Fatawa Rizvia With referencing and translation of Arabic phrases Imam Ahmed Raza Barelvi (May Allah sanctify his secret) 2 Raza Foundation Jamia Nizamia Rizvia Inside Lohari Gate Lahore, 8 Pakistan (54000)

फ़तावा रिज़विया अरबी इबारतों की तख़रीज और तर्जुमे के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) २ रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रिज़विया अंदरुन लोहारी दरवाज़ा लाहौर, ८ पाकिस्तान (५४०००)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ ۲ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Fatawa Razawiyya Volume Two

Summary List 4
Preface ..... 5 Fatawa Razawiyya Volume Two ..... 6 List of Volume Two ..... 9 Chapters and Matters ..... 9 List of Subsidiary Matters ..... 17 Chapter on Waters ..... 37 (Description of Waters) 37
Treatise ..... 43 Fatwa titled: ..... 43 At-Tars al-Mu'addal fi Hadd al-Ma' al-Musta'mal 1320 AH ..... 43 A fair scroll regarding the definition of used water (T) ..... 43 Fatwa titled: ..... 113 An-Numiqat al-Atqa fi Farq al-Mulaqi wal-Mulqi 1327 AH ..... 113 A pure writing on the difference between meeting and poured water (T) ..... 113 Fatwa titled: ..... 286 Al-Hani' an-Namir fil-Ma' al-Mustadir 1332 AH ..... 286 Research on pleasant clear circular water (T) ..... 286 Rahab as-Sahah fi Miyah la Yastawi Wajhuha wa Jawfuha fil-Misahah 1332 AH ..... 322 Expanding the field regarding those waters whose surface and depth are not equal in measurement (T) ..... 322 Tajdid an-Nazar bi Wajhin Akhar wa Ibanat ma huwa Ahla wa Azhar wa Ajla wa Azhar ..... 406 Another review from a different perspective, and explanation in an excellent, bright, and clearer manner ..... 406 Fatwa titled: ..... 426 Hibat al-Khabir fi 'Umq Ma' Kathir 1332 AH 426

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड 2)

इजमाली फ़ेहरिस्त (संक्षिप्त सूची) ..... 4 पेश लफ्ज़ (प्रस्तावना) ..... 5 फ़तावा रज़विया जिल्द दोम ..... 6 फ़ेहरिस्त जिल्द दोम ..... 9 अबवाब व मसाइल (अध्याय और मसले) ..... 9 फ़ेहरिस्त ज़िमनी मसाइल (सहायक मुद्दों की सूची) ..... 17 बाबुल मियाह (पानी का अध्याय) ..... 37 (पानीयों का बयान) ..... 37 रिसाला ..... 43 फ़तवा मुसम्मा बह (फ़तवा जिसका नाम है) ..... 43 अत-तर्स अल-मुअ़द्दल फ़ी ह़द्दिल मा-इल मुस्तअ़मल 1320 हिजरी ..... 43 इस्तेमाल शुदा पानी की तारीफ़ में मुनसिफ़ सहीफ़ा (त) ..... 43 फ़तवा मुसम्मा बह ..... 113 अन-नुमीक़तुल अतका फ़ी फ़र्किल मुलाक़ी वल मुल्की 1327 हिजरी ..... 113 मिलने वाले और डाले गए पानी के फ़र्क में एक पाकीज़ा तहरीर (त) ..... 113 फ़तवा मुसम्मा बह ..... 286 अल-ह़नी अन-नमी़र फ़िल मा-इल मुस्तदीर 1332 हिजरी ..... 286 ख़ुशगवार साफ़ आब-ए-मुस्तदीर की तह़क़ीक़ (त) ..... 286 रह़ब-उस-साह़ा फ़ी मियाह ला यस्तवी वजहुहा व जौफ़ुहा फ़िल मिसाह़ा 1332 हिजरी ..... 322 उन पानीयों के बारे में मैदान-ए-वसीअ़ करना जिनकी सतह और गहराई पैमाइश में बराबर न हो (त) ..... 322 तजदीदुन नज़रि बि वज्हिन आखर व इबानति मा हुवा अहला व अज़हर व अजला व अज़हर ..... 406 एक और तरीक़े से नज़र-ए-सानी, और उम्दा, रोशन और अज़हर तरीक़े पर वज़ाह़त ..... 406 फ़तवा मुसम्मा बह ..... 426 ह़िबतुल खबीर फ़ी उ़म्क़ मा-ए-कसीर 1332 हिजरी 426

पृष्ठ 711 का 1

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

اجمالی فہرست ..... 4 پیش

لفظ ..... 5 فتاویٰ رضویہ جلد

دوم ..... 6 فہرست جلد

دوم ..... 9 ابواب و

مسائل ..... 9 فہرست ضمنی

مسائل ..... 17 باب

المیاہ ..... 37 (پانیوں کا

بیان) 37

رسالہ ..... 43 فتویٰ

مسمّٰی بہ ..... 43 الطرس المعدل

فی حدالماء المستعمل ۱۳۲۰ھ ..... 43 استعمال شدہ پانی کی

تعریف میں منصف صحیفہ (ت) ..... 43 فتویٰ مسمّٰی

بہ ..... 113 النمیقۃ الاتقی فی فرق

الملاقی والملقی ۱۳۲۷ھ ..... 113 ملنے والے اور ڈالے

گئے پانی کے فرق میں ایک پاکیزہ تحریر (ت) 113

فتویٰ مسمّٰی بہ ..... 286 الھنیئ

النمیر فی الماء المستدیر ۱۳۳۲ھ ..... 286 خوشگوار

صاف آب مستدیر کی تحقیق (ت) ..... 286 رحب

الساحة فی میاہ لا یستوی وجھھا وجوفھا فی المساحۃ ۱۳۳۲ھ ..... 322 ان پانیوں کے بارے میں میدانِ وسیع کرنا جن کی سطح اور گہرائی پیمائش میں برابر نہ ہو

(ت) ..... 322 تجدید النظر بوجہ آخر و ابانۃ موھواحلی و ازھر واجلی واظھر ..... 406 ایک اور طریقہ سے نظرِ ثانی، اور عمدہ، روشن اور اظہر طریقہ پر وضاحت ..... 406 فتویٰ مسمّٰی بہ ..... 426 ھبۃ الخبیر فی عمق ماء کثیر ۱۳۳۲ھ 426

Fatawa Rizwia Volume 2 426 ..... The gift of rain clouds in the depth of excess water (T) Fatwa named as... Al-Noor wa al-Nawariq li-Asfar al-Ma' al-Mutlaq 1332 AH ..... 452 (Light and radiance to illuminate the ruling on absolute water) ..... 452 (Subsidiary Treatise) 'Ata al-Nabi li-Afadat Ahkam Ma' al-Sabiyy 1332 AH ..... 495 (The Prophet's [peace and blessings of Allah be upon him] gift regarding the rulings on water obtained by a child) .... 495 Sources and References 698

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2) 426 .....
वर्षा के बादलों का उपहार अधिक पानी की गहराई में (त) फतवा जिसका नाम है... अल-नूर वल-नवारिक लि-असफ़ार अल-मा अल-मुतलक १३३२
हिजरी ..... 452 (शुद्ध जल के आदेश को स्पष्ट करने के लिए नूर और रौनक) ..... 452 (सहायक पुस्तिका) अता अन-नबी लि-अफ़ादत अहकाम मा अल-सबी १३३२ हिजरी ..... 495 (बच्चे द्वारा प्राप्त पानी के नियमों के संबंध में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का
उपहार) ..... 495 स्रोत और
संदर्भ 698

www.dawateislami.net आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 2/711

فتاوی رضویه جلد ثانی 426 ..... ابر باراں کا عطیہ زیادہ پانی کی گہرائی میں (ت) فتوی مسمّٰی به... النوروالنورق لاسفارالماءالمطلق ۱۳۳۲ھ ..... 452 (آب مطلق کا حکم روشن کرنے کیلئے نور اور رونق) ..... 452 (رساله ضمنیه) عطاء النبي لافاضة احكام ماء الصبي ۱۳۳۲ھ ..... 495 (بچے کے حاصل کردہ پانی کے احکام کے متعلق نبی پاک صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا عطیہ) 495

مآخذ ومراجع .....

698

Fatawa Razawiya Volume Two

Fatawa Razawiya With research citations and translation of Arabic passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Razavia

www.dawateislami.net Inside Lohari Gate, Lahore No. 8 Pakistan (54000)

I.T. Majlis of Dawateislami Page 1 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दो)

फ़तावा रज़विया अरबी इबारतों के शोध संदर्भ और अनुवाद के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उन पर अपनी रहमत फ़रमाए) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया

www.dawateislami.net अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 1/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

www.dawateislami.net اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 1 از 711

Fatawa Rizvia Volume Two Whomever Allah intends good for, He gives him understanding of the religion (Hadith). Al-Ataya al-Nabawiyya fi al-Fatawa al-Rizviyya With citations and translation of Arabic phrases. Volume Two A grand fourteenth-century jurisprudential encyclopedia consisting of rare research. Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 1272 AH — 1340 AH 1856 AD — 1921 AD Raza Foundation, Jamia Nizamia Rizvia Inside Lohari Gate, Lahore, Pakistan I.T. Majlis of Dawat-e-Islami www.dawateislami.net Page 2 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द-ए-सानी (भाग दो) जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है, उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है (हदीस)। अल-अताया अन-नबवियाह फ़िल फ़तावा अर-रिज़वियाह अरबी इबारत की तख़रीज और तर्जुमे के साथ। जिल्द-ए-सानी दुर्लभ शोधों पर आधारित चौदहवीं शताब्दी का एक विशाल फ़िक़्ही इनसाइक्लोपीडिया। इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सिर्रहु अल-अज़ीज़) १२७२ हिजरी — १३४० हिजरी १८५६ ईस्वी — १९२१ ईस्वी रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रिज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर, पाकिस्तान आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी www.dawateislami.net पृष्ठ २ / ७११

فتاویٰ رضویہ جلدِ ثانی مَنْ یُّرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُّفَقِّھْہُ فِی الدِّیْنِ (الحدیث) اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات جلدِ ثانی تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ — ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء — ۱۹۲۱ء رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور، پاکستان آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی www.dawateislami.net صفحہ 2 از 711

Fatawa-e-Razvia, Volume Second

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. (All rights reserved by the publisher)

Book: Fatawa-e-Razvia, Volume Two Author: Sheikh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelvi (May his secret be sanctified) Translation of Arabic phrases: Mufti Syed Shujaat Ali Qadri, Dar-ul-Uloom Naeemia, Karachi Foreword: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia, Lahore Research and Correction: 1. Maulana Nazir Ahmed Saeedi 2. Maulana Muhammad Umar Hazarvi Arrangement and Supervision: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Qadri Hazarvi (May his shadow be extended) Index Preparation: Maulana Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saeedi Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Katial Kalan (Gujranwala) Proofreading: Maulana Sardar Ahmed Hasan Saeedi First Publication: Rabi-us-Sani 1412 AH / November 1991 AD Quantity: One thousand Pages: 710 Press: Zahid Bashir Printer, Lahore Publisher: Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore Price: _____

Available Addresses: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore. Phones: 0300/9415300, 7665772 * Maktaba Ahle Sunnat Jamia Nizamia Razvia, Inside Lohari Gate, Lahore. * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore. * Shabbir Brothers, 40 B, Urdu Bazaar, Lahore.

फतवा-ए-रजविया, खंड द्वितीय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दयालु है। (सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं)

पुस्तक: फतवा-ए-रजविया, खंड दो लेखक: शेख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी (अल्लाह उनकी कब्र को नूर से भर दे) अरबी वाक्यांशों का अनुवाद: मुफ्ती सैयद शुजात अली कादरी, दार-उल-उलूम नईमिया, कराची प्रस्तावना: हाफिज अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निजामिया, लाहौर शोध और सुधार: 1. मौलाना नज़ीर अहमद सईदी 2. मौलाना मोहम्मद उमर हज़ारवी व्यवस्था और पर्यवेक्षण: मौलाना मुफ्ती मोहम्मद अब्दुल कय्यूम कादरी हज़ारवी (उनकी छाया बनी रहे) अनुक्रमणिका तैयारी: मौलाना हाफिज मोहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी सुलेख: मोहम्मद शरीफ गुल, कटियाल कलां (गुजरांवाला) प्रूफरीडिंग: मौलाना सरदार अहमद हसन सईदी प्रथम प्रकाशन: रबी-उस-सानी 1412 हिजरी / नवंबर 1991 ईस्वी संख्या: एक हजार पृष्ठ: 710 प्रेस: ज़ाहिद बशीर प्रिंटर, लाहौर प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रजविया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर मूल्य: _____

मिलने के पते: * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रजविया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर। फोन: 0300/9415300, 7665772 * मकतबा अहले सुन्नत जामिया निज़ामिया रजविया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर। * ज़िया-उल-कुरान पब्लिकेशन्स, गंज बख्श रोड, लाहौर। * शब्बीर ब्रदर्स, 40 बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर।

पृष्ठ 711 में से 3

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں)

کتاب: فتاویٰ رضویہ جلد دوم تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی قدس سرہ العزیز ترجمہ عربی عبارات: مفتی سید شجاعت علی قادری، دارالعلوم نعیمیہ، کراچی پیش لفظ: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ، لاہور تخریج و تصحیح: ۱۔ مولانا نظیر احمد سعیدی ۲۔ مولانا محمد عمر ہزاروی باہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم قادری ہزاروی مدظلہ ترتیب فہرست: مولانا حافظ محمد عبدالستار سعیدی کتابت: محمد شریف گل، کٹیال کلاں (گوجرانوالا) پروف ریڈنگ: مولانا سردار احمد حسن سعیدی اشاعت اول: ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ / نومبر ۱۹۹۱ء تعداد: ایک ہزار صفحات: ۷۱۰ مطبع: زاہد بشیر پرنٹر، لاہور ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت: ____

ملنے کے پتے: * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور۔ فون: ۰۳۰۰/۹۴۱۵۳۰۰، ۷۶۶۵۷۷۲ * مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور۔ * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور۔ * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور۔

Fatawa Razawiya Volume Two

Summary Table of Contents

- Foreword _____ 5
- Chapter on Waters _____ 37
- Sources and References _____ 697

List of Treatises

- At-Tars al-Mu'addal _____ 43 to 112
- An-Numaiqat al-Anqa _____ 113 to 228
- Al-Hani al-Namir _____ 285 to 308
- Rajab al-Sahat _____ 321 to 423
- Hiba al-Habir _____ 425 to 449
- An-Noor wal-Nawraq _____ 451 (This treatise will conclude in Volume Three)
- Ataa al-Nabi _____ 494 to 541

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 4 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी (द्वितीय खंड)

संक्षिप्त विषय-सूची

- प्रस्तावना _____ ५
- जल संबंधी अध्याय _____ ३७
- स्रोत और संदर्भ ____ ६९७

पुस्तिकाओं की सूची

- अत-तर्स अल-मुअद्दल ____ ४३ से ११२
- अन-नुमईक़त अल-अनक़ा ____ ११३ से २२८
- अल-हनी अल-नमीर ____ २८५ से ३०८
- रजब अस-साहत ____ ३२१ से ४२३
- हिबा अल-हबीर _____ ४२५ से ४४९
- अन-नूर वल-नौरक़ _____ ४५१ (यह पुस्तिका तीसरे खंड में समाप्त होगी)
- अता-ए-नबी ____ ४९४ से ५४१

आई.टी. मज्लिस ऑफ़ दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ ४/७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

اجمالی فہرست

- ہ پیش لفظ _____ ۵
- ہ باب المیاہ _____ ۳۷
- ہ مآخذ و مراجع _____ ۶۹۷

فہرست رسائل

- ہ الطرس المعدل _____ ۴۳ تا ۱۱۲
- ہ النمیقۃ الانقیٰ _____ ۱۱۳ تا ۲۲۸
- ہ الھنئی النمیر _____ ۲۸۵ تا ۳۰۸
- ہ رجب الساحۃ _____ ۳۲۱ تا ۴۲۳
- ہ ہبۃ الحبیر _____ ۴۲۵ تا ۴۴۹
- ہ النور والنورق _____ ۴۵۱ (یہ رسالہ جلد سوم میں ختم ہوگا)
- ہ عطاء النبی _____ ۴۹۴ تا ۵۴۱

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ ۴ از ۷۱۱

Fatawa Razawiya - Volume Two

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Preface

There is a consensus among all people of knowledge and jurisprudence that among the later scholars, an expert jurist (faqih), mujtahid, and theologian like AlaHazrat, the great in rank, the traveler in the desert of Sharia, the swimmer in the ocean of Ma'rifat (gnosis), Imam Ahmad Raza Khan Fazil Barelvi, is not found in the entire Islamic world. In terms of the abundance of his writings, a parallel to him might not even be found among the early scholars. The scholars of Arabia and non-Arab lands during and after his era have whole-heartedly acknowledged his vastness of knowledge and depth of vision. While paying a tremendous tribute to his reformative, jurisprudential, theological, literary, and research abilities, they declared him the second Abu Hanifa, the teacher of Shami and other jurists, the Mujaddid of the 14th century, and a manifestation of the saying of the Messenger of Allah (peace be upon him and his progeny): "Whomsoever Allah intends good for, He gives him understanding (faqahah) in religion." Although he has approximately eleven hundred compositions in more than fifty sciences and arts, and each of these works is full of research and evidence, "Al-Ataya al-Nabawiyyah fil Fatawa al-Ridawiyyah," known as "Fatawa Razawiya," is a special masterpiece of his scholarly depth and jurisprudential insight. It is a grand treasure and repository of millions of jurisprudential issues and details, among which are thousands of issues that either do not exist at all in any other book or have not been described elsewhere in such a strong and coherent manner. Looking at the excellent and unique style of expression and the waves of arguments and proofs in Fatawa Razawiya, which spans thousands of pages, it can only be said that "This is the grace of Allah, He gives it to whom He wills."

This blessing is not achieved by the strength of one's arm, Unless the Gracious God bestows it.

With all its excellence and perfection, this grand jurisprudential masterpiece could not become widely circulated and well-known until now simply because all its previous editions were in an old style of bookmaking and printing. Along with that, due to hundreds of pages being in Arabic and Persian, not only the general public but even the elite and scholars could only benefit from it with difficulty. Therefore, a dire need was being felt for some institution to present it in such a manner that...

फ़तावा रज़विया - भाग दो

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

प्रस्तावना

ज्ञान और न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) के सभी विद्वानों के बीच इस बात पर सहमति है कि बाद के विद्वानों में आला हज़रत, उच्च पदस्थ, शरीअत के मरुस्थल के यात्री, मारिफ़त के समुद्र के तैराक, इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िल बरेलवी जैसा विशेषज्ञ न्यायविद (फ़क़ीह), मुजतहिद और धर्मशास्त्री पूरे इस्लामी जगत में दिखाई नहीं देता। यहाँ तक कि रचनाओं की प्रचुरता के मामले में भी पूर्ववर्ती विद्वानों में शायद उनका कोई सानी न मिले। उनके समय और बाद के अरब और गैर-अरब (अजम) के विद्वानों ने उनके ज्ञान की गहराई और दृष्टि की व्यापकता को तहे दिल से स्वीकार किया है। उनकी सुधारात्मक, न्यायशास्त्रीय, धार्मिक और शोध क्षमताओं को जबरदस्त श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें दूसरा अबू हनीफ़ा, शामी आदि न्यायविदों का उस्ताद, चौदहवीं शताब्दी का मुजद्दिद और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन का प्रतीक घोषित किया: "अल्लाह जिसके साथ भलाई करना चाहता है, उसे दीन (धर्म) की गहरी समझ (फ़िक़्ह) प्रदान करता है।" वैसे तो पचास से अधिक ज्ञान और कलाओं में उनकी लगभग ग्यारह सौ रचनाएँ मौजूद हैं और उनमें से प्रत्येक रचना शोध और साक्ष्यों से भरपूर है। लेकिन "अल-अताया अन-नबविया फिल फ़तावा अर-रज़विया", जिसे "फ़तावा रज़विया" के नाम से जाना जाता है, उनके वैज्ञानिक विसर्जन और न्यायशास्त्रीय समझ का एक विशेष उत्कृष्ट नमूना (मास्टरपीस) है। यह लाखों न्यायशास्त्रीय मुद्दों और विवरणों का एक विशाल खजाना और भंडार है, जिनमें हजारों ऐसे मुद्दे हैं जो या तो किसी अन्य पुस्तक में बिल्कुल नहीं मिलते या फिर इतने मजबूत और सुसंगत तरीके से कहीं और वर्णित नहीं किए गए हैं। हज़ारों पृष्ठों पर आधारित फ़तावा रज़विया की उत्कृष्ट और अद्वितीय वर्णन शैली और तर्कों एवं प्रमाणों के उतार-चढ़ाव को देखकर केवल यही कहा जा सकता है कि "यह अल्लाह का अनुग्रह है, वह जिसे चाहता है उसे देता है।"

यह सौभाग्य भुजाओं के बल से नहीं मिलता, जब तक कि देने वाला ईश्वर इसे न दे दे।

सभी खूबियों और पूर्णता के बावजूद, यह महान न्यायशास्त्रीय उत्कृष्ट कृति अब तक केवल इसलिए लोकप्रिय और प्रसिद्ध नहीं हो सकी क्योंकि इसके पिछले सभी संस्करण पुस्तक और छपाई के पुराने ढंग पर थे। इसके साथ ही, सैकड़ों पृष्ठों के अरबी और फ़ारसी भाषा में होने के कारण न केवल आम

जनता, बल्कि विशिष्ट लोग और विद्वान भी कठिनाई से ही लाभ उठा पाते थे। इसलिए बड़ी तीव्रता से आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि कोई संस्थान इसे ऐसे ढंग से प्रस्तुत करे कि...

पृष्ठ 711 में से 5

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ

اس بات پر تمام ارباب علم و فقاہت کا اتفاق ہے کہ متاخرین میں اعلیٰحضرت عظیم المرتبت، سیاح بادیہ شریعت، سباح بحر معرفت امام احمد رضا خاں فاضل بریلوی جیسا ماہر فقیہ، مجتہد اور متکلم پورے عالم اسلام میں دکھائی نہیں دیتا جبکہ کثرت تصنیفات کے اعتبار سے تو متقدمین میں بھی شاید آپ کی نظیر نہ مل سکے۔ آپ کے دور اور مابعد کے علماء عرب و عجم نے آپ کے تبحر علمی اور تعمق نظری کا تہہ دل سے اعتراف کیا اور آپ کی تجدیدی، فقہی و کلامی اور تصنیفی و تحقیقی صلاحیتوں کو زبردست خراج تحسین پیش کرتے ہوئے آپ کو ابو حنیفہ ثانی، شامی وغیرہ فقہاء کا استاد، چودہویں صدی کا مجدد اور ارشاد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم "من یرد اللہ بہ خیراً یفقھہ فی الدین" کا مظہر قرار دیا۔ یوں تو آپ کی پچاس سے زائد علوم و فنون میں تقریباً گیارہ سو تصانیف موجود ہیں اور ان میں سے ہر ایک تصنیف تحقیقی اور دلائل سے بھرپور ہے۔ مگر "العطایا النبویۃ فی الفتاوی الرضویۃ" المعروف "فتاویٰ رضویہ" آپ کے علمی تبحر اور تفقہ کا خصوصی شاہکار ہے جو لاکھوں مسائل و جزئیات فقہیہ کا عظیم الشان خزانہ و ذخیرہ ہے جن میں ہزاروں مسائل ایسے ہیں جن کا کسی دوسری کتاب میں یا تو سرے سے وجود ہی نہیں یا پھر اس مضبوط و مربوط انداز سے کہیں اور بیان نہیں ہوئے، ہزارہا صفحات پر مشتمل فتاویٰ رضویہ کے عمدہ و منفرد اسلوب بیان اور دلائل و براہین کے تلاطم و تموج کو دیکھ کر یہی کہا جا سکتا ہے کہ ذٰلك فضل اللہ یؤتیہ من یشاء۔

ایں سعادت بزور بازو نیست تا نہ بخشد خدائے بخشندہ

ہمہ خوبی و کمال کے باوجود یہ عظیم الشان فقہی شاہکار اب تک محض اس لئے متداول و معروف نہ ہو سکا کہ اس کی سابقہ تمام اشاعتیں کتاب اور طباعت کے قدیم انداز پر تھیں اور اس کے ساتھ ساتھ سینکڑوں صفحات عربی و فارسی زبان پر مشتمل ہونے کی وجہ سے عوام تو در کنار خواص و علماء بھی مشکل ہی سے استفادہ کر پاتے تھے لہٰذا بڑی شدت سے ضرورت محسوس کی جارہی تھی کہ کوئی ادارہ اس کو ایسے انداز میں پیش کرے کہ

Fatawa Razawiyya, Volume II

...so that both the general public and the elite could benefit from its utility. Thus, the servant of the Ahl-e-Sunnat, the leader of the scholars, Hazrat Allama Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi (may his high blessings and complete bounties continue) took up the task of this grand project. By establishing an institution named "Raza Foundation" and relying on the grace and bounty of Allah Almighty and the mercy and kindness of the Beloved of God (peace and blessings be upon him), he initiated this noble work. The day and night hard work and efforts of him and his colleagues finally bore fruit. The first volume of Fatawa Razawiyya, embellished and adorned with formal and spiritual beauty in accordance with a new style, standard printing, and the requirements of the modern era, appeared on the scene. In it, the paragraphs of the texts, the citations of references with volume and page numbers as much as possible, and Urdu translations of Arabic and Persian texts along with a list of sources and references were also provided. As soon as the first volume was published, the speed with which people grabbed it surpassed our expectations; eleven hundred copies reached the hands of those with academic taste in no time. While this conveys a sense of the importance and utility of this book, it also reveals the thirst of both the common people and the elite. Therefore, the second edition of the first volume has also been brought to light immediately.

Fatawa Razawiyya Volume II

By the praise of Allah Almighty, the second volume of Fatawa Razawiyya, adorned with an excellent standard, style, and eye-catching printing, has reached your hands, cooling your eyes and delighting your heart. This volume covers from page 436, the chapter on waters (Bab al-Miyah), of the old first volume to page 484, up to the supplementary treatise "Ad-Diqqah wa al-Tibyan". From this, the grand treatise "Ajla al-I'lam," which was on pages 381 to 407 of the old volume, has been placed at the beginning of the first volume. The current volume contains answers to 33 questions, 933 exquisite benefits under the title of "Aqool," and 502 sub-notes and submissions.

There are seven treatises in this volume as follows: (1) Al-Tars al-Muba'dal fi Hadd al-Ma' al-Musta'mal (Definition and research of used water). (2) Al-Namīqah al-Anqā fi Farq al-Mulāqī wa al-Mulqā (The ruling on putting the hands of a person without ablution or in a state of major ritual impurity into a small amount of water). (3) Al-Hanī' al-Namīr fi al-Mā' al-Mustadīr (Description of the measurement of a 'dah-dar-dah' circular water body). (4) Rahb al-Sāhah fi Miyāh lā Yastawī Wajhuhā wa Jawfuhā fi

al-Masāhah (Description of waters whose surface measurement is less than 'dah-dar-dah' while the bottom is 'dah-dar-dah', or vice versa).

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

...ताकि आम और खास सभी इसकी उपयोगिता से लाभान्वित हो सकें। अत; अहले सुन्नत के सेवक, विद्वानों के नेता, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़रवी (उनकी उच्च बरकतें और पूर्ण कृपा बनी रहे) ने इस महान कार्य का बीड़ा उठाया और "रज़ा फाउंडेशन" के नाम से एक संस्था की स्थापना की। अल्लाह तआला के अनुग्रह और कृपा तथा अल्लाह के प्रिय (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की दया और कृपा पर भरोसा करते हुए, उन्होंने इस नेक काम की शुरुआत की। उनकी और उनके सहयोगियों की दिन-रात की मेहनत और कोशिशें आखिरकार रंग लाईं और फ़तावा रज़विया का पहला खंड नए अंदाज़, मानक छपाई और वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुसार बाहरी और आंतरिक सुंदरता से सुसज्जित होकर सामने आया। इसमें इबारतों (अनुच्छेदों) की संरचना, जहाँ तक संभव हो खंड और पृष्ठ संख्या के साथ संदर्भों का उल्लेख, और अरबी तथा फारसी इबारतों के उर्दू अनुवाद के साथ-साथ स्रोतों और संदर्भों की सूची भी दी गई। पहला खंड प्रकाशित होते ही जिस तेज़ी से लोगों ने इसे हाथों-हाथ लिया, वह हमारी अपेक्षाओं से कहीं अधिक है; ग्यारह सौ प्रतियाँ देखते ही देखते शैक्षणिक रुचि रखने वालों के हाथों में पहुँच गईं। जहाँ इससे इस पुस्तक के महत्व और उपयोगिता का बोध होता है, वहीं आम और खास लोगों की प्यास का भी पता चलता है। अत; तुरंत पहले खंड का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित कर दिया गया है।

फ़तावा रज़विया खंड द्वितीय

अल्लाह तआला की प्रशंसा से, फ़तावा रज़विया का दूसरा खंड बहुत ही बेहतरीन मानक, शैली और आकर्षक छपाई से सुसज्जित होकर आपके हाथों में पहुँच चुका है, जो आपकी आँखों को ठंडक और दिल को खुशी प्रदान कर रहा है। यह खंड पुराने पहले खंड के पृष्ठ 436, 'बाब अल-मियाह' (जल का अध्याय) से लेकर पृष्ठ 484, पूरक शोध-पत्र "अद-दिक्क़ह व अल-तिब्यान" तक है। इसमें से महान शोध-पत्र "अजला अल-इलाम", जो पुराने खंड के पृष्ठ 381 से 407 तक था, उसे पहले खंड के शुरू में लगा दिया गया। वर्तमान खंड 33 प्रश्नों के उत्तर, "अक़ूल" शीर्षक के तहत 933 उत्तम लाभ और 502 टिप्पणियों और प्रस्तुतियों पर आधारित है।

इस खंड में निम्नलिखित सात शोध-पत्र हैं: (1) अत-तर्स अल-मुबअदल फ़ी हद्द अल-मा अल-मुस्तअमल (उपयोग किए गए पानी की परिभाषा और शोध)। (2) अन-नमीक़ह अल-अन्क़ा फ़ी फ़र्क़ अल-मुलाक़ी व अल-मुल्क़ा। (कम पानी में बिना वज़ू या नापाकी की अवस्था वाले व्यक्ति के हाथ

डालने का हुक्म।) (3) अल-हनी अल-नमीर फ़ी अल-मा अल-मुस्तदीर। (गोलाकार पानी के'दह-दर-दह' माप का वर्णन।) (4) रहब अस-साहह फ़ी मियाह ला यस्तवी वजहुहा व जौफ़ुहा फ़ी अल-मसाहह (उन पानियों का वर्णन जिनका ऊपरी माप कम है और निचला हिस्सा 'दह-दर-दह' है, या इसके विपरीत।)

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

اس کی افادیت سے عوام و خواص سب ہی بہرہ ور ہوسکیں۔ چنانچہ مخدوم اہل سنت رئیس العلماء حضرت علامہ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی دامت برکاتہم العالیہ وعمت فیوضہم الکاملہ نے اس جلیل القدر کام کا بیڑا اٹھایا اور "رضا فاؤنڈیشن" کے نام سے ایک ادارہ قائم فرما کر اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم اور حبیبِ خدا صلی اللہ علیہ وسلم کی رحمت و عنایت پر بھروسہ کرتے ہوئے اس کار خیر کا آغاز فرمایا آپ کی اور آپ کے رفقاء کار کی شبانہ روز کی محنت و کاوش بالآخر رنگ لائی اور فتاویٰ رضویہ کی جلد اول نئے انداز، معیاری طباعت اور دور حاضر کے تقاضوں کے عین مطابق حسن صوری و معنوی سے مزین و آراستہ ہو کر منصہ شہود پر جلوہ گر ہوئی، جس میں عبارات کی پیرا بندی، حوالہ جات کی مقدور بھر تخریج بقیدِ جلد و صفحہ اور عربی و فارسی عبارات کے اردو ترجمے کے ساتھ ساتھ مآخذ و مراجع کی فہرست بھی دے دی گئی۔ جلد اول کے شائع ہوتے ہی جس برق رفتاری کے ساتھ لوگوں نے اسے ہاتھوں ہاتھ لیا یہ ہماری توقعات سے کہیں بڑھ کر ہے، گیارہ سو نسخے دیکھتے ہی دیکھتے علمی ذوق رکھنے والوں کے ہاتھوں میں جا پہنچے۔ اس سے جہاں اس کتاب کی اہمیت و افادیت کا احساس ہوتا ہے وہاں عوام خواص کی تشنگی کا بھی پتہ چلتا ہے، چنانچہ فوری طور پر جلد اول کا دوسرا ایڈیشن بھی منظرِ عام پر لایا جا چکا ہے۔

فتاویٰ رضویہ جلد دوم

بحمد اللہ تعالیٰ فتاویٰ رضویہ کی جلد دوم نہایت عمدہ معیار وانداز اور دیدہ زیب طباعت سے محلیٰ ہو کر آپ کے ہاتھوں میں پہنچ چکی ہے جو آپ کی آنکھوں کو ٹھنڈا اور دل کو باغ باغ کر رہی

ہے۔ یہ جلد پرانی جلد اول کے صفحہ ۴۳۶، باب المیاہ سے صفحہ ۴۸۴ رسالہ ضمنیہ "الدقة والتبیان" تک ہے جس میں سے رسالہ جلیلہ "اجلی الاعلام" جو پرانی جلد کے صفحہ ۳۸۱ سے صفحہ ۴۰۷ تک تھا جلد اول کے شروع میں لگا دیا گیا۔ پیشِ نظر جلد ۳۳ سوالوں کے جوابات، اقول کے عنوان سے ۹۳۳ فوائدِ نفیسہ اور ۵۰۲ تطفلات و معروضات پر مشتمل ہے۔

اس جلد میں مندرجہ ذیل سات رسائل ہیں: (۱) اَلطَّرْسُ الْمُبَعْدَلُ فِيْ حَدِّ الْمَاءِ الْمُسْتَعْمَلِ (مستعمل پانی کی تعریف و تحقیق) (۲) اَلنَّمِيْقَةُ الْاَنْقٰی فِيْ فَرْقِ الْمُلَاقِيْ وَالْمُلْقٰی۔ (ماء قلیل میں بے وضو یا جنبی کے ہاتھ ڈالنے کا حکم۔) (۳) اَلْهَنِيْئُ النَّمِيْرُ فِيْ الْمَاءِ الْمُسْتَدِيْرِ۔ (متدیر پانی کی مساحت دہ دردہ کا بیان۔) (۴) رَحْبُ السَّاحَةِ فِيْ مِيَاهٍ لَا يَسْتَوِیْ وَجْهُهَا وَجَوْفُهَا فِي الْمَسَاحَةِ (ان پانیوں کا بیان جن کی مساحت اوپر سے کم اور نیچے سے دہ دردہ ہے یا اس کے برعکس۔)

Fatawa Razawiya Volume Second (5) Hibat-ul-Khabir fi Umqi Ma'in Kathir - Description of the depth of large quantities of water. (6) An-Nooru wan-Nawraqu li-Isfari-il-Ma'il-Mutlaq - Investigation of absolute water. (7) Ataa-un-Nabi li-Ifadati Ahkami Ma'is-Sabiyyi - Description of the rules regarding water used by a child.

Here, it is essential to pay tribute to the beautiful efforts of Hazrat Allama Sahibzada Qazi Muhammad Abdul Daim Sahib (may his glory increase), Chief Editor of "Jaam-e-Irfan" and custodian of the exalted seat of Astana Alia Naqshbandiya Mujaddidiya, Haripur Hazara. He demonstrated extreme diligence and hard work in reviewing, correcting, and improving the translation in some places, as well as in the arrangement and ornamentation of phrases and sentences in this volume. Full of sincerity and devotion, he utilized his God-given literary and intellectual abilities to enhance its beauty and elegance. The members of the Raza Foundation are deeply grateful to him for this.

A sincere appeal is made to scholars and learned individuals to inform us of any errors in translation or calligraphy that they come across. Furthermore, please provide your valuable suggestions to further this great and significant project. May Allah Almighty keep the shadow of the Mufti over the heads of the Ahl-e-Sunnat, and provide resources and means from the unseen to bring the great project you have started to completion. Ameen, for the sake of the Beloved of the Lord of the Worlds.

Hafiz Abdul Sattar Saeedi Director of Education, Jamia Nizamia Razawiya Inside Lohari Gate, Lahore

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय खंड) (५) ह़िबतुल ख़बीर फ़ी उ़म्क़ि माइन कसीर - आबे कसीर (अधिक पानी) की गहराई का विवरण। (६) अन-नूरु वन-नौरक़ु लि-इस्फ़ारिल-माइल-मुतलक़ - मुतलक़ पानी (शुद्ध जल) की जाँच। (७) अ़ताउन्नबी लि-इफ़ाज़ति अ़हकामि माइस्सबी - बच्चे द्वारा उपयोग किए गए पानी के नियमों का विवरण।

यहाँ हज़रत अल्लामा साहिबज़ादा क़ाज़ी मुहम्मद अब्दुल दायम साहिब (ज़ैद मज्दुहू), मुख्य संपादक "जाम-ए-इरफ़ान", सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया नक़्शबंदिया मुजद्दीदिया, हरिपुर हजारा के उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस जिल्द (खंड) के पुनरीक्षण, संशोधन, कुछ स्थानों पर अनुवाद के सुधार और वाक्यों व वाक्यांशों की सजावट और व्यवस्था में अत्यंत कठिन परिश्रम और लगन का प्रदर्शन किया। निष्ठा और समर्पण की भावना से ओतप्रोत होकर, उन्होंने अपनी ईश्वर प्रदत्त साहित्यिक और बौद्धिक क्षमताओं का उपयोग करते हुए इसकी सुंदरता और भव्यता में निखार पैदा किया। रज़ा फ़ाउंडेशन के सदस्य इसके लिए उनके तहे दिल से शुक्रगुज़ार हैं।

विद्वानों और सुधीजनों से विनम्र अपील है कि अनुवाद या लेखन में जो भी त्रुटियां उनकी नज़र में आएं उनसे हमें अवगत कराएं। साथ ही, इस महान और महत्वपूर्ण परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से नवाज़ें। अल्लाह तआला मुफ़्ती साहिब का साया अहले सुन्नत के सिरों पर क़ायम व दायम रखे और जिस महान परियोजना की आपने शुरुआत की है, उसे पूरा करने के लिए अदृश्य से संसाधन और साधन उपलब्ध कराए। आमीन, हबीबे रब्बुल आलमीन के सदक़े में।

हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी गेट, लाहौर

पृष्ठ ७/७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی (۵) هِبَةُ الْحَبِيْرِ فِي عُمْقِ مَاءٍ كَثِيرٍ۔ آبِ کثیر کی گہرائی کا بیان۔ (۶) اَلنُّوْرُ وَالنَّوْرَقُ لِاِسْفَارِ الْمَاءِ الْمُطْلَقُ مطلق پانی کی تحقیق۔ (۷) عَطَاءُ النَّبِي لِاِفَاضَةِ اَحْكَامِ مَاءِ الصَّبِيِّ بچہ کے حاصل کئے ہوئے پانی کا بیان۔

یہاں حضرت علامہ صاحبزادہ قاضی محمد عبدالداؤم صاحب زید مجدہ، مدیر اعلیٰ "جام عرفان" سجادہ نشین آستانہ عالیہ نقشبندیہ مجددیہ ہری پور ہزارہ کی مساعی جمیلہ کو خراج تحسین پیش کرنا نہایت ضروری ہے جنہوں نے اس جلد کی نظر ثانی، تصحیح، بعض مقامات پر ترجمہ کی اصلاح اور عبارات و جمل کی ترتیب و تزئین میں انتہائی عرق ریزی اور محنت شاقہ کا مظاہرہ فرمایا اور خلوص وللیت کے جذبے سے سرشار ہو کر اپنی خدا داد ادبی و فکری صلاحیتوں کو بروئے کار لاتے ہوئے اس کے حسن و زیبائش میں نکھار پیدا کیا۔ اس پر رضا فاؤنڈیشن کے اراکین تہہ دل سے ان کے شکر گزار ہیں۔

اہل علم حضرات سے مخلصانہ اپیل ہے کہ ترجمہ و کتابت کی جو اغلاط ان کی نظر میں آئیں ان سے مطلع فرمائیں نیز اس عظیم و وقیع منصوبے کو آگے بڑھانے کے لئے اپنی قیمتی تجاویز سے نوازیں۔ اللہ تعالیٰ مفتی صاحب کا سایہ اہلسنت کے سروں پر قائم و دائم رکھے اور جس عظیم منصوبے کا آپ نے آغاز فرمایا ہے اسے پایہ تکمیل تک پہنچانے کے لئے غیب سے وسائل واسباب مہیا فرمائے، آمین بجاہ حبیب اللہ العلمین۔

حافظ عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری گیٹ، لاہور

Fatawa Rizvia Volume Two

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Dawat-e-Islami

Page 8 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी (दूसरा भाग)

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस ऑफ दावत-ए-इस्लामी दावत-ए-इस्लामी

पेज 8 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

www.dawateislami.net آئی ٹی مجلس آف دعوتِ اسلامی دعوتِ اسلامی

صفحہ 8 از 711

Fatawa Razawiyya Volume Second Index of Volume Two Chapters and Issues

- Preface | 5
- Fatwa 28. A comprehensive and exclusive definition of used water (Ma-e-Mustamal) and explanation of the situations in which water becomes 'used'. | 43
- Chapter of Waters | 37
- If one is without wudu and the vessel is so large that it cannot be tilted, how should they take water? | 44
- Fatwa 23. Regarding wudu with leftover water of wudu, and the ruling if a few drops or a stream from the hand fall into it. | 44
- If even a tiny bit of a limb of a person in major impurity (junub) or without wudu, which has not yet been purified, is immersed in a pitcher full of water, that water will no longer be fit for purification. | 47
- Fatwa 24. Performing wudu with the leftover water of Istinja is permissible. | 44
- If used and unused water are mixed, the dominant quantity is considered. | 48
- Fatwa 25. What is the ruling regarding rainwater that flows through the city drains? | 45
- Situations in which water does not become 'used'. | 48
- Fatwa 26. A tank of seven and a half square yards will not become impure due to urine. | 47
- Wudu and Ghusl cannot be performed with anything other than absolute water, such as rosewater etc. | 49
- Fatwa 27. A ten-by-ten tank does not become impure from filth unless its color, smell, or taste changes due to the specific filth. | 47
- It is prohibited (haram) to pour or sprinkle used water of wudu or ghusl inside the mosque. | 49
- The author's unique research that washing a vessel with the intention of the Sunnah does not make the water 'used'. | 52

फतावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय) फेहरिस्त जिल्द दोम (द्वितीय) अबवाब व मसाइल

- पेश लफ्ज़ (प्रस्तावना) | ५
- फतवा २८. आब-ए-मुस्तअमल (प्रयुक्त पानी) की जामे माने परिभाषा, पानी मुस्तअमल होने की सूरतों का बयान। | ४३
- बाबुल मियाह (जल का अध्याय) | ३७
- बे-वुज़ू है और बर्तन बड़ा कि झुका नहीं सकता तो पानी किस तरह ले। | ४४
- फतवा २३. वुज़ू के बचे पानी से वुज़ू और अगर उसमें कुछ कतरे या धार हाथ से गिरी तो क्या हुक्म है। | ४४
- जुनुब या बे-वुज़ू का वह उज़्व (अंग) जिसकी अभी तहारत न की ज़र्रा भर भी अगर मटके भर पानी में डूब जाए क़ाबिले तहारत न रहेगा। | ४७
- फतवा २४. इस्तिन्जे के बचे हुए पानी से वुज़ू जायज़ है। | ४४
- मुस्तअमल व गैर-मुस्तअमल पानी मिल जाएं तो ज़ायद (अधिकता) का एतबार है। | ४८
- फतवा २५. बारिश का पानी कि शहर की नालियाँ धो कर बहता है उसका क्या हुक्म है। | ४५
- पानी मुस्तअमल न होने की सूरतें। | ४८
- फतवा २६. साढ़े सात गज़ मुरब्बा हौज़ पेशाब से नापाक न होगा। | ४७
- आब-ए-मुतलक़ के सिवा गुलाब वगैरह किसी चीज़ से वुज़ू व गुस्ल नहीं हो सकता। | ४९
- फतवा २७. हौज़ दह दर दह नजासत से नापाक नहीं होता जब तक ख़ास नजासत के सबब उसका रंग या बू या मज़ा न बदल जाए। | ४७
- वुज़ू या गुस्ल का पानी मस्जिद में डालना छिड़कना हराम है। | ४९
- मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़-ए-मुफ़रद कि बर्तन ब-नियत सुन्नत धोने से पानी मुस्तअमल नहीं होता। | ५२

पेज ९ ऑफ़ ७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی فہرست جلد دوم ابواب و مسائل

- پیش لفظ | ۵
- فتویٰ ۲۸۔ آب مستعمل کی جامع مانع تعریف پانی مستعمل ہونے کی صورتوں کا بیان۔ | ۴۳
- باب المیاہ | ۳۷
- بے وضو ہے اور برتن بڑا کہ جھکا نہیں سکتا تو پانی کس طرح لے۔ | ۴۴
- فتویٰ ۲۳۔ وضو کے بچے پانی سے وضو اور اگر اس میں کچھ قطرے یادھار ہاتھ سے گری تو کیا حکم ہے۔ | ۴۴
- جنب یا بے وضو کا وہ عضو جس کی ابھی طہارت نہ کی ذرہ بھر بھی اگر مٹکے بھر پانی میں ڈوب جائے قابل طہارت نہ رہے گا۔ | ۴۷
- فتویٰ ۲۴۔ استنجے کے بچے ہوئے پانی سے وضو جائز ہے۔ | ۴۴
- مستعمل و غیر مستعمل پانی مل جائیں تو زائد کا اعتبار ہے | ۴۸
- فتویٰ ۲۵۔ بارش کا پانی کہ شہر کی نالیاں دھو کر بہتا ہے اس کا کیا حکم ہے۔ | ۴۵
- پانی مستعمل نہ ہونے کی صورتیں | ۴۸
- فتویٰ ۲۶۔ ساڑھے سات گز مربع حوض پیشاب سے ناپاک نہ ہوگا۔ | ۴۷
- آب مطلق کے سوا گلاب وغیرہ کسی چیز سے وضو و غسل نہیں ہو سکتا۔ | ۴۹
- فتویٰ ۲۷۔ حوض دہ در دہ نجاست سے ناپاک نہیں ہوتا جب تک خاص نجاست کے سبب اس کا رنگ یا بو یا مزہ نہ بدل جائے۔ | ۴۷
- وضو یا غسل کا پانی مسجد میں ڈالنا چھڑ کنا حرام ہے۔ | ۴۹
- مصنف کی تحقیق مفرد کہ برتن بہ نیت سنت دھونے سے پانی مستعمل نہیں ہوتا۔ | ۵۲

Fatawa Razawiya, Volume Second

114 | 53 | Washing parents' clothes, or washing fruit for them to eat, or washing the mosque floor with the intention of reward - the water will not become used (mustamal). | 53 | If water touches the deceased's body before the ritual bath, even without the intent of ghusl, it will no longer remain fit for ablution (wudu). 117 | 53 | If menstruation or postnatal bleeding has not yet ended, a woman's hand getting into the water in this state will leave it fit for wudu as usual. | 54 | The cause of water becoming used (mustamal). 117 | 55 | Putting hands in out of necessity does not make the water used, but doing so more than necessary will make it used. | 55 | Water becomes used as soon as it separates from the body, even if it has not yet stayed anywhere. 118 | 60 | If a hand is put in due to necessity, and then the intention is made to wash while still in the water, it becomes used. | 60 | If a person with wudu bathes in summer to focus on worship or washes their face and hands, the water will not become used. 120 | 61 | Two methods to make used water fit for wudu. | 61 | Keeping the body clean is recommended (mustahab); Islam is founded on cleanliness. However, someone with wudu washing their body with this intention will not make the water used. 122 | 70 | Used (mustamal) water is pure; clothes can be washed with it. | 70 | A minor's hand dipping into the water does not make it used. 122 | 85 | Drinking it or kneading dough with it is disliked (makruh). | 85 | Discussion on the researcher's statement that the fulfillment of the obligation is the basis for usage (Arabic: Inna suqoot al-farz huwa al-asl fil isti'maal). 122 | 100 | On this, references from 40 books and Imams state that even a single unwashed particle of the body touching the water makes all the water used. | 100 | Washing the inner part of the eyes will not make the water used. 123 | 101 | If a person in ritual impurity or without wudu needs to take water with a mug and the bowl sinks, and there is no other vessel or water, the water will not become used if they have to put their hands in as much as necessary to retrieve it. | 101 | The author's research that water becomes used even through wiping (masah). 123 | 101 | Putting a hand or an entire limb in to get cool makes the water unfit for wudu. | 101 | A person without wudu put his head into a water vessel until one-fourth of the head was touched by water; masah is performed, and the water in the vessel did not become used. 125 | 102 | A bucket fell into a well; a person entered it without bathing to retrieve it. The water will not be ruined as long as there is no actual impurity on his body or clothes, and he does not intend to lift the state of ritual impurity. | 102 | Putting feet with socks or a bandaged limb into a water vessel will complete their wiping (masah), and

the water will not become used. --- | 113 | Fatwa 29: A single unwashed particle of the body makes water used, and the method to make it fit for wudu.

Page 10 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

११४ | ५३ | माँ-बाप के कपड़े या उनके खाने के लिए फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब की नियत से धोने से पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा। | ५३ | मय्यत (मृतक) के बदन को गुस्ल (स्नान) से पहले अगरचे बिना गुस्ल के इरादे के भी पानी छुए तो वह वज़ू के काबिल नहीं रहेगा। ११४ | ५४ | हैज़ (मासिक धर्म) व निफ़ास अभी खत्म नहीं हुआ, इस हालत में औरत का हाथ पानी में पड़ने से वह बदस्तूर वज़ू के काबिल रहेगा। | ५४ | पानी मुस्तअमल हो जाने का कारण। ११४ | ५५ | ज़रूरत की वजह से हाथ डालने से पानी मुस्तअमल नहीं होता, हाँ ज़रूरत से ज़्यादा डालने से मुस्तअमल हो जाएगा। | ५५ | पानी बदन से जुदा होते ही मुस्तअमल हो जाता है, चाहे अभी कहीं ठहरा न हो। ११८ | ६० | ज़रूरत से हाथ डाला फिर पानी ही में धोने की नियत कर ली तो मुस्तअमल हो गया। | ६० | बा-वज़ू शख्स गर्मी में किसी इबादत में दिल लगाने के लिए नहाया या हाथ-मुँह धोए तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा। १२० | ६१ | मुस्तअमल पानी को वज़ू के काबिल बनाने के दो तरीके। | ६१ | बदन साफ़ रखना मुस्तहब (पसंदीदा) है, इस्लाम की बुनियाद पाकीज़गी पर है, मगर बा-वज़ू का इस नियत से बदन धोना पानी को मुस्तअमल नहीं करेगा। १२४ | ७० | मुस्तअमल पानी पाक है, उससे कपड़ा धो सकते हैं। | ७० | नाबालिक का हाथ डूबने से पानी मुस्तअमल नहीं होता। १२४ | ८५ | पीना और आटा गूँधना मकरूह (नापसंद) है। | ८५ | मुहक्किक (शोधकर्ता) के इस कथन पर चर्चा कि "फ़र्ज़ का गिरना ही इस्तेमाल में असल है" (अरबी: इन्ना सुकूत अल-फ़र्ज़ हुवा अल-अस्ल फ़िल इस्तिमाल)। १२४ | १०० | इस पर चालीस ४० किताबों और इमामों के हवाले कि बिना धुले बदन का एक कण पानी से लग जाना सारे पानी को मुस्तअमल कर देता है। | १०० | आँख के अंदरूनी हिस्से को धोने से पानी मुस्तअमल नहीं होगा। १२४ | १०१ | जुनूब (नापाक व्यक्ति) या बिना वज़ू वाले को मग से पानी लेने की ज़रूरत है और कटोरा उसमें डूब गया, न दूसरा बर्तन है न पानी, तो उसे निकालने के लिए जितना हाथ डालना ज़रूरी हो, उससे पानी मुस्तअमल नहीं होगा। | १०१ | मुसन्निफ़ (लेखक) की तहकीक कि मसह (गीला हाथ फेरना) से भी पानी मुस्तअमल हो जाता है। १२४ | १०१ | ठंडक लेने के लिए हाथ या पूरा अंग डाला तो पानी वज़ू के काबिल नहीं रहा। | १०१ | बिना वज़ू वाले शख्स ने पानी के बर्तन में अपना सर दाखिल किया यहाँ तक कि चौथाई सर को पानी लगा, मसह अदा हो गया और बर्तन का पानी मुस्तअमल नहीं हुआ। १२५ | १०४ | कुएँ में डोल (बाल्टी) गिर गया, उसे निकालने के लिए आदमी बिना नहाए घुसा, पानी खराब नहीं होगा जब तक कि उसके बदन या कपड़े पर नजासत-ए-हकीकिया (ठोस गंदगी) न हो और न ही उसने रफ़ा-ए-

हदस (नापाकी दूर करने) की नियत की हो। | १०२ | पानी के बर्तन में मोज़े पहने पैर या पट्टी बँधा अंग डालने से उनका मसह अदा हो जाएगा और पानी मुस्तअमल नहीं होगा। --- | ١١٣ | फ़तवा २९: एक कण बिना धुला बदन पानी को मुस्तअमल कर देता है और उसे वज़ू के काबिल बनाने का तरीका।

पृष्ठ ७११ में से १०

فتاوی رضویہ جلد ثانی

۱۱۴ | ۵۳ | ماں باپ کے کپڑے یا ان کے کھانے کے لئے پھل یا مسجد کا فرش بہ نیت ثواب دھونے سے پانی مستعمل نہ ہوگا۔ | ۵۳ | میت کے بدن سے قبل غسل اگرچہ بے قصد غسل جو پانی مس کرے قابل وضو نہ رہے گا۔ ۱۱۷ | ۵۳ | حیض ونفاس ابھی ختم نہ ہوا اس حالت میں عورت کا ہاتھ پانی میں پڑنے سے بدستور قابل وضو رہے گا۔ | ۵۴ | پانی مستعمل ہو جانے کا سبب۔ ۱۱۷ | ۵۵ | بضرورت ہاتھ ڈالنے سے پانی مستعمل نہیں ہوتا ہاں ضرورت سے زائد مستعمل کر دے گا۔ | ۵۵ | پانی بدن سے جدا ہوتے ہی مستعمل ہو جاتا ہے۔ اگرچہ ابھی کہیں نہ ٹھہرا ہو۔ ۱۱۸ | ۶۰ | ہاتھ ڈالا ضرورت سے پھر پانی ہی میں دھونے کی نیت کر لی مستعمل ہو گیا۔ | ۶۰ | باوضو شخص گرمی میں کسی عبادت میں دل لگنے کیلئے نہایا یا ہاتھ منہ دھوئے پانی مستعمل نہ ہوگا۔ ۱۲۰ | ۶۱ | مستعمل پانی کو قابل وضو کرنے کے دو طریقے۔ | ۶۱ | بدن ستھرا رکھنا مستحب ہے اسلام کی بناء ستھرائی پر ہے مگر باوضو کا اس نیت سے بدن دھونا پانی مستعمل نہ کرے گا۔ ۱۲۲ | ۷۰ | مستعمل پانی پاک ہے اس سے کپڑا دھو سکتے ہیں | ۷۰ | نابالغ کا ہاتھ ڈوبنے سے پانی مستعمل نہیں ہوتا ۱۲۲ | ۸۵ | پینا اور آٹا گوندھنا مکروہ ہے۔ | ۸۵ | بحث قول المحقق ان سقوط الفرض هو الاصل في الاستعمال۔ ۱۲۲ | ۱۰۰ | اس پر چالیس ۴۰ کتب و ائمہ کی نصوص کہ بے دھلے بدن کا ایک ذرہ پانی سے لگ جانا سارے پانی کو مستعمل کر دیتا ہے۔ | ۱۰۰ | باطن چشم دھونے سے پانی مستعمل نہ ہوگا۔ ۱۲۳ | ۱۰۱ | جنب یا بے وضو کو کولی سے پانی لینے کی ضرورت ہے اور کٹورا اس میں ڈوب گیا نہ اور برتن نہ پانی اس کے نکالنے کو جتنا ہاتھ بھی ڈالنا ضروری ہو پانی مستعمل نہ کرے گا۔ | ۱۰۱ | مصنف کی تحقیق کہ مسح سے بھی پانی مستعمل ہو جاتا ہے۔ ۱۲۳ | ۱۰۱ | ٹھنڈک لینے کو ہاتھ یا ایک پورا ہی ڈالا

پانی وضو کے قابل نہ رہا۔ | ۱۰۱ | بے وضو شخص نے پانی کے برتن میں اپنا سر داخل کیا یہاں تک کہ چہارم سر کو پانی لگا مسح ادا ہو گیا اور برتن کا پانی مستعمل نہ ہوا۔ ۱۲۵ | ۱۰۲ | کنویں میں ڈول گر گیا اس کے نکالنے کو آدمی بے نہائے گھسا پانی خراب نہ ہو گا جبکہ اس کے بدن یا کپڑے پر نجاست حقیقیہ نہ ہو نہ رفع حدث کی نیت کرے۔ | ۱۰۲ | پانی کے برتن میں موزہ پہنے پاؤں یا پٹی بندھا عضو ڈالنے سے ان کا مسح ادا ہو جائے گا اور پانی مستعمل نہ ہوگا۔ --- | ۱۱۳ | فتوی ۲۹۔ ایک ذرہ بے دھلا بدن پانی کو مستعمل کر دیتا ہے اور اس کے قابل وضو کرنے کا طریقہ۔

Fatawa Razawiyya, Volume 2

- Diving into a well with the intention of performing Ghusl; by consensus, the water becomes used (Mustamal). [Page 126] | Below it is 'dah dar dah' (10x10 cubits) and above it is less, the ruling for both parts. [Page 204]
- A person with Wudu entered a well, for example to pull out a bucket, and there made an intention of bathing for the sake of proximity (to God); the water became used. [Page 129] | A jurisprudential riddle: Which water is it that as long as it is abundant (Kathir) it will become impure (Najis), and if it decreases it will not be impure? [Page 204]
- The issue of entering a well without Wudu. [Page 129] | The author's research that being 'dah dar dah' square is not necessary; only an area of one hundred hands (cubits) is required. [Page 204]
- Until a woman's menstruation or post-natal bleeding has ceased, if she enters water to seek cool, it will not become used. [Page 130] | A small tank taken out from a large tank, its ruling. [Page 210]
- The issue of a person in a state of major impurity (Junub) entering ten (10) wells. [Page 130] | A small tank where water enters from one side and leaves from the other; even if it is wide, it does not prevent the water from being considered flowing. [Page 211]
- The issue of a person in a state of minor impurity (Muhdith) entering ten (10) wells. [Page 131] | If water bubbles up from springs and flows through a channel, it is considered flowing water. [Page 212]
- If visible impurity falls into 'dah dar dah' water, Wudu is still permissible from all sides. [Page 135] | The ruling for used water falling into a well. [Page 236]
- Water remaining from a woman or man drinking, or from their Wudu or Ghusl, is permissible for another to use for Wudu. [Page 138] | Fatwa 30: What is the ruling on performing Ghusl repeatedly and consecutively in a tank? [Page 249]
- Used water is pure according to all our Imams, but not suitable for Wudu. [Page 138] | When is non-flowing water considered abundant (Kathir)? [Page 249]
- Crops or thick weeds growing in 'dah dar dah' water will not make it less (than the required volume). [Page 189] | Two ways to make used tank water suitable for Wudu again. [Page 250]
- The ruling on water with moss/algae on it. [Page 189] | Where those two ways are difficult, extracting 20 buckets can be sufficient. [Page 250]

- If ice has frozen on water, how is it to perform Wudu by putting hands and feet in it? [Page 190] | Fatwa 31: Water from a settlement flows into a trench and rainwater collects there; what is the ruling for Wudu in it? [Page 259]
- Water is 'dah dar dah' above and less below; the ruling for its both parts. [Page 203] | Fatwa 32: The quantity of a Shari'i cubit (Gaz) in a 'dah dar dah' tank. [Page 260]

फ़तावा रज़विया, जिल्द-2

- ग़ुस्ल उतारने की नियत से कुएँ में गोता लगाया, पानी बिल-इत्तेफ़ाक़ मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो गया। [पृष्ठ 126] | नीचे दह दर दह है और ऊपर कम तो दोनों हिस्सों का हुक्म। [पृष्ठ 204]
- बा-वज़ू कुएँ में मसलन डोल निकालने को घुसा और वहाँ ब-क़स्दे क़ुरबत (नज़दीकी की नियत से) नहाने की नियत कर ली, पानी मुस्तअमल हो गया। [पृष्ठ 129] | फ़िक़्ही चीस्तान (पहेली): वह कौन सा पानी है कि जब तक कसीर (ज़्यादा) है नजिस (नापाक) हो जाएगा और घट जाए तो नजिस न होगा? [पृष्ठ 204]
- बे-वज़ू के कुएँ में जाने का मसला। [पृष्ठ 129] | मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ात कि दह दर दह मुरब्बा (चौकोर) होना ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ सौ हाथ की मसाहत (क्षेत्रफल) दरकार है। [पृष्ठ 204]
- औरत का जब तक हैज़ व निफ़ास (माहवारी और प्रसव के बाद का रक्तस्राव) मुन्क़ते (बंद) न हुआ अगर वह ठंडक लेने को पानी में घुसे मुस्तअमल न होगा। [पृष्ठ 130] | बड़े हौज़ से एक छोटा हौज़ निकाला गया उसका हुक्म। [पृष्ठ 210]
- जुनूब (नापाकी की हालत) के दस 10 कुओं में जाने का मसला। [पृष्ठ 130] | छोटा हौज़ जिसके एक तरफ़ से पानी आता और दूसरी तरफ़ से निकल जाता है, अगरचे चौड़ा हो पानी जारी होने का मानिअ (रुकावट) नहीं। [पृष्ठ 211]
- मुहदिस (बे-वज़ू शख़्स) के दस 10 कुओं में जाने का मसला। [पृष्ठ 131] | सोतों से पानी उबले और नाली से बहे तो वह आब-ए-जारी (बहता पानी) है। [पृष्ठ 212]
- दह दर दह पानी में नजासत (गंदगी) नज़र आने वाली पड़ी हो, जब भी सब तरफ़ वज़ू जाइज़ है। [पृष्ठ 135] | कुएँ में मुस्तअमल पानी गिर जाने का हुक्म। [पृष्ठ 236]
- औरत या मर्द के पीने या वज़ू व ग़ुस्ल से जो पानी बचा दूसरे को उससे वज़ू जाइज़ है। [पृष्ठ 138] | फ़तवा 30: हौज़ में बार-बार मुतवातिर (लगातार) ग़ुस्ल करने का क्या हुक्म है। [पृष्ठ 249]
- आब-ए-मुस्तअमल हमारे सब इमामों के नज़दीक पाक है मगर क़ाबिल-ए-वज़ू नहीं। [पृष्ठ 138] | ग़ैर-जारी पानी कब कसीर (ज़्यादा) समझा जाएगा। [पृष्ठ 249]

- दह दर दह पानी में खेती या ज़कल (घास-फूस) क़रीब-क़रीब उगना उसे कम न कर देगा। [पृष्ठ 189] | हौज़ का पानी कि मुस्तअमल हो जाए, इसके क़ाबिल-ए-वज़ू करने के दो तरीक़े। [पृष्ठ 250]
- जिस पानी पर काई जमी हो उसका हुक्म। [पृष्ठ 189] | जहाँ वे दोनों सूरतें दुश्वार हों, बीस 20 डोल निकालना काफ़ी हो सकता है। [पृष्ठ 250]
- पानी पर बर्फ़ जम गई तो उसमें हाथ-पाँव डाल कर वज़ू करना कैसा है। [पृष्ठ 190] | फ़तवा 31: ख़ंदक़ में बस्ती का पानी जाता है और बारिश का जमा हुआ, इसमें वज़ू का क्या हुक्म है। [पृष्ठ 259]
- पानी ऊपर दह दर दह है और नीचे कम, इसके दोनों हिस्सों का हुक्म। [पृष्ठ 203] | फ़तवा 32: दह दर दह हौज़ में गज़-ए-शरई की मिक़दार। [पृष्ठ 260]

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

- غسل اتارنے کی نیت سے کنوئیں میں غوطہ لگایا پانی بالاتفاق مستعمل ہو گیا۔ ۱۲۶ | نیچے دہ در دہ ہے اور اوپر کم تو دونوں حصوں کا حکم۔ ۲۰۴
- باوضو کنوئیں میں مثلاً ڈول نکالنے کو گھسا اور وہاں بقصد قربت نہانے کی نیت کر لی پانی مستعمل ہو گیا۔ ۱۲۹ | فقہی چیستان وہ کون سا پانی ہے کہ جب تک کثیر ہے نجس ہو جائے گا اور گھٹ جائے تو نجس نہ ہوگا۔ ۲۰۴
- بے وضو کے کنوئیں میں جانے کا مسئلہ ۱۲۹ | مصنف کی تحقیقات کہ دہ در دہ مربع ہونا ضرور نہیں صرف سو ہاتھ کی مساحت درکار ہے۔ ۲۰۴
- عورت کا جب تک حیض و نفاس منقطع نہ ہوا اگر وہ ٹھنڈک لینے کو پانی میں گھسے مستعمل نہ ہوگا۔ ۱۳۰ | بڑے حوض سے ایک چھوٹا حوض نکالا گیا اس کا حکم۔ ۲۱۰
- جنب کے دس ۱۰ کنوؤں میں جانے کا مسئلہ ۱۳۰ | چھوٹا حوض جس کے ایک طرف سے پانی آتا دوسری طرف سے نکل جاتا ہے اگر چہ چوڑا ہو پانی جاری ہونے کا مانع نہیں۔ ۲۱۱
- محدث کے دس ۱۰ کنوؤں میں جانے کا مسئلہ ۱۳۱ | سوتوں سے پانی اُبلے اور نالی سے بہے تو وہ آب جاری ہے۔ ۲۱۲
- دہ در دہ پانی میں نجاست نظر آنے والی پڑی ہو جب بھی سب طرف وضو جائز ہے۔ ۱۳۵ | کنوئیں میں مستعمل پانی گر جانے کا حکم۔ ۲۳۶
- عورت یا مرد کے پینے یا وضو و غسل سے جو پانی بچا دوسرے کو اس سے وضو جائز ہے۔ ۱۳۸ | فتویٰ ۳۰- حوض میں بار بار متواتر غسل کرنے کا کیا حکم ہے۔ ۲۴۹

- آب مستعمل ہمارے سب اماموں کے نزدیک پاک ہے مگر قابل وضو نہیں۔ ۱۳۸ | غیر جاری پانی کب کثیر سمجھا جائے گا۔ ۲۴۹
- دہ در دہ پانی میں کھیتی یا ز کل قریب قریب اگنا اسے کم نہ کر دے گا۔ ۱۸۹ | حوض کا پانی کہ مستعمل ہو جائے اس کے قابل وضو کرنے کے دو طریقے ۲۵۰
- جس پانی پر کاہی جمی ہو اس کا حکم ۱۸۹ | جہاں وہ دونوں صورتیں دشوار ہوں بیس ۲۰ ڈول نکالنا کافی ہو سکتا ہے۔ ۲۵۰
- پانی پر برف جم گیا تو اس میں ہاتھ پاؤں ڈال کر وضو کرنا کیسا ہے۔ ۱۹۰ | فتویٰ ۳۱- خندق میں بستی کا پانی جاتا ہے اور بارش کا جمع ہوا اس میں وضو کا کیا حکم ہے۔ ۲۵۹
- پانی اوپر دہ در دہ ہے اور نیچے کم اس کے دونوں حصوں کا حکم۔ ۲۰۳ | فتویٰ ۳۲- دہ در دہ حوض میں گز شرعی کی مقدار۔ ۲۶۰

Fatawa Rizwia Volume 2

- Fatwa 33: Twelve pillars were erected in a 'dah-dar-dah' (10x10 cubit) reservoir, covering an area of 6 yards; does it remain 'dah-dar-dah' or not? Page 271
- Fatwa 34: Ruling on spitting or putting feet in a 'dah-dar-dah' reservoir. Page 272
- Fatwa 35: A 'dah-dar-dah' pond where heaps of impurity fall; ruling on it. Page 272
- Fatwa 36: Medicines are boiled in water; can it be used for wudu (ablution) or istinja (cleaning after relief)? Page 273
- Fatwa 37: Ruling on ponds near settlements and those used for istinja, and water whose color and smell have changed, and flowing water that brings impurity and stops somewhere; ruling on all of them. Page 273
- Fatwa 38: Description of the measurement of a 'dah-dar-dah' reservoir and investigation into its yards, feet, inches, and fingers. Page 274
- Fatwa 39: Impure water does not become pure by flowing on its own or by exposure to wind. Page 277
- Fatwa 40: In what ways does water become 'makruh' (disliked/impure)? Page 277
- Fatwa 41: How is it for a non-mahram woman to drink the leftovers of her spiritual guide (Murshid)? Page 280
- Fatwa 42: Water filled a reservoir after passing through an impure drain; what is the ruling? Page 281
- If the color, smell, or taste of actual impurity appears in a large body of water, it becomes impure. Things made impure by impurity, like rose water etc., their color, smell, and taste are not considered. Page 282
- Fatwa 43: Regarding water measurement, only the upper surface is considered; what is the area of water that is 11 cubits long, 9 cubits wide, and 3 cubits deep? Page 283
- Fatwa 44: Related to the circumference of a well in the section on wells. For an equilateral triangular reservoir to have an area of 100 1/4 cubits, each side should be 1.15/1 cubits. Page 285
- A second opinion on the same issue. Page 286
- Fatwa 45: Is wudu from a river better or from a reservoir? Page 308
- Fatwa 46: What is the ruling on water used by a Hindu for bathing? Page 313

- Fatwa 47: Ruling on the leftovers (food/drink) of a Hindu or a Christian. Page 314
- Fatwa 48: Hookah water is pure. Page 320
- If wudu water runs short during a journey, the deficiency can be fulfilled with hookah water. Fulfilling the obligatory (fard) is necessary; tayammum (dry ablution) is not permitted. Page 320
- Fatwa 49: A reservoir is 'dah-dar-dah' at the bottom but smaller at the top, and impurity fell while it was full; what is the status of the bottom part? Page 321
- Fatwa 50: If the upper water of the same reservoir is removed and filled with pure water, what is the ruling? Page 331

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड 2)

- फ़तवा 33: एक 'दह-दर-दह' (10x10 हाथ) के हौज़ में बारह स्तंभ (खंभे) स्थापित किए गए जिनका क्षेत्रफल 6 गज़ है; क्या वह 'दह-दर-दह' रहा या नहीं? पृष्ठ 271
- फ़तवा 34: 'दह-दर-दह' हौज़ में थूकने या पैर डालने का हुक्म। पृष्ठ 272
- फ़तवा 35: 'दह-दर-दह' तालाब है लेकिन उसमें गंदगी के ढेर पड़ते हैं; उसका हुक्म। पृष्ठ 272
- फ़तवा 36: पानी में दवाएं उबाली गई हैं, उससे वज़ू या इस्तिंजा होगा या नहीं। पृष्ठ 273
- फ़तवा 37: बस्ती के पास वाले तालाबों का हुक्म और जिनमें इस्तिंजा किया जाता है, और वह पानी जिसका रंग और गंध बदल गई हो, और बहता पानी जो गंदगी लेकर आया और किसी स्थान पर रुक गया; इन सब का हुक्म। पृष्ठ 273
- फ़तवा 38: 'दह-दर-दह' हौज़ की माप का वर्णन और उसके गज़ों, फ़ीटों, इंचों और उंगलियों की तहक़ीक़ (जाँच)। पृष्ठ 274
- फ़तवा 39: अशुद्ध (नजिस) पानी केवल खुद बहने या हवा लगने से शुद्ध (पाक) नहीं होता। पृष्ठ 277
- फ़तवा 40: पानी किस-किस तरह से मकरूह (नापसंद/अशुद्ध) होता है। पृष्ठ 277
- फ़तवा 41: गैर-मेहरम महिला के लिए अपने मुर्शिद (गुरु) का झूठा पीना कैसा है। पृष्ठ 280
- फ़तवा 42: नापाक नाली से होकर पानी ने हौज़ को भर दिया; इसका क्या हुक्म है। पृष्ठ 281
- बड़े जल निकाय (आब-ए-कसीर) में यदि स्वयं गंदगी का रंग, गंध या स्वाद आ जाए तो वह अशुद्ध हो जाएगा। गंदगी से जो चीज़ अशुद्ध हुई जैसे गुलाब का अर्क आदि, उनके रंग, गंध और स्वाद का कोई विचार नहीं किया जाएगा। पृष्ठ 282
- फ़तवा 43: पानी की माप में केवल ऊपरी सतह का विचार किया जाता है; जो पानी 11 हाथ लंबा, 9 हाथ चौड़ा और 3 हाथ गहरा हो, उसकी माप क्या होगी? पृष्ठ 283
- फ़तवा 44: कुएं के घेरे से संबंधित, कुएं के अनुभाग में। समबाहु त्रिभुज के आकार वाले हौज़ का क्षेत्रफल 100 सवा हाथ होने के लिए प्रत्येक भुजा 1.15/1 हाथ होनी चाहिए। पृष्ठ 285
- इसी मसले में दूसरा मत। पृष्ठ 286
- फ़तवा 45: वज़ू नहर से करना बेहतर है या हौज़ से। पृष्ठ 308
- फ़तवा 46: हिंदू के नहाने का पानी कैसा है। पृष्ठ 313
- फ़तवा 47: हिंदू और ईसाई के झूठे(भोजन/पेय) का हुक्म। पृष्ठ 314

- फ़तवा 48: हुक्के का पानी पाक (शुद्ध) है। पृष्ठ 320
- सफ़र में वज़ू का पानी कम हो गया तो हुक्के के पानी से वह कमी पूरी की जा सकती है। फ़र्ज़ को पूरा करना अनिवार्य है; तयम्मुम की अनुमति नहीं है। पृष्ठ 320
- फ़तवा 49: हौज़ नीचे से 'दह-दर-दह' है और ऊपर से छोटा है, और भरे हुए में गंदगी गिर गई; तो नीचे के हिस्से का क्या हाल रहा। पृष्ठ 321
- फ़तवा 50: यदि उसी हौज़ के ऊपर का पानी निकालकर शुद्ध पानी से भर दिया जाए, तो क्या हुक्म है। पृष्ठ 331

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

- فتویٰ ۳۳۔ دہ دردہ حوض میں بارہ ستون قائم کیے جن کی مساحت ۶ گز ہے وہ دہ دردہ رہا یا نہیں۔ ۲۷۱
- فتویٰ ۳۴۔ دہ دردہ حوض میں تھوکنے یا پاؤں ڈالنے کا حکم۔ ۲۷۲
- فتویٰ ۳۵۔ دہ دردہ تالاب ہے مگر اس میں نجاست کی ڈھیریاں پڑتی ہیں اس کا حکم۔ ۲۷۲
- فتویٰ ۳۶۔ پانی میں دوائیں جوش کی ہیں اس سے وضو یا استنجا ہوگا یا نہیں۔ ۲۷۳
- فتویٰ ۳۷۔ بستی کے قریب کے تالابوں کا حکم اور جن میں استنجے کیے جاتے ہیں اور وہ پانی جس کا رنگ و بو بدلا ہوا ہے اور بہاؤ کا پانی کہ نجاست لے کر آیا اور کسی جگہ ٹھہرا ان سب کا حکم۔ ۲۷۳
- فتویٰ ۳۸۔ دہ دردہ حوض کی پیمائش کا بیان اور اس کے گزوں اور فٹوں اور انچوں اور انگلیوں کی تحقیق۔ ۲۷۴
- فتویٰ ۳۹۔ نجس پانی تنہا خود بہنے یا ہوا لگنے سے پاک نہیں ہوتا۔ ۲۷۷
- فتویٰ ۴۰۔ پانی مکروہ کس کس طرح سے ہوتا ہے۔ ۲۷۷
- فتویٰ ۴۱۔ نامحرم عورت کو اپنے مرشد کا جھوٹا پینا کیسا ہے۔ ۲۸۰
- فتویٰ ۴۲۔ ناپاک نالی سے ہو کر پانی نے حوض بھرا اس کا کیا حکم ہے۔ ۲۸۱
- آب کثیر میں خود عین نجاست کا رنگ یا بو یا مزہ آجائے تو ناپاک ہوگا نجاست سے جو چیز ناپاک ہوئی جیسے گلاب وغیرہ اس کے رنگ و بو ومزہ کا اعتبار نہیں۔ ۲۸۲
- فتویٰ ۴۳۔ پانی کی مساحت میں فقط سطح بالا کا اعتبار ہے جو پانی ۱۱ ہاتھ لمبا ۹ ہاتھ چوڑا تین ہاتھ گہرا ہو اس کی مساحت کیا ہوئی۔ ۲۸۳

- فتویٰ ۴۴۔ متعلق دور چاہ در فصل البئر۔ حوض مثلث متساوی الاضلاع کے ۱۰۰ سوا ہاتھ مساحت ہونے کے لئے ہر ضلع ۱/۱۵،۱ ہاتھ ہو۔ ۲۸۵
- اسی مسئلہ میں دوسرا قول۔ ۲۸۶
- فتویٰ ۴۵۔ وضو نہر سے افضل ہے یا حوض سے۔ ۳۰۸
- فتویٰ ۴۶۔ ہندو کے نہانے کا پانی کیسا ہے۔ ۳۱۳
- فتویٰ ۴۷۔ ہندو و نصرانی کے جھوٹے کا حکم۔ ۳۱۴
- فتویٰ ۴۸۔ حقہ کا پانی پاک ہے۔ ۳۲۰
- سفر میں وضو کا پانی کم ہو گیا حقہ کے پانی سے وہ کمی پوری ہو سکتی ہے تکمیل فرض ہے تیمم کی اجازت نہیں۔ ۳۲۰
- فتویٰ ۴۹۔ حوض نیچے دہ دردہ ہے اور اوپر کم اور بھرے ہوئے میں نجاست پڑی تو تو نیچے کا حصہ کیسا رہا۔ ۳۲۱
- فتویٰ ۵۰۔ اسی حوض میں اوپر کا پانی نکال کر پاک پانی سے بھر دیا تو کیا حکم ہے۔ ۳۳۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Fatwa/Issue	Page	Ruling/Description	Page
Fatwa 51: Impurity fell into the bottom 10x10 section of a pond and it was then filled up; what is the ruling?	342	A small amount of water at the bottom of a pond became impure; even after filling it, it will not become pure until it overflows.	349
Fatwa 52: The upper part of a basin is 10x10 and the lower part is smaller; if impurity falls, what is the status of the lower part?	343	The volume of water will be considered at the moment it meets the impurity, even if it later increases or decreases.	350
Description of the four types of water's quality, form, and surface/bottom movement.	344	Fatwa 53: Impurity fell in the lower section (which is smaller) and then it was filled; what is the ruling for both sections? The author establishes 10-11 principles and a rule for this.	352
What is the ruling if steps are built on a river and the section separated by the steps?	344	In a small basin, if water enters from one side and is taken from the other, it is considered running water as long as this state continues.	355
Ice froze in a pond and a portion was opened; what is the ruling?	344	Water is entering a well from a spring and being drawn out with a bucket; it will not become impure by impurity as long as movement doesn't stop.	355
If pieces of water separated by steps or ice become impure, another piece will not become impure.	344	Characteristics of running water changed due to impurity making it impure, then the impurity settled and water became clear (change in characteristics gone); it becomes pure by itself.	366
If a portion taken from a pond or river is less than two and a half hands, it is not considered separate.	345	If the entire bed of a river is impure but a small amount of water is flowing over it, it will not be impure until its characteristics change due to impurity.	367
	348		368

Fatwa/Issue	Page	Ruling/Description	Page
Impurity fell in 10x10 water and it didn't become impure; then it shrunk into a small area; it will still not be impure if no impurity remains.		The characteristics of 10x10 water changed due to impurity, then impurity settled and it cleared up; did it become pure or not?	
Impure water will not become pure by spreading over a 10x10 area.	348	When water keeps flowing out, its spreading in width does not prevent it from being classified as 'flowing water'.	369
Impurity was in a large pond which then dried up leaving only a small amount; it won't be impure if no impurity remains.	349	Water in a whirlpool is also considered running water.	370

फतावा रज़विया, जिल्द 2

फतवा/विषय	पृष्ठ	नियम/विवरण	पृष्ठ
फतवा 51: एक तालाब के निचले 10x10 हिस्से में गंदगी गिरी और फिर उसे भर दिया गया, तो क्या हुक्म है?	342	तालाब की तह में थोड़ा पानी नापाक हो गया, भरने से भी पाक नहीं होगा जब तक कि वह उबल न जाए।	349
फतवा 52: हौज का ऊपरी हिस्सा 10x10 है और निचला हिस्सा छोटा है, और गंदगी गिरी तो निचले हिस्से का क्या दर्जा है?	343	गंदगी से मिलते समय पानी की मात्रा देखी जाएगी, भले ही बाद में वह कम या ज्यादा हो जाए।	350
पानी की गुणवत्ता, स्वरूप और ऊपर-नीचे के पानी के चार प्रकारों का वर्णन।	344	फतवा 53: निचले हिस्से में (जो छोटा है) गंदगी गिरी फिर उसे भर दिया गया, दोनों हिस्सों का क्या हुक्म है? लेखक ने इसके लिए 10-11 सिद्धांत और एक नियम निर्धारित किया है।	352
यदि नदी पर घाट बनाया जाए और जो हिस्सा घाट ने अलग किया है, उसका क्या हुक्म है?	344	छोटे हौज में एक तरफ से पानी आ रहा है और दूसरी तरफ से निकाला जा रहा है, जब तक यह स्थिति बनी रहती है, वह 'बहते पानी' के हुक्म में है।	355
तालाब में बर्फ जम गई और एक जगह से उसे खोला गया, उसका हुक्म।	344	कुएं में सोते (स्रोत) से पानी आ रहा है और डोल से निकाला जा रहा है, जब तक हलचल बंद न हो, वह गंदगी से नापाक नहीं होगा।	355
घाट या बर्फ ने पानी के जो टुकड़े अलग किए, उनमें से एक के नापाक होने से दूसरा नापाक नहीं होगा।	344	बहते पानी के गुण गंदगी के कारण बदल गए और वह नापाक हो गया, फिर गंदगी नीचे बैठ गई और पानी साफ हो गया (गुणों का बदलाव खत्म हो गया), तो वह खुद पाक हो गया।	366
	345	नहर का सारा तल नापाक हो और थोड़ा पानी ऊपर बह रहा हो, तो वह नापाक नहीं होगा	367

फतवा/विषय	पृष्ठ	नियम/विवरण	पृष्ठ
तालाब या नहर से निकला हुआ हिस्सा ढाई हाथ से कम है तो वह अलग नहीं माना जाएगा।		जब तक कि गंदगी से उसके गुणों में बदलाव न आ जाए।	
10x10 पानी में गंदगी गिरी और वह नापाक नहीं हुआ, फिर वह सिमट कर थोड़ी जगह में रह गया, तो भी वह नापाक नहीं होगा यदि गंदगी मौजूद न हो।	348	10x10 पानी के गुण गंदगी के कारण बदल गए, फिर गंदगी नीचे बैठ गई और पानी साफ हो गया; क्या वह पाक हुआ या नहीं?	368
नापाक पानी 10x10 जगह में फैल जाने से पाक नहीं होगा।	348	जब पानी बहता चला जाता है, तो चौड़ाई में उसका फैलना 'प्रवाह' (जर्यान) में बाधक नहीं है।	369
बड़े तालाब में गंदगी गिरी थी, फिर वह सूख कर थोड़ा रह गया, तो वह नापाक नहीं होगा यदि गंदगी शेष न रहे।	349	भँवर का पानी भी बहता हुआ पानी (आब-ए-जारी) है।	370

فتویٰ / مسئلہ	صفحہ	حکم / تفصیل	صفحہ
فتویٰ ۵۱۔ نیچے کے دہ در دہ حصہ میں نجاست پڑی پھر بھر دیا تو کیا حکم۔	۳۴۲	تالاب کی تہ میں تھوڑا پانی ناپاک ہو گیا بھرنے سے بھی پاک نہ ہوگا جب تک ابل نہ جائے۔	۳۴۹
فتویٰ ۵۲۔ حوض اوپر دہ در دہ ہے اور نیچے کم، اور نجاست پڑی تو نیچے کا حصہ کیسا ہے۔	۳۴۳	نجاست سے ملتے وقت پانی کی مساحت دیکھی جائے گی اگر چہ بعد کو کم و بیش ہو جائے۔	۳۵۰
پانی کی صفت اور صورت اور آب زیر و بالا میں چار قسموں کا بیان۔	۳۴۴	فتویٰ ۵۳۔ نیچے کے حصہ میں کہ کم ہے نجاست پڑی پھر بھر دیا، دونوں حصوں کا کیا حکم ہے مصنف کا اس کے لیے دس ۱۱ اصلیں وضع کرنا اور اس کا ضابطہ۔	۳۵۲
نہر پر گھاٹ بنائے تو جو حصہ پانی کا گھاٹ نے جدا کیا اس کا کیا حکم ہے۔	۳۴۴	چھوٹے حوض میں ایک طرف سے پانی آتا اور دوسری طرف سے لیا جا رہا ہے جب تک یہ حالت باقی ہے جاری کے حکم میں ہے۔	۳۵۵
تالاب میں برف جم گیا ایک جگہ سے کچھ کھول لیا اس کا حکم۔	۳۴۴	کنویں میں سوت سے پانی آرہا ہے اور ڈول سے بھرا جا رہا ہے جب تک ہلنا موقوف نہ ہو نجاست سے ناپاک نہ ہو گا۔	۳۵۵

فتویٰ / مسئلہ	صفحہ	حکم / تفصیل	صفحہ
گھاٹ یا برف نے پانی کے جو ٹکڑے جدا کیے ان میں ہر ایک کے ناپاک ہونے سے دوسرا ناپاک نہ ہو گا۔	۳۴۴	جاری پانی کے اوصاف نجاست سے بدل گئے کہ ناپاک ہو گیا پھر نجاست تہ نشین ہو کر پانی صاف ہو گیا اوصاف کا تغیر جاتا رہا خود پاک ہو گیا۔	۳۶۶
تالاب یا نہر سے نکلا ہوا حصہ ڈھائی ہاتھ سے کم ہے تو جدا نہیں۔	۳۴۵	نہر کا سار ا پیٹ ناپاک ہو اور تھوڑا پانی اوپر بہہ رہا ہے ناپاک نہ ہو گا جب تک نجاست سے متغیر نہ ہو جائے۔	۳۶۷
دہ در دہ پانی میں نجاست پڑی ناپاک نہ ہوا پھر سمٹ کر تھوڑی جگہ ہو جانے سے بھی ناپاک نہ ہوگا اگر نجاست باقی نہیں۔	۳۴۸	دہ در دہ پانی کے اوصاف نجاست سے بدلے پھر نجاست تہ نشین ہو کر صاف ہو گیا پاک ہوا یا نہیں۔	۳۶۸
ناپاک پانی دہ در دہ جگہ میں پھیل جانے سے پاک نہ ہو گا۔	۳۴۸	پانی جب نکلتا چلا جاتا ہے تو عرض میں اس کا پھیلنا مانع جریان نہیں۔	۳۶۹
بڑے تالاب میں نجاست پڑی تھی پھر سوکھ کر تھوڑا رہ گیا ناپاک نہ ہو گا اگر نجاست باقی نہیں۔	۳۴۹	بھنور کا پانی بھی آب جاری ہے۔	۳۷۰

Fatawa Razawiya - Volume 2

404 | 370 | If a large pond dried up in summer, animals defecated in it, people relieved themselves, then rain came and filled it, what is the ruling? | Three types of flow (Jaryan) and their rulings. 405 | 371 | No matter how many impurities are outside the pond, flowing water passing over them into the pond will not become impure without change. However, if impurity is inside the pond before it reaches the ten-by-ten area, passing over it will make everything impure. | Explanation of the second opinion that exit is not a condition for the flow of a tank (hauz). 410 | 389 | **Author's research and detailed investigation into whether assistance from above is necessary for water to flow.** | Water is considered flowing as long as it flows on the roof or ground or falls from a spout. 411 | 389 | The method in travel to perform wudu and have the same water remain usable for wudu. | No matter how much impurity is on the roof or at the mouth of the spout, rainwater passing through or down from it will not become impure unless one of its qualities is changed by the impurity. 411 | 390 | If a canal's water is blocked from above but continues to flow below, it still won't become impure from impurity. | If there is impurity on the roof and water drips, it is pure as long as it is raining. 412 | 392 | If stagnant water is made to flow and wudu is performed in the flowing water, it will not become "used" (musta'mal); one can perform wudu as many times as desired. | Pure water passing over impure water will not make it pure until it mixes with the impure water and flows away. 415 | 393 | Two small connected tanks where water leaves one and immediately enters the other are not considered flowing. Yes, if there is a distance between them, it is considered flowing while in that distance. | Filling a tank or well to the top and letting it overflow makes it pure. 415 | 399 | **Razawi reconciliation: Assistance is not a condition for the flow of pure water, but it is a condition for the flow of impure water.** | In terms of abundance or scarcity of a single body of water, only the surface of the water is considered. 417 | 400 | Clarification on small tanks (hauz-e-saghir), flowing and non-flowing. | Explanation of the depth of large non-flowing water. | 403 | If some water is drained from a well, all of it will become pure. |

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (खंड 2)

४०४ | ३७० | गर्मियों में बड़ा तालाब सूख गया, उसमें जानवरों ने गोबर किया, आदमियों ने पाखाना फिरा, बरसात में पानी आया और उसे भर दिया, तो क्या हुक्म है? | जर्यान (प्रवाह) की तीन किस्में और उनके अहकाम (नियम)। ४०५ | ३७१ | तालाब के बाहर कितनी ही नजासतें (अशुद्धियां) हों, बहता पानी उन पर से गुजर कर तालाब में दाखिल होगा, तो बिना परिवर्तन के नापाक नहीं होगा। लेकिन तालाब के अंदर जो नजासत है, दह दर दह (१० गुणा १०) जगह में होने से पहले उस पर गुजरेगा तो सब नापाक हो जाएगा। | इस दूसरे कौल (कथन) का बयान कि हौज (टैंक) के प्रवाह के लिए निकास शर्त नहीं है। ४१० | ३८९ | **मुसन्निफ (लेखक) की तहकीक व तदकीक (शोध और सूक्ष्म जांच) कि पानी के जारी होने में ऊपर से मदद आना भी ज़रूरी है या नहीं।** | पानी जब तक छत या ज़मीन पर बहता या परनाले से गिरता है, जारी है। ४११ | ३८९ | सफर में वह तदबीर (उपाय) कि वुज़ू कर ले और फिर वही पानी वुज़ू के काबिल रहे। | छत पर या परनाले के मुंह पर कितनी ही नजासत हो, मेंह (बारिश) का पानी उससे गुजरता-उतरता नापाक नहीं होगा, जब तक नजासत से उसका कोई वस्फ (गुण) मुतग़य्यर (परिवर्तित) न हो जाए। ४११ | ३९० | नहर का पानी ऊपर से मेढ़ा (बाँध) बाँध दिया गया, नीचे पानी बदस्तूर (निरंतर) जारी है, अब भी नजासत से नापाक नहीं होगा। | छत पर नजासत है और पानी टपका, जब तक मेंह बरस रहा है, पाक है। ४१२ | ३९२ | ठहरे हुए पानी को बहाया, बहते में वुज़ू किया, मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा, जितनी बार चाहे वुज़ू करे। | नजिस (नापाक) पानी पर पाक पानी का गुजर उसे पाक नहीं कर देगा जब तक नजिस पानी के साथ मिलकर बह न जाए। ४१५ | ३९३ | दो छोटे हौज मुत्तसिल (जुड़े हुए) हैं, पानी एक से निकलता दूसरे में मअन (तुरंत) दाखिल होता है, वह जारी नहीं। हाँ, बीच में फासला हो, तो जब तक उस फासले में है, जारी है। | हौज या कुआँ ऊपर तक भरकर बहा दें, पाक हो गया। ४१५ | ३९९ | **तौफीक-ए-रज़वी कि ताहिर (शुद्ध) के जर्यान को मदद शर्त नहीं, नजिस के जर्यान को शर्त है।** | आब-ए-वाहिद (एक ही जल निकाय) की कसरत व किल्लत (अधिकता और कमी) में सिर्फ रू-ए-आब (पानी की सतह) का एतबार (विचार) है। ४१७ | ४०० | हौज-ए-सगीर (छोटा हौज) जारी और ना-जारी की तौज़ीह (स्पष्टीकरण)। | आब-ए-कसीर गैर-जारी (अधिक गैर-प्रवाह जल) की गहराई का बयान। | ४०३ | कुएँ का पानी अगर कुछ बहा दिया जाए, सब पाक हो जाएगा। |

पृष्ठ ७११ में से १४

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

۴۰۴ | ۳۷۰ | گرمیوں میں بڑا تالاب خشک ہو گیا اس میں جانوروں نے گوبر کئے آدمیوں نے پاخانے پھرے برسات میں پانی آیا اور اسے بھر دیا تو کیا حکم ہے۔ | جریان کی تین قسمیں اور ان کے احکام۔ ۴۰۵ | ۳۷۱ | تالاب کے باہر کتنی ہی نجاستیں ہوں بہتا پانی کہ ان پر گزر کر تالاب میں داخل ہو گا بے تغییر ناپاک نہ ہو گا لیکن تالاب کے اندر جو نجاست ہے دہ در دہ جگہ میں ہونے سے پہلے اس پر گزرے گا تو سب ناپاک ہو جائے گا۔ | اس دوسرے قول کا بیان کہ جریان حوض کے لیے خروج شرط نہیں۔ ۴۱۰ | ۳۸۹ | **مصنف کی تحقیق و تدقیق کہ پانی کے جاری ہونے میں اوپر سے مدد آنا بھی ضروری ہے یا نہیں۔** | پانی جب تک چھت یا زمین پر بہتا یا پرنالے سے گرتا ہے جاری ہے۔ ۴۱۱ | ۳۸۹ | سفر میں وہ تدبیر کہ وضو کر لے اور پھر وہی پانی قابل وضو رہے۔ | چھت پر یا پرنالے کے منہ پر کتنی ہی نجاست ہو مینہ کا پانی اس سے گزرتا اترتا ناپاک نہ ہو گا جب تک نجاست سے اس کا کوئی وصف متغیر نہ ہو جائے۔ ۴۱۱ | ۳۹۰ | نہر کا پانی اوپر سے مینڈھا باندھ دیا گیا نیچے پانی بدستور جاری ہے اب بھی نجاست سے ناپاک نہ ہو گا۔ | چھت پر نجاست ہے اور پانی ٹپکا جب تک مینہ برس رہا ہے پاک ہے۔ ۴۱۲ | ۳۹۲ | ٹھہرے ہوئے پانی کو بہایا بہتے میں وضو کیا مستعمل نہ ہو گا جتنی بار چاہے وضو کرے۔ | نجس پانی پر پاک پانی کا گزر اسے پاک نہ کر دے گا جب تک نجس پانی کے ساتھ مل کر بہہ نہ جائے۔ ۴۱۵ | ۳۹۳ | دو چھوٹے حوض متصل ہیں پانی ایک سے نکلتا دوسرے میں معاً داخل ہوتا ہے وہ جاری نہیں ہاں بیچ میں فاصلہ ہو تو جب تک اس فاصلہ میں ہے جاری ہے۔ | حوض یا کنواں اوپر تک بھر کر بہا دیں پاک ہو گیا۔ ۴۱۵ | ۳۹۹ | **توفیق رضوی کہ طاہر کے جریان کو مدد شرط نہیں نجس کے جریان کو شرط ہے۔** | آب واحد کی کثرت و قلت میں صرف روئے آب کا

اعتبار ہے۔ ۴۱۷ | ۴۰۰ | حوضِ صغیر جاری و نا جاری کی توضیح۔ | آب کثیر غیر جاری کے عمق کا بیان | ۴۰۳ | کنویں کا پانی اگر کچھ بہا دیا جائے سب پاک ہو جائے گا۔ |

Fatawa Razawiyya Volume II

Page	Left Column	Page	Right Column
417	If ice is frozen on a pond and it is broken at one place, and the water flows and forms a layer on top of the ice, even then, dipping a dry hand into it will make the water 'musta'mal' (already used for ritual purity) as long as it is not so deep that taking a handful reveals the ice.	466	Performing wudu or bathing with water heated by the sun under these conditions is undesirable (Makruh).
445	Fatwa 54: What is the required depth for 'Ab-e-Kaseer' (a large body of water)?	466	It is undesirable (Makruh) for a man to attain ritual purity from the leftover water of a woman's purification.
442	In flowing water, neither width nor depth is a requirement.	471	It is better that a woman should also not use the leftover water of a man for purification.
445	The author's detailed investigation and research regarding depth.	475	It is better to avoid water in which a child has placed their hands or feet.
445	The necessity of this condition and its rulings while taking water.	476	Wudu is permissible with cistern water even if it has an odor.
446	Rain is flowing water; bathing in it completes the ritual bath (ghusl) provided mouth rinsing and nasal inhalation are performed.	477	It is Makruh to use water from land upon which divine wrath descended or to perform tayammum with its soil, except for the well of Prophet Salih's (AS) camel.
447	The author's research that the ground should not be exposed when water is taken, whether by handful, joined palms, or a vessel.	478	If someone takes someone else's water by force or theft, wudu with it will be valid but is haram (forbidden).
447		478	

Page	Left Column	Page	Right Column
	The author's research that depth is required only where water is taken from, even if the rest is only a span deep.		If water is filled from a privately owned well despite a prohibition, its use is permissible.
447	If the ground is exposed while taking water but a portion of 100x100 cubits remains on all sides, then there is no harm.	481	One cannot perform wudu or ghusl from a drinking water stand (Sabeel) without permission; if other water is not available, perform tayammum.
447	Situations of ground exposure and their rulings.	481	Cases where wudu and ghusl from a drinking water stand are permissible.
451	Fatwa 55: Statement on 'Ab-e-Mutlaq' (absolute water) and 'Ab-e-Muqayyad' (restricted water).	483	Water in religious schools is like a religious endowment (waqf); rulings for wudu and ghusl from it.
452	Waters through which purification is achieved, whether their use is permissible or not.	483	Is it permissible to drink from water intended for wudu?
464	Discussion on water heated by the sun.	494	A magnificent and grand independent treatise containing the author's special researches on water collected by a minor.

फ़तावा रज़विया जिल्द द्वितीय

पृष्ठ	बायां स्तंभ	पृष्ठ	दायां स्तंभ
417	तालाब पर बर्फ़ जमी है, उसे एक जगह से तोड़ा गया, पानी बहकर बर्फ़ के ऊपर फैल गया, तब भी बिना धुले हाथ डालने से वह मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, जब तक कि वह इतना कम न हो कि अंजलि भर पानी लेने पर बर्फ़ दिखाई दे।	466	इन शर्तों के साथ धूप से गर्म पानी से वुज़ू करना या नहाना मकरूह है।
445	फ़तवा 54: 'आब-ए-कसीर' (ज़्यादा पानी) के लिए कितनी गहराई आवश्यक है?	466	औरत की तहारत के बचे हुए पानी से मर्द को तहारत करना मकरूह है।
442	बहते पानी में न चौड़ाई की ज़रूरत है न गहराई की।	471	बेहतर यह है कि मर्द के बचे हुए पानी से औरत भी तहारत न करे।
445	गहराई के बारे में लेखक का शोध और सूक्ष्म विवेचन।	475	जिस पानी में बच्चे ने हाथ-पाँव डाले हों, उससे बचना बेहतर है।
445	पानी लेते समय इस शर्त की आवश्यकता और उसके नियम।	476	हौज़ के पानी में अगर बदबू आती हो, तो भी उससे वुज़ू जायज़ है।
446	बारिश का पानी बहता हुआ पानी है, उसमें नहाने से ग़ुस्ल हो जाएगा, बशर्ते कुल्ली और नाक में पानी डाल लिया गया हो।	477	जिस ज़मीन पर ईश्वरीय प्रकोप (ग़ज़ब-ए-इलाही) उतरा हो, उसके पानी का उपयोग और उसकी मिट्टी से तयम्मुम करना मकरूह है। सिवाय सालेह (अ.स.) की ऊँटनी के कुएँ के।
447	लेखक का शोध कि जिस तरह भी पानी लिया जाए, उससे ज़मीन का न खुलना ज़रूरी है, चाहे अंजलि से हो या बर्तन से।	478	पराया पानी ज़बरदस्ती या चुराकर ले लिया, उससे वुज़ू तो हो जाएगा मगर वह हराम है।
447		478	

पृष्ठ	बायां स्तंभ	पृष्ठ	दायां स्तंभ
	लेखक का शोध कि उतनी गहराई वहीं ज़रूरी है जहाँ से पानी लिया जा रहा है, भले ही बाकी जगह सिर्फ़ एक बालिश्त गहरा हो।		किसी के निजी कुएँ से मना करने के बावजूद पानी भर लिया, तो उसका उपयोग जायज़ है।
447	अगर पानी निकालने से ज़मीन खुल गई, लेकिन चारों तरफ़ 100/100 हाथ का टुकड़ा बचा रहा, तो कोई हर्ज़ नहीं।	481	पीने की सबील (प्यास बुझाने का स्थान) से बिना अनुमति वुज़ू और ग़ुस्ल नहीं कर सकता; अगर दूसरा पानी न मिले तो तयम्मुम कर ले।
447	ज़मीन खुल जाने की स्थितियाँ और उनके नियम।	481	पीने की सबील से वुज़ू और ग़ुस्ल जायज़ होने की स्थितियाँ।
451	फ़तवा 55: 'आब-ए-मुतलक़' (शुद्ध पानी) और 'आब-ए-मुक़य्यद' (मिश्रित पानी) का वर्णन।	483	धार्मिक पाठशालाओं (मदरसों) का पानी वक़्फ़ की तरह है; उससे वुज़ू और ग़ुस्ल के नियम।
452	वह पानी जिनसे तहारत हो जाएगी, चाहे उनका उपयोग जायज़ हो या नहीं।	483	वुज़ू के लिए बनाई गई सबील से पानी पीना जायज़ है या नहीं?
464	धूप से गर्म पानी पर चर्चा।	494	नाबालिग द्वारा भरे गए पानी के बारे में लेखक के विशेष शोध पर आधारित एक शानदार और विशाल स्वतंत्र पुस्तिका।

पृष्ठ 711 का 15

فتاوی رضویہ جلدثانی

صفحہ	بایاں کالم	صفحہ	دایاں کالم
۴۱۷	تالاب پر برف جما ہے اسے ایک جگہ سے توڑا پانی بہہ کر برف کے اوپر وہ دروہ ہو گیا جب بھی بے ڈھلا ہاتھ ڈالنے سے مستعمل ہو جائے گا جب تک اتنا ڈل نہ ہو کہ لپ سے برف کھلے۔	۴۶۶	ان شرطوں کے ساتھ دھوپ کے گرم پانی سے وضو کرنا یا نہانا مکروہ ہے۔
۴۴۵	فتوی ۵۴۔ آب کثیر کو کتنا عمق درکار ہے۔	۴۶۶	عورت کی طہارت کے بچے ہوئے پانی سے مرد کو طہارت مکروہ ہے۔
۴۴۲	جاری پانی میں نہ عرض کی ضرورت نہ عمق کی۔	۴۷۱	اولیٰ یہ ہے کہ مرد کے بچے پانی سے عورت بھی طہارت نہ کرے۔
۴۴۵	عمق کے بارے میں مصنف کی تحقیق وتدقیق	۴۷۵	جس پانی میں بچے نے ہاتھ پاؤں ڈالا ہو اس سے بچنا بہتر۔
۴۴۵	پانی لیتے وقت اس شرط کی حاجت اور اس کے احکام۔	۴۷۶	حوض کے پانی میں بد بو آتی ہو اس سے وضو جائز ہے۔
۴۴۶	مینہ جاری پانی ہے اس سے نہانے سے غسل اتر جائے گا جبکہ کلی اور ناک میں پانی ڈال لیا ہو۔	۴۷۷	جس زمین پر غضب الہی اترا اس کے پانی کا استعمال اس کی مٹی

صفحہ	بایاں کالم	صفحہ	دایاں کالم
			سے تیمم مکروہ ہے۔ مگر ناقہ صالح علیہ الصلوٰۃ والسلام کا کنواں
۴۴۷	مصنف کی تحقیق کہ جس طرح پانی لیا جائے اس سے زمین نہ کھلنا ضرور ہے چلو ہو یا لپ یا برتن۔	۴۷۸	پرایا پانی زبر دستی یا چرا کر لے لیا اس سے وضو ہو جائے گا مگر حرام ہے۔
۴۴۷	مصنف کی تحقیق کہ اتنا عمق وہیں درکار ہے جہاں سے پانی لیں اگرچہ باقی جو ہی بھر ہو۔	۴۷۸	مملوک کنویں سے اس کی ممانعت پر پانی بھر لیا اس کا استعمال جائز ہے۔
۴۴۷	اگر پانی اٹھانے سے زمین کھل گئی مگر ہر طرف کا ٹکڑا ۱۰۰/۱۰۰ ہاتھ رہا تو حرج نہیں۔	۴۸۱	پینے کی سبیل سے وضو و غسل بے اجازت نہیں کر سکتا اگر اور پانی نہ ملے تیمم کرلے۔
۴۴۷	زمین کھل جانے کی صورتیں اور ان کے احکام	۴۸۱	پینے کی سبیل سے وضو و غسل جائز ہونے کی صورتیں۔
۴۵۱	فتوی ۵۵۔ آب مطلق و مقید کا بیان	۴۸۳	وقتی مدارس کا پانی مثل وقف ہے اس سے وضو و غسل کے احکام۔
۴۵۲	وہ پانی جن سے طہارت ہو جائے گی خواہ ان کا استعمال جائز ہو یا نہیں۔	۴۸۳	وضو کے لئے جو سبیل ہے اس سے پانی پینا جائز ہے یا نہیں۔
۴۶۴	دھوپ سے گرم پانی کی بحث	۴۹۴	

نابالغ کے بھرے ہوئے پانی میں

مستقل رسالہ جلیل و عظیم تحقیقات

خاصہ مصنف پر مشتمل۔

Fatawa Razawiyya (Volume 2)

Page No.	Subject 1	Serial No.	Subject 2
576	It is better not to perform wudu (ablution) with water into which a stream or distinct drops of used water have fallen.	541	If only date-mead (nabidh tamr) is found, tayammum is mandatory, and performing wudu is also recommended.
592	Description of waters in which some other substance has mixed.	543	Rulings on wudu with water used to wash a miswak (teeth-cleaning twig).
595	What is the ruling on wudu if sand or mud gets mixed in water?	544	If a person with wudu washes their limbs just to refresh themselves, the water remains valid for wudu.
595	What is the ruling on wudu if so many leaves fall into a pond that the water turns green?	548	The wash-water of the Holy Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) blessed sandals gives blessing and purity, but it should not be poured on the feet.
596	Water does not become impure by the death of an animal that has no blood; however, except for fish and 'Tairi' (aquatic creature), if parts of such animals are mixed in water, eating or drinking it is not permissible.	559	Those 125 types of water with which wudu is not valid.
625	Leftover water of a horse is valid for wudu.	563	If no water other than the leftover water of a donkey is available, then perform wudu with it and also necessarily perform tayammum, otherwise the prayer will not be valid.
629		563	

Page No.	Subject 1	Serial No.	Subject 2
	Rulings on the leftover water of male and female halal animals.		Those 22 types of water regarding which there is disagreement about the permissibility of wudu.
650	What is the ruling if a male smelled the urine of a female or sucked her secretion and then put water in his mouth?	564	Ten scenarios of mixing another substance in water.
697	Ruling on wudu with water in which some foul-smelling substance has mixed.	565	Sources and References.

[Watermark: I.T. Majlis of DawateIslami, Dawat-e-Islami]

फ़तावा रज़विया (खण्ड 2)

पृष्ठ संख्या	विषय 1	क्रमांक	विषय 2
५७६	जिस पानी में इस्तेमाल किया हुआ पानी (मा-ए-मुस्तअमल) की धार गिरी हो या साफ़ कतरे, उससे वज़ू न करना बेहतर है।	५४१	यदि केवल खजूर का शरबत (नबीज़-ए-तम्र) मिले तो तयम्मुम का हुक्म है और वज़ू कर लेना भी मुस्तहब है।
५९२	उन पानियों का वर्णन जिनमें किसी दूसरी वस्तु का मेल हो गया हो।	५४३	मिसवाक जिस पानी से धोई गई हो, उससे वज़ू करने के नियम।
५९५	पानी में रेत या कीचड़ मिल जाने पर वज़ू का क्या हुक्म है?	५४४	बा-वज़ू व्यक्ति ने ताजगी के लिए अंग धोए तो पानी वज़ू के योग्य बना रहेगा।
५९५	हौज़ में इतने पत्ते गिरे कि पानी हरा हो गया, तो उससे वज़ू का क्या हुक्म है?	५४८	हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुबारक जूतों का धोवन बरकत और पवित्रता प्रदान करने वाला है, परन्तु उसे पैरों पर न डाला जाए।
५९६	बिना खून वाले जानवर के मरने से पानी अशुद्ध नहीं होता, परन्तु मछली और 'टेरी' के अलावा ऐसे जानवरों के अंग यदि पानी में मिल जाएँ तो उसका खाना-पीना जायज़ नहीं है।	५५९	वे १२५ तरह के पानी जिनसे वज़ू सही नहीं होता।
६२५	घोड़े का जूठा पानी वज़ू के योग्य है।	५६३	गधे के जूठे पानी के अलावा और पानी न मिले तो उससे वज़ू भी करे और तयम्मुम भी अवश्य करे, अन्यथा नमाज़ नहीं होगी।
६२९	हलाल जानवरों (नर और मादा) के जूठे का हुक्म।	५६३	वे २२ तरह के पानी जिनके वज़ू के लिए उपयोग पर मतभेद है।

पृष्ठ संख्या	विषय 1	क्रमांक	विषय 2
६५०	यदि नर ने मादा का पेशाब सूँघा या उसकी गन्दगी चूसी और पानी मुँह में डाल दिया, तो क्या हुक्म है?	५६४	पानी में दूसरी वस्तु मिलने की दस स्थितियाँ।
६९७	जिस पानी में कोई दुर्गंधयुक्त वस्तु मिल जाए, उससे वज़ू का हुक्म।	५६५	स्रोत और सन्दर्भ।

[वॉटरमार्क आईटी मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी, दावत-ए-इस्लामी]

فتاویٰ رضویہ (جلد ثانی)

صفحہ نمبر	مضمون ۱	شمار مضمون ۲	
۵۷۶	جس پانی میں مائے مستعمل کی دھار پہنچی یا واضح قطرے اس سے وضو نہ کرنا بہتر۔	۵۴۱	صرف نبیذ تمر پائے تو تیمّم کا حکم ہے اور وضو کر لینا بھی مستحب۔
۵۹۲	اُن پانیوں کا بیان جن میں کسی دوسری چیز کا میل ہو گیا۔	۵۴۳	مسواک جس پانی سے دھوئی اس سے وضو کے احکام۔
۵۹۵	پانی میں ریتا کیچڑ مل جائے تو اس سے وضو کا کیا حکم ہے۔	۵۴۴	باوضو نے اپنی نظر دفع کرنے کے لیے اعضاء دھوئے پانی قابلِ وضو رہے گا۔
۵۹۵	حوض میں پتے اتنے گرے کہ پانی سبز ہوگیا اس سے وضو کا کیا حکم ہے۔	۵۴۸	حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نعلین مبارک کا غسالہ برکت و طہارت عطا کرنے والا ہے مگر پاؤں پر نہ ڈالا جائے۔
۵۹۶	جس جانور میں خون نہیں اس کے مرنے سے پانی ناپاک نہیں ہوتا مگر مچھلی اور ٹیری کے سوا ایسے جانور کے اجزاء اگر پانی میں مل جائیں تو اس کا کھانا پینا جائز نہیں۔	۵۵۹	وہ ۱۲۵ پانی جن سے وضو صحیح نہیں۔

صفحہ نمبر	مضمون ۱	شمار	مضمون ۲
			گدھے کے جھوٹے پانی کے سوا
۶۲۵	گھوڑے کا جھوٹا پانی قابلِ وضو ہے۔	۵۶۳	اور پانی نہ ملے تو اس سے وضو بھی کرے اور تیمّم بھی ضرور کرے ورنہ نماز نہ ہوگی۔
۶۲۹	حلال جانوروں نروماده کے جھوٹے کا حکم	۵۶۳	وہ ۲۲ پانی جن سے جواز وضو میں اختلاف ہے۔
۶۵۰	نرنے ماده کا پیشاب سونگھا یا اپنی مندی چوسی اور پانی منہ میں ڈال دیا تو کیا حکم ہے۔	۵۶۴	پانی میں دوسری چیز ملنے کی دس صورتیں۔
۶۹۷	جس پانی میں کوئی بدبودار چیز مل جائے اس سے وضو کا حکم۔	۵۶۵	ماخذ و مراجع

Fatawa Rizvia - Volume 2

List of Subsidiary Issues

Issues of Wudu

Page	Description (Left Column)	Page	Description (Right Column)
46	In Wudu, every limb is distinct; water flowing from one to another is insufficient. In Ghusl, the whole body is considered as one; water from the head will purify wherever it flows down to the feet.	103	Performing Masah (wiping) of the entire head is Sunnah, and its method.
63	Saints (Auliya) witness with their eyes that sins are washed away with the water of Wudu.	104	Placing one finger on the head and dragging it so that it covers a quarter of the head; Masah will not be valid.
77	If one starts Wudu but cannot complete it due to some hindrance, reward will be granted for the acts performed, even if the Wudu was not completed.	106	It will not be valid with two fingers either; however, if three fingers are dragged such that they cover a quarter of the head, it is valid.
77	One who intentionally performs only half of the Wudu will not receive any reward.	107	Ruling on performing Masah with the tips of the fingers.
77	One who intended to perform Wudu but then intentionally abandoned it midway will not receive any reward.	108	If raindrops fall on the head, Masah is considered performed.
93	Seven Hadiths stating that whoever performs Wudu starting with 'Bismillah', their entire body will become pure, otherwise only the limbs of Wudu are purified; and the author's reinforcement of this.	108	If a wet piece of wood is moved across the head such that a quarter of the head becomes wet, Masah is performed.
103	The moisture remaining on a limb after washing can be used for Masah, but	111	Tahqiq al-Musannif (Author's Research) on the issue of

Page	Description (Left Column)	Page	Description (Right Column)
	moisture left over from a Masah cannot be used for Masah again.		Masah with one or two fingers.
		111	(Author's research regarding the description of performing Masah using one and two fingers)

फ़तावा रज़विया - जिल्द (भाग) २

अनुषंगी मसलों की सूची

वुज़ू के मसाइल

पृष्ठ	विवरण (बायां कॉलम)
४६	वुज़ू में हर अंग अलग है, एक का पानी दूसरे पर बहना काफी नहीं, जबकि ग़ुस्ल में पूरा शरीर एक है; सिर का पानी पैरों तक जहाँ-जहाँ बहेगा, उसे पाक कर देगा।
६३	औलिया (संत) अपनी आँखों से देखते हैं कि वुज़ू के पानी के साथ गुनाह धुल जाते हैं।
७७	वुज़ू करने बैठा फिर किसी बाधा के कारण पूरा न कर सका, तो जितने कार्य किए उन पर सवाब (पुण्य) मिलेगा, भले ही वुज़ू न हुआ हो।
७७	जिसने जानबूझकर आधा वुज़ू किया, उसे सवाब नहीं मिलेगा।
७७	जिसका इरादा वुज़ू का था फिर जानबूझकर बीच में ही छोड़ दिया, उसे सवाब नहीं मिलेगा।
९३	सात हदीसें कि जो बिस्मिल्लाह कहकर वुज़ू करे उसका सारा बदन पाक हो जाएगा, अन्यथा केवल वुज़ू के अंग; और लेखक द्वारा इसकी पुष्टि।
१०३	अंग धोने के बाद जो नमी अंग में रहे उससे मसह हो सकता है, और मसह की बची हुई नमी से मसह नहीं होगा।

पृष्ठ	विवरण (दायां कॉलम)
१०३	पूरे सिर का मसह (पोंछना) सुन्नत है और उसका तरीका।
१०४	एक उंगली सिर पर रखकर खींच दी कि चौथाई सिर की मात्रा तक पहुँच गई, मसह नहीं होगा।
१०६	दो उंगलियों से भी मसह नहीं होगा; हाँ, तीन उंगलियां यदि इतनी खींची जाएं कि चौथाई सिर तक पहुँचें, तो हो गया।
१०७	उंगलियों के पोरों से मसह करने का हुक्म।
१०८	अगर सिर पर बारिश की बूंदें गिरें, तो मसह हो गया।
१०८	अगर गीली लकड़ी सिर पर इस तरह फेरी जाए कि चौथाई सिर गीला हो जाए, तो मसह हो गया।
१११	एक या दो उंगलियों से मसह करने के मसले पर लेखक का शोध (तहक़ीक़ अल-मुसन्निफ़)।

पृष्ठ	विवरण (बायां कॉलम)	पृष्ठ	विवरण (दायां कॉलम)
		१११	(एक और दो उंगलियों के माध्यम से मसह करने के विवरण में लेखक का शोध)

पृष्ठ ७११ का १७

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

فہرست ضمنی مسائل

مسائل وضو

صفحہ	تفصیل (بایاں کالم)	صفحہ	تفصیل (دایاں کالم)
۴۶	وضو میں ہر عضو جدا ہے ایک کا پانی دوسرے پر بہنا کافی نہیں اور غسل میں سب بدن ایک ہے سر کا پانی پاؤں تک جہاں جہاں بہے پاک کر دے گا۔	۱۰۳	سارے سر کا مسح سنت ہے اور اس کا طریقہ
۶۳	اولیاء آنکھوں سے دیکھتے ہیں کہ وضو کے پانی کے ساتھ گناہ نکلتے ہیں۔	۱۰۴	ایک انگلی سر پر رکھ کر کھینچی دی کہ چہارم سر کی قدر تک پہنچ گئی مسح نہ ہوگا۔
۷۷	وضو کرنے بیٹھا پھر کسی مانع کے سبب تمام نہ کر سکا تو جتنے افعال کیے ان پر ثواب پائے گا اگرچہ وضو نہ ہوا۔	۱۰۶	دو انگلیوں سے بھی نہ ہوگا ہاں تین انگلیاں اگر اتنی کھینچیں کہ چہارم سر کو پہنچیں ہو گیا۔
۷۷	جس نے بالقصد آدھا وضو کیا ثواب نہ پائے گا۔	۱۰۷	انگلیوں کے پوروں سے مسح کرنے کا حکم۔
۷۷	جس کا ارادہ وضو کا تھا پھر قصداً بیچ میں سے چھوڑ دیا ثواب نہ پائے گا۔	۱۰۸	اگر سر پر مینہ کی بوندیں گریں مسح ہو گیا۔

صفحہ	تفصیل (بایاں کالم)	صفحہ	تفصیل (دایاں کالم)
	سات حدیثیں کہ جو بسم اللہ کہہ کر وضو کرے اس		اگر لکڑی بھگو کر سر پر پھیر
۹۳	کا سارا بدن پاک ہو جائے گا ورنہ صرف	۱۰۸	دی کہ چہارم سر تر ہو گیا مسح
	اعضائے وضو اور مصنف کا اس کی تقویت کرنا۔		ہو گیا۔
	دھونے کے بعد جو تری عضو میں رہے اس سے		تحقیق المصنف فی مسألة المسح
۱۰۳	مسح ہو سکتا ہے اور مسح کی تری بچی ہوئی	۱۱۱	بمداصبع اواصبعین
	سے نہ ہوگا۔		(ایک اور دو انگلیوں کے ذریعے
		۱۱۱	مسح کرنے کے بیان میں مصنف
			کی تحقیق)

Fatawa Razawiya - Volume 2

- Method of wiping the head (Masah) with one finger. | 111 | Research into the difference between the meaning of 'Hadath' and the divisibility of one of them without the other. | 82
- Sitting bareheaded in dew; if a quarter of the head gets wet, then wiping (Masah) is accomplished. | 460 | The author's research on whether legal impurity (Najasa Hukmiya) occurs only in the limbs of ablution (Wudu) or in the whole body. | 92
- Ablution (Wudu) with water that is too hot or too cold to be poured on the body is disliked (Makruh). | 464 | When 'Muhdith' (one in a state of ritual impurity) is mentioned generally, it refers to one without Wudu, not one who requires a full bath (Ghusl). | 95
- How to perform Masah if there is medicine on the head. | 622 | Every breaker of Wudu arises from eating; the entire body should have been washed, but the specification of four limbs contains wisdom, and in them, only wiping the head also contains this wisdom. | 97
- Breakers of Ablution (Nawaqidh-e-Wudu) | | Ritual impurity (Hadath) requiring Wudu occurs only in four limbs; if someone insists on Ghusl in place of Wudu, it is an innovation (Bid'ah). | 100
- Research on the meaning of 'Raf' al-Hadath' and addressing the objections of Imam Ibn al-Humam. | 67 | Rulings on Bathing (Masa'il-e-Ghusl)
- (Research into the meaning of Raf' al-Hadath and reply to Imam Ibn al-Humam's objection) | | It is recommended (Mustahabb) to perform Ghusl after washing a deceased person. | 45
- A minor is always in a state of Wudu; his Wudu is not broken by any 'Hadath', nor is Ghusl mandatory for him due to intercourse. | 70 | Bathing for Friday, 'Arafah, the two Eids, and Ihram is recommended, and it can only be fulfilled with the same water used for the Ghusl of Janabat. | 61
- 'Hadath' has two meanings, and it is divisible into one of them without the other. | 76 | As long as complete purification is not achieved, any act that was not permissible without that purification will not become permissible, even if the limb through which the act is performed has been washed. | 67
- Noble research on the definition of 'Hadath'. | 77 | One without Wudu cannot touch the Holy Quran even with their chest. | 95

- Exquisite research by the Absolute Researcher on the meaning of legal impurity (Najasa Hukmiya). | 80 | One without Wudu cannot touch the Holy Quran even with the corner of a sheet that is on their body, except in one situation. | 95

फ़तावा रज़विया - जिल्द-ए-सानी

- एक उँगली से सर का मसह़ हो जाने का तरीक़ा। | १११ | ह़दथ के मा'नी और उनमें से एक के दूसरे के बिना जुदा होने के दरमियान फ़र्क़ की तह़क़ीक़। | ८२
- ओस में सर बरहना बैठा उससे चौथाई सर की मिक़दार भीग गया मसह़ हो गया। | ४६० | मुसन्निफ़ (लेखक) की तह़क़ीक़ कि नजासते ह़ुक्मिया सिर्फ़ अ'ज़ा-ए-वुज़ू में होती है या सारे बदन में। | ९२
- ज़्यादा गर्म व सर्द पानी कि बदन पर डाला न जाए उससे वुज़ू मकरूह है। | ४६४ | मुह़दिस जब मुतलक़ हो उससे मुराद बे-वुज़ू है न कि वह जिस पर ग़ुस्ल है। | ९५
- सर पर कोई दवा लगी है तो मसह़ किस तरह करे। | ६२२ | हर नाक़िज़-ए-वुज़ू (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़) खाने से पैदा होता है, धोना सारे ही बदन को चाहिए था, चार अ'ज़ू की तख़्सीस (विशिष्टता) इस ह़िक्मत से है और उनमें भी सिर्फ़ सर के मसह़ की यह ह़िक्मत। | ९७
- नवादि़ज़-ए-वुज़ू (वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें) | | ह़दथ मूजिब-ए-वुज़ू सिर्फ़ चार आज़ा में होता है अगर कोई वुज़ू की जगह ग़ुस्ल का इल्तिज़ाम करे तो बिदअ़त है। | १००
- तह़क़ीक़-ए-मा'नी रफ़अुल ह़दथ व रफ़अ़ ईराद-ए-इमाम इब्ने हुमाम। | ६७ | मसाइल-ए-ग़ुस्ल
- (रफ़अ़-ए-ह़दथ के मा'नी की तह़क़ीक़ और इमाम इब्ने हुमाम के ए'तराज़ का जवाब) | | मय्यित को नहला कर ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है। | ४५
- नाबालिग़ हर वक़्त बा-वुज़ू है किसी ह़दथ से उसका वुज़ू नहीं जाता न जिमा' (संभोग) से उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो। | ७० | जुमअ़, अ़रफ़ा, ईदैन, एह़राम का ग़ुस्ल मुस्तह़ब है और सिर्फ़ उसी पानी से अदा हो सकेगा जिससे जनाबत का ग़ुस्ल। | ६१
- ह़दथ के दो मा'नी हैं और वह एक पर दूसरे के बग़ैर मुतजज़ी (विभाज्य) है। | ७६ | जब तक सारी त़हारत न कर ले कोई काम जो बे उस त़हारत के जाइज़ न था जाइज़ न हो जाएगा अगरचे जिस उज़ू से यह काम किया जाता है वह धुल चुका हो। | ६७
- तह़क़ीक़-ए-शरीफ़ फ़ी ता'रीफ़िल ह़दथ (ह़दथ की परिभाषा पर महत्वपूर्ण शोध)। | ७७ | बे-वुज़ू अपने सीने से भी मुसह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआन) को मस (स्पर्श) नहीं कर सकता। | ९५
- तह़क़ीक़-ए-नफ़ीस लिल मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़तलाक़ फ़ी मा'निल नजासतुल ह़ुक्मिया। | ८० | बे-वुज़ू के बदन पर जो चादर हो उसके गोशे (कोने) से भी मुसह़फ़ शरीफ़ को मस नहीं कर सकता मगर एक सूरत में। | ९५

- ایک انگلی سے سر کا مسح ہو جانے کا طریقہ۔ | ۱۱۱ | تحقیق الفرق بین معنی الحدث وتجزی احدھما دون الآخر۔ | ۸۲
- اوس میں سر برہنہ بیٹھا اس سے چہارم سر کی قدر بھیگ گیا مسح ہوگیا۔ | ۴۶۰ | مصنف کی تحقیق کہ نجاست حکمیہ صرف اعضائے وضو میں ہوتی ہے یا سارے بدن میں۔ | ۹۲
- زیادہ گرم و سرد پانی کہ بدن پر ڈالا نہ جائے اس سے وضو مکروہ ہے۔ | ۴۶۴ | محدث جب مطلق ہو اس سے مراد بے وضو ہے نہ وہ جس پر غسل ہے۔ | ۹۵
- سر پر کوئی دوا لگی ہے تو مسح کس طرح کرے | ۶۲۲ | ہر ناقض وضو کھانے سے پیدا ہوتا ہے دھونا سارے ہی بدن کو چاہیے تھا چار عضو کی تخصیص اس حکمت سے ہے اور ان میں بھی سر کے فقط مسح کی یہ حکمت۔ | ۹۷
- نواقض وضو | | حدث موجب وضو صرف چار اعضاء میں ہوتا ہے اگر کوئی وضو کی جگہ غسل کا التزام کرے بدعت ہے۔ | ۱۰۰
- تحقیق معنی رفع الحدث ورفع ایراد الامام ابن الہمام | ۶۷ | مسائل غسل |
- (رفع حدث کے معنی کی تحقیق اور امام ابن ہمام کے اعتراض کا جواب) | | میت کو نہلا کر غسل کرنا مستحب ہے۔ | ۴۵
- نابالغ ہر وقت باوضو ہے کسی حدث سے اس کا وضو نہیں جاتا نہ جماع سے اس پر غسل فرض ہو۔ | ۷۰ | جمعہ عرفہ عیدین احرام کا غسل مستحب ہے اور صرف اسی پانی سے ادا ہوسکے گا جس سے جنابت کا غسل۔ | ۶۱

- للحدث معنیان و ھو متجز علی احدھما دون الآخر | ۷۶ | جب تک ساری طہارت نہ کرلے کوئی کام جو بے اس طہارت کے جائز نہ تھا جائز نہ ہوجائے گا اگرچہ جس عضو سے یہ کام کیا جاتا ہے وہ دھل چکا ہو۔ | ۶۷
- تحقیق شریف فی تعریف الحدث۔ | ۷۷ | بے وضو اپنے سینہ سے بھی مصحف شریف کو مس نہیں کرسکتا۔ | ۹۵
- تحقیق نفیس للمحقق علی الاطلاق فی معنی النجاسة الحکمیة۔ | ۸۰ | بے وضو کے بدن پر جو چادر ہو اس کے گوشہ سے بھی مصحف شریف کو مس نہیں کرسکتا مگر ایک صورت میں۔ | ۹۵

Fatawa Rizvia Volume II

313: The way Hindus bathe does not remove the state of ritual impurity (Janabat). If they embrace Islam, it is mandatory to teach them the rules of ritual bathing (Ghusl) and ensure it is performed correctly. 473: A vessel used for feces, as long as the impurity is not known for certain, will not make the well impure if it falls into it. 252: Bathing (Ghusl) and ablution (Wudu) from the sacred Zamzam water is permissible without any dislike. Using it for cleansing (Istinja) after using a clod of earth is disliked (Makruh), and washing away impurities with it is a sin. 475: If a piece of a child's bedding falls into a well without known impurity, it will not become impure; however, it is disliked (Makruh), and twenty (20) buckets of water should be drawn out.

Issues Related to Wells 476: The same rule applies to the use of shoes. 252: If someone without ablution enters a well, twenty (20) buckets should be drawn out.

Issues Related to Tayammum (Dry Ablution) 252: Large cisterns built in the desert for water storage in Arabia, do they fall under the ruling of a well or not? 106: Wiping with only two (2) fingers in Tayammum is not sufficient; three are necessary.

Meaning of 'Al-Bi'r' (The Well) 111: Tayammum will not be valid with only one or two fingers even if they are repeatedly applied to the dust and wiped over the body. 256: Even if a 'Koli' (a type of vessel) is buried in the ground, it does not fall under the ruling of a well. The method for its purification is also mentioned. 112: If one falls onto dust with the intention of Tayammum, the Tayammum will be valid provided that the dust reaches every part of the limbs involved in Tayammum. 256: Research into the meanings of 'Al-Sahrij', 'Al-Hawd', and 'Al-Bi'r'. 490: If water is available during travel but is needed for some essential requirement, then one should perform Tayammum. 285: The rim of a well should be at such a distance that impurities cannot fall in and make it impure. 490: If water for Wudu or Ghusl can be stored in a vessel for an animal, then Tayammum is not permissible solely due to the animal's thirst. 472: A well from which women, children, or villagers draw water is not impure. 490: If one can perform Wudu in a way that the water does not become 'used' (Must'amal) - the method of which is on page 390 - then Tayammum is not permissible due to any need. 473: A vessel placed on the ground, whose bottom's impurity is not verified, will not be considered pure. 493: The ruling regarding Tayammum for the thirst of a 'Dhimmi' (non-Muslim citizen) should apply; however, there are no 'Dhimmi' non-Muslims here.

फतावा रिज़विया जिल्द दो

३१३: हिंदू जिस तरह नहाते हैं उससे गुस्ल-ए-जनाबत दूर नहीं होता। यदि वे इस्लाम स्वीकार करते हैं, तो उन्हें गुस्ल के नियम सिखाकर सही गुस्ल कराना अनिवार्य है। ४७३: लोटा जिसे शौच के लिए ले जाया जाता है, जब तक कि उसकी अशुद्धता (नजासत) ज्ञात न हो, उसे कुएं में डालने से कुआं अशुद्ध नहीं होगा। २५२: ज़मज़म शरीफ़ के पानी से गुस्ल और वज़ू बिना किसी नापसंदगी के जायज़ है। मिट्टी के ढेले से इस्तेंजा करने के बाद इससे इस्तेंजा करना मकरूह है, और इससे नजासत धोना गुनाह है। ४७५: बच्चे के बिस्तर (नेहालचा) का टुकड़ा कुएं में गिर जाए और नजासत का ज्ञान न हो तो अशुद्ध नहीं होगा, लेकिन मकरूह है, बीस (२०) बाल्टी पानी निकालें।

कुएं के मसले (नियम) ४७६: यही नियम इस्तेमाल किए हुए जूतों के लिए है। २५२: कुएं में यदि बिना वज़ू वाला व्यक्ति घुस जाए तो बीस (२०) बाल्टी पानी निकाला जाए।

तयम्मुम (शुष्क वज़ू) के मसले २५२: अरब शरीफ़ में पानी के संचय के लिए जंगल में बनने वाले बड़े हौज़ क्या कुएं के हुक्म में हैं या नहीं? १०६: तयम्मुम में केवल दो (२) उंगलियों से मसह करना काफ़ी नहीं है, तीन ज़रूरी हैं।

म'अनी अल-बि'र (कुएं का अर्थ) १११: एक या दो उंगलियों से तयम्मुम नहीं होगा, चाहे मिट्टी पर बार-बार लगाकर शरीर पर फिराया जाए। २५६: कोली (एक प्रकार का बर्तन) चाहे ज़मीन में गड़ी हो, कुएं के हुक्म में नहीं आती। इसे शुद्ध करने का तरीका भी बताया गया है। ११२: तयम्मुम की नीयत से धूल पर गिरने से तयम्मुम हो जाएगा, यदि तयम्मुम के अंगों के हर हिस्से तक धूल पहुँच जाए। २५६: अस-सहरीज, अल-हौज़ और अल-बि'र के अर्थों का शोध। ४९०: सफ़र में पानी साथ है मगर किसी ज़रूरी ज़रूरत के लिए चाहिए तो तयम्मुम करे। २८५: कुएं का घेरा हाथ की पहुँच से दूर होना चाहिए ताकि नजासत गिरने से वह नापाक न हो सके। ४९०: वज़ू या गुस्ल का पानी यदि जानवर के लिए किसी बर्तन में सुरक्षित रखा जा सकता है, तो जानवर की प्यास के ख़याल से तयम्मुम जायज़ नहीं। ४७२: जिस कुएं से औरतें, बच्चे और अनपढ़ लोग पानी भरते हैं, वह नापाक नहीं है। ४९०: अगर वज़ू इस तरह किया जा सके कि पानी मुस्त'अमल (इस्तेमाल किया हुआ) न हो - जिसका तरीका पेज ३९० पर है - तो किसी ज़रूरत की वजह से तयम्मुम जायज़ नहीं। ४७३: जो बर्तन ज़मीन पर रखा जाए और उसके पेंदे की नजासत की पुष्टि न हो, वह पाक नहीं होगा। ४९३: काफ़िर-ए-ज़िम्मी की प्यास के लिए तयम्मुम का हुक्म होना चाहिए; यहाँ कोई काफ़िर-ए-ज़िम्मी नहीं है।

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

۳۱۳: ہندو جس طرح نہاتے ہیں اس سے غسل جنابت نہیں اترتا اسلام لائیں تو قواعد غسل سکھا کر تصحیح غسل لازم ہے۔ ۴۷۳: لوٹا کہ پاخانہ کو لے جاتے ہیں جب تک اس کی نجاست معلوم نہ ہو کنویں میں ڈالنے سے ناپاک نہ ہوگا۔ ۲۵۲: زمزم شریف سے غسل و وضو بلا کراہت جائز اور ڈھیلے کے بعد اس سے استنجا مکروہ اور نجاست دھونا گناہ۔ ۴۷۵: بچے کے نہالچے کا ٹکڑا کنویں میں گر جائے بے علم نجاست ناپاک نہ ہوگا مکروہ ہے بیس ۲۰ ڈول نکالیں۔

کنویں کے مسائل ۴۷۶: یہی حکم استعمال جوتے کا ہے۔ ۲۵۲: کنویں میں بے وضو گھسا بیس ۲۰ ڈول نکالے جائیں۔

مسائل تیمم ۲۵۲: بڑے حوض کہ عرب شریف میں پانی کے خزانہ کے لیے جنگل میں بنتے ہیں کنویں کے حکم میں ہیں یا نہیں۔ ۱۰۶: تیمم میں دو ۲ انگلیوں سے مسح کافی نہیں تین ضروری ہیں۔

معنی البئر ۱۱۱: ایک یادو انگلیوں سے تیمم نہ ہوگا اگرچہ مٹی پر بار بار لگا کر بدن پر پھیرے۔ ۲۵۶: کولی اگرچہ زمین میں گڑی ہو کنویں کے حکم میں نہیں اور اس کے پاک کرنے کا طریقہ ۱۱۲: تیمم کی نیت سے خاک پر لوٹا تیمم ہو جائے گا اگر اعضائے تیمم پر ہر جگہ غبار پہنچ جائے۔ ۲۵۶: تحقیق معنی الصہریج والحوض والبئر۔ ۴۹۰: سفر میں پانی ساتھ ہے مگر کسی ضروری حاجت کو درکار ہے تو تیمم کرے۔ ۲۸۵: کنویں کا دور کے ہاتھ ہونا چاہیے کہ نجاست گرنے سے ناپاک نہ ہو سکے۔ ۴۹۰: وضو یا غسل کا پانی جانور کے لیے کسی ظرف میں محفوظ رکھ سکتا ہے تو جانور کی پیاس کے خیال سے تیمم جائز نہیں۔ ۴۷۲: جس کنویں سے عورتیں بچے گنوار پانی بھریں ناپاک نہیں۔ ۴۹۰: اگر وضو یوں کر سکتا ہے کہ پانی مستعمل نہ ہونے پائے جس کا طریقہ صفحہ ۳۹۰ میں ہے تو کسی حاجت کے سبب تیمم جائز نہیں۔ ۴۷۳: جو برتن

زمین پر رکھا جائے اور پیندے کی نجاست تحقیق نہ ہونا پاک نہ ہوگا۔ ۴۹۳: کافر ذمی کی پیاس کے لیے تیمم کا حکم ہونا چاہیے یہاں کوئی کافر ذمی نہیں۔

صفحہ ۱۹ از ۷۱۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Masah on Socks (Masah Khaffain) - Water in a vessel becomes impure if a drunkard with long mustaches drinks from it. | 316 - Washing feet is better than wiping over socks (Masah), but where not doing Masah leads to suspicion, then Masah is better. | 311 - Every flowing thing becomes pure by flowing together with pure water of its own kind. | 352 - Wiping over the socks (Masah) will occur by walking in grass wet with dew. | 460 - In boiling, length and width are not conditions. | 352

Menstruation (Hayd) - There are three conditions for this flowing. | 353 - It is commendable (Mustahab) for a woman in menstruation or postpartum bleeding to perform ablution (Wudu) at prayer times and engage in the remembrance of Allah for a while. | 44 - As long as it doesn't boil, even the pure will become impure; when it boils, everything will become pure. | 353

Impurities (Anjas) - Flowing some distance in a furnace is not a condition. | 356 - A mouse died in solidified clarified butter (Ghee). | 161 - As long as it is boiling, it will not become impure even from other impurities. | 356 - Author's research on the cause of a pure thing becoming impure due to impurity. | 163 - Whatever comes out and falls by boiling is also pure. | 357 - Ruling on wrapping a pure cloth in an impure one, or an impure one in a pure one. | 163 - If a bucket or vessel is impure from the inside, it will become pure by boiling, and rulings for when the upper surface or bottom is impure. | 360 - Author's research that water becomes impure instantly, not gradually, and meeting a part of a thing is meeting the whole. | 164 - Boiling from the side it entered and returning to the same side will not be sufficient. | 361 - Lime extinguished in impure water is non-visible impurity. | 282 - Keeping the vessel level during boiling is also not a condition, but if it's tilted, water must be poured from the higher side. | 363

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

मसह खुफ़्फ़ैन (मोज़ों पर मसह) - बड़ी मूँछों वाला शराबी जिस बर्तन में पानी पीये वह नापाक हो जाएगा। | 316 - मोज़ों पर मसह करने से पैर धोना बेहतर है, लेकिन जहाँ मसह न करने पर बुरा गुमान हो तो मसह करना बेहतर है। | 311 - हर बहने वाली चीज़ अपनी तरह के पाक पानी के साथ मिलकर बहने से पाक हो जाएगी। | 352 - ओस से भीगी घास में चलने से मोज़ों का मसह हो जाएगा। | 460 - उबालने में लंबाई और चौड़ाई की कोई शर्त नहीं है। | 352

हैज़ (मासिक धर्म) - इसके बहने की तीन शर्तें हैं। | 353 - हैज़ और निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्राव) वाली महिला के लिए मुस्तहब है कि वह नमाज़ के समय वज़ू करके कुछ देर अल्लाह का ज़िक्र करे। | 44 - जब तक उबलेगा नहीं, पाक भी नापाक हो जाएगा; जब उबल जाएगा, तो सब पाक हो जाएगा। | 353

अन्जास (अशुद्धियाँ) - भट्टी में कुछ दूर बहकर जाना शर्त नहीं है। | 356 - जमे हुए घी में चूहा मर गया। | 161 - जब तक उबल रहा है, किसी और नजासत (गंदगी) से भी नापाक नहीं होगा। | 356 - पाक चीज़ के नापाक होने के कारण पर लेखक का शोध। | 163 - उबालने से जो कुछ बाहर निकल कर गिरा, वह भी पाक है। | 357 - नापाक कपड़े में पाक कपड़ा लपेटा गया या पाक में नापाक, तो क्या हुक्म है। | 163 - डोल या बर्तन अंदर से नापाक है तो उबालने से पाक हो जाएगा, और ऊपरी सतह या पेंदे के नापाक होने के बारे में हुक्म। | 360 - लेखक का शोध कि पानी का नापाक होना अचानक होता है, धीरे-धीरे नहीं, और किसी चीज़ के एक हिस्से से मिलना पूरे से मिलना है। | 164 - उबालने में जिस तरफ से दाखिल हुआ उसी तरफ लौट आया तो काफी न होगा। | 361 - नापाक पानी में बुझाया हुआ चूना अदृश्य नजासत है। | 282 - उबालने में बर्तन को समतल रखना भी शर्त नहीं है, लेकिन अगर वह झुका हुआ हो तो यह ज़रूरी है कि ऊँची तरफ से पानी डालें। | 363

पृष्ठ 20 / 711

مسح خفین - بڑی مونچھوں والا شرابی جس برتن میں پانی پیئے ناپاک ہو جائے گا۔ | ۳۱۶ - مسح موزہ سے پاؤں دھونا افضل ہے مگر جہاں مسح نہ کرنے پر بد گمانی ہوتی ہو تو مسح افضل ہے | ۳۱۱ - ہر بہتی چیز اپنی جنس طاہر یا پاک پانی کے ساتھ مل کر بہنے سے پاک ہو جائے گی۔ | ۳۵۲ - شبنم سے تر گھاس میں چلنے سے موزہ کا مسح ہو جائے گا۔ | ۴۶۰ - ابالنے میں طول و عرض کچھ شرط نہیں۔ | ۳۵۲

حیض - اس بہنے کی تین شرطیں ہیں۔ | ۳۵۳ - حیض و نفاس والی کو مستحب ہے کہ نمازوں کے وقت وضو کر کے کچھ دیر ذکر الٰہی کرے۔ | ۴۴ - جب تک ابلے گا نہیں یہ پاک بھی ناپاک ہو جائے گا جب ابلے سب پاک ہو جائے گا۔ | ۳۵۳

انجاس - لنے میں کچھ دور بہہ کر جانا شرط نہیں۔ | ۳۵۶ - جمے ہوئے گھی میں چوہا مر گیا۔ | ۱۶۱ - جب تک ابل رہا ہے کسی اور نجاست سے بھی ناپاک نہ ہو گا۔ | ۳۵۶ - تحقیق المصنف فی سبب تنجس الطاہر بالنجس۔ | ۱۶۳ - ابلانے سے جو کچھ باہر نکل کر گرا وہ بھی پاک ہے۔ | ۳۵۷ - ناپاک کپڑے میں پاک کپڑا لپیٹا گیا یا پاک میں ناپاک تو کیا حکم ہے۔ | ۱۶۳ - ڈول یا برتن اندر سے ناپاک ہے تو ابالنے سے پاک ہو جائے گا اور اوپر کی سطح یا تلا ناپاک ہے تو اس کے احکام۔ | ۳۶۰ - تحقیق المصنف ان تنجس الماء دفعی لا تدریجی وان ملاقاۃ شیئ لبعضہ ملاقاۃ لکلہ۔ | ۱۶۴ - ابالنے میں جس طرف سے داخل ہوا اسی طرف لوٹ آیا تو کافی نہ ہو گا۔ | ۳۶۱ - ناپاک پانی میں بجھایا ہوا چونا نجاست غیر مرئیہ ہے۔ | ۲۸۲ - ابالنے میں برتن کا ہموار رکھنا بھی شرط نہیں مگر جھکا ہوا ہو تو یہ ضرور ہے کہ اونچی جانب سے پانی ڈالیں۔ | ۳۶۳

Fatawa Rizvia, Volume Second

- Method for purifying flowing substances such as milk, ghee, oil, etc. (P. 368) | Movement of water within a vessel is not considered flowing until it overflows. However, if there's a smaller vessel inside such that water overflows and spills due to this movement, it is considered flowing for that vessel. (P. 368)
- Its second method. (P. 368) | If the impurity is non-perceptible, it becomes absolutely pure upon flowing. If the impurity is visible, it remains pure as long as it's overflowing; it becomes impure as soon as it stops. (P. 368)
- If flowing water passed over impurities and they dissolved in it until they were no longer discernible, this water will not be impure even when it becomes stagnant. (P. 378) | All three washings of water used for cleaning impurity are impure. (P. 378)
- If non-perceptible impurity fell into a small amount of water and turned into mud, and then that water was drained, it becomes pure. (P. 378) | While washing off impurity, water becomes impure at the moment it separates from the body or cloth. (P. 378)
- If drops of blood fell into flowing syrup but its effect is not apparent, it remains pure. (P. 396) | When placing a cloth in a basin for washing, it is better to place the cloth first and then pour water over it. (P. 374)
- If a flowing substance becomes impure and then solidifies, and if melting it is difficult, washing its surface will make it pure. (P. 414) | The body will also become pure by being dipped in all three waters of the basin. (P. 374)
- If a kid (young goat) dies, the milk within its stomach is pure. (P. 414) | If an impure cloth is put into a basin for washing, it remains pure until separated from it, although it may apparently make another cloth impure. (P. 374)
- In washing impurity, it is necessary for the water to drain away and for there to be a strong probability that the impurity is gone. (P. 412) | The stream from a lota etc., while in the air, does not become impure by coming into contact with any impurity. (P. 375)
- The silkworm, its liquid, and its excrement are also pure. (P. 463) | The author's profound research on the outcome of water meeting impurity, and the differences in rulings whether water falls on impurity or impurity on water. (P. 376)

- A worm produced from impurity is itself pure. (P. 463) | If impurity falls into running or abundant water, it is not destroyed but fails to leave an effect. (P. 377)
- Ruling regarding the water and clothing of Hindus and other non-believers. (P. 474) | If running water falls upon non-perceptible impurity, it will eliminate it. Rulings regarding water poured over impurity on the ground. (P. 377)

फतावा रज़विया, जिल्द सानी

- दूध, घी, तेल आदि बहने वाली चीज़ों को पाक करने का तरीका। (पृ. ३६८) | किसी बर्तन के अंदर पानी की हरकत बहना नहीं है जब तक वह उबल न जाए, लेकिन अगर उसके अंदर छोटा बर्तन हो कि पानी इस हरकत से बहकर उबल जाए तो उसके हक में बहना हो गया। (पृ. ३६८)
- इसका दूसरा तरीका। (पृ. ३६८) | नजासत गैर-मरइया (अदृश्य गंदगी) है तो बहते ही पूर्णतः पाक हो जाएगा और नजासत मरइया (दृश्य गंदगी) अगर बाकी है तो जब तक उबल रहा है पाक है, रुकते ही नापाक हो जाएगा। (पृ. ३६८)
- बहता पानी नजासतों पर से गुजरा और वे उसमें मिलकर गायब हो गईं, तो यह पानी रुकने पर भी नापाक नहीं होगा। (पृ. ३७८) | नजासत धोने के तीनों पानी नापाक हैं। (पृ. ३७८)
- कम पानी में अदृश्य नजासत पड़कर मिट्टी हो गई फिर उस पानी को बहा दिया तो पाक हो गया। (पृ. ३७८) | नजासत धोने में पानी बदन या कपड़े से जब अलग होगा तब नापाक होगा। (पृ. ३७८)
- बहते हुए शीरे में खून की छींटे पड़ गईं जिसका असर जाहिर न हुआ, वह पाक रहेगा। (पृ. ३९६) | कपड़ा धोने के लिए तश्त (बेसिन) में डालें तो बेहतर यह है कि पहले कपड़ा रखकर ऊपर से पानी डालें। (पृ. ३७४)
- बहती हुई चीज़ नापाक होकर जम गई, अगर उसे पिघलाना कठिन है तो ऊपर से धो ले, पाक हो जाएगी। (पृ. ४१४) | बदन भी तश्त के तीनों पानियों में डालने से पाक हो जाएगा। (पृ. ३७४)
- बकरी का बच्चा मर गया, उसके पेट में जो दूध है वह पाक है। (पृ. ४१४) | नापाक कपड़ा तश्त के पानी में धोने को डाला, जब तक उससे अलग न होगा पाक रहेगा, मगर जाहिर है दूसरे कपड़े को नापाक कर देगा। (पृ. ३७४)
- नजासत धोने में ज़रूरी है कि वह पानी निकल जाए और नजासत न रहने का प्रबल अनुमान हो जाए। (पृ. ४१२) | लोटे आदि की धार जब तक हवा में है, किसी नजासत के मिलने से नापाक नहीं होगी। (पृ. ३७५)
- रेशम का कीड़ा और उसका पानी और उसकी बीट भी पाक है। (पृ. ४६३) | मुसन्निफ (लेखक) की महान शोध: पानी और नजासत के मिलने के परिणाम, और नजासत पानी पर गिरे या पानी नजासत पर, इनके हुक्मों का अंतर। (पृ. ३७६)

- नजासत से जो कीड़ा पैदा होता है वह स्वयं पाक है। (पृ. ४६३) | बहते या अधिक पानी पर नजासत गिरने से वह नष्ट नहीं होती बल्कि प्रभाव नहीं छोड़ती। (पृ. ३७७)
- हिंदू आदि काफिरों के पानी और कपड़े का हुक्म। (पृ. ४७४) | बहता पानी अदृश्य नजासत पर गिरे तो उसे मिटा देगा। ज़मीन पर नजासत थी उस पर पानी बहाया, इसके हुक्म। (पृ. ३७७)

पृष्ठ २१ का ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

۳۶۸ | کسی ظرف کے اندر پانی کی حرکت بہنا نہیں جب تک نہ اُبلے مگر اس کے اندر چھوٹا ظرف ہو کہ پانی کی اس حرکت سے بہہ کر اُبل جائے تو اس کے حق میں بہنا ہو گیا۔ | ۳۶۸ | دودھ، گھی، تیل وغیرہ بہتی چیزوں کے پاک کرنے کا طریقہ۔ ۳۶۸ | نجاست غیر مرئیہ ہے تو بہتے ہی مطلقاً پاک ہو جائے گا اور نجاست مرئیہ اگر باقی ہے تو جب تک اُبل رہا ہے پاک ہے تھمتے ہی ناپاک ہو جائے گا۔ | ۳۶۸ | اس کا دوسرا طریقہ۔ ۳۷۸ | نجاست دھونے کے تینوں پانی ناپاک ہیں۔ | ۳۷۸ | بہتا پانی نجاستوں پر گزرا اور وہ اس میں مل کر نا معلوم ہو گئیں یہ پانی ٹھہرنے پر بھی ناپاک نہ ہو گا۔ ۳۷۸ | نجاست دھونے میں پانی بدن یا کپڑے سے جب جُدا ہوگا اس وقت ناپاک ہوگا۔ | ۳۷۸ | قلیل پانی میں نجاست غیر مرئیہ پڑ کر مٹی ہوگئی پھر اس پانی کو بہا دیا پاک ہو گیا۔ ۳۷۴ | کپڑا دھونے کے لیے طشت میں ڈالیں تو بہتر یہ ہے کہ پہلے کپڑا رکھ کر اوپر سے پانی ڈالیں۔ | ۳۹۶ | بہتے شیرہ میں خون کی چھینٹ پڑگئی جس کا اثر ظاہر نہ ہوا پاک رہے گا۔ ۳۷۴ | بدن بھی طشت کے تینوں پانیوں میں ڈالنے سے پاک ہو جائے گا۔ | ۴۱۴ | بہتی ہوئی چیز ناپاک ہو کر جم گئی اگر اس کا پگھلانا دشوار ہے اوپر سے دھو ڈالے پاک ہو جائے گی۔ ۳۷۴ | ناپاک کپڑا طشت کے پانی میں دھونے کو ڈالا جب تک اُس سے جدا نہ ہوگا پاک رہے گا مگر ظاہر اُدوسرے کپڑے کو ناپاک کر دے گا۔ | ۴۱۴ | بکری کا بچہ مر گیا اس کے پیٹ میں جو دودھ ہے پاک ہے۔ ۳۷۵ | لوٹے وغیرہ کی دھار جب تک ہوا میں ہے کسی نجاست کے ملنے سے ناپاک نہ ہوگی۔ | ۴۱۲ | نجاست کے دھونے میں ضرور ہے کہ وہ پانی نکل جائے اور نجاست نہ رہنے کا ظن غالب ہو جائے۔ ۳۷۶ | مصنف کی تحقیق جلیل ملاقات آب و نجس کے ثمرے اور پانی نجاست پر وارد ہو یا نجاست پانی پر اس کے فرق احکام۔ | ۴۶۳ | ریشم کا کیڑا

اور اس کا پانی اور اس کی بیٹ بھی پاک ہے۔ ۳۷۷ | جاری یا کثیر پانی پر نجاست وارد ہو کر فنا نہیں ہوتی بلکہ اثر نہیں کرتی۔ | ۴۶۳ | نجاست سے جو کیڑا پیدا ہوتا ہے خود پاک ہے۔ ۳۷۷ | جاری پانی نجاست غیر مرئیہ پر وارد ہو تو اسے فنا کردے گا۔ زمین پر نجاست تھی اس پر پانی بہایا اس کے احکام۔ | ۴۷۴ | ہندو وغیرہ کافروں کے پانی اور کپڑے کا حکم۔

Fatawa Rizvia, Volume Second

Page Number	Subject/Ruling	Page Number	Subject/Ruling
529	If a pile of grain becomes impure and the exact location is unknown, and the grain is distributed or some of it is gifted or given as charity, then its use becomes permissible for everyone.	537	A sane adult cannot offer prayer behind a deaf person.
	What is the ruling if clothes become impure and the exact spot is forgotten?	538	Rulings regarding the Mosque
47	Impurity that sticks to animals' bodies becomes pure upon drying and cleaning.	562	It is prohibited (Haram) to throw or sprinkle water from Wudu (ablution) or Ghusl (ritual bath) in the mosque. If Wudu is performed with rose water, Wudu is not valid, but that rose water can be sprinkled in the mosque.
320	An animal's mouth became impure; it put its mouth into four vessels. The first three became impure, the fourth remained pure.	565	As long as there is an unpleasant odor in the body or clothes, it is prohibited (Haram) to enter the mosque and joining the congregation is forbidden.
	The blood of meat is pure, and if the animal is Halal, it's also Halal.	565	Funerals
62	**Istinja** (Cleansing after elimination)		Sins are washed away by every good deed, but their impurity is transferred only towards that thing

Page Number	Subject/Ruling	Page Number	Subject/Ruling
			which the Sharia has specifically designated for establishing that proximity. Eating food offered as 'Niyaz' to saints is blessed; considering it vile because of it being 'charity' is the vileness of the Wahabis.
112	Urinating in water is absolutely disliked (Makruh), even if it's in a river.	158	If a dead body is found floating after drowning, its Ghusl (bath) is considered done, but the obligation upon the living to give a bath is not fulfilled. Therefore, it is necessary to move the body in water with the intention of bathing it.
116	Water is not a condition for Istinja; any clean thing that removes the impurity is sufficient.	243	If a dead body is bathed without intention, the obligation is lifted but no reward will be gained.
570	Istinja with a dry clay clod provides full purity as long as the impurity hasn't spread more than the size of a rupee coin.	253	Wash the head and beard of the deceased with hollyhock (Khatmi), otherwise with pure soap.
	Rulings of Prayer		**Rulings of Fasting**
692 (Footnote)	Prayer will not be valid standing on impure ground while wearing shoes; it will be valid standing with feet on top of the shoes.	96	For a young man, kissing his wife while fasting is disliked (Makruh), but not for an elderly man.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द-ए-सानी

पृष्ठ संख्या	विषय/हुक्म	पृष्ठ संख्या	विषय/हुक्म
529	अनाज के ढेर में नापाकी हो गई और जगह मालूम न रही और अनाज बंट गया या किसी को उसमें से कुछ हिबा (उपहार) या सदका कर दिया गया, तो हर एक के लिए उसका इस्तेमाल जायज़ हो गया।	537	बहरे के पीछे आकिल बालिग (समझदार वयस्क) की नमाज़ नहीं हो सकती।
	कपड़ा नापाक हो गया और जगह याद न रही तो क्या हुक्म है?	538	अहकाम-ए-मस्जिद (मस्जिद के नियम)
47	जानवरों के बदन पर जो नजासत (गंदगी) लगती है, वह सूखकर साफ होने पर पाक हो जाती है।	562	वज़ू या गुस्ल का पानी मस्जिद में डालना या छिड़कना हराम है। अगर गुलाब जल से वज़ू किया तो वज़ू नहीं हुआ, लेकिन उस गुलाब जल को मस्जिद में छिड़क सकते हैं।
320	जानवर का मुँह नापाक हो गया, उसने चार बर्तनों में मुँह डाला। पहले तीन नापाक हो गए, चौथा पाक रहा।	565	जब तक बदन या कपड़े में बदबू हो, मस्जिद में जाना हराम है और जमाअत में शिरकत मना है।
	गोश्त का खून पाक है और अगर जानवर हलाल हो तो हलाल भी है।	565	जनाइज़ (जनाज़े के मसाइल)
62	**इस्तिंजा**		

पृष्ठ संख्या	विषय/हुक्म
112	पानी में पेशाब करना मुतलकन (पूर्णत:) मकरूह है, चाहे वह दरिया में ही क्यों न हो।
116	इस्तिंजे के लिए पानी शर्त नहीं है; हर पाक चीज़ जो नजासत को दूर कर दे, काफी है।
570	ढेले से इस्तिंजा पूरी तहारत (पवित्रता) है, बशर्ते कि नजासत रुपये भर से ज़्यादा न फैली हो।
	मसाइल-ए-नमाज़
692 (हाशिया)	नापाक ज़मीन पर जूता पहनकर खड़े होने से नमाज़ नहीं होगी, लेकिन जूतों के ऊपर पैर रखकर खड़े होने से नमाज़ हो जाएगी।

पृष्ठ संख्या	विषय/हुक्म
158	हर नेकी से गुनाह धुलते हैं, मगर उनकी नजासत सिर्फ उस चीज़ की तरफ मुंतकिल (स्थानांतरित) होती है जिसे शरीअत ने विशेष रूप से उस कुर्बत (निकटता) को कायम करने के लिए मुकर्रर किया हो। औलिया की नियाज़ का खाना मुतबर्रक (बरकत वाला) है; सदका होने के कारण इसे खबीस (बुरा) मानना वहाबियों की खबासत है।
	मुर्दा डूब कर ऊपर आ गया तो उसका गुस्ल हो गया, मगर ज़िंदों पर जो गुस्ल देना फर्ज़ है वह अदा न हुआ। लिहाज़ा लाज़िम है कि नहलाने की नियत से उसे पानी में जुम्बिश (हरकत) दें।
243	मुर्दे को बिना नियत के गुस्ल दिया तो फर्ज़ अदा हो गया मगर सवाब नहीं मिलेगा।
253	मय्यत के सर और दाढ़ी को खतमी (एक फूल) से धोएं वरना पाक साबुन से।
	मसाइल-ए-रोज़ा
96	रोज़े की हालत में अपनी बीवी का बोसा (चुंबन) लेना जवान के लिए मकरूह है, बूढ़े के लिए नहीं।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
	اناج کے ڈھیر میں ناپاکی ہوگئی اور جگہ معلوم نہ رہی اور ناج
۵۲۹	بٹ گیا یا کسی کو اس میں سے کچھ ہبہ یا صدقہ کردیا ہر ایک کو اس کا استعمال جائز ہو گیا۔
	کپڑا ناپاک ہو گیا اور جگہ یاد نہ رہی تو کیا حکم ہے۔
	جانوروں کے بدن کو جو نجاست
۴۷	لگتی ہے سوکھ کر صاف ہو کر پاک ہو جاتی ہے۔
	جانور کا منہ ناپاک ہو گیا اس
۳۲۰	نے چار برتنوں میں منہ ڈالا تین پہلے ناپاک ہوگئے چوتھا پاک رہا۔

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
۵۳۷	بہرے کے پیچھے عاقل بالغ کی نماز نہیں ہوسکتی۔
۵۳۸	احکام مسجد
۵۶۲	وضو یا غسل کا پانی مسجد میں ڈالنا چھڑکنا حرام ہے اور گلاب سے وضو کیا تو وضو نہ ہوا اور وہ گلاب مسجد میں چھڑک سکتے ہیں۔
۵۶۵	جب تک بدن یا کپڑے میں بدبو ہو مسجد میں جانا حرام جماعت میں شرکت منع۔
۵۶۵	جنائز

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
	گوشت کا خون پاک ہے اور جانور حلال ہو تو حلال بھی۔
۶۲	**استنجا**
۱۱۲	پانی میں پیشاب کرنا مطلقاً مکروہ ہے اگرچہ دریا میں ہو۔
۱۱۶	استنجے کے لیے پانی شرط نہیں ہر پاک چیز کہ نجاست کا ازالہ کردے کافی ہے۔
۵۷۰	ڈھیلے سے استنجا پوری طہارت ہے جبکہ نجاست روپے بھر سے زیادہ نہ پھیلی ہو۔

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
	ہر نیکی سے گناہ دھلتے ہیں مگر ان کی نجاست صرف اس چیز کی طرف منتقل ہوتی ہے جسے شرع نے بالخصوص اس قربت کی اقامت کو معین فرمایا ہو، نیاز اولیاء کا کھانا متبرک ہے صدقہ کے سبب اس میں خباثت ماننا وہابیہ کی خباثت ہے۔
۱۵۸	مردہ ڈوب کر اترا آیا اس کا غسل ہوگیا مگر زندوں پر جو غسل دینا فرض ہے ادا نہ ہوا۔ لہٰذا لازم کہ نہلانے کی نیت سے اسے پانی میں جنبش دے لیں۔
۲۴۳	مردے کو بے نیت غسل دیا فرض اتر گیا ثواب نہ ملے گا۔
۲۵۳	میت کے سر و ریش کو خطمی سے دھوئیں ورنہ پاک صابون سے۔

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
	مسائل نماز
۶۹۲ (حاشیہ)	ناپاک زمین پر جوتا پہنے کھڑا ہوا نماز نہ ہوگی اور جوتوں پر پاؤں رکھ کر کھڑا ہوا ہو جائے گی۔

صفحہ نمبر	مضمون / حکم
	مسائل روزہ
۹۶	روزہ میں اپنی عورت کا بوسہ لینا جوان کو مکروہ ہے بوڑھے کو نہیں۔

Fatawa Razawiyya - Volume Two

- Issues of Jihad (Siyar):
- If there is an unknown dhimmi (non-Muslim citizen) in a fortress of warring infidels, it is forbidden to kill them. However, if some of them come out, or are taken out, or are killed against orders, then killing the rest will become permissible. (Page 538)
- Issues of Hajj:
- Pebbles thrown at the Jamarat become impure after washing away sins. They should not be reused. If necessary, wash them three times; indeed, washing pebbles is better in every way. (Page 55)
- Partnership Issues:
- What is the ruling if all brothers worked together on inherited property? (Page 512)
- Marriage Issues:
- It is permissible to take help for household chores from one's wife. (Reference 536 | Page 512)
- Whatever work a father and son or husband and wife do together, the profits belong only to the father and husband. (Page 512)
- When a bride is brought home, it is recommended to wash her feet and sprinkle that water in the four corners of the house; this brings blessings. (Reference 595 | Page 512)
- If a father and son together acquire a permissible thing, the son is the owner of what he himself acquired. (Page 512)
- Oath Issues:
- If two people strive to acquire a permissible thing, who will own it? (Page 513)
- An oath to pray will not be fulfilled by a funeral prayer but will be fulfilled by an eclipse prayer. (Reference 681 | Page 514)
- The owner of permissible wood will be the person who cuts it, not the one who gathers or carries it. (Page 514)
- An oath not to eat meat will not be broken by eating fish. (Reference 686 | Page 519)

- If two companions mix their goods while traveling or staying and eat together, there is no harm, even if one eats more and the other less. (Page 519)
- Issues of Jihad (Siyar):
- People who recite the Kalima of Islam and then deny any essential of religion are ruled like warring infidels, as they are apostates. (Page 483)
- Endowment (Waqf) Issues:
- It is forbidden to use endowed (waqf) water for anything other than its designated purpose, even for the person who made the endowment. (Reference 493 | Page 483)
- Noble research by the author: Verily, the endowment of water is not valid. (Page 484)

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो

- सियर के मसाइल (जिहाद सम्बन्धी):
- जंगी काफ़िरों के किले में यदि कोई अज्ञात धिम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) भी है, तो उन्हें मारना हराम है। लेकिन यदि उनमें से कुछ बाहर निकल जाएँ, या निकाल दिए जाएँ, या आदेश के विरुद्ध मारे जाएँ, तो शेष को मारना जायज़ हो जाएगा। (पृष्ठ 538)
- हज के मसाइल:
- कंकरियाँ जो जमरात पर मारी जाती हैं, गुनाह धोकर नापाक हो जाती हैं। उन्हें दोबारा काम में न लाएँ। यदि आवश्यकता हो, तो तीन बार धो लें; वास्तव में कंकरियों को धो लेना हर तरह से बेहतर है। (पृष्ठ 55)
- शिर्कत के मसाइल (साझेदारी):
- यदि सभी भाइयों ने मिलकर विरासत की संपत्ति पर काम किया, तो क्या हुक्म है? (पृष्ठ 512)
- निकाह के मसाइल:
- घरेलू कामकाज में अपनी पत्नी से मदद लेना जायज़ है। (संदर्भ 536 | पृष्ठ 512)
- बाप-बेटा या पति-पत्नी मिलकर जो काम करें, उसका मुनाफ़ा केवल बाप और पति का है। (पृष्ठ 512)
- जब दुल्हन शादी करके आए, तो मुस्तहब (पसंदीदा) है कि उसके पैर धोकर उस पानी को घर के चारों कोनों में छिड़कें, इससे बरकत होती है। (संदर्भ 595 | पृष्ठ 512)
- यदि बाप और बेटे ने मिलकर कोई मुबाह (अनुमत) चीज़ प्राप्त की, तो बेटा उसी हिस्से का मालिक है जो उसने प्राप्त किया। (पृष्ठ 512)
- कसम के मसाइल:
- यदि दो व्यक्तियों ने किसी मुबाह चीज़ को प्राप्त करने की कोशिश की, तो वह उनमें से किसकी होगी? (पृष्ठ 513)
- नमाज़ की कसम जनाज़े की नमाज़ से पूरी नहीं होगी, लेकिन ग्रहण की नमाज़ (कुसूफ़) से हो जाएगी। (संदर्भ 681 | पृष्ठ 514)

- मुबाह लकड़ी का मालिक उसे काटने वाला होगा, न कि उसे इकट्ठा करने वाला या उठाने वाला। (पृष्ठ 514)
- मांस न खाने की कसम मछली खाने से नहीं टूटेगी। (संदर्भ 686 | पृष्ठ 519)
- यदि सफर या घर में दो साथी अपना सामान मिला लें और साथ मिलकर खाएं तो इसमें कोई हर्ज नहीं है, भले ही कोई कम खाए और कोई ज़्यादा। (पृष्ठ 519)

- सियर के मसाइल:

- जो लोग इस्लाम का कलिमा पढ़ते हैं और फिर धर्म की आवश्यक बातों में से किसी का खंडन करते हैं, उनका हुक्म जंगी काफ़िर की तरह है क्योंकि वे मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं। (पृष्ठ 483)

- वक्फ के मसाइल (दान सम्बन्धी):

- वक्फ किए गए पानी को उस उद्देश्य के अलावा किसी अन्य काम में खर्च करना हराम है जिसके लिए उसे वक्फ किया गया था, यहाँ तक कि स्वयं वक्फ करने वाले के लिए भी। (संदर्भ 493 | पृष्ठ 483)
- लेखक का विशेष शोध: वास्तव में पानी का वक्फ करना सही नहीं है। (पृष्ठ 484)

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

- مسائل سِیَر:
- حربی کافروں کے قلعہ میں کوئی غیر معروف ذمی بھی ہے تو ان کا قتل حرام ہے مگر اس صورت میں کہ اُن میں سے بعض نکل جائیں یا نکال دیئے جائیں یا خلاف حکم قتل کردیئے جائیں تو اب باقی کا قتل جائز ہو جائے گا۔ (صفحہ ۵۳۸)
- مسائل حج:
- کنکریاں کہ جمروں پر ماری جاتی ہیں گناہ دھو کر نجس ہو جاتی ہیں انہیں دوبارہ کام میں نہ لائے اور ضرورت ہو تو تین بار دھولے بلکہ کنکریوں کا دھولینا ہر طرح چاہیے۔ (صفحہ ۵۵)
- مسائل شرکت:
- ترکہ میں سب بھائیوں نے مل کر کام کیا تو کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۵۱۲)
- مسائل نکاح:
- خانگی کاروبار اپنی زوجہ سے لینا جائز ہے۔ (۵۳۶ | صفحہ ۵۱۲)
- باپ بیٹا یا زوج وزوجہ مل کر جو کام کریں منافع فقط باپ اور شوہر کے ہیں۔ (صفحہ ۵۱۲)
- جب دلہن بیاہ کر لائیں مستحب ہے کہ اس کے پاؤں دھو کر مکان کے چاروں گوشوں میں چھڑکیں اس سے برکت ہوتی ہے۔ (۵۹۵ | صفحہ ۵۱۲)
- مباح چیز اگر باپ بیٹے نے مل کر حاصل کی تو جتنی بیٹے نے حاصل کی وہی مالک ہے۔ (صفحہ ۵۱۲)

- مسائل قسم:

- اگر کسی مباح چیز کے حاصل کرنے میں دو نے کوشش کی تو وہ ان میں کس کی ہوگی۔ (صفحہ ۵۱۳)
- نماز کی قسم جنازہ کی نماز سے پوری نہ ہوگی گھن کی نماز سے ہو جائے گی۔ (۶۸۱ | صفحہ ۵۱۴)
- مباح لکڑی کا مالک کاٹنے والا ہوگا نہ اس کا جمع کرنے والا یا اٹھانے والا۔ (صفحہ ۵۱۴)
- گوشت کھانے کی قسم مچھلی کھانے سے نہ ٹوٹے گی۔ (۶۸۶ | صفحہ ۵۱۹)
- سفر یا حضر میں دو رفیق اپنا مال ملالیں اور مل کر کھائیں تو اس میں حرج نہیں اگرچہ ایک زیادہ کھائے گا دوسرا کم۔ (صفحہ ۵۱۹)

- مسائل سِیَر:

- جو لوگ کلمہ اسلام پڑھتے اور پھر ضروریات دین سے کسی شے کا انکار کرتے ہیں ان کا حکم مثل حربی ہے کہ وہ مرتد ہیں۔ (صفحہ ۴۸۳)

- مسائل وقف:

- وقف کا پانی جس لیے وقف کیا اس کے غیر میں صرف کرنا حرام یہاں تک کہ خود واقف کو۔ (۴۹۳ | صفحہ ۴۸۳)
- تحقیق شریف للمصنّف ان الماء لا یصح وقفه (صفحہ ۴۸۴)

- Movable objects can only be endowed (waqf) without immovable property if there is a custom of endowing them. [Ref: 484] | Taking water from mosque water-carriers (saqay) to homes is forbidden except in one case. [Ref: 489]
- If there is a custom, then rupees, gold coins (Ashrafi), and notes can also be endowed. [Ref: 484] | Taking hot water from water-carriers to homes is forbidden. [Ref: 489]
- If there is a custom, wheat can be endowed; if there is a custom, cows, buffaloes, and goats can be endowed. [Ref: 484] | If there is permission from the provider of a public drinking fountain (Sabeel) for women to take water home for drinking, then it is permissible, otherwise not. [Ref: 489]
- Endowing a charpoy (cot) and cloth for funerals, the Holy Quran for reading, and books for study is permissible. [Ref: 485] | It is not permissible for anyone other than those for whom the Sabeel was set up to drink from it. [Ref: 489]
- The endowment of a bridge and water supply is valid. [Ref: 486] | **Issues of Agency (Wakalat)**
- Along with immovable property, its appurtenances can be endowed even without custom. [Ref: 486] | If an agent is appointed to buy a horse and no specific horse is designated, and he buys one, then does that horse belong to the agent or the principal? [Ref: 507]
- An endowment cannot be anyone's property, but what is endowed for a community becomes their property after its yield is given to them, and the fruits of a family endowment are their property. [Ref: 488] | **The issue of invalidity of agency in permissible acts, its knowledge, and its rights.** [Ref: 521]
- Water filled from endowment funds in mosques and schools does not belong to anyone. It is not permissible to use it for a purpose other than what the endower (waqif) intended. [Ref: 488] | **Issues of Gift (Hiba)**
- The water of a Sabeel set up by a person from their own property remains their property. It can only be used for the purpose for which permission was given, then or now. [Ref: 488] | Items sent in the name of children but intended for the parents belong to the parents. [Ref: 514]
- [Blank] | If it is known that it was given only to the children, then the parents cannot use it for themselves as long as they are not in need. [Ref: 517]

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

- चल वस्तुएं अचल संपत्ति के बिना केवल तभी वक्फ की जा सकती हैं जब उनके वक्फ का रिवाज हो। [संदर्भ: ४८४] | मस्जिद के सक्काओं का पानी घरों में ले जाना हराम है, सिवाय एक सूरत के। [संदर्भ: ४८९]
- अगर रिवाज हो तो रुपये, अशर्फी और नोट भी वक्फ किए जा सकते हैं। [संदर्भ: ४८४] | सक्काओं से गर्म पानी घरों में ले जाना हराम है। [संदर्भ: ४८९]
- रिवाज हो तो गेहूं भी वक्फ किया जा सकता है; रिवाज हो तो गाय, भैंस, बकरी वक्फ की जा सकती है। [संदर्भ: ४८४] | पीने की सबील से अगर औरतों के पीने के लिए घरों में ले जाने की इजाजत है तो जायज है, वरना नहीं। [संदर्भ: ४८९]
- जनाजे के लिए चारपाई और चादर, कुरान मजीद मुताले के लिए और किताबों का वक्फ जायज है। [संदर्भ: ४८५] | सबील लगाने वाले ने जिन लोगों के लिए लगाई, उनके अलावा दूसरों का उससे पीना जायज नहीं। [संदर्भ: ४८९]
- पुल और सक़्क़ा का वक्फ सही है। [संदर्भ: ४८६] | **मसाईल-ए-वकालत (एजेंसी के मामले)**
- अचल संपत्ति के साथ उसके सहायक सामान भी बिना रिवाज के वक्फ किए जा सकते हैं। [संदर्भ: ४८६] | घोड़ा खरीदने के लिए वकील बनाया और कोई विशेष घोड़ा तय नहीं किया, और उसने खरीदा, तो वह घोड़ा वकील की मिल्कियत हुआ या मुवक्किल की? [संदर्भ: ५०७]
- वक्फ किसी की मिल्कियत नहीं हो सकता, लेकिन जो वक्फ किसी कौम पर है, उसकी पैदावार उन्हें दिए जाने के बाद उनकी मिल्कियत हो जाएगी और वक्फ-ए-अहली (पारिवारिक वक्फ) के फल उनकी मिल्कियत हैं। [संदर्भ: ४८८] | **मुबाह कार्यों में वकालत की शून्यता का मामला, उसकी जानकारी और उसके अधिकार।** [संदर्भ: ५२१]
- मस्जिदों और मदरसों के सक्काओं में वक्फ के पैसे से जो पानी भरा गया, वह किसी की मिल्कियत नहीं। वक्फ करने वाले ने जिस उद्देश्य के लिए उसे वक्फ किया, उसके अलावा किसी और काम में उसका उपयोग जायज नहीं। [संदर्भ: ४८८] | **मसाईल-ए-हिबा (उपहार के मामले)**
- आदमी अपनी मिल्कियत से जो सबील लगाए, उसका पानी उसी की मिल्कियत रहता है। जिस काम के लिए उसकी इजाजत दी गई है या अब दी गई, उसी में खर्च हो सकता है। [संदर्भ:

४८८] | जो चीज बच्चों के नाम करके भेजी जाए और मकसद मां-बाप को देना हो, उसके मालिक मां-बाप ही होंगे। [संदर्भ: ५१४]

- [खाली] | अगर मालूम हो कि बच्चों ही को दी गई है, तो मां-बाप जब तक मोहताज न हों, उसे अपने खर्च में नहीं ला सकते। [संदर्भ: ५१७]

اشیائے منقولہ بغیر جائداد غیر منقولہ وہی وقف ہو سکتی ہیں جن کے وقف کا رواج ہو۔ ۴۸۴ | مسجد کے سقایوں کا پانی گھروں میں لے جانا حرام ہے مگر ایک صورت میں۔ ۴۸۹ اگر رواج ہو تو روپے اشرفی نوٹ بھی وقف ہو سکتے ہیں۔ ۴۸۴ | سقایوں سے گرم پانی گھروں میں لے جانا حرام ہے۔ ۴۸۹ رواج ہو تو گیہوں بھی وقف ہو سکتی ہیں رواج ہو تو گائے، بھینس، بکری وقف ہو سکتی ہے۔ ۴۸۴ | پینے کی سبیل سے اگر عورتوں کے پینے کیلئے گھروں میں لے جانے کی اجازت ہے تو جائز ہے ورنہ نہیں۔ ۴۸۹ جنازہ کے لیے چار پائی چادر پڑھنے کے لیے قرآن مجید مطالعہ کے لیے کتابوں کا وقف جائز ہے۔ ۴۸۵ | سبیل لگانے والے نے جن لوگوں کے لئے لگائی ان کے غیر کو اس سے پینا جائز نہیں۔ ۴۸۹ پل اور سقائے کا وقف صحیح ہے۔ ۴۸۶ | مسائل وکالت جائداد غیر منقولہ کے ساتھ اس کے توابع بغیر رواج بھی وقف ہو سکتے ہیں۔ ۴۸۶ | گھوڑا خریدنے کو وکیل کیا اور کوئی خاص گھوڑا معین نہ کیا اور اس نے خرید تو وہ گھوڑا وکیل کی ملک ہوا یا مؤکل کی۔ ۵۰۷ وقف کسی کی ملک نہیں ہو سکتا مگر جو وقف کسی قوم پر ہے اس کے حاصل انہیں دیے جانے کے بعد ان کی ملک ہو جائیں گے اور وقف اہلی کے پھل ان کی ملک ہیں۔ ۴۸۸ | مسئلۃ بطلان التوکیل بالمباحات وعلمھا ومالھا علیہا۔ ۵۲۱ مسجدوں مدرسوں کے سقایوں میں زر وقف سے جو پانی بھر گیا کسی کی ملک نہیں واقف نے جس غرض کے لیے اسے وقف کیا اس کے غیر میں اس کا صرف جائز نہیں۔ ۴۸۸ | مسائل ہبہ آدمی اپنی ملک سے جو سبیل لگائے اس کا پانی اسی کی ملک رہتا ہے جس کام کے لیے اس کی اجازت ہے یا اب ہوا اسی میں صرف ہو سکتا ہے۔ ۴۸۸ | جو چیز بچوں کا نام کر کے بھیجی جائے اور مقصود ماں باپ کو دینا

ہو اس کے مالک ماں باپ ہی ہوں گے۔ ۵۱۴ | اگر معلوم ہو کہ بچوں ہی کو دی تو ماں باپ جب تک محتاج نہ ہوں اپنے صرف میں نہیں لا سکتے۔ ۵۱۷

Fatawa Rizvia Volume II

Page 523: If an owner allows someone to use his property, that person does not become the owner. A guest is not permitted to give any part of the food to anyone without the owner's permission. Page 530: If a person is hired to bring a permissible item, who will that item belong to? Whatever a guardian gives to a child for eating or drinking, even if they didn't make the child the owner, the child can give it to someone else, otherwise not. Page 537: Issues of Interdiction (Hijr) Issues of Hiring/ Lease Page 518: A permitted slave can host a customary feast. Page 500: Definition of a specific employee (Ajir-e-Khas) and its rulings. Page 527: When is it permissible to buy something from a child? Page 502: If someone is hired to bring a permissible item from the forest, they will receive a wage, and this person (the employee) will be the owner of the item. Page 527: Ruling on gifts and sales by a minor. Page 502: If a wage is fixed for carrying a permissible item but the time is not set, the lease is invalid (fasid), and its rulings. Page 529: Ruling on buying, selling, gifting, etc., by a deaf person is like that of a sane child. Page 502: If a wage is fixed for working on one's own property, the lease is valid. Page 535: Rulings on the dealings of a child. Page 502: If someone is hired to kill an escaped lion or wolf, the lease is invalid, and its ruling. Issues of Usurpation (Ghasab) Page 505: Rulings on hiring for fighting a case, etc., and that lawyers' fees are only valid according to Shariah if determined per hearing. Page 499: If something from a deceased's estate is given to another thinking it belongs to them, then it's found it belonged to the deceased, they will take it back, and if it's gone, they will take compensation. Page 505: If told to a baker: 'I have hired you for today to knead this flour for one rupee wage,' this lease is invalid because the contract applies to both work and time. Page 499: If one thought in accounting that 100 rupees are due to Zaid, then the error is realized, the rupees shall be taken back. Page 506: If said: 'I have hired you to bake this flour for one rupee on condition that you bake it today' or 'if you bake it today, I'll give one rupee,' it is permissible. Page 526: Ruling on utilizing a friend's property or employing their servant.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द-2

पेज 523: मालिक ने जिसे अपने माल के उपयोग की अनुमति दी, वह मालिक नहीं बन जाएगा। मेहमान को अनुमति नहीं है कि वह मालिक की इजाज़त के बिना खाने में से किसी को कुछ दे। पेज 530: मुबाह चीज़ लाने पर किसी को मज़दूर रखा तो वह चीज़ किसकी होगी? वली ने बच्चे को खाने-पीने के लिए जो चीज़ दी, भले ही उसे मालिक न बनाया हो, वह उसमें से दूसरे को दे सकता है, अन्यथा नहीं। पेज 537: हिज्र के मसले (प्रतिबंध के मुद्दे) इजारा के मसले (किरायेदारी/रोजगार के मुद्दे) पेज 518: माज़ून गुलाम (अनुमति प्राप्त दास) सामान्य दावत दे सकता है। पेज 500: अजीरे ख़ास (विशिष्ट कर्मचारी) की परिभाषा और उसके नियम। पेज 527: बच्चे से कोई चीज़ खरीदना कब जायज़ है? पेज 502: किसी को जंगल से कोई मुबाह चीज़ लाने पर नौकर रखा, उसे वेतन मिलेगा और चीज़ का मालिक यही (नौकर) होगा। पेज 527: नाबालिग के हिबा (उपहार) और बिक्री का हुक्म। पेज 502: यदि मुबाह चीज़ लादने पर मज़दूरी तय की और समय निर्धारित नहीं किया, तो इजारा फासिद (अवैध) है, और उसके नियम। पेज 529: खरीद-बिक्री, हिबा आदि में बहरे का हुक्म समझदार बच्चे (सबिय-ए-आक़िल) जैसा है। पेज 502: यदि अपनी संपत्ति पर काम करने के लिए मज़दूरी तय की तो इजारा सही है। पेज 535: बच्चे के लेन-देन के नियम। पेज 502: छूटे हुए शेर या भेड़िए को मारने के लिए मज़दूर रखा, तो इजारा फासिद है और उसका हुक्म। ग़सब के मसले (जबरन कब्ज़ा करने के मुद्दे) पेज 505: मुक़दमा लड़ने आदि कामों पर इजारा का हुक्म और यह कि वकीलों की फीस शरीयत के अनुसार तभी सही है जब पेशी पर समय तय किया जाए। पेज 499: वारिस की विरासत से कोई चीज़ दूसरे की समझकर उसे दे दी, फिर पता चला कि वह वारिस की ही थी, तो वापस लेगा और यदि न रही हो तो मुआवज़ा लेगा। पेज 505: नानबाई (रसोइए) से कहा: 'मैंने तुझे आज के लिए इस पर नौकर रखा कि यह आटा एक रुपये मज़दूरी पर गूँध दे', यह इजारा फासिद है क्योंकि इसमें काम और समय दोनों पर अनुबंध किया गया। पेज 499: हिसाब में समझा कि ज़ैद के सौ रुपये मुझ पर निकलते हैं, फिर उसकी गलती पता चली तो रुपये वापस लिए जाएंगे। पेज 506: अगर यूँ कहा: 'मैंने तुझे यह आटा पकाने के लिए एक रुपये पर मज़दूर रखा इस शर्त पर कि आज ही पका दे' या 'अगर आज पका दे तो एक रुपया दूँगा', तो यह जायज़ है। पेज 526: दोस्त के माल का उपयोग करने या उसके नौकर से काम लेने का हुक्म।

पेज 25 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

۵۲۳ مالک نے جسے اپنے مال میں تصرف مباح کیا وہ مالک نہ ہو جائے گا مہمان کو جائز نہیں کہ بے اجازت مالک کھانے میں سے کسی کو کچھ دے۔ ۵۳۰ مباح چیز لانے پر اجیر کیا تو وہ چیز کس کی ہوگی۔ ولی نے جو چیز بچہ کو کھانے پینے کو دی اگرچہ کو مالک نہ کردیا اس میں سے دوسرے کو دے سکتا ہے ورنہ نہیں۔ ۵۳۷ مسائل حجر مسائل اجارہ ۵۱۸ ماذون غلام معتاد دعوت کرسکتا ہے۔ ۵۰۰ اجیر خاص کی تعریف اور اس کے احکام۔ ۵۲۷ بچہ سے کوئی چیز خرید نا کس وقت جائز ہے ۵۰۲ کسی کو جنگل کی مباح چیز لانے پر نوکر رکھا اسے تنخواہ ملے گی اور چیز کا مالک یہ ہوگا۔ ۵۲۷ نابالغ کے ہبہ و بیع کا حکم۔ ۵۰۲ اگر مباح شے لادنے پر اجرت ٹھہرائی اور وقت مقرر نہ کیا اجارہ فاسد ہے اور اس کے احکام۔ ۵۲۹ خرید و فروخت ہبہ وغیرہ میں بوہرے کا حکم صبی عاقل کی مثل ہے۔ ۵۰۲ اگر اپنی ملک میں عمل کرنے کے لیے اُجرت قرار دی اجارہ صحیح ہے۔ ۵۳۵ تصرفات صبی کے احکام۔ ۵۰۲ چھوٹے ہوئے شیر یا بھیڑیے کے قتل پر اجیر مقرر کیا اجارہ فاسد ہے اور اس کا حکم۔ مسائل غصب ۵۰۵ مقدمہ لڑانا وغیرہ کاموں پر اجارہ کا حکم اور یہ کہ وکیلوں کی اُجرت شرعاً وہی صحیح ہے جو پیشی پر تعین وقت مقرر کی جائے۔ ۴۹۹ مورث کے ترکہ سے کوئی چیز دوسرے کی سمجھ کر اسے دے دی پھر معلوم ہوا کہ مورث ہی کی تھی واپس لے گا اور نہ رہی ہو تاوان لے گا۔ ۵۰۵ نان بائی سے کہا میں نے تجھے آج کے لیے اس پر اجیر کیا کہ یہ آٹا ایک روپے اجرت پر لگا دے یہ اجارہ فاسد ہے کہ اس میں عمل اور وقت دونوں پر عقدِ اجارہ وارد کیا۔ ۴۹۹ حساب میں سمجھا کہ زید کے سو روپے مجھ پر آتے ہیں پھر اس کی غلطی معلوم ہوئی روپے واپس لے گا۔ ۵۰۶ اگر یوں کہا کہ میں نے تجھے یہ آٹا پکانے کے لئے ایک روپے پر اجیر کیا اس شرط پر کہ آج ہی پکادے یا یوں کہ یہ آٹا آج پکادے ایک

روپیہ دوں گا تو یہ جائز ہے۔ ۵۲۶ دوست کے مال میں تصرف یا اس کے نوکر سے کام لینے کا حکم۔

Fatawa Rizvia - Volume Second

[Right Column] 314: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his progeny) forbade eating at a Christian's place. 316: Commandment in Hadith to avoid the utensils of Christians. 317: Hadith prohibits standing in a place of accusation (suspicion). 317: The commandment of Hadiths to avoid that which causes hatred among people. 319: Without a Sharia reason, such a thing is disliked which opens the door for backbiting. 319: Here, the command to avoid the food and water of Christians is more emphatic than that of Hindus. 455: One should not travel in the sea without any necessity. 475: It is disliked to eat or drink from the utensils of Hindus and Christians without purifying them. 493: The Imams state that if in a desert a dog and an enemy combatant (harbi) are dying of thirst, and a Muslim has water for only one's thirst, he should give it to the dog and not to the harbi. 535: Asking about everything without necessity is forbidden, and rulings on asking someone for work. 280: Wild grass is not the property of the land owner; however, if the land was ploughed and watered, then it becomes his property.

[Left Column] 541: If a minor's property gets mixed with another's property in such a way that it cannot be separated, that thing becomes prohibited for the owner. 540: The meanings of 'Mithli' (fungible) and 'Qimi' (non-fungible) and whether water is Mithli or Qimi; research of the author on this. **Issues of Partition** 539: Rule for adult heirs taking their own share from legacy money or grain in which a minor also has a portion. 539: Taking one's share from common money or grain in the absence of the partner. **Issues of Hunting, Slaughtering, and Sacrifice** 479: A net was set up for hunting, a prey got trapped, it became his property; however, if it was for training, then whoever catches it will own it. 514: The one who rounds up the prey is not the owner, but the one who actually catches it. **Issues of Restriction and Permission** 45: It is recommended to wash hands up to the wrists three times and rinse the mouth three times before eating, even if one is in a state of wudu. 56: Licking the vessel clean after eating is a Sunnah. **Issues of Reclaiming Barren Land**

फतावा रिज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

[दायाँ कॉलम] ३१४: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने ईसाई के यहाँ खाने से मना फरमाया। ३१६: हदीस में ईसाइयों के बर्तनों से बचने का हुक्म। ३१७: तोहमत (संदेह) वाली जगह खड़े होने से हदीस में मनाही आई है। ३१७: हदीसों का हुक्म कि उस बात से बचो जिससे लोगों में नफरत पैदा हो। ३१९: बिना किसी शरीयत की वजह के ऐसी बात मकरूह है जिससे उसकी ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) का दरवाज़ा खुले। ३१९: यहाँ ईसाइयों के खाने-पीने से बचना हिंदुओं के मुकाबले में ज़्यादा ताकीदी हुक्म है। ४५५: बिना किसी ज़रूरत के समुद्र में सफर नहीं करना चाहिए। ४७५: हिंदुओं और ईसाइयों के बर्तनों में बिना पाक (पवित्र) किए खाना-पीना मकरूह है। ४९३: आईमा (इमाम) फरमाते हैं कि अगर जंगल में कुत्ता और एक हर्बी (शत्रु) प्यास से मर रहे हों और मुसलमान के पास एक की प्यास भर पानी हो, तो वह कुत्ते को पिलाए, हर्बी को नहीं। ५३५: बिना ज़रूरत हर बात का सवाल करना हराम है और किसी से काम कहने के हुक्म। २८०: प्राकृतिक रूप से उगने वाली घास ज़मीन के मालिक की संपत्ति नहीं है, हाँ अगर ज़मीन जोती गई और पानी दिया गया तो वह उसकी मिल्कियत हो गई।

[बायाँ कॉलम] ५४१: यदि किसी नाबालिग की कोई चीज़ दूसरे की मिल्कियत में इस तरह मिल जाए कि वह अलग न हो सके, तो वह चीज़ मालिक के लिए हराम हो गई। ५४०: मिस्ली (एक जैसा) और क़ीमी (मूल्यवान) का अर्थ और क्या पानी मिस्ली है या क़ीमी, इसमें लेखक का शोध। **विभाजन (क़िस्मत) के मसले** ५३९: विरासत के रुपयों या अनाज में से, जिसमें नाबालिग का भी हिस्सा है, बालिग वारिसों द्वारा अपना हिस्सा लेने का हुक्म। ५३९: साझे के रुपयों या अनाज में से साझेदार की अनुपस्थिति में अपना हिस्सा लेना। **शिकार, ज़बीहा और क़ुर्बानी के मसले** ४७९: शिकार के लिए जाल लगाया, शिकार फँस गया तो वह उसकी मिल्कियत हो गया, और यदि प्रशिक्षण के लिए है तो जो पकड़ेगा वह उसका मालिक होगा। ५१९: शिकार को घेर कर लाने वाला मालिक नहीं होता, बल्कि उसे पकड़ने वाला होता है। **पाबंदी और अनुमति (हज़्र व इबाहत) के मसले** ४५: खाने से पहले कलाइयों तक तीन बार हाथ धोना और तीन बार कुल्ली करना मुस्तहब है, चाहे वज़ू ही क्यों न हो। ५६: खाना खाने के बाद बर्तन को चाटकर साफ़ करना मसनून (सुन्नत) है। **बंजर भूमि को आबाद करने (एहया-ए-मवात) के मसले**

पृष्ठ २६ / ७११

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

[دایاں کالم] ۳۱۴ | رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے نصرانی کے یہاں کھانے سے ممانعت فرمائی۔ ۳۱۶ | حدیث میں نصاریٰ کے برتنوں سے بچنے کا حکم۔ ۳۱۷ | تہمت کی جگہ کھڑے ہونے سے حدیث میں ممانعت آئی ہے۔ ۳۱۷ | حدیثوں کا حکم کہ اس بات سے بچو جس سے لوگوں کو نفرت پیدا ہو۔ ۳۱۹ | بلا وجہ شرعی ایسی بات مکروہ ہے جس سے اس کی غیبت کا دروازہ کھلے۔ ۳۱۹ | یہاں نصاریٰ کے کھانے پانی سے بہ نسبت ہنود کے بچنا زیادہ حکم ہے۔ ۴۵۵ | بے کسی ضرورت کے سمندر میں سوار ہونا نہ چاہیے۔ ۴۷۵ | ہنود و نصاریٰ کے برتن میں بغیر پاک کیے کھانا پینا مکروہ ہے۔ ۴۹۳ | ائمہ فرماتے ہیں اگر جنگل میں کتا اور ایک حربی پیاس سے مرے جاتے ہوں اور مسلمان کے پاس ایک پیاس کا پانی ہے کتے کو پلائے حربی کو نہ دے۔ ۵۳۵ | بے ضرورت ہر بات کا سوال حرام ہے اور کسی سے کام کو کہنے کے احکام۔ ۲۸۰ | خودرو گھاس مالک زمین کی ملک نہیں ہاں اگر زمین جوتی اور پانی دیا تو اس کی ملک ہو گئی۔

[بایاں کالم] ۵۴۱ | نابالغ کی کوئی چیز دوسرے کی ملک میں اس طرح مل جائے کہ جدا نہ ہوسکے وہ چیز مالک پر حرام ہو گئی۔ ۵۴۰ | مثلی اور قیمی کے معنی اور پانی مثلی ہے یا قیمی اس میں مصنف کی تحقیق۔ **مسائل قسمت** ۵۳۹ | ترکہ کے روپے یا اناج میں سے جس میں نابالغ کا بھی حصہ ہے بالغ وارثوں کا اپنا حصہ لینے کا حکم۔ ۵۳۹ | مشترک روپے یا اناج میں سے شریک کی غیبت میں اپنا حصہ لینا۔ **مسائل شکار و ذبیحہ و قربانی** ۴۷۹ | جال شکار کے لئے کھڑا کیا شکار پھنس گیا اس کی ملک ہو گیا اور سکھانے کے لیے تو جو پکڑے گا اس کی ملک ہوگا۔ ۵۱۴ | شکار کو گھیر کر لانے والا مالک نہیں ہوتا بلکہ پکڑنے والا۔ **مسائل حظر واباحت**

۴۵ | کھانے سے پہلے کلائیوں تک تین بار ہاتھ دھونا تین کلیاں کرنا مستحب ہے اگر چہ وضو ہو۔

۵۶ | کھانا کھا کر برتن کو چاٹ کر صاف کرنا مسنون ہے۔ **مسائل احیائے موات**

Fatawa-e-Razvia | Volume II

Nine forms of possession of a permissible (mubah) object, their rulings, and the author's formulation of a principle in this regard. | 495 | The owner of a well's water is not the one who fills it, but rather the one who separates it from the mouth of the well. | 513 Whoever takes possession of a permissible object first becomes its owner, based on the details mentioned. | 495 | Seventeen (17) scenarios of water filled by a minor and their rulings. | 525 Appointing a deputy or agent to bring a permissible object is futile; the one who takes possession will be the owner, not the one who appointed them. | 496 | Eight (8) scenarios in which others are not allowed to use water filled by a minor. | 526 If someone is made to hunt fish for another, the one who hunts becomes the owner. Similarly for every permissible thing in the wilderness. | 497 | If a minor water-carrier (Bhishti) is filling water, taking it from him for drinking or ablution is forbidden (haram). | 528 Three scenarios of asking someone to bring a permissible object without payment. | 500 | Seven (7) scenarios of taking water from a minor water-carrier and the author's research on them. | 528 If parents ask their children to bring a permissible object, whose property will it be? | 508 | A water-carrier is the owner of the water in his skin-bag until he pours it into another's vessel. | 529 What is the ruling if two people are partners in acquiring a permissible object? | 512 | No one can take the water filled by a "Bumra" (a specific category or type). | 529 Issues regarding Drinking | | Can even the parents of a "Bumra" use the water he has filled? | 529 The water in a well does not belong to the well owner; it is specifically the property of God. | 478 | It is stated in very reliable books that if a minor takes water from a basin or well and then pours it back, the water in that basin or well becomes forbidden for everyone. | 529 Rainwater that fills someone's vessel on its own does not become their property, though another cannot use that vessel without permission. | 481 | The author's exception of sixteen (16) scenarios from this difficult problem and a warning on other benefits. | 530 If the vessel was placed specifically to catch rainwater, then they become the owner. | 481 | If someone else pours the water owned by a minor back into a well or basin, even then, no one will be allowed to use that well or basin. | 531 | | From that well or basin, his/her parents can use it on the condition of necessity. | 531

फ़तावा-ए-रजविया | खंड द्वितीय

एक मुबाह (अनुमत) वस्तु पर कब्ज़ा करने के नौ तरीके, उनके नियम और इस बारे में लेखक द्वारा निर्धारित सिद्धांत। | ४९५ | कुएं के पानी का मालिक वह नहीं होता जो उसे भरता है, बल्कि वह होता है जो उसे कुएं के मुहाने से अलग करता है। | ५१३ जो मुबाह चीज़ पर पहले कब्ज़ा कर ले वह मालिक हो जाता है, उस विवरण के आधार पर जो उल्लेखित है। | ४९५ | एक नाबालिग द्वारा भरे गए पानी की सत्रह (१७) स्थितियां और उनके नियम। | ५२५ किसी मुबाह चीज़ को लाने के लिए किसी को प्रतिनिधि या वकील नियुक्त करना व्यर्थ है; जो कब्ज़ा करेगा वही मालिक होगा, न कि नियुक्त करने वाला। | ४९६ | वे आठ (८) स्थितियां जिनमें नाबालिग द्वारा भरे गए पानी में दूसरों का उपयोग करना जायज़ नहीं है। | ५२६ अगर किसी से मछलियाँ पकड़वाई जाएँ, तो पकड़ने वाला ही मालिक होता है। इसी तरह जंगल की हर मुबाह चीज़ के लिए भी यही नियम है। | ४९७ | यदि एक नाबालिग भिश्ती पानी भर रहा है, तो उससे पीने या वज़ू के लिए पानी लेना हराम है। | ५२८ बिना पारिश्रमिक के किसी से कोई मुबाह चीज़ मँगाने की तीन स्थितियाँ। | ५०० | नाबालिग भिश्ती से पानी लेने की सात (७) स्थितियाँ और उन पर लेखक का शोध। | ५२८ अगर माता-पिता अपनी संतान से कोई मुबाह चीज़ मँगवाएँ, तो वह किसकी मिल्कियत (संपत्ति) होगी? | ५०८ | मशक (चमड़े का थैला) का पानी ढोने वाला उस पानी का मालिक होता है जब तक कि वह उसे किसी दूसरे के बर्तन में न भर दे। | ५२९ मुबाह वस्तु प्राप्त करने में यदि दो व्यक्ति भागीदार हों तो क्या नियम है? | ५१२ | बुमरा (एक विशेष श्रेणी) का भरा हुआ पानी कोई नहीं ले सकता। | ५२९ पीने से संबंधित मसले | | क्या बुमरा के माता-पिता भी उसके द्वारा भरे गए पानी का उपयोग कर सकते हैं या नहीं। | ५२९ कुएं का पानी कुएं के मालिक का नहीं होता, वह विशेष रूप से अल्लाह की मिल्कियत है। | ४७८ | बहुत भरोसेमंद किताबों में लिखा है कि अगर किसी नाबालिग ने हौज़ या कुएं से पानी लेकर उसी में वापस डाल दिया, तो अब उस हौज़ या कुएं का पानी सब पर हराम हो गया। | ५२९ बारिश का पानी जो अपने आप किसी के बर्तन में भर जाए, वह उसकी मिल्कियत नहीं होगा, हालाँकि अनुमति के बिना दूसरा व्यक्ति उस बर्तन का उपयोग नहीं कर सकता। | ४८१ | लेखक द्वारा इस कठिन समस्या से सोलह (१६) स्थितियों को अपवाद स्वरूप अलग करना और अन्य लाभों पर चेतावनी। | ५३० अगर बर्तन इसीलिए रखा गया था कि बारिश का पानी उसमें आए, तो वह मालिक हो गया। | ४८१ | नाबालिग के स्वामित्व वाला पानी अगर कोई दूसरा कुएं या हौज़ में डाल दे, तब भी उस कुएं या हौज़

में किसी का उपयोग करना जायज़ नहीं रहेगा। | ५३१ | | उस कुएं या हौज़ से उसके माता-पिता ज़रूरत पड़ने की स्थिति में उपयोग कर सकते हैं। | ५३१

فتاویٰ رضویہ | جلد ثانی

شے مباح پر قبضہ کی نو صورتیں اور ان کے احکام اور مصنف کا اس میں ضابطہ وضع کرنا۔ | ۴۹۵ | کنویں کے پانی کا مالک بھرنے والا نہیں ہوتا بلالکہ وہ جو اسے کنویں کی مُن سے جدا کرے۔ | ۵۱۳ مباح پر جو پہلے قبضہ کرلے مالک ہو جاتا ہے اس تفصیل پر جو مذکور ہے۔ | ۴۹۵ | نابالغ کے بھرے ہوئے پانی کی سترہ ۱۷ صورتیں اور ان کے احکام۔ | ۵۲۵ کسی مباح چیز کے لانے کے لیے کسی کو نائب یا وکیل کرنا بے سود ہے قبضہ کرنے سے وہی مالک ہو گا نہ یہ۔ | ۴۹۶ | وہ آٹھ ۸ صورتیں جن میں نابالغ کے بھرے پانی میں دوسروں کو تصرف جائز نہیں۔ | ۵۲۶ کسی سے مچھلیاں شکار کرائیں شکار کرنے والا ہی مالک ہوا اسی طرح جنگل کی ہر مباح چیز۔ | ۴۹۷ | نابالغ بہشتی پانی بھر رہا ہے اس سے پینے یا وضو کو لینا حرام ہے۔ | ۵۲۸ بلاجرت کسی سے سے کوئی مباح چیز منگانے کی تین صورتیں۔ | ۵۰۰ | نابالغ بہشتی سے پانی لینے کی سات ۷ صورتیں اور ان میں مصنف کی تحقیق۔ | ۵۲۸ والدین اپنی اولاد سے کوئی مباح چیز منگوائیں وہ کس کی ملک ہو گی۔ | ۵۰۸ | سقا مشک کے پانی کا مالک ہے جب تک دوسرے کے برتن میں نہ بھرے۔ | ۵۲۹ مباح کی تحصیل میں دو شخص شریک ہوں تو کیا حکم ہے۔ | ۵۱۲ | بومرے کا بھرا ہوا پانی کوئی نہیں لے سکتا | ۵۲۹ مسائل شرب | | بومرے کا بھرا ہوا پانی اس کے ماں باپ بھی صرف میں لا سکتے ہیں یا نہیں۔ | ۵۲۹ کنویں کا پانی کنویں کے مالک کا نہیں خاص ملک خدا ہے۔ | ۴۷۸ | بہت معتمد کتابوں میں ہے کہ نابالغ نے حوض یا کنویں سے پانی لے کر اس میں ڈال دیا اب حوض یا کنویں کا پانی سب پر حرام ہو گیا۔ | ۵۲۹ مینہ کا پانی جس کے برتن میں خود بھر جائے وہ اس کی ملک نہ ہو گا ہاں بے اجازت دوسرا اس برتن

کو استعمال نہیں کر سکتا۔ | ۴۸۱ | مصنف کا اس مشکل مسئلہ سے سولہ ۱۶ صورتوں کا استثنا کرنا اور دیگر فوائد پر تنبیہ۔ | ۵۳۰ اگر برتن اسی لیے رکھا کہ مینہ کا پانی آئے تو مالک ہو گیا۔ | ۴۸۱ | نابالغ کا مملوک پانی اگر کوئی دوسرا کنویں یا حوض میں ڈال دے جب بھی اس کنویں یا حوض میں کسی کو تصرف جائز نہ رہے گا۔ | ۵۳۱ | | اس کنویں یا حوض سے اس کے والدین بشرط احتیاج استعمال کر سکتے ہیں۔ | ۵۳۱

Fatawa-e-Razvia Volume Two

Ref	Legal Ruling / Topic
511	If water belonging to a minor is mixed into a well or a public or private pool, it cannot even be purchased.
511	Ruling on water filled by male and female slaves.
520	These rulings apply to stagnant water, even if it is more than ten-by-ten cubits, but not to running water.
520	Water in which a minor's water has been mixed cannot even be discarded. However, if such a well becomes impure, buckets can be drawn to purify it.
521	The pool in which a minor's water was mixed, if it overflowed on its own or due to rain, it is now permissible, but boiling it oneself is not permissible.
527	Discussion on the solution to this problem.
527	Praise be to Allah, the easy solution to this problem is: if a minor has put a certain amount of water into a pool or well, fill and give back that much or more to them; the use of the rest becomes permissible.
536	For permissibility, it is sufficient to draw out as much water as the minor had put in.
531	A father can have his child serve a teacher.
532	The father, grandfather, and their executor should take appropriate service from a minor to instill a habit in them.
533	What is the ruling if a mother eats with her orphaned child by mixing food with the child's property?
534	A mother can eat one or two morsels from the earnings of an orphaned minor.
534	Ruling on taking work from someone else's child.
537	A teacher cannot take water filled by a minor either. The ruling on the extent to which service can be taken from them.
539	The method by which a teacher can have a minor fill water and then use it.
539	In what situation can parents and grandparents take work from a child?

Ref	Legal Ruling / Topic
	Issues of Diyat (Blood Money)
539	Fingers are the essence of the hand; if someone cuts off the fingers, the blood money (diyat) for the whole hand will be mandatory.
	Issues of Wasi (Executor)
61	When can parents take their child's property?

Ref	Legal Ruling / Topic
	Issues of Fara'iz (Inheritance)
108	Ruling on the distribution of an estate in which some heirs are minors.
	Jurisprudential Benefits
509	A ruling is for wisdom, but it does not depend solely on it.

फ़तावा रज़विया जिल्द-सानी (भाग दो)

सं.	कानूनी व्यवस्था / विषय
511	कुएँ या सार्वजनिक अथवा निजी तालाब में नाबालिग के स्वामित्व वाला पानी मिल जाए तो उसे खरीदा भी नहीं जा सकता।
511	दास और दासी द्वारा भरे गए पानी का हुक्म।
520	ये हुक्म ठहरे हुए पानी के लिए हैं, चाहे वह दस गुना दस से अधिक हो, बहते पानी में नहीं।
520	जिस पानी में नाबालिग का पानी मिल गया हो, उसे फेंका भी नहीं जा सकता, लेकिन यदि ऐसा कुआँ अपवित्र हो जाए तो उसे पवित्र करने के लिए डोल निकाले जा सकते हैं।
521	जिस तालाब में नाबालिग का पानी मिला था, यदि वह स्वयं ही या बारिश से उबल गया तो अब जायज़ हो गया, परंतु स्वयं उबालना जायज़ नहीं।
527	इस समस्या के समाधान पर चर्चा।
527	अल्हम्दुलिल्लाह, इस मुश्किल का आसान समाधान यह है कि तालाब या कुएँ में नाबालिग ने जितना पानी
531	पिता अपने बच्चे से शिक्षक की सेवा करा सकता है।
532	पिता, दादा और उनके वसी (वसीयतदार) नाबालिग से आदत डालने के लिए उसकी योग्यता के अनुसार सेवा लें।
533	यदि माँ अपने अनाथ बच्चे के माल में मिलाकर साथ खाए तो क्या हुक्म है?
534	अनाथ नाबालिग की कमाई से माँ एक-दो कौर खा सकती है।
534	दूसरे के बच्चे से काम लेने का हुक्म।
537	शिक्षक भी नाबालिग द्वारा भरा हुआ पानी नहीं ले सकता। जिस सीमा तक सेवा ली जा सकती है, उसका हुक्म।
539	वह तरीका जिससे शिक्षक नाबालिग से पानी भरवा कर उसका उपयोग कर सके।

सं.	कानूनी व्यवस्था / विषय
	डाला है, उतना या उससे अधिक भरकर उसे दे दें; बाकी का उपयोग जायज़ हो गया।
536	जायज़ होने के लिए उतना पानी निकालना काफी है जितना नाबालिग ने डाला था।
	मसाइल-ए-दियत (रक्त मूल्य के मसले)
539	हाथ में उंगलियाँ ही मुख्य हैं; यदि किसी ने उंगलियाँ काट दीं, तो पूरे हाथ की दियत (मुआवज़ा) अनिवार्य होगी।
	मसाइल-ए-वसी (वसीयतदार के मसले)
61	माता-पिता अपने बच्चे का माल किस समय ले सकते हैं।

सं.	कानूनी व्यवस्था / विषय
539	माता-पिता, दादा-दादी किस स्थिति में बच्चे से काम ले सकते हैं।
	मसाइल-ए-फ़राइज़ (उत्तराधिकार के मसले)
108	उस विरासत के बँटवारे का हुक्म जिसमें कुछ वारिस नाबालिग हों।
	फ़वाइद-ए-फ़िक़्हिया (न्यायशास्त्रीय लाभ)
509	हुक्म हिकमत (तर्क/उद्देश्य) के लिए होता है, परंतु हिकमत पर उसका आधार नहीं होता।

حوالہ	مسئلہ / عنوان	حوالہ	مسئلہ / عنوان
۵۱۱	کنویں یا مباح خواہ مملوک حوض میں نابالغ کی ملک کا جو پانی مل جائے وہ خریدا بھی نہیں جاسکتا۔	۵۳۱	باپ اپنے بچے سے استاد کی خدمت کراسکتا ہے۔
۵۱۱	غلام و کنیز کے بھرے ہوئے پانی کا حکم۔	۵۳۲	باپ اور دادا اور ان کے وصی نابالغ سے عادت ڈالنے کے لیے اس کے لائق خدمت لیں۔
۵۲۰	یہ احکام ٹھہرے پانی میں ہیں اگرچہ دہ دردہ سے زیادہ ہو نہ جاری میں۔	۵۳۳	ماں اپنے یتیم بچہ کے مال سے ملا کر ساتھ کھائے تو کیا حکم ہے۔
۵۲۰	جس پانی میں نابالغ کا پانی مل گیا اسے پھینک بھی نہیں سکتے مگر ایسا کنواں ناپاک ہو جائے تو پاک کرنے کے ڈول نکالے جاسکتے ہیں۔	۵۳۴	نابالغ یتیم کی کمائی سے ماں دو ایک لقمہ کھاسکتی ہے۔
۵۲۱	جس حوض میں نابالغ کا پانی ملا تھا بینہ یا ابلے سے ابل گیا اب جائز ہو گیا مگر خود ابالنا جائز نہیں۔	۵۳۴	دوسرے کے بچے سے کام لینے کا حکم۔
۵۲۷	اس مشکل کے علاج پر بحث۔	۵۳۷	

حوالہ	مسئلہ / عنوان	حوالہ	مسئلہ / عنوان
			استاد بھی نابالغ کا بھرا پانی نہیں لے سکتا اور خدمت جہاں تک لے سکتا ہے اس کا حکم۔
۵۲۷	الحمدللہ اس مشکل کی سہل آسانی حوض یا کنویں میں نابالغ نے جتنا پانی ڈال دیا ہے اُتنا یا اس سے زاید بھر کر اسے دے دیں باقی کا استعمال جائز ہو گیا۔	۵۳۹	وہ طریقہ کہ اُستاد نابالغ سے پانی بھروا کر اسے استعمال کر سکے۔
۵۳۶	جواز کے لیے اُتنا پانی نکلنا کافی ہے جتنا نابالغ نے ڈالا۔	۵۳۹	ماں باپ، دادا، دادی کس صورت میں بچہ سے کام لے سکتے ہیں۔
	مسائل دیت		**مسائل فرائض**
۵۳۹	ہاتھ میں انگلیاں اصل ہیں اگر کسی نے انگلیاں کاٹ دیں پورے ہاتھ کی دیت لازم آئے گی۔	۱۰۸	اُس ترکہ کہ تقسیم کا حکم جس میں بعض وارث نابالغ ہیں۔
	مسائل وصی		**فوائد فقہیہ**
۶۱	ماں باپ اپنے بچہ کا مال کس وقت لے سکتے ہیں۔	۵۰۹	حکم حکمت کے لیے ہوتا ہے مگر حکمت پر اُس کا مدار نہیں۔

Fatawa Rizwia **Volume Second**

Research on whether the falling away of the obligation is the meaning of their saying "ablution in the pool". [Page 194]

There are three meanings for 'shuyu' (prevalence/commonality). [Page 229]

The measurement of a cloth yard (Zira Kirbas). [Page 260]

The measurement of a superficial yard (Zira Masahat). [Page 260]

In trust (Amanat), gift (Hiba), charity (Sadaqa), partnership (Shirkat), profit-sharing (Mudarabat), and usurpation (Ghasb), the specific rupees/gold coins given are the ones that are designated. [Page 487]

In matters of jurisprudence, if suspicion is predominant, it is like certainty, otherwise it is like doubt and is unreliable. [Page 493]

Certainty regarding an unknown place is removed by doubt. [Page 537]

Due to a difference in the question regarding the same thing, the

Al-Siraj al-Wahhaj is among the weak books, and its summary Al-Jawhara al-Nayira is among the reliable books. [Page 470]

The practice of Al-Hindiyya is to quote text from books that mention opinions by symbolizing their authors with letters; by omitting the symbols the two opinions become as one, so perhaps a confusion occurs to someone who does not know this in understanding the matter as it truly is. [Page 506]

The saying of the masters (Mashaikh) is not called a 'narration'. [Page 549]

The difference between restricting a ruling due to necessity and dropping it entirely due to necessity. [Page 551]

Chalpi, the commentator on Sadr al-Shariah, is not from the people of preference (Ahlu al-Tarjih). [Page 554]

Issues of Theology (Kalam)

The composition of bodies from individual atoms (jawahir farda) and the doubts of the philosophers against it are all rejected. [Page 173]

Mufti's fatwa becomes different. [Page 690 (Footnote)]

Etiquette of the Mufti (Rasm al-Mufti)

What Qadi Khan has prioritized is the most manifest and famous, thus it is the one relied upon. [Page 102]

The Mufti only gives a fatwa according to what he deems beneficial (Maslaha). [Page 317]

The author of 'Al-Bahr' (Ibn Nujaym) is not among the masters of preference (As-hab al-Tarjih). [Page 434]

Do not rely on the fatwas of Ibn Nujaym nor on the fatwas of Al-Turi. [Page 438]

Absolute dislike (Karahah) implies prohibition (Tahrim). [Page 453]

Explanation of how a body is seen even though its smallest part (atom) is not seen. [Page 173 (Footnote)]

Hadith Benefits

Sunan al-Nasai al-Kubra is not from the Sahih (six authentic collections), unlike its common summary. [Page 470]

Names of Men (Biographies)

Yahya bin Hashim is abandoned (Matruk). [Page 93]

'Al-Qurba' (nearness) in general from one perspective. [Page 71]

फ़तावा रज़विया **जिल्द सानी (द्वितीय भाग)**

तहक़ीक़ (शोध) कि क्या फ़र्ज़ का गिरना उनके इस कथन का अर्थ है कि "हौज़ में वज़ू करना"। [पृष्ठ १९४]

'शुयू' (प्रसार) के तीन अर्थ हैं। [पृष्ठ २२९]

'ज़िरा किरबास' (कपड़े की नाप) की मात्रा। [पृष्ठ २६०]

'ज़िरा मसाहत' (क्षेत्रफल की नाप) की मात्रा। [पृष्ठ २६०]

अमानत, हिबा (उपहार), सदक़ा (दान), शिरकत (साझेदारी), मुज़ारबत और ग़स्ब (अवैध क़ब्ज़ा) में दिए गए रुपये या अशर्फ़ियां वही मुतय्यन (निश्चित) होती हैं जो दी गई हों। [पृष्ठ ४८७]

फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के मसलों में यदि 'ज़न्न' (प्रबल संभावना) प्रबल हो तो वह यक़ीन (निश्चितता) की तरह है, अन्यथा वह वहम की तरह अविश्वसनीय है। [पृष्ठ ४९३]

'अस-सिराज अल-वहाज' कमज़ोर किताबों में से है और उसका संक्षेप 'अल-जौहरा अन-नयिरा' विश्वसनीय किताबों में से है। [पृष्ठ ४७०]

'अल-हिन्दिया' की आदत किताबों की इबारत नक़ल करते समय अक़वाल (कथनों) को उनके कहने वालों के प्रतीकात्मक अक्षरों के साथ ज़िक्र करने की है; प्रतीकों को हटा देने से दो कथन एक जैसे लगने लगते हैं, जिससे शायद वह व्यक्ति जो इसे नहीं जानता, मामले को सही ढंग से समझने में भ्रमित हो जाए। [पृष्ठ ५०६]

मशाईख (विद्वानों) के कथन को 'रिवायत' नहीं कहा जाता। [पृष्ठ ५४९]

ज़रूरत के कारण किसी हुक्म को सीमित करने और ज़रूरत के कारण उसे पूरी तरह खत्म करने के बीच का अंतर। [पृष्ठ ५५१]

'चलपी', जो सद्र-उश-शरिया के टिप्पणीकार हैं, वह तरजीह (प्राथमिकता देने वाले) लोगों में से नहीं हैं। [पृष्ठ ५५४]

कलामी मसले (धर्मशास्त्र के मुद्दे)

फ़तावा रज़विया

अज्ञात स्थान के संबंध में जो यक़ीन हो, वह शक से खत्म हो जाता है। [पृष्ठ ५३७]

एक ही चीज़ के बारे में सवाल में अंतर होने से मुफ़्ती का फ़तवा बदल जाता है। [पृष्ठ ६९० (हाशिया)]

रस्मुल मुफ़्ती (मुफ़्ती के नियम)

काज़ी खाँ ने जिसे प्राथमिकता दी है, वही सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध है, अतः वही विश्वसनीय है। [पृष्ठ १०२]

मुफ़्ती केवल उसी के अनुसार फ़तवा देता है जिसे वह जनहित (मसलहत) के अनुकूल पाता है। [पृष्ठ ३१७]

'अल-बहर' के लेखक (इब्न नुजैम) तरजीह देने वाले विद्वानों में से नहीं हैं। [पृष्ठ ४३४]

न तो इब्न नुजैम के फ़तवों पर भरोसा किया जाए और न ही अल-तूरी के फ़तवों पर। [पृष्ठ ४३८]

मुतलक़ कराहत (पूर्ण नापसंदगी) हराम (निषेध) के लिए होती है। [पृष्ठ ४५३]

पृष्ठ २९/७११

जिल्द सानी (द्वितीय भाग)

शरीरों का सूक्ष्म कणों (जवाहर फ़र्दा) से बनना और दार्शनिकों के संदेह, ये सब रद्द (अस्वीकार्य) हैं। [पृष्ठ १७३]

इस बात का विवरण कि शरीर कैसे दिखाई देता है जबकि उसका सूक्ष्म अंग नहीं दिखाई देता। [पृष्ठ १७३ (हाशिया)]

फ़वाइद-ए-हदीसिया (हदीस के लाभ)

'सुनन अन-नसाई अल-कुबरा' सहीह किताबों (सहाह सित्ता) में से नहीं है, जबकि उसका संक्षिप्त संस्करण प्रचलित है। [पृष्ठ ४७०]

अस्मा-उर-रिजाल (जीवनी)

याह्या बिन हाशिम 'मतरूक' (त्याग दिया गया) है। [पृष्ठ ९३]

'अल-क़ुरबा' (निकटता) सामान्यतः एक दृष्टिकोण से। [पृष्ठ ७१]

تحقیق ان بین سقوط الفرض مفاد قولهم الوضوء فی الحوض۔ [صفحہ ۱۹۴]

للشیوع ثلثة معان۔ [صفحہ ۲۲۹]

ذراع کرباس کی مقدار۔ [صفحہ ۲۶۰]

ذراع مساحت کی مقدار۔ [صفحہ ۲۶۰]

امانت و ہبہ وصدقہ و شرکت و مضاربت و غصب میں روپے اشرفی جو دیئے گئے وہی متعین ہوتے ہیں۔ [صفحہ ۴۸۷]

مسائل فقہ میں ظن اگر غالب ہو مثل یقین ہے ورنہ مثل و ہم نامعتبر۔ [صفحہ ۴۹۳]

جو یقین کسی مجہول محل میں ہو شک سے زائل ہو جاتا ہے۔ [صفحہ ۵۳۷]

السراج الوهاج من الكتب الضعيفة و مختصره الجوهره النيرة من الكتب المعتمدة۔ [صفحہ ۴۷۰]

عادة الهندية نقل عبارة الكتب التى تذكر الاقوال رامزة لقائليها بالحروف بحذف الرموز فيصير القولان كقول واحد فربما يحصل بذلك عند من لا يعرف خبط فى فهم الامر على ما هو عليه۔ [صفحہ ۵۰۶]

لا يقال لقول المشائخ رواية [صفحہ ۵۴۹]

فرق بين تقييد حكم بضرورة واسقاطه رأسا لضرورة۔ [صفحہ ۵۵۱]

چلپی محشی صدر الشریعة لیس من اهل الترجیح۔ [صفحہ ۵۵۴]

مسائل کلامیہ

مردودة۔ [صفحہ ۱۷۳]

ایک ہی چیز میں اختلاف سوال سے مفتی کا فتویٰ مختلف ہو جاتا ہے۔ [صفحہ ۶۹۰ (حاشیہ)]

رسم المفتی

ما قدم قاضیخان هو الاظهر الاشهر فیکون هو المعتمد۔ [صفحہ ۱۰۲]

المفتی انما یفتی بما یقع عنده من المصلحة۔ [صفحہ ۳۱۷]

صاحب البحر لیس من اصحاب الترجیح۔ [صفحہ ۴۳۴]

لا یعتمد علی فتاوی ابن نجیم ولا علی فتاوی الطوری۔ [صفحہ ۴۳۸]

مطلق الکراهة للتحریم۔ [صفحہ ۴۵۳]

بیان انه کیف یری الجسم مع ان الجزء لا یری۔ [صفحہ ۱۷۳ (حاشیہ)]

فوائد حدیثیہ

سنن النسائی الکبری لیست من الصحاح بخلاف مختصرها المتداول۔ [صفحہ ۴۷۰]

اسماء الرجال

یحیی بن هاشم متروک [صفحہ ۹۳]

والقربة عموما من وجه [صفحہ ۷۱]

Fatawa Razawiya - Volume 2 Virtues and Merits

156 | | | The soundness of the cause necessitates the soundness of the ruling, but not vice versa. 185 | 63 | Shafi'i imams state that the insights of Imam al-A'zam (RA) are so profound that only the great saints recognize them. | 63 | When it is said 'there is none better than him', it is conventionally understood that he is the best. 436 | 64 | Saints state that Imam al-A'zam and Imam Abu Yusuf are the leaders of the people of spiritual unveiling and witnessing. | 64 | A more general definition for the Mujtahid in the school of thought (Madhhab). 442 | 91 | The water used for ablution (Wudu) or ritual bath (Ghusl) by the Holy Prophet (PBUH) and all the Prophets (AS) is pure and purifying for us. If it is mixed with other water, Wudu can be performed with it. This issue is not hypothetical even now, as Sayyiduna Isa (AS) will arrive soon. | 91 | The absolute (Mutlaq) exists with the existence of one individual and is not negated except by the negation of all individuals. 442 | 52 (Footnote) | The water that flowed from the blessed fingers of the Holy Prophet (PBUH) is superior to the water of Zamzam, Kawsar, and all the waters of both worlds. | 52 | Negation of a genus, according to convention and language, only occurs by negating all individuals; the 'negligence' (muhmala) of ancient philosophers is of no concern here. 443 | 477 | The benefit of association with the beloveds of God. | 477 | For any two things that are inseparable, mentioning one of them suffices for the mention of the other, like hand, eye, and boot; you say 'musafaha' (handshaking) means taking the hand, i.e., both hands. 453 | | Jurisprudential Principles | | Prohibitively disliked (Makruh Tahrimi) acts can be called 'Haram'. 471 | 78 | Defining by the ruling is permissible among the jurists. | 78 | Omitting a recommended (Mustahab) act is not disliked (Makruh). 560 | 81 | There are two meanings for defining by the ruling. | 81 | The early imams referred even to the unlawful (Haram) as 'disliked' (Makruh). 673 | 109 | What is based on conjecture, the ruling must be established according to it. | 109 | A noble research by the author: which accidental factor prevents an individual from falling under the concept of the absolute, and which accidental factor does not, while all accidental factors are equal in not being understood from the absolute.

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी फ़ज़ाइल व मनाक़िब (गुण और श्रेष्ठाएँ)

156 | | | कारण की शुद्धता नियम की शुद्धता को अनिवार्य बनाती है और इसके विपरीत नहीं। 185 | 63 | शाफ़ई इमाम कहते हैं कि इमाम-ए-आज़म (रज़ि.) की अंतर्दृष्टि इतनी सूक्ष्म है कि उसे केवल महान वली (संत) ही पहचानते हैं। | 63 | जब कहा जाता है कि 'उनसे बेहतर कोई नहीं', तो लोकाचार में इसका अर्थ यही है कि वह सर्वश्रेष्ठ हैं। 436 | 64 | वली फरमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ कशफ़ और मुशाहिदा (आत्मिक दृष्टि) वालों के सरदार हैं। | 64 | मज़हब (विचारधारा) में मुजतहिद के लिए एक व्यापक परिभाषा। 442 | 91 | हुज़ूर पाक (स.अ.व.) और सभी अंबिया (अ.स.) के वज़ू या ग़ुस्ल का पानी हमारे लिए पाक और पवित्र करने वाला है। अगर यह मिला हुआ हो, तो इससे वज़ू हो जाएगा। यह मसला आज भी काल्पनिक नहीं है क्योंकि सैय्यदुना ईसा (अ.स.) शीघ्र ही तशरीफ़ लाने वाले हैं। | 91 | 'मुतलक' (निरपेक्ष) एक व्यक्ति के अस्तित्व से अस्तित्व में आता है और सभी व्यक्तियों के निषेध के बिना समाप्त नहीं होता। 442 | 52 (हाशिया) | ज़मज़म, कौसर और दोनों जहानों के तमाम पानियों से श्रेष्ठ वह पानी है जो हुज़ूर पाक (स.अ.व.) की मुबारक उंगलियों से निकला। | 52 | जाति का निषेध, लोकाचार और भाषा में, केवल सभी व्यक्तियों के निषेध से ही होता है; प्राचीन दार्शनिकों की 'मुहमला' (उपेक्षा) यहाँ महत्वहीन है। 443 | 477 | अल्लाह के महबूबों से संबंध रखने का लाभ। | 477 | किन्हीं दो अविभाज्य वस्तुओं में से एक का उल्लेख दूसरे के उल्लेख के लिए पर्याप्त होता है, जैसे हाथ, आँख और जूता; मुसाफ़हा (हाथ मिलाना) का अर्थ हाथ पकड़ना यानी दोनों हाथ पकड़ना है। 453 | | उसूली फ़ायदे | | मकरूह तहरीमी (नापसंद कार्य जो हराम के करीब हो) को हराम कहा जा सकता है। 471 | 78 | फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) के निकट हुक्म के आधार पर परिभाषा देना जायज़ है। | 78 | मुस्तहब (पसंदीदा कार्य) को छोड़ना मकरूह नहीं है। 560 | 81 | हुक्म के आधार पर परिभाषा देने के दो अर्थ हैं। | 81 | पूर्ववर्ती इमाम हराम को भी मकरूह कहते हैं। 673 | 109 | जो बात गुमान (अनुमान) पर आधारित हो, उसके आधार पर हुक्म साबित करना ज़रूरी है। | 109 | लेखक द्वारा एक उत्कृष्ट शोध: कौन सा आकस्मिक कारक किसी व्यक्ति को मुतलक अवधारणा के अंतर्गत आने से रोकता है, और कौन सा नहीं, जबकि सभी आकस्मिक कारक मुतलक से समझ में न आने के मामले में समान हैं।

पृष्ठ 30 / 711

۱۵۶ | | | صحة العلة تستلزم صحة الحكم ولا عكس (علت کا صحیح ہونا حکم کے صحیح ہونے کو مستلزم ہے، اس کا عکس نہیں)۔ ۱۸۵ | ۶۳ | ائمہ شافعیہ فرماتے ہیں کہ امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مدارک ایسے دقیق ہیں جن کو اکابر اولیا ہی پہچانتے ہیں۔ | ۶۳ | اذا قیل لا افضل منه فهم منه عرفا انه الافضل (جب کہا جائے کہ اس سے افضل کوئی نہیں تو عرفاً اس سے یہی سمجھا جاتا ہے کہ وہ سب سے افضل ہے)۔ ۴۳۶ | ۶۴ | اولیا فرماتے ہیں کہ امام اعظم و امام ابو یوسف سرداران اہل کشف و مشاہدہ ہیں۔ | ۶۴ | تعریف اعم للمجتهد في المذهب (مذہب میں مجتہد کے لیے زیادہ عام تعریف)۔ ۴۴۲ | ۹۱ | حضور اقدس صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور تمام انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کے وضو یا غسل جنابت کا پانی ہمارے حق میں طاہر مطہر ہے ملے تو اس سے وضو ہوجائے گا اور یہ مسئلہ اب بھی فرضی نہیں سیدنا عیسی علیہ الصلوۃ والسلام عنقریب تشریف لانے والے ہیں۔ | ۹۱ | المطلق یوجد بوجود فرد ولا ینتفي الا بانتفاء الافراد جمیعا (مطلق ایک فرد کے وجود سے پایا جاتا ہے اور تمام افراد کی نفی کے بغیر اس کی نفی نہیں ہوتی)۔ ۴۴۲ | ۵۲ (حاشیہ) | زمزم و کوثر اور دونوں جہان کے سب پانیوں سے افضل وہ پانی ہے جو حضور اقدس صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی انگشتان مبارک سے نکلا۔ | ۵۲ | نفي الجنس لا یکون عرفاً ولغة الا بنفي جمیع الافراد ولا عبرة ههنا بمهملة الفلاسفة القدماء۔ (جنس کی نفی عرفاً اور لغتاً تمام افراد کی نفی کے بغیر نہیں ہوتی، اور قدیم فلاسفہ کی مہملہ کا یہاں کوئی اعتبار نہیں)۔ ۴۴۳ | ۴۷۷ | محبوبانِ خدا سے نسبت کا فائدہ۔ | ۴۷۷ | کل شیئین لا یفترقان فذکر احدهما یجزئ عن ذکر الآخر کالید والعین والخف تقول المصافحة الاخذ بالید ای بالیدین۔ (کوئی بھی دو چیزیں جو جدا نہ ہوتی ہوں ان میں سے ایک کا ذکر دوسرے کے ذکر سے کفایت کرتا ہے جیسے ہاتھ، آنکھ اور موزہ؛ آپ

کہتے ہیں مصافحہ ہاتھ پکڑنا یعنی دونوں ہاتھ پکڑنا)۔ ۴۵۳ | | فوائد اصولیہ | | مکروہ تحریمی کو حرام کہہ سکتے ہیں۔ ۴۷۱ | ۷۸ | التعریف بالحکم سائغ عند الفقهاء (فقہاء کے نزدیک حکم کے ذریعے تعریف کرنا جائز ہے)۔ | ۷۸ | مستحب کا ترک مکروہ نہیں۔ ۵۶۰ | ۸۱ | للتعریف بالحکم معنیان۔ (حکم کے ذریعے تعریف کے دو معنی ہیں)۔ | ۸۱ | ائمہ متقدمین حرام کو بھی مکروہ کہتے ہیں۔ ۶۷۳ | ۱۰۹ | ما کان مظنوناً یجب اثبات الحکم باعتباره (جو بات ظنی ہو اس کے اعتبار سے حکم کا اثبات واجب ہے)۔ | ۱۰۹ | تحقیق شریف للمصنّف ای عارض یمنع الفرد من دخوله تحت المفهوم من المطلق واي عارض لا یمنع مع تساوی العوارض جمیعا في عدم الانفهام من المطلق۔ (مصنف کی ایک بہترین تحقیق: کونسا عارض فرد کو مطلق کے مفہوم میں داخل ہونے سے روکتا ہے اور کونسا عارض نہیں روکتا، جبکہ مطلق سے نہ سمجھنے میں تمام عوارض برابر ہیں)۔

Fatawa Rizvia Volume II 288 | Noble research by the author on the meaning of their saying 'the absolute refers to the perfect individual' and their saying 'the absolute refers to the lowest.' | 675 (Footnote) | Ratio of diameter and circumference. | 288 288 | Research by the author that the non-fulfillment of Sharia intent does not prevent the individual from falling under the common understanding of 'absolute' in physical realities. | 678 | Author's invented methods to find two unknown values when one out of diameter, circumference, and area of a circle is known. | 288 Discussion on additions (idafat), i.e., addition for restriction and which of them are for definition. | 680 | Miscellaneous | 66 | Geometry and Mathematics | Cure for sins | www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 31 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द दो २८८ | लेखक द्वारा उनके इस कथन के अर्थ पर उत्कृष्ट शोध: 'अल-मुतलक़ यन्सरिफ़ इला अल-फ़र्द अल-कामिल' (निरपेक्ष पूर्ण व्यक्ति की ओर जाता है) और उनका कथन 'अल-मुतलक़ यन्सरिफ़ इला अल-अदना' (निरपेक्ष निम्नतम की ओर जाता है)। | ६७५ (फ़ुटनोट) | व्यास और परिधि का अनुपात। | २८८ २८८ | लेखक का शोध कि शरीयत के उद्देश्य की विफलता किसी व्यक्ति को भौतिक वास्तविकताओं में निरपेक्ष शब्द से समझे जाने वाले अर्थ के दायरे से बाहर नहीं करती है। | ६७८ | वृत्त के व्यास, परिधि और क्षेत्रफल में से कोई एक चीज़ ज्ञात होने पर शेष दो को ज्ञात करने के लिए लेखक द्वारा आविष्कृत तरीके। | २८८ अतिरिक्त (इज़ाफ़ात) पर शोध, अर्थात प्रतिबंध के लिए अतिरिक्त और उनमें से कौन से परिभाषा के लिए हैं। | ६८० | विविध | ६६ | ज्यामिति और गणित | गुनाहों का इलाज | www.dawateislami.net आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ ३१ का ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ۲۸۸ | تحقیق شریف للمصنّف فی معنی قولھم المطلق ینصرف الی الفرد الکامل و قولھم المطلق ینصرف الی الادنٰی۔ | ۶۷۵ (حاشیہ) | قطر و محیط کی نسبت۔ | ۲۸۸ ۲۸۸ | تحقیق المصنّف ان فوات المقصد الشرعی لا یقعد الفرد عن الدخول تحت المتفاھم من المطلق فی الحقائق العینیہ۔ | ۶۷۸ | دائرے کے قطر و محیط و مساحت سے جو ایک چیز معلوم ہو باقی دو معلوم کرنے کے طریقے ایجاد مصنف۔ | ۲۸۸ بحث الاضافات ای اضافة للتقیید و ایھاً للتعریف۔ | ۶۸۰ | متفرقات | ۶۶ | ہندسہ و ریاضی | گناہوں کا علاج |

Fatawa Razawiyya Volume II Summary Table of Contents of Treatises

- Page 94 | Treatise 1: At-Tars al-Mu'addal regarding the definition of Used Water. Grand investigations into the definition and issues of used water.
- Page 43 | Warning 3: Does minor ritual impurity settle over the entire body like major impurity? The author's investigation into it, and discussion with Al-Fath, Al-Hidayah, Al-Kafi, Al-Hilyah, Imam al-Haramayn, Imam 'Izz bin 'Abdus Salam, and Ibn al-Jawzi.
- Page 101 | Composing a comprehensive and exclusive definition of used water along with its conditions in three verses of poetry.
- Page 47 | Warning 4: The author's investigation that wiping (masah) also renders water 'used', and discussion with a group of noble scholars.
- Page 105 | Five warnings from the author.
- Page 51 | Warning 5: The issue of wiping with a finger, and discussion with Al-Fath and Imam Shams al-A'immah.
- Page 113 | Regarding the issue of washing a pot, and discussion with Al-Hilyah.
- Page 51 | Treatise 2: An-Numiqah al-Anqa regarding the difference between what meets (al-mulaqi) and what is met (al-mulqa).
- Page 114 | The author's investigation that not every act of worship (qurbah) changes water from its purifying state.
- Page 59 | Conditions for water becoming 'used' through contact, and discussion with Al-Ghunyah.
- Page 122 | Warning 2: Regarding the explanation of the cause of water becoming 'used' and the author's investigation that there is no tripling [of washing], and discussion with Imam Ibn al-Humam, Ash-Shami, Nuh Efendi, Al-Bahr, An-Nahr, Ad-Durut, Mi'raj ad-Dirayah, and Al-'Inayah.
- Page 67 | Corroboration of texts and discussion with Al-Bahr, An-Nahr, Ad-Durr, Ash-Shami, and 'Allamah Ibn ash-Shuhnah.
- Page 135 | Chapter One regarding the words of 'Allamah Qasim, and discussion on it from forty-five aspects.

फ़तावा रज़विया, जिल्द II पत्रों (रिसालों) के विषयों की संक्षिप्त सूची

- पृष्ठ 94 | रिसाला 1: अत-तर्स अल-मुअद्दल, इस्तेमाल किए गए पानी (मा-ए-मुस्तअमल) की परिभाषा के संबंध में। इस्तेमाल किए गए पानी की परिभाषा और समस्याओं में महान शोध।
- पृष्ठ 43 | चेतावनी 3: क्या छोटी अपवित्रता (हदस-ए-अस़ार) पूरे शरीर पर बड़ी अपवित्रता की तरह बसती है? इसमें लेखक का शोध, और अल-फ़तह, अल-हिदाया, अल-काफ़ी, अल-हिल्या, इमाम अल-हरमैन, इमाम इज़ बिन अब्दुल सलाम और इब्न अल-जौज़ी के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 101 | इस्तेमाल किए गए पानी की व्यापक और अनन्य परिभाषा को उसकी शर्तों के साथ कविता के तीन छंदों में रचना।
- पृष्ठ 47 | चेतावनी 4: लेखक का शोध कि मसह (पोंछना) भी पानी को 'इस्तेमाल किया हुआ' बना देता है, और सम्मानित उलेमाओं के एक समूह के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 105 | लेखक की ओर से पाँच चेतावनियाँ।
- पृष्ठ 51 | चेतावनी 5: उँगली से मसह करने का मसला, और अल-फ़तह और इमाम शम्स अल-अइम्मा के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 113 | बर्तन धोने के मसले में और अल-हिल्या के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 51 | रिसाला 2: अन-नुमीक़ा अल-अन्क़ा, मिलने वाले (मुलाक़ी) और जिससे मिला जाए (मुल्क़ा) के अंतर के बारे में।
- पृष्ठ 114 | लेखक का शोध कि हर इबादत (क़ुरबत) पानी को उसकी शुद्धता से नहीं बदलती।
- पृष्ठ 59 | संपर्क द्वारा इस्तेमाल की शर्तें, और अल-ग़ुनिया के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 122 | चेतावनी 2: इस्तेमाल के कारण के वर्णन में और लेखक का शोध कि धुलाई को तीन बार करना अनिवार्य नहीं है, और इमाम इब्न अल-हुमाम, अल-शामी, नूह अफंदी, अल-बहर, अन-नहर, अद-दुरुत, मेराज अद-दिराया और अल-इनाया के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 67 | पाठों की प्रचुरता और अल-बहर, अन-नहर, अद-दुर्र, अल-शामी और अल्लामा इब्न अश-शुहना के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 135 | अल्लामा क़ासिम के कथनों के बारे में पहला अध्याय, और उस पर पैंतालीस पहलुओं से चर्चा।

पृष्ठ 32 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی مجمل فہرست مضامین رسائل

- ۹۴ | رسالہ ۱- الطرس المعدل في حد الماء المستعمل، آب مستعمل کی تعریف و مسائل میں جلیل تحقیقات۔
- ۴۳ | التنبیہ ۳- ھل الحدث الاصغر یحل کالاکبر بالبدن کلہ وتحقیق المصنّف ففیہ والکلام مع الفتح والھدایۃ والکافی والحلیۃ وامام الحرمین والامام العزبن عبدالسلام وابن الجوزی۔
- ۱۰۱ | آب مستعمل کی جامع مانع تعریف مع شرائط کا تین شعروں میں نظم کرنا۔
- ۴۷ | التنبیہ ۴- تحقیق المصنّف ان المسح ایضاً یجعل الماء مستعملا والکلام مع جماعۃ من المشائخ الکرام۔
- ۱۰۵ | خمس تنبیھات من المصنّف۔
- ۵۱ | التنبیہ ۵- مسألۃ المسح باصبع والکلام مع الفتح والامام شمس الائمۃ۔
- ۱۱۳ | في مسألۃ غسل القدر والکلام مع الحلیۃ۔
- ۵۱ | رسالہ ۲- النمیقۃ الانقی في فرق الملاقی والملقی۔
- ۱۱۴ | تحقیق المصنّف ان لیس کل قربۃ مغیرۃ للماء عن الطھوریۃ۔
- ۵۹ | شرائط الاستعمال بالملاقی والکلام مع الغنیۃ۔
- ۱۲۲ | التنبیہ ۲- فی بیان سبب الاستعمال وتحقیق المصنّف ان لاتثلیث والکلام مع الامام ابن الھمام والشامی نوح افندی والبحر والنھر والدروط ومعراج الدرایۃ والعنایۃ۔
- ۶۷ | تظافر النصوص والکلام مع البحر والنھر والدر والشامی والعلامۃ ابن الشحنۃ۔
- ۱۳۵ | الفصل الاول في کلام العلامۃ قاسم والکلام علیہ بخمسۃ واربعین وجھا۔

Fatawa Razawiya - Volume Two

Page	Subject	Page	Details/Explanations
321	Discussion with the Imam Malik al-Ulama (may Allah sanctify his noble secret) in seventeen aspects, and with Al-Hulya in seven aspects.	146	Rulings on waters whose surface area is less at the top and ten-by-ten at the bottom, or vice versa. It contains exquisite investigations and superior refinements, the likes of which have not been seen. Discussion with Al-Hulya, Al-Khaniya, Al-Khulasa, and masters Hashiya Tahtawi, Al-Shami, Malik al-Ulama, and Al-Ghunia.
352	Second Section: Concerning the words of Al-Bahr (author of Al-Bahr al-Raiq), discussed in thirty-nine aspects.	182	Establishing ten principles and discussion with Al-Shami, Al-Tahtawi, Al-Halabi, and Al-Durr.
372	Third Section: Concerning the words of Al-Allamah Ibn al-Shihnah, discussed in twenty-six aspects, along with the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq), Al-Allamah Qasim, Malik al-Ulama, and Al-Bahr.	200	The author's investigation into the difference between flow (jaryan) and streaming (sayalan).
382	Fourth Section: Various benefits and investigation of the ruling on ablution in a small basin (Hawd al-Saghir). Discussion with Al-Allamah al-Shurunbulali, in ten aspects with Al-Shami and his teacher, and dependency on Al-Muhaqqiq.	225	Explanation of 120 categories here. Four shapes of basins and one part of water being dependent, independent, capable or incapable of flow, scarcity and abundance, beginning and end, and divisions based on floating, sinking, remaining, or exiting impurities, and the systematic recording of all their rulings.
382	Treatise 3: Al-Hani al-Namir fi al-Ma' al-Mustadir (The sweet fresh water regarding circular water).	285	All benefits are from the author, with discussion with Al-Hulya and Al-Ghunia.

Page	Subject	Page	Details/Explanations
388	Explanation of the area of circular water (ten by ten). It contains four opinions and the author's investigation, and discussion with Al-Siraj al-Wahhaj, Al-Shami, Al-Quhistani, Al-Birjandi, and Nuh Effendi.	285	Great Warning: Are both exit and entry pillars of flow, or just exit? Is help from above a condition or not? The author's investigation into all of that, with discussion with Al-Hulya, Al-Bahr, Al-Khaniya, Al-Tajnis, Al-Fath, Al-Siraj, Al-Shami, and Al-Bada'i.
321	Treatise 4: Ruhb al-Sahah fi Miyah la Yastawi Wajhuha wa Jawfuha fi al-Masahah (Extensiveness of space regarding waters whose surface and depth do not match in area).		

फ़तावा रज़विया - भाग दो

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विवरण/व्याख्या
321	इमाम मलिक अल-उलमा (अल्लाह उनकी पवित्र आत्मा को पावन करे) के साथ सत्रह पहलुओं में चर्चा, और अल-हिल्या के साथ सात पहलुओं में।	146	उन पानी के बारे में नियम जिनकी सतह का क्षेत्रफल ऊपर कम है और नीचे दस-बाय-दस है, या इसके विपरीत। इसमें उत्कृष्ट शोध और श्रेष्ठ बारीकियां शामिल हैं, जिनकी मिसाल पहले नहीं देखी गई। अल-हिल्या, अल-खानिया, अल-खुलासा और हाशिया तहतावी, अल-शामी, मलिक अल-उलमा और अल-गुनिया जैसे विद्वानों के साथ चर्चा।
352	दूसरा खंड: अल-बहर (अल-बहर अल-राईक के लेखक) के शब्दों के बारे में, उन पर उनतालीस पहलुओं में चर्चा।	182	दस सिद्धांतों की स्थापना और अल-शामी, अल-तहतावी, अल-हलबी और अल-दुर्र के साथ चर्चा।
372	तीसरा खंड: अल्लामा इब्न अल-शिहना के शब्दों के बारे में, उन पर छब्बीस पहलुओं में चर्चा, साथ ही पूर्ण शोधकर्ता (अल-मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़), अल्लामा क़ासिम, मलिक अल-उलमा और अल-बहर के साथ।	200	प्रवाह (जर्यान) और बहाव (सयलान) के बीच अंतर पर लेखक का शोध।
382	चौथा खंड: विभिन्न लाभ और छोटे हौज़ (हौज़ अल-सगीर) में वूज़ू के नियम की जांच। अल्लामा अल-शुरुनबुलाली के साथ चर्चा, अल-शामी और उनके शिक्षक के साथ दस पहलुओं में, और शोधकर्ता पर निर्भरता।	225	यहाँ 120 श्रेणियों का वर्णन। हौज़ की चार आकृतियाँ और पानी का एक हिस्सा आश्रित, स्वतंत्र, प्रवाह के योग्य या अयोग्य, कमी और प्रचुरता, शुरुआत और अंत, और तैरने वाली, डूबने वाली, शेष रहने वाली, या निकलने वाली अशुद्धियों के आधार पर विभाजन, और उनके सभी नियमों का व्यवस्थित विवरण।

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विवरण/व्याख्या
382	शोध-पत्र 3: अल-हनी अल-नमिर फ़ी अल-मा अल-मुस्तदीर (गोलाकार पानी के संबंध में मीठा ताज़ा पानी)।	285	सभी लाभ लेखक की ओर से हैं, अल-हिल्या और अल-गुनिया के साथ चर्चा।
388	गोलाकार पानी के क्षेत्रफल (दस गुना दस) का विवरण। इसमें चार राय और लेखक की जांच है, और अल-सिराज अल-वहाज, अल-शामी, अल-कुहिस्तानी, अल-बिरजंदी और नूह एफेंदी के साथ चर्चा।	285	महान चेतावनी: क्या निकास और प्रवेश दोनों प्रवाह के स्तंभ हैं, या केवल निकास? क्या ऊपर से मदद एक शर्त है या नहीं? उन सभी पर लेखक का शोध, अल-हिल्या, अल-बहर, अल-खानिया, अल-तजनीस, अल-फ़तह, अल-सिराज, अल-शामी और अल-बदाइ' के साथ चर्चा।
	शोध-पत्र 4: रुहब अल-साहा फ़ी मियाह ला यस्तवी वजहुहा वा जौफ़ुहा फ़ी अल-मसाहा (उन जल निकायों के बारे में क्षेत्र की व्यापकता जिनकी सतह और गहराई क्षेत्रफल में बराबर नहीं हैं)।	321	

صفحہ	مضمون	صفحہ	تفصیل/توضیحات
۳۲۱	الکلام مع الامام ملک العلماء قدسنا اللہ تعالیٰ بسرہ الشریف بسبعة عشر وجهاً ومع الحلیة بسبعة وجوہ۔	۱۴۶	ان پانیوں کے احکام جن کی مساحت اوپر کم ہے اور نیچے دہ دردہ یا بالعکس ان تحقیقات رائقہ وتدقیقات فائقہ پر مشتمل جن کا نظیر نظر سے نہ گزرا۔ والکلام مع الحلیة والخانیة والخلاصة والسادة ح ط ش و ملک العلماء والغنیة۔
۳۵۲	الفصل الثانی فی کلام البحر صاحب البحر والکلام علیه بتسعة وثلثین وجها۔	۱۸۲	وضع عشرة اصول والکلام مع الشامی والطحطاوی والحلبی والدر۔
۳۷۲	الفصل الثالث فی کلام العلامة ابن الشحنة والکلام علیه بستة وعشرین وجها ومع المحقق علی الاطلاق والعلامة قاسم وملک العلماء والبحر۔	۲۰۰	مصنف کی تحقیق جریان و سیلان میں فرق۔
۳۸۲	الفصل الرابع فی فوائد شتی وتحقیق حکم الوضوء فی الحوض الصغیر والکلام مع العلامة الشرنبلالی وبعشرة وجوہ مع	۲۲۵	یہاں ۱۲۰ قسموں کا بیان۔ حوض کی چار شکلیں اور ایک حصہ آب کے تابع و مستقل و قابل و نا قابل اجراء و قلت وکثرت مبدء ومنتہی اور نجاست کے طافیہ و راسبہ و باقیہ و مخرجہ کی طرف

صفحہ	مضمون	صفحہ	تفصیل/توضیحات
	الشامی وشیخه وتطفل علی المحقق۔		تقسیمیں اور ان سب کے احکام کا تبیین طرح ضبط۔
۳۸۲	رساله ۳۔ الهنیئ النمیر فی الماء المستدیر۔	۲۸۵	سب افادات مصنف سے والکلام مع الحلیة والغنیة۔
۳۸۸	آب مستدیر کی مساحت دہ دردہ کا بیان۔ اس میں چار قول اور تحقیق مصنف والکلام مع السراج الوهاج والشامی والقهستانی والبرجندی ونوح افندی۔	۲۸۵	تنبیہ جلیل خروج ودخول دونوں رکن جریان ہیں یا صرف خروج اور اوپر سے مدد شرط ہے یا نہیں وتحقیق المصنف فی کل ذلک والکلام مع الحلیة والبحر والخانیة والتجنیس والفتح والسراج والشامی والبدائع۔
	رساله ۴۔ رحب الساحة فی میاه لایستوی وجهها وجوفها فی المساحة۔	۳۲۱	

Fatawa Razawiyya - Volume Second

Page	Description	Page	Title/Subject
399	Definition of flowing water.	446	The author's explanation of what was narrated from Imam Abu Yusuf regarding the depth of flowing water.
400	The wisdom behind why water in a vessel or cavity must flow out for it to be considered flowing.	451	Treatise 6: Al-Noor wal-Nawraq... On the explanation of absolute water, high-level research without parallel, consisting of five sections.
403	The wisdom of the condition of continuity in what is joined to flowing [water].	452	Section One: Mandated details in three types.
405	Renewal of consideration and the statement of those who said outflow is not a condition for flow, and refinement of the reality of flow beyond which there is no more. Discussion with al-Bazzaziyya and al-Hilya.	452	Type One: Water with which purification can be achieved even if use is prohibited. Discussion with Malik al-Ulama, Tahtawi, Shami, al-Bahr, al-Nahr, al-Quhistani, Ibn Hajar, al-Siraj, al-Shaikh al-Muhaddith, al-Fath, al-Ghunya, al-Durr, and Sayyidi al-Nabulsi.
420	The investigation that movement inside a cistern or pond is not flow.	494	Treatise 7 (Supplementary): 'Ata-un-Nabi... On the rulings for water filled by a child. Great researches by the author. Water is of three types: owned, permissible, owned-permissible, and an explanation of all three types.
425	Treatise 5: Hibat al-Habir... Unique research on the required depth of 'ab-e-kthir' (large body of water).	495	The author's rule for owning permissible (unowned) things and refutation of al-Zahidi and his teacher. Discussion with Tahtawi, Shami, and al-Hindiyya.
425	Explanation of 11 opinions and reconciliation among the correct ones. Discussion with al-Bahr, al-Durr, Biri-Zadah, al-Shami, al-	508	Refinement on a child taking possession of something permissible at the request of his parents. Mention of

Page	Description
	Tahtawi, al-Birjandi, and al-Durar.
431	Great benefit: The determination of "dah dar dah" (ten by ten) is the explanation of the "Zahir al-Riwayah" itself. Discussion with Sadr al-Shari'ah, al-Bahr, and al-Durr.
440	Verification that the meaning is scooping with both hands.

Page	Title/Subject
	three opinions on it and the author's research on the ruling.
511	Weakening of the first opinion and discussion with al-Shami.

फतवा रज़विया - जिल्द सानी (खंड दूसरा)

पृष्ठ	विवरण
399	प्रवाहमान जल (जर्यान-ए-आब) की परिभाषा।
400	इसकी हिकमत (बुद्धि) कि जो पानी बर्तन या गुहा में हो, उसके प्रवाह का बाहर निकलना आवश्यक है।
403	बहते पानी के साथ जुड़े हुए पानी में निरंतरता की शर्त की हिकमत।
405	पुनर्विचार और उनका कथन जिन्होंने कहा कि प्रवाह के लिए बाहर निकलना शर्त नहीं है, और प्रवाह की वास्तविकता का ऐसा परिष्करण जिसके आगे कुछ नहीं। अल-बज्जाज़िया और अल-हिलिया के साथ चर्चा।
420	यह शोध कि हौज़ या तालाब के अंदर की गति प्रवाह नहीं है।
425	रिसाला 5: हिबत अल-हबीर... आब-ए-कसीर (विशाल जल निकाय) की गहराई के परिमाण पर अद्वितीय शोध।
425	

पृष्ठ	शीर्षक/विषय
446	बहते पानी की गहराई के संबंध में इमाम अबू यूसुफ से जो कुछ वर्णित है, उस पर लेखक का स्पष्टीकरण।
451	रिसाला 6: अन-नूर वल-नौरक... आब-ए-मुतलक (शुद्ध जल) के वर्णन में वे उच्च शोध जिनकी कोई मिसाल नहीं, पांच अध्यायों पर आधारित।
452	पहला अध्याय: तीन प्रकार के स्पष्ट विवरण।
452	पहला प्रकार: वह पानी जिससे पवित्रता प्राप्त हो जाएगी चाहे उपयोग वर्जित हो। मलिक अल-उलेमा, तहतावी, शामी, अल-बह्र, अल-नह्र, अल-कुहिस्तानी, इब्न हजर, अल-सिराज, अल-शेख अल-मुहद्दिस, अल-फत्ह, अल-ग़ुनिया, अल-दुर्र और सैयदी अल-नाबुलसी के साथ चर्चा।
494	रिसाला 7 (अनुपूरक): अता-उन-नबी... बच्चे द्वारा भरे गए पानी के नियमों पर। लेखक के महान शोध। पानी तीन प्रकार का है: स्वामित्व वाला, अनुमत, स्वामित्व-अनुमत, और तीनों प्रकारों का वर्णन।
495	अनुमत चीजों के स्वामित्व के लिए लेखक का नियम और अल-ज़ाहिदी और उनके शिक्षक का खंडन। तहतावी, शामी और अल-हिंदिया के साथ चर्चा।
508	

पृष्ठ	विवरण
431	इसमें 11 मतों का वर्णन और जो सही हैं उनके बीच सामंजस्य। अल-बह्र, अल-दुर्र, बीरी-ज़ादा, अल-शामी, अल-तहतावी, अल-बिरजंदी और अल-दुरर के साथ चर्चा। महान लाभ: "दह दर दह" (दस बटा दस) का निर्धारण ज़ाहिर अल-रिवायत की ही व्याख्या है। सद्र अल-शरीया, अल-बह्र और अल-दुर्र के साथ चर्चा।
440	यह शोध कि अर्थ दोनों हाथों से पानी निकालना (स्कूपिंग) है।

पृष्ठ 34 का 711

पृष्ठ	शीर्षक/विषय
511	माता-पिता के अनुरोध पर बच्चे द्वारा किसी अनुमत चीज़ पर कब्ज़ा करने पर शोध। इसमें तीन मतों का उल्लेख और इस पर लेखक का शोध। पहले मत को कमज़ोर ठहराना और अल-शामी के साथ चर्चा।

صفحہ تفصیل		صفحہ عنوان/مضمون	
۳۹۹	جریانِ آب کی تعریف۔	۴۴۶	توجیہ المصنف ما روی عن الامام ابی یوسف فی عمق الماء الجاری۔
۴۰۰	اس کی حکمت کہ جو پانی ظرف و جوف میں ہو اس کے جریان کو باہر نکلنا ضرور ہے۔	۴۵۱	رسالہ ۶۔ النور والنورق لاسفار الماء المطلق آب مطلق کے بیان میں وہ تحقیقات عالیہ جن کی نظیر نہیں پانچ فصل پر مشتمل۔
۴۰۳	ملحق بالجاری میں شرطِ دوام کی حکمت۔	۴۵۲	فصل اول جزئیات منصوصہ تین قسم پر۔
۴۰۵	تجدید النظر وقول من قال لا یشترط للجریان الخروج وتنقیح حقیقة الجریان بما لامزید علیه والکلام مع البزازیة والحلیة۔	۴۵۲	قسم اول وہ پانی جن سے طہارت ہو جائے گی اگرچہ استعمال ممنوع ہو والکلام مع ملک العلماء و ط و ش والبحر والنهر والقهستانی وابن حجر والسراج والشیخ المحدث والفتح والغنیة والدر وسیدی النابلسی۔
۴۲۰	اس کی تحقیق کہ حوض یا تالاب کے اندر حرکت جریان نہیں۔	۴۹۴	رسالہ ۷ ضمنی۔ عطاء النبی لافاضة احکام ماء الصبی بچہ کے بھرے ہوئے پانی میں عظیم جلیل تحقیقات مصنف پانی تین قسم ہے مملوک، مباح، مملوک مباح اور تینوں قسموں کا بیان۔

صفحہ تفصیل		صفحہ عنوان/مضمون	
۴۲۵	رسالہ ۵۔ ہبة الحبير في عمق ماء كثير آبِ كثير ميں مقدارِ عمق كى تحقيق يكتا۔	۴۹۵	ضابطة المصنف لتملك المباح والرد على الزاهدى واستاذه والكلام مع ط و ش والهندية۔
۴۲۵	اس ميں ۱۱ قولوں كا بيان اور جو مصيح ہيں ان ميں تطبيق والكلام مع البحر والدر وبيرى زاده والشامى والطحطاوى والبرجندى والدرر۔	۵۰۸	تنقيح فى استيلاء صبى على مباح باستدعا ابويه وذكر ثلاثة اقوال فيه وتحقيق المصنف الحكم فيه۔
۴۳۱	جليل فائده ده در ده كى تقدير ظاہر الرواية ہى كى تفسير ہے والكلام مع صدر الشريعة والبحر والدر۔	۵۱۱	تضعيف القول الاول والكلام مع الشامى
۴۴۰	تحقيق ان المراد الغرف باليدين۔		

Fatawa Razawiyyah - Volume 2

- Page 514: Discourse on the second opinion, then its substantiation and discussion regarding As-Sirajiyyah and Ash-Shami. | Page 585: Second category: flowing things; discussion with Ad-Durar, Abdul Halim, and Imam Az-Zayla'i.
- Page 521: Weakening of the third opinion and discussion with Al-Inayah, Al-Fath, and Al-Bahr. | Page 596: Second section: those from which Wudu is not valid; discussion with Al-Hidayah, Ad-Durar, Ash-Shurunbulali, Hasan Al-Ujaymi, Abdul Halim, Al-Khadimi, Nuh Effendi, Sayyid Abu Al-Saud, Az-Zayla'i, Al-Bahr, and Al-Bazzaziyyah.
- Page 530: Problem of mixing a child's water with pond and well water, the author's exception of 16 scenarios from it, providing 18 clarifications, and discussion with Ash-Shami and Sayyid An-Nabulsi. | Page 612: Mixture involving cooking and three paths for the texts regarding that, and the author's investigation through reconciliation; discussion with Al-Khaniyah, Al-Bahr, Ash-Shami, and Al-Birjandi.
- Page 543: Description of those waters in which some other thing has mixed; discussion with Al-Hilyah, Al-Ghazzi, Majma' al-Anhur, Al-Fawa'id, Akhi Chelebi, Yusuf Chelebi, Imam Malik al-Ulama, Ash-Shurunbulali, Ad-Durr, and Abu al-Saud. | Page 623: Comparisons and discussion with the commentary of Al-Majma', Al-Ghunya, and Al-Bahr.
- Page 571: Definition of cooking (At-Tabkh). | Page 626: Another type, both categories.
- Page 573: Another type. | Page 629: Third section: those from which the ruling for the permissibility of Wudu is narrated contrary to Imam Az-Zayla'i's rule; discussion with Ad-Durar, Imam Az-Zayla'i, Sayyid Abu Al-Saud, and Al-Bahr.
- Page 574: First category: dry things; discussion with the two Imams Ibn Hajar al-Asqalani and Al-Makki, Imam Malik al-Ulama, and Mawla Bahr al-Ulum and Al-Khadimi. | Page 629: First category: dry items.
- Page 577: Four paths for the texts regarding that, author's investigation through reconciliation. | Page 638: Second category: liquid things.

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (खंड 2)

- पृष्ठ ५१४: दूसरे कथन पर चर्चा, फिर उसका समर्थन और अस-सिराजिया और अश-शामी के साथ चर्चा। | पृष्ठ ५८५: दूसरी श्रेणी: बहने वाली चीजें; अद-दुर्रर, अब्दुल हलीम और इमाम अज़-ज़ैलई के साथ चर्चा।
- पृष्ठ ५२१: तीसरे कथन को कमजोर साबित करना और अल-इनाया, अल-फतह और अल-बह्र के साथ चर्चा। | पृष्ठ ५९६: दूसरा हिस्सा: वे चीजें जिनसे वज़ू सही नहीं है; अल-हिदाया, अद-दुर्रर, अशु-शुरुनबुलाली, हसन अल-उजैमी, अब्दुल हलीम, अल-खादिमी, नूह एफेंदी, सैय्यद अबू अल-सऊद, अज़-ज़ैलई, अल-बह्र और अल-बज्ज़ाज़िया के साथ चर्चा।
- पृष्ठ ५३०: हौज़ और कुएँ के पानी में बच्चे के पानी के मिलने का मसला, लेखक द्वारा १६ स्थितियों का अपवाद, १८ स्पष्टीकरण और अश-शामी और सैय्यद अन-नाबुलसी के साथ चर्चा। | पृष्ठ ६१२: खाना पकाने से संबंधित मिश्रण; इस पर ग्रंथों के तीन तरीके और सुलह के माध्यम से लेखक की जाँच; अल-खानिया, अल-बह्र, अश-शामी और अल-बिरजंदी के साथ चर्चा।
- पृष्ठ ५४३: उन पानियों का वर्णन जिनमें कोई अन्य चीज़ मिल गई हो; अल-हिल्या, अल-ग़ज़ी, मजमा अल-अन्हुर, अल-फ़वाइद, अख़ी चेलपी, यूसुफ चेलपी, इमाम मलिक अल-उलेमा, अशु-शुरुनबुलाली, अद-दुर और अबू अल-सऊद के साथ चर्चा। | पृष्ठ ६२३: तुलना और मजमा की व्याख्या, अल-ग़ुनिया और अल-बह्र के साथ चर्चा।
- पृष्ठ ५७१: पकाने (तबरीख) की परिभाषा। | पृष्ठ ६२६: एक और प्रकार, दोनों श्रेणियाँ।
- पृष्ठ ५७३: एक और प्रकार। | पृष्ठ ६२९: तीसरा हिस्सा: वे चीजें जिनसे वज़ू की वैधता का हुक्म इमाम अज़-ज़ैलई के नियम के विरुद्ध वर्णित है; अद-दुर्रर, इमाम अज़-ज़ैलई, सैय्यद अबू अल-सऊद और अल-बह्र के साथ चर्चा।
- पृष्ठ ५७४: पहली श्रेणी: सूखी चीज़ें; दो इमामों, इब्न हजर अल-अस्कालानी और अल-मक्की, इमाम मलिक अल-उलेमा और मौला बह्र अल-उलूम और अल-खादिमी के साथ चर्चा। | पृष्ठ ६२९: पहली श्रेणी: सूखी वस्तुएं।
- पृष्ठ ५७७: इस संबंध में ग्रंथों के चार तरीके सुलह के साथ लेखक की जाँच। | पृष्ठ ६३८: दूसरी श्रेणी: तरल चीजें।

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

٥١٤ الكلام على القول الثانى ثم تأييده والكلام مع السراجية والشامي۔ | صنف دوم، بہتی چیزیں والكلام مع الدرر وعبد الحليم والامام الزيلعي۔ ٥٨٥ ٥٢١ تضعيف القول الثالث والكلام مع العناية والفتح والبحر | قسم دوم جن سے وضو صحیح نہیں والكلام مع الهداية والدرر والشرنبلالي وحسن العجيمي عبد الحليم و الخادمى ونوح افندى والسيد ابى السعود الزيلعي والبحر والبزازية۔ ٥٩٦ ٥٣٠ مسألة اختلاط ماء الصبى بماء الحوض والبئر واستثناء المصنف منها ١٦ صورة وافادة ١٨ تنبيها والكلام مع الشامى وسيدى النابلسى۔ | المخلوط بالطبخ وثلثة مسالك للعبارات فى ذلك وتحقيق المصنف بالتوفيق والكلام مع الخانية والبحر والشامي والبرجندى۔ ٦١٢ ٥٤٣ ان پانیوں کا بیان جن میں کسی دوسری چیز کا خلط ہوگیا والكلام مع الحلية و الغزى ومجمع الانهر والفوائد واخى چلپى و يوسف چلپى والامام ملک العلماء والشرنبلالى والدر وابى السعود۔ | المقابلات والكلام مع شرح المجمع والغنية والبحر۔ ٦٢٣ ٥٧١ تعريف الطبخ | نوع ديگر ہر دو صنف ٦٢٦ ٥٧٣ نوع ديگر | قسم سوم جن سے جواز وضو میں حکم منقول وضابطہ امام زیلعی کاخلاف ہے والكلام مع الدرر والامام الزيلعي والسيد ابوالسعود والبحر۔ ٦٢٩ ٥٧٤ صنف اول خشک چیزیں والكلام مع الامامين ابني حجر العسقلانى والمكي والامام ملک العلماء والمولى بحر العلوم والخادمى۔ | صنف اول خشک اشیاء ٦٢٩ ٥٧٧ اربعة مسالك للعبارات فى ذلك تحقيق المصنف بالتوفيق فيها۔ | صنف دوم سیال چیزیں ٦٣٨

Fatawa Razawiya | Volume 2

Page	Description
652	Section Two: 12 statements of scholars regarding the definition of absolute (mutlaq) and restricted (muqayyad) water and an explanation of the best among them. Discussion with al-Kifayah, al-Inayah, al-Bahr, Imam al-Isbijabi, al-Sam'ani, Ibn al-Shalabi, Imam Sahib al-Hidayah, Sa'di Effendi, Isam, al-Fath, al-'Ayni, al-Ghunyah, al-Hilyah, al-Shami, Abdul Halim, al-Khadimi, al-Ghazzi, and al-Sayyid al-Sharif.
667	The author's investigation that used (musta'mal) and impure (najis) water are types of absolute water. Discussion with al-Bahr, al-Shami, Abdul Halim, and al-Khadimi.
677	The author's investigation into the basis of the opinions of Abu Yusuf and Muhammad (may Allah have mercy on them) regarding absolute water.
679	The Razawi definition of absolute water.
679	Memorization of this definition in two verses of poetry.
680	Discussion on additions (idafat) and added water (ma' mudaf), seven statements therein, the absence of the 'best', and discussion with al-'Inayah, al-Binayah, al-Bahr, al-Kifayah, al-Dirayah, al-Imam al-Ajal Khawahar Zadah, and the refutation of al-Zahidi.
687	Section Three: Six (6) principles from the texts (mutun) etc.
687	Six (6) principles.
687	Eight (8) consensus-based (ijma'i) issues.
693	The principle of completion (it'mam) and discussion with al-'Ayni and al-Fath.

फ़तावा रज़विया | जिल्द सानी

पृष्ठ	विवरण
652	फ़स्ल दोम: मुतलक़ और मुक़य्यद की परिभाषा में विद्वानों के12 कथनों और उनमें से सबसे उत्तम का वर्णन। अल-किफ़ाया, अल-इनाया, अल-बह्र, इमाम अल-इस्बीजाबी, अल-समअनी, इब्न अल-शलबी, इमाम साहिब अल-हिदाया, सअदी एफ़ेंदी, इसाम, अल-फ़तह, अल-अनी, अल-ग़ुनिया, अल-हिलिया, अल-शामी, अब्दुल हलीम, अल-खादिमी, अल-ग़ज़्ज़ी और अल-सैय्यद अल-शरीफ़ के साथ चर्चा।
667	लेखक का शोध कि मुस्तअमल (प्रयुक्त) और नजिस (अशुद्ध) पानी मुतलक़ पानी का हिस्सा है। अल-बह्र, अल-शामी, अब्दुल हलीम और अल-खादिमी के साथ चर्चा।
677	मुतलक़ पानी के बारे में इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के कथनों के आधार पर लेखक का शोध।
679	मुतलक़ पानी की रज़वी परिभाषा।
679	इस परिभाषा का दो शेरों में संकलन।
680	इज़ाफ़ात (जोड़) और मा-ए-मुदाफ़ (मिश्रित जल) पर चर्चा और उसमें सात कथन, सबसे उत्तम का अभाव, और अल-इनाया, अल-बिनाया, अल-बह्र, अल-किफ़ाया, अल-दिराया, इमाम अल-अजल ख्वाहर ज़ादा के साथ चर्चा और अल-ज़ाहिदी का खंडन।
687	फ़स्ल सोम: मतून आदि के छह (6) नियम।
687	छह (6) नियम।
687	आठ (8) सर्वसम्मत (इजमाई) मसले।
693	इत्माम (पूर्णता) का नियम और अल-अनी व अल-फ़तह के साथ चर्चा।

صفحہ	تفصیل
۶۵۲	فصل دوم مطلق و مقید کی تعریف میں علما کی ۱۲ عبارتیں اور ان کے احسن کا بیان والکلام مع الکفایة والعنایة والبحر والامام الاسبیجابي والسمعانی وابن الشلبی والامام صاحب الهدایة وسعدی أفندی وعصام والفتح والعیني والغنیة والحلیة والشامي وعبدالحلیم و الخادمی والغزی والسید الشریف۔
۶۶۷	تحقیق المصنف ان الماء المستعمل والنجس من الماء المطلق والکلام مع البحر والشامي وعبدالحلیم والخادمی۔
۶۷۷	تحقیق المصنف مناط قولی ابي یوسف ومحمد رحمهما الله تعالی في الماء المطلق۔
۶۷۹	التعریف الرضوی للماء المطلق
۶۷۹	اس تعریف کا دو شعروں میں ضبط
۶۸۰	بحث الاضافات والماء المضاف وسبع عبارات فیه وانتفاء الاحسن والکلام مع العنایة والبنایة والبحر والکفایة والدرایة والامام الاجل خواهر زاده والرد علی الزاهدی
۶۸۷	فصل سوم متون وغیرہ کے چھ ۶ ضابطے۔
۶۸۷	چھ ۶ ضابطے۔
۶۸۷	آٹھ ۸ مسائل اجماعیہ
۶۹۳	ضابطہ اتمام والکلام مع العینی والفتح۔

Fatawa Razawiyya Volume 2

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Chapter of Waters (Explanation of Waters)

Problem 23: 27 Safar 1305 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: is the remaining water of wudu left in a vessel permissible for wudu or not? And if while performing the first wudu some water falls from the hand into it, what is the ruling? Explain and be rewarded.

The Answer: (1) The remaining water of wudu left in a vessel is not 'used water' (ma-e-musta'mal); rather it is the water that remains from usage. There is no harm in performing wudu with it. (2) If used water (musta'mal) mixes with unused water, then in the correct school of thought, performing wudu with it is permissible as long as the used water does not exceed the unused water, even if the used water fell in a continuous stream. Some have said that in this case, the used water will spoil it and wudu will not be permissible even if the unused water is more, but preference is given to the first school of thought.

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
In Fatawa al-Khulasa: If a person in a state of major ritual impurity (junub) performs a bath and something from his washing falls into his vessel, the water is not spoiled for him. However, if it flows from him in a stream, it spoils it. Similarly, the pool of a public bath is based on this. According to Imam Muhammad, it does not spoil it unless it overcomes it, meaning it does not remove its purifying nature. [1]In Ad-Durr al-Mukhtar, ritual impurity is removed by pure (mutlaq) water, not by water overcome by used (musta'mal) water in parts. If the pure water is more than half, purification with all of it is permissible; otherwise, it is not, as verified in Al-Bahr, An-Nahr, and Al-Minah. [2]Taken selectively. And Allah Almighty	In Fatawa Khulasa, it is stated: If during washing, some droplets from the body of a person in major ritual impurity fall into the vessel, the water will not become impure. Yes, if the water flows regularly and falls, it will become impure, and the ruling for a public bath pool is the same. Imam Muhammad's statement is that it will only become impure when it overcomes the pure water. And in Durr-e-Mukhtar, it is written that one should remove ritual impurity with pure water, not with water that is overcome by used water. If the pure water is more than half, it is permissible to attain purification from the whole, otherwise not. This is the

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
knows best, and His knowledge is most complete and most perfect.	research in Bahr, Nahr, and Minah. (End of selection)

1 Khulasat al-Fatawa, Book of Purification (1/8) 2 Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, printed Mujtabai Delhi (1/34)

फ़तावा रज़विया खंड 2

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

बाब अल-मियाह (पानी का वर्णन)

मसला 23: 27 सफ़र 1305 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि वज़ू का बचा हुआ पानी जो बर्तन में रह जाए, उससे वज़ू करना जाइज़ है या नहीं? और अगर पहला वज़ू करते समय कुछ पानी हाथ से उसमें गिर जाए तो क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएँ।

जवाब: (1) वज़ू का जो पानी बर्तन में रह जाता है वह 'मा-ए-मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ पानी) नहीं है, बल्कि वह वह पानी है जो इस्तेमाल से बच गया। उससे वज़ू करने में कोई हर्ज़ नहीं। (2) अगर इस्तेमाल किया हुआ पानी (मुस्तअमल) गैर-मुस्तअमल (शुद्ध पानी) में मिल जाए, तो सही मज़हब के अनुसार उससे वज़ू जाइज़ है जब तक कि मुस्तअमल पानी गैर-मुस्तअमल से ज़्यादा न हो जाए, चाहे मुस्तअमल पानी धार बनकर गिरा हो। कुछ ने कहा है कि इस सूरत में भी मुस्तअमल पानी उसे ख़राब कर देगा और वज़ू जाइज़ नहीं होगा चाहे गैर-मुस्तअमल ज़्यादा हो, लेकिन पहले मज़हब को प्राथमिकता दी गई है।

अरबी पाठ

फ़तावा अल-खुलासा में है: यदि कोई जुनुब (अशुद्ध) व्यक्ति स्नान करता है और उसके स्नान से कुछ पानी उसके बर्तन में गिर जाता है, तो पानी उसके लिए खराब नहीं होता। लेकिन अगर वह धार के रूप में बहता है, तो वह उसे खराब कर देता है। हमाम के हौज़ का भी यही नियम है। इमाम मुहम्मद के अनुसार, यह तब तक खराब नहीं होता जब तक कि यह उस पर हावी न हो जाए, यानी उसे शुद्धता से बाहर न कर दे। [1]अद-दुर अल-मुख्तार में है: अशुद्धि को मुतलक़ (शुद्ध) पानी से दूर किया जाता है, न कि उस पानी से जो मुस्तअमल पानी से अभिभूत हो। यदि मुतलक़ पानी आधे से अधिक है, तो पूरे से शुद्धिकरण जाइज़ है, अन्यथा नहीं,

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

फ़तावा खुलासा में है: अगर जुनुब व्यक्ति के शरीर से ग़ुस्ल (स्नान) के समय कुछ छीटें बर्तन में गिर जाएँ तो पानी नापाक नहीं होगा, हाँ अगर बाकायदा बहकर पानी गिरा तो नापाक होगा और हमाम के हौज़ का भी यही हुक्म है। इमाम मुहम्मद का कौल (कथन) है कि सिर्फ उसी वक्त नापाक होगा जब वह पाक पानी पर ग़ालिब (प्रभावी) हो जाए। और दुर्रे मुख़्तार में है कि मुतलक पानी से ह़दथ को ज़ाइल करे न कि उस पानी से जिस पर मुस्तअमल पानी ग़ालिब हो। अगर मुतलक पानी आधे से ज़्यादा हो

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
जैसा कि अल-बहर, अन-नहर और अल-मिनह में सत्यापित किया गया है। [2]संक्षेप में। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है।	तो कुल से पाकी हासिल करना जाइज़ है वर्ना नहीं। बहर, नहर और मिनह में यही तहकीक है। (संक्षिप्त)

1 खुलासातुल फ़तावा, किताबुल तहारत (1/8) 2 अद-दुरुल मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित (1/34)

पृष्ठ 37/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

باب المیاہ (پانیوں کا بیان)

مسئلہ ۲۳: ۲۷ صفر ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بقیہ آب وضو سے کہ برتن میں رہ جائے وضو جائز ہے یا نہیں اور اگر پہلا وضو کرنے میں کچھ پانی ہاتھ سے اُس میں گر پڑے تو کیا حکم ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: بقیہ (۱) آب وضو کہ برتن میں رہ جاتا ہے مائے مستعمل نہیں بلکہ وہ پانی ہے جو استعمال سے بچ رہا اُس سے وضو میں کوئی حرج نہیں اور مائے مستعمل (۲) اگر غیر مستعمل میں مل جائے تو مذہبِ صحیح میں اُس سے وضو جائز ہے جب تک مائے مستعمل غیر مستعمل سے زائد نہ ہو جائے اگرچہ مستعمل پانی دھار بندھ کر گرا ہو، اور بعض نے کہا اس صورت میں بھی مستعمل فاسد کردے گا اور وضو جائز نہ ہوگا اگر چہ غیر مستعمل زائد ہو مگر ترجیح مذہبِ اول کو ہے۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ/تشریح
فی فتاوی الخلاصة جنب اغتسل فانتقض من غسله شیئ فی انائه لم یفسد علیه الماء اما اذا کان یسیل منه سیلانا افسده وکذا حوض الحمام علی هذا وعلی قول محمّد لا یفسده مالم یغلب علیه یعنی لا یخرجه من الطهوریة	فتاویٰ خلاصہ میں ہے اگر جنبی شخص کے جسم سے بوقت غسل کچھ چھینٹے برتن میں گر گئے تو پانی ناپاک نہ ہوگا، ہاں اگر باقاعدہ بہہ کر پانی گرا تو ناپاک ہوگا اور حمام کے حوض کا بھی یہی حکم ہے اور امام محمد کا قول ہے کہ صرف اُسی وقت ناپاک

عربی عبارت	اردو ترجمہ/تشریح
۱وفی الدر المختار یرفع الحدث بماء مطلق لا بماء مغلوب بمستعمل بالاجزاء فان المطلق اکثر من النصف جاز التطھیر بالکل والا لا علی ما حققه فی البحر والنھر والمنح ۲ اه ملتقطاً و اللہ تعالیٰ اعلم وعلمه اتم واحکم۔	ہوگا جب وہ پاک پانی پر غالب ہو جائے اور دُرِ مختار میں ہے کہ مطلق پانی سے حدث کو زائل کرے نہ کہ اُس پانی سے جس پر مستعمل پانی غالب ہو اگر مطلق پانی آدھے سے زائد ہو تو کل سے پاکی حاصل کرنا جائز ہے ورنہ نہیں، بحر، نہر اور منح میں یہی تحقیق ہے اھ ملتقطاً۔ (ت)

1 خلاصة الفتاوی کتاب الطہارت (۸/۱) 2 الدر المختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی (۳۴/۱)

Fatawa Razawiyya Volume Two Problem 24: From Ghaziabad district Meerut, Mohalla Bagh, sent by Hamid Hasan Sahib, 5 Ramadan-ul-Mubarak 1315 AH. Is performing wudu (ablution) with the water left over after Istinja (1) (cleaning oneself after urination or defecation) permissible or not? And does it make any difference in the sanctity of wudu because of this? Please explain and be rewarded.

Answer: It is permissible, and there is nothing contrary to the sanctity of wudu in this, as this water has not been used (already for a ritual purpose), as is obvious (Kama la yakha). Allah knows best what is correct.

Problem 25: 20 Jamadi-al-Ukhra 1321 AH. What do the scholars of religion say about this issue: Is the rainwater that specifically falls in the city and washes through drains etc. and goes out, pure or not? Is wudu valid with it? Will this water be called 'Ma-e-Jari' (flowing water) or not? Please explain and be rewarded.

Answer: (2) While it is raining and the water is flowing, it is certainly flowing water (Ma-e-Jari). It can never become impure unless a characteristic of impurity, like smell or color, becomes apparent in it. Merely passing over impurities does not cause it to become impure, for "the flowing water purifies one part by another" (t). As for wudu with it: if particles of visible impurity are flowing in it such that any part of water taken from it will also contain a particle, then it is certainly forbidden and unlawful. Wudu will not be valid, and the body will become impure because the ruling of purity was due to its flow; once water is taken in a vessel or palm, the flow is interrupted, and if a particle of impurity is present, the water has now become impure. Even if this is not the case, one should still avoid it without necessity, as gutter water is likely not free from components of impurity, and common nature finds it repulsive (istidhar), i.e., feels aversion, disgust, and dislike towards it. And shunning such things is desired in Sharia; it is in Hadiths: "Avoid what sounds bad to the ear" (1). "Avoid that for which an apology is needed later" (2). "Give glad tidings and do not create aversion" (3). (t) And if the rain has stopped and the water has settled, and now components of impurity are apparent in it, or if there is impurity in the bed of the drain...

1. Musnad Imam Ahmad from Abu Al-Ghadia, printed Beirut 4/46
2. Jami' al-Saghir with Fayz al-Qadir, printed Beirut 3/311
3. Jami' al-Bukhari, Kitab al-Ilm, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/16 Page 38 of 711

फतावा रज़विया भाग दो मसाला 24: गाजियाबाद जिला मेरठ, मोहल्ला बाग से, प्रेषक हामिद हसन साहब, 5 रमज़ान-उल-मुबारक 1315 हिजरी। इस्तिन्जा (1) यानी पेशाब-पाखाने के बाद बचे हुए पानी से वज़ू जायज़ है या नहीं? और क्या इस वजह से वज़ू की हुरमत (पवित्रता) में कोई फर्क आता है या क्या? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: जायज़ है और इसमें वज़ू की हुरमत के खिलाफ कुछ नहीं है क्योंकि यह पानी इस्तेमाल (मुस्तअमल) नहीं हुआ है, जैसा कि स्पष्ट है (कमा ला यखफा)। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 25: 20 जमादी-उल-उखरा 1321 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि बारिश का पानी जो खास तौर पर शहर में बरसता है और नाली वगैरह को धोकर बाहर चला जाता है, वह पाक (शुद्ध) है या नहीं? उससे वज़ू करना सही है या नहीं? इस पानी को 'जारी' (बहता हुआ) कहेंगे या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: (2) जिस समय बारिश हो रही है और वह पानी बह रहा है, वह निश्चित रूप से 'मा-ए-जारी' (बहता हुआ पानी) है और वह तब तक हरगिज़ नापाक नहीं हो सकता जब तक कि उसमें नजासत (गंदगी) का कोई गुण, जैसे गंध या रंग, प्रकट न हो जाए। केवल नजासत के ऊपर से उसका गुज़रना उसे नापाक नहीं करता, क्योंकि 'बहता हुआ पानी एक हिस्सा दूसरे को पाक कर देता है' (त)। रही बात उससे वज़ू की: अगर उसमें दिखाई देने वाली नजासत के कण इस तरह बह रहे हैं कि पानी का जो हिस्सा उससे लिया जाए, उसमें भी एक-आध कण आ जाए, तो वह यकीनन हराम और नाजायज़ है। वज़ू नहीं होगा और शरीर नापाक हो जाएगा, क्योंकि शुद्धता का हुक्म उसके बहने के कारण था। जब पानी बर्तन या चुल्लू में लिया गया तो बहाव रुक गया और यदि नजासत का कण मौजूद है तो अब पानी अपवित्र (नजिस) हो गया। और अगर ऐसा नहीं भी है, तब भी बिना ज़रूरत उससे बचना चाहिए क्योंकि नालियों का पानी अक्सर नजासत के हिस्सों से खाली नहीं होता और आम स्वभाव में इससे 'इस्तिज़हार' यानी घृणा, नफरत और नापसंदगी होती है। और ऐसी चीज़ से शरीअत में बचना वांछित है, हदीसों में है: "उस चीज़ से बचो जो कान को बुरी लगे" (1)। "उस बात से बचो जिसके लिए बाद में माफ़ी माँगने की ज़रूरत पड़े" (2)। "खुशखबरी सुनाओ, नफरत न फैलाओ" (3)। (त) और अगर बारिश हो चुकी और पानी ठहर गया और अब उसमें नजासत के कण दिखाई दे रहे हैं या नाली की तलहटी में नजासत...

1. मुस्नद इमाम अहमद, अबू अल-गादिया से, मुद्रित बेरुत 4/46

2. जामि अल-सगीर मय फैज़ अल-कादिर, मुद्रित बेरुत 3/311

3. जामि अल-बुखारी, किताब अल-इल्म, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/16 पेज 38 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی مسئلہ ۲۴: از غازی آباد ضلع میرٹھ محلہ باغ مرسلہ حامد حسن صاحب ۵ رمضان المبارک ۱۳۱۵ھ استنجا (۱) یعنی پیشاب پاخانے کے بچے ہوئے پانی سے وضو جائز ہے یا نہیں اور وضو کی حرمت میں اس وجہ سے کچھ فرق تو نہیں آتا یا کیا؟ بینوا توجروا

الجواب: جائز ہے اور اس میں حرمت و وضو کا کچھ خلاف نہیں کہ یہ پانی استعمال میں نہ آیا کما لا یخفی واللہ اعلم بالصواب۔

مسئلہ ۲۵: ۲۰ جمادی الاخرٰی ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پانی بارش کا جو خاص شہر میں برستا ہے اور نالی وغیرہ دھو کر باہر چلا جاتا ہے پاک ہے یا نہیں ، اُس سے وضو درست ہے یا نہیں ، اس پانی کو جاریہ کہیں گے یا نہیں۔ بینوا توجروا

الجواب: (۲) جس وقت بارش ہو رہی ہے اور وہ پانی بہہ رہا ہے ضرور مائے جاری ہے اور وہ ہرگز ناپاک نہیں ہو سکتا جب تک نجاست کی کوئی صفت مثلاً بو یا رنگ اُس میں ظاہر نہ ہو صرف نجاستوں پر اس کا گزرتا ہوا جانا اُس کی نجاست کا موجب نہیں فان الماء الجاری یطہر بعضہ بعضاً (جاری پانی کا ایک حصہ دوسرے کو پاک کر دیتا ہے ۔ت) رہا اُس سے وضو، اگر کسی نجاست مرئیہ کے اجزا اُس میں ایسے بہتے جا رہے ہیں کہ جو حصہ پانی کا اُس سے لیا جائے ایک آدھ ذرہ اس میں بھی آئے گا جب تو یقیناً حرام و ناجائز ہے وضو نہ ہوگا اور بدن ناپاک ہو جائے گا کہ حکم طہارت بوجہ جریان تھا جب پانی برتن یا چلو میں لیا جریان منقطع ہوا اور نجاست کا ذرہ موجود ہے اب پانی نجس ہو گیا اور اگر ایسا نہیں جب بھی بلا ضرورت اُس سے احتراز چاہئے کہ نالیوں کا پانی غالباً اجزائے نجاست سے خالی نہیں ہوتا اور عام طبائع میں اس کا استقذار یعنی اس سے تنفر اُس سے گھن کرنا اُسے ناپسند رکھنا ہے اور ایسے امر سے شرعاً احتراز مطلوب ، احادیث میں ہے: ایاک و ما یسوء الاذن ۱۔ ایاک و ما یعتذر منہ ۲ بشّروا ۳ بُری

بات سننے سے بچو۔ اور اس بات سے کہ بعد میں عذر کی ولا تنفروا ۳۔ ضرورت ہو، خوشخبری سناؤ نفرت نہ پھیلاؤ۔ (ت) اور اگر بارش ہو چکی اور پانی ٹھہر گیا اور اب اُس میں اجزائے نجاست ظاہر ہیں یا نالی کے پیٹ میں نجاست کی

1 مسند امام احمد عن ابی الغادیہ مطبوعہ بیروت ۴۶/۴ 2 جامع الصغیر مع فیض القدیر مطبوعہ بیروت ۷/۳۱۱ 3 جامع للبخاری کتاب العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۶/۱ Page 38 of 711

Fatawa-e-Razvia Volume 2

...had color or smell, and it didn't rain enough to clean it completely, and that color or smell still remains after the rain stops, then this water is impure. And if the drain was clean or the rain cleaned it completely and no part of impurity is felt in the water, then it is pure. And Allah Almighty knows best.

Issue 26: 11 Safar 1309 AH

Question: Respected Maulvi Sahib Qibla! A pool is seven and a half yards long, seven and a half yards wide, and one and a half yards deep. If a four-year-old child urinates in it, did it become impure or remain pure? Humble servant, Azizullah.

Answer: (1) It remained pure because its surface area (perimeter) is 25 yards more than even double of 'Dah dar Dah' (ten by ten), i.e., 100 hands. And the standard is the cloth-yard for ease and Islam. Allah Almighty knows best. (And the standard is the yard in common use for the ease of people. T)

Issue 27: 29 Rajab 1311 AH

Question: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say in this matter that there is a 'Dah dar Dah' pool among Sunnis or Shias, and a dog or pig has drunk water from it, or one wants to perform ablution (wudu) from it or drink it, or urine or feces has fallen into it, has it remained pure or not? Explain and be rewarded.

Answer: (2) Regarding the matter of water, the school of thought of our noble Imams (may Allah be pleased with them) is more cautious than all other schools. Running water, by consensus, does not become impure until its color, smell, or taste changes due to impurity, or according to one saying, it passes over half or most of the visible impurity. And regarding non-running water, the summary of 'Zahir al-Riwayah' from our three Imams (may Allah be pleased with them all) is that if impurity has fallen there and the predominant thought is that if you perform wudu at that spot, the water from that distance will not immediately flow away and be replaced, then the water there has not become impure; wudu etc. from it is all permissible.

[Table/Box Content] Left (Arabic): In Radd al-Muhtar, it is said in al-Bada'i and al-Muhit: "The narration from our earlier companions agreed that it is considered by movement, which is that it rises and falls at its hour, not after staying, and the original movement is not considered. In al-Tatarkhaniya: 'It is what is narrated from

our three Imams in the famous books.' End quote. And is the washing movement considered..." Right (Urdu): It is mentioned in Radd al-Muhtar that it was said in Bada'i and Muhit that it is an agreed narration from our earlier companions that movement will be considered, meaning that ups and downs appear in the water at that very moment, not after a while, and the original movement will not be considered. It is in Tatarkhaniya that this same thing is narrated from our three Imams in famous books. End quote. Now there is a difference in this as to whether...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दूसरी

...रंगत या गंध थी और बारिश इतनी नहीं हुई कि उसे बिल्कुल साफ कर देती, और रुकने के बाद भी वह रंग या गंध अभी भी बाकी है, तो अब यह पानी नापाक (अशुद्ध) है। और अगर नाली साफ थी या बारिश ने बिल्कुल साफ कर दी और पानी में कोई भी गंदगी का हिस्सा महसूस नहीं होता, तो वह पाक (शुद्ध) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २६: ११ सफ़र १३०९ हिजरी

प्रश्न: जनाब मौलवी साहब क़िबला! एक हौज साढ़े सात गज़ लंबा, साढ़े सात गज़ चौड़ा और डेढ़ गज़ गहरा है। अगर उसमें चार साल का बच्चा पेशाब कर दे तो क्या वह नापाक हो गया या पाक रहा? ख़ाकसार अज़ीज़ुल्लाह।

उत्तर: (१) पाक रहा क्योंकि इसकी सतह (घेरा) 'दह दर दह' यानी सौ हाथ के दोगुने से भी पच्चीस (२५) हाथ ज़्यादा है। और विचार कपड़े वाले गज़ का है, आसानी और इस्लाम के लिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (और आम इस्तेमाल में आने वाले गज़ का ही विचार है लोगों की आसानी के लिए। त)

मसला २७: २९ रजब १३११ हिजरी

प्रश्न: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि सुन्नियों या शियाओं में एक हौज 'दह दर दह' (१० गुणा १०) है और उसमें कुत्ते या सूअर ने पानी पी लिया हो, या उससे वज़ू करना या पानी पीना चाहते हों, या उसमें पेशाब या मल गिर गया हो, तो क्या वह पाक रहा या नहीं? व्याख्या करें और पुण्य पाएं।

उत्तर: (२) पानी के मामले में हमारे इमामों (अल्लाह उनसे खुश हो) का मज़हब तमाम मज़हबों से ज़्यादा एहतियात (सावधानी) वाला है। बहता हुआ पानी तो सर्वसम्मति से तब तक नापाक नहीं होता जब तक कि गंदगी से उसका रंग, गंध या स्वाद न बदल जाए, या एक मत के अनुसार वह आधी या अधिकतर दृश्य गंदगी के ऊपर से होकर न गुज़रे। और न बहने वाले पानी में हमारे तीनों इमामों (अल्लाह उन सब से खुश हो) से ज़ाहिर-उर-रिवायत का सारांश यह है कि अगर यहाँ गंदगी गिरी है और प्रबल संभावना है कि उस जगह वज़ू करने से इतनी दूर का पानी तुरंत बहकर खत्म नहीं होगा, तो वहाँ का पानी नापाक नहीं हुआ, उससे वज़ू वगैरह सब जायज़ है।

[तालिका/बॉक्स सामग्री] बायां (अरबी): रद अल-मुहतार में, अल-बदई और अल-मुहीत में कहा गया है: "हमारे पूर्ववर्तियों के साथियों से यह रिवायत सहमत है कि इसे हरकत (हलचल) द्वारा माना जाता है, जो यह है कि यह उसी समय बढ़ता और घटता है, रुकने के बाद नहीं, और मूल हरकत को नहीं माना जाता है। अल-तातारखनिया में: 'यह वही है जो प्रसिद्ध पुस्तकों में हमारे तीन इमामों से वर्णित है।' और क्या धोने की हरकत मानी जाती है..." दायां (उर्दू): रद-उल-मुहतार में है कि बदाए और मुहीत में फ़रमाया गया कि हमारे पुराने साथियों से यह रिवायत सर्वसम्मत है कि हिलाने का विचार होगा, यानी उसी समय पानी में उतार-चढ़ाव पैदा हो न कि थोड़ी देर बाद, और असल हरकत का विचार नहीं होगा। तातार ख़ानिया में है कि यही हमारे तीनों इमामों से मशहूर किताबों में वर्णित है। अब इसमें मतभेद है कि क्या...

पृष्ठ ३९/७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

رنگت یا بو تھی اور بارش اتنی نہ ہوئی کہ اُسے بالکل صاف کر دیتی انقطاع کے بعد وہ رنگ یا بو ہنوز باقی ہے تو اب یہ پانی ناپاک ہے اور اگر نالی صاف تھی یا مینہ نے بالکل صاف کردی اور پانی میں بھی کوئی جزء نجاست محسوس نہیں تو پاک ہے۔ واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۲۶ : ۱۱ صفر ۱۳۰۹ھ جناب مولوی صاحب قبلہ! ایک حوض ساڑھے سات گز لمبا اور ساڑھے سات گز چوڑا اور ڈیڑھ گز گہرا اگر اُس میں چار برس کا بچہ موت دے تو ناپاک ہو گیا یا پاک رہا۔ خاکسار عزیز اللہ

الجواب : (۱) پاک رہا کہ اس کی مساحت (قطر) دہ در دہ یعنی سو ہاتھ کے دونے سے بھی پچیس ۲۵ ہاتھ زائد ہے والعبرۃ بذراع الکرباس تیسیر ا واسلام واللہ تعالٰی اعلم (اور اعتبارِ عام استعمال ہونے والے گز کا ہے لوگوں کی آسانی کیلئے۔ ت)

مسئلہ ۲۷ : ۲۹ رجب ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اِس مسئلہ میں کہ ایک حوض دہ در دہ ہے سنّیوں میں یا شیعوں میں اور اُس میں کتا یا سؤر پانی پی گیا ہو یا اس سے وضو یا پینا چاہئے یا نہیں یا پیشاب یا پاخانہ پھر گیا ہو، پاک رہا یا نہیں۔ بینوا توجروا

الجواب : (۲) امرِ آب میں ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کا مذہب تمام مذاہب سے زیادہ احتیاط کا ہے آبِ جاری تو بالا جماع نجس نہیں ہوتا جب تک نجاست سے اُس کا رنگ یا بو یا مزہ نہ بدلے یا ایک قول پر اُس کا نصف یا اکثر نجاستِ مرئیہ پر ہو کر گزرے اور غیر جاری میں ہمارے ائمہ ثلثہ رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین سے ظاہر الروایۃ کا محصل یہ ہے کہ اگر یہاں

نجاست پڑی ہے اور ظنِ غالب ہو کہ اس جگہ وضو کیجئے تو اتنی دور کا پانی فوراً گزر کر نہ ہونے لگے گا تو وہاں کا پانی ناپاک نہ ہوا اُس سے وضو وغیرہ سب جائز ہے۔

[باکس کی تفصیل] دائیں جانب (اردو): ردالمحتار میں ہے کہ بدائع اور محیط میں فرمایا کہ ہمارے اصحابِ متقدمین سے یہ روایت متفق ہے کہ ہلانے کا اعتبار ہوگا، یعنی اُسی وقت پانی میں نشیب و فراز پیدا ہو نہ یہ کہ تھوڑی دیر بعد، اور اصلِ حرکت کا اعتبار نہ ہوگا تاتار خانیہ میں ہے کہ یہی ہمارے ائمہ ثلثہ سے کتب مشہورہ میں منقول ہے اھ اب اس میں اختلاف ہے کہ آیا بائیں جانب

(عربی): فی ردالمحتار قال فی البدائع والمحیط اتفقت الروایة عن اصحابنا المتقدمین انه یعتبر بالتحریك وهو ان یرتفع وینخفض من ساعته لابعد المکث ولا یعتبر اصل الحرکة وفی التتار خانیة انه المروی عن ائمتنا الثلثة فی الکتب المشهورة اه وهل المعتبر حرکة الغسل

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Right Column] ...refers to the movement of bathing, or ablution, or the hand. The second narration is more authentic (asah) because it is moderate, as mentioned in Al-Muheet and Al-Hawi Al-Qudsi, and the complete discussion is in Al-Hilya etc. etc. And in Al-Durr al-Mukhtar, it is stated that the predominant opinion of the person using the water is reliable. If his strong assumption is that the impurity has not reached the other side, it is permissible; otherwise, it is not. This is the apparent narration (Zahir al-Riwayah) and it is the most authentic, as in Al-Khaniyyah etc., and it has been established through research in Al-Bahr that this is the school's position (al-Madhhab). [End of summary]. Then the later scholars (Muta'akhkhirin) estimated it as ten-by-ten (dah-dar-dah) and categorized it under the ruling of the facilitation of flowing water, deciding that ablution etc. is permissible from all sides as long as the water does not take on the effect of impurity. And in Al-Durr al-Mukhtar, it is said: "But in An-Nahr, it is mentioned that the consideration of ten cubits makes the matter more regulated, especially for the common people who do not have personal opinions; therefore, the prominent later scholars issued fatwas based on it." And in Radd al-Muhtar, some commentators quoted from Shaykh-ul-Islam Allama Sa'd al-Din al-Dairi's treatise "Al-Qawl al-Ra'iq" that his research matches what the authors of the foundational texts (Ashab al-Mutun) wrote, i.e., ten cubits will be considered. And against those who wrote contrary to this, he gave a profound rebuttal, presenting about a hundred correct citations. And it is evident that those later scholars who...

[Left Column] ...or ablution, or the hand. There are narrations, the second of which is more authentic because it is moderate, as in Al-Muheet and Al-Hawi Al-Qudsi, and its completion is in Al-Hilya and others etc. In Al-Durr al-Mukhtar: "The consideration is the predominant opinion of the afflicted person. If his opinion predominates that the impurity did not reach the other side, it is permissible; otherwise, no. This is the apparent narration and it is the most authentic as in Al-Khaniyyah and others. And it was verified in Al-Bahr that it is the Madhhab." [End of summary in Al-Durr al-Mukhtar]. However, in An-Nahr: "And you know that the consideration of ten is more precise, especially for those among the commoners who have no personal opinion. Hence the prominent later scholars issued fatwas based on it" etc. In Radd al-Muhtar, some commentators mentioned from Shaykh-ul-Islam Allama Sa'd al-Din al-Dairi in his treatise Al-Qawl al-Ra'iq that he verified what the authors of the foundational texts chose regarding the consideration of ten, and in it he refuted whoever said otherwise with a profound rebuttal, and brought about a hundred narrations

speaking the truth. It is not hidden that the later scholars who issued fatwas based on ten, like the author of Al-Hidayah, Qadi Khan, and others, are from the people of preference (Ahl al-Tarjih)...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/121 2 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Matba' Mujtabai Delhi, 1/36 3 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Matba' Mujtabai Delhi, 1/36

फतावा रज़विया, जिल्द 2

[दायां कॉलम] ...नहाने की हरकत मुराद है या वज़ू की या हाथ की। दूसरी रिवायत असह (ज़्यादा सही) है क्योंकि वह दरमियानी है, जैसा कि अल-मुहीत और अल-हावी अल-क़ुदसी में है, और इसकी पूरी बहस हिलिया वग़ैरा में है इल्ख़। और दुर्रे मुख़्तार में है कि जो पानी इस्तेमाल कर रहा है उसी का ज़न्ने ग़ालिब (प्रबल विचार) मोतबर है, और अगर उसका ग़ालिब गुमान यह है कि पानी के दूसरे हिस्से तक नजासत (गंदगी) नहीं पहुँची है तो जायज़ है वरना नहीं, यही ज़ाहिर रिवायत है और यही असह है जैसा कि ख़ानिया वग़ैरा में है और बहर में तहक़ीक़ से साबित किया है कि यही मज़हब है इह मुलख़्ख़सन। फिर अइम्मा मुतअख़्ख़रीन (बाद के इमामों) ने इसे दह-दर-दह (दस बाई दस) से अंदाज़ा फ़रमाया और तीसीरे आबे जारी (बहते पानी की सुगमता) के हुक्म में क़रार दिया कि तमाम जानिब से वज़ू वग़ैरा रवा है जब तक पानी नजासत का असर न ले ले। और दुर्रे मुख़्तार में यह है कि "लेकिन नहर में है कि दस हाथ का एतबार मसले को ज़्यादा मुनज़बित (नियमित) कर देता है, ख़ास तौर पर अवाम के लिए जो ज़ाती राय नहीं रखते हैं इसलिए मुतअख़्ख़रीन उलमा ने इसी पर फ़तवा दिया है।" और रद्दुल मुह्तार में बाज़ हाशिया निगारों ने शैखुल इस्लाम अल्लामा सअदुद्दीन अल-देरी से उनके रिसाले "अल-क़ौलुर रायिक़" से नक़्ल किया है कि उनकी तहक़ीक़ वही है जो असहाबे मुतून (मूल ग्रंथों के लेखकों) ने लिखा है यानी दस हाथ का एतबार किया जाएगा, और जिन हज़रात ने इसके बरअक्स लिखा है उन पर आपने रद्दे बलीग़ (ज़ोरदार खंडन) किया है, इस पर उन्होंने एक सौ नुक़ूले सहीहा पेश की हैं, और यह ज़ाहिर है कि वह मुतअख़्ख़रीन जिन्होंने...

[बायां कॉलम] ...या वज़ू या हाथ। रिवायतें, जिनमें से दूसरी ज़्यादा सही है क्योंकि वह मध्यम है जैसा कि अल-मुहीत और अल-हावी अल-क़ुदसी में है और उसकी पूर्णता अल-हिलिया आदि में है... इल्ख़। और अल-दुरुल मुख़्तार में: "एतबार आज़माइश में पड़े व्यक्ति के प्रबल विचार का है। अगर उसके विचार में प्रबलता है कि नजासत दूसरी तरफ नहीं पहुँची, तो जायज़ है, वरना नहीं।" यह ज़ाहिर रिवायत है और यही ज़्यादा सही है जैसा कि अल-ख़ानिया आदि में है। और अल-बहर में प्रमाणित किया गया कि यही मज़हब है। (अद्दुरुल मुख़्तार में संक्षिप्त सार)। लेकिन अन-नहर में: "आप जानते हैं कि दस का एतबार ज़्यादा सटीक है, विशेष रूप से अवाम के हक़ में जिनका कोई अपना विचार नहीं होता। इसीलिए प्रसिद्ध मुतअख़्ख़रीन विद्वानों ने इसी पर फ़तवा दिया।" आदि। और रद्दुल मुह्तार में कुछ हाशियाकारों ने शैखुल इस्लाम अल्लामा सअदुद्दीन अल-देरी का उनके लेख "अल-क़ौलुर रायिक़" से ज़िक्र किया है कि उन्होंने उसमें उसी की पुष्टि की है जिसे मतून के लेखकों

ने दस के एतबार के संबंध में चुना था, और उसमें उन्होंने इसके विपरीत बोलने वालों का ज़ोरदार खंडन किया, और लगभग सौ सही रिवायतें पेश कीं जो सत्य बोलती हैं। यह छिपा नहीं है कि जिन मुतअख़्ख़रीन ने दस का फ़तवा दिया जैसे हिदाया के लेखक, क़ाज़ी ख़ान और अन्य लोग जो अहल-ए-तरजीह (वरीयता देने वाले विशेषज्ञ) में से हैं...

---

1 रद्दुल मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/121 2 अद्दुरुल मुख़्तार, बाबुल मियाह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/36 3 अद्दुरुल मुख़्तार, बाबुल मियाह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/36

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دائیں جانب کا کالم] غسل کی حرکت مراد ہے یا وضو کی یا ہاتھ کی۔ دوسری روایت اصح ہے کیونکہ وہ درمیانی ہے ، جیسا کہ المحیط والحاوی القدسی میں ہے ، اور مکمل بحث حلیہ وغیرہ میں ہے الخ اور دُر مختار میں ہے کہ جو پانی استعمال کر رہا ہے اسی کا ظن غالب معتبر ہے ، اور اگر اس کا غالب گمان یہ ہے کہ پانی کے دوسرے حصے تک نجاست نہیں پہنچی ہے تو جائز ہے ورنہ نہیں ، یہی ظاہر روایت ہے اور یہی اصح ہے کما فی الخانیہ وغیرہا اور بحر میں تحقیق سے ثابت کیا ہے کہ یہی مذہب ہے اھ ملخصاً پھر ائمہ متاخرین نے اسے دہ دردہ سے اندازہ فرمایا اور تیسیر آبِ جاری کے حکم میں قرار دیا کہ جمیع جوانب سے وضو وغیرہ روا جب تک پانی نجاست کا اثر نہ لے لے۔ اور در مختار میں یہ ہے کہ "لیکن نہر میں ہے کہ دس ہاتھ کا اعتبار مسئلہ کو زیادہ منضبط کر دیتا ہے، خاص طور پر عوام کیلئے جو ذاتی رائے نہیں رکھتے ہیں اس لئے متاخرین علماء نے اسی پر فتویٰ دیا ہے، اور ردالمحتار میں بعض حاشیہ نگاروں نے شیخ الاسلام علامہ سعد الدین الدیری سے ان کے رسالہ "القول الرائق" سے نقل کیا ہے کہ ان کی تحقیق وہی ہے جو اصحاب متون نے لکھا ہے یعنی دس ہاتھ کا اعتبار کیا جائے گا، اور جن حضرات نے اس کے بر عکس لکھا ہے ان پر آپ نے ردِ بلیغ کیا ہے، اس پر انہوں نے ایک سو نقول صحیحہ پیش کی ہیں، اور یہ ظاہر ہے کہ وہ متاخرین جنہوں نے

[بائیں جانب کا کالم] او الوضوء اوالید روایات ثانیها اصح لانه الوسط کما في المحیط والحاوي القدسي وتمامه في الحلیة وغیرها الخ وفی الدر المختار والمعتبر اکبر رأی المبتلی به فان غلب علی ظنه عدم خلوص النجاسة الی الجانب الاخر جاز والا لاهذه ظاهر الروایة وهو الاصح کما في الخانیة وغیرها وحقق في البحر انه المذهب اه ملخصاً في الدر المختار لکن في النهر وانت خبیر بان اعتبار العشر

اضبط ولا سيما في حق من لا رأى له من العوام فلذا افتى به المتأخرون الاعلام الخ وفى رد المحتار ذكر بعض المحشين عن شيخ الاسلام العلامة سعد الدين الديرى في رسالته القول الرائق انه حقق فيها ما اختاره اصحاب المتون من اعتبار العشر ورد فيها على من قال بخلافه رداً بليغاً واورد نحو مائة نقل ناطقة بالصواب ولا يخفى ان المتأخرين الذين افتوا بالعشر كصاحب الهداية وقاضى خان وغيرهما من اهل الترجيح

---

1 ردالمختار باب المياه مصطفى البابى مصر ١/ ١٢١ 2 الدرالمختار باب المياه مطبع مجتبائى دہلى ١/ ٣٦ 3 الدرالمختار باب المياه مطبع مجتبائى دہلى ١/ ٣٦

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume II

They are more knowledgeable about the Madhhab than us, so we must follow them. This is supported by what the commentator presented in Rasm al-Mufti: "As for us, we must follow what they have preferred and corrected, just as if they had issued a fatwa to us during their lifetime."

In it (Al-Fath) it says: It is narrated from Abu Yusuf that it (large body of water) is like running water; it does not become impure except through change (in color, smell, or taste). This is what should be authenticated. Therefore, there should be no distinction between visible and invisible impurity, because the evidence requires that in case of abundance, impurity does not occur except through change, without any distinction.

In the marginal notes of Allama al-Tahtawi: There is no difference between the place where the impurity falls and elsewhere, nor between one type of impurity and another. It should be authenticated as in Al-Fath, and it is the chosen view as stated by Allama Qasim, and upon it is the fatwa, as in An-Nisab. And Allah the Glorified and Exalted knows best.

[Urdu Column Translation:] A fatwa has been given on ten "cubits" (hands), as the author of Al-Hidayah, Qadi Khan, and others are among the people of preference (Ahl al-Tarjih); they know the Madhhab more than us. Therefore, it is obligatory for us to follow them, and this is supported by what the commentator said in Rasm al-Mufti that "it is necessary for us to follow what they have declared as predominant and correct, just as if they were giving a fatwa in their lifetime, then following them would be necessary." And in it (the same source) it says that in Fath it is stated: "And it is narrated from Abu Yusuf that this is like running water; it will not become impure without change, and its authentication should be done. Thus, there should be no difference between visible and invisible impurity because the demand of the evidence is that large bodies of water do not become impure except for change." End quote. And in Maraqi al-Falah it is stated: Our scholars of Balkh have given a fatwa on this for the ease of people, and the opinion of ten cubits is the one for giving fatwa. And in its margin, Allama Tahtawi wrote that there is no difference between the place where the impurity falls and another place, similarly, there is no difference between one impurity and another impurity, and its correction should be sought as in Al-Fath, and this is the chosen one, as Allama Qasim said and 'upon it is the fatwa' as in An-Nisab (on this is the fatwa as it is in An-Nisab). End quote. And Allah, Glory be to Him, the Most High, knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/121.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/140.
3. Maraqi al-Falah, Purification, Noor Muhammad, Karachi, p. 16.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

वे हमसे अधिक मज़हब के ज्ञाता हैं, अतः हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। इसका समर्थन उस बात से होता है जो टीकाकार ने रस्म अल-मुफ्ती में प्रस्तुत की है: "जहाँ तक हमारी बात है, तो हमें उसी का पालन करना चाहिए जिसे उन्होंने वरीयता दी है और सही ठहराया है, ठीक वैसे ही जैसे वे हमारे जीवनकाल में हमें फ़तवा देते।"

इसमें (अल-फ़त) कहा गया है: अबू युसूफ से वर्णित है कि यह (बड़ा जलाशय) बहते पानी की तरह है; यह बिना परिवर्तन (रंग, गंध या स्वाद) के अपवित्र नहीं होता। यही वह है जिसे प्रमाणित किया जाना चाहिए। इसलिए, दृश्य और अदृश्य अशुद्धता के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रमाण की आवश्यकता यह है कि प्रचुरता के मामले में, अशुद्धता बिना परिवर्तन के नहीं होती, बिना किसी भेद के।

अल्लामा अल-तहतावी के हाशिये (नोट्स) में: अशुद्धता गिरने के स्थान और अन्य स्थानों के बीच कोई अंतर नहीं है, न ही एक प्रकार की अशुद्धता और दूसरी अशुद्धता के बीच। इसे अल-फ़त के अनुसार प्रमाणित किया जाना चाहिए, और यही अल्लामा कासिम द्वारा बताया गया चुना हुआ विचार है, और इसी पर फ़तवा है, जैसा कि अन-निसब में है। और अल्लाह गौरवशाली और सर्वोच्च सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद:] दस "हाथ" पर फ़तवा दिया गया है, क्योंकि हिदाया के लेखक, काज़ी खान और अन्य लोग वरीयता देने वालों (अहल अल-तरजीह) में से हैं; वे हमसे अधिक मज़हब को जानते हैं। इसलिए, हमारे लिए उनका अनुसरण करना अनिवार्य है, और इसका समर्थन टीकाकार ने रस्म अल-मुफ्ती में जो कहा है उससे होता है कि "हमारे लिए उसका अनुसरण करना आवश्यक है जिसे उन्होंने प्रबल और सही घोषित किया है, बिल्कुल वैसे ही जैसे वे अपने जीवनकाल में फ़तवा देते, तो उनका अनुसरण करना आवश्यक होता।" और उसी में है कि फ़त में कहा गया "और अबू युसूफ से वर्णित है कि यह बहते पानी की तरह है; बिना परिवर्तन के अशुद्ध नहीं होगा और इसका प्रमाणन किया जाना चाहिए। इस प्रकार, दृश्य और अदृश्य अशुद्धता के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रमाण की मांग यह है कि प्रचुर मात्रा में पानी परिवर्तन के बिना अशुद्ध नहीं होता।" उद्धरण समाप्त। और मराकी अल-फलाह में है कि: इसी पर हमारे बल्ख के विद्वानों ने लोगों की आसानी के लिए फ़तवा दिया है, और दस हाथों वाला मत ही फ़तवा देने योग्य है। और इसके हाशिये में अल्लामा

तहतावी ने लिखा कि अशुद्धता गिरने के स्थान और दूसरे स्थान में कोई अंतर नहीं है, इसी तरह एक अशुद्धता और दूसरी अशुद्धता में कोई अंतर नहीं है, और इसका संशोधन चाहा जाना चाहिए जैसा कि फ़त में है, और यही चुना हुआ मत है, जैसा कि अल्लामा कासिम ने कहा और 'उसी पर फ़तवा है' जैसा कि अन-निसब में है (इसी पर फ़तवा है जैसा कि निसब में है)। उद्धरण समाप्त। और अल्लाह, वह पवित्र है, सर्वोच्च है, बेहतर जानता है। (त)

---

1. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/121।
2. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/140।
3. मराकी अल-फलाह, पवित्रता, नूर मुहम्मद, कराची, पृ. 16।

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

هم اعلم بالمذهب منا فعلينا اتباعهم ويؤيده ما قدمه الشارح في رسم المفتى واما نحن فعلينا اتباع مارجحوه وصححوه كمالو افتونا في حياتهم اهـ

وفيه قال في الفتح وعن ابي يوسف انه كالجاري لا يتنجس الا بالتغير وهو الذى ينبغى تصحيحه فينبغي عدم الفرق بين المرئية وغيرها لان الدليل انما يقتضى عند الكثرة عدم التنجس الا بالتغير من غير فصل اهـ

وفى حاشيته للعلامة الطحطاوى لافرق بين موضع الوقوع وغيره وبين نجاسة ونجاسة وينبغى تصحيحه كما فى الفتح وهو المختار كما قاله العلامة قاسم وعليه الفتوى كما فى النصاب اهـ والله سبحنه وتعالى اعلم۔

دس "ہاتھ پر فتویٰ دیا ہے، جیسے صاحبِ ہدایہ اور قاضی خاں وغیرہما اہل ترجیح سے ہیں، وہ ہم سے زائد مذہب کے جاننے والے ہیں، لہٰذا ہم پر واجب ہے کہ ہم ان کی پیروی کریں، اور اس کی تائید اس سے ہوتی ہے جو شارح نے رسم المفتی میں کہا ہے کہ "ہم لوگوں پر اس کی اتباع لازم ہے جس کو انہوں نے راجح اور صحیح قرار دیا ہے بالکل اسی طرح جس طرح وہ اپنی زندگی میں فتویٰ دیتے تو ہم پر اتباع لازم تھا۔ اور اسی میں ہے کہ فتح میں فرمایا "اور ابویوسف سے مروی ہے کہ یہ جاری پانی کی طرح ہے، بغیر تغیر کے ناپاک نہ ہوگا اور اس کی تصحیح کی جانی چاہئے تو نجاست مرئیہ اور غیر مرئیہ کے درمیان فرق نہ ہونا چاہئے کیونکہ دلیل کا تقاضا یہ ہے کہ کثیر پانی سوائے تغیر کے ناپاک نہ ہو۔ اھ اور مراقی الفلاح میں ہے کہ اسی پر ہمارے مشائخ بلخ نے لوگوں پر فراخی کیلئے فتویٰ دیا ہے اور دس ہاتھوں کا قول ہی مفتی بہ ہے۔ اور اس کے

حاشیہ میں علامہ طحطاوی نے لکھا کہ نجاست کے گرنے کی جگہ اور دوسری جگہ میں فرق نہیں، اسی طرح ایک نجاست اور دوسری نجاست میں فرق نہیں، اور اس کی تصحیح کی جانی چاہئے کما فی الفتح، اور یہی مختار ہے، جیسا کہ علامہ قاسم نے فرمایا وعلیہ الفتوی کما فی النصاب اسی پر فتوی ہے جیسا کہ نصاب میں ہے) اھ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔ (ت)

---

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البانی مصر ۱/ ۱۲۱ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البانی مصر ۱/ ۱۴۰ 3 مراقی الفلاح الطھارۃ نور محمد کراچی ص ۱۶

Fatawa Rizvia Volume II Treatise Fatwa named Al-Tars al-Mu'addal fi Hadd al-Ma' al-Musta'mal 1320 AH A fair page in the definition of used water (T) In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. Problem 28: 5th Rabi al-Akhir Sharif 1320 AH What do the scholars of religion say in this matter regarding the definition of 'Ma' al-Musta'mal' (used water)? Explain and be rewarded. The Answer In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. Praise be to Him Who made purification a washer for our sins, thus purifying our souls by flowing water over our bodies. What a great favor! And the most excellent blessings and the purest peace be upon him who purified us from impurities and continued the flow of his blessings upon us until he cleansed us from filth, and upon his family, his companions, and the people of the Sunnah. Amen. I say: And with Allah is the guidance (1) Used water is that small amount of water which has either discharged an obligation through the purification of legal impurity (Najast-e-Hukmiyah), meaning it touched a part of a human body whose purification through Wudu or Ghusl was actually necessary, or its use on the exterior of the body was itself an act of reward and the user used it on their body with the intention of that same reward. Thus, after discharging the obligatory purification or establishing proximity (qurbat), it separated from the limb, even if it has not yet settled in any place but is still flowing. Some have also added the condition of cessation of movement and attainment of settlement. With Allah's help, this is a comprehensive and exclusive definition for both schools of thought, which you will not find anywhere else except in these lines. Now listen to the benefits of the constraints: (1) If a person in a state of minor impurity (Muhdith) performs Wudu, or one in major impurity (Junub) performs Ghusl, or even if some impurity is washed in 'Ab-e-Kathir' (large body of water, i.e., ten by ten cubits) or running water, the water will neither become impure nor used. Therefore, the constraint of 'Qaleel' (small amount) is necessary. (2) If a 'Muhdith' (2) washed all or some limbs of Wudu, even if without the intention of Wudu, just for cooling or removing dirt, etc., or if they did not perform any act at all nor intended it, but rather someone else poured water on them which passed over a limb whose purification in Wudu or Ghusl was still mandatory upon them—for example, on the hand of a 'Muhdith' or the back of a 'Junub'—then in all these cases, due to the first scenario, the water becomes used because by touching the site of legal impurity, it discharged the duty of purifying that portion of the body from the person's responsibility... Page 43 of 711

फतावा रिज़विया जिल्द सानी (द्वितीय) रिसाला (लघु शोध प्रबंध) फ़तवा मुसम्मा बह अत-तर्स अल-मुअद्दल फ़ी हद्द अल-मा अल-मुस्तअमल १३२० हिजरी इस्तेमाल शुदा पानी की परिभाषा में मुंसिफ़ सहीफ़ा (त) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम। मसला २८: ५ रबी-उल-आखिर शरीफ १३२० हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि आबे-मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ पानी) की क्या परिभाषा है? बयान करें, सवाब पायें। अल-जवाब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तारीफ़ उस ज़ात के लिए जिसने पाकीज़ा पानी को हमारे गुनाहों का धोने वाला बनाया, फिर हमारे जिस्मों पर पानी बहाकर हमारी रूहों को पाक किया। वह क्या ही बड़ा एहसान है! और सबसे अफ़ज़ल दरूद और पाकीज़ा सलाम उन पर जिन्होंने हमें गंदगियों से पाक किया और हम पर अपनी नेमतों का सिलसिला जारी रखा यहाँ तक कि हमें आलूदगियों से साफ़ कर दिया, और उनकी आल, असहाब और अहले सुन्नत पर। आमीन। अक़ूल (मैं कहता हूँ): वबिल्लाहित तौफ़ीक़ (१) मा-ए-मुस्तअमल वह क़लील (थोड़ा) पानी है जिसने या तो ततहीर-ए-नजासत-ए-हुकमिया से किसी वाजिब को साक़ित किया यानी इंसान के किसी ऐसे पारा-ए-जिस्म (अंग) को छुआ जिसकी ततहीर (शुद्धि) वज़ू या ग़ुस्ल से बिल-फ़ेल (वास्तव में) लाज़िम थी, या ज़ाहिर-ए-बदन पर उसका इस्तेमाल खुद कार-ए-सवाब (पुण्य का कार्य) था और इस्तेमाल करने वाले ने अपने बदन पर इसी अम्र-ए-सवाब की नीयत से इस्तेमाल किया, और यूँ इसक़ात-ए-वाजिब ततहीर या इक़ामत-ए-क़ुर्बत करके उज़्व (अंग) से जुदा हुआ अगरचे अभी किसी जगह मुस्तक़िर (स्थिर) न हुआ हो बल्कि रवानी (बहाव) में हो। और बाज़ ने ज़वाल-ए-हरकत व हुसूल-ए-इस्तक़रार की भी शर्त लगाई। यह अल्लाह की मदद से दोनों मज़हब पर एक ऐसी जामेअ मानअ (व्यापक और विशिष्ट) परिभाषा है जो इन पंक्तियों के सिवा कहीं नहीं मिलेगी। अब पाबंदियों (क़ैद) के फ़ायदे सुनिये: (१) आबे-कसीर यानी दह दर दह (१०x१० हाथ का हौज) या बहते पानी में मुहदिस वज़ू करे या जुनूब ग़ुस्ल करे या कोई नजासत ही धोई जाए तो पानी न नापाक होगा न मुस्तअमल। लिहाज़ा क़लील (थोड़ा होने) की शर्त ज़रूरी है। (२) मुहदिस (२) ने तमाम या बाज़ आज़ा-ए-वज़ू धोए अगरचे बे-नीयत वज़ू महज़ ठंड या मैल वगैरह दूर करने के लिए, या उसने असल में कोई काम नहीं किया और न उसका इरादा था बल्कि किसी दूसरे ने उस पर पानी डाल दिया जो उसके किसी ऐसे उज़्व (अंग) पर गुज़रा जिसका वज़ू या ग़ुस्ल में पाक करना अभी उस पर फ़र्ज़ था, मिसाल के तौर पर मुहदिस के हाथ या जुनूब की पीठ पर, तो इन सब सूरतों में पहली सूरत के सबब पानी मुस्तअमल हो गया कि उसने महल-ए-नजासत-ए-हुकमिया से छूकर इतने टुकड़े की ततहीर-ए-वाजिब को ज़िम्मे... सफ़ह ४३ / ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی رسالہ فتوی مسمیٰ بہ الطرس المعدل فی حد الماء المستعمل ۱۳۲۰ھ استعمال شدہ پانی کی تعریف میں منصف صحیفہ (ت) بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم مسئلہ ۲۸: ۵ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ آبِ مستعمل کی کیا تعریف ہے بینوا توجروا۔ الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم حمد المن جعل الطھور غاسلا لآثامنا فطھر ارواحنا باسالۃ الماء علی اجسامنا فیا لہ من منۃ وافضل الصلاۃ وازکی السلام علی من طھرنا من الانجاس و ادام دیم نعمہ علینا حتی نقانا من الادناس وعلی الہ وصحبہ واھل السنۃ آمین۔ اقول: وباللہ التوفیق (۱) مائے مستعمل وہ قلیل پانی ہے جس نے یا تو تطہیر نجاست حکمیہ سے کسی واجب کو ساقط کیا یعنی انسان کے کسی ایسے پارہ جسم کو مس کیا جس کی تطہیر وضو یا غسل سے بالفعل لازم تھی یا ظاہرِ بدن پر اس کا استعمال خود کار ثواب تھا اور استعمال کرنے والے نے اپنے بدن پر اسی امرِ ثواب کی نیت سے استعمال کیا اور یوں اسقاطِ واجب تطہیر یا اقامت قربت کرکے عضو سے جدا ہوا اگرچہ ہنوز کسی جگہ مستقر نہ ہوا بلکہ روانی میں ہے اور بعض نے زوالِ حرکت و حصولِ استقرار کی بھی شرط لگائی۔ یہ بعونہ تعالٰی دونوں مذہب پر حدِ جامع مانع ہے کہ ان سطروں کے سوا کہیں نہ ملے گی۔ اب فوائد قیود سنیے: (۱) آبِ کثیر یعنی دہ در دہ یا جاری پانی میں محدث وضو یا جنب غسل کرے یا کوئی نجاست ہی دھوئی جائے تو پانی نہ نجس ہوگا نہ مستعمل لہٰذا قلیل کی قید ضرور ہے۔ (۲) محدث (۲) نے تمام یا بعض اعضائے وضو دھوئے اگرچہ بے نیت وضو محض ٹھنڈ یا میل وغیرہ جدا کرنے کیلئے یا اس نے اصلاً کوئی فعل نہ کیا نہ اس کا قصد تھا بلکہ کسی دوسرے نے اس پر پانی ڈال دیا جو اس کے کسی ایسے عضو پر گزرا جس کا وضو یا غسل میں پاک کرنا ہنوز اس پر فرض تھا مثلاً محدث کے ہاتھ یا جنب کی

پیٹھ پر تو ان سب صورتوں میں شکل اول کے سبب پانی مستعمل ہو گیا کہ اس نے محل نجاست

حکمیہ سے مس کرکے اتنے ٹکڑے کی تطہیر واجب کو ذمہ... Page 43 of 711

Fatawa Rizvia, Volume Two

...waived for the person, although in the latter scenarios the command for purifying other limbs remains, while in the first scenario, i.e., when all limbs have been washed, the obligatory duty of purification has been fully discharged.

Warning: (1) If water is not found anywhere except in a large clay pot or vessel that cannot be tilted, and there was only one small vessel like a bowl nearby, and it fell and sank into that larger vessel, and there is no child or a person already in a state of wudu to ask to retrieve it; now out of necessity, the ritualy impure person (muhdith) himself will put his hand in to take it out, or if there is no small vessel at all, then he will wash his hands by taking handfuls of water. In both these cases, although the initial form, i.e., the dropping of the obligation of purification occurred, these are excused due to necessity. If one does this without necessity, then the water, in whole or in part by consensus, will become 'Mustamal' (used water), even if according to one opinion it remains usable for wudu. (2) The explanation for this is that if a limb of a 'muhdith' (one needing wudu or ghusl) from which the command of purification has not yet been waived—even if it's a very small part like a whole nail—touches a small quantity of water, our scholars differ. According to some, all that water becomes 'Mustamal' and is no longer fit for wudu or ghusl. According to others, only that amount becomes 'Mustamal' which came into contact with that part of the body, and the surrounding water that is aligned with that limb but did not touch it does not become 'Mustamal'. Likewise, all the water that is below the level reached by that limb is also not ruled as used. According to this opinion, even putting the hand up to the elbow in a large pot or vessel will leave the water fit for purification, because it's clear that the water around and below the hand is much more than the portion that touched the hand. And when (3) unused water is more than the 'Mustamal' water, the water remains fit for wudu and ghusl. For example, if someone performed wudu in a basin and poured that water into a pitcher full of unused water, the total is fit for wudu because the 'Mustamal' is less than the non-used. Based on this, some have ruled on putting the hand in, that only as much became 'Mustamal' as touched the hand, and the rest remained separate and dominant over it. The first group stated that water is a continuous body; touching part of it is like touching all of it. Therefore, even touching with the tip of a nail or the edge of a fingertip will make the whole pot 'Mustamal'. These are two opinions, and the opinion of the first group is more cautious. In any case, both parties agree that without necessity, taking a handful or putting the hand in will make the water 'Mustamal', although some consider our

definition to be comprehensive and exclusive even based on this opinion. (3) A person already in wudu performed wudu again with the intention of gaining reward. (4) A discerning minor performed wudu with the intent of wudu. (5) For women in menstruation (haiz) or post-natal bleeding (nifas), as long as the state persists, wudu and ghusl are not commanded. However, (4) it is commendable (mustahabb) for them, if they are accustomed to the five daily prayers and Ishraq, Chasht, and Tahajjud, to perform wudu during those times and remember Allah for a while so that the habit of worship remains. They performed this wudu.

फ़तावा रज़विया, जिल्द द्वितीय

...मुकल्लफ़ से साक़ित कर दिया गया, हालांकि पिछली सूरतों में अब भी दीगर अंगों को पाक करने का हुक्म बाक़ी है, और पहली सूरत में, यानी जब तमाम अंग धो लिए गए, तो पाकी का फ़र्ज़ पूरी तरह ज़िम्मे से उतर गया।

चेतावनी: (1) यदि पानी एक बड़ी मटकी या बड़े बर्तन के सिवा कहीं नहीं है और वह बर्तन झुकाने के योग्य नहीं है, और एक ही छोटा बर्तन जैसे कटोरा पास था और वह उसी बर्तन में गिरकर डूब गया, और कोई बच्चा या वुज़ू वाला आदमी ऐसा नहीं है जिससे कहकर निकलवाया जाए; अब मजबूरी में 'मुहदिथ' (बे-वुज़ू व्यक्ति) स्वयं हाथ डालकर उसे निकालेगा, या छोटा बर्तन बिल्कुल है ही नहीं तो लाचार होकर चुल्लू ले-लेकर हाथ धोएगा। इन दोनों सूरतों में भी, हालांकि पहली शक्ल यानी पाकी के वाजिब हुक्म का गिरना पाया गया, इन्हें ज़रूरत के कारण माफ़ रखा गया है। बिना ज़रूरत ऐसा करेगा तो पानी पूरा या उसका कुछ हिस्सा सर्वसम्मति से 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, चाहे एक राय के अनुसार वह वुज़ू के योग्य रहे। (2) इसका बयान यह है कि 'मुहदिथ' यानी बे-वुज़ू या जिसे ग़ुस्ल की ज़रूरत हो, उसका वह अंग जिससे अभी पाकी का हुक्म साक़ित नहीं हुआ —चाहे वह कितना ही कम हो, जैसे पूरा नाख़ून—यदि थोड़े पानी को छुए तो हमारे विद्वानों में मतभेद है। कुछ के अनुसार वह सारा पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है और वुज़ू व ग़ुस्ल के लायक नहीं रहता। और कुछ के अनुसार केवल उतना ही 'मुस्तअमल' हुआ जितना उस शरीर के हिस्से से मिला; उसके आस-पास का पानी जो उस अंग की सीध में है और उससे स्पर्श नहीं हुआ, वह 'मुस्तअमल' नहीं हुआ। इसी तरह वह सारा पानी जो उस अंग के पहुँचने की जगह से नीचे है, उस पर भी इस्तेमाल का हुक्म नहीं आया। इस राय पर, मटके या बड़े बर्तन में कोहनी तक हाथ डालने से भी पानी पाकी के योग्य रहेगा, क्योंकि यह स्पष्ट है कि जो पानी हाथ के आस-पास और उसके नीचे रहा, वह उस हिस्से से बहुत अधिक है जिसने हाथ को छुआ। और जब (3) बिना इस्तेमाल वाला पानी 'मुस्तअमल' से अधिक हो, तो पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के योग्य रहता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने परात में वुज़ू किया और वह पानी एक घड़े भर बिना इस्तेमाल वाले पानी में डाल दिया, तो यह कुल मिश्रण वुज़ू के योग्य है क्योंकि 'मुस्तअमल' 'नामस्तअमल' से कम है। इसी पर क़ियास करके कुछ लोगों ने हाथ डालने का हुक्म रखा कि 'मुस्तअमल' तो उतना ही हुआ जितना हाथ को लगा, बाकी जो अलग रहा वह उस पर प्रबल है। और पहले पक्ष ने कहा कि पानी एक निरंतर शरीर है, उसके एक हिस्से से मिलना पूरे से मिलना है। इसलिए नाख़ून की नोक या पोर के किनारे लग जाने से भी पूरा मटका

'मुस्तअमल' हो जाएगा। ये दो राय हैं और पहले पक्ष की राय ही सावधानी वाली है। बहरहाल, इतने में दोनों पक्ष सहमत हैं कि बिना ज़रूरत चुल्लू लेने या हाथ डालने से पानी 'मुस्तअमल' हो जाएगा, हालांकि कुछ हमारी परिभाषा को इस राय पर भी हर तरह से व्यापक और अनन्य (जामे-माने) मानते हैं। (3) बा-वुज़ू व्यक्ति ने सवाब की नीयत से दोबारा वुज़ू किया। (4) समझदार नाबालिग ने वुज़ू के इरादे से वुज़ू किया। (5) मासिक धर्म (हैज़) और प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफ़ास) वाली महिलाओं के लिए जब तक यह स्थिति बनी रहती है, वुज़ू और ग़ुस्ल का हुक्म नहीं है, लेकिन उनके लिए (4) मुस्तहब (पसंदीदा) है कि पाँचों नमाज़ों के समय, और यदि वे इश्राक़, चाश्त और तहज्जुद की आदी हों, तो उन समयों में भी वुज़ू करके कुछ देर अल्लाह को याद कर लिया करें ताकि इबादत की आदत बनी रहे। उन्होंने यह वुज़ू किया।

पृष्ठ 44 / 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی مکلّف سے ساقط کردیا اگر چہ پچھلی صورتوں میں ہنوز حکمِ تطہیر دیگر اعضا میں باقی ہے اور پہلی میں تو یعنی جبکہ تمام اعضا دھو لئے فرض تطہیر پورا ہی ذمہ سے اُتر گیا۔

تنبیہ : (1) پانی کولی یا بڑے مٹکے کے سوا کہیں نہیں وہ برتن جھکانے کے قابل نہیں چھوٹا برتن مثلاً کٹورا ایک ہی پاس تھا وہ اسی برتن میں گر کر ڈوب گیا کوئی بچہ یا باوضو آدمی ایسا نہیں جس سے کہہ کر نکلوائے اب بمجبوری محدث خود ہی ہاتھ ڈال کر نکالے گا یا چھوٹا برتن سرے سے ہے ہی نہیں تو ناچار چلو لے لے کر ہاتھ دھوئے گا ان دونوں صورتوں میں بھی اگر چہ شکلِ اول یعنی اسقاطِ واجبِ تطہیر پائی گئی یہ ضرورۃً معاف رکھی گئی ہیں بے ضرورت ایسا کرے گا تو پانی کُل یا بعض بالاتفاق مستعمل ہو جائے گا اگر چہ ایک قول پر قابلِ وضو رہے۔ (2) بیان اس کا یہ ہے کہ محدث یعنی بے وضو یا حاجت غسل والے کا وہ عضو جس پر سے ہنوز حکمِ تطہیر ساقط نہ ہوا اگر چہ کتنا ہی کم ہو مثلاً پورا یا ناخن اگر قلیل پانی سے مس کرے تو ہمارے علماء کو اختلاف ہے بعض کے نزدیک وہ سارا پانی مستعمل ہو جاتا ہے اور قابلِ وضو و غسل نہیں رہتا اور بعض کے نزدیک صرف اتنا مستعمل ہوا جس قدر اس پارہ بدن سے ملاقاتی اس پاس کا پانی جو اس عضو کی محاذات میں ہے اور اس سے مس نہ ہوا مستعمل نہ ہوا یوں ہی وہ تمام پانی کہ اس عضو کے پہنچنے کی جگہ سے نیچے ہے اس پر بھی حکمِ استعمال نہ آیا۔ اس قول پر مٹکے یا کولی میں کہنی تک ہاتھ ڈالنے سے بھی پانی قابلِ طہارت رہے گا کہ ظاہر ہے کہ جو پانی ہاتھ کے آس پاس اور اس سے نیچے رہا وہ اس حصے سے بہت زائد ہے جس نے ہاتھ سے مس کیا اور جب (3) غیر مستعمل پانی مستعمل سے زائد ہو تو پانی قابلِ وضو و غسل رہتا ہے مثلاً لگن میں وضو کیا اور وہ پانی ایک گھڑے بھر آبِ غیر مستعمل میں ڈال دیا تو یہ مجموع قابلِ وضو ہے کہ مستعمل نا

مستعمل سے کم ہے اسی پر قیاس کر کے ان بعض نے ہاتھ ڈالنے کا حکم رکھا کہ مستعمل تو اتنا ہی ہوا جتنا ہاتھ کو لگا باقی کہ الگ رہا اس پر غالب ہے اور فریق اول نے فرمایا کہ پانی ایک متصل جسم ہے اس کے بعض سے ملنا کُل سے ملنا ہے لہذا ناخن کی نوک یا پور کے کنارہ لگ جانے سے بھی کُل مٹکا مستعمل ہو جائے گا۔ یہ دو قول ہیں اور فریق اول ہی کا قول احتیاط ہے بہرحال اتنے میں فریقین متفق ہیں کہ بے ضرورت چلو لینے یا ہاتھ ڈالنے سے پانی مستعمل ہو جائے گا اگر چہ بعض تو ہماری تعریف اس قول پر بھی ہر طرح جامع مانع ہے۔ (3) باوضو آدمی نے بہ نیت ثواب دوبارہ وضو کیا۔ (4) سمجھ والا نا بالغ نے وضو بقصدِ وضو کیا۔ (5) حائض و نفساء کو جب تک حیض و نفاس باقی ہے وضو و غسل کا حکم نہیں مگر انہیں (4) مستحب ہے کہ نماز پنجگانہ کے وقت اور اشراق و چاشت و تہجد کی عادت رکھتی ہو تو ان وقتوں میں بھی وضو کر کے کچھ دیر یادِ الٰہی کر لیا کرے کہ عبادت کی عادت باقی رہے۔ انہوں نے یہ وضو کیا۔

Fatawa Razawiyya, Volume Second

(6) A pure person performed the Sunnah bath (Ghusl) for Friday, the two Eids, the day of Arafah, Ihram, or other prescribed Sunnah times, or performed Wudu or Ghusl to wash a deceased person.

(7) A person in a state of Wudu (1) washed their hands or rinsed their mouth with the intention of performing a Sunnah either before or after eating.

(8) Water that was used for rinsing the mouth or nose during an obligatory (Fard) or voluntary (Nafl) Wudu.

(9) Some limbs were washed and then dried; they were washed again with the intention of the Sunnah of continuity (Mualat). In all these cases, the water will become 'used' (Musta'mal) because of the second form, even if it did not fulfill an obligation but established a closeness (Qurbat). (2) It is also recommended (Mustahab) to take a bath after washing a deceased person, as mentioned in 'Ad-Durr' etc.

(10) Scholars differ regarding the deceased. According to the majority (Jamhur), death is a physical impurity (Najasat-e-Haqiqiyah). Based on this, the water used for washing the deceased is not just 'used' water, but rather it is impure (Napak). However, according to some, it is a legal/ritual impurity (Najasat-e-Hukmiyah). In 'Bahr-ur-Raiq' etc., this view is stated as more correct. Based on this, that water is also 'used' water and falls under the first part of our definition because it also fulfilled an obligation.

I say (Aqool): Therefore, we said 'a part of the human body' and not 'a person bound by religious law' (Mukallaf), because the deceased is not a Mukallaf. And it was said that 'purification was necessary', not that 'it was necessary upon them', because this purification is not the responsibility of the deceased but of the living.

(11) Similarly, the second and third waters of the bath for the deceased will also be 'used' water, because although the obligation was fulfilled with the first water, performing the action thrice (Tathleeth) in washing the deceased is also a sought-after closeness in Shariah.

I say (Aqool): Therefore, in the second part as well, we kept 'human body' general (Mutlaq).

(12) With the intention of 'Wudu upon Wudu' (performing Wudu while already in a state of purity), a person asked someone else to perform Wudu for them. The other person washed the limbs of Wudu without the intention of reward. The water became 'used' because it was done at their command and their intention was closeness (Qurbat), so it will be considered their usage. Do you not see that if an impure person did this with intention, they would have performed what was commanded, even though the command 'wash and wipe' was upon them (i.e., if a person without Wudu does so with intention, they would be fulfilling the command that was obligatory upon them through 'wash and wipe').

(13) A person already in a state of Wudu (3) washed their limbs to cool down or remove dirt without the intention of 'Wudu upon Wudu'. The water will not be 'used' because now there is neither fulfillment of an obligation nor establishment of closeness.

(14) It was known that a limb had been washed three times and the water had not yet dried, but a fourth time was added without reason; this is also not closeness but rather contrary to etiquette.

(15) Yes, if there is a doubt whether it was washed twice or thrice, and water was added again to ensure the three-fold wash (Tathleeth), then it will become 'used'.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

(6) एक पाक आदमी ने सुन्नत को पूरा करने के लिए जुमा या ईदैन या अरफ़ा या एहराम या अन्य सुन्नत के समयों पर स्नान किया, या मृत व्यक्ति को स्नान कराने के लिए वुज़ू या स्नान किया।

(7) बा-वुज़ू (1) व्यक्ति ने सुन्नत की नियत से खाने से पहले या खाना खाकर हाथ धोए या कुल्ली की।

(8) फ़र्ज़ या नफ़्ल वुज़ू में वह पानी जो कुल्ली करने या नाक में पहुँचाने में ख़र्च हुआ।

(9) कुछ अंग धोए गए थे जो सूख गए, उन्हें सुन्नत-ए-मुआलात (निरंतरता) की नियत से फिर से धोया गया। इन सभी सूरतों में, दूसरी शक्ल के कारण पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, भले ही उसने कोई वाजिब कार्य पूरा न किया हो लेकिन निकटता (क़ुर्बत) क़ायम की हो। (2) मृत व्यक्ति को नहलाकर स्नान करना भी मुस्तहब (पसंदीदा) है, जैसा कि 'अद-दुर्र' आदि में वर्णित है।

(10) मृत व्यक्ति के बारे में उलेमा (विद्वान) मतभेद रखते हैं। बहुमत (जमहूर) के नज़दीक मृत्यु हक़ीक़ी नजासत (वास्तविक अशुद्धि) है। इस आधार पर वह पानी जो मय्यत (मृतक) के ग़ुस्ल में ख़र्च हुआ, वह सिर्फ़'म-ए-मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ पानी) ही नहीं बल्कि नापाक है। और कुछ के नज़दीक यह हुक्मी नजासत (क़ानूनी अशुद्धि) है। 'बहर-उर-राईक़' आदि में इसी को अधिक सही कहा गया है। इस आधार पर वह पानी भी 'म-ए-मुस्तअमल' है और हमारी परिभाषा के पहले भाग में शामिल है क्योंकि उसने भी वाजिब को पूरा किया।

मैं कहता हूँ (अक़ूल): इसीलिए हमने 'इंसान के जिस्म का टुकड़ा' कहा, न कि 'मुकल्लफ़' (धार्मिक कर्तव्यों का उत्तरदायी), क्योंकि मय्यत मुकल्लफ़ नहीं है। और कहा कि 'पाकीज़गी लाज़िम थी', यह नहीं कि 'उस पर लाज़िम थी', क्योंकि यह पाकीज़गी मय्यत की ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि ज़िंदा लोगों पर लाज़िम है।

(11) इसी तरह मय्यत के ग़ुस्ल का दूसरा और तीसरा पानी भी मुस्तअमल होगा, क्योंकि यद्यपि पहले पानी से वाजिब पूरा हो गया था, लेकिन मय्यत के ग़ुस्ल में भी तीन बार धोना (तसलीस) शरीअत में वांछित क़ुर्बत (निकटता) है।

मैं कहता हूँ (अक़ूल): इसीलिए हमने दूसरे भाग में भी मानव शरीर को मुतलक़ (सामान्य) रखा।

(12) 'वुज़ू पर वुज़ू' की नियत से दूसरे से कहा कि मुझे वुज़ू करा दे। उसने सवाब की नियत के बिना उसके वुज़ू के अंगों को धो दिया। पानी मुस्तअमल हो गया क्योंकि यह उसके आदेश पर हुआ और उसकी नियत क़ुर्बत की थी, तो इसे उसी का उपयोग माना जाएगा। क्या आप नहीं देखते कि यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति ऐसा करता और नियत करता, तो उसने आदेशित कार्य को पूरा किया होता, यद्यपि 'धोएँ और पोंछें का आदेश उसी पर था। (अर्थात, यदि कोई बिना वुज़ू वाला व्यक्ति ऐसा करे और नियत करे, तो वह उस आदेश को पूरा करने वाला होगा जो 'फ़ागसिलू वमसहू' के माध्यम से उस पर लाज़िम था।)

(13) बा-वुज़ू (3) आदमी ने अंगों को ठंडा करने या मैल धोने के लिए 'वुज़ू पर वुज़ू' की नियत के बिना वुज़ू किया। पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि अब न तो वाजिब पूरा हुआ है और न ही क़ुर्बत क़ायम हुई है।

(14) ज्ञात था कि अंग तीन बार धोया जा चुका है और अभी पानी सूखा भी नहीं था, फिर भी बिना वजह चौथी बार पानी डाला। यह भी क़ुर्बत नहीं बल्कि अदब के ख़िलाफ़ है।

(15) हाँ, यदि संदेह हो कि दो बार धोया या तीन बार, और इस प्रकार तीन बार धोने के यक़ीन (तयक़्क़ुन-ए-तसलीस) के लिए फिर पानी डाला, तो वह मुस्तअमल हो जाएगा।

पृष्ठ 45 का 711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

(۶) پاک آدمی نے ادائے سنّت کو جمعے یا عیدین یا عرفے یا احرام یا اور اوقاتِ مسنونہ کا غسل یا میت کو غسل دینے کا وضو یا غسل کیا۔

(۷) با وضو (۱) نے کھانے کو یا کھانا کھا کر بہ نیت ادائے سنت ہاتھ دھوئے یا کُلّی کی۔

(۸) وضوئے فرض یا نفل میں جو پانی کُلّی یا ناک میں پہنچانے میں صرف ہوا۔

(۹) کچھ اعضا دھوئے تھے خشک ہوگئے سنت موالات کی نیت سے انہیں پھر دھویا ان سب صورتوں میں شکل دوم کے سبب مستعمل ہوجائے گا اگرچہ اسقاط واجب نہ کیا اقامت قربت کی (۲) میت کو نہلا کر غسل کرنا بھی مستحب ہے کما فی الدر وغیرہ۔

(۱۰) میت کے بارے میں علماء مختلف ہیں جمہور کے نزدیک موت نجاستِ حقیقیہ ہے اس تقدیر پر تو وہ پانی کہ غسلِ میت میں صرف ہوا مائے مستعمل نہیں بلا بلکہ ناپاک ہے اور بعض کے نزدیک نجاستِ حکمیہ ہے بحر الرائق وغیرہ میں اسی کو اصح کہا اس تقدیر پر وہ پانی بھی مائے مستعمل ہے اور ہماری تعریف کی شق اول میں داخل کہ اس نے بھی اسقاطِ واجب کیا۔

اقول ولذا ہم نے انسان کا پارہ جسم کہا نہ مکلف کا کہ میت مکلف نہیں۔ اور تطہیر لازم تھی کہا نہ یہ کہ اس کے ذمے پر لازم تھی کہ یہ تطہیر میت کے ذمے پر نہیں احیا پر لازم ہے۔

(۱۱) یوں ہی غسلِ میت کا دوسرا اور تیسرا پانی بھی آپ مستعمل ہوگا کہ اگرچہ پہلے پانی سے اسقاطِ واجب ہوگیا مگر غسلِ میت میں تثلیث بھی قربت مطلوبہ فی الشرع ہے۔

اقول ولذا ہم نے شق دوم میں بھی بدنِ انسان مطلق رکھا۔

(۱۲) وضو علی الوضو کی نیت سے دوسرے کو کہا مجھے وضو کرا دے اس نے بے نیتِ ثواب اس کے اعضائے وضو دھو دیئے پانی مستعمل ہو گیا کہ جب اس کے امر سے ہے اور اس کی نیتِ قربت کی ہے تو وہ اسی کا استعمال قرار پائے گا الا تریٰ انہ لو فعل ذلک محدث و نوی فقد اتی بالمأمور بہ مع ان امر فاغسلوا وامسحوا انما کان علیہ (جیسا کہ اگر بے وضو ایسا کرے اور نیت کرے تو مامور بہ کو بجالانے والا ہوگا جو فاغسلوا وامسحوا سے اس پر لازم تھا۔)

(۱۳) با وضو (۳) آدمی نے اعضاء ٹھنڈے کرنے یا میل دھونے کو وضو بے نیتِ وضو علی الوضو کیا پانی مستعمل نہ ہوگا کہ اب نہ اسقاطِ واجب ہے نہ اقامتِ قربت۔

(۱۴) معلوم تھا کہ عضو تین بار دھو چکا ہوں اور ہنوز پانی خشک بھی نہ ہوا تھا بلا وجہ چوتھی بار اور ڈالا یہ بھی قربت نہیں بلکہ خلافِ ادب ہے۔

(۱۵) ہاں اگر شک ہو کہ دو بار دھویا یا تین بار یوں تیقنِ تثلیث کیلئے پانی پھر ڈالا تو مستعمل ہو جائے گا۔

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

...even if it was actually the fourth time. (16) One who did not need a bath (Ghusl) washed a part of the body other than the limbs of Wudu, for example, the back or thigh. (17) A person already in the state of Wudu washed their hands and face or performed rinsing (Kulli) after eating or otherwise to clean themselves, but did not have the intention of performing a Sunnah. The water used will not be considered 'Mustamal' (used water) because neither did a state of impurity (hadath) exist nor was it an act of worship (qurbat). (18) A person already in Wudu performed Wudu with the sole intention of teaching someone else how to perform Wudu. The water used will not be considered 'Mustamal' because teaching Wudu, although a righteous act (qurbat), the act of performing Wudu for the sake of teaching is not a qurbat in itself; teaching is the qurbat, which is also possible through speech. Therefore, we have added the condition that the use itself must be an act of seeking reward, meaning the action itself must be required by Sharia, even if it is intended for something else, like Wudu. (The action itself is required by Sharia even if it is for the sake of another thing, like Wudu. - Note) (19) Washing any clean cloth etc. (20 & 21) Bathing an impure animal or a minor child, provided there was no impurity (najasat) on their bodies, even if the animal is one whose meat is not consumed, like a cat or a rat, or even a dog according to the preferred view, as long as the water remained separate from its saliva. Even if bathing them was for the purpose of curing a disease or providing coolness during intense heat with the intention of reward, the water will not be considered 'Mustamal'. I say: Clothes, vessels, animals, and the like are excluded by the condition of the human body. Bathing a minor child is like Wudu for teaching; it is not a qurbat in itself because no specific command has come in Sharia for bathing children. Yes, there is encouragement to benefit and provide comfort to them, or rather to every Muslim and living being. These customary matters can become a qurbat under a general praiseworthy rule with such intention, but the cause for water being 'Mustamal' is only that action which is a qurbat and required by Sharia in its essence. (22) A woman in menstruation (Haiz) or post-natal bleeding (Nifas) performed Ghusl with the intention of qurbat before the bleeding stopped. The water will not be considered 'Mustamal' because even though it touched a human body whose purification through Ghusl will become obligatory, it is not obligatory yet; it will become obligatory after the bleeding ceases. I say: therefore, we have added the condition of 'actual' (bil-fi'l). (23) A child without understanding performed Wudu, the way children of two or three years old start performing the

actions of Wudu and prayer by imitating their parents as a form of play or imitation. The water will not be considered 'Mustamal' because there is neither qurbat nor removal of impurity. (24) While performing Wudu, as long as the water is flowing over the same limb, it will not be ruled as 'Mustamal', otherwise performing Wudu would become impossible. Rather, it will be called 'Mustamal' when it separates from that limb, even if it has not settled anywhere yet. For example, (1) while washing the face, one took water on the wrist and that same water, after separating from the face, flowed onto the wrist. According to the majority of scholars, this will not be sufficient because as soon as it separated from the face, the ruling of 'Mustamal' applied. Yes, for some who stipulate 'settling' (istiqrar) as a condition, it is sufficient as it hasn't become 'Mustamal' yet. And in Ghusl, the entire body is like a single limb, so the water from the head that flows down to the feet will keep purifying every place it passes.

फतावा रज़विया, खंड दो

...भले ही वास्तव में चौथी बार हो। (१६) जिसे ग़ुस्ल (स्नान) की ज़रूरत नहीं थी, उसने वुज़ू के अंगों के अलावा शरीर का कोई हिस्सा धोया, जैसे पीठ या जांघ। (१७) वुज़ू की हालत में किसी व्यक्ति ने खाना खाने से पहले या बाद में, या वैसे ही हाथ-मुँह साफ़ करने के लिए हाथ धोए और कुल्ली की, और सुन्नत अदा करने की नीयत नहीं थी, तो वह पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा क्योंकि न तो अपवित्रता (हदस) दूर हुई और न ही यह इबादत (क़ुर्बत) थी। (१८) वुज़ू वाले व्यक्ति ने केवल किसी को वुज़ू सिखाने की नीयत से वुज़ू किया, तो वह पानी 'मुस्तअमल' नहीं हुआ क्योंकि वुज़ू की शिक्षा देना यद्यपि इबादत है, लेकिन वुज़ू सिखाने के लिए वुज़ू करना अपने आप में इबादत नहीं है; शिक्षा देना इबादत है, और वह ज़बान से भी संभव है। इसीलिए हमने यह शर्त लगाई है कि वह इस्तेमाल स्वयं पुण्य का कार्य हो, यानी वह कार्य अपने आप में शरीयत में वांछित हो, चाहे वह किसी और चीज़ के लिए हो जैसे वुज़ू। (कार्य स्वयं शरीयत में वांछित है चाहे वह किसी और चीज़ के लिए हो जैसे वुज़ू है। - त) (१९) कोई पाक कपड़ा आदि धोया। (२० और २१) किसी अपवित्र जानवर या नासमझ बच्चे को नहलाया और उनके शरीर पर कोई गंदगी (नजासत) नहीं थी, चाहे वह जानवर हराम मांस वाला ही क्यों न हो जैसे बिल्ली या चूहा, यहाँ तक कि प्रबल मत के अनुसार कुत्ता भी, बशर्ते कि पानी उसकी लार से अलग रहा हो। चाहे उन्हें नहलाना बीमारी दूर करने या भीषण गर्मी में ठंडक पहुँचाने के लिए पुण्य की नीयत से हो, वह पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा। मैं कहता हूँ: कपड़े, बर्तन, जानवर और उनके जैसे अन्य चीज़ें 'मानव शरीर' की शर्त से बाहर हैं। और नासमझ बच्चे को नहलाना वुज़ू की शिक्षा देने के समान है, यह स्वयं इबादत नहीं है क्योंकि बच्चों को नहलाने का कोई विशेष आदेश शरीयत में नहीं आया है। हाँ, उन्हें बल्कि हर मुसलमान और जीव को लाभ और आराम पहुँचाने का प्रोत्साहन ज़रूर है। ये सामान्य मामले उस नीयत के साथ एक सराहनीय नियम के अंतर्गत आकर इबादत बन सकते हैं, लेकिन पानी के मुस्तअमल होने का कारण वही कार्य है जो अपने आप में इबादत और शरीयत में वांछित हो। (२२) मासिक धर्म (हैज़) या प्रसव के बाद के रक्तस्राव (निफ़ास) वाली महिला ने रक्त बंद होने से पहले इबादत की नीयत से ग़ुस्ल किया, तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि यद्यपि उसने मनुष्य के शरीर को छुआ है जिसकी शुद्धि ग़ुस्ल से अनिवार्य होगी, लेकिन अभी अनिवार्य नहीं है, रक्त बंद होने के बाद अनिवार्य होगी। मैं कहता हूँ: इसीलिए हमने 'वास्तविक' (बिल-फ़ेल) की शर्त लगाई है। (२३) नासमझ बच्चे ने वुज़ू किया, जैसे दो-तीन साल के बच्चे माता-पिता को देखकर नकल के तौर पर वुज़ू और नमाज़ के कार्य करने लगते हैं,

तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि न तो इबादत है और न ही अपवित्रता दूर हुई। (२४) वुज़ू करते समय जब तक पानी उसी अंग पर बह रहा है, उसे मुस्तअमल नहीं माना जाएगा अन्यथा वुज़ू करना असंभव हो जाएगा। बल्कि जब वह उस अंग से अलग होगा, तब उसे मुस्तअमल कहा जाएगा, चाहे वह अभी कहीं स्थिर न हुआ हो। उदाहरण के लिए, (१) मुँह धोते समय कलाई पर पानी लिया और वही पानी मुँह से अलग होकर कलाई पर बह गया। अधिकांश विद्वानों (जमहूर) के अनुसार यह पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि मुँह से अलग होते ही वह मुस्तअमल हो गया। हाँ, उन कुछ विद्वानों के यहाँ जिनके पास 'स्थिरता' (इस्तिकरार) शर्त है, उनके अनुसार यह पर्याप्त है क्योंकि अभी वह मुस्तअमल नहीं हुआ। और ग़ुस्ल में पूरा शरीर एक ही अंग के समान है, इसलिए सिर का पानी जो पैरों तक बहता जाए, जिस-जिस जगह से गुज़रेगा सबको पाक (पवित्र) करता जाएगा।

पृष्ठ ४६ का ७११

اگرچہ واقع میں چوتھی بار ہو۔ (۱۶) جسے حاجت غسل نہیں اُس نے اعضائے وضو کے سوا مثلاً پیٹھ یا ران دھوئی۔ (۱۷) باوضو نے کھانا کھانے کو یا کھانے سے بعد یا ویسے ہی ہاتھ منہ صاف کرنے کو ہاتھ دھوئے کُلی کی اور ادائے سنّت کی نیت نہ تھی مستعمل نہ ہوگا کہ حدث و قربت نہیں۔ (۱۸) باوضو نے صرف کسی کو وضو سکھانے کی نیت سے وضو کیا مستعمل نہ ہوا کہ تعلیم وضو اگرچہ قربت ہے مگر وضو سکھانے کو وضو کرنا فی نفسہ قربت نہیں سکھانا قربت ہے اور وہ زبان سے بھی ممکن ولذا ہم نے قید لگائی کہ وہ استعمال خود کارِ ثواب تھا یعنی فعل فی نفسہ مطلوب فی الشرع ولو مقصود الغیرہ کالوضوء (فعل فی نفسہ مطلوب فی الشرع ہے اگر چہ مقصود لغیرہ ہو جیسے وضو ہے۔ ت) (۱۹) کوئی پاک کپڑا وغیرہ دھویا۔ (۲۰ و ۲۱) نجس جانور یا نابالغ بچہ کو نہلایا اور ان کے بدن پر نجاست نہ تھی اگر چہ وہ جانور غیر ماکول اللحم ہو جیسے بلی یا چوہا حتی کہ مذہبِ راجح میں کُتّا بھی جبکہ پانی اُن کے لعاب سے جُدا رہا اگر چہ نہلانا ان کے دفعِ مرض یا شدتِ گرما میں ٹھنڈ پہنچانے کو بہ نیت ثواب ہو مستعمل نہ ہوگا۔ اقول: کپڑا برتن جانور اور ان کے امثال تو بدن انسان کی قید سے خارج ہوئے اور نابالغ کو نہلانا مثل وضوئے تعلیم خود قربت نہیں کہ بچوں کے نہلانے کا کوئی خاص حکم شرع میں نہ آیا ہاں انہیں بلکہ ہر مسلمان وجاندار کو نفع و آرام پہنچانے کی ترغیب ہے یہ امورِ عاد یہ اُس حکم کی نیت سے کلیہ محمودہ کے نیچے آکر قربت ہو سکتے ہیں مگر موجب استعمال وہی فعل ہے جو بذاتِ خود قربت و مطلوب شرع ہو۔ (۲۲) حائض ونفساء نے قبل انقطاعِ دم بہ نیت قربت غسل کیا پانی مستعمل نہ ہوگا کہ اس نے اگرچہ انسان کے جسم کو مس کیا جس کی تطہیر غسل سے واجب ہوگی مگر ابھی لازم نہیں بعد انقطاع لزوم ہوگا۔ اقول ولذا ہم نے بالفعل کی قید لگائی۔ (۲۳) نا سمجھ بچے نے

وضو کیا جس طرح دو تین سال کے اطفال ماں باپ کو دیکھ کر بطور نقل و حکایت افعالِ وضو نماز کرنے لگتے ہیں پانی مستعمل نہ ہوگا کہ نہ قربت نہ حدث۔ (۲۴) وضو کرنے میں پانی کو جب تک اُسی عضو پر بہہ رہا ہے حکم استعمال نہ دیا جائے گا ورنہ وضو محال ہو جائے بلکہ جب اُس عضو سے جُدا ہوگا اس وقت مستعمل کہا جائے گا اگرچہ ہنوز کہیں مستقر نہ ہوا ہو مثلاً (۱) منہ دھونے منہ دھونے میں کلائی پر پانی لیا اور وہی پانی کے منہ سے جُدا ہو کر آیا کلائی پر بہا لیا جمہور کے نزدیک کافی نہ ہوگا کہ منہ سے منفصل ہوتے ہی حکم استعمال ہو گیا ہاں جن بعض کے یہاں استقرار شرط ہے اُن کے نزدیک کافی ہے کہ ابھی مستعمل نہ ہوا اور غسل میں سارا بدن عضو واحد ہے تو سر کا پانی کہ پاؤں تک بہتا جائے جس جس جگہ گزرا سب کو پاک کرتا جائے گا۔

Fatawa Razawiyya Volume 2 (25) I say: The benefit of restricting to 'impurity in rule' (najasat hukmiyah) is evident, as water used to remove 'real impurity' (najasat haqiqiyah) becomes absolutely impure (najis) according to us, not 'used' (mustamal). (26) I say: We kept 'water' absolute and clarified it through the removal of 'impurity in rule' and the performance of the aforementioned acts of worship (qurbat), meaning 'absolute water' (maa-e-mutlaq). Thus, if someone performs ablution (wudhu) with soup, milk whey, or date-drink (nabiz-e-tamr), they will not become 'used' (mustamal). In fact, ablution will not even be valid with them, so how could they become 'used'? (27) The nature of the substance itself, i.e., water, excludes milk, vinegar, rose water, screwpine water, etc. If someone performs ablution with these, they will not become 'used', even if the person was without ablution, or in a state of major ritual impurity (junub), or intended worship. This is because (1) nothing other than water can provide purification from 'impurity in rule' (najasat hukmiyah) in the first place. Note: If it is asked what the benefit of points 26 and 27 is, since something doesn't become impure (najis) according to us just by becoming 'used' (mustamal), it only loses the ability to remove 'impurity in rule'. These substances didn't have this capability before either, so what is the benefit of not considering them 'used'? I say: Firstly, the benefit was that by not being 'used', their purity remains agreed upon (muttafaq alayh), whereas there is a difference of opinion among our Imams regarding the purity of 'used' water, although the correct view is that it is pure (tahir). Secondly: 'Used' water (2), though pure, is considered repulsive (qadhar), and it is impermissible to pour it in a mosque. By not considering these substances as 'used', it is known that, for example, if someone (3) performs ablution with rose water, they can sprinkle it in the mosque as it is not 'used' water. In short, this is an exquisite, magnificent, comprehensive, exclusive, healing, and beneficial definition of 'used water' (maa-e-mustamal) which, by the grace of Allah, was inspired in this humble servant through the service of the words of the noble scholars. To Allah belongs all praise. For ease of memorization, this humble servant versifies it and hopes for prayers for forgiveness and well-being from his religious brothers: Used water, pure itself but not purifying, A comprehensive and exclusive definition from Raza in two verses: Absolute water spent either to wash a mandatory ritual impurity, Or specifically used on a human body for a desired act of worship. Stagnant water (note: ah) that separates from the body in this way is 'used', Though according to some, it's only when it settles in a place or vessel. These two verses cover all the details mentioned so far, and also that the preferred (rajih) first opinion is: it will be ruled 'used' as soon as it separates from the body; settling in a place is not a condition.

Now, I will mention the statements of scholars and my individual research on some of the aforementioned issues. Success is from Allah. In Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar, it says: "It is not permissible (for purification) with water that has been used for the purpose of proximity, i.e., reward, even if it be (additional) ablution." This water is not permissible which has been used for the sake of reward.

1Translation: Used water, which is pure in itself but does not purify another, has a comprehensive and exclusive definition from Raza in two points: * That through which ritual impurity (hadath) is absolutely removed, or which has been used on the body with the intention of a desired proximity (qurbat-e-maqsuda). A small amount of water becomes 'used' when it separates from the body, but according to some, its settling in some place or vessel after separating from the body is necessary. ah: 'Stagnant' (rakid) meaning non-flowing, i.e., a small amount of water (aab-e-qalil) which is less than ten by ten cubits. 12 (m)

फतावा रज़विया जिल्द दोयम (भाग 2) (२५) अक़ूल: नजासत में हुकमिया की तक़यीद (प्रतिबंध) का फ़ायदा ज़ाहिर है कि जो पानी नजासत-ए-हक़ीक़िया (वास्तविक अशुद्धि) को दूर करने में इस्तेमाल हो, हमारे नज़दीक वह मुतलक़न (पूरी तरह) नापाक हो जाएगा, न कि मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ)। (२६) अक़ूल: हमने पानी को मुतलक़ रखा और खुद रफ़-ए-नजासत-ए-हुकमिया (कानूनी अशुद्धि को दूर करना) और ज़िक्र की गई कुर्बतों (इबादतों) के प्रदर्शन से स्पष्ट किया कि पानी से मुराद 'माए मुतलक़' (शुद्ध पानी) है। तो शोरबे या छाछ या खजूर के नबीज़ से अगर कोई वज़ू करे, तो वे मुस्तअमल नहीं होंगे। उनसे वज़ू ही नहीं होगा, तो वे मुस्तअमल कैसे हो गए? (२७) पानी की अपनी ज़ात (प्रजाति) ने दूध, सिरका, गुलाब जल, केवड़ा आदि को बाहर कर दिया कि अगर इनसे वज़ू किया जाए, तो वे मुस्तअमल नहीं होंगे, चाहे वज़ू न हो, चाहे जनाबत की हालत हो, चाहे कुर्बत (पुण्य) की नीयत हो। क्योंकि (१) पानी के अलावा और कुछ भी नजासत-ए-हुकमिया से असल में पाकी हासिल नहीं करा सकता। तन्बीह: अगर कोई पूछे कि २६ और २७ का परिणाम क्या है? क्योंकि हमारे नज़दीक कोई चीज़ मुस्तअमल होने से नापाक नहीं हो जाती, वह केवल नजासत-ए-हुकमिया को दूर करने के योग्य नहीं रहती। यह योग्यता इन चीजों में पहले भी नहीं थी, तो उन्हें मुस्तअमल न मानने का क्या फ़ायदा हुआ? अक़ूल: पहली बात तो यह कि यही फ़ायदा बहुत बड़ा था कि मुस्तअमल न होने से उनकी पाकी (शुद्धता) मुत्तफ़क़ अलैह (सर्वसम्मत) रहेगी, क्योंकि मुस्तअमल पानी की पाकी में हमारे इमामों के बीच मतभेद है, हालांकि सही बात यह है कि वह पाक (ताहिर) है। दूसरी बात: मुस्तअमल (२) पानी हालांकि पाक है, लेकिन वह घृणित (क़दर) है और उसे मस्जिद में डालना नाजायज़ है। इन चीज़ों को मुस्तअमल न बताकर यह पता चला कि मिसाल के तौर पर अगर किसी ने (३) गुलाब जल से वज़ू किया, तो उसे मस्जिद में छिड़क सकते हैं क्योंकि वह मुस्तअमल नहीं हुआ। संक्षेप में, यह 'माए मुस्तअमल' (उपयोग किए गए पानी) की वह उत्कृष्ट, महान, व्यापक, विशिष्ट, उपचारात्मक और लाभदायक परिभाषा है जो अल्लाह के फ़ज़ल से उलेमा-ए-किराम के शब्दों की सेवा से इस फ़क़ीर (दीन के सेवक) के मन में आई। तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है। याद रखने की आसानी के लिए, यह फ़क़ीर इसे कविता के रूप में लिखता है और अपने धार्मिक भाइयों से क्षमा और कल्याण की दुआ की उम्मीद रखता है। माए मुस्तअमल कि ताहिर ना मुतहर वस्फ़े ओस्त, जामे ओ माने हद ओ अज़ रज़ा दो हर्फ़ शुद। मुतलक़े को वाजिब शुस्तन ज़े हदसे कास्त या, बर बशर दर क़ुरबते मतलूबा ऐनन सर्फ़ शुद। राकिदे (अह) कांईसां जुदा शुद अज़ बदन मुस्तअमल अस्त, लीक नज़दे बाज़ चूँ क़ायम ब जा या ज़र्फ़ शुद। इन दो अंतिम शेरों में वे तमाम विवरण आ गए जो यहाँ तक वर्णित हुए, और यह भी कि पहला मत ही पसंदीदा (राजिह) है, यानी शरीर से अलग होते

ही उसे मुस्तअमल माना जाएगा, किसी स्थान पर रुकना शर्त नहीं है। अब मैं उलेमा के उद्धरणों और कुछ वर्णित मसलों पर अपना व्यक्तिगत शोध प्रस्तुत करूँगा। सफलता अल्लाह की ओर से है। 'तन्वीरुल अबसार', 'दुर्रे मुख़्तार' और 'रद्दुल मुहतार' में लिखा है: "उस पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है जो कुर्बत यानी सवाब के लिए इस्तेमाल किया गया हो, चाहे वह (दोबारा किया गया) वज़ू ही क्यों न हो।" वज़ू उस पानी से जायज़ नहीं है जिसे सवाब के तौर पर इस्तेमाल किया गया हो।

१अनुवाद: मुस्तअमल पानी जो खुद पाक होता है और दूसरे को पाक नहीं करता, रज़ा की ओर से इसकी व्यापक और विशिष्ट परिभाषा दो बातों में हुई: * जिससे पूर्णतः हदस (अशुद्धि) दूर हुई हो या जो शरीर पर इच्छित कुर्बत की नीयत से इस्तेमाल हुआ हो। थोड़ा पानी जब शरीर से अलग हो जाए तो वह मुस्तअमल हो जाएगा, लेकिन कुछ के नज़दीक शरीर से अलग होकर किसी स्थान या बर्तन में उसका ठहरना ज़रूरी है। अह: 'राकिद' का अर्थ है गैर-जारी (ठहरा हुआ), यानी 'आबे क़लील' जो दस गुणा दस हाथ से कम हो। १२ (म)

पृष्ठ ७११ का ४७

فتاوی رضویہ جلد ثانی (۲۵) اقول نجاست میں حکمیہ کی تقیید کا فائدہ ظاہر ہے کہ جو پانی نجاست حقیقیہ کے ازالہ میں صرف ہو ہمارے نزدیک مطلقاً ناپاک ہو جائے گا نہ کہ مستعمل۔ (۲۶) اقول: ہم نے پانی کو مطلق رکھا اور خود رفع نجاست حکمیہ و اقامت قربت ہائے مذکورہ سے واضح کہ پانی سے مائے مطلق مراد ہے تو شور بے یا دودھ کی لسی یا نبیز تمر سے اگر وضو کرے وہ مستعمل نہ ہونگے ان سے وضو ہی نہ ہوگا تو مستعمل کیا ہوں۔ (۲۷) خود نفس جنس یعنی پانی نے دودھ سرکہ گلاب کیوڑے وغیرہا کو خارج کر دیا کہ ان سے وضو کرے تو مستعمل نہ ہوں گے اگر چہ بے وضو ہو اگر چہ جنب ہو اگر چہ نیت قربت کرے کہ (۱) غیر آب نجاست حکمیہ سے اصلاً تطہیر نہیں کر سکتا۔ تنبیہ : اگر کہئے ۲۶ و ۲۷ کا ثمرہ کیا ہے کہ مستعمل ہونے سے ہمارے نزدیک شے نجس نہیں ہو جاتی صرف نجاست حکمیہ دور کرنے کے قابل نہیں رہتی یہ قابلیت ان اشیاء میں پہلے بھی نہ تھی تو ان کو مستعمل نہ ماننے کا کیا فائدہ ہوا۔ اقول اول تو یہی فائدہ بہت تھا کہ مستعمل نہ ہونے سے ان کی طہارت متفق علیہ رہے گی کہ مستعمل کی طہارت میں ہمارے ائمہ کا اختلاف ہے اگر چہ صحیح طہارت ہے۔ ثانیاً : مستعمل (۲) اگر چہ طاہر ہے مگر قذر ہے مسجد میں اس کا ڈالنا نا جائز ہے ان اشیاء کو مستعمل نہ بتانے سے یہ معلوم ہوا کہ مثلاً جس (۳) گلاب سے کسی نے وضو کیا اسے مسجد میں چھڑک سکتے ہیں کہ وہ مستعمل نہ ہوا۔ بالجملہ یہ وہ نفیس و جلیل جامع و مانع و شافی و نافع تعریف مائے مستعمل ہے کہ بفضل الٰہی خدمت کلمات علمائے کرام سے اس فقیر پر القا ہوئے وللہ الحمد۔ سہولت حفظ کیلئے فقیر اسے نظم کرتا اور برادران دینی سے دعائے عفو و عافیت کی طمع رکھتا ہے۔ مائے مستعمل کہ طاہر نا مطہر وصف اوست جامع و مانع حد اواز رضا دو حرف شد مطلقے کو واجب شستن زحدثے کاست یا بر بشر در قربت مطلوبہ عیناً صرف شد راکدے عہ کائینسان جدا شد از بدن مستعمل ست لیک نزد بعض چوں قائم بجا یا

ظرف شد دو شعر اخیر میں وہ تمام تفاصیل آگئیں جو یہاں تک مذکور ہوئیں اور یہ بھی کہ راجح قول اول ہے یعنی بدن سے جدا ہوتے ہی مستعمل کا حکم دیا جائے گا کسی جگہ مستقر ہونا شرط نہیں۔ اب عبارات علماء اور بعض مسائل مذکورہ میں اپنی تحقیق مفرد ذکر کریں وباللہ التوفیق۔ تنویر الابصار و در مختار و رد المحتار میں ہے: لا یجوز بماء استعمل لاجل قربۃ ای ثواب ولو وضواً بانی سے جائز نہیں جس کو بطور ثواب استعمال کیا گیا ہو۔

۱ ترجمہ: مستعمل پانی جو کہ خود پاک ہوتا ہے اور دوسرے کو پاک نہیں کرتا رضا سے اس کی جامع مانع تعریف دو باتوں میں ہوئی * جس سے مطلقاً حدث زائل ہوا ہو یا قربت مقصودہ کی نیت سے بدن پر استعمال ہوا ہو قلیل پانی جب بدن سے جدا ہوا تو مستعمل ہو جائیگا لیکن بعض کے نزدیک بدن سے جدا ہو کر کسی جگہ یا ظرف میں اس کا قرار ضروری ہے۔ عہ: راکد بمعنے غیر جاری یعنی آب قلیل کہ وہ دہ در دہ نباشد ۱۲ (م)

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Left Column: Arabic/Urdu Mix] | [Right Column: Urdu Translation/Explanation] From a discerning child (if he performs wudu intending purification as mentioned in Al-Khaniyah; the apparent meaning is that if he did not intend purification, the water would not become 'used' - Musta'mal). | Even if used by a child who has attained discernment. (When he performs wudu with the intention of attaining purity as in Al-Khaniyah, and its apparent meaning is that if purity was not intended, it would not become 'used').

Or a menstruating woman due to the habit of worship. (It is stated in 'An-Nahr' that the jurists said the water used for the wudu of a menstruating woman becomes 'used' because it is recommended for her to perform wudu for every obligatory prayer time and to sit at her place of prayer for the duration of the prayer so that her habit of prayer is not interrupted. And if she performs wudu for Tahajjud or Salat ad-Duha, it is appropriate that the water becomes 'used'. Ar-Ramli and others upheld this, and its reason is evident. Therefore, the commentator affirmed this and used the term 'worship' in a general sense, following 'Jami' al-Fatawa'). | Or a menstruating woman due to the habit of worship. (In 'Nahr' it is mentioned that the jurists stated the wudu of a menstruating woman makes the water 'used' because wudu is recommended for her for every obligatory prayer time, and that she sits in her place of prayer for the duration of the prayer so that the habit of prayer is not lost. And if she performs wudu for Tahajjud or Chashat prayer, that water should become 'used'. Ar-Ramli and others maintained this, and its reason is clear. Thus, the commentator was certain about it and kept 'worship' general, following Jami' al-Fatawa).

Or washing a deceased person; and the view that the water used for washing the deceased becomes 'used' is the most correct according to 'Al-Bahr'. I say: The opinion of the majority of jurists, which 'Al-Bada'i' relied upon, is that the impurity of a deceased person is an impurity of filth (Najasat-e-Khubth), because a human is a blood-bearing creature, and its... It is permissible to link it to 'discerning', i.e., even if it is for washing a dead body, because wudu before washing a dead body is Sunnah, or [washing] hands for eating with the intention of Sunnah. It is restricted in 'Al-Bahr' based on the statement of 'Al-Muhit' because he performed an act of proximity as it is a Sunnah, as in 'An-Nahr', and thus it should be stipulated in every case. | Or washing a deceased person, and for the water used in this bath to be 'used' is the most correct (Asah), according to Bahr. I say: this is the statement of the common

jurists, and Bada'i relied upon it, that the impurity of a dead body is the impurity of filth, because a dead person is a blood-bearing creature, and its...

Footnotes: 1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, printed at Mujtabai, Delhi, 1/7 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, printed at Mustafa al-Babi, Egypt, 1/125 3. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, printed at Mujtabai, Delhi, 1/7 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, printed at Mustafa al-Babi, Egypt, 1/125 5. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, printed at Mujtabai, Delhi, 1/7 6. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Egypt, 1/125 7. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai, Delhi, 1/7

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

[बायां कॉलम: अरबी/उर्दू] | [दायां कॉलम: उर्दू अनुवाद/व्याख्या] उस समझदार बच्चे के द्वारा (यदि वह पवित्रता के उद्देश्य से वूज़ू करता है जैसा कि अल-खानिया में है; स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि उसने पवित्रता का इरादा नहीं किया, तो पानी 'मुस्तअमल' यानी इस्तेमाल किया हुआ नहीं माना जाएगा)। | हालाँकि इसका इस्तेमाल उस बच्चे ने किया है जिसमें समझ (शऊर) पैदा हो चुकी हो। (बशर्ते उसने वुज़ू किया हो और उसका इरादा पाकी हासिल करना हो जैसा कि अल-खानिया में है, और इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि उसने पवित्रता का इरादा नहीं किया तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा)।

या इबादत की आदत के कारण हैज़ (मासिक धर्म) वाली महिला द्वारा। ('अन-नहर' में है कि फ़ुक़हा ने फ़रमाया है कि हैज़ वाली महिला के वूज़ू से पानी मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि उसके लिए हर फ़र्ज़ नमाज़ के वक्त वूज़ू करना मुस्तहब है और यह कि नमाज़ की अवधि तक अपने मुसल्ले पर बैठे ताकि नमाज़ की आदत न छूटे। और यदि उसने तहज्जुद या चाश्त की नमाज़ के लिए वूज़ू किया तो वह पानी मुस्तअमल हो जाना चाहिए। अर-रम्ली और अन्य ने इसे बरकरार रखा है, और इसका कारण स्पष्ट है। इसलिए, व्याख्याकार ने इसे निश्चित रूप से स्वीकार किया और 'जामे अल-फ़तावा' के अनुसरण में इबादत शब्द को सामान्य रखा)। | या इबादत की आदत की वजह से हैज़ वाली महिला द्वारा। (नहर में है कि फ़ुक़हा ने फ़रमाया है कि हैज़ वाली औरत के वुज़ू से पानी मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि उसके लिए हर फ़र्ज़ के लिए वुज़ू मुस्तहब है और यह कि नमाज़ की मात्रा के बराबर अपने मुसल्ले पर बैठे ताकि नमाज़ की आदत खत्म न हो। और अगर उसने तहज्जुद या चाश्त की नमाज़ के लिए वुज़ू किया तो वह पानी मुस्तअमल हो जाना चाहिए। अर-रम्ली वगैरह ने इसे बरकरार रखा है, और इसका कारण स्पष्ट है। इसलिए शारेह ने इस पर यक़ीन ज़ाहिर किया और 'जामे अल-फ़तावा' की पैरवी में इबादत को आम रखा)।

या मुर्दे को ग़ुस्ल (स्नान) दिया जाना; और मुर्दे के ग़ुस्ल के पानी का मुस्तअमल होना ही 'अल-बहर' के अनुसार सबसे सही (असह) है। मैं कहता हूँ: आम फ़ुक़हा का यही विचार है, जिस पर 'अल-बदाए' ने भरोसा किया है कि मुर्दे की नजासत 'ख़ुब्स' (गंदगी) की नजासत है, क्योंकि मुर्दा खून वाला प्राणी है, और उसका... इसे 'समझदार बच्चे' से जोड़ा जा सकता है, यानी भले ही वह मुर्दे के ग़ुस्ल के लिए हो, क्योंकि मुर्दे के ग़ुस्ल से पहले वुज़ू करना सुन्नत है, या सुन्नत की नीयत से खाने के लिए हाथ धोना। 'अल-बहर' में इसे 'अल-मुहीत' के कथन के आधार पर प्रतिबंधित किया गया है क्योंकि उसने इसके ज़रिए नेकी की क्योंकि यह सुन्नत है, जैसा कि 'अन-नहर' में है, और इसलिए इसे हर मामले में शर्त

माना जाना चाहिए। | या मुर्दे को ग़ुस्ल दिया गया और इस ग़ुस्ल के इस्तेमाल किए हुए पानी का मुस्तअमल होना ही सबसे सही है, 'बहर' के अनुसार। मैं कहता हूँ कि आम फ़ुक़हा का यही कहना है, जिस पर 'बदाए' ने भरोसा किया है कि मुर्दे की नजासत 'ख़ुब्स' की नजासत है, क्योंकि मुर्दा खून वाला जानवर है, और उसका...

पाद-टिप्पणियाँ (फ़ुटनोट्स): 1. अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), मुज्तबाई दिल्ली, 1/7 2. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/125 3. अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/7 4. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/125 5. अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/7 6. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मिस्र, 1/125 7. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/7

[بایاں کالم: عربی/اردو آمیز] | [دایاں کالم: اردو ترجمہ و تشریح] من مميز (اذا توضأ يريد به التطهير كما فى الخانية وظاهره انه لولم يرد به ذلك لم يصر مستعملاً) | اگرچہ اس بچہ نے استعمال کیا ہے جس میں شعور پیدا ہوچکا ہو۔ (جبکہ وضو کیا کہ اس سے اس کا ارادہ پاکی حاصل کرنے کا تھا کما فی الخانیہ اور اس کا ظاہر یہ ہے کہ اگر اس سے طہارت کا ارادہ نہ کیا تو مستعمل نہ ہوگا) او حائض لعادة عبادة (قال في النهر قالوا بوضوء الحائض يصير مستعملا لانه يستحب لها الوضوء لكل فريضة وان تجلس فى مصلاها قدرها كيلا تنسى عادتها وينبغى ان لو توضأت لتهجد عادى او صلاة ضحى ان يصير مستعملا اه واقره الرملى وغيره ووجهه ظاهر فلذا جزم به الشارح فاطلق العبادة تبعا لجامع الفتاوى) | یا حائض عبادت کی عادت کی وجہ سے، (نہر میں ہے کہ فقہاء نے فرمایا حائض کے وضو سے مستعمل ہو جائے گا کہ اس کیلئے ہر فرض کیلئے وضو مستحب ہے اور یہ کہ نماز کی مقدار میں اپنے مصلی پر بیٹھے تاکہ نماز کی عادت نہ ختم ہو جائے اور اگر تہجد یا نماز چاشت کیلئے اُس نے وضو کیا تو چاہئے کہ وہ پانی مستعمل ہو جائے اھ رَملی وغیرہ نے اس کو برقرار رکھا، اور اس کی وجہ ظاہر ہے، اس لئے اس پر شارح نے جزم کیا اور عبادت کو مطلق رکھا، جامع الفتاوی کی متابعت میں) او غسل ميت وكون غسالته مستعملة هو الاصح بحراقول: قول العامة واعتمده البدائع ان نجاسة الميت نجاسة خبث لانه حيوان دموى ويجوز عطفه على مميزاى ولو من اجل غسل ميت لانه يندب الوضوء من غسل الميت او يد لاكل اومنه بنية السنة قيد به فى البحر اخذا من قول المحيط لانه اقام به قربة لانه سنة اه في النهر وعليه ينبغى اشتراطه فى كل | یا میت کو غسل دیا اور اس غسل کے مستعمل پانی کا مستعمل ہونا ہی اصح ہے بحر، میں کہتا ہوں

عام فقہاء کا قول یہی ہے، اس پر بدائع نے اعتماد کیا کہ میت کی نجاست خُبث کی نجاست ہے، کیونکہ میت خون والا جانور ہے، اور اس کا

حواشی: 1 الدر المختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷/۱ 2 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱۲۵/۱ 3 الدر المختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷/۱ 4 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱۲۵/۱ 5 الدر المختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷/۱ 6 ردالمحتار باب المیاہ مصر ۱۲۵/۱ 7 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۷/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Left Column - Arabic] It is a Sunnah like washing the mouth and nose. Al-Ramli said: There is no hesitation in it even if he was not in a state of major ritual impurity (junub) and intended by washing the mouth and nose mere cleaning, not establishing proximity (to Allah), the water does not become 'must’amal' (used) [1]. Or to remove minor impurity like the wudu of one in ritual impurity even if for cooling. So if a person who already has wudu performs wudu for cooling, teaching, or because of mud on his hands, it does not become must'amal by consensus [2]. (It was mentioned that teaching wudu is an act of proximity. Al-Bahr answered, followed by Al-Nahr and others, that performing wudu itself is not an act of proximity, rather teaching is, and it is external to it, hence it occurs by speech [3]. Like exceeding thrice without the intention of proximity [4]. (If he intended exceeding over the first wudu, and there is a difference among the scholars in this. As for if he intended it as the start of wudu, it becomes must'amal - Bada'i', i.e., if it was after finishing the first wudu, otherwise it would be an innovation as mentioned before, so it does not become must'amal. This also applies if the gathering changes, otherwise not, because it is disliked - Bahr. But we have already stated that repeating it in a gathering multiple times is disliked [5]). And like washing such as the thigh [6] (from what is not among the parts of wudu, which is...)

[Right Column - Urdu] It is permissible on the 'atf-e-mumayyiz' (distinctive conjunction), meaning "even if it is because of washing the deceased, because it is recommended (mandub) to perform wudu after bathing the deceased, or washing hands for eating or with the intention of Sunnah (in Al-Bahr, this restriction is taken from the statement of Muhit because he performed an act of worship with it, as it is Sunnah etc. And in Al-Nahr, it is stated that on this basis, this condition should be applied to every Sunnah like washing the mouth or putting water in the nose). Ramli said that there is no doubt in this, even if he is not in major impurity and intends only cleanliness by washing the mouth and nose and not performing an act of proximity, then the water will not be must'amal, or to remove ritual impurity like a person without wudu performing wudu, whether it is for obtaining coolness. So if a person who already has wudu performs wudu for the purpose of obtaining coolness, for teaching, or to remove mud from hands, then this water will not be must'amal by consensus. (An objection was raised on this that teaching how to perform wudu is itself an act of worship? Al-Bahr gave its answer which Al-Nahr etc. also liked...

[Bottom Section] (Annotation) We have already presented the investigation of all this in 'Bariq al-Nur', so remember it. End from him, may his secret be sanctified. We have already stated its research in 'Bariq al-Nur' earlier, one should remember it. End (T).

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter: Al-Miyah (The Waters), printed Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Miyah, printed Mujtabai Delhi, 1/73 3. Radd al-Muhtar, Chapter: Al-Miyah, printed Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 4. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Miyah, printed Mujtabai Delhi, 1/73 5. Radd al-Muhtar, Chapter: Al-Miyah, printed Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 6. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Miyah, printed Mujtabai Delhi, 1/73

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

[बायां कॉलम - अरबी] यह सुन्नत है जैसे मुँह और नाक धोना। अल-रमली ने कहा: इसमें कोई हिचकिचाहट नहीं है, भले ही वह जनाबत (अशुद्धि) की स्थिति में न हो और मुँह और नाक धोने से उसका उद्देश्य केवल सफाई हो, न कि अल्लाह की निकटता प्राप्त करना, तो पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता [1]। या अशुद्धि दूर करने के लिए, जैसे बिना वज़ू वाले का वज़ू करना भले ही ठंडक के लिए हो। तो अगर वज़ू वाला व्यक्ति ठंडक के लिए, सिखाने के लिए या हाथ पर लगी मिट्टी हटाने के लिए वज़ू करे, तो सर्वसम्मति से वह पानी मुस्तअमल नहीं होगा [2]। (यह उल्लेख किया गया कि वज़ू सिखाना निकटता का कार्य है। अल-बहर ने उत्तर दिया, जिसका अनुसरण अल-नहर और अन्य ने किया, कि स्वयं वज़ू करना निकटता का कार्य नहीं है, बल्कि सिखाना है, और यह उससे अलग है, इसलिए यह बोलकर भी हो जाता है [3]। जैसे तीन बार से अधिक बिना निकटता की नियत के धोना [4]। (यदि उसने पहले वज़ू पर अधिक करने का इरादा किया, और इसमें विद्वानों के बीच मतभेद है। जहाँ तक यदि उसने इसे वज़ू की शुरुआत के रूप में चाहा, तो वह मुस्तअमल हो जाता है - बदाइ, यानी यदि यह पहले वज़ू से फारिग होने के बाद था, अन्यथा यह बिदअत होगी जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, तो यह मुस्तअमल नहीं होता। यह तब भी है जब सभा बदल जाए, अन्यथा नहीं, क्योंकि यह मकरूह है - बहर। लेकिन हमने पहले ही उल्लेख किया है कि एक ही सभा में बार-बार दोहराना मकरूह है [5])। और जैसे जाँघ धोना [6] (उन अंगों में से जो वज़ू के अंगों में से नहीं हैं, और वह है...)

[दायां कॉलम - उर्दू] 'अत्फ़-ए-मुमय्यिज़' पर जायज़ है यानी "चाहे वह मय्यत के ग़ुस्ल की वजह से हो क्योंकि मय्यत को नहलाने के बाद वज़ू कर लेना मन्दूब (पसंदीदा) है, या खाने के लिए हाथ धोना या सुन्नत की नियत से (बहर में यह शर्त मुहीत के कथन से लेकर लगाई गई है क्योंकि उसने इससे इबादत अदा की है क्योंकि वह सुन्नत है)। और नहर में है कि इस आधार पर यह शर्त हर सुन्नत में लगानी चाहिए जैसे मुँह धोना या नाक में पानी डालना। रमली ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है यहाँ तक कि अगर वह जुनबी (अपवित्र) न हो और मुँह और नाक धोने से महज़ सफाई का इरादा करे न कि कुर्बत (निकटता) की अदायगी का तो पानी मुस्तअमल न होगा, या हदस (अशुद्धि) को रफ़अ करने के लिए जैसे बे-वज़ू का वज़ू करना चाहे ठंडक हासिल करने के लिए हो, तो अगर किसी बा-वज़ू शख़्स ने ठंडक हासिल करने के लिए, सिखाने के लिए, या हाथों की मिट्टी छुड़ाने के लिए वज़ू किया तो यह पानी मुस्तअमल न होगा, बिल-इत्तेफ़ाक़ (इस पर यह ऐतराज़ वारिद किया गया है कि

वज़ू करने की तालीम देना बजाए खुद इबादत है? बहर ने इसका जवाब दिया जिसको नहर वगैरह ने भी पसंद...

[निचला हिस्सा] (हाशिया) हमने इस सब की तहक़ीक़ 'बारिक़ अल-नूर' में पहले ही पेश कर दी है, तो उसे याद रखो। उनके द्वारा समाप्त, अल्लाह उनके राज़ को पवित्र करे। हमने इसकी तहक़ीक़ बारिक़ अल-नूर में पहले बयान कर दी है इसे याद कर ले। समाप्त (त)।

[फुटनोट्स] 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/73 3. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 4. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/73 5. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 6. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/73

पृष्ठ 49/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی] سنة كغسل فم وانف اه قال الرملی ولا تردد فيه حتى لولم يكن جنباً وقصد بغسل الفم والأنف مجرد التنظيف لا اقامة القربة لا يصير مستعملاً ^1 او لرفع حدث كوضوء محدث ولو للتبرد فلو توضأ متوضئ لتبردا وتعليم او لطين بيده لم يصر مستعملاً اتفاقاً ^2 (اورد ان تعليم الوضوء قربة واجاب البحر وتبعه النهر وغيره ان التوضی نفسه ليس قربة بل التعليم وهو خارج عنه ولذا يحصل بالقول ^3 كزيادة على الثلث بلانية قربة ^4 (ان اراد الزيادة على الوضوء الاول وفيه اختلاف المشائخ اما لو اراد بها ابتداء الوضوء صار مستعملاً بدائع ای اذا كان بعد الفراغ من الوضوء الاول والا لكان بدعة كما مر فلا يصير مستعملاً وهذا ايضا اذا اختلف المجلس والا فلا لانه مكروه بحر لكن قدمنا ان المكروه تكراره في مجلس مرارا عه ^5) وكغسل نحو فخذ ^6 (مما ليس من اعضاء الوضوء وهو)

[دایاں کالم - اردو] عطف ممیز پر جائز ہے یعنی "اگر چہ میت کے غسل کی وجہ سے ہو کیونکہ میت کو نہلانے کے بعد وضو کر لینا مندوب ہے، یا ہاتھ دھونا کھانے کیلئے یا اس سے بہ نیت سنت (بحر میں یہ قید محیط کے قول سے لے کر لگائی ہے کیونکہ اُس نے اس سے عبادت ادا کی ہے اس لئے کہ وہ سنت ہے اھ اور نہر میں ہے کہ اس بنا پر یہ شرط لگانی چاہئے ہر سنت میں جیسے منہ کا دھونا یا ناک میں پانی ڈالنا، اھ رملی نے کہا کہ اس میں کوئی تردد نہیں حتی کہ اگر وہ جنب نہ ہو اور منہ اور ناک کے دھونے سے محض صفائی کا ارادہ کرے نہ کہ قربت کی ادائیگی کا تو پانی مستعمل نہ ہوگا، یا حدث کو رفع کرنے کیلئے جیسے بے وضو کا وضو کرنا خواہ ٹھنڈک کے حصول کیلئے ہو، تو اگر کسی باوضو شخص نے ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے، سکھانے کیلئے، یا ہاتھوں کی مٹی چھڑانے کیلئے وضو کیا تو یہ پانی مستعمل نہ ہوگا، بالاتفاق (اس پر یہ اعتراض

وارد کیا گیا ہے کہ وضو کرنے کی تعلیم دینا بجائے خود عبادت ہے؟ بحر نے اس کا جواب دیا جس کو نہر وغیرہ نے بھی پسند

[نیچے کا حصہ] عه قد قدمنا التحقيق في كل ذلك في بارق النور فتذكره اه منه قدس سره۔ ہم نے اس کی تحقیق بارق النور میں پہلے بیان کردی ہے اس کو یاد کر لے اھ (ت)

[حواشی] 1 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱/ ۱۲۶ 2 الدرالمختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۳ 3 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱/ ۱۲۶ 4 الدرالمختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۳ 5 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱/ ۱۲۶ 6 الدرالمختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۳

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Section]: ...by one in minor ritual impurity (hadath), not major (janaba) (1) or a clean cloth (2) (and similar inanimate objects like pots and fruits, Quhistani (3)) or an animal whose meat is eaten (4) (Bahr from Al-Mubtaghani said: Sayyidi Abdul Ghani and others similarly said that they do not make water impure nor do they take away its purifying quality, like a donkey, a mouse, or predatory animals whose mouth the water did not reach etc. Ar-Rahmati mentioned something similar (5). Or not to drop an obligation by washing some of his limbs (6) that must be washed, to avoid the washing by a person in state of minor impurity like the thigh (7) or putting his hand or foot in a tank for something other than scooping out water etc. (8) (rather to cool off or to wash mud or dough off the hand; so if he intended to scoop out etc. like taking out a jug, it does not become used (must'amal) due to necessity (9)). For it becomes used (must'amal) when it separates from the limb even if it does not settle in something according to the madhhab. And it is said when it settles (10) (in a place on the ground, palm, or cloth and stops moving, and this is the saying of a group of the scholars of Balkh, and Fakhr al-Islam and others chose it. In Al-Khulasa and others, it is mentioned that this is the chosen one, but the majority are on the first opinion, which is the most correct, and the effect of the difference appears...)

[Urdu Section]: (Because wudu itself is not an act of worship (qurbat), yes, teaching it is, and teaching is a different thing from wudu, therefore teaching can be done just by speech) like washing wudu limbs more than three times without the intention of worship, (this is when the intention is to add to the previous wudu, and there is a difference of opinion among scholars on this. If the beginning of wudu is intended by it, then the water will become used (must'amal), Bada'i, meaning when it is after finishing the first wudu, otherwise it would be a bid'ah (innovation) as mentioned before, so it won't be must'amal. And this is also when the gathering is different, otherwise not, because it is disliked (makruh), Bahr. But we have previously stated that its repetition several times in the same gathering is makruh) and like washing the thigh (which is not from the limbs of wudu, even though the person may be without wudu but not in a state of major ritual impurity (junub)) or a clean cloth (and like it dry items like pots and fruits, Quhistani) or an animal whose meat is eaten, (Bahr narrated this from Al-Mubtaghani, Sayyidi Abdul Ghani and others said that besides this they do not make the water impure and they do not [remove] the attribute of purifying from it...)

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mujtabai Delhi, 1/37 3. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 4. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 5. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 6. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 7. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/127 8. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/46 9. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126 10. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/126

फतवा रज़विया, खंड 2

[अरबी खंड]: ...एक व्यक्ति द्वारा जो लघु अशुद्धि (हद्दस) की स्थिति में हो, न कि पूर्ण अशुद्धि (जनाबत) में (१), या एक साफ कपड़े द्वारा (२) (और इसी तरह की निर्जीव वस्तुएं जैसे हांडियां और फल, कुहिस्तानी (३)) या वह जानवर जिसका मांस खाया जाता हो (४) (बह्र ने 'अल-मुबतगनी' के हवाले से कहा: सैयदी अब्दुल गनी और अन्य लोगों ने इसी तरह कहा है कि वे पानी को अशुद्ध नहीं करते और न ही उसकी शुद्ध करने की क्षमता को छीनते हैं, जैसे गधा, चूहा और शिकारी जानवर जिनका मुँह पानी तक न पहुँचा हो आदि। अर-रहमती ने भी इसी तरह का उल्लेख किया है (५))। या किसी अनिवार्य कार्य (फर्ज़) को समाप्त करने के लिए न हो, जैसे अपने उन अंगों का कुछ हिस्सा धोना (६) जिनका धोना अनिवार्य है, ताकि लघु अशुद्धि वाले व्यक्ति के धोने से बचा जा सके जैसे जांघ (७), या अपना हाथ या पैर किसी टंकी में पानी निकालने के अलावा किसी और काम के लिए डालना आदि (८) (बल्कि ठंडा करने के लिए या हाथ से मिट्टी या आटा धोने के लिए; तो अगर उसका इरादा पानी निकालने आदि का हो जैसे कि जग निकालना, तो आवश्यकता के कारण वह पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) नहीं होगा (९))। क्योंकि मज़हब के अनुसार वह तब मुस्तअमल हो जाता है जब वह अंग से अलग हो जाता है, भले ही वह किसी चीज़ में न ठहरे। और कहा गया है कि जब वह ठहर जाए (१०) (ज़मीन पर किसी स्थान, हथेली या कपड़े पर और हिलना बंद कर दे, और यह बल्ख के विद्वानों के एक समूह का कथन है, और फख्र उल इस्लाम और अन्यों ने इसे चुना है। अल-खुलासा और अन्यों में उल्लेख है कि यही चुनिंदा मत है, लेकिन आम राय पहले मत पर है और वही अधिक सही है, और मतभेद का प्रभाव दिखाई देता है...)

[उर्दू खंड]: (क्योंकि वज़ू अपने आप में कोई इबादत (क़ुर्बत) नहीं है, हाँ उसे सिखाना इबादत है और सिखाना वज़ू से अलग चीज़ है, इसलिए सिखाना केवल बोलकर भी हो जाता है) जैसे बिना इबादत की नीयत के वज़ू के अंगों को तीन बार से अधिक धोना, (यह उस समय है जब उसका इरादा पिछले वज़ू पर अधिकता करने का हो और इस बारे में विद्वानों में मतभेद है। और अगर इससे वज़ू की शुरुआत करना मुराद हो तो इस तरह पानी मुस्तअमल हो जाएगा, बदाइ, यानी जब यह पहले वज़ू से फारिग होने के बाद हो वरना बिदअत होगा जैसा कि गुज़रा तो मुस्तअमल न होगा। और यह भी उस समय है जब सभा (मजलिस) अलग हो वरना नहीं क्योंकि यह मकरूह है, बह्र। लेकिन हम पहले बता आए हैं कि एक ही मजलिस में इसकी कई बार पुनरावृत्ति मकरूह है) और जैसे जांघ का धोना (जो वज़ू के अंगों में से नहीं है हालाँकि वह व्यक्ति बिना वज़ू के हो न कि जुनुब हो) या पाक कपड़ा (और इसी की

तरह सूखी चीज़ें जैसे हांडियां और फल, कुहिस्तानी) या वह जानवर जिसका मांस खाया जाता हो, (बह्र ने इसे मुबत्गनी से रिवायत किया, सैयदी अब्दुल गनी आदि ने कहा और इसके अलावा भी पानी नापाक नहीं करते हैं और उसके पाक करने की सिफ़त को उससे...)

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 2. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/37 3. रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 4. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 5. रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 6. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 7. रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/127 8. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/46 9. रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126 10. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/126

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[عربی حصہ]: محدث لاجنب)١ او ثوب طاهر ٢ (ونحوه من الجامدات كقدور وثمار قهستانی ٣) اودابة تؤكل ٤ (بحر عن المبتغی قال سیدی عبدالغنی وغیرها كذلك لا تنجس الماء ولا تسلب طهوریته كحمار وفارة وسباع بهائم لم یصل الماء الی فمها اهـ وذكر الرحمتی نحوه ٥ اولاسقاط فرض بان یغسل بعض اعضائه ٦ التی یجب غسلها احترازاً عن غسل المحدث نحوا لفخذ ٧ اویدخل یده او رجله في جب لغیر اغتراف ونحوه ٨ (بل لتبرد او غسل ید من طین او عجین فلو قصد الاغتراف ونحوه كاستخراج كوزلم یصر مستعملا للضرورة ٩) فانه یصیر مستعملا اذا انفصل عن عضو وان لم یستقر في شیئ علی المذهب وقیل اذا استقر ١٠ (في مكان من ارض او كف او ثوب ویسكن عن التحرك وهذا قول طائفة من مشائخ بلخ واختاره فخر الاسلام وغیره، وفي الخلاصة وغیرها انه المختار الا ان العامة علی الاول وهو الاصح واثر الخلاف یظهر

[اردو حصہ]: کیا کہ وضو خود قربت نہیں ہے، ہاں تعلیم قربت ہے اور تعلیم وضو سے الگ شے ہے اس لئے تعلیم صرف قول سے بھی ہو جاتی ہے) جیسے تین مرتبہ سے زائد اعضاء وضو کا بلانیت قربت دھونا ، (یہ اُس وقت ہے جب اُس کا ارادہ یہ ہو کہ پہلے وضو پر زیادتی کی جائے اور اس میں مشائخ کا اختلاف ہے، اور اگر اس سے وضو کی ابتداء مراد ہو تو اس طرح پانی مستعمل ہو جائے گا ، بدائع ، یعنی جبکہ پہلے وضو سے فراغت کے بعد ہو ورنہ بدعت ہوگا جیسا کہ گزرا تو مستعمل نہ ہوگا، اور یہ بھی اس وقت ہے جبکہ مجلس مختلف ہو ورنہ نہیں کیونکہ یہ مکروہ ہے، بحر ۔ لیکن ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ مکروہ اس کا ایک ہی مجلس میں کئی مرتبہ تکرار ہے) اور جیسے ران کا دھونا (جو اعضائے وضو سے نہیں ہے حالانکہ وہ بے وضو ہو نہ کہ جنب ہو) یا پاک کپڑا (اور اسی کی مثل خشک اشیاء جیسے ہانڈیاں اور پھل ، قہستانی) یا وہ

چوپایہ جس کا گوشت کھایا جاتا ہو، (بحر نے اس کو مبتغنی سے روایت کیا، سیدی عبدالغنی وغیرہ نے کہا اور اسکے علاوہ بھی پانی ناپاک نہیں کرتے ہیں اور اُس کے پاک کرنے کی صفت کو اُس سے

[حواشی]: 1. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 2. در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱ / ۳۷ 3. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 4. در مختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 5. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 6. در مختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 7. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۷ 8. در مختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۴۶ 9. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶ 10. در مختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Top Left Box - Arabic Text] Regarding if it [water] separates and falls on a person, then he passes it over himself, it is valid according to the second [opinion], not the first - Nahr. And it has already been mentioned that the limbs of washing are considered as a single limb; so if it separates from one limb and falls on another limb of washing, then he passes it over it, it is valid according to both opinions - Summarized from Ah. And in Al-Hindiyya, from At-Tatar-Khaniya: If one performs ablution with vinegar or rose water, it does not become 'used' (musta'mal) according to all - Ah.

[Top Right Box - Urdu Text] ...they do not deprive [the water of its purifying quality], such as donkeys, mice, and of the four-legged animals, predators, as long as the water does not reach their mouths - Ah, and Rahmati has mentioned similarly) (or to discharge an obligation, for example, washing a limb) (from among those limbs whose washing is mandatory; this is to exclude an un-abluted person washing his thigh etc.) or putting his hand or foot in a pit, not intending to scoop water etc. from it,

[Middle Paragraph - Urdu Text] (rather, the intention being to cool down or to clean hands from soil or flour, then if he intended to scoop water, like putting a hand in water to take out a vessel, the water will not become 'used' because this is a necessity) because water becomes 'used' at the moment it separates from the limb, even if it does not settle on anything; this is the established school of thought. And there is an opinion that it becomes 'used' when it settles somewhere (on the ground, hand, or clothes, and after movement, it comes to rest; this is the saying of some sheikhs of Balkh, which Fakhr al-Islam and others favored, and in Khulasa etc., it is mentioned that this is the chosen opinion, however, most scholars follow the first opinion and it is the most correct; the effect of this difference would be in the case where water separates and falls on a person and he passes it over himself, then according to the second opinion it is valid, but not the first - Nahr. And it has been mentioned that all the limbs of washing are like a single limb, so if water separates from one and falls on the limbs of washing and he passes it over them, then according to both opinions it will be correct - Summarized from Ah. And it is mentioned in Al-Hindiyya, citing from At-Tatar-Khaniya, that if one performs ablution with vinegar or rose water, then according to all, it will not be considered 'used'. - T

[Bottom Left Box - Arabic Text] Warning: He said (1) in Al-Munya, after defining used water as water with which ritual impurity was removed or used on the body for the sake of reward, the text is: a woman washed a pot or bowls, the water does not become 'used' - Ah.

[Bottom Right Box - Urdu Text] Warning: In Al-Munya, in the definition of 'used water', it is stated: "That water with which some ritual impurity was removed or used on the body as a means of seeking nearness (reward)", then it was stated that if a woman washed a cooking pot or a large bowl, the water would not be considered 'used'. - T

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa Al-Bani, Egypt, 1/73 2. Al-Hindiyya, Regarding what is not permissible for ablution, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/23 3. Munyat al-Musalli, Regarding Impurities, Maktaba Qadriah Lahore, p. 108

फ़तावा रज़विया जिल्द दूसरी

[ऊपरी बायां बॉक्स - अरबी पाठ] यदि वह [पानी] अलग होकर किसी इंसान पर गिरे और वह उसे अपने ऊपर बहा ले, तो दूसरे [विचार] के अनुसार यह सही है, पहले के अनुसार नहीं - नह्र। और उन्होंने पहले उल्लेख किया कि वज़ू के अंग एक ही अंग की तरह हैं; अतः यदि वह उससे अलग होकर वज़ू के किसी अन्य अंग पर गिर जाए और वह उसे उस पर बहा ले, तो दोनों मतों के अनुसार यह सही है - अह संक्षेप में। और अल-हिन्दिया में अत्-तातार-खनिया से: यदि उसने सिरके या गुलाब जल से वज़ू किया, तो सभी के अनुसार वह 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) नहीं होता - अह।

[ऊपरी दायां बॉक्स - उर्दू पाठ] ...वे [पानी की पवित्रता] को खत्म नहीं करते, जैसे गधा, चूहा और चौपायों में से शिकारी जानवर जब तक कि पानी उनके मुँह तक न पहुँचे - अह, और रहमती ने भी ऐसा ही उल्लेख किया है) (या किसी फर्ज़ को हटाने के लिए, उदाहरण के लिए किसी अंग को धोना) (उन अंगों में से जिनका धोना आवश्यक है; यह बे-वज़ू व्यक्ति द्वारा अपनी जांघ आदि धोने से बचने के लिए है) या अपना हाथ या पैर किसी गड्ढे में डाले, उससे चुल्लू आदि भरने का इरादा न हो,

[मध्य अनुच्छेद - उर्दू पाठ] (बल्कि ठंडक पाने के लिए या हाथों को मिट्टी या आटे से साफ करने के उद्देश्य से, तो अगर चुल्लू भरने का इरादा किया जैसे पानी से लोटा निकालने के लिए हाथ डाला तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि यह ज़रूरत है) क्योंकि पानी मुस्तअमल उस समय होगा जब वह अंग से अलग हो जाए, चाहे वह किसी चीज़ पर न ठहरे; यही मज़हब (विचारधारा) है। और एक मत यह है कि जब वह किसी स्थान पर ठहर जाए, (ज़मीन पर या हाथ पर या कपड़े पर, और गति के बाद उसमें ठहराव आ गया हो; यह बल्ख के कुछ मशायख का कहना है, फख्र-उल-इस्लाम आदि ने इसे पसंद किया है, और खुलासा आदि में है कि यही चुना गया है, लेकिन आम विद्वान पहले मत पर ही हैं और वही सबसे सही है; इस मतभेद का प्रभाव उस स्थिति में होगा जब पानी अलग होकर किसी इंसान पर गिरे और वह उसे अपने ऊपर प्रवाहित करे, तो दूसरे मत के अनुसार सही है न कि पहले पर, - नह्र। और यह गुज़र चुका है कि धोने के अंग एक ही अंग की तरह हैं, तो अगर उससे पानी अलग होकर धोने के अंगों पर गिरा और उसने उन्हें उन पर प्रवाहित कर लिया तो दोनों मतों के अनुसार सही होगा - अह संक्षेप में, और हिन्दिया में तातार खानिया से नकल करते हुए फरमाया कि अगर सिरके से या गुलाब के अर्क से वज़ू किया तो सबके नज़दीक मुस्तअमल न होगा। - त

[निचला बायां बॉक्स - अरबी पाठ] चेतावनी: उसने (1) अल-मुन्या में मुस्तअमल पानी की परिभाषा के बाद कहा कि वह पानी जिससे कोई हद्दस (अशुद्धि) दूर की गई हो या क़ुरबत (निकटता) के रूप में शरीर पर इस्तेमाल किया गया हो, जिसका पाठ यह है: एक महिला ने पतीला या कटोरे धोए, पानी मुस्तअमल नहीं होता - अह।

[निचला दायां बॉक्स - उर्दू पाठ] चेतावनी: मुन्या में मुस्तअमल पानी की परिभाषा में कहा कि 'वह पानी जिससे कोई हद्दस दूर किया गया हो या शरीर पर क़ुरबत के तौर पर इस्तेमाल किया गया हो', फिर फरमाया कि अगर किसी औरत ने हाँडी या बड़ा प्याला धोया तो पानी मुस्तअमल न होगा। - त

[पादलेख (Footnotes)] 1. रद-उल-मुहतार, पानी का अध्याय, मुस्तफा अल-बानी, मिस्र, 1/73 2. अल-हिन्दिया, जिससे वज़ू जायज़ नहीं है, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/23 3. मुनियत-उल-मुसल्ली नजासत के बारे में, मकतबा कादिरिया लाहौर, पृ. 108

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[اوپری بایاں باکس - عربی متن] فیما لو انفصل فسقط علی انسان فاجراہ علیہ صح علی الثانی لا الاول نھر، وقدمران اعضاء الغسل کعضو واحد فلو انفصل منہ فسقط علی عضو آخر من اعضاء الغسل فاجراہ علیہ صح علی القولین۱ اہ ملتقطاً وفی الھندیہ عن التاتارخانیۃ لو توضاء بالخل او ماء الورد لا یصیر مستعملاً عند الکل۲ اھ

[اوپری دایاں باکس - اردو متن] سلب نہیں کرتے ہیں، جیسا گدھا، چوہا، اور چوپایوں میں سے درندے جبکہ پانی ان کے منہ تک نہ پہنچے اہ اور رحمتی نے ایسا ہی ذکر کیا) (یا کسی فرض کو ساقط کرنے کیلئے مثلاً یہ کہ کسی عضو کو دھوئے) (اُن اعضاء میں سے جن کا دھونا لازم ہے، یہ بے وضو شخص کے اپنی ران وغیرہ کو دھونے سے احتراز ہے) یا اپنا ہاتھ یا پیر کسی گڑھے میں ڈالے، اُس سے چلو وغیرہ نہ بھرے،

[درمیانی پیراگراف - اردو متن] (بلکہ ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے یا ہاتھوں کو مٹی سے یا آٹے سے صاف کرنا مقصود، تو اگر چلو بھرنے کا ارادہ کیا جیسے پانی سے لوٹا نکالنے کیلئے ہاتھ ڈالا تو پانی مستعمل نہ ہوگا کیونکہ یہ ضرورت ہے) کیونکہ پانی مستعمل اُس وقت ہوگا جبکہ عضو سے جُدا ہو، اگرچہ کسی چیز پر نہ ٹھہرے، مذہب یہی ہے۔ اور ایک قول یہ ہے کہ جب کہ کسی جگہ پر ٹھہرے، (زمین پر یا ہاتھ پر یا کپڑے پر، اور حرکت کے بعد اس میں سکون پیدا ہو چکا ہو، یہ بلخ کے مشائخ میں سے بعض کا قول ہے اس کو فخر الاسلام وغیرہ نے پسند کیا ہے، اور خلاصہ وغیرہ میں ہے کہ یہی مختار ہے، مگر عام علماء پہلے قول پر ہی ہیں اور وہی اصح ہے، اس اختلاف کا اثر اُس صورت میں ہوگا جبکہ پانی جُدا ہو کر کسی انسان پر گرے اور وہ اس کو اپنے اوپر جاری کرے تو دوسرے قول پر صحیح ہے نہ کہ پہلے پر، نہر۔ اور یہ گزر چکا ہے کہ

اعضاء غسل ایک عضو کی طرح ہیں، تو اگر اُس سے پانی جُدا ہو کر اعضاء غسل پر گرا اور اُس نے وہ اُن پر جاری کر لیا تو دونوں اقوال کے مطابق صحیح ہوگا اھ ملتقط، اور ہندیہ میں تاتار خانیہ سے نقل کرتے ہوئے فرمایا کہ اگر سرکہ سے یا گلاب کے عرق سے وضو کیا تو سب کے نزدیک مستعمل نہ ہوگا۔ ت

[نچلا بایاں باکس - عربی متن] تنبیہ: قال (۱) فی المنیة بعد ما عرف المستعمل بماء ازیل به حدث او استعمل فی البدن علی وجه القربة مانصه امرأة غسلت القدر او القصاع لا یصیر الماء مستعملا۳ اھ

[نچلا دایاں باکس - اردو متن] تنبیہ: منیہ میں ماء مستعمل کی تعریف میں کہا کہ "وہ پانی جس سے کوئی حدث زائل کیا گیا ہو یا بدن پر قُربۃ کے طور پر استعمال کیا گیا ہو، پھر فرمایا کہ اگر کسی عورت نے ہانڈی یا بڑا پیالہ دھویا تو پانی مستعمل نہ ہوگا۔ ت

[حواشی] 1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البانی مصر ۱ / ۷۳ 2 ھندیہ فیما لایجو زبه الوضو نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۳ 3 منیة المصلی فی النجاسة مکتبہ قادریہ لاہور ص ۱۰۸

Fatawa Razawiyya Volume Two

(Left Column - Arabic Text): I say: It is as you see, absolute, covering the case where she intended to establish a Sunnah by it. Certainly, it is said in 'al-Ghunyah' that his statement "on the body" is to exclude cases where it was used for something else like a garment and the like with the intention of gaining spiritual proximity (qurbah), for then it does not become used water (musta'mal). Based on what we mentioned, a derivative issue arises: if a woman washed a pot or bowls etc. However, it is stated in 'al-Hulyah' that as for pots, bowls and similar pure objects such as vegetables, fruits, clothes, or stones, the rulings of worship do not apply to them. If she intended qurbah with them, i.e., washing them after food has touched them with the intention of establishing a Sunnah, then that water would become used (musta'mal). End of quote. (T)

(Right Column - Urdu Translation): I say: This is absolute; it also includes the scenario where the woman intended to fulfill a Sunnah by this washing. It is stated in al-Ghunyah that his saying "on the body" is a precaution against when it is used for something else like a garment etc. with the intention of "qurbah" (spiritual proximity), for then it will not be considered musta'mal. And a branch issue arises from what we mentioned: if a woman washed a pot or bowls etc. However, it is mentioned in Hulyah: "In any case, pots, bowls, etc., i.e., pure items such as vegetables, fruits, clothes, stones—the ruling of worship does not apply to inanimate objects (jamadat). If an intention of qurbah was made with them, i.e., washing them after food has touched them with the intention of establishing a Sunnah, then this water would become musta'mal." End of quote. (T)

I say, firstly: There is some implausibility in this, and he did not attribute it to anyone. Al-Hidayah, Mukhtasar al-Quduri, al-Munyah, etc., have restricted the use for qurbah to being on the body. This researcher has maintained this, and the implied meanings of the books are evidence for us. Therefore, it was made exclusionary in al-Ghunyah. Similar is in al-Jawharah al-Nayyirah where he says: "His statement 'on the body' is a restriction because the washings of inanimate objects like pots, bowls, and stones do not become musta'mal etc." Secondly: You see all of them, to the very last, presenting the issues of usage in other than...

Footnotes: 1. Ghunyat al-Mustamli fi al-Najah, Sohail Academy Lahore, p. 153. 2. Hulyah. 3. Al-Jawharah al-Nayyirah, Al-Taharat Imdadia Multan, 16/1.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड 2)

(बायाँ कॉलम - अरबी पाठ): [यहाँ अरबी पाठ का भावार्थ दिया जा रहा है जो दाएँ कॉलम में उर्दू में उपलब्ध है।]

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद): मैं कहता हूँ यह मुतलक (व्यापक) है, इसमें यह सूरत भी शामिल है जबकि उस औरत ने इस धोने से सुन्नत की अदायगी का इरादा किया हो। 'ग़ुनिया' में कहा गया है कि उनका कहना "बदन पर" इस सूरत से बचाव है जब कपड़े आदि में 'क़ुरबा' (पुण्य) की नीयत से इस्तेमाल किया गया हो, तो वह 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) नहीं होगा। और जो हमने ज़िक्र किया, उस पर यह उप-मसाला (शाखा) निकलेगा कि किसी औरत ने हांडी या प्याले धोए आदि। लेकिन 'हुलिया' में फ़रमाया "बहरहाल हांडी, प्याले वगैरह यानी पाक चीज़ें जैसे सब्ज़ियाँ, फल, कपड़े, पत्थर, तो इसलिए कि बेजान चीज़ों (जमादात) पर इबादत का हुक्म जारी नहीं होता है। अगर उनके साथ क़ुरबत का इरादा किया यानी खाना लग जाने के बाद उनको बतौर सुन्नत धोया तो यह पानी मुस्तअमल हो जाएगा।" (समाप्त)। (त)

मैं कहता हूँ अव्वलन (पहली बात): इसमें कुछ दुराव (असंगति) है, उन्होंने इसे किसी की ओर मंसूब नहीं किया है। 'हिदाया', 'मुख़्तसर क़ुदूरी' और 'मुनिया' आदि में क़ुरबत के लिए इस्तेमाल को बदन में होने के साथ सीमित (मक़ैय्यद) किया गया है। और इस शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने इसे बरकरार रखा है और किताबों के मफ़ाहीम (भावार्थ) हमारे लिए हुज्जत (प्रमाण) हैं। इसी वजह से 'ग़ुनिया' में इसे एहतराज़ी (व्यावर्तक) करार दिया गया है। इसी की मिसाल 'जौहरा नय्यिरा' में है जहाँ वे फ़रमाते हैं: "उनका क़ौल 'बदन में', क्योंकि जमादात का धोवन जैसे हांडियाँ, प्याले, पत्थर का धोवन मुस्तअमल न होगा" आदि। और थानियन (दूसरी बात): आप उन सबको देखेंगे कि वे अंत तक इस्तेमाल के मसाइल को ग़ैर-बदन के बारे में...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. ग़ुनियतुल मुस्तमली फ़ी अन-नजात, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 153। 2. हुलिया। 3. अल-जौहरा अन-नय्यिरा, अत-तहारत इमदादिया मुल्तान, 16/1।

पेज 52 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم - عربی متن): اقول: وھو کما تری مطلق یشمل ما اذانوت بہ اقامۃ سنۃ لاجرم ان قال فی الغنیۃ قولہ في البدن احتراز عما اذا استعمل فی غیرہ من ثوب و نحوہ بنیۃ القربۃ فانہ لایصیر مستعملا ویتفرع علی ماذکرنا امرأۃ غسلت القدر اوالقصاع الخ لکن قال في الحلیۃ اما القدر والقصاع ونحوھما من الاعیان الطاھرات لا یلحقھا حکم العبادۃ اما لو نوت بذلک قربۃ بان غسلتھما من الطعام بقصد اقامۃ السنۃ کان ذلک الماء مستعملا[2] اہ اقول اولا: فیہ (۱) بعد ولم یعزہ لاحد وقد قید فی مختصر القدوری والھدایۃ والمنیۃ وغیرھا الاستعمال لقربۃ بکونہ فی البدن واقر علیہ ھذا المحقق ومفاہیم الکتب حجۃ ولذا جعلہ فی الغنیۃ احترازاً ومثلہ فی الجوھرۃ النیرۃ حیث قال قولہ فی البدن قید بہ لانہ ماکان من غسالۃ الجمادات کالقدور والقصاع والحجارۃ لایکون مستعملا الخ وثانیاً : (۲) تراھم عن اخرھم یرسلون مسائل الاستعمال في غیر

(دایاں کالم - اردو ترجمہ): میں کہتا ہوں یہ مطلق ہے اس میں یہ صورت بھی شامل ہے جبکہ اُس عورت نے اس دھونے سے سُنّت کی ادائیگی کا ارادہ کیا ہو، غنیہ میں کہا کہ اُن کا قول "فی البدن" اس صورت سے احتراز ہے جب کپڑے وغیرہ میں استعمال کیا ہو بہ نیتِ "قُربہ" تو وہ مستعمل نہ ہوگا، اور جو ہم نے ذکر کیا اس پر یہ تفریع ہوگی کہ کسی عورت نے ہانڈی یا پیالے دھوئے الخ مگر حلیہ میں فرمایا "بہر حال ہانڈی پیالے وغیرہ یعنی پاک اشیا جیسے سبزیاں، پھل، کپڑے، پتھر، تو اس لئے کہ جمادات پر عبادات کا حکم جاری نہیں ہوتا ہے، اگر ان کے ساتھ قربت کا ارادہ کیا یعنی کھانا لگ جانے کے بعد ان کو بطور سنّت دھویا تو یہ پانی مستعمل ہو جائے گا اہ (ت) میں کہتا ہوں اولاً: اس میں بُعد ہے اس کو انہوں نے کسی کی طرف منسوب نہیں کیا ہے ہدایہ، مختصر قدوری اور منیہ وغیرہ میں قُربت کے استعمال کو بدن میں ہونے کے ساتھ مقید کیا ہے، اور اس

محقق نے اسے برقرار رکھا ہے اور کتابوں کے مفاہیم ہمارے لئے حجت ہیں، اور اس لئے غنیہ میں اس کو احترازی قرار دیا ہے، اسی کی مثل جوہرہ نیرہ میں وہ فرماتے ہیں ان کا قول "فی البدن" کیونکہ جمادات کا دھوون جیسے ہانڈیاں، پیالے، پتھر کا دھوون، مستعمل نہ ہوگا الخ

حواشی: 1 غنیۃ المستملی فی النجاۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۳ 2 حلیہ 3 الجوھرۃ النیرۃ الطہارت امدادیہ ملتان ۱۶/۱

صفحہ: Page 52 of 711

Fatawa Razawiyya Volume II

[Arabic side] ...the human body fully, not leaning towards restricting it by the absence of an intention for nearness (1), such as the issue of washing an animal mentioned in Al-Mubtaghi, Al-Fath, Al-Bahr, Ad-Durr, Al-Tatarkhaniyya, and others. Also, the issue of pots and bowls, these and others; their unanimous agreement on its absolute application indicates their consensus on restricting it to the human body. For all of that holds the potential for an intention of nearness, such as washing one's parents' clothes from dirt, fruits from dust to eat them, and the stones of the mosque floor for cleaning, among others. There is no permissible act except that it can be made an act of nearness with a praiseworthy intention, as is not hidden from a scholar of the science of intentions.

Thirdly: (2) This restriction is the requirement of the evidence (3) by which the performance of an act of nearness was made a changer of water from the description of purification, meaning it carrying sins from the body used in it. In Al-Hidayah, Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) said: It does not become used except by performing an act of nearness, because usage is by the transfer of the impurity of sins to it, and they are removed by acts of nearness. Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) says: The discharge of an obligation is also effective, so corruption is established by both matters. End. And in Al-Inaya, the change according to both of them (meaning the change of water and its becoming soiled according to the two Sheikhs, may Allah Almighty be pleased with them) is only by the removal of a legal impurity from the place...

...and its transfer to the water, and it has indeed transferred to the water in both cases (i.e., the case of performing an act of nearness and the case of discharging an obligation (as previously mentioned).

[Urdu side] Secondly: All the jurists keep the issues of usage on bodies other than humans general; they do not impose the condition of lack of intention for nearness, such as the issue of giving an animal a bath which is mentioned in Al-Mubtaghi, Fath, Bahr, Durr, and Tatarkhaniyya etc., and the issue of clothes and stones _____ the issue of fruits, the issue of pots and bowls etc. Their consensus on keeping all of them general is a sign of the fact that they all agree on restricting it with the human body because each of them carries the possibility of an intention for nearness, like washing the dirty clothes of one's parents, and washing fruits to feed parents, and washing the mosque floor for cleaning etc. So it is possible to make every permissible

act an act of nearness with a praiseworthy intention, and the Knower of intentions knows it well.

Thirdly: Imposing this restriction is the requirement of the evidence due to which the performance of an act of nearness was declared as changing the water's characteristic from being purifying, meaning its removal of sins from the body. It is in Hidayah that Imam Muhammad said: Water becomes used only by the performance of an act of nearness because the reason for usage is the transfer of sins to it, and this thing happens only through the performance of an act of nearness, and Imam Abu Yusuf says that the discharge of an obligation is also effective in this, so corruption will be established in both cases. And in Inaya it is stated that change according to both of them (meaning the changing of water and its becoming soiled) is due to the removal of a legal impurity from the place and its transfer to the water... as has been mentioned before.

1. Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudhu is permissible, Al-Maktabah al-Arabiyya Karachi, 22/1 Page 53 of 711

फतावा रज़विया जिल्द दो

[अरबी पक्ष] ...मानव शरीर को पूरी तरह से, निकटता की नीयत (1) के अभाव में इसे प्रतिबंधित करने की ओर झुके बिना, जैसे कि अल-मुब्तग़ी, अल-फतह, अल-बहर, अद-दुर, अल-ततारखनिया और अन्य में वर्णित जानवर को धोने का मामला। इसके अलावा, बर्तनों और कटोरों का मामला, ये और अन्य; इसके पूर्ण अनुप्रयोग पर उनकी सर्वसम्मति मानव शरीर तक इसे सीमित करने पर उनकी सहमति का संकेत देती है। क्योंकि उन सभी में निकटता की नीयत की संभावना होती है, जैसे माता-पिता के गंदे कपड़ों को धोना, खाने के लिए फलों से धूल साफ करना, और मस्जिद के फर्श के पत्थरों की सफाई करना, इत्यादि। ऐसा कोई जायज़ कार्य नहीं है जिसे प्रशंसनीय नीयत के साथ निकटता का कार्य न बनाया जा सके, जैसा कि नीयतों के विज्ञान के विद्वान से छिपा नहीं है।

तीसरा: (2) यह प्रतिबंध उस प्रमाण (3) की आवश्यकता है जिसके द्वारा निकटता के कार्य के संपादन को जल को शुद्धिकरण के विवरण से बदलने वाला बनाया गया था, जिसका अर्थ है कि यह उस शरीर से पापों को वहन करता है जिसमें इसका उपयोग किया गया था। अल-हिदाया में, मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: यह केवल निकटता के कार्य को करने से ही प्रयुक्त नहीं होता है, क्योंकि उपयोग पापों की अशुद्धता के इसमें स्थानांतरण से होता है, और वे निकटता के कार्यों से दूर हो जाते हैं। अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर रहम करे) कहते हैं: दायित्व का निर्वहन भी प्रभावी है, इसलिए दोनों मामलों से खराबी सिद्ध होती है। इति। और अल-इनाया में, उन दोनों के अनुसार परिवर्तन (अर्थात दो शेखों के अनुसार पानी का बदलना और उसका गंदा होना, अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) केवल स्थान से कानूनी अशुद्धता को हटाने से होता है...

...और पानी में इसका स्थानांतरण, और यह वास्तव में दोनों मामलों में पानी में स्थानांतरित हो गया है (यानी निकटता के कार्य को करने की स्थिति और दायित्व निभाने की स्थिति में (जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है)।

[उर्दू पक्ष] दूसरा: सभी फ़ुक़हा मानव शरीर के अलावा अन्य निकायों पर उपयोग के मामलों को सामान्य रखते हैं; वे निकटता की नीयत की कमी की शर्त नहीं लगाते हैं, जैसे कि जानवर को नहलाने का मामला जिसका उल्लेख अल-मुब्तग़ी, फतह, बहर, दुर और ततारखनिया आदि में है, और कपड़ों और पत्थरों का मामला _____ फलों का मामला, हांडियों और प्यालों का मामला आदि। उन सभी को सामान्य रखने पर उनकी सर्वसम्मति इस तथ्य का संकेत है कि वे सभी मानव शरीर के साथ इसे

प्रतिबंधित करने पर सहमत हैं क्योंकि उनमें से प्रत्येक में निकटता की नीयत की संभावना होती है, जैसे अपने माता-पिता के गंदे कपड़े धोना, और माता-पिता को खिलाने के लिए फल धोना, और मस्जिद के फर्श को साफ करने के लिए धोना आदि। तो प्रशंसनीय नीयत के साथ हर जायज़ कार्य को निकटता का कार्य बनाना संभव है, और नीयतों को जानने वाला उसे अच्छी तरह जानता है।

तीसरा: यह प्रतिबंध लगाना ही उस प्रमाण की आवश्यकता है जिसके कारण निकटता के कार्य की अदायगी को पानी की विशेषता को शुद्धता से बदलने वाला घोषित किया गया था, जिसका अर्थ है शरीर से पापों का दूर होना। हिदाया में है कि इमाम मुहम्मद ने फ़रमाया: पानी केवल निकटता के कार्य की अदायगी से प्रयुक्त होता है क्योंकि उपयोग का कारण पापों का उसमें स्थानांतरण है, और यह चीज़ केवल निकटता के कार्य की अदायगी के माध्यम से होती है, और इमाम अबू यूसुफ कहते हैं कि इसमें फर्ज़ की अदायगी भी प्रभावी है, इसलिए दोनों ही मामलों में खराबी सिद्ध हो जाएगी। और अनाया में कहा गया है कि उन दोनों के अनुसार परिवर्तन (यानी पानी का बदलना और उसका गंदा होना) स्थान से कानूनी अशुद्धता को हटाने और पानी में उसके स्थानांतरण के कारण होता है... जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

1. अल-हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अल-मकतबाह अल-अरबिया कराची, 22/1 पृष्ठ 53 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی حصہ] بدن الانسان ارسالاً تاماً غیر جانحین الی تقییدها بعدم نیة القربة (۱) کمسألة غسل الدابة المذکورة في المبتغی والفتح والبحر والدر و التتارخانیة وغیرها ومسألة القدور والقصاع هذه وغیرها فاطباقهم علی اطلاقها یؤذن باتفاقهم علی تقییدها ببدن الانسان فان کل ذلك یحتمل نیة القربة کغسل ثوب ابویه من الوسخ والثمار من الغبار لاکلها واحجار فرش المسجد للتنظیف الی غیر ذلك فما من مباح الا ویمکن جعله قربة بنیة محمودة کم لا یخفی علی عالم علم النیات وثالثاً: (۲) هذا التقیید هو القضیة للدلیل (۳) الذی جعل به اقامة القربة مغیر ا للماء عن وصف الطهوریة اعنی حمله الاثام من البدن المستعمل فیه في الهدایة قال محمد رحمه الله تعالی لا یصیر مستعملا الا باقامة القربة لان الاستعمال بانتقال نجاسة الاثام الیه و انها تزول بالقرب وابو یوسف رحمه الله تعالی یقول اسقاط الفرض مؤثر ایضاً فیثبت الفساد بالامرین اه وفی العنایة التغیر عند هما (ای تغیر الماء وتدنسه عند الشیخین رضی الله تعالی عنهما انما یکون بزوال نجاسة حکمیة عن المحل وانتقالها الی الماء وقد انتقلت الی الماء فی الحالین (ای حال اقامة القربة وحال اسقاط الواجب (کما تقدم من

[اردو حصہ] ثانیاً: فقہاء سب کے سب غیر انسان کے بدن میں استعمال کے مسائل کو مطلق رکھتے ہیں عدم نیت قربت کی قید نہیں لگاتے ہیں، جیسے گھوڑے کو غسل دینے کا مسئلہ جس کا ذکر مبتغی، فتح، بحر، ڈر اور تاتار خانیہ وغیرہ میں ہے اور کپڑے اور پتھروں کا مسئلہ _____ پھلوں کا مسئلہ، ہانڈیوں اور پیالوں کا مسئلہ وغیرہ ہا تو ان تمام فقہا کا ان کو مطلق رکھنے پر اتفاق کر لینا اس امر کی علامت ہے کہ وہ سب کے سب اس کو بدن انسانی کے ساتھ مقید کرنے پر متفق ہیں کیونکہ ان میں سے ہر ایک نیت قربت کا احتمال رکھتا ہے، جیسے اپنے والدین کے میلے کپڑوں کا دھونا، اور والدین کے کھلانے کیلئے پھلوں کا دھونا، اور مسجد کے فرش کا صفائی کیلئے دھونا

وغیرہ تو ہر مباح کا نیت محمودہ سے قربت کر لینا ممکن ہے، اور نیتوں کا جاننے والا اسے خوب جانتا ہے۔ ثالثاً : یہ قید لگانا ہی دلیل کا تقاضا ہے جس کی وجہ سے قربت کی ادائیگی کو پانی کے وصف کو طہوریت سے متغیر کر دینے والا قرار دیا تھا، یعنی اس کا بدن سے گناہوں کا دور کر دینا۔ ہدایہ میں ہے کہ امام محمد نے فرمایا پانی قربت کی ادائیگی سے ہی مستعمل ہوتا ہے کیونکہ استعمال کی وجہ گناہوں کا اس کی طرف منتقل ہونا ہے، اور یہ چیز قربت کی ادائیگی سے ہی ہوتی ہے، اور امام ابو یوسف فرماتے ہیں کہ اسقاط فرض بھی اس میں مؤثر ہے تو دونوں صورتوں میں فساد ثابت ہو جائے گا اور عنایہ میں ہے کہ تغیر اُن دونوں کے نزدیک (یعنی پانی کا بدلنا اور اُس کا میلا ہونا) محل سے نجاستِ حکمیہ کے زائل ہونے اور پانی کی طرف منتقل ہونے کی وجہ سے ہوتا ہے جیسا کہ پہلے گزرا۔

۱ الہدایہ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء المکتبۃ العربیۃ کراچی ۲۲/۱ صفحہ 53 از 711

Fatawa Rizvia Volume 2

Considering it as real impurity (Najasat-e-Haqiqiya), the corruption of water is established by both matters, as clarified. Similarly, in 'Al-Bahr' quoting 'Al-Muheet', it is stated that the change in water according to Imam Muhammad is based on the performance of a virtuous act (Qurbah) through it. According to the two Shaikhs (Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf), it is based on the fact that a legal impurity (Najasat-e-Hukmiya) has transferred to it. In both cases, a legal impurity has transferred to the water, necessitating its change. In 'Al-Tabyin', the reason is the performance of Qurbah and the removal of Hadath (ritual impurity) according to Abu Hanifa and Abu Yusuf, while according to Imam Muhammad, it is only the performance of Qurbah. The first view is more correct because usage occurs through the transfer of the impurity of Hadath or the impurity of sins into it. It is stated in 'Al-Kafi' that the saliva of a dog is impure because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Wash the vessel three times from the dog's licking.' It cannot be said that the command to wash could be for ritual worship (Ta'abbud), just as a person in a state of Hadath is commanded to perform Wudu, because washing for Ta'abbud is only legislated for the purity required for prayer, as it is performed as an act of worship for Allah Almighty. Inanimate objects (Jamadat) are not subject to the rules of worship because it is regarding the impurity of sins, and inanimate objects are not capable of that. It cannot be said that (1) the stone...

1. Al-Inaya on the margins of Fath al-Qadir, Chapter on Water used for Wudu, Nooriya Razviya Sukkur 1/81.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, discussion on Used Water, H.M. Saeed Company Karachi 1/91.
3. Tabyin al-Haqa'iq, Used Water, Bulaq Egypt 1/24.

फ़तावा रिज़विया जिल्द दूसरी

वास्तविक अशुद्धि (नजासत-ए-हक़ीक़िया) के रूप में विचार करने पर, पानी का भ्रष्ट होना दोनों मामलों से सिद्ध होता है, जैसा कि स्पष्ट किया गया है। इसी तरह 'अल-बहर' में 'अल-मुहीत' के हवाले से कहा गया है कि इमाम मुहम्मद के अनुसार पानी में परिवर्तन इसके माध्यम से एक पुण्य कार्य (क़ुर्बः) करने के आधार पर है। और दो शेखों (इमाम अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़) के अनुसार, यह इस आधार पर है कि इसमें एक कानूनी अशुद्धि (नजासत-ए-हुकमिया) स्थानांतरित हो गई है। दोनों ही मामलों में, पानी में कानूनी अशुद्धि स्थानांतरित हो गई है, जिससे इसका परिवर्तन आवश्यक हो गया है। 'अल-तबीन' में इसका कारण अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ के अनुसार क़ुर्बः की स्थापना और हद्थ (अनुष्ठानिक अशुद्धि) को दूर करना है, जबकि इमाम मुहम्मद के अनुसार केवल क़ुर्बः की स्थापना है। पहला विचार अधिक सही है क्योंकि उपयोग हद्थ की अशुद्धि या पापों की अशुद्धि के इसमें स्थानांतरित होने के कारण होता है। 'अल-काफ़ी' में कहा गया है कि कुत्ते का जूठा नापाक है क्योंकि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'कुत्ते के चाटने पर बर्तन को तीन बार धोओ।' यह नहीं कहा जा सकता कि धोने का आदेश इबादत (तअबुद) के लिए हो सकता है, जैसे हद्थ वाले व्यक्ति को वुज़ू करने का आदेश दिया जाता है, क्योंकि तअबुद के लिए धोना केवल नमाज़ की पवित्रता के लिए निर्धारित है, क्योंकि यह अल्लाह तआला के लिए इबादत के रूप में किया जाता है। निर्जीव वस्तुएं(जमादात) इबादत के नियमों के अधीन नहीं हैं क्योंकि यह पापों की अशुद्धि के संबंध में है, और निर्जीव वस्तुएं इसके योग्य नहीं हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि (1) पत्थर...

1. अल-इनाया अला हाशिया फ़तह अल-क़दीर, वुज़ू के लिए जायज़ पानी का अध्याय, नूरिया रिज़विया सुक्कुर 1/81.
2. बहर अल-राइक़, मुस्तमल पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/91.
3. तबीन अल-हक़ायिक़, मुस्तमल पानी, बुलाक़ मिस्र 1/24.

पृष्ठ 54 का 711

نجاستِ حقیقیہ کے اعتبار سے پانی کا فساد ان دونوں امروں سے ثابت ہوتا ہے جیسا کہ واضح کیا گیا۔ اسی طرح بحر میں محیط سے منقول ہے جہاں کہا گیا کہ امام محمد کے نزدیک پانی کا متغیر ہونا اس سے قربت حاصل کرنے کے اعتبار سے ہے، اور شیخین کے نزدیک اس اعتبار سے ہے کہ اس میں نجاستِ حکمیہ منتقل ہوگئی ہے۔ اور دونوں صورتوں میں پانی کی طرف نجاستِ حکمیہ ہی منتقل ہوئی ہے لہٰذا اس کا متغیر ہونا ثابت ہوگیا۔ تبیین میں اس کا سبب امام ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف کے نزدیک قیامِ قربت اور ازالۂ حدث ہے، جبکہ امام محمد کے نزدیک صرف قیامِ قربت ہے۔ پہلا قول زیادہ صحیح ہے کیونکہ پانی کے استعمال کا سبب حدث یا گناہوں کی نجاست کا اس کی طرف منتقل ہونا ہے۔ کافی میں ہے کہ کتے کا جوٹھا نجس ہے کیونکہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: برتن کو کتے کے چاٹنے پر تین بار دھویا جائے۔ یہ نہیں کہا جا سکتا کہ دھونے کا حکم محض تعبد (عبادت) کے طور پر ہو سکتا ہے جیسا کہ محدث کو وضو کا حکم دیا گیا ہے، کیونکہ تعبد کے طور پر دھونا صرف نماز کی طہارت کے لیے مشروع ہے کیونکہ یہ اللہ تعالیٰ کے لیے عبادت کے طور پر واقع ہوتا ہے۔ اور جمادات (بے جان چیزیں) عبادت کے احکام کے اہل نہیں ہیں کیونکہ یہ گناہوں کی نجاست کے اعتبار سے ہے اور جمادات اس کے اہل نہیں ہیں۔ یہ نہیں کہا جائے گا (۱) پتھر...

۱۔ العنایۃ علی حاشیۃ فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۱/۸۱۔ ۲۔ بحر الرائق بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۱۔ ۳۔ تبیین الحقائق الماء المستعمل بولاق مصر ۱/۲۴۔

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic Segment]: "The stone used for stoning the pillars (Rami al-Jammar) should be washed and thrown again to establish closeness (qurbah) through it, because the stone is the instrument of throwing, and the instrument can change due to the transfer of the impurity of sins to it, just like the wealth of Zakat and used water." [End of summary from Al-Kafi].

[Urdu Segment]: The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The vessel which a dog licks should be washed three times."

If the objection is raised that it is also permissible for the command of bathing (Ghusl) to be given as an act of worship (ta'abbudan), just as a person without Wudu is commanded to perform Wudu, the answer is that Ghusl as an act of worship was only prescribed for the purification of prayer because it is an act of worship for Allah, and inanimate objects are not subject to the commands of worship. This is because it (the impurity) is due to the filth of sins, and inanimate objects are not capable of committing sins. If the objection is raised: what is the ruling if the stone used in Rami al-Jamarat is washed and then reused for Rami to achieve closeness? The answer is that the stone is an instrument of Rami, and the instrument changes because sins are transferred to it, just like Zakat money and used water. [End of summary].

[Arabic Segment]: I say: From what we have discussed, it has become clear, praise be to Allah, that the absolute statements in Al-Wiqayah, An-Niqayah, Al-Kanz, Al-Ghurar, Al-Islah, Al-Multaqa, and At-Tanwir are to be understood as restricted by the conditions in Al-Kitab (Quduri), Al-Hidayah, and Al-Munyah. This is supported by their consensus that the separation (of water) from the limb is a condition for it to be considered 'used' (musta'mal). Discussion only occurred regarding the condition of settlement (qarar) after separation. Some scholars made it a condition, and Al-Kanz affirmed this, contradicting what is in Al-Kafi. Imam Fakhr al-Islam and others chose this in their commentaries on Al-Jami' al-Saghir, and it is the school of Imam Abu Hafs al-Kabir and Imam Zahir al-Din al-Marghinani. In Al-Khulasah, it is stated to be the preferred view, and Al-Atqani favored it in Ghayat al-Bayan, claiming that not requiring it would cause hardship, as explained along with the response in Al-Bahr and Al-Madhab.

[Urdu Segment]: Praise be to Allah, from our discussions it has become known that the general application in Wiqayah, Niqayah, Kanz, Ghurar, Islah, Multaqa and Tanwir is restricted by what is in the book (Quduri), Hidaya and Munya. This is also

supported by the fact that they agree that the separation of water from the limb is a condition for it to be 'used'. The difference is only in whether the condition of settlement after separation exists or not. So some scholars have made it a condition, and this is what is firmly stated in Kanz, which is against its own 'Kafi'. Imam Fakhr al-Islam has declared it as the preferred view in the commentary of Jami' Saghir, and this is the school of Abu Hafs al-Kabir and Imam Zahir al-Din al-Marghinani. In 'Khulasa' it has been declared as preferred, and in 'Ghayat al-Bayan' Allama Atqani has declared it as weightier and said that there is hardship in not making it a condition.

1. Al-Kafi Page 55 of 711

फतवा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी खंड का अनुवाद]: "जो पत्थर रमी अल-जमार (कंकड़ फेंकने) में इस्तेमाल किया गया हो, उसे धोकर फिर से फेंका जाए ताकि उससे कुर्बत (निकटता) हासिल हो, क्योंकि पत्थर रमी का साधन है और पापों की अशुद्धि उस पर स्थानांतरित होने के कारण साधन में बदलाव आ जाता है, जैसे ज़कात का माल और इस्तेमाल किया गया पानी।" [अल-काफी से संक्षिप्त]।

[उर्दू खंड]: हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जिस बर्तन को कुत्ता चाट ले उसे तीन बार धोया जाए।"

अगर यह आपत्ति की जाए कि यह भी तो जायज़ है कि ग़ुस्ल का हुक्म इबादत (ता'अब्बुदन) के तौर पर दिया जाए जैसे बे-वुज़ू को वुज़ू का हुक्म दिया गया, तो इसका जवाब यह है कि इबादत के तौर पर ग़ुस्ल केवल नमाज़ की पवित्रता के लिए निर्धारित किया गया है क्योंकि वह अल्लाह की इबादत है, और निर्जीव वस्तुओं (जमादात) के लिए इबादत का हुक्म नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह (अशुद्धि) पापों की गंदगी की वजह से है, और निर्जीव वस्तुएं पाप करने के योग्य नहीं हैं। अगर यह आपत्ति की जाए कि वह पत्थर जो रमी अल-जमारत में इस्तेमाल हुआ हो, उसे धोकर दोबारा उसी से कुर्बत की अदायगी के लिए रमी की जाए तो क्या हुक्म है, इसका जवाब यह है कि पत्थर रमी का साधन है और पापों के उसकी तरफ स्थानांतरित होने की वजह से साधन बदल जाता है जैसे ज़कात का माल और इस्तेमाल किया गया पानी। [संक्षेप में]।

[अरबी खंड का अनुवाद]: मैं कहता हूँ: और जो कुछ हमने चर्चा की है उससे अल्लाह की प्रशंसा के साथ यह स्पष्ट हो गया है कि अल-विक़ाया, अन-निफ़ाया, अल-कंज़, अल-ग़ुरर, अल-इसलाह, अल-मुल्तक़ा और अत-तनवीर में दिए गए सामान्य विवरण किताब (क़ुदूरी), हिदाया और मुनिया के प्रतिबंधित विवरणों पर आधारित समझे जाने चाहिए। इसका समर्थन इस बात से भी होता है कि वे इस बात पर सहमत हैं कि पानी का अंग से अलग होना उसके इस्तेमाल शुदा (मुस्तअमल) होने के लिए शर्त है। चर्चा केवल अंग से अलग होने के बाद पानी के रुकने (क़रार) की शर्त के बारे में हुई है। कुछ विद्वानों ने इसे शर्त बनाया है, और 'कंज़' ने इसकी पुष्टि की है, जो उसकी अपनी 'काफ़ी' के विपरीत है। इमाम फ़ख़रुल इस्लाम और अन्य लोगों ने 'जामे सगीर' की अपनी टिप्पणियों में इसे ही चुना है, और यही इमाम अबू हफ़्स कबीर और इमाम ज़हीर उद्दीन मरग़ीनानी का संप्रदाय (मज़हब)

है। 'खुलासा' में इसे पसंदीदा विचार बताया गया है, और 'ग़ायतुल बयान' में अल्लामा इतक़ानी ने इसे वरीयता दी है, यह दावा करते हुए कि इसकी आवश्यकता न होने से कठिनाई पैदा होगी।

[उर्दू खंड]: अल्हम्दुलिल्लाह, हमारी इन बहसों से मालूम हुआ कि विक़ाया, निफ़ाया, कंज़, ग़ुरर, इसलाह, मुल्तक़ा और तनवीर का सामान्य उल्लेख किताब (क़ुदूरी), हिदाया और मुनिया के प्रतिबंधित विवरणों पर आधारित है। इसका समर्थन इस बात से भी होता है कि वे इस बात पर सहमत हैं कि पानी का अंग से अलग होना उसके इस्तेमाल शुदा (मुस्तअमल) होने के लिए शर्त है। मतभेद केवल इस बात में है कि अंग से अलग होने के बाद स्थिरता (क़रार) की शर्त है या नहीं? तो कुछ विद्वानों ने इसकी शर्त रखी है और इसी पर 'कंज़' में मज़बूती से ज़िक्र किया गया है जो उसकी अपनी 'काफ़ी' के ख़िलाफ़ है, और इसे इमाम फ़ख़रुल इस्लाम ने 'जामे सगीर' की व्याख्या में पसंदीदा (मुख्तार) घोषित किया है, और यही अबू हफ़्स कबीर और इमाम ज़हीर उद्दीन मरग़ीनानी का मज़हब है। 'खुलासा' में इसे ही मुख्तार करार दिया गया है, और 'ग़ायतुल बयान' में अल्लामा इतक़ानी ने इसे वजनी (राजह) माना है और कहा है कि इसे शर्त न मानने में कठिनाई (हरज) है।

1. काफ़ी पृष्ठ 55/711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[عربی عبارت]: الذی استعمل فی رمی الجمار یغسل ویرمی ثانیا لاقامة القربة به لان الحجر الة الرمی وقد تتغیر الآلة بنقل نجاسة الآثام الیها کمال الزکوة والماء المستعمل 1 اه باختصار۔

[اردو عبارت]: حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "جس برتن کو کتا لے اس چاٹ کو تین مرتبہ دھویا جائے۔"

اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ یہ بھی تو جائز ہے کہ غسل کا حکم تعبُّداً دیا جائے جیسے بے وضو کو وضو کا حکم دیا گیا، تو اس کا جواب یہ ہے کہ غسل تعبُّداً صرف نماز کی طہارت کیلئے مشروع ہوا ہے کیونکہ وہ اللہ کی عبادت ہے، اور جمادات کو عبادات کا حکم نہیں ہے، کیونکہ وہ گناہوں کی نجاست کی وجہ سے ہے، اور جمادات گناہوں کے اہل نہیں ہیں۔ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ وہ پتھر جو رمی جمرات میں استعمال ہوا ہو اس کو دھو کر دوبارہ اُسی سے قربت کی ادائیگی کیلئے رمی کی جائے تو کیا حکم ہے، اس کا جواب یہ ہے کہ پتھر آلہ رمی ہے اور آلہ اس کی طرف گناہوں کے منتقل ہونے کی وجہ سے متغیر ہو جاتا ہے جیسے زکوٰۃ کا مال اور مستعمل پانی اھ باختصار۔

[عربی عبارت]: اقول: وبما حثنا هذه ظهر ولله الحمد ان مطلق الوقاية والنقاية والكنز والغرر والاصلاح والملتقى والتنوير محمول على مقيد الكتاب والهداية والمنية ومما يؤيده اطباقهم على اشتراط الانفصال عن العضو للحكم بالاستعمال وانما(١) وقع المقال في اشتراط القرار بعد الانفصال فشرطه بعض المشائخ و به جزم فی الكنز مخالفا لكا فيه واختاره الامام فخر الاسلام وغيره فی شروح الجامع الصغير وهو مذهب الامام ابی حفص الكبير والامام ظهير الدين المرغينانی وقال في الخلاصة هو

المختار ورجحه الاتقانی في غاية البيان زاعما ان فی عدم اشتراطه حرجا كما بينه مع جوابہ فی البحر والمذہب

[اردو عبارت]: الحمدللہ ہماری ان بحثوں سے معلوم ہوا کہ وقایہ، نقایہ، کنز، غرر، اصلاح، ملتقی اور تنویر کا اطلاق کتاب (قدوری) ہدایہ اور منیہ کے مقید پر محمول ہے، اور اس کی تائید اس امر سے بھی ہوتی ہے کہ ان کا اتفاق ہے کہ پانی کا عضو سے جُدا ہونا اس کے مستعمل ہونے کیلئے شرط ہے۔ اختلاف صرف اس امر میں ہے کہ انفصال کے بعد قرار کی شرط ہے یا نہیں؟ تو بعض مشائخ نے اس کی شرط رکھی ہے اور اسی پر کنز میں جزم کیا ہے جو اسکی اپنی کافی کے خلاف ہے، اور اس کو امام فخر الاسلام نے جامع صغیر کی شرح میں مختار قرار دیا ہے، اور یہی ابو حفص کبیر اور امام ظہیر الدین مرغینانی کا مذہب ہے، اور خلاصہ میں اسی کو مختار قرار دیا ہے، اور غایۃ البیان میں علامہ اتقانی نے اس کو راجح قرار دیا ہے اور فرمایا ہے کہ اس کو شرط نہ کرنے میں حرج ہے

1 کافی صفحہ 55 از 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

According to us, the ruling of water becoming 'used' (musta'mal) is established upon its mere separation from the limb. This was authenticated in 'Al-Hidayah' and many other books, and relied upon in 'Al-Kafi', while the opposing view was weakened. The researchers hold this view as stated in 'Al-Fath', and the generality [of scholars] as in 'Al-Bahr'. Rather, in 'Al-Muhit' it is mentioned that the one who stipulates 'settling' (istihrar) as a condition is Imam Sufyan al-Thawri (may Allah have mercy on him), not the people of the [Hanafi] school. 'Al-Fath' and 'Al-Bahr' have taken it upon themselves to refute what they [the opponents] relied on, and 'Al-Durr' has alluded to it. In summary, what is mentioned in the speech of both groups is separation from the limb, which signifies that the intended use is on the body only. And Allah Almighty knows best.

Fourthly: (1) It is a matter of consideration whether washing dishes with water merely to remove the trace of food is a specific required act of worship; rather, what is required is cleaning, and it may be achieved by licking, with a cloth, or with something other than absolute water. (2) The first is closer to humility and following the etiquette of the Sunnah. Imam Muslim narrated in his Sahih from Jabir (may Allah be pleased with him)...

Footnote: Translation and Hadiths: (1) In Sahih Muslim, it is narrated from Jabir (may Allah be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded the licking of fingers and the plate, and said: "You do not know in which part of the food the blessing lies," meaning it might be in the portion that remains on the fingers or in the vessel. Imam Hakim Tirmidhi narrated these words from Anas: "And that vessel will pray for him." (2) Muslim, Ahmad, Abu Dawud, Tirmidhi, and Nasa'i narrated from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded us to clean the bowl thoroughly after eating, saying: "You do not know in which of your food the blessing lies." (3) Ahmad, Tirmidhi, and Ibn Majah narrated from Nubayshah al-Khayr al-Hudhali that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever eats food in a bowl and then cleans it with their tongue, that bowl will seek forgiveness for them." (4) Imam Hakim Tirmidhi narrated from Anas on the same subject that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "And that vessel sends blessings upon him..." (continued on the next page).

फ़तवा रज़विया, खंड 2

हमारे अनुसार, पानी के'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) होने का नियम अंग से उसके अलग होते ही लागू होता है। इसे 'अल-हिदाया' और कई अन्य पुस्तकों में प्रमाणित किया गया है, और 'अल-काफ़ी' में इस पर भरोसा किया गया है, जबकि इसके विपरीत राय को कमज़ोर बताया गया है। शोधकर्ताओं का यही विचार है जैसा कि 'अल-फ़तह' में है और 'अल-बहर' जैसी सामान्य पुस्तकों में भी। वास्तव में 'अल-मुहीत' में उल्लेख है कि 'स्थिरता' (इस्तिक़रार) की शर्त रखने वाले इमाम सुफ़ियान अल-थौरी (अल्लाह उन पर रहम करे) हैं, न कि हमारे [हनफ़ी] पंथ के लोग। 'अल-फ़तह' और 'अल-बहर' ने उनके तर्कों का खंडन करने का बीड़ा उठाया है, और 'अल-दुर्र' में इसकी ओर इशारा किया गया है। संक्षेप में, दोनों समूहों की बातचीत में अंग से अलग होने का ज़िक्र है, जिसका अर्थ है कि इसका उद्देश्य केवल शरीर पर उपयोग है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

चौथा: (1) यह विचारणीय है कि क्या भोजन के अवशेषों के लिए बर्तनों को पानी से धोना अपने आप में एक वांछित इबादत है; बल्कि स्वच्छता वांछित है, जो कभी चाटने से, कपड़े से या सादे पानी के अलावा किसी और चीज़ से भी प्राप्त हो सकती है। (2) पहला तरीका (चाटना/पोंछना) विनम्रता और सुन्नत के शिष्टाचार के अधिक निकट है। इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है...

पादलेख: अनुवाद और हदीसें: (1) सहीह मुस्लिम में जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णित है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उंगलियां और बर्तन चाटने का आदेश देते थे और फरमाते थे: 'तुम्हें क्या पता कि भोजन के किस भाग में बरकत है,' यानी शायद उसी भाग में हो जो उंगलियों या बर्तन में लगा रह गया है। इमाम हाकिम तिर्मिज़ी ने अनस से ये शब्द नकल किए हैं: 'और वह बर्तन उसके लिए दुआ करेगा।' (2) मुस्लिम, अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमें खाना खाने के बाद प्याले को अच्छी तरह साफ करने का आदेश दिया और कहा कि तुम क्या जानो तुम्हारे किस भोजन में बरकत है। (3) अहमद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने नुबैशाह अल-खैर अल-हुज़ली से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'जो कोई किसी प्याले में खाना खाए और फिर उसे अपनी ज़ुबान से साफ कर दे, तो वह प्याला उसके लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करेगा।' (4) इमाम हाकिम तिर्मिज़ी ने इसी विषय पर अनस से रिवायत की है कि फरमाया: 'और वह बर्तन उस पर दुरूद (प्रार्थना) भेजता है...' (बाकी अगले पेज पर)।

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

عندنا هو حكم الاستعمال بمجرد الانفصال وصححه فى الهداية وكثير من الكتب واعتمده فى الكافى وضعف خلافه وعليه المحققون كما فى الفتح والعامة كما فى البحر بل فى المحيط ان القائل باشتراط الاستقرار الامام سفيان الثورى رحمه الله تعالى دون اهل المذهب وقد تكفل فى الفتح والبحر برد ماتعلقوا به واشار اليه فى الدر وبالجملة المذكور فى كلام الفريقين هو الانفصال عن العضو المؤذن بان المراد استعماله فى البدن لاغير والله تعالى اعلم ،

ترجمہ: جیسا کہ انہوں نے اس کو بیان کیا اور اس کا جواب بھی بحر میں دیا، اور ہمارے نزدیک پانی عضو سے جدا ہوتے ہی مستعمل ہو جاتا ہے، اسی کو ہدایہ میں صحیح کہا ہے، اور کافی میں اس پر اعتماد کیا ہے اور اس کے خلاف کو ضعیف قرار دیا ہے ، اور اسی پر محققین ہیں جیسا کہ فتح میں اور عام کتب میں ہے کما فی البحر، بلکہ محیط میں ہے کہ استقرار کی شرط کے قائل امام سفیان ثوری ہیں، اہل مذہب نہیں ہیں اور فتح اور بحر میں ان کے دلائل کا رد کیا ہے اور دُر میں اس کی طرف اشارہ کیا ہے، خلاصہ یہ ہے کہ فریقین کے کلام میں مذکور عضو سے منفصل ہونا ہے، جس کا مطلب یہ ہے کہ مراد اس کا بدن ہی میں استعمال ہے فقط نہ کہ اس کے غیر میں واللہ تعالیٰ اعلم۔

ورابعاً:(۱) محل نظر كون غسل الاوانى بالماء لمجرد اثر الطعام قربة مطلوب بعينها بل المطلوب هو التنظيف وربما يحصل بلحس وبخرقة وبغير ماء مطلق و(۲) الاول اقرب الى التواضع والتأدب بآداب السنة، فاخرج عہ الامام مسلم في صحيحه عن جابر رضى الله تعالى عنه

رابعاً: محلِ نظر یہ امر ہے کہ برتنوں کو محض اس لئے دھونا کہ ان پر کھانے کا اثر ہے یہی قربت مطلوب ہے بلکہ مطلوب صفائی ہے جو کبھی چاٹ کر بھی کپڑے سے اور بغیر ماء مطلق اور اول اقرب الی التواضع اور سنت کے آداب سے تادب ہے، چنانچہ امام مسلم نے صحیح میں حضرت جابر سے نکالا۔

عہ: ترجمہ واحادیث (۱) صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے ہے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم انگلیاں اور رکابی چاٹنے کا حکم فرماتے اور ارشاد کرتے تمہیں کیا معلوم کھانے کے کس حصہ میں برکت ہے یعنی شاید اسی حصے میں ہو جو انگلیوں یا برتن میں لگا رہ گیا ہے۔ امام حکیم ترمذی نے حضرت انس سے یہ لفظ نقل کئے "اور وہ برتن اس کے لئے دعا کرے گا"(۲) مسلم واحمد وابوداؤد وترمذی ونسائی نے انس رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے ہمیں کھانا کھا کر پیالہ خوب صاف کر دینے کا حکم فرمایا کہ تم کیا جانو کہ تمہارے کون سے کھانے میں برکت ہے۔(۳) احمد و ترمذی وابن ماجہ نے نبیشہ الخیر الہذلی سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو کسی پیالے میں کھانا کھا کر زبان سے اسے صاف کر دے وہ پیالہ اس کیلئے دعائے مغفرت کرے گا۔(۴) امام حکیم ترمذی اسی مضمون میں حضرت انس سے راوی کہ فرمایا اور وہ برتن اس پر درود (باقی اگلے صفحہ پر)

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded licking the fingers and the dish, saying: "Indeed, you do not know in which part [of the food] the blessing lies." This is recorded by Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, and Nasai from Anas (may Allah be pleased with him): "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded us to wipe the dish, saying: 'Indeed, you do not know in which of your food the blessing lies.'" And from Imam Ahmad, Tirmidhi, and Ibn Majah from Nubayshah Al-Khayr al-Hudhali (may Allah be pleased with him): "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever eats from a dish and then licks it, the dish seeks forgiveness for him.'"

And sometimes it is achieved through something other than absolute water, and the former is closer to humility and involves following the Sunnah. Thus, Imam Muslim narrated in his Sahih from Jabir that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded licking the fingers and the vessel and said: "You do not know in which thing the blessing will be!" And Imam Muslim, Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, and Nasai narrated from Anas as a marfu' tradition that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded us to clean the vessel, saying: "You do not know in which part of your food there is blessing." Imam Ahmad, Tirmidhi, and...

(Continuation of previous footnote) Daylami's narration mentions: "He said, the bowl prays: 'O Allah! Save him from the fire of Hell as he saved me from Satan.' Meaning, if the vessel is left uncleaned, Satan licks it." (5) Hakim and Ibn Hibban in their Sahihs, and Bayhaqi in Shu'ab, narrated from Jabir bin Abdullah as a marfu' tradition: "He said, do not pick up the bowl until you lick it yourself or let someone else lick it, because the blessing is at the end of the meal." (6) In Musnad Hasan bin Sufyan, from the father of Ra'it (may Allah be pleased with them): "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Licking the bowl is more beloved to me than donating a full bowl of food.' That is, the reward for the humility in licking it is greater than the reward for that charity." (7) In Mu'jam al-Kabir from Irbad bin Sariya (may Allah be pleased with him): "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever licks the platter and his fingers, Allah will fill his stomach in this world and the hereafter.' Meaning, he will be saved from poverty in this world and protected from hunger on the Day of Judgment, granted refuge from Hell, for no one's stomach will be filled in Hell. In it is food that 'neither fattens nor satisfies hunger' (La yusminu wala yughni min ju'). May Allah protect us from it."

1 Sahih Muslim, Book on Recommendation of licking the fingers, Published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/175 2 Sahih Muslim, Book on Recommendation of licking the fingers, Published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/176

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उंगलियाँ और बर्तन चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया: "बेशक तुम्हें नहीं मालूम कि किस हिस्से में बरकत है।" जैसा कि अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें बर्तन साफ़ करने का हुक्म दिया और फ़रमाया: "बेशक तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे खाने के किस हिस्से में बरकत है।" और इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजह ने नुबैशा अल-खैर अल-हुज़ली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "जिसने किसी बर्तन में खाना खाया और फिर उसे चाटा, तो वह बर्तन उसके लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करता है।"

और कभी यह मुतलक पानी के अलावा भी हासिल हो जाता है और पहला आज़िज़ी (विनम्रता) के ज़्यादा करीब है और इसमें सुन्नत का पालन भी है। चुनाँचे इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में हज़रत जाबिर से रिवायत की कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उंगलियाँ चाटने और बर्तन चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया: "तुम्हें नहीं मालूम कि किस चीज़ में बरकत होगी!" और इमाम मुस्लिम, अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत अनस से मरफ़ूअ रिवायत की कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें बर्तन साफ़ करने का हुक्म दिया और फ़रमाया: "तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे खाने के किस हिस्से में बरकत है।" इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और...

(पिछले हाशिये का शेष) दैलमी की रिवायत में है कि फ़रमाया: वह प्याला यूँ कहेगा: ऐ अल्लाह! इसे दोज़ख की आग से बचा जिस तरह इसने मुझे शैतान से बचाया। यानी बर्तन अन-साफ़ छोड़ दें तो शैतान उसे चाटता है। (५) हाकिम और इब्ने हब्बान ने अपनी सहीह में और बैहक़ी ने 'शुअब' में जाबिर बिन अब्दुल्ला से मरफ़ूअ रिवायत की: "आप ने फ़रमाया कि प्याले को न उठाओ जब तक कि उसे खुद न चाट लो या दूसरे को चाटने दो क्योंकि खाने के आख़िर में बरकत होती है।" (६) मुसनद हसन बिन सुफ़यान में वालिद राईत (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से है: "रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: प्याला चाट लेना मुझे इससे ज़्यादा पसंद है कि मैं उस प्याले भर खाना सदक़ा करूँ। यानी चाटने में जो आज़िज़ी है उसका सवाब उस सदक़े के सवाब से ज़्यादा है।" (७) मुअजम कबीर में इरिबाज़ बिन सारिया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है: "रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो रकाबी और अपनी उंगलियाँ चाटे, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसका पेट भरेगा। यानी दुनिया में फ़क्र व फ़ाक़ा (ग़रीबी) से बचेगा, क़यामत की भूख से महफ़ूज़ रहेगा, दोज़ख़

से पनाह दी जाएगी कि दोज़ख़ में किसी का पेट नहीं भरेगा। उसमें वह खाना है कि 'न तो मोटा करता है और न भूख मिटाता है' (ला युसमीनु वला युग़नी मिन जूअ)। अल्लाह उससे पनाह दे।"

१ सहीह मुस्लिम, उंगलियाँ चाटने का मुस्तहब होना, पुराना कुतुब खाना कराची, २/१७५ २ सहीह मुस्लिम, उंगलियाँ चाटने का मुस्तहब होना, पुराना कुतुब खाना कराची, १/१७६

पृष्ठ ५७ / ७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

ان النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم امر بلعق الاصابع والصحفة وقال انکم لاتدرون فی ایہ البرکة اولہ کاحمد وابی داؤد والترمذی والنسائی عن انس رضی اللہ تعالی عنہ ان رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم امرنا ان نسلت القصعة قال فانکم لا تدرون فی ای طعامکم البرکة 2 وللامام احمد والترمذی وابن ماجة عن نبیشة الخیر الھذلی رضی اللہ تعالی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من اکل في قصعة ثم لحسھا استغفرت لھا

اور کبھی ماء مطلق کے غیر سے حاصل ہو جاتی ہے اور پہلا اقرب الی التواضع ہے اور اس میں اتباع سنت بھی ہے، چنانچہ امام مسلم نے اپنی صحیح میں حضرت جابر سے روایت کی کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انگلیاں چاٹنے اور برتن چاٹنے کا حکم دیا اور فرمایا تم کو معلوم نہیں کہ کس چیز میں برکت ہوگی ! اور امام مسلم، احمد، ابو داؤد، ترمذی اور نسائی نے حضرت انس سے مرفوعاً روایت کی کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں برتن صاف کرنے کا حکم دیا ہے فرمایا تم کو پتا نہیں کہ تمہارے کھانے کے کس حصہ میں برکت ہے۔ امام احمد، ترمذی اور

(بقیہ حاشیہ گزشتہ) بھیجی دیلمی کی روایت میں ہے کہ فرمایا وہ پیالہ یوں کہے الٰہی ! اسے آتش دوزخ سے بچا جس طرح اس نے مجھ کو شیطان سے بچایا یعنی برتن سنا ہوا چھوڑ دیں تو شیطان اسے چاٹتا ہے۔ (۵) حاکم اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں اور بیہقی نے شعب میں جابر بن عبداللہ سے مرفوعاً روایت کیا، آپ نے فرمایا کہ پیالہ کو نہ اٹھائے تاوقتیکہ اس کو خود چاٹ لے یا دوسرے کو چاٹنے دے کیونکہ کھانے کے آخر میں برکت ہے۔ (۶) مسند حسن بن سفیان میں والد رائط رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا پیالہ چاٹ لینا

مجھے اس سے زیادہ محبوب ہے کہ اس پیالے بھر کھانا تصدق کروں یعنی چاٹنے میں جو تواضع ہے اس کا ثواب اس تصدق کے ثواب سے زیادہ ہے۔ (۷) معجم کبیر میں عرباض بن ساریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا جو رکابی اور اپنی انگلیاں چاٹے اللہ تعالیٰ دنیا اور آخرت میں اس کا پیٹ بھرے۔ یعنی دنیا میں فقر و فاقہ سے بچے قیامت کی بھوک سے محفوظ رہے دوزخ سے پناہ دیا جائے کہ دوزخ میں کسی کا پیٹ نہ بھرے گا اُس میں وہ کھانا ہے کہ لایسمن ولا یغنی من جوع نہ فربہی لائے نہ بھوک میں کچھ کام آئے۔ والعیاذ باللہ۔)

1 صحیح مسلم استحباب لعق الاصابع مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۷۵/۲ 2 صحیح مسلم استحباب لعق الاصابع مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۷۶/۱

Ibn Majah narrated from Nubayshah al-Khayr al-Hudhali that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Whoever eats from a bowl and then licks it, the bowl will seek forgiveness for him." Imam Hakim Tirmidhi quoted these words from Hazrat Anas: "And that vessel will pray for him." And Daylami narrated from him that the bowl will say: "O Allah, free him from the fire of Hell just as he has freed me from the Shaytan." Hakim, Ibn Hibban (in their Sahihs), and Bayhaqi (in Al-Shu'ab) narrated from Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them) in a Hadith raised to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him): "Do not lift the bowl until you have licked it or had it licked (e.g., by a child or servant), for blessing lies in the last part of the food." And from Hasan bin Sufyan from Ra'itah from her father (may Allah be pleased with her) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Licking the bowl is dearer to me than giving an equivalent amount of food in charity." And Tabarani in Al-Kabir narrated from Irbad bin Sariyah (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Whoever licks the plate and licks his fingers, Allah will keep him satisfied in this world and the Hereafter." And washing with water is among the common customary matters between believers and disbelievers. So if one intends the condition of the "Sunnah of purification," meaning cleaning because it is a Sunnah.

He means that the addition (Idafah) is explanatory (bayaniyyah), not possessive (lamiyyah), so that washing becomes a Sunnah in this cleaning. Rather, the meaning is that he intended the Sunnah, which is cleaning. That is, he intended cleaning because it is a Sunnah. End (from him).

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, from Nubayshah, Beirut 2/5
2. Kanz al-Ummal, Adab al-Akl, Maktabat al-Turath, Aleppo 15/253
3. Kanz al-Ummal, Adab al-Akl, Maktabat al-Turath, Aleppo 15/253
4. Sahih Ibn Hibban, Adab al-Akl, Maktabat al-Turath, Aleppo, Athariyyah Sangla Hill 8/335
5. Kanz al-Ummal, Adab al-Akl, Maktabat al-Turath, Aleppo 15/253
6. Majma' al-Zawa'id, Bab al-Atq al-Suhfah wa al-Asabi', Beirut 2/5 Page 58 of 711

इब्न माजह ने नुबैशाह अल-खैर अल-हुज़ली से रिवायत की है कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने किसी प्याले में खाया और फिर उसे चाटा, तो वह प्याला उसके लिए इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दुआ) करेगा।" इमाम हकीम तिर्मिज़ी ने हज़रत अनस से ये शब्द नक़ल किए हैं: "और वह बर्तन उसके लिए दुआ करेगा।" और दैलमी ने उनसे रिवायत की है कि वह प्याला कहेगा: "ऐ अल्लाह, इसे जहन्नम की आग से आज़ाद फरमा जिस तरह इसने मुझे शैतान से छुटकारा दिलाया है।" हाकिम, इब्न हिब्बान (अपनी सहीह में) और बैहक़ी (अश-शुअब में) ने जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है, जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक पहुँचती है: "प्याला न उठाएं जब तक कि उसे स्वयं न चाट लें या (मसलन किसी बच्चे या खादिम को) चटवा न दें, क्योंकि खाने के आखिरी हिस्से में बरकत है।" और हसन बिन सुफ़ियान ने राइता से, उन्होंने अपने पिता से, उन्होंने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि: "मेरे नज़दीक प्याले को चाट लेना उतनी ही मात्रा में खाना सदक़ा करने से बेहतर है।" और तबरानी ने 'अल-कबीर' में इरबाज़ बिन सारिया (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि जिसने प्लेट को चाटा और उंगलियों को चाटा, अल्लाह उसे दुनिया और आखिरत में पेट भरा हुआ (संतुष्ट) रखेगा। और पानी से धोना मोमिनों और काफिरों के बीच आम प्रचलित आदतों में से है। तो जब 'सुन्नत-ए-तन्ज़ीफ़' की शर्त की नीयत की, यानी सफाई क्योंकि वह सुन्नत है।

मुराद यह है कि इज़ाफ़त बयानिया है, लामिया नहीं, ताकि इस सफाई में धोना सुन्नत बन जाए, बल्कि मतलब यह है कि सुन्नत की नीयत की और वह सफाई है, यानी सफाई की नीयत की क्योंकि वह सुन्नत है। समाप्त (उनकी ओर से)।

1. मुस्नद अहमद बिन हंबल, नुबैशाह से, बेरुत 2/5
2. कंज़ुल उम्माल, आदाबुल अक्ल, मकतबतुल तुरास, हलब 15/253
3. कंज़ुल उम्माल, आदाबुल अक्ल, मकतबतुल तुरास, हलब 15/253
4. सहीह इब्न हिब्बान, आदाबुल अक्ल, मकतबतुल तुरास, हलब, असरिय्या सांगला हिल 8/335
5. कंज़ुल उम्माल, आदाबुल अक्ल, मकतबतुल तुरास, हलब 15/253
6. मजमउज़ ज़वाइद, बाबुल अतकुल सुहफ़ा वल असाबे, बेरुत 2/5 पेज 58 of 711

ابن ماجہ نے نبیشہ الخیر الہذلی سے روایت کی کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے کسی پیالہ میں کھایا پھر اس کو چاٹا تو وہ پیالہ اس کیلئے استغفار کرے گا۔ امام حکیم ترمذی نے حضرت انس سے یہ لفظ نقل کئے "اور وہ برتن اس کے لئے دعا کرے گا" اور دیلمی نے اُن سے روایت کی کہ وہ پیالہ کہے گا یا اللہ اس کو نارِ جہنم سے آزاد فرما جس طرح اس نے مجھ کو شیطان سے چھٹکارا دلایا ہے، حاکم وابن حبان و بیہقی جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روای کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کھانا کھا کر برتن نہ اٹھائے جب تک اسے خود چاٹ نہ لے یا (مثلاً کسی بچے یا خادم کو) چٹا دے کہ کھانے کے پچھلے حصہ میں برکت ہے۔ اور حسن بن سفیان رائطہ سے وہ اپنے باپ سے وہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں کہ میرے نزدیک پیالہ کا چاٹ لینا اس کی مقدار میں کھانے کے صدقہ کرنے سے افضل ہے، اور طبرانی نے کبیر میں عرباض بن ساریہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی ہے کہ جس نے پلیٹ کو چاٹا اور انگلیوں کو چاٹا اللہ اس کو دنیا اور آخرت میں شکم سیر فرمائے گا۔ اور پانی سے دھونا مومنین اور کفار کے درمیان عام رائج امور عادیہ میں سے ہے۔ پس جب 'سنت التنظیف' کی شرط کی نیت کی، یعنی تنظیف کیونکہ وہ سنت ہے۔

یرید ان الاضافة بیانیة لالامیة لیصیر الغسل سنة فی هذا التنظیف بل المعنی نوی سنة هو التنظیف ای نوی التنظیف لکونہ سنة اھ منہ(م) | اضافت بیانیہ مراد ہے لامیہ نہیں تاکہ اس تنظیف میں دھونا

سنت بن جائے بلکہ معنی یہ ہے کہ سنّت کی نیت کی اور وہ تنظیف ہے یعنی تنظیف کی نیت کی کیونکہ وہ سنّت ہے اھ (ت)

1. مسند احمد بن حنبل عن نبیشہ بیروت ۲/۵
2. کنز العمال اداب الاکل مکتبہ التراث حلب ۲۵۳/۱۵
3. کنز العمال، اداب الاکل، مکتبہ التراث حلب ۲۵۳/۱۵
4. صحیح ابن حبان اداب الاکل، مکتبہ التراث حلب اثریہ سانگلہ ہل ۳۳۵/۸
5. کنز العمال اداب الاکل، مکتبہ التراث حلب ۲۵۳/۱۵
6. مجمع الزوائد باب العتق الصحفہ والاصابع بیروت ۲/۵ Page 58 of 711

[Right Column - Urdu Text] The specificity of washing along with it is an ordinary matter; there is no distinction between a believer and a disbeliever in this. Now, if he intended the Sunnah through cleanliness, he categorized it under a general commendable act with his intention. Thus, he would be like a person who performed ablution (Wudu) for the purpose of teaching. By the grace and mercy of Allah Almighty, the research that has come to my understanding regarding this point is that not everything that is an act of nearness (qurba) changes the purifying nature of water. Instead, it is necessary that the specific action performed with water be, primarily and intrinsically in the eyes of Sharia, a required act of nearness. The summary of this is that the required act of nearness must be an entity that exists only through water. This is because if that act of nearness could be achieved without it, there would be multiple ways for its realization—some achieved with water and some without water. Therefore, whatever is achieved primarily and intrinsically with water would not be the required act in itself, but rather a means to achieve the required act. The implication is that purely utilizing water in that action is legally (Sharia-wise) required in itself, because when the required entity is dependent on it, it too becomes required in itself. Examples include rinsing the mouth, putting water in the nose during Wudu, and washing three times in Wudu and Ghusl, even if it is for the washing of a corpse. And perhaps it may occur to our readers that this insight is only known from the discourse of the author of Al-Bahr and his brother, the author of An-Nahr. To that I say, it is not so; rather, the issue of performing Wudu for teaching is explicitly mentioned in Al-Mubtaghi, Al-Fath, and other books of the school of thought (Madhhab), and there is a clear statement in Ad-Durr.

[Left Column - Arabic Text] He included it with his intention under a general commendable act, so he was like one performing ablution for teaching. Then I say, investigating the matter according to what the All-Knowing King has taught me, not everything that is made an act of nearness changes water from its purifying nature. Rather, the specific action performed with water must primarily and intrinsically be a required act of nearness in Sharia specifically. Its essence is that the required act of nearness must be an entity that cannot be established except through water. If it were possible to achieve it without water, there would be various ways for its realization, some through water and others without it. Thus, what is achieved through water primarily and intrinsically would not be required in itself, but rather a means to achieve what is required in itself. Consequently, the expenditure of water in

that act must be specifically required in Sharia, because since the required entity is dependent upon it, it also becomes specifically required. Examples include rinsing the mouth and sniffing water into the nose during Wudu, and performing actions three times in Wudu and Ghusl, even in the washing of a corpse. You might think that this benefit was only known from the Allama, the author of Al-Bahr, and followed by his brother in An-Nahr. I say: Not at all. Rather, the issue—namely, the Wudu of one who performs it for teaching—is explicitly stated in Al-Mubtaghi, Al-Fath, and other books of the school of thought. It is stated in Ad-Durr that it is agreed upon, and there is no doubt that it is explicit.

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] धोने की विशेषता एक सामान्य बात है; इसमें मोमिन (आस्तिक) और काफ़िर (नास्तिक) के बीच कोई अंतर नहीं है। अब, यदि उसने स्वच्छता के माध्यम से सुन्नत की नीयत की, तो उसने इसे अपनी नीयत के साथ एक सामान्य सराहनीय कार्य के तहत शामिल किया। इस प्रकार, वह उस व्यक्ति की तरह होगा जिसने शिक्षण के उद्देश्य से वज़ू किया। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और करम से, इस विषय के बारे में जो शोध मेरी समझ में आया है वह यह है कि हर वह चीज़ जो कुर्बत (निकटता का साधन) है, वह पानी की शुद्धता को नहीं बदलती है। इसके बजाय, यह आवश्यक है कि पानी के साथ किया जा रहा विशिष्ट कार्य प्राथमिक और मौलिक रूप से शरीयत की नज़र में एक आवश्यक कुर्बत हो। इसका सारांश यह है कि आवश्यक कुर्बत एक ऐसी इकाई होनी चाहिए जो केवल पानी के साथ मौजूद हो। क्योंकि यदि वह कुर्बत उसके बिना प्राप्त की जा सकती, तो उसके अस्तित्व के कई उदाहरण होते—कुछ पानी से प्राप्त होते और कुछ पानी के बिना। तो, जो प्राथमिक और मौलिक रूप से पानी के साथ प्राप्त होता है, वह स्वयं में आवश्यक कार्य नहीं होगा, बल्कि आवश्यक कार्य को प्राप्त करने का एक साधन होगा। इसका परिणाम यह होगा कि इस क्रिया में विशुद्ध रूप से पानी खर्च करना शरीयत के अनुसार स्वयं में आवश्यक है, क्योंकि जब आवश्यक कार्य उस पर निर्भर होता है, तो वह स्वयं में भी आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए, कुल्ला करना, वज़ू में नाक में पानी डालना, और वज़ू और ग़ुस्ल में तीन बार धोना, भले ही वह मैय्यत (शव) के ग़ुस्ल में हो। और शायद हमारे पाठकों को यह विचार आए कि यह बात केवल 'बहर' के लेखक और उनके भाई 'नहर' के लेखक के शब्दों से ही जानी जाती है। तो, मैं कहता हूँ कि ऐसा नहीं है; बल्कि, शिक्षण के लिए वज़ू करने का मसला 'मुब्तग़ी', 'फ़तह' और मज़हब की अन्य किताबों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है, और 'दुर्र' में एक स्पष्ट कथन है।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] उसने अपनी नीयत के साथ इसे एक सामान्य सराहनीय कार्य के तहत शामिल किया, इसलिए वह शिक्षण के लिए वज़ू करने वाले की तरह था। फिर मैं कहता हूँ, सर्वज्ञ मालिक ने मुझे जो सिखाया है, उसके अनुसार इस विषय की जांच यह है कि हर वह चीज़ जिसे कुर्बत (निकटता का साधन) बनाया गया है, वह पानी को उसकी शुद्धता से नहीं बदलती। बल्कि, पानी के साथ किए जाने वाले विशिष्ट कार्य को प्राथमिक और मौलिक रूप से शरीयत की नज़र में विशेष रूप से एक आवश्यक कुर्बत होना चाहिए। इसका सार यह है कि आवश्यक कुर्बत एक ऐसी इकाई होनी चाहिए जो केवल पानी के साथ ही स्थापित हो सके। क्योंकि यदि इसे पानी के बिना प्राप्त करना संभव

होता, तो इसकी प्राप्ति के कई तरीके होते, कुछ पानी के माध्यम से और कुछ इसके बिना। इस प्रकार, जो प्राथमिक और मौलिक रूप से पानी के माध्यम से प्राप्त होता है, वह स्वयं में आवश्यक नहीं होगा, बल्कि स्वयं में आवश्यक कार्य को प्राप्त करने का एक साधन होगा। नतीजतन, उस कार्य में पानी का खर्च करना शरीयत में विशेष रूप से आवश्यक होना चाहिए, क्योंकि जब आवश्यक इकाई उस पर निर्भर है, तो वह भी विशेष रूप से आवश्यक हो जाता है। उदाहरणों में वज़ू में कुल्ला करना और नाक में पानी डालना, और वज़ू और ग़ुस्ल में तीन बार धोना शामिल है, भले ही वह मैय्यत के ग़ुस्ल में हो। शायद आप सोचें कि यह लाभ केवल अल्लामा, बहर के लेखक, और नहर में उनके भाई द्वारा ही जाना गया था। मैं कहता हूँ: बिल्कुल नहीं। बल्कि, मुद्दा—यानी शिक्षण के लिए वज़ू करने वाले का वज़ू—'अल-मुब्तग़ी', 'अल-फ़तह' और मज़हब की अन्य किताबों में स्पष्ट रूप से वर्णित है। 'अद-दुर्र में यह स्पष्ट है कि इस पर सहमति है, और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह स्पष्ट है।

पृष्ठ 711 का 59

[دایاں کالم - اردو عبارت] ساتھ دھونے کی خصوصیت ایک عادی امر ہے اس میں مومن و کافر کا بھی فرق نہیں، اب اگر اس نے تنظیف سے سنت کی نیت کی تو اس نے اس کو اپنی نیت سے ایک محمود عام کے تحت داخل کیا تو یہ اس شخص کی طرح ہو گا جس نے تعلیم کے لئے وضو کیا۔ اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے اس مقام کی جو تحقیق میری سمجھ میں آئی ہے وہ یہ ہے کہ ہر وہ چیز جو قربت ہے وہ پانی کو طہوریت سے بدلنے والی نہیں ہے بلکہ ضروری ہے کہ وہ مخصوص فعل جو پانی سے ادا کیا جا رہا ہے وہ اولاً وبالذات شریعت کی نگاہ میں قربت مطلوبہ ہو، اور اس کا خلاصہ یہ ہے کہ قربت مطلوبہ ایک ایسا عین ہو جو پانی کے ساتھ ہی قائم ہو کیونکہ اگر اس کے بغیر وہ قربت حاصل ہو جائے تو اس کے وجود کے کئی موارد ہوں گے کچھ تو پانی سے حاصل ہوں گے اور کچھ بغیر پانی کے حاصل ہوں گے تو جو چیز پانی سے اولاً وبالذات حاصل ہو تو وہ بعینہ مطلوب نہ ہو گی بلکہ بعینہ مطلوب کو حاصل کرنے والی ہو گی اس کا حاصل یہ ہو گا کہ محض پانی کا اس فعل میں صرف کرنا شرعاً مطلوب بعینہ ہو کیونکہ مطلوب بعینہ جب اس پر موقوف ہے تو یہ بھی مطلوب بعینہ ہو جائے گا جیسے کلی، ناک میں پانی ڈالنا وضو میں، اور تثلیث وضو و غسل میں اگرچہ میت کے غسل میں ہو، اور شاید ہمارے قارئین کو یہ خیال گزرے کہ یہ فائدہ تو صاحب بحر اور ان کے بھائی صاحب نہر کے کلام ہی سے معلوم ہوا ہے، تو میں کہتا ہوں یہ بات نہیں ہے بلکہ تعلیم کیلئے وضو کرنے کا مسئلہ مبتغی اور فتح وغیرہ کتب مذہب میں منصوص ہے اور دُرّ میں تصریح ہے

[بایاں کالم - عربی عبارت] ادخله بنیته تحت عام محمود فکان کمتوضئ توضاً للتعلیم۔ ثم اقول تحقیق (١) المقام علی ما علمني الملك العلام ان (٢) لیس کل ما جعل قربة مغیرا للماء عن الطهوریة بل یجب

ان يكون الفعل المخصوص الذي يحصل بالماء اولا وبالذات قربة مطلوبة في الشرع بخصوصه ومرجعه الى ان تكون القربة المطلوبة عينا لا تقوم الا بالماء اذ لو جاز ان تحصل بدونه لكان لتحققها موارد منها ما يحصل بالماء ومنها غيره فما يحصل بالماء اولا وبالذات لا يكون مطلوباً بعينه بل محصلا لمطلوب بعينه فيتحصل ان يكون نفس انفاق الماء في ذلك الفعل مطلوبا في الشرع عينا اذ المطلوب عينا لم يحصل الا به كان ايضا مطلوباً عينا كالمضمضة والاستنشاق في الوضوء والتثليث فيه وفى الغسل ولو للميت ولعلك تظن ان هذه فائدة لم تعرف الا من قبل العلامة صاحب البحر وتبعه عليه اخوه في النهر۔ اقول: كلا بل المسألة اعنى وضوء المتوضئ للتعليم منصوص عليها فى المبتغى والفتح وغيرهما من كتب المذهب وقد نص في الدر انها متفق عليها ولا شك انها صريحة

صفحہ 59 از 711

Fatawa Razvia - Volume Two

[Arabic side text:] In that benefit, teaching is a definitively required act of closeness (qurba). He intended this through this ablution, and in this specific regard, he is also following the past Sunnah, as demonstration by action is stronger than demonstration by word. Despite this, they (the scholars) agreed that it (the water) does not become 'used' (mustamal). Thus, it is a consensus that not every act of closeness changes the water, but rather only that which cannot be performed without water. For there is no difference between ablution with the intention of teaching and ablution upon ablution except for this. Then, the act that depends on water must be intended for its own sake, otherwise the distinction would be lost. Since there is no doubt that ablution for teaching achieves a religiously required act of closeness, it is an act of closeness and it cannot be done except with water. However, the Sharia did not require it specifically; it required teaching, and teaching does not depend on spending water. Thus, the conclusion of the investigation rests on what 'Al-Bahr' stated, and it became clear that the correct view regarding the branch of pots and bowls, along with 'Al-Ghunya', is what we have relied upon.

I say: (1) What supports this is the unanimous statement of all jurists on the issue of performing ablution and taking a bath for cooling (2), even though cooling may sometimes be for the purpose of focusing the mind for worship and gaining strength for studying books of knowledge, which are undoubtedly acts of closeness. Every permissible act performed by a believing servant with a good intention becomes good, yet it was not specifically requested by the Sharia.

[Urdu side text translation:] ...has done, so it is agreed upon, and there is no doubt that it is explicit in this benefit, because teaching is definitively an act of proximity, and through this ablution, he intended that very same thing. In this specific case, he is a follower of the past Sunnah, as demonstration through action is stronger than demonstration through speech. Despite this, their agreement on the fact that the water will not become used (mustamal) makes it a consensus that not every act of proximity changes the water; rather, only that act of proximity does so which is established only with water. Because this very thing differentiates between ablution with the intention of teaching and the intention for ablution upon ablution. Then, the proximity whose dependency on water is necessary must be the intended one itself, otherwise, the distinction will be lost. Since the ablution performed for teaching attains a legal (Sharia) proximity, it will be an act of proximity, and ablution occurs only with water. But in Sharia, it is not desired for its own sake; it is desired for

teaching, and teaching is not dependent on spending water. Thus, the research that is in 'Bahr' is correct, and it also became clear that in the miscellaneous issues of pots and bowls, the truth is what is in 'Ghunya', therefore we relied on it. Then its support is found in this general statement of all jurists that they say: performing ablution and bathing to obtain cooling, although obtaining cooling is sometimes also for the purpose that a person remains peaceful in worship or can study with satisfaction, and undoubtedly in this case it will be worship because...

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग २)

[अरबी पक्ष का पाठ:] उस लाभ में, शिक्षण निश्चित रूप से एक वांछित निकटता (कुर्ब) का कार्य है। उसने इस वज़ू के माध्यम से यही नियत की, और इस विशिष्ट संबंध में, वह पिछली सुन्नत का भी पालन कर रहा है कि क्रिया के माध्यम से प्रदर्शन, शब्दों के माध्यम से प्रदर्शन से अधिक शक्तिशाली होता है। इसके बावजूद, उन (विद्वानों) ने सहमति व्यक्त की है कि वह (पानी) 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता। इस प्रकार, यह एक सर्वसम्मति है कि हर निकटता का कार्य पानी को नहीं बदलता है, बल्कि केवल वही बदलता है जो पानी के बिना नहीं किया जा सकता। क्योंकि शिक्षण की नियत से वज़ू करने और वज़ू पर वज़ू करने की नियत में इसके अलावा कोई अंतर नहीं है। फिर, वह कार्य जो पानी पर निर्भर है, वह स्वयं में ही वांछित होना चाहिए, अन्यथा यह अंतर व्यर्थ हो जाएगा। चूँकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षण के लिए वज़ू एक शरीअत द्वारा वांछित निकटता प्राप्त करता है, इसलिए यह एक निकटता का कार्य है और यह केवल पानी के साथ ही संभव है। लेकिन शरीअत ने इसे विशेष रूप से नहीं मांगा; उसने शिक्षण को मांगा, और शिक्षण पानी खर्च करने पर निर्भर नहीं है। इस प्रकार, शोध का निष्कर्ष वही है जो 'अल-बह्र' में बताया गया है, और यह स्पष्ट हो गया कि हांडियों और प्यालों के मसलों के संबंध में 'अल-गुन्या' के साथ सही बात वही है जिस पर हमने भरोसा किया है।

मैं कहता हूँ: (१) इसका समर्थन सभी न्यायविदों (फ़क़ीहों) के इस कथन से भी मिलता है कि वज़ू और ग़ुस्ल (स्नान) ठंडक प्राप्त करने के लिए करना (२), हालाँकि ठंडक प्राप्त करना कभी-कभी इबादत के लिए मन की एकाग्रता और ज्ञान की पुस्तकों के अध्ययन के लिए शक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से भी होता है, जो निस्संदेह निकटता के कार्यों में से हैं। एक आस्तिक भक्त द्वारा अच्छी नियत के साथ किया गया हर जायज़ कार्य अच्छा होता है, फिर भी शरीअत में इसे विशेष रूप से नहीं मांगा गया।

[उर्दू पक्ष का अनुवाद:] ...की है कि यह मुत्तफ़िक़ अलैहि है, और इसमें शक नहीं कि वह उस फायदे में सरीह है, क्योंकि तालीम क़तई तौर पर कुर्बत है और इस वज़ू से उसने उसी की नियत की है। और वह इस खुसूस में गुज़श्ता सुन्नत की पैरवी करने वाला है कि फेल के ज़रिए बयान, क़ौल के ज़रिए बयान से अक़वा (मजबूत) होता है। बावजूद इसके उनका इस अम्र पर इत्तेफ़ाक़ है कि पानी मुस्तअमल न होगा। तो यह इज्मा हो गया इस अम्र पर कि हर कुर्बत पानी को मुतग़य्यर नहीं करती है, बल्कि सिर्फ वह कुर्बत करती है जो पानी के साथ ही क़ायम हो। क्योंकि बह नियत-ए-तालीम वज़ू करने और वज़ू बर वज़ू की नियत में फर्क करने वाली यही चीज़ है। फिर जिस कुर्बत का पानी पर

मौक़ूफ़ होना लाज़िम है वह ब-ऐनिही मतलूब हो वरना फर्क ज़ाया हो जाएगा। क्योंकि तालीम के लिए किया जाने वाला वज़ू शरई कुर्बत को हासिल करने वाला है तो यह कुर्बत होगा, और वज़ू सिर्फ पानी से ही होता है लेकिन शरीयत में वह ब-ऐनिही मतलूब नहीं है, वह तालीम के लिए मतलूब है और तालीम पानी खर्च करने पर मौक़ूफ़ नहीं है। तो तहक़ीक़ वही दुरुस्त है जो 'बहर' में है और यह भी ज़ाहिर हुआ कि हांडियों और प्यालों के मसाइल-ए-मुतफ़र्रिका में हक़ वह है जो 'गुन्या' में है, लिहाज़ा हमने उसी पर एतेमाद किया। फिर इसकी ताईद तमाम फुक़हा के इस इतलाक़ से मिलती है कि वह फरमाते हैं कि वज़ू और ग़ुस्ल ठंडक हासिल करने के लिए करना, हालाँकि ठंडक हासिल करना कभी इस ग़रज़ से भी होता है कि इंसान इबादत में पुरसुकून रहे या मुतालआ इत्मीनान से कर सके और बिला शुबा इस सूरत में यह इबादत होगा क्योंकि...

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[عربی عبارت:] في تلك الافادة فان التعليم قربة مطلوبة قطعاً وقد نواه بهذا التوضی وهو فی هذا الخصوص ایضاً متبع للسنة الماضية ان البيان بالفعل اقوی من البيان بالقول ومع ذلك اجمعوا انه لايصير مستعملا فكان اجماعاً ان ليس كل قربة تغير الماء بل التی لاتقوم الا بالماء اذلا فارق فی التوضی بنية التعليم وبنية الوضوء علی الوضوء الا هذا ثم لابد ان تكون التی تتوقف علی الماء قربة مطلوبة بعينها والا لعاد الفرق ضائعاً اذلا شك ان الوضوء للتعليم محصل لقربة مطلوبة شرعاً فيكون قربة وهولا يقوم الا بالماء لكن الشرع لم يطلبه عيناً انما طلب التعليم وهو لا يتوقف علی انفاق الماء فاستقر عرش التحقيق علی ما افاد البحر وظهر ان الصواب في فرع القدور والقصاع مع الغنية فلذا عولنا عليه ۔ اقول: (۱) ومما يؤيده اطلاقهم قاطبة مسألة التوضی والاغتسال للتبرد (۲) مع ان التبرد ربما يكون لجمع الخاطر للعبادة والتقوی علی مطالعة كتب العلم وهو لاشك اذن من القرب فكل مباح فعله العبد المؤمن بنية خير خير غير انه لم يطلب عيناً فی الشرع

[اردو عبارت:] کی ہے کہ یہ متفق علیہ ہے، اور اس میں شک نہیں کہ وہ اس فائدہ میں صریح ہے، کیونکہ تعلیم قطعی طور پر قربت ہے اور اس وضو سے اُس نے اُسی کی نیت کی ہے اور وہ اس خصوص میں گذشتہ سنت کی پیروی کرنے والا ہے کہ فعل کے ذریعہ بیان قول کے ذریعہ بیان سے اقوی ہوتا ہے، باوجود اس کے اُن کا اس امر پر اتفاق ہے کہ پانی مستعمل نہ ہوگا، تو یہ اجماع ہو گیا اس امر پر کہ ہر قربت پانی کو متغیر نہیں کرتی ہے بلکہ صرف وہ قربت کرتی ہے جو پانی کے ساتھ ہی قائم ہو کیونکہ بہ نیت تعلیم وضو کرنے اور وضو بر وضو کی نیت میں فرق کرنے والی یہی چیز ہے۔ پھر جس قربت کا پانی پر موقوف ہونا لازم ہے وہ بعینہا مطلوب ہو ورنہ فرق ضائع ہو جائے گا کیونکہ تعلیم کیلئے کیا جانے والا وضو شرعی قربت کو حاصل کرنے والا ہے

تو یہ قربت ہوگا، اور وضو صرف پانی سے ہی ہوتا ہے لیکن شریعت میں وہ بعینہ مطلوب نہیں ہے وہ تعلیم کیلئے مطلوب ہے اور تعلیم پانی خرچ کرنے پر موقوف نہیں ہے تو تحقیق وہی درست ہے جو بحر میں ہے اور یہ بھی ظاہر ہوا کہ ہانڈیاں اور پیالوں کے مسائل متفرقہ میں حق وہ ہے جو غنیہ میں ہے لہٰذا ہم نے اسی پر اعتماد کیا۔ پھر اس کی تائید تمام فقہاء کے اس اطلاق سے ملتی ہے کہ وہ فرماتے ہیں کہ وضو اور غسل ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے کرنا، حالانکہ ٹھنڈک حاصل کرنا کبھی اس غرض سے بھی ہوتا ہے کہ انسان عبادت میں پرسکون رہے یا مطالعہ اطمینان سے کر سکے اور بلاشبہ اس صورت میں یہ عبادت ہوگا کیونکہ

Fatawa Razawiya - Volume 2

And if it is permissible for it to become a means to a desired and greater goal, (1) such as the issue of washing to remove dirt (2), then it is sought in its own right in Islamic law, for religion is built on cleanliness. This was the wisdom behind the command to perform ghusl (washing) on Friday, as clarified by the hadiths, although the removal of dirt is not dependent on water. Therefore, it was not among the matters in which the Sharia required the spending of water specifically, unlike (3) the ghusl for Friday, the two Eids, 'Arafah, and Ihram. For whoever performs ghusl for these with fruit juice or date nectar, for example, has certainly not followed the Sunnah, even if he removed the dirt and (4) filth with it. This is because the ruling is based on wisdom, but the servants are commanded to follow the ruling, not the wisdom, as is known in its place. Here, the rebuttal to the issue of the bowl and the pot is complete. And it has become clear, praise be to Allah, that the meaning of "qurbah" (act of devotion) here is that which relates to the outward body of the person, where the Sharia has established the performance of the required act of devotion itself, even if it is recommended, upon applying water specifically, even if it is by wiping the skin of a human, even if dead. Thus, the ambiguity has disappeared, the goal has become clear, and the rulings have appeared in all branches. Praise be to Allah, the Guardian of Blessings. And now, perhaps you will stand and say: "The matter boils down to the fact that water only becomes 'used' (musta'mal) if it is spent on something where spending water on it is specifically required in the Sharia. So what is the difference between that and if it is spent in a religiously required act of devotion without being dependent on water specifically, especially how..."

Page 61 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

प्रत्येक वैध (मुबाह) कार्य जिसे मनुष्य भलाई की नियत से करता है, वह भलाई है। हालांकि, वह अपने आप में शरीयत द्वारा वांछित (मतलूब) नहीं है, भले ही वह किसी वांछित चीज़ का साधन बन सके। इससे भी बड़ी बात धोने (गुस्ल) का मसला है, जो गंदगी दूर करने के लिए है। यह अपने आप में शरीयत द्वारा वांछित है; धर्म की नींव ही स्वच्छता पर है। और जुमा के दिन गुस्ल के आदेश की हिकमत यही है, जैसा कि हदीसों में बताया गया है, हालांकि गंदगी दूर करना केवल पानी पर निर्भर नहीं है। इसलिए, पानी का खर्च करना अपने आप में शरीयत की मांग नहीं थी। इसके विपरीत, जुमा, दोनों ईदों, अराफात और एहराम का गुस्ल शरीयत के अनुसार वांछित है। यदि किसी ने इन गुस्लों को फलों के रस या खजूर के रस से किया, तो वह निश्चित रूप से सुन्नत का पालन करने वाला नहीं होगा, भले ही उससे सारी गंदगी दूर हो जाए। इसका कारण यह है कि नियम किसी न किसी हिकमत (तर्क) पर आधारित होता है, लेकिन बंदों को नियम का पालन करने का आदेश है, न कि हिकमत का। यह बात अपने स्थान पर बताई गई है। यहाँ प्याले और हांडी के मसले पर खंडन पूरा हुआ।

और अल्हम्दुलिल्लाह यह स्पष्ट हो गया कि 'कुर्बत' (निकटता/पुण्य कार्य) से तात्पर्य उस कुर्बत से है जिसका संबंध शरीर के बाहरी हिस्से से है, जिसमें शरीयत ने वांछित कुर्बत के प्रदर्शन को, चाहे वह मुस्तहब (पसंदीदा) ही क्यों न हो, इस पर आधारित किया है कि पानी अनिवार्य रूप से मनुष्य की त्वचा को छुए, चाहे वह जीवित हो या मृत, भले ही वह पोंछने (मसा) के रूप में ही क्यों न हो। इससे हमारा उद्देश्य स्पष्ट हो गया और मसले की शाखाएँ और नियम स्पष्ट हो गए। अल्हम्दुलिल्लाह वली अल-अनआम (तमाम नेमतों के मालिक अल्लाह के लिए सब प्रशंसा है)। अब इस बिंदु पर, यह कहना संभव है कि मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) पानी वह है जो किसी ऐसे कार्य में खर्च किया जाए...

पृष्ठ 61 का 711

ہر مباح جو انسان خیر کی نیت سے کرے خیر ہے، البتہ وہ بعینہ مطلوب شرع نہیں، اگرچہ مطلوب کا وسیلہ بن سکتا ہے اس سے بڑی بات غسل کا مسئلہ ہے میل دور کرنے کیلئے یہ بعینہ مطلوب شرع ہے دین کی بنیاد ہی نظافت پر ہے اور جمعہ کے دن غسل کے حکم کی حکمت یہی ہے، جیسا کہ احادیث میں مذکور ہے کہ البتہ میل کا زائل کرنا پانی پر ہی موقوف نہیں، لہذا پانی کا خرچ کرنا بعینہ مطلوب شرع نہ ہوا، اور جمعہ، عیدین، وقوف بعرفہ، اور احرام کا غسل شرعاً مطلوب ہے، ان غسلوں کو اگر کسی نے پھلوں کے عرق یا شیرہ کھجور سے کیا تو قطعی طور پر سنت کی اتباع نہ ہوگی، خواہ اس سے میل کچیل زائل ہو جائے، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ حکم کسی نہ کسی حکمت پر مبنی ہوتا ہے، لیکن بندوں پر حکم کی پابندی ہے نہ کہ حکمت کی ۔ یہ بات اپنے مقام پر مذکور ہے یہاں تک پیالہ اور ہانڈی کے مسئلہ پر رد مکمل ہوا،

اور الحمد للہ یہ بات واضح ہوگئی کہ قربت سے مراد اس مقام پر وہ قربت ہے جس کا تعلق ظاہر بدن سے ہو جس میں شریعت نے قربت مطلوب، خواہ ندباً ہی ہو، کا دارومدار اس پر کیا ہے کہ انسان، خواہ مردہ ہی ہو، کی جلد پر بعینہ پانی لگے، خواہ بطور مسح ہی ہو، اس سے ہمارا مقصود واضح ہوا اور مسئلہ کے فروع و احکام ظاہر ہوئے الحمد للہ ولی الانعام ۔ اب اس مقام پر ممکن ہے کہ یہ کہا جائے کہ مستعمل پانی وہ ہوتا ہے جو کسی ایسے عمل میں خرچ

Fatawa Ridawiyya Volume Two

[Arabic Passage 1]: Indeed, the changer is the transformation into a legal impurity (najasat hukmiya), and among them is the impurity of sins. This is removed, in whole or in part, by every act of worship due to the general saying of the Almighty: "Indeed, good deeds do away with misdeeds." (Quran 11:114)

[Arabic Passage 2]: I say: (1) Yes, and praise be to Allah forever. Sins are removed by Allah's permission through every act of worship, as a mercy from Him—Exalted are His favors—to this blessed and graced nation in this world and the hereafter, through its noble, kind, and merciful Prophet, sent as a mercy and bestowed as a blessing. May the best blessings of his Lord, the most beautiful greetings, the purest benedictions, and the most enduring salutations be upon him, his family, his companions, and his nation forever. However, removal [of sins] by an act of worship does not necessitate the transformation into the instrument through which it was performed. We only know this in the specific instruments designated by the Sharia, such as wealth in Zakat and water in purification (Taharat). This is based on the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) regarding charities: "Indeed, they are the filth of the people." Narrated by Ahmad and Muslim from Abdul Muttalib bin Rabi'a (may Allah be pleased with him).

[Arabic Passage 3]: And his saying (peace and blessings of Allah be upon him): "Whoever performs ablution and performs it well, his sins will come out of his body until they come out from under his nails." Narrated by Bukhari and Muslim (Shaykhayn).

[Urdu Explanation]: ...that in which its spending is exactly what is required by Sharia. In this case, and when water is used in an act of worship that is legally required but not dependent on water, what would be the difference? While the thing causing change in the water is the arrival of legal impurity (najasat hukmiya) towards it, and the impurity of sins is also a legal impurity, which is washed away entirely or partially by every act of worship, as per the divine command: "Indeed, good deeds do away with misdeeds" (Good deeds eliminate evils. This is an advice for those who remember, for the general requirement. -T).

I say: Yes, it is true that sins are removed by any act of worship through the mercy of Allah... but the removal of sins due to an act of worship does not require that they be transferred to the instrument of purification. This is only in those instruments which Sharia has specified, like wealth in Zakat and water in purification. For the Noble

Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said that Zakat is the dirt and filth of the people. This was narrated by Ahmad and Muslim from Abdul Muttalib bin Rabi'a. And the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever performs wudu (ablution) well, sins will leave his body, even from under his fingernails." This was narrated by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim) from the Leader of the Believers, Uthman (may Allah be pleased with him). And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When a Muslim or a believing servant washes his face during wudu, every sin toward which he looked with his two eyes departs from his face..."

[Footnotes]: 1. Quran 11/114 2. Sahih Muslim, Prohibition of Zakat for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/325 3. Sahih Muslim, Departure of Sins with Wudu Water, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/125

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

[अरबी भाग 1]: वास्तव में, बदलने वाली चीज़ हिक्मी अपवित्रता (नजासत हुक्मिया) में परिवर्तन है, और उनमें से पापों की अपवित्रता है। यह सर्वशक्तिमान के इस कथन की व्यापकता के कारण हर इबादत (पुण्य कार्य) से पूरी तरह या आंशिक रूप से दूर हो जाती है: "बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं।" (कुरान 11:114)

[अरबी भाग 2]: मैं कहता हूँ: (1) हाँ, और अल्लाह के लिए हमेशा प्रशंसा है। अल्लाह की अनुमति से हर इबादत के माध्यम से पाप दूर हो जाते हैं, यह उसकी ओर से दया है—उसकी कृपा महान है—इस धन्य और दयालु उम्मत (समुदाय) पर दुनिया और आख़िरत में, उसके नेक, दयालु और कृपालु पैगंबर के माध्यम से, जिन्हें दया के रूप में भेजा गया और वरदान के रूप में प्रदान किया गया। उनके प्रभु की सर्वश्रेष्ठ प्रार्थनाएं सबसे सुंदर अभिवादन, सबसे शुद्ध आशीर्वाद और सबसे स्थायी सलाम उन पर, उनके परिवार, उनके साथियों और उनकी उम्मत पर हमेशा हों। लेकिन किसी इबादत से [पापों का] दूर होना उस उपकरण (साधन) में परिवर्तन को अनिवार्य नहीं करता है जिसके द्वारा इसे किया गया था। हमें यह केवल शरिया द्वारा निर्दिष्ट विशिष्ट साधनों में ही पता है, जैसे ज़कात में धन और शुद्धता (तहारत) में पानी। यह ज़कात के बारे में पैगंबर (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के इस कथन पर आधारित है: "वास्तव में, वे लोगों की गंदगी हैं।" इसे अहमद और मुस्लिम ने अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत किया है।

[अरबी भाग 3]: और उनका यह कथन (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो): "जिसने वूज़ू (वज़ू) किया और उसे अच्छी तरह किया, उसके पाप उसके शरीर से निकल जाएंगे यहाँ तक कि उसके नाखूनों के नीचे से भी निकल जाएंगे।" इसे शैखैन (बुखारी और मुस्लिम) ने रिवायत किया है।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: ...जिसमें उसका खर्च किया जाना ही शरीअत का वांछित उद्देश्य हो। इस स्थिति में और जब पानी को ऐसी इबादत में खर्च किया गया हो जो शरीअत के अनुसार वांछित तो हो लेकिन पानी पर निर्भर न हो, तो क्या अंतर होगा? जबकि पानी में परिवर्तन पैदा करने वाली चीज़ उसकी ओर हिक्मी अपवित्रता (नजासत हुक्मिया) का आना है और पापों की अपवित्रता भी हिक्मी अपवित्रता ही है, जो हर इबादत से पूरी तरह या आंशिक रूप से धुल जाती है जैसा कि ईश्वरीय आदेश है: "बेशक नेकियाँ बुराइयों को खत्म कर देती हैं" (नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं। यह याद करने वालों के लिए एक नसीहत है क्योंकि यह सामान्य मांग है। -त)

मैं कहता हूँ हाँ, यह सच है कि अल्लाह की रहमत से हर इबादत से गुनाह खत्म हो जाते हैं..... लेकिन किसी इबादत की वजह से गुनाहों का खत्म होना इस बात की मांग नहीं करता कि वे सफाई के साधन (आला-ए-ततहीर) की ओर स्थानांतरित हो जाएं। यह बात केवल उसी साधन में है जिसे शरीअत ने निर्धारित किया है जैसे ज़कात में माल और पवित्रता में पानी, क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि ज़कात लोगों का मैल-कुचैल है। इसे अहमद और मुस्लिम ने अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीअ से रिवायत किया। और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसने अच्छी तरह वज़ू किया तो गुनाह उसके जिस्म से निकलेंगे यहाँ तक कि उसके नाखूनों के नीचे से निकलेंगे, इसे शैखैन ने अमीरुल मोमिनीन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब मुस्लिम या मोमिन बंदा वज़ू में अपना चेहरा धोता है तो उसके चेहरे से हर वो गुनाह निकल जाता है जिसकी तरफ उसने अपनी दोनों...

[पादलेख]: 1. अल-कुरान 11/114 2. सहीह मुस्लिम, रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ज़कात की हरामियत, कदीमी कुतुब खाना कराची 325/1 3. सहीह मुस्लिम, वज़ू के पानी के साथ गुनाहों का निकलना, कदीमी कुतुब खाना कराची 125/1

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی متن]: و انما المغیر تحول نجاسة حکمیۃ و منها نجاسة الآثام وھی تزول کلا او بعضا بکل قربة لعموم قولہ تعالیٰ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ أقول:(۱) نعم ولوجہ اللہ الحمد ابدا تزول الآثام باذن اللہ بکل قربة رحمة منه جلت آلاؤہ بهذه الامة المبارکة المرحومة دنیا واخری بنبیها الکریم الرؤوف الرحیم المرسل رحمة و المبعوث نعمة افضل صلوات ربه واجمل تسلیماته و ازکی برکاته و ادوم تحیاته علیه و علی اله و صحبه و امته ابدا ولکن الزوال بقربة لایوجب التحول الی آلتها التی اقیمت بها وما علمنا ذلک الا فی آلة عینها الشرع کالمال فی الزکوة و الماء فی الطهر لقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم فی الصدقات انما هی اوساخ الناس رواہ احمد و مسلم عن عبدالمطلب بن ربیعة رضی اللہ تعالیٰ عنه.
وقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم من توضأ فاحسن الوضوء خرجت خطایاہ من جسدہ حتی تخرج من تحت اظفارہ رواہ الشیخان

[اردو متن]: ہوا ہو کہ جس میں اس کا خرچ کیا جانا بعینہ مطلوب شرع ہو تو اس صورت میں اور جب پانی ایسی قربت میں خرچ کیا گیا ہو جو شرعاً مطلوب تو ہو مگر پانی پر موقوف نہ ہو کیا فرق ہوگا؟ جبکہ پانی میں تغیر پیدا کرنے والی چیز اس کی طرف نجاست حکمیہ کا آنا ہے اور گناہوں کی نجاست بھی نجاست حکمیہ ہی ہے، جو کُلاً یا بعضاً ہر قربت سے دُھل جاتی ہے جیسا کہ فرمانِ الٰہی "اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ" (نیکیاں برائیوں کو ختم کردیتی ہیں یہ ذاکرین کیلئے نصیحت ہے کہ عموم کا تقاضا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں ہاں یہ درست ہے گناہ ہر عبادت سے اللہ کی رحمت سے زائل ہوجاتے ہیں ..... مگر گناہوں کا کسی قربت کی وجہ سے زائل ہونا اس امر کا متقاضی نہیں کہ وہ آلہ تطہیر کی طرف منتقل ہوجائیں، یہ بات صرف اُسی آلہ میں ہے جس کو شریعت نے متعین کیا ہو جیسے زکوۃ میں مال اور طہارت میں پانی، کیونکہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد

ہے کہ زکوۃ لوگوں کا میل کچیل ہے، اس کو احمد و مسلم نے عبدالمطلب بن ربیعہ سے روایت کیا۔ اور حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جس نے اچھی طرح وضو کیا تو گناہ اُس کے جسم سے نکلیں گے یہاں تک کہ اُس کے ناخنوں کے نیچے سے نکلیں گے، اس کو شیخین نے امیر المومنین عثمان رضی اللہ عنہ سے روایت کیا، اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جب مسلم یا مومن بندہ وضو میں اپنا چہرہ دھوتا ہے تو اُس کے چہرہ سے ہر گناہ نکل جاتا ہے جس کی طرف اس نے اپنی دونوں

[حواشی]: 1 القرآن ۱۱۴/۱۱ 2 صحیح المسلم تحریم الزکوۃ علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۲۵/۱ 3 صحیح المسلم خروج الخطایا مع ماء الوضوء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۲۵/۱

Fatawa Razawiyya Volume II On the authority of the Commander of the Faithful, Uthman (may Allah be pleased with him), and the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'When a Muslim servant or believer performs ablution (wudu) and washes his face, every sin he looked at with his eyes leaves his face with the water or with the last drop of water. When he washes his hands, every sin his hands committed leaves with the water or with the last drop of water. When he washes his feet, every sin his feet walked toward leaves with the water or with the last drop of water, until he emerges purified from sins.' Narrated by Muslim from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). And there are many well-known hadiths with this meaning. (1) People of true observation—may Allah return their blessings upon us in this world and the hereafter—witness the water of ablution leaving people's limbs polluted with sins, colored with their ugly colors. From this, the Imam of the people of observation, Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), ruled that used water (ma-e-mustamal) is a major impurity (najis-e-ghaleeza) because he saw it tainted with those filths. So it was only proper for him to judge thus; how can a person reject something he sees with his own eyes? The Gnostic Imam, my master Abdul Wahhab al-Sha'rani (may his secret be sanctified), who was among the great Shafi'i scholars, stated in 'Mizan al-Shari'ah al-Kubra': 'I heard my master Ali al-Khawas (may Allah be pleased with him)—who was also a Shafi'i as will be mentioned—saying: "The perceptions of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) are so subtle that hardly anyone is aware of them except..."

...the people of spiritual unveiling (kashf) from among the great saints. He said: "Whenever Imam Abu Hanifa saw the water of the basin, he would recognize all the sins."

For this reason, he established three levels for water used by an accountable person (mukallaf): First: It is major impurity (najis-e-ghaleeza) because there is a possibility that the person committed a major sin. Second: Intermediate impurity (najis-e-mutawassit) because there is a possibility that the person committed a minor sin.

1 Sahih Muslim, the exit of sins with Wudu water, Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/125 Page 63 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2) अमीरुल मोमिनीन उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरवी है, और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान है: 'जब एक मुसलमान या मोमिन बंदा वज़ू करता है और अपना चेहरा धोता है, तो उसके चेहरे से वह हर गुनाह जो उसने अपनी आँखों से देखा था, पानी के साथ या पानी की आखिरी बूँद के साथ निकल जाता है। जब वह अपने हाथ धोता है, तो जो गुनाह उसके हाथों ने किए थे, वे पानी के साथ या पानी की आखिरी बूँद के साथ निकल जाते हैं। जब वह अपने पैर धोता है, तो उसके पैरों के गुनाह पानी के साथ या पानी की आखिरी बूँद के साथ निकल जाते हैं, यहाँ तक कि वह गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाता है।' इसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। और इस मफ़हूम की हदीसें बहुत मशहूर व मारूफ़ हैं। (1) और मुशाहिदा करने वाले (अहले कशफ़) अपनी आँखों से वज़ू के पानी से लोगों के गुनाहों को धुलता हुआ देखते हैं। अल्लाह तआला हमें दुनिया और आखिरत में उनकी बरकतों से नवाज़े। यही वजह है कि अहले शहूद के इमाम, अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया कि इस्तेमाल किया हुआ पानी (मा-ए-मुस्तअमल) नजासत-ए-मुग़ल्लिज़ा (बड़ी नापाकी) है, क्योंकि वे उस पानी को गुनाहों की गंदगी से सना हुआ देखते थे। ज़ाहिर है कि जब वे यह देख रहे थे, तो इसके अलावा और क्या हुक्म दे सकते थे? इंसान अपनी आँखों देखी बात का कैसे इनकार कर सकता है? आरिफ-बिल्लाह इमाम सैयदी अब्दुल वहाब अल-शर्रानी (क़द्दस सर्रहुल रब्बानी), जो बड़े शाफ़ई आलिम थे, उन्होंने 'मीज़ान अल-शरीअत अल-कुबरा' में फ़रमाया कि मैंने सैयदी अली अल-खवास (रज़ियल्लाहु अन्हु) को कहते सुना: 'इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मुशाहिदात इतने बारीक हैं कि उन पर सिर्फ बड़े दर्जे के कशफ़ वाले औलिया-अल्लाह ही आगाह हो सकते हैं।' वे कहते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा जब वज़ू में इस्तेमाल किया हुआ पानी देखते, तो उसमें मौजूद तमाम सगैरा (छोटे) और कबाईरा (बड़े) गुनाहों और मकरूहात को पहचान लेते थे।

...अहले कशफ़ और बड़े औलिया। उन्होंने कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा जब हौज़ का पानी देखते थे तो तमाम गुनाहों को पहचान लेते थे।

इसलिए, जिस पानी को किसी मुकल्लफ़ (उत्तरदायी व्यक्ति) ने इस्तेमाल किया हो, उसके लिए आपने तीन दर्जे मुक़र्रर फरमाए: अव्वल: वह नजासत-ए-मुग़ल्लिज़ा है क्योंकि इस बात का एहतिमाल (संभावना) है कि मुकल्लफ़ ने गुनाह-ए-कबीरा किया हो। दोम: नजासत-ए-मुतवस्सित (मध्यम नापाकी) क्योंकि यह एहतिमाल है कि मुकल्लफ़ ने गुनाह-ए-सगीरा किया हो।

1 सहीह मुस्लिम, वज़ू के पानी के साथ गुनाहों का निकलना, क़दीमी कुतुब खाना करा1/125 چی
पेज 63 ऑफ़ 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی عن امیر المومنین عثمان رضی اللہ تعالٰی عنہ ، وقولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اذا توضأ العبد المسلم اوالمؤمن فغسل وجھہ خرج من وجھہ کل خطیئۃ نظر الیھا بعینیہ مع الماء اومع آخر قطر الماء فاذا غسل یدیہ خرج من یدیہ کل خطیئۃ کان بطشتھا یداہ مع الماء اومع آخر قطر الماء فاذا غسل رجلیہ خرج کل خطیئۃ مشتھا رجلاہ مع الماء اومع آخر قطر الماء حتی یخرج نقیًا من الذنوب 1 رواہ مسلم عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ آنکھوں سے دیکھا ہو پانی کے ساتھ یا آخری قطرہ کے ساتھ، جب وہ اپنے دونوں ہاتھ دھوتا ہے تو جو گناہ اس نے اپنے ہاتھوں سے کئے وہ پانی کے ساتھ یا پانی کے آخری قطرہ کے ساتھ نکل جاتے ہیں اور جب وہ اپنے پیر دھوتا ہے تو اس کے پیروں کے گناہ پانی کے ساتھ یا پانی کے آخری قطرہ کے ساتھ نکل جاتے ہیں یہاں تک کہ وہ گناہوں سے پاک وصاف ہو جاتا ہے۔ اس کو مسلم نے ابوہریرہ سے روایت کیا۔ اور اس مفہوم کی احادیث بکثرت مشہور و معروف ہیں، اور اصحابِ مشاہدہ اپنی آنکھوں سے وضو کے پانی سے لوگوں کے گناہوں کو دھلتا ہوا دیکھتے ہیں، اور یہی وجہ ہے کہ اہل شہود کے امام ابو حنیفہ نے فرمایا کہ مستعمل پانی نجاستِ مغلظہ ہے کیونکہ وہ اس پانی کو گندگیوں میں ملوث دیکھتے تھے، تو ظاہر ہے کہ وہ دیکھتے ہوئے، اس کے علاوہ اور کیا حکم لگا سکتے تھے۔ امام شعرانی نے میزان الشریعۃ الکبرٰی میں فرمایا کہ میں نے سیدی علی الخواص (جو بڑے شافعی عالم تھے) کو فرماتے سنا ہے کہ امام ابو حنیفہ کے مشاہدات اتنے دقیق ہیں جن پر بڑے بڑے صاحبانِ کشف اولیاء اللہ ہی مطلع ہو سکتے ہیں، فرماتے ہیں امام ابوحنیفہ جب وضو میں استعمال شدہ پانی دیکھتے تو اس میں جتنے صغائر و کبائر مکروہات ہوتے ان کو پہچان لیتے تھے، اس لئے جس پانی کو مکلف نے استعمال کیا ہو اس کے تین درجات آپ نے مقرر فرمائے:

والاحاديث كثير شهير فى هذا المعنى و (١) اصحاب المشاهدة الحقة اعاد الله علينا من بركاتهم فى الدنيا والأخرة يشاهدون ماء الوضوء يخرج من اعضاء الناس متلوثاً بالآثام متلوناً بالوانها البشعة وعن هذا حكم امام اهل الشهود ابو حنيفة رضى الله تعالىٰ عنہ ان الماء المستعمل نجاسة مغلظة لانه كان يراه متلطخاً بتلك القاذورات فما كان يسعہ الا الحكم بهذا وكيف يرد الانسان امرا يراه بالعيان قالا الامام العارف بالله سيدى عبدالوہاب الشعرانى قدس سره الربانى وكان من كبار العلماء الشافعية فى ميزان الشريعة الكبرى سمعت سيدى عليا الخواص رضى الله تعالىٰ عنہ (وكان ايضا شافعيا كما سيأتى) (٢) يقول مدارك الامام ابى حنيفة رضى الله الله تعالىٰ عنہ دقيقة لايكاد يطلع عليہا الا

اہل الكشف من اكابر الاولياء قال وكان الامام ابو حنيفہ اذ رأى ماء الميضأة يعرف سائر الذنوب اول: وہ نجاستِ مغلظہ ہے كيونكہ اس امر كا احتمال ہے كہ مكلف نے گناہ كبيرہ كا ارتكاب كيا ہو۔ دوم: نجاستِ متوسط اس لئے كہ احتمال ہے كہ مكلف نے صغيرہ كا ارتكاب كيا ہو۔

1 صحيح المسلم خروج الخطاء مع ماء الوضوء قديمى كتب خانہ كراچى ١٢٥/١ Page 63 of 711

Fatawa Rizvia Volume 2

...which fall into it from major sins, minor sins, and disliked acts. Therefore, the water of purification, when used by a person for purification, has three states: First: It is like heavy impurity (Najasat-e-Mughallazah), due to the possibility that the person committed a major sin. Second: It is like medium impurity (Najasat-e-Mutawassitah), due to the possibility that the person committed a minor sin. Third: It is pure but not purifying (Tahir Ghayr Mutahhir), due to the possibility that the person committed a disliked act (Makruh). A group of his followers understood these three to be different opinions for a single situation, whereas the fact is that these three states are according to the categories of sins, as we have mentioned. End. And in the same book, it is mentioned: May Allah be pleased with Imam Abu Hanifa and have mercy on his companions, as they divided impurity into heavy (Mughallazah) and light (Mukhaffafah), because sins are either major or minor. And I heard Sayyidi Ali al-Khawwas (may Allah Almighty have mercy on him) saying that if a person were granted spiritual unveiling (Kashf), he would see the water people use for purification as extremely filthy and foul-smelling. His soul would not find comfort in using it, just as it does not find comfort in using a small amount of water in which a dog or a cat has died. I said to him, "From this, it is known that Abu Hanifa and Abu Yusuf were people of spiritual unveiling (Ahl-e-Kashf) because they held the opinion of the impurity of used water." He said, "Yes, Abu Hanifa and his companion were great people of spiritual unveiling. When they would see the water used by people for ablution (Wudu), they would recognize the sins falling into the water and distinguish the washings of major sins from the washings of minor sins..."

---

1 Al-Mizan al-Kubra, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/109 2 Al-Mizan al-Kubra, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/108

फ़तवा रज़विया जिल्द 2

...जो उसमें बड़े पापों (कबायर), छोटे पापों (स़ग़ायर) और मकरूहात (नापसंद कार्यों) से गिरते हैं। इसलिए, शुद्धिकरण का पानी जब किसी व्यक्ति द्वारा शुद्धिकरण के लिए उपयोग किया जाता है, तो उसकी तीन स्थितियाँ होती हैं: पहला: यह भारी अशुद्धि (नजासत-ए-मुग़ल्लज़ह) की तरह है, इस संभावना के कारण कि व्यक्ति ने कोई बड़ा पाप किया हो। दूसरा: यह मध्यम अशुद्धि (नजासत-ए-मुतवस्सि़तह) की तरह है, इस संभावना के कारण कि व्यक्ति ने कोई छोटा पाप किया हो। तीसरा: यह शुद्ध है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है (ताहिर ग़ैर मुत़ह्हिर), इस संभावना के कारण कि व्यक्ति ने कोई नापसंद कार्य किया हो। उनके अनुयायियों के एक समूह ने समझा कि ये तीन एक ही स्थिति के लिए अलग-अलग राय हैं, जबकि तथ्य यह है कि ये तीन राय पापों की श्रेणियों के अनुसार हैं, जैसा कि हमने उल्लेख किया है। समाप्त। और इसी किताब में है: इमाम अबू हनीफ़ा से अल्लाह प्रसन्न हो और उनके साथियों पर दया करे, क्योंकि उन्होंने अशुद्धि को भारी (मुग़ल्लज़ह) और हल्की (मुख़फ़्फ़फ़ह) में विभाजित किया है, क्योंकि पाप या तो बड़े होंगे या छोटे। और मैंने सैय्यदी अली अल-ख़व्वास (अल्लाह उन पर दया करे) को कहते सुना कि अगर किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक अनावरण (कश्फ़) प्राप्त हो जाए, तो वह उस पानी को जिसे लोग शुद्धिकरण के लिए उपयोग करते हैं, अत्यंत गंदा और दुर्गंधयुक्त देखेगा। उसका मन इसके उपयोग में सहज महसूस नहीं करेगा, ठीक वैसे ही जैसे वह उस कम पानी के उपयोग में सहज महसूस नहीं करता जिसमें कुत्ता या बिल्ली मर गई हो। मैंने उनसे कहा, "इससे पता चलता है कि अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ आध्यात्मिक अनावरण वाले (अहल-ए-कश्फ़) लोग थे क्योंकि वे प्रयुक्त जल (मुस्तअमल पानी) की अशुद्धि के कायल थे।" उन्होंने कहा, "हाँ, अबू हनीफ़ा और उनके साथी बड़े आध्यात्मिक अनावरण वाले थे। जब वे उस पानी को देखते थे जिसे लोगों ने वज़ू में इस्तेमाल किया होता था, तो वे पानी में गिरते हुए पापों को पहचान लेते थे और बड़े पापों के धुलने को छोटे पापों के धुलने से अलग..."

---

1 अल-मीज़ान अल-कुबरा, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/109 2 अल-मीज़ान अल-कुबरा, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/108

التی خرت فیہ من کبائر وصغائر ومکروہات فلہذا جعل ماء الطھارۃ اذا تطھر بہ المکلف لہ ثلثۃ احوال احدھا انہ کالنجاسۃ المغلظۃ لاحتمال ان یکون المکلف ارتکب کبیرۃ الثاني کالنجاسۃ المتوسطۃ لاحتمال ان یکون ارتکب صغیرۃ الثالث طاھر غیر مطھر لاحتمال ان یکون ارتکب مکروہا وفہم جماعۃ من مقلدیہ ان ھذہ الثلثۃ اقوال فی حال واحد والحال انہا فی احوال بحسب حصر الذنوب فی ثلثۃ اقسام کما ذکرنا اھ وفیہ ایضا رضی اللہ عن الامام ابی حنیفۃ و رحم اصحابہ حیث قسموا النجاسۃ الی مغلظۃ و مخففۃ لان المعاصی لا تخرج عن کونھا کبائر او صغائر وسعت سیدی علیا الخواص رحمہ اللہ تعالی لو کشف للعبد لرأی الماء الذی یتطھر منہ الناس فی غایۃ القذارۃ والنتن فکانت نفسہ لا تطیب باستعمالہ کمالا تطیب باستعمال ماء قلیل مات فیہ کلب او ھرۃ قلت لہ فاذن(۱) کان الامام ابو حنیفۃ وابو یوسف من اھل الکشف حیث قالا بنجاسۃ الماء المستعمل قال نعم کان ابو حنیفۃ وصاحبہ

سوم: طاہر غیر مطہر، کیونکہ احتمال ہے کہ اس نے مکروہ کا ارتکاب کیا ہو، ان کے بعض مقلدین سمجھ بیٹھے کہ یہ ابو حنیفہ کے تین اقوال ہیں ایک ہی حالت میں، حالانکہ امر واقعہ یہ ہے کہ یہ تین اقوال گناہوں کی اقسام کے اعتبار سے ہیں جیسا کہ ہم نے ذکر کیا اھ اور اسی کتاب میں ہے کہ امام ابو حنیفہ اور ان کے اصحاب نے نجاست کو مغلظہ اور مخففہ میں تقسیم کیا ہے، کیونکہ معاصی، کبائر ہوں گے یا صغائر۔ اور میں نے سیدی علی الخواص کو فرماتے سنا کہ اگر انسان پر کشف ہو جائے وہ طہارت میں استعمال کئے جانے والے پانی کو انتہائی گندہ اور بدبودار دیکھے گا اور وہ اس پانی کو اسی طرح استعمال نہ کر سکے گا جیسے اُس پانی کو استعمال نہیں کرتا ہے جس میں کتا بلی مرگئی ہو میں نے اُن سے کہا اس سے معلوم ہوا کہ ابو حنیفہ اور ابو یوسف اہل کشف سے تھے کیونکہ یہ مستعمل کی نجاست کے قائل تھے، تو انہوں نے کہا جی ہاں۔ ابو حنیفہ

اور ان کے صاحب بڑے اہل کشف تھے ، جب وہ اُس پانی کو دیکھتے جس کو لوگوں نے وضو میں استعمال کیا ہوتا تو وہ پانی میں گرتے ہوئے گناہوں کو پہچان لیتے تھے اور کبائر کے دھوون کو صغائر کے دھوون سے الگ

---

1 المیزان الکبری کتاب الطہارۃ مصطفی البابی مصر ۱/۱۰۹ 2 المیزان الکبری کتاب الطہارۃ مصطفی البابی مصر ۱/۱۰۸

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[The page contains Arabic text on the left and its Urdu translation on the right.]

...[one] of the greatest people of spiritual insight (kashf). When he saw the water with which people performed ablution, he would recognize the specific sins that had come out into the water. He could distinguish the wash-off of major sins from minor ones, minor ones from disliked acts (makruhat), and disliked acts from what is against the ideal (khilaf al-awla), just as physical objects are tangibly distinct from one another. It is related to us that once he entered the washroom of the Grand Mosque of Kufa and saw a young man performing ablution. Looking at the water dripping from him, he said, "O my son! Repent for disobeying your parents." The young man replied, "I repent to Allah for that." He saw the wash-off of another person and said, "O my brother! Repent from adultery." He said, "I repent." He saw the wash-off of another and said, "Repent from drinking alcohol and listening to musical instruments." He said, "I repent." [End of quote]. It is also mentioned therein regarding some followers of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) that they prohibited performing ablution from the water of washrooms where the water is not flowing, because the sins of those performing ablution wash into it. They commanded their followers to perform ablution from rivers, wells, or large ponds. Sidi Ali al-Khawwas (may Allah have mercy on him), despite being of the Shafi'i school, most of the time did not perform ablution in the washrooms of mosques. He would say that the water in these washrooms does not refresh bodies like ours because it is polluted with the sins that have washed into it. He could distinguish between the wash-offs of various sins and recognize the wash-off of forbidden acts from disliked ones and from those against the ideal.

---

1 Al-Mizan al-Kubra, Book of Purity, Mustafa al-Babi, Egypt 1/109.

Page 65 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

[पृष्ठ के बाईं ओर अरबी पाठ है और दाईं ओर उसका उर्दू अनुवाद है।]

...आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (कश्फ़) रखने वाले महान लोगों में से [एक] थे। जब वे उस पानी को देखते थे जिससे लोग वज़ू (शुद्धि) करते थे, तो वे पानी में निकले उन विशिष्ट पापों को पहचान लेते थे। वे बड़े पापों के धुलने के निशान को छोटे पापों से, छोटे पापों को नापसंद कार्यों (मकरूहात) से, और नापसंद कार्यों को आदर्श के विपरीत (ख़िलाफ़ अल-औला) कार्यों से अलग पहचान सकते थे, ठीक वैसे ही जैसे भौतिक वस्तुएं एक-दूसरे से अलग पहचानी जाती हैं। हमें यह रिवायत मिली है कि एक बार आप जामा कूफ़ा के वज़ू खाने में दाखिल हुए, तो देखा कि एक युवक वज़ू कर रहा है, और पानी की बूंदें उससे टपक रही हैं। आपने फ़रमाया, "ऐ मेरे बेटे! माता-पिता की नाफ़रमानी से तौबा कर।" उसने तुरंत कहा, "मैंने अल्लाह से उसके लिए तौबा की।" आपने दूसरे व्यक्ति के वज़ू के पानी को देखा तो फ़रमाया, "ऐ मेरे भाई! व्यभिचार से तौबा कर।" उसने कहा, "मैंने तौबा की।" आपने एक और व्यक्ति के वज़ू का पानी गिरता देखा तो उससे फ़रमाया, "शराब पीने और अश्लील गाने-बजाने से तौबा कर।" उसने कहा, "मैंने तौबा की।" [उद्धरण समाप्त]। इसी में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के कुछ अनुयायियों से वर्णित है कि उन्होंने उन वज़ू खानों के पानी से वज़ू करने से मना किया जिनमें पानी बहता न हो, क्योंकि उनमें वज़ू करने वालों के पाप बहते हैं। उन्होंने हुक्म दिया कि वे नहरों, कुओं और बड़े तालाबों के पानी से वज़ू करें। और सिदी अली अल-ख़व्वास (रह.) शाफ़ई मज़हब होने के बावजूद मस्जिदों के वज़ू खानों में अक्सर वज़ू नहीं करते थे और फ़रमाते थे कि यह पानी हम जैसे लोगों के शरीरों को साफ़ नहीं करता है क्योंकि यह उन पापों से दूषित है जो इसमें मिल गए हैं। वे विभिन्न पापों के धुलने के बीच अंतर कर सकते थे और हराम (वर्जित) के धुलने को मकरूह और आदर्श के विपरीत वाले से पहचान लेते थे।

---

1 अल-मीज़ान अल-कुबरा, किताबुल तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/109।

पृष्ठ 65 का 711

(Arabic Text) من اعظم اهل الكشف فكان اذا رأى الماء الذى يتوضأ منه الناس يعرف اعيان تلك الخطايا التى خرجت فى الماء ويميز غسالة الكبائر عن الصغائر والصغائر عن المكروهات والمكروهات عن خلاف الاولى كالامور المجسدة حسا على حد سواء قال وقد بلغنا انه دخل مطهرة جامع الكوفة فرأى شاباً يتوضأ فنظر فى الماء المتقاطر منه فقال يا ولدى تب عن عقوق الوالدين فقال تبت الى الله عن ذلك ورأى غسالة شخص اخر فقال له يا اخى تب من الزنا فقال تبت ورأى غسالة اخر فقال تب من شرب الخمر وسماع آلات اللهو فقال تبت اه وفيه ايضا رحمه الله تعالى مقلدى الامام ابى حنيفة رضى الله تعالى عنه حيث منعوا الطهارة من ماء المطاهر التى لم تستجر لما يخر فيها من خطايا المتوضئين وامروا اتباعهم بالوضوء من الانهار والآبار او البرك الكبيرة وكان سيدى على الخواص رحمه الله تعالى مع كونه شافعيا لا يتوضأ من مطاهر المساجد فى اكثر اوقاته ويقول ان ماء هذه المطاهر لا ينعش جسد امثالنا لتقذرها بالخطايا التى خرجت فيها وكان يميز بين غسالات الذنوب ويعرف غسالة الحرام من المكروه من خلاف الاولى

(Urdu Column) ممتاز کر سکتے تھے، اور صغائر کے دھوون کو مکروہات سے اور مکروہات کے دھوون کو خلاف اولیٰ سے ممتاز کر سکتے تھے اسی طرح جیسے محسوس اشیاء ایک دوسرے سے الگ ممتاز ہوا کرتی ہیں، فرمایا کہ ہمیں یہ روایت پہنچی ہے کہ ایک مرتبہ آپ جامع کوفہ کے طہارت خانہ میں داخل ہوئے، تو دیکھا کہ ایک جوان وضو کر رہا ہے، اور پانی کے قطرات اُس سے ٹپک رہے ہیں تو فرمایا اے میرے بیٹے! والدین کی نافرمانی سے توبہ کر۔ اس نے فوراً کہا میں نے توبہ کی۔ ایک دوسرے شخص کے پانی کے قطرات دیکھے تو فرمایا اے میرے بھائی! زنا سے توبہ کر۔ اس نے کہا میں نے توبہ کی۔ ایک اور شخص کے وضو کا پانی

گرتا ہوا دیکھا تو اُس سے فرمایا شراب نوشی اور فحش گانے بجانے سے توبہ کر۔ اس نے کہا میں نے توبہ کی اھ اسی میں حضرت امام ابو حنیفہ کے بعض مقلدین سے مروی ہے کہ انہوں نے اُن وضو خانوں کے پانی سے وضو کو منع کیا ہے جن میں پانی جاری نہ ہو کیونکہ اُس میں وضو کرنے والوں کے گناہ بہتے ہیں، اور انہوں نے حکم دیا کہ وہ نہروں کنوؤں اور بڑے حوضوں کے پانی سے وضو کریں۔ اور سیدی علی الخواص باوجود شافعی المذہب ہونے کے مساجد کے طہارت خانوں میں اکثر اوقات وضو نہیں کرتے تھے اور فرماتے تھے کہ یہ پانی ہم جیسے لوگوں کے جسموں کو صاف نہیں کرتا ہے کیونکہ یہ اُن گناہوں سے آلودہ ہے جو اس میں مل گئے ہیں، اور وہ گناہوں کے دھوون میں

---

1 المیزان الکبری الطہارۃ مصطفی البابی مصر ۱۰۹/۱

Fatawa Razawiya - Volume Two

[Translation of the page content]: He used to make this distinction as well, whether something was forbidden (haram), disliked (makruh), or against the better way (khilaf-e-awla). One day, I entered the ablution area of the Al-Azhar Madrasa with him. He intended to perform istinja (cleansing) from the tank, but after looking at it, he turned back. I asked why. He replied, "I saw in it the washings of a major sin which has changed its state at this time." I had also seen the person who entered the ablution area before the Sheikh and then left. I followed him and informed him of what the Sheikh had said. He confirmed it, saying, "Adultery has been committed by me," and he came to the Sheikh and repented. This is an incident I witnessed from the Sheikh. This has all been quoted here for its great benefit and significant lesson. What you have designated as an instrument for closeness (to God) is not in the sense that the Legislator (Shariah) has specified, so it should not be associated with it.

I say: Rather, the evidence stands for non-association. Do you not see that quenching the thirst of the thirsty is a definitely required act of closeness? And it has been specifically mentioned in this regard that it is an eraser of sins. Al-Khatib narrated from Anas bin Malik (may Allah Almighty be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) said: "When your sins become numerous, serve water upon water (repeatedly), for then your sins will fall away just as leaves fall from a tree in a violent wind." So, when you have drawn water for him from a well or poured it from a vessel and given it to him, you have performed an act of closeness through it.

[Footnotes]: 1. Al-Mizan al-Kubra, Book of Purification, Mustafa al-Babi Egypt, 1/110. 2. Tarikh Baghdad on the authority of Anas, Beirut, 6/204.

Page 66 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

[पृष्ठ सामग्री का अनुवाद]: वह यह फर्क भी कर लेते थे कि यह हराम का है या मकरूह का या खिलाफ-ए-औला (बेहतर के खिलाफ) का। एक दिन मैं उनके साथ मदरसा अल-अज़हर के वज़ू खाने में दाखिल हुआ। उन्होंने हौज से इस्तंजा (शौच के बाद की सफाई) करने का इरादा किया, लेकिन उसे देखकर लौट आए। मैंने दरियाफ्त किया कि क्यों? तो फ़रमाया, "मैंने इसमें एक बड़े गुनाह (गुनाह-ए-कबीरा) का धोवन देखा है जिसने इस वक़्त इसे बदल दिया है।" मैंने उस शख्स को भी देखा था जो हज़रत शेख से पहले वज़ू खाने में दाखिल हुआ था। फिर मैं उसके पीछे-पीछे गया और उसे वह बात बताई जो हज़रत शेख ने कही थी। उसने तस्दीक की और कहा, "मुझसे ज़िना (व्यभिचार) वाक़े हुआ है," और वह हज़रत शेख के हाथ पर आकर ताइब (पश्चाताप करने वाला) हुआ। यह मेरा अपना मुशाहदा (अवलोकन) है। यह सब इसके अज़ीम फायदे के लिए यहाँ ज़िक्र किया गया है। और जिसे आपने कुर्बत (ईश्वर से निकटता का साधन) का आला (यंत्र) करार दिया है, वह उस मायने में नहीं है जिसे शारै (कानून निर्माता) ने मुअय्यन (निर्धारित) किया है, इसलिए इसे उसके साथ लाहिक (संबद्ध) न किया जाए।

मैं कहता हूँ: बल्कि दलील (तर्क) अदम-ए-इल्तिहाक (जुड़ाव न होने) पर कायम है। क्या आप नहीं देखते कि प्यासे को सैराब करना कुर्बत-ए-मतलूबा (वांछित पुण्य कार्य) है? और इस बारे में खासतौर पर वारिद हुआ है कि यह गुनाहों का मिटाने वाला है। खतीब अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रावी हैं, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "जब तेरे गुनाह ज़्यादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला, तो तेरे गुनाह इस तरह झड़ जाएंगे जिस तरह तेज़ हवा से पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं।" तो जब तूने उसके लिए कुएं से पानी निकाला या बर्तन से उड़ेला और उसे दिया, तो तूने इसके ज़रिए एक कुर्बत (पुण्य कार्य) कायम की।

[पादलेख]: 1. अल-मीज़ान अल-कुबरा, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/110. 2. तारीख़ बगदाद, अनस के हवाले से, बेरूत, 6/204.

पेज 66/711

ودخلت معه مرة میضأة المدرسة الازھریة فاراد ان یستنجي من المغطس فنظر ورجع فقلت لم قال رایت فیه غسالة ذنب کبیر غیرته في ھذا الوقت وکنت انارأیت الذي دخل قبل الشیخ وخرج فتبعته فأخبرته الخبر فقال صدق الشیخ قد وقعت في زنا ثم جاء الی الشیخ وتاب ھذا امر شاھد ته من الشیخ اھـ کله ملتقطاً وسقته ھھنا لجمیل فائدته وجلیل عائدته ولیس ماعینته انت آلة لقربة في معنی ماعینه الشارع فلا یلتحق۔

یہ فرق بھی کر لیتے تھے کہ یہ حرام کا ہے یا مکروہ کا یا خلاف اولیٰ کا، اور ایک دن میں ان کے ساتھ مدرسۃ الازھر کے وضو خانہ میں داخل ہوا تو انہوں نے ارادہ کیا کہ حوض سے استنجا کریں ، تو اس کو دیکھ کر لوٹ آئے میں نے دریافت کیا کیوں؟ تو فرمایا کہ میں نے اس میں ایک گناہ کبیرہ کا دھوون دیکھا ہے جس نے اس کو متغیر کردیا ہے، اور میں نے اُس شخص کو بھی دیکھا تھا جو حضرت شیخ سے قبل وضو خانہ میں داخل ہوا تھا، پھر میں اُس کے پیچھے پیچھے گیا اور اُس کو حضرت شیخ نے جو کہا تھا اس کی خبر دی ، اُس نے تصدیق کی اور کہا کہ مجھ سے زنا واقع ہوا ، اور حضرت شیخ کے ہاتھ پر آکر تائب ہوا۔ یہ میرا اپنا مشاہدہ ہے اہ یہ سب ماخوذ ہے اس کے عظیم فائدہ کیلئے میں نے اس کو ذکر کیا ہے، اور جس کو آپ نے قربت کا آلہ قرار دیا ہے وہ اس معنی میں نہیں ہے جس کو شارع نے معین کیا ہے تو یہ اس کے ساتھ لاحق نہ کیا جائے۔

اقول: بل الدلیل ناھض علی عدم الالتحاق الاتری ان ارواء الظمآن قربة مطلوبة قطعا وقد (۱)ورد فیه خصوصا انه محاء للذنوب اخرج الخطیب عن انس بن مالك رضی الله تعالی عنه عن النبي صلی الله

تعالی علیه وسلم اذا کثرت ذنوبك فاسق الماء علی الماء تتناثر کما یتناثر الورق من الشجر في الریح العاصف اهـ فاذا استقیت له الماء من بئر اوسکبت من اناء واعطیته ایاه فقد اقمت به قربة

میں کہتا ہوں بلکہ دلیل عدم التحاق پر قائم ہے کیا یہ نہیں کہ پیاسے کو سیراب کرنا قربة مطلوبہ ہے ، اور اس بارے میں بطور خاص وارد ہوا کہ یہ گناہوں کا مٹانے والا ہے۔ خطیب انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں جب تیرے گناہ زیادہ ہو جائیں تو تو پانی پر پانی پلا تو تیرے گناہ اس طرح جھڑ جائیں گے جس طرح تیز ہوا سے پیڑ کے پتے جھڑ جاتے ہیں اهـ تو جب تُو نے اس کو

1 المیزان الکبری کتاب الطهارة مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۱۰ 2 تاریخ بغداد عن انس بیروت ۶ / ۲۰۴

Fatawa Razvia Volume II

[Arabic Section]: If the impurity of sins were transferred to it, it would become impure and forbidden to drink according to the Imam, and filthy by consensus, making it disliked to drink. Thus, kindness would turn into ill-treatment, and the act of seeking nearness [to God] would negate itself, which is void by consensus. This is only because the Sharia merely required you to prepare for him what quenches his thirst, and did not specify the water particularly such that no other would suffice. Rather, if you gave him pure milk to drink, or mixed with water, or rose water, or a julep with ice, even if it were screwpine [Kewra] water and the like, it would be even more excellent and better, and you would have fulfilled the act of seeking nearness and even more. And Allah loves those who do good. And this has strongly reinforced the foundations of what we aimed for in the issue of pots and bowls. This is all that has appeared to me, and I hope that the matter has become clear and the veil removed. And praise be to Allah, Lord of the worlds.

Note (2): Most books, in explaining the first part of 'used water' (al-ma' al-musta'mal), use the expression: 'water used in removing a state of ritual impurity' (hadath). Upon this are the main texts (mutun) such as al-Quduri, al-Hidayah, al-Wiqayah, al-Nuqayah, al-Islah, al-Kanz, al-Ghurar, and al-Multaqa. The Absolute Researcher (al-Muhaqqiq al-al-Itlaq) objected to them in 'al-Fath' stating that the occurrence of ritual impurity does not partition itself, as per the correct and relied-upon view. Therefore, as long as part of the body...

[Urdu Section]: Volume II ...quenched his thirst with well water or poured it from a vessel and gave it to him, you fulfilled an act of seeking nearness through him. Now, if the impurity of sins were transferred to it, it would become impure, and according to the Imam, drinking it would be forbidden, and by consensus, it would be filthy and drinking it would be disliked. Thus, a good deed would turn into a sin, and the act of seeking nearness would negate itself. This is void by consensus. This is simply because Sharia has demanded of you to prepare for him that which quenches his thirst, and has not specified any particular water such that it wouldn't suffice without it. Rather, if you give him pure milk, milk mixed with water, rose water, or a chilled syrup, even if it is screwpine [Kewra] flavored, it would be better. Your act of seeking nearness would be fulfilled and even more. And Allah loves the doers of good. Our discourse further supports the issue regarding pots and bowls. This has become apparent to me, and I hope the matter has become clear through this. And praise be to Allah, Lord of the worlds. — t

Note: In explaining the first part of 'used water', common books state that it is water used in removing ritual impurity. This is what is found in standard texts, for example: Quduri, Hidayah, Wiqayah, Nuqayah, Islah, Kanz, Ghurar, and Multaqa, etc. The Absolute Researcher in Fath [al-Qadir] objected to them, saying that in the establishment of ritual impurity, there is no partitioning, i.e., according to the correct relied-upon view. So, until [a part of] the body...

Footnote: 1 Fath al-Qadir, section on 'Used Water', Nooriyah Razvia Sukkur, 1/291.

फतावा रज़विया खंड II

[अरबी खंड]: यदि पापों की अशुद्धि इसमें स्थानांतरित हो जाती, तो यह अशुद्ध हो जाता और इमाम के अनुसार इसे पीना हराम होता, और आम सहमति (इज्मा) के अनुसार यह गंदा होता और इसे पीना मकरूह होता। इस प्रकार, उपकार बुराई में बदल जाता और सामीप्य (क़ुर्बत) का कार्य स्वयं का खंडन बन जाता, जो आम सहमति से अमान्य है। यह केवल इसलिए है क्योंकि शरीयत ने केवल आपसे यह अपेक्षा की है कि आप उसके लिए वह तैयार करें जो उसकी प्यास बुझाए, और विशेष रूप से पानी को निर्दिष्ट नहीं किया है कि उसके बिना काम न चले। बल्कि, यदि आप उसे शुद्ध दूध पिलाते, या पानी मिला हुआ दूध, या गुलाब जल, या बर्फ वाला शरबत, चाहे वह केवड़े वाला ही क्यों न हो, तो यह और भी उत्कृष्ट और बेहतर होता, और आपने सामीप्य का कार्य पूरा किया होता और कुछ अधिक भी। और अल्लाह उपकार करने वालों को पसंद करता है। और इसने बर्तनों और प्यालों के मामले में हमारे उद्देश्य की नींव को दृढ़ता से पुष्ट किया है। यह सब मुझे स्पष्ट हुआ है, और मुझे आशा है कि मामला स्पष्ट हो गया है और परदा हट गया है। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है।

नोट (2): 'प्रयुक्त जल' (अल-मा अल-मुस्तअमल) के पहले भाग की व्याख्या में अधिकांश पुस्तकें इस अभिव्यक्ति का उपयोग करती हैं: 'अनुष्ठानिक अशुद्धि' (हदस) को दूर करने में उपयोग किया गया जल। इसी पर प्रमुख ग्रंथ (मुतून) आधारित हैं जैसे अल-क़ुदूरी, अल-हिदाया, अल-विक़ाया, अल-नुक़ाया, अल-इस्लाह, अल-कन्ज़, अल-ग़ुरर और अल-मुल्तका। 'अल-फ़तह' में पूर्ण शोधकर्ता (अल-मुहक़्क़िक़ अल-इतलाक़) ने उन पर यह आपत्ति जताई कि अनुष्ठानिक अशुद्धि के होने में विभाजन नहीं होता है, सही और विश्वसनीय मत के अनुसार। इसलिए, जब तक शरीर का [कोई हिस्सा]...

[उर्दू खंड]: खंड II ...कुएं के पानी से प्यास बुझाई या किसी बर्तन से उड़ेल कर उसे दिया, तो आपने उसके साथ सामीप्य (क़ुर्बत) का कार्य स्थापित किया। अब, यदि पापों की अशुद्धि उसकी ओर स्थानांतरित हो जाए तो वह अशुद्ध (नजिस) हो जाएगा और इमाम के निकट उसका पीना हराम होगा, और आम सहमति से गंदा होगा और उसका पीना मकरूह होगा। तो उपकार पाप बन जाएगा और सामीप्य स्वयं का खंडन बन जाएगा। यह आम सहमति से शून्य है। यह केवल इस कारण से है कि शरीयत ने आपसे यह मांग की है कि आप उसके लिए वह तैयार करें जो उसे तृप्त कर दे, और इसके लिए किसी पानी को विशिष्ट नहीं किया है कि उसके बिना पर्याप्त न हो। बल्कि यदि आप उसे शुद्ध दूध, पानी मिला दूध, अर्कए-गुलाब या बर्फ वाला शरबत दें चाहे वह केवड़े वाला हो, तो वह अधिक

बेहतर होगा। आपका सामीप्य का कार्य पूरा हो गया और कुछ अधिक भी। और अल्लाह उपकार करने वालों को पसंद करता है। और हमारे इस विवरण से हांडियों और प्यालों वाले मामले की और अधिक पुष्टि होती है। यह मेरे लिए स्पष्ट हुआ है और मुझे आशा है कि इससे मामला स्पष्ट हो गया है। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। — त

नोट: प्रयुक्त जल के पहले भाग के विवरण में आम किताबों में यही है कि यह वह पानी है जो हदस (अशुद्धि) दूर करने में उपयोग हुआ हो। ग्रंथों में यही है, जैसे क़ुदूरी, हिदाया, विक़ाया, नुक़ाया, इस्लाह, कन्ज़, ग़ुरर और मुल्तका आदि। और मुहक़्क़िक़ अल-इतलाक़ ने 'फ़तह' में उन पर यह आपत्ति की है कि हदस के प्रमाण में विभाजन नहीं होता है, यानी सही विश्वसनीय मत पर। तो जब तक शरीर का...

पाद टिप्पणी: 1 फ़तह अल-क़दीर, प्रयुक्त जल खंड, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/291।

पृष्ठ 67/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم]: فلو تحولت نجاسة الأثام اليه لصار نجسا حراماً شربه عند الامام وقذرا بالاجماع مكروه الشرب فيعود الاحسان اساءة والقربة على نفسها بالنقض وهو باطل اجماعاً فما ذلك الالان الشرع انما طلب منك ان تهيئ له ما يرويه ولم يعين له الماء بخصوصه بحيث لا يجزئ غيره بل لوسقيته لبناً خالصاً او ممزوجاً بماء اوماء الورد او جلا باً بثلج ولو زومآء الكاذي وامثال ذلك لكان اجد واجود واقمت القربة و ازيد والله يحب المحسنين وقد (١) اشتد تشييدا بهذا اركان ما نحونا اليه في مسألة القدور والقصاع هذا كله ما ظهر لی و ارجو ان قد زهر الامر و زال القناع والحمد لله رب العلمين۔ تنبيه:(٢) عامة الكتب في بيان الشق الاول من الماء المستعمل على التعبير بماء استعمل في رفع حدث وعليه المتون كالقدوری والهداية والوقاية والنقاية والاصلاح والكنز والغرر والملتقى واعترضهم المحقق على الاطلاق في الفتح بان الحدث لا يتجزاء ثبوتاً اه على (٣) القول الصحيح المعتمد فيأ

[اردو کالم]: جلد ثانی کنوئیں کے پانی سے سیراب کیا یا کسی برتن سے انڈیلا اور اس کو دیا تو تونے اس کے ساتھ قربت کو قائم کیا، تو اگر گناہوں کی نجاست اس کی طرف منتقل ہو جائے تو وہ نجس ہو گا اور امام کے نزدیک اس کا پینا حرام ہو گا، اور بالا جماع گندہ ہو گا اور اس کا پینا مکروہ ہو گا تو احسان گناہ ہو جائے گا اور قربت اپنے نفس پر نقض ہو گئی یہ بالا جماع باطل ہے، یہ صرف اس وجہ سے ہے کہ شریعت نے تم سے یہ مطالبہ کیا ہے کہ تم اُس کے لئے وہ تیار کرو جو اس کو سیراب کر دے، اور اس کیلئے کسی پانی کو مخصوص نہیں کیا ہے کہ اُس کے بغیر کفایت نہ ہو، بلکہ اگر تم اس کو خالص دودھ ، پانی ملا دودھ، عرقِ گلاب یا برف والا شربت خواہ وہ کیوڑے والا ہو تو زیادہ بہتر ہو گا تمہاری قربت ادا ہو گئی اور کچھ زیادہ بھی اور اللہ محسنین کو پسند کرتا ہے، اور ہماری اس تقریر سے ہانڈیوں اور پیالوں والے مسئلہ کی مزید تائید ہوتی ہے۔

یہ میرے لئے ظاہر ہوا ہے اور مجھے امید ہے کہ اس سے معاملہ واضح ہو گیا ہے والحمد للہ رب العالمین۔ت تنبیہ: مستعمل پانی کی پہلی شق کے بیان میں عام کتب میں یہی ہے کہ یہ وہ پانی ہے جو حدث دُور کرنے میں مستعمل ہوا ہو، متون کتب میں یہی ہے، مثلاً قدوری، ہدایہ، وقایہ، نقایہ، اصلاح، کنز، غرر اور ملتقٰی وغیرہ، اور محقق علی الاطلاق نے فتح میں ان پر یہ اعتراض کیا ہے کہ حدث کے ثبوت میں تجزی نہیں ہوتی ہے اھ یعنی قولِ صحیح معتمد پر، تو جب تک بدن کا

حاشیہ: ۱ فتح القدیر ماء مستعمل نوریہ رضویہ سکھر ۲۹۱/۱

Fatawa Rizvia Volume 2

(Left Column - Translation from Arabic): If even a particle remains of that which was subject to the ruling of purification, the ritual impurity (hadath) remains in everything it affected. For instance, if a person in a state of minor impurity (muhdith) or major impurity (junub) performs purification, but a tiny dry spot remains on their foot, it is not permissible for them to touch the Mushaf (Quran) with their hand or sleeve, nor is it permissible for the one in major impurity to recite the Quran. All this is according to what is preferred for fatwa. Thus, this water did not remove the impurity, and if they did not intend (niyah), it was not an act of devotion (qurba) either, despite being definitively classified as 'used water' (musta'mal). This is based on many sub-rulings (furu') explicitly narrated from the master of the school (Imam Abu Hanifa), may Allah Almighty be pleased with him, regarding an impure person dipping some of their limbs into water for a purpose other than the necessity of scooping, as detailed in Al-Fath, Al-Hilya, Al-Bahr, and others. To resolve this, the researcher (Al-Muhaqqiq) established that water becomes used (musta'mal) through one of three things: lifting ritual impurity, seeking nearness to God (taqarrub), or the dropping of the obligation from the limb. He said: upon this, the sub-branches regarding dipping the hand or foot into a small amount of water without necessity are based. There is no necessary correlation (talazum) between the dropping of the obligation (suqut al-fard) and the lifting of the ritual impurity (irtifa' al-hadath). For example, the dropping of the obligation from the hand implies that it is not necessary to re-wash it with the rest of the limbs, while the lifting of the ritual impurity is dependent on washing the remainder of the body. The dropping of the obligation is the principle reason for water becoming used, as it is known that its basis is like the wealth of Zakah, and what is established in it is only the dropping of the obligation since it was legally deemed as 'impurity' (dans) according to what we have mentioned^1. His student, the researcher, followed him in Al-Hilya then Al-Bahr.

(Right Column - Original Urdu): If any particle on which the command of purification applies remains, the ritual impurity will also remain in that part, to the extent that if a person without wudu or an impure person performs ghusl and, for example, a slight dry spot remains on his foot, he cannot touch the Mushaf with his hand or his sleeve, and in the case of being junub, he cannot recite. This is the preferred view for fatwa. Thus, this water did not lift the ritual impurity, and if he did not make an intention, it would not be an act of devotion either, although it is certainly 'used water'. There are many sub-rulings in this that are reported from the master of the school; they relate

to the matter of a person without wudu putting any of his limbs into water without need to take a handful, as mentioned in detail in Fath, Hilya, and Bahr. To address this objection, the researcher (Muhaqqiq) stated that there are three ways for water to become used: lifting the ritual impurity, seeking nearness (Taqarrub), and the dropping of the obligation from the limb. He said that the sub-rulings branch out from this, such as putting a hand or foot into a small amount of water without need. There is no necessary correlation between the dropping of the obligation and the lifting of the ritual impurity. Now, the dropping of the obligation from the hand, for example, means that the washing of the hand does not need to be repeated with the rest of the limbs, and the removal of the ritual impurity is dependent on washing the remaining limbs. In the use of water, the dropping of the obligation is the original factor, as it is known that its root is like the wealth of Zakah, and...

^1 Fath al-Qadeer, used water, Nooria Rizvia, Sukkur 1/97 Page 68 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

(बायाँ स्तंभ - अरबी से अनुवाद): यदि शुद्धि के आदेश के अधीन कोई कण भी शेष रह जाता है, तो अनुष्ठानिक अशुद्धि (हदाथ) उन सभी चीज़ों में बनी रहती है जिनसे वह प्रभावित हुआ था। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति जो अशुद्ध (मुहदिथ) या अपवित्र (जुनुब) अवस्था में है, शुद्धि करता है, लेकिन उसके पैर पर एक छोटा सा सूखा स्थान रह जाता है, तो उसके लिए अपने हाथ या आस्तीन से मुसहफ़ (क़ुरान) को छूना जायज़ नहीं है, और न ही बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति के लिए क़ुरान का पाठ करना जायज़ है। यह सब फ़तवे के लिए पसंदीदा राय के अनुसार है। अत; इस पानी ने अशुद्धि को दूर नहीं किया, और यदि उसने नीयत (इरादा) नहीं की थी, तो यह भक्ति (कुर्बा) का कार्य भी नहीं था, इसके बावजूद कि यह निश्चित रूप से 'इस्तेमाल किया हुआ पानी' (मुस्तअमल) है। यह मज़हब के संस्थापक (इमाम अबू हनीफ़ा), अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, से स्पष्ट रूप से वर्णित कई उप-शाखाओं (फ़ुरुअ) पर आधारित है, जो बिना ज़रूरत के एक अशुद्ध व्यक्ति द्वारा अपने कुछ अंगों को पानी में डुबोने के बारे में है, जैसा कि 'अल-फ़तह', 'अल-हिल्या', 'अल-बहर' और अन्य में विस्तार से बताया गया है। इसे हल करने के लिए, शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने स्थापित किया कि पानी तीन चीजों में से एक के माध्यम से 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाता है: अशुद्धि को दूर करना, ईश्वर के निकटता (तक़र्रुब) की तलाश करना, या अंग से दायित्व (फ़र्ज़) का गिरना। उन्होंने कहा: इस पर, बिना ज़रूरत के थोड़े से पानी में हाथ या पैर डालने के बारे में उप-शाखाएँ आधारित हैं। दायित्व के गिरने (सुक़ूत अल-फ़र्ज़) और अशुद्धि के दूर होने (इरतिफ़ा अल-हदाथ) के बीच कोई अनिवार्य संबंध (तलाज़ुम) नहीं है। उदाहरण के लिए, हाथ से दायित्व गिरने का तात्पर्य है कि इसे शेष अंगों के साथ फिर से धोने की आवश्यकता नहीं है, जबकि अशुद्धि का दूर होना शरीर के शेष भाग को धोने पर निर्भर है। पानी के उपयोग में दायित्व का गिरना ही मूल कारण है, क्योंकि यह ज्ञात है कि इसका आधार ज़कात के धन की तरह है, और जैसा कि हमने उल्लेख किया है^1, जब इसे कानूनी रूप से 'गंदगी' (दंस) घोषित किया जाता है, तो इसमें केवल दायित्व का गिरना ही स्थापित होता है। उनके छात्र, शोधकर्ता ने 'अल-हिल्या' और फिर 'अल-बहर' में उनका अनुसरण किया।

(दायाँ स्तंभ - मूल उर्दू): शुद्धि का कोई भी कण जिस पर शुद्धि का हुक्म लागू होता है, शेष रह जाता है, तो अशुद्धि भी उस भाग में शेष रहेगी। यहाँ तक कि यदि कोई बिना वज़ू या अपवित्र व्यक्ति स्नान करता है और, उदाहरण के लिए, उसके पैर में मामूली सी खुश्की रह जाती है, तो वह मुसहफ़ को अपने हाथ या अपनी आस्तीन से नहीं छू सकता, और जुनुब होने की स्थिति में तिलावत नहीं कर

सकता। यह सब फ़तवे के लिए मुख़्तार (चुना हुआ) है। अत; इस पानी ने अशुद्धि को दूर नहीं किया, और यदि उसने नीयत नहीं की थी, तो यह सवाब (पुण्य) भी नहीं होगा, हालांकि वह निश्चित रूप से 'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) है। इसमें कई उप-शाखाएँ हैं जो मज़हब के प्रमुख से वर्णित हैं; वे इस मामले से संबंधित हैं कि एक बिना वज़ू वाला व्यक्ति बिना आवश्यकता के अंजलि भरने के लिए अपने किसी अंग को पानी में डाल देता है, जैसा कि फ़तह, हिल्या और बहर में विस्तार से बताया गया है। इस आपत्ति को दूर करने के लिए, शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने यह स्पष्टीकरण दिया है कि पानी के मुस्तअमल होने की तीन स्थितियाँ हैं: अशुद्धि दूर करना, निकटता (तक़र्रुब) प्राप्त करना, और अंग से फ़र्ज़ का गिरना। उन्होंने कहा कि इसी पर ये उप-शाखाएँ आधारित होंगी कि हाथ या पैर को बिना ज़रूरत के थोड़े पानी में डाला गया। सुक़ूत-ए-फ़र्ज़ (दायित्व का गिरना) और इरतिफ़ा-ए-हदाथ (अशुद्धि दूर होना) के बीच कोई आवश्यक संबंध नहीं है। अब हाथ से सुक़ूत-ए-फ़र्ज़ का उदाहरण के लिए अर्थ यह है कि हाथ को शेष अंगों के साथ दोबारा धोने की आवश्यकता न हो, और अशुद्धि का दूर होना शेष अंगों को धोने पर निर्भर है। पानी के उपयोग में सुक़ूत-ए-फ़र्ज़ ही मूल कारक है, जैसा कि ज्ञात है कि इसकी जड़ ज़कात के माल की तरह है, और...

^1 फ़तह अल-क़दीर, मुस्तअमल पानी, नूरिया रज़विया, सुक्कुर 1/97 पृष्ठ 68 of 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم - عربی متن مع ترجمہ): اگر تطہیر (پاکی) کے حکم والا کوئی ایک ذرہ بھی باقی رہ گیا تو اس حصے میں حدث (ناپاکی) برقرار رہے گی جو اس کے زیر اثر تھا۔ مثال کے طور پر، اگر کوئی بے وضو یا ناپاک شخص پاکی حاصل کرے لیکن مثلاً اس کے پاؤں میں ایک چھوٹا سا حصہ خشک رہ جائے تو اس کے لیے اپنے ہاتھ یا آستین سے قرآن مجید کو چھونا جائز نہیں ہے، اور نہ ہی جنبی (بڑی ناپاکی والے) کے لیے تلاوت جائز ہے۔ یہ سب فتوے کے لیے پسندیدہ قول کے مطابق ہے۔ پس اس پانی نے حدث کو ختم نہیں کیا، اور اگر اس نے نیت نہیں کی تھی تو یہ عملِ قربت (عبادت) بھی نہیں ہوا، باوجود اس کے کہ وہ یقینی طور پر 'مستعمل پانی' ہے۔ یہ مذہب کے امام (امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ) سے منصوص بہت سے ایسے فروعی مسائل پر مبنی ہے جو بے وضو شخص کے بغیر ضرورت کے چُلّو بھرنے کے لیے پانی میں اعضاء ڈالنے سے متعلق ہیں، جیسا کہ 'الفتح'، 'الحلیہ' اور 'البر' وغیرہ میں تفصیل سے مذکور ہے۔ اس کے حل کے لیے محقق نے یہ ضابطہ طے کیا کہ پانی تین چیزوں میں سے کسی ایک کی وجہ سے 'مستعمل' ہو جاتا ہے: رفعِ حدث (ناپاکی دور ہونا)، تقرب (ثواب حاصل کرنا)، یا عضو سے فرض کا ساقط ہونا۔ انہوں نے فرمایا کہ اسی پر وہ فروعی مسائل مبنی ہیں جن میں ہاتھ یا پاؤں کو بغیر ضرورت کے تھوڑے سے پانی میں ڈالا جائے۔ فرض کے ساقط ہونے اور حدث کے رفع ہونے کے درمیان کوئی لازمی تعلق نہیں ہے۔ مثال کے طور پر، ہاتھ سے فرض کا ساقط ہونا اس بات کا تقاضا کرتا ہے کہ بقیہ اعضاء کے ساتھ اسے دوبارہ دھونا واجب نہ ہو، جبکہ حدث کا رفع ہونا باقی جسم کے دھونے پر موقوف ہے۔ پانی کے استعمال میں فرض کا ساقط ہونا ہی اصل بنیاد ہے، کیونکہ یہ معلوم ہے کہ اس کی اصل زکوٰۃ کے مال کی طرح ہے، اور جیسا کہ ہم نے ذکر کیا ہے اس میں صرف فرض کا

ساقط ہونا ہی ثابت ہوتا ہے جب اسے شرعی طور پر 'میل کچیل' قرار دیا گیا[18]۔ ان کے شاگرد محقق نے 'الحلیہ' اور پھر 'البحر' میں ان کی پیروی کی۔

(دایاں کالم - اردو متن): کوئی ذرہ جس سے حکم تطہیر لاحق ہوتا ہے باقی بچارہے گا حدث بھی اُس حصہ میں باقی رہے گا، یہاں تک کہ کوئی بے وضو یا ناپاک شخص غسل کرتا ہے اور مثلاً اُس کے پیر میں خشکی کی معمولی سی چمک باقی رہ جاتی ہے تو وہ مصحف کو اپنے ہاتھ سے یا اپنی آستین سے نہیں چھو سکتا ہے اور جُنُب ہونے کی صورت میں تلاوت نہیں کر سکتا ہے یہ سب فتویٰ کیلئے مختار ہے، تو اس پانی نے حدث کو رفع نہیں کیا، اور اگر اُس نے نیت نہ کی تو قربت بھی نہ ہوگی حالانکہ وہ قطعاً مستعمل ہے، اس میں بہت سی فروع ہیں جو صاحبِ مذہب سے منقول ہیں، ان کا تعلق اس امر سے ہے کہ بے وضو اپنے کسی عضو کو بلا ضرورت چُلّو بھرنے کیلئے پانی میں ڈالے، جیسا کہ فتح، حلیہ اور بحر میں تفصیل سے ذکر کیا ہے، اس اعتراض سے رہائی حاصل کرنے کیلئے محقق نے یہ تقریر کی ہے کہ پانی کے مستعمل ہونے کی تین صورتیں ہیں رفعِ حدث، تقرب اور فرض کا عضو سے ساقط ہونا، فرمایا کہ اسی پر یہ فروع متفرع ہوں گی کہ ہاتھ یا پیر تھوڑے پانی میں بلا ضرورت ڈالا، اور سقوطِ فرض اور ارتفاعِ حَدَث میں کوئی تلازم نہیں ہے اب ہاتھ سے سقوطِ فرض مثلاً چاہتا ہے کہ ہاتھ کے دھونے کا بقیہ اعضاء کے ساتھ اعادہ نہ ہو، اور حَدَث کا مرتفع ہونا باقی اعضاء کے دھونے پر موقوف ہو اور پانی کے استعمال میں سقوطِ فرض ہی اصل ہے جیسا کہ معلوم ہے کہ اس کی اصل مال زکوٰۃ ہے اور

[18] فتح القدیر ماء مستعمل نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۹۷ صفحہ 68 of 711

Fatawa Rizvia, Volume II

In Al-Bahr, then his student Allama al-Ghazzi even made it a part of the text, and the investigator (Al-Muhaqqiq) in Al-Durr confirmed it, and the Knower of Allah, Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi, relied upon it in the commentary of Hadiyyah Ibn al-'Imad. Allama 'Sh' claimed that this third cause was added in Al-Fath. — 1

I say: (1) It is not so, rather it is explicitly mentioned by the Master of the Madhhab [Imam Abu Hanifa] (may Allah be pleased with him). In Al-Fath, narrated from the book of Hassan from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), it states: If a person in a state of ritual impurity (Janaba) or without ablution (Wudu) dips his hands up to the elbows or one of his feet into a basin, ablution from it is not permissible because the obligation has dropped from him. — 2 It was already mentioned from Al-Hidayah regarding the reasoning of Abu Yusuf's and the Imam's view (may Allah be pleased with both of them) that the dropping of the obligation is also effective, so the corruption [of the water] is established by both matters. — 3 Yes, what the investigator added is the triplication of the cause, and that is not correct because the dropping of the obligation is more general in absolute terms than the removal of the ritual impurity (Hadath). Therefore, it [dropping of obligation] makes one independent of it [removal of impurity]. It is mentioned in Minhat al-Khaliq that sometimes the ritual impurity might be removed but the obligation does not drop, like the ablution of a discerning child, as previously mentioned regarding his water becoming [used].

1. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/146.
2. Fath al-Qadir, Discussion on Used Water (Al-Ma' al-Musta'mal), Nuriya Razaviya, Sukkur, 1/76.
3. Al-Hidayah, Water with which Ablution is Permissible, Al-Arabiyya, Karachi, 1/22.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

अल-बहर में, फिर उनके छात्र अल्लामा अल-ग़ज़ी ने इसे यहाँ तक कि मूल पाठ का हिस्सा बना दिया, और अद-दुर्र में अन्वेषक (मुहक़्क़िक़) ने इसकी पुष्टि की, और आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी ने हदियह इब्न अल-इमाद की व्याख्या में इस पर भरोसा किया। अल्लामा 'श' का दावा है कि यह तीसरा कारण अल-फतह में जोड़ा गया था। — 1

मैं कहता हूँ: (1) ऐसा नहीं है, बल्कि यह मज़हब के स्वामी [इमाम अबू हनीफ़ा] (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णित है। अल-फतह में हसन की किताब से अबू हनीफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है कि: यदि किसी नापाक (जनाबत की स्थिति में) व्यक्ति या बिना वज़ू वाले व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ कोहनियों तक या अपना एक पैर किसी बर्तन में डुबोया, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि उसका फ़र्ज़ उससे साक़ित (समाप्त) हो चुका है। — 2 हमने पहले ही अल-हिदायह से इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के तर्क के बारे में उल्लेख किया है कि फ़र्ज़ का गिरना भी प्रभावी है, इसलिए भ्रष्टाचार (पानी का प्रयुक्त हो जाना) दोनों बातों से सिद्ध होगा। — 3 हाँ, मुहक़्क़िक़ ने जो जोड़ा है वह कारण का तिगुना होना है, और वह सही नहीं है क्योंकि फ़र्ज़ का गिरना 'रफ़-ए-हदस' (अशुद्धि दूर करने) से पूर्णतः अधिक व्यापक है। इसलिए, यह (फ़र्ज़ का गिरना) उससे बे-नियाज़ करने वाला है। और मिन्हात अल-ख़ालिक़ में है कि कभी 'हदस' दूर हो जाता है लेकिन फ़र्ज़ साक़ित नहीं होता, जैसे कि एक समझदार बच्चे का वज़ू, जैसा कि पहले उसके पानी के प्रयुक्त होने के बारे में बताया गया है।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मयाह, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/146।
2. फ़तह अल-क़दीर, प्रयुक्त जल (अल-मा अल-मुस्तअमल) पर चर्चा, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/76।
3. अल-हिदायह, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अल-अरबिय्या, कराची, 1/22।

पृष्ठ 69 का 711

في البحر ثم تلميذه العلامة الغزی حتی جعله متناً واقره عليه المدقق في الدر و اعتمده العارف بالله سیدی عبدالغنی النابلسی في شرح هدية ابن العماد زعم العلامة ش ان هذا السبب الثالث زاده في الفتح[1]۔ اس میں یہی ثابت ہے کہ سقوطِ فرض ہو ، کیونکہ اس میں شرعاً میل کچیل ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا اھ اور ان کے محقق شاگرد نے ان کی پیروی کی حلیہ میں ، پھر صاحبِ بحر نے بحر میں۔ پھر ان کے شاگرد علامہ غزّی نے، یہاں تک کہ اس کو متن قرار دیا ، اور دُرّ میں اس کو مدقق نے برقرار رکھا، اور عبدالغنی نابلسی نے شرح ہدیہ ابن العماد میں اس پر اعتماد کیا، اور علامہ ش نے فرمایا کہ اس تیسرے سبب کو فتح میں زیادہ کیا گیا۔ ت

اقول: (۱) وليس كذا بل هو منصوص عليه من صاحب المذهب رضی الله تعالی عنه ففي الفتح عن كتاب الحسن عن ابي حنيفة رضی الله تعالی عنه ان غمس جنب اوغير متوضئ يديه الی المرفقين اواحدی رجليه في اجانة لم يجز الوضوء منه لانه سقط فرضه عنه[2] اہـ وقدمنا عن الهداية في تعليل قول ابي يوسف ای والامام رضی الله تعالی عنهما ان اسقاط الفرض مؤثر ايضاً فيثبت الفساد بالامرين[3] اہـ میں کہتا ہوں یہ بات درست نہیں بلکہ یہ صاحبِ مذہب رحمہ اللہ سے ہی منصوص ہے، فتح میں حسن کی کتب سے ابو حنیفہ سے مروی ہے کہ اگر ناپاک شخص یا بے وضو شخص نے اپنے دونوں ہاتھ دونوں کہنیوں تک پانی میں ڈبوئے یا ایک پیر کسی مرتبان میں ڈبویا تو اُس سے وضو جائز نہ ہوگا ، کیونکہ اس کا فرض اُس سے ساقط ہو چکا ہے اھ اور ہم نے ہدایتہ سے ابویوسف کے قول یعنی امام کے قول کی بھی علّت بیان کرتے ہوئے پہلے ذکر کیا ہے کہ اسقاطِ فرض بھی مؤثر ہے تو فساد دونوں امروں سے ثابت ہوگا اھ نعم المزيد من المحقق هو تثليث السبب وليس بذاك فان سقوط الفرض اعم مطلقاً من رفع الحدث ففيه غنية عنه اما ما في منحة الخالق انه قد يرفع الحدث

ولا یسقط الفرض کوضوء الصبی العاقل لما مر من صیر ورۃ ماءہ۔ ہاں محقق نے جو اضافہ کیا ہے وہ سبب کی تثلیث ہے ، اور وہ درست نہیں کیونکہ سقوطِ فرض اعم مطلق ہے رفعِ حدث سے ، لہٰذا یہ اس سے بے نیاز کرنے والا ہے، اور منحۃ الخالق میں ہے کہ کبھی حدث

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۴۶ 2 فتح القدیر بحث الماء المستعمل نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۷۶ 3 ھدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء العربیہ کراچی ۱/ ۲۲

Fatawa Rizwia Volume 2

...becomes used (musta'mal), while it is not obligatory for him, just like the ablution of a sane child; because it has just been mentioned that his water becomes used, even though ablution is not obligatory for him.

I say: This is not correct because the ruling of ritual impurity (hadath) only applies to a responsible person (mukallaf). Scholars have clarified that if an adolescent boy (murahiq) commits intercourse or an adolescent girl (murahiqa) undergoes intercourse, they will be commanded to perform a ritual bath (ghusl) for the purpose of teaching morals and etiquette; this is stated in Al-Khaniya, Al-Ghuniyah, and others. And in Ad-Dur, it is mentioned that a ten-year-old boy will be commanded to perform ghusl as a disciplinary measure. Since the obligation does not drop because of the absence of imposition, ritual impurity is also not removed because its ruling is absent. As for the water becoming 'used', it is not because he has removed ritual impurity, otherwise, the water used by every child would become 'used' even if he were not sane, and this is contrary to what is explicitly stated in the texts. Rather, it is because this act of proximity (qurbah) will only be valid when he intends it, and for this reason, they have restricted the child to being 'sane', because an insane person has no intention. And what was mentioned earlier, if intended by the matter in 'Al-Bahr', then it is his statement in 'Al-Khulasa': 'When a child performs ablution in a basin, will the water become used? The chosen opinion is that it will become used when the child is sane.' So this restriction provides the benefit of that same thing.

1 Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ma' al-Musta'mal, Saeed Company Karachi, 1/92 2 Qazi Khan, Regarding what necessitates Ghusl, Nawal Kishore Lucknow, 1/21 3 Dur al-Mukhtar, Causes of Ghusl, Mujtabai Delhi, 1/31 4 Khulasat al-Fatawa, Al-Ma' al-Musta'mal, Nawal Kishore Lucknow, 11/

फतावा रज़विया जिल्द 2

...मुस्तअमल हो जाता है और फ़र्ज़ साक़ित नहीं होता जैसे आकिल बच्चे का वज़ू क्योंकि अभी गुज़रा है कि उसका पानी मुस्तअमल हो जाता है हालाँकि वज़ू उस पर फ़र्ज़ नहीं।

मैं कहता हूँ यह ठीक नहीं क्योंकि हदस का हुक्म मुकल्लफ़ को लाहिक़ होता है, उलमा ने तसरीह की है कि अगर किसी मुराहिक़ ने जिमाअ किया या किसी मुराहिक़ा से जिमाअ किया गया तो उनको अख़्लाक़ और आदाब सिखाने की ग़रज़ से ग़ुस्ल का हुक्म दिया जाएगा, ख़ानिया और ग़ुनिया वग़ैरा में यही है। और दुर में यह है कि दस साला लड़के को तादीबन ग़ुस्ल का हुक्म दिया जाएगा जब फ़र्ज़ साक़ित न होगा क्योंकि फ़र्ज़ियत मुनअदम है तो हदस भी मुर्तफ़ा न होगा क्योंकि उसका हुक्म मुनअदम है, और रहा उसका मुस्तअमल होना तो यह इस वजह से नहीं कि उसने हदस को रफ़ा किया है वरना तो हर बच्चे का मुस्तअमल पानी मुस्तअमल हो जाता अगरचे वह आकिल न हो, और यह खिलाफ़े मन्सूस है बल्कि यह इसलिए है कि यह क़ुर्बत उसी वक़्त मोतबर होगी जबकि वह उसकी नियत करे, और इसी लिए उन्होंने बच्चे को आकिल से मुक़य्यद किया है क्योंकि ग़ैर-आकिल की नियत नहीं होती है, और जो गुज़रा उससे उनका इरादा वह है जो गुज़ारा बहर में तो उनका वह क़ौल खुलासा में है कि जब बच्चा तश्त में वज़ू करे तो आया पानी मुस्तअमल होगा? तो मुख़्तार यह है कि उस वक़्त मुस्तअमल होगा जब बच्चा आकिल हुआ, तो यह तक़यीद उसी चीज़ का फ़ायदा दे रही है।

1 मिन्हतुल ख़ालिक़ अलल बहरुल माउल मुस्तअमल, सईद कंपनी कराची, 1/92 2 क़ाज़ी ख़ान, फ़ीमा यूजिबुल ग़ुस्ल, नवल किशोर लखनऊ, 1/21 3 दुर्रे मुख़्तार, मौजिबातुल ग़ुस्ल, मुज्तबाई दिल्ली, 1/31 4 ख़ुलासतुल फ़तावा, अल-माउल मुस्तअमल, नवल किशोर लखनऊ, 11/

पेज 70 / 711

مستعملا مع انه لافرض علیه اھ ختم ہو جاتا ہے اور فرض ساقط نہیں ہوتا جیسے عاقل بچے کا وضو کیونکہ ابھی گزرا ہے کہ اس کا پانی مستعمل ہو جاتا ہے حالانکہ وضو اس پر فرض نہیں۔

فأقول: (1) لیس بشیء فان (2) حکم الحدث انما یلحق المکلف وقد نصوا ان مراھقا جامع او مراھقة جو معت انما یؤمران بالغسل تخلقا و اعتیادا کما في الخانیة والغنیة و غیرھما میں کہتا ہوں یہ ٹھیک نہیں کیونکہ حدث کا حکم مکلف کو لاحق ہوتا ہے، علماء نے تصریح کی ہے کہ اگر کسی مراھق نے جماع کیا یا کسی مراھقہ سے جماع کیا گیا تو ان کو اخلاق و آداب سکھانے کی غرض سے غسل کا حکم دیا جائے گا، خانیہ اور غنیہ وغیرہ میں یہی ہے۔

وفي الدر یؤمر به ابن عشر تادیبا فحیث لم یسقط الفرض لانعدام الافتراض لم یرتفع الحدث ایضا لانعدام الحکم به اما صیرورته مستعملا فلیس لرفعه حدثا والاصار مستعملا من کل صبي ولولم یعقل وھو خلاف المنصوص بل لکونه قربة معتبرة اذا نواھا ولذا قیدوه بالعاقل لان غیره لانیة له (3) والذي مران اراد به امر فی البحر فھو قوله فی الخلاصة اذا توضأ الصبی فی طست ھل یصیر الماء مستعملا المختار انه یصیر اذا کان عاقلا اھ فھذا التقیید یفید ما قلنا وقد قال (۴) فی الغنیة ان ادخل الصبي یده في الماء وعلم ان لیس بھا نجس یجوز التوضؤ به وان شك في طھارتھا یستحب ان لا یتوضأ به وان توضأ جاز ھذا اذا لم یتوضأ الصبی به فان اور دُر میں یہ ہے کہ دس سالہ لڑکے کو تادیباً غسل کا حکم دیا جائیگا جب فرض ساقط نہ ہوگا کیونکہ فرضیت منعدم ہے تو حدث بھی مرتفع نہ ہوگا کیونکہ اس حکم منعدم ہے، اور رہا اس کا مستعمل ہونا تو یہ اس وجہ سے نہیں کہ اس نے حدث کو رفع کیا ہے ورنہ تو ہر بچہ کا مستعمل پانی مستعمل ہو جاتا اگرچہ وہ عاقل نہ ہو، اور یہ خلاف

منصوص ہے بلکہ یہ اس لئے ہے کہ یہ قربت اسی وقت معتبر ہوگی جبکہ وہ اس کی نیت کرے، اور اسی لئے انہوں نے بچہ کو عاقل سے مقید کیا ہے کیونکہ غیر عاقل کی نیت نہیں ہوتی ہے، اور جو گزرا اس سے ان کا ارادہ وہ ہے جو گزارا بحر میں تو ان کا وہ قول خلاصہ میں ہے کہ جب بچہ تشت میں وضو کرے تو آیا پانی مستعمل ہوگا ؟ تو مختار یہ ہے کہ اس وقت مستعمل ہوگا جب بچہ عاقل ہواھ تو یہ تقیید اسی چیز کا فائدہ دے رہی ہے

1 منحۃ الخالق علی البحر الماء المستعمل سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۲ 2 قاضی خان فیما یوجب الغسل نولکشور لکھنؤ ۲۱/۱ 3 در مختار موجبات الغسل مجتبائی دہلی ۳۱/۱ 4 خلاصۃ الفتاوی الماء المستعمل نولکشور لکھنؤ ۱۱/

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Right Column - Urdu Text] ...what we have said, and in 'Ghunyah' it is stated that if a child puts his hand in the water and it was known that there was no impurity on his hand, then performing wudu with that water is permissible. As we said, and if there is doubt about its purity, then it is recommended (mustahabb) not to perform wudu with that water, but if wudu is performed, it is permissible. This is in the case where the child did not perform wudu with it. If he performed wudu with intention, then the later scholars differ on this, and the preferred view is that if he is rational, it will be considered musta'mal (used water) because he intended a valid act of worship (qurbah). And if he meant what was mentioned in 'Minhah' itself a few lines before, then it is even more clear and bright. He says, quoting from 'Khaniyah', that when a rational child performs wudu and intends to achieve purity, then the water should become musta'mal, because he intended a valid act of worship. Then he himself said that his saying 'intending purification' points towards the fact that if he did not intend purification, the water would not be musta'mal. But flawless is the God who does not forget. Then he said in 'Minhah': "Now this matter remains whether there is a correlation between the falling away of an obligation (fard) and an act of worship (qurbah) or not? etc." I say: His meaning is, does an act of worship necessitate the falling away of an obligation? Because correlation is from both sides, and no rational person can even think that the falling away of an obligation necessitates an act of worship, because putting water in the nose and rinsing the mouth in wudu and rinsing the mouth for eating and its...

[Left Column - Arabic Text] Performed wudu with intention, the later scholars differed on it, and the preferred view is that it becomes used (musta'mal) if he is rational because he intended a valid act of worship (qurbah)[1]. And if he meant by it what was mentioned in 'al-Minhah' itself shortly before this by a few lines, then it is more explicit and clearer where he said, quoting from 'al-Khaniyah': "A rational child, when he performs wudu intending purification by it, it is appropriate that the water becomes used because he intended a valid act of worship[2]." Then (1) he himself pointed out that his saying 'intending purification by it' indicates that if he did not intend purification by it, it does not become used[3]. But glory be to Him who does not forget. Then (2) he said in 'al-Minhah': "Is there a necessary correlation between the falling away of an obligation (fard) and an act of worship (qurbah) or not? etc." I say: (3) His meaning is whether an act of worship necessitates the falling away of an obligation or not, for correlation is from both sides, and no rational person would

imagine that the falling away of an obligation necessitates an act of worship, for inhaling water into the nose in wudu and rinsing the mouth in it and for food and from it and wudu upon wudu and their likes...

[Footnotes] 1. Ghunyat al-Mustamli, Al-Ma' al-Musta'mal, Suhail Academy Lahore, 1/153 2. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Al-Musta'mal, Saeed Company Karachi, 1/91 3. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Al-Musta'mal, Saeed Company Karachi, 1/92 4. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Al-Musta'mal, Saeed Company Karachi, 1/92

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] ...जो हमने कहा है, और 'गुन्या' में कहा गया है कि अगर बच्चे ने पानी में हाथ डाला और यह ज्ञात था कि उसके हाथ पर कोई गंदगी नहीं है, तो उस पानी से वज़ू जायज़ है। जैसा कि हमने कहा, और यदि उसकी पवित्रता में संदेह है, तो बेहतर (मुस्तहब) यही है कि उस पानी से वज़ू न किया जाए, लेकिन यदि वज़ू कर लिया गया तो वह जायज़ है। यह उस स्थिति में है जब बच्चे ने उससे वज़ू न किया हो। यदि उसने नीयत के साथ वज़ू किया, तो बाद के विद्वानों में इस पर मतभेद है, और पसंदीदा बात यह है कि यदि वह समझदार है तो पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) माना जाएगा क्योंकि उसने मान्य इबादत (क़ुर्बत) की नीयत की है। और यदि उनका इरादा वही था जो कुछ पंक्तियाँ पहले स्वयं 'मिन्हा' में गुज़रा है, तो वह और भी अधिक स्पष्ट और रौशन है। वह 'खानिया' से उद्धृत करते हुए कहते हैं कि जब एक समझदार बच्चा वज़ू करता है और उससे पाकी हासिल करने का इरादा करता है, तो चाहिए कि पानी मुस्तअमल हो जाए, क्योंकि उसने मान्य इबादत की नीयत की है। फिर स्वयं ही कहा कि उनका कहना "पाकी का इरादा करना" इस बात की ओर इशारा है कि यदि उसने पाकी की नीयत नहीं की तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा। लेकिन बे-ऐब है वह खुदा जो भूलता नहीं। फिर 'मिन्हा' में कहा: "अब यह बात शेष रह गई है कि क्या फ़र्ज़ के गिरने और इबादत में कोई अटूट संबंध (तलाज़ुम) है या नहीं? आदि।" मैं कहता हूँ: उनका उद्देश्य यह है कि क्या इबादत फ़र्ज़ के गिरने को ज़रूरी बनाती है? क्योंकि अटूट संबंध दोनों तरफ़ से होता है, और कोई भी समझदार व्यक्ति यह सोच भी नहीं सकता कि फ़र्ज़ का गिरना इबादत को ज़रूरी बनाता है, क्योंकि वज़ू में नाक में पानी डालना और कुल्ली करना और खाने के लिए कुल्ली करना और उसके..

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] वज़ू नीयत के साथ किया गया, तो बाद के विद्वानों में मतभेद है, और पसंदीदा विचार यह है कि यदि वह समझदार है तो पानी 'मुस्तअमल' हो जाएगा क्योंकि उसने एक मान्य इबादत की नीयत की है।[1] और अगर उसका तात्पर्य वही है जो इस से कुछ पंक्तियाँ पहले 'मिन्हा' में ही गुज़रा है, तो यह और भी स्पष्ट और ज़ाहिर है, जहाँ उन्होंने 'अल-खानिया' के हवाले से कहा: "जब एक समझदार बच्चा पाकी की नीयत से वज़ू करता है, तो उचित है कि पानी मुस्तअमल हो जाए क्योंकि उसने एक मान्य इबादत की नीयत की है।"[2] फिर (1) उन्होंने स्वयं स्पष्ट किया कि उनका यह कहना कि "पाकी की नीयत से" इस ओर संकेत करता है कि यदि उसने पाकी की नीयत नहीं की, तो वह मुस्तअमल नहीं होगा।[3] लेकिन महिमावान है वह जो कभी नहीं भूलता।

फिर (2) उन्होंने 'अल-मिन्हा' में कहा: "क्या फ़र्ज़ के गिरने और इबादत के बीच कोई अटूट संबंध है या नहीं? आदि।" मैं कहता हूँ: (3) उनका मतलब यह है कि क्या इबादत फ़र्ज़ के गिरने को अनिवार्य करती है या नहीं, क्योंकि संबंध दोनों पक्षों से होता है। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह नहीं सोच सकता कि फ़र्ज़ का गिरना इबादत को अनिवार्य करता है, क्योंकि वज़ू में नाक में पानी डालना, कुल्ली करना, और खाने के लिए कुल्ली करना, और वज़ू पर वज़ू करना और इसी तरह के अन्य कार्य...

[पादलेख] 1. गुन्यातुल मुस्तमली, अल-माउल मुस्तअमल, सुहैल एकेडमी लाहौर, 1/153 2. मिहतुल ख़ालिक़ अलल बहरिर रैक़, अल-मुस्तअमल, सईद कंपनी कराची, 1/91 3. मिहतुल ख़ालिक़ अलल बرهरि रैक़, अल-मुस्तअमल, सईद कंपनी कराची, 1/92 4. मिहतुल ख़ालिक़ अलल बرهरि रैक़, अल-मुस्तअमल, सईद कंपनी कराची, 1/92

[دایاں کالم - اردو متن] جو ہم نے کہی ہے ، اور غنیہ میں فرمایا کہ اگر بچہ نے پانی میں ہاتھ ڈالا اور یہ علم تھا کہ اس کے ہاتھ پر کوئی نجاست موجود نہیں ہے تو اس پانی سے وضو جائز ہے ، جو ہم نے کہی ہے ، اور اس کی طہارت میں شک ہے تو مستحب یہ ہے کہ اُس پانی سے وضو نہ کرے اور اگر وضو کیا تو جائز ہے ، یہ اُس صورت میں ہے جب کہ بچہ نے اُس سے وضو نہ کیا ہو اور اگر نیت کے ساتھ وضو کیا ہو تو متاخرین کا اس میں اختلاف ہے ، اور پسندیدہ قول یہ ہے کہ اگر وہ عاقل ہو تو مستعمل قرار پائے گا کیونکہ اُس نے معتبر قربت کی نیت کی ہے اھ اور اگر وہ ارادہ کیا جو نفس منحہ میں گزرا ہے اس سے چند سطور قبل تو وہ اور زیادہ واضح اور روشن ہے وہ خانیہ سے نقل کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ عاقل بچہ جب وضو کرے اور اس سے پاکی حاصل کرنے کا ارادہ کرے تو چاہئے کہ پانی مستعمل ہو جائے، کیونکہ اُس نے معتبر قربۃ کی نیت کی اھ پھر خود ہی فرمایا کہ اس کا قول "یرید بہ التطھیر" اس امر کی طرف اشارہ ہے کہ اگر اس نے نیت تطہیر نہ کی تو پانی مستعمل نہ ہو گا اھ لیکن بے عیب ہے وہ خدا جو بھولتا نہیں۔ پھر منحہ میں فرمایا اب یہ امر باقی رہ گیا ہے کہ آیا سقوطِ فرض اور قربۃ میں تلازم ہے یا نہیں الخ۔ت اقول : انکی مراد یہ ہے کیا قربت سقوطِ فرض کو مستلزم ہے یا نہیں؟ کہ تلازم جانبین سے ہی ہوتا ہے اور کوئی عقلمند آدمی یہ سوچ بھی نہیں سکتا ہے کہ سقوطِ فرض مستلزم قربت ہے ، کیونکہ وضو میں ناک میں پانی ڈالنا اور کلی کرنا اور کھانے کیلئے کلی کرنا اور اس کے

[بایاں کالم - عربی متن] توضأ به ناویًا اختلف فیه المتأخرون والمختار انه یصیر مستعملا اذا کان عاقلا لانه نوی قربة معتبرة [1] اه وان اراد به ما مر فی نفس المنحة قبیل هذا بسطور فهو اصرح وابین حیث قال نقلا عن الخانیة الصبی العاقل اذا توضأ یرید به التطهیر ینبغی ان یصیر الماء مستعملا لانه

نوی قربة معتبرة [2] ثم (١) افاد بنفسه ان قوله یرید به التطهیر یشیر الی انه ان لم یرد به التطهیر لا یصیر مستعملا [3] اه ولکن سبحن من لاینسی ثم (٢) قال فی المنحة بقی هل بین سقوط الفرض والقربة تلازم ام لا الخ اقول : (٣) مراده هل القربة تلزم سقوط الفرض ام لافان التلازم یکون من الجانبین ولا یتوهم عاقل ان سقوط الفرض یلزم القربة فأن الاستنشاق فی الوضوء والمضمضة فیه وللطعام ومنه والوضوء علی الوضوء وامثالها

[فٹ نوٹس] 1. غنیۃ المستملی الماء المستعمل سہیل اکیڈمی لاہور ١/ ١٥٣ 2. منحۃ الخالق علی البحر الرائق المستعمل سعید کمپنی کراچی ١/ ٩١ 3. منحۃ الخالق علی البحر الرائق المستعمل سعید کمپنی کراچی ١/ ٩٢ 4. منحۃ الخالق علی البحر الرائق المستعمل سعید کمپنی کراچی ١/ ٩٢

Fatawa Razawiyya Volume 2

All of that is closeness (qurbah) and not the falling away of an obligation (suqut al-fard), but there is leniency in the wording, and it was thought that it follows 'Al-Fath' and 'Al-Bahr' where it is said there is a correlation (talazum) between the falling away of the obligation and the removal of ritual impurity (irtifa' al-hadath). It says in 'Al-Minhah': The intended meaning is the negation of correlation from one of the two sides, which is the side of the falling away of the obligation, etc.

I say (1): It is not like that; rather, correlation (talazum) means that necessity (luzum) is from both sides. Therefore, its negation (salb) will be true in the case of the absence (intifa) of necessity from one side, and this is exactly what both the learned scholars intended. Explaining it with necessity from only one side corrupts the meaning because when negation is applied to it, the result will be the negation of necessity from both sides, and this is neither correct nor intended. In any case, we must reflect on this question because if the correlation between closeness (qurbat) and the falling away of obligation (suqut-e-fard) becomes evident, then falling away of obligation will also be negated, just as the removal of impurity (raf-e-hadath) was removed, and the ruling on 'usage' would depend solely on closeness, as the jurists have attributed it to Imam Muhammad. Although the correct research is that he did not differ with the two masters (Shaykhayn), as mentioned in 'Bahr' and 'Fath'. The author of 'Minhah' has answered this question by stating: if no reward is recognized in the falling away of an obligation, then it is correct; after gargling, and wudu upon wudu, and other similar things are all acts of worship, but no obligation is dropped by them. However, he has used leniency in the wording, and they thought they were following 'Fath' and 'Bahr'. Both of them say there is no correlation between falling away of obligation and removal of impurity. In 'Minhah', it is stated that negation of correlation is from one side, and that is toward the side of falling away of obligation, etc. (T)

1 Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Al-Musta'mil, Saeed Company, Karachi, 1/92.
Page 72 of 711

फतावा रज़विया जिल्द - 2

यह सब निकटता (कुर्बा) है और कर्तव्य का गिरना (सुकूत-ए-फर्ज़) नहीं है। हालाँकि, शब्दावली में कुछ ढील है, और यह सोचा गया कि यह 'अल-फ़तह' और 'अल-बहर' का अनुसरण करता है जहाँ यह कहा गया है कि कर्तव्य के गिरने और अशुद्धि के निवारण (इर्तिफ़ा-उल-हदस) के बीच एक सहसंबंध (तलाज़ुम) है। 'अल-मिन्हा' में कहा गया है: अभीष्ट अर्थ दो पक्षों में से एक पक्ष से सहसंबंध का निषेध है, जो कि कर्तव्य के गिरने का पक्ष है, इत्यादि।

मैं कहता हूँ (1): बात यह नहीं है। बल्कि, सहसंबंध (तलाज़ुम) का अर्थ है कि आवश्यकता (लुज़ूम) दोनों पक्षों से हो। इसलिए, इसका निषेध (सल्ब) एक पक्ष से आवश्यकता की अनुपस्थिति (इंतिफ़ा) की स्थिति में सत्य होगा, और यही दोनों विद्वानों का इरादा है। इसे केवल एक पक्ष की आवश्यकता के साथ समझाना अर्थ को बिगाड़ देता है, क्योंकि जब इस पर निषेध लागू होगा, तो परिणाम दोनों पक्षों से आवश्यकता का निषेध होगा, और यह न तो सही है और न ही अभीष्ट है। किसी भी स्थिति में, हमें इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए क्योंकि यदि निकटता (कुर्बत) और कर्तव्य के गिरने (सुकूत-ए-फर्ज़) के बीच सहसंबंध स्पष्ट हो जाता है, तो कर्तव्य का गिरना भी निरस्त हो जाएगा, जैसे अशुद्धि का निवारण (रफ़-ए-हदस) हटा दिया गया था, और 'उपयोग' का नियम पूरी तरह से निकटता पर आधारित होगा, जैसा कि न्यायविदों ने इमाम मुहम्मद की ओर जिम्मेदार ठहराया है। हालाँकि सही शोध यह है कि उन्होंने दोनों उस्तादों (शेखैन) के साथ मतभेद नहीं किया, जैसा कि 'बहर' और 'फ़तह' में है। 'मिन्हा' के लेखक ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा है: यदि कर्तव्य के गिरने में कोई पुण्य (सवाब) नहीं माना जाता है, तो यह सही है; कुल्ला करने के बाद, और वज़ू पर वज़ू, और इसी तरह की अन्य चीजें सभी इबादतें (पूजा) हैं, लेकिन उनसे कोई फर्ज़ (कर्तव्य) नहीं गिरता है। हालाँकि, उन्होंने शब्दावली में ढील का उपयोग किया है, और उन्होंने सोचा कि उन्होंने 'फ़तह' और 'बहर' का अनुसरण किया है। वे दोनों कहते हैं कि कर्तव्य के गिरने और अशुद्धि के निवारण के बीच कोई सहसंबंध नहीं है। 'मिन्हा' में कहा गया है कि सहसंबंध का निषेध एक पक्ष से है, और वह कर्तव्य के गिरने के पक्ष में है, इत्यादि। (त)

1 मिन्हातुल खालिक अलल बहरुर राइक, अल-मुस्तअमिल, सईद कंपनी, कराची, 1/92। पृष्ठ 72 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

کل ذلک قرب ولا سقوط لفرض و لکن تسامح فی العبارۃ و ظن انہ تبع فیہ الفتح و البحر حیث قال تلازم بین سقوط الفرض و ارتفاع الحدث قال فی المنحۃ المراد نفی التلازم من احد الجانبین و ہو جانب سقوط الفرض الخ

میں کہتا ہوں بات یہ نہیں ہے بلکہ تلازم کا مطلب یہ ہے کہ لزوم دونوں جانب سے ہو، تو اس کا سلب احد الجانبین سے لزوم کے انتفاء کی صورت میں صادق آئے گا اور یہی مراد ہے دونوں فاضل علماء کی، اور اس کی تفسیر احد الجانبین کے لزوم کے ساتھ معنی کو فاسد کرنے والی ہے، کیونکہ جب اس پر سلب وارد ہوگا تو حاصل نفی لزوم ہو گا دونوں جانبوں سے اور یہ نہ تو صحیح ہے اور نہ ہی مراد ہے، اور بہر نوع ہمیں اس سوال پر غور کرنا ہے کیونکہ اگر قربت اور سقوط فرض کا لزوم ظاہر ہو جائے تو سقوط فرض بھی ساقط ہو جائے گا جیسے کہ رفع حدث مرتفع ہوا اور حکم استعمال کا دارومدار محض قربت پر ہو جائیگا جیسا کہ فقہاء نے اس کو امام محمد کی طرف منسوب کیا ہے اگرچہ تحقیق یہی ہے کہ انہوں نے شیخین کی مخالفت نہیں کی جیسا کہ بحر اور فتح میں ہے، علامہ صاحب منحہ نے اس سوال کا جواب دیا ہے فرماتے ہیں کہ اگر اسقاط فرض میں کوئی ثواب نہ مانا جائے تو یہ درست بعد گلی کرنا اور وضو پر وضو اور اسی جیسی دوسری چیزیں سب کی سب عبادتیں ہیں لیکن ان سے کوئی فرض ساقط نہیں ہوتا ہے، لیکن انہوں نے عبارت میں تسامح سے کام لیا ہے اور انہوں نے گمان کیا ہے کہ اس میں انہوں نے فتح اور بحر کی متابعت کی ہے وہ دونوں فرماتے ہیں سقوط فرض اور ارتفاع حدث میں تلازم نہیں۔ منحہ میں فرمایا ایک جانب سے تلازم کی نفی ہے اور وہ سقوط فرض کی جانب ہے الخ(ت)

Fatawa Razawiyya Volume 2

Indeed, the preferred view is the first, because the reward in Wudu is for the intended action, which legally consists of washing the three limbs and wiping the head. Thus, washing one limb is not a Sharia-compliant Wudu; so how can there be reward for it? Except, it might be said that the reward for washing each limb is contingent upon completion. If it is completed, then reward is given for washing each limb, otherwise not. This is indicated by what Muslim narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him), who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When a Muslim or believer servant performs Wudu..." until the end of the Hadith which we have previously mentioned (1) etc.

I say, firstly: (1) There is no meaning to requiring 'nearness to God' (qurbah) for the discharge of an obligation (fard), even if we say that reward is established in the discharge of an obligation, because reward is only through intention (niyyah) and the discharge of obligation does not depend on it. So the truth is that between the two, there is a general relationship ('umum min wajh) absolutely. And if he (may Allah have mercy on him) had looked at the difference between the two expressions 'suqut' (falling away) and 'isqat' (causing to fall away), he would have realized that reward, if any, is only through the intention indicated by 'isqat', and 'suqut' does not depend on it.

Secondly: (3) This humble servant has a word regarding the reward for purity being dependent on completion; rather, reward is linked to the intention of obedience, as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, actions are judged by intentions."

[Right Column Translation]: No, and if it is said that there is reward in it, then it is correct. Allamah Nuh Afandi says that sound reasoning demands that the first view is preferred because the reward is for the intended Wudu, and that in Sharia means washing the three limbs and wiping the head. So washing one limb is not a Sharia-compliant Wudu, so how will there be reward for it! Yes, it can be said that the reward for washing a single limb will remain dependent on completing the Wudu. Now, if it is completed, reward will be received for washing every limb, otherwise not. The proof for this is the narration of Muslim from Abu Huraira that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When a Muslim or believer performs Wudu..." the Hadith which we have mentioned before (T). I say, firstly, there is no meaning to the necessity of 'qurbah' (closeness) for the discharge of an obligation, whether we

say reward will be established in the discharge of obligation, because reward is not without intention and discharge of obligation is not dependent on intention. So the truth is that between these two there is 'umum min wajh' (general relationship) absolutely. And if he (may Allah have mercy on him) had looked at the difference between the two terms, i.e., 'suqut' and 'isqat', he would have known that reward comes from intention which is understood from 'isqat', and 'suqut' is not dependent on it. Secondly, this humble servant has a concern in the matter that reward is dependent on the completion of purity; rather, reward is dependent on the intention to follow the command, as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said...

---

1 Manhiya al-Khaliq on the margin of Bahr al-Ra’iq, discussion of used water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/92. Page 73 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

बेशक, पसंदीदा विचार पहला है, क्योंकि वज़ू में सवाब (पुण्य) उस मक़सूद काम के लिए है जो शरीयत में तीन अंगों को धोने और सिर के मसह (पोंछने) का नाम है। तो एक अंग को धोना शरीअती वज़ू नहीं है; फिर उस पर सवाब कैसे मिलेगा? हाँ, यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक अंग को धोने का सवाब वज़ू पूरा करने पर निर्भर रहेगा। यदि वह इसे पूरा कर लेता है, तो प्रत्येक अंग को धोने पर सवाब दिया जाएगा, अन्यथा नहीं। इस पर वह हदीस दलील है जिसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है, जिन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जब एक मुसलमान या मोमिन बंदा वज़ू करता है..." हदीस के अंत तक जिसका हमने पहले उल्लेख किया है।

मैं कहता हूँ, सबसे पहले: (1) फर्ज़ के गिरने के लिए 'क़ुर्बत' (ईश्वर की निकटता) की अनिवार्यता का कोई अर्थ नहीं है, भले ही हम कहें कि फर्ज़ की अदायगी में सवाब तय है, क्योंकि सवाब केवल नीयत (इरादे) से होता है और फर्ज़ का गिरना उस पर निर्भर नहीं है। तो सच यह है कि इन दोनों के बीच पूर्ण रूप से 'उमूम मिन वजह' का रिश्ता है। और अगर वे (अल्लाह उन पर रहम करे) 'सुक़ूत' (स्वयं गिरना) और 'इस्क़ात' (गिराना) इन दो शब्दों के बीच के अंतर को देखते, तो उन्हें पता चलता कि सवाब, यदि है, तो केवल उस नीयत से है जो 'इस्क़ात' से समझी जाती है, और 'सुक़ूत' उस पर निर्भर नहीं है।

दूसरा: (3) इस अदना बंदे (गुलाम) का इस मामले में कुछ कहना है कि क्या पाकी (पवित्रता) के सवाब का मिलना उसके पूरा होने पर निर्भर है; बल्कि सवाब हुक्म मानने की नीयत पर निर्भर है, जैसा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "कर्मों का दारोमदार नीयतों पर है।"

[दाहिने कॉलम का अनुवाद]: नहीं, और अगर कहें कि इसमें सवाब है तो यह सही है, अल्लामा नूह आफ़ंदी फ़रमाते हैं कि सही नज़रिया यही मांग करता है कि पहला विचार ही बेहतर है क्योंकि सवाब मक़सूद वज़ू में है और वह शरीयत में तीन अंगों को धोने और सिर के मसह को कहते हैं, तो एक अंग का धोना शरीअती वज़ू नहीं है तो उस पर सवाब कैसे होगा! हाँ यह कहा जा सकता है कि सवाब किसी एक अंग के धोने का सवाब वज़ू पूरा करने पर रुका रहेगा, अब अगर मुकम्मल कर लेगा तो हर अंग के धोने पर सवाब पाएगा वरना नहीं। इसकी दलील मुस्लिम की रिवायत अबू हुरैरा से है कि

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब मुसलमान या मोमिन वज़ू करता है, वही हदीस जिसका ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं (त)। मैं कहता हूँ पहले कुर्बत के फर्ज़ के गिरने को लाज़मी होने का कोई मतलब नहीं है, चाहे हम यह कहें कि सवाब फर्ज़ के गिरने में पक्का होगा, क्योंकि सवाब बिना नीयत के नहीं होता और फर्ज़ का गिरना नीयत पर निर्भर नहीं है, तो सच यह है कि इन दोनों में मुतलक़ तौर पर 'उमूम मिन वजह' है, और अगर वह रहमतुल्लाहि अलैहि दोनों शब्दों के अंतर को देखते यानी सुकूत और इस्क़ात तो उनको मालूम होता कि सवाब नीयत से होता है जो इस्क़ात से समझ आता है और सुकूत उस पर निर्भर नहीं। दूसरा, अदना बंदे को इस बात में आपत्ति है कि सवाब पाकी के मुकम्मल होने पर निर्भर है बल्कि सवाब हुक्म मानने की नीयत पर निर्भर है, जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने...

---

1 मन्हिया अल-ख़ालिक हाशियह बहर अल-राइक़ पर, मुस्तमल पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/92 पृष्ठ 711 का 73

فتاوی رضویه جلد ثانی

ان الراجح هو الاول لان الثواب فی الوضوء المقصود وهو شرعا عبارة عن غسل الاعضاء الثلاثة ومسح الراس فغسل عضو منها لیس بوضوء شرعی فکیف یثاب علیه اللهم الا ان یقال ان یثاب علی غسل کل عضو منها ثواباً موقوفاً علی الاتمام فان اتمه اثیب علی غسل کل عضو منها والا فلا ویدل علیه مااخرجه مسلم عن ابی هریرة رضی اللہ تعالی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اذا توضأ العبد المسلم اوالمؤمن الی اخر الحدیث الذی قدمنا ۱ اھ۔

اقول اولا: (۱) لامعنی للزوم القربة سقوط الفرض وان قلنا بثبوت الثواب فی اسقاط الفرض اذلاثواب الا بالنیة وسقوط الفرض لایتوقف علیها فالحق ان بینهما عموما من وجه مطلقا ولو (۲) نظر رحمه اللہ تعالی الی فرق مابین تعبیریه بالسقوط والاسقاط لتنبه لان الثواب ان کان لم یکن الا بالقصد المدلول علیه بالاسقاط والسقوط لایتوقف علیه۔

وثانیا: (۳) للعبدالضعیف کلام فی توقف الثواب فی الطهارة علی الاتمام بل الثواب منوط بنیة الامتثال کما قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم انما الاعمال بالنیات

[دائیں کالم کا متن]: نہیں، اور اگر کہیں کہ اس میں ثواب ہے تو یہ درست ہے، علامہ نوح آفندی فرماتے ہیں نظر صحیح کا تقاضا یہ ہے کہ راجح پہلا قول ہی ہے کیونکہ ثواب مقصود وضو میں ہے اور وہ شرعاً اعضاء ثلاثہ کے دھونے اور سر کے مسح کو کہتے ہیں، تو ایک عضو کا دھونا شرعی وضو نہیں ہے تو اس پر ثواب کیسے ہوگا! ہاں یہ کہا جاسکتا ہے کہ ثواب کسی ایک عضو کے دھونے کا ثواب موقوف رہے گا مکمل وضو کرنے پر، اب اگر مکمل کرلے گا تو ہر ہر عضو کے دھونے پر ثواب پائے گا ورنہ نہیں۔ اس کی دلیل مسلم کی روایت ابوہریرہ سے ہے کہ حضور

اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا جب مسلمان یا مومن وضو کرتا ہے الحدیث الذی قدمناہ اھ (جو حدیث ہم پہلے بیان کر چکے(ت) میں کہتا ہوں اولاً قربت کے سقوط فرض کو لازم ہونے کے کوئی معنی نہیں، خواہ ہم یہ کہیں کہ ثواب ثابت ہوگا اسقاط فرض میں، کیونکہ ثواب بلانیت کے نہیں ہوتا اور فرض کا سقوط نیت پر موقوف نہیں ہے، تو حق یہ ہے کہ ان دونوں میں عموم من وجہ مطلقاً ہے، اور اگر وہ رحمہ اللہ دونوں تعبیروں کے فرق کو دیکھتے، یعنی سقوط اور اسقاط تو ان کو معلوم ہوتا کہ ثواب نیت سے ہوتا ہے جو اسقاط سے مفہوم ہوتی ہے اور سقوط اس پر موقوف نہیں۔ ثانیاً عبد ضعیف کو اس امر میں کلام ہے کہ ثواب موقوف ہے طہارت کے مکمل ہونے پر بلکہ ثواب موقوف ہے حکم ماننے کی نیت پر، جیسا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

---

1 منحیۃ الخالق علی حاشیہ بحر الرائق بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۲

Fatawa Rizvia, Volume Two

[Left Column - Arabic Text] I say: It is not clear to me how the removal of ritual impurity (Raf' al-Hadath) is realized within an act of worship (Qurbah) without the falling away of the obligation (Suqut al-Fard), such that this other triplication mentioned by this scholar would be correct. Rather, whenever ritual impurity is removed, the falling away of the obligation necessarily follows, as he admitted in 'al-Minhah'. If he leans towards what we previously cited from him regarding the issue of the wudu of a discerning child—i.e., if he performs wudu with an intention, then the removal of ritual impurity is realized within the act of worship without the falling away of an obligation. So I say, firstly: You have already known its invalidity. Secondly, even if it is granted, it does not follow that the removal of ritual impurity would be realized without an act of worship or the falling away of an obligation when a child performs wudu without an intention, because the removal of ritual impurity does not require intention, whereas an act of worship is not found without it. At that point, the original objective is destroyed and the triplication mentioned by the Researcher returns. Therefore, the correct view is what I mentioned: that the removal of ritual impurity necessitates the falling away of the obligation, so it suffices for it. Then I say, if the Absolute Researcher (al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) had turned his attention here to the commentary on 'al-Hidayah', he would not have leaned towards the triplication of the cause, and it would have become apparent...

[Right Column - Urdu Text] There is no evidence for the matter that the reward will depend on the whole, and the summary is that there is no independence of either 'closeness' (qurbat) or 'falling away' (suqoot) from each other. Unlike 'removal' (raf') and 'falling away' (suqoot), there is no reason for triplication. Then I saw Allama Sh. indicating this in 'Radd al-Muhtar'; he said that the removal of ritual impurity is realized either within 'closeness' or within 'falling away of obligation', or within both, so independence will be achieved from both of them. (T) I say, it is not clear to me how removal of ritual impurity will be realized within 'closeness' without the falling away of obligation, so that this second triplication indicated by this Allama is established as correct. Rather, whenever ritual impurity is removed, the obligation will fall away from it, as he admitted in 'Minhah'. If they lean towards what we previously cited from them—i.e., the wudu of a discerning child—when a discerning child performs wudu with intention, the ritual impurity will be removed within 'closeness', but the obligation will not fall away. (T) I say, firstly you have already known its falsehood. Secondly, if this is accepted, it would follow that removal of

ritual impurity is realized without 'closeness', and nor would there be a falling away of obligation when a child performs wudu without intention, because removal of ritual impurity does not need intention while 'closeness' is not found without intention. In this case, the main objective will be finished and that triplication will return which the researcher mentioned. So, the correct view is what I mentioned, that falling away of obligation is necessary for removal of ritual impurity, so this makes it unnecessary. (T) Then I say if the Absolute Researcher had paid attention to the words of the author of Hidayah, then he would not have turned towards the triplication of cause and what is from common books and texts...

फतावा रिज़विया, जिल्द-2

[बायाँ स्तंभ - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: मुझे यह स्पष्ट नहीं हुआ कि कैसे रिसाला (रफ़्उल-हदस) फर्ज़ के गिरने (सुकूत उल-फर्ज़) के बिना क़ुरबत (ईश्वर की निकटता का कार्य) के दायरे में सिद्ध हो सकता है, ताकि इस विद्वान द्वारा उल्लिखित अन्य त्रयी (तश्लीस) सही हो सके। बल्कि, जब भी अपवित्रता दूर होती है, तो फर्ज़ का गिरना आवश्यक हो जाता है, जैसा कि उन्होंने 'अल-मिन्हा' में स्वीकार किया है। यदि वह उस ओर झुकते हैं जो हमने पहले उनसे विवेचित बच्चे के वुज़ू के मसले के बारे में उद्धृत किया है—यानी, जब एक समझदार बच्चा नीयत के साथ वुज़ू करता है, तो फर्ज़ गिरे बिना क़ुरबत के दायरे में अपवित्रता दूर हो जाती है। तो मैं कहता हूँ, पहला: आप इसकी अमान्यता को जान चुके हैं। दूसरा: यदि इसे मान भी लिया जाए, तो यह आवश्यक नहीं है कि जब बच्चा बिना नीयत के वुज़ू करे, तो क़ुरबत या फर्ज़ के गिरने के बिना अपवित्रता का दूर होना सिद्ध हो जाए, क्योंकि अपवित्रता को दूर करने के लिए नीयत की आवश्यकता नहीं होती, जबकि क़ुरबत उसके बिना नहीं पाई जाती। उस स्थिति में, मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा और शोधकर्ता द्वारा उल्लिखित त्रयी फिर से आ जाएगी। अतः सही बात वही है जो मैंने कही कि अपवित्रता के दूर होने के साथ फर्ज़ का गिरना अनिवार्य है, अतः वह उसके लिए पर्याप्त है। फिर मैं कहता हूँ कि यदि मुहाक़िक-ए-मुतलक़ (परम शोधकर्ता) ने यहाँ 'हिदाया' की व्याख्या पर ध्यान दिया होता, तो वे कारण की त्रयी की ओर नहीं झुकते, और यह स्पष्ट हो जाता...

[दायाँ स्तंभ - उर्दू पाठ] इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि सवाब पूर्ण पर निर्भर होगा, और सारांश यह है कि क़ुरबत और सुकूत (गिरना) में से कोई भी एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं है। रफ़्(हटाना) और सुकूत (गिरना) के विपरीत, त्रयी का कोई कारण नहीं है। फिर मैंने अल्लामा श. को देखा कि उन्होंने 'रद्द अल-मुह्तार' में इस ओर संकेत किया है; उन्होंने कहा कि अपवित्रता का दूर होना या तो क़ुरबत के दायरे में सिद्ध होता है या फर्ज़ के गिरने के दायरे में, या दोनों के दायरे में, तो इन दोनों से इसमें स्वतंत्रता प्राप्त हो जाएगी। (त) मैं कहता हूँ कि मुझ पर यह स्पष्ट नहीं हुआ कि फर्ज़ के गिरने के बिना क़ुरबत के दायरे में अपवित्रता का दूर होना कैसे सिद्ध होगा, ताकि इस विद्वान द्वारा संकेतित यह दूसरी त्रयी सही मानी जा सके। बल्कि, जब भी अपवित्रता हटेगी, उससे फर्ज़ गिर जाएगा, जैसा कि उन्होंने 'मिन्हा' में स्वीकार किया है। यदि वे उस ओर झुकते हैं जो हमने पहले उनसे उद्धृत किया है—यानी समझदार बच्चे का वुज़ू—जब समझदार बच्चा नीयत के साथ वुज़ू करे, तो अपवित्रता क़ुरबत के दायरे में हट जाएगी लेकिन फर्ज़ नहीं गिरेगा। (त) मैं कहता हूँ कि पहले तो आप इसकी असत्यता

जान चुके हैं। दूसरे, यदि इसे मान लिया जाए, तो यह अनिवार्य होगा कि अपवित्रता का दूर होना बिना क़ुरबत के सिद्ध हो, और न ही फर्ज़ का गिरना हो जब बच्चा बिना नीयत के वुज़ू करे, क्योंकि अपवित्रता दूर करना नीयत का मोहताज नहीं होता जबकि क़ुरबत बिना नीयत के नहीं पाई जाती। इस स्थिति में, मूल उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा और वह त्रयी लौट आएगी जिसका शोधकर्ता ने उल्लेख किया है। तो सही वही है जिसका मैंने उल्लेख किया कि अपवित्रता दूर होने के लिए फर्ज़ का गिरना अनिवार्य है, अतः यह उससे बेनियाज़ (स्वतंत्र) करने वाला है। (त) फिर मैं कहता हूँ कि यदि मुहाक़िक़-ए-मुतलक़ हिदाया के लेखक के कलाम पर ध्यान देते, तो वे सबब की त्रयी की ओर न मुड़ते और जो आम किताबों और मतून (मूल पाठों) से...

पृष्ठ 75/711

اقول: لم یظھر لی کیف یتحقق رفع الحدث فی ضمن القربۃ من دون سقوط الفرض حتی یصح ھذا التثلیث الاخر الذی ذکر ھذا العلامۃ بل کلما رفع الحدث لزم منہ سقوط الفرض کما اعترف بہ فی المنحۃ فان جنح الی ما قدمنا عنہ من مسألۃ وضوء الصبی العاقل ای اذا توضأ ناویا فقد تحقق رفع الحدث فی ضمن القربۃ من دون سقوط فرض۔ فاقول اولا: قد علمت بطلانہ وثانیا ان (۱) سلم فلا یلزم ان یتحقق رفع الحدث من دون قربۃ ولا سقوط فرض اذا توضأ الصبی غیر ناو لان رفع الحدث لایفتقر الی النیۃ والقربۃ لا توجد بدونھا فحینئذ ینھدم اصل المرام ویعود التثلیث الذی ذکر المحقق فالصواب ماذکرت ان رفع الحدث یلزمہ سقوط الفرض ففیہ غنیۃ عنہ۔ ثم اقول لو (۱) ان المحقق علی الاطلاق حانت منہ التفاتہ ھنالی کلام مشروح الھدایۃ لما جنح الی تثلیث السبب ولظھر

امر پر دلیل نہیں کہ ثواب تمام پر موقوف ہوگا، اور خلاصہ یہ کہ قربت اور سقوط میں سے کسی ایک کو دوسرے سے بے نیازی نہیں۔ بخلاف رفع اور سقوط کے، تو تثلیث کی کوئی وجہ نہیں، پھر میں نے علامہ ش کو دیکھا کہ انہوں نے ردالمختار میں اس طرف اشارہ کیا، فرمایا رفعِ حدث قربت کے ضمن ہی میں متحقق ہوتا ہے یا اسقاطِ فرض کے یا دونوں کے ضمن میں متحقق ہوتا ہے، تو ان دونوں سے اس میں بے نیازی حاصل کی جائے گی اھ (ت) میں کہتا ہوں مجھ پر یہ ظاہر نہیں ہوا کہ رفعِ حدث قربت کے ضمن میں کیسے متحقق ہوگا بغیر فرض کے سقوط کے یہاں تک کہ یہ دوسری تثلیث جس کی طرف اس علامہ نے اشارہ کیا ہے صحیح قرار پائے، بلکہ جب بھی حدث مرتفع ہوگا اس سے فرض ساقط ہوگا، جیسا کہ منحہ میں اس کا اعتراف کیا ہے، تو اگر اس کی طرف مائل ہوں جو ہم نے پہلے ان سے نقل کیا ہے یعنی عاقل بچہ کا وضو، جب عاقل بچہ نیت کے ساتھ وضو کرے تو حدث قربت کے ضمن میں مرتفع ہو جائے گا مگر فرض ساقط نہ ہو گا۔ (ت)

میں کہتا ہوں اولاً تم اس کا بطلان جان چکے ہو۔ ثانیاً اگر یہ مان لیا جائے تو لازم آئے گا کہ رفعِ حدث متحقق ہو بلا قربت کے، اور نہ فرض کا سقوط ہو جب بچہ بلانیت وضو کرے، کیونکہ رفعِ حدث محتاجِ نیت نہیں ہوتا جبکہ قربت بلانیت نہیں پائی جاتی ہے، اس صورت میں اصلِ مقصود ہی ختم ہو جائے گا اور وہ تثلیث عود کر آئے گی جس کو محقق نے ذکر کیا ہے، تو صحیح وہی ہے جس کو میں نے ذکر کیا کہ رفعِ حدث کو سقوطِ فرض لازم ہے، پس یہ اُس سے بے نیاز کرنے والا ہے۔ (ت) پھر میں کہتا ہوں اگر محقق علی الاطلاق صاحبِ ہدایہ کے کلام پر توجہ دیتے تو تثلیث سبب کی طرف متوجہ نہ ہوتے اور جو عام کتب اور متون سے

Fatawa Razawiyya Volume Two

The answer to the common objections raised against general statements and texts would also become clear. The reason is that the author of al-Hidayah (may his secret be sanctified) expressed the matter as "that water with which hadath (ritual impurity) is removed or which is used as a means of seeking nearness (qurbat)." In providing the evidence, he stated that the "dropping of the obligation" (isqat al-fard) is also effective, so the corruption (of the water) will be apparent from both matters. From this, it is known that by 'removal of hadath' is meant the 'dropping of the obligation', and the outcome of both is the same. There is no doubt that the dropping of the obligation from one limb and not another, rather from one part of a limb and not another part, is established and proven. Even if the rulings of 'elevation of hadath' are not applied to it. And this, as I have indicated, in the explanation of the sub-branches, also includes that case when one performs purification completely or washes some of their limbs, or rather even a part of one limb. Thus, there will be no requirement for threefold washing (tathleeth) and no objection regarding non-divisibility. Its research is cited from the research of Allama Nuh Effendi in 'Munhah', which is quoted in the marginalia of 'Durar', and from what is quoted in the marginalia of 'Majma' from Sheikh Qasim, that 'hadath' is used in two meanings: first, the Sharia-stipulated prohibition from things that are not permissible without purification, and this is indivisible without any disagreement between Abu Hanifa and his two companions. Second, in the sense of 'legal impurity' (najasat hukmiyya), and this is divisible in its occurrence and elevation without disagreement between Abu Hanifa and his two companions.

Note: I say: He mentioned regarding the first [meaning] Abu Hanifa and his two companions [using the dual form] because some scholars said it is divisible...

I say: Regarding the first, the dual form for the two companions is mentioned along with Imam Abu Hanifa because some Mashayikh (scholars) said that for a Junub (person in a state of major ritual impurity) to recite [the Quran], rinsing the mouth... (Continued on the next page)

---

1 Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is not permissible, Al-Maktabah al-Arabiyyah, 1/122. Page 76 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

सामान्य कथनों और मूल पाठों (मतून) पर उठाए गए आपत्तियों का उत्तर भी स्पष्ट हो जाएगा। इसका कारण यह है कि अल-हिदाया के लेखक (उनका रहस्य पवित्र हो) ने इस मामले को इस प्रकार व्यक्त किया है कि "वह पानी जिससे हदस (अनुष्ठानिक अशुद्धि) दूर की गई हो या जिसे निकटता (कुर्बत) प्राप्त करने के साधन के रूप में उपयोग किया गया हो।" प्रमाण देते हुए उन्होंने कहा कि "फ़र्ज़ का गिरना" (इस्क़ात-ए-फ़र्ज़) भी प्रभावशाली है, इसलिए पानी की अशुद्धि दोनों बातों से स्पष्ट होगी। इससे पता चला कि 'हदस के दूर होने' से तात्पर्य 'फ़र्ज़ का गिरना' है, और दोनों का परिणाम एक ही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक अंग से फ़र्ज़ का गिरना और दूसरे से नहीं, बल्कि एक अंग के कुछ हिस्से से गिरना और दूसरे हिस्से से नहीं, यह स्थापित और प्रमाणित है। भले ही उस पर 'हदस के ऊपर उठने' (इरतेफ़ा-ए-हदस) के नियम लागू न हों। और जैसा कि मैंने शाखाओं (फ़ुरअ) के विवरण में संकेत दिया है, इसमें वह स्थिति भी शामिल है जब कोई पूरी तरह से शुद्धता प्राप्त करता है या अपने कुछ अंगों को धोता है, या बल्कि अपने एक अंग का हिस्सा धोता है। तो न तो तीन बार धोने (तथलीथ) की आवश्यकता होगी और न ही अविभाज्यता पर कोई आपत्ति होगी। इसका शोध 'मुन्हा' में अल्लामा नूह अफ़ंदी के उस शोध से उद्धृत है जो 'दुरर' के हाशिये में उद्धृत है, और जो 'मजमा' के हाशिये में शेख़ कासिम से उद्धृत है कि 'हदस' का प्रयोग दो अर्थों में होता है: पहला, उन चीज़ों से शरीयत की मनाही जो बिना शुद्धता के जायज़ नहीं हैं, और यह इमाम अबू हनीफ़ा और उनके दो साथियों के बीच बिना किसी मतभेद के अविभाज्य है। दूसरा, 'हुक्मी नजासत' (विधिक अशुद्धि) के अर्थ में, और यह अबू हनीफ़ा और उनके साथियों के बीच बिना किसी मतभेद के अपने होने और हटने में विभाज्य है।

नोट: मैं कहता हूँ: पहले [अर्थ] के बारे में इमाम अबू हनीफ़ा और उनके दो साथियों का उल्लेख (द्विवचन रूप में) किया गया है क्योंकि कुछ विद्वानों ने इसे विभाज्य कहा है...

मैं कहता हूँ: पहले के संबंध में इमाम अबू हनीफ़ा के साथ दो साथियों के लिए द्विवचन (तथनिया) का शब्द उल्लेख किया गया है क्योंकि कुछ मशायख़ (विद्वानों) ने कहा कि जुनुब (बड़ी अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति) के लिए क़ुरान पाठ हेतु कुल्ला करना... (अगले पृष्ठ पर जारी)

---

1 अल-हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ नहीं है, अल-मकतबाह अल-अरबिय्या, 1/122। पृष्ठ 76/711

اعتراض ہوتا تھا اس کا جواب بھی ظاہر ہو جاتا، اس کی وجہ یہ ہے کہ صاحب ہدایت نے مسئلہ میں یہ تعبیر کی ہے کہ وہ پانی جس سے حدث زائل کیا گیا ہو یا بطور قربت استعمال کیا گیا ہو، اور دلیل میں فرمایا کہ اسقاط فرض بھی مؤثر ہے تو فساد دونوں امروں سے ظاہر ہوگا۔ اس سے معلوم ہوا کہ زوال حدث سے مراد سقوط فرض ہے اور دونوں کا نتیجہ ایک ہی ہے اور اس میں شک نہیں کہ فرض کا سقوط ایک عضو سے نہ کہ دوسرے عضو سے، بلکہ بعض عضو سے نہ کہ دوسرے بعض سے ثابت متحق ہے اگر چہ اس پر ارتفاع حدث کے احکام مترتب نہیں ہوتے ہیں اور یہ جیسا کہ میں اشارہ کر چکا ہوں بیان فروع میں اُس صورت کو بھی شامل ہے جبکہ پوری طرح طہارت کی یا کچھ اعضاء دھوئے بلکہ اپنے ایک عضو کا حصہ دھویا تو نہ تثلیث ہوگی اور نہ عدم تجزی کا اعتراض ہوگا، اس کی تحقیق منحہ میں علامہ نوح آفندی کی اُس تحقیق سے منقول ہے جو درر کے حواشی میں منقول ہے اور جو حواشی مجمع میں شیخ قاسم سے منقول ہے کہ حَدَث کا اطلاق دو معنی میں ہوتا ہے، ایک تو یہ کہ جو چیز بلا طہارت جائز نہ ہو اُس کی شرعی ممانعت، اور یہ چیز ابو حنیفہ اور ان کے صاحبین کے درمیان بالا تفاق بے جوڑ ہے، اور دوسرا حکمی نجاست کے معنی میں ہے، اور یہ ابو حنیفہ اور ان کے صاحبین کے درمیان بلا اختلاف وقوع اور ارتفاع میں تقسیم کے قابل ہے۔

عه : اقول قال فی الاول عند ابی حنیفة وصاحبیه لان من المشائخ من قال بتجزیه اقول: پہلے کے متعلق امام ابو حنیفہ کے ساتھ صاحبین کا صیغہ تثنیہ کا صیغہ ذکر کیا ہے کیونکہ بعض مشائخ نے کہا جنبی کو قرأت کیلئے کلی (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyyah Volume 2

...it has been viewed in this way, and attributed to some eminent scholars, that the ruling of anything refers to its effect which proceeds from it and is consequent upon it. The aforementioned preventiveness (man'iyyah) is not of this category. The ruling of ritual impurity (hadath) is that prayer is not valid with it and touching the Quran (mushaf) is forbidden, and similar rulings. Thus, a definition based on the ruling could be that ritual impurity is that which renders prayer invalid—reflect on this. 'Sh' (Allamah Shami) stated that, additionally, definition by ruling is commonly used among jurists because rulings are the focus of their study. 'T' (Allamah Tahtawi) also alluded to this, and regarding 'preventiveness,' he stated it refers to being a preventer from prayer and from touching the Quran; the more evident view is to call it a 'legal preventer' (mani' shar'i). (Note: T)

I say: And with the guidance of Allah (2), the objections of the critics against 'al-Bahr' are entirely devoid of depth of knowledge. Their entire basis is the assumption that the definition in 'al-Bahr' differs from that in 'al-Ghayah,' for which there is no proof. For preventiveness in the sense of a 'state'—not to mention it being something that cannot subsist without a subject, as it is not an added attribute—does not subsist in the limbs at all. The limbs themselves are not preventers such that preventiveness could subsist in them. In the sense of 'relation,' i.e., something that has an attribution to a legal preventer, it certainly applies to that description.

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/63
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/63
3. Tahtawi 'ala al-Durr, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi, Beirut, 1/56 Page 78 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

...इसे इस दृष्टिकोण से देखा गया है, और इसे कुछ विद्वानों की ओर आरोपित किया गया है कि हर वस्तु का हुक्म उसके उस प्रभाव (असर) को कहते हैं जो उससे निकलता है और उस पर आधारित होता है। पूर्वोक्त निवारकता (मानइयत) इस श्रेणी की नहीं है। 'हदस' (अशुद्धि) का हुक्म तो यह है कि इसके साथ नमाज़ वैध नहीं होती और मुसहफ़ (क़ुरान) को छूना वर्जित है, और इसी प्रकार के अन्य हुक्म। अतः, हुक्म के आधार पर परिभाषा यह हो सकती है कि 'हदस' वह है जिसके साथ नमाज़ वैध न हो—इस पर विचार करें। 'श' (शामी) ने कहा कि इसके अतिरिक्त, फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) के यहाँ हुक्म के आधार पर परिभाषा प्रचलित है क्योंकि वे हुक्मों के परिप्रेक्ष्य से ही चर्चा करते हैं। 'त' (तहतावी) ने भी इसी ओर संकेत किया है और "निवारकता" (मानइयत) के विषय में कहा है कि यह नमाज़ और मुसहफ़ को छूने से निवारक (बाधक) होना है; और अधिक स्पष्ट बात यह है कि इसे 'शारई माने' (कानूनी निवारक) कहा जाए। (टीका: त)

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से (2), 'अल-बहर' पर आपत्ति करने वालों के कथन गहराई और ज्ञान से रहित हैं। उनकी पूरी बुनियाद इस धारणा पर टिकी है कि 'बहर' की परिभाषा 'ग़ाया' की परिभाषा से भिन्न है, जिसका कोई प्रमाण नहीं है। क्योंकि 'निवारकता' (मानइयत) यदि 'हाल' (अवस्था) के अर्थ में ली जाए—इस बात को छोड़ भी दें कि वह अपने विषय के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकती क्योंकि वह अंगों के साथ जुड़ी हुई अतिरिक्त विशेषताओं में से नहीं है—तो अंगों में इसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। अंग स्वयं 'माने' (निवारक) नहीं हैं कि उनमें 'मानइयत' (निवारकता) हो। और 'निसबत' (संबंध) के अर्थ में, अर्थात् वह चीज़ जिसका संबंध किसी कानूनी निवारक से हो, तो यह उस वर्णन पर निश्चित रूप से लागू होता है।

1. रद-अल-मुह्तार, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/63
2. रद-अल-मुह्तार, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/63
3. तहतावी अलद-दुर्र, किताब अत-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, बेरूत, 1/56 पेज 78/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(عربی متن): عنه مترتباً علیه والمانعیة المذکورة لیست کذلك وانما حکم الحدث عدم صحة الصلاة معه وحرمة مس المصحف ونحو ذلك فالتعریف بالحکم کأن یقال الحدث مالا تصح الصلاة معه تأمل ۱ اھـ قال ش (۱) علی ان التعریف بالحکم مستعمل عند الفقهاء لان الاحکام محل مواقع انظارهم ۲ اھـ وقد اشار الیه ط وقال علی قوله مانعیة ای کونه مانعا من الصلاة ومس المصحف والاظهر ان یقال مانع شرعی ۳ اھـ اقول: وباللہ التوفیق (۲) کلام المعترضین علی البحر کله بمعزل عن غوص العرفان مبناه طرا علی ان تعریف البحر غیر تعریف الغایة ولا دلیل علیه فان المانعیة بمعنی الحال فضلا عن کونه مما لا قیام له بموضوع لعدم کونه من الصفات المنضمة لاقیام لها بالاعضاء اصلاً فانها غیر مانعة حتی تکون لها مانعیة وبمعنی النسبة ای شیئ له انتساب الی مانع شرعی صادق قطعاً علی ذلك الوصف

(اردو متن): کرتے ہوئے نظر کی ہے، اور اس کو بعض فضلاء کی طرف منسوب کیا ہے کہ ہر چیز کا حکم اس کے اثر کو کہتے ہیں جو اس سے خارج ہوا اور اس پر مرتب ہو اور مذکورہ مانعیت اس قسم کی نہیں ہے، اور حدث کا حکم تو یہی ہے کہ اس کے ساتھ نماز درست نہیں ہوتی اور مصحف کو نہیں چھوا جاسکتا ہے اور اسی قسم کے دوسرے احکام، تو تعریف بالحکم اس طرح ہوسکتی ہے کہ حدث وہ چیز ہے جس کے ساتھ نماز درست نہ ہو، تامل اھ "ش" نے فرمایا کہ علاوہ ازیں تعریف بالحکم فقہاء کے نزدیک مستعمل ہے کیونکہ احکام ہی سے وہ بحث کرتے ہیں اھ اور "ط" نے بھی اس کی طرف اشارہ کیا ہے اور "مانعیت" پر فرمایا کہ اس کا نماز سے مانع ہونا اور مصحف کے چھونے سے مانع ہونا ہے اور اظہر یہ ہے کہ کہا جائے کہ یہ مانع شرعی ہے اھ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق (۲) میں بتوفیق الہی کہتا ہوں معترضین کے بحر پر اعتراضات گہرائی سے خالی ہیں، کیونکہ ان کی بنیاد اس پر ہے کہ بحر کی تعریف غایہ کی تعریف سے مختلف ہے اور اس پر کوئی دلیل نہیں کیونکہ مانعیت بمعنی حال ہے اس سے قطع نظر کہ وہ صفات منضمّہ میں سے نہ ہونے کی بنا پر اپنے موضوع کے ساتھ قائم نہیں ہوتی، اس کا اعضاء کے ساتھ قیام بالکل ہوتا ہی نہیں کیونکہ اعضاء مانع نہیں تاکہ انکے ساتھ مانعیت قائم ہو اور بمعنی نسبت کے یعنی وہ شے جس کا کسی مانع شرعی کی طرف انتساب ہو

1 ردالمحتار کتاب الطہارت مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۶۳ 2 ردالمحتار کتاب الطہارت مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۶۳ 3 طحطاوی علی الدر کتاب الطہارت مصطفیٰ البابی بیروت ۱/ ۵۶ Page 78 of 711

Fatawa-e-Razvia Volume Two

[Arabic Text Section]: (The legal description) which resides in the body parts and removes their purity, because the preventer is the legal discourse, and what is attributed to it is the reason for which the discourse was revealed, namely ritual impurity (an-Najasat al-Hukmiyah). It is precisely that description existing in the body parts. Thus, the definition returns to the definition of 'al-Ghayah', so there is no contradiction or discrepancy. Don't you see that the student of the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq al-Ala al-Itlaq), meaning Al-Muhaqqiq al-Halabi, defined 'hadath' (ritual state of impurity) in 'Al-Hilyah' as: "the legal description which the Lawgiver (ash-Shari') has considered to exist in the body parts as a result of major impurity (janabah), menstruation, post-natal bleeding, urine, feces, and other things that break wudu. It prevents approaching prayer and what is in its meaning as long as it exists in the person, until the use of what is considered to remove it." 1 As you can see, this is merely an elaboration of what his teacher, the Researcher, summarized. It is exactly the same definition as in 'al-Ghayah'. If he had said "a legal preventer" (mani' shar'i), as Allama 'Ta' suggested, the reference would still be the same, because that legal description, which is impurity, is a legal preventer in the sense that it is the reason for the prevention. The use of 'preventer' in this sense is widespread and common. (1) However, the Researcher kept it in its literal sense and used the relative form, so there is no significant reason for the suggestion. Moreover, (2) the clearest proof of this is that the author of 'al-Bahr' drew this definition from the sources of 'Fath al-Qadir', as mentioned in 'Radd al-Muhtar'. The Researcher said in...

[Urdu Translation/Explanation Section]: This certainly applies to that legal attribute which resides in the body parts and removes their purity. This is because the preventer is that legal discourse, and what is attributed to it is the thing for which the discourse was revealed, and that is 'ritual impurity' (Najasat-e-Hukmiya). It is precisely that attribute which exists in the body parts. Thus, the definition returns to the definition of 'Ghayah', so there is no contradiction or discrepancy. Don't you see that the student of the Absolute Researcher, Al-Muhaqqiq Al-Halabi, defined 'hadath' in 'Hilyah' in such a way that it is a legal attribute which the Lawgiver has considered to exist in the body parts? This is caused by major ritual impurity, menstruation, post-natal bleeding, urination, and defecation etc., which break wudu. This thing prevents one from approaching prayer, or whatever is under the ruling of prayer. This prevention remains as long as this attribute exists in that person, until they use that

thing which removes it. (Ah) This definition, as you see, is the elaboration of the same thing which his teacher, the Researcher, stated concisely. This is precisely the same definition as in 'Ghayah'. If one were to call it a 'legal preventer' (mani'-e-shar'i) as Allama "Ta" said, its result would be the same. This is because that legal attribute, which is impurity, is a legal preventer in the sense that it is the thing due to which there is a prevention, and...

Footnote: 1. Hilyah Page 79 of 711

फतवा-ए-रज़विया दूसरा खंड

(वह कानूनी विशेषता) जो शरीर के अंगों में समा जाती है और उनकी पवित्रता को समाप्त कर देती है, क्योंकि निवारक वह कानूनी संबोधन है, और इसकी ओर जो कुछ भी जिम्मेदार ठहराया जाता है, वह वही कारण है जिसके लिए संबोधन आया था, अर्थात् 'हिकमी अशुद्धता' (नजासत-ए-हुकमिया)। यह बिल्कुल वही विशेषता है जो शरीर के अंगों में बनी रहती है। इस प्रकार, परिभाषा 'अल-ग़ाया' की परिभाषा की ओर लौट आती है, इसलिए कोई विरोधाभास या मतभेद नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि पूर्ण शोधकर्ता (मुहक्किक अल-इतलाक़) के शिष्य मुहक्किक हलबी ने 'अल-हिल्या' में 'हदस' को इस प्रकार परिभाषित किया है: "वह शरीअत संबंधी विशेषता जिसे शरीअत निर्माता (शारे') ने शरीर के अंगों में जनाबत (बड़ी अशुद्धता), मासिक धर्म, प्रसवोत्तर रक्तस्राव, मूत्र, मल और वज़ू को तोड़ने वाली अन्य चीजों के कारण माना है। यह नमाज़ के पास जाने और उसके समान चीजों से तब तक रोकता है जब तक वह व्यक्ति में बना रहता है, जब तक कि वह उस चीज़ का उपयोग न करे जो उसे दूर करने वाली मानी जाती है।" 1 जैसा कि आप देख सकते हैं, यह केवल उसी बात का विस्तार है जिसे उनके गुरु, शोधकर्ता (मुहक्किक) ने संक्षेप में कहा था। यह बिल्कुल वही परिभाषा है जो 'अल-ग़ाया' में है। यदि उन्होंने "शरीअत संबंधी निवारक" (मानि' शरीअत) कहा होता, जैसा कि अल्लामा 'ता' (तहतावी) ने सुझाया था, तो भी इसका संदर्भ वही होता, क्योंकि वह शरीअत संबंधी विशेषता, जो अशुद्धता है, इस अर्थ में एक 'शरीअत संबंधी निवारक' है कि यह वह चीज़ है जिसके कारण मना किया गया है। इस अर्थ में 'निवारक' शब्द का प्रयोग व्यापक और सामान्य है। (१) हालांकि, शोधकर्ता ने इसे इसके शाब्दिक अर्थ में रखा और संबंधवाचक रूप का उपयोग किया, इसलिए सुझाव का कोई महत्वपूर्ण कारण नहीं है। इसके अलावा, (२) इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि 'अल-बहर' के लेखक ने यह परिभाषा 'फ़तह अल-क़दीर' के स्रोतों से ली है, जैसा कि 'रद अल-मुह्तार' में उल्लेख किया गया है। शोधकर्ता ने कहा है...

यह निश्चित रूप से उस शरीअत (कानूनी) विशेषता पर लागू होता है जो शरीर के अंगों में समा जाती है और उनकी पवित्रता को समाप्त कर देती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि निवारक वह शरीअत का संबोधन है, और इसकी ओर जो कुछ भी जिम्मेदार ठहराया जाता है, वह वही चीज़ है जिसके कारण संबोधन आया था, और वह 'हिकमी अशुद्धता' (नजासत-ए-हुकमिया) है। यह बिल्कुल वही विशेषता है जो अंगों में बनी रहती है। इस प्रकार, परिभाषा 'ग़ाया' की परिभाषा की ओर लौट आती है, इसलिए कोई विरोधाभास या मतभेद नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि पूर्ण शोधकर्ता के शिष्य, मुहक्किक

हलबी ने 'हिल्या' में 'हदस' को इस तरह परिभाषित किया है कि यह एक शरीअत संबंधी विशेषता है जिसे शरीअत निर्माता ने अंगों में माना है? यह जनाबत, मासिक धर्म, प्रसवोत्तर रक्तस्राव, मूत्र और मल आदि के कारण होता है, जो वज़ू को तोड़ते हैं। यह चीज़ व्यक्ति को नमाज़ के पास जाने से रोकती है, या जो कुछ भी नमाज़ के हुक्म में है। यह निवारण तब तक रहता है जब तक यह विशेषता उस व्यक्ति में बनी रहती है, जब तक कि वह उस चीज़ का उपयोग न करे जो इसे समाप्त करती है। (अह) यह परिभाषा, जैसा कि आप देख रहे हैं, उसी चीज़ का विस्तार है जिसे उनके गुरु मुहक्किक ने संक्षेप में कहा था। यह बिल्कुल वही परिभाषा है जो 'ग़ाया' में है। यदि इसे अल्लामा "ता" के अनुसार 'शरीअत संबंधी निवारक' कहा जाए, तो उसका परिणाम भी वही होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह शरीअत संबंधी विशेषता, जो अशुद्धता है, इस अर्थ में शरीअत संबंधी निवारक है कि यह वह चीज़ है जिसके कारण मनाही है, और...

फुटनोट: १. हिल्या पृष्ठ ७९/७११

الشرعي الذي يحل بالأعضاء فيزيل طهرها لان المانع هو الخطاب الشرعي والمنتسب اليه مالا جله ورد الخطاب وهي النجاسة الحكمية وهى بعينها ذلك الوصف القائم بالأعضاء فرجع التعريف الى تعريف الغاية فلا خلاف ولا خلف الا ترى ان تلميذ المحقق على الاطلاق اعنى المحقق الحلبي عرف الحدث في الحلية بانه الوصف الحكمي الذي اعتبر الشارع قيامه بالأعضاء مسببا عن الجنابة والحيض والنفاس والبول والغائط وغيرهما من نواقض الوضوء ومنع من قربان الصلاة وما في معناها معه حال قيامه بمن قام به الى غاية استعمال ما يعتبر به زائلا ١ اه وهو كما ترى ليس الا بسطا لما أجمله شيخه المحقق وما هو الاعين ما عرف به في الغاية ولو قال مانع شرعي كما استظهره العلامة ط لكان أيضا مرجعه الى ذلك لان ذلك الوصف الشرعي وهى النجاسة مانع شرعي بمعنى مالا جله المنع واستعمال المانع بهذا المعنى شائع ذائع (١) غير ان المحقق ابقاه على حقيقته فاتى بالنسبة فلا وجه وجيها للاستظهار ثم من (٢) اوضح دليل عليه ان البحر مغترف في هذا الحد من مناهل فتح القدير كما ذكره في رد المحتار وقد قال المحقق في

یہ قطعاً اس وصفِ شرعی پر صادق آتی ہے جو اعضاء میں حلول کرتا ہے اور ان کی طہارت کو زائل کرتا ہے اس لئے کہ مانع وہ خطابِ شرعی ہے، اور اس کی طرف منسوب وہ چیز ہے جس کی وجہ سے خطاب وارد ہوا، اور وہی نجاستِ حکمیہ ہے، اور وہ بعینہٖ وہ وصف ہے جو اعضاء کے ساتھ قائم ہے تو تعریف، غایہ والی تعریف کی طرف لوٹ آئی تو کوئی خلاف نہیں اور نہ خلف ہے، کیا تم نہیں دیکھتے کہ محقق علی الاطلاق کے شاگرد محقق حلبی نے حلیہ میں حدث کی تعریف اس طرح کی ہے کہ وہ ایک وصفِ حکمی ہے کہ شارع نے اعضاء کے ساتھ اس کے قیام کا اعتبار کیا ہے، اور یہ جنابت، حیض، نفاس، پیشاب اور پاخانہ وغیرہ ہما نواقض وضو کے باعث

ہوتا ہے، اور یہ چیز نماز کے قریب جانے سے مانع ہوتی ہے، یا جو چیز نماز کے حکم میں ہو، یہ مانعیت اس وقت تک رہتی ہے جب تک یہ وصف اُسی شخص کے ساتھ قائم رہے، یہاں تک کہ وہ اس چیز کو استعمال کرے جو اس کو زائل کرنے والی ہے اھ یہ تعریف جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں اُسی چیز کا بسط ہے جس کا اجمال ان کے شیخ محقق نے کیا ہے اور یہ بعینہٖ وہی تعریف ہے جو غایہ میں ہے، اور مانعِ شرعی کہتے جیسا کہ علامہ "ط" نے فرمایا اس کا بھی ماحصل یہی ہے کیونکہ وہ وصفِ شرعی، جو نجاست ہے مانعِ شرعی ہے اس معنی کے اعتبار سے کہ یہ وہ چیز ہے جس کی وجہ سے منع ہے، اور

حاشیہ: ۱ حلیہ صفحہ ۷۹ از ۷۱۱

[Arabic Text - Left Column] Al-Fath, while providing evidence for the narration of Imam Al-Hassan and Abu Yusuf from Imam Al-A'zam (Abu Hanifa), states that used water is either heavily (ghaliza) or lightly (khafifa) impure. Its text is as follows: 1. The basis for the narration of impurity is an analogy (qiyas). Its original (asl) is water used in real impurity (najasat haqiqiyya), and its branch (far') is water used in ritual impurity (najasat hukmiyya), through the common factor of being used in removing impurity. This is based on ignoring the attribute of 'real' (haqiqi) in establishing impurity. This is because the meaning of 'real' is only that the impurity is attributed to a body independent of the person, not that the attribute of impurity in reality only exists in such a body and is metaphorical in others. Rather, its real meaning is one in that body and in the state of ritual impurity (hadath). This is because for us, nothing is established from its meaning except that it is a legal consideration (i'tibar shar'i) where the Legislator (Allah/The Prophet) prohibited approaching prayer and prostration for one in such a state until water is used in it. When it is used, that legal consideration is terminated. All of this is a trial (ibtila). As for whether there is a real rational or sensory attribute there, then no. Whoever claims such cannot establish it except through mere assertion. Its being a legal consideration is proven by its variation with different divine laws. Do you not see that wine is ruled impure in our law and pure in others? Thus, it is known that it is nothing but a legal consideration imposed under certain conditions as a trial. In this, there is no difference between blood and others.

[Urdu Text - Right Column] The use of 'Mani' (preventive/impurity) in this sense is common and widespread. However, the researcher has kept it to its reality. Thus, when the relationship is brought forth, there is no reasonable cause for externalization (istizhar). Furthermore, the clearest evidence for this is that [the author of] Al-Bahr has also benefited from Fath al-Qadir in this definition, as mentioned in Radd al-Muhtar. The researcher in Al-Fath has sought evidence from the narration of Abu Yusuf and Al-Hassan from Abu Hanifa that used water is either heavily (ghaliza) or lightly (khafifa) impure. The narration where it is declared as impure is based on analogy (qiyas). The original (asl) of this analogy is water used in real impurity, and its branch (far') is water used in ritual impurity, and the common cause is use in removing impurity. This is based on the idea that the description of 'real' is irrelevant in establishing impurity. The proof for this is that the meaning of 'real' is that such a body is characterized by this impurity which is independent of the

person. It is not that the attribute of impurity truly exists only in such a body and is metaphorical in others. Rather, its real meaning is the same in that body and in the state of ritual impurity. This is because the real meaning known to us is that it is a legal consideration (shar'i i'tibar). As long as it exists, the Legislator has prohibited the one characterized by it from approaching prayer etc., until water is used in it.

[Footnote] 1. Fath al-Qadir, Discussion on Used Water, Nuriya Ridawiya, Sukkur, 1/72.

[अरबी पाठ - बायां कॉलम] अल-फ़तह में इमाम-ए-आज़म से इमाम हसन और अबू यूसुफ की रिवायत पर दलील देते हुए कहा गया है कि प्रयुक्त पानी (मुस्तअमल) नजासत-ए-ग़लीज़ा (भारी अशुद्धि) या नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा (हल्की अशुद्धि) है, जिसका पाठ यह है: 1. नजासत की रिवायत का आधार 'क़ियास' (तुलना) है जिसका 'अस्ल' (मूल) वह पानी है जो वास्तविक अशुद्धि (नजासत-ए-हक़ीक़िया) में प्रयुक्त हुआ हो और 'फ़रअ' (शाखा) वह है जो शरीयत द्वारा मानी गई अशुद्धि (नजासत-ए-हुकमिया) में प्रयुक्त हो, दोनों में साझा कारण 'अशुद्धि में उपयोग' है। यह अशुद्धि के प्रमाण में 'वास्तविक' होने के विशेषण को नज़रअंदाज़ करने पर आधारित है। ऐसा इसलिए क्योंकि 'वास्तविक' का अर्थ केवल यह है कि अशुद्धि किसी ऐसे पिंड का गुण है जो व्यक्ति से स्वतंत्र है, न कि यह कि अशुद्धि का गुण वास्तविकता में केवल ऐसे पिंडों में ही होता है और अन्यत्र केवल रूपक (मजाज़) है। बल्कि इसका वास्तविक अर्थ पिंड और स्थिति (हदस) दोनों में एक ही है। ऐसा इसलिए क्योंकि अशुद्धि के अर्थ से हमारे लिए शरीयत के एक आदेश (ऐतबार-ए-शई) के अलावा कुछ भी साबित नहीं है, जिसके द्वारा शरीयत देने वाले ने उस स्थिति वाले व्यक्ति को नमाज़ और सजदे के पास जाने से तब तक मना किया है जब तक वह पानी का उपयोग न कर ले। जब पानी उपयोग हो जाता है, तो वह पाबंदी समाप्त हो जाती है। यह सब केवल एक आज़माइश (इब्तिला) है। वहां कोई वास्तविक तर्कसंगत या इंद्रियजन्य गुण नहीं है। जो इसका दावा करता है, उसके पास केवल दावे के अलावा कोई प्रमाण नहीं है। इसका शरीयत का आदेश होना विभिन्न शरीयत के कानूनों के अनुसार बदलने से सिद्ध होता है। क्या आप नहीं देखते कि हमारी शरीयत में शराब को अशुद्ध माना गया और अन्यों में शुद्ध? अतः ज्ञात हुआ कि अशुद्धि केवल एक शरीयत का आदेश है जो एक निश्चित सीमा तक आज़माइश के रूप में लागू किया गया है। इसमें और खून आदि में कोई अंतर नहीं है।

[उर्दू पाठ - दायां कॉलम] 'मानिअ' (बाधक/अशुद्धि) का प्रयोग इस अर्थ में प्रचलित और प्रसिद्ध है। हालांकि, शोधकर्ता ने इसे इसकी वास्तविकता पर रखा है। अतः जब संबंध लाया जाता है, तो इसके स्पष्टीकरण का कोई तर्कसंगत कारण नहीं बचता। फिर इस पर सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि 'अल-बहर' के लेखक ने भी इस परिभाषा में 'फ़तह अल-क़दीर' से लाभ उठाया है, जैसा कि 'रद अल-मुहतार' में उल्लेख है। शोधकर्ता ने 'अल-फ़तह' में इमाम अबू हनीफा से इमाम अबू यूसुफ और हसन की रिवायत पर दलील दी है कि प्रयुक्त पानी नजासत-ए-ग़लीज़ा है या नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा। जिस रिवायत में इसे अशुद्ध बताया गया है, वह 'क़ियास' (तुलना) पर आधारित है। इस क़ियास का

मूल वह पानी है जो वास्तविक अशुद्धि में प्रयुक्त हुआ हो, और इसकी शाखा वह पानी है जो शरीयत द्वारा मानी गई अशुद्धि में प्रयुक्त हुआ हो, और साझा कारण अशुद्धि में उपयोग है। यह इस आधार पर है कि अशुद्धि के प्रमाण में 'वास्तविक' होने का विशेषण निरर्थक है। इसका प्रमाण यह है कि 'वास्तविक' का अर्थ यह है कि इस अशुद्धि से ऐसा पिंड विशेषित हो जो स्वयं व्यक्ति से स्वतंत्र हो। यह नहीं है कि अशुद्धि का गुण वास्तव में केवल ऐसे ही पिंड के साथ होता है और अन्यत्र रूपक है। बल्कि इसके वास्तविक अर्थ उस पिंड और स्थिति (हदस) दोनों में एक ही हैं। इसलिए क्योंकि हमें वास्तविक रूप से जो अर्थ ज्ञात हैं, वे यह हैं कि यह एक शरीयत का आदेश है कि जब तक वह मौजूद है, शरीयत देने वाले ने उस व्यक्ति को नमाज़ आदि के पास जाने से तब तक मना किया है जब तक वह पानी का उपयोग न कर ले।

[पादलेख] 1. फ़तह अल-क़दीर, बह्स-ए-अल-मा अल-मुस्तअमल, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/72।

[عربی متن - بایاں کالم] الفتح مستدلا لروایة الحسن وابی یوسف عن الامام الاعظم ان الماء المستعمل نجسا مغلظا او مخففا مانصه 1 وجه روایة النجاسة قیاس اصله الماء المستعمل فی النجاسة الحقیقیة والفرع المستعمل فی الحکمیة بجامع الاستعمال فی النجاسة بناء علی الغاء وصف الحقیقی فی ثبوت النجاسة و (۱) ذلك لان معنی الحقیقی لیس الا کون النجاسة موصوفا بها جسم مستقل بنفسه عن المکلف لا ان وصف النجاسة حقیقة لا تقوم الا بجسم کذلك وفی غیره مجاز بل معناه الحقیقی واحد فی ذلك الجسم وفی الحدث لانه لیس المتحقق لنا من معناها سوی انها اعتبار شرعی منع الشارع من قربان الصلاة والسجود حال قیامه لمن قام به الی غایة استعمال الماء فیه فاذا استعمله قطع ذلك الاعتبار کل ذلك ابتلاء فاما ان هناك وصفا حقیقیا عقلیا اومحسوسا فلا ومن ادعاه لا یقدر فی اثباته علی غیر الدعوی ویدل علی انه اعتبار اختلافه باختلاف الشرائع الاتری ان الخمر محکوم بنجاسة فی شریعتنا وبطهارتها فی غیرها فعلم انها لیست سوی اعتبار شرعی الزم معه کذا الی غایة کذا ابتلاء وفی هذا الاتفاوت بین الدم

[اردو متن - دایاں کالم] مانع کا استعمال اس معنی میں شائع و ذائع ہے، البتہ محقق نے اس کو اس کی حقیقت پر باقی رکھا ہے، تو نسبت کولائے ہیں تو استظہار کی کوئی معقول وجہ نہیں، پھر اس پر واضح ترین دلیل یہ ہے کہ بحر نے بھی اس تعریف میں فتح القدیر سے استفادہ کیا ہے، جیسا کہ اس کو ردالمحتار میں ذکر کیا ہے اور محقق نے فتح میں ابو یوسف اور حسن کی ابو حنیفہ سے روایت پر استدلال کیا ہے کہ مستعمل پانی نجاست غلیظہ ہے یا نجاست خفیفہ ہے، جس روایت میں اس کو نجاست قرار دیا گیا ہے وہ قیاس کی بنیاد پر ہے اس قیاس کی اصل وہ پانی ہے جو نجاست حقیقیہ میں مستعمل ہو، اور اس کی فرع وہ پانی ہے جو نجاست حکمیہ میں مستعمل ہو، اور علّت

جامعہ، نجاست میں استعمال ہے، بناء کرتے ہوئے کہ وصف حقیقی ثبوت نجاست میں لغو ہے اور اس کی دلیل یہ ہے کہ حقیقی کا مفہوم یہ ہے کہ اس نجاست سے ایسا جسم متصف ہو جو بنفسہ مکلف سے مستقل ہو یہ نہیں کہ وصف نجاست حقیقۃً ایسے ہی جسم کے ساتھ قائم ہوتی ہے اور اس کے غیر میں مجاز ہے، بلکہ اس کے حقیقی معنی ایک ہیں اس جسم میں اور حدث میں، اس لئے کہ ہمیں حقیقی طور پر جو معنی معلوم ہیں وہ یہ ہیں کہ وہ ایک شرعی اعتبار ہے کہ جب تک وہ موجود ہو تو شارع نے اس کو جو اس کے ساتھ متصف ہو نماز وغیرہ کے قریب جانے سے منع کیا ہے تاوقتیکہ وہ اس میں پانی کو استعمال

[حاشیہ] 1 فتح القدیر بحث الماء المستعمل نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۷۲

Fatawa Rizvia, Volume 2

(Arabic text): "And Hadath (ritual impurity), it is also nothing but that same consideration. This is a clear text stating that the legal impediment, which is ended by the use of a remover, is nothing but legal impurity (Najasat-e-Hukmiya). Thus, the two definitions became one."

(Urdu text): ...should not use [it], when he uses that water, that consideration will end. All of this is a test of obedience. As for the matter of whether there is any rational, real, or perceptible quality here, there is no such thing. Whoever claims so, it is merely a claim. The proof of its being a matter of consideration is that it changes with the changing of religious laws. For example, wine is impure in our Sharia but was pure in other Sharias. From this it is known that this impurity is mandatory only by legal consideration for such a duration as a test, and in this, there is no difference between blood and Hadath because this is also the same kind of consideration. End of quote. So, this is a clear text regarding the matter that this legal impediment, the end of which is the use of a remover, is indeed legal impurity (Najasat-e-Hukmiya). Thus, both definitions became one.

(Arabic text): "Then I say: (1) Defining (2) by the ruling (hukm) - if it is intended to make the ruling itself the defined thing such that it is predicated upon the defined, then yes, the objection of 'al-Nahr' and 'al-Durr' is dismissed. For the impediment in the mentioned sense, which is 'Najasat-e-Hukmiya', is not an effect resulting from 'Hadath' in the sense of a legal attribute, but rather it is it itself, as you have known. In that case, the responder's statement that definition by the ruling is like saying 'it is that with which prayer is not valid' is also not correct. This is because 'that with which [prayer] is not valid' is not a ruling; rather, the ruling, as admitted, is the 'lack of validity' (adam al-sihha), and he did not define it by that. It would only be a definition by the ruling if it were said: 'Hadath is the lack of validity of prayer.' The response of T (Tahtawi) and Sh (Shurunbulali) would also be repeated, that it is used among the jurists. For what is used among them is mentioning the ruling in the definition, not predicating the effect upon the cause. And if it is intended by it that..."

(Urdu text): (Translator's Note) Then I say, if definition by ruling means that the ruling is made the defining term (mu'arrif) such that it is predicated upon the thing defined, then the objection of Nahr and Durr would be removed. This is because the impediment in the mentioned sense, meaning in the sense of legal impurity, is not an effect resulting from Hadath, in the sense of a legal attribute; rather, it is the same

thing, as you have recognized. In this case, the respondent's statement would not be correct that definition by ruling is, for example, saying: "Hadath is that in the presence of which prayer is not valid." This is because the sentence "that in the presence of which prayer is not valid" is not a ruling. Rather, the ruling, as they admitted, is "lack of validity" (adam-e-sihat), and they did not define it by that. Definition by ruling would occur if it were said: "Hadath is the non-validity of prayer." And the response of 'Ta' and 'Shin' (Tahtawi and Shurunbulali) would also become troubled in this case, as this kind of definition by jurists...

---

1. Fath al-Qadir, Discussion on Used Water, Nooria Razvia, Sukkur, 1/51. Page 81 of 711

फतावा रजविया, जिल्द 2

(अरबी पाठ): "और हदस (आनुष्ठानिक अशुद्धि), यह भी उसी विचार के अलावा और कुछ नहीं है। यह एक स्पष्ट पाठ है जिसमें कहा गया है कि वह कानूनी बाधा, जो किसी निवारक के उपयोग से समाप्त होती है, कानूनी अशुद्धि (नजासत-ए-हुकमिया) के अलावा और कुछ नहीं है। इस प्रकार, दोनों परिभाषाएँ एक हो गईं।"

(उर्दू पाठ): ...उपयोग न करें, जब वह उस पानी का उपयोग कर लेगा तो वह विचार समाप्त हो जाएगा। यह सब आज्ञाकारिता की परीक्षा है। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि क्या यहाँ कोई तर्कसंगत, वास्तविक या बोधगम्य गुण है, तो ऐसा कुछ भी नहीं है। जो कोई ऐसा दावा करता है, वह केवल एक दावा है। इसके विचार का विषय होने का प्रमाण यह है कि यह धार्मिक कानूनों के बदलने के साथ बदलता रहता है। उदाहरण के लिए, हमारी शरीयत में शराब अपवित्र है लेकिन अन्य शरीयतों में पवित्र थी। इससे ज्ञात होता है कि यह अशुद्धि केवल कानूनी विचार से इतनी अवधि के लिए परीक्षा के रूप में अनिवार्य की गई है, और इसमें रक्त और हदस के बीच कोई अंतर नहीं है क्योंकि यह भी उसी तरह का विचार है। उद्धरण समाप्त। तो, इस मामले में यह स्पष्ट पाठ है कि यह कानूनी बाधा, जिसका अंत निवारक का उपयोग है, वास्तव में कानूनी अशुद्धि (नजासत-ए-हुकमिया) ही है। इस प्रकार दोनों परिभाषाएँ एक हो गईं।

(अरबी पाठ): "फिर मैं कहता हूँ: (1) परिभाषा (2) हुक्म (शासन) द्वारा - यदि इसका उद्देश्य हुक्म को ही परिभाषित वस्तु बनाना है ताकि इसे परिभाषित पर लागू किया जा सके, तो हाँ, 'अल-नहर' और 'अल-दुर्र' की आपत्ति खारिज हो जाती है। क्योंकि उल्लिखित अर्थ में बाधा, जो 'नजासत-ए-हुकमिया' है, कानूनी गुण के अर्थ में 'हदस' से उत्पन्न होने वाला प्रभाव नहीं है, बल्कि यह स्वयं वही है, जैसा कि आप जानते हैं। उस स्थिति में, प्रत्युत्तर देने वाले का यह कथन कि हुक्म द्वारा परिभाषा देना वैसा ही है जैसे यह कहना कि 'यह वह है जिसके साथ प्रार्थना मान्य नहीं है' भी सही नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'वह जिसके साथ [प्रार्थना] मान्य नहीं है' कोई हुक्म नहीं है; बल्कि, हुक्म, जैसा कि स्वीकार किया गया है, 'वैधता की कमी' (अदम अल-सिहत) है, और उसने इसके द्वारा इसे परिभाषित नहीं किया। यह हुक्म द्वारा परिभाषा तभी होती जब यह कहा जाता: 'हदस प्रार्थना की वैधता की कमी है।' 'ता' (तहतावी) और 'शीन' (शुरुनबुलाली) की प्रतिक्रिया भी दोहराई जाएगी, कि यह न्यायविदों के बीच उपयोग किया जाता है। क्योंकि उनके बीच जो उपयोग किया जाता है वह परिभाषा में हुक्म का

उल्लेख करना है, न कि प्रभाव को कारण पर आरोपित करना। और यदि इसके द्वारा यह अभिप्राय है कि..."

(उर्दू पाठ): (अनुवादक की टिप्पणी) फिर मैं कहता हूँ, यदि हुक्म द्वारा परिभाषा का अर्थ यह है कि हुक्म को परिभाषित शब्द (मुआरिफ) बनाया जाए ताकि वह परिभाषित वस्तु पर लागू हो, तो नहर और दुर्र की आपत्ति दूर हो जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि उल्लिखित अर्थ में बाधा, अर्थात कानूनी अशुद्धि के अर्थ में, कानूनी गुण के अर्थ में हदस से उत्पन्न होने वाला प्रभाव नहीं है; बल्कि, यह वही चीज़ है, जैसा कि आपने पहचाना है। इस मामले में, उत्तरदाता का यह कथन सही नहीं होगा कि हुक्म द्वारा परिभाषा, उदाहरण के लिए, यह कहना है: "हदस वह है जिसकी उपस्थिति में नमाज़ सही नहीं होती।" ऐसा इसलिए है क्योंकि वाक्य "वह जिसकी उपस्थिति में नमाज़ सही न हो" कोई हुक्म नहीं है। बल्कि, हुक्म, जैसा कि उन्होंने स्वीकार किया, "अदम-ए-सिहत" (वैधता का अभाव) है, और उन्होंने इसके द्वारा परिभाषा नहीं दी है। हुक्म द्वारा परिभाषा तब होती जब यह कहा जाता: "हदस नमाज़ की अमान्यता है।" और 'ता' और 'शीन' (तहतावी और शुरुनबुलाली) का उत्तर भी इस मामले में संदिग्ध हो जाएगा, क्योंकि न्यायविदों द्वारा इस प्रकार की परिभाषा...

---

1. फतह अल-कदीर, बहस अल-मा अल-मुस्तअमल, नूरिया रजविया, सुक्कुर, 1/51. पृष्ठ 81 का 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

والحدث فانه ایضا لیس الانفس ذلك الاعتبار اه فهذا نص صریح فی ان تلك المانعیة الشرعیة المغیاة الی استعمال المزیل لیست الا النجاسة الحکمیة فاتحد التعریفان۔

استعمال نہ کرے، جب وہ پانی استعمال کر لے گا تو وہ اعتبار ختم ہو جائے گا، یہ سب طاعت کی ابتلاء ہے، رہی یہ بات کہ یہاں کوئی وصف عقلی حقیقی یا محسوس ہے، تو ایسی کوئی بات نہیں، اور جو اس کا دعوٰی کرتا ہے تو محض دعوٰی ہی ہے، اور اس کے اعتباری ہونے کی دلیل ہے کہ یہ شریعتوں کے مختلف ہونے سے مختلف ہوتا رہتا ہے، مثلاً شراب ہماری شریعت میں ناپاک ہے اور دوسری شریعتوں میں پاک ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ یہ نجاست محض شرعی اعتبار سے یہ اتنی مدت تک کیلئے لازم کیا گیا ہے ابتلاءً اور اس میں خون اور حدث میں کوئی تفاوت نہیں کیونکہ یہ بھی ویسا ہی اعتبار ہے اھ تو یہ اس امر میں نص صریح ہے کہ یہ مانیعت شرعیہ جس کی انتہا مزیل کا استعمال ہے، نجاست حکمیہ ہی ہے تو دونوں تعریفیں متحد ہو گئیں۔

ثم اقول: (۱) التعریف (۲) بالحکم ان ارید به ان یجعل الحکم نفس المعرف بحیث یحمل هو علی المعرف فنعم یسقط ایراد النهر والدر فان المانعیة بالمعنی المذکور وهی النجاسة الحکمیة لیست اثراً مترتبا علی الحدث بمعنی الوصف الشرعی بل هی هو کما عرفت وح لا یستقیم ایضا قول المجیب ان التعریف بالحکم کأن یقال هو مالاتصح الصلاة معه فان مالاتصح لیس حکماً بل الحکم کما اعترف عدم الصحة ولم یعرف به وانما یکون تعریفاً بالحکم لو قیل الحدث عدم صحة الصلاة ویتکرر ایضاً جواب ط وش بانه مستعمل عند الفقهاء فان المستعمل عندهم ذکر الحکم فی التعریف لا حمل الاثر علی المؤثر وان ارید به ان

ت) پھر میں کہتا ہوں تعریف بالحکم سے مراد اگر یہ ہے کہ حکم کو معرف بنا دیا جائے کہ وہ معرف پر محمول ہو تو نہر اور در کا اعتراض رفع ہو جائے گا، کیونکہ مانیعت بالمعنی المذکور یعنی نجاست حکمیہ کے معنی میں، حدث پر مترتب ہونے والا اثر نہیں ہے، یعنی وصف شرعی کے معنی میں بلکہ یہ وہی ہے جیسا کہ تم نے پہچانا۔ اور اس صورت میں مجیب کا یہ قول درست نہ ہوگا کہ تعریف بالحکم مثلاً یہ کہا جائے کہ حدث وہ ہے کہ جس کے ہوتے ہوئے نماز درست نہ ہو، کیونکہ "وہ جس کے ہوتے ہوئے نماز صحیح نہ ہو" یہ جملہ حکم نہیں ہے بلکہ حکم جیسا کہ انہوں نے اعتراف کیا، عدم صحت ہے، اور اس سے انہوں نے تعریف نہیں کی ہے، اور تعریف بالحکم اس صورت میں ہوتی جب یہ کہا جاتا کہ حدث نماز کا صحیح نہ ہونا ہے، اور ط و ش کا جواب بھی اس صورت میں مکدر ہو جائے گا کہ اس قسم کی تعریف فقہاء کے

---

1 فتح القدیر بحث الماء المستعمل نوریہ رضویہ سکھر ۵۱/۱ صفحہ 81 از 711

Fatawa Ridawiya, Volume 2

[Left Column - Arabic] The defined is distinguished by means of the ruling by stating that it is what produces this effect. Thus, the respondent's example of defining by the ruling as mentioned is sound. However, the original answer 'H' fails by stating that being an impediment (mani'iyah) is not a ruling. For definition by ruling does not necessarily mean that the predicate is the ruling itself, but rather that the ruling is mentioned within it. This is definitely present in the mentioned definition, as it includes preventing the legally responsible person (mukallaf) from specific things as long as that description remains in effect. We then address the objection, which is even more baseless and erroneous. For the definition chosen by the objectors is also not free from 'definition by ruling' because they mention 'removal of purity' (zawal al-taharah) in it, which is none other than the effect resulting from that legal description. Therefore, what was mentioned by 'Ta' and 'Sha' suffices as an answer for both definitions. In summary, there is no need to create a distinction between the two definitions, and the objection from 'Al-Nahr' and 'Al-Durr' has no validity. The answer of Al-Fattal on behalf of some scholars is not free from confusion and error. There remains the discussion on the first meaning mentioned by Allama Qasim and how it differs from the second meaning.

I say: (1) The legal impediment (al-mani' al-shar'i), i.e., that for the sake of which prevention occurs, is ritual impurity (al-najasat al-hukmiyah). That which is attributed to it is the engagement of the mukallaf with it. The difference between them is that ritual impurity...

[Right Column - Urdu] ...is used here, because in their practice, the definition used mentions the ruling, and it is not about attributing the effect to the cause. And if the intention by this is that the defined should be distinguished through the ruling—meaning it is said that 'it is this which is producing this effect'—then in this case, the example given by the respondent for 'definition by ruling' would be considered correct. However, at that point, their original answer would cease, i.e., that being an impediment is not a ruling. This is because 'definition by ruling' in this context does not mean that the predicate is the ruling itself; rather, it means the ruling is mentioned within it. This is definitely found in the mentioned definition, as this definition entails stopping the mukallaf from specific things as long as this description persists within them. Now we come to the objection, and its form is even more incorrect and baseless because the definition chosen by the objectors is also not devoid of 'definition by ruling.' This is because they also use 'removal of purity' in

it, and that is the effect that follows from that legal description. In such a situation, the discourse given by 'Ta' and 'Sha' in response to the objection against both definitions is sufficient. The summary is that there is no reason present for asserting a distinction between the two definitions, and the objection of 'Nahr' and 'Durr' is not correct. The answer given by Al-Fattal on behalf of some scholars is not free from confusion and error. Now, the discussion on the first meaning mentioned by Allama Qasim remains, as to how this meaning differs from the second meaning. (T) I say: the legal impediment, meaning that due to which there is prevention, is ritual impurity, and what is attributed to it is the mukallaf being entangled with it. And...

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[बायां कॉलम - अरबी] परिभाषित को हुक्म के माध्यम से इस प्रकार पहचाना जाता है कि वह वही है जो यह प्रभाव (असर) डालता है। इस प्रकार, उत्तरदाता द्वारा हुक्म के माध्यम से परिभाषा देने का उदाहरण सही है। हालाँकि, मूल उत्तर 'ह' विफल हो जाता है क्योंकि यह कहा गया है कि मानइयत (बाधा होना) हुक्म नहीं है। हुक्म द्वारा परिभाषा का अर्थ यह नहीं है कि विधेय स्वयं हुक्म है, बल्कि यह है कि इसमें हुक्म का उल्लेख है। यह निश्चित रूप से उल्लिखित परिभाषा में मौजूद है, क्योंकि इसमें मुकल्लफ़ (धार्मिक रूप से उत्तरदायी व्यक्ति) को विशिष्ट चीजों से तब तक रोकना शामिल है जब तक कि वह गुण बना रहे। फिर हम आपत्ति पर आते हैं, जो और भी अधिक निराधार और त्रुटिपूर्ण है। आपत्तिकर्ताओं द्वारा चुनी गई परिभाषा भी 'हुक्म द्वारा परिभाषा' से मुक्त नहीं है क्योंकि वे इसमें 'शुद्धि की समाप्ति' (ज़वाल-ए-तहारत) का उल्लेख करते हैं, जो उस कानूनी गुण से उत्पन्न होने वाले प्रभाव के अलावा कुछ नहीं है। इसलिए, 'ता' और 'शा' द्वारा जो उल्लेख किया गया है वह दोनों परिभाषाओं के उत्तर के रूप में पर्याप्त है। संक्षेप में, दोनों परिभाषाओं के बीच अंतर करने की कोई आवश्यकता नहीं है, और 'अन-नहर' और 'अद-दुर्र' की आपत्ति मान्य नहीं है। कुछ विद्वानों की ओर से फत्ताल का उत्तर भ्रम और त्रुटि से मुक्त नहीं है। अल्लामा कासिम द्वारा वर्णित पहले अर्थ और दूसरे अर्थ से इसकी भिन्नता पर चर्चा अभी बाकी है।

मैं कहता हूँ: (1) कानूनी बाधा (अल-मानि अल-शर्ई), यानी जिसके कारण रोकथाम होती है, वह अनुष्ठानिक अशुद्धि (अन-नजासतुल हुक्मिया) है। जो इसके साथ जुड़ा है वह मुकल्लफ़ का इसमें शामिल होना है। दोनों के बीच अंतर यह है कि अशुद्धि...

[दायां कॉलम - उर्दू] ...यहाँ इस्तेमाल किया गया है, क्योंकि उनके यहाँ इस्तेमाल की गई परिभाषा में हुक्म का उल्लेख है, न कि प्रभाव को कारण पर आरोपित किया गया है। और यदि इससे यह इरादा है कि हुक्म के माध्यम से महदूद (परिभाषित) को अलग किया जाए - यानी यह कहा जाए कि 'यही वह है जो यह प्रभाव पैदा कर रहा है' - तो इस मामले में, उत्तरदाता द्वारा 'हुक्म द्वारा परिभाषा' के लिए दिया गया उदाहरण सही माना जाएगा। हालाँकि, उस समय, उनका मूल उत्तर समाप्त हो जाएगा, यानी कि बाधा होना हुक्म नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस संदर्भ में 'हुक्म द्वारा परिभाषा' का अर्थ यह नहीं है कि विधेय स्वयं हुक्म है; बल्कि, इसका अर्थ है कि इसमें हुक्म का उल्लेख है। यह निश्चित रूप से उल्लिखित परिभाषा में पाया जाता है, क्योंकि इस परिभाषा में मुकल्लफ़ को विशिष्ट चीजों से तब तक रोकना शामिल है जब तक यह गुण उनमें बना रहे। अब हम आपत्ति की ओर आते

हैं, और उसका स्वरूप और भी अधिक गलत और निराधार है क्योंकि आपत्तिकर्ताओं द्वारा चुनी गई परिभाषा भी 'हुक्म द्वारा परिभाषा' से रहित नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इसमें 'शुद्धि की समाप्ति' का भी उपयोग करते हैं, और वह प्रभाव है जो उस कानूनी गुण के बाद होता है। ऐसी स्थिति में, दोनों परिभाषाओं के विरुद्ध आपत्ति के उत्तर में 'ता' और 'शा' द्वारा दिया गया विवरण पर्याप्त है। सारांश यह है कि दोनों परिभाषाओं के बीच अंतर बताने का कोई कारण मौजूद नहीं है, और 'नहर' और 'दुर्र' की आपत्ति सही नहीं है। फत्ताल द्वारा कुछ विद्वानों की ओर से दिया गया उत्तर भ्रम और त्रुटि से मुक्त नहीं है। अब, अल्लामा कासिम द्वारा वर्णित पहले अर्थ पर चर्चा बाकी है, कि यह अर्थ दूसरे अर्थ से कैसे भिन्न है। (त) मैं कहता हूँ: कानूनी बाधा, यानी जिसके कारण रोकथाम है, वह अनुष्ठानिक अशुद्धि है, और जो इसके लिए जिम्मेदार है वह मुकल्लफ़ का इसके साथ ग्रस्त होना है। और...

فتاوی رضویه، جلدثانی

[بایاں کالم - عربی] یمیّز المحدود بذریعة الحکم بان یعطی انه الذی یؤثر هذا الاثر فنعم یستقیم تمثیل المجیب التعریف بالحکم بماذکر لکن یسقط ح اصل جوابہ بأن المانعیة لیست حکما فان التعریف بالحکم لیس اذن ان یکون المحمول عین الحکم بل ماذکر فیه الحکم وهو حاصل في التعریف المذکور قطعاً لاشتماله علی منع المکلف من اشیاء مخصوصة مادام ذلك الوصف قائماً به اتینا علی الایراد وهو علی هذا اشد سقوطاً وابین غلطاً فان الذی اختاره الموردون لایخلو ایضاً عن التعریف بالحکم لذکرهم فیه زوال الطهارة وما هو الا الاثر المترتب علی ذلك الوصف الشرعي واذن یکفی جواباً عن کلا الحدین ما ذکر ط و ش وبالجملة فایقاع التغایر بین الحدین لاداعی له و ایراد النهر والدر لا صحة له وجواب الفتال عن بعض الفضلاء لا یخلوعن خلط وغلط بقی الکلام علی المعنی الاول الذی ذکره العلامة قاسم وکیف تباینه للمعنی الثانی۔ فأقول: (۱) المانع الشرعي ای مالاجله المنع هي النجاسة الحکمیة والمنتسب الیها تلبس المکلف بها والفرق بینهما ان النجاسة

[دایاں کالم - اردو] یہاں مستعمل ہے ، کیونکہ ان کے یہاں مستعمل تعریف میں حکم کا تذکرہ ہے نہ یہ کہ اثر کو موثر پر محمول کرلیا جائے ، اور اگر اس سے یہ ارادہ کیا جائے کہ محدود کو بذریعہ حکم ممیز کیا جائے یعنی یہ کہا جائے کہ یہی ہے جو یہ اثر کررہا ہے تو اس صورت میں مجیب کی یہ مثال جو انہوں نے تعریف بالحکم کیلئے پیش کی ہے درست قرار پائے گی ، مگر اس وقت ان کا اصل جواب ختم ہوجائے گا ، یعنی یہ کہ مانعیت حکم نہیں ہے کیونکہ تعریف بالحکم اس صورت میں یہ نہیں ہے کہ محمول عین حکم ہو ، بلکہ یہ ہے کہ جس میں حکم مذکور ہو، اور یہ تعریف مذکور میں قطعاً موجود ہے ، کیونکہ یہ تعریف اس پر مشتمل ہے کہ مکلف کو مخصوص اشیاء سے روکنا جب تک کہ یہ وصف اس کے ساتھ قائم رہے۔ اب ہم اعتراض کی طرف آتے ہیں اور اس

کی صورت اور بھی زیادہ غلط اور ساقط ہے کیونکہ معترضین نے جو تعریف اختیار کی ہے وہ تعریف بھی تعریف بالحکم سے خالی نہیں ہے ، کیونکہ وہ بھی اس میں زوال طہارت کا استعمال کرتے ہیں ، اور وہ اس وصف شرعی پر مرتب ہونے والا اثر ہے ، ایسی صورت میں دونوں تعریفوں پر جو اعتراض ہے اُس کے جواب میں "ط" اور "ش" نے جو تقریر کی ہے وہ کافی ہے ، اور خلاصہ یہ کہ دونوں تعریفوں میں تغایر کا قول کرنے کی کوئی وجہ موجود نہیں ہے ، اور نہر اور دُر کا اعتراض درست نہیں ہے اور فتال نے جو جواب بعض فضلاء کی طرف سے دیا ہے وہ غلط اور خلط سے خالی نہیں ہے۔ اب اُس پہلے معنی پر گفتگو باقی رہ گئی جو علامہ قاسم نے ذکر کئے ہیں ، اور یہ معنی دوسرے معنی سے کس طرح مختلف ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں مانع شرعی یعنی جس کی وجہ سے منع ہے وہ نجاست حکمیہ ہے ، اور جو اس کی طرف منسوب ہے وہ مکلف کا اُس کے ساتھ ملتبس ہونا ہے ، اور

Fatawa Rizvia Volume 2

[Arabic Column Text] Legal impurity is a legal description that resides in the visible surfaces of the body parts through pervasive indwelling. Since the surface is extended and divisible, the impurity is divided by its division. Thus, it accepts divisibility both in its establishment and its removal. As for its removal, it is evident; for example, if the hand is washed, the impurity is removed from it, and therefore the obligation of purification falls from it, while the impurity remains in the rest of the parts where it resided. As for its establishment, minor ritual impurity (hadath asghar) only renders four parts impure, and major impurity (hadath akbar) the whole body. We will return to discuss this soon, God willing. As for the subject's being clothed with it, i.e., accompanied by it, it is a description of the subject that occurs through the indwelling of impurity in any part of his body. It remains as long as it remains in any part of it. If the impurity increases, it [the ritual state] does not increase, and if it decreases, it does not decrease. Rather, when it occurs, it occurs, and however much remains, even if it is very little, it remains complete. When it is completely removed, it is removed. Its parallel is motion in the sense of 'traversing' (qata') and in the sense of 'being in between' (tawassut). The first is divisible because it corresponds to the divisible distance. The second has no parts, but occurs at the occurrence of the first part of the parts of the first, and remains in its state as long as the moving object is between the two limits. When it stops, it is removed at once. If you say: Why does the speech of al-Bahr not hold this, so that the difference between the two definitions is established as understood by al-Nahr and al-Durr, and agrees with the objection made following al-Fath that the common speech and texts state that ritual impurity is not divisible?

[Urdu Column Text] The difference between the two is that legal impurity (najasa shar'i) is a description that stands with the surfaces of the visible organs, and this is a pervasive indwelling. Since the surface is extended and divisible, due to its division, the impurity will also be divided. Thus, it will accept divisibility both in its removal and its establishment. Removal is clear, because, for example, if one washed their hands three times, the impurity would be removed from it, and therefore the obligation of purification would be dropped from it while impurity remains in the rest of the organs. And establishment is in the sense that minor ritual impurity (hadath asghar) makes four organs impure and major (akbar) the whole body; we will soon speak on this, God willing. As for the subject being characterized by it, it is a description of the subject that arises from the indwelling of impurity, whether it be in any part of his

body. And the ritual impurity (hadath) will remain as long as impurity remains in any organ. So, if impurity increases, the ritual impurity will not increase, and if impurity decreases, the ritual impurity will not decrease. Rather, whenever impurity comes into existence, the ritual impurity will also come, and as long as it remains, even if it is minimal, the ritual impurity will remain in full. And when the impurity is completely removed, the ritual impurity will also be removed. The parallel of these two is motion in the sense of 'traversing' (qata') and motion in the sense of 'being in between' (tawassut). The first is divisible because it corresponds to the divided distance, and the second has no part; rather, it arises upon the arising of the first part of the first motion and remains the same as long as it is between the two ends.

फ़तावा रज़विया, जिल्द-2

[अरबी कॉलम का अनुवाद] शरीय नजसत एक शारीय गुण है जो शरीर के अंगों की बाहरी सतहों पर व्यापक रूप से स्थित होता है। चूंकि सतह विस्तृत और विभाज्य है, इसलिए नजसत भी उसके विभाजन के साथ विभाजित हो जाती है। इस प्रकार, यह इसके स्थापित होने और हटने, दोनों ही स्थितियों में विभाज्यता को स्वीकार करती है। हटने के संदर्भ में यह स्पष्ट है; उदाहरण के लिए, यदि हाथ धोया जाता है, तो उससे नजसत हट जाती है, और इसलिए उस अंग के लिए शुद्धिकरण का दायित्व समाप्त हो जाता है, जबकि शरीर के अन्य अंगों में नजसत बनी रहती है जहाँ वह पहले से थी। जहाँ तक इसके स्थापित होने का प्रश्न है, 'हदस असग़र' (छोटा अपवित्रता की स्थिति) केवल चार अंगों को अपवित्र करती है और 'हदस अकबर' (बड़ी अपवित्रता की स्थिति) पूरे शरीर को। हम शीघ्र ही इस पर चर्चा करेंगे, इंशा अल्लाह। जहाँ तक मुकल्लफ (धार्मिक दायित्व वाला व्यक्ति) के इस अवस्था में होने का प्रश्न है, तो यह मुकल्लफ का एक गुण है जो उसके शरीर के किसी भी हिस्से में नजसत के होने से उत्पन्न होता है। यह तब तक बना रहता है जब तक शरीर के किसी भी हिस्से में नजसत बनी रहती है। यदि नजसत बढ़ती है, तो 'हदस' नहीं बढ़ता, और यदि नजसत घटती है, तो 'हदस' कम नहीं होता। बल्कि, जब भी नजसत अस्तित्व में आती है, हदस भी आ जाता है, और जब तक नजसत बनी रहती है, चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो, हदस पूर्ण रूप से बना रहता है। जब नजसत पूरी तरह से हट जाती है, तो हदस भी हट जाता है। इन दोनों का उदाहरण 'हरकत' (गति) है, 'कता' (तय करने) के अर्थ में और 'तवस्सुत' (मध्यस्थता) के अर्थ में। पहली विभाज्य है क्योंकि यह विभाजित दूरी के अनुरूप है। दूसरी का कोई भाग नहीं होता, बल्कि यह पहली गति के अंगों में से पहले अंग के उत्पन्न होने पर उत्पन्न होती है और तब तक उसी स्थिति में बनी रहती है जब तक गतिमान वस्तु दो सीमाओं के बीच होती है। जब वह रुक जाती है, तो यह तुरंत समाप्त हो जाती है। यदि आप कहें: अल-बहर का कथन इस पर क्यों नहीं टिकता, ताकि दो परिभाषाओं के बीच का अंतर स्थापित हो सके जैसा कि अल-नहर और अल-दुर्र ने समझा है, और अल-फ़त के अनुसरण में किए गए इस विरोध से सहमत हो सके कि सामान्य बातचीत और मूल पाठ यह कहते हैं कि 'हदस' विभाज्य नहीं है?

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] दोनों में अंतर यह है कि 'नजसत-ए-शईं' एक गुण है जो बाहरी अंगों की सतहों के साथ स्थापित होता है, और यह व्यापक रूप से समाहित होना है। चूंकि सतह विस्तृत और विभाज्य है, इसलिए उसके विभाजन के कारण नजसत भी विभाजित हो जाएगी। अत; यह हटने और

स्थापित होने, दोनों ही स्थितियों में विभाज्यता (तज्ज़ी) को स्वीकार करेगी। हटने के संदर्भ में तो यह स्पष्ट है, क्योंकि उदाहरण के तौर पर यदि किसी ने तीन बार हाथ धोया, तो उससे नजसत समाप्त हो जाएगी, और इसीलिए उससे शुद्धिकरण का अनिवार्य कर्तव्य समाप्त हो गया जबकि बाकी अंगों में नजसत शेष है। और स्थापित होने के संदर्भ में इस तरह कि 'हदस-ए-असग़र' चार अंगों को नापाक करता है और 'अकबर' पूरे शरीर को; हम जल्द ही इस पर चर्चा करेंगे, इंशा अल्लाह। रही बात मुकल्लफ़ का नजसत के साथ युक्त होना, तो यह मुकल्लफ़ का वह गुण है जो नजसत के समाहित होने से पैदा होता है, चाहे वह उसके शरीर के किसी भी हिस्से में हो। और 'हदस' उस समय तक शेष रहेगा जब तक नजसत किसी भी अंग में शेष रहे। तो, यदि नजसत बढ़ जाए तो हदस ज़्यादा नहीं होगा, और नजसत अगर कम हो जाए तो हदस कम नहीं होगा। बल्कि, जब भी नजसत वजूद में आएगी, हदस भी आएगा और जब तक शेष रहेगी, चाहे कम से कम हो, हदस भी मुकम्मल तौर पर शेष रहेगा। और जब नजसत पूरी तरह से खत्म हो जाएगी, तो हदस भी खत्म हो जाएगा। इन दोनों का उदाहरण 'हरकत' है 'क़ता' (तय करने) के अर्थ में और हरकत 'तवस्सुत' (मध्यस्थता) के अर्थ में। तो पहली विभाज्य (मुनक़सिम) है क्योंकि वह विभाजित दूरी पर लागू होती है, और दूसरी का कोई हिस्सा नहीं होता बल्कि पहली हरकत के पहले हिस्से के पैदा होने पर पैदा होती है और इसी तरह बनी रहती है जब तक दोनों सीमाओं के बीच हो।

पृष्ठ 83 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم] وصف شرعی یحل بسطوح الاعضاء الظاھرۃ حلول سریان والسطح ممتد منقسم فتنقسم النجاسۃ بانقسامھا فتقبل التجزئی ثبوتآ و رفعا اما رفعا فظاھر فانہ اذا غسل الید مثلا زالت النجاسۃ عنھا ولذا سقط عنھا فرض التطھیر مع بقاء النجاسۃ في سائر الاعضاء التي حلتھا واما ثبوتآ فلان الحدث الاصغر انما ینجس اربعۃ اعضاء والاکبر البدن کلہ وسنعود الی الکلام فی ھذا عنقریب ان شاء اللہ تعالٰی اما تلبس المکلف بھا ای اصطحابہ لھا فوصف للمکلف یحدث بحلول النجاسۃ في ای جزء من اجزاء بدنہ و یبقی ببقائھا فی شیئ منھا فان زادت النجاسۃ لم یزدوان نقصت لم ینتقص بل اذا حدث حدث ومھما بقیت ولوکاقل قلیل بقی کملا واذا زالت بالکلیۃ زال وکان نظیرھا الحرکۃ بمعنی القطع وبمعنی التوسط فالاول متجزئۃ لانطباقھا علی المسافۃ المتجزئۃ والثانیۃ لاجزء لھا بل تحدث بحدوث اول جزء من اجزاء الاولی و تبقی بحالھا مادام المتحرک بین الغایتین فاذ اسکن زالت دفعا فانقلت لم لایحصل کلام البحر علی ھذا کی یثبت التغایر بین الحدین کمافھم النھر والدرو یوافق لما اعترض بہ تبعآ للفتح کلام العامۃ والمتون ان الحدث لایتجزی۔

[اردو کالم] دونوں میں فرق یہ ہے کہ نجاست شرعی وصف ہے جو اعضاء ظاہر ہ کی سطحوں کے ساتھ قائم ہوتا ہے، اور یہ حلول سریانی ہوتا ہے اور سطح ممتد اور منقسم ہے تو اس کی تقسیم کی وجہ سے نجاست بھی منقسم ہوجائے گی، تو یہ رفعاً اور ثبوتاً تجزی کو قبول کرے گا، رفعاً تو ظاہر ہے، کیونکہ مثلاً اس نے ہاتھ تین بار دھویا تو اس سے نجاست زائل ہوجائے گی، اور اسی لئے اس سے فرض تطہیر ساقط ہوگیا جبکہ باقی اعضاء میں نجاست باقی ہے اور ثبوتاً اس طرح کہ حدث اصغر چار اعضاء کو ناپاک کرتا ہے اور اکبر تمام بدن کو، ہم عنقریب اس پر کلام کریں گے ان شاء اللہ تعالیٰ۔ رہا نجاست کے ساتھ مکلف کا متلبس ہونا، تو یہ مکلف کا وصف ہے جو نجاست

کے حلول سے پیدا ہوتا ہے، خواہ اس کے بدن کے کسی جزء میں بھی ہو، اور حدث اس وقت تک باقی رہے گا جب تک نجاست کسی بھی عضو میں باقی رہے، تو اگر نجاست زیادہ ہوجائے تو حدث زیادہ نہ ہوگا، اور نجاست اگر کم ہو تو حدث کم نہ ہوگا، بلکہ جب بھی نجاست وجود میں آئے گی حدث بھی آئے گا اور جب تک باقی رہے گی خواہ کم سے کم ہو تو حدث بھی مکمل طور پر باقی رہے گا اور جب نجاست بالکلیہ زائل ہوجائے گی تو حدث بھی زائل ہوجائے گا، ان دونوں کی نظیر حرکت بمعنی قطع ہے اور حرکت بمعنی توسط کے ہے، تو پہلی منقسم ہے کیونکہ وہ مسافت منقسمہ پر منطبق ہوتی ہے اور دوسری کا کوئی جزء نہیں بلکہ پہلی حرکت کے پہلے جز کے پیدا ہونے پر پیدا ہوتی ہے اور اسی طرح باقی رہتی ہے جب تک دونوں غایتوں کے درمیان۔

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Arabic Column] I said: His statement "existing in the limbs" refutes this, for the state of attachment (talabbus) that does not divide only exists in the person himself, not in the limbs. And that which exists in the limbs is divided by their division, as you have known. As for its contradiction to what was mentioned regarding non-division, I say: (1) It is no wonder, for he is the one who said in the chapter on the conditions of prayer, immediately following this definition without any separation, his text: "Impurity (khabath) is a substance deemed filthy by law, and ritual impurity (hadath) was prioritized due to its strength because even a small amount of it prevents [validity of prayer], unlike a small amount of physical impurity (khabath)." So, he explicitly stated the divisibility of ritual impurity. And his leader, the absolute investigator in Al-Fath, said: "Their word is unanimous that the leather sock (khuff) is legally considered a barrier preventing the spread of ritual impurity to the foot. Thus, the foot remains in its state of purity, and ritual impurity descends upon the leather sock, so it is removed by wiping (mash)." This is an explicit text on the divisibility of ritual impurity and an admission of their unanimous agreement on it. And it is so; whoever looks at their words in the issues of wiping over leather socks and others will be certain that they all state its divisibility. Rather, what is not divisible is the person's involvement in the legal prohibition. So it appeared as clear as day that the objection against...

[Urdu Column] ...remains in motion, and when it becomes still, the motion will cease instantly. If you say, why not interpret the words of 'Bahr' in this way so that a distinction between the two definitions becomes apparent, as understood by 'Nahr' and 'Durr,' and it aligns with the objection they raised against general books and texts following 'Fath,' that ritual impurity is not divisible? (T) I say: this interpretation is rejected by his statement "existing in the limbs," because the state of ritual impurity (talabbus), which is an indivisible thing, resides in the person himself, not in his limbs. And whatever resides in the limbs becomes divisible due to the divisibility of the limbs, as you have recognized, and its opposition to non-divisibility. Therefore, I say there should be no surprise at this, because immediately after this definition in the 'Chapter on Conditions of Prayer,' he states: "And impurity (khabath) is that which is legally filthy, and ritual impurity (hadath) was prioritized because of its strength, as even a small amount of it is a preventative. Unlike a small amount of impurity." Here, he has explicitly spoken of the divisibility of ritual impurity. And his leader, the Absolute Investigator, stated in 'Al-Fath' that all jurists agree that the leather sock

(khuff) is legally a barrier to the spread of ritual impurity towards the foot. Thus, the foot remains pure as before, and the ritual impurity enters the leather sock, therefore it will be removed by wiping (mash). This is an explicit text on the divisibility of ritual impurity and an admission that the jurists are unanimous on this, and the matter...

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Conditions of Prayer, Saeed Company Karachi, 1/266 2. Fath al-Qadir, Wiping over Leather Socks, Sukkur, 1/128

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग २)

[अरबी कॉलम] मैंने कहा: उनका यह कथन "अंगों में मौजूद" इसका खंडन करता है, क्योंकि अशुद्धि की अवस्था (तलब्बुल) जो विभाजित नहीं होती, वह केवल स्वयं व्यक्ति में स्थित होती है, अंगों में नहीं। और जो अंगों में स्थित होती है, वह अंगों के विभाजन से विभाजित होती है, जैसा कि आप जान चुके हैं। जहाँ तक इसके उस उल्लेख के विरुद्ध होने की बात है जिसमें कहा गया था कि यह विभाजित नहीं होता, तो मैं कहता हूँ: (1) इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि वे वही हैं जिन्होंने नमाज़ की शर्तों के अध्याय में, इस परिभाषा के तुरंत बाद बिना किसी अंतराल के अपना पाठ कहा है: "अशुद्धि (ख़बथ) वह पदार्थ है जिसे शरीयत द्वारा गंदा माना गया है, और हदथ (धार्मिक अशुद्धि) को उसकी शक्ति के कारण प्राथमिकता दी गई क्योंकि इसकी कम मात्रा भी [नमाज़ की वैधता को] रोकती है, जबकि अशुद्धि (ख़बथ) की कम मात्रा के विपरीत।" अतः उन्होंने स्पष्ट रूप से हदथ की विभाज्यता का उल्लेख किया है। और उनके मार्गदर्शक, अल-फ़तह में पूर्ण अन्वेषक ने कहा: "उनका कथन इस पर सहमत है कि मोज़ा (ख़ुफ़) शरीयत के अनुसार पैर तक हदथ के प्रसार को रोकने वाला माना जाता है। इस प्रकार पैर अपनी पवित्रता की स्थिति में रहता है, और हदथ मोज़े पर आ जाता है, इसलिए इसे पोंछने (मसह) से हटा दिया जाता है।" यह हदथ की विभाज्यता पर एक स्पष्ट पाठ है और इस पर उनकी सर्वसम्मति की स्वीकारोक्ति है। और ऐसा ही है; जो कोई मोज़ों पर मसह करने और अन्य मसलों में उनके शब्दों को देखेगा, उसे विश्वास हो जाएगा कि वे सभी इसकी विभाज्यता के पक्षधर हैं। वास्तव में, जो विभाजित नहीं होता वह कानूनी निषेध में व्यक्ति की संलिप्तता है। तो यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो गया कि...

[उर्दू कॉलम] ...गतिशील रहे और जब स्थिर हो जाएगा तो गति तुरंत समाप्त हो जाएगी। यदि तुम कहो कि 'बहर' के शब्दों को इस पर क्यों न मान लिया जाए ताकि दोनों परिभाषाओं में अंतर स्पष्ट हो जाए, जैसा कि 'नहर' और 'दुर्र' ने समझा है, और यह उस आपत्ति के अनुकूल हो जाए जो उन्होंने 'फ़तह' का अनुसरण करते हुए सामान्य किताबों और मूल ग्रंथों पर की है कि हदथ विभाजित नहीं होता? (त) मैं कहता हूँ: इस व्याख्या का उनके शब्द "अंगों में मौजूद" विरोध करते हैं, क्योंकि अशुद्धि की अवस्था (तलब्बुल), जो कि एक अविभाज्य चीज़ है, वह स्वयं व्यक्ति के साथ स्थित होती है न कि उसके अंगों के साथ। और जो चीज़ अंगों के साथ स्थित है वह अंगों के विभाजन के कारण विभाजित होती है, जैसा कि आपने पहचाना और विभाजन न होने के साथ इसके विरोध को। अतः मैं कहता हूँ कि इस पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि उन्होंने स्वयं इसी परिभाषा के तुरंत बाद "नमाज़

की शर्तों के अध्याय" में कहा है: "और नजासत (ख़बथ) वह चीज़ है जो शरीयत के अनुसार गंदी हो, और हदथ को उसकी शक्ति के कारण प्राथमिकता दी गई क्योंकि इसकी कम मात्रा भी बाधा है। शारीरिक अशुद्धि की कम मात्रा के विपरीत।" यहाँ उन्होंने स्पष्ट रूप से हदथ के विभाजित होने की बात कही है, और उनके मार्गदर्शक 'मुहक्किक़ अली अल-इतलाक़' ने 'फ़तह' में फरमाया कि सभी फ़क़ीह (विधिवेत्ता) इस पर सहमत हैं कि मोज़ा शरीयत के अनुसार पैर की ओर हदथ के प्रसार को रोकने वाला है, तो पैर पहले की तरह पाक (पवित्र) रहेगा और हदथ मोज़े में दाखिल हो जाएगा, इसलिए मसह से इसे दूर कर दिया जाएगा। यह हदथ के विभाजित होने पर स्पष्ट प्रमाण है और इस बात का स्वीकार है कि फ़क़ीह इस पर एकमत हैं, और बात...

पाद टिप्पणियाँ: 1. अल-बहर अर-राइक़, नमाज़ की शर्तें, सईद कंपनी, कराची, 1/266 2. फ़तह अल-क़दीर, मसह अल-ख़ुफ़ैन, सुक्कुर, 1/128

पृष्ठ ७११ का ८४

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[Arabic Column] قلت: يأباه قوله قائمة بالاعضاء فان التلبس الذى لا تجزى له انما يقوم بالمكلف نفسه لا بالاعضاء و الذى يقوم بها يتجزى بتجزيها كما عرفت اما مخالفته لما ذكر من عدم التجزى فاقول: (1) لا غرو فهو القائل فى باب شروط الصلاة متصلا بهذا التعريف بلا فصل مانصه والخبث عين مستقذرة شرعا وقدم الحدث لقوته لان قليله مانع بخلاف قليل الخبث ١ھ فقد افصح بتجزى الحدث وقال متبوعه المحقق على الاطلاق فى الفتح كلمتهم متفقة على ان الخف اعتبر شرعاً مانعاً سراية الحدث الى القدم فتبقى القدم على طهارتها ويحل الحدث بالخف فيزال بالمسح ٢ھ فهذا نص صريح على تجزى الحدث واعتراف باطباق كلمتهم عليه وهو كذلك فمن نظر كلامهم في مسائل مسح الخفين وغيرها ايقن بانهم جميعاً قائلون بتجزيه وانما الذى لا يتجزى هو تلبس المكلف بالمنع الشرعي فظهر ظهور النهاران الايراد على

[Urdu Column] متحرک رہے اور جب پُر سکون ہو گا تو حرکت یک دم ختم ہو جائے گی۔ اگر تو کہے کہ بحر کے کلام کو اس پر کیوں محمول نہ کر لیا جائے تاکہ دونوں تعریفوں میں تغایر ظاہر ہو جائے جیسا کہ نہر اور ڈر نے سمجھا ہے اور موافق ہو جائے اس اعتراض کے ساتھ جو انہوں نے فتح کی متابعت میں عام کتب اور متون پر کیا ہے کہ حدّث منقسم نہیں ہوتا۔ (ت) میں کہتا ہوں اس تاویل سے ان کا قول "قائمة بالاعضاء" انکار کرتا ہے، کیونکہ تلبس جو ایک غیر متجزی شیء ہے، وہ بذاتِ خود مکلّف کے ساتھ قائم ہوتا ہے نہ کہ اُس کے اعضاء کے ساتھ، اور جو چیز اعضاء کے ساتھ قائم ہے وہ اعضاء کی تجزی کے باعث متجزی ہوتی ہے جیسا کہ آپ نے پہچانا اور اس کی مخالفت عدمِ تجزی سے، تو میں کہتا ہوں کہ اس پر کوئی تعجب نہ ہونا چاہئے کیونکہ وہ خود ہی اس تعریف کے متصلا بعد "باب شروط الصلوۃ" میں فرماتے ہیں "اور خُبث وہ چیز ہے

جو شرعاً گندی ہو، اور حدث کو اس کی قوت کے باعث مقدم کیا کیونکہ اس کا قلیل بھی مانع ہے۔ بخلاف قلیلِ خبث کے اھ یہاں انہوں نے بوضاحت حدّث کے منقسم ہونے کا قول کیا ہے، اور اُن کے مقتدا محقق علی الاطلاق نے فتح میں فرمایا تمام فقہاء اس پر متفق ہیں کہ موزہ شرعاً قدم کی طرف حدث کی سرایۃ کو قدم تک روکنے والا ہے، تو قدم بدستور پاک رہے گا اور حدث موزہ میں داخل ہو جائے گا، لہٰذا مسح سے اس کو زائل کر دیا جائے گا اھ یہ نص صریح ہے حدث کے متجزی ہونے پر اور اس امر کا اعتراف ہے کہ فقہاء اس پر متفق ہیں، اور بات

حواشی: 1. بحر الرائق شروط الصلوۃ سعید کمپنی کراچی ۱/۲۶۶ 2. فتح القدیر مسح الخفین سکھر ۱/۱۲۸

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Text on the left side - Arabic]: The texts and the general [books], and the triplication of the cause, are all out of place. There is no need for the laborious effort undertaken by 'al-Bahr' in responding to the texts by saying: 'Unless it is said that ritual impurity (hadath) is removed from the limb in a conditional manner (mawqoofan).' Then he weakened it by saying: 'However, that which is given as a reason in the book of al-Hasan from Abu Hanifa is the discharge of the obligation (isqat al-fard), not the removal of ritual impurity (izalat al-hadath).' I say: rather, there is no justification for it, because hadath, in the sense that it is indivisible—meaning the person’s being characterized by a legal prohibition—does not reside in a limb such that it would be removed from it definitively or conditionally. Then, the Imam's reasoning in this speech with the discharge of the obligation does not contradict his reasoning in another speech with the removal of ritual impurity, as we have established for you with the guidance of al-Hidayah that their result is one. It has been said in al-Khulasa, al-Tabyeen, al-Fath, and others: With what does water become used (musta'mal)? Abu Hanifa and Abu Yusuf said: When ritual impurity is removed by it or nearness [to God] is sought by it, etc. And with Allah is success. Then the inclination of the Researcher (al-Muhaqqiq) at the end of his speech, which we quoted from him, towards [the view] that the discharge of the obligation is the original [reason] for the [water] being used—al-Bahr then al-Durr relied on it, and pointed towards its rejection.

[Text on the right side - Urdu]: It is so because whoever looks at the speech of the jurists regarding the wiping over the leather socks (Mash al-al-Khuffayn) will be certain that all jurists are in favor of the divisibility of ritual impurity (hadath). And the thing which is not divisible is the person's characterization by a legal prohibition. Thus, it has become as clear as daylight that the objection against the texts and general books, and the triplication of the cause, are all out of place. There was little need for the laborious effort 'al-Bahr' made in response to the texts; the answer is: "unless it is said that the hadath was removed from the limb in a conditional manner." Then he himself declared it weak and said that in Hasan's book, the reason attributed to Abu Hanifa is the discharge of the obligation, not the removal of hadath. (T) I say: in fact, there is no reason for it at all, because hadath, in the sense that it is not divisible—meaning the person's being characterized by a legal hindrance—does not reside in any limb so that it could be removed from it immediately or conditionally. Then, the Imam's reasoning in this speech with the discharge of the

obligation is not contradictory to his describing the removal of hadath as the cause in his other speech, as we have made clear from the text of al-Hidayah that the result of both is the same. It is mentioned in al-Khulasa, al-Tabyeen, al-Fath, etc., that water will become used (musta'mal) according to Abu Hanifa and Abu Yusuf when some ritual impurity is removed by it or some nearness is sought, etc. And with Allah is success. Then the speech of the Researcher which we have quoted...

[Footnotes]: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, discussion on Musta'mal water, Sa'id Company Karachi, 1/92. 2. Khulasa al-Fatawa, Naval Kishore Lucknow, 1/17.

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

[बाईं ओर का पाठ - अरबी]: मूल पाठ (मतून) और सामान्य पुस्तकें और कारण का तीन गुना होना, सब अनुचित स्थान पर हैं। 'अल-बहर' ने मूल पाठों के उत्तर में जो कठिन प्रयास किया है, उसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, यह कहकर कि: 'सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि अंग से अशुद्धि (हदस) शर्तिया तौर पर समाप्त हुई है।' फिर उन्होंने इसे यह कहकर कमज़ोर कर दिया कि: 'हालांकि, इमाम हसन की किताब में इमाम अबू हनीफ़ा से जो कारण बताया गया है, वह दायित्व की पूर्ति (इसक़ात-ए-फ़र्ज़) है, न कि अशुद्धि का निवारण (इज़ाला-ए-हदस)।' मैं कहता हूँ: बल्कि, इसका कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि हदस, उस अर्थ में जिसमें वह अविभाज्य है—यानी व्यक्ति का कानूनी रोक (मान-ए-शई) से ग्रस्त होना—किसी अंग में निवास नहीं करता कि वह उससे निश्चित रूप से या शर्तिया तौर पर समाप्त हो जाए। फिर, इस कथन में इमाम का दायित्व की पूर्ति को कारण बताना, उनके दूसरे कथन में अशुद्धि निवारण को कारण बताने के विपरीत नहीं है, जैसा कि हमने 'हिदाया' के मार्गदर्शन से आपके लिए स्पष्ट कर दिया है कि दोनों का परिणाम एक ही है। 'अल-खुलासा', 'अत-तबीन', 'अल-फ़तह' और अन्य में कहा गया है: पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) कब होता है? अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ ने कहा: जब उसके द्वारा अशुद्धि दूर की जाए या उसके द्वारा [ईश्वर की] निकटता प्राप्त की जाए, इत्यादि। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। फिर 'मुहक़्क़िक़' (शोधकर्ता) का अपने कथन के अंत में झुकाव, जिसे हमने उद्धृत किया है, इस ओर कि दायित्व की पूर्ति ही पानी के मुस्तअमल होने का मूल कारण है—'अल-बहर' और फिर 'अद-दुर्र' ने इस पर भरोसा किया, और इसके खंडन की ओर संकेत किया।

[दाईं ओर का पाठ - उर्दू]: ऐसी है क्योंकि जो भी मसह अल-अल-ख़ुफ़ैन (चमड़े के मोज़ों पर मसह) के संबंध में न्यायविदों के भाषण को देखेगा, वह निश्चित हो जाएगा कि सभी न्यायविद अशुद्धि (हदस) की विभाज्यता के पक्ष में हैं। और जो चीज़ विभाज्य नहीं है, वह व्यक्ति का कानूनी रोक से ग्रस्त होना है। इस प्रकार, यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो गया है कि मूल पाठों और सामान्य पुस्तकों पर आपत्ति और कारण का तिगुना होना, सब बेमानी है। 'अल-बहर' ने मूल पाठों के उत्तर में जो श्रमसाध्य प्रयास किया था, उसकी बहुत कम आवश्यकता थी; उत्तर यह है: "जब तक कि यह न कहा जाए कि हदस अंग से शर्तिया तौर पर हटा दिया गया था।" फिर उन्होंने स्वयं इसे कमजोर घोषित कर दिया और कहा कि हसन की पुस्तक में, अबू हनीफ़ा को दिया गया कारण दायित्व का निर्वहन है, न कि हदस को हटाना। (त) मैं कहता हूँ: वास्तव में, इसका कोई कारण ही नहीं है, क्योंकि हदस, उस अर्थ

में जिसमें वह विभाज्य नहीं है—यानी व्यक्ति का कानूनी बाधा के साथ ग्रस्त होना—किसी भी अंग में निवास नहीं करता है ताकि उसे तुरंत या शर्तिया तौर पर उससे हटाया जा सके। फिर, इस भाषण में इमाम का दायित्व के निर्वहन के साथ तर्क करना उनके दूसरे भाषण में हदस को हटाने को कारण बताने के विपरीत नहीं है, जैसा कि हमने हिदाया के पाठ से स्पष्ट कर दिया है कि दोनों का परिणाम एक ही है। अल-खुलासा, अत-तबीन, अल-फतह आदि में उल्लेख किया गया है कि अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ के अनुसार पानी तब मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) हो जाएगा जब उसके द्वारा कोई अशुद्धि हटा दी जाए या कोई निकटता मांगी जाए, आदि। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। फिर शोधकर्ता का वह भाषण जिसे हमने उद्धृत किया है...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. अल-बहर अल-राइक़, मुस्तअमल पानी की चर्चा, सईद कंपनी कराची, 1/92। 2. ख़ुलासा-तुल-फ़तावा, नवल किशोर लखनऊ, 1/17।

पृष्ठ 85/711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[بائیں جانب کی عبارت - عربی]: المتون والعامة وتثليث السبب كلا كان في غير محله ولا حاجة الى ما تجشم البحر جواباً عن المتون بقوله الا ان يقال ان الحدث زال عن العضو زوالا موقوفا ثم ضعفه بقوله لكن المعلل به في كتاب الحسن عن ابي حنيفة اسقاط الفرض لا ازالة الحدث۔ اقول: بل لا وجه له لان الحدث بالمعنی الذی لایتجزی اعنی تلبس المکلف بالمانع الشرعی لاقوام له بعضو حتی یزول عنه منجزا اوموقوفا ثم تعلیل الامام فی هذا الکلام باسقاط الفرض لا ینافی تعلیلہ فی کلام آخر برفع الحدث علی ما قررنا لک بارشاد الهدایۃ ان مؤداهما واحد وقد قال فی الخلاصة والتبیین والفتح وغیرہا الماء بماذا یصیر مستعملاً قال ابو حنیفہ وابو یوسف اذا ازیل بہ حدث او تقرب بہ الخ وباللہ التوفیق۔ ثم جنوح المحقق فی آخر کلامہ الذی اثرنا عنہ الی ان سقوط الفرض ہو الاصل فی الاستعمال اعتمدہ فی البحر ثم الدر واشار الی الرد علیہ۔

[دائیں جانب کی عبارت - اردو]: ایسی ہے کیونکہ جو بھی مسح علی الخفین کی بابت فقہاء کے کلام کو دیکھے گا اس کو یقین آجائے گا کہ سب فقہاء حدث کے متجزی ہونے کے قائل ہیں ، اور جو چیز متجزی نہیں ہوتی ہے وہ مکلف کا منع شرعی سے متصف ہونا ہے، تو روز روشن کی طرح واضح ہو گیا کہ متون اور عام کتب پر اعتراض اور سبب کی تثلیث سب بے محل ہیں اور جو تکلف بحر نے متون کے جواب میں کیا ہے اس کی چنداں حاجت نہیں، جواب یہ ہے کہ "مگر یہ کہ کہا جائے کہ حدث عضو سے زوال موقوف کے طور پر زائل ہوا ہے، پھر خود ہی اس کو ضعیف قرار دیا اور فرمایا کہ حسن کی کتاب میں ابو حنیفہ سے اسقاط فرض کی علت بنانا مروی ہے نہ کہ ازالہ حدث کو۔ (ت) میں کہتا ہوں دراصل اس کی کوئی وجہ ہی نہیں ہے، کیونکہ حدث اُس معنی کے اعتبار سے جس میں وہ منقسم نہیں ہوتا ہے یعنی مکلف کا مانع شرعی کے ساتھ متلبس ہونا ، اس کا

قیام کسی عضو کے ساتھ نہیں ، تاکہ وہ اس سے فوری طور پر یا موقوفاً زائل ہو جائے ، پھر امام کا اس کلام میں اسقاط فرض کے ساتھ تعلیل کرنا ، ان کے دوسرے کلام میں رفع حدث کی علت بتانے سے متضاد نہیں ، جیسا کہ ہم نے ہدایہ کی عبارت سے واضح کردیا ہے کہ دونوں کا حاصل ایک ہی ہے ، اور خلاصہ، تبیین، فتح وغیرہما میں ہے کہ پانی کا مستعمل ہونا ابو حنیفہ اور ابو یوسف کے نزدیک اس وقت ہوگا جب اس سے کوئی حدث زائل کیا جائے یا کوئی تقرب کیا جائے الخ وباللہ التوفیق پھر محقق کا جو کلام ہم نے نقل کیا ہے

[حواشی]: 1 بحر الرائق بحث الماء المستعمل سعید کمپنی کراچی ۹۲/۱ 2 خلاصة الفتاوی نولکشور لکھنؤ ۱۷/۱

Fatawa Razawiyya - Volume II

[Arabic Column] Allamah 'Sh' narrated first from 'al-Fath' himself that what is known from the perspective of the Legislator (Allah) is that the instrument through which an obligation is discharged and nearness [to Allah] is achieved becomes soiled, etc. Also, from him is the text: "What we reason is that both seeking nearness (Taqarrub) and the discharge of obligation (Isqat) are effective in causing the change. Do you not see that the description of nearness alone exists in voluntary charity (Sadaqah at-Tatawwu') and the change had an effect to the extent that it became forbidden for the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him)? Thus, we know that each has a legally recognized effect in causing change." He then said after quoting both of them: "The implication is that seeking nearness is also an original cause (Asal), so there are two original causes for the effect in usage."

I say: (1) The discourse of the researcher (Al-Muhaqqiq) from beginning to end is overflowing with establishing the original cause (Asalah) in this sense, i.e., that upon which the ruling of water becoming soiled is based, due to both nearness and the discharge of obligation. Rather, it is he who made it threefold and established three principles. He would not establish all this and then, within the discourse itself, limit the original cause to one thing. The origin of his discourse is that he (may Allah's mercy be upon him) narrated from them that 'usage' according to the two Shaikhs [Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf] is due to one of two things: lifting ritual impurity (Raf' al-Hadath) or nearness, and according to Muhammad, due to nearness alone. He interpreted 'lifting ritual impurity' in a sense that is indivisible, thus it branched out...

[Urdu Column] In this, their inclination is towards the fact that in the usage of water, the discharge of obligation (Suqoot-e-Farz) is the original cause; Al-Bahr and Durr [al-Mukhtar] have relied upon this, and Allamah 'Sh' [Ibn Abidin] has pointed towards its refutation. First, he himself quoted from al-Fath that it is known from the Legislator that the instrument through which an obligation is discharged and nearness is achieved becomes soiled, etc. He further stated: "What we understand is that both nearness and the discharge of obligation are effective in causing the change. For example, the description of nearness is unique in voluntary charity and the change had an effect such that it became forbidden for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Thus, we learned that each has left a legal effect of change." Then, after quoting both, he said: "The implication is that nearness is also an original cause, so there are two original causes effective in usage."

I say that the discourse of the researcher from beginning to end is overflowing in that he has established the original cause in this sense, i.e., the thing upon which the ruling is based—becoming soiled due to performing an act of nearness and due to discharging an obligation. Rather, they are the ones who made it threefold and set three principles, and by stating this, they are not limiting the original cause to one thing. The main purpose of their discourse is that they (may Allah have mercy on them) are quoting from them that according to the Two Shaikhs, usage is due to one of two things...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/136. Fath al-Qadir, Chapter on Water Permissible for Ablution and What is Not, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 1/57. Page 86 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

[अरबी कॉलम] अल्लामा 'श' (इब्न आबिदीन शामी) ने सबसे पहले 'अल-फ़तह' से उद्धृत किया कि शरीयत देने वाले (अल्लाह) की ओर से यह ज्ञात है कि जिस साधन के माध्यम से कोई फ़र्ज़ (कर्तव्य) पूरा होता है और निकटता (क़ुर्बत) प्राप्त होती है, वह मैला हो जाता है इत्यादि। साथ ही उनसे यह भी उद्धृत किया: "जिसे हम समझते हैं वह यह है कि निकटता (तक़र्रुब) और फ़र्ज़ को पूरा करना (इस्कात) दोनों ही परिवर्तन लाने में प्रभावशाली हैं। क्या आप नहीं देखते कि स्वेच्छा से दिए गए दान (सदक़ा ततव्वु) में केवल निकटता का गुण होता है, और परिवर्तन का प्रभाव यहाँ तक पड़ा कि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए हराम हो गया। तो हमें ज्ञात हुआ कि प्रत्येक का शरीयत के अनुसार परिवर्तन लाने में प्रभाव है।" फिर दोनों को उद्धृत करने के बाद उन्होंने कहा: "इसका अर्थ यह है कि क़ुर्बत भी एक मूल (अस्ल) है, इसलिए इस्तेमाल में प्रभाव डालने वाले दो मूल कारण हैं।"

मैं कहता हूँ: (1) मोहक़्क़िक़ का कलाम शुरू से अंत तक इस अर्थ में असालत (प्राथमिकता) को सिद्ध करने से भरा पड़ा है, यानी वह चीज़ जिस पर हुक्म आधारित हो—पानी का क़ुर्बत अदा करने और फ़र्ज़ पूरा करने दोनों के कारण मैला हो जाना। बल्कि, वही हैं जिन्होंने इसे तीन गुना किया और तीन सिद्धांत स्थापित किए। वह यह सब स्थापित नहीं करते और फिर उसी कलाम के बीच में असालत को केवल एक चीज़ तक सीमित नहीं करते। उनके कलाम का मूल कारण यह है कि उन्होंने (रहमतुल्लाहि अलैहि) उनसे उद्धृत किया कि शैख़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) के अनुसार 'इस्तेमाल' दो चीज़ों में से किसी एक के कारण होता है: रफ़अ-ए-हदस (अशुद्धि दूर करना) और तक़र्रुब, और इमाम मोहम्मद के अनुसार केवल तक़र्रुब के कारण। और उन्होंने रफ़अ-ए-हदस को ऐसे अर्थ में लिया जो अविभाज्य है, जिससे यह शाखाएं निकलीं...

[उर्दू कॉलम] इसमें उनका झुकाव इस ओर है कि पानी के इस्तेमाल से फ़र्ज़ का पूरा होना (सुक़ूत-ए-फ़र्ज़) ही असल है; बहर और दुर्र ने इसी पर भरोसा किया है और अल्लामा 'श' ने इसके खंडन की ओर इशारा किया है। पहले तो उन्होंने खुद ही फ़तह से उद्धृत किया कि शरीयत से मालूम है कि वह साधन जिससे फ़र्ज़ पूरा हो और क़ुर्बत अदा हो, वह मैला हो जाता है इत्यादि। उन्होंने आगे फ़रमाया: "जो हम समझते हैं वह यह है कि तक़र्रुब और सुक़ूत-ए-फ़र्ज़ दोनों ही परिवर्तन में प्रभावशाली हैं। उदाहरण के लिए, नफ़्ली सदक़े में केवल तक़र्रुब का गुण होता है और परिवर्तन ने अपना प्रभाव दिखाया, यहाँ तक कि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए हराम हो गया। तो हमें पता चला कि हर एक ने शरीयत के अनुसार परिवर्तन का प्रभाव छोड़ा है।" फिर दोनों को उद्धृत करने

के बाद फ़रमाया: "इसका अर्थ यह है कि क़ुर्बत भी असल है, तो इस्तेमाल में प्रभावशाली दो असलें हैं।"

मैं कहता हूँ कि मोहक़्क़िक़ का कलाम शुरू से अंत तक भरा हुआ है कि उन्होंने इस अर्थ में असालत को सिद्ध किया है, यानी वह चीज़ जिस पर हुक्म की बुनियाद हो—क़ुर्बत अदा करने के कारण और फ़र्ज़ पूरा करने के कारण मैला हो जाना। बल्कि, वे ही हैं जिन्होंने तीन हिस्से किए और तीन सिद्धांत निर्धारित किए, और यह बयान करके वे असालत को किसी एक चीज़ तक सीमित नहीं कर रहे हैं। उनके कलाम का मुख्य उद्देश्य यह है कि वे उन (रहमतुल्लाहि अलैहिम) से यह उद्धृत कर रहे हैं कि शैख़ैन के अनुसार इस्तेमाल दो चीज़ों में से एक की वजह से है...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. रद अल-मुहतार, जल अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/136। फ़तह अल-क़दीर, वज़ू के लिए अनुमत और गैर-अनुमत जल का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/57। पृष्ठ 86/711

[عربی کالم] العلامۃ ش بان نقل اولا عن الفتح نفسه ان المعلوم من جهة الشارع ان الآلة التي تسقط الفرض وتقام بها القربة تتدنس الخ وايضا عنه مانصه والذي نعقله ان كلا من التقرب والاسقاط مؤثر في التغير الا ترى انه انفرد وصف التقرب في صدقة التطوع واثر التغير حتى حرمت على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم فعرفنا ان كلا اثر تغييرا شرعيا اه ثم قال بعد نقلهما مقتضاه ان القربة اصل ايضا فالمؤثر في الاستعمال اصلان اهـ اقول: (۱) كلام المحقق من اوله الى اخره طافح باثبات الاصالة بهذا المعنى اي مايبتنى عليه الحكم بتدنس الماء للقربة والاسقاط جميعا بل هو الذى ثلث واقام اصولاً ثلثة وماكان ليقرر هذا كله ثم فى طى نفس الكلام يحصر الاصالة في شيئ واحد وانما منشأ كلامه انه رحمه الله تعالى نقل عنهم ان الاستعمال عند الشيخين باحد شيئين رفع الحدث والتقرب وعند محمد بالتقرب وحده وحمل رفع الحدث على المعنى الذى لايتجزى فتطرق

[اردو کالم] اس میں ان کا میلان اس طرف ہے کہ پانی کے استعمال سے سقوط فرض ہی اصل ہے بحر اور ڈر نے اسی پر اعتماد کیا ہے اور علامہ "ش" نے اس پر رد کی طرف اشارہ کیا ہے، پہلے تو انہوں نے خود ہی فتح سے نقل کیا کہ شارع سے معلوم ہے کہ وہ آلہ جس سے فرض ساقط ہو اور قربہ ادا ہو میلا ہو جاتا ہے الخ انہوں نے مزید فرمایا کہ جو ہم سمجھتے ہیں وہ یہ ہے کہ تقرب اور اسقاط فرض دونوں ہی تغیر میں مؤثر ہیں، مثلاً وصف تقرب صدقہ تطوع میں منفرد ہے اور تغیر نے اثر کیا یہاں تک کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم پر حرام ہوگئی، تو ہمیں معلوم ہوا کہ ہر ایک نے شرعی تغیر کا اثر چھوڑا ہے اھ پھر دونوں کو نقل کرنے کے بعد فرمایا کہ اس کا مقتضی یہ ہے کہ قربہ بھی اصل ہے تو استعمال میں مؤثر دو اصلیں ہیں اھت میں کہتا ہوں محقق کا کلام از اوّل تا آخر طافح ہے کہ اس میں اصالت اس معنی کے اعتبار سے ثابت کی ہے، یعنی وہ چیز جس

پر حکم کی بنا ہو، پانی کے ادائے قربت کی وجہ سے میلا ہو جانے کے باعث اور اسقاط فرض کے باعث، بلکہ وہی ہیں جنہوں نے تثلیث کی اور تین اصول مقرر کئے، اور وہ یہ تقریر کر کے پھر ان میں سے ایک چیز پر اصالت کو منحصر نہیں کر رہے، ان کے کلام کا اصل مقصد یہ ہے کہ وہ ان (رحمہم اللہ) سے یہ نقل کر رہے ہیں کہ شیخین کے نزدیک استعمال دو چیزوں میں سے ایک کی وجہ سے

[حواشی] 1۔ رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۶ فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء و مالایجوز نوریہ رضویہ سکھر ۱/۵۷ صفحہ 86 از 711

Fatawa Ridawiyya - Volume II

(Left Column - Arabic Content): Objection is raised based on secondary issues (furu') where the ruling was given for the use of water while the state of ritual impurity (hadath) remained. They concluded that the dropping of the obligation (isqat al-fard) is also effective. They reasoned this from the words of the Imam in the book of 'Al-Hasan' and by stating that the principle through which we recognized this ruling is the wealth of Zakat. What is established therein is nothing but the dropping of the obligation. That is, even if we also established it through seeking nearness (taqarrub) by another evidence, the original principle that first guided us to this ruling is the dropping of the obligation. So how can one turn away from it? Rather, it is necessary to uphold it. This does not contradict that the principles are two, or rather three. This meaning will strike the mind of anyone who combines his opening words with his concluding ones, where he says: "It is known from the Shari'ah that the instrument through which an obligation is dropped and nearness is established becomes soiled. Its origin is the wealth of Zakat, which becomes soiled by the dropping of the obligation, so much so that it was called 'filth' (awsakh) in the words of the Prophet (PBUH), etc." Thus, he made it clear that both matters are transformative, yet he restricted it to the dropping of the obligation regarding Zakat. Then he said in explaining the reason for the establishment of 'use' (of water): according to Abu Hanifa and Abu Yusuf, it is both the lifting of ritual impurity (raf' al-hadath) and seeking nearness (taqarrub). According to Muhammad, it is only taqarrub. According to Zufar, it is the lifting (raf'). It is not said that what is mentioned does not stand against Zufar, for he says: "Mere taqarrub does not soil, but rather the dropping (isqat). For wealth is not soiled simply by seeking nearness with it, which is why voluntary charity (sadaqah al-tatawwu') is permissible for a Hashimi." Rather, its implication is that...

(Right Column - Urdu Content): ...it happens, lifting of ritual impurity and seeking nearness. According to Muhammad, it is only through seeking nearness, and the lifting of ritual impurity was interpreted to mean that it is not divisible. Therefore, an objection was raised based on these secondary issues in which the ruling was given for using water while ritual impurity remained. They proved that the dropping of the obligation is also effective, and they argued this from the Imam's words mentioned in the 'Kitab al-Hasan'. They also reasoned that the principle through which we know this ruling is the wealth of Zakat, and in it there is only the dropping of the obligation. That is, even if we prove it through seeking nearness by another evidence, the

principle that we mentioned earlier and by which this ruling was established is the dropping of the obligation. So how is it possible to ignore it? Rather, it is mandatory to accept it. This does not contradict the fact that principles are two, but rather three. These meanings will surely create a stir in the heart of anyone who reads his first and last statements together. They say that the instrument through which an obligation is dropped and nearness is fulfilled becomes soiled. Its origin is the wealth of Zakat, which becomes soiled by the dropping of the obligation, so it is referred to as "filth" (awsakh) in the Hadith, etc. From this it became clear that both matters are transformative, and in Zakat, only the dropping of the obligation was considered sufficient. Then, in explaining the reason for the establishment of usage, he said that according to Abu Hanifa and Abu Yusuf, the reason is the lifting of ritual impurity and seeking nearness.

Footnote: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Water with which Wudu is Permitted and not Permitted. Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 1/51.

फतावा रज़विया - जिल्द दो

(बायां कॉलम - अरबी सामग्री का अनुवाद): उन शाखाओं (फ़ुरूत) के साथ एतराज़ किया गया जिनमें हदस (अशुद्धि) के बाक़ी रहते हुए पानी के इस्तेमाल का हुक्म दिया गया। उन्होंने तय किया कि फ़र्ज़ का गिरना (इस्क़ात-ए-फ़र्ज़) भी प्रभावी है। उन्होंने इमाम के कलाम से इस्तदलाल (तर्क) किया जो किताब 'अल-हसन' में है और इस बात से कि वह असल जिससे हमने यह हुक्म पहचाना वह ज़कात का माल है। और उसमें जो साबित है वह सिर्फ फ़र्ज़ का सुक़ूत है। यानी अगर हम इसे दूसरी दलील से तक़र्रुब (निकटता) के ज़रिए भी साबित करें, तो वह असल जिसने हमें सबसे पहले इस हुक्म की तरफ रहनुमाई की, वह फ़र्ज़ का सुक़ूत है। तो उससे नज़र कैसे हटाई जा सकती है? बल्कि उसे मानना वाजिब है। और यह इस बात के खिलाफ नहीं कि उसूल दो हैं, बल्कि तीन हैं। यह बात उसके ज़हन में आएगी जो उनके शुरुआती कलाम को आख़िरी कलाम के साथ मिलाएगा, जहाँ वह कहते हैं: "शरीअत की तरफ से यह मालूम है कि वह ज़रिया जिससे फ़र्ज़ साक़ित होता है और तक़र्रुब हासिल होता है, वह मैला हो जाता है। इसकी असल ज़कात का माल है जो फ़र्ज़ के सुक़ूत से मैला हो जाता है, यहाँ तक कि उसे नबी (स.) के कलाम में 'औसाख़' (गंदगी) कहा गया है इल्ख़।" तो उन्होंने साफ कर दिया कि दोनों बातें बदलने वाली हैं, और ज़कात में सिर्फ सुक़ूत पर इक्तिफ़ा किया। फिर इस्तेमाल के सुबूत के सबब के बयान में कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ के नज़दीक यह रफ़-ए-हदस और तक़र्रुब दोनों हैं। मुहम्मद के नज़दीक सिर्फ तक़र्रुब है। और ज़ुफ़र के नज़दीक सिर्फ रफ़ (हटाना) है। यह नहीं कहा जा सकता कि जो ज़िक्र किया गया वह ज़ुफ़र के खिलाफ नहीं टिकता, क्योंकि वह कहते हैं: "सिर्फ तक़र्रुब मैला नहीं करता, बल्कि सुक़ूत करता है। क्योंकि माल सिर्फ तक़र्रुब से मैला नहीं होता, इसी वजह से हाशिमी के लिए नफ़्ली सदक़ा जायज़ है।" बल्कि इसका तक़ाज़ा है कि...

(दायां कॉलम - उर्दू सामग्री): ...होता है, रफ़-ए-हदस और तक़र्रुब, और मुहम्मद के नज़दीक सिर्फ तक़र्रुब से और रफ़-ए-हदस को इस मानी पर महमूल किया गया कि इसमें तज्ज़ी (विभाजन) नहीं होती, इस बिना पर उन फ़ुरूत की वजह से एतराज वारिद हुआ जिनमें पानी के इस्तेमाल का हुक्म हुआ हदस के बाक़ी होते हुए, उन्होंने इस अम्र को साबित किया कि इस्क़ात-ए-फ़र्ज़ भी मुअस्सिर है, और इस पर उन्होंने इमाम के कलाम से इस्तदलाल किया है जो किताब 'हसन' में मज़कूर है और यह इस्तदलाल भी किया है कि वह असल जिसकी वजह से हमने यह हुक्म जाना है वह ज़कात का माल है और इसमें सिर्फ फ़र्ज़ का सुक़ूत है, यानी अगरचे हम इसको किसी और दलील की वजह से

तक़र्रुब से साबित करें तो वह असल जो हमने पहले से बताई है और जिससे यह हुक्म साबित हुआ है वह सुक़ूत-ए-फ़र्ज़ है तो उससे सर्फ़ए-नज़र क्यूंकर मुमकिन है बल्कि उसको मानना लाज़िम है, और यह इस अम्र के मनाफी नहीं कि उसूल दो हैं बल्कि तीन हैं ये मानी उसके दिल में ज़रूर खलजान पैदा करेंगे जो उनके अव्वल कलाम और आख़िर कलाम को यकजा करके पढ़ेगा, वह कहते हैं कि वह आला जिससे फ़र्ज़ साक़ित होता है और क़ुर्बत अदा होती है मैला हो जाता है उसकी असल माल-ए-ज़कात है कि वह इस्क़ात-ए-फ़र्ज़ से मैला हो जाता है इसलिए उसको हदीस में "औसाख़" क़रार दिया गया है इल्ख़। इससे वाज़ेह हुआ कि दोनों उमूर तब्दीली करने वाले हैं, और ज़कात में इस्क़ात पर इक्तिफ़ा किया गया है, फिर सुबूत-ए-इस्तेमाल के सबब के बयान में फ़रमाया कि अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ के नज़दीक सबब रफ़-ए-हदस और तक़र्रुब है।

पाद-टिप्पणी: 1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-मा अल्लज़ी यज़ूज़ु बिही अल-वुज़ू व माला यज़ूज़ु। नूरिय्या रज़विया, सक्खर, 1/51.

पृष्ठ 87 / 711

(بایاں کالم - عربی): الایراد بالفروع التي حكم فيها باستعمال الماء مع بقاء الحدث فقرران اسقاط الفرض ایضا مؤثر واستدل علیه بكلام الامام في كتاب الحسن وبان الاصل الذى عرفنا به هذا الحكم هو مال الزكاة والثابت فیه لیس الاسقوط الفرض ای وان اثبتناه ایضا بالتقریب بدلیل اخر فالاصل الذى ارشدنا اولالى هذا الحكم هو سقوط الفرض فكیف یعزل النظر عنه بل یجب القول به وهذا لاینافي ان الاصول اثنان بل ثلثة ینقدح هذا المعنى في ذهن من جمع اول كلامه بأخره حیث یقول المعلوم من جهة الشارع ان الة تسقط الفرض وتقام بها القربة تتدنس اصله مال الزكاة تدنس باسقاط الفرض حتى جعل من الاوساخ في لفظه صلى الله تعالى علیه وسلم الخ فافصح ان كلا الامرین مغیر واقتصر في الزكوة على الاسقاط ثم قال في بیان سبب ثبوت الاستعمال انه عند ابى حنیفة وابى یوسف كل من رفع الحدث والتقرب وعند محمد التقرب وعند زفر الرافع لایقال ما ذكر لاینتهض على زفر اذ یقول مجرد القربة لایدنس بل الاسقاط فان المال لم یتدنس بمجرد التقرب به ولذا جاز للهاشمى صدقة التطوع بل مقتضاه ان لا

(دایاں کالم - اردو): ہوتا ہے، رفع حدث اور تقرب، اور محمد کے نزدیک صرف تقرب سے اور رفع حدث کو اس معنی پر محمول کیا کہ اس میں تجزی نہیں ہوتی، اس بنا پر ان فروع کی وجہ سے اعتراض وارد ہوا جن میں پانی کے استعمال کا حکم ہوا حدث کے باقی ہوتے ہوئے، انہوں نے اس امر کو ثابت کیا اسقاط فرض بھی مؤثر ہے، اور اس پر انہوں نے امام کے کلام سے استدلال کیا ہے جو کتاب حسن میں مذکور ہے اور یہ استدلال بھی کیا ہے کہ وہ اصل جس کی وجہ سے ہم نے یہ حکم جانا ہے وہ زکوٰۃ کا مال ہے اور اس میں صرف فرض کا سقوط ہے، یعنی اگرچہ ہم اس کو کسی اور دلیل کی وجہ سے تقرب سے ثابت کریں تو وہ اصل جو ہم نے پہلے سے بتائی ہے اور

جس سے یہ حکم ثابت ہوا ہے وہ سقوط فرض ہے تو اس سے صرف نظر کیونکر ممکن ہے بلکہ اس کو ماننا لازم ہے، اور یہ اس امر کے منافی نہیں کہ اصول دو ہیں بلکہ تین ہیں یہ معنی اس کے دل میں ضرور خلجان پیدا کریں گے جو ان کے اول کلام اور آخر کلام کو یکجا کرکے پڑھے گا، وہ کہتے ہیں کہ وہ آلہ جس سے فرض ساقط ہوتا ہے اور قربت ادا ہوتی ہے میلا ہو جاتا ہے اس کی اصل مال زکوٰۃ ہے کہ وہ اسقاط فرض سے میلا ہو جاتا ہے اس لئے اس کو حدیث میں "اوساخ" قرار دیا گیا ہے الخ اس سے واضح ہوا کہ دونوں امور تبدیلی کرنے والے ہیں، اور زکوٰۃ میں اسقاط پر اکتفاء کیا گیا ہے، پھر ثبوت استعمال کے سبب کے بیان میں فرمایا کہ ابو حنیفہ اور ابو یوسف کے نزدیک سبب رفع حدث اور تقرب ہے

حاشیہ: 1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء و مالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۵۱/۱

Fatawa Ridawiyya Volume Two

[Left Column] (Water) becomes 'used' (Musta'mal) only through discharge (of obligation) along with seeking nearness to God (Taqarrub). For the principle, meaning the wealth of Zakat, does not have discharge isolated from it, as Zakat is not valid except with intention. This is not the opinion of just one of the three (referring to the three opinions: the two Sheikhs [Abu Hanifa & Abu Yusuf] and Muhammad or Zafar). For we say: the ultimate matter is the establishment of the ruling in the root together with the whole, and that does not necessitate that the effective cause is the whole; rather, it revolves around the suitability for the ruling. For if the independence of every ruling is understood by it, or the whole is ruled by it, then (so be it). And what we understand is that his words are effective[1] until the end of what preceded. Then he said: It is said in "Al-Khulasa" as to what makes water 'used'. (He then mentioned the two schools of thought as we have quoted, and then said:) This is problematic according to the opinion of the Mashayikh (scholars) that impurity (Hadath) is not divisible. The way out is that water becomes 'used' by one of three things: removal of impurity (Raf-ul-Hadath), seeking nearness (Taqarrub), and discharge of obligation (Suqoot-ul-Fard), which is the principle, as it is known that its root is the wealth of Zakat, and what is established in it is only the discharge of obligation. I say: i.e., even if both matters are present in it, this is stronger, and in it there is sufficiency, so it is not established except by...

[Right Column] And according to Imam Muhammad, it is 'Taqarrub' (seeking nearness), and according to Imam Zafar, it is 'Raf' (removal). Let it not be objected that this argument cannot hold against Imam Zafar because they say that mere 'Taqarrub' does not make water 'used', but 'Isqat' (discharge) is also included in it, because the wealth of Zakat did not become impure solely because of 'Taqarrub', and for this reason, a Hashimi can accept voluntary charity (Nafli Sadaqah). Rather, its requirement is that 'Isqat' with 'Taqarrub' is not isolated 'Isqat', because Zakat is not valid without intention. And this is not the opinion of any one of the three (by which they mean the proponents of the three opinions: Imam Abu Hanifa, Imam Abu Yusuf, and Imam Muhammad or Imam Zafar, may Allah have mercy on them). Because we say that at most, the principle of the ruling is established with the whole, and that does not necessitate that the effective cause is the whole; rather, it depends on understanding the suitable ruling. If the independence of each ruling is understood with it, or of the whole, then the ruling will be made accordingly. And what we understand is that each one is effective until the end of what preceded. Then he said:

They said in 'Al-Khulasa' as to what thing makes water 'used'? (So they mentioned both schools of thought as we have quoted, then said: [This is problematic in light of the opinion of the Mashayikh that impurity is not divisible, and the way out of this problem is one of three matters: removal of impurity, seeking nearness, and discharge of obligation is the principle, because it has become known that its root is the wealth of Zakat, and what is established in it is the discharge of obligation ہی principle ہے۔ Because it has become known that its root is the wealth of Zakat, and what is established in it is the discharge of obligation.] (T: I say: although both matters are present in it, this is stronger and it is sufficient for this, so...)

[Footer] 1. Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible and that with which it is not. Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 1/76. Page 88 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

[बायां कॉलम] (पानी) केवल अल्लाह की निकटता (तक़र्रुब) के साथ कर्तव्य विसर्जन (इसक़ात) द्वारा 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है। क्योंकि मूल रूप से, यानी ज़कात की संपत्ति, इसमें कर्तव्य विसर्जन अकेला नहीं होता है, क्योंकि ज़कात बिना नीयत के जायज़ नहीं है। यह तीनों में से किसी एक بی ک विचार नहीं है (अर्थात तीन विचारों के समर्थकों: दोनों शैख़ [इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ] और इमाम मोहम्मद या ज़फ़र)। क्योंकि हम कहते हैं: मामले की अंतिम बात यह है कि मूल रूप से पूरे के साथ नियम की स्थापना होती है, और इसका मतलब यह नहीं है कि प्रभावी कारण पूरा है; बल्कि यह नियम की उपयुक्तता पर निर्भर करता है। क्योंकि यदि इसके द्वारा प्रत्येक नियम की स्वतंत्रता समझी जाती है, या पूरे को इसके द्वारा शासित किया जाता है, तो (वैसा ही होगा)। और जो हम समझते हैं वह यह है कि उनके शब्द पूर्व के अंत तक प्रभावी[1] हैं। फिर उन्होंने कहा: "अल-ख़ुलासा" में कहा गया है कि पानी किस चीज़ से 'मुस्तअमल' हो जाता है। (उन्होंने दोनों पंथों का उल्लेख किया जैसा कि हमने उद्धृत किया है, फिर कहा:) यह मशायख़ (विद्वानों) की राय के अनुसार कठिन है कि अशुद्धि (हद्दस) विभाज्य नहीं है। समाधान यह है कि पानी तीन में से एक चीज़ से 'मुस्तअमल' हो जाता है: अशुद्धि दूर करना (रफ़-उल-हद्दस), निकटता प्राप्त करना (तक़र्रुब), और कर्तव्य की मुक्ति (सुक़ूत-उल-फ़र्ज़) जो कि मूल है, जैसा कि ज्ञात है कि इसकी जड़ ज़कात की संपत्ति है, और इसमें जो स्थापित है वह केवल कर्तव्य की मुक्ति है। मैं कहता हूँ: अर्थात, भले ही इसमें दोनों बातें मौजूद हों, लेकिन यह अधिक प्रबल है और इसमें पर्याप्तता है, इसलिए इसके द्वारा कुछ भी स्थापित नहीं होता सिवाय...

[दायां कॉलम] और इमाम मोहम्मद के अनुसार वह 'तक़र्रुब' (निकटता) है और इमाम ज़फ़र के अनुसार 'रफ़' (हटाना) है। यह आपत्ति नहीं की जानी चाहिए कि यह दलील इमाम ज़फ़र के ख़िलाफ़ नहीं चल सकती क्योंकि वे फ़रमाते हैं कि केवल तक़र्रुब पानी को 'मुस्तअमल' नहीं करता है बल्कि 'इसक़ात' (मुक्ति) भी इसमें शामिल है, क्योंकि ज़कात की संपत्ति केवल तक़र्रुब की वजह से मैली नहीं हुई है, और इसीलिए हाशमी नफ़ली सदक़ा ले सकता है। बल्कि इसकी आवश्यकता यह है कि तक़र्रुब के साथ इसक़ात कोई अकेला इसक़ात नहीं है, क्योंकि नीयत के बिना ज़कात जायज़ नहीं है। और यह तीनों में से किसी एक का कथन नहीं है (इससे उनका तात्पर्य तीनों मतों के मानने वाले यानी इमाम अबू हनीफा और अबू यूसुफ, मोहम्मद या ज़फ़र रहिमहुमुल्लाह हैं)। क्योंकि हम कहते हैं कि अधिक से अधिक नियम का मूल पूरे के साथ सिद्ध होता है और वह इस बात को आवश्यक नहीं

बनाता है कि प्रभावी पूरा है, बल्कि इसका दारोमदार इस पर है कि उपयुक्त नियम को समझा जाए। यदि हर नियम की स्वतंत्रता इसके साथ समझी जाए या पूरे की, तो उसके साथ नियम किया जाएगा। और जो हम समझते हैं वह यह है कि हर एक प्रभावी है, पूर्व के अंत तक। फिर कहा कि उन्होंने 'खुलासा' में फ़रमाया कि पानी किस चीज़ की वजह से मुस्तअमल होता है? (तो उन्होंने दोनों मतों का ज़िक्र किया है जैसा कि हमने नक़्ल किया, फिर फ़रमाया: [यह मशायख़ के कथन की रोशनी में कठिन है कि अशुद्धि विभाज्य नहीं होती, और इस कठिनाई से छुटकारे का तरीका तीन बातों में से एक है: अशुद्धि हटाना, तक़र्रुब और कर्तव्य की मुक्ति ही असल है, क्योंकि यह मालूम हो चुका है कि इसकी असल ज़कात का माल है और इसमें जो सिद्ध है वह कर्तव्य की मुक्ति ही असल है, क्योंकि यह मालूम हो चुका है कि इसकी असल ज़कात का माल है और इसमें जो सिद्ध है वह कर्तव्य की मुक्ति है।] (त: मैं कहता हूँ यद्यपि इसमें मौजूद दोनों बातें हैं लेकिन यह अधिक प्रबल है और इसमें पर्याप्तता है, तो...)

[फुटर] 1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-माउल लज़ी यजजु बिहिल वुज़ूअ व माला यजजु, नूरिया रज़विया सक्खर, 1/76 पृष्ठ 711 में से 88

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[بایاں کالم] یصیر مستعملا الا بالاسقاط مع التقرب فان الاصل اعنی مال الزکاۃ لاینفرد فیہ الاسقاط عنہ اذ لا تجوزالزکاۃ الا بنیۃ ولیس ھو قول واحد من الثلثۃ (یرید اصحاب الاقوال الثلثۃ الشیخین و محمد او زفر) لانا نقول غایۃ الامر ثبوت الحکم في الاصل مع المجموع وھو لایستلزم ان المؤثر المجموع بل ذلك دائر مع عقلیۃ المناسب للحکم فان عقل استقلال کل حکم بہ او المجموع حکم بہ والذی نعقلہ ان کلامہ اثر ۱ الی اخر ما تقدم ثم قال قال في الخلاصۃ ان الماء بما ذا یصیر مستعملا (فذکر المذھبین کما نقلنا ثم قال ھذا یشکل علی قول المشائخ ان الحدث لا یتجزأ والمخلص ان صیرورۃ الماء مستعملا باحد ثلثۃ رفع الحدث والتقرب وسقوط الفرض وھو الاصل لما عرف ان اصلہ مال الزکاۃ والثابت فیہ لیس الاسقوط الفرض۔ اقول: ای وان کان الموجود فیہ الامران لکن ھذا اقوی وفیہ المقنع فلا یثبت بہ الا

[دایاں کالم] اور محمد کے نزدیک وہ تقرب ہے اور زفر کے نزدیک رفع ہے یہ اعتراض نہ کیا جائے کہ یہ دلیل زفر کے خلاف نہیں چل سکتی ہے کہ وہ فرماتے ہیں کہ صرف قربت پانی کو مستعمل نہیں کرتی ہے بلکہ اسقاط بھی اس میں شامل ہے، کیونکہ مال زکوۃ محض تقرب کی وجہ سے میلا نہیں ہوا ہے، اور اسی لئے ہاشمی نفلی صدقہ لے سکتا ہے بلکہ اس کا مقتضی یہ ہے کہ اسقاط مع تقرب سے اسقاط منفرد نہیں، کیونکہ زکوۃ بلانیت جائز نہیں اور یہ تینوں میں سے کسی ایک کا قول نہیں (اس سے ان کی مراد تینوں اقوال کے قائلین یعنی ابو حنیفہ وابو یوسف، محمد یا زفر رحمہم اللہ ہیں) کیونکہ ہم کہتے ہیں کہ زیادہ سے زیادہ حکم کا اصل مجموع کے ساتھ ثابت ہوتا ہے اور وہ اس امر کو مستلزم نہیں ہے کہ مؤثر مجموع ہے بلکہ اس کا دارومدار اس پر ہے کہ مناسب حکم کو سمجھا جائے، اگر ہر حکم کا استقلال اس کے ساتھ سمجھا جائے یا مجموع کا تو

اس کے ساتھ حکم کیا جائے گا اور جو ہم سمجھتے ہیں وہ یہ ہے کہ ہر ایک مؤثر ہے الی آخر ما تقدم، پھر کہا کہ انہوں نے خلاصہ میں فرمایا کہ پانی کس چیز کی وجہ سے مستعمل ہوتا ہے (تو انہوں نے دونوں مذاہب کا ذکر کیا ہے جیسا کہ ہم نے نقل کیا پھر فرمایا (یہ مشائخ کے قول کی روشنی میں مشکل ہے کہ حدث متجزی نہیں ہوتا، اور اس اشکال سے نجات کی صورت تین امور میں سے ایک امر ہے رفع حدث، تقرب اور سقوطِ فرض ہی اصل ہے، کیونکہ یہ معلوم ہو چکا ہے کہ اس کی اصل مال زکوۃ ہے اور اس میں جو ثابت ہے وہ سقوطِ فرض ہی اصل ہے، کیونکہ یہ معلوم ہو چکا ہے کہ اس کی اصل مال زکوۃ ہے اور اس میں جو ثابت ہے وہ سقوطِ فرض ہے۔ ت) میں کہتا ہوں اگرچہ اس میں موجود دونوں امر ہیں لیکن یہ اقوی ہے اور اس میں کفایت ہے، تو

[فٹر] ۱ فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۷۶ صفحہ 88 از 711

Fatawa Rizvia, Volume Two

[Left Column - Arabic/Urdu]: This causality, even if the causality of the other is inferred from the evidence of the prohibition of voluntary charity (sadaqah) for him, peace and blessings of Allah be upon him, as previously mentioned. Thus, the effect of discharging the obligation is the first thing established by the supreme principle, so there is no leeway to dismiss it. He said: What is useful for considering dismissal as influential is the explicit reasoning of Imam Abu Hanifa, that his obligation has been dismissed from him.^1 [End of selection]. It is upon you to refine your intellect with this. Allama Tahtawi, following the author of al-Bahr, established it in another way where he said under the statement in al-Durr: "Discharging an obligation is the original usage as pointed out by al-Kamal." His text states: "And it (water) exists in removing a state of ritual impurity (hadath) in reality, and in an act of worship (qurbah) legally (hukman), because it is in the position of a secondary discharge, as previously mentioned."^2 [End of selection]. What was previously mentioned is his saying: "Water becomes used only through an act of worship like ablution upon ablution, because when one intends an act of worship, it has added purity upon purity. So, it does not become new purity except by removing legal impurity (najasa hukmiyya) legally. Thus, purity upon purity and purity upon ritual impurity became equal."^3 This was conveyed by the author of al-Bahr. [End of selection]. I say: He narrated it from Mi'raj al-Diraya and affirmed it, (1) but there is a distance in it that is not hidden, especially regarding legal impurity.

[Right Column - Urdu]: Its causality will be established by this, even if the causality of the other is also established. Its proof is that voluntary charity is prohibited for the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, as mentioned before. Thus, the impact of discharging the obligation is the first thing established from the supreme principle, so there is no justification for dismissing it. And what is useful for considering dismissal as influential is the explicit reasoning of Imam Abu Hanifa, that his obligation has been dismissed from him. [End of selection]. And please your disposition with this. Therefore, Allama "Tahtawi," following "Bahr," explained it in another way. Under the saying of "Durr" that "discharging an obligation is the original usage," he stated, as Kamal pointed out, that this exists in removing ritual impurity (hadath) in reality and in an act of worship (qurbah) legally, because this is like a secondary discharge, as mentioned before. And what was mentioned is his saying: Indeed, water becomes used because of an act of worship, like performing ablution over ablution. Therefore, when the intention for an act of worship is made, it

increases in terms of purity. So, new purity will only be achieved legally by the removal of legal impurity. Thus, purity upon purity and purity upon ritual impurity became equal. The author of Bahr conveyed this. [End of selection]. (I say) I have quoted this from Mi'raj al-Diraya and maintained it; there is a remoteness in it which is not hidden because...

[Footnotes]: 1 Fath al-Qadir, "Water with which ablution is permissible and not permissible," Nuriya Rizviya Sukkur 1/76. 2 Tahtawi 'ala al-Durr, "Chapter on Waters," Beirut 1/110. 3 Bahr al-Ra'iq, "Book of Purification," H.M. Saeed Company Karachi 1/92. Page 89 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू]: इसकी कारणता (सबबियत) इससे सिद्ध होगी, यद्यपि दूसरे की कारणता भी सिद्ध हो, जैसा कि पहले बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए स्वैच्छिक दान (सदक़ा) का निषेध इसका प्रमाण है। अत; दायित्व से मुक्ति (इसक़ात-ए-फ़र्ज़) का प्रभाव वह पहली चीज़ है जो मूल सिद्धांत (असल-ए-आज़म) से सिद्ध है, इसलिए इसे नकारने की कोई गुंजाइश नहीं है। उन्होंने कहा: इसक़ात को प्रभावशाली मानने के लिए जो चीज़ उपयोगी है, वह इमाम अबू हनीफ़ा का स्पष्ट तर्क है कि उनका फ़र्ज़ उनसे साक़ित (समाप्त) हो गया।^1 [उद्धरण समाप्त]। आपको अपनी बुद्धि को इससे परिष्कृत करना चाहिए। अल्लामा तहतावी ने 'बहर' का अनुसरण करते हुए इसे दूसरे तरीके से स्थापित किया है, जहाँ उन्होंने 'दुर' के इस कथन के तहत कहा है: "फ़र्ज़ साक़ित करना ही उपयोग में मूल है, जैसा कि कमाल ने इस पर ध्यान दिलाया है।" उनके पाठ में है: "और यह वास्तविकता में हदाथ (अपवित्रता) को दूर करने में और हुक्मन (क़ानूनी रूप से) क़ुरबत (इबादत) में मौजूद है, क्योंकि यह दूसरे इसक़ात के समान है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।"^2 [उद्धरण समाप्त]। और जो पहले गुज़रा वह उनका यह कथन है: "पानी केवल क़ुरबत की वजह से मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) होता है जैसे वज़ू पर वज़ू करना, क्योंकि जब क़ुरबत का इरादा किया गया तो वह पवित्रता पर पवित्रता बढ़ गई। इसलिए नई पवित्रता केवल हुक्मन नजासत-ए-हुकमिया को दूर करने से ही होगी। तो पवित्रता पर पवित्रता और हदाथ पर पवित्रता बराबर हो गई।"^3 यह 'बहर' के लेखक द्वारा बताया गया है। [उद्धरण समाप्त]। मैं कहता हूँ: उन्होंने इसे मिराज अद-दिरया से उद्धृत किया और इसे बरकरार रखा, (१) इसमें एक दूरी (अस्पष्टता) है जो छिपी नहीं है, विशेष रूप से नजासत-ए-हुकमिया के मामले में।

[दायां कॉलम - उर्दू का हिंदी अनुवाद]: इससे इसकी सबबियत साबित होगी अगरचे दूसरे की सबबियत भी साबित होगी, इसकी दलील यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नफ़्ली सदक़ा हराम है जैसा कि गुज़रा, तो इसक़ात-ए-फ़र्ज़ की तासीर पहली चीज़ है जो असल-ए-आज़म से साबित है तो इसके साक़ित करने का कोई जवाज़ नहीं फ़रमाया) और इसक़ात को मुअस्सिर एतबार करने के लिए मुफ़ीद इमाम अबू हनीफ़ा की सरीह तालील है कि इसका फ़र्ज़ इस से साक़ित हो गया अह मुलतक़ता, और तुम अपनी तबीअत को खुशगवार करो, लिहाज़ा और अल्लामा "ता" ने बहर की मुताअबत करते हुए इसकी तक़रीर दूसरे अंदाज़ में की है, उन्होंने "दुर" के क़ौल इसक़ात-ए-फ़र्ज़ ही इस्तेमाल में असल है के तहत फ़रमाया, जैसा कि कमाल ने इस पर तंबीह

फ़रमाई है कि यह हदाथ को रफ़ा करने में हक़ीक़तन मौजूद है और क़ुरबत में हुकमन है, क्योंकि यह ब-मंज़िला इसक़ात-ए-सानिया है और यह गुज़रा अह और जो गुज़रा वह उन का क़ौल है, बेशक पानी क़ुरबत की वजह से मुस्तअमल होता है, जैसे वज़ू पर वज़ू करना इस लिए जब क़ुरबत का इरादा किया तो वह तहारत के एतबार से ज़्यादा हो गया, तो नई तहारत नजासत-ए-हुकमिया के अज़ाला से ही होगी हुकमन, तो तहारत पर तहारत, और हदाथ पर तहारत बराबर हो गई, इसका अफ़ादा साहब-ए-बहर ने किया अह (त) मैं कहता हूँ इस को मेराज अद-दिरया से नक़ल किया और बरक़रार रखा, इस में बुअद है जो मख़फ़ी नहीं है क्यूंकि...

[पाद-टिप्पणियाँ]: 1 फ़तह अल-क़दीर, "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं," नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/76। 2 तहतावी अला अद-दुर्र, "पानी का अध्याय," बेरूत 1/110। 3 बहर अर-राइक़, "पवित्रता की पुस्तक," एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/92। पृष्ठ 711 का 89

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی/اردو]: سببية هذا وان استفيد سببية الاخر بدليل حرمة صدقة التطوع عليه صلى الله تعالى عليه وسلم كما قدم فتأثير اسقاط الغرض هواول ماثبت بالاصل الاعظم فلا مساغ لاسقاطه قال والمفيد لاعتبار الاسقاط مؤثرا صريح تعليل ابى حنيفة انه سقط فرضه عنه^1 اه ملتقطا وعليك بتلطيف القريحة هذا وقرره العلامة ط تبعاً للبحر بوجه اخر حيث قال تحت قول الدر اسقاط فرض هو الاصل في الاستعمال كما نبه عليه الكمال مانصه وهو موجود في رفع الحدث حقيقة وفي القربة حكما لكونها بمنزلة الاسقاط ثانيا وقدم ^2 اه وما مر هو قوله انما استعمل الماء بالقربة كالوضوء على الوضوء لانه لما نوى القربة فقد ازداد طهارة على طهارة فلا تكون طهارة جديدة الا بازالة النجاسة الحكمية حكما فصارت الطهارة على الطهارة وعلى الحدث سواء ^3 افاده صاحب البحر اهـ اقول: نقله عن معراج الدراية واقر و فيه (١) بعد لا يخفى فيما النجاسة لا سيما الحكمية۔

[دایاں کالم - اردو]: اس سے اس کی سببیت ثابت ہوگی اگرچہ دوسرے کی سببیت بھی ثابت ہوگی، اس کی دلیل یہ ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر نفلی صدقہ حرام ہے جیسا کہ گزرا، تو اسقاط فرض کی تاثیر پہلی چیز ہے جو اصل اعظم سے ثابت ہے تو اس کے ساقط کرنے کا کوئی جواز نہیں فرمایا) اور اسقاط کو مؤثر اعتبار کرنے کیلئے مفید امام ابو حنیفہ کی صریح تعلیل ہے کہ اس کا فرض اس سے ساقط ہو گیا اھ ملتقطا ، اور تم اپنی طبیعت کو خوشگوار کرو، لہٰذا اور علامہ "ط" نے بحر کی متابعت کرتے ہوئے اس کی تقریر دوسرے انداز میں کی ہے، انہوں نے "در" کے قول اسقاط فرض ہی استعمال میں اصل ہے کے تحت فرمایا، جیسا کہ کمال نے اس پر تنبیہ فرمائی ہے کہ یہ حدث کو رفع کرنے میں حقیقۃً موجود ہے اور قربت میں حکماً ہے، کیونکہ یہ بمنزلہ اسقاط ثانیا ہے اور یہ گزرا اھ اور جو گزرا وہ ان کا قول ہے، بیشک پانی قربت کی وجہ

سے مستعمل ہوتا ہے، جیسے وضو پر وضو کرنا اس لئے جب قربت کا ارادہ کیا تو وہ طہارت کے اعتبار سے زیادہ ہو گیا، تو نئی طہارت نجاست حکمیہ کے ازالہ سے ہی ہو گی حکماً ، تو طہارت پر طہارت ، اور حدث پر طہارت برابر ہو گئی ، اس کا افادہ صاحب بحر نے کیا اھ (ت) میں کہتا ہوں اس کو معراج الدرایہ سے نقل کیا اور برقرار رکھا، اس میں بعد ہے جو مخفی نہیں ہے کیونکہ...

[حواشی]: 1 فتح القدیر الماء الذی یجوز به الوضوء و مالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۶ 2 طحطاوی علی الدر باب المیاہ بیروت ۱/۱۱۰ 3 بحر الرائق کتاب الطھارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۲ صفحہ 89 از 711

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Text Column] There is no Shariah consideration except a valid consideration, and a valid consideration only occurs when its origin is valid; without it, it is an invention, and the stature of Shariah is far above that. Once it is removed by purity (taharah), it will only return through a new state of ritual impurity (hadath). In other words, has Shariah considered something here that contradicts purity and is removed by the second water, resulting in new purity, or has it not been considered? In the second case, the question returns because there is neither actual impurity nor a considered one. In the first case, what is the reality of legal (hukmi) impurity other than that Shariah consideration? Thus, it is meaningless to say that legal impurity exists legally but not actually. In a shorter phrasing, it can be said that legal impurity consists only of Shariah consideration. Therefore, "legal impurity legally" means Shariah's consideration that it is considered, yet it was not considered, for if it had been, it would have been realized. In summary, the outcome of the answer is to consider legal impurity there by an invalid assumption for which there is no room. I inform you that what they have presented is merely an unnecessary effort which is not needed. The reason for this is that [the author of] Al-Mi'raj only needed it to answer the question: If it is said that the limbs of the one performing ablution have neither real nor legal impurity, how does the water become "used" (must'amal) through the intention of seeking proximity [to God]? He answered by saying that when one makes the intention of proximity, the [reward] increased, etc. (T)

[Urdu Text Column] Impurity, specifically legal (hukmi) impurity, is a Shariah consideration, and a valid consideration only occurs when its source is valid; otherwise, it is an invention. Shariah's stature is far greater than this. Once it is removed by purity (taharah), it will only return with a new state of impurity (hadath). In other words, has Shariah considered something here that is contrary to purity and is removed by second water, so that new purity is obtained, or has it not been considered? On the second premise, the question will return because there is no real impurity nor an analytical one. On the first premise, what is the reality of legal impurity other than Shariah consideration? Then it is meaningless to say that legal impurity is found legally and not actually. In a shorter phrase, it can be said that legal impurity only consists of Shariah consideration. Thus, legal impurity legally is this Shariah consideration that it has been considered, and it was not considered because if it were considered, it would have been realized. In short, the conclusion of the answer is that legal impurity should be considered there by an invalid assumption for

which there is no scope. I warn you that what they have explained is mere formality which is not necessary. The reason for this is that Al-Mi'raj needed it because they had to answer the question: If it is said that there is neither real nor legal impurity on the limbs of the person performing wudu, how will the water become used (must'amal) with the intention of proximity? So they answered that when he made the intention, he increased, etc. (T)

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi 1/92 Page 90 of 711

फ़तावा रज़विया खंड दो

[अरबी पाठ स्तंभ] शरीयत के विचार के अलावा कोई और विचार नहीं है, और सही विचार तभी होता है जब उसका स्रोत सही हो; उसके बिना यह एक आविष्कार है, शरीयत की गरिमा इससे कहीं ऊपर है। जब यह पाकी (पवित्रता) से दूर हो जाए, तो यह केवल नई अशुद्धि (हदस) के माध्यम से ही वापस आएगा। दूसरे शब्दों में, क्या शरीयत ने यहाँ ऐसी किसी चीज़ को मान्य माना है जो पाकी के विपरीत हो और दूसरे पानी से दूर हो जाए, जिससे नई पाकी प्राप्त हो, या उसे मान्य नहीं माना गया है? दूसरी स्थिति में सवाल फिर वहीं आ जाएगा क्योंकि न तो कोई वास्तविक अशुद्धि है और न ही कोई मानी हुई। पहली स्थिति में, शरीयत के विचार के अलावा कानूनी (हुक्मी) अशुद्धि की वास्तविकता और क्या है? अतः यह कहना निरर्थक है कि कानूनी अशुद्धि कानूनी तौर पर मौजूद है लेकिन वास्तव में नहीं। संक्षिप्त शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कानूनी अशुद्धि केवल शरीयत के विचार से बनी है। इसलिए, "कानूनी तौर पर कानूनी अशुद्धि" का अर्थ शरीयत का यह विचार है कि इसे माना गया है, फिर भी इसे नहीं माना गया था, क्योंकि यदि माना जाता तो वह सिद्ध हो जाती। सारांश में, उत्तर का परिणाम यह है कि कानूनी अशुद्धि को वहां एक गलत धारणा द्वारा माना जाए जिसके लिए कोई जगह नहीं है। मैं आपको सूचित करता हूँ कि उन्होंने जो कुछ प्रस्तुत किया है वह केवल एक अनावश्यक प्रयास है जिसकी आवश्यकता नहीं है। इसका कारण यह है कि 'अल-मेराज' को इसकी आवश्यकता केवल इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए थी: यदि यह कहा जाए कि वज़ू करने वाले के अंगों पर न तो वास्तविक और न ही कानूनी अशुद्धि है, तो ईश्वर की निकटता की नियत से पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) कैसे हो जाता है? उन्होंने यह कहकर उत्तर दिया कि जब कोई निकटता की नियत करता है, तो वृद्धि होती है, इत्यादि। (त)

[उर्दू पाठ स्तंभ] नजासत (अशुद्धि), विशेष रूप से हुक्मी (कानूनी), एक शरीयत का एतबार (विचार) है और सही एतबार तभी होता है जब उसका स्रोत सही हो, अन्यथा यह एक आविष्कार है। शरीयत की गरिमा इससे कहीं ऊपर है। जब यह पाकी (पवित्रता) से दूर हो जाए, तो यह केवल नए हदस (अशुद्धि की अवस्था) से ही वापस आएगा। दूसरे शब्दों में, क्या शरीयत ने यहाँ ऐसी किसी चीज़ को मान्य माना है जो पाकी के विपरीत हो और दूसरे पानी से दूर हो जाए, जिससे नई पाकी प्राप्त हो, या उसे मान्य नहीं माना गया है? दूसरी स्थिति में सवाल फिर वहीं आ जाएगा क्योंकि न तो कोई वास्तविक नजासत है और न ही कोई एतबारी (मानी हुई)। और पहली स्थिति में, शरीयत के एतबार के अलावा हुक्मी नजासत की हकीकत और क्या है? तो यह कहना निरर्थक है कि हुक्मी नजासत

वास्तव में नहीं बल्कि हुक्म में पाई जाती है। संक्षिप्त शब्दों में यह कहा जा सकता है कि हुक्मी नजासत केवल शरीयत के एतबार का नाम है। अतः हुक्मी नजासत हुक्म में, शरीयत का यह एतबार है कि इसका एतबार किया गया है, जबकि एतबार नहीं किया गया क्योंकि यदि एतबार किया जाता तो वह सिद्ध हो जाती। सारांश यह है कि उत्तर का परिणाम यह है कि हुक्मी नजासत को वहां एक गलत धारणा के आधार पर माना जाए जिसकी कोई गुंजाइश नहीं है। और मैं तुम्हें सचेत करता हूँ कि उन्होंने जो कुछ बताया है वह केवल एक अनावश्यक प्रयास है जिसकी आवश्यकता नहीं है। इसका कारण यह है कि 'अल-मेराज' को इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ी ताकि वे इस प्रश्न का उत्तर दे सकें कि यदि यह कहा जाए कि वज़ू करने वाले के अंगों पर न तो वास्तविक नजासत है और न ही हुक्मी, तो कुर्बत (ईश्वर की निकटता) की नियत से पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) कैसे हो जाएगा? तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब उसने नियत की तो उसने वृद्धि की, इत्यादि। (त)

1 अल-बहर अल-राईक, किताब अत-तहारा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/92 पृष्ठ 90/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی عبارت] الا اعتبار شرعی والاعتبار الصحیح لایکون الاعن منشأ صحیح وبدونه اختراع یجل شان الشرع عنه وقد زال ذلك بالطهر فلا یعود الا بحدث جدید وبعبارة اخری هل اعتبر الشرع هنا شیئا ینافی الطهر یزول بالماء الثانی فیحصل طهر جدید ام لا علی الثانی عاد السؤال اذ لا نجاسة حقیقة ولا اعتبار او علی الاول ما حقیقة النجاسة الحکمیة الا ذلك الاعتبار الشرعی فلا معنی لتحقق الحکمیة حکماً لا حقیقة وبعبارة اخصر ما الحکمیة الا اعتبار الشرع فالحکمیة حکماً اعتبار الشرع انه اعتبر وما اعتبر اذ لو اعتبر لتحققت وبالجملة مامآل الجواب الا فرضها هنالك فرضاً باطلا ولا مساغ له وانا انبئك ان ما (۱) افاده انما هو تجشم مستغنی عنه وذلك لان المعراج انما احتاج الیه جوابا عن سؤال نصبه بقوله فان قیل المتوضی لیس علی اعضائه نجاسة لا حقیقة ولا حکمیة فکیف یصیر الماء مستعملا بنیة القربة فاجاب بقوله لما نوی القربة فقد ازداد الخ

[اردو ترجمہ و تشریح] نجاست ،خاص طور پر حکمیہ اعتبار شرعی ہے اور اعتبار صحیح اسی وقت ہوتا ہے جب اس کا منشاء صحیح ہو ، اور اس کے بغیر اختراع ہے ، شریعت کی شان اس سے بڑی ہے، اور یہ طُہر سے زائل ہو گیا تو صرف نئے حدث سے ہی یہ عود کرے گا، بالفاظِ دیگر کیا یہاں شریعت نے کوئی ایسی چیز معتبر مانی ہے جو منافی طہر ہو اور دوسرے پانی سے زائل ہو جائے، تو نئی پاکی حاصل ہو یا معتبر نہیں مانی ہے، دوسری تقدیر پر سوال لوٹ کر آئیگا کیونکہ کوئی حقیقی نجاست نہیں اور نہ ہی اعتباری ہے اور پہلی تقدیر پر نجاست حکمیہ کی حقیقت شرعی اعتبار کے علاوہ اور کیا ہے تو یہ کہنا بے معنی ہے کہ نجاست حکمیہ حقیقۃً نہیں حکماً پائی جاتی ہے اور مختصر عبارت میں یوں کہا جاسکتا ہے کہ نجاست حکمیہ صرف شرعی اعتبار سے عبارت ہے تو حکمیہ حکماً شرع کا یہ اعتبار ہے کہ اس کا اعتبار کیا گیا ہے، اور اعتبار کیا

نہیں گیا کیونکہ اگر اعتبار کیا جاتا تو وہ متحقق ہو جاتی۔ خلاصہ یہ کہ جواب کا مآل یہ ہے کہ حکمیہ کو وہاں اعتبار کیا جائے بفرضِ باطل جس کی گنجائش نہیں ، اور میں تجھ کو خبر دار کرتا ہوں کہ جس کا افادہ انہوں نے کیا ہے وہ محض تکلف ہے جس کی ضرورت نہیں، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ معراج کو اس کی ضرورت اس لئے پڑی کہ انہیں اس سوال کا جواب دینا ہے کہ اگر یہ کہا جائے کہ وضو کرنے والے کے اعضاء پر نہ حقیقی نجاست ہے اور نہ حکمی بہ نیتِ تقرب کیسے مستعمل ہو جائے گا، تو انہوں نے جواب دیا کہ جب اس نے نیت کی تو زیادتی کی الخ۔ (ت)

1 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۹۲/۱ صفحہ 90 از 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

Firstly, I say that the questioner might claim we do not accept the increase in purity (taharah). There is an increase in cleanliness (nazafah) because cleanliness admits degrees of more or less, whereas purity does not. For this reason, we stated that ritual impurity (hadath) is not divisible. The famous hadith "Ablution upon ablution is light upon light" refers to the increase in cleanliness. It was narrated by Razin, although Al-Iraqi and Al-Mundhiri said they did not come across it, as mentioned in Al-Taysir.

Secondly, there is no room for the question at all, as it is based on the assumption that legal impurity (najasah hukmiyah) is confined only to ritual impurity (hadath). This is not the case; rather, legal impurity includes sins as well, as texts have previously established. Just as the first water removes ritual impurity, it also washes away the effects of sins, provided there is intention. However, it is not necessary for it to wash away all sins entirely; otherwise, ablution alone would suffice and there would be no need for repentance (tawbah). If someone committed thousands of sins and performed ablution once, all sins would be forgiven, and it would be as if they never sinned at all, which is clearly false. Thus, this is a legal impurity that remains in people even after attaining purity. So how can the question even arise? Furthermore, we have already stated that disliked acts (makruhat) also affect the water, so this principle is broader and more general. As for the Prophets (peace be upon them) who are infallible (ma'sum), we do not accept this for them.

I say: Regarding their [the Prophets'] water, we do not even concede that the first water used by them is "used water" (ma' musta'mal) for us. Rather, it is pure and purifying (tahir tahur) for us, let alone the second. Since we believe in the purity of the leftovers of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), what then about his ablution water? Therefore, the argument for the purity of used water is based on the fact that the companions (may Allah be pleased with them) rushed to the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) ablution water and wiped their faces with it.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

मैं पहले कहता हूँ कि सवाल करने वाला कह सकता है कि हम पवित्रता (तहारत) की वृद्धि को स्वीकार नहीं करते। इसमें स्वच्छता (नज़ाफ़त) की वृद्धि तो इसलिए है क्योंकि स्वच्छता कमी या अधिकता को स्वीकार करती है, लेकिन पवित्रता ऐसी नहीं है। और इसीलिए हमने कहा है कि 'हदथ' (अनुष्ठानिक अशुद्धता) में कोई विभाजन नहीं होता। स्वच्छता में वृद्धि की ओर उस प्रसिद्ध हदीस में इशारा है कि "वुज़ू पर वुज़ू नूर पर नूर है"। इसे रजीन ने रिवायत किया है, हालाँकि इराक़ी और मुन्ज़िरी ने कहा है कि हमें इस पर जानकारी नहीं मिली, जैसा कि 'अल-तयसीर' में है।

दूसरा: सवाल की कोई गुंजाइश ही नहीं है, क्योंकि इस सवाल का आधार इस बात पर है कि 'नजासते हुकमिया' (क़ानूनी अशुद्धता) को केवल 'हदथ' तक सीमित कर दिया गया है। जबकि बात ऐसी नहीं है, बल्कि नजासते हुकमिया में पाप (गुनाह) भी शामिल हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। पहला पानी जिस तरह 'हदथ' को दूर करता है, वह नीयत (इरादे) की शर्त के साथ पापों के प्रभाव को भी धो डालता है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि वह गुनाहों को पूरी तरह धो डाले, अन्यथा वुज़ू ही काफी हो जाता और तौबा (प्रायश्चित) की ज़रूरत ही नहीं होती। और हज़ारों गुनाहों के बाद एक ही बार वुज़ू करने से तमाम गुनाह माफ हो जाते, और वह इस तरह हो जाता मानो उसने कोई गुनाह किया ही न हो, और यह बात निश्चित रूप से असत्य है। तो यह वह नजासते हुकमिया है जो पवित्रता प्राप्त करने के बाद भी लोगों में बाकी रहती है। तो अब सवाल कैसे पैदा हो सकता है? बल्कि हम पहले बता चुके हैं कि मकरूहात (नापसंद कार्य) भी पानी को बदल देते हैं, तो यह बात और अधिक व्यापक है। रहे अंबिया अलैहिस्सलाम जो मासूम हैं, तो हम उनके लिए यह स्वीकार नहीं करते।

मैं कहता हूँ: उनके(पैगंबरों के) पानी के बारे में हम यह स्वीकार ही नहीं करते कि उनका इस्तेमाल किया हुआ पहला पानी भी हमारे हक़ में 'इस्तेमाल शुदा पानी' (मा-ए-मुस्तअमल) है। बल्कि वह हमारे लिए पाक (पवित्र) और पाक करने वाला है, दूसरे की तो बात ही क्या। और जब हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बची हुई चीज़ों में पवित्रता का विश्वास रखते हैं, तो उनके वुज़ू के पानी के बारे में क्या ख्याल है? इसलिए, इस्तेमाल किए हुए पानी की पवित्रता पर दलील यह है कि सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वुज़ू के पानी की तरफ लपके और उससे अपने चेहरे पोंछे।

فتاوی رضویه جلد ثانی

اقول اولا یعود السائل یمنع ازدیاد الطهارة وانما ازداد نظافة لانها تقبل التشکیك دون الطهارة ولذا قلنا بعدم تجزی الحدث والی ازدیاد النظافة یشیر الحدیث المشهور الوضوء علی الوضوء نور علی نور اخرجه رزین وان قال العراق والمنذری لم نقف علیه کما في التیسیر۔

میں کہتا ہوں اولاً کہ سائل کہہ سکتا ہے کہ ہم طہارت کی زیادتی کو تسلیم نہیں کرتے اس میں نظافت کا اضافہ تو اس لئے ہے کہ نظافت کمی بیشی کو قبول کرتی ہے، مگر طہارت ایسی نہیں اور اسی لئے ہم نے کہا ہے کہ حدث میں تجزی نہیں ہے، اور نظافت میں اضافہ کی طرف اس حدیث میں اشارہ ہے کہ وضو پر وضو نور علیٰ نور ہے، اس کی تخریج رزین نے کی ہے اگرچہ عراقی اور منذری نے کہا ہے کہ ہم اس پر مطلع نہیں ہوئے ہیں کما فی التیسیر۔

وثانیا: (1) لا مساغ للسؤال رأسا فان مبناه علی حصر النجاسة الحکمیة في الحدث ولیس کذا بل منها المعاصی کما تقدمت النصوص علیه والماء الاول وان کان کما یزیل الحدث یغسل من اثر المعاصی ایضاً بشرط النیة ولکن لا یجب ان یزیلها کلاً والالکفي الوضوء عن التوبة وصار کل من توضأ مرة و لو بعد الف کبیرة کمن لا ذنب له وهو باطل قطعا فهذه نجاسة حکمیة باقیة بعد التطهیر في عامة المکلفین فاین مثار السؤال بل قدمنا ان المکروهات ایضاً تغیر الماء فهذا اطم واعم اما المعصومون صلوات الله تعالی وسلامه علیهم

ثانیاً: سوال کی گنجائش ہی نہیں، کیونکہ اس سوال کا دار ومدار اس پر ہے کہ نجاست حکمیہ کو حدث میں منحصر کردیا گیا ہے اور حالانکہ بات یہ نہیں ہے، بلکہ نجاست حکمیہ میں معاصی بھی شامل ہیں، اس پر نصوص گزر چکے ہیں، اور پہلا پانی جس طرح حدث کو زائل کرتا ہے بشرطِ

نیت گناہوں کو بھی دھو ڈالتا ہے مگر یہ ضروری نہیں کہ گناہوں کو کلیتہً دھو ڈالے ورنہ تو وضو ہی کافی ہوجاتا توبہ کی ضرورت ہی نہ ہوتی اور ہزار ہا گناہوں کے بعد ایک ہی مرتبہ وضو کر لیتا تو تمام گناہ معاف ہو جاتے، اور وہ اس طرح ہو جاتا گویا اس نے کوئی گناہ کیا ہی نہیں ہے، اور یہ چیز قطعاً باطل ہے تو یہ وہ نجاست حکمیہ ہے جو مکلفین میں طہارت حاصل کرنے کے بعد بھی باقی رہتی ہے، تو اب سوال کیسے پیدا ہوسکتا ہے، بلکہ ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ مکروہات بھی پانی کو متغیر کردیتے ہیں تو یہ بلند اور اعم ہے۔ رہے انبیاء علیہم السلام جو معصوم ہیں تو ہم یہ تسلیم نہیں کرتے۔

فاقول: لا نسلم في مائهم (3) الاول ايضاً انه مستعمل في حقنا بل طاهر طهور مطهر لنا فضلا عن الثاني واذا اعتقدنا الطهارة في فضلاته صلى الله تعالى عليه وسلم فما ظنك بوضوئه فالاستدلال (4) على طهارة الماء المستعمل بان اصحابه صلى الله تعالى عليه وسلم بادروا الى وضوئه فمسحوا به وجوهم۔

میں کہتا ہوں: ان کے (انبیاء کے) پانی کے متعلق ہم یہ تسلیم ہی نہیں کرتے کہ ان کا پہلا پانی بھی ہمارے حق میں مستعمل ہے بلکہ وہ ہمارے لئے طاہر، طہور اور مطہر ہے، دوسرے (پانی) کا تو ذکر ہی کیا، اور جب ہم حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے فضلات (بچی ہوئی چیزوں) کی طہارت کے قائل ہیں تو پھر آپ کے وضو کے پانی کا کیا کہنا۔ پس مستعمل پانی کی طہارت پر استدلال یہ ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے وضو کے پانی کی طرف لپکتے تھے اور اسے اپنے چہروں پر ملتے تھے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say: It may be permissible for a speaker to say that perhaps it testifies to the first [opinion] primarily, then hesitation will arise in its preference. I say it is also permissible for someone to say that the proof for the first statement is this Hadith: "When any of you performs purification and mentions the name of Allah upon it, then his entire body becomes pure, but if he does not mention the name of Allah the Almighty upon his purification, then only those limbs upon which water passed will be pure." [1] Narrated by ad-Daraqutni and al-Bayhaqi in their Sunans and ash-Shirazi in al-Alqab from Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him). Al-Bayhaqi, after citing it via the route of Yahya ibn Hashim al-Simsar who said: Al-A'mash narrated to us from Shaqiq ibn Salama from Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) who said: I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) saying... then he mentioned the full Hadith. [Al-Bayhaqi said:] "This is weak; I do not know anyone besides (2) Yahya ibn Hashim who narrated it from al-A'mash, and he is a discarded narrator (matruk al-hadith)." [2] Ibn 'Adi narrated it as a fabrication (al-wad'). Ibn Ma'in and Salih Jazara called him a liar, and an-Nasa'i called him matruk (discarded). The researcher (al-Muhaqqiq) in al-Fath pointed out this defect when discussing the obligation of mentioning Allah's name (Tasmiya) in ablution, following al-Bayhaqi.

I say: (3) Rather, it has routes that elevate it from weakness. Indeed, ad-Daraqutni and al-Bayhaqi also narrated it from Ibn 'Umar, and both of them and Abu al-Shaykh narrated it from Abu Hurairah (may Allah be pleased with them), and the wording from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

---

1. ad-Daraqutni, Chapter on Tasmiyah in Wudu, Cairo Press, 1/73
2. Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Tasmiyah in Wudu, Beirut, 1/44

फ़तावा रज़विय्या, खंड 2

मैं कहता हूँ: और यह अनुमेय हो सकता है कि कोई कहने वाला कहे कि शायद यह पहले [विचार] की पुष्टि करता है, फिर इसकी प्राथमिकता में संदेह उत्पन्न होगा। मैं कहता हूँ कि यह भी जायज़ है कि कोई कहे कि पहले कथन का प्रमाण यह हदीस है: "जब तुम में से कोई शुद्धि (पाकी) प्राप्त करे और उस पर अल्लाह का नाम ले, तो उसका पूरा शरीर शुद्ध हो जाता है, लेकिन यदि वह अपनी शुद्धि पर अल्लाह सर्वशक्तिमान का नाम नहीं लेता है, तो केवल वही अंग शुद्ध होंगे जिन पर पानी गुजरा।" [1] इसे दारकुतनी और बैहकी ने अपनी सुनन में और शिराज़ी ने अल-अल्क़ाब में अब्दुल्ला इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। अल-बैहकी ने इसे याह्या इब्न हाशिम अल-सिमसार के माध्यम से उल्लेख करने के बाद कहा: अल-अमश ने हमसे शकी़क इब्न सलमा के माध्यम से अब्दुल्ला इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की, उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कहते सुना... फिर पूरी हदीस का उल्लेख किया। [बैहकी ने कहा:] "यह रिवायत ज़ईफ़ (कमज़ोर) है; मैं नहीं जानता कि (2) याह्या इब्न हाशिम के अलावा किसी और ने इसे अल-अमश से रिवायत किया हो, और वह मतरूक-उल-हदीस (परित्यक्त कथावाचक) है।" [2] इब्न अदी ने इसे गढ़ने (मौज़ू) के तौर पर रिवायत किया है। इब्न मुईन और सालेह जज़रा ने उसे झूठा कहा, और अन-नसाई ने उसे मतरूक कहा। अल-फतह में शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने बैहकी का अनुसरण करते हुए वुज़ू में बिस्मिल्लाह कहने की अनिवार्यता पर चर्चा करते समय इसी दोष की ओर इशारा किया।

मैं कहता हूँ: (3) बल्कि इसके ऐसे रास्ते (सनदें) हैं जो इसे कमज़ोरी से ऊपर उठाते हैं। वास्तव में, दारकुतनी और बैहकी ने भी इसे इब्न उमर से रिवायत किया है, और उन दोनों ने और अबू अल-शेख ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत किया है, और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इसके शब्द...

---

1. दारकुतनी, बाब अत-तस्मिया अलल वुज़ू, काहिरा प्रेस, 1/73
2. सुनन अल-कुबरा लिल बैहकी, तस्मिया अलल वुज़ू, बेरूत, 1/44

पृष्ठ 93 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی اقول: وقد یجوز ان یقول قائل ربما یشهد للاول اولا تو اس سے اس کی ترجیح میں تردد پیدا ہوگا، (۱) حدیث اذا تطهرا احدکم فذکر اسم الله علیه فانه یطهر جسده کله فان لم یذکر اسم الله تعالی علی طهوره لم یطهر الامامر علیه الماء ۱ رواه الدارقطنی والبیهقی فی سننه والشیرازی فی الالقاب عن عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه میں کہتا ہوں یہ بھی جائز ہے کہ کوئی کہنے والا کہے کہ پہلے قول کی دلیل یہ حدیث ہے کہ جب تم میں سے کوئی پاکی حاصل کرے اور اللہ کا نام لے تو اس کا پورا جسم پاک ہو جائے گا اور اگر اللہ کا نام نہ لے تو صرف وہی عضو پاک ہوگا جس پر پانی گزرا ہو، روایت کیا دار قطنی اور بیہقی نے اپنی سنن میں اور شیرازی نے القاب میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے قال البیهقی بعد ماساقه بطریق یحیی بن هاشم السمسار ثنا الاعمش عن شقیق بن سلمة عن عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه قال سمعت رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم یقول فذکره هذا ضعیف لااعلم رواه عن الاعمش غیر (۲) یحیی بن هاشم وهو متروك الحدیث ۲ ورواه ابن عدی بالوضع اه و کذبه ابن معین وصالح جزرة وقال النسائی متروك وبه اعله المحقق فی الفتح حین کلامه علی وجوب التسمیة فی الوضوء تبعا للبیهقی۔ بیہقی نے یہ حدیث بسند یحیی بن ہاشم السمسار ذکر کی ہے، ہم سے اعمش نے شفیق بن سلمہ سے عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت کی، انہوں نے کہا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا، پھر پوری حدیث ذکر کی، یہ ضعیف ہے، میں نہیں جانتا کہ اس کو اعمش سے یحیی بن ہاشم کے غیر نے روایت کیا، اور وہ متروک الحدیث ہے، اور اس کو ابن عدی نے وضاع قرار دیا اھ ابن معین اور صالح نے اس کی تکذیب کی اور نسائی نے اس کو متروک کہا اور یہی علت محقق نے فتح میں بیان کی، یہ اُس موقعہ پر ہے جہاں انہوں نے وضو میں بسم اللہ کے وجوب کا ذکر کیا بیہقی کی متابعت میں۔ اقول: (۳) بل له طرق ترفعه عن الوهن فقد رواه الدار قطنی والبیهقی

ایضا عن ابن عمر وھما و ابو الشیخ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنھم ولفظہ عن النبی صلی اللہ تعالٰی میں ت) کہتا ہوں اس حدیث کے بعض طرق ایسے ہیں جو اس کی کمزوری کو رفع کرتے ہیں، دار قطنی اور بیہقی نے بھی اس کو ابن عمر سے روایت کیا، اور انہی دونوں نے اور ابوالشیخ نے ابو ہریرہ سے روایت

---

1 دار قطنی باب التسمیۃ علی الوضوء مطبع القاہرہ ۱/ ۷۳ 2 سنن الکبری للبیھقی تسمیۃ علی الوضوء بیروت ۱/ ۴۴

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Arabic Column Text:] ...upon him said: 'Whoever performs ablution and mentions the name of Allah upon his ablution, his entire body is purified. And whoever performs ablution and does not mention the name of Allah upon his ablution, only the parts of ablution are purified.' (1) Abdur Razzaq narrated this in his Musannaf from Hasan al-Dabbi al-Kufi as a mursal report attributed to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Whoever mentions Allah during ablution, his entire body is purified. If he does not mention the name of Allah, only that which the water reaches is purified.' (2) Abu Bakr bin Abi Shaybah narrated in his Musannaf from Abu Bakr as-Siddiq (may Allah be pleased with him) that he said: 'When a servant performs ablution and mentions the name of Allah, his entire body is purified. If he does not mention [it], only that which the water reaches is purified.' (3) Sa'id bin Mansur narrated in his Sunan from Makhul that he said: 'When a man purifies himself and mentions the name of Allah, his whole body is purified. If he does not mention the name of Allah while performing ablution, only the place of ablution is purified.' (4) With these various chains, it is impossible to judge it as discarded; rather, it may rise above weakness. No wonder it was stated in al-Mirqat regarding the Hadith of Daraqutni that its chain is good. Secondly, the great scholar az-Zayla'i, the Hadith scholar Jamaluddin Abdullah, the student of the Imam, narrated...

[Urdu Column Text:] ...said, his words are that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever performs ablution after saying Bismillah, his whole body will be purified. And whoever did not recite Bismillah at the time of ablution, only the place of ablution will be purified.' Abdur Razzaq narrated this in his Musannaf from Hasan al-Dabbi al-Kufi as a mursal report, and he attributes it to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), saying: 'Whoever mentioned Allah at the time of ablution, his whole body will become pure, and if Allah's name was not mentioned, only that part will be pure over which water has passed.' And from Abu Bakr, Ibn Abi Shaybah narrated in his Musannaf that when a servant performs ablution and mentions Allah, his whole body becomes pure, and if he does not mention Allah, then only that part becomes pure where the water reached. Sa'id bin Mansur narrated in his Sunan from Makhul that when someone attains purification and mentions Allah, his whole body becomes pure, and when he does not take Allah's name at the time of ablution, only the place of ablution becomes pure; rather, with these, the Hadith rises above the rank of weakness.

[Footnotes:] 1. Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter on Naming during Ablution, Beirut Edition, 1/25. 2. Kanz al-Ummal, Etiquettes of Ablution, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 9/293. 3. Musannaf Ibn Abi Shaybah, on Naming during Ablution, Idara al-Quran Karachi, 1/3. 4. Kanz al-Ummal, Etiquettes of Ablution, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 9/275.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[अरबी कॉलम का पाठ:] ...सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'जिसने वज़ू किया और अपने वज़ू पर अल्लाह का नाम लिया, उसका पूरा शरीर शुद्ध हो गया। और जिसने वज़ू किया और अपने वज़ू पर अल्लाह का नाम नहीं लिया, तो केवल वज़ू के अंग ही शुद्ध हुए।' (1) अब्दुर रज़्ज़ाक ने अपनी मुसन्निफ़ में हसन अल-दब्बी अल-कूफ़ी से इसे मुर्सल रूप में रिवायत किया है जो इसे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर मंसूब करते हैं: 'जिसने वज़ू के समय अल्लाह को याद किया, उसका पूरा शरीर शुद्ध हो गया। यदि उसने अल्लाह का नाम नहीं लिया, तो केवल वही शुद्ध हुआ जहाँ पानी पहुँचा।' (2) अबू बक्र बिन अबी शैबा ने अपनी मुसन्निफ़ में अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि उन्होंने कहा: 'जब कोई बंदा वज़ू करता है और अल्लाह का नाम लेता है, तो उसका पूरा शरीर शुद्ध हो जाता है। यदि वह नाम नहीं लेता, तो केवल वही शुद्ध होता है जहाँ पानी पहुँचा हो।' (3) सईद बिन मंसूर ने अपनी सुनन में मखुल से रिवायत किया कि उन्होंने कहा: 'जब कोई व्यक्ति शुद्धि प्राप्त करता है और अल्लाह का नाम लेता है, तो उसका पूरा शरीर शुद्ध हो जाता है। और यदि वज़ू करते समय अल्लाह का नाम नहीं लेता, तो केवल वज़ू का स्थान ही शुद्ध होता है।' (4) इन विभिन्न रास्तों के साथ, इसे त्याग दिया गया घोषित करना असंभव है; बल्कि यह कमज़ोरी से ऊपर उठ सकता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अल-मिरक़ात में दारक़ुत्नी की हदीस के बारे में स्पष्ट किया गया है कि उसकी सनद हसन है। दूसरे, अल्लामा ज़ैली मुहद्दिस जमालुद्दीन अब्दुल्ला, जो इमाम के छात्र हैं, ने नक़ल किया...

[उर्दू कॉलम का पाठ:] ...किया, उनके शब्द ये हैं कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'जिसने बिस्मिल्लाह कहकर वज़ू किया, तो उसका पूरा शरीर पाक होगा। और जिसने वज़ू के वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी, तो केवल वज़ू की जगह ही पाक होगी।' इसे अब्दुर रज़्ज़ाक ने अपनी मुसन्निफ़ में हसन अल-दब्बी अल-कूफ़ी से मुर्सल रूप में रिवायत किया है, और वे इसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर मंसूब करते हैं, फ़रमाते हैं: 'जिसने वज़ू के वक़्त अल्लाह का ज़िक्र किया, उसका पूरा शरीर पाक हो जाएगा और अगर अल्लाह का ज़िक्र न किया, तो केवल वही हिस्सा पाक होगा जिस पर पानी गुज़रा होगा।' और अबू बक्र से इब्न अबी शैबा ने अपनी मुसन्निफ़ में रिवायत की कि बंदा जब वज़ू करता है और अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो उसका पूरा शरीर पाक हो जाता है और अगर अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता, तो केवल वही हिस्सा पाक होता है जिस पर पानी पहुँचा हो। सईद बिन मंसूर ने अपनी सुनन में मखुल से रिवायत की कि जब कोई व्यक्ति पाकी

हासिल करता है और अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो उसका पूरा शरीर पाक हो जाता है और जब वज़ू के समय अल्लाह का नाम नहीं लेता, तो केवल वज़ू की जगह पाक होती है; बल्कि इनसे हदीस कमज़ोरी (ज़ुफ़) के स्तर से बुलंद हो जाती है।

[पाद टिप्पणियाँ:] 1. सुनन अल-कुबरा, अल-बैहक़ी, बाबू तस्मिया अल-वज़ू, बेरूत प्रिंट, 1/25। 2. कन्ज़ुल उम्माल, आदाब अल-वज़ू, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 9/293। 3. मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा, फ़ी तस्मिया फ़िल वज़ू, इदारा अल-क़ुरआन कराची, 1/3। 4. कन्ज़ुल उम्माल, आदाब अल-वज़ू, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 9/275।

पृष्ठ 94 का 711

[عربی کالم کا متن:] علیه وسلم من توضأ وذکر اسم الله علی وضوئه تطهر جسده کله ومن توضأ ولم یذکر اسم الله علی وضوئه لم یتطهر الاموضع الوضوء [1] ورواه عبدالرزاق في مصنفه عن الحسن الضبی الکوفی مرسلا ینمیه الی النبي صلی الله تعالی علیه وسلم من ذکر الله عندالوضوء طهر جسده کله فان لم یذکر اسم الله لم یتطهر منه الا ما اصاب الماء[2] واخرج ابو بکر بن ابی شیبة في مصنفه عن ابي بکر الصدیق رضی الله تعالی عنه انه قال اذا توضأ العبد فذکر اسم الله تعالی طهر جسده کله وان لم یذکر لم یتطهر الا ما اصابه به الماء[3] وروی سعید بن منصور في سننه عن مکحول قال اذا تطهر الرجل وذکر اسم الله طهر جسده کله واذا لم یذکر اسم الله حین یتوضأ لم یتطهر منه الامکان الوضوء [4] ومع هذه الطرق یستحیل الحکم بالسقوط بل ربما یرتقی عن الضعف لاجرم ان صرح في المرقاة لحدیث الدار قطنی ان سنده حسن وثانیا نقل العلامة الزیلعي المحدث جمال الدین عبدالله تلمیذ الامام

[اردو کالم کا متن:] کیا، ان کے لفظ یہ ہیں کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا جس نے بسم اللہ کرکے وضو کیا تو اس کا سارا جسم پاک ہوگا اور جس نے وضو کے وقت بسم اللہ نہ پڑھی تو صرف وضو کی جگہ ہی پاک ہوگی اس کو عبدالرزاق نے اپنی مصنّف میں حسن الضبی کوفی سے مرسلاً روایت کیا، اور وہ اس کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف منسوب کرتے ہیں، فرماتے ہیں جس نے وضو کے وقت اللہ کا ذکر کیا اس کا تمام جسم پاک ہوجائے گا اور اگر اللہ کا ذکر نہ کیا تو صرف وہی حصہ پاک ہوگا جس پر پانی گزرا ہوگا، اور ابو بکر سے ابن ابی شیبة نے اپنی مصنّف میں روایت کی کہ بندہ جب وضو کرتا ہے اور اللہ کا ذکر کرتا ہے تو اس کا سارا جسم پاک ہو جاتا ہے اور اگر اللہ کا ذکر نہیں کرتا تو صرف وہی حصہ پاک ہوتا ہے جس پر پانی پہنچا ہو۔ سعید بن منصور نے اپنی سنن میں مکحول سے روایت کی کہ جب کوئی شخص پاکی

حاصل کرتا ہے اور اللہ کا ذکر کرتا ہے تو اس کا سارا جسم پاک ہو جاتا ہے اور جب بوقت وضو اللہ کا نام نہیں لیتا ہے تو صرف وضو کی جگہ پاک ہوتی ہے، بلکہ ان سے حدیث مرتبہ ضعف سے بلند ہو جاتی ہے

[حواشی:] 1 سنن الکبری للبیہقی باب التسمیة علی الوضوء مطبع بیروت ۲۵/۱ 2 کنزالعمال آداب الوضوء مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۹۳/۹ 3 مصنّف ابن ابی شیبة في التسمیة فی الوضوء ادارۃ القرآن کراچی ۳/۱ 4 کنزالعمال آداب الوضوء مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۷۵/۹

Fatawa Rizvia, Volume II

(Right Column:) In the presence of all these paths (chains of narration), claiming its cancellation is impossible. And in 'Mirqat', the chain of narration for the report by Daraqutni has been declared as 'Hasan' (fair). Secondly, Allama Zayla'i the Hadith scholar Jamaluddin Abdullah, a student of Imam Zayla'i the jurist Fakhruddin Usman, the commentator of 'Kanz', states in 'Nasb al-Rayah' under the hadith "There is no wudhu for one who does not mention the name of Allah" that Imam Ibn al-Jawzi Abu al-Faraj al-Hanbali, in order to argue against us—since they consider the mention of 'Bismillah' in wudhu as obligatory—stated that for a 'muhdith' (one who has incurred minor ritual impurity, because the discussion is about that, and when used generally, that is what is intended, as in 'al-Hilya'), it is not permissible to touch the Mushaf (the Quran) with their chest. And they maintained this position. (Translator's note: I say its support is found in 'al-Fath', then 'al-Bahr', and in Shalabi's marginalia on 'al-Tabyin'. Some friends asked me: if a person has a scarf around their neck, can they touch the Mushaf with that scarf? I said I find no narrated text on this matter specifically, but if the situation is such that by holding the Mushaf from one end, moving it causes the other end to move, then it should not be permissible. If it does not move with such movement, then touching it should be permissible, because in the first case, they consider it a follower (part) of the person just like their body. In the second case, it is not considered a follower. This is because by 'muhdith', the person with minor impurity is meant, because from it...)

(Left Column:) Zayla'i the jurist Fakhruddin Usman, commentator of 'Kanz' in 'Nasb al-Rayah' under the hadith "No wudhu for one who does not mention Allah Almighty" from Imam Ibn al-Jawzi Abu al-Faraj al-Hanbali, that he said, arguing against us regarding their making the Tasmiya (mentioning Allah's name) obligatory for wudhu: "Indeed the muhdith (i.e., with minor ritual impurity since the discussion is about it and (1) it is what is meant when the term is used generally, as in 'al-Hilya')(2) it is not permissible for him to touch the Mushaf with his chest." (End quote) And he affirmed it. I say: This is supported by what is in 'al-Fath,' then 'al-Bahr,' and the marginalia of Shalabi on 'al-Tabyin'(3) He said: Some brothers said to me: "Is it permissible to touch the Mushaf with a cloth that is around the neck?" I said: "I do not know of any transmitted text regarding it. What appears to be the case is that if it is with its edge and it moves with his movement, then it ought not to be permissible. But if it does not move with his movement, then it ought to be permissible, because of their considering it in the first case as following him like his body, unlike the second." (End

quote) Indeed, what is meant is the muhdith with minor ritual impurity because he already transmitted a few lines before from 'al-Fatawa' that "it is not permissible for the junub (in state of major impurity) and the menstruating woman to touch the Mushaf with their sleeves or with some of their clothes, because clothes are like their bodies." (End quote) So his saying...

(Footnotes:) 1. Nasb al-Rayah, Book of Purification, Islamia Riyadh, 1/7 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Menstruation, Saeed Company Karachi, 201/1 3. Shalabi 'ala al-Tabyin, Chapter on Menstruation, Bulaq Egypt, 58/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द शानी (खंड द्वितीय)

(दायां कॉलम:) इन सभी रास्तों की मौजूदगी में इसके पतन (रद्द) का दावा करना असंभव है। और 'मिरक़ात' में दारकुतनी की रिवायत की सनद को 'हसन' (उत्तम) करार दिया गया है। दूसरी बात, अल्लामा ज़ैलई मुहद्दिस जमालुद्दीन अब्दुल्लाह, जो इमाम ज़ैलई फ़क़ीह फ़खरुद्दीन उस्मान (कन्ज़ के व्याख्याता) के शिष्य थे, 'नसब अल-राया' में हदीस "ला वुज़ूअ लिमन लम यस्मुल्लाह" (उसका वज़ू नहीं जिसने अल्लाह का नाम न लिया) के तहत फ़रमाते हैं कि इमाम इब्न अल-जौज़ी अबू अल-फ़रज अल-हनबली ने हम पर तर्क स्थापित करने के लिए - क्योंकि वे वज़ू में 'बिस्मिल्लाह' को वाजिब मानते हैं - फ़रमाया कि 'मुहद्दिस' (जिसको हदसे असग़र यानी छोटी नापाकी लिहक़ हुई हो, क्योंकि बात उसी बारे में है और सामान्य तौर पर वही मुराद होता है, जैसा कि 'अल-हिल्या' में है) के लिए अपने सीने से मुसहफ़ (कुरान) को छूना जायज़ नहीं है। और उन्होंने इसे बरक़रार रखा। (नोट: मैं कहता हूँ कि इसका समर्थन 'अल-फतह', फिर 'अल-बहर' और 'अत-तबीन' पर शलबी के हाशिए में मौजूद है। मुझसे कुछ दोस्तों ने पूछा कि अगर कोई व्यक्ति गले में रुमाल डाले हो, तो क्या वह उस रुमाल से मुसहफ़ को छू सकता है? मैंने कहा कि मुझे इस बारे में कोई नक़्ल तो नहीं मिलती, लेकिन अगर सूरत यह हो कि उसके एक किनारे से मुसहफ़ को पकड़ने और हिलाने से दूसरा किनारा भी हिले, तो जायज़ नहीं होना चाहिए। और अगर न हिले, तो छूना जायज़ होना चाहिए, क्योंकि पहली सूरत में वे उसे बदन की तरह उसका ताबे (अनुगामी) करार देते हैं। दूसरी सूरत में ताबे नहीं कहते। क्योंकि 'मुहद्दिस' से मुराद हदसे असग़र वाला व्यक्ति है, क्योंकि इससे...)

(बायां कॉलम:) ज़ैलई फ़क़ीह फ़खरुद्दीन उस्मान, 'कन्ज़' के व्याख्याता, 'नसब अल-राया' में हदीस "अल्लाह तआला का नाम न लेने वाले का वज़ू नहीं" के तहत इमाम इब्न अल-जौज़ी अबू अल-फ़रज अल-हनबली से नक़्ल करते हैं कि उन्होंने वज़ू में तस्मिया को वाजिब ठहराने पर हमारे खिलाफ तर्क देते हुए कहा: "बेशक मुहद्दिस (यानी हदसे असग़र वाला, क्योंकि बात उसी में है और (1) सामान्यतः वही मुराद होता है जैसा कि 'अल-हिल्या' में है)(2) के लिए अपने सीने से मुसहफ़ छूना जायज़ नहीं है।" (समाप्त) और उन्होंने इसे स्वीकार किया। मैं कहता हूँ: इसका समर्थन 'अल-फतह', फिर 'अल-बहर' और 'अत-तबीन' पर शलबी के हाशिए(3) से होता है। उन्होंने कहा: मुझसे कुछ भाइयों ने कहा: "क्या मुसहफ़ को गले में पड़े रुमाल से छूना जायज़ है?" मैंने कहा: "मैं इसके बारे में कोई नक़्ल नहीं जानता। जो ज़ाहिर होता है वह यह कि अगर वह उसके किनारे से हो और उसकी हरकत से हरकत करे तो जायज़ नहीं होना चाहिए, और अगर उसकी हरकत से हरकत न करे तो जायज़ होना चाहिए,

क्योंकि पहली सूरत में वे इसे उसके बदन की तरह ताबे मानते हैं, दूसरी सूरत के विपरीत।" (समाप्त) बेशक मुराद हदसे असग़र वाला मुहद्दिस है, क्योंकि उन्होंने इससे चंद पंक्तियां पहले 'अल-फ़तावा' से नक़्ल किया है कि "जुनुबी और हाएज़ा (माहवारी वाली महिला) के लिए अपनी आस्तीन या कपड़े के किसी हिस्से से मुसहफ़ छूना जायज़ नहीं है, क्योंकि कपड़े उनके बदन की तरह हैं।" (समाप्त) तो उनका कहना...

(फ़ुटनोट्स:) 1. नसब अल-राया, किताबुत्तहारह, इस्लामिया रियाज़, 1/7 2. अल-बहर अर-राइक़, बाबुल हैज़, सईद कंपनी कराची, 201/1 3. शलबी अल-तबीन, बाबुल हैज़, बुलाक मिस्र, 58/1

पृष्ठ 95/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

(دایاں کالم) ان تمام طُرق کی موجودگی میں سقوط کا قول کرنا محال ہے ب اور مرقاۃ میں دارقطنی کی روایت کی سند کو حسن قرار دیا ہے۔ ثانیاً علامہ زیلعی محدث جمال الدین عبد اللہ شاگرد امام زیلعی فقیہ فخر الدین عثمان شارح کنز نصب الرایہ میں "لا وضوء لمن لم یسم اللہ" (اس کا وضو نہیں جو اللہ کا نام نہ لے) کی حدیث کے تحت فرماتے ہیں کہ امام ابن جوزی ابو الفرج الحنبلی نے ہم پر حجت قائم کرنے کیلئے وہ بسم اللہ کو وضو میں واجب قرار دیتے ہیں فرمایا کہ مُحدث (جس کو حدث اصغر لاحق ہوا کیونکہ کلام اُسی میں ہے اور عند الاطلاق وہی مراد ہوتا ہے، کما فی الحلیہ) اس کو مصحف کا چھونا اپنے سینہ سے جائز نہیں اھ اور اس کو انہوں نے برقرار رکھا۔ ت) میں کہتا ہوں اس کی تائید فتح میں، پھر بحر میں اور تبیین پر شلبی کے حاشیہ میں ہے مجھ سے بعض دوستوں نے دریافت کیا کہ اگر کوئی شخص گلے میں رومال ڈالے ہو تو وہ اس رومال سے مصحف کو چھو سکتا ہے؟ میں نے کہا میں اس سلسلہ میں کوئی نقل تو نہیں پاتا ہوں لیکن اگر صورت یہ ہو کہ اس کے ایک کنارے سے مصحف کو پکڑئے اور اس کے حرکت دینے سے دوسرا کنارہ حرکت کرے تو جائز نہ ہونا چاہئے اور اگر حرکت نہ کرے تو مس کرنا جائز ہونا چاہئے، کیونکہ پہلی صورت میں وہ اس کو اس کا تابع قرار دیتے ہیں جیسا کہ اس کا بدن ہے دوسری صورت میں تابع نہیں کہتے اھ کیونکہ مُحدث سے مراد حدث اصغر والا شخص ہے، کیونکہ اس سے

(بایاں کالم) الزیلعی الفقیه فخر الدین عثمن شارح الکنز فی نصب الرایه تحت حدیث لا وضوء لمن لم یسم الله تعالیٰ عن الامام ابن الجوزی ابی الفرج الحنبلی انه قال محتجا علینا فی ایجابهم التسمیة للوضوء ان المحدث (ای بالحدث الاصغر اذ فیه الکلام و(۱) یکون هو المراد عند الاطلاق کما فی الحلیة)(۲)

لایجوز له مس المصحف بصدره ۱ اهـ واقره علیه۔ قلت: ویؤیده مافی الفتح ثم البحر وحاشیة الشلبی علی التبیین(۳) قال لی بعض الاخوان هل یجوز مس المصحف بمندیل هو لابسه علی عنقه قلت لا اعلم فیه منقولا والذی یظهر انه ان کان بطرفه وهو یتحرك بحرکة ینبغی ان لا یجوز وان کان لایتحرك بحرکته ینبغی ان یجوز لاعتبارهم ایاه فی الاول تابعا له کبدنه دون الثانی ۲ اهـ فان المراد المحدث بالحدث الاصغر اذ قد نقل قبله بأسطر عن الفتاوی لا یجوز للجنب والحائض ان یمس المصحف بکمهما او ببعض ثیابهما لان الثیاب بمنزلة بدنهما ۳ اهـ فقوله

(حواشی) 1 نصب الرایة کتاب الطهارة اسلامیہ ریاض ۱/۷ 2 بحر الرائق باب الحیض سعید کمپنی کراچی ۲۰۱/۱ 3 شلبی علی التبیین باب الحیض بولاق مصر ۵۸/۱

Fatawa Razawiyyah Volume 2

(Left Column - Arabic) ...some of their garments include a handkerchief he is wearing. Why does he say, "I do not know of any transmission regarding it"? Is it based on what he just transmitted while it was before his eyes? I say: But I saw in 'at-Tabyin' it said after its statement prohibiting the one in a state of ritual impurity (hadath) from touching the Quran, and prohibiting the one in a state of major ritual impurity (janaba) and menstruation (nifas) like menstruation (hayd) from recitation and touching, its text is: "And it is not permissible for them to touch the Mushaf (Quran) with the clothes they are wearing because they are in the position of the body. For this reason, if one swore not to sit on the ground, then sat on it while his clothes were a barrier between him and it, and he was wearing them, he has broken his oath (2). And if he stood in prayer on impurity while on his feet were shoes or socks, his prayer is not valid, unlike if they were separate from him." End quote. So this is clear in the return of the pronoun to the one in ritual impurity and whoever is with him, all of them. This is the transmission, and praise be to Allah. In short, the point is that if touching it with what is on his neck and chest is prohibited, then how about with them (the neck and chest themselves)? This indicates the occurrence of ritual impurity in the whole body. Then I saw the issue explicitly stated in 'al-Hindiyya' on the authority of 'az-Zahidi' where he said: "They differed regarding touching the Mushaf with other than the limbs of purification and with what was washed of the limbs before completing the wudu, and prohibition is more correct." End quote (2).

(Right Column - Urdu) Volume Two It was just transmitted from fatawa earlier that it is not permissible for the one in a state of major ritual impurity (junub) or menstruation (ha'id) to touch the Mushaf with their sleeve or any part of their clothing because clothes are like their body. End quote. So, "some clothes" also includes the handkerchief that he is wearing. Then why do they say that they do not know of any transmission in this regard? Did they forget the transmission they themselves presented while looking at it? (T) I say, I have seen in 'at-Tabyin' that they state touching the Quran is prohibited due to ritual impurity (hadath), and states of major ritual impurity (janabat) and post-natal bleeding (nifas), like menstruation (hayd), have prohibited both reciting and touching. Their wording is: "It is not permissible for them to touch the Quran with the clothes they are wearing because those clothes are like the body, and therefore if someone takes an oath that he will not sit on the ground, and then sits such that the clothes he is wearing act as a barrier between him and the ground, he will be breaking his oath. And if someone

stands on impurity while in a state of impurity, and has shoes or socks on both feet, his prayer will not be valid; if these things are separate, it will be." End quote. From this it appears that the pronoun refers to the one in ritual impurity (muhdith) and also to the one who is with the one in ritual impurity. This is a clear transmission, and Al-Hamdulillah (praise be to Allah). The summary is that when it is not permissible to touch the Quran with the clothes that are on his neck and chest, then how can touching with the neck and chest themselves be permissible! Thus it is known...

Footnotes: 1. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Menstruation, Bulaq Egypt 1/51 2. Fatawa Hindiyyah, Chapter on Rules of Menstruation, Post-natal Bleeding, and Chronic Bleeding, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/39 Page 96 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

(बायाँ कॉलम - अरबी) ...उनके कुछ कपड़ों में वह रुमाल भी शामिल है जो उन्होंने पहना हुआ है। फिर वह ऐसा क्यों कहते हैं कि "मुझे इसके बारे में किसी नक़्ल (प्रमाण) का पता नहीं है"? क्या यह उस पर आधारित है जो उन्होंने अभी नक़्ल किया जबकि वह उनकी आँखों के सामने था? मैं कहता हूँ: लेकिन मैंने 'अत-तबीन' में देखा, उसने अपनी इस बात के बाद कि 'हदस' (अशुद्धि) की स्थिति वाले के लिए क़ुरआन छूना मना है और 'जनाबत' (बड़ी नापाकी) तथा 'निफ़ास' (प्रसव के बाद का रक्त) वाली को 'हैज़' (मासिक धर्म) की तरह पढ़ने और छूने से मना किया है, उसके शब्द ये हैं: "और उनके लिए उन कपड़ों के साथ मुसहफ़ (क़ुरआन) को छूना जायज़ नहीं है जिन्हें वे पहने हुए हैं क्योंकि वे शरीर के स्थान पर हैं। इसी कारण से, यदि किसी ने शपथ ली कि वह ज़मीन पर नहीं बैठेगा, फिर वह उस पर बैठ गया जबकि उसके कपड़े उसके और ज़मीन के बीच बाधा थे और वह उन्हें पहने हुए था, तो उसने अपनी शपथ तोड़ दी (2)। और यदि कोई अशुद्धि (नजासत) पर नमाज़ में खड़ा हुआ और उसके दोनों पैरों में जूते या मोज़े हैं, तो उसकी नमाज़ सही नहीं होगी, इसके विपरीत यदि वे उससे अलग हों।" उद्धरण समाप्त। तो यह ज़मीर (सर्वनाम) के'मुहद्दिस' (अशुद्ध व्यक्ति) और उसके साथ जो भी हैं, उन सभी की ओर लौटने में स्पष्ट है। तो यह नक़्ल है और अल्लाह का शुक्र है। संक्षेप में, उद्देश्य यह है कि यदि उसकी गर्दन और सीने पर मौजूद कपड़ों के साथ उसे छूना मना है, तो फिर उनके(गर्दन और सीने) साथ कैसे (जायज़ होगा)? तो यह पूरे शरीर में 'हदस' (अशुद्धि) के होने पर संकेत करता है। फिर मैंने 'अल-हिन्दिया' में 'अज़-ज़ाहेदी' के हवाले से इस मसले को स्पष्ट रूप से वर्णित देखा जहाँ उन्होंने कहा: "उन्होंने वुज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों से और वुज़ू पूरा करने से पहले धोए गए अंगों से मुसहफ़ छूने के बारे में मतभेद किया है, और मना करना अधिक सही है।" उद्धरण समाप्त (2)।

(दायाँ कॉलम - उर्दू) जिल्द सानी (द्वितीय) अभी कुछ ही पहले फ़तावा से नक़्ल हुआ कि 'जुनुब' (नापाक व्यक्ति) और 'हाइज़' (मासिक धर्म वाली महिला) के लिए जायज़ नहीं है कि वे दोनों मुसहफ़ को अपनी आस्तीन से या कपड़े के किसी हिस्से से छुएँ क्योंकि कपड़े उनके शरीर के समान हैं। उद्धरण समाप्त। तो "कुछ कपड़ों" में वह रुमाल भी आ जाता है जिसे वह पहने हुए हो, तो फिर वे यह क्यों कहते हैं कि मैं इसमें कोई नक़्ल नहीं जानता? क्या वे देखते-भालते उस नक़्ल को भूल गए जो खुद ही उन्होंने पेश की है? (त) मैं कहता हूँ मैंने 'तबीन' में देखा है कि वे फ़रमाते हैं 'हदस' की वजह से क़ुरआन को हाथ लगाना मना किया है, और 'जनाबत' और 'निफ़ास' ने 'हैज़' की तरह, पढ़ने और

हाथ लगाने दोनों को मना किया है, उनकी इबारत (लेख) यह है कि उनके लिए उन कपड़ों के साथ जो वे पहने हुए हैं क़ुरआन को हाथ लगाना जायज़ नहीं क्योंकि वे कपड़े शरीर के समान हैं, और इसलिए अगर किसी शख़्स ने क़सम खाई कि वह ज़मीन पर नहीं बैठेगा अब वह इस तरह बैठा कि उसके और ज़मीन के दरमियान पहने हुए कपड़े हाइल (बाधा) हों तो वह क़सम में हानिस (शपथ तोड़ने वाला) हो जाएगा और अगर कोई शख़्स नजासत की हालत पर खड़ा हुआ और उसके दोनों पैरों में जूते या जुराबें हैं तो उसकी नमाज़ सही न होगी, अगर ये चीज़ें जुदा हैं तो हो जाएगी। उद्धरण समाप्त। तो इससे ज़ाहिर होता है कि ज़मीर 'मुहद्दिस' की तरफ़ लौटती है और उसकी तरफ़ भी जो 'मुहद्दिस' के साथ हो, यह सरीह (स्पष्ट) नक़्ल है और अल्हम्दुलिल्लाह, और ख़ुलासा यह कि जब क़ुरआन को उस कपड़े के साथ छूना जायज़ नहीं जो उसकी गर्दन और सीने पर है तो खुद गर्दन और सीने से मस (स्पर्श) करना कैसे जायज़ होगा! पस मालूम हुआ...

पादलेख: 1. तबीन अल-हक़ाएक़, बाब अल-हैज़, बुलाक मिस्र 1/51 2. फ़तावा हिन्दिया, बाब फ़ी अहकाम अल-हैज़ वन-निफ़ास वल-इस्तिहाज़ा, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/39 पृष्ठ 96 / 711

فتاوی رضویه جلد ثانی

(بائیں کالم کی عبارت - عربی) بعض ثیابها کان یشمل مندیلاً هو لابسه فلم یقول لا اعلم فیه المنقول افبنی مانقله انفا وهو بمرأی منه اقول: لکنی رایت فی التبیین قال بعد قوله منع الحدث مس القران ومنع من القرأة والمس الجنابة والنفاس کالحیض مانصه ولا یجوز لهم مس المصحف بالثیاب التي یلبسونها لانها بمنزلة البدن ولهذا لو حلف لا یجلس علی الارض فجلس علیها وثیابه حائلة بینه وبینها وهو لابسها یحنث (۲) ولو قام في الصلاة علی النجاسة وفی رجلیه نعلان اوجوربان لاتصح صلاته بخلاف المنفصل عنه اهـ فهذا ظاهر في رجوع الضمیر الی المحدث ومن معه جمیعاً فهذا النقل ولله الحمد وبالجملة المقصود انه اذا منع مسه بما علی عنقه وصدره فکیف بهما فدل علی حلول الحدث جمیع البدن ثم رأیت المسألة منصوصاً علیها فی الهندیة عن الزاهدی حیث قال اختلفوا في مس المصحف بما عدا اعضاء الطهارة وبما غسل من الاعضاء قبل اکمال الوضوء والمنع اصح اهـ 2

(دائیں کالم کی عبارت - اردو) جلد ثانی کچھ ہی پہلے فتاویٰ سے منقول ہوا کہ جنب اور حائض کو جائز نہیں کہ وہ دونوں مصحف کو اپنی آستین سے یا کپڑے کے کسی حصہ سے چھوئیں کیونکہ کپڑے بمنزلہ ان کے بدن کے ہیں اہـ تو "بعض کپڑوں" میں وہ رومال بھی آجاتا ہے جس کو وہ پہنے ہوئے ہو تو پھر وہ یہ کیوں کہتے ہیں کہ میں اس میں کوئی نقل نہیں جانتا کیا وہ دیکھتے بھالتے اس نقل کو بھول گئے جو خود ہی انہوں نے پیش کی ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں میں نے تبیین میں دیکھا ہے کہ وہ فرماتے ہیں حدث کی وجہ سے قرآن کو ہاتھ لگانا منع کیا ہے، اور جنابت اور نفاس نے حیض کی طرح، پڑھنے اور ہاتھ لگانے دونوں کو منع کیا ہے، ان کی عبارت یہ ہے کہ ان کیلئے ان کپڑوں کے ساتھ جو وہ پہنے ہوئے ہیں قرآن کو ہاتھ لگانا جائز نہیں کیونکہ وہ کپڑے بمنزلہ بدن کے ہیں، اور اس لئے اگر کسی شخص نے قسم کھائی کہ وہ زمین پر نہیں بیٹھے گا اب

وہ اس طرح بیٹھا کہ اس کے اور زمین کے درمیان پہنے ہوئے کپڑے حائل ہوں تو وہ قسم میں حانث ہو جائے گا اور اگر کوئی شخص بحالت نجاست پر کھڑا ہوا اور اس کے دونوں پیروں میں جوتے یا جرابیں ہیں تو اس کی نماز صحیح نہ ہوگی، اگر یہ چیزیں جدا ہیں تو ہو جائے گی اہـ تو اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ ضمیر محدث کی طرف لوٹتی ہے اور اس کی طرف بھی جو محدث کے ساتھ ہو، یہ صریح نقل ہے والحمد للہ، اور خلاصہ یہ کہ جب قرآن کو اس کپڑے کے ساتھ چھونا جائز نہیں جو اس کی گردن اور سینے پر ہے تو خود گردن اور سینے سے مس کرنا کیسے جائز ہوگا! پس معلوم ہوا

حواشی: 1 تبیین الحقائق باب الحیض بولاق مصر ۱/۵۱ 2 فتاوی ھندیة باب فی احکام الحیض والنفاس والاستحاضہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۹ Page 96 of 711

[Right Column] ...that ritual impurity permeates the entire body. Then, I saw this issue explicitly stated by Zahidi in [Fatawa] Hindiyya. He says there is a difference of opinion regarding touching the Quran with the limbs of purity—the limbs washed before completing wudu—and prohibition is the most correct view. End of quote. (T)

Thirdly: According to the Gnostics, it is an accepted fact that ritual impurity, whether minor or major, is strictly born from eating. Even a loud laugh in prayer, which represents extreme negligence in the very court [of God], can only happen to one whose stomach is full, even extremely full. In hunger, it's rare for teeth to even show in a smile, let alone laughter, especially in prayer. There's no doubt the benefit of food reaches the whole body; similarly, the benefit and relief of expelling waste reach the whole body. Thus, food entering the stomach creates negligence, and the expulsion of harmful waste confirms and reinforces it. Negligence leads to the death of the heart, and the heart is the king of the body; if this piece of flesh is sound, the entire body is sound, and if it's corrupt, the entire body is ruined. Water brings freshness and removes negligence, as observed in sprinkling it on the face of one who has fainted.

So I say, just as the cause of death was common to the whole body, it was necessary for the cause of life, i.e., water, to reach the entire body. In major ritual impurity, the Law gave this very command, but minor ritual impurity occurs frequently and repeatedly. If bathing were commanded for every minor impurity, people would face hardship, and there is no hardship in this religion. Therefore, this gentle and easy Law commanded washing the limbs in place of bathing, as it is the gracious Sunnah of Allah, Exalted and Mighty is He.

[Left Column] Thirdly: It is established among the Gnostics that there is no minor or major ritual impurity except that which is generated from eating, even a loud laugh in prayer. Indeed, that extreme negligence in the very Presence [of God] does not occur except from satiety—that is, fullness. For a hungry person, the teeth are seldom bared, let alone laughing out loud, besides being in prayer. There is no doubt that the benefit of eating encompasses the body, as does the benefit of what comes out and the comfort achieved by it. Thus, the entry of food generates negligence, and the exit of the harmful confirms it. Through negligence comes the death of the heart, and the heart is the leader, for it is a piece of flesh which if sound, the whole body is

sound, and if corrupt, the whole body is corrupt. Water refreshes and removes negligence, as is observed in one who has fainted.

I say: Just as the cause of death encompassed the body, it was appropriate for the cause of life to also encompass it. This is how the Law came regarding major ritual impurity. But minor impurity occurs frequently. If they were commanded collectively to wash [fully] whenever it occurred, they would fall into hardship, and hardship is avoided. So the lenient, easy Law established the washing of limbs in place of a full bath. For it is from the Sunnah of His generosity, Exalted is He, that if the beginning and the end are sound, He overlooks the middle and makes it prosperous.

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी

[दायां कॉलम] ...कि अशुद्धि पूरे शरीर में व्याप्त हो जाती है। फिर, मैंने इस मसले को फ़तावा हिन्दिया में ज़ाहिदी से स्पष्ट रूप से वर्णित देखा। वे कहते हैं कि पवित्रता के अंगों—वे अंग जो वुज़ू पूरा होने से पहले धोए जाते हैं—उनके साथ कुरान को छूने के बारे में मतभेद है, और मना करना अधिक सही है। (त)

तीसरा: ज्ञानियों के नज़दीक यह बात सर्वमान्य है कि अशुद्धि, चाहे छोटी हो या बड़ी, भोजन करने से ही उत्पन्न होती है। यहाँ तक कि नमाज़ में ज़ोर से हँसना भी, जो ईश्वरीय दरबार में घोर लापरवाही का प्रतीक है, केवल उसी व्यक्ति के साथ हो सकता है जिसका पेट पूरी तरह भरा हो। भूख की स्थिति में तो हँसी में दाँत खुलना भी मुश्किल है, ज़ोर से हँसना तो बहुत दूर की बात है, वह भी नमाज़ के दौरान। इसमें कोई शक नहीं कि भोजन का लाभ पूरे शरीर तक पहुँचता है; इसी तरह अपशिष्ट त्यागने का लाभ और राहत भी पूरे शरीर को होती है। अतः पेट में भोजन का जाना लापरवाही पैदा करता है, और हानिकारक अपशिष्ट का निकलना उसे और पुख्ता करता है। लापरवाही से दिल की मौत होती है, और दिल शरीर का राजा है; यदि मांस का यह टुकड़ा सही रहे तो पूरा शरीर सही रहता है, और यदि यह बिगड़ जाए तो पूरा शरीर नष्ट हो जाता है। पानी ताज़गी लाता है और लापरवाही को दूर करता है, जैसा कि बेहोश व्यक्ति के चेहरे पर छिड़कने से देखा जाता है।

तो मैं कहता हूँ, जिस तरह मृत्यु का कारण पूरे शरीर में व्याप्त था, वैसे ही जीवन का कारण यानी पानी भी पूरे शरीर तक पहुँचना चाहिए था। बड़ी अशुद्धि में शरीअत ने यही आदेश दिया है, लेकिन छोटी अशुद्धि बार-बार और लगातार होती है। यदि हर छोटी अशुद्धि पर स्नान का आदेश होता, तो लोग कठिनाई में पड़ जाते, और इस धर्म में कोई कठिनाई नहीं है। इसलिए, इस कोमल और सरल शरीअत ने स्नान के स्थान पर अंगों को धोने का आदेश दिया, क्योंकि यह अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल की उदार सुन्नत है।

[बायां कॉलम] तीसरा: ज्ञानियों के बीच यह स्थापित है कि भोजन से उत्पन्न होने वाली अशुद्धि के अलावा कोई छोटी या बड़ी अशुद्धि नहीं है, यहाँ तक कि नमाज़ में ज़ोर से हँसना भी। वास्तव में, ईश्वरीय उपस्थिति के बीच वह घोर लापरवाही केवल तृप्ति (पेट भरा होने) से ही आती है। क्योंकि भूखे व्यक्ति के दाँत शायद ही हँसी में खुलते हैं, नमाज़ में ज़ोर से हँसना तो दूर की बात है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि खाने का लाभ शरीर में व्याप्त होता है, और बाहर निकलने वाली चीज़ का लाभ और

उससे मिलने वाला आराम भी। इस प्रकार, भोजन का प्रवेश लापरवाही को जन्म देता है, और हानिकारक चीज़ का निकलना इसकी पुष्टि करता है। लापरवाही से दिल की मौत होती है, और दिल नेता है, क्योंकि यह मांस का वह टुकड़ा है जो यदि सही हो तो पूरा शरीर सही हो जाता है, और यदि भ्रष्ट हो तो पूरा शरीर भ्रष्ट हो जाता है। पानी ताज़गी देता है और लापरवाही को दूर करता है, जैसा कि बेहोश व्यक्ति में देखा जाता है।

मैं कहता हूँ: जैसे मृत्यु का कारण शरीर में व्याप्त था, वैसे ही जीवन का कारण भी व्याप्त होना उचित था। और बड़ी अशुद्धि के संबंध में शरीअत इसी तरह आई है। लेकिन छोटी अशुद्धि बार-बार होती है। यदि उन्हें हर बार छोटी अशुद्धि होने पर स्नान करने का सामूहिक आदेश दिया जाता, तो वे कठिनाई में पड़ जाते, और कठिनाई को दूर रखा गया है। इसलिए उदार और सरल शरीअत ने स्नान के स्थान पर अंगों को धोने को स्थापित किया। क्योंकि यह अल्लाह तआला की उदारता की सुन्नत है कि यदि शुरुआत और अंत सही हो, तो वह बीच के हिस्से को अनदेखा कर देता है और उसे समृद्ध बनाता है।

पृष्ठ 97 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم] کہ حدث تمام بدن میں سرایت کرتا ہے، پھر میں نے اس مسئلہ کو ہندیہ میں زاہدی سے منصوص دیکھا وہ فرماتے ہیں اعضاء طہارہ اور وہ اعضاء جو وضو کی تکمیل سے قبل دھوئے گئے ہوں ان سے مس مصحف میں اختلاف ہے، اور منع اصح ہے اھ (ت)

ثالثاً: عرفاء کے نزدیک یہ امر مسلم ہے کہ حدث چھوٹا ہو خواہ بڑا مطلقاً کھانا کھانے ہی سے پیدا ہوتا ہے یہاں تک کہ نماز میں قہقہہ بھی کہ عین دربار میں ایسی سخت غفلت اسی سے ہو سکے گی جس کا پیٹ بھرا اور نہایت بھرا ہو کہ بھوک میں تو ہنسی سے دانت کھلنا ہی نادر ہے نہ کہ ٹھٹھا اور وہ بھی نماز میں، اور شک نہیں کہ کھانے کا نفع تمام بدن کو پہنچتا ہے یونہی فضلہ نکل جانے کی منفعت و راحت بھی سارے بدن کو ہوتی ہے تو کھانا معدہ میں جانا غفلت پیدا کرتا ہے اور موذی یعنی فضلہ کا نکلنا غفلت کو ثابت و مؤکد کرتا ہے اور غفلت سے دل کی موت ہے اور دل بدن کا بادشاہ ہے کہ یہی بوٹی درست ہو تو سارا بدن درست رہے اور بگڑے تو سارا بدن خراب ہو جائے اور پانی تازگی لاتا اور غفلت دور کرتا ہے جیسا کہ غشی والے کے منہ پر چھڑکنے میں مشاہدہ ہے۔

تو میں کہتا ہوں جس طرح موت کا سبب سارے بدن کو عام ہوا تھا چاہئے تھا کہ حیات کا سبب یعنی پانی بھی سب جسم پر پہنچے حدث اکبر میں تو شرع نے یہی حکم دیا مگر حدث اصغر بکثرت مکرر ہوتا ہے تو ہر حدث اصغر پر اگر نہانے کا حکم ہوتا تو لوگ حرج میں پڑتے اور اس دین میں حرج نہیں لہذا اس نرم و آسان شریعت نے اطراف بدن کا دھونا قائم مقام نہانے کے فرمایا دیا کہ اللہ عز و جل کی سنت کریم ہے

[بایاں کالم] وثالثاً: تقرر (١) عند العرفاء ان لا حدث صغير اولا كبيراً الا ما تولد من اكل حتى القهقهة في الصلاة فان تلك الغفلة الشديدة في عين الحضرة لا تكون الا من شبع اى شبع اذ الجائع ربما لا يكشر له سن فضلاً عن القهقهة خلفة عن كونها في الصلاة ولا شك ان نفع الاكل يعم البدن وكذا نفع الخارج والراحة الحاصلة به فدخول الطعام يولد الغفلة وخروج المؤذى يحققها وبالغفلة موت القلب والقلب رئيس فأنه المضغة اذا صلحت صلح الجسد كله واذا فسدت فسد الجسد كله والماء ينعش ويذهب الغفلة كما هو مشاهد في المغشى عليه۔

قلت: فكما ان سبب الموت عم البدن كان ينبغى ان يعمه ايضاً سبب الحياة وبه اتى الشرع فى الحدث الاكبر لكن الاصغر يتكرر كثيرا فلو امروا كليا احد ثوا ان يغتسلوا لوقعوا فى الحرج والحرج مدفوع فأقامت الشريعة السمحة السهلة مقام الغسل غسل الاطراف اذ من سنة كرمه تعالى ان اذا صلح الاول والاخر تجاوز عن الوسط وجعله معمورا

Fatawa Razawiyya, Volume 2

(Arabic text on the left): ...in both of them. Then, among the extremities was the head, and washing it multiple times every day would also cause hardship and distress. Therefore, washing was substituted with wiping (masah) as a mercy from the One who says, and most glorious is He: "Allah intends for you ease and does not intend for you hardship." The consequence of this is that ritual impurity (hadath), even if it is minor, settles in the whole body.

I say: (2) And by this it becomes clear that what more than one of our scholars and others explicitly stated—that washing parts not directly affected in ritual impurity is a matter of devotion (ta'abbudi), as found in 'Al-Hidayah' and elsewhere, and we have previously cited it from 'Al-Kafi' (2)—and likewise, restricting to four parts in Wudu, as mentioned therein and in 'Al-Hilyah' and others, is the view held by Imam al-Haramayn and chosen by Imam Izz al-Din ibn Abd al-Salam, both of whom are Shafi'i scholars. All of these in the science of spiritual truths (haqa'iq) are rulings with sensible meanings. And Allah Almighty knows best. This is an exposition of questions that occurred to me, and I presented them so that they would not be troublesome for a deficient person like me, nor branch out into reflection requiring disclosure.

I say: In response to the first, what is meant is the impurity of sins. For if the impurity of ritual state (hadath) was intended, it would follow that one who does not mention the name of Allah (Tasmiyah) would not have complete purity. This is the school of the Zahiriyyah and a narration from Imam Ahmad, may Allah Almighty be pleased with him, but none of our scholars have held this view. And the remaining of the impurity of sins in parts other than those of purity, rather...

(Urdu explanation/translation on the right): That when the beginning and end are correct, He overlooks the deficiency that occurred in between. Now, the head was also among the extremities of the body, and washing it several times every day would make one sick and put one into difficulty. Therefore, instead of washing it, wiping was prescribed; a mercy from Him who says that Allah desires ease for you and does not desire difficulty. (The summary of this entire discussion is that ritual impurity, whether minor, pervades the whole body. - T)

I say, from this it is also known that the statement of our masters—that washing those limbs which ritual impurity has not reached is merely a matter of devotion, as is in 'Hidayah' etc., and we have also cited from 'Kafi'—and similarly, restricting to four in Wudu, as is in 'Hidayah' and 'Hilyah' etc., is also the statement of Imam al-

Haramayn, and Imam Izz al-Din bin Abd al-Salam has adopted it. These two are Shafi'i scholars because all these are rational rulings of realities. And Allah Almighty knows best. This is the discourse on those questions that were revealed to me; I have discussed them so that some deficient person like me might not encounter them and fall into difficulty. (T)

Now in response to the first, I say that it means the impurity of sins. Because if the impurity of ritual state was intended, it would necessitate that whoever does not say 'Bismillah', their purity would not be complete. And this is the school of the Zahiriyyah, and a narration of Imam Ahmad, and is not the saying of any of our scholars. And other than the limbs of purity...

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

(बाईं ओर अरबी पाठ): ...उन दोनों में। फिर, अंगों में सिर भी था और इसे हर दिन कई बार धोना भी कष्ट और परेशानी का कारण बनता। इसलिए, धोने के बदले में मसह (पोंछना) निर्धारित किया गया, उस रचयिता की दया के रूप में जो कहता है, और वह अत्यंत गौरवशाली है: "अल्लाह तुम्हारे लिए सुगमता चाहता है और तुम्हारे लिए कठिनाई नहीं चाहता।" इसका परिणाम यह है कि अनुष्ठानिक अशुद्धि (हदथ), चाहे वह छोटी ही क्यों न हो, पूरे शरीर में बस जाती है।

मैं कहता हूँ: (2) और इससे यह स्पष्ट हो गया कि हमारे कई आचार्यों और अन्य लोगों ने जो स्पष्ट रूप से कहा है—कि अनुष्ठानिक अशुद्धि में सीधे प्रभावित न होने वाले अंगों को धोना भक्ति का विषय (तअब्बुदी) है, जैसा कि 'अल-हिदाया' और अन्य में है, और हमने इसे पहले 'अल-काफी' (2) से उद्धृत किया है—और इसी तरह, वूज़ू में चार अंगों तक सीमित रहना, जैसा कि उसमें और 'अल-हिलया' आदि में वर्णित है, इमाम अल-हरमैन द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण है और इमाम इज्ज़ अल-दीन इब्न अब्द अल-सलाम द्वारा चुना गया है, जो दोनों शाफ़ई विद्वान हैं। आध्यात्मिक सत्यों (हक़ाएक़) के विज्ञान में ये सभी तर्कसंगत अर्थों वाले निर्णय हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। यह उन प्रश्नों की व्याख्या है जो मुझे सूझे, और मैंने उन्हें इसलिए प्रस्तुत किया ताकि वे मेरे जैसे किसी अल्पज्ञानी के लिए कष्टदायक न हों, और न ही वे ऐसे चिंतन में विस्तार लें जिसके प्रकटीकरण की आवश्यकता हो।

मैं कहता हूँ: पहले के उत्तर में, अभिप्रेत पापों की अशुद्धि है। क्योंकि यदि अनुष्ठानिक स्थिति (हदथ) की अशुद्धि का इरादा होता, तो इसका अर्थ यह होता कि जो अल्लाह का नाम (तस्मिया) नहीं लेता, उसकी शुद्धि पूर्ण नहीं होगी। यह ज़ाहिरीय्या संप्रदाय का मत है और इमाम अहमद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का एक वृत्तांत है, लेकिन हमारे किसी भी विद्वान ने यह मत नहीं रखा है। और शुद्धि के अंगों के अलावा अन्य अंगों में पापों की अशुद्धि का रहना, बल्कि...

(दाईं ओर उर्दू व्याख्या/अनुवाद): कि जब आदि और अंत ठीक होते हैं, तो बीच में होने वाली कमी को वह क्षमा कर देता है। अब, शरीर के अंगों में सिर भी था और इसे हर दिन कई बार धोना बीमार कर देता और कठिनाई में डालता, इसलिए इसे धोने के बदले मसह निर्धारित किया गया; उसकी दया जो कहती है कि अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तंगी नहीं चाहता। (इस पूरी चर्चा का सार यह है कि अनुष्ठानिक अशुद्धि, चाहे वह छोटी ही हो, पूरे शरीर में व्याप्त हो जाती है। - त)

मैं कहता हूँ कि इससे यह भी ज्ञात हुआ कि हमारे आचार्यों का यह कहना—कि उन अंगों को धोना जहाँ अनुष्ठानिक अशुद्धि नहीं पहुँची है, केवल भक्ति का विषय है, जैसा कि 'हिदाया' आदि में है, और हमने 'काफी' से भी उद्धृत किया है—और इसी तरह, वूज़ू में चार पर सीमित रहना, जैसा कि 'हिदाया' और 'हिलया' आदि में है, यही इमाम अल-हरमैन का भी कथन है, और इमाम इज्ज़ अल-दीन बिन अब्द अल-सलाम ने इसे अपनाया है। ये दोनों शाफ़ई विद्वान हैं क्योंकि ये सभी वास्तविकताओं के तर्कसंगत आदेश हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। यह उन सवालों का विवरण है जो मुझ पर प्रकट हुए; मैंने उन पर इसलिए चर्चा की है ताकि मेरे जैसे किसी अल्पज्ञानी को इनका सामना न करना पड़े और वह मुश्किल में न फँस जाए। (त)

अब पहले के जवाब में मैं कहता हूँ कि इससे मुराद गुनाहों की नजासत (अशुद्धि) है। क्योंकि अगर हदथ की नजासत का इरादा किया जाता, तो यह लाज़िम आता कि जो बिस्मिल्लाह न कहे उसकी तहारत (शुद्धि) मुकम्मल नहीं होगी। और यह ज़ाहिरीय्या का मज़हब है, और इमाम अहमद की एक रिवायत है, और हमारे उलेमा में से किसी का क़ौल नहीं है। और तहारत के अंगों के अलावा...

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(بائیں کالم میں عربی عبارت): فیهما ثم کان من الاطراف الراس وغسله کل یوم مرارا ایضا کان یورث البؤس والباس فابدل فیه الغسل بالمسح رحمة من الذی یقول عز من قائل یرید الله بکم الیسر ولا یرید بکم العسر فقضیة هذا ان الحدث ولو اصغر یحل البدن کله۔ اقول: (۲) وبه تبین ان ما صرح به غیر واحد من مشائخنا وغیرهم ان غسل غیر المصاب فی الحدث امر تعبدی کما فی الهدایة وغیرها وقدمناه عن الکافي (۲) وکذلك الاقتصار علی الاربعة في الوضوء کمافیها وفی الحلیة وغیرها وبه قال الامام الحرمین واختاره الامام عز الدین بن عبد السلام کلاهما من الشافعیة فان کل ذلك فی علم الحقائق احکام معقولة المعنی والله تعالی اعلم هذا تقریر اسئلة ظهرت لی واتیت بها کیلا تعن لقاصر مثلی ولا یتفرع للتدبر فیحتاج لکشفها۔ اقول : في الجواب عن الاول المراد نجاسة الاثام اذلو ارید نجاسة الحدث لزم ان من لم یسم لم یتم طهره وهو مذهب الظاهریة وروایة عن الامام احمد رضی الله تعالی عنه ولم یقل به احد من علمائنا وبقاء نجاسة الاثام فیما عدا اعضاء الطهر بل

(دائیں کالم میں اردو تشریح): کہ جب اول و آخر ٹھیک ہوتے ہیں تو بیچ میں جو نقصان ہوا اس سے درگزر فرماتا ہے اب اطراف بدن میں سر بھی تھا اور اسے ہر روز چند بار دھونا بھی بیمار کر دیتا مشقت میں ڈالتا لہذا اس کو دھونے کے عوض مسح مقرر فرمادیا، رحمت اس کی جو فرماتا ہے کہ اللہ تمہارے ساتھ آسانی چاہتا ہے اور دشواری نہیں چاہتا۔ (اس تمام گفتگو کا ما حصل یہ ہے کہ حدث خواہ اصغر ہی ہو تمام بدن میں حلول کرتا ہے۔ ت) میں کہتا ہوں اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ ہمارے مشائخ کا یہ فرمانا کہ ان اعضاء کو دھونا جن کو حدث نہیں پہنچا ہے محض امر تعبدی ہے جیسا کہ ہدایہ وغیرہ میں ہے اور ہم نے کافی سے بھی نقل کیا ہے، اور اسی طرح وضو میں چار پر اقتصار جیسا کہ ہدایہ اور حلیہ وغیرہ میں ہے اور یہی امام الحرمین کا قول ہے اور امام عز

الدین بن عبدالسلام نے اس کو اختیار کیا ہے یہ دونوں شافعی علماء ہیں کیونکہ یہ تمام حقائق کے معقول احکام ہیں واللہ تعالٰی اعلم، یہ ان سوالوں کی تقریر ہے جو مجھے منکشف ہوئے، میں نے ان پر اس لئے گفتگو کی ہے کہ کہیں مجھ جیسے قاصر کو یہ درپیش نہ آجائیں اور وہ مشکل میں مبتلا نہ ہو جائے۔ (ت) اب میں پہلے کے جواب میں کہتا ہوں کہ اس سے مراد گناہوں کی نجاست ہے کیونکہ اگر حدث کی نجاست کا ارادہ کیا جائے تو یہ لازم آئے گا جو بسم اللہ نہ کرے اس کی طہارت مکمل نہ ہوگی، اور یہ ظاہر یہ کا مذہب ہے، اور امام احمد کی ایک روایت ہے اور ہمارے علماء میں سے کسی کا قول نہیں، اور اعضاء طہارت کے علاوہ

Fatawa Razawiya, Volume II And in it also, as we have previously stated, it does not contradict the validity of purity and prayer. And from this (1), the answer to Abu al-Faraj's deduction from the Hadith became clear.

And regarding the second [point]: The prohibition due to ritual impurity (hadath) is based on the second meaning, which is indivisible, because of Allah the Almighty's word: "None shall touch it but the purified," and the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "None shall touch the Quran but the pure." A person is not considered pure as long as even a spot (lum'ah) remains [unwashed], even if it is slight. Thus, the prohibition of touching implies that the person is stained with ritual impurity (najasah hukmiyah), not that a specific limb used for touching is stained. Do you not see that it is not permissible to touch it with a hand that has been washed as long as the ablution (wudu) is not completed? Do you not see that they prohibited touching with what is on one, like clothes, even if there is no real or ritual impurity on them? The prohibition is only because they follow the body of the person in a state of ritual impurity. Therefore, prohibiting [touching with] the body itself is even more appropriate, even if it were a body in which ritual impurity had not settled, according to the more correct opinion.

As for the opinion of those who say that the prohibition is due to the first meaning, i.e., due to the presence of ritual impurity in the part touching it, then the issue is rejected from its root. Rather, he is a proponent of the permissibility of touching it with limbs other than those of ablution, as mentioned from al-Hindiyyah. If touching with clothes is prohibited, it is due to the presence of a follower [of the body] that contains ritual impurity, like a sleeve for a hand that has not been washed, not absolutely, as is not hidden.

And regarding the third [point]: Yes, that is a concession from your Lord and a mercy, but it can be understood in two ways: First, the Sharia considers ritual impurity to settle in the whole body, and then considers the purification of the four limbs as purification for the whole. Second, when the Lawgiver saw the hardship in it...

फतवा रज़विया, जिल्द II और उसमें भी, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, यह पवित्रता और प्रार्थना की वैधता के विपरीत नहीं है। और इसी से (१) हदीस से अबू अल-फ़रज के निष्कर्ष का उत्तर स्पष्ट हो गया।

और दूसरे [बिंदु] के बारे में: अनुष्ठान अशुद्धि (हथ) के कारण निषेध दूसरे अर्थ पर आधारित है, जो अविभाज्य है, क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का कथन है: "इसे केवल पवित्र लोग ही स्पर्श करेंगे," और पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) का कथन है: "पवित्र के अलावा कोई कुरान को नहीं छुएगा।" एक व्यक्ति तब तक पवित्र नहीं माना जाता जब तक कि एक छोटा सा स्थान (लुमआह) भी [बिना धुले] शेष रहे, भले ही वह बहुत कम हो। इस प्रकार, स्पर्श करने का निषेध यह दर्शाता है कि व्यक्ति अनुष्ठान अशुद्धि (नजासत हुकमिया) से कलंकित है, न कि स्पर्श करने के लिए उपयोग किया जाने वाला कोई विशिष्ट अंग कलंकित है। क्या आप नहीं देखते कि उस हाथ से छूना जायज़ नहीं है जिसे धोया गया हो जब तक कि वूज़ू (वज़ू) पूरा न हो जाए? क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने उन चीजों से छूने से मना किया है जो किसी के पास हों, जैसे कपड़े, भले ही उनमें कोई वास्तविक या अनुष्ठान अशुद्धि न हो? निषेध केवल इसलिए है क्योंकि वे अनुष्ठान अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति के शरीर का अनुसरण करते हैं। इसलिए, स्वयं शरीर से [स्पर्श] प्रतिबंधित करना और भी उचित है, भले ही वह ऐसा शरीर हो जिसमें अनुष्ठान अशुद्धि न बसी हो, अधिक सही राय के अनुसार।

जहाँ तक उन लोगों की राय का सवाल है जो कहते हैं कि निषेध पहले अर्थ के कारण है, यानी स्पर्श करने वाले हिस्से में अनुष्ठान अशुद्धि की उपस्थिति के कारण, तो यह मुद्दा इसकी जड़ से ही खारिज है। बल्कि, वह वूज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों से इसे छूने की अनुमति के समर्थक हैं, जैसा कि अल-हिन्दिया से उल्लेख किया गया है। यदि कपड़ों से छूना प्रतिबंधित है, तो यह अनुष्ठान अशुद्धि वाले अनुगामी [शरीर के] की उपस्थिति के कारण है, जैसे कि उस हाथ के लिए आस्तीन जिसे धोया नहीं गया है, न कि पूर्ण रूप से, जैसा कि छिपा नहीं है।

और तीसरे [बिंदु] के बारे में: हाँ, यह आपके भगवान की ओर से एक रियायत और दया है, लेकिन इसे दो तरीकों से समझा जा सकता है: पहला, शरीयत अनुष्ठान अशुद्धि को पूरे शरीर में बसने वाला मानती है, और फिर चार अंगों की शुद्धि को पूरे शरीर की शुद्धि मानती है। दूसरा, जब व्यवस्थापक ने इसमें कठिनाई देखी...

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی باقی اعضاء میں گناہوں کی نجاست کا باقی رہنا، بلکہ اعضاء طہارت میں بھی، جیسا کہ ہم نے پہلے ذکر کیا صحت طہارت کے منافی ہے اور نہ ادائیگی نماز کے، اور اسی سے ظاہر ہو گیا جو اب اس استدلال سے ابو الفرج نے حدیث سے کیا ہے۔

اور دوسرے کا جواب یہ ہے کہ حدث کا منع کرنا دوسرے معنی کے اعتبار سے جو غیر متجزی ہے اللہ تعالیٰ کے اس فرمان کی وجہ سے "اس کو پاک لوگ ہی چھوئیں" اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے "قرآن کو پاک ہی چھوئے" اور مُحدِث اس وقت تک پاک نہ ہوگا جب تک ایک "لمعہ" بھی باقی رہے خواہ کتنا ہی خفیف کیوں نہ ہو، تو چھونے کی ممانعت کا مطلب یہ ہے کہ مکلف نجاست حکمیہ کے ساتھ ملوث ہے، یہ نہیں کہ اس کا کوئی خاص عضو اس میں ملوث ہے یہی وجہ ہے کہ قرآن کو محض دھلے ہوئے ہاتھ سے چھونا جائز نہیں تاوقتیکہ وضو مکمل نہ ہو، یہی وجہ ہے کہ فقہاء نے اس ہاتھ سے قرآن چھونے کو منع کیا ہے جو کپڑے میں لپٹا ہوا ہو خواہ اس پر نہ حقیقی نجاست ہو اور نہ حکمی، ممانعت اس لئے ہے کہ وہ مُحدِث کی ذات کے تابع ہے تو نفس بدن سے چھونے کی ممانعت بدرجہ اولیٰ ہوگی، خواہ اس میں حدث نے حلول نہ کیا ہو، یہ اصح کے مطابق ہے، اور جو حضرات منع معنی اول میں قرار دیتے ہیں، یعنی ممسوس بہ کے ساتھ نجاست حکمیہ کا قائم ہونا، تو مسئلہ اصلاً ممنوع ہے، بلکہ اُس کے مَس کے جواز کے قائل ہیں

وفیھا ایضاً کما قدمنا لا ینافی صحۃ الطھارۃ والصلاۃ وبہ (۱) ظھر الجواب عن استدلال ابی الفرج بالحدیث وعن الثانی: ان المنع للحدث بالمعنی الثانی الغیر المتجزی لقولہ تعالی لا یمسہ الا المطھرون وقولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا یمس القرآن الا طاہر وھو لا یکون طاہر ام بقیت لمعۃ وان خفت فمنع المس انما یقتضی تلبس المکلف بنجاسۃ حکمیۃ لا تلبس خصوص العضو الممسوس بہ الا تری انہ

لا يجوز مسہ بيد قد غسلها مالم يستكمل الوضوء الا ترى انهم منعوا المس بما عليہ من الثياب ولا نجاسة فيها حقيقة ولا حكمية انما المنع لانها تبع لبدن شخص محدث فلان يمنع بنفس بدنہ اولى وان كان بدنا لم يحلہ الحدث هذا على الاصح اما على قول من يقول ان المنع للمعنى الاول اى لقيام النجاسة الحكمية بالممسوس بہ فالمسألة ممنوعة من رأسها بل ہو قائل بجواز مسہ بغير اعضاء الطہارة كما مر عن الهندية وان منع المس بالثياب فبثبوت تابع لما فيہ الحدث كأكم ليد لم يغسل لا مطلقاً كما لا يخفى، وعن الثالث: نعم ذلک تخفيف من ربكم ورحمة لكنہ يحتمل وجهين الاول ان يعتبر الشرع حلول الحدث بكل البدن ثم يجعل تطہير الاعضاء الاربعة تطہيراً للكل والثانى ان الشارع لما رأى فيہ الحرج

Fatawa Razawiyya - Volume 2

...without the organs of purification, as mentioned from al-Hindiyyah; and if it is not permissible to spread a bed with clothes, then it is not permissible with that cloth which is subordinate (to the person), because there is impurity (hadath) in it, such as a sleeve for a hand that has not been washed, not absolutely, as is not hidden.

And the answer to the third point is: yes, this is a relief and mercy from your Lord. However, there are two aspects to it. First, that the Shariah considers the occurrence of impurity (hadath) throughout the entire body and then decrees the purification of the whole body after the cleansing of the four specified organs. Second, when the Lawgiver saw hardship in this, He waived its consideration and restricted it only to the four organs. A precedent for each of these exists in the Shariah. The precedent for the first is Tayammum (dry ablution); in it, wiping two organs is considered equivalent to the purification of all four organs. The precedent for the second is the eye; because there was hardship in washing it, the Shariah did not deem the occurrence of impurity in it at all. It is not that the impurity occurred and then was waived; rather, it never occurred. Thus, if someone washes their eyes, the water will unanimously not be considered 'used' (must'amal). When a possibility arises, the argument is interrupted. Rather, I say: if you reflect, the second view is preferred because not considering (the occurrence of impurity) is better than considering it and then invalidating it. Analogy with the eye due to the cause of hardship is clear and correct, unlike Tayammum, for the original obligation is Ghusl, and Wudu and Tayammum are substitutes. No one here claims that the original obligation for every impurity is Ghusl and that Wudu is a substitute. Rather, no one has said that Ghusl is the determined course (Azimah) and Wudu is a concession (Rukhsah). Our masters, the noble Gnostics (Arifeen)—may Allah Almighty return their blessings upon us in both worlds—we have seen them hold themselves to the strictest standards in every small detail and not settling for concessions. Yet, it has not been reported from any of them that they made Ghusl mandatory upon themselves in place of Wudu for every occurrence of minor impurity. If anyone were to impose such a thing now, they would be seen as following a path of unnecessary severity and hair-splitting. Thus, it is evident that this belongs to the second category, not the first. Furthermore, this is a different level beyond the level we are discussing, and rulings are not devoid of wisdom, but they do not revolve around it. Do you not see that...

...शुद्धि के अंगों के बिना, जैसा कि अल-हिंदिया से उद्धृत किया गया है; और यदि कपड़ों के साथ बिस्तर बिछाना जायज़ नहीं है, तो उस कपड़े के साथ जो गौण (ताबे) है, क्योंकि उसमें अशुद्धि (हदस) है, जैसे हाथ के लिए आस्तीन जिसे धोया न गया हो, न कि पूर्ण रूप से जैसा कि स्पष्ट है।

और तीसरे बिंदु का उत्तर यह है: हाँ, यह आपके रब की ओर से राहत और दया है। हालाँकि, इसके दो पहलू हैं। पहला यह कि शरीयत पूरे शरीर में अशुद्धि (हदस) के समाने का विचार करती है और फिर चार निर्दिष्ट अंगों की शुद्धि के बाद पूरे शरीर की शुद्धि का आदेश देती है। दूसरा यह कि जब शरीयत ने इसमें कठिनाई देखी तो इसके विचार को समाप्त कर दिया और इसे केवल चार अंगों तक ही सीमित रहने दिया। इनमें से प्रत्येक का उदाहरण शरीयत में मौजूद है। पहले का उदाहरण तयम्मुम है; इसमें दो अंगों को पोंछने को चारों अंगों की शुद्धि के बराबर माना गया है। दूसरे का उदाहरण आँख है; चूँकि इसे धोना कठिन था, शरीयत ने इसमें अशुद्धि के समाने को बिल्कुल नहीं माना। ऐसा नहीं है कि अशुद्धि समा गई और फिर उसे हटा दिया गया; बल्कि, वह कभी समाई ही नहीं। इस प्रकार, यदि कोई अपनी दोनों आँखें धोता है, तो पानी सर्वसम्मति से 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) नहीं माना जाएगा। जब संभावना उत्पन्न होती है, तो तर्क समाप्त हो जाता है। बल्कि, मैं कहता हूँ: यदि आप विचार करें, तो दूसरे मत को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि विचार न करना विचार करने और फिर उसे अमान्य करने से बेहतर है। कठिनाई के कारण आँख के साथ सादृश्य (क़यास) स्पष्ट और सही है, तयम्मुम के विपरीत, क्योंकि मूल कर्तव्य ग़ुस्ल है, और वज़ू तथा तयम्मुम उसके विकल्प हैं। यहाँ कोई भी यह दावा नहीं करता है कि प्रत्येक अशुद्धि के लिए मूल कर्तव्य ग़ुस्ल है और वज़ू एक विकल्प है। बल्कि, किसी ने यह नहीं कहा है कि ग़ुस्ल दृढ़ मार्ग (अज़ीमत) है और वज़ू एक रियायत (रुख़्सत) है। हमारे स्वामी, महान संत (आरिफ़ीन)—अल्लाह तआला दोनों जहानों में उनकी बरकतें हम पर लौटाए—हमने उन्हें हर छोटी चीज़ में खुद को सख्त मानकों पर रखते हुए देखा है और रियायतों से संतुष्ट नहीं होते। फिर भी, उनमें से किसी से यह सूचित नहीं हुआ है कि उन्होंने हर छोटी अशुद्धि के लिए वज़ू के स्थान पर खुद पर ग़ुस्ल अनिवार्य किया हो। यदि अब कोई ऐसा नियम थोपता है, तो उसे अनावश्यक कठोरता का पालन करने वाला माना जाएगा। अतः यह स्पष्ट है कि यह दूसरी श्रेणी से संबंधित है, न कि पहली से। इसके अलावा, यह उस स्तर से परे एक अलग स्तर है जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, और नियम हिकमत (बुद्धिमत्ता) से रहित नहीं होते हैं, लेकिन वे उस पर आधारित नहीं होते हैं। क्या आप नहीं देखते कि...

اسقاط اعتباره الا في الاعضاء الاربعة ولكل منهما نظير في الشرع فنظير الاول التيمم جعل فيه مسح عضوين مطهر للاربع بالاتفاق ونظير الثاني العين كان في غسلها حرج فلم يجعلها الشرع محل حلول حدث اصلا لا انه حل وسقط الغسل للحرج (۱) فلو غسل عينيه لا يصير الماء مستعملا بالوفاق وعند الاحتمال ينقطع الاستدلال، بل اقول: (۲) لو تأملت لرجحت الثاني اذ عدم الاعتبار اولى من الاعتبار ثم الاهدار والقياس على العين بجامع الحرج واضح صحيح بخلاف التيمم فان اصل الواجب ثم الوضوء والتيمم خلف ولم يزعم ههنا احد ان اصل الواجب بكل حدث هو الغسل والوضوء خلف بل لم يقل احد ان الغسل عزيمة والوضوء رخصة وهؤلاء ساداتنا العرفاء الكرام اعاد الله تعالى علينا بركاتهم في الدارين رأيناهم يأخذون انفسهم في كل نقير وقطمير بالعزائم ولا يرضون لهم التنزل الى الرخص ثم لم ينقل عن احد منهم انه الزم نفسه الغسل عند كل حدث مكان الوضوء ولو التزمه الان احد لكان متعقبا مشددا متنطعا فظهر انه من الباب الثاني دون الاول على ان ذلك طور اخر وراء الطور الذي نتكلم فيه والاحكام ( ) لا تخلو عن الحكم لكن لا تدار عليها الا ترى ان من

بلا اعضاء طہارت کے، جیسا کہ ہندیہ سے گزرا، اور اگر کپڑوں کے ساتھ بچھونا جائز نہیں تو اس کپڑے کے ساتھ جو تابع ہو کیونکہ اس میں حدث ہے، جیسے آستین ہاتھ کیلئے جو دھلا نہ ہو، نہ کہ مطلقاً کما لا یخفی۔ اور تیسرے کا جواب یہ ہے، ہاں یہ تمہارے رب کی طرف سے تخفیف ہے اور رحمت ہے لیکن اس میں دو وجہیں ہیں پہلی تو یہ کہ شرع تمام بدن میں حدث کے حلول کا اعتبار کرتی ہے اور پھر چار اعضاء کی تطہیر کے بعد کل بدن کی طہارت کا حکم کرتی ہے اور دوسرے یہ کہ شارع نے جب اس میں حرج دیکھا تو اس کے اعتبار کو ساقط کر دیا صرف اعضاء اربعہ میں رہنے دیا، اور ان میں سے ہر ایک کی نظیر شرع میں موجود ہے، پہلے کی نظیر تیمم

ہے اس میں دو اعضاء کے مسح کرنے کو چاروں اعضاء کی پاکی قرار دیا ہے، اور دوسرے کی نظیر آنکھ ہے کہ اس کے دھونے میں حرج تھا، تو شریعت نے اس میں حدث کا حلول نہیں مانا، یہ نہیں کہ حدث حلول کر گیا ہو، اب اگر کسی نے اپنی دونوں آنکھیں دھوئیں تو پانی بالاتفاق مستعمل نہ ہوگا، اور جب احتمال پیدا ہو جائے تو استدلال ختم ہو جاتا ہے، بلکہ میں کہتا ہوں اگر آپ تامل کریں تو دوسرے کو ترجیح ہے کیونکہ اعتبار نہ کرنا اعتبار کرنے سے اولیٰ ہے کہ پہلے اعتبار کیا جائے پھر اس کو باطل کیا جائے، اور آنکھ پر قیاس کرنا حرج کی علت سے

Fatawa Razvia, Volume II

(Arabic Text Translation): One who occupies themselves with play, amusement, joking, and loud laughter outside of prayer; there is no doubt that during those hours they are heedless of their Lord, Almighty and Majestic (1). This is especially true for one who laughs loudly during a funeral prayer, despite the fact that the remembrance of death is an all-consuming occupation. Yet, the Sacred Law (Shari'ah) has not deemed any of these actions as a state of ritual impurity (hadath). Similarly, it has not classified eating—the fundamental state—nor sleep—which is akin to death—as a hadath, unless there is a strong suspicion of an emission [of impurity] due to an unstable posture. Therefore, it is incumbent upon us to adhere to what they [the jurists] have preferred and authenticated, as if they had issued the decree to us personally during their lifetimes. And Allah Almighty knows best His rulings.

(Urdu Text Translation): It is clear and correct, in contrast to tayammum; because in that case, the primary obligation is ablution (wudhu), and tayammum is its substitute. Here, no one has presumed that for every ritual impurity, a full bath (ghusl) is fundamentally required while wudhu serves as a substitute. In fact, no one has even suggested that ghusl is the 'standard duty' (azimat) and wudhu is the 'concession' (rukhsat), even though our esteemed elders—may Allah shower His blessings upon us—scrutinize even the smallest details and are not inclined to seek any form of concession. Furthermore, there is no record from any of them suggesting they performed ghusl in place of wudhu. If someone were to do so now, they would be considered extremely rigid. Thus, it is evident that this falls under the second category rather than the first. Moreover, this represents a new approach in our discourse. While legal rulings are never devoid of underlying wisdom, they do not solely depend on it. For example, if someone is occupied with levity, humor, and laughter outside of prayer, they are undoubtedly distracted from their Lord in those moments—especially someone laughing during a funeral prayer, even though death turns a person away from all else to focus on Allah. Nonetheless, the Lawgiver has not designated any of these as a hadath. The same applies to eating, which is an essential act, and sleep, which resembles death, until the individual suspects that something has been discharged, such as if they were not seated firmly or were lying down. Consequently, it is necessary for us to follow precisely what the jurists have favored and declared correct, just as if those venerable figures had provided the fatwa in their own lifetimes.

Note: It is a well-known fact that whether you term it as performing a pious act, removing ritual impurity, discharging an obligation, or eliminating legal impurity, this absolutely applies to the obligatory wiping (masah) and also to the sunnah wiping, provided there is an intention. Therefore, it is mandatory that the moisture becomes 'used water' (mustamal) as soon as it detaches from the head, sock, bandage, or ear. For this reason, we have relied on this principle and clarified the general applicability of wiping. However, Imam Faqih al-Nafs stated in the 'Khaniya' that if an individual without wudhu put his head for wiping...

फतावा रज़विया, खंड द्वितीय

(अरबी पाठ का अनुवाद): नमाज़ के बाहर खेल-कूद, मज़ाक और ठहाकों में व्यस्त होना; निसंदेह उन घंटों में वे अपने रब अज़्ज़ व जल्ल (1) से गाफ़िल होते हैं। विशेष रूप से वह जो जनाज़ा की नमाज़ में ठहाका लगाता है, जबकि मृत्यु का स्मरण एक व्यस्त रखने वाला कार्य है। फिर भी, शरीयत ने इनमें से किसी को भी 'हद्दस' (अनुष्ठानिक अशुद्धि) नहीं माना है। इसी प्रकार, उसने खाने को—जो कि मूल अवस्था है—और नींद को—जो मृत्यु की सहोदर है—तब तक हद्दस नहीं माना है जब तक कि स्थिर मुद्रा में न होने के कारण किसी चीज़ के निकलने का प्रबल संदेह न हो। अत; हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम उसी का पालन करें जिसे उन्होंने [विधिवेत्ताओं ने] प्राथमिकता दी और प्रमाणित किया है, मानो उन्होंने अपने जीवनकाल में हमें स्वयं फ़तवा दिया हो। और अल्लाह तआला अपने आदेशों को सर्वविदित जानता है।

(उर्दू पाठ का अनुवाद): यह स्पष्ट और सही है, तयम्मुम के विपरीत; क्योंकि वहाँ मूलतः जो अनिवार्य है वह वज़ू है और तयम्मुम उसका विकल्प है। यहाँ किसी ने यह नहीं माना कि प्रत्येक अशुद्धि के लिए मूल रूप से गुस्ल (स्नान) अनिवार्य है और वज़ू उसका विकल्प है। वास्तव में, किसी ने यह भी नहीं कहा कि गुस्ल 'अज़ीमत' (दृढ़ कर्तव्य) है और वज़ू 'रुख्सत' (रियायत) है, जबकि हमारे ये महान पूर्वज—अल्लाह उनकी बरकतें हम पर बरसाए—सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का भी ध्यान रखते हैं और किसी भी प्रकार की रियायत के पक्ष में नहीं होते। इसके अलावा, उनमें से किसी से यह वर्णित नहीं है कि उन्होंने वज़ू के बजाय गुस्ल किया हो। यदि अब कोई ऐसा करता है, तो उसे अत्यधिक कट्टरपंथी माना जाएगा। अतः यह ज्ञात होता है कि यह पहले अध्याय के बजाय दूसरे अध्याय से संबंधित है। इसके अतिरिक्त, यह हमारी चर्चा का एक नया तरीका है। यद्यपि कानूनी आदेश कभी भी अंतर्निहित बुद्धिमत्ता (हिकमत) से रहित नहीं होते, लेकिन वे पूरी तरह से उन पर निर्भर नहीं होते। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति नमाज़ के बाहर खेल-कूद, मज़ाक और ठहाकों में व्यस्त है, तो वह उन क्षणों में निस्संदेह अपने रब से विमुख है—विशेषकर वह जो जनाज़ा की नमाज़ में हँसता है, भले ही मौत इंसान को हर चीज़ से हटाकर अल्लाह की ओर मोड़ देती है। फिर भी, शारेअ (विधि प्रदाता) ने इनमें से किसी को भी हद्दस घोषित नहीं किया है। यही बात खाने पर लागू होती है, जो एक आवश्यक क्रिया है, और नींद पर, जो मृत्यु के समान है, जब तक कि व्यक्ति को यह संदेह न हो जाए कि शरीर से कुछ उत्सर्जित हुआ है, जैसे कि यदि वे मजबूती से नहीं बैठे थे या लेटे हुए थे। परिणामस्वरूप, हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम ठीक उसी चीज़ का पालन करें जिसे विधिवेत्ताओं ने पसंद किया

और सही घोषित किया है, ठीक वैसे ही जैसे कि वे प्रतिष्ठित हस्तियाँ अपने जीवनकाल में हमें फ़तवा देतीं।

नोट: यह एक सर्वविदित तथ्य है कि चाहे आप इसे उपासना करना कहें, अशुद्धि दूर करना कहें, कर्तव्य पूरा करना कहें, या कानूनी अपवित्रता को समाप्त करना कहें, यह पूर्णतः अनिवार्य 'मसह' (पोंछने) और सुन्नत मसह (नियत की शर्त के साथ) पर लागू होता है। इसलिए, यह अनिवार्य है कि नमी जैसे ही सिर, मोज़े, पट्टी या कान से अलग हो, वह 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ पानी) बन जाए। इसी कारण से, हमने इस सिद्धांत पर भरोसा किया और मसह की सामान्य प्रयोज्यता को स्पष्ट किया। हालाँकि, इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स ने 'खानिया' में कहा है कि यदि वज़ू के बिना किसी व्यक्ति ने मसह के लिए अपना सिर...

पृष्ठ १०१ / ७११

اشتغل فی لہو ولعب و مزاح و قہقہۃ خارج الصلاۃ فلا شک انہم غافل فی تلک الساعات عن ربہ عزوجل (۱)لاسیما الذی قہقہ فی صلاۃ الجنازۃ مع ان فی ذکر الموت شغلا شاغلا ولم یجعل الشرع شیئاً من ذلك حدثاً وكذا لم يجعل الاكل وهو الاصل ولا النوم الذي هواخ الموت مالم يظن خروج شيئ بان لم يكن متمكنا فعلينا اتباع مارجحوه وصححوه كما لو افتونا في حياتهم والله تعالى اعلم بأحكامه۔

واضح اور صحیح ہے، بخلاف تیمّم کے کیونکہ وہاں اصالتہً جو چیز واجب ہے وہ وضو ہے اور تیمّم خلیفہ ہے، اور یہاں کسی نے گمان نہیں کیا کہ ہر حدث میں اصالتہً واجب غسل ہے اور وضو خلیفہ ہے، بلکہ کسی نے یہ بھی نہ کہا کہ غسل عزیمت ہے اور وضو رخصت ہے، حالانکہ ہمارے یہ بزرگ، اللہ ان کی برکتیں ہم پر نازل کرے، باریک سے باریک تر چیز کا اعتبار کرتے ہیں اور کسی قسم کی رخصت پر تیار نہیں ہوتے، پھر ان میں سے کسی سے منقول نہیں کہ بجائے وضو کے غسل کرتا ہو اور اگر اب کوئی ایسا کرے تو وہ انتہا درجہ کا متشدد ہو گا تو معلوم ہوا کہ وہ دوسرے باب سے ہے نہ کہ پہلے باب سے۔ علاوہ ازیں یہ ہماری گفتگو کا ایک نیا انداز ہے، اور احکام حکمتوں سے خالی نہیں ہوتے، لیکن اُن پر دارومدار نہیں ہوتا، مثلاً کوئی شخص لہو ولعب، مزاح اور قہقہوں میں بیرونِ نماز مصروف ہے تو بلا شبہ ان لمحات میں وہ اپنے رب سے غافل ہے، خاص طور پر قہقہہ لگانے والا نمازِ جنازہ میں، حالانکہ موت انسان کو ہر چیز سے موڑ کر اللہ کی طرف متوجہ کردیتی ہے، مگر شارع نے ان اشیاء میں سے کسی چیز کو بھی حدث قرار نہیں دیا ہے، اور اس طرح کھانے کو، جو اصل ہے، اور نیند کو جو موت کی نظیر ہے تا وقتیکہ اُس شخص کو یہ ظن نہ ہو جائے کہ کوئی چیز خارج ہوئی ہے، مثلاً یہ کہ جم کر نہیں بیٹھا یا لیٹا

تھا، تو ہم پر لازم ہے کہ جس چیز کو فقہاء نے راجح قرار دیا اور صحیح قرار دیا ہے ہم اس کی بالکل اسی طرح پیروی کریں جیسے اگر وہ حضرات اپنی زندگی میں ہمیں فتوی دیتے۔

ت تنبیہ : یہ امر معلوم ہے کہ قُربۃ کی ادائیگی، رفع حدث، اسقاط فرض، نجاست حکمیہ کا ازالہ وغیرہ، جو تعبیر بھی آپ کریں یہ مفروض مسح کو مطلقاً شامل ہے اور مسنون کو بشرطِ نیت، لہذا لازم ہے کہ تری سر سے، موزے سے، پٹی سے یا کان سے جدا ہوتے ہی مستعمل ہو جائے، اور اسی لئے ہم نے اس پر اعتماد کیا، اور مسح کے عام ہونے کی تصریح کی، لیکن امام فقیہ النفس نے خانیہ میں فرمایا اگر بے وضو نے اپنا سر مسح کیلئے

تنبیہ:(١)معلوم ان اقامة قربة اورفع حدث اواسقاط فرض اوازالة نجاسة حكمية بايها عبرت كل ذلك يشمل المسح المفروض مطلقاً والسنون بشرط النية فيجب ان تصير البلة مستعملة اذا انفصلت من رأس اوخف او جبيرة اواذن مثلا ولذا عولنا عليه وصرحنا بعمومه المسح لكن قال الامام فقيه النفس في الخانية(١)لو ادخل المحدث

Fatawa Razawiyya Volume 2

If [a person] dips his head into a vessel intending to perform wiping (Masah), the water does not become 'Mustamal' (used water) according to the view of Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him). He states that water only becomes used from that which is washed; as for that which is wiped, the water does not become used, even if the intention for wiping was made. Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) stated that if there are bandages/splints on someone's forearms and they dip them into water, or if they dip their head into the vessel, it is not permissible and the water becomes 'Mustamal'. (End of quote). The view of Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) has been prioritized, and it is the more apparent and famous one, as indicated in his sermon. Therefore, it is the one to be relied upon, as mentioned in 'Ta' (Tahtawi) and 'Sha' (Shami). In fact, the jurists have authenticated that Imam Muhammad is with Imam Abu Yusuf in this matter, so no disagreement remains. It is mentioned in 'Al-Bahr' (2) that if a person in a state of minor ritual impurity inserts his head, his leather sock (khuff), or his bandage into a vessel, Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) said it suffices for wiping and the water does not become used, whether he intended it or not. Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) said that if he did not intend it, the scholars differed on his view; some said it would not suffice and the water would become used, while the correct view is that it is permissible and the water does not become used, as stated in 'Al-Bada'i'. From this, it is known that the disagreement mentioned in 'Al-Jam'—(I say: and in 'Al-Khaniyah', 'Al-Fath', and others)—regarding this issue is not based on the correct view. The correct view is...

1. Fatawa Khaniyah on Al-Hindiyyah, Chapter of Used Water, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/5
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/5

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम (भाग 2)

यदि [कोई व्यक्ति] मसह (पोंछने) की नीयत से अपना सिर बर्तन में डुबो दे, तो इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कथन के अनुसार पानी मुस्तमल (उपयोग किया हुआ) नहीं होगा। वे फरमाते हैं कि पानी उस चीज़ से मुस्तमल होता है जिसे धोया जाता है, और जो चीज़ मसह की जाती है उससे पानी मुस्तमल नहीं होता, चाहे मसह का इरादा ही क्यों न किया गया हो। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फरमाया कि यदि किसी के हाथों पर पट्टियाँ हों और उसने उन्हें पानी में डुबो दिया, या अपना सिर पानी में डुबो दिया, तो यह जायज़ नहीं है और पानी मुस्तमल हो जाएगा। इमाम अबू यूसुफ के कथन को प्राथमिकता दी गई है और वही ज़ाहिर और मशहूर है, जैसा कि उन्होंने अपने खुतबे में फरमाया है, इसलिए वही विश्वसनीय होगा, जैसा कि 'ताहतावी' और 'शामी' में है। बल्कि फुकहा (धर्मशास्त्रियों) ने इस बात को सही करार दिया है कि इसमें इमाम मुहम्मद, इमाम अबू यूसुफ के साथ हैं, तो कोई मतभेद शेष नहीं रहा। 'बहर' में फरमाया गया है कि यदि किसी व्यक्ति ने बे-वुज़ू होने की हालत में अपना सिर, मोज़ा या पट्टी बर्तन में डुबो दी, तो इमाम अबू यूसुफ ने फरमाया कि मसह हो जाएगा और पानी मुस्तमल नहीं होगा, चाहे मसह की नीयत की हो या न की हो। इमाम मुहम्मद ने फरमाया कि यदि नीयत नहीं की तो उनके कथन पर इसमें मशायख का मतभेद है; कुछ कहते हैं कि यह काफी नहीं होगा और पानी मुस्तमल हो जाएगा, और सही यह है कि यह जायज़ है और पानी मुस्तमल नहीं होगा, जैसा कि 'बदाई' में है। तो इससे मालूम हुआ कि 'अल-जमअ' में जो मतभेद है—(मैं कहता हूँ कि 'खनिया' और 'फतह' आदि में भी)—जो मतभेद बयान किया गया है वह सही नहीं है, सही यह है...

1. फ़तावा खनिया अलल हिन्दिया, बाबुल माअल मुस्तमल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/5
2. बहरुर राइक, किताबुत्तहारह, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/5

पृष्ठ 102/711

برتن میں ڈبو دیا تو ابو یوسف کے قول کے مطابق پانی مستعمل نہ ہوگا، کیونکہ وہ فرماتے ہیں پانی اس چیز سے نجس ہوگا جو دھوئی جاتی ہے، اور جو ممسوح ہے اس سے نہیں خواہ اس سے مسح کا ارادہ ہی کیا ہو، اور امام محمد نے فرمایا کہ اگر کسی کے ہاتھوں پر پٹیاں ہوں اور اس نے وہ پانی میں ڈبو دیے یا اپنا سر پانی میں ڈبو دیا تو جائز نہیں اور پانی مستعمل ہوگا اھ ابو یوسف کے قول کو مقدم کیا گیا ہے وہی ظاہر و مشہور ہے جیسا کہ انہوں نے اپنے خطبہ میں فرمایا تو وہی قابلِ اعتماد ہوگا، جیسا کہ "ط" و "ش" میں ہے بلکہ فقہاء نے اس امر کو صحیح قرار دیا ہے کہ اس میں امام ابو یوسف کے ساتھ ہیں، تو کوئی اختلاف باقی نہ رہا۔ بحر میں فرمایا کہ اگر کسی شخص نے اپنا سر، موزہ یا پٹی بے وضو ہونے کی حالت میں برتن میں ڈبو دی تو امام ابو یوسف نے فرمایا مسح ہو جائے گا اور پانی مستعمل نہ ہوگا خواہ مسح کی نیت کی ہو یا نہ، امام محمد نے فرمایا اگر نیت نہیں کی تو ان کے قول پر اس میں مشائخ کا اختلاف ہے، بعضے کہتے ہیں اس کو کافی نہ ہوگا اور پانی مستعمل ہو جائے گا، اور صحیح یہ ہے کہ جائز ہے اور پانی مستعمل نہ ہوگا کذا فی البدائع تو اس سے معلوم ہوا کہ جمع میں جو اختلاف ہے۔ (ت) (میں کہتا ہوں خانیہ اور فتح وغیرہ میں بھی) جو اختلاف بیان کیا گیا ہے وہ صحیح نہیں، صحیح یہ ہے

1 فتاوٰی خانیہ علی الھندیہ باب الماء المستعمل نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵ 2 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵

Rather, the correct view is that there is no disagreement, and it is also known that there is no difference between [wiping] the head, the leather socks (khuff), and the bandage, contrary to what Ibn al-Malik mentioned. [End of quote] And it was summarized in Al-Durr, saying: Water does not become 'used' (musta'mal) even if one intends [it to be so], by consensus according to the correct opinion. [End of quote]

I say: Let this not alarm you, for it does not mean that wiping does not cause the water to become 'used'. How could it be otherwise when their statements regarding the causes [of water becoming used] are absolute, covering both washing and wiping? Furthermore, this very issue is explicitly stated by the prominent scholars, among them Faqih al-Nafs (1), as he says: If someone performs ablution and then wipes over the leather socks with the moisture remaining on his palm after washing [the hands], it is permissible. However, if he wipes his head and then wipes the socks with the moisture remaining on the palm after that wiping [of the head], it is not permissible because he wiped the socks with 'used' moisture, unlike the first case. [End of quote] This is confirmed in Al-Fath and others. And in Al-Khaniya also (2): Complete coverage (isti'ab) in wiping the head is Sunnah, and the manner of doing this is that he places the fingers of his hands on the front of his head and his palms on his temples and pulls them back to the nape of his neck. This is permissible. And some other jurists pointed to another way to avoid using 'used' water, but that is not possible except with hardship and difficulty. So the first way is permissible, and the water does not become 'used' out of the necessity of establishing the Sunnah. [End of quote] That is, as long as the water remains on the limb, it is not considered 'used'. And in Al-Fath (3): Regarding the wiping of the head, if one wipes with a single finger and pulls it as far as the obligatory portion [it would be valid].

Footnotes: 1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharat, Sa'id Company Karachi 1/15 2. Al-Durr al-Mukhtar, Arkan al-Wudu 1/19 3. Fatawa Khaniya, Masah 'ala al-Khuffayn 1/23 4. Khaniya 'ala al-Hindiya, Fasl Sifat al-Wudu, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/35

बल्कि सही यह है कि इसमें कोई मतभेद नहीं है, और यह भी मालूम हो कि सिर, मोज़े और पट्टी (जबीरा) के हुक्म में कोई अंतर नहीं है, जैसा कि इब्ने मलिक ने ज़िक्र किया है। [समाप्त] और इसी को 'दुर' (अल-दुर अल-मुख्तार) में संक्षेप में बयान किया गया है: सही क़ौल के अनुसार सर्वसम्मति से पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा, चाहे नियत की गई हो। [समाप्त]

मैं कहता हूँ: यह चीज़ आपको विचलित न करे, क्योंकि इसका यह अर्थ नहीं है कि मसह से पानी मुस्तअमल नहीं होता। ऐसा कैसे हो सकता है जबकि फ़ुक़हा (इस्लामी न्यायविदों) के शब्द 'इस्तेमाल' के कारणों के बारे में सामान्य हैं, जिनमें ग़ुस्ल (नहाना/धोना) और मसह (पोंछना) दोनों शामिल हैं। फिर बड़े विद्वानों ने इस मसले को स्पष्ट रूप से बयान भी किया है, उदाहरण के लिए 'फ़क़ीह अन-नफ़्स' (1) फ़रमाते हैं: यदि किसी व्यक्ति ने वज़ू किया, फिर हाथ धोने के बाद जो तरी (नमी) हाथ में बच गई थी उससे मोज़ों पर मसह किया तो यह जायज़ है। लेकिन अगर उसने सिर का मसह किया और फिर उस मसह के बाद हाथ में बची हुई नमी से मोज़ों का मसह किया तो यह जायज़ नहीं है, क्योंकि उसने मुस्तअमल तरी से मोज़ों का मसह किया है, जो कि पहली स्थिति के विपरीत है। [समाप्त] 'फ़तह' और अन्य किताबों में भी इसी को सही माना गया है। और 'खानिया' (2) में भी है कि सिर के पूरे मसह (इस्तिआब) का सुन्नत तरीक़ा यह है कि अपनी उँगलियाँ माथे के सामने वाले भाग पर रखे और हथेलियाँ कनपटी पर, और फिर उन्हें गर्दन के पीछे की ओर खींच कर ले जाए। तो यह जायज़ है। कुछ अन्य फ़ुक़हा ने दूसरा तरीक़ा बताया ताकि मुस्तअमल पानी के इस्तेमाल से बचा जा सके, लेकिन उसमें बहुत अधिक कठिनाई और मशक्कत है, इसलिए पहला तरीक़ा ही जायज़ है और सुन्नत को पूरा करने की ज़रूरत के कारण पानी मुस्तअमल नहीं होगा। [समाप्त] यानी जब तक पानी अंग पर रहता है, वह मुस्तअमल नहीं होता। और 'फ़तह' (3) में है: सिर के मसह के बारे में, यदि कोई एक उँगली से मसह करे और उसे फ़र्ज़ की मात्रा तक खींचे [तो काफ़ी होगा]।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. बहर-उर-राइक़, किताब-उत-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/15 2. अद-दुर-अल-मुख्तार, अरकान-अल-वुज़ू 1/19 3. फ़तावा खानिया, मसह अलल खुफ़्फ़ैन 1/23 4. खानिया अलल हिन्दिया, फ़स्ल सिफ़त-उल-वुज़ू, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/35

بل الصحیح ان لاخلاف وان علم ایضا انه لافرق بین الرأس والخف والجبیرة خلافا لما ذکره ابن الملك ' اھ واختصره فی الدر فقال لم یصر الماء مستعملا وان نوی اتفاقا علی الصحیح ۲ اھ کہ اختلاف نہیں، اور یہ بھی معلوم ہو کہ سر، موزے اور پٹی میں کوئی اختلاف نہیں جیسا کہ ابن الملک نے ذکر کیا اھ اور اسی کو دُر میں مختصر کیا، فرمایا پانی مستعمل نہ ہو گا خواہ نیت کی ہو، یہ متفق علیہ ہے صحیح قول پر اھ

اقول: ولا یهولنك هذا فلیس معناه ان المسح لایفید الاستعمال کیف وکلامهم طرافی اسبابه مطلق یعم الغسل والمسح ثم المسألة عینها منصوصة علی لسان الکبراء منهم فقیه النفس (۱) اذ یقول توضأ ثم مسح الخف ببلة بقیت علی کفه بعد الغسل جاز ولو مسح برأسه ثم مسح الخف ببلة بقیت علی الکف بعد المسح لایجوز لانه مسح الخف ببلة مستعملة بخلاف الاول ۳ اھ واقره فی الفتح وغیره وفی الخانیة ایضا (۲) الاستیعاب في مسح الرأس سنة وصورة ذلك ان یضع اصابع یدیه علی مقدم رأسه وکفیه علی فودیه ویمدهما الی قفاه فیجوز واشار بعضهم الی طریق اخر احترازا عن استعمال الماء المستعمل الا ان ذلك لا یمکن الا بکلفة ومشقة فیجوز الاول ولا یصیر الماء مستعملا ضرورة اقامة السنة ۴ اھ ای لما علم ان الماء مادام علی العضو لایصیر مستعملا وفی الفتح (۳) من مسح الرأس لو مسح باصبع واحدة مدها قدر الفرض اقول: یہ چیز کوئی قابل تعجب نہیں، اس کا یہ معنی نہیں کہ مسح سے استعمال نہیں ہوتا، حالانکہ تمام فقہاء کا کلام اسباب استعمال کے سلسلہ میں عام ہے اس میں غسل اور مسح دونوں شامل ہیں، اور پھر اکابر علماء نے مسئلہ کی صراحت بھی کی ہے، مثلاً فقیہ النفس فرماتے ہیں کسی شخص نے وضو کیا پھر ہاتھ دھونے کے بعد جو تری باقی رہ گئی تھی اس سے موزے پر مسح کر لیا تو جائز ہے اور اگر سر پر مسح کیا اور مسح کے بعد ہاتھ پر جو تری رہ گئی تھی

اُس سے موزے پر مسح کیا تو جائز نہیں کیونکہ اس نے مستعمل تری سے موزے پر مسح کیا ہے، بخلافِ اول کے اھ فتح و خانیہ میں اسی کو برقرار رکھا، پھر استیعابِ مسح میں سنت ہے، اور استیعاب کا طریقہ یہ ہے کہ اپنی انگلیاں ماتھے پر رکھے اور ہتھیلیاں کنپٹیوں پر اور گدی کی طرف کھینچ کر لے جائے تو جائز ہے، اور بعض دوسرے فقہاء نے اور طریقہ بتایا کہ مستعمل پانی کے استعمال سے بچا جاسکے، مگر اس میں بہت تکلف اور مشقت ہے، تو پہلی صورت جائز ہے اور پانی مستعمل نہ ہو گا تاکہ سنت ادا ہو سکے اھ یعنی جب یہ بات معلوم ہو گئی کہ پانی جب تک عضو پر باقی

1 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵ 2 الدر المختار ارکان الوضوء ۱/ ۱۹ 3 فتاوی خانیہ مسح علی الخفین ۱/ ۲۳ 4 خانیہ علی الہندیہ فصل صفۃ الوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۵

Fatawa-e-Razawiyyah Volume 2

(Arabic Text): It is permissible according to Zufar, and according to us, it is not permissible. They reasoned that the moisture became 'Musta'mal' (used). This is problematic because water does not become 'Musta'mal' before separation. It was said that the original rule is that use is established upon contact itself, but it was waived for washed limbs due to the necessary hardship of ensuring every part is touched by flowing water over other parts. There is no such hardship in wiping (Masah) because it occurs by mere contact, so it remains according to the original rule. This was rebutted by saying it contradicts what was reasoned for Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) concerning entering the head into a vessel; water remains pure according to him. They said wiping occurred by contact, and water only takes the ruling of 'used' after separation, and what touched it has not left the limb. Some later scholars shifted to reasoning by the necessity of separation of the finger's moisture through drawing it, so it becomes 'used' because of that. In short, reports on this matter are many and well-known in books. Although this servant has extensive research on the finger issue, the point of the vessel issue is not what is imagined but what we just quoted from al-Fath. He mentioned it in another place saying: water is not given the ruling of 'used' except after separation; what met the head adhered to it and purified it, and the rest did not meet it, so it is not 'used'. So the meaning of their saying is that water does not become...

(Urdu Text): ...stay, it does not become 'Musta'mal'. And in 'Fath' it says: whoever wiped his head or even with one finger, pulling it to the extent of the obligatory amount, it is permissible according to Zufar and not permissible according to us. The reason given is that the moisture became 'used'. However, the objection to this is that water does not become 'Musta'mal' without separating from the limb. One opinion is that the principle is indeed that water becomes 'Musta'mal' as soon as it touches the limb, but in washed limbs, this was not considered due to hardship; otherwise, water from one part of the limb would make the other part impure. In wiping (Masah), this situation does not exist because there is no flowing, just applying. So, the original principle was relied upon. In response to this objection, it was said that what Imam Abu Yusuf stated regarding entering the head into a vessel contradicts this view because, according to him, water is purifying. He says that by applying water, 'Masah' is done, and since water becomes 'used' after separating from the limb and it does not separate in 'Masah', it will not be 'Musta'mal'. Until some later scholars chose this reasoning instead of that one: that the moisture of the finger separated in such a

way that it was drawn, so now this water will become 'Musta'mal'. Ah. In summary, there are many reports in this chapter found in famous books, and...

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Kitab al-Taharah, Nooria Razawiyyah, Sukkur, 1/16 2. Fath al-Qadir, Kitab al-Taharah, Nooria Razawiyyah, Sukkur, 1/17

(अरबी पाठ): ज़ुफ़र के अनुसार यह जायज़ है, और हमारे अनुसार जायज़ नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि नमी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो गई। यह समस्यात्मक है क्योंकि पानी अलग होने से पहले मुस्तअमल नहीं होता है। यह कहा गया कि मूल नियम यह है कि संपर्क मात्र से ही इस्तेमाल स्थापित हो जाता है, लेकिन धुले हुए अंगों के मामले में इसे कठिनाई (हरज) के कारण छोड़ दिया गया, क्योंकि एक हिस्से पर बहते हुए पानी को दूसरे हिस्से तक पहुँचाने की मजबूरी होती है। मसह (पोंछने) में ऐसी कोई कठिनाई नहीं है क्योंकि यह केवल संपर्क से होता है, इसलिए यह मूल नियम पर ही रहता है। इसका खंडन यह कह कर किया गया कि यह इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) के बर्तन में सिर डालने वाले मामले के तर्क के विपरीत है; उनके अनुसार पानी पाक (शुद्ध) रहता है। उन्होंने कहा कि मसह संपर्क से हुआ, और पानी अलग होने के बाद ही 'मुस्तअमल' का हुक्म लेता है, और जो हिस्सा लगा है उसने अंग को नहीं छोड़ा। कुछ बाद के विद्वानों ने इस तर्क को अपनाया कि उंगली की नमी खींचने की वजह से अलग हो गई, इसलिए उस कारण से वह मुस्तअमल हो गया। संक्षेप में, इस विषय पर रिपोर्टें किताबों में बहुत और प्रसिद्ध हैं। हालाँकि इस बंदे के पास उंगली के मामले में व्यापक शोध है, लेकिन बर्तन के मसले का पहलू वह नहीं है जो कल्पना की जाती है, बल्कि वह है जो हमने अभी 'फ़तह' से उद्धृत किया है। उन्होंने इसे एक अन्य स्थान पर यह कहते हुए उल्लेख किया है: पानी को अलग होने तक मुस्तअमल का हुक्म नहीं दिया जाता है; जो हिस्सा सिर से मिला वह उससे चिपक गया और उसे पाक कर दिया, और बाकी उससे नहीं मिला, इसलिए वह मुस्तअमल नहीं है। अतः उनके कहने का अर्थ यह है कि पानी नहीं बनता...

(उर्दू पाठ): ...रहता है, मुस्तअमल नहीं होता है। और 'फ़तह' में है कि जिसने सिर का मसह किया या भले ही एक उंगली से मसह किया कि उसे फ़र्ज़ की मात्रा तक खींचा, तो ज़ुफ़र के नज़दीक जायज़ है और हमारे नज़दीक जायज़ नहीं है। इसकी वजह यह बताई गई है कि नमी मुस्तअमल हो गई। मगर इस पर आपत्ति यह है कि पानी अंग से अलग हुए बिना मुस्तअमल नहीं होता है। एक राय यह है कि मूल नियम तो यही है कि पानी अंग से लगते ही मुस्तअमल हो जाए, मगर धुले हुए अंगों में इसे कठिनाई की वजह से मान्य नहीं माना गया है, अन्यथा अंग के एक हिस्से का पानी दूसरे हिस्से को नापाक कर देता। और मसह में यह स्थिति नहीं है क्योंकि इसमें बहाना नहीं है, केवल लगाना है। इसलिए इसमें मूल नियम पर भरोसा किया गया। इस आपत्ति के उत्तर में कहा गया कि इमाम अबू यूसुफ़ ने सिर को बर्तन में डालने के बारे में जो कहा है, यह बात उसके विरुद्ध है क्योंकि उनके

नज़दीक पानी शुद्ध करने वाला है। वह फ़रमाते हैं कि पानी लगाने से मसह तो हो गया और चूंकि पानी अंग से अलग होने के बाद मुस्तअमल होता है और मसह में अलग नहीं होता, इसलिए मुस्तअमल भी न होगा। यहाँ तक कि कुछ बाद के विद्वानों ने उस दलील के बजाय यह दलील अपनाई कि उंगली की नमी इस तरह अलग हुई कि उसे खींचा गया, तो अब यह पानी मुस्तअमल हो जाएगा। सारांश: इस अध्याय में बहुत सी रिवायतें मौजूद हैं जो प्रसिद्ध पुस्तकों में पाई जाती हैं, और...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/16 2. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/17

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(عربی عبارت کا ترجمہ): امام زفر کے نزدیک جائز ہے اور ہمارے نزدیک جائز نہیں اور انہوں نے اس کی وجہ یہ بیان کی کہ تری مستعمل ہوگئی اور یہ (استدلال) مشکل ہے اس لیے کہ پانی جدا ہونے سے پہلے مستعمل نہیں ہوتا۔ اور یہ جو کہا گیا کہ اصل تو ملاقات (چھونے) سے ہی استعمال کا ثابت ہونا ہے لیکن یہ دھونے والے اعضاء میں لازم آنے والے حرج کی وجہ سے ساقط ہوگیا کیونکہ ہر حصے پر پانی بہانا ضروری ہے جس کی وجہ سے ایک حصہ دوسرے کو ملوث کر سکتا ہے۔ اور مسح میں کوئی حرج نہیں کیونکہ وہ صرف لگنے سے حاصل ہوجاتا ہے تو وہ اپنی اصل پر رہا۔ اس کا رد اس بات سے کیا گیا کہ یہ امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے سر کو برتن میں داخل کرنے کے مسئلے میں دی گئی علت کے متناقض ہے کیونکہ ان کے نزدیک پانی پاک رہتا ہے۔ تو انہوں نے کہا کہ مسح چھونے سے حاصل ہوا اور پانی جدا ہونے کے بعد ہی مستعمل کا حکم لیتا ہے اور جو حصہ عضو پر لگا اس نے عضو کو نہیں چھوڑا یہاں تک کہ بعض متاخرین نے اس علت کی طرف رجوع کیا کہ کھینچنے کی وجہ سے انگلی کی تری جدا ہوئی تو اس وجہ سے وہ مستعمل ہوجائے گی اھ خلاصہ کلام یہ کہ اس باب میں نقول بکثرت اور کتابوں میں مشہور ہیں اگرچہ اس بندے کے پاس انگلی کے مسئلے میں کثیر ابحاث ہیں، تو برتن کے مسئلے کی وہ صورت نہیں جو وہم کیا جاتا ہے بلکہ وہ ہے جو ہم نے ابھی 'فتح' سے نقل کیا اور انہوں نے اسے دوسری جگہ ان الفاظ میں ذکر کیا کہ پانی کو جدا ہونے سے پہلے مستعمل کا حکم نہیں دیا جاتا اور جو حصہ سر سے ملا وہ اس سے چپک گیا پس اس نے اسے پاک کردیا اور دوسرا حصہ اس سے نہیں ملا پس وہ مستعمل نہیں ہوا اھ تو ان کے قول کا معنی یہ ہے کہ پانی نہیں بنتا۔۔۔

(اصل اردو متن): رہتا ہے مستعمل نہیں ہوتا ہے۔ اور فتح میں ہے جس نے سر کا مسح کیا یا اگرچہ ایک انگلی سے مسح کیا کہ اس کو بقدر فرض کھینچا، تو زفر کے نزدیک جائز ہے اور ہمارے نزدیک جائز نہیں اس کی وجہ یہ بتائی ہے کہ تری مستعمل ہو گئی، مگر اس پر اعتراض یہ ہے کہ پانی عضو سے جدا ہوئے بغیر مستعمل نہیں ہوتا ہے، ایک قول یہ ہے کہ اصل تو یہی ہے کہ پانی عضو سے لگتے ہی مستعمل ہو جائے مگر اعضاء مغسولہ میں اس کو حرج کی وجہ سے معتبر نہیں مانا گیا ہے ورنہ تو عضو کے ایک حصہ کا پانی دوسرے حصہ کو ناپاک کردیتا، اور مسح میں یہ صورت حال نہیں ہے کیونکہ اس میں بہانا نہیں ہے محض لگانا ہے تو اس میں اصل پر اعتبار کیا گیا۔ اس اعتراض کے جواب میں کہا گیا ہے کہ امام ابو یوسف نے سر کو برتن میں داخل کرنے کی بابت جو ارشاد فرمایا ہے یہ قول اس کے برخلاف ہے کیونکہ پانی اُن کے نزدیک پاک کرنے والا ہے، وہ فرماتے ہیں پانی لگانے سے مسح تو ہو گیا اور چونکہ پانی عضو سے جدا ہونے کے بعد مستعمل ہوتا ہے اور مسح میں جدا نہیں ہوتا اس لئے مستعمل بھی نہ ہوگا حتی کہ بعض متاخرین نے بجائے اس دلیل کے یہ دلیل اختیار کی ہے کہ انگلی کی تری اس طرح جُدا ہوئی کہ اس کو کھینچا گیا تو اب یہ پانی مستعمل ہو جائے گا۔ اھ خلاصہ یہ کہ اس باب میں نقول بہت موجود ہیں جو مشہور کتب میں پائی جاتی ہیں، اور

حواشی: 1. فتح القدیر کتاب الطہارت نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۶ 2. فتح القدیر کتاب الطہارت نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۷

Fatawa Razawiya Volume Two

(Arabic Text Translation:) "Used water" (*Mustamalan*) means what remains in the vessel. This is what is meant by the statement in Al-Khaniya regarding Imam Abu Yusuf: "The water only becomes used (literally: takes the ruling of impurity in context of use) in what is washed, not in what is wiped," i.e., the water in the vessel by introducing into it that whose function is washing rather than wiping. Thus, the confusion is removed, and the claim is substantiated. I say: (1) Even if their restriction of contact to what adhered to the head is considered, it appears problematic. This was likely the intent of the researcher (*Al-Muhaqqiq*) when he said after mentioning it, "and in it is room for consideration (nadhar)." I say: It appears to me that the course of this issue is like the issue of disagreement regarding the thing thrown and the thing it met. Correcting this, or rather correcting the agreement in it, perhaps gives weight to the absence of difference, unless a distinction is made between washing and wiping. Thus, all the water does not become legally "used" by consensus, unlike washing, which requires a specific reason. So let one reflect. And Allah Almighty knows best. Warning: Know that the researcher in *Al-Fath* left the issue of the passing finger unexplained. He mentioned three justifications for it and refuted them all. The first is the justification by usage, and you have already known its refutation and what...

(Urdu Text Translation:) This humble person holds deep discussions on the issue of the finger. The reason for the vessel issue is not what some people imagined, but rather it is what we have just quoted from *Fath* (al-Qadir). They explained it elsewhere stating that the water will only be judged as 'used' (*mustamal*) when it separates from the limb. The parts of the water that touched the head stick to it, purify it, and do not touch any part other than the head, so it does not become *mustamal*. So, what the jurists said about the water not becoming *mustamal* means as long as it remains in the vessel. And what *Al-Khaniya* quoted from Imam Abu Yusuf—that water becomes *mustamal* on limbs that are washed, not those that are wiped—their intent is that the water in the vessel will become *mustamal* due to the insertion of limbs that are washed, not those that are wiped. Thus, the illusion was removed, and this was the intended meaning. (T) I say: It appears to me that the solution to the problem depends on the difference between the thing that meets and the thing met. The jurists' correction of restricting the meeting to the head is seemingly questionable, and perhaps this is what the researcher meant because after mentioning it, he said, "and in it is room for consideration." (T) Rather, by correcting the agreement in it,

preference is given to the lack of difference. Yes, if a distinction is made between washing and wiping, then it is a different matter; in that case, all the water will not be considered *mustamal* by consensus, unlike washing. This requires a proof. So let one reflect, and Allah Almighty knows best. (T) (Warning): The issue of the finger that passed, the researcher did not clarify it in *Fath*. He stated three justifications and rejected all three. The first justification relates to usage, and you have already known its rejection, and its...

---

1. Fath al-Qadir, Book of Purification, 1/17 Page 105 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

(अरबी पाठ का अनुवाद:) 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) का अर्थ वह है जो बर्तन में शेष रहता है। इमाम अबू यूसुफ के बारे में अल-खनिया के इस कथन का यही अर्थ है: "पानी केवल उसमें प्रयुक्त माना जाता है जिसे धोया जाता है, न कि जिसे पोंछा जाता है," यानी बर्तन का पानी उसमें धोने के कार्य के लिए अंग डालने से प्रयुक्त होगा, न कि मसह (पोंछने) से। इस प्रकार भ्रम दूर हो गया और दावा सिद्ध हो गया। मैं कहता हूँ: (1) यदि सिर से चिपके हुए हिस्से तक संपर्क को सीमित करने पर विचार किया जाए, तो यह स्पष्ट रूप से विचारणीय है। संभवतः शोधकर्ता (मुहक़्क़िक) का भी यही आशय था जब उन्होंने इसका उल्लेख करने के बाद कहा, "और इसमें विचार की गुंजाइश है।" मैं कहता हूँ: मुझे लगता है कि इस मसले की राह उस मसले की तरह है जिसमें डाली गई चीज़ और जिससे वह मिली, उसके बीच मतभेद है। इसे सही करना, या यों कहें कि इसमें सहमति को सही करना, शायद अंतर न होने को प्राथमिकता देता है, जब तक कि धोने और पोंछने के बीच अंतर न किया जाए। इस प्रकार, सर्वसम्मति से सारा पानी कानूनी रूप से 'मुस्तअमल' नहीं होता, जबकि धोने के विपरीत, जिसके लिए विशेष आधार की आवश्यकता होती है। अतः इस पर विचार किया जाना चाहिए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। चेतावनी: जान लें कि शोधकर्ता ने अल-फ़तह में उँगली गुज़ारने के मसले को बिना स्पष्ट किए छोड़ दिया है। उन्होंने इसके लिए तीन दलीलें दीं और तीनों को खारिज कर दिया। पहली दलील 'इस्तेमाल' से संबंधित है, और आप पहले ही इसका खंडन जान चुके हैं और जो...

(उर्दू पाठ का अनुवाद:) इस तुच्छ व्यक्ति की उँगली के मसले पर बहुत गहरी बहसें हैं। बर्तन के मसले का कारण वह नहीं है जो कुछ लोगों के वहम में आया है, बल्कि वह है जो हमने अभी 'फ़तह' से उद्धृत किया है। उन्होंने इसे दूसरी जगह इस तरह बयान किया है कि पानी को 'मुस्तअमल' होने का हुक्म उसी समय मिलेगा जब वह अंग से अलग हो जाए। पानी के जो हिस्से सिर के संपर्क में आए, वे उसी में चिपक जाते हैं, उसे पाक कर देते हैं, और सिर के अलावा किसी और हिस्से पर नहीं लगते, तो वह 'मुस्तअमल' नहीं हुआ। तो फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने जो कहा है कि पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा, उसका मतलब यह है कि जब तक वह बर्तन में रहे। और 'खनिया' ने इमाम अबू यूसुफ से जो नक़्ल किया है कि पानी उन अंगों में 'मुस्तअमल' होता है जिन्हें धोया जाता है, न कि उनमें जिनका मसह किया जाता है, तो उनका मतलब यह है कि बर्तन का पानी उन अंगों को डालने के कारण 'मुस्तअमल' होगा जो 'मग़सूला' (धोने योग्य) हैं, न कि 'ममसूहा' (मसह योग्य)। तो वहम दूर हो गया

और यही उद्देश्य था। (त) मैं कहता हूँ और मुझे लगता है कि मसले का समाधान मिलने वाली चीज़ और जिससे वह मिली है, उसके बीच के अंतर पर आधारित है। फ़ुक़हा ने मिलने को जो सिर के साथ विशेष कर दिया है, उसमें ज़ाहिर तौर पर संशय है, और शायद मुहक़्क़िक़ की मुराद यही है क्योंकि उन्होंने इसके ज़िक्र के बाद फ़रमाया: "वफ़ीहि नज़र" (इसमें विचार की गुंजाइश है)। (त) बल्कि इसमें इत्तिफ़ाक़ी (सहमति) की तसहीह (सुधार) से अंतर न होने को प्राथमिकता प्राप्त होती है। हाँ, अगर ग़ुस्ल (धोने) और मसह (पोंछने) में ही फ़र्क़ कर लिया जाए, तो बात और है। तो उससे तमाम पानी हुक्मन (क़ानूनी रूप से) मुस्तअमल न होगा बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से), बरअक्स ग़ुस्ल के। और यह दलील का मोहताज है, फली-तदब्बर (अतः विचार करें)। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। त (तन्बीह): उँगली का मसला जो गुज़रा, उसे मुहक़्क़िक़ ने 'फ़तह' में स्पष्ट नहीं किया। तीन दलीलें बयान कीं और तीनों को रद कर दिया। पहली दलील इस्तेमाल से संबंधित है और इसका रद तुम जान चुके हो, और उसकी...

---

1. फ़तह अल-क़दीर, किताबुत्-तहारत 1/17 पेज 105 of 711

مستعملا ای مابقی فی الاناء وھو المراد بقول الخانیۃ عن الامام ابی یوسف انما یتنجس الماء فیما یغسل لا مایمسح ای ماء الاناء بادخال ما وظیفۃ الغسل دون المسح فزال الوھم وفیہ المدعی۔ اقول: (۱) وان کان فی قصرھم اللقاء علی مالصق بالرأس تأمل ظاھر وکان ھذا ھو مراد المحقق اذقال بعد ذکرہ وفیہ نظر ۱ھ۔ اقول: ویظھر لی ان سبیل المسألۃ سبیل الخلف فی الملقی والملاقی وتصحیح ھذہ بل تصحیح الوفاق فیھا ربما یعطی ترجیح عدم الفرق الا ان یفرق بین الغسل والمسح فلا یصیر بہ کل الماء مستعملا حکما بالاتفاق بخلاف الغسل ویحتاج لوجہ فلیتدبر واللہ تعالی اعلم۔ تنبیہ: اعلم ان مسألۃ الاصبع المارۃ ترکھا المحقق فی الفتح غیر مبینۃ ذکرلہ ثلث تعلیلات وردالجمیع فالاول التعلیل بالاستعمال وقد علمت ردہ وما

ناچیز انگلی کے مسئلہ پر بڑی گہری ابحاث رکھتا ہے، برتن کے مسئلہ کی وجہ وہ نہیں جو بعض حضرات کے وہم میں آئی ہے بلکہ وہ ہے جو ہم نے ابھی فتح سے نقل کی ہے اور اسی کو انہوں نے دوسرے مقام پر اس طرح بیان کیا ہے کہ پانی کو مستعمل ہونے کا حکم اُسی وقت ملے گا جب وہ عضو سے جدا ہو اور پانی کے جو اجزاء سر سے متصل ہوئے وہ اسی میں چپک جاتے ہیں اور اس کو پاک کر دیتے ہیں اور سر کے علاوہ کسی اور حصے پر نہیں لگتے ہیں تو مستعمل نہ ہوا ھ۔ تو فقہاء نے جو فرمایا ہے کہ پانی مستعمل نہ ہوگا اس کا مطلب یہ ہے کہ جب تک برتن میں رہے، اور خانیہ نے امام ابو یوسف سے جو نقل کیا ہے کہ پانی اُن اعضاء میں مستعمل ہوتا ہے جو دھوئے جاتے ہیں نہ کہ اُن میں جو مسح کیے جاتے ہیں، تو اس سے ان کی مراد یہ ہے کہ برتن کا پانی اُن اعضاء کے داخل کرنے کی وجہ سے مستعمل ہوگا جو مغسولہ ہیں نہ کہ ممسوحہ تو وہم رفع ہوا اور یہی مقصود تھا۔ (ت) میں کہتا ہوں میں کہتا ہوں اور مجھے معلوم ہوتا ہے کہ مسئلہ کا

حل ملنے والی شے اور جس سے ملی ہے اس میں اختلاف پر مبنی ہے، اور اس کی تصحیح فقہاء نے ملنے کو جو سر کے ساتھ مختص کر دیا ہے اس میں بظاہر تامل ہے، اور غالباً محقق کی مراد یہی ہے کیونکہ انہوں نے اس کے ذکر کے بعد فرمایا: وفیه نظر۔ (ت) بلکہ اس میں اتفاقی کی تصحیح سے عدم فرق کو ترجیح حاصل ہوتی ہے، ہاں اگر غسل اور مسح میں ہی فرق کر لیا جائے تو بات اور ہے، تو اُس سے تمام پانی حکماً مستعمل نہ ہوگا بالاتفاق بخلاف غسل کے، اور یہ دلیل کا محتاج ہے فلیتدبر واللہ تعالٰی اعلم۔ ت (تنبیہ): انگلی کا مسئلہ جو گزرا اس کو محقق نے فتح میں واضح نہیں کیا تین تعلیلات بیان کیں اور تینوں کو رَد کر دیا، پہلی تعلیل استعمال سے متعلق ہے اور اس کا رد تم معلوم کر چکے ہو، اور اس کی

---

1 فتح القدیر کتاب الطہارۃ 17/1 Page 105 of 711

Fatawa Razawiyya Volume II

Some of the later scholars attempted to rectify this, but they rejected both the rectification and the original point as faulty. They stated that this implies that drawing two fingers across the head during ablution is not permissible, a point explicitly confirmed by the jurists. Similarly, according to the opinion that requires wiping a quarter of the head, drawing three fingers should also not be permissible. This is the stance of Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them). However, [the author of al-Nahr] says: "I have not seen anything regarding the drawing of three fingers except its permissibility (Ah)."

This was contested in 'al-Nahr' by quoting from 'al-Bada'i': "If three fingers are placed on the head but not drawn, it is permissible according to the narration requiring three fingers, but not according to the narration requiring a quarter. If he wipes with his fingers held upright, without placing them flat and without drawing them, it is not permissible. (2) If he draws them until the obligatory amount is covered, it is still not permissible according to our three leading scholars, in contrast to Imam Zufar (Ah)."

He further stated: "I have encountered the transmitted rulings, which confirm that non-permissibility is the unanimous verdict of our three Imams. Thus, how can 'Al-Muhaqqiq' claim he has seen only permissibility? It is quite surprising coming from a scholar of his stature, as pointed out in 'al-Minha'. This is because the pronoun in the phrase 'drawing it' (madha) refers to fingers held upright, whereas the discussion in 'al-Fath' pertains to fingers placed flat."

I say: It appears that 'al-Nahr' observed four possible scenarios: three fingers either placed flat or held upright, and in both cases, either drawn or not drawn. 'al-Bada'i' first mentions the two scenarios where the fingers are not drawn, then says: "if he draws them." Therefore, the pronoun should refer to "three fingers" generally, whether they were placed flat...

---

1. Fath al-Qadir, Book of Purification, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/16
2. Bada'i al-Sana'i, Section on Wiping the Head, HM Saeed Company Karachi, 1/15

बाद के कुछ विद्वानों ने इसे सुधारने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने सुधार और मूल बिंदु दोनों को ही दोषपूर्ण बताते हुए अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि इससे यह पता चलता है कि वज़ू के दौरान सिर पर दो उंगलियाँ फेरना जायज़ नहीं है, जिसकी पुष्टि न्यायविदों ने स्पष्ट रूप से की है। इसी तरह, चौथाई सिर के मसह की अनिवार्यता के मत के अनुसार, तीन उंगलियाँ फेरना भी जायज़ नहीं होना चाहिए। यह इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) का रुख है। हालाँकि, [अल-नहर के लेखक] कहते हैं: "मैंने तीन उंगलियों को फेरने के संबंध में केवल अनुमति (जवाज़) के अलावा कुछ नहीं देखा है (अह)।"

'अल-नहर' में 'अल-बदाए' से उद्धृत करते हुए इसका विरोध किया गया: "यदि सिर पर तीन उंगलियाँ रखी जाएँ लेकिन फेरी न जाएँ तो तीन उंगलियों वाली रिवायत के अनुसार यह जायज़ है, लेकिन चौथाई वाली रिवायत के अनुसार नहीं। यदि वह अपनी उंगलियों को खड़ा रखकर मसह करता है, उन्हें सपाट रखे और फेरे बिना, तो यह जायज़ नहीं है। (2) यदि वह उन्हें तब तक फेरता है जब तक कि अनिवार्य मात्रा पूरी न हो जाए, तब भी हमारे तीनों प्रमुख विद्वानों के अनुसार यह जायज़ नहीं है, इमाम ज़फ़र के विपरीत (अह)।"

उन्होंने आगे कहा: "मुझे वे उल्लेख मिले हैं जो पुष्टि करते हैं कि अनुमति न होना हमारे तीनों इमामों का सर्वसम्मत निर्णय है। तो 'अल-मुहक़्क़िक़' यह कैसे दावा कर सकते हैं कि उन्होंने केवल अनुमति ही देखी है? उनके जैसे कद के विद्वान से यह काफी आश्चर्यजनक है, जैसा कि 'अल-मिन्हा' में बताया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'मदहा' (उसे फेरना) वाक्यांश में सर्वनाम खड़ी उंगलियों को संदर्भित करता है, जबकि 'अल-फ़तह' में चर्चा सपाट रखी गई उंगलियों के बारे में है।"

मैं कहता हूँ: ऐसा प्रतीत होता है कि 'अल-नहर' ने चार संभावित स्थितियों को देखा: तीन उंगलियां या तो सपाट रखी गई हों या खड़ी, और दोनों ही मामलों में, या तो फेरी गई हों या नहीं। 'अल-बदाए' में पहले उन दो स्थितियों का उल्लेख है जहाँ उंगलियाँ फेरी नहीं जाती हैं, फिर कहता है: "यदि वह उन्हें फेरता है।" इसलिए, सर्वनाम सामान्य रूप से "तीन उंगलियों" को संदर्भित करना चाहिए, चाहे वे सपाट रखी गई हों...

---

1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/16

2. बदाए अल-सनाए, मसह अल-रास का खंड, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/15

पेज 106/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

عدل الیه بعض المتأخرین لاصلاحه فرده والاول معاباً ان هذا کله یستلزم (۱) ان مد اصبعین لایجوز وقد صرحوا به وکذا الثلاث علی القول بالربع وهو قول ابی حنیفة وابی یوسف رحمهما الله تعالی ولکن لم ار فی مد الثلاث الا الجواز ۱ ھ اصلاح میں بعض متاخرین نے جو فرمایا ہے اس کو اور پہلے کو ساتھ ہی انہوں نے رَد کیا ہے، اور فرمایا ہے کہ اس سے لازم آتا ہے کہ دو انگلیوں کا کھینچنا جائز نہ ہو، اور اس کی فقہاء نے تصریح کی ہے اور چوتھائی کے قول پر تین کا کھینچنا جائز نہ ہو، اور یہ ابو حنیفہ اور ابو یوسف کا قول ہے، لیکن تین کے کھینچنے میں مجھے جواز ہی ملا ہے اھ

واعترضه فی النهر بقول البدائع لو وضع ثلثة اصابع ولم یمدها جاز علی روایة الثلاث لا الربع ولو مسح بها منصوبة غیر موضوعة ولا ممدودة فلا (۲) فلو مدها حتی بلغ القدر المفروض لم یجز عند علمائنا الثلثة خلافا لزفر ۲ ھ اور نہر میں اس پر اعتراض کیا اور بدائع کا یہ قول ذکر کیا ہے کہ اگر تین انگلیاں رکھیں اور ان کو کھینچنا نہیں تو تین کی روایت پر جائز ہے نہ کہ چوتھائی کی روایت پر، اور اگر کھڑی انگلیوں سے مسح کیا، ان کو نہ تو رکھا نہ کھینچنا تو جائز نہیں، اور اگر اتنا کھینچا کہ فرض مقدار پوری ہو گئی تو ہمارے تینوں علماء کے نزدیک جائز نہ ہو گا امام زفر کا اس میں اختلاف ہے اھ

قال وقد وقفت علی المنقول ای ان عدم الجواز قول ائمتنا الثلثة فکیف یقول المحقق لم ارفیه الا الجواز وهو عجیب من مثله کما نبه علیه في المنحة فان الضمیر فی مدها للمنصوبة وکلام الفتح فی الموضوعة۔ انہوں نے فرمایا کہ میں منقول پر مطلع ہوا ہوں، یعنی عدمِ جواز ہمارے تینوں ائمہ کا

قول ہے، تو محقق کا یہ قول کیونکر درست ہو گا کہ میں نے صرف جواز ہی دیکھا ہے، اور اُن جیسے شخص سے یہ بڑے تعجب کی بات ہے، منحہ میں اسی پر تنبیہ کی ہے کیونکہ "مدھا" میں ھا کی ضمیر "منصوبہ" کیلئے ہے اور فتح کا کلام "موضوعہ" کیلئے ہے۔ ت

اقول: کان النھر نظر ای ان الصور اربع ثلاث اصابع موضوعة او منصوبة والکل ممدودة اولا وقد ذکر فی البدائع اولا صورتی عدم المد ثم قال فلو مدھا فلیکن الضمیر الی ثلث اصابع مطلقة موضوعة۔

میں کہتا ہوں غالباً نہر نے دیکھا کہ صورتیں چار ہیں، تین انگلیاں رکھی ہوئیں یا کھڑی اور سب کھینچی ہوئی یا نہیں، اور بدائع میں پہلے نہ کھینچنے کی دو صورتیں ذکر کی ہیں، پھر کہا کہ "فلو مدھا" تو اس میں ضمیر "ثلث اصابع" کی طرف ہونی چاہئے خواہ وہ رکھی...

---

۱ فتح القدیر کتاب الطہارت نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۱۶ ۲ بدائع الصنائع مطلب مسح الراس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵

Fatawa Razawiyya - Volume Two

[Arabic Text Block]: Or standing up (fingers), so that his words encompass all forms. But the reality is that he claims to have obtained the transmission (of the ruling), so the possibility of the pronoun returning to 'standing up' will be harmful to him, especially since it is the closest reference. Kashf al-Murad in Al-Hilyah clarified the objective where it says: "Secondary rulings: If someone performs mash (wiping) with three standing fingers, it is not permissible. Even if he drags them until they reach the prescribed area, it is not permissible according to our three leading scholars. If he places them and does not drag them, it is not permissible according to the narration of the quarter head. This is mentioned in At-Tuhfah, Al-Muhit, and Al-Badai'." I say: Regarding what some later scholars turned to, I do not find it productive. If the intention was separation from the finger, it does not provide the benefit of 'use' (water becoming used/musta'mal) because the finger is the tool. What is beneficial is separation from the site or from the head entirely, so it is a manifest error. Or (if it meant) separation from the specific spot the finger touched, then yes, but it does not satisfy the need. Rather, it would be similar to what was turned away from regarding the ruling of 'use' occurring while the water is still moving on the limb itself without separating from it, and that is false. Inevitably, it is explicitly stated in Al-Khulasa and then Al-Bahr regarding when one wipes with the tips of their fingers and drags them until they reach the prescribed area, it is permissible whether the water drips or not. They both said it is the correct view. Shaykh Isma'il said similarly in Al-Waqi'at.

[Urdu Text Block]: ...whether they be (flat) or upright, so that his words encompass all scenarios. But they claim to have succeeded in obtaining the transmission, so the possibility of the pronoun returning to 'upright' (fingers) will be detrimental for them, and furthermore, it is the nearest reference. In Al-Hilyah, the meaning is clarified; it says: "Secondary rulings: If someone wipes with three upright fingers, it is not permissible. And if he drags them such that they reach the required amount, it is still not permissible according to our three scholars. And if he places the fingers but does not drag them, it is not permissible according to the narration of the quarter head. This is mentioned in At-Tuhfah, Al-Muhit, and Al-Badai'." I say: I do not perceive any benefit in what some later scholars have turned towards. If their intention is separation from the finger, then the benefit of 'use' (water becoming musta'mal) will not be achieved because the finger is the tool. For it to be useful, it must separate from the specific site or from the whole head. Thus, this is a manifest error. Or (if it

means separation) from the place where the finger touched, then yes, but there is no benefit in it; rather, it will be an example of the very thing that was turned away from to judge the occurrence of 'use', whereas the water is still moving on the limb and has not separated from it, which is false. Then, in Al-Khulasa and Al-Bahr, it is explicitly stated that if a person wipes with the tips of their fingers and drags them until they reach the place of obligation, it is permissible whether the water drips or not. It is in both (books).

1. Badai' al-Sanai', Topic: Wiping of the Head, Sa'id Company Karachi, 1/5
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, Sa'id Company Karachi, 1/15 Page 107 of 711

[अरबी पाठ]: या 'मनसूबा' (खड़ी उंगलियाँ), ताकि उनके शब्द सभी रूपों को समाहित करें। लेकिन वास्तविकता यह है कि वह प्रसारण प्राप्त करने का दावा करते हैं, इसलिए सर्वनाम के'मनसूबा' की ओर लौटने की संभावना उनके लिए हानिकारक होगी, विशेष रूप से चूंकि यह सबसे निकटतम संदर्भ है। अल-हिलिया में कश्फ़ अल-मुराद ने इस उद्देश्य को स्पष्ट किया है जहाँ वह कहते हैं: "गौण नियम: यदि कोई तीन खड़ी उंगलियों से मसह (पोंछना) करता है, तो यह जायज़ नहीं है। भले ही वह उन्हें तब तक खींचे जब तक वे निर्धारित क्षेत्र तक न पहुँच जाएँ, हमारे तीन प्रमुख विद्वानों के अनुसार यह जायज़ नहीं है। यदि वह उन्हें रखता है लेकिन खींचता नहीं है, तो एक चौथाई सिर के वर्णन के अनुसार यह जायज़ नहीं है। इसका उल्लेख अत-तुहफ़ा, अल-मुहीत और अल-बदाई में किया गया है।" मैं कहता हूँ: कुछ बाद के विद्वानों ने जिस ओर रुख किया है, मुझे वह उपयोगी नहीं लगता। यदि इरादा उंगली से अलग होना था, तो यह 'उपयोग' (पानी का मुस्तअमल होना) का लाभ नहीं देता क्योंकि उंगली उपकरण है। जो लाभदायक है वह स्थान से या पूरे सिर से अलग होना है, इसलिए यह एक स्पष्ट त्रुटि है। या (यदि उनका मतलब था) उस विशिष्ट स्थान से अलग होना जहाँ उंगली ने छुआ था, तो हाँ, लेकिन यह आवश्यकता को पूरा नहीं करता। बल्कि, यह उसी चीज़ के समान होगा जिससे 'उपयोग' होने के नियम के लिए मुँह मोड़ा गया था, जबकि पानी अभी भी अंग पर ही घूम रहा है और उससे अलग नहीं हुआ है, और वह गलत है। अनिवार्य रूप से, अल-खुलासा और फिर अल-बहर में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जब कोई अपनी उंगलियों के पोरों से मसह करता है और उन्हें तब तक खींचता है जब तक वे निर्धारित क्षेत्र तक नहीं पहुँच जाते, तो यह जायज़ है चाहे पानी टपके या न टपके। उन दोनों ने कहा कि यही सही मत है। शेख इस्माइल ने अल-वाकियात में भी ऐसा ही कहा है।

[उर्दू पाठ]: ...चाहे वे (समतल) हों या खड़ी, ताकि उनकी बात सभी स्थितियों को घेरे। लेकिन वे दावा करते हैं कि वे प्रसारण प्राप्त करने में सफल रहे हैं, इसलिए सर्वनाम के'खड़ी' (उंगलियों) की ओर लौटने की संभावना उनके लिए हानिकारक होगी, और इसके अलावा, यह निकटतम संदर्भ है। अल-हिलिया में अर्थ स्पष्ट किया गया है; यह कहता है: "गौण नियम: यदि कोई तीन खड़ी उंगलियों से मसह करता है, तो यह जायज़ नहीं है। और यदि वह उन्हें इतना खींचता है कि वे आवश्यक मात्रा तक पहुँच जाएँ तो भी हमारे तीन विद्वानों के अनुसार यह जायज़ नहीं है। और यदि वह उंगलियों को रखता है लेकिन खींचता नहीं है, तो चौथाई सिर के वर्णन के अनुसार यह जायज़ नहीं है। इसका

उल्लेख अत-तुहफ़ा, अल-मुहीत और अल-बदाई में किया गया है।" मैं कहता हूँ: मुझे उस चीज़ में कोई लाभ महसूस नहीं होता जिसकी ओर कुछ बाद के विद्वानों ने रुख किया है। यदि उनका इरादा उंगली से अलग होना है, तो 'उपयोग' (पानी का मुस्तअमल होना) का लाभ प्राप्त नहीं होगा क्योंकि उंगली उपकरण है। इसके उपयोगी होने के लिए, इसे विशिष्ट स्थान से या पूरे सिर से अलग होना चाहिए। इस प्रकार, यह एक स्पष्ट त्रुटि है। या (यदि इसका अर्थ अलग होना है) उस स्थान से जहाँ उंगली लगी थी, तो हाँ, लेकिन इसमें कोई लाभ नहीं है; बल्कि, यह उसी चीज़ का उदाहरण होगा जिससे 'उपयोग' होने का निर्णय लेने के लिए मुँह मोड़ा गया था, जबकि पानी अभी भी अंग पर घूम रहा है और उससे अलग नहीं हुआ है, जो कि गलत है। फिर, अल-खुलासा और अल-बहर में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी उंगलियों के किनारों (पोरों) से मसह करता है और उन्हें तब तक खींचता है जब तक कि वे दायित्व के स्थान तक न पहुँच जाएँ, तो यह जायज़ है चाहे पानी टपके या न टपके। यह दोनों (पुस्तकों) में है।

१ बदाई अस-सनाई, विषय: सिर का मसह, सईद कंपनी कराची, १/५ २ अल-बहर अर-राइक, पवित्रता की पुस्तक, सईद कंपनी कराची, १/१५ पेज 107 / 711

او منصوبة ليستوعب كلامه الصور لكن الشان انه مدع ظفر النقل فيضره احتمال العود الى المنصوبة لاسيما وهى الاقرب وقد (١) كشف المراد فى الحلية حيث قال: فروع، مسح بثلثة اصابع منصوبة لم يجز ولو مدها حتى بلغ المفروض لم يجز عند علمائنا الثلثة ولو وضعها ولم يمد لم يجز على رواية الربع ذكره في التحفة والمحيط والبدائع ١ اهـ اقول: على ان ما عدل (٢) اليه بعض المتأخرين لا اعرف له محصلا فان المراد ان كان الانفصال عن الاصبع فلا يفيد الاستعمال لانها آلة وانما يفيده الانفصال عن المحل او عن الرأس كله فظاهر الغلط او عن موضعه الذى اصابته الاصبع او لا فنعم ولم يشف غليلا بل كان نظيرا لما عدل عنه للحكم بحصول الاستعمال مع كون الماء مترددا بعد على نفس العضو غير منفصل عنه و هو (٣) باطل لا جرم ان نص فى الخلاصة ثم البحر فيما اذا مسح باطراف اصابعه ومدها حتى بلغ المفروض انه يجوز سواء كان الماء متقاطرا اولا قالا وهو ٢ الصحيح، قال ش قال الشيخ اسمعيل و نحوه في الواقعات۔

ہوں یا کھڑی، تاکہ اُن کا کلام تمام صورتوں کا استیعاب کرے، لیکن وہ اس امر کے مدعی ہیں کہ وہ نقل حاصل کرنے میں کامیاب ہوئے ہیں تو ضمیر کے منصوبہ کی طرف لوٹنے کا احتمال اُن کیلئے مضر ہو گا اور پھر وہ اقرب بھی ہے، اور حلیہ میں مراد واضح کی ہے فرمایا۔ فروع اگر کسی نے تین کھڑی انگلیوں سے مسح کیا تو جائز نہیں اور اگر ان کو اتنا کھینچا کہ فرض مقدار کو پہنچا دیا تو ہمارے تینوں علماء کے نزدیک جائز نہیں اور اگر انگلیوں کو رکھا اور نہ کھینچا تو چوتھائی کی روایت پر جائز نہیں، اس کو تحفہ ، محیط اور بدائع میں ذکر کیا ہے اھـ میں کہتا ہوں بعض متأخرین نے جس کی طرف عدول کیا ہے میں اس کا کوئی فائدہ نہیں محسوس کرتا ہوں کیونکہ اگر ان کی مراد انگلی سے جدا ہونا ہے تو استعمال کا فائدہ نہ ہوگا کیونکہ وہ تو آلہ ہے اس

کو تو محل سے جدا ہونا یا کل سر سے جدا ہونا مفید ہے، تو یہ ظاہر اغلط ہے یا اس کی جگہ سے جہاں انگلی لگی ہے یا نہیں، تو ہاں، مگر اس سے کچھ فائدہ نہیں بلکہ یہ نظیر ہوگا اس چیز کی جس سے عدول کیا ہے تاکہ استعمال کے حصول کا حکم ہو حالانکہ پانی متردد ہے عضو پر اس سے جدا نہیں، اور وہ باطل ہے، پھر خلاصہ و بحر میں صراحت ہے کہ اگر کسی شخص نے اپنی انگلیوں کے کناروں سے مسح کیا اور ان کو کھینچا یہاں تک کہ فرض کے مقام کو پہنچا تو یہ جائز ہے خواہ پانی ٹپکے یا نہ ٹپکے اُن دونوں (کتب میں) ہے۔

۱ بدائع الصنائع مطلب مسح الرأس سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵ ۲ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵ Page 107 of 711

Fatawa-e-Razvia, Volume II

[Arabic Text Column] And Al-Faidh[1] etc. contrary to what is in Al-Muheet, states that it is only permissible when it is dripping because the water descends from his fingers to their tips, so extending it is like taking new water[2]. Second: What Shams al-Aimmah chose is that the prohibition of extending one or two fingers is not due to the use of moisture, as evidenced by the fact that (1) if he wiped with two fingers in Tayammum, it would not be permissible even though nothing becomes "used" (must'amal), especially if he performed Tayammum on a hard stone. Rather, the reason is that we are commanded to wipe with the hand, and two fingers are not called a hand, unlike three, because they are the majority of what is the original part of it[3] etc. Meaning in the hand, and they are the fingers (٢). Therefore, if they are cut off, the full compensation (arsh) for a hand is mandatory. The researcher (Al-Muhaqqiq) rejected it after approving it, saying that it necessitates the requirement of touching with the hand (٣), which is negated by the issue of rain. It can be countered that what is meant is the specification of the hand or what takes its place of instruments when intending the actual drop optionally. However, its requirement is that those instruments be the size of three fingers, so much so that if it were (٤) a stick that does not reach that size, we would say it is not permissible to extend it[4].

[Urdu Text Column] ...said that it is correct. Sh. said Sheikh Ismail said, also in Waqi'at and Al-Faidh it is stated: etc. meaning contrary to Al-Muheet, this is permissible when the water is dripping because the water will drip to the tips of his fingers, so drawing it is equivalent to taking new water. T And the second one is what Shams al-Aimmah has chosen: that the prohibition of drawing one or two fingers is not because of the use of moisture. Its proof is that if he wiped with two fingers in Tayammum, it would not be permissible, even though nothing becomes "used," especially when performing Tayammum on a smooth stone. Rather, the reason is that we have been ordered to wipe with the hand, and two fingers are not called a hand, unlike three fingers, because these are the majority of the original part of the hand. etc. Meaning the hand and those fingers, and therefore, for cutting three fingers, the blood money (diyat) for the full hand is mandatory. The researcher (Muhaqqiq) rejected it after liking it, because its requirement is that touching with the hand is necessary, even though this is not the case because of the issue of rain. One answer to this has been given as: actually, the intention is the specification of the hand or what stands in its place, whatever instrument it may be, while the actual dropping is intended optionally. However, it is necessary that whatever instrument it is, it should be in the

amount of three fingers, to the extent that if someone moved such a stick which was not of this amount, it would not be permissible.

[Footnotes] 1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Chapter Egypt, 1/25 2 Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Chapter Egypt, 1/74 3 Fath al-Qadir, Kitab al-Taharah, Nuriya Razawiya Sukkur, 1/61 4 Fath al-Qadir, Kitab al-Taharah, Nuriya Razawiya Sukkur, 1/61

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द दो

[अरबी पाठ स्तंभ] और अल-फ़ैज़[1] आदि, अल-मुहीत के विपरीत, कहते हैं कि यह तभी जायज़ है जब वह टपक रहा हो, क्योंकि पानी उसकी उंगलियों से उनके सिरों तक उतरता है, इसलिए इसे बढ़ाना नया पानी लेने के समान है[2]। दूसरा: शम्स अल-अइम्मा ने जो चुना है वह यह है कि एक या दो उंगलियों को बढ़ाने की मनाही नमी के उपयोग के कारण नहीं है, जैसा कि प्रमाण है कि (1) यदि उसने तैयम्मुम में दो उंगलियों से मसह किया, तो यह जायज़ नहीं होगा भले ही कुछ भी "उपयोग किया हुआ" (मुस्तअमल) न हो जाए, विशेष रूप से यदि उसने सख्त पत्थर पर तैयम्मुम किया हो। बल्कि कारण यह है कि हमें हाथ से मसह करने का आदेश दिया गया है, और दो उंगलियों को हाथ नहीं कहा जाता है, तीन के विपरीत, क्योंकि वे उसके मूल भाग का बहुमत हैं[3] आदि। यानी हाथ में, और वे उंगलियां हैं (२)। इसलिए, यदि वे काट दी जाएं तो पूरे हाथ का मुआवज़ा (अर्श) अनिवार्य है। शोधकर्ता (अल-मुहक़्क़िक़) ने इसे स्वीकार करने के बाद अस्वीकार कर दिया, यह कहते हुए कि इसके लिए हाथ से छूना आवश्यक है (३), जो बारिश के मसले से नकारा जाता है। इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि इसका अर्थ हाथ का निर्धारण है या उन उपकरणों का जो उसका स्थान लेते हैं जब वास्तव में स्वेच्छा से गिराने का इरादा हो। हालाँकि, इसकी आवश्यकता यह है कि वे उपकरण तीन उंगलियों के आकार के हों, यहाँ तक कि यदि वह (४) एक ऐसी लकड़ी हो जो उस आकार तक नहीं पहुँचती है, तो हम कहेंगे कि उसे बढ़ाना जायज़ नहीं है[4]।

[उर्दू पाठ स्तंभ] ...ने कहा कि वही सही है। श. ने कहा शेख इस्माइल ने फरमाया, साथ ही वाक़ियात और अल-फ़ैज़ में भी है: अर्थात् मुहीत के विपरीत, यह उस समय जायज़ है जब पानी टपक रहा हो क्योंकि पानी उसकी उंगलियों के किनारों तक टपकेगा, तो उसे खींचना गोया नया पानी लेने के समान है। त और दूसरा वह है जिसे शम्स अल-अइम्मा ने चुना है: कि एक या दो उंगलियों को खींचने की मनाही नमी के उपयोग के कारण नहीं है। इसका प्रमाण यह है कि यदि उसने तैयम्मुम में दो उंगलियों से मसह किया, तो यह जायज़ नहीं होगा, भले ही कुछ भी "इस्तेमाल शुदा" न हो, विशेष रूप से जब चिकने पत्थर पर तैयम्मुम किया गया हो। बल्कि कारण यह है कि हमें हाथ से मसह करने का आदेश दिया गया है, और दो उंगलियों को हाथ नहीं कहा जाता है, तीन उंगलियों के विपरीत, क्योंकि ये हाथ के मूल भाग का बहुमत हैं। इत्यादि। यानी हाथ और वे उंगलियां, और इसी कारण तीन उंगलियों के कटने पर पूरे हाथ की दियत (खून की कीमत) अनिवार्य होती है। शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने इसे पसंद करने के बाद खारिज कर दिया, क्योंकि इसकी आवश्यकता यह है कि हाथ से छूना

आवश्यक है, भले ही बारिश के मसले के कारण ऐसा न हो। इसका एक उत्तर इस प्रकार दिया गया है: वास्तव में, मंशा हाथ का निर्धारण है या वह जो इसके स्थान पर हो, चाहे वह कोई भी उपकरण हो, जबकि वास्तव में स्वेच्छा से गिराना अभीष्ट हो। हालाँकि, यह आवश्यक है कि जो भी उपकरण हो, वह तीन उंगलियों की मात्रा में हो, यहाँ तक कि यदि किसी ने ऐसी लकड़ी चलाई जो इस मात्रा की नहीं थी, तो वह जायज़ नहीं होगा।

[पाद टिप्पणियाँ] 1 रद्द अल-मुह्तार, किताब अत-तहारह, मिस्र, 1/25 2 रद्द अल-मुह्तार, किताब अत-तहारह, मिस्र, 1/74 3 फ़तह अल-क़दीर, किताब अत-तहारह, नूरिय्या रज़विय्या सुक्कुर, 1/61 4 फ़तह अल-क़दीर, किताब अत-तहारह, नूरिय्या रज़विय्या सुक्कुर, 1/61

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[عربی متن] والفیض[1] اھای علی خلاف مافی المحیط انه انما یجوز اذا کان متقاطر لان الماء ینزل من اصابعه الی اطرافها فمده کا خذ جدید[2]۔ والثانی: مااختار شمس الائمة ان المنع فی مد الاصبع والا ثنتین غیر معلل باستعمال البلة بدلیل انه(1) لومسح بأصبعین فی التیمم لا یجوز مع عدم شیئ یصیر مستعملا خصوصاً اذا تیمم علی الحجر الصلد بل الوجه انامامأمورون بالمسح بالید والاصبعان لاتسمی یدا بخلاف الثلاث لانها اکثر ماھو الاصل فیها[3] اھ ای فی الید وھی الاصابع (۲) ولذا یجب بقطعها ارش الید کاملا ورده المحقق بعد استحسانه بأنه یقتضی تعیین الاصابة بالید(۳) وھو منتف بمسألة المطر وقد یدفع بأن المراد تعیینها اوما یقوم مقامها من الالات عند قصد الاسقاط بالفعل اختیاراً غیران لازمه کون تلك الآلة قدر ثلاث اصابع حتی لوکان(۴) عودا لا یبلغ ذلك القدر قلنا بعدم جواز مده[4]

[اردو متن] نے کہا کہ وہی صحیح ہے۔ ش نے فرمایا شیخ اسمعیل نے فرمایا نیز واقعات اور فیض میں ہے اھ یعنی محیط کے برعکس یہ اس وقت جائز ہے جبکہ پانی ٹپک رہا ہو کیونکہ پانی اس کی انگلیوں کے کناروں تک ٹپک آئے گا تو اس کا کھینچنا گویا نیا پانی لینے کے مترادف ہے۔ ت اور دوسرا وہ ہے جو شمس الائمہ نے اختیار کیا ہے کہ ایک یا دو انگلیوں کے کھینچنے کی ممانعت تری کے استعمال کی وجہ سے نہیں ہے اس کی دلیل یہ ہے کہ اگر اس نے دو انگلیوں سے تیمم میں مسح کیا تو جائز نہیں، حالانکہ کوئی چیز ایسی نہیں جو مستعمل ہو خصوصاً جب چکنے پتھر پر تیمم کیا، بلکہ اس کی وجہ یہ ہے کہ ہمیں ہاتھ سے مسح کا حکم دیا گیا ہے اور دو انگلیوں کو ہاتھ نہیں کہا جاتا ہے، بخلاف تین انگلیوں کے کیونکہ یہ مسح کے اصل میں جو اصل ہے اس کا اکثر حصہ ہیں اھ یعنی ہاتھ اور وہ انگلیاں ہیں اور اسی لئے تین انگلیوں کے کاٹنے پر پورے ہاتھ کی دیت لازم ہوتی ہے اور محقق نے اس کو پسند کرنے کے بعد رد کردیا، کیونکہ اس کا تقاضا یہ

ہے کہ ہاتھ کا لگانا ہی ضروری ہے حالانکہ بارش کے مسئلہ کی وجہ سے ایسا نہیں ہے، اس کا ایک جواب اس طرح دیا گیا ہے کہ دراصل مراد ہاتھ کی تعیین ہے یا جو اس کے قائم مقام ہو، کوئی بھی آلہ ہو، جبکہ اختیاری فعلی سے اسقاط مطلوب ہو، البتہ یہ ضروری ہے کہ جو بھی آلہ ہو تین انگلیوں کی مقدار میں ہو یہاں تک کہ اگر کسی نے ایسی لکڑی پھیری جو اس مقدار کی نہ تھی تو جائز نہ ہوگا۔

[حواشی] 1 ردالمحتار کتاب الطهارة الباب مصر ۱/۲۵ 2 ردالمحتار کتاب الطهارة الباب مصر ۱/۷۴ 3 فتح القدیر کتاب الطهارة نوریه رضویه سکهر ۱/۶۱ 4 فتح القدیر کتاب الطهارة نوریه رضویه سکهر ۱/۶۱

Fatawa Razawiya Volume Second

I say, the summary of this is that the hand is not obligatory, but when wiping (Masah) is done with the hand, it is necessary that it be of such a quantity that it can be called a 'hand'. However, objections can be raised against this in several ways:

First: The issue of rain is beneficial in our favor because the purpose of the Shariah is that a specific amount of wetness should reach [the head], regardless of how it happens. Neither the instrument is under discussion nor the intentional act. Our elders (Mashaikh) say that the meaning of the Divine command "And wipe over your heads" is "with your hands over your heads". The place is implied/estimated, not the instrument. Sadr al-Shari'ah, Ibn al-Sa'ati, and the researcher himself in 'Al-Fath' have given the same explanation; ponder over it.

Second: The jurists (Fuqaha) agree that if someone performs Masah with the tips of their fingers while water is dripping from them, it is permissible. Thus, it becomes clear that the specification of the instrument is not important here, and comparing it with Tayammum is a 'comparison with a difference' (Qiyas ma'al-fariq).

Third: Regarding the objection they raised by saying "permissibility is not there with one finger," it is based on the notion that the wetness runs out before reaching the required amount of the obligation. However, if two fingers are held together, water can reach the required amount between them. This is either observed or a strong likelihood exists. Therefore, relying on this, it became necessary to apply the ruling. Thus, sufficing with three fingers makes it permissible to use two [as a substitute] because between those two, there is enough water present that a further finger's quantity...

Footnote: 1. Fath al-Qadir, Kitab al-Taharat, Nuriya Razawiya, Sukkur, 1/17 Page 109 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

मैं कहता हूँ कि इसका हासिल यह निकला कि हाथ लाज़िम (अनिवार्य) नहीं है, लेकिन जब हाथ से मसह (पोंछना) करना हो तो ज़रूरी है कि इतनी मात्रा हो कि उस पर हाथ का प्रयोग (इतलाक़) होता हो। मगर इस पर कई तरीकों से आपत्ति हो सकती है:

पहला: बारिश का मामला हमारे पक्ष में उपयोगी है क्योंकि शरीअत का उद्देश्य यह है कि गीलेपन की एक निश्चित मात्रा लग जाए चाहे वह किसी भी तरह हो। इसमें न तो उपकरण (आला) विचाराधीन है और न ही स्वैच्छिक कार्य। और हमारे बुजुर्गों (मशायख) का कहना है कि ईश्वरीय आदेश "और अपने सिरों का मसह करो" का अर्थ यह है कि "अपने हाथों से अपने सिरों पर"। यहाँ स्थान (महल) अनुमानित है न कि उपकरण। सदरुश-शरिया, इब्न अल-साती और स्वयं अन्वेषक ने 'अल-फ़तह' में यही विवरण दिया है; इस पर विचार करें।

दूसरा: फुकहा (कानूनविदों) का इस बात पर आम सहमति है कि यदि किसी ने उंगलियों के पोरों से मसह किया और उनसे पानी टपक रहा था तो यह जायज़ (मान्य) है। तो पता चला कि यहाँ उपकरण का निर्धारण महत्वपूर्ण नहीं है और इसकी तुलना तयम्मुम से करना 'असमानता के साथ तुलना' (क़ियास मअल फ़ारिक) है।

तीसरा: उन्होंने "एक उंगली से अपर्याप्तता" कहकर जो आपत्ति जताई है, वह इस आधार पर है कि गीलापन अनिवार्य मात्रा तक पहुँचने से पहले ही समाप्त हो जाता है। लेकिन यदि दो उंगलियां आपस में मिली हों, तो उनके बीच पानी अनिवार्य मात्रा तक पहुँच सकता है। यह या तो प्रत्यक्ष देखा गया है या इसकी प्रबल संभावना (ज़न्ने ग़ालिब) है। इसलिए, इस पर भरोसा करते हुए नियम लागू करना आवश्यक हुआ। अतः तीन उंगलियों पर संतोष करना दो के फेर लेने को जायज़ करार देता है क्योंकि उन दो के बीच इतना पानी मौजूद होता है जो एक और उंगली की मात्रा के बराबर...

पादलेख (फ़ुटनोट): 1. फतह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/17 पृष्ठ 109 का 711

میں کہتا ہوں کہ اس کا حاصل یہ نکلا کہ ہاتھ لازم نہیں ہے لیکن جب ہاتھ سے مسح کرنا ہو تو ضروری ہے کہ اتنی مقدار ہو کہ اس پر ہاتھ کا اطلاق ہوتا ہو۔ مگر اس پر متعدد طریقوں سے اعتراض ہو سکتا ہے،

اول: بارش کا مسئلہ ہمارے حق میں مفید ہے کیونکہ مقصود شرع یہ ہے کہ تری کی ایک معین مقدار لگ جائے خواہ کسی طرح ہو اس میں نہ تو آلہ زیر بحث ہے اور نہ اختیاری فعل، اور ہمارے مشائخ فرماتے ہیں کہ فرمان الہی "اور مسح کرو تم سروں کا" اس کا مفہوم یہ ہے کہ "اپنے ہاتھوں کا اپنے سروں سے" میں محل مقدر ہے نہ کہ آلہ صدر الشریعہ، ابن الساعاتی اور خود محقق نے فتح میں یہی تقریر فرمائی ہے، غور کر۔

دوم: فقہاء کا اس امر پر اتفاق ہے کہ اگر کسی نے انگلیوں کے پوروں سے مسح کیا اور ان سے پانی ٹپک رہا تھا تو جائز ہے، تو معلوم ہوا کہ یہاں آلہ کی تعیین اہم نہیں ہے اور اس کو تیمم پر قیاس کرنا قیاس مع الفارق ہے۔

سوم: انہوں نے "عدم الجواز بالاصبع" کہہ کر جو اعتراض کیا ہے سو وہ اس بنا پر ہے کہ تری فرض مقدار تک پہنچنے سے قبل ختم ہو جاتی ہے لیکن دو انگلیاں اگر ملی ہوں تو ان میں فرض مقدار تک پانی پہنچ سکتا ہے، اس کا مشاہدہ ہے یا ظن غالب ہے، تو اس پر اعتبار کرتے ہوئے حکم کا لگا دینا لازم ہوا تو تین انگلیوں پر اکتفاء کرنا دو کے پھیر لینے کو جائز قرار دیتا ہے کیونکہ ان دو کے درمیان اتنا پانی موجود ہوتا ہے جو مزید ایک انگلی کی مقدار...

حاشیہ: 1. فتح القدیر کتاب الطہارت نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۷ صفحہ 109 از 711

I say: The end of his speech testifies that his meaning in saying 'it is possible to extend to the amount of the obligation' is the amount according to the opinion of the sufficiency of three [fingers]. Thus, it would have been better to express it this way to prevent any misunderstanding. Then the researcher (Muhaqqiq) refuted it by saying: 'Except that this is hampered by the impermissibility of performing Tayammum with two fingers.' 1 End. (T)

I say: That is, there is nothing there that finishes or vanishes because there is no need for a trace of dust on the hand. If there is a residue that is legally disregarded, it is considered non-existent legally, even if it is not physically absent. Thus, it is more apparent for non-existence in reality and in ruling. This is the meaning of the statement of Shams al-A'immah, 'especially if he performs Tayammum on a hard stone.' This is all that the researcher presented without giving a final verdict on it.

I say: (1) It is also responded to what he presented that the exhaustion of moisture is not universal. Have you not heard the verification in al-Khulasa regarding the permissibility of extending the ends [of fingers] even if the water is not dripping? 2 While the ruling on the issue is absolute. (2) It appears to me, and Allah the Exalted knows best, that there is no escape except to say that what is meant by the lack of sufficiency is when...

[Right Column Translation/Explanation] ...can spread and it is not permissible based on a quarter of the head, because as for the water between these two, there is no prevailing assumption that it can fulfill the amount of a quarter. End. (T)

I say that the end of their speech testifies to this matter that their intention by 'it is possible to extend to the amount of the obligation' is the wiping of three fingers, so it is better to express it with this so that the delusion is removed. Then the researcher (Muhaqqiq) rejected this by saying this, but the objection to this is that it necessitates that performing Tayammum with two fingers would not be permissible. (T)

I say its meaning is that there is no such thing there which vanishes, because there is no need for dust to stick to the hand. If it is there, then it is an additional matter, and there is no need for it according to the Shari'ah, so it did not happen legally. And if there is no dust, then the matter will be more clear because, in reality and legally, it is absent in both ways. This is the meaning of Shams al-A'immah's saying 'especially on

hard stone'. This is the discussion which the researcher (Muhaqqiq) conducted and did not mention any final decision in it. (T)

I say that what he stated is also refuted by the fact that the ending of moisture is not a universal matter, as mentioned in the correction of Khulasa that wiping will also be achieved by moving the fingertips, whether water flows from them or not, even though the command of the issue is absolute. It appears to me (And Allah knows best).

---

1. Fath al-Qadir, Book of Purification, Nuria Rizvia, Sukkur, 1/171
2. Khulasat al-Fatawa, Chapter Four on Wiping, Naval Kishore, Lucknow, 1/26 Page 110 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो

मैं कहता हूँ: उनके कथन का अंत इस बात की गवाही देता है कि 'फ़र्ज़ की मात्रा तक विस्तार की संभावना' कहने से उनका तात्पर्य तीन [उंगलियों] की पर्याप्तता के मत के अनुसार उसकी मात्रा है। इसलिए, भ्रम को दूर करने के लिए इसे इसी तरह व्यक्त करना बेहतर होता। फिर अन्वेषक (मुहक़्क़िक़) ने यह कहते हुए इसका खंडन किया: 'सिवाय इसके कि यह दो उंगलियों से तयम्मुम की अनुमति न होने के कारण बाधित है।' 1 समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ: यानी वहाँ ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो खत्म और लुप्त हो जाए क्योंकि हाथ पर धूल के निशान की कोई ज़रूरत नहीं है। यदि कोई ऐसा अवशेष है जिसे शरीयत में नज़रअंदाज़ किया गया है, तो उसे कानूनी रूप से ग़ैर-मौजूद माना जाता है, भले ही वह शारीरिक रूप से मौजूद न हो। तब यह वास्तविकता और नियमतः ग़ैर-मौजूदगी के लिए अधिक स्पष्ट है। शम्स अल-अइम्मा के कथन 'विशेष रूप से यदि वह सख्त पत्थर पर तयम्मुम करता है' का यही अर्थ है। यह सब वह है जो अन्वेषक ने बिना किसी अंतिम निर्णय के प्रस्तुत किया है।

मैं कहता हूँ: (1) उनके द्वारा प्रस्तुत बात का यह भी उत्तर दिया जाता है कि नमी का समाप्त होना सार्वभौमिक नहीं है। क्या आपने अल-खुलासा में छोरों [उंगलियों के] को विस्तार देने में अनुमति के सत्यापन के बारे में नहीं सुना है, भले ही पानी टपक न रहा हो? 2 जबकि इस मामले का नियम निरपेक्ष (मुतलक़) है। (2) मुझे प्रतीत होता है, और अल्लाह बेहतर जानता है, कि इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है कि यह कहा जाए कि पर्याप्तता की कमी से तात्पर्य तब है जब...

[दाहिना कॉलम अनुवाद/व्याख्या] ...फैल सकता है और सिर के चौथाई हिस्से के आधार पर जायज़ नहीं है, क्योंकि जो पानी इन दोनों के बीच है, उसमें प्रबल धारणा (ज़न्न-ए-ग़ालिब) नहीं है कि वह चौथाई मात्रा को पूरा कर सके। (त)

मैं कहता हूँ कि उनकी बात का अंत इस बात की गवाही देता है कि 'फ़र्ज़ की मात्रा तक विस्तार की संभावना' से उनका तात्पर्य तीन उंगलियों का फेरना है, तो बेहतर यह है कि इसे इसी से व्यक्त किया जाए ताकि भ्रम दूर हो जाए। फिर अन्वेषक ने इसे कहकर ख़ारिज कर दिया, लेकिन इस पर यह आपत्ति है कि इससे यह आवश्यक हो जाता है कि दो उंगलियों से तयम्मुम जायज़ न हो। (त)

मैं कहता हूँ इसका मतलब यह है कि वहाँ कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो नष्ट हो जाती हो, क्योंकि हाथ पर धूल लगने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर हो तो यह एक अतिरिक्त बात है, शरीयत में इसकी

ज़रूरत नहीं है, तो यह कानूनी रूप से नहीं हुआ। और अगर धूल न हो तो बात और अधिक स्पष्ट होगी क्योंकि वास्तव में और कानूनी रूप से दोनों तरह से ही यह अनुपस्थित है। और शम्स-उल-अइम्मा के कथन 'विशेष रूप से सख्त पत्थर पर' का यही अर्थ है। यह वह बहस है जो अन्वेषक ने की है और इसमें किसी अंतिम निर्णय का उल्लेख नहीं किया। (त)

मैं कहता हूँ और जो उन्होंने फ़रमाया उसका खंडन इस बात से भी होता है कि तरी का खत्म हो जाना कोई आम बात नहीं है, जैसा कि खुलासा के सत्यापन में गुज़रा कि उंगलियों के पोरों को फेरने से भी मसह हो जाएगा चाहे उनसे पानी न बहता हो, हालाँकि मसले का हुक्म मुतलक़ (निरपेक्ष) है। मुझे ज़ाहिर होता है (वल्लाह)।

---

1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/171
2. खुलासा अल-फ़तावा, मसह पर चौथा अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/26 पृष्ठ 110/711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

اقول: آخر کلامه یشهد ان مراده بقوله یحتمل الامتداد الی قدر الفرض هو قدره علی القول باجزاء ثلاث فکان الاولی التعبیر به دفعاً للوهم ثم ان المحقق رده بقوله الا ان هذا یعکر علیه عدم جواز التیمم بأصبعین 1 اهـ ت

اقول: ای فلیس ثمه شیئ یفرغ ویتلاشی اذلا حاجة الی اثر غبار علی الید فان کان فضل غیر ملتفت الیه شرعاً فکان معدوماً حکماً وان لم یکن فأظهر للعدم حقیقة وحکماً وهذا معنی قول شمس الائمة خصوصاً اذا تیمم علی الحجر الصلد فهذا کل ما اورده المحقق ولم یفصل القول فیه فصلا۔

اقول: (۱) ویرد ایضاً علی ما ابداه ان فناء البلل غیر مطرد اما سمعت تصحیح الخلاصة الجواز في مد الاطراف وان لم یکن الماء متقاطرا ۲ مع ان حکم المسألة مطلق (۲) ویظهر لی واللہ تعالی اعلم ان لا مخلص الا ان یقال ان المراد بعدم الاجزاء ما اذا کانت

پھیل سکتا ہے اور چوتھائی سر کے اعتبار پر جائز نہیں، کیونکہ جو پانی ان دو کے درمیان ہے ظن غالب نہیں کہ وہ چوتھائی کی مقدار کو پورا ہوسکے اھـ ت

میں کہتا ہوں کہ ان کے کلام کا آخر اس امر کی شہادت دیتا ہے کہ ان کی مراد یحتمل الامتداد الی قدر الفرض سے تین انگلیوں کا پھیرنا ہے، تو بہتر یہ ہے کہ اسی سے تعبیر کی جائے تاکہ وہم رفع ہوجائے پھر محقق نے اس کو یہ کہہ کر دفع کیا ہے مگر اس پر یہ اعتراض ہے کہ اس سے لازم آتا ہے کہ دو انگلیوں سے تیمم جائز نہ ہوا ھ ت

میں کہتا ہوں اس کا مطلب یہ ہے کہ وہاں کوئی چیز ایسی نہیں جو فنا ہوجاتی ہو، کیونکہ ہاتھ پر گرد کے لگنے کی کوئی ضرورت نہیں ہے اگر ہو تو یہ اضافی امر ہے شرعاً اس کی حاجت نہیں،

تو یہ حکماً نہ ہوا، اور اگر غبار نہ ہو تو بات زیادہ ظاہر ہوگی کیونکہ درحقیقت اور حکماً دونوں طرح ہی معدوم ہے اور شمس الائمہ کے قول "خصوصاً علی الحجر الصلد" کا یہی مفہوم ہے، یہ وہ بحث ہے جو محقق نے کی ہے اور اس میں کسی قول فیصل کو ذکر نہ کیا۔ (ت)

میں کہتا ہوں اور جو انہوں نے فرمایا اس کی تردید اس امر سے بھی ہوتی ہے کہ تری کا ختم ہو جانا کوئی عمومی امر نہیں، جیسا کہ خلاصہ کی تصحیح میں گزرا کہ مسح انگلیوں کے پوروں کے پھیرنے سے بھی ہو جائیگا خواہ ان سے پانی نہ بہتا ہو، حالانکہ مسئلہ کا حکم مطلق ہے، میرے لئے ظاہر ہوتا ہے (واللہ

---

1 فتح القدیر کتاب الطھارت نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۷۱ 2 خلاصۃ الفتاویٰ الفصل الرابع فی المسح نولکشور لکھنئو ۱ / ۲۶ صفحہ 110 از 711

Fatawa Razawiyya Volume II

(Allah knows best) that the only way to escape this objection is to interpret it as meaning that when the moisture is so little that it vanishes as soon as it is applied or after a slight movement, so that only a dampness remains that does not separate from the hand, then the wiping of the head [with it] is insufficient. Perhaps this is what most commonly occurs. And by the correction in 'Al-Khulasa' is meant that when the moisture is so much that it remains until the obligatory amount is reached, such that it separates at every place and reaches it. This is what 'Al-Muheet' means by 'taqatur' (dripping). Thus, all statements will agree. And when you look at the reasoning, you will be convinced of this detail; why else? There is no meaning to the sufficiency of mere dampness in the first scenario, nor to wasting the moisture in the second scenario. So let there be reconciliation, and success is from Allah.

As for the Hadith (1) of Tayammum, I say: In it, the intention of the subject and his voluntary act is necessary, so that the discourse of Imam Shams al-A'immah will be applicable in it. Do you not see that they have clearly stated that if one performs Tayammum (2) with one or two fingers and repeats it several times, it is not permissible, as it is mentioned in 'Al-Bahr' from 'As-Siraj' from 'Al-Idah'. But if one wipes his head with one finger and repeats it four times in [different] places, it is valid by consensus. Therefore, the conformity of what is here with what is in Tayammum should not be sought so that it becomes problematic, since there is no specification of the instrument here at all, unlike in Tayammum. And that is also in the usual way, i.e., Tayammum with the hand. Otherwise, it has been stated in 'Al-Hulya' that (3) if one rolls in the dust, it suffices him if it reaches his face, his forearms, and his palms, because he has performed the obligatory and more. Otherwise, not. End. Meaning it suffices him if he makes the intention as...

---

1. Hulya Page 111 of 711

(अल्लाह बेहतर जानता है) कि इस आपत्ति से छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका यह है कि इसका अर्थ यह लिया जाए कि जब नमी इतनी कम हो कि लगाने पर ही समाप्त हो जाए या थोड़ा सा पोंछने पर समाप्त हो जाए और केवल इतनी शेष रहे कि हाथ नम महसूस हो और वह सिर को गीला न कर सके और संभवतः सामान्यतः ऐसा ही होता है। और 'अल-खुलासा' के सुधार का अर्थ यह है कि जब नमी इतनी अधिक हो कि अनिवार्य मात्रा तक पहुँचने के बाद भी बनी रहे, इस तरह कि वह हर जगह अलग होकर लगे। और 'अल-मुहीत' का 'तकातुर' (टपकने) से यही अभिप्राय है। इस प्रकार सभी कथनों में सहमति हो जाएगी। और जब आप तर्क को देखेंगे, तो आपको इस विवरण का विश्वास हो जाएगा; और क्या? पहली स्थिति में नमी की पर्याप्तता का कोई अर्थ नहीं है, और न ही दूसरी स्थिति में नमी को बर्बाद करने का। इसलिए सामंजस्य बिठाया जाना चाहिए, और अल्लाह के माध्यम से ही सफलता है।

जहाँ तक तयम्मुम की हदीस (1) का संबंध है, मैं कहता हूँ: इसमें कर्ता का इरादा और उसका स्वैच्छिक कार्य आवश्यक है, तब इमाम शम्स अल-अइम्मा का तर्क इसमें स्थान पा सकेगा। क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि किसी ने एक या दो उंगलियों से तयम्मुम (2) किया और उसे कई बार दोहराया, तो यह जायज़ नहीं है, जैसा कि 'अल-बहर' में 'अस-सिराज' से 'अल-इज़ाह' के हवाले से वर्णित है। और यदि किसी ने एक उंगली से अपने सिर का मसह किया और चार अलग-अलग स्थानों पर उसकी पुनरावृत्ति की, तो यह सर्वसम्मति (इज्मा) से सही है। इसलिए, यहाँ की स्थिति और तयम्मुम की स्थिति के बीच समानता नहीं खोजी जानी चाहिए जिससे परेशानी हो, क्योंकि यहाँ अंग के निर्धारण का कोई प्रश्न ही नहीं है, तयम्मुम के विपरीत। और वह भी सामान्य तरीके से है, यानी हाथ से तयम्मुम। अन्यथा, 'अल-हल्या' में उल्लेख किया गया है कि (3) यदि कोई मिट्टी में लोट जाए, तो यह उसके लिए पर्याप्त है यदि वह उसके चेहरे, अग्रबाहुओं और हथेलियों तक पहुँच जाए, क्योंकि उसने अनिवार्य कार्य और उससे अधिक किया। अन्यथा नहीं। समाप्त। यानी यह उसके लिए पर्याप्त है यदि वह नियत करे जैसा कि...

---

1. हल्या पृष्ठ 111 का 711

تعالیٰ اعلم) کہ اس اعتراض سے چھٹکارے کی ایک ہی شکل ہے کہ اس سے یہ مراد لی جائے کہ جب تری اتنی کم ہو کہ رکھتے ہی ختم ہو جائے یا تھوڑا سا پھیرنے پر ختم ہو جائے اور محض اتنی باقی رہے کہ ہاتھ تر محسوس ہو اور وہ سر کو تر نہ کر سکے اور غالباً عام طور پر ایسا ہی واقع ہوتا ہے، اور خلاصہ کی تصحیح سے مراد یہ ہو کہ جب تری اتنی زیادہ ہو کہ فرض مقدار تک پہنچنے کے بعد بھی باقی رہے یعنی اس طور پر کہ ہر جگہ جدا ہو اور لگ جائے، اور محیط کی مراد تقاطر سے یہی ہے اس طرح تمام عبارات میں اتفاق ہوجائے گا، اور جو تم علت کو دیکھوگے تو یقین آجائے گا کیونکہ پہلی صورت میں تری کے پھیرنے کے اور کوئی معنی نہیں اور نہ ہی دوسری صورت میں تری کو ضائع کرنے کے، تو اس طرح تطبیق دینی چاہئے وباللہ التوفیق۔ رہی حدیث تیمم، تو اس میں مکلف کا ارادہ اور اس کا اختیاری فعل ضروری ہے، تب شمس الائمہ کی تقریر اس میں چل سکے گی، یہی وجہ ہے کہ فقہاء نے اس امر کی تصریح کی ہے کہ اگر کسی نے ایک یا دو انگلیوں سے تیمم کیا اور ان کو بار بار پھیرا تو جائز نہیں جیسا کہ بحر میں سراج سے ایضاح سے منقول ہے، اور اگر ایک انگلی سے اپنے سر کا مسح کیا اور چار مختلف جگہوں پر اس کا تکرار کیا تو اجماعاً صحیح ہے، تو اس کی موافقت تیمم کے معاملہ سے نہ کی جائے تاکہ اس سے اعتراض لازم آئے کیونکہ یہاں آلہ کا تعین بالکل نہیں بخلاف التیمم وذلك ایضاً فی الطریق المعتاد اعنی التیمم بالید والافقد نص فی الحلیة ان (۳) لوتمعك فی التراب یجزئه ان اصاب وجهه وذراعیه و کفیه لانه اتی بالمفروض وزیادة والافلا اهـ ای یجزئه ان نوی کما البلة خفیفة تفنی باول وضع او قلیل مد حتی لاتبقی الا نداوة لا تنفصل عن الید فبطل الرأس ولعله هو الاکثر وقوعاً وبتصحیح الخلاصة ما اذا کانت کثیرة تبقی الی بلوغ القدر المفروض بحیث تنفصل فی کل محل

وتصيب وهذا هو مراد المحيط بالتقاطر فتتفق الكلمات وانت اذ انظرت الى الوجه اذعنت بهذا التفصيل كيف ولا معنى لاجزاء النداوة فى الصورة الاولى ولا اهدار البلة فى الصورة الثانية فليكن التوفيق وبالله التوفيق۔ اماً حديث (١) التيمم فاقول: لابد فيه من قصد المكلف وفعله الاختيارى فيكون لتقرير الامام شمس الائمة فيه مساغ الاترى انهم صرحوا ان لو تيمم (٢) باصبع او اصبعين و كرر مراراً لم يجز كما فى البحر عن السراج عن الايضاح ولو مسح راسه باصبع وكرر اربعاً فى مواضع صح اجماعاً فلا يطلب موافقة ماهنا لما فى التيمم حتى يعكر عليه به اذ لاتعين للالة ههنا اصلاً

Fatawa Razawiyya Volume Two It is not hidden, and Allah Almighty knows best. Contrary to Tayammum, and this is also in the customary way, i.e., with hands in tayammum. Otherwise, it is specified in Al-Hilya that if a person rolls in the dust and the dust gets on their face, hands, and arms, it is sufficient. This is because they have not only fulfilled the obligation but have done even more than that; otherwise not. That is, if they have made the intention, it will be sufficient, as is apparent. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो) यह छिपा नहीं है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। इसके विपरीत तयम्मुम में, और यह भी सामान्य तरीके से है, यानी हाथों से तयम्मुम करना। अन्यथा, 'हिलया' में स्पष्ट किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति मिट्टी में लोट-पोट हो गया और मिट्टी उसके चेहरे, हाथों और भुजाओं पर लग गई, तो यह काफी है। क्योंकि उसने न केवल फ़र्ज़ अदा किया बल्कि उससे भी अधिक कर लिया; अन्यथा नहीं। अर्थात यदि उसने नीयत की है तो पर्याप्त होगा, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی لایخفی واللہ تعالٰی اعلم۔ بخلاف تیمّم کے، اور یہ بھی معتاد طریق میں ہے، یعنی ہاتھ سے تیمّم میں ورنہ حلیہ میں تصریح کی ہے کہ اگر کوئی شخص خاک میں لوٹ پوٹ ہوگیا اور خاک اس کے چہرے، ہاتھوں اور بانہوں کو لگ گئی تو کافی ہے کیونکہ اُس نے نہ صرف فرض ادا کرلیا بلکہ اس سے بھی زیادہ کرلیا، ورنہ نہیں اھ یعنی اگر اس نے نیت کی ہے تو کافی ہوگا، جیسا کہ ظاہر ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume II

Fatwa titled "Al-Namiqat al-Anqa fi Farq al-Mulaqi wa'l-Mulqi" 1327 AH (An exquisite writing on the difference between water that meets [the body] and water that is poured [into it]) (T)

Question 29: Rajab 1327 AH What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say on this issue: if the hand, finger, nail, etc., of a person without wudu or in a state of major impurity (janaba) falls into a lota (small water pot) or a pitcher, does the water remain fit for wudu or not? Some people say the water becomes disliked (makruh), and if it's no longer fit for wudu, how can it be made fit again? Explain and be rewarded.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praise be to Allah who sent down the Remembrance (the Quran) which was met by the Pure, Cleansing, Most Holy Master, who met his Lord on the night of the Ascension (Isra). Upon him be the radiant blessings of his Lord, and upon his family, his companions, his nation, and his party until the Day of Meeting. Ameen.

The predominant and relied-upon view is that if any limb (or any part of it, even a nail or the edge of a nail) that a person is currently obligated to wash due to ritual impurity (such as needing wudu, janaba, or the end of menstruation/post-childbirth bleeding) falls into a small quantity of water (which is neither flowing nor "dah dar dah", i.e., 10x10 arm-spans) without necessity, that water no longer remains fit for wudu or ghusl. That is, the water becomes "Must'amal" (used); it is pure in itself but cannot purify from ritual impurity, although physical impurity (najis) can be washed with it. This is the correct and preferred opinion, as stated explicitly in most books. This has been narrated and recorded from our three Imams: Imam al-A'zam (Abu Hanifa), Imam Abu Yusuf, and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them). Great scholars like Imam Abu Abdullah Jurjani, Imam Abu al-Husayn Quduri, Imam Malik al-Ulama Abu Bakr Kashani, and Imam Faqih al-Nafs Fakhr al-Din Qazi Khan (may Allah have mercy on them) have described this as the agreed-upon position of our Imams. I, the humble servant (may the Almighty Lord forgive him), have cited texts from forty other Imams and books besides the three Imams (may Allah be pleased with them) in one of my writings and addressed the doubts that occurred to some later scholars (may Allah have mercy on them) regarding this matter.

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम

फ़तवा मुसम्मा बह "अल-नमीक़तुल अनक़ा फ़ी फ़र्क़ुल मुलाक़ी वल मुल्क़ी" १३२७ हिजरी (मिलने वाले और डाले गए पानी के फ़र्क़ में एक पाकीज़ा तहरीर) (त)

मसला २९: रजब १३२७ हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरह-ए-मतीन इस मसले में कि अगर बे-वज़ू या जुनब का हाथ या उंगली या नाख़ून वग़ैरह लोटे या घड़े में पड़ जाए तो पानी वज़ू के क़ाबिल रहता है या नहीं? बाज़ लोग कहते हैं इससे पानी मकरूह हो जाता है और अगर क़ाबिल-ए-वज़ू न रहे तो किस तरह क़ाबिल किया जा सकता है? बय्यान फ़रमाएं सवाब पाएं।

अल-जवाब: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला है। तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जिसने ज़िक्र (क़ुरआन) नाज़िल किया जिसे पाक, पाकीज़ा, मुक़द्दस सरदार ने पाया, जिन्होंने मेराज की रात अपने रब से मुलाक़ात की। उन पर उनके रब की नूरानी रहमतें हों और उनकी आल, उनके सहाबा, उनकी उम्मत और उनके गिरोह पर मुलाक़ात के दिन तक। आमीन।

राजिह और मोअतमिद (विश्वसनीय) बात यह है कि मुकल्लफ़ (जिस पर शरीयत के अहकाम लागू हों) पर जिस अज़्व (अंग) का धोना किसी नजासत-ए-हुकमिया जैसे हदस (बे-वज़ू होना), जनाबत और हैज़ व निफ़ास के ख़त्म होने की वजह से फ़िलहाल वाजिब है, वह अज़्व या उसका कोई हिस्सा ख़्वाह नाख़ून या नाख़ून का किनारा ही क्यों न हो, अगर ग़ैर-कसीर पानी (जो न बहता हो और न ही "दह-दर-दह" यानी १०x१० हाथ हो) में बिना ज़रूरत पड़ जाए, तो वह पानी वज़ू और ग़ुस्ल के क़ाबिल नहीं रहता। यानी पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाता है कि वह ख़ुद तो पाक है लेकिन नजासत-ए-हुकमिया से पाकी हासिल नहीं करा सकता, हालांकि नजासत-ए-हक़ीक़िया (गंदगी) उससे धोई जा सकती है। यही क़ौल सहीह और राजिह है और आम किताबों में इसकी वज़ाहत है। यह हमारे तीनों इमामों—इमाम-ए-आज़म, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हुम)—से स्पष्ट रूप से वर्णित है। बड़े उलेमा जैसे इमाम अबू अब्दुल्लाह जुर्जानी, इमाम अबुल हुसैन क़ुदूरी, इमाम मलिकुल उलेमा अबू बक्र काशानी और इमाम फ़क़ीहुन-नफ़्स फ़ख़रुद्दीन क़ाज़ी ख़ान वग़ैरह (रहमहुमुल्लाह) ने इसे हमारे इमामों का मुत्तफ़िक़ा (सर्वसम्मत) मज़हब बताया है। मुझ फ़क़ीर ने अपनी एक तहरीर में तीनों इमामों के अलावा चालीस अन्य इमामों और किताबों के हवाले नक़ल किए हैं और बाज़ बाद के उलेमा को जो इसमें शक हुए थे उनके जवाब दिए हैं।

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

فتوٰی مسمّٰی بہ النمیقۃ الانقیٰ فی فرق الملاقی والملمقی ۱۳۲۷ھ ملنے والے اور ڈالے گئے پانی کے فرق میں ایک پاکیزہ تحریر (ت)

مسئلہ ۲۹: رجب ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ اگر بے وضو یا جنب کا ہاتھ یا انگلی یا ناخن وغیرہ لوٹے یا گھڑے میں پڑ جائے تو پانی وضو کے قابل رہتا ہے یا نہیں؟ بعض لوگ کہتے ہیں اس سے پانی مکروہ ہو جاتا ہے اور اگر قابلِ وضو نہ رہے تو کس طرح قابل کیا جا سکتا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط الحمد للہ الذي انزل الذکر الملقی علی السید الطیب الطھور الانقی الملاقی ربہ لیلۃ الاسراء علیہ من ربہ الصلاۃ الزھراء وعلی آلہ وصحبہ وامتہ وحزبہ الی یوم اللقاء آمین

راجح ومعتمد یہ ہے کہ مکلّف پر جس عضو کا دھونا کسی نجاست حکمیہ مثل حدث وجنابت وانقطاع حیض ونفاس کے سبب بالفعل واجب ہے وہ عضو یا اُس کا کوئی حصہ اگرچہ ناخن یا ناخن کا کنارہ آبِ غیر کثیر میں کہ نہ جاری ہے نہ دہ در دہ بے ضرورت پڑ جانا پانی کو قابلِ وضو وغسل نہیں رکھتا یعنی پانی مستعمل ہو جاتا ہے کہ خود پاک ہے اور نجاست حکمیہ سے تطہیر نہیں کرسکتا اگرچہ نجاست حقیقیہ اس سے دھو سکتے ہیں، یہی قول صحیح ورجح ہے عامہ کتب میں اس کی تصریح ہے اور یہ خود ہمارے ائمہ ثلاثہ امامِ اعظم وامام ابو یوسف وامام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہم سے منصوص ومروی آیا اکابر مشائخ مثل امام ابو عبد اللہ جرجانی وامام ابو الحسین قدوری وامام ملک العلماء ابوبکر کاشانی وامام فقیہ النفس فخر الدین قاضی خان وغیرہم رحمہم اللہ

تعالیٰ نے اُسے ہمارے ائمہ کا مذہب متفق علیہ بتایا۔ فقیر غفر لہ المولی القدیر نے اپنی ایک تحریر میں اُس پر ائمہ ثلاثہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے سوا چالیس ائمہ وکتب کے نصوص نقل کئے اور بعض علمائے متاخرین رحمہم اللہ تعالیٰ کو جو اس میں شبہات واقع ہوئے ان کے جواب دیے۔

Here, first, mention the benefits and related issues. Secondly, the completion of the answer. Thirdly, investigation of the point and clarification of the correct view, and for that, removal of the veil from the aforementioned writing. And with Allah is the guidance in every chapter, and praise be to Allah, the Gracious, the Bestower.

Benefits, Constraints, and Issues Mentioned

Benefit 1: (1) A minor, even if he is one day short of fifteen years, as long as signs of puberty like nocturnal emission and menstruation have not yet started, his clean body, upon which there is no actual impurity, even if it is completely and fully immersed in a small quantity of water, will not disqualify that water from being fit for wudu and ghusl due to the absence of hadath (ritual impurity). (Note: Though it is better to avoid it due to the possibility of impurity as is common with non-discerning children). However, if it occurs from a discerning child with the intention of attaining closeness (to Allah), it will make the water 'must'amal' (used).

Because he is among its people (eligible for it), and we have explained this issue in 'Al-Tars al-Mu'addal'.	Because he is eligible for it, and we have explained this issue in 'Al-Tars al-Mu'addal'.

It is stated in 'Wajiz Imam Kurdari':

Arabic Text	**Urdu Translation**
If a child puts his hand into a vessel, if the purity of his hand is known, for example, there was someone watching over him or he had washed his hand, then it is pure. If its impurity is known, then it is impure. If there is doubt, then it is recommended to perform wudu with other water because of the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Leave that which makes you doubt for that which does not make you doubt.' The preferred view is that the wudu of a discerning	If a child puts his hand in water, and it is known that his hand is pure—for example, someone is appointed to look after the child or he had washed his hands—then this water is pure. If his hand is known to be impure, the water is impure. And if there is doubt, it is recommended to perform wudu with other water, because the Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Leave that which puts you in doubt and choose that which does not put you in doubt.' The chosen view is that the wudu of a rational (discerning) child makes the water used; a non-rational child's

Arabic Text	Urdu Translation
child makes the water 'used', while that of a non-discerning child does not.	does not. (Note: That is why we added the condition of being 'Mukallaf' [legally responsible]).

Benefit 2: I say, according to the opinion of some that death (2) is a legal impurity (najasat hukmiya), if for example, the hand or foot of a deceased person falls into a small quantity of water before the ritual bath (ghusl), even if with the intention of ghusl, it will make the water 'must'amal' (used), as the intention is not required for the removal of impurity (3), even though for the living...

---

1. Fatawa Bazaziya, known as al-Wajiz al-Kurdari, on al-Hashiya al-Hindiyya, section on 'Used' and 'Absolute' water, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 4/9.

यहाँ पहले लाभ (फवाइद) और उनसे संबंधित मसलों का ज़िक्र करें। दूसरे, जवाब की पूर्णता। तीसरे, स्थान की जाँच और सही बात का स्पष्टीकरण और उसके लिए अपनी लिखित इबारत से परदा हटाना। और अल्लाह ही हर अध्याय में तौफीक देने वाला है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो निहायत करम करने वाला और बहुत देने वाला है।

फवाइद, कयूद और मसाइल

फायदा १: (१) नावालिग़ बच्चा चाहे वह १५ वर्ष का होने में एक दिन कम ही क्यों न हो, जब तक कि उसमें बालिग़ होने के लक्षण जैसे स्वप्नदोष या मासिक धर्म अभी शुरू न हुए हों, उसका पाक (शुद्ध) बदन जिस पर कोई वास्तविक अशुद्धि (नजासत हकीकिया) न हो, यदि वह पूरी तरह थोड़े पानी (आब-ए-कलील) में डूब जाए, तो वह पानी को वज़ू और ग़ुस्ल की योग्यता से बाहर नहीं करेगा क्योंकि 'हदस' (अशुद्धि) नहीं पाई गई। (नोट: हालाँकि अशुद्धि की संभावना के कारण, जैसा कि नासमझ बच्चों में होता है, बचना बेहतर है)। हाँ, अगर किसी समझदार बच्चे से अल्लाह की नज़दीकी की नीयत से वज़ू या ग़ुस्ल हो जाए, तो वह पानी को 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) बना देगा।

क्योंकि वह इसके योग्य लोगों में से है और हमने यह मसला 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' में बयान कर दिया है।	क्योंकि वह इसके योग्य है और हमने यह मसला 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' में बयान कर दिया है।

'वजीज़ इमाम करदरी' में है:

अरबी इबारत	हिंदी अनुवाद
यदि कोई बच्चा बर्तन में हाथ डाल दे, अगर उसके हाथ की पवित्रता का पता हो, जैसे कि कोई उसकी देख-रेख करने वाला हो या उसने हाथ धोया हो, तो वह पवित्र है। यदि अशुद्धि का पता हो तो अशुद्ध है। और यदि संदेह हो, तो मुस्तहब (पसंदीदा) है कि दूसरे पानी से वज़ू करे, क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि	अगर बच्चे ने पानी में हाथ डाला, और यह मालूम है कि उसका हाथ पाक है, जैसे कोई शख्स बच्चे की देखभाल पर नियुक्त है या उसने हाथ धोया हुआ था, तो यह पानी पाक है। और अगर उसके हाथ का नापाक होना मालूम है तो पानी नापाक है, और अगर शक है तो मुस्तहब है कि दूसरे पानी से वज़ू करे, क्योंकि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

अरबी इबारत

वसल्लम) का फरमान है: 'उसे छोड़ दो जो तुम्हें संदेह में डाले और उसे अपनाओ जो तुम्हें संदेह में न डाले।' पसंदीदा राय यह है कि समझदार बच्चे का वज़ू पानी को 'मुस्तअमल' बनाता है और नासमझ का नहीं।

हिंदी अनुवाद

का इरशाद है: "जो चीज़ तुम्हें शक में डाले उसको छोड़कर वह इख्तियार करो जो शक में न डाले।" मुख्तार (चुनी हुई राय) यह है कि आकिल (समझदार) बच्चे का वज़ू करना पानी को मुस्तअमल बनाता है, ग़ैर-आकिल का नहीं बनाता। इसीलिए हमने मुकल्लफ की कैद (शर्त) लगाई।

फायदा २: मैं कहता हूँ, कुछ लोगों के इस कौल पर कि मौत (२) नजासत-ए-हुकमिया (कानूनी अशुद्धि) है, अगर मैयत का हाथ या पाँव मिसाल के तौर पर ग़ुस्ल से पहले थोड़े पानी में पड़ जाए, चाहे ग़ुस्ल की नीयत से ही क्यों न हो, तो पानी को मुस्तअमल कर देगा क्योंकि नजासत को दूर करने के लिए नीयत की ज़रूरत नहीं होती (३), चाहे ज़िंदों पर...

---

1. फ़तावा बज़ाज़िया, मारूफ़ 'अल-वजीज़ अल-करदरी' अलल-हाशियह अल-हिन्दिया, मुस्तअमल और मुतलक पानी की किस्मों में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, ४/९।

یہاں اولاً فوائد اور ان کے متعلق مسائل ذکر کریں۔ ثانیاً اتمام جواب۔ ثالثاً تحقیق مقام وابانت صواب اور اس کیلئے اپنی تحریر مذکور سے رفع حجاب۔ وباللہ التوفیق فی کل باب والحمدللہ الکریم الوھاب۔

فوائد قیود ومسائل مورد

فائدہ ۱: (۱) نابالغ اگرچہ ایک دن کم پندرہ برس کا ہو جبکہ آثار بلوغ مثل احتلام و حیض ہنوز شروع نہ ہوئے ہوں اُس کا پاک بدن جس پر کوئی نجاست حقیقیہ نہ ہو اگرچہ تمام وکمال آب قلیل میں ڈوب جائے اُسے قابلیت وضو و غسل سے خارج نہ کرے گا لعدم الحدث (ناپاک نہ ہونے کی وجہ سے۔ ت) اگرچہ بحالِ احتمالِ نجاست جیسے ناسمجھ بچوں میں ہے بچنا افضل ہے ہاں بہ نیت قربت سمجھ والے بچہ سے واقع ہو تو مستعمل کردے گا۔

لانہ من اھلھا وقد بینا المسئلۃ فی الطرس المعدل۔

کیونکہ وہ اس کے اہل سے ہے اور ہم نے یہ مسئلہ 'الطرس المعدل' میں بیان کردیا۔ ت

وجیز امام کردری میں ہے:

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
ادخل صبی یدہ فی الاناء ان علم طہارۃ یدہ بأن کان لہ رقیب یحفظہ او غسل یدہ فھو طاہر ان علم نجاستہ فنجس وان شک فالمستحب ان یتوضأ بغیرہ لقولہ صلی اللہ	اگر بچہ نے پانی میں ہاتھ ڈالا، اور یہ معلوم ہے کہ اُس کا ہاتھ پاک ہے، مثلاً کوئی شخص بچہ کی دیکھ بھال پر متعین ہے یا اُس نے ہاتھ دھویا ہوا تھا، تو یہ پانی پاک ہے اور اگر اُس کے ہاتھ کا ناپاک ہونا معلوم ہے تو پانی ناپاک ہے، اور اگر شک ہے تو مستحب ہے کہ دوسرے پانی سے وضو کرے، کیونکہ

عربی عبارت	اردو ترجمہ
تعالٰی علیہ وسلم دع ما یریبك الٰی مالا یریبك المختار ۱ ان وضوء الصبی العاقل مستعمل وغیر العاقل لا ۱۔	حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے: "جو چیز تم کو شک میں ڈالے اس کو چھوڑ کر وہ اختیار کرو جو شک میں نہ ڈالے۔" مختار یہ ہے کہ عاقل بچہ کا وضو کرنا پانی کا مستعمل بناتا ہے غیر عاقل کا نہیں بناتا۔ (ت) اسی لئے ہم نے مکلّف کی قید لگائی۔

فائدہ ۲: اقول قولِ بعض پر کہ موت (۲) نجاست حکمیہ ہے اگر میت کا ہاتھ یا پاؤں مثلاً آب قلیل میں قبل غسل پڑ جائے اگرچہ بہ نیت غسل تو پانی کو مستعمل کردے گا کہ زوال نجاست کیلئے نیت کی حاجت نہیں (۳) اگرچہ احیا پر سے

---

۱ فتاوٰی بزازیہ المعروف الوجیز الکردری علی الھاشمیۃ الھندیۃ نوع فی المستعمل والمطلق نورانی کتب خانہ پشاور ۹/۴

Fatawa Razawiyya - Volume 2

For the discharge of this collective obligation (Fard-e-Kifayah), it is necessary for an intentional action to occur from their side. Therefore, if a deceased person is found in a river, the obligation will not be fulfilled until living people move them in the water by their own intent. However, if water has passed over the entire body of the deceased, ritual purity (taharat) is achieved. Likewise, funeral prayers are permissible without a formal bath. A specific intention for bathing the deceased is not mandatory even for the living; their intentional act is sufficient. This is the reconciliation and research on this issue. It is stated in *Durr al-Mukhtar*:

Arabic Text	English Translation / Explanation
بغير نية (ان غسل الميت) اجزاءه (لطهارته لا لاسقاط الفرض عن ذمة المكلفين (و) لذا قال (لو وجد ميت فى الماء فلا بد من غسله ثلثا) لانا امرنا بالغسل فيحركه فى الماء بنية الغسل ثلثا فتح وتعليله يفيد انهم لو صلوا عليه بلا اعادة غسله صح وان لم يسقط وجوبه عنهم فتدبر -1	(If the deceased was bathed) without intention (it is sufficient) for that deceased's purity, but not for absolving the responsible people (mukallafeen) from the obligation. (And) for this reason, it was said: (if a dead body is found in water, it must still be bathed three times) because we are commanded to bathe it. So, that corpse should be moved in the water three times with the intention of bathing, according to *Fath*. The reason they stated reveals that if the funeral prayer was offered without repeating the bath, it would be valid for the people, and the obligation of the funeral would be dropped, even though the obligation of giving the bath was not dropped from them. Reflect on this. (T)

It is stated in *Inaya*:

Arabic Text	English Translation / Explanation
الماء مزيل بطبعه فكما لا تجب النية فى غسل النجس فكذا لا تجب فى غسل الميت ولهذا قال في فتاوى قاضي خان ميت غسله اهله من غير نية الغسل اجزائهم ذلك-2	Water is a cleanser by nature. Just as intention is not mandatory for washing away impurities (najis), it is not mandatory for the bath of a deceased person. That is why it is stated in *Fatawa Qadi Khan* that if a family bathed their deceased without the intention of ghusl, it is sufficient for them. (T)

It is stated in *Radd al-Muhtar*:

Arabic Text	English Translation / Explanation
وصرح فی التجرید والا سبیجابی والمفتاح بعدم اشتراطها ایضا 3-	It is also explicitly stated in *Tajreed*, *Isbijabi*, and *al-Miftah* that intention is not a condition. (T)

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Funeral Prayer, Mujtabai Delhi, 1/120. 2. Inaya with al-Fath, Section on bathing the deceased, Nuriya Razawiyya Sukkur, 4/72. 3. Radd al-Muhtar, Section on bathing the deceased, Al-Babi Egypt, 1/635.

फ़तावा रज़विय्या - खंड 2

इस फ़र्ज़-ए-किफ़ाया के साक़ित (समाप्त) होने के लिए उनकी ओर से जानबूझकर किए गए कार्य (फ़ेल-ए-क़स्दी) का होना अनिवार्य है। अतः यदि कोई मृत शरीर (मय्यित) नदी में मिले, तो जब तक जीवित लोग उसे अपने इरादे से पानी में हिलाएँ नहीं, उन पर से फ़र्ज़ नहीं उतरेगा। हाँ, यदि मय्यित के संपूर्ण शरीर पर पानी बह गया, तो उसे शुद्धि (तहारत) प्राप्त हो गई। इसी प्रकार बिना ग़ुस्ल दिए उस पर नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ना जायज़ है। और मय्यित के ग़ुस्ल की विशेष नीयत जीवित व्यक्ति पर भी अनिवार्य नहीं है; उसका उद्देश्यपूर्ण कार्य ही पर्याप्त है। इस समस्या में यही समन्वय और शोध है। 'दुर्रे मुख़्तार' में उल्लेख है:

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या
بغير نية (ان غسل الميت) اجزاءه (لطهارته لا لاسقاط الفرض عن ذمة المكلفين (و) لذا قال (لو وجد ميت فى الماء فلا بد من غسله ثلثا) لانا امرنا بالغسل فيحركه فى الماء بنية الغسل ثلثا فتح وتعليله يفيد انهم لو صلوا عليه بلا اعادة غسله صح وان لم يسقط وجوبه عنهم فتدبر -1	(यदि ग़ुस्ल दिया गया) मय्यित को (बिना नीयत के, तो वह पर्याप्त है) उस मय्यित की शुद्धि के लिए, न कि उत्तरदायी लोगों (मुकल्लिफ़ीन) के दायित्व से फ़र्ज़ को समाप्त करने के लिए। (और) इसी कारण कहा गया कि (यदि कोई मृत शरीर पानी में पाया जाए, तो भी उसे तीन बार ग़ुस्ल कराना अनिवार्य है) क्योंकि हमें ग़ुस्ल देने का आदेश दिया गया है। अतः उस मृत शरीर को पानी में ग़ुस्ल की नीयत से तीन बार हिलाना चाहिए, फ़तह। और जो कारण उन्होंने बताया है उससे ज्ञात होता है कि यदि ग़ुस्ल दोहराए बिना नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ ली गई, तो लोगों पर से जनाज़ा का दायित्व समाप्त हो जाएगा, यद्यपि ग़ुस्ल का दायित्व उनसे समाप्त नहीं होगा। इस पर विचार करें। (त)

'इनाया' में है:

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या
الماء مزيل بطبعه فكما لا تجب النية فى غسل النجس فكذا لا تجب فى غسل الميت ولهذا قال وى قاضي خان ميتافي ف	जल अपनी प्रकृति से गन्दगी दूर करने वाला है। तो जिस प्रकार जीवित व्यक्ति के(अशुद्धि हटाने के) स्नान में नीयत अनिवार्य नहीं है, उसी प्रकार मय्यित के ग़ुस्ल में भी नीयत अनिवार्य नहीं है। इसी कारण 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में कहा

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या
غسله اهله من غير نية الغسل اجزائهم ذلك-2	गया है कि यदि किसी मय्यित को उसके परिवार वालों ने बिना नीयत के ग़ुस्ल दे दिया, तो वह उनके लिए पर्याप्त है। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है:

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या
وصرح فى التجريد والا سبيجابى والمفتاح بعدم اشتراطها ايضا 3-	'तजरीद', 'इस्बीजाबी' और 'मिफ़्ताह' में भी नीयत के शर्त न होने का स्पष्ट उल्लेख है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-दुर्रुल मुख़्तार, अध्याय: जनाज़ा की नमाज़, मुज्तबाई दिल्ली, 1/120. 2. इनाया मअल फ़तह, अध्याय: मय्यित को ग़ुस्ल देना, नूरिया रज़विय्या सुक्कुर, 4/72. 3. रद्दुल मुहतार, अध्याय: मय्यित को ग़ुस्ल देना, अल-बाबी मिस्र, 1/635.

पृष्ठ 115/711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

اس فرض کفایہ کے سقوط کو اُن کی جانب سے وقوع فعل قصدی لازم ہے ولہذا اگر میت دریا میں ملے تو جب تک احیا اپنے قصد سے اسے پانی میں جنبش نہ دے اُن پر سے فرض نہ اترے گا مگر میت کے سب بدن پر پانی گزر گیا تو اسے طہارت حاصل ہو گئی یونہی بے غسل دیے اس پر نماز جنازہ جائز ہے اور خاص غسل میت کی نیت تو احیا پر بھی ضرور نہیں اپنا قصدی فعل کافی ہے یہی اس مسئلہ میں توفیق و تحقیق ہے درمختار میں ہے :

عربی عبارت **اردو ترجمہ و تشریح**

(ان غسل المیت) بغیر نیة اجزاءہ (لطھارته لا لاسقاط الفرض عن ذمة المکلفین (و) لذا قال (لو وجد میت فی الماء فلا بد من غسله ثلثا) لانا امرنا بالغسل فیحرکه فی الماء بنیة الغسل ثلثا فتح وتعلیله یفید انهم لو صلوا علیه بلا اعادة غسله صح وان لم یسقط وجوبه عنهم فتدبر -1

(اگر غسل دیا) میت کو (بغیر نیت کے تو کافی ہے) اُس میت کی طہارت کیلئے نہ کہ فرض کو مکلف لوگوں سے ساقط کرنے کیلئے (اور) اس لئے فرمایا (اگر کوئی مردہ پانی میں ملا تو بھی اس کو تین مرتبہ غسل کرانا ضروری ہے) کیونکہ ہمیں غسل دینے کا حکم دیا گیا ہے تو اُس مُردہ کو پانی میں تین مرتبہ بنیتِ غسل حرکت دینی چاہئے، فتح ۔ اور جو وجہ انہوں نے بیان کی ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اگر اس کی نمازِ جنازہ اُس کے غسل کے اعادہ کے بغیر پڑھ لی گئی تو لوگوں سے جنازہ کا وجوب ساقط ہو جائیگا اگرچہ ان سے غسل کا وجوب ساقط نہ ہوگا، فتدبر۔ (ت)

عنایہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
الماء مزيل بطبعه فكما لا تجب النية فى غسل النجس فكذا لا تجب فى غسل الميت ولهذا قال في فتاوى قاضي خان ميت غسله اهله من غير نية الغسل اجزائهم ذلك-2	پانی اپنی طبیعت کی وجہ سے زائل کرنے والا ہے تو جس طرح زندہ شخص کے غسل میں نیت لازم نہیں اسی طرح مردہ کے غسل میں بھی نہیں، اسی لئے قاضی خان میں فرمایا کہ اگر کسی مردہ کو اس کے گھر والوں نے بلانیت غسل دے دیا تو کافی ہے۔ ت

ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
وصرح فى التجريد والا سبيجابى والمفتاح بعدم اشتراطها ايضا 3-	تجرید، اسپیجابی اور مفتاح میں بھی نیت کے شرط نہ کرنے کی تصریح ہے۔ ت

حواشی: 1. الدر المختار باب صلوة الجنازة مجتبائی دہلی ۱/ ۱۲۰ 2. عناية مع الفتح فصل في الغسل للميت نوریہ رضویہ سکھر ۴/ ۷۲ 3. ردالمحتار فصل في الغسل للميت البابى مصر ۱/ ۶۳۵

Fatawa Razawiyya Volume II In it, it is stated:

It is mentioned in 'Al-Tajnis' that according to the apparent saying, intention (niyyah) is necessary in washing the deceased. In 'Al-Khaniyah', it is narrated from Abu Yusuf that if water flows over the deceased or rain falls on them, it will not count as washing (Ghusl) because we have been commanded to perform the washing, and this [natural flow] is not [the act of] washing. In 'Al-Nihayah' and 'Al-Kifayah' etc., it is stated that in such a case, it is necessary to move the deceased with the intention of washing. Then, the reconciliation from 'Al-Fath' was cited, noting that the requirement of moving [the deceased] is so that the obligation of washing is discharged from the person responsible (Mukallaf), not so that the deceased becomes pure, nor is it a condition for the validity of the funeral prayer over them. Then, their contention with 'Al-Ghunyah' is that from the aforementioned saying of Abu Yusuf, it is understood that the obligation is for us, the living, to wash the deceased, to the extent that if the deceased is washed for the purpose of teaching others, it would suffice. However, it does not imply that intention is also a condition for the discharge of the obligation such that one would deserve punishment without it. It is established in the principles (Usul) that for physical acts which are obligatory for the sake of something else, their existence is required, not necessarily their intentional initiation for their existence, like running (sa'i) or purification. Yes, without intention, the reward for worship will not be obtained. It is said that Al-Baqani, while maintaining this, supported it with what is in 'Al-Muhit'. In 'Al-Muhit', it says that if the deceased is found in water, it is still necessary to wash them because the command is addressed to human beings, and no action was performed by them. So, the summary is that for the discharge of the obligation...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Washing the Deceased, Al-Babi Egypt, 1/663.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय खंड) इसी में है:

'अल-तजनीस' में है कि ज़ाहिर कौल के अनुसार मुर्दे के गुस्ल (स्नान) में नियत (इरादा) ज़रूरी है। 'अल-खानिया' में है कि अगर मय्यत (मृतक) पर पानी बह गया या बारिश पड़ गई, तो इमाम अबू यूसुफ से मन्क़ूल (वर्णित) है कि यह गुस्ल शुमार नहीं होगा, क्योंकि हमें गुस्ल करने का हुक्म दिया गया है और यह [प्राकृतिक बहाव] गुस्ल नहीं है। 'अल-निहाया' और 'अल-किफाया' आदि में है कि ऐसी सूरत में मुर्दे को गुस्ल की नियत से हरकत (हिलाना-डुलाना) देना लाज़िम है। फिर उन्होंने 'फ़तह' की ततबीक़ (सामंजस्य) नक़ल की और यह भी ज़िक्र किया कि हरकत देने की शर्त इसलिए है ताकि गुस्ल का वज़ूब मुकल्लफ़ (उत्तरदायी व्यक्ति) से साक़ित (समाप्त) हो जाए, यह नहीं कि मुर्दा पाक हो जाए, और न ही यह उस पर नमाज़ की सेहत (वैधता) की शर्त है। फिर उनका 'ग़ुनिया' से यह बहस करना कि इमाम अबू यूसुफ के गुज़रे हुए कौल से मालूम होता है कि फ़र्ज़ यह है कि हम ज़िंदा लोग उस मुर्दे को गुस्ल दें, यहाँ तक कि अगर मुर्दे को दूसरों को सिखाने की ग़रज़ (उद्देश्य) से गुस्ल दिया गया तो वह काफी होगा। मगर इसमें यह मौजूद नहीं है कि नियत भी इस्क़ात-ए-वाजिब (कर्तव्य से मुक्ति) के लिए शर्त है कि अगर न हो तो वह अज़ाब का मुस्तहिक़ (सज़ा का पात्र) हो। उसूल (सिद्धांतों) में यह मुक़र्रर है कि जो 'अफ़आल-ए-हिसिया' (शारीरिक कार्य) दूसरों के लिए वाजिब हों, तो उनका वजूद (अस्तित्व) ज़रूरी है न कि ईजाद (सृजन), जैसे कि सई (दौड़ना) और तहारत (पवित्रता)। हाँ, नियत के बिना इबादत का सवाब (पुण्य) नहीं मिलेगा। अल-बाक़ानी ने इसे मुक़र्रर रखते हुए इसकी ताईद (समर्थन) 'मुहीत' से की है। 'मुहीत' में है कि अगर मय्यत पानी में पाई गई, तो भी उसका गुस्ल ज़रूरी है क्योंकि खिताब बनू आदम (मनुष्यों) को है और उनसे कोई फ़ेल (कार्य) पाया नहीं गया। तो खुलासा यह निकला कि इस्क़ात-ए-फ़र्ज़ में...

---

1 रद अल-मुहतार, मय्यत के गुस्ल का अध्याय, अल-बाबी मिस्र, 1/663.

पृष्ठ 711 का 116

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی اسی میں ہے:

قال فی التجنیس لابد من النیة فی غسله فی الظاهر وفی الخانیة اذا جری الماء علی المیت او اصابه المطر عن ابی یوسف لا ینوب عن الغسل لانا امرنا بالغسل وذلك لیس بغسل وفی النهایة والکفایة وغیرهما لابد منه الا ان یحرکه بنیة الغسل اه ثم نقل توفیق الفتح باستظهار ان اشتراطها لاسقاط وجوبه عن المکلف لا لتحصیل طهارته هو وشرط صحة الصلاة علیه اه ثم منازعة الغنیة له بأن مامر عن ابی یوسف یفید ان الفرض فعل الغسل منا حتی لو غسله (لتعلیم الغیر کفی ولیس فیه ما یفید اشتراط النیة لاسقاط الوجوب بحیث یستحق العقاب بترکها وقد تقرر فی الاصول ان ماوجب لغیره من الافعال الحسیة یشترط وجوده لا ایجاده کالسعی والطهارة نعم لا ینال ثواب العبادة بدونها اه قال واقره الباقانی وایده بما فی المحیط لو وجد المیت فی الماء لابد من غسله لان الخطاب یتوجه الی بنی آدم ولم یوجد منهم فعل اه فتلخص انه لابد فی اسقاط الفرض من الفعل واما النیة فشرط لتحصیل الثواب ولذا اصح تغسیل الذمیة زوجها المسلم مع ان النیة شرطها الاسلام فیسقط الفرض عنا بفعلنا بدون نیة وهو المتبادر من قول الخانیة اجزأهم ذلك اهـ

اور تجنیس میں ہے کہ ظاہر قول کے مطابق مردہ کے غسل میں نیت ضروری ہے، اور خانیہ میں ہے اگر میت پر پانی بہ گیا یا بارش پڑ گئی تو ابو یوسف سے منقول ہے کہ یہ غسل شمار نہ ہوگا، کیونکہ ہمیں غسل کا حکم دیا گیا ہے اور یہ غسل نہیں ہے، اور نہایہ و کفایہ وغیرہما میں ہے کہ مردہ کو ایسی صورت میں بہ نیتِ غسل حرکت دینا لازم ہے، پھر انہوں نے فتح کی تطبیق نقل کی اور یہ بھی ذکر کیا کہ حرکت دینے کی شرط اس لئے ہے کہ غسل کا وجوب مکلف سے ساقط ہو جائے، یہ نہیں کہ مردہ پاک ہو جائے، اور نہ یہ اس پر نماز کی صحت کی شرط ہے اھ پھر اُن کا غنیہ سے یہ جھگڑا کرنا کہ قولِ ابو یوسف کی گزری اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ فرض یہ ہے کہ ہم

زندہ لوگ اُس مُردہ کو غسل دیں، یہاں تک کہ اگر مُردہ کو دوسروں کو سکھانے کی غرض سے غسل دیا تو کافی ہوگا مگر اس میں یہ موجود نہیں ہے کہ نیت بھی اسقاطِ واجب کیلئے شرط ہے کہ اگر نہ ہو تو وہ عذاب کا مستحق ہو، اور اصول میں یہ مقرر ہے کہ جو افعالِ حسّیہ غیر کیلئے واجب ہوں تو اُن کا وجود ضروری ہے نہ کہ ایجاد ان کے موجود ہونے کیلئے ضروری ہے، جیسے کہ سعی اور طہارت، ہاں نیت کے بغیر عبادت کا ثواب نہیں ملے گا اھ فرمایا اس کو باقانی نے مقرر رکھتے ہوئے اس کی تائید محیط سے کی ہے، محیط میں ہے کہ اگر میت پانی میں پائی گئی تو بھی اس کا غسل ضروری ہے کیونکہ خطاب بنو آدم کو ہے اور اُن سے کوئی فعل پایا نہیں گیا اھ تو خلاصہ یہ نکلا کہ اسقاطِ فرض میں

---

1 رد المحتار فصل فی الغسل للمیت البابی مصر ۱/ ۶۶۳

Fatawa Razawiyyah Volume Two [Top Box - Left (Arabic)]: I say: All this is based on what is commonly understood from the intention of the Shariah requirement. However, if it is interpreted as the intention of the act itself, then the dispute is resolved. For what the responsible person (mukallaf) is commanded to do is only their voluntary act. Therefore, what occurs from them without their intention does not relieve them of the obligation to perform the act. Regarding the washing of the deceased (Ghusl-e-Mayyit), there are two aspects: one relates to it being a condition (shartiyyah), which is that the funeral prayer for them is not valid without purification. In this case, its existence is sufficient even without its initiation by the person, just like the purification of a living person. The other aspect relates to it being an obligation (fardiyyah) upon us, and this can only be fulfilled by an act performed intentionally, even if the specific act of worship commanded is not intended. This is the meaning of Abu Yusuf's statement: "Because we were commanded to wash," and the statement in Al-Muhit that: "The address is directed towards the sons of Adam." In this way, the statements align. And what is in the words of Al-Ghaniyah becomes apparent. All praise be to Allah. [Top Box - Right (Urdu)]: It is necessary for some action or another to occur, and intention is a condition for attaining reward. Therefore, a Dhimmi woman can wash her Muslim husband, even though Islam is a condition for intention. Thus, the obligation will be fulfilled by our action whether there is intention or not. From the statement in Khaniyah "it suffices them," this is what apparently seems to be the case. - (T) I say, all this is understood from the perspective of Sharia intention. If by intention, the intention of the act is meant, then the difference of opinion will end. Because the command given to a responsible person (mukallaf) will be their voluntary act, and what happens from them without intention and choice cannot discharge them from the responsibility of the obligatory act. There are two aspects to washing the deceased: one towards being a condition, which is that prayer is not permissible without purification. In this case, the existence of the washing is enough whether it was initiated by him or not, like the purity of a living person. The other aspect is its obligation upon us, and this can be fulfilled by the same act which is done intentionally, even if the intention is not for the commanded worship. This is the meaning of Hazrat Imam Abu Yusuf's statement "because we have been commanded to wash," and the meaning of Al-Muhit's statement "that the address is directed towards the sons of Adam." In this way, harmony will be achieved between different statements, and what is in Al-Ghaniyah will become clear. All praise be to Allah. - (T) That is why we said it is mandatory to wash a certain limb of a Mukallaf (responsible

person), not the limb of a Mukallaf, because a deceased person is not a Mukallaf. Benefit 3: If a woman (2) is still in menstruation (menses) or postnatal bleeding (lochia) and the blood has not stopped, if her hand or any limb falls into water in this state, it will not become 'Must'amal' (used water) because the command for Ghusl is not yet upon her. This issue is in Khaniyah, Al-Khulasah, Al-Bahr, etc. That is why we mentioned the restriction of 'bil-fi'l' (actual). Benefit 4: Whatever limb (3) needs to be put into water out of necessity is pardoned; it will not make the water 'Must'amal'. For example: (1) Water is in a basin or small tub that is not 'dah dar dah' (ten by ten cubits) and there is no vessel to take it out for Wudu, then for taking a handful of water... Page 117 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द दो। [ऊपरी बॉक्स - बायाँ (अरबी)]: मैं कहता हूँ: यह सब शरीयत की नीयत के इरादे से जो समझा जाता है उस पर आधारित है। हालाँकि, यदि इसे क्रिया के इरादे (इरादा-ए-फ़ेल) के रूप में लिया जाए, तो विवाद समाप्त हो जाएगा। क्योंकि उत्तरदायी व्यक्ति (मुकल्लफ़) को जो आदेश दिया जाता है, वह उसका स्वैच्छिक कार्य ही होता है। इसलिए, जो कुछ उससे बिना इरादे के घटित होता है, वह उसे कार्य करने के दायित्व से मुक्त नहीं करता है। मृतक को नहलाने (गुस्ल-ए-मय्यत) के दो पहलू हैं: एक शर्त होने (शर्तिया) के संबंध में, जो यह है कि बिना शुद्धिकरण के उसके लिए नमाज़ वैध नहीं है। इस मामले में, नहलाने का अस्तित्व पर्याप्त है, चाहे वह व्यक्ति द्वारा शुरू न किया गया हो, जैसे जीवित व्यक्ति की शुद्धता। दूसरा पहलू हम पर इसके अनिवार्य (फ़र्ज़िया) होने से संबंधित है, और इसे केवल उसी कार्य से पूरा किया जा सकता है जो जानबूझकर किया गया हो, भले ही उस विशेष इबादत की नीयत न की गई हो जिसका आदेश दिया गया है। इमाम अबू यूसुफ़ के इस कथन का यही अर्थ है: "क्योंकि हमें गुस्ल का हुक्म दिया गया है," और अल-मुहीत के इस कथन का भी: "कि संबोधन आदम की संतान की ओर है।" इस तरह, विभिन्न कथनों में तालमेल हो जाएगा, और अल-ग़निया में जो है वह स्पष्ट हो जाएगा। अल्लाह का शुक्र है। [ऊपरी बॉक्स - दायाँ (उर्दू)]: किसी न किसी क्रिया का होना आवश्यक है और सवाब पाने के लिए नीयत एक शर्त है। इसलिए, एक ज़िम्मी महिला अपने मुसलमान पति को गुस्ल दे सकती है, हालाँकि नीयत के लिए इस्लाम शर्त है। इस प्रकार, फर्ज़ हमारे कार्य से पूरा हो जाएगा, चाहे नीयत हो या न हो। खानिया के कथन "अज़-अहुम" (उन्हें काफी है) से स्पष्ट रूप से यही प्रतीत होता है। - त (अनुवादक) मैं कहता हूँ, यह सब शरीयत की नीयत के इरादे से समझा जाता है। अगर नीयत से मुराद क्रिया का इरादा (इरादा-ए-फ़ेल) लिया जाए तो मतभेद खत्म हो जाएगा। क्योंकि मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार व्यक्ति) को जो हुक्म दिया गया है वह उसका स्वैच्छिक कार्य होगा, और जो उससे बिना इरादे और पसंद के होगा वह उसे अनिवार्य कार्य की ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं कर सकता। और मृतक के गुस्ल के दो पहलू हैं: एक शर्त की ओर, और वह यह है कि शुद्धिकरण के बिना उस पर नमाज़ जायज़ नहीं है, और इस सूरत में गुस्ल का होना ही काफी है चाहे वह उसकी ओर से न किया गया हो, जैसे जीवित व्यक्ति की पवित्रता। और एक पहलू हम पर इसके फर्ज़ होने का है, और यह उसी क्रिया से अदा हो सकता है जो जानबूझकर किया जाए, भले ही आदेशित इबादत का इरादा न किया जाए। और हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ के इस कथन का यही अर्थ है कि "क्योंकि हमें गुस्ल का हुक्म दिया गया है," और अल-मुहीत के इस कथन का भी यही अर्थ है कि "कि संबोधन आदम की संतान की ओर मुतवज्जह है।" इस तरह विभिन्न कथनों में समन्वय हो जाएगा, और जो अल-ग़निया में है वह स्पष्ट हो जाएगा। अल्लाह का शुक्र है। - त

इसीलिए हमने मुकल्लफ़ पर जिस अंग को धोना वाजिब कहा, न कि मुकल्लफ़ का अंग, क्योंकि मृतक मुकल्लफ़ नहीं होता। फायदा ३: यदि कोई महिला (२) अभी हैज़ (मासिक धर्म) या निफ़ास (प्रसव के बाद का रक्तस्राव) में है और खून बंद नहीं हुआ है, तो इस स्थिति में यदि उसका हाथ या कोई अंग पानी में गिर जाए, तो वह पानी मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) नहीं होगा क्योंकि अभी उस पर गुस्ल का आदेश नहीं है। यह मसला खानिया, अल-खुलसा, अल-बहर आदि में है। इसीलिए हमने 'बिल-फ़ेल' (वास्तव में) की शर्त का उल्लेख किया है। फायदा ४: जिस अंग (३) को ज़रूरत के कारण पानी में डालना पड़े, उतना माफ़ है; वह पानी को मुस्तअमल नहीं करेगा। उदाहरण के लिए: (१) पानी एक लगन या छोटे हौज़ में है जो 'दह दर दह' (१० गुणा १० हाथ) नहीं है और कोई बर्तन नहीं है जिससे निकालकर वूज़ू किया जा सके, तो चुल्लू लेने के लिए... पेज 117 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی [Top Box - Left (Arabic)]: اقول: هذا كله على المتبادر من ارادة النية الشرعية اما لو حملت على قصد الفعل ارتفع النزاع فان المامور به المكلف لا يكون الا فعله الاختياری فما وقع عنه من دون قصد منه لا يخرجه عن عهدة ايجاب الفعل وغسل الميت له وجهان وجه الى الشرطية وهو عدم صحة الصلاة عليه بدون الطهارة وهذا ما يكفى فيه وجوده بلا ايجاده كطهارة الحى ووجه الى الفرضية علينا ولا يتأتى الا بفعل توقعه قصدا ولولم تقصد العبادة المامور بها وهذا معنى قول ابى يوسف لانا امرنا بالغسل وقول المحيط ان الخطاب يتوجه الى بني آدم وبهذا تتفق الكلمات (۱) ويظهر ما فى كلام الغنية ولله الحمد۔ [Top Box - Right (Urdu)]: کسی نہ کسی فعل کا ہونا ضروری ہے اور نیت حصولِ ثواب کیلئے شرط ہے، اس لئے ذمی عورت اپنے مسلمان شوہر کو غسل دے سکتی ہے حالانکہ نیت کیلئے اسلام شرط ہے تو فرض ہمارے فعل سے ساقط ہو جائے گا خواہ نیت نہ ہو اور خانیہ کے قول أجزأهم سے بظاہر یہی معلوم ہوتا ہے اھـ ت میں کہتا ہوں یہ سب نیت شرعیہ کے ارادہ سے متبادر ہے اور اگر نیت سے مراد ارادہِ فعل لیا جائے تو اختلاف ختم ہو جائے گا، کیونکہ مکلف کو جو حکم دیا گیا ہے وہ اس کا فعل اختیاری ہوگا اور جو اُس سے بلا قصد و اختیار سرزد ہو وہ ایجابِ فعل کی ذمہ داری سے اس کو عہدہ برآ نہیں کرسکتا، اور غسلِ میت کی دو وجہیں ہیں ایک تو شرطیہ کی طرف اور وہ یہ ہے کہ اس پر نماز بلا طہارت جائز نہیں، اور اس صورت میں غسل کا وجود کافی ہے خواہ اس کی طرف سے ایجاد نہ ہو، جیسے زندہ انسان کی پاکی، اور ایک وجہ ہم پر فرضیت کی ہے، اور یہ اُسی فعل سے ادا ہو سکتی ہے جو قصد آ کیا جائے اگرچہ مامور بہا عبادت کا قصد نہ کیا جائے، اور یہی مفہوم ہے حضرت امام ابو یوسف کے قول "اس لئے کہ ہم کو غسل کا حکم دیا گیا ہے" کا، اور محیط کے اس قول "کہ خطاب بنو آدم کی طرف متوجہ ہے" کا بھی یہی مفہوم ہے، اس طرح مختلف اقوال میں تطبیق ہو

جائے گی، اور جو غنیہ میں ہے وہ ظاہر ہو جائے گا واللہ الحمد۔ ت اسی لئے ہم نے مکلّف پر جس عضو کا دھونا واجب کہا نہ مکلّف کا عضو کہ میت مکلّف نہیں۔ فائدہ ۳: عورت (۲) ابھی حیض یا نفاس میں ہے خون منقطع نہ ہوا اس حالت میں اگر اس کا ہاتھ یا کوئی عضو پانی میں پڑ جائے مستعمل نہ ہوگا کہ ہنوز اس پر غسل کا حکم نہیں والمسألة في الخانية والخلاصة والبحر وغیرھا اس لئے ہم نے بالفعل کی قید ذکر کی۔ فائدہ ۴: جس عضو کا (۳) جہاں تک پانی میں ڈالنا بضرورت ہو اتنا معاف ہے پانی کو مستعمل نہ کرے گا مثلاً: (۱) پانی لگن یا چھوٹے حوض میں ہے کہ دہ دردہ نہیں اور کوئی برتن نہیں جس سے نکال کر وضو کرے تو چُلّو لینے کیلئے Page 117 of 711

It will not become 'Musta'mal' (used) by putting the hand in it. (2) In the same situation, if the hand, for example, is dipped up to the elbow or half of the forearm to take a handful of water, i.e., in a way that insertion was not needed to take the handful, it will become 'Musta'mal' because the excess occurred without necessity. (3) If a cup sinks in a pitcher or a large earthen jar, the amount of the hand that needs to be inserted to retrieve it will not make the water 'Musta'mal', even if it is up to the arm, as there is a necessity. (4) If a foot falls into a vessel, the water becomes 'Musta'mal' because there was no necessity for it. (5) If one dove into a well or a cistern to cool off, or just put hands and feet in, it becomes 'Musta'mal' because there was no necessity. (6) If one put their hand in a vessel or cistern (1) to take a handful, but then intended to wash the hand in it, it becomes 'Musta'mal' because washing in the cistern was not a necessity, only taking a handful was. (7) If one pulled the bucket from the well and intended to perform Ghusl (ritual bath) or Wudu (ablution) right there, it unanimously becomes 'Musta'mal', even though Imam Muhammad allowed it for pulling the bucket because the intention of purification was not necessary, and so on. It is stated in Fath al-Qadir:

[Arabic Table Text]: If a person in a state of minor ritual impurity (Hadath), major ritual impurity (Janaba), or a woman who has become pure from menstruation (Hayd), puts their hand into water to scoop some out, it does not become 'Musta'mal' because of the necessity. This is unlike if the person in minor ritual impurity puts their foot or head in, where the water is spoiled due to lack of necessity. In the book of Hasan, from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), it is stated that if a person in major ritual impurity or a person without Wudu dips both their hands up to the elbows or one of their feet into a basin, Wudu from that water is not permissible because the obligation (Fard) has been lifted from that limb. This is because necessity is not established for dipping up to the elbows. However, if there is a necessity, for example, a jug falls into a well and one has to put their hand up to the elbow to retrieve it, it does not become 'Musta'mal'. This is explicitly stated in 'Al-Khulasah'. It says, unlike if one puts their hand in just to cool down, due to lack of necessity. Then, merely putting the palm in does not make it 'Musta'mal' if one does not intend to wash it but rather intends to lift...

[Urdu Table Text]: If a person without Wudu, in a state of major ritual impurity, or a woman who has become pure from menstruation puts their hand into water to take a handful, the water will not become 'Musta'mal' because it was done out of

necessity. But if someone without Wudu puts their head or foot in that water, it will become 'Musta'mal' because it was without necessity. And in the book of Hasan which is from Abu Hanifa, it is mentioned that if someone in major impurity or without Wudu puts both hands up to the elbows or one foot in a jar, Wudu is not permissible from it because the obligation was lifted from it in this way, since there was no necessity to dip hands up to the elbows. Yes, if there is a necessity, for example, a lota (vessel) falls into a well and one has to put the hand up to the elbow to retrieve it, the water will not become 'Musta'mal'. This is recorded in Al-Khulasah. It is stated that if the hand was put in merely for cooling without necessity, this rule does not apply, because there is no necessity there. Then...

इसमें हाथ डालने से वह मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा। (२) इसी स्थिति में यदि हाथ, उदाहरण के लिए, कोहनी या आधी कलाई तक डुबोकर चुल्लू लिया जाए, यानी जिस हद तक डुबोने की चुल्लू लेने में आवश्यकता नहीं थी, तो वह मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि अतिरिक्त भाग बिना आवश्यकता के डूबा। (३) यदि घड़े या मटके में कटोरा डूब जाए, तो उसे निकालने के लिए जितना हाथ डालना पड़े, वह पानी को मुस्तअमल नहीं करेगा, चाहे वह बाजू तक ही क्यों न हो, क्योंकि वहां आवश्यकता है। (४) यदि बर्तन में पैर पड़ गया, तो पानी मुस्तअमल हो गया क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं थी। (५) कुएं या हौज में ठंडक पाने के लिए गोता लगाया या सिर्फ हाथ-पांव डाले, तो वह मुस्तअमल हो गया क्योंकि आवश्यकता नहीं थी। (६) बर्तन या हौज (१) में हाथ तो चुल्लू लेने के लिए डाला था, फिर उसमें हाथ धोने की नियत कर ली, तो वह मुस्तअमल हो गया क्योंकि हौज में धोना आवश्यकता नहीं थी, केवल चुल्लू लेने की आवश्यकता थी। (७) कुएं से डोल निकालते समय वहीं गुसल (स्नान) या वज़ू की नियत कर ली, तो सर्वसम्मति से वह मुस्तअमल हो गया, हालांकि इमाम मुहम्मद ने डोल निकालने के लिए अनुमति दी थी क्योंकि पवित्रता का इरादा आवश्यक नहीं था, इत्यादि। 'फतह अल-क़दीर' में है:

[अरबी तालिका पाठ]: यदि कोई व्यक्ति अशुद्धता की स्थिति में, या मासिक धर्म से शुद्ध हुई महिला अपना हाथ पानी निकालने के लिए उसमें डाले, तो वह आवश्यकता के कारण मुस्तअमल नहीं होता। इसके विपरीत यदि अशुद्ध व्यक्ति अपना पैर या सिर उसमें डाले, जहाँ आवश्यकता न होने के कारण पानी खराब हो जाता है। हसन की पुस्तक में अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि यदि कोई अपवित्र व्यक्ति या बिना वज़ू वाला व्यक्ति अपने दोनों हाथ कोहनियों तक या अपना एक पैर मर्तबान में डुबोता है, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि उसका फ़र्ज़ (दायित्व) उससे हट गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोहनियों तक हाथ डुबोने की कोई आवश्यकता स्थापित नहीं होती। हालांकि, यदि आवश्यकता हो, जैसे कि लोटा कुएं में गिर जाए और उसे निकालने के लिए हाथ कोहनी तक डालना पड़े, तो वह मुस्तअमल नहीं होता। यह 'अल-खुलासा' में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है। इसमें कहा गया है कि, इसके विपरीत यदि किसी ने केवल ठंडक पाने के लिए बिना आवश्यकता के हाथ डाला। फिर, केवल हथेली डालना मुस्तअमल नहीं बनाता यदि इरादा उसे धोना न हो बल्कि...

[उर्दू तालिका पाठ]: अगर बे-वज़ू व्यक्ति, जुनुब (अपवित्र) या पाक हो जाने वाली महिला ने अपना हाथ चुल्लू भर पानी लेने के लिए पानी में डाला तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि यह आवश्यकतानुसार किया गया है। लेकिन अगर बे-वज़ू व्यक्ति ने अपना सिर या पैर उस पानी में डाल दिया तो वह मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि यह बिना आवश्यकता के हुआ। और हसन की किताब में जो इमाम अबू हनीफ़ा से है, वर्णित है कि अगर जुनुब या बे-वज़ू व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ कोहनियों तक या एक पैर किसी मर्तबान में डाल दिए तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, क्योंकि इस प्रकार उसका फ़र्ज़ उस अंग से हट गया, क्योंकि कोहनियों तक हाथ डुबोने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हाँ, अगर यह आवश्यकता हो, जैसे कि लोटा कुएं में गिर जाए और उसे निकालने के लिए हाथ कोहनियों तक उसमें डालना पड़े, तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा। यह 'खुलासा' में स्पष्ट रूप से वर्णित है। कहा गया है कि, इसके विपरीत यदि हाथ केवल ठंडक पाने के लिए बिना आवश्यकता के डाला गया तो यह नियम लागू नहीं होगा, क्योंकि वहां आवश्यकता नहीं है। फिर...

पृष्ठ ११८/७११

اُسی میں ہاتھ ڈالنے سے مستعمل نہ ہو گا۔ (۲) اسی صورت میں اگر ہاتھ مثلاً کہنی یا نصف کلائی تک ڈال کر چلو لیا یعنی جس قدر کے ادخال کی چلو میں حاجت نہ تھی مستعمل ہو جائے گا کہ زیادت بے ضرورت واقع ہوئی۔ (۳) گولی یا مٹکے میں کٹورا ڈوب گیا اُس کے نکالنے کو جتنا ہاتھ ڈالنا ہو مستعمل نہ کرے گا، اگر چہ بازو تک ہو کہ ضرورت ہے۔ (۴) برتن میں پاؤں پڑ گیا پانی مستعمل ہو گیا کہ اس کی ضرورت نہ تھی۔ (۵) کنوئیں یا حوض میں ٹھنڈ لینے کو غوطہ مارا یا صرف ہاتھ پاؤں ڈالا مستعمل ہو گیا کہ ضرورت نہیں۔ (۶) برتن یا حوض (۱) میں ہاتھ ڈالا تو تھا چلو لینے کو پھر اُس میں ہاتھ دھونے کی نیت کر لی مستعمل ہو گیا کہ حوض میں دھونا ضرورت نہ تھا صرف چلو لینے کی حاجت تھی۔ (۷) کنوئیں سے ڈول نکالنے گھسا اور وہاں غسل یا وضو کی نیت کر لی بالاتفاق مستعمل ہو گیا اگر چہ امام محمد نے ڈول نکالنے کیلئے اجازت دی تھی کہ قصد طہارت کی ضرورت نہ تھی و قس علیہ۔ فتح القدیر میں ہے:

لو ادخل المحدث او الجنب او الحائض التي طهرت اليد في الماء للاغتراف لايصير مستعملا للحاجة بخلاف مالو ادخل المحدث رجله او رأسه حيث يفسد الماء لعدم الضرورة وفي كتاب الحسن عن ابي حنيفة رضي الله تعالى عنه ان غمس جنب او غير متوضيئ يديه الى المرفقين او احدى رجليه في اجانة لم يجز الوضوء منه لانه سقط فرضه عنه وذلك لان الضرورة لم تتحقق في الادخال الى المرفقين حتى لوتحققت بان وقع الكوز في الجب فادخل يده الى المرفق لاخراجه لايصير مستعملا نص عليه في الخلاصة قال بخلاف مالوادخل يده للتبرد لعدم الضرورة ثم ادخال مجرد الكف انما لايصير مستعملا اذا لم يرد الغسل فيه بل اراد رفع

اگر بے وضو، جنب یا پاک ہو جانے والی حائض عورت نے اپنا ہاتھ چلو بھر پانی لینے کیلئے پانی میں ڈالا تو پانی مستعمل نہ ہو گا کیونکہ یہ ضرورتًا کیا گیا ہے، لیکن اگر بے وضو نے اپنا سر یا پیر اس پانی میں ڈال دیا تو مستعمل ہو جائے گا کیونکہ بغیر ضرورت ہوا، اور حسن کی کتاب جو ابو حنیفہ سے ہے میں ہے کہ اگر جنب یا بے وضو نے اپنے دونوں ہاتھ کہنیوں تک یا ایک پیر کسی مرتبان میں ڈالے تو اس سے وضو جائز نہیں، کیونکہ اس طرح اس کا فرض اس سے ساقط ہو گیا کیونکہ کہنیوں تک ہاتھوں کو ڈبونے کی کوئی ضرورت نہ تھی ہاں اگر یہ ضرورت ہو، مثلاً لوٹا کنویں میں گر پڑا اس کو نکالنے کیلئے ہاتھ کہنیوں تک اس میں ڈالنا پڑا تو پانی مستعمل نہ ہو گا، یہ خلاصہ میں منصوص ہے، فرمایا اگر ہاتھ محض ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے بلا ضرورت ڈالا تو اس کا یہ حکم نہیں، کیونکہ وہاں ضرورت نہیں، پھر

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Table Header: Left Column (Arabic), Right Column (Urdu Explanation)] [Left]: Water, and in 'Al-Mubtaghi' etc.: by cooling oneself in it, it becomes used (must’amal) if the person was in a state of ritual impurity (hadath), otherwise not. [End of quote abbreviated]. [Right]: Merely putting a hand into water does not make it used as long as there is no intention for a ritual bath (Ghusl), for instance, if the intention is just to lift the water. In 'Al-Mubtaghi' etc., it is stated that it will become used by obtaining coolness if one is in a state of impurity, otherwise not. (T)

In 'Radd al-Muhtar', under the commentator's statement: "An impure person dived into a well for a bucket and did not intend..." (one without Wudu who dived into a well to retrieve a bucket and did not make an intention - T), it is said:

[Table Header: Left Column (Arabic), Right Column (Urdu Explanation)] [Left]: "He did not intend", meaning for Ghusl. If he intended it, the water becomes used by consensus, except in the opinion of Zufar in 'Siraj'. The meaning is that he did not intend after diving, so it does not contradict his statement "for a bucket". This was explained by 'Ta'. [Right]: He did not intend, meaning for Ghusl. If he intended Ghusl, then by consensus the water will become used, except according to Imam Zufar's opinion in 'Siraj'. And the meaning is that if he did not intend after diving, then it is not contrary to his statement "for a bucket". This was explained by 'Ta'. (T)

That is why we added the condition of "without necessity".

Benefit 5: (1) The well-known narration from Imam Abu Yusuf is that part of a limb being submerged does not make the water used until the entire limb is submerged. For example, if fingers are put into water, it will not be used; the ruling of it being used will be given when the palm is submerged. However, the correct view is that without necessity, even a small piece makes it used. It is stated in 'Fath al-Qadir':

[Table Header: Left Column (Arabic), Right Column (Urdu Explanation)] [Left]: If a person in a state of major ritual impurity (junub) puts any part of the body other than the hands and feet into a well, he spoils it (makes it used), because necessity exists only for those two. Our phrase "from the body" implies use by entering part of a limb. This agrees with what is narrated from Abu Yusuf regarding a pure person: if he puts his head into a vessel and part of his head gets wet, it becomes used. As for the well-known narration from Abu Yusuf, it is that it does not become used by part of a limb. [Right]: If a junub (ritually impure person) puts any limb other than hands and

feet into a well, the water will become used, because the necessity is only for these two. Our statement "from the body" gives the benefit of becoming used by inserting part of a limb, and it aligns with the narration from Imam Abu Yusuf. He says that if a pure person put his head in a vessel and some part of it got wet, it would become used. And the famous narration from Abu Yusuf is that it will not become used by a part of a limb. (T)

1 Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is permissible and not permissible, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/71 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai, Delhi, 1/17 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/138 4 Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is permissible and not permissible, Nooria Rizvia, Sukkur, 1/81

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[तालिका शीर्षक: बायां स्तंभ (अरबी), दायां स्तंभ (उर्दू व्याख्या)] [बायां]: पानी, और 'अल-मुबतग़ी' आदि में है: इसमें शरीर ठंडा करने से यह 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) हो जाता है यदि व्यक्ति अपवित्र अवस्था (हदस) में हो, अन्यथा नहीं। [संक्षेप में उद्धरण समाप्त]। [दायां]: केवल हाथ का डालना पानी को मुस्तअमल नहीं कर देता है जबकि ग़ुस्ल का इरादा न हो, उदाहरण के लिए यह कि पानी उठाने का इरादा हो, और 'मुबतग़ी' वग़ैरह में है कि ठंडक हासिल होने से मुस्तअमल हो जाएगा अगर बे-वज़ू हो वर्ना नहीं। (त)

'रद्दुल मुहतार' में भाष्यकार के इस कथन के तहत: "एक अपवित्र व्यक्ति डोल निकालने के लिए कुएं में डूबा और उसने नीयत नहीं की..." (बिना वज़ू के जिसने डोल निकालने के लिए कुएं में गोता लगाया और नीयत नहीं की - त), फ़रमाया:

[तालिका शीर्षक: बायां स्तंभ (अरबी), दायां स्तंभ (उर्दू व्याख्या)] [बायां]: "उसने नीयत नहीं की", यानी ग़ुस्ल की। अगर उसने नीयत की, तो सर्वसम्मति से पानी मुस्तअमल हो जाता है, सिवाय इमाम ज़ुफ़र के मत के जो 'सिराज' में है। और मुराद यह है कि गोता लगाने के बाद नीयत नहीं की, तो यह उसके कथन 'डोल के लिए' के विरोधाभासी नहीं है। इसे 'ता' ने स्पष्ट किया है। [दायां]: नीयत नहीं की यानी ग़ुस्ल की, अगर ग़ुस्ल की नीयत की तो पानी बिल-इत्तेफ़ाक़ मुस्तअमल हो जाएगा मगर ज़ुफ़र के क़ौल में, सिराज। और मुराद यह है कि गोता खाने के बाद नीयत न की तो उनके क़ौल 'लदल्व' के मुनाफ़ी नहीं, इसका इफ़ादा 'ता' ने किया। (त)

इसीलिए हमने 'बे-ज़रूरत' की क़ैद लगाई।

फ़ायदा 5: (1) इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत-ए-मअरूफ़ा यह है कि अज़ू (अंग) का टुकड़ा डूब जाने से मुस्तअमल नहीं होता जब तक पूरा अज़ू न डूबे, मसलन उंगलियां पानी में डालें तो मुस्तअमल न होगा कफ़-ए-दस्त (हथेली) के डूबने से हुक्म-ए-इस्तेमाल दिया जाएगा और सही यह है कि बे-ज़रूरत कितना ही टुकड़ा हो मुस्तअमल कर देगा। 'फ़तहुल क़दीर' में है:

[तालिका शीर्षक: बायां स्तंभ (अरबी), दायां स्तंभ (उर्दू व्याख्या)] [बायां]: अगर किसी जुनुब (महा-अपवित्र) ने कुएं में हाथ और पैर के अलावा शरीर का कोई भी हिस्सा डाला, तो उसने उसे ख़राब (मुस्तअमल) कर दिया क्योंकि ज़रूरत सिर्फ उन्हीं दो में है। और हमारा कहना 'शरीर से' अंग के कुछ हिस्से के दाख़िल करने से इस्तेमाल का लाभ देता है। और यह इमाम अबू यूसुफ़ से एक पाक

व्यक्ति के बारे में वर्णित रिवायत के अनुसार है: यदि उसने अपना सर किसी बर्तन में डाला और उसका कुछ हिस्सा गीला हो गया, तो वह मुस्तअमल हो जाता है। जहाँ तक अबू यूसुफ़ से प्रसिद्ध रिवायत का सवाल है, वह यह है कि अज़ू के कुछ हिस्से से वह मुस्तअमल नहीं होगा। [दायां]: अगर जुनुब ने कुएं में हाथ पैर के अलावा कोई अज़ू डाला तो पानी फ़ासिद (मुस्तअमल) हो जाएगा, क्योंकि ज़रूरत सिर्फ उन्हीं दो में है और हमारा क़ौल 'मिनल जसद' अज़ू के कुछ हिस्से के दाख़िल करने से मुस्तअमल होने का फ़ायदा देता है, और वो अबू यूसुफ़ से मरवी शुदा क़ौल के मुवाफ़िक़ है, वो फ़रमाते हैं कि पाक शख़्स ने किसी बर्तन में अपना सर डाला और उसका कुछ हिस्सा तर हो गया तो मुस्तअमल होगा, और अबू यूसुफ़ से जो रिवायत मअरूफ़ है वो ये है कि अज़ू के बाज़ हिस्से से मुस्तअमल न होगा। (त)

1 फ़तहुल क़दीर, बाबुल मा-अल-लज़ी यजूज़ु बिहिल वज़ू व मा ला यजूज़ु, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/71 2 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/17 3 रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/138 4 फ़तहुल क़दीर, बाबुल मा-अल-लज़ी यजूज़ु बिहिल वज़ू व मा ला यजूज़ु, नूरानी रिज़विया सुक्कुर, 1/81

पृष्ठ 119/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

الماء وفی المبتغی وغیرہ بتبردہ یصیر مستعملا ان کان محدثاً والافلا 1اھ باختصار۔ محض ہاتھ کا ڈالنا پانی کو مستعمل نہیں کر دیتا ہے جبکہ غسل کا ارادہ نہ ہو ، مثلاً یہ کہ پانی اٹھانے کا ارادہ ہو ، اور مبتغی وغیرہ میں ہے ٹھنڈک حاصل ہونے سے مستعمل ہو جائے گا اگر بے وضو ہو ورنہ نہیں اھ ت

ردالمحتار میں زیر قول شارح محدث انغمس في بئر لدلو ولم ینو 2 (بے وضو جس نے ڈول نکالنے کیلئے کنویں میں غوطہ لگایا اور نیت نہ کی ۔ت) فرمایا :

لم ینو ای الاغتسال فلو نواہ صار مستعملا بالاتفاق الا فی قول زفر سراج والمراد لم ینو بعد انغماسہ فلا ینافي قولہ لدلو افادہ 3 ط۔ نیت نہ کی یعنی غسل کی، اگر غسل کی نیت کی تو پانی بالاتفاق مستعمل ہو جائے گا مگر زفر کے قول میں ، سراج ۔ اور مراد یہ ہے کہ غوطہ کھانے کے بعد نیت نہ کی تو ان کے قول لدلو کے منافی نہیں ، اس کا افادہ 'ط' نے کیا۔ ت

ولذا ہم نے بے ضرورت کی قید لگائی۔

فائدہ ۵ : (۱) امام ابو یوسف سے روایت معروفہ یہ ہے کہ عضو کا ٹکڑا ڈوب جانے سے مستعمل نہیں ہوتا جب تک پورا عضو نہ ڈوبے ، مثلاً انگلیاں پانی میں ڈالیں تو مستعمل نہ ہوگا کف دست کے ڈوبنے سے حکم استعمال دیا جائے گا اور صحیح یہ ہے کہ بے ضرورت کتنا ہی ٹکڑا ہو مستعمل کردے گا۔ فتح القدیر میں ہے :

لو ادخل الجنب في البئر غیر الید والرجل من الجسد افسدہ لان الحاجۃ فیھما وقولنا من الجسد یفید الاستعمال بادخال بعض عضو وھو یوافق المروی عن ابي یوسف فی الطاھر اذا ادخل رأسہ فی الاناء

وابتل بعض رأسه انه يصير مستعملا اما الرواية المعروفة عن ابي يوسف انه لايصير مستعملا ببعض العضو 4 - اگر جنب نے کنویں میں ہاتھ پیر کے علاوہ کوئی عضو ڈالا تو پانی فاسد ہو جائے گا، کیونکہ ضرورت صرف انہی دو میں ہے اور ہمارا قول من الجسد بعض عضو کے داخل کرنے سے مستعمل ہونے کا فائدہ دیتا ہے ، اور وہ ابو یوسف سے مروی شدہ قول کے موافق ہے ، وہ فرماتے ہیں کہ پاک شخص نے کسی برتن میں اپنا سر ڈالا اور اس کا کچھ حصہ تر ہو گیا تو مستعمل ہوگا ، اور ابو یوسف سے جو روایت معروف ہے وہ یہ ہے کہ عضو کے بعض حصہ سے مستعمل نہ ہو گا۔ ت

1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء ومالا یجوز نورانی کتب خانہ پشاور ۷۱/۱ 2 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۷۱/۱ 3 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۳۸/۱ 4 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء ومالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۸۱/۱

Fatawa Razawiya Volume Two

In the same (source), some before it is written: Arabic: If it was a finger or more without the palm, it does not harm, and with the palm, it is contrary to that; it was mentioned in al-Khulasa, and it is not without need to reflect on its reasoning. | Urdu: If it is a finger or more but less than the palm, it is not harmful, but with the palm, it is the opposite; this was mentioned in 'Al-Khulasa', and there is a need to reflect on its reasoning. (End note)

In 'Wajiz Imam Kurdari', it is written: Arabic: What is known from the second Imam is the absence of corruption as long as it does not become a complete limb, and corruption is the apparent [view]. | Urdu: It is well known from Imam Thani that as long as the complete limb is not inserted, there is no corruption, although corruption is apparent. (End note)

Arabic: I say: The truth is that the criterion is necessity, so where it is repelled by part of the limb and the whole is inserted, it becomes used (musta'mal). Perhaps this is the interpretation of that narration that inserting the fingers for scooping does not corrupt, unlike the palm. Therefore, it is said in al-Khaniya in the chapter of Wudhu: "If he does not have a small vessel with him, then he scoops from the basin with the fingers of his left hand joined together, not with the palm." | Urdu: I say: The truth is that the basis for the ruling is necessity; so where the need is fulfilled by a part of the limb, if the entire limb is inserted, the water becomes 'used'. Perhaps this is the interpretation of that narration which states that inserting fingers to scoop water does not corrupt it, unlike the palm. Therefore, it is stated in the chapter of Wudhu in 'Al-Khaniya' that if one does not have a small vessel, he should scoop water from the basin by joining the fingers of his left hand together and not by putting in the palm. (End note)

Therefore, we have maintained a general rule; the remaining benefits are evident from our treatise 'Al-Tars al-Mu'addal'. There are two ways to make it suitable (1) for Wudhu: one is that it should be mixed with pure and purifying water in an amount exceeding its own; then the whole will become suitable for Wudhu. In 'Durr al-Mukhtar' it is said: Arabic: The predominance of the mixing [water], if it is similar like used water, then [it is decided] by the parts; if the absolute [pure water] is more than half, purification is permissible. | Urdu: If the predominance of the mixing water is of the same kind, such as used water, then the parts (quantity) will be considered; if the absolute (quantity) is more than half.

[1] Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudhu is Permissible and with which it is Not, Nuriya Razawiya Sukkur 1/76. [2] Bazzaziya with al-Hindiyya, Type: Regarding Used, Restricted, and Absolute [Water], Nurani Kutub Khana Peshawar 9/4. [3] Khaniya with al-Hindiyya, Description of Wudhu, Nurani Kutub Khana Peshawar 1/33.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

इसी (स्रोत) में इससे कुछ पहले है: अरबी: अगर उंगली या उससे ज़्यादा हो हथेली के बिना तो नुक़सान नहीं पहुँचाता, और हथेली के साथ इसके विपरीत है; इसे अल-ख़ुलासा में ज़िक्र किया गया, और यह इसकी वजह पर ग़ौर करने की ज़रूरत से खाली नहीं है। | उर्दू: अगर उंगली या उससे ज़्यादा हो और हथेली से कम हो तो नुक़सानदेह नहीं, और हथेली के साथ इसके विपरीत है, इसे 'ख़ुलासा' में ज़िक्र किया गया है, इसमें ज़रूरत है कि इसकी वजह पर ग़ौर किया जाए। (समाप्त)

वजीज़ इमाम कुरदरी में है: अरबी: इमाम सानी से जो मशहूर है वह फ़साद (पानी का ख़राब होना) का न होना है जब तक कि पूरा अंग न बन जाए, और फ़साद ही ज़ाहिर (स्पष्ट मत) है। | उर्दू: इमाम सानी से मशहूर यह है कि जब तक पूरा अंग दाखिल न हो, फ़साद नहीं होता, हालाँकि फ़साद ज़ाहिर है। (समाप्त)

अरबी: मैं कहता हूँ: हक़ यह है कि कसौटी ज़रूरत है, तो जहाँ वह अंग के कुछ हिस्से से दूर हो जाए और पूरा हिस्सा दाखिल कर दिया जाए, तो वह मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाता है। शायद यही उस रिवायत का महमल (तात्पर्य) है कि चुल्लू भरने के लिए उंगलियों का डालना फ़ासिद नहीं करता, हथेली के विपरीत। इसीलिए ख़ानिया में वज़ू के बाब में कहा गया है: "अगर उसके पास छोटा बर्तन न हो, तो वह तश्त से अपने बाएँ हाथ की उंगलियों को मिला कर चुल्लू भरता है, हथेली से नहीं।" | उर्दू: मैं कहता हूँ: सच यह है कि हुक्म की वजह ज़रूरत है; तो जहाँ ज़रूरत अंग के कुछ हिस्से से पूरी हो जाती हो, वहाँ अगर पूरा अंग डाल दिया तो पानी 'मुस्तअमल' हो जाएगा। और शायद यह उस रिवायत का मक़सद है जिसमें बताया गया है कि चुलू भर कर पानी लेने के लिए उंगलियों का डालना पानी को फ़ासिद नहीं करता, हथेली के विपरीत। इसीलिए 'ख़ानिया' के वज़ू के बाब में है कि अगर उसके पास छोटा बर्तन न हो तो तश्त से अपने बाएँ हाथ की उंगलियाँ मिला कर पानी निकाल ले, हथेली न डाले। (समाप्त)

इसलिए हमने आम हुक्म रखा है; बाक़ी फ़ायदे हमारे रिसाले 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' से ज़ाहिर हैं। उसे (1) वज़ू के क़ाबिल बनाने के दो तरीक़े हैं, एक यह कि अपनी मिक़दार (मात्रा) से ज़्यादा पाक और पाकीज़ा पानी में मिला दिया जाए, तो सब वज़ू के क़ाबिल हो जाएगा। दुर्रे मुख़्तार में है: अरबी: मिलने वाले [पानी] का ग़लबा (प्रभुत्व), अगर वह मुस्तअमल की तरह समान हो, तो हिस्सों के हिसाब से [तय होगा]; अगर मुतलक़ [शुद्ध पानी] आधे से ज़्यादा है, तो तहारत जायज़ है। | उर्दू: मिलने वाले

पानी का ग़लबा अगर उसी की तरह हो जैसे मुस्तअमल पानी, तो हिस्सों (मात्रा) का एतबार होगा; अगर मुतलक़ (मात्रा) आधे से ज़्यादा है।

---

[1] फ़तहुल क़दीर, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वज़ू व माला यजूज़ु, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/76। [2] बज़्ज़ाज़िया मअ अल-हिन्दिया, नऊ फ़िल मुस्तअमल वल मुक़य्यद वल मुतलक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 4/9। [3] ख़ानिया मअ अल-हिन्दिया, सिफ़तुल वज़ू, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/33।

اسی میں اس سے کچھ پہلے ہے: ان کان اصبعا او اکثر دون الکف لا یضر ومع الکف بخلافه ذکره في الخلاصة ولا یخلو من حاجة الی تأمل وجهه[1]۔ | اگر انگلی یا اس سے زیادہ ہو اور ہتھیلی سے کم ہو تو مضر نہیں اور ہتھیلی کے ساتھ اس کے برعکس ہے ، اس کو خلاصہ میں ذکر کیا، اس میں ضرورت ہے کہ اس کی وجہ پر غور کیا جائے۔ت

وجیز امام کردری میں ہے: المعروف عن الامام الثانی عدم الفساد مالم یصر عضوا تاما والفساد ھو الظاھر[2] اھ | امام ثانی سے مشہور یہ ہے کہ جب تک پورا عضو داخل نہ ہو فساد نہیں، حالانکہ فساد ظاہر ہے۔ت اقول: الحق ان المناط الحاجة فحیث کانت تندفع ببعض العضو فادخل کله یصیر مستعملا ولعل هذا هو محمل تلك الروایة ان ادخال الاصابع للاغتراف لا یفسد بخلاف الکف ولهذا قال في الخانیة من باب الوضوء ان لم تکن معه آنیة صغیرة فانه یغترف من التور باصابع یده الیسری مضمومة لا بالکف[3]۔ | میں کہتا ہوں حق یہ ہے کہ حکم کی علت حاجت ہے تو جہاں ضرورت عضو کے بعض حصے سے پوری ہو جاتی ہو وہاں اگر کل عضو ڈال دیا تو پانی مستعمل ہو جائے گا اور شاید یہ اُس روایت کا محمل ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ چُلّو بھر کر پانی لینے کیلئے انگلیوں کا ڈالنا پانی کو فاسد نہیں کرتا، بخلاف ہتھیلی کے، اس لئے خانیہ کے باب وضو میں ہے اگر اس کے پاس چھوٹا برتن نہ ہو تو تشت سے اپنے بائیں ہاتھ کی انگلیاں ملا کر پانی نکال لے ہتھیلی نہ ڈالے۔ت

ولہذا ہم نے حکمِ عام رکھا باقی فوائد ہمارے رسالہ الطرس المعدل سے ظاہر ہیں اُسے قابل (۱) وضو کرنے کے دو طریقے ہیں، ایک یہ کہ اپنی مقدار سے زائد آبِ طاہر مطہر میں ملا دیا جائے سب قابلِ وضو ہو جائے گا۔ در مختار میں ہے: غلبة المخالط لو مماثلا کمستعمل فبا لا جزاء فان

المطلق اکثر من النصف جاز التطهیر | ملنے والے پانی کا غلبہ اگر اسی کی مثل ہو جیسے مستعمل پانی تو اعتبار اجزاء (مقدار) کا ہوگا، اگر مطلق (مقدار) نصف سے زیادہ ہے

---

[1] فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوٴ ومالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۷۶/۱ [2] بزازیہ مع الہندیہ نوع فی المستعمل والمقید والمطلق نورانی کتب خانہ پشاور ۹/۴ [3] خانیہ مع الہندیہ صفۃ الوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ۳۳/۱

Fatawa Razawiyyah Volume 2

| 1. بالكل والا لا | Then it is permissible to obtain purification from all of it, otherwise not. (T) |

Secondly, one should keep pouring pure and purifying water into it until its vessel fills and starts overflowing, and everything becomes pure and purifying. This is because by flowing with pure water, impure water becomes pure, so it becoming non-purifying is even more likely. It is stated in 'Durr al-Mukhtar':

| 2. المختار طهارة المتنجس بمجرد جريانه | The chosen view is that impure water will become pure merely by flowing. (T) |

It is in Radd al-Muhtar:

| بمجرد جريانه بأن يدخل من جانب ويخرج من آخر حال دخوله وان قل الخارج بحدود لا يلزم ان يكون ممتلاً اول وقت الدخول لانه اذا كان ناقصاً فدخل الماء حتى امتلاً وخرج بعضه طهر ايضا كما حققه في الحلية 3. | Merely by its flowing, such that it is entered from one side and taken out from the other side during its entry, even if the exit is little. According to 'Bahr', it is not necessary that it be full at the time of entry, because when it is incomplete and water enters until the vessel fills and then water comes out, then also this water will become pure, as is researched in 'Hilyah'. (T) |

It is in Bada'i:

| 4. وعلى هذا حوض الحمام والاوانى اذا تنجس | And on this basis, the pool of a bath or vessels are to be compared when they become impure. (T) |

It is in Shami:

| مقتضاه انه على قول الصحيح تطهر الاواني ايضاً بمجرد الجريان وقد علل في البدائع هذا القول بأنه صار ماء جاريا فاتضح الحكم ولله الحمد اه وتمامه فيه 5. | Its requirement is that according to the correct view, the vessel will also become pure merely by the flowing of water, and the reason for this is explained in 'Badai' that it has become flowing water, so the ruling of flowing water will apply to it, thus the ruling became clear. And praise be to Allah (Exalted) and its complete discussion is in it. (T) |

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/34
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/36
3. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/143
4. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/143

5. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/143

फ़तावा रज़विया जिल्द दो (भाग 2)

| 1. بالکل والا لا | तो सबसे पाकी (शुद्धता) हासिल करना जायज़ है वरना नहीं। (त) |

दूसरा यह कि उसमें पाक और पाक करने वाला पानी डालते रहें यहाँ तक कि उसका बर्तन भर कर उबलने और बहना शुरू हो जाए तो सब पाक और पाक करने वाला हो जाएगा क्योंकि इस तरह पाक पानी के साथ बहाने से नापाक पानी पाक हो जाता है तो ग़ैर मुतह्हिर (अशुद्ध) हो जाना बदरजा-ए-औला (प्रथमतः) दर्र-ए-मुख्तार में है:

| المختار طهارة المتنجس 2. بمجرد جريانه | मख़्तार कौल यह है कि नजिस (अशुद्ध) पानी महज़ जारी होने से पाक हो जाएगा। (त) |

रद्दुल मुहतार में है:

| بمجرد جريانه بأن يدخل من جانب ويخرج من آخر حال دخوله وان قل الخارج بحدود لا يلزم ان يكون ممتلاً اول وقت الدخول لانه اذا كان ناقصاً فدخل الماء حتى امتلاً وخرج بعضه طهر ايضا كما حققه في الحلية 3. | महज़ इसके जारी होने से, कि एक तरफ़ से दाख़िल किया जाए और दूसरी तरफ़ से निकाला जाए इसके दाख़िल होने की हालत में, अगरचे ख़ारिज कम हो, बह्र, यह ज़रूरी नहीं कि दाख़िल होते वक़्त भरा हुआ हो, क्योंकि जब कम होगा और पानी दाख़िल होकर बर्तन भर जाए फिर पानी निकल जाए तो भी यह पानी पाक हो जाएगा, जैसा कि हिलिया में तहक़ीक़ की। (त) |

बदाइअ में है:

| 4. وعلى هذا حوض الحمام والاوانى اذا تنجس | और इसी पर हम्माम के हौज़ को क़यास किया जाए या बर्तनों को जब वो नापाक हो जाएँ। (त) |

शामी में है:

| مقتضاه انه على قول الصحيح تطهر الاواني ايضاً بمجرد الجريان وقد علل في البدائع هذا القول بأنه صار ماء جاريا فاتضح الحكم ولله الحمد اه وتمامه فيه 5. | इसका मुक़्तज़ा यह है कि कौल-ए-सहीह पर बर्तन भी महज़ पानी के बहने से पाक हो जाएँगे, और इसकी वजह बदाइअ में

यह बयान की है कि यह जारी पानी हो गया, तो जारी पानी का हुक्म इस पर लागू होगा, तो हुक्म ज़ाहिर हो गया वलिल्लाहिल हम्द अ्ह और इसकी मुकम्मल बहस इसी में है। (त) |

1. दर्र-ए-मुख्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/34
2. दर्र-ए-मुख्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/36
3. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/143
4. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/143
5. रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/143

पृष्ठ 121 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

| بالکل والا لا 1۔ | تو سب سے پاکی حاصل کرنا جائز ہے ورنہ نہیں۔ ت |

دوسرے یہ کہ اُس میں طاہر مطہر پانی ڈالتے رہیں یہاں تک کہ اُس کا برتن بھر کر اُبلے اور بہنا شروع ہو سب طاہر مطہر ہو جائے گا کہ اس طرح پاک پانی کے ساتھ بہانے سے ناپاک پانی پاک ہو جاتا ہے تو غیر مطہر ہو جانا بدرجہ اولیٰ در مختار میں ہے:

| المختار طھارۃ المتنجس بمجرد جریانہ 2۔ | مختار قول یہ ہے کہ نجس پانی محض جاری ہونے سے پاک ہوجائے گا۔ ت |

رد المحتار میں ہے:

| بمجرد جریانہ بأن یدخل من جانب ویخرج من آخر حال دخولہ وان قل الخارج بحدود لا یلزم ان یکون ممتلأ اول وقت الدخول لانہ اذا کان ناقصاً فدخل الماء حتی امتلأ وخرج بعضہ طھر ایضا کما حققہ في الحلیۃ 3۔ | محض اس کے جاری ہونے سے، کہ ایک طرف سے داخل کیا جائے اور دوسری طرف سے نکالا جائے اس کے داخل ہونے کی حالت میں، اگرچہ خارج کم ہو، بحر، یہ ضروری نہیں کہ داخل ہوتے وقت بھرا ہوا ہو، کیونکہ جب ناقص ہوگا اور پانی داخل ہو کر برتن بھر جائے پھر پانی نکل جائے تو بھی یہ پانی پاک ہوجائے گا، جیسا کہ حلیہ میں تحقیق کی۔ت |

بدائع میں ہے:

| وعلی ھذا حوض الحمام والاوانی اذا تنجس 4۔ | اور اسی پر حمام کے حوض کو قیاس کیا جائے یا برتنوں کو جب وہ ناپاک ہوجائیں۔ ت |

شامی میں ہے:

| مقتضاہ انہ علی قول الصحیح تطھر الاواني ایضاً بمجرد الجریان وقد علل في البدائع ھذا القول بأنه صار ماء جاریا فاتضح الحکم وللہ الحمد اہ وتمامه فیه 5۔ | اس کا مقتضی یہ ہے کہ قولِ صحیح پر برتن بھی محض پانی کے بہنے سے پاک ہوجائیں گے، اور اس کی وجہ بدائع میں یہ بیان کی ہے کہ یہ جاری پانی ہوگیا، تو جاری پانی کا حکم اس پر لاگو ہوگا، تو حکم ظاہر ہوگیا وللہ الحمد اھ اور اس کی مکمل بحث اسی میں ہے۔ ت |

1 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۴ 2 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۶ 3 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۴۳ 4 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۴۳ 5 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۴۳

Fatawa Razawiya, Volume 2 Some people say that water becomes 'Makruh' (disliked) due to it. If this refers to the context of drinking, then it is based on the correct school of thought (madhab) that 'used water' (maa-e-musta'mal) (1) is pure but not purifying; ablution (wudu) cannot be performed with it, and drinking it is Makruh. It is mentioned in 'Hulyah' and then in 'Shami': 'Swallowing it is Makruh' 1 (It is disliked for him to swallow it - T). It is mentioned in 'Durr-e-Mukhtar':

[Arabic Section]: It is pure, even if it is from a 'Junub' (person in a state of ritual impurity), and this is the apparent view, but drinking it and kneading dough with it is 'Makruh Tanzihi' (mildly disliked) due to revulsion, and according to the narration of its impurity, it is 'Makruh Tahrimi' (strongly disliked) 2. [Urdu Section]: It is pure even if it is from a person in major ritual impurity, and this is apparent, but drinking it and kneading dough with it is Makruh Tanzihi because it causes disgust, and on the narration of being impure, it is Makruh Tahrimi. (T)

And if it is intended regarding wudu, meaning that wudu will be valid but it is Makruh, then this is based on an incorrect school of thought, because the correct view is that the water becomes 'used' (musta'mal) and wudu will not be valid with it, not that it is merely 'Makruh', as we will establish with the help of Allah Almighty, for the time for which has arrived by His grace.

Investigation of the Matter: By the grace of the All-Knowing King, I say: and success is from Allah. (2) Numerous branches (of jurisprudence) have come and the reports from our three Imams (may Allah be pleased with them) and from those after them are supportive, and the reliable texts of commentaries and fatwas are recurrent, witnessing that if a person with minor ritual impurity (muhdith) puts his limb into a small amount of water before washing it, then he makes the water 'used', except for what is due to necessity, which is excused. It is said in 'Al-Fath' after establishing evidence that 'lifting ritual impurity' also changes the water even if there is no intention of proximity to God (qurbah) with it. Its text is: 'By this, the statement of Muhammad that it is only proximity is distanced, unless it is denied that this is his school of thought as Shams al-A'immah said because it is not narrated from him. And the correct view from him is that removing the ritual impurity (hadath) with water spoils the water.'

[Urdu Section Corresponding to Arabic Above]: I say by the grace of Allah Almighty that abundant branches and narrations from our three Imams and subsequent scholars and explicit statements from reliable texts and commentaries show that

when an unpurified person puts any of his limbs into a small amount of water without washing it, that water becomes 'used' (musta'mal). Yes, doing so out of necessity is pardoned. In 'Al-Fath', proof has been established on the matter that 'lifting ritual impurity' (raf'e-hadath) also causes a change in the water even if there is no intention of worship in it. After that, they said that with this, Imam Muhammad's saying that it only changes with the intention of worship becomes unlikely; his school of thought should not be accepted (in this regard), as Shams al-A'immah stated because it is not narrated from him. And the correct view from him is that removing the ritual impurity from the water spoils the water.

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 7/1
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 7/1 Page 122 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द-ए-सानी कुछ लोगों का कहना है कि इससे पानी मकरूह (नापसंद) हो जाता है। अगर पीने के हक़ में मुराद है तो मज़हब-ए-सहीह पर मबनी है कि मा-ए-मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ पानी) (१) पाक है मगर पाक करने वाला नहीं; इससे वज़ू नहीं होगा और पीना मकरूह है। 'हुलिया' और फिर 'शामी' में है: 'इसको निगलना मकरूह है' 1 (उसका इसको निगलना मकरूह है। त)। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी खंड]: वह पाक है चाहे जुनूब (नापाक व्यक्ति) से हो और यही ज़ाहिर है लेकिन नफ़रत की वजह से इसका पीना और इससे आटा गूँधना मकरूह-ए-तन्ज़ीही है, और इसकी नजासत (नापाकी) की रिवायत पर मकरूह-ए-तहरीमी है 2। [उर्दू खंड]: वह पाक है चाहे जुनूब से ही हो और यही ज़ाहिर है लेकिन इसका पीना और इससे आटा गूँधना मकरूह-ए-तन्ज़ीही है क्योंकि इससे घिन आती है, और नजिस होने की रिवायत पर मकरूह-ए-तहरीमी है। (त)

और अगर वज़ू के हक़ में मक़सूद है यानी इससे वज़ू हो जाएगा मगर मकरूह है, तो यह मज़हब-ए-ग़ैर-सहीह पर मबनी है क्योंकि सहीह यही है कि इससे पानी 'मुस्तअमल' हो जाएगा और इससे वज़ू सहीह न होगा, न यह कि सिर्फ़ कराहत हो जैसा कि हम अल्लाह तआला की तौफीक से साबित करेंगे, जिसके लिए अब समय आ गया है।

तहकीक-उल-मक़ाम: अल्लाम बादशाह के फ़ज़ल से मैं कहता हूँ: और कामयाबी अल्लाह की तौफीक से है। (२) फ़ुक़्हा की कसरत से फ़ुरूई (शाखाई) मसले आए हैं और हमारे तीनों इमामों (अल्लाह उन पर राज़ी हो) और उनके बाद के उलेमा से नकलो-रिवायत और मुस्तनद शरह व फ़तावा के नसूस (पाठ) मुतवातिर (लगातार) इस बात पर गवाह हैं कि जब बे-वज़ू शख़्स वज़ू करने से पहले अपना कोई वज़ू का अंग थोड़े पानी में डाल देता है तो वह उस पानी को 'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) बना देता है, सिवाय उस सूरत के जो ज़रूरत के तहत हो तो वह माफ़ है। 'फ़तह' में दलील कायम करने के बाद कहा गया है कि रफ़-ए-हदस (नापाकी दूर करना) भी पानी को बदल देता है चाहे उसमें अल्लाह की क़ुर्बत (इबादत) की नियत न हो। उसकी इबारत है: 'इससे इमाम मुहम्मद का यह कहना कि सिर्फ़ क़ुर्बत की नियत से ही पानी मुस्तअमल होता है, ज़ईफ़ (कमज़ोर) हो जाता है, बशर्ते कि इसे उनका मज़हब न माना जाए जैसा कि शम्सुल अइम्मा ने फ़रमाया क्योंकि यह उनसे मरवी (वर्णित) नहीं है। और उनके नज़दीक सहीह यही है कि हदस को पानी से ज़ायल करना पानी को फ़ासिद (ख़राब) कर देता है।'

[दाहिना उर्दू कॉलम]: मैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से कहता हूँ कि मुतवाफ़िर (प्रचुर) फ़ुरूअ और हमारे तीनों अइम्मा और बाद के उलेमा की नुक़ूल और मुतून व शूरूह-ए-मोतमदा की तसरीहात से मालूम होता है कि बे-वज़ू शख़्स जब अपना कोई उज़्व (अंग) धोए बग़ैर थोड़े पानी में डालेगा तो वह पानी मुस्तअमल हो जाएगा, हाँ ज़रूरत के तहत ऐसा करना माफ़ है। 'फ़तह' में इस बात पर दलील कायम की है कि रफ़-ए-हदस भी पानी में तग़य्युर (बदलाव) पैदा करता है चाहे उसमें क़ुर्बत की नियत न हो। उसके बाद उन्होंने कहा कि इससे इमाम मुहम्मद का क़ौल कि सिर्फ़ क़ुर्बत से मुतग़य्यिर (परिवर्तित) होता है, बईद (गलत) हो जाता है; उनका मज़हब न माना जाए, जैसा कि शम्सुल अइम्मा ने फ़रमाया है क्योंकि यह उनसे मरवी नहीं है, और उनसे सहीह यह है कि हदस का पानी से ज़ायल करना पानी को फ़ासिद कर देता है।

1. दुर्रे मुख्तार बाबुल मियाह मुज्तबाई देहली 1/7
2. दुर्रे मुख्तार बाबुल मियाह मुज्तबाई देहली 1/7 पेज 122 of 711

فتاوی رضویہ جلدثانی بعض لوگوں کا کہنا کہ اس سے پانی مکروہ ہو جاتا ہے اگر پینے کے حق میں مراد تو مذہب صحیح پر مبنی ہے کہ ماء مستعمل (۱)طاہر ہے مطہر نہیں اس سے وضو نہ ہوگا اور پینا مکروہ۔ حلیہ پھر شامی میں ہے: بلعہ ایاہ مکروہ1 (اس کا اس کو نگلنا مکروہ ہے۔ ت)

در مختار میں ہے:

ھو طاھر ولو من جنب وھو الظاھر لکن یکرہ شربہ والعجن بہ تنزیھا للاستقذار وعلی روایۃ نجاستہ تحریماً 2۔ | وہ پاک ہے خواہ جنب سے ہی ہو اور یہی ظاہر ہے لیکن اس کا پینا اور اس سے آٹا گوندھنا مکروہ تنزیہی ہے کیونکہ اس سے گھن آتی ہے، اور نجس ہونے کی روایت پر مکروہ تحریمی ہے۔(ت)

اور اگر وضو کے حق میں مقصود یعنی اس سے وضو ہو جائے گا مگر مکروہ ہے تو مذہب غیر صحیح پر مبنی ہے کہ صحیح یہی ہے کہ اس سے پانی مستعمل ہو جائے گا اور اس سے وضو صحیح نہ ہوگا نہ یہ کہ صرف کراہت ہو کما سنحققہ بتوفیقس اللہ تعالیٰ قد ان اوانہ بتوفیقہ عز شانہ۔

تحقیق المقام: بفضل الملک العلام اقول: وباللہ التوفیق اتت (۲) الفروع متوافرۃ والنقول عن ائمتنا الثلثۃ رضی اللہ تعالی عنھم وعمن بعدھم متظافرۃ ونصوص معتمدات الشروح والفتاوی متواترۃ شاھداتٍ علی ان المحدث اذا ادخل عضوہ قبل غسلہ فی ماء قلیل فانہ یجعل الماء مستعملا الا ماکان عن ضرورۃ فعفی قال فی الفتح بعد اقامۃ البینۃ علی ان رفع الحدث ایضاً مغیر للماء وان لم تکن معہ نیۃ قربۃ مانصہ وبھذا یبعد قول محمد انہ التقرب فقط الا ان یمنع کون ھذا مذھبہ کما قال شمس الائمۃ قال لانہ لیس بمروی | میں بفضلہ تعالیٰ کہتا ہوں کہ متوافر فروع اور ہمارے تینوں ائمہ اور بعد کے علماء کی نقول اور متون وشروح معتمدہ کی تصریحات سے معلوم ہوتا ہے کہ بے وضو شخص جب اپنا کوئی عضو دھوئے بغیر تھوڑے پانی میں ڈالے گا تو وہ پانی مستعمل ہو جائے گا، ہاں ضرورتاً ایسا کرنا

معاف ہے، فتح میں اس امر پر دلیل قائم کی ہے کہ رفع حَدَث بھی پانی میں تغیر پیدا کرتا ہے خواہ اس میں تقرب کی نیت نہ ہو، اس کے بعد انہوں نے کہا کہ اس سے امام محمد کا قول کہ صرف تقرب سے متغیر ہوتا ہے، بعید ہو جاتا ہے ان کا مذہب نہ مانا جائے، جیسا کہ شمس الائمہ نے فرمایا ہے کیونکہ یہ ان سے مروی نہیں ہے، اور ان سے صحیح یہ ہے کہ حدث کا پانی سے زائل کرنا پانی کو فاسد کردیتا ہے،

Fatawa Ridawiyyah, Volume 2

From him, and the correct view according to him is that removing ritual impurity (hadath) with water invalidates it (makes it 'used' or must'amal). Similar to this is narrated from Al-Jurjani; they derived evidence for this from the case of a person who dives into water to retrieve a bucket. Imam Muhammad said regarding such a person that the man is pure and the water is also pure. The answer is that removing ritual impurity, according to him, invalidates the water, except in cases of necessity and need. This is as we all say: if a person without wudu, a person in a state of major ritual impurity (junub), or a menstruating woman who has become pure, puts their hand into the water to scoop some out, it does not become 'used' (must'amal) due to necessity. However, if they put their foot or head in, the water becomes invalidated due to lack of necessity. And in (1) the Book of Al-Hasan from Abu Hanifah: If a junub or a person without wudu dips both hands up to the elbows or one of their feet into a large basin, wudu is not permissible with it, because the obligation [of washing that limb] has been fulfilled for him. This is because necessity was not established in dipping up to the elbows. If necessity were established, such as if (2) a jug fell into a cistern and one put their hand in up to the elbow to retrieve it, it would not become 'used'. This is explicitly stated in 'Al-Khulasah'. He said: (3) Conversely, if one dips their hand to cool down, it becomes 'used' because necessity is not found. End quote. Similarly, it is stated in 'Al-Tabyin'. In the issue of the well, for Imam Muhammad, it was added as a reason that the falling of a bucket into a well occurs frequently, and the state of major ritual impurity (janabah) also occurs frequently. So, if they had to wash themselves every time they retrieved a fallen bucket, they would be in difficulty. End quote. And in 'Al-Khaniyah': (4) Our companions (scholars), may Allah Almighty have mercy on them, have agreed...

1 Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is Permissible and with which it is Not, Nooriyeh Rizviyeh Sukkur, 1/76 2 Tabyin al-Haqaiq, Book of Purification, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, 25/1 Page 123 of 711

उनसे, और उनके निकट सही यह है कि पानी से 'हदस' (अशुद्धि) को दूर करना उसे 'फ़ासिद' (दूषित/मुस्तअमल) कर देता है। और इसी के समान जुर्जानी से भी वर्णित है। उन्होंने उस व्यक्ति के मसले से प्रमाण लिया है जो डोल निकालने के लिए पानी में गोता लगाए। इमाम मुहम्मद ने उस व्यक्ति के बारे में फ़रमाया कि पुरुष भी पवित्र है और पानी भी पवित्र है। इसका उत्तर यह है कि उनके निकट अशुद्धि दूर करना पानी को दूषित कर देता है, सिवाय आवश्यकता और ज़रूरत के समय। जैसा कि हम सब कहते हैं कि यदि बिना वज़ू वाला, नापाक (जुनुब) या वह महिला जो माहवारी से पवित्र हो चुकी हो, पानी निकालने के लिए उसमें हाथ डाले, तो ज़रूरत की वजह से वह पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा। इसके विपरीत यदि उसने अपना पैर या सिर डाला तो आवश्यकता न होने के कारण पानी दूषित हो जाएगा। और (1) हसन की किताब में अबू हनीफ़ा से वर्णित है कि यदि जुनुब या बिना वज़ू वाले व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ कोहनियों तक या अपना एक पैर किसी बर्तन (मर्तबान) में डाला, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, क्योंकि उसका फ़र्ज़ पूरा हो चुका है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि कोहनियों तक हाथ डालने में आवश्यकता सिद्ध नहीं हुई। यदि आवश्यकता सिद्ध हो जाए, जैसे कि (2) लोटा हौज़ में गिर गया और उसे निकालने के लिए कोहनियों तक हाथ डाले, तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा। 'अल-ख़ुलासा' में इसकी स्पष्ट व्याख्या की गई है। फ़रमाया: (3) इसके विपरीत यदि हाथ ठंडक पाने के लिए डुबोए, तो आवश्यकता न होने के कारण पानी मुस्तअमल हो जाएगा। 'अल-तब्यीन' में भी इसी तरह है। और इमाम मुहम्मद ने कुएँ के मसले में अतिरिक्त तर्क के रूप में बताया कि कुएँ में डोल का गिरना बहुत अधिक होता है, और जनाबत (अशुद्धि) भी बहुत अधिक होती है। अतः यदि हर बार डोल निकालने के लिए ग़ुस्ल अनिवार्य हो, तो लोग मुश्किल में पड़ जाएंगे। 'अल-ख़ानिया' में है: (4) हमारे साथियों (विद्वानों), अल्लाह उन पर रहम करे, ने सहमति व्यक्त की है...

1 फ़तह अल-क़दीर, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/76 2 तब्यीन अल-हक़ाइक़, किताबुल तहारत, मतबा अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 25/1 पृष्ठ 123 / 711

عنه والصحیح عنده ان ازالة الحدث بالماء مفسد له ومثله عن الجرجاني وما استدلوا به علیه من مسألة المنغمس لطلب الدلو حیث قال محمد الرجل طاهر والماء طاهر جوابه ان الازالة عنده مفسدة الا عند الضرورة والحاجة کقولنا جمیعا لو ادخل المحدث اوالجنب اوالحائض التي طهرت الید في الماء للاغتراف لایصیر مستعملا للحاجة بخلاف مالو ادخل رجله اورأسه حیث یفسد الماء لعدم الضرورة وفي (۱) کتاب الحسن عن ابی حنیفة ان غمس جنب او غیر متوضئ یدیه الی المرفقین اواحدی رجلیه في اجانة لم یجز الوضوء منه لانه سقط فرضه عنه وذلك لان الضرورة لم تتحقق في الادخال الی المرفقین حتی لوتحققت بان (۲) وقع الکوز في الجب فادخل یده الی المرفق لاخراجه لایصیر مستعملا نص علیه في الخلاصة قال (۳) بخلاف مالو ادخل یده للتبرد یصیر مستعملا لعدم الضرورة اهـ وفي التبیین نحوه وزاد معللا لمحمد في مسألة البئران وقوع الدلو في البئر یکثر والجنابة تکثر ایضا فلو اغتسلوا لاخراج الدلو کلما وقع یخرجون اهـ وفي الخانیة (۴) اتفق اصحابنا رحمهم الله تعالی

اور اسی کی مثل جرجانی سے منقول ہے، انہوں نے اُس شخص سے استدلال کیا ہے جو ڈول نکالنے کیلئے پانی میں غوطہ لگائے۔ امام محمد نے اس شخص کی بابت فرمایا مرد بھی پاک ہے اور پانی بھی پاک ، جواب یہ ہے کہ ازالہ حدث اُن کے نزدیک پانی کو فاسد کر دیتا ہے مگر ضرورتاً نہیں کرتا ہے جیسا کہ ہم سب کہتے ہیں کہ اگر بے وضوء ناپاک یا حائض جو پاک ہوگئی ہو اگر پانی میں ہاتھ ڈال کر چلو بھریں تو ضرورت کی وجہ سے یہ پانی مستعمل نہ ہوگا، ہاں اگر سر یا پیر ڈالا تو پانی فاسد ہو جائے گا کہ یہاں ضرورت نہیں ہے، اور حسن کی کتاب میں ابو حنیفہ سے ہے کہ اگر جنب یا بے وضو شخص نے اپنے دونوں ہاتھ کہنیوں تک یا ایک پیر مرتبان میں ڈالا تو اس سے وضو جائز نہیں، کیونکہ اس کا فرض ساقط ہوا ہے، کیونکہ دونوں کہنیوں تک

ڈبونے کی کوئی ضرورت نہ تھی، ہاں اگر ضرورت پائی گئی مثلاً لوٹا تالاب میں تھا تو اس کو نکالنے کیلئے کہنیوں تک ہاتھ ڈالے تو پانی مستعمل نہ ہوگا، خلاصہ نے اس کی تصریح کی ہے فرمایا۔ بخلاف اس کے کہ اگر ہاتھ ٹھنڈک حاصل کرنے کو ڈبوئے تو پانی ضرورت نہ پائے جانے کی وجہ سے مستعمل ہو جائیگا اھ اس کا اور تبیین میں بھی ایسا ہی ہے اور امام محمد کے کنویں کے مسئلہ میں باضافہ دلیل اس طرح بیان کیا ہے کہ کنویں میں ڈول کا گرنا بکثرت ہوتا ہے اور جنابت بھی بکثرت ہوتی ہے تو اگر ہر مرتبہ ڈول نکالنے کیلئے غسل ضروری ہو

1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء مالا یجوز نوریه رضویه سکهر ۱ / ۷۶ 2 تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبع الامیریہ ببولاق مصر ۲۵/۱ Page 123 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

In the Zahir al-Riwayah (manifest reports), it is stated that water used on the body does not remain purifying. Scholars differ on whether it becomes 'used' (musta'mal) for the falling of the obligation when one intends cooling or retrieving a bucket from a well. Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah have mercy on them) said it becomes used. Muhammad (may Allah have mercy on him) in the famous report from him said it does not. [Arabic Text ends]

...then people would fall into hardship. And in 'Al-Khaniya' it is stated that our companions in Zahir al-Riwayah are agreed on this matter that the water used on the body will not remain purifying. And there is a difference in this whether putting one's hand to cool it or to take out a bucket would make it used due to the falling of the obligation? Abu Hanifa and Abu Yusuf's saying is that it will become used, and the famous report from Muhammad is that it will not. This is due to necessity, as mentioned before. However, the Imam did not consider necessity here because the need for immersion is rare, while taking a handful with the hand is common. The reason for necessity is limited to seeking a bucket. Cooling was mentioned because the famous report from Muhammad is that he considers only performing an act of worship (qurbat) as the reason for usage. This is also in 'Al-Khaniya', hence it mentioned it, and 'Al-Bahr', 'Al-Nahr', and 'Al-Durr' followed it. [Urdu Text ends]

I say: (1) This is surprising after they agreed that the correct view is that Muhammad does not limit the change (of water status) to an act of worship alone. Ash-Shami said: We have stated previously that this is contrary to the correct view according to him. Therefore, 'Al-Hidayah' restricted itself to the issue of seeking a bucket. I say: 'Al-Hidayah'...

(2) is also among those following like 'Al-Khaniya' and many others on the view that Muhammad only makes the cause an act of worship (qurbat). We have mentioned it in the margin.

Footnotes: 1. Fatawa Khaniya on Al-Alamgiri, The Used Water, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/12 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, 94/1 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, 94/1, 128/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

ज़ाहिर अल-रिव़ाया में है कि शरीर पर इस्तेमाल किया गया पानी पवित्र करने वाला (तहूर) नहीं रहता। विद्वानों में इस बात पर मतभेद है कि क्या वह फ़र्ज़ के समाप्त होने के कारण 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है जब कोई ठंडक या कुएं से बाल्टी निकालने का इरादा करता है। इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा कि वह मुस्तअमल हो जाएगा, और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) से प्रसिद्ध रिवायत यह है कि नहीं होगा। [अरबी पाठ समाप्त]

...तो लोग तंगी में पड़ जाएंगे। और खानिया में है कि हमारे साथी ज़ाहिर रिवायत में इस बात पर सहमत हैं कि जो पानी शरीर पर इस्तेमाल हो वह तहूर नहीं रहेगा। और इसमें मतभेद है कि अगर हाथ ठंडा करने के लिए या बाल्टी निकालने के लिए हाथ डाला तो क्या वह फ़र्ज़ गिरने की वजह से मुस्तअमल होगा या नहीं? अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ का कहना है कि मुस्तअमल हो जाएगा, और मुहम्मद से मशहूर रिवायत यह है कि नहीं होगा। यानी ज़रूरत की वजह से जैसा कि गुज़रा, लेकिन इमाम ने यहाँ ज़रूरत का एतबार नहीं किया, क्योंकि गोता लगाने की ज़रूरत कभी-कभार ही होती है, हाँ हाथ से चुल्लू भरना अक्सर होता है। और ज़रूरत की वजह बाल्टी माँगने तक सीमित है। ठंडक का ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि मुहम्मद से यह रिवायत मशहूर हुई कि वे केवल इबादत (क़ुर्बत) को इस्तेमाल की वजह मानते हैं। और खानिया में भी यही है, इसलिए उसने इसका ज़िक्र किया और बहर, नहर और दुर ने उसका अनुसरण किया। [उर्दू पाठ समाप्त]

मैं कहता हूँ: (1) यह आश्चर्यजनक है जब वे इस बात को मानते हैं कि सही यही है कि मुहम्मद पानी की स्थिति बदलने को केवल इबादत तक सीमित नहीं रखते। शामी ने कहा: हमने पहले बताया है कि यह उनके नज़दीक सही के ख़िलाफ़ है, इसलिए हिदाया में केवल बाल्टी खोजने के मुद्दे पर बस किया गया है। मैं कहता हूँ हिदाया...

(2) भी खानिया और अन्य कई लोगों की तरह अनुसरण करने वाला है कि इमाम मुहम्मद केवल इबादत (क़ुर्बत) को कारण मानते हैं। हमने इसका ज़िक्र हाशिए (तर्स) में किया है।

फुटनोट: 1. फ़तावा खानिया अलल-आलमगीरी, अल-मा अल-मुस्तअमल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/12 2. रद्दुल मुहतार, बाब अल-मियाह, 94/1 3. रद्दुल मुहतार, बाब अल-मियाह, 94/1, 128/1

पृष्ठ 711 में से 124

فی الروایات الظاھرۃ علی ان الماء المستعمل فی البدن لا یبقی طھورا واختلفوا ھل یصیر مستعملا لسقوط الفرض اذا قصد التبردا و اخراج الدلو من البئر قال ابو حنیفۃ وابو یوسف رحمھما اللہ تعالیٰ یصیر مستعملا وقال محمد رحمہ اللہ تعالیٰ فی المشھور عنہ لا اھـ ترجمہ: روایات ظاہرہ میں اس پر اتفاق ہے کہ بدن پر استعمال شدہ پانی پاک کرنے والا (طہور) نہیں رہتا، اور ان میں اس پر اختلاف ہے کہ اگر ٹھنڈک یا کنویں سے ڈول نکالنے کا ارادہ ہو تو کیا وہ فرض کے ساقط ہونے کی وجہ سے مستعمل ہو جائے گا؟ امام ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف رحمہم اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ مستعمل ہو جائے گا، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے مشہور روایت یہ ہے کہ نہیں ہوگا۔

تو لوگ تنگی میں پڑ جائیں گے اھ اور خانیہ میں ہے کہ ہمارے اصحاب روایات ظاہرہ میں اس امر پر متفق ہیں کہ جو پانی بدن پر مستعمل ہو وہ طہور نہ رہے گا اور اس میں اختلاف ہے کہ اگر ہاتھ ٹھنڈا کرنے کیلئے یا ڈول نکالنے کیلئے ہاتھ ڈالا تو آیا سقوطِ فرض کی وجہ سے مستعمل ہوگا یا نہیں؟ ابو حنیفہ اور ابو یوسف کا قول ہے کہ مستعمل ہوجائے گا اور محمد سے مشہور روایت یہ ہے کہ نہ ہوگا اھ یعنی ضرورت کی وجہ سے جیسا کہ گزرا، مگر امام نے یہاں ضرورت کا اعتبار نہ کیا، کیونکہ غوطہ لگانے کی حاجت شاذ ہی ہوتی ہے ہاں ہاتھ سے چلو بھرنا عموماً ہوتا ہے اھ ش اور ضرورت کی علت ڈول طلب کرنے پر منحصر ہے ٹھنڈک کا ذکر اس وجہ سے کیا کہ محمد سے یہ روایت مشہور ہوئی کہ وہ صرف ادائے قربت کو وجہ استعمال قرار دیتے ہیں اور خانیہ میں بھی یہی ہے تو اس لئے اس کو ذکر کیا اور بحر، نہر اور دُر نے اس کی پیروی۔ت

میں کہتا ہوں یہ امر باعثِ تعجب ہے کیونکہ وہ اس امر کو مانتے ہیں کہ صحیح یہی ہے کہ محمد پانی کے تغیر کو قربت تک ہی محدود نہیں رکھتے۔ اش نے فرمایا ہم پہلے لکھ آئے ہیں کہ یہ اُن کے نزدیک صحیح کے خلاف ہے اس لئے ہدایہ میں صرف ڈول کی تلاش کے مسئلہ پر اکتفاء کیا ہے اھ ت

میں کہتا ہوں ہدایہ بھی پیروی کرنے والا ہے، جیسے صاحبِ خانیہ ہیں اور بہت سے دوسرے فقہاء کہ امام محمد سبب، صرف تقرب کو قرار دیتے ہیں، اور ہم نے اسے طرس (حاشیہ) میں ذکر کر دیا ہے۔

حواشی: 1 فتاویٰ خانیہ علی العالمگیری الماء المستعمل نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۲ 2 ردالمحتار باب المیاہ ۹۴/۱ 3 ردالمحتار باب المیاہ ۹۴/۱ ۱۲۸/۱

[Main Body Text - Left Column Arabic, Right Column Urdu Translation/ Explanation] ...al-Mu'addal, so his restriction to mentioning the request is for what was stated. And we have mentioned this in "al-Tirs al-Mu'addal", so their restriction to the request is not for the reason mentioned. And in it, from the section of 'what falls into the well' it's updated: when he washes - i.e., in al-Khaniyah - the tips of his fingers and does not wash the limb completely, al-Hakim (may Allah Almighty have mercy on him) indicated in al-Mukhtasar that it becomes used (musta'mal) [1] [6]. As it is in the Khaniyah's section 'What falls in the well', if a person without wudu washed the tips of his fingers and did not wash the entire limb, al-Hakim said in the Mukhtasar that in this way the water will become used (musta'mal).

And in "Wajeez al-Imam al-Kurdari": if a person in a state of major ritual impurity (junub) or a menstruating woman (ha'id) puts their hand into it (i.e., into the water) to scoop out water or to take it out for cooling [2] [7]. And in Wajeez Imam Kurdari, it is stated that if a junub or a menstruating woman puts their hand in it (water) to take a handful or to take out a vessel from it, then the water will not be spoiled due to necessity. Yes, if put in to gain coolness, then it will become spoiled.

And in "al-Kafi": Muhammad did not rule the water to be used in the issue of the well due to necessity, because if they brought someone to retrieve their bucket, they could not compel him to bathe first [3]. [8] And in al-Kafi, it is stated that Imam Muhammad did not apply the rule of used water in the well issue because there is a necessity there, because if a person is found to pull out the bucket, it is not possible for people to first bind him to perform ghusl (bath).

And in "al-Khulasah", attributed [9] to "al-Asl", and something similar in "al-Khaniyah" [10]. And from it in "al-Ghunya" and the wording is by "Faqih al-Nafs" in brief: putting one's hand in to scoop water does not spoil the water, and likewise if he puts his hand into the well up to the elbow to bring out the jug, and his hand and feet in the well to search for the bucket, because of necessity. But if it's for cooling, it becomes used due to the absence of necessity [4] [11]. And in Khulasah, this thing is attributed to "al-Asl" and a similar text is in Khaniyah, and from Khaniyah it is quoted in Ghunya, and the words are of "Faqih al-Nafs" in brief: if a person puts his hand in water to take a handful, he will not spoil the water, and similarly, to take out a vessel, he put his hand into the pit up to the elbows, and similarly, if he put his hands and feet into the well to look for the bucket, then due to necessity, the water...

And in [12] "al-Hilyah": al-Quduri said: Our teacher Abu Abdullah used to say: The correct view in my opinion from the school of our companions is that the removal of ritual impurity necessitates the water being used, and there is no meaning to this disagreement as...

[Footnotes] 1. Fatawa Qazi Khan, Section on what falls into the well, 1/6. 2. Bazzaziya with al-Alamgiriyah, al-Musta'mal, al-Mufid, and al-Mutlaq, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/19. 3. Al-Kafi. 4. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Impurities, Sohail Academy Lahore, p. 152.

[मुख्य पाठ - बायां कॉलम अरबी, दायां कॉलम उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...अल-मुअद्दल, इसलिए उनका अनुरोध का उल्लेख करने तक सीमित रहना उसी कारण से है जो बताया गया। और हम इसे "अल-तिर्स अल-मुअद्दल" में बयान कर चुके हैं, इसलिए उनका अनुरोध पर बस करना उस कारण से नहीं है जो बयान किया गया। और उसमें 'कुएं में गिरने वाली चीज़ों' के अध्याय से है: जब वह धोता है - यानी 'अल-खनिया' में - अपनी उंगलियों के पोरों को और पूरे अंग को नहीं धोता है, तो अल-हाकिम (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'अल-मुख्तसर' में संकेत दिया है कि वह इस्तेमाल किया हुआ (मुस्तअमल) हो जाता है [1] [6]। जैसा कि खनिया के अध्याय 'कुएं में गिरने वाली चीज़ें' में है, बे-वज़ू ने अगर अपनी उंगलियों के किनारों को धोया और पूरा अंग नहीं धोया, तो हाकिम ने मुख्तसर में कहा कि इस तरह पानी मुस्तअमल हो जाएगा।

और "वजीज़ अल-इमाम अल-कुर्दरी" में है: यदि कोई जुनुबी या माहवारी वाली महिला उसमें (यानी पानी में) पानी निकालने के लिए या ठंडक के लिए हाथ डालती है [2] [7]। और वजीज़ इमाम कुर्दरी में है, जुनुब या हयज़ वाली ने उसमें (पानी में) चुल्लू भरने के लिए अपना हाथ डाला या उसमें से लोटा निकालने के लिए, तो पानी ज़रूरत की वजह से खराब नहीं होगा, हाँ अगर ठंडक हासिल करने के लिए डाला तो फासिद (खराब) हो जाएगा।

और "अल-काफी" में है: इमाम मुहम्मद ने कुएं के मामले में पानी के इस्तेमाल किए जाने का हुक्म ज़रूरत के कारण नहीं दिया, क्योंकि अगर वे अपना डोल (बाल्टी) निकालने के लिए किसी को लाते हैं, तो वे उसे पहले ग़ुस्ल (स्नान) करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते [3]। [8] और काफी में है कि इमाम मुहम्मद ने कुएं के मसले में पानी के मुस्तअमल होने का हुक्म इसलिए नहीं लगाया कि वहां ज़रूरत है, क्योंकि अगर डोल निकालने वाला मिल जाए तो लोगों के लिए मुमकिन नहीं कि पहले उसको ग़ुस्ल का पाबंद करें।

और "अल-खुलासा" में इसे [9] "अल-अस्ल" की ओर मनसूब किया गया है, और इसी तरह का पाठ "अल-खनिया" में है [10]। और उससे "अल-गुनिया" में उद्धृत है और शब्द संक्षिप्त रूप में "फक़ीह अन-नफ्स" के हैं: पानी निकालने के लिए हाथ डालना पानी को खराब नहीं करता है, और इसी तरह यदि उसने सुराही निकालने के लिए कोहनी तक अपना हाथ गड्ढे में डाला, और डोल की तलाश में कुएं में अपने हाथ और पैर डाले, तो ज़रूरत के कारण। लेकिन अगर ठंडक के लिए है, तो ज़रूरत न

होने के कारण वह इस्तेमाल किया हुआ (मुस्तअमल) हो जाएगा [4] [11]। और खुलासा में यह चीज़ 'अस्ल' की तरफ मनसूब है और इसी किस्म की इबारत 'खनिया' में है और 'खनिया' से 'गुनिया' में मनक़ूल है और अल्फ़ाज़ 'फक़ीह अन-नफ्स' के हैं मुख्तसरन: किसी शख्स ने पानी में अपना हाथ चुल्लू भरने के लिए डाला तो वह पानी को फासिद न करेगा और इसी तरह लोटा निकालने के लिए अपना हाथ गड्ढे में कोहनियों तक डाला, और इसी तरह हाथ पैर अगर कुएं में डोल की तलाश में डाले तो ज़रूरत की वजह से पानी...

और [12] "अल-हिलया" में है: अल-कुदूरी ने कहा: हमारे उस्ताद अबू अब्दुल्लाह कहा करते थे: मेरे नज़दीक हमारे साथियों के मज़हब में सही बात यह है कि हद्दस (नापाकी) को दूर करने से पानी इस्तेमाल किया हुआ (मुस्तअमल) हो जाता है, और इस मतभेद का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. फ़तावा काज़ी ख़ान, कुएं में गिरने वाली चीज़ों का अध्याय, 1/6. 2. बज़्ज़ाज़िया मअ अल-आलमगीरिया, अल-मुस्तअमल वल-मुफ़ीद वल-मुतलक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 2/19. 3. अल-काफी। 4. गुनियातुल मुस्तमली, नजासत का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 152.

المعدل فلیس اقتصارہ علی ذکر الطلب لما ذکر اور ہم اس کو "الطرس المعدل" میں بیان کر چکے ہیں تو ان کا وفیھا من فصل مایقع فی البئر المحدث اذا غسل طلب پر اکتفاء اس سبب سے نہیں جو ذکر کیا اور خانیہ کی فصل ای فی الخانیہ اطراف اصابعہ ولم یغسل عضو مائیقع فی البئر میں ہے، بے وضو نے اگر اپنی انگلیوں کے اتاما اشار (۵) الحاکم رحمہ اللہ تعالی فی المختصر کناروں کو دھویا اور پورا عضو نہ دھویا، حاکم نے مختصر میں کہا کہ الی انہ یصیر مستعملا ۱۸ (۶) وفی وجیز الامام اس طرح پانی مستعمل ہو جائے گا، الکردری ادخل الجنب اوالحائض فیہ (ای فی اور وجیز امام کردری میں ہے، جنب یا حائض نے اس میں (پانی الماء) یدہ للاغتراف اورفع ادخالہ للتبرد ۲۸ (۷) وفی میں) چلو بھرنے کیلئے اپنا ہاتھ ڈالا یا اس میں سے لوٹا نکالنے الکافی انما لم یحکم محمد باستعمال الماء فی کیلئے، تو پانی ضرورت کی وجہ سے خراب نہیں ہوگا، ہاں اگر مسألۃ البئر للضرورۃ فانھم لوجاءوا بمن یطلب ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے ڈالا تو فاسد ہو جائے گا، دلوھم لا یمکنھم ان یکلفوہ بالاغتسال اولا اور کافی میں ہے کہ امام محمد نے کنویں کے مسئلہ میں پانی کے ۳۸ اھ (۸) وفی الخلاصۃ معزیاً (۹) للاصل ونحوہ فی مستعمل ہونے کا حکم اس لئے نہیں لگایا کہ وہاں ضرورت الخانیۃ (۱۰) وعنھا فی الغنیۃ واللفظ لفقیہ النفس ہے، کیونکہ اگر ڈول نکالنے والا مل جائے تو لوگوں کیلئے ممکن مختصرا ادخل یدہ للاغتراف لایفسد الماء وکذا اذا نہیں کہ پہلے اس کو غسل کا پابند کریں اھ، ادخل یدہ فی الجب الی المرفق لاخراج الکوز ویدہ اور خلاصہ میں یہ چیز اصل کی طرف منسوب ہے اور اسی قسم کی ورجلیہ فی البئر لطلب الدلو لمکان الضرورۃ ولو للتبرد عبارت خانیہ میں ہے اور خانیہ سے غنیہ میں منقول ہے اور الفاظ یصیر مستعملا لانعدام الضرورۃ ۴۸ اھ (۱۱) وفی (۱۲) الحلیۃ فقیہ النفس کے ہیں مختصراً کسی شخص نے پانی میں اپنا ہاتھ قال

القدوری کان شیخنا ابو عبداللہ یقول الصحیح چلو بھرنے کیلئے ڈالا تو وہ پانی کو فاسد نہ کرے گا اور اسی طرح لوٹا عندی من مذھب اصحابنا ان ازالۃ الحدث توجب نکالنے کیلئے اپنا ہاتھ گڑھے میں کہنیوں تک ڈالا، اور اسی طرح استعمال الماء ولا معنی لھذا الخلاف اذ لا ہاتھ پیر اگر کنویں میں ڈول کی تلاش میں ڈالے تو ضرورت کی وجہ سے پانی

1۸ فتاویٰ قاضی خان فصل فی مائیقع فی البئر ۶/۱ 2۸ بزازیہ مع العالمگیری المستعمل والمفید والمطلق نورانی کتب خانہ پشاور ۱۹/۲ 3۸ الکافی 4۸ غنیۃ المستملی باب الانجاس سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۲

Fatawa Razvia - Volume Second

(1) There is a text on this, and water does not take the ruling of being 'used' (must'amal) in the issue of searching for a bucket because of necessity. Since the need to dive into a well to find a bucket is frequent, and if it were required to drain all the water every time, people would face immense hardship. Thus, it is like a person in a state of minor ritual impurity (hadath) scooping water with his palm; it does not become 'used' without disagreement, even if the intention of fulfilling an obligation exists, due to necessity. [End of quote] (1) And in al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman (15) then Ghunyat Dhuwi al-Ahkam by al-Shurunbulali, its meaning is mentioned. In the commentary of al-Wahbaniyah by al-Allamah Ibn al-Shihnah, the consideration of necessity in such matters is mentioned in al-Sughra and others. [End of quote] (17) And in al-Nihayah (18) then al-Hindiyyah: If one dives (2) for bathing for prayer, the water is spoiled (becomes used) by consensus. [End of quote] and similar to it is in al-'Inayah and others (19). And in the 'Benefits' (Fawa'id) of Imam Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad bin Umar on the commentary of al-Jami' al-Saghir by al-Imam al-Sadr al-Shahid Husam al-Din Umar bin Abdul Aziz (may Allah have mercy on them both): If one puts his foot in the well without the intention of using it, Shaykh al-Islam known as Khwahirzadah (may Allah have mercy on him) mentioned that the water becomes used according to Muhammad (may Allah be pleased with him). And Shams al-A'immah al-Halwani (may Allah have mercy on him) mentioned...

[Right Column Translation]: ...it will not be spoiled. And if he enters [the water] for the sake of obtaining coolness, the water will become used because there is no [legal] necessity. And it is stated in Al-Hilya that Al-Quduri said: Our Shaykh Abu Abdullah used to say: In my view, the correct school of thought of our companions is that removing ritual impurity is what necessitates water being 'used'. There is no significance to this disagreement because there is no explicit text (nass) in it. And in the issue of searching for a bucket, the water not becoming 'used' is due to necessity, because diving to find a bucket in a well is common, and if it were necessary to drain the entire well's water every time, people would be in severe hardship. So, it is like a person without ablution (wudu); if he takes water with a handful, the water will not become 'used' by consensus, even though the fulfillment of an obligation is being found in it, because there is necessity. And in Al-Burhan Sharh Mawahib Al-Rahman, also in Ghunyat Dhuwi Al-Ahkam Al-Shurunbulali, the same meaning is present. And in Allamah Ibn Ash-Shihna's commentary on Al-Wahbaniyah, it is stated that the

consideration of necessity in such problems is mentioned in Al-Sughra, etc. And in Al-Nihayah and Al-Hindiyyah, it is stated that if one dived to perform ghusl for prayer, the water would become 'used' by consensus. And the same is in Al-Inayah, etc. And the Fawa'id of Imam Zahir Al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad bin Umar, which is a commentary on Jami' Al-Saghir by Imam Sadr Shahid Husam Al-Din Umar bin Abdul Aziz, may Allah have mercy on him...

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Mas'ala al-Bi'r, Published by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/79. 2. Al-Hindiyyah, The water with which ablution is not permissible, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/23.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (दूसरी)

(1) इसमें स्पष्ट पाठ है कि कुएं में बाल्टी खोजने के मसले में ज़रूरत के कारण पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) का हुक्म नहीं लेता। क्योंकि बाल्टी की तलाश के लिए कुएं में गोता लगाने की ज़रूरत अक्सर पड़ती रहती है, और अगर हर बार सारा पानी निकालने की ज़रूरत पड़ जाए तो लोग बड़ी कठिनाई में पड़ जाएंगे। अतः यह उस व्यक्ति की तरह है जिसे वुज़ू की ज़रूरत हो और वह अपनी हथेली से पानी निकाले; वह बिना किसी मतभेद के'मुस्तअमल' नहीं होता, भले ही इसमें फ़र्ज़ की अदायगी पाई जा रही हो, क्योंकि ज़रूरत मौजूद है। (1) और अल-बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान (15), फिर शुनबलाली की गुनियत ज़ुविल अहकाम में इसका यही अर्थ है। अल्लामा इब्न अल-शहनह की शरह वहबनियाह में है कि इस तरह के मसलों में ज़रूरत का विचार अल-सुगरा आदि में वर्णित है। (17) और अल-निहाया (18) फिर अल-हिंदिया में है: यदि नमाज़ के लिए गुस्ल करने के लिए गोता लगाया (2) तो पानी सर्वसम्मति से खराब (मुस्तअमल) हो जाएगा। और इसी के समान अल-इनाया और अन्य (19) में है। और इमाम ज़हीर अल-दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद बिन उमर की 'फ़वाइद' में, जो इमाम सदर अल-शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (अल्लाह उन दोनों पर रहम करे) की जामे अल-सगीर की शरह है: यदि किसी ने अपना पैर कुएं में डाल दिया और उसका इरादा इस्तेमाल का नहीं था, तो शैखुल इस्लाम जिन्हें ख्वाहरज़ादा कहा जाता है (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उल्लेख किया कि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अनुसार पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है। और शम्सुल अइम्मा हलवानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उल्लेख किया...

[दायां कॉलम]: ...खराब नहीं होगा। और अगर ठंडक पाने की खातिर (पानी में) डाले तो पानी मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि यहाँ ज़रूरत नहीं है। और हल्या में है कि कुद्दूरी ने कहा हमारे शेख अबू अब्दुल्लाह फरमाते थे: मेरे नज़दीक हमारे साथियों (मज़हब के इमामों) का सही मज़हब यह है कि हदस (अशुद्धि) को दूर करना पानी के इस्तेमाल का सबब है। और इस मतभेद का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट नुस (पाठ) मौजूद नहीं है। और बाल्टी ढूँढने के मसले में पानी का मुस्तअमल न होना ज़रूरत की वजह से है क्योंकि कुएं में बाल्टी की तलाश में गोताखोरी आम है। और अगर हर बार कुएं का पूरा पानी निकालना पड़ जाए तो लोग सख़्त तंगी में मुब्तला हो जाएंगे। तो यह बिना वुज़ू वाले व्यक्ति की तरह है कि वह चुल्लू से पानी ले तो सर्वसम्मति से पानी मुस्तअमल नहीं होगा, चाहे इसमें फ़र्ज़ की अदायगी भी पाई जा रही हो, क्योंकि ज़रूरत है। और बुरहान शरह

मवाहिब अल-रहमान, साथ ही गुनियत ज़ुविल अहकाम शुनबलाली में भी इसका यही अर्थ है। और अल्लामा इब्न शहनह की शरह वहबनियाह में है कि इस किस्म के मसलों में ज़रूरत का एतबार सुगरा वगैरह में मज़कूर है। और निहाया और हिंदिया में है कि नमाज़ के लिए गुस्ल करने को गोता लगाया तो पानी बिल-इत्तिफ़ाक़ मुस्तअमल हो जाएगा। और इनाया वगैरह में भी इसी की तरह है। और इमाम ज़हीर अल-दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद बिन उमर के जो फ़वाइद शरह जामे सगीर इमाम सदर शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैह...

पाद टिप्पणियाँ: 1. अल-बहर अल-राइक़, किताबुत तहारत, मसला-ए-बिर, मतरुबा एच एम सईद कंपनी कराची, 1/79 2. हिंदिया, वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ नहीं, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/23

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(۱) نص فیہ وانما لم یأخذ الماء حکم الاستعمال فی مسألة طلب الدلو لمکان الضرورة اذ الحاجة الی الانغماس فی البئر لطلب الدلو مما یکثر و لواحتیج الی نزح کل الماء کل مرة لحرجوا حرجا عظیما فصار کالمحدث اذا غرف الماء بکفہ لایصیر مستعملا بلا خلاف وان وجد اسقاط الفرض لمکان الضرورة اھ(۱) و فی البرھان شرح مواھب الرحمن (۱۵) ثم غنیة ذوی الاحکام للشرنبلالی معناہ وفی شرح الوھبانیة للعلامة ابن الشحنة اعتبار الضرورة فی مثل ذلك (۱۶) مذکور في الصغری وغیرھا اھ (۱۷) وفی النھایة (۱۸) ثم الھندیة لو انغمس (۲) للاغتسال للصلاة یفسد الماء بالاتفاق اھ ونحوہ (۱۹) فی العنایة وغیرھا وفی فوائد الامام ظھیر الدین ابی بکر محمد بن احمد بن عمر علی شرح الجامع الصغیر للامام الصدر الشھید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز رحمھما اللہ تعالی لو ادخل رجلہ فی البئر ولم ینو بہ الاستعمال ذکر شیخ الاسلام المعروف بخواھرزادہ رحمہ اللہ تعالی ان الماء یصیر مستعملا عند محمد رضی اللہ تعالی عنہ وذکر شمس الائمة الحلواني رحمہ

فاسد نہ ہوگا اور ٹھنڈک کے حصول کی خاطر ڈالے تو پانی مستعمل ہو جائے گا کہ ضرورت نہیں ہے۔ اور حلیہ میں ہے کہ قدوری نے کہا ہمارے شیخ ابو عبداللہ فرماتے تھے میرے نزدیک ہمارے اصحاب کا صحیح مذہب یہ ہے کہ ازالہ حدث پانی کے استعمال کا موجب ہے اور اس اختلاف کا کوئی مفہوم نہیں کیونکہ اس میں نص موجود نہیں، اور ڈول کی تلاش کے مسئلہ میں پانی کا مستعمل نہ ہونا ضرورت ہونے کی وجہ سے ہے کیونکہ کنویں میں ڈول کی تلاش میں غوطہ خوری عام ہے، اور اگر ہر مرتبہ کنویں کا پورا پانی نکالنا پڑ جائے تو لوگ سخت تنگی میں مبتلا ہو جائیں گے، تو یہ بے وضو کی طرح ہے کہ وہ چلو سے پانی لے تو بالاتفاق پانی مستعمل نہ ہوگا اگر چہ اس میں اسقاط فرض بھی پایا جا رہا ہے، کیونکہ ضرورت ہے، اور برہان شرح مواہب

الرحمن، نیز غنیہ ذوی الاحکام شرنبلالی میں اس کا ہم معنی ہے، اور علامہ ابن شحنہ کی شرح وہبانیہ میں ہے کہ اس قسم کے مسائل میں ضرورت کا اعتبار صغری وغیرہ میں مذکور ہے اھ اور نہایہ و ہندیہ میں ہے کہ نماز کیلئے غسل کرنے کو غوطہ لگایا تو پانی بالاتفاق مستعمل ہو جائے گا اھ اور عنایہ وغیرہ میں اسی کی مثل ہے اور امام ظہیر الدین ابو بکر محمد بن احمد بن عمر کے جو فوائد شرح جامع صغیر امام صدر شہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز رحمہ اللہ

حواشی: 1 بحر الرائق کتاب الطہارت مسئلہ البئر مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۹ 2 ہندیۃ الماء الذی لا یجوز بہ التوضؤ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۳

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Left Column - Arabic Translation] Allah the Almighty [knows best]. Truly, it does not become 'used water' (musta'mal) because the foot in the well is in the position of the hand in a vessel. According to this reasoning, if a person puts their foot in a vessel, it becomes 'used' due to the lack of necessity. (End of quote). It is not a place of necessity, and what al-Halwani stated is based on the place of necessity. (End of quote). I say: The summary of Imam al-Halwani's statement is that the hand may not reach the bottom of the well, so the need arose for the foot. This is what the text of his statement provides; there is no other possibility for it. The exception of the place of necessity is known from their statements by necessity. (As the statement of Allama Ibn al-Shuhnah in 'Zahr al-Rawd' after quoting it: it is possible to resolve the contradiction by interpreting what Khawahir Zadah said as being for when there is no hesitation in a place of certainty and doubt in the place of conviction. In the text of 'al-Multaqa': if a person in a state of major ritual impurity (junub) immerses themselves in a well without intention, it was said the water and the person are both impure according to the Imam. The more correct view is that according to him, the person is pure and the water is 'used' (musta'mal). (End of quote). In the commentary of 'Majma' al-Anhur', it says: if he had said 'a person in minor ritual impurity (muhdith) immersed', it would have been more appropriate, and he only said 'without intention'.

[Right Column - Urdu Text Translation] It is mentioned in [the book] that if someone put their foot into a well without the intention of using it... Sheikh al-Islam, known as Khawahir Zadah, stated that the water would become 'used' according to Imam Muhammad. And Shams al-A'immah al-Halwani mentioned that the water would not become 'used' because putting a foot in a well is like putting a hand in a vessel. Based on this same reasoning, if someone puts their foot in a vessel, the water will become 'used' due to the absence of necessity. I say: and the gist of the statements of the Imam and al-Halwani is that the hand sometimes does not reach the bottom of the well, so there is a necessity for the foot. This meaning is derived from his explicit statement, which leaves no room for any other possibility. The exception of the place of necessity is evident from their statements. Thus, the statement of Allama Ibn al-Shuhnah in 'Zahr al-Rawd', after being quoted, its contradiction can be resolved such that what Khawahir Zadah said is applied to the absence of necessity, and al-Halwani's statement is applied to the presence of necessity. (End of quote). There is hesitation in a place of certainty and doubt in a place of conviction. In the text of

'Multaqi', it says that if a junub dived into a well without intention, it is said that according to the Imam, both the person and the water are impure. The more correct view according to him is that the person is pure but the water becomes 'used'. (End of quote). T. And in its commentary 'Majma' al-Anhur', it is mentioned that if a muhdith dived...

[Footnotes] 1. Kifayah with al-Fath, 'The water with which ablution is permissible and that with which it is not', Nooriya Rizvia Sukkur, 1/80. 2. Zahr al-Rawd. 3. Multaqa al-Abhur, Chapter on general waters, Egypt, 1/31.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

[बायां कॉलम - अरबी अनुवाद] अल्लाह सर्वशक्तिमान [बेहतर जानता है]। वास्तव में, यह 'इस्तेमाल किया हुआ पानी' (मुस्तअमल) नहीं बनता है क्योंकि कुएं में पैर बर्तन में हाथ की स्थिति में है। इस तर्क के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति अपना पैर बर्तन में डालता है, तो आवश्यकता की कमी के कारण वह 'मुस्तअमल' हो जाता है। (कथन समाप्त)। यह आवश्यकता का स्थान नहीं है, और हलवानी ने जो कहा वह आवश्यकता के स्थान पर आधारित है। (कथन समाप्त)। मैं कहता हूँ: इमाम हलवानी के कथन का सारांश यह है कि हाथ शायद कुएं की गहराई तक न पहुँच सके, इसलिए पैर की आवश्यकता हुई। उनके कथन का पाठ यही प्रदान करता है; इसमें किसी अन्य बात की संभावना नहीं है। आवश्यकता के स्थान का अपवाद उनके कथनों से अनिवार्य रूप से ज्ञात होता है। (जैसा कि 'ज़हर अल-रौद' में अल्लामा इब्न अल-शुहना का कथन उसे उद्धृत करने के बाद: विरोधाभास को इस तरह से हल करना संभव है कि ख्वाहर ज़ादा ने जो कहा उसे उस स्थिति के लिए माना जाए जब निश्चितता के स्थान पर कोई झिझक न हो और दृढ़ विश्वास के स्थान पर संदेह हो। 'अल-मुल्तका' के पाठ में है: यदि कोई जुनुब (बड़ी नापाकी वाला) बिना किसी इरादे के कुएं में डूब जाता है, तो कहा गया कि इमाम के अनुसार पानी और व्यक्ति दोनों अशुद्ध हैं। अधिक सही विचार यह है कि उनके अनुसार, व्यक्ति शुद्ध है और पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) है। (कथन समाप्त)। 'मजमा अल-अनहुर' की व्याख्या में कहा गया है: यदि उन्होंने कहा होता 'एक मुहदिथ (छोटी नापाकी वाला) डूब गया', तो यह अधिक उपयुक्त होता, और उन्होंने केवल 'बिना इरादे के कहा।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ अनुवाद] [किताब] में उल्लेख है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुएं में बिना किसी इरादे के अपना पैर डाला तो... शेखुल इस्लाम, जिन्हें ख्वाहर ज़ादा के नाम से जाना जाता है, ने कहा कि पानी इमाम मुहम्मद के अनुसार 'मुस्तअमल' हो जाएगा। और शम्सुल अइम्मा हलवानी ने उल्लेख किया कि पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि कुएं में पैर डालना बर्तन में हाथ डालने जैसा है। इसी तर्क के आधार पर, यदि कोई व्यक्ति बर्तन में पैर डालता है, तो आवश्यकता न होने के कारण पानी मुस्तअमल हो जाएगा। मैं कहता हूँ: और इमाम और हलवानी के कथनों का सार यह है कि हाथ कभी-कभी कुएं की तह तक नहीं पहुँच पाता है, इसलिए पैर की आवश्यकता होती है। यह अर्थ उनके स्पष्ट कथन से प्राप्त होता है, जिसमें किसी अन्य संभावना के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके कथनों से आवश्यकता के स्थान का अपवाद स्पष्ट है। इस प्रकार, 'ज़हर अल-रौद' में अल्लामा इब्न अल-शुहना का कथन, उद्धृत किए जाने के बाद, उसके विरोधाभास को इस तरह हल किया जा

सकता है कि ख्वाहर ज़ादा ने जो कहा वह आवश्यकता की अनुपस्थिति पर लागू होता है, और हलवानी का कथन आवश्यकता की उपस्थिति पर लागू होता है। (कथन समाप्त)। निश्चितता के स्थान पर हिचकिचाहट है और दृढ़ विश्वास के स्थान पर संदेह है। 'मुल्तकी' के पाठ में कहा गया है कि यदि किसी जुनुब ने बिना इरादे के कुएं में गोता लगाया, तो कहा गया कि इमाम के अनुसार व्यक्ति और पानी दोनों अशुद्ध हैं। उनके अनुसार अधिक सही विचार यह है कि व्यक्ति शुद्ध है लेकिन पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है। (कथन समाप्त)। त। और इसकी व्याख्या 'मजमा अल-अनहुर' में उल्लेख है कि यदि कोई मुहदिथ गोता लगाता...

[पादलेख] 1. किफ़ाया म'अल फ़तह, 'वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं', नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 1/80। 2. ज़हर अल-रौद। 3. मुल्तक़ल अबहुर, सामान्य जल पर अध्याय, मिस्र, 1/31।

[بایاں کالم - عربی متن] اللہ تعالٰی انه لا یصیر مستعملا لان الرجل في البئر بمنزلة الید في الآنیة فعلی هذا التعلیل اذا ادخل الرجل في الاناء یصیر مستعملا لعدم الضرورة ۱۸اھ یکن موضع ضرورة وما قاله الحلواني علی موضع الضرورة ۲۸اھ قلت: وحاصل قول الامام الحلواني ان الید ربما لا تبلغ قعر البئر فمست الحاجة الی الرجل هذا هو الذی یعطیه نص قوله لا احتمال فیه لغیره واستثناء موضع الضرورة معلوم من اقوالهم بالضرورة (افقول العلامة ابن الشحنة في زهر الروض بعد نقله یمکن دفع التعارض بحمل ماقاله خواهر زاده علی ما اذا لم تردد في موضع الجزم وشك في محل الیقین وفي متن الملتقی لو انغمس جنب في البئر بلانیة فقیل الماء والرجل نجسان عند الامام والاصح ان الرجل طاهر والماء مستعمل عنده ۳۸اھ وفي شرح مجمع الانهر لو قال انغمس محدث لکان اولی وانما قال بلانیة

[داہنا کالم - اردو متن] میں ہے کہ اگر کسی شخص نے کنویں میں بلانیت استعمال اپنا پیر ڈالا تو ---------- شیخ الاسلام المعروف خواہر زادہ نے فرمایا کہ پانی امام محمد کے نزدیک مستعمل ہو جائے گا، اور شمس الائمہ حلوانی نے ذکر کیا کہ پانی مستعمل نہ ہوگا کیونکہ کنویں میں پیر کا ڈالنا ایسا ہے جیسا ہاتھ برتن میں، اسی استدلال کی بنیاد پر اگر کوئی شخص برتن میں پیر داخل کرے تو پانی ضرورت نہ ہونے کی وجہ سے مستعمل ہو جائے گا۔ میں کہتا ہوں اور امام حلوانی کے قول کا ماحصل یہ ہے کہ ہاتھ کبھی کنویں کی تہ تک نہیں پہنچ پاتا ہے تو پیر کی ضرورت ہوتی ہے، یہ مفہوم ان کی اس تصریح سے حاصل ہوتا ہے کہ اس میں اس کے غیر کا احتمال نہیں ہے اور مقام ضرورت کا استثناء ان کے اقوال سے بداہتۃً معلوم ہوتا ہے تو علامہ ابن الشحنہ کا قول زہر الروض میں نقل کے بعد اس کا تعارض اس طرح رفع ہو سکتا ہے کہ خواہر زادہ نے جو فرمایا ہے اس کو ضرورت کے نہ ہونے پر محمول کیا جائے اور حلوانی کے قول کو ضرورت پر محمول کیا جائے

اھ - تردد ہے مقام یقین میں اور شک ہے مقام یقین میں۔ اور متن ملتقی میں ہے کہ اگر کسی جُنب نے بلانیت کنویں میں غوطہ لگایا تو کہا گیا کہ آدمی اور پانی دونوں نجس ہیں امام کے نزدیک۔ اور اصح یہ ہے کہ ان کے نزدیک آدمی پاک ہے اور پانی مستعمل ہے اھ ت اور اس کی شرح مجمع الانہر میں ہے کہ اگر انغمس محدث

[حواشی] 1 كفاية مع الفتح الماء الذي يجوز به الوضوء ومالا يجوز نوريہ رضويہ سكھر ۸۰/۱ 2 زهر الروض 3 ملتقى الابحر فصل في المياه العامره مصر ۳۱/۱

Because if one were to submerge for bathing, the water would become spoiled according to everyone. And in *An-Nahr al-Faiq*, regarding the reasoning for Imam Muhammad's statement on the issue of 'Jahat' (digging a well): As for the purification of the person, it's because Imam Muhammad does not make pouring a condition. As for the water remaining pure, it is due to necessity. This was cited by Sayyid al-Azhari in *Al-Kanz*. In *Ad-Durr*, dropping the obligation is the principle, such as when one puts their hand or foot into a vessel for a purpose other than scooping water, it becomes used water (musta’mal) due to the dropping of the obligation by consensus. If we were to continue listing the sub-cases, it would exhaust us; rather, we return to the ocean and scoop from it frequently because the discussion revolves around it. We say regarding used water from the ocean: Abu Bakr al-Razi mentioned that according to Imam Muhammad, it becomes used by performing an act of worship only, drawing an analogy from the case of a person in a state of major ritual impurity (junub) who dives into a well to retrieve a bucket. Shams al-A’immah al-Sarakhsi replied that it did not become used due to necessity, and this was endorsed by Allama Ibn al-Humam and Imam al-Zayla’i.

In it, you should know that this and its likes are similar to their statement regarding one who puts both hands up to the elbows and one of their feet into a basin; the water becomes used. This indicates that water becomes used through one of three things: removal of ritual impurity, performing an act of worship, or dropping an obligation. Thus, it was better to mention this reason.

---

1 Majma' al-Anhur, Chapter on Abundant Waters, Egypt 1/31 2 Fath al-Mu'in, Bir Jahat, Saeed Company Karachi 1/70 3 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi 1/73 4 Bahr al-Raiq, Book of Purification, HM Saeed Company Karachi 1/190

फ़तावा रज़विया जिल्द दूसरी

क्योंकि यदि कोई नहाने के लिए गोता लगाता है, तो पानी सभी के अनुसार दूषित (मुस्तअमल) हो जाएगा। और अन-नहर अल-फ़ाइक में, 'जहत' (कुआं खोदने) के मसले पर इमाम मुहम्मद के कथन के तर्क के बारे में कहा गया है: जहाँ तक व्यक्ति के शुद्ध होने की बात है, तो वह इसलिए है क्योंकि इमाम मुहम्मद पानी गिराने को शर्त नहीं मानते। और पानी का शुद्ध रहना ज़रूरत के कारण है। इसे सैयद अल-अज़हरी ने अल-कन्ज़ में उद्धृत किया है। और अद-दुर्र में है कि फ़र्ज़ (कर्तव्य) का साक़ित होना ही मूल है, जैसे कि कोई अपना हाथ या पैर किसी बर्तन में पानी निकालने के अलावा किसी और इरादे से डाले, तो वह पानी इत्तेफ़ाक़ से मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि इस तरह फ़र्ज़ साक़ित हो जाता है। अगर हम उप-शाखाओं (कानूनी मामलों) को गिनाना शुरू करें तो यह मुश्किल होगा, लेकिन हम समुद्र की ओर लौटते हैं और उससे बार-बार पानी निकालते हैं क्योंकि चर्चा उसी के इर्द-गिर्द घूमेगी। समुद्र के मुस्तअमल पानी के बारे में हम कहते हैं: अबू बक्र अल-राज़ी ने उल्लेख किया है कि इमाम मुहम्मद के अनुसार, यह केवल इबादत (कुर्बा) की अदायगी से मुस्तअमल होगा। वे इसे उस जुनुब (नापाक व्यक्ति) के मसले पर कयास करते हैं जो कुएं से डोल निकालने के लिए गोता लगाता है। शम्स अल-अइम्मा अस-सरख़सी ने इसका जवाब दिया कि यह ज़रूरत के कारण मुस्तअमल नहीं हुआ, और अल्लामा इब्न अल-हुमाम और इमाम ज़ैलई ने इसे बरक़रार रखा।

इसमें है, जानना चाहिए कि यह और इसके समान जैसे उनका कथन, उस व्यक्ति के बारे में जिसने अपने दोनों हाथ कोहनियों तक और अपना एक पैर एक बर्तन में डाला; पानी मुस्तअमल हो जाता है। यह इस बात का संकेत है कि पानी तीन में से एक चीज़ से मुस्तअमल होता है: नापाकी (हदस) दूर करना, इबादत करना, या फ़र्ज़ साक़ित करना। अतः इस कारण का उल्लेख करना ही बेहतर था।

---

1 मजमा अल-अन्हुर, प्रचुर जल पर अध्याय, मिस्र 1/31 2 फ़तह अल-मुईन, बीर जहत, सईद कंपनी कराची 1/70 3 दुर्रे मुख्तार, जल पर अध्याय, मुजतबाई दिल्ली 1/73 4 बहर अल-रैक, शुद्धिकरण की पुस्तक, एचएम सईद कंपनी कराची 1/190

فتاوی رضویہ جلد ثانی

لانه لو انغمس للاغتسال فسد الماء عند الكل اهـ وفی النهر الفائق فی تعلیل قول محمد فی مسألة جحط اما طهارة الرجل فلان محمد الایشترط الصب واما الماء فللضرورة اهـ نقله السید الازهری علی الکنز وفی الدر اسقاط فرض هو الاصل بان یدخل یده اور رجله في الجب لغیر اغتراف ونحوه فأنه یصیر مستعملا لسقوط الفرض اتفاقا اهـ ولو استرسلنا فی سرد الفروع لاعیانا ولکن نرد البحر ونکثر الاغتراف منه لان الکلام سیدور معه فنقول فی البحر من الماء المستعمل ذکر ابو بکر الرازي انه یصیر مستعملا عند محمد باقامة القربة لاغیر استدلالا بمسألة الجنب اذا انغمس في البئر لطلب الدلو قال شمس الائمة السرخسي جوابه انما لم یصیر مستعملا للضرورة واقره علیه العلامة ابن الهمام والامام الزیلعي اهـ

کہا ہوتا تو بہتر تھا۔ اور اس لئے "بلا نیت" کہا کیونکہ اگر غسل کیلئے غوطہ لگایا تو سب ہی کے نزدیک پانی مستعمل ہو جائیگا اهـ اور نہر الفائق میں مسئلہ بئر جحط میں امام محمد کے قول کی وجہ بتاتے ہوئے فرمایا آدمی کا پاک ہونا اس وجہ سے ہے کہ محمد بہانے کو شرط قرار نہیں دیتے اور پانی کا پاک ہونا ضرورت کی وجہ سے ہے اهـ اس کو سید ازہری نے کنز میں نقل کیا ہے، اور دُر میں ہے کہ اسقاط فرض ہی اصل ہے، مثلاً یہ کہ گڑھے میں ہاتھ یا پیر چلو بھرنے وغیرہ کی نیت کے علاوہ کسی اور ارادہ سے ڈالے تو وہ مستعمل ہو جائے گا، کیونکہ اس طرح فرض بالاتفاق ساقط ہو جاتا ہے اهـ اور اگر ہم فروع گنانا شروع کردیں تو مشکل ہوگا، لیکن ہم سمندر پر آکر اُس سے بکثرت چلو بھرتے ہیں، کیونکہ گفتگو انہیں کے ساتھ رہے گی، تو ہم کہتے ہیں، بحر میں ہے کہ ابو بکر رازی کہتے ہیں کہ صرف قربہ کی ادائیگی سے پانی مستعمل ہوگا، عند محمد۔ وہ اس کو جنب کے مسئلہ پر قیاس کرتے ہیں جو کنویں میں ڈول نکالنے کی خاطر غوطہ لگائے۔

اور شمس الائمہ سرخسی نے فرمایا اس کا جواب یہ ہے کہ مستعمل ضرورت کی وجہ سے نہ ہوا، اور اس کو علامہ ابن ہمام اور زیلعی نے برقرار رکھا اھـ

وفيه واعلم ان هذا وامثاله كقولهم فيمن ادخل يديه الى المرفقين واحدى رجليه في اجانة يصير الماء مستعملا يفيد ان الماء يصير مستعملا بواحد من ثلثة ازالة حدث اقامة قربة اسقاط فرض فكان الاولى ذكر هذا السبب

اس میں ہے جاننا چاہئے کہ یہ اور اس کے امثال جیسے ان کا قول، اس شخص کی بابت جو اپنے دونوں ہاتھ کہنیوں تک

---

1 مجمع الانهر فصل فی المیاہ العامرہ مصر ۱/۳۱ 2 فتح المعین بئر جحط سعید کمپنی کراچی ۷۰/۱ 3 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۷/۱ ۳ 4 بحر الرائق کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۹۰/۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 2

...or if someone puts one foot in a jar, the water becomes 'Musta'mal' (used). It appears from this that water becomes used through one of three things: removal of ritual impurity (hadath), performing an act of worship (qurbah), or fulfilling an obligation (fard). So it would have been better to mention this third reason. In the same [book] it is mentioned that Shams al-A'immah al-Sarakhsi mentioned in Al-Mabsut (i.e., its commentary) that in Al-Asl (i.e., Al-Mabsut of Imam Muhammad, may Allah have mercy on him) it is stated that if a ritually pure person bathes in a well, he spoils it [makes it used]. This is if he intends an act of worship, as is clear. Also in it is the issue of 'Jahat' (diving) in a well, which is when a person in a state of major ritual impurity (junub) dives into a well to fetch a bucket or to cool off, and there is no physical impurity on his body. According to [Imam] Muhammad, the man is pure and the water is purifying. The reason for Muhammad's view, according to what is correct from him, is that water does not become 'used' even if impurity is removed with it, due to necessity. In the same [book] Al-Khabbazi said in the commentary on Al-Hidayah: Al-Quduri (may Allah have mercy on him) said our teacher Abu Abdullah al-Jurjani used to say: The correct view in my opinion from the school of our companions is... [until the end of what we quoted from Al-Hilyah, though he said:] if they were required to perform ghusl (bath) every time water is drawn from the well, they would face hardship, etc. He added at the end: unlike when someone puts something other than the hand into it, the water becomes 'used'. In it, from Abu Hanifah [it is narrated] that the man is pure because water is not given the ruling of being 'used' until it is separated from the limb. Al-Zayla'i, Al-Hindi, and others said, following Al-Hidayah: 'And this report is the most concordant of reports', and in Fath al-Qadir...

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company, Karachi, 1/92
2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company, Karachi, 1/79
3. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company, Karachi, 1/79
4. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company, Karachi, 1/79 Page 129 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

...या यदि कोई अपना एक पैर मर्तबान में डाल दे, तो पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाता है। इससे पता चलता है कि पानी का मुस्तअमल होना तीन चीजों में से किसी एक के कारण होता है: हदस (अशुद्धि) को दूर करना, कुर्बा (पुण्य कार्य) करना, या फ़र्ज़ (अनिवार्य कर्तव्य) पूरा करना। इसलिए बेहतर होता कि इस तीसरे कारण का उल्लेख किया जाता। और इसी में यह भी है कि शम्स अल-अइम्मा अस-सरख़्सी ने 'मबसूत' में (यानी इसकी व्याख्या में) उल्लेख किया है कि 'अल-अस्ल' में (यानी इमाम मुहम्मद की मबसूत में) यह है कि यदि कोई पवित्र व्यक्ति कुएं में स्नान करता है, तो वह उसे ख़राब कर देता है (यानी पानी मुस्तअमल हो जाता है)। यह तब है जब उसने नेकी की नीयत की हो, जैसा कि स्पष्ट है। और इसी में कुएं का मसला 'जहत' (गोता लगाना) भी है, जिसका स्वरूप यह है कि एक जुनूब (बड़ी नापाकी वाला व्यक्ति) कुएं में डोल निकालने या ठंडक पाने के लिए गोता लगाता है, और उसके शरीर पर कोई बाहरी गंदगी (नजासत) न हो। इमाम मुहम्मद के अनुसार, आदमी भी पवित्र है और पानी भी पवित्र करने वाला है। इमाम मुहम्मद के मत का कारण, जो कि उनके द्वारा सही माना गया है, यह है कि पानी मुस्तअमल नहीं होता, भले ही उससे हदस दूर किया जाए, ज़रूरत की वजह से। इसी में खब्बाज़ी ने 'हाशिया हिदाया' में कहा है कि क़ुदूरी (रहमतुल्लाह अलैह) ने कहा: हमारे उस्ताद अबू अब्दुल्लाह अल-जुरजानी कहते थे कि मेरे नज़दीक हमारे साथियों (इमामों) के मत में सही यह है... [अंत तक जो हमने हलिया से उद्धृत किया है, हालांकि उन्होंने कहा:] अगर उन्हें कुएं से पानी निकालने के हर बार ग़ुस्ल (स्नान) करने की ज़रूरत पड़े, तो वे मुश्किल में पड़ जाएंगे, इत्यादि। उन्होंने अंत में जोड़ा: इसके विपरीत जब कोई हाथ के अलावा कोई और अंग उसमें डाले, तो पानी मुस्तअमल हो जाता है। इसी में इमाम अबू हनीफ़ा से रिवायत है कि आदमी पवित्र है क्योंकि पानी को अंग से अलग होने से पहले मुस्तअमल होने का हुक्म नहीं दिया जाता। ज़ैलाई, अल-हिंदी और अन्य ने 'हिदाया' के अनुसरण में कहा: "और यह रिवायत सबसे अधिक उपयुक्त रिवायत है", और 'फ़तह अल-क़दीर' में...

1. बहर अल-राईक़, किताब अल-तहारत, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/92
2. बहर अल-राईक़, किताब अल-तहारत, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/79
3. बहर अल-राईक़, किताब अल-तहारत, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/79
4. बहर अल-राईक़, किताब अल-तहारत, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/79 पेज 129 of 711

تیسرا ۱ھ (۱) اور اس میں شمس الائمہ سرخسی کا تذکرہ مبسوط میں (یعنی اس کی شرح میں) ہے کہ اصل میں (یعنی امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ کی مبسوط میں) ہے کہ جب پاک شخص کنویں میں غسل کرے تو وہ اسے فاسد (یعنی مستعمل) کر دیتا ہے ۲ھ یعنی جب وہ قربت کی نیت کرے جیسا کہ مخفی نہیں، اور اسی میں کنویں کا مسئلہ جحط ہے اور اس کی صورت یہ ہے کہ ایک جنب نے کنویں میں غوطہ لگایا ڈول نکالنے کیلئے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے، اور اس کے بدن پر نجاست نہ ہو تو محمد کے نزدیک آدمی پاک ہے اور پانی پاک کرنے والا ہے، اور محمد کے قول کی وجہ صحیح قول کے مطابق یہ ہے کہ پانی مستعمل نہیں ہوتا ہے خواہ اس سے حدث ہی کیوں زائل نہ کیا جائے ضرورت کی وجہ سے۔ اسی میں ہے خبازی نے کہا حاشیہ ہدایہ میں کہ قدوری رحمۃ اللہ تعالیٰ نے کہا کہ ہمارے شیخ ابو عبداللہ الجرجانی فرماتے ہیں میرے نزدیک ہمارے اصحاب کا صحیح مذہب (آخر تک جو ہم نے حلیہ سے نقل کیا، البتہ انہوں نے فرمایا کہ اگر وہ غسل کے محتاج ہوں ہر مرتبہ کنویں سے پانی نکالتے وقت تو حرج میں پڑ جائیں گے الخ اور آخر میں زیادہ کیا) بخلاف اس کے کہ جب ہاتھ کے علاوہ کوئی عضو اس میں داخل کرے تو پانی مستعمل ہو جاتا ہے ۴ھ اور اس میں ابو حنیفہ سے ہے کہ آدمی پاک ہے کیونکہ پانی کو عضو سے جدا ہونے سے پہلے استعمال کا حکم نہیں دیا جاتا۔ زیلعی اور ہندی وغیرہ نے ہدایہ کی اتباع میں کہا: اور یہ روایت سب روایتوں میں سے زیادہ موافق ہے، اور فتح القدیر میں---

یا ایک پیر کسی مرتبان میں ڈالے تو پانی مستعمل ہو جائیگا، سے معلوم ہوتا کہ پانی کا مستعمل ہونا تین اشیاء میں سے کسی ایک کے ساتھ ہوگا، حدث کا زائل کرنا، قربۃ کا ادا کرنا، فرض کا ساقط کرنا، تو بہتر یہ تھا کہ اس تیسرے سبب کو ذکر کرتے۔ اور اسی میں ہے کہ شمس الائمہ سرخسی

نے مبسوط میں (یعنی اس کی شرح میں) ذکر کیا کہ اصل میں (یعنی امام محمد کی مبسوط) میں ہے کہ اگر پاک شخص نے کنویں میں غسل کیا تو پانی مستعمل ہو جائیگا اھ یعنی اگر قربۃ کی نیت کی کمالا یخفی۔ اور اسی میں ہے کہ کنویں کا مسئلہ جحط ہے اور اس کی صورت یہ ہے کہ ایک جنب نے کنویں میں غوطہ لگایا ڈول نکالنے کیلئے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے، اور اس کے بدن پر نجاست نہ ہو تو محمد کے نزدیک آدمی پاک ہے اور پانی پاک کرنے والا ہے، اور محمد کے قول کی وجہ صحیح قول کے مطابق یہ ہے کہ پانی مستعمل نہیں ہوتا ہے خواہ اس سے حدث ہی کیوں زائل نہ کیا جائے ضرورت کی وجہ سے۔ اسی میں ہے خبازی نے کہا حاشیہ ہدایہ میں کہ قدوری نے کہا کہ ہمارے شیخ ابو عبداللہ الجرجانی فرماتے ہیں میرے نزدیک ہمارے اصحاب کا صحیح مذہب (آخر تک جو ہم نے حلیہ سے نقل کیا، البتہ انہوں نے فرمایا کہ اگر وہ غسل کے محتاج ہوں ہر مرتبہ کنویں سے پانی

1. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۲
2. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۹
3. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۹
4. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۹ صفحہ ۱۲۹ از ۷۱۱

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Main Text - Right Column] ...while taking it out, people will fall into difficulty, etc. and at the end of it added: contrary to the case when a limb other than the hand is put into water, the water will become used (musta'mal). It is narrated from Imam Abu Hanifa that the person is pure because the ruling of water becoming 'used' will not be given until it separates from the limb. Zayla'i, Hindi, etc., following Al-Hidayah, have said this, and this narration creates compatibility among all narrations. In Fath al-Qadir and Sharh al-Majma' it is stated that this is the corrected (muṣaḥḥaḥ) narration. Thus, from our discourse, it is known that the chosen school (madhhab) in this issue is that...

[Main Text - Left Column (Arabic with commentary)] ...and Sharh al-Majma' that it is the corrected narration. [Footnote 1] (1) Thus it is known by what we have established that the chosen school in this issue is that the person is pure and the water is pure but not purifying (tahir ghayr tahoor). [Footnote 2] And it is stated therein: if one immerses for ritual bathing (ghusl), it becomes 'used' (musta'mal) by consensus. The ruling of minor ritual impurity (hadath) is the same as the ruling of major ritual impurity (janaba), as mentioned in al-Bada'i'. [Footnote 3] And it is stated therein (2): similarly for a menstruating woman (ha'id) and a woman in post-partum bleeding (nufasa') after the cessation of bleeding. As for before the cessation, they are like a pure person; if they immerse for cooling down, the water does not become 'used'. Thus it is in Fatawa Qadi Khan and Al-Khulasa. [Footnote 4] And it is stated therein (3): Al-Qadi al-Isbijabi said in the commentary on Mukhtasar al-Tahawi: 'A person in a state of major ritual impurity (junub) bathed in a well, then in another well...'

[Lower Block] Ash-Shami said that Al-Ramli said: 'I say, it will soon be mentioned that it is pure and purifying (tahir tahoor) according to the correct view.' I say, this is an explicit statement of the correctness of the narration 'Ta' (Tahawi) regarding 'Jahut'. Therefore, what is mentioned in Al-Minha from the commentary on Hadiyyat Ibn al-Imad by Sayyidi Abdul Ghani—that the three opinions regarding the issue of 'Bir Jahut' are weak—is because they choose the fourth narration preferred in Al-Bahr ar-Ra'iq, not that none of the three has been declared correct. -T.

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/71. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/98. 3. Al-Bahr al-Ra'iq,

Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/98. 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/98.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[मुख्य पाठ - दायां कॉलम] ...निकालते समय लोग कठिनाई में पड़ जाएंगे इत्यादि और इसके अंत में जोड़ा गया: इसके विपरीत उस स्थिति के जब हाथ के अलावा कोई और अंग पानी में डाला जाए तो पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाएगा। इमाम अबू हनीफ़ा से वर्णित है कि मनुष्य पाक (शुद्ध) है क्योंकि पानी के मुस्तअमल होने का आदेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक वह अंग से अलग न हो जाए। ज़ैलाई और हिंदी आदि ने हिदाया का अनुसरण करते हुए यही कहा है, और यह वर्णन सभी वर्णनों में अनुकूलता पैदा करता है। फ़तह अल-क़दीर और शरह अल-मजमा' में है कि यही सही (मुसह़ह़ह़) वर्णन है। अतः हमारे विमर्श से यह ज्ञात हुआ कि इस मसले में चुना हुआ मत (मज़हब) यह है कि...

[मुख्य पाठ - बायां कॉलम (अरबी और व्याख्या)] ...और शरह अल-मजमा' कि यही सही वर्णन है। [फुटनोट 1] (1) तो हमारे द्वारा स्थापित तथ्यों से यह ज्ञात हुआ कि इस मसले में चुनिंदा मत यह है कि व्यक्ति शुद्ध है और पानी शुद्ध है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं (ताहिर ग़ैर तहूर)। [फुटनोट 2] और इसमें है कि यदि कोई ग़ुस्ल (स्नान) के लिए डुबकी लगाता है तो सर्वसम्मति से पानी मुस्तअमल हो जाता है। लघु अशुद्धि (ह़दथ) का नियम वही है जो बड़ी अशुद्धि (जनाबत) का है, जैसा कि अल-बदाए' में वर्णित है। [फुटनोट 3] और इसमें है (2) इसी प्रकार माहवारी वाली महिला (ह़ाएज़) और प्रसवोत्तर रक्तस्राव वाली महिला (नुफ़सा) रक्त रुकने के बाद। जहाँ तक रक्त रुकने से पहले की बात है, वे एक शुद्ध व्यक्ति की तरह हैं; यदि वे ठंडक के लिए डुबकी लगाते हैं, तो पानी मुस्तअमल नहीं होता। फ़तावा क़ाज़ी ख़ान और अल-ख़ुलासा में ऐसा ही है। [फुटनोट 4] और इसमें है (3) क़ाज़ी इस्बिजाबी ने मुख़्तसर अल-त़ह़ावी की व्याख्या में कहा: 'जनाबत की स्थिति वाले व्यक्ति ने एक कुएं में ग़ुस्ल किया, फिर दूसरे कुएं में...'

[निचला भाग] शामी ने कहा कि रमली ने कहा: 'मैं कहता हूँ, शीघ्र ही आएगा कि सही मत के अनुसार यह ताहिर और तहूर (शुद्ध और शुद्ध करने वाला) है।' मैं कहता हूँ, यह 'जह़त़' के संबंध में तह़ावी के वर्णन की शुद्धता का स्पष्ट विवरण है। अतः अल-मिन्हा में सैय्यदी अब्दुल ग़नी द्वारा ह़दिय्यत इब्न अल-इमाद की व्याख्या में जो उल्लेख है—कि बीर-ए-जह़त़ के मसले में तीनों मत कमज़ोर हैं—वह इसलिए है क्योंकि वे अल-बह़र अल-राइक़ में चुनी गई चौथी रिवायत को अपनाते हैं, न कि इसलिए कि तीनों में से किसी को सही नहीं ठहराया गया है। -त.

[फुटनोट] 1. अल-बहर अल-राइक़, किताब अत-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/71. 2. अल-बहर अल-राइक़, किताब अत-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/98. 3. अल-बहर अल-राइक़, किताब अत-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/98. 4. अल-बहर अल-राइक़, किताब अत-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/98.

पृष्ठ 130/711

نکالتے وقت تو لوگ حرج میں پڑ جائیں گے الخ اور اس کے آخر میں اضافہ کیا، بخلاف اس صورت کے کہ جب ہاتھ کے علاوہ اور کوئی عضو پانی میں ڈالا تو پانی مستعمل ہو جائے گا اھ اور اس میں ابو حنیفہ سے منقول ہے کہ آدمی پاک ہے کیونکہ پانی کو مستعمل ہونے کا حکم نہیں دیا جائے گا تا وقتیکہ وہ عضو سے جدا نہ ہو، زیلعی و ہندی و غیر ہم نے ہدایہ کی متابعت میں فرمایا اور یہ روایت تمام روایات میں مطابقت پیدا کرنے والی ہے اور فتح القدیر اور شرح المجمع میں ہے کہ تصحیح شدہ روایت یہی ہے اھ تو ہماری تقریر سے معلوم ہوا کہ اس مسئلہ میں مذہب مختار یہ ہے کہ

وشرح المجمع انها الرواية المصححة ۸1 اه (۱) فعلم بما قررنا عه ان المذهب المختار في هذه المسألة ان الرجل طاهر والماء طاهر غير طهور ۸2 اه وفيه وان انغمس للاغتسال صار مستعملا اتفاقاً وحكم الحدث حكم الجنابة ذكره في البدائع ۸3 اه وفيه (۲) وكذا الحائض والنفساء بعد الانقطاع اما قبل الانقطاع فهما كالطاهر اذا انغمس للتبرد لا يصير الماء مستعملا كذا في فتاوى قاضى خان والخلاصة ۸4 اه وفيه (۳) قال القاضى الاسبيجابى في شرح مختصر الطحاوى جنب اغتسل في بئر ثم في بئر الى

عه قال الشامى قال الرملى اقول سياتى قريبا انه طاهر طهور على الصحيح اه اقول وهذا تصريح بتصحيح رواية ط من جحط فما فى المنحة عن شرح هدية ابن العماد لسيدى عبدالغنى قدس سره ان مسألة جحط الاقوال الثلثة فيها ضعيفة فكانه لاختيار الرواية الرابعة المختارة في البحر لان لا شيئ من الثلث مصححاً اه منه۔

شامی نے کہا رملی نے کہا میں کہتا ہوں عنقریب آئیگا کہ یہ صحیح روایت پر طاہر وطہور ہے میں کہتا ہوں یہ مسئلہ بئر جحط سے طحطاوی کی تصحیح شدہ روایت کی تصریح ہے تو جو منحہ میں سید عبدالغنی کی شرح ہدیۃ ابن عماد سے ہے کہ مسئلہ بئر جحط کے تینوں قول ضعیف ہیں تو اس وجہ سے کہ وہ بحر الرائق کی اختیار کردہ چوتھی روایت کو اختیار کرتے ہیں یہ نہیں کہ تین میں سے کسی کی تصحیح نہیں کی گئی۔ ت

1 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱ 2 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱ 3 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱ 4 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Arabic side column] Ten. Muhammad said: He emerges pure from the third [Footnote 1]. Then, if there was actual impurity on his body, all the waters became impure (meaning the third). If there was no (impurity), the waters (three) all became used (mustamal). Then after the third, if intention (niyyah) is found from him, it becomes used, and if [Footnote 2] it is not found, no [Footnote 1]. Similar to this is from him in Khizanat al-Muftin with explicit clarification of the correction of the aforementioned statement of Imam Muhammad. And I also saw in it the explicit clarification of intending three as I added it (1) for clarification. And he added: and likewise in Wudu. Then I saw in al-Minhah from as-Siraj al-Wahhaj also the explicit clarification of the usage of three, not what is after them except with intention, and it is apparent. And in it, among the discussions on restricted water (al-ma' al-muqayyad), they explicitly stated that if a person in major ritual impurity (junub) descends into a well with the intention of bathing (ghusl), the water becomes spoiled according to everyone. Al-Akmal and the author of Mi'raj al-Dirayah and others explicitly stated this [Footnote 2]. And in it...

[Main Urdu body] Man is pure and water is pure but not purifying (it becomes used water). And in it (it is mentioned that) if someone dives for a bath, the water will consensually become used (Mustamal), and the ruling for a minor ritual impurity (hadath) is the same as for major ritual impurity (janabat). This is mentioned in Bada'i. And in it is that the same rule applies to a menstruating woman (ha'id) or one in postnatal bleeding (nifas) whose bleeding has stopped. Before the cessation of blood, both of them are like a pure person who dived to get coolness; the water will not become used. This is mentioned in Fatawa Qazi Khan and Khulasa. And in it is that Qazi Asijabi stated in the commentary on Mukhtasar Tahawi that a person in a state of major ritual impurity (junub) bathed in one well, then in another well, until he bathed in ten wells. Then Imam Muhammad said he would emerge pure from the third one. Then if there was physical impurity (najis) on his body, all the water would become impure (i.e., the first three). And if there was no physical impurity, the (first) three would become used water.

[Arabic Commentary 1]: I say: Rather, from the first, because doing it thrice is only a Sunnah. So it is as if he intended the Sunnah purification. Then, the restriction of rinsing the mouth (madmadah) and sniffing water into the nose (istinshaq) is not hidden. [Urdu Translation 1]: I say: Rather, from the first, because doing it thrice is

only a Sunnah. So it is as if they intended the Sunnah purification. Then, the restriction of rinsing the mouth and sniffing water into the nose is not hidden. T.

[Arabic Commentary 2]: I say: If no ritual impurity occurred after the third, as is not hidden. [Urdu Translation 2]: I say: If no ritual impurity occurred after the third, as is not hidden. T.

Footnotes: 1. Al-Bahr ar-Ra'iq, Kitab at-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/99 2. Al-Bahr ar-Ra'iq, Al-Ma' al-Muqayyad, H.M. Saeed Company Karachi, 1/171

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

[अरबी कॉलम] दस। (इमाम) मुहम्मद ने फरमाया: वह तीसरे से शुद्ध होकर निकलता है। फिर, यदि उसके शरीर पर वास्तविक अशुद्धि थी, तो सभी जल नापाक हो गए (मतलब तीसरे तक)। और यदि नहीं थी, तो जल (तीनों) सभी मुस्तमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो गए। फिर तीसरे के बाद, यदि उसकी ओर से नियत (इरादा) पाई जाती है, तो वह मुस्तमल हो जाता है, और यदि नहीं पाई जाती, तो नहीं। और इसी तरह खिज़ानतुल मुफ़्तीन में भी इमाम मुहम्मद के उक्त कथन को सही बताने के स्पष्टीकरण के साथ है। और मैंने इसमें तीन के इरादे का स्पष्ट उल्लेख भी देखा जैसा कि मैंने इसे (1) स्पष्टीकरण के लिए जोड़ा है। और उन्होंने आगे कहा: और इसी तरह वज़ू में भी। फिर मैंने 'अल-मिन्हा' में 'अस-सिराज अल-वहाज' से तीन के इस्तेमाल के स्पष्टीकरण को भी देखा, उसके बाद के नहीं सिवाय नियत के और यह ज़ाहिर है। और इसमें प्रतिबंधित पानी (अल-मा अल-मुक़य्यद) की चर्चाओं में उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि कोई जुनुब स्नान के इरादे से कुएं में उतरता है, तो पानी सभी के अनुसार खराब हो जाता है। अल-अकमल और मेराजुद दिराया के लेखक और अन्य लोगों ने इसे स्पष्ट किया है।

[मुख्य उर्दू भाग] मनुष्य शुद्ध है और पानी भी शुद्ध है, लेकिन वह शुद्ध करने वाला नहीं है (अर्थात वह मुस्तमल है)। और इसी में है कि यदि किसी ने स्नान के लिए डुबकी लगाई, तो सर्वसम्मति से पानी मुस्तमल हो जाएगा, और लघु अशुद्धि (हदस) का नियम वही है जो बड़ी अशुद्धि (जनाबत) का है। इसका उल्लेख 'बदाई' में किया गया है। और इसी में है कि यही नियम उस मासिक धर्म या प्रसव के बाद के रक्तस्राव वाली महिला के लिए है जिसका रक्त रुक गया हो। रक्त रुकने से पहले, वे दोनों उस शुद्ध व्यक्ति की तरह हैं जिसने ठंडक पाने के लिए डुबकी लगाई हो; पानी मुस्तमल नहीं होगा। फ़तावा क़ाज़ी खान और खुलासा में यही है। और इसी में है कि क़ाज़ी असीजाबी ने 'शरह मुख्तसर तहावी' में कहा है कि एक जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति) ने एक कुएं में स्नान किया, फिर दूसरे कुएं में, यहाँ तक कि दस कुओं में स्नान किया। तो इमाम मुहम्मद ने फरमाया कि वह तीसरे से शुद्ध होकर निकलेगा। फिर यदि उसके शरीर पर कोई शारीरिक अशुद्धि (नजासत) हो, तो सारा पानी नापाक हो जाएगा (अर्थात तीनों)। और यदि नजासत न हो, तो तीनों मुस्तमल हो जाएंगे।

[अरबी टिप्पणी 1]: मैं कहता हूँ बल्कि पहले से, क्योंकि तीन बार करना तो सुन्नत है, मानो उन्होंने सुन्नत तरीके से पाकी हासिल करने का इरादा किया है। फिर कुल्ली करने (मज़मज़ा) और नाक में पानी डालने (इस्तिनशाक़) की शर्त लगाना छिपा नहीं है। [हिन्दी अनुवाद 1]: मैं कहता हूँ बल्कि पहले

से, क्योंकि तीन बार करना तो सुन्नत है, मानो उन्होंने सुन्नत तरीके से पाकी हासिल करने का इरादा किया है। फिर कुल्ली करने और नाक में पानी डालने की शर्त लगाना छिपा नहीं है। त।

[अरबी टिप्पणी 2]: मैं कहता हूँ अगर तीसरे के बाद कोई अशुद्धि (ह़दस) नहीं हुई, जैसा कि छिपा नहीं है। [हिन्दी अनुवाद 2]: मैं कहता हूँ अगर तीसरे के बाद कोई अशुद्धि नहीं हुई, जैसा कि छिपा नहीं है। त।

पाद-लेख: 1. अल-बहर अर-रैक़, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/99 2. अल-बहर अर-रैक़, अल-मा अल-मुक़य्यद, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/171

عشرة قال محمد یخرج من الثالثة ع۱ طاهراً ثم ان کان علی بدنه عین نجاسة تنجست المیاه کلها (یرید الثالثة) وان لم تکن صارت المیاه (الثلثة) کلها مستعملة ثم بعد الثالثة ان وجدت منه النیة یصیر مستعملا وان ع۲ لم توجد لا ۱ اھ ومثله عنه في خزانة المفتین مع التصریح بتصحیح قول محمد المذکور ورأیت ایضاً فیه التصریح بإرادة الثلثة کما زدته (۱) توضیحاً وزاد وکذلك في الوضوء اھ ثم رأیت في المنحة عن السراج الوھاج ایضاً التصریح بأستعمال ثلث دون ما بعدھا الا بالنیة وھو ظاھر وفیه من ابحاث الماء المقید صرحوا بأن الجنب اذا نزل في البئر بقصد الاغتسال یفسد الماء عند الکل صرح به الاکمل وصاحب معراج الدرایة وغیرھما ۲ اھ وفیه

آدمی پاک ہے اور پانی پاک تو ہے مگر پاک کرنے والا نہیں اھ اور اسی میں ہے اگر کسی نے غسل کیلئے غوطہ لگایا تو پانی اتفاقاً مستعمل ہو جائے گا اور حدث کا حکم جنابت والا ہی ہے، اس کو بدائع میں ذکر کیا اھ اور اسی میں ہے کہ یہی حکم حائض اور نفاس والی عورت کا ہے جس کا خون منقطع ہو چکا ہو، اور انقطاع خون سے قبل تو وہ دونوں اس پاک شخص کی طرح ہیں جس نے ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے غوطہ لگایا تو پانی مستعمل نہ ہوگا، فتاوٰی قاضی خان اور خلاصہ میں یہی ہے اھ اور اسی میں ہے کہ قاضی اسیجابی نے شرح مختصر طحاوی میں فرمایا کہ ایک جنب شخص نے ایک کنویں میں غسل کیا اور پھر دوسرے کنویں میں یہاں تک کہ دس کنوؤں میں غسل کیا، تو محمد نے فرمایا تیسرے سے پاک نکلے گا، پھر اگر اس کے بدن پر نجاست ہو تو تمام پانی نجس ہو جائیں گے (یعنی تینوں) اور اگر نجاست نہ ہو تو تینوں مستعمل ہو جائیں گے۔

ع۱: اقول بل من الاولی لان التثلیث لیس الاسنة فکأنه اراد الطهارة المسنونة ثم لا یخفی التقیید بالمضمضة والاستنشاق اھ منہ۔ میں کہتا ہوں بلکہ پہلے سے کیونکہ تثلیث تو سنت ہے گویا انہوں نے مسنون طہارت کا ارادہ کیا ہے پھر مضمضہ اور استنشاق کی قید لگانا مخفی نہیں اھت

ع۲: اقول ان لم یحدث بعد الثالثة کما لا یخفی اھ منہ میں کہتا ہوں اگر تیسرے کے بعد حدث لاحق نہ ہوا ہو جیسا کہ مخفی نہیں۔ت

1 بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۹ 2 بحر الرائق الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷۱

...Then if after the third well he made an intention, the water will become used (mustamal). If he did not make an intention, it will not be used water. A similar thing is reported from them. In 'Khizanat-ul-Muftin', the mentioned saying of [Imam] Muhammad is declared correct. In it, I have seen the clarification regarding the intention for three [wells], just as I have explained it well. Similarly, they have added this in Wudu. Then I saw in 'Minha' from 'Siraj Wahaj' the clarification that only three [wells] will be used, not those after them. This is obvious and it is from the discussions of restricted water (ma-al-muqayyad). They have clarified that when a person in a state of major ritual impurity (junub) enters a well with the intention of bathing (ghusl), then according to everyone, the water will become used. Akmal, the author of 'Mi’raj-ud-Dirayah', and other scholars have clarified this. In the same source, it is stated that jurists have clarified that when a person puts their palm into the water, the water becomes used. The author of 'Mubtaghi' has clarified this (with the letter Ghain). In the same, it is said that Asbijabi and Walwalji stated in their Fatawa that a junub person entered one well for ghusl and then entered another...

Likewise, they clarified that water is spoiled when the palm is placed in it. Among those who clarified this is the author of 'al-Mubtaghi'. 1End. In it, [it says] that al-Asbijabi and al-Walwalji said in their Fatawa: a junub bathed in a well, then another, until the end of what was mentioned before. 2End. In it, Imam al-Qadi Abu Zayd al-Dabusi said in 'al-Asrar' that Muhammad says when one bathes in a small amount of water, it all becomes used in ruling. 3End. So this expression removes confusion and clarifies every estimation and conjecture. 4End. Let us limit ourselves to this extent, concluding with what 'al-Bahr' admitted, that it removes confusion and eliminates conjecture. And these, as you see, are clear texts stating that the meeting of a small amount of water with a limb having a ritual impurity (hadath) makes the water used, whether the water was poured on the limb or the limb was put into the water, similar to actual impurity (najasat-e-haqiqiyah). Thus, the water is impure whether the impurity came upon the water or the water upon it. In short, the branches of jurisprudence follow this established path, and opinions are woven in this manner, until the turn came to the students of the Absolute Investigative Imam (al-Imam al-Muhaqqiq 'alal Itlaq) and the issue of performing wudu in the context of transgressors (fusaq) revolved.

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Book of Purification, Nuriya Razviya Sukkur, 1/76. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, Saeed Company Karachi, 1/11. 3. Al-Bahr al-Ra'iq,

Book of Purification, Saeed Company Karachi, 1/11, 99. 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, Saeed Company Karachi, 1/11.

...फिर अगर तीसरे कुएं के बाद उसने नियत की तो पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, अगर नियत न की तो मुस्तअमल नहीं होगा और इसी की तरह उनसे मनकूला (वर्णित) है। 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में [इमाम] मुहम्मद का उल्लेखित कथन सही करार दिया गया है। इसमें मैंने तीन के इरादे का स्पष्टीकरण देखा है, जैसा कि मैंने इसे अच्छी तरह स्पष्ट किया है। इसी तरह उन्होंने वुज़ू में इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया है। फिर मैंने 'मिन्हा' में 'सिराज वहाज' से इस बात का स्पष्टीकरण देखा कि केवल तीन [कुएं] मुस्तअमल होंगे, न कि उनके बाद वाले। यह ज़ाहिर (स्पष्ट) है और यह 'मा-ए-मुक़य्यद' (सीमित पानी) की चर्चाओं में से है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि जब कोई जुनुब (अशुद्ध अवस्था वाला) कुएं में उतरे और गुस्ल (स्नान) का इरादा करे, तो सबके नज़दीक पानी मुस्तअमल हो जाएगा। अकमल, 'मेराजुद्दिराया' के लेखक और अन्य विद्वानों ने इसे स्पष्ट किया है। इसी में है कि फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है कि जब कोई व्यक्ति पानी में हथेली डाल दे तो पानी मुस्तअमल हो जाएगा। 'मुब्तगी' के लेखक ने इसे स्पष्ट किया है (ग़ैन के साथ)। इसी में है कि असीजाबी और वलवालजी ने अपने फतावा में कहा कि एक जुनुब व्यक्ति एक कुएं में गुस्ल के लिए उतरा, फिर दूसरे में उतरा...

इसी तरह उन्होंने स्पष्ट किया कि पानी खराब हो जाता है जब उसमें हथेली डाली जाती है। जिन्होंने इसे स्पष्ट किया है उनमें 'अल-मुब्तगी' के लेखक शामिल हैं। 1समाप्त। इसमें कहा गया है कि अल-असीजाबी और अल-वलवालजी ने अपने फतावा में कहा: एक जुनुब ने एक कुएं में गुस्ल किया, फिर दूसरे में, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। 2समाप्त। इसमें इमाम अल-काज़ी अबू ज़ैद अद-दबूसी ने 'अल-असरार' में कहा है कि मुहम्मद कहते हैं कि जब कोई थोड़े से पानी में गुस्ल करता है, तो वह सारा पानी हुक्मन मुस्तअमल हो जाता है। 3समाप्त। तो यह इबारत (वाक्य) भ्रम को दूर करती है और हर अनुमान को स्पष्ट करती है। 4समाप्त। आइए हम इसी तक सीमित रहें, 'अल-बहर' द्वारा स्वीकार की गई बात के साथ समाप्त करते हुए कि यह भ्रम को दूर करता है और अनुमान को मिटा देता है। और जैसा कि आप देखते हैं, ये स्पष्ट पाठ हैं जो बताते हैं कि थोड़े पानी का किसी अंग से मिलना जिस पर हदस (धार्मिक अशुद्धि) हो, उसे मुस्तअमल बना देता है, चाहे पानी अंग पर डाला जाए या अंग पानी में डाला जाए, बिल्कुल हकीकी नजासत (वास्तविक अशुद्धि) की तरह। अतः पानी नापाक है चाहे नजासत पानी पर आए या पानी नजासत पर। संक्षेप में, फिक्ह (धर्मशास्त्र) की शाखाएं इसी स्थापित मार्ग पर चलती हैं और राय इसी तरह बुनी जाती हैं, जब तक कि मुतलक मोहक्किक

इमाम (परम खोजी इमाम) के शिष्यों की बारी नहीं आई और फासिकों (पापियों) के वुज़ू का मामला नहीं घूमा।

पादलेख (Footnotes): 1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/76। 2. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/11। 3. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/11, 99। 4. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/11।

---- پھر اگر تیسرے کنویں کے بعد اس نے نیت کی تو پانی مستعمل ہو جائے گا اگر نیت نہ کی تو مستعمل نہ ہوگا اور اسی کی مثل اُن سے منقول ہے اور خزانتہ المفتین میں محمد کا مذکور قول صحیح قرار دیا گیا ہے اور اس میں میں نے تین کے ارادہ کی تصریح دیکھی ہے، جس طرح میں نے اس کی وضاحت بخوبی کردی ہے، اور اسی طرح انہوں نے وضو میں اضافہ کیا ہے اور پھر میں نے منحۃ میں سراج وہاج سے اس امر کی تصریح دیکھی کہ صرف تین مستعمل ہوں گے نہ کہ ان کے بعد والے، اور یہ ظاہر ہے اور اس میں ماء مقید کی ابحاث سے ہے، اور انہوں نے اس امر کی تصریح کی ہے کہ جنب جب کنویں میں اُترے اور غسل کا ارادہ کرے تو سب کے نزدیک پانی مستعمل ہوجائے گا، اس کی تصریح اکمل، صاحب معراج الدرایہ اور دوسرے علماء نے کی ہے اھ ۔ اور اسی میں ہے، اسی طرح فقہاء نے تصریح کی ہے کہ جب کوئی شخص پانی میں ہتھیلی ڈال دے تو پانی مستعمل ہوجائے گا، اور اس کی تصریح صاحب مبتغی نے کی ہے (غین معجمہ سے) اھ، اور اسی میں ہے کہ اسیجابی اور ولوالجی نے اپنے فتاویٰ میں فرمایا کہ ایک جنب ایک کنویں میں غسل کیلئے اترا پھر دوسرے میں اترا

وکذا صرحوا ان الماء یفسد اذا ادخل الکف فیه ومنمن صرح به صاحب المبتغی بالغین المعجمة 1اھـ وفیه قال الاسبیجابي والوالوجي في فتاواه جنب اغتسل في بئر ثم بئر الی اخر ما تقدم 2اھـ وفیه قال الامام القاضي ابو زید الدبوسي في الاسرار ان محمداً یقول لما اغتسل في الماء القلیل صار الکل مستعملاً حکماً 3اھـ فهذه العبارة کشف اللبس واوضحت کل تخمین 4وحدس اھـ ولنقتصر علی هذا القدر خاتمین بما اعترف البحر انه کشف اللبس وازاح الحدس وهي کما تری نصوص صرائح تفید ان ملاقاة الماء القلیل لعضو علیه حدث یجعله مستعملا سواء ورد الماء علی العضو او العضو علی الماء

على سبيل النجاسة الحقيقية فالماء نجس سواء وردت هي على الماء او الماء عليها وبالجملة كانت الفروع تأتي على هذا السنن المطبوع والاقوال تنسج على هذا المنوال الى ان جاء الدور بتلامذة الامام المحقق على الاطلاق و دارت مسألة التوضى فى الفساق

حواشى: 1 فتح القدير كتاب الطهارت نوريہ رضويہ سكهر ۷۶/۱ 2 بحر الرائق كتاب الطهارت سعيد كمپنى كراچى ۱۱/۱ 3 بحر الرائق كتاب الطهارت سعيد كمپنى كراچى ۱۱/۱، ۹۹ 4 بحر الرائق كتاب الطهارت سعيد كمپنى كراچى ۱۱/۱

صفحہ 132 از 711

Fatawa-e-Razvia Volume 2

[Arabic Section]: ...the minor ones among the experts. The scholar Zain-ud-Din Qasim bin Qatlubugha issued a fatwa of permissibility and authored a treatise titled 'Raf' al-Ishtibah 'an Mas'alat al-Miyah' (The Removal of Doubt regarding the Issue of Waters). His student, the scholar Abd al-Barr bin al-Shahnah, opposed him and composed a treatise called 'Zahr al-Rawd fi Mas'alat al-Hawd' (The Flower of the Garden on the Issue of the Cistern). Imam Ibn Amir al-Hajj, in 'al-Hulyah', also inclined toward some of the positions relied upon by scholar Qasim. They were all among the prominent associates of Imam Ibn al-Humam, may the mercy of the Beneficent Sovereign be upon them. Thereafter, the researcher Zain bin Nujaym, author of 'al-Bahr', may Allah Almighty have mercy on him, arrived and supported Zain [bin Qatlubugha]. He authored a treatise named 'al-Khayr al-Baqi fi Jawaz al-Wudu' min al-Fasaqi' (The Lasting Good on the Permissibility of Ablution from Fountains). Later scholars followed his lead, such as the authors of 'al-Nahr', 'al-Manh', and 'al-Durr'. It is mentioned in 'al-Khaza'in' that he has a dedicated treatise on this. The scholar al-Baqani, Sheikh Isma'il al-Nabulsi, his son the gnostic Sidi Abd al-Ghani, and the commentator on 'al-Ashbah', Sharaf-ud-Din al-Ghazzi—as mentioned by the researcher al-Ala'i—also reported this. Similarly, some Shami masters, including Abu al-Su'ud al-Azhari, showed inclination though with some hesitation. The words of scholar Nuh Effendi also lean toward this view, and he agreed.

[Urdu Section]: ...to the end of what preceded. And in it, it is stated that Imam Qadi Abu Zayd al-Dabbusi said in 'al-Asrar' that [Imam] Muhammad said: When a person performs Ghusl (ritual bath) in a small amount of water, then the entire body of water becomes legally classified as 'used' (musta'mal). This text has clearly elucidated the entire matter. We conclude with this and finally cite the statement from 'al-Bahr' that the ambiguity has been resolved. As you can see, these are explicit texts indicating that the contact of a small quantity of water with a limb requiring purification (due to state of ritual impurity) renders the water 'used', regardless of whether the water is poured onto the limb or the limb is dipped into the water. Conversely, if this water comes into contact with an impure (najis) limb, the water itself becomes impure. In summary, the various branches of this issue have been explained, and the opinions of several scholars and jurists have been cited. Subsequently, during the era of the students of the Absolute Researcher [Ibn al-Humam], when the issue of performing ablution in small cisterns was debated among experts, the scholar Zain-ud-Din Qasim bin Qatlubugha issued a fatwa of permissibility and authored a treatise titled 'Raf' al-

Ishtibah 'an Mas'alat al-Miyah'. His student, the scholar Abd al-Barr bin al-Shahnah, disagreed and wrote 'Zahr al-Rawd fi Mas'alat al-Hawd'. Imam Ibn al-Hajj, in 'al-Hulyah', also showed some inclination toward the views of scholar Qasim. All of these...

[Footnotes]: 1 Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/21. 2 Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/21.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दो

[अरबी अनुभाग]: ...विशेषज्ञों के बीच मतभेद। अल्लामा ज़ैन-उद-दीन क़ासिम बिन क़तलूबुग़ा ने अनुमेयता का फ़तवा दिया और 'रफ़' अल-इश्तिबाह 'अन मसअ़लत अल-मियाह' नामक ग्रंथ की रचना की। उनके शिष्य अल्लामा अब्दुल बर्र बिन अल-शहना ने उनका विरोध किया और 'ज़हर अल-रौद फ़ी मसअ़लत अल-हौज़' नामक ग्रंथ लिखा। इमाम इब्न अमीर अल-हज ने भी 'हलिया' में अल्लामा क़ासिम द्वारा अपनाई गई कुछ बातों की ओर झुकाव दिखाया। वे सभी इमाम इब्न अल-हुमाम के प्रमुख साथियों में से थे, उन पर कृपालु ईश्वर की दया हो। फिर शोधकर्ता ज़ैन बिन नुजैम, जो 'अल-बहर' के लेखक हैं, आए और उन्होंने ज़ैन [बिन क़तलूबुग़ा] का समर्थन किया। उन्होंने 'अल-खैर अल-बाक़ी फ़ी जवाज़ अल-वज़ू' मिन अल-फ़साक़ी' नामक ग्रंथ लिखा। इसके बाद के विद्वानों ने उनका अनुसरण किया, जैसे 'अल-नहर', 'अल-मन्ह' और 'अल-दुर्र के लेखक। 'अल-खज़ाइन' में उल्लेख है कि इस पर उनका एक शोध-पत्र है। अल्लामा बाक़ानी, शेख इस्माइल नाबुलसी, उनके पुत्र आरिफ़ बिल्लाह सीधी अब्दुल ग़नी और 'अल-अश्बाह' के टीकाकार शरफ़-उद-दीन अल-ग़ज़्ज़ी ने भी —जैसा कि शोधकर्ता अल-अलाई ने उल्लेख किया है—इसे रिपोर्ट किया। इसी तरह कुछ शामी उस्तादों, जैसे अबू अल-सुऊद अल-अज़हरी ने भी कुछ हिचकिचाहट के साथ झुकाव दिखाया। अल्लामा नूह अफ़ंदी का कथन भी इसी ओर झुकता है और उन्होंने सहमति व्यक्त की।

[उर्दू अनुभाग]: ...पूर्वगामी के अंत तक। और इसी में उल्लेख है कि इमाम क़ाज़ी अबू ज़ैद अल-दबूसी ने 'अल-असरार' में कहा है कि इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं: जब कोई व्यक्ति थोड़े पानी में ग़ुस्ल (स्नान) करता है, तो वह पूरा पानी कानूनी रूप से 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है। इस इबारत ने पूरे मामले को स्पष्टता के साथ खोलकर रख दिया है। हम इसी पर संतोष करते हैं और अंत में 'अल-बहर' का यह कथन उद्धृत करते हैं कि उन्होंने अस्पष्टता को दूर कर दिया है। जैसा कि आप देख रहे हैं, ये स्पष्ट विवरण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि थोड़े से पानी का उस अंग से स्पर्श होना जिस पर अशुद्धि (हदथ) हो, पानी को 'मुस्तअमल' बना देता है, चाहे पानी अंग पर डाला जाए या अंग पानी में डाला जाए। और यदि यह पानी किसी अपवित्र (नजस) अंग पर आए, तो वह पानी अपवित्र हो जाएगा। संक्षेप में, इस मसले की शाखाओं को इस तरह से बयान किया गया है, और विद्वानों एवं न्यायविदों के इस प्रकार के कथन वर्णित किए गए हैं। इसके बाद, जब मुतहक़्क़िक अली अल-इतलाक़ [इब्न अल-हुमाम] के शिष्यों का युग आया और विशेषज्ञों के बीच छोटे हौजों में वज़ू का मसला विचाराधीन आया, तो अल्लामा ज़ैन-उद-दीन क़ासिम बिन क़तलूबुग़ा ने इसके जायज़ होने का

फ़तवा दिया और 'रफ़' अल-इश्तिबाह 'अन मसअ़लत अल-मियाह' नामक एक शोध-पत्र लिखा। इस पर उनके शिष्य अल्लामा अब्दुल बर्र बिन अल-शहना ने उनका विरोध किया और 'ज़हर अल-रौद फ़ी मसअ़लत अल-हौज़' नामक पुस्तक लिखी। इमाम इब्न अमीर अल-हज ने भी 'हलिया' में अल्लामा क़ासिम के प्रति कुछ झुकाव व्यक्त किया है। ये सभी...

[पाद-टिप्पणियाँ]: 1 बहर अल-रईक़, किताब अल-तहारत, मताब' एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/21. 2 बहर अल-रईक़, किताब अल-तहारत, मताब' एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/21.

فتاوی رضویه جلد ثانی

الصغار بين الحذاق - فأفتى العلامة زين الدين قاسم بن قطلوبغا بالجواز والف رسالة سماها رفع الاشتباه عن مسألة المياه وخالفه تلميذه العلامة عبدالبر بن الشحنة وصنف رسالة سماها زهر الروض في مسألة الحوض والامام ابن اميرالحاج في الحلية ايضا ميل الى شيئ مما اعتمده العلامة قاسم وهم جميعا من جلة اصحاب الامام ابن الهمام عليهم رحمة الملك المنعام ثم جاء المحقق زين بن نجيم صاحب البحر رحمه الله تعالى فانتصر للزين ونمق رسالة سماها الخير الباقي في جواز الوضوء من الفساقى ثم تتابع المتأخرون على اتباعه كالنهر والمنح والدر وذكر في الخزائن ان له رسالة فيه والعلامة الباقانى والشيخ اسمعيل النابلسى وولده العارف بالله سيدى عبدالغنى ومحشى الاشباه شرف الدين الغزى فيما ذكره المدقق العلائي بلاغا وكذا بعض مشائخ الشامى والسادات الثالثة ابو السعود الازهرى وط وش ميلا مع تردد واليه يميل كلام العلامة نوح افندى ووافق

الی آخر ماتقدم ۔ اور اسی میں ہے کہ امام قاضی ابو زید الدبوسی نے اسرار میں فرمایا کہ محمد فرماتے ہیں کہ جب کسی شخص نے تھوڑے پانی میں غسل کیا تو کل پانی حکماً مستعمل ہو جائے گا اھ اس عبارت نے کل معاملہ وضاحت سے کھول کر رکھ دیا ہے اھ ہم اسی پر اکتفاء کرتے ہیں اور اختتام پر بحر کا یہ قول نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے ابہام کو رفع کر دیا ہے، اور جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں یہ صریح نصوص ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ تھوڑے سے پانی کا عضو سے ملنا جس پر حدث ہے پانی کو مستعمل بنا دیتا ہے خواہ پانی عضو پر وارد ہو یا عضو پانی پر وارد ہو، اور اگر یہ پانی نجس عضو پر آئے، خواہ پانی عضو پر یا عضو پانی پر تو پانی نجس ہو جائے گا۔ خلاصہ کلام یہ کہ مسئلہ کی فروع کو اس انداز سے بیان کیا گیا ہے، اور اس قسم کے اقوال علماء وفقہاء کے ذکر کئے گئے ہیں، پھر جب محقق علی الاطلاق کے شاگردوں کا دور آیا اور چھوٹے

حوضوں میں وضو کا مسئلہ ماہرین کے درمیان زیر بحث آیا تو علامہ زین الدین قاسم بن قطلوبغا نے جواز کا فتوی دیا اور ایک رسالہ لکھا جس کا نام "رفع الاشتباہ عن مسألة المیاہ" ہے اس پر ان کے شاگرد علامہ عبد البر بن الشحنہ نے ان کی مخالفت کی ، اور ایک رسالہ "زھر الروض فی مسئلة الحوض" لکھا۔ امام ابن الحاج نے حلیہ میں علامہ قاسم کی طرف کچھ میلان کیا ہے، یہ تمام کے تمام

حواشی: 1 بحر الرائق کتاب الطہارة مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۱ 2 بحر الرائق کتاب الطہارة مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۱

Fatawa Razawiyya Volume II

Among the eminent scholars are Al-Allama Ibn al-Shuhna, Al-Allama Ibn al-Shilbi, through whom fatwas were issued, Al-Muhaqqiq Ali al-Maqdisi, and Al-Allama Hasan al-Shurunbulali.

He (Ibn Humam) had illustrious disciples; then Ibn Nujaym, the author of Al-Bahr, came and assisted Zayn and wrote a treatise titled "Al-Khair al-Baqi fi Jawaz al-Wudu' min al-Fasaqi." Then the later scholars (muta'akhkhirin) successively discussed this issue and followed him. For instance, in Nahr, Minah, Durar, and Khaza'in, it is mentioned that they wrote a treatise on this. Allama Baqani, Shaykh Isma'il Nabulsi, and his son Arif-billah Abd al-Ghani Nabulsi, as well as the commentator of Al-Ashbah, Sharaf al-Din al-Ghazzi, according to the verifier Al-Ala'i, mentioned it for notification. Similarly, some Shami scholars and the three masters Abu al-Sa'ud, Al-Azhari, and Al-Atrawash showed an inclination towards this, though some also expressed hesitation. Allama Nuh Afandi's discourse points in this direction, and Allama Ibn al-Shuhna agreed, as did Allama Ibn Shilbi, who also issued a fatwa accordingly. Verifier Ali al-Maqdisi and Allama Hasan al-Shurunbulali also stated the same. (T)

I say: The verifier's discourse in Al-Fath guides towards this, and you have already known that this was the trodden path until the time of Allama Ibn Qasim. This is what is narrated from all our companions and from our three Imams explicitly. No one among the predecessors opposed it except for the author of Al-Bada'i in dialectics and reasoning; however, when mentioning rulings, he is with the majority. Similarly, we have quoted from several of these later scholars contrary to what they inclined towards. As for what was attributed to Allama Qari al-Hidaya, it is not established, as you will soon learn, Insha'Allah. In short, the issue is a great battlefield, and all three treatises, by the grace of Allah Almighty, are with me. I present their summary to you with what is for and against them, both concisely and in detail. Success is through Allah. Let us distribute the discourse into four chapters.

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

प्रतिष्ठित विद्वानों में अल-अल्लामा इब्न अल-शुहना, अल-अल्लामा इब्न अल-शिल्बी शामिल हैं, जिनके माध्यम से फ़तवे जारी किए गए, अल-मुहक़्क़िक़ अली अल-मक़दसी और अल-अल्लामा हसन अल-शुरुनबुलाली।

इब्न हुमाम के महान शिष्य थे; फिर 'अल-बहर' के लेखक इब्न नुजैम आए और उन्होंने ज़ैन की मदद की और "अल-खैर अल-बाकी फी जवाज़ अल-वुज़ू मिन अल-फ़साकी" नामक एक शोध प्रबंध लिखा। फिर बाद के विद्वानों (मुतअखिरीन) ने इस मुद्दे पर लगातार चर्चा की और उनका अनुसरण किया। उदाहरण के लिए, 'नहर', 'मिनह', 'दुरर' और 'खज़ाइन' में उल्लेख है कि उन्होंने इस पर एक शोध प्रबंध लिखा है। अल्लामा बाक़ानी, शेख इस्माइल नाबुलसी और उनके पुत्र आरिफ़-बिल्लाह अब्द अल-ग़नी नाबुलसी, और 'अल-अशबाह' के व्याख्याकार शरफ़ अल-दीन अल-ग़ज़ी ने शोधकर्ता अल-अलाई के अनुसार इसे अधिसूचना के तौर पर बताया। इसी तरह, कुछ शामी विद्वानों और तीनों स्वामियों अबू अल-सऊद, अल-अज़हरी और अल-अतरावाश का इस ओर झुकाव था, हालांकि कुछ ने संकोच भी किया। अल्लामा नूह अफ़ंदी का कथन भी इसी ओर संकेत करता है, और अल्लामा इब्न अल-शुहना ने सहमति जताई, और अल्लामा इब्न शिल्बी ने भी सहमति दी और इसी पर फ़तवा दिया। शोधकर्ता अली अल-मक़दसी और अल्लामा हसन अल-शुरुनबुलाली ने भी यही कहा। (त)

मैं कहता हूँ: शोधकर्ता का 'अल-फ़तह' में कथन इसी ओर मार्गदर्शन करता है, और आप पहले ही जान चुके हैं कि अल्लामा इब्न कासिम के समय तक यही प्रचलित मार्ग था। हमारे सभी साथियों और हमारे तीनों इमामों से यही स्पष्ट रूप से वर्णित है। पूर्ववर्तियों में से किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया, सिवाय 'अल-बदाई' के लेखक के जो केवल तर्क और विवेचना में था; हालाँकि, नियमों का उल्लेख करते समय वह बहुमत के साथ हैं। इसी तरह, हमने इन बाद के कई विद्वानों से उनके झुकाव के विपरीत उद्धृत किया है। जहाँ तक अल्लामा क़ारी अल-हिदाया की ओर जो कुछ भी जिम्मेदार ठहराया गया है, वह स्थापित नहीं है, जैसा कि आप जल्द ही जान लेंगे, इंशाअल्लाह। संक्षेप में, यह मुद्दा एक बड़ा संघर्ष क्षेत्र है, और तीनों शोध प्रबंध, अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से, मेरे पास हैं। मैं आपके सामने उनके पक्ष और विपक्ष के साथ, संक्षेप में और विस्तार से उनका सारांश प्रस्तुत करता हूँ। सफलता अल्लाह की ओर से है। आइए इस विमर्श को चार अध्यायों में विभाजित करें।

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

العلامة ابن الشحنة منهم العلامة ابن الشلبی و به افتی والمحقق علی المقدسی والعلامة حسن الشرنبلالی۔

ابنِ ہُمام کے جلیل القدر تلامذہ ہیں، پھر ابنِ نجیم صاحبِ بحر آئے اور انہوں نے زین کی مدد کی اور ایک رسالہ لکھا جس کا نام "الخير الباقي في جواز الوضوء من الفساقي" ہے پھر متاخرین نے پے در پے اس مسئلہ پر کلام کیا اور ان کی پیروی کی مثلاً نہر، منح، درر اور خزائن میں ہے کہ انہوں نے اس پر ایک رسالہ لکھا ہے، اور علامہ باقانی، شیخ اسماعیل نابلسی اور ان کے صاحبزادہ عارف باللہ عبد الغنی نابلسی اور اشباہ کے محشی شرف الدین الغزی بقول مدقق علائی بطورِ بلاغ، اور اسی طرح بعض مشائخ شامی اور سادات ثلثہ ابوالسعود والازہری واطراوش کا اس طرف میلان ہے، کچھ تردد بھی کیا ہے اور اسی طرف علامہ نوح آفندی کا کلام ہے اور علامہ ابن الشحنہ نے موافقت کی اور علامہ ابن شلبی نے بھی موافقت کی اور اسی پر فتویٰ دیا اور محقق علی المقدسی اور علامہ حسن شرنبلالی نے بھی یہی فرمایا۔ (ت)

قلت: والیه یرشد کلام المحقق في الفتح وقد علمت انها الجادة المسلوكة الی زمن العلامة قاسم والمروی عن جمیع اصحابنا وعن ائمتنا الثلثة عینا ولم یخالفها احد ممن تقدمه غیر الامام صاحب البدائع فی جدل وتعلیل اما عند ذكر الاحكام فهو مع الجمهور وكذلك قدمنا عن عدة من هؤلاء المتأخرین خلاف ما مالوا الیه اماما نسب الی العلامة قارئ الهدایة فلا یتم كما ستعرف ان شاء الله تعالی وبالجملة فالمسألة ذات معترک عظیم والرسائل الثلث جمیعا بحمد الله تعالی عندی و هانا الخصها لك مع مالها وعلیها اجمالا مفصلا وبالله التوفیق فلنوزع الكلام علی اربعة فصول

میں کہتا ہوں محقق کا کلام فتح میں اسی طرف رہنمائی کرتا ہے اور آپ جان چکے ہیں کہ علامہ ابن قاسم کے زمانہ تک یہی روش رہی، اور یہی ہمارے تمام اصحاب اور ائمہ ثلثہ سے منقول ہے، اور متقدمین میں سے سوائے صاحبِ بدائع کے کسی اور نے مخالفت نہ کی، جدل اور تعلیل میں، اور احکام کے ذکر کے وقت وہ جمہور کے ساتھ ہیں، اور اسی طرح ہم بہت سے متاخرین سے ان کے خلاف نقل کر چکے ہیں، اور جو علامہ قارئ الہدایہ کی طرف منسوب ہے وہ ثابت نہیں، جیسا کہ آپ عنقریب جان لیں گے ان شاء اللہ تعالیٰ، اور خلاصہ یہ ہے کہ مسئلہ بہت معرکہ کا ہے اور تینوں رسائل بحمد اللہ میرے پاس ہیں جن کا خلاصہ میں آپ کے سامنے مالہا وما علیہا کے ساتھ پیش کرتا ہوں یہ کلام چار فصول پر مشتمل ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Right Column] First Section, the Discourse of Allama Qasim: Allama Qasim's treatise is about one notebook in size, in which he has discussed the definition of "ma' al-kathir" (a large amount of water) in detail. He established through research that all its sides are equal regarding the permissibility of purification, whether the impurity is visible or not. He refuted many points in 'Sharh al-Mukhtar', 'Tuhfa', 'Bada'i', etc., even going as far as verbal critiques. We do not wish to mention those things at this time; our purpose relates to the last page of this treatise, where he discussed the issues of 'ma' al-musta'mal' (used water). He stated that it does not change the water until it overcomes it. In this regard, he considered the 'multee' (the water that meets) and 'mulaaqi' (the body part that meets the water) as equal. This means that if used water is poured into a pool or a jar, and the water in the jar is more than the used water, purification with it is permissible. This is the correct, relied-upon view, and it is the view of the general body of scholars. Similarly, if a person in a state of minor or major ritual impurity puts their hand into a jar, the water will not be altered because the 'used' part is what touched their body, which is less compared to the rest. He reasoned for this with three points: Firstly, the author of 'Bada'i', while discussing the hadith "None of you should urinate in stagnant water," said (when the Imam used it as evidence for the impurity of used water): It should not be said that this is a prohibition (i.e., against bathing in it, not because used water is impure, but) because of (2) taking the water out of its purifying state without necessity, which is forbidden. Because in this, the water without necessity becomes...

[Left Column] Section One: Regarding the discourse of Allama Qasim His treatise (may Allah the Almighty have mercy on him) is about the size of a notebook in which he elaborated on the limit of "ma' al-kathir" (large quantity of water). He established (1) that all its sides are equal in the permissibility of purification, whether the impurity is seen or not. He refuted 'Sharh al-Mukhtar', 'al-Tuhfa', and 'al-Bada'i' extensively, reaching linguistic critiques. We are not concerned with that now; our aim is a page at its end where he mentioned 'ma' al-musta'mal' (used water) and that it does not change the water unless it dominates it. He chose to equate the 'multaqi' and 'mulaaqi' in that regard. That is, if used water is thrown into a basin or a jar, and the water in the jar was more than it, purification with it is permissible according to the correct, relied-upon view, as held by the majority of scholars. Similarly, if a person in state of impurity or major ritual impurity puts their hand into a jar, its water is not changed because the used part is what met the body and it is less in proportion to

the remainder. He argued for that with three things. The first is the speech of 'al-Bada'i' where it says regarding the hadith "None of you should urinate in stagnant water" (i.e., when he used it as evidence for the Imam on the impurity of used water): It is not said that it was a prohibition (i.e., from bathing in it, not because used water is impure, but) because of (2) removing the water from being a purifier without necessity, which is forbidden. For we say a small quantity of water only ceases to be a purifier by the mixing of a non-purifier with it when the non-purifier is dominant, like rose water, milk, and the like.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २

[दायाँ कॉलम] पहला भाग, अल्लामा क़ासिम का कथन: अल्लामा क़ासिम की पुस्तिका लगभग एक कॉपी के बराबर है जिसमें उन्होंने "मा-ए-कसीर" (अधिक पानी) की परिभाषा पर विस्तार से चर्चा की है, और शोध से सिद्ध किया है कि पवित्रता की अनुमति के मामले में इसके सभी किनारे बराबर हैं, चाहे गंदगी दिखाई दे रही हो या नहीं। उन्होंने 'शरह अल-मुख्तार', 'तौहफ़ा', 'बदाए' आदि का काफी खंडन किया, यहाँ तक कि शाब्दिक आलोचनाओं तक भी पहुँच गए। हम इस समय उन चीज़ों का वर्णन नहीं करना चाहते; हमारा उद्देश्य इस पुस्तिका के अंतिम पन्ने से संबंधित है जिसमें उन्होंने 'मा-ए-मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) के मुद्दों का वर्णन किया है। उन्होंने कहा कि वह पानी को तब तक नहीं बदलता जब तक कि वह उस पर हावी न हो जाए। इस संबंध में उन्होंने 'मुल्तकी' और 'मुलाक़ी' को बराबर माना है। इसका अर्थ यह है कि यदि प्रयुक्त जल किसी हौज (कुंड) या घड़े में डाला जाए और घड़े का पानी प्रयुक्त जल से अधिक हो, तो उससे पवित्रता प्राप्त करना जायज़ है। यही सही और विश्वसनीय मत है और आम विद्वानों का भी यही मत है। इसी तरह यदि किसी अपवित्र व्यक्ति ने अपना हाथ किसी घड़े में डाला तो पानी नहीं बदलेगा क्योंकि उसमें से प्रयुक्त वह है जो उसके शरीर से मिला और शेष की तुलना में कम है। उन्होंने इस पर तीन चीज़ों से तर्क दिया है: पहला, 'बदाए' के लेखक ने हदीस "तुम में से कोई भी ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे" पर चर्चा करते हुए कहा (अर्थात् जब इमाम ने इससे प्रयुक्त जल की अपवित्रता पर तर्क दिया): यह न कहा जाए कि यह मनाही है (अर्थात् इसमें स्नान करने से इसलिए नहीं कि प्रयुक्त जल अपवित्र है, बल्कि) क्योंकि इसमें (२) बिना आवश्यकता के पानी को शुद्धिकरण की स्थिति से बाहर निकालना है, जो हराम है। क्योंकि इसमें पानी को बिना ज़रूरत...

[बायाँ कॉलम] प्रथम खंड: अल्लामा कासिम के कलाम के बारे में उनका रिसाला (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) लगभग एक कॉपी के बराबर है जिसमें उन्होंने पानी की अधिकता (मा-ए-कसीर) की सीमा पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने शोध (१) से सिद्ध किया है कि पवित्रता की अनुमति में उसके सभी पक्ष बराबर हैं, चाहे अशुद्धता दिखाई दे या नहीं। उन्होंने 'शरह अल-मुख्तार', 'अत-तुहफा' और 'अल-बदाए' पर पर्याप्त खंडन किया, यहाँ तक कि भाषाई आपत्तियों तक पहुँच गए। हम अभी उस चर्चा में नहीं पड़ना चाहते; हमारा सरोकार इसके अंत के एक पृष्ठ से है जिसमें उन्होंने प्रयुक्त जल (मा-ए-मुस्तअमल) का उल्लेख किया है और यह कि वह पानी को तब तक नहीं बदलता जब तक वह उस पर हावी न हो जाए। उन्होंने इस मामले में 'मुल्तकी' और 'मुलाक़ी' को बराबर माना

है। यानी जैसे प्रयुक्त जल यदि किसी कुंड या मटके में डाला जाए और मटके का पानी उससे अधिक हो, तो उससे पवित्रता प्राप्त करना जायज़ है, जैसा कि सही और विश्वसनीय मत है और आम विद्वानों का भी यही मत है। इसी तरह यदि किसी अपवित्र व्यक्ति ने अपना हाथ मटके में डाला, तो उसका पानी नहीं बदलेगा क्योंकि प्रयुक्त हिस्सा वह है जो उसके शरीर से मिला और वह बाकी की तुलना में कम है। उन्होंने इस पर तीन चीज़ों से तर्क दिया है। पहला 'अल-बदाए' का कथन है जहाँ हदीस "तुम में से कोई भी ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे" पर चर्चा करते हुए कहा गया है (अर्थात जब इमाम के लिए प्रयुक्त जल की अशुद्धता पर इससे तर्क दिया गया): यह न कहा जाए कि यह निषेध है (अर्थात उसमें स्नान करने से, इसलिए नहीं कि प्रयुक्त जल अशुद्ध है, बल्कि) इसलिए कि इसमें (२) बिना आवश्यकता के पानी को शुद्धिकरण की स्थिति से बाहर करना शामिल है और यह हराम है। क्योंकि हम कहते हैं कि थोड़ा पानी केवल तभी शुद्धिकरण की स्थिति से बाहर निकलता है जब उसमें गैर-शुद्धिकारक वस्तु का मिश्रण हो और वह गैर-शुद्धिकारक वस्तु हावी हो, जैसे गुलाब जल, दूध और इसी तरह की वस्तुएँ।

पृष्ठ १३५/७११

[دایاں کالم] پہلی فصل، علامہ قاسم کا کلام: علامہ قاسم کا رسالہ تقریباً ایک کاپی ہے جس میں "ماء کثیر" کی تعریف پر انہوں نے مفصل گفتگو کی ہے، اور تحقیق سے ثابت کیا ہے کہ اس کے تمام کنارے برابر ہیں طہارت کے جواز میں، خواہ نجاست نظر آنے والی ہو یا نہ ہو، اور شرح مختار، تحفہ، بدائع وغیرہ پر کافی رد کیا یہاں تک کہ لفظی گرفت سے بھی نہ چوکنے۔ ہم اس وقت یہ چیزیں بیان کرنا نہیں چاہتے ، ہماری غرض اس رسالہ کے آخری ورق سے متعلق ہے جس میں انہوں نے ماء مستعمل کے مسائل بیان کیے ہیں اور یہ کہ وہ پانی کو اس وقت تک تبدیل نہیں کرتا ہے جب تک وہ اس پر غالب نہ آجائے ، اور انہوں نے اس سلسلہ میں ملتقٰی اور ملاقی کو برابر قرار دیا ہے یعنی جس طرح مستعمل پانی اگر کسی حوض یا تھلیا میں ڈالا جائے اور تھلیا کا پانی مستعمل پانی سے زیادہ ہو تو اس سے طہارت حاصل کرنا جائز ہے۔ صحیح ، معتمد قول یہی ہے اور عام علماء کا یہی قول ہے اور اسی طرح اگر محدث یا ناپاک نے اپنا ہاتھ کسی ٹھلیا میں ڈالا تو پانی متغیر نہ ہوگا کیونکہ اس میں سے مستعمل وہ ہے جو اس کے بدن سے ملا اور بہ نسبت باقی کے کمتر ہے، اس پر تین چیزوں سے استدلال کیا ہے: اول صاحب بدائع نے "لا یبولن احدکم فی الماء الدائم" (ٹھہرے پانی میں کوئی پیشاب نہ کرے) پر کلام کرتے ہوئے فرمایا (یعنی جب امام نے اس سے مستعمل پانی کی نجاست پر استدلال کیا) یہ نہ کہا جائے کہ یہ نہی ہے (یعنی اس میں غسل کرنے سے اس لئے نہیں کہ مستعمل نجس ہے بلاکلہ) کیونکہ اس میں پانی کو بلا ضرورت مُظتر

[بایاں کالم] الفصل الاول فی کلام العلامة قاسم رسالته رحمة الله تعالٰی نحو کراسة اطال فیها الکلام في حد الماء الکثیر وحقق(۱) ان جمیع جوانبه سواء في جواز الطهارة سواء کانت النجاسة مرئیة اولا واکثر من الرد علی شرح المختار والتحفة والبدائع حتی تجاوز الی المؤاخذات اللفظیة ولسنا الآن بصدد

ذلك وانما يتعلق منها بغرضنا نحو ورقة في آخرها ذكر فيها الماء المستعمل وانه لا يغير الماء مالم يغلب عليه واختار التسوية فى ذلک بين الملتقى والملاقى اى كما ان الماء المستعمل لو القى فى حوض او جرة وكان ماء الجرة اكثر منه جاز الطهارة به على ماهو الصحيح المعتمد وعليه عامة العلماء كذلک ان ادخل المحدث او الجنب يده مثلا فى جرة لم يتغير ماؤها لان المستعمل منه مالاقى بدنه وهو اقل بالنسبة الى الباقى واحتج على ذلک بثلاثة اشياء الاول كلام البدائع حيث قال فى الكلام على حديث لايبولن احدكم فى الماء الدائم (اى حين استدل به للامام على نجاسة الماء المستعمل) لايقال انه نهى (اى عن الاغتسال فيه لالان المستعمل نجس بل) لما فيه من (٢) اخراج الماء من ان يكون مطهرا من غير ضرورة وذلک حرام لانا نقول الماء القليل انما يخرج عن كونه مطهرا باختلاط غير المطهر به اذا كان غير المطهر غالبا كماء الورد واللبن ونحو

Fatawa Ridawiyya Volume II

(Text on the left side is Arabic, the right side is its Urdu translation)

...to exclude it [from being purifying], and this is prohibited. For we say that a small quantity of water ceases to be a purifier because it mixes with non-purifying water. However, this only happens when the non-purifying water is dominant, for example, rose water, milk, etc. If it is the intended quantity, it would not be so. Here, 'used water' (must'amal) is what comes into contact with the body, and there is no doubt that this is less than the 'unused water'. So, how could it cease to be a purifier because of it? End.

I say the complete explanation is as follows: The contact of impurity with something pure makes the pure thing impure, even if the impurity is not dominant, because it has mixed with the pure thing in such a way that it is impossible to distinguish between them; thus, the ruling of impurity is applied to the whole. He said, and stated elsewhere (i.e., a few pages later) regarding a person who falls into a well: if there is ritual impurity (najasat hukmiyah) on their body, for example, they are without ablution (wudu), or in a state of major ritual impurity (janaba), or a woman whose menstruation or post-partum bleeding has ended—then according to the view of those who do not consider the water 'used' (I say, by this he means Imam Abu Yusuf, for whom pouring is a condition), nothing will be drawn out from the well because the water remains a purifier. Similarly, according to the view of those who call such water 'used' and consider used water pure (meaning Imam Muhammad), because the unused water is more, it will not cease to be a purifier until the used water becomes dominant, for example, if milk is poured into a well.

Footnotes: 1. Badai al-Sanai, Section on Physical Purity, Saeed Company Karachi, 1/71. 2. Badai al-Sanai, Section on Physical Purity, Saeed Company Karachi, 1/71. 3. Badai al-Sanai, Section on Physical Purity, Saeed Company Karachi, 1/71.

Page 136 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द दोयम

(बाईं ओर का पाठ अरबी है, दाईं ओर उसका उर्दू अनुवाद है)

...इसे [शुद्ध होने से] बाहर करना है और यह वर्जित (हराम) है। क्योंकि हम कहते हैं कि थोड़ा पानी (मा कलील) शुद्ध करने वाला होने से इसलिए बाहर हो जाता है क्योंकि वह गैर-शुद्ध जल से मिलता है। लेकिन यह तभी होगा जब गैर-शुद्ध जल प्रबल हो, उदाहरण के लिए गुलाब जल, दूध आदि। यदि वह अभीष्ट मात्रा में हो, तो ऐसा नहीं होगा। यहाँ प्रयुक्त जल (मुस्तअमल) वह है जो शरीर के संपर्क में आता है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह 'गैर-प्रयुक्त जल' से कम है। तो, इसके कारण यह शुद्ध करने वाला होने से कैसे बाहर हो जाएगा? अंत।

मैं कहता हूँ कि पूर्ण विवरण इस प्रकार है: और अशुद्ध का शुद्ध से मिलना शुद्ध को अशुद्ध कर देता है भले ही वह शुद्ध पर प्रबल न हो, क्योंकि वह शुद्ध से इस तरह मिल गया है कि दोनों में अंतर करना संभव नहीं रहा है, तो पूरे पर अशुद्धि का नियम लागू होगा। उन्होंने कहा, और दूसरी जगह फरमाया (यानी इसके कुछ पन्नों के बाद) उस व्यक्ति के बारे में जो कुएँ में गिर पड़ा: यदि उसके शरीर पर रस्मी अशुद्धि (नजासत हुकमिया) हो, जैसे कि वह बिना वज़ू के हो, या जनाबत की स्थिति में हो, या ऐसी महिला हो जिसका मासिक धर्म या प्रसवोत्तर रक्तस्राव समाप्त हो चुका हो—तो उनके विचार पर जो पानी को 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) नहीं मानते (मैं कहता हूँ, इससे उनका मतलब इमाम अबू यूसुफ से है, जिनके अनुसार पानी का बहना शर्त है), कुएँ से कुछ भी नहीं निकाला जाएगा क्योंकि वह शुद्ध करने वाला है। इसी तरह, उनके विचार पर जो पानी को प्रयुक्त कहते हैं और प्रयुक्त को शुद्ध कहते हैं (यानी इमाम मुहम्मद), क्योंकि गैर-प्रयुक्त जल अधिक है, तो शुद्ध होने से उस समय तक बाहर नहीं होगा जब तक प्रयुक्त जल प्रबल न हो जाए, उदाहरण के लिए कुएँ में दूध डाल दिया जाए।

पाद टिप्पणियाँ: 1. बदै-अल-सनई, वास्तविक शुद्धता पर अनुभाग, सईद कंपनी कराची, 1/71। 2. बदै-अल-सनई, वास्तविक शुद्धता पर अनुभाग, सईद कंपनी कराची, 1/71। 3. बदै-अल-सनई, वास्तविक शुद्धता पर अनुभाग, सईद कंपनी कराची, 1/71।

पृष्ठ 136/711

ذلك فاما ان یکون مغلوباً فلا وھھنا الماء المستعمل ما یلاقي البدن ولا شك ان ذلك اقل من غیر المستعمل فکیف یخرج بہ من ان یکون مطھراً ۱ انتہی۔ ہونے سے خارج کرنا ہے اور یہ حرام ہے، کیونکہ ہم کہتے ہیں کہ ماء قلیل مطہر ہونے سے اس لئے خارج ہو جاتا ہے کہ وہ غیر مطہر پانی سے ملتا ہے مگر یہ اس وقت ہو گا جب غیر مطہر غالب ہو، مثلاً گلاب کا پانی اور دودھ وغیرہ، اور اگر مطلوب ہو تو نہ ہوگا اور یہاں مستعمل پانی وہ ہے جو بدن سے ملاقی ہوتا ہے اور اس میں شک نہیں کہ یہ غیر مستعمل سے کم ہے تو اس کی وجہ سے مطہر ہونے سے کیسے خارج ہو گا انتہٰی۔

قلت: و تمامہ فاما ملاقاۃ النجس الطاھر فتوجب تنجیس الطاھر و ان لم یغلب علی الطاھر لاختلاطہ بالطاھر علی وجہ لا یمکن التمییز بینھما فیحکم بنجاسۃ الکل ۲ اھ قال و قال فی موضع آخر (ای بعدہ بوریقات) فیمن وقع فی البئر فان کان علی بدنہ نجاسۃ حکمیۃ بأن کان محدثاً او جنباً او حائضاً او نفساء (ای و قد انقطعا ممن جعلھا مستعملاً و جعل المستعمل طاھراً (یرید محمداً رحمہ اللہ تعالٰی) لان غیر المستعمل اکثر فلا یخرج عن کونہ طھوراً مالم یکن المستعمل غالباً علیہ عنھما فعلی قول من لا یجعل ھذا الماء مستعملاً (قلت یرید الامام ابا یوسف رحمہ اللہ تعالٰی لاشتراطہ الصب) لا ینزح شئی لانہ طھور وکذا علی قول کما لو صب اللبن فی البئر بالاجماع او بالت شاۃ فیھا عند محمد ۳ رحمہ اللہ تعالٰی انتہی۔

میں کہتا ہوں مکمل اس طرح ہے، اور نجس کا طاہر کو ملاقی ہونا طاہر کو نجس کر دیتا ہے اگرچہ طاہر پر غالب نہ ہو کیونکہ وہ طاہر سے اس طور پر مل گیا ہے کہ دونوں میں امتیاز ممکن نہیں رہا ہے تو کل کی نجاست کا حکم کیا جائے گا۔ کہا، اور دوسرے مقام پر فرمایا (یعنی اس کے کچھ ورق بعد) اس شخص کی بابت جو کنویں میں گر پڑا تو اگر اس کے بدن پر نجاست حکمیہ ہو

مثلاً یہ کہ وہ بے وضو یا جنب یا حیض و نفاس والی عورت ہو (یعنی ان دونوں عورتوں کی ناپاکی ختم ہو چکی ہو) تو اُس کے قول پر جو پانی کو مستعمل قرار نہیں دیتا ہے (میں کہتا ہوں اس سے ان کی مراد امام ابو یوسف ہیں جن کے نزدیک بہانا شرط ہے) کنویں سے کچھ بھی نہیں نکالا جائے گا کیونکہ وہ پاک کرنے والا ہے، اور اسی طرح اُن کے قول پر جو پانی کو مستعمل کہتے ہیں اور مستعمل کو پاک کہتے ہیں (امام محمد مراد ہیں) کیونکہ غیر مستعمل زائد ہے تو طہور ہونے سے اس وقت تک خارج نہ ہو گا جب تک مستعمل پانی غالب نہ ہو جائے، مثلاً دودھ کنویں میں ڈال دیا جائے،

1. بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقۃ سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱
2. بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقۃ سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱
3. بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقۃ سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱

Fatawa Rizwia, Volume II I say: And its completion is that according to the opinion of those who considered this water 'musta'mal' (used) and considered used water as 'najis' (impure) - meaning Imam [Abu Hanifa] (may Allah be pleased with him) according to the narration of Hasan bin Ziyad (may Allah be pleased with him) regarding the impurity of used water, even if his narration from him [Abu Hanifa] specifically in this matter is what he will mention - all the water of the well should be drained, just as if a drop of blood or wine fell into it. And Hasan narrated from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that if it was a minor ritual impurity (hadath), forty buckets should be drained, and if it was major ritual impurity (janaba), the whole well should be drained. This narration is problematic because either this water became 'used' or it did not. If it did not become 'used,' then nothing needs to be drained because it remains pure (tahur) as it was. And if it became 'used,' then used water according to Hasan is a heavy impurity (najasa ghaliza), so all the water should be drained. Ends. We only quote these completions for benefits you will recognize with the help of Allah Almighty. He said, and he said in another place (i.e., a few pages before this and a little after the first one), if used water is mixed with a small amount of water, some said that wudhu is not permissible with it, even if it is a small amount... and this is invalid according to Imam Muhammad, because it is pure and did not overwhelm the absolute water, so it does not change its quality of purification (tahuriyat).

1. Bada'i al-Sana'i, statement on the amount by which a place becomes impure, Saeed Company Karachi, 1/72. Page 137 of 711

फतवा रिज़विया, खंड द्वितीय मैंने कहा: और इसकी पूर्णता यह है कि उन लोगों के मत के अनुसार जिन्होंने इस पानी को 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) माना और प्रयुक्त पानी को 'नजिस' (अशुद्ध) माना है - (इससे मुराद इमाम अबू हनीफ़ा हैं हसन बिन ज़ियाद की रिवायत के अनुसार कि प्रयुक्त पानी अशुद्ध होगा, हालांकि हसन की रिवायत अबू हनीफ़ा से विशेष रूप से इसी मसले में है जैसा कि वे उल्लेख करेंगे) कुएं का सारा पानी निकाल दिया जाएगा, जैसे कि कुएं में खून या शराब की एक बूंद गिर जाए। और हसन ने अबू हनीफ़ा से रिवायत की कि यदि वह मामूली अशुद्धि (हद्दथ) हो तो चालीस डोल पानी निकाला जाएगा और यदि वह बड़ी अशुद्धि (जनाबत) हो तो पूरा कुआं खाली किया जाएगा। यह रिवायत कठिन है क्योंकि या तो यह पानी प्रयुक्त हो गया या नहीं। यदि यह प्रयुक्त नहीं हुआ, तो कुछ भी पानी नहीं निकाला जाएगा, क्योंकि वह पहले की तरह पवित्र है। और यदि यह प्रयुक्त हो गया, तो हसन के निकट प्रयुक्त पानी 'नजासत-ए-ग़लीज़ा' (भारी अशुद्धि) है, तो कुएं का सारा पानी निकालना चाहिए। इति। हमने यह सब उन लाभों के लिए उद्धृत किया है जिन्हें आप इंशाअल्लाह पहचानेंगे। उन्होंने कहा, और एक अन्य स्थान पर कहा (यानी इससे कुछ पन्ने पहले और पहले के कुछ बाद), यदि प्रयुक्त पानी थोड़े से पानी में मिल जाए, तो कुछ के अनुसार उससे वज़ू जायज़ नहीं है, चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो। और यह इमाम मुहम्मद के अनुसार अमान्य है, क्योंकि यह पवित्र है और शुद्ध पानी पर हावी नहीं हुआ है, इसलिए यह उसे शुद्धता के गुण से नहीं बदलता।

1. बदाए अल-सनाए, स्थान को अशुद्ध करने वाली मात्रा का बयान, सईद कंपनी कराची, 1/72। पृष्ठ 137 का 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی قلت: و تمامه واما علی قول من جعل هذا الماء مستعملا وجعل الماء المستعمل نجسا(یرید الامام رضی الله تعالی عنه علی روایة الحسن بن زیاد رحمه الله تعالی عنه نجاسة الماء المستعمل وان کانت روایته عنه رضی الله تعالی عنه فی خصوص المسألة ماسیذکره) ینزح ماء البئر کله کما لو وقعت فیها قطرة من دم او خمر و روی الحسن عن ابي حنیفة رضی الله تعالی عنه انه ان کان محدثا ینزح اربعون وان کان جنبا ینزح کله وهذه الروایة مشکلة لانه لا یخلو اما ان صار هذا الماء مستعملا اولا فان لم یصر مستعملا لا یجب نزح شیئ لانه بقی طهورا کما کان وان صار مستعملا فالماء المستعمل عند الحسن نجس نجاسة غلیظة فینبغي ان یجب نزح جمیع الماء اهـ وانما ننقل هذه التمامات لفوائد ستعرفها بعون الله تعالی قال وقال فی موضع اخر (ای قبل هذا بأوراق وبعد الاول بقلیل) لو اختلط الماء المستعمل بالماء القلیل قال بعضهم لا یجوز التوضی به وان قل وهذا فاسد اما عند محمد رحمه الله تعالی فلانه طاهر لم یغلب علی الماء المطلق فلا یغیره عن صفة۔

میں کہتا ہوں اس کا مکمل یہ ہے کہ، اور ان لوگوں کے قول پر جنہوں نے اس پانی کو مستعمل قرار دیا ہے اور مستعمل پانی کو نجس قرار دیا ہے (اس سے مراد امام ابو حنیفہ ہیں بروایت حسن بن زیاد کہ مستعمل پانی نجس ہوگا اگر چہ حسن کی روایت ابو حنیفہ سے خاص اسی مسئلہ میں ہے کہ جیسا وہ ذکر کریں گے) کنویں کا کل پانی نکالا جائے گا، جیسے کہ کنویں میں خون یا شراب کا قطرہ گر جائے، اور حسن نے ابو حنیفہ سے روایت کی کہ اگر بے وضو ہو تو چالیس ڈول پانی نکالا جائے گا اور اگر جنب ہو تو کل پانی نکالا جائے گا، اور یہ روایت مشکل ہے کہ یا تو یہ پانی مستعمل ہو گا یا نہیں تو اگر مستعمل نہیں ہے تو کچھ بھی پانی نہ نکالا جائے گا، کیونکہ وہ بدستور پاک ہے جیسا کہ تھا، اور اگر مستعمل ہو گیا تو حسن کے نزدیک مستعمل پانی نجاست غلیظہ ہے تو کنویں کا کل پانی نکالنا چاہئے اھ یہ جو کچھ ہم نے نقل کیا ہے ان فوائد کی خاطر ہے جن کو آپ

ان شاء اللہ پہچانیں گے، فرمایا اور کہا ایک دوسرے مقام پر (یعنی اس سے چند ورق پہلے اور پہلے سے کچھ بعد) اگر ماء مستعمل تھوڑے پانی میں مل گیا تو بعض کے نزدیک اس سے وضو جائز نہیں خواہ وہ کم ہی کیوں نہ ہو۔۔۔۔۔۔ اور یہ فاسد ہے امام محمد کے نزدیک تو اس لئے کہ یہ پاک ہے اور ماء مطلق پر غالب نہیں ہوا ہے، تو اس کو طہوریت کی صفت سے

1 بدائع الصنائع بیان مقدار الذی یصیر به المحل نجسا سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۲ صفحہ 137 از 711

Fatawa Ridawiyya, Volume II

[Left Column - Arabic/Urdu Text] Purification is like milk. As for both of them [Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf], may Allah be pleased with them, a small amount from which it is impossible to refrain is pardoned. Then, according to Imam Muhammad, 'excessive' is what overcomes absolute water, and according to both [Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf], it is that the place where the drop fell becomes apparent in the vessel. Finished. [1] He said: You have known that the correct position for fatwa is the narration of Muhammad from Abu Hanifa, may Allah have mercy on them. [2] i.e., it does not spoil a small amount [of water] because the non-used water is more. Second: He said, and (1) Muhammad said in 'Kitab al-Athar' after narrating the hadith of Aisha, may Allah be pleased with her: 'There is no harm in a man bathing with a woman, whether he starts before her or she starts before him.' [3] He said: If you have known this, do not hesitate from the ruling regarding the validity of wudu (ablution) from the pots placed in schools [madrasas] when there is no predominant thought of the dominance of used water or the falling of impurity in small ones. He said: If you say, when the use is repeated, does it prohibit [wudu]? I say: Apparently, this quality will not be considered in impure water, so how could it be in pure water? He said: They said in 'Al-Mubtagha' (and this is the third): If people form a row on the bank of a river to perform ablution, it is permissible. The same is the ruling for a basin/pool, because the water of a basin is in the category of running water. Finished. [4]

[Right Column - Urdu Translation] ...it will not change like milk, and according to the Shaykhayn [Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf], the reason for this is that it is impossible to avoid small amounts, so it is forgiven. Then, according to Imam Muhammad, 'excessive' is that which overcomes absolute water. And according to the Shaykhayn, it is that the drop's place becomes apparent in the vessel. Finished. He said: You have come to know that the correct position for fatwa is the narration of Muhammad from Abu Hanifa, may Allah have mercy on them. Meaning, it does not spoil a small amount of water because the unused part is more. Second: He said, Muhammad stated in 'Kitab al-Athar' after this hadith of Hazrat Aisha: 'There is no harm if a man bathes with a woman, whether the man starts first or the woman.' After that, he said that it can be easily concluded from this that there is no harm in bathing with the vessels kept in madrasas, as long as there is no strong suspicion that the used water has become dominant or that impurity has fallen into small vessels. He said: If you say that when use is repeated, is wudu or ghusl forbidden? I say: Apparently, if this quality is not considered in impure water, then how can it be in

pure water? He said that they said in 'Al-Mubtagha' (this is the third): If some people form a row and perform wudu at the bank of a river, it is permissible. The same ruling applies to a pool/basin because the water in a basin is under the ruling of running water. Finished.

[Footnotes] 1 Bada'i al-Sana'i, Chapter on Physical Purity, Saeed Company Karachi 1/68 2 Al-Ishtibah regarding the issue of waters 3 Kitab al-Athar, Chapter on a man and woman bathing from one vessel, Idara-ul-Quran wal-Uloom-ul-Islamia Karachi, p. 10 4 Al-Ishtibah regarding the issue of waters

फ़तावा रज़विया, भाग II

[बायाँ कॉलम - अरबी/उर्दू पाठ] शुद्धिकरण दूध की तरह है। जहाँ तक उन दोनों (इमामों) का सवाल है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, तो इसलिए कि थोड़ी मात्रा जिससे बचना असंभव है, उसे क्षमा किया गया है। फिर इमाम मुहम्मद के अनुसार 'अधिक' वह है जो शुद्ध पानी पर हावी हो जाए, और उन दोनों के अनुसार यह है कि बर्तन में वह स्थान स्पष्ट हो जाए जहाँ बूंद गिरी है। समाप्त। [1] उन्होंने कहा: आप जान चुके हैं कि फतवे के लिए सही स्थिति अबू हनीफा से मुहम्मद का वर्णन है, अल्लाह उन दोनों पर दया करे। [2] अर्थात, यह थोड़ी मात्रा (पानी) को दूषित नहीं करता क्योंकि बिना इस्तेमाल किया हुआ पानी अधिक है। दूसरा: उन्होंने कहा, और (1) मुहम्मद ने हज़रत आयशा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की हदीस सुनाने के बाद 'किताब अल-आथार' में कहा: 'पुरुष का स्त्री के साथ स्नान करने में कोई हर्ज नहीं है, चाहे वह उससे पहले शुरू करे या वह उससे पहले शुरू करे।' [3] उन्होंने कहा: जब आप यह जान गए, तो मदरसों में रखे बर्तनों से वज़ू की वैधता के बारे में निर्णय देने में देर न करें, जब तक कि यह प्रबल विचार न हो कि इस्तेमाल किया हुआ पानी हावी हो गया है या छोटे बर्तनों में अशुद्धि गिर गई है। उन्होंने कहा: यदि आप कहें कि जब उपयोग बार-बार हो, तो क्या वज़ू या स्नान वर्जित है? मैं कहता हूँ: स्पष्ट रूप से इस विशेषता पर अशुद्ध पानी में विचार नहीं किया जाएगा, तो शुद्ध पानी में कैसे होगा? उन्होंने कहा: उन्होंने 'अल-मुब्तगी' में कहा (यह तीसरा है): यदि कुछ लोग नदी के किनारे पंक्ति बनाकर वज़ू करें, तो यह जायज है। हौज (कुंड) का भी यही हुक्म है क्योंकि हौज का पानी बहते पानी के हुक्म में है। समाप्त। [4]

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...यह दूध की तरह नहीं बदलेगा, और शैखैन (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ) के अनुसार इसका कारण यह है कि थोड़ी मात्रा से बचना संभव नहीं है, इसलिए इसे क्षमा किया गया है। फिर इमाम मुहम्मद के अनुसार 'अधिक' वह है जो शुद्ध पानी पर हावी हो जाए। और शैखैन के अनुसार यह है कि बूंद का स्थान बर्तन में स्पष्ट हो जाए। समाप्त। उन्होंने कहा: आपको पता चल गया है कि फतवे की सही स्थिति अबू हनीफा से मुहम्मद का वर्णन है। अर्थात, यह थोड़े पानी को दूषित नहीं करता है क्योंकि जो हिस्सा इस्तेमाल नहीं हुआ वह अधिक है। दूसरा: उन्होंने कहा, मुहम्मद ने 'किताब अल-आथार' में हज़रत आयशा की इस हदीस के बाद फरमाया: 'इसमें कोई हर्ज नहीं है कि पुरुष महिला के साथ स्नान करे, चाहे पुरुष पहले शुरू करे या महिला।' उसके बाद उन्होंने फरमाया कि इससे आसानी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मदरसों में रखे बर्तनों से स्नान करने में कोई हर्ज नहीं है, जब तक कि यह प्रबल संदेह न हो कि इस्तेमाल किया

हुआ पानी हावी हो गया है या छोटे बर्तनों में गंदगी गिर गई है। उन्होंने कहा: यदि आप कहें कि जब उपयोग बार-बार हो, तो क्या वज़ू या स्नान मना है? मैं कहता हूँ कि जाहिर तौर पर, यदि इस विशेषता पर अशुद्ध पानी में विचार नहीं किया जाता है, तो शुद्ध पानी में कैसे होगा? उन्होंने कहा कि उन्होंने 'अल-मुब्तगी' में फरमाया (यह तीसरा है): यदि कुछ लोग कतार बनाकर नदी के किनारे वज़ू करें तो यह जायज है। हौज का भी यही हुक्म है क्योंकि हौज का पानी बहते पानी के हुक्म में है। समाप्त।

[पाद टिप्पणियाँ] 1 बदाइ अल-सनाइ, वास्तविक पवित्रता पर अध्याय, सईद कंपनी कराची 1/68 2 अल-इश्तिबाह, पानी के मुद्दे पर 3 किताब अल-आथार, एक ही बर्तन से पुरुष और महिला के स्नान पर अध्याय, इदारा-उल-कुरान वल-उलूम-उल-इस्लामिया कराची, पृष्ठ 10 4 अल-इश्तिबाह, पानी के मुद्दे पर

पृष्ठ 138/711

فتاوی رضویه جلد ثانی

الطهورية كاللبن واماً عندهما رضی الله تعالیٰ عنهما فلان القليل مما لا يمكن التحرز عنه يجعل عفوا ثم الكثير عند محمد ما يغلب على الماء المطلق وعندهما ان يستبين موضع القطرة في الاناء انتهی۔ [1] قال وقد علمت ان الصحيح المفتی به رواية محمد عن ابی حنيفة رحمهما الله تعالیٰ ۲ اه ای فلا يفسد قليله لان غير المستعمل اكثر الثاني: قال وقال (۱) محمد في كتاب الاثار بعد رواية حديث عائشة رضی الله تعالی عنها ولا باس ان يغتسل الرجل مع المرأة بدأت قبله او بدأ قبلها ۳ قال اذا عرفت هذا لم تتأخر عن الحكم بصحة الوضوء من الفساق الموضوعة في المدارس عند عدم غلبة الظن بغلبة الماء المستعمل او وقوع نجاسة في الصغار منها قال فان قلت اذا تكرر الاستعمال هل يمنع قلت الظاهر عدم اعتبار هذا المعنی في النجس فكيف بالطاهر قال قال في المبتغی (وهو الثالث) قوم يتوضؤن صفاً علی شاطئ النهر جاز فكذا في الحوض لان حكم ماء الحوض في حكم ماء جار انتهی ٤۔

تبدیل نہیں کرے گا جیسے دودھ، اور شیخین کے نزدیک اس کی وجہ یہ ہے کہ تھوڑے سے بچنا ممکن نہیں اس لئے معاف ہے پھر امام محمد کے نزدیک کثیر وہ ہے جو مطلق پانی پر غالب آجائے۔ اور شیخین کے نزدیک یہ ہے کہ قطرہ کی جگہ برتن میں ظاہر ہو جائے، انتہی، فرمایا تمہیں معلوم ہو چکا ہے کہ صحیح مفتی بہ محمد کی روایت ابو حنیفہ سے ہے اھ یعنی قلیل پانی کو فاسد نہیں کرتا ہے کیونکہ غیر مستعمل زائد ہے۔ ثانی: فرمایا، محمد نے کتاب الآثار میں حضرت عائشہ کی اس حدیث۔ کوئی حرج نہیں کہ مرد عورت کے ساتھ غسل کرے خواہ مرد پہل کرے یا عورت۔ کے بعد فرمایا کہ اس سے بآسانی یہ نتیجہ اخذ کیا جا سکتا ہے کہ مدارس میں جو برتن رکھے ہوتے ہیں ان سے غسل کر لینے میں حرج نہیں، جبکہ یہ ظن غالب نہ ہو کہ مستعمل پانی غالب ہو گیا ہے یا چھوٹے برتن میں نجاست پڑ چکی ہے۔ فرمایا اگر تم یہ کہو کہ جب استعمال بار

بار ہو تو کیا وضو یا غسل منع ہے؟ میں کہتا ہوں بظاہر اس وصف کا اعتبار نجس پانی میں نہ ہوگا تو طاہر میں کیسے ہوگا؟ فرمایا کہ انہوں نے مبتنی میں فرمایا (یہ تیسرا ہے) اگر کچھ لوگ صف باندھ کر نہر کے کنارے پر وضو کریں تو جائز ہے، حوض کا بھی یہی حکم ہے کیونکہ حوض کا پانی جاری پانی کے حکم میں ہے انتہی۔

1 بدائع الصنائع فصل فی الطہارت الحقیقیۃ سعید کمپنی کراچی ۱/۶۸ 2 الاشتباہ عن مسألة المیاہ 3 کتاب الاثار باب غسل الرجل والمراۃ من اناء واحد ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ص ۱۰ 4 الاشتباہ عن مسألة المیاہ

[Left Column - Arabic Text Transcription] I say: Meaning, the prohibition is only because the wash-water falls into it, or because people without ablution put their hands in it, and all of this is not prohibitive according to what is established with him. Then he cited some narrations, some regarding contact and some regarding meeting [water]. Thus, he said: Indeed, Ibn Abi Shaybah narrated from Hasan regarding a person in a state of ritual impurity (junub) who puts their unwashed hand into a vessel; he said: "He may perform ablution with it if he wishes." And it is narrated from Sa'id ibn al-Musayyib that there is no harm if a person in a state of ritual impurity (junub) puts his hand into the vessel before washing it. From Aisha bint Sa'd, she said that Sa'd used to order the maidservant to bring him water for purification from the basin, so she would dip her hand into it. It would be said that she is menstruating, so he would say: "Did I cause her menstruation?" And from 'Amir, he said: "The companions of the Messenger of Allah (may Allah Almighty bless him and grant him peace) used to put their hands in the vessel while they were in a state of ritual impurity (junub), and the women while menstruating; they saw no harm in that," meaning before washing them. And from Ibn Abbas regarding a man bathing for ritual impurity (janaba) and water from his washing splashes into his vessel, he said: "There is no harm in it." And similar accounts are narrated from Hasan, Ibrahim, Zuhri, Abu Ja'far, and Ibn Sirin. He said: If you ask, then what is the interpretation of the Hadith "None of you should urinate in standing water nor bathe in it..."?

[Right Column - Urdu Translation] I say: Meaning, the prohibition is only because the wash-water falls into it, or because people without ablution put their hands in it, and all of this is not prohibitive as is established with him. Then he mentioned some narrations regarding contact and some regarding meeting [water]. Thus, he said: Indeed, Ibn Abi Shaybah narrated from Hasan regarding a person in a state of ritual impurity (junub) who puts their unwashed hand into a vessel; he said: "If he wishes, he can perform ablution with it." It is narrated from Sa'id ibn al-Musayyib that if a person in a state of ritual impurity (junub) puts his hand into the vessel before washing it, there is no harm. Aisha bint Sa'd says that Hazrat Sa'd used to order the maidservant to bring water from the pool, so she would dip her hand into the pool. It would be said that she is menstruating, so he would say: "Have I caused her menstruation?" And it is narrated from 'Amir that the companions of the Messenger of Allah (may Allah Almighty bless him and grant him peace) used to put their hands in the water while they were in a state of ritual impurity (junub) and the women were

menstruating, and these people did not consider it harmful to put their hands in without washing them. It is narrated from Ibn Abbas that if a person performs a bath for ritual impurity (ghusl janabat) and splashes fall into the vessel, there is no harm in it. And from Hasan, Ibrahim, Zuhri, Abu Ja'far, and Ibn Sirin similarly.

[Middle Note] Note: This is how it is in the original; perhaps it should be "that the junub enters his hand...". (M) - (T)

[Footnotes] 1. Musannaf Ibn Abi Shaybah, regarding a man putting his hand in a vessel while he is in a state of ritual impurity (junub), Idarat al-Qur'an wal-Ulum al-Islamiyya Karachi, 1/82. 2. Musannaf Ibn Abi Shaybah, regarding a man in a state of ritual impurity whose bath water splashes into his vessel, ibid, 1/72.

[बायाँ स्तंभ - अरबी मूल पाठ] मैं कहता हूँ: यानी, मनाही केवल इसलिए है कि धोने का पानी उसमें गिरता है, या इसलिए कि बिना वज़ू के लोग उसमें अपने हाथ डालते हैं, और यह सब उसके पास जो स्थापित है उसके अनुसार बाधक नहीं है। फिर उन्होंने कुछ उल्लेख (आसार) उद्धृत किए, कुछ संपर्क के बारे में और कुछ [पानी में] मिलने के बारे में। अतः उन्होंने कहा: वास्तव में, इब्न अबी शैबा ने हसन से जुनब (धार्मिक अशुद्धता की स्थिति) वाले व्यक्ति के बारे में वर्णन किया है जो बर्तन धोने से पहले अपना हाथ बर्तन में डाल देता है; उन्होंने कहा: "यदि वह चाहे तो इससे वज़ू कर सकता है।" और सईद बिन अल-मुसय्यब से वर्णित है कि यदि कोई जुनब धोने से पहले अपना हाथ बर्तन में डाल दे तो कोई हर्ज नहीं है। आयशा बिंत साद से वर्णित है, उन्होंने कहा कि साद अपनी दासी को हौज़ से शुद्धिकरण के लिए पानी लाने का आदेश देते थे, तो वह उसमें अपना हाथ डुबो देती थी। कहा जाता था कि वह मासिक धर्म (हायज़ा) से है, तो वह कहते थे: "क्या मैंने उसे मासिक धर्म वाला बनाया है?" और आमिर से वर्णित है, उन्होंने कहा: "अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथी बर्तन में अपने हाथ डालते थे जबकि वे जुनब होते थे, और महिलाएँ मासिक धर्म में होती थीं; उन्होंने इसमें कोई हर्ज नहीं देखा," यानी उन्हें धोने से पहले। और इब्न अब्बास से उस व्यक्ति के बारे में जो जनाबत से स्नान कर रहा है और उसके धोने का पानी उसके बर्तन में छलक जाता है, उन्होंने कहा: "इसमें कोई हर्ज नहीं है।" और हसन, इब्राहिम, ज़ुहरी, अबू जाफ़र और इब्न सिरीन से भी इसी तरह के वर्णन हैं। उन्होंने कहा: यदि आप पूछें, तो फिर इस हदीस का क्या अर्थ है कि "तुम में से कोई भी ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे और न ही उसमें स्नान करे..."?

[दायाँ स्तंभ - उर्दू अनुवाद] मैं कहता हूँ, यानी मनाही इसलिए है कि धोवन उसमें गिरता है या इसलिए कि बिना वज़ू के लोग उसमें अपने हाथ डालते हैं और यह सब गैर-मानिक (बाधक नहीं) है जैसा कि उनके नज़दीक मुक़र्रर है। फिर उन्होंने इसके कुछ आसार मुलाक़ाती में और कुछ मुलतकी में ज़िक्र किए, पस फ़रमाया और तहक़ीक़ इब्ने अबी शैबा ने हसन से जुनब के बारे में रिवायत की जो बिना धोए अपना हाथ बर्तन में डाले तो फ़रमाया अगर चाहे तो उसके साथ वज़ू करे, और सईद बिन अल-मुसय्यब से मरवी है कि जुनब अगर अपना हाथ धोने से क़ब्ल बर्तन में डाल दे तो हर्ज नहीं, और आइशा बिन्त साद कहती हैं कि हज़रत साद बांदी को हुक्म देते थे कि वह हौज़ से पानी लाकर दे, तो वह हौज़ में अपना हाथ डुबोती थी, तो कहा जाता था कि वह हायज़ा है, तो आप फ़रमाते थे: क्या मैंने उसको हायज़ा किया है? और आमिर से मरवी है कि असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अपने हाथ पानी में डालते थे जबकि वे जुनब होते थे और औरतें हायज़ होती थीं और ये लोग बिना हाथ धोए पानी में डालने में हर्ज नहीं समझते थे, और इब्ने अब्बास से मनक़ूल है कि अगर कोई शख़्स ग़ुस्ले जनाबत करे और उसके छींटे बर्तन में गिरें तो उसमें हर्ज नहीं, और हसन, इब्राहिम, ज़ुहरी, अबू जाफ़र और इब्ने सिरीन से भी इसी तरह।

[मध्य नोट] नोट: असल में इसी तरह है शायद यूँ हो "कि जुनब अपना हाथ डाले"। (म) - (त)

[पाद लेख] 1. मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, उस आदमी के बारे में जो जुनब होने की हालत में अपना हाथ बर्तन में डालता है, इदारतुल क़ुरान वल उलूमल इस्लामिया कराची, 1/82। 2. मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, उस आदमी के बारे में जो जुनब हो और उसके ग़ुस्ल के छींटे उसके बर्तन में गिरें, ऐज़न (वही), 1/72।

قلت: ای ان المنع انما یکون لسقوط الغسالة فیها اولادخال المحدثین ایدیهم فیها والکل غیر مانع علی ماتقرر عنده ثم اتی بآثار بعضها فی الملاقی وبعضها فی الملتقی فقال وقد روی ابن ابی شیبة عن الحسن فی الجنب یدخل یده فی الاناء قبل ان یغسلها قال یتوضؤ به ان شاء وعن سعید بن المسیب لابأس الجنب عه یده فی الاناء قبل ان یغسلها 1 وعن عائشة بنت سعد قالت کان سعد یأمر الجاریة بتناوله الطهور من الحوض فتغمس یدها فیها فیقال انها حائض فیقول انا حیضتها وعن عامر قال کان اصحاب رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم یدخلون ایدیهم فی الاناء وهم جنب والنساء حیض لایرون بذلك بأسا یعنی قبل ان یغسلواها وعن ابن عباس فی الرجل یغتسل من الجنابة فینضح فی انائه من غسله فقال لاباس به 2 وعن الحسن وابراهیم والزهری وابی جعفر وابن سیرین نحوه قال فأن قلت فما محمل حدیث لایبولن احدکم فی الماء الدائم ولا یغتسلن

میں کہتا ہوں، یعنی منع اس لئے ہے کہ دھوون اس میں گرتا ہے یا اس لئے کہ بے وضو لوگ اس میں اپنے ہاتھ ڈالتے ہیں اور یہ سب غیر مانع ہے جیسا کہ ان کے نزدیک مقرر ہے پھر انہوں نے اس کے بعض آثار ملاقاتی میں اور بعض ملقی میں ذکر کیے پس فرمایا اور تحقیق ابن ابی شیبہ نے حسن سے جنب کے بارے میں روایت کی جو بے دھوئے اپنا ہاتھ برتن میں ڈالے تو فرمایا اگر چاہے تو اُس کے ساتھ وضو کرے، اور سعید بن المسیب سے مروی ہے کہ جنب اگر اپنا ہاتھ دھونے سے قبل برتن میں ڈال دے تو حرج نہیں، اور عائشہ بنت سعد کہتی ہیں کہ حضرت سعد باندی کو حکم دیتے تھے کہ وہ حوض سے پانی لا کر دے، تو وہ حوض میں اپنا ہاتھ ڈبوتی تھی، تو کہا جاتا تھا کہ وہ حائضہ ہے، تو آپ فرماتے تھے: کیا میں نے اس کو حائضہ کیا ہے؟ اور عامر سے مروی ہے کہ اصحابِ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اپنے ہاتھ پانی میں ڈالتے تھے جبکہ وہ

جنب ہوتے تھے اور عورتیں حائض ہوتی تھیں اور یہ لوگ بلا ہاتھ دھوئے پانی میں ڈالنے میں ہرج نہیں سمجھتے تھے، اور ابن عباس سے منقول ہے کہ اگر کوئی شخص غسل جنابت کرے اور اس کے چھینٹے برتن میں گریں تو اس میں حرج نہیں، اور حسن، ابراہیم، زہری، ابو جعفر اور ابن سیرین سے بھی اسی طرح۔ قال فأن قلت (پس اگر تم کہو) تو حدیث "تم میں سے کوئی بھی ٹھہرے ہوئے پانی میں پیشاب نہ کرے اور نہ غسل کرے" کا کیا محمل (مطلب) ہے؟

عه كذا بالاصل ولعله ان يدخل الجنب يده منه-(م) | اصل میں اسی طرح ہے شاید یوں ہو "ان یدخل الجنب یدہ"۔ (ت)

1 مصنف ابن ابی شیبة فی الرجل یدخل یده فی الاناء وهو جنب ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۸۲/۱ 2 مصنف ابن ابی شیبة فی الرجل یجنب فینتضح من غسله فی انائه ایضاً ۷۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume II

Abu Ja'far and Ibn Sirin narrated a similar report, saying: If someone asks, what would then be the meaning of the Hadith "None of you should urinate in stagnant water, etc."? I say, Al-Karkhi deduced from this that obtaining ritual purity with used (must'amal) water is not permissible, but its generality does not match their detailed rulings (furu') mentioned regarding abundant water. Therefore, it will be interpreted as disliking (makruh), and the narrator of the Hadith reported exactly this. Accordingly, Ibn Abi Shaybah narrated from Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both) that we used to prefer taking water from the pond and going to a side to perform ghusl (bath). He said: And those detailed rulings that oppose this are based on the narration of impurity, such as their saying if a person in a state of major ritual impurity (junub), minor impurity (muhdith), or a menstruating woman (haiz) puts their hand into a vessel before washing it, then according to analogy (qiyas) it spoils the water, but according to juristic preference (istihsan) it will not be corrupted because there is a need for scooping water. To the extent that if someone put their foot in the vessel, the water would be spoiled because there is no need, but if they put it in the well, it was made an exception (forgiven). If they put any part of the body other than the hand and foot into the vessel or well, it would spoil the water as there is no need for it. Similar are other such matters. (Then he mentioned issues and reports not related to our topic until he said:) And from Abu Jurayj, he said: I said to Ata', "I saw a man performing ablution (wudu) in that pond while uncovered." He said: "There is no harm in it, Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) had done it, and he knew that Al-Abyad performs ablution from it."

Footnotes: 1. Musannaf Ibn Abi Shaybah, Regarding the one who disliked urinating in stagnant water, Idara al-Quran, Karachi, 1/141. 2. Musannaf Ibn Abi Shaybah, A man reaches a well and a pond while in a state of ritual impurity, Idara al-Quran, Karachi. 3. Bada'i al-Sana'i, Chapter on Essential Ritual Purity, Saeed Company, Karachi, 1/69.

फतावा रज़विया जिल्द दो

अबू जाफ़र और इब्न सिरीन ने इसी तरह की रिवायत की, फ़रमाया: अगर कोई कहे कि फिर "लाईबोलन्न अहादुकुम फ़िल मा इद्दाईम इला आख़िर" हदीस का क्या मफ़हूम (अर्थ) होगा? मैं कहता हूँ करखी ने इससे इस्तदलाल (निष्कर्ष) किया है कि मुस्त'अमल (प्रयुक्त) पानी से तहारत (पवित्रता) हासिल करना जायज़ नहीं है, लेकिन इसकी व्यापकता अधिक पानी के मामले में उनके फ़ुरू (उप-नियमों) के साथ मेल नहीं खाती, इसलिए इसे कराहत (नापसंदगी) पर आधारित माना जाएगा और हदीस के रावी (वर्णनकर्ता) ने यही ख़बर दी है। चुनांचे इब्न अबी शैबा ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि हम इस बात को पसंद करते थे कि तालाब से पानी लेकर एक कोने में जाकर ग़ुस्ल (स्नान) करें। उन्होंने फ़रमाया: और जो फ़ुरू इसके विरुद्ध हैं, वे नजासत (अशुद्धता) की रिवायत पर आधारित हैं, जैसे उनका कहना कि यदि कोई जुनुब (बड़ी नापाकी वाला), मुहदिस (छोटी नापाकी वाला) या हाएज़ा (माहवारी वाली स्त्री) हाथ धोए बिना बर्तन में डाल दे, तो क़यास (तर्क) यह चाहता है कि पानी ख़राब हो जाए और इस्तिहसान (कानूनी प्राथमिकता) के अनुसार फ़ासिद (दूषित) न होगा, क्योंकि चुलू भरने (पानी निकालने) की ज़रूरत होती है। यहाँ तक कि यदि किसी ने बर्तन में पैर डाल दिया तो पानी ख़राब हो जाएगा क्योंकि ज़रूरत नहीं है, और यदि पैर कुएं में डाला तो पानी ख़राब न होगा क्योंकि कुएं से डोल पानी ख़राब हो जाएगा क्योंकि इसकी कोई ज़रूरत नहीं, निकालने के लिए पैर डालने की ज़रूरत होती है तो उसे माफ़ कर दिया गया है। और यदि बर्तन या कुएं में हाथ-पैर के अलावा शरीर का कोई और हिस्सा डाला तो वह पानी को ख़राब कर देगा क्योंकि उसकी ज़रूरत नहीं है। इसी तरह की दूसरी चीज़ें हैं। (फिर उन्होंने ऐसे मसाइल और आसार ज़िक्र किए जिनका संबंध हमारे विषय से नहीं है, यहाँ तक कि कहा:) और अबू जुरैज से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैंने अता से कहा, "मैंने एक व्यक्ति को उस हौज़ (तालाब) में वुज़ू करते देखा जबकि वह ढका हुआ नहीं था।" उन्होंने कहा: "इसमें कोई हर्ज नहीं है, इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने ऐसा किया था और वह जानते थे कि अल-अबीद उससे वुज़ू करते हैं।"

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा, जो रुके हुए पानी में पेशाब करने को नापसंद करता है, इदारा अल-क़ुरआन कराची 1/141. 2. मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा, व्यक्ति कुएं और तालाब पर पहुँचता है जबकि वह नापाकी की हालत में हो, इदारा अल-क़ुरआन कराची. 3. बदाइ अल-स़नाइ, तहारत-ए-हक़ीक़ी का बयान, सईद कंपनी कराची 1/69.

पेज 140/711

ابو جعفر اور ابن سیرین نے اسی قسم کی روایت کی، فرمایا اگر کوئی کہے کہ پھر "لایبولن احدکم فی الماء الدائم الخ" حدیث کا کیا مفہوم ہوگا؟ میں کہتا ہوں کرخی نے اس سے استدلال کیا ہے کہ مستعمل پانی سے طہارت کا حاصل کرنا جائز نہیں ہے لیکن اس کا عموم زائد پانی میں ان کی فروع سے مطابقت نہیں رکھتا پس اسے کراہت پر محمول کیا جائے گا اور راوی حدیث نے یہی خبر دی ہے۔ چنانچہ ابن ابی شیبہ نے جابر بن عبداللہ سے روایت کی کہ ہم اس امر کو پسند کرتے تھے کہ تالاب سے پانی لے کر ایک کونے میں جاکر غسل کریں، فرمایا اور جو فروع اس کی مخالف ہیں تو وہ نجاست کی روایت پر ہیں، جیسے کسی جنب یا محدث یا حائض نے اپنا ہاتھ برتن میں بلا دھوئے ڈالا، تو قیاس چاہتا ہے کہ پانی خراب ہو جائے اور استحسان کی رُو سے فاسد نہ ہوگا، کیونکہ چُلو بھرنے کی حاجت ہوتی ہے یہاں تک کہ اگر کسی نے برتن میں پیر ڈال دیا تو پانی خراب ہو جائے گا کیونکہ ضرورت نہیں، اور اگر پیر کُنوں میں ڈالا تو پانی خراب نہ ہوگا کیونکہ کُنوں سے ڈول پانی خراب ہو جائے گا کیونکہ اس کی کوئی ضرورت نہیں، نکالنے کیلئے پیر ڈالنے کی ضرورت ہوتی ہے تو اس کو معاف کردیا گیا ہے اور اگر برتن یا کُنوں میں ہاتھ پیر کے علاوہ جسم کا اور کوئی حصہ ڈالا تو اور اسی کی مثل دوسری چیزیں ہیں (پھر انہوں نے ایسے مسائل اور آثار ذکر کئے جن کا

فیہ من الجنابۃ قلت استدل بہ الکرخی علی عدم جواز التطھیر بالمستعمل ولا یطابق عمومہ فروعھم المذکورۃ فی الماء الکثیر فیحمل علی الکراھۃ وبذلک اخبر راوی الخبر فأخرج ابن ابی شیبۃ عن جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالی عنھما قال کنا نستحب ان نأخذ من ماء الغدیر ونغتسل بہ ناحیۃ 2قال وما ذکر من الفروع مخالفاً لھذا فبناء علی روایۃ النجاسۃ کقولھم لو ادخل جنب او محدث او حائض یدہ فی

الاناء قبل ان يغسلها فالقياس انہ يفسد الماء وفٰی الاستحسان لايفسد للاحتياج الى الاغتراف حتى لو ادخل رجلہ يفسد الماء لانعدام الحاجۃ ولو ادخلها فی البئر فجعل عفواً ولو ادخل فی الاناء او البئر بعض جسده سوى اليد والرجل افسده لانہ لاحاجۃ اليہ 3وامثال هذه (ثم ذكر مسائل و آثاراً لايتعلق بما نحن فيہ الى ان قال) وعن ابى جريج قال قلت لعطاء رأيت رجلاً توضأ فی ذلک الحوض متكشفا فقال لابأس بہ قد فعلہ ابن عباس رضى الله تعالى عنهما وقد علم انہ يتوضؤ منہ الابيض

1 مصنف ابن ابى شيبۃ من كان يكره ان يبول فی الماء الراكد ادارۃ القرآن كراچی ۱۴۱/۱ 2 مصنف ابن ابى شيبۃ الرجل ينتهى الى البئر والغدير وهو جنب ادارۃ القرآن كراچی 3 بدائع الصنائع فصل فی الطهارۃ الحقيقيۃ سعيد كمپنى كراچی ۶۹/۱

Fatawa Rizwia, Volume II

(Column 2, Right side): (Has no relation to this discussion, then he said) and it is narrated from Ibn Jurayj that he said: I said to 'Ata' that a person bathed naked in a pond. He replied: There is no harm in it. Ibn Abbas himself did this even though he knew that people of all kinds (black and white) bathe in it. And in one narration it says that the wudu water of people used to fall into that pond. He said: Perhaps they saw the hadith of the 'awakened person' (mustayqiz) specifically related to that, or that this is a devotional matter (ta'abbudi). Furthermore, Ibn Shaybah narrated from Abu Muawiyah from Al-A'mash from Ibrahim that whenever the hadith of Hazrat Abu Huraira was mentioned before the companions of Abdullah, they would say: What would Abu Huraira do in the Mihras (stone water tank) that was in Medina? (End of quote). Such things are mentioned in this chapter. I say by the grace of Allah that there is discussion on this from several aspects: First, it is surprising that he relied on the wording of 'Al-Mubtaghi', whereas what he sought is not present in it, because in it they are discussing a large pond as you can know from their statement 'Indeed the water of the pond is under the ruling of flowing water', and it is definitively known that the pond will be the one which...

(Column 1, Left side): ...and black. And in a narration: and it (water) used to pour from people's wudu into its hollow. He said: It is as if they saw the hadith of the 'awakened person' as specific to him, or that it is a devotional matter. However, Ibn Abi Shaybah narrated from Abu Muawiyah from Al-A'mash from Ibrahim who said: When the companions of Abdullah (May Allah be pleased with him) mentioned the hadith of Abu Huraira (May Allah be pleased with him), they said: How did Abu Huraira act regarding the Mihras (stone water tank) in Medina? This is all that he presented in this chapter in his book, may Allah have mercy on him, in his refuge. I say: And with Allah's guidance, the discussion on this is from several aspects. First (1): It is surprising that he, may Allah have mercy on him, relied on the wording of 'Al-Mubtaghi', for there is no trace in it of what he sought, because his speech (may his secret be sanctified) is about a large pond. Do you not see his statement: 'Indeed the water of the pond is in the ruling of flowing water'? And it is known definitively that this is only regarding the pond...

(Bottom Section): Note (عه): Then I saw the clarification of it in the absolute speech of his Shaykh, the Researcher (al-Muhaqqiq), where he cited the speech of 'Al-Mubtaghi' in the issues of abundant water, then said: 'Necessarily, he intended the large pond by it'. End of quote from him, may he be forgiven. (M). Then I saw its clarification in

the absolute speech of Shaykh Al-Muhaqqiq where he cited the speech of 'Al-Mubtaghi' in the issues of abundant water, then said: 'Necessarily, by this is meant the large pond'. End of quote. (T)

[1] Treatise of Allama Qasim Page 141 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द दो

(दायां कॉलम): (इस बहस से संबंध नहीं है, फिर कहा) और इब्न जुराइज से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने अता से कहा कि एक व्यक्ति ने हौज़ में नंगे होकर ग़ुस्ल किया। उन्होंने कहा: इसमें कोई हर्ज नहीं है। खुद इब्न अब्बास ने ऐसा किया जबकि उन्हें पता था कि इसमें हर तरह के लोग (काले और गोरे) ग़ुस्ल करते हैं। और एक रिवायत में है कि उस हौज़ में लोगों के वज़ू का पानी गिरता था। उन्होंने कहा: शायद उन्होंने 'मुस्तैक़िज़' (जागे हुए व्यक्ति) वाली हदीस को उसी के साथ विशिष्ट देखा या यह कि यह एक ता'अब्बुदी (भक्तिमय) मामला है। इसके अलावा, इब्न शैबाह ने अबू मुआविआ से, उन्होंने आमश से, उन्होंने इब्राहिम से रिवायत की कि जब हज़रत अबू हुरैरा की हदीस का ज़िक्र अब्दुल्लाह के साथियों के सामने आता था, तो वे कहते थे: अबू हुरैरा उस मिहरास (पत्थर के हौज़) में क्या करते थे जो मदीना में था? (इक्तबास समाप्त)। इस अध्याय में इस प्रकार की बातें वर्णित हैं। मैं अल्लाह की तौफीक से कहता हूँ कि इसमें कई पहलुओं से चर्चा है: पहला, आश्चर्य है कि उन्होंने 'मुब्तग़ी' के कथन से प्रमाण लिया है, जबकि वह जो चाहते थे उसमें मौजूद नहीं है, क्योंकि उसमें वे बड़े हौज़ के बारे में चर्चा कर रहे हैं जैसा कि आप उनके इस कथन 'बेशक हौज़ का पानी बहते हुए पानी के हुक्म में है' से जान सकते हैं और यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि हौज़ वही होगा जो...

(बायां कॉलम): ...और काला। और एक रिवायत में: और लोगों के वज़ू का पानी उसके खोखले हिस्से में गिरता था। उन्होंने कहा: मानो उन्होंने 'मुस्तैक़िज़' वाली हदीस को उनके लिए विशिष्ट देखा, या यह कि यह एक ता'अब्बुदी कार्य है। हालाँकि, इब्न अबी शैबाह ने अबू मुआविआ से, उन्होंने आमश से, उन्होंने इब्राहिम से रिवायत की जिन्होंने कहा: जब अब्दुल्लाह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के साथियों के पास अबू हुरैरा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस का ज़िक्र किया जाता था, तो वे कहते थे: अबू हुरैरा मदीना वाले मिहरास के बारे में क्या करते थे? यह सब कुछ है जो उन्होंने अपनी किताब में इस अध्याय में पेश किया है, अल्लाह उन पर रहम करे। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफीक से, इस पर चर्चा कई पहलुओं से है। पहला (१): आश्चर्य है कि उन्होंने, अल्लाह उन पर रहम करे, 'मुब्तग़ी' के शब्दों पर भरोसा किया, क्योंकि इसमें उस चीज़ का कोई निशान नहीं है जो उन्होंने चाही थी, क्योंकि उनकी चर्चा बड़े हौज़ के बारे में है। क्या आप उनके इस कथन को नहीं देखते: 'बेशक हौज़ का पानी बहते पानी के हुक्म में है'? और यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि यह केवल हौज़ के बारे में है...

(निचला हिस्सा): नोट (عه): फिर मैंने इसके बारे में उनके शैख मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ के कलाम में स्पष्टीकरण देखा, जहाँ उन्होंने पानी की अधिकता के मसलों में 'मुब्तग़ी' का कलाम उद्धृत

किया, फिर कहा: 'ज़रूर उन्होंने इससे बड़ा हौज़ ही मुराद लिया है'। उनसे, अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे। (एम)। फिर मैंने इसका स्पष्टीकरण शैख अल-मुहक़्क़िक़ के कलाम में देखा जहाँ उन्होंने कसीर (अधिक) पानी के मसलों में 'मुब्तग़ी' का कलाम उद्धृत किया फिर फ़रमाया: 'ज़रूर इससे मुराद हौज़-ए-कबीर है'। (टी)

[1] रिसाला अल्लामा क़ासिम पृष्ठ १४१/७११

فتاویٰ رضویہ ، جلد ثانی

(دایاں کالم): اس بحث سے تعلق نہیں، پھر فرمایا) اور ابن جریج سے مروی ہے انہوں نے کہا کہ میں نے عطاء سے کہا کہ ایک شخص نے حوض میں ننگے ہو کر غسل کیا تو انہوں نے کہا اس میں حرج نہیں، خود ابن عباس نے ایسا کیا حالانکہ ان کو معلوم تھا کہ اس میں سیاہ و سپید سب ہی غسل کرتے ہیں۔ اور ایک روایت میں ہے کہ اس حوض میں لوگوں کے وضو کا پانی گرتا تھا، فرمایا کہ غالباً انہوں نے مستیقظ کی حدیث کو اُسی کے ساتھ خاص دیکھا یا یہ کہ یہ امر تعبدی ہے ، علاوہ ازیں ابن شیبہ نے ابو معاویہ سے اعمش سے ابراہیم سے روایت کی کہ اصحاب عبد اللہ کے سامنے جب حضرت ابو ہریرہ کی حدیث کا ذکر آتا تھا تو فرماتے تھے کہ ابو ہریرہ مہراس میں کیا کرتے تھے جو مدینہ میں تھی اھ اس باب میں اس قسم کی چیزیں ذکر کی ہیں۔ میں بتوفیق الٰہی کہتا ہوں کہ اس میں چند وجوہ سے کلام ہے : اول تعجب ہے کہ انہوں نے مبتغی کی عبارت سے استدلال کیا ہے، حالانکہ وہ جو چاہتے تھے اس میں موجود نہیں، کیونکہ اس میں وہ بڑے حوض کے بارے میں گفتگو کر رہے ہیں جیسا کہ آپ ان کے قول ان ماء الحوض فی حکم ماء جار سے معلوم کر سکتے ہیں اور یہ قطعی معلوم ہے کہ حوض وہی ہو گا جس

(بایاں کالم): والاسود وفي رواية وكان ينسكب من وضوء الناس في جوفها قال وكأنهم رأوا حديث المستيقظ خاصاً به او انه امر تعبدي على ان ابن ابی شيبة قد روى عن أبي معوية عن الاعمش عن ابرهيم قال كان اصحاب عبدالله رضی اللہ تعالٰی عنہ اذا ذكر عندهم حديث ابی هريرة رضی اللہ تعالٰی عنہ قالوا كيف يصنع أبو هريرة بالمهراس الذی بالمدينة اھ فهذا كل ما آتی بہ فی هذا الباب فی كتابه رحمه اللہ تعالٰی فی مأبہ۔ اقول: وباللہ التوفيق الكلام فيه من وجوه الاول(۱)من العجب استناده رحمه اللہ

تعالی بعبارة المبتغی فلیس فیها أثر مما ابتغی لان کلامه عه في الحوض الکبیر الاتری إلی قوله إن ماء الحوض في حکم ماء جار ومعلوم قطعاً أن ذلك انما هو في الحوض

(نیچے کا حصہ): عه: ثم رأیت التصریح به فی کلام شیخه المحقق علی الاطلاق حیث اورد کلام المبتغی فی مسائل الماء الکثیر ثم قال وانما اراد الحوض الکبیر بالضرورة اه منه غفرله-(م) پھر میں نے اس کی تصریح ان کے شیخ محقق علی الاطلاق کے کلام میں دیکھی جہاں انہوں نے کثیر پانی کے مسائل میں مبتغی کا کلام وارد کیا پھر فرمایا بالضرورة اس سے مراد حوضِ کبیر ہے اھ (ت)

[1] رسالہ علامہ قاسم Page 141 of 711

Fatawa Ridawiyyah Volume Two

[Left Column - Arabic] ...the large one containing plenty of water. As for the small one, it is like vessels. The scholar himself said in this treatise that vessel water becomes impure if impurity falls into it, even if it doesn't change. He said: whatever is in a pool or stagnant water, similar to vessel water, is associated with it as the location has no effect. - 1 AH Second (2): We previously mentioned in number [38] from Al-Mubtaghi the explicit statement that water is spoiled by inserting the palm. Third (3): Likewise, there is no support for his intended meaning in the phrasing of Kitab al-Athar; it does not say that a man inserts his hand into a vessel before washing, or a woman, then they both wash from it. How can such a thing be thought of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) or the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her)? Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) only intended to refute the saying of those who invalidated wudu with the leftover wudu water of a woman absolutely, or if she was in a state of major ritual impurity (janaba) or menstruation. These are the two views of the Hanbalis and Malikis. Therefore, he said: 'She began before him' or 'He began before her,' and he entitled the chapter: 'Chapter of washing of the man and the woman from a single vessel from janaba.' - 4 Fourth (3): He (may Allah be pleased with him) clarified his noble intent in his exalted Muwatta, saying: 'Chapter of a man washing or performing wudu with the leftover water of a woman.' Malik informed us, Nafi' narrated to us from Ibn Umar (may Allah be pleased with him)...

[Right Column - Urdu] ...contains plenty of water and a small basin is like vessels. The Allama himself stated in this treatise that vessel water becomes impure when impurity falls into it, even if no change occurs. He stated that water in a pond or pit which is equal to vessel water is also associated with vessels because the location has no effect. AH. Second, in number 38, we gave the explicit statement of Al-Mubtaghi that water will be spoiled by putting in the hand. Third, similarly, no support is found in Kitab al-Athar either; it does not mention that a person puts his hand into a vessel without washing it, or a woman does so, and then they both perform ghusl (bath) with it. How can such a suspicion be held regarding the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and the Mother of the Believers, Sayyidatuna Aisha? Imam Muhammad's intent was only to refute the statement of those people who [prohibit the use of leftovers] of women, and for this reason he said: 'the woman started before the man or the man started before the woman,' and established the title 'Chapter of [those who] declare performing wudu absolutely invalid for a man

from the leftover water of a man and a woman, or when the woman is in a state of janaba or menstruation; and these are the two views of the Hanbalis and Malikis, in the description of performing ghusl of janaba from a vessel.'

Footnotes: 1. Treatise of Allama Qasim. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharat, Saeed Company Karachi 1/71. 3. Kitab al-Athar, Ghusl of the man and the woman from a single vessel from janaba, Idaratul Quran Karachi p. 10.

फ़तावा रिज़विया जिल्द दूसरी

[बायां कॉलम - अरबी] ...बड़ा जिसमें बहुत पानी हो। छोटे हौज़ बर्तनों की तरह हैं। स्वयं अल्लामा ने इसी रिसाले में फ़रमाया है कि बर्तनों का पानी गंदगी गिरने से नापाक हो जाएगा, चाहे उसमें बदलाव न आए। उन्होंने फ़रमाया: जो पानी तालाब और गड्ढे में हो और वह बर्तनों के पानी के बराबर हो तो उसे भी बर्तनों के साथ जोड़ा जाएगा क्योंकि स्थान का कोई असर नहीं होता। - 1 AH दूसरा (2): हमने पहले नंबर [38] में 'मुब्तग़ी' के हवाले से स्पष्ट किया है कि हथेली डालने से पानी ख़राब हो जाता है। तीसरा (3): इसी तरह 'किताब अल-आसार' के शब्दों में उनके उद्देश्य का कोई समर्थन नहीं मिलता; उसमें यह नहीं है कि कोई पुरुष धोने से पहले बर्तन में हाथ डालता है, या कोई महिला, और फिर वे दोनों उससे स्नान करते हैं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) या उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) के बारे में ऐसा कैसे सोचा जा सकता है? इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) का उद्देश्य केवल उन लोगों के कथन का खंडन करना था जो पूरी तरह से महिला के वज़ू के बचे हुए पानी से वज़ू को अमान्य मानते हैं, या जब वह जनाबत (अशुद्धि) या मासिक धर्म की स्थिति में हो। ये हंबली और मालिकी संप्रदायों के दो विचार हैं। इसीलिए उन्होंने कहा: 'उसने उससे पहले शुरू किया' या 'उसने उससे पहले शुरू किया', और अध्याय का शीर्षक दिया: 'जनाबत की स्थिति में एक ही बर्तन से पुरुष और महिला के स्नान का अध्याय'। - 4 चौथा (3): उन्होंने (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपनी महान पुस्तक 'मुवत्ता' में अपना पवित्र उद्देश्य स्पष्ट किया है, जहाँ उन्होंने कहा: 'महिला के बचे हुए पानी से पुरुष के स्नान या वज़ू का अध्याय।' हमें मालिक ने बताया, नाफ़े ने इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की...

[दायां कॉलम - उर्दू] ...में पानी बहुत ज़्यादा हो और छोटा हौज़ तो बर्तनों की तरह है। स्वयं अल्लामा ने इस रिसाले में फ़रमाया कि बर्तनों का पानी गंदगी के गिरने से नापाक हो जाएगा चाहे उसमें बदलाव न हो। फ़रमाया जो पानी तालाब और गड्ढे में हो वह बर्तनों के पानी के बराबर हो तो वह भी बर्तनों के साथ जुड़ा है क्योंकि स्थान का कोई असर नहीं। अ.ह. दूसरा, नंबर 38 में हमने 'मुब्तग़ी' का स्पष्टीकरण दिया कि हाथ डालने से पानी ख़राब होगा। तीसरा, इसी तरह 'किताब अल-आसार' से भी उनकी पुष्टि नहीं मिलती है। इसमें यह नहीं है कि कोई व्यक्ति अपना हाथ धोए बिना बर्तन में डाले या औरत डाले और फिर दोनों उससे स्नान करें। और इस तरह का विचार अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा के बारे में कैसे हो सकता है? इमाम मुहम्मद का उद्देश्य केवल उन लोगों के कथन का खंडन करना है जो महिला के[बचे हुए पानी] के बारे में हैं

और इसीलिए फ़रमाया, महिला ने पुरुष से पहले या पुरुष ने महिला से पहले शुरुआत की हो, और इसका शीर्षक यह रखा: "अध्याय: पुरुष और महिला के एक ही बचे हुए पानी से पुरुष के लिए वज़ू को पूरी तरह अमान्य करार देते हैं या जब महिला जनाबत या मासिक धर्म में हो, और यही दो विचार हंबली और मालिकी के हैं, बर्तन से जनाबत का स्नान करने के वर्णन में"।

पादलेख: 1. रिसाला अल्लामा क़ासिम। 2. बहर-उर-राइक, किताब-उत-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/71। 3. किताब-उल-आसार, जनाबत की स्थिति में एक ही बर्तन से पुरुष और महिला का स्नान, इदारतुल क़ुरआन कराची पेज 10।

पृष्ठ 142/711

فتاوی رضویه جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی] الكبير ذي الماء الكثير اما الصغير فكالاواني وقد قال(١)العلامة نفسه في هذه الرسالة أن ماء الاواني لا يتنجس بوقوع النجاسة وإن لم يتغير قال وما كان في غدير او مستنقع وهو نحو ماء الاواني فهو ملحق بها إذ لا اثر للمحل - ١اهـ الثاني (٢) قدمنا في نمرة عن المبتغى التصريح بأن الماء يفسد بادخال الكف ٣ الثالث (٣) كذلك لاأثر لتأييد شيئ من مقصوده في عبارة كتاب الاثار فليس أن الرجل يدخل يده في الاناء قبل الغسل او المرأة ثم يغتسلان منه وكيف يظن هذا برسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم او ام المؤمنين رضى الله تعالى عنها وانما مراد محمد رحمه الله تعالى نفى قول من ابطل الوضوء بفضل وضوء المرأة مطلقا واذا كانت جنبا او حائضا وهما قولان للحنابلة والمالكية ولذا قال بدأت قبله اوبداً قبلها وترجم له باب غسل الرجل والمرأة من إناء واحد من الجنابة - ٤ الرابع (٣) قد اوضح رضى الله تعالى عنه مراده الشريف في مؤطاه المنيف إذ قال باب الرجل يغتسل او يتوضأ بسور المرأة اخبرنا مالك حدثنا نافع عن ابن عمر رضى الله

[دایاں کالم - اردو] میں پانی بہت زیادہ ہو اور چھوٹا حوض تو برتنوں کی طرح ہے، خود علامہ نے اس رسالہ میں فرمایا کہ برتنوں کا پانی نجاست کے گرنے سے نجس ہو جائے گا خواہ اس میں تغیر نہ ہو، فرمایا جو پانی تالاب اور گڑھے میں ہو وہ برتنوں کے پانی کے برابر ہو تو وہ بھی برتنوں کے ساتھ ملحق ہے کیونکہ محل کا کوئی اثر نہیں اھ دوم نمبر ۳۸ میں ہم نے مبتغی کی تصریح کہ پانی ہاتھ ڈالنے سے خراب ہوگا، سوم اسی طرح کتاب الآثار سے بھی ان کی تائید نہیں ملتی ہے، اس میں یہ نہیں کہ کوئی شخص اپنا ہاتھ دھوئے بغیر برتن میں ڈالے یا عورت ڈالے پھر دونوں اس سے غسل کریں، اور اس قسم کا گمان حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور ام المومنین حضرت عائشہ سے کیسے ہو سکتا ہے، امام محمد کا مقصود تو صرف ان لوگوں کے قول کی

تردید ہے جو عورت کے اور اس لئے فرمایا، عورت نے مرد سے پہلے یا مرد نے عورت سے پہلے ابتدا کی ہو، اور اس کا عنوان یہ قائم کیا "باب عورت اور مرد کے ایک بچے ہوئے پانی سے مطلق مرد کیلئے وضو کرنے کو باطل قرار دیتے ہیں یا جب عورت جنب یا حائض ہو، اور یہی دو قول حنابلہ و مالکیہ کے ہیں، برتن سے غسل جنابت کرنے کے بیان میں"،

حواشی: 1 رسالہ علامہ قاسم 2 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۷۱ 3 کتاب الاثار غسل الرجل والمرأة من اناء واحد من الجنابة ادارة القرآن کراچی ص ۱۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

Fourthly: Imam Muhammad clarified his intent in his Muwatta. He stated: "Chapter regarding a man performing ablution with the water left over by a woman." Malik informed us, and Nafi' narrated from Ibn 'Umar, who said there is no harm if a man performs ablution with water left by a woman, provided she is not in a state of major ritual impurity (junub) or menstruation. Muhammad said: There is no harm in performing ablution with water left over by a woman, whether it be from her ablution (wudu) or ritual bath (ghusl), or her leftovers, and whether she is in a state of ritual impurity or menstruation. A hadith reached us that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and Sayyidatuna 'Aisha would perform ritual baths from a single vessel, competing for the water. This is proof of performing ghusl with water left by a woman in a state of ritual impurity, and this is the opinion of Abu Hanifa.

Fifthly: We have already cited from a large group of illustrious imams including Abu Bakr al-Razi, Shams al-A'imma al-Sarakhsi, al-Isbijabi, al-Walwaliji, Abu Zayd al-Dabusi, al-Zayla'i, Ibn al-Humam, and others—may Allah the Almighty forgive us for their sake. From al-Khulasa, the explicit text of Imam Muhammad's Asl has been cited regarding this specific ruling. So how can this speech be interpreted contrary to that? And with Allah is success.

Sixthly: What he cited from Ibn 'Abbas, Imam al-Baqir, Hasan al-Basri, Ibn Sirin, Ibrahim al-Nakha'i, and al-Zuhri (may Allah be pleased with them) does not pertain to the intended subject because it concerns the 'thrown' (mulqa) water, whereas the discussion is regarding the 'touched' (mulaqi) water.

Seventhly: Regarding what they cited at the end from 'Ata and Ibn 'Abbas...

---

1 Muwatta Imam Muhammad, "A man performing ghusl or wudu with the leftovers of a woman," Mujtabai, Lahore, p. 83. Page 143 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

चौथा: इमाम मुहम्मद ने अपनी मुअत्ता में अपनी मंशा स्पष्ट कर दी है। उन्होंने कहा: "अध्याय इस बारे में कि पुरुष महिला के बचे हुए पानी से वज़ू करे।" मालिक ने हमें सूचित किया, और नाफ़े ने इब्न उमर से रिवायत की, जिन्होंने कहा कि इसमें कोई हर्ज नहीं है कि पुरुष महिला के बचे हुए पानी से वज़ू करे, बशर्ते वह जुनुब (अशुद्ध अवस्था) या माहवारी में न हो। मुहम्मद ने कहा: महिला के बचे हुए पानी से वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं है, चाहे वह उसके वज़ू का हो या ग़ुस्ल का हो या उसका झूठा हो, और चाहे वह जुनुब हो या माहवारी में हो। हमें हदीस मिली है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सैयदा आइशा एक ही बर्तन से छीना-झपटी करके ग़ुस्ल करते थे। यह जुनुब महिला के बचे हुए पानी से ग़ुस्ल का प्रमाण है, और यही अबू हनीफ़ा का कथन है।

पांचवां: हमने अबू बक्र अर-राज़ी, शम्स अल-अइम्मा सरखसी, इस्बिजाबी, वालवालिजी, अबू ज़ैद अद-दबूसी, ज़ैलई, इब्न अल-हुमाम और अन्य जैसे महान इमामों के एक बड़े समूह से पहले ही उद्धृत किया है—अल्लाह तआला उनके सदके हमें माफ़ करे। और 'अल-खुलासा' से इमाम मुहम्मद की 'अस्ल' का स्पष्ट पाठ इस विशिष्ट नियम के बारे में उद्धृत किया गया है। तो इस कलाम को इसके विरुद्ध कैसे समझा जा सकता है? और अल्लाह ही से सफलता है।

छठा: उन्होंने इब्न अब्बास, इमाम बाकिर, हसन बसरी, इब्न सीरीन, इब्राहिम नखई और ज़ुहरी (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से जो उद्धृत किया है, वह मुख्य विषय से संबंधित नहीं है क्योंकि वह 'मुल्का' (डाले गए पानी) के बारे में है, जबकि चर्चा 'मुलाकी' (छूने वाले पानी) के बारे में है।

सातवां: जो अंत में उन्होंने अता और इब्न अब्बास से...

---

1 मुअत्ता इमाम मुहम्मद, "एक पुरुष महिला के बचे हुए पानी से ग़ुस्ल या वज़ू करे," मुजतबाई, लाहौर, पृष्ठ 83। पृष्ठ 143/711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

چہارم: امام محمد نے اپنی مراد کی وضاحت اپنی مؤطا میں کردی ہے، فرمایا: باب اس بیان میں کہ مرد عورت کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرے۔ ہمیں مالک نے خبر دی، ہم سے نافع نے ابن عمر سے روایت کی، انہوں نے فرمایا اس میں کوئی حرج نہیں کہ مرد عورت کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرے، بشر طیکہ جنب یا حائض نہ ہو۔ محمد نے فرمایا اس میں حرج نہیں کہ عورت کے بچے ہوئے پانی سے وضو کیا جائے خواہ وہ اس کے وضو کا ہو یا غسل کا ہو یا جھوٹا ہو اور خواہ وہ جنب ہو یا حائض ہو، ہمیں حدیث پہنچی ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور سیدہ عائشہ ایک ہی برتن سے پانی چھین جھپٹ کر غسل کرتے تھے، یہ جنب عورت کے بچے ہوئے پانی سے غسل کا ثبوت ہے، اور یہی ابو حنیفہ کا قول ہے۔

پنجم: ہم نے ابوبکر الرازی، شمس الائمہ سرخسی، اسپیجابی، ولوالجی، ابو زید الدبوسی، زیلعی، ابن الہمام وغیرہم، جلیل القدر ائمہ کی ایک عظیم جماعت سے پہلے ہی نقل کیا ہے اور خلاصہ سے امام محمد کی اصل کی تصریح نقل کی ہے کہ اسی میں خاص حکم بیان کیا ہے تو اس کلام کو اس کے خلاف پر کیونکر محمول کیا جا سکتا ہے وباللہ التوفیق۔

ششم: انہوں نے جو ابن عباس، امام باقر، حسن بصری، ابن سیرین، ابراھیم نخعی اور زہری رضی اللہ عنہم سے نقل کیا ہے وہ مقصود سے متعلق نہیں کیونکہ وہ ملقٰی کے بارے میں ہے جبکہ گفتگو ملاقی کی بابت ہے۔

ہفتم: جو آخر میں انہوں نے عطا اور ابن عباس

1 موطا امام محمد الرجل يغتسل او يتوضا بسؤر المراة مجتبائی لاہور ص ۸۳ Page 143 of 711

Fatawa Razawiyya Volume II

...is narrated from [it], then its latter part is regarding 'mulqi' (water that falls into other water) and there is no argument in its former part. Because if the intention is to perform ablution (Wudu) from a pool such that the wash-water falls into the pool, just as Wudu is performed over a basin, then it belongs to the category of 'mulqi'. And if the intention is that one put their hand in the pool and took a handful of water to perform Wudu, then it has already been mentioned that Sharia has exempted this amount when other vessels are not available. And if the intention is that one entered the pool to perform Wudu, then even then the argument will not be established because there is no mention of the pool's size in it; so it is possible that the pool was large.

Eighth: Similarly is the Hadith of Sa'd (may Allah be pleased with him), because it relates to the time before the cessation of menstruation, and we have already quoted from 'Khaniya', 'Khulasa' and others that it does not spoil the water then, because neither of the two causes exists: neither the falling away of an obligation (suqut al-fard) nor the performance of an act of worship (iqamat al-qurbah).

Ninth: Regarding what is narrated from 'Amir, it is apparent that the phrase "before they wash it" (qabla an yaghsiluha) is interpolated (mudraj) into the Hadith, and it is not known whose saying it is, and an argument is not established from the unknown (majhul).

Tenth: What has been narrated from Hasan is contrary to what has been narrated from him in 'Badai', which is regarding what the ruling would be if used water falls into a small amount of water. Hasan Basri was asked about a small amount, so he...

Eleventh: (4) What is narrated from Sa'eed, assuming its authenticity, is the opinion of a Tabi'i; so how can it be used as an argument against the Madhhab? (5) And this is a sufficient answer regarding the rest of the narrations (Athar). Twelfth: (6) Similarly is the expression...

1. Badai al-Sanai, Discussion on Used Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/28. Page 144 of 711

...से उद्धृत किया है, तो इसका अंतिम भाग 'मुलक़ी' (गिरने वाला पानी) के संबंध में है और इसके प्रारंभिक भाग में कोई प्रमाण नहीं है। क्योंकि यदि इसका अर्थ पूल (हौज़) से वज़ू करना है कि इस तरह वज़ू का धोया हुआ पानी पूल में गिरे, जैसे कि तश्तरी में वज़ू किया जाता है, तो वह 'मुलक़ी' श्रेणी में आता है। और यदि इसका अर्थ यह है कि पूल में हाथ डालकर एक अंजलि जल लेकर वज़ू किया गया, तो यह पहले ही बताया जा चुका है कि शरीयत ने इस मात्रा को तब क्षमा किया है जब अन्य बर्तन उपलब्ध न हों। और यदि इसका अर्थ यह है कि पूल में उतरकर वज़ू किया गया, तो भी प्रमाण स्थापित नहीं होगा क्योंकि इसमें पूल के आकार का कोई उल्लेख नहीं है; अतः यह संभव है कि पूल बड़ा हो।

आठवाँ: इसी प्रकार सा'द (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस है, क्योंकि यह मासिक धर्म बंद होने से पहले के समय से संबंधित है और हमने 'ख़ानिया', 'ख़ुलासा' और अन्य से उद्धृत किया है कि यह तब पानी को खराब नहीं करता है, क्योंकि दोनों में से कोई भी कारण मौजूद नहीं है: न तो फ़र्ज़ की समाप्ति (सुक़ूत-ए-फ़र्ज़) और न ही इबादत की अदायगी (इक़ामा-ए-क़ुर्बा)।

नवाँ: आमिर से जो उद्धृत किया गया है, उससे यह स्पष्ट है कि "इसे धोने से पहले" (क़ब्ल अन यग़सिलुहा) शब्द हदीस में प्रविष्ट (मुदरज) हैं, और यह ज्ञात नहीं है कि यह किसका कथन है, और अज्ञात (मझूल) से तर्क स्थापित नहीं किया जा सकता।

दसवाँ: हसन से जो उद्धृत किया गया है, वह उसके विपरीत है जो उन्हीं से 'बदाई' में उद्धृत किया गया है, यानी कि यदि थोड़े पानी में प्रयुक्त पानी गिर जाए तो उसका क्या हुक्म होगा। हसन बसरी से कम (थोड़े पानी) के बारे में पूछा गया, तो आपने...

ग्यारहवाँ: (४) सईद से जो उद्धृत है, उसकी प्रामाणिकता की स्थिति में वह एक ताबी'ई का मत है; तो इसे मज़हब के विरुद्ध प्रमाण के रूप में कैसे उपयोग किया जा सकता है? (५) और यह शेष अन्य हदीसों (आसार) के बारे में पर्याप्त उत्तर है। बारहवाँ: (६) इसी प्रकार की अभिव्यक्ति है...

1. बदाई अस-सनाई, प्रयुक्त पानी पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/२८। पृष्ठ ७११ में से १४४

سے نقل کیا ہے تو اس کا آخری حصہ ملقی میں ہے اور اس کے اول میں کوئی حجت نہیں، کیونکہ اگر مراد حوض سے وضو کرنا ہے کہ اس طرح اس کا دھوون حوض میں گرے جیسے طشت میں وضو کیا جاتا ہے تو وہ ملقی سے ہے اور اگر مراد یہ ہو کہ حوض میں ہاتھ ڈال کر چلو بھر کر وضو کیا تو گزر چکا ہے کہ اس قدر کو شرع نے معاف رکھا ہے جبکہ دوسرے برتن نہ ہوں، اور اگر مراد یہ ہو کہ حوض میں اتر کر وضو کیا تو بھی حجت قائم نہ ہوگی کیونکہ اس میں حوض کے سائز کا ذکر نہیں، پس ممکن ہے کہ حوض بڑا ہو۔

ہشتم: اسی طرح سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث ہے کیونکہ وہ حیض کے منقطع ہونے سے قبل سے متعلق ہے اور ہم نے خانیہ اور خلاصہ وغیرہما سے نقل کیا کہ یہ پانی کو خراب نہیں کرتا، کیونکہ دونوں سبب ہی موجود نہیں ہیں نہ تو سقوط فرض ہے اور نہ ہی قربت کی ادائیگی ہے۔

نہم: جو عامر سے نقل ہوا تو ظاہر یہ ہے کہ "قبل ان یغسلوھا" کا لفظ حدیث میں مندرج ہے، اور معلوم نہیں کہ یہ کس کا قول ہے، اور مجہول سے استدلال نہیں ہوتا۔

دہم: جو حسن سے نقل کیا گیا ہے وہ اس کے مخالف ہے جو انہی سے بدائع میں نقل کیا گیا ہے یعنی یہ کہ کم پانی میں اگر مستعمل پانی گر جائے تو کیا حکم ہو گا، حسن بصری سے کم کی بابت پوچھا گیا، تو آپ نے

الحادی عشر: (۴) ما حکی عن سعید فعلی تقدیر الصحۃ عنہ مذہب تابعی فکیف یحتج بہ علی المذھب (۵) وکفی بہ جواباً عن سائر الآثار ۔ الثانی عشر: (۶) کذلک العبارۃ

۱۔ بدائع الصنائع بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۱ صفحہ 144 از 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Third: The [quote] from al-Bada'i' is far from the intended purpose; for it concerns the water thrown [into a vessel], and there is no discussion about it. Do you not see his words: "Then, according to Muhammad, 'plentiful' is that which overcomes the absolute water, and according to the two [Abu Hanifa and Abu Yusuf], it is that the impact sites of the drops become apparent in the vessel." End of quote.

I say: The reasoning for this is that according to Muhammad, the water is pure, so the attribute of purity is not stripped from it as long as it does not overcome it. And according to the two, it is impure, according to what is said. A drop of impurity makes all small amounts of water impure, except for that which does not become apparent; it is not considered, like splashes of urine the size of a needle's head, which are forgiven due to the difficulty of avoidance. So how does this relate to what we are discussing? Yes, most of what is in his hand is what al-Bada'i' mentioned in the [book of] debate regarding a weak narration and the justification of Muhammad's opinion in the issue of 'Jahat' [receding water]: that used water is what has met the body, and it is less than other [water].

I say: Success is from Allah, and He is the one whose help is sought for the pouring forth of investigation. Who am I, and what is my status?

[Response:] He replied saying, who is the owner of the water splashes? So, a small amount is forgiven due to the difficulty [of avoidance], but in the case of more, this is not the situation, so it will not be forgiven. Their discussion is about 'Mulqa' (water thrown into a vessel), so what would be the case in meeting [the body]?

Eleventh: What has been narrated from Sa'id, if it is authentic, then it is the opinion of a Tabii (successor). How can an argument be based on it for the [main] school of thought? The same response should be kept in mind for other narrations.

Twelfth: Similarly, the third text quoted from al-Bada'i' is also separate from the objective because it is regarding 'Mulqa' and there is no discussion in it. It also states: "Then, according to Muhammad, 'plentiful' is that which overcomes the absolute water, and according to the Shaykhayn (Abu Hanifa and Abu Yusuf), it is that the location of the drops becomes apparent in the vessel." End of quote.

I say the reason for this is that according to Muhammad, the water is pure, so the attribute of its purity will not be stripped from it until an impurity overcomes it. According to the Shaykhayn, it is impure, as is said, and a single drop of impurity

makes all small amounts of water impure; however, that which does not appear in the water is not considered, such as splashes of urine as small as the tip of a needle. Since it is difficult to avoid, it was forgiven. So what does this have to do with our discussion? Yes, the noteworthy text is what they quoted from al-Bada'i', which is a dispute over a weak narration and a justification of Muhammad's statement on the issue of 'Jahat': that used water is what has met the body and is less than other water. I say: success is from Allah, and He is the one whose help is sought for the pouring forth of investigation. As for me and my reality...

---

1. Bada'i' al-Sana'i', Discussion on Used Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/28.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

तीसरी बात: 'बदाई' से उद्धृत अंश उद्देश्य से अलग है, क्योंकि यह फेंके गए पानी (मुल्क़ी) के बारे में है और इसमें कोई चर्चा नहीं है। क्या आप उनके शब्दों को नहीं देखते: "फिर मुहम्मद के अनुसार, 'अधिक' वह है जो शुद्ध पानी पर हावी हो जाए, और उन दोनों (अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़) के अनुसार, यह है कि बर्तन में बूंदों के गिरने की जगह दिखाई देने लगे।" उद्धरण समाप्त।

मैं कहता हूँ: इसका तर्क यह है कि मुहम्मद के अनुसार पानी पाक (शुद्ध) है, इसलिए उसकी शुद्धता का गुण तब तक नहीं छीना जाएगा जब तक कि उस पर कुछ हावी न हो जाए। और उन दोनों के अनुसार, जैसा कि कहा जाता है, यह नापाक है। नजासत की एक बूंद ही सभी थोड़े पानी को नापाक कर देती है, सिवाय उसके जो दिखाई न दे; उसे नहीं माना जाता, जैसे सुई की नोक के बराबर पेशाब की छींटे, जिन्हें बचने की कठिनाई के कारण माफ कर दिया गया है। तो इसका हमारी चर्चा से क्या संबंध है? हाँ, उनके हाथ में जो कुछ है, वह 'बदाई' द्वारा एक कमज़ोर रिवायत के बारे में बहस में उल्लेख किया गया है और 'जहत' के मसले पर मुहम्मद के कथन की व्याख्या है कि 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) पानी वह है जो शरीर के संपर्क में आया हो, और वह दूसरे पानी से कम हो।

मैं कहता हूँ: सफलता अल्लाह की ओर से है, और उसी से शोध के प्रवाह के लिए सहायता मांगी जाती है। मैं कौन हूँ और मेरी हैसियत क्या है?

[जवाब:] उन्होंने यह कहते हुए जवाब दिया कि पानी की छींटों का मालिक कौन है? तो कम मात्रा तो कठिनाई के कारण माफ है, लेकिन अधिक मात्रा में यह स्थिति नहीं है, इसलिए वह माफ नहीं किया जाएगा। उनकी यह चर्चा 'मुल्क़ी' के बारे में है, तो [शरीर से] मिलने की स्थिति में क्या हाल होगा?

ग्यारहवीं बात: जो सईद से उद्धृत किया गया है, यदि वह सही है, तो वह एक ताबेई का मत है। तो उससे [मुख्य] मत पर तर्क कैसे दिया जा सकता है? अन्य विवरणों में भी यही उत्तर ध्यान में रखा जाना चाहिए।

बारहवीं बात: इसी तरह 'बदाई' से उद्धृत तीसरी इबारत भी उद्देश्य से अलग है क्योंकि वह 'मुल्क़ी' के बारे में है और इसमें बहस नहीं है। इसमें यह भी है कि "फिर मुहम्मद के अनुसार 'कसीर' (अधिक) वह है जो मुतलक़ पानी पर ग़ालिब (हावी) आ जाए और शेख़ैन के अनुसार यह कि बूंदों की जगह बर्तन में ज़ाहिर हो जाए।" उद्धरण समाप्त।

मैं कहता हूँ कि इसमें वजह यह है कि मुहम्मद के नज़दीक पानी पाक है तो उसकी पाकीज़गी का वस्फ़ (गुण) उस वक़्त तक उससे छीना नहीं जाएगा जब तक कि उस पर कोई नजासत ग़ालिब न आ जाए। और शेख़ैन के नज़दीक नजिस (अपवित्र) है जैसा कि कहा जाता है, और नजासत का एक कतरा ही तमाम क़लील (थोड़े) पानी को नजिस कर देता है, अलबत्ता जो पानी में ज़ाहिर नहीं होता वह मोतबर (मान्य) नहीं होता जैसे सुई की नोक के बराबर पेशाब की छींटे। चूंकि इससे बचने में दुश्वारी (कठिनाई) है इसलिए इसको माफ़ कर दिया गया। तो इसका हमारी बहस से क्या ताल्लुक है? हाँ, क़ाबिल-ए-ग़ौर (विचारणीय) वह इबारत है जो उन्होंने 'बदाई' से नक़्ल की है, वह एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायत पर झगड़ा है और मसला-ए-जहत पर मुहम्मद के क़ौल की तौजीह (व्याख्या) है कि मुस्तअमल पानी वह है जिसकी मुलाक़ात बदन से हुई हो और वह दूसरे से कम हो। मैं कहता हूँ वबिल्लाहित-तौफ़ीक़ वहुवल मुस्तआनु अला इफ़ाज़तिल तहक़ीक़, मैं और मेरी हक़ीक़त क्या...

---

1. बदाई-उस-सनाई, मुस्तअमल पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/28। पृष्ठ 145/711

الثالثة عن البدائع بمعزل عن المقصود فانهانی الملقی ولا کلام فیه الاتری إلی قوله ثم الکثیر عند محمد مایغلب علی الماء المطلق وعندهما ان یستبین مواقع القطر في الاناء اه۔

قلت: والوجه فیه ان الماء طاهر عند محمد فلا یسلبه وصف الطهوریة مالم یغلب علیه ونجس عندهما فیما یقال وقطرة نجس تنجس کل ماء قلیل غیر ان الذی لایستبین لایعتبر کرشاش البول قدر رؤس الابر فعفی عنه لعسر التحرز فاین هذا مما نحن فیه نعم جل مافی یده ماذکر البدائع فی الجدل عن روایة ضعیفة وتعلیل قول محمد فی مسألة جحط ان المستعمل مالاقی البدن وهو اقل من غیره۔

اقول: وباللہ التوفیق وهو المستعان علی افاضۃ التحقیق ایش انا ومن انا

جواب دیا کہا پانی کے چھینٹوں کا مالک کون ہے؟ تو کم تو تعذر کی وجہ سے معاف ہے مگر زائد میں یہ صورت نہیں تو وہ معاف نہ ہوگا۔ ان کی یہ گفتگو مُلقَی میں ہے تو ملاقات میں کیا حال ہوگا۔

یاز دہم: جو سعید سے نقل کیا گیا ہے اگر وہ صحیح ہو تو وہ ایک تابعی کا مذہب ہے تو اس سے مذہب پر کیسے استدلال ہو سکتا ہے اور یہی جواب دوسرے آثار میں ملحوظ خاطر رکھنا چاہئے۔

دوازدہم: اس طرح بدائع سے نقل کردہ تیسری عبارت بھی مقصود سے الگ ہے کیونکہ وہ مُلقَی کی بابت ہے اور اس میں گفتگو نہیں، اس میں یہ بھی ہے کہ "پھر محمد کے نزدیک کثیر وہ ہے جو مطلق پانی پر غالب آجائے اور شیخین کے نزدیک یہ کہ قطروں کی جگہ برتن میں ظاہر ہو جائے اھ

میں کہتا ہوں اس میں وجہ یہ ہے کہ محمد کے نزدیک پانی پاک ہے تو اس کی پاکیزگی کا وصف اس وقت تک اس سے سلب نہ ہوگا جب تک کہ اس پر کوئی نجاست غالب نہ آجائے، اور شیخین

کے نزدیک نجس ہے جیسا کہ کہا جاتا ہے، اور نجس کا ایک قطرہ ہی تمام قلیل پانی کو نجس کر دیتا ہے البتہ جو پانی میں ظاہر نہیں ہوتا وہ معتبر نہیں ہوتا ہے جیسے سوئی کی نوک کے برابر پیشاب کے چھینٹے، تو چونکہ اس سے بچنے میں دشواری ہے اس لئے اس کو معاف کر دیا گیا، تو اس کا ہماری بحث سے کیا تعلق ہے، ہاں قابلِ غور وہ عبارت ہے جو انہوں نے بدائع سے نقل کیا ہے، وہ ایک ضعیف روایت پر جھگڑا ہے اور مسئلہ جحط پر محمد کے قول کی توجیہ ہے کہ مستعمل پانی وہ ہے جس کی ملاقات بدن سے ہوئی ہو اور وہ دوسرے سے کم ہے۔ میں کہتا ہوں وباللہ التوفیق وھو المستعان علی افاضۃ التحقیق، میں اور میری حقیقت کیا جو

---

1 بدائع الصنائع بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۱ صفحہ 145 از 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

How can I speak before this great Imam, the King of Scholars (Malik al-Ulama), the sovereign of noble scholars? May Allah exalt his ranks in the Abode of Peace (Jannah), and may we always benefit from his blessings, Amen. However, the school of thought (Madhab) is well-established, and authentic, explicit reports from the three Imams (may Allah be pleased with them) are abundant. I have observed that this illustrious Imam has agreed with the great foremost scholars in those reports when mentioning the narrated texts. It is understood that what is said during debates or put forward as legal reasoning (illat) does not override the explicit texts of the Madhab; indeed, sometimes even the one who initiates an argument does not actually hold that view, as is well-known to those who serve this art of jurisprudence. This realization has emboldened me to say, and it is this:

Thirteenth: (1) Imam Malik al-Ulama (may his secret be sanctified) is the one who stated in his book 'Bada'i,' after mentioning cases where the ruling of water being 'used' (musta'mal) is waived due to necessity—such as putting one's hand into a vessel to scoop water or one's foot into a well to retrieve a bucket—his text is: 'If one puts a part of their body other than the hand or foot into the vessel or well, they spoil the water because there was no necessity for it.' Based on this principle, the issue of the well is derived: when a person in a state of major ritual impurity (junub) immerses themselves in it to retrieve a bucket without the intention of ritual bathing (ghusl), provided there is no actual physical impurity on their body. The summary of this is that the person immersing themselves is either pure or not (meaning they have actual impurity or ritual impurity like Janabah or Hadath on their body). Each case has two scenarios: either they immerse themselves to seek the bucket, to cool down, or for ritual bathing. There are two rulings in this matter: the ruling for the water in the well and the ruling for the person entering it. If he is pure...

फ़तावा रज़विया, जिल्द दोम

मैं इस महान इमाम, विद्वानों के राजा (मलिकुल उलमा), कुलीन विद्वानों के अधिपति के सामने बोलने का साहस कैसे कर सकता हूँ? अल्लाह शांति के निवास (जन्नत) में उनके पद को ऊँचा करे, और हम निरंतर उनके आशीर्वाद से लाभान्वित होते रहें, आमीन। हालाँकि, पंथ (मज़हब) अच्छी तरह से स्थापित है, और तीन इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से प्रामाणिक और स्पष्ट विवरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। मैंने देखा है कि इस यशस्वी इमाम ने वर्णित ग्रंथों का उल्लेख करते समय उन महान अग्रणी विद्वानों के साथ सहमति व्यक्त की है। यह समझा जाता है कि बहस के दौरान कही गई बातें या कानूनी तर्क(इल्लत) के रूप में पेश की गई बातें मज़हब के स्पष्ट ग्रंथों को रद्द नहीं करतीं; वास्तव में, कभी-कभी तर्क शुरू करने वाला भी वास्तव में उस विचार को नहीं मानता है, जैसा कि इस न्यायशास्त्र की कला की सेवा करने वालों को अच्छी तरह ज्ञात है। इस अहसास ने मुझे यह कहने के लिए प्रोत्साहित किया है, और वह यह है:

तेरहवीं: (1) इमाम मलिकुल उलमा (अल्लाह उनकी कब्र को पवित्र करे) वे हैं जिन्होंने अपनी पुस्तक 'बदाइ' में उन मामलों का उल्लेख करने के बाद जहाँ आवश्यकता के कारण पानी के'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) होने का हुक्म हट जाता है—जैसे बर्तन से पानी निकालने के लिए हाथ डालना या डोल खोजने के लिए कुएं में पैर डालना—उनका मूल पाठ यह है: 'यदि कोई हाथ या पैर के अलावा अपने शरीर का कोई हिस्सा बर्तन या कुएं में डालता है, तो वह पानी को खराब कर देता है क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी।' इसी सिद्धांत के आधार पर, कुएं का मुद्दा निकाला जाता है: जब बड़ी अशुद्धि (जुनुब) की स्थिति में कोई व्यक्ति स्नान (ग़ुस्ल) की नियत के बिना केवल डोल निकालने के लिए कुएं में डूबता है, बशर्ते कि उसके शरीर पर कोई वास्तविक शारीरिक अशुद्धि न हो। इसका सारांश यह है कि डूबने वाला व्यक्ति या तो शुद्ध है या नहीं (यानी उसके शरीर पर वास्तविक अशुद्धि है या जनाबत या हदस जैसी हुक्मी अशुद्धि है)। प्रत्येक स्थिति के दो परिदृश्य हैं: या तो वह डोल की तलाश में डूबता है, या ठंडा होने के लिए, या स्नान के लिए। इस मामले में दो हुक्म हैं: कुएं के पानी के लिए हुक्म और उसमें प्रवेश करने वाले व्यक्ति के लिए हुक्म। यदि वह शुद्ध है...

حتی کہ میں اس امامِ ہمام، ملک العلماء کے سامنے لب کشائی کروں؟ امامِ ہمام، علمائے کرام کے بادشاہ، اللہ تعالیٰ جنت میں ان کے درجات بلند فرمائے ہم ان کی برکتوں سے ہمیشہ مستفید ہوتے رہیں آمین، لیکن مذہب تو طے ہو چکا ہے اور ائمہ ثلاثہ (رضی اللہ عنہم) سے منقول صریح اور صحیح روایات بکثرت موجود ہیں۔ میں نے دیکھا ہے کہ اس جلیل القدر امام نے منقولات کے ذکر کے وقت ان اکابر ائمہ سے اتفاق کیا ہے اور یہ ظاہر ہے کہ ہماری بحثوں سے مذہب کی تصریحات باطل نہیں قرار پاسکتی ہیں جیسا کہ اس فن کے خدام پر واضح ہے، اس لئے میں کچھ معروضات پیش کرنے کی ضرورت محسوس کرتا ہوں اور وہ یہ ہیں : میں کہتا ہوں : سینز دہم:

(۱) امام ملک العلماء (قدس سرہ) نے بدائع میں ذکر کیا کہ وہ کون سے مقامات ہیں جہاں ضرورتاً پانی کے مستعمل ہونے کا حکم ساقط ہو جاتا ہے، جیسے چُلّو بھرنے کیلئے ہاتھ کا پانی کے برتن میں ڈالنا اور ڈول تلاش کرنے کیلئے پیر کا کنویں میں ڈالنا، پھر انہوں نے فرمایا کہ اگر کسی نے برتن یا کنویں میں اپنا جسم کے بعض حصے کو ڈال دیا ہاتھ پیر کے علاوہ، تو پانی فاسد ہو جائے گا کیونکہ یہ بے ضرورت ہے اور اسی اصل پر کنویں کے مسئلے کی تخریج کی جائے گی کہ جنب انسان اس میں ڈول کی تلاش میں اُترا ہو بغیر نیتِ غسل کے بشر طیکہ اس کے جسم پر کوئی حقیقی نجاست موجود نہ ہو، اور خلاصہ یہ کہ اس میں بحث یہ ہے کہ یا تو غوطہ لگانے والا پاک ہوگا یا ناپاک ہوگا، مثلاً یہ کہ اس کے جسم پر حقیقی یا حکمی نجاست موجود ہو جیسے جنابت اور حدث، اور ہر وجہ کی پھر دو وجہیں ہیں یا تو غوطہ لگانے والا ڈول کی تلاش میں غوطہ لگائے یا ٹھنڈک کیلئے یا غسل کیلئے، اور اس مسئلے میں دو حکم ہیں، ایک کنویں کے پانی کا حکم اور دوسرا اس میں داخل ہونے والے کا، پس اگر وہ پاک ہو...

Fatawa Razawiyya - Volume 2

Arabic Text Translation: And if one dives in search of a bucket or to cool down, the water does not become 'Musta'mal' (used) by consensus, because of the absence of removal of ritual impurity (Hadath) and the performance of an act of worship (Qurbah). If one dives into it for ritual bathing (Ghusl), the water becomes 'Musta'mal' according to our three leading scholars, may Allah be pleased with them, because of the performance of an act of worship. According to Imam Zufar and Imam Shafi'i, may Allah have mercy on them, it does not become 'Musta'mal' because ritual impurity is not removed, and the person is pure in both cases. Look at his statement in the matter: there are two rulings, the ruling of the water in the well. Do you think that the water in the well is only that which touched the surface of his body upon diving? No, rather it refers to all the water in the well, and the objective is to state its ruling. In the second scenario, it has been ruled that it becomes 'Musta'mal' by the consensus of our three leading scholars, among whom is Imam Muhammad, who says it is pure, yet he ruled that by diving, the well water is stripped of its purifying quality.

Urdu Text Translation: (Someone) dove in search of a bucket or to get cool; there are two rulings in this matter: one is the ruling for the water in the well and the second is for the person who entered the well. If he is pure and dived to retrieve a bucket or to get cool, then by consensus, the water will not become used ('Musta'mal'), because neither ritual impurity was removed by this water nor was any act of worship performed. And if he dived for ritual bathing (Ghusl), then according to our three scholars, the water will become used ('Musta'mal') because an act of worship was performed. According to Imam Zufar and Imam Shafi'i, may Allah have mercy on them, it will not become used because ritual impurity was not removed, and the person remains pure in both cases. Now look at his statement in which he says: that there are two rulings in the matter: one is the ruling for the water in the well, so do you think that in the well there is only that water which...

(Lower Section Explanation): From the explanation of the reason, it is known that bathing as an act of worship (Qurbah) is intended, and in all upcoming places, this is what is meant. It does not mean bathing to remove dirt or to ward off heat, because when a pure person bathes to ward off heat and obtain cooling, the water will not become used since both reasons—removal of ritual impurity and performance of worship—were not found. (T)

Footnote: 1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on Physical Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 29/1.

फ़तावा रज़विय्या - खंड 2

अरबी पाठ का अनुवाद: और यदि कोई बाल्टी खोजने या ठंडक पाने के लिए कुएं में डुबकी लगाता है, तो आम सहमति (इज्मा) के अनुसार पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता है, क्योंकि न तो अशुद्धि (हदस) दूर हुई है और न ही इबादत (कुर्बा) की नीयत थी। यदि कोई ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) की नीयत से डुबकी लगाता है, तो हमारे तीनों इमामों (अबू हनीफा, अबू यूसुफ और मुहम्मद), अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, के अनुसार पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है, क्योंकि इबादत की नीयत मौजूद थी। इमाम ज़ुफ़र और इमाम शाफ़ई के अनुसार, अल्लाह उन पर रहम करे, पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा क्योंकि अशुद्धि दूर नहीं हुई है और व्यक्ति दोनों ही मामलों में शुद्ध है। उनके इस कथन को देखें कि इस मसले में दो हुक्म हैं: एक तो उस पानी का हुक्म जो कुएं में है। तो क्या आप समझते हैं कि कुएं में वही पानी है जो डुबकी लगाते समय शरीर की सतह को छू गया? नहीं, बल्कि कुएं का सारा पानी मुराद है और इसका उद्देश्य उसका हुक्म बयान करना है। दूसरी सूरत में, हमारे तीनों इमामों की सहमति से यह हुक्म दिया गया है कि वह 'मुस्तअमल' हो गया, जिनमें इमाम मुहम्मद भी शामिल हैं जो इसकी पवित्रता के कायल हैं। फिर भी उन्होंने हुक्म दिया कि डुबकी लगाने से कुएं के पानी की पवित्रता (तहारत) छिन गई।

उर्दू पाठ का अनुवाद: बाल्टी की तलाश में या ठंडक पाने के लिए डुबकी लगाई; इस मसले में दो हुक्म हैं: एक तो उस पानी का हुक्म जो कुएं में है और दूसरा उस व्यक्ति का हुक्म जो कुएं में दाखिल हुआ। अगर वह पाक (शुद्ध) है और उसने बाल्टी निकालने या ठंडक पाने के लिए गोता लगाया था, तो पानी आम सहमति से 'मुस्तअमल' नहीं होगा, क्योंकि उस पानी से न तो अशुद्धि (हदस) दूर की गई है और न ही कोई इबादत (कुर्बा) अदा की गई है। और अगर उसने ग़ुस्ल के लिए गोता लगाया, तो हमारे तीनों इमामों के नज़दीक पानी 'मुस्तअमल' हो जाएगा क्योंकि उससे इबादत अदा हुई है। इमाम ज़ुफ़र और इमाम शाफ़ई के नज़दीक 'मुस्तअमल' नहीं होगा क्योंकि उससे अशुद्धि दूर नहीं हुई है और आदमी दोनों ही सूरतों में पाक है। अब उनके इस कौल (कथन) को देखें जिसमें वे फ़रमाते हैं: कि मसले में दो हुक्म हैं: एक तो उस पानी का हुक्म जो कुएं में है, तो क्या आप समझते हैं कि कुएं में वही पानी है जो...

(नीचे का भाग): कारण (इल्लत) के बयान से मालूम हुआ है कि इबादत (कुर्बत) के तौर पर ग़ुस्ल मुराद है, और भविष्य के तमाम मुकामों पर यही मुराद है। मैल को दूर करने या गर्मी को दूर भगाने का ग़ुस्ल मुराद नहीं है, क्योंकि जब एक पाक आदमी गर्मी दूर करने और ठंडक पाने के लिए ग़ुस्ल

करे तो पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा क्योंकि दोनों चीज़ें—अशुद्धि दूर करना और इबादत करना—नहीं पाई गईं। (त)

पाद-टिप्पणी: 1. बदाइ-उस-सनाइ, अध्याय: हकीकी तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 29/1।

عربی عبارت: وانغمس لطلب الدلو او للتبرد لایصیر مستعملا بالاجماع لعدم ازالة الحدث واقامة القربة وان انغمس فیها للاغتسال عه صار الماء مستعملا عند اصحابنا الثلثة رضی الله تعالٰی عنهم لوجود اقامة القربة وعند زفر والشافعی رحمهما الله تعالٰی لایصیر مستعملا لانعدام ازالة الحدث والرجل طاهر فی الوجهین جمیعا اهـ فانظر الی قوله فی المسألة حکمان حکم الماء الذی فی البئر فهل تری ان الذی فی البئر هو مالاقی سطح بدنه عند الانغماس کلا بل کل مافی البئر وهو المقصود بیان حکمه وقد حکم علیه فی الصورة الثانیة بانه صار مستعملا باجماع ائمتنا الثلثة رضی الله تعالٰی عنهم وفیهم محمد القائل بطهارته وقد حکم بانه بالانغماس سلب ماء البئر طهوریته

اردو ترجمہ و تشریح: ڈول کی تلاش میں لگائے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے اور اس مسئلہ میں دو حکم ہیں ایک تو اس پانی کا حکم جو کنویں میں ہے اور دوسرے اس شخص کا حکم جو کنویں میں داخل ہوا، اگر وہ پاک ہے اور اس نے ڈول نکالنے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے غوطہ لگایا تھا، تو پانی بالاتفاق مستعمل نہ ہوگا، کیونکہ اس پانی سے نہ تو حدث کا ازالہ کیا گیا ہے اور نہ کوئی قربہ ادا کی گئی ہے اور اگر اس میں غسل کیلئے غوطہ کھایا تو ہمارے اصحاب ثلاثہ کے نزدیک پانی مستعمل ہو جائے گا کیونکہ اس سے قربہ ادا ہوئی ہے اور زفر اور شافعی رحمہما الله کے نزدیک مستعمل نہ ہوگا کیونکہ اس سے حدث زائل نہیں کیا گیا ہے اور آدمی دونوں صورتوں میں پاک ہے اہـ اب ان کے اس قول کو دیکھئے جس میں وہ فرماتے ہیں : کہ مسئلہ میں دو حکم ہیں ایک تو اس پانی کا حکم جو کنویں میں ہے، تو کیا آپ سمجھتے ہیں کہ کنویں میں وہی پانی ہے جو

(نیچے کی عبارت): (عه یرید الاغتسال علی وجه القربة بدلیل التعلیل وهو المراد فی سائر المواضع الأتیة دون الاغتسال لازالة درن اودفع حر فانه والتبرد سواء لایفید الاستعمال اذا کان من طاهر لانعدام السببین اهـ منه حفظه ربه تبارک وتعالیٰ۔ (م)) علت کے بیان سے معلوم ہوا ہے کہ قربت کے طور پر غسل مراد ہے اور آئندہ تمام مقامات میں یہی مراد ہے، میل کو دور کرنے یا گرمی کو دفع کرنے کا غسل مراد نہیں کیونکہ جب طاہر آدمی دفع گرمی اور حصول ٹھنڈک کیلئے غسل کرے تو پانی مستعمل نہ ہوگا کہ دونوں ازالہ حدث اور اقامت قربت نہیں پائے گئے اهـ (ت)

حاشیہ: 1 بدائع الصنائع فصل فی الطهارة الحقیقیة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱

Fatawa Rizvia - Volume 2

[Left Column: Arabic Text] It became clear that the ruling of usage (istimal) flows through all of a small amount of water, just as the ruling of impurity flows, by the consensus of our companions (may Allah be pleased with them). For the flowing (suriyan), according to the view that used water is impure, is evident and undisputed. Here is Imam Muhammad, who holds the view of purity, yet he ruled for its flowing. Thus, the view became unanimous, and no room for disagreement remains. Rather, it is thought that Malik al-Ulama proceeded here on the basis that the purity of used water is agreed upon among our companions, as he said (1) in al-Bada'i: The scholars of Iraq did not investigate the disagreement; they stated it is pure but not a purifier according to our companions (may Allah be pleased with them). It is even narrated from Qadi Abu Hazim al-Iraqi that he used to say: "We hope the narration of the impurity of used water is not established from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him)." This is the choice of the researcher-scholars among our mashayikh in Transoxiana. This is because the flow of his speech here, as mentioned before, is to encompass the rulings of water and the person in all possible scenarios. He committed to detailing the disagreement among our three Imams in every scenario. He detailed the ruling of water in the two parts of purity: in the first, he said it does not become used by consensus; in the second, it becomes used according to our three Imams, unlike Zufar and al-Shafi'i.

[Right Column: Urdu Text] Was it in contact with the body surface during the dip? Not at all, rather it is the entire water of the well, and the purpose is to state its ruling. In the second case, the ruling on it is the same: it has become 'used' (mustamal) according to the three Imams. Imam Muhammad is included among them, who believes in its purity, yet he stated that the water's purifying quality is stripped due to the dip. So it became clear that the ruling of usage applies fully in a small quantity of water, like the ruling of impurity. Our companions have a consensus on this because spreading (suriyat) is obvious if used water is called impure; there's no dispute there. Since Imam Muhammad, who believes in the water's purity, is giving the ruling of spreading, it is as if this view is unanimous; no disagreement remains. Here, it has even been thought that Malik al-Ulama has termed the purity of water as a matter of agreement among our companions, as stated in al-Bada'i. The scholars of Iraq didn't research the disagreement, so they said it's pure but not a purifier. This is the view of our companions (may Allah be pleased with them). It's even narrated from Qadi Abu Hazim al-Iraqi that he used to say: "We hope the report of used water's impurity isn't

proven according to Abu Hanifa." This is the preferred view of the researcher scholars of Transoxiana. The reason for this is that here...

[Footnote] 1 Badai' al-Sanai', Chapter on Substantial Purity, H.M. Saeed Company Karachi 1/76 Page 148 of 711

फ़तावा रज़विया - दूसरा खंड

[बायाँ कॉलम: अरबी पाठ] अतः यह स्पष्ट हो गया कि थोड़े से पानी में उपयोग (इस्तेअमाल) का हुक्म पूरे पानी में वैसे ही फैल जाता है जैसे अशुद्धता (नजासत) का हुक्म फैलता है, हमारे साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति से। क्योंकि प्रसार, उपयोग किए गए पानी को अशुद्ध मानने वाली राय के अनुसार, स्पष्ट है और इसमें कोई विवाद नहीं है। और यहाँ [इमाम] मुहम्मद हैं, जो पवित्रता के समर्थक हैं, उन्होंने प्रसार का हुक्म दिया है, इसलिए यह राय सर्वसम्मत हो गई। अब किसी के पास विवाद का कोई आधार नहीं बचा। बल्कि, यह माना जाता है कि 'मलिकुल उलमा' यहाँ हमारे साथियों के बीच उपयोग किए गए पानी की पवित्रता को सर्वसम्मत बनाने के आधार पर आगे बढ़े, जैसा कि उन्होंने (1) 'अल-बदाइ' में कहा है: और इराक के विद्वानों ने विवाद की पुष्टि नहीं की, इसलिए उन्होंने कहा कि यह हमारे साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार पवित्र तो है लेकिन पवित्र करने वाला नहीं है, यहाँ तक कि काज़ी अबू हाज़िम अल-इराकी से वर्णित है कि वे कहते थे: हमें आशा है कि अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से उपयोग किए गए पानी की अशुद्धता का वर्णन सिद्ध नहीं है। और यही मा वरा अन्नह्र (ट्रांसोक्सियाना) के हमारे शोधकर्ता विद्वानों की पसंद है। बात समाप्त। और ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी बात का क्रम यहाँ, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पानी और व्यक्ति के हुक्मों को यहाँ सभी संभावित स्थितियों में शामिल करने के लिए है। और उन्होंने हमारे तीन इमामों के बीच विवाद को स्पष्ट करने का वचन दिया है हर उस स्थिति में जहाँ विवाद हो, और उन्होंने पवित्रता के दोनों भागों में पानी के हुक्म का विवरण दिया। तो पहले भाग में उन्होंने कहा: यह सर्वसम्मति से उपयोग किया गया (मुस्तअमल) नहीं होता है, और दूसरे में: यह हमारे तीन इमामों के अनुसार मुस्तअमल हो जाता है, ज़ुफ़र और शाफ़ई के विपरीत।

[दायाँ कॉलम: उर्दू पाठ] क्या डुबकी के समय शरीर की सतह से संपर्क हुआ था? बिल्कुल नहीं, बल्कि यह कुएँ का पूरा पानी है, और उसी का हुक्म बताना उद्देश्य है। दूसरी स्थिति में उस पर यही हुक्म हुआ है कि वह अइम्मा-ए-सलासा (तीन इमामों) के नज़दीक मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) हो गया है, उनमें इमाम मुहम्मद भी शामिल हैं जो इसकी पाकी (पवित्रता) के कायल (समर्थक) हैं, और उन्होंने फ़रमाया कि ग़ोता (डुबकी) की वजह से पानी के पाक करने वाली सिफ़त (गुण) सलब (समाप्त) हो गई है। तो ज़ाहिर हुआ कि इस्तिमाल का हुक्म थोड़े पानी में मुकम्मल तौर पर जारी होता है, जैसे कि नजासत का हुक्म, इस पर हमारे अस्हाब का इज्मा (सर्वसम्मति) है क्योंकि सरायत (फैलाव) करना मुस्तअमल पानी को नजिस (अशुद्ध) कहने की सूरत में ज़ाहिर है, इसमें ख़िलाफ़

(विवाद) नहीं है, और इमाम मुहम्मद जो पानी की पाकी के कायल हैं सरायत का हुक्म दे रहे हैं तो गोया ये कौल इजमाई है, इसमें किसी का ख़िलाफ़ नहीं रहा बल्कि यहाँ ये गुमान भी किया गया है कि मुल्क-उल-उलमा ने पानी के पाक होने को हमारे अस्हाब के दरमियान मुत्तफ़िक़ अलैया (सर्वसम्मत) करार दिया है जैसा कि बदाइ में फ़रमाया है, और मशायख़-ए-इराक़ ने इख्तिलाफ़ की तहक़ीक़ नहीं की, तो उन्होंने फ़रमाया कि ये ताहिर (पवित्र) तो है मगर ताहिर करने वाला नहीं, ये हमारे अस्हाब रज़ियल्लाहु अन्हुम के नज़दीक है, यहाँ तक कि क़ाज़ी अबू हाज़िम अल-इराक़ी से मरवी (वर्णित) है कि वो फ़रमाते थे कि हमें तवक़्क़ो (आशा) है कि मुस्तअमल पानी की नजासत की रवायत अबू हनीफ़ा के नज़दीक साबित नहीं है और यही हमारे वरा-उन-नहर के मोहक़्क़िक़ीन मशायख़ का मुख़्तार (पसंदीदा) है। और इसकी वजह ये है कि यहाँ...

[फ़ुटनोट] 1 बदाइ-उस-सनाइ, फ़स्ल फ़ित्तहारत-उल-हक़ीक़िया, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/76

جلد ثانی فتاوی رضویہ

[بایاں کالم: عربی متن] فظهر ان حكم الاستعمال ليسرى فى الماء القليل كله سريان حكم النجاسة باجماع اصحابنا رضى الله تعالى عنهم فان السريان على القول بنجاسة الماء المستعمل ظاهر لاخلف فيه وهذا محمد القائل بالطهارة قد حكم بالسريان فكان القول به مجمعا عليه ولم يبق لاحد بالخلاف يد ان بل يظن ان ملك العلماء ماش ههنا على جعل طهارة الماء المستعمل متفقا عليها بين اصحابنا كما قال (۱) فى البدائع ومشائخ العراق لم يحققوا الخلاف فقالوا انه طاهر غير طهور عند اصحابنا رضى الله تعالى عنهم حتى روى عن القاضى ابى حازم العراقى انه كان يقول انا نرجو ان لا تثبت رواية نجاسة الماء المستعمل عن ابي حنيفة رضى الله تعالى عنه وهو اختيار المحققين من مشائخنا بما وراء النهر اهـ وذلك لان سوق كلامه ههنا كما قدم لاحاطة احكام الماء والرجل فى جميع الصور المحتملة هنا وقد التزم فى كل صورة بيان الخلاف بين ائمتنا الثلثة ان كان وفصل فى شقى الطاهر حكم الماء فقال فى الاول لا يصير مستعملا بالاجماع وفى الثانى صار مستعملا عند ائمتنا الثلثة خلافا لزفر والشافعى

[دایاں کالم: اردو متن] غوطہ کے وقت سطح بدن سے ملاقی ہوا تھا؟ ہر گز نہیں، بلکہ کنوئیں کا کُل پانی ہے اور اسی کا حکم بیان کرنا مقصود ہے، اور دوسری صورت میں اس پر یہی حکم ہوا ہے کہ وہ ائمہ ثلاثہ کے نزدیک مستعمل ہو گیا ہے، ان میں امام محمد بھی شامل ہیں جو اس کی طہارت کے قائل ہیں، اور انہوں نے فرمایا کہ غوطہ کی وجہ سے پانی کے پاک کرنے والی صفت سلب ہوگئی ہے تو ظاہر ہوا کہ استعمال کا حکم تھوڑے پانی میں مکمل طور پر جاری ہوتا ہے، جیسے کہ نجاست کا حکم ، اس پر ہمارے اصحاب کا اجماع ہے کیونکہ سرایت کرنا مستعمل پانی کو نجس کہنے کی صورت میں ظاہر ہے، اس میں خلاف نہیں، اور امام محمد جو پانی کی طہارت کے قائل ہیں سرایت کا حکم دے رہے ہیں تو گویا یہ قول اجماعی ہے، اس میں کسی کا خلاف نہیں رہا بلکہ

یہاں یہ گمان بھی کیا گیا ہے کہ ملک العلماء نے پانی کے پاک ہونے کو ہمارے اصحاب کے درمیان متفق علیہ قرار دیا ہے جیسا کہ بدائع میں فرمایا ہے، اور مشائخ عراق نے اختلاف کی تحقیق نہیں کی، تو انہوں نے فرمایا کہ یہ طاہر تو ہے مگر طاہر کرنے والا نہیں، یہ ہمارے اصحاب رضی اللہ عنہم کے نزدیک ہے، یہاں تک کہ قاضی ابو حازم العراقی سے مروی ہے کہ وہ فرماتے تھے کہ ہمیں توقع ہے کہ مستعمل پانی کی نجاست کی روایت ابو حنیفہ کے نزدیک ثابت نہیں ہے اور یہی ہمارے وراء النہر کے محققین مشائخ کا مختار ہے اھ اور اس کی وجہ یہ ہے کہ یہاں

[حاشیہ] 1 بدائع الصنائع فصل فی الطہارۃ الحقیقۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۶ Page 148 of 711

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Left Column - Arabic] What remained for him was to explain the ruling regarding the man in the two issues according to our Imams. He combined them and stated: 'The man is pure in both cases together.' Just as it is impossible for a sound taste to consider this a completion of the statements of Zufar and ash-Shafi'i, such that he remains silent on explaining the ruling regarding the man in the two cases according to our Imams (may Allah the Exalted be pleased with them), similarly it is improbable that this is the statement of some of them to the exclusion of others. For if it were so, he would have explained the disagreement as he did in all other scenarios, and he would not have presented it in this absolute manner, as it would cause an illusion of no disagreement while one exists—especially given the two indications of consensus and agreement regarding the ruling on water in these two cases. Thus, nothing occurs to the mind except that it is a matter of agreement among our companions, just like its two preceding indicators. This only follows if one holds the opinion of the purity of used water; since the water did not become impure, it is not possible for it to render the pure impure, unlike if impurity were claimed, for then the argument would arise that the water became impure and thus made [the man] impure, so the man would not be pure [by consensus].

If you ask: 'Is it not that the ruling of "used" is only given after separation, and the entire body is considered a single thing in ritual bathing? So as long as it is on the body, it is not used, and when it becomes used, it is no longer on the body. Based on this, he emerges pure despite the impurity of the used water according to the two Imams in what is narrated from them.' I say: Yes, but this only follows the statement of the Imam [Abu Hanifa]; as for according to Abu Yusuf, it is established...

[Right Column - Urdu] The manner of his discourse, as previously mentioned, is to encompass the rulings on water and the rulings concerning the man in all possible scenarios. He has committed to explaining the disagreement of our three Imams in every scenario if an actual disagreement exists. He detailed the ruling on water in both categories of purity. In the first case, he stated that by consensus it will not be considered used (musta'mal), and in the second case, he stated it becomes used according to our three Imams, with Zufar and ash-Shafi'i disagreeing. Now, it remained for him to explain what the ruling regarding that person is in both issues according to our Imams. So, he combined both and stated that in both cases, the person is pure. Just as it is burdensome to a sound taste to consider this a completion of the statements of Zufar and ash-Shafi'i, while our Imams remained

silent on the ruling regarding the man in both cases, similarly, it is improbable that this is the opinion of some but not others. For if that were the case, he would have surely explained the disagreement as he did in all other scenarios. However, he did not mention it in such an absolute manner to avoid the illusion of disagreement—meaning the illusion of no disagreement while one exists—especially since two indicators of consensus and agreement are present regarding what the ruling on water is in both scenarios. Therefore, the doubt in the mind is because this issue is a matter of agreement among our companions, just like its two preceding indicators. This will only occur if the purity of used water is upheld because the water did not become impure, so this possibility does not exist.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय)

[बायाँ कॉलम - अरबी] उन पर हमारे इमामों के अनुसार दोनों मुद्दों में मनुष्य के हुक्म (नियम) को स्पष्ट करना शेष था। उन्होंने दोनों को जोड़ दिया और कहा: 'मनुष्य दोनों स्थितियों में शुद्ध है।' जिस प्रकार एक स्वस्थ विवेक (ज़ौक़-ए-सलीम) के लिए यह मानना असंभव है कि यह ज़ुफ़र और शाफ़ई के बयानों का पूरक है, और वे हमारे इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार दोनों स्थितियों में मनुष्य के हुक्म को स्पष्ट करने पर चुप रहें, उसी तरह यह भी असंभव लगता है कि यह उनमें से कुछ का कथन हो और दूसरों का नहीं। क्योंकि यदि ऐसा होता, तो वे मतभेद को स्पष्ट करते जैसा कि उन्होंने अन्य सभी स्थितियों में किया है, और वे इसे इस तरह निरपेक्ष रूप से प्रस्तुत नहीं करते, क्योंकि इससे मतभेद न होने का भ्रम पैदा होता जबकि वास्तव में मतभेद है—विशेष रूप से इन दोनों स्थितियों में पानी के हुक्म के संबंध में इज्मा (आम सहमति) और इत्तेफ़ाक़ के दो संकेतों को देखते हुए। इसलिए, मन में इसके अलावा कुछ नहीं आता कि यह हमारे साथियों के बीच सहमति का मामला है, जैसे इसके दो पिछले संकेत हैं। यह तभी संभव है जब इस्तेमाल किए गए पानी की पवित्रता का मत अपनाया जाए; क्योंकि पानी अपवित्र नहीं हुआ, तो यह संभव नहीं है कि वह शुद्ध को अपवित्र कर दे, इसके विपरीत यदि अपवित्रता का दावा किया जाता, तो यह तर्क दिया जाता कि पानी अपवित्र हो गया और उसने (मनुष्य को) अपवित्र कर दिया, तो मनुष्य (आम सहमति से) शुद्ध नहीं होता।

यदि आप कहें: 'क्या ऐसा नहीं है कि 'इस्तेमाल' का हुक्म केवल अलग होने के बाद दिया जाता है, और स्नान (गुस्ल) में पूरे शरीर को एक ही वस्तु माना जाता है? इसलिए जब तक पानी शरीर पर है, वह इस्तेमाल किया हुआ नहीं है, और जब वह इस्तेमाल किया हुआ हो जाता है, तो वह शरीर पर नहीं रहता। इस आधार पर, वह उन दोनों (इमामों) के अनुसार इस्तेमाल किए गए पानी की अपवित्रता के बावजूद पवित्र निकलता है जैसा कि उनके बारे में उल्लेख किया गया है।' मैं कहता हूँ: हाँ, लेकिन यह केवल इमाम (अबू हनीफ़ा) के कथन के अनुकूल है; जहाँ तक अबू यूसुफ़ का प्रश्न है, तो यह सिद्ध है...

[दायाँ कॉलम - उर्दू] उनके कलाम (भाषण) की शैली, जैसा कि पहले बताया गया है, पानी के नियमों को पूरी तरह से कवर करने और सभी संभावित स्थितियों में मनुष्य के बारे में नियमों के लिए है। उन्होंने यह वचन दिया है कि वे हर स्थिति में हमारे तीनों इमामों के बीच के मतभेदों को बयान करेंगे, यदि वास्तव में कोई मतभेद मौजूद हो। उन्होंने पवित्रता के दोनों पहलुओं में पानी के नियमों का

विस्तार से उल्लेख किया है। पहले मामले में, उन्होंने कहा कि सर्वसम्मति (इज्मा) से वह 'इस्तेमाल किया हुआ' (मुस्ता'मल) नहीं होगा, और दूसरे मामले में उन्होंने कहा कि हमारे तीनों इमामों के अनुसार वह 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाएगा, जबकि ज़ुफ़र और शाफ़ई का इससे मतभेद है। अब उनके लिए यह बताना बाकी था कि इन दोनों मसलों में उस व्यक्ति का हुक्म हमारे इमामों के नज़दीक क्या है। इसलिए उन्होंने उन दोनों को एक साथ मिला दिया और फ़रमाया कि दोनों ही स्थितियों में वह व्यक्ति पाक (शुद्ध) है। जिस प्रकार एक स्वस्थ विवेक (ज़ौक़-ए-सलीम) पर यह भारी पड़ता है कि इसे ज़ुफ़र और शाफ़ई के कथनों का पूरक माना जाए, जबकि हमारे इमाम पुरुष के हुक्म के बारे में दोनों स्थितियों में चुप रहें, उसी तरह यह भी असंभव लगता है कि यह राय उनमें से कुछ की हो और कुछ की न हो। क्योंकि अगर ऐसा होता, तो वे मतभेद को ज़रूर बयान करते जैसा कि उन्होंने अन्य सभी स्थितियों में किया है। लेकिन उन्होंने इसे इस तरह निरपेक्ष रूप से उल्लेख नहीं किया ताकि मतभेद का भ्रम न हो, यानी मतभेद के होते हुए मतभेद न होने का भ्रम, विशेष रूप से तब जब आम सहमति और इत्तेफ़ाक़ के दो संकेत इस बात पर मौजूद हैं कि दोनों स्थितियों में पानी का हुक्म क्या है। लिहाज़ा ज़हन में जो खलन है वह यह है कि यह मसला हमारे साथियों के बीच सर्वसम्मत है, जैसे इसके दो पूर्व संकेत हैं। और यह केवल उसी स्थिति में होगा जब इस्तेमाल किए हुए पानी की पवित्रता का मत अपनाया जाए, क्योंकि पानी नजिस (अपवित्र) नहीं हुआ है, तो इसकी कोई संभावना नहीं है।

पृष्ठ 149/711

[بایاں کالم - عربی] بقی علیہ بیان حکم الرجل فی المسئلتین عند ائمتنا فجمعهما وقال الرجل طاهر فی الوجهین جمیعاً فکما انہ یستحیل عند الذوق السلیم کون هذا تتمة قول زفر والشافعی فیبقی ساکتاً عن بیان حکم الرجل فی الوجهین عند ائمتنا رضی اللہ تعالیٰ عنهم کذلک یبعد ان یکون هذا قول بعض دون بعض منهم اذلو کان کذلک لبین الخلاف کما بین فی سائر الصور ولم یأت بہ هکذا مرسلاً لایهام الخلاف اعنی عدم الخلاف مع وجوده لاسیماً مع قرینتی الاجماع والاتفاق فی حکم الماء فی هذین الوجهین فلا ینقدح فی الذهن الا کونہ وفاقاً بین اصحابنا کقرینتیہ السابقتین وهذا لایتأتی الا علی القول بطهارة الماء المستعمل حیث لم یتنجس الماء فلا یحتمل ان ینجس الطاهر بخلاف ماذا قیل بنجاسة اذیتطرق القول بان الماء تنجس فنجس فلا یکون الرجل طاهر اوفافا - فان قلت الیس ان حکم الاستعمال انما یعطی بعد الانفصال والبدن کلہ شیئ واحد فی الاغتسال فمادام فیہ لم یکن مستعملاً واذا صار مستعملاً لم یکن فیہ فعن هذا یخرج طاهراً مع نجاسة الماء المستعمل عندهما فیما یذکر عنهما قلت بلی ولکن اما یتمشی علی قول الامام اما عند ابی یوسف فیثبت

[دایاں کالم - اردو] ان کے کلام کی روش جیسا کہ گزرا پانی کے احکام کے احاطہ کیلئے ہے اور مرد کے احکام کی بابت ہے یہ تمام محتمل صورتوں میں ہے، اور انہوں نے یہ التزام کیا ہے کہ ہر صورت میں ہمارے ائمہ ثلثہ کا اختلاف بیان کیا ہے اگر واقعۃً اختلاف ہو۔ اور پاک کی دونوں شقوں میں پانی کا حکم تفصیلاً ذکر کیا ہے، پہلی صورت میں کہا بالا جماع مستعمل نہ ہوگا اور دوسری صورت میں کہا مستعمل ہوگیا ہمارے تینوں ائمہ کے نزدیک، اس میں زفر اور شافعی کا خلاف ہے اب ان پر یہ بیان کرنا باقی ہے کہ دونوں مسئلوں میں اس شخص کا حکم ہمارے ائمہ کے نزدیک کیا ہے، تو ان دونوں کو جمع کر دیا اور فرمایا کہ دونوں صورتوں میں وہ شخص پاک ہے، تو جس

طرح ذوقِ سلیم پر یہ گراں ہے کہ اس کو زفر و شافعی کے اقوال کا تتمہ قرار دیا جائے، اور مرد کے حکم میں ہمارے ائمہ دونوں صورتوں میں خاموش رہے، یوں یہ بعید ہے کہ یہ قول بعض کا ہو اور بعض کا نہ ہو، اس لئے کہ اگر ایسا ہوتا تو وہ اختلاف کو ضرور بیان کرتے جیسا کہ تمام صورتوں میں بیان کیا ہے لیکن اس کو انہوں نے اس طرح مطلق ذکر نہ کیا تاکہ خلاف کا ایہام ہو یعنی عدمِ خلاف مع وجودِ خلاف بالخصوص جبکہ دو قرینے اجماع اور اتفاق کے اس امر پر موجود ہیں کہ دونوں صورتوں میں پانی کا حکم کیا ہے لہٰذا ذہن میں جو خلش ہے وہ اس کی ہے کہ یہ مسئلہ ہمارے اصحاب کے درمیان اتفاقی ہے، جیسے اس کے دو سابقہ قرینے ہیں، اور یہ اُسی صورت میں ہوگا جبکہ مستعمل پانی کی طہارت کا قول کیا جائے اس لئے کہ پانی نجس نہیں ہوا، تو یہ احتمال نہیں ہے

Fatawa Razawiyya Volume Second

...that it makes the pure thing impure. Contrary to the case where water is called impure, in which case it can be said that since the water has become impure, it made the pure person impure, so the man would not be pure by consensus. If you say: Is it not true that the ruling of being 'used' (must'amal) will be applied to water only when it separates from the body, and the body in the state of bathing (ghusl) is a single entity? So as long as the water stays on the body, it will not be 'used', and what becomes 'used' will not stay on the body. For this reason, that person becomes pure and the water becomes impure according to the 'Shaykhayn' (Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf), as is famous regarding them. I say this is correct, but it can only work on the saying of Imam Abu Hanifa because, according to Abu Yusuf, the ruling of water being 'used' will be given at the very first contact with the body. It is in 'Al-Bada'i': Abu Yusuf said that water becomes 'used' as soon as it meets the first limb of the person in state of minor ritual impurity (hadath), and similarly, a pure person's limb touching water with the intention of performing an act of worship (qurbah) makes the water 'used'. And when the water becomes 'used' from the first contact, the purification of the remaining limbs cannot be done with that water. Then how does he say that the water became 'used' and the man is pure? And it is said in 'Al-Bada'i' that if there is only formal impurity (najasah hukmiyah) on his hand, then he...

Ruling on usage with the first contact of the body with water. It is stated in Al-Bada'i: Abu Yusuf says that the contact of the first limb of the person in hadath with water causes it to become 'used'. Similarly, the contact of the first limb of a pure person with water with the intention of establishing closeness (qurbah). When the water becomes 'used' with the first contact, the purification of the remaining limbs cannot be realized with 'used' water. So how can he say the water is 'used' and the man is pure? It was said in Al-Bada'i: If there was only formal impurity on his hand and he inserted it to seek a bucket or for cooling, he comes out from the first (meaning the first water, as the issue is assumed in immersion in several waters) pure according to Abu Hanifa and Muhammad, may Allah the Almighty have mercy on them, which is the correct view because janabah is removed by one immersion. According to Abu Yusuf, it is impure and never comes out pure. If you consider it here based on necessity because Al-Bada'i says: As for Abu Yusuf, he abandoned his original principle in case of necessity as will be mentioned. It was narrated from Bishr from him that all waters are impure, which is the logical extension of his school of thought. Point 809: What passed here is that the water is 'used' and the man is pure, which is

the opposite of what the second Imam says in a state of necessity. Do you not see his school of thought in the issue of the well?

1 Bada'i al-Sana'i, section on true purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/70 2 Bada'i al-Sana'i, section on true purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/70 3 Bada'i al-Sana'i, section on true purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/70

फतावा रज़विया जिल्द २

...कि वह पाक को नापाक बना दे। उस सूरत के विपरीत जहाँ पानी को नापाक कहा जाए, जिसमें यह कहा जा सकता है कि चूंकि पानी नापाक हो गया है, इसलिए उसने पाक को नापाक कर दिया, तो आदमी सर्वसम्मति से पाक नहीं होगा। अगर तुम कहो: क्या यह बात सही नहीं है कि पानी पर मुस्तअमल होने का हुक्म उसी समय लगाया जाएगा जब वह शरीर से अलग हो, और गुसल की स्थिति में शरीर एक ही इकाई है? तो जब तक पानी शरीर पर रहेगा, वह मुस्तअमल नहीं होगा, और जो मुस्तअमल होगा वह शरीर पर नहीं रहेगा। इसी कारण से वह व्यक्ति पाक हो जाता है और पानी 'शेख़ैन' (इमाम अबू हनीफा और अबू यूसुफ) के नज़दीक नापाक हो जाता है, जैसा कि उनके बारे में मशहूर है। मैं कहता हूँ यह सही है, लेकिन यह केवल इमाम अबू हनीफा के कौल पर चल सकता है क्योंकि अबू यूसुफ के नज़दीक पानी के मुस्तअमल होने का हुक्म शरीर से पहली मुलाकात में ही दे दिया जाएगा। 'बदाए' में है: अबू यूसुफ ने फरमाया मुद्दिस (नापाक व्यक्ति) के पहले अंग से मिलते ही पानी मुस्तअमल हो जाता है, और इसी तरह पाक आदमी के किसी अंग का इबादत की नीयत से पानी को छूना पानी को मुस्तअमल बना देता है। और जब पानी पहली मुलाकात से ही मुस्तअमल हो गया, तो बाकी अंगों की पाकी पानी से नहीं हो सकती। तो फिर वह किस तरह फरमाते हैं कि पानी मुस्तअमल हो गया और आदमी पाक है? और 'बदाए' में फरमाया कि अगर उसके हाथ पर सिर्फ नजासत-ए-हुकमिया है फिर वह...

पानी के शरीर से पहले मिलन के साथ इस्तेमाल का हुक्म। बदाए में कहा गया है: अबू यूसुफ कहते हैं कि नापाक व्यक्ति के पहले अंग का पानी से मिलना उसे मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) बना देता है। इसी तरह पाक व्यक्ति के पहले अंग का इबादत की नीयत से पानी से मिलना। जब पानी पहले मिलन से मुस्तअमल हो जाता है, तो मुस्तअमल पानी से बाकी अंगों की पाकी हासिल नहीं की जा सकती। तो वह कैसे कहते हैं कि पानी मुस्तअमल है और आदमी पाक है? और बदाए में कहा गया है कि अगर उसके हाथ पर सिर्फ नजासत-ए-हुकमिया थी और उसने बाल्टी निकालने या ठंडक के लिए हाथ डाला, तो वह पहले (यानी पहले पानी से, क्योंकि यह मसला कई बार डूबने का है) पाक निकलेगा, अबू हनीफा और मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसार, और यही सही है क्योंकि एक बार डूबने से नापाकी दूर हो जाती है। अबू यूसुफ के अनुसार, वह नापाक है और कभी पाक नहीं निकलता। अगर आप इसे यहाँ ज़रूरत की स्थिति पर आधारित करते हैं क्योंकि बदाए कहता है: जहाँ तक अबू यूसुफ की बात है, उन्होंने ज़रूरत के समय अपना मूल सिद्धांत छोड़ दिया

जैसा कि ज़िक्र किया जाएगा। बिश्र से रिवायत है कि उनके अनुसार सभी पानी नापाक हैं, जो उनके मज़हब का कयास है। दफ़ा ८०९: यहाँ जो गुज़रा वह यह है कि पानी मुस्तअमल है और आदमी पाक है, जो ज़रूरत की हालत में दूसरे इमाम के कहने के उलट है। क्या आप कुएँ के मसले में उनका मज़हब नहीं देखते?

१ बदाए अस-सनाए, सच्ची पाकी का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी कराची १/७० २ बदाए अस-सनाए, सच्ची पाकी का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी कराची १/७० ३ बदाए अस-सनाए, सच्ची पाकी का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी कराची १/७०

पृष्ठ १५० का ७११

کہ وہ پاک کو نجس بنادے۔ بخلاف اس صورت کے کہ پانی کو نجس کہا جائے کہ اس صورت میں کہا جاسکتا ہے کہ چونکہ پانی نجس ہوگیا ہے اس لئے اس نے طاہر کو نجس کردیا تو مرد بالاتفاق پاک نہ ہوگا۔ اگر تُو یہ کہے کہ آیا یہ بات درست نہیں کہ پانی پر مستعمل ہونے کا حکم اُسی وقت لگایا جائیگا جب وہ بدن سے جدا ہو، اور بدنِ غسل کی صورت میں شیئِ واحد ہے، تو جب تک پانی بدن پر رہے گا مستعمل نہ ہوگا اور جو مستعمل ہوگا تو بدن پر نہ رہے گا اسی وجہ سے وہ شخص پاک ہو جاتا ہے اور پانی شیخین کے نزدیک نجس ہوجاتا ہے جیسا کہ شیخین کی بابت مشہور ہے۔ میں کہتا ہوں یہ درست ہے، مگر یہ صرف امام ابو حنیفہ کے قول پر چل سکتا ہے کیونکہ ابو یوسف کے نزدیک پانی کے مستعمل ہونے کا حکم بدن سے پہلی ملاقات ہی میں دے دیا جائیگا بدائع میں ہے ابویوسف نے فرمایا مُحدث کے پہلے عضو سے ملتے ہی پانی مستعمل ہو جاتا ہے، اور اسی طرح پاک آدمی کے کسی عضو کا بہ نیتِ ادائیگیِ قربت پانی کو لگنا پانی کو مستعمل بنا دیتا ہے اور جب پانی پہلی ملاقات ہی سے مستعمل ہوگیا تو باقی اعضاء کی طہارت پانی سے نہیں ہو سکتی ہے اھ تو پھر وہ کس طرح فرماتے ہیں کہ پانی مستعمل ہوگیا اور مرد پاک ہے۔ اور بدائع میں فرمایا کہ اگر اس کے ہاتھ پر صرف نجاست حکمیہ ہے پھر وہ

حکم الاستعمال باول ملاقاة البدن الماء قال فی البدائع ابویوسف یقول ان ملاقاة اول عضو المحدث الماء یوجب صیرورته مستعملا فکذا ملاقاة اول عضو الطاهر الماء علی قصد اقامة القربة واذا صار الماء مستعمل باول الملاقاة لا تتحقق طهارة بقیة الاعضاء بالماء المستعمل اهـ فکیف یقول الماء مستعمل والرجل طاهر، وقد قال فی البدائع ان کان علی یده نجاسة حکمیة فقط فان ادخلها لطلب الدلوا والتبرد یخرج من الاول (ای الماء الاول فان المسألة مفروضة فی الانغماس فی عدة میاه) طاهرا عند ابی حنیفة

و محمد رحمہما اللہ تعالیٰ ھو الصحیح لزوال الجنابۃ بالانغماس مرۃ واحدۃ وعند ابی یوسف ھو نجس ولا یخرج طاھرا ابدا اھـ فان حملتہ ھنا علی حال الضرورۃ لقول البدائع اما ابو یوسف فقد ترک اصلہ عند الضرورۃ علی مایذکر وروی بشر عنہ ان المیاہ کلھا نجسۃ وھو قیاس مذھبہ اھـ دفعہ ۸۰۹ ان مامر ھھنا ان الماء مستعمل والرجل طاھر عکس مایقول بہ الامام الثانی حال الضرورۃ الاتری ان مذھبہ فی مسألۃ البئر

1 بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰ 2 بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰ 3 بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰

Fatawa Razawiyya Volume II

[Left Column - Arabic Text Translation] Jahat (mnemonic abbreviation), the letter 'Ha' means that the water remains pure in its current state and the man does not become pure as he was. It is stated in Al-Bada'i' that Abu Yusuf says: It is obligatory to act upon this principle, meaning what has preceded regarding the establishment of the ruling upon the first contact, except in case of necessity, such as a person in a state of major ritual impurity (Junub) or minor impurity (Muhdith) when he dips his hand into a vessel to scoop out water; the water does not become 'used' (musta'mal) and the impurity is not removed from the water due to necessity. For if this water were to become 'used', it would only become so by removing the impurity, and if it removed the impurity, it would become impure, and if it became impure, it would not remove the impurity. And if it does not remove the impurity, it remains pure. And since it remains pure, it removes the impurity, thus a circular logic (dawr) occurs. So we broke the circularity from the beginning and said that it does not remove the impurity from him, so he remains as he is and the water remains as it is. In short, there is no consistency for this based on the view of Abu Yusuf at all, except by saying that it is based on the purity of 'used' water according to all of them, which is a correct view strengthened by Malik al-Ulama and chosen by the researchers, even if he followed in many places the attribution of impurity to the two Sheikhs (Abu Hanifa and Muhammad) as is famous. Based on this, the matter is an explicit text from our three Imams regarding the extension of the ruling of 'used' water to all the water while it remains pure. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

[Right Column - Urdu Text Translation] ...dips it into the well to draw a bucket or to get coolness, then he will come out pure from the first [water] (meaning the first water because the issue is based on the assumption that he dipped his hand in several waters). This is according to Abu Hanifa and Muhammad, and this is correct because ritual impurity was removed by a single dip. According to Abu Yusuf, he is impure and will never be pure. If you attribute this to necessity here because it says in Bada'i': "In any case, Abu Yusuf abandoned his principle at the time of necessity, as narrated from him, and Bishr narrated from him that all the water is impure and this is what aligns with his school of thought." Article 809: What passed here—that the water is 'used' and the person is pure—is contrary to the view of the Second Imam in case of necessity. Don't you see that their school of thought in the well issue 'J-H-T' is 'H', meaning the water remains pure in its previous state and the person is also impure as he was before. In Bada'i' it is said that Abu Yusuf says it is mandatory to act

on this principle (meaning the ruling is established at the first meeting). Yes, at the time of necessity, it can be abandoned, such as when a Junub or person without Wudu dips their hands to take water from a vessel, the water will not become 'used' and the impurity will not be removed because necessity exists here. Because if this water were 'used', it would be due to removing the impurity, and if it removed the impurity, it would become impure and...

1 Bada'i' al-Sana'i', Chapter on Real Purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/70
Page 151 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] जहत (संक्षिप्त नाम), अक्षर 'ह' का अर्थ है कि पानी अपनी वर्तमान स्थिति में शुद्ध रहता है और व्यक्ति शुद्ध नहीं होता जैसा कि वह था। 'बदई' में कहा गया है कि अबू यूसुफ़ फ़रमाते हैं: इस सिद्धांत पर अमल करना अनिवार्य है, अर्थात वह जो पहली मुलाक़ात पर हुक्म की स्थापना के संबंध में पहले आ चुका है, सिवाय ज़रूरत की स्थिति के, जैसे कि बड़ी अशुद्धि (जुनुब) या छोटी अशुद्धि (मुहदिस) की स्थिति में कोई व्यक्ति जब बर्तन से पानी निकालने के लिए अपना हाथ डालता है; तो पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता और ज़रूरत के कारण अशुद्धि पानी से दूर नहीं होती। क्योंकि यदि यह पानी 'मुस्तअमल' हो जाता, तो यह केवल अशुद्धि को दूर करने से ही होता, और यदि इसने अशुद्धि को दूर किया होता, तो यह अशुद्ध हो जाता, और यदि यह अशुद्ध हो जाता, तो यह अशुद्धि को दूर नहीं कर पाता। और यदि यह अशुद्धि को दूर नहीं करता है, तो यह शुद्ध रहता है। और चूंकि यह शुद्ध रहता है, इसलिए यह अशुद्धि को दूर करता है, इस प्रकार एक तर्कहीन चक्र (दौर) उत्पन्न होता है। इसलिए हमने शुरुआत से ही उस चक्र को तोड़ दिया और कहा कि यह उससे अशुद्धि को दूर नहीं करता है, इसलिए वह जैसा है वैसा ही रहता है और पानी वैसा ही रहता है। संक्षेप में, अबू यूसुफ़ के दृष्टिकोण के आधार पर इसके लिए कोई निरंतरता नहीं है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि यह उन सभी के अनुसार 'मुस्तअमल' पानी की शुद्धता पर आधारित है, जो कि 'मलिकुल उलेमा' द्वारा पुष्ट और शोधकर्ताओं द्वारा चुना गया एक सही दृष्टिकोण है, भले ही उन्होंने कई स्थानों पर दो शेखों (अबू हनीफ़ा और मुहम्मद) की ओर नापाकी के आरोप का पालन किया हो जैसा कि प्रसिद्ध है। इस आधार पर, यह मामला हमारे तीनों इमामों की ओर से 'मुस्तअमल' पानी के हुक्म के पूरे पानी में फैलने पर एक स्पष्ट पाठ है जबकि वह शुद्ध रहता है। और अल्लाह, वह पवित्र और सर्वोच्च है, बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] ...उसे कुएँ में डोल निकालने या ठंडक पाने के लिए डालता है, तो वह पहले [पानी] से शुद्ध निकलेगा (अर्थात पहला पानी क्योंकि मुद्दा इस धारणा पर आधारित है कि उसने कई पानियों में हाथ डुबोया)। यह अबू हनीफ़ा और मुहम्मद के अनुसार है, और यह सही है क्योंकि बड़ी अशुद्धि एक ही बार डुबोने से दूर हो गई। अबू यूसुफ़ के अनुसार, वह अशुद्ध है और कभी शुद्ध नहीं होगा। यदि आप इसे यहाँ ज़रूरत पर आधारित मानते हैं क्योंकि 'बदई' में लिखा है: "बहरहाल, अबू यूसुफ़ ने ज़रूरत के समय अपने सिद्धांत को त्याग दिया, जैसा कि उनसे वर्णित है, और बिश्र ने उनसे वर्णन किया है कि सारा पानी अशुद्ध है और यही उनके पंथ के अनुकूल है।"

अनुच्छेद 809: यहाँ जो बात गुज़री—कि पानी 'मुस्तअमल' है और व्यक्ति शुद्ध है—ज़रूरत की स्थिति में दूसरे इमाम के दृष्टिकोण के विपरीत है। क्या आप नहीं देखते कि कुएँ के मसले 'जह़त' में उनका पंथ 'ह़' है, जिसका अर्थ है कि पानी अपनी पिछली शुद्ध स्थिति में रहता है और व्यक्ति भी वैसा ही अशुद्ध है जैसा वह पहले था। 'बदई' में कहा गया है कि अबू यूसुफ़ कहते हैं कि इस सिद्धांत पर अमल करना अनिवार्य है (अर्थात हुक्म पहली मुलाक़ात पर ही स्थापित हो जाता है)। हाँ, ज़रूरत के समय इसे त्यागा जा सकता है, जैसे कि जब कोई जुनब या बिना वुज़ू वाला व्यक्ति बर्तन से पानी लेने के लिए अपने हाथ डुबोता है, तो पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा और अशुद्धि दूर नहीं होगी क्योंकि यहाँ ज़रूरत मौजूद है। क्योंकि यदि यह पानी 'मुस्तअमल' होता, तो यह अशुद्धि दूर करने के कारण होता, और यदि इसने अशुद्धि को दूर किया होता, तो यह अशुद्ध हो जाता और...

1 बदई-उस-सनाई, वास्तविक शुद्धता पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/70 पृष्ठ 151 / 711

جحط الحاء ای ان الماء طاھر علی حالہ والرجل لم یطھر کما کان قال فی البدائع ابو یوسف یقول یجب العمل بھذا الاصل ای ماتقدم من ثبوت الحکم باول اللقاء، الا عند الضرورۃ کالجنیب والمحدث اذا ادخل یدہ فی الاناء لاغتراف الماء لا یصیر مستعملا ولا یزول الحدث الی الماء لمکان الضرورۃ لان ھذا الماء لو صار مستعملا انما یصیر مستعملا بازالۃ الحدث ولو ازال الحدث لتنجس ولو تنجس لا یزیل الحدث واذا لم یزل الحدث بقی طاھرا واذ بقی طاھرا یزیل الحدث فیقع الدور فقطعنا الدور من الابتداء فقلنا انہ لا یزیل الحدث عنہ فبقی ھو بحالہ والماء علی حالہ اھ وبالجملۃ لا استقامۃ لھذا علی قول ابی یوسف اصلا الابان یقال انہ مبنی علی طھارۃ الماء المستعمل عندھم جمیعا وھو قول صحیح قد قواہ ملك العلماء وجعلہ مختار المحققین وان مشی فی مواضع کثیرۃ علی نسبۃ التنجیس الی الشیخین کما اشتھر فعلی ھذا تکون المسألۃ نصاً عن ائمتنا الثلثۃ علی سریان حکم الاستعمال الی جمیع الماء مع طھارتہ واللہ سبحنہ و تعالی اعلم۔

اس کو کنویں میں ڈول نکالنے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے داخل کرتا ہے تو وہ اول (یعنی پہلا پانی کیونکہ مسئلہ اس مفروضہ پر ہے کہ کئی پانیوں میں ہاتھ ڈبویا) سے پاک نکلے گا، یہ ابو حنیفہ اور محمد کے نزدیک ہے، یہی صحیح ہے کیونکہ جنابت ایک ہی مرتبہ ڈبونے سے زائل ہو گئی اور ابو یوسف کے نزدیک وہ نجس ہے، اور وہ کبھی پاک نہ ہوگا۔ اگر آپ اس کو یہاں ضرورت پر محمول کریں کیونکہ بدائع میں ہے "بہر حال ابو یوسف نے اپنی اصل کو ضرورت کے وقت ترک کیا ہے، جیسا کہ اُن سے مروی ہے اور بشر نے ان سے روایت کی ہے کہ سب کے سب پانی نجس ہیں اور یہی چیز ان کے مذہب سے لگّا کھاتی ہے۔" دفعہ ۸۰۹ : جو یہاں گزرا کہ پانی مستعمل ہے اور آدمی پاک ہے، امام ثانی کے قول کے برعکس ہے ضرورت کی حالت میں،

کیا آپ نہیں دیکھتے کہ ان کا مذہب کنویں کے مسئلہ "جحط" میں "ح" ہے یعنی پانی اپنی سابقہ حالت پر پاک ہے اور انسان بھی جیسا کہ پہلے تھا نا پاک ہے۔ بدائع میں فرمایا ابو یوسف فرماتے ہیں اس اصل پر عمل لازم ہے (یعنی یہ کہ پہلی ملاقات ہی میں حکم ثابت ہو جاتا ہے) ہاں ضرورت کے وقت اس کو ترک بھی کر سکتے ہیں، جیسے جنب اور بے وضو جب برتن میں سے پانی لینے کیلئے اپنے ہاتھ ڈبوئیں تو پانی مستعمل نہ ہوگا اور حدث بھی زائل نہ ہوگا کیونکہ یہاں ضرورت موجود ہے، کیونکہ یہ پانی اگر مستعمل ہوتا تو حدث کے زائل کرنے کی وجہ سے ہوتا، اور اگر یہ حدث کو زائل کرتا تو ناپاک ہو جاتا اور

1 بدائع الصنائع فصل فی الطهارة الحقیقیة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰ Page 151 of 711

Fatawa Rizvia, Volume 2

Fourteenth: (1) Then he (may his secret be sanctified) said regarding one who immersed himself in three wells or more, according to them (i.e., the two sides - Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad, may Allah be pleased with them): If he immersed himself seeking a bucket or for cooling, then the waters remain in their state (pure and purifying). But if the immersion was for ritual bathing (ghusl), then the fourth water and beyond is 'used' (must'amal) because of the fulfillment of an act of devotion (qurbah). Look at what thing he ruled as being 'used' regarding the fourth water and beyond—not specifically what touched the surface of the body. I say: The meaning is all the waters from the first one. He only specified the fourth and above for mention to dispel the illusion that the ruling of 'used' is restricted to the first three waters, as there is no 'qurbah' (devotion) after performing it three times (tathleeth), so the fourth and what follows would not become 'used' due to the absence of the two reasons. So be aware of its invalidity, for that is in the case of a single sitting, and it has no scope in the chapter of wells.

[Urdu Text Side] If it were impure, it would not remove the state of ritual impurity (hadath). And when it did not remove ritual impurity, it remained pure. And if it remained pure and removed ritual impurity, then a circular argument (dawr) would follow. So we cut off the circular argument from the beginning, which is that this water does not remove ritual impurity, thus the person remains in their state and the water remains in its state. In short, this statement is in no way correct according to the view of Imam Abu Yusuf. There is only one possible scenario, which is that this water is pure according to all these Imams, and this view is correct. Malik al-Ulama strengthened it and researchers chose it, although in most places they ruled this water as impure according to the Shaykhayn (Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf), as is well known. Therefore, this issue will be a clarification of the matter that according to our three Imams, the ruling of 'used' will apply to all the water and the person will remain pure. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Fourteenth: Then he (may his secret be sanctified) said that the person who dived into three or more wells, according to both (the two sides), if it was to search for a bucket or to get cool, the waters will remain in their original state. But if the diving was for ghusl, then the fourth water and subsequent ones will be 'used' because an act of devotion (qurbah) was performed through them. Look at what they ruled as being 'used'—the fourth water and beyond, not specifically that water which came into contact with the ritual impurity.

I say the meaning is that all water from the first onwards is 'used'. They specifically mentioned the fourth and subsequent ones so that there is no misconception that the ruling of 'used' is limited only to three waters, because after 'tathleeth' (washing three times), devotion (qurbah) no longer remains, so the fourth and subsequent ones would not be 'used' since both reasons are not present. So, for its invalidity...

1 Bada'i al-Sana'i, Chapter on Physical Purity, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/110.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

चौदहवां: (1) फिर उन्होंने (अल्लाह उनकी कब्र को पवित्र रखे) उस व्यक्ति के बारे में कहा जिसने तीन या उससे अधिक कुओं में गोता लगाया, उन दोनों के अनुसार (यानी तरफ़ैन - इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद): यदि उसने बाल्टी की तलाश में या ठंडक पाने के लिए गोता लगाया, तो पानी अपनी मूल स्थिति (शुद्ध और शुद्ध करने वाला) में रहेगा। लेकिन यदि गोता नहाने (ग़ुस्ल) के लिए था, तो चौथा और उसके बाद का पानी 'इस्तेमाल किया हुआ' (मुस्तअमल) माना जाएगा क्योंकि इससे 'क़ुर्बत' (इबादत) अदा हुई। देखिये उन्होंने किस चीज़ को 'मुस्तअमल' होने का हुक्म दिया है - चौथा पानी और उसके बाद का, न कि विशेष रूप से वह पानी जो शरीर की सतह को छू गया। मैं कहता हूँ: इसका अर्थ पहले से लेकर सभी पानी हैं। उन्होंने केवल चौथे और उसके बाद का विशेष उल्लेख इसलिए किया ताकि यह भ्रम न रहे कि 'मुस्तअमल' होने का हुक्म केवल पहले तीन पानियों तक ही सीमित है, क्योंकि तीन बार धोने (तथलीथ) के बाद 'क़ुर्बत' बाकी नहीं रहती, इसलिए चौथा और उसके बाद वाला 'मुस्तअमल' नहीं होगा क्योंकि दोनों कारण मौजूद नहीं हैं। तो इसके अमान्य होने पर ध्यान दें, क्योंकि वह एक ही बैठक की स्थिति में है, और कुओं के अध्याय में इसका कोई स्थान नहीं है।

[उर्दू पाठ] यदि वह अपवित्र (नापाक) होता तो अशुद्धता (हदस) को दूर न करता, और जब उसने अशुद्धता को दूर नहीं किया तो वह पवित्र रहा। और जब वह पवित्र रहा और अशुद्धता को दूर किया, तो एक चक्र (दौर) अनिवार्य होगा, इसलिए हमने शुरू से ही उस चक्र को काट दिया और वह इस प्रकार है कि यह पानी अशुद्धता को दूर नहीं करता है, इसलिए मनुष्य अपनी स्थिति पर रहा और पानी अपनी स्थिति पर रहा। सारांश यह है कि इमाम अबू यूसुफ़ के कथन पर यह विचार किसी भी तरह सही नहीं बैठता, इसकी केवल एक ही सूरत है और वह यह कि यह पानी इन सभी इमामों के निकट पवित्र है और यही विचार सही है, इसे मलिक उल उलमा ने पुख्ता किया और शोधकर्ताओं ने इसे चुना, हालांकि अधिकांश स्थानों पर उन्होंने इस पानी को शैख़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) के निकट अपवित्र करार दिया है, जैसा कि प्रसिद्ध है। इसलिए, यह मुद्दा इस बात का स्पष्टीकरण होगा कि हमारे तीनों इमामों के निकट 'इस्तेमाल' का हुक्म पूरे पानी में जारी होगा और मनुष्य पवित्र रहेगा, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

चौदहवां: फिर उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति ने तीन या तीन से अधिक कुओं में गोता लगाया, उन दोनों (यानी तरफ़ैन) के निकट यदि बाल्टी की तलाश में या ठंडक पाने के लिए लगाया गया, तो पानी

अपनी स्थिति पर बाकी रहेगा, और अगर गोता ग़ुस्ल के लिए था तो चौथा पानी और उसके बाद वाले पानी 'मुस्तअमल' होंगे क्योंकि उनसे 'क़ुर्बत' अदा हुई है। तो देखिए उन्होंने किस चीज़ पर 'मुस्तअमल' होने का हुक्म लगाया है, चौथा पानी और उससे अधिक, न कि विशेष रूप से वह पानी जिससे अशुद्धता मिली।

मैं कहता हूँ मुराद यह है कि पहले पानी से लेकर तमाम पानी मुस्तअमल हैं, उन्होंने चौथे और उसके बाद वाले का विशेष ज़िक्र इसलिए किया ताकि यह वहम न हो कि इस्तेमाल का हुक्म सिर्फ तीन पानियों तक ही सीमित है क्योंकि तथलीथ (तीन बार धोने) के बाद क़ुर्बत बाकी नहीं रहती है तो चौथा और उसके बाद वाला मुस्तअमल न होगा, क्योंकि इसमें दोनों सबब मौजूद नहीं हैं, तो इसके बतलान (अमान्य होने) पर उन्होंने...

1 बदाए अस-सनाए, तहारत-ए-हक़ीक़िया का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 110/1

पृष्ठ 152/711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ

الرابع عشر: (۱) ثم قال قدس سرہ فی من انغمس فی ثلثۃ ابار واکثر عندھما(ای الطرفین رضی اللہ تعالیٰ عنھما) ان انغمس لطلب الدلو اوالتبرد فالمیاہ باقیۃ علی حالہا وان کان الانغماس للاغتسال فالمای الرابع فصاعدا مستعمل لوجود اقامۃ القربۃ ۱ھـ فانظر علی ای شیئی حکم بکونہ مستعملا المای الرابع فصاعدا لاخصوص مالاقی منہ سطح البدن۔ قلت والمعنی جمیع المیاہ من اولہا وانما خص الرابع فما فوقہ بالذکر دفعاً لتوہم انہ یقتصر حکم الاستعمال علی المیاہ الثلثۃ الاول اذ لا قربۃ بعد التثلیث فالرابع و ما بعدہ لایصیر مستعملا لعدم السببین فتنبہ علی بطلانہ بأن ذلک عند اتحاد المجلس ولا مساغ لہ فی باب الابار

اگر ناپاک ہوتا تو حدث کو زائل نہ کرتا، اور جب حدث کو زائل نہیں کیا تو پاک رہا اور جب پاک رہا تو حدث کو زائل کرے گا تو دور لازم آئے گا، تو ہم نے دور کو ابتداء ہی سے قطع کیا اور وہ اس طرح کہ یہ پانی حدث کو زائل نہیں کرتا ہے تو انسان اپنی حالت پر رہا اور پانی اپنی حالت پر رہا۔ خلاصہ یہ کہ ابویوسف کے قول پر یہ قول کسی طرح درست نہیں بیٹھتا ہے، اس کی محض ایک ہی صورت ہے اور وہ یہ کہ پانی ان تمام ائمہ کے نزدیک پاک ہے اور یہی قول صحیح ہے، اس کو ملک العلماء نے قوی قرار دیا اور اس کو محققین کا مختار قرار دیا، اگرچہ اکثر مقامات پر انہوں نے اس پانی کو شیخین کے نزدیک نجس قرار دیا ہے، جیسا کہ مشہور ہے، اس بنا پر یہ مسئلہ اس امر کی تصریح ہوگا کہ ہمارے تینوں ائمہ کے نزدیک استعمال کا حکم تمام پانی میں جاری ہوگا اور انسان پاک رہے گا، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

چودھواں: پھر قدس سرہ نے فرمایا کہ جس شخص نے تین یا تین سے زیادہ کنوؤں میں غوطہ لگایا تو ان دونوں (یعنی طرفین) کے نزدیک اگر ڈول کی تلاش میں لگایا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے، تو

پانی اپنی حالت پر باقی رہیں گے، اور اگر غوطہ خوری غسل کیلئے تھی تو چوتھا پانی اور اس کے بعد والے پانی مستعمل ہوں گے کہ ان سے قربۃ ادا ہوئی ہے اھـ تو دیکھئے انہوں نے کس چیز پر مستعمل ہونے کا حکم لگایا ہے، چوتھا پانی اور اس سے زائد خاص وہ پانی نہیں جس سے محدث ملا۔

میں کہتا ہوں مراد یہ ہے کہ پہلے پانی سے لے کر تمام پانی مستعمل ہیں، انہوں نے چوتھے اور اُس کے بعد والے کا خصوصی ذکر اس لئے کیا تاکہ یہ وہم نہ ہو کہ استعمال کا حکم صرف تین پانیوں تک ہی محدود ہے کیونکہ تثلیث کے بعد قربۃ باقی نہیں رہتی ہے تو چوتھا اور اس کے بعد والا مستعمل نہ ہوگا، کیونکہ اس میں دونوں سبب موجود نہیں ہیں، تو اس کے بطلان پر انہوں

۱ بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱۰

صفحہ ۱۵۲ از ۷۱۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say: (1) However, it is problematic for him, may Allah the Almighty have mercy on him, as he mentioned this regarding one who has physical impurity on their body. For his statement is as follows: "And if he is not pure, then if there is physical impurity on his body, whether he is in a state of ritual impurity (janaba) or not, and he dives into three wells or more, he will not emerge pure from the first and second by consensus, but he will emerge pure from the third according to Abu Hanifa and Muhammad, may Allah be pleased with them both. The water of all three becomes impure, but their impurity levels differ as we mentioned. According to Abu Yusuf, all are impure and the person is impure, whether he dived to retrieve a bucket or for washing. According to them (Abu Hanifa and Muhammad), if he dived to retrieve a bucket or for cooling, the waters remain in their state... etc." How can it remain in its state while the assumption is that there is physical impurity on his body? Unless it is said that the discussion on it ends with his saying: "The waters are all impure and the person is impure," and his saying "whether he dived for a bucket... etc." is an explanation that the ruling according to Abu Yusuf is not restricted to physical impurity, but ritual impurity is also the same, as we presented earlier, that according to Abu Yusuf, he is impure and will never emerge pure. So when he elaborated on this, he showed the disagreement of the two sides in it, that this generalization is not according to them—and it is muddied by the fact that...

(Right Column Contents): ...notified that this is in the case of unity of assembly, and this situation is not found in different wells. I say there is an objection to this, that they described this ruling for the person who has physical impurity on his body. Their statement is like this: "So if he is not pure, then either there will be physical impurity on his body, and whether he is a 'junub' or not, if such a person dives into three wells or more, he will not come out pure from the first and second by consensus, and from the third he will come out pure according to Abu Hanifa and Muhammad, and all three waters are impure, but their impurity is different as we have mentioned, and according to Abu Yusuf all are impure, and the human is also impure, whether he dived to take out a bucket or for bathing, and according to the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), if he dived to take out a bucket or to get coolness, the water remains in its previous state... etc. But how can this be possible when the assumption is that there is physical impurity on his body? Yes, if it is said that their speech is complete at 'The waters are all impure and the man is impure' and their saying 'whether he dived to retrieve a bucket... etc.' is an explanation of this matter

that according to Abu Yusuf, the ruling of impurity is not restricted to physical impurity, but the same is the case with ritual impurity as we have mentioned that according to Abu Yusuf, a person is impure and will never be pure, from this..."

1. Badai' al-Sanai', section on Physical Purity, H.M. Saeed Company Karachi 1/711. Page 153 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

मैं कहता हूँ: (1) हालाँकि, उनके लिए, अल्लाह तआला उन पर रहम करे, यह बात मुश्किल है कि उन्होंने इसे उस व्यक्ति के बारे में ज़िक्र किया जिसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत (वास्तविक अशुद्धि) हो। उनकी इबारत इस प्रकार है: "और अगर वह पाक नहीं है, तो अगर उसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत हो और वह जुनुब हो या न हो, और वह तीन कुओं या उससे ज़्यादा में गोता लगाए, तो वह पहले और दूसरे से इज्मा (सर्वसम्मति) से पाक नहीं निकलेगा। तीसरे से इमाम अबू हनीफ़ा और मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के नज़दीक पाक निकलेगा। तीनों कुओं का पानी नापाक है, लेकिन उनकी नापाकी का स्तर अलग-अलग है जैसा कि हमने ज़िक्र किया। अबू यूसुफ के नज़दीक सब नापाक हैं और आदमी भी नापाक है, चाहे उसने डोल निकालने के लिए गोता लगाया हो या ग़ुस्ल करने के लिए। और उन दोनों के नज़दीक, अगर उसने डोल निकालने या ठंडक पाने के लिए गोता लगाया, तो पानी अपनी हालत पर बाक़ी रहता है... आदि।" वह अपनी हालत पर कैसे बाक़ी रह सकता है जबकि फ़र्ज़ यह किया गया है कि उसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत है? जब तक कि यह न कहा जाए कि उस पर बात उनके इस कौल "तमाम पानी नापाक हैं और आदमी नापाक है" तक ख़त्म होती है, और उनका यह कहना "चाहे उसने डोल निकालने के लिए गोता लगाया... आदि" इस बात का बयान है कि अबू यूसुफ के नज़दीक हुक्म हक़ीक़ी नजासत तक सीमित नहीं है, बल्कि हुक्मी नजासत का भी यही हाल है जैसा कि हमने पहले पेश किया कि अबू यूसुफ के नज़दीक इंसान नापाक है और कभी पाक नहीं निकलेगा। तो जब उन्होंने इस बात को विस्तार से बताया, तो उन्होंने इसमें दोनों पक्षों (अबू हनीफ़ा और मुहम्मद) का इख़्तिलाफ़ (असहमति) साफ़ कर दिया कि यह ता'मीम (सामान्यीकरण) उनके नज़दीक नहीं है - और इसे यह बात धुंधला कर देती है कि...

(दायां कॉलम सामग्री): ...ने आगाह किया कि यह मजलिस की यकसांयियत (सभा की एकता) की सूरत में है, और यह चीज़ मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) कुओं में नहीं पाई जाती। मैं कहता हूँ कि इस पर एतराज़ (आपत्ति) यह है कि उन्होंने यह हुक्म उस शख़्स का बयान किया है जिसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत हो, उनकी इबारत इस तरह है "अतः अगर वह पाक नहीं है तो या तो उसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत होगी, और वह जुनुब होगा या नहीं, ऐसा शख़्स अगर तीन कुओं में गोता लगाए या ज़्यादा में तो पहले और दूसरे से बिल-इज्मा (सर्वसम्मति से) पाक नहीं निकलेगा और तीसरे से अबू हनीफ़ा और मुहम्मद के नज़दीक पाक निकलेगा और तीनों पानी नजिस (नापाक) हैं, मगर उनकी नजासत मुख़्तलिफ़ है जैसा कि हमने ज़िक्र किया, और अबू यूसुफ के नज़दीक सब नजिस हैं, और

इंसान भी नजिस है, चाहे उसने डोल निकालने के लिए गोता लगाया हो या ग़ुस्ल करने के लिए, और तरफ़ैन (अबू हनीफ़ा और मुहम्मद) के नज़दीक अगर डोल निकालने के लिए या ठंडक हासिल करने के लिए गोता लगाया तो पानी अपनी हालत-ए-साबिक़ा (पुरानी स्थिति) पर बाक़ी है। आदि। लेकिन यह कैसे हो सकता है जबकि फ़र्ज़ यह किया गया है कि उसके बदन पर हक़ीक़ी नजासत है। हाँ अगर यह कहा जाए कि उनका कलाम 'अल-मियाह कुल्लुहा नजिसतुन वर-रजुलु नजिसुन' पर पूरा हुआ और उनका कौल 'सवा-उन इनग़मसा लि-तलबिद् डलवि' आदि इस बात का बयान है कि अबू यूसुफ के नज़दीक हुक्म नजासत-ए-हक़ीक़िया पर महदूद नहीं है बल्कि हुक्मी का भी यही हाल है जैसा कि हम ज़िक्र कर आए हैं कि अबू यूसुफ के नज़दीक इंसान नापाक है तो कभी पाक न होगा, इससे..."

1. बदाए अस्सनाए, फ़स्ल फ़ित-तहारतिल हक़ीक़ीया, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/711. पेज 153 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

اقول: (۱) لکن یشکل علیہ انہ رحمہ اللہ تعالی اما ذکر ھذا في من کان علی بدنہ نجاسۃ حقیقیۃ لان عبارتہ ھکذا وان لم یکن طاھرا فان کان علی بدنہ نجاسۃ حقیقیۃ وھو جنب اولا فانغمس فی ثلثۃ ابار اواکثر من ذلك لا یخرج من الاولی والثانیۃ طاھرا بالاجماع ویخرج من الثالثۃ طاھرا عند ابی حنیفۃ و محمد رضی اللہ تعالی عنھما والمیاہ الثلثۃ نجسۃ لکن نجاستھا علی التفاوت علی ما ذکرنا وعند ابی یوسف کلھا نجسۃ والرجل نجس سواء انغمس لطلب الدلو والاغتسال وعند ھما ان انغمس لطلب الدلو والتبرد فالمیاہ باقیۃ علی حالھا الخ۔ وکیف تبقی علی حالھا والفرض ان علی بدنہ نجاسۃ حقیقیۃ الا ان یقال انتھی الکلام علیھا الی قولہ المیاہ کلھا نجسۃ والرجل نجس وقولہ سواء انغمس لطلب الدلو الخ بیان لعدم اقتصار الحکم عند ابي یوسف علی النجاسۃ الحقیقیۃ بل کذلك الحکمیۃ کما قدمنا ان عند ابی یوسف ھو نجس ولا یخرج طاھرا ابدا فلما استطرد ھذا ابان خلاف الطرفین فیہ ان ھذا التعمیم لیس عندھما - ویکدرہ ان

(دائیں کالم کی تحریر): نے متنبہ کیا کہ یہ اتحاد مجلس کی صورت میں ہے، اور یہ چیز مختلف کنوؤں میں نہیں پائی جاتی ہے۔ میں کہتا ہوں اس پر اشکال یہ ہے کہ انہوں نے یہ حکم اس شخص کا بیان کیا ہے جس کے بدن پر حقیقی نجاست ہو، ان کی عبارت اس طرح ہے "پس اگر وہ پاک نہیں ہے تو یا تو اس کے بدن پر حقیقی نجاست ہوگی، اور وہ جنب ہوگا یا نہیں، ایسا شخص اگر تین کنوؤں میں غوطہ لگائے یا زیادہ میں تو پہلے اور دوسرے سے بالاجماع پاک نہیں نکلے گا اور تیسرے سے ابو حنیفہ اور محمد کے نزدیک پاک نکلے گا اور تینوں پانی نجس ہیں، مگر ان کی نجاست مختلف ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا، اور ابو یوسف کے نزدیک سب نجس ہیں، اور انسان بھی نجس ہے، خواہ اس نے ڈول نکالنے کیلئے غوطہ لگایا ہو یا غسل کرنے کیلئے، اور طرفین

کے نزدیک اگر ڈول نکالنے کیلئے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے غوطہ لگایا تو پانی اپنی حالت سابقہ پر باقی ہے۔ الخ۔ لیکن یہ کیسے ہو سکتا ہے جبکہ فرض یہ کیا گیا ہے کہ اُس کے بدن پر حقیقی نجاست ہے۔ ہاں اگر یہ کہا جائے کہ ان کا کلام المیاہ کلھا نجسۃ والرجل نجس پر پورا ہوا اور ان کا قول سواء انغمس لطلب الدلو الخ اس امر کا بیان ہے کہ ابو یوسف کے نزدیک حکم نجاست حقیقیہ پر مقصور نہیں ہے بلکہ حکمیہ کا بھی یہی حال ہے جیسا کہ ہم ذکر کر آئے ہیں کہ ابو یوسف کے نزدیک انسان ناپاک ہے تو کبھی پاک نہ ہوگا، اس سے

1. بدائع الصنائع فصل فی الطھارۃ الحقیقیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۱۱ صفحہ 153 از 711

Fatawa Razawiyyah Volume 2

The discourse proceeded by negating ritual impurity (najasa hukmiyya). How then can it be said, according to the two [Imams], that if one dives in to retrieve a bucket or to cool down, the waters remain in their original state? For according to the Imam (may Allah be pleased with him), water becomes 'used' (musta'mal) by the removal of ritual impurity (hadath) even if there was no intention. Similarly, according to Imam Muhammad as well upon investigation (1). It is stated in al-Badai' regarding a human falling into a well: if there was ritual impurity on their body, then according to those who deem this water 'used' and 'used' water as 'impure' (najis), the entire water of the well must be drained, as mentioned before. If this is the case when it happens unintentionally, then what about one who dives intentionally to cool down? Furthermore (2), he later addressed the case of ritual impurity and explicitly stated the correct ruling contrary to what is here, as will follow. Even if what is here is attributed to necessity (dharura), besides being far-fetched, it contradicts his statement 'or cooling down.' However, it could be said that they included it therein, as will follow. Based on this leniency (tasamuh), this attribution is correct but not preserved. And if the discourse is extended even further to include one who is pure, then firstly, the generalization in the second Imam's statement 'whether one dives...' etc., would definitely not include it. This is undermined by the fact that the generalization does not exclude one who is in a state of ritual impurity (muhdith). How then is it correct to state absolutely that the waters remain in their original state and not...

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter: Explaining the amount by which a place becomes impure. HM Saeed Company, Karachi, 2/71. Page 154 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

जब बहस ने नजासत-ए-हुकमिया (धार्मिक अशुद्धि) की नफ़ी की, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि उनके(दोनों इमामों के) नज़दीक अगर कोई डोल निकालने या ठंडक के लिए गोता लगाए, तो पानी अपनी मूल स्थिति में रहता है? क्योंकि इमाम (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के नज़दीक, हदस (धार्मिक अशुद्धि) दूर करने से पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है, भले ही नीयत न हो। तहक़ीक़ के मुताबिक इमाम मुहम्मद के नज़दीक भी यही हुक्म है (1)। 'बदाइअ' में कुएँ में गिरने वाले इंसान के बारे में है कि अगर उसके बदन पर नजासत-ए-हुकमिया हो, तो उन लोगों के अनुसार जो इस पानी को 'मुस्तअमल' और मुस्तअमल को 'नजिस' (अशुद्ध) मानते हैं, कुएँ का सारा पानी निकाला जाएगा जैसा कि पहले गुज़रा। जब यह हुक्म बिना इरादे के गिरने वाले का है, तो उसका क्या हाल होगा जो ठंडक के लिए जानबूझकर गोता लगाए? फिर (2) उन्होंने बाद में नजासत-ए-हुकमिया वाली सूरत का ज़िक्र किया और वहाँ इसके विपरीत सही हुक्म की स्पष्ट व्याख्या की, जैसा कि आगे आएगा। और अगर यहाँ जो कुछ है उसे ज़रूरत पर आधारित मान लिया जाए, तो यह बात दूर होने के अलावा उनके कथन "या ठंडक के लिए" के भी विरुद्ध है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि उन्होंने इसे भी उसी में शामिल कर लिया है, जैसा कि आएगा। तो इस ढील (तसामुह) के आधार पर यह मानना सही है लेकिन सुरक्षित नहीं। और अगर बहस को इतना बढ़ाया जाए कि उसमें पाक (शुद्ध) व्यक्ति भी शामिल हो जाए, तो एक तो इमाम-ए-सानी के कथन की व्यापकता "चाहे गोता लगाए..." आदि में यह निश्चित रूप से शामिल नहीं होगा। इस पर यह आपत्ति है कि यह व्यापकता मुह्दिस (जिस पर नजासत हो) को बाहर नहीं करती, तो यह कहना कैसे सही हो सकता है कि पानी अपनी मूल स्थिति में रहता है और नहीं...

1. बदाइअ अल-सनाइअ, अध्याय: उस मात्रा का बयान जिससे जगह नजिस हो जाती है। एच एम सईद कंपनी, कराची, 2/71। पृष्ठ 154/711

معلوم ہوا کہ اس میں طرفین کا خلاف ہے، کہ یہ تعمیم اُن دونوں کے نزدیک نہیں ہے۔ اس پر یہ اعتراض ہے کہ کلام مستطرد نجاست حکمیہ کی بابت ہے تو پھر یہ کیسے فرمایا کہ طرفین کے نزدیک اگر ڈول نکالنے یا ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے غوطہ لگایا تو پانی اپنی حالت پر باقی ہیں کیونکہ امام کے نزدیک پانی حدث کے ازالہ سے مستعمل ہو جائیگا اگرچہ اُس نے نیت نہ کی ہو، بلکہ تحقیق یہ ہے کہ امام محمد کے نزدیک بھی یہی حکم ہے، بدائع میں ہے کہ اگر کوئی انسان کنویں میں گر گیا تو اگر اس کے بدن پر نجاست حکمیہ ہے تو جو لوگ اس پر پانی کو مستعمل قرار دیتے ہیں اور مستعمل کو نجس کہتے ہیں تو انکے نزدیک کنویں کا کل پانی نکالا جائیگا جیسا کہ گزرا، اور جب یہ حکم بلا قصد گرنے والے کا ہو تو پھر اس کا کیا حال ہو گا جو ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے قصداً غوطہ لگائے، پھر انہوں نے نجاست حکمیہ والی شق کا ذکر کیا ہے اور وہاں انہوں نے یہاں کے برعکس حکم صحیح کی صراحت کی، جیسا کہ آئے گا، اور اگر یہاں جو کچھ ہے اس کو ضرورت پر محمول کر لیا جائے تو یہ بعید ہونے کے علاوہ اُن کے قول او التبرد کے مناقض ہے، مگر یہ کہا جاسکتا ہے کہ انہوں نے اس کو بھی اسی میں شامل کرلیا ہے، جیسا کہ آئے گا، تو اس تسامح کی بنیاد پر یہ حمل صحیح ہے لیکن محفوظ نہیں، اور اگر استطراد کو زائد کیا جائے اتنا کہ طاہر کو بھی شامل ہو جائے تو ایک تو امام ثانی کے قول کی تعمیم "سواء انغمس"

1 بدائع الصنائع فصل اما بیان المقدار الذی یصیر بہ المحل نجسا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۷۱

Fatawa Razawiyya - Volume II

The reason for specifying the ruling as 'pure' is because the discourse is directed towards a part where it might not be pure, while the ruling for 'pure' was already mentioned before. In short, the expression here, as understood by the deficient one, is not without anxiety and unease. Perhaps some alteration, displacement, or transposition occurred in it from the pens of the scribes, and there are many such precedents. Let it be reflected upon, and Allah Almighty knows best the intent of His special servants.

Fifteenth: Then he (A) - may his secret be sanctified - said under his previous statement: 'The passer-by, even if there was only a ritual impurity (Najasa Hukmiyya) on his hand' - his words are: 'As for the ruling on the waters, the first water is "used" (Must'amal) according to Abu Hanifa, may Allah Almighty be pleased with him, because the removal of ritual impurity (Hadath) occurred. The rest remain in their original state due to the total absence of anything necessitating "usage" - that is, because the scenario is presumed to be immersion for cooling or seeking a bucket, so there is no intention of proximity (Qurba) to Allah. Ritual impurity was already removed by the first. According to Abu Yusuf and Muhammad, all waters remain in their original state. As for Muhammad, it is clear because the act of proximity was not established by any of them. As for Abu Yusuf, he departed from his principle due to necessity, as mentioned.' [End quote]. So he conveyed that if the intention of proximity were present, the water would become "used" according to the Divine Imam.

Footnote 1: Bada'i al-Sana'i, Chapter on True Purification, Saeed Company Karachi 1/70 Page 155 of 711

फतावा रज़विया - द्वितीय खंड

शासन को 'शुद्ध' के रूप में निर्दिष्ट करने का कारण यह है कि प्रवचन उस भाग की ओर निर्देशित है जहाँ वह शुद्ध नहीं हो सकता है, जबकि 'शुद्ध' के लिए शासन का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। संक्षेप में, यहाँ की अभिव्यक्ति अल्पज्ञानी की समझ के अनुसार, चिंता और बेचैनी से रहित नहीं है। शायद लिपिकों की कलम से इसमें कुछ परिवर्तन, स्थानान्तरण या उलटफेर हुआ हो, और इसके कई उदाहरण हैं। इस पर विचार किया जाना चाहिए, और अल्लाह सर्वशक्तिमान अपने विशिष्ट सेवकों के इरादों को सबसे बेहतर जानता है।

पंद्रहवां: फिर उन्होंने (ए) - उनका रहस्य पवित्र हो - अपने पिछले कथन के तहत कहा: 'राहगीर, भले ही उसके हाथ पर केवल एक रस्म की अशुद्धता (नजासते हुकमिया) हो' - उनके शब्द हैं: 'जहाँ तक पानी के शासन का सवाल है, इमाम अबू हनीफा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार पहला पानी "प्रयुक्त" (मुस्तअमल) है, क्योंकि रस्म की अशुद्धता (हदथ) का निवारण हुआ है। शेष अपनी मूल स्थिति में बने रहते हैं क्योंकि "उपयोग" की आवश्यकता वाली किसी भी चीज़ का पूर्ण अभाव है - यानी, क्योंकि परिदृश्य शीतलन या बाल्टी खोजने के लिए गोता लगाने का माना गया है, इसलिए ईश्वर की निकटता (क़ुर्बत) का कोई इरादा नहीं है। रस्म की अशुद्धता पहले के द्वारा ही दूर हो गई थी। अबू यूसुफ और मुहम्मद के अनुसार, सभी पानी अपनी मूल स्थिति में रहते हैं। जहाँ तक मुहम्मद का सवाल है, यह स्पष्ट है क्योंकि उनमें से किसी के द्वारा भी निकटता का कार्य स्थापित नहीं हुआ था। जहाँ तक अबू यूसुफ का सवाल है, उन्होंने आवश्यकता के कारण अपने सिद्धांत को छोड़ दिया, जैसा कि उल्लेख किया गया है। [समाप्त]। अतः उन्होंने बताया कि यदि निकटता का इरादा होता, तो दैवीय इमाम के अनुसार पानी "प्रयुक्त" हो जाता।

पादलेख 1: बदाए अल-सनाए, वास्तविक शुद्धता पर अध्याय, सईद कंपनी कराची 1/70 पृष्ठ 155/711

وجہ لتخصیص الحکم بالطاھر فان الکلام مسوق في شق وان لم یکن طاھرا وقد قدم حکم الطاھر من قبل، وبالجملة فالعبارة ھھنا فیھا وصل الیه فھم القاصر لاتخلو عن قلق وحزازة ولعلھا وقع فیھا من قلم الناسخین تغییر وتقدیم وتأخیر وکم له من نظیر فلیتأمل واللہ تعالی اعلم بمراد خواص عبادہ۔

انغمس۔۔الخ " اس کو قطعاً شامل نہیں۔ پھر اس پر یہ بھی اشکال ہے کہ شمول بے وضو کو نہیں نکالے گا تو یہ مطلق حکم کیسے لگایا جاسکتا ہے کہ تمام پانی اپنی حالت پر باقی ہیں، اور حکم کو پاک کے ساتھ مخصوص کردینے کی کوئی وجہ نہیں کیونکہ گفتگو اس شق سے متعلق ہے کہ اگر پاک نہ ہو حالانکہ پاک کا حکم پہلے ہی گزر چکا، اور خلاصہ یہ کہ میری ناقص فہم میں یہاں عبارت اضطراب سے خالی نہیں، اور شاید اس میں ناسخین سے کچھ تغیر، تقدیم یا تاخیر واقع ہوئی ہے، اور اس کی بہت نظائر ہیں، غور کرو اور اللہ تعالیٰ زیادہ جانتا ہے اپنے خاص بندوں کے ارادوں کو۔

الخامس عشر : ثم قال (ا) قدس سرہ تحت قولہ المار وان کان علی یدہ نجاسة حکمیة فقط مانصه واما حکم المیاہ فالماء الاول مستعمل عند ابي حنیفة رضی اللہ تعالی عنه لوجود ازالة الحدث والبواقی علی حالھا لانعدام ما یوجب الاستعمال اصلا ای لان الصورة مفروضة فی الانغماس للتبرد اوطلب الدلو فلانیة قربة والحدث قدزال بالاول وعند ابي یوسف ومحمد المیاہ کلھا علی حالھا اما عند محمد فظاھر لانه لم یوجد اقامة القربة بشیئ منھا واما ابو یوسف فقد ترك اصله عند الضرورة علی مایذکر اھـ فقد افادان لووجدت نیة القربة لصار الماء مستعملا عند الامام الربانی۔

پندرھواں، پھر انہوں نے ان کے گزرے ہوئے قول "وان کان علی یدہ نجاسة حکمیة فقط" کے تحت فرمایا بہر حال پانی، تو پہلا پانی امام ابو حنیفہ کے نزدیک مستعمل ہے کیونکہ اس میں حدث کا ازالہ پایا جاتا ہے اور باقی اپنے حال پر باقی ہیں کہ وہاں کوئی ایسا سبب موجود نہیں جس کی بنا پر ان کو مستعمل قرار دیا جائے (یعنی مفروضہ تو یہ ہے کہ ٹھنڈک حاصل کرنے یا ڈول کی طلب میں غوطہ لگایا اور قربت کی نیت نہیں ہے، اور حدث پہلے ہی سے زائل ہو گیا) اور ابو یوسف اور محمد کے نزدیک کل پانی اپنی حالت پر ہیں، محمد کے نزدیک تو ظاہر ہے کیونکہ ان سے قربت ادا نہیں کی گئی ہے اور ابو یوسف نے ضرورت کی وجہ سے اپنی اصل کو چھوڑا ہے جیسا کہ ذکر کیا جاتا ہے اھ پس انہوں نے بتایا کہ اگر قربت کی نیت ہوگی تو پانی مستعمل ہوگا۔

1 بدائع الصنائع فصل فی الطہارۃ الحقیقۃ سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۰ Page 155 of 711

Fatawa Razawiya, Volume II

[Left Column - Arabic] Also, it is so, for research indicates that usage is not limited to the intention of closeness [to God], as previously mentioned. I say: These are explicit texts on the matter from the leaders of the school of thought (may Allah be pleased with them) brought by Malik al-Ulama. What he mentioned in terms of reasoning or debate cannot oppose them. As for the debate, it is clear. And as for the reasoning, if it were correct, it would necessitate the correctness of the ruling, but not the reverse, for it is possible that this reasoning is invalid and the ruling is based on another reason. It is like that here, for the statement regarding the impurity of used water is based on other reasons mentioned in al-Bada’i’ itself, al-Hidayah, al-Kafi, al-Tabyin, and others. This scholar Qasim has refuted Malik al-Ulama's reasoning with this Hadith in his treatise. It has already been mentioned that his statement does not match its generality with their branches mentioned regarding abundant water, so it is interpreted as being disliked (Makruh)... etc. He said before that, when refuting some of the speech of al-Bada’i’ point by point: "It is narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: 'None of you should urinate in stagnant water nor bathe in it after major ritual impurity (janaba) without distinction between one stagnant water and another...'" etc. It is said to him: "See if you are among the greatest opponents of this Hadith, since you and your teachers said that one performs ablution from the other side in visible water and from any side in non-visible water, as when a person urinates in it or a person in a state of ritual impurity bathes, or are you among those who act upon it?"

[Right Column - Urdu] According to Imam Rabbani, or rather this is the reality because research shows that being 'mustamal' (used water) does not depend on the intention of 'qurbat' (closeness to God), as mentioned previously. I say that these are the clarifications regarding this matter narrated from the Imams of the school of thought, which Malik al-Ulama has mentioned. That statement which he made during the explanation of the reason ('illat) or as an argument (jadal) cannot be opposed to them. The matter of argument is obvious, and if the reason was correct, it would necessitate the correctness of the ruling, but the reverse will not be true because it is possible that this reason is invalid and the ruling is actually due to some other reason. And here this is the situation, because the statement regarding the impurity of used water is due to other reasons which are mentioned in Bada'i; it is also the same in Hidayah, Kafi, Tabyin, etc. And Allama Qasim has refuted Malik al-Ulama's reasoning with this Hadith in his treatise, and his statement has already

passed that a match is not found between its generality and their mentioned branches which relate to abundant water, so it will be taken as being 'makruh' (disliked) etc. And he said before this where he refuted some words of Bada'i and refuted each and every thing, that their statement that it is narrated that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "None of you should ever urinate in stagnant water nor perform the bath of janaba (major ritual impurity) in it." In this, there is no detail between one stagnant water and another... etc.

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] इसी तरह, बल्कि हकीकत यही है क्योंकि शोध यह है कि इस्तेमाल का होना 'नियते क़ुर्बत' (ईश्वर की समीपता की नियत) पर निर्भर नहीं है जैसा कि पहले बताया गया है। मैं कहता हूँ: ये इस मसले में मज़हब के इमामों (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के स्पष्ट कथन हैं, जिन्हें मलिकुल उलमा ने उल्लेख किया है। उनके खिलाफ वह बात नहीं हो सकती जो उन्होंने कारण (इल्लत) बताने या बहस (जदल) के दौरान कही है। बहस की बात तो ज़ाहिर है, और कारण अगर सही हो तो हुक्म की सेहत लाज़िमी होगी, और इसका उल्टा नहीं होगा, क्योंकि मुमकिन है कि यह कारण गलत हो और हुक्म वास्तव में किसी और कारण से हो। और यहाँ यही स्थिति है, क्योंकि इस्तेमालशुदा पानी की नजासत का कथन दूसरे कारणों से है जो 'बदाइ' में वर्णित हैं, 'हिदाया', 'काफी' और 'तब्ईन' आदि में भी यही है। और अल्लामा कासिम ने अपने रिसाले में मलिकुल उलमा के इस हदीस से दलील देने का खंडन किया है और उनका यह कथन गुज़र चुका है कि इसकी व्यापकता और उनके बताए गए उपनियमों (फुरूअ) में समानता नहीं पाई जाती जो प्रचुर जल (मा-ए-कसीर) से संबंधित हैं, इसलिए इसे 'कराहत' (नापसंदगी) पर आधारित माना जाएगा... इत्यादि। और इससे पहले फरमाया जहाँ उन्होंने बदाइ के कुछ कलाम का खंडन किया है और एक-एक बात का जवाब दिया है कि उनका यह कहना कि रिवायत की गई है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "तुम में से कोई भी ठहरे हुए पानी में हरगिज़ पेशाब न करे और न ही गुस्ल-ए-जनाबत करे, इसमें ठहरे हुए और दूसरे ठहरे हुए के बीच कोई अंतर नहीं है..." इत्यादि। उनसे कहा जाता है: "देखो कि क्या तुम इस हदीस के सबसे बड़े विरोधियों में से हो, क्योंकि तुमने और तुम्हारे मशाइख ने कहा कि दिखने वाले पानी (मरइया) में दूसरी तरफ से वज़ू किया जाता है और न दिखने वाले में किसी भी तरफ से, जैसे कि जब कोई इंसान उसमें पेशाब कर दे या कोई नापाक (जुनुब) नहा ले, या फिर तुम उन लोगों में से हो जो इस पर अमल करते हैं?"

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] इमाम रब्बानी के नज़दीक, बल्कि हकीकत यही है क्योंकि तहकीक यह है कि मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) होना नियते कुर्बत पर मौकूफ नहीं जैसा कि गुज़रा। मैं कहता हूँ ये तसरीहात (स्पष्टीकरण) हैं जो इस मसले में अइम्मा-ए-मज़हब से मन्कूल हैं, उनको मलिकुल उलमा ने ज़िक्र किया है, उनके मुआरिज़ (विपरीत) वह इबारत नहीं हो सकती जो उन्होंने इल्लत के बयान के वक्त या जदल के तौर पर बयान की है, जदल की बात तो ज़ाहिर है और इल्लत अगर सही हुई तो हुक्म की सेहत को लाज़िम होगी, और इसका अक्स (उल्टा) न होगा, क्योंकि

मुमकिन है कि यह इल्लत बातिला (गलत) हो और हुक्म दरअसल किसी और इल्लत की वजह से हो, और यहाँ यही सूरत-ए-हाल है, क्योंकि मुस्तअमल पानी की नजासत का कौल दूसरी इल्लतों की वजह से है जो बदाइ में मज़कूर हैं, हिदाया, काफी और तब्ईन वगैरह में भी यही है, और अल्लामा कासिम ने अपने रिसाले में मलिकुल उलमा के इस हदीस से इस्तदलाल पर रद (खंडन) किया है और उनका यह कौल गुज़र चुका है कि इसके उमूम (व्यापकता) और उनके मज़कूर फुरूअ में मुताबकत (समानता) नहीं पाई जाती है जो मा-ए-कसीर (अधिक जल) से मुताल्लिक हैं तो इसको कराहत पर महमूल किया जाएगा अलख और इससे कब्ल फरमाया जहाँ उन्होंने बदाइ के बाज़ कलाम को रद किया है, और एक-एक बात का रद किया है कि उनका कौल कि रिवायत किया गया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में से कोई शख्स ठहरे हुए पानी में हरगिज़ पेशाब न करे और न ही गुस्ल-ए-जनाबत करे, इसमें कोई तफ्सील नहीं है एक ठहरे हुए और दूसरे ठहरे हुए के दरमियान... अलख

पृष्ठ 156 का 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی متن کا ترجمہ] ایضاً بلکہ وہ اسی طرح ہے کیونکہ تحقیق یہ ہے کہ مستعمل ہونا نیتِ قربت پر موقوف نہیں جیسا کہ پہلے گزرا۔ میں کہتا ہوں: پس یہ اس مسئلے میں ائمہ مذہب (رضی اللہ تعالی عنہم) کی صریح نصوص ہیں جنہیں ملک العلماء نے پیش کیا ہے، لہٰذا ان کے معارض وہ عبارت نہیں ہو سکتی جو انہوں نے علت بیان کرنے یا جرح (جدل) کے طور پر لکھی ہے۔ جدل کی بات تو ظاہر ہے، اور علت اگر صحیح ہو تو وہ حکم کی صحت کو لازم کرتی ہے لیکن اس کا عکس ضروری نہیں، کیونکہ ممکن ہے کہ وہ علت باطل ہو اور حکم کسی دوسری علت کی بنا پر ہو۔ اور یہاں بھی معاملہ ایسا ہی ہے، کیونکہ مستعمل پانی کی نجاست کا قول دیگر وجوہات کی بنا پر ہے جو خود بدائع، ہدایہ، کافی اور تبیین وغیرہ میں مذکور ہیں۔ اور علامہ قاسم نے اپنے اس رسالے میں ملک العلماء کے اس حدیث سے استدلال پر رد کیا ہے اور ان کا یہ قول پہلے گزر چکا ہے کہ اس حدیث کا عموم ان کے ذکر کردہ ان ذیلی مسائل (فروع) کے مطابق نہیں جو کثیر پانی کے بارے میں ہیں، لہٰذا اسے کراہت پر محمول کیا جائے گا... الخ۔ اور اس سے پہلے انہوں نے فرمایا جہاں بدائع کے بعض کلام کا ایک ایک کر کے رد کیا ہے: "اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا: تم میں سے کوئی ہرگز ٹھہرے ہوئے پانی میں پیشاب نہ کرے اور نہ ہی اس میں غسلِ جنابت کرے، بغیر کسی فرق کے کہ وہ کیسا ٹھہرا ہوا پانی ہے"... الخ۔ ان پر کہا جائے گا کہ دیکھو کیا تم اس حدیث کے سب سے بڑے مخالفین میں سے ہو، جبکہ تم نے اور تمہارے مشائخ نے کہا کہ مرئیہ پانی میں دوسری جانب سے وضو کیا جائے گا اور غیر مرئیہ میں جس جانب سے بھی ہو، جیسے کہ جب اس میں کوئی انسان پیشاب کر دے یا کوئی جنبی غسل کر لے، یا پھر تم اس پر عمل کرنے والوں میں سے ہو؟

[دایاں کالم - اردو متن] امام ربانی کے نزدیک، بلکہ حقیقت یہی ہے کیونکہ تحقیق یہ ہے کہ مستعمل ہونا نیت قربت پر موقوف نہیں جیسا کہ گزرا۔ میں کہتا ہوں یہ تصریحات ہیں جو اس مسئلہ میں ائمہ مذہب سے منقول ہیں، ان کو ملک العلماء نے ذکر کیا ہے، ان کے معارض وہ عبارت نہیں ہو سکتی ہے جو انہوں نے علت کے بیان کے وقت یا جدل کے طور پر بیان کی ہے، جدل کی بات تو ظاہر ہے اور علت اگر صحیح ہوئی تو حکم کی صحت کو لازم ہوگی، اور اس کا عکس نہ ہوگا، کیونکہ ممکن ہے کہ یہ علت باطلہ ہو اور حکم دراصل کسی اور علت کی وجہ سے ہو، اور یہاں یہی صورت حال ہے، کیونکہ مستعمل پانی کی نجاست کا قول دوسری علتوں کی وجہ سے ہے جو بدائع میں مذکور ہیں، ہدایہ، کافی اور تبیین وغیرہ میں بھی یہی ہے، اور علامہ قاسم نے اپنے رسالہ میں ملک العلماء کے اس حدیث سے استدلال پر رد کیا ہے اور ان کا یہ قول گزر چکا ہے کہ اس کے عموم اور ان کے مذکورہ فروع میں مطابقت نہیں پائی جاتی ہے جو ماءِ کثیر سے متعلق ہیں تو اس کو کراہت پر محمول کیا جائے گا الخ اور اس سے قبل فرمایا جہاں انہوں نے بدائع کے بعض کلام کو رد کیا ہے، اور ایک ایک بات کا رد کیا ہے کہ ان کا قول کہ روایت کیا گیا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تم میں سے کوئی شخص ٹھہرے ہوئے پانی میں ہرگز پیشاب نہ کرے اور نہ ہی غسل جنابت کرے، اس میں کوئی تفصیل نہیں ہے ایک ٹھہرے ہوئے اور دوسرے ٹھہرے ہوئے کے درمیان --- الخ

Fatawa Razawiya, Volume II ...Therefore, I am not surprised at one who uses a Hadith as evidence while being one of those who oppose it. End. This is what he referred to with his statement "It does not match its generality..." etc. I say: May Allah have mercy on you, you have exceeded the limit in accepting and rejecting. Firstly, (1) what they said is only regarding large amounts of water (Kathir), and large amounts of water are treated as flowing water, while the Hadith is about stagnant (Daim) water. Secondly, (2) if "dislike" (Karaha) is intended to mean prohibition (Karahat al-Tahrim), it would not align with his statement, and that is what the narrator of the report informed, saying, "We used to recommend..." to the end of what was mentioned before. Furthermore, it would be of no use to you, because if the water did not change because of it, there would be no reason for the prohibition. Do you not see that in a large body of water, due to its lack of change, bathing is permissible by consensus (Ijma), as mentioned in al-Bada'i'? He himself used this Hadith as evidence for the impurity of used (Mustamal) water, and your Sheikh, the Investigator (al-Muhaqqiq), used it generally for the loss of its purifying nature through this prohibition which implies prohibitive dislike. And if "mild dislike" (Karahat al-Tanziyya) is intended, then it is a deviation from the literal truth without a compelling necessity, and it does not align with the 'Nun of Emphasis' in the saying of the Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him): "Let them not bathe..." and the scholar al-Akmal in 'al-Inaya' refuted the idea of mild dislike by saying that restricting it to stagnant water contradicts it, for flowing water...

[Urdu Commentary/Translation of the Arabic Text]: On this, it will be said: Reflect, are you among the major opponents of this Hadith? Because you and your elders have said that if impurity is visible, one should perform ablution from the other side, and if it is not visible, one may perform ablution from whichever side one wishes, such as when a person urinates in that water or a person in a state of major ritual impurity (Junub) bathes. Or are you among those who act upon this Hadith? What could be more surprising than the person who opposes this Hadith also using it as evidence? End. And this is what they pointed to in their statement "It does not match its generality," etc. I say: May Allah have mercy on you, you have exceeded the limit in both accepting and rejecting. Firstly, what they said concerns large quantities of water, and large quantities fall under the ruling of flowing water, while the Hadith pertains to stagnant water. Secondly: If by "dislike" (Karahat) is meant "prohibitive dislike" (Karahat-e-Tahrim), then it would not be in accordance with their statement, and the narrator of the Hadith reported the same, saying "We used to recommend

etc." Then it is of no use to you, because if there were no change in the water due to it, there would be no reason to forbid it. For example, large quantities of water do not change; hence bathing in them is permissible by consensus, as mentioned in 'Bada'i'. He himself used this to argue for the impurity of used water, and your Sheikh al-Muhaqqiq used it to argue for the loss of its purifying property, and the evidence is this very prohibition which indicates prohibitive dislike. And if "mild dislike" (Karahat-e-Tanzihi) is intended by it, then it is a departure from reality without extreme necessity...

फ़तावा रज़विया, जिल्द द्वितीय ...इसलिए, मुझे उस व्यक्ति पर आश्चर्य नहीं होता जो उस हदीस को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करता है जिसका वह स्वयं विरोध करने वालों में से एक है। समाप्त। और यही वह बात है जिसकी ओर उन्होंने अपने इस कथन से संकेत किया है कि "यह अपनी व्यापकता के अनुरूप नहीं है..." इत्यादि। मैं कहता हूँ: अल्लाह आप पर रहम करे, आपने स्वीकार करने और अस्वीकार करने में सीमा पार कर दी है। पहली बात तो यह कि (1) उन्होंने जो कहा वह केवल बड़ी मात्रा में पानी (कसीर) के बारे में है, और बड़ी मात्रा में पानी बहते हुए पानी के समान माना जाता है, जबकि हदीस ठहरे हुए पानी (दाइम) के बारे में है। दूसरी बात यह कि (2) यदि "नापसंदगी" (कराहत) से तात्पर्य निषेधात्मक नापसंदगी (कराहते तहरीम) है, तो यह उनके कथन के अनुकूल नहीं होगा, और हदीस के रावी (वर्णनकर्ता) ने यही बताया है, कहा: "हम पसंद करते थे..." जो पहले उल्लेख किया गया था उसके अंत तक। इसके अलावा, यह आपके लिए किसी काम का नहीं होगा, क्योंकि यदि इसके कारण पानी में कोई परिवर्तन नहीं होता, तो इसके निषेध का कोई कारण नहीं होता। क्या आप नहीं देखते कि पानी की बड़ी मात्रा में, परिवर्तन की कमी के कारण, सर्वसम्मति (इज्मा) से स्नान करना जायज़ है, जैसा कि 'बदाई' में है? उन्होंने स्वयं इसे प्रयुक्त पानी (मुस्तअमल) की अशुद्धता के लिए प्रमाण के रूप में इस्तेमाल किया है, और आपके शेख अल-मुहक्किक ने इस निषेध के आधार पर पानी से शुद्ध करने की शक्ति के लुप्त होने पर प्रमाण दिया है जो निषेध (कराहते तहरीम) को दर्शाता है। और यदि इससे तंज़ीही (हल्की) नापसंदगी का इरादा किया गया है, तो यह बिना किसी अनिवार्य आवश्यकता के वास्तविकता से भटकना है, और यह पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन में ताकीद (ज़ोर देने वाले) 'नुन' के साथ मेल नहीं खाता: "उन्हें स्नान नहीं करना चाहिए..." और अल्लामा अल-अकमल ने 'अल-इनाया' में तंज़ीही नापसंदगी का खंडन करते हुए कहा है कि इसे ठहरे हुए पानी तक सीमित करना इसके विपरीत है, क्योंकि बहता हुआ पानी...

[अरबी पाठ का उर्दू टीका/अनुवाद]: इस पर यह कहा जाएगा: गौर करो, क्या तुम इस हदीस के बड़े विरोधियों में से हो? क्योंकि तुमने और तुम्हारे मशाइख़ ने कहा है कि यदि अशुद्धता दिखाई दे रही हो, तो दूसरे किनारे से वज़ू कर ले और यदि दिखाई न दे रही हो, तो जिस किनारे से चाहे वज़ू करे, जैसे किसी व्यक्ति ने उस पानी में पेशाब किया या जुनुब (अशुद्ध अवस्था) वाले ने स्नान किया। या तुम इस हदीस पर अमल करने वालों में से हो? इससे अधिक आश्चर्यजनक बात क्या होगी कि जो व्यक्ति इस हदीस का विरोधी है, वही इस हदीस से दलील भी देता है। समाप्त। और यह वही बात है जिसकी ओर उन्होंने अपने कथन "ला युताविक़ उमूमहु" में संकेत किया था इत्यादि। मैं कहता हूँ, अल्लाह तुम

पर रहम करे, तुमने स्वीकार करने और रद्द करने दोनों में सीमा पार की है। पहली बात यह कि उन्होंने जो कुछ फरमाया है वह कसीर (अधिक) पानी के बारे में है और कसीर जारी (बहते हुए) के हुक्म में है, और हदीस ठहरे हुए पानी से संबंधित है। दूसरा: यदि कराहत से मुराद कराहते तहरीम है, तो यह उनके कथन के अनुकूल नहीं होगी, और हदीस के रावी ने यही बताया है, कहा "कुन्ना नस्तहिब अलख" (हम मुस्तहब समझते थे)। फिर यह आपके लिए उपयोगी नहीं है, क्योंकि यदि इसकी वजह से पानी में बदलाव न होता, तो इसे रोकने की कोई वजह न होती। उदाहरण के लिए, कसीर पानी कि वह बदलता नहीं है, उससे स्नान करना सर्वसम्मति से जायज़ है, जैसा कि 'बदाई' में है। और उन्होंने स्वयं इससे मुस्तअमल पानी के नजासत (अशुद्ध) होने पर दलील दी है, और आपके शेख मुहक्क़िक ने पानी से तहारत (शुद्धता) के छिन जाने पर दलील दी है, और दलील यही 'नही' (मनाही) है जो कराहते तहरीमी को ज़ाहिर करती है। और यदि इससे कराहते तंज़ीही का इरादा किया जाए, तो यह हकीकत से बिना सख्त ज़रूरत के भटकना है...

पृष्ठ 157/711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی ...به فأنه لا اعجب ممن یستدل بحدیث هو احد من خالفه اهـ وهذا ما اشار الیه بقوله لا یطابق عمومه --- الخ۔ اقول: رحمکم الله جاوزتم الحد فی الاخذ والرد فاوّلاً (۱) ما قالوه انما ہو فی الکثیر والکثیر ملحق بالجاری والحدیث فی الدائم ثانیاً: (۲) الکراہۃ ان ارید بها کراهة التحریم لم یلائم قوله وبذلك اخبر راوی الخبر قال کنا نستحب الی اخر مامر مع انها لا تفید کم اذ لو لم یتغیر بہ الماء لم یکن وجہ للنہی عنہ الا تری ان الماء الکثیر لعدم تغیرہ یجوز الاغتسال فیه اجماعاً کما في البدائع وقد استدل هو علی نجاسة الماء المستعمل وشیخکم المحقق علی الاطلاق علی انسلاب الطهوریة عنه بهذا النهی المفید کراهة التحریم وان ارید بها کراهة التنزیه فعدول عن الحقیقة من دون ضرورة ملجئة ولا یلائمها نون التأکید فی قوله صلی الله تعالی علیہ وسلم لا یغتسلن وقد دفع العلامة الاکمل في العنایة کراهة التنزیه بان تقییده بالدائم ینافیه فان الماء الجاری...

[عربی عبارت کا اردو ترجمہ و تشریح]: اس پر یہ کہا جائے گا غور کرو کیا تم اس حدیث کے بڑے مخالفین میں سے ہو۔ کیونکہ تم نے اور تمہارے مشائخ نے کہا ہے کہ اگر نجاست نظر آ رہی ہو تو دوسرے کنارے سے وضو کرلے اور اگر نظر نہ آتی ہو تو جس کنارے سے چاہے وضو کرے، جیسے کسی انسان نے اس پانی میں پیشاب کیا یا جنب نے غسل کیا۔ یا تم اس حدیث پر عمل کرنے والوں میں سے ہو، اس سے زیادہ تعجب خیز بات کیا ہو گی کہ جو شخص اس حدیث کا مخالف ہے وہی اس حدیث سے استدلال بھی کرتا ہے اھ اور یہ ہے وہ بات جس کی طرف انہوں نے اپنے قول لا یطابق عمومہ میں اشارہ کیا تھا الخ۔ میں کہتا ہوں اللہ تم پر رحم کرے تم نے قبول کرنے اور رد کرنے دونوں میں حد سے تجاوز کیا ہے اول تو یہ کہ جو کچھ انہوں نے فرمایا ہے وہ کثیر پانی کی بابت ہے اور کثیر جاری کے حکم میں ہے اور حدیث ٹھہرے ہوئے پانی سے متعلق ہے۔ ثانیاً : اگر کراہت سے مراد کراہت تحریم ہے تو یہ ان کے قول کے موافق نہ ہوگی، اور اسی کی

خبر حدیث کے راوی نے دی فرمایا "کنا نستحب الخ" پھر یہ آپ کیلئے مفید نہیں، اس لئے کہ اگر اس کی وجہ سے پانی میں تغیر نہ ہوتا تو اس سے منع کرنے کی کوئی وجہ نہ ہوتی، مثلاً کثیر پانی کہ وہ متغیر نہیں ہوتا اس سے غسل کرنا بالاجماع جائز ہے، جیسا کہ بدائع میں ہے اور اس نے خود اس سے مستعمل پانی کے نجس ہونے پر استدلال کیا ہے اور آپ کے شیخ محقق نے پانی سے طہوریت کے سلب ہو جانے پر استدلال کیا ہے، اور دلیل یہی نہی ہے جو کراہت تحریمی کو ظاہر کرتی ہے اور اگر اس سے کراہت تنزیہی کا ارادہ کیا جائے تو یہ حقیقت سے بلا اشد ضرورت کے انحراف کرنا ہے...

Fatawa Razawiyya, Volume 2

(Right Column): And furthermore, in the statement of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him), "Layaghtasilanna" (do not bathe), the "nun" of emphasis does not align with it either. Allama Akmal in Al-Inayah, while refuting the "karahat tanzihiyya" (slight dislike), stated that restricting it with the condition of "standing" (water) is contrary to it, because flowing water is also an equal participant in this slight dislike. Since urinating in standing water is against etiquette, it is likewise disliked in flowing water; thus, there would be no benefit in restricting it, and the speech of the Legislator (Allah/Prophet) is protected from such redundancy. End quote. And it is stated in Al-Mujtaba that in water—be it little or much, standing or flowing—urinating is disliked. And Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) called anyone who urinates in flowing water "ignorant." End quote. As mentioned by Ibn Shalbi in At-Tabyin. Thirdly: Granted that in some instances they did not act upon its absolute sense. Thus, anyone who has restricted an absolute rule or specified a general one based on some evidence is not barred from deriving an inference from that same context for another matter. This, and similarly the non-usage of water due to the falling of a ritually impure person into a well according to Imam Muhammad—even if it is accepted—why do you not state the reason for it that is established among you? And...

(Left Column): ...shares in that meaning; for urinating, just as it is not mannerly in standing water, it is likewise in flowing water. Thus, the restriction has no benefit, and the Legislator’s speech is safeguarded from that. End quote. And it was said in Al-Mujtaba: as for urinating in it (1), it is disliked, whether it be little or much, standing or flowing. And Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) named the one who urinates in flowing water "ignorant." End quote. As in Ibn Ash-Shalbi's commentary on At-Tabyin. I say (2): It is established with us that the texts of the Legislator are not interpreted through contrary implication (mafhum al-mukhalafa). It is possible that the mention of "standing" was with respect to the second ruling, which is the prohibition against bathing. Thirdly: suppose (3) they did not act upon its absolute sense in some instances; it is not the case that whoever restricted an absolute or specified a general rule due to an apparent evidence is then forbidden from adhering to it in another matter. This, and likewise the non-usage of water due to the falling of a ritually impure person in a well according to Imam Muhammad—granting its acceptance—why do you not provide the cause for it based on what is established among you and what you have declared multiple times, that Imam Muhammad does

not rule something as "used" water except with the intention of worship (qurbah)? And what intention does a person falling in have? And you (4) are the ones who clearly stated, as previously mentioned, that if a pure person immerses...

Footnotes: 1. Al-Inayah with Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible, Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/63. 2. Shalbi on Tabyin al-Haqaiq, Book of Purification, Al-Amiriyya Press, Bulaq, Egypt, 1/21. Page 158 of 711

फतावा रजविया, जिल्द सानी (खंड 2)

(दाहिना कॉलम): और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान "ला यग़तसिलन्ना" में जो "नून" ताकीद है उससे भी इसकी संगति नहीं बैठती, और अल्लामा अकमल ने इनाया में कराहते तंज़ीहिया को दूर करते हुए फरमाया कि इसे "दाइम" (ठहरे हुए) की शर्त से बांधना इसके विपरीत है क्योंकि बहता पानी भी कराहते तंज़ीहिया में इसका साझीदार है। चूँकि रुके हुए पानी में पेशाब करना अदब के खिलाफ है, इसी तरह बहते पानी में भी मकरूह है, तो इसे सीमित करने का कोई फायदा न होगा, और शरीयत का कलाम इससे सुरक्षित है। अंत। और मुजतबा में है कि पानी में चाहे वह कम हो या ज्यादा, ठहरा हुआ हो या बहता हुआ, पेशाब करना मकरूह है। और इमाम अबू हनीफा ने बहते पानी में पेशाब करने वाले को 'जाहिल' कहा है। अंत। जैसा कि इब्न शलबी ने अत-तबीन में लिखा है। तीसरा: मान लिया कि कुछ स्थितियों में उन्होंने इसके पूर्ण अर्थ (इतलाक़) पर अमल नहीं किया है। तो जिसने किसी दलील के आधार पर किसी निरपेक्ष नियम को सीमित किया हो या सामान्य को विशेष किया हो, उसके लिए यह मना नहीं है कि वह उस जगह से किसी और चीज़ का तर्क दे। यह, और इसी तरह इमाम मुहम्मद के नज़दीक किसी अपवित्र (मुहद्दिस) व्यक्ति के कुएँ में गिर जाने की वजह से पानी का 'इस्तेमाल' न होना—अगर इसे स्वीकार भी कर लिया जाए—तो आप उसकी वह वजह क्यों नहीं बताते जो आपके नज़दीक तय है, और...

(बायां कॉलम): ...उस अर्थ में साझा करता है; क्योंकि पेशाब करना, जैसे कि रुके हुए पानी में अदब के खिलाफ है, वैसे ही बहते पानी में भी है। इसलिए पाबंदी का कोई फायदा नहीं, और शरीयत देने वाले का कलाम इससे सुरक्षित है। अंत। और 'अल-मुजतबा' में कहा गया है: जहाँ तक इसमें पेशाब करने (१) की बात है, तो यह मकरूह है, चाहे पानी थोड़ा हो या अधिक, ठहरा हुआ हो या बहता हुआ। और इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बहते पानी में पेशाब करने वाले को 'जाहिल' कहा है। अंत। जैसा कि इब्न अल-शलबी ने अत-तबीन पर अपनी टिप्पणी में लिखा है। मैं कहता हूँ (२): हमारे यहाँ यह स्थापित है कि शारेअ के ग्रंथों में विपरीत अर्थ (मफहूम अल-मुखालफत) पर विचार नहीं किया जाता है। संभव है कि 'ठहरे हुए' का उल्लेख दूसरे हुक्म यानी नहाने की मनाही के कारण हो। तीसरा: मान लें (३) कि उन्होंने कुछ स्थितियों में इसके सामान्य अर्थ पर अमल नहीं किया; तो ऐसा नहीं है कि जिस किसी ने किसी ज़ाहिर दलील के आधार पर किसी मुतलक़ को मुक़य्यद किया या आम को खास किया, उसे फिर किसी अन्य चीज़ में उस पर कायम रहने से रोका जाए। यह, और इसी तरह इमाम मुहम्मद के अनुसार कुएँ में किसी नापाक व्यक्ति के गिरने से पानी का इस्तेमाल न

होना—अगर इसे मान लिया जाए—तो आप इसका वह सबब क्यों नहीं बताते जो आपके यहाँ स्थापित है और जिसे आपने कई बार स्पष्ट किया है कि इमाम मुहम्मद 'इस्तेमाल' का हुक्म केवल 'क़ुरबत' की नीयत के साथ देते हैं? और गिरने वाले की क्या नीयत होगी? और आप (४) ही वे हैं जिन्होंने साफ़ तौर पर कहा है, जैसा कि पहले गुज़रा, कि यदि एक पाक शख़्स डुबकी लगा ले...

पादलेख: 1. 'अल-इनाया' मय 'फतह अल-कदीर', वज़ू के पानी का अध्याय, नूरैया रजविया सुक्कुर, १/६३। 2. शलबी 'तबीन अल-हकाइक' पर, किताब-उत-तहारत, अल-अमीरिया प्रेस, बुलाक़, मिस्र, १/२१। पृष्ठ १५८/७११

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

(دائیں کالم کی عبارت): اور پھر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے قول "لا یغتسلن" میں جو "نون" تاکید ہے اس سے بھی اس کی مطابقت نہیں، اور علامہ اکمل نے عنایہ میں کراہت تنزیہ کو دفع کرتے ہوئے فرمایا کہ اس کو "دائم" کی قید سے مقید کرنا اس کے منافی ہے کیونکہ جاری پانی بھی اس کا شریک ہے کراہت تنزیہ میں۔ کیونکہ پیشاب کرنا ٹھہرے ہوئے پانی میں خلاف ادب ہے اس طرح جاری پانی میں مکروہ ہے تو مقید کرنے کا کوئی فائدہ نہ ہوگا، اور شارع کا کلام اس سے محفوظ ہے اھ اور مجتبیٰ میں ہے کہ پانی میں خواہ وہ قلیل ہو یا کثیر، ٹھہرا ہوا ہو یا جاری، پیشاب کرنا مکروہ ہے، اور ابو حنیفہ نے جاری پانی میں پیشاب کرنے والے کو جاہل کہا ہے اھ جیسا کہ ابن شلبی علی التبیین میں ہے۔ ثالثاً: مان لیا کہ بعض صورتوں میں انہوں نے اس کے اطلاق پر عمل نہیں کیا ہے تو جس نے کسی مطلق کو مقید کیا ہو یا عام کو خاص کیا ہو کسی دلیل کی بناء پر، اس کو یہ ممنوع نہیں ہے کہ وہ اس جگہ سے کسی اور چیز کا استدلال کرے، اور اسی طرح پانی کا مستعمل نہ ہونا کسی مُحدث کے کنویں میں گر جانے کی وجہ سے محمد کے نزدیک، اگر اس کو تسلیم بھی کر لیا جائے، تو آپ اس کی علت وہ کیوں نہیں بتاتے ہو جو تمہارے نزدیک مقرر ہے، اور

(بائیں کالم کی عبارت): یشارکه فی ذلك المعنی فان البول کما انه لیس بادب فی الماء الدائم فکذلك فی الجاری فلا یکون للتقیید فائدة وکلام الشارع مصون عن ذلك اهـ وقد قال فی المجتبی اما البول فیه(۱) فمکروه قلیلا کان او کثیرا دائماً اوجاریاً وسمی ابو حنیفة رضی الله تعالی عنه من یبول فی الماء الجاری جاهلا اهـ کمافی ابن الشلبي علی التبیین۔ اقول:(۲) المقرر عندنا ان نصوص الشارع لا نظر فیها الی مفهوم المخالف ویجوز ان یکون ذکر الدائم نظرا الی الحکم الثانی هو النهی عن الاغتسال۔

وثالثا : هب (٣) انهم لم يعملوا فى بعض الصور بأطلاقه فليس من قيد اطلاقاً او خصص عموماً لدليل لاح ممنوعاً عن التمسك به فى شيئ اخر هذا وكذا عدم استعمال الماء بوقوع محدث فى البئر عند محمد على تسليمه لم لا تعللونه بما تقرر عندكم وصرحتم به غير مرة ان محمدا لا يقول بالاستعمال الا بنية القربة واى نية للساقط وانتم (۴) المصرحون كما تقدم ان الطاہر ان انغمس

حواشی: 1 العناية مع فتح القدير باب الماء الذى يجوز به الوضوء نوريہ رضويہ سكهر ١/ ۶٣ 2 شلبى على تبيين الحقائق كتاب الطهارة الاميرية ببولاق مصر ١/ ٢١ صفحہ 158 از 711

Fatawa-e-Razawiyya Volume II In it, for bathing, the water becomes used (must'amal) according to our three companions (Imams), may Allah be pleased with them. So why didn't (Imam) Muhammad say that if the unused water is more, it doesn't lose its property of being a purifier? You have explained more than once that Muhammad says water becomes used when there is an intention of 'qurbah' (nearness to God), and what intention will one have when falling into water! And you have clarified, as passed before, that if a clean person dives into a well for bathing, the water will become used according to our three companions. Then why didn't Muhammad say that since unused water is in majority, it should not lose its purity? Sixteenth: (1) The correct and reliable narration in the issue of 'Jahat' is the fourth one, which is not covered by the letters [of abbreviations], and it is 'Tam' (Clean but not Purifier), meaning the person is clean, their ritual impurity is gone, and the water is clean but not a purifier. It is stated in Al-Hidayah, Al-Kafi, At-Tabyin, As-Siraj, and others that this is the most consistent of narrations (1), and in Ad-Durr it is stated to be the most correct (2). In Al-Fath and Sharh al-Majma', it is called the verified narration (3). In Al-Bahr, it is considered the chosen madhhab and the ruling based on correctness (4). Thus, the doubt was completely removed, and by the grace of Allah, the throne of research settled on the fact that being 'used' spreads in small quantities of water just as impurity (najasat) spreads. Seventeenth: His Eminence distinguished between ritual impurity (hadath) and physical impurity (najasat) in terms of where they spread and where they don't...

1. Shibli on Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/25.
2. Durr-e-Mukhtar, Bab Miyah, Mujtabai, Delhi, 1/37.
3. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company, Karachi, 1/9.
4. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company, Karachi, 1/98. Page 159 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दो इसमें स्नान के लिए हमारे तीन साथियों (इमामों) के निकट पानी प्रयुक्त (मुस्तअमल) हो जाता है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। तो मुहम्मद ने यह क्यों नहीं कहा कि यदि अप्रयुक्त पानी अधिक हो, तो वह अपनी पवित्रता करने वाली गुण से बाहर नहीं होगा। आपने एक से अधिक बार स्पष्ट किया है कि मुहम्मद कहते हैं कि पानी उस समय प्रयुक्त होगा जब 'कुर्बत' (ईश्वर के सामीप्य) की नियत हो, और जो पानी में गिर जाए उसकी क्या नियत होगी! और आपने स्पष्ट किया है जैसा कि बीत चुका है कि यदि कोई पवित्र व्यक्ति स्नान के लिए कुएं में गोता लगाए तो हमारे तीन साथियों के निकट पानी प्रयुक्त हो जाएगा, तो मुहम्मद ने क्यों नहीं कहा कि अप्रयुक्त पानी अधिक होने पर भी वह पवित्रता से बाहर नहीं होगा। सोलहवां: (१) 'जह्त' के मसले में सही और विश्वसनीय रिवायत चौथी है जिसे अक्षरों में शामिल नहीं किया गया और वह 'तम' है अर्थात व्यक्ति पवित्र है, उसकी अशुद्धि (हदस) दूर हो गई है और पानी पवित्र तो है पर 'तहूर' (पवित्र करने वाला) नहीं है। हिदाया, काफी, तबयीन और सिराज आदि में है कि यह सभी रिवायतों में सबसे अधिक व्यापक है (१), और दुर्र में इसे 'असह' कहा गया है (२)। फ़तह और शरह अल-मजमा में कहा गया है कि यही प्रमाणित रिवायत है (३) और बहर में इसे ही मज़हब-ए-मुख्तार ठहराया गया है और यह कि सही कथन के अनुसार हुक्म यही है (४)। अतः संदेह पूरी तरह से समाप्त हो गया और अल्लाह की कृपा से शोध के सिंहासन पर यह तय हो गया कि प्रयुक्त होना थोड़े पानी में उसी प्रकार फैलता है जैसे अशुद्धि (नजासत) फैलती है। सत्रहवां: आपके पवित्र साये (क़ुद्दुस सिर्रहु) ने हदस और नजासत में अंतर किया है कि कहाँ वे फैलते हैं और कहाँ नहीं...

1. शिबली अल-तबईन अल-हक़ा'इक़, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र 1/25।
2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब मियाह, मुज्तबाई, दिल्ली 1/37।
3. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी, कराची 1/9।
4. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी, कराची 1/98। पृष्ठ 159/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی فیھا للاغتسال صار الماء مستعملا عند اصحابنا الثلثۃ رضی اللہ تعالی عنھم فلم لم یقل محمد ثم ان غیر المستعمل اکثر فلا یخرج عن کونہ طھوراً۔ تم نے ایک سے زائد مرتبہ اس کی وضاحت کی ہے کہ محمد فرماتے ہیں کہ پانی اس وقت مستعمل ہوگا جب قربہ کی نیت ہو، اور جو پانی میں گر جائے اس کی کیانیت ہوگی! اور تم نے تصریح کی ہے جیسا کہ گزرا کہ اگر پاک آدمی کنویں میں غوطہ لگائے نہانے کیلئے تو پانی ہمارے اصحابِ ثلثہ کے نزدیک مستعمل ہو جائے گا، تو محمد نے کیوں نہیں کہا پھر غیر مستعمل اکثر ہے تو طہور ہونے سے خارج نہ ہو گا۔ السادس عشر: (۱) الروایۃ الصحیحۃ المعتمدۃ في مسألۃ جحط رابعۃ لم تشملھا الحروف وھي طم ای ان الرجل طاھر زال حدثہ والماء طاھر غیر طھور قال في الھدایۃ والکافي والتبیین والسراج وغیرھا انھا اوفق الروایات (۱) و في الدر انہ الاصح (۲) سولھواں: صحیح روایت اور معتمد روایت مسئلہ جحط میں چوتھی ہے اس کو حروف شامل نہیں اور وہ طم ہیں یعنی انسان پاک ہے اس کا حدث زائل ہو گیا ہے اور پانی پاک تو ہے مگر طہور (پاک کرنے والا) نہیں ہے، ہدایہ، کافی، تبیین اور سراج وغیرہ میں ہے کہ یہ تمام روایتوں میں سب سے زیادہ جامع ہے، اور دُر میں اسی کو اصح کہا، وفی الفتح وشرح المجمع انھا الروایۃ المصححۃ (۳) وفی البحر انہ المذھب المختار وانہ الحکم علی الصحیح (۴) فانقطعت الشبھۃ رأسا واستقر بحمد اللہ عرش التحقیق علی ان الاستعمال یشیع في الماء القلیل سریان النجاسۃ۔ اور فتح اور شرح مجمع میں کہا کہ یہی مصحح روایت ہے اور بحر میں اسی کو مذہبِ مختار قرار دیا ہے اور یہ کہ صحیح قول کے مطابق حکم یہی ہے تو شبہ بالکل منقطع ہو گیا اور یہ امر محقق ہو گیا کہ مستعمل ہونا تھوڑے پانی میں اسی طرح سرایت کرتا ہے جس طرح نجاست سرایت کرتی ہے۔ السابع عشر: فرق قدس سرہ في الحدث والنجاسۃ حیث تشیع ولا یشیع سترھواں: قدس سرہ نے حدث اور نجاست میں فرق کیا ہے کہ نجاست سرایت کرتی ہے اور حدث ...

1 شبلی علی تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ الا میریہ بولاق مصر ۲۵/۱ 2 دُرِ مختار باب میاہ مجتبائی دہلی ۷/۱ ۳ 3 بحر الرائق کتاب الطھارۃ سعید کمپنی کراچی ۹/۱ 4 بحر الرائق کتاب الطھارۃ سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱ Page 159 of 711

Fatawa-e-Razviya - Volume 2

...because the impure (najis) mixes with the pure (tahir) in a way that it is impossible to distinguish between them, thus the ruling of impurity applies to the whole.

I say: Firstly (1) the reasoning falls short of the claim, as many impurities do not mix, and many mix yet remain distinguishable, so the ruling does not spread to the entirety of a small amount of water. Have you considered if a pig's hair falls into a pond? Would only the portion it touches become impure, as there is nothing there to mix and thus no inability to distinguish? No one among us says this. If you say it makes what is adjacent to it impure, and that is mixed with the rest of the parts such that distinction is impossible, I say then if an impure dye is thrown into a pond, it would necessitate that only what is colored by it becomes impure because distinction is achieved by color. If you say what is not colored is adjacent to what is colored, and thus the ruling spreads to the whole.

I say: This is another method besides the path of Imam Malik al-Ulama, which is that the ruling of the impurity of the whole is due to the lack of distinction, not due to spreading by proximity. A refutation of this will come to you in the discussion of liquids. Indeed, it was denied in 'al-Bada'i' by his saying (may Allah sanctify his secret): "The Shari'ah brought the ruling of the impurity of what is adjacent to the impure, not the impurity of what is adjacent to what is adjacent to the impure. Do you not see (2) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) ruled on the purity..."

Page 160 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया - भाग 2

...क्योंकि अशुद्ध (नजिस) शुद्ध (ताहिर) के साथ इस तरह मिल जाता है कि दोनों के बीच अंतर करना असंभव हो जाता है, इसलिए पूरे पर अशुद्धि का हुक्म लागू होगा।

मैं कहता हूँ: पहली बात (1) यह तर्क दावे से कम है, क्योंकि बहुत सी अशुद्धियाँ मिश्रित नहीं होती हैं और बहुत सी मिश्रित होती हैं लेकिन अलग पहचानी जा सकती हैं, इसलिए हुक्म थोड़े पानी के पूरे भाग तक नहीं फैलता। क्या आपने सोचा है कि अगर तालाब में सुअर का एक बाल गिर जाए? क्या केवल वही हिस्सा अशुद्ध होगा जिसे वह स्पर्श करता है, क्योंकि वहाँ मिश्रित होने के लिए कुछ भी नहीं है और इस प्रकार अंतर करने में कोई असमर्थता नहीं है? हममें से कोई भी ऐसा नहीं कहता। यदि आप कहते हैं कि इसके बगल वाला पानी अशुद्ध हो जाता है, और वह बाकी हिस्सों के साथ इस तरह मिला हुआ है कि अंतर संभव नहीं है, तो मैं कहता हूँ कि अगर तालाब में कोई अशुद्ध रंग डाला जाए, तो इसका मतलब यह होगा कि केवल वही हिस्सा अशुद्ध होगा जो रंगा गया है क्योंकि रंग के आधार पर अंतर हो जाता है। यदि आप कहते हैं कि जो रंगा नहीं गया है वह रंगे हुए के बगल में है, और इस प्रकार हुक्म पूरे पर लागू होता है।

मैं कहता हूँ: यह इमाम मलिक अल-उलमा के मार्ग के अलावा एक और रास्ता है, और वह यह है कि पूरे पानी की अशुद्धि का हुक्म अंतर न होने के कारण है, न कि निकटता से फैलने के कारण। इसका खंडन आपको तरल पदार्थों की चर्चा में मिलेगा। वास्तव में, 'अल-बदई' में उनके इस कथन से इसका खंडन किया गया है (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे): "शरीयत ने अशुद्ध के निकटतम वस्तु के अशुद्ध होने का हुक्म दिया है, न कि अशुद्ध के निकटतम के निकटतम के अशुद्ध होने का। क्या आप नहीं देखते (2) कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पवित्रता का हुक्म दिया..."

पृष्ठ 160 का 711

سرایت نہیں کرتا ہے کیونکہ نجس پاک چیز کے ساتھ اس طرح مل جاتا ہے کہ دونوں میں امتیاز نہیں ہو سکتا ہے تو کل پر نجاست کا حکم ہو گا۔

میں کہتا ہوں اول وجہ مدعیٰ سے قاصر ہے کہ بہت سے نجس مختلط نہیں ہوتے اور بہت سے نجس مختلط ہوتے ہیں اور ممتاز رہتے ہیں تو حکم قلیل پانی میں مکمل طور پر نہ ہو گا مثلاً تالاب میں خنزیر کا ایک بال گر جائے تو کیا صرف وہی نجس ہو گا جو بال سے متصل ہوا ہو کہ اس میں کوئی چیز مختلط ہونے والی نہیں پائی جاتی ہے لہٰذا امتیاز نہیں ہو سکتا ہے، یہ قول ہم سے کسی کا نہیں، اگر یہ کہا جائے کہ اس سے وہ پانی نجس ہو گا جو اس سے متصل ہے اور وہ تمام اجزاء سے ملا ہوا ہے کہ تمیز ممکن نہیں ہے، اس کا جواب یہ ہے کہ تھوڑی سی نجس قے کا تالاب میں مل جانا اس امر کو مستلزم ہے کہ صرف اتنا پانی ہی نجس ہو جو اس میں ملا ہو کیونکہ یہاں رنگ کی وجہ سے امتیاز حاصل ہو جائیگا۔ اگر کہا جائے کہ جو پانی قے سے آلود ہو گیا وہ اُس پانی سے مل جائے گا جو آلود نہیں ہوا ہے اس طرح کل پانی نجس ہو گیا۔

میں کہتا ہوں یہ ملک العلماء کے راستے کے علاوہ ایک اور راستہ ہے، اور وہ یہ ہے کہ کل پانی کی نجاست کا حکم عدم تمیز کی بناء پر ہے اس لئے نہیں کہ متصل پانی میں اس نے سرایت کی ہے، اس کی تردید آپ مائع کے بیان میں پڑھ لیں گے، اور بدائع میں اس کا انکار کیا ہے اور کہا ہے کہ شریعت نے ناپاک کے متصل کے ناپاک ہونے کا حکم دیا ہے یہ نہیں کہ متصل کے متصل کی ناپاکی کا حکم دیا ہے مثلاً یہ کہ حضور صلی اللہ

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Text Section (Left Column)]: Concerning the ghee adjacent to that which was adjacent to a mouse, and ruling on the impurity of what was adjacent to the mouse. This is because if the neighbor of the neighbor of an impurity were ruled impure, it would also lead to ruling the neighbor of the neighbor of the neighbor of an impurity as impure, ad infinitum. This would lead to the conclusion that if a drop of urine or a mouse fell into a vast ocean, all its water would become impure due to the connection between its parts, and that is false. Three ways to refute this occurred to me, which I mentioned in the margins of my copy of Al-Bada'i: First: The discussion is regarding solids (1), so there is no spreading [of impurity]. Second: (2) Sharia has established that large quantities of water and running water do not become impure unless one of their qualities changes, while a small quantity of water is considered a single entity, where the neighbor of the neighbor is a neighbor. Third: The leading Sheikh mentioned this to show the difference in the ruling for a mouse, a cat, and a sheep falling into a well, requiring the removal of twenty or forty buckets. All of this is because twenty small buckets of water are adjacent to the mouse due to its small body size. Thus, this amount was ruled impure because what is beyond it did not neighbor the mouse, but rather neighbored what neighbored the mouse, and Sharia has addressed this as previously mentioned. (3) I wrote on it that if it were assumed that only the twenty buckets' worth were made impure by the mouse, the whole would necessarily be corrupted due to mixing such that it cannot be distinguished. Then I saw Al-Allamah Ibn Amir al-Haj mentioned the first two points in Al-Hilyah in detailed and beneficial terms, as was his practice, may Allah Almighty have mercy on him.

[Urdu Text Section (Right Column)]: [Peace] be upon him commanded the purity of the water that is connected to the ghee which is connected to the mouse. The ghee that is directly connected to the mouse is impure, and the reason is that if a ruling of impurity were applied to what is connected to the connection of an impurity, then what is connected to that connection would also be ruled impure, and this cycle would continue infinitely. The result of this would be that if a single drop of urine or a mouse fell into a large ocean, all the water would become impure because all parts of the water are connected to each other, and this is incorrect. I have refuted this in three ways, and I have mentioned these reasons in the margins of my copy of Bada'i: (1) The discussion is about a solid object, so the question of spreading [impurity] does not even arise. (2) Sharia has given the ruling regarding large and flowing water

that it will not become impure until one of its qualities changes, and a little water is a single thing; in it, the connected to the connected is [simply] connected. (3) The leading Sheikh stated this so that the difference in the ruling for a mouse, cat, and goat falling into a well becomes clear—twenty, forty buckets and...

---

1 Bada'i al-Sana'i, Chapter: Explaining the amount by which a place becomes impure. H.M. Saeed Company Karachi, 1/57. Page 161 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

[अरबी पाठ अनुभाग (बायां कॉलम)]: उस घी के बारे में जो चूहे के पास था और चूहे के पास वाली चीज़ की अशुद्धता के नियम के बारे में। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि अशुद्धता के पड़ोसी के पड़ोसी को अशुद्ध माना जाए, तो अशुद्धता के पड़ोसी के पड़ोसी के पड़ोसी को भी अनंत तक अशुद्ध माना जाएगा। इससे यह निष्कर्ष निकलेगा कि यदि मूत्र की एक बूंद या एक चुहिया किसी विशाल सागर में गिर जाए, तो उसके सभी हिस्सों के बीच संबंध होने के कारण उसका सारा पानी अशुद्ध हो जाएगा, और यह गलत है। मैंने इसका खंडन करने के तीन तरीके सोचे थे, जिनका उल्लेख मैंने अपनी 'अल-बदाइ' की प्रति के हाशिये पर किया है: पहला: चर्चा ठोस (1) वस्तुओं के बारे में है, इसलिए [अशुद्धता के] प्रसार का सवाल ही नहीं उठता। दूसरा: (2) शरीयत ने यह नियम बनाया है कि बहुत अधिक और बहता हुआ पानी तब तक अशुद्ध नहीं होता जब तक कि उसके गुणों में से कोई एक बदल न जाए, जबकि थोड़ा पानी एक ही चीज़ माना जाता है, जिसमें पड़ोसी का पड़ोसी भी पड़ोसी ही होता है। तीसरा: इमाम शेख ने यह चूहे, बिल्ली और भेड़ के कुएं में गिरने के नियम के बीच अंतर दिखाने के लिए उल्लेख किया है, जिसमें बीस या चालीस डोल निकालने की आवश्यकता होती है। यह सब इसलिए है क्योंकि चूहे के छोटे शरीर के कारण बीस छोटे डोल पानी उसके आसपास होता है। अत; इस मात्रा को अशुद्ध घोषित किया गया क्योंकि इसके आगे का पानी चूहे के पास नहीं था, बल्कि उस पानी के पास था जो चूहे के पास था, और शरीयत ने जैसा पहले बताया गया है वैसा ही निर्देश दिया है। (3) मैंने उस पर लिखा कि यदि यह मान लिया जाए कि चूहे से केवल बीस डोल की मात्रा ही अशुद्ध हुई है, तो मिश्रण के कारण पूरा पानी दूषित होना आवश्यक हो जाएगा क्योंकि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। फिर मैंने देखा कि अल्लामा इब्न अमीर अल-हज ने 'अल-हिल्या' में पहले दो बिंदुओं का विस्तृत और लाभकारी शब्दों में उल्लेख किया है, जैसा कि उनकी आदत थी, अल्लाह तआला उन पर रहम करे।

[उर्दू पाठ अनुभाग (दायां कॉलम)]: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पानी के पाक होने का हुक्म दिया जो उस घी से मिला हुआ है जो चूहे से मिला हुआ है। और जो घी चूहे से सीधे मिला हुआ है वह नापाक है, और इसकी वजह यह है कि अगर नजासत (अशुद्धता) से जुड़ी चीज़ से जुड़ी चीज़ पर भी नजासत का हुक्म लगाया जाए, तो जो उसके साथ जुड़ी होगी उस पर भी नजासत का हुक्म लगाया जाएगा और यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। इसका नतीजा यह निकलेगा कि अगर पेशाब का एक कतरा या चुहिया बड़े समंदर में गिर जाए तो सारा पानी नापाक हो जाएगा क्योंकि

पानी के तमाम हिस्से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और यह गलत है। मैंने इसकी तीन तरह से काट की है और ये बातें मैंने अपनी 'बदाइ' की किताब के हाशिये पर लिखी हैं: (1) बात ठोस चीज़ की हो रही है तो नजासत फैलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। (2) शरीयत ने ज़्यादा और बहते पानी के बारे में यह हुक्म दिया है कि वह उस वक़्त तक नापाक नहीं होगा जब तक उसके गुणों में से किसी एक में बदलाव न आ जाए, और थोड़ा पानी एक ही चीज़ है, उसमें जुड़े से जुड़ा भी जुड़ा हुआ ही है। (3) शेख इमाम ने यह इसलिए बयान किया है कि कुएं में गिरने वाली चुहिया, बिल्ली और बकरी के हुक्म में फर्क साफ़ हो जाए—बीस, चालीस डोल और...

---

1 बदाइ-उस-सनाई, अध्याय: उस मात्रा का वर्णन जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है। एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/57। पेज 161 का 711

[عربی متن کا حصہ (بایاں کالم)]: ماجاور السمن الذي جاور الفأرة وحكم بنجاسة ماجاور الفارة وهذا لان جار جار النجس لوحكم بنجاسة لحكم ايضا بنجاسة ماجاور جار جار النجس الى مالانهاية له فيؤدى الى ان قطرة من بول او فأرة لووقعت فى بحر عظيم ان يتنجس جميع مائه لاتصال بين اجزائه وذلك فاسد ١هـ وقد كان سنح لى فى الرد على هذا ثلثة اوجه ذكرتها على هامش نسختى البدائع اولها: التقرير فى (١) الجامد فلا سراية وثانيها: (٢) الشرع جعل الكثير والجارى لايقبلان النجاسة مالم يتغير احد اوصافها والماء القليل شيئ واحد فقيه جار الجار جار- وثالثها: ذكر الشيخ الامام هذا لابداء الفرق فى حكم الفأرة والهر والشاة الواقعة فى البئر بنزح عشرين واربعين والكل بان الفارة يجاورها من الماء عشرون دلو الصغر جثتها فحكم بنجاسة هذا القدر لان ماوراءه لم يجاور الفأرة بل جاور ماجاور الفأرة والشرع ورد الى اخر مامرم (٣) فكتبت عليه ان لو فرض عدم التنجيس بالفأرة الالقدر عشرين لزم فساد الكل للاختلاط بحيث لايمتاز ثم رأيت العلامة ابن امير الحاج ذكر فى الحلية الوجهين الاولين بعبارات مطنبة مفيدة كما هو دا به رحمه الله تعالى

[اردو متن کا حصہ (دایاں کالم)]: علیہ وسلم نے اُس پانی کے پاک ہونے کا حکم دیا جو اس گھی سے متصل ہے جو چوہے سے متصل ہے اور جو گھی چوہے کے متصل ہے وہ ناپاک ہے اور اس کی وجہ یہ ہے کہ نجس کے متصل کا متصل اگر اس پر نجاست کا حکم لگایا جائے تو جو متصل کے متصل کے ساتھ متصل ہوگا اس پر بھی نجاست کا حکم لگایا جائے گا اور یہ سلسلہ لامتناہی چلے گا، اس کا نتیجہ یہ نکلے گا کہ اگر پیشاب کا ایک قطرہ یا چوہیا بڑے سمندر میں گر جائے تو تمام کا تمام پانی ناپاک ہو جائے گا کیونکہ پانی کے تمام اجزاء ایک دوسرے سے متصل ہیں، اور یہ غلط ہے اھ میں نے اس کی تردید تین طرح کی ہے اور یہ وجوہ میں نے اپنے بدائع کے نسخہ

کے حاشیہ پر ذکر کی ہیں: (۱) گفتگو جامد چیز میں ہے تو سرایت کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ (۲) شریعت نے کثیر اور جاری پانی کے بارے میں یہ حکم دیا ہے کہ وہ اس وقت تک ناپاک نہ ہوگا جب تک اس کے اوصاف میں سے کسی ایک وصف میں تبدیلی نہ ہو جائے اور تھوڑا پانی شیئ واحد ہے، اس میں متصل کا متصل، متصل ہے۔ (۳) شیخ امام نے یہ اس لئے بیان کیا ہے کہ چوہیا، بلی اور بکری جو کنویں میں گر جائے ان کے حکم میں فرق ظاہر ہو جائے، بیس، چالیس ڈول اور

---

1 بدائع الصنائع فصل اما بیان المقدار الذی یصیر بہ المحل نجساً ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۷

Fatawa Razawiyya Volume II

(Left Column) He said in the first: It is known that water is not a dense thing whose density prevents the spread of the impurity occurring in it from the place where it landed to other parts, as is the case in solidified clarified butter (ghee), so that the limitation of impurity remains on the adjacent part and not others. Rather, it is a thin, subtle liquid whose subtlety and the thinness of its parts, along with the agitation occurring by taking from it, determine the spread of impurity to the rest of its parts. Then he mentioned the second reason after other discourse[1]. And now I say: (1) Does solidified ghee accept impurity by being adjacent to the impure thing or not? According to the second view, why did the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) command removing what was around the mouse, and you have accepted its impurity? And according to the first view, if it is assumed that what is adjacent to the impure is impure, and so on, it would necessitate making everything adjacent to what was commanded to be removed impure, because it is adjacent to this impure part, even if it is not adjacent to the mouse. Then the difference between subtlety and density would not be useful. Rather, someone might say...

(Right Column) ...all the water will be extracted. Along with the mouse, twenty buckets of water are contiguous, because its body is small, so only that amount of water will be extracted, because besides this quantity, the water is not contiguous with the mouse, rather it is contiguous with what is contiguous with the mouse, and the Sharia ruling has been issued like this... etc. I wrote on this that if it is assumed that only twenty buckets worth of water from the mouse would become impure, then total corruption would follow because mixing has occurred and distinction is lost. Then I saw Allama Ibn Amir al-Hajj, he has written two initial reasons in 'Hilya' with detailed expressions, as is his style. In the first, he said: It is known that water is not a dense thing such that its density prevents the spread of the impurity that fell into it, like solid ghee, so that impurity remains limited only to the contiguous part and does not transcend to another. Rather, water is a liquid, thin, and subtle; its subtlety and the thinness of its parts, along with the occurring agitation, assist in the spread of impurity to all other parts. Then he mentioned the second reason after some other discourse. (T) And now I say: Does solidified ghee accept becoming impure due to the contact of impurity or not? On the second premise, why did the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) command removing the ghee around the mouse, and you accepted its impurity? And on the first premise, when it was assumed that the neighbor of impurity is impure, and so on, then the part connected

to the clean place will make it impure because it is adjacent to that impurity, even if it is not adjacent to the mouse. So the difference of subtlety and density will be of no use, rather someone could say...

[1] Hilya

(बायाँ कॉलम) उसने पहले में कहा: यह ज्ञात है कि पानी कोई ऐसी सघन चीज़ नहीं है जिसकी सघनता उसमें गिरने वाली अशुद्धि (नजासत) को उस स्थान से जहाँ वह गिरी है, दूसरे हिस्सों तक फैलने से रोक सके, जैसा कि जमे हुए घी में होता है, ताकि अशुद्धि का सीमित होना केवल सटे हुए भाग पर रहे और दूसरों पर नहीं। बल्कि, वह एक पतला, सूक्ष्म तरल है जिसकी सूक्ष्मता और उसके हिस्सों का पतलापन, उसमें से लेने के कारण होने वाली हलचल के साथ, अशुद्धि के उसके शेष हिस्सों में फैलने को निर्धारित करता है। फिर उसने दूसरे प्रवचन के बाद दूसरा कारण बताया[1]। अब मैं कहता हूँ: (1) क्या जमा हुआ घी अशुद्ध चीज़ के पास होने से अशुद्धता स्वीकार करता है या नहीं? दूसरे विचार के अनुसार, पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने चूहे के आसपास के घी को हटाने का आदेश क्यों दिया? और आपने इसकी अशुद्धता को स्वीकार कर लिया है। और पहले विचार के अनुसार, यदि यह मान लिया जाए कि अशुद्ध के बगल वाला अशुद्ध है, और इसी तरह आगे भी, तो यह उस हिस्से को अशुद्ध करना आवश्यक बना देगा जो इस आदेशित हिस्से के बगल में है, क्योंकि यह इस अशुद्ध भाग के बगल में है, भले ही वह चूहे के बगल में न हो। तब सूक्ष्मता और सघनता के बीच का अंतर उपयोगी नहीं होगा। बल्कि, कोई कह सकता है...

(दायाँ कॉलम) ...सारा पानी निकाला जाएगा। चूहे के साथ पानी की बीस बाल्टियाँ जुड़ी हुई हैं, क्योंकि उसका शरीर छोटा है, इसलिए पानी की उतनी ही मात्रा निकाली जाएगी, क्योंकि इस मात्रा के अलावा पानी चूहे से नहीं जुड़ा है, बल्कि वह उससे जुड़ा है जो चूहे से जुड़ा है, और शरीयत का हुक्म इसी तरह आया है... इत्यादि। मैंने इस पर लिखा है कि यदि यह मान लिया जाए कि चूहे से केवल बीस बाल्टियों की मात्रा का पानी अशुद्ध होगा, तो पूर्ण भ्रष्टाचार अनिवार्य होगा क्योंकि मिश्रण हो चुका है और अंतर समाप्त हो गया है। फिर मैंने अल्लामा इब्न अमीर अल-हज को देखा कि उन्होंने 'हिलिया' में विस्तृत कथनों के साथ दो शुरुआती कारण लिखे हैं, जैसा कि उनका तरीका है। पहले में उन्होंने कहा: यह ज्ञात है कि पानी कोई सघन चीज़ नहीं है कि उसकी सघनता उसमें गिरी हुई अशुद्धि के प्रसार को रोक सके, जैसा कि ठोस घी में होता है, ताकि अशुद्धि केवल सटे हुए भाग तक ही सीमित रहे और दूसरे तक न पहुँचे। बल्कि पानी तरल है, पतला है, सूक्ष्म है; इसकी सूक्ष्मता और भागों का पतलापन, होने वाली हलचल के साथ, अन्य सभी भागों तक अशुद्धि फैलाने में सहायक होता है। फिर उन्होंने कुछ अन्य चर्चा के बाद दूसरा कारण बताया। (त) और अब मैं कहता हूँ: क्या जमा हुआ घी अशुद्धि के मिलने के कारण अशुद्ध होना स्वीकार करेगा या नहीं? दूसरी संभावना पर अल्लाह के

रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चूहे के चारों ओर के घी को हटाने का आदेश क्यों दिया और आपने उसकी अशुद्धता को स्वीकार कर लिया? और पहली संभावना पर जब यह मान लिया गया कि अशुद्धि का पड़ोसी अशुद्ध है और इसी तरह आगे भी, तो जो हिस्सा साफ जगह से जुड़ा है उसे अशुद्ध कर देगा क्योंकि वह उस अशुद्ध के पास है भले ही वह चूहे के पास न हो। तो सूक्ष्मता और सघनता का अंतर कुछ भी फायदेमंद नहीं होगा, बल्कि कोई कहने वाला कह सकता है...

[1] हिलिया

पृष्ठ 162/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

(بائیں کالم) فقال فی الاول معلوم ان الماء لیس بشیئ کثیف یمنع کثافته سریان النجاسة الواقعة فیه من محلها الذي حلت به الی غیره کما في السمن الجامد لیقع الاقتصار فی التنجیس علی الجار المتصل دون غیره بل هو مائع رقیق لطیف تعین لطافته ورقة اجزائه مع الاضطراب العارض له بواسطة الاخذ منه علی سرایة النجاسة الی سائر اجزائه ثم ذکر الثانی بعد کلام آخر[1]۔ والآن اقول:(۱)السمن الجامد هل یقبل التنجس بجوار النجس ام لاعلی الثانی لم امر صلی اللہ تعالی علیه وسلم بتقدیر ما حول الفأرة وسلمتم نجاسته وعلی الاول اذا فرض ان جار النجس نجس وهلم جراوجب تنجیس ما یجاور هذا المأمور بتقدیره لکونه مجاورا لهذا النجس وان لم یجاور الفأرة فلا یجدی الفرق باللطافة والکثافة بل لقائل ان

(دائیں کالم) کل پانی نکالا جائیگا۔ چوہیا کے ساتھ پانی کے بیس ڈول متصل ہیں کیونکہ اس کا جسم چھوٹا ہے تو اتنی ہی مقدار پانی کی نکالی جائے گی کیونکہ اس مقدار کے علاوہ پانی چوہیا کے متصل نہیں ہے بلکہ جو چوہیا سے متصل ہے اس کے متصل ہے اور حکم شرعی اس کی مثل وارد ہوا ہے۔۔الخ۔ میں نے اس پر لکھا ہے کہ اگر یہ فرض کیا جائے کہ چوہیا سے صرف بیس ڈولوں کی مقدار نجس ہوگی تو کل کا فساد لازم آئیگا کہ اختلاط ہوا ہے اور امتیاز ختم ہو گیا۔ پھر میں نے علامہ ابن امیر الحاج کو دیکھا کہ انہوں نے حلیہ میں دو پہلی وجوہ مفصل عبارات سے لکھی ہیں، جیسا کہ ان کا اسلوب ہے، پہلی میں فرمایا یہ معلوم ہے کہ پانی کثیف شیئ نہیں کہ اس کی کثافت اس نجاست کی سرایت کو مانع ہو جو اس میں گری ہے، جیسا جامد گھی، تاکہ ناپاکی صرف متصل تک ہی محدود رہے دوسرے تک تجاوز نہ کرے، بلکہ پانی مائع ہے رقیق ہے لطیف ہے اس کی لطافت واجزاء کی رقت عارض ہونے والے اضطراب کے ساتھ، دوسرے تمام اجزاء تک نجاست

کے سرایت کرنے میں معاون ہے، پھر دوسری وجہ دوسرے کلام کے بعد ذکر کی۔ (ت) اور اب میں کہتا ہوں منجمد گھی نجس کے ملنے کی وجہ سے نجس ہونے کو قبول کرے گا یا نہیں!

دوسری تقدیر پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے چوہیا کے ارد گرد کے گھی کو دُور کرنے کا حکم کیوں فرمایا اور تم نے اس کی نجاست تسلیم کرلی، اور پہلی تقدیر پر جب یہ فرض کیا گیا کہ نجس کا پڑوسی نجس ہے اور ھلم جرا تو جو حصہ صفائی والی جگہ سے ملا ہوا ہے اس کو نجس کر دے گا کیونکہ وہ اس نجس کے مجاور ہے اگرچہ چوہیا کے مجاور نہیں تو لطافت و کثافت کا فرق کچھ مفید نہ ہوگا، بلکہ کوئی کہنے والا کہہ سکتا ہے

1 حلیہ

Fatawa-e-Razawiyyah Volume 2

(1) It says that when the ghee around the mouse becomes impure (najis), then that which is adjacent to this ghee is not the neighbor of the neighbor of the impurity, but rather the neighbor of the impurity itself. And so on until the end. If a distinction is made that the ghee is contaminated (mutanajjis) and not inherently impure (najis), and that what is adjacent to an impurity becomes impure, not what is adjacent to a contaminated substance, then it would necessarily follow that water would not become impure if this ghee is added to it after scooping out (the mouse), because its contact was with something contaminated (mutanajjis) and not something inherently impure (najis). From this, the weakness in the discourse of Malik al-Ulama becomes apparent, and this entire line of reasoning is folded up from the beginning.

I say, and success is from Allah: (2) The reason for a pure thing becoming impure is not merely its proximity to an impurity. (3) Do you not see that if an impure cloth were wrapped inside a pure cloth, the pure one would not become impure if both were dry? Nay, even if there were some remaining moisture in the impurity, such that only a mere trace appears on the pure cloth, it would still not be impure, as mentioned in 'al-Durr' and 'al-Shami', and as we have explained in our Fatawa. Rather, it is the pure thing acquiring the ruling of impurity upon meeting the impurity. This occurs in a small amount of liquid (pure substance) by mere meeting, even if the impurity is dry and has no moisture in it. In a non-liquid pure substance, the impure moisture must transfer to it; therefore, for it to become impure, there must be moisture that separates (from the impurity). Then, the matter varies according to the difference in the consistency of the pure substance—whether it is fine or dense. The penetration (of impurity) is greater in fine substances compared to dense ones. Similarly, this difference also arises from the variation in the duration of contact. Once you understand this, the ghee is scooped out, and a portion is discarded from it to the extent that the impure moisture is thought to have penetrated, and the remaining part stays pure because the contamination did not occur.

Page 163 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 2

(1) यह कहा जाता है कि जब चूहे के आस-पास का घी अशुद्ध (नजिस) हो जाता है, तो जो उस घी के पास है, वह अशुद्ध चीज़ के पड़ोसी का पड़ोसी नहीं है, बल्कि अशुद्ध चीज़ का पड़ोसी है। और इसी तरह अंत तक। यदि यह अंतर किया जाए कि घी 'मुतनज्जिस' (अशुद्ध के संपर्क से अशुद्ध) है, 'नजिस' (स्वयं अशुद्ध) नहीं है, और यह कि अशुद्ध के निकट वाली वस्तु अशुद्ध होती है न कि मुतनज्जिस के निकट वाली, तो यह अनिवार्य रूप से लागू होगा कि यदि इस घी को (चूहे को निकालने के बाद) पानी में मिलाया जाए, तो पानी अशुद्ध नहीं होगा, क्योंकि उसका संपर्क मुतनज्जिस से हुआ है, नजिस से नहीं। इससे मलिक अल-उलेमा के कथन की कमजोरी स्पष्ट हो जाती है, और इस तर्क को शुरू से ही समाप्त मान लिया जाता है।

मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: (2) किसी शुद्ध वस्तु के अशुद्ध होने का कारण उसका किसी अशुद्ध वस्तु के निकट होना मात्र नहीं है। (3) क्या आप नहीं देखते कि यदि एक अशुद्ध कपड़े को एक शुद्ध कपड़े में लपेट दिया जाए, तो शुद्ध कपड़ा अशुद्ध नहीं होगा यदि दोनों सूखे हों? यहाँ तक कि यदि अशुद्ध कपड़े में कुछ नमी भी बची हो, जिसका केवल निशान शुद्ध कपड़े पर दिखे, तब भी वह अशुद्ध नहीं होगा, जैसा कि 'अल-दुर्र' और 'अल-शमी' में वर्णित है और हमने अपने फ़तावा में स्पष्ट किया है। बल्कि, यह अशुद्ध वस्तु से मिलने पर शुद्ध वस्तु द्वारा अशुद्धता के आदेश को अपनाना है। यह तरल शुद्ध वस्तु की थोड़ी मात्रा में केवल मिलने मात्र से हो जाता है, भले ही अशुद्ध वस्तु सूखी हो और उसमें कोई नमी न हो। एक गैर-तरल शुद्ध वस्तु में, अशुद्ध नमी का उसमें स्थानांतरित होना आवश्यक है; इसलिए उसे अशुद्ध करने के लिए ऐसी नमी का होना ज़रूरी है जो (अशुद्धता से) अलग हो जाए। फिर, शुद्ध वस्तु की बनावट के अंतर के अनुसार मामला अलग होगा—अर्थात कोमलता (तरलता) और सघनता (गाढ़ापन) के आधार पर। सघन वस्तुओं की तुलना में कोमल वस्तुओं में (अशुद्धता का) प्रभाव अधिक होगा। इसी प्रकार, यह अंतर संपर्क की अवधि के अंतर से भी उत्पन्न होता है। यदि आप इसे समझ लेते हैं, तो घी को निकाल लिया जाता है और उसमें से उतना हिस्सा फेंक दिया जाता है, जहाँ तक अशुद्ध नमी के प्रवेश करने का संदेह हो, और शेष भाग शुद्ध रहता है क्योंकि अशुद्धता वहाँ तक नहीं पहुँची।

पृष्ठ 163 का 711

(۱) یقول اذا تنجس السمن حولها فما یجاور هذا السمن لیس جار جار النجس بل جار النجس وهکذا الی الاخر فان فرق بان السمن متنجس لانجس وجار النجس یتنجس لاجار المتنجس لزم ان لایتنجس الماء اذا القی فیه هذا السمن بعد التقویر لانه لاقی متنجسا لانجسا وبه یظهر ما فی کلام ملك العلماء ویطوی هذا البساط من اوله- کہ جب چوہیا کے ارد گرد گھی نجس ہوگیا تو جو اس گھی کے مجاور ہے وہ نجس کے متصل کا متصل نہیں ہے بلکہ نجس کا متصل ہے اور اسی طرح اخیر تک ، اگر یہ فرق کیا جائے کہ گھی متنجس ہے نجس نہیں ہے اور نجس کا متصل نجس ہوتا ہے نہ کہ متنجس کا متصل ، تو لازم آئے گا کہ پانی اس وقت نجس نہ ہو جب اس میں گھی نتھارنے کے بعد ملایا جائے کیونکہ اس کی ملاقات متنجس سے ہوئی نجس سے نہیں ہوئی ، اس سے ملک العلماء کے کلام کی خامی ظاہر ہو جاتی ہے اور بساط ابتدا سے لپیٹ دی جاتی ہے۔

فأقول: وبالله التوفیق(۲) لیس سبب تنجس الطاهر مجاورته لنجس(۳) الا تری ان لولف ثوب نجس في ثوب طاهر لم یتنجس الطاهر اذا کانا یابسین بل ولا اذا کانت في النجس بقیة نداوة یظهر بها فی الطاهر مجرد اثر کما في الدر والشامي وبیناه فی فتاونا بل هو اکتساب الطاهر حکم النجاسة عند لقاء النجس وذلك یحصل في الطاهر المائع القلیل بمجرد اللقاء وان کان النجس یابسالا بلة فیه وفی الطاهر الغیر المائع بانتقال البلة النجسة الیه فلا بد لتنجیسه من بلة تنفصل ثم یختلف الامر باختلاف جرم الطاهر لطافة وکثافة فالسراية فی اللطیف اکثر منها فی الکثیف وکذلك قد یختلف باختلاف زمن التجاور اذا عرفت هذا فالسمن یقور ویلقی منه قدر ما یظن سراية البلة النجسة الیه ویبقی الباقی طاهرا لان التنجس لم یکن

میں کہتا ہوں وباللہ التوفیق ، پاک کا ناپاک ہونا اس لئے نہیں ہے کہ وہ ناپاک سے متصل ہے مثلاً یہ کہ اگر ایک نجس کپڑا پاک کپڑے میں لپیٹ دیا جائے تو پاک ناپاک نہ ہوگا ، اگر وہ دونوں خشک ہیں بلکہ اس صورت میں بھی نجس نہ ہوگا جبکہ ناپاک میں تری باقی ہو جس کا محض اثر پاک پر ظاہر ہو ، جیسا کہ دُر اور شامی میں ہے اور ہم نے اس کو اپنے فتاویٰ میں بیان کیا ہے بلکہ وہ پاک کا نجاست کے حکم کو حاصل کرنا ہے نجس کے ملنے سے اور یہ اُس پاک میں ہوتا ہے جو مائع قلیل ہو ، اور یہ محض ملنے سے ہوگا اگرچہ نجس خشک ہو اور اس میں تری نہ ہو ، اور طاہر غیر مائع میں نجس تری اس کی طرف منتقل ہوگی تو اس کو ناپاک کرنے کیلئے تری کا ہونا ضروری ہے جو اس سے جدا ہو ، پھر معاملہ پاک کے جرم کے اختلاف کی وجہ سے مختلف ہوگا ، یعنی لطافت و کثافت کے اعتبار سے ، تو لطیف میں بہ نسبت کثیف کے سرایت زیادہ ہوگی ، اور اسی طرح یہ اختلاف اتصال کے زمانہ کے اختلاف سے بھی پیدا

Volume Two Fatawa Razawiyya

[Arabic side]: ...due to proximity to the impurity, such that it could be said that the ghee following it is adjacent to this impurity. Rather, it is due to the spreading of moisture, and that (1) has ended. Thus, it becomes clear that Malik al-Ulama's citation of the ghee issue to differentiate between a mouse and larger animals is baseless. Indeed, wells follow the traditional narrations (athar). How beautiful is what the Researcher (al-Muhaqqiq), may Allah Almighty have mercy on him, said in Fath al-Qadir regarding the issues of wells: "The right path is for a person to be in the hand of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his companions (may Allah be pleased with them) like a blind man in the hand of a guide." End. We ask Allah Almighty for the best of success, Amen. Secondly: And this is (2) the eighteenth [point], it is not our school of thought (madhhab) that when impurity falls into a small amount of water, only the part in physical contact with it becomes impure while the rest remains pure, and its use is only prohibited for fear of using the impurity because of its mixing such that it cannot be distinguished. Rather, the definitive school of thought is the spreading of impurity, so everything becomes impure. At this point - I say: (3) What exactly spreads from the impurity? Is it the physical substance itself or its ruling? Meaning, does the water acquire its ruling by proximity to it? The first [option] is definitively false because as you have learned, impurities do not mix [in that way]. Also, how could a drop of urine, for example, mix with a large pond that is not vast? For the division of bodies...

[Urdu side]: ...it happens. When you have understood this, then the ghee should be strained and an amount should be discarded from it as much as there is a suspicion of the seepage of the impure moisture into it, and the rest will remain pure. This is because becoming impure was not due to contact with the impurity such that it could be said that the subsequent ghee is adjacent (connected) to this impurity; rather, its impurity is due to the moisture coming towards it, and the moisture has ended. Thus, it is known that Malik al-Ulama's citation of the ghee issue to prove a difference between the ruling for a mouse and larger animals is without cause. Indeed, wells follow the traditional reports (athar). The Researcher (al-Muhaqqiq) said beautifully in 'Fath al-Qadir' regarding well issues: "The correct way is for a person to place their hand in the hand of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his companions (may Allah be pleased with them) just as a blind person puts their hand in the hand of a guide." We ask Allah Almighty for the best success. Amen. Secondly (and this is the eighteenth point), our school of thought (madhhab) is not that when

impurity falls into a small amount of water, only that specific water in contact with it becomes impure while the rest remains pure, and its use is prohibited only for fear that impurity might have mixed into it without being noticed. Rather, the definitive school of thought is that impurity will spread through the whole, thus everything becomes impure. And in this case, I say: what is meant by the generality of impurity? Is it that the physical impurity itself becomes general, or is its ruling general? That is, the ruling will also apply to the nearby water. The first case is definitely false because it has been established that impurities do not mix [this way]. Also, for example, how can a drop of urine mix in a large pool that is not very vast? For the division of bodies...

1. Fath al-Qadir, Section on the Well, Nuriyya Razawiyya, Sukkur, 1/86 Page 165 of 711

जिल्द सानी (खंड दो) फतावा रज़विया

[अरबी पक्ष]: ...अपवित्रता (नजासत) की निकटता के कारण, यहाँ तक कि यह कहा जा सके कि इसके बाद वाला घी इस अपवित्रता के समीप है। बल्कि यह नमी के फैलने के कारण है, और वह (१) समाप्त हो चुकी है। अतः यह स्पष्ट हो गया कि 'मलिकुल उलमा' का चूहे और उससे बड़े जानवरों के मसले में अंतर करने के लिए घी के मसले का प्रमाण देना निराधार है। वास्तव में, कुएँ रिवायतों (आसार) के अधीन होते हैं। और शोधकर्ता (मुहक्किक), अल्लाह तआला उन पर रहम करे, ने 'फतहुल कदीर' में कुएँ के मसलों के बारे में कितना सुंदर कहा है: "सही रास्ता यह है कि इंसान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके साथियों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के हाथ में इस तरह हो जैसे अंधा अपने मार्गदर्शक के हाथ में होता है।" समाप्त। हम अल्लाह तआला से बेहतरीन तौफीक (सफलता) माँगते हैं, आमीन। दूसरा: और यह (२) अठारहवाँ [बिंदु] है, हमारा पंथ (मज़हब) यह नहीं है कि जब अपवित्रता कम पानी में गिर जाए, तो केवल वही हिस्सा अपवित्र होगा जो उसके भौतिक संपर्क में है और बाकी पवित्र रहेगा, और इसका उपयोग केवल इसलिए वर्जित होगा कि कहीं इसमें अपवित्रता मिलकर न आ जाए और पहचान न हो सके। बल्कि निश्चित मज़हब यह है कि नजासत पूरे पानी में फैल जाएगी, जिससे सारा पानी नापाक (अपवित्र) हो जाएगा। इस बिंदु पर - मैं कहता हूँ: (३) नजासत से वास्तव में क्या फैलता है? उसका भौतिक तत्व या उसका हुक्म (आदेश)? यानी, क्या पानी उसके समीप होने से उसका हुक्म प्राप्त कर लेता है? पहला विकल्प निश्चित रूप से गलत है क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, नजासतें इस तरह नहीं मिलती हैं। साथ ही, उदाहरण के लिए पेशाब की एक बूंद एक बड़े तालाब में कैसे मिल सकती है जो बहुत विशाल न हो? क्योंकि पिंडों का विभाजन...

[उर्दू पक्ष]: ...होता है। जब आपने यह जान लिया तो घी को निथारा जाएगा और उसमें से उतनी मात्रा फेंक दी जाएगी जितनी उसमें अपवित्र नमी के रिसाव होने का संदेह हो, और बाकी शुद्ध रहेगा। क्योंकि अशुद्ध होना अपवित्र वस्तु के संपर्क के कारण नहीं था कि यह कहा जाए कि उसके बाद वाला घी इस अपवित्रता के समीप (जुड़ा हुआ) है, बल्कि इसकी अशुद्धि उसकी ओर नमी आने के कारण है, और नमी समाप्त हो चुकी है। अतः यह ज्ञात हुआ कि 'मलिकुल उलमा' का चूहे और उससे बड़े जानवरों के मसले में अंतर सिद्ध करने के लिए घी के मसले का प्रमाण देना निराधार है। वास्तव में, कुएँ रिवायतों (आसार) के अधीन होते हैं। शोधकर्ता (मुहक्किक) ने 'फतहुल कदीर' में कुएँ के मसलों के बारे में बहुत सुंदर कहा है: "सही रास्ता यह है कि इंसान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके साथियों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के हाथ में अपना हाथ इस तरह दे दे जैसे अंधा अपने

मार्गदर्शक के हाथ में हाथ देता है।" हम अल्लाह तआला से बेहतरीन तौफीक (सफलता) के प्रार्थी हैं। आमीन। दूसरा (और यही अठारहवाँ बिंदु है), हमारा पंथ (मज़हब) यह नहीं है कि जब अपवित्रता थोड़े पानी में गिर जाए, तो केवल वही पानी अपवित्र होगा जो उसके सीधे संपर्क में है और बाकी शुद्ध रहेगा, और इसका उपयोग केवल इसलिए वर्जित होगा कि कहीं उसमें अपवित्रता मिलकर न आ जाए और पता न चल सके। बल्कि निश्चित मज़हब यह है कि अपवित्रता पूरे में फैल जाएगी, जिससे सारा पानी अशुद्ध हो जाएगा। और इस स्थिति में मैं कहता हूँ: अपवित्रता की व्यापकता से क्या अभिप्राय है? क्या भौतिक अपवित्रता ही व्यापक होगी या उसका आदेश (हुक्म) व्यापक होगा? अर्थात्, पास के पानी पर भी उसका आदेश लागू होगा। पहली स्थिति तो निश्चित रूप से असत्य है क्योंकि यह ज्ञात हो चुका है कि अपवित्रताओं में मिश्रण नहीं पाया जाता है। साथ ही, उदाहरण के लिए पेशाब की एक बूंद एक बड़े तालाब में कैसे मिल सकती है जो बहुत विशाल न हो? क्योंकि पिंडों का विभाजन...

1. फतहुल कदीर, कुएँ का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/८६ पृष्ठ १६५/७११

جلد ثانی فتاوی رضویه

[عربی حصہ]: لمجاورة النجس حتى يقال ان السمن الذى بعده مجاور لهذا النجس بل لسراية البلة وقد (ا) انتهت فظهران استشهاد ملك العلماء بمسألة السمن على التفرقة بين الفأرة وما فوقها لاوجه له وانما الآبار تتبع الآثار، وما احسن ما قال المحقق رحمه الله تعالى في فتح القدير في مسائل البئر من الطريق ان يكون الانسان في يد النبى صلى الله تعالى عليه وسلم واصحابه رضى الله تعالى عنهم كالا عمى في يد القائد اهـ نسأل الله تعالى حسن التوفيق امين- وثانيا: وهو(٢) الثامن عشر ليس مذهبنا ان النجس اذا وقع في الماء القليل لم ينجس منه الاما اتصل به عينا والباقي باق على طهارته وانما يمتنع استعماله مخافة استعمال النجس لاختلاطه به بحيث لا يمكن التمييز بل المذهب قطعاً شيوع النجاسة فينجس الكل وحينئذ-اقول: ماذا(٣) يشيع من النجاسة عينها ام حكمها اى يكتسب الماء بمجاورتها حكمها الاول باطل قطعاً لما علمت من انجاس لا تختلط وايضاً قطرة من بول مثلاً كيف تمتزج بغدير كبير غير كبير فان قسمة الاجسام

[اردو حصہ]: ہوتا ہے ، جب تم نے یہ جان لیا تو گھی کو نتھارا جائے گا اور اس میں سے اتنی مقدار پھینک دی جائے گی جتنی اس کی طرف نجس تری کی سرایت کا گمان ہو اور باقی پاک رہے گا کیونکہ ناپاک ہونا نجس کے اتصال کی وجہ سے نہ تھا کہ یہ کہا جائے کہ اس کے بعد والا گھی اس نجس کے مجاور (متصل) ہے بلکہ اس کی نجاست تری کے اس کی طرف آجانے کی وجہ سے ہے اور تری ختم ہو چکی ہے ، تو معلوم ہوا کہ ملک العلماء کا استشہاد گھی کے مسئلہ سے نچو ہیا اور اس سے بڑے جانور کے مسئلہ میں اختلاف کو ثابت کرنے کے لئے بلا وجہ ہے اور بیشک کنویں آثار کے تابع ہوتے ہیں، اور محقق نے فتح القدیر میں خوب فرمایا کنویں کے مسئلہ میں، صحیح راستہ یہ ہے کہ انسان حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے اصحاب کے ہاتھ میں اس

طرح ہاتھ دے دے جیسے اندھا اپنے قائد کے ہاتھ میں ہاتھ دیتا ہے، ہم اللہ تعالیٰ سے احسن توفیق کے سائل ہیں۔ اور ثانیاً (اور یہی اٹھارہواں ہے) ہمارا مذہب یہ نہیں ہے کہ جب نجاست تھوڑے پانی میں گر جائے تو صرف وہی پانی ناپاک ہوگا جو اس سے متصل ہے اور باقی پاک رہے گا اور اس کا استعمال اس لئے ممنوع ہوگا کہ کہیں اس میں ناپاک مل کر نہ آجائے اور پتہ نہ چل سکے، بلکہ قطعی مذہب یہ ہے کہ نجاست تمام کو شامل ہوگی۔ اور اس صورت میں میں کہتا ہوں کہ نجاست کے عموم سے کیا مراد ہے کیا عین نجاست عام ہوگی یا اس کا حکم عام ہوگا؟ یعنی قریبی پانی پر بھی اس کا حکم لاگو ہوگا، پہلی صورت تو قطعاً باطل ہے کیونکہ معلوم ہو چکا ہے کہ نجاستوں میں اختلاط نہیں پایا جاتا ہے

۱ فتح القدیر فصل فی البئر نوریہ رضویہ سکھر ۱/۸۶ Page 165 of 711

Fatawa-e-Razvia, Volume Two

(Arabic side): ...is finite according to us, so it is impossible for what is in a small thing to equal several parts of a large thing. For the second point, there are two aspects: gradual transfer, meaning the water adjacent to it from every side acquires the ruling, then so on until it reaches all the water, as long as it does not reach the limit of abundance; or instantaneous establishment, by which the whole becomes impure upon the falling of the impurity together without mediating intermediaries. The first is void, as we know for certain that by the falling of a drop of urine, for example, on this side of a pond whose length is a hundred cubits, width is a cubit minus half a finger, and depth is a thousand cubits, the other side and the bottom become impure together, because the Law does not rule for a delay in the impurity of that side for a time suitable for the gradual transfer of the ruling bit by bit. Thus, it is established that the ruling applies to the whole together fundamentally without mediation. It is known from the Law that water is not made impure except by meeting the impurity. You have mentioned here that meeting with the impure necessitates the impurity of the pure even if it does not overwhelm the pure. Therefore, it is necessary that the meeting occurred with all the water at once, not through intermediaries. It is certainly known that physical contact only occurs with a small part, and the matter is clearer regarding a hair as mentioned. Thus, it is proven that when it fell, it met all parts of the small amount of water; otherwise, the whole would not have become impure due to the absence of the cause. So it appeared, and praise be to Allah, that small water in the view of...

(Urdu side): For example, how will a drop of urine mix with a pond, because for us the division of bodies is finite, so it is impossible for a small thing to mix with multiple parts of a large thing. And in the second scenario, there are also two possibilities: one is gradual transfer, meaning the water adjacent to the impurity acquires the rule from all sides, then from it the other parts of the adjacent water acquire the rule, and this process continues until this rule becomes common to all the water, until the water reaches the limit of abundance. Or, the transfer is instantaneous and all at once, such that as soon as the impurity falls, all the water becomes impure and no intermediary comes in between. The first is void because we know for certain that if a drop of urine falls into such a pond whose length is a hundred hands (cubits) and width is one finger less than a hand and depth is a thousand hands, now the bank where that drop fell is certainly impure and the other bank is also impure and even the last part of the depth is impure, and all this will be at the same time. It is not that

Sharia will give the ruling of impurity for the other bank with some delay so that the ruling moves towards it slowly. From this, it was known that the ruling fundamentally will be transferred to all the water at the same time without mediation, and this fact is known that Sharia does not declare water impure until the impurity is transferred to it, and you have stated here that the meeting of the impure with the pure makes the pure impure.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड दो

(अरबी पक्ष): ...हमारे अनुसार परिमित है, इसलिए यह असंभव है कि एक छोटी चीज़ में जो है वह एक बड़ी चीज़ के कई हिस्सों के बराबर हो। दूसरे बिंदु के लिए दो पहलू हैं: क्रमिक हस्तांतरण, जिसका अर्थ है कि हर तरफ से इसके बगल वाला पानी नियम प्राप्त करता है, फिर इसी तरह जब तक कि यह पूरे पानी तक न पहुँच जाए, जब तक कि वह प्रचुरता की सीमा तक न पहुँच जाए; या तात्कालिक स्थापना, जिसके द्वारा अशुद्धता के गिरने पर बिना मध्यस्थों के एक साथ पूरा अशुद्ध हो जाता है। पहला शून्य है, क्योंकि हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उदाहरण के लिए, पेशाब की एक बूंद गिरने से सौ हाथ लंबे, एक हाथ में से आधी उंगली कम चौड़े और एक हजार हाथ गहरे तालाब के इस किनारे पर, दूसरा किनारा और तल एक साथ अशुद्ध हो जाते हैं, क्योंकि कानून धीरे-धीरे नियम के क्रमिक हस्तांतरण के लिए उपयुक्त समय के लिए उस किनारे की अशुद्धता में देरी का आदेश नहीं देता है। इस प्रकार, यह स्थापित होता है कि नियम बिना किसी मध्यस्थता के मौलिक रूप से एक साथ पूरे पर लागू होता है। कानून से ज्ञात होता है कि पानी अशुद्धता से मिले बिना अशुद्ध नहीं होता है। आपने यहाँ उल्लेख किया है कि अशुद्ध के साथ मिलना शुद्ध की अशुद्धता को आवश्यक बनाता है भले ही वह शुद्ध पर हावी न हो। इसलिए, यह आवश्यक है कि मिलना सभी पानी के साथ एक साथ हुआ, मध्यस्थों के माध्यम से नहीं। यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि शारीरिक संपर्क केवल एक छोटे से हिस्से के साथ होता है, और जैसा कि उल्लेख किया गया है, बाल के संबंध में मामला अधिक स्पष्ट है। इस प्रकार, यह सिद्ध होता है कि जब यह गिरा, तो यह थोड़े से पानी के सभी भागों से मिला; अन्यथा, कारण के अभाव में पूरा अशुद्ध नहीं हुआ होता। तो यह प्रकट हुआ, और अल्लाह की स्तुति हो, कि कम पानी...

(उर्दू पक्ष): उदाहरण के लिए, पेशाब की एक बूंद तालाब से कैसे मिश्रित होगी, क्योंकि हमारे लिए पिंडों का विभाजन परिमित है, इसलिए एक छोटी चीज़ का बड़ी चीज़ के कई हिस्सों के साथ मिश्रित होना असंभव है। और दूसरे परिदृश्य में भी दो संभावनाएँ हैं: एक क्रमिक हस्तांतरण है, जिसका अर्थ है कि अशुद्धता के निकटवर्ती पानी को सभी पक्षों से नियम प्राप्त होता है, फिर उससे निकटवर्ती पानी के अन्य हिस्से नियम प्राप्त करते हैं, और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि यह नियम सभी पानी के लिए सामान्य न हो जाए, जब तक कि पानी प्रचुरता की सीमा तक न पहुँच जाए। या, हस्तांतरण तात्कालिक और एक साथ होता है, जैसे कि अशुद्धता के गिरते ही सारा पानी अशुद्ध हो जाए और बीच में कोई मध्यस्थ न आए। पहला शून्य है क्योंकि हम निश्चित रूप से जानते हैं कि

यदि पेशाब की एक बूंद ऐसे तालाब में गिरती है जिसकी लंबाई सौ हाथ है और चौड़ाई हाथ से एक उंगली कम है और गहराई एक हजार हाथ है, तो अब वह किनारा जहाँ वह बूंद गिरी है निश्चित रूप से अशुद्ध है और दूसरा किनारा भी अशुद्ध है और यहाँ तक कि गहराई का अंतिम भाग भी अशुद्ध है, और यह सब एक ही समय में होगा। ऐसा नहीं है कि शरीयत दूसरे किनारे के लिए अशुद्धता का नियम कुछ देरी से देगी ताकि नियम धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़े। इससे ज्ञात हुआ कि नियम मौलिक रूप से बिना मध्यस्थता के एक ही समय में सभी पानी में स्थानांतरित हो जाएगा, और यह तथ्य ज्ञात है कि शरीयत तब तक पानी को अशुद्ध घोषित नहीं करती जब तक कि अशुद्धता उसमें स्थानांतरित न हो जाए, और आपने यहाँ कहा है कि अशुद्ध का शुद्ध के साथ मिलना शुद्ध को अशुद्ध बना देता है।

पृष्ठ 166 का 711

متناهية عندنا فيستحيل ان يكون فى الصغير ما يساوى عدة حصص الكبير وللثاني وجهان الانتقال التدريجى اى يكتسب الحكم ما يليها من الماء من كل جانب ثم والى ان ينتهى الى جميع الماء مالم يبلغ حد الكثرة ام الثبوت الدفعى بان ينجس الكل بوقوع النجس معا من دون توسيط وسائط الاول باطل لانا نعلم قطعا ان بوقوع قطرة من بول مثلا فى هذا الطرف من غدير طوله مائة ذراع وعرضه ذراع الانصف اصبع وعمقه الف ذراع يتنجس الطرف الاخر واخر القعر معالان الشرع يحكم بتأخر تنجس ذلك الطرف بزمان صالح لانتقال الحكم شيئا فشيئا فاذن ثبت ثبوت الحكم للكل معا اصالة بدون توسط ومعلوم من الشرع ان الماء لا ينجسه الملاقاة النجس وقد افدتم انتم ههنا ان ملاقاة النجس الطاهر توجب تنجيس الطاهر وان لم يغلب على الطاهر فوجب ان الملاقاة حصلت لكل الماء دفعة لا بالوسائط ومعلوم قطعا ان اللقاء الحسى أن الوقوع ليس الا لجزء خفيف والامر اظهر فى نحو الشعرة المذكورة فثبت انها حين وقعت لاقت جميع اجزاء الماء القليل والا لما تنجس الكل معالعدم السبب فظهر ولله الحمد ان الماء القليل في نظر

مثلاً پیشاب کا ایک قطرہ تالاب سے کیسے مختلط ہوگا، کیونکہ ہمارے نزدیک اجسام کی تقسیم متناہی ہے، تو یہ امر محال ہے کہ چھوٹی چیز بڑی چیز کے متعدد حصوں سے مل جائے اور دوسری شق میں بھی دو صورتیں ہیں، ایک تو تدریجی انتقال ہے، یعنی جو پانی نجاست کے متصل ہے وہ حکم کو حاصل کرلے ہر طرف سے، پھر اس سے متصل پانی کے دوسرے اجزاء سے حکم کو حاصل کرلیں اور یہ سلسلہ اس وقت تک جاری رہے جب تک کہ یہ حکم تمام پانی کو عام نہ ہوجائے، جب تک حد کثرت کو پانی نہ پہنچے یا انتقال دفعۃً اور یکدم ہو کہ نجاست گرتے ہی سارا پانی ناپاک ہوجائے اور درمیان میں کوئی واسطہ نہ آئے، پہلا باطل ہے کیونکہ ہم قطعی طور پر

جانتے ہیں کہ اگر پیشاب کا ایک قطرہ ایسے حوض میں گر جائے جس کی لمبائی سو ہاتھ ہے اور چوڑائی ایک ہاتھ سے ایک انگلی کم اور گہرائی ایک ہزار ہاتھ ہے اب جس کنارے میں وہ قطرہ گرا ہے وہ قطعاً ناپاک ہے اور دوسرا کنارہ بھی ناپاک ہے اور گہرائی کا آخری حصہ تک ناپاک ہے اور یہ سب بیک وقت ہوگا یہ نہیں کہ شریعت دوسرے کنارے کی ناپاکی کا حکم قدرے تاخیر سے دے گی کہ آہستہ آہستہ حکم اس کی طرف منتقل ہو، اس سے معلوم ہوا کہ حکم اصالۃً تمام پانی کیلئے بیک وقت بلا توسط کے منتقل ہوگا، اور یہ بات معلوم ہے کہ شریعت پانی کو اس وقت تک نجس قرار نہیں دیتی ہے جب تک کہ نجاست اس کی طرف منتقل نہ ہو اور آپ نے یہاں فرمایا ہے کہ نجس کا پاک سے ملنا پاک کو نجس۔

Fatawa Ridawiyya Volume 2

The Sharia treats water as a single, simple entity, such that contact with one part of it is considered contact with the whole. (1) Thus, it is established that when a person in a state of ritual impurity (muhdith) dips his hand, for example, into a small pool (ghadir al-ghayr al-kabir), at the moment of entry, he has come into contact with the entire water. Consequently, the whole volume of water becomes 'used' (musta'mal). Praise be to Allah for granting proper understanding and for His continuous blessings.

In short, if contact were limited only to what is physically touched, then when a hair falls into water, only the droplets directly surrounding it would become impure. This is because the cause of impurity is contact with the impure object, which is limited to those specific droplets. However, this notion is categorically false. Therefore, it is known that the entire body of water is considered to be in contact. There is no ground to claim that the portion not in contact is greater than the portion in contact. All praise is due to Allah, the Ever-Living, and blessings and peace be upon the Generous Master, the Protector, and upon his family and companions until the Day of Resurrection.

Thirdly: This is the nineteenth point. Restricting the ruling only to the part in direct contact would make the concept of 'used water' impossible and place it in the realm of the impossible. This is because physical bodies only meet at their surfaces, as the interpenetration of bodies is impossible. What is the ratio of a surface to a volume? If so, the water for wudu (ablution) and ghusl (ritual bath) must remain purifying because the part of the water that touched the person's body is only the surface, while the rest is the body of the water. Thus, it would not lose its purifying quality because 'used' water [is distinct] from what is not it.

[Urdu Column Content:] ...even if it does not overpower the pure, it is known that contact occurred with all the water at once without intermediaries. It is definitively known that this physical contact is only with a very small part; this is clear from the example of the hair mentioned earlier. From this, it is proven that when the impurity fell, it met all parts of the small amount of water, otherwise, all the water would not have become impure at once because the cause was not present. From this, it is proven that a small amount of water is a single and simple entity in the eyes of the Lawgiver, and contact with one part is contact with the whole. So it is proven that when a person in a state of ritual impurity dips his hand, for example, into a small

pond, as soon as he dips his hand, the whole water meets it and all becomes 'used'. In summary, if contact were only to the extent that the water actually touched, then on the falling of a hair, only a few drops around it would be impure because the cause of impurity is contact with the impure thing which is limited to those few drops. But this is definitely false, so it is known that everything is in contact, and there is no choice but to say that the non-contacted part is more than the contacted part. (T)

Thirdly: This (nineteenth) is that restricting the ruling only to the contacted part makes 'use' impossible because the contact of bodies only happens through surfaces, for interpenetration in bodies is impossible. And what is the relation of a surface to a body? So, wudu and ghusl water is obligatory to be purifying because the part of the water that met the body of the person in ritual impurity is only the surface, and the rest is the body [of water], so it will not take away its purifying quality because 'used' water, from its other [is distinct].

शरीअत [पानी] को एक एकल सरल वस्तु मानती है और उसके एक भाग के साथ संपर्क पूरे के साथ संपर्क है। (१) अतः यह सिद्ध हुआ कि जब कोई मुहद्दिस अपना हाथ, उदाहरण के लिए, एक छोटे तालाब में डालता है, तो केवल डालने मात्र से ही वह पूरे पानी के संपर्क में आ जाता है। तो सारा पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो गया। श्रेष्ठ समझ और अल्लाह की निरंतर नेमतों पर उसकी प्रशंसा हो।

संक्षेप में, यदि संपर्क केवल उसी तक सीमित होता जो वास्तव में संपर्क में आया है, तो बाल गिरने से केवल उसके चारों ओर की कुछ बूंदें ही अपवित्र होतीं, क्योंकि अपवित्रता का कारण अपवित्र वस्तु से संपर्क है जो उन कुछ बूंदों तक सीमित है। लेकिन यह निश्चित रूप से असत्य है, तो ज्ञात हुआ कि पूरा पानी संपर्क में है। इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं कि यह कहा जाए कि जो संपर्क में नहीं है वह संपर्क वाले से अधिक है। अल्लाह की प्रशंसा जो सदैव रहने वाला है, और शांति और कृपा उदार स्वामी, रक्षक, और उनके परिवार और साथियों पर हो पुनरुत्थान के दिन तक।

तीसरा: यह (उन्नीसवाँ) बिंदु है। नियम को केवल संपर्क वाले हिस्से तक सीमित रखना 'उपयोग' को असंभव बनाना है, क्योंकि पिंडों का संपर्क केवल सतहों के माध्यम से होता है, क्योंकि पिंडों का एक-दूसरे में समा जाना असंभव है। और सतह का शरीर से क्या अनुपात है? तो वज़ू और ग़ुस्ल का पानी शुद्ध करने वाला रहना अनिवार्य है क्योंकि पानी का वह भाग जो मुहद्दिस के शरीर से मिला है वह केवल सतह है, और शेष पिंड है, तो वह उसकी शुद्धता की गुणवत्ता को समाप्त नहीं करेगा, क्योंकि प्रयुक्त, अपने गैर से [अलग है]।

[दाएं कॉलम का विवरण:] ...कर देता है चाहे वह पाक पर हावी न हुआ हो, तो ज्ञात हुआ कि संपर्क पूरे पानी के साथ अचानक बिना किसी माध्यम के हुआ है, और यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि यह भौतिक संपर्क केवल एक सूक्ष्म भाग के साथ है, यह बात बाल के उदाहरण से स्पष्ट है जो पहले बीत चुकी है, इससे सिद्ध हुआ कि जब वह अशुद्धता गिरी तो वह कम पानी के सभी भागों से मिली, अन्यथा सारा पानी एक साथ अपवित्र न होता क्योंकि उसका कारण मौजूद नहीं था, इससे सिद्ध हुआ कि कम पानी शरीअत की नज़र में एक एकल और सरल वस्तु है और उसके एक भाग का संपर्क पूरे के साथ संपर्क है। तो सिद्ध हुआ कि जब मुहद्दिस अपना हाथ मान लीजिए छोटे तालाब में डाले तो हाथ डालते ही पूरा पानी उससे मिल गया तो सब मुस्तअमल हो गया। और सारांश यह है कि यदि संपर्क केवल उसी सीमा तक होता जहाँ तक पानी वास्तव में मिला है, तो बाल गिरने से केवल कुछ ही

बूंदें अपवित्र होतीं जो बाल के चारों ओर होतीं क्योंकि अपवित्रता का कारण अशुद्ध वस्तु से संपर्क है जो उन कुछ बूंदों तक सीमित है, लेकिन यह बात निश्चित रूप से असत्य है, तो ज्ञात हुआ कि सारा का सारा संपर्क में है और इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है कि यह कहा जाए कि गैर-संपर्क वाला हिस्सा संपर्क वाले से अधिक है। (त)

तीसरा: यही (उन्नीसवाँ) है, नियम को केवल संपर्क वाले हिस्से तक सीमित रखना उपयोग को असंभव बनाना है क्योंकि पिंडों का संपर्क केवल सतहों से होता है, क्योंकि पिंडों में प्रवेश असंभव है और सतह का शरीर से क्या संबंध है? तो वज़ू और ग़ुस्ल का पानी शुद्ध रहना अनिवार्य है क्योंकि पानी के जिस भाग को मुहद्दिस का शरीर मिला है वह केवल सतह है और बाकी पिंड है तो वह उसकी शुद्धता को नहीं छीनेगा, क्योंकि प्रयुक्त, अपने गैर से [अलग है]।

पृष्ठ 167/711

الشرع كشيئ واحد بسيط وان ملاقاة جزء منه | کر دیتا ہے خواہ وہ پاک پر غالب نہ ہوا ہو، تو معلوم ہوا کہ ملاقاة ملاقاة للكل(۱) فثبت ان المحدث اذا ادخل يده | تمام پانی سے دفعۃً بلا واسطوں کے ہوئی ہے، اور یہ قطعی معلوم ہے مثلا في الغدير الغير الكبير فبمجرد الادخال لاقاها | کہ یہ حسی لقاء محض ایک خفیف جزء سے ہے، یہ چیز بال کی مثال الماء كله فصار جميعه مستعملا والحمد لله على | سے واضح ہے جو گزر چکی ہے، اس سے ثابت ہوا کہ جب وہ حسن التفہیم وتواتر الائہ | نجاست گری تو کم پانی کے تمام اجزاء سے ملی، ورنہ تو تمام پانی بیک وبالجملة لوكان اللقاء يقتصر على ما اتصل به | وقت ناپاک نہ ہوتا کیونکہ اس کا سبب موجود نہیں، اس سے حقيقة لم يتنجس بوقوع الشعرة الاقطيرات | ثابت ہوا کہ تھوڑا پانی شارع کی نگاہ میں شیئ واحد اور بسیط تحيطها لان سبب التنجيس ليس الاملاقاة | ہے اور اس کے ایک جزء کی اس سے ملاقاۃ کُل سے ملاقاۃ ہے تو النجس وهى مقصورة على تلك القطيرات لكنه باطل | ثابت ہوا کہ مُحدث جب اپنا ہاتھ مثلاً چھوٹے تالاب میں ڈالے قطعاً فعلم ان الكل ملاق و انه لامساغ لان يقال | تو ہاتھ ڈالتے ہی کُل پانی اُس سے مل گیا تو سب مستعمل ہو گیا، اور ان غير الملاقي اكثر من الملاقي ولله الحمد دائم | خلاصہ یہ کہ اگر ملاقاۃ صرف اسی حد تک ہوتی جس سے پانی حقيقةً الباقي والصلوة والسلام على المولى الكريم الواقي، | ملا ہے تو بال گرنے سے صرف چند قطرات ہی نجس ہوتے جو بال وآله وصحبه اجمعين الى يوم التلاقى۔ | کے گردا گرد ہوتے کیونکہ ناپاکی کا سبب نجس سے ملاقاۃ ہے جو ان ثالثاً) وهو (۲) التاسع عشر قصر الحكم على الملاقي | چند قطروں تک محدود ہے، مگر یہ چیز قطعاً باطل ہے، تو معلوم ہوا يحيل الاستعمال، ويسلكه في سلك المحال، وذلك | کہ سارے کا سارا ملاقی ہے اور اس کے سوا چارہ کار نہیں کہ یہ کہا لان الاجسام لاتتلاقى الا بالسطوح لاستحالة

| جائے کہ غیر مُلاقی ، مُلاقی سے زیادہ ہے۔ (ت) تداخل الاجسام واني يقع السطح من الجسم فماء | ثالثاً: یہی (انیسواں) ہے حکم کا محض مُلاقی تک محدود رکھنا استعمال الوضوء والغسل يجب ان يبقى طهور الان الذى | کو محال کرنا ہے کیونکہ اجسام کی ملاقاۃ صرف سطوح سے ہوتی لاقى منه بدن المحدث سطح والباقى جسم فلا | ہے، کیونکہ اجسام میں تداخل محال ہے اور سطح کو جسم سے کتنی يسلبه الطهورية لان المستعمل | نسبت ہے؟ تو وضو اور غسل کا پانی واجب ہے کہ طہور ہے کیونکہ | پانی کے جس حصے کو مُحدث کا بدن ملا ہے وہ فقط سطح ہے اور باقی | جسم ہے تو وہ اس کی طہوریت کو سلب نہ کرے گا، کیونکہ مستعمل، | اپنے غیر سے

(The amount of water) is much less compared to others. If it is said: "Yes, this is the reality, but the purified Sharia considers all the water poured over the body of a person in a state of ritual impurity (muhdith) as 'used' (must'amal) because it is a single, continuous entity."

I say: Likewise, every small amount of water is, by legal decree (shari'i), a single entity and is physically continuous as well. This continuity in the poured water is not because of the act of pouring, but because of its small quantity. Do you not see that the entire water in a cistern becomes impure simultaneously if a single drop of filth falls into it? This is only because it is a single entity; contact with one part of it is contact with the whole, as we have explained. Therefore, when a person in ritual impurity puts their hand into a vessel, it comes into contact with all the water in the vessel, not just the surface in contact with the hand.

This is the intended point. If it is said: "The factor that makes water 'used' is the act of pouring, and since pouring makes all the poured water 'used', therefore the whole of it will be considered used."

I say: According to us, the action of the person (mukallaf) has no role. The effective factor is solely that, in Sharia, a small amount of water is considered a single thing, whether it discharges an obligation (fard) or earns proximity (qurbah). This is present in both cases.

Fourthly, and this is the twentieth (case): If there is water in a basin and a person in ritual impurity intends to wash their hand with it, there are two ways: either they pour the water over their hand, so the water encounters the impurity (hadath), or they dip their hand into the basin, so the impurity (hadath) encounters the water.

(पानी की मात्रा) दूसरों की तुलना में बहुत कम है। यदि यह कहा जाए: "हाँ, वास्तविकता तो यही है, लेकिन शरीयत-ए-मुतहरा ने उस पूरे पानी को जो मुहदिथ (अशुद्ध अवस्था वाले व्यक्ति) के शरीर पर बहाया गया है, 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) माना है क्योंकि वह एक ही वस्तु है और आपस में जुड़ी हुई है।"

मैं कहता हूँ: इसी तरह, हर थोड़ा पानी शरीयत के हुक्म के अनुसार एक ही चीज़ है और शारीरिक रूप से भी आपस में जुड़ा हुआ है। और बहाए गए पानी में यह जुड़ाव (मत्तसिल होना) उसके बहाने के कारण नहीं है, बल्कि उसकी कम मात्रा के कारण है। क्या आप नहीं देखते कि तालाब का सारा पानी एक साथ नापाक हो जाता है जब उसमें गंदगी की एक बूंद गिरती है? और यह केवल इसलिए है क्योंकि वह एक ही चीज़ है; उसके एक हिस्से से मिलना पूरे पानी से मिलने के समान है जैसा कि हमने स्पष्ट किया है। अतः जब कोई मुहदिथ अपना हाथ बर्तन में डालता है, तो उसका संपर्क बर्तन के पूरे पानी से हो जाता है, न कि केवल हाथ से सटे हुए पानी की सतह से।

यही उद्देश्य है। यदि कहा जाए: "उपयोग में प्रभावी कारक (मुअस्सिर) बहाना है, और चूंकि बहाने से पूरा बहाया गया पानी मुस्तअमल गिना जाता है, इसलिए वह पूरा मुस्तअमल हो जाएगा।"

मैं कहूँगा: हमारे निकट मुकल्लफ़ (व्यक्ति) के कार्य का कोई दखल नहीं है। प्रभावी कारक तो केवल यह है कि शरीयत में थोड़ा पानी एक ही चीज़ माना जाता है, चाहे वह फर्ज़ को साक़ित (पूरा) करे या कुर्बत (पुण्य) का कार्य हो, और यह दोनों स्थितियों में प्राप्त है।

चौथी बात और यह बीसवाँ (मसला) है: यदि एक तश्त (बड़े बर्तन) में पानी है और मुहदिथ उससे अपना हाथ धोना चाहता है, तो उसके दो तरीके हैं: एक तो यह कि वह पानी को अपने हाथ पर बहाए, तो पानी हदस (अशुद्धि की स्थिति) पर गिरेगा, या अपना हाथ तश्त में डाल दे, तो हदस पानी पर गिरेगा।

पृष्ठ 168 का 711

بہت کم ہے۔ اگر کہا جائے کہ حقیقتہً تو ایسا ہی ہے لیکن شریعتِ مطہرہ نے کل پانی کو جو محدث کے جسم پر بہایا گیا ہے مستعمل قرار دیا ہے کیونکہ وہ شیئ واحد ہے اور متصل ہے۔

میں کہتا ہوں اسی طرح ہر تھوڑا پانی حکم شرعی کے اعتبار سے شیئ واحد ہے اور حسّی اعتبار سے متصل ہے اور یہ چیز بہائے پانی میں بہانے کی وجہ سے نہیں ہے بلکہ اس کی قلت کی وجہ سے ہے، اس لئے تالاب کا کل پانی بیک وقت ناپاک ہو جاتا ہے جبکہ اس میں نجاست کا کوئی قطرہ گر جائے، اور یہ اسی لئے ہے کہ وہ شئے واحد کی طرح ہے، اس کے ایک جزء سے ملاقات کل سے ملاقات ہے، جیسا کہ ہم نے بیان کیا تو جب محدث نے اپنا ہاتھ برتن میں ڈالا تو برتن میں جو کچھ تھا اُس سے ہاتھ کی ملاقات ہو گئی، یہ نہیں کہ صرف اس کی متصل سطح سے ملاقات ہوئی اور اسی میں مقصود ہے، اگر کہا جائے کہ استعمال میں مؤثر بہانا ہے تو کل بہایا ہوا مستعمل شمار ہوگا تو کل مستعمل ہوگا۔

تو میں کہوں گا ہمارے نزدیک مکلف کے فعل کا کوئی دخل نہیں، مؤثر تو صرف یہ ہے کہ تھوڑا پانی شرعاً ایک شئے ہے خواہ وہ فرض کو ساقط کرے یا قربت ادا کرے اور یہ دونوں صورتوں میں حاصل ہے۔

اور رابعاً اور یہی (بیسواں) ہے، اگر ایک طشت میں پانی ہے اور محدث یہ چاہتا ہے کہ اس سے اپنا ہاتھ دھوئے، تو اس کے دو طریقے ہیں ایک تو یہ کہ اس کو ہاتھ پر بہائے تو پانی حَدث پر واقع ہوگا اور یا یہ کہ ہاتھ کو طشت میں ڈال دے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 2

If he pours all of it over his hand, it becomes entirely used (musta'mal) definitively, by the consensus of our companions, even if some of it would have sufficed him and he has been extravagant. But there is no way to say that only the amount that sufficed him was used and the rest remained in its state of purifying power (tahuriyyah). Similarly, when he dipped his hand into the entire water and washed it there; what is the difference between the two? Success is from Allah.

Fifthly, I say, and success is from Allah (1) and this is the twenty-first [point]: 'Usage' (isti'mal) is passive, meaning the process of water becoming 'used' (musta'mal) cannot be established for what meets the body of the person in a state of ritual impurity (muhdith), and that is the internal surface of the water. This is because 'usage' is the loss of purifying power (tahuriyyah), so it can only be established in what was purifying (tahur). Just as death only occurs to what is alive. It is known that purifying power (tahuriyyah) is an attribute of the substance of water. Allah Almighty said: 'And We sent down from the sky pure water' [1] and the Blessed and Exalted said: 'And He sends down upon you water from the sky that He may purify you with it' [2]. It is not an attribute of one of its sides which has no existence except by extraction, assuming the connection of bodies. Nor in washing (ghusl) is it an attribute of a side that is indivisible, because washing is a flowing (isala), and there is no flowing except with a body. Otherwise, how would it be distinguished from wiping (mash)? In other words, is the usage of water its unsuitability for wudu or the falling...

---

1. Al-Quran 25/48
2. Al-Quran 8/11

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

यदि वह सारा पानी अपने हाथ पर बहा दे, तो हमारे साथियों (विद्वानों) की सर्वसम्मति से वह निश्चित रूप से 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, भले ही उसका कुछ हिस्सा ही उसके लिए पर्याप्त होता और उसने फिजूलखर्ची की हो। लेकिन यह कहने की कोई गुंजाइश नहीं है कि केवल वही मात्रा इस्तेमाल हुई जो उसके लिए पर्याप्त थी और शेष अपनी शुद्धता (तहूरियत) पर रहा। इसी तरह जब उसने अपना हाथ पूरे पानी में डाल दिया और उसे वहीं धो लिया; तो उन दोनों के बीच क्या अंतर है? सफलता अल्लाह की ओर से है।

पाँचवाँ, मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह से है (1) और यह इक्कीसवाँ (बिंदु) है: 'इस्तेमाल' (इस्तिआमाल) का अर्थ है पानी का मुस्तअमल हो जाना। यह उस चीज़ के लिए साबित होना मुमकिन नहीं है जो अशुद्ध व्यक्ति (मुहद्दिस) के शरीर को छूती है, और वह पानी की आंतरिक सतह है। क्योंकि इस्तेमाल का मतलब 'तहूरियत' (पवित्र करने की शक्ति) का छिन जाना है, तो यह उसी चीज़ में साबित होगा जो 'तहुर' (पवित्र करने वाला) हो। जैसे मौत उसी चीज़ पर आती है जो जीवित हो। और यह ज्ञात है कि तहूरियत पानी के पिंड (जिस्म) का एक गुण है। अल्लाह तआला ने फरमाया: 'और हमने आसमान से पाक पानी बरसाया' [1] और उसने फरमाया: 'और वह तुम पर आसमान से पानी बरसाता है ताकि तुम्हें उसके माध्यम से पवित्र करे' [2]। यह इसके किसी एक किनारे का गुण नहीं है जिसका अस्तित्व केवल कल्पना मात्र है, जब पिंडों के जुड़ाव को मान लिया जाए। और न ही ग़ुस्ल (स्नान) में यह किसी ऐसे किनारे का गुण है जिसे विभाजित न किया जा सके, क्योंकि ग़ुस्ल का अर्थ पानी का बहाना (इसाला) है, और बहाना केवल पिंड (जिस्म) के द्वारा ही होता है। अन्यथा, यह 'मसह' (पोंछने) से कैसे अलग होगा? दूसरे शब्दों में, क्या पानी का इस्तेमाल उसके वूज़ू के लिए अनुपयुक्त होने या गिरने...

---

1. अल-कुरान 25/48
2. अल-कुरान 8/11

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

فان صبه کله علی یده یصیر کله مستعملا قطعاً باجماع اصحابنا وان کان یکفیه بعضہ وقد اسرف لکن لا مساغ لان یقال انما استعمل قدر ما یکفیہ والفضل بقی علی طهوریتہ فکذا اذا ادخل یده فی کلہ وغسلها هناک وای فرق بینهما وباللہ التوفیق۔

تو حَدث پانی پر وارد ہو جائیگا تو اگر سب ہاتھ پر بہایا تو کل قطعاً مستعمل ہو جائیگا، اس پر ہمارے اصحاب کا اجماع ہے اگرچہ اس کو بعض کفایت کرتا، اور اس نے اسراف کیا مگر یہ کہنے کا جواز نہیں کہ صرف اتنی مقدار مستعمل ہوئی جو اس کو کفایت کرتی اور باقینا ندہ اپنی طہوریت پر رہا تو اسی طرح جب اس نے اپنا ہاتھ سب پانی میں داخل کیا اور اس کو وہاں دھویا، اور ان دونوں میں کیا فرق ہے؟ وباللہ التوفیق۔

و خامسا اقول: وباللہ التوفیق (۱) وهو الحادی والعشرون : الاستعمال مبنیا للمفعول ای صیرورة الماء مستعملا لایمکن ثبوتہ لا یلاقی بدن المحدث وهو سطح الماء الباطن لان الاستعمال انسالب الطهوریہ فلا یثبت الافما کان طهورا کما ان الموت لایلحق الاما کان حیا ومعلوم ان الطهوریہ صفة جرم الماء قال اللہ عزوجل "وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا" وقال تبارک وتعالی وَیُنَزِّلُ عَلَیْکُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّیُطَهِّرَکُمْ بِهٖ لاصفة احدا اطرافہ التی لاوجود لها الا بالانتزاع علی فرض اتصال الاجسام ولا فی الغسل صفة طرف لا یتجزی لانہ اسالة ولا اسالة الا بالجسم والا ففیم یمتاز عن المسح، وبعبارة اخری هل استعمال الماء عدم صلوحه للتوضی به ام سقوط

اور خامساً میں کہتا ہوں، وباللہ التوفیق، اور یہ (اکیسواں) ہے، استعمال بنی للمفعول ہے یعنی پانی کے مستعمل ہونے کا ثبوت ممکن نہیں ہے اس چیز کیلئے جو بدن محدث کو ملاقی ہو اور وہ باطنی

پانی کی سطح ہے اس لئے کہ استعمال کے بعد طہوریت کا سلب ہو جانا ہے تو یہ اسی چیز میں ثابت ہوگا جو طہور ہو، جیسے موت اسی چیز پر طاری ہوتی ہے جو زندہ ہو اور یہ معلوم ہے کہ طہوریت پانی کے جسم کی صفت ہے، اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے "وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا" (ہم نے آسمان سے پاک پانی برسایا) نیز فرمایا "وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ" (وہ آسمان سے تم پر پانی برساتا ہے تاکہ تم کو اسی سے پاک کرے) یہ اس کی کسی طرف کی صفت نہیں ہے جس کا وجود محض انتزاعی ہے جبکہ اجسام کا اتصال فرض کیا جائے، اور نہ ہی غسل میں کسی طرف کی صفت ہے جس میں تجزی نہ ہو، اس لئے کہ غسل کا معنی

---

1 القرآن ۲۸/۲۵ 2 القرآن ۱۱/۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

(Arabic Text Column): Correcting after its proof on the first case: the contacting part was 'used' (must’amal) before contact, because ablution (wudu) is not possible with just a surface. According to the second case, the contacting part never becomes 'used' because it was never suitable for it at all. From this, it becomes clear—and praise be to Allah (1)—that in the issues of a person in a state of ritual impurity (muhdith) immersing themselves, and many branches (legal cases) stating that water becomes 'used' by the entry of some limb of the muhdith without necessity, diverting the whole meaning to say that only the portion contacting the body becomes 'used' and not the rest of the well water or the pitcher (or pool), as done in 'al-Hilyah' arguing from what appeared in 'al-Bada’i' and followed by 'al-Bahr' in 'al-Bahr', is a futile diversion with no justification at all. In it is the invalidation of clear texts circulating in manifest narrations from all the Imams of the school (Madhhab), may Allah be pleased with them, where they ruled it as 'used'. Diverting it resulted in 'non-usage'. If it were correct to interpret affirmation with negation and opposite with opposite, then this would be correct (3). This—and may Allah have mercy on the author of 'al-Bahr'—as he admitted the truth in 'al-Bahr' that this interpretation is not an interpretation but rather a change of the ruling and a conversion, where he expressed it under 'jahat' by saying that well water does not become 'used' absolutely... etc. This is the true meaning of that interpretation, and there is no justification for what he turned to, that 'used' is what falls off the limbs and it is overcome, for what falls off has also not contacted, rather only the surface has contacted, and it does not accept usage.

(Urdu Text Column): ...is to flow water, and flowing will be on the body, otherwise how would bathing (ghusl) be distinguished from wiping (mash)? In other words, does the water being 'used' mean that it no longer has the capacity to be used for wudu? Or was the capacity lost after being established? In the first case, the contacting part will be 'used' before it even makes contact because wudu from a surface is impossible. In the second scenario, the contacting part will never be 'used' because it never had that capacity in it. From this, it is known that the immersion of a muhdith, and many other subsidiary cases from which it is known that without necessity, any limb of a muhdith entering water makes the water 'used', without needing to divert to the meaning that only as much water as touched the body is 'used' and not the remaining water of the well or pond. This is as done in 'al-Hilyah'; they argued from the text of 'al-Bada’i', and the researcher followed it in 'al-Bahr'. But there is no

justification for it, and it invalidates clear texts which are apparent narrations from all the Imams of the school, as all of them ruled it as 'used'. This interpretation suggests the water is not 'used'. If affirming can be interpreted as negation and an opposite as its opposite, then this would also be correct. The learned researcher in 'al-Bahr' has spoken fairly, stating that this is not an interpretation but a change of ruling, because...

(Footnote): 1- Al-Bahr al-Ra’iq, Kitab al-Taharat, Mas'ala al-Bi’r, Vol. 1, p. 98, H.M. Saeed Company, Karachi. Page 170 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

(अरबी पाठ स्तंभ): पहली स्थिति पर इसके प्रमाण के बाद इसे सुधारना: संपर्क करने वाला भाग संपर्क से पहले 'इस्तेमाल किया हुआ' (मुस्तअमल) था, क्योंकि केवल सतह से वज़ू संभव नहीं है। दूसरी स्थिति के अनुसार, संपर्क करने वाला भाग कभी भी 'इस्तेमाल किया हुआ' नहीं बनता क्योंकि वह इसके लिए कभी उपयुक्त था ही नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है—और अल्लाह का शुक्र है (1)—कि मुस्तअमल (अशुद्ध अवस्था में व्यक्ति) के डूबने के मुद्दों और कई शाखाओं (कानूनी मामलों) में यह कहा गया है कि बिना आवश्यकता के मुस्तअमल के किसी अंग के प्रवेश करने से पानी 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाता है। इस पूरे अर्थ को इस ओर मोड़ना कि केवल शरीर के संपर्क में आने वाला हिस्सा ही 'इस्तेमाल किया हुआ' होगा न कि कुएं या घड़े (या तालाब) का बाकी पानी, जैसा कि 'अल-हिल्या' में किया गया है, 'अल-बदाइ' में जो कुछ आया है उससे तर्क करते हुए और 'अल-बहर' ने जिसका अनुसरण किया है, वह एक व्यर्थ मोड़ है जिसका कोई औचित्य नहीं है। इसमें मज़हब के सभी इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के स्पष्ट ग्रंथों का खंडन है, क्योंकि उन्होंने इसे 'इस्तेमाल किया हुआ' माना है। इस अर्थ को मोड़ने से यह परिणाम निकला कि यह 'इस्तेमाल किया हुआ' नहीं है। यदि सकारात्मक की व्याख्या नकारात्मक से और विपरीत की व्याख्या विपरीत से करना सही होता, तो यह भी सही होता (3)। यह—और अल्लाह 'अल-बहर' के लेखक पर दया करे—क्योंकि उन्होंने 'अल-बहर' में सत्य को स्वीकार किया कि यह व्याख्या व्याख्या नहीं है बल्कि हुक्म (नियम) का परिवर्तन और रूपांतरण है, जहाँ उन्होंने 'जहत' के तहत यह कहा कि कुएं का पानी पूर्ण रूप से 'इस्तेमाल किया हुआ' नहीं होता... आदि। यही उस व्याख्या का वास्तविक अर्थ है, और उस चीज़ का कोई औचित्य नहीं है जिसकी ओर वे मुड़े कि 'इस्तेमाल किया हुआ' वह है जो अंगों से गिरता है और वह पराजित है, क्योंकि जो गिरता है उसने भी संपर्क नहीं किया है, बल्कि केवल सतह ने संपर्क किया है, और वह उपयोग स्वीकार नहीं करती है।

(उर्दू पाठ स्तंभ): ...बहाना है और बहाना शरीर पर ही होगा, अन्यथा स्नान (गुस्ल) पोंछने (मसह) से कैसे अलग होगा? दूसरे शब्दों में, क्या पानी के'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) होने का अर्थ यह है कि उसमें अब वज़ू करने की क्षमता ही नहीं रही? या क्षमता स्थापित होने के बाद समाप्त हो गई? पहली स्थिति में, संपर्क करने वाला भाग संपर्क से पहले ही मुस्तअमल होगा क्योंकि सतह से वज़ू संभव नहीं है। और दूसरी स्थिति में, संपर्क करने वाला भाग कभी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि उसमें कभी वह क्षमता थी ही नहीं। इससे पता चला कि मुस्तअमल (अशुद्ध अवस्था वाला व्यक्ति) का गोता

लगाना, और कई अन्य उप-शाखाएं जिनसे पता चलता है कि बिना आवश्यकता के मुस्तअमल के किसी भी अंग के पानी में प्रवेश करने से पानी मुस्तअमल हो जाता है, इस अर्थ की ओर मोड़ने की आवश्यकता के बिना कि जितना पानी शरीर से मिला है वह मुस्तअमल होगा न कि कुएं का बाकी पानी या तालाब का बाकी पानी। जैसा कि 'हिल्या' में किया गया है, उन्होंने 'बदाइ' की इबारत से तर्क किया है, और शोधकर्ता ने 'बहर' में उसका अनुसरण किया है। लेकिन इसका कोई औचित्य नहीं है, और इसमें उन स्पष्ट ग्रंथों का खंडन है जो मज़हब के सभी इमामों से ज़ाहिर रिवायत में हैं, क्योंकि उन सबने मुस्तअमल होने का हुक्म दिया है। और यह अर्थ निकालने से ज़ाहिर होता है कि पानी मुस्तअमल नहीं है। यदि सकारात्मक की व्याख्या नकारात्मक से और विपरीत की व्याख्या विपरीत से हो सकती है, तो यह भी सही है। अल्लामा शोधकर्ता ने 'बहर' में निष्पक्ष बात कही है और फरमाया है कि यह व्याख्या नहीं बल्कि हुक्म की तब्दीली है, क्योंकि...

(पादलेख): 1- अल-बहर अल-राइक़, किताब अत-तहारत, मसला अल-बिअर, जिल्द 1, पेज 98, एच.एम. सईद कंपनी, कराची। पृष्ठ 170 / 711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

(عربی متن): الصلوح بعد ثبوته على الاول كان الملاقى مستعملا قبل ان يلاقى لان السطح لا يمكن التوضى به وعلى الثانى لا يصير الملاقى مستعملا ابدا لانه لم يكن صالحا له قط، و به ظهر ولله الحمد (١) ان في مسائل انغماس المحدث والفروع الكثيرة الناطقة بصيرورة الماء مستعملا بدخول بعض عضو المحدث من دون ضرورة صرف الكل الى معنى ان القدر الملاقى للبدن يصير مستعملا لا بقية ماء البئر او الزير، (الغدير) كما فعله فى الحلية محتجا بما وقع فى البدائع وتبعه البحر فى البحر صرف ضائع لا مساغ له اصلا وفيه (٢) ابطال صرائح النصوص الدائرة السائرة فى الروايات الظاهرة عن جميع ائمة المذهب رضى الله تعالى عنهم حيث حكموا بالاستعمال وحصل بالصرف ان لا استعمال فان صح تاويل الاثبات بالنفى والنقيض بالنقيض صح (٣) هذا ورحم الله البحر حيث صدر منه فى البحر الاعتراف بالحق ان هذا التاويل ليس بتاويل بل تبديل للحكم وتحويل حيث عبر عنه تحت جحط بقوله ان ماء البئر لا يصير مستعملا مطلقاً ١ــالخ۔ فهذا هو معنى ذلك التاويل حقيقة ولا مساغ لما انصرف اليه ان المستعمل ما تساقط عن الاعضاء وهو مغلوب فان ما تساقط لم يلاق ايضا انما الملاقى سطح وهو لا يقبل الاستعمال۔

(اردو متن): بہانا ہے اور بہانا جسم پر ہی ہو گا ورنہ غسل مسح سے کیونکر ممتاز ہوگا؟ اور بالفاظ دیگر ، آیا پانی کے مستعمل ہونے کے معنی یہ ہیں کہ اس میں اس بات کی صلاحیت ہی نہیں ہے کہ اس سے وضو کیا جا سکے ؟ یا صلاحیت ثابت ہونے کے بعد ساقط ہوئی ؟ پہلی صورت میں ملاقی مستعمل ہوگا قبل اس کے کہ ملاقات کرے کیونکہ سطح سے وضو ممکن نہیں اور دوسری تقدیر پر ملاقی کبھی مستعمل نہ ہوگا کیونکہ اس میں اس کی صلاحیت کبھی نہ تھی، اور اس سے معلوم ہوا کہ مُحدِث کا غوطہ لگانا، اور بہت سی فروع جن سے معلوم ہوتا ہے کہ بغیر ضرورت

محدث کے کسی بھی عضو کے پانی میں داخل ہو جانے سے پانی مستعمل ہو جاتا ہے بغیر اس معنی کی طرف پھیرنے کی ضرورت کے کہ جس قدر پانی بدن سے ملا ہے وہ مستعمل ہوگا نہ کہ کنویں کا باقی پانی یا تالاب کا باقی پانی، جیسا کہ حلیہ میں کیا ہے، انہوں نے بدائع کی عبارت سے استدلال کیا ہے ، اور محقق نے بحر میں اس کی متابعت کی ہے۔ مگر اس کا کوئی جواز نہیں، اور اس میں صریح نصوص جو تمام ائمہ مذہب سے ظواہر روایت میں ہیں، کا ابطال ہے کہ ان سب نے استعمال کا حکم لگایا ہے اور یہ معنی کرنے سے ظاہر ہوتا ہے کہ پانی مستعمل نہیں ، اگر اثبات کی تاویل نفی سے اور نقیض کی نقیض سے ہو سکتی ہے تو یہ بھی صحیح ہے ، علامہ محقق نے بحر میں منصفانہ بات کہی ہے اور فرمایا ہے کہ یہ تاویل نہیں بلکہ حکم کی تبدیلی ہے ، کیونکہ

(حاشیہ): 1- بحر الرائق کتاب الطہارت مسلۂ البئر جط ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱ صفحہ 170 از 711

Fatawa Rizwia Volume 2

[Arabic Text - Left Column]: Sixthly: (1) And it is the twenty-second [point]: What his holiness mentioned regarding the school of thought of the Imam (may Allah be pleased with him) and from the obligation of draining all the water, it demolishes the basis of the difference between physical impurity (Najasa al-Ayniyya) and ritual impurity (Hadath). For there is nothing on the body of a person in a state of ritual impurity that mixes with the pure [water] in a way that makes distinction impossible. Rather, only that which comes into contact with it becomes impure. You have restricted it to what is connected to his body, so it was obligatory that only that part becomes impure. The mixing of adjacent water with the rest of it is countered by what you mentioned in the difference between the mouse and the cat. It does not spread based on your benefit that the impure is the neighbor of the impure, not the neighbor's neighbor. However, the Imam made draining all of it mandatory, so it becomes necessary to say that what came into contact is all the water. Thus, just as all of it becomes impure according to the Imam in what is narrated from him, similarly, the purifying quality (Tahuriyah) is removed from all of it according to his relied-upon and fatwa-given school of thought, because the cause is present in all of it. In other words, as his holiness said regarding the narration of al-Hasan about the difference between a person in a state of minor impurity (Muhdith) and major impurity (Junub), we say here: Does the falling of a person in a state of minor impurity into the well establish contact for all the water or not? If not, why was draining everything made mandatory? For you have benefited [us] that adjacency does not transcend. And if yes, then the purpose is achieved. In short, here...

[Urdu Text - Right Column]: Under the discussion of 'Habt' (immersion), he stated that "well water will not become used (Musta'mal) absolutely... etc." These are the true meanings of this interpretation, and what he said has no justification. He says that the 'used' water is what fell from the limbs and it was overcome because what fell had no contact, for contact is only with the surface and it [surface] does not accept usage. And twenty-sixthly (and it is the twenty-second) which his holiness mentioned on the Imam's school of thought that all water will be taken out, it demolishes the foundation of the difference between physical impurity and ritual impurity. For in the body of a person in a state of minor ritual impurity (Muhdith), there is nothing that would mix with the pure in such a way that distinction is impossible. Only that which comes into contact with it becomes impure. You have restricted it to what meets his body, so it should be that only that becomes impure. The mixing of this water that is

attached to the rest of the body is countered by the difference you stated regarding the cat and the mouse, and it will not spread because you said that the impure is the neighbor of the impure, not the neighbor of the neighbor. However, the Imam has declared the removal of all water as necessary, so this statement made it necessary that all the water is what was contacted. In this case, as all the water becomes impure according to the Imam as narrated from him, similarly, the purifying quality will be stripped from all the water as is his relied-upon school of thought for the Mufti, because the cause is present in all. In other words, as his holiness stated according to the narration of Hasan, there is a difference between a person in minor impurity (Muhdith) and major impurity (Junub). Similarly, we say: will the falling of a Muhdith into a well establish contact with all the water or not? And on the second possibility, why is the removal of all the water from the well necessary?

फ़तावा रज़विया खंड 2

[अरबी पाठ - बायां कॉलम]: छठा: (1) और यह बाईसवां [बिंदु] है: जो उनकी पवित्रता ने इमाम (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के मत के संबंध में उल्लेख किया है और सारा पानी निकालने की अनिवार्यता से, यह शारीरिक अशुद्धता (नजासत ऐनिया) और अनुष्ठानिक अशुद्धता (हदस) के बीच के अंतर के आधार को ध्वस्त कर देता है। क्योंकि अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध व्यक्ति (मुहद्दिस) के शरीर पर ऐसा कुछ भी नहीं है जो शुद्ध [पानी] के साथ इस तरह मिल जाए कि भेद करना असंभव हो। बल्कि, केवल वही अशुद्ध होता है जो उसके संपर्क में आता है। आपने इसे उसके शरीर से जुड़े होने तक सीमित कर दिया है, इसलिए यह अनिवार्य था कि केवल वही भाग अशुद्ध हो। शेष पानी के साथ बगल के पानी के मिश्रण का मुकाबला चूहे और बिल्ली के बीच के अंतर में आपके द्वारा बताए गए अंतर से होता है। यह आपके इस लाभ के आधार पर नहीं फैलता है कि अशुद्ध वह है जो अशुद्ध का पड़ोसी है, न कि पड़ोसी का पड़ोसी। हालाँकि, इमाम ने सारा पानी निकालना अनिवार्य कर दिया है, इसलिए यह कहना आवश्यक हो जाता है कि जो संपर्क में आया वह सारा पानी है। इस प्रकार, जिस तरह इमाम के अनुसार उनके बारे में जो वर्णित है, उसमें सारा पानी अशुद्ध हो जाता है, उसी तरह उनके विश्वसनीय और फतवा दिए गए मत के अनुसार सभी से शुद्धिकरण का गुण (तहुरियाह) हटा दिया जाता है, क्योंकि कारण सभी में मौजूद है। दूसरे शब्दों में, जैसा कि उनकी पवित्रता ने हसन के वर्णन के संबंध में छोटी अशुद्धता (मुहद्दिस) और बड़ी अशुद्धता (जुनुब) की स्थिति वाले व्यक्ति के बीच के अंतर के बारे में कहा था, हम यहाँ कहते हैं: क्या कुएं में छोटी अशुद्धता की स्थिति वाले व्यक्ति के गिरने से सारा पानी संपर्क में आता है या नहीं? यदि नहीं, तो सब कुछ निकालना अनिवार्य क्यों किया गया? क्योंकि आपने [हमें] लाभान्वित किया है कि निकटता पार नहीं करती है। और यदि हाँ, तो उद्देश्य सिद्ध हो जाता है। संक्षेप में, यहाँ...

[उर्दू पाठ - दायां कॉलम]: 'हब्त' (डूबने) की चर्चा के तहत, उन्होंने कहा कि "कुएं का पानी बिल्कुल भी प्रयुक्त (मुस्तअमल) नहीं होगा... आदि।" ये इस व्याख्या के वास्तविक अर्थ हैं, और जो उन्होंने कहा उसका कोई औचित्य नहीं है। वे कहते हैं कि 'प्रयुक्त' पानी वह है जो अंगों से गिरा और वह पराजित हो गया क्योंकि जो गिरा उसका कोई संपर्क नहीं था, क्योंकि संपर्क केवल सतह से होता है और वह [सतह] उपयोग को स्वीकार नहीं करती है। और छठा (और यह बाईसवां है) जिसका उल्लेख उनकी पवित्रता ने इमाम के मत पर किया है कि सारा पानी निकाल लिया जाएगा, यह शारीरिक अशुद्धता और अनुष्ठानिक अशुद्धता के बीच के अंतर की नींव को ध्वस्त कर देता है।

क्योंकि मामूली अनुष्ठानिक अशुद्धता (मुहद्दिस) की स्थिति वाले व्यक्ति के शरीर में ऐसा कुछ भी नहीं है जो शुद्ध के साथ इस तरह मिल जाए कि भेद करना असंभव हो। केवल वही जो उसके संपर्क में आता है अशुद्ध हो जाता है। आपने इसे उसके शरीर से मिलने तक सीमित कर दिया है, इसलिए यह होना चाहिए कि केवल वही अशुद्ध हो। शरीर के बाकी हिस्सों से जुड़े इस पानी के मिश्रण का मुकाबला बिल्ली और चूहे के संबंध में आपके द्वारा बताए गए अंतर से किया जाता है, और यह फैलेगा नहीं क्योंकि आपने कहा था कि अशुद्ध अशुद्ध का पड़ोसी है, न कि पड़ोसी का पड़ोसी। हालाँकि, इमाम ने सारा पानी निकालना आवश्यक घोषित किया है, इसलिए इस कथन ने यह आवश्यक बना दिया कि सारा पानी वही है जिससे संपर्क हुआ था। इस मामले में, जैसा कि इमाम के अनुसार सारा पानी अशुद्ध हो जाता है जैसा कि उनसे वर्णित है, उसी तरह मुफ्ती के लिए उनके विश्वसनीय मत के अनुसार सभी पानी से शुद्धिकरण का गुण छीन लिया जाएगा, क्योंकि कारण सभी में मौजूद है। दूसरे शब्दों में, जैसा कि उनकी पवित्रता ने हसन के वर्णन के अनुसार कहा था, एक मुहद्दिस और एक जुनुब के बीच अंतर है। इसी तरह, हम कहते हैं: क्या कुएं में मुहद्दिस के गिरने से सारा पानी संपर्क स्थापित होगा या नहीं? और दूसरी संभावना पर, कुएं से सारा पानी निकालना क्यों आवश्यक है?

पृष्ठ 171/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی متن - بایاں کالم]: وسادسا: (١) وهو الثاني والعشرون: ماذكر قدس سره على مذهب الامام رضى الله تعالى عنه ومن وجوب نزح الماء كله يهدم اساس الفرق بين النجاسة العينية والحدث اذليس فى بدن المحدث مايختلط بالطاهر على وجه لايمكن التمييز وانما يتنجس مايلاقى وقد قصرتموه على ما اتصل ببدنه فكان يجب ان لايتنجس الا هو واختلاط ماجاوره من الماء بسائره يدفعه ماذكرتم فى الفرق بين الفأر والهر ولا يسرى لما افدتم من ان النجس هو جار النجس لاجار الجار لكن الامام اوجب نزح الكل فوجب القول بان الملاقى كل الماء واذن كما يتنجس كله عند الامام فيما يروى عنه كذلك تنسلب الطهورية عن كله على مذهبه المعتمد المفتى به لحصول السبب فى الكل، وبعبارة اخرى كما قال قدس سره على رواية الحسن الفرق بين المحدث والجنب كذلك نقول هنا ان بوقوع المحدث فى البئر هل ثبت اللقاء للماء كله اولا على الثانى لم وجب نزح الجميع فقد افدتم ان الجوار لايتعدى وعلى الاول حصل المقصود وبالجملة هنا

[اردو متن - دایاں کالم]: حبط کے تحت انہوں نے فرمایا کہ "کنوئیں کا پانی مستعمل نہ ہوگا مطلقاً... الخ" یہ ہیں اس تاویل کے حقیقی معنی، اور جو انہوں نے فرمایا ہے اس کا کوئی جواز نہیں۔ وہ فرماتے ہیں مستعمل وہ ہے جو اعضاء سے گرا اور وہ مغلوب تھا کیونکہ جو گرا اس کی ملاقات نہ ہوئی تھی ملاقات تو صرف سطح سے ہے اور وہ استعمال کو قبول نہیں کرتی ہے۔ اور ساوساً (اور وہ بائیسواں ہے) جو قدس سرہ نے مذہب امام پر ذکر کیا ہے کہ کل پانی نکالا جائے گا وہ نجاست عینیہ اور حدث کے فرق کی اساس کو منہدم کرتا ہے کہ بدن محدث میں کوئی ایسی چیز نہیں جو طاہر سے اس طور پر مل جائے کہ تمیز ممکن نہ ہو، اور نجس صرف وہ ہوتا ہے جو اُس سے ملاقی ہو اور تم نے اس کو صرف اُس پر منحصر رکھا ہے جو اُس کے بدن سے ملتا ہے تو چاہئے

کہ صرف وہی نجس ہو اور اس پانی کا اختلاط جو باقی بدن سے لگا ہے اس کو وہ فرق دفع کرتا ہے جو تم نے بلی اور چوہے میں بیان کیا ہے، اور وہ سرایت نہ کرے گا، کیونکہ آپ نے کہا ہے کہ نجس وہ ہے جو نجس کا پڑوسی ہے نہ کہ پڑوسی کا پڑوسی، لیکن امام نے کل پانی کے نکالنے جانے کو ضروری قرار دیا ہے تو یہ قول لازم ہوا کہ ملاقاتی کل پانی ہے، اور اس صورت میں جیسے کل پانی امام کے نزدیک نجس ہوتا ہے جیسا کہ ان سے مروی ہے اسی طرح طہوریت کل پانی سے سلب ہو جائے گی جیسا کہ ان کا مذہب معتمد مفتی بہ ہے کیونکہ سبب کل میں موجود ہے، اور بالفاظِ دیگر جیسا کہ قدس سرہ نے فرمایا حسن کی روایت کے مطابق فرق محدث اور جنب کے درمیان میں۔ اسی طرح ہم کہتے ہیں کہ محدث کے کنوئیں میں گرنے سے کیا کل پانی سے لقاء ثابت ہوگی یا نہیں؟ اور بر تقدیر ثانی کنوئیں کا کل پانی نکالنا کیوں

Volume Two, Fatawa-e-Razvia

...it became necessary because you stated that the permissibility is not transitive, and according to the first estimation, the objective was achieved. In summary, there are two things here: the cause (Sabab) and the ruling (Hukm). The cause is agreed upon, which is contact (mulaqat). The disagreement is only in the ruling, whether it is becoming impure (najasat) or the removal of purity (tahuriyat). If the cause is restricted only to what is in contact, then the ruling must also be restricted to it, whatever the ruling may be. If one of the two rulings encompasses all the water, then the existence of the cause in the whole will be established, and thus both rulings must encompass the whole. And success is with Allah.

Seventh Point (and it is the twenty-third): You stated that the water in contact with a mouse is twenty small buckets because its body is small. In the case of a chicken or a cat, the water in contact is more due to their greater size. And a human being is in contact with all the water usually because of the large size of their body. And you mentioned that this is subtle jurisprudence (fiqh-e-khafi). This is an explicit statement from you that a person in a state of minor ritual impurity (muhdith) who falls into a well is in contact with all the water. Therefore, it is necessary that all the water becomes 'used' (musta'mal). This refutes the saying that used water is only what touches him, which is less than the rest. Furthermore, water in a basin and many large pots does not reach twenty buckets, nor even ten. And a human palm is not smaller than a mouse. So when a person in a state of minor impurity dips their hand into a pot, it is mandatory that all of it becomes used. There is no room here to distinguish between the two types of impurities, essential (ayniyah) and legal/ritual (hukmiyah), for contact...

---

1. Bada'i al-Sana'i, the amount by which a place becomes impure, 7/51. Page 172 of 711

जिल्द सानी, फतावा-ए-रजविया

...लाज़िम हुआ क्योंकि आपने कहा है कि जवाज़ मुतअद्दी (संक्रामक) नहीं होता है और पहली तक़दीर पर मक़सूद हासिल हो गया। और खुलासा यह है कि यहाँ दो चीज़ें हैं, सबब और हुक्म। सबब तो मुत्तफ़िक़ अलैह (सहमत) है और वह मुलाक़ात (संपर्क) है और इख़्तलाफ़ (मतभेद) सिर्फ हुक्म में है और वह नापाक होना है या तहारत (पवित्रता) का छिन जाना है। अगर सबब मुत्तसिल (संपर्क वाले हिस्से) पर मौक़ूफ़ हो तो हुक्म का भी उस पर मक़सूद करना वाजिब होगा, जो भी हुक्म हो। और अगर एक हुक्म तमाम पानी को शामिल हो तो सबब कुल (पूरे) में होना साबित हो जाएगा तो दोनों हुक्मों का कुल को शामिल होना लाज़िम होगा। और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

सातवाँ बिंदु (और वह तेईसवाँ है): आपने फरमाया है कि चुहिया से मुत्तसिल बीस डोल पानी होता है क्योंकि उसका जिस्म छोटा है और मुर्गी और बिल्ली में उनकी ज़ख़ामत (मोटाई/आकार) की वजह से ज़ायद पानी मुत्तसिल होता है और आदमी अपने जस्सा (शरीर) के बड़े होने की वजह से कुल पानी के मुत्तसिल होता है। और आपने ज़िक्र किया कि यह फ़िक़्ह-ए-ख़फ़ी है। यह आपकी तरफ़ से इस अम्र (मामले) की सराहत (स्पष्टता) है कि जो मुहदिस (अशुद्ध अवस्था वाला व्यक्ति) कुएँ में गिरता है वह तमाम पानी के मुजावर (निकट/संपर्क में) होता है, तो लाज़िम है कि वह तमाम मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाए। और यह क़ौल ग़लत हुआ कि मुस्तअमल वह है जो उससे मिला हुआ है और वह उसके ग़ैर से अक़ल्ल (कम) है। और तश्त का पानी और बहुत से मटकों का पानी बीस डोल बल्कि दस डोल की मिक़दार तक नहीं होता और इंसान की हथेली चुहिया से छोटी नहीं होती, तो जब मुहदिस ने अपना हाथ मटके में डाला तो वाजिब है कि उसका कुल मुस्तअमल हो। और यहाँ कोई फ़र्क़ नहीं दो नजासतों के दरमियान ऐनिया और हुकमिया, क्योंकि मुजावरत...

---

1. बदाए अल-सनाए, वह मिक़दार जिससे जगह नापाक हो जाती है, 7/51. पृष्ठ 172/711

لازم ہوا کیونکہ آپ نے کہا ہے کہ جواز متعدی نہیں ہوتا ہے اور پہلی تقدیر پر مقصود حاصل ہو گیا۔ اور خلاصہ یہ کہ یہاں دو چیزیں ہیں ، سبب اور حکم۔ سبب تو متفق علیہ ہے اور وہ ملاقات ہے اور اختلاف صرف حکم میں ہے اور وہ ناپاک ہونا ہے یا طہوریت کا سلب ہونا ہے ، اگر سبب متصل پر موقوف ہو تو حکم کا بھی اس پر مقصود کرنا واجب ہوگا ، جو بھی حکم ہو، اور اگر ایک حکم تمام پانی کو شامل ہو تو سبب کل میں ہونا ثابت ہو جائے گا تو دونوں حکموں کا کل کو شامل ہونا لازم ہوگا، وباللہ التوفیق۔

ساتواں (اور وہ تئیسواں ہے) آپ نے کہا ہے کہ چوہیا سے متصل بیس ڈول پانی ہوتا ہے کیونکہ اس کا جسم چھوٹا ہے اور مرغی اور بلی میں ان کی ضخامت کی وجہ سے زائد پانی متصل ہوتا ہے اور آدمی اپنے جثہ کے بڑے ہونے کی وجہ سے کل پانی کے متصل ہوتا ہے اھ اور تم نے ذکر کیا ہے کہ یہ فقہ حنفی ہے، یہ تمہاری طرف سے اس امر کی صراحت ہے کہ جو محدث کنویں میں گرتا ہے وہ تمام پانی کے مجاور ہوتا ہے تو لازم ہے کہ وہ تمام مستعمل ہو ، اور یہ قول غلط ہوا کہ مستعمل وہ ہے جو اس سے ملا ہوا ہے اور وہ اس کے غیر سے اقل ہے اور طشت کا پانی اور بہت سے مٹکوں کا پانی بیس ڈول بلکہ دس ڈول کی مقدار تک نہیں ہوتا اور انسان کی ہتھیلی چوہیا سے چھوٹی نہیں ہوتی ، تو جب محدث نے اپنا ہاتھ مٹکے میں ڈالا تو واجب ہے کہ اس کا کل مستعمل ہو، اور یہاں کوئی فرق نہیں دو نجاستوں کے درمیان عینیہ والحکمیہ فان الجوار

---

1 بدائع الصنائع المقدار الذی یصیر بہ المحل نجساً ۷/۵۱ Page 172 of 711

...occurs between two bodies for their essence, and there is no entry in it for an attribute existing in one of them such that it varies by its variation. If it is said: The reality of adjacency is only for what is connected to the body, and it only spread to twenty [buckets] for a mouse, forty for a cat, and all for a human, because moisture separates from a corpse and varies according to the size of the carcasses. Malik al-Ulama said: It is necessary to deem all the water impure if something from these incidents decays or swells, because at that time moisture comes out of it due to softness in it, so it adjoins all parts of the water. Before that, it only adjoins the amount we mentioned due to hardness in it. Thus, the meaning of the adjacency of twenty, forty, and all is the adjacency of the moisture, not the carcass; the carcass only met what it met. I say: Then what you mentioned regarding a ritual impure person (muhdith) falling into a well is invalidated according to the Imam's view on the impurity of used water, due to the absence of moisture there that separates. The truth, as it appears to the weak servant—may he be forgiven—is that if the water is one continuous thing in reality, as the philosophers claim, then there is no doubt that the meeting of a part of it is the meeting of all of it, rather there is no "part" there due to the lack of...

...and in the legal ruling, because adjacency is obtained for the essences of two bodies and no attribute that resides with either of them has any involvement in it so that it would vary because of its variation. If it is objected that true adjacency is only for that which is connected with the body, and this permeates up to twenty buckets in the case of a mouse, forty in the case of a cat, and all the water in the case of a human falling, because moisture separates from a corpse and there is a difference according to the bodies. Malik al-Ulama said that if any of these things swells or bursts, then it is necessary to declare all the water impure, because in this state moisture will exit from these things due to their softness and will connect with all parts of the water, and before that it was only connected to the amount we mentioned because in that state these things were hard. So, by the adjacency of twenty, forty, or all, it means the adjacency of moisture and not the carcass; the carcass has met whatever it met. I say that on what you have said, this objection arises: if a ritual impure person falls into a well, then according to the Imam's view, the used water will become impure because there is no moisture present there that has separated from the person, and the truth that has become manifest to me is that

if water is one continuous entity in reality, as is the view of philosophers, then there is no doubt that meeting a part of it is meeting the whole.

---

1. Bada'i al-Sana'i, the amount by which a place becomes impure, Sa'eed Company Karachi, 1/51. Page 173 of 711

...दो शरीरों के बीच उनकी अस्ल (तत्व) के लिए होता है, और इसमें किसी ऐसे गुण का कोई प्रवेश नहीं है जो उनमें से किसी एक में मौजूद हो ताकि उसके बदलाव से इसमें बदलाव आए। यदि यह कहा जाए: सामीप्य (मजावरत) की वास्तविकता केवल उसी के लिए है जो शरीर से जुड़ा हो, और यह एक चुहिया के मामले में बीस [बाल्टी] तक, एक बिल्ली के लिए चालीस, और एक मनुष्य के लिए पूरे पानी तक फैल गया, क्योंकि एक शव से नमी अलग होती है और शवों के आकार के अनुसार भिन्न होती है। मलिक अल-उलमा ने कहा: यदि इनमें से कोई चीज़ सड़ जाए या फूल जाए तो पूरे पानी को अशुद्ध (नजिस) मानना आवश्यक है, क्योंकि उस समय उसमें कोमलता के कारण उससे नमी बाहर निकलती है, इसलिए वह पानी के सभी हिस्सों के करीब आ जाती है। उससे पहले, कठोरता के कारण यह केवल उस मात्रा के करीब थी जिसका हमने उल्लेख किया था। इस प्रकार, बीस, चालीस और सभी के सामीप्य का अर्थ नमी का सामीप्य है, न कि शव का; शव तो केवल उसी से मिला जिससे वह मिला। मैं कहता हूँ: फिर आपने जो उल्लेख किया है कि कुएँ में एक 'मुहद्दिस' (जिसका वज़ू न हो) के गिरने के बारे में, वह इमाम के इस्तेमाल किए गए पानी की अशुद्धता के विचार के अनुसार अमान्य हो जाता है, क्योंकि वहां कोई नमी नहीं है जो अलग होती है। और सत्य, जैसा कि इस कमजोर सेवक के लिए प्रकट होता है - उसे क्षमा किया जाए - वह यह है कि यदि पानी वास्तव में एक निरंतर वस्तु है, जैसा कि दार्शनिकों का दावा है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसके एक हिस्से का मिलन पूरे का मिलन है, बल्कि वहां 'हिस्सा' जैसा कुछ नहीं है क्योंकि...

...और हक्मी (कानूनी) में, क्योंकि जोआर (पड़ोस) दो जिस्मों की जातों को हासिल होता है और इसमें किसी ऐसे वस्फ़ (गुण) को दखल नहीं जो उनमें से किसी एक के साथ क़ायम हो ताकि उसके इख्तिलाफ़ (अंतर) की वजह से मुख्तलिफ़ (अलग) हो जाए। अगर यह एतराज़ (आपत्ति) किया जाए कि हक़ीक़ी मजावरत (वास्तविक सामीप्य) तो उसी चीज़ के लिए है जो जिस्म से मुत्तसिल (जुड़ा) हो, और यह बीस डोल तक चूहिया में सरायत (व्याप्त) करती है और चालीस तक बिल्ली में, और कुल पानी में आदमी के गिरने की सूरत में क्योंकि मैयत से तरियां (नमी) जुदा होती हैं और उनमें जस्सों (शवों) के एतबार से फ़र्क़ होता है। मलिक अल-उलमा ने फ़रमाया कि इन अशिया (चीज़ों) में से अगर कोई चीज़ फूल जाए या फट जाए तो कुल पानी का नजिस (अशुद्ध) क़रार देना ज़रूरी है, क्योंकि इस सूरत में इन अशिया से तरी (नमी) ख़ारिज होगी क्योंकि उनमें नरमी है और पानी के तमाम अज्ज़ा (हिस्सों) से मुत्तसिल हो जाएगी, और उससे क़ब्ल (पहले) सिर्फ़ इस मिक़दार (मात्रा) के मुत्तसिल थी

जिसका हमने ज़िक्र किया क्योंकि इस सूरत में ये अशिया सख़्त थीं। तो बीस, चालीस या कुल की मजावरत से मुराद तरी की मजावरत है न कि जस्से की, जस्सा तो जिससे मिला है सो मिला है। मैं कहता हूँ जो आपने कहा है उस पर यह नक़्ज़ (खंडन) वारिद होता है कि अगर मुहद्दिस कुएं में गिर जाए तो इमाम के क़ौल पर मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) पानी नजिस हो जाएगा क्योंकि वहां कोई तरी मौजूद नहीं जो मुहद्दिस से अलग हुई हो, और जो हक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ है वह यह है कि पानी अगर मुत्तसिल वाहिद (एक निरंतर इकाई) है हक़ीक़तन जैसा कि फ़लासफ़ा (दार्शनिकों) का ख़्याल है तो इसमें शक नहीं कि उसके बाज़ (हिस्से) से मुलाक़ात कुल से मुलाक़ात।

---

1. बदाए अल-सनाए, वह मात्रा जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है, सईद कंपनी कराची, 51/1. पृष्ठ 173/711

يحصل بين الجسمين لذا تهما ولا مدخل فيه لوصف قائم باحدهما حتى يختلف باختلافه۔ فان قيل: حقيقة المجاورة ليست الالما اتصل بالجسم وانما سرى الى عشرين في الفأرة واربعين في الهر والكل في الادمى لان الميت تنفصل منه بلات وتتفاوت بتفاوت الجثث قال ملک العلماء وجب تنجيس جميع الماء اذا تفسخ شيئ من هذه الواقعات او انتفخ لان عند ذلك تخرج البلة منها لرخاوة فيها فتجاور جميع اجزاء الماء وقبل ذلك لا يجاور الا قدر ما ذكرنا لصلابة فيها اهـ فالمراد بمجاورة عشرين واربعين والكل مجاورة البلة دون الجثة وانما لاقت الجثة مالاقت۔ اقول: فاذن ينتقض ما ذكرتم فی وقوع محدث فی البئر علی قول الامام بنجاسة الماء المستعمل لعدم بلة هناك تنفصل والحق على ما يظهر للعبد الضعيف غفر له ان الماء ان كان شيئاً واحداً متصلاً حقيقة كما تزعمه الفلاسفة فلا شك ان لقاء بعضه لقاء كله بل لابغض هناك لعدم

اور حکمیہ میں، کیونکہ جوار دو جسموں کی ذاتوں کو حاصل ہوتا ہے اور اس میں کسی ایسے وصف کو دخل نہیں جو ان میں سے کسی ایک کے ساتھ قائم ہو تا کہ اس کے اختلاف کی وجہ سے مختلف ہو جائے۔ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ حقیقی مجاورت تو اسی چیز کیلئے ہے جو جسم سے متصل ہو، اور یہ بیس ڈول تک چوہیا میں سرایت کرتی ہے اور چالیس تک بلی میں ، اور کل پانی میں آدمی کے گرنے کی صورت میں کیونکہ میت سے تریاں جدا ہوتی ہیں اور ان میں جثوں کے اعتبار سے فرق ہوتا ہے۔ ملک العلماء نے فرمایا کہ ان اشیاء میں سے اگر کوئی چیز پھول جائے یا پھٹ جائے تو کل پانی کا نجس قرار دینا ضروری ہے، کیونکہ اس صورت میں ان اشیاء سے تری خارج ہوگی کیونکہ ان میں نرمی ہے اور پانی کے تمام اجزاء سے متصل ہو جائے گی، اور اس سے قبل صرف اس مقدار کے متصل تھی جس کا ہم نے ذکر کیا کیونکہ اس صورت میں یہ اشیاء

سخت تھیں اھ تو بیس، چالیس یا کل کی مجاورت سے مراد تری کی مجاورت ہے نہ کہ جثہ کی، جثہ تو جس سے ملا ہے سو ملا ہے۔ میں کہتا ہوں جو آپ نے کہا ہے اس پر یہ نقض وارد ہوتا ہے کہ اگر محدث کنویں میں گر جائے تو امام کے قول پر مستعمل پانی نجس ہو جائے گا کیونکہ وہاں کوئی تری موجود نہیں جو محدث سے الگ ہوئی ہو، اور جو حق مجھ پر ظاہر ہوا ہے وہ یہ ہے کہ پانی اگر متصل واحد ہے حقیقۃً جیسا کہ فلاسفہ کا خیال ہے تو اس میں شک نہیں کہ اس کے بعض سے ملاقات کل سے ملاقات

---

1 بدائع الصنائع المقدار الذی یصیر به المحل نجساً سعید کمپنی کراچی ۵۱/۱ Page 173 of 711

Fatawa Rizvia - Volume Two

[Arabic Text Block]: Divisibility in actuality, even if they were separate parts as it is our view that bodies are composed of indivisible atoms (jawahir farda) that are adjacent but do not touch due to the impossibility of the junction of two parts. [Urdu Translation]: It would be conceivable, but here some of it is not even conceivable because in actuality there is no divisibility, and if there are separate parts as is our view, because according to us bodies are composed of indivisible atoms, then in this case the parts would be adjacent but not connected, because the connection of two parts is impossible.

[Arabic Text Block]: I say: And all that the philosophers and their servants labored in establishing geometrical and other proofs for the impossibility of the part—and Al-Shirazi in the commentary of Al-Ghayah named 'Hidayat Al-Hikmah' brought it to twelve and called them proofs—only indicates the impossibility of connection without preventing the existence of the parts themselves. The basis of geometry is on the imagination of connected lines, and there is no need for them to exist physically, let alone their connection, like the structure (astronomy) based on the imagination of zones, axes, poles, and circles, even if they do not have a physical existence. In fact, it is better, for geometry is independent of their existence through the existence of the sources as well, so none of that is held against us, and praise be to Allah. Many of the theologians neglected that, so they were confused in repelling the doubts of the philosophizers, and with Allah is success. Rather the body... [Urdu Translation]: I say that the philosophers have struggled to invalidate the part with geometric proofs, and Shirazi in the commentary of Al-Ghayah named 'Hidayat al-Hikmah' has established twelve such arguments and named them Hujjat (proofs). From them, only the impossibility of connection of parts is proved, not the impossibility of the part itself. The foundation of geometry is on the concept of continuous lines, and their existence in reality is not necessary, let alone their connection. Just as the basis of astronomy is on the concept of zones, axes, poles, and circles although they have no external existence. In fact, it is even more superior because geometry is independent of their existence by the existence of their origins as well. Therefore, nothing of this applies to us, and praise be to Allah. Many theologians were unaware of this and [remained confused] by the philosophizers.

[Arabic Note]: Note: If you say, 'How is the body seen while the part is not seen?' I say firstly, the custom in human sight has been that a thing extremely fine in its thinness, when individual, is not perceived by sight. But when similar items are gathered and

become numerous, they appear, as when there is a black spot like a needle's head on the skin of a white bull, it is not perceived, but if they become numerous... [Urdu Note]: Note: If you say how does the body appear while the part is not visible. Firstly I say that human sight naturally is incapable of encompassing an extremely fine thing when it is individual. But if with this thing multiple similar items are gathered then it becomes apparent, like (continued on next page).

फ़तावा रिज़विया - जिल्द सानी

[अरबी पाठ]: वास्तविक रूप से विभाज्यता, भले ही वे अलग-अलग भाग हों जैसा कि हमारे पास है, यह है कि शरीर अविभाज्य परमाणुओं (जवाहर फ़र्दा) से बने होते हैं जो एक-दूसरे के निकट होते हैं लेकिन दो भागों के जुड़ने की असंभवता के कारण स्पर्श नहीं करते हैं। [उर्दू अनुवाद]: यह बोधगम्य होगा, लेकिन यहाँ इसका कुछ भाग बोधगम्य भी नहीं है क्योंकि वास्तव में कोई विभाज्यता नहीं है, और यदि अलग-अलग भाग हैं जैसा कि हमारा विचार है, क्योंकि हमारे अनुसार शरीर अविभाज्य परमाणुओं से बने होते हैं, तो इस स्थिति में भाग निकट होंगे लेकिन जुड़े हुए नहीं होंगे, क्योंकि दो भागों का जुड़ना असंभव है।

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: और दार्शनिकों और उनके सेवकों ने भाग की असंभवता के लिए ज्यामितीय और अन्य प्रमाण स्थापित करने में जो कुछ भी श्रम किया है—और अल-शीराज़ी ने 'हिदायत अल-हिकमत' नामक अल-ग़याह की व्याख्या में इसे बारह तक पहुँचाया और उन्हें प्रमाण कहा—वह केवल जुड़ाव की असंभवता को इंगित करता है, न कि स्वयं भागों के अस्तित्व को रोकने के लिए। ज्यामिति का आधार जुड़ी हुई रेखाओं की कल्पना पर है, और उनके भौतिक रूप से अस्तित्व में होने की कोई आवश्यकता नहीं है, उनके जुड़ाव की तो बात ही छोड़िए, जैसे खगोल विज्ञान क्षेत्रों, अक्षों, ध्रुवों और वृत्तों की कल्पना पर आधारित है, भले ही उनका कोई भौतिक अस्तित्व न हो। वास्तव में, यह बेहतर है, क्योंकि ज्यामिति उनके स्रोतों के अस्तित्व के माध्यम से भी उनके अस्तित्व से स्वतंत्र है, इसलिए उनमें से कुछ भी हमारे विरुद्ध नहीं है, और अल्लाह की स्तुति हो। कई धर्मशास्त्रियों ने इसकी उपेक्षा की, इसलिए वे दार्शनिकों के संदेहों को दूर करने में भ्रमित थे, और सफलता अल्लाह के साथ है। बल्कि शरीर... [उर्दू अनुवाद]: मैं कहता हूँ कि दार्शनिकों ने ज्यामितीय प्रमाणों के साथ भाग को अमान्य करने के लिए संघर्ष किया है, और शीराज़ी ने 'हिदायत अल-हिकमत' नामक अल-ग़याह की व्याख्या में ऐसे बारह तर्क स्थापित किए हैं और उन्हें हुज्जत (प्रमाण) नाम दिया है। उनसे केवल भागों के जुड़ाव की असंभवता सिद्ध होती है, स्वयं भाग की असंभवता नहीं। ज्यामिति की नींव निरंतर रेखाओं की अवधारणा पर है, और वास्तव में उनका अस्तित्व आवश्यक नहीं है, उनके जुड़ाव की तो बात ही छोड़िए। जैसे खगोल विज्ञान का आधार क्षेत्रों, अक्षों, ध्रुवों और वृत्तों की अवधारणा पर है, हालांकि उनका कोई बाहरी अस्तित्व नहीं है। वास्तव में, यह और भी श्रेष्ठ है क्योंकि ज्यामिति उनके उद्गम के अस्तित्व से भी उनके अस्तित्व से स्वतंत्र है। इसलिए,

इनमें से कुछ भी हम पर लागू नहीं होता है, और अल्लाह की स्तुति हो। कई धर्मशास्त्री इससे अनभिज्ञ थे और दार्शनिकों द्वारा [भ्रमित] थे।

[अरबी नोट]: चेतावनी: यदि तुम कहो, 'शरीर कैसे दिखाई देता है जबकि भाग नहीं दिखाई देता?' मैं सबसे पहले कहता हूँ, मानव दृष्टि में यह रीति रही है कि अपनी सूक्ष्मता में अत्यंत बारीक वस्तु, जब वह अकेली हो, तो दृष्टि द्वारा नहीं देखी जाती। लेकिन जब वैसी ही चीजें एकत्रित हो जाती हैं और संख्या में बढ़ जाती हैं, तो वे प्रकट होती हैं, जैसे कि जब एक सफ़ेद बैल की खाल पर सुई की नोک की तरह काला धब्बा हो, तो वह महसूस नहीं होता, लेकिन यदि वे अधिक हो जाएं.. [उर्दू नोट]: चेतावनी: यदि तुम कहो कि शरीर कैसे प्रकट होता है जबकि भाग दिखाई नहीं देता। सबसे पहले मैं कहता हूँ कि मानव दृष्टि स्वाभाविक रूप से एक अत्यंत सूक्ष्म वस्तु को घेरने में असमर्थ है जब वह अकेली होती है। लेकिन यदि इस वस्तु के साथ कई समान वस्तुएं एकत्रित हो जाती हैं तो वह स्पष्ट हो जाती है, जैसे (अगले पृष्ठ पर जारी)।

पृष्ठ 174/711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

التجزی بالفعل وان کانا اجزاء متفرقة کما ھو عندنا ان تألف الاجسام من جواھر فردة تتجاور ولا تتلاصق لاستحالة اتصال جزئین۔ متصور ہوگی، بلکہ یہاں بعض کا تصور ہی نہیں کیونکہ بالفعل تجزی نہیں ہے اور اگر متفرق اجزاء ہوں جیسا کہ ہمارے نزدیک ہے کیونکہ ہمارے نزدیک اجسام جواہر منفردہ سے مرکب ہیں تو اس صورت میں اجزاء مجاور ہوں گے لیکن متصل نہیں ہونگے، کیونکہ دو اجزاء کا اتصال محال ہے۔

اقول: وکل ماتجشمه الفلاسفة وخدمهم من اقامة براھین ھندسیة وغیرھا علی استحالة الجزء وقد اوصلھا الشیرازی فی شرح الغوایة المسماة ھدایة الحکمة الی اثنی عشر وسماھا حججا انما تدل علی استحالة الاتصال دون امتناع نفس وجود الاجزاء ومبنی الھندسة علی توھم خطوط متصلة ولا حاجة لھا الی وجودھا عینا فضلا عن اتصالھا کالھیئة تبتني علی توھم مناطق ومحاور واقطاب ودوائر وان لم یکن لھا وجود عینی بل اولی فان الھندسة تستغنی عن وجودھا بوجود المناشی ایضا فلا یرد علینا شیئ من ذلك وللہ الحمد (۲) وقد اغفل ذلك کثیر من المتکلمین فاحتاروا فی دفع شبه المتفلسفین و باللہ التوفیق۔ بل الجسم عہ میں کہتا ہوں فلاسفہ نے جو تگ و دو کی ہے کہ براہین ہندسیہ سے جزء کا ابطال کیا ہے، اور شیرازی نے شرح الغوایہ جس کا نام "ہدایۃ الحکمۃ" ہے ایسے بارہ دلائل قائم کئے ہیں اور ان کا نام حجۃ رکھا ہے، اُن سے صرف اجزاء کا اتصال محال ثابت ہوتا ہے نفس جزء کا استحالہ ثابت نہیں ہوتا ہے اور ہندسہ کی بنیاد خطوط متصلہ کے توہم پر ہے، اور ان کا موجود ہونا خارج میں کچھ ضروری نہیں چہ جائیکہ ان کا اتصال، جیسے علم ہیأۃ کا دارومدار، منطقوں، محوروں، قطبوں اور دوائر کے توہم پر مبنی ہے اگرچہ ان کا خارجی وجود نہ ہو، بلکہ اس سے بھی اولی

ہے کیونکہ علم ہندسہ ان کے وجود سے ان کے منشاء کے وجود سے بھی مستغنی ہے، تو ان میں سے کوئی چیز ہم پر وارد نہیں ہوتی وللہ الحمد، اس سے بہت متکلمین غافل رہے اور متفلسفین کے

عه تنبیه:(۳) فان قلت کیف یری الجسم و الجزء لایری اقول اولا جرت السنة فی بصر البشر ان شیئا بالغ النهایة فی الدقة اذا کان منفردا لم یحط به البصر واذا اجتمع امثالها وکثرت ظهرت کما اذا کان فی جلد ثور ابیض نقطة سوداء کراس الابرة لاتحس وان کثرت تنبیہ اگر تو کہے کہ جسم کیسے دکھائی دیتا ہے جبکہ جزء تو نظر نہیں آتی اوّلاً میں کہتا ہوں کہ نگاہ انسانی فطری طور پر انتہائی باریک چیز کا احاطہ کرنے سے قاصر ہے جبکہ وہ چیز منفرد ہو۔ لیکن اگر اس چیز کے ساتھ اس کی متعدد امثال مجتمع ہوں تو وہ ظاہر ہو جاتی ہے، جیسے (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya Volume II

In our view, parts that are truly separate are sensorially connected, just as... | They were left stunned by the refutation of the objections.

(Remaining footnote from the previous page): If there is a black dot the size of a needle's tip on the skin of a white ox, it is not visible. However, if multiple black dots congregate, they become visible; rather, from a distance, only their black color is seen. This fact is apparent in dust, as it contains small spherical particles, the shapes of most of which the eye does not perceive; instead, their color appears like clouds, such as the Milky Way and scattered stars. If any of them were solitary, it would normally be impossible for them to be seen. However, due to their abundance and accumulation, they are seen, like the pillar of light between you and a skylight appearing like a cloud. In fact, clouds themselves are of this type, because vapors are separate parts; no single one of them is visible, but upon accumulation, they appear as cloud mountains. Perhaps the reason for this is that a solitary object requires focused vision. When it is extremely fine, the two rays of light emanating from the eyes reach it and coincide, and the angle of vision vanishes, just as the vanishing of the angle of parallax for objects above the Sun is the cause. Thus, its real and apparent longitudinal positions become one. When these parts are numerous and spread out, they fall between the two legs of the visual angle triangle and become visible.

Secondly: This is according to their [the philosophers'] method, if they accept it; otherwise, our article of faith is that vision and everything else occurs by the will of Allah Almighty alone and no other. If He wills, a blind person can see a black ant's eye in a pitch-dark night, and if He wills not, a blue-eyed [sharp-eyed] person is blind to a mountain reaching the horizon of the sky in the middle of the day if he does not want to see. (Remaining on the next page)

फ़तावा रज़विया जिल्द-सानी

हमारे नज़दीक, वास्तव में अलग भाग इंद्रिय बोध से जुड़े हुए हैं, जैसे कि... | वे आपत्तियों के खंडन से चकित रह गए।

(पिछले पृष्ठ से शेष पाद टिप्पणी): सफेद बैल की खाल पर सुई की नोक के बराबर काला बिंदु दिखाई नहीं देता। लेकिन अगर कई काले बिंदु इकट्ठे हो जाएं तो वे दिखाई देने लगते हैं; बल्कि, दूर से तो केवल उनका काला रंग ही दिखाई देता है। यह बात धूल में स्पष्ट है, क्योंकि इसमें छोटे गोलाकार कण होते हैं, जिनमें से अधिकांश के आकार को आँख महसूस नहीं करती; इसके बजाय, उनका रंग बादलों की तरह दिखाई देता है, जैसे आकाशगंगा और बिखरे हुए तारे। यदि उनमें से कोई भी अकेला हो, तो उसे देख पाना सामान्यतः असंभव होगा। हालाँकि, उनकी प्रचुरता और संचय के कारण, वे दिखाई देते हैं, जैसे आपके और रोशनदान के बीच प्रकाश का स्तंभ बादल की तरह दिखाई देता है। वास्तव में, बादल स्वयं इसी प्रकार के होते हैं, क्योंकि वाष्प अलग-अलग हिस्से होते हैं; उनमें से कोई एक भी दिखाई नहीं देता, लेकिन संचय होने पर, वे बादल के पहाड़ों के रूप में दिखाई देते हैं। शायद इसका कारण यह है कि एक अकेली वस्तु पर केंद्रित दृष्टि की आवश्यकता होती है। जब वह अत्यंत सूक्ष्म होती है, तो आँखों से निकलने वाली दो किरणें उस तक पहुँचती हैं और एक साथ मिल जाती हैं, और दृष्टि का कोण गायब हो जाता है, जैसे कि सूर्य के ऊपर की वस्तुओं के लिए पैरालैक्स (दृष्टि-भेद) कोण का गायब होना इसका कारण है। इस प्रकार, इसकी वास्तविक और आभासी देशांतर स्थितियाँ एक हो जाती हैं। जब ये भाग अनेक और फैले हुए होते हैं, तो वे दृश्य कोण त्रिभुज की दो भुजाओं के बीच गिरने से दिखाई देने लगते हैं।

दूसरा: यह उनके[दार्शनिकों] के तरीके के अनुसार है, यदि वे इसे स्वीकार करते हैं; अन्यथा, हमारा विश्वास यह है कि दृष्टि और सब कुछ केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान की इच्छा से है और किसी अन्य से नहीं। यदि वह चाहे, तो एक अंधा व्यक्ति घोर अंधेरी रात में एक काली चींटी की आँख देख सकता है, और यदि वह न चाहे, तो एक तेज़ आँखों वाला व्यक्ति दिन के उजाले में आकाश के क्षितिज तक पहुँचने वाले पहाड़ को भी नहीं देख सकता जब वह नहीं देखना चाहता। (शेष अगले पृष्ठ पर)

पृष्ठ 711 का 175

عندنا اجزاء متفرقة حقيقة متصلة حساً كما | اعتراضات کے رد میں حیران رہ گئے،

(باقی حاشیہ صفحہ گذشتہ) امثالها متجاورات ابصرت بل قدلا یری من البعد الا لونها وهو السواد وهذا ظاهر فی الهباء فان فیہ ذرات قلائل تری کریة الشکل وعامتہ لا یحس البصر اشکالها بل لونا سحابیا ککواکب المجرة والنثرة ولو تفرد شیئ منها ما امکن عادة ان یبصر وبکثرتها وتراکمها تری کعمود بینك و بین الکوة مثل السحاب بل السحاب نفسہ من ذلك فان البخار اجزاء متفرقة ولا تبصر واحد منها وبتراکمها تری سحابا کالجبال ولعل الوجہ فیہ ان المنفرد یقتضی خصوص النظر الیہ فاذا کان علی هذا القدر من الدقة انطبق الخطان الشعاعیان الواصلان الیہ و انعدمت زاویة الرؤیة کما هو السبب فی انتفاء زاویة اختلاف المنظر لما فوق الشمس فاتحد تقویماه المرئی والحقیقی واذا کثرت وانبسطت وقعت بین ساقی مثلث ذی زاویة مبصرة فابصرت

سفید بیل کی جلد پر سوئی کے سرے کے برابر سیاہ نقطہ دکھائی نہیں دیتا لیکن اگر متعدد سیاہ نقطے مجتمع ہو جائیں تو نظر آنے لگتے ہیں، بلکہ دُور سے تو محض ان کا سیاہ رنگ ہی دکھائی دیتا ہے۔ یہ بات غبار میں ظاہر ہے کیونکہ اس میں چھوٹے چھوٹے کروی الشکل ذرات ہوتے ہیں جن میں سے اکثر کی شکلوں کو آنکھ محسوس نہیں کرتی بلکہ بادلوں کی مانند ان کا رنگ دکھائی دیتا ہے جیسے کہکشاں اور بکھرے ہوئے ستارے، ان میں سے کوئی بھی اگر منفرد ہو تو عادۃً اس کا دکھائی دینا ناممکن ہے۔ البتہ کثرت واجتماعیت کی وجہ سے نظر آجاتے ہیں، جیسے تیرے اور روشن دان کے درمیان روشنی کا ستون بادل کی مثل دکھائی دیتا ہے، بلکہ خود بادل بھی اسی قبیل سے ہے کیونکہ بخارات متفرق اجزاء ہوتے ہیں جن میں سے کوئی ایک دکھائی نہیں دیتا مگر

مجتمع ہو کر پہاڑوں جیسے بادل نظر آتے ہیں، شاید اس کی وجہ یہ ہو کہ منفرد چیز خصوصی نظر کا تقاضا کرتی ہے جب وہ نہایت باریک ہو تو دونوں آنکھوں سے نکلنے والی شعاعیں اس تک پہنچ کر باہم منطبق ہو جاتی ہیں اور زاویہ نظر معدوم ہو جاتا ہے جیسا کہ مافوق الشمس اختلاف منظر کے زاویہ کے منتفی ہونے کا یہی سبب ہے۔ پس اس کی حقیقی اور مرئی تقویمیں متحد ہو جاتی ہے اور جب یہ اجزاء کثیر اور پھیلے ہوئے ہوں تو بصری زاویہ والی مثلث کے دو خطوں کے درمیان واقع ہونے پر دکھائی دینے لگتے ہیں۔

وثانیاً: هذا علی طریقتهم فان سلموا والا فانما اصلنا الایمانی ان الابصار وکل شیئ بارادة الله تعالی وحده لا غیر فان شاء رأی الاعمی فی لیلة ظلماء عین نملة سوداء وان لم یشاء عمیت الزرقاء فی رابعة النهار عن جبل بالغ افق السماء فاذا اراد ان لایری۔ ثانیاً مذکورہ بالا (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya Volume Second

[Arabic Text Translation]: You see in the dust motes when the sun enters through a window, and even in smoke, steam, and dust, that there is no real connection between any part of the water and any part of the body. If reality were considered, water would not become impure by the falling of any filth into it. Thus, it becomes clear that the pure Shari'ah has considered sensory perception here. There is no doubt that in sensory perception, the whole is one thing, just as it is in reality according to philosophers. There is no barrier where sensory proximity ends upon reaching it. Therefore, it is necessary that according to this as well, meeting a part is meeting the whole; rather, there is no 'part' because there is no sensory divisibility. As for 'plenty' (Kathir), the Shari'ah has made it such that it does not bear filth, so sensory proximity will not harm it. By this (1), the throne of investigation is established: that 'plenty' of water does not become impure by any part of filth falling into it, even if it is visible, including the area surrounding it. This is how investigation should be. And Allah Almighty is the Grantor of success. Here ends the discussion with the great Imam, the King of Noble Scholars. May Allah Almighty benefit us with his blessings forever in the Abode of Peace (Jannah). Amen.

[Urdu Text Translation]: According to us, a body is composed of scattered particles that are truly connected sensually. For example, when a ray of light enters a room through a hole, particles are seen in it. Indeed, they are also seen in smoke, vapours, and dust. Therefore, water is not truly connected to the body. So, if reality were considered, water would not become impure by falling into any dirty thing. Thus, it is known that the pure Shari'ah has considered sensory perception here. And there is no doubt that to sensory perception, the whole is one thing, just as according to philosophers, this is the reality. And there is no such obstacle where sensory proximity would stop. Therefore, it became necessary that meeting a part is considered meeting the whole. Rather, there is no part there because there is no sensory divisibility. As for 'plenty' (Kathir), the Shari'ah has said that impurity will not affect it, so sensory proximity will not be harmful to it. From this throne-seated investigation, it is known that 'plenty' of water will not become impure by the falling of filth, whether it is visible or not, to the extent that even the surroundings of the filth will not be impure. This is how the investigation should be. Here the conversation with Imam Hamam Malik-ul-Ulama was completed. May Allah Almighty always make us benefit from their blessings until Paradise. Amen.

[Footnote Translation]: (Remaining footnote from previous page) Particles individually, and when they become a body, they are seen, it happens as He willed. May his Lord, the Blessed and Exalted, protect him (M). This is according to the philosophy of the philosophers; if we accept it, then well and good, otherwise our faithful proof is that eyes and all things are subject to the will of Allah, the Blessed and Exalted. If He wills, a blind person can see the eye of a black ant in a dark night, and if He does not will, even the blue sky cannot be seen from a sky-touching mountain in the light of day. Since He willed that the particles should not be visible individually and should be seen when they gather, it happened exactly as He willed. (T)

[अरबी पाठ का अनुवाद]: आप खिड़की से सूरज की रोशनी आने पर धूल के कणों में, और धुएँ भाप और धूल में भी देखते हैं कि पानी के किसी भी हिस्से का शरीर के किसी हिस्से से कोई वास्तविक संबंध नहीं है। यदि वास्तविकता पर विचार किया जाए, तो गंदगी के किसी भी हिस्से के गिरने से पानी अशुद्ध नहीं होगा। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि शुद्ध शरीयत ने यहाँ इंद्रिय बोध (हिस) पर विचार किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंद्रिय बोध में, संपूर्ण एक ही चीज़ है, जैसा कि दार्शनिकों के अनुसार वास्तविकता में है। वहां कोई ऐसी बाधा नहीं है जहाँ पहुँचने पर इंद्रिय सामीप्य समाप्त हो जाए। इसलिए, यह आवश्यक है कि इसके अनुसार भी, एक भाग का मिलना पूरे से मिलना माना जाए; बल्कि, कोई 'भाग' है ही नहीं क्योंकि कोई इंद्रिय विभाज्यता नहीं है। जहाँ तक 'प्रचुर' (कसीर) का सवाल है, शरीयत ने इसे ऐसा बनाया है कि यह गंदगी को सहन नहीं करता है, इसलिए इंद्रिय सामीप्य इसे नुकसान नहीं पहुँचाएगा। इसी के द्वारा (१) शोध का सिंहासन स्थापित होता है: कि 'प्रचुर' पानी गंदगी के किसी भी हिस्से के गिरने से अशुद्ध नहीं होता है, भले ही वह दिखाई दे, यहाँ तक कि उसके आस-पास का क्षेत्र भी अशुद्ध नहीं होता। इस तरह से शोध होना चाहिए। और अल्लाह तआला ही सफलता देने वाला है। यहाँ महान इमाम, कुलीन विद्वानों के राजा के साथ चर्चा समाप्त हुई। अल्लाह तआला हमें उनके आशीर्वाद से हमेशा शांति के निवास (जन्नत) में लाभान्वित करे। आमीन।

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: हमारे अनुसार, शरीर वास्तव में इंद्रिय रूप से जुड़े हुए बिखरे हुए कणों से बना है। उदाहरण के लिए, जब रोशनी की किरण कमरे के एक छेद से अंदर आती है, तो उसमें कण दिखाई देते हैं। वास्तव में, वे धुएँ वाष्प और धूल में भी देखे जाते हैं। इसलिए, पानी वास्तविक रूप से शरीर से जुड़ा नहीं है। तो, अगर वास्तविकता पर विचार किया जाए, तो पानी किसी भी गंदी चीज़ के गिरने से नापाक नहीं होगा। अत; यह ज्ञात हुआ कि शुद्ध शरीयत ने यहाँ 'हिस' (इंद्रिय बोध) का विचार किया है। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंद्रिय बोध के लिए, संपूर्ण एक ही चीज़ है, जैसा कि दार्शनिकों के अनुसार यही वास्तविकता है। और वहाँ ऐसी कोई बाधा मौजूद नहीं है जहाँ पहुँचकर इंद्रिय सामीप्य रुक जाए। इसलिए यह आवश्यक हो गया कि किसी भाग की मुलाकात को पूरे की मुलाकात मान लिया जाए। बल्कि, वहाँ भाग है ही नहीं क्योंकि वहाँ इंद्रिय विभाज्यता नहीं है। जहाँ तक 'कसीर' (प्रचुर) का संबंध है, शरीयत ने फरमाया है कि इसमें गंदगी असर नहीं करेगी, तो इंद्रिय सामीप्य इसके लिए हानिकारक नहीं होगा। इस सिंहासन-सीन शोध से ज्ञात हुआ कि प्रचुर

पानी गंदगी गिरने से नापाक नहीं होगा, चाहे वह दिखाई देने वाली हो या न हो, यहाँ तक कि गंदगी का आस-पास भी नापाक नहीं होगा। शोध इसी तरह होना चाहिए। यहाँ इमाम हमाम मलिक-उल-उलेमा के साथ बातचीत पूरी हुई। अल्लाह तआला उनके आशीर्वाद से हमें हमेशा जन्नत तक लाभान्वित फरमाए। आमीन।

[पादलेख अनुवाद]: (पिछले पृष्ठ से शेष पादलेख) कण व्यक्तिगत रूप से, और जब वे शरीर बन जाते हैं, तो वे दिखाई देते हैं, यह वैसा ही होता है जैसा उसने चाहा। उसका रब, जो धन्य और महान है, उसकी रक्षा करे(म)। यह दार्शनिकों के दर्शन के अनुसार है; यदि हम इसे मान लें तो ठीक है, अन्यथा हमारा ईमान वाला प्रमाण यह है कि निगाहें और सभी चीजें अल्लाह तबारक व तआला की इच्छा के अधीन हैं। यदि वह चाहे तो एक अंधा व्यक्ति काली रात में काली चींटी की आँख देख सकता है, और यदि वह न चाहे तो दिन के उजाले में आकाश छूने वाले पहाड़ से नीले आसमान को भी नहीं देखा जा सकता। चूँकि उसने चाहा कि कण व्यक्तिगत रूप से दिखाई न दें और जब वे इकट्ठा हों तो दिखाई देने लगें, इसलिए वैसा ही हुआ जैसा उसने चाहा। (त)

पृष्ठ १७६ का ७११

تری فی الھباء عند دخول الشمس من کوۃ بل وفی الدخان والبخار والغبار فح لا اتصال حقیقۃ لشیئ من الماء بشیئ من البدن فلو اعتبرت الحقیقۃ لم یتنجس الماء بوقوع شیئ من الخبث فظھر ان الشرع المطھر قد اعتبر ھھنا الحس ولا شك ان کله في الحس شیئ واحد کما ھو فی الحقیقۃ عند المتفلسفۃ ولیس ثم حاجز ینتھی الجوار الحسی بالبلوغ الیه فوجب ان یکون علی ھذا ایضا لقاء بعضه لقاء کله بل لا بعض لعدم التجزی حسا اما الکثیر فجعله الشرع لا یحتمل الخبث فلا یضرہ الجوار الحسی وبه (۱) استقر عرش التحقیق علی ان الماء الکثیر لا یتنجس بشیئ منه بوقوع النجاسۃ ولو مرئیۃ حتی ما حولھا مما یلیھا ھکذا ینبغی التحقیق واللہ تعالی ولي التوفیق وھنا تم الکلام مع الامام الھمام ملک العلماء الکرام، نفعنا اللہ تعالی ببرکاتہ علی الدوام ، في دار السلام، امین۔

ہمارے نزدیک جسم اجزائے متفرقہ حقیقتاً متصلہ حساً سے عبارت ہے جیسے کمرہ کے سوراخ سے روشنی کی کرن جب اندر داخل ہوتی ہے تو اس میں ذرات نظر آتے ہیں، بلالکہ دھوئیں، بخارات اور غبار میں بھی نظر آتے ہیں ، لہذا پانی حقیقی طور پر بدن سے متصل نہیں ہے، تو اگر حقیقت کا اعتبار کیا جائے تو پانی کسی بھی گندی چیز کے گرنے سے نجس نہ ہو ، پس معلوم ہوا کہ شریعت مطہرہ نے یہاں حس کا اعتبار کیا ہے ، اور اس میں شک نہیں کہ حس کے نزدیک کل ایک چیز ہے جیسا کہ متفلسفہ کے نزدیک حقیقت یہی ہے اور وہاں کوئی ایسی روک بھی موجود نہیں جہاں پہنچ کر جوار حسی رک جائے تو اس بنا پر لازم ہوا کہ بعض کی ملاقات کل کی ملاقات قرار پائے ، بلالکہ وہاں بعض ہے ہی نہیں کیونکہ تجزیٰ نہیں ہے حساً، اور رہا کثیر تو شرع نے فرمایا ہے کہ اس میں نجاست اثر نہیں کرے گی تو اس کو جوار حسی کچھ مضر نہ ہوگا ، اس تحقیق عرش نشیں سے معلوم ہوا کہ کثیر پانی نجاست کے گرنے سے نجس نہ ہو گا خواہ وہ نظر

آنے والی ہو ، یہاں تک کہ نجاست کا گرد و پیش بھی نجس نہ ہوگا، اسی طرح تحقیق ہونی چاہئے یہاں تک کہ امام ہمام ملک العلماء کے ساتھ گفتگو مکمل ہوئی، اللہ تعالی ان کی برکات سے ہم کو ہمیشہ جنت تک مستفید فرمائے۔ آمین

(باقی حاشیہ صفحہ گزشتہ) الاجزاء علی الانفراد واذا تجسمت أبصرت یکون کما اراد اہ منہ حفظہ ربہ تبارک و تعالی (م)

دلیل فلاسفہ کے مذہب کے مطابق ہے اگر مان لیں تو فبہا وگرنہ ہماری ایمانی دلیل یہ ہے کہ نگاہیں اور تمام چیزیں اللہ تبارک و تعالیٰ کے ارادے کے تابع ہیں۔ اگر وہ چاہے تو ایک اندھا تاریک رات میں سیاہ چیونٹی کی آنکھ دیکھ سکتا ہے اور اگر وہ نہ چاہے تو دن کی روشنی میں فلک بوس پہاڑ سے نیلگوں آسمان کو بھی نہیں دیکھا جاسکتا چونکہ اس نے چاہا کہ اجزاء انفرادی طور پر نظر نہ آئیں اور جب وہ مجتمع ہو جائیں تو نظر آنے لگیں لہذا جیسا اس نے چاہا ویسا ہی واقع ہوا۔ (ت)

Fatawa-e-Razviya Volume 2

Twenty-fourth: It is possible to respond to the attribution to the words of Badai' with what he [the author of Al-Bahr] cited in Al-Bahr and did not reject, even though he did not reject it because he quoted from the 'Asrar' of Qadi Imam al-Dabusi what preceded: that Muhammad says when one bathes in a small amount of water, the whole becomes 'musta'mal' (used) legally. Then he said: So this statement cleared the confusion and clarified every conjecture and guess. For it informed that the implication of Muhammad's school of thought is that water does not become 'musta'mal' by mixing a small amount of used water, except that Muhammad ruled that the whole becomes 'musta'mal' legally, not literally. So what is in 'Al-Badai' is interpreted to mean that the requirement of Muhammad's school is non-use, but he says otherwise. End. It is said in 'Minhat al-Khaliq', meaning that the author of 'Al-Badai' attributed non-use to Muhammad based on what his school required, that 'used' water does not spoil water as long as it does not overpower it or equal it. But Muhammad did not say that which...

Footnote: He [may Allah have mercy on him] mentioned it within a question and deviated in the answer towards interpreting the prominent, recurrent (mutawatir) narrations based on the weak, rare ones, and other such things that the answer to which will come to you, if Allah wills. End. From him, may he be forgiven (m).

1. Al-Bahr al-Raiq, Kitab al-Taharat, H.M. Saeed Company Karachi, 1/71.
2. Al-Bahr al-Raiq, Kitab al-Taharat, H.M. Saeed Company Karachi, 21/1.

Page 177 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी

चौबीसवाँ: 'बदाए' के कथनों के हवाले से जवाब देना संभव है जो 'बहर' के लेखक ने अपनी किताब 'अल-बहर' में उल्लेख किया है और उसे नकारा नहीं है। हालाँकि उन्होंने इसे नहीं नकारा क्योंकि उन्होंने काज़ी इमाम दबूसी की 'असरार' से उद्धृत किया है जो पहले गुज़रा कि इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं: जब कोई थोड़े पानी में ग़ुस्ल करे, तो वह सारा पानी कानूनी तौर पर (हुकमन) 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है। फिर उन्होंने कहा: इस इबारत ने भ्रम को दूर कर दिया और हर अनुमान और कयास को स्पष्ट कर दिया। इससे पता चला कि इमाम मुहम्मद के मज़हब का तक़ाज़ा यह है कि थोड़े से मुस्तअमल पानी के मिलने से पानी मुस्तअमल नहीं होगा, लेकिन मुहम्मद ने हुक्म दिया है कि वह सारा हुकमन मुस्तअमल होगा न कि हक़ीक़तन। तो 'बदाए' में जो कुछ है, वह इस पर आधारित है कि मुहम्मद के मज़हब का तक़ाज़ा इस्तिमाल न करना (अदम-ए-इस्तिमाल) है, लेकिन वे इसके विपरीत कहते हैं। 'मिन्हत-उल-ख़ालिक़' में कहा गया है कि 'बदाए' के लेखक ने इमाम मुहम्मद की ओर अदम-ए-इस्तिमाल को इसलिए मनसूब किया क्योंकि उनके मज़हब का तक़ाज़ा है कि मुस्तअमल पानी, पानी को फ़ासिद (खराब) नहीं करेगा जब तक कि वह उस पर ग़ालिब (प्रभावी) न हो जाए या उसके बराबर न हो जाए, लेकिन मुहम्मद ने यह नहीं फ़रमाया जबकि यह उनके मज़हब का तक़ाज़ा है, बल्कि इस सूरत में...

पाद-टिप्पणी: उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) इसे सवाल के दौरान ज़िक्र किया और जवाब में मुतवातिर और ज़ाहिर रिवायतों को ज़ईफ़ और नादिर रिवायतों पर महमूल करने की तरफ़ रुजू किया है, जिसका जवाब इंशा अल्लाह आपको दिया जाएगा। (त)

1. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/71.
2. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 21/1.

पृष्ठ 177/711

فتاوی رضویه جلد ثانی

الرابع والعشرون: یمکن الجواب عن الاستناد الی کلام البدائع بماعه اورده فی البحر ولم یرده وان لم یرده اذ نقل عن اسرار القاضی الامام الدبوسي ما تقدم ان محمدا یقول لما اغتسل فی الماء القلیل صار الکل مستعملا حکما ثم قال فهذه العبارة کشفت اللبس واوضحت کل تخمین وحدس فانها افادت ان مقتضی مذهب محمد ان الماء لا یصیر مستعملا باختلاط القلیل من الماء المستعمل الا ان محمدا حکم بأن الکل صار مستعملا حکما لا حقیقة فما فی البدائع محمول علی ان مقتضی مذهب محمد عدم الاستعمال الا انه یقول بخلافه اهـ قال فی منحة الخالق یعنی ان صاحب البدائع نسب الی محمد عدم الاستعمال بناء علی مااقتضاه مذهبه من ان المستعمل لا یفسد الماء مالم یغلبه اویساوه لکن محمدا ما قال بذلك الذی

چوبیسواں، صاحب بدائع کے کلام کی طرف جو منسوب ہے اس کا بیان صاحب بحر کے بیان سے ممکن ہے جس کو انہوں نے رد نہیں کیا اگرچہ صاحب بحر نے یہ ارادہ نہیں کیونکہ انہوں نے قاضی امام دبوسی کی اسرار سے نقل کیا ہے جو گزرا کہ امام محمد فرماتے ہیں تھوڑا پانی ہو اور اس میں کوئی غسل کرے تو کل حکما مستعمل ہوگا، تواس عبارت نے التباس کو ختم کردیا ہے، اس عبارت سے معلوم ہوا کہ محمد کے مذہب کا مقتضیٰ یہ ہے کہ تھوڑے سے مستعمل پانی کے مل جانے سے پانی مستعمل نہ ہوگا، مگر محمد نے حکم کیا ہے کہ کل حکماً مستعمل ہوگا نہ کہ حقیقۃ، تو جو کچھ بدائع میں ہے وہ یہ ہے کہ محمد کے مذہب کا مقتضیٰ یہ ہے کہ پانی مستعمل نہ ہوگا، مگر وہ کہتے اس کے خلاف ہیں اھ منحۃ الخالق میں فرمایا یعنی صاحب بدائع نے محمد کی طرف عدم استعمال کی طرف منسوب کیا، جیسا کہ ان کے مذہب کا مقتضیٰ ہے کہ مستعمل پانی، پانی کو

فاسد نہ کرے گا تاوقتیکہ اس پر غالب ہوجائے ، یا اس کے برابر ہوجائے ، لیکن محمد نے یہ نہیں فرمایا ہے حالانکہ یہ اُن کے مذہب کا مقتضیٰ ہے بلکہ اس صورت میں

عه ذکره رحمه الله تعالی فی ضمن سؤال وعدل فی الجواب الی حمل الروایات المتواترة الظاهرة علی الضعیفة النادرة وغیر ذلك مما یأ تیك الجواب عنه ان شاء الله اهـ منه غفر له ـ (م)

انہوں نے اس کو سوال کے ضمن میں ذکر کیا ہے اور جواب میں روایتِ متواترہ ظاہر ہ کو روایتِ ضعیفہ نادرہ وغیرہ پر محمول کرنے کی طرف عدول کیا ہے جس کا جواب ان شاء اللہ تعالیٰ آپ کو دیا جائے گا اھ منہ غفر لہ (ت)

1 بحر الرائق کتاب الطھارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱ 2 بحر الرائق کتاب الطھارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۱/۱

صفحہ 177 از 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

It was required by his school of thought, rather he said in this instance that it has become 'hukman' (legally/effectively) used, as clearly stated by the passage of Al-Dabbusi. (1)

I say: The proof of 'usage' is through contact. In reality, contact occurs with those specific parts, and the ruling is established for the entirety of the water because, in the consideration of the illustrious Sharia, a small amount is considered a single entity. As we have previously established its research and illuminated its path for you, because the ruling is effectively nonexistent, establishing this ruling would be an estimation. To apply this to all the branches mentioned recurrently in the general books of the school of thought, which the scholars and commentators have cited, is a strange thing from such a researcher.

Twenty-fifth: The attempt of the Allama (may Allah Almighty have mercy on him) to reject all those recurrent branches circulating in general books of the school of thought, which are explicitly stated by all the Imams of the school of thought, by referring them all to the narration regarding the impurity of used water, is far-fetched from a researcher like the Allama.

So I say first: (1) How is it permissible for these branches to be rejected in such abundance, while they circulate in all books of the school of thought and are handled by Imams and commentators, without anyone pointing out that they are based on a weak and abandoned report? Rather, they mention them, affirm them, and derive further rulings from them, and during debates and arguments, they resort to them. To reject all of that is far-fetched.

(Marginalia): i.e., sensory and customary reality. (Footnote 1): Minhat al-Khaliq on Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/71.

Page 178 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

यह उनके मत की आवश्यकता थी, बल्कि उन्होंने इस मामले में कहा कि यह 'हुक्मन' (कानूनी रूप से) उपयोग किया गया हो गया है, जैसा कि अल-दब्बूसी के विवरण से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। (1)

मैं कहता हूँ: 'उपयोग' का प्रमाण संपर्क से होता है। वास्तव में, संपर्क उन विशिष्ट भागों के साथ होता है, और नियम पूरे पानी के लिए स्थापित होता है क्योंकि, शानदार शरीयत के विचार में, थोड़ी मात्रा को एक इकाई माना जाता है। जैसा कि हमने पहले ही इसके शोध को स्थापित कर दिया है और आपके लिए इसका मार्ग प्रकाशित कर दिया है, क्योंकि नियम वास्तव में अस्तित्वहीन है, इसलिए इस नियम को स्थापित करना एक अनुमान होगा। इसे मत के सामान्य ग्रंथों में बार-बार उल्लिखित उन सभी उप-नियमों पर लागू करना, जिन्हें विद्वानों और टीकाकारों ने उद्धृत किया है, ऐसे शोधकर्ता की ओर से एक अजीब बात है।

पच्चीसवाँ: अल्लामा (अल्लाह तआला उन पर दया करे) का उन सभी निरंतर (मुतवातिर) उप-नियमों को खारिज करने का प्रयास जो मत के सामान्य ग्रंथों में प्रचलित हैं, जिन्हें मत के सभी इमामों द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया है, इन सबको उन्होंने इस्तेमाल शुदा पानी के नापाक होने वाली रिवायत की तरफ फेरा है, अल्लामा जैसे मुहक़्क़िक़ से यह बात बहुत दूर है।

तो मैं पहले कहता हूँ: (1) यह कैसे संभव है कि इन उप-नियमों को इतनी अधिकता में खारिज कर दिया जाए, जबकि वे मत के सभी ग्रंथों में घूम रहे हैं और इमामों और टीकाकारों द्वारा प्रसारित किए जा रहे हैं, बिना किसी के यह बताए कि वे एक कमजोर और छोड़ी गई रिपोर्ट पर आधारित हैं? बल्कि, वे उनका उल्लेख करते हैं, उन्हें स्वीकार करते हैं, और उनसे और अधिक उप-नियम निकालते हैं, और बहस और विवादों के दौरान वे उनका सहारा लेते हैं। इन सबका खंडन करना बहुत दूर की बात है।

(पार्श्व टिप्पणी): यानी इंद्रियजन्य और प्रथागत वास्तविकता। (पाद टिप्पणी 1): मिन्हात अल-खालिक अल-बहर अल-रईक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/71।

पृष्ठ 178 का 711

انہوں نے فرمایا کہ یہ حکماً مستعمل ہو گیا جیسا کہ دبوسی کی عبارت سے صراحۃً معلوم ہوتا ہے۔ (1)

میں کہتا ہوں استعمال کا ثبوت ملاقات سے ہوتا ہے، اور حقیقۃً ملاقات ان اجزاء سے ہوتی ہے اور حکم تمام پانی کے لئے ثابت ہوتا ہے کیونکہ شریعت میں قلیل شے واحد ہے، جیسا کہ ہم اس کی تحقیق اور نورانی طریقہ بیان کر آئے ہیں، کیونکہ حکم حقیقی طور پر منتفی ہے تو اس حکم کو ثابت کرنا اندازاً ہو گا۔ وہ تمام فروع جو تواتر کے ساتھ عام کتب مذہب میں مذکور ہیں اور ائمہ شراح نے ان کو ذکر کیا ہے، ایسے محقق سے یہ بات عجیب ہے۔

پچیسواں: علامہ (رحمہ اللہ تعالی) کی یہ کوشش کہ وہ تمام فروع جو تواتر کے ساتھ عام کتب مذہب میں مذکور ہیں اور تمام ائمہ مذہب سے منصوص ہیں جن پر سلف مذہب اور خلف مذہب متفق ہیں ان سب کو انہوں نے مستعمل پانی کے نجس ہونے والی روایت کی طرف راجع کیا ہے، علامہ جیسے محقق سے یہ بات بعید ہے۔

میں کہتا ہوں اولاً: (1) یہ کیسے ممکن ہے کہ یہ فروع اس کثرت سے تمام کتب مذہب میں ذکر کی جائیں اور ائمہ وشراح ان کو قبول کریں اور کسی کو یہ خبر نہ ہو کہ یہ ضعیف ومتروک روایت پر مبنی ہیں، بلکہ وہ حضرات ان کو مسلسل ذکر کرتے چلے جائیں اور ان پر مزید تفریعات کرتے چلے جائیں اور مناظروں میں ان کو پیش کرتے رہیں، ان سب کا رد کر دینا بعید (محال) ہے۔

حاشیہ: یعنی حقیقہ حسی عرفی۔ (1) منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۷۱

Fatawa Razawiyya Volume II

...completely far-fetched. Secondly, it is explicitly mentioned in the apparent narrations (al-riwayah al-zahirah), while the narration of impurity is rare; Al-Hasan narrated this and Imam Muhammad explicitly stated it in 'al-Asl'. Thirdly, multiple corrections support this, as we previously cited from al-Bahr, via al-Khabbazi, al-Quduri, al-Jurjani, and from al-Hilyah via Abu al-Husayn, Abu Abdullah, and from Khazanat al-Muftin, and the text of al-Multaqa. Al-Bahr also mentions it as the chosen (mukhtar) school of thought. So how can it be based on an abandoned (matruk) narration? Fourthly, there are numerous reports of consensus on this, and it is the school of thought of all our companions, as previously mentioned from al-Nihayah, al-Inayah, al-Hindiyyah, Majma' al-Anhur, al-Durr al-Mukhtar, etc. From al-Bahr, via al-Bada'i, and from it via al-Inayah, al-Dirayah, etc. From al-Hilyah and al-Bahr via al-Khabbazi, both from Abu al-Husayn, from al-Jurjani, and from your Muhaqqiq scholar (al-Shaykh al-Muhaqqiq) that it is the saying of all of us. So how can it be permissible to refer back to an abandoned narration? Fifthly, many attributed it to Imam Muhammad, as passed in al-Fawa'id al-Zahiriyyah from Shaykh al-Islam Khwahar Zadah, Abu Bakr al-Razi, Shams al-A'immah al-Sarakhsi, and from al-Zayla'i and your Muhaqqiq scholar where he mentioned it generally. From al-Bahr, via al-Isbijabi and al-Walwaliji. Wherever Imam Muhammad ruled on the dropping of the ruling of usage, they reasoned it due to necessity, as previously cited from al-Bahr, al-Nahr, al-Fath, al-Tabyin, al-Kafi, and al-Burhan. In al-Hilyah, al-Fawa'id al-Sughra, al-Khabbazi, al-Quduri, al-Jurjani, Shams al-A'immah al-Halwani, and from al-Bahr from al-Sarakhsi, it was passed from the text of Imam Muhammad in al-Asl, and from al-Bahr from al-Dabusi that Muhammad said: "Everything is legally used," and in al-Bahr...

फ़तावा रज़विया खंड II

...पूरी तरह से दूर की बात है। दूसरे, यह ज़ाहिर रिवायत (प्रसिद्ध विवरणों) में स्पष्ट रूप से वर्णित है, जबकि अशुद्धता की रिवायत दुर्लभ है; अल-हसन ने इसे रिवायत किया और इमाम मुहम्मद ने 'अल-अस्ल' में इसे स्पष्ट रूप से बताया। तीसरे, इस पर लगातार शोध और सुधार मौजूद हैं जैसा कि हमने अल-बहर, अल-खब्बाज़ी, अल-कुदूरी, अल-जुर्जानी और अल-हिलिया के माध्यम से अबू अल-हुसैन, अबू अब्दुल्ला से, और खज़ानत अल-मुफ़्तीं और अल-मुल्तका के पाठ से उद्धृत किया है। अल-बहर में भी इसे चुना हुआ (मुख्तार) मत बताया गया है। तो फिर यह एक परित्यक्त (मतरूक) रिवायत पर आधारित कैसे हो सकता है? चौथे, इस पर सर्वसम्मति की अनेक रिपोर्टें हैं और यह हमारे सभी साथियों का मत है जैसा कि अल-निहाया, अल-इनाया, अल-हिंदिया, मजमा' अल-अनहुर, अल-दुर अल-मुख्तार आदि से पहले गुजर चुका है। अल-बहर से अल-बदई के माध्यम से, और उससे अल-इनाया, अल-दिरया आदि के माध्यम से। अल-हिलिया और अल-बहर से अल-खब्बाज़ी के माध्यम से, दोनों ने अबू अल-हुसैन से, अल-जुर्जानी से, और आपके विद्वान अन्वेषक (अल-शेख अल-मुहक़्क़िक़) से कि यह हम सभी का कथन है। तो फिर एक परित्यक्त रिवायत की ओर लौटना कैसे उचित हो सकता है? पांचवें, कई लोगों ने इसे इमाम मुहम्मद की ओर संबंद्ध किया है, जैसा कि अल-फ़वाइद अल-ज़हीरिया में शेख अल-इस्लाम ख़्वाहरज़ादा, अबू बक्र अल-राज़ी, शम्स अल-अइम्मा अल-सरख़सी, और अल-ज़ैलाई और आपके शेख मुहक़्क़िक़ से गुज़रा जहाँ उन्होंने इसे सामान्य रूप से उल्लेख किया। अल-बहर से अल-इस्बीजाबी और अल-वलवालिजी के माध्यम से। जहाँ इमाम मुहम्मद ने उपयोग के नियम को हटाने का फैसला किया, उन्होंने इसे आवश्यकता (ज़रूरत) पर आधारित बताया, जैसा कि अल-बहर, अल-नहर, अल-फतह, अल-तब्यीन, अल-काफी और अल-बुरहान से पहले उल्लेख किया गया है। अल-हिलिया, अल-फ़वाइद अल-सुगरा, अल-खब्बाज़ी, अल-कुदूरी, अल-जुर्जानी, शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी में गुज़रा और अल-बहर में सरख़सी से असल में इमाम मुहम्मद के मूल पाठ (नस) से गुज़रा और अल-बहर में दबौसी से गुज़रा कि मुहम्मद कहते हैं: "सब कुछ कानूनी रूप से उपयोग किया गया होगा" और अल-बहर में...

पृष्ठ 179/711

كل البعد-وثانياً: هو منصوص عليه في الرواية الظاهرة وما رواية التنجيس الانادرة روى هذه الحسن ونص على ذلك محمد في الاصل وثالثاً: تظافرت عليه التصحيحات كما قدمنا عن البحر عن الخبازي عن القدوري عن الجرجاني وعن الحلية عن ابى الحسين عن ابى عبدالله وعن خزانة المفتين ومتن الملتقى وعن البحرانه المذهب المختار فكيف يبتنى على رواية متروكة. ورابعاً: توافرت فيه نقول الاتفاق عليه وانه مذهب اصحابنا جميعا كما سبق عن النهاية والعناية والهندية ومجمع الانهر والدر المختار وغيرها وعن البحر عن البدائع وعنه عن العناية والدراية وغيرها وعن الحلية وعن البحر عن الخبازى كلاهما عن ابى الحسين عن الجرجانى وعن شيخكم المحقق انه قولنا جميعا فكيف يجوز رجعه الى رواية متروكة. وخامسا: اكثروا من عزوه لمحمد كمامر عن الفوائد الظهيرية عن شيخ الاسلام خواهر زاده وابي بكر الرازى وشمس الائمة السرخسي وعن الزيلعي وشيخكم المحقق حيث اطلق وعن البحر عن الاسبيجابي والولوالجي وحيث حكم محمد بسقوط حكم الاستعمال عللوه با لضرورة كما سلف عن البحر والنهر والفتح و التبيين والكافي والبرهان۔

تو ان سب کو روایت نجاست کی طرف لوٹانا سخت بعید ہے۔ اور ثانیاً یہ ظاہر روایت میں نص ہے اور تنجیس کی روایت نادرہ ہے ، اس کو حسن نے روایت کیا ، اصل میں محمد نے اس پر نص کی ۔ اور ثالثاً اس پر پے در پے تصحیحات موجود ہیں جیسا کہ ہم نے بحر، خبازی ، قدوری، جرجانی، حلیہ، ابی الحسین، ابی عبداللہ، خزانۃ المفتین ، اور متن ملتقی کے حوالوں سے نقل کیا، اور بحر سے نقل کیا کہ یہی مذہب مختار ہے تو پھر یہ متروک روایت پر کس طرح مبنی ہو سکتا ہے۔ اور رابعاً متفقہ نقول کثرت سے ہیں یہی ہمارے تمام اصحاب کا مذہب ہے جیسا کہ گزرا نہایہ، عنایہ ، ہندیہ ، مجمع الانہر، در مختار وغیرہ سے اور بحر نے بدائع، عنایہ و درایہ اور حلیہ سے

اور بحر و خبازی دونوں نے ابوالحسن، جرجانی اور شیخ محقق سے یہ تمام کا قول ہے تو متروکہ روایت کی طرف اس کو راجع کرنا کیسے جائز ہو سکتا ہے اور خامساً اکثر نے اس کو محمد کی طرف منسوب کیا ہے جیسا کہ فوائد ظہیریہ ، شیخ الاسلام، خواہر زادہ ، ابو بکر رازی ، شمس الائمہ سرخسی ، زیلعی اور تمہارے شیخ محقق، بحر، اسبیجابی، ولوالجی سے گزرا، اور جہاں محمد نے استعمال کا حکم ساقط ہونے کی بات کی اس کو انہوں نے ضرورت پر محمول کیا جیسا کہ بحر، نہر، فتح، تبیین، کافی، برہان، حلیہ، فوائد، صغری، خبازی، قدوری، جرجانی ، شمس الائمہ حلوانی سے گزرا اور بحر سے سرخسی سے اصل میں امام محمد کی نص سے گزرا اور بحر سے دبوسی سے گزرا کہ محمد فرماتے ہیں کُل حکماً مستعمل ہوگا اور بحر میں

Fatawa Razawiyya - Volume II

[Arabic Text Column] ...and Al-Hilyah, Al-Fawa'id, Al-Sughra, Al-Khabbazi, Al-Quduri, Al-Jurjani, Shams al-A'immah al-Halwani; and on the authority of Al-Bahr from Al-Sarakhsi from the text of [Imam] Muhammad in 'Al-Asl'; and on the authority of Al-Bahr from Al-Dabusi that Muhammad says 'the whole becomes used (musta'mal) legally'. And it was said [in a side note] in Al-Bahr: 'Indeed, this phrasing removed ambiguity and clarified every conjecture and guess[1].' And it is well known that Muhammad never spoke of impurity (tanjis), so how can it be attributed to him? With this (1), the answer to what Al-Bahr intended in Al-Bahr and the treatise [Ar-Risalah] became clear, which was to dismiss the improbability of this interpretation, by stating that the researcher in 'Al-Fath' interpreted a subsidiary issue (far') in 'Al-Khaniyah' as the impurity of used water and said: 'Fatwa is not given based on such subsidiaries[2]' etc. It was added in 'Ar-Risalah' that his student in 'Al-Hilyah' applied two subsidiaries to this, namely 'Ajmah' (thickets) and 'Tahlab' (moss), which are mentioned in 'Al-Khulasah' and 'Al-Munyah', and said that he derived many subsidiaries on this pattern etc. So, are there some subsidiaries like these that are mentioned frequently in scattered fatwas, whether in commentaries (shuruh) or original texts (mutun), without any objection being raised against them? Or are there ones like them in the books of 'Zahir al-Riwayah'? Or have they been so extensively corrected? Or are they explicitly stated in all the books of the Hanafi school? Or has there been a consensus on them, saying: 'This is the saying of all of us, this is the school of our companions'? Or is there some other interpretation that points towards them?

Side note (عم): Meaning, he raised it against himself and did not answer it. From him, may he be forgiven (M).

[Urdu Translation Column] He said that the problem has been solved by this phrasing, and it is known that Muhammad definitely did not give an opinion on the water being impure, so how can it be attributed to that? From this, the answer of Bahr and Risalah also became apparent; they had considered this attribution far-fetched, and said that the researcher in Fath interpreted a subsidiary issue from Khaniyah regarding used water as its impurity, and said that fatwa should not be given on such types of subsidiaries. etc. In the treatise, there is this addition that his student in Hilyah interpreted two subsidiaries on this, thickets and moss; these are mentioned in Khulasah and Munyah. And he said that on this same pattern, they derived many subsidiaries. etc. So, like these subsidiaries, are there some other such subsidiaries mentioned with this much frequency in scattered fatwas, whether in

commentaries or texts, and no objection was raised against them? Or are they in the books of Zahir al-Riwayah like them? Or are there so many corrections of them? Or are they explicitly stated in all the books of the Hanafi school? Or has it been agreed upon that this is the saying of all of us, this is the school of our companions? Or is there some other interpretation that points towards them?

Side note (عہ): Meaning, he raised it against himself and did not answer it. (T)

[Footnotes] 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company Karachi 1/71 2 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company Karachi 1/73 3 Jawaz al-Wudu' min al-Fasaqi, a treatise from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Quran Karachi 821/8/2 Page 180 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो

[अरबी पाठ स्तंभ] ...और अल-हिल्या, अल-फ़वाइद, अल-सुगरा, अल-खब्बाज़ी, अल-कुद्दूरी, अल-जुर्जानी, शम्स अल-आइम्मा अल-हलवानी; और अल-बह्र के अधिकार पर अल-सरखसी से [इमाम] मुहम्मद के 'अल-अस्ल' के पाठ से; और अल-बह्र के अधिकार पर अल-दबूसी से कि मुहम्मद कहते हैं 'सब कुछ कानूनी तौर पर इस्तेमाल किया हुआ (मुस्तअमल) हो जाता है'। और अल-बह्र में [एक पार्श्व नोट में] कहा गया: 'वास्तव में, इस शब्दावली ने अस्पष्टता को दूर कर दिया और हर अनुमान और अटकल[1] को स्पष्ट कर दिया।' और यह सर्वविदित है कि मुहम्मद ने कभी अशुद्धि (तन्जीस) की बात नहीं की, तो इसे उन पर कैसे आरोपित किया जा सकता है? इसके साथ (1), अल-बह्र ने अल-बह्र और ग्रंथ [अर-रिसाला] में जो इरादा किया था उसका उत्तर स्पष्ट हो गया, जो इस व्याख्या की असंभावना को खारिज करना था, यह बताते हुए कि 'अल-फतह' में शोधकर्ता ने 'अल-खानिया' के एक उप-मुद्दे (फरअ) को इस्तेमाल किए गए पानी की अशुद्धि के रूप में व्याख्यायित किया और कहा: 'ऐसे उप-मुद्दों के आधार पर फतवा नहीं दिया जाता[2]' आदि। 'अर-रिसाला' में यह जोड़ा गया कि 'अल-हिल्या' में उनके शिष्य ने इस पर दो उप-मुद्दों को लागू किया, अर्थात् 'अजमह' (झाड़ियाँ) और 'तहलूब' (काई), जो 'अल-खुलासा' और 'अल-मुन्या' में वर्णित हैं, और कहा कि उन्होंने इसी पैटर्न पर कई उप-मुद्दों को प्राप्त किया आदि। तो, क्या इनके जैसे कुछ उप-मुद्दे हैं जिनका बिखरे हुए फतवों में इतनी बार उल्लेख किया गया है, चाहे वो व्याख्याओं (शुरुह) में हों या मूल ग्रंथों (मुतून) में, बिना उन पर कोई आपत्ति जताए? या उनके जैसे 'ज़ाहिर अल-रिवयाह' की किताबों में हैं? या उनमें इतने सुधार किए गए हैं? या वे हनफ़ी संप्रदाय की सभी किताबों में स्पष्ट रूप से बताए गए हैं? या उन पर आम सहमति हुई है, यह कहते हुए: 'यह हम सभी का कथन है, यह हमारे साथियों का संप्रदाय है'? या उनकी कोई और व्याख्या है जो उनकी ओर स्पष्ट संकेत करती है?

पार्श्व नोट (عم): यानी, उन्होंने इसे अपने ऊपर उठाया और इसका जवाब नहीं दिया। उनसे, उन्हें क्षमा किया जाए (M)।

[उर्दू अनुवाद स्तंभ] फरमाया है कि इस इबारत से मुश्किल हल हो गई है, और यह मालूम है कि मुहम्मद ने पानी के नजिस होने का कतई तौर पर कोल (मत) नहीं दिया है, तो इसको इस पर कैसे महमूल (आधारित) किया जाएगा? इससे बह्र और रिसाला का जवाब भी ज़ाहिर हो गया; उन्होंने इस महमूल को दूर का माना था, और कहा था कि तहकीक करने वाले ने फ़तह में मुस्तअमल पानी पर खानिया की एक फ़रअ को उस पानी की नजासत पर महमूल किया है, और कहा है कि इस किस्म

की फ़रअ पर फतवा न दिया जाए। रिसाला में यह इज़ाफ़ा (जोड़) है कि उनके शागिर्द ने हिल्या में इस पर अज़मह और तहलब की दो फ़रअ को महमूल किया; ये खुलासा और मुन्या में ज़िक्र किए गए हैं। और फरमाया कि इसी नहज (तरीके) पर उन्होंने बहुत सी फ़रअ अख्ज़ (प्राप्त) की हैं। तो क्या इन फ़रअ की तरह कुछ और ऐसी फ़रअ हैं जो मुतफर्रिक फतावा में इस कसरत के साथ मज़कूर (वर्णित) हों, चाहे वो शुरुह हों या मुतून, और उन पर कैसे कोई नकीर (आपत्ति) नहीं की गई? या उनकी तरह कुतुब-ए-ज़ाहिर-ए-रिवयात में हों? या उनकी इतनी तसहीहात (सुधार) हों? या तमाम मज़हब-ए-हनफी की कुतुब में मन्सूस (स्पष्ट) हों? या उन पर इत्तेफाक किया गया हो कि यह हम सबका कोल है, यह हमारे असहाब का मज़हब है? या उनका कोई और महमल है कि उनकी तरफ रौशन संकेत हो?

पार्श्व नोट (عہ): यानी उन्होंने इसको अपने ऊपर वारिद किया है और इसका जवाब नहीं दिया। (T)

[फुटनोट्स] 1 अल-बह्र अल-राईक, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/71 2 अल-बह्र अल-राईक, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/73 3 जवाज़ अल-वज़ू मिन अल-फ़साक़ी, इब्न नुजैम के रिसालों में से एक रिसाला, इदारात अल-क़ुरान कराची 821/8/2 पृष्ठ 180 का 711

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

[عربی عبارت کا کالم] والحلیۃ والفوائد والصغری والخبازی والقدوری والجرجانی وشمس الائمۃ الحلوانی وعن البحر عن السرخسی عن نص محمد فی الاصل وعن البحر عن الدبوسی ان محمدا یقول صار الکل مستعملا حکما وقد قال عہ فی البحر ان ھذہ العبارۃ کشفت اللبس واوضحت کل تخمین وحدس[1] و معلوم ان محمدا لم یقل قط بالتنجیس فکیف تحمل علیہ وبہ (۱) ظھر الجواب عما اراد بہ البحر فی البحر والرسالۃ دفع الاستبعاد عن ھذا الحمل بان المحقق فی الفتح حمل فرعا فی الخانیۃ علی نجاسۃ المستعمل وقال لایفتی بمثل ھذہ الفروع[2] اھ زاد فی الرسالۃ ان تلمیذہ فی الحلیۃ حمل علیھا فرعی الاجمۃ والطحلب وحمل فروعا کثیرہ علی ھذا النحو[3] اھ فھل بعض فروع وردت متفرقۃ فی غضون بعض الفتاوی کھذہ الفروع الوافرۃ المتکاثرۃ المتواترۃ الثابتۃ الدائرۃ فی عامۃ الشروح والفتاوی مع عدۃ من

عہ ای اوردہ علی نفسہ ولم یجب عنہ منہ غفرلہ (م)

[اردو ترجمہ و تشریح کا کالم] فرمایا ہے کہ اس عبارت سے مشکل حل ہوگئی ہے، اور یہ معلوم ہے کہ محمد نے پانی کے نجس ہونے کا قطعاً قول نہیں کیا ہے تو اس کو اس پر کیسے محمول کیا جائے گا، اور اس سے بحر اور رسالہ کا جواب بھی ظاہر ہوگیا، انہوں نے اس حمل کو بعید گردانا تھا، اور کہا تھا کہ محقق نے فتح میں مستعمل پانی پر ایک فرع خانیہ کی اس پانی کی نجاست پر محمول کی ہے، اور کہا ہے کہ اس قسم کی فروع پر فتوٰی نہ دیا جائے اھ رسالہ میں یہ اضافہ ہے کہ ان کے شاگرد نے حلیہ میں اس پر اجمہ اور طحلب کی دو فروع کو محمول کیا، یہ خلاصہ اور منیہ میں مذکور ہیں اور فرمایا کہ اسی نہج پر انہوں نے بہت سی فروع اخذ کی ہیں، اھ تو کیا ان فروع کی طرح کچھ اور ایسی فروع ہیں جو متفرق فتاوٰی میں اس کثرت کے ساتھ مذکور ہوں، کیا

شروح اور کیا متون اور ان پر کیسے کوئی نکیر نہیں کی؟ یا ان کی طرح کتب ظاہر روایت میں ہوں؟ یا ان کی اتنی تصحیحات ہوں؟ یا تمام مذہب حنفی کی کتب میں منصوص ہوں؟ یا ان پر اتفاق کیا گیا ہو کہ یہ ہم سب کا قول ہے یہ ہمارے اصحاب کا مذہب ہے؟ یا ان کا کوئی اور محمل ہے کہ ان کی طرف روشن

عہ یعنی انہوں نے اسکو اپنے اوپر وارد کیا ہے اور اس کا جواب نہیں دیا۔ (ت)

[حواشی] 1 بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱ 2 بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۳ 3 جواز الوضوء من الفساقی رسالہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن کراچی ۸۲۱/۸/۲ صفحہ 180 از 711

Fatawa Razawiyyah Volume II

[Arabic Column]: The texts, without any objection or room for doubt, such matters are found in the evident books, matters supported by numerous authentications, matters stipulated by all the leaders of the Hanafi school of thought, matters adorned with the garment of consensus and being our collective opinion and the school of our companions. So where does this lead one who approaches it? Is there any other interpretation for it? How can it be compared to what is established, which has a clear and manifest path.

Twenty-Sixth: The words of the Allamah regarding the Hadith: "None of you should urinate in stagnant water." We have already discussed this and referred to the words of his teacher, the absolute researcher (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq), where he says: As for the words of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) - and he mentioned the Hadith - the most they imply is that the prohibition of bathing is 'karahat at-tahrim' (abominable to the point of being forbidden). This may be so that its purifying quality is not lost, leading someone who is unaware of it to use it for removing ritual impurity (hadath) and then pray. There is no difference between this and the water becoming impure (najis), whereby someone unaware of its condition would use it, leading to the same undesirable consequence, which is praying while in a state incompatible with prayer. Thus, each of these reasons is fit to be the cause of the mentioned prohibition. [1] End (a). And the rejection by 'Al-Bahr' [Al-Bahr al-Ra'iq] of this using the discussion from 'Al-Bada'i' is a rejection of what is correct using what is not, as you have learned. As for the Hadith...

[Urdu Column]: ...be the path. Twenty-sixth: Regarding the discourse the Allamah made on "None of you should urinate in stagnant water," we have already discussed it, and have already pointed towards the discourse of his Shaykh, the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq). He states: "In any case, the prohibition of bathing in the command of the Prophet ﷺ (then he narrated the mentioned Hadith) at most proves a prohibition of 'tahrim' (forbiddance), so that its purifying nature is not taken away, and someone in ignorance might use it to remove ritual impurity and offer prayer. In this, and in the context that the water becomes impure, so that someone in ignorance might not use it—in both cases, a 'mahzoor' (prohibited/ undesirable act) becomes necessary, i.e., praying while something incompatible is present. Therefore, it is permissible that each of these..."

[Footnote]: 1. Fath al-Qadir, The water with which ablution is permissible and with which it is not, Nooriya Razawiyyah, Sukkur, 1/751 Page 181 of 711

फ़तावा रज़विया भाग दो

[अरबी कॉलम]: मूल पाठ, बिना किसी आपत्ति या संदेह की गुंजाइश के, ऐसे मामले स्पष्ट पुस्तकों में पाए जाते हैं, जो अनेक प्रामाणिकताओं से पुष्ट हैं, हनफ़ी संप्रदाय के सभी विद्वानों द्वारा स्पष्ट किए गए हैं, आम सहमति के वस्त्र से सुशोभित हैं और हमारी सामूहिक राय और हमारे साथियों का पंथ हैं। तो इसे अपनाने वाला कहाँ जाएगा? क्या इसके लिए कोई अन्य व्याख्या है? इसकी तुलना उस चीज़ से कैसे की जा सकती है जो स्थापित है, जिसका स्पष्ट और प्रकट मार्ग है।

छब्बीसवाँ: हदीस "तुम में से कोई भी ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे" पर अल्लामा के शब्द। हमने पहले ही इस पर चर्चा की है और उनके शिक्षक, 'मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़' (परम शोधकर्ता) के शब्दों की ओर इशारा किया है, जहाँ वे कहते हैं: जहाँ तक नबी ﷺ के शब्दों का सवाल है - और उन्होंने हदीस का उल्लेख किया - वे अधिक से अधिक यह अर्थ देते हैं कि स्नान की मनाही 'कराहते तहरीम' (निषिद्ध होने की हद तक घृणास्पद) है। यह इसलिए हो सकता है ताकि इसकी शुद्धिकरण गुणवत्ता समाप्त न हो जाए, जिससे कोई अनभिज्ञ व्यक्ति इसका उपयोग अनुष्ठानिक अशुद्धि (हदस) दूर करने के लिए करे और फिर नमाज़ पढ़े। इसमें और पानी के अपवित्र (नजिस) होने में कोई अंतर नहीं है, जिससे उसकी स्थिति से अनभिज्ञ व्यक्ति इसका उपयोग करेगा, जिससे वही अवांछनीय परिणाम निकलेगा, यानी नमाज़ के साथ असंगत अवस्था में नमाज़ पढ़ना। इस प्रकार, इनमें से प्रत्येक कारण उल्लिखित निषेध का कारण होने के लिए उपयुक्त है। [१] समाप्त (अ)। और 'अल-बह्र' [अल-बह्र अल-रैक] द्वारा 'अल-बदाई' की चर्चा का उपयोग करते हुए इसे अस्वीकार करना, सही चीज़ को गलत चीज़ से अस्वीकार करना है, जैसा कि आपने जान लिया है। जहाँ तक हदीस का सवाल है...

[उर्दू कॉलम]: ...रास्ता हो। छब्बीसवाँ: अल्लामा ने "ठहरे हुए पानी में पेशाब न करे" पर जो चर्चा की है, उस पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, और उनके शेख 'मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़' के शब्दों की ओर इशारा कर आए हैं। वे कहते हैं: "बहरहाल, हुज़ूर ﷺ के फरमान (फिर उन्होंने उक्त हदीस का वर्णन किया) में जो स्नान करने की मनाही है, उससे अधिक से अधिक जो सिद्ध होता है वह 'नही-ए-तहरीम' (मनाही) है, ताकि ऐसा न हो कि इसकी शुद्धता छिन जाए, और कोई व्यक्ति अज्ञानता में इसे 'रफ़-ए-हदस' (अशुद्धि दूर करने) के लिए इस्तेमाल कर ले और नमाज़ पढ़ ले। इसमें और इस विषय में कि पानी नापाक हो जाता है, तो ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति अज्ञानता में इसका उपयोग करे —दोनों स्थितियों में 'महज़ूर' (अवांछनीय कार्य) अनिवार्य हो जाता है, अर्थात विरोधी चीज़ की उपस्थिति में नमाज़ पढ़ना। अतः संभव है कि इनमें से प्रत्येक..."

[फुटनोट]: १. फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/७५१ पृष्ठ १८१ / ७११

[عربی کالم]: المتون، من دون نکیر ولا مجال ظنون، امر ھی کھذہ فی الکتب الظاھرۃ، امر ھی مذیلات بالتصحیحات المتظافرۃ، امر ھی منصوص علیھا من جمیع ائمۃ المذھب الحنفی، امر ھی مزینۃ بطراز الاتفاق وبأنھا قولنا جمیعاً وبأنھا مذھب اصحابنا فأین ذی من اتی، امر ھل لھا محمل غیر ھذا فکیف یقاس علی المتعین، مالہ سبیل واضح متبین۔

السادس والعشرون: کلام العلامۃ علی حدیث لا یبولن احدکم فی الماء الدائم قدمنا الکلام علیہ واشرنا الی کلام شیخہ المحقق علی الاطلاق حیث یقول اما قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم (وذکر الحدیث) فغایہ مایفید نھی الاغتسال کراھۃ التحریم ویجوز کونھا لکیلا تسلب الطھوریۃ فیستعملہ من لا علم بہ بذلک فی رفع الحدث ویصلی ولا فرق بین ھذا وبین کونہ یتنجس فیستعملہ من لا علم لہ بحالہ فی لزوم المحذور وھو الصلاۃ مع المنافی فیصلح کون کل منھما مثیرا للنھی المذکور ۱ اھ (ا) ودفع البحر ایاہ ببحث البدائع المذکور دفع للصحیح بمالیس بہ کما علمت اما حدیث

[اردو کالم]: راستہ ہو۔ چھبیسواں علامہ نے لایبولن احد کم فی الماء الدائم (ٹھہرے پانی میں پیشاب نہ کرے) پر جو کلام کیا ہے اس پر ہم پہلے ہی بحث کر چکے ہیں، اور اُن کے شیخ محقق علی الاطلاق کے کلام کی طرف اشارہ کر آئے ہیں، وہ فرماتے ہیں "بہر حال حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان (پھر انہوں نے مذکور حدیث بیان کی) میں جو غسل کرنے کی نہی ہے اس سے زیادہ سے زیادہ جو ثابت ہوتا ہے وہ نہی تحریم ہے تاکہ ایسا نہ ہو کہ طہوریت سلب ہو جائے، اور اس کو کوئی شخص لاعلمی میں رفعِ حَدَث کیلئے استعمال کر بیٹھے اور نماز پڑھ لے اور اس میں اور اس مضمون میں کہ پانی نجس ہو جاتا ہے تو ایسا نہ ہو کہ اس کو کوئی شخص لاعلمی میں

استعمال کرے، دونوں صورتوں میں محذور لازم ہے، یعنی منافی کے ہوتے ہوئے نماز پڑھنا، پس جائز ہے کہ ان میں سے ہر ایک

[حاشیہ]: ۱ فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز نوریہ رضویہ سکھر ۷۵۱/۱ صفحہ 181 از 711

Fatawa Rizvia, Volume 2

...caused the aforementioned prohibition. Bahr's rebuttal of this using the aforementioned discussion from Bada'i is like refuting a correct point with an incorrect one, as you have realized. As for the hadith of the 'awakened person', I say: our argument in this regard is not based on the possibility of it being due to physical impurity (najasa ayniyya). Rather, it is evident from the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "for he does not know where his hand spent the night," that this is the case. The Allama deviated from this clear answer and provided three responses, none of which are correct. First: the claim of specificity (khususiyya), for which there is no evidence. Second: how can it be considered a ritualistic act (ta'abbudi) with an irrational meaning when the hadith itself points to the meaning? That is, "for he does not know where his hand spent the night." Third: what is narrated from the companions of Abdullah (may Allah be pleased with them) is possibly because Abu Hurairah used to send it loosely, so they pointed towards specializing it for places of necessity. This is like the clear ruling we have: when water is in a cistern and there is no vessel to draw water with.

Twenty-seventh: His saying (may Allah have mercy on him) regarding repeated use; the apparent meaning is that if this meaning is not considered in the case of impurity (najis), then what about purity (tahir)? It is neither clarifying nor pure in itself. For example, if impurity stains a body or garment in separate places, it will be gathered [collectively]. Now, if it reaches the limit of prohibition, it will prohibit. If impurity falls into a large body of water, it cannot apparently be gathered, because in water...

फ़तावा रिज़विया, जिल्द दो

...उक्त निषेध का कारण बना। बहर का इसे बदा'इ की उक्त चर्चा से ख़ारिज करना सही को ग़लत से ख़ारिज करने जैसा है, जैसा कि आप जान चुके हैं। और रही 'जागने वाले' (मुस्तयक़िज़) वाली हदीस, तो मैं कहता हूँ कि इस बारे में हमारी दलील यह नहीं है क्योंकि यह संभावना है कि यह शारीरिक अशुद्धि (नजासत-ए-ऐनिया) के कारण हो, बल्कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस इरशाद से साफ़ ज़ाहिर है "फ़इन्नहू ला यदरी ऐना बातत यदुहु" (क्योंकि वह नहीं जानता कि उसका हाथ रात को कहाँ रहा), और अल्लामा ने इस स्पष्ट जवाब से हटकर तीन जवाब दिए हैं जिनमें से कोई भी सही नहीं है। पहला: विशिष्टता का दावा, जिस पर कोई दलील नहीं है। दूसरा: इसे एक रस्म (तअ़ब्बुदी) और बुद्धि से परे कैसे माना जा सकता है जबकि हदीस में ही इसके अर्थ की ओर संकेत मौजूद है? और वह यह है कि "फ़इन्नहू ला यदरी ऐना बातत यदुहु"। तीसरा: हज़रत अब्दुल्लाह के साथियों से जो रिवायत है, संभव है कि वह इसलिए हो क्योंकि अबू हुरैरा इसे सामान्य तौर पर भेजते थे, तो उन्होंने ज़रूरत के स्थानों के साथ इसे विशेष करने की ओर इशारा किया हो, जैसा कि हमारे यहाँ यह स्पष्ट हुक्म मौजूद है कि जब पानी तालाब में हो और पानी निकालने के लिए कोई बर्तन न हो।

सत्ताईसवाँ: बार-बार उपयोग के बारे में उनका कथन (रहमतुल्लाहि अलैहि), स्पष्ट रूप से यही है कि यदि अशुद्ध (नजिस) के मामले में इस अर्थ पर विचार नहीं किया जाता, तो फिर शुद्ध (ताहिर) का क्या हाल होगा? यह न तो प्रकट करने वाला है और न ही स्वयं शुद्ध है। उदाहरण के लिए, यदि अशुद्धि शरीर या कपड़े के अलग-अलग हिस्सों पर लग जाए, तो उसे इकट्ठा माना जाएगा। अब यदि वह निषेध की सीमा तक पहुँच जाए, तो वह मना कर देगा। यदि बड़ी मात्रा में पानी में अशुद्धि गिर जाए, तो उसे ज़ाहिरी तौर पर इकट्ठा नहीं किया जा सकता, क्योंकि पानी में...

पेज 182 ऑफ़ 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

مذکور نہی کا باعث ہوا۔ بحر کا اس کو بدائع کی مذکور بحث سے دفع کرنا صحیح کو غیر صحیح سے دفع کرنا ہے جیسا کہ آپ نے جان لیا اور رہی مستیقظ والی حدیث، تو میں کہتا ہوں اس سلسلہ میں ہماری دلیل یہ نہیں ہے کیونکہ یہ احتمال ہے کہ یہ نجاست عینیہ کی وجہ سے ہو بلکہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد "فانہ لایدری این باتت یدہ" (وہ نہیں جانتا کہ اس کا ہاتھ رات کو کہاں رہا) سے یہی ظاہر ہے، اور علامہ نے اس جواب سے عدول کر کے تین جوابات دیے جن میں سے کوئی ٹھیک نہیں، پہلا دعوائے خصوص، جس پر کوئی دلیل نہیں۔ دوسرے یہ کہ کس طرح اس کو تعبدی اور غیر معقول المعنی قرار دیا جاسکتا ہے جبکہ خود حدیث میں معنی کی طرف رہنمائی ہے اور وہ یہ ہے کہ فانہ لایدری این باتت یدہ۔ تیسرے عبداللہ کے اصحاب سے جو مروی ہے ممکن ہے وہ اس لئے ہو کہ ابوہریرہ اس کا ارسال کرتے ہوں تو انہوں نے ضرورت کے مقامات کے ساتھ اس کو مختص کرنے کی طرف اشارہ کیا ہو، جیسا کہ ہمارے یہاں یہ واضح حکم موجود ہے کہ جب پانی تالاب میں ہو اور کوئی برتن پانی نکالنے کیلئے نہ ہو۔

ستائیسواں: ان کا قول تکرار استعمال کی بابت، ظاہر یہی ہے کہ معنی نجس میں اعتبار نہ کیا جائے تو پھر طاہر کا کیا حال ہوگا۔ یہ نہ ظاہر کرنے والا ہے اور نہ بذات خود ظاہر ہے، مثلاً نجاست جو بدن یا کپڑے کو متفرق مقامات پر لگ جائے تو اس کو جمع کیا جائے گا۔ اب اگر منع کی حد کو پہنچ جائے تو منع کرے گی۔ اگر کثیر پانی میں نجاست گر جائے تو اس کو بظاہر جمع نہیں کیا جاسکتا ہے، کیونکہ پانی میں

Fatawa Razawiyyah Volume Two

(Left Column - Arabic text translation) Like falling in one place, it is not due to non-accumulation, but due to not reaching the threshold of prohibition. Even if it did reach [the threshold], in that the sum changed one of its qualities whereas individual parts did not, there is no doubt in the accumulation [being considered]. Allah Almighty knows best. This concludes the discussion with Allama Qasim, may Allah Almighty have mercy on him. Through it, the correct truth has appeared, such that there is no need for more. Praise be to Allah, the Praiseworthy, the Glorious.

Section Two: Regarding the words of Allama Zayn in 'al-Bahr' and 'al-Risalah'. The requirement of chronological order was to present the words of Allama Ibn al-Shuhnah (may Allah Almighty have mercy on both) before him, but we wanted to join the similar with its similar. He [Allama Zayn] (may Allah have mercy on him) did not bring anything in his treatise or his 'Bahr' that exceeds what Allama Qasim mentioned, except for what has no relation to the point of contention. He first expounded on the definition of 'abundant water' (al-ma' al-kathir), stating that the school of thought is to entrust it to the judgment of the person afflicted. The estimation of 'ten by ten' was only chosen by later scholars to provide ease for those who have no opinion of their own, and it does not return to any reliable legal (shari'i) basis. Then he spoke on the attribute of 'used water' (al-ma' al-musta'mal), and that the position on which a fatwa is given is that it is pure (tahir) but not purifying (ghayr tahur). Then he came to the issue and said: They have said that when used water is mixed with purifying water, dominance (ghalaba) is considered; so if the water...

(Right Column - Urdu text translation) If impurity falls in ten places, it is the same as if it fell in one place. So, this thing is not due to lack of accumulation, but because it has not reached the threshold of prohibition. If it reaches the threshold of prohibition, for example, the sum of impurity changes one of its qualities, and each individual part does not change it, then there is no doubt in accumulating [them]. This was the complete conversation with Allama Qasim, the truth became evident from it, there is no need for more than this, and all praise is for Allah, the Praiseworthy, the Glorious.

Second section regarding Allama Zayn's words in 'Bahr' and 'Risalah': The demand of chronological order was that we should put Allama Ibn al-Shuhnah's words before it, but we wanted to join one matching view to another matching one. In his treatise or 'Bahr', he did not add anything more to Allama Qasim's words; only that matter is mentioned which has no relation to the point of contention. First, he defined

'abundant water' (kathir pani) and said that in the school, this matter is entrusted to the person concerned. The estimate of 'ten by ten' was established by later scholars for the ease of those people who do not have their own opinion, and there is no reliable legal (shari'i) evidence for it. Then he spoke on 'used water' and stated that the fatwa-abiding saying is that it is pure but not a purifier. Then he stated the main issue and said that the scholars (Mashayikh) say that used water, when [mixed] with purifying water...

फतावा रज़विय्या जिल्द दो

(बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद) जैसे एक स्थान पर गिरना, इसलिए यह जमा न होने के कारण नहीं है बल्कि निषेध की सीमा तक न पहुँचने के कारण है। भले ही वह सीमा तक पहुँच जाए, इस तरह कि कुल योग ने उसके गुणों में से किसी एक को बदल दिया हो जबकि व्यक्तिगत हिस्सों ने नहीं बदला, तो जमा करने में कोई संदेह नहीं है। अल्लाह सबसे अच्छा जानता है। अल्लामा कासिम के साथ चर्चा का यह अंत है, अल्लाह उन पर दया करे। इसके माध्यम से सही सत्य प्रकट हो गया है, इस तरह कि अधिक की कोई आवश्यकता नहीं है। और अल्लाह की प्रशंसा हो, जो प्रशंसनीय और महिमामय है।

दूसरा अध्याय: 'अल-बहर' और 'अल-रिसाला' में अल्लामा ज़ैन के शब्दों के बारे में। कालानुक्रमिक क्रम की आवश्यकता यह थी कि हम उनसे पहले अल्लामा इब्न अल-शुहना के शब्दों को प्रस्तुत करते (अल्लाह उन दोनों पर दया करे), लेकिन हम समान दृष्टिकोण को समान के साथ जोड़ना चाहते थे। उन्होंने [अल्लामा ज़ैन] ने अपनी किताब या 'बहर' में अल्लामा कासिम द्वारा वर्णित बातों के अलावा कुछ और नहीं जोड़ा, सिवाय उन बातों के जिनका विवाद से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने पहले 'प्रचुर जल' (अल-मा अल-कसीर) की परिभाषा पर विस्तार से चर्चा की, और कहा कि मज़हब यह है कि इसे पीड़ित व्यक्ति के विवेक पर छोड़ दिया जाए। 'दस-दर-दस' का अनुमान केवल बाद के विद्वानों द्वारा उन लोगों की सुगमता के लिए चुना गया था जिनकी अपनी कोई राय नहीं है, और यह किसी विश्वसनीय शरीयती आधार पर नहीं टिकता है। फिर उन्होंने 'इस्तेमाल किए गए पानी' (अल-मा अल-मुस्तअमल) की विशेषता के बारे में बात की, और यह कि जिस पर फतवा दिया गया है वह यह है कि यह पवित्र (ताहिर) है लेकिन शुद्ध करने वाला (ग़ैर तहूर) नहीं है। फिर वह मुद्दे पर आए और कहा: उन्होंने कहा है कि जब इस्तेमाल किया गया पानी शुद्ध करने वाले पानी के साथ मिल जाता है, तो प्रबलता (ग़लबा) पर विचार किया जाता है; तो यदि पानी...

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद) यदि दस स्थानों पर अशुद्धि गिर जाए तो वह वैसी ही है जैसे एक स्थान पर गिरी हो, तो यह चीज़ 'अदम-ए-जमा' (इकट्ठा न होने) के कारण नहीं है बल्कि इस कारण से है कि वह 'हद-ए-मना' (मनाही की सीमा) तक नहीं पहुँची है और अगर 'हद-ए-मना' तक पहुँच जाए, उदाहरण के लिए यह कि अशुद्धियों का कुल योग उसके गुणों में से किसी गुण को बदल दे, और प्रत्येक व्यक्तिगत हिस्सा न बदले तो इकट्ठा करने में कोई संदेह नहीं है। यह अल्लामा

कासिम के साथ पूरी बातचीत थी, इससे सत्य स्पष्ट हो गया, इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है, और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो प्रशंसनीय और महिमामय है।

दूसरा खंड: अल्लामा ज़ैन के भाषण में जो 'बहर' और 'रिसाला' में है: समय के क्रम की आवश्यकता यह थी कि हम अल्लामा इब्न अल-शहना के भाषण को उनसे पहले रखते, लेकिन हम एक सहमत विचार को दूसरे सहमत विचार के साथ जोड़ना चाहते थे। उन्होंने अपने 'रिसाला' या 'बहर' में अल्लामा कासिम के भाषण में कुछ और नहीं जोड़ा है; केवल वही बात कही गई है जिसका विवाद के स्थान से कोई संबंध नहीं है। पहले तो उन्होंने 'कसीर पानी' (अधिक जल) की सीमा निर्धारित की है और कहा है कि मज़हब में यह मामला संबंधित व्यक्ति को सौंपा गया है, और 'दह-दर-दह' (दस-गुणा-दस) के अनुमान को बाद के विद्वानों ने उन लोगों की आसानी के लिए बनाया है जिनकी अपनी कोई राय नहीं है और इसका कोई विश्वसनीय शरीयत प्रमाण नहीं है। फिर उन्होंने 'मुस्तअमल पानी' (उपयोग किए गए जल) पर चर्चा की है और बताया है कि 'मुफ़्ता-बिही' मत यह है कि यह पवित्र तो है लेकिन पवित्र करने वाला नहीं है। फिर मूल समस्या का वर्णन किया गया है और कहा गया है कि मशायख़ (विद्वान) फरमाते हैं कि मुस्तअमल पानी जब पाक करने वाले पानी के..

فتاوی رضویه جلد ثانی

(Left Column - Arabic) كالوقوع في موضع فليس لعدم الجمع بل لعدم البلوغ الى حد المنع حتى لوبلغت بأن غير المجموع احد اوصافه و ماكانت الافراد لتغيره فلا شك في الجمع والله تعالى اعلم هذا تمام الكلام مع العلامة قاسم رحمه الله تعالى وقد ظهر به الحق السديد، بحيث لاحاجة الى المزيد، والحمد لله الحميد المجيد۔ الفصل الثاني: في كلام العلامة زين في البحر والرسالة كانت قضية ترتيب الزمان ان نقدم عليه كلام العلامة ابن الشحنة رحمهما الله تعالى لكن اردنا الحاق الموافق بموافقه لم يأت رحمه الله تعالى في رسالته ولا في بحره بشيئ يزيد على ما اورد العلامة قاسم الا مالا مساس له بمحل النزاع افاض اولا في تحديد الماء الكثير وان المذهب تفويضه الى رأى المبتلى وان التقدير بعشر في عشر انما اختاره المتأخرون تيسيرا على من لارأى له وانه لا يرجع الى اصل شرعي يعتمد عليه ثم تكلم على صفة الماء المستعمل وان المفتى به انه طاہر غير طهور ثم اتى على المسألة فقال وقد قالوا ان الماء المستعمل اذا اختلط بالطهور تعتبر فيه الغلبة فان كان الماء

(Right Column - Urdu) اگر دس جگہ نجاست گر جائے تو وہ ایسی ہے جیسے ایک جگہ گری ہو، تو یہ چیز عدم جمع کی وجہ سے نہیں ہے بلکہ اس وجہ سے ہے کہ وہ حد منع تک نہیں پہنچی ہے اور اگر حد منع تک پہنچ جائے مثلاً یہ کہ نجاست کا مجموعہ اس کے اوصاف میں سے کسی وصف کو بدل دے، اور ہر فرد نہ بدلے تو جمع کرنے میں شک نہیں۔ یہ مکمل گفتگو تھی علامہ قاسم کے ساتھ، اس سے حق ظاہر ہو گیا، اس سے زیادہ کی حاجت نہیں، والحمد لله الحميد المجيد۔ دوسری فصل علامہ زین کے کلام میں جو بحر اور رسالہ میں ہے: زمانی ترتیب کا تقاضا یہ تھا کہ ہم ابن الشحنہ کا کلام اس پر مقدم کرتے، لیکن ہم نے ایک موافق کو دوسرے موافق سے لاحق کرنا چاہا ہے انہوں نے اپنے رسالہ میں یا بحر میں علامہ قاسم کے کلام سے کچھ مزید

اضافہ نہیں کیا ہے، صرف وہی بات مذکور ہے جس کا محل نزاع سے کچھ تعلق نہیں، پہلے تو انہوں نے کثیر پانی کی تحدید کی ہے اور کہا کہ مذہب میں یہ معاملہ صاحب معاملہ کے سپرد ہے، اور دہ در دہ کے اندازہ کو متاخرین نے اُن لوگوں کی آسانی کیلئے وضع کیا ہے جن کی اپنی کوئی رائے نہ ہو اور اس کی کوئی قابل اعتماد شرعی دلیل نہیں، پھر انہوں نے مستعمل پانی پر کلام کیا ہے اور بتایا ہے کہ مفتی بہ قول یہ ہے کہ یہ طاہر تو ہے مگر پاک کرنے والا نہیں ہے، پھر اصل مسئلہ بیان کیا ہے اور فرمایا ہے کہ مشائخ فرماتے ہیں کہ مستعمل پانی جب پاک کرنے والے پانی کے

Fatawa Razawiyya Volume II

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] ...if it mixes with it, then the majority will be considered. If the purifying water is more, then performing ablution with all the water will be permissible, otherwise it will be impermissible. This was clarified by Imam al-Zaylai in Sharh al-Kanz, Allama Siraj-ud-Din al-Hindi in Sharh al-Hidayah, and the researcher in Fath al-Qadir. He stated that this in its absolute sense includes when water is used externally, then the used water is added and mixes with the purifying water, or a person dives into purifying water or performs ablution in it. (T) I say: (1) This statement is based on considering only those parts of the water that are in contact with the body as 'used' (musta'mal), and what is beyond that is purifying water mixed with used water. Whereas, the fact is not so; rather, the entire amount of water comes into contact with it [the body], therefore all of it is 'used.' How can the absolute term include it? He said: The text in Al-Bada'i also points to this. Then he mentioned three texts and said: This is explicit evidence for what we have said. (2) I say: (2) There is no place for 'also' (aydan) here, because this indication is based on the understanding of Al-Bada'i; otherwise there is no indication as you have known. And whatever is in Al-Bada'i, we have already discussed it in the best manner, praise be to Allah! He said: The text of Khulasat al-Fatawa also indicates this, which is that an impure person took a bath and some of the water from his washing splashed into his vessel, it did not ruin the water for him; however, if it flowed into it in a stream, it ruined it. And similarly, the public bath pool is based on this and on...

[Left Column - Original Arabic Text] Al-tahur ghaliban yajuzu al-wudu' bi-al-kull wa-illa la yajuzu wa-mimman nassa 'alayhi al-Imam al-Zaylai fi Sharh al-Kanz wa-al-Allamah Siraj al-Din al-Hindi fi Sharh al-Hidayah wa-al-Muhaqqiq fi Fath al-Qadir qala wa-hiya bi-itlaqihi tashmalu ma idha ustu'mila al-ma'u kharijan thumma ulqiya al-ma'u al-musta'mal wa-ikhtalata bi-al-tahur aw inghamasa fi al-ma'i al-tahur aw tawadda'a fihi ih- Aqulu: (1) mabni 'ala ja'li al-musta'mal hiya al-ajza' al-muttasilah bi-al-badan fa-ma wara'aha tahurun ikhtalata bihi al-ma'u al-musta'mal wa-laysa hakadha bal kulluhu mulaqin fa-kulluhu musta'malun fa-kayfa yashmaluhu al-itlaqu qala: wa-yadullu 'alayhi aydan ma fi al-Bada'i wa-dhakara 'ibarat al-thalath qala fa-hadha sarihun fima qulna 2 Aqulu: la mahalla (2) li-aydan fa-inna tilka al-dalalah mabniyatun 'ala ma fi al-Bada'i wa-illa fa-la dalalata kama 'alimta wa-ma fi al-Bada'i qad faraghna 'anhu bi-abda'i wajhin wa-lillahi al-hamd! Qala: wa-yadullu 'alayhi aydan ma fi Khulasat al-Fatawa junubun ightasala fa-intadaha min ghuslihi shay'un fi ina'ihi lam yufsid 'alayhi

al-ma'a amma idha kana yasilu fihi saylanan afsadahu wa-kadha hawdu al-hammam 'ala hadha wa-'ala

[Footnotes] 1. Ar-Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ishtibah from Rasa'il Ibn Nujaym, Idarat al-Qur'an Karachi 6/819/2 2. Ar-Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ishtibah from Rasa'il Ibn Nujaym, Idarat al-Qur'an Karachi 6/819/2 Page 184 of 711

फतावा रज़विया जिल्द द्वितीय

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...साथ मिल जाए तो इसमें ग़लबा (प्रभुत्व) का एतबार होगा। अगर पाक करने वाला पानी ज़्यादा हो तो सब पानी से वज़ू जाइज़ होगा वरना ना-जाइज़ होगा। इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) ज़ैलई ने शरह कंज़ में, अल्लामा सिराजुद्दीन हिन्दी ने शरह हिदाया में और मोहक़्क़िक़ ने फ़तह अल-क़दीर में की है, और फ़रमाया है कि इस सूरत को भी शामिल है कि जब पानी बाहरी तौर पर इस्तेमाल किया जाए फिर मुस्तअमल (इस्तेमालशुदा) पानी डाला जाए और वह पाक करने वाले पानी से मिल जाए या आदमी पाक करने वाले पानी में ग़ोता खाए या उससे वज़ू करे। (त) मैं कहता हूँ: (१) यह क़ौल इस पर मबनी (आधारित) है कि मुस्तअमल पानी उन अज्ज़ा (अंशों) को क़रार दिया जाए जो बदन से मुत्तसिल (जुड़े) हों और इसके अलावा पाक करने वाला है जिसके साथ मुस्तअमल पानी मिल गया है, हालाँकि बात यह नहीं है बल्कि कुल पानी उससे मिलने वाला है लिहाज़ा कुल मुस्तअमल होगा, इसको इतलाक़ (सामान्य नियम) कैसे शामिल है? फ़रमाया इस पर बदाई की इबारत भी दलालत करती है और फिर उन्होंने तीनों इबारतें ज़िक्र की हैं, फ़रमाया यह हमारे क़ौल की सरीह (स्पष्ट) दलील है। (२) मैं कहता हूँ: (२) यहाँ 'एज़न' (भी) का कोई मक़ाम नहीं, क्योंकि यह दलालत मफ़हूम-ए-बदाई पर मबनी है वरना कोई दलालत नहीं जैसा कि तुमने जाना, और जो कुछ बदाई में है उस पर अच्छी तरह हम बहस कर चुके हैं वल्लाह अल-हम्द! फ़रमाया इस पर खुलासतुल फ़तावा की इबारत भी दलालत करती है वह यह है कि एक नापाक शख़्स ने ग़ुस्ल किया और उसके धोने से कुछ छींटे उसके बर्तन में गिरे, तो उसने पानी को खराब नहीं किया; लेकिन अगर वह धार के रूप में उसमें गिरा, तो उसने उसे खराब कर दिया। और इसी तरह हमाम का हौज इसी पर आधारित है और...

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] अल-तहुर ग़ालिबन यजूज़ु अल-वुज़ू' बि-अल-कुल्ल व-इल्ला ला यजूज़ु व-मिम्मन नस्सा 'अलैहि अल-इमाम अल-ज़ैलई फ़ी शरह अल-कंज़ व-अल-'अल्लामा सिराज अल-दीन अल-हिन्दी फ़ी शरह अल-हिदाया व-अल-मुहक़्क़िक़ फ़ी फ़तह अल-क़दीर क़ाला व-हिया बि-इतलाक़िही तशमालु मा इज़ा उस्तु'मिला अल-मा'उ ख़ारिजन थुम्मा उल्क़िया अल-मा'उ अल-मुस्तअमल व-इख़्तलता बि-अल-तहुर अव इन-ग़मसा फ़ी अल-मा'इ अल-तहुर अव तवद्दा'अ फ़ीहि इह- अक़ूलु: (१) मबनी 'अला ज'लि अल-मुस्तअमल हिया अल-अज्ज़ा' अल-मुत्तसिला बि-अल-बदन फ़-मा वरा'अहा तहुरुन इख़्तलता बिही अल-मा'उ अल-मुस्तअमल व-लैसा हकाज़ा बल कुल्लुहु मुलाक़िन फ़-कुल्लुहु मुस्तअमलुन फ़-कैफ़ा यशमलुहु अल-इतलाक़ु क़ाला: व-यदुल्लू 'अलैहि एज़न

मा फ़ी अल-बदाई' व-ज़करा 'इबारात अल-थलाथ क़ाला फ़-हाज़ा सरीहुन फ़ीमा क़ुलना २ अक़ूलु: ला महल्ला (२) लि-एज़न फ़-इन्ना तिल्का अल-दलाला मबनीयतुन 'अला मा फ़ी अल-बदाई' व-इल्ला फ़-ला दलाला कमा 'अलिम्ता व-मा फ़ी अल-बदाई' क़द फ़राग़्ना 'अन्हु बि-अब्दाई वज्हिन व-लिल्लाहि अल-हम्द! क़ाला: व-यदुल्लू 'अलैहि एज़न मा फ़ी खुलासत अल-फ़तावा जुनूबुन इग़तसला फ़-इन्तदहा मिन ग़ुस्लिही शै'उन फ़ी इना'इही लम युफ़्सिद 'अलैहि अल-मा'अ अम्मा इज़ा काना यसीलू फ़ीहि सैलानन अफ़्सदहू व-कज़ा हौदु अल-हम्माम 'अला हाज़ा व-'अला

[पाद टिप्पणियाँ] १. अर-रिसाला फ़ी जवाज़ अल-वुज़ू मअ अल-इश्तिबाह, रसाइल इब्न नुजैम, इदारतुल क़ुरआन कराची ६/८१९/२ २. अर-रिसाला फ़ी जवाज़ अल-वुज़ू मअ अल-इश्तिबाह, रसाइल इब्न नुजैम, इदारतुल क़ुरआन कराची ६/८१९/२ पृष्ठ ७११ में से १८४

[دائیں کالم کی عبارت - اردو ترجمہ و تشریح] ساتھ مل جائے تو اس میں غلبہ کا اعتبار ہوگا اگر پاک کرنے والا پانی زیادہ ہو تو سب پانی سے وضو جائز ہوگا ورنہ ناجائز ہوگا۔ اس کی تصریح زیلعی نے شرح کنز میں، علامہ سراج الدین ہندی نے شرح ہدایہ میں اور محقق نے فتح القدیر میں کی ہے، اور فرمایا ہے کہ اس صورت کو بھی شامل ہے کہ جب پانی خارجی طور پر استعمال کیا جائے پھر مستعمل پانی ڈالا جائے اور وہ پاک کرنے والے پانی سے مل جائے یا آدمی پاک کرنے والے پانی میں غوطہ کھائے یا اس سے وضو کرے اھ ۔(ت) میں کہتا ہوں (۱) یہ قول اس پر مبنی ہے کہ مستعمل پانی ان اجزاء کو قرار دیا جائے جو بدن سے متصل ہوں اور اس کے علاوہ پاک کرنے والا ہے جس کے ساتھ مستعمل پانی مل گیا ہے، حالانکہ بات یہ نہیں ہے بلکہ کل پانی اس سے ملنے والا ہے لہذا کل مستعمل ہوگا، اس کو اطلاق کیسے شامل ہے؟ فرمایا اس پر بدائع کی عبارت بھی دلالت کرتی ہے اور پھر انہوں نے تینوں عبارات ذکر کی ہیں، فرمایا یہ ہمارے قول کی صریح دلیل ہے۔ (۲) میں کہتا ہوں (۲) 'ایضاً' کا یہاں کوئی مقام نہیں، کیونکہ یہ دلالت مفہوم بدائع پر مبنی ہے ورنہ کوئی دلالت نہیں جیسا کہ تم نے جانا، اور جو کچھ بدائع میں ہے اس پر اچھی طرح ہم بحث کر چکے ہیں وللہ الحمد، فرمایا اس پر خلاصۃ الفتاوی کی عبارت بھی دلالت کرتی ہے وہ یہ ہے کہ ایک ناپاک شخص نے غسل کیا اور اس کے دھونے سے کچھ چھینٹیں اس کے برتن میں گریں تو اس نے پانی کو خراب نہیں کیا، لیکن اگر وہ دھار کی شکل میں اس میں گرا تو اسے خراب کر دیا۔ اور اسی طرح حمام کا حوض اسی پر مبنی ہے اور---

[بائیں کالم کی عبارت - اصل عربی متن] الطهور غالباً يجوز الوضوء بالكل والا لا يجوز وممن نص عليه الامام الزيلعي في شرح الكنز والعلامة سراج الدين الهندى في شرح الهداية والمحقق في فتح القدير

قال وهي بأطلاقة تشمل ما اذا استعمل الماء خارجاً ثم القى الماء المستعمل واختلط بالطهور او انغمس في الماء الطهور او توضأ فيه اهـ اقول: (١) مبنى على جعل المستعمل هي الاجزاء المتصلة بالبدن فما وراءها طهور اختلط به الماء المستعمل وليس هكذا بل كله ملاق فكله مستعمل فكيف يشمله الاطلاق قال: ويدل عليه ايضا ما في البدائع وذكر عبارات الثلاث قال فهذا صريح فيما قلنا 2 اقول: لا محل (٢) لا يضاً فان تلك الدلالة مبتنية على ما في البدائع والا فلا دلالة كما علمت وما في البدائع قد فرغنا عنه بابدع وجه ولله الحمد! قال: ويدل عليه ايضا ما في خلاصة الفتاوى جنب اغتسل فانتضح من غسله شيئ في انائه لم يفسد عليه الماء اما اذا كان يسيل فيه سيلانا افسده وكذا حوض الحمام على هذا وعلى

[حواشى] 1 الرسالة في جواز الوضوء مع الاشتباه من رسائل ابن نجيم ادارة القرآن كراچى ٦/٨١٩/٢

2 الرسالة في جواز الوضوء مع الاشتباه من رسائل ابن نجيم ادارة القرآن كراچى ٦/٨١٩/٢ Page 184 of 711

Fatawa Rizwia, Volume Second

Right Column: What? If some splashes from it fly and fall into his vessel, its water will not become corrupted. If the used water flows into it, it will corrupt it. Similarly, the tank of a bathhouse, and according to the saying of Imam Muhammad, it will not corrupt it unless it becomes dominant, meaning it does not take it out of the quality of purifying, unless it overcomes the pure water. End with wording. (T) I say, may God have mercy on you, this is 'mulqi' (the thing thrown) while the discussion is about 'mulaqi' (the thing it meets/contacts). Then he himself posed a question based on many branches mentioned in numerous books that contradict what he inclined towards. Among them he mentioned (1) a branch from Al-Khaniyah: If the leftover water of ablution was poured into a well but it was not used for 'istinja' (cleaning after relieving oneself), then according to the saying of Muhammad it will not be impure, however, twenty buckets will be drawn from it so that the water becomes purifying. End. A branch from Al-Khulasah (2): This is also like that but it mentions drawing more than twenty buckets and regarding that water which was poured into it, according to Muhammad. End. He said, so this apparently suggests that if a little used water, water...

Left Column: The saying of Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him): It does not corrupt as long as it does not dominate over it, meaning it does not take it out of being purifying. End with his wording. I say: (1) May Allah have mercy on you, this is 'mulqi' and the discussion is regarding 'mulaqi'. Then he posed a question to himself regarding many branches in well-known books that contradict what he inclined towards. He cited from them: (1) A branch of Al-Khaniyah: If ablution water is poured into a well and it was not used for 'istinja', according to the saying of Muhammad it does not become impure but twenty buckets are drawn from it to make the water purifying. End. And branch 3: Al-Khulasah similarly, except that it says drawing the majority or more than twenty buckets and from water poured into it according to Muhammad. End. He said: So this is apparent in its usage of water by the falling of a small amount of used water into it according to the saying of Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). He answered that it is based on a weak narration from Muhammad. Note: He mentioned this branch after several other branches and we have annexed it to the branch of Al-Khaniyah because the form of both is the same. End from him, may Allah forgive him (M). They mentioned this branch after multiple branches and we have attached it to the branch of Khaniyah because the situation of both is the same. End (T).

Footnotes: 1. Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Quran 2/819/6 2. Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Quran 2/819/6 3. Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Quran 2/820/7 4. Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Quran 2/819/6

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

दायां स्तंभ: क्या? यदि उससे कुछ छींटें उड़कर उसके बर्तन में गिर जाएं तो उसका पानी खराब नहीं होगा, यदि इस्तेमाल किया हुआ पानी बहकर उसमें चला जाए तो उसे खराब कर देगा। इसी तरह हमाम (स्नानगृह) का हौज, और इमाम मुहम्मद के कथन के अनुसार वह उसे तब तक खराब नहीं करेगा जब तक कि वह प्रबल न हो जाए, यानी उसे शुद्ध करने के गुण से बाहर न कर दे, जब तक कि वह शुद्ध पानी पर हावी न हो जाए। इति। (त) मैं कहता हूँ कि ईश्वर आप पर दया करे, यह 'मुल्क़ी' (फेंकने वाली चीज़) है जबकि चर्चा 'मुलाक़ी' (मिलने वाली चीज़) के बारे में है, फिर उन्होंने स्वयं अपने ऊपर उन अनेक उप-विषयों (फुरूअ) से प्रश्न किया जो अनेक पुस्तकों में वर्णित हैं, ये सभी उनके दृष्टिकोण के विपरीत हैं। खानिया का उप-विषय (1): यदि वज़ू का बचा हुआ पानी कुएँ में डाल दिया गया लेकिन उसका उपयोग इस्तंजा के लिए नहीं किया गया था, तो मुहम्मद के कथन के अनुसार वह नापाक (अशुद्ध) नहीं होगा, फिर भी उससे बीस बाल्टी पानी निकाला जाएगा ताकि पानी शुद्ध करने वाला हो जाए। इति। खुलासा का उप-विषय (2): यह भी इसी तरह है लेकिन इसमें बीस बाल्टी से अधिक निकालने का उल्लेख है और उस पानी के बारे में जो उसमें डाला गया है मुहम्मद के अनुसार। इति। उन्होंने कहा, इससे स्पष्टतः यही प्रतीत होता है कि यदि थोड़ा सा इस्तेमाल किया हुआ पानी, पानी...

बायां स्तंभ: मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) का कथन: यह तब तक खराब नहीं होता जब तक कि यह उस पर हावी न हो जाए, यानी यह इसे शुद्धता (तहौरियत) से बाहर नहीं करता। इति शब्दों के साथ। मैं कहता हूँ: (1) अल्लाह आप पर रहम करे, यह 'मुल्क़ी' है और चर्चा 'मुलाक़ी' के बारे में है। फिर उन्होंने स्वयं पर एक प्रश्न किया उन अनेक उप-विषयों की ओर से जो प्रसिद्ध पुस्तकों में हैं और जो उनके झुकाव के विपरीत हैं। उन्होंने उनमें से उल्लेख किया: (1) खानिया का उप-विषय: यदि वज़ू का पानी कुएँ में डाला जाए और उसका इस्तंजा में उपयोग न किया गया हो, तो मुहम्मद के कथन के अनुसार वह अशुद्ध नहीं होगा लेकिन उससे बीस बाल्टी निकाली जाएंगी ताकि पानी शुद्ध हो जाए। इति। और उप-विषय 3: खुलासा उसी प्रकार है, सिवाय इसके कि उसमें बीस बाल्टी से अधिक निकालने का और मुहम्मद के अनुसार उसमें डाले गए पानी का उल्लेख है। इति। उन्होंने कहा: तो यह मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) के कथन के अनुसार इस्तेमाल किए हुए पानी के थोड़े से गिरने से पानी के इस्तेमाल में स्पष्ट है। और उन्होंने उत्तर दिया कि यह मुहम्मद से एक कमजोर रिवायत (वर्णन) पर आधारित है। नोट: उन्होंने इस उप-विषय को कई उप-

विषयों के बाद उल्लेख किया है और हमने इसे खानिया के उप-विषय के साथ जोड़ दिया है क्योंकि दोनों का स्वरूप एक ही है। इति उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)। उन्होंने इस उप-विषय को कई उप-विषयों के बाद ज़िक्र किया है और हमने इसे खानिया के उप-विषय से जोड़ दिया है क्योंकि दोनों की स्थिति एक जैसी है। इति (त)।

पादलेख: 1. इब्न नुजैम के पत्रों से 'रिसाला फी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह', इदारात अल-कुरान 2/819/6 2. इब्न नुजैम के पत्रों से 'रिसाला फी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह', इदारात अल-कुरान 2/819/6 3. इब्न नुजैम के पत्रों से 'रिसाला फी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह', इदारात अल-कुरान 2/820/7 4. इब्न नुजैम के पत्रों से 'रिसाला फी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह', इदारात अल-कुरान 2/819/6

पृष्ठ 185 का 711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

دایاں کالم: کیا؟ اس سے کچھ چھینٹیں اڑ کر اس کے برتن میں پڑے تو اس کا پانی فاسد نہ ہوگا، اگر مستعمل بہہ کر اس میں گیا تو فاسد کردے گا اسی طرح حمام کا حوض ، اور امام محمد کے قول پر فاسد نہ کرے گا جب تک غالب نہ ہو جائے ، یعنی اس کو پاک کرنے کے وصف سے خارج نہ کریگا الّا یہ کہ وہ پاک پر غالب ہو جائے اھ بلفتہ - (ت) میں کہتا ہوں خدا آپ پر رحم کرے یہ مُلقی ہے جبکہ گفتگو ملاقی میں ہے ، پھر انہوں نے خود ہی اپنے اوپر ان فروعِ کثیرہ سے سوال وارد کیا جو کتب کثیرہ میں وارد ہیں، یہ سب ان کے نظریہ کے مخالف ہیں۔ خانیہ کی فرع (۱) : اگر وضو کا بچا ہوا پانی کنویں میں بہا دیا مگر اس سے استنجا نہیں کیا تھا تو یہ محمد کے قول پر نجس نہ ہوگا، تاہم اس سے بیس ڈول نکالے جائیں گے تاکہ پانی طہور ہو جائے اھ - خلاصہ کی فرع (۲) : یہ بھی اسی طرح ہے مگر اس میں بیس ڈول سے زیادہ نکالے جانے کا ذکر ہے اور اُس پانی سے جو اس میں بہایا گیا ہے محمد کے نزدیک اھ - فرمایا اس سے بظاہر یہی معلوم ہوتا ہے کہ اگر تھوڑا مستعمل پانی، پانی

بایاں کالم: قولہ محمد رحمہ اللہ تعالی لا یفسد مالم یغلب علیہ یعنی لا یخرجہ عن الطھوریۃ ۱اہ بلفظہ - اقول : (۱) رحمک اللہ ہذا ملقی والکلام فی الملاقی ثم اورد علی نفسہ سؤالا من قبل فروع کثیرۃ فی کتب مشھورۃ تخالف ماجنح الیہ اورد منہا (۱) فرع الخانیۃ لوصب الوضوء فی بئر ولم یکن استنجی بہ علی قول محمد لایکون نجسا لکن ینزح منھا عشرون لیصیر الماء طھوراً ۲اہ - وفرع ۳ خلاصہ نحوہ غیر ان فیہ ینزح الاکثر من عشرین دلوا ومن ماء صب فیہ عند محمد ۳اہ- قال فھذا ظاھر فی استعمالہ الماء بوقوع قلیل من الماء المستعمل فیہ علی قول محمد رحمہ اللہ تعالی ٤ واجاب بانہ مبنی علی روایۃ ضعیفۃ عن محمد عہ اورردہ بعد عدۃ فروع والحقناہ بفرع الخانیۃ لاتحاد صورتہما اہ منہ

غفر لہ (م) انہوں نے اس فرع کو متعدد فروع کے بعد ذکر کیا ہے اور ہم نے اسے خانیہ کی فرع سے ملحق کیا ہے کیونکہ دونوں کی صورت ایک جیسی ہے اھ (ت)

حواشی: 1 رسالہ فی جواز الوضوء مع الاشباہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن ۲/۸۱۹/۶ 2 رسالہ فی جواز الوضوء مع الاشباہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن ۲/۸۱۹/۶ 3 رسالہ فی جواز الوضوء مع الاشباہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن ۷/۲/۸۲۰ 4 رسالہ فی جواز الوضوء مع الاشباہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن ۲/۸۱۹/۶

Fatawa-e-Razvia Volume 2

(Left Column - Arabic text with Urdu translation context): "Indeed, water becomes 'used' (musta'mal) by the falling of a small amount of used water into it, not according to the correct position of his school, which is that it does not become 'used' unless it dominates it." This correction is quoted from 'Al-Muhit' and 'Sharh al-Hidayah' by Allama Siraj al-Din al-Hindi, who cited from 'Al-Tuhfah' that this is the chosen (mukhtar) position.

I say: It is as he said, and the two branches in 'Al-Mulqi' do not touch upon the point of contention. Being 'used' does not depend on the dominance of used water, but rather its absence depends on the dominance of the purifying water. Thus, if they are equal, the whole becomes 'used', as they have explicitly stated, including in 'Al-Bahr'.

I say: 'Al-Muhit', 'Al-Siraj', 'Al-Tuhfah', 'Al-Khulasah', and others restricted it to the mention of dominance because true equality is very rare, as they said regarding the understanding of Zaid's superiority from the saying of one who says, "None is superior to him." The branch of 'Jahat' (3) mentioned in the texts and commentaries, its form is that a person descends into a well to seek a bucket, and there is no impurity on his body. According to Muhammad, the water is pure but not purifying (tahir but not tahoor), and the man is pure, although the water that touched his body in the well is less than the rest, yet Muhammad considered it 'used' due to the absence...

(Right Column - Urdu translation and commentary): ...falls into it, then that water will become used. This is the saying of Muhammad (Ith). The answer given is that this saying of Muhammad is based on a weak report that water becomes used due to the falling of a little used water. Their correct school of thought is that water will only be used when the used water dominates it. Its correction is cited from Muhit, and from Sirajuddin Hindi's commentary on Hidaya, and through them from Tuhfa it is cited that the same school of thought is the chosen one. (T)

I say, it is exactly as they have said, and these two branches are in 'Malqi', therefore they have no relation to the point of contention. Being used does not depend on the dominance of used water, but rather its absence of dominance depends on the purifier. So, if both are equal, then the whole will become used, as the scholars have specified. The same is in 'Bahr'. (T)

I say, in 'Muhit', 'Siraj', 'Tuhfa', and 'Khulasa' etc., it is restricted to the mention of dominance because true equality is rare. The scholars have clarified it with this example: if someone says "No one is more superior than Zaid", then Zaid's superiority is understood from it. The branch of 'Jahat' (3) mentioned in texts and commentaries, its form is that a person descended into a well to take out a bucket and there is no impurity on his body, then according to Muhammad the water is pure (tahir) but not purifying (tahoor), and the man is pure, even though the water that is from the well on his...

Footnotes: 1. Treatise on the permissibility of ablution with doubt, from the treatises of Ibn Nujaym, Idara al-Quran 2/820 2. Treatise on the permissibility of ablution with doubt, from the treatises of Ibn Nujaym, Idara al-Quran 2/820 Page 186 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया दूसरा भाग

(बायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद संदर्भ के साथ अरबी पाठ): "निस्संदेह, थोड़ा सा प्रयुक्त (मुस्तअमल) पानी गिरने से पानी प्रयुक्त हो जाता है, न कि उनके मत की सही स्थिति के अनुसार, जो यह है कि वह तब तक प्रयुक्त नहीं होता जब तक कि वह उस पर हावी न हो जाए।" इस सुधार को अल्लामा सिराजुद्दीन अल-हिंदी द्वारा 'अल-मुहीत' और 'शराह अल-हिदाया' से उद्धृत किया गया है, जिन्होंने 'अल-तुहफ़ा' से उद्धृत किया कि यही चुना हुआ (मुख्तार) मत है।

मैं कहता हूँ: यह वैसा ही है जैसा उन्होंने कहा, और 'अल-मुल्की' में दो शाखाएँ विवाद के विषय को स्पर्श नहीं करती हैं। प्रयुक्त होना प्रयुक्त पानी के प्रभुत्व पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इसकी अनुपस्थिति शुद्ध करने वाले पानी के प्रभुत्व पर आधारित है। इसलिए, यदि वे बराबर हैं, तो पूरा प्रयुक्त हो जाता है, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है, जिसमें 'अल-बहर' भी शामिल है।

मैं कहता हूँ: 'अल-मुहीत', 'सिराज', 'तुहफ़ा', 'अल-ख़ुलासा' और अन्य ने प्रभुत्व के उल्लेख तक सीमित रखा है क्योंकि वास्तविक समानता बहुत दुर्लभ है, जैसा कि उन्होंने "उससे श्रेष्ठ कोई नहीं है" कहने वाले के कथन से ज़ैद की श्रेष्ठता को समझने के संबंध में कहा है। 'जहत' (3) की शाखा जो मूल पाठों और टीकाओं में उल्लिखित है, उसका स्वरूप यह है कि एक व्यक्ति कुएं में बाल्टी खोजने के लिए उतरा और उसके शरीर पर कोई नजासत (अशुद्धि) नहीं है। तो मुहम्मद के अनुसार पानी पाक (ताहिर) है पर पाक करने वाला (तहुर) नहीं, और आदमी पाक है, हालाँकि कुएँ का वह पानी जो उसके शरीर से लगा, दूसरे पानी से कम है, फिर भी मुहम्मद ने उसे प्रयुक्त (मुस्तअमल) माना है क्योंकि...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद और टिप्पणी): ...में गिर जाए तो वह पानी प्रयुक्त हो जाएगा। यह (इमाम) मुहम्मद का कथन है। इसका यह उत्तर दिया गया कि मुहम्मद का यह कथन एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित है कि थोड़े से प्रयुक्त पानी के गिरने से पानी प्रयुक्त हो जाता है। उनका सही मत यह है कि पानी केवल तभी प्रयुक्त होगा जब उस पर प्रयुक्त पानी का प्रभुत्व (ग़लबा) हो जाए। इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) मुहीत, सिराजुद्दीन हिंदी की हिदाया की व्याख्या से उद्धृत की गई है और उनसे तुहफ़ा से उद्धृत किया गया है कि वही चुना हुआ मत है। (त)

मैं कहता हूँ कि यह वैसा ही है जैसा उन्होंने फ़रमाया और ये दोनों शाखाएँ'मल्की' में हैं, लिहाज़ा विवाद के विषय से इनका कोई संबंध नहीं बनता। प्रयुक्त होना प्रयुक्त पानी के ग़लबे (प्रभुत्व) पर

निर्भर नहीं है, बल्कि इसका अदम-ए-ग़लबा (प्रभुत्व की कमी) मुतहिर (शुद्ध करने वाले) पर आधारित है। तो अगर दोनों बराबर हों तो पूरा प्रयुक्त हो जाएगा, जैसा कि माशइख़ ने इसे स्पष्ट किया है, 'बहर' में भी यही है। (त)

मैं कहता हूँ कि 'मुहीत', 'सिराज', 'तुहफ़ा' और 'ख़ुलासा' आदि में ग़लबे के ज़िक्र पर इक्तिसार (संक्षेप) किया गया है क्योंकि हकीकी बराबरी बहुत कम होती है। माशइख़ ने इसे इस मिसाल से स्पष्ट किया है कि अगर कोई 'ला अफज़ल मिन ज़ैद' (ज़ैद से बेहतर कोई नहीं) कहे, तो उससे ज़ैद की श्रेष्ठता समझ में आती है। 'जहत' (3) की उप-शाखा जो मतून और शुराह में ज़िक्र है, उसकी सूरत यह है कि एक व्यक्ति कुएं में डोल निकालने के लिए उतरा और उसके शरीर पर नजासत नहीं है, तो मुहम्मद के नज़दीक पानी पाक (ताहिर) है पर पाक करने वाला (तहुर) नहीं, और आदमी पाक है हालाँकि वह पानी जो कुएं में से उसके..

पाद-टिप्पणियाँ: 1. संदेहास्पद स्थिति में वज़ू की अनुमति पर लेख, इब्न नुजैम के लेखों से, इदारा अल-क़ुरान 2/820 2. संदेहास्पद स्थिति में वज़ू की अनुमति पर लेख, इब्न नुजैम के लेखों से, इदारा अल-क़ुरान 2/820 पृष्ठ 186/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

ان الماء یصیر مستعملا بوقوع قلیل من الماء المستعمل لاعلی الصحیح من مذھبہ انہ لایصیر مستعملا مالم یغلب علیہ اھ ونقل تصحیحہ عن المحیط وعن شرح الھدایۃ للعلامۃ سراج الدین الھندی ونقل عنہ عن التحفۃ انہ المذھب المختار - اقول : ھو (۱) کما قال والفرعان في الملقی فلا یمسان مورد النزاع والاستعمال لا یتوقف علی غلبۃ المستعمل بل عدمہ علی غلبۃ المطھر فأن تساویا صار الکل مستعملا کما نصوا علیہ منھم ھو في البحر - اقول : واقتصار المحیط والسراج والتحفۃ و الخلاصۃ وغیرھا علی ذکر الغلبۃ لان المساواۃ الحقیقۃ نادرۃ جدا (۲) کما قالوہ في افھام افضلیۃ زید من قول القائل لا افضل منہ (۳) وفرع جحط المذکور فی المتون والشروح وصورتھا رجل نزل لطلب الدلو ولیس علی بدنہ نجاسۃ فعند محمد الماء طاھر غیر طھور والرجل طاھر مع ان الماء الذي لاقی بدنہ فی البئر اقل من غیرہ وقد جعلہ محمد مستعملا لانعدام

میں گر جائے تو وہ پانی مستعمل ہو جائیگا، یہ محمد کا قول ہے اھ اس کا یہ جواب دیا کہ محمد کا یہ قول ایک ضعیف روایت پر مبنی ہے کہ پانی تھوڑے مستعمل پانی کے گرنے کی وجہ سے مستعمل ہو جائیگا، ان کا صحیح مذہب یہ ہے کہ پانی صرف اسی وقت مستعمل ہو گا جب اس پر مستعمل پانی کا غلبہ ہو جائے اھ اور اس کی تصحیح کو محیط، سراج الدین ہندی کی شرح ہدایہ سے نقل کیا اور ان سے تحفہ سے نقل کیا کہ وہی مذہب مختار ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں یہ ویسا ہی ہے جیسا کہ انہوں نے فرمایا اور یہ دونوں فرعیں ملقی میں ہیں لہٰذا محل نزاع سے ان کا کوئی تعلق نہیں بنتا ہے اور استعمال مستعمل کے غلبہ پر موقوف نہیں بلکہ اس کا عدم غلبہ مطہر پر مبنی ہے، تو اگر دونوں برابر ہوں تو کل مستعمل ہو جائے گا، جیسا کہ مشائخ نے اس کی تنصیص کی ، بحر میں بھی یہی ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں محیط، سراج، تحفہ اور خلاصہ وغیرہ میں غلبہ کے ذکر پر اقتصار کیا ہے، کیونکہ حقیقی مساوات نادر ہے، مشائخ نے اس کو اس مثال سے واضح کیا ہے کہ اگر کوئی لا افضل من زید، کہے تو اس سے زید کی افضلیت سمجھ میں آتی ہے۔ جحط (۳) کی فرع جو متون و شروح میں مذکور ہے، اس کی صورت یہ ہے کہ ایک شخص کنویں میں ڈول نکالنے کیلئے اُترا اور اس کے بدن پر نجاست نہیں ہے تو محمد کے یہاں پانی طاہر ہے طہور نہیں اور آدمی طاہر ہے حالانکہ وہ پانی جو کنویں میں سے اس کے

حواشی: 1 رسالة فی جواز الوضوء مع الاشتباه من رسائل ابن نجیم ادارة القرآن ۸۲۰/۲ 2 رسالة فی جواز الوضوء مع الاشتباه من رسائل ابن نجیم ادارة القرآن ۸۲۰/۲ Page 186 of 711

Fatawa Razawiyya - Volume II

[Main Text - Right Column (Urdu)] ...is on the body, it is less than the other; and [Imam] Muhammad has declared it 'Mustamal' (used water) because there is no necessity. The answer to this is what has already passed. (T)

I say: May Allah have mercy on you and us. If the 'T' (ط) of 'Jahat' (جحط) refers to 'Tahir Ghair-Tahoor' (pure but not purifying), then why do you base it on a weak narration from [Imam] Muhammad? While you yourselves state in your [book] 'Al-Bahr' [Al-Bahr al-Raiq]: "From our discourse, it is known that the chosen school of thought (Mazhab) in this matter is that the person is pure and the water is pure but not purifying, according to the correct view." Yes, it is well-known that its 'T' is for 'Al-Tahir Al-Tahoor' (pure and purifying), as you mentioned in 'Al-Bahr'. At that point, the derivative issue will arise from the fact that the ruling of usage (istimal) is waived due to necessity. You said in 'Al-Bahr' regarding [Imam] Muhammad's view: "The person is pure and the water is pure and purifying. The reason for Imam Muhammad's statement (according to the correct narration) is that pouring is not a condition for him. Thus, the person became pure, and the water does not become 'Mustamal' even if impurity (Hadath) was removed by it due to necessity. But as for what Abu Bakr al-Razi deduced..."

Note - I say: What is meant by this is the usage of water by removing 'Hadath', even if there is no intention of spiritual proximity (Qurbat), contrary to the deduction of Imam Razi. That is why he said 'As for what he deduced etc.', so this is not a validation of this narration; rather, the correct view is what passed earlier: that the water is pure but not purifying. (T) From him [Ahmad Raza Khan], may Allah forgive him. (M)

[Main Text - Left Column (Arabic)] ...necessity. [End of quote] It is mandatory to command. **I say:** (1) May Allah have mercy on you and have mercy on us with you. If the 'T' of 'Jahat' means 'pure but not purifying', then how can you make it based on a weak narration from Muhammad, while you are the ones who say in your 'Al-Bahr' regarding what we have established: 'The chosen view in this matter is that the man is pure and the water is pure but not purifying according to the correct opinion'? Yes, the well-known view is that its 'T' is for 'The pure and purifying one' as you mentioned in 'Al-Bahr', and at that point, the derivative case arises because the ruling of 'usage' is dropped for necessity. You said in 'Al-Bahr' according to Muhammad: 'The man is pure and the water is pure and purifying.' The reason for Muhammad's

statement, based on what is correct from him, is that pouring is not a condition for him. Thus, the man became pure, and the water does not become 'used' even if Hadath was removed by it due to necessity. But as for what Abu Bakr al-Razi deduced... **Note - I say:** The meaning of it is the use of water to remove Hadath even if one does not intend proximity, contrary to the deduction of Imam al-Razi. Therefore, he said: 'And as for what was deduced etc.', so it is not a correction of this narration, but the correct view is what preceded that it is pure but not purifying. (T) From him, may He forgive him. (M)

[Footnotes] 1. Al-Risala fi Jawaz al-Wudu with Al-Ashbah wal-Naza'ir, Idarat al-Qur'an Karachi, 6/819/2 2. Al-Bahr al-Raiq, Kitab al-Taharat, H.M. Saeed Company Karachi, 1/98

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

[मुख्य पाठ - दायां कॉलम (उर्दू)] ...शरीर पर लगा है, वह दूसरे से कम है; और [इमाम] मुहम्मद ने इसे 'मुस्तमल' (इस्तेमाल किया हुआ पानी) करार दिया है क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं है। इसका उत्तर वही है जो पहले गुज़र चुका है। (त)

मैं कहता हूँ: अल्लाह आप पर और हम पर रहम फ़रमाए। अगर 'जह्त' (جحط) की 'त' (ط) से मुराद 'ताहिर ग़ैर-तहूर' (पवित्र लेकिन पवित्र करने वाला नहीं) है, तो आप इसे [इमाम] मुहम्मद की एक कमज़ोर रिवायत पर कैसे आधारित करते हैं? जबकि आप खुद अपनी [किताब] 'अल-बहर' [अल-बहर अल-रैक] में कहते हैं: "हमारी तक़रीर से मालूम हुआ कि इस मसले में पसन्दीदा मज़हब यह है कि आदमी पाक है और पानी पाक है लेकिन पाक करने वाला नहीं है, सही मज़हब के अनुसार।" हाँ, यह मशहूर है कि इसकी 'त' 'ताहिर तहूर' (पवित्र और पवित्र करने वाला) के लिए है, जैसा कि आपने 'अल-बहर' में ज़िक्र किया। उस समय, यह मसला इस तरफ़ से आएगा कि ज़रूरत की वजह से इस्तेमाल का हुक्म साक़ित (रद्द) हो जाता है। आपने 'अल-बहर' में इमाम मुहम्मद के नज़दीक कहा है: "आदमी पाक है और पानी पाक और पाक करने वाला है। इमाम मुहम्मद के कौल की वजह (सही रिवायत के मुताबिक) यह है कि उनके नज़दीक पानी बहाना शर्त नहीं है। तो आदमी पाक हो गया और पानी 'मुस्तमल' नहीं होगा, चाहे उससे 'हदस' (अशुद्धि) को दूर किया गया हो, ज़रूरत की बिना पर। लेकिन जहाँ तक अबू बक्र अल-राज़ी के निकाले हुए नतीजे का सवाल है..."

नोट - मैं कहता हूँ: इससे मुराद यह है कि 'हदस' दूर करने से पानी 'मुस्तमल' हो जाएगा चाहे क़ुर्बत (पुण्य की नीयत) न हो, इमाम राज़ी की तख़रीज (निष्कर्ष) के ख़िलाफ़। इसी वजह से उन्होंने 'अम्मा अला मा ख़रजा' (जहाँ तक उसके निकाले हुए नतीजे का सवाल है) इत्यादि कहा, लिहाज़ा यह इस रिवायत की तस्दीक़ नहीं है बल्कि सही रिवायत वही है जो पहले गुज़र चुकी है कि पानी 'ताहिर ग़ैर-तहूर' है। (त) उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ फ़रमाए। (म)

[मुख्य पाठ - बायां कॉलम (अरबी का अनुवाद)] ...आवश्यकता। [उद्धरण का अंत] यह आदेश देना अनिवार्य है। **मैं कहता हूँ:** (१) अल्लाह आप पर दया करे और आपके साथ हम पर दया करे। यदि 'जह्त' की 'त' का अर्थ 'पवित्र लेकिन पवित्र करने वाला नहीं' है, तो आप इसे मुहम्मद की एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित कैसे कर सकते हैं, जबकि आप ही अपनी 'अल-बहर' में कहते हैं: 'इस मसले में चुना हुआ विचार यह है कि मनुष्य पवित्र है और पानी पवित्र है लेकिन सही राय के

अनुसार पवित्र करने वाला नहीं है'? हाँ, प्रसिद्ध विचार यह है कि इसकी 'त' 'ताहिर और तहूर' के लिए है जैसा कि आपने 'अल-बहर' में उल्लेख किया है, और उस बिंदु पर, गौण मामला उठता है क्योंकि 'उपयोग' का नियम आवश्यकता के लिए हटा दिया जाता है। आपने मुहम्मद के अनुसार 'अल-बहर' में कहा: 'मनुष्य पवित्र है और पानी पवित्र और पवित्र करने वाला है।' मुहम्मद के कथन का कारण, जो उनके बारे में सही है, यह है कि पानी बहाना उनके लिए शर्त नहीं है। इस प्रकार, मनुष्य पवित्र हो गया, और पानी 'इस्तेमाल किया हुआ' नहीं बनता, भले ही आवश्यकता के कारण इसके द्वारा 'हदस' को हटा दिया गया हो। लेकिन जहाँ तक अबू बक्र अल-राज़ी के निष्कर्ष का सवाल है... **नोट - मैं कहता हूँ:** इसका अर्थ है 'हदस' को दूर करने के लिए पानी का उपयोग करना, भले ही कोई व्यक्ति अल्लाह की निकटता का इरादा न रखता हो, इमाम अल-राज़ी के निष्कर्ष के विपरीत। इसलिए, उन्होंने कहा: 'और जहाँ तक निष्कर्ष निकाला गया है आदि', इसलिए यह इस रिवायत का सुधार नहीं है, बल्कि सही विचार वह है जो पहले कहा गया कि यह पवित्र है लेकिन पवित्र करने वाला नहीं है। (त) उनकी ओर से, वे उन्हें क्षमा करें। (म)

[पाद लेख] 1. अल-रिसाला फ़ी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह वल-नज़ाइर, इदारत अल-क़ुरआन कराची, 6/819/2 2. बहर अल-रैक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/98

पृष्ठ 187/711

[دایاں کالم - اردو] بدن پر لگا ہے دوسرے سے کم ہے، اور محمد نے اس کو مستعمل قرار دیا ہے کیونکہ ضرورت نہیں اھ اس کا جواب وہ دیا جو گزرا۔ (ت)

میں کہتا ہوں اللہ تم پر اور ہم پر رحم فرمائے اگر جحط کی "ط" سے طاہر غیر طہور مراد ہو تو آپ اس کو محمد کی روایت ضعیفہ پر کیونکر مبنی کرتے ہیں حالانکہ آپ بحر میں کہتے ہیں کہ ہماری تقریر سے معلوم ہوا کہ مذہب مختار اس مسئلہ میں یہ ہے کہ آدمی پاک ہے اور پانی طاہر غیر طہور ہے صحیح مذہب پر اھ ہاں مشہور یہی ہے کہ اس کی "ط" طاہر کیلئے ہے اور طہور کیلئے، جیسا کہ تم نے بحر میں ذکر کیا، اور اس وقت فرع اس جانب سے وارد ہوگی کہ استعمال کا حکم ضرورت کی وجہ سے ساقط ہوتا ہے تم نے بحر میں کہا ہے کہ محمد کے نزدیک مرد پاک ہے اور پانی طاہر طہور ہے امام محمد کے قول کی وجہ (صحیح روایت کے بموجب) یہ ہے کہ ان کے نزدیک بہنا شرط نہیں، تو آدمی پاک ہوا اور پانی مستعمل نہ ہوگا خواہ اس سے حدث زائل کیا گیا ہو،

میں کہتا ہوں اس سے مراد یہ ہے کہ ازالہ حدث سے پانی مستعمل ہو جائے گا اگرچہ قربت کی نیت نہ ہو، بخلاف امام رازی کی تخریج کے، اسی وجہ سے انہوں نے اما علی ماخرج الخ فرمایا لہٰذا صحیح روایت یہ نہیں بلکہ وہ ہے جو گزری کہ پانی طاہر غیر طہور ہے اھ (ت) منہ غفرلہ (م)

[بایاں کالم - عربی] الضرورۃ اھ واجب بیا مر۔ اقول: (۱) رحمکم اللہ ورحمنا بکم اذا ارید بطاء جحط طاھر غیر طھور فکیف تجعلونہ مبنیاً علی روایۃ ضعیفۃ عن محمد وانتم القائلون في بحرکم علم بما قررناہ ان المذھب المختار في ھذہ المسألۃ ان الرجل طاھر والماء طاھر غیر طھور علی الصحیح اھ

نعم المشهور ان طاءه للطاهر الطهور كما ذكرتم في البحر وحينئذ يرد الفرع من قبل ان سقوط حكم الاستعمال لاجل الضرورة قلتم في البحر عند محمد الرجل طاهر والماء طاهر طهور وجه قول محمد على ماهو الصحيح عنه ان الصب ليس بشرط عنده فكان الرجل طاهرا ولا يصير الماء مستعملا وان ازيل به حدث للضرورة واما على ماخرجه ابوبكر الرازي عه اقول: والمراد به استعمال الماء بازالة حدث وان لم ينوقربة خلافا لتخريج الامام الرازي ولذا قال واما على ماخرج الخ فليس تصحيحا لهذه الرواية بل الصحيح ما تقدم انه طاهر غير طهور اه منه غفرله (م)

[حواشی] 1 الرسالة في جواز الوضوء مع الاشباه والنظائر ادارة القرآن كراچی ۶/۸۱۹/۲ 2 بحر الرائق كتاب الطہارت ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ۱/۹۸

Fatawa Ridawiyyah, Volume 2

It does not become 'used' (musta'mal) due to the lack of an intention for nearness (to Allah). If you reject this because it is a non-preferred narration as we have previously stated, then the preferred narration would be even stronger in its rejection. (4) A branch from 'Al-Asrar', which is his commentary on the Hadith 'Let none of you urinate...', says: Whoever says that used water is pure and purifying (tahir-tahur) does not deem bathing in it prohibited. Similarly, for those who say it is pure but not purifying, because their school of thought (madhhab) is that when used water falls into other water, it does not spoil it unless it becomes dominant over it. Only that portion becomes 'used' which comes into contact with the body of the user. This amount is usually less than the total water used for bathing which remains after contact with the body. Thus, it will not spoil the rest, and it remains purifying, and bathing in it is not prohibited. However, Imam Muhammad says that by bathing in it, it becomes used. This is quoted in 'Al-Bahr' with the words: 'Imam Muhammad says when one bathes in a small amount of water, it all becomes 'used' in ruling'. The answer to this has already been given. I say: (1) Glory be to Allah! The explicit wording of 'Al-Asrar' is that the school of thought considers dominance, although...

Due to necessity, and according to the deduction of Abu Bakr al-Razi, water will not be 'used' because there is no intention of nearness in it. So if you deny this narration on the grounds that it is non-preferred as we stated, then the preferred narration will be even more emphatic in its refutation. The branch of 'Asrar' (4) regarding his discussion on the Hadith 'Let none of you urinate' is that whoever says used water is pure and purifying, he does not declare bathing in it prohibited. Similarly, those who call this water pure but not purifying, because their school of thought is that when used water mixes with other water, it does not spoil it as long as it does not dominate it. Only that much becomes used which is in contact with the body, and this amount is usually less than the total volume of water used for bathing that remains after body contact. So, it will not spoil it and it will remain purifying, and bathing with it will not be prohibited. However, Muhammad states that by bathing in it, it will become used, and 'Al-Bahr' has quoted it with the words that Muhammad says when someone bathes in a small amount of water, all of it will legally become used. And its answer was also given as before. I say: Glory be to Allah. The explicit text of 'Asrar' is that the school of thought is that dominance is considered, even if its...

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/79

2. Al-Risalah fi Jawaz al-Wudu' from the epistles of Ibn Nujaym with Al-Ashbah, Idarat al-Qur'an, Karachi, 6/819/2
3. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/71

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

यह 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता क्योंकि इसमें 'क़ुर्बत' (ईश्वर की निकटता) की नीयत नहीं है। यदि आप इस रिवायत का इनकार करें कि यह ग़ैर-मुख़्तार रिवायत है जैसा कि हमने पहले बयान किया, तो मुख़्तार रिवायत रद्द करने में और भी सख़्त होगी। (4) 'अल-असरार' की शाखा, जो 'ला यबूलन' हदीस पर उनकी चर्चा है, कहती है: जो कहता है कि मुस्तअमल पानी पाक और पाक करने वाला (ताहिर-तहूर) है, वह उसमें ग़ुस्ल (स्नान) को हराम नहीं ठहराता। इसी तरह वे लोग जो इसे ताहिर (पाक) लेकिन ग़ैर-तहूर (पाक न करने वाला) कहते हैं, क्योंकि उनका मज़हब यह है कि जब मुस्तअमल पानी दूसरे पानी में मिल जाए, तो जब तक वह उस पर ग़ालिब (प्रभावी) न हो, उसे ख़राब नहीं करता। मुस्तअमल केवल उतना ही पानी होता है जो इस्तेमाल करने वाले के शरीर के संपर्क में आता है। यह मात्रा आमतौर पर उस कुल पानी से कम होती है जिससे ग़ुस्ल किया जाता है और जो शरीर के संपर्क के बाद बच जाता है। इसलिए, यह शेष पानी को ख़राब नहीं करेगा और वह तहूर ही रहेगा, और उसमें ग़ुस्ल करना हराम नहीं होगा। हालाँकि, इमाम मोहम्मद फ़रमाते हैं कि इसमें ग़ुस्ल करने से यह मुस्तअमल हो जाएगा। 'अल-बहर' में इसे इन शब्दों के साथ उद्धृत किया गया है: 'इमाम मोहम्मद फ़रमाते हैं कि जब कोई थोड़े पानी में ग़ुस्ल करता है, तो वह सब हुक्मन (क़ानूनन) मुस्तअमल हो जाता है।' इसका जवाब भी वही दिया जा चुका है जो पहले गुज़रा। मैं कहता हूँ: (1) सुब्हान अल्लाह! 'अल-असरार' का स्पष्ट कथन यह है कि मज़हब यह है कि ग़ालिब (प्रभावी) होने का विचार किया जाएगा, चाहे उसका...

ज़रूरत की वजह से, और अबू बक्र अल-राज़ी की तख़रीज के अनुसार पानी मुस्तअमल नहीं होगा क्योंकि इसमें क़ुर्बत की नियत नहीं है। तो अगर आप इस रिवायत का इनकार करें कि यह ग़ैर-मुख़्तार रिवायत है जैसा कि हमने बयान किया तो मुख़्तार रिवायत तरदीद में ज़ायद होगी। असरार (4) की फ़रअ हदीस "ला यबूलन" पर उनकी गुफ़्तगू यह है कि जो यह कहता है मुस्तअमल पानी तहूर व ताहिर है तो वह इसमें ग़ुस्ल को हराम क़रार नहीं देता और इसी तरह जो इस पानी को ताहिर ग़ैर तहूर कहते हैं क्योंकि उनका मज़हब यह है कि जब मुस्तअमल पानी दूसरे पानी में मिल जाए तो जब तक उस पर ग़ालिब न हो उसको फ़ासिद नहीं करता और सिर्फ़ इसी क़दर मुस्तअमल होता है जो बदन से मुत्तसिल होता है और यह मिक़दार उस मजमूई पानी की मिक़दार से जिससे ग़ुस्ल किया जाता है आदतन उस पानी से कम हुआ करती है जो मुलाक़ात-ए-बदन से बच रहा होता है, तो यह उसको फ़ासिद नहीं करेगा और तहूर ही रहेगा और उससे ग़ुस्ल हराम न होगा, ता-हम मोहम्मद

फ़रमाते हैं कि इसमें ग़ुस्ल करने से यह मुस्तअमल हो जाएगा और बहर में इसको इन अल्फ़ाज़ से नक़्ल किया है कि मोहम्मद फ़रमाते हैं कि जब कोई थोड़े पानी में ग़ुस्ल करेगा तो सब का सब हुक्मन मुस्तअमल हो जाएगा और इसका जवाब भी वह दिया जो गुज़रा। मैं कहता हूँ सुब्हान अल्लाह। असरार का सरीह मंतूक़ यह है कि मज़हब यह है कि एतबार ग़ालबे को है, अगरचे इसका...

1. बहर अल-राइक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/79
2. अल-रिसाला फ़ी जवाज़ अल-वुज़ू, इब्न नजीम के रिसालों से, अल-अशबाह के साथ, इदारात अल-क़ुरआन, कराची, 6/819/2
3. बहर अल-राइक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/71

لایصیر مستعملا لفقد نیة القربة اھ فان ابیتوموھا لانھا روایة غیر مختارة کما قدمنا کانت المختارة اشد فی الرد، (۴) وفرع الاسرار وھو کلامه علی حدیث لایبولن اذیقول من قال ان الماء المستعمل طاھر طھور لایجعل الاغتسال فیه حراماً وکذا من قال طاھر غیر طھور لان المذھب عنده ان الماء المستعمل اذا وقع فی ماء أخر لم یفسده حتی یغلب علیه وقدراً یلاقی بدن المستعمل یصیر مستعملا وذلك القدر من جملة مایغتسل فیه عادة یکون اقل من ماء فضل عن ملاقاة بدنه فلا یفسده ویبقی طھورا ولا یحرم فیه الاغتسال الا ان محمدا یقول بصیرورته مستعملا بالاغتسال فیه اھ ونقله فی البحر بلفظ ان محمدا یقول لما اغتسل فی الماء القلیل صار الکل مستعملا حکماً اھ واجاب عنه ایضاً بما مر۔

اقول: (۱) سبحن اللہ صریح منطوق الاسرار ان المذھب اعتبار الغلبة وان

ضرورت کی وجہ سے ، اور ابوبکر الرازی کی تخریج کے مطابق پانی مستعمل نہ ہوگا کیونکہ اس میں قربت کی نیت نہیں اھ تو اگر آپ اس روایت کا انکار کریں کہ یہ غیر مختار روایت ہے جیسا کہ ہم نے بیان کیا تو مختار روایت تردید میں زائد ہوگی۔ اسرار (۴) کی فرع حدیث "لایبولن" پر انکی گفتگو یہ ہے کہ جو یہ کہتا ہے مستعمل پانی طہور و طاہر ہے تو وہ اس میں غسل کو حرام قرار نہیں دیتا اور اسی طرح جو اس پانی کو طاہر غیر طہور کہتے ہیں کیونکہ ان کا مذہب یہ ہے کہ جب مستعمل پانی دوسرے پانی میں مل جائے تو جب تک اس پر غالب نہ ہو اس کو فاسد نہیں کرتا اور صرف اسی قدر مستعمل ہوتا ہے جو بدن سے متصل ہوتا ہے اور یہ مقدار اُس مجموعی پانی کی مقدار سے جس سے غسل کیا جاتا ہے عادۃً اس پانی سے کم ہوا کرتی ہے جو ملاقاتِ بدن سے بچ رہا ہوتا ہے، تو یہ اس کو فاسد نہیں کرے گا اور طہور ہی رہے گا اور اُس سے غسل حرام نہ

ہوگا، تاہم محمد فرماتے ہیں کہ اس میں غسل کرنے سے یہ مستعمل ہو جائیگا اھ اور بحر میں اس کو ان الفاظ سے نقل کیا ہے کہ محمد فرماتے ہیں کہ جب کوئی تھوڑے پانی میں غسل کرے گا تو سب کا سب حکماً مستعمل ہوجائے گا اھ اور اس کا جواب بھی وہ دیا جو گزرا۔ میں کہتا ہوں سبحان اللہ۔ اسرار کا صریح منطوق یہ ہے کہ مذہب یہ ہے کہ اعتبار غلبہ کو ہے، اگرچہ اس کا

1. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۹
2. الرسالۃ فی جواز الوضوء من رسائل ابن نجیم مع الاشباہ، ادارۃ القرآن کراچی ۶/۸۱۹/۲
3. بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۱

Fatawa Razvia, Volume Two

Its logic demands that the whole [body of water] does not become 'musta'mal' (used) because that which actually meets [the body] is less than that which does not, except that Muhammad [Imam Muhammad] declared the whole to be 'musta'mal' legally (hukman). Therefore, how can it be imagined that this is based on a weak narration which is contrary to this school of thought? Rather, it is a specification (takhsees) of its logic, and the specification of a ruling is based on the ruling itself, not on what is contrary to the ruling. This is very clear, and we have explained the secret of the words in 'al-Asrar'. (5) A branch of 'al-Mubtaghi': If one puts their palm [into water], it becomes 'musta'mal'. (6) 'Al-Bahr' added a branch from 'al-'Inayah', 'al-Dirayah', and others: If a person in a state of major ritual impurity (junub) descends into a well with the intention of performing a bath (ghusl), the water becomes spoiled (fasid) according to all. (7) A branch of 'al-Khaniyah': If someone puts their hand or foot in a vessel to cool down, the water becomes 'musta'mal' because there is no necessity. (8) A branch of 'al-Isbijabi' and 'al-Walwalji' regarding one who bathes in a well up to ten cubits and there is no impurity on them: Muhammad said all the water becomes 'musta'mal'. He added to his statement until the end of the branches, providing guidance towards the remaining numerous branches, saying: This is explicit regarding the use of all water according to Muhammad by performing ritual bathing in it. Ah. Answered on behalf of all that it is based on a weak narration from...

1. Al-Risala fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah min Rasa'il Ibn Nujaym, Idarat al-Qur'an Karachi 6/819/2
2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi 1/11 Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi 1/11
3. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi 1/11
4. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi 1/11

Page 189 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द-ए-सानी

इसका तर्क यह मांग करता है कि पूरा [पानी का स्रोत] 'मुस्त'मल' (इस्तेमाल किया हुआ) न हो जाए क्योंकि जो वास्तव में [शरीर के] संपर्क में आता है वह उससे कम है जो संपर्क में नहीं आता, सिवाय इसके कि मुहम्मद [इमाम मुहम्मद] ने हुक्म के तौर पर पूरे को 'मुस्त'मल' करार दिया है। तो यह कैसे सोचा जा सकता है कि यह किसी ऐसी कमज़ोर रिवायत पर आधारित है जो इस मज़हब के खिलाफ है? बल्कि, यह इसके तर्क की एक विशिष्टता (तख़सीस) है, और हुक्म की विशिष्टता हुक्म पर ही आधारित होती है, न कि हुक्म के विपरीत पर। यह बहुत स्पष्ट है, और हमने 'अल-असरार' के कलाम के राज़ को बयान कर दिया है। (5) 'अल-मुब्तग़ी' की एक शाखा: यदि कोई अपनी हथेली [पानी में] डाले, तो वह 'मुस्त'मल' हो गया। (6) 'अल-बहर' ने 'अल-इनाया', 'अल-दिराया' और अन्य से एक शाखा जोड़ी है: यदि कोई जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति में) ग़ुस्ल (स्नान) की नियत से कुएं में उतरेगा, तो सबके नज़दीक पानी फ़ासिद (दूषित) हो जाएगा। (7) 'खानिया' की शाखा: यदि किसी ने अपना पैर या हाथ बर्तन में ठंडक प्राप्त करने के लिए डाला, तो पानी 'मुस्त'मल' हो जाएगा क्योंकि ज़रूरत मौजूद नहीं है। (8) 'अस्बीजाबी' और 'वल्वालजी' की शाखा उस व्यक्ति के बारे में जिसने कुएं में दस हाथ तक स्नान किया और उस पर कोई नजासत (अशुद्धि) नहीं है: मुहम्मद ने कहा कि सारा पानी 'मुस्त'मल' हो जाएगा। उन्होंने फ़ुरू' (शाखाओं) के अंत तक अपनी बात में इज़ाफ़ा किया, बाकी कई शाखाओं की ओर मार्गदर्शन करते हुए कहा: यह इमाम मुहम्मद के अनुसार उसमें ग़ुस्ल करने से पूरे पानी के इस्तेमाल के बारे में स्पष्ट है। अह् (इति)। सबकी तरफ से जवाब दिया कि यह एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित है...

1. अल-रिसाला फ़ी जवाज़ अल-वुज़ू' मअ अल-अशबाह मिन रसा'इल इब्न नुजैम, इदारातुल क़ुरआन कराची 6/819/2
2. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/11 बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/11
3. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/11
4. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची 1/11

पृष्ठ 189/711

تقاضا یہ ہے کہ کل مستعمل نہ ہوگا کیونکہ ملاقی حقیقۃً غیر ملاقی سے کم ہے مگر یہ کہ محمد نے کل کو حکماً مستعمل قرار دیا ہے ، تو یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ یہ کسی ضعیف روایت پر مبنی ہے جو اس مذہب کے خلاف ہے ، یہ اس کے مقتضی کی تخصیص ہے اور حکم کی تخصیص حکم پر ہی مبنی ہوتی ہے نہ کہ خلافِ حکم پر ، اور یہ بہت واضح ہے ، اور اسرار کے کلام کا راز ہم نے بیان کر دیا۔ مبتغی (۵) کی فرع: اگر ہتھیلی ڈالی تو پانی مستعمل ہو گیا اھ، اور بحر میں اضافہ کیا ہے عنایہ اور درایہ (۶) وغیرہما کی فرع کا: جنب اگر کنویں میں غسل کی نیت سے اترے گا تو سب ہی کے نزدیک پانی فاسد ہو جائے گا۔ "خانیہ (۷) کی فرع: اگر کسی نے اپنا پیر یا ہاتھ برتن میں ٹھنڈک حاصل کرنے کیلئے ڈالا تو پانی مستعمل ہو جائے گا کہ ضرورت موجود نہیں ہے۔ اسبیجابی (۸) اور ولوالجی کی فرع: جو کنویں میں دس ہاتھ تک نہایا اور اس پر کوئی نجاست بھی نہیں ہے تو محمد نے فرمایا کل پانی مستعمل ہو جائیگا ، اور اپنے قول الی آخر الفروع کا اضافہ کیا ، باقی کثیر فروع کی طرف رہنمائی کرتے ہوئے فرمایا یہ صریح ہے امام محمد کے نزدیک بالاغتسال فیہ اھـ جواب دیا عن الکل بانہ مبنی علی روایت ضعیفہ عن

1 الرسالة فی جواز الوضوء مع الاشباہ من رسائل ابن نجیم ادارۃ القرآن کراچی ۶/۸۱۹/۲ 2 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱ 3 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱ 4 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Left Column: Arabic] Muhammad [Imam Muhammad] speaks regarding the impurity of used water (Al-Ma' Al-Musta'mal), then cites evidence by applying a branch of law from *Al-Khaniyah* to it. What has been mentioned about it through six perspectives has already passed. (9) A branch from *Munyat al-Musalli* from the jurist (1) Abu Ja'far: [A person] performed ablution (Wudu) in a thicket of reeds; if the water does not reach from one part to another, it is permissible. In *Al-Khulasah*: [One] performed Wudu in a thicket of reeds or land where plants are connected to each other; if it is ten by ten [cubits], it is permissible. He said that its implication is that if it is less, Wudu in it is not permissible. *Al-Ajmah* with a vowel on the 'jim' refers to a dense forest of many tangled trees. (10) A branch from the two books *Al-Khulasah* and *Al-Munyah* (2): [One] performed Wudu in a pond where green moss (*Al-Tahlab*) covered the entire surface of the water; if it is in a state where if stirred it moves, it is permissible. He said its implication is that if the moss does not move by stirring the water, it is not permissible. For the lack of movement when stirring the water indicates that it is in a state of thickness and adherence to the surface of the water such that it prevents the transition of used water falling into it to another place. Thus, the Wudu would be with used water. And *Al-Tahlab*...

[Right Column: Urdu] ...according to [him], the reason for the entire water being used is the washing in it. The answer to all of this is that it is based on a weak narration, i.e., Muhammad's narration that used water becomes impure (najis). Then this citation of evidence was made that *Al-Fath* applied a branch of *Al-Khaniyah* to this, and the objections against it have already passed through six reasons. (9) Branch from *Munyat al-Musalli*: This is from the jurist Abu Ja'far. Someone performed Wudu in a bamboo thicket; if they are so dense that the parts of the water remain separate from each other, then it is permissible. In *Al-Khulasah*, it's mentioned: in a bamboo thicket or such land where plants are connected to each other, if it is 'Dah-dar-Dah' (ten by ten), Wudu is permissible. Its negative implication is that if it is less than that, it is not allowed. And 'Ajmah Muharrakah' refers to dense trees. Branch of *Khulasah* and *Munyah* (10): Wudu was performed in a pond and moss (*Tahlab*) was on the entire surface of the water. If it is such that if moved, everything moves, it is permissible. He said its negative implication is that if it does not move by the movement of the water, it is not permissible, because its not moving by moving the water is proof of the fact that it is so dense that it is difficult for used water to move from one place to another.

So Wudu will be with used water. And *Tahlab* is green-colored grass that floats on water. 'Ah' (End of quote). And this is derived from *Al-Hilyah*. He said all this...

[Footnotes] 1. Al-Risala, Jawaz al-Wudu ma' al-Ashbah, from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/1840. 2. Al-Risala, Jawaz al-Wudu ma' al-Ashbah, from the treatises of Ibn Nujaym, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/1840. Page 190 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[बायां कॉलम: अरबी] मुहम्मद [इमाम मुहम्मद] प्रयुक्त जल (अल-मा' अल-मुस्तअमल) की अशुद्धता के बारे में बोलते हैं, फिर अल-खानिया की एक उप-शाखा को इस पर लागू करके साक्ष्य देते हैं। इसके बारे में छह पहलुओं से जो कहा गया है वह बीत चुका है। (9) फकीह (1) अबू जाफ़र से मुन्यात अल-मुसल्ली की एक उप-शाखा: उन्होंने नरकट के झुंड में वज़ू किया। यदि पानी के हिस्से एक-दूसरे से अलग न हों, तो यह जायज़ है। अल-खुलसाह में है: नरकट के झुंड में या ऐसी भूमि में वज़ू किया जहाँ फसलें एक-दूसरे से जुड़ी हों, यदि वह दस गुणा दस [हाथ] हो, तो जायज़ है। इसमें कहा गया है कि इसका अर्थ यह है कि यदि वह कम हो तो वज़ू जायज़ नहीं है। 'अजमह' का अर्थ है घने और उलझे हुए पेड़ों वाला जंगल। (10) दो किताबों, अल-खुलसाह और अल-मुन्याह (2) की एक उप-शाखा: एक हौज में वज़ू किया गया और पानी की पूरी सतह पर काई (तहलब) थी। यदि स्थिति ऐसी हो कि हिलाने पर वह हिलती है, तो जायज़ है। कहा गया है कि इसका अर्थ यह है कि यदि पानी हिलाने से काई न हिले, तो जायज़ नहीं है। क्योंकि पानी हिलाने पर उसका न हिलना इस बात का प्रमाण है कि वह इतनी घनी और पानी की सतह से जुड़ी हुई है कि वह उसमें गिरने वाले प्रयुक्त जल को दूसरे स्थान पर जाने से रोकती है। इस प्रकार वज़ू प्रयुक्त जल से होगा। और तहलब...

[दायां कॉलम: उर्दू] ...उनके अनुसार, पूरे पानी के प्रयुक्त होने का कारण उसमें स्नान करना है। इन सबका जवाब यह दिया गया कि यह एक कमजोर रिवायत पर आधारित है, यानी मुहम्मद की रिवायत कि प्रयुक्त जल अशुद्ध (नजिस) हो जाता है। फिर यह दलील दी गई कि अल-फ़तह ने अल-खानिया की एक शाखा को इसी पर आधारित किया है, और इस पर आपत्तियां छह कारणों से गुजर चुकी हैं। (9) मुन्यात अल-मुसल्ली की उप-शाखा: यह फकीह अबू जाफ़र से है। किसी ने बांस के झुंड में वज़ू किया; यदि वे इतने घने हैं कि पानी के हिस्से एक-दूसरे से अलग रहते हैं, तो यह जायज़ है। खुलसाह में उल्लेख है: बांस के झुंड में या ऐसी भूमि में जहाँ पौधे एक-दूसरे से जुड़े हों, यदि वह 'दह-दर-दह' (दस गुणा दस) हो, तो वज़ू जायज़ है। इसका विपरीत अर्थ यह है कि यदि वह उससे कम हो तो अनुमति नहीं है। और 'अजमह मुहर्रका' घने पेड़ों को कहा जाता है। खुलसाह और मुन्याह की उप-शाखा (10): एक हौज में वज़ू किया गया और पूरी सतह पर काई (तहलब) थी। यदि वह ऐसी है कि हिलाने पर सब कुछ हिलता है, तो जायज़ है। उन्होंने कहा कि इसका विपरीत अर्थ यह है कि यदि पानी की हरकत से वह न हिले, तो जायज़ नहीं है, क्योंकि पानी हिलाने पर उसका न हिलना इस बात का सबूत है कि वह इतनी घनी है कि प्रयुक्त जल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना मुश्किल है।

इसलिए वज़ू प्रयुक्त जल से होगा। और तहलब हरे रंग की घास है जो पानी पर तैरती रहती है। 'अह' (उद्धरण समाप्त)। और यह अल-हिलयाह से लिया गया है। उन्होंने यह सब कहा...

[फुटनोट] 1. अल-रिसाला, जवाज़ अल-वज़ू मा अल-अशबाह, इब्न नुजैम के ग्रंथों से, इदारत अल-कुरान कराची, 2/1840। 2. अल-रिसाला, जवाज़ अल-वज़ू मा अल-अशबाह, इब्न नुजैम के ग्रंथों से, इदारत अल-कुरान कराची, 2/1840। पृष्ठ 190/711

فتاوی رضویه (جلد ثانی)

[بایاں کالم: عربی] محمد قائلة بنجاسة الماء المستعمل ثم استشهد بحمل الفتح فرعا فی الخانیة علیها وقد مرما فیه من ستة اوجه۔ (۹) وفرع منیة المصلی عن الفقیه (۱) ابی جعفر توضا فی أجمة القصب فان کان لایخلص بعضه الی بعض یجوز وفی الخلاصة توضا فی أجمة القصب او ارض فیها زرع متصل بعضها ببعض ان کان عشرا فی عشر یجوز قال فمفهومه انه اذا کان اقل لایجوز التوضی فیه والآجمة محرکة الشجر الکثیر الملتف۔ (۱۰) وفرع الکتابین الخلاصة والمنیة (۲) توضا فی حوض وعلی جمیع وجه الماء الطحلب ان کان بحال لوحرک یتحرک یجوز قال ومفهومه انه لوکان لایتحرک الطحلب بتحریک الماء لایجوز فان عدم تحرکه بتحریک الماء یدل علی انه بحالة من التکاثف والاستمساك لسطح الماء بحیث یمنع انتقال الماء المستعمل الواقع فیه الی محل اخر فیقع الوضوء بماء مستعمل والطحلب

[دایاں کالم: اردو] نزدیک تمام پانی کے مستعمل ہونے میں اس میں غسل کرنے کی وجہ ہے، اور سب کا جواب یہ دیا کہ یہ ضعیف روایت پر مبنی ہے، یعنی محمد کی اس روایت پر کہ مستعمل پانی نجس ہو جاتا ہے، پھر یہ استشہاد کیا کہ فتح نے خانیہ کی ایک فرع کو اسی پر محمول کیا ہے، اور جو اس پر اعتراض ہے وہ چھ وجوہ سے گزر چکا ہے۔ (۹) منیہ المصلی کی فرع: یہ فقیہ ابو جعفر سے ہے کسی نے بانسوں کے جھنڈ میں وضو کیا اگر وہ اتنے گھنے ہیں کہ پانی کے حصے ایک دوسرے سے جدا رہتے ہیں تو جائز ہے اور خلاصہ میں ہے کہ بانسوں کے جھنڈ میں یا ایسی زمین میں جس میں پودے ایک دوسرے سے متصل ہوں، اگر وہ دہ در دہ ہو تو وضو جائز ہے، اس کا مفہوم مخالف یہ ہے کہ اگر اس سے کم ہو تو جائز نہیں، اور اجمۃ محرکہ، گھنے درختوں کو کہتے ہیں۔ خلاصہ اور منیہ کی فرع (۱۰): حوض میں وضو کیا اور طحلب پانی کی تمام سطح پر ہواگر

وہ ایسا ہے کہ اس کو حرکت دی جائے تو سب ہل جائے تو جائز ہے، فرمایا اس کا مفہوم مخالف یہ ہے کہ اگر حرکت نہ کرے طحلب پانی کے حرکت دینے سے تو جائز نہیں کیونکہ پانی کے حرکت دینے سے اس کا متحرک نہ ہونا اس امر پر دلالت ہے کہ وہ اتنا کثیف ہے کہ مستعمل پانی کا ایک جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہونا مشکل ہے، تو وضو مستعمل پانی سے ہوگا، اور طحلب سبز رنگ کی گھاس ہے جو پانی پر تیرتی رہتی ہے اھ اور یہ حلیہ سے ماخوذ ہے، فرمایا یہ سب

[حواشی] 1 الرساله جواز الوضوء مع الاشباه من رسائل ابن نجیم ادارة القرآن کراچی ۱۸۴۰/۲ 2

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Left Column - Arabic Text] Green vegetation grows upon the water, some part over another, etc. It is taken from 'al-Hilya', which stated: This all indicates that the water becomes 'used' (musta’mal) by performing ablution in it unconditionally, etc.

He answered both of them by attributing them to the impurity of used water. This was explicitly stated by the commentator of 'al-Munya', Allamah Ibn Amir al-Hajj, who said: The permission was restricted by the absence of complete mixing, for if one part of it were to mix with another, it would not be permissible. However, this is according to the view of the impurity of used water. As for the view of its purity, it is permissible as long as one does not have a strong presumption that the amount he scoops from it to fulfill the obligation of wiping or washing is used water, or that used water is mixed with it in an equal or greater amount, etc. He said: This is explicit regarding what we have stated about the permissibility of ablution in large pools (fasaqi). As for the issue of algae, the commentator of 'al-Munya' also said: This is also based on the impurity of used water or its being equal to it, etc. Similarly, he explicitly stated in the issue (1) of one who performed ablution in a basin where the water had frozen: They said that if the ice is thin and breaks upon movement, it is permissible. However, if it is thick such that it does not move upon movement, it is not permissible. He said: This is also based on the impurity of used water. As for its purity, the answer is what we mentioned in previous sections, etc. And you know that he (may Allah Almighty have mercy on him)...

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] This is a proof for the matter that water becomes used (musta’mal) by performing ablution in it unconditionally, etc.

And the answer he gave to both of these questions is that he considered both to be based on the impurity of used water. This was explicitly stated by the commentator of 'Munya', Allamah Ibn Amir al-Hajj, and he said that the permission was conditioned on the absence of mixing, because if some part of the water went towards another part, it would not be permissible. But this is when used water is declared impure. However, if it is declared pure, it is permissible until one has a strong presumption that the amount he is taking from that water in his palm to fulfill the obligation of wiping or washing is used water, or used water is mixed in it which is equal to it or dominant over it, etc. He said that this is explicit regarding what we have said, that ablution is permissible in a 'fasaqi' (large water basin). And the issue of grass (algae), the commentator of Munya also stated that this too is based on the

impurity of used water or it being equal to used water, etc. And similarly, he explicitly stated in this issue that if a person performed ablution in such a pool where the water had frozen, he said: if the frozen water is such that it breaks easily upon moving, then it is permissible, and if there are large pieces such that they do not move by moving, then it is not permissible. He stated that this too is based on the fact that used water is impure, and regarding its purity...

[Footnotes] 1. Ar-Risala Jawaz al-Wudu from Rasa'il Ibn Nujaym with al-Ashbah, Idarat al-Qur'an Karachi 820/2 2. Ar-Risala Jawaz al-Wudu from Rasa'il Ibn Nujaym with al-Ashbah, Idarat al-Qur'an Karachi 8/821/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] पानी पर हरी वनस्पति (काई) उग आती है, एक के ऊपर एक, आदि। यह 'अल-हिलिया' से लिया गया है, जिसमें कहा गया है: यह सब इस बात का प्रमाण है कि पानी उसमें वुज़ू करने से पूर्णतः'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है, आदि।

उन्होंने इन दोनों का उत्तर उन्हें मुस्तअमल पानी की नापाकी (अपवित्रता) पर आधारित मानकर दिया है। इसकी स्पष्ट व्याख्या 'मुन्या' के व्याख्याकार अल्लामा इब्न अमीर अल-हज ने की है, और फरमाया कि अनुमति को पूर्ण मिश्रण के अभाव के साथ सीमित किया गया है, क्योंकि अगर इसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से में मिल जाए तो वह जायज़ नहीं होगा। लेकिन यह तब है जब मुस्तअमल पानी को नापाक माना जाए। जहाँ तक इसकी पाकी (शुद्धता) के विचार का प्रश्न है, तो यह जायज़ है जब तक कि यह प्रबल धारणा न हो जाए कि जो मात्रा वह पानी से चुल्लू भर कर ले रहा है, वह मसह या धोने के फ़र्ज़ को अदा करने के लिए मुस्तअमल पानी है, या उसमें बराबर या अधिक मात्रा में मुस्तअमल पानी मिला हुआ है, आदि। उन्होंने कहा: यह उस बात के लिए स्पष्ट है जो हमने 'फ़साकी' (बड़े हौज) में वुज़ू की अनुमति के बारे में कही है। काई (शैवाल) के मसले पर 'मुन्या' के व्याख्याकार ने यह भी कहा: यह भी मुस्तअमल पानी की नापाकी या उसके बराबर होने पर आधारित है, आदि। इसी तरह उन्होंने इस मसले (1) में स्पष्ट किया जिसमें एक व्यक्ति ने ऐसे हौज में वुज़ू किया जिसका पानी जम गया था: उन्होंने कहा कि अगर बर्फ पतली है और हिलाने पर टूट जाती है, तो यह जायज़ है। हालाँकि, यदि यह इतनी मोटी है कि हिलाने पर नहीं हिलती, तो यह जायज़ नहीं है। उन्होंने फरमाया: यह भी मुस्तअमल पानी की नापाकी पर आधारित है। जहाँ तक इसकी पाकी का सवाल है, तो उत्तर वही है जो हमने पहले के अनुभागों में बताया है, आदि। और आप जानते हैं कि वह (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए)...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] यह इस बात की दलील है कि पानी उसमें वुज़ू करने से पूर्णतः 'मुस्तअमल' हो जाता है, आदि।

और इन दोनों सवालों का जवाब उन्होंने यह दिया है कि इन दोनों को मुस्तअमल पानी की नापाकी पर महमूल किया है (आधारित माना है)। इसकी तसरीह (व्याख्या) मुन्या के व्याख्याकार अल्लामा इब्न अमीर अल-हज ने की है, और फरमाया कि जवाज़ (अनुमति) को अदम-ए-खुलूस (मिश्रण का न होना) के साथ मुक़ैयद (सीमित) किया क्योंकि अगर पानी का कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से की तरफ चला

गया तो जायज़ नहीं, लेकिन यह तब है जब मुस्तअमल पानी को नजिस (अपवित्र) करार दिया जाए। लेकिन अगर इसे पाक करार दिया जाए तो जायज़ है जब तक कि उसे इस बात का ज़न्न-ए-ग़ालिब (प्रबल धारणा) न हो जाए कि वह मिक़दार (मात्रा) जो वह पानी से चुल्लू भर कर ले रहा है, मसह या धोने के फ़र्ज़ को साक़ित (पूरा) करने के लिए मुस्तअमल पानी है या उसमें मुस्तअमल पानी मिला हुआ है जो उसके बराबर है या ग़ालिब (अधिक) है, आदि। फरमाया यह इस बारे में सरीह (स्पष्ट) है जो हमने कहा है कि वुज़ू फ़साक़ी (बड़े हौज) में जायज़ है। और घास (काई) का मसला, तो मुन्या के व्याख्याकार ने भी फरमाया यह भी मुस्तअमल पानी की नजासत पर मबनी (आधारित) है या वह मुस्तअमल पानी के मसावी (बराबर) हो, आदि। और इसी तरह उन्होंने इस मसले में तसरीह की कि किसी शख्स ने ऐसे हौज में वुज़ू किया जिसका पानी मुंजमिद (जम) चुका था, फरमाया अगर मुंजमिद पानी ऐसा है कि हिलाने से बा-आसानी टूट जाता है तो जायज़ है और अगर उसके बड़े-बड़े टुकड़े हों कि हिलाने से न हिलें तो जायज़ नहीं। फरमाया यह भी इसी पर मबनी है कि मुस्तअमल पानी नजिस है, और इसकी पाकी की...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. अर-रिसाला जवाज़ अल-वुज़ू, इब्न नुजैम के रसाएल से, अल-अशबाह के साथ, इदारतुल कुरआन कराची, 820/2 2. अर-रिसाला जवाज़ अल-वुज़ू, इब्न नुजैम के रसाएल से, अल-अशबाह के साथ, इदारतुल कुरआन कराची, 8/821/2

पृष्ठ 191/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[Left Column - Arabic Text] نبت اخضر یعلو الماء بعضه علی بعض اهـ وهو مأخوذ عن الحلیة قال وهذا کله یدل ان الماء یصیر مستعملاً بالوضوء فیه مطلقاً اهـ واجاب: عنها بحملهما علی نجاسة الماء المستعمل صرح به شارح المنیة العلامة ابن امیر الحاج فقال وانما قید الجواز بعدم الخلوص لانه لو کان یخلص بعضه الی بعض لایجوز لکن علی القول بنجاسة الماء المستعمل اما علی القول بطهارته فیجوز مالم یغلب علی ظنه ان القدر الذی یغترفه منه لاسقاط فرض من مسح او غسل ماء مستعمل او یمازجه مستعمل مساو او غالب اهـ قال فهذا صریح فیما قلناه من جواز الوضوء فی الفساق، و اما مسألة الطحلب فقال شارح المنیة ایضاً هذا ایضا بناء علی نجاسة الماء المستعمل او مساواته اهـ وکذا صرح فی مسألة (۱) توضأ فی حوض انجمد ماؤه قالوا ان کان الجمد رقیقاً ینکسر بالتحریک یجوز اما اذا کان کبیرا قطعا قطعا لا یتحرک بالتحریک لایجوز فقال هذا ایضاً بناء علی نجاسة الماء المستعمل اما علی طهارته فالجواب ما ذکرنا فی السابقات اهـ وانت تعلم انه رحمه الله تعالی

[Right Column - Urdu Text] اس امر پر دلیل ہے کہ پانی اس میں وضو کرنے سے مطلقاً مستعمل ہو جاتا ہے اهـ

اور ان دونوں سوالوں کا جواب انہوں نے یہ دیا ہے کہ ان دونوں کو مستعمل پانی کی نجاست پر محمول کیا ہے ، اس کی تصریح شارح منیہ علامہ ابن امیر الحاج نے کی ہے ، اور فرمایا کہ جواز کو عدم خلوص کے ساتھ مقید کیا کیونکہ اگر پانی کا کچھ حصہ دوسرے حصہ کی طرف چلا گیا تو جائز نہیں ، لیکن یہ تب ہے کہ جب مستعمل پانی کو نجس قرار دیا جائے ، لیکن اگر اس کو پاک قرار دیا جائے تو جائز ہے تادقتیکہ اس کو اس بات کا ظن غالب نہ ہو جائے کہ وہ مقدار جو اس پانی سے وہ چلّو بھر کر لے رہا ہے مسح یا دھونے کے فرض کو ساقط کرنے کیلئے کہ وہ مستعمل

پانی ہے یا اس میں مستعمل پانی ملا ہوا ہے جو اس کے برابر ہے یا غالب ہے اھ فرمایا یہ اس بارے میں صریح ہے جو ہم نے کہا ہے کہ وضو فساقی میں جائز ہے ، اور گھاس کا مسئلہ ، تو منیہ کے شارح نے بھی فرمایا یہ بھی مستعمل پانی کی نجاست پر مبنی ہے یا وہ مستعمل پانی کے مساوی ہو ، اھ اور اسی طرح انہوں نے اس مسئلہ میں تصریح کی کہ کسی شخص نے ایسے حوض میں وضو کیا جس کا پانی منجمد ہو چکا تھا فرمایا اگر منجمد پانی ایسا ہے کہ ہلانے سے باآسانی ٹوٹ جاتا ہے تو جائز ہے اور اگر اس کے بڑے بڑے ٹکڑے ہوں کہ ہلانے سے نہ ہلیں تو جائز نہیں ، فرمایا یہ بھی اسی پر مبنی ہے کہ مستعمل پانی نجس ہے ، اور اس کی پاکی کی

[Footnotes] 1 الرسالة جواز الوضوء من رسائل ابن نجیم مع الاشباہ ادارۃ القرآن کراچی ۸۲۰/۲

2 الرسالة جواز الوضوء من رسائل ابن نجیم مع الاشباہ ادارۃ القرآن کراچی ۸/۸۲۱/۲

Fatawa-e-Razvia, Volume Two

In the matter of marshy plants (al-ajma) and moss (al-tahlab), two approaches have been taken. This is because their statement ruled that wudu (ablution) is not permissible if the water in the marsh is less than ten-by-ten (dih dar dih) or if the moss does not move when the water is stirred. They considered this as an objection because performing wudu in a small amount of water would make the entire water 'used' (musta'mal). The response given was that this is based on the narration of impurity. However, 'Al-Hilya' ruled it permissible even if the water is small, as long as the pure water is more, based on the principle of purity. This was used as evidence that performing wudu in a small amount of water does not spoil it as long as the pure water predominates over the used water. To these two scenarios, they added the sub-issue of freezing in their argumentation, though it could also be a point of objection. In 'Al-Bahr', only three sub-issues were mentioned: explicitly for the first and implicitly for the other two, describing 'ma lahu' (what it is for) rather than 'ma huwa alaihi' (what it is based on). Then he said, "I saw 'Allama Ibn Amir al-Hajj say (and he quoted his previous statement), and he also said that the proximity of crops to crops does not prevent the connection of water with water, even if it is from the kind that can be reached." So, according to the preferred narration, purification with used water will be permissible, but the condition remains as mentioned (i.e., the predominance of pure water over others). Then Halabi mentioned several issues on this pattern, which clearly supports what we previously stated regarding the permissibility of wudu with water mixed with a small amount of used water. And his statement in the 'Risala' is explicit regarding what we said about the permissibility of wudu in fasaq (cisterns).

1. Bahr-ul-Raiq, Kitab-ut-Taharat, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/74. Page 192 of 711

फतवा-ए-रज़विया, खंड दो

दलदली पौधों (अल-अजमा) और काई (अल-तहलब) के मामले में दो रास्ते अपनाए गए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी बात ने वज़ू की अनुमति न होने का हुक्म दिया यदि दलदल का पानी दस-बाई-दस से कम हो या पानी को हिलाने से काई न हिले। उन्होंने इसे एक आपत्ति माना क्योंकि थोड़े पानी में वज़ू करने से पूरा पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाएगा। इसका जवाब यह दिया गया कि यह अशुद्धता की रिवायत पर आधारित है। हालांकि, 'अल-हिलिया' ने इसे जायज़ ठहराया चाहे पानी थोड़ा ही क्यों न हो जब तक कि शुद्ध पानी अधिक हो, पवित्रता के सिद्धांत के आधार पर। इसे एक प्रमाण के रूप में इस्तेमाल किया गया कि थोड़े पानी में वज़ू उसे खराब नहीं करता जब तक कि शुद्ध पानी प्रयुक्त पानी पर हावी रहे। इन दोनों स्थितियों के साथ उन्होंने अपने तर्क में जमने (इनजमद) के उप-मुद्दे को भी जोड़ा, हालांकि यह भी एक आपत्ति का विषय हो सकता है। 'अल-बहर' में केवल तीन उप-मुद्दों का उल्लेख किया गया है: पहले के लिए स्पष्ट रूप से और अन्य दो के लिए संकेत के रूप में, 'मा लहू' (वह किसके लिए है) का वर्णन किया गया है न कि 'मा हुवा अलैहि' (वह किस पर आधारित है) का। फिर उन्होंने कहा, "मैंने अल्लामा इब्न अमीर अल-हज को कहते देखा (और उन्होंने अपना पिछला बयान उद्धृत किया), और उन्होंने यह भी कहा कि फसलों का फसलों से सटा होना पानी के पानी से संपर्क को नहीं रोकता है, भले ही वह उस तरह का हो जहाँ तक पहुँचा जा सके।" तो, पसंदीदा रिवायत के अनुसार, प्रयुक्त पानी से पवित्रता प्राप्त करना जायज़ होगा, लेकिन शर्त वही रहेगी जो पहले बताई गई थी (यानी, दूसरों पर शुद्ध पानी की प्रधानता)। फिर हलबी ने इस पद्धति पर कई मसलों का उल्लेख किया, जो स्पष्ट रूप से उसका समर्थन करता है जो हमने पहले थोड़े प्रयुक्त पानी के साथ मिश्रित पानी से वज़ू की अनुमति के संबंध में कहा था। और 'रिसाला' में उनका बयान हमारे द्वारा फसाक (हौज़) में वज़ू की अनुमति के बारे में कही गई बात के बारे में स्पष्ट है।

1. बहर-उल-रैक, किताब-उत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/74। पेज 192/711

صورت میں تو جواب وہی ہے جو ہم پہلے ذکر کر آئے ہیں اھ اور تمہیں معلوم ہے کہ انہوں نے جھنڈ اور کائی کے مسئلہ میں دورا ہیں اختیار کی ہیں، اور یہ اس لئے ہے کہ ان دونوں میں سے ہر ایک نے حکم عدم جواز کا لگایا، اگر جھنڈ کا پانی دہ در دہ سے کم ہو یا پانی کو حرکت دینے سے کائی میں حرکت پیدا نہ ہو، انہوں نے قلیل پانی میں وضو پر تمام پانی کو مستعمل قرار دینے کو اعتراض قرار دیا اور اس کا جواب یہ دیا کہ یہ نجاست والی روایت پر محمول ہے اور حلیہ نے قلیل پانی میں وضو کو جائز کہا ہے بشرطیکہ وہ مستعمل پانی سے زیادہ ہو کیونکہ وہ پاک ہے، اس کو انہوں نے اپنی دلیل بنایا جہاں انہوں نے کہا کہ قلیل پانی میں وضو پانی کو فاسد نہیں کرتا جب تک پاک پانی غالب رہے، ان دونوں صورتوں کے ساتھ انہوں نے استدلال میں انجماد کی فرع کا اضافہ کیا اگرچہ یہ بھی اعتراض کی صورت بن سکتی ہے اور بحر میں تینوں فروع کا ذکر پر اکتفا کیا ہے پہلی کی تصریح کی ہے اور باقی میں تلویح کی ہے، ماحولہ کا بیان کیا ہے نہ کہ ماھوعلیہ کا۔ پھر فرمایا کہ میں نے علامہ ابن امیر الحاج کو دیکھا انہوں نے فرمایا (پھر ان کا گزشتہ قول نقل کیا) کہا نیز انہوں نے فرمایا کہ کھیتی کا کھیتی سے متصل ہونا پانی کے پانی سے متصل ہونے کو نہیں روکتا ہے اگرچہ یہ اس قبیلہ سے ہے کہ پہنچ سکتا ہے، تو مختار روایت کے مطابق جو مستعمل پانی سے طہارۃ جائز ہوگی مگر شرط وہی رہے گی جو گزری، (یعنی طہور کا غلبہ غیر پر) پھر حلبی نے چند مسائل پر گفتگو کی جو صریحاً اس کی تائید کرتی ہے جو ہم نے پہلے قلیل مستعمل پانی کے ملے ہوئے پانی سے وضو کے جواز کے بارے میں کہا تھا۔ اور رسالہ میں ان کا یہ قول اس بات میں صریح ہے جو ہم نے فساق (حوضوں) میں وضو کے جواز کے بارے میں کہی۔

۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۴ صفحہ 192 از 711

Fatawa Rizwia - Volume 2

(Left Column - Translated from Arabic) ...is more in accord with his purpose, as there is no dispute in the issue of mixing, except that he (Allah have mercy on him), when he ruled that there is no difference between the 'mulqi' (the water added) and the 'mulaqi' (the water added to), began to not differentiate between them in his arguments. Then he concluded his discourse in 'Al-Bahr' by presenting another piece of evidence for himself from the Fatawa of Allama Qari al-Hidaya, compiled by his student, the absolute researcher. He was asked about a small fountain (fasqiya) in which people perform ablution, where used water falls into it and new water arrives every day: is it permissible to perform ablution therein? He replied: if no impurity falls into it, [otherwise] it becomes impure due to its smallness. [End of quote] (Footnote marker) [End of quote]. I say, and success is from Allah: (1) Both objections and all four arguments are based on the oversight of the point of contention, because those branches concern the side of the 'mulqi', not the 'mulaqi'. As for the branch of Qari al-Hidaya, it is clear because the question says 'used water falls into it' and...

(Right Column - Urdu) ...mentioned of this type, and it is explicit in what we have mentioned, that is, if a small amount of used water is mixed with non-used water, performing ablution with it is permissible. [End of quote]. And his statement in the "Risala" that "this is explicit in the matter that performing ablution from the 'fasaki' (small tanks) is permissible" is more in accord with his purpose, because in the issue of mixing there is no dispute at all. However, it is only that since they did not differentiate between the 'mulqi' and 'mulaqi', it was close that they would not differentiate between them in reasoning either. Then he concluded his discourse in 'Bahr' by giving one more proof from the Fatawa of Allama Qari al-Hidaya. It was compiled by his student, the absolute researcher. He was asked about a small pit in which people perform ablution, used water falls into it and every day new water also arrives, is ablution permissible from it or not? So he replied that if no water other than the mentioned water falls into it, then there is no harm. [End of quote]. That is, if any impurity falls into it, it will become impure because it is small. [End of quote] (T). I say by Divine success: both objections and all four arguments are based on this, that the point of contention was not kept in view, because all these branches are in the 'mulqi', not in the 'mulaqi'. The branch of Qari al-Hidaya is obvious, because the question says that used water comes into it daily, and the answer is...

(Footnote section) Marker (عه): The "Ah" preceding these two is the end of the discourse of Allama Qari al-Hidaya, which was mentioned by Ibn al-Humam. The first

of these two is for the discourse of Ibn al-Humam from the discourse of Al-Bahr, and the last is for the discourse of Al-Bahr from the discourse of the author. (m) Before these two, "Ah" is the end of the discourse of Allama Qari al-Hidaya which Ibn al-Humam mentioned, and from these two, the first "Ah" is the end of Ibn al-Humam's discourse which Bahr described, and the last is the end of Bahr's discourse which the author mentioned. 12 (T)

(Footer) 1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/47. Page 193 of 711

फ़तावा रिज़विया - जिल्द दूसरी

(बायां कॉलम - अरबी से अनुवादित) ...यह उनके उद्देश्य के अधिक अनुकूल है क्योंकि मिश्रण के मुद्दे में कोई विवाद नहीं है, सिवाय इसके कि उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे), जब यह फैसला सुनाया कि 'मुल्की' (डाला गया पानी) और 'मुलाक़ी' (जिसमें डाला गया) के बीच कोई अंतर नहीं है, तो उन्होंने अपने तर्कों में भी उनके बीच अंतर करना छोड़ दिया। फिर उन्होंने 'अल-बह्र' में अल्लामा क़ारी अल-हिदाया के फ़तवों से एक और प्रमाण प्रस्तुत करके अपनी बात समाप्त की, जिसे उनके शिष्य, मुतलक़ शोधकर्ता ने संकलित किया था। उनसे एक छोटी फ़सक़िया (फव्वारा/कुंड) के बारे में पूछा गया जिसमें लोग वज़ू करते हैं, जहां इस्तेमाल किया हुआ पानी उसमें गिरता है और हर दिन नया पानी आता है: क्या उसमें वज़ू करना जायज़ है? उन्होंने उत्तर दिया: यदि उसमें कोई अपवित्रता नहीं गिरती है, [अन्यथा] यह अपनी लघुता के कारण अपवित्र हो जाता है। [उद्धरण समाप्त] (पादलेख मार्कर) [उद्धरण समाप्त]। मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: (1) दोनों आपत्तियाँ और चारों तर्क विवाद के केंद्र की अनदेखी पर आधारित हैं, क्योंकि वे शाखाएँ'मुल्की' पक्ष से संबंधित हैं, 'मुलाक़ी' से नहीं। जहाँ तक क़ारी अल-हिदाया की शाखा का प्रश्न है, यह स्पष्ट है क्योंकि प्रश्न कहता है 'इस्तेमाल किया हुआ पानी उसमें गिरता है' और...

(दायां कॉलम - उर्दू) ...इसी तरह का उल्लेख किया, और वह उसमें स्पष्ट है जिसका हमने उल्लेख किया है, यानी यदि गैर-इस्तेमाल शुदा पानी में थोड़ा सा इस्तेमाल शुदा पानी मिल जाए तो उससे वज़ू जायज़ है। [उद्धरण समाप्त]। और उनका "रिसाला" में यह कहना कि "यह इस बात में स्पष्ट है कि फ़साकी (छोटे कुंडों) से वज़ू जायज़ है" उनके उद्देश्य के अधिक अनुकूल है, क्योंकि मिश्रण के मामले में तो कोई विवाद ही नहीं है। अलबत्ता सिर्फ यह है कि चूंकि उन्होंने 'मुल्की' और 'मुलाक़ी' में अंतर नहीं किया है, तो संभव था कि वे तर्क करने में भी उनमें अंतर न करते। फिर उन्होंने 'बह्र' में अपनी बात इस पर समाप्त की कि अपनी एक और दलील फ़तावा अल्लामा क़ारी हिदाया से दी। इसे उनके शिष्य मुत्तलाक़ शोधकर्ता ने संकलित किया है। उनसे एक छोटे गड्ढे के बारे में पूछा गया जिसमें लोग वज़ू करते हैं, उसमें इस्तेमाल शुदा पानी गिरता है और हर दिन नया पानी भी आता है, इससे वज़ू जायज़ है या नहीं? तो उन्होंने जवाब दिया कि यदि इसमें बताए गए पानी के अलावा और पानी न गिरता हो तो कुछ हर्ज नहीं है। [उद्धरण समाप्त]। यानी यदि इसमें कोई गंदगी गिरेगी तो यह नापाक हो जाएगा क्योंकि यह छोटा है। [उद्धरण समाप्त] (त)। मैं अल्लाह की तौफीक से कहता हूँ: दोनों आपत्तियाँ और चारों तर्क इस पर आधारित हैं कि विवाद के मुख्य बिंदु पर नज़र नहीं रखी गई,

क्योंकि ये सभी शाखाएँ'मुल्की' में हैं न कि 'मुलाक़ी' में। क़ारी अल-हिदाया की शाखा तो स्पष्ट है, क्योंकि सवाल में है कि इसमें इस्तेमाल शुदा पानी रोज़ आता है और जवाब में है...

(पादलेख अनुभाग) मार्कर (عه): इन दोनों से पहले वाला "अह" अल्लामा क़ारी अल-हिदाया के कथन का अंत है, जिसे इब्न अल-हुमाम ने उद्धृत किया था। इन दोनों में से पहला इब्न अल-हुमाम के कथन के लिए है जो 'अल-बह्र' से है, और अंतिम लेखक के कथन से 'अल-बह्र' के कथन का अंत है। (म) इन दोनों से पहले "अह" अल्लामा क़ारी। अल-हिदाया के कथन का अंत है जिसे इब्न अल-हुमाम ने उल्लेख किया है, और इन दोनों में से पहली "अह" इब्न अल-हुमाम के कथन का अंत है जिसे बह्र ने वर्णित किया है, और अंतिम बह्र के कथन का अंत है जिसे लेखक ने उल्लेख किया है। १२ (त)

(फ़ुटर) १. बह्र अल-रायक़, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/४७। पेज १९३ ऑफ़ ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم - عربی) اوفق بمقصودہ اذ لا نزاع فی مسألة الاختلاط غیر انہ رحمہ اللہ تعالی لما حکم بعدم الفرق بین الملقی والملاقی طفق لایفرق بینھما فی الحجاج ثم انھی کلامہ فی البحر بإیراد حجة لہ اخری عن فتاوی العلامة قارئ الھدایة جمع تلمیذہ المحقق علی الاطلاق سئل عن فسقیة صغیرة یتوضؤ فیھا الناس وینزل فیھا الماء المستعمل فی کل یوم ینزل فیھا ماء جدید ھل یجوز الوضوء فیھا اجاب اذا لم یقع فیھا نجاسة تنجست لصغرھا اھ عہ اھ اقول: وباللہ التوفیق (1) الایرادان والحجج الاربع کلھا مبنیة علی الذھول عن محل النزاع لان تلك الفروع طرفی الملقی لاالملاقی اما فرع قارئ الھدایة فظاھر لقول السؤال ینزل فیھا الماء المستعمل و

(دایاں کالم - اردو) اسی قسم کے ذکر کئے، اور وہ اس میں صریح ہے جس کا ہم نے ذکر کیا ہے، یعنی اگر غیر مستعمل پانی میں تھوڑا سا مستعمل مل جائے تو اس سے وضو جائز ہے اھ اور ان کا قول "رسالہ" میں "یہ صریح ہے اس امر میں کہ فساقی سے وضو جائز ہے" ان کے مقصود سے زیادہ موافق ہے، کیونکہ اختلاط کے مسئلہ میں تو کوئی نزاع ہی نہیں، البتہ صرف یہ ہے کہ چونکہ انہوں نے ملقی اور ملاقی میں فرق نہیں کیا ہے تو قریب تھا کہ وہ ان دونوں سے استدلال میں بھی فرق نہ کرتے، پھر انہوں نے اپنا کلام بحر میں اس پر ختم کیا کہ اپنی ایک مزید دلیل فتاوی علامہ قارئ ہدایہ سے دی، اس کو ان کے شاگرد محقق علی الاطلاق نے جمع کیا ہے اُن سے ایک چھوٹے گڑھے کے بارے میں دریافت کیا گیا جس میں لوگ وضو کریں اس میں مستعمل پانی گرے اور ہر روز نیا پانی بھی آئے ، اس سے وضو جائز ہے یا نہیں؟ تو انہوں نے جواب دیا کہ اس میں مذکورہ پانی کے علاوہ اور پانی نہ گرتا ہو تو کچھ حرج نہیں اھ یعنی اس میں اگر کوئی نجاست گرے گی تو یہ نجس ہوجائے گا کیونکہ یہ چھوٹا ہے۔ اھ (ت) میں بتوفیق الہی کہتا ہوں

دونوں اعتراض اور چاروں استدلال اس پر مبنی ہیں کہ محل نزاع پر نظر نہیں رکھی گئی کیونکہ یہ تمام فروع ملقی میں ہیں نہ کہ ملاقی میں، قارئ الہدایہ کی فرع تو ظاہر ہے، کیونکہ سوال میں ہے کہ اس میں مستعمل پانی روز آتا ہے اور جواب میں ہے

(حاشیہ کا حصہ) عہ: اہ السابق علی ھذین لکلام العلامۃ قارئ الھدایۃ وھو قول الامام ابن الھمام والاول من ھذین لکلام ابن الھمام من کلام البحر والاخیر لکلام البحر من کلام المصنف (م) ان دونوں سے پہلے "اھ" علامہ قارئ الہدایہ کے کلام کی انتہا ہے جس کو ابن ہمام نے ذکر کیا اور ان دونوں میں سے پہلی "اھ" ابن ہمام کے کلام کی انتہا ہے جس کو بحر نے بیان کیا اور آخری بحر کے کلام کی انتہا ہے جس کو مصنف نے ذکر کیا ہے ۱۲ (ت)

(فوٹر) 1 بحر الرائق کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۴۷ Page 193 of 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Column] His statement in the answer: "as long as nothing else falls into it." As for the three branches (furu') of Al-Hilyah, it is because the basis for both answers and arguments is the speech of Allama al-Halabi. He has explicitly stated that all of them are concerning 'Mulqa' (the place of falling) and not 'Mulaqa' (the thing met). For instance, let his first statement be considered: "If some parts do not mix with others, it is permissible because the water at that time is abundant. And if the used water (Ma-ul-Must'amal) falling into it contained impurity, it would not have been prohibited, so how could it be when it is pure (tahir)? Indeed, he restricted the permissibility until the end of what you quoted." And he said in the second: "It prevents the transfer of the used water falling into it," and you have quoted it even if you did not attribute it to its author. And he said in the third: "The fact that ice breaks by moving the water does not prevent the transfer of the water connected to it in the tank from that place falling into it... etc." Likewise, he said regarding its similar cases. Rather, this is derived from the branches themselves according to the way of Al-Hilyah, for they apparently concern performing ablution from a tank or pond. Indeed, he stated in Al-Hilyah, one page before the first branch, regarding the difference between performing ablution 'from' a tank and 'in' it: "Performing ablution from it does not at all necessitate the wash-water falling into it, unlike performing ablution 'in' it." He said: "The concern regarding people performing ablution at the place where the wash-water falls is the intended purpose of the derivation (tafree'). On the contrary, performing ablution from it such that their wash-water falls outside is permissible, for that is a matter of consensus and does not branch out from the opinion of one group over another." This is all based on...

[Urdu Column] ...that when no other thing besides this water falls into it, and the three branches of Hilyah are because the authority for both answers and the arguments is the speech of Allama Halabi, and he has explicitly stated that all these are in 'Mulqa' (the place of falling), not in 'Mulaqa' (the thing met). Accordingly, let his first statement be seen: that if some of it does not go towards the other, it is permissible, because in this case, the water will be abundant. And if that used water in which impurity has fallen is not a preventer, then how will that which is pure be? And undoubtedly, he restricted the permissibility to the end of what you quoted. And in the second, he said: "It prevents the transfer of used water in which it occurs," although you have quoted it even if you have not named its author. And in the third, he said: "The breaking of ice by moving the water does not prevent the transfer of

water connected to it in the tank from that place falling into it, etc." And similarly, he said in its examples. Rather, according to the method of Hilyah, this is derived from the branches themselves because these are apparently related to performing ablution from a pond or tank. And in Hilyah, one page before the first branch, he stated: "There is a difference between performing ablution from a pond and performing ablution in a pond." And it is in it that performing ablution from a pond does not mean that the wash water falls into the pond, but if ablution is performed 'in' the pond, then the wash water will necessarily fall into it. He said: "People's performing ablution from that place where their wash water falls is the actual purpose of the derivation (tafree'), and to perform ablution at such a place where the wash water falls outside, then in this, no one's [disagreement exists]..."

Footnote: 1 Hilyah

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[अरबी कॉलम] उत्तर में उनका कथन: "जब तक कि उसमें इस पानी के अलावा कुछ और न गिरे।" जहाँ तक 'अल-हिल्या' की तीन उपशाखाओं (फुरूअ) की बात है, तो इसलिए क्योंकि दोनों उत्तरों और तर्कों का आधार अल्लामा अल-हलबी का कथन है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि ये सभी 'मुल्का' (गिराए जाने वाले स्थान) के बारे में हैं न कि 'मुलाक़ा' (मिलने वाली चीज़) के बारे में। उदाहरण के लिए, उनके पहले कथन पर विचार करें: "यदि उसका कुछ हिस्सा दूसरे की ओर न जाए तो यह जायज़ है क्योंकि उस समय पानी प्रचुर मात्रा में होगा। और यदि उसमें गिरने वाला प्रयुक्त जल (मा-उल-मुस्तअमल) अशुद्ध होता, तो भी वह वर्जित न होता, तो वह जो शुद्ध (ताहिर) है, कैसे वर्जित हो सकता है? वास्तव में, उन्होंने अनुमति को आपके द्वारा उद्धृत किए गए अंत तक सीमित रखा है।" और उन्होंने दूसरे में कहा: "यह उसमें गिरने वाले प्रयुक्त जल के स्थानांतरण को रोकता है," और आपने इसे उद्धृत किया है भले ही आपने इसे इसके लेखक के नाम से न जोड़ा हो। और उन्होंने तीसरे में कहा: "पानी के हिलने से बर्फ का टूटना, टैंक में उससे जुड़े पानी के उस गिरने वाले स्थान से स्थानांतरण को नहीं रोकता... आदि।" इसी तरह, उन्होंने इसके समान मामलों के बारे में कहा। बल्कि, अल-हिल्या के तरीके के अनुसार यह स्वयं उपशाखाओं से प्राप्त होता है, क्योंकि वे प्रत्यक्ष रूप से टैंक या तालाब से वज़ू करने से संबंधित हैं। वास्तव में, उन्होंने अल-हिल्या में पहली उपशाखा से एक पृष्ठ पहले, टैंक 'से' वज़ू करने और 'में' वज़ू करने के बीच अंतर के बारे में कहा है: "उससे वज़ू करने का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी टैंक में गिरे, जैसा कि उसके 'भीतर' वज़ू करने के विपरीत है।" उन्होंने कहा: "उन लोगों का उस स्थान से वज़ू करना जहाँ उनका इस्तेमाल किया हुआ पानी गिरता है, उपविभाजन (तफ़रीअ) का वास्तविक उद्देश्य है। इसके विपरीत, उससे वज़ू करना इस तरह कि उनका इस्तेमाल किया हुआ पानी बाहर गिरे, जायज़ है, क्योंकि यह सर्वसम्मत मामला है और एक समूह की राय दूसरे पर नहीं थोपता।" यह सब इस पर आधारित है...

[उर्दू कॉलम] ...कि जबकि इसमें इस पानी के अलावा कोई और चीज़ न गिरती हो, और हिल्या की तीनों उपशाखाएँ इसलिए हैं क्योंकि दोनों उत्तरों का आधार और तर्क अल्लामा हलबी का कलाम हैं, और उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि ये सभी मुल्का में हैं न कि मुलाक़ी में। तदनुसार, उनके पहले कथन को देखा जाए कि यदि उसका कुछ भाग दूसरे की ओर नहीं जाता है तो यह जायज़ है, क्योंकि इस स्थिति में पानी बहुत अधिक होगा, और यदि वह प्रयुक्त जल (मा-ए-मुस्तअमल) जिसमें अशुद्धि गिर गई हो वह बाधक नहीं है, तो वह जो शुद्ध है वह कैसे होगा? और निस्संदेह उन्होंने अनुमति को

आपके द्वारा उद्धृत किए गए अंश के अंत तक सीमित किया है। और दूसरे में उन्होंने कहा: "यह प्रयुक्त पानी के स्थानांतरण को रोकता है जिसमें वह गिरता है," हालांकि आपने इसे उद्धृत किया है भले ही आपने इसके लेखक का नाम नहीं लिया है। और तीसरे में उन्होंने कहा कि बर्फ के हिलने से पानी का टूटना हौज में जो पानी उससे जुड़ा है उसके स्थानांतरित होने में बाधक नहीं है, इत्यादि। और इसी तरह उन्होंने इसके उदाहरणों में कहा, बल्कि हिल्या की पद्धति के अनुसार यह स्वयं उपशाखाओं से प्राप्त होता है क्योंकि ये स्पष्ट रूप से हौज या तालाब से वज़ू करने से संबंधित हैं। और हिल्या में पहली उपशाखा से एक पृष्ठ पहले उन्होंने कहा: हौज से वज़ू करने और हौज में वज़ू करने में अंतर है। और इसी में यह है कि हौज से वज़ू करने का मतलब यह नहीं है कि धोवन (इस्तेमाल किया हुआ पानी) हौज में गिरे, लेकिन यदि हौज में वज़ू किया जाता है, तो धोवन अनिवार्य रूप से उसमें गिरेगा। उन्होंने कहा कि लोगों का उस स्थान से वज़ू करना जहाँ उनके धोवन का पानी गिरता है, यही तफ़रीअ (उपविभाजन) का वास्तविक उद्देश्य है, और ऐसी जगह वज़ू करना जहाँ धोवन बाहर गिरता हो तो इसमें किसी का (कोई मतभेद नहीं)...

पाद-टिप्पणी: 1 हिल्या

पृष्ठ 194/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[عربی عبارت (بایاں کالم)] قوله في الجواب اذالم يقع فيها غيره واما فروع الحلية الثلثة فلان مستند الجوابين والاحتجاجات كلام العلامة الحلبى وهو مصرح بانها جميعاً في الملقى دون الملاقى الا ترى الى قوله في الاول ان كان لايخلص بعضه الى بعض جازلان الماء حينئذ كثير ولوكان الماء المستعمل الواقع فيه نجاسة لم يمنع فكيف وهو طاهر وانما قيد الجواز الى آخر مانقلتم وقال في الثانى يمنع انتقال الماء المستعمل الواقع فيه وقد نقلتموه وان لم تعزوه وقال في الثالث ان كون الجمد ينكسر بتحريك الماء لايمنع من انتقال الماء المتصل منه في الحوض من ذلك المحل الواقع فيه --- الخ وكذلك قال في نظائره بل هذا على طريق الحلية مستفاد من نفس الفروع فانها في الوضوء في حوض اوغدير، وقد افاد في الحلية قبل الفرع الاول بصفحة في الفرق بين التوضى من حوض وفيه ان التوضى منه لايستلزم البتة وقوع الغسالة فيه بخلاف التوضى فيه قال وكون وضوء المتوضئين من موضع وقوع غسالة تهم فيه هو مقصود الافادة من التفريع بخلاف كون وضوء المتوضى منه بحيث تقع غسالاتهم خارجه جائزا فان ذلک مجمع عليه لايتفرع على قول قوم دون آخرين ۱ اھ۔ هذا كله على

[اردو عبارت (دایاں کالم)] کہ جبکہ اس میں اس پانی کے علاوہ کوئی اور چیز نہ گرتی ہو ، اور حلیہ کی تینوں فروع اس لئے کہ دونوں جوابوں کی سند اور استدلالات علامہ حلبی کا کلام ہیں، اور انہوں نے تصریح کر دی ہے یہ تمام ملقیٰ میں ہیں نہ کہ ملاقی میں۔ چنانچہ ان کا پہلا قول دیکھا جائے کہ اس کا بعض دوسرے بعض کی طرف نہ جاتا ہو تو جائز ہے، کیونکہ اس صورت میں پانی کثیر ہو گا، اور اگر وہ ماء مستعمل جس میں نجاست گر گئی ہو مانع نہیں ہے تو جو طاہر ہے وہ کیسے ہو گا، اور بیشک جواز کو مقید کیا الی آخر مانقلتم اور دوسرے میں فرمایا منع کرتا ہے مستعمل پانی کا منتقل ہونا جس میں وہ واقع ہے حالانکہ تم نے اس کو نقل کیا ہے اگرچہ اس کے

قائل کا نام نہیں لیا ہے ، اور تیسرے میں فرمایا کہ برف کا پانی کو حرکت دینے سے ٹوٹ جانا حوض میں جو پانی اس سے متصل ہے اس کے منتقل ہونے کو مانع نہیں ہے الخ اور اسی طرح اس کی نظیروں میں فرمایا بلکہ حلیہ کے طریق کے مطابق یہ نفس فروع سے مستفاد ہے کیونکہ یہ بظاہر حوض یا تالاب سے وضو سے متعلق ہیں ، اور حلیہ میں فرع اول سے ایک صفحہ قبل فرمایا : حوض سے وضو اور حوض میں وضو کے اندر فرق ہے، اور اسی میں ہے کہ حوض سے وضو کا مطلب یہ نہیں ہے کہ دھوون حوض میں گرے ، لیکن اگر حوض میں وضو کیا جائے تو دھوون لازمی طور پر اس میں گرے گا ، فرمایا لوگوں کا اس جگہ سے وضو کرنا جہاں اُن کے دھوون کا پانی پڑتا ہے یہی تفریح کا اصل مقصود ہے اور ایسی جگہ وضو کرنا جہاں دھوون باہر گرتا ہو تو اس میں کسی کا [اختلاف نہیں]۔۔۔

حاشیہ: 1 حلیہ

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Right Column - Urdu]: There is no disagreement; it is not such that it stems from the view of some people and not others. All this discussion follows the methodology of 'Hilyah'. I say that performing ablution (wudhu) from a pool has two meanings: one is that water is taken from the pool by hand or vessel and wudhu is performed outside it, while the wash-water keeps falling back into the pool, as is said, "I performed wudhu from the basin." The researcher Al-Halabi limited himself to this. The second method is for one to perform wudhu by immersing their limbs in the pool, as people generally wash their feet, and as it is said, "I washed clothes in the tub." This is closer to being the receptacle for 'Wudhu' (the act, with damma), although its application to the first case is based on the interpretation that it is the receptacle for 'Wadu' (the water, with fatha). So there is no reason for it to be restricted to only the first case. In the first case, the water is 'thrown' (mulqa), meaning it was first used outside and then cast into pure (absolute) water. In the second case, it is 'meeting' (mulaqi), meaning pure water met a body in ritual impurity and an obligation was dropped, or it met the body of someone seeking proximity (to God) and a pious act was performed through it. And you know that the wording in the three branches allows for both interpretations; it is just that if we take it to mean the second...

[Left Column - Arabic]: The way of lawfulness. I say: (1) and from Him I seek help: performing wudhu in a pool can have two meanings. One is to scoop from it with a hand or vessel and perform wudhu outside it such that its wash-water falls back into it, as you say, "I performed wudhu in the basin," and this is what the researcher Al-Halabi limited himself to. The other is to wash one's limbs by immersing them in it, as many people do with their feet, as you say, "I washed the cloth in the tub." This is closer to the pool being the place for the act of 'Wudhu' (with damma), even if it is applied to the first because the pool becomes the receptacle for 'Wadu' (with fatha). There is no reason to restrict it to the first. In the first, the water is 'cast into' (mulqa), meaning it was used outside and then cast into pure water. In the second, it is 'meeting' (mulaqi), meaning pure water met a body in ritual impurity and an obligation was dropped, or the body of one seeking proximity and a pious act was established. You (3) know that the expression in the three branches allows for both ways, however, if we were to apply it to the second, it would be necessary to refer it to a weak narration, which is the impurity of used water or that pure water becomes 'used' by the falling of used water into it, even if a little, except for what is sprinkled

like dew, for that is pardoned to avoid hardship. Both are weak and abandoned. The correct and relied-upon view is its purity and its lack of effect on pure water.

[Bottom Note - Arabic]: He included it in Al-Bahr as legally impure following Al-Diraya, and the rebuttal to him has already been mentioned in Al-Turs al-Mu'addal. (M)

[Bottom Note - Urdu]: Al-Bahr included it as legally impure following Al-Diraya; its rebuttal was previously mentioned in Al-Turs al-Mu'addal. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[दायां कॉलम - उर्दू]: कोई मतभेद नहीं है; यह ऐसा नहीं है कि यह कुछ लोगों के मत पर आधारित हो और दूसरों के नहीं। यह पूरी चर्चा 'हिलया' की पद्धति पर आधारित है। मैं कहता हूँ कि हौज (कुंड) से वज़ू करने के दो अर्थ हैं: एक यह कि हौज से हाथ या बर्तन से पानी लिया जाए और हौज के बाहर वज़ू किया जाए, जबकि इस्तेमाल किया हुआ पानी हौज में गिरता रहे, जैसा कि कहा जाता है, "मैंने तसले से वज़ू किया।" शोधकर्ता अल-हलबी ने खुद को इसी तक सीमित रखा है। दूसरी विधि यह है कि व्यक्ति हौज में अपने अंगों को डुबोकर वज़ू करे, जैसा कि लोग आमतौर पर अपने पैर धोते हैं, और जैसा कि कहा जाता है, "मैंने टब में कपड़े धोए।" यह 'वज़ू' (क्रिया, दम्मा के साथ) का पात्र होने के अधिक निकट है, हालाँकि पहले मामले में इसका प्रयोग इस व्याख्या पर आधारित है कि यह 'वज़ू' (पानी, फत्हा के साथ) का पात्र है। इसलिए इसे केवल पहले मामले तक ही सीमित रखने का कोई कारण नहीं है। पहली स्थिति में, पानी 'डाला गया' (मुलक़ी) है, जिसका अर्थ है कि इसे पहले बाहर इस्तेमाल किया गया और फिर शुद्ध पानी में डाला गया। दूसरी स्थिति में, यह 'मिलने वाला' (मुलाक़ी) है, जिसका अर्थ है कि शुद्ध पानी एक अशुद्ध शरीर से मिला और एक दायित्व समाप्त हो गया, या किसी निकटता चाहने वाले के शरीर से मिला और उसके माध्यम से एक नेक कार्य किया गया। और आप जानते हैं कि तीनों उप-शाखाओं में शब्दों का प्रयोग दोनों व्याख्याओं की अनुमति देता है; बस इतना है कि अगर हम इसे दूसरे अर्थ में लें तो...

[बायां कॉलम - अरबी]: शुद्धता का मार्ग। मैं कहता हूँ: (1) और उसी से सहायता चाहता हूँ: हौज में वज़ू करने के दो अर्थ हो सकते हैं। एक यह कि उससे हाथ या बर्तन से पानी निकाला जाए और बाहर वज़ू किया जाए जिससे धोया हुआ पानी वापस उसमें गिरे, जैसे आप कहते हैं, "मैंने तसले में वज़ू किया," और मोहक़्क़िक़ हलबी ने इसी पर इक्तिफा किया है। दूसरा यह कि अपने अंगों को उसमें डुबोकर धोया जाए, जैसा कि बहुत से लोग पैरों के साथ करते हैं, जैसे आपका कहना, "मैंने टब में कपड़े धोए।" यह हौज के वज़ू (दम्मा के साथ) का स्थान होने के अधिक निकट है, भले ही इसे पहले पर भी लागू किया जाता हो क्योंकि हौज वज़ू (फत्हा के साथ) का पात्र बन जाता है। इसे पहले तक सीमित रखने का कोई कारण नहीं है। पहले में, पानी 'मुलक़ी' है, यानी बाहर इस्तेमाल किया गया फिर शुद्ध पानी में डाला गया। दूसरे में, यह 'मुलाक़ी' है, यानी शुद्ध पानी जो अपवित्र शरीर से मिला और एक फ़र्ज़ को समाप्त किया, या निकटता चाहने वाले के शरीर से मिला और एक नेकी अदा हुई। आप (3) जानते हैं कि तीनों शाखाओं की इबारत दोनों पहलुओं की संभावना रखती है, लेकिन अगर

हम इसे दूसरे पर लागू करें, तो इसे एक कमज़ोर रिवायत की ओर मोड़ना होगा, जो कि इस्तेमाल किए हुए पानी की अपवित्रता है या यह कि शुद्ध पानी में इस्तेमाल किया हुआ पानी गिरने से वह 'इस्तेमालशुदा' हो जाता है, भले ही वह थोड़ा ही क्यों न हो, सिवाय उस पानी के जो ओस की तरह छिड़का गया हो, क्योंकि तंगी से बचने के लिए वह क्षम्य है। दोनों रिवायतें कमज़ोर और त्यागी हुई हैं। सही और भरोसेमंद बात इसकी शुद्धता और शुद्ध पानी पर इसका प्रभाव न होना है।

[नीचे का नोट - अरबी/उर्दू]: बहर ने 'दिराया' का अनुसरण करते हुए इसे कानूनी रूप से अशुद्ध माना है, और 'तुरस अल-मुअद्दल' में उसका खंडन पहले ही हो चुका है।

पृष्ठ 195/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم - اردو]: اختلاف نہیں، یہ ایسا نہیں کہ کچھ لوگوں کے قول پر متفرع ہو اور کچھ کے قول پر متفرع نہ ہو۔ یہ تمام بحث حلیہ کے نہج پر ہے۔ میں کہتا ہوں حوض سے وضو کے دو معنی ہیں ایک تو یہ کہ حوض سے چلو سے پانی لیا جائے یا برتن سے لیا جائے اور حوض کے باہر وضو کیا جائے اور اس کا دھوون حوض میں گرتا رہے، جیسے کہا جاتا ہے، میں نے طشت سے وضو کیا۔ محقق حلبی نے اس پر اکتفاء کیا ہے، اور دوسرا طریقہ یہ ہے کہ حوض میں اپنے اعضاء ڈبو کر وضو کرے جیسے عام طور پر لوگ پیر دھوتے ہیں، جیسے کہا جاتا ہے "میں نے ٹب میں کپڑے دھوئے، اور یہ حوض سے وضو بالضم کا ظرف ہونے کے اقرب ہے، اگرچہ اس کا اطلاق پہلے پر اس تاویل سے ہوتا ہے کہ وہ وضوء بالفتح کا ظرف ہے، تو کوئی وجہ نہیں کہ اس کو پہلے تک ہی مقصور رکھا جائے اور پہلے میں پانی ملقی ہے یعنی پہلے باہر استعمال کیا گیا پھر مطلق پانی میں ڈالا گیا اور دوسرے میں ملاقی ہے، یعنی مطلق پانی جو حدث والے بدن کو ملا اور ایک فرض کو ساقط کیا یا متقرب کے بدن کو ملا اور ایک قربت اس سے ادا ہوئی، اور آپ جانتے ہیں کہ تینوں فروع کی عبارت دونوں وجہوں کا احتمال رکھتی ہے، صرف اتنا ہے کہ اگر ہم اس کو دوسرے پر

[بایاں کالم - عربی]: طریق الحلیة وانا اقول:(۱) وبه استعین الوضوء فی الحوض یحتمل معنیین احدهما ان یغترف منه بید اواناء ویتوضأ خارجه بحیث تقع غسالته فیه کقولك توضأت فی الطست وهو الذی اقتصر علیه المحقق الحلبي والاخر ان یغسل اعضاء ه بغمسها فیه کما یفعل کثیر من الناس فی الرجلین کقولك غسلت الثوب فی الاجانة وهذا اقرب الی ظرفیة الحوض للوضوء بالضم وان اطلق علی الاول لصیرورة الحوض ظرف الوضوء بالفتح(۲) فلا وجه للقصر علی الاول والماء فی الاول ملقی

ای استعمل فی الخارج ثم القی فی الماء المطلق وفی الثانی ملاق ای ماء مطلق لاقی بدناً ذا حدث فاسقط فرضاً او بدن عـ متقرب فأقام قربة، وانت(۳) تعلم ان العبارة فی الفروع الثلثة تحتمل الوجهین بید انا لو حملناها علی الثانی وجب ردها الی روایة ضعیفة وهو نجاسة المستعمل او صیرورة المطلق مستعملا بوقوع المستعمل ولو قلیلاً الا ماترشف کالطل فانه عفو دفعاً للحرج وکلتاهما ضعیفة مهجورة والصحیح المعتمد طهارته وعدم تأثیره فی المطلق

[نیچے کا نوٹ]: عـ ادخله فی البحر فی المحدث حکماً تبعاً للدرایة وتقدم الرد علیه فی الطرس المعدل اھـ (م) بحر نے اس کو حکماً محدث میں داخل کیا درایہ کی پیروی کرتے ہوئے طرس معدل میں اس کا رد پہلے گزر اھ (ت)

صفحہ 195/711

[Left Column - Arabic Text] ...absolutely as long as it does not equal or overpower it. Narrations are protected from such [weakness] as far as possible. Thus it became clear that the intended meaning in the three cases is the second meaning, not what the researcher understood, which forced him to attribute them to a weak narration. Thus the three have become proofs for us. There is no clear evidence to divert them to a weak narration. Whoever does so turns into a claimant after being a questioner. So let him illuminate his claim with proof, and where is the proof? This is because the principle regarding the narrations of the Imams is reliability. Whoever relies on them has fulfilled his obligation, and whoever wants to reject them in favor of something else, let him bring a compelling proof. This claim of mine has been acknowledged by the Allamah in both Al-Bahr and Al-Risalah, as he judged those subsidiary branches to be based on a weak narration, saying: "The truth of this truthful claim will become apparent to you with just evidence." By his admission, may Allah have mercy on him, he has returned to being a claimant, so how can he be accepted without evidence? As for what is mentioned in "Al-Bayyinah," it is the statement of "Al-Muhit," Allamah Siraj al-Hindi, and "Al-Tuhfah": "If used water falls into a well, according to [Imam] Muhammad, it is permissible to perform ablution with it as long as it does not overpower the water. This is the correct view." The wording of "Al-Tuhfah" is: "According to the chosen madhhab (school of thought)."

[Right Column - Urdu Explanation] If interpreted, it would have to be referred back to a weak narration, which is that used water is impure or that regular water becomes used by being mixed with a small amount of used water. Yes, drops like dew are exempt to avoid hardship. Both of these narrations are discarded and weak, and the correct and reliable view is its purity and that it does not affect regular water as long as it does not equal or overpower it. Narrations are kept safe from this kind of thing as far as possible. So it became known that in the three branches, the second meaning is intended, not the meanings that the researcher took, and then he had to attribute them to a weak narration. In this way, all three branches became our proof and there is no clear evidence present to attribute them to a weak narration. And whoever does so makes himself a claimant instead of a questioner, and in such a case he should bring proof, and from where will he get proof? Because in the narrations of the Imams, the actual basis is reliability, so whoever relies on them has fulfilled his responsibility, and whoever wants to reject them towards something else, he will have to present his proof. And the Allamah has acknowledged this claim of

mine in both Bahr and Risalah because he considered their basis to be a weak narration and said that the truth of this claim will be revealed to you by a just evidence.

[Footnote] 1 Al-Risalah fi Jawaz al-Wudu' ma' al-Ashbah wa al-Naza'ir, Idarat al-Qur'an wa al-'Ulum al-Islamiyya, Karachi 820/7.

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...बिल्कुल जब तक कि वह उसके बराबर न हो जाए या उस पर हावी न हो जाए। आख्यानों (रिवायतों) को यथासंभव ऐसी कमज़ोरी से बचाया जाता है। अतः यह स्पष्ट हो गया कि तीनों मामलों में अभिप्रेत अर्थ दूसरा अर्थ है, वह नहीं जो शोधकर्ता ने समझा, जिसने उसे उन्हें एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित करने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार वे तीनों हमारे लिए प्रमाण बन गए हैं। उन्हें किसी कमज़ोर रिवायत की ओर मोड़ने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। जो कोई भी ऐसा करता है वह पहले प्रश्नकर्ता होने के बाद अब दावेदार बन जाता है। तो उसे अपने दावे को प्रमाण के साथ रोशन करने दें, और प्रमाण कहाँ है? ऐसा इसलिए है क्योंकि इमामों की रिवायतों के संबंध में मूल सिद्धांत विश्वसनीयता है। जिसने उन पर भरोसा किया, उसने अपना कर्तव्य पूरा किया, और जो उन्हें किसी और चीज़ के पक्ष में अस्वीकार करना चाहता है, उसे एक बाध्यकारी प्रमाण लाना चाहिए। मेरे इस दावे को अल्लामा ने अल-बहर और अल-रिसाला दोनों में स्वीकार किया है, क्योंकि उन्होंने उन उप-शाखाओं को एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित माना और कहा: "इस सच्चे दावे की सच्चाई आपके सामने न्यायपूर्ण प्रमाण के साथ स्पष्ट हो जाएगी।" उनकी अपनी स्वीकृति से, अल्लाह उन पर दया करे, वह एक दावेदार बन गए हैं, तो बिना प्रमाण के उन्हें कैसे स्वीकार किया जा सकता है? जहाँ तक "अल-बय्यिना" में उल्लेख का सवाल है, वह "अल-मुहीत", अल्लामा सिराज अल-हिंदी और "अल-तुहफ़ा" का कथन है: "यदि इस्तेमाल किया हुआ पानी कुएं में गिर जाता है, तो [इमाम] मुहम्मद के अनुसार, उससे वज़ू करना जायज़ है जब तक कि वह पानी पर हावी न हो जाए। यही सही विचार है।" "अल-तुहफ़ा" के शब्द हैं: "चुने हुए मज़हब के अनुसार।"

[दायां कॉलम - उर्दू व्याख्या] यदि व्याख्या की जाए, तो इसे एक कमज़ोर रिवायत की ओर मोड़ना पड़ेगा, जो यह है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी अपवित्र होता है या सामान्य पानी थोड़े से इस्तेमाल किए हुए पानी के मिलने से इस्तेमाल किया हुआ बन जाता है। हाँ, ओस जैसी बूंदें कठिनाई को दूर करने के लिए माफ़ हैं। ये दोनों रिवायतें छोड़ी हुई और कमज़ोर हैं, और सही और विश्वसनीय विचार इसकी शुद्धता है और यह कि यह सामान्य पानी पर तब तक प्रभाव नहीं डालता जब तक कि वह उसके बराबर या उस पर हावी न हो जाए। और रिवायतों को यथासंभव इस तरह की चीज़ों से सुरक्षित रखा जाता है। तो यह ज्ञात हुआ कि तीनों शाखाओं में दूसरा अर्थ ही अभिप्रेत है, वे अर्थ नहीं जो शोधकर्ता ने लिए और फिर उसे उन्हें कमज़ोर रिवायत पर आधारित करना पड़ा। इस तरह तीनों शाखाएं हमारा प्रमाण बन गईं और उन्हें कमज़ोर रिवायत की ओर ले जाने के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण

मौजूद नहीं है। और जो ऐसा करता है वह प्रश्नकर्ता के बजाय खुद को दावेदार बनाता है और ऐसी स्थिति में उसे प्रमाण लाना चाहिए, और प्रमाण कहाँ से मिलेगा? क्योंकि इमामों की रिवायतों में मूल आधार विश्वसनीयता ही है, तो जो उनसे प्रमाण लेगा उसने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर ली। और जो उन्हें किसी और तरफ़ ले जाना चाहता है उसे उसका प्रमाण देना होगा। और मेरे इस दावे को अल्लामा ने बहर और रिसाला दोनों में स्वीकार किया है क्योंकि उन्होंने उनके आधार को कमज़ोर रिवायत पर आधारित माना है और कहा है कि तुम पर इस दावे की सच्चाई न्यायपूर्ण प्रमाण से स्पष्ट हो जाएगी।

[फुटनोट] 1 अल-रिसाला फी जवाज़ अल-वुज़ू मा अल-अशबाह व अन-नज़ैर, इदारात अल-कुरान व अल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची 7/820.

[Left Column - Arabic] مطلقاً مالم یساوہ او یغلب علیہ والروایات تصان عن مثلہ مہما امکن فظہر ان المراد فی الثلاثۃ معنی الثانی لاما فہم المحقق واضطر الی حملہا علی ضعیف واذن صارت الثلثۃ حججاً لنا ولا دلیل ناطق علی صرفہا الی ضعیف ومن (۱) یفعلہ ینقلب مدعیاً بعد ان کان سائلاً فلینور دعواہ ببرہان و این البرہان وذلك لان الاصل فی روایات الائمۃ الاعتماد فمن استند بہا فقد قضی ما علیہ، ومن یرید ردہا الی ما یردہا فلیات بدلیل یلجیئ الیہ، ودعوای ہذہ قد اعترف بہا العلامۃ فی البحر والرسالۃ معاً اذ حکم بابتناء تلك الفروع علی روایۃ ضعیفۃ فقال وسیظہر لك صدق ہذہ الدعوی الصادقۃ بالبینۃ العادلۃ فقد اقرانہ رحمہ اللہ تعالی عاد بہذا مدعیاً فکیف تسلم بلا دلیل اماماً ذکر فی البینۃ وہو قول المحیط والعلامۃ السراج الہندی والتحفۃ اذا وقع الماء المستعمل فی البئر عند محمد یجوز التوضؤ بہ مالم یغلب علی الماء وہو الصحیح ولفظ التحفۃ علی المذہب المختار ۱۔

[Right Column - Urdu] محمول کریں تو اس کو ایک ضعیف روایت کی طرف راجع کرنا پڑے گا اور وہ مستعمل پانی کا نجس ہونا ہے یا مطلق پانی کا تھوڑے مستعمل پانی سے مل جانے کی وجہ سے مستعمل ہو جانا ، ہاں شبنم جیسے قطرے معاف ہیں حرج کو دفع کرنے کیلئے۔ یہ دونوں روایتیں متروک اور ضعیف ہیں، اور صحیح اور قابل اعتماد اس کی پاکی ہے اور اس کا مطلق پانی پر اثر انداز نہ ہونا ہے تا وقتیکہ اس کے برابر یا اس پر غالب نہ ہو جائے اور روایتیں اس قسم کی چیز سے حتی الامکان محفوظ رکھی جاتی ہیں ، تو معلوم ہوا کہ تینوں فروع میں دوسرے معنی ہی مراد ہیں ، وہ معنی نہیں ہیں جو محقق نے لئے ہیں اور پھر ان کو ضعیف روایت پر حمل کرنا پڑا اور اس طرح تینوں فروع ہماری دلیل بن گئی ہیں اور ان کو ضعیف روایت پر محمول کرنے کیلئے کوئی دلیل ناطق موجود نہیں ، اور جو ایسا کرتا ہے وہ سائل کے بجائے اپنے

آپ کو مدعی بناتا ہے اور ایسی صورت میں اس کو برہان لانا چاہئے ، اور برہان کہاں سے ملے گا کیونکہ ائمہ کی روایات میں اصل اعتماد ہے تو جوان سے استناد کرے گا اس نے اپنی ذمہ داری پوری کر دی ، اور جو ان کو کسی اور طرف رد کرنا چاہتا ہے تو اسے اس کی دلیل پیش کرنا ہو گی ، اور میرے اس دعویٰ کا اعتراف علامہ نے بحر اور رسالہ دونوں میں کیا ہے کیونکہ انہوں نے ان کی بنیاد کو ضعیف روایت پر مبنی قرار دیا ہے اور فرمایا کہ تم پر اس دعویٰ کی صداقت بینہ عادلہ سے ظاہر ہو جائیگی۔

[Footnote] 1 الرسالة فی جواز الوضوء مع الاشباہ والنظائر ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۷/۸۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 2

I say: (1) May Allah have mercy on the Great Shaykh, what he mentioned is found in 'al-Multaqa'. So how can it indicate the basis of what is written in 'al-Asrar', 'al-'Inayah', 'al-Dirayah', and other commentaries of 'al-Hidayah', as well as the commentary of 'al-Isbijabi', 'Fatawa al-Walwalijiyyah', and others, upon a weak report, while it pertains to 'al-Mulaqi' (that which meets/mixes)? Up to here, the discourse with 'al-Bahr' and 'al-Risalah' together is complete. Nothing remains in them except a single point in 'al-Bahr', which is his saying (may Allah have mercy on him): "One cannot conceive [note a] a difference between the two cases in terms of ruling," meaning 'al-Multaqa' and 'al-Mulaqi'.

They have admitted in this that they have become claimants in this manner, so how will this claim be accepted without evidence? And what they mentioned in 'Bayyinah' is the saying of the author of 'al-Muhit', Allama Siraj al-Hindi, and 'al-Tuhfah', that if used water falls into a well, then according to Imam Muhammad, ablution with it is permissible as long as it does not overpower the water, and this is the correct view. It is stated clearly in 'al-Tuhfah' that this is the chosen school of thought. (T)

I say, may Allah Almighty have mercy on the Shaykh, whatever he mentioned is in 'al-Multaqa'. So how can the texts of 'al-Asrar', 'al-'Inayah', 'al-Dirayah' (commentaries of 'al-Hidayah'), 'Sharh al-Isbijabi', 'Fatawa al-Walwalijiyyah', etc., be used as evidence based on a weak narration because they are regarding 'al-Mulaqi'? Here the discussion from 'al-Bahr' and 'al-Risalah' is complete, although 'al-Bahr' said one word, which is that there is no difference between the cases of 'al-Multaqa' and 'al-Mulaqi' in terms of the ruling. (T)

I say: (2) By your life, there is indeed a difference, and what a difference! Because the status of 'musta'mal' (used water) is only established by the water removing a ritual impurity ('hadath'), or dropping an obligation ('fard'), or performing an act of spiritual proximity ('qurbah'), and that occurs through its contact (meeting) [with the body].

I say there is a very big difference between the two cases because water becomes 'musta'mal' either due to the removal of 'hadath' or due to the dropping of a 'fard' or some...

[Footnote a] Note: Here he quoted from some of his contemporaries a distinction: that in ablution ('wudu'), the state of being 'used' spreads through all the water, unlike in pouring ('al-sabb'). Then he himself refuted it. This is a flawed statement

that opened the door for its own refutation. Therefore, since there was justification for what was mentioned in 'al-Bahr', we omitted its mention here. We shall return to it, if Allah Almighty wills, in the fourth chapter. [Ends from him, may Allah forgive him].

Here he quoted this difference from some contemporaries that used water in ablution occurs in all the water, but it's not so in pouring. Then he himself refuted it and this phrase is flawed; it opened the door of refutation against itself. So, since its permissibility was mentioned in 'al-Bahr', we did not mention it, and in the fourth chapter, we will mention it, if Allah Almighty wills. Ends from him. (T)

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

मैं कहता हूँ: (1) अल्लाह महान शेख पर दया करे, उन्होंने जो उल्लेख किया है वह 'अल-मुल्तका' में है। तो यह 'अल-असरार', 'अल-इनाया', 'अल-दिराया' और 'अल-हिदाया' की अन्य व्याख्याओं, साथ ही 'अल-इस्बीजाबी' की व्याख्या, 'फ़तावा अल-वलवालिजी' आदि में जो कुछ है, उसके एक कमज़ोर रिवायत पर आधारित होने का प्रमाण कैसे बन सकता है, जबकि वह 'अल-मुलाक़ी' (मिलने वाला) के बारे में है? यहाँ तक 'अल-बहर' और 'अल-रिसाला' के साथ बातचीत पूरी हुई। उनमें 'अल-बहर' में एक शब्द के अलावा कुछ नहीं बचा, और वह उनका कथन है (अल्लाह उन पर दया करे): "दोनों स्थितियों के बीच हुक्म के लिहाज़ से कोई फर्क समझ में नहीं आता [नोट ए]", यानी मुल्तका और मुलाक़ी।

उन्होंने इसमें स्वीकार कर लिया है कि वे इस तरह दावेदार बन गए हैं, तो अब बिना सबूत के इस दावे को कैसे स्वीकार किया जाएगा? और 'बय्यिनाह' में जो उन्होंने उल्लेख किया है, वह 'अल-मुहीत' के लेखक अल्लामा सिराज अल-हिंदी और 'अल-तुहफ़ा' का कथन है कि यदि इस्तेमाल किया हुआ पानी कुएं में गिर जाए, तो इमाम मुहम्मद के अनुसार उससे वज़ू जायज़ है जब तक कि वह पानी पर हावी न हो जाए, और यही सही है। 'अल-तुहफ़ा' में स्पष्ट है कि यही पसंदीदा मज़हब है। (त)

मैं कहता हूँ, अल्लाह तआला शेख अल्लामा पर रहम फरमाए, उन्होंने जो कुछ उल्लेख किया है वह 'मुल्तका' में है। तो 'असरार', 'इनाया', 'दिराया' (हिदाया की शरह), 'शरह इस्बीजाबी' और 'फ़तावा वलवालिजी' आदि की इबारतों के कमज़ोर रिवायत पर आधारित होने पर दलील कैसे बन सकता है क्योंकि वे 'मुलाक़ी' के बारे में हैं? यहाँ तक 'बहर' और 'रिसाला' से जो बातचीत थी वह पूरी हुई, हालाँकि 'बहर' ने एक शब्द कहा है कि 'मुल्तका' और 'मुलाक़ी' दोनों सूरतों में हुक्म के लिहाज़ से कोई फर्क नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: (2) तुम्हारी उम्र की कसम, फर्क है और बहुत बड़ा फर्क है! क्योंकि पानी का 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) होना केवल पानी द्वारा 'हदस' (अशुद्धि) को दूर करने, या किसी 'फ़र्ज़' को अदा करने, या 'क़ुर्बत' (पुण्य कार्य) करने से साबित होता है, और यह उसके स्पर्श (मुलाक़ात) से होता है।

मैं कहता हूँ दोनों सूरतों में बहुत बड़ा फर्क है क्योंकि पानी का मुस्तअमल होना या तो हदस के ज़ाले की वजह से होता है या इसक़ात-ए-फ़र्ज़ की वजह से या किसी...

[नोट ए] नोट: यहाँ उन्होंने अपने कुछ समकालीनों से यह भेद उद्धृत किया है: कि वज़ू में इस्तेमाल पूरे पानी में फैल जाता है, जबकि बहाने ('अल-सब्ब') में ऐसा नहीं होता। फिर उन्होंने स्वयं इसका खंडन किया। यह एक त्रुटिपूर्ण कथन है जिसने अपने विरुद्ध खंडन का द्वार खोल दिया। अत; चूँकि 'अल-बहर' में जो उल्लेख किया गया था उसका औचित्य था, इसलिए हमने यहाँ उसके उल्लेख को छोड़ दिया। हम चौथी फ़स्ल में इस पर फिर लौटेंगे, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। [उनकी ओर से समाप्त, अल्लाह उन्हें क्षमा करे]।

यहाँ उन्होंने अपने कुछ समकालीनों से यह फर्क नकल किया है कि वज़ू से इस्तेमाल तमाम पानी में होता है और बहाने में यह नहीं है, फिर खुद ही उन्होंने इसका रद किया और यह इबारत मदख़ूला (गलत) है; इसने अपने ऊपर रद का दरवाज़ा खोल दिया है। तो, जो 'बहर' में इसका जवाज़ था इसलिए हमने इसका ज़िक्र नहीं किया, और चौथी फ़स्ल में हम इसका ज़िक्र करेंगे, इंशा अल्लाह तआला। उनकी ओर से समाप्त। (त)

पृष्ठ 197 का 711

فتاٰی رضویہ جلد ثانی

فاقول: (۱) رحم اللہ الشیخ العلامۃ ما ذکر وہ فھو في الملتقی فکیف یدل علی ابتناء ما فی الاسرار والعنایۃ والدرایۃ وغیرھما من شروح الھدایۃ وشرح الاسبیجابی وفتاوی الولو الجي وغیرھا علی روایۃ ضعیفۃ مع کونھا في الملاقی والی ھنا تم الکلام مع البحر والرسالۃ معا ولم یبق فیھا شیئ غیر حرف واحد في البحر وھو قولہ رحمہ اللہ تعالی لا یعقل عہ فرق بین الصورتین من جھۃ الحکم یعنی الملتقی والملاقی۔

انہوں نے اس میں اعتراف کرلیا کہ وہ اس طرح مدعی بن گئے ہیں، تو اب یہ دعوی بلا دلیل کس طرح قبول کیا جائیگا، اور بینہ میں جو انہوں نے ذکر کیا ہے وہ محیط علامہ سراج ہندی اور تحفہ کا قول ہے کہ اگر مستعمل پانی کنویں میں گر جائے تو محمد کے نزدیک اس سے وضو جائز ہے تاوقتیکہ وہ پانی پر غالب نہ ہو جائے اور یہی صحیح ہے اور تحفہ میں صراحت ہے کہ یہی مذہب مختار ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں اللہ تعالیٰ شیخ علامہ پر رحم فرمائے، جو کچھ انہوں نے ذکر کیا ہے وہ ملتقی میں ہے تو یہ اسرار، عنایہ، درایہ (شروح ہدایہ)، شرح اسبیجابی اور فتاوی ولوالجہی وغیرہ کی عبارات کے ضعیف روایت پر مبنی ہونے پر کیونکر دلیل بن سکتا ہے کیونکہ وہ ملاقی کے بارے میں ہیں۔ یہاں تک بحر اور رسالہ سے جو گفتگو تھی پوری ہوئی البتہ بحر نے ایک لفظ کہا ہے وہ یہ کہ ملتقی اور ملاقی دونوں صورتوں میں حکم کے لحاظ سے کوئی فرق نہیں۔ (ت)

اقول: (۲) ای لعمرك فرق وای فرق لان الاستعمال انما یثبت بازالۃ الماء حدثا اواسقاطہ فرضا اواقامتہ قربۃ وذلک بملاقاتہ۔

میں کہتا ہوں دونوں صورتوں میں بہت بڑا فرق ہے کیونکہ پانی کا مستعمل ہونا یا تو حَدَث کے ازالہ کی وجہ سے ہوتا ہے یا اسقاط فرض کی وجہ سے یا کسی

عہ ذکر ھھنا عن بعض معاصر یہ الفرق بان في الوضوء یشیع الاستعمال في الجمیع بخلافه في الصب اھـ ثم رده وھی عبارة مدخولة فتحت علی نفسھا باب الرد فکان لما ذکر في البحر مساغ فلذا طوینا ذکره وسنعود الیه ان شاء الله تعالی في الفصل الرابع اه منه غفر لہ۔

یہاں انہوں نے اپنے بعض معاصرین سے یہ فرق نقل کیا ہے کہ وضو سے استعمال تمام پانی میں ہوتا ہے اور بہانے میں یہ نہیں ہے، پھر خود ہی انہوں نے اس کا رد کیا اور یہ عبارت مدخولہ ہے، اس نے اپنے اوپر رد کا دروازہ کھول دیا ہے، تو جو بحر میں اس کا جواز تھا اس لئے ہم نے اس کو ذکر نہ کیا اور چوتھی فصل میں ہم اس کو ذکر کریں گے ان شاء اللہ تعالیٰ اہ منہ (ت)

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 2

[Arabic Text Section] It (used water status) occurs due to the performance of a ritual act of worship (Qurbah), and this occurs only when it touches the body of the person in a state of ritual impurity (Muhdith) or seeking proximity (Mutaqarrib), not when it touches something that has already touched the body. That which exists in the thing encountered is the first, and that which is cast into it is the second. This is what was mentioned in the treatise, and here—I mean in the discussion of absolute water in Al-Bahr—it was mentioned as a primary source in the issue of the well in 'Jahat'. It was branched out from the statement in Al-Hilyah: "Used water is that which has touched the person." Based on this, their statement (i.e., regarding one who enters a well for bathing) that the water has become 'used' (Musta'mal) means that the water touching the body has become 'used', not all the water in the well. Thus, we have already provided a sufficient and thorough discourse on this, by the grace of Allah Almighty, under the twenty-first point of the discussion with Allama Qasim, and three arguments before it from the nineteenth point—so these are four in total.

And I say: Fifthly (1), if this were correct, you would not have needed to interpret those numerous, manifest, and abundant narrations based on a single weak, outweighed, and rare narration. It would have been sufficient for you to say: Yes, it has become 'used', but the water that touched the body or the hand is a small amount and is overwhelmed (by the rest of the water), so it is not harmful. Sixthly (2), since the scholars have ruled on the falling away of 'usage' (Musta'mal status) in the case of inserting the hand and immersion.

[Urdu Text Section] It happens because of the fulfillment of Qurbah (proximity to God), and this will only happen when it touches the body of a Muhdith or Mutaqarrib, not when it touches something that has already touched the body. That which is present in the encountering substance is first, and that which is cast in is second; this is in the treatise. In the discussion of absolute water in the book Al-Bahr, Al-Bahr has branched out from the statement of Hilyah in the problem of 'Jahat': "Used water is that which has touched the person." The words of the branching are these: so on this basis, their saying (meaning the person who descended into the well for a bath) that the water became used means that the water touching the body became used, not that all the water of the well became used. We have done a full discussion on this while talking about the words of Allama Qasim under number twenty-one, and before that, three arguments were stated in number nineteen, so these are four. Fifthly: I say if this were true, you would not have interpreted those many manifest

narrations into a weak narration; rather, you would only say that yes, that water became used, but the water that touched the body and hands is a little and is overwhelmed, so it will not be harmful. Sixthly, the scholars have ruled for the falling of usage status in the case of putting the hand in and diving.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/98 Page 198 of 711

फ़तवा-ए-रज़विया, खंड 2

[अरबी पाठ अनुभाग] यह (प्रयुक्त जल की स्थिति) एक अनुष्ठानिक उपासना (क़ुरबा) के प्रदर्शन के कारण होता है, और यह तभी होता है जब यह अनुष्ठानिक अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति (मुहदिथ) या निकटता चाहने वाले (मुतकर्रिब) के शरीर को छूता है, न कि जब यह उस चीज़ को छूता है जो शरीर को पहले ही छू चुकी है। जो वस्तु मिलने वाली चीज़ में मौजूद है वह पहली है और जो उसमें डाली गई है वह दूसरी है। यह वही है जिसका उल्लेख ग्रंथ में किया गया था, और यहाँ—मेरा मतलब अल-बह्र में पूर्ण जल की चर्चा में—इसे 'जहत' में कुएं के मुद्दे में एक प्राथमिक स्रोत के रूप में वर्णित किया गया था। यह अल-हिल्या के इस कथन से उपजा है: "प्रयुक्त जल वह है जिसने व्यक्ति को छुआ है।" इसके आधार पर, उनका कथन (अर्थात, स्नान के लिए कुएं में उतरने वाले व्यक्ति के संबंध में) कि पानी 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) हो गया है, इसका अर्थ है कि शरीर को छूने वाला पानी 'प्रयुक्त' हो गया है, न कि कुएं का सारा पानी। इस प्रकार, हमने अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से अल्लामा कासिम के साथ चर्चा के इक्कीसवें बिंदु और उन्नीसवें बिंदु के तीन तर्कों के तहत इस पर एक पर्याप्त और संतोषजनक प्रवचन पहले ही प्रदान कर दिया है—तो ये कुल चार हो गए।

और मैं कहता हूँ: पाँचवाँ (1), यदि यह सही होता, तो आपको उन अनेक, प्रत्यक्ष और प्रचुर आख्यानों की व्याख्या एक कमजोर, कमज़ोर और दुर्लभ आख्यान के आधार पर करने की आवश्यकता नहीं होती। आपके लिए यह कहना पर्याप्त होता: हाँ, यह 'प्रयुक्त' हो गया है, लेकिन जो पानी शरीर या हाथ को लगा है वह कम मात्रा में है और (बाकी पानी द्वारा) अभिभूत है, इसलिए यह हानिकारक नहीं है। छठा (2), चूंकि विद्वानों ने हाथ डालने और डुबकी लगाने की स्थिति में 'उपयोग' (मुस्तअमल स्थिति) के समाप्त होने का नियम दिया है।

[उर्दू पाठ अनुभाग] यह क़ुर्बत (ईश्वर की निकटता) की अदायगी के कारण होता है, और यह उसी समय होगा जब वह मुहदिथ या मुतकर्रिब के शरीर से लगे न कि उस चीज़ को लगे जो शरीर को लगी है। और जो चीज़ मुलाक़ी (मिलने वाली) में मौजूद है वह अव्वल है और जो मुलक़ी (डाली गई) में है वह दूसरी चीज़ है, यह रिसाला (ग्रंथ) में है। और बह्र की मुतलक़ पानी की बहस में है, और बह्र ने मसला-ए-जहत में हिल्या के इस कौल (कथन) पर तफ़रीअ (शाखाकरण) की है: "अल-माउल मुस्तअमलु हुवल्लज़ी लाक़र-रज्जुल" (मुस्तअमल पानी वह है जो आदमी के जिस्म से मुत्तसिल यानी जुड़ा हुआ हो)। तफ़रीअ के लफ़्ज़ ये हैं, तो इस बिना पर उनका कौल (यानी जो शख़्स कुएं में नहाने को उतरा) पानी मुस्तअमल हो गया, इसका मफ़हूम (अर्थ) यह है कि बदन को लगने वाला पानी

मुस्तअमल हो गया, यह नहीं कि कुएं का सारा पानी मुस्तअमल हो जाए। हमने इस पर मुकम्मल बहस अल्लामा कासिम के कलाम पर गुफ़्तगू करते हुए इक्कीसवें नंबर के तहत कर दी है और उससे क़ब्ल उन्नीसवें नंबर में तीन दलीलें बयान की हैं, तो ये चार हुए। पाँचवाँ: मैं कहता हूँ अगर यह बात दुरुस्त होती तो आप इन कसीर ज़ाहिर रिवायतों को एक ज़ईफ़ रिवायत पर महमूल न करते बल्कि सिर्फ इतना कहते कि हाँ वह पानी मुस्तअमल हो गया है, लेकिन जो पानी बदन और हाथों को लगा है वह थोड़ा सा है और मग़लूब (दबा हुआ) है तो नुक़सानदेह न होगा। छठा, मशाईख ने सुक़ूत-ए-इस्तअमाल (उपयोग की स्थिति समाप्त होने) का हुक्म लगाया है हाथ डालने और ग़ोता खाने की सूरत में।

1. अल-बह्र अर-रईक़, किताबुत्तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/98 पृष्ठ 198 / 711

بدن المحدث اوالمتقرب لملاقاتہ مالاقاہ والموجود فی الملاقی الاول وفٰی الملقی فیہ الثانی ہذا کل ماذکرہ فی الرسالۃ وہہنا اعنی فی بحث الماء المطلق فی البحر اماماً ذکر فی مسألۃ البئر جحط مفرعاً علی قول الحلیۃ الماء المستعمل ہو الذی لاقی الرجل بقولہ فعلی ہذا قولہم (ای فیمن نزل البئر للاغتسال)صار الماء مستعملا معناہ صار الماء الملاقی للبدن مستعملاً لا جمیع ماء البئر اہ فقد قدمنا الکلام علیہ کافیاً شافیاً بتوفیق اللہ تعالی تحت الحادی والعشرین من الکلام مع العلامۃ قاسم وثلثۃ حجج قبلہ من التاسع عشر فہذہ اربعۃ۔ واقول: خامسا(۱)لوصح ہذا لما احتجتم الی حمل تلک الروایات الظاہرۃ الکاثرۃ الوافرۃ علی روایۃ ضعیفۃ مرجوحۃ نادرۃ وکان یکفیکم ان تقولو انعم صار مستعملا لکن مالاقی البدن اوالکف وہو مستہلک مغلوب فلا یضر۔ وسادسا:(۲)حیث حکموا بسقوط الاستعمال فی ادخال الکف والانغماس

قربۃ کی ادائیگی کے باعث ہوتا ہے اور یہ اسی وقت ہوگا جبکہ وہ محدث یا متقرب کے بدن سے لگے نہ کہ اس چیز کو لگے جو بدن کو لگی ہے، اور جو چیز مُلاقی میں موجود ہے وہ اوّل ہے اور مُلقی میں دوسری چیز ہے یہ رسالہ میں ہے، اور بحر کی مطلق پانی کی بحث میں ہے، اور بحر نے مسئلہ جحط میں حلیہ کے اس قول پر تفریع کی ہے "الماء المستعمل ہو الذی لاقی الرجل" (مستعمل پانی وہ ہے جو آدمی کے جسم سے متصل ہو) تفریع کے لفظ یہ ہیں، تو اس بنا پر ان کا قول (یعنی جو شخص کنویں میں نہانے کو اُترا) پانی مستعمل ہوگیا، اس کا مفہوم یہ ہے کہ بدن کو لگنے والا پانی مستعمل ہوگیا، یہ نہیں کہ کنویں کا سارا پانی مستعمل ہوجائے ، اھ ہم نے اس پر مکمل بحث علامہ قاسم کے کلام پر گفتگو کرتے ہوئے اکیسویں نمبر کے تحت کردی ہے اور اس سے قبل انیسویں نمبر میں تین دلائل بیان کیے ہیں تو یہ چار ہوئے۔ خامساً: میں کہتا ہوں اگر یہ بات

درست ہوتی تو آپ ان کثیر ظاہر روایات کو ایک ضعیف روایت پر محمول نہ کرتے بلکہ صرف اتنا کہتے کہ ہاں وہ پانی مستعمل ہوگیا ہے، لیکن جو پانی بدن اور ہاتھوں کو لگا ہے وہ تھوڑا سا ہے اور مغلوب ہے تو نقصان دہ نہ ہوگا۔ سادساً مشائخ نے سقوط استعمال کا حکم لگایا ہے ہاتھ ڈالنے اور غوطہ کھانے کی صورت میں،

1 بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 98/1 Page 198 of 711

Fatawa Razawiyyah - Volume Two

They have agreed, predecessors and successors, and you are with them, on its justification by necessity, as we have previously mentioned from Al-Fath, Al-Khulasa, Al-Tabyin, Al-Bazzaziyya, Al-Kafi, Al-Khaniyya, Al-Ghunya, Al-Hilya, Al-Nahr, Al-Quduri, Al-Jurjani, Al-Burhan, Al-Sughra, Al-Fawa'id al-Zahiriyya, Shams al-A'imma al-Halwani, from your Bahr, and from you from Shams al-A'imma al-Sarakhsi, the commentator of Al-Hidayah Al-Khabbazi, the investigator (who spoke generally), Al-Zayla'i, Abu al-Hasan, and Abu Abdullah, may Allah Almighty have mercy on them. We have already presented it from Al-Khulasa from the recorded text of the school's jurist Muhammad in Kitab al-Asl, and from Al-Fath from the book of Al-Hasan from the leader of the school Imam al-A'zam, may Allah Almighty be pleased with them. Even if only what adhered to the body was used, what hardship would occur and what necessity would arise? For the water, despite the proof of usage, remains pure and purifying as it was.

Seventhly: (1) We have previously cited from Imam Shams al-A'imma al-Kardari that a person in a state of ritual impurity putting their hand in water without necessity spoils it (1). And from you from Al-Mubtaghi that it spoils the water (2). And from you from Al-Mabsut from the text of Muhammad in Al-Asl: if a pure person bathes in a well, he spoils it (3). And from Majma' al-Anhur: it is spoiled according to all (4). And from...

Footnotes: 1 Al-Hindiyya in meaning, chapter on what is not permissible for wudu, Noorani Kutub Khana Peshawar 22/1 2 Al-Hindiyya in meaning, chapter on what is not permissible for wudu, Noorani Kutub Khana Peshawar 23/1 3 Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, Saeed Company Karachi 96/1 4 Majma' al-Anhur, Chapter on Water, Beirut 31/1

पूर्वजों और उत्तराधिकारियों ने सहमति व्यक्त की है, और आप उनके साथ हैं, आवश्यकता के आधार पर इसके औचित्य पर, जैसा कि हमने पहले अल-फतह, अल-खुलासा, अत-तबीन, अल-बज्जाज़िया, अल-काफ़ी, अल-खानिया, अल-ग़ुनिया, अल-हिल्या, अन-नहर, अल-क़ुदुरी, अल-जुरजानी, अल-बुरहान, अल-सुग़रा, अल-फ़वाइद अज़-ज़हीरिया, शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी, आपके बहर से, और आपसे शम्स अल-अइम्मा अस-सरखसी से, अल-हिदाया अल-खब्बाजी के टीकाकार, अन्वेषक (जिन्होंने सामान्य रूप से बात की), अल-ज़ैलाई, अबू अल-हसन, और अबू अब्दुल्ला, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे। हमने इसे पहले ही अल-खुलासा से स्कूल के विधिवेत्ता मुहम्मद के किताब अल-असल में दर्ज पाठ से प्रस्तुत किया है, और अल-फतह से अल-हसन की पुस्तक से स्कूल के नेता इमाम अल-आज़म से, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन सभी से प्रसन्न हो। यदि केवल वही उपयोग किया जाता जो शरीर से चिपका हुआ था, तो क्या कठिनाई होती और क्या आवश्यकता उत्पन्न होती? क्योंकि पानी, उपयोग के प्रमाण के बावजूद, पवित्र और शुद्ध करने वाला ही रहता है जैसा कि वह पहले था।

सातवाँ: (1) हमने पहले इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-करदरी से उद्धृत किया है कि एक अशुद्ध व्यक्ति का बिना आवश्यकता के पानी में हाथ डालना उसे दूषित कर देता है (1)। और आपसे अल-मुबतग़ी से कि यह पानी को दूषित कर देता है (2)। और आपसे अल-मबसूद से मुहम्मद के असल में पाठ से उद्धृत किया है कि यदि कोई शुद्ध व्यक्ति कुएं में स्नान करता है, तो वह उसे दूषित कर देता है (3)। और मजमा अल-अन्हुर से: यह सभी के अनुसार दूषित है (4)। और...

पादलेख: 1 अल-हिंदिया अर्थ में, वूज़ू के लिए क्या अनुमत नहीं है पर अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 22/1 2 अल-हिंदिया अर्थ में, वूज़ू के लिए क्या अनुमत नहीं है पर अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 23/1 3 बहर अल-रईक, पवित्रता की पुस्तक, सईद कंपनी कराची 96/1 4 मजमा अल-अन्हुर, पानी पर अध्याय, बेरूत 31/1

اطبقوا سلفاً وخلفاً وانتم معهم على تعليله بالضرورة كما قدمنا عن الفتح والخلاصة والتبيين والبزازية والكافى والخانية والغنية والحلية والنهر والقدورى والجرجانى والبرهان والصغرى والفوائد الظهيرية والشمس الائمة الحلوانى وعن بحركم وعنكم عن شمس الائمة السرخسى وشارح الهداية الخبازى والمحقق حيث اطلق والزيلعى وابى الحسن وابى عبدالله رحمهم الله تعالى وقدمناه عن الخلاصة عن نص محرر المذهب محمد فى كتاب الاصل وعن الفتح عن كتاب الحسن عن صاحب المذهب الامام الاعظم رضى الله تعالى عنهم ولو كان لا يستعمل الا مالصق بالبدن فاى حرج يلحق واى ضرورة تمس فان الماء مع ثبوت الاستعمال يبقى طاهراً مطهراً كما كان۔

سلف سے خلف تک اسی پر چلے آرہے ہیں اور آپ بھی ان کے ہم نوا ہیں اور اس کیلئے علت بتائی ہے جیسا کہ ہم فتح ، خلاصہ ، تبیین ، بزازیہ ، کافی ، خانیہ ، غنیہ ، حلیہ ، نہر ، قدوری، جرجانی ، برہان ، صغری ، فوائد ظہیریہ ، شمس الائمہ حلوانی ، بحر اور آپ کی سند سے شمس الائمہ سرخسی سے ، شارح ہدایہ خبازی ، محقق (انہوں نے اطلاق سے کام لیا) ابو الحسن وابو عبداللہ سے روایت کر آئے ہیں اور اس کو ہم نے خلاصہ سے محرر المذہب امام محمد کا قول ان کی اصل سے نقل کیا ہے اور فتح سے حسن کی کتاب سے صاحب المذہب امام اعظم سے نقل کیا ہے، اگر صرف اتنا ہی مستعمل ہوتا ہے جو بدن سے لگا ہو تو کیا حرج لاحق ہوتا ہے؟ اور کونسی ضرورت درپیش ہوتی ہے؟ کیونکہ پانی باوجود ثبوت استعمال کے طاہر مطہر ہی رہے گا جیسا کہ پہلے تھا۔

وسابعاً: (١) قدمنا عن الامام شمس الائمة الكردری ان ادخال المحدث یده فی الماء لا لضرورة یفسده ١ وعنکم عن المبتغی انه یفسد الماء ٢ وعنکم عن المبسوط عن نص محمد فی الاصل اغتسل الطاهر فی البئر افسده ٣ وعن مجمع الانهر فسد عند الکل ٤ وعن

سابعاً ہم امام شمس الائمہ کردری سے نقل کر آئے ہیں کہ محدث کا اپنے ہاتھ کو پانی میں بلا ضرورت ڈالنا پانی کو فاسد کردیتا ہے اور تم سے مبتغی سے روایت کی ہے کہ وہ پانی کو فاسد کردیتا ہے، اور تم سے مبسوط سے ، محمد کی اصل میں نص سے روایت کی ہے کہ اگر پاک آدمی کنویں میں غسل کرے تو اس کو فاسد

1 الهندية بالمعنى فصل فيما لا يجوز به الوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ٢٢/١ 2 الهندية بالمعنى فصل فيما لا يجوز به الوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ٢٣/١ 3 بحر الرائق کتاب الطهارت سعيد کمپنی کراچی ٩٦/١ 4 مجمع الانهر فصل فی الماء بيروت ٣١/١

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic Text]: Al-Hindiyyah cites Al-Nihayah stating it becomes corrupt by consensus. The wording of Al-Inayah is: 'The water became corrupt according to everyone.' It is narrated from you via Al-Dirayah, Al-Inayah, and others that it becomes corrupt according to all. This is an explicit statement of (Imam) Muhammad in the Zahir al-Riwayah, and an explicit citation of consensus in reliable books such as Al-Bahr, stating that all the water becomes used (musta'mal) until none of it remains suitable for performing Wudu. Corruption is nothing but a thing ceasing to be fit for what it was meant for. If Wudu were still permissible with it, then what was corrupted, and how did it get corrupted?

[Urdu Text]: It will make it so, and in Majma' al-Anhur it is stated that it became corrupt according to everyone, and it is narrated from Al-Hindiyyah via Al-Nihayah that it will become corrupt by consensus. The words of Al-Inayah are that the water became corrupt according to all. It is narrated from you through Al-Dirayah, Al-Inayah, and others that it became corrupt according to everyone. This is the explicit text of (Imam) Muhammad in Zahir al-Riwayah, and explicit narrations of consensus are present in reliable books. It is in Al-Bahr that besides this, all water becomes used (musta'mal) to the extent that Wudu cannot even be performed with it, because the meaning of corruption is that something which had the capability for a certain task is no longer fit for it. And if Wudu remains permissible with it, then why and how did corruption occur in it? (T)

[Arabic Text]: Eighthly: (1) We previously cited from Al-Fath via Kitab al-Hasan an explicit statement from the leader of the school (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, in words that are most clear, accepting no interpretation or alteration. His statement is: 'Wudu from it is not permissible.' Thus, it is firmly established that there is no room for this interpretation. It contradicts the explicit text of the leader of the school and the clear text of (Imam) Muhammad in the Zahir al-Riwayah. Moreover, it clashes with the consensus of the leaders of the school narrated in reliable works like your Al-Bahr. The clear truth is the school's prescribed position from the leaders of the school found in the authoritative books, which is agreed upon in the consistently narrated reports.

[Urdu Text]: Eighthly: We have quoted the statement of the leader of the school, Imam Azam, may Allah be pleased with him, from Hasan's book with reference to Al-Fath, and this statement is so clear and explicit that it does not accept any kind of

interpretation. It is that Wudu from it is not permissible. So it has been definitively proven that there is no scope for this interpretation, and this is contrary to the explicit text of the Imam of the school and also contrary to the clear text of Imam Muhammad. In fact, it is also contrary to the consensus of the Imams of the school narrated in reliable books; for example, the narration of consensus is present in your Al-Bahr. So the truth is what is from the Imams of the school in the books of Zahir al-Riwayah.

Footnotes: 1. Al-Hindiyyah, Second Chapter on Waters, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/33. 2. Inayah with Fath al-Qadir, Water with which Wudu is permissible, Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/79. 3. Hashiya al-Hidayah, Water with which Wudu is permissible, Al-Maktaba al-Arabiyya Karachi, 1/23.

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द दूसरी

[अरबी पाठ]: 'अल-हिन्दिया' में 'अन-निहाया' के हवाले से है कि यह सर्वसम्मति (इत्तिफ़ाक़) से फ़ासिद (दूषित) हो जाता है। 'अल-इनाया' के शब्द हैं: 'पानी सबके नज़दीक फ़ासिद हो गया।' आपसे 'अद-दिराया', 'अल-इनाया' और अन्य के माध्यम से वर्णित है कि यह सबके अनुसार फ़ासिद हो जाता है। यह 'ज़ाहिर अल-रिवायत' में (इमाम) मुहम्मद का स्पष्ट कथन है और विश्वसनीय पुस्तकों जैसे 'अल-बहर' में इज्मा (आम सहमति) का स्पष्ट वर्णन है, कि सारा पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) हो जाता है यहाँ तक कि वह वुज़ू के योग्य नहीं रहता। फ़साद (दूषण) का अर्थ ही यही है कि कोई चीज़ जिस काम के लिए थी अब उसके योग्य न रहे। यदि इससे वुज़ू जायज़ रहता, तो फिर इसमें फ़साद कैसा और क्यों हुआ?

[उर्दू पाठ]: यह इसे ऐसा कर देगा, और 'मजमा-उल-अनहुर' में है कि सबके नज़दीक फ़ासिद हो गया, और 'हिन्दिया' से 'निहाया' के हवाले से नक़ल है कि सर्वसम्मति से फ़ासिद हो जाएगा। 'इनाया' के शब्द यह हैं कि सबके नज़दीक पानी फ़ासिद हो गया। आपसे 'दिराया', 'इनाया' और अन्य से रिवायत है कि सबके नज़दीक फ़ासिद हो गया। तो यह 'ज़ाहिर रिवायत' में (इमाम) मुहम्मद का स्पष्ट प्रमाण है, और इज्मा की स्पष्ट नक़लें विश्वसनीय पुस्तकों में मौजूद हैं। 'बहर' में है कि इसके अलावा तमाम पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है यहाँ तक कि उससे वुज़ू भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि फ़साद का अर्थ ही यह है कि जो चीज़ जिस काम की योग्यता रखती थी अब उसके योग्य न रही। और अगर उससे वुज़ू जायज़ रहे, तो फिर उसमें फ़साद क्यों और कैसे हुआ? (त)

[अरबी पाठ]: आठवां: हमने पहले 'अल-फ़तह' के हवाले से 'किताब अल-हसन' से मज़हब के इमाम (इमाम आज़म) रज़ियल्लाहु अन्हु का एक कथन उद्धृत किया है, और यह इतना स्पष्ट और बेबाक कथन है कि यह किसी भी प्रकार की व्याख्या (तावील) को स्वीकार नहीं करता और न ही किसी बदलाव को। उनका कथन है: 'इससे वुज़ू करना जायज़ नहीं है।' अतः यह निश्चित रूप से सिद्ध हो गया कि इस तावील की कोई गुंजाइश नहीं है। यह मज़हब के इमाम के स्पष्ट कथन के विरुद्ध है और 'ज़ाहिर अल-रिवायत' में इमाम मुहम्मद के स्पष्ट कथन के भी विरुद्ध है। बल्कि, यह मज़हब के इमामों की उस सर्वसम्मति के भी विरुद्ध है जो विश्वसनीय पुस्तकों जैसे आपकी 'अल-बहर' में वर्णित है। अतः स्पष्ट सत्य वही मज़हब है जो मज़हब के इमामों से प्रमाणित पुस्तकों में वर्णित है और जिस पर मुतवातिर (निरंतर) रिवायतों में सहमति है।

[उर्दू पाठ]: आठवां: हमने 'फ़तह' के हवाले से हसन की किताब से मज़हब के इमाम, इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल नक़ल किया है, और यह इतना स्पष्ट और स्पष्ट क़ौल है कि किसी भी प्रकार की तावील (व्याख्या) को स्वीकार नहीं करता है। वह यह है कि इससे वुज़ू जायज़ नहीं है। तो निश्चित रूप से सिद्ध हो गया कि इस तावील की कोई गुंजाइश नहीं है, और यह मज़हब के इमाम के स्पष्ट क़ौल के विरुद्ध है और इमाम मुहम्मद के स्पष्ट क़ौल के भी विरुद्ध है। बल्कि, विश्वसनीय पुस्तकों में मज़हब के इमामों का जो इज्मा नक़ल है उसके भी विरुद्ध है; उदाहरण के लिए, आपकी ही 'बहर' में इज्मा का ज़िक्र मौजूद है। तो सत्य वही है जो ज़ाहिर रिवायत की किताबों में मज़हब के इमामों से वर्णित है।

पाद-टिप्पणी: 1. हिन्दिया, पानी का दूसरा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/33. 2. इनाया साथ में फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है, नूरैया रज़विय्या सुक्कुर, 1/79. 3. हाशिया अल-हिदाया, वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है, अल-मक्तबा अल-अरबिया कराची, 1/23.

पृष्ठ 200 का 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[عربی متن]: الهندية عن النهاية يفسد بالاتفاق 1 ولفظ العناية فسد الماء عند الكل 2 وعنكم عن الدراية والعناية وغيرهما يفسد عند الكل فهذا صريح نص محمد في الرواية الظاهرة وصريح لقول الاجماع في الكتب المعتمدة منها بحركم على ان الماء كله يصير مستعملا حتى لايبقى صالحا لان يتوضأ به اذليس الفساد الاخروج الشيئ عما يصلح له ولوكان يجوز به الوضوء فايش فسد وكيف فسد۔

[اردو متن]: کردے گا، اور مجمع الانہر میں ہے کہ سب کے نزدیک فاسد ہوگیا، اور ہندیہ سے نہایہ سے منقول ہے کہ بالاتفاق فاسد ہوجائے گا، اور عنایہ کے الفاظ یہ ہیں کہ سب کے نزدیک پانی فاسد ہوگیا اور تم سے درایہ و عنایہ وغیرہما سے روایت کی ہے سب کے نزدیک فاسد ہوگیا تو یہ ظاہر روایت میں محمد کی صریح نص ہے، اور اجماع کی صریح نقول کتب معتمدہ میں موجود ہیں ، بحر میں ہے علاوہ ازیں تمام پانی مستعمل ہو جاتا ہے حتیٰ کہ اس سے وضو بھی نہیں کیا جاسکتا ہے کیونکہ فساد کے معنیٰ ہی یہ ہیں کہ جو چیز جس کام کی صلاحیت رکھتی تھی اب اس کے لائق نہ رہی اور اگر اس سے وضو جائز رہے تو پھر اس میں فساد کیوں اور کیسے ہوا؟ (ت)

[عربی متن]: وثامنا: (1) قدمنا عن الفتح عن كتاب الحسن عن صاحب المذهب الامام رضى الله تعالى عنه التصريح بابين لفظ لا يقبل تأويلا ولا يرضى تحويلا وهو قوله رضى الله تعالى عنه لم يجز الوضوء منه فثبت قطعاً ان لا مساغ لهذا التأويل وانه مضاد لصريح نص امام المذهب وجلى نص محمد في ظاهر الرواية بل ومصادم لاجماع ائمة المذهب المنقول في المعتمدات كبحر كم فالحق الناصع هو المذهب المنصوص عليه من ائمة المذهب في الكتب الظاهرة المطبق عليه في الروايات المتواترة

[اردو متن]: ثامناً: ہم نے فتح کے حوالہ سے حسن کی کتاب سے صاحب مذہب امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول نقل کیا ہے، اور یہ اتنا واضح اور صریح قول ہے کہ کسی قسم کی تاویل کو قبول نہیں کرتا ہے، اور وہ یہ ہے کہ اس سے وضوء جائز نہیں، تو قطعی طور پر ثابت ہو گیا کہ اس تاویل کی کوئی گنجائش نہیں اور یہ امام مذہب کے نص صریح کے مخالف ہے اور امام محمد کے واضح نص کے بھی خلاف ہے بلکہ کتب معتمدہ میں ائمہ مذہب کا جو اجماع منقول ہے اس کے بھی مخالف ہے، مثلاً آپ ہی کی بحر میں حکایت اجماع موجود ہے تو حق وہی ہے جو ظاہر روایت کی کتب میں ائمہ مذہب سے

حواشی: 1 هندية الفصل الثانی من المياه نورانی کتب خانه پشاور ۳۳/۱ 2 عناية مع فتح القدير ماء الذی يجوزبه الوضوء نوريہ رضويہ سکھر ۷۹/۱ 3 حاشية الهداية ماء الذی يجوز به الوضوء المكتبة العربية کراچی ۲۳/۱

Fatawa Razawiyya, Volume II

I mean the proof of 'usage' (istim'al) for all small water, whether it be a small or large quantity, by the entry of a part of a ritually impure (muhdith) person's body into it. Nothing is narrated that contradicts it, and no statement is found from anyone that disputes it, except for a phrase that appeared in the book 'Al-Badai'' in the context of reasoning and argumentation, despite its agreement with what is narrated. What value can a mere discussion have against the texts of the school's (Madhhab) founder and the explicit statement of its redactor (Muharrir) in the book 'Zahir al-Riwayah', let alone the consensus of the school's imams? Inevitably, that phrase remained unaddressed by anyone as far as we know until the era of the Absolute Investigative Imam (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq), until his two brilliant students, Al-Qasim and Al-Halabi, came. They chose it, preferred it, and expanded upon its influence. Allamah Qasim made it a narrated text and a satisfactory ruling, through which he rejected the well-known texts of the school and the widely reported branches (furu') in publicized books, in favor of a weak and abandoned narration. He did not provide any transmitted narration for it, nor any acceptable or supported rational proof. Therefore, the school is what is followed, and truth is most worthy of being followed. Allah is the one whose help is sought, and in Him is reliance. May Allah Almighty send blessings upon the Master of men and jinn, and upon his family, his companions, his son, and his party, as long as day and night alternate. May He send blessings and peace upon them forever. Amen. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds.

The Third Chapter: Regarding the speech of Allamah Ibn al-Shihnah His treatise, may Allah Almighty have mercy on him, is more than half a quire. In it, he followed a path that completely contradicted the path taken by his teacher, Allamah Qasim.

Page 201 of 711

फतावा रज़विया, खंड द्वितीय

मेरा तात्पर्य यह है कि सभी थोड़े पानी के लिए 'इस्तेमाल' का प्रमाण सिद्ध है, चाहे वह मात्रा में कम हो या अधिक, जब उसमें एक अशुद्ध व्यक्ति (मुहद्दिस) के शरीर का कोई हिस्सा प्रवेश कर जाए। इसके विपरीत कुछ भी वर्णित नहीं है, और किसी के कलाम में कोई शब्द नहीं मिलता जो इसका विरोध करे, सिवाय एक शब्द के जो 'अल-बदाइ' में तर्क और बहस के रूप में आया है, जबकि वह वर्णित तथ्यों (मुरवी) के अनुकूल है। मज़हब के प्रणेता के स्पष्ट ग्रंथों और 'ज़ाहिर अल-रवाया' के संकलनकर्ता के स्पष्टीकरण के सामने, बल्कि मज़हब के इमामों की सर्वसम्मति के सामने, केवल एक बहस की क्या कीमत हो सकती है? निश्चित रूप से, वह शब्द तब तक किसी के द्वारा ध्यान में नहीं लाया गया जहाँ तक हमें ज्ञात है, जब तक कि 'मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़' (परम शोधकर्ता इमाम) का युग नहीं आया, और उनके दो प्रतिभाशाली छात्र अल्लामा क़ासिम और हलबी आए। उन्होंने उसे चुना, वरीयता दी और उसे बढ़ावा दिया। अल्लामा क़ासिम ने इसे एक वर्णित पाठ और एक संतोषजनक हुक्म बना दिया, जिसके माध्यम से उन्होंने मज़हब के प्रसिद्ध ग्रंथों और प्रकाशित किताबों में दर्ज मतों (फुरअ) को एक कमज़ोर और त्यागी हुई रिवायत के पक्ष में खारिज कर दिया। उन्होंने इसके लिए कोई पारंपरिक रिवायत पेश नहीं की, और न ही कोई स्वीकार्य बुद्धिपरक दलील। अतः, मज़हब ही वह है जिसका अनुसरण किया जाए, और सत्य ही इसका पात्र है कि उसका पालन किया जाए। अल्लाह ही सहायक है और उसी पर भरोसा है। अल्लाह तआला का दरूद हो मानव और जिन्न के सरदार पर, और उनकी आल, साथियों, पुत्र और उनकी जमात पर, जब तक दिन और रात का सिलसिला चलता रहे। उन पर सदैव बरकतें और सलामती हो। आमीन। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का रब है।

तीसरी फ़सल: अल्लामा इब्न अल-शिहना के कलाम के विषय में उनका रिसाला (ग्रंथ), अल्लाह तआला उन पर रहम करे, आधी कॉपी से अधिक है। इसमें उन्होंने अपने गुरु, अल्लामा क़ासिम द्वारा अपनाए गए मार्ग के पूर्णतः विपरीत मार्ग अपनाया है।

पृष्ठ 201/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

اعنی ثبوت الاستعمال لجمیع الماء القلیل قلیلا کان او کثیرا بدخول جزء من بدن محدث فیه لم یروما یخالفه ولم یرفی کلام احد ما ینازعه الالفظة وقعت فی کلام البدائع فی تعلیل وجدل مع وفاقه في المروی وما قدر بحث مع نصوص صاحب المذهب وتصریح محرره في کتاب ظاهر الروایة بل مع اجماع ائمة المذهب لا جرم ان بقیت تلك الکلمة لم یعرج علیها احد فیما نعلم الی عصر الامام المحقق علی الاطلاق حتی اتی تلمیذاه العلامتان القاسم والحلبی فاثراها، واثراها وآثاراها، وجعلها العلامة قاسم نصاً مروياً، وحکماً مرضیاً، رد به نصوص المذهب المشهورة، والفروع المتواترة فی الکتب المنشورة، الی روایة ضعیفة مهجورة، ولم یات علیها بروایة منقولة مأثورة، ولا درایة مقبولة منصورة، فالمذهب هو المتبع، والحق احق ان یتبع، والله المستعان، وعلیه التکلان، وصلی الله تعالی علی سید الانس والجان، وآله وصحبه وابنه وحزبه ماتعاقب الملوان، وبارک وسلم ابدا آمین، والحمد لله رب العلمین۔

منقول ہے اور جس پر متواتر روایات منطبق ہیں یعنی تمام قلیل پانی پر مستعمل ہونے کا حکم لگایا جانا خواہ قلیل ہو یا کثیر جبکہ محدث کے بدن کا کوئی حصہ بھی اس میں داخل ہو جائے اس پر یہی حکم ہوگا، اس کے خلاف کسی کے کلام میں منقول نہیں صرف ایک لفظ بدائع میں تعلیل وجدل کے طور پر آیا ہے حالانکہ روایت کردہ پر وہ متفق ہیں، لیکن نصوص مذہب کی موجودگی میں محض ایک بحث کی کیا قدر و قیمت ہو سکتی ہے، پھر محرّرِ مذہب کی تصریح ظاہر الروایہ کی کتاب میں ہے اور ائمہ مذہب کا اجماع ہے، پھر ایک اس کلمہ پر محقق علی الاطلاق کے زمانہ تک کسی نے غور نہ کیا یہاں تک کہ ان کے شاگرد علامہ قاسم اور حلبی آئے تو انہوں نے اس بات کو بڑھایا اور ترجیح دی اور پھیلایا اور علامہ قاسم نے تو اس کو اپنی پسندیدہ نص قرار دیا جس سے نصوص مذہب اور فروع متواترہ تک کو رد کر دیا اور اس کی تائید میں صرف ایک ضعیف روایت

لاسکے اور کوئی قابل عقلی یا نقلی دلیل پیش نہ کر سکے، تو مذہب حق وہی ہے جس کی پیروی کی گئی ہے اور حق ہی اس کا مستحق ہے کہ اس کا اتباع کیا جائے واللہ المستعان، اسی پر بھروسا ہے، انس و جن کے سردار پر درود اور ان کی آل واصحاب، اولاد اور باقی جماعت پر تا قیامت برکتیں اور سلام نازل ہو، آمین والحمد للہ رب العالمین۔

الفصل الثالث فی کلام العلامة ابن الشحنة تیسری فصل علامہ ابن الشحنہ کے کلام میں:

رسالته رحمه الله تعالی اکثر من نصف کراسة سلک فیها مسلکا یخالف ماسلکه شیخه العلامة ان کا رسالہ آدھی کاپی سے زیادہ ہے اس میں انہوں نے اپنے شیخ علامہ قاسم کے سراسر خلاف راہ اپنائی ہے کیونکہ

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

Qasim, in total opposition, for he claimed equality between the one who throws water (mulqi) and the one thrown into (mulaqi) regarding the permissibility of ablution, and he claimed their equality in non-permissibility. He (may Allah have mercy on him) mentioned addressing his questioner: "You asked me, may Allah guide me and you, about a pond less than three cubits in its square area: Is ablution permissible in it or not? And does the water become 'used' (musta'mal) by performing ablution in it? And you mentioned that the fatwa-basis is the saying of Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) that it is pure but not purifying (tahir ghayr tuhur), and that the water dripping from ablution is little and not more than the purifying water it falls into, so it does not strip it of its attribute of purification. And I answered you that it is permissible to scoop water from it and perform ablution outside it, not in it."

I say: This (1) is apparent regarding the 'mulqi' (the water falling in), and that the meaning of 'performing ablution in it' is according to the first meaning, i.e., in a way that the wash-water falls into it. The questioner had pointed out the correct ruling in it, that the dripping water is pure but overcome (in volume), but he (the scholar) answered him with prohibition, which is contrary to the correct view as you have known. And what is strange is that the Sheikh himself will soon narrate that the correct view is the opposite, then he proceeded upon it. It was appropriate for us to interpret his words on 'ablution in it' according to the second meaning, which is by immersing the limbs in it. And the meaning of his statement 'ablution outside it' is that the limbs of the person performing ablution be outside the pond so that it agrees with the correct view and does not contradict his own words in what he narrates of the correction. And it was an error by the questioner when he asked about ablution in it by immersion...

---

1 Risalah Ibn al-Shuhnah Page 202 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

वह तो वज़ू के जायज़ होने में मुल्की (पानी गिराने वाला) और मुलाक़ी (जिसमें पानी गिरे) की बराबरी के क़ायल थे और उन्होंने न-जायज़ होने में दोनों की बराबरी का क़ौल किया है। वह मुख़ातिब (संबोधित) होकर फ़रमाते हैं: तुमने मुझसे सवाल किया, ख़ुदा तुमको और मुझको हिदायत दे, एक हौज़ के बारे में जो तीन हाथ से कम है, उसमें वज़ू जायज़ है या नहीं? और उसमें वज़ू करने से पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) होगा या नहीं? और तुमने ज़िक्र किया कि मुफ़्ती-बिह (जिस पर फ़तवा है) इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का क़ौल है कि वह पाक है मगर पाक करने वाला नहीं है, और वज़ू से जो पानी टपका है वह कम है और जिस पानी से मिला है वह ज़्यादा है, तो वह उसकी तहूरियत (पाक करने की ख़ूबी) के वस्फ़ (गुण) को छीन नहीं सकता। मैंने तुम्हें यह जवाब दिया है कि उससे चुल्लू भरकर पानी लेकर वज़ू बाहर करना जायज़ है, उसके बीच में वज़ू करना जायज़ नहीं है।

मैं कहता हूँ: यह 'मुल्की' में ज़ाहिर है और यह कि इससे मुराद पहले मानी के एतबार से वज़ू करना है यानी धोवन (धोया हुआ पानी) उसमें गिरे। और सायल (सवाल करने वाले) ने इसमें सही हुक्म पर ख़बरदार किया था कि टपकने वाला पानी पाक और मगलूब (दब जाने वाला) है, मगर उन्होंने उसका जवाब मना के साथ दिया और जैसा कि आप जानते हैं यह 'सही' (क़ौल) के ख़िलाफ़ है। और ताज्जुब की बात यह है कि ख़ुद शैख़ अनक़रीब (जल्द ही) यह नक़ल करेंगे कि 'सही' इसके ख़िलाफ़ है और फिर ख़ुद उसी पर चले हैं। हमारे लिए मुनासिब बात तो यह थी कि हम उसके कलाम को दूसरे मानी पर महमूल करते, यानी इसमें अंगों का डुबो देना। और उनके इस क़ौल का मतलब कि 'वज़ू हौज़ के बाहर', यह है कि वज़ू करने वाले के अंग हौज़ के बाहर हों ताकि 'सही' (क़ौल) के मुवाफ़िक़ हो और ख़ुद उनके कलाम में विरोधाभास न हो...

---

1 रिसाला इब्न अल-शुहना पेज 202 of 711

قاسم خلافاً کلیاً فانه کان ادعی تسویة الملقی والملقی فی جواز الوضوء وادعی هذا تسویتهما فی عدم الجواز ذکر رحمه الله تعالی مخاطباً لسائله سألت ارشدنی الله وایاك عن حوض دون ثلثة اذرع في مثلها هل یجوز الوضوء فیه ام لاوهل یصیر مستعملاً بالتوضی فیه وذکرت ان المفتی به قول محمد رضی الله تعالی عنه انه طاهر غیر طهور وان المتقاطر من الوضوء قلیل لا في طهورا اکثر منه فلا یسلبه وصف الطهوریة واجبتک انه یجوز الاغتراف منه والتوضی خارجه لافیه اهـ وہ تو جوازِ وضو میں ملقی اور ملاقی کی برابری کے قائل تھے اور انہوں نے عدم جواز میں دونوں کی برابری کا قول کیا ہے وہ بصیغہ خطاب فرماتے ہیں تو نے مجھ سے سوال کیا خدا تجھ کو اور مجھے ہدایت دے ایک حوض کے بارے میں جو تین ہاتھ سے کم ہے، اس میں وضو جائز ہے یا نہیں؟ اور اس میں وضو کرنے سے پانی مستعمل ہوگا یا نہیں؟ اور تو نے ذکر کیا مفتی بہ محمد کا قول ہے کہ وہ پاک ہے پاک کرنے والا نہیں ہے اور وضو سے جو ٹپکا ہے وہ کم ہے اور جس پانی سے ملا ہے وہ زیادہ ہے تو وہ اس کی طہوریت کے وصف کو سلب نہیں کر سکتا ہے، میں نے تجھ کو یہ جواب دیا ہے کہ اس سے چلو بھر کر پانی لے کر وضو باہر کرنا جائز ہے اس کے بیچ وضو کرنا جائز نہیں اھ

اقول: فهذا(۱) ظاهر فی الملقی وان المراد التوضی فیه بالمعنی الاول ای بحیث تقع الغسالة فیه وقد کان السائل نبه علی الحکم الصحیح فیه ان المتقاطر طاهر مغلوب لکن اجابه بالمنع وهو خلاف الصحیح کما علمت والعجب ان الشیخ سینقل ان الصحیح خلافه ثم مشی علیه وکان حریاً بنا ان نحمل کلامه علی التوضی فیه بالمعنی الثاني ای بغمس الاعضاء فیه و معنی قوله التوضی خارجه ان تکون اعضاء المتوضی خارج الحوض کی یوافق الصحیح ولا یناقض کلام نفسه فیما ینقل من التصحیح وکان تخطئة السائل حیث سأل عن الوضوء فیه بغمس میں کہتا ہوں یہ ملقی میں ظاہر ہے اور یہ کہ اس سے مراد

پہلے معنی کے اعتبار سے وضو کرنا ہے یعنی دھوون اس میں گرے اور سائل نے اس میں صحیح حکم پر خبر دار کیا تھا کہ ٹپکنے والا پانی طاہر مغلوب ہے مگر انہوں نے اس کا جواب منع کے ساتھ دیا اور جیسا کہ آپ جانتے ہیں یہ صحیح کے خلاف ہے، اور تعجب خیز بات یہ ہے کہ خود شیخ عنقریب یہ نقل کریں گے کہ صحیح اس کے خلاف ہے اور پھر خود اسی پر چلے ہیں، اور ہمارے لائق بات تو یہ تھی کہ ہم اس کو دوسرے معنی میں لیتے وہ یہ کہ اس میں وضو کرنے پر محمول کرتے یعنی اس میں اعضاء کا ڈبو دینا، اور ان کے اس قول کے معنی کہ وضو حوض کے باہر، یہ ہیں کہ وضو کرنے والے کے اعضاء حوض کے باہر ہوں تاکہ صحیح کے موافق ہو اور خود

Fatawa Rizvia, Volume Second

[Main Text - Left Column (Arabic Source)] ...limbs, and there was no place after it to mention the scantiness of the dripping. It is easier for us than for flaws like this to creep into the speech of the Great Scholar (Allama). However, he (may Allah have mercy on him) will explicitly state this manifest point, thus closing the door to interpretation. Then he presented a preamble in explaining the water in which the effect of use appears and in which it does not appear, aiming to establish that the pool inquired about—meaning the small one—is among those affected by use just as it is affected by impurity. So he said: "Know that the water in which the effect of use appears is that [1] in which the effect of impurity appears. And anything in which the effect of impurity does not appear, the effect of use does not appear in it either, and there is no difference." Then he proceeded to list the various opinions on the definition of a small quantity (al-qalil) and went on at length until he said: "Thus, the appearance of the effect of use is established, which is the removal of purity (tahuriyya) from the water of the pool you asked about, and its ruling was like that of a vessel, a cistern, and a well." End.

[Main Text - Right Column (Urdu Translation)] ...so that the speech does not contradict itself, meaning regarding this correction which will be cited. And they deemed the questioner wrong because he had asked that he wanted to perform ablution by dipping his limbs into the pool. After that, there was no occasion to say that the dripping is less. It is easier for us to accept a flaw in the Scholar's speech than this. But if he himself explicitly states this manifest point, then the door of interpretation is closed. Then he stated a preamble about that water in which the effect of use is manifest and in which it is not. His intention by this was to state that the small pool being inquired about is affected by used water just as it is by impure water. And he said, "It should be known that the water in which the effect of use appears is the same in which the effect of impurity appears, and in which the effect of impurity does not appear, the effect of use will also not appear, and there is no difference." Then they presented several opinions on the limit of the 'small quantity' and adopted a fair amount of length, and finally said, "So it was proven that the manifestation of the effect of use means that the purity has been removed from the water of the pool you inquired about."

[Footnote Section - Left Column (Arabic Source)] [1] Placing a separating pronoun (damir al-fasl) after the subject (musnad ilayh) yields the benefit of restricting the predicate (musnad) to the subject. Thus, the meaning of the first proposition is that

the effect of impurity is restricted to that which is affected by use. That is, whatever does not show the effect of use will not show the effect of impurity. Then he mentioned its universal converse, indicating that they are one and the same thing and that there is no separation between the effect of one from the other. End, from him, may he be forgiven. (M)

[Footnote Section - Right Column (Urdu Translation)] Bringing a separating pronoun after the subject gives the benefit of restriction to the subject. Thus, the benefit of the first proposition is that the effectiveness of impurity is dependent on that thing in which use is effective. That is, in what the effect of use does not appear, the effect of impurity will also not appear. Then they mentioned its universal converse, the meaning of which is that both things are one, and that the effect of one will not be separate from the other. End, from him, may he be forgiven. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (द्वितीय)

[मुख्य पाठ] ...अंग, और इसके बाद टपकने वाले पानी की कमी के उल्लेख का कोई स्थान नहीं था। हमारे लिए यह ज़्यादा आसान है कि हम अल्लामा के कलाम में कोई कमी मान लें बजाय इसके कि हम उसे सही साबित करने की कोशिश करें। मगर वो (रहमतुल्लाह अलैह) खुद इस वाज़ेह बात की तसरीह करेंगे जिससे तावील (व्याख्या) का दरवाज़ा बंद हो गया। फिर उन्होंने उस पानी के बारे में एक मुकद्दमा पेश किया जिसमें इस्तिमाल का असर ज़ाहिर होता है और जिसमें नहीं होता। उनका मक्सद ये बताना था कि वो छोटा हौज़ जिसके बारे में सवाल किया गया है, इस्तिमाल किए हुए पानी से वैसे ही मुतास्सिर होता है जैसे नापाक पानी से। और उन्होंने कहा: "जान लो कि वो पानी जिसमें इस्तिमाल का असर ज़ाहिर होता है वही है [1] जिसमें नजासत (गंदगी) का असर ज़ाहिर होता है। और जिसमें नजासत का असर ज़ाहिर नहीं होता, उसमें इस्तिमाल का असर भी ज़ाहिर नहीं होगा और इसमें कोई फ़र्क नहीं है।" फिर उन्होंने 'कलील' (थोड़ी मात्रा) की हद के बारे में कई अक़वाल (कथन) पेश किए और काफी तफ़्सील से बयान किया यहाँ तक कि कहा: "तो ये साबित हो गया कि इस्तिमाल के असर के ज़ाहिर होने का मतलब ये है कि आपने जिस हौज़ के बारे में पूछा था उसके पानी से पाक करने की सिफ़त (तहूरियत) ख़त्म हो गई, और उसका हुक्म बर्तन, हौज़ और कुएँ जैसा ही था।" इक़्तिताम।

[हाशिया (फ़ुटनोट)] [1] मुसनद इलैह के बाद 'ज़मीर-ए-फ़स्ल' का आना मुसनद इलैह पर पाबंदी (हस्र) का फ़ायदा देता है। तो पहली बात का मतलब ये है कि नजासत का असरदार होना उस चीज़ पर मुनहसिर (निर्भर) है जिसमें इस्तिमाल असरदार हो। यानी जिसमें इस्तिमाल का असर ज़ाहिर न हो उसमें नजासत का असर भी ज़ाहिर नहीं होगा। फिर उन्होंने इसका 'अक्स-ए-कुल्ली' ज़िक्र किया जिसका मतलब ये है कि दोनों चीज़ें एक ही हैं और एक का असर दूसरे से अलग नहीं होगा। इक़्तिताम, उनकी जानिब से, अल्लाह उन्हें माफ़ फ़रमाए। (म/त)

पेज 203/711

فتاوی رضویه، جلد ثانی

[متن] الاعضاء و لم یکن بعده محل لذکر قلة المتقاطر ایسر علینا من تطرق امثال الخلل الی کلام العلامة و لکنه رحمه الله سیصرح بهذا الظاهر فأنسد باب التاویل ثم قدم مقدمة في بیان الماء الذی یظهر فیه اثر الاستعمال والذي لا یظهر فیه قاصدا اثبات ان الحوض المسئول عنه اعنی الصغیر مما یتأثر بالاستعمال تأثره بالنجس فقال اعلم ان الماء الذی یظهر فیه اثر الاستعمال هو الذی ع۱ یظهر فیه اثر النجاسة وکل مالا یظهر فیه اثر النجاسة لا یظهر فیه اثر الاستعمال ولا فرق ثم جعل یسرد الاقوال في حد القلیل واطال الی ان قال فثبت ح ظهور اثر الاستعمال وهو سلب الطهوریه عن ماء الحوض الذی سألت عنه وکان حکمه کالاناء والجب والبئر اهـ

کلام آپس میں متناقض نہ ہو یعنی اس تصحیح کے جو نقل کی جائے گی، اور انہوں نے سائل کو غلط اس لئے ٹھہرایا کیونکہ اس نے یہ سوال کیا تھا کہ وہ اپنے اعضاء کو حوض میں داخل کر کے وضو کرنا چاہتا ہے اس کے بعد اس کا محل نہ تھا کہ ٹپکنے والا کم ہے یہ ہم پر بہ نسبت اس کے آسان ہے کہ علامہ کے کلام میں خلل کو مان لیں مگر وہ خود اس ظاہر کی تصریح کریں گے تو تاویل کا باب بند ہو گیا، پھر ایک مقدمہ اُس پانی کے بارے میں بیان کیا جس میں اثر استعمال ظاہر ہوتا ہے اور جس میں نہیں ہوتا ہے، اس سے ان کا ارادہ یہ بتانا کہ وہ چھوٹا حوض جس کے بارے میں دریافت کیا جارہا ہے مستعمل پانی سے اسی طرح متاثر ہوتا ہے جس طرح نجس پانی سے ، اور فرمایا جاننا چاہئے کہ وہ پانی جس میں استعمال کا اثر ظاہر ہوتا ہے وہی ہے جس میں نجاست کا اثر ظاہر ہوتا ہے اور جس میں نجاست کا اثر ظاہر نہ ہو اس میں استعمال کا اثر بھی ظاہر نہ ہوگا اور کوئی فرق نہیں ، پھر انہوں نے قلیل کے حد میں کئی اقوال پیش کیے اور کافی طوالت

اختیار کی اور آخر میں کہا، تو ثابت ہو گیا کہ استعمال کے اثر ظاہر ہونے کا مطلب یہ ہے کہ تم نے جس حوض کی بابت دریافت کیا ہے اس کے پانی سے طہوریت سلب

[حاشیہ] ع۱ تعقیب المسند الیہ بضمیر الفصل یفید قصر المسند علی المسند الیہ فمفاد القضیۃ الاولی ان تأثیر النجاسۃ مقصور علی ما یؤثر فیہ الاستعمال ای کل مالا یظھر فیہ اثر الاستعمال لا یظھر فیہ اثر النجاسۃ ثم ذکر عکسہ کلیا فأفاد انھما شیئ واحد وانہ لا انفکاك لتأثیر عن اخر اہ منہ غفر لہ۔ (م)

مسند الیہ کے بعد ضمیر فصل لانا مسند الیہ پر حصر کا فائدہ دیتا ہے تو پہلے قضیہ کا فائدہ یہ ہے کہ نجاست کا مؤثر ہونا اس چیز پر منحصر ہے جس میں استعمال مؤثر ہو یعنی جس میں استعمال کا اثر ظاہر نہ ہو اس میں نجاست کا اثر بھی ظاہر نہ ہوگا پھر انہوں نے اس کا عکس کلی ذکر کیا جس کا مفاد یہ ہے کہ دونوں شیئ واحد ہیں اور یہ کہ ایک کی تاثیر دوسرے سے جُدا نہ ہو گی اہ منہ غفر لہ، (ت)

Fatawa Rizvia, Volume 2

I say: May Allah have mercy on you, everything you have brought here only explains that small amount of water in which impurity has an effect is such and such, and there is nothing in it that indicates that every small amount [of water] is affected by use just like it is affected by impurity. The actual purpose was [to prove] this, but you did not mention it clearly, other than your statement that "whatever is affected by it (impurity) is affected by it (use) without difference," which is the first proposition in your speech. As for the second proposition, which states that "whatever is affected by use is affected by impurity," there is no dispute in that, but it has no connection to the intended purpose at all. Then, for the sake of completing the explanation, [the author] mentioned and listed a branch (issue) from Al-Khulasa: a small basin is like vessels and pits, performing ablution in it is not permissible, and if even a drop of wine falls into it, it becomes impure. (2) A branch from Al-Bazzaziya, Al-Tajnis, and Al-Khaniya: if a basin is less than ten by ten [cubits], one should not perform ablution in it; rather, one should scoop water from it and perform ablution outside. (2) The wording of Al-Khaniya is: "Ablution in it is not permissible." (3) The wording of Al-Tajnis is: "The upper part is ten by ten and the lower part is less, and it is full; performing ablution and taking a bath in it is permissible, but if it decreases [the level drops], it is not; rather, one should scoop water from it and perform ablution [outside]." I say: And in its opposite case, the reverse [ruling] will apply, i.e., when the bottom is ten by ten and the top is smaller.

Footnotes: 1. Khulasa al-Fatawa, Al-Jins al-Awwal fi al-Hiyadh, Naval Kishore, Lucknow, 1/5. 2. Bazzaziya with Al-Hindiyya, Naw' fi al-Hiyadh, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/5. 3. Qazi Khan, Fasl fi al-Ma' al-Rakid, Naval Kishore, Lucknow, 1/4. 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company, Karachi, 1/177. Page 204 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

मैं कहता हूँ: अल्लाह आप पर रहम करे, आपने यहाँ तक जो कुछ भी बयान किया है, वह सिर्फ यह बताता है कि थोड़ा पानी जिसमें अशुद्धता असर करती है, वह ऐसा और ऐसा है, और इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह दर्शाए कि हर थोड़ा पानी इस्तेमाल से उसी तरह प्रभावित होता है जैसे वह अशुद्धता से प्रभावित होता है। असल मकसद यही था जिसका आपने स्पष्ट उल्लेख नहीं किया, सिवाय आपके इस कथन के कि "जो कुछ भी उससे (अशुद्धता से) प्रभावित होगा, वह उससे (इस्तेमाल से) भी प्रभावित होगा बिना किसी अंतर के," यह आपके भाषण का पहला प्रस्ताव है। जहाँ तक दूसरे प्रस्ताव का सवाल है, जो कहता है कि "जो पानी इस्तेमाल से प्रभावित होगा, वह अशुद्धता से भी प्रभावित होगा," तो उसमें कोई विवाद नहीं है, और इसका असल मकसद से कोई संबंध नहीं है। फिर स्पष्टीकरण को पूरा करने के लिए, [लेखक ने] 'अल-खुलासा' की एक उप-शाखा (मसला) का उल्लेख किया: एक छोटा हौज़ (कुण्ड) बर्तनों और गड्ढों के समान है, उसमें वज़ू (शुद्धि) करना जायज़ नहीं है, और यदि उसमें शराब की एक बूंद भी गिर जाए, तो वह अशुद्ध हो जाता है। (2) 'अल-बज़्ज़िया', 'अल-तजनीस' और 'अल-खानिया' की एक उप-शाखा: यदि हौज़ दस गुणा दस [हाथ] से कम हो, तो उसमें वज़ू न करे; बल्कि उसमें से पानी निकाल कर बाहर वज़ू करे। (2) 'अल-खानिया' के शब्द हैं: "उसमें वज़ू जायज़ नहीं है।" (3) 'अल-तजनीस' के शब्द हैं: "उसका ऊपरी हिस्सा दस गुणा दस है और निचला हिस्सा कम है, और वह भरा हुआ है; उसमें वज़ू और गुस्ल (स्नान) करना जायज़ है, लेकिन अगर पानी कम हो जाए [स्तर गिर जाए], तो नहीं; बल्कि उसमें से पानी लेकर बाहर वज़ू करे।" मैं कहता हूँ: और इसके विपरीत स्थिति में, उल्टा नियम लागू होगा, यानी जब निचला हिस्सा दस गुणा दस हो और ऊपरी हिस्सा छोटा हो।

फुटनोट: 1. खुलासा अल-फतावा, अल-जिन्स अल-अव्वल फी अल-हियाज़, नवल किशोर, लखनऊ, 1/5। 2. बज़्ज़िया म' अल-हिंदिया, नौ' फी अल-हियाज़, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/5। 3. क़ाज़ी खान, फ़स्ल फी अल-मा अल-राकिद, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4। 4. अल-बहर अल-रैक, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी, कराची, 1/177। पृष्ठ 204/711

فتاوی رضویہ ، جلد ثانی

اقول: رحمکم اللہ کل (۱) ما اتیتم بہ الی ھنا انما بین ان القلیل الذی تؤثر فیہ النجاسۃ کذا وکذا ولیس فی شیئ منہ مایدل علی ان کل قلیل یتأثر بالاستعمال کالنجاسۃ وانما کان المقصود فیہ ولم تذکر وافیۃ غیر قولکم ان کل ما تأثر بھا تأثر بہ ولافرق وھی القضیۃ الاولی فی کلامکم اما الاخری القائلۃ ان کل ما تأثر بہ تأثر بھا فلا کلام فیھا ولا تمس المقصود اصلا ثم ذکر تکییلا لتوضیحہ وسرد فیہ (۱) فرع الخلاصۃ ان الحوض الصغیر قیاس الاوانی والجباب لایجوز التوضی فیہ ولو وقعت فیہ قطرۃ خمر تنجس (۱) (۲) وفرع البزازیۃ والتنجیس والخانیۃ اذا نقص الحوض من عشر فی عشر لایتوضؤ فیہ بل یغترف منہ ویتوضؤ خارجہ (۲) ولفظ الخانیۃ لایجوز فیہ الوضوء (۳) ولفظ التجنیس (۲) اعلاہ عشر فی عشر واسفلہ اقل وھو ممتل یجوز التوضی فیہ والاغتسال فیہ وان نقص لاولکن یغترف منہ ویتوضأ (٤) اھ قلت: وفی عکسہ عکسہ (۳) ای اذا کان اسفلہ عشرا فی عشر واعلاہ۔

ہو گئی اور اس کا حکم برتن، گڑھے اور کنویں کی مانند ہو گیا۔ میں کہتا ہوں یہاں تک آپ نے جو کچھ بیان کیا ہے وہ یہ ہے کہ قلیل پانی وہ ہے جس میں نجاست اثر کرے وہ پانی فلاں فلاں ہے، اس میں یہ کہیں نہیں ہے کہ ہر قلیل پانی استعمال سے متاثر ہوتا ہے جس طرح کہ نجاست سے متاثر ہوتا ہے اور اس سے وہ مقصود تھا جس کا آپ نے ذکر نہیں کیا صرف یہ ذکر کیا ہے کہ ہر پانی جو نجاست سے متاثر ہوگا وہ استعمال سے بھی متاثر ہوگا بغیر کسی فرق کے، یہ ہوا پہلا قضیہ تمہارے کلام میں اور دوسرا قضیہ یہ ہے کہ جو پانی استعمال سے متاثر ہوگا وہ نجاست سے بھی متاثر ہوگا، تو اس میں کلام نہیں، اور اس کا مقصود سے کوئی تعلق نہیں، پھر اپنی وضاحت کی تکمیل کی اور یہ فروع ذکر کیں، فرع (۱) خلاصہ کہ چھوٹا حوض جو برتنوں اور گڑھوں کی مانند ہو اس میں وضو جائز نہیں ہے اور اس میں اگر ایک قطرہ شراب کا گر جائے تو وہ نجس ہو

جائے گا۔ (۲) بزازیہ، تجنیس اور خانیہ میں ہے کہ جب حوض دہ در دہ سے کم ہو تو اس میں وضو نہ کرے گا بلکہ اس میں سے چلو کے ذریعہ لے گا اور وضو حوض سے باہر کرے گا، اور خانیہ کے الفاظ یہ ہیں اس میں وضو جائز نہیں، اور تجنیس کے الفاظ یہ ہیں کہ اس کا بالائی حصہ دہ در دہ ہے اور نچلا حصہ دہ در دہ سے کم ہے۔ میں کہتا ہوں: اور اس کے عکس میں اس کا الٹا حکم ہوگا یعنی جب اس کا نچلا حصہ دہ در دہ ہو اور اوپر کا حصہ کم ہو۔

حواشی: ۱ خلاصۃ الفتاویٰ الجنس الاول فی الحیاض نولکشور لکھنؤ ۵/۱ ۲ بزازیہ مع الہندیہ نوع فی الحیاض نورانی کتب خانہ پشاور ۵/۲ ۳ قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۴/۱ ٤ بحر الرائق کتاب الطہارۃ سعید کمپنی کراچی ۱۷۷/۱ صفحہ ۲۰٤/۷۱۱

Fatawa Razviya - Volume II

[Left Column - Arabic/Urdu text] (If it is) less, wudu (ablution) is not permissible in it while it is full. When it decreases and reaches 'abundance' (1), it becomes permissible. And a puzzle is based on this: 'Which water is such that ghusl (ritual bath) is not permissible in it as long as it is abundant, but when it becomes less, it becomes permissible?' (3) A branch (ruling) from Khaniya: A trench with a length of a hundred cubits or more and a width of two cubits. The general body of scholars (Mashaikh) said wudu is not permissible in it. Then it was narrated from some of them that it is permissible if its water, when spread out, becomes ten by ten cubits. [Reference ended]. I say: (2) This is the chosen view. 'Durar' quoted it from 'Uyun al-Madhahib' and 'Zahiriyya', and 'Al-Muhit' and 'Al-Ikhtiyar' and others authenticated it. In 'Al-Fath', the other view was chosen and authenticated by his student Sheikh Qasim because the criterion for 'abundance' is the non-arrival of impurity to the other side, and there is no doubt about the dominance of arrival from the side of the width. [End of citation from the commentary]. I say: (1) This is not accepted. If the criterion were this, then wudu would not be permissible in a large body of water from the side where the impurity is, but it is not so. Thus it is known that the criterion is the quantity, meaning the area, so there is no need for (considering) width. The Investigator (Al-Muhaqqiq) himself said: 'Regarding non-visible impurity, they said one performs wudu from the side of the occurrence, and regarding visible (impurity), no...'

[Right Column - Urdu translation/explanation] ...is less and it is full, then wudu from it is permissible, and ghusl as well. And if it is less, it is not permissible, though one can take a handful of water for wudu. I say that in its opposite, the ruling is opposite, i.e., when its lower part is ten-by-ten and the upper part is less, then wudu is not permissible in it while it is full. When it decreases and reaches 'abundance', it becomes permissible. That's why a legal puzzle is famous: 'What is that water which, when abundant, ghusl from it is not permissible, and when less, it is permissible?' A branch of (a ruling) from Khaniya (3): A trench whose length is a hundred cubits or more and width is two cubits. General scholars say wudu is not permissible from it. Some scholars report its permissibility, provided it is such a pond that if its water were spread out, it would become ten-by-ten. I say this is the chosen (ruling), and 'Durar' quoted it from 'Uyun al-Madhahib' and 'Zahiriyya', and 'Muhit', 'Ikhtiyar' and others authenticated it. In 'Al-Fath', the other view was chosen and authenticated by his student Sheikh Qasim because the criterion for 'abundance' depends on the

impurity not reaching the other side, and there's no doubt that the arrival (of impurity) is dominant from the side of the width. I say this is not an accepted point because if it were based on that, then wudu would not be permissible from the side where the impurity is in a large body of water, whereas that's not the case. So it's known that the real factor is the quantity, i.e., the measurement. Thus, there is no need for width. The Researcher himself has said: 'The scholars said regarding invisible impurity...'

[Footnotes] 1 Qazi Khan, Chapter on Still Water, Naval Kishore Lucknow, 1/4 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/142

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू पाठ] (अगर वह) कम है और भरा हुआ है तो उसमें वज़ू जायज़ नहीं। जब वह कम होता है और 'कसरत' (ज़्यादा पानी होने की स्थिति) तक पहुँचता है (1), तो जायज़ हो जाता है। इसी पर एक पहेली आधारित है: 'वह कौन सा पानी है जिसमें तब तक ग़ुस्ल जायज़ नहीं जब तक वह कसीर (ज़्यादा) है, और जब वह कम हो जाए तो जायज़ हो जाता है?' (3) ख़ानिया की एक शाख़: एक खंदक जिसकी लंबाई सौ हाथ या उससे अधिक है और चौड़ाई दो हाथ है। आम मशाइख़ ने कहा कि इसमें वज़ू जायज़ नहीं है। फिर उनमें से कुछ से जवाज़ (अनुमति) नक़ल की गई कि अगर उसका पानी फैला दिया जाए तो दस-दर-दस हाथ हो जाए। मैं कहता हूँ: (2) यही पसंदीदा नज़रिया है। 'दुर्रर' ने इसे 'उयूनुल मज़ाहिब' और 'ज़हीरैया' से नक़ल किया है, और 'अल-मुहीत' व 'अल-इख़्तियार' वग़ैरहुमा ने इसकी तसहीह की है। 'अल-फ़तह' में दूसरे क़ौल को चुना गया और इसकी तसहीह उनके शागिर्द शेख़ क़ासिम ने की, क्योंकि कसरत का दारोमदार नजासत के दूसरी तरफ न पहुँचने पर है, और इसमें कोई शक नहीं कि चौड़ाई की तरफ से नजासत पहुँचने का ग़लबा रहता है। मैं कहता हूँ: (1) यह बात तस्लीम नहीं की गई। अगर दारोमदार इसी पर होता, तो कसीर (ज़्यादा) पानी में उस तरफ़ से वज़ू जायज़ नहीं होता जहाँ नजासत है, लेकिन ऐसा नहीं है। लिहाज़ा मालूम हुआ कि असल चीज़ मिकदार है, यानी क्षेत्रफल, इसलिए चौड़ाई की कोई ज़रूरत नहीं है। मुहक़्क़िक़ (अन्वेषक) ने खुद कहा है: 'ग़ैर-मरई (अदृश्य) नजासत के मामले में, उन्होंने कहा कि जहाँ नजासत गिरी हो उस जानिब से वज़ू किया जाए, और मरई (दृश्य) के बारे में नहीं...'

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...कम है और वह भरा हुआ हो तो उससे वज़ू भी जायज़ है और ग़ुस्ल भी, और कम हो तो जायज़ नहीं अलबत्ता उसे चुल्लू भर कर पानी लेकर वज़ू कर सकता है। मैं कहता हूँ इसके बरअक्स में हुक्म बरअक्स है यानी जब उसका निचला हिस्सा दह दर दह हो और ऊपर वाला कम हो तो उसमें वज़ू जायज़ नहीं जबकि भरा हुआ हो, पस जब कम हो जाए और कसरत को पहुँच जाए तो जायज़ है, इसी लिए एक फ़िक़्ही पहेली मशहूर है "वह कौन सा पानी है कि जब कसीर हो तो उससे ग़ुस्ल जायज़ नहीं और जब कम हो तो जायज़ है। ख़ानिया (३) की फ़राअ (शाखा): एक खंदक है जिसकी लंबाई सौ हाथ या उससे ज़्यादा है और चौड़ाई दो हाथ है तो आम मशाइख़ फ़रमाते हैं उससे वज़ू जायज़ नहीं, और बाज़ मशाइख़ से जवाज़ मनक़ूल है, बशर्ते कि वह हौज़ ऐसा हो कि अगर उसके पानी को फैला दिया जाए तो वह दह दर दह हो जाए। मैं कहता हूँ यही मुख्तार (पसंदीदा) है, इसको 'दुर्रर' ने 'उयूनुल मज़ाहिब' से और 'ज़हीरैया' से नक़ल किया और

'मुहीत' व 'इख़्तियार' वग़ैरहुमा ने इसकी तसहीह की, और 'फ़तह' में दूसरे क़ौल को इख़्तियार किया और इसकी तसहीह उनके शागिर्द शेख़ क़ासिम ने की क्योंकि कसरत का दारोमदार नजासत के दूसरी जानिब न पहुँचने पर है, और इसमें शक नहीं कि ख़ुलूस (पहुँचने) का ग़लबा चौड़ाई की तरफ़ से है। मैं कहता हूँ यह मुस्लमा बात नहीं है क्योंकि अगर इसी पर मदार होता तो कसीर पानी में उस जानिब से वज़ू जायज़ नहीं होता जिसमें कि नजासत है हालांकि ऐसा नहीं है तो मालूम हुआ कि असल चीज़ मिक़दार है यानी पैमाइश, तो चौड़ाई की कोई हाजत नहीं, और खुद मुहक़्क़िक़ ने फ़रमाया है "मशाइख़ का ग़ैर मरई नजासत में"।

[पाद-टिप्पणियाँ] 1 क़ाज़ी खान, फ़स्ल फ़िल मा-उर राकिद, नवल किशोर लखनऊ, 1/4 2 रद-उल-मुहतार, बाब-उल-मैयाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/142

[بایاں کالم] اقل لم یجز الوضوء فیه ممتلئًا فاذا نقص وبلغ الکثرة (1) جاز و به یلغز ای ماء لا یجوز الاغتسال فیه مادام کثیرا واذا قل جاز (3) و فرع الخانیة خندق طوله مائة ذراع او اکثر في عرض ذراعین قال عامة المشائخ لا یجوز فیه الوضوء ثم حکی عن بعضهم الجواز ان کان ماؤه لوا نبسط یصیر عشرا في عشر 1 اهـ قلت: (2) وهو المختار درر عن عیون المذاهب والظهیریة وصححه فی المحیط والاختیار وغیرهما واختار فی الفتح القول الاخر وصححه تلمیذه الشیخ قاسم لان مدار الکثرة علی عدم خلوص النجاسة الی الجانب ولا شک فی غلبة الخلوص من جهة العرض 2 اهـ ش۔ اقول:
(1) هذا غیر مسلم اذ لو کان علیه المدار لما جاز الوضوء فی الماء الکثیر من الجانب الذی فیه النجاسة ولیس کذلك فعلم ان المدار هو المقدار اعنی المساحة فلا حاجة الی العرض وقد قال المحقق نفسه قالوا فی غیر المرئیة یتوضؤ من جانب الوقوع وفی المرئیة لا وعن

[دایاں کالم] کم ہے اور وہ بھرا ہوا ہو تو اس سے وضو بھی جائز ہے اور غسل بھی، اور کم ہو تو جائز نہیں البتہ اسے چلو بھر کر پانی لے کر وضو کرسکتا ہے۔ میں کہتا ہوں اس کے بر عکس میں حکم برعکس ہے یعنی جب اس کا نچلا حصہ دہ در دہ ہو اور اوپر والا کم ہو تو اس میں وضو جائز نہیں جبکہ بھرا ہوا ہو ، پس جب کم ہو جائے اور کثرت کو پہنچ جائے تو جائز ہے، اسی لئے ایک فقہی پہیلی مشہور ہے "وہ کون سا پانی ہے کہ جب کثیر ہو تو اس سے غسل جائز نہیں اور جب کم ہو تو جائز ہے۔ خانیہ (۳) کی فرع، ایک خندق ہے جس کی لمبائی سو ہاتھ یا اُس سے زیادہ ہے اور چوڑائی دو ہاتھ ہے تو عام مشائخ فرماتے ہیں اُس سے وضو جائز نہیں، اور بعض مشائخ سے جواز منقول ہے، بشر طیکہ وہ حوض ایسا ہو کہ اگر اس کے پانی کو پھیلا دیا جائے تو وہ دہ در دہ ہو جائے اھ میں کہتا ہوں یہی مختار ہے اس کو درر نے عیون المذاہب سے اور ظہیر یہ سے نقل

کیا اور محیط و اختیار وغیرہما نے اس کی تصحیح کی، اور فتح میں دوسرے قول کو اختیار کیا اور اس کی تصحیح ان کے شاگرد شیخ قاسم نے کی کیونکہ کثرت کا دارو مدار نجاست کے دوسری جانب نہ پہنچنے پر ہے، اور اس میں شک نہیں کہ خلوص کا غلبہ چوڑائی کی طرف سے ہے اھ ش۔ میں کہتا ہوں یہ مسلمہ بات نہیں ہے کیونکہ اگر اسی پر مدار ہوتا تو کثیر پانی میں اس جانب سے وضو جائز نہیں ہوتا جس میں کہ نجاست ہے حالانکہ ایسا نہیں ہے تو معلوم ہوا کہ اصل چیز مقدار ہے یعنی پیمائش، تو چوڑائی کی کوئی حاجت نہیں، اور خود محقق نے فرمایا ہے "مشائخ کا غیر مرئی نجاست میں"

[حواشی] 1 قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۱/۴ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۴۲

صفحہ 205 کا 711

(Left Arabic Column) Abu Yusuf said that it [pond water] is like running water; it does not become impure except through change. This is what should be authenticated because the evidence requires that in cases of abundance, impurity does not occur except through change, without distinction. This is also the consensus ruling based on what we previously cited from Shaykh al-Islam. This is supported by what is in 'al-Mubtaghi' that pond water is ruled like running water. The Allama himself spoke at length on this in his treatise and argued using hadiths and reports. He stated at the end: "It is established that the water of a large pond does not become impure except through change, whether the substance falling into it is visible or invisible. Thus, running water is even more deserving of this ruling." Prior to this, commenting on the author of 'al-Ikhtiyar' who said: "If the impurity is visible, one should not perform ablution from the spot where it fell...", his text says: "It will be said to him: If this is the ruling, then what happened to the principle you claimed—that a large amount of water does not become impure? And how does this deviate from the original evidence you provided, which is the hadith... etc.?" Concerning the statement in 'al-Bada'i' that "if the impurity is visible, one should not perform ablution from the side where the carcass is," he stated: "All of this contradicts the aforementioned principle and the hadith."

(Right Urdu Column) It is said that one can perform ablution from where the impurity fell, but not if it is visible. It is narrated from Abu Yusuf that this is like running water; as long as there is no change, it will not be impure. This is what should be authenticated because the demand of the evidence is that in the case of abundance, it should only be considered impure when a change occurs, without any restrictions. This is also a consensus ruling; we have already presented the citation from Shaykh al-Islam. It is mentioned in 'al-Mubtaghi' in accordance with this that pond water follows the ruling of running water. The Allama himself has discussed this at length in his treatise and reasoned with hadiths and traditions. At the end, he stated that from this, it is understood that pond water becomes impure due to change, whether the falling object is visible or invisible. Thus, this ruling will apply even more strongly to running water. Before this, while discussing with the author of 'al-Ikhtiyar', he said: "If the impurity is visible, one should not perform ablution from the place where it fell... etc." His text is as follows: "He will be asked: When the ruling is this, what happened to the principle you explained that a large amount of water does not become impure? And how did this become excluded from that original evidence

which you explained, and that is the hadith... etc.?" Regarding the statement of 'al-Bada'i', he said: "If the impurity is visible, then from where the carcass has fallen..."

Then I say: (1) Rather, making the matter revolve around this invalidates the consideration | ...one will not perform ablution. All of their text and the aforementioned principle...

1- Fath al-Qadir, Chapter: Water with which ablution is permissible and not permissible, Nuria Rizvia Sukkur 7/211 2- Zahr al-Rawdh regarding the issue of the pond 3- Zahr al-Rawdh regarding the issue of the pond 4- Zahr al-Rawdh regarding the issue of the pond

(बायां अरबी कॉलम) अबू यूसुफ़ ने कहा कि यह (बड़े तालाब का पानी) बहते पानी की तरह है; यह परिवर्तन के बिना अशुद्ध नहीं होता है। यही वह चीज़ है जिसे प्रमाणित किया जाना चाहिए क्योंकि प्रमाण की आवश्यकता यह है कि प्रचुरता के मामले में, अशुद्धता केवल परिवर्तन के माध्यम से होती है, बिना किसी भेदभाव के। शेख-उल-इस्लाम से पहले जो हमने उद्धृत किया था, उसके आधार पर यह सर्वसम्मति वाला नियम भी है। 'अल-मुब्तग़ी' में भी इसका समर्थन किया गया है कि तालाब का पानी बहते पानी की तरह माना जाता है। अल्लामा ने स्वयं अपने शोध-प्रबंध में इस पर विस्तार से चर्चा की है और हदीसों और परंपराओं का प्रमाण दिया है। उन्होंने अंत में कहा: "यह स्थापित है कि बड़े तालाब का पानी परिवर्तन के बिना अशुद्ध नहीं होता है, चाहे उसमें गिरने वाली चीज़ दृश्य हो या अदृश्य। इस प्रकार, बहता पानी इस नियम का और भी अधिक पात्र है।" इससे पहले, 'अल-इख़्तियार' के लेखक पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा: "यदि अशुद्धता दृश्य है, तो उस स्थान से वज़ू नहीं करना चाहिए जहाँ वह गिरी थी... आदि।" उनके पाठ में लिखा है: "उससे कहा जाएगा: यदि नियम यह है, तो उस सिद्धांत का क्या हुआ जिसका आपने दावा किया था कि बड़ी मात्रा में पानी अशुद्ध नहीं होता है? और यह उस मूल साक्ष्य से कैसे विचलित हो गया जिसे आपने प्रस्तुत किया था, जो कि हदीस है... आदि?" 'अल-बदा'इ' के इस कथन के संबंध में कि "यदि अशुद्धता दृश्य है, तो उस तरफ से वज़ू नहीं करना चाहिए जहाँ शव पड़ा है," उन्होंने कहा: "यह सब पूर्वोक्त सिद्धांत और हदीस के विपरीत है।"

(दायां उर्दू कॉलम) कहना है कि जहाँ नजासत गिरी है वहाँ से वज़ू कर सकता है और मरइया (दृश्य) में नहीं, और अबू यूसुफ़ से मरवी (वर्णित) है कि यह जारी पानी की तरह है जब तक तग़य्युर (परिवर्तन) न होगा नजिस (अशुद्ध) न होगा इसी की तसहीह (पुष्टि) होनी चाहिए, क्योंकि दलील का तक़ाज़ा तो यह है कि कसरत (प्रचुरता) की सूरत में सिर्फ़ उसी वक़्त नापाक हो जबकि तग़य्युर आ जाए और इसमें कोई क़ैद न हो, यह भी इज्तिमाई (सर्वसम्मत) हुक्म है हम इस पर शेखुल इस्लाम की नक़ल बयान कर आए हैं, और मुब्तग़ी में इसके मुवाफ़िक़ है कि हौज़ का पानी जारी पानी के हुक्म में है अह्। और अल्लामा ने ख़ुद अपने इस रिसाले में इस पर तवील (लंबी) बहस की है और अहादीस व आसार से इस्तदलाल (तर्क) किया है और इसके आख़िर में फ़रमाया है कि इससे मालूम हुआ कि तालाबों का पानी तग़य्युर से नापाक होता है ख़्वाह गिरने वाली चीज़ मरई हो या ग़ैर मरई, तो जारी में यह हुक्म बतरीक़े औला होगा अह्। और इससे क़ब्ल साहब-ए-इख़्तियार पर कलाम करते हुए

फ़रमाया कि अगर नजासत मरइया हो तो गिरने की जगह से वज़ू नहीं करेगा... आदि उनकी इबारत इस तरह है "उससे कहा जाएगा कि जब हुक्म यह है तो उस असल (सिद्धांत) का क्या हुआ जो आपने बयान की थी कि कसीर (अधिक मात्रा में) पानी नापाक नहीं होता और यह उस दलील असल से कैसे ख़ारिज (बाहर) हो गया जिसको आपने बयान किया था और वह हदीस है... आदि और बदा'इ के क़ौल पर फ़रमाया कि अगर नजासत मरइया हो तो जहाँ मुरदार गिरा है वहाँ से

फिर मैं कहता हूँ: (1) बल्कि मामले को इस पर घुमाना एतबार (विचार) को बातिल करता है | वज़ू नहीं करेगा, उनकी यह तमाम इबारत असल मज़कूर और

1- फ़तह अल-क़दीर बाब अल-मा अल्लज़ी यजोज़ु बिहिल वज़ू मा ला यजोज़ु नूरिया रज़विया सुक्कुर 7/211 2- ज़हर अल-रौज़ फ़ी मसअला अल-हौज़ 3- ज़हर अल-रौज़ फ़ी मसअला अल-हौज़ 4- ज़हर अल-रौज़ फ़ी मसअला अल-हौज़

ابی یوسف انه کالجاری لایتنجس الا بالتغیر | کہنا ہے کہ جہاں نجاست گری ہے وہاں سے وضو کر سکتا ہے وھو الذی ینبغی تصحیحه لان الدلیل انما | اور مرئیہ میں نہیں، اور ابو یوسف سے مروی ہے کہ یہ یقتضی عند الکثرة عدم التنجس الا بالتغیر | جاری پانی کی طرح ہے جب تک تغیر نہ ہوگا نجس نہ ہوگا اسی من غیر فصل وھو ایضا الحکم المجمع علیه علی | کی تصحیح ہونی چاہئے، کیونکہ دلیل کا تقاضا تو یہ ہے کہ کثرت ماقدمناہ من نقل شیخ الاسلام ویوافقه مافی | کی صورت میں صرف اسی وقت ناپاک ہو جبکہ تغیر آ جائے المبتغی ان ماء الحوض في حکم ماء جار اھ۔ | اور اس میں کوئی قید نہ ہو، یہ بھی اجتماعی حکم ہے ہم اس پر شیخ الاسلام کی نقل بیان کر آئے ہیں، اور مبتغی میں اس کے والعلامة نفسه اطال فیه الکلام فی رسالته تلك | موافق ہے کہ حوض کا پانی جاری پانی کے حکم میں ہے اھ واحتج بالا حادیث والا ثار وقال في اخره فثبت | اور علامہ نے خود اپنے اس رسالہ میں اس پر طویل بحث کی ان ماء الغدیر لایتنجس الا بالتغیر سواء کان | ہے اور احادیث و آثار سے استدلال کیا ہے اور اس کے آخر الواقع فیه مرئیاً او غیر مرئي فالجاری اولی | میں فرمایا ہے کہ اس سے معلوم ہوا کہ تالابوں کا پانی تغیر اھ۔ وقال قبله علی قول صاحب الاختیار ان | سے ناپاک ہوتا ہے خواہ گرنے والی چیز مرئی ہو یا غیر کانت النجاسة مرئیة لا یتوضؤ من موضع | مرئی، تو جاری میں یہ حکم بطریق اولی ہوگا اھ اور اس سے الوقوع۔۔ الخ مانصه یقال له اذا کان الحکم | قبل صاحب اختیار پر کلام کرتے ہوئے فرمایا کہ اگر نجاست ھذا فاین الاصل الذی ادعیته وھو ان الکثیر | مرئیہ ہو تو گرنے کی جگہ سے وضو نہیں کرے گا۔۔ الخ ان کی عبارت اس طرح ہے "اُس سے کہا جائے گا کہ جب حکم یہ لاینجس وکیف خرج ھذا عن دلیل الاصل | ہے تو اس اصل کا کیا ہوا جو آپ نے بیان کی تھی کہ کثیر پانی الذی اوردته وھو الحدیث الخ وقال علی قول

| ناپاک نہیں ہوتا اور یہ اُس دلیل اصل سے کیسے خارج ہو گیا البدائع ان کانت مرئیة لا یتوضؤ من الجانب | جس کو آپ نے بیان کیا تھا اور وہ حدیث ہے... الخ اور الذی فیه الجیفة مانصه کله مخالف للاصل | بدائع کے قول پر فرمایا کہ اگر نجاست مرئیہ ہو تو جہاں مردار المذکور والحدیث اھ۔ | گرا ہے وہاں سے

ثم اقول:(۱)بل ادارة الامر علیه یبطل اعتبار | وضو نہیں کرے گا، ان کی یہ تمام عبارت اصل مذکور اور

1- فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء مالایجوز نوریہ رضویہ سکھر ۷/ ۲۱۱ 2- زھر الروض فی مسئلہ الحوض 3- زھر الروض فی مسئلہ الحوض 4- زھر الروض فی مسئلہ الحوض

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Column] The objective is that the point of reference at that time is that there must be a distance between the impurity and the water. [End]. He means taking it as ten cubits; so if the impurity falls into one end of that trench, it does not reach the other end lengthwise, even if it reaches widthwise. Thus, taking from the length after ten cubits is permissible, even if it is not permissible from the width. (2) Rather, it invalidates the consideration of area altogether since the pivot here is on the separation. If a trench is ten cubits long and its width is a hand-span, and impurity falls in one end, ablution is permissible from the other end because of the existence of the separation preventing it from reaching. No one among us says this. (3) If impurity falls in the middle of a pond that is ten by ten, or rather twenty by twenty except for a finger-width on both sides, the whole thing becomes impure because the separation on each side is less than ten. Similarly, (4) if it was a hundred by a hundred, or rather a thousand by a thousand, and a drop of impurity falls with a separation of ten on the edges and then every twenty in the middle, the whole must become impure without a change in quality, even if it is ten thousand.

[Urdu Column] It is contrary to the Hadith. [End]. Then I say that making this the pivot invalidates the consideration of width because at that time the reason for the ruling is that there be a distance of ten cubits between it and the impurity. If impurity falls into one edge of that trench, it cannot reach the other edge lengthwise, even though it may reach the other side widthwise. Thus, the use of that water from after ten cubits in length will be permissible, although it is not permissible from the width. Rather, this invalidates the consideration of area because in this case the pivot is on the separation. Now if the length of a trench is ten cubits but the width is one hand-span and impurity falls in one edge of it, then ablution is permissible from the other edge because an obstacle is present to prevent reaching. No one among us holds this view. And if impurity falls right in the middle of a pond and the pond is ten by ten or even twenty by twenty but is short by one finger on both sides, then the entirety of it will become impure because the separation in every direction is less than ten. Similarly, if it is a hundred by a hundred or even a thousand by a thousand, and the impurity is ten cubits [away]...

[Footnote] (Arabic): To make ten thousand cubits impure, twenty-five drops of impurity, similar to the size of a millet grain, are sufficient, and for water spread over a million cubits, two thousand five hundred drops are sufficient. Ended. From him, may he be forgiven. (M) (Urdu): Twenty-five drops of impurity equal to a grain of

millet are sufficient to make ten thousand yards impure, and two thousand five hundred drops are sufficient to make water spread over a hundred thousand yards impure. Ended. From him, may he be forgiven. (T)

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[अरबी कॉलम] उद्देश्य यह है कि उस समय आधार अशुद्धि और जल के बीच दूरी का होना है। उनका अर्थ है कि इसे दस हाथ लिया जाए; अतः यदि अशुद्धि उस खाई के एक किनारे पर गिरती है, तो वह लंबाई में दूसरे किनारे तक नहीं पहुँचती, भले ही वह चौड़ाई में पहुँच जाए। इसलिए दस हाथ के बाद लंबाई से पानी लेना जायज़ है, भले ही चौड़ाई से जायज़ न हो। (२) बल्कि यह क्षेत्रफल के विचार को पूरी तरह से रद्द कर देता है क्योंकि यहाँ मुख्य आधार दूरी (व्यवधान) है। यदि एक खाई की लंबाई दस हाथ और चौड़ाई एक बालिश्त (हथेली की चौड़ाई) हो, और उसके एक किनारे में अशुद्धि गिर जाए, तो दूसरे किनारे से वज़ू करना जायज़ है क्योंकि अशुद्धि के पहुँचने में रुकावट मौजूद है। हम में से कोई भी ऐसा नहीं कहता। (३) यदि अशुद्धि दस-दर-दस या बीस-दर-बीस वाले तालाब के बीच में गिर जाए, जिसमें दोनों ओर से एक-एक उंगली कम हो, तो वह पूरा का पूरा नापाक हो जाएगा, क्योंकि हर दिशा में दूरी दस से कम है। इसी तरह (४) यदि तालाब सौ-दर-सौ या हज़ार-दर-हज़ार भी हो, और अशुद्धि किनारों से दस के अंतराल पर गिरे और फिर बीच में हर बीस पर एक अशुद्धि की बूंद, तो बिना किसी गुण के बदले भी पूरे का नापाक होना आवश्यक है, भले ही वह दस हज़ार हो।

[उर्दू कॉलम] यह हदीस के विपरीत है। फिर मैं कहता हूँ कि इस पर आधार रखना चौड़ाई के विचार को अमान्य कर देता है क्योंकि उस समय हुक्म का कारण यह है कि उसके और अशुद्धि के बीच दस हाथ का फासला हो। तो अगर इस खाई के एक किनारे में अशुद्धि गिर गई तो वह लंबाई में दूसरे किनारे तक नहीं पहुँच सकती, भले ही चौड़ाई में दूसरी तरफ पहुँच जाए। तो लंबाई में दस हाथ के बाद से उस पानी का इस्तेमाल जायज़ होगा, भले ही चौड़ाई से जायज़ नहीं। बल्कि यह क्षेत्रफल के विचार को अमान्य करता है क्योंकि इस सूरत में आधार अंतराल (दूरी) पर है। अब अगर किसी खाई की लंबाई दस हाथ है मगर चौड़ाई एक बालिश्त है और उसके एक किनारे में अशुद्धि गिर जाए, तो दूसरे किनारे से वज़ू जायज़ है क्योंकि पहुँचने के लिए रुकावट मौजूद है, और हम में से यह विचार किसी का नहीं। और अगर अशुद्धि तालाब के बीचों-बीच गिर गई और तालाब दस-दर-दस बल्कि बीस-दर-बीस है मगर दोनों तरफ से एक-एक उंगली कम है तो पूरे का पूरा नापाक हो जाएगा, क्योंकि अंतराल हर दिशा में दस से कम है। इसी तरह अगर वह सौ-दर-सौ हो बल्कि हज़ार-दर-हज़ार हो, और अशुद्धि दस हाथ...

[पादलेख] (अरबी): दस हज़ार गज़ को नापाक करने के लिए बाजरे के दाने के बराबर अशुद्धि की पच्चीस बूंदें पर्याप्त हैं और एक लाख गज़ में फैले पानी को नापाक करने के लिए दो हज़ार पाँच सौ बूंदें पर्याप्त हैं। समाप्त। उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म) (उर्दू): दस हज़ार गज़ को नापाक करने के लिए बाजरे के दाने के बराबर अशुद्धि की पच्चीस बूंदें काफी हैं, और एक लाख गज़ में फैलने वाले पानी को नापाक करने के लिए दो हज़ार पाँच सौ बूंदें काफी हैं। समाप्त। उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

पृष्ठ २०७/७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم] الغرض فان المناط ح ان یکون بین النجاسة والماء اھـ یرید ان یأخذہ عشرة اذرع فاذا وقع النجس في احد اطراف ذلك الخندق لم یخلص الی الطرف الآخر طولا وان خلص عرضاً فیجوز الاخذ من الطول بعد عشرة اذرع وان لم یجز من العرض (۲) بل ھی تبطل اعتبار المساحة رأسا اذ المدار علی ھذا علی الفصل فلوان خندقاً طولہ عشرة اذرع وعرضہ شبر وقع فی طرف منہ نجس جاز الوضوء من الطرف الآخر لوجود الفصل المانع للخلوص وھذا لا یقول بہ احد منا (۳) ولو وقع النجس فی الوسط والغدیر عشر فی عشر بل عشرون فی العشرین الا اصبعاً فی الجانبین تنجس کلہ لان الفصل فی کل جانب اقل من عشر وکذا (٤) اذا کان مائة فی مائة بل الفاً فی الف عہ ووقع بفصل عشر في الاطراف ثم کل عشرین فی الاوساط قطرة نجس وجب تنجس الکل من دون تغیر وصف مع کونہ عشرة آلاف

[اردو کالم] حدیث کے مخالف ہے اھـ پھر میں کہتا ہوں کہ اس پر دارومدار کرنا عرض کے اعتبار کو باطل کردیتا ہے کیونکہ اس وقت علت حکم یہ ہے کہ اس کے اور نجاست کے درمیان دس ہاتھ کا فاصلہ ہو تو اگر اس خندق کے ایک کنارے میں نجاست گر گئی تو وہ لمبائی میں دوسرے کنارے تک نہیں آسکتی اگرچہ چوڑائی میں دوسری طرف پہنچ جائے ، تو لمبائی میں دس ہاتھ کے بعد سے اس پانی کا استعمال جائز ہوگا اگرچہ چوڑائی سے جائز نہیں ، بلکہ یہ مساحت کے اعتبار کو باطل کرتا ہے کیونکہ اس صورت میں دارومدار فصل پر ہے اب اگر کسی خندق کی لمبائی دس ہاتھ ہے مگر چوڑائی ایک بالشت ہے اور اس کے ایک کنارے میں نجاست گر جائے تو دوسرے کنارے سے وضو جائز ہے کیونکہ خلوص کے لئے مانع موجود ہے ، اور ہم میں سے یہ قول کسی کا نہیں۔ اور اگر نجاست تالاب کے بیچوں بیچ گر گئی اور تالاب دہ در دہ بلکہ بست در بست ہے مگر

دونوں طرف سے ایک ایک انگل کم ہے تو پورے کا پورا ناپاک ہوجائے گا، کیونکہ فصل ہر جہت میں دس سے کم ہے ، اسی طرح اگر وہ سو در سو ہو بلکہ ہزار در ہزار ہو، اور نجاست دس ہاتھ

[حاشیہ] عہ فتكفي لتنجيس عشرة آلاف ذراع خمس وعشرون قطيرة كحبة الجاورس مثلا ولتنجيس ماء منبسط فی الف الف ذراع الفان وخمسمائة ۔ اھ منه غفر له ۔ (م) دس ہزار گز کو نجس کرنے کیلئے نجاست کے پچیس قطرے باجرہ کے دانہ برابر کافی ہیں اور ایک لاکھ گز میں پھیلنے والے پانی کو نجس کرنے کیلئے دو ہزار پانچ سو قطرے کافی ہیں اھ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Left Column] ...cubits, or even a million. The truth is that the basis is the quantity, and the water after it is like running water, and Allah Almighty knows best. I say: It appears to this weak servant that it was appropriate to make this the intended meaning of 'Zahir al-Riwayah', that 'large quantity' (al-kathir) is that in which parts do not mix with each other. You have expressed it through the rising and falling of water during the movement of ablution (wudu) at the moment, or washing, or scooping out, or turbidity, or the spreading of dye. The first one is correct. It is established that the intent is nothing but to find a commonality between it and running water. The Imam Malik al-Ulama said in 'al-Badai' from Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him) regarding an ignorant person who urinated in running water and a man downstream from him who performed ablution with it: He said, 'There is no harm in it,' and this is because running water is such that its parts do not mix with each other. So the water with which he is performing ablution may be impure and may be pure, and water is pure in origin, so we do not judge it to be impure based on doubt. End quote. I say: Its meaning is that urine is consumed in the water and becomes like a part of it, but it does not become pure because it is intrinsically impure. So this is water, some of which is impure, but running water is not affected by the remaining part due to this part, and this is the meaning of his saying 'it does not mix'.

[Right Column] ...that it is located in the surroundings at a distance, and then there is one impure drop between every twenty, then all will become impure, whether the quality has changed or not, despite being ten thousand yards, rather even if it is a hundred thousand yards. The truth is that the basis is the quantity, and the water after it is like running water, and Allah Almighty knows best. I say: It appeared to this weak servant that it was appropriate to make this the intended meaning of 'Zahir al-Riwayah', i.e., 'large quantity' (kathir) is that where some parts are not included in others. And in this, they have considered the movement (rise and fall) of water; it can be known from wudu, ghusl, taking water with hands, becoming muddy, or the spreading of color. And the first one is correct. It is settled that the purpose is to find a common point between this water and running water. Malik al-Ulama has quoted from Abu Hanifa in 'Badai' that if an ignorant person urinates in running water and someone is performing wudu in the lower part of it, he said there is no problem, and the reason is that parts of running water do not mix into each other. So, regarding the water he is performing wudu with, there is a possibility that it is pure and a

possibility that it is impure, and water is pure by its original nature, so a ruling of impurity will not be given based on doubt. End quote. I say: Its meaning is that urine gets lost (dissolved) in the water and becomes like one of its parts, but it does not purify as its essence is impure. So this is such a water whose some part is impure but running water...

---

1 Badai al-Sanai: The quantity that makes the place impure. Saeed Company Karachi 1/37. Page 208 of 711

फतवा रज़विया, खंड द्वितीय

[बायां कॉलम] ...हाथ, बल्कि दस लाख हाथ। सच तो यह है कि आधार मात्रा है, और उसके बाद का पानी बहते पानी की तरह है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: इस दुर्बल सेवक पर यह स्पष्ट हुआ कि उचित यह था कि इसी को 'ज़ाहिर अल-रिवैया' का उद्देश्य बनाया जाता, कि 'अधिक मात्रा' (अल-कसीर) वह है जिसके हिस्से एक-दूसरे में नहीं मिलते। आपने इसे वज़ू की हरकत, या धोने, या पानी निकालने, या गंदला होने, या रंग फैलने के समय पानी के उतार-चढ़ाव से व्यक्त किया है। पहला विकल्प सही है। यह स्थापित है कि इसका उद्देश्य इसके और बहते पानी के बीच एक समानता खोजना है। इमाम मलिक अल-उलमा ने 'अल-बदाए' में अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक ऐसे अज्ञानी व्यक्ति के बारे में उल्लेख किया है जिसने बहते पानी में पेशाब कर दिया और उसके नीचे की ओर एक व्यक्ति उससे वज़ू कर रहा था। उन्होंने कहा, 'इसमें कोई बुराई नहीं है,' और इसका कारण यह है कि बहता पानी ऐसा होता है जिसके हिस्से एक-दूसरे में नहीं मिलते। अतः जिस पानी से वह वज़ू कर रहा है, उसके बारे में संभावना है कि वह शुद्ध हो और संभावना है कि वह अशुद्ध हो, और पानी मूल रूप से शुद्ध है, इसलिए हम संदेह के आधार पर उसे अशुद्ध नहीं मानेंगे। (समाप्त)। मैं कहता हूँ: इसका अर्थ यह है कि पेशाब पानी में खप जाता है और उसका एक हिस्सा बन जाता है, लेकिन वह अपनी अशुद्धता के कारण शुद्ध नहीं होता। तो यह ऐसा पानी है जिसका कुछ हिस्सा अशुद्ध है, लेकिन बहते पानी का शेष भाग इस हिस्से से प्रभावित नहीं होता, और यही उनके इस कथन का अर्थ है कि 'वह नहीं मिलता'।

[दायां कॉलम] ...कि वह दूरी पर किनारों में स्थित हो, और फिर हर बीस के बीच में एक अशुद्ध बूंद हो, तो सारा अशुद्ध हो जाएगा, चाहे गुणों में परिवर्तन न हुआ हो, दस हजार गज़ होने के बावजूद, बल्कि एक लाख गज़ होने के बावजूद। सच तो यह है कि आधार मात्रा पर है, और उसके बाद पानी बहते पानी की तरह है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: इस दुर्बल सेवक पर यह स्पष्ट हुआ कि उचित यह था कि इसी को 'ज़ाहिर अल-रिवैया' का उद्देश्य बनाया जाता, यानी 'कसीर' (अधिक) वह है जिसमें कुछ हिस्से दूसरों में शामिल न हों। और इसमें उन्होंने पानी के उतार-चढ़ाव का ध्यान रखा है; यह वज़ू, ग़ुस्ल, हाथ से पानी लेने, गंदा होने या रंग फैलने से पता चल सकता है। और पहला ही सही है। यह तय है कि उद्देश्य इस पानी और बहते पानी में कोई समानता तलाशना है। मलिक अल-उलमा ने 'बदाए' में अबू हनीफा से उद्धृत किया है कि यदि कोई अज्ञानी बहते पानी में पेशाब कर दे और उसके निचले हिस्से में कोई व्यक्ति वज़ू कर रहा हो, तो उन्होंने कहा कि कोई

हर्ज नहीं है। और इसका कारण यह है कि बहते पानी के हिस्से एक-दूसरे में शामिल नहीं होते। तो जिस पानी से वह वज़ू कर रहा है, उसके बारे में संभावना है कि वह पाक हो और संभावना है कि वह नापाक हो, और पानी अपनी मूल प्रकृति के अनुसार पाक है, इसलिए संदेह के आधार पर उस पर नापाकी का हुक्म नहीं दिया जाएगा। (समाप्त)। मैं कहता हूँ: इसका अर्थ यह है कि पेशाब पानी में खो जाता है और उसके एक हिस्से जैसा हो जाता है, लेकिन वह पाक नहीं करता क्योंकि उसका अस्तित्व नापाक है। तो यह ऐसा पानी है जिसका कुछ हिस्सा नापाक है लेकिन बहता पानी...

---

1 बदाए अस-सनाए: वह मात्रा जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है। सईद कंपनी कराची 1/37। पेज 208 of 711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم] ذراع بل الف الف، فالحق ان المدار هو المقدار، والماء بعده كماء جار، والله تعالیٰ اعلم۔

اقول: ویظهر للعبد الضعیف انه كان ینبغی ان یجعل هذا هو المقصود بظاهر الروایة ان الكثیر مالا یخلص بعضه الی بعض وعبرتوه بالارتفاع والانخفاض بتحریك الوضوء من ساعته او الغسل اوالاغتراف اوالتكدر اوسرایة الصبغ والاول هو الصحیح ویقرران المقصود به لیس الا تحصیل جامع بینه وبین الجاری قال الامام ملك العلماء فی البدائع عن ابی حنیفة رضی الله تعالیٰ عنہ فی جاهل بال فی الماء الجاری ورجل اسفل منه یتوضؤ به قال لا بأس به وهذا لان الماء الجاری مما لا یخلص بعضه الی بعض فالماء الذی یتوضؤ به یحتمل انه نجس ویحتمل انه طاهر والماء طاهر فی الاصل فلا نحكم بنجاسته بالشك 1 اهـ ۔ اقول: معناه ان البول یستهلك فی الماء فیصیر كجزء منه لكن لایظهر لنجاسة عینا فهذا ماء بعضه نجس غیران الماء الجاری لا یتأثر بقیته بهذا البعض وهذا معنی قوله لا یخلص

[دایاں کالم] کہ فاصلہ سے اطراف میں واقع ہو اور پھر ہر بیس کے درمیان میں ایک نجس قطرہ ہو تو کل نجس ہو جائیگا خواہ وصف میں تغیر نہ ہوا ہو دس ہزار گز ہونے کے باوجود بلالکہ لاکھ گز ہونے کے باوجود حق یہ ہے کہ دارومدار مقدار پر ہے اور پانی اس کے بعد ماءِ جاری کی طرح ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ میں کہتا ہوں اس عبدِ ضعیف پر یہ ظاہر ہوا کہ مناسب یہ تھا کہ اسی کو ظاہر الروایۃ کا مقصود بنایا جاتا یعنی کثیر وہ ہے کہ بعض بعض میں شامل نہ ہو اور اس میں انہوں نے پانی کے زیر و بم کا لحاظ کیا ہے، وضو، غسل، چُلو سے پانی لینے، گدلا ہونے یا رنگ کے سرایت کرنے سے معلوم ہو سکتا ہے، اور اول ہی صحیح ہے، اور یہ مقرر ہے کہ مقصود اس پانی اور جاری پانی میں کوئی جہتِ جامعہ تلاش کرنا ہے، ملک العلماء نے بدائع میں ابو حنیفہ سے نقل کی ہے کہ اگر کوئی جاہل جاری پانی میں پیشاب کر دے اور اس کے نچلے حصے میں کوئی

شخص وضو کر رہا ہو تو فرمایا کچھ مضائقہ نہیں، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ جاری پانی کے اجزا ایک دوسرے میں شامل نہیں ہوتے ہیں، تو جس پانی سے وہ وضو کر رہا ہے اس کے بارے میں احتمال ہے کہ پاک ہو اور احتمال ہے کہ ناپاک ہو، اور پانی اصل کے اعتبار سے پاک ہے تو شک کی بنا پر اس پر ناپاکی کا حکم نہیں کیا جائے گا اھ میں کہتا ہوں اس کے معنی یہ ہیں کہ پیشاب پانی میں گُم ہو جاتا ہے اور اس کے ایک جزء کی طرح ہو جاتا ہے لیکن وہ پاک نہیں کرتا ہے کہ اس کی ذات نجس ہے تو یہ ایسا پانی ہے جس کا بعض نجس ہے مگر جاری پانی

---

1 بدائع الصنائع المقدار الذی یصیر المحل نجسا سعید کمپنی کراچی ۳۱/۷ Page 208 of 711

Fatawa Razawiyyah, Volume II (Arabic Text Column): ...one part to another (1). Thus, the objection raised by Allama Qasim in his treatise is refuted, where he said: "This is something that can hardly be understood, and whoever observes the collision of river waves would definitely conclude contrary to what these statements imply." He assumed that the meaning was that one part does not reach another (2). If this were intended, then in the collision of waves, there would be nothing to refute it. For waves, when they move the first water to the position of the second, they move the second to the position of the third. Thus, the arrival of the first to the second is not established, but rather to its first position. In short, the intended goal is the realization of this meaning which joins it with running water. When this occurs, it falls under that category and no longer accepts impurity at all, because it becomes impure from the point of impurity to where some of its parts mix with each other, while the rest remains pure until it is necessary to leave a space equivalent to a small pool from the point of impurity, as per the narration of al-Imla (3). This is because water becomes impure through an impure substance just as it becomes impure through impurity itself. If the amount it clears becomes impure, how can what follows remain pure while being connected to it? And Allah Almighty knows best. This matter was mentioned in 'al-Bada'i', making the permissibility more solid and its absence more precautionary, where it said: "If stagnant water has length without width like rivers containing stagnant water..." It is not mentioned in Zahir al-Riwayah. From Abu Nasr Muhammad bin Muhammad bin Salam.

(Urdu Text Column): ...its remaining parts are not affected by it, and this is the meaning of this statement that its some part does not reach the other part. Thus, the objection that Allama Qasim made in his treatise is resolved. The objection is this: "This is an incomprehensible thing and whoever observes the clashing waves of the rivers will know that what is written in these statements is wrong." And probably he understood its meaning to be that some part of the water does not reach the other part; if this were the case, it would not have been refuted by the clashing of waves, because when a wave takes the first to the place of the second, it will take the second to the place of the third, so the first water will not reach the place of the second water but will reach its first place. In short, this quality must be present in it which connects it to running water; if this quality is found, it will be under the ruling of running water and will not accept impurity at all. It is not that it will become impure from the place of impurity, and wherever its parts go, the rest will remain on its original purity until a space of the size of a small pool is left from the place of

impurity as per the narration of Imla, because water becomes impure from an impure thing just as it becomes impure from an impurity itself, so if that much amount which towards it...

[1] Treatise of Allama Qasim Page 209 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड II (अरबी पाठ स्तंभ): ...एक हिस्सा दूसरे तक (1)। इस प्रकार, अल्लामा कासिम ने अपने शोध प्रबंध में जो आपत्ति उठाई थी, उसका खंडन हो गया है, जहाँ उन्होंने कहा था: "यह कुछ ऐसा है जिसे शायद ही समझा जा सके और जो कोई भी नदी की लहरों के टकराव को देखेगा, वह निश्चित रूप से इन कथनों के निहितार्थ के विपरीत निष्कर्ष निकालेगा।" उन्होंने माना कि इसका अर्थ यह था कि एक हिस्सा दूसरे तक नहीं पहुँचता (2)। यदि यही अभिप्राय होता, तो लहरों के टकराव में इसका खंडन करने के लिए कुछ भी नहीं होता। क्योंकि लहरें, जब वे पहले पानी को दूसरे के स्थान पर ले जाती हैं, तो वे दूसरे को तीसरे के स्थान पर ले जाती हैं। इस प्रकार, पहले का दूसरे तक पहुँचना सिद्ध नहीं होता, बल्कि उसके पहले स्थान तक पहुँचना सिद्ध होता है। संक्षेप में, इच्छित लक्ष्य इस अर्थ की प्राप्ति है जो इसे बहते पानी के साथ जोड़ता है। जब ऐसा होता है, तो यह उस श्रेणी में आता है और अब अशुद्धता को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करता है, क्योंकि यह अशुद्धता के बिंदु से अशुद्ध हो जाता है जहाँ इसके कुछ हिस्से एक-दूसरे के साथ मिल जाते हैं, जबकि शेष पानी शुद्ध रहता है जब तक कि अशुद्धता के बिंदु से एक छोटे तालाब के बराबर स्थान छोड़ना आवश्यक न हो, जैसा कि अल-इमला (3) के वर्णन के अनुसार है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पानी एक अशुद्ध पदार्थ के माध्यम से अशुद्ध हो जाता है जैसे वह स्वयं अशुद्धता के माध्यम से अशुद्ध होता है। यदि वह मात्रा जो साफ़ होती है अशुद्ध हो जाती है, तो उसके बाद आने वाला पानी उससे जुड़े होने के बावजूद कैसे शुद्ध रह सकता है? और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। इस मामले का उल्लेख 'अल-बदाई' में किया गया था, जिससे इसकी अनुमति अधिक ठोस और इसकी अनुपस्थिति अधिक एहतियाती हो गई, जहाँ कहा गया था: "यदि स्थिर पानी की चौड़ाई के बिना लंबाई हो जैसे कि स्थिर पानी वाली नदियाँ..." ज़ाहिर अल-रिवायत में इसका उल्लेख नहीं है। अबू नस्र मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सलाम से।

(उर्दू पाठ स्तंभ): ...इसके शेष हिस्से इससे प्रभावित नहीं होते हैं, और इस कथन का यही अर्थ है कि इसका कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से तक नहीं पहुँचता है। इस प्रकार, अल्लामा कासिम ने अपने ग्रंथ में जो आपत्ति की थी, वह समाप्त हो गई। आपत्ति यह है: "यह एक समझ से बाहर की चीज़ है और जो कोई भी नदियों की टकराती लहरों का निरीक्षण करेगा, उसे पता चल जाएगा कि इन कथनों में जो लिखा है वह गलत है।" और संभवतः उन्होंने इसका अर्थ यह समझ लिया कि पानी का कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से तक नहीं पहुँचता; यदि ऐसी बात होती, तो लहरों के टकराने से इसका खंडन नहीं होता, क्योंकि जब एक लहर पहले को दूसरे के स्थान पर ले जाएगी, तो वह दूसरे को तीसरे के स्थान पर ले जाएगी,

इसलिए पहला पानी दूसरे पानी के स्थान पर नहीं पहुँचेगा बल्कि अपने पहले स्थान पर पहुँचेगा। संक्षेप में, इसमें यह गुण होना चाहिए जो इसे बहते पानी से जोड़ता है; यदि यह गुण पाया जाता है, तो यह बहते पानी के नियम के अधीन होगा और अशुद्धता को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करेगा। ऐसा नहीं है कि यह अशुद्धता के स्थान से अशुद्ध हो जाएगा, और जहाँ तक इसके हिस्से जाएंगे, बाकी अपनी मूल पवित्रता पर रहेगा जब तक कि अशुद्धता के स्थान से एक छोटे तालाब के आकार का स्थान न छोड़ दिया जाए जैसा कि इमला का वर्णन है, क्योंकि पानी एक अशुद्ध चीज़ से वैसे ही अशुद्ध हो जाता है जैसे वह स्वयं अशुद्धता से अशुद्ध होता है, इसलिए यदि वह मात्रा जो इसकी ओर...

[1] अल्लामा कासिम का ग्रंथ पृष्ठ 209 711 में से

فتاوی رضویہ جلد ثانی (عربی عبارت کا کالم): بعضه الی بعض (۱) فاندفع ما رد علیه العلامة قاسم في الرسالة بقوله هذا مما لا یکاد یفهم ومن نظر تدافع امواج الانهار جزم بخلاف مقتضی هذه العبارات اهـ وکان ظن ان المراد لا یصل بعضه الی بعض (۲) ولو ارید هذا لم یکن فی تدافع الامواج ما یدفعه فان التموج حین یوصل الماء الاول مکان الثانی ینقل الثانی الی مکان الثالث فلا یثبت وصول الاول الی الثانی بل الی مکانه الاول وبالجملة المقصود حصول هذا المعنی الملحق ایاه بالجاری فاذا حصل لحق وصار لا یقبل النجاسة اصلا لانه یتنجس من موضع النجاسة الی حیث یخلص بعضه الی بعض ویبقی الباقی علی طهارته حتی یجب ان یترك من موضع النجاسة قدر حوض صغیر کما هي روایة الاملاء (۳) وذلك لان الماء یتنجس بالمتنجس تنجسه بالنجس فان صار قدر ما یخلص الیه نجسا کیف یبقی ما بعده طاهرا مع اتصاله به واللہ تعالی اعلم ہذا۔ و ذکر المسألة في البدائع فجعل الجواز احکم و عدمہ احوط حیث قال اذا کان الماء الراکد له طول بلا عرض کالانهار التی فیها میاه راکدة لم یذکر فی ظاهر الروایة وعن ابي نصر محمد بن محمد بن سلام۔

(اردو عبارت کا کالم): کے بقیہ اجزاء اس سے متاثر نہیں ہوتے ہیں، اور یہی مفہوم اس عبارت کا ہے کہ اس کا بعض حصہ دوسرے بعض کی طرف نہیں پہنچتا ہے، تو وہ اعتراض جو علامہ قاسم نے اپنے رسالہ میں کیا وہ ختم ہوا، اعتراض یہ ہے "یہ ایک ناقابل فہم چیز ہے اور جو شخص بھی نہروں کی ٹکراتی ہوئی موجوں کا مشاہدہ کرے گا اس کو معلوم ہو جائیگا کہ ان عبارات میں جو لکھا ہے وہ غلط ہے" اور غالبا انہوں نے اس کا مطلب یہ سمجھ لیا کہ پانی کا بعض حصہ دوسرے بعض تک نہیں پہنچتا ہے، اگر بات یہی ہوتی تو موجوں کے ٹکراؤ سے اس کی تردید نہ ہوتی، کیونکہ موج جب پہلے کو دوسرے کی جگہ لے جائے گی تو دوسرے کو تیسرے کی جگہ لے جائے گی تو پہلا پانی دوسرے پانی کی جگہ تک نہیں پہنچے گا بلکہ اس کی پہلی جگہ تک پہنچے

گا، خلاصہ یہ کہ اس میں اس وصف کا حاصل ہونا ہے جو اس کو جاری پانی سے ملاتا ہے، اگر یہ وصف پایا جائیگا تو وہ جاری پانی کے حکم میں ہوگا اور نجاست کو بالکل قبول نہ کریگا، یہ نہیں کہ نجاست کی جگہ سے وہ ناپاک ہو جائیگا، اور جہاں تک اس کے اجزاء جائیں گے اور باقی اپنی اصلی طہارت پر باقی رہے گا یہاں تک کہ نجاست کی جگہ سے چھوٹے حوض کی مقدار میں جگہ چھوڑ دی جائے جیسا کہ یہ املاء کی روایت ہے کیونکہ پانی ناپاک چیز سے ایسا ہی ناپاک ہو جاتا ہے جیسا کہ خود نجس چیز سے، تو اگر اتنی مقدار جو اس کی طرف

Fatawa Razawiyya Volume 2

If the length of the water is such that its parts do not mix, it is permissible to perform ablution (wudu) with it. From Abu Sulayman al-Juzajani, it is reported as not [permissible]. According to his view, if impurity falls into it, and it is at one of the ends, then an area of ten cubits becomes impure. If it is in the middle, then ten cubits from each side become impure. Thus, what Abu Nasr followed is closer to the legal ruling, because considering the width necessitates declaring it impure, whereas considering the length does not; therefore, it is not deemed impure due to doubt. And what Abu Sulayman said is closer to precaution (ihtiyat) because if considering the length does not necessitate declaring it impure, considering the width does; thus, a ruling of impurity is given as a precaution. End.

I say: (1) There is reason for objection in both justifications; rather, length necessitates purity and width does not necessitate its impurity. This is because the criterion depends on the presence or absence of 'khulus' (purity/separation). Its absence is evident from the perspective of length, while its presence is removed from the perspective of width. Due to the smallness of the width, 'khulus' is achieved in the width. So, how will it spread from there to the length while there is a barrier preventing 'khulus'...

[Right Column Text]: ...is coming. If it becomes impure, how can what remains after it stay pure, even though it is also connected to it? Allah Almighty knows best. In 'Bada'i', the issue was mentioned, and permissibility was termed strong, while non-permissibility was termed as more cautious. It was stated that when water is stagnant and has length but no width, such as stagnant water in canals. This is not mentioned in the manifest reports (Zahir al-Riwayah). It is narrated from Abu Nasr Muhammad bin Muhammad bin Salam that if the length of the water is such that one part does not reach the other, then wudu with it is permissible. From Abu Sulayman al-Juzajani, it is not [permissible]. According to his view, if impurity falls into it, if it is at one edge, an area of ten hands becomes impure; and if it is in the middle, then ten hands from each side become impure. Thus, Abu Nasr's statement is closer to the legal ruling because considering width makes it impure and considering length does not necessitate impurity, so it won't be impure due to doubt. And what Abu Sulayman said is closer to precaution because if considering length does not make declaring it impure mandatory, then considering width does. Therefore, the ruling of impurity will be applied as a precaution. End.

I say there is an objection to both justifications; rather, length necessitates purity and width does not necessitate its impurity because the matter depends on whether 'khulus' exists or not. Its absence is apparent from the perspective of length, and its existence is removed from the perspective of width. Because from the smallness of width, 'khulus' will be obtained in the width, so how will it go from there towards the length while...

---

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter: Explanation of the amount by which a place becomes impure, H.M. Saeed Company Karachi 1/73.

फतावा रज़विया जिल्द सानी

यदि पानी की लंबाई ऐसी हो कि उसका एक हिस्सा दूसरे से न मिलता हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। अबू सुलेमान अल-जौज़जानी से रिवायत है कि नहीं। और उनके कथन के अनुसार, यदि उसमें नजासत (अशुद्धता) गिर जाए, और वह दोनों सिरों में से किसी एक पर हो, तो दस हाथ की मात्रा नापाक हो जाएगी। और यदि वह बीच में हो, तो प्रत्येक दिशा से दस हाथ की मात्रा नापाक हो जाएगी। अतः, अबू नसर ने जो दृष्टिकोण अपनाया वह कानूनी हुक्म के अधिक निकट है, क्योंकि चौड़ाई पर विचार करना उसे नापाक घोषित करना अनिवार्य करता है, जबकि लंबाई पर विचार करना ऐसा नहीं करता; इसलिए, संदेह के कारण इसे नापाक नहीं माना जाएगा। और जो अबू सुलेमान ने कहा वह एहतियात (सावधानी) के अधिक निकट है क्योंकि यदि लंबाई पर विचार करना नापाक घोषित करना अनिवार्य नहीं करता है, तो चौड़ाई पर विचार करना करता है; इस प्रकार, एहतियात के तौर पर नापाकी का हुक्म दिया जाएगा। समाप्त।

मैं कहता हूँ: (१) दोनों दलीलों में एतराज़ की गुंजाइश है; बल्कि लंबाई पवित्रता को अनिवार्य करती है और चौड़ाई उसकी नापाकी को अनिवार्य नहीं करती। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानदंड 'ख़ुलूस' (शुद्धता/अलगाव) की उपस्थिति या अनुपस्थिति पर निर्भर करता है। लंबाई के दृष्टिकोण से इसकी अनुपस्थिति स्पष्ट है, जबकि चौड़ाई के दृष्टिकोण से इसकी उपस्थिति समाप्त हो जाती है। चौड़ाई की कमी के कारण, चौड़ाई में 'ख़ुलूस' प्राप्त हो जाता है। तो, यह वहाँ से लंबाई की ओर कैसे फैलेगा जबकि ख़ुलूस को रोकने वाला एक अवरोध मौजूद है...

[दायां कॉलम]: ...आ रही है। यदि वह नजिस (नापाक) हो जाए, तो उसके बाद जो शेष है वह शुद्ध कैसे रह सकता है, भले ही वह उससे जुड़ा हुआ हो? अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 'बदाइ' में इस मुद्दे का उल्लेख किया गया था, और अनुमति को पुख्ता कहा गया था, जबकि अनुमति न होने को अधिक एहतियात वाला माना गया था। यह कहा गया था कि जब पानी ठहरा हुआ हो और उसमें लंबाई हो लेकिन चौड़ाई न हो, जैसे नहरों में ठहरा हुआ पानी। ज़ाहिर रिवायत (प्रकट विवरणों) में इसका उल्लेख नहीं है। अबू नसर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सलाम से वर्णित है कि यदि पानी की लंबाई ऐसी है कि एक हिस्सा दूसरे तक नहीं पहुँचता है, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। अबू सुलेमान अल-जौज़जानी से रिवायत है कि नहीं। उनके कथन के अनुसार, यदि इसमें नजासत गिर जाए, यदि वह एक किनारे पर हो, तो दस हाथ की संख्या नापाक हो जाएगी; और यदि वह बीच में हो, तो दोनों तरफ से दस हाथ नापाक हो जाएंगे। इस प्रकार, अबू नसर का कथन कानूनी हुक्म के अधिक निकट

है क्योंकि चौड़ाई पर विचार करना उसे नापाक बनाता है और लंबाई पर विचार करना नजासत को अनिवार्य नहीं करता है, इसलिए यह संदेह के कारण नापाक नहीं होगा। और जो अबू सुलेमान ने कहा वह एहतियात के अधिक निकट है क्योंकि यदि लंबाई पर विचार करना उसे नजिस घोषित करना अनिवार्य नहीं बनाता है, तो चौड़ाई पर विचार करना बनाता है। इसलिए, एहतियातन नापाकी का हुक्म लागू किया जाएगा। समाप्त।

मैं कहता हूँ कि दोनों दलीलों पर एतराज़ है; बल्कि लंबाई तहारत (पवित्रता) को अनिवार्य करती है और चौड़ाई उसकी नापाकी को अनिवार्य नहीं करती क्योंकि मामला इस बात पर निर्भर करता है कि 'ख़ुलूस' मौजूद है या नहीं। लंबाई के नज़रिये से इसका अभाव स्पष्ट है, और चौड़ाई के नज़रिये से इसका अस्तित्व समाप्त हो गया है। क्योंकि चौड़ाई की किल्लत से, चौड़ाई में 'ख़ुलूस' प्राप्त होगा, तो यह वहाँ से लंबाई की ओर कैसे जाएगा जबकि...

---

1. बदाइ-उत-सनाइ, अध्याय: उस मात्रा का विवरण जिससे स्थान नजिस हो जाता है, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/७३।

पृष्ठ २१०/७११

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

اگر پانی کی لمبائی ایسی ہو کہ اس کا ایک حصہ دوسرے تک نہ پہنچتا ہو تو اس سے وضو کرنا جائز ہے۔ ابو سلیمان الجوزجانی سے روایت ہے کہ نہیں۔ اور ان کے قول کے مطابق اگر اس میں نجاست گر جائے، اور وہ دونوں کناروں میں سے کسی ایک پر ہو، تو دس ہاتھ کی مقدار ناپاک ہو جائے گی۔ اور اگر وسط (درمیان) میں ہو، تو ہر جانب سے دس ہاتھ کی مقدار ناپاک ہو جائے گی۔ تو ابو نصر جس طرف گئے ہیں وہ حکم کے زیادہ قریب ہے کیونکہ چوڑائی کا اعتبار اسے نجس کرنا واجب کرتا ہے اور لمبائی کا اعتبار واجب نہیں کرتا؛ لہذا شک کی بنا پر ناپاک نہیں کہا جائے گا۔ اور جو ابو سلیمان نے کہا وہ احتیاط کے زیادہ قریب ہے کیونکہ اگر لمبائی کا اعتبار نجس کرنا واجب نہیں کرتا تو چوڑائی کا اعتبار واجب کرتا ہے، چنانچہ احتیاطاً نجاست کا حکم لگا دیا جائے گا۔ اھ

اقول (میں کہتا ہوں): (۱) دونوں دلیلوں میں اعتراض ہے بلکہ لمبائی طہارت کو واجب کرتی ہے اور چوڑائی اس کی ناپاکی کو واجب نہیں کرتی کیونکہ مدار (بنیاد) خلوص کے ہونے یا نہ ہونے پر ہے تو لمبائی کے اعتبار سے اس کا نہ ہونا ظاہر ہے اور چوڑائی کے اعتبار سے اس کا ہونا ختم ہے کیونکہ چوڑائی کی کمی سے چوڑائی میں خلوص حاصل ہو جائے گا۔ تو پھر وہاں سے لمبائی کی طرف کیسے جائے گا حالانکہ خلوص کو روکنے والا فاصلہ موجود ہے اور...

[دائیں کالم کا متن]: ...آرہی ہے نجس ہو جائے تو اس کے بعد جو بچا ہے وہ طاہر کیسے رہے گا حالانکہ وہ بھی اس کے ساتھ متصل ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ بدائع میں مسئلہ کا ذکر کیا اور جواز کو مضبوط اور عدم جواز کو احوط قرار دیا، فرمایا جب پانی ٹھہرا ہوا ہو اس میں طول ہو مگر عرض نہ ہو جیسا کہ نہروں میں ٹھہرا ہوا پانی۔ ظاہر روایت میں اس کا ذکر نہیں ہے، اور ابونصر محمد

بن محمد بن سلام سے مروی ہے کہ اگر پانی کی لمبائی ایسی ہے کہ پانی کا بعض دوسرے بعض تک نہ پہنچتا ہو تو اس سے وضو جائز ہے، ابوسلیمان الجوزجانی سے ہے کہ نہیں، اور ان کے قول پر اگر اس میں نجاست پڑ جائے تو اگر کسی ایک کنارے پر ہو تو دس ہاتھ کی تعداد پر ناپاک ہو جائے گا، اور اگر درمیان میں ہو تو ہر جانب سے دس ہاتھ ناپاک ہو جائے گا تو ابونصر کا قول اقرب الی الحکم ہے کیونکہ چوڑائی کا اعتبار ناپاک کرتا ہے اور لمبائی کا اعتبار نجاست لازم نہیں کرتا، تو شک سے ناپاک نہ ہوگا، اور جو ابوسلیمان نے کہا وہ اقرب الی الاحتیاط ہے کیونکہ لمبائی کا اعتبار اگر نجس کرنے کو واجب نہیں کرتا تو چوڑائی کا اعتبار واجب کرتا ہے تو نجاست کا حکم احتیاطاً لگا دیا جائے گا اھ

میں کہتا ہوں دونوں تعلیلوں پر اعتراض ہے بلکہ لمبائی طہارت کو واجب کرتی ہے اور چوڑائی اس کی ناپاکی کو واجب نہیں کرتی کیونکہ دارومدار خلوص کے ہونے نہ ہونے پر ہے تو اس کا عدم لمبائی کے اعتبار سے ظاہر ہے اور اس کا وجود چوڑائی کے اعتبار سے زائل ہے، کیونکہ چوڑائی کی قلت سے خلوص حاصل ہوگا چوڑائی میں تو اس سے لمبائی کی طرف کیسے چلے گا حالانکہ

---

۱ بدائع الصنائع فصل اما بیان المقدار الذی یصیر بہ المحل نجسا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۳

Fatawa Razawiyya Volume II

(Arabic Text/Left Column): If you wish, witness it through what they have established as a standard for purity and its absence. This is because when you perform ablution in it, movement occurs in its width, not throughout its length. Similarly [this applies to] color and turbidity. And it was answered in 'Al-Bahr' that although this is the most preferable view (awjah), the jurists eased the matter for the people and stated 'bil-damm', meaning adding length to width, as indicated in 'Al-Tajnees' with the statement "to make it easy for Muslims" (end of quote). And 'Sh' [Shami] upheld it.

I say: (1) It is not 'awjah', let alone being 'al-awjah' (the most preferable). Rather, the 'awjah' is permission, as you have known, and success is from Allah. Then, it is mentioned in 'Zahral-Rawd' (4), a branch of 'Khaniyya': A large basin has a watercourse. If the water is connected to the wooden planks like a coffin, ablution in it is not permissible. The connection of the watercourse's water with the water coming out of it is of no benefit, like a large basin (5) from which a small basin is branched off. If one performs ablution in the small one, it is not permissible, even if the water of the small one is connected to the water of the large one. Similarly, the connection of the watercourse's water with the water beneath it is not considered if the planks are bound (end of quote).

I say: Apparently, its basis lies in what was mentioned in its third branch regarding the condition of width; otherwise, there is no doubt.

(Urdu Translation/Commentary - Right Column): The chapter discusses what hinders purity. And if you wish, observe it from the standard they have established for purity and its absence, because when performing ablution in it, the movement will occur in its width, not in its length. Similarly for color and turbidity. In 'Bahr', the answer was given that although this is more preferable, the jurists, to make the matter easy for the people, said that the length should be added to the width. Hence, in 'Tajnees', it is said 'Taysir ala al-Muslimeen' (to provide facility for Muslims), and 'Sh' maintained this.

I say this is not 'awjah', let alone 'al-awjah'. 'Awjah' is indeed permission as you have known, and success is from Allah. Then in 'Zahral-Rawd' it is stated: (4) A branch of 'Khaniyya', there is a large basin with a channel. Now if its planks are joined like a coffin, ablution is not permissible in it, and the connection of the channel's water is not beneficial. Just as if a small basin is taken out of a large basin (5) and someone performs ablution from that small basin, it is not permissible, even if the water of the

small one is connected to the water of the large one. Similarly, the connection of the channel's water with the water below it is not reliable if the planks are bound.

I say that apparently, it depends on what passed in the third branch, i.e., the condition of width, otherwise...

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/77. 2. Fatawa Khaniyya known as Qazi Khan, Chapter on Still Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4. Page 211 of 711

फतवा रज़विया खंड द्वितीय

(अरबी पाठ/बायां कॉलम): यदि आप चाहें, तो इसे उस चीज़ से देख सकते हैं जिसे उन्होंने शुद्धता (ख़ुलूस) और इसकी अनुपस्थिति का पैमाना माना है। क्योंकि जब आप इसमें वज़ू करते हैं, तो गति इसकी चौड़ाई (अर्ज़) में होती है, न कि इसकी पूरी लंबाई (तुल) में। इसी तरह रंग और धुंधलेपन के बारे में है। 'अल-बह्र' में उत्तर दिया गया कि यद्यपि यह अधिक तर्कसंगत (अवजह) है, फिर भी फकीहों ने लोगों के लिए मामले को आसान बनाया और 'बिल-दम्म' के पक्ष में कहा, जिसका अर्थ है लंबाई को चौड़ाई के साथ जोड़ना, जैसा कि 'अल-तजनीस' में उनके कथन "मुसलमानों की आसानी के लिए" (उद्धरण समाप्त) द्वारा संकेत दिया गया है। और 'श' (शामी) ने इसे बरकरार रखा।

मैं कहता हूँ: (१) यह 'अवजह' नहीं है, 'अल-अवजह' होना तो दूर की बात है। बल्कि 'अवजह' तो अनुमति (जवाज़) ही है जैसा कि आप जान चुके हैं, और सफलता अल्लाह की ओर से है। फिर 'ज़हरुल-रौज़' (४) में 'ख़ानिया' की एक उपशाखा का उल्लेख है: एक बड़ा हौज जिसमें एक नाली (मश्रअह) है। यदि पानी लकड़ी के तख्तों से इस तरह जुड़ा हो जैसे ताबूत, तो उसमें वज़ू जायज़ नहीं है। नाली के पानी का उससे निकलने वाले पानी के साथ जुड़ा होना लाभदायक नहीं है, जैसे एक बड़े हौज (५) से एक छोटा हौज (६) निकाला गया हो। यदि कोई व्यक्ति उस छोटे हौज में वज़ू करे तो जायज़ नहीं है, भले ही छोटे हौज का पानी बड़े के पानी से जुड़ा हो। इसी तरह नाली के पानी का उसके नीचे वाले पानी से जुड़ा होना मान्य नहीं है यदि तख्ते बंधे हुए हों (उद्धरण समाप्त)।

मैं कहता हूँ: स्पष्ट रूप से इसका आधार वही है जो इसकी तीसरी उपशाखा में चौड़ाई (अर्ज़) की शर्त के बारे में गुज़रा है, अन्यथा कोई संदेह नहीं है।

(उर्दू अनुवाद/टिप्पणी - दायां कॉलम): यह अध्याय शुद्धता में बाधक चीज़ों के बारे में है। और यदि आप चाहें, तो इसे उस मानक से देख सकते हैं जो उन्होंने शुद्धता और अशुद्धता के लिए निर्धारित किया है, क्योंकि जब इसमें वज़ू करेंगे, तो उसकी गति उसकी चौड़ाई में होगी, न कि उसकी लंबाई में। इसी तरह रंग और धुंधलेपन के लिए। 'बह्र' में उत्तर दिया गया कि यद्यपि यह अधिक उपयुक्त है, लेकिन फकीहों ने लोगों के लिए मामले को आसान बनाने के लिए कहा कि लंबाई को चौड़ाई में जोड़ा जाना चाहिए। इसलिए, 'तजनीस' में कहा गया है 'तयसीर अल-अल-मुस्लिमीन' (मुसलमानों को सुविधा प्रदान करने के लिए), और 'श' ने इसे बनाए रखा।

मैं कहता हूँ कि यह 'अवजह' नहीं है, 'अल-अवजह' तो बहुत दूर की बात है। 'अवजह' वास्तव में अनुमति ही है जैसा कि आप जान चुके हैं, और सफलता अल्लाह की ओर से है। फिर 'ज़हरुल-रौज़' में कहा गया है: (४) 'ख़ानिया' की एक शाखा, एक बड़ी नाली वाला एक बड़ा हौज है। अब यदि उसके तख्ते ताबूत की तरह जुड़े हुए हैं, तो उसमें वज़ू जायज़ नहीं है, और नाली के पानी का जुड़ाव लाभकारी नहीं है। जैसे बड़े हौज (५) में से छोटा हौज निकाल लिया जाए और कोई उस छोटे हौज से वज़ू करे, तो जायज़ नहीं है, भले ही छोटे का पानी बड़े के पानी से जुड़ा हो। इसी तरह, नाली के पानी का नीचे के पानी से जुड़ना विश्वसनीय नहीं है यदि तख्ते बंधे हों।

मैं कहता हूँ कि ज़ाहिर तौर पर यह उसी बात पर निर्भर करता है जो तीसरी शाखा में गुज़री, यानी चौड़ाई की शर्त, वरना...

पाद टिप्पणियाँ: १. अल-बह्र अल-राइक, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/७७। २. फतावा ख़ानिया जिसे काज़ी खान के नाम से जाना जाता है, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, १/४। पेज २११ / ७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم - عربی متن): ان شئت فشاهده بما جعلوه معيار الخلوص وعدمه فانک اذا توضأت فيه يتحرك فی عرضه لا جميع طوله وكذا الصبغ والتكدير واجاب فی البحر بان هذا وان كان الاوجه الا انهم وسعوا الامر علی الناس وقالوا بالضم ای ضم الطول الی العرض كما اشار اليه فی التجنيس بقوله تيسيراً علی المسلمين 1 اھ واقره ش۔ اقول: (۱) ليس باوجه فضلا عن ان يكون الاوجه وانما الاوجه الجواز كما علمت وبالله التوفيق ہذا ثم ذكر في زهرالروض (۴) فرع الخانية حوض كبير فيه مشرعة ان كان الماء متصلا بالالواح بمنزلة التابوت لا يجوز فيه الوضوء واتصال ماء المشرعة بالماء الخارج منها لاينفع (۵) كحوض (۶) كبير انشعب منه حوض صغير فتوضأ في الصغير لا يجوز و ان كان ماء الصغير متصلا بماء الكبير وكذا لايعتبر اتصال ماء المشرعة بما تحتها من الماء ان كانت الالواح مشدودة 2 اھ اقول: انما مبناه فيما يظهر ما تقدم في فرعها الثالث من اشتراط العرض والا فلاشك

(دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح): فصل خلوص کو مانع ہے، اور اگر تو چاہے تو اس کا مشاہدہ اس چیز سے کر جس کو انہوں نے خلوص و عدم خلوص کا معیار قرار دیا ہے کیونکہ جب اس میں وضو کریں گے تو اس کے عرض میں اس کی حرکت ہوگی نہ کہ اس کے طول میں۔ اسی طرح رنگ اور گدلا پن۔ اور بحر میں جواب دیا کہ یہ اگرچہ اوجہ ہے مگر فقہاء نے لوگوں پر معاملہ کو آسان کرتے ہوئے فرمایا ہے کہ طول کو عرض سے ملایا جائے، چنانچہ تجنیس میں فرمایا تیسیر اعلیٰ المسلمین اھ (مسلمانوں کو سہولت دینے کیلئے) اور اس کو برقرار رکھا "ش" نے۔

میں کہتا ہوں یہ اوجہ نہیں، چہ جائیکہ الاوجہ ہو، اوجہ تو جواز ہی ہے جیسا کہ آپ نے جانا وباللہ التوفیق پھر زہرالروض میں فرمایا، (۴) خانیہ کی فرع، ایک بڑا حوض ہے جس میں ایک نالی ہے، اب اگر اس کے تختے تابوت کی طرح ملے ہوئے ہیں تو اس میں وضو جائز نہیں اور نالی کے پانی

کا متصل ہونا نفع بخش نہیں ہے، جیسے بڑے حوض (۵) میں سے چھوٹا حوض نکال لیا جائے اور کوئی شخص اس چھوٹے حوض سے وضو کرے تو جائز نہیں اگرچہ چھوٹے کا پانی بڑے کے پانی سے متصل ہو اسی طرح نالی کے پانی کا نیچے کے پانی سے متصل ہونا معتبر نہیں اگر تختے بندھے ہوں اھ

میں کہتا ہوں اس کا دار ومدار بظاہر اسی چیز پر ہے جو تیسری فرع میں گزرا یعنی چوڑائی کی شرط ورنہ

حواشی: 1 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۷ 2 فتاویٰ خانیہ المعروف قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنو ۱/ ۴ Page 211 of 711

Fatawa Razawiya Volume II

In achieving the required surface area at the time of water connection, and you have already known that its condition is contrary to the correct, preferred, and sound opinion. A subsidiary of al-Khaniyah: A small basin where water enters from one side and exits from another. The jurists have stated that if it is four by four cubits or less, performing ablution (wudu) in it is permissible. If it is larger, it is not permissible except at the point where water enters and exits, because in the first case, the used water that falls into it does not settle but exits as it enters, thus it is considered flowing. In the second case, the water settles in it and does not exit except after some time. The more correct view is that this estimation is not mandatory; rather, reliance is on the aforementioned meaning. So it should be seen: if the used water falls into it and exits immediately without settling, then wudu in it is permissible, otherwise not. This varies according to the abundance of water entering it, its strength, and its opposite. End.

I say: This is contrary to what the fatwa is based on. It is said in al-Durr: They have classified the bathroom basin with flowing water if the water is descending and the scooping is continuous, like a small basin where water enters from one side and exits from another. Ablution is permissible from all sides absolutely. This is the issued fatwa, i.e., whether it is four by four or more. End.

1. Fatawa Khaniyah, known as Qazi Khan, Chapter on Waters, Naval Kishore Lucknow, 1/3.
2. Fatawa Khaniyah, known as Qazi Khan, Chapter on Waters, Naval Kishore Lucknow, 1/3.
3. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/140.

पानी के जुड़ाव के समय वांछित सतह के क्षेत्र की प्राप्ति में कोई संदेह नहीं है, और आप जान चुके हैं कि इसकी शर्त सही, पसंदीदा और सुदृढ़ राय के विरुद्ध है। अल-खनिया की एक शाखा: एक छोटा हौज जिसमें पानी एक तरफ से दाखिल होता है और दूसरी तरफ से निकलता है। फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने कहा है कि अगर वह चार बाई चार हाथ या उससे कम हो तो उसमें वुज़ू जायज़ है, और अगर उससे ज़्यादा हो तो नहीं होगा, सिवाय पानी के दाखिल होने या निकलने की जगह के। क्योंकि पहली सूरत में जो इस्तेमाल किया हुआ पानी उसमें गिरेगा वह उसमें नहीं ठहरेगा बल्कि दाखिल होते ही निकल जाएगा, तो वह जारी (बहता हुआ) माना जाएगा। और दूसरी सूरत में पानी उसमें ठहरेगा और काफी देर बाद निकलेगा। और सही यह है कि यह अंदाज़ा ज़रूरी नहीं है, बल्कि दारोमदार उसी मक़सद पर है जिसका ज़िक्र किया गया है। तो इसमें गौर किया जाए कि अगर इस्तेमाल किया हुआ पानी दाखिल होते ही निकल जाता है और उसमें ठहरता नहीं है तो उसमें वुज़ू जायज़ है, वरना नहीं। इसका दारोमदार पानी की कसरत और उसकी कुव्वत (शक्ति) पर है जो उसमें दाखिल होता है और निकलता है।

मैं कहता हूँ: यह उस कौल (बात) के खिलाफ है जिस पर फतवा है। 'अद-दुर्र' में कहा गया है: उन्होंने हमाम (स्नानघर) के हौज को जारी पानी के हुक्म में शामिल किया है, बशर्ते पानी गिर रहा हो और चुल्लू भर कर पानी लेने का सिलसिला मुतवातिर (लगातार) हो, जैसे कि वह छोटा हौज जिसमें पानी एक तरफ से दाखिल होकर दूसरी तरफ से निकल जाता हो। ऐसे हौज के हर तरफ से वुज़ू करना मुतलकन (पूर्णत) जायज़ है। इसी पर फतवा है, यानी वह चाहे चार बाई चार का हो या उससे ज़्यादा।

1. फतावा खनिया अल-मारूफ ब-काजी खान, फसल फिल मियाह, नवल किशोर लखनऊ, 1/3
2. फतावा खनिया अल-मारूफ ब-काजी खान, फसल फिल मियाह, नवल किशोर लखनऊ, 1/3
3. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/140

فی حصول المساحۃ المطلوبۃ عند اتصال الماء وقد علمت ان اشتراطہ خلاف الصحیح الراجیح الوجیہ (۲) وفرع (۱) الخانیۃ حوض صغیر یدخل الماء من جانب ویخرج من جانب قالوا ان کان اربعاً فی اربع فمادونہ یجوز فیہ التوضی وان کان اکثر لا الا فی موضع دخول الماء وخروجہ لان فی الوجہ الاول مایقع فیہ من الماء المستعمل لایستقر فیہ بل یخرج کما دخل فکان جاریاً وفی الوجہ الثانی یستقر فیہ الماء ولا یخرج الا بعد زمان والاصح ان ہذا التقدیر لیس بلازم وانما الاعتماد علی ماذکر من المعنی فینظر فیہ ان کان ماوقع فیہ من الماء المستعمل یخرج من ساعتہ ولا یستقر فیہ یجوز فیہ التوضی والا فلا وذلك یختلف بکثرۃ الماء الذی یدخل فیہ وقوتہ وضد ذلک ۱ھ مطلوبہ پیمائش کے پانی کے اتصال کے وقت حاصل ہو جانے میں کوئی شک نہیں، اور آپ جان چکے ہیں کہ اس کی شرط صحیح رِیح وجیہ کے خلاف ہے۔ خانیہ کی فرع، ایک چھوٹا حوض ہے جس میں ایک طرف سے پانی داخل ہوتا ہے اور دوسری طرف سے نکلتا ہے تو فقہاء نے فرمایا ہے کہ اگر چہار در چہار ہے یا اس سے کم ہے تو اس میں وضو جائز ہے اور اگر زیادہ ہے تو نہ ہوگا، صرف پانی کے داخل ہونے کی جگہ سے یا خارج ہونے کی جگہ سے ہوجائے گا کیونکہ پہلی صورت میں جو مستعمل پانی اس میں داخل ہوگا وہ اس میں نہیں ٹھہریگا بلکہ داخل ہوتے ہی نکل جائے گا تو جاری ہوگا اور دوسری صورت میں پانی اس میں ٹھہریگا اور کافی دیر بعد نکلے گا اور زیادہ صحیح یہ ہے کہ یہ اندازہ لازم نہیں ہے، اور اعتماد صرف اسی وصف پر ہے جو ذکر کیا گیا ہے، تو اس میں غور کیا جائے کہ اگر مستعمل پانی داخل ہوتے ہی نکل جاتا ہے اور اس میں ٹھہرتا نہیں تو اس میں وضوء جائز ہے ورنہ نہیں اس کا دارو مدار اس پانی کی قوت وضعف پر ہے جو اس میں داخل ہوتا ہے اور نکلتا ہے اھ

اقول: ھو خلاف ماعلیہ الفتوی قال فی الدر والحقوا بالجاری حوض الحمام لو الماء نازلاً والغرف متدارک کحوض صغیر یدخلہ الماء من جانب ویخرج من آخر یجوز التوضی من کل الجوانب مطلقاً یفتی ۲ اھـ ای سواء کان اربعاً فی اربع او اکثر اھـ ش ۳ میں کہتا ہوں یہ مفتی بہ قول کے خلاف ہے، درمیں فرمایا فقہاء نے حوض حمام کو جاری پانی کا حکم دیا ہے، خواہ پانی اتر رہا ہو اور مسلسل چلو بھر کر پانی لیا جائے جیسے چھوٹا حوض کہ جس میں ایک طرف سے پانی داخل ہو کر دوسری طرف سے نکل جاتا ہو تو ایسے حوض کے ہر طرف سے وضو جائز ہے، اسی پر فتوی ہے، یعنی وہ چار چار کا ہو یا زیادہ۔

۱ فتاویٰ خانیہ المعروف بقاضی خان فصل فی المیاہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳ ۲ فتاویٰ خانیہ المعروف بقاضی خان فصل فی المیاہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳ ۳ ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۴۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

Fatwa is based on this without further detail, as cited in Al-Hindiyya from Sadr al-Shari'ah, al-Mujtaba, and al-Diraya. (7) Branch of Al-Khaniyah: Following what has passed, they similarly said (1) concerning a spring of water that is seven by seven, where the water wells up from its bottom and exits through its outlet; wudu is not permissible except at the point where the water exits from it. [1]

I say: This is also contrary to the fatwa. It is stated in al-Durr after what preceded: "Like a spring that is five by five, from which water wells up; fatwa is given based on this." [2] The Shaykh, meaning Ibn al-Shihnah, said, and Imam al-Hasiri clarified in Khayr al-Matlub, that the outcome is that the condition is the non-use of the water that has already been used and has fallen from it. [3] He said: "And this [reuse] is certain in the tank about which you asked, and these branch-issues are explicit regarding your specific case." [4]

I say: (2) Firstly, all these branch-issues, except the first two, are contrary to the correct view and what is acted upon (mufta bihi), as you have learned. Likewise, the first two are understood in a way that supports this, as will follow, so it is not valid to argue with them. (3) Secondly, these are seven branch-issues, and if you count the branches from al-Bazzaziyyah, al-Tajnis, and the first mention in al-Khaniyah individually, they become nine. Yet, in none of them is there anything to support the claim of equality between the water met (mulqa) and the water meeting (mulaqi) regarding the loss of purifying nature (salb al-tahuriyyah), until the sixth branch, which is the branch-issue of the tank.

Sixth Branch: Branch of a Tank

---

1. Qadi Khan, Chapter on Waters, Naval Kishore, Lucknow 1/3.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai, Delhi 1/36.
3. Treatise of Ibn al-Shihnah.
4. Treatise of Ibn al-Shihnah.

फतावा रज़विया, जिल्द 2

बिना किसी विवरण के हिंदिया, सद्र अल-शरिया, मुजतबा और दिराया से इसी पर फतवा है। (7) खानिया की शाखा: जैसा कि पहले गुज़र चुका है, इसी तरह उन्होंने (1) उस पानी के चश्मे के बारे में कहा है जो सात गुना सात का हो, पानी उसके नीचे से फूटता हो और उसके निकास से निकलता हो; उसमें केवल वहीं से वज़ू करना जायज़ नहीं है जहाँ से पानी निकल रहा हो। [1]

मैं कहता हूँ: यह भी फतवे के विरुद्ध है। 'अल-दुर' में पहले जो गुज़र चुका है उसके बाद फ़रमाया गया: "जैसे वह चश्मा जो पाँच गुना पाँच का हो, जिसमें से पानी फूट रहा हो; इसी पर फतवा दिया जाता है।" [2] शेख, यानी इब्न अल-शहना ने कहा, और इमाम अल-हसीरी ने 'खैर अल-मतलूब' में स्पष्ट किया कि असल बात यह है कि शर्त इस्तेमाल किए गए पानी का पुन: उपयोग न होना है जो उससे गिरा हो। [3] उन्होंने कहा: "और यह (पुन: उपयोग) उस हौज़ में निश्चित है जिसके बारे में आपने पूछा था, और ये शाखा-मुद्दे आपके विशिष्ट मामले में स्पष्ट हैं।" [4]

मैं कहता हूँ: (2) पहली बात तो यह कि पहली दो को छोड़कर ये सभी शाखा-मुद्दे सही और जिस पर फतवा दिया जाता है, उसके विरुद्ध हैं, जैसा कि आप जान चुके हैं। इसी तरह, पहली दो को भी एक ऐसे अर्थ में लिया गया है जो इसका समर्थन करता है, जैसा कि आगे आएगा, इसलिए उनके साथ तर्क करना सही नहीं है। (3) दूसरी बात यह है कि ये सात शाखा-मुद्दे हैं, और यदि आप अल-बज़ाज़िया, अल-तजनीस और पहली खानिया के शाखा-मुद्दों को अलग-अलग गिनें, तो वे नौ होते हैं। फिर भी, उनमें से किसी में भी ऐसा कुछ नहीं है जो पवित्रता छिनने (सल्ब अल-तहुरिया) के संबंध में मिले हुए पानी (मुल्का) और जिससे मिला जाए (मुलाकी) के बीच समानता के दावे का समर्थन करता हो, जब तक कि छठी शाखा, हौज़ का शाखा-मुद्दा न आ जाए।

छठा मुद्दा: हौज़ का मुद्दा

---

1. काजी खान, पानी पर अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ 1/3.
2. दुर्र-ए-मुख्तार, पानी पर अध्याय, मुजतबाई, दिल्ली 1/36.
3. इब्न अल-शहना का लेख।
4. इब्न अल-शहना का लेख।

पृष्ठ 213/711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

ہوا اھ ش۔ اور اسی پر فتوٰی ہے بلا تفصیل ہندیہ ، صدر الشریعہ، مجتبٰی اور درایہ سے۔ خانیہ (۷) کی فرع: اسی طرح فقہاء نے اس چشمے کی بابت فرمایا ہے جو سات سات کا ہو، اس کے نیچے پانی کا سوتا ہو اور پانی اس کی نالی سے نکلتا ہو، اس حوض سے صرف اسی جگہ سے وضو جائز ہے جہاں سے پانی نکل رہا ہے اھ

میں کہتا ہوں یہ بھی خلاف فتوٰی ہے، در میں فرمایا اور جیسے وہ چشمہ جو پانچ پانچ کا ہو، جس میں پانی پھوٹ رہا ہو، یہ مفتٰی بہ ہے اھ شیخ ابن الشحنہ نے فرمایا اور امام حصیر ی نے خیر مطلوب میں صراحت کی کہ اصل چیز یہ ہے کہ مستعمل پانی کو دوبارہ مستعمل نہیں ہونا چاہئے اھ اور جو تم سے سوال کیا ہے اس میں ایسا ہونا متحقق ہے، اور یہ فروع تمہارے سوال کے سلسلہ میں صریح ہیں اھ اور جو تم سے سوال کیا ہے اس میں ایسا ہونا متحقق ہے، اور یہ فروع تمہارے سوال کے سلسلہ میں صریح ہیں اھ

میں کہتا ہوں اولاً یہ تمام فروع سوائے پہلی دو کے صحیح اور مفتی بہ کے خلاف ہیں، جیسا کہ آپ کو معلوم ہوا، اور پہلی دو بھی ایسے محمل پر جو اس کا فائدہ دے، جیسا کہ آگے آئے گا تو ان سے استدلال صحیح نہیں، اور ثانیاً یہ سات فروع ہیں اور اگر آپ بزازیہ، تجنیس اور خانیہ کی پہلی عبارت کو مستقل شمار کریں تو کل نو ہوئیں مگر ان میں کہیں یہ دعوٰی نہیں کہ ملقی اور ملاقی میں سلب طہوریت میں مساوات ہے، یہاں تک کہ

السادس فرع حوض

1 قاضی خان فصل فی المیاہ نولکشور لکھنو ۱/ ۳ 2 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۶ 3 رسالہ ابن شحنہ 4 رسالہ ابن شحنہ

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Arabic Section]: ...a small pond into which water enters and from which it exits. This is because all of them possibly involve performing Wudu in it in the second sense, meaning by immersing the limbs. You have already known that this is closer to being considered a vessel. In 'Al-Khaniyah', it is stated: Regarding a large pond where impurity has fallen, if the impurity is visible, it is not permissible to perform Wudu or Ghusl at that specific spot. Instead, one should move to another side such that the distance between him and the impurity is more than the size of a small pond. If the impurity is not visible, our scholars and the scholars of Balkh said it is permissible to perform Wudu at the spot of the impurity. It is not hidden that what is meant here is the second sense (immersion), for there would be no meaning in the impermissibility of Wudu outside the pond in a manner that the used wash-water falls into the spot of impurity. There would also be no reason for distinguishing between visible and invisible impurities in that case. This, as you see, includes the sixth branch; for if the water falling into it does not stay but leaves immediately, it would be considered flowing water, as mentioned. Flowing water is not affected by immersion. If it stays and does not leave except after some time, it is stagnant and small, so immersion would harm it. Thus, there is nothing in the branches that supports his claim. Yes, they are explicit in our claim that the water meeting the limbs all becomes 'used' (Musta'mal) according to what the Shaykh intended, for he was only hinting at the reasoning of the sixth branch.

[Urdu Section]: The sixth branch relates to a small pond in which water enters from one side and leaves from the other. This is because in each of these, there is a possibility that performing Wudu in it is based on the second meaning, i.e., by dipping the limbs. You have already known that this meaning is closer to the concept of being a vessel. And in 'Khaniyah' it was stated that there is a large pond into which impurity fell. Now, if the impurity is visible, then neither Wudu nor Ghusl is permissible from the spot where the impurity fell. Rather, one should move away from the place where the impurity fell to a distance equal to the size of a small pond. If the impurity is invisible, then our scholars and the scholars of Balkh stated that performing Wudu even from the spot where the impurity fell is permissible. It is evident that the second meaning is intended here because it is impossible for a person to perform Wudu outside the pond in such a way that his wash-water falls specifically into that spot in the pond where the impurity had fallen. Furthermore, in that case, there would be no reason for a difference between visible and invisible

impurity. And as you can see, this includes the sixth branch, because when the water entering it does not stay, it comes under the ruling of flowing water, and flowing water is not affected by the dipping of limbs.

[Footnote Note]: (Arabic): Interpreting Wudu and Ghusl as scooping (up water) and taking 'fi' (in) to mean 'min' (from) is far-fetched; sound taste rejects it. (Urdu): And to interpret Wudu and Ghusl as taking water in cupped hands and taking the word "in" to mean "from" is far-fetched; sound nature rejects it. (T)

[Footer]: 1. Fatawa Khaniyah, known as Qadi Khan, Chapter on Stagnant Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4. Page 214 of 711

[अरबी अनुभाग]: ...छोटा हौज जिसमें पानी प्रवेश करता है और बाहर निकलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन सभी में दूसरे अर्थ के अनुसार वज़ू करने की संभावना है, जिसका अर्थ है अंगों को डुबोना। आप पहले ही जान चुके हैं कि यह बर्तन (ज़र्फियत) होने के अधिक निकट है। 'अल-खानिया' में कहा गया है: एक बड़े हौज के संबंध में जहाँ गंदगी गिर गई है, यदि गंदगी दिखाई देने वाली (मरईया) है, तो उस विशेष स्थान पर वज़ू या गुस्ल करना जायज़ नहीं है। इसके बजाय, किसी को दूसरी तरफ हट जाना चाहिए ताकि उसके और गंदगी के बीच की दूरी एक छोटे हौज के आकार से अधिक हो। यदि गंदगी दिखाई नहीं दे रही है (गैर-मरईया), तो हमारे विद्वानों और बल्ख के विद्वानों ने कहा कि गंदगी वाले स्थान पर वज़ू करना जायज़ है। यह स्पष्ट है कि यहाँ जो अभिप्रेत है वह दूसरा अर्थ (डुबोना) है, क्योंकि हौज के बाहर वज़ू करने की पाबंदी का कोई अर्थ नहीं होगा इस तरह से कि इस्तेमाल किया गया पानी गंदगी के स्थान पर गिर जाए। उस स्थिति में दिखाई देने वाली और अदृश्य गंदगी के बीच अंतर करने का भी कोई कारण नहीं होगा। यह, जैसा कि आप देख रहे हैं, छठी शाखा को शामिल करता है; क्योंकि यदि इसमें गिरने वाला पानी नहीं रुकता बल्कि तुरंत निकल जाता है, तो उसे बहता हुआ पानी माना जाएगा, जैसा कि उल्लेख किया गया है। बहता हुआ पानी अंगों को डुबोने से प्रभावित नहीं होता है। यदि यह रुकता है और कुछ समय बाद ही निकलता है, तो यह स्थिर और छोटा है, इसलिए डुबोना इसे प्रभावित करेगा। इस प्रकार, उप-शाखाओं में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनके दावे का समर्थन करता हो। हाँ, वे हमारे इस दावे में स्पष्ट हैं कि अंगों से मिलने वाला सारा पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाता है, जैसा कि शेख का इरादा था, क्योंकि वह केवल छठी शाखा के तर्क की ओर इशारा कर रहे थे।

[उर्दू अनुभाग]: छठी उप-शाखा छोटे हौज से संबंधित है जिसमें एक तरफ से पानी प्रवेश करता है और दूसरी तरफ से निकलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इनमें से प्रत्येक में, एक संभावना है कि इसमें वज़ू करना दूसरे अर्थ पर आधारित है, यानी अंगों को डुबोकर। आप पहले ही जान चुके हैं कि यह अर्थ बर्तन होने के अधिक निकट है। और 'खानिया' में कहा गया था कि एक बड़ा हौज है जिसमें गंदगी गिर गई। अब यदि गंदगी दिखाई देने वाली है, तो उस स्थान से न तो वज़ू और न ही गुस्ल जायज़ है जहाँ गंदगी गिरी थी। बल्कि, उसे गंदगी गिरने के स्थान से एक छोटे हौज के आकार के बराबर की दूरी पर हट जाना चाहिए। यदि गंदगी अदृश्य है, तो हमारे विद्वानों और बल्ख के विद्वानों ने कहा कि जहाँ गंदगी गिरी है उस स्थान से भी वज़ू करना जायज़ है। यह स्पष्ट है कि यहाँ दूसरे अर्थ

का इरादा है क्योंकि एक व्यक्ति के लिए हौज के बाहर इस तरह से वज़ू करना असंभव है कि उसका धोवन हौज में विशेष रूप से उस स्थान पर गिरे जहाँ गंदगी गिरी थी। इसके अलावा, उस स्थिति में, दृश्य और अदृश्य गंदगी के बीच अंतर का कोई कारण नहीं होगा। और जैसा कि आप देख सकते हैं, इसमें छठी शाखा शामिल है, क्योंकि जब इसमें प्रवेश करने वाला पानी नहीं रुकता है, तो यह बहते पानी के नियम के तहत आता है, और बहता पानी अंगों को डुबोने से प्रभावित नहीं होता है।

[मध्य नोट अनुभाग]: (अरबी): वज़ू और गुस्ल को अंजुलि (चुल्लू) में पानी लेने के रूप में व्याख्या करना, और "में" (फी) को "से" (मिन) के रूप में व्याख्या करना दूर की बात है और स्वस्थ विवेक इसे खारिज करता है। (उर्दू): और वज़ू और गुस्ल को चुल्लू में पानी लेने के रूप में व्याख्या करना और शब्द "में" को "से" के अर्थ में लेना दूर की बात है; स्वस्थ स्वभाव इसे नकारता है। (त)

[फुटर]: 1. फतावा खानिया, जिसे काजी खान के नाम से जाना जाता है, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4। पृष्ठ 711 का 214

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

[عربی متن]: صغير يدخل فيه الماء ويخرج وذلك لان كلها يحتمل الوضوء فيه بالمعنى الثاني اعنى بغمس الاعضاء وقد علمت انه الاقرب الى الظرفية وقد قال فى الخانية حوض كبير وقعت فيه النجاسة ان كانت النجاسة مرئية لايجوز الوضوء ولا الاغتسال في ذلك الموضع بل يتنحى الى ناحية اخرى بينه وبين النجاسة اكثر من الحوض الصغير وان كانت غير مرئية قال مشائخنا ومشائخ بلخ جاز الوضوء في موضع النجاسة اهـ فليس بخاف ان المراد عه المعنى الثانى اذلا معنى لعدم جواز الوضوء خارج الحوض بحيث تقع الغسالة في موضع النجاسة ولا وجه على هذا للفرق بين المرئية وغيرها وهذا كما ترى يشمل الفرع السادس فانه اذالم يسقع ما يقع فيه من الماء بل يخرج من ساعته كان جارياً كما ذكر والجارى لايتأثر بالغمس واذا كان يستقر ولا يخرج الا بعد زمان كان راكدا وهو صغير فيضره الغمس فليس في الفروع شيئاً مما يفيد دعواه نعم هى صريحة في دعونا ان الملاقى كله يصير مستعملا اماماً اراد الشيخ فانما يلمح اليه تعليل الفرع السادس

[اردو متن]: چھٹی فرع جو چھوٹے حوض سے متعلق ہے جس میں ایک طرف سے پانی داخل ہو کر دوسری طرف سے نکل جاتا ہو کیونکہ ان میں سے ہر ایک میں اس امر کا احتمال ہے کہ اس میں وضو کرنا دوسرے معنی کے اعتبار سے ہو، یعنی اعضاء کو ڈبو کر، اور تم جان چکے ہو کہ یہی معنیٰ ظرفیت کے زیادہ قریب ہیں۔ اور خانیہ میں فرمایا کہ ایک بڑا حوض ہے جس میں نجاست گر گئی اب اگر نجاست مرئیہ ہے تو اس سے نہ وضو جائز ہے نہ غسل، اس جگہ سے جہاں نجاست گری ہے بلکہ وہ نجاست گرنے کی جگہ سے ایک چھوٹے حوض کے فاصلہ کی مقدار میں دور ہو جائے، اور اگر وہ نجاست غیر مرئیہ ہے تو ہمارے مشائخ اور بلخ کے مشائخ نے فرمایا جہاں نجاست گری ہے وہاں سے بھی وضو کرنا جائز ہے ہو ظاہر ہے کہ یہاں دوسرے معنی مراد

ہیں کیونکہ یہ تو ہو نہیں سکتا کہ آدمی حوض کے باہر اس طرح وضو کرے کہ اس کا دھون حوض میں خاص اس جگہ کرے جہاں نجاست گری تھی، اور پھر اس صورت میں مرئیہ اور غیر مرئیہ کے درمیان فرق کی کوئی وجہ نہیں، اور یہ جیسا کہ آپ دیکھ رہے ہیں چھٹی فرع کو شامل ہے، کیونکہ جب اس میں جانے والا پانی ٹھہرا نہیں، تو یہ جاری پانی کے حکم میں ہو گیا اور جاری پانی اعضاء کے ڈبونے سے متاثر نہیں ہوتا ہے،

[حاشیہ نوٹ]: عه وحمل الوضوء والاغتسال على الاغتراف وفى على من بعيد يا بأه الذوق السليم اه منه م) اور وضو اور غسل کو چلو سے لینے پر محمول کرنا اور "فی" کو "من" کے معنی میں کرنا بعید ہے، ذوق سلیم اس سے انکار کرتا ہے اہ (ت)

[فٹر]: 1 فتاوی خانیہ المعروف بقاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۴/۱ Page 214 of 711

(Arabic Text): Mentioned in Al-Khaniya for the addition of the term 'musta'mal' (used water). If it were not added, it would return to what we mentioned that if the water does not settle in it, it is considered flowing. Similarly, the reasoning of Al-Hasiri, and you (1) have known what your Sheikh, the Absolute Researcher, provided in a branch in Al-Khaniya that it is based on the used water being impure (najis), and similarly many such examples. However, according to the preferred narration that it is pure but not purifying, then let it be preserved to derive branches from it, and no fatwa should be given based on such branches ^1. If this is the case for the branches, then what about the reasonings?

And I say: The referral of Al-Khaniya to the settlement of used water potentially builds upon one of two weak opinions: the impurity of used water, or the water losing its purifying quality by the falling of used water even if it is a little. This is determined in the speech of Al-Hasiri, and both are contrary to the correct reliable view as per the clarification of the senior scholars, including the Sheikh himself in this very treatise as will come soon, Insha Allah. Here, the Sheikh has spoiled for us what we intended to interpret his speech upon, that what is meant is wudu with five [waters], as for the branches...

(Urdu Text): And if it stays and then comes out after a short while, then it has settled; so in the case of the pool being small, it will be harmful. Thus, none of the branches are useful for their claim. Yes, these branches are explicit in our claim that every meeting [water] will become 'musta'mal'. And what the Sheikh intends is indicated in the reasoning of the sixth branch of Khaniya because they have added the word 'musta'mal'. If they had not added this word, its meaning would also come out as: when the water does not settle in it, it is flowing. And this is the case with Al-Hasiri's reasoning. And you have known that what your Sheikh, the Absolute Researcher, stated in the branch of Khaniya is based on used water being impure. And the state of many of its parallels is similar. And if the preferred narration is taken, in which this water is declared pure but not purifying, then it would not be so. This should be remembered and branches should be derived upon it, and fatwa should not be given on such branches. Ends. When this is the state of the branch, then what will be the state of the reasonings!

I say, Al-Khaniya's referring to the settlement of used water is based on one of two weak points: either the impurity of used water or the water's loss of purifying quality

due to the addition of used water, no matter how small the amount. And this is also determined in the words of Al-Hasiri. And according to the correction of the elders, both of these are against the correct reliable [view]. Even the Sheikh himself has clarified this in this very treatise, as will soon come, God willing. In this way, the solution we had found for the Sheikh's speech...

---

^1 Fath al-Qadir, before the discussion of the Great Pond, Sukkur, 1/70.

(अरबी पाठ): अल-खानिया में 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) शब्द जोड़ने के लिए उल्लेख किया गया है। यदि इसे न जोड़ा जाता, तो यह उस बात पर वापस लौट जाता जिसका हमने उल्लेख किया था कि यदि पानी उसमें नहीं ठहरता है, तो वह प्रवाहित माना जाता है। इसी तरह अल-हसीरी का तर्क है, और आप (1) जान चुके हैं कि आपके शेख, मुतलक़ शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़े मुतलक़) ने अल-खानिया की एक शाखा में क्या लाभ पहुँचाया है कि यह प्रयुक्त जल के अशुद्ध (नजिस) होने पर आधारित है, और इसी तरह के कई उदाहरण हैं। लेकिन पसंदीदा वर्णन (रिवायत) के अनुसार कि वह शुद्ध है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है, तो इसे सुरक्षित रखा जाए ताकि उससे शाखाएँ निकाली जा सकें और ऐसी शाखाओं पर फतवा न दिया जाए ^1। यदि शाखाओं का यह हाल है, तो तर्कों का क्या हाल होगा!

और मैं कहता हूँ: अल-खानिया का प्रयुक्त जल के ठहराव (इस्तिक़रार) पर आधारित होना दो कमजोर मतों में से एक पर आधारित होने की संभावना रखता है: प्रयुक्त जल की अशुद्धता, या प्रयुक्त जल के गिरने से पानी का शुद्ध करने का गुण समाप्त हो जाना, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो। यह अल-हसीरी के कलाम में निर्धारित है, और दोनों वरिष्ठ विद्वानों के स्पष्टीकरण के अनुसार सही विश्वसनीय मत के विरुद्ध हैं, यहाँ तक कि खुद शेख ने भी इसी शोध-पत्र (रिसाला) में स्पष्ट किया है जैसा कि जल्द ही आएगा, इंशा अल्लाह। यहाँ शेख ने हमारे लिए वह बिगाड़ दिया जिसे हम उनके कलाम पर लागू करना चाहते थे कि इसका अर्थ पाँच [पानी] से वज़ू है, जहाँ तक शाखाओं का प्रश्न है...

(उर्दू पाठ): और यदि वह ठहरकर थोड़ी देर में निकलता है, तो वह ठहरा हुआ है; तो हौज (कुंड) के छोटे होने की स्थिति में यह उसे नुकसान पहुँचाएगा। अत; शाखाओं में से कोई भी उनके दावे के लिए उपयोगी नहीं है। हाँ, ये शाखाएँ हमारे दावे में स्पष्ट हैं कि प्रत्येक मिलने वाला [जल] 'मुस्तअमल' हो जाएगा। और शेख का जो उद्देश्य है, उसकी ओर खानिया की छठी शाखा के तर्क में संकेत है क्योंकि उन्होंने 'मुस्तअमल' शब्द जोड़ा है। यदि वे यह शब्द न बढ़ाते, तो इसका अर्थ भी यही निकलता कि जब पानी उसमें नहीं ठहरता है, तो वह प्रवाहित है। और यही हाल हसीरी के तर्क का है। और आप जान चुके हैं कि खानिया की शाखा में आपके शेख मुतलक़ शोधकर्ता ने जो कहा है, वह प्रयुक्त जल के अशुद्ध होने पर आधारित है। और इसके कई समान उदाहरणों का भी यही हाल है। और यदि वह पसंदीदा वर्णन लिया जाए जिसमें इस पानी को शुद्ध लेकिन शुद्ध न करने वाला घोषित

किया गया है, तो ऐसा नहीं होगा। इसे याद रखा जाए और इसी पर उप-नियम (तफ़रीआत) बनाए जाएँ, और ऐसी शाखाओं पर फतवा न दिया जाए। इति। जब शाखा का यह हाल है, तो तर्कों का क्या हाल होगा!

मैं कहता हूँ, खानिया का प्रयुक्त जल के ठहराव पर आधारित होना दो में से किसी एक कमजोर बात पर आधारित है: या तो प्रयुक्त जल की अशुद्धता या प्रयुक्त जल के मिल जाने के कारण पानी का शुद्धिकरण गुण से बाहर हो जाना, चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो। और हसीरी के शब्दों में भी यही तय है। और बड़ों के सुधार (तस्हीह) के अनुसार ये दोनों सही विश्वसनीय [मत] के विरुद्ध हैं। यहाँ तक कि शेख ने खुद भी इसी रिसाले में इसकी स्पष्टता की है जैसा कि जल्द ही आएगा, इंशा अल्लाह। इस तरह हमने शेख के कलाम का जो समाधान निकाला था...

---

^1 फ़तहुल क़दीर, अल-ग़दीर अल-अज़ीम की चर्चा से पहले, सुक्कुर, 1/70.

पृष्ठ 215/711

المذکور فی الخانیة لزیادة لفظ المستعمل ولولم یزده لرجع الی ما ذکرنا انه اذالم یستقر الماء فیه کان جاریاً وکذا تعلیل الحصیری وقد(۱) علمتم ما افاده شیخکم المحقق علی الاطلاق فی فرع فی الخانیة انه بناء علی کون المستعمل نجسا وکذا کثیر من اشباه هٰذا فاما علی المختار من روایة انه طاهر غیر طهور فلا فلتتحفظ لیفرع علیها ولا یفتی بمثل هذه الفروع ۱۸ اھ فاذا کان هٰذا فی الفروع فما بالك بالتعلیلات۔

وانا اقول: احالة الخانیة علی استقرار المستعمل یحتمل البناء علی احد ضعیفین نجاسة المستعمل اوخروج الماء عن الطهوریة بوقوع المستعمل وان قل وهو المتعین فی کلام الحصیری وکلاهما خلاف الصحیح المعتمد بتصریح اجلة الاکابر حتی الشیخ نفسه فی هذه الرسالة نفسها کما سیأتی ان شاء الله تعالی فههنا افسد الشیخ علینا ما اردنا حمل کلامه علیه من ان المراد الوضوء بالخمس اما الفروع

اور اگر وہ ٹھہر کر تھوڑی دیر میں خارج ہوتا ہے تو وہ ٹھہرا ہوا ہے، تو حوض کے چھوٹا ہونے کی صورت میں اس کو مضر ہوگا، تو فروع میں سے کوئی بھی ان کے دعویٰ کے حق میں مفید نہیں ہے ہاں یہ فروع ہمارے دعویٰ میں صریح ہیں کہ کل ملاقی مستعمل ہو جائے گا اور جو شیخ کی مراد ہے اس کی طرف خانیہ کی چھٹی فرع کی تعلیل میں اشارہ ہے کیونکہ انہوں نے مستعمل کے لفظ کا اضافہ کیا ہے اور اگر وہ یہ لفظ نہ بڑھاتے تو اس کا مفہوم بھی وہی نکلتا کہ جب پانی اس میں ٹھہرتا نہیں تو جاری ہے اور یہی حال حصیری کی تعلیل کا ہے، اور آپ جان چکے ہیں، خانیہ کی فرع میں جو تمہارے شیخ محقق علی الاطلاق نے فرمایا ہے وہ مستعمل پانی کے نجس ہونے پر مبنی ہے اور اسی طرح اس کے بہت سے نظائر کا حال ہے اور اگر مختار روایت لی جائے جس میں اس پانی کو طاہر غیر طہور قرار دیا گیا ہے تو ایسا نہ ہوگا، اس کو یاد رکھا جائے

اور اسی پر تفریعات کی جائیں اور ان جیسی فروع پر فتویٰ نہ دیا جائے اھ جب فرع کا یہ حال ہے تو تعلیلات کا کیا حال ہوگا !

میں کہتا ہوں خانیہ کا مستعمل پانی کے استقرار پر محول کرنا دو میں سے کسی ایک ضعیف چیز پر مبنی ہے یا تو مستعمل پانی کی نجاست یا پانی کا طہوریت سے خارج ہونا مستعمل پانی کے مل جانے کی وجہ سے خواہ وہ کتنا ہی کم ہو، اور حصیری کے کلام میں بھی یہی متعین ہے، اور اکابر کی تصحیح کے مطابق یہ دونوں صحیح معتمد کے خلاف ہیں، یہاں تک کہ شیخ نے خود بھی اسی رسالہ میں اس کی تصریح کی ہے جیسا کہ عنقریب آئے گا ان شاء اللہ تعالیٰ، اس طرح ہم نے شیخ کے کلام کا جو حل تلاش کیا تھا

---

۱ فتح القدیر قبیل بحث الغدیر العظیم سکھر ۱/۷۰

[Translation of Left Column (Arabic)]: It was not ideal, therefore, to resort to the words of the Imams and interpret them in a weak, unacceptable sense, given that a sound interpretation exists. And with Allah lies all success.

Then he, may Allah have mercy on him, established a chapter on the definition of used water (Musta'mal), what makes it used and what does not. Therein he mentioned what we previously stated from Al-Quduri, on the authority of Al-Jarjani, and from the 'Mabsut' of Shams al-A'imma al-Sarakhsi, that the ruling of water becoming 'used' is waived according to Imam Muhammad for someone who enters a well to retrieve a bucket out of necessity. Similarly, for a person in a state of ritual impurity (Junub) dipping their hand into a vessel (i.e., to scoop water when a scoop is unavailable, as mentioned before). But if the one seeking the bucket puts their leg into the well, or puts their leg or head into the vessel, it becomes used water due to the lack of necessity.

He said: I wish I knew what the response of those who rely on this issue (i.e., the issue that according to Imam Muhammad, the water does not become used for one who enters the well for a bucket) would be to the statements of these leading Imams! Then he mentioned what we previously cited from 'Al-Fawa'id al-Zahiriyya' on the authority of Shaykh al-Islam Khwahir Zadah, from Imam Muhammad. He said: This is an explicit narration from the Third Imam, reported by a figure like Khwahir Zadah. Then he cited the aforementioned text from 'Al-Kafi', noting that it recounted Al-Quduri's words without following them up with any critique. He said: So it has become clear to you through this that dipping one's hand into a small basin with the intention of performing Wudu therein strips the water of its purifying quality, because ritual impurity is removed and a state of worship is sought by dipping and withdrawing the hand, according to the consensus of our four scholars.

[Translation of Right Column (Urdu)]: That also could not be correct, meaning that Wudu refers to the immersion of limbs. As for secondary matters (Furoo'), we cannot interpret the words of the Imams in a weak sense when a sound interpretation is available. And success is through Allah.

Then he established a chapter on the definition of used water, in which he stated when water becomes used and when not. In this regard, he cited texts from Quduri, Jarjani, and the 'Mabsut' of Shams al-A'imma al-Sarakhsi, stating that according to Muhammad, a person entering a well to retrieve a bucket does not make the water

used due to necessity. Similarly, the case of a Junub person putting their hand in a tub when no small vessel is available. Likewise, if someone puts their foot in the well to retrieve a bucket, the ruling is the same. However, if this person puts their foot or head into a vessel, the water will become used as necessity is absent. He said: It is unknown what the response of those who argue from this issue (that according to Muhammad, retrieving a bucket from a well doesn't make water used) to the words of these Imams will be! Then he mentioned what we cited from 'Fawa'id al-Zahiriyya' from Shaykh al-Islam Khwahir Zadah on the authority of Muhammad. He said: this is an explicit narration from the third Imam, narrated by someone like Khwahir Zadah. Then the previous text of 'Kafi' was cited and Quduri's words were cited without being countered. He said: from this it became clear that...

[बाएँ कॉलम (अरबी) का अनुवाद]: इसलिए, इमामों के शब्दों का सहारा लेना और उनकी ऐसी व्याख्या करना जो कमज़ोर और अस्वीकार्य हो, उचित नहीं था, जबकि एक सही व्याख्या उपलब्ध है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

फिर उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) प्रयुक्त जल (मुस्तअमल पानी) की परिभाषा पर एक अध्याय बनाया, और उसमें यह बताया कि पानी कब प्रयुक्त हो जाता है और कब नहीं। इसमें उन्होंने वह सब उल्लेख किया जो हमने पहले अल-क़ुदूरी से अल-जुरजानी के माध्यम से और शम्स अल-आइम्मा अल-सरख़सी की 'मबसूत' से उद्धृत किया था, कि इमाम मुहम्मद के अनुसार, आवश्यकता के कारण कुएँ से बाल्टी निकालने के लिए उसमें उतरने वाले व्यक्ति पर पानी के प्रयुक्त होने का नियम लागू नहीं होता। इसी प्रकार, यदि कोई जुनुब व्यक्ति पात्र छोटा होने के कारण (अर्थात पानी निकालने के साधन के अभाव में) बर्तन में अपना हाथ डालता है। यदि बाल्टी निकालने वाला अपना पैर कुएँ में डाल दे, या कोई व्यक्ति अपना पैर या सिर बर्तन में डाल दे, तो पानी प्रयुक्त हो जाएगा क्योंकि वहाँ कोई आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने कहा: काश मुझे पता होता कि जो लोग इस मसले पर आधारित तर्क देते हैं (कि इमाम मुहम्मद के अनुसार कुएँ से बाल्टी निकालने के लिए उतरने से पानी प्रयुक्त नहीं होता), वे इन महान इमामों के वचनों का क्या उत्तर देंगे! फिर उन्होंने वह ज़िक्र किया जो हमने पहले 'फ़वाइद अल-ज़हीरिया' से शेख-उल-इस्लाम ख़्वाहर ज़ादा के माध्यम से इमाम मुहम्मद से रिवायत किया था। उन्होंने कहा: यह तीसरे इमाम से एक स्पष्ट रिवायत है, जिसे ख़्वाहर ज़ादा जैसे व्यक्ति ने रिवायत किया है। फिर उन्होंने 'अल-काफ़ी' का पिछला पाठ उद्धृत किया जिसमें अल-क़ुदूरी की बात दोहराई गई थी और उस पर कोई आपत्ति नहीं की गई थी। उन्होंने कहा: इससे आपको स्पष्ट हो गया कि वज़ू करने के इरादे से छोटे हौज में हाथ डालना पानी की पवित्रता के गुण को समाप्त कर देता है, क्योंकि हाथ डालने और निकालने से अपवित्रता दूर होती है और अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है, और इस पर हमारे चारों विद्वानों की सहमति है।

[दाएँ कॉलम (उर्दू) का अनुवाद]: वह भी सही न हो सका, अर्थात वज़ू से तात्पर्य अंगों को डुबोना है। और जहाँ तक शाखाओं (फ़ुरूअ) का प्रश्न है, हम ऐसा नहीं कर सकते कि इमामों के शब्दों को दुर्बल अर्थों में लें जबकि एक सही अर्थ उपलब्ध है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

फिर उन्होंने इस्तेमाल किए हुए पानी की परिभाषा में एक अध्याय बनाया, जिसमें उन्होंने बताया कि पानी कब इस्तेमाल किया हुआ माना जाता है और कब नहीं। इस संबंध में उन्होंने क़ुदूरी, जुरजानी और शम्स अल-आइम्मा सरख़सी की 'मबसूत' से लेख उद्धृत किए, जिसमें कहा गया है कि मुहम्मद के अनुसार, आवश्यकता के कारण कुएँ से बाल्टी निकालने के लिए उतरने वाले व्यक्ति का पानी इस्तेमाल किया हुआ नहीं होता। इसी तरह, छोटा बर्तन न होने की स्थिति में टब में हाथ डालने वाले जुनुब व्यक्ति का मामला है। इसी तरह, अगर कोई बाल्टी निकालने के लिए कुएँ में अपना पैर डालता है, तो नियम वही है। हालाँकि, यदि यह व्यक्ति बर्तन में अपना पैर या सिर डालता है, तो पानी इस्तेमाल किया हुआ माना जाएगा क्योंकि वहाँ आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा: यह अज्ञात है कि जो लोग इस मसले से तर्क करते हैं (कि मुहम्मद के अनुसार कुएँ से बाल्टी निकालने से पानी इस्तेमाल किया हुआ नहीं होता) वे इन इमामों के शब्दों का क्या जवाब देंगे! फिर उन्होंने वह उल्लेख किया जो हमने 'फ़वाइद अल-ज़हीरिया' से शेख-उल-इस्लाम ख़्वाहर ज़ादा के माध्यम से मुहम्मद से उद्धृत किया था। उन्होंने कहा: यह तीसरे इमाम से एक स्पष्ट रिवायत है, जिसे ख़्वाहर ज़ादा जैसे व्यक्ति ने बताया है। फिर 'काफ़ी' का पिछला लेख उद्धृत किया गया और क़ुदूरी की बात बिना किसी विरोध के उद्धृत की गई। उन्होंने कहा: इससे यह स्पष्ट हो गया कि...

[بائیں کالم (عربی عبارت) کی نقل]: فلیس الاولی بناء ان نعمد الی کلمات الائمة فنحملها علی محمل ضعیف غیر مقبول مع صحة الصحیح وبالله التوفیق۔ ثم عقد رحمه الله تعالی فصلا فی تعریف الماء المستعمل وما یصیر به مستعملا ومالا وذکر فیه ما قدمنا عن القدوری عن الجرجانی وعن مبسوط شمس الائمة السرخسی من ان سقوط حکم الاستعمال عند محمد فی من دخل البئر للدلو لاجل الضرورة وکذا ادخال الجنب یده فی الاناء (ای للاغتراف عند عدم ما یغترف به کما قدمنا) وطالب الدلو رجله فی البئر ولو ادخل رجله فی الاناء او رأسه صار مستعملا لعدم الحاجة قال فیالیت شعری ما جواب التمسك بهذه المسألة (ای مسألة من دخل البئر للدلو لم یستعمل عند محمد) عن کلام هؤلاء الائمة الاساطین ثم ذکر ما قدمنا عن الفوائد الظهیریة عن شیخ الاسلام خواهر زاده عن محمد قال وهذا نقل صریح عن الامام الثالث نقل مثل خواهر زاده ثم ذکر کلام الکافی المقدم و انه حکی کلام القدوری ولم یتعقبه قال فظهرلك بهذا ان ادخال الید فی الحوض الصغیر بقصد التوضی فیه سالب عن الماء وصف الطهوریة لارتفاع الحدث والتقرب بادخال الید ونزعها باتفاق علمائنا الاربعة

[دائیں کالم (اردو عبارت) کی نقل]: وہ بھی درست نہ ہوسکا، یعنی یہ کہ وضو سے مراد اعضاء کا ڈبونا ہے، اور جہاں تک فروع کا تعلق ہے تو ہم ایسا نہیں کرسکتے کہ ائمہ کے کلمات کو ضعیف محمل پر محمول کریں حالانکہ صحیح محمل بھی موجود ہو، وباللہ التوفیق۔ پھر انہوں نے مستعمل پانی کی تعریف میں ایک فصل قائم کی، اس میں یہ بتایا کہ کب پانی مستعمل ہوتا ہے اور کب نہیں، اور انہوں نے اس سلسلہ میں قدوری، جرجانی اور شمس الائمہ سرخسی کی مبسوط سے عبارات نقل کیں، اور بتایا کہ محمد کے نزدیک جو شخص کنوئیں سے ڈول نکالنے کیلئے داخل ہو اس سے پانی کا مستعمل نہ ہونا ضرورت کی وجہ سے ہے، اور اسی طرح جنب شخص کا چھوٹا برتن نہ

ہونے کی صورت میں ٹب میں ہاتھ کو داخل کرنے کا معاملہ ہے، اسی طرح کوئی شخص ڈول نکالنے کیلئے کنویں میں اپنا پیر ڈالے تو اس کا حکم وہی ہے، اگر یہ شخص اپنا پیر برتن میں ڈال دے یا سر ڈال دے تو پانی مستعمل ہو جائے گا کہ حاجت منعدم ہے، فرمایا معلوم نہیں جو اس مسئلہ سے استدلال کرتے ہیں ان کا جواب کیا ہوگا (یعنی یہ مسئلہ کہ محمد کے نزدیک کنوئیں سے ڈول نکالنے سے پانی مستعمل نہ ہوگا) ان ائمہ کے کلام کا! پھر انہوں نے وہ ذکر کیا جو ہم فوائد ظہیریہ سے شیخ الاسلام خواہر زادہ سے محمد سے روایت کو نقل کیا، فرمایا یہ صریح نقل ہے تیسرے امام سے اس کو خواہر زادہ جیسے شخص نے نقل کیا، پھر کافی کا گزشتہ کلام نقل کیا اور قدوری کا کلام نقل کیا مگر اس کا تعاقب نہ کیا، فرمایا اس سے ظاہر ہوا کہ

Fatawa Razawiya, Volume Two

(The three Imams and Zufar) - may Allah be pleased with them - intend that when it is devoid of the mentioned intention, it is ineffective according to a narration whose attribution to Muhammad is rejected. It was rejected by these pillars of the school (Madhab) whose views are prioritized over others. Then, the rejection of its attribution (1) to Muhammad was supported by the statement of Imam Qadhi Khan in the commentary of Al-Jami' al-Saghir: "There is no text (nass) from our companions in this regard." He said that the later scholars mentioned a difference of opinion in it. Then he narrated that some of our scholars said that according to Muhammad, the water becomes used (must'amal) by the removal of ritual impurity (hadath) as well, because sins are transferred to the water. The reason water does not become used in the issue of a person in a state of major ritual impurity (junub) entering a well according to Muhammad is due to necessity. Then he said: "By my life, I wonder at the one who says in our current issue that his basis for fatwa—permitting ablution in this tank—is the issue of the well, whereas there is no common point between them. Because the former is about someone devoid of intention, while this one is about someone performing ablution. How strange this is! And Allah is the Grantor of Success." Then he cited the words of his teacher in Al-Fath, which we mentioned in the first point, up to his words "as in Al-Khulasa" (1).

A person performing ablution putting their hand in a small tank with the intention of wudu will strip the water of its purifying quality because by putting the hand in and taking it out, according to the consensus of our four Imams (the three Imams and Zufar), the water's purifying quality will cease, due to the removal of ritual impurity and the attainment of spiritual proximity. When the mentioned intention is absent, it is ineffective according to one statement whose proof from Muhammad does not exist; the Imams of the Madhab have rejected it, and their word is final. Then, it was supported as not being Muhammad's statement by Imam Qadhi Khan's statement in the commentary of Al-Jami' al-Saghir that there is no 'nass' (text) from our companions in it. He said that the later scholars have mentioned a difference in this. Then he narrated that some among our scholars have said that according to Muhammad, water becomes used even by the removal of hadath, because sins are transferred to the water. And in the issue of the well, the non-becoming of water as used by the entry of a junub person is due to necessity according to Muhammad. Then he said: I am extremely surprised in this issue that they have made the issue of

the well the basis for their fatwa and given this fatwa that ablution in this tank is permissible, whereas both...

(At the beginning of the treatise, when books were mentioned, 'Al-Inayah' was mistakenly counted twice. So let this be the completion of forty, or rather what comes from 'Khazanat al-Muftin'. End of note. May Allah forgive him.)

At the beginning of the treatise where books are mentioned, 'Inayah' was counted twice by mistake. So, this should be the supplement for forty, rather it is what comes from 'Khazanat al-Muftin'. End. (T)

1. Commentary on Al-Jami' al-Saghir by Qadhi Khan and the treatise of Ibn Shuhna.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

(तीनों इमाम और ज़ुफ़र) - अल्लाह उन पर प्रसन्न हो - का आशय है कि जब वह उल्लेखित नियत (इरादे) से रहित हो, तो वह मुहम्मद (इमाम मुहम्मद) से संबंधित एक अस्वीकार्य कथन के अनुसार अप्रभावी है। इसे संप्रदाय के उन स्तंभों द्वारा अस्वीकार किया गया है जिनके विचार दूसरों पर प्राथमिकता रखते हैं। फिर, मुहम्मद (1) से इसके जुड़ाव की अस्वीकृति को अल-जामी अल-सगीर की व्याख्या में इमाम क़ाज़ी खान के कथन से समर्थन मिला: "इस संबंध में हमारे साथियों की ओर से कोई स्पष्ट पाठ (नस्स) नहीं है।" उन्होंने कहा कि बाद के विद्वानों ने इसमें मतभेद का उल्लेख किया है। फिर उन्होंने वर्णन किया कि हमारे कुछ विद्वानों ने कहा कि मुहम्मद के अनुसार, अनुष्ठानिक अशुद्धता (हदथ) को दूर करने से भी पानी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) हो जाता है, क्योंकि पाप पानी में स्थानांतरित हो जाते हैं। मुहम्मद के अनुसार कुएं में 'जुनुब' (प्रमुख अशुद्धता की स्थिति में व्यक्ति) के प्रवेश के मामले में पानी के प्रयुक्त न होने का कारण आवश्यकता है। फिर उन्होंने कहा: "मेरे जीवन की कसम, मुझे उस व्यक्ति पर आश्चर्य होता है जो हमारे वर्तमान मामले में कहता है कि उसके फतवे का आधार - इस टैंक में वज़ू की अनुमति देना - कुएं का मामला है, जबकि उनके बीच समानता का कोई बिंदु नहीं है। क्योंकि पूर्ववर्ती वह है जो नियत से रहित है, जबकि यह वह है जो वज़ू कर रहा है। यह कितना अजीब है! और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।" फिर उन्होंने अल-फतह में अपने शिक्षक के शब्दों को उद्धृत किया, जिनका हमने पहले बिंदु में उल्लेख किया था, उनके शब्दों तक "जैसा कि अल-खुलासा में है" (1)।

वज़ू करने वाले का छोटे हौज में हाथ को वज़ू की नियत से डालना पानी से 'तहूरियत' (पवित्र करने का गुण) को छीन लेगा क्योंकि हाथ डालने और निकालने से, हमारे चार इमामों (तीन इमाम और ज़ुफ़र) की सहमति के अनुसार, पानी का पवित्र करने वाला गुण समाप्त हो जाएगा, हदथ (अशुद्धता) के समाप्त होने और अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के कारण। और जब उल्लेखित नियत न हो तो वह एक कथन के अनुसार अप्रभावी है जिसका मुहम्मद से प्रमाण नहीं है; संप्रदाय के इमामों ने इसे अस्वीकार कर दिया है और उनका निर्णय अंतिम है। फिर, इसे मुहम्मद का कथन न होने के प्रमाण के रूप में इमाम क़ाज़ी खान के अल-जामी अल-सगीर की व्याख्या वाले इस कथन से समर्थन मिला कि इसमें हमारे साथियों का कोई 'नस्स' (पाठ) नहीं है। उन्होंने कहा कि बाद के विद्वानों ने इसमें मतभेद का उल्लेख किया है। फिर उन्होंने यह वर्णन किया कि हमारे कुछ विद्वानों ने कहा है कि मुहम्मद के अनुसार, हदथ के दूर होने से भी पानी प्रयुक्त हो जाता है, क्योंकि पाप पानी की ओर

स्थानांतरित हो जाते हैं। और कुएं के मामले में, जुनुब व्यक्ति के प्रवेश से पानी का प्रयुक्त न होना मुहम्मद के अनुसार आवश्यकता के कारण है। फिर उन्होंने कहा: मुझे इस मामले में बेहद आश्चर्य है कि उन्होंने कुएं के मामले को अपने फतवे का आधार बनाया है और यह फतवा दिया है कि इस हौज में वज़ू जायज़ है, जबकि दोनों...

(रिसाला की शुरुआत में, जहाँ किताबों का ज़िक्र है, 'इनाया' की गिनती गलती से दो बार हो गई है। अतः इसे चालीस की पूर्ति माना जाए, बल्कि वह जो 'खज़ानत अल-मुफ़्तीन' से आ रहा है। नोट समाप्त। अल्लाह उन्हें क्षमा करे।)

रिसाला के शुरू में जहाँ किताबों का ज़िक्र है, इनाया की गिनती सहवन (गलती से) दो बार की गई है। अतः चाहिए कि यह चालीस का समापन हो, बल्कि वह जो 'खज़ानत अल-मुफ़्तीन' से आ रहा है। समाप्त (त)

1. काज़ी खान द्वारा अल-जामी अल-सगीर की व्याख्या और इब्न शुहना का शोध प्रबंध।

पृष्ठ 217 / 711

(یرید الائمة الثلاثة وزفر) رضی اللہ عنہم واذا تجرد عن القصد المذکور فھو غیر مؤثر في قول مردود ثبوته عن محمد رده ھؤلاء الاساطین الذین لا یلتفت الی قول غیرھم في المذھب، ثم اید رد ثبوته (۱) عن محمد عه بقول الامام قاضی خان في شرح الجامع الصغیر لا نص فیه عن اصحابنا قال وذکر المتأخرون فیھا خلافا ثم حکی ان من علمائنا من قال ان الماء یصیر مستعملا عند محمد برفع الحدث ایضا لانتقال الاثام الی الماء وانما لم یصر ماء البئر مستعملا في مسألة الجنب عند محمد لمکان الضرورة ثم قال ولعمری انی لاعجب ممن یقول في مسألتنا ھذه ان مستنده في افتائه یجوز التوضی فی ھذا الحوض مسألة البئر والحال انه لا جامع بینھما لان تلك في من تجرد عن النیة وھذه فیمن یتوضأ ما ھذا الا عجیب واللہ الموفق ثم اورد کلام شیخه في الفتح الذي ذکرنا في النمرة الاولی الی قوله کذا فی الخلاصة ۱۔

وضو کرنے والے کا چھوٹے حوض میں ہاتھ کو داخل کرنا بہ نیت وضو پانی سے طہوریت کے وصف کو سلب کردے گا کیونکہ ہاتھ کے ڈال کر نکالنے سے ہمارے ائمہ اربعہ (ائمہ ثلاثہ وزفر) کے اتفاق سے پانی کا وصفِ طہوریت ختم ہوجائے گا، حدث کے ختم ہو جانے اور تقرب کے حاصل کرنے کی وجہ سے، اور جب قصد مذکور نہ ہو تو وہ غیر مؤثر ہے ایک قول کے مطابق جس کا ثبوت محمد سے نہیں ہے اس کو ائمہ مذہب نے رد کیا ہے جن کا قول فیصل ہے، پھر اس کو محمد کا قول نہ ہونے پر شرح جامع صغیر میں قاضی خان کے قول سے مؤید کیا ہے کہ اس میں ہمارے اصحاب کی کوئی نص نہیں، فرمایا کہ متاخرین نے اس میں اختلاف کا ذکر کیا ہے، پھر یہ حکایت کی کہ ہمارے علماء میں سے بعض نے فرمایا ہے کہ محمد کے نزدیک حدث کے مرتفع ہونے سے بھی پانی مستعمل ہو جاتا ہے، کیونکہ پانی کی طرف گناہ منتقل ہوتے ہیں، اور

کنویں کے مسئلہ میں جنب کے داخل ہونے سے پانی کا مستعمل نہ ہونا محمد کے نزدیک ضرورت کی وجہ سے ہے، پھر فرمایا مجھے بے انتہا تعجب ہے اس مسئلہ میں کہ انہوں نے اپنے فتویٰ کی سند کنویں کے مسئلہ کو بنایا ہے اور یہ فتویٰ دیا ہے کہ اس حوض میں وضو جائز ہے حالانکہ دونوں

عه وقع فی صدر الرسالة عند ذکر الکتب عد العنایة سهوا مرتین فلیکن هذا متم الاربعین بل الذی یأتی عن خزانة المفتین اه منه غفر له

شروعِ رسالہ میں جہاں کتابوں کا ذکر ہے عنایہ کا شمار سہواً دو دفعہ کیا ہے۔ پس چاہئے یہ چالیس کا تتمہ ہو بلالکہ وہ جو خزانہ المفتین سے آرہا ہے اھ (ت)

۱ شرح جامع الصغیر لقاضی خان اور رسالہ ابن شحنہ

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Right Column - Urdu Text] ...there is no comprehensive effective cause (illah jamiah) between them because that issue is about the absence of intention, while this one is where the intention for ablution exists. This is quite strange, and Allah is the Grantor of success. Then he mentioned the discourse of his Sheikh which we mentioned in the first 'namrah' up to 'as in Al-Khulasah'. I say: The entire discourse is good, and the text of Fawaid al-Zahiriyyah was taken from it, except for the saying "I am extremely surprised." Indeed, I am extremely surprised by him because when the Sheikh has verified that the correct view from Imam Muhammad is also that there is no difference between intention and its absence, then where did this distinction come from? Actually, he should have said that it is due to necessity, and this is without necessity. Then he established a 'tadhneeb' (supplementary note) in which he listed the branches (furu') regarding when water becomes used (musta'mal) and when it does not. Before that, he mentioned a 'tanbih' (caution/notice), in which he stated that the fatwa regarding the cause of usage (isti'mal) is based on the saying of the two Sheikhs (Abu Hanifa and Abu Yusuf), which is either the removal of ritual impurity (hadath) or seeking closeness to God (taqarrub). It is not based on the saying of Muhammad, which is that the cause is only 'taqarrub'. And he cited the authentication of their saying from al-Khulasah, al-Khaniyah, Khizanat al-Muftin, al-Ikhtiyar, and al-Bazzaziyah. I say: By the 'tanbih', his aim is to concede the disagreement of Muhammad, otherwise, after it has been proven that the first view is the saying of all of them and the second has not been proven from the third (Imam Muhammad), there is no need for it. Understand this, as it will benefit us in the issue. A branch from al-Khulasah and Khizanat [al-Muftin]: if someone puts their hand or foot in a vessel for cooling, [the water] becomes used (musta'mal) due to the absence of necessity...

[Left Column - Arabic Text] I say: All of it is good speech, and from it, the text of al-Fawaid al-Zahiriyyah (1) was taken, except for what he said: "By my life, I am indeed surprised." By my life, I am indeed surprised, as the Sheikh has verified that the correct view from Muhammad is also the lack of difference between intention and its absence, so what is the origin of this distinction? He should have only said that that is due to necessity and this is without it. Then he established a 'tadhneeb' listing the branches of what makes water used (musta'mal) and what does not. Before it, he provided a 'tanbih' (notice) stating that the fatwa regarding the cause of usage (isti'mal) is according to their (Abu Hanifa and Abu Yusuf) saying, that it is the

removal of hadath or taqarrub, not according to Muhammad's saying that it is only taqarrub. He cited the authentication of their saying from al-Khulasah, al-Khaniyah, Khizanat al-Muftin, al-Ikhtiyar, and al-Bazzaziyah. I say: He intended by the tanbih to concede the disagreement of Muhammad, otherwise there is no need for it after it has been proven that the first is the saying of all of them and that the second has not been proven from the third. This, and among what benefits us in the issue is a branch in al-Khulasah and Khizanat al-Muftin: [if] he put his hand or foot in the vessel for cooling, it becomes musta'mal due to the absence of necessity. [End quote] And we have mentioned it before.

[Footnote] 1 Khulasat al-Fatawa, Chapter on Used Water, Naval Kishore Lucknow, 1/2.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दोयम (भाग 2)

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] ...उनके बीच कोई व्यापक प्रभावी कारण (इल्लत जामिया) मौजूद नहीं है क्योंकि वह मसला नियत के न होने का है और यह वह है जिसमें वुज़ू की नियत पाई जाती है। यह बड़ी अजीब बात है, और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। फिर उन्होंने अपने शेख का कलाम ज़िक्र किया जो हमने पहले 'नमराह' में ज़िक्र किया था 'कज़ा फ़िल खुलासा' तक। मैं कहता हूँ: सारा कलाम अच्छा है और इसी से 'फ़वाइद ज़हीरिया' की इबारत ली गई है सिवाय इस कौल के कि "मुझे बेइंतहा ताज्जुब है"। तो मुझे उन पर बेइंतहा ताज्जुब है क्योंकि जब शेख ने यह तहकीक की है कि इमाम मुहम्मद से सहीह यह है कि नियत और अदम-नियत में कोई फ़र्क नहीं, तो यह फ़र्क कहाँ से आ गया? असल में उनको यह कहना चाहिए था कि वह ज़रूरत की वजह से है और यह बिला ज़रूरत है। फिर एक 'तज़नीब' (परिशिष्ट) कायम किया जिसमें उन फ़ुरू (शाखाओं) का ज़िक्र किया है जिनमें पानी मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) होता है और नहीं होता है। उससे पहले एक 'तन्बीह' (चेतावनी) ज़िक्र की, उसमें यह बताया है कि इस्तेमाल के सबब में फतवा 'शैखैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ) के कौल पर है, और वह सबब या तो 'रफ़-ए-हदस' (अशुद्धि दूर करना) है या 'तक़र्रुब' (ईश्वर की निकटता) है। इमाम मुहम्मद के कौल पर नहीं है कि सबब सिर्फ'तक़र्रुब' है। और उन्होंने उन दोनों के कौल की तस्हीह (पुष्टि) 'खुलासा', 'खानिया', 'खज़ानतुल मुफ़्तीन', 'इख़्तियार' और 'बज़ज़िया' से नक़ल की है। मैं कहता हूँ: 'तन्बीह' से उनका मक्सद इमाम मुहम्मद के खिलाफ को तस्लीम करना है, वरना इस बात के साबित हो जाने के बाद कि पहला सब ही का कौल है, इसकी ज़रूरत नहीं है और दूसरा तीसरे से साबित नहीं है। इसको समझिये कि यह हमें मसले में फायदा देगा। 'खुलासा' और 'खज़ाना' की एक फ़ुरू: किसी ने अपना हाथ या पैर बर्तन में ठंडा करने के लिए डाला तो पानी मुस्तअमल हो जाएगा क्योंकि ज़रूरत...

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] अकुल (मैं कहता हूँ): यह सब अच्छी बातें हैं और उन्हीं से 'फ़वाइद ज़हीरिया' (1) की इबारत ली गई है, सिवाय इसके कि उन्होंने कहा: "मेरी उम्र की कसम, मुझे वाकई ताज्जुब है।" मेरी उम्र की कसम, मुझे वाकई ताज्जुब है, क्योंकि जब शेख ने यह पुख्ता कर दिया कि मुहम्मद से सहीह रिवायत यही है कि नियत होने और न होने में कोई फर्क नहीं है, तो इस फर्क की बुनियाद क्या है? उन्हें बस यह कहना चाहिए था कि वह ज़रूरत के लिए है और यह उसके बिना है। फिर उन्होंने एक तज़नीब (परिशिष्ट) बनाई जिसमें उन शाखाओं को सूचीबद्ध किया गया है जिनसे पानी मुस्तअमल हो जाता है और जिनसे नहीं होता। उससे पहले उन्होंने एक तन्बीह (सूचना) दी कि

इस्तेमाल के कारण के बारे में फतवा उनके(शैखैन) के कौल पर है कि यह रफ़-ए-हदस या तक़र्रुब है, न कि मुहम्मद के कौल पर कि यह सिर्फ तक़र्रुब है। उन्होंने अल-खुलासा, अल-खानिया, खज़ानतुल मुफ़्तीन, अल-इख़्तियार और अल-बज़ज़िया से उनके कौल की तस्हीह नक़ल की है। अकुल (मैं कहता हूँ): उन्होंने तन्बीह से मुहम्मद के मतभेद को स्वीकार करना चाहा है, अन्यथा इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी जब यह साबित हो गया कि पहला उन सबका कौल है और दूसरा तीसरे (मुहम्मद) से साबित नहीं है। यह, और जो हमें मसले में लाभ पहुँचाता है वह अल-खुलासा और खज़ानतुल मुफ़्तीन की एक शाखा है: उसने ठंडा करने के लिए बर्तन में अपना हाथ या पैर डाला तो वह मुस्तअमल हो जाता है क्योंकि ज़रूरत नहीं है। इलतहा (समाप्त)। और हमने इसे पहले ज़िक्र किया है।

[पाद-टिप्पणी] 1 खुलासातुल फ़तावा, पानी के इस्तेमाल पर अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/2.
पृष्ठ 711 में से 218

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم - اردو متن] کے درمیان کوئی علت جامع موجود نہیں کیونکہ وہ مسئلہ نیت کے نہ ہونے کا ہے اور یہ وہ ہے جس میں نیت وضو پائی جاتی ہے یہ بڑی عجیب بات ہے واللہ الموفق۔ پھر انہوں نے اپنے شیخ کا کلام ذکر کیا جو ہم نے نمرہ اولیٰ میں ذکر کیا کذا فی الخلاصہ تک۔ میں کہتا ہوں سارا کلام اچھا ہے اور اسی سے فوائد ظہیریہ کی عبارت لی گئی ہے سوائے اس قول کے کہ "مجھے بے انتہا تعجب ہے"۔ تو مجھے ان پر بے انتہا تعجب ہے کیونکہ جب شیخ نے یہ تحقیق کی ہے کہ محمد سے صحیح یہ ہے کہ نیت اور عدم نیت میں کوئی فرق نہیں، تو یہ فارق کہاں سے آگیا، دراصل ان کو کہنا یہ چاہئے تھا کہ وہ ضرورت کی وجہ سے ہے اور یہ بلا ضرورت ہے، پھر ایک تذنیب قائم کی اس میں ان فروع کا ذکر کیا ہے جن میں پانی مستعمل ہوتا ہے اور نہیں ہوتا ہے اس سے پہلے ایک تنبیہ ذکر کی، اس میں یہ بتایا ہے کہ سبب استعمال میں فتویٰ شیخین کے قول پر ہے اور وہ سبب یا تو رفع حدث ہے یا تقرب ہے، محمد کے قول پر نہیں ہے کہ سبب صرف تقرب ہے اور انہوں نے اُن دونوں کے قول کی تصحیح نقل کی خلاصہ، خانیہ، خزانۃ المفتین، اختیار اور بزازیہ سے۔ میں کہتا ہوں تنبیہ سے ان کا مقصود محمد کے خلاف کو تسلیم کرنا ہے، ورنہ اس بات کے ثابت ہو جانے کے بعد کہ پہلا سب ہی کا قول ہے اس کی حاجت نہیں ہے اور دوسرا تیسرے سے ثابت نہیں، اس کو سمجھئے کہ یہ ہمیں مسئلہ میں فائدہ دے گا، خلاصہ اور خزانہ کی فرع، کسی نے اپنا ہاتھ یا پیر برتن میں ٹھنڈا کرنے کو ڈالا تو مستعمل ہو جائیگا کہ ضرورت

[بایاں کالم - عربی متن] اقول: کلہ کلام طیب وعنہ اخذت عبارۃ الفوائد الظھیریۃ (۱) غیر ان ما قال في لعمری انی لاعجب فلعمری انی لاعجب واذ قد حقق الشیخ ان الصحیح عن محمد ایضاً عدم الفرق

بين النية وعدمها فبما منشؤ هذا الفارق وانما كان عليه ان يقول تلك للضرورة وهذه بدونها ثم عقد تذنيباً يسرد فروع ما يصير به الماء مستعملاً ومالاً وقدم عليها تنبيها فى ان الفتوى فى سبب الاستعمال على قولهما انه رفع حدث او التقرب لاعلى قول محمد انه التقرب فقط ونقل تصحيح قولهما عن الخلاصة والخانية وخزانة المفتين والاختيار والبزازية۔ اقول: اراد التنبيه عليه على تسليم خلاف محمد والا فلا حاجة اليه بعدما قد ثبت ان الاول قولهم جميعاً وان الثاني لم يثبت عن الثالث هذا وفيه مما يفيدنا فى المسألة فرع الخلاصة وخزانة المفتين ادخل يده في الاناء اورجله للتبرد يصير مستعملا لانعدام الضرورة اهـ وقدمناه

[حاشيہ] 1 خلاصۃ الفتاوی فصل فی الماء المستعمل نولکشور لکھنؤ ۲/۱ Page 218 of 711

Fatawa Razawiya Volume Two

(Left Column) From Al-Khulasa, Al-Khaniya, Al-Bazzaziya, and Al-Ghuniya. A subsidiary issue (far') from Al-Khaniya: Muhammad (may Allah have mercy on him) said if there are splints on someone's forearms and they dip them in water or dip their head into the vessel, it is not permissible and the water becomes used (must'amal). Ah. He said: I have put forward this warning to alert those who think that the verdict (Fatwa) follows the opinion of Muhammad (may Allah have mercy on him) in this regard, because the authors of the books have generally stated that the verdict follows his opinion regarding used water. Their intention is only that the verdict follows his opinion regarding its purity, not regarding what makes it used water, as will be discussed in the second section that the research is that this (meaning its purity) is also the school of Abu Hanifa, and its attribution to Muhammad became famous only because he is among those who narrated it from the Imam. Ah. I say: Meaning he is the most honorable of those who narrated it and he acted upon it. This is the first of the two corrections promised to be explained. Then he listed the subsidiary issues, and among them is what benefits us from a branch of Al-Khulasa: that inserting the palm alone does not make the water used if washing was not intended, but rather the intention was to lift water. If washing was intended, then if it is a finger or more but less than the palm, it does not harm, but with the full palm it is the opposite. Ah.

(Right Column) ...was not, Ah. We have presented from Khulasa, Khaniya, Bazzaziya, and Ghuniya. A branch of Khaniya: Muhammad said if someone has bandages on their hands, then they dip that hand in water or dip their head, it is not permissible, and the water will become used, Ah. And he said, I have made this warning so that those people who think that the Fatwa is on Muhammad's saying may be alert because the authors of the books have stated generally that the Fatwa is on his saying regarding used water. Although their intention is that the Fatwa is on Muhammad's saying regarding the water being pure and not regarding it being used. Furthermore, you will see in the second section that the research is that this (meaning its purity) is also the school of Abu Hanifa, its attribution towards Muhammad has become famous merely because he is also among its narrators, Ah. I say they are the greatest among its narrators and they have adopted it and this is the first correction of the two we promised to explain, then described the branches. A branch of Khulasa: entering the hand merely to take water, without the intention of washing, does not make the water used, and if it is with the intention of washing,

then if it is less than one palm it is not harmful, and if it is one palm then it is harmful, Ah.

1. Fatawa Khaniya known as Qazi Khan, Section on Used Water, Naval Kishore Lucknow 1/8
2. Risala Ibn al-Shihna
3. Khulasa-tul-Fatawa, Section on Used Water, Naval Kishore Lucknow 1/6 Page 219 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

(बायां कॉलम) अल-ख़ुलासा, अल-ख़ानिया, अल-बज़ज़िया और अल-ग़ुनिया से उद्धृत। अल-ख़ानिया का उप-मसला (फ़र'): मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़रमाया कि यदि किसी की कलाइयों पर पट्टियाँ (ज़बाइर) हों और वह उन्हें पानी में डुबो दे या अपना सिर बर्तन में डुबो दे, तो यह जायज़ नहीं है और पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाता है। उन्होंने कहा: मैंने यह चेतावनी उन लोगों को सचेत करने के लिए दी है जो समझते हैं कि फ़तवा इस मामले में मुहम्मद (रह.) के कथन पर आधारित है, क्योंकि पुस्तकों के लेखकों ने सामान्य तौर पर कहा है कि मुस्तअमल पानी के बारे में फ़तवा उनके कथन पर है। उनका उद्देश्य केवल यह है कि फ़तवा उनके कथन पर इसके ताहिर (शुद्ध) होने के बारे में है, न कि इसमें कि क्या चीज़ इसे मुस्तअमल बनाती है। जैसा कि दूसरे अध्याय में आएगा कि शोध यह है कि यह (अर्थात इसकी पाकी) इमाम अबू हनीफ़ा का भी मज़हब है, और मुहम्मद की ओर इसकी प्रसिद्धि केवल इसलिए हुई क्योंकि वह इमाम से इसके रावीयों (वर्णनकर्ताओं) में से एक हैं। 'अह'। मैं कहता हूँ: अर्थात् वह इसके रावीयों में सबसे श्रेष्ठ हैं और उन्होंने इसे अपनाया है। यह उन दो सुधारों में से पहला है जिनका वादा किया गया था। फिर उन्होंने उप-मसलों का वर्णन किया, जिनमें अल-ख़ुलासा का एक उप-मसला हमारे काम का है: केवल हथेली का पानी में डालना पानी को मुस्तअमल नहीं बनाता यदि इरादा स्नान (ग़ुस्ल) का न हो बल्कि केवल पानी उठाने का हो। यदि स्नान का इरादा हो, तो यदि वह एक उँगली या उससे अधिक हो लेकिन पूरी हथेली से कम हो तो कोई समस्या नहीं है, लेकिन पूरी हथेली के साथ मामला इसके विपरीत है (नुकसानदेह है)। 'अह'।

(दायां कॉलम) ...नहीं थी 'अह'। हमने ख़ुलासा, ख़ानिया, बज़ज़िया और ग़ुनिया से पेश कर दिया है। ख़ानिया का एक मसला: मुहम्मद ने फ़रमाया कि किसी के हाथ पर पट्टियाँ हों, फिर वह हाथ पानी में डुबो दे या सिर डुबो दे तो जायज़ नहीं, और पानी मुस्तअमल हो जाएगा 'अह'। और फ़रमाया मैंने यह चेतावनी इसलिए दी है ताकि जो लोग समझते हैं कि फ़तवा मुहम्मद के कौल पर है वे सावधान हो जाएं क्योंकि किताब के लेखकों ने आम तौर पर कहा है कि फ़तवा उनके कौल पर मुस्तअमल पानी के बारे में है। हालाँकि उनकी मुराद यह है कि फ़तवा मुहम्मद के कौल पर पानी के ताहिर होने के बारे में है न कि मुस्तअमल होने के बारे में। इसके अलावा आप दूसरी फ़स्ल (अध्याय) में देखेंगे कि तहकीक़ (शोध) यही है कि यह (यानी इसकी तहारत) मज़हबे अबू हनीफ़ा भी है, इसकी निसबत मुहम्मद की तरफ़ महज़ इसलिए मशहूर हो गई है कि वह भी इसके रावीयों में हैं 'अह'। मैं कहता हूँ

वह इसके रावीयों में बुज़ुर्ग-तर (महान) हैं और उन्होंने इसको इख़्तियार किया है और यह पहली तसहीह (सुधार) है जिन दो का हमने वादा किया था, फिर फ़रुअ (उप-मसलों) का बयान किया। ख़ुलासा का मसला: हाथ का दाख़िल करना महज़ पानी लेने के लिए, बिला इरादा-ए-ग़ुस्ल, पानी को मुस्तअमल नहीं करता है, और अगर ब-नीयत-ए-ग़ुस्ल हो तो अगर एक हथेली से कम है तो मुज़िर (हानिकारक) नहीं, और अगर एक हथेली है तो मुज़िर है 'अह'।

1 फ़तावा ख़ानिया मारूफ़ ब-काज़ी ख़ान फ़स्ल फ़िल मा-इल मुस्तअमल नवलकिशोर लखनऊ 8/1 2 रिसाला इब्न अश-शिहना 3 ख़ुलासा-तुल-फ़तावा फ़स्ल फ़िल मा-इल मुस्तअमल नवलकिशोर लखनऊ 6/1 पृष्ठ 219 का 711

(دائیں کالم) نہ تھی اھ، ہم نے خلاصہ، خانیہ، بزازیہ، اور غنیہ سے پیش کر دیا ہے۔ خانیہ کی فرع، محمد نے فرمایا کسی کے ہاتھ پر پٹّیاں ہوں، پھر وہ ہاتھ پانی میں ڈبودے یا سر ڈبودے تو جائز نہیں، اور پانی مستعمل ہو جائیگا اھ اور فرمایا میں نے یہ تنبیہ اس لئے کی ہے تاکہ جو لوگ سمجھتے ہیں کہ فتوٰی محمد کے قول پر ہے وہ متنبہ ہو جائیں کیونکہ اصحاب کتب نے اطلاق فرمایا ہے کہ فتوٰی ان کے قول پر ہے مستعمل پانی میں۔ حالانکہ ان کی مراد یہ ہے کہ فتوٰی محمد کے قول پر ہے پانی کے طاہر ہونے میں نہ کہ مستعمل ہونے میں۔ علاوہ ازیں آپ دوسری فصل میں دیکھیں گے کہ تحقیق یہی ہے کہ یہ (یعنی اس کی طہارت) مذہب ابی حنیفہ بھی ہے، اس کی نسبت محمد کی طرف محض اس لئے مشہور ہو گئی ہے کہ وہ بھی اس کے راویوں میں ہیں اھ میں کہتا ہوں وہ اس کے راویوں میں بزرگ تر ہیں اور انہوں نے اس کو اختیار کیا ہے اور یہ پہلی تصحیح ہے جن دو کا ہم نے وعدہ کیا تھا، پھر فروع کا بیان کیا۔ خلاصہ کی فرع، ہاتھ کا داخل کرنا محض پانی لینے کیلئے، بلا ارادہ غسل، پانی کو مستعمل نہیں کرتا ہے، اور اگر بہ نیت غسل ہو تو اگر ایک ہتھیلی سے کم ہے تو مضر نہیں، اور اگر ایک ہتھیلی ہے تو مضر ہے اھ

(بائیں کالم) عن الخلاصة والخانية والبزازية والغنية۔ وفرع الخانية قال محمد رحمه الله تعالیٰ اذا كان على ذراعيه جبائر فغمسها في الماء اوغمس رأسه في الاناء لا يجوز ويصير الماء مستعملا اھ قال وانما قدمت هذا التنبيه تنبيها لمن يظن ان الفتوى على قول محمد رحمه الله تعالیٰ في ذلك لا طلاق اصحاب الكتب ان الفتوى على قوله في الماء المستعمل وانما مرادهم ان الفتوى على قوله في كونه طاهراً لا فيما يصير به مستعملا على انه سيرد علیہ فی الفصل الثانی ان التحقيق ان هذا (ای طهارته) مذهب ابی حنيفہ ايضا وانما اشتهرت نسبتہ الی محمد لكونہ في جملۃ من رواه عن الامام اھ اقول: ای

انه اجل من رواه وقد اخذ به وهذا اول التصحيحين الموعود بيانهما ثم اتى على سرد الفروع وفيها مما يفيدنا فرع الخلاصة ان ادخال الكف مجردا انما لايصير مستعملا اذ لم يرد الغسل فيه بل اراد رفع الماء فان اراد الغسل ان كان اصبعاً اواكثر دون الكف لايضرو مع الكف بخلافه اهـ

1 فتاوىٰ خانيہ المعروف بقاضى خان فصل فى الماء المستعمل نولكشور لكهنو 8/1 2 رسالہ ابن الشحنہ 3 خلاصۃ الفتاوىٰ فصل فى الماء المستعمل نولكشور لكهنو 6/1 Page 219 of 711

Fatawa Razawiyya - Volume Two

I say: We have already presented the research that the fingertip, the nail, and the palm are equal in ruling. From a subsidiary of 'Khulasa' from 'Fiqh al-Umara': This applies when the person putting his hand into the vessel or well is an adult. If he is a minor, and if it is known that his hand was pure—for example, the child was in the street with a guardian—then performing ablution with that [water] is permissible... etc.

I say: From this, the difference between an adult and a minor becomes apparent. This informs us that if an adult puts his hand into a vessel or well, performing ablution with it is not permissible (1). This is like a text from the book of Hasan; there remains no room for the interpretation of 'al-Bahr'. Then he established the second chapter regarding the ruling on 'used water' (ma' al-musta'mal) and when it becomes used. He said after explaining what is inherently clear and accepted by all—meaning the impermissibility of performing ablution with used water according to all our Imams—what he wrote is: "This, along with its generality, bears witness for the first chapter." He said, "and that is sufficient as a proof" end of quote. (T)

I say: (2) This is an example of 'al-Bahr' relying on generalities. He looked at the generality that the consideration is for dominance, but did not notice that the matter is restricted to the usage of what is attached to the skin only. And the Sheikh looked at this generality and did not notice that the discussion is about making all small amounts of water 'used' by the entry of something like a nail from a person in a state of ritual impurity (muhdith).

Footnotes: 1. Khulasa-tul-Fatawa, Chapter on Used Water, Nawal Kishore, Lucknow, 1/8. 2. Risalah Ibn al-Shuhnah.

Page 220 of 711

फ़तावा रज़विया - भाग दो

मैं कहता हूँ: हम पहले यह शोध प्रस्तुत कर चुके हैं कि पूरे नाखून और हथेली का नियम समान है। 'खुलासा' की एक उप-शाखा 'फिक्ह अल-उमरा' से: यह तब है जब बर्तन या कुएं में हाथ डालने वाला व्यक्ति वयस्क हो। यदि वह नाबालिग है, यदि यह ज्ञात हो कि उसका हाथ शुद्ध था—उदाहरण के लिए, बच्चा गली में अपने किसी संरक्षक के साथ था—तो उससे वज़ू (वज़ू) करना जायज़ है... आदि।

मैं कहता हूँ: इससे वयस्क और नाबालिग के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता है। इससे ज्ञात हुआ कि यदि किसी वयस्क ने बर्तन या कुएं में अपना हाथ डाला, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है (1)। यह हसन की किताब के एक स्पष्ट पाठ (नस्) की तरह है; इसमें 'अल-बहर' की व्याख्या की कोई गुंजाइश नहीं बचती। फिर उन्होंने 'इस्तेमाल किए हुए पानी' (मा-ए-मुस्तअमल) के नियम के बयान में दूसरा अध्याय स्थापित किया, और यह बताया कि पानी कब मुस्तअमल होगा। फिर उन्होंने इसे स्पष्ट करने के बाद जो स्वयं स्पष्ट है और सभी के निकट मान्य है—यानी हमारे सभी इमामों के अनुसार मुस्तअमल पानी से वज़ू का जायज़ न होना—कहा कि इसका पाठ यह है: "यह अपनी व्यापकता (उमूम) के साथ पहले अध्याय के लिए प्रमाण है" और उन्होंने कहा, "और यह पर्याप्त प्रमाण है" (समाप्त)। (त)

मैं कहता हूँ: (2) यह 'अल-बहर' द्वारा सामान्य शब्दों को प्रमाण बनाने का एक उदाहरण है। उन्होंने इस सामान्यता को देखते हुए फरमाया कि विचार प्रधानता (ग़ल्बा) का है, और यह नहीं देखा कि मुस्तअमल होना केवल उस पानी के लिए है जो त्वचा से सटा हो। और शेख ने इस व्यापकता की ओर देखा और यह नहीं देखा कि चर्चा इस विषय में है कि थोड़ा पानी पूरी तरह से मुस्तअमल हो जाएगा चाहे वह किसी मुहदिस (अशुद्ध अवस्था वाले व्यक्ति) के नाखून जैसे अंग के प्रवेश से हो।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. खुलासा-तुल-फ़तावा, मा-ए-मुस्तअमल, नवल किशोर, लखनऊ, 1/8। 2. रिसाला इब्न अल-शुहना।

पृष्ठ 220 / 711

قلت: وقدمنا تحقیق ان الانملة والظفر والکف سواء وفرع الخلاصة عن فقه الامراء هذا اذاکان الذی یدخل یده في الاناء او البئر بالغاً فان کان صبیاً ان علم ان یده طاهرة بان کان مع الصبی رقیب في السکة یجوز التوضی بذلك ۱ الخ۔ میں کہتا ہوں ہم پہلے تحقیق پیش کر آئے ہیں کہ پورا ناخن اور ہتھیلی حکم میں برابر ہیں۔ خلاصہ کی فرع فقہ الامراء سے، یہ اُس وقت ہے جبکہ ہاتھ داخل کرنے والا بالغ ہو اور اگر نابالغ ہے تو اگر یہ معلوم ہے کہ اس کا ہاتھ پاک تھا مثلاً بچہ گلی میں اپنے کسی محافظ کے ہمراہ تھا تو اس سے وضو جائز ہے۔۔۔ الخ

اقول: وبه فارق البالغ فافاد ان لو ادخل البالغ یده في اناء او بئر لم یجز الوضوء(۱)بہ ہذا کنص کتاب الحسن لایبقی لتأویل البحر مساغاً ثم عقد الفصل الثاني في حکم الماء المستعمل ومتی یصیر مستعملاً وقال بعد ما بین ماهو بین بنفسه ومسلم عند الکل اعنی عدم جواز الوضوء بالماء المستعمل عند ائمتنا جمیعاً مانصه هذا مع عمومه یشهد للفصل الاول قال وکفی بذلك ۲ حجة اهـ میں کہتا ہوں اس سے بالغ و نابالغ میں فرق ظاہر ہوگیا، اس سے معلوم ہوا کہ اگر بالغ نے برتن یا کنویں میں اپنا ہاتھ ڈالا تو اس سے وضو جائز نہیں اور یہ حسن کی کتاب کے نص کی طرح ہے۔ اس میں بحر کی تاویل کی کوئی گنجائش نہیں، پھر دوسری فصل مستعمل پانی کے حکم کے بیان میں قائم کی، اور یہ بتایا کہ پانی کب مستعمل ہوگا، اور پھر جو انہوں نے اس کو واضح کرنے کے بعد جو خود واضح ہے اور تمام کے نزدیک مسلم ہے یعنی مستعمل پانی سے وضو کا جائز نہ ہونا ہمارے تمام ائمہ کے نزدیک کہا اس کی نص یہ ہے "یہ اپنے عموم کے ساتھ پہلی فصل کیلئے شہادت دیتی ہے" اور یہ کافی حجت ہے اهـ (ت)

اقول:(۲) هذا نظير تمسك البحر بالاطلاق فنظر الى اطلاق ان العبرة للغلبة ولم يلاحظ ان الشأن في قصر الاستعمال على ما التصق بالجلد فقط والشيخ نظر الى هذا العموم ولم يلاحظ ان الكلام في تعميم الاستعمال جميع الماء القليل بدخول نحو ظفر من محدث۔ میں کہتا ہوں یہ بحر کے اطلاق کو دلیل بنانے کی ایک نظیر ہے تو انہوں نے اطلاق کو دیکھتے ہوئے فرمایا کہ اعتبار غلبہ کا ہے اور یہ نہیں دیکھا کہ مستعمل ہونا اُسی پانی کیلئے ہے جو جلد سے متصل ہو، اور شیخ نے اس عموم کی طرف دیکھا اور یہ نہ دیکھا کہ گفتگو اس امر میں ہے کہ تھوڑا پانی مکمل طور پر مستعمل ہو جائے گا خواہ

حاشیہ: 1 خلاصۃ الفتاوی الماء المستعمل نولکشور لکھنو ۱/۸ 2 رسالہ ابن الشحنۃ

Fatawa Razawiyya Volume II

Then he brought a conclusion regarding the ruling on pure water meeting purifying water and explained that the consideration is for dominance. He narrated its authentication from 'At-Tawshih' and 'At-Tuhfa', stating that it is the chosen school of thought.

I say: This is the second of the two promised authentications. The Sheikh acknowledged the truth, and the equality of what is added and what it is added to ceased. Then he narrated a branch from 'Al-Khaniya' and similarly from the commentary of 'Al-Quduri' on the summary of 'Al-Karkhi' regarding drawing twenty buckets if ablution water is thrown into a well. He said: This is the most explicit thing regarding the agreement of the three Imams on the effect of used water on purifying water, even if it is less than it. He mentioned from the commentary of 'Al-Jami' as-Saghir' by Qadi Khan that if a small amount of wash water falls into a vessel, it does not spoil the water. They spoke about 'a small amount' from Muhammad: what is like the heads of needles is small. From Al-Karkhi: if the locations of the drops are visible in the water, then it is many, and if they are not visible like dew, then it is little. He said: This, may Allah have mercy on you, is more explicit than what preceded. This was narrated in 'Al-Fawa'id al-Zahiriyya' and followed by Al-Quduri. It was narrated from Abu Sulayman that he was asked about the water of ritual impurity (janaba) when it falls in such a way that the drops are visible: he said it is nothing. In 'Fatawa Qadi Khan' there is a contrary view, and in 'Khazanat al-Muftin', one in ritual impurity bathed.

1. Risala Ibn ash-Shihna Page 221 of 711

फिर उन्होंने शुद्ध पानी के पवित्र करने वाले पानी से मिलने के हुक्म के बारे में एक निष्कर्ष पेश किया और स्पष्ट किया कि प्रधानता ही विचारणीय है। उन्होंने 'अत-तौशीह' और 'अत-तुहफ़ा' से इसके प्रमाणीकरण को उद्धृत किया और बताया कि यही चुनिंदा विचारधारा है।

मैं कहता हूँ: यह उन दो प्रतिज्ञाबद्ध प्रमाणीकरणों में से दूसरा है। शेख ने सत्य को स्वीकार किया, और जो मिलाया गया और जिसमें मिलाया गया, उनकी समानता समाप्त हो गई। फिर उन्होंने 'अल-खनिया' से एक शाखा और उसी तरह 'अल-कुदुरी' की व्याख्या से 'अल-करखी' के सारांश पर बीस बाल्टी खींचने के बारे में उद्धृत किया यदि वज़ू का पानी कुएं में डाल दिया जाए। उन्होंने कहा: यह शुद्ध पानी पर प्रयुक्त पानी के प्रभाव पर तीनों इमामों की सहमति के बारे में सबसे स्पष्ट बात है, भले ही वह उससे कम हो। उन्होंने काजी खान द्वारा 'अल-जामी अस-सगीर' की व्याख्या से उल्लेख किया कि यदि बर्तन में धोने के कुछ कतरे गिर जाएं और कम हों, तो वे पानी को खराब नहीं करेंगे। उन्होंने मुहम्मद से 'थोड़ी मात्रा' के बारे में बात की: जो सुई के सिरों के समान हो वह थोड़ा है। अल-करखी से: यदि पानी में बूंदों के स्थान स्पष्ट दिखाई देते हैं, तो वह अधिक है, और यदि वे ओस की तरह दिखाई नहीं देते हैं, तो वह कम है। उन्होंने कहा: यह, अल्लाह आप पर दया करे, पहले बताई गई बातों से अधिक स्पष्ट है। इसे 'अल-फवाइद अल-जहीरिया' में वर्णित किया गया है और अल-कुदुरी इसी पर चले हैं। अबू सुलेमान से उल्लेख है कि उनसे जनाबत (अपवित्रता) के पानी के बारे में पूछा गया था जब वह इस तरह गिरे कि बूंदें स्पष्ट दिखाई दें: उन्होंने कहा कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। 'फ़तावा काजी खान' में इसके विपरीत विचार है, और 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में एक अपवित्र व्यक्ति ने स्नान किया।

1. रिसाला इब्न अश-शिहना पेज 221 ऑफ़ 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

بے وضو اپنا ایک ناخن ہی کیوں نہ ڈالے۔ پھر خاتمہ اس امر کے بیان میں ہے کہ طاہر پانی طہور پانی سے جب ملے گا تو اعتبار غلبہ کو ہوگا، اور اس کی تصحیح توشیح اور تحفہ سے نقل کی اور اسی سے نقل کیا کہ یہ مذہب مختار ہے۔

میں کہتا ہوں یہ دوسری تصحیح ہے جس دو کا ہم نے وعدہ کیا تھا، توشیح نے حق کا اعتراف کر لیا، اور ملقی اور ملاقی کی برابری ختم ہوئی، پھر خانیہ کی فرع نقل کی اور اسی قسم کی شرح قدوری مختصر کرخی کی فرع نقل کی۔ یہ بیس ڈول کھینچنے سے متعلق ہے یہ اس صورت میں ہے جبکہ وضو کا پانی کنویں میں ڈالا ہو، فرمایا پاک پانی میں مستعمل پانی کے اثر انداز ہونے کی ائمہ ثلثہ کے نزدیک یہ واضح مثال ہے، اگرچہ وہ اس پانی سے کم ہو، اور قاضی خان کی شرح جامع صغیر سے یہ نقل کیا کہ اگر دھوون کے کچھ قطرات برتن میں گر جائیں اور کم ہوں تو پانی کو فاسد نہ کریں گے، اور قلیل میں کلام کیا ہے، اس میں محمد سے منقول ہے کہ جو سوئی کے ناکوں کے برابر ہو وہ قلیل ہے اور کرخی سے یہ منقول ہے کہ پانی کے قطرے اگر پانی میں ظاہر ہوں تو یہ کثیر ہے اور اگر ظاہر نہ ہوں جیسے شبنم کے قطرے ہوتے ہیں تو یہ قلیل ہے فرمایا یہ گزشتہ مثال سے بھی زائد صریح ہے، یہ فوائد ظہیریہ میں مذکور ہے، اسی پر قدوری چلے ہیں، اور ابو سلیمان سے کسی نے جنابت کے پانی کی بابت دریافت کیا کہ اگر اس کے قطرے پانی میں پڑ جائیں اور واضح نظر آئیں، فرمایا اس میں کوئی حرج نہیں، فتاوی قاضیخان۔

1 رسالہ ابن الشحنہ صفحہ 221 از 711

Fatawa Rizvia - Volume 2

[Arabic Column] ...so if [water] splashed from his washing into his vessel, the water is not spoiled. However, when it flows into it with a flow, it spoils it. (1) He said: And the research here is that the issue is based on a principle mentioned by our Imams in the 'Book of Faith' and they transferred it to 'Lactation'. It is mentioned in 'Al-Dhakhira': A person swore not to drink milk, then water was poured into the milk. The principle in this issue and its categories is that if the swearer makes his oath regarding a liquid and it gets mixed with another liquid of a different kind, if the predominance is for what was sworn upon... (2) (And the rest of the speech is missing from my copy of Zahr al-Rawdh). I say: (1) Glory be to Allah, the Sheikh (may Allah Almighty have mercy on him) mentions at the beginning of the discourse that the correct and chosen doctrine is to consider predominance. He has explicitly stated in his commentary on Al-Wahbaniyya that it is the correct view from our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them) and that the fatwa is based on it. Then he returns to argue using the two branches of 'extraction' and 'splashing' and says that it is the clearest thing regarding the agreement of the three Imams. This is clearer than it! And what justification remains for them after the truth has become clear - the correct, chosen doctrine, the one upon which fatwa is given, and the one upon which there is consensus from our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them)? And the door he opened for explaining the basis, which is a branch of 'oath', is the clearest thing in...

[Urdu Column] ...in it is contrary to that. And it is in 'Khizanat al-Muftin' that an impure person bathed and its splashes fell into a vessel, then the water will not become corrupted; and if it started flowing into it, the water will become corrupted. He said, actually, this issue is based on another principle which our three Imams have mentioned in the 'Book of Faith' and quoted it in the explanation of 'Lactation'. In 'Al-Dhakhira', it is said that someone took an oath that he would not drink milk, then he mixed water into the milk. So, in this issue and its similar ones, the principle is that when the person taking the oath took an oath on some liquid and it got mixed with some other liquid which was not of its kind, then if the sworn-upon thing is predominant (and the remaining text is missing from my copy of 'Zahr-ul-Raudh'). (T) I say: Glory be to Allah! The Sheikh mentions in the beginning of the discourse that consideration of predominance is correct and the chosen doctrine. And in the commentary of 'Wahbaniyya', there is a clear text on this that this is correct from our three Imams, and on this is the fatwa. Then he spoke on both branches of extraction

and splashing, and said that this is an explicit thing in the agreement of the three Imams. And this is more explicit than that. After knowing the true and correct doctrine, the chosen doctrine for fatwa, and the agreed-upon doctrine of the three Imams (of the Hanafi school), what reason for justification remains for those two! And the door he has opened for explaining the basis, and that is a branch of oath, from it, it is known that...

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, HM Saeed Company Karachi, 1/71 2. Treatise of Ibn Shuhna Page 222 of 711

फ़तावा रिज़विया - जिल्द सानी

[अरबी स्तंभ] ...तो यदि उसके धोने से छींटे उसके बर्तन में गिरे, तो पानी खराब नहीं होता। लेकिन जब वह प्रवाह के साथ उसमें बहने लगे, तो वह उसे खराब कर देता है। (१) उन्होंने कहा: और यहाँ शोध यह है कि यह मसला हमारे इमामों द्वारा 'किताबुल ईमान' में वर्णित एक सिद्धांत पर आधारित है और उन्होंने इसे 'रज़ाअत' (दुग्धपान) में स्थानांतरित कर दिया है। 'अल-ज़ख़ीरा' में है: एक व्यक्ति ने कसम खाई कि वह दूध नहीं पिएगा, फिर दूध में पानी डाला गया। इस मसले और इसकी श्रेणियों में सिद्धांत यह है कि यदि कसम खाने वाला किसी तरल पदार्थ पर अपनी कसम बांधता है और वह दूसरी नस्ल के किसी अन्य तरल के साथ मिल जाता है, यदि प्रबलता उस चीज़ की है जिस पर कसम खाई गई थी... (२) (और मेरी 'ज़हरुल रौज़' की प्रति से शेष कलाम साक़ित है)। मैं कहता हूँ: (१) सुब्हानअल्लाह, शैख़ (अल्लाह तआला उन पर रहमत करे) कलाम की शुरुआत में उल्लेख करते हैं कि सही और मज़हब-ए-मुख्तार ग़ल्बा (प्रबलता) का एतबार ही है। और उन्होंने 'अल-वहबानिया' की अपनी शरह में स्पष्ट किया है कि हमारे तीनों इमामों (अल्लाह तआला उन सबसे राजी हो) से यही सही है और इसी पर फतवा है। फिर वह 'नज़ह' और 'इन्तिज़ाज़' की दो फ़रई (शाखागत) मसलों से दलील पेश करने के लिए लौटते हैं और कहते हैं कि वह तीनों इमामों के इत्तेफ़ाक़ (सहमति) में सबसे स्पष्ट बात है। यह उससे भी अधिक स्पष्ट है! और उनके लिए क्या गुंजाइश बची है जब हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो गया - सही मज़हब-ए-मुख्तार, मुफ़्ती बिही, और हमारे तीनों इमामों (अल्लाह तआला उन सबसे राजी हो) का मुत्तफ़िक़ा (सर्वसम्मत) मज़हब? और उन्होंने जो 'बयान-ए-मबनी' का दरवाज़ा खोला है, जो 'हलफ़' (शपथ) की एक शाख़ है, वह सबसे स्पष्ट बात है कि...

[उर्दू स्तंभ] ...में इसके बरअक्स (विपरीत) है। और 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में है कि एक नापाक आदमी ने ग़ुस्ल किया और उसके छींटे बर्तन में गिरे तो पानी फ़ासिद न होगा और अगर उसमें बहने लगा तो पानी फ़ासिद हो जाएगा। फ़रमाया दरअसल यह मसला एक और असल (सिद्धांत) पर मबनी है जिसको हमारे अइमा-ए-सलासा ने 'किताबुल ईमान' में ज़िक्र किया है और उसको 'रज़ाअत' के बयान में नक़ल किया। 'ज़ख़ीरा' में फ़रमाया कि किसी शख़्स ने हलफ़ (क़सम) उठाया कि वह दूध नहीं पिएगा तो उसने पानी दूध में मिलाया, तो इस मसले में और इसके नज़ाइर (उदाहरणों) में असल यह है कि हलफ़ उठाने वाले ने जब किसी सैयाल (तरल) चीज़ पर हलफ़ उठाया और वह किसी और माएअ (तरल) से मिल गया जो उसकी जिन्स से न हो तो अगर महलूफ़ अलैया ग़ालिब है (और बाक़ी कलाम मेरे 'ज़हरुल रौज़' के नुस्ख़े से साक़ित है)। (त) मैं कहता हूँ सुब्हानअल्लाह शैख़ कलाम की

इब्तिदा (शुरुआत) में ज़िक्र करते हैं कि सही और मज़हब-ए-मुख्तार ग़ल्बा का एतबार ही है और 'शरह वहबानिया' में इस पर नस्स (स्पष्ट प्रमाण) है कि हमारे अइमा-ए-सलासा से यही सही है, और इसी पर फतवा है फिर उन्होंने 'नज़ह' और 'इन्तिज़ाज़' की दोनों फ़रुओं (शाखाओं) पर कलाम किया, और फ़रमाया कि यह अइमा-ए-सलासा के इत्तेफ़ाक़ में सरीह (स्पष्ट) चीज़ है और यह उससे ज़ायद सरीह है और मज़हब-ए-हक़ व सही, और मज़हब-ए-मुख्तार मुफ़्ती बिही और अइमा-ए-सलासा (हन्फ़ी मज़हब के) का मुत्तफ़िक़ा मज़हब मालूम हो जाने के बाद इन दोनों के लिए क्या वजह-ए-जवाज़ रह गई है! और 'बयान-ए-मबनी' का जो दरवाज़ा खोला है और वह हलफ़ की फ़रअ है उससे मालूम होता है कि...

[पादलेख] १. अल-बहरुर राईक़, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कम्पनी कराची, १/७१ २. रिसाला इब्न शुहना पृष्ठ ७११ का २२२

[عربی متن] فانتضح من غسله فی انائه لم یفسد الماء اما اذا کان یسیل فیه سیلانا افسده 1 قال والتحقیق هنا ان المسألة مبنیة علی اصل ذکره ائمتنا في کتاب الایمان ونقلوه الی الرضاع قال في الذخیرة حلف لایشرب لبنا فصب الماء في اللبن فالاصل في هذه المسألة واجناسها ان الحالف اذا عقد یمینه علی مائع فاختلط بمائع اخر خلاف جنسه ان کانت الغلبة للمحلوف علیه 2 (وسقط بقیة الکلام من نسختی زهر الروض) اقول: (1) سبحن اللہ یذکر الشیخ رحمه اللہ تعالی في اول الکلام ان الصحیح والمذهب المختار هو اعتبار الغلبة وقد نص في شرحه للوهبانیة انه الصحیح عن ائمتنا الثلثة رضی اللہ تعالی عنهم وان علیه الفتوی ثم یعود یحتج بفرعي النزح و الانتضاح ویقول ذاک اصرح شیئ في اتفاق الائمة الثلثة وهذا اصرح منه واي مساغ بقی لهما بعدما تبین الحق الصحیح المذهب المختار المفتی به المطبق علیه من ائمتنا الثلثة رضی اللہ تعالی عنهم و ما فتح (۲) بابہ من بیان المبنی وهو فرع الحلف فهو اصرح شیئ في ان

[اردو متن] میں اس کے برعکس ہے اور خزانہ المفتین میں ہے کہ ایک ناپاک آدمی نے غسل کیا اور اس کے چھینٹے برتن میں گرے تو پانی فاسد نہ ہو گا اور اگر اس میں بہنے لگا تو پانی فاسد ہو جائے گا، فرمایا دراصل یہ مسئلہ ایک اور اصل پر مبنی ہے جس کو ہمارے ائمہ ثلاثہ نے کتاب الایمان میں ذکر کیا ہے اور اس کو رضاع کے بیان میں نقل کیا، ذخیرہ میں فرمایا کہ کسی شخص نے حلف اٹھایا کہ وہ دودھ نہیں پئے گا تو اس نے پانی دودھ میں ملایا، تو اس مسئلہ میں اور اس کے نظائر میں اصل یہ ہے کہ حلف اٹھانے والے نے جب کسی سیال چیز پر حلف اٹھایا اور وہ کسی اور مائع سے مل گیا جو اس کی جنس سے نہ ہو تو اگر محلوف علیہ غالب ہے (اور باقی کلام میرے زہر الروض کے نسخہ سے ساقط ہے) (ت) میں کہتا ہوں سبحان اللہ شیخ کلام کی ابتداء میں

ذکر کرتے ہیں کہ صحیح اور مذہب مختار غلبہ کا اعتبار ہی ہے اور شرح وہبانیہ میں اس پر نص ہے کہ ہمارے ائمہ ثلاثہ سے یہی صحیح ہے، اور اسی پر فتوی ہے پھر انہوں نے نزح اور انتضاح کی دونوں فرعوں پر کلام کیا، اور فرمایا کہ یہ ائمہ ثلاثہ کے اتفاق میں صریح چیز ہے اور یہ اس سے زائد صریح ہے اور مذہب حق و صحیح، اور مذہب مختار مفتی بہ اور ائمہ ثلاثہ (حنفی مذہب کے) کا متفق علیہ مذہب معلوم ہو جانے کے بعد ان دونوں کیلئے کیا وجہ جواز رہ گئی ہے ! اور بیان مبنی کا جو دروازہ کھولا ہے اور وہ حلف کی فرع ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ

[حواشی] 1 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۱ 2 رسالہ ابن شحنۃ Page of 711 222

Fatawa Razawiya, Volume II

The basis is on predominance. If he had maintained it in his final words—which are missing from my copy—then it would be a return towards what he argued with contradiction. Otherwise, it is very surprising, and it will soon be clear that the Sheikh returned to the truth by the grace of Allah Almighty. Had he not brought this discourse here and argued with these two derivative cases and provided those two rationales there, then all his speech would have been correct and sound. But Allah does what He wills. Then he wrote a supplement (tatimma) in which he said: "The greatest proof that according to none of our scholars is performing ablution (Wudu) from this basin permissible is what is stated in 'Kitab al-Asl' by Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), as narrated by Imam Abu Sulayman al-Juzjani (may Allah have mercy on him). It is mentioned in the chapters of Ablution and Bathing. The narration is: I said, 'If a person in a state of major ritual impurity (Junub) bathes and some splashes of his washing fall into his vessel, does it spoil the water for him?' He said, 'No.' I asked, 'Why?' He replied, 'Because it is something impossible to avoid.' I asked, 'If he poured water over his head or body, or washed his private parts, and that water kept collecting in the vessel?' He said, 'This will spoil the water; neither ablution nor bathing will be valid with it.' He also said in the chapter on the well and what defiles it: I asked, 'If a pure person fell into a well and bathed in it?' He said, 'He spoiled all the water of the well.' I say, 'Is the ruling for ablution in the well the same?' He said, 'Yes.' I asked..."

---

1. Kitab al-Asl known as al-Mabsut, Imam Muhammad, Chapter of Ablution and Bathing from Janabah, Idaratul Quran Karachi 1/22. Page 223 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द II

सारा दारोमदार प्रबलता (ग़लबा) पर है। यदि उन्होंने अपने उन अंतिम शब्दों में—जो मेरी प्रति से लुप्त हैं—इसे बरकरार रखा है, तो यह उसी ओर वापसी है जिस पर उन्होंने विरोधाभास के साथ तर्क दिया था। अन्यथा, यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है, और शीघ्र ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि शेख ने अल्लाह तआला की तौफीक से सत्य की ओर वापसी की। यदि वे यहाँ यह बात न लाते और इन दो उप-शाखाओं (फ़रूअ) से तर्क न करते और वहाँ वे दो कारण (ता'लील) न बताते, तो उनका पूरा कथन सही और सटीक होता। लेकिन अल्लाह जो चाहता है वही करता है। फिर उन्होंने एक पूरक (ततिम्मा) लिखा और कहा: "इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण कि हमारे किसी भी इमाम के अनुसार इस हौज़ से वज़ू करना जायज़ नहीं है, वह है जो इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की 'किताब अल-अस्ल' में वर्णित है, जैसा कि इमाम अबू सुलेमान अल-जुज़जानी (रहमतुल्लाहि अलैह) द्वारा रिवायत किया गया है। यह वज़ू और ग़ुस्ल के अध्यायों में उल्लेखित है। रिवायत यह है कि मैंने कहा, 'यदि किसी जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति में व्यक्ति) ने ग़ुस्ल किया और उसके धोने की छीटें उसके बर्तन में गिर गईं, तो क्या उसके लिए पानी खराब हो गया?' उन्होंने कहा, 'नहीं।' मैंने पूछा, 'क्यों?' उन्होंने उत्तर दिया, 'क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जिससे बचना असंभव (मुहाल) है।' मैंने पूछा, 'यदि उसने अपने सिर या शरीर पर पानी डाला या अपने निजी अंगों को धोया और वह पानी बर्तन में जमा होता रहा?' उन्होंने कहा, 'इससे पानी खराब हो जाएगा; न तो इससे वज़ू जायज़ होगा और न ही ग़ुस्ल।' उन्होंने कुएं और उसकी अशुद्धियों के अध्याय में भी कहा: मैंने पूछा, 'यदि कोई पाक व्यक्ति कुएं में गिर गया और उसमें ग़ुस्ल कर लिया?' उन्होंने कहा, 'उसने कुएं का सारा पानी खराब कर दिया।' मैं कहता हूँ, 'क्या कुएं में वज़ू का भी यही हुक्म है?' उन्होंने कहा, 'हाँ।' मैंने पूछा..."

---

1. किताब अल-अस्ल जिसे अल-मबसूत कहा जाता है, इमाम मुहम्मद, जनाबत से वज़ू और ग़ुस्ल का अध्याय, इदारातुल कुरान कराची 1/22। पृष्ठ 223 / 711

دارومدار غلبہ کو ہے ، اگر انہوں نے اس کو برقرار رکھا ہے اپنے اس کلام میں جو میرے نسخہ سے ساقط ہے تو یہ اسی طرف رجوع ہے جس پر نقض سے استدلال کیا ہے ، ورنہ بہت ہی تعجب خیز بات ہے ، اور عنقریب آجائے گا کہ شیخ نے حق کی طرف رجوع کیا بتوفیق تعالٰی ، اگر وہ یہ کلام یہاں نہ لاتے اور ان دو فروعوں سے استدلال نہ کرتے اور وہاں دو تعلیلیں بیان نہ کرتے تو کل کلام صحیح ہوتا ، لیکن اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے ۔ پھر انہوں نے ایک تتمہ لکھا اور فرمایا کہ پھر اس پر سب سے بڑی دلیل اس پر کہ ہمارے کسی امام کے نزدیک اس حوض سے وضو جائز نہیں۔ امام محمد کی اصل میں وارد شدہ روایت ہے جو امام ابو سلیمان الجوزجانی کی روایت ہے اور باب الوضوء و باب الغسل میں مذکور ہے ، روایت یہ ہے کہ میں نے کہا اگر ایک جنب نے غسل کیا اور اس کے چھینٹے ایک برتن میں گرے تو کیا پانی خراب ہو گیا ، فرمایا نہیں ، میں نے کہا کیوں؟ فرمایا یہ ایسی چیز ہے جس سے بچنا محال ہے ، میں نے پوچھا اگر جنب نے اپنے سر یا جسم پر پانی ڈالا یا اپنی شرمگاہ دھوئی اور یہ پانی برتن میں جمع ہوتا رہا فرمایا اس سے پانی فاسد ہو جائیگا ، نہ اس سے وضو جائز ہوگا نہ غسل ، فرمایا انہوں نے کنویں اور اس کی نجاستوں کے باب میں فرمایا ، میں نے پوچھا اگر ایک پاک شخص کنویں کے پانی میں گر گیا اور اس میں غسل کیا ، فرمایا کل پانی خراب ہو جائیگا ، میں کہتا ہوں یہی حکم کنویں میں وضو کا ہے ؟

---

۱ کتاب الاصل المعروف بہ المبسوط امام محمد باب الوضوء والغسل من الجنابتہ ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۲۲

He said yes. I said, "Similarly, if someone performed istinja (cleansing) in it?" He replied, "Yes." I asked, "And what do you say about the well?" He said, "All the water of the well must be drawn out, unless the water overcomes them (refills too fast)." I asked, "Will that person's ablution (wudu) be sufficient?" He said, "No," and then remained silent and did not attribute it to either of his two masters. This was his approach in agreed-upon matters, as stated at the beginning of the book. (End) (T)

I say: The latter branch pertains to the 'meeting' (mulaqi) water, and it is undoubtedly correct. Adhering to it is successful, and it is the clearest clarification. As for the former (1), it concerns the 'thrown' (mulqi) water, and there is no escape from basing it on one of two weak positions. The source mentioned here is not 'Kitab al-Mabsut,' which is one of the six manifest books, but rather one of the rare books. Therefore, how can what is mentioned in it oppose the correct, chosen, and decreed (mufta bihi) school of all our Imams? Success is with Allah.

Then he (may Allah have mercy on him) said: Isam al-Din, in his commentary on al-Hidayah, after discussing the issue of an impure person (junub) immersing themselves in a well, reported that this is based on the idea that all parts of the water in a single location are treated as a single entity in the ruling of 'usage' (isti'mal). This is because it is colloquially attributed to the whole, and linguistically as well. The understanding of common people and linguists does not perceive that some of this water is 'used' while the remainder is merely mixed with it. This is why for those who consider used water to be pure but not purifying (tahir ghayr tuhoor), when another...

---

1. Kitab al-Asl, known as al-Mabsut by Imam Muhammad; regarding a pure man who fell into the well. Idarat al-Quran, Karachi 1/83.
2. Risalah Ibn Shuhnah.

उन्होंने कहा हाँ। मैंने कहा, "इसी तरह अगर किसी ने उसमें इस्तिन्जा किया तो?" उन्होंने फ़रमाया "हाँ।" मैंने पूछा, "और कुएं के बारे में आप क्या कहते हैं?" उन्होंने कहा, "कुएं का सारा पानी निकाल देना चाहिए, सिवाय इसके कि पानी निकालते-निकालते वे थक जाएं।" मैंने पूछा, "क्या उस व्यक्ति के लिए यह वज़ू काफी होगा?" उन्होंने कहा, "नहीं," और इसके बाद वे खामोश हो गए और इसे अपने दोनों उस्तादों में से किसी की ओर मंसूब नहीं किया। आम सहमति वाले मसलों में उनका यही तरीका था जैसा कि किताब की शुरुआत में बताया गया है। (अंत) (त)

मैं कहता हूँ: अंतिम उप-मसला 'मुलाकी' (मिलने वाले पानी) के बारे में है और वह निस्संदेह सही है। उस पर अमल करना ही बेहतर है और यह सबसे स्पष्ट व्याख्या है। जहाँ तक पहले (1) का सवाल है, वह 'मुल्की' (डाले गए पानी) के बारे में है, और इसमें दो कमजोर बातों में से किसी एक पर आधारित होने के अलावा कोई चारा नहीं है। यहाँ 'अस्ल' से मुराद 'किताब अल-मब्सूत' नहीं है जो छह प्रसिद्ध किताबों में से एक है, बल्कि यह दुर्लभ किताबों में से है। तो इसमें जो उल्लेख किया गया है वह हमारे सभी इमामों के उस मज़हब के खिलाफ कैसे हो सकता है जो सही, चुनिंदा और फतवा दिए जाने योग्य है? सफलता अल्लाह की ओर से है।

फिर उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा: इसाम अल-दीन ने हिदाया की शरह में, नापाक व्यक्ति (जुनुब) के कुएं में गोता लगाने के मसले पर चर्चा के बाद फ़रमाया कि यह इस बात पर आधारित है कि एक स्थान पर मौजूद पानी के सभी भाग इस्तेमाल (इस्तिमाल) के हुक्म में एक ही चीज़ की तरह हैं। क्योंकि प्रचलन (ऊर्फ़) के अनुसार उसे पूरे पानी की ओर मंसूब किया जाता है, बल्कि भाषा में भी ऐसा ही है। ऊर्फ़ और भाषा के जानकार यह नहीं समझते कि इस पानी का कुछ हिस्सा तो 'इस्तेमाल' किया गया है और बाकी उसमें मिला हुआ है। यही वजह है कि जिन हज़रात के नज़दीक 'इस्तेमालशुदा पानी' पाक है मगर पाकी हासिल करने वाला नहीं है, जब किसी दूसरे...

---

1. किताब अल-अस्ल, जिसे इमाम मुहम्मद की अल-मब्सूत के नाम से जाना जाता है; 'एक पाक आदमी कुएं में गिर गया' के बारे में। इदारात अल-कुरान कराची 1/83।
2. रिसाला इब्न शुहना।

كذلك لو استنجى فيها قال نعم قلت فما حال البئر قال عليهم ان ينزحوا ماء البئر كله الا ان يغلبهم الماء قلت ارأيت الرجل هل يجزئه وضوئه ذلك قال لا و سكت عليه ولم يعزه لاحد من شيخيه وهذا شأنه فى المتفق عليه كما صرح به اول الكتاب اه

فرمایا ہاں، میں نے کہا اسی طرح اگر کنویں میں استنجا کیا؟ فرمایا ہاں، میں نے پوچھا اور کنویں کی بابت کیا فرماتے ہیں؟ فرمایا کنویں کا سارا پانی نکالنا چاہئے، الا یہ کہ نکالتے نکالتے تھک جائیں، میں نے پوچھا کیا اُس شخص کیلئے یہ وضو کافی ہوگا؟ فرمایا نہیں، اس پر وہ خاموش ہوگئے اور اپنے شیوخ میں سے کسی کی طرف اس کو منسوب نہ کیا، اور متفق علیہ مسائل میں ان کا یہی طریقہ تھا جیسا کہ کتاب کے شروع میں ذکر کیا اھ (ت)

اقول: الفرع الاخير فى الملاقى وهو لاشك صحيح، والتمسک به نجيح، وهو اصرح تصريح. اما الاول(۱) ففى الملقى ولا محيد من ابتنائه على احد ضعفين وليس الاصل هذا كتاب المبسوط احد الكتب الستة الظاهرة بل من الكتب النادرة فكيف يعارض به مذهب ائمتنا جميعا الصحيح المختار المفتى به وبالله التوفيق

میں کہتا ہوں فرع اخیر ملاقی میں ہے اور وہ بلاشبہ صحیح ہے اور یہ تمسک کے قابل اور واضح تصریح ہے اور پہلی فرع ملقی میں ہے، اور سوائے اس کے چارہ کار نہیں کہ دو میں سے ایک ضعیف پر بنا کرنا چاہئے، اور اصل سے مراد وہ مبسوط نہیں جو چھ ظاہر کتب میں سے ایک ہے بلکہ کتب نادرہ سے ہے، تو جو اس میں مذکور ہے وہ ہمارے ائمہ کے صحیح مختار مفتی بہ سے کیسے معارض ہوسکتا ہے وباللہ التوفیق،

ثم قال رحمه الله تعالى ونقل عصام الدين فی شرح الهداية بعد الكلام على مسألة انغماس الجنب فی البئر هذا مبنی على ان اجزاء ماء الذی فی محل واحد بمنزلة شيئ واحد فی حكم الاستعمال لانه ينسب الى الجميع عرفا بل لغة ايضا اذ لا تذهب افهام اهل العرف واللغة الى ان المستعمل بعض هذا الماء والباقی ممتزج به الا ترى ان الماء المستعمل عند من يجعله طاهرا غير

پھر فرمایا، عصام الدین نے شرح ہدایہ میں، جنب کے کنویں میں غوطہ لگانے کا مسئلہ ذکر کرنے کے بعد فرمایا یہ اس پر مبنی ہے کہ پانی کے تمام اجزاء جو ایک جگہ ہیں وہ حکم استعمال میں بمنزلہ شیئی واحد کے ہیں، کیونکہ وہ عرفاً تمام ہی کی طرف منسوب ہوتا ہے بلکہ لغت میں بھی ایسا ہے، کیونکہ اہل عرف اور اہل لغت یہ لفظ سن کر یہ نہیں سمجھتے ہیں کہ کچھ پانی تو مستعمل ہے اور کچھ اس میں ملا ہوا ہے، یہی وجہ ہے کہ جن حضرات کے نزدیک مستعمل پانی طاہر غیر طہور ہے جب کسی دوسرے

---

1 كتاب الاصل المعروف به المبسوط امام محمد رجل طاہر وقع فی البئر ادارة القرآن كراچی ۱/ ۸۳

2 رسالہ ابن شحنہ

Fatawa Razawiya Volume 2

Purifying water (Tahoor), if it falls into other water, it will not corrupt it until it overcomes it. This was decided in Al-Asrar and considered more correct in Al-Tuhfa. And if a lot of water is poured over a limb, all of it becomes used (musta'mal) according to them, despite the fact that the part meeting the skin is overcome, based on the fact that all of it is one in the rule of use. This meaning has been pointed out in Al-Asrar.

I say: This, by my life, is in a place of beauty, by which ears are invigorated and souls are gladdened. There is no perfume after a bride. My Master, Glorified and Exalted is He, has granted me success in its meaning in what has passed, and I have perfected its explanation and strengthened its pillars. Through it, the difference between what meets (mulaqi) and what is cast (mulqi) became apparent, such that no illusion occurs and no doubt remains. (1) It is surprising that the Sheikh proceeded on the basis of equalizing them, relying on two justifications, then he invalidated it by quoting the correction of what is correct from Al-Tuhfa and Al-Tawshih. Then after a few lines he returned to it and made the two branches of nazh (drawing water) and intidhah (sprinkling) the most explicit. Then he invalidated it by quoting the original root from the Dhakhira of the glorious Imam. Then it did not take long before he returned to it by quoting a branch of the root, then he invalidated it by quoting the words of Isam connected to it without separation. With it he concluded, and indeed the lesson is in the conclusions. May Allah Almighty conclude for us upon the straight religion and the right path.

1. Treatise of Ibn Shuhnah Page 225 of 711

फतावा रजविया खंड 2

तहूर (पवित्र करने वाला) पानी जब दूसरे पानी में गिरे तो उसे तब तक खराब नहीं करेगा जब तक कि वह उस पर हावी न हो जाए। 'अल-असरार' में इस पर पक्का फैसला दिया गया है और 'अल-तुहफा' में इसे अधिक सही करार दिया गया है। और अगर किसी अंग पर बहुत सा पानी डाला जाए तो उनके नजदीक सारा पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा, हालांकि जो पानी त्वचा से लगा हुआ है वह दबा हुआ है, क्योंकि इस्तेमाल के हुक्म में सब एक ही है। और इसी अर्थ की ओर 'अल-असरार' में इशारा किया गया है।

मैं कहता हूँ: यह, मेरी उम्र की कसम, खूबसूरती की ऐसी जगह है जिससे कान ताज़ा हो जाते हैं और रूहें खुश हो जाती हैं। 'दुल्हन के बाद कोई इत्र नहीं' (अर्थात् इससे बेहतर कुछ नहीं)। मेरे मालिक, सुब्हानहु व तआला ने मुझे पहले इसके अर्थ की तौफीक दी, और मैंने इसकी व्याख्या को पुख्ता किया और इसके स्तंभों को मजबूत किया। और इससे 'मुलाकी' (मिलने वाला) और 'मुल्की' (डाला गया) के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया, जिससे कोई वहम पैदा नहीं होता और न ही कोई शक बाकी रहता है। (1) और शेख पर ताज्जुब है कि उन्होंने दोनों को बराबर मानकर दो दलीलों से इस्तदलाल किया, फिर 'अल-तुहफा' और 'अल-तौशीह' से सही की तस्हीह (सुधार) नकल करके इसे रद्द कर दिया। फिर कुछ पंक्तियों के बाद वह इस पर वापस लौटे और 'नज़' और 'इन्तिदाह' की दोनों शाखाओं को सबसे साफ ज़िक्र किया। फिर इमाम जलील की 'ज़खीरा' से असल मूल नकल करके इसे रद्द किया। फिर ज़्यादा देर नहीं गुज़री कि असल की एक शाखा नकल करके इस पर वापस लौटे, फिर इस पर 'इसाम' की बात नकल करके बगैर किसी विच्छेद के इसे रद्द किया। इसी पर उन्होंने बात खत्म की, और असल सबक तो नतीजों में है। अल्लाह तआला दीन-ए-कवीम और सीधे रास्ते पर हमारा खात्मा करे।

1. रिसाला इब्न शुहनाह पृष्ठ 225/711

طھور اذا وقع فی ماء أخر لایفسده حتی یغلب علیه بهذا قطع فی الاسرار جعله فی التحفة اصح ولو صب ماء کثیر علی العضو یصیر الکل مستعملا عندهم مع ان الملاقی للبشرة مغلوب بناء علی ان الکل واحد فی حکم الاستعمال وقد اشیر الی هذا المعنی فی الاسرار^1 پانی میں گر جائے تو اس کو اس وقت تک فاسد نہ کرے گا جب تک اس پر غالب نہ ہو جائے۔ اسرار میں اس پر قطعی حکم لگایا اور تحفہ میں اس کو اصح قرار دیا ہے اور اگر کسی عضو پر بہت سا پانی ڈالا تو ان کے نزدیک سارا پانی مستعمل ہو جائے گا، حالانکہ جو پانی جلد سے متصل ہے وہ مغلوب ہے کیونکہ حکم استعمال میں سب ایک ہی ہے اور اسی معنی کی طرف اسرار میں اشارہ کیا ہے۔

اقول: هذا لعمري من الحسن بمکان، تنشط به الأذان، وتبتهج به النفوس، ولا عطر بعد عروس، وقد وفقنی المولی، سبحانه وتعالی، لمعناه فیما مضی، واتقنت بیانه، وشیدت ارکانه، وبه ظهر الفرق بین الملاقی والملقی، بحیث لا یعتری وهم ولاشك یبقی، (1) والعجب من الشیخ مشی علی التسویة بینهما محتجابا لتعلیلین ثم نقضه بنقل تصحیح الصحیح، عن التحفة والتوشیح، ثم بعد اسطر عاد الیه وجعل فرعی النزح والانتضاح اصرح صریح، ثم نقضه بنقل الاصل الاصیل، عن ذخیرة الامام الجلیل، ثم لم یلبث ان عاد الیه بنقل فرع الاصل، ثم نقضه بنقل کلام العصام متصلا به من غیر فصل، وبه ختم وانما العبرة للخواتیم، ختم الله تعالی لنا علی الدین القویم، والصراط میں کہتا ہوں یہ بحث ذہنوں کو جلا بخشنے والی ہے، اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے اس کی تقریر کی ہے، اس سے ملقی اور ملاقی کے درمیان فرق ظاہر ہو گیا اور شک باقی نہ رہا، اور شیخ پر تعجب ہے کہ انہوں نے ان دونوں کو ایک قرار دیا ہے اور دو تعلیلوں سے استدلال کیا ہے پھر ایک صحیح کی تصحیح نقل کر کے اس پر نقض وارد کیا، یہ تحفہ اور توشیح کی نقول ہیں، پھر چند سطور کے بعد اس بحث کا اعادہ

کیا اور نزح اور انتضاح کی دونوں فروع کو بہت صریح قرار دیا، پھر اس پر ذخیرہ سے نقض وارد کیا، پھر اصل کی فرع کو نقل کیا، پھر اس پر عصام کی نقل سے نقض وارد کیا اور اس پر کلام کو ختم کیا۔ ----- اللہ تعالیٰ ہمارا خاتمہ دین قویم صراط مستقیم اور تمام حسنات

Fatawa Razawiyya, Volume 2

...on the straight (path), and with every beauty, and upon our noble Prophet and his noble family, may the radiant prayers and the most sublime peace be showered. Amen. And all praise is for Allah, the Lord of the worlds.

Chapter Four: On various benefits and the investigation of the ruling of performing ablution in a small cistern.

Praise be to Allah, we have finished with the three treatises, rather these five books, including Al-Bahr and Al-Bada'i', and we have covered everything in them. Now we mention the remaining benefits to complete the advantages. And success is from Allah.

Benefit (1): Al-Muhaqqiq 'Ali al-Maqdisi (may Allah have mercy on him) said in the commentary on the poem Al-Kanz, refuting Al-Bahr, the text of which is: "As for interpreting the speech as meaning that the water becomes 'used' (musta'mal) means that what touches the limbs becomes 'used', this is very far-fetched, as there is absolutely no need for such specification." This was quoted in Minhat al-Khaliq under the discussion of 'used water', and he endorsed it.

I say: We have already presented eight refutations against him, and this is the ninth (1). I will add a tenth for you, and say: When someone immerses themselves in water and then comes out, the water is divided into five types: First, that which remains in the cistern and does not separate from the water by the separation of the body. Second, that which comes out with the body and flows down from it without lingering. Third, that which stays and disappears by dripping. Fourth, the moisture that disappears...

---

1 Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/98. Page 226 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द 2

...सीधे (मार्ग) पर, और हर सुंदरता के साथ, और हमारे महान नबी और उनके प्रतिष्ठित परिवार पर उज्ज्वल दुआएं और सबसे शानदार शांति अवतरित हो। आमीन। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है।

चौथा अध्याय: विभिन्न लाभों और छोटे हौज में वज़ू करने के नियम की जांच के बारे में।

अल्हम्दुलिल्लाह, हमने तीनों शोध-पत्रों, बल्कि इन पांचों पुस्तकों, जिनमें अल-बह्र और अल-बदाई भी शामिल हैं, को पूरा कर लिया है, और हमने उनमें जो कुछ भी था उसे कवर कर लिया है। अब हम लाभों को पूरा करने के लिए शेष लाभों का उल्लेख करते हैं। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

लाभ (1): मुहाक़िक अली अल-मक़दिसी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अल-कंज़ की कविता की व्याख्या में अल-बह्र का खंडन करते हुए कहा, जिसका पाठ यह है: "जहां तक भाषण की इस व्याख्या का सवाल है कि पानी का 'इस्तेमाल किया हुआ' (मुस्तअमल) होने का मतलब यह है कि जो अंगों को छूता है वह 'इस्तेमाल किया हुआ' बन जाता है, तो यह बहुत ही दूर की बात है, क्योंकि इसके लिए किसी स्पष्टीकरण की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है।" इसे 'इस्तेमाल किए गए पानी' की चर्चा के तहत मिन्नत अल-खालिक में उद्धृत किया गया था, और उन्होंने इसका समर्थन किया।

मैं कहता हूं: हमने उसके खिलाफ पहले ही आठ खंडन पेश कर दिए हैं, और यह नौवां (1) है। मैं आपके लिए दसवां जोड़ूंगा, और कहूंगा: जब कोई व्यक्ति पानी में डुबकी लगाता है और फिर बाहर निकलता है, तो पानी पांच प्रकारों में विभाजित होता है: पहला, वह जो हौज में ही रहता है और शरीर के अलग होने से पानी से अलग नहीं होता है। दूसरा, जो शरीर के साथ बाहर निकलता है और बिना रुके उससे नीचे बह जाता है। तीसरा, जो रुकता है और टपकने से खत्म हो जाता है। चौथा, नमी जो खत्म हो जाती है...

---

1 मिन्नत अल-खालिक अला अल-बह्र अर-रैक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/98। पेज 226/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

المستقیم، وبکل حسنی، وعلی نبینا الکریم والہ الکرام الصلاۃ الزھرا والسلام الاسنی، والحمد للہ رب العلمین۔

پر کرے، اور ہمارے نبی کریم ان کی آل مکرم پر صلاۃ وسلام نازل فرمائے آمین والحمد للہ رب العالمین۔

الفصل الرابع في فوائد شتی وتحقیق حکم الوضوء في الحوض الصغیر چوتھی فصل میں مختلف فوائد اور چھوٹے اور حوض سے وضو کا حکم

الحمد للہ فرغنا عن الرسائل الثلاث بل الکتب الخمسۃ ھذہ والبحر والبدائع واتینا علی جمیع مافیھا والآن نذکر ماتبقی من الفوائد تکمیلا للعوائد وباللہ التوفیق۔ الحمد للہ کہ ہم تینوں رسائل بلکہ ان پانچوں کتب اور بحر و بدائع سے فارغ ہوگئے، اور ان میں جو کچھ تھا وہ بیان کردیا اور اب باقیماندہ فوائد تکمیل بحث کیلئے ذکر کرتے ہیں۔

فائدہ(۱): قال المحقق علی المقدسی رحمہ اللہ تعالی فی شرح نظم الکنز ردا علی البحر ما نصہ واما تاویل الکلام بان المراد بصیر ورتہ مستعملا صیرورۃ مالاقی اعضائہ منہ مستعملا فھذا بعید جدا اذلا یحتاج الی التنصیص علی ذلك اصلا اہ نقلہ في منحۃ الخالق من الماء المستعمل واقرہ فائدہ ۱: محقق علی المقدسی نے کنز کی نظم کی شرح میں بحر پر رد کرتے ہوئے فرمایا، ان کی عبارت یہ ہے اور کلام کی یہ تاویل کرنا کہ پانی کے مستعمل ہونے سے مراد یہ ہے کہ جو پانی اس کے اعضاء سے ملا ہے وہ مستعمل ہو جائے گا، تو یہ بہت بعید ہے کہ یہ اس پر تنصیص کا قطعاً محتاج نہیں، اس کو منحہ الخالق میں نقل کیا ہے مستعمل پانی کی بحث میں، اور اس کو برقرار رکھا ہے۔

قلت قدمنا ثمانية ردود عليه وهذا تاسع(١) وازيدك عاشرا فاقول: اذا انغمس احد فى الماء ثم خرج ينقسم الماء الى خمسة اقسام قسم يبقى فى الحوض ولا ينفصل عن الماء بانفصال البدن والثاني يخرج مع البدن وينحدر عنه بلامكث والثالث يمكث ويذهب بالتقاطر والرابع بلل يذهب میں کہتا ہوں ہم نے اس پر آٹھ رد کئے ہیں اور یہ نواں ہے اور اب دسویں کا اضافہ کرتے ہیں، اور وہ یہ ہے کہ جو شخص پانی میں غوطہ لگائے اور پھر نکلے، تو پانی کی اس صورت میں پانچ قسمیں ہیں، ایک تو وہ جو حوض ہی میں رہتا ہے اور بدن سے جدا ہونے کی وجہ سے پانی سے جدا نہیں ہوتا ہے، اور دوسرا بدن کے ساتھ نکلتا ہے اور بلا ٹھہرے

---

1 منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱ Page 226 of 711

Fatawa-e-Razvia Volume 2 [Arabic side:] ...by absorption, and the fifth is the moisture that remains even after absorption and does not go away except by drying through the action of the sun and air. There is no doubt that these are also watery parts and do not penetrate into bodies, nor is there any 'adhesion in the parts' as mentioned before. So each type was above the other, separate from it, and beneath all was that moisture which touched the body and does not accept separation. And since there is no separation, there is no usage (Musta'mal status). Thus these are ten complete types. If you say: The matter is as you described, but we extend the ruling to everything except the first because of its connection to the body, and therefore it moves with its movement. I say: Firstly, we do not accept that it is because of its connection to it, otherwise it would have stayed on it like dripping water. Rather, it was pushed away by being pushed and descended by its nature. Don't you see that a person submerged, if he emerges with strong force, a lot of water accompanies him; or with gentleness, then a little; and if he emerges so slowly that as much as possible no movement is created in the water, hardly anything comes out with him except what disappears by dripping. Although the contact was the same, it is known that it differs according to the movement of pushing. If you say: Then there is no doubt about the connection of dripping water, so we rule it as used (Musta'mal), and it is undoubtedly capable of separation, so interpretation is correct and usage is not negated.

[Urdu side:] ...comes below it, and the third stays and ends by dripping, and the fourth is the moisture that ends after being absorbed by cloth. The fifth is the moisture that remains even after being absorbed by cloth and only ends after being dried by the sun or air. Without a doubt, these are also parts of water, and there is no penetration into bodies, rather there is not even 'adhesion in the parts' as mentioned before. So every type was above another, separated from it, and beneath each is that moisture, so this is what meets the body and it does not accept separation, and usage does not occur without separation, so it did not become Musta'mal. So these ten are complete. If this objection is raised that this is correct but we apply the ruling to others besides the first because it is related to the body and that is why it moves as the body moves. I say firstly, we do not accept that it is because of its relation, otherwise it would have stayed on it like the dripping one, rather it was pushed away by being pushed and descended naturally. For example, if a diver in water comes out with force, a lot of water will come with him, and if with gentleness, then less water will come, and if he comes out so slowly that as far as possible no movement is

created in the water, then only that much water will come with him which would vanish by dripping, although the meeting is the same. So it became known that there is a difference in the movement of pushing. If the objection is that in this case there is no doubt about the connection of the dripping one, then we will rule it as Musta'mal, and without doubt it is capable of separation, then the interpretation...

फतावा-ए-रज़विया जिल्द सानी (भाग 2) [अरबी पक्ष:] ...सोखने के बाद, और पाँचवाँ वह नमी है जो सोखने के बाद भी रह जाती है और केवल सूरज और हवा की क्रिया से सूखने के बाद ही समाप्त होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये भी जलीय अंश हैं और शरीरों में प्रवेश नहीं करते हैं, और न ही 'अंगों में आसंजन' है जैसा कि पहले बताया गया है। इसलिए प्रत्येक श्रेणी दूसरी के ऊपर थी, उससे अलग थी, और उन सब के नीचे वह नमी थी जो शरीर से मिली हुई है और वह पृथक्करण (जुदाई) को स्वीकार नहीं करती है। और चूँकि पृथक्करण के बिना 'इस्तेमाल' (मुस्तअमल होना) नहीं होता, इसलिए वह मुस्तअमल नहीं हुआ। तो ये दस पूर्ण प्रकार हो गए। यदि आप कहें: मामला वैसा ही है जैसा आपने वर्णन किया, लेकिन हम पहले के अलावा दूसरों पर भी यह हुक्म लागू करते हैं क्योंकि इसका शरीर से संबंध है, और इसलिए वह उसके हटने से हट जाता है। मैं कहता हूँ: पहली बात तो यह कि हम यह स्वीकार नहीं करते कि यह उसके संबंध के कारण है, अन्यथा वह उस पर टिका रहता जैसे कि टपकने वाला पानी। बल्कि वह धकेले जाने से धकेल दिया गया और अपने स्वभाव से नीचे उतर गया। क्या आप नहीं देखते कि जो व्यक्ति पानी में डूबा हुआ है, यदि वह ज़ोर से बाहर निकले तो उसके साथ बहुत सारा पानी आएगा; या यदि वह धीरे से निकले तो थोड़ा; और यदि वह इतनी धीरे निकले कि जहाँ तक संभव हो पानी में हलचल न हो, तो उसके साथ शायद ही कुछ बाहर आए सिवाय उस पानी के जो टपक कर खत्म हो जाता है। हालाँकि संपर्क एक ही था, फिर भी पता चला कि धकेलने की गति के अनुसार इसमें अंतर आता है। यदि आप कहें: तब टपकने वाले पानी के संबंध में कोई संदेह नहीं है, इसलिए हम उसे 'मुस्तअमल' होने का हुक्म देंगे, और वह निस्संदेह अलग होने के योग्य है, तो तावील (व्याख्या) सही है और इस्तेमाल का हुक्म नकारा नहीं जा सकता।

[उर्दू पक्ष:] ...उससे नीचे आता है, और तीसरा ठहरता है और टपक कर खत्म हो जाता है, और चौथा वह नमी है जो कपड़े के ज़रिये जज्ब करने के बाद खत्म हो जाती है। पाँचवाँ वह नमी है जो कपड़े के ज़रिये जज्ब करने के बाद भी बाकी रहती है और सूरज या हवा से खुशक हो जाने के बाद ही खत्म होती है और बिला शुबा ये भी पानी के अज्ज़ा (अंग) हैं और ये अज्साम में तदाखुल नहीं बल्कि 'तलासुक फ़िल अज्ज़ा' भी नहीं जैसा कि गुज़रा, तो हर किस्म दूसरी से ऊपर हुई, उससे जुदा हुई और हर एक के नीचे वह नमी होती है तो ये वह है जो बदन से मुलाकी (मिलने वाली) है और ये इन्फिसल (अलगाव) को कबूल नहीं करता है और इस्तेमाल बिला इन्फिसल नहीं होता है, तो मुस्तअमल न हुआ, तो ये दस मुकम्मल हो गए। अगर ये एतराज़ किया जाए कि ये दुरुस्त है लेकिन

हम हुक्म अव्वल के अलावा दूसरों पर लगाते हैं क्योंकि इसका ताल्लुक बदन से है और इसी लिए इसके मुंतकिल होने से वह मुंतकिल हो जाता है। मैं कहता हूँ अव्वलन हम ये तस्लीम नहीं करते कि ये इसके ताल्लुक की वजह से है वरना वह उस पर रुकता, जैसा कि टपकने वाला, बल्कि इसके दफा करने से मुन्दफा हो गया और बत्तबा मुनहदर हो गया मसलन पानी में गोता खाने वाला अगर कुव्वत से निकले तो इसके साथ बहुत पानी आएगा और अगर आहिस्तगी से हो तो कम पानी आएगा और अगर इतना आहिस्ता निकले कि हत्ता अल-इमकान पानी में हरकत न पैदा हो तो इसके साथ सिर्फ इतना पानी आएगा जो टपक कर ज़ायल हो जाए हालांकि मुलाकात एक ही है, तो मालूम हुआ कि दफा की हरकत में इससे इख्तिलाफ़ होता है। अगर ये एतराज़ हो कि इस सूरत में टपकने वाले के ताल्लुक में कोई शक नहीं तो हम इस पर मुस्तअमल होने का हुक्म लगाएंगे और बिला शुबा काबिले इन्फिसल है तो तावील...

فتاوی رضویہ جلد ثانی بالنشف والخامس نداوة تبقی بعد النشف ایضا ولا تذهب الا بالجفاف بعمل الشمس و الهواء ولا شك انها ایضا اجزاء مائیة ولا تداخل فی الاجسام بل لا تلاصق فی الاجزاء کما تقدم فکان کل قسم فوق الاخر منفصلا عنه وکان تحت الکل ذاك الندی فهو الذی لاقی البدن وهو لایقبل الانفصال ولا استعمال الابه فلا استعمال تلك عشرة کاملة۔ فأن قلت: الامر کما وصفتم ولکنا نعدی الحکم الی ماعدا الاول لتعلقه بالبدن ولذا انتقل بانتقاله اقول اولا لانسلم انه لتعلقه به والا لکان له استمساك علیه کالمتقاطر بل اندفع بدفعه وانحدر بطبعه الا تری ان المنغمس ان اندفع بعنف قوی صحبه ماء کثیر او برفق فقلیل وان استدرج فی الخروج بحیث لایتحرك الماء حتی الامکان لم یکد یخرج معه الا مایزول بالتقاطر مع ان اللقاء کان واحدا فعلم انه لحرکة الدفع یختلف باختلافها۔ فأن قلت: اذن لاریب فی تعلق المتقاطر فنحکم علیه بالاستعمال وهو لاشك قابل الانفصال فیصح التاویل ولا ینتفی الاستعمال۔

اس سے نیچے آتا ہے، اور تیسرا ٹھہرتا ہے اور ٹپک کر ختم ہو جاتا ہے، اور چوتھا وہ تری ہے جو کپڑے کے ذریعے جذب کرنے کے بعد ختم ہو جاتی ہے۔ پانچواں وہ تری جو کپڑے کے ذریعے جذب کرنے کے بعد بھی باقی رہتی ہے اور آفتاب یا ہوا سے خشک ہو جانے کے بعد ہی ختم ہوتی ہے اور بلا شبہ یہ بھی پانی کے اجزاء ہیں اور یہ اجسام میں تداخل نہیں بلکہ "تلاصق فی الاجزاء" بھی نہیں جیسا کہ گزرا ، تو ہر قسم دوسری سے اوپر ہوئی اس سے جدا ہوئی اور ہر ایک کے نیچے وہ تری ہوتی ہے تو یہ وہ ہے جو بدن سے ملاقی ہے اور یہ انفصال کو قبول نہیں کرتا ہے اور استعمال بلا انفصال نہیں ہوتا ہے، تو مستعمل نہ ہوا، تو یہ دس مکمل ہو گئے۔ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ یہ درست ہے لیکن ہم حکم اول کے علاوہ دوسروں پر لگاتے ہیں کیونکہ اس کا تعلق بدن سے ہے اور اسی لئے اس کے منتقل ہونے سے وہ منتقل ہو جاتا ہے۔ میں کہتا ہوں اولاً ہم یہ تسلیم نہیں کرتے کہ یہ اس کے تعلق کی وجہ سے ہے ورنہ وہ اس پر رکتا، جیسا کہ ٹپکنے

والا، بلکہ اس کے دفع کرنے سے مندفع ہو گیا اور بالطبع منحدر ہو گیا مثلاً پانی میں غوطہ کھانیوالا اگر قوت سے نکلے تو اس کے ساتھ بہت پانی آئے گا اور اگر آہستگی سے ہو تو کم پانی آئیگا اور اگر اتنا آہستہ نکلے کہ حتی الامکان پانی میں حرکت نہ پیدا ہو تو اس کے ساتھ صرف اتنا پانی آئیگا جو ٹپک کر زائل ہو جائے حالانکہ ملاقات ایک ہی ہے، تو معلوم ہوا کہ دفع کی حرکت میں اس سے اختلاف ہوتا ہے۔ اگر یہ اعتراض ہو کہ اس صورت میں ٹپکنے والے کے تعلق میں کوئی شک نہیں تو ہم اس پر مستعمل ہونے کا حکم لگائیں گے اور بلاشبہ قابل انفصال ہے تو تاویل

Fatawa Razawiya, Volume 2

I say: The state of what flows down without delay upon exiting after immersion is like the state of what flows down immediately from the washing of Wudu and Ghusl. Therefore, only that which remains after it, falling drop by drop, is considered 'used' (mustamal), and this is contrary to consensus (Ijma). [Urdu Translation/Explanation: It will be correct and the used water will not be purificatory. I say: The water that flows down and falls from the body immediately after coming out of immersion is like the water that flows down immediately after Wudu and Ghusl. Thus, only that which continues to drip in drops after it will be 'used', and this is contrary to the consensus.]

Secondly: How different are 'attachment' (ta'alluq) and 'adhesion' (talasuq)! Attachment includes the outer garment (dithar), while adhesion is specific to the inner garment (shi'ar), and that is the difference between them. If it is objected that these are two clothes, so one is a barrier for the other from meeting, whereas water is a single thing, so one part cannot be a barrier for another part, but rather all of it is meeting. I say: that is what we desired, for all water is one upon immersion, so all is meeting without any doubt. [Urdu Translation/Explanation: Second, there is a great difference between 'attachment' and 'adhesion'. Attachment includes the lining/outer garment and adhesion is specific to the upper/inner part, and this is the difference between the two. If it is objected that these are two clothes, so one of them is a barrier for the meeting of the other, while water is a single thing, its one part cannot be a barrier for another part, rather all of it is connected to each other. I say: This is according to our wish; when a person immerses in water, the water will be a single entity and will meet each other without hindrance.]

Benefit: Allamah Sheikh Hasan al-Shurunbulali said in his commentary on al-Wahbaniyya, refuting al-Bahr, his text: 'And what was mentioned that usage is by the part that meets the body, not the rest of the water, so that part becomes consumed in the many, is rejected because usage spreads (sarayan) throughout the whole legally (hukman), and it is not like the dominant water by pouring a little water into it.' End. [Urdu Translation/Explanation: Benefit 2: Allamah Shurunbulali said in the commentary of Wahbaniyya, refuting al-Bahr, the text is: 'And what has been mentioned that usage is from that part which is joined to the body and not the rest of the water, so that small part will mix into the many parts and finish, this is rejected because legally the usage will spread into all the water, and this is not like that dominant water in which a little water has been mixed.']

I say: (1) The word 'sarayan' (spreading) occurred out of place, for it gives the impression that what is 'used' first is what met the body, then the ruling spreads to the rest of the water parts by proximity, whereas it... [Urdu Translation/Explanation: I say: The word "sarayan" has been used out of place. It creates the delusion that first the used water is that which meets the body, then the ruling is for the rest of the parts...]

1. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Tahara, H.M. Saeed Company Karachi 1/72 Page 228 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

अक़ूल (मैं कहता हूँ): गोता लगाकर बाहर निकलते समय बिना रुके जो पानी नीचे गिरता है, उसकी हालत वैसी ही है जैसे वुज़ू और ग़ुस्ल के फ़ौरन बाद बहने वाले पानी की होती है। तो 'इस्तेमाल' (मुस्तअमल) वही होगा जो उसके बाद बूंद-बूंद करके टपकता रहे, और यह इज्मा (आम सहमति) के ख़िलाफ़ है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या: सही होगी और इस्तेमाल करने वाला मुत्तक़ी न होगा। मैं कहता हूँ गोता से निकलने के फ़ौरन बाद जो पानी बदन से बहता हुआ गिरता है उसका हाल उस पानी जैसा है जो वज़ू और ग़ुस्ल के फ़ौरन बाद बहता हुआ गिरता है तो मुस्तअमल वही होगा जो उसके बाद क़तरों की सूरत में टपकता रहे और यह इज्मा के ख़िलाफ़ है।]

दूसरा: 'तअल्लुक़' (जुड़ाव) और 'तलासुक़' (चिपकना) में बहुत अंतर है। 'तअल्लुक़' में बाहरी वस्त्र (दिसार) शामिल है और 'तलासुक़' अंदरूनी वस्त्र (शिआर) के लिए विशिष्ट है, और यही दोनों में अंतर है। यदि यह आपत्ति की जाए कि ये तो दो कपड़े हैं, इसलिए एक दूसरे के मिलने में रुकावट है, जबकि पानी एक चीज़ है, इसलिए उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से के लिए रुकावट नहीं बन सकता, बल्कि पूरा का पूरा मिल रहा है। मैं कहता हूँ: यही तो हम चाहते थे, क्योंकि गोता लगाते समय सारा पानी एक ही होता है, इसलिए बिना किसी संदेह के पूरा पानी मिल रहा है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या: दूसरा, तअल्लुक़ और तलासुक़ में बहुत फ़र्क़ है, तअल्लुक़ अस्तर को शामिल है और तलासुक़ ऊपर वाले हिस्से के साथ मुख़्तस है, और यही दोनों में फ़र्क़ है, अगर यह एतराज़ किया जाए कि यह तो दो कपड़े हैं तो उनमें से एक दूसरे की मुलाक़ात के लिए रुकावट है, और पानी तो शय वाहिद है, इसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से के लिए रुकावट नहीं बन सकता है वह तो सारे का सारा एक दूसरे से मिला हुआ है, मैं कहता हूँ यह तो हमारे हस्ब-ए-मंशा है, जब इंसान पानी में गोता लगाएगा तो पानी शय वाहिद होगा और बग़ैर रुकावट आपस में मिलेगा।]

फ़ायदा: अल्लामा शेख़ हसन शुरुनबुलाली ने 'शराह वहबानिया' में 'अल-बहर' का खंडन करते हुए कहा, जिसका मूल पाठ यह है: 'और यह जो ज़िक्र किया गया है कि इस्तेमाल उस हिस्से से है जो बदन से मिला हुआ हो, न कि बाक़ी पानी से, और वह हिस्सा ज़्यादा पानी में मिलकर ख़त्म हो जाएगा, तो यह बात रद्द है क्योंकि कानूनी तौर पर (हुक्मन) इस्तेमाल पूरे पानी में फैल जाएगा, और यह उस ज़्यादा पानी की तरह नहीं है जिसमें थोड़ा सा पानी मिला दिया गया हो।' अंत। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या: फ़ायदा 2: अल्लामा शुरुनबुलाली ने शरह वहबानिया में फ़रमाया बहर पर रद करते हुए, नस यह है, और यह जो ज़िक्र किया है कि इस्तेमाल इस जुज़ से है जो बदन से मिला हुआ हो न कि बाक़ी पानी

से, तो वह जुज़ई कसीर अज्ज़ा में मिलकर ख़त्म हो जाएगा, तो यह मरदूद है क्योंकि हुक्मन तो इस्तेमाल तमाम पानी में सरायत करेगा, और यह उस ग़ालिब पानी की तरह नहीं जिसमें थोड़ा सा पानी मिल गया हो।]

मैं कहता हूँ: (1) 'सरयान' (फैलना) शब्द का प्रयोग बेमौक़ा हुआ है, क्योंकि इससे यह भ्रम पैदा होता है कि 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) पहले वह है जो बदन से मिला, फिर हुक्म बाक़ी पानी के हिस्सों तक पहुँचा, जबकि वह... [उर्दू अनुवाद/व्याख्या: मैं कहता हूँ "सरायत" का लफ़्ज़ बे-मौक़ा इस्तेमाल हुआ है इससे यह वहम पैदा होता है कि मुस्तअमल अव्वलन तो वह है जो बदन से मुलाक़ी है फिर हुक्म बक़िया अज्ज़ा की...]

1. मिन्हतुल ख़ालिक़ अलल बहरिर रायिक़, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/72 पृष्ठ 228 का 711

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

اقول: شأن ما انحدر بلامكث عند الخروج بعد الانغماس شأن مانحدر فوراً من غسالة الوضوء والغسل فلا يستعمل الا مابقى بعده متساقطاً بالتقاطر وهو خلاف الاجماع۔ [ترجمہ: صحیح ہوگی اور استعمال متقی نہ ہوگا۔ میں کہتا ہوں غوطہ سے نکلنے کے فورا بعد جو پانی بدن سے بہتا ہوا گرتا ہے اس کا حال اس پانی جیسا ہے جو وضو اور غسل کے فورا بعد بہتا ہوا گرتا ہے تو مستعمل وہی ہوگا جو اس کے بعد قطرات کی صورت میں ٹپکتا رہے اور یہ اجماع کے خلاف ہے۔]

وثانیاً: شتّان ما التعلق والتلاصق فالتعلق يشمل الدثار والتلاصق يختص بالشعار وهو الفرق بينهما فان قلت هما ثوبان فيعد احدهما حاجزاً للآخر عن التلاق بخلاف الماء فانه شيئ واحد فلا يحجز بعضه بعضاً بل الكل ملاق، اقول ذلك ماكنا نبغ فالماء كله واحد عند الانغماس، فالكل ملاق بلا وسواس۔

[ترجمہ: دوسرا، تعلق اور تلاصق میں بہت فرق ہے، تعلق استر کو شامل ہے اور تلاصق اوپر والے حصہ کے ساتھ مختص ہے، اور یہی دونوں میں فرق ہے، اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ یہ تو دو کپڑے ہیں تو ان میں سے ایک دوسرے کی ملاقات کیلئے رکاوٹ ہے، اور پانی تو شے واحد ہے، اس کا ایک حصہ دوسرے حصہ کیلئے رکاوٹ نہیں بن سکتا ہے وہ تو سارے کا سارا ایک دوسرے سے ملا ہوا ہے، میں کہتا ہوں یہ تو ہمارے حسب منشا ہے، جب انسان پانی میں غوطہ لگائے گا تو پانی شی واحد ہوگا اور بغیر رکاوٹ آپس میں ملے گا۔]

فائدہ: قال العلامة الشيخ حسن الشرنبلالى فى شرحه على الوهبانية رداً على البحر ما نصه وما ذكر من ان الاستعمال بالجزء الذى يلاقى جسده دون باقى الماء فيصير ذلك الجزء مستهلكا فى كثير فهو مردود لسريان الاستعمال فى الجميع حكما وليس كالغالب بصب القليل من الماء فيه ١ھ [ترجمہ: فائدہ ٢: علامہ شرنبلالی نے شرح وہبانیہ میں فرمایا بحر پر رد کرتے ہوئے، نص یہ ہے، اور یہ جو ذکر

کیا ہے کہ استعمال اس جزء سے ہے جو بدن سے ملا ہوا ہو نہ کہ باقی پانی سے، تو وہ جزئی کثیر اجزا میں مل کر ختم ہو جائیگا، تو یہ مردود ہے کیونکہ حکماً تو استعمال تمام پانی میں سرایت کریگا، اور یہ اس غالب پانی کی طرح نہیں جس میں تھوڑا سا پانی مل گیا ہو۔]

اقول: (۱) لفظ السریان وقع غیر موقعہ فانہ یوھم ان المستعمل اولا مالاقی ثم یسری الحکم الی بقیۃ اجزاء الماء بالتجاور وھو [ترجمہ: میں کہتا ہوں "سریان" کا لفظ بے موقع استعمال ہوا ہے اس سے یہ وہم پیدا ہوتا ہے کہ مستعمل اولاً تو وہ ہے جو بدن سے ملاقی ہے پھر حکم بقیہ اجزاء کی]

1۔ منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۲ صفحہ 228 از 711

Fatawa-e-Razvia Volume 2

(Arabic Text): It is explicitly rejected based on what has preceded, that consideration is given to dominance (ghalaba). Even if it were to spread, it would spread through contact (mulaqi), as Allama Abdul Barr mistakenly thought. Thus, the distinction would be void, and the discourse would return to the intended point with a defect. This is what compelled the author of 'Al-Bahr' to restrict the ruling of 'used water' (musta'mal) only to that which comes into contact. Rather, we say that when a person immerses himself in a small amount of water, it all becomes 'used' at once because it is all a single thing. So, there is no restriction and no spreading. Allama Shami (may Allah have mercy on him) did well to establish this by saying in 'Al-Minha' that when one immerses himself or puts his hand in, for example, all that water becomes 'used' by law (hukman). This is because the water which is 'used' in reality (haqiqatan) is that which touches the body, unlike when 'used water' is poured into it. In the latter case, the water that is 'used' both in reality and by law is only that which came into contact. There is no reason to rule the water it was poured into as 'used' unless it is equal to it or exceeds it, as the body did not enter it for it to be ruled 'used' by law. This is supported by what is in 'Al-Asrar' by Al-Dabbusi and their statement regarding the issue of 'Al-Bi'r Jahat' (the well): if someone immerses themselves with the intention of taking a ritual bath (ghusl) for prayer, the water becomes 'used' by consensus. This is the research, and Allah Almighty is the grantor of success. Benefit 3: Allama anticipated Abu al-Ikhlas...

(Urdu Text): ...side, because these are close to each other. This is explicitly rejected, as it has been established that the primary consideration is for dominance. If it spreads, it will do so through the contact point, as Allama Abdul Barr had a misconception. Then the difference will be nullified, and the discourse will return to the intended purpose with deficiency. This is what forced the author of 'Bahr' to apply the ruling of usage only to what meets [the body]. Rather, we say that when a person dives into water and the water is small in quantity, then all of it will suddenly become 'used' (musta'mal) because all of it is a single entity. Therefore, there is no restriction and no spreading. Allama Shami did well by maintaining this. He states in 'Al-Minhah' that when one dives or, for example, dips his hand, all the water becomes used by law (hukman). This is because in reality, the used water is only that which is in direct contact with the body. If used water is poured into it, a different ruling applies, because in reality and law, the used part is that which was in contact. So there is no reason to apply the ruling of usage on the recipient water unless the used water

equals or dominates it, because the body did not enter it for a legal ruling of usage to be applied. Dabbusi's 'Al-Asrar' supports this, stating in the problem of 'Al-Bi'r Jahat' that if someone dives into a well with the intention of performing ritual bath (ghusl) for prayer, the water becomes used by consensus. This is the correct finding, and Allah Almighty grants success. Benefit 3: Allama made the distinction before Abu al-Ikhlas...

Footnote 1: Minhat al-Khaliq on Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, H.M. Saeed Company Karachi 1/71 Page 229 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

(अरबी पाठ): यह स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया गया है जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि विचार प्रधानता (ग़लबा) को दिया जाता है। यदि यह फैलता भी, तो यह संपर्क(मुलाक़ी) के माध्यम से फैलता, जैसा कि अल्लामा अब्दुल बर्र को भ्रम हुआ था। इस प्रकार अंतर व्यर्थ हो जाएगा और चर्चा दोष के साथ इच्छित बिंदु पर लौट आएगी। यही वह चीज़ है जिसने 'अल-बहर' के लेखक को 'इस्तेमाल किए हुए पानी' (मुस्तअमल) के निर्णय को केवल उसी तक सीमित करने के लिए मजबूर किया जो संपर्क में आता है। बल्कि, हम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति थोड़े से पानी में गोता लगाता है, तो वह सब एक साथ 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाता है क्योंकि वह सब एक ही वस्तु है। इसलिए, कोई प्रतिबंध नहीं है और न ही कोई प्रसार है। अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर दया करे) ने इसे 'अल-मिन्हा' में यह कहकर स्थापित किया कि जब कोई व्यक्ति गोता लगाता है या उदाहरण के तौर पर अपना हाथ डालता है, तो वह सारा पानी कानूनी रूप से (हुकमान) 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हकीकत में (हक़ीक़तन) 'इस्तेमाल किया हुआ' पानी वही है जो शरीर को छूता है, इसके विपरीत जब 'इस्तेमाल किया हुआ पानी' इसमें डाला जाता है। बाद वाले मामले में, जो पानी हकीकत और कानून दोनों में 'इस्तेमाल किया हुआ' है, वह केवल वही है जो संपर्क में आया था। इसमें डाले गए पानी को 'इस्तेमाल किया हुआ' घोषित करने का कोई कारण नहीं है जब तक कि वह इसके बराबर न हो या उससे अधिक न हो, क्योंकि शरीर उसमें प्रवेश नहीं किया था कि इसे कानूनन 'इस्तेमाल किया हुआ' माना जाए। इसका समर्थन अल-दब्बूस की 'अल-असरार' में जो कुछ है और 'अल-बि'र जहत' (कुआं) के मुद्दे के संबंध में उनके बयान से होता है: यदि कोई प्रार्थना के लिए स्नान करने के इरादे से गोता लगाता है, तो पानी सर्वसम्मति से 'इस्तेमाल किया हुआ' हो जाता है। यही शोध है, और अल्लाह तआला सफलता देने वाला है। फ़ायदा 3: अल्लामा ने अबू अल-इखलास से पहले...

(उर्दू पाठ): ...तरफ़ जाएगा क्योंकि ये एक दूसरे के करीब हैं, और यह स्पष्ट रूप से खारिज है, जैसा कि बताया जा चुका है कि प्रधानता (ग़लबा) पर विचार किया जाता है। और अगर यह फैलता है, तो यह संपर्क वाले हिस्से में फैलेगा, जैसा कि अल्लामा अब्दुल बर्र को गलतफहमी हुई थी। फिर अंतर निरस्त हो जाएगा और प्रवचन दोष के साथ इच्छित उद्देश्य की ओर लौट आएगा। और यही वह बात है जिसने 'बहर' के लेखक को इस्तेमाल का फैसला केवल संपर्क में आने वाले पानी पर लागू करने के लिए मजबूर किया। बल्कि हम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति पानी में गोता लगाता है और पानी कम

मात्रा में होता है, तो वह सब अचानक 'इस्तेमाल किया हुआ' (मुस्तअमल) हो जाएगा क्योंकि वह सब एक ही वस्तु है। इसलिए न तो कोई प्रतिबंध है और न ही प्रसार। अल्लामा शामी ने इसे बनाए रखकर अच्छा किया। वे 'अल-मिन्हा' में कहते हैं कि जब उसने गोता लगाया या उदाहरण के लिए अपना हाथ डुबोया, तो सारा पानी कानूनी तौर पर (हुकमान) इस्तेमाल किया हुआ हो गया, क्योंकि वास्तव में इस्तेमाल किया हुआ पानी केवल वही है जो शरीर से जुड़ा है। और यदि इस्तेमाल किया हुआ पानी इसमें डाला जाए, तो दूसरा नियम लागू होता है, क्योंकि वास्तव में और कानूनी तौर पर इस्तेमाल किया हुआ वही संपर्क वाला हिस्सा है। इसलिए संपर्क वाले पानी पर इस्तेमाल का नियम लागू करने का कोई कारण नहीं है जब तक कि वह उसके बराबर न हो या उस पर हावी न हो, क्योंकि उसका शरीर उसमें प्रवेश नहीं किया था कि उस पर कानूनी रूप से इस्तेमाल का नियम लगाया जाए। दब्बूस की 'अल-असरार' इस ओर संकेत करती है, और 'अल-बि'र जहत' (कुएं) के मुद्दे में उनका कहना है कि यदि कोई प्रार्थना के लिए स्नान (ग़ुस्ल) करने के इरादे से कुएं में गोता लगाता है, तो पानी सर्वसम्मति से इस्तेमाल किया हुआ हो जाएगा। यही शोध है, और अल्लाह तआला सफलता देने वाला है। फ़ायदा 3: अल्लामा ने अबू अल-इखलास से पहले अंतर को...

पाद-टिप्पणी 1: मिन्हात अल-खालिक अल अल-बहر अर-राइक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/71 पृष्ठ 229 of 711

(عربی متن): مردود صریحاً بما تقدم ان العبرة للغلبة ولو سری لسری بالملاقي کما توھم العلامة عبدالبر فیبطل الفرق ویعود الکلام علی مقصود بالنقص وھذا ھو الذی حمل البحر علی قصر الاستعمال علی مالاقی بل نقول انه اذا انغمس فیه وھو قلیل فقد استعمل کله معلان جمیعه شیئ واحد فلا قصر ولا سریان ولقد احسن العلامة الشامی رحمه الله تعالی اذقرره بقوله فی المنحة یعنی انه لما انغمس او ادخل یده مثلا صار مستعملا لجمیع ذلك الماء حکماً لان المستعمل حقیقة ھو مالاقی جسده بخلاف ما اذا صب المستعمل فیه فان المستعمل حقیقة وحکماً ھو ذلك الملاقی فلا وجه للحکم علی الملاقی فیه بالاستعمال مالم یساوه اویغلب علیه اذلم یدخل فیه جسده حتی یحکم علیه بالاستعمال حکماً، یدل علیه ما فی الاسرار للدبوسی وقولھم فی مسألة البئر جحط لوانغمس بقصد الاغتسال للصلاة صار الماء مستعملا اتفاقاً اه فھذا ھو التحقیق والله تعالی ولی التوفیق۔ فائدة ۳: سبق العلامة ابا الاخلاص

(اردو متن): طرف جائے گا کیونکہ یہ ایک دوسرے کے قریب ہیں، اور یہ صریحاً مردود ہے، جیسا کہ گزرا کہ اعتبار غلبہ کو ہے اور اگر سرایت کرے گا تو ملاقی میں کرے گا، جیسا کہ علامہ عبدالبر کو وہم ہوا ہے تو فرق باطل ہو جائے گا اور کلام مقصود بالنقص کی طرف لوٹے گا، اور یہی چیز ہے جس نے بحر کو اس پر مجبور کیا وہ استعمال کا حکم صرف اس پر لگائیں جو ملاقی ہو، بلکہ ہم کہتے ہیں جب کوئی شخص پانی میں غوطہ لگائے اور پانی کم ہو تو سب یک دم مستعمل ہو جائیگا کیونکہ وہ سارے کا سارا شیئی واحد ہے، تو نہ قصر اور نہ سرایت ہے، علامہ شامی نے اس کو برقرار رکھ کر اچھا کیا، وہ منحہ میں فرماتے ہیں یعنی جب اس نے غوطہ لگایا یا مثلاً اس نے اپنا ہاتھ ڈبویا تو سارا پانی مستعمل ہوگیا حکماً، کیونکہ حقیقۃً مستعمل تو صرف وہی ہے جو بدن سے متصل ہو، اور اگر مستعمل اس میں ڈالا گیا تو دوسرا حکم ہے، کیونکہ حقیقۃً و

حکماً مستعمل وہی ملاقی ہے تو کوئی وجہ نہیں کہ ملاقی فیہ پر استعمال کا حکم لگایا جائے تا وقتیکہ وہ اس کے برابر نہ ہو یا اس پر غالب نہ ہو کیونکہ اس کا جسم تو اس میں داخل نہیں ہوا کہ اس پر حکماً استعمال کا حکم لگایا جائے، اس پر دبوسی کی اسرار دلالت کرتی ہے اور ان کا مسئلہ البئر جحط میں یہ کہنا کہ اگر کسی شخص نے کنویں میں اس نیت سے غوطہ لگایا کہ نماز کیلئے غسل کرے گا تو پانی اتفاقاً مستعمل ہو جائے گا اھ تو تحقیق یہی ہے اور اللہ تعالیٰ توفیق دینے والا ہے۔ فائدہ ۳: علامہ نے ابوالاخلاص سے پہلے فرق کو

1 منحة الخالق على البحر الرائق كتاب الطهارة ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/۷۱ صفحہ 229 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2.

Some contemporaries of Allama Zain expressed the distinction in this way, presented it, and then refuted it. His statement in 'Al-Bahr' is as follows: When you have understood this, the weakness of the claim made by some in our time becomes apparent—that when used water (must'amal) is poured into pure water and the pure water is predominant, ablution with all of it is permissible; however, if one performs ablution in a small pool, all of it becomes used. This is because there is no meaningful distinction between the two cases. The imagined distinction—that in ablution, usage spreads throughout the whole, whereas it does not when poured—is dismissed because prevalence (shuyūʿ) and mixing are equal in both cases. Rather, one could say that pouring wash-water from outside has a stronger effect than anything else, as the used water is identified through observation and specification, and its separation is distinct. This statement was approved by both Al-Sayyid 'Ta' and 'Sha,' until 'Ta,' after mentioning Al-Shurunbulali's words, said: This misconception was mentioned in 'Al-Bahr' and ignored. However, the meticulous Al-Ala'i took issue with 'Al-Bahr' using Al-Shurunbulali's words and said: Refer to it and reflect carefully.

I say: The statement 'it spreads throughout the whole' can have three interpretations, because 'prevalence' (shuyūʿ) is (1) mixing without distinction...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/72.
2. Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter of Waters, Beirut, 1/102.
3. Al-Durr al-Mukhtar with Tahtawi's Marginalia, Chapter of Waters, Beirut, 1/102.

फतावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग २)।

अल्लामा ज़ैन के कुछ समकालीनों ने इस तरह अंतर व्यक्त किया, इसे प्रस्तुत किया और फिर इसका खंडन किया। 'अल-बह्र' में उनका कथन इस प्रकार है: जब आपने इसे समझ लिया, तो हमारे समय के कुछ लोगों के इस दावे की कमज़ोरी स्पष्ट हो जाती है कि जब उपयोग किया हुआ पानी (मुस्तअमल) शुद्ध पानी में डाला जाए और शुद्ध पानी की मात्रा अधिक हो, तो उस पूरे पानी से वुज़ू (अंग प्रक्षालन) जायज़ है; लेकिन अगर कोई छोटे हौज़ में वुज़ू करता है, तो वह पूरा पानी मुस्तअमल हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों स्थितियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। वह कल्पित अंतर—कि वुज़ू की स्थिति में उपयोग पूरे पानी में फैल जाता है, जबकि पानी डालने पर ऐसा नहीं होता—खारिज कर दिया गया है क्योंकि प्रसार (शुयूअ) और मिश्रण दोनों स्थितियों में समान है। बल्कि, कोई यह कह सकता है कि बाहर से धोने वाला पानी डालना अधिक प्रभावी है, क्योंकि उपयोग किया हुआ पानी देख कर और पहचान कर निर्धारित हो जाता है, और उसका अलग होना स्पष्ट होता है। इस बात को सैय्यदैन 'त' और 'श' ने पसंद किया, यहाँ तक कि 'त' ने शरनबुलली के शब्दों का उल्लेख करने के बाद कहा: इस वहम का ज़िक्र 'अल-बह्र' में किया गया और इसे नज़रअंदाज़ कर दिया गया। हालाँकि, बारीकी से देखने वाले अल-अलाई ने अल-शरनबुलली के शब्दों के माध्यम से 'अल-बह्र' पर आपत्ति जताई और कहा: पूरी गंभीरता से इसकी ओर ध्यान दें।

मैं कहता हूँ: "यशीउ फिल जमीअ" (यह सब में फैल जाता है) वाले कथन की तीन व्याख्याएँ हो सकती हैं क्योंकि "शुयूअ" (प्रसार) (१) बिना किसी भेद के मिश्रण है...

---

1. बह्र अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/७२।
2. तहतावी अला अल-दुर्र, बाब अल-मियाह (पानी का अध्याय), बेरूत, १/१०२।
3. अल-दुर्र अल-मुख्तार अला हाशियत अत-तहतावी, बाब अल-मियाह, बेरूत, १/१०२।

पृष्ठ २३० / ७११

بیان کیا ، اسی طرح علامہ زین کے بعض معاصرین نے فرق بیان کیا ، اور اس کو رد کیا ، اور یہ بحر میں ان کی عبارت ہے ، جب تم نے یہ جان لیا تو ہمارے بعض معاصرین کے اس قول کا ضعف ظاہر ہوگیا کہ مستعمل پانی جب مطلق پانی میں ڈالا جائے اور مطلق غالب ہو تو سارے پانی سے وضو جائز ہے اور جب چھوٹے حوض میں وضو کیا تو کل مستعمل ہو گیا ، کیونکہ دونوں مسئلوں میں فرق کی کوئی وجہ نہیں ، اور یہ فرق جو بیان کیا جاتا ہے کہ وضو کی صورت میں استعمال تمام پانی میں عام ہو جاتا ہے اور ڈالنے میں یہ صورت نہیں ہوتی ، اس لئے ناقابلِ لحاظ ہے کہ شیوع اور اختلاط دونوں صورتوں میں برابر ہے ، بلکہ کہا جا سکتا ہے کہ دھوون کا باہر سے ڈالنا زیادہ مؤثر ہے ، کیونکہ اس میں مستعمل دیکھنے اور علیحدہ پہچان کرنے سے متعین ہو جاتا ہے اھ اور اس کلام کو سید ان 'ط' اور 'ش' نے پسند کیا یہاں تک کہ 'ط' نے شرنبلالی کا کلام ذکر کرنے کے بعد فرمایا ، اس وہم کو بحر میں ذکر کیا اور اس سے اعراض کیا اھ اور مدقق علائی نے بحر پر شرنبلالی کے کلام سے استدراک کیا اور فرمایا پورے غور سے اس کی طرف مراجعت کریں اھ میں کہتا ہوں "یشیع فی الجمیع" والے قول میں تین تاویلات ہو سکتی ہیں کیونکہ شیوع (۱) امتزاج بلا امتیاز ہو

---

1 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۲ 2 طحطاوی علی الدر باب المیاہ بیروت ۱/ ۱۰۲ 3 الدر المختار علی حاشیۃ الطحطاوی باب المیاہ بیروت ۱/ ۱۰۲

...without distinction, so determination is not possible; rather, the whole bears the possibility by way of substitution, like the gift of an undivided share (mushaa'). The meaning of this is that when one performs ablution in a small tank (fasqiya), the water of his ablution mixes with the rest of it such that distinction is impossible. Therefore, whichever handful you take, it bears the possibility of being from the used (musta'mal) water. Thus, the ruling of usage becomes common throughout all parts, like the commonness of a gift of an undivided half in the two halves. (2) And Shiyu' means Sariyan (pervasiveness), meaning if one performs ablution in it, the part he touches becomes used, and the ruling spreads from it to its neighbor, and so on, until the whole becomes used. (3) And Shiyu' comes in the sense of 'Umum (generality), meaning in the case of ablution, the ruling of usage applies to all. You know that the third meaning is correct truth with no dust on it at all, and the objection in Al-Bahr does not touch it because the generality of the ruling is due to the generality of the cause, for the whole is contacted [by the limbs], as has been mentioned repeatedly. The second meaning is what 'Allamah Al-Shurunbulali inclined towards in the primary sense of his speech, and you have known what is for it and what is against it. The first meaning is like it in invalidity; the necessity of establishing a difference through its invalidation is sufficient rebuttal against both of them. Al-Bahr interpreted it according to the first meaning, so he explained Shiyu' as Ikhtilat (mixture) and ruled that it is the same in both cases. According to him, this is due to the first meaning, not due to Sariyan and 'Umum, unless by Shiyu' he meant its cause and explained it as Ikhtilat, then the meaning would be that the cause of Sariyan or 'Umum for you is Ikhtilat, which is the same in both cases despite the deviation of the ruling.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

...बिना किसी भेद के इसलिए निर्धारण संभव नहीं है; बल्कि पूरे में विकल्प (बदली) के तौर पर इसकी संभावना है, जैसे कि अविभाजित वस्तु (मुशाअ) का दान। इसका अर्थ यह है कि जब किसी छोटे हौज (फस्किया) में वज़ू किया जाता है, तो वज़ू का पानी शेष पानी में इस प्रकार मिल जाता है कि भेद करना असंभव होता है। इसलिए, आप जो भी चुल्लू लेंगे, उसमें प्रयुक्त (मुस्तअमल) पानी से होने की संभावना है। इस प्रकार, उपयोग का नियम सभी भागों में व्यापक हो जाता है, जैसे दो अविभाजित भागों वाली चीज़ के आधे हिस्से का दान। (2) और 'शियूअ' का अर्थ 'सरयान' (प्रसार) है, अर्थात् यदि इसमें वज़ू किया जाता है, तो वह हिस्सा जिससे संपर्क होता है, प्रयुक्त हो जाता है, और नियम उससे उसके पड़ोसी हिस्से तक फैलता है, और इसी तरह, यहाँ तक कि पूरा प्रयुक्त हो जाता है। (3) और 'शियूअ' व्यापकता (उमूम) के अर्थ में भी आता है, अर्थात् वज़ू की स्थिति में उपयोग का नियम पूरे पर लागू हो जाता है। आप जानते हैं कि तीसरा अर्थ बिल्कुल सही और संदेह रहित सत्य है, और 'अल-बहर' की आपत्ति इस पर लागू नहीं होती क्योंकि नियम की व्यापकता कारण की व्यापकता के कारण है, क्योंकि सारा पानी संपर्क में आता है, जैसा कि कई बार उल्लेख किया गया है। दूसरे अर्थ की ओर अल्लामा शरुन्बुलाली का झुकाव उनके भाषण के प्राथमिक बोध में है, और आप इसके पक्ष और विपक्ष को जान चुके हैं। पहला अर्थ भी अमान्यता में उसी के समान है; उसकी अमान्यता के माध्यम से अंतर स्थापित करने की आवश्यकता उन दोनों के विरुद्ध पर्याप्त खंडन है। 'अल-बहर' ने इसे पहले अर्थ के अनुसार व्याख्यायित किया, इसलिए उन्होंने 'शियूअ' को 'इख़्तिलात' (मिश्रण) के रूप में समझाया और नियम दिया कि यह दोनों स्थितियों में समान है। उनके अनुसार, यह पहले अर्थ के कारण है, न कि 'सरयान' और 'उमूम' के कारण, जब तक कि 'शियूअ' से उनका तात्पर्य इसका कारण न हो और उन्होंने इसे 'इख़्तिलात' के रूप में समझाया हो, तब अर्थ यह होगा कि आपके लिए 'सरयान' या 'उमूम' का कारण 'इख़्तिलात' है, जो नियम के विचलन के बावजूद दोनों स्थितियों में समान है।

पृष्ठ 711 का 231

من دون امتیاز فلا یمکن التعیین بل الکل یحتملہ علی البدلیۃ کھبۃ المشاع والمعنی علیہ انہ اذا توضأ فی الفسقیۃ اختلط ماء وضوئہ بسائرھا بحیث لا یمکن التمییز فأی غرفۃ تأخذھا تحتمل ان تکون من المستعمل فیکون حکم الاستعمال شائعا فی جمیع الاجزاء شیوع ھبۃ نصف شائع فی النصفین (۲) والشیوع السریان ای اذا توضأ فیھا استعمل مالاقاہ وتعدی الحکم منہ الی جارہ وھکذا فصار الکل مستعملا (۳) والشیوع العموم ای ان فی الوضوء یعم الاستعمال لجمیع وانت تعلم ان المعنی الثالث حق صحیح لا غبار علیہ اصلا ولا یمسہ مافی البحر لان عموم الحکم لعموم السبب فان الکل ملاق کما سبق مرارا والمعنی الثانی ھو ماجنح الیہ العلامۃ الشرنبلالی فی متبادر کلامہ وقد علمت مالہ وعلیہ والمعنی الاول مثلہ فی البطلان کفی ردا علیھما مسألۃ الملقی ولزوم اثبات الفرق بابطالہ والبحر حملہ علی الاول ففسر الشیوع بالاختلاط وحکم انہ فی الصورتین سواء وانما ذلک عندہ للمعنی الاول دون السریان والعموم الا ان یرید بالشیوع سببہ ویفسرہ بالاختلاط فیکون المعنی ان سبب السریان اوالعموم عندک وھو الاختلاط سواء فی الصورتین مع تخلف الحکم

تو تعیین ممکن نہیں بلکہ کل میں اس کا احتمال علی سبیل البدلیہ ہے جیسا کہ مشاع کا ہبہ، اور اس کا مفہوم یہ ہے کہ جب چھوٹے حوض میں وضو کیا تو اس کا پانی تمام پانی میں ملے گا اور امتیاز ممکن نہیں، تو جو چلو لیا جائے گا اس میں احتمال ہے کہ مستعمل پانی سے ہو، تو استعمال کا حکم تمام پانی کو اس طرح شامل ہوگا جیسا کہ غیر ممتاز دو حصوں والی چیز کے نصف کا ہبہ ہو، اور شیوع (۲) سریان یعنی جب اس میں وضو کیا تو جو اس کے ملاقی ہے وہ مستعمل ہو جائیگا پھر اس کے ساتھ والے اجزاء تک یہی حکم چلے گا اور اس طرح سارے کا سارا مستعمل ہو جائیگا، اور (۳) شیوع عموم کے معنی میں بھی آتا ہے یعنی وضو کی صورت میں استعمال کا حکم تمام پر

لاگو ہو جاتا ہے، اور آپ جانتے ہیں کہ تیسرا معنی حق اور بے غبار ہے، اور بحر کا اعتراض اس پر نہیں ہوتا، کیونکہ حکم کا عموم سبب کے عموم کی وجہ سے ہے کیونکہ کل ملاقی ہے جیسا کہ کئی مرتبہ گزرا، اور دوسرے معنی کی طرف علامہ شرنبلالی کا میلان ہے جیسا کہ ان کے کلام سے متبادر ہے اور اس کا مالہ و ما علیہ آپ جان چکے ہیں اور پہلا معنی بھی اسی کی طرح باطل ہے، ان کی تردید میں اور اس کے ابطال کو فرق کے اثبات کا لازم ہونا کافی ہے اور بحر نے اس کو پہلے پر محمول کیا ہے اور شیوع کی تفسیر اختلاط سے کی ہے اور حکم لگایا ہے کہ یہ دونوں صورتوں میں برابر ہے اور ان کے نزدیک یہ پہلے معنی کے باعث ہے سریان و عموم کی وجہ سے نہیں ہے، ہاں اگر شیوع سے مراد اس کا سبب لیں تو

...And if they interpret it as mixing, the meaning would be that the cause of pervasion or generality, in your view, is mixing itself, and it is the same in both cases, whereas the ruling for a meeting point is different by consensus. You have already known the correct answer to it. Yes, whoever presumes pervasion will be refuted, and he will not be able to refute it back. (T)

I say: To advance further, what they have stated is not correct. Firstly, it is not a condition for it to be considered "used" (must'amal) that its passage over the body be seen, nor is it necessary to witness its separation. Being visible does not grant it superiority over others, especially when there is certain knowledge of it. There is no doubt that it is a distinct entity in itself; therefore, our inability to distinguish it does not harm it. Secondly, being "used" is not a matter of degree (tashkeek) such that the visible part would be stronger than the others.

Thirdly, its basis is solely what was fixed in his (may Allah Almighty have mercy on him) mind: that the meeting parts are only the ones in contact. However, this is not correct. Rather, it applies to all parts, as we have researched. Just as the water poured (on the body) appears distinct, separate, and identifiable as we witness its passage over the body and then its separation from it, similarly, the entire water in the reservoir is distinct, separate, identified, and witnessed as the limbs enter it and then separate from it. (T)

Note 4: The complete discourse of 'Al-Asrar' in the second section—its beginning matches what is stated in 'Al-Badai,' that the "used" water refers to the parts in contact with the body, while its conclusion is an explicit text on what is the truth. So much so that the brother of the author of 'Al-Bahr,' Allamah Umar ibn Nujaim, who follows him in this matter,

...और यदि वे इसकी व्याख्या मेल-जोल (मिश्रण) से करते हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि आपके निकट व्याप्तता या व्यापकता का कारण मेल-जोल ही है, और यह दोनों स्थितियों में समान है, जबकि संगम (मुलाक़ी) के मामले में निर्णय सर्वसम्मति से भिन्न है। और इसका सही उत्तर आप जान चुके हैं। हाँ, जो कोई व्याप्तता का अनुमान लगाता है, उसका खंडन किया जाएगा और वह उसका खंडन नहीं कर पाएगा। (त)

मैं कहता हूँ: आगे बढ़ते हुए, उन्होंने जो कुछ भी कहा है वह सही नहीं है। पहली बात यह है कि 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) होने के लिए यह शर्त नहीं है कि उसे शरीर पर से गुजरते हुए देखा जाए, और न ही उसका अलग होना देखना आवश्यक है। देखने योग्य होना इसके लिए दूसरों पर श्रेष्ठता का कारण नहीं है, जबकि इसका निश्चित ज्ञान हो। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह अपने आप में एक विशिष्ट वस्तु है, इसलिए हमारा इसे अलग न पहचान पाना इसे नुकसान नहीं पहुँचाता। दूसरी बात यह है कि 'प्रयुक्त' होना संदेह (तशकीक) की श्रेणी में नहीं आता कि देखा गया हिस्सा दूसरों से अधिक प्रबल हो।

तीसरी बात यह है कि इसका आधार केवल वही है जो उनके(अल्लाह उन पर कृपा करे) मन में बैठा हुआ था कि संगम केवल वही हिस्से हैं जो संपर्क में हैं। हालाँकि, यह सही नहीं है, बल्कि यह सभी हिस्सों पर लागू होता है, जैसा कि हमने शोध किया है। जैसे शरीर पर डाला गया पानी अलग और स्पष्ट दिखाई देता है और शरीर से अलग होता हुआ भी दिखता है, उसी तरह हौज (कुंड) का सारा पानी अलग और स्पष्ट है जो दिखाई देता है, उसमें अंगों का डूबना और अलग होना भी दिखाई देता है। (त)

विशेष टिप्पणी ४: 'अल-असरार' का पूरा प्रवचन जो दूसरे खंड में आया है—इसका आरम्भ 'अल-बदाइ' के अनुसार है कि प्रयुक्त पानी वही हिस्से हैं जो शरीर के संपर्क में आते हैं, जबकि इसका अंत सत्य पर एक स्पष्ट पाठ है। यहाँ तक कि 'अल-बह्र' के लेखक के भाई, अल्लामा उमर इब्न नुजैम, जो इस मसले में उनके अनुयायी हैं,

فالملقی وفاقاً وقد علمت جوابہ علی الحق نعم من یزعم السریان یرد علیہ ولا یُرَدُّ۔ | --- اور اس کی تفسیر وہ اختلاط سے کریں تو معنی یہ ہوں گے کہ سریان یا عموم کا سبب تمہارے نزدیک اختلاط ہی ہے اور وہ دونوں صورتوں میں یکساں ہے حالانکہ ملقی میں حکم مختلف ہے اتفاقاً، اور اس کا حق جواب آپ جان چکے ہیں، ہاں جو سریان کا گمان کرتا ہے اس پر رد کیا جائے گا اور وہ رد نہ کرے گا۔ (ت)

ثم اقول: ما ترقی بہ لا احصلہ (۱) فأولا لیس من شرط الاستعمال رؤیۃ مرورہ علی البدن ولا معاینۃ انفصالہ ولا لمرئیہ مزیۃ علی غیرہ مع تحقق العلم القطعی بہ ولا شك انہ شیئ مشخص بنفسہ فلا یضرہ عدم قدرتنا علی تمییزہ وثانیا لیس الاستعمال (۲) مقولا بالتشکیك لیکون المرئی اقوی من غیرہ وثالثا: انما (۳) مبناہ علی ما ارتکز في ذھنہ رحمہ اللہ تعالی ان الملاقی ھي الاجزاء الملاصقۃ ولیس کذلك بل الکل کما حققنا فکما ان المصبوب کان ممتازاً منحازا مشخصاً عاینا مرورہ علی البدن ثم انفصالہ عنہ کذلك کل الماء في الفسقیۃ ممتاز منحاز متعین معاین ورود الاعضاء فیہ ثم انفصالھا منہ۔ | میں کہتا ہوں برسبیل ترقی جو کچھ انہوں نے فرمایا ہے وہ درست نہیں ، اولاً مستعمل ہونے کی یہ شرط نہیں ہے کہ اس کو بدن پر گزرتا ہوا دیکھا جائے ، نہ اس کے جدا ہونے کا دیکھنا ضروری ہے اور نہ ہی دیکھنے کے قابل ہونا اس کیلئے دوسروں پر وجہ فضیلت ہے ، جبکہ اس کا علم قطعی ہو اور اس میں شک نہیں کہ یہ ایک ایسی چیز ہے جو مشخص بنفسہ ہے تو ہمارا اس کی تمیز پر پر قادر نہ ہونا اس کو مضر نہیں ، ثانیاً استعمال تشکیک کے قبیلہ میں سے نہیں تاکہ مرئی دوسروں سے اقوی ہو۔

ثالثاً اس کا مبنی صرف یہ ہے کہ اُن کے (رحمہ اللہ تعالیٰ) ذہن میں یہ بات مرکوز ہو گئی ہے کہ ملاتی صرف وہ اجزاء ہیں جو متصل ہیں ، حالانکہ یہ درست نہیں بلکہ تمام اجزاء میں ، جیسا کہ ہم نے تحقیق کی ہے جیسا کہ بدن پر ڈالا جانے والا پانی الگ اور ممتاز نظر آتا ہے اور جسم سے جدا ہوتا بھی دکھائی دیتا ہے اسی طرح حوض کا کُل پانی الگ اور ممتاز ہے جو نظر آتا ہے ، اس میں اعضاء کا ڈوبنا اور جُدا ہونا بھی نظر آتا ہے۔ (ت)

فائدہ ۴: کلام الاسرار برمته في الفصل الثاني وقع اوله موافقا لما وقع في البدائع من ان المستعمل هي الاجزاء الملاصقة بالبدن وآخره نص صريح على ماهو الحق حتى ان اخا | فائدہ ۴: اسرار کا مکمل کلام جو گزرا دوسری فصل میں اس کی ابتدا بدائع کے مطابق ہے کہ مستعمل وہی اجزا ہیں جو بدن سے متصل ہیں اور اس کا آخر حق پر نص صریح ہے ، یہاں تک کہ صاحب البحر کے بھائی علامہ عمر ابن نجیم جو اس مسئلہ میں ان کے پیروکار ہیں،

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

The author of Al-Bahr, the learned scholar Umar ibn Nujaym (may Allah have mercy on him), despite following the traces of Al-Bahr in this matter, was just in what he quoted in the margins of Al-Bahr. Where he said after quoting the passage from Al-Asrar that "this passage has cleared the dust (confusion), etc.", he responded to it by saying "Yes, it cleared the dust until its end, only that Muhammad says: when ghusl is performed in a small amount of water, it all legally becomes used (musta'mal). We say there are two scenarios here: one is the falling of used water into unused water, then the dominance of the water that is not used will be considered. The second is the water with which a person performed wudu or dipped his hand into it due to a need, so it all legally became used as you have seen." [End of quote]. This was quoted in Al-Minha and he maintained it. Therefore, the author of Al-Bahr could not benefit from the beginning of this passage, and in its rejection, he said that this is based on a weak narration. The humble servant [the author] has provided a harmonization between its beginning and end and presented it as a coherent discourse. The learned Shaykh Abd al-Barr, in the commentary of Al-Wahbaniyya, took another path, which is that he considered its beginning as a question and its end as an answer. He says that the summary is that Abu Zayd al-Dabusi has mentioned it in the book Al-Asrar.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/71.
2. "Thus in my copy of Al-Minha, and the correct version is 'not for a need' or 'for other than a need'" (Author). In the copy of Al-Minha available to me, it is the same way, and "not for a need" or "for other than a need" is more appropriate. (Translator).
3. Minhat al-Khaliq on Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/71.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

बहर के लेखक, प्रसिद्ध विद्वान उमर बिन नुजैम (अल्लाह उन पर रहम करे), इस मसले में 'आसार अल-बहर' के पदचिन्हों पर चलने के बावजूद, बहर के हाशिये (margins) में जो कुछ उन्होंने उद्धृत किया है, उसमें उन्होंने इंसाफ से काम लिया है। जहाँ उन्होंने 'अल-असरार' के अंश के बाद यह कहा कि "इस इबारत ने ग़ुबार (भ्रम) साफ कर दिया है, आदि", तो उन्होंने उस पर कहा: "हाँ, इसके अंत तक ग़ुबार साफ कर दिया है, सिर्फ इतना है कि मुहम्मद कहते हैं कि जब थोड़े से पानी में ग़ुस्ल किया गया तो वह सारा हिकमन (कानूनी तौर पर) मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो गया। हम कहते हैं यहाँ दो सूरतें हैं: एक, मुस्तअमल पानी का गैर-मुस्तअमल में गिरना, तो इसमें उस पानी की प्रबलता का एतबार (विचार) होगा जो मुस्तअमल नहीं है। दूसरी वह पानी जिससे एक शख्स ने वज़ू किया हो या ज़रूरत के कारण उसने अपना हाथ उसमें डाला हो तो वह सारा हिकमन मुस्तअमल हो गया जैसा कि आपने देखा।" [उद्धरण समाप्त]। इसे 'मुन्हा' में नक़्ल (उद्धृत) किया गया और उन्होंने इसे बरकरार रखा। इसलिए, बहर के लेखक को इस इबारत के पहले हिस्से से कोई फायदा न हुआ और इसके रद्द (अस्वीकृति) में उन्होंने कहा कि यह एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायत पर आधारित है। इस अदना सेवक (लेखक) ने इस क़ौल (कथन) के अव्वल (शुरुआत) और आखिर (अंत) में तत्बीक़ (सामंजस्य) दी है और इसे एक व्यवस्थित कलाम (वक्तव्य) की हैसियत से पेश किया है। और शेख अल्लामा अब्दुल बर्र ने 'वहबानिया' की शरह (व्याख्या) में एक दूसरी राह इख्तियार (अपनाई) की है और वह यह कि इसके अव्वल को सवाल और आखिर को जवाब करार दिया है। वे फ़रमाते हैं कि हासिल यह है कि अबू ज़ैद अद-दबूसी ने किताब 'अल-असरार' में वह ज़िक्र कर लिया है।

1. अल-बहर अर-राइक, किताबत अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/71।
2. "मेरी 'मुन्हा' की प्रति में ऐसा ही है, और सही 'हाजत के लिए नहीं' या 'हाजत के अलावा' है" (लेखक)। मेरे पास मौजूद मुन्हा की प्रति में इसी तरह है और 'हाजत के लिए नहीं' या 'हाजत के अलावा' अधिक उपयुक्त है। (अनुवादक)।
3. मुनहतुल खालिक अला अल-बहर अर-राइक, किताबत अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/71।

पृष्ठ 711 का 233

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

صاحب البحر العلامۃ عمر بن نجیم رحمھم اللہ تعالی مسئلہ آثار البحر میں ان کی پیروی کرنے کے باوجود، بحر کے حاشیہ میں جو کچھ انہوں نے نقل کیا ہے اس میں انہوں نے انصاف کیا ہے، جہاں انہوں نے اسرار کی عبارت کے بعد کہا کہ اس عبارت نے غبار صاف کر دیا الخ اس پر کہا ہاں غبار صاف کر دیا اس کے آخر تک، صرف اتنا ہے کہ محمد کہتے ہیں کہ جب تھوڑے سے پانی میں غسل کیا تو کل حکماً مستعمل ہو گیا، ہم کہتے ہیں یہاں دو صورتیں ہیں ایک تو مستعمل پانی کا غیر مستعمل میں واقع ہونا تو اس پانی کے غلبہ کا اعتبار ہوگا جو مستعمل نہیں دوسرا وہ پانی جس سے ایک شخص نے وضو کیا ہو یا بوجہ حاجت اس نے اپنا ہاتھ اس میں ڈالا تو کل حکماً مستعمل ہو گیا جیسا کہ آپ نے دیکھا اھ اس کو منحہ میں نقل کیا اور برقرار رکھا، اس لئے بحر کو اس عبارت کے اول سے کوئی فائدہ نہ ہوا اور اس کے رد میں انہوں نے کہا کہ یہ ایک ضعیف روایت پر مبنی ہے، اور ناچیز نے اس قول کے اول و آخر میں تطبیق دی ہے اور اس کو منظم کلام کی حیثیت سے پیش کیا ہے اور شیخ علامہ عبدالبر نے وہانیہ کی شرح میں ایک دوسری راہ اختیار کی ہے اور وہ یہ کہ اس کے اول کو سوال اور آخر کو جواب قرار دیا ہے، وہ فرماتے ہیں کہ حاصل یہ ہے کہ ابو زید الدبوسی نے کتاب الاسرار میں وہ ذکر کر لیا ہے

1۔ البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/ 71 2۔ کذا فی نسختی المنحۃ وصوابہ لا لحاجۃ او لغیر حاجۃ اھ منہ (م) میرے پاس موجود منحہ کے نسخہ میں اسی طرح ہے اور مناسب " لا لحاجۃ " یا " لغیر حاجۃ " ہے۔ (ت) 3۔ منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/ 71

صفحہ 233 از 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Arabic Column Text:] What was mentioned in 'Al-Badai' by way of obligating Muhammad from Abu Yusuf (may Allah have mercy on them both), and mentioning Muhammad's response to it, which clarified the confusion and made clear every estimation and conjecture. For he said after mentioning the schools of our scholars regarding used water and the reasoning of Muhammad (may Allah have mercy on them): Generally, our sheikhs support the view of Muhammad and his narration from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). Then he said: The other view (i.e., its impurity) is argued for by what was narrated, so he mentioned the hadith "None of you should urinate [in standing water]." Then he said: And whoever says that used water is pure and purifying does not make bathing in it forbidden... until the end of what was previously mentioned from Al-Dabbusi. (1)

I say: This statement (1), although not apparent from the context of the wording in 'Al-Asrar,' its explanation depends on what is mentioned in 'Al-Badai' then 'Al-Bahr,' that removing water from being a purifier without necessity is forbidden (2) (End of quote). From this, it is inferred that the bath of a person in a state of minor ritual impurity in a small amount of water is also forbidden according to Muhammad. So, it is as if Imam Abu Yusuf obligates him by saying: According to you, used water is pure, and pure water does not strip the purifying water of its purifying quality as long as the purifying water is predominant, like milk falling into it. So, for you, it should not be correct to forbid bathing in it unless...

[Urdu Column Text:] What was mentioned in 'Al-Badai' as an objection against Muhammad from Abu Yusuf, and Muhammad's response was also mentioned, through which the whole matter became clear. He first mentioned the stance of our scholars regarding used water and mentioned the reasoning of Imam Muhammad, then said that the general scholars support the view of Imam Muhammad and his narration which is from Imam Abu Hanifa. Then he said: The other view (meaning its impurity) was argued from the narrated hadith, then he reasoned with the hadith "None of you should urinate." Then he said those who say that used water is pure and purifying do not declare bathing in it forbidden, until the end of what was mentioned from Al-Dabbusi. (T)

I say that this statement is not apparent from the context of the text of 'Al-Asrar,' its explanation depends on what is mentioned in 'Al-Badai' and then 'Al-Bahr' that it is forbidden to remove water from being a purifier without necessity. (End of quote)

From this, it is known that bathing in a small amount of water for someone without ablution is also forbidden according to Muhammad. It is as if Imam Abu Yusuf is saying to him as an obligation that according to you, used water is pure, and pure water does not take away the purification quality of other water as long as the pure water is dominant, for example, if milk falls into it, then for you...

Footnotes: 1. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company Karachi 1/71 2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company Karachi 1/70 Page 234 of 711

फ़तावा रिज़विया, खंड 2

[अरबी कॉलम का पाठ:] जो 'बदाइ' में इमाम अबू युसुफ़ की ओर से इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन दोनों पर रहम करे) पर आरोप का ज़िक्र किया गया है और इमाम मुहम्मद का जवाब ज़िक्र किया गया है, जिससे पूरी बात स्पष्ट हो गई है। उन्होंने पहले तो हमारे उलेमा का इस्तेमाल शुदा (मस्तूमल) पानी के बारे में मज़हब ज़िक्र किया और इमाम मुहम्मद का तर्क ज़िक्र किया, फिर कहा कि आम मशाइख़ इमाम मुहम्मद के कौल और उनकी रिवायत जो इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर राज़ी हो) से है, का समर्थन करते हैं। फिर फ़रमाया कि दूसरे कौल पर (यानी उसकी नजासत पर) उस हदीस से तर्क दिया गया है जो रिवायत की गई है, फिर "ला यबुलन अहदुकुम" वाली हदीस से तर्क दिया। फिर फ़रमाया जो हज़रात यह कहते हैं कि मुस्तअमल पानी पाक और पाक करने वाला है, वे उसमें ग़ुस्ल (स्नान) करने को हराम नहीं मानते हैं... अल-दब्बूसि से पहले बताई गई बात के अंत तक। (1)

मैं कहता हूँ: यह बयान (1), हालांकि 'अस्रार' की इबारत के संदर्भ से ज़ाहिर नहीं है, इसका स्पष्टीकरण उस पर निर्भर है जो 'बदाइ' फिर 'बहर' में ज़िक्र किया गया है कि पानी को बिना ज़रूरत पाक करने की क्षमता से बाहर करना हराम है (2)। इससे पता चलता है कि बे-वज़ू व्यक्ति का थोड़े पानी में ग़ुस्ल करना मुहम्मद के नज़दीक भी हराम है। गोया इमाम अबू युसुफ़ तर्क के तौर पर उनसे यह कहते हैं कि तुम्हारे नज़दीक मुस्तअमल पानी पाक है, और पाक पानी दूसरे पानी की पाक करने की क्षमता को खत्म नहीं करता जब तक कि पाक करने वाला पानी ज़्यादा हो, जैसे कि उसमें दूध गिर जाए। तो आपके लिए उसमें ग़ुस्ल करने को हराम करना सही नहीं होना चाहिए जब तक...

[उर्दू कॉलम का पाठ:] जो 'बदाइ' में इमाम अबू युसुफ़ की ओर से इमाम मुहम्मद पर आरोप ज़िक्र किया गया है और इमाम मुहम्मद का जवाब ज़िक्र किया गया है जिससे पूरी बात स्पष्ट हो गई। उन्होंने पहले तो हमारे उलेमा का मज़हब मुस्तअमल पानी की बाबत ज़िक्र किया और इमाम मुहम्मद का तर्क ज़िक्र किया, फिर कहा कि आम मशाइख़ इमाम मुहम्मद के कौल और उनकी रिवायत जो इमाम अबू हनीफ़ा से है, का समर्थन करते हैं। फिर फ़रमाया दूसरे कौल पर (यानी उसकी नजासत पर) उस हदीस से तर्क दिया गया है जो रिवायत की गई है, फिर "ला यबुलन अहदुकुम" वाली हदीस से तर्क दिया। फिर फ़रमाया जो हज़रात यह कहते हैं कि मुस्तअमल पानी पाक और पाक करने वाला है वे उससे ग़ुस्ल को हराम करार नहीं देते हैं, अल-दब्बूसि से पहले गुज़री हुई बात के अंत तक। (त)

मैं यह कहता हूँ कि यह बयान 'अस्रार' की इबारत के संदर्भ से ज़ाहिर नहीं है, इसका बयान उस पर निर्भर है जो 'बदाइ' फिर 'बहर' में ज़िक्र किया गया है कि पानी को पाक करने वाला होने से बिना ज़रूरत बाहर करना हराम है। इससे मालूम होता है कि बिना वज़ू वाले का थोड़े पानी में ग़ुस्ल करना मुहम्मद के नज़दीक भी हराम है, गोया इमाम अबू युसुफ़ बाध्यकारी तौर पर उनसे यह कहते हैं कि तुम्हारे नज़दीक मुस्तअमल पानी पाक है और पाक पानी दूसरे पानी की पाक करने की क्षमता को खत्म नहीं करता है जब तक कि पाक करने वाला पानी ज़्यादा हो, जैसे कि दूध उसमें गिर जाए, तो आप...

पाद-टिप्पणी: 1. मिन्हातुल खालिक अला अल-बहरुर रैक, किताबुत तहारत, एचएम सईद कंपनी, कराची, 1/71 2. बहरुर रैक, किताबुत तहारत, एचएम सईद कंपनी, कराची, 1/70 पृष्ठ 234 / 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم کی عبارت:] ماذکرہ فی البدائع علی سبیل الالزام من ابی یوسف لمحمد رحمھما اللہ تعالی وذکر جواب محمد عنہ فکشف اللبس واوضح کل تخمین وحدس فانہ قال بعد ماذکر مذاھب علمائنا فی الماء المستعمل والاستدلال لمحمد رحمھم اللہ تعالی عامۃ مشایخنا ینصرون قول محمد وروایتہ عن ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنہ ثم قال یحتج للقول الآخر (ای نجاستہ) بما روی فذکر حدیث "لا یبولن احدکم" ثم قال ومن قال ان الماء المستعمل طاھر طھور لا یجعل الاغتسال فیہ حراماً الی اخر ما تقدم عن الدبوسی 1- اقول: ھذا التقریر (1) وان لم یکن ظاھرا من سوق عبارۃ الاسرار بیانہ یتوقف علی ماذکر فی البدائع ثم البحر ان اخراج الماء من ان یکون مطھرا من غیر ضرورۃ حرام 2 اھـ * فیستفاد منہ ان اغتسال المحدث فی الماء القلیل حرام عند محمد ایضاً فکأنّ الامام ابا یوسف یلزمہ بان المستعمل طاھر عندك والطاھر لا یسلب الطھور طھوریتہ مادام الطھور غالبا کلبن یقع فیہ فلا یصح لك تحریم الاغتسال فیہ الا

[اردو کالم کی عبارت:] جو بدائع میں ابویوسف کی طرف محمد پر الزام ذکر کیا ہے اور محمد کا جواب ذکر کیا ہے جس سے تمام بات واضح ہوگئی انہوں نے پہلے تو ہمارے علماء کا مذہب مستعمل پانی کی بابت ذکر کیا اور امام محمد کا استدلال ذکر کیا پھر کہا کہ عام مشائخ امام محمد کے قول اور ان کی روایت جو امام ابوحنیفہ سے ہے کی تائید کرتے ہیں_____ پھر فرمایا دوسرے قول پر (یعنی اُس کی نجاست پر) اُس حدیث سے استدلال کیا گیا ہے جو مروی ہے، پھر "لا یبولن احدکم" والی حدیث سے استدلال کیا۔ پھر فرمایا جو حضرات یہ کہتے ہیں کہ مستعمل پانی طاہر وطہور ہے وہ اس سے غسل کو حرام قرار نہیں دیتے ہیں الی آخر ما تقدم عن الدبوسی۔(ت) میں یہ کہتا ہوں کہ یہ تقریر اسرار کی عبارت کے سیاق سے ظاہر نہیں ہے، اس کا بیان اُس پر موقوف ہے

جو بدائع پھر بحر میں مذکور ہے کہ پانی کو مطہر ہونے سے بلا ضرورت خارج کرنا حرام ہے اھ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بے وضو کا تھوڑے پانی میں غسل کرنا محمد کے نزدیک بھی حرام ہے، گویا امام ابویوسف بطور الزام اُن سے یہ کہتے ہیں کہ تمہارے نزدیک مستعمل پانی پاک ہے اور پاک پانی دوسرے پانی کی طہوریت کو سلب نہیں کرتا ہے جب تک کہ طہور غالب ہو، جیسے کہ دودھ اس میں گر جائے، تو آپ

حواشی: 1 منحة الخالق على البحر الرائق كتاب الطهارة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱ 2 بحر الرائق كتاب الطهارة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۰ صفحہ 234 از 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Column] If you follow the opinion and rule regarding the impurity of the wash-water, then the whole would be corrupted and the ruling would be correct. Muhammad replied that since the whole, being a small amount, is one single thing, the whole has come into contact with the body of the person in a state of ritual impurity (muhdith), thus the whole becomes legally 'used water' (musta'mal). This is unlike milk, where there is no mixing of a pure thing with a purifying thing; it is not a cause for usage, thus it does not deprive the water of its purifying quality as long as the water remains predominant over it.

I say: Malik al-Ulama did not present this as a binding argument from Abu Yusuf against Muhammad; rather, it was a rebuttal against Abu Yusuf's deduction from the Hadith, as previously mentioned at the beginning of the first chapter. Everyone has their own direction. In short, its beginning in both cases supports a weak narration, and its end is a sufficient answer to it. The best course is what this humble servant has done, as you have known. Praise be to Allah.

Note 5: From the words of Shaykh Ibn al-Shihnah in the commentary on the issue of a person without ablution (muhdith) falling into a well, his text is: 'What has been clarified for me is that the ruling on it differs according to the different principles of our Imams. The research is that all the water should be extracted according to the Imam (Abu Hanifa) based on the opinion of the impurity of used water. It is said forty buckets according to him. The research on Muhammad's school is that it deprives water of its purifying quality, and this is the correct view from the Imam, and the second (Abu Yusuf) follows him.'

[Urdu Column] In this, one cannot declare bathing (ghusl) forbidden; the only way is for you to adopt my view and declare the wash-water (ghusala) impure. In this case, all the water will become corrupted and the ruling will be correct. Muhammad answered this by saying that since the whole water, due to being a small amount, is considered a single thing, the whole has touched the body of the person without ablution. Thus, legally, the entire water became 'used' (musta'mal). This is not the case with milk; in it, a pure thing is mixed with a purifying thing, and this is not a cause for usage. Therefore, it will not deprive its purifying quality as long as the water remains predominant over it. (T)

I say: Malik al-Ulama has not mentioned this as an allegation from Abu Yusuf against Imam Muhammad, but it is a response to an intermediary objection that arises from

Abu Yusuf's deduction from the Hadith, as mentioned at the beginning of the first chapter. Every person has their own style of deduction. In summary, its first part supports a weak narration in both cases, and its final part is a sufficient answer to it. The better way is the one adopted by this humble person, as you have known. Praise be to Allah. (T)

Note 5: This is derived from the words of Shaykh Ibn al-Shihnah which he expressed regarding a person without ablution who falls into a well. He says that its ruling is different because of the different principles of our Imams. The research is that according to the Imam (Abu Hanifa), all the water of the well should be extracted because according to them used water is impure. One saying is that forty buckets will be taken out, and the research of Imam Muhammad's school is that it...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी कॉलम] यदि आप धुलाई के पानी (ग़ुसाला) की अशुद्धि के बारे में राय और नियम का पालन करते हैं, तो पूरा जल दूषित हो जाएगा और निर्णय सही होगा। मुहम्मद ने उत्तर दिया कि चूंकि पूरा जल, कम मात्रा होने के कारण, एक ही चीज़ है, इसलिए पूरा उस व्यक्ति के शरीर के संपर्क में आया है जो अशुद्धि की अवस्था में है, इस प्रकार पूरा कानूनी रूप से 'प्रयुक्त जल' (मुस्तअमल) बन जाता है। यह दूध के विपरीत है, जहाँ शुद्ध चीज़ का शुद्ध करने वाली चीज़ के साथ कोई मिश्रण नहीं होता है; यह उपयोग का कारण नहीं है, इसलिए यह पानी की शुद्ध करने की गुणवत्ता को तब तक नहीं छीनता जब तक पानी की प्रधानता बनी रहती है।

मैं कहता हूँ: मलिक उल-उलमा ने इसे अबू यूसुफ की ओर से मुहम्मद के लिए एक दायित्व के रूप में प्रस्तुत नहीं किया; बल्कि, यह हदीस से अबू यूसुफ के निष्कर्ष के खिलाफ एक खंडन था, जैसा कि पहले अध्याय की शुरुआत में उल्लेख किया गया था। हर व्यक्ति की अपनी दिशा होती है जिसकी ओर वह मुड़ता है। संक्षेप में, दोनों ही मामलों में इसकी शुरुआत एक कमज़ोर कथन का समर्थन करती है, और इसका अंत उसका पर्याप्त उत्तर है। सबसे अच्छा तरीका वह है जो इस तुच्छ सेवक ने अपनाया है, जैसा कि आप जान चुके हैं। अल्लाह की प्रशंसा हो।

नोट 5: कुएं में गिरने वाले बिना वुज़ू के व्यक्ति (मुहद्दिस) के मामले की व्याख्या में शेख इब्न अल-शिहना के शब्दों से, उनका पाठ है: 'मेरे लिए जो स्पष्ट हुआ है वह यह है कि इस पर निर्णय हमारे इमामों के विभिन्न सिद्धांतों के अनुसार अलग-अलग है। शोध यह है कि इमाम (अबू हनीफा) के अनुसार प्रयुक्त जल की अशुद्धि के दृष्टिकोण के आधार पर सभी जल को निकाला जाना चाहिए। उनके अनुसार चालीस बाल्टी कहा जाता है। मुहम्मद के मत पर शोध यह है कि यह इसकी शुद्ध करने की गुणवत्ता को छीन लेता है, और यह इमाम के अनुसार सही है, और दूसरे (अबू यूसुफ) उनका अनुसरण करते हैं।'

[उर्दू कॉलम] इसमें ग़ुस्ल (स्नान) को हराम नहीं कह सकते; इसका एकमात्र तरीका यह है कि आप मेरी बात मान लें और धुलाई के पानी की अशुद्धि का मत अपनाएँ। इस स्थिति में सारा पानी दूषित हो जाएगा और नियम सही होगा। मुहम्मद ने इसका उत्तर दिया कि सारा पानी कम होने के कारण चूँकि एक ही चीज़ है, इसलिए वह सारा बिना वुज़ू वाले व्यक्ति के शरीर से छू गया। तो कानूनी तौर पर सारा पानी प्रयुक्त (मुस्तअमल) हो गया। दूध में यह बात नहीं है, उसमें एक शुद्ध चीज़ का शुद्ध करने

वाली चीज़ से मिलना है और यह इस्तेमाल का कारण नहीं है। इसलिए यह इसकी पाकीज़गी (शुद्धता) को तब तक ख़त्म नहीं करेगा जब तक पानी उस पर हावी रहे। (त)

मैं कहता हूँ कि मलिक उल-उलमा ने इसे अबू यूसुफ की ओर से इमाम मुहम्मद पर आरोप के रूप में ज़िक्र नहीं किया है, बल्कि यह एक बीच के ऐतराज़ (आपत्ति) का जवाब है जो अबू यूसुफ के हदीस से तर्क करने पर पैदा होता है, जैसा कि पहले अध्याय की शुरुआत में गुज़रा। हर इंसान का अपना तर्क करने का तरीक़ा होता है। सारांश यह है कि इसका शुरुआती हिस्सा दोनों ही सूरतों में एक कमज़ोर रिवायत का समर्थन है और इसका आख़िरी हिस्सा उसका मुकम्मल जवाब है। और बेहतर वह सूरत है जो इस नाचीज़ (तुच्छ व्यक्ति) ने अपनाई है, जैसा कि आप जान चुके हैं। वलिल्लाहिल हम्द (अल्लाह की प्रशंसा हो)। (त)

फ़ायदा ५: यह शेख इब्न अल-शिहना के कलाम से लिया गया है जो उन्होंने उस बिना वुज़ू वाले व्यक्ति के बारे में कहा है जो कुएं में गिर गया हो। वे फ़रमाते हैं कि इसका हुक्म हमारे इमामों के सिद्धांतों के अलग होने की वजह से अलग-अलग है। शोध यह है कि इमाम साहब (अबू हनीफ़ा) के नज़दीक कुएं का सारा पानी निकाला जाएगा क्योंकि उनके नज़दीक इस्तेमाल किया हुआ पानी नापाक है। एक क़ौल (कथन) यह है कि चालीस डोल निकाले जाएंगे, और इमाम मुहम्मद के मज़हब की तहक़ीक़ (शोध) यह है कि वह...

فتاوی رضویه، جلد ثانی

[عربی کالم] ان تقول بقول وتحکم بنجاسة الغسالة فح یفسد الکل ویصح الحکم فاجاب محمد بان الکل لکونه قلیلا شیئ واحد فصار الکل ملاقیا لبدن المحدث فصار الکل مستعملا حکما بخلاف اللبن فلیس فیه الاختلاط طاهر بطهور ولیس سبب الاستعمال فلا یسلبه الطهوریة مادام الماء غالبا علیه - قلت: وملک العلماء لم یجعله الزاماً من ابي یوسف لمحمد بل دفع یرد علی استدلال ابي یوسف بالحدیث کما تقدم نقله في صدر الفصل الاول ولکل وجهة هو مولیها وبالجملة اوله علی کلا الوجهین تأیید لروایة ضعیفة وکفی بأخره جواباً عنه والاولی مافعل العبد الضعیف کما علمت وللہ الحمد - فائده ۵: من کلام الشیخ ابن الشحنة في الشرح علی مسألة محدث وقع فی بئر مانصه والذی تحرر عندی انه یختلف الحکم فیها باختلاف اصول ائمتنا فیه والتحقیق نزح الجمیع عند الامام علی القول بنجاسة الماء المستعمل وقیل اربعون عنده وتحقیق مذهب محمد انه یسلبه الطهوریة وهو الصحیح عن الامام والثانی علیه

[اردو کالم] اس میں غسل کو حرام نہیں کر سکتے ہیں، صرف اس کی یہی صورت ہے کہ آپ میرے قول کو اختیار کر لیں، اور دھوون کی نجاست کا قول کریں، اس صورت میں کل پانی فاسد ہو جائے گا اور حکم صحیح ہوگا، محمد نے اس کا جواب یہ دیا کہ کل پانی بوجہ قلیل ہونے کے چونکہ شیئ واحد ہے تو کل بے وضو کے بدن سے متصل ہوا، تو حکماً کل مستعمل ہو گیا، دودھ میں یہ چیز نہیں اس میں ایک طاہر کا طہور سے ملنا ہے اور یہ استعمال کا سبب نہیں ہے تو اُس کی طہوریت کو سلب نہ کریگا جب تک پانی اس پر غالب رہے۔ (ت) میں کہتا ہوں ملک العلماء نے اس کو ابو یوسف کی طرف سے امام محمد پر بطور الزام ذکر نہیں کیا ہے، بلکہ ایک درمیانی اعتراض کا جواب ہے جو ابو یوسف کے حدیث سے استدلال پر پیدا ہوتا ہے جیسا کہ فصل اول کی ابتداء میں گزرا، ہر شخص کا اپنا اپنا طرز استدلال ہوتا ہے، خلاصہ یہ کہ اس کا اوّل دونوں

صورتوں میں ایک ضعیف روایت کی تائید ہے اور اس کا آخر اس کا جواب شافی ہے، اور بہتر وہ صورت ہے جو ناچیز نے اختیار کی ہے، جیسا کہ آپ نے جان لیا وللہ الحمد - (ت) فائدہ ۵: یہ شیخ ابن الشحنہ کے کلام سے ماخوذ ہے جو انہوں نے اس بے وضو کی بابت کیا ہے جو کنویں میں گر پڑا ہو، فرماتے ہیں اس کا حکم ہمارے ائمہ کے اصول کے مختلف ہونے کی وجہ سے مختلف ہے اور تحقیق یہ ہے کہ امام صاحب کے نزدیک تمام کنویں کا پانی نکالا جائے گا کیونکہ ان کے نزدیک مستعمل پانی نجس ہے، ایک قول یہ ہے کہ چالیس ڈول نکالے جائیں گے، اور مذہب امام محمد کی تحقیق یہ ہے کہ وہ

Fatawa Rizvia, Volume II

[Arabic Column]: The fatwa is that twenty buckets should be drawn so it becomes pure. This is based on the opinion of not considering necessity. However, if necessity were considered, it would not become 'used' (mustamal) in every place where necessity is established for immersion in water and putting the hand in it. The consideration of necessity in such cases is mentioned in 'As-Sughra' and others. So, do not be misled by what our Sheikh, the great scholar Zayn al-Din Qasim (may God cover him with His mercy), mentioned in his treatise named 'Raf' al-Ishtibah'. For indeed, he contradicted the clear transmissions from our Imams and relied on a discussion that occurred in 'Al-Badai' by way of research. Some of those who claim to follow the Hanafi school but are not well-grounded in their jurisprudence followed him (meaning Qasim) in that. They wrote a book about it full of confusion, error, and contradiction of the texts transmitted from Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). I have explained this in a preface I wrote, in which I verified the school's position on this issue. (Then he said: The summary is that Abu Zayd al-Dabbusi... to the end of what we previously presented from him. Then he said:) In 'Al-Badai' also, there is a clear statement that if a pure person immerses themselves in a well with the intention of ghusl (ritual bathing), the water becomes used (mustamal) according to our three companions (may Allah Almighty be pleased with them). It was stated in the 'Fatawa Qadikhan' that putting the hand in a vessel for ghusl spoils the water according to our three Imams. I have undertaken to clarify and record this in my treatise 'Zahr al-Rawd'.[1] End.

[Urdu Column]: It takes away the purity from the water, and this is correct from the Imam (Abu Hanifa) and also from the other Imam, and the fatwa is on this. So, twenty buckets will be taken out from it so that it becomes pure. And this is on the saying of non-consideration of necessity. And if necessity is considered, then in every such place where there is a necessity to dive into the water or dip the hand, the water will not become 'used' (mustamal). And the consideration of necessity in similar cases is mentioned in 'Sughra' etc. Therefore, there should be no misunderstanding from what Sheikh Allama Zainuddin has said in his treatise 'Raf' al-Ishtibah', because it is contrary to the clear narrations of our Imams. It is purely based on the discussion that 'Badai' has done, and their (i.e., Allama Qasim's) following has been done only by some immature Hanafi jurists. And on this, a baseless book has been written which is contrary to the texts narrated from Imam Muhammad. I have done all this discussion in a preface, and in it, I have researched the sect's position. (Then he said: The

summary is that Abu Zaid Dabusi until the end of what we presented from him just now. Then he said:) And in 'Badai' also, it is explicitly stated that when a pure person dives into a well with the intention of 'ghusl' (ritual bath), then according to our three companions (Radi Allahu Anhum), the water will become 'used' (mustamal). And in 'Fatawa Qazikhan', this explicit statement is present that putting the hand in water with the intention of 'ghusl' makes the water spoiled (fasid), according to our three Imams. I have done its complete explanation and writing in my treatise 'Zahr al-Rawd'. (T)

---

[1] Minhat al-Khaliq on al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/72 Page 236 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द द्वितीय

[अरबी कॉलम]: फतवा यह है कि बीस डोल निकाले जाएं ताकि वह पाक (शुद्ध) हो जाए। यह उस राय पर आधारित है जिसमें ज़रूरत (मजबूरी) का विचार नहीं किया गया। यदि ज़रूरत का विचार किया जाए, तो पानी हर उस स्थान पर 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा जहाँ पानी में डूबने और उसमें हाथ डालने की ज़रूरत पड़ती है। ऐसी स्थितियों में ज़रूरत का विचार 'अस-सुग़रा' और अन्य किताबों में वर्णित है। अतः हमारे शेख, अल्लामा ज़ैनुद्दीन क़ासिम (अल्लाह उन पर अपनी रहमत बरसाए) ने अपने रिसाले 'रफ़' अल-इश्तिबाह' में जो कुछ ज़िक्र किया है, उससे धोखा न खाएँ। क्योंकि उन्होंने हमारे इमामों से स्पष्ट रूप से वर्णित बातों का विरोध किया है और 'अल-बदाई' में शोध के तौर पर की गई एक चर्चा पर भरोसा किया है। कुछ ऐसे लोग जो हनफी मज़हब का दावा करते हैं लेकिन उनके फिक़्ह (धर्मशास्त्र) में पक्के नहीं हैं, उन्होंने इस मामले में उनका (यानी क़ासिम का) अनुसरण किया। उन्होंने इस बारे में एक ऐसी किताब लिखी जो उलझन, ग़लती और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहमत करे) से वर्णित ग्रंथों के विरोध से भरी हुई है। मैंने इस पर एक प्रस्तावना (मुक़द्दमा) में विस्तार से चर्चा की है, जिसमें मैंने इस मसले पर मज़हब (विचारधारा) की वास्तविकता को स्पष्ट किया है। (फिर उन्होंने कहा: सारांश यह है कि अबू ज़ैद अल-दबूसी... उनके द्वारा पहले प्रस्तुत की गई बात के अंत तक। फिर उन्होंने कहा:) 'अल-बदाई' में भी यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि कोई पाक व्यक्ति ग़ुस्ल (स्नान) की नियत से कुएँ में गोता लगाता है, तो हमारे तीनों साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार पानी 'मुस्तअमल' हो जाता है। 'फतावा क़ाज़ीख़ान' में भी यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ग़ुस्ल की नियत से बर्तन में हाथ डालना हमारे तीनों इमामों के अनुसार पानी को ख़राब कर देता है। मैंने अपने रिसाले 'ज़हर अल-रौद' में इसकी पूरी व्याख्या और लेखन किया है।[1] अंत।

[उर्दू कॉलम]: पानी से तहारत (पवित्रता) को छीन लेता है, और इमाम साहब से यही सही है और दूसरे इमाम से भी, और इसी पर फतवा है। तो उससे बीस डोल निकाले जाएँगे ताकि वह पाक हो जाए। और यह ज़रूरत के विचार न करने के कौल (कथन) पर है। और अगर ज़रूरत का एतबार किया जाए तो हर उस जगह जहाँ पानी में गोता लगाने की या हाथ डुबोने की ज़रूरत हो वहाँ पानी मुस्तअमल न होगा। और ज़रूरत का एतबार इसकी मिसाल में 'सुग़रा' वग़ैरह में ज़िक्र है। तो शेख अल्लामा ज़ैनुद्दीन ने अपने रिसाले 'रफ़' अल-इश्तिबाह' में जो कुछ फ़रमाया है उससे ग़लतफ़हमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि वह हमारे इमामों की साफ़ रिवायतों के ख़िलाफ़ है। वह महज़ उस बहस के

सहारे पर है जो 'बदाई' ने की है और उनकी (यानी अल्लामा क़ासिम की) पैरवी महज़ कुछ कच्चे हनफ़ी फुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने की है। और इसी पर एक बेबुनियाद किताब लिखी गई है जो इमाम मुहम्मद से नक़्ल किए गए नसूस (धर्मग्रंथों) के ख़िलाफ़ है। मैंने यह तमाम बहस एक मुक़द्दमे में की है, और उसमें मज़हब की तहक़ीक़ की है। (फिर फ़रमाया ख़ुलासा यह कि अबू ज़ैद दबूसी... आख़िर तक जो हमने अभी उनसे नक़्ल किया। फिर फ़रमाया) और 'बदाई' में भी यह तसरीह (स्पष्टीकरण) की है कि पाक इंसान जब कुएँ में गोता लगाए ग़ुस्ल की नियत से, तो हमारे असहाब-ए-सलासा (तीनों साथियों) रज़ियल्लाहु अन्हुम के नज़दीक पानी मुस्तअमल हो जाएगा। और 'फतावा क़ाज़ीख़ान' में यह तसरीह मौजूद है कि पानी में बनियते ग़ुस्ल (ग़ुस्ल की नियत से) हाथ डालना पानी को फ़ासिद (ख़राब) कर देता है, हमारे आइम्मा-ए-सलासा के नज़दीक। मैंने इसकी मुकम्मल ईज़ाह (व्याख्या) व तहरीर अपने रिसाले 'ज़हरुर रौद' में की है। (त)

---

[1] मिन्हातुल ख़ालिक़ अलल बहुर राइक़, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/७२ पृष्ठ २३६/७११

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم]: الفتوی فینزح عشرون لیصیر طھورا وھذا علی القول بعدم اعتبار الضرورۃ امالو اعتبرت لایصیر مستعملا في کل موضع تتحقق الضرورۃ في الانغماس في الماء وادخال الید فیه واعتبار الضرورۃ في مثل ذلك مذکور في الصغری وغیرھا، فلا تغتر بما ذکرہ شیخنا العلامۃ زین الدین قاسم تغمدہ اللہ برحمتہ في رسالتہ المسماۃ برفع الاشتباہ فانہ خالف فیھا صریح المنقول عن ائمتنا واستند الی کلام وقع في البدائع علی سبیل البحث وتبعہ (یعنی القاسم) علی ذلك بعض من ینتحل مذھب الحنفیۃ ممن لارسوخ لہ في فقھھم وکتب فیہ کتابۃ مشتملۃ علی خلط وخبط ومخالفۃ النصوص المنقولۃ عن محمد رحمہ اللہ تعالی وقد بینت ذلك في مقدمۃ کتبتھا حققت فیھا المذھب في ھذہ المسألۃ (ثم قال والحاصل ان ابازید الدبوسي الی اخر ماقدمنا عنہ آنفا ثم قال) وفي البدائع ایضاً التصریح بان الطاھر اذا انغمس في البئر للاغتسال صار مستعملا عند اصحابنا الثلثۃ رضی اللہ تعالی عنھم وصرح في فتاوی قاضیخان بان ادخال الید في الاناء للغسل یفسد الماء عند ائمتنا الثلثۃ وتکفل بایضاح ھذا وتحریرہ رسالتي زھر الروض ۱ اھ

[اردو کالم]: پانی سے طہوریت کو سلب کرلیتا ہے، اور امام صاحب سے صحیح یہی ہے اور دوسرے امام سے بھی، اور اسی پر فتوی ہے تو اُس سے بیس ڈول نکالے جائیں گے تاکہ وہ طہور ہو جائے اور یہ عدمِ اعتبارِ ضرورت کے قول پر ہے، اور اگر ضرورت کا اعتبار کیا جائے تو ہر اس جگہ جہاں پانی میں غوطہ لگانے کی یا ہاتھ ڈوبونے کی ضرورت ہو وہاں پانی مستعمل نہ ہوگا اور ضرورت کا اعتبار اس کی مثل میں صغریٰ وغیرہا میں مذکور ہے، تو شیخ علّامہ زین الدین نے اپنے رسالہ رفع الاشتباہ میں جو کچھ فرمایا ہے اس سے مغالطہ نہ ہونا چاہئے کہ وہ ہمارے ائمہ کی صریح نقول کے مخالف ہے، وہ محض اُس بحث کے سہارے پر ہے جو بدائع نے کی ہے

اور ان کی (یعنی علامہ قاسم کی) پیروی محض بعض ناپختہ کار حنفی فقہاء نے کی ہے، اور اسی پر ایک بے سروپا کتاب جو امام محمد سے منقول نصوص کے مخالف ہے لکھی ہے، میں نے یہ تمام بحث ایک مقدمہ میں کی ہے، اور اس میں مذہب کی تحقیق کی ہے (پھر فرمایا خلاصہ یہ کہ ابو زید دبوسی الی اخر ماقدمنا عنہ انفا پھر فرمایا) اور بدائع میں بھی یہ تصریح کی ہے کہ پاک انسان جب کنویں میں غوطہ لگائے غسل کی نیت سے، تو ہمارے اصحابِ ثلثہ رضی اللہ عنہم کے نزدیک پانی مستعمل ہو جائیگا، اور فتاوٰی قاضیخان میں یہ تصریح موجود ہے کہ پانی میں بہ نیتِ غسل ہاتھ ڈالنا پانی کو فاسد کردیتا ہے، ہمارے ائمہ ثلثہ کے نزدیک، میں نے اس کی مکمل ایضاح و تحریر اپنے رسالہ زہرالروض میں کی ہے(ت)

---

۱ منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۲ صفحہ 236 از 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say: This is an excellent discourse. In it, he has summarized the objectives of his treatise and cleared it of the confusion created in 'Zahr al-Rawd' regarding the equalization of the 'Mulqa' (the thing thrown) and the 'Mulaqi' (the water in which it is thrown) in terms of non-permissibility, except for (1) the Hadith of drawing twenty buckets. According to his verified position in his school of thought, the research is that no water is to be drawn at all unless the used water becomes equal to or predominant, because 'Tahur' (purifying water) does not become impure [simply by contact]. (T)

Benefit 6: It is stated in 'ad-Durr' that if the absolute water is more than half, it is permissible to obtain purification with the whole; otherwise, not. This applies generally to both 'Mulqa' and 'Mulaqi'. Therefore, in small basins, wudu (ablution) is permissible as long as the equality of the used water is not known, as established in 'al-Bahr', 'an-Nahr', and 'al-Minah'. I say: However, ash-Shurunbulali, in the commentary on 'al-Wahbaniyya', distinguished between the two, so reflect upon it carefully.

And 'Sh' [commentator], under his statement 'He established it in al-Bahr', mentioned his deduction that their absolute expression implies generality, and from the statement in 'al-Badai' and the mentioned fatwa of 'Qari al-Hidayah'. He said: Deduction was also made in 'al-Bahr' using other phrases that do not support his view, as becomes apparent to the contemplative person, because those phrases relate to 'Mulqa', whereas the dispute is regarding 'Mulaqi', as we have clarified in our notes on it. Therefore, we have restricted ourselves to what we mentioned.

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/32.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/134.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २

मैं कहता हूँ: यह कलाम बहुत अच्छा है। इसमें उन्होंने अपने रिसाले के मक़ासिद को बड़ी वाज़ेह तौर पर बयान किया है, और 'ज़हर-उर-रौज़' में 'मुल्क़ा' (डाली गई चीज़) और 'मुलाक़ी' (जिस पानी में डाली गई) को अदम-ए-जवाज़ (नाजायज़ होने) में जो यकसां कर दिया गया था, उस उलझन को दूर किया है, सिवाय (१) बीस डोल निकालने वाली हदीस के। उनके मोतमिद मज़हब में तहक़ीक़ यह है कि जब तक मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) पानी बराबर या ग़ालिब न हो जाए, तब तक पानी बिल्कुल नहीं निकाला जाएगा क्योंकि 'तहूर' (पाक करने वाला पानी) नापाक नहीं होता। (त)

फ़ायदा ६: 'दुर्र' में है कि अगर मुतलक़ पानी आधे से ज़्यादा है तो पूरे से पाकी हासिल करना जाइज़ है, वरना नहीं। और यह चीज़ 'मुल्क़ा' और 'मुलाक़ी' दोनों के लिए आम है, लिहाज़ा छोटे हौज़ों में वज़ू जाइज़ है जब तक कि मुस्तअमल पानी का बराबर होना मालूम न हो जाए, जैसा कि 'बहर', 'नहर' और 'मिनह' में तहक़ीक़ की गई है। मैं कहता हूँ लेकिन 'शुरुनबुलाली' ने 'शह-ए-वहबानिया' में दोनों के बीच फ़र्क़ किया है, उसे ग़ौर से देखें।

और 'श' ने उनके क़ौल 'हक़्क़क़हु फ़िल बहर' के पास उनका इस्तदलाल (تک) ज़िक्र किया है कि उनका मुतलक़ कहना उमूम (व्यापकता) का फ़ायदा देता है, और 'बदाइअ' के क़ौल और 'क़ारी-उल-हिदाया' के मज़कूरा फ़तवे से। उन्होंने कहा: 'बहर' में दूसरी इबारतों से भी इस्तदलाल किया गया है मगर वे उनके हक़ में मुफ़ीद नहीं हैं, जैसा कि ग़ौर करने पर ज़ाहिर होता है, क्योंकि वे इबारतें 'मुल्क़ा' से मुताल्लिक़ हैं और झगड़ा 'मुलाक़ी' में है, जैसा कि हमने अपनी तअलीक़ात में वाज़ेह किया है। लिहाज़ा हमने उसी पर इक्तिफ़ा (बस) किया जो ज़िक्र किया।

---

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-उल-मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, १/३२।
2. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१३४।

पृष्ठ २३७/७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: هو كلام طيب لخص فيه مقاصد رسالته و خلصه مما خلط به في زهر الروض من تسوية الملقى والملاقى فى عدم الجواز الا (١) حديث نزح عشرين (٢) والتحقيق عنده على مذهبه المعتمد لا نزح اصلا مالم يساو اويغلب لان الطهور لا يطهر۔ میں کہتا ہوں یہ کلام بہت خوب ہے، اس میں انہوں نے بڑی وضاحت سے اپنے رسالہ کے مقاصد کو ظاہر کیا ہے، اور زہر الروض نے جو ملقی اور ملاقی میں خلط مبحث کیا ہے عدم جواز میں، اُس سے بھی چھٹکارا دلایا ہے صرف بیس ڈول والی حدیث کا معاملہ باقی ہے اور ان کے مذہب معتمد میں تحقیق یہ ہے کہ جب تک مستعمل پانی برابر یا غالب نہ ہو اس وقت تک پانی بالکل نہیں نکالا جائیگا کیونکہ طہور پاک نہیں ہوتا ہے۔ (ت)

فائدہ ۶: قال في الدر ان المطلق اكثر من النصف جاز التطهير بالكل والا لا وهذا يعم الملقى والملاقى ففى الفساقى يجوز التوضى مالم يعلم تساوى المستعمل على ماحققه فى البحر والنهر والمنح قلت لكن الشرنبلالى في شرح الوهبانية فرق بينهما فراجعه متأملاً اهـ فائدہ ۶: دُر میں ہے کہ مطلق پانی آدھے سے زائد ہے تو کل سے پاکی حاصل کرنا جائز ہے ورنہ نہیں، اور یہ چیز ملقی اور ملاقی کو عام ہے تو چھوٹے حوضوں میں وضو جائز ہے جب تک مستعمل پانی کا برابر ہونا معلوم نہ ہو، اس کی تحقیق بحر، نہر اور منح میں موجود ہے، میں کہتا ہوں شرنبلالی نے شرح وہبانیہ میں دونوں میں فرق کیا ہے وہ بغور دیکھا جائے اھـ

وذكر ش عند قوله حققه في البحر استدلاله على ذلك بأطلاقهم المفيد للعموم وبقول البدائع وفتوى قارئ الهداية المذكورة قال وقد استدل في البحر بعبارات اخر لاتدل له كما يظهر للمتأمل لانها في الملقى والنزاع في الملاقى كما اوضحناه فيما علقناه عليه فلذا اقتصر نا على ما ذكرنا ٢ اهـ ورأيتنى كتبت في جد اور "ش" نے ان کے قول حققہ فی البحر کے پاس ان کا استدلال ذکر کیا ہے کہ ان کا اطلاق مفیدِ

عموم ہے، اور بدائع کے قول اور قارئ الہدایہ کے مذکورہ فتوی سے، فرمایا بحر میں دوسری عبارات سے بھی استدلال کیا ہے مگر وہ ان کے حق میں مفید نہیں، جیسا کہ غور کرنے پر ظاہر ہوتا ہے، کیونکہ وہ عبارات ملقی سے متعلق ہیں اور جھگڑا ملاقی میں ہے، جیسا کہ ہم نے

---

۱ در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۳۲/۱ ۲ رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۳۴/۱

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Arabic segment]: Al-Mustar on his statement which is useful for generality (al-mufid lil-umum), its text is as follows: I say: Yes, it is useful on the assumption that what is used (musta'mal) in contact is the surface of the water touching the body of the person in a state of ritual impurity (muhdith) and nothing else. This is the root of the dispute. I say that if it were so, used water would vanish from the face of the earth because if you poured water on your hand, for example, only a surface of the water would meet the hand while the rest of its volume remains separate from it, just as the contact occurs with the surface of your hand while the rest of its volume is not touched by water. A body is always larger than its surface, so the non-used portion would predominate, and it would never become used. If you consider the whole of it used because its surface meets the surface of the body, then we see no difference between one volume and another. If you poured it gently, the whole would become used, and if you poured it vigorously such that the thickness of the water was many times the former, it would also all be used. There is no evidence for distinguishing between thicknesses unless it reaches the limit of abundance (kathrat). The statement in 'al-Badai' is a discussion he mentioned in a question and answer format, not a transmission from the companions (Ashab), unlike the discourse of Imam al-Dabusi, which is an explicit transmission. Similarly, among the explicit texts are the issues of dipping the hand and foot and the entry of a muhdith into a well, which are explicitly transmitted from the three Imams in the core texts (mutun), commentaries (shuruh), and fatwas. Attributing all of these to a weak narration is something inconceivable and untenable, as per the wording of the fatwa.

[Urdu segment]: It has been clarified, and we have shed light on it in our annotations; therefore, we have contented ourselves with that. I have written in my book 'Jadd al-Mumtar' that this was written under his statement 'Al-Mufid lil-Umum'. My submission is that... Yes, it provides benefit based on the hypothesis that the 'used' part in contact is that surface of water which is touching the body of the muhdith, and nothing else, and that is the first point of dispute. I say if this were so, the existence of used water on the face of the earth would become extinct because, for example, if you poured water on your hand, your hand would meet the water's surface, and its remaining part would stay separate from it, just as contact occurs with the surface of your hand and the rest of its volume never touches the water. A body is always larger than its surface, so the non-used part would be dominant, thus it would never be used. When you declared the whole to be used because its surface

was meeting the body's surface, we do not find a difference between one volume and another. So, if poured slowly, the whole would become used; and if poured forcefully such that the volume of water is many times more than before, then too the whole would become used. There is no proof for a difference between one volume of water and another unless it reaches the limit of abundance. The saying of 'Badai' is merely a discussion which he mentioned in the context of a question and answer; these are the companions of Imam Abu Hanifa.

फ़तावा रज़विया खंड 2

[अरबी खंड]: अल-मुस्तार उनके उस कथन पर जो व्यापकता के लिए उपयोगी (अल-मुफीद लिल-उमूम) है, उसका मूल पाठ इस प्रकार है: मैं कहता हूँ: हाँ, यह इस धारणा पर लाभदायक है कि संपर्क में जो 'इस्तेमालशुदा' (मुस्तअमल) है, वह पानी की वह सतह है जो व्यक्ति (मुहदिथ) के शरीर को छूती है और कुछ नहीं। यही विवाद का मूल है। मैं कहता हूँ कि अगर ऐसा होता, तो इस्तेमालशुदा पानी धरती के चेहरे से गायब हो जाता क्योंकि उदाहरण के लिए, यदि आप अपने हाथ पर पानी डालते हैं, तो पानी की केवल एक सतह हाथ से मिलती है जबकि उसका बाकी आयतन उससे अलग रहता है, ठीक वैसे ही जैसे संपर्क आपके हाथ की सतह से होता है जबकि उसका बाकी आयतन पानी से नहीं छूता। एक पिंड हमेशा अपनी सतह से बड़ा होता है, इसलिए गैर-इस्तेमालशुदा हिस्सा हावी होगा, और वह कभी इस्तेमालशुदा नहीं बनेगा। यदि आप उस पूरे को इस्तेमालशुदा मान लेते हैं क्योंकि उसकी सतह शरीर की सतह से मिलती है, तो हमें एक आयतन और दूसरे आयतन में कोई अंतर नहीं दिखता। यदि आप इसे धीरे से डालते हैं, तो पूरा इस्तेमालशुदा हो जाता है; और यदि आप इसे जोर से डालते हैं जिससे पानी की मोटाई पहले से कई गुना अधिक हो, तो वह भी पूरा इस्तेमालशुदा हो जाएगा। विभिन्न मोटाई के बीच अंतर करने का कोई प्रमाण नहीं है जब तक कि वह प्रचुरता (कसरत) की सीमा तक न पहुँच जाए। 'अल-बदाई' का कथन एक चर्चा है जिसका उन्होंने प्रश्न-उत्तर के रूप में उल्लेख किया है, न कि साथियों (अस्हाब) से कोई रिवायत, इमाम अल-दबूसी के कथन के विपरीत, जो एक स्पष्ट रिवायत है। इसी तरह, स्पष्ट ग्रंथों में हाथ और पैर डालने और कुएं में प्रवेश करने के मुद्दे हैं, जो मूल पाठों (मुतून), व्याख्याओं (शुरुह) और फतवों में तीन इमामों से स्पष्ट रूप से बताए गए हैं। इन सभी को एक कमजोर रिवायत पर आधारित करना अकल्पनीय और असमर्थनीय है, फतवे की शब्दावली के अनुसार।

[उर्दू खंड]: स्पष्ट किया गया है, और हमने अपनी टिप्पणियों में इस पर प्रकाश डाला है; इसलिए, हमने उसी पर संतोष किया है। मैंने अपनी पुस्तक 'जद्द अल-मुम्तार' में लिखा है कि यह उनके कथन 'अल-मुफीद लिल-उमूम' के तहत लिखा गया है। मेरा निवेदन यह है कि... हाँ, यह इस परिकल्पना के आधार पर लाभ प्रदान करता है कि संपर्क में 'इस्तेमालशुदा' हिस्सा पानी की वह सतह है जो मुहदिथ के शरीर को छू रही है, और कुछ नहीं, और यही विवाद का पहला बिंदु है। मैं कहता हूँ कि अगर ऐसा होता, तो पृथ्वी की सतह पर इस्तेमालशुदा पानी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता क्योंकि, उदाहरण के लिए, यदि आपने अपने हाथ पर पानी डाला, तो आपका हाथ पानी की सतह से मिलेगा,

और उसका शेष भाग उससे अलग रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे संपर्क आपके हाथ की सतह के साथ होता है और उसका बाकी आयतन कभी पानी को नहीं छूता। एक पिंड हमेशा अपनी सतह से बड़ा होता है, इसलिए गैर-इस्तेमालशुदा हिस्सा हावी होगा, इस प्रकार वह कभी इस्तेमालशुदा नहीं होगा। जब आपने पूरे को इस्तेमालशुदा घोषित कर दिया क्योंकि उसकी सतह शरीर की सतह से मिल रही थी, तो हमें एक आयतन और दूसरे आयतन के बीच कोई अंतर नहीं मिलता। इसलिए, यदि धीरे से डाला जाए, तो पूरा इस्तेमालशुदा हो जाएगा; और यदि जोर से डाला जाए जिससे पानी का आयतन पहले से कई गुना अधिक हो, तो भी पूरा इस्तेमालशुदा हो जाएगा। पानी के एक आयतन और दूसरे आयतन के बीच अंतर के लिए कोई प्रमाण नहीं है जब तक कि वह प्रचुरता की सीमा तक न पहुँच जाए। 'बदाई' का कहना केवल एक चर्चा है जिसका उल्लेख उन्होंने प्रश्न और उत्तर के संदर्भ में किया है; ये इमाम अबू हनीफा के साथी हैं।

पृष्ठ 238 का 711

المستار علی قولہ المفید للعموم مانصہ۔ اقول: نعم یفید علی فرض ان المستعمل فی الملاقی ھو السطح الملاصق من الماء بجسد المحدث لاغیر وھو اول النزاع وانا اقول لوکان کذلک لارتفع المستعمل من صفحۃ الدنیا لانک اذا صببت الماء علی یدک مثلاً فانما یلاقی یدہ سطح من الماء وسائر جرمہ منفصل عنھا کما ان التلاقی یکون بسطح من یدک وسائر جرمھا لم یمسہ الماء والجسم ابداً یکون اکبر من السطح فتکون الغلبۃ لغیر المستعمل فلا یصیر مستعملاً ابداً واذا جعلت کلہ مستعملاً لتلاقی سطحہ سطح الجسد فلا نعلم فرقاً بین جرم وجرم فان اسلت اسالۃ ضعیفۃ صار الکل مستعملاً وان صببت صباً شدیداً حتی کان ثخن الماء اضعاف الاول کان ایضاً کلہ مستعملاً فلا دلیل علی التفرقۃ بین ثخن وثخن مالم یبلغ حد الکثرۃ۔ وقول البدائع بحث منہ ذکرہ فی سؤال وجواب لانقل عن الاصحاب بخلاف کلام الامام الدبوسی فانہ نقل صریح ومن النصوص الصرائح کذلک مسائل ادخال الید والرجل ودخول المحدث فی البئر المصرح بھا نقلا عن الائمۃ الثلاثۃ فی المتون والشروح والفتاوی وحمل کلھا علی روایۃ ضعیفۃ مما لایعقل ولا یحتمل وعبارۃ الفتوی

واضح کیا ہے، اپنی تعلیقات میں اس پر ہم نے روشنی ڈالی ہے، اس لئے ہم نے اس پر اکتفاء کیا، اور میں نے اپنی کتاب "جد الممتار" میں لکھا ہے، یہ ان کے قول "المفید للعموم" کے تحت لکھا گیا ہے۔ میری عرض یہ ہے کہ---- ہاں فائدہ دیتا ہے اس مفروضہ پر کہ مستعمل ملاقی میں وہ سطح آب ہے جو مُحدِث کے جسم سے ملی ہوئی ہے، اس کے علاوہ کچھ اور نہیں ہے اور وہ پہلا نزاع ہے، اور میں کہتا ہوں اگر ایسا ہی ہوتا تو روئے زمین پر مستعمل پانی کا وجود ہی ناپید ہو جاتا کیونکہ مثلاً اگر آپ نے اپنے ہاتھ پر پانی بہایا تو آپ کا ہاتھ پانی کی سطح سے ملے گا اور اس کا باقی حصہ اس سے الگ رہے گا، جس طرح تلاقی آپ کے ہاتھ کی سطح سے ہوتی ہے اور اس کا

باقی حصہ پانی سے کبھی نہیں لگتا ہے اور جسم ہمیشہ سطح سے بڑا ہی ہوتا ہے، تو غلبہ غیر مستعمل کو ہو گا تو وہ مستعمل کبھی نہ ہوگا، اور جب آپ نے کل کو مستعمل قرار دیا کہ اس کی سطح جسم کی سطح سے مل رہی ہے تو ہم ایک جرم اور دوسرے جرم میں فرق نہیں پاتے ہیں، تو اگر آہستہ سے بہایا جائے تو کُل مستعمل ہو جائے گا، اور اگر سختی سے بہایا جائے اس طور پر کہ پانی کا حجم پہلے سے کئی گنا زائد ہو تو بھی کل مستعمل ہو جائے گا تو پانی کے ایک حجم اور دوسرے حجم کے فرق پر کوئی دلیل نہیں، تا وقتیکہ وہ حدِ کثرت کو نہ پہنچ جائے، اور بدائع کا قول تو محض ایک بحث ہے جس کو انہوں نے ایک سوال و جواب کے ضمن میں ذکر کیا ہے یہ اصحابِ امام ابی حنیفہ

Fatawa Razawiyya Volume II

(Arabic Text - Left Column): ...explicit that the used water falls into it, so it is from the 'thrown' (mulqa) rather than the 'met' (mulaqa). Do not be deceived by the fact that they must scoop from it and thus put their hands in before washing; that is a meeting (talaqin) because scooping is pardoned by consensus due to necessity. [End of what I wrote]. You have learned from what we previously presented in the three chapters that the three great scholars have all overlooked the point of contention. However, the oversight is not surprising; (1) what is surprising is that Allama Shami became aware of this and left most of what was in 'Al-Bahr' because it pertained to the 'mulqa', then quoted the text of the fatwa even though, as you know, it is explicit regarding the 'mulqa'. Thus, it should have been omitted as well. You have seen that arguing from generality is a type of 'begging the question' (musadara 'ala al-matlub). They have nothing at all except the discussion in 'Al-Bada'i', which stands in opposition to the mutawatir texts and the clear, authentic narrations from the three Imams, and is in conflict with their consensus reported in authoritative books, even in 'Al-Bada'i' and 'Al-Bahr'. So stand firm and do not waver. May Allah keep us, you, and all Muslims firm with the firm word in the life of this world and in the hereafter. Indeed, He is the Guardian of that and Capable of it. There is no power or strength except with Allah, the High, the Great. And may Allah Almighty send blessings upon our Master and Protector, and his Family, Companions, Son, and Group altogether. Amen!

(Urdu Text - Right Column): ...is not narrated from him, whereas Imam Dabusi has presented the narration. Similarly, the issues of putting hands and feet in, and entering the well without ablution (wudu) are explicitly mentioned in the texts (mutun) and commentaries (shuruh) and are also mentioned in the fatwas; these have been narrated from our three Imams. Now, to attribute all these things to a weak narration is highly unreasonable. It is clearly known from the wording of the fatwa that if used water falls into it, it will be from the 'thrown' (mulqa) and not the 'met' (mulaqa). Do not be deceived into thinking that it is not necessary for them to take water out of it by hand-scooping, so they would put their hands in before washing, and this is called 'talaqi' (meeting), because taking water out by hand-scooping in this way is pardoned by consensus, as there is a need for it. [End of my marginalia here]. From what we have mentioned in the three chapters, it will have become known to you that the three illustrious scholars remained unaware of the actual point of contention. However, there is no surprise at this oversight; the

surprise is at the fact that Allama Shami became alert to this and abandoned what was in 'Al-Bahr' because it related to the 'mulqa', and yet he quoted the wording of the fatwa, whereas, as you know, it is explicit about the 'mulqa', so its omission was also necessary. You know that arguing from generality is a kind of 'begging the question' (musadara 'ala al-matlub). They have nothing except the discussion in 'Al-Bada'i', whereas this statement is contrary to the mutawatir texts and clear authentic narrations, and is also contrary to the consensus of the three Imams recorded in authoritative books, even in 'Al-Bada'i' and 'Al-Bahr'. Therefore, this should be well kept in mind. May Allah Almighty [keep] you...

(अरबी पक्ष): ...स्पष्ट है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी उसमें गिरता है, इसलिए वह 'मुल्का' (फेके गए) में से है न कि 'मुलाका' (मिले हुए) में से। इस बात से धोखे में न आएं कि उनके लिए उससे पानी निकालना ज़रूरी है और इस तरह वे धोने से पहले अपने हाथ उसमें डालते हैं; यह एक मिलाप (तलाकिन) है क्योंकि ज़रूरत के कारण आम सहमति (इज्मा) से हाथ से पानी निकालना माफ़ है। [मेरे द्वारा लिखे गए का अंत]। जैसा कि हमने पिछले तीन अध्यायों में प्रस्तुत किया है, आप जान चुके हैं कि तीनों महान विद्वानों ने विवाद के मुख्य बिंदु की अनदेखी की है। हालांकि, अनदेखी आश्चर्यजनक नहीं है; (1) आश्चर्य की बात यह है कि अल्लामा शामी इस बात से अवगत हो गए और 'अल-बह्र' में जो कुछ था उसमें से अधिकांश को छोड़ दिया क्योंकि वह 'मुल्का' से संबंधित था, फिर फतवे की इबारत (पाठ) को उद्धृत किया जबकि, जैसा कि आप जानते हैं, वह 'मुल्का' के बारे में स्पष्ट है। इसलिए, इसे भी हटा दिया जाना चाहिए था। आपने देखा है कि व्यापकता (उमूम) से दलील देना 'मुसादिरा अला अल-मतलूब' (साध्य का आश्रय लेना) का एक प्रकार है। उनके पास 'अल-बदाइ' में हुई चर्चा के अलावा और कुछ नहीं है, जबकि यह इबारत मुतवातिर नुसूस़ और तीनों इमामों से स्पष्ट, प्रामाणिक रिवायतों के खिलाफ है, और विश्वसनीय पुस्तकों में दर्ज उनके इज्मा (आम सहमति) के भी विपरीत है, यहाँ तक कि 'अल-बदाइ' और 'अल-बह्र' में भी। इसलिए अडिग रहें और विचलित न हों। अल्लाह हमें, आपको और सभी मुसलमानों को इस दुनिया और आखिरत में मज़बूत शब्द (कौल-ए-साबित) पर कायम रखे। बेशक वह इसका मालिक और इस पर कादिर है। अल्लाह के सिवा कोई ताकत और कुवत नहीं है, जो बुलंद और अज़ीम है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला, और उनके आल, असहाब, बेटे और जमात सब पर रहमतें नाज़िल फरमाए। आमीन!

(उर्दू पक्ष): ...उनसे नक़ल नहीं है जबकि इमाम दबूसी ने नक़ल पेश की है। इसी तरह हाथ-पैर दाखिल करने और बे-वज़ू कुएं में दाखिल होने के मसाइल मुतून और शुरूह में सरह़तन मज़कूर हैं और फ़तावा में भी मज़कूर हैं, इन्हें हमारे आइमा-ए-सलासा (तीनों इमामों) से नक़ल किया गया है। अब इन तमाम चीज़ों को एक ज़ईफ़ रिवायत पर म़हमूल करना इंतेहाई ग़ैर-माक़ूल बात है, और फ़तवा की इबारत से सरह़तन मालूम होता है कि मुस्तअमल पानी उसमें गिरता है तो वह मुल्क़ा से होगा न कि मुलाक़ा से। तुझे यह धोखा न हो कि उनके लिए यह ज़रूरी नहीं कि वे उससे चुल्लू के ज़रिये पानी निकालें तो वे हाथ धोने से पहले दाखिल करेंगे और इसी को तलाक़ी कहते हैं, क्योंकि इस तरह चुल्लू से पानी निकालना बिल-इत्तेफ़ाक़ माफ़ है, क्योंकि इसमें हाजत (ज़रूरत) है। यहाँ तक

मेरा हाशिया ख़त्म हुआ, और जो कुछ हमने फ़ुसूल-ए-सलासा (तीन अध्यायों) में ज़िक्र किया है उससे आपको मालूम हो गया होगा कि तीनों जलील-उल-क़द्र उलेमा असल महल-ए-निज़ा (विवाद के मुख्य स्थल) से ग़ाफ़िल रहे, लेकिन इस ग़फ़लत पर ताज्जुब नहीं, ताज्जुब तो इस अमर पर है कि अल्लामा शामी इस पर मुतनब्बे (सतर्क) हो गए और जो बह्र में था उसको तर्क कर दिया क्योंकि उसका ताल्लुक़ मुल्क़ा से था, और फिर भी फ़तवा की इबारत ज़िक्र की, हालांकि जैसा कि आपको मालूम है वह मुल्क़ा में सरीह़ है तो उसका इस्क़ात (हटाना) भी ज़रूरी था और आपको मालूम है कि उमूम से इस्तेदलाल में एक क़िस्म का मुसादिरा अला अल-मतलूब है तो उनके पास बदाइ की बहस के अलावा कुछ नहीं है जबकि यह इबारत नुसूस-ए-मुतवातिरा और रिवायत-ए-ज़ाहिरा सह़ीह़ा के मुख़ालिफ़ है और आइमा-ए-सलासा का जो इज्मा कुतुब-ए-मुअतमिदा यहाँ तक कि बदाइ और बह्र में भी मन्क़ूल है उसके भी ख़िलाफ़ है लिहाज़ा इसको ख़ूब ज़हन-नशीन कर लेना चाहिए, अल्लाह तआला तुमको...

(عربی متن - بایاں کالم): صریحة في ان الماء المستعمل یقع فیها فیکون من الملقی دون الملاقی ولا تغتر بأنهم لابدلهم ان یغترفوا منها فیدخلوا ایدیهم قبل الغسل وذلك تلاق لان الاعتراف معفو عنه بالاتفاق لاجل الحاجة اهـ ما کتبت علیه، وقد علمت مما قدمناه في الفصول الثلثة ان الفحول الثلثة کلهم قد اغفلوا محل النزاع ولکن لاعجب في الاغفال انما (۱) العجب من العلامة الشامی تنبه لهذا وترك جل مافی البحر لکونه في الملقی ثم اورد عبارة الفتوی مع انها کما علمت صریحة في الملقی فکان یجب اسقاطها ایضا وقد علمت مافی الاستدلال بالعموم من نوع مصادرة علی المطلوب فلیس بأیدیهم شیئ اصلا سوی بحث البدائع الواقع مناضلا لمتواترات النصوص والروایات الظاهرة الصحیحة عن الائمة الثلثة مصادما لاجماعهم المنقول في الکتب المعتمدة حتی البدائع والبحر فتثبت ولا تزل ثبتنا الله وایاك والمسلمین بالقول الثابت في الحیوة الدنیا وفی الآخرة انه ولی ذلك والقدیر علیه ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم وصلی الله تعالی علی سیدنا ومولنا وآله وصحبه وابنه وحزبه اجمعین آمین!

(اردو متن - دایاں کالم): سے نقل نہیں ہے جبکہ امام دبوسی نے نقل پیش کی ہے اسی طرح ہاتھ پیر داخل کرنے، اور بے وضو کے کنویں میں داخل ہونے کے مسائل صراحۃ متون وشروح میں مذکور ہیں اور فتاویٰ میں بھی مذکور ہیں، ان کو ہمارے ائمہ ثلثہ سے نقل کیا گیا ہے، اب ان تمام چیزوں کو ایک ضعیف روایت پر محمول کرنا انتہائی غیر معقول بات ہے، اور فتویٰ کی عبارت سے صراحتہ معلوم ہوتا ہے کہ مستعمل پانی اس میں گرتا ہے تو وہ ملقٰی سے ہوگا نہ کہ ملاقی سے ،تجھ یہ دھوکا نہ ہو کہ ان کیلئے یہ ضروری نہیں کہ وہ اس سے چلو کے ذریعہ پانی نکالیں تو وہ ہاتھ دھونے سے قبل داخل کرینگے اور اسی کو تلاقی کہتے ہیں، کیونکہ اس طرح چلو سے پانی نکالنا بالاتفاق معاف ہے، کیونکہ اس میں حاجت ہے اھ یہاں تک میرا حاشیہ ختم ہوا، اور جو

کچھ ہم نے فصول ثلثہ میں ذکر کیا ہے اس سے آپ کو معلوم ہو گیا ہوگا کہ تینوں جلیل القدر علماء اصل محل نزاع سے غافل رہے، لیکن اس غفلت پر تعجب نہیں، تعجب تو اس امر پر ہے کہ علامہ شامی اس پر متنبہ ہو گئے اور جو بحر میں تھا اس کو ترک کر دیا کیونکہ اس کا تعلق ملقٰی سے تھا، اور پھر بھی فتویٰ کی عبارت ذکر کی، حالانکہ جیسا کہ آپ کو معلوم ہے وہ ملقٰی میں صریح ہے تو اس کا اسقاط بھی ضروری تھا اور آپ کو معلوم ہے کہ عموم سے استدلال میں ایک قسم کا مصادرہ علی المطلوب ہے تو ان کے پاس بدائع کے بحث کے علاوہ کچھ نہیں ہے جبکہ یہ عبارت نصوص متواترہ اور روایات ظاہر ہ صحیحہ کے مخالف ہے اور ائمہ ثلثہ کا جو اجماع کتب معتمدہ حتی کہ بدائع اور بحر میں بھی منقول ہے اُس کے بھی خلاف ہے لہذا اس کو خوب ذہن نشین کر لینا چاہئے، اللہ تعالیٰ تم کو

Fatawa Razawiyya Volume 2 Benefit: The commentator (Sh) concluded this discussion by saying, "I say, in this (i.e., what the Allamah and Al-Bahr inclined towards) is a great expansion, especially in a time when water is cut off from the basins of mosques and elsewhere in our lands, but precaution is not hidden." End. I say: (1) Precaution is acting upon the stronger of the two evidences, and you have known that what he inclined towards has no evidence for it. Expansion might justify leaning towards a narration of others which is preferred by reasoning (dirayah), but here there is neither a narration nor reasoning. Yes, if necessity is established, then in acting according to the words of the two Imams of guidance, Malik and Shafi'i (may Allah Almighty be pleased with them both), there is leeway that used water is pure and purifying. Benefit: Sh said in 'Al-Minhah' regarding the statement of Al-Bahr: "There is no meaning to the difference between the two issues," meaning the 'mulqa' (thrown in) and 'mulaqa' (encountered). His text is: "Some of our sheikhs said it is also indicated by the narration of impurity, for the impure thing makes others impure whether it is the 'mulqa' or 'mulaqa'. Likewise, on the narration of purity. If that is the case, then reliance should be upon it, especially since many have chosen it and generally those who came after the commentator followed him in this."

Urdu Column: May He keep us and all Muslims steadfast on the truth in this world and the hereafter. He is the Guardian and Powerful over it. There is no power or strength except from Allah, the Most High, the Most Great. And may blessings be upon our master, his family, companions, sons, and the entire assembly. Amen! (T) Benefit 7: "Sh" ended this discussion with these words: "I say, and in this (i.e., that towards which the Allamah and Al-Bahr incline) there is great vastness, especially in this era when water is running out from the ponds of our city's mosques etc., but precaution is not hidden." End (T). I say precaution is that among two evidences, whichever is stronger should be acted upon. And you know that there is no evidence for what they incline towards. Sometimes, for the sake of leeway, even a less preferred (marjooh) narration is adopted based on reasoning (dirayah). But here there is neither narration nor reasoning. Yes, if a need is found, it is found to the extent of acting upon the words of Imam Malik and Imam Shafi'i, and according to them, this water is pure and purifying. (T) Benefit 8: "Sh" stated in 'Minhah' regarding the statement of Al-Bahr that there is no difference between the two cases, i.e., between 'mulqa' and 'mulaqa'. His statement is that some of our sheikhs said the narration of impurity points to this because an impure thing makes another impure whether it is 'mulqa' or 'mulaqa'. Similarly, on the narration of purity. And when the

situation is such, it should be relied upon, especially in such a situation when many scholars have...

Footnote: 1. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/135. Page 240 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द 2 फ़ायदा: व्याख्याता (श) ने इस चर्चा को यह कहते हुए समाप्त किया, "मैं कहता हूँ, इसमें (यानी जिसकी ओर अल्लामा और अल-बहर का झुकाव है) एक महान विस्तार है, विशेष रूप से ऐसे समय में जब हमारे देशों में मस्जिदों के हौज़ों और अन्य स्थानों से पानी कट जाता है, लेकिन एहतियात (सावधानी) छिपी नहीं है।" समाप्त। मैं कहता हूँ: (1) एहतियात दो प्रमाणों में से अधिक मजबूत पर अमल करना है, और आप जान चुके हैं कि जिसकी ओर उनका झुकाव है उसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। विस्तार कभी-कभी दूसरे की रिवायत की ओर झुकाव को जायज़ ठहरा सकता है जो समझ (दरायाा) के आधार पर बेहतर हो, लेकिन यहाँ न तो कोई रिवायत है और न ही समझ। हाँ, यदि आवश्यकता स्थापित हो जाए, तो हिदायत के दो इमामों, मलिक और शाफ़ई (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के कथनों के अनुसार कार्य करने में गुंजाइश है कि उपयोग किया गया पानी पाक और पाकीज़ा है। फ़ायदा: श ने 'अल-मिन्हा' में अल-बहर के कथन के बारे में कहा: "दो मुद्दों के बीच अंतर का कोई अर्थ नहीं है," यानी 'मुलका' (फेंका हुआ) और 'मुलाका' (मिला हुआ)। उनका पाठ है: "हमारे कुछ शेखों ने कहा कि यह अशुद्धता की रिवायत से भी संकेतित है, क्योंकि अशुद्ध वस्तु दूसरों को अशुद्ध कर देती है चाहे वह 'मुलका' हो या 'मुलाका'। इसी तरह, शुद्धता की रिवायत पर। यदि ऐसा है, तो इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए, विशेष रूप से क्योंकि कई लोगों ने इसे चुना है और आम तौर पर व्याख्याता के बाद आने वालों ने इस पर उनका अनुसरण किया है।"

उर्दू कॉलम: वह हमें और सभी मुसलमानों को दुनिया और आखिरत में सच्चाई पर अडिग रखे। वह उसका संरक्षक और उस पर सक्षम है। अल्लाह, जो सबसे ऊंचा और सबसे महान है, के अलावा कोई शक्ति या बल नहीं है। और हमारे आका, उनके परिवार, साथियों, पुत्रों और पूरी सभा पर दरूद हो। आमीन! (त) फ़ायदा 7: "श" ने इस चर्चा को इन शब्दों के साथ समाप्त किया: "मैं कहता हूँ, और इसमें (यानी जिसकी ओर अल्लामा और बहर का झुकाव है) बड़ी विशालता है, विशेष रूप से इस युग में जब हमारे शहर की मस्जिदों आदि के तालाबों से पानी खत्म हो रहा है, लेकिन सावधानी छिपी नहीं है।" समाप्त (त)। मैं कहता हूँ कि सावधानी यह है कि दो प्रमाणों में से जो भी अधिक प्रबल हो, उस पर अमल किया जाना चाहिए। और आप जानते हैं कि जिसकी ओर उनका झुकाव है, उसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। कभी-कभी, गुंजाइश के लिए, समझ (दरायाा) के आधार पर कम पसंदीदा (मरजूह) रिवायत को भी अपनाया जाता है। लेकिन यहाँ न तो रिवायत है और न ही समझ। हाँ, यदि आवश्यकता पाई जाती है, तो वह इमाम मलिक और इमाम शाफ़ई के शब्दों पर अमल करने की

सीमा तक पाई जाती है, और उनके अनुसार, यह पानी पाक और पाकीज़ा है। (त) फ़ायदा 8: "श" ने 'मिन्हा' में अल-बहर के कथन के बारे में कहा कि दोनों मामलों में कोई अंतर नहीं है, यानी 'मुलका' और 'मुलाका' के बीच। उनका बयान है कि हमारे कुछ शेखों ने कहा कि अशुद्धता की रिवायत इसकी ओर इशारा करती है क्योंकि एक अशुद्ध चीज़ दूसरे को अशुद्ध कर देती है चाहे वह 'मुलका' हो या 'मुलाका'। इसी तरह, शुद्धता की रिवायत पर। और जब स्थिति ऐसी है, तो इस पर भरोसा किया जाना चाहिए, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब कई विद्वानों ने...

पाद टिप्पणी: 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/135। पृष्ठ 240 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی فائدہ : ختم هذا المبحث ش بقوله قلت وفي ذلك (ای ما مال اليه العلامة والبحر) توسعة عظيمة ولا سيما في زمن انقطاع المياه عن حياض المساجد وغيرها في بلادنا ولكن الاحتياط لا يخفى اھ اقول: (۱) الاحتياط العمل باقوى الدليلين وقد علمت ان ما مال اليه لا دليل عليه ( ) والتوسعة قد تبيح الميل الى رواية لغيرها رجحان عليها دراية وههنا لا رواية ولا دراية نعم ان تحققت الضرورة ففی العمل بقول امامي الهدى مالك والشافعی رضی الله تعالی عنهما مندوحة ان الماء المستعمل طاهر وطهور- فائدہ : قال ش فی المنحة علی قول البحر لا معنی للفرق بين المسألتين يريد الملقی والملاقی ما نصه قال بعض مشائخنا يدل عليه ايضا رواية النجاسة فان النجس ينجس غيره سواء كان ملقی او ملاقيا فكذا على رواية الطهارة واذا كان كذلك فليكن التعويل عليه سيما وقد اختاره كثيرون وعامة من تأخر عن الشارح تابعه علی

اردو کالم: ہم کو تمام مسلمانوں کو دنیا و آخرت میں حق پر ثابت قدم رکھے وہ اس کا والی اور قادر ہے اس اللہ علی و عظیم کے سوا کسی کو طاقت نہیں ہے اور صلوٰۃ ہمارے سردار ان کی آل اصحاب بیٹے جماعت تمام پر ہو، آمین ! (ت) فائدہ ۷ : "ش" نے اس بحث کو ان الفاظ پر ختم کیا ہے "میں کہتا ہوں اور اس میں (یعنی جس کی طرف علامہ اور بحر کا میلان ہے) بڑی وسعت ہے خاص طور پر اس زمانہ میں جبکہ ہمارے بلاد کی مساجد وغیرہ سے حوضوں کا پانی ختم ہوتا جاتا ہے، لیکن احتیاط مخفی نہیں " اھ (ت) میں کہتا ہوں احتیاط تو اس میں ہے کہ دو دلیلوں میں سے جو زیادہ قوی ہو اس پر عمل کیا جائے ، اور آپ کو معلوم ہے کہ جس طرف ان کا رجحان ہے اس پر کوئی دلیل نہیں، اور گنجائش میں کبھی مرجوح روایت کو بھی درایۃً اختیار کرنا پڑتا ہے، اور یہاں تو نہ روایت ہے اور نہ درایت، ہاں اگر ضرورت پائی جاتی ہے تو بقول امام مالک اور امام شافعی عمل کی حد تک پائی جاتی ہے ، اور ان کے نزدیک یہ پانی طاہر و طہور ہے۔ (ت) فائدہ

۸ : "ش" نے منحہ میں بحر کے قول پر فرمایا دونوں مسئلوں میں کوئی فرق نہیں، یعنی ملقی اور ملاقی میں، ان کی عبارت یہ ہے کہ ہمارے بعض مشائخ نے فرمایا اس پر نجاست کی روایت دلالت کرتی ہے کیونکہ نجس دوسرے کو بھی نجس کرتا ہے خواہ وہ ملقی ہو یا ملاقی ، اسی طرح طہارت کی روایت پر۔ اور جب صورت حال یہ ہے تو اسی پر اعتماد ہونا چاہئے بالخصوص ایسی صورت میں جبکہ بہت سے علماء نے اس کو

حاشیہ: 1 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۳۵/۱ Page 240 of 711

Fatawa Razawiyyah, Volume 2

...even the author of Al-Nahr has followed them, despite what it contains of removing great hardship from Muslims. (Ref: T)

I say: Firstly, (1) if analogy based on the narration regarding impurity were permissible, Sheikh Ibn al-Shahnah would be more entitled to this than you. This is because equality in the narration regarding impurity lies in the influence, not in the absence of influence. Just as they are equal in influence by taking away purity (Taharah), they should likewise be equal in taking away purificatory power (Tahuriyyah) based on the narration of purity, rather than having equality in the total absence of influence.

Secondly, (2) they have clarified that water poured on an impurity becomes impure just as it is in the reverse case. This means contamination occurs to the entirety of a small amount of water whether it falls upon impurity or impurity falls upon it. Therefore, we state similarly here: just as the water that falls upon a 'hukmi' (legal) impurity becomes entirely deprived of purificatory power, in the same way, when 'hukmi' impurity falls upon a small amount of water, it makes all of it deprived of purificatory power. Analogizing one impurity to another is more worthy of acceptance than analogizing a narration about purity to a narration about impurity.

Thirdly, (3) and this is the solution: a legal ruling is only established by the establishment of its cause. The cause of contamination is meeting with impurity, and that is achieved in the thing thrown into [water] as in the thing met [by it]. The cause of 'use' (making water 'musta'mal') is meeting the body...

Footnote: Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company, Karachi, 1/174.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

...यहाँ तक कि अल-नहर के लेखक ने भी उनका अनुसरण किया है, जबकि इसमें मुसलमानों की बड़ी कठिनाई को दूर करने की बात है। (संदर्भ: टी)

मैं कहता हूँ: पहली बात, (1) यदि अशुद्धता (नजासत) से संबंधित विवरणी पर आधारित उपमा (क़यास) की अनुमति होती, तो शेख इब्न अल-शाहना आपकी तुलना में इसके अधिक पात्र होते। इसका कारण यह है कि अशुद्धता की विवरणी में समानता उसके प्रभाव में है, न कि प्रभाव की अनुपस्थिति में। जिस तरह वे पवित्रता (तहारत) को छीनने के प्रभाव में समान हैं, उसी तरह पवित्रता की विवरणी के आधार पर उन्हें शुद्धिकरण शक्ति (तहूरियत) को छीनने में समान होना चाहिए, न कि प्रभाव की पूर्ण अनुपस्थिति में।

दूसरी बात, (2) उन्होंने स्पष्ट किया है कि अशुद्धता पर गिराया गया पानी अशुद्ध हो जाता है जैसा कि इसके विपरीत होता है। इसका अर्थ है कि थोड़े पानी की पूरी मात्रा में संदूषण तब होता है जब वह अशुद्धता पर गिरता है या अशुद्धता उस पर गिरती है। इसलिए, हम यहाँ भी इसी तरह कहते हैं: जिस तरह 'हुक्मी' (कानूनी) अशुद्धता पर गिरने वाला पानी पूरी तरह से अपनी शुद्धिकरण शक्ति खो देता है, उसी तरह जब 'हुक्मी' अशुद्धता थोड़े पानी पर गिरती है, तो वह उस पूरे पानी की शुद्धिकरण शक्ति को समाप्त कर देती है। एक अशुद्धता की तुलना दूसरी अशुद्धता से करना, पवित्रता की विवरणी की तुलना अशुद्धता की विवरणी से करने की तुलना में अधिक स्वीकार्य है।

तीसरी बात, (3) और यही समाधान है: एक कानूनी आदेश केवल उसके कारण की स्थापना से ही स्थापित होता है। संदूषण का कारण अशुद्धता से मिलना है, और वह पानी में फेंकी गई वस्तु में भी उसी तरह होता है जैसे पानी से मिलने वाली वस्तु में। 'मुस्तअमल' (उपयोग किए गए) होने का कारण शरीर से मिलना है...

पादलेख: मिन्हातुल खालिक अलल बहरिर राइक, किताबुत्तहारह, एच एम सईद कंपनी कराची, 1/174।

ذلك حتی صاحب النهر مع ما فیه من رفع الحرج العظیم علی المسلمین اهـ اختیار کیا ہے اور شارح کے بعد آنے والے علماء نے حتی کہ صاحبِ نہر نے بھی ان کی متابعت کی ہے، پھر مسلمانوں کو تنگی سے نکالنا ہے اھ (ت)

اقول اولا: (۱) ان کان للقیاس علی روایة النجاسة مساغ کان الشیخ ابن الشحنة احق بهذا منکم فان التسویة علی روایة النجاسة انما هی فی التاثیر لافی عدمها فکما استویا علیها فی التاثیر بسلب الطهارة فکذا علی روایة الطهارة بسلب الطهوریة لا فی عدم التاثیر اصلا میں کہتا ہوں اولاً اگر قیاس کو نجاست والی روایت پر گنجائش موجود ہو تو شیخ ابن الشحنہ اس کے بہ نسبت آپ کے زائد مستحق ہیں کیونکہ نجاست والی روایت پر برابری تاثیر میں ہے نہ کہ عدمِ تاثیر میں جیسے وہ دونوں سلبِ طہارت کی تاثیر میں برابر ہیں، اسی طرح طہارت کی روایت پر سلبِ طہوریت میں برابر ہونا چاہئے نہ کہ اصلاً عدمِ تاثیر میں مساوات ہو۔

وثانیا: (۲) صرحوا ان ماء ورد علی نجس نجس کعکسه ای ان التنجس یحصل للماء القلیل کله سواء کان هو الوارد علی نجاسة او بالعکس واذن نقول بمثله ههنا فکما ان الماء الوارد علی نجاسة حکمیة یصیر کله منسلب الطهوریة کذلك النجاسة الحکمیة اذا وردت علی ماء قلیل تجعل جمیعه مسلوب الطهوریة وقیاس احدی النجاستین علی الاخری احق بالقبول من قیاس روایة الطهارة علی روایة النجاسة۔ ثانیاً اس امر کی علماء نے تصریح کی ہے جو پانی نجس پر وارد ہوتا ہے وہ بھی نجس ہو جاتا ہے جیسا کہ اس کا عکس ہے، یعنی ناپاک ہونا کل تھوڑے پانی میں ہوتا ہے خواہ وہ نجاست پر وارد ہو یا نجاست اس پر وارد ہو، اس لئے اسی قسم کا قول ہم یہاں کرتے ہیں تو جس طرح وہ پانی

جو نجاستِ حکمیہ پر وارد ہوتا ہے اس کی طہوریت ختم ہو جاتی ہے اسی طرح نجاستِ حکمیہ جب تھوڑے پانی پر وارد ہو تو تمام پانی کی طہوریت ختم ہو جائے گی، اور ایک نجاست کو دوسری نجاست پر قیاس کرنا زیادہ بہتر ہے بہ نسبت اس کے کہ طہارت کی روایت کو نجاست کی روایت پر قیاس کیا جائے۔

وثالثا: (۳) وهو الحل الحكم انما يثبت بثبوت سببه وسبب التنجس هو ملاقاة النجس وهو حاصل فی الملقی كالملاقی وسبب الاستعمال ملاقاة بدن ثالثاً: یہی حل ہے، حکم جب ثابت ہوتا ہے تو وہ اس کے سبب کے ثابت ہونے کی وجہ سے ہوتا ہے، اور تنجس کا سبب نجس سے ملنا ہے اور وہ ملقٰی (جس میں ڈالا جائے) میں اسی طرح حاصل ہے جیسے ملاقی (جس کے ساتھ ملا) میں۔ اور استعمال کا سبب بدن سے ملنا ہے۔

منحة الخالق على البحر الرائق كتاب الطهارة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷۴

Volume Two Fatawa Razawiyya

(Arabic side) ...ritual impurity (Hadath) or approaching it, whether it is by water coming onto the impurity or the impurity coming onto the water. This is present in the meeting agent (Mulaqi) and absent in the thing met (Mulqa fihi). Because when used water is thrown into a pool, neither its water comes onto the impurity nor the impurity comes onto it. Rather, what comes onto it is what came onto the impurity, and this is not the reason for usage (istimal). Fourthly: (1) You have heard the discussion on removing and repelling hardship. Fifthly: (2) These many scholars are latecomers after the author of 'Al-Bahr' (Al-Bahr al-Raiq). Among them, there is no one whose opinion carries weight in the Madhhab (school of thought), especially against the correct, relied-upon Madhhab that is adorned with consensus. And here is the author of 'Al-Bahr' saying that fatwa is not given nor acted upon except according to the opinion of Imam al-Azam (Abu Hanifa). One does not deviate from his opinion to the opinion of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) or either of them or others, except out of necessity, such as the weakness of evidence or a practice contrary to it, like the case of sharecropping (Muzara'a), even if the elders stated that the fatwa is according to the opinion of the two companions. So, if this is the case regarding the opinions of the two Imams of the Madhhab when they have given fatwa, then what do you think of something that is neither the opinion of either of them nor the opinion of anyone else, nor a narration from anyone, nor authenticated by anyone, nor has any basis in reasoning (Dirayah)? How can one deviate from a Madhhab for such a thing?

(Urdu side) And the cause of being impure is meeting the impure thing. So it is present in the 'multaqi' (meeting point) in the same way it is present in the 'mulaqi' (the one that meets). The cause of 'usage' (istimal) is meeting the body of a person in a state of ritual impurity, whether water is poured on the impurity or the impurity is placed in water. This thing is present in the 'mulaqi' but not in the 'mulqa fihi' (that into which it is thrown). Because when used water is put into a pool, neither did its water come onto an impurity nor did an impurity come onto it. Instead, what came onto it was that which had come onto the impurity, and this is not the reason for the water becoming 'used' (Mustamal). Fourthly: You have already heard the matter of removing hardship and its rebuttal. Fifthly: These many scholars are later than the author of 'Al-Bahr', and none of them is of such a stature that their opinion could be an authority in the Madhhab, especially against a correct opinion on which consensus has already occurred. Especially when the author of 'Al-Bahr' is saying that

fatwa should only be given according to the opinion of Imam al-Azam, not according to the opinion of the two companions or either of them, except in case of necessity, for example, if the evidence is weak or if practice is against it, as happened in the case of sharecropping (Muzara'a), even if the elders clarified that the fatwa is on the opinion of the two companions. When this is the case with the two Imams of the Madhhab and they have given a fatwa on it, then where a person's...

1. Al-Bahr al-Raiq, Auqat-e-Namaz, Saeed Company, Karachi 1/246. Page 242 of 711

जिल्द थानी (दूसरा खंड) फ़तावा रज़विया

(अरबी पक्ष) ...ह़दथ (अशुद्धि) या उसके करीब होना, चाहे वह ह़दथ पर पानी डालने से हो या पानी पर ह़दथ डालने से। यह मिलने वाली चीज़ (मुलाक़ी) में मौजूद है और जिसमें मिलाया गया (मुल्क़ा फ़ीहि) उसमें नहीं है। क्योंकि जब इस्तेमाल किया हुआ पानी ह़ौज़ में डाला जाता है, तो न तो उसका पानी ह़दथ पर पड़ता है और न ही ह़दथ उस पर पड़ता है। बल्कि उस पर वह चीज़ पड़ती है जो ह़दथ पर पड़ी थी, और यह इस्तेमाल (इस्तिमाल) का कारण नहीं है। चौथा: (1) आपने कठिनाई दूर करने और उसे रोकने की चर्चा सुनी। पांचवां: (2) ये बहुत से विद्वान 'अल-बह्र' (अल-बह्र अर-राईक़) के बाद के हैं। उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी राय मज़हब (विचारधारा) में प्रामाणिक मानी जाए, विशेष रूप से उस सही, विश्वसनीय मज़हब के खिलाफ जो आम सहमति (इजमा) से सुसज्जित है। और यहाँ 'अल-बह्र' के लेखक कह रहे हैं कि फतवा नहीं दिया जाता और न ही इमाम आज़म (अबू हनीफ़ा) के मत के अलावा किसी और पर अमल किया जाता है। उनकी राय से हटकर उनके दो साथियों (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) या उनमें से किसी एक या दूसरों की राय पर तब तक अमल नहीं किया जाता जब तक कि कोई आवश्यकता न हो, जैसे प्रमाण की कमजोरी या इसके विपरीत कोई व्यवहार, जैसे कि मुज़ाराअ (साझा खेती) के मामले में हुआ, भले ही बुजुर्गों ने स्पष्ट किया हो कि फतवा दो साथियों की राय पर है। तो जब यह मज़हब के दो इमामों की राय के बारे में है जबकि उन्होंने इस पर फतवा दिया है, तो आप उस चीज़ के बारे में क्या सोचते हैं जो न तो उन दोनों की राय है, न किसी और की राय है, न ही किसी से रिवायत (कथन) है, न ही किसी ने इसे सही ठहराया है और न ही तर्क(दिरायत) में इसका कोई आधार है? ऐसी चीज़ के लिए कोई मज़हब से कैसे विचलित हो सकता है?

(उर्दू पक्ष) और नापाक होने का कारण नापाक से मिलना है, तो वह 'मुल्तक़ी' (मिलने का स्थान) में भी उसी तरह मौजूद है जैसे 'मुलाक़ी' (मिलने वाला) में है। और 'इस्तिमाल' (उपयोग) का कारण अशुद्ध व्यक्ति के शरीर से मिलना है, चाहे अशुद्धि पर पानी डाला जाए या पानी पर अशुद्धि डाली जाए। और यह चीज़ मुलाक़ी में तो है लेकिन 'मुल्क़ा फ़ीहि' (जिसमें डाला गया) में नहीं है। क्योंकि इस्तेमाल किया हुआ पानी जब ह़ौज़ में डाला जाता है, तो न तो उसका पानी अशुद्धि पर पड़ा और न ही अशुद्धि उस पर पड़ी। बल्कि उस पर वह चीज़ पड़ी जो अशुद्धि पर पड़ी थी, और यह इस्तेमाल होने का कारण नहीं है। चौथा: आप कठिनाई दूर करने के मामले और उसके खंडन को सुन चुके हैं। पांचवां: ये बहुत से विद्वान 'बह्र' के लेखक से बाद के हैं, और उनमें से कोई भी इस स्तर का नहीं है कि

मज़हब में उनकी बात सनद (प्रमाण) हो, विशेष रूप से उस सही बात के मुक़ाबले जिस पर इजमा (आम सहमति) हो चुकी हो। विशेष रूप से जब 'बह्र' के लेखक कह रहे हों कि फ़तवा इमाम आज़म की बात पर ही दिया जाए, न कि साहिबैन (दो साथियों) या उनमें से किसी एक की बात पर, सिवाय ज़रूरत के, उदाहरण के लिए यह कि प्रमाण कमज़ोर हो या उसके विरुद्ध व्यवहार हो, जैसे मुज़ाराअ (साझा खेती) के मामले में हुआ, चाहे मशाइख (बुज़ुर्गों) ने स्पष्ट किया हो कि फ़तवा साहिबैन की बात पर है। जब यह मामला मज़हब के दो इमामों के साथ है और वे इस पर फ़तवा दे चुके हैं, तो जहाँ किसी का...

1. अल-बह्र अर-राईक़, औक़ात-ए-नमाज़, सईद कंपनी, कराची 1/246. पेज 242 ऑफ़ 711

جلد ثانی فتاوی رضویہ

(عربی کالم) محدث او متقرب سواء کان بورود الماء علی الحدث او الحدث علی الماء وھو حاصل في الملاقي منتف في الملقی فیه لان الماء المستعمل اذا القي في الحوض فلا ماؤہ ورد علی حدث ولا الحدث ورد علیه انما ورد علیه ماورد علی الحدث ولیس ھذا سبب الاستعمال۔ ورابعا: (۱) سمعت حدیث رفع الحرج ودفعه وخامسا: (۲) لیس ھؤلاء الکثیرون الالمتأخرون عن البحر ولیس فیھم من یکون له قول في المذھب لاسیما علی خلاف المذھب الصحیح المعتمد المذیل بطراز الاجماع وھذا صاحب البحر قائلا فیه لا یفتی ولا یعمل الا بقول الامام الاعظم ولا یعدل عنه الی قولھما او قول احدھما اوغیرھما الالضرورۃ من ضعف دلیل او تعامل بخلافه کالمزارعة وان صرح المشائخ بان الفتوی علی قولھما۱ اھـ فإذا کان ھذا في قول امامي المذھب وقد افتوا به فما ظنك بما لیس قول احدھما ولا قول احد ولا روایة عن احد وما صححه احد ولا له في الدرایة مستند، فکیف یعدل الی مثله عن مذھب

(اردو کالم) اور ناپاک ہونے کا سبب ناپاک سے ملاقات ہے، تو وہ ملتقی میں بھی اسی طرح موجود ہے جس طرح ملاقی میں ہے اور استعمال کا سبب محدث کے بدن سے ملاقات ہے خواہ حدث پر پانی وارد ہو یا پانی پر حدث وارد ہو، اور یہ چیز ملاقی میں تو ہے ملتقی فیہ میں نہیں کیونکہ مستعمل پانی جب حوض میں ڈالا جائے تو نہ تو اس کا پانی حدث پر وارد ہوا اور نہ ہی حدث اس پر وارد ہوا، اور اس پر وہ چیز وارد ہوئی ہے جو حدث پر وارد ہوئی ہے اور یہ سبب استعمال نہیں۔ رابعاً: آپ حرج رفع کرنے کا معاملہ اور اس کا رد سن چکے ہیں۔ خامساً یہ کثیر علماء بحر سے متاخر ہیں، اور ان میں کوئی اس پایہ کا نہیں کہ مذہب میں اس کا قول سند ہو، خاص طور پر قول صحیح کے مقابل جس پر اجماع ہوچکا ہو، خاص طور پر جبکہ صاحبِ بحر فرما رہے ہوں ، فتوی امام اعظم کے قول پر ہی دیا جائے نہ کہ صاحبین یا کسی ایک صاحب کے قول پر سوائے

ضرورت کے، مثلاً یہ کہ دلیل ضعیف ہو یا اس کے خلاف تعامل ہو، جیسے مزارعہ کے معاملہ میں ہوا، خواہ مشائخ نے تصریح کی ہو کہ فتویٰ صاحبین کے قول پر ہے اھ جب یہ معاملہ دو ائمہ مذہب کے ساتھ ہے اور وہ اس پر فتوی دے چکے ہیں تو جہاں کسی کا

۱ بحر الرائق اوقات نماز سعید کمپنی کراچی ۱/۲۴۶ Page 242 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume II

[Left Column - Arabic] ...of all the Imams, the correct and relied-upon [opinion]. What are these [later scholars] before the Imams of the School (Madhab), except like one of us before them? Rather, they are even less and further removed. For we are all equal in the obligation to surrender to the Imams, coming and going, and that we have no choice of our own when they have decreed a matter. As for the large number of those who followed "Al-Bahr" (1), Al-Bahr itself stated regarding something even more widespread and powerful than a thousand instances of this—due to its circulation in the core texts (mutun) of the School, commentaries, and fatwas—namely, counting the making of I'tikaf conditional among things that are invalid. Its text states: "This is a place where they have erred, and the error here is most heinous because of the abundance of explicit statements regarding the validity of making it conditional. I am amazed at how they have passed around these phrases in core texts, commentaries, and fatwas. It often happens that an author mentions something erroneous, and those who come after him quote that phrase without change or warning, thus the number of narrators increases while its origin is from a single mistaken person" (1) [End of quote]. This is what has happened here, as you see. And with Allah lies protection (2). Moreover, the speech of many of them on this topic is not free from inconsistency. Even Al-Bahr itself has cited many reports which we have already presented as part of our arguments, including a report of consensus, and it explicitly stated regarding the issue of the well that the preferred school opinion is that the water is pure but not purifying (2).

[Right Column - Urdu] If there is no saying, no narration, no one has authenticated it, and there is no reliable rational evidence for it, then how can the collective madhab of all the Imams be abandoned to adopt it? Before the Imams of the school, their value and status are not as much as our status before these personalities, but even less. Because it is mandatory for all of us to obey the command of the Imams and to bow our heads in submission before them. When they decide on a matter, we have no choice from our side. As for the matter that many Mashaikh followed Al-Bahr; in one issue which is a thousand times more intense and powerful than this because it is present in the core texts, commentaries, and fatwas of the madhab—that is, regarding the invalidity of making I'tikaf conditional—Al-Bahr himself said that they have made a mistake here, and the error here is more heinous because there are numerous clarifications on the validity of its conditionality. I am surprised that the jurists accepted these phrases in the core texts, commentaries, and fatwas.

Generally, it keeps happening that an author mentions something by mistake, then those coming later continue to quote this error without rejection; in this way, the quoters of one wrongdoer become numerous [End of quote]. And here it has happened exactly like this, as you can see. Besides, most of their speech is not free from inconsistency. And Al-Bahr himself has mentioned many narrations which we have mentioned long ago in our arguments, and in it there is a mention of consensus...

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Miscellaneous Sales, H.M. Saeed Company, Karachi, 6/185. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Issue of the Well, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/98.

फतावा रजविया, जिल्द द्वितीय

[बायां कॉलम - अरबी] ...सभी इमामों का सही और विश्वसनीय [मत]। मज़हब (पंथ) के इमामों के सामने ये [बाद के विद्वान] ऐसे ही हैं जैसे उनके सामने हममें से कोई एक हो। बल्कि, वे और भी कम और दूर हैं। क्योंकि हम सभी इमामों के आदेशों को मानने के लिए समान रूप से बाध्य हैं, और जब वे किसी मामले का निर्णय कर देते हैं, तो हमारे पास अपना कोई विकल्प नहीं होता। जहाँ तक "अल-बहर" (1) का अनुसरण करने वालों की बड़ी संख्या का प्रश्न है, स्वयं अल-बहर ने एक ऐसी चीज़ के बारे में कहा जो इससे हज़ार गुना अधिक व्यापक और प्रबल थी—मज़हब के मूल ग्रंथों (मुतून), व्याख्याओं और फ़तवों में इसके प्रसार के कारण—यानी एतिकाफ़ को उन चीज़ों में गिनना जिनका शर्त के साथ जुड़ना (तअलीक़) सही नहीं है। उसका मूल पाठ है: "यह वह स्थान है जहाँ उन्होंने गलती की है, और यहाँ गलती सबसे अधिक घृणित है क्योंकि इसे शर्त के साथ जोड़ने की वैधता पर स्पष्ट कथनों की प्रचुरता है। मैं चकित हूँ कि उन्होंने इन वाक्यांशों को मूल ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवों में कैसे फैलाया। अक्सर ऐसा होता है कि एक लेखक गलती से कुछ लिख देता है, और बाद में आने वाले बिना किसी बदलाव या चेतावनी के उसी वाक्यांश को उद्धृत करते रहते हैं, इस प्रकार नकल करने वालों की संख्या बढ़ जाती है जबकि उसका मूल एक ही गलत व्यक्ति से होता है" (1) [उद्धरण समाप्त]। यही यहाँ हुआ है, जैसा कि आप देख रहे हैं। और अल्लाह ही रक्षा करने वाला है (2)। इसके अलावा, इस विषय पर उनमें से बहुतों की बातें विसंगतियों (इज़तिराब) से मुक्त नहीं हैं। स्वयं अल-बहर ने भी ऐसी बहुत सी रिपोर्टें उद्धृत की हैं जिन्हें हम पहले ही अपने तर्कों के रूप में प्रस्तुत कर चुके हैं, जिनमें आम सहमति (इज्मा) की रिपोर्ट भी शामिल है, और कुएं के मसले में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि चुना हुआ पंथ मत यह है कि पानी शुद्ध है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है (2)।

[दायां कॉलम - उर्दू] यदि कोई बात न हो, न कोई रिवायत हो, न ही किसी ने इसकी पुष्टि की हो, और न ही इसके लिए कोई विश्वसनीय प्रमाण हो, तो सभी इमामों के सामूहिक मत को छोड़कर इसे कैसे अपनाया जा सकता है? मज़हब के इमामों के सामने इन (बाद के विद्वानों) की क़द्र और क़ीमत उतनी नहीं है जितनी कि हमारी इन हस्तियों के सामने है, बल्कि उससे भी कम है। क्योंकि हम सभी पर इमामों के आदेश का पालन करना अनिवार्य है और उनके सामने सिर झुकाना है। जब वे किसी मामले का निर्णय कर देते हैं, तो हमारी अपनी कोई इच्छा नहीं रह जाती। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि कई मशायख़ ने 'अल-बहर' का अनुसरण किया है; तो एक मसले में जो तीव्रता और शक्ति के

मामले में इससे हज़ार गुना अधिक है—क्योंकि वह मज़हब के मूल ग्रंथों, टीकाओं और फ़तवों में मौजूद है—अर्थात एतिकाफ़ को शर्त से जोड़ने के सही न होने के बारे में, स्वयं बहर ने कहा कि यहाँ उनसे गलती हुई है, और यहाँ गलती अधिक घृणित है क्योंकि इसकी वैधता पर अनेक स्पष्टीकरण मौजूद हैं। मुझे आश्चर्य है कि फ़क़ीहों ने इन वाक्यांशों को मूल ग्रंथों, टीकाओं और फ़तवों में स्वीकार कर लिया। आम तौर पर ऐसा होता रहता है कि एक लेखक गलती से कोई चीज़ लिख देता है, फिर बाद वाले बिना किसी विरोध के उस गलती को दोहराते रहते हैं; इस तरह एक गलती करने वाले के नकलची बहुत हो जाते हैं। और यहाँ ठीक ऐसा ही हुआ है, जैसा कि आप देख सकते हैं। इसके अलावा, उनकी अधिकांश बातें विसंगतियों से मुक्त नहीं हैं। और स्वयं बहर ने कई ऐसी रिवायतें ज़िक्र की हैं जिन्हें हमने अपने तर्कों में बहुत पहले ज़िक्र किया है, और इसमें इज्मा (आम सहमति) का उल्लेख है...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. अल-बहर अल-रईक़, मुतफ़र्रिक़ात मिन अल-बयूँ, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 6/185। 2. अल-बहर अल-रईक़, मसला-ए-बीर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/98।

पृष्ठ 711 का 243

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی] جمیع الائمة الصحیح المعتمد، وما مثل هؤلاء بین ایدی ائمة المذهب الا کمثل احدنا عند هؤلاء بل اقل وابعد، لاستوائنا جمیعاً فی وجوب الاستسلام للائمة ورداً وصدراً وان لا تکون لنا الخیرة من انفسنا اذا قضوا امراً۔ اما کثرة من تبع البحر (۱) فقد قال البحر فی ماهو اعظم کثرة واشد قوة من الوف امثال هذا لدورانه فی متون المذهب والشروح والفتاوی اعنی عد الاعتکاف مما لا یصح تعلیقه ما نصه هذا الموضع مما اخطؤا فیه والخطأ هنا اقبح لکثرة الصرائح بصحة تعلیقه وانا متعجب لکونهم تداولوا هذه العبارات متوناً وشروحاً وفتاوی وقد یقع کثیراً ان مؤلفاً یذکر شیئاً خطأ فیأتی من بعده فینقلون تلك العبارة من غیر تغییر ولا تنبیه فیکثر الناقلون واصله لواحد مخطئ ۱ اهـ وهذا هو الواقع ههنا کما تری وبالله العصمة (۲) علی ان کلام کثیر منهم فی الباب لم یسلم عن اضطراب وهذا البحر نفسه قد اکثر من نقول ما قد منا من حججنا وفیها نقل الاجماع ونص فی مسألة البئر ان المذهب المختار ان الماء طاهر غیر طهور ۲

[دایاں کالم - اردو] قول ہی نہ ہو اور نہ روایت ہو، اور نہ کسی نے اس کی تصحیح کی ہو اور نہ اس کیلئے مستند درایت ہو، تو تمام ائمہ کا اجتماعی مذہب چھوڑ کر اس کو کیسے اختیار کیا جاسکتا ہے، ائمہ مذہب کے سامنے ان کی قدر و قیمت اتنی نہیں جتنی کہ ہماری ان حضرات کے سامنے ہے بلکہ اس سے بھی کمتر، کیونکہ ہم سب پر ائمہ کے حکم کا ماننا لازم ہے اور ان کے سامنے سر تسلیم خم کرنا ہے اور جب کسی معاملہ کا وہ فیصلہ کر دیں تو ہمیں اپنی طرف سے کوئی اختیار نہیں اور رہا یہ معاملہ کہ بحر کی اتباع بہت سے مشائخ نے کی ہے ایک مسئلہ میں جو شدت و قوت کے لحاظ سے اس سے ہزار گنا زیادہ ہے کیونکہ وہ متون مذہب اور شروح اور فتاوی میں موجود ہے، یعنی اعتکاف کی تعلیق کے صحیح نہ ہونے کے بارے میں خود بحر نے فرمایا کہ

یہاں ان کو غلطی لگی ہے، اور یہاں خطا زیادہ قبیح ہے کیونکہ اس کی تعلیق کی صحت پر بکثرت تصریحات موجود ہیں اور مجھے تعجب ہے کہ فقہاء نے ان عبارات کو متون و شروح اور فتاویٰ میں قبول کیا ہے، عام طور پر ایسا ہوتا رہتا ہے کہ ایک مؤلف ایک چیز ذکر دیتا ہے غلطی سے، پھر بعد والے اس غلطی کو بلا نکیر نقل کرتے رہتے ہیں، اس طرح ایک خطا کار کے ناقل بکثرت ہو جاتے ہیں اھ اور یہاں ایسا ہی ہوا ہے جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں، علاوہ ازیں ان میں سے اکثر کا کلام اضطراب سے خالی نہیں، اور خود بحر نے بہت سے نقول ذکر کی ہیں جنہیں ہم نے اپنے دلائل میں بہت پہلے ذکر کیا ہے اور اس میں اجماع کو

[حواشی] ۱ بحر الرائق متفرقات من البیوع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸۵/۶ ۲ بحر الرائق مسئلہ البئر حط ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۹۸/۱

Fatawa Ridawiyya Volume 2

[Arabic Section] And An-Nahr stated in the text of Al-Asrar what it stated. When Al-Bahr relied on the text of Al-Muhit, At-Tawshih, and At-Tuhfah regarding the situation where used water falls into a well... etc., it was noted: It should not be hidden from you that the text refers to the falling of water, not the person washing, and similarly in what follows ^1 ah. Ad-Durr corrected Al-Bahr with the words of Al-Hasan, as did Abu As-Sa'ud. We have previously presented the words of 'Sh', and all of them, along with Al-Hilyah before them, reasoned the dropping of the ruling of 'used' (musta'mal) water due to necessity. And this, as you know, is an acknowledgment of the truth out of necessity.

[Urdu Section] It has been quoted and in the issue of wells, it has been clarified that the chosen view is that the water is pure but not purifying (tahir ghair tanoor). An-Nahr stated in the text of Al-Asrar that which has passed, and when Al-Bahr argued from the texts of Al-Muhit, At-Tawshih, and At-Tuhfah, saying: "When used water falls into a well... etc.", it was written on it that it should not remain hidden from you that the text is about the falling of water and not about the falling of the washing water. Similarly, the text following it. Ad-Durr corrected Al-Bahr using Al-Hasan's words, and so did Abu Al-Sa'ud. We have quoted the words of "Sh", all of them, and Al-Hilyah; all these individuals have attributed the dropping of the ruling of usage to necessity. And as you have realized, this is an admission of the truth. (T)

Benefit 9: [Arabic] I say: I mentioned in At-Tars Al-Mu'addal the issue of a person in a state of minor ritual impurity (muhdith) putting his head, leather sock (khuff), or bandage into water. It suffices him according to the Second Imam [Abu Yusuf], and the water does not become 'used' (musta'mal). The correct view, in agreement with Muhammad, is that what is meant is that the water in the vessel does not become used, but rather the moisture adhering to the head, i.e., the wiped part only. So know that this specificity is for wiping (mas'h), and washing (maghsool) should not be compared to it. Malik al-Ulama said in Al-Bada'i: A person in a state of minor ritual impurity put his head, leather sock, or bandage into a vessel; Abu Yusuf said it suffices for wiping, and the water does not become used, whether he intended it or not...

[Urdu] Benefit 9: I have mentioned in "At-Tars Al-Mu'addal" the issue of a person without wudu dipping his head, sock, or bandage into water, and that according to the Second Imam, it will be sufficient for him, and the water will not become used. In

this, the correct view is that Imam Muhammad agrees with it, and the meaning is that the water in the vessel will not become used, rather it is the moisture attached to the head, i.e., only the wiped part. Therefore, it should be known that this is specific to wiping, so washing should not be compared to it. Malik al-Ulama stated in Al-Bada'i that someone put their head, sock, or bandage in water while without wudu; Abu Yusuf said it is sufficient for their mas'h (wiping), and the water will not become used in any case, whether they intended it or not, because usage has two...

---

^1 Nahr al-Faiq Page 244 of 711

[अरबी खंड] और अन-नहर ने अल-असरार के पाठ में वह कहा जो उसने कहा। जब अल-बहर ने अल-मुहीत, अत-तौशीह और अत-तुहफ़ा के पाठ पर भरोसा किया कि जब इस्तेमाल किया हुआ पानी कुएं में गिर जाए... इत्यादि, तो उस पर लिखा गया: आप पर यह छिपा नहीं होना चाहिए कि पाठ पानी के गिरने के बारे में है, न कि धोने वाले के, और इसी तरह बाद में भी ^1 अ.। अद-दुर्र ने अल-हसन के शब्दों के साथ अल-बहर को सुधारा, और अबू अस-सऊद ने भी ऐसा ही किया। हमने पहले 'श' के शब्द प्रस्तुत किए हैं, और उन सभी ने, और उनसे पहले अल-हिलिया ने, आवश्यकता के कारण 'इस्तेमाल' (मुस्तअमल) के नियम को छोड़ने का तर्क दिया। और यह, जैसा कि आप जानते हैं, आवश्यकता के कारण सत्य की स्वीकारोक्ति है।

[उर्दू खंड] उद्धृत किया गया है और कुएं के मसले में यह स्पष्ट किया गया है कि पसंदीदा मत यह है कि पानी ताहिर (शुद्ध) है लेकिन ग़ैर-तहूर (शुद्ध करने वाला नहीं) है। नहर ने असरार की इबारत में फ़रमाया है जो बीत चुका है, और जब बहर ने मुहीत, तौशीह और तुहफ़ा की इबारत से दलील देते हुए फ़रमाया "जब मुस्तअमल पानी कुएं में गिर जाए... इत्यादि", तो उस पर लिखा कि आप पर यह छिपा न रहे कि इबारत पानी के गिरने में है न कि धोवन के गिरने में, और इसी तरह उसके बाद की इबारत। और दुर्र ने बहर पर हसन के कलाम से इस्तदराक (सुधार) किया है, और इसी तरह अबू अस-सऊद ने, और हमने "श" और उन सबके और हिलिया के कलिमात (शब्द) उद्धृत किए हैं; इन सभी हज़रात ने हुक्म-ए-इस्तेमाल के साक़ित (ख़त्म) होने की वजह ज़रूरत (आवश्यकता) को क़रार दिया है, और जैसा कि आपने जाना यह एतराफ़-ए-हक़ (सत्य की स्वीकारोक्ति) है। (त)

फ़ायदा ९: [अरबी] मैं कहता हूँ: मैंने अत-तर्स अल-मुअद्दल में एक मुहदिस (बिना वज़ू वाला) द्वारा अपना सिर, मोज़ा या पट्टी पानी में डालने के मसले का ज़िक्र किया है। इमाम-ए-सानी (अबू यूसुफ़) के नज़दीक यह उसे काफ़ी होगा, और पानी मुस्तअमल नहीं होगा। सही बात, जिसमें मुहम्मद की सहमति है, यह है कि इसका अर्थ यह है कि बर्तन का पानी मुस्तअमल नहीं होगा, बल्कि सिर से चिपकी नमी, यानी केवल मसह किया हुआ भाग। तो जान लें कि यह विशेषता मसह के लिए है, इसलिए मघसूल (धोई हुई चीज़) की इस पर तुलना नहीं की जानी चाहिए। मलिक उल-उलेमा ने बदाई में फ़रमाया: एक मुहदिस ने अपना सिर, मोज़ा या पट्टी बर्तन में डाली; अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया कि यह मसह के लिए काफ़ी है, और पानी किसी भी हाल में मुस्तअमल नहीं होगा, चाहे वह नियत करे या न करे...

[उर्दू] फ़ायदा ९: मैंने "अत-तर्स अल-मुअद्दल" में मुहदिस का पानी में अपना सिर, मोज़ा या पट्टी डुबोने का मसला ज़िक्र किया है और यह कि दूसरे इमाम के नज़दीक यह उसे किफ़ायत करेगा, और पानी मुस्तअमल न होगा। इसमें सही यही है कि मुहम्मद को इससे इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है, और यह कि मुराद यह है कि बर्तन का पानी मुस्तअमल न होगा बल्कि वह तरी जो सिर से लगी हुई है यानी सिर्फ़ मसह किया हुआ, तो जानना चाहिए कि यह ख़ास मसह के लिए है तो इस पर मघसूल को क़यास (तुलना) न करना चाहिए। मलिक उल-उलेमा ने बदाई में फ़रमाया किसी ने अपना सिर, मोज़ा या पट्टी पानी में दाख़िल की और बे-वज़ू था, तो अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया उसके मसह को काफ़ी है, और पानी बहरहाल मुस्तअमल न होगा ख़्वाह नियत करे या न करे क्योंकि इस्तेमाल के दो...

---

^1 नहर अल-फ़ाइक़ पेज 244 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

والنهر قال في عبارة الاسرار ما قال ولما تمسك البحر بعبارة المحيط والتوشيح والتحفة اذا وقع الماء المستعمل في البئر ۔۔۔ الخ كتب عليه لا يخفاك ان العبارة في وقوع الماء لا المغتسل وكذا فيما بعده ۱۸ اهـ والدر استدرك على البحر بكلام الحسن وكذا ابو السعود وقدمنا كلمات ش وهم جميعاً والحلية قبلهم عللو اسقوط حكم الاستعمال بالضرورة وهو كما علمت اعتراف بالحق بالضرورة۔

نقل کیا ہے اور کنویں کے مسئلہ میں یہ صراحت کی ہے کہ مذہب مختار یہ ہے کہ پانی طاہر غیر طہور ہے، اور نہر نے اسرار کی عبارت میں فرمایا ہے جو گزرا، اور جب بحر نے محیط، توشیح اور تحفہ کی عبارت سے استدلال کرتے ہوئے فرمایا "جب مستعمل پانی کنویں میں گر جائے ۔۔۔ الخ" تو اس پر لکھا کہ آپ پر مخفی نہ رہے کہ عبارت پانی کے گرنے میں ہے نہ کہ دھوون کے گرنے میں ، اور اس طرح اس کے بعد کی عبارت اھ اور در نے بحر پر حسن کے کلام سے استدراک کیا ہے، اور اسی طرح ابو السعود نے، اور ہم نے "ش" اور ان سب کے اور حلیہ کے کلمات نقل کئے ان تمام حضرات نے حکم استعمال کے ساقط ہونے کی وجہ ضرورت کو قرار دیا ہے، اور جیسا کہ آپ نے جانا یہ اعتراف حق ہے۔(ت)

فائدہ ۹: اقول ذكرت في الطرس المعدل مسألة ادخال المحدث رأسه او خفه او جبيرته في الماء وانه يجزئه عند الامام الثاني ولا يصير الماء مستعملا وان الصحيح وفاق محمد فيها وان المراد لا يصير ماء الاناء مثلا مستعملا بل البلة الملتصقة بالرأس اى الممسوح فقط فاعلم ان هذا الخصوص المسح فلا يقاس عليه المغسول قال ملك العلماء في البدائع ادخل رأسه او خفه او جبيرته في الاناء وهو محدث قال ابو يوسف يجزئه في المسح ولا يصير الماء مستعملا سواء نوى

فائدہ ۹: میں نے "الطرس المعدل" میں محدث کا پانی میں اپنا سر، موزہ یا پٹی ڈبونے کا مسئلہ ذکر کیا ہے اور یہ کہ دوسرے امام کے نزدیک اس کو یہ کفایت کرے گا، اور پانی مستعمل نہ ہوگا، اور اس میں صحیح وہی ہے کہ محمد کو اس سے اتفاق ہے، اور یہ کہ مراد یہ ہے کہ برتن کا پانی مستعمل نہ ہوگا بلکہ وہ تری جو سر سے لگی ہوئی ہے یعنی صرف ممسوح، تو جاننا چاہئے کہ یہ خاص مسح کیلئے ہے تو اس پر مغسول کو قیاس نہ کرنا چاہئے، ملک العلماء نے بدائع میں فرمایا کسی نے اپنا سر، موزہ یا پٹی پانی میں داخل کی اور بے وضو تھا، تو ابو یوسف نے فرمایا اس کے مسح کو کافی ہے، اور پانی بہر حال مستعمل نہ ہوگا خواہ نیت کرے یا نہ کرے کیونکہ استعمال کے دو

Fatawa Razawiyyah Volume 2

...or if he did not intend, because of the presence of one of the two reasons for usage (i.e., water becoming 'used'). This is because the obligation of wiping (Masah) is fulfilled by the contact of moisture, as wiping is a term for touching/contacting, not for pouring (washing). Thus, no part of the ritual impurity (hadath) was transferred to the remaining water in the vessel; it was only transferred to the moisture. Similarly, the act of gaining proximity to God (qurbah) is achieved through it, so the ruling of usage (istimal) was restricted to that moisture. [End]. This clearly proclaims that the non-transfer of ritual impurity to the remaining water in the vessel and the restriction of the 'used water' ruling to the moisture in wiping scenarios is because only moisture is required; the obligation is fulfilled through it and the act of worship is established by it. Thus, he did not use the water itself, but rather the moisture. This is contrary to washing (ghusl), where pouring water is essential. In washing, the water itself is used, not just moisture, so the impurity transfers to all the water in the vessel due to its small quantity, and the ruling of usage is not restricted to the moisture meeting the surface of the body.

I say: His statement "due to existence" refers to the negation, meaning the water becoming 'used' due to the removal of ritual impurity even without intention, and the 'establishment of worship' is also negated if intended. Thus, it does not become 'used' even if both reasons are present. This negation is because he did not use the water, but only the moisture, and that is because the obligation of wiping... etc. From him, may Allah forgive him. (M)

I say: his statement "because of the existence" is related to the negation, meaning water becoming 'used' due to the removal of hadath even if there is no intention, and "establishing qurbah" is also negated if there is intention. Therefore, it will not become 'used' even if both reasons are present. This negation is because he did not use water but only moisture, and this is because the obligation of Masah... etc. 12 Minhu (T)

1. Badai' al-Sanai', Chapter on Actual Purification, H.M. Saeed Company, Karachi 1/70. Page 245 of 711

फतावा रज़विया जिल्द 2

...या उसने नियत न की हो, क्योंकि इस्तेमाल (पानी के'इस्तेमालशुदा' होने) के दो कारणों में से एक पाया जा रहा है। और यह इसलिए है क्योंकि मसह (पोंछने) का फ़र्ज़ नमी (तरी) लगने से पूरा हो जाता है, क्योंकि मसह का मतलब नमी लगाना है न कि पानी बहाना। अतः ह़दथ (धार्मिक अशुद्धता) में से कुछ भी बर्तन में बाकी बचे पानी तक नहीं पहुँचा, बल्कि केवल नमी तक ही स्थानांतरित हुआ। इसी तरह इससे क़ुर्बत (पुण्य कार्य) प्राप्त होती है, तो इस्तेमाल का हुक्म केवल उसी (नमी) तक सीमित रहा। [समाप्त]। और यह स्पष्ट रूप से पुकारता है कि मसह के मामलों में ह़दथ का बर्तन में बचे हुए पानी की ओर स्थानांतरित न होना और इस्तेमाल के हुक्म का केवल नमी तक सीमित रहना इसलिए है क्योंकि यहाँ केवल नमी की ज़रूरत है, जिससे फ़र्ज़ पूरा हो जाता है और क़ुर्बत प्राप्त हो जाती है। अतः उसने पानी का इस्तेमाल नहीं किया बल्कि नमी का किया। इसके विपरीत जिसमें धोना (ग़ुस्ल) आवश्यक है क्योंकि उसमें पानी बहाना ज़रूरी है। इसलिए वहाँ पानी का इस्तेमाल होगा न कि केवल नमी का, तो ह़दथ बर्तन के पूरे पानी में स्थानांतरित हो जाएगा क्योंकि वह कम है और इस्तेमाल का हुक्म उस नमी...

मैं कहता हूँ: उनका कथन "वजूद के कारण" नकारात्मक से संबंधित है, अर्थात ह़दथ दूर होने के कारण पानी का 'इस्तेमालशुदा' होना भले ही नियत न की जाए, और 'क़ुर्बत स्थापित करने' से भी यदि नियत करे तो इनकार है, तो वह 'इस्तेमालशुदा' नहीं होगा भले ही दोनों कारण पाए जाएँ। और यह इनकार इसलिए है क्योंकि उसने पानी का इस्तेमाल नहीं किया बल्कि केवल नमी का इस्तेमाल किया, और यह इसलिए है क्योंकि मसह का फ़र्ज़... इत्यादि। उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

मैं कहता हूँ: उनका कथन "वजूद के कारण" नकारात्मक से संबंधित है, यानी ह़दथ के हटने के कारण पानी का 'मस्तूमल' (इस्तेमालशुदा) होना भले ही नियत न हो, और 'क़ुर्बत कायम करने' से भी अगर नियत हो तो नफ़ी (इनकार) है, तो मस्तूमल नहीं होगा भले ही दोनों सबब (कारण) पाए जाएँ। और यह नफ़ी इसलिए है क्योंकि उसने पानी इस्तेमाल नहीं किया सिर्फ तरी इस्तेमाल की और यह इसलिए है कि मसह का फ़र्ज़... इत्यादि। 12 मिन्हु (त)

1. बदाइअुस-सनइअ़, हक़ीक़ी पाकी का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी, कराची 1/70. पृष्ठ 245 का 711

فتاوی رضویه جلد ثانی

او لم ینو لوجود عه احد سببي الاستعمال وانما كان لان فرض المسح يتأدى باصابة البلّة اذ هو اسم للاصابة دون الاسالة فلم يزل شيئ من الحدث الى الماء الباقى في الاناء وانما زال الى البلّة وكذا اقامة القربة تحصل بها فاقتصر حكم الاستعمال عليها اهـ وهذا ينادى بأعلى نداء ان عدم انتقال الحدث الى باقى الماء فى الاناء واقتصار حكم الاستعمال على البلّة فى صور المسح انما كان لانه لا يحتاج الا الى بلّة فبها يتأدى فرضه وبها تقوم قربته فهو لم يستعمل الماء بل البلّة بخلاف ما وظيفته الغسل فانه اسالة فكان استعمالا للماء لالمجرد بلّة فيزول به الحدث الى جميع ما فى الاناء لقلته ولا يقتصر حكم الاستعمال على البلّة الملاقية لسطح البدن۔

سببوں میں سے ایک پایا جا رہا ہے اور یہ اس لئے ہوا کہ مسح کا فرض ادنی تری سے ادا ہو جاتا ہے کیونکہ مسح لگانے کو کہتے ہیں نہ کہ بہانے کو ، تو حدث میں سے کوئی چیز چھوٹ کر برتن میں پانی تک نہیں آتی صرف تری تک منتقل ہوئی اور اسی طرح اس سے قربۃ قائم ہوتی ہے تو اس پر استعمال کا حکم محدود ہو گیا۔ اھـ اور اس سے یہ بات واضح ہوتی ہے کہ مسح میں حدث کا برتن میں باقی پانی کی طرف منتقل نہ ہونا اور استعمال کے حکم کا صرف تری تک محدود رہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہاں محض تری کی ضرورت ہے اسی سے فرض ادا ہو جاتا ہے اور اسی سے قربۃ ادا ہو جاتی ہے، تو اس نے پانی کو استعمال نہیں کیا بلکہ اس نے تری کو استعمال کیا۔ بخلاف اس کے جس میں دھونا ضروری ہے کیونکہ اس میں بہانا ضروری ہے تو وہاں پانی کا استعمال ہوگا محض تری کا نہیں ہوگا، تو حدث برتن کے تمام پانی کی طرف منتقل ہوگا کیونکہ وہ کم ہے اور استعمال کا حکم اس تری---

عه اقول: قوله لوجود متعلق بالمنفي أي صيرورة الماء مستعملا لوجود ازالة الحدث وان لم ينو واقامة القربة ايضاً ان نوى منتفية فلا يصير مستعملا وان وجد السببان وانما كان هذا الانتفاء لانه لم يستعمل الماء بل البلّة وذلك لان فرض المسح... الخ منه غفر له (م).

اقول اس کا قول "لوجود" منفی سے متعلق ہے یعنی پانی کا مستعمل ہونا حدث کے ازالہ کی وجہ سے اگرچہ نیت نہ کرے، اور "اقامة القربة" سے بھی اگر نیت کرے منتفی ہے، تو مستعمل نہ ہوگا اگرچہ دونوں سبب پائے جائیں، اور یہ انتفاء اس لئے ہے کیونکہ اس نے پانی استعمال نہیں کیا صرف تری استعمال کی اور یہ اس لئے ہے کہ مسح کا فرض الخ ۱۲منہ (ت)

1 بدائع الصنائع فصل فی الطهارة الحقیقیة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۰ Page 245 of 711

Fatawa Razawiyya | Volume Two

[Top paragraph]: ...the manifest, because dampness does not result in flowing or washing. Thus, the matter has become clear with the help of Allah. There is no argument in it for those who equate the 'meeter' (the one being met) and the 'met' (the one meeting), and its basis is not on that issue. (T)

[Middle paragraph]: I say: The conclusive evidence for this is that Abu Yusuf, who holds the view of the impurity of used (Musta'mal) water, does not claim 'pervasion' (sariyan) here. The Imam, Faqih al-Nafs Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), said that Imam Abu Yusuf stated, "Water only becomes impure in everything that is washed. As for what is wiped (masah), the water does not become used (musta'mal)." - end quote. This is despite the consensus of our companions that impurity pervades in small quantities of water, whether the impurity is little or much. Clarification on this from 'al-Bada'i' has already been mentioned. Thus, the response to their view is complete. It appears that this issue follows the pattern of disagreement regarding the 'met' and the 'meeter'. What I have mentioned as a response regarding the difference between washing (Ghusl) and wiping (Masah) clarifies it. As for my hesitation in its reasoning, the reason lies with the Mujtahid (jurist), and it is not incumbent upon us to manifest it. (T)

[Bottom paragraph]: I say: It occurs to my mind, and Allah Almighty knows best, that bodies, as I have previously mentioned, are individual atoms (jawahir farda) accumulated and actually separate, though sensory-wise connected. The act of washing cannot be performed except with a liquid body of suitable thickness... (incomplete)

[Footnote]: 1. Fatawa Qazi Khan, 'Used Water', Naval Kishore, Lucknow, 1/8. Page 246 of 711

[ऊपरी पैराग्राफ]: ...प्रकट है क्योंकि नमी से न तो बहाना (प्रवाह) प्राप्त होता है और न ही ग़ुस्ल (धोना)। अतः अल्लाह की तौफीक से मामला स्पष्ट हो गया, इसमें उन लोगों के लिए कोई प्रमाण नहीं है जो 'मुल्की' (जिससे मिला जाए) और 'मुलाक़ी' (मिलने वाला) में फ़र्क नहीं करते, तो इसकी बुनियाद इस मसले पर नहीं है। (त)

[मध्य पैराग्राफ]: मैं कहता हूँ, इस पर निर्णायक प्रमाण यह है कि अबू यूसुफ़, जो इस्तेमाल किए हुए पानी (मुस्तअमल) की नापाकी के कायल हैं, वह यहाँ 'सरायत' (व्याप्ति) की बात नहीं करते। इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़रमाया कि इमाम अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया, "पानी हर उस चीज़ में नापाक होता है जिसे धोया जाता है, और जिस पर मसह किया जाए उससे पानी मुस्तअमल नहीं होगा" - संक्षेप। हालाँकि हमारे साथियों (विद्वानों) का आम सहमति (इज्मा) है कि नापाकी थोड़े पानी में फैल जाती है, चाहे वह कम हो या ज़्यादा, 'बदाए' से इस पर स्पष्टीकरण पहले ही गुज़र चुका है। तो उनका जवाब हो गया, और बज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह मसला 'ख़ल्फ़' (विवाद) की तरह है 'मुल्की' और 'मुलाक़ी' में, और जो जवाब मैंने ज़िक्र किया वह भी स्पष्ट हो गया यानी यह कि ग़ुस्ल और मसह में फ़र्क है, और इसके तर्क में मेरा रुकना इसलिए है क्योंकि दलील पेश करना मुजतहिद का काम है, और हमारे लिए उसे प्रकट करना लाज़िम नहीं। (त)

[निचला पैराग्राफ]: मैं कहता हूँ, अल्लाह बेहतर जानता है, मेरे दिल में यह विचार आया कि पिंड (शरीर), जैसा कि हमने पहले लिखा है, अविभाज्य कण (जवाहर फ़रदा) हैं जो तह-दर-तह हैं, वास्तव में अलग-अलग हैं और इंद्रियों के लिए जुड़े हुए हैं, और धोना ऐसे पिंड से हो सकता है जो पानी का... (अपूर्ण)

[फुटर]: 1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, 'मुस्तअमल पानी', नवल किशोर, लखनऊ, 1/8। पृष्ठ 246 का 711

الظاهر لان البلة لا يحصل بها اسالة ولا غسل فظهر الامر وبالله التوفيق فلا حجة فيه للمسوين بين الملاقي والملقى وليس مبناه على تلك المسألة۔ تک محدود نہ رہے گا جو بدن کے ظاہر کی سطح سے متصل ہے کیونکہ تری سے نہ بہانا حاصل ہوتا ہے نہ غسل، تو معاملہ بتوفیق اللہ ظاہر ہو گیا، اس میں ان لوگوں کیلئے حجتہ نہیں جو ملقی اور ملاقی میں فرق نہیں کرتے تو اس کی بنیاد اس مسئلہ پر نہیں۔(ت)

اقول: والدليل القاطع عليہ ان ابا يوسف القائل بنجاسة الماء المستعمل لم يقل ههنا بالسريان قال الامام فقیہ النفس ابو يوسف رحمه الله تعالیٰ قال انما يتنجس الماء في كل شيئ يغسل اما ما يمسح فلا يصير الماء مستعملا اھ میں کہتا ہوں اس پر قطعی دلیل یہ ہے کہ ابو یوسف جو مستعمل پانی کی نجاست کے قائل ہیں وہ یہاں سرایت کا قول نہیں کرتے، امام فقیہ النفس نے فرمایا کہ امام ابو یوسف نے فرمایا "پانی ہر اس چیز میں نجس ہوتا ہے جو دھوئی جاتی ہے اور جس پر مسح کیا جاتا ہے اس سے مستعمل نہ ہوگا اھ

مع اجماع اصحابنا ان النجاسة تسری فی القليل بلا فرق بين الكثير منها والقليل وقد تقدم التصريح به عن البدائع فاندفع ماكان ذهب اليه وهلی في بادی الرأی ان سبيل المسألة سبيل الخلف في الملقي والملاقی واستنار ما ذكرت جوابا عنه من الفرق بين الغسل والمسح اما توقفی في وجهه فالوجه عند المجتهد وليس علينا ابداؤه۔ حالانکہ ہمارے اصحاب کا اجماع ہے کہ نجاست تھوڑے پانی میں سرایت کرتی ہے خواہ کم ہو یا زائد، بدائع سے اس پر تصریح گزر چکی ہے تو ان کا جواب ہو گیا، اور بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ مسئلہ خلف کی طرح ہے ملقی اور ملاقی میں اور جو جواب میں نے ذکر کیا وہ بھی واضح ہو گیا یعنی یہ کہ غسل اور مسح میں فرق ہے، اور اس کے استدلال میں میرا

توقف کرنا اس لئے ہے کہ دلیل پیش کرنا مجتہد کا کام ہے، اور ہمیں اس کا ظاہر کرنا لازم نہیں۔ (ت)

واقول: یخطر ببالي واللہ تعالی اعلم ان الاجسام کما قدمت جواھر فردۃ متراکمۃ متفرقۃ حقیقۃ متصلۃ حسا وامر الغسل لا یتأدی الابجسم مائی ذی ثخن صالح میں کہتا ہوں اللہ بہتر جانتا ہے میرے دل میں یہ خطرہ گزرا کہ اجسام جیسا کہ ہم نے پہلے لکھا ہے جواہر فردہ ہیں تہ بہ تہ ہیں حقیقتاً متفرق ہیں اور حساً متصل ہیں، اور دھونا ایسے جسم سے ہو سکتا ہے جو پانی کا...

Fatawa Razvia Volume 2

...[it] should have volume and be seen flowing over the body; in this, what is perceivable must be considered. In a space where water is present in a single place as a connected entity, the entire water becomes 'mustamal' (used) because the contact is with the whole. This is similar to impurity falling into water; the ruling regarding a large quantity of water is waived because the Shariah has treated it like flowing water, so it will not be affected as long as it does not change, as previously discussed. As for 'mash' (wiping), it is merely applying water without causing it to flow. Therefore, it is sufficient to have nearby molecules that provide moisture, and these molecules are separate from the ones above them. Thus, the contact remains limited to them and does not extend to other parts because there is no need to abandon the literal meaning. From this, it becomes clear why the jurists said that contact is limited only to the moisture.

The answer to the point I mentioned has become evident, and the researcher hinted at it, as Ibn al-Humam stated that there is a point for consideration in it. In my view, this is its explanation. In any case, there is no argument for those who believe in equality between the one casting and the one met. On the contrary, this is an argument against them because its implication indicates that the ruling is restricted to the moisture and not to the remaining water in the vessel, because flowing is not required in 'mash'. Thus, they showed that where flowing is required, the ruling applies to all the water in the vessel, and this is the goal. (T)

Note 10: I say, by the guidance of Allah, there are two terms here: 'Al-Wudu min al-Hawd' (ablution from the pond) and 'Al-Wudu fi al-Hawd' (ablution in the pond). Qasim has...

फ़तावा रिज़विया जिल्द दो

...[वह] हो और उसमें आयतन हो और शरीर पर बहता हुआ दिखाई दे, तो उसमें जो महसूस हो सके उसका विचार करना ज़रूरी है। जहाँ पानी एक जगह हो और वह एक जुड़ा हुआ हिस्सा हो, तो सारा पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) हो गया क्योंकि संपर्क पूरे के साथ है। यह वैसा ही है जैसे पानी पर कोई नापाकी (गंदगी) आ गिरे; बड़ी मात्रा में पानी का हुक्म इसलिए हटा दिया गया क्योंकि शरीयत ने उसे बहते पानी की तरह माना है, तो जब तक उसमें बदलाव न हो, वह प्रभावित नहीं होगा जैसा कि पहले बताया जा चुका है। जहाँ तक 'मसह' का सवाल है, वह सिर्फ पानी लगाना है न कि उसे बहाना। इसलिए, इसके लिए पास के अणुओं का होना काफ़ी है जिनसे नमी पैदा होती है, और वे अणु ऊपर वालों से अलग हैं। इसलिए संपर्क उन्हीं तक सीमित रहेगा और अन्य भागों तक नहीं पहुँचेगा क्योंकि हकीकत (मूल अर्थ) को छोड़ने की ज़रूरत नहीं है। यहीं से पता चला कि संपर्क केवल नमी तक सीमित है, जैसा कि फ़ुकहा (विधिवेत्ताओं) ने कहा है।

मैंने जिस नुक्ते का ज़िक्र किया था, उसका जवाब ज़ाहिर हो गया है, और शोधकर्ता ने इसकी ओर इशारा किया क्योंकि इब्न अल-हुमाम ने कहा कि इसमें विचार करने की बात है। मेरे नज़दीक इसकी व्याख्या यही है। बहरहाल, उनके लिए इसमें कोई दलील नहीं है जो 'मुल्की' (डालने वाले) और 'मुलाक़ी' (जिससे मिला) की बराबरी के कायल हैं, बल्कि यह उनके खिलाफ एक दलील है क्योंकि इसका अर्थ यह संकेत देता है कि हुक्म केवल नमी पर सीमित है, बर्तन के बाकी पानी पर नहीं, क्योंकि मसह में बहाने की ज़रूरत नहीं होती। इस तरह उन्होंने बताया कि जहाँ बहाना ज़रूरी हो, वहाँ हुक्म बर्तन के पूरे पानी पर लागू होता है और यही उद्देश्य है। (त)

फायदा १०: मैं अल्लाह की तौफीक से कहता हूँ कि यहाँ दो शब्द हैं: 'अल-वुज़ू मिन अल-हौज़' (हौज़ से वज़ू करना) और 'अल-वुज़ू फ़ि अल-हौज़' (हौज़ में वज़ू करना)। कासिम ने...

पेज 247/711

یری سائلاً علی البدن سیلانا فلابد فیہ من اعتبار المحسوس وفی الحبس الماء الکائن فی محل واحد شیئ متصل واحد فحصل الاستعمال للکل لحصول اللقی للکل کما فی نجاسة ترد علی الماء و انما سقط الحکم عن الکثیر لان الشرع جعلہ کالجاری فلا یتاثر مالم یتغیر کما سبق تقریر کل ذلک اما المسح فمجرد اصابة من دون اسالة فتکفی فیہ جواھر قریبہ تفید بلہ وھی منفصلة عما فوقھا فیقتصر اللقاء علیھا ولا یتعدی الی سائر الاجزاء لعدم الحاجة الی ترک الحقیقة وبہ استبان ما قالوا ھنا من قصر اللقاء علی البلة۔ ہو اور اس میں حجم ہو اور جسم پر بہتا ہوا نظر آئے، تو اس میں محسوس کا اعتبار ضروری ہے اور جس میں وہ پانی جو ایک جگہ ہو متصل واحد ہے تو کل پانی مستعمل ہو گیا کیونکہ ملاقات کل سے ہی ہے، جیسے کہ وہ نجاست جو پانی پر وارد ہو اور حکم کثیر سے اس لئے ساقط ہو گیا کیونکہ شریعت نے اس کو جاری کے حکم میں رکھا ہے، تو جب تک اس میں تغیر نہ ہو متاثر نہ ہوگا جیسے کہ اس کی تقریر گزری، اور مسح میں صرف پانی کا لگانا ہے نہ کہ بہانا ہے، تو اس کیلئے قریب جواہر ہونا کافی ہے جن سے تری پیدا ہوتی ہے اور وہ جواہر اوپر والوں سے جدا ہیں تو ملاقات اسی پر منحصر رہے گی اور باقی اجزاء کی طرف منتقل نہ ہوگی کیونکہ ترکِ حقیقت کی حاجت نہیں اور یہیں سے معلوم ہوا کہ ملاقات صرف تری تک محدود ہے جیسا کہ فقہاء نے فرمایا، اور جو نظر میں نے ذکر کی ہے اس سے جواب ظاہر ہوگیا، اور محقق نے اس کی طرف اشارہ کیا کیونکہ ابنِ ہمام نے فرمایا اس میں نظر ہے میرے نزدیک اس کی تقریر یہی ہے، بہر صورت ان کیلئے اس میں کوئی حجت نہیں جو ملقی اور ملاقی میں برابری کے قائل ہیں، بلکہ یہ اُن کے خلاف حجت ہے، کیونکہ اس کا فحویٰ اس پر دلالت کرتا ہے کہ حکم تری پر مقصور ہے، جو برتن میں باقیماندہ پانی ہے اس پر نہیں ہے کیونکہ مسح میں اسالہ کی ضرورت

نہیں، تو انہوں نے بتایا کہ جہاں بہانا ہوتا ہے وہاں حکم برتن کے تمام پانی کو عام ہوتا ہے اور یہی مقصود ہے۔ (ت)

وظہر الجواب عما ذکرت فیہ من النظر (۱) واشار الیہ المحقق حیث اطلق ابن الھمام بقولہ فیہ نظر ھذا ما عندی فی تقریرہ وجھد المقل دموعہ ویحتاج الی تلطیف القریحۃ وکیف ماکان لاحجۃ فیہ للمسوّین بل ھو حجۃ علیھم لدلالۃ فحواہ ان قصر الحکم علی البلۃ دون بقیۃ ما فی الاناء لعدم الحاجۃ فی المسح الی الاسالۃ فافاد ان فیھا وظیفتہ الاسالۃ یعم الحکم جمیع مافی الاناء وھو المقصود۔

فائدہ ۱۰: اقول وباللہ التوفیق ھنا لفظان الوضوء من الحوض و فائدہ ۱۰: میں بتوفیقِ الٰہی کہتا ہوں یہاں دو لفظ ہیں الوضوء من الحوض اور الوضوء فی الحوض۔ قاسم نے

Fatawa Rizvia, Volume 2

...with it (1) Allama Qasim expressed himself leniently using "from the basin" (min al-hawd), and Allama Ibn al-Shihna expressed it as "performing ablution in the basin" (al-wudu fi al-hawd). The author of Al-Bahr equated both of them (2). Sometimes he says "min" (from), as he did at the beginning of his discourse and in the name of his treatise, and other times he uses "fi" (in) within his expressions. You have already learned that the second case carries two possibilities: 1. Performing ablution outside it such that the used water (ghusala) falls into it, even after flowing on the ground. 2. Performing ablution in it by immersing the limbs. That one is "mulqa" (thrown into) and this one is "mulaqi" (meeting/contacting).

The first expression carries three possibilities: the aforementioned two, and the third is performing ablution outside it by scooping from it such that the used water does not reach it, like performing ablution from the Well of Zamzam. This third case itself has three modes: i. Scooping with a vessel such that no part of the hand touches the water. ii. Scooping with the hand due to the absence of a vessel. iii. Scooping with the hand despite the presence of a vessel.

The first mode is permissible by consensus, and no concern of contaminating the water arises. The second is also permissible due to necessity, unless one inserts more than what is needed, or inserts the required amount for scooping and then intends to perform ritual washing (ghusl) in it. In these two sub-cases, it returns to the form of immersion, just like the third mode. Thus, in these [four] cases marked by (Ah), all the water becomes used (musta'mal).

(Ah) i.e., inserting more than the amount needed for scooping, intending ritual washing therein, scooping with a hand in a state of minor ritual impurity while a vessel is present, and performing ablution by immersing the limbs in the water. End note by him, may Allah forgive him. (T) -(M)

Page 248 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

...इसके साथ (1) अल्लामा क़ासिम ने उदारता बरतते हुए "हौज़ से" (मिन अल-हौज़) शब्द का प्रयोग किया, और अल्लामा इब्न अल-शिहना ने "हौज़ में वज़ू" (अल-वज़ू फ़िल हौज़) शब्द का प्रयोग किया। अल-बहर के लेखक ने इन दोनों को समान माना (2)। कभी वह "मिन" (से) कहते हैं, जैसा कि उन्होंने अपने लेख की शुरुआत में और अपने शोध पत्र के नाम में किया, और कभी अपने कथनों के बीच में "फ़ि" (में) का प्रयोग करते हैं। आप जान चुके हैं कि दूसरी स्थिति में दो संभावनाएँ हैं: 1. इसके बाहर वज़ू करना इस तरह कि इस्तेमाल किया हुआ पानी (ग़ुसाला) इसमें गिरे, चाहे वह ज़मीन पर बहकर ही क्यों न जाए। 2. इसमें अंगों को डुबोकर वज़ू करना। वह "मुल्का" (फेंका हुआ) है और यह "मुलाक़ी" (मिलने वाला) है।

पहले शब्द में तीन संभावनाएँ हैं: ऊपर बताई गई दो, और तीसरी यह कि इससे पानी भरकर बाहर बैठकर वज़ू करना, इस तरह कि इस्तेमाल किया हुआ पानी हौज़ तक न पहुँचे, जैसे ज़मज़म के कुएँ से वज़ू किया जाता है। इस तीसरी स्थिति में भी तीन तरीके हैं: i. बर्तन से पानी लेना इस तरह कि हाथ पानी को न छुए। ii. बर्तन न होने के कारण हाथ से पानी लेना। iii. बर्तन होने के बावजूद हाथ से पानी लेना।

पहला तरीका सर्वसम्मति से जायज़ है और इससे पानी में कोई खराबी आने का सवाल ही पैदा नहीं होता। दूसरा भी जायज़ है क्योंकि ज़रूरत है, हाँ, अगर ज़रूरत से ज़्यादा हाथ डाला या ज़रूरत के मुताबिक डाल कर फिर उसमें ग़ुसल (स्नान) का इरादा किया। इन दो स्थितियों में यह अंगों को डुबोने के समान हो जाता है, जैसे तीसरा तरीका। अत; (अह) चिन्हित इन चार स्थितियों में सारा पानी इस्तेमाल शुदा (मुस्तअमल) हो जाता है।

(अह) यानी पानी निकालने की ज़रूरत से ज़्यादा हाथ डालना, उसमें ग़ुसल की नियत करना, बर्तन मौजूद होने पर अपवित्र हाथ से पानी निकालना और अंगों को पानी में डुबोकर वज़ू करना। यह उनकी ओर से समाप्त हुआ, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त) -(म)

पृष्ठ 711 में से 248

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

به (۱) عبر العلامة قاسم تسامحاً وفی الحوض وبه عبر العلامة ابن الشحنة وسوی (۲) بینهما البحر فتارة یقول من کمصدر مقالته واسم رسالته واخری فی کمطاوی عبارته وقد علمت ان الثانی یحتمل وجهین الوضوء خارجه بحیث تقع الغسالة فیه ولو بعد الجریان علی الارض والوضوء فیه بغمس الاعضاء ذاك ملقی وهذا ملاقی واللفظ الاو یحتمل ثلثة وجوه هذین والوضوء خارجه بالاغتراف منه بحیث لاتصل الغسالة الیه کالوضوء من بئر زمزم وهذا الثالث علی ثلثة وجوه الاغتراف باناء بحیث لا یصیب شیئ من یده الماء وبالید لعدم اناء او مع وجوده فالاول جائز بالاجماع ولا یتوهم تطرق خلل به الی الماء وکذا الثانی لمکان الضرورة الا اذا ادخل ازید من قدر الحاجة او قدرها للاغتراف ثم نوی الغسل فیه فان هذین یعودان الی صورة الغمس کالثالث ففی هذه عه الاربع یصیر الماء کله مستعملا

تسامح سے کام لیتے ہوئے من الحوض سے تعبیر کیا اور ابن الشحنہ نے الوضو فی الحوض سے تعبیر کیا اور بحر نے ان دونوں کو برابر کیا، کبھی تو من کہتے ہیں، جیسا کہ انہوں نے اپنے مقالہ کی ابتداء اور رسالہ کے نام میں، اور کبھی فی استعمال کیا جیسا کہ عبارات کے درمیان میں کیا۔ اور آپ جان چکے ہیں دوسرا دو وجہوں کا احتمال رکھتا ہے، ایک تو وضو حوض کے باہر اس طرح کہ دھوون حوض میں گرے خواہ زمین پر بہہ کر جائے اور ایک یہ کہ وضوء اس طرح کیا جائے کہ حوض میں اعضاء ڈبوئے جائیں وہ ملقی ہے اور یہ ملاقی ہے اور پہلا لفظ تین وجوہ کا محتمل ہے، دو تو یہی اور تیسری یہ کہ حوض کے باہر بیٹھ کر حوض سے چلو بھر پانی لیں اس طرح کہ دھوون حوض تک نہ پہنچے، جیسے زمزم کے کنویں سے کیا جاتا ہے۔ اور اس تیسری وجہ میں بھی تین وجوہ ہیں، ایک تو یہ کہ برتن سے پانی لیں اس طرح کہ ہاتھ پانی کو نہ لگے، دوسرے یہ کہ ہاتھ سے لیں جبکہ برتن نہ ہو، تیسرے یہ کہ ہاتھ سے لیں لیکن برتن موجود ہو تو

پہلا بالاجماع جائز ہے اور اس سے پانی میں خلل کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ہے اور دوسرا بھی جائز ہے کیونکہ ضرورت ہے، ہاں اگر ضرورت سے زائد ہاتھ داخل کیا یا بقدر ضرورت ڈالا پھر اس میں غسل کا ارادہ کیا تو یہ دونوں صورتیں ڈبونے کی صورت

عه ای ادخال الزائد علی قدر حاجة الاغتراف ونیة الغسل فیه والاغتراف بید محدثة مع وجود الاناء والوضوء فیه بغمس الاعضاء اھ منه غفر له (ت)

یعنی چلو کی مقدار سے زیادہ داخل کرنا اور پانی میں دھونے کی نیت کرنا اور برتن کے ہوتے ہوئے محدث ہاتھ کے ذریعے پانی نکالنا اور پانی میں اعضاء ڈبو کر وضو کرنا اھ منہ غفرلہ (ت) (م)-

Fatawa Razawiyya, Volume II

[Arabic Column]: ...whether it be a little or a lot, as long as it is not 'katheer' (abundant). As for the first of the second—meaning ablution performed outside of it while the wash-water falls into it—the correct and relied-upon position is that it does not spoil the water as long as it does not equal it or overcome it. These are the rulings for the five scenarios, and I have clarified them, by the praise of Allah Almighty, as clearly as the sun. From this, it is evident that the scholar Abd al-Barr was correct in the ruling of the first four, but not the fifth. The two scholars al-Qasim and the author of 'al-Bahr', and those who followed them, took the opposite view. Furthermore, in those [scenarios], several reports and detailed opinions in 'al-Badai' and other works contradicted the correct view: that 'used' (mustamal) water spoils absolute water absolutely, even if it is a little, or when the spots where the drops fall become visible, or when it flows heavily. All of these result from performing wudu in a small basin according to the first meaning. Contrary to these eminent scholars, they have nothing in their hands except the discussion found in 'al-Badai' that goes against the mass-transmitted texts (nusoos al-mutawatirah) and the consensus (ijma') of the imams of the school of thought, may Allah be pleased with them. The truth lies in this distinction, which the Lord, Glorified and Exalted is He, granted His humble servant the success of establishing through grand research, such that it has encompassed, if Allah Almighty wills, every case of much and little, and reached the ultimate degree in derivation and foundation. To Him belongs all praise for what He has bestowed. Most excellent and exalted prayers and pure, blessed salutations be upon the Master, and his family, companions, son, and group, as our Lord loves and is pleased with. Ameen. All praise is due to Allah, the Lord of the Worlds. Allah Almighty and His knowledge, Glorified be His Majesty, is most complete and wise.

[Urdu Column]: ...are included in, such as the third; so in these four scenarios, the entire water will become 'mustamal', whether it is little or much, until it becomes 'katheer'. But the first part of the second scenario—meaning performing wudu outside the basin in such a way that the wash-water falls into it—the correct and relied-upon view is that as long as it does not equal the water or overcome it, it will not spoil the water. These are the rulings of the five scenarios, and I have clarified them, by the praise of Allah, as clearly as the sun. From this, it has become evident that Allama Abdul Barr made no mistake in explaining the first four scenarios but erred in the fifth. Allama Qasim and the author of 'Bahr' and their followers did the opposite. Furthermore, along with him in those scenarios where they disagreed,

there are several narrations and statements, the details of which are in 'al-Badai' etc., for example, that 'used' water spoils absolute water absolutely, no matter how little it is, or if the spots of the drops become visible, or when it flows well. And all this is obtained by performing wudu in a small basin, but in terms of the first meaning. Contrary to these high-ranking scholars, they have nothing in their hands except that discussion which occurred in 'al-Badai' against the recurring texts and consensus of the imams of the school of thought. The truth is that distinction which the Lord (Glorified be He) gave success to His humble servant through grand research, that he encompassed much and little and reached the end. His praise is foremost. Better prayers and peace, most excellent, upon the blessed Meccan Master, his family, companions, children, and group, as our Lord likes. Ameen. All praise to Allah, the Lord of the worlds, until the end.

फ़तावा रज़विया, जिल्द II

[अरबी कॉलम]: ...चाहे वह थोड़ा हो या बहुत, जब तक कि वह 'कसीर' (प्रचुर) न हो। जहाँ तक दूसरी स्थिति के पहले भाग का सवाल है—अर्थात उसके बाहर वज़ू करना जबकि धोवन उसमें गिर रहा हो—तो सही और विश्वसनीय स्थिति यह है कि जब तक वह पानी के बराबर न हो या उस पर हावी न हो, वह पानी को खराब नहीं करता है। ये पाँचों स्थितियों के नियम हैं, और मैंने अल्लाह तआला की प्रशंसा से उन्हें सूरज की तरह स्पष्ट कर दिया है। इससे यह स्पष्ट है कि विद्वान अब्द अल-बर्र पहली चार स्थितियों के निर्णय में सही थे, लेकिन पाँचवीं में नहीं। दो विद्वान अल-कासिम और 'अल-बहर' के लेखक, और उनके अनुयायियों ने इसके विपरीत दृष्टिकोण अपनाया। इसके अलावा, उन स्थितियों में, 'अल-बदाइ' और अन्य कृतियों में कई रिपोर्टों और विस्तृत मतों ने सही दृष्टिकोण का विरोध किया: कि 'मुस्तमल' (इस्तेमाल किया हुआ) पानी मुतलक (साधारण) पानी को पूरी तरह से खराब कर देता है, भले ही वह थोड़ा हो, या जब बूंदों के गिरने के स्थान दिखाई दें, या जब वह भारी रूप से बहता हो। यह सब पहले अर्थ के अनुसार एक छोटे हौज़ में वज़ू करने का परिणाम है। इन प्रतिष्ठित विद्वानों के विपरीत, उनके पास 'अल-बदाइ' में पाई जाने वाली उस चर्चा के अलावा कुछ भी नहीं है जो मुतवातिर नुसूस और मज़हब के इमामों की सर्वसम्मति के विरुद्ध है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। सच्चाई उस भेद में निहित है, जिसे प्रभु, महिमामय और उच्च, ने अपने विनम्र सेवक को भव्य शोध के माध्यम से स्थापित करने की सफलता प्रदान की, जिससे उसने, यदि अल्लाह तआला चाहे, बहुत और थोड़े के हर मामले को शामिल किया है, और तफ़रीअ और तासील में अंतिम डिग्री तक पहुँच गया है। उसने जो कुछ प्रदान किया है उसके लिए उसकी प्रशंसा है। सबसे उत्कृष्ट और उच्च प्रार्थनाएँ और शुद्ध, धन्य अभिवादन स्वामी पर, और उनके परिवार, साथियों, पुत्र और समूह पर हों, जैसा कि हमारा प्रभु प्यार करता है और प्रसन्न होता है। आमीन। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का भगवान है। अल्लाह तआला और उसका ज्ञान, उसका प्रताप महिमामय हो, सबसे पूर्ण और बुद्धिमान है।

[उर्दू कॉलम]: ...में शामिल हैं, जैसे कि तीसरी; तो इन चारों स्थितियों में पूरा पानी 'मुस्तमल' हो जाएगा, चाहे वह कम हो या ज़्यादा, जब तक कि वह 'कसीर' न हो जाए। लेकिन दूसरी स्थिति का पहला भाग—अर्थात हौज़ के बाहर वज़ू करना इस तरह से कि धोवन उसमें गिरता रहे—सही और विश्वसनीय विचार यह है कि जब तक वह पानी के बराबर न हो या उस पर हावी न हो, वह पानी को खराब नहीं करेगा। ये पाँचों स्थितियों के नियम हैं, और मैंने अल्लाह की प्रशंसा से उन्हें सूरज की तरह

स्पष्ट कर दिया है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि अल्लामा अब्दुल बर्र ने पहली चार स्थितियों को समझाने में कोई गलती नहीं की, लेकिन पाँचवीं में गलती की। अल्लामा कासिम और 'बहर' के लेखक और उनके अनुयायियों ने इसके विपरीत किया। इसके अलावा, उन स्थितियों में जहाँ उन्होंने असहमति व्यक्त की, कई रिवायतें और कथन हैं, जिनका विवरण 'अल-बदाइ' आदि में है, उदाहरण के लिए, कि 'मुस्तमल' पानी मुतलक पानी को मुतलकन खराब कर देता है, चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो, या यदि बूंदों के स्थान दिखाई दें, या जब वह अच्छी तरह से बहे। और यह सब एक छोटे हौज़ में वज़ू करने से प्राप्त होता है, लेकिन पहले अर्थ के संदर्भ में। इन उच्च श्रेणी के विद्वानों के विपरीत, उनके पास उस चर्चा के अलावा कुछ भी नहीं है जो 'नुसूस-ए-मुतवातिराह' और मज़हब के इमामों की सर्वसम्मति के खिलाफ 'अल-बदाइ' में हुई थी। सच्चाई वह भेद है जिसे प्रभु (महिमावान है वह) ने अपने विनम्र सेवक को महान शोध के माध्यम से सफलता दी, कि उसने बहुत और थोड़े को समाहित कर लिया और अंत तक पहुँच गया। उसकी प्रशंसा सर्वोपरि है। बेहतर प्रार्थना और शांति, सबसे उत्कृष्ट, मुबारक मक्की आका पर, उनके परिवार, साथियों, बच्चों और समूह पर, जैसा कि हमारा रब पसंद करता है। आमीन। अल्लाह के लिए सारी प्रशंसा, दुनिया के भगवान, अंत तक।

पृष्ठ 249/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم]: قلیلا کان او کثیرا مالم یکن کثیرا اما اول الثانی اعنی الوضوء خارجه مع وقوع الغسالة فیه فالصحیح المعتمد انه لا یفسد الماء مالم یساوه او یغلب علیه هذه احکام الصور الخمس وقد وضحت بحمد الله تعالی مثل الشمس، وبه ظهر ان العلامة عبد البر اصاب في حکم الاربع الاول دون الخامس، والعلامتان القاسم والبحر ومن تبعهم بالعکس ثم معه فیها خالف الصحیح عدة روایات واقوال مفصلة في البدائع وغیرها ان الماء المستعمل یفسد المطلق مطلقا وان قل او اذا استبان مواقع القطر او اذا سال سیلانا والکل حاصل في الوضوء في الحوض الصغیر بالمعنی الاول بخلاف هؤلاء الجلة فلیس بایدیهم الابحث وقع في البدائع علی خلاف النصوص المتواترة واجماع ائمة المذهب رضي الله تعالی عنهم. والحق هو هذا الفرق الذی وفق المولی سبحانه وتعالی عبده الذلیل بتحقیقه الجلیل بحیث احاط ان شاء الله تعالی بکل کثیر وقلیل وبلغ الغایة القصوی في التفریع والتأصیل، فله الحمد علی ما اولی، وافضل الصلوات العلی، والتسلیمات الزاکیات المبارکات علی المولی، واله وصحبه، وابنه وحزبه، کما یحب ربنا ویرضی أمین والحمد لله رب العلمین، والله سبحانه وتعالی وعلمه جل مجده اتم واحکم.

[اردو کالم]: میں شامل ہیں، جیسی کہ تیسری ، تو ان چاروں صورتوں میں کل پانی مستعمل ہو جائیگا خواہ کم ہو یا زیادہ، جب تک کہ کثیر نہ ہو جائے لیکن دوسرے کا پہلا یعنی حوض کے باہر وضو کرنا اس طرح کہ دھوون اس میں گرتا رہے تو صحیح اور معتمد یہ ہے کہ جب تک وہ پانی کے برابر نہ ہو یا اس پر غالب نہ ہو پانی کو فاسد نہ کرے گا ، یہ پانچوں صورتوں کے احکام ہیں اور میں نے بحمد اللہ سورج کی طرح واضح کر دیا ہے، اور اسی سے ظاہر ہو گیا کہ علامہ عبدالبر نے پہلی چار صورتوں کے بیان میں کوئی غلطی نہیں کی مگر پانچویں میں غلطی کی اور علامہ قاسم اور بحر اور ان کے متبعین نے برعکس کیا پھر ان کے ساتھ ان صورتوں میں جن میں

مخالفت کی ، متعدد روایات واقوال ہیں جن کی تفصیل بدائع وغیرہ میں ہے، مثلاً یہ کہ مستعمل پانی مطلق پانی کو مطلقاً فاسد کر دیتا ہے خواہ کتنا ہی کم کیوں نہ ہو ، یا قطروں کے مقامات ظاہر ہوں یا جبکہ خوب بہے اور یہ سب چھوٹے حوض میں وضو کرنے سے حاصل ہے، لیکن پہلے معنی کے اعتبار سے، بخلاف ان جلیل القدر علماء کے کہ ان کے ہاتھ میں سوائے اُس بحث کے کچھ نہیں جو نصوص متواترہ، اجماع ائمہ مذہب کے خلاف بدائع میں واقع ہے، اور حق وہ فرق ہے جس کی اپنے ذلیل بندے کو مولی سبحانہ نے توفیق دی تحقیق جلیل کی کہ اس نے کثیر وقلیل کا احاطہ کیا اور انتہا کو پہنچا اس کی حمد سب سے اولی ہے بہتر صلوٰۃ وسلام افضل مبارک مکی آقا پر ان کے آل اصحاب اولاد جماعت پر جیسا کہ ہمارا رب پسند فرمائے آمین والحمد للہ رب العالمین الی آخرہ ۔

Fatawa Razawiya Volume Two Issue 30: Sent by Mawlawi Nazr Imam Sahib, Teacher of Sahswan, 29 Rabi al-Awwal Sharif 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: if a person in need of a ritual bath (ghusl-e-janabat) performs it in a pool, will the pool become impure or not? Zaid says that if a person enters a pool repeatedly, it becomes impure. Bakr says if a clean person enters, it neither becomes impure nor disliked (makruh), yes, if the color, smell, or taste changes due to impurity, then it will become impure. Please explain and be rewarded.

The Answer: No matter how small the pool is or how little the water is, it never becomes impure by a clean and pure person entering and bathing in it, on whose body there is no real impurity (najasat-e-haqiqiyah), even if they needed a ritual bath, and even if they entered it specifically with the intention of removing ritual impurity (janabat). According to the correct, reliable, and fatwa-issued school of our Imams, the ritual bath will be valid and the pool will also remain pure as before. And if the pool contains water in a large quantity (ma-e-kaseer), then besides it being 'used water' (musta'mal) from a person in janabat bathing, by the consensus of all noble Imams, it will not become impure even by the falling of any real impurity until such a large amount of impurity falls that it changes its color, smell, or taste. Fatwa is upon this. Or, according to one saying, if half or most of it is covered by visible impurity. Flowing water, by the absolute consensus of the entire Ummah of Muhammad (peace and blessings be upon their master), is considered 'large water' (aab-e-kaseer) and cannot become impure in any way without such change or reasons. An example is the pool of the Fatehpuri Mosque in Delhi, which is fed by a canal brought from the Yamuna River. And (1) for standing water, there are two sayings of our scholars: (1) That which a person's heart testifies that an impurity fallen on one side will not reach the other side is 'large water' (kaseer) for them. The criterion for the effect not reaching is that if wudu is performed at one edge, the water at the other edge does not immediately start moving up and down; mere ripples or the rising and falling of water after some time are not considered. (2) That which has a surface area of ten by ten (dah dar dah), meaning a flat surface of one hundred square cubits (su hath) in length and breadth, and deep enough that the ground is not exposed when water is taken in cupped hands, is 'large water'. The original school of our noble Imams (may Allah be pleased with them) is the first saying, while general religious texts have adopted the second saying, and many eminent jurists have given fatwa on it. In any case, this saying also holds more precaution than the sayings of all other schools. Yes, if the water is less than the large quantity, then certainly, by falling of even a tiny

bit of impurity, even if light (khafifah), or by the bathing of a person who had some real impurity on their body, it will definitely become impure by consensus. And according to the correct and reliable school of all our Imams, when any obligatory purification is performed with it (e.g., a person in janabat bathes, or someone without wudu performs wudu, or for necessity of purification, e.g., other than taking water in cupped hands, a person in a state of ritual impurity touches it with any unwashed [part]...

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो) मसला ३०: मुर्सला मौलवी नज़्र इमाम साहब, मुदर्रिस सहसवानी, २९ रबीउल अव्वल शरीफ़ १३१५ हिजरी। प्रश्न: علماء دین (धर्म के विद्वान) इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई व्यक्ति जिसे ग़ुस्ल-ए-जनाबत (अनिवार्य स्नान) की ज़रूरत हो, हौज़ में ग़ुस्ल करे तो हौज़ नापाक (अपवित्र) हो जाएगा या नहीं? ज़ैद कहता है कि हौज़ में कोई शख़्स लगातार घुसे तो वह नापाक हो जाता है। बक्र कहता है कि अगर पाक-साफ़ आदमी घुसे तो न वह नापाक होता है न ही मकरूह, हाँ, अगर नजासत (अशुद्धि) से रंग, बू (गंध) या मज़ा (स्वाद) बदल जाए तो वह नापाक हो जाएगा। बयान फ़रमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: हौज़ कितना ही छोटा हो और पानी कितना ही कम हो, किसी पाक-साफ़ आदमी के उसमें जाने और नहाने से, जिसके बदन पर कोई नजासत-ए-हक़ीक़िया (वास्तविक अशुद्धि) न लगी हो, वह हरगिज़ नापाक नहीं होता, चाहे उसे नहाने की ज़रूरत ही क्यों न हो, और चाहे वह विशेष रूप से जनाबत दूर करने की नीयत से ही उसमें गया हो। हमारे इमामों के सही, विश्वसनीय और फ़तवा दिए गए मत के अनुसार, ग़ुस्ल (स्नान) भी हो जाएगा और हौज़ भी पहले की तरह पाक रहेगा। और अगर हौज़ में पानी 'मा-ए-कसीर' (अधिक मात्रा में पानी) है, तो जुनुब (जिस पर ग़ुस्ल वाजिब हो) के नहाने से मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) होना तो दूर, तमाम इमामों की सहमति (इज्मा) से किसी नजासत-ए-हक़ीक़िया के गिरने से भी वह हरगिज़ नापाक नहीं होगा, जब तक कि नजासत इतनी ज़्यादा न गिरे कि उसका रंग, बू या मज़ा बदल दे। इसी पर फ़तवा है। या एक क़ौल के अनुसार, उसका आधा या ज़्यादा हिस्सा नजासत-ए-मरइया (दिखने वाली अशुद्धि) से भर जाए। बहता हुआ पानी तो उम्मत-ए-मुहम्मदिया (उनके सरदार पर श्रेष्ठतम दुरूद और सलाम हो) के सर्वसम्मत निर्णय से 'आब-ए-कसीर' (अधिक पानी) है, जो बिना इस परिवर्तन या कारणों के किसी भी तरह नापाक नहीं हो सकता, जैसे दिल्ली में मस्जिद फ़तेहपुरी का हौज़ जिसमें जमना से लाई गई नहर गिरती है। और (१) ठहरे हुए पानी के बारे में हमारे उलेमा के दो क़ौल (विचार) हैं: (१) जिस पर आदमी का दिल गवाही दे कि एक किनारे पर पड़ी नजासत का असर दूसरे किनारे तक नहीं पहुँचेगा, उसके हक़ में वही कसीर (अधिक) है। असर न पहुँचने का मापदंड यह है कि एक किनारे पर वज़ू किया जाए तो दूसरे किनारे का पानी फ़ौरन ऊपर-नीचे न होने लगे; सिर्फ़ हरकत या देर के बाद पानी के उठने-बैठने का एतबार नहीं। (२) जिसकी ऊपरी सतह की माप 'दह दर दह' हो, यानी दस हाथ लंबाई और दस हाथ चौड़ाई का समतल सौ हाथ हो, और इतना गहरा हो कि अंजुली में पानी लेने से ज़मीन नज़र न आए, वह कसीर है। हमारे इमामों (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का असल मत वही पहला क़ौल है,

और आम धार्मिक ग्रंथों ने दूसरे क़ौल को अपनाया है और बहुत से बड़े आलिमों (मशाइख़-ए-अज़ाम) ने इस पर फ़तवा दिया है। बहरहाल, यह क़ौल भी बाक़ी तमाम मतों के क़ौलों से ज़्यादा एहतियात (सावधानी) वाला है। हाँ, अगर पानी कसीर मात्रा से कम है, तो यकीनन ज़रा सी नजासत गिरने से, चाहे वह ख़फ़ीफ़ा (हल्की) ही क्यों न हो, या किसी ऐसे शख़्स के नहाने से जिसके बदन पर कुछ भी नजासत-ए-हक़ीक़िया लगी थी, वह बिला इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) नापाक हो जाएगा। और हमारे सभी इमामों के सही और विश्वसनीय मत के अनुसार, जब उससे कोई फ़र्ज़ तहारत (अनिवार्य शुद्धता) साक़ित (पूरी) हो (जैसे जुनुब नहाए या मुहदिस वज़ू करे या ज़रूरत-ए-तहारत के लिए, मसलन चुल्लू में पानी लेने के अलावा साहिब-ए-हदस के किसी बिना धुले...

पृष्ठ ७११ में से २५०

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی مسئلہ ۳۰: مرسلہ مولوی نذر امام صاحب مدرس سہسوانی، ۲۹ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کوئی شخص غسل جنابت کی حاجت میں غسل حوض میں کرے تو حوض پلید ہو جائے گا یا نہیں؟ زید کہتا ہے کہ حوض میں کوئی شخص متواتر گھسے تو پلید ہو جاتا ہے بکر کہتا ہے آدمی پاک صاف گھسا تو نہ پلید ہوتا ہے نہ مکروہ ، ہاں نجاست سے رنگ بُو مزہ بدل جائیگا تو پلید ہو جائیگا۔ بینوا توجروا۔

الجواب : حوض کتنا ہی چھوٹا پانی کتنا ہی کم ہو کسی پاک صاف آدمی کے جانے نہانے سے جس کے بدن پر کوئی نجاست حقیقیہ نہ لگی ہو ہر گز نا پاک نہیں ہوتا اگرچہ اسے نہانے کی حاجت ہی ہوا اگر چہ وہ خاص ازالہ جنابت ہی کی نیت سے اس میں گیا ہو ہمارے ائمہ کے صحیح ومعتمد ومفتی بہ مذہب پر غسل بھی اُتر جائے گا اور حوض بھی بدستور پاک رہے گا اور اگر آپ حوض مائے کثیر کی مقدار پر ہے جب تو جنب کے نہانے سے مستعمل ہونا درکنار با جماع تمام ائمہ کرام کسی نجاست حقیقیہ کے گرنے سے بھی ہر گز نا پاک نہ ہو گا جب تک اس قدر کثرت سے نجاست نہ گرے کہ اس کے رنگ یا بُو یا مزہ کو بدل دے اسی پر فتوٰی ہے یا ایک قول پر اس کا نصف یا اکثر نجاست مرئیہ پر ہو کر گزرے بہتا پانی تو با جماع قطعی تمام امت محمدیہ علی سیدھا افضل الصلوۃ والتحیۃ آپ کثیر ہے کہ بغیر اس تغیر یامور کے کسی طرح نا پاک نہیں ہو سکتا جیسے دہلی میں مسجد فتحپوری کا حوض جس میں جمنا سے لائی ہوئی نہر پڑی ہے اور (۱) ٹھہرے ہوئے پانی میں ہمارے علماء کے دو قول ہیں : (۱) جس پر آدمی کا دل شہادت دے کہ ایک کنارے کی پڑی ہوئی نجاست کا اثر دوسرے کنارے تک نہیں پہنچے گا اُس کے حق میں وہی کثیر ہے اور اثر نہ پہنچنے کا معیار یہ کہ ایک کنارے پر وضو کیا جائے تو دوسرے کنارے کا پانی فوراً تلے اوپر نہ ہونے لگے نری حرکت یا دیر کے بعد پانی کے اٹھنے بیٹھنے کا اعتبار نہیں۔ (۲) جس کی

مساحت سطح بالائی دہ دردہ یعنی دس کے طول و عرض کا مسطح سو ہاتھ ہو اور گہرا اتنا کہ کُلپ میں پانی لینے سے زمین نہ کھلے وہ کثیر ہے ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا اصل مذہب وہی قول اول ہے اور عام متون مذہب نے قول ثانی اختیار کیا اور بکثرت مشائخ اعلام نے اس پر فتویٰ دیا بہر حال یہ قول بھی باقی تمام مذاہب کے اقوال سے زیادہ احتیاط رکھتا ہے ہاں اگر پانی مقدار کثیر سے کم ہے تو البتہ کتنی ہی ذرا سی نجاست اگرچہ خفیفہ کے گرنے یا کسی ایسے شخص کے نہانے سے جس کے بدن پر کچھ بھی نجاست حقیقیہ لگی تھی ضرور بالاتفاق نا پاک ہو جائیگا اور ہمارے جمیع ائمہ مذہب کے مذہب صحیح و معتمد پر جبکہ اُس سے کوئی فرض طہارت ساقط ہو (مثلاً جنب نہائے یا محدث وضو کرے یا بضرورت طہارت مثلاً چُلّو میں پانی لینے کے سوا صاحب حدث کے کسی بے دھوئے...

Volume Two Fatawa Razawiyya (Any part of a limb that was necessary to wash, if it gets washed unintentionally) or if it is used with the intention of proximity/reward (e.g., a person already in a state of wudu washes a limb in it with the intention of a fresh wudu), all the water becomes "must'amal" (used). It remains pure but is no longer suitable for ghusl or wudu. When this occurs in a small basin (Hawdh Saghir), one of two things must be done to make it purifying (Mutahhir) again: either make the purifying water dominant over the used water, or fill the basin to the brim and let the purifying water overflow. The first case is: if at the time the person bathed or dipped an unwashed limb without necessity, the water was less than half the basin, then fill it with purifying water so it exceeds the used water. If it was half or more, first remove enough water so that most of the basin is empty, then fill it to the top. For example, in a uniform basin two yards deep, if there was one yard of water when the person bathed, remove a quarter yard. If it was 17 Girahs, draw out one and a quarter Girah so that, in any case, sixteen and a quarter Girahs are empty and fifteen and three-quarters have water. Then fill it to the brim with new water. The second method: no matter how much water is in the basin, do not remove any; keep adding new water until it overflows from the edges. This second method also suffices for purifying an impure basin after removing any extractable impurities and then overflowing it. Clearly, if the water in the basin is less than half, the first method will be easier. If a two-yard deep basin only had four Girahs of water, just add four more Girahs and a few extra buckets so that the purifying water dominates the used water. And if the water is more than half, the second method will be easier, as nothing will need to be removed, and only a small empty portion needs to be filled to overflow. Where both methods present clear difficulty and hardship, if one acts on the opinion of some scholars and removes only twenty buckets, it is hoped that, God willing, this will suffice. "Allah intends for you ease and does not intend for you hardship" (Al-Baqarah: 185). The most extreme case of necessity is when there is no well, the basin fills with rainwater, and it has become "used." Where would water come from to drain it or add more purifying water to it? Therefore, the third method will be acted upon. And with Allah is success.

It is stated in Durr al-Mukhtar: It is not permissible (i.e., to remove ritual impurity) with water that has been used for the purpose of proximity/reward or to fulfill an obligation, such as by dipping one's hand or foot into a tub for a purpose other than scooping water, etc. Once it separates from the limb, even if it has not settled, it

becomes 'used' according to the [Hanafi] school of thought. It is pure even if [used] by a person in a state of major ritual impurity (Junub), and this is the purifying [view].

वोल्यूम II फ़तावा रज़विया (अंग का वह भाग जिसे धोना अनिवार्य था, यदि वह अनजाने में धुल जाए) या उसे सवाब (नेकी) की नीयत से उपयोग में लाया जाए (उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो पहले से वज़ू की स्थिति में है, नए वज़ू की नीयत से उसमें किसी अंग को डुबोकर धोता है), तो सारा पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) हो जाएगा। वह शुद्ध तो है लेकिन ग़ुस्ल या वज़ू के लिए उपयुक्त नहीं रहता। जब यह स्थिति एक छोटे हौज़ (हौज़-ए-सग़ीर) में हो, तो उसे फिर से पाक (पवित्र करने योग्य) बनाने के लिए दो चीजों में से एक करनी चाहिए: या तो शुद्ध पानी को इस्तेमाल किए हुए पानी पर हावी कर दें, या हौज़ को लबालब भरकर शुद्ध पानी बहा दें। पहली स्थिति यह है कि यदि उस व्यक्ति के नहाने या बिना धोए अंग को बिना ज़रूरत डालने के समय हौज़ में पानी आधे से कम था, तो अब उसे शुद्ध पानी से भर दें ताकि वह इस्तेमाल किए हुए पानी से ज़्यादा हो जाए। और अगर उस समय हौज़ में आधा या उससे ज़्यादा पानी था, तो पहले इतना पानी निकाल दें कि हौज़ का ज़्यादातर हिस्सा खाली हो जाए, फिर उसे मुँह तक भर दें। उदाहरण के लिए, एक समान गहराई वाला हौज़ जो दो गज़ गहरा है, और उस व्यक्ति के नहाने के समय उसमें एक गज़ पानी था, तो एक चौथाई गज़ पानी निकाल दें। और अगर 17 गिरह था, तो सवा गिरह निकाल दें, ताकि हर हाल में सवा सोलह गिरह खाली रहे और पौने सोलह में पानी रहे, फिर नए पानी से लबालब भर दें। दूसरी विधि यह है कि हौज़ में उस समय पानी कितना भी हो, उसमें से कुछ न निकालें और नया पानी उसमें डालते जाएँ यहाँ तक कि किनारों से उबलकर बह जाए। यह दूसरी विधि नापाक हौज़ को पाक करने में भी पर्याप्त होती है, जब नापाक चीज़ निकालने के लायक हो तो उसे निकालकर पानी को उबालकर बहा दें। ज़ाहिर है कि उस समय हौज़ में पानी आधे से जितना कम होगा, पहली विधि उतनी ही आसान होगी। दो गज़ गहरे हौज़ में उस समय केवल चार गिरह पानी था, तो केवल चार गिरह पानी और डालकर कुछ डोल ज़्यादा डाल दें कि मुस्तअमल से मुतहर (शुद्ध करने वाला पानी) ज़्यादा हो गया। और उस समय पानी आधे से जितना अधिक होगा, दूसरी विधि उतनी ही आसान होगी कि उसमें से कुछ निकालना नहीं पड़ेगा और कम हिस्सा खाली है जिसे भरकर उबालना होगा। और जहाँ दोनों स्थितियों में स्पष्ट कठिनाई और परेशानी हो, वहाँ अगर कुछ विद्वानों के मत पर अमल करके उसमें से केवल बीस डोल ही निकाल दें, तो उम्मीद है कि इंशाअल्लाह इतना ही काफी होगा। "अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता" (अल-बक़रह: 185)। और सबसे बड़ी ज़रूरत की स्थिति यह है कि वहाँ कुआँ न हो, हौज़ बारिश के पानी से भरता हो और वह मुस्तअमल हो गया, तो अब उसे बहाने या मुस्तअमल पर शुद्ध पानी बढ़ाने के लिए पानी कहाँ से लाएँ? इसलिए इस तीसरी सूरत पर अमल होगा। और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है।

दुर्रे मुख़्तार में है: जायज़ नहीं है (यानी हदस दूर करना) उस पानी से जो हदस दूर करने या कुर्बत (सवाब) हासिल करने के लिए इस्तेमाल में लाया गया हो, उदाहरण के लिए अपना हाथ या पैर किसी गढ़े में डाल दे और उसका मकसद चुल्लू भरकर पानी लेना न हो, तो वह अंग से अलग होते ही मुस्तअमल हो जाएगा, चाहे वह स्थिर न हुआ हो। यही मज़हब (विचारधारा) है और वह पाक है चाहे जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति) वाले से ही क्यों न हो, और यही पाक करने वाला नज़रिया है।

पृष्ठ 251/711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ عضو کا جسے دھونا ضرور تھا کوئی جز کسی طرح بلا قصد اُس سے دُھل جائے) یا بہ نیت قربت استعمال میں لایا جائے (مثلاً باوضو آدمی وضوئے تازہ کی نیت سے اُس میں کسی عضو کو غوطہ دے کر دھوئے) سارا پانی مستعمل ہو جائے گا کہ پاک تو ہے مگر غسل و وضو کے قابل نہ رہا جب حوض (۱) صغیر میں یہ صورت واقع ہو تو اس کے مطہر کرنے کیلئے دو باتوں میں سے ایک کرنا چاہئے یا تو مطہر پانی مستعمل پر غالب کر دینا یا حوض کو لبریز کر کے مطہر پانی سے بہا دینا اول کی صورت یہ ہے کہ حوض میں خود ہی اس شخص کے نہاتے یا بے دُھلا عضو بلا ضرورت ڈالتے وقت نصف حوض سے کم پانی تھا تو اب مطہر پانی سے بھر دیں کہ یہ مستعمل سے زیادہ ہو گیا اور اگر اس وقت نصف یا زیادہ حوض میں پانی تھا تو پہلے اتنا پانی نکال دیں کہ حوض کا اکثر حصہ خالی ہو جائے پھر منہ تک بھر دیں مثلاً ہموار حوض کہ زیر و بالا یکساں مساحت رکھتا ہے دو گز گہرا ہے اور اس شخص کے نہاتے وقت اُس میں گز بھر پانی تھا تو پاؤ گز پانی نکال دیں اور سترہ گرہ تھا تو سوا گرہ کھینچ دیں کہ بہر حال سوا سولہ گرہ خالی اور پونے سولہ میں پانی رہے پھر نئے پانی سے لبالب بھر دیں اور دوم کی شکل یہ کہ حوض میں اُس وقت پانی کتنا ہی ہو اُس میں سے کچھ نہ نکالیں اور نیا پانی اُس میں پہنچاتے جائیں یہاں تک کہ کناروں سے اُبل کر بہ جائے یہ دوسرا طریقہ ناپاک حوض کے پاک کرنے میں بھی کفایت کرتا ہے جبکہ ناپاک چیز نکالنے کے قابل نکال کر پانی سے اُبال کر بہا دیں ظاہر ہے کہ اُس وقت حوض میں پانی نصف سے جتنا کم ہو پہلا طریقہ آسان تر ہوگا دو گز گہرے حوض میں اُس وقت چار ہی گرہ پانی تھا تو صرف چار گرہ پانی اور پہنچا کر چند ڈول زیادہ ڈال دیں کہ مستعمل سے مطہر اکثر ہو گیا اور اس وقت پانی نصف سے جتنا زائد ہو دوسرا طریقہ سہل تر ہوگا کہ اُس میں نکالنا کچھ نہ پڑے گا اور کم حصہ خالی ہے جسے بھر کر ابالنا ہوگا اور جہاں

(۲) دونوں صورتیں دشواری و حرج صریح رکھتی ہوں وہاں اگر قولِ بعض علماء پر عمل کر کے اُس میں سے بیس ہی ڈول نکال دیں تو امید ہے کہ ان شاء اللہ تعالیٰ اسی قدر کافی ہو یُرِیدُ اللّٰہُ بِکُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیدُ بِکُمُ الْعُسْرَ (اللہ تعالیٰ تم پر آسانی چاہتا ہے تنگی نہیں اہتاـت) اور سب سے زیادہ صورت ضرورت یہ ہے کہ وہاں کنواں نہ ہو مینہ سے حوض بھرتا ہو اور ہو گیا مستعمل اب اُس کے بہانے یا مستعمل پر مطہر بڑھانے کیلئے پانی کہاں سے لائیں لہٰذا اس صورت ثالثہ پر عمل ہوگا و باللہ التوفیق۔

در مختار میں ہے : لا یجوز (ای رفع الحدث) بماء استعمل لاجل قربۃ | جائز نہیں (یعنی رفع حدث) اس پانی سے جو حدث دُور کرنے او اسقاط فرض بان یدخل یدہ او رجلہ فی جب لغیر | یا قربت حاصل کرنے کیلئے استعمال میں لایا گیا ہو مثلاً یہ کہ اپنا ہاتھ اغتراف و نحوہ اذا انفصل عن عضو وان لم یستقر | یا پیر کسی گڑھے میں داخل کر دے اور اس کو مقصود چلو بھر علی المذہب و ھو طاہر و لو من جنب و ھو الطاہر | کر پانی لینا نہ ہو تو وہ عضو سے جُدا ہوتے ہی مستعمل ہو جائیگا خواہ اس پر

Fatawa Rizwia, Volume 2

[Arabic]: It is not a purifier for ritual impurity according to the relied-upon opinion if a person in a state of minor impurity immerses himself in a well while there is no physical impurity on him. The most correct view is that he is pure and the water is 'used' (musta'mal). End of excerpt. [Urdu]: It does not purify; this is the school of thought, and he will remain pure even if it were an impure person. He is pure but not a purifier. The relied-upon saying is this: if someone without wudu dives into a well and there is no physical impurity on his body, the most correct view is that he is pure and the water is used. End of excerpt (T).

In Radd al-Muhtar: [Arabic]: His statement 'The most correct': This saying was mentioned in al-Hidayah as a narration from the Imam. Az-Zayla'i, al-Hindi, and others said, following the author of al-Hidayah, that this narration is the most appropriate of narrations. In Fath al-Qadir and Sharh al-Majma', it says this is the authenticated narration. In al-Bahr, it says: Thus, it is known that the chosen school of thought in this matter is that the person is pure and the water is pure but not a purifier. Abridged excerpt. [Urdu]: His saying 'the most correct'; this saying has been mentioned in Hidaya from the Imam as a narration; Zaylai and Hindi etc., following the author of Hidaya, said that this narration is the most consistent of narrations; it is in Fath al-Qadir and Sharh al-Majma' that the authenticated narration is this; it is in Bahr that from this it was known that the chosen school of thought in this issue is that man is pure, water is pure but not a purifier. Abridged (T).

In Durr al-Mukhtar: [Arabic]: Preponderance, if the mixed substance is similar like used water, is by parts. If the absolute (pure) water is more than half, purification is permissible, otherwise not. End of excerpt. [Urdu]: Preponderance will be according to parts if the additive is similar like used water; so if absolute water is more than half, then purification is permissible, otherwise not. End of excerpt (T).

In Radd al-Muhtar: [Arabic]: Meaning, even if the absolute water is not more, such as being less or equal, it is not permissible. End. [Urdu]: Meaning if absolute water is not more, for example if it is less or equal, then it is not permissible. End (T).

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/7 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/128 3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/32 4. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/134 and Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/142 Page 252 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

[अरबी]: भरोसेमंद मत के अनुसार, यह (पानी) अशुद्धि (हद्दस) को दूर करने के लिए शुद्धिकरण का साधन नहीं है, यदि अशुद्धि की स्थिति वाला व्यक्ति कुएं में डुबकी लगाता है जबकि उसके शरीर पर कोई शारीरिक अपवित्रता न हो। सबसे सही मत यह है कि वह शुद्ध है और पानी 'उपयोग किया हुआ' (मुस्तअमल) हो गया है। [इक्तबास समाप्त] [उर्दू]: वह शुद्ध करने वाला नहीं रहता; यही पंथ (मज़हब) है और वह शुद्ध ही रहेगा भले ही वह अपवित्र व्यक्ति ही क्यों न हो। वह शुद्ध है, लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है। भरोसेमंद बात यही है; अगर कोई बिना वज़ू के कुएं में गोता लगाता है और उसके शरीर पर कोई अशुद्धि (नजासत) नहीं है, तो सबसे सही यही है कि वह शुद्ध है और पानी इस्तेमाल किया हुआ है। [इक्तबास समाप्त] (त)

रद्द-उल-मुहतार में है: [अरबी]: उनका कथन 'सबसे सही': यह बात अल-हिदाया में इमाम से एक वर्णन (रिवायत) के रूप में उल्लेखित है। अल-ज़ैलई, अल-हिंदी और अन्य ने हिदाया के लेखक का अनुसरण करते हुए कहा कि यह वर्णन सभी वर्णनों में सबसे उपयुक्त है। फतह अल-कादिर और शर्ह अल-मजमा में लिखा है कि यही प्रमाणित वर्णन है। अल-बहर में है: इस प्रकार यह ज्ञात हुआ कि इस मामले में चुना हुआ पंथ यही है कि व्यक्ति शुद्ध है और पानी शुद्ध है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है। [संक्षेपित] [उर्दू]: उनका कहना 'सबसे सही'; यह बात हिदाया में इमाम से एक वर्णन के रूप में उल्लेखित है; ज़ैलई और हिंदी आदि ने हिदाया के लेखक का अनुसरण करते हुए कहा कि यह वर्णन वर्णनों में सबसे उपयुक्त है; फतह अल-कादिर और शर्ह अल-मजमा में है कि प्रमाणित वर्णन यही है; बहर में है कि इससे ज्ञात हुआ कि इस मसले में चुना हुआ मज़हब यह है कि मनुष्य पाक है, पानी पाक है मगर पाक करने वाला नहीं। [संक्षिप्त] (त)

दुर्रे मुख्तार में है: [अरबी]: यदि मिलाने वाली चीज़ (जैसे इस्तेमाल किया हुआ पानी) समान हो, तो प्रबलता अंशों (भागों) के आधार पर होगी। यदि शुद्ध (मुतलक) पानी आधे से अधिक है, तो शुद्धिकरण जायज़ है, अन्यथा नहीं। [इक्तबास समाप्त] [उर्दू]: प्रबलता अंशों (अजज़ा) के आधार पर होगी यदि मिलने वाली चीज़ समान हो जैसे इस्तेमाल किया हुआ पानी; अतः यदि मुतलक पानी आधे से अधिक है, तो शुद्धिकरण जायज़ है, अन्यथा नहीं। [इक्तबास समाप्त] (त)

रद्द-उल-मुहतार में है: [अरबी]: अर्थात, भले ही मुतलक पानी अधिक न हो, जैसे कि वह कम हो या बराबर हो, तो (शुद्धिकरण) जायज़ नहीं है। [समाप्त] [उर्दू]: यानी अगर मुतलक पानी अधिक न हो, उदाहरण के लिए वह कम हो या बराबर हो, तो जायज़ नहीं है। [समाप्त] (त)

पाद टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/7 2. रद्द-उल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/128 3. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/32 4. रद्द-उल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/134 और रद्द-उल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/142 पेज 252 ऑफ़ 711

[عربی]: لیس بطھور لحدث علی المعتمد محدث انغمس فے بئر ولا نجس علیہ الاصح انہ طاھر والماء مستعمل اھ ملتقطاً۔ [اردو]: نہ ٹھہرے، مذہب یہی ہے اور یہ پاک ہی رہے گا خواہ ناپاک آدمی ہی کیوں نہ ہو اور وہ طاہر ہے، پاک کرنے والا نہیں ہے، معتمد قول یہی ہے، اگر کوئی بے وضو کسی کنویں میں غوطہ لگائے اور اس کے جسم پر کوئی نجاست نہ ہو اصح یہ ہے کہ وہ پاک ہے اور پانی مستعمل ہے اھ ملتقطاً۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [عربی]: قولہ الاصح ھذا القول ذکرہ فی الھدایۃ روایۃ عن الامام قال الزیلعي والھندی وغیرھما تبعا لصاحب الھدایۃ ھذہ الروایۃ اوفق الروایات وفي فتح القدیر وشرح المجمع انھا الروایۃ المصححۃ قال في البحر فعلم ان المذھب المختار في ھذہ المسألۃ ان الرجل طاھر والماء طاھر غیر طھور اھ مختصرا۔ [اردو]: اس کا قول الاصح، اس قول کو ہدایت میں امام سے بطور روایت کے ذکر کیا ہے، زیلعی اور ہندی وغیرہما نے صاحب ہدایت کی متابعت میں کہا کہ یہ روایت اوفق الروایات ہے، فتح القدیر اور شرح المجمع میں ہے کہ تصحیح شدہ روایت یہی ہے، بحر میں ہے اس سے معلوم ہوا کہ مذہب مختار اس مسئلہ میں یہ ہے کہ آدمی پاک ہے، پانی پاک ہے مگر پاک کرنے والا نہیں اھ مختصراً۔ (ت)

درمختار میں ہے: [عربی]: الغلبۃ لوالمخالط مماثلاً کمستعمل بالاجزاء فان المطلق اکثر من النصف جاز التطھیر والا لا اھ ملتقطاً۔ [اردو]: غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہوگا اگر ملنے والا مماثل ہو جیسے مستعمل پس اگر مطلق اکثر ہے نصف سے، تو تطہیر جائز ہے ورنہ نہیں اھ ملتقطاً۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [عربی]: ای وان لم یکن المطلق اکثر بان کان اقل اومساویا لایجوز اھ [اردو]: یعنی اگر مطلق زائد نہ ہو مثلاً یہ کہ کم ہو یا مساوی تو جائز نہیں اھ (ت)

حواشی: 1 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۷/۱ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۸ 3 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۳۲/۱ 4 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۳۴/۱ و ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۴۲/۱ صفحہ 252 از 711

Fatawa-e-Razviya Volume Two

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

It is permissible to perform ablution (Wudu) with running water into which impurity (Najasa) has fallen, provided its traces (which are taste, smell, or color) are not apparent. This seemingly applies to carcasses as well. Al-Kamal preferred this view, and his student Qasim said it is the chosen (Mukhtar) position. It was strengthened in Al-Nahr and approved by the author. In Al-Quhastani, quoting from Al-Mudmarat and Al-Nisab, it is mentioned that the fatwa is based on this. It is also said that if half or more of the water flows over the impurity, it is not permissible, and this is more precautionary (ahwat). (Likewise) it is permissible with a large amount of stagnant water into which impurity has fallen and its traces are not visible, even if it is at the exact spot where the visible impurity fell. This is the fatwa in Al-Bahr. (The consideration) for the amount of stagnant water is (the greater likelihood as perceived by) the person afflicted by it (i.e., the opinion of the person involved in the matter; if his predominant thought is that the impurity did not cross from here to reach the other side, then it is permissible, otherwise not). This is the Zahir al-Riwayah and the most correct view according to Al-Ghaya and others. In Al-Nahr, it is stated that considering ten cubits is more appropriate, especially for the common people who do not have an informed opinion on this matter; thus, the later scholars (muta'akhkhirin) gave the fatwa on this basis. (Abbreviated summary)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

In Al-Hidayah and others, it is stated that a large pool (Al-Ghadir al-Azim) is one where the movement of one of its sides does not cause the other side to move.

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi 1/31.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

दुर्रे मुख्तार में है:

उस बहते पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें नजासत (अशुद्धि) गिरी हो और उसका असर यानी मज़ा (स्वाद), बू (गंध) या रंग उसमें ज़ाहिर न हो। ज़ाहिर है कि यह मृत पशु पर भी लागू होता है, कमाल ने इसे तरजीह दी है और उनके शागिर्द कासिम ने कहा कि यही मुख्तार (मान्य) है। और नह्र में इसे मज़बूती दी और मुसन्निफ़ (लेखक) ने इसे बरकरार रखा। और कुहिस्तानी में मुज़मरात से निसाब के हवाले से नकल है कि इसी पर फतवा है। और कहा गया कि अगर उस पर आधा या ज़्यादा जारी हो तो जायज़ नहीं और यही अहतियात (सावधानी) के करीब है। (और इसी तरह) जायज़ है (ठहरे हुए) बहुत ज़्यादा पानी से जिसमें नजासत गिरी हो और उसका असर दिखाई न दे, चाहे वह उस जगह से ही क्यों न हो जहाँ नजासत नज़र आती हो, इसी पर फतवा है बहर में। (और मोतबर/मान्य) ठहरे हुए पानी की मात्रा के बारे में (जिस तरफ राय का रुझान हो) यानी उस शख्स की राय जो इस मामले से संबंधित है, (अगर उसे यह प्रबल विचार/ज़न्ने ग़ालिब है कि नजासत यहाँ से पार होकर दूसरी तरफ नहीं गई है, तो जायज़ है, वरना नहीं)। यह ज़ाहिर रिवायत है और यही सही है ग़ाया वगैरह में। और नह्र में है कि दस हाथ का एतबार (मानक) कर लेना ज़्यादा मुनासिब है, खास तौर पर उन आम लोगों के हक़ में जिनकी इस सिलसिले में कोई राय नहीं होती; इसीलिए बाद के विद्वानों (मुताखिरीन) ने इसी पर फतवा दिया है। (संक्षिप्त)

रद्दुल मुख्तार में है:

हिदाया वगैरह में है कि बड़ा तालाब वह है जिसके एक किनारे की हरकत से दूसरे किनारे में हरकत न हो।

---

1 दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), मुजतबाई दिल्ली 1/31

पृष्ठ 253 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

در مختار میں ہے:

یجوز بجار وقعت فیه نجاسة ان لم یر اثره (وهو طعم اوریح اولون) ظاهرة یعم الجیفة ورجحه الکمال وقال تلمیذه قاسم انه المختار وقواه في النهر واقره المصنف وفی القهستاني عن المضمرات عن النصاب وعلیه الفتوی وقیل ان جری علیه نصفه فاکثر لم یجز وهو احوط (وکذا) یجوز (براکد) کثیر وقع فیه نجس لم یر اثره ولو فی موضع وقوع المرئیة به یفتی بحر (والمعتبر) في مقدار الراکد (اکبرای) المبتلی به (فان غلب علی ظنه عدم خلوص النجاسة الی الجانب الآخر جاز و الا لا)هذا ظاهر الروایة وهو الاصح غایة وغیرها وفی النهر ان اعتبار العشر اضبط ولاسیما فی حق من لارأی له من العوام فلذا افتی به المتأخرون الاعلام اهـ مختصرا۔

وضو جائز ہے اُس جاری پانی سے جس میں نجاست گری اور اس کا اثر یعنی مزہ، بُو یا رنگ اس میں ظاہر نہ ہو، بظاہر یہ مردہ کو بھی عام ہے، کمال نے اس کو ترجیح دی ہے اور ان کے شاگرد قاسم نے کہا کہ یہی مختار ہے، اور نہر میں اس کو تقویت دی اور مصنف نے اس کو برقرار رکھا، اور قہستانی میں مضمرات سے نصاب سے منقول ہے کہ اسی پر فتویٰ ہے، اور کہا گیا کہ اگر اس پر آدھا یا زائد جاری ہو تو جائز نہیں اور یہی احوط ہے (اور اسی طرح) جائز ہے (ٹھہرے ہوئے) کثیر پانی سے جس میں نجاست گری ہو اور اس کا اثر غیر مرئی ہو خواہ اُس جگہ سے ہو جہاں نجاست نظر آتی ہو، اسی پر فتویٰ ہے بحر (اور معتبر) ٹھہرے ہوئے پانی کی مقدار میں (جس طرف رائے کا رجحان ہو) یعنی اس شخص کی رائے جو اس معاملہ سے متعلق ہے، (اگر اس کو یہ ظن غالب ہے کہ نجاست یہاں سے تجاوز کر کے دوسری طرف نہیں گئی ہے تو جائز ہے، ورنہ نہیں) یہ ظاہر روایت ہے اور یہی صحیح ہے غایہ وغیرہ میں۔ اور نہر میں ہے کہ دس ہاتھ کا

اعتبار کر لینا زیادہ مناسب ہے، خاص طور پر اُن عوام کے حق میں جن کی اس سلسلہ میں کوئی رائے نہیں ہوتی ہے، اسی لئے متاخرین علماء نے اسی پر فتویٰ دیا ہے اھ مختصرا۔ (ت)

ردالمختار میں ہے:

في الهداية وغيرها ان الغدير العظيم مالايتحرك احد طرفيه بتحرك الطرف الأخروفی

ہدایہ وغیرہ میں ہے کہ بڑا تالاب وہ ہے کہ جس کے ایک کنارہ کی حرکت سے دوسرے کنارے کو حرکت

---

1 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی 1/31

Fatawa Rizvia, Volume II

[Left Column Text - Arabic with Urdu Translation in Right Column] Al-Mi'raj: It is the apparent position of the school of thought (madhhab). In Al-Zayla'i: It is the apparent position of the school and the saying of the predecessors, even Al-Bada'i and Al-Muhit state: The narration from our predecessor companions has agreed that consideration is given to movement, which is that [the water] rises and falls at that instant, not after a long delay. Mere origin of movement is not considered; the movement considered is that of performing wudu (ablution), which is the most correct view—Muhit and Hawi al-Qudsi. It should not be hidden from you that considering purity based on the predominance of opinion (ghalbat al-zann) without specifying an amount appears to contradict the consideration by movement. This is because predominance of opinion is an internal matter that varies, while movement of the other side is a perceptible, observable matter that does not vary. Both points are narrated from our three Imams in the 'Zahir al-Riwayah'. I have not seen anyone discuss this. The harmonization (tawfiq) that occurs to me is that predominance of opinion means 'if it were moved, it would reach the other side' in cases where actual movement is absent. So let one reflect. End of summary.

[Section: I Say (Aqool)] I say: This harmonization he initiated is excellent in its wording and truthful. For if someone finds water in a wasteland with impurity on one of its sides, would it be reasonable to command him to go to the other side, perform wudu, and test for himself if the water moves there or not? If he finds it moves, then he should avoid it, and what else should be avoided when...

---

1. Rad al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/121. Page 254 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड द्वितीय)

[बायां कॉलम - अरबी पाठ और दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] अल-मेराज: यह मज़हब का ज़ाहिर (प्रसिद्ध) रुख है। और ज़ैलाई में है: यही मज़हब का ज़ाहिर है और पूर्वजों (मुतक़दमीन) का कथन है, यहाँ तक कि बदाई' और मुहीत में है: हमारे पूर्ववर्ती साथियों की रिवायत इस पर सहमत है कि एतबार हिलाने (तहरीक) का है, यानी पानी उसी पल ऊपर-नीचे होने लगे, न कि बहुत देर बाद। केवल गति का मूल मान्य नहीं है; मान्य गति वज़ू करने की गति है, यही सबसे सही मत है—मुहीत और हावी अल-कुदसी। आप पर यह स्पष्ट होना चाहिए कि बिना किसी माप के प्रबल धारणा (ग़ालिब ज़न) पर भरोसा करना प्रत्यक्ष रूप से गति के एतबार के विपरीत है। क्योंकि प्रबल धारणा एक आंतरिक विषय है जो बदलता रहता है, जबकि दूसरे किनारे की गति एक प्रत्यक्ष, दृश्यमान विषय है जिसमें कोई मतभेद नहीं होता। फिर भी ये दोनों बातें हमारे तीनों इमामों से 'ज़ाहिर रिवायत' में वर्णित हैं। मैंने किसी को इस पर चर्चा करते नहीं देखा। मेरे अनुसार सामंजस्य (ततबीक़) यह है कि प्रबल धारणा का अर्थ यह है कि 'यदि पानी हिलाया जाता, तो वह दूसरे किनारे तक पहुँच जाता' जहाँ वास्तविक गति का अभाव हो। अतः विचार करें। संक्षिप्त विवरण समाप्त।

[अनुभाग: मैं कहता हूँ (अक़ूल)] मैं कहता हूँ: सामंजस्य का जो स्वरूप उन्होंने प्रस्तुत किया है, वह बहुत ही सराहनीय और सत्य है। यदि कोई जंगल में पानी का कुंड पाए जिसके एक किनारे पर गंदगी हो, तो क्या यह तर्कसंगत होगा कि उसे दूसरे किनारे पर जाकर वज़ू करने और यह जाँचने का आदेश दिया जाए कि पानी वहां हिलता है या नहीं? यदि वह पाए कि पानी हिलता है, तो उसे बचना चाहिए, और किस चीज़ से बचा जाए जब...

---

1. रद-अल-मुहतार, बाब-अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/121 पृष्ठ 254/711

المعراج انه ظاهر المذهب وفی الزیلعی ظاهر المذهب وقول المتقدمین حتی قال فی البدائع والمحیط اتفقت الروایة عن اصحابنا المتقدمین انه یعتبر بالتحریك وهو ان یرتفع وینخفض من ساعته لابعد المكث ولا یعتبر اصل الحركة والمعتبر حركة الوضوء هو الاصح محیط وحاوی القدسی ولا یخفی علیك ان اعتبار الخلوص بغلبة الظن بلا تقدیر شیئی مخالف فی الظاهر لاعتباره بالتحریك لان غلبة الظن امر باطنی یختلف و تحریك الطرف الاخر حسی مشاهد لا یختلف مع ان كلامهما منقول عن ائمتنا الثلثة فی ظاهر الروایة ولم ار من تكلم علی ذلك ویظهر لی التوفیق بان المراد غلبة الظن بانه لو حرك لوصل الی الجانب الاخر اذ لم یوجد التحریك بالفعل فلیتأمل اھ ملخصا۔ نہ ہو، اور معراج میں ہے کہ ظاہر مذہب یہی ہے۔ اور زیلعی میں ہے کہ یہی ظاہر مذہب ہے اور متقدمین کا قول ہے، یہاں تک کہ بدائع اور محیط میں ہے کہ ہمارے اصحابِ متقدمین کی روایت اس پر متفق ہے کہ اعتبار ہلانے کا ہے اس کے ساتھ ہی پانی اوپر نیچے ہونے لگے نہ کہ دیر بعد، اور عام حرکت کا اعتبار نہیں، اور معتبر وضو کی حرکت ہے، یہی اصح ہے، محیط اور حاوی قدسی۔ اور تجھ پر یہ بات مخفی نہ ہونی چاہئے کہ غالب ظن کا اعتبار بلا تقدیر شیئی یہ ظاہر میں حرکت کے اعتبار کے مخالف ہے کیونکہ غلبہ ظن ایک باطنی امر ہے جس میں اختلاف ہوتا ہے، اور دوسرے کنارہ کو حرکت دینا ایک حسی امر ہے جس کا مشاہدہ ہوتا ہے اور اس میں کوئی اختلاف نہیں ہوتا پھر یہ دونوں چیزیں ہمارے ائمہ ثلاثہ سے ظاہر روایت میں منقول ہیں، اور میں نے نہیں دیکھا کہ کسی نے اس پر کلام کیا ہو، اس میں تطبیق کی شکل میرے نزدیک یہ ہوسکتی ہے کہ جب بالفعل تالاب کو حرکت نہ دی جائے تو اس امر کا غلبہ ظن ہونا چاہئے کہ اگر حرکت دی جاتی تو دوسرے کنارے پر حرکت پیدا ہوتی فلیتأمل اھ ملخصا۔ (ت)

اقول: هذا الذي ابداه من التوفيق حسن بالقول حقيق فان من وجد في البرية ماء فی احد جانبيه نجاسة فهل يؤمر ان يتوضأ في الطرف الاخرى يجرب على نفسه انه يتحرك ام لافان وجده يتحرك فليجتنب وای شیئ يجتنب وقد میں کہتا ہوں تطبیق کی جو شکل انہوں نے پیش کی ہے نہایت مستحسن ہے کیونکہ اگر کوئی شخص جنگل میں پانی کا تالاب پائے جس کے ایک کنارہ پر نجاست ہو تو اب کیا یہ معقول بات ہوگی کہ اسے حکم دیا جائے ، جاؤ اس کے دوسرے کنارے سے وضو کر کے تجربہ کرو کہ آیا اس طرح دوسرے کنارے پر حرکت ہوتی ہے

1- ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱ / ۱۲۱ صفحہ 254 از 711

Fatawa Razawiya - Volume Two

[Urdu Commentary Column] ...or not? Now, if he feels movement, he should not perform ablution, and how can he be saved now that his limbs have been contaminated in this dirty water? Therefore, the preponderance of opinion (ghalba-e-zann) means that if he performs ablution, there will be movement in the other part. Thus, the first statement contains an explanation of the objective, and this is an explanation for recognition, because the reach of impurity to the other side is an internal matter, which is not known. And through the reaching of movement, it becomes known that where it is suspected, it is present there as well; and if not suspected, then it is not there either. Then, regarding the well, it is narrated that if an unpurified person or one in a state of major ritual impurity (janaba) dives into a well, twenty buckets of water will be drawn from it. It is narrated in 'Radd al-Muhtar' from 'al-Wahbaniyya' that the school of Imam Muhammad (RA) is that the purifying quality will be lost, and according to the two Shaikhs (Abu Hanifa and Abu Yusuf), this is the correct view, so twenty buckets will be drawn from it so that it becomes pure. It was stated that 'muhdith' (one in minor impurity) also includes 'junub' (one in major impurity). Then, a dispute arose among the jurists regarding the cistern (as-Sihrij)—which the Shafi'is quoted from 'al-Qamus' as meaning a large basin: one view is that it is like a well, so drawing some of its water will be sufficient where it is sufficient, or it is like a 'zir' (large pitcher) and all the water must be drawn and its surfaces must also be washed for purification. Following the first view, some contemporaries of Allamah Umar ibn Nujaym, the author of 'al-Nahr', issued a fatwa and argued from this absolute statement of the jurists that they mentioned 'the well' without specific restriction, including those with springs and...

[Arabic Source Column] ...contamination, then it is allowed. The meaning is not that it is currently most likely that if he performs ablution, it will move. What is in the first statement is an explanation of the intended purpose, and what is here is an explanation for knowledge, for the purity from impurity is an internal matter that does not depend on it, and the reaching of movement is known, so what is thought about in it, this is what is suspected in it, and eventually it is not. Then (1) it is narrated regarding the well that if a person in a state of minor impurity immerses himself in it, even if in a state of major impurity (Janaba), twenty buckets of water are drawn. In 'Radd al-Muhtar' from 'al-Wahbaniyya', the school of Muhammad (RA) is that it loses its purifying quality, and this is the correct view according to the two Shaikhs, so twenty buckets are drawn from it to become purifying. He said, 'The

meaning of minor impurity includes major impurity'. Then (2) a dispute arose among them regarding whether the cistern (as-Sihrij)—which, according to what the Shafi'is narrated from 'al-Qamus', is a large basin—is like a well, so drawing some water is sufficient where it is sufficient, or like a 'zir' (large earthen jar), so all water must be removed and the surfaces washed for purification. Some contemporaries of Allamah Umar ibn Nujaym, the author of 'al-Nahr', issued a fatwa according to the first view, holding onto their absolute mention of 'well' without restriction by a specific source. He refuted it in 'al-Nahr' following 'al-Bahr' with what is in 'al-Badai', 'al-Kafi', and others, stating that if a mouse falls into a jar, all the water is poured out. He said, 'The reason is that being content with drawing some water in wells is contrary to analogy (qiyas) based on reports (athar), so others are not linked to it'. Then he said, 'This refutation is only...'

[Footnote] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt 1/157. Page 255 of 711

[उर्दू टिप्पणी कॉलम] ...या नहीं? अब अगर हरकत महसूस करे तो वज़ू न करे और अब बच कैसे सकता है जबकि उसके अंग इस गंदे पानी में संदूषित हो चुके हैं, लिहाज़ा ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल संभावना) से मुराद यही है कि अगर वह वज़ू करे तो दूसरे हिस्से पर हरकत होगी, तो पहले क़ौल में मक़सूद का बयान है और यह मारिफ़त (पहचान) का बयान है क्योंकि नजासत का दूसरी जानिब पहुँचना एक बातिनी (आंतरिक) अम्र है इस पर इत्तिला (सूचना) नहीं होती है, और हरकत के पहुँचने से मालूम होता है जहाँ उसका गुमान है वहाँ उसका भी है उसका नहीं तो उसका भी नहीं, फिर कुएं के बारे में यह मन्क़ूल (वर्णित) है कि अगर बे-वज़ू या जुनुब कुएं में ग़ोता लगाए तो उससे बीस डोल पानी निकाला जाएगा। रद अल-मुह्तार में वहबनिया से मन्क़ूल है कि मुहम्मद का मज़हब यह है कि तहूरियत (पवित्रता) सल्ब (छिन) हो जाएगी, और शैख़ैन के नज़दीक यही सही है, तो उससे बीस डोल निकाले जाएँगे ताकि वह तहूर (पवित्र) हो जाए। अहा फ़रमाया और मुहदिस में जुनुब भी शामिल है, फिर फ़ुक़हा में यह इख़्तिलाफ़ (मतभेद) वाक़े हुआ कि जो सिहरीज़ शाफ़इया ने क़ामूस से नक़्ल किया कि इससे मुराद बड़ा हौज़ है, एक क़ौल यह है कि वह कुएं की तरह है तो उसका कुछ पानी निकालना काफ़ी होगा या ज़ीर (सोता) की तरह है और कुल पानी निकालना होगा और उसकी सतहों को भी धोना पड़ेगा, पहले क़ौल के मुताबिक़ अल्लामा उमर बिन नुजैम साहब-ए-नहर के बाज़ मुआसेरीन (समकालीन) ने फ़तवा दिया और फ़ुक़हा के इस इत्लाक़ (सामान्य उल्लेख) से इस्तिदलाल (तर्क) किया कि उन्होंने कुएं में सोते वाले और...

[अरबी स्रोत कॉलम] ...संदूषण, तो अनुमति है। इसका अर्थ यह नहीं है कि अभी इसकी प्रबल संभावना है कि यदि वह वुज़ू करता है, तो पानी हिलेगा। पहले कथन में जो है वह उद्देश्य का वर्णन है, और यहाँ जो है वह ज्ञान के लिए वर्णन है, क्योंकि अशुद्धता से मुक्ति एक आंतरिक मामला है जो इस पर निर्भर नहीं करता है, और गति के पहुँचने को जाना जाता है, इसलिए जिसमें ऐसा सोचा जाता है, वही उसमें संदिग्ध है, और अंततः नहीं। फिर (1) कुएं के संबंध में यह वर्णित है कि यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति (मुहदिस) उसमें गोता लगाता है, भले ही वह जनाबत (बड़ी अशुद्धि) की स्थिति में हो, तो उसमें से बीस डोल पानी निकाला जाएगा। 'रद अल-मुह्तार' में 'वहाबनिया' से वर्णित है कि इमाम मुहम्मद (रह.) का मज़हब यह है कि इसकी शुद्ध करने की क्षमता समाप्त हो जाएगी, और दोनों शैखों (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ) के अनुसार यही सही है, इसलिए इसमें से बीस डोल निकाले जाएंगे ताकि वह शुद्ध हो जाए। उन्होंने कहा: 'हदस' (लघु अशुद्धि) शब्द में 'जनाबत' (बड़ी अशुद्धि)

भी शामिल है। फिर (2) उनके बीच यह विवाद हुआ कि क्या 'सिहरीज़' (हौज़)—जिसे शाफ़ईयों ने 'अल-क़ामूस' के हवाले से बड़ा हौज बताया है—कुएं की तरह है, इसलिए जहाँ पर्याप्त हो वहाँ कुछ पानी निकालना पर्याप्त होगा, या यह 'ज़ीर' (मिट्टी का बड़ा मटका) की तरह है, इसलिए सारा पानी निकालना होगा और शुद्धिकरण के लिए इसकी सतहों को धोना होगा। पहले विचार के अनुसार, 'अल-नहर' के लेखक अल्लामा उमर इब्न नुजैम के कुछ समकालीनों ने फ़तवा दिया और फ़क़ीहों के इस सामान्य उल्लेख से तर्क दिया कि उन्होंने कुएं को बिना किसी विशिष्ट प्रतिबंध के उल्लेख किया है। और उन्होंने 'अल-नहर' में 'अल-बहर' के अनुसार इसका खंडन किया, जो 'अल-बदाइ', 'अल-काफी' आदि में है, कि यदि चूहा मटके में गिर जाए तो सारा पानी बहा दिया जाएगा। उन्होंने कहा: इसका कारण यह है कि कुओं में कुछ पानी निकालने पर संतोष करना सादृश्य (क़ियास) के विरुद्ध है, जो पारंपरिक सूचनाओं (आसार) पर आधारित है, इसलिए अन्य चीज़ों को इससे नहीं जोड़ा जा सकता। फिर उन्होंने कहा: और यह खंडन केवल...

[पादलेख] 1. रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल-बिअर, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/157. पेज 255 of 711

[دائیں کالم کا متن] یا نہیں؟ اب اگر حرکت محسوس کرے تو وضو نہ کرے اور اب بچ کیسے سکتا ہے جبکہ اس کے اعضاء اس گندے پانی میں ملوث ہو چکے ہیں، لہذا غلبہ ظن سے مراد یہی ہے کہ اگر وہ وضو کرے تو دوسرے حصہ پر حرکت ہوگی، تو پہلے قول میں مقصود کا بیان ہے اور یہ معرفت کا بیان ہے کیونکہ نجاست کا دوسری جانب پہنچنا ایک باطنی امر ہے اس پر اطلاع نہیں ہوتی ہے، اور حرکت کے پہنچنے سے معلوم ہوتا ہے جہاں اس کا گمان ہے وہاں اُس کا بھی ہے اس کا نہیں تو اُس کا بھی نہیں، پھر کنویں کے بارے میں یہ منقول ہے کہ اگر بے وضو یا جنب کنویں میں غوطہ لگائے تو اُس سے بیس ڈول پانی نکالا جائیگا۔ ردالمحتار میں وہبانیہ سے منقول ہے کہ محمد کا مذہب یہ ہے کہ طہوریت سلب ہو جائیگی، اور شیخین کے نزدیک یہی صحیح ہے، تو اُس سے بیس ڈول نکالے جائیں گے تاکہ وہ طہور ہو جائے اھ فرمایا اور محدث میں جنب بھی شامل ہے، پھر فقہاء میں یہ اختلاف واقع ہوا کہ جو صہر یج شافعیہ نے قاموس سے نقل کیا کہ اس سے مراد بڑا حوض ہے، ایک قول یہ ہے کہ وہ کنویں کی طرح ہے تو اس کا کچھ پانی نکالنا کافی ہوگا یا زیر (سوتا) کی طرح ہے اور کل پانی نکالنا ہو گا اور اس کی سطحوں کو بھی دھونا پڑے گا، پہلے قول کے مطابق علامہ عمر بن نجیم صاحب نہر کے بعض معاصرین نے فتویٰ دیا اور فقہاء کے اس اطلاق سے استدلال کیا کہ انہوں نے کنویں میں سوتے والے اور

[بائیں کالم کا متن] تلوث فاذن لیس المراد الان یغلب علی ظنه انه ان توضأ تحرك فمافی القول الاول بیان للمقصود وما هنا بیان لمعرفه فان خلوص النجاسة امر باطنی لا یتوقف علیه و وصول الحرك یعرفه فما یظن فیه هذا هو المظنون فیه ذاك ومآلا فلا ثم (۱) المنقول فی البئر اذا انغمس فیها محدث ولو جنباً نزح عشرین دلو افقی رد المحتار عن الوهبانیة مذهب محمد اه یسلب الطهوریة وهو الصحیح

عند الشيخين فينزح منه عشرون ليصير طهوراً اه قال والمراد بالحدث ما يشمل الجنب، ثم (٢) وقع بينهم النزاع فى ان الصهريج وهو على ما نقل الشافعية عن القاموس الحوض الكبير هل هو كالبئر فيكفى فيه نزح البعض حيث يكفى ام كالزير فيجب اخراج الكل وغسل السطوح للتطهير بالأول افتى بعض معاصرى العلامة عمر بن نجيم صاحب النهر متمسكاً باطلاقهم البئر من دون تقييد بالمعين ورده فى النهر تبعاً للبحر بما فى البدائع والكافى وغيرهما من ان الفأرة لو وقعت فى الحب يهراق الماء كله قال ووجهه ان الاكتفاء بنزح البعض فى الآبار على خلاف القياس بالآثار فلا يلحق بها غيرها ثم قال وهذا الرد انما

[حاشيه] 1 رد المحتار فصل فى البئر مصطفى البابي مصر ١/ ١٥٧ Page 255 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic Text - Left Column] This is based on the premise that a cistern (Sahrij) is not considered a well (Bir) in any way[1]. Al-Shami said: Therefore, if it is claimed to be included in the definition of a well, it would not contradict the traditions (athar). This is supported by what we previously mentioned, that 'Bir' is derived from 'Ba'art', meaning 'I dug'. A 'Sahrij' is a pit in the ground whose water cannot be reached by hand, unlike a spring ('Ayn), a large jar (Hubb), or a basin (Hawd). Allama al-Maqdisi leaned towards this view and said: The reasoning used in 'al-Bahr' is not without its weaknesses. How can a jar (Hubb) be compared to a cistern (Sahrij), especially one that can accommodate large buckets?[2] However, this contradicts what is in 'al-Nutaf', the text of which is: "As for a well, it is that which has sources from its bottom," i.e., it has waters that replenish and gush from its bottom. It is not hidden that according to this definition, cisterns, jars, and wells filled by rain or rivers are excluded.[3] [Summary from Rad al-Muhtar].

I say: (2) The derivation of 'Bir' (well) from 'Ba'ar' (to dig) implies that every well is dug, but not that everything dug is a well. Do not forget what they related about 'Qarura' (flask) and 'Jarjir' (watercress/cress) in 'al-Durr'.

[Urdu Text - Right Column] No distinction was made for that which lacks a spring; this was rejected in [the discussion of] the river following [the reasoning of] al-Bahr. Because it is mentioned in Bada'i', al-Kafi, etc., that if a mouse falls into a pit, all the water shall be extracted. The reason for this is that extracting some water from a well is contrary to analogy (qiyas) and is based on traditions (athar). Therefore, this exception to analogy will not apply to anything other than a well. Furthermore, he stated that this rejection is based on the fact that the term 'Bir' is not applicable to a 'Sahrij' (cistern).

Al-Shami said that when the claim is made that the term 'Bir' also applies to it, it will not be contrary to traditions. This is supported by the fact that 'Bir' is derived from 'Ba'art', meaning "I dug". A 'Sahrij' refers to a pit where the water cannot be reached by hand. Springs, jars, and basins are the opposite. Allama al-Maqdisi leaned towards this and stated that the weakness in the reasoning of al-Bahr is evident. There is a great difference between a jar and a cistern, especially one that has the capacity for large buckets. However, this contradicts 'al-Nutaf', whose text is: "A well is that which has springs from beneath it," meaning water keeps coming out from below. It should

not be hidden that cisterns, jars, and wells filled by rain or rivers are excluded from this definition. [Summary from Rad al-Muhtar (T)].

I say that the derivation of 'Bir' from 'Ba'ar' necessitates that every well is dug, but it does not mean that every dug thing is a well. Do not forget what they recounted regarding 'Qarura' and 'Jarjir'.

[Footnotes] 1 Rad al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt 1/159 2 Rad al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt 1/159 3 Rad al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt 1/159

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी पाठ - बायाँ कॉलम] यह इस आधार पर है कि एक हौज (सहरिज) किसी भी तरह से कुएं (बइर) के नाम में शामिल नहीं है। 1 अल-शमी ने कहा: यदि यह दावा किया जाए कि यह कुएं की परिभाषा में आता है, तो यह परंपराओं (आसार) के विपरीत नहीं होगा। इसका समर्थन हमारे पूर्व उल्लेख से होता है कि 'बइर' शब्द 'बआरत' से निकला है, जिसका अर्थ है 'मैंने खोदा'। एक 'सहरिज' जमीन में एक गड्ढा है जहाँ पानी तक हाथ नहीं पहुँच सकता, चश्मे (ऐन), मटके(हुब) या हौज के विपरीत। अल्लामा अल-मक्दिसी ने इसी ओर झुकाव दिखाया और कहा: 'अल-बहर' में जो तर्क दिया गया है, उसकी कमियाँ छिपी नहीं हैं। एक मटके की तुलना सहरिज से कैसे की जा सकती है, विशेष रूप से वह जिसमें बड़े डोल समा सकें? 2 हालांकि, यह 'अल-नुतफ' के विपरीत है, जिसका पाठ है: "जहाँ तक कुएं का संबंध है, यह वह है जिसके नीचे से स्रोत हों," अर्थात जिसके तल से पानी निकलता और फूटता रहे। यह स्पष्ट है कि इस परिभाषा के अनुसार, हौज, मटके और बारिश या नदियों से भरने वाले कुएं बाहर हो जाते हैं। 3 [रद अल-मुह्तार से संक्षिप्त सारांश]।

मैं कहता हूँ: (2) 'बइर' का 'बआर' से व्युत्पन्न होना यह आवश्यक बनाता है कि प्रत्येक कुआँ खोदा गया हो, न कि हर खोदी गई चीज़ कुआँ हो। उन्होंने 'अल-दुर' में 'कारूरा' और 'जरजीर' के बारे में जो वर्णन किया है, उसे न भूलें।

[उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम] बिना सोता (spring) वाले में कोई भेद नहीं किया गया; इसे 'बहर' के अनुसरण में नहर की चर्चा में खारिज कर दिया गया। क्योंकि 'बदाए', 'अल-काफी' आदि में उल्लेख है कि यदि गड्ढे में चूहा गिर जाए, तो पूरा पानी निकाला जाएगा। इसका कारण यह है कि कुएं से कुछ पानी निकालना कयास (analogy) के विपरीत है और केवल आसार (traditions) पर आधारित है। इसलिए, कयास का यह विरोध कुएं के अलावा किसी अन्य चीज़ पर लागू नहीं होगा। फिर उन्होंने कहा कि यह खंडन इस आधार पर है कि 'सहरिज' पर 'बइर' शब्द लागू नहीं होता।

शमी ने कहा कि जब यह दावा किया जाए कि इस पर भी 'बइर' का प्रयोग होता है, तो यह आसार के विपरीत नहीं होगा। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि 'बइर' शब्द 'बआरत' से निकला है जिसका अर्थ है "मैंने खोदा"। 'सहरिज' उस गड्ढे को कहते हैं जहाँ पानी तक हाथ न पहुँचे। चश्मा, मटका और हौज इसके विपरीत हैं। अल्लामा अल-मक्दिसी ने इसी विचार का समर्थन किया और कहा कि 'अल-बहर' के तर्क की कमजोरी स्पष्ट है। मटके और सहरिज में बड़ा अंतर है, विशेषकर उस सहरिज में

जिसमें बड़े डोल की गुंजाइश हो। लेकिन यह 'अल-नुतफ' के विरुद्ध है जिसका पाठ है: "कुआँ वह है जिसके नीचे से सोते (springs) हों," यानी नीचे से पानी निकलता रहे। यह स्पष्ट रहे कि सहरिज, मटका और बारिश या नहरों से भरने वाले कुएं इस परिभाषा से बाहर हैं। [रद अल-मुह्तार संक्षिप्त में (त)]।

मैं कहता हूँ कि 'बइर' का 'बआर' से व्युत्पन्न होना इस बात का तकाजा करता है कि हर कुआँ खोदा हुआ हो, यह नहीं कि हर खोदा हुआ गड्ढा कुआँ हो। उन्होंने 'कारूरा' और 'जरजीर' के बारे में जो कथा सुनाई है, उसे न भूलें।

[पाद टिप्पणियाँ] 1 रद अल-मुह्तार, कुएं का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/159 2 रद अल-मुह्तार, कुएं का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/159 3 रद अल-मुह्तार, कुएं का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/159

فتاویٰ رضویہ ،جلد ثانی

[عربی متن - بایاں کالم] یتم بناء علی ان الصھریج لیس من مسمی البئر فی شیئ 1 اھـ قال الشامي أي فإذا ادعی دخوله في مسمی البئر لا یکون مخالفاً للآثار ویؤیده ما قدمناه من ان البئر مشتقة من بأرت ای حفرت والصھریج حفرة في الارض لا تصل الید الی مائها بخلاف العین والحب والحوض والیه مال العلامة المقدسی فقال ما استدل به في البحر لا یخفی بعده و این الحب من الصھریج لاسیما الذی یسع الوفاء من الدلاء 2 اھـ لکنه خلاف ما فی النتف و نصه اما البئر فھی التي لھا مواد من اسفلھاھـ ای لھامیاه تمد وتنبع من اسفلھا ولا یخفی انه علی ھذا التعریف یخرج الصھریج والحب والآبار التی تملاء من المطر او من الانھار 3 اھـ ما فی ردالمحتار باختصار۔ اقول: (۲) و کون البئر من البأر یقتضی ان کل بئر محفورة لان کل محفور بئر ولا تنس ما حکوه فی القارورة والجر جیر في الدر

[اردو متن - دایاں کالم] بغیر سوتے والے میں فرق نہ کیا، اس کو نہر میں بحر کی متابعت میں رد کیا، کیونکہ بدائع اور کافی وغیرہ میں ہے کہ گڑھے میں چھوہیا گرجائے تو کل پانی نکالا جائیگا اور اس کی وجہ یہ ہے کہ کنویں سے کچھ پانی کا نکالنا خلافِ قیاس ہے اور آثار کی وجہ سے ہے تو کنویں کے علاوہ کسی اور چیز میں یہ خلافِ قیاس نہ چلے گا، پھر فرمایا یہ رد اس بناء پر ہے کہ صہرتج پر بئر کا اطلاق نہیں ہوتا اھ شامی نے کہا جب یہ دعویٰ کیا جائے کہ اس پر بھی بئر کا اطلاق ہوتا ہے تو آثار کے مخالف نہ ہوگا اور اس کی تائید اس سے ہوتی ہے کہ بئر بأرت سے مشتق ہے یعنی "حفرت" (میں نے کھودا) صہرتج اس گڑھے کو کہتے ہیں جس کے پانی تک ہاتھ نہ پہنچتا ہو، عین، حب، حوض اس کے برعکس ہے اور اسی طرف علامہ مقدسی مائل ہوئے ہیں، اور فرمایا جس سے بحر نے استدلال کیا اس سے اس کا بعد مخفی نہ رہے اور حب اور صہرتج میں بڑا فرق ہے خاص طور پر وہ جس میں وفادول کی گنجائش ہواھ مگر یہ نتف کے خلاف ہے

اور اس کی عبارت یہ ہے اور کنواں وہ ہے جس کے نیچے سے سوتے ہوں اھ یعنی نیچے سے پانی نکلتا رہتا ہو، اور مخفی نہ رہے کہ صہرتج، حب اور کنویں جو بارش سے بھر جاتے ہیں یا نہروں سے وہ اس تعریف سے خارج ہیں اھ ردالمحتار مختصراً (ت) میں کہتا ہوں بئر کا بأر سے مشتق ہونا اس امر کا مقتضی ہے کہ ہر بئر کھودا ہوا ہو یہ نہیں کہ ہر کھودا ہوا بئر ہو اور تم اس کو نہ بھلانا جو انہوں نے قاروره اور جر جیر کے بارے میں حکایت کیا ہے

[حواشی] 1 رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۱ 2 رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۱ 3 رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume Two

[Arabic Text - Right Column] From Al-Mukhtar, quoting the annotations of Al-Allamah Al-Ghazzi, author of Tanwir al-Absar on Al-Kanz, from Al-Quniyah: Verily, the ruling of the 'Rakiya' (a type of well) is like that of a well. And from Al-Fawa'id: If most of a buried vessel (hubb) is in the ground, it is like a well. It is stated in Al-Durr: Based on this, water is extracted from a cistern (sahrij) and a large jar (zir) as it is from a well, so take advantage of this research.[1] Al-Shami said: 'Rakiya' in common usage is a well in which rainwater collects; thus, it is in the sense of a cistern. He said: This is accepted regarding the cistern (1), but not the jar, because it falls outside the name of a well, even if most of it is buried, i.e., buried in the ground. This does not make it a well, neither conventionally nor linguistically. What is in Al-Fawa'id is contradicted by the absolute statements passed from Al-Bada'i, Al-Kafi, and others. There is a clear difference between it and a cistern, as we previously cited from Al-Muqaddasi.[2] Briefly. I say: This is very good, but (note) the distinction between a pond (hawd) and a cistern (sahrij) is not apparent. For (3) the inability of the hand to reach the water is not part of the definition of a well or a cistern. Rather, a well, as mentioned, is from 'ba'r' meaning digging, or from it meaning storing. The proximity or distance of its water varies according to the land and the seasons. In moist lands and during rainy seasons...

[Urdu Text - Left Column] And in Durr-e-Mukhtar, from the annotations of Al-Allamah Al-Ghazzi on Tanwir al-Kanz from Al-Quniyah, it is stated that the ruling for 'Rakiya' is the same as for a well. From Al-Fawa'id, it is mentioned that if most of a buried vessel is underground, it is treated like a well. In Al-Durr, it is said: From this, it is understood that water will be drawn from a cistern (sahrij) and a large jar (zir) like from a well. Consider this writing a blessing. Al-Shami stated that in common parlance, 'Rakiya' refers to a well where rainwater accumulates, which means it carries the meaning of a cistern. He further said: This is acceptable for a cistern but not for a jar, as the term 'well' (bir) does not apply to it. Most of it is buried and submerged in the earth, therefore, neither linguistically nor conventionally is it a well. What is mentioned in Al-Fawa'id contradicts the absolute statements from Al-Bada'i, Al-Kafi, etc. There is a clear difference between it and a cistern, as we quoted from Al-Muqaddasi. Briefly. (Translator) I say: This is a fine point, but it doesn't clarify the difference between a pond and a cistern because the hand not reaching the water is not included in the meaning of a well, nor in the meaning of a cistern. As we

mentioned, 'bi'r' (well) is derived from 'ba'r', which means to dig, or it means to store, and its water being near or far depends on the difference in land and seasons.

[Middle Note] Note: Referring to his previous statement "unlike the eye, the vessel, and the pond". From the author (m). This refers to his previous statement "unlike the eye, the vessel, and the pond". From the translator (t).

[Footnotes] [1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai Delhi (1/39) [2] Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi (1/59)

फ़तावा रिज़विया, भाग दो

[दायां कॉलम] अल-मुख्तार में अल्लामा ग़ज़्ज़ी (तन्वीर अल-कंज के लेखक) के हाशिये में कुनियाह के हवाले से है कि "रकियाह" का हुक्म कुएं जैसा है। और अल-फ़वाइद से है कि यदि दबे हुए मटके (हुब्ब) का अधिकांश हिस्सा ज़मीन के अंदर हो तो वह कुएं की तरह है। अद्दुर्र में कहा गया: इसके आधार पर सहरीज (हौज) और बड़े मटके(ज़ीर) से कुएं की तरह पानी निकाला जाएगा, इस शोध को ग़नीमत समझें।[1] शामी ने कहा: 'रकियाह' आम बोलचाल में उस कुएं को कहते हैं जिसमें बारिश का पानी जमा होता है; अतः यह सहरीज के अर्थ में है। उन्होंने कहा: यह सहरीज (1) के बारे में स्वीकार्य है, लेकिन मटके के बारे में नहीं, क्योंकि यह कुएं के नाम से बाहर है, भले ही इसका अधिकांश हिस्सा ज़मीन में दबा हो। यह न तो पारंपरिक रूप से और न ही भाषाई रूप से कुआं है। अल-फ़वाइद में जो है, वह अल-बदाइ, अल-काफी आदि के सामान्य कथनों के विपरीत है। जैसा कि हमने पहले मुक़द्दसी[2] से उद्धृत किया है, इसके और सहरीज के बीच स्पष्ट अंतर है। संक्षेप में। मैं कहता हूँ: यह बहुत अच्छा है, लेकिन हौज और सहरीज के बीच का अंतर स्पष्ट नहीं होता। क्योंकि (3) हाथ का पानी तक न पहुँच पाना कुएं या सहरीज की परिभाषा का हिस्सा नहीं है। बल्कि कुआं, जैसा कि उल्लेख किया गया है, 'बअर' से है जिसका अर्थ है खोदना, या जमा करना। इसके पानी का पास या दूर होना ज़मीन और मौसम के अनुसार बदलता रहता है। नम ज़मीन और बारिश के मौसम में...

[बायां कॉलम] और दुर्रे-मुख्तार में अल्लामा ग़ज़्ज़ी के तन्वीर अल-कंज के हाशिये में कुनियाह के हवाले से है कि रकियाह का हुक्म कुएं जैसा है। अल-फ़वाइद से उल्लेख है कि यदि दबे हुए बर्तन का अधिकांश हिस्सा ज़मीन के अंदर हो, तो उसे कुएं की तरह माना जाता है। अद्दुर्र में कहा गया: इससे यह समझा जाता है कि सहरीज और बड़े मटके से कुएं की तरह पानी निकाला जाएगा। इस लेखन को आशीर्वाद समझें। शामी ने कहा कि आम बोलचाल में रकियाह उस कुएं को कहते हैं जहां बारिश का पानी जमा होता है, जिसका अर्थ है कि यह सहरीज का अर्थ रखता है। उन्होंने आगे कहा: यह सहरीज के लिए स्वीकार्य है लेकिन मटके के लिए नहीं, क्योंकि 'बअर' (कुआं) शब्द उस पर लागू नहीं होता। इसका अधिकांश हिस्सा ज़मीन में दबा और धंसा हुआ होता है, इसलिए न तो भाषाई रूप से और न ही पारंपरिक रूप से यह कुआं है। अल-फ़वाइद में जो उल्लेख किया गया है वह अल-बदाइ, अल-काफी आदि के निरपेक्ष कथनों का खंडन करता है। जैसा कि हमने मुक़द्दसी से उद्धृत किया है, इसके और सहरीज के बीच स्पष्ट अंतर है। संक्षेप में। (अनुवादक) मैं कहता हूँ: यह एक अच्छी बात है, लेकिन यह हौज और सहरीज के बीच के अंतर को स्पष्ट नहीं करता क्योंकि पानी तक

हाथ का न पहुँच पाना कुएं के अर्थ में शामिल नहीं है, और न ही सहरीज के अर्थ में। जैसा कि हमने उल्लेख किया है, 'बअर' (कुआं) 'बअर' से बना है, जिसका अर्थ खोदना है, या इसका अर्थ जमा करना है, और इसके पानी का पास या दूर होना ज़मीन और मौसम के अंतर पर निर्भर करता है।

[मध्य नोट] नोट: उनके पिछले कथन "ऐन, हुब्ब और हौज के विपरीत" का संदर्भ देते हुए। लेखक से (म)। यह उनके पिछले कथन "ऐन, हुब्ब और हौज के विपरीत" को संदर्भित करता है। अनुवादक से (त)।

[पाद टिप्पणियाँ] [1] दुर्रे-मुख्तार, कुएं का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली (1/39) [2] रद्दे मुहतार, कुएं का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी (1/59)

पृष्ठ 257/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[دایاں کالم - عربی متن] المختار عن حواشی العلامة الغزی صاحب التنویر علی الکنز عن القنیة ان حکم الرکیة کالبئر وعن الفوائدان الحب المطمورا کثرہ فی الارض کالبئر قال فی الدر وعلیه فالصهریج والزیر الکبیر ینزح منه کالبئر فاغتنم هذا التحریر۱۸ اه قال الشامی الرکیة في العرف بئر یجتمع ماؤها من المطرفهی بمعنی الصهریج قال وهذا مسلم في الصهریج (۱) دون الزیر لخروجه عن مسمی البئر وکون اکثرہ مطموراای مدفوناً فی الارض لا یدخله فیه لا عرفا ولا لغة ومافي الفوائد معارض بأطلاق ما مر عن البدائع والکافی وغیرهما وفرق ظاهر بینه وبین الصهریج کما قدمنا عن المقدسی۲۸ اه مختصرا۔ اقول: هذا من الحسن بمکان (۲) لکن عه لا یظهر التفرقة بین الحوض والصهریج فان (۳) عدم وصول الید الی الماء لیس داخلا فی مسمی البئر ولا الصهریج وانما البئر کما ذکر من البأر بمعنی الحفر او منه بمعنی الادخار ویختلف قرب مائها و ابتعادہ باختلاف الارض والفصول ففی الاراضی الندیة وابان المطر

[بایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] اور درمختار میں حواشی علامہ غزی صاحب تنویر کنز پر قنیہ سے ہے کہ "رکیہ" کا حکم کنویں کا سا ہے، اور فوائد سے ہے کہ حب مطمور کا اکثر حصہ اگر زمین کے اندر ہو تو وہ کنویں کی طرح ہے در میں فرمایا اس سے معلوم ہوتا ہے کہ صہریج اور زیر کبیر سے کنویں کی طرح پانی نکالا جائیگا اس تحریر کو غنیمت جانواھ شامی نے فرمایا کہ رکیہ عرف میں اس کنویں کو کہتے ہیں جس میں بارش کا پانی اکٹھا ہو جاتا ہے تو یہ صہریج کے معنی میں ہے، فرمایا یہ صہریج میں مسلم ہے زیر میں نہیں، کیونکہ اس پر بئر کا اطلاق نہیں ہوتا ہے، اور اس کا بیشتر حصہ زمین میں مدفون اور دھنسا ہوا ہوتا ہے لہٰذا وہ عرفاً اور لغۃً کنواں نہیں ہے، اور جو فوائد میں ہے وہ بدائع اور کافی وغیرہ کے اطلاق کے معارض ہے اور اس میں اور

صہریج میں واضح فرق ہے جیسا کہ ہم نے مقدسی سے نقل کیا اھ مختصرا۔ (ت) میں کہتا ہوں یہ ایک اچھی بات ہے لیکن اس سے حوض اور صہریج میں فرق ظاہر نہیں ہوتا کیونکہ پانی تک ہاتھ کا نہ پہنچ سکنا کنویں کے مفہوم میں شامل نہیں ہے اور نہ صہریج کے مفہوم میں ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا بئر، بائر سے ہے جس کے معنی کھودنے کے ہیں، یا بمعنی ذخیرہ کرنے کے ہیں، اور اس کے پانی کا قریب و بعید ہونا زمین اور موسموں کے اختلاف سے

[درمیانی نوٹ] عہ ناظرا الی قولہ السابق بخلاف العین والحب والحوض اہ منہ (م) جو اس کے قول سابق بخلاف العین والحب والحوض اہ منہ (ت)

[حواشی] 1 درمختار، فصل في البئر، مجتبائی دہلی (۱/۳۹) 2 رد المحتار، فصل في البئر، مصطفی البابی (۱/۵۹)

Fatawa Razawiyya, Volume II It (water level) gets very close, especially near large rivers, to the extent that we have seen wells whose water can be reached by hand. When floods flow, they overflow and become level with the ground; these are called 'Choya' in Hindi. Reservoirs are often deep, such that even when they are half-filled or slightly more, hands cannot reach their water. But when they are full, the hands can reach. The same is true for a large 'Zeer' (large jar). A 'Sahreej' is nothing but a reservoir where water collects, as I saw in my copy of Al-Qamus, which has a commentary in Taj al-Arus, and similarly in Mukhtar al-Razi. In Al-Surah, 'Sahreej' is the opposite, meaning a small water cistern. Regarding what you mentioned from Al-Qamus that it is a large reservoir where water collects, this too is nothing more than a reservoir, except for the specification of being large. A reservoir is a reservoir, whether small or large. Undoubtedly, even if a 'Sahreej' is deep, the valley fills it when it flows, and you see it overflowing with pure water. Dhu al-Rummah said: With thirsty heads and pounding chests, The camels partake of sips from the reservoirs. (Thin-waisted noble women are hydrated in this way, like thirsty camels drink the remaining water of the reservoirs). Since camels sip from it with their lips, why wouldn't hands reach its waters? Al-Allama Al-Maqdisi only leans towards distinguishing between the 'Hubb' (large jar) and the 'Sahreej' due to the manifest difficulty in emptying, washing, and drying the 'Sahreej' like a well, unlike the 'Zeer'. His statement 'especially one that holds a thousand' points to this, as you have known.

1. Al-Surah, Chapter 'Jeem', Section 'Saad', Majidi Press Kanpur, p. 88.

फ़तावा रज़विया, खंड II यह (पानी का स्तर) बहुत निकट हो जाता है, विशेष रूप से बड़ी नदियों के पास, यहाँ तक कि हमने ऐसे कुएँ देखे हैं जिनका पानी हाथों से निकाला जा सकता है। जब बाढ़ आती है, तो वे (कुएँ) भर जाते हैं और ज़मीन के बराबर हो जाते हैं; इन्हें हिंदी में 'चोया' कहा जाता है। हौज़ अक्सर गहरे होते हैं, यहाँ तक कि जब वे आधे या उससे थोड़ा अधिक भर जाते हैं, तो हाथ उनके पानी तक नहीं पहुँच पाते। लेकिन जब वे भर जाते हैं, तो हाथ पहुँच जाते हैं। यही हाल बड़े 'ज़ीर' (मिट्टी के बड़े बर्तन) का है। 'सहरीज' केवल एक हौज़ है जिसमें पानी इकट्ठा होता है, जैसा कि मैंने अल-क़ामूस के अपने संस्करण में देखा है, और ताज अल-अरूस में इसकी व्याख्या है, और मुख़्तार अर-राज़ी में भी यही है। अल-सुराह में, 'सहरीज' इसके विपरीत है, जिसका अर्थ है पानी का एक छोटा हौज़। जहाँ तक उस बात का संबंध है जो आपने अल-क़ामूस के हवाले से कही कि यह एक बड़ा हौज़ है जिसमें पानी जमा होता है, यह भी एक हौज़ ही है, बस बड़े होने की शर्त के साथ। हौज़ तो हौज़ ही है, चाहे छोटा हो या बड़ा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सहरीज चाहे कितना ही गहरा हो, वादी (नदी का बहाव) उसे भर देती है, और जब वह भर जाता है तो आप उसे स्वच्छ जल के साथ बहते हुए देखते हैं। ज़ुल-रुम्मा ने कहा है: प्यासी गर्दनों और धड़कते दिलों के साथ, प्यासे ऊँट हौज़ों से घूँट भरते हैं। (पतली कमर वाली अशराफ़ औरतें इस तरह सैराब होती हैं जैसे प्यासे ऊँट हौज़ों के बक़िया पानी को पीते हैं)। जब ऊँट अपने होठों से इसमें से घूँट भरते हैं, तो हाथ इसके पानी तक क्यों नहीं पहुँच सकते? अल्लामा अल-मक़दसी 'हुब्ब' और 'सहरीज' के बीच अंतर करने की ओर झुकते हैं क्योंकि कुएँ की तरह सहरीज को खाली करने, धोने और सुखाने में स्पष्ट कठिनाई होती है, जो कि 'ज़ीर' के मामले में नहीं है। उनकी यह उक्ति 'विशेष रूप से वह जो एक हज़ार समाए' इसी ओर इशारा करती है, जैसा कि आप जान चुके हैं।

1. अल-सुराह, अध्याय 'जीम', अनुभाग 'साद', मजीदी प्रेस कानपुर, पृ. 88.

فتاوی رضویہ، جلد ثانی یقترب جدا سیما بقرب الانہار الکبار حتی رأینا من الآبار ما ینال ماؤھا بالایدی واذا سالت السیول تَرَعَّتْ واستوت بالارض وھی التی تسمی بالھندیۃ چویًا والحیاض کثیرا ما تکون بعیدۃ الغور . حتی اذا ملئت الی قدر النصف اوازید منہ قلیلا لا تصل الایدی الی مائھا واذا امتلأت وصلت وکذلك الزیر الکبیر ، وما الصھریج الاحوضا یجتمع فیہ الماء کما رأیتہ فی نسختی القاموس وعلیھا شرح فی تاج العروس ومثلہ فی مختار الرازي وفی الصراح صھریج بالعکس حوض چہ اب 1اھـ وعلی ما اثر تم عن القاموس ھو الحوض الکبیر یجتمع فیہ الماء و ھذا ایضاً لا یزید علی الحوض الا بقید الکبر و الحوض حوض صغرا و کبر و لاشك ان الصھریج وان بعد قعرہ یملؤہ الوادي اذاسال فتراہ یتدفق بماء سلسال وقد قال ذو الرمۃ۔ ہوتا ہے چنانچہ تر زمینوں اور بارش کے موسم میں بہت قریب ہوتا ہے خاص طور پر بڑی بڑی نہروں کے قریب، یہاں تک کہ ہم نے بعض کنویں ایسے دیکھے جن میں سے ہاتھ سے پانی نکالا جاسکتا ہے اور سیلاب کے موسم میں تو یہ کنویں منہ تک بھر جاتے ہیں ہندی میں اس کو "چویا" کہتے ہیں اور کسی حوض کی گہرائی زیادہ ہوتی ہے، یہاں تک کہ جب وہ آدھے بھر جائیں یا اس سے زائد تب بھی ان کے پانی تک ہاتھ نہیں پہنچ پاتا ہے ، جب بھر جاتے ہیں تب ہاتھ پہنچتا ہے اور یہی حال بڑے زیر کا ہے ، اور صہریج بڑے حوض کو کہتے ہیں جس میں پانی اکٹھا ہو جاتا ہے ، میرے قاموس کے نسخہ میں یہی ہے اور تاج العروس میں اس کی شرح ہے ، اور یہی چیز مختار الرازی میں ہے اور صراح میں ہے صہریج بالکسر پانی کا چھوٹا حوض اھ اور جس کو تم نے جو قاموس کے حوالہ سے ذکر کیا ہے کہ صہریج بڑا حوض ہے جس میں پانی جمع ہوتا ہے اور یہ بھی حوض ہی ہے ، صرف بڑا ہوتا ہے ، اور حوض تو حوض ہی ہوتا ہے خواہ بڑا ہو یا چھوٹا ، اور اس میں شک نہیں کہ صہریج خواہ کتنا ہی گہرا ہو اس کو وادی بھرتی ہے، جب وہ بھر جاتا ہے تو اس سے پانی اچھل کر نکلتا ہے۔

صوادي الهام والاحشاء خافقة تناول الهيم ارشاف الصهاريج ذوالرمہ نے کہا ہے :۔ صوادي الهام والاحشاء خافقة تناول الهيم ارشاف الصهاريج (پتلی کمر والی اشراف عورتیں اس طرح سیراب ہوتی ہیں جیسے پیاسے اونٹ حوضوں کے بقیہ پانی کو پیتے ہیں) فاذا كانت الابل ترتشف ارشافها بشفاهها فما بال الايدى لا تصل الى مياهها. والعلامة المقدسي انما يميل الى التفرقة بين الحب والصهريج بالحرج البين فى تفريغ الصهاريج وغسلها ونشفها كالبئر بخلاف الزير واليه يشير قوله لا سيما الذى يسع الوفا اذا علمت توجب اونٹ اپنے ہونٹوں سے حوض سے پانی پیتے ہیں تو ہاتھ پانی تک کیوں نہیں پہنچتے ہیں ،

1 الصراح باب الجيم فصل الصاد مطبع مجيدى كانپور ص ۸۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Right Column - Urdu Translation/Explanation of Arabic text] And Imam al-Maqdisi distinguishes between a 'Hubb' (large vessel) and a 'Saharrij' (cistern). He states that emptying a cistern involves great difficulty; similarly, washing and drying them is also difficult, just like a well. This is contrary to a 'Zeer' (small pot). He hinted at this in his statement: 'especially that in which a Wafa (a specific measure) can fit.' Once you have understood this, it should be known that if we were to limit ourselves in this matter to what the two great scholars, Allama Qasim and Allama al-Bahr, and many of their successors among the prominent scholars claimed—that 'used water' (musta'mal) is only that which has come into contact with the body—then we would not have needed to command the drawing out of any water at all. This is because the portion that touches the body is far less than the remaining water, so its purifying property (tahuriyat) would not be lost unless it was tested [by being overcome]. However, this contradicts the explicit texts (nusoos) of the Imams of the school (Madhhab) as transmitted in the reliable books, and their consensus (ijma') is upon this. Therefore, returning to the school's position is mandatory. At this point, a disagreement appeared regarding whether it is treated like a well or like a pot (zeer). We acted upon what was easier during times of difficulty, by either letting it flow or ordering the emptying of the majority of it where there is no difficulty, so that it becomes like flowing water or its absolute components become greater. A consensus suffices for its purifying status. This is the research we have stated. All praise belongs to Allah, from Him, for Him, and to Him. This is how the research ought to be. Allah, the Glorified and Exalted, is the Granter of success. The research we mentioned regarding the issue of flowing water is the same as in 'Radd al-Muhtar', and we have mentioned it in several places in our Fatawa. (T)

[Left Column - Original Arabic Text] This being known, if we had limited ourselves in the matter to what the two great scholars Qasim and al-Bahr claimed, followed by many of the prominent scholars who came after them—that 'used water' is only that which has come into contact with the body—we would not have needed to command the drawing out of anything at all. This is because the contact part is much less than the remainder, so the purifying quality is not stripped away until it is overcome. However, it contradicts the texts of the Imams of the school transmitted in the reliable books, their consensus upon it being established. Thus, it was necessary to return to the school's position. A disagreement occurred whether it is like a well or like a pot. We acted upon what was easier in times of hardship, and by flowing or

emptying the majority where there is no hardship, so that it becomes like flowing water or absolute water in the majority of its parts. By consensus, parts are sufficient for purification. This is the research we relied upon. Praise be to Allah, from Him, by Him, and to Him. Thus should research be. Allah, Glorified and Exalted, is the Master of success. Regarding what we mentioned about the issue of flowing water, its detailed research is in 'Radd al-Muhtar', and we have mentioned it in various places in our Fatawa.

[Bottom Paragraph - Urdu] As for Zaid's claim that if people enter [the water] consecutively it becomes impure, its sheer falsity is evident. According to the narration where 'used water' is considered impure, the water would become impure the very first time. However, according to the correct and reliable position of the school, it will not become impure even if entered a million times.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] और अल्लामा मक़दिसी 'हुब्ब' और 'सहरीज' के बीच अंतर करते हैं। वह कहते हैं कि हौज को खाली करने में बहुत कठिनाई होती है, इसी तरह उन्हें धोना और सुखाना भी मुश्किल है, जैसे कि कुआँ। इसके विपरीत 'ज़ीर' (मिट्टी का छोटा बर्तन) है। उन्होंने अपने इस कथन से इसी ओर इशारा किया है: 'विशेष रूप से वह जिसमें एक वफ़ा समा सके।' जब आपने यह जान लिया तो अब यह मालूम होना चाहिए कि यदि हम इस मसले में अल्लामा क़ासिम और अल्लामा बहर और उनके अनुयायियों की तरह केवल इसी पर संतोष करते कि 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त पानी) केवल वही है जो शरीर के संपर्क में आया हो, तो हमें कुछ भी पानी निकालने का आदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि शरीर को छूने वाला पानी शेष पानी की तुलना में बहुत कम होता है, इसलिए उसकी शुद्धता (तहूरियत) तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक कि वह उस पर हावी न हो जाए। लेकिन यह मज़हब के इमामों के उन नुसूस (स्पष्ट ग्रंथों) के विरुद्ध है जो प्रामाणिक पुस्तकों में उद्धृत हैं और इसी पर उनका इज्मा (आम सहमति) है। इसलिए मज़हब की ओर लौटना अनिवार्य है। इस समय यह मतभेद प्रकट हुआ कि क्या यह कुएँ की तरह है या ज़ीर की तरह? हमने कठिनाई के समय जो आसान था उस पर अमल किया, यानी उसे बहा देने या जहाँ कठिनाई न हो वहाँ उसके अधिकांश हिस्से को खाली करने का आदेश दिया, ताकि वह बहते पानी की तरह हो जाए या उसके पूर्ण अंश अधिक हो जाएँ। उसकी शुद्धता के लिए इज्मा पर्याप्त है। यह वह शोध है जो हमने बयान किया। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, उसी से, उसी के लिए और उसी की ओर है। शोध इसी तरह होना चाहिए। अल्लाह सुब्हानहू व तआला सफलता का दाता है। इजरा (बहाने) के मसले पर हमने जो शोध बयान किया है वही 'रद्दुल मुह्तार' में भी है और हमने अपने फ़तावा में कई स्थानों पर इसका उल्लेख किया है। (त)

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] यह जानकर, यदि हम इस मामले में केवल उसी तक सीमित रहते जो दो महान विद्वानों क़ासिम और अल-बहर ने दावा किया था, और उनके बाद आने वाले कई प्रमुख विद्वानों ने उसका अनुसरण किया—कि 'प्रयुक्त पानी' केवल वही है जो शरीर के संपर्क में आया है—तो हमें बिल्कुल भी कुछ भी निकालने का आदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। ऐसा इसलिए है क्योंकि संपर्क वाला हिस्सा शेष की तुलना में बहुत कम है, इसलिए शुद्धिकरण की गुणवत्ता तब तक नहीं छीन ली जाती जब तक कि वह अभिभूत न हो जाए। हालाँकि, यह विश्वसनीय पुस्तकों में प्रसारित मज़हब के इमामों के ग्रंथों के विपरीत है, जिन पर उनकी आम सहमति स्थापित है। इस प्रकार,

मज़हब की स्थिति पर लौटना आवश्यक था। इस बारे में असहमति हुई कि क्या यह कुएँ की तरह है या बर्तन की तरह। हमने कठिनाई के समय जो आसान था उस पर अमल किया, और बहाव द्वारा या जहाँ कठिनाई नहीं है वहां बहुमत को खाली करके, ताकि वह बहते पानी की तरह या अपने अधिकांश हिस्सों में पूर्ण पानी की तरह हो जाए। आम सहमति से, शुद्धिकरण के लिए हिस्से पर्याप्त हैं। यह वह शोध है जिस पर हमने भरोसा किया। अल्लाह की स्तुति हो, उसी से, उसी के द्वारा और उसी की ओर। शोध इसी प्रकार होना चाहिए। अल्लाह, महिमामय और उच्च, सफलता का स्वामी है। बहते पानी के मुद्दे के बारे में हमने जो उल्लेख किया है, उसका विस्तृत शोध 'रद्द अल-मुह्तार' में है, और हमने अपने फ़तावा में विभिन्न स्थानों पर इसका उल्लेख किया है।

[निचला पैराग्राफ - उर्दू] जहाँ तक ज़ैद के इस दावे का प्रश्न है कि यदि लोग लगातार पानी में प्रवेश करें तो वह अपवित्र हो जाएगा, तो उसकी सरासर असत्यता स्पष्ट है। उस रिवायत के अनुसार जहाँ 'प्रयुक्त पानी' को अपवित्र माना जाता है, पानी पहली ही बार में अपवित्र हो जाएगा। हालाँकि, मज़हब की सही और विश्वसनीय स्थिति के अनुसार, यह दस लाख बार प्रवेश करने पर भी अपवित्र नहीं होगा।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم] اور علامہ مقدسی "حب" اور "صبرتج" میں فرق کرتے ہیں، وہ فرماتے ہیں کہ صبارج کو خالی کرنے میں بہت حرج ہوتا ہے اسی طرح ان کو دھونا اور سکھانا بھی مشکل ہے جیسے کنواں، بخلاف "زیر" کے، اور اسی طرف انہوں نے اپنے اس قول سے اشارہ کیا ہے کہ "خاص طور پر وہ جس میں "وفا" سما سکے ، جب آپ نے یہ جان لیا تو اب معلوم ہونا چاہئے کہ ہم اگر مسئلہ میں علامہ قاسم اور بحر اور ان کے پیروکاروں کی طرح صرف اسی پر اکتفاء کرتے کہ مستعمل صرف وہی ہے جو بدن سے ملاقی ہو، تو ہمیں کچھ پانی نکالنے کا حکم دینے کی ضرورت نہ تھی کیونکہ جو ملاقی ہے وہ بہت ہی کم ہوتا ہے بہ نسبت باقی کے تو طہوریت اس وقت تک سلب نہ ہوگی جب تک کہ آزمایانہ جائے لیکن یہ ائمہ مذہب کے نصوص کے خلاف ہے جو کتب معتمدہ میں منقول ہیں اور اسی پر اُن کا اجماع ہے تو مذہب کی طرف رجوع لازم ہے اور اس وقت اختلاف ظاہر ہوا ہے در میان اس کے کہ آیا یہ کہ کنویں کی طرح ہے یا زیر کی طرح ہے اور ہم نے جو ایسر تھا اس پر عمل کیا حرج کے جاری کرنے کے وقت اور اکثر کے خالی کرنے کا حکم اس جگہ دیا جہاں کوئی حرج نہ ہو، تاکہ وہ جاری ہو جائے یا مطلق کے اجزاء زیادہ ہوں اس کی طہوریت کیلئے اجماع کافی ہے یہ وہ تحقیق ہے جو ہم نے بیان کی۔ تمام تعریف اللہ کی اس سے اسی کیلئے ہے، تحقیق کو یہی لائق تھا، اللہ سبحان بلند توفیق کا والی ہے، ہم نے اجراء کے مسئلہ کی جو تحقیق بیان کی ہے وہی رد المحتار میں ہے اپنے فتاوی میں ہم نے بہت جگہ ذکر کیا ہے۔ (ت)

[بایاں کالم] هذا فاعلم انالو اقتصرنا فی المسألة علی ما زعمه العلامتان قاسم والبحر وتبعه کثیر ممن جاء بعده من الاعلام ان المستعمل لیس الامالاقی البدن لم نحتج الی الامر بنزح شیئ اصلا لان الملاقي

اقل بكثير من الباقي فالطهورية لم تسلب حتى تُحلب لكنه خلاف نصوص ائمة المذهب المنقول في الكتب المعتمدة اجماعهم عليه فوجب الرجوع الى المذهب واعترى ح الخلاف بين انه كالبئر او كالزير فعملنا بالايسر عند الحرج وبالاجراء او تفريغ الاكثر حيث لاحرج كى يصير جاريا او المطلق اكثراجزاء، وبإجماع يجزئ في الطهور اجزاء، فهذا تحقيق ما عولنا عليه، والحمد لله ومنه واليه، هكذا ينبغى التحقيق والله سبحانه وتعالى ولى التوفيق، وما ذكرنا من مسألة الاجراء فتحقيقه في رد المحتار وقد ذكرناه في مواضع من فتاونا۔

رہا زید کا کہنا کہ کوئی شخص متواتر داخل ہو تو پلید ہو جائے گا اس کا محض غلط ہونا تو ظاہر ہے کہ جس روایت پر مستعمل پانی نجس ہے پانی ایک ہی بار سے پلید ہو جائے گا ور صحیح و معتمد مذہب پر لاکھ بار سے بھی پلید نہ ہوگا

Fatawa Razawiya Volume Second Yes, the views of Allama Zain Qasim and Allama Zain bin Nujaym differed on this issue: whether all the water in a small pool becomes 'Musta'mal' (used/ritually impure for reuse) if many people bathe in it. The first sought clarification from the second, and the second from the first.

Author's Opinion: To me, the second view is more evident (at). However, their basis is on the idea that only the portion of water that touches the body becomes 'Musta'mal'. Thus, how can all the water become 'Musta'mal' by one person's bathing? Yes, if many people bathe, the suspicion arises that if the total portion of water that touched all their bodies is equal to or more than the remaining water, then all of it would become 'Musta'mal'. But that idea is not correct. The reliable and correct doctrine is that if water has not reached the limit of 'Ab-e-Kaseer' (large body of water), it all becomes 'Musta'mal' even if just a corner of a fingernail is immersed in it without necessity. This consensus has been cited in several books. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most perfect.

Problem 31: Sent by Dr. Muhammad Waiz al-Haq Sahib, Sadullahpuri, Post Office Khusropur, District Patna, 2nd Rabi' al-Akhir 1322 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this matter: if rainwater collects in a ditch, and that ditch is more than ten yards long and wide but is near a settlement, and the settlement's water flows into it, is it permissible to perform Ghusl (ritual bath) and Wudu (ablution) in it or not?

Answer: The Answer: A ditch whose dimensions are 'Deh dar Deh' (ten by ten), meaning multiplying length and width gives one hundred hands (units of measure), for example, 10 hands long and 10 hands wide, or 20 hands long and 5 hands wide, or 50 hands long and 2 hands wide. And in all these cases, its depth should be such that when water is taken in cupped hands, the bottom should not be revealed. Now, there are two scenarios: If first, it was filled with rainwater, and then water from houses, of all kinds, even if only impure, came and mixed with it, the water will remain pure as long as there is no change in its color, smell, or taste due to specific impurity. In this case, Wudu and Ghusl are permissible. And if the settlement's water settled in it first, then first it must be seen whether that water was impure or not. If it was not impure, then it is obvious. For example, it rained and washed various waters from houses into this ditch, and there was no change in its color, taste, or smell due to impurity. Then it became pure along with that flowing water, for 'Indeed, flowing water purifies one part with another' (because flowing water purifies some impure

water). (t) Or if there was impure water in the ditch previously... and now some pure water flowed in such that before the flow stopped, it reached 'Deh dar Deh' size. This is also a form of purification because as long as it was flowing, it was not subject to impurity, and when it stopped, it was at a time when it had become 'Deh dar Deh' and was already under the rule of flowing water. Therefore, at no time did it accept the quality of impurity. And if the water was impure, whether because the impurity...

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय खंड) हाँ, अल्लामा ज़ैन क़ासिम और अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम की नज़र इस मुद्दे पर अलग-अलग थी कि क्या बहुत से लोगों के नहाने से छोटे हौज (तालाब) का सारा पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा या नहीं। पहले ने दूसरे से और दूसरे ने पहले से स्पष्टीकरण मांगा।

लेखक का मत: मैं कहता हूँ: मेरे नज़दीक दूसरा विचार अधिक स्पष्ट है (त)। लेकिन उनका आधार इस विचार पर है कि पानी का वही हिस्सा मुस्तअमल होता है जो शरीर से स्पर्श करता है। तो फिर एक आदमी के नहाने से सारा पानी मुस्तअमल कैसे हो सकता है? हाँ, अगर बहुत से लोग नहाएं तो यह संदेह होता है कि यदि उन सबके शरीरों से स्पर्श करने वाला पानी का कुल हिस्सा शेष पानी के बराबर या उससे अधिक हो जाए, तो सब मुस्तअमल हो जाएगा। लेकिन वह विचार सही नहीं है। विश्वसनीय और सही मत यही है कि जो पानी 'आब-ए-कसीर' (बड़ी जलराशि) की सीमा तक न पहुँचा हो, वह एक आदमी के नहाने तो क्या, नाखून का एक कोना भी बिना ज़रूरत डूब जाने से सब मुस्तअमल हो जाता है। और कई किताबों में इस पर इज्मा (आम सहमति) उद्धृत किया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, उसकी शान महान हो, सबसे पूर्ण और सबसे मज़बूत है।

मसला ३१: प्रेषक डॉ. मुहम्मद वाइज़ अल-हक़ साहब सादुल्लाहपुरी, डाकखाना खुसरोपुर, जिला पटना, २ रबी अल-आख़िर १३२२ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि यदि बारिश का पानी किसी खंदक (खाई) में जमा हो जाए और वह खंदक दस गज़ से ज़्यादा लंबी-चौड़ी हो, लेकिन बस्ती के पास हो और बस्ती का पानी उसमें जाता हो, तो क्या उसमें ग़ुस्ल (स्नान) और वज़ू करना जायज़ है या नहीं?

जवाब: अल-जवाब: जिस खंदक का क्षेत्रफल 'दह दर दह' (दस गुणा दस) हो, यानी लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल सौ हाथ प्राप्त हो, उदाहरण के लिए दस १० हाथ लंबाई और दस १० हाथ चौड़ाई, या बीस २० हाथ लंबाई और पाँच ५ हाथ चौड़ाई, या पचास ५० हाथ लंबाई और दो २ हाथ चौड़ाई। और इन सभी स्थितियों में उसकी गहराई इतनी हो कि अंजलि में पानी लेने से ज़मीन न दिखे। तो अब इसमें दो स्थितियाँ हैं: अगर पहले उसमें बारिश का पानी भर गया, उसके बाद घरों का पानी हर तरह का, चाहे केवल नापाक (अशुद्ध) ही आकर मिला, तो जब तक विशेष नजासत (गंदगी) के कारण उसके रंग या गंध या स्वाद में परिवर्तन न आए, पानी पाक रहेगा और उससे वज़ू और ग़ुस्ल जायज़ है। और अगर पहले बस्ती का पानी उसमें आकर जमा हो गया, तो पहले यह देखना है कि वह

पानी नापाक भी था या नहीं। अगर नापाक नहीं था, तो स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, बारिश हुई और मकानों के विभिन्न जलों को अपने साथ बहाकर इस खंदक में लाई और उसके रंग, स्वाद, गंध में से किसी में भी नजासत के कारण परिवर्तन नहीं आया, तो वह नापाक भी उसके साथ बहकर पाक हो गए क्योंकि "बहता पानी इसके एक हिस्से को दूसरे से पाक कर देता है" (त)। या पहले से खंदक में नापाक पानी था... और अब कोई पाक पानी ऐसा बहकर आया कि बहाव रुकने से पहले वह दह दर दह हो गया। यह भी पवित्रता का एक रूप है कि जब तक वह बह रहा था, नजासत स्वीकार करने योग्य नहीं था और जब रुका तो उस समय वह दह दर दह होकर जारी पानी के हुक्म में आ चुका था। इसलिए किसी भी समय उसने नजासत का गुण स्वीकार नहीं किया। और अगर पानी नापाक था, चाहे इस तरह कि नजासत ने...

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی ہاں علامہ زین قاسم و علامہ زین بن نجیم کی نظر اس میں مختلف ہوئی کہ بکثرت آدمیوں کے نہانے سے حوضِ صغیر کا سب پانی مستعمل ہو جائے گا یا نہیں، اول نے ثانی اور ثانی نے اول کا استبصار کیا۔

اقول: عندی الاظھر ھو الثانی (میرے نزدیک اظہر ثانی ہے۔ت) مگر اس کی بنا ان کے اس خیال پر ہے کہ پانی کا جو حصہ بدن سے ملا اتنا ہی مستعمل ہوتا ہے تو ایک آدمی کے نہانے سے سارا پانی کیونکر مستعمل ہو سکتا ہے ہاں بہت سے نہائیں تو یہ شبہ جاتا ہے کہ پانی کے جتنے حصے ان سب کے بدن سے ملے وہ باقی پانی کے برابر یا اس سے زائد ہو جائیں تو سب مستعمل ہو جائیگا مگر وہ خیال صحیح نہیں مذہبِ معتمد و صحیح یہی ہے جو پانی آبِ کثیر کی حد کو نہ پہنچا ہو وہ ایک آدمی کا نہانا کیا ناخن کا ایک کنارہ بے ضرورت ڈوب جانے سے سب مستعمل ہو جاتا ہے وقد نقلوا علیہ الاجماع فی غیر ما کتاب واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۳۱: مرسلہ ڈاکٹر محمد واعظ الحق صاحب سعد اللہ پوری ڈاکخانہ خسروپور ضلع پٹنہ ۲ ربیع الآخر ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ بارش کا پانی اگر کسی خندق میں جمع ہو جائے اور وہ خندق دس گز سے لمبا چوڑا زیادہ ہو مگر بستی کے قریب ہو اور اس میں بستی کا پانی جاتا ہو اس میں غسل کرنا اور وضو بنانا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب : جس خندق کی مساحت دہ در دہ ہے یعنی طول و عرض کے ضرب دینے سے سو ہاتھ حاصل ہوں مثلاً دس ۱۰ ہاتھ طول ہو دس ۱۰ ہاتھ عرض یا بیس ۲۰ ہاتھ طول ، پانچ ۵ ہاتھ عرض یا پچاس ۵۰ ہاتھ طول، دو ۲ ہاتھ عرض اور ان سب صورتوں میں اس کا گہراؤ اتنا ہو لپ میں پانی لینے سے زمین نہ کھل جائے تو اب اس میں دو صورتیں ہیں اگر پہلے اس میں بارش کا پانی بھر

گیا اس کے بعد گھروں کا پانی پاک ناپاک ہر طرح کا خواہ صرف ناپاک ہی آکر ملا تو جب تک خاص نجاست کے سبب اس کے رنگ یا بو یا مزے میں تغیر نہ آئے پانی پاک رہے گا اور اس سے وضو و غسل جائز اور اگر پہلے بستی کا پانی اس میں آکر مستقر ہو گیا تو اولاً یہ نظر کرنا ہے کہ وہ پانی ناپاک بھی تھا یا نہیں اگر ناپاک نہ تھا جب تو ظاہر ہے مثلاً پانی برسا اور مکانوں کے ہر گونہ پانیوں کو اپنے ساتھ بہا کر اس خندق میں لایا اور اس کے رنگ، مزے، بو، کسی میں نجاست کے باعث تغیر نہ آیا تو وہ ناپاک بھی اس کے ساتھ بہہ کر پاک ہو گئے لان الماء الجاری یطھر بعضہ بعضاً کیونکہ جاری پانی بعض ناپاک پانی کو پاک کر دیتا ہے۔ ت) یا پہلے سے ناپاک پانی خندق میں تھا.....اور اب کوئی پاک پانی ایسا بہتا آیا کہ بہاؤ ٹھہرنے سے پہلے وہ دہ در دہ ہو گیا یہ بھی صورت طہارت کی ہے کہ جب تک بہ رہا تھا قابل نجاست نہ تھا اور ٹھہرا تو اس وقت کہ دہ در دہ ہو کر حکم جاری میں ہو چکا تھا لہٰذا کوئی وقت اس نے وصف نجاست قبول کرنے کا نہ پایا اور اگر پانی ناپاک تھا خواہ یوں کہ نجاست نے

Fatawa Razawiyya Volume II

...changed any mentioned attribute of flowing water, or that first purely impure water reached the trench, after which rainwater etc. kept coming into it little by little; as much as it mixed, it kept becoming impure. Or, initially pure water was in the trench in an area less than 'dah-dar-dah' (ten by ten cubits), and purely impure water entered it. Then there are two possibilities: if the rainfall was slight such that the water just mixed with the impure water and remained there, then it also became impure. And if the rain was heavy such that a large amount of water flowed in, filling the trench and causing it to overflow so that water spilled over the edges, then everything is now pure. And Allah Almighty knows best.

Problem 372: What do the scholars of the religion say about this issue: what is the measure of the Shari'i yard (Guz) in a 'dah-dar-dah' pond? Explain and be rewarded.

The Answer: Regarding the measurement of a large pond (Hawz-e-Kabeer) which is established as 'dah-dar-dah', there is a difference of opinion among the scholars (may Allah have mercy on them) on three sayings concerning the determination of the yard (Guz).

First Saying: The credible one is the 'Zira-e-Kirbas' (cloth cubit), which is also called the common cubit, meaning the yard used for clothes. Most have leaned towards this opinion, and it has been adopted in Durr-e-Mukhtar, Zahiriyya, Khulasa, Khizana, Maraqi al-Falah, Alamgiriyya etc. In Sharh-e-Zahidi, Tajnis, and Fatawa Kubra, then in Quhistani, then in Durr-e-Mukhtar, it was called chosen (mukhtar); in Nihaya, correct (sahih); in Hidaya, the one acted upon for fatwa (mufta bihi); and in Walwalji, most appropriate and expansive. Then (1) there was a difference in the estimation of the cloth cubit itself. Imam Walwalji fixed it at seven handfuls, each handful being 4 closed fingers, thus making the yard twenty-eight (28) fingers. In our region, this is more than nine (9) girahs and less than ten (10) girahs, i.e., 9-3/11 girahs. Nihaya, then Jami' al-Rumuz, then Durr-e-Mukhtar, and following Walwalji, Fazil Ibrahim Halabi in Sharh-e-Munyah restricted it to this. However, according to the majority of scholars, the cloth cubit is six (6) handfuls, each handful being four (4) closed fingers. The leaning of the face of the absolute investigator (Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) Kamaluddin Muhammad bin al-Humam is towards this. The same is quoted from numerous books in Tabyin and Bahr al-Ra'iq within Alamgiriyya. Therefore, in the preferred opinion, this yard consists of twenty-four (24) fingers, which is one hand, making it half a yard in our region.

Second Saying: The consideration is of the 'Zira-e-Masahat' (measurement cubit). Imam, the jurist of the soul, among the people of fatwa and preference, Imam Fakhruddin Qazi Khan Awzjandi (may Allah Almighty have mercy on him) declared this saying correct in Khaniyya and rejected the first saying. In Tahtawi's marginal notes on Maraqi al-Falah, the narration of a fatwa has also occurred on this, and certainly, in terms of evidence, it has strength. Different sayings have been reported regarding the estimation of this yard (1). In Mudmarat, it is fixed at seven handfuls, with one finger added to each handful, making a total of thirty-five fingers, which in our...

Footnote: This fatwa is from the remains of the old fatwas written by the author in his childhood. 12 (M)

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

...बहते पानी का कोई उल्लेखित गुण बदल दिया या यह कि पहले शुद्ध अशुद्ध पानी खाई (ख़ंदक़) में पहुँच गया उसके बाद बारिश आदि का पानी थोड़ा-थोड़ा उसमें आता गया, जितना मिला अशुद्ध होता गया। या पहले से शुद्ध पानी खाई में 'दह-दर-दह' (दस गुणा दस हाथ) से कम जगह में था, उस पर शुद्ध अशुद्ध पानी आया। तो इसमें फिर दो स्थितियाँ हैं: यदि बारिश थोड़ी हुई कि वह पानी उस अशुद्ध में मिलकर रह गया, तो वह भी अशुद्ध हो गया। और यदि बारिश ज़ोर से हुई कि प्रचुर मात्रा में पानी बहता आया जिसने इस खाई को भरकर उफ़ान दे दिया कि पानी किनारों से छलक गया, तो अब सब शुद्ध है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३७२: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि 'दह-दर-दह' हौज़ (तालाब) में शरीअत के गज़ की मात्रा क्या है? व्याख्या करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: बड़े हौज़ (हौज़-ए-कबीर) के माप के बारे में जो 'दह-दर-दह' निर्धारित हुआ है, विद्वानों (अल्लाह उन पर रहम करे) के बीच गज़ के निर्धारण में तीन कथनों पर मतभेद है।

पहला कथन: मान्य 'ज़िरा-ए-किरबास' (कपड़े का हाथ) है और इसी को 'ज़िरा-ए-आमा' कहते हैं यानी कपड़ों का गज़। अधिकांश का झुकाव इसी मत की ओर है और इसी को 'दुर्र-ओ-ज़हीरिया', 'ख़ुलासा', 'ख़ज़ाना', 'मराक़ी अल-फ़लाह' और 'आलमगीरिया' आदि में अपनाया गया है। 'शर्ह-ए-ज़िादी', 'तजनीस' और 'फ़तावा कुब्रा', फिर 'क़ुहिस्तानी', फिर 'दुर्रे मुख़्तार' में इसे 'मुख़्तार' (चुना हुआ) कहा गया; 'निहाया' में 'सहीह'; 'हिदाया' में 'मुफ़्ता बिही' (जिस पर फ़तवा दिया जाए) और 'वलवाल्जी' में 'अधिक उपयुक्त और व्यापक' कहा गया। फिर ख़ुद (१) 'ज़िरा-ए-किरबास' के अनुमान में मतभेद हुआ। इमाम वलवाल्जी ने इसे सात मुट्ठी निर्धारित किया, प्रत्येक मुट्ठी ४ अंगुल बंद, तो २८ अंगुल का गज़ हुआ। हमारे यहाँ के ९ गिरह से अधिक और १० गिरह से कम यानी ९-३/११ गिरह। 'निहाया' फिर 'जामे अल-रुमूज़' फिर 'दुर्रे मुख़्तार' और वलवाल्जी का अनुसरण करते हुए फ़ाज़िल इब्राहिम हलाबी ने 'शर्ह-ए-मुन्या' में इसी तक सीमित रखा। मगर विद्वानों के बहुमत के अनुसार 'ज़िरा-ए-किरबास' ६ मुट्ठी का है, प्रत्येक मुट्ठी ४ अंगुल बंद। और 'मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़' कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अल-हुमाम का झुकाव भी इसी ओर है। यही 'आलमगीरिया' में 'तब्ईन' और 'बह्र अल-राइक़' में अनेक पुस्तकों से उद्धृत है। अतः पसंदीदा कथन में यह गज़ २४ अंगुल का हुआ जो एक हाथ है, तो हमारे यहाँ का आधा गज़ ठहरा।

दूसरा कथन: माप का आधार 'ज़िरा-ए-मसाहत' है। इमाम, फ़क़ीह-उन-नफ़्स, अहल-ए-इफ़्ता और तर्जीह इमाम फ़ख़रुद्दीन क़ाज़ी ख़ान अौज़जंदी (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने 'ख़ानिया' में इसी कथन को सही ठहराया और पहले कथन का खंडन किया। 'तहातावी' हाशिया 'मराक़ी अल-फ़लाह' में इस पर भी फ़तवा होने की बात कही गई है, और निश्चित रूप से प्रमाण के आधार पर इसमें शक्ति है। इस गज़ (१) के अनुमान में विभिन्न कथन आए हैं। 'मुज़मरात' में सात मुट्ठी, प्रत्येक मुट्ठी के साथ एक अंगुल निर्धारित किया गया जिससे कुल पैंतीस अंगुल हमारे...

नोट: यह फ़तवा पुराने फ़तवों के अवशेषों में से है जो लेखक ने अपनी किशोरावस्था में लिखे थे। १२ (म)

पृष्ठ २६१ / ७११

بہتے پانی کا کوئی وصف مذکور بدل دیا یا یہ کہ پہلے خالص ناپاک پانی خندق میں پہنچ لیا اُس کے بعد بارش وغیرہ کا پانی تھوڑا تھوڑا اس میں آتا گیا جتنا ملا ناپاک ہوتا گیا یا پہلے سے پاک پانی خندق میں دہ در دہ سے کم جگہ میں تھا اس پر خالص ناپاک پانی وارد ہوا تو اس میں پھر دو صورتیں ہیں اگر بارش تھوڑی سی ہوئی کہ وہ پانی اس ناپاک میں مل کر رہ گیا تو وہ بھی ناپاک ہو گیا اور اگر بارش زور سے ہوئی کہ بکثرت پانی بہتا آیا جس نے اس خندق کو بھر کر ابال دیا کہ پانی کناروں سے چھلک گیا تو اب سب پاک ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۷۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حوض دہ در دہ میں گز شرعی کی مقدار کیا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: علماء رحمہم اللہ تعالیٰ کو درباره مساحت حوض کبیر کہ دہ در دہ قرار پایا ہے تعیین گز میں تین قول پر اختلاف ہے

قول اول: معتبر ذراع کر باس ہے اور اسی کو ذراع عامہ کہتے ہیں یعنی کپڑوں کا گز۔ اسی قول کی طرف اکثر کا رجحان رائے اور اسی کو درر و ظہیریہ و خلاصہ و خزانہ و مراقی الفلاح و عالمگیر یہ وغیرہما میں اختیار کیا اور شرح زاہدی و تجنیس اور فتاویٰ کبریٰ پھر قہستانی پھر درمختار میں اُسے مختار اور نہایہ میں صحیح اور ہدایہ میں مفتی بہ اور ولوالجی میں الیق و اوسع کہا۔ پھر خود (۱) ذراع کر باس کی تقدیر میں اختلاف واقع ہوا امام ولوالجی نے سات مٹھی قرار دیا ہر مٹھی چار ۴ انگل مضموم تو اٹھائیس ۲۸ انگل کا گز ہوا ہمارے یہاں کی نو ۹ گرہ سے زائد اور دس ۱۰ گرہ سے کم یعنی ۹-۳/۱۱ ۳ گرہ۔ اس قول پر نہایہ پھر جامع الرموز پھر درمختار اور

باتباع والوالجی فاضل ابرہیم حلبی نے شرح منیہ میں اقتصار کیا مگر جمہور علماء کے نزدیک ذراع کرباس چھ ۶ مٹھی کا ہے ہر مٹھی چار ۴ انگل مضموم اور اسی طرف رجحان روئے علامہ محقق علی الاطلاق کمال الدین محمد بن الہمام کا ہے اور یہی عالمگیریہ میں تبیین اور بحر الرائق میں کتب کثیرہ سے منقول پس قول راح میں یہ گز چوبیس ۲۴ انگل کا ہوا کہ ایک ہاتھ ہے تو ہمارے یہاں کا آدھ گز ٹھہرا۔

قول دوم: اعتبار ذراع مساحت کا ہے امام علامہ فقیہ النفس اہل الافتاء والترجیح امام فخر الدین قاضی خان اوز جندی رحمۃ اللہ تعالیٰ نے خانیہ میں اسی قول کی تصحیح اور قول اول کا رد کیا طحطاوی حاشیہ مراقی الفلاح میں اس پر بھی حکایت فتویٰ واقع ہوئی اور بیشک من حیث الدلیل اسے قوت ہے۔ اس گز (۱) کی تقدیر میں اقوال مختلفہ وارد ہوئے مضمرات میں سات مٹھی، ہر مٹھی کے ساتھ ایک انگل قرار دیا کہ مجموع پینتیس انگل ہمارے

عہ: یہ فتویٰ فتاوائے قدیمہ کے بقایا سے ہے جو مصنف نے اپنے صغر سن لکھے تھے ۱۲ (م)

Fatawa Ridawiyyah, Volume 2 From the yard (gaz), it was 33 knots and 3/4 out of 11. Allama Kirmani said seven fists, six ordinary fists and in the seventh, the thumb was spread out, so this also became approximately close to eleven knots. But both these views are rare (shadh). The view of the majority (jamhur), as stated in common books, is seven fists. Every fist has fingers spread out, meaning three and a half feet, which from this yard is a bit more than eighteen and a half knots, i.e., 18 and 3/4 knots out of 3.

Third view: In every city and region and in every era and time, the prevailing yard (gaz) is taken into account. In 'Muhit' this is called 'the most correct' (asah), in 'Nahr' it is called 'the most appropriate' (ansab), and in 'Kafi' also this has been adopted. But later scholars (muta'akhireen) reject this view and state it as extremely weak in terms of evidence, and it also appears to be so from a jurisprudential perspective.

[Table with Arabic on the left and Urdu translation/ explanation on the right]

Arabic Content: And these are the texts of the scholars in Al-Hidayah by Imam Burhan al-Din al-Marghinani (may his secret be sanctified). Some have estimated the area as ten by ten using the cloth-yard (dhira' al-kirbas) to provide ease for the people, and upon this is the fatwa. In 'Fath al-Qadir' by the verifying Imam, it is stated without restriction: "by the cloth-yard", which consists of six fists. No finger should be added over any fist. Now the question remains, is the standard yard for measurement (dhira' al-masahah) or the cloth-yard (dhira' al-kirbas), or is it according to the custom of each era and place in every time and place? There are different views on this. In 'Khaniyah' by Imam Fakhr al-Din (may Allah Almighty have mercy on him), the measurement yard is taken into account, not the cloth-yard; this is the correct view because the measurement yard is more appropriate for measured areas. In the commentary on 'Al-Munyah' by Allama Ibn Amir al-Haj, it is asked: is the cloth-yard the standard or the measurement yard? Some have gone towards the first view in 'Al-Hidayah' and the fatwa is on it.

Urdu Content: And these are the texts of the scholars. It is mentioned in 'Hidayah' by Burhan al-Din al-Marghinani: some have measured ten by ten with the cloth-yard (dhira' al-kirbas) so that there is ease for the people, and upon this is the fatwa. In 'Fath al-Qadir' it is written "with the cloth-yard"; this consists of six fists. No finger

should be added to any fist. Now the question remains whether the measurement yard is considered or the cloth-yard, or whether it is according to the custom of each era and place. There are various views on this. Imam Fakhr al-Din in 'Khaniyah' has taken the measurement yard into account, not the cloth-yard; this is correct because the measurement yard is more suitable for measured areas. In Allama Ibn Amir al-Haj's commentary on 'Munyah', it is asked whether the cloth-yard is considered or the measurement yard? Some have leaned towards the first view as in 'Hidayah' and the fatwa is on it. In 'Sharh Zahidi', it is stated that this is the chosen (mukhtar) view. Some have taken the second view. Qazi Khan said this is correct because the measurement yard...

Footnotes: 1. Hidayah, Chapter on the Well, Matba' Arabiyyah Karachi, 1/20 2. Fath al-Qadir, Chapter on the Well, Nuriyyah Ridawiyyah Sukkur, 1/70 3. Fatawa Khaniyah known as Qazi Khan, Chapter on Stagnant Water, Naval Kishore Lucknow, 1/4

फ़तावा रज़विया, जिल्द २ ग़ज़ से ११ में से ३३ और ३/४ गिरह हुआ। अल्लामा किरमानी ने सात मुश्त (मुट्ठी), छह मुश्त मामूली और सातवें में अंगूठा फैला हुआ बताया कि यह भी लगभग ग्यारह गिरह के करीब हुआ। मगर ये दोनों कौल शाज़ (दुर्लभ) हैं। जमहूर (बहुमत) का कौल, जैसा कि आम किताबों में वर्णित है, सात मुश्त है। हर मुश्त उंगलियाँ फैली हुई, यानी साढ़े तीन फीट, जो इस ग़ज़ से कुछ ऊपर साढ़े अठारह गिरह हुआ, यानी ३ में से १८ और ३/४ गिरह।

तीसरा कौल: हर शहर और क्षेत्र और हर दौर और समय में प्रचलित ग़ज़ का एतबार (विचार) किया जाता है। 'मुहीत' में इसी को असह् (सबसे सही) और 'नहर' में अनसब (सबसे उपयुक्त) कहा गया है और 'काफ़ी' में भी यही अपनाया गया है। लेकिन बाद के विद्वानों (मुताअक्खिरीन) ने इस कौल को खारिज कर दिया है और इसे प्रमाण के दृष्टिकोण से अत्यंत कमजोर बताया है, और फिकही (न्यायशास्त्र) दृष्टि से भी ऐसा ही प्रतीत होता है।

[तालिका: बाईं ओर अरबी पाठ और दाईं ओर उर्दू अनुवाद/व्याख्या]

अरबी सामग्री: और ये विद्वानों के नुसूस (ग्रंथगत प्रमाण) हैं। इमाम बुर्हानुद्दीन अल-मर्ग़ीनानी की 'हिदाया' में उल्लेख है: कुछ लोगों ने लोगों के लिए आसानी पैदा करने के वास्ते दस गुना दस की माप कपड़े वाले हाथ (ज़िरा-ए-किरबास) से की है, और इसी पर फ़तवा है। इमाम मुहक़्क़िक़ की 'फ़त्हुल कदीर' में बिना किसी शर्त के है: "कपड़े वाले हाथ से", यह छह मुश्त का होता है। किसी भी मुश्त पर कोई अतिरिक्त उंगली न जोड़ी जाए। अब सवाल यह है कि क्या पैमाइश वाला हाथ (ज़िरा-ए-मसाहत) मान्य है या कपड़े वाला हाथ (ज़िरा-ए-किरबास), या हर दौर और स्थान की उनकी प्रथा के अनुसार है? इसमें अलग-अलग कौल हैं। इमाम फ़ख़रुद्दीन (उन पर अल्लाह की रहमत हो) ने 'ख़ानिया' में पैमाइश वाले हाथ का एतबार किया है, कपड़े वाले का नहीं; यही सही है क्योंकि पैमाइश का हाथ मापी जाने वाली जगहों के लिए अधिक उपयुक्त है। अल्लामा इब्न अमीर अल-हाज की 'मुन्या' की शरह (व्याख्या) में है: क्या कपड़े वाले हाथ का एतबार है या पैमाइश वाले हाथ का? कुछ लोग पहले कौल की ओर गए हैं जैसा कि 'हिदाया' में है और इसी पर फ़तवा है।

उर्दू सामग्री: और ये विद्वानों के नुसूस हैं। बुर्हानुद्दीन मर्ग़ीनानी के'हिदाया' में उल्लेख है: कुछ ने तो पैमाइश 'दह दर दह' (१०x१०) कपड़े के ज़िरा से की है ताकि लोगों के लिए आसानी हो, और इसी पर

फ़तवा है। 'फ़त्हुल कदीर' में है "कपड़े वाले हाथ से", यह छह मुश्त का होता है, हर मुश्त पर उंगली अतिरिक्त न की जाए। अब रहा यह सवाल कि क्या पैमाइश का हाथ मान्य है या कपड़े का हाथ, या हर दौर और जगह में उनकी प्रथा के अनुसार है? इसमें विभिन्न मत हैं। इमाम फ़ख़रुद्दीन ने 'ख़ानिया' में पैमाइश वाले हाथ का एतबार किया है, कपड़े वाले का नहीं; यही सही है क्योंकि पैमाइश का हाथ मापी जाने वाली जगहों के लिए अधिक उपयुक्त है। अल्लामा इब्न अमीर अल-हाज की 'मुन्या' की शरह में है कि क्या कपड़े के हाथ का एतबार है या पैमाइश के हाथ का? कुछ लोग पहले मत की ओर गए हैं जैसा कि 'हिदाया' में है और इसी पर फ़तवा है, और 'शरह ज़ाहिदी' में है कि यही चुना हुआ (मुख़्तार) मत है। कुछ ने दूसरे मत को अपनाया है। क़ाज़ी खान ने कहा कि यही सही है क्योंकि पैमाइश का ग़ज़...

पाद टिप्पणियाँ: १. हिदाया, फ़स्ल फ़िल बिअर (कुएँ के बारे में अध्याय), मतबा अरबिया कराची, १/२० २. फ़त्हुल कदीर, फ़स्ल फ़िल बिअर, नूरिया रज़विया सुक्कुर, १/७० ३. फ़तावा ख़ानिया मारूफ़ क़ाज़ी खान, फ़स्ल फ़िल मा-इर्रराकिद (ठहरे हुए पानी के बारे में अध्याय), नवल किशोर लखनऊ, १/४

पृष्ठ २६२ / ७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی گز سے ۱۱- ۳/۴ ۳۳ گرہ ہوا علامہ کرمانی نے سات مشت چھ مشت معمولی اور ساتویں میں انگوٹھا پھیلا ہوا کہ یہ بھی تخمیناً گیارہ گرہ کے قریب ہوا مگر یہ دونوں قول شاذ ہیں قول جمہور کہ عامہ کتب میں مصرح سات مشت ہے ، ہر مشت نر انگشت کشادہ یعنی ساڑھے تین فٹ کہ اس گز سے کچھ اوپر ساڑھے اٹھارہ گرہ ہو یعنی ۱۸- ۳/۴ ۳ گرہ۔

قول سوم : ہر شہر و دیار و ہر عہد و زمانہ میں گز رائج کا اعتبار ہے محیط میں اسی کو اصح اور نہر میں انسب کہا اور کافی میں بھی یہی اختیار کیا مگر علمائے متاخرین اس قول کو رد کرتے اور من حیث الدلیل نہایت ضعیف بتاتے ہیں اور نظر فقہی میں معلوم بھی ایسا ہی ہوتا ہے،

[ٹیبل: بائیں طرف عربی متن اور دائیں طرف اس کی اردو تشریح/ترجمہ]

عربی متن: وهذه نصوص العلماء في الهداية للامام برهان الدين المرغيناني قدس سره الرباني بعضهم قدروا بالمساحة عشر في عشر بذراع الكرباس توسعة للامر على الناس وعليه الفتوى[1] وفي فتح القدير للامام المحقق على الاطلاق قوله بذراع الكرباس هو ست قبضات ليس فوق كل قبضة اصبع قائمة وهل المعتبر ذراع المساحة او ذراع الكرباس او في كل زمان ومكان[2] حسب عاداتهم اقوال وفي الخانية للامام فخر الدين رحمه الله تعالى يعتبر فيه ذراع المساحة لا ذراع الكرباس هو الصحيح لان ذراع المساحة بالممسوحات اليق[3] وفي شرح المنية للعلامة ابن امير الحاج هل المعتبر ذراع الكرباس او ذراع المساحة ذهب بعضهم الى الاول في الهداية وعليه

اردو متن: اور یہ علماء کے نصوص ہیں۔ برہان الدین مرغینانی کے ہدایہ میں مذکور ہے بعض نے تو پیمائش دہ در دہ کرباس کے ذراع سے کی ہے تاکہ لوگوں کیلئے فراخی ہو، اور اسی پر فتوی ہے، فتح القدیر میں ہے "بذراع الکرباس" یہ چھ مشت کا ہوتا ہے، ہر مشت پر انگلی زائد نہ کی جائے، اب رہا یہ سوال کہ معتبر ذراع مساحت ہے یا ذراع کرباس ہے یا ہر زمانہ و مقام میں ان کی عادت کے مطابق ہے اس میں مختلف اقوال ہیں، امام فخر الدین نے خانیہ میں ذراع مساحت کا اعتبار کیا ہے کرباس کا نہیں یہی صحیح ہے اس لئے کہ مساحت کا ذراع ممسوحات کے زیادہ لائق ہے۔ علامہ ابن امیر الحاج کی شرح منیہ میں ہے کہ آیا ذراع کرباس کا اعتبار ہے یا ذراع مساحت کا؟ کچھ لوگ پہلے قول کی طرف گئے ہیں جیسا کہ ہدایہ میں ہے اور اسی پر فتوی ہے، اور شرح زاہدی میں ہے یہی مختار ہے، اور بعض نے دوسرے قول کو لیا ہے قاضی خان نے کہا کہ یہی صحیح ہے کیونکہ مساحت کا گز

حواشی: 1 ہدایہ فصل فی البئر مطبع عربیہ کراچی ۲۰/۱ 2 فتح القدیر فصل فی البئر نوریہ رضویہ سکھر ۷۰/۱ 3 فتاویٰ خانیۃ المعروف قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۱/۴

Fatawa Razvia Volume Two

The fatwa and in the commentary of Az-Zahidi, which is the chosen view, and some have gone towards the second. Qazi Khan said it is the correct one because the yardstick of measurement (dhira' al-masaha) is more suited for measured things (mamsushat). And in Fatawa al-Walwaliji, when the large pond was estimated as ten yards by ten yards, the yardstick of cloth (dhira' al-kirbas) is considered, not the yardstick of measurement. It is seven fists, meaning seven handfuls, without an upright finger on each fist. Because the yardstick of measurement is seven fists with an upright finger on each fist. So the first is more suitable for expansion. End. The intended meaning of the upright finger is the height of the thumb as stated in Ghayat al-Bayan. So it appeared that the yardstick of cloth is shorter than the yardstick of measurement. For this reason, ease was provided to people by estimating with it. And it is narrated from Al-Muhit that in every time and place, their yardstick is considered, and this was followed in Al-Kafi 1. End. And in the large commentary of Ibrahim al-Halabi, the considered yardstick is the yardstick of cloth, which is seven fists only. This was the choice of Imam Ishaq bin Abi Bakr al-Walwaliji in his Fatawa because it is shorter, so it is easier. Qazi Khan chose in his Fatawa the yardstick of measurement, which is seven fists with an upright finger in the last fist. And it was said in every fist. Qazi Khan said because, meaning the pond estimated from measured things, so it was the yardstick of measurement...

...is more suitable for measured things. And in Fatawa Walwaliji it is mentioned that for a large pond which is ten by ten, the cloth yardstick is valid, not the measurement yardstick. It is seven fists in which there is no addition of a finger on each fist, because the measurement yardstick is seven fists in which there is an addition of one upright finger on each fist. Thus, the first one is more in line with ease. End. And by 'upright finger' is meant the height of the thumb, as mentioned in Ghayat al-Bayan. So it became known that the cloth yardstick is smaller than the measurement yardstick. For this reason, ease was created for people in the estimation of the yardstick. And it is narrated from Al-Muhit that in every era and every place, a separate yardstick will be considered. And Al-Kafi has also said this. End. And in Ibrahim Halabi's Sharh Kabir it is mentioned that the valid yardstick is the cloth yardstick which is seven fists only. And Imam Ishaq bin Abi Bakr Al-Walwaliji liked this in his Fatawa because since it is smaller, there will be ease in it. And Qazi Khan in his Fatawa called the measurement yardstick the chosen one, and it is seven fists with one upright finger in the last fist, and some said in every fist. Qazi Khan said,

meaning the pond which has been estimated belongs to measured things, so in it, estimating with the measurement yardstick will be more appropriate. And in Al-Muhit it is stated that the most correct view is that in every era and every place, the local yardstick will be valid.

---

1 Hilya

फ़तावा रज़विया खंड दो

फ़तवा और ज़हीदी की व्याख्या में, जो कि चुना हुआ विचार है, और कुछ दूसरे की ओर गए हैं। काज़ी खान ने कहा कि यह सही है क्योंकि माप का गज (ज़िरा अल-मसाहा) मापी गई वस्तुओं के लिए अधिक उपयुक्त है। और फ़तावा अल-वलवालिजी में, जब बड़े तालाब का अनुमान दस गज गुना दस गज लगाया गया था, तो कपड़े का गज (ज़िरा अल-किरबास) माना जाता है, न कि माप का गज। यह सात मुट्ठी है, यानी सात मुट्ठी, जिसमें प्रत्येक मुट्ठी पर खड़ी उंगली नहीं होती। क्योंकि माप का गज सात मुट्ठी है जिसमें प्रत्येक मुट्ठी पर एक खड़ी उंगली होती है। इसलिए पहला विस्तार के लिए अधिक उपयुक्त है। समाप्त। खड़ी उंगली का अभिप्रेत अर्थ अंगूठे की ऊंचाई है जैसा कि ग़ायत अल-बयान में कहा गया है। तो यह स्पष्ट हो गया कि कपड़े का गज माप के गज से छोटा होता है। इसी कारण से इसके साथ अनुमान लगाकर लोगों को आसानी प्रदान की गई। और अल-मुहीत से वर्णित है कि हर समय और स्थान पर, उनका गज माना जाता है, और इसका पालन अल-काफी 1 में किया गया था। समाप्त। और इब्राहिम अल-हलबी की बड़ी व्याख्या में, माना जाने वाला गज कपड़े का गज है, जो केवल सात मुट्ठी है। यह उनके फ़तावा में इमाम इशाक बिन अबी बक्र अल-वलवालिजी की पसंद थी क्योंकि यह छोटा है, इसलिए यह आसान है। काज़ी खान ने अपने फ़तावा में माप के गज को चुना, जो सात मुट्ठी है और अंतिम मुट्ठी में एक खड़ी उंगली है। और प्रत्येक मुट्ठी में कहा गया। काज़ी खान ने कहा क्योंकि, अर्थात मापी गई वस्तुओं से अनुमानित तालाब, इसलिए यह माप का गज था...

...मापी गई वस्तुओं के लिए अधिक उपयुक्त है। और फ़तावा वलवालिजी में उल्लेख है कि एक बड़े तालाब के लिए जो दस गुना दस है, कपड़े का गज मान्य है, माप का गज नहीं। यह सात मुट्ठी है जिसमें प्रत्येक मुट्ठी पर उंगली का कोई जोड़ नहीं होता है, क्योंकि माप का गज सात मुट्ठी होता है जिसमें प्रत्येक मुट्ठी पर एक खड़ी उंगली का जोड़ होता है। इस प्रकार, पहला वाला आसानी के साथ अधिक मेल खाता है। समाप्त। और 'खड़ी उंगली' से तात्पर्य अंगूठे की ऊंचाई है, जैसा कि ग़ायत अल-बयान में वर्णित है। तो यह ज्ञात हुआ कि कपड़े का गज माप के गज से छोटा है। इसी कारण से, गज के आकलन में लोगों के लिए आसानी पैदा की गई। और अल-मुहीत से वर्णित है कि प्रत्येक युग और प्रत्येक स्थान में, एक अलग गज माना जाएगा। और अल-काफी ने भी यही कहा है। समाप्त। और इब्राहिम हलबी की शरह कबीर में उल्लेख है कि मान्य गज कपड़े का गज है जो केवल सात मुट्ठी है। और इमाम इशाक बिन अबी बक्र अल-वलवालिजी ने अपने फ़तावा में इसे पसंद किया क्योंकि यह छोटा होने के कारण इसमें आसानी होगी। और काज़ी खान ने अपने फ़तावा में माप के

गज को चुना हुआ कहा, और यह अंतिम मुट्ठी में एक खड़ी उंगली के साथ सात मुट्ठी है, और कुछ ने हर मुट्ठी में कहा। काज़ी खान ने कहा, यानी वह तालाब जिसका अनुमान लगाया गया है, मापी गई वस्तुओं में से है, इसलिए इसमें माप के गज से अनुमान लगाना अधिक उचित होगा। और अल-मुहीत में कहा गया है कि सबसे सही विचार यह है कि हर युग और हर जगह में स्थानीय गज ही मान्य होगा।

---

1 हिल्या

पृष्ठ 263 का 711

الفتی وفی شرح الزاھدی وھو المختار وذھب بعضھم الی الثانی قال قاضی خان ھو الصحیح لان ذراع المساحۃ بالممسوحات الیق ،وفی فتاوٰی الولوالجی الحوض الکبیر لما کان مقدرا بعشرۃ اذرع فی عشرۃ اذرع فالمعتبر ذراع الکرباس دون المساحۃ وھی سبع مشتات ای سبع قبضات لیس فوق کل مشت اصبع قائمۃ لان ذراع المساحۃ سبع مشتات فوق کل مشت اصبع قائمۃ فالاول الیق للتوسع انتھی والمراد بالاصبع القائمۃ ارتفاع الابھام کما فی غایۃ البیان فظھران ذراع الکرباس اقصر من ذراع المساحۃ فبسبب ذلک وقع الترفیہ للناس بالتقدیر بھا و نقلوا عن المحیط انہ یعتبر فی کل زمان و مکان ذراعھم وعلیہ مشی فی الکافی 1 اھ و فی الشرح الکبیر لابراھیم الحلبی المعتبر فی الذراع ذراع الکرباس وھو سبع قبضات فقط وھو اختیار الامام اسحق بن ابی بکر الولوالجی فی فتاوٰہ لانہ اقصر فیکون ایسر واختار قاضیخان فی فتاوٰہ ذراع المساحۃ وھو سبع قبضات باصبع قائمۃ فی القبضۃ الاخیرۃ وقیل فی کل قبضۃ قال قاضی خان لانہ یعنی الغدیر المقدر من الممسوحات فکان ذراع المساحۃ

ممسوحات کے زائد لائق ہے، اور فتاوٰی ولوالجی میں ہے کہ بڑا حوض جو دہ در دہ ہوتا ہے اور اس میں معتبر کرباس کا ذراع ہے نہ کہ مساحت کا اور وہ سات مشت ہے ، جس میں ہر مشت پر ایک انگلی کا اضافہ نہ ہو، کیونکہ مساحت کا گز سات مشت ہے جس میں ہر ایک مشت پر ایک کھڑی انگلی کا اضافہ ہو، تو پہلا آسانی سے زیادہ مطابقت رکھتا ہے انتہی، اور کھڑی انگلی سے مراد انگوٹھے کی بلندی ہے، جیسا کہ غایۃ البیان میں ہے تو معلوم ہوا کہ ذراع کرباس ذراع مساحت سے چھوٹا ہے تو اسی سبب سے تقدیر ذراع میں لوگوں کیلئے آسانی ہوئی اور محیط سے نقل کیا ہے کہ ہر زمانہ اور ہر جگہ کا الگ گز معتبر ہوگا، اور کافی نے بھی یہی کہا ہے اھ اور ابراہیم حلبی کی شرح کبیر میں ہے کہ معتبر ذراع کرباس ہے جو سات مشت ہوتا ہے فقط، اور اسی

کو امام اسحق بن ابی بکر الولوالجی نے اپنے فتاویٰ میں پسند کیا ہے، کیونکہ وہ چھوٹا ہوتا ہے تو اسی میں آسانی رہے گی اور قاضی خان نے اپنے فتاویٰ میں ذراع مساحت کو مختار کہا ہے اور وہ سات مشت مع ایک کھڑی انگلی کے آخری مشت میں ہے اور بعض نے کہا کہ ہر مشت میں قاضی خان نے فرمایا یعنی تالاب جس کا اندازہ لگایا گیا ہے وہ ممسوحات سے ہے، تو اس میں ذراع مساحت سے اندازہ لگانا زائد مناسب ہوگا، اور محیط میں ہے اصح یہ ہے کہ ہر زمانہ اور ہر جگہ میں وہیں کا ذراع معتبر ہوگا۔

---

1 حلیہ

صفحہ 263 از 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

(Arabic Text) In it is more appropriate. In al-Muhit, the more correct view is that in every time and place, their cubit (dhira') is considered. The author of al-Kafi followed him, like the author of al-Nahr al-Faiq and others. This is strange and very far-fetched, until the end of what he said. In al-Bahr al-Raiq by the scholar Zain bin Nujaym al-Misri, it is stated that the scholars differed regarding the cubit into three opinions. In al-Tajnis, the chosen view is the cloth cubit (dhira' al-karpas). There is a disagreement regarding it; in many books, it is six fistfuls, and on top of each fistful, there is no standing finger, so it is twenty-four fingers, corresponding to the number of letters in 'La ilaha illallah Muhammad Rasulullah'. The meaning of 'standing finger' is the height of the thumb, as stated in Ghayat al-Bayan. In Fatawa al-Walwalajiyya, the cloth cubit is seven fistfuls, and on top of each fistful, there is no standing finger. In Fatawa Qadi Khan and others, the more correct view is the cubit of measurement (dhira' al-masaha), which is seven fistfuls, and on top of each fistful, there is one standing finger. In al-Muhit and al-Kafi, the more correct view is that in every time and place, their own cubit is considered, without referring to measurement or cloth. In al-Fatawa al-Hindiyya, the considered cubit is the cloth cubit; likewise in al-Zahiriyya, and the fatwa is based on this, as mentioned in al-Hidayah. It is the general cubit which is six fistfuls, meaning twenty-four fingers.

(Urdu Text) The author of Kafi and the author of Nahr al-Faiq etc. followed this, and it is very strange and extremely far-fetched. And in al-Bahr al-Raiq of Allama Zain bin Nujaym al-Misri, it is mentioned that there are three sayings regarding the cubit of the scholars. In Tajnis, it is written that the cloth cubit (dhira' karpas) is preferred, and there is disagreement about it. In several books, it is stated that it is equal to six fists in which there is no extra standing finger on each fist, so it is as if it is equal to twenty-four fingers, according to the number of letters of La ilaha illallah Muhammad Rasulullah. By 'standing finger' is meant the height of the thumb as in Ghayat al-Bayan. In Fatawa al-Walwalajiyya, it is said that the cloth cubit is seven fists without the addition of a standing finger. And in Fatawa Qadi Khan etc., it is stated that the most correct is that the measurement yard (masaha ka gaz) is seven fists with one standing finger. And in Muhit and Kafi, it is said that the most correct is that in every time and place, their own yard will be valid, there is no mention of measurement or cloth in it. And in Fatawa Hindiyya, the valid cubit is the cloth cubit, the same is in Zahiriyya, the fatwa is on this, it is the same in Hidayah and this is the common yard which consists of six fists, i.e., twenty-four fingers, the same is in Tabyin. In the Jam'

al-Rumuz of Fazil Quhistani, it is mentioned that there is a difference in the cubit. So in Muhit, it is stated that the most correct is that in every time and place, their own yard will be valid.

[1] Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Rules of Menstruation, Sohail Academy Lahore 1/989 [2] Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/76 Page 264 of 711

फतावा रज़विया, खंड द्वितीय

(अरबी पाठ) इसमें अधिक उपयुक्त है। मुहीत में है कि सबसे सही मत यह है कि हर समय और स्थान में उनका हाथ (ज़िरा) माना जाता है। काफ़ी के लेखक ने उनका अनुसरण किया, जैसे अल-नहर अल-फ़ायिक के लेखक आदि। यह विचित्र और बहुत दूर की बात है, उनकी कही बात के अंत तक। अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम अल-मिस्री की 'अल-बहर अल-रायिक' में है कि विद्वानों के हाथ (ज़िरा) के बारे में तीन मत हैं। 'तजनीस' में चुना गया मत कपड़े का हाथ (ज़िरा अल-करपास) है। इसके बारे में मतभेद है; कई पुस्तकों में है कि यह छह मुट्ठी है, और प्रत्येक मुट्ठी के ऊपर कोई खड़ी उंगली नहीं है, इसलिए यह चौबीस उंगलियां हैं, 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह' के अक्षरों की संख्या के अनुसार। खड़ी उंगली का अर्थ अंगूठे की ऊंचाई है जैसा कि 'ग़ायत अल-बयान' में है। 'फतावा अल-वलवालजिया' में, कपड़े का हाथ सात मुट्ठी है, प्रत्येक मुट्ठी के ऊपर कोई खड़ी उंगली नहीं है। 'फतावा क़ाज़ी खान' और अन्य में, सबसे सही मत माप का हाथ (ज़िरा अल-मसाहा) है, जो सात मुट्ठी है, प्रत्येक मुट्ठी के ऊपर एक खड़ी उंगली है। 'मुहीत' और 'काफ़ी' में, सबसे सही मत यह है कि हर समय और स्थान में उनका अपना हाथ माना जाता है, बिना माप या कपड़े का उल्लेख किए। 'फतावा हिंदिया' में, माना गया हाथ कपड़े का हाथ है; 'ज़हीरिया' में भी ऐसा ही है, और फतवा इसी पर आधारित है, जैसा कि 'हिदाया' में उल्लेखित है। यह सामान्य हाथ है जो छह मुट्ठी है, अर्थात चौबीस उंगलियां।

(उर्दू पाठ) काफ़ी के लेखक और नहर अल-फ़ायिक आदि के लेखक ने इसका अनुसरण किया है और यह बहुत विचित्र और अत्यंत दूर की बात है। और अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम अल-मिस्री की 'अल-बहर अल-रायिक' में है कि विद्वानों के हाथ (ज़िरा) के बारे में तीन मत हैं। 'तजनीस' में है कि कपड़े का हाथ (ज़िरा करपास) पसंदीदा है, और इसमें मतभेद है। कई पुस्तकों में है कि यह ऐसी छह मुट्ठियों के बराबर है जिनमें प्रत्येक मुट्ठी पर एक खड़ी उंगली अतिरिक्त न हो, तो यह मानो चौबीस उंगलियों के बराबर है, 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह' के अक्षरों की संख्या के अनुसार। और 'खड़ी उंगली' से तात्पर्य अंगूठे की ऊंचाई से है, जैसा कि 'ग़ायत अल-बयान' में है। और 'फतावा अल-वलवालजिया' में है कि कपड़े का हाथ सात मुट्ठी है बिना खड़ी उंगली के जोड़ के। और 'फतावा क़ाज़ी खान' आदि में है कि सबसे सही यह है कि माप का गज़ (मसाहत का गज़) सात मुट्ठी है एक खड़ी उंगली के साथ। और 'मुहीत' और 'काफ़ी' में है कि सबसे सही यह है कि हर समय और स्थान में उनका अपना गज़ मान्य होगा, इसमें माप या कपड़े का कोई उल्लेख नहीं है। और 'फतावा

हिंदिया' में है कि मान्य हाथ कपड़े का हाथ है, यही 'ज़हीरिया' में है, इसी पर फतवा है, 'हिदाया' में भी यही है और यह सामान्य गज़ है जो छह मुट्ठी यानी चौबीस उंगलियों का होता है, यही 'तबीन' में है। फ़ाज़िल क़ुहिस्तानी की 'जामे अल-रुमुज़' में है कि हाथ (ज़िरा) में मतभेद है। तो 'मुहीत' में है कि सबसे सही यह है कि हर समय और स्थान का अपना-अपना गज़ मान्य होगा।

[1] गुन्यातुल मुस्तमली, मासिक धर्म के नियमों का अध्याय, सोहेल अकादमी लाहौर 1/989 [2] अल-बहर अल-रायिक, पवित्रता की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/76 पृष्ठ 264 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

(عربی عبارت) فیه الیق، وفی المحیط والاصح ان یعتبر فی کل زمان ومکان ذراعهم وتبعه صاحب الکافی کصاحب النهر الفائق وغیره وهذا عجیب وبعید جدا الی آخر ما قال وفی البحر الرائق للعلامة زین بن نجیم المصری اختلف المشائخ فی الذراع علی ثلثة اقوال ففی التجنیس المختار ذراع الکرباس واختلف فیه ففی کثیر من الکتب انه ست قبضات لیس فوق کل قبضة اصبع قائمة فهی اربع وعشرون اصبعا بعدد حروف لا اله الا الله محمد رسول الله والمراد بالاصبع القائمة ارتفاع الابهام کما فی غایة البیان وفی فتاوی الولوالجی ان ذراع الکرباس سبع قبضات لیس فوق کل قبضة اصبع قائمة وفی فتاوی قاضي خان وغیره الاصح ذراع المساحة وهو سبع قبضات فوق کل قبضة اصبع قائمة وفی المحیط والکافی الاصح انه یعتبر فی کل زمان ومکان ذراعهم من غیر تعرض للمساحة والکرباس وفی الفتاوی الهندیة المعتبر ذراع الکرباس کذا فی الظهیریة وعلیه الفتوی کذا فی الهدایة وهی ذراع العامة ست قبضات اربع وعشرون اصبعا

(اردو عبارت) صاحب کافی اور صاحب نہر الفائق وغیرہ نے اس کی متابعت کی اور یہ بہت عجیب ہے اور نہایت بعید ہے، اور علامہ زین بن نجیم المصری کی بحرالرائق میں ہے کہ مشائخ کے ذراع کی بابت تین اقوال ہیں، تجنیس میں ہے کہ ذراع کرباس مختار ہے، اور اس میں اختلاف ہے، کئی کتب میں ہے کہ یہ ایسی چھ مشت کے برابر ہے جن میں ہر مشت پر ایک کھڑی انگلی زائد نہ ہو تو گویا یہ چوبیس انگشت کے برابر ہے لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ کے حروف کی تعداد کے مطابق اور کھڑی انگلی سے مراد انگوٹھے کی بلندی ہے جیسا کہ غایۃ البیان میں ہے اور فتاوٰی ولولاجی میں ہے کہ ذراع کرباس سات مشت بلا کھڑی انگلی کے اضافہ کے، اور فتاوٰی قاضی خان وغیرہ میں ہے اصح یہ ہے کہ مساحۃ کا گز سات مشت مع ایک کھڑی انگلی کے، اور محیط

اور کافی میں ہے کہ اصح یہ ہے کہ ہر زمان و مکان میں ان کا اپنا گز معتبر ہوگا، اس میں مساحہ اور کرباس کا کچھ ذکر نہیں، اور فتاویٰ ہندیہ میں ہے معتبر ذراع کرباس ہے، یہی ظہیر یہ میں ہے اسی پر فتویٰ ہے، ہدایہ میں یہی ہے اور یہ عام گز ہے جو چھ مشت یعنی چوبیس انگشت کا ہوتا ہے یہی تبیین میں ہے، فاضل قہستانی کی جامع الرموز میں ہے کہ ذراع میں اختلاف ہے، تو محیط میں ہے اصح یہ ہے کہ ہر زمان و مکان کا اپنا اپنا گز معتبر ہوگا۔

[1] غنیۃ المستملی فصل فی احکام الحیض سہیل اکیڈمی لاہور ۹۸۹/۱ [2] بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۶/۱ Page 264 of 711

Fatawa Razawiya Volume Two

Main Body Text: It is stated in al-Tabyin^1 ... and in Jami' al-Rumuz by al-Fazil al-Quhustani: Opinions differed regarding the cubit (dhra). In al-Muhit, the most correct view is the cubit of every place and time. In Fatawa Qazi Khan: the correct 'Dhra' al-Masaha' (area cubit) consists of seven fists, such that on each fist one finger is standing upright as in al-Walwalijiyya; or on the seventh fist, the finger is standing as in al-Kirmani; or one flat finger is placed each time as in Siyar al-Mudmarat. In al-Nihaya: the correct one is the 'Dhra' al-Kirbas' (cloth cubit), which is seven fists, each fist being four fingers, and this is the chosen (mukhtar) view^2 as in al-Kubra. In Durr al-Mukhtar by al-Fazil Ala-ud-Din al-Haskafi, based on al-Quhustani: the preferred cloth cubit is exactly seven fists. In its commentary^3 by al-Allamah al-Sayyid Ahmad al-Tahtawi: as for the area cubit, it is seven fists, with one standing finger above each fist.^4 In Radd al-Muhtar by al-Fazil al-Sayyid Muhammad Amin al-Shami regarding the saying "and the chosen is the cloth cubit": in al-Hidayah, the fatwa is based on it, and it was chosen in al-Durar, al-Zahiriyya, al-Khulasa, and al-Khizana. In al-Muhit and al-Kafi, it is stated that in every time and place, the people's cubit will be considered. In al-Nahr, it is mentioned that this is more appropriate. I say: but it was refuted in Sharh al-Munya, because the purpose of this estimation is to reach a predominant opinion (ghalaba-i-zann) that the impurity hasn't passed to the other side, and this thing is such that the difference in time and place makes no difference. Their saying that it is seven fists is in al-Walwalijiyya, and...

Footnotes: 1. Al-Hindiyya, Section on Still Water, Noorani Peshawar, 1/18 2. Jami' al-Rumuz, Explanation of Waters, Gunbad Iran, 1/289 3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/36 4. Al-Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter of Waters, Beirut, 1/108

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

मुख्य विषय वस्तु: तबीन^1 में इसी प्रकार है ... और फ़ाज़िल कुहुस्तानी की जामे अल-रुमूज़ में है: ज़िराअ (हाथ की लंबाई) के बारे में मतभेद है। मुहीत में है कि सबसे सही हर स्थान और समय का ज़िराअ है। फ़तावा काज़ी ख़ां में है: सही 'ज़िराअ मसाहत' (क्षेत्रफल मापने का हाथ) सात मुट्ठी है कि हर मुट्ठी पर एक उंगली खड़ी हो जैसा कि वलोवलजिया में है; या सातवीं मुट्ठी पर खड़ी उंगली हो जैसा कि किरमानी में है; या एक लेटी हुई उंगली हर बार जैसा कि सैर अल-मुज़मरात में है। और निहाया में है कि सही 'ज़िराअ किरबास' (कपड़ा नापने वाला हाथ) है और वो सात मुट्ठी है, हर मुट्ठी चार उंगली है और यही मुख्तार (पसंदीदा) है^2 जैसा कि कुबरा में है। फ़ाज़िल अलाउद्दीन हसकफ़ी ने दुर्रे मुख़्तार में बयान फ़रमाया और कुहुस्तानी में है कि पसंदीदा ज़िराअ किरबास है और वो सिर्फ़ सात मुट्ठी है। और इसके हाशिये (टीका)^3 में अल्लामा सैय्यद अहमद तहतावी ने फ़रमाया: ज़िराअ मसाहत सात मुट्ठी है, हर मुट्ठी पर एक खड़ी उंगली।^4 और सैय्यद मुहम्मद अमीन शामी ने रद अल-मुह्तार में फ़रमाया, उनका कथन "वल-मुख़्तार ज़िराअ अल-किरबास", और हिदाया में इसी पर फ़तवा है और दुरर, ज़हीरिया, ख़ुलासा, ख़ज़ाना में इसी को चुना गया है। मुहीत और काफ़ी में फ़रमाया कि हर ज़माने और स्थान में लोगों के गज़ (हाथ) का एतबार होगा, नह्र में है कि यही अनसब (अधिक उपयुक्त) है। मैं कहता हूँ, इसको शरह मुनिया में खंडित किया गया है कि इस अनुमान का उद्देश्य प्रबल धारणा (ग़लबा-ए-ज़न) प्राप्त करना है कि अशुद्धि दूसरी तरफ़ नहीं गई है, और यह चीज़ ऐसी है कि इसमें समय और स्थान के अंतर से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। उनका कथन कि वह सात मुट्ठी है, यह वलोवलजिया में है, और...

पाद लेख: 1. हिन्दिया, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नूरानी पेशावर, 1/18 2. जामे अल-रुमूज़, जल विवरण, गुंबद ईरान, 1/289 3. दुर्रे मुख़्तार, जल अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली, 1/36 4. तहतावी अल-दुर्र, जल अध्याय, बेरुत, 1/108

کذا فی التبیین[1] اھ وفی جامع الرموز للفاضل القہستانی اختلف فی الذراع ففی المحیط الاصح ذراع کل مکان وزمان وفی فتاوی قاضی خان الصحیح ذراع المساحۃ وھی سبع قبضات واصبع قائمۃ فی کل مرۃ کما فی الولوالجی او المرۃ السابعۃ کما فی الکرمانی واصبیع موضوعۃ فی کل مرۃ کما فی سیرالمضمرات وفی النھایۃ الصحیح ذراع الکرباس وھی سبع قبضات کل قبضۃ اربع اصابع وھو المختار[2] کما فی الکبری وفی الدرالمختار للفاضل علاء الدین الحصکفی فی القہستانی والمختار ذراع الکرباس وھو سبع قبضات فقط[3] وفی حاشیتہ للعلامۃ السید احمد الطحطاوی واما ذراع المساحۃ فسبع قبضات فوق کل قبضۃ اصبع قائمۃ[4] وفی ردالمحتار للفاضل السید محمد امین الشامی قولہ والمختار ذراع الکرباس وفی الھدایۃ ان علیہ الفتوی واختارہ فی الدرر والظہیریۃ والخلاصۃ والخزانۃ وفی المحیط والکافی انہ یعتبر فی کل زمان و مکان ذراعہم قال فی النھر وھو الانسب قلت لکن ردہ فی شرح المنیۃ کہ مقصود اس تقدیر سے غلبہ ظن ہے اس امر کا کہ نجاست دوسری طرف نہیں گئی ہے، اور یہ چیز ایسی ہے کہ اس میں زمان و مکان کے اختلاف سے کوئی فرق نہیں پڑتا ہے، ان کا قول کہ وہ سات مشت ہے، یہ ولو الجیہ میں ہے، اور

فتاوٰی قاضی خاں میں ہے صحیح ذراع مساحۃ جو سات مشت ہے کہ ہر مشت پر ایک انگلی کھڑی ہو جیسا کہ ولو الجیہ میں ہے یا ساتویں مشت پر کھڑی انگلی ہو جیسا کہ کرمانی میں ہے یا ایک لیٹی ہوئی انگل ہر مرتبہ جیسا کہ سیر المضمرات میں ہے اور نہایہ میں ہے صحیح ذراع کر باس ہے اور وہ سات مشت ہے ، ہر مشت چار انگل ہے اور یہی مختار ہے جیسا کہ کبری میں ہے، اور فاضل علاء الدین حصکفی نے درمختار میں بیان فرمایا اور قہستانی میں ہے کہ پسندیدہ ذراع کر باس ہے اور وہ صرف سات مشت ہے، اور اس کے حاشیہ میں علامہ سید احمد طحطاوی نے

فرمایا ذراع مساحۃ سات مشت ہے ہر مشت پر ایک کھڑی انگشت، اور سید محمد امین شامی نے ردالمختار میں فرمایا ان کا قول والمختار ذراع الکرباس، اور ہدایہ میں اسی پر فتوی ہے اور درر ، ظہیریہ ، خلاصہ ، خزانہ میں اسی کو اختیار کیا ہے محیط اور کافی میں فرمایا کہ ہر زمان و مکان میں لوگوں کے گز کا اعتبار ہوگا، نہر میں ہے کہ یہی انسب ہے۔

1 ہندیہ فصل فی الماء الراکد نورانی پشاور ۱/۱۸ 2 جامع الرموز بیان المیاہ گنبد ایران ۲۸۹/۱ 3 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۳۶/۱ 4 طحطاوی علی الدر باب المیاہ بیروت ۱۰۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

That the purpose of this estimation is the predominance of opinion (ghalbat al-zann) regarding the absence of impurity, and that does not vary with the variation of times and places. His saying: 'and it is seven handfuls (qabdas)' - this is what is in al-Walwalijiyya. In al-Bahr, it is mentioned that in many books it is six handfuls etc. And by handful is meant four closed fingers - Nuh. I say: and it is close to the cubit of the arm (dhira' al-yad) because it is six handfuls and a span (shibr) and something, and that is two spans. (End of summary). In Maraqi al-Falah by the virtuous Shurunbulali: 'ten by ten by the common cubit (dhira' al-amma)'. (End of brief extract). In the commentary by the virtuous al-Tahtawi, he cited the author of al-Durr that the fatwa-given measurement is the surveyor's cubit (dhira' al-masaha) and it is larger than our cubit today. So ten by ten by our cubit today would be eight by eight. (End). (T)

I say: there is an oversight in this in several ways, and that is because the complete phrase of al-Durr is thus: 'In al-Quhistani and al-Mukhtar, it is the cloth-merchant's cubit (dhira' al-kirbas), and it is seven handfuls only.' Thus it would be eight by eight by the cubit of our time—eight handfuls and three fingers—according to the fatwa-given opinion of ten. (End). Firstly, they explicitly stated...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/124. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/124. 3. Maraqi al-Falah, Book of Purification, al-Amiriyya, Egypt, p. 16. 4. Hashiyat al-Tahtawi with Maraqi al-Falah, Book of Purification, al-Amiriyya, Egypt, p. 16. 5. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai, Delhi, 36/1.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

इस अनुमान का उद्देश्य यह है कि गंदगी की शुद्धता न रहने के बारे में प्रबल अनुमान (ग़लबा-ए-ज़न्न) हो जाए, और यह समय और स्थान के अंतर के साथ नहीं बदलता। उनका कथन: 'और यह सात मुट्ठी (क़ब्ज़ा) है' - यह अल-वलवालिजीया में है। अल-बहर में है कि बहुत सी किताबों में यह छह मुट्ठी है आदि। और मुट्ठी से तात्पर्य चार बंद उंगलियाँ हैं - नूह। मैं कहता हूँ: यह हाथ के हाथ (ज़िरा अल-यद) के करीब है क्योंकि यह छह मुट्ठी और एक बालिश्त (शिब्र) और कुछ अधिक है, और वह दो बालिश्त होता है। (संक्षिप्त सारांश समाप्त)। और फ़ाज़िल शुरुनबुलाली की मराक़ी अल-फलाह में है: 'आम लोगों के हाथ से दस गुणा दस (दह दर दह) हो'। (संक्षेप में समाप्त)। और फ़ाज़िल तहतावी के हाशिये में है कि दुर्र के लेखक ने उद्धृत किया है कि फ़तवा जिस पर आधारित है वह मापन वाला हाथ (ज़िरा अल-मसाहा) है और वह हमारे आज के हाथ से बड़ा है, तो आज के हिसाब से दस गुणा दस, आठ गुणा आठ हुआ। (समाप्त)। (त)

मैं कहता हूँ: इसमें कई कारणों से त्रुटि है, और वह इसलिए क्योंकि दुर्र का पूरा इबारत इस प्रकार है: 'कुहिस्तानी और मुख़्तार में किरबास (कपड़ा) का हाथ है और वह केवल सात मुट्ठी होता है।' तो हमारे समय के हाथ के हिसाब से वह आठ गुणा आठ होगा—आठ मुट्ठी और तीन अंगुल होगा—दस के फ़तवे वाले मत के अनुसार। (समाप्त)। पहले उन्होंने स्पष्ट किया...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/124. 2. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/124. 3. मराक़ी अल-फलाह, किताबुल तहारत, अल-अमीरिया, मिस्र, पृ. 16. 4. हाशियतुल तहतावी साथ मराक़ी अल-फलाह, किताबुल तहारत, अल-अमीरिया, मिस्र, पृ. 16. 5. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुस्तबाई दिल्ली, 36/1.

पृष्ठ 266 का 711

بأن المقصود من هذا التقدير غلبة الظن بعدم خلوص النجاسة وذلك لايختلف باختلاف الازمنة والامكنة قوله وهو سبع قبضات هذا مافی الولوالجية وفی البحر ان في كثير من الكتب انه ست قبضات الخ اه والمراد بالقبضة اربع اصابع مضمومة نوح اقول وهو قريب من ذراع اليد لانه ست قبضات وشبر وشيئ وذلك شبران[2] انتهی ملخصا وفی مراقی الفلاح للفاضل الشرنبلالی عشر في عشر بذراع العامة[3] انتهی مختصرا وفی حاشيته للفاضل الطحطاوی نقل صاحب الدر ان المفتی به ذراع المساحة وانه اكبر من ذراعنا اليوم فالعشر في العشر بذراعنا اليوم ثمان في ثمان[4] اه بحر میں ہے کہ بہت کتب میں چھ مشت ہے الخ اه اور مشت سے مراد چار بندھی ہوئی انگلیاں ہیں، نوح۔ میں کہتا ہوں یہ ہاتھ کے گز سے قریب ہے کیونکہ وہ چھ مشت اور تھوڑا زائد ہوتا ہے اور وہ دو بالشت ہوتا ہے انتہی ملخصا، اور شرنبلالی کی مراقی الفلاح میں ہے کہ عام لوگوں کے گز سے دہ در دہ ہو، انتہی مختصرا۔ اور فاضل طحطاوی کے حاشیہ میں ہے نیز صاحب در نے نقل کیا کہ مفتی بہ پیمائش والا گز ہے اور وہ ہمارے موجودہ گز سے بڑا ہے گویا آج کے اعتبار سے دہ در دہ آٹھ در آٹھ ہوا اھ (ت)

اقول: فيه سهوبوجوه وذلك ان عبارة الدر بتمامها هكذا فی القهستانی والمختار ذراع الكرباس وهو سبع قبضات فقط فيكون ثمانيا فی ثمان بذراع زماننا ثمان قبضات وثلاث اصابع علی القول المفتی به بالعشر[5] اه فأولا(۱) میں کہتا ہوں اس میں کئی وجوہ سے سہو ہے کیونکہ در کی پوری عبارت اس طرح ہے ایسا ہی قہستانی میں ہے اور مختار کرباس کا گز ہے اور وہ صرف سات مشت ہوتا ہے تو ہمارے زمانہ کے گز کے اعتبار سے آٹھ ضرب آٹھ، آٹھ مشت اور تین انگل ہوگا دس کے مفتی بہ قول پر اھ اوّلاً انہوں نے صراحت

1 ردالمحتار باب المياه مصطفى البابى مصر ۱/۱۲۴ 2 ردالمحتار باب المياه مصطفى البابى مصر ۱/۱۲۴ 3 مراقى الفلاح كتاب الطهارة الاميريه مصر ص ۱۶ 4 حاشية الطحطاوى مع مراقى الفلاح كتاب الطهارة الاميريه مصر ص ۱۶ 5 در مختار باب المياه مجتبائى دہلى ۳۶/۱

Fatawa Rizwia Volume 2

(Left Column) Explicit text chose the 'Karbas' (cloth) cubit over the measurement cubit. Secondly: (1) There is no mention in it of a fatwa (legal ruling) based on any of the cubit measurements. Rather, it states that the ruling is based on what the later scholars (mutakhireen) follow regarding the estimation of 'many' (kathir) as ten by ten. The Sayyid himself stated in the margins of 'Al-Durr' regarding the phrase 'upon the mufti-bi' (the issued fatwa): meaning what the later scholars have ruled, and you have already known the origin of the school. (End) Thirdly: One of his clearest errors —may Allah have mercy on him—is his statement that it is larger than our cubit. How can seven handbreadths be larger than eight (4)? And when ten by ten is equal to eight by eight, then everyone knows that this is larger, not that one (5). This is neither present in 'Al-Durr' nor in its source 'Al-Quhistani'. If he—may Allah have mercy on him—had said that 'Al-Durr' narrated that the chosen one is the 'Karbas' cubit and it is smaller etc., he would have been correct. Then, the calculation of 'Al-Durr' following its origin is that ten by ten is like eight by eight. Sayyid Tahtawi explained this by saying that ten multiplied by seven is seventy, and eight multiplied by eight is sixty-four handbreadths. And eight fingers multiplied by three are twenty-four fingers, which are six handbreadths, thus completing seventy handbreadths. (End)

Note: So it is in Tahtawi, and it is more correct to mention 'thulth' (three) in the masculine form. (Compiler)

(Right Column) ...it is that the 'Karbas' cubit will be taken, not the measurement cubit. Secondly, there is no mention of any fatwa-worthy saying regarding the quantity of the cubit in it. It only mentions that the fatwa-worthy saying is that of the later scholars, which is that 'Kathir' (large quantity) is called 'ten by ten' (dah dar dah). The Sayyid himself, in the margins of 'Al-Durr', said: their saying 'upon the mufti-bi' means according to the fatwa-worthy saying of the later scholars; and you already know the origin of the school. Thirdly: The biggest error in this is that they said regarding it that it is a yard (gaz) larger than the yard of our time. How can seven handbreadths be larger than eight handbreadths? When ten by ten is equal to eight by eight, every person can understand that this is larger, not that one. This is not found in 'Al-Durr', nor in its source 'Quhistani'. If he had stated that 'Al-Durr' narrated that the chosen yard is of 'Karbas' and it is small etc., then it would be correct. Then the calculation of 'Al-Durr' in following its source is that 'ten by ten' is such as 'eight by eight'. Sayyid Tahtawi described it thus: ten times seven is seventy, and eight times eight is sixty-four (meaning that many handbreadths), and if eight fingers are

multiplied by three, there are twenty-four fingers, which are six handbreadths. In this way, it is seventy handbreadths.

In Tahtawi, it is written like this, and mentioning 'thulth' (three) with masculine gender is more appropriate. (T)

(Footnotes) 1. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Water, Beirut 1/108 2. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Water, Beirut 1/108 Page 267 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द 2

(बायां कॉलम) स्पष्ट पाठ ने माप वाले हाथ (धरा) के बजाय 'करबास' (कपड़ा नापने वाला) हाथ को चुना है। दूसरा: (1) इसमें हाथ की मात्रा के बारे में किसी फतवा-योग्य कथन का उल्लेख नहीं है। बल्कि इसमें केवल इतना है कि फतवा-योग्य कथन वही है जिस पर बाद के विद्वान (मुताखिरीन) दस गुणा दस (दह दर दह) के अनुमान पर सहमत हैं। सैय्यद ने स्वयं 'अल-दुर्र' के हाशिए में 'अ़लल मुफ्ती बिही' वाक्यांश पर कहा है: यानी वह जिस पर बाद के विद्वानों ने फतवा दिया है, और आप मज़हब की जड़ पहले ही जान चुके हैं। (समाप्त) तीसरा: उनकी सबसे स्पष्ट गलतियों में से एक—अल्लाह उन पर रहम करे—उनका यह कहना है कि यह हमारे गज से बड़ा है। सात मुट्ठियां (क़ब्ज़ात) आठ से बड़ी कैसे हो सकती हैं (4)? और जब दस गुणा दस आठ गुणा आठ के बराबर हो, तो हर कोई जानता है कि यह बड़ा है, न कि वह (5)। इसका कोई अस्तित्व न तो 'अल-दुर्र' में है और न ही इसके मूल 'अल-कुहिस्तानी' में। यदि वे—अल्लाह उन पर रहम करे—यह कहते कि 'अल-दुर्र' ने यह नकल किया है कि चुनिंदा गज 'करबास' का है और वह छोटा होता है आदि, तो वे सही होते। फिर 'अल-दुर्र' की गणना उसके मूल के अनुसार यह है कि दस गुणा दस वैसा ही है जैसे आठ गुणा आठ। सैय्यद तहतावी ने इसे इस तरह समझाया कि दस गुणा सात सत्तर होते हैं और आठ गुणा आठ चौंसठ मुट्ठियां होती हैं। और आठ उंगलियों को तीन से गुणा करने पर चौबीस उंगलियां होती हैं, जो छह मुट्ठियां बनती हैं, इस तरह सत्तर मुट्ठियां पूरी होती हैं। (समाप्त)

नोट: 'तहतावी' में भी ऐसा ही है, और 'थुलथ' को पुल्लिंग रूप में उल्लेख करना अधिक उचित है। (लेखक)

(दायां कॉलम) ...है कि 'करबास' का हाथ लिया जाएगा न कि पैमाइश का हाथ। दूसरा, इसमें हाथ की मात्रा के बारे में किसी फतवा-योग्य कथन का ज़िक्र नहीं है। इसमें सिर्फ़ इतना है कि फतवा-योग्य कथन बाद के विद्वानों का कथन है, और वह यह है कि 'कसीर' (बड़ा) दस गुणा दस को कहते हैं। सैय्यद ने स्वयं हाशिए-ए-दुर्र में फ़रमाया: उनका कथन 'अ़लल मुफ्ती बिही', यानी बाद के विद्वानों के फतवा-योग्य कथन के अनुसार है; और मज़हब की असल तो आपको मालूम हो ही चुकी है। तीसरा: इसमें सबसे बड़ी चूक यह हुई है कि उन्होंने इसके बारे में कहा है कि यह हमारे ज़माने के गज से बड़ा गज है। सात मुट्ठियां आठ मुट्ठियों से बड़ी कैसे हो सकती हैं? और जब दस गुणा दस आठ गुणा आठ के बराबर हो, तो हर व्यक्ति समझ सकता है कि यह बड़ा है न कि वह। यह न तो 'अल-दुर्र' में पाया जाता है और न ही इसके मूल 'कुहिस्तानी' में। अगर वे यह फ़रमा देते कि 'दुर्र' ने यह नक़ल

किया है कि चुनिंदा गज 'करबास' का है और वह छोटा होता है आदि, तो सही बात होती। फिर 'दुर्र' का हिसाब इसके मूल के अनुसार यह है कि 'दह दर दह' (दस गुणा दस) वैसा ही है जैसा 'आठ गुणा आठ'। सैय्यद तहतावी ने इसे यूँ बयान किया कि दस गुणा सात सत्तर होते हैं और आठ गुणा आठ चौंसठ होते हैं (यानी इतनी मुट्ठी), और अगर आठ उंगलियों को तीन से गुणा किया जाए तो चौबीस उंगलियां होती हैं और यह छह मुट्ठियां होती हैं, इस तरह सत्तर मुट्ठी।

तहतावी में इसी तरह है और 'थुलथ' का तज़कीर (पुल्लिंग) के साथ ज़िक्र करना ज़्यादा मुनासिब है। (त)

(पाद टिप्पणियां) 1. तहतावी अ़लद दुर्रुल मुख़्तार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), बेरूत 1/108 2. तहतावी अ़लद दुर्रुल मुख़्तार, बाबुल मियाह, बेरूत 1/108 पृष्ठ 267/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم) صریح نصہ اختیار ذراع الکرباس دون المساحة وثانیا:(۱) لیس فیه ذکر الافتاء علی شیئ من تقادیر الذراع انما فیه ان المفتی به ما علیه المتأخرون من تقدیر الکثیر بعشر فی(۲) عشر وقد قال السید نفسه فی حواشی الدر قوله علی المفتی به ای الذي افتی به المتأخرون وقد علمت اصل المذهب ۱اه وثالثا من ابین (۳) سهوقوله رحمه الله تعالی انه اکبر من ذراعنا وکیف تکون سبع قبضات اکبر من ثمان (۴) واذکان عشر فی عشر بذاك ثمانیا فی ثمان بهذا فکل احد یعرف ان هذا اکبر لاذاك ولا(۵) وجود له فی الدر ولا في اصله القهستانی فلو قال رحمه الله تعالی نقل الدران المختار ذراع الکرباس وانه اصغر الخ لاصاب ثم حساب الدر تبعا لاصله ان عشرا فی عشر کثمان فی ثمان بینه السید ط بأن العشرة فی سبعة بسبعین والثمانیة فی مثلها باربعة وستین قبضة والثمانیة فی ثلثة عـه اصابع باربع وعشرین اصبعاوهی ست قبضات فتمت سبعین قبضة ۲اه عہ کذا فی ط والاصوب ثلث بالتذکیر اھ منہ(م)

(دایاں کالم) کی ہے کہ ذراع کرباس لیا جائے گا نہ کہ ذراع مساحت۔ ثانیاً اس میں ذراع کی مقدار کی بابت کسی مفتی بہ قول کا ذکر نہیں ہے اس میں صرف اتنا ہے کہ مفتی بہ قول متاخرین کا قول ہے، اور وہ یہ ہے کہ کثیر دہ در دہ کو کہتے ہیں، اور سید نے خود حواشی در میں فرمایا ان کا قول علی المفتی بہ، یعنی متاخرین کے مفتی بہ قول کے مطابق، اور اصل مذہب تو آپ کو معلوم ہو ہی چکا ہے۔ ثالثاً: سب سے بڑا سہو اس میں یہ ہوا ہے کہ انہوں نے اس کے بارے میں کہا ہے کہ ہمارے زمانہ کے گز سے بڑا گز ہے، اور سات مشت آٹھ مشت سے کیسے بڑا ہو سکتا ہے؟ اور جب دہ در دہ برابر ہے اس آٹھ در آٹھ کے، تو ہر شخص سمجھ سکتا ہے کہ یہ بڑا ہے نہ کہ وہ، اور در میں یہ نہیں پایا جاتا ہے، اور نہ اس کی اصل قہستانی میں، اگر وہ یہ فرمادیتے کہ دُر نے

یہ نقل کیا ہے کہ مختار کرباس کا گز ہے اور وہ چھوٹا ہوتا ہے الخ تو درست بات ہوتی ، پھر در کا حساب اس کی اصل کی متابعت میں یہ ہے کہ وہ دہ در دہ ایسا ہے جیسا کہ آٹھ در آٹھ، اس کو سید ط نے یوں بیان کیا کہ دس ضرب سات ستر ہوتے ہیں اور آٹھ ضرب آٹھ چونسٹھ ہوتے ہیں (یعنی اتنی مشت) اور آٹھ انگلیوں کو تین سے ضرب دیا جائے تو چوبیس انگلیاں ہوتی ہیں اور یہ چھ مشت ہوتی ہیں اس طرح ستر مشت طحطاوی میں اسی طرح ہے اور ثلث بتذکیر ذکر کرنا زیادہ مناسب ہے۔ (ت)

(حواشی) 1 طحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱۰۸/۱ 2 طحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱۰۸/۱ Page 267 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume Two

I say: It is a correct calculation with no ambiguity. In it, ten by ten was taken with a cubit (zira) that is seven fists (qabdah), and eight by eight with a cubit that is eight fists and three fingers. He explained the equality of one side to another, for in each case it equals seventy fists as mentioned, or two hundred and eighty fingers. This is because the first cubit consists of twenty-eight fingers and the second is thirty-five. When the first is multiplied by ten and the second by eight, the result is the same, which is 280. The equality of side to side necessarily implies the equality of square to square. However, Al-Sayyid 'Sh' (may Allah have mercy on him) refuted the author of Al-Durr by saying: 'It seems he quoted this from Al-Quhistani without testing it.' The correct version would be ten by eight. The explanation for this is that a fist equals four fingers, and the cubit of their time was eight fists and three fingers, making it thirty-five fingers. When ten is multiplied by eight according to this cubit's calculation, the result is eighty. Then, when that is multiplied by thirty-five, the result is two thousand eight hundred fingers. This is the amount of 'ten by ten' (deh darda) according to the linen yard (karbas) estimated at seven fists, because a cubit then is twenty-eight fingers, and ten by ten equals a hundred. So when twenty-eight is multiplied by a hundred...

Footnote: This is how it is in 'Sh' (Shami) and using the masculine form 'thaman' is more correct. (T)

Page 268 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

मैं कहता हूँ: यह एक सही गणना है जिसमें कोई संदेह नहीं है। इसमें 'दह दर दह' (दस बाई दस) को उस हाथ (ज़िरा) के अनुसार लिया गया है जो सात मुट्ठी (क़ब्ज़ा) हो, और आठ बाई आठ को उस हाथ के साथ जो आठ मुट्ठी और तीन उंगलियां हो। भुजा से भुजा की समानता को स्पष्ट किया गया है, क्योंकि प्रत्येक स्थिति में यह सत्तर मुट्ठी होगी जैसा कि बताया गया है, या दो सौ अस्सी उंगलियां। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहली माप अट्ठाईस उंगलियां है और दूसरी पैंतीस। जब पहली को दस से और दूसरी को आठ से गुणा किया जाता है, तो परिणाम एक ही होगा यानी दो सौ अस्सी। भुजा की भुजा से समानता अनिवार्य रूप से वर्ग की वर्ग से समानता सिद्ध करती है। लेकिन सैय्यद 'श' (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'दुर' पर यह कहते हुए आपत्ति की कि संभवतः उन्होंने इसे अल-क़ुहिस्तानी से उद्धृत किया है और इसे ध्यान से नहीं देखा। सही यह है कि यह 'दस गुणा आठ' होगा। इसका विवरण यह है कि एक मुट्ठी चार उंगलियों के बराबर होती है, और उनके समय का हाथ आठ मुट्ठी और तीन उंगलियों का था, इस प्रकार पैंतीस उंगलियां हुईं। जब दस को आठ में इस हाथ के हिसाब से गुणा किया जाए, तो परिणाम अस्सी होता है। फिर इसे पैंतीस से गुणा करने पर परिणाम दो हजार आठ सौ उंगलियां होगा। और कपास (करबास) के गज के हिसाब से 'दह दर दह' की मात्रा यही है, क्योंकि तब एक हाथ अट्ठाईस उंगलियों का होता है और दस बाई दस सौ होता है। तो जब अट्ठाईस को सौ से गुणा किया जाए...

पादलेख: शामी में इसी तरह है और पुल्लिंग 'थमान' के साथ प्रयोग करना बेहतर है। (त)

पृष्ठ २६८ / ७१।

اقول : وھو حساب حق صحیح لاغبار علیہ اخذ فیہ عشراً فی عشر بذراع ھو سبع قبضات و ثمانیاً فی ثمان بذراع ھو ثمان قبضات وثلث اصابع وبین مساواۃ ضلع لضلع فانہ علی کل سبعون قبضۃ کما بین او مائتان وثمانون اصبعاً لان الاول ثمان وعشرون اصبعاً والثانی خمس وثلثون واذا ضربت الاول فی عشرۃ والثانی فی ثمانیۃ اتحد الحاصل وھو . ومساواۃ الضلع للضلع یوجب بالضرورۃ مساواۃ المربع للمربع لکن السید ش رحمہ اللہ تعالٰی رد علی الدر بقولہ کأنہ نقل ذلک عن القہستانی ولم یمتحنہ وصوابہ فیکون عشراً فی ثمان وبیان ذلک ان القبضۃ اربع اصابع واذا کان ذراع زمانھم ثمان قبضات وثلاث اصابع یکون خمساً وثلاثین اصبعاً واذا ضربت العشر فی ثمان بذلک الذراع تبلغ ثمانین فاضربھا فی خمس وثلاثین تبلغ الفین وثمان مائۃ اصبع وھی مقدار عشر فی عشر بذراع الکرباس المقدر بسبع قبضات لان الذراع حینئذ ثمانیۃ عہ وعشرون اصبعاً والعشر فی عشر بمائۃ فاذا ضربت ثمانیۃ وعشرین فی مائۃ پوری ہوئیں۔ (ت) میں کہتا ہوں، بلاشبہ یہ حساب صحیح ہے، اس میں دہ درده کو اختیار کیا گیا ہے، ایک ذراع کے لحاظ سے جو سات مشت ہو، اور آٹھ در آٹھ کو ایسے ذراع کے ساتھ جو آٹھ مشت تین انگلی ہو، اور ایک ضلع کا دوسرے ضلع کے مساوی ہونا بیان کیا کیونکہ یہ ہر قول پر ستر مشت ہوگا جیسا کہ بیان کیا، یا دوسو اسی ۲۸۰ انگشت کیونکہ پہلا اٹھائیس انگشت ہے اور دوسرا پینتیس انگشت اور جب پہلے کو دس میں اور دوسرے کو آٹھ میں ضرب دیا جائے تو دونوں کا حاصل ایک ہی ہوگا یعنی دو سواسی، اور ایک ضلع کی مساواۃ دوسرے ضلع سے ایک مربع کی مساواۃ دوسرے مربع سے بالبداہۃ ثابت کرتی ہے لیکن سید "ش" نے در پر اپنے اس قول سے رد کیا، غالباً انہوں نے یہ قہستانی سے نقل کیا ہے اور اس کو بغور دیکھا نہیں، صحیح یہ ہے کہ "یہ ہو جائیگا دس ضرب آٹھ، اور اس کی تشریح یہ ہے کہ ایک مشت

چار انگشت ہوتی ہے، اور ان کے زمانہ کا ذراع آٹھ مشت تین انگشت تھا، اس طرح پینتیس انگشت ہوئیں اور جب دس کو آٹھ میں اس ذراع کے حساب سے ضرب دی جائے تو حاصل اسی ہوتا ہے، پھر اس کو پینتیس سے ضرب دی جائے تو حاصل دو ہزار آٹھ سو انگشت ہوگا، اور یہی مقدار دہ دردہ کی ہے کرباس کے گز سے، عہ کذا فی ش والاصوب ثمان بالتذکیر اہ منہ(م) | شامی میں اسی طرح ہے اور بہتر تذکیر کے ساتھ ثمان ہے۔ (ت)

Fatawa-e-Razawiyyah - Volume II

[Arabic Column] It reaches that amount, but according to what the commentator said, it does not reach that, because if you multiply eight by eight, it reaches sixty-four, and if you multiply it by thirty-five, it reaches two thousand two hundred and forty digits (asba'), and that is eighty cubits (dhira') by the cubit of cloth (kurbas), while the required is a hundred. So, what we said is correct, so understand. He pointed by saying "understand" to the rebuttal of 'T' in his aforementioned book at the beginning of the book.

I say: All of this is an oversight from him, may Allah Almighty have mercy on him. He was correct in two parts: first, that the cubit of their time was thirty-five digits, and second, that the cloth cubit estimated at seven fists is twenty-eight [digits]. Everything besides that is an explicit error. Firstly, what was ten by eight in their cubit is not two thousand eight hundred, but rather ninety-eight thousand digits, by placing the 'Ta' first, because in three hundred and fifty, and in two hundred and eighty, 350 * 280 = 98,000.

Secondly: (2) what was ten by ten by the mentioned cloth cubit is also not 2800, but rather seventy-eight thousand four hundred digits, by placing the 'Seen' first, because...

[Urdu Column] ...whose quantity has been stated as seven fists, because in this case, a cubit will be twenty-eight fingers, and ten multiplied by ten is a hundred, so when twenty-eight is multiplied by a hundred, the same result will be obtained, and according to the commentator, this result will not be obtained, because when eight is multiplied by eight, sixty-four is obtained, and when they are multiplied by thirty-five, it became two thousand two hundred and forty fingers, and from the cloth cubit, these are eighty (80) cubits, whereas the requirement is a hundred (100). So what we said is correct, understand. From "understand", there is an indication of rejection of 'T', this is their known method which they adopted at the beginning of their book. (T)

I say: This is a slip of the eye from him, two points are correct: first, that the cubit of their time was thirty-five fingers, and second, that the measurement of a cloth yard according to seven fists is twenty-eight. Apart from this, whatever was said is a clear error. Firstly, multiplying ten by eight does not give two thousand eight hundred, but ninety-eight thousand fingers by putting 'Ta' first, because 35 multiplied by 10 = 350 and 35 multiplied by eight became 280, and 350 * 280 = 98,000.

Secondly: According to the mentioned cloth cubit, ten multiplied by ten does not make 2800, it makes seventy-eight thousand four hundred, this is by putting 'Seen' first ------ because 28 * 100...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt 1/124 Page 269 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो (दूसरा खंड)

[अरबी कॉलम] यह उस मात्रा तक पहुँचता है, लेकिन जैसा कि टीकाकार (शारिह) ने कहा है, वह उस तक नहीं पहुँचता, क्योंकि यदि आप आठ को आठ से गुणा करते हैं, तो यह चौंसठ हो जाता है, और यदि आप इसे पैंतीस से गुणा करते हैं, तो यह दो हज़ार दो सौ चालीस अंगुल (असबा') हो जाता है, और यह कपड़े के हाथ (ज़िरा-ए-कुर्बास) के अनुसार अस्सी हाथ होता है, जबकि वांछित सौ है। इसलिए, जो हमने कहा वह सही है, इसे समझें। उन्होंने "समझें" (फ़ाफ़हम) कहकर अपनी पुस्तक की शुरुआत में उल्लिखित 'त' (एक संदर्भ) के खंडन की ओर इशारा किया है।

मैं कहता हूँ: यह सब उनकी दृष्टि की एक चूक है, अल्लाह उन पर दया करे। उन्होंने दो बातों में सही कहा: पहला यह कि उनके समय का हाथ पैंतीस अंगुल का था, और दूसरा यह कि सात मुट्ठी के अनुमानित कपड़े का हाथ अठाइस अंगुल का होता है। इसके अलावा जो कुछ भी कहा गया है वह स्पष्ट त्रुटि है। पहले, उनके हाथ के अनुसार दस गुणा आठ दो हज़ार आठ सौ नहीं होता, बल्कि 'ता' को पहले रखने पर अठानबे हज़ार अंगुल होता है, क्योंकि तीन सौ पचास में और दो सौ अस्सी में 350 * 280 = 98,000 होता है।

दूसरा: (2) उल्लिखित कपड़े के हाथ के अनुसार दस गुणा दस भी 2800 नहीं होता, बल्कि 'सीन' को पहले रखने पर अठहत्तर हज़ार चार सौ अंगुल होता है, क्योंकि...

[उर्दू कॉलम] ...जिसकी मात्रा सात मुट्ठी बताई गई है, क्योंकि इस स्थिति में हाथ अठाइस अंगुल का होगा, और दस गुणा दस सौ है, तो जब अठाइस को सौ से गुणा करेंगे तो वही प्राप्त होगा, और टीकाकार के अनुसार यह प्राप्त नहीं होगा, क्योंकि जब आठ को आठ से गुणा करेंगे तो चौंसठ प्राप्त होगा, और जब उन्हें पैंतीस से गुणा किया जाएगा तो दो हज़ार दो सौ चालीस अंगुल हुए, और कपड़े के हाथ से ये अस्सी (80) हाथ होते हैं, जबकि वांछित सौ (100) हैं। तो सही वही है जो हमने कहा, समझें। 'फ़ाफ़हम' से 'त' पर खंडन की ओर इशारा है, यह उनका प्रसिद्ध तरीका है जो उन्होंने अपनी पुस्तक की शुरुआत में अपनाया। (त)

मैं कहता हूँ कि यह उनसे चूक हुई है, दो शब्द तो सही हैं, पहला तो यह कि उनके ज़माने का हाथ पैंतीस अंगुल था, और दूसरा यह कि कुर्बास के गज़ की मात्रा सात मुट्ठी के हिसाब से अठाइस है, इसके अलावा जो कुछ कहा वह स्पष्ट भूल है। पहले दस को आठ से गुणा करने से दो हज़ार आठ सौ

नहीं आते बल्कि अठानबे हज़ार अंगुल 'ता' को पहले रखकर आते हैं, क्योंकि 35 गुणा 10 = 350 और 35 गुणा आठ 280 हुए, और 350 * 280 = 98,000 हुए।

दूसरा: उल्लिखित कुर्बास के हाथ के अनुसार दस गुणा दस 2800 नहीं बनता, अठहत्तर हज़ार चार सौ बनता है, यह 'सीन' को पहले रखकर है ------ क्योंकि 28 * 100...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह (पानी का अध्याय), मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/124 पृष्ठ 269 का 711

فتاوی رضویه - جلد ثانی

[عربی کالم] تبلغ ذلك المقدار واما على ماقاله الشارح فلا تبلغ ذلك لانك اذا ضربت ثمانيا في ثمان تبلغ اربعاً وستين فاذا ضربتها في خمس وثلاثين تبلغ الفين ومائتين واربعين اصبعا وذلك ثمانون ذراعا بذراع الكرباس والمطلوب مائة فالصواب ما قلناه فافهم اه اشار بقوله فافهم الى الرد على ط في كتابه المذكور في صدر كتابہ۔

اقول: وهو كله زلة نظر منه رحمه الله تعالى اصاب في حرفين الاول ان ذراع زمانهم خمس وثلثون اصبعاً والأخر ان ذراع الكرباس المقدر بسبع قبضات ثمان وعشرون وما سوى ذلك كله سهو صريح فاولاً ما كان عشر في ثمان بذراعهم لا يكون الفين وثمان مائة بل ثمانية وتسعين الف اصبع بتقديم التاء لان في ثلثمائة وخمسون وفي مائتان وثمانون و ۳۵۰ * ۲۸۰ = ۹۸۰۰۰

وثانياً: (۲) ما كان عشراً في عشر بذراع الكرباس المذكور لا يكون ايضاً ۲۸۰۰ بل ثمانية و سبعين الف اصبع بتقديم السين و اربعمائة لان

[اردو کالم] جس کی مقدار سات مشت بتائی گئی ہے، کیونکہ اس صورت میں ذراع اٹھائیس انگشت ہوگا، اور دس ضرب دس سو ہے، تو جب اٹھائیس کو سو میں ضرب دیں تو وہی حاصل ہوگا، اور بقول شارح یہ حاصل نہیں ہوگا، کیونکہ جب آٹھ کو آٹھ میں ضرب دیں تو چونٹھ حاصل ہوگا، اور جب ان کو پینتیس میں ضرب دی جائے تو دو ہزار دو سو چالیس انگشت ہوئی، اور ذراع کرباس سے یہ اسی ۸۰ ذراع ہوتے ہیں، جبکہ مطلوب سو ۱۰۰ ہیں، تو صحیح وہی ہے جو ہم نے کہا فافهم اه فافهم سے ط پر رد کی طرف اشارہ ہے یہ ان کا معروف طریقہ ہے جو انہوں نے اپنی کتاب کے شروع میں اختیار کیا۔(ت)

میں کہتا ہوں یہ ان سے لغزش ہوئی ہے دو حروف تو صحیح ہیں، پہلا تو یہ کہ ان کے زمانہ کا ذراع پینتیس انگشت تھا، اور دوسرا یہ کہ کرباس کے گز کی مقدار سات مشت کے حساب سے اٹھائیس ہے، اس کے علاوہ جو کچھ کہا وہ صریح سہو ہے۔ اولاً دس کو آٹھ میں ضرب دینے سے دو ہزار آٹھ سو نہیں آتے بلکہ اٹھانوے ہزار انگشت بتقدیم التاء، اس لئے کہ ۳۵ ضرب ۱۰ = ۳۵۰ اور ۳۵ ضرب آٹھ ۲۸۰ ہوئے، اور ۳۵۰ * ۲۸۰ = ۹۸۰۰۰ ہوئے۔

ثانیاً: ذراع کرباس مذکور کے اعتبار سے دس ضرب دس ۲۸۰۰ نہیں بنتا اٹھتر ہزار چار سو بنتا ہے یہ بتقدیم سین ہے ------ اس لئے کہ ۲۸ * ۱۰۰

---

۱ رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۴ صفحہ ۲۶۹ از ۷۱۱

Fatawa Rizwiya Volume II

...to two hundred and eighty, and its square is 78,400. After reducing nineteen thousand six hundred (19,600) fingers, how can these two be equal?

Thirdly: (1) Eight times eight according to their yard (zira') does not result in two thousand two hundred and forty (2240), but rather the square of two hundred and eighty (280), because every yard and length is 8 * 35 = 280, and similarly the width. Thus the surface area is 78,400, which is exactly equal to ten-by-ten yards of cloth, just as stated by the commentator, al-Quhistani, and 'T'.

Fourthly: (2) The measurement of eighty yards by the cloth yard (zira' al-kirbas) is not 2240, but rather sixty-two thousand seven hundred and twenty (62,720) fingers. This is because the measurement of a yard is that which is a 'yard by a yard', and that is the square of seven hundred and eighty-four (784) fingers; and 80 * 784 = 62,720. The origin of (3) the error in all this is that he (may Allah have mercy on him) did not distinguish between a line (khat) and a surface (satah). He merely calculated by multiplying the length by the width and multiplying the result by the number of fingers in a yard, which are either thirty-five (35) or twenty-eight (28) fingers, and considered the result as the measurement of water. However, the matter is not so; this is the quantity of fingers for the measurement of a yard in a line. As for the surface which is the size of a yard, its fingers will be the square of that, which is one thousand two hundred and twenty-five (1225) fingers according to the first opinion and seven hundred and eighty-four (784) according to the second. That is then multiplied by eight-by-eight in the first...

फ़तावा रिज़विया जिल्द सानी (द्वितीय भाग)

...दो सौ अस्सी (२८०) हुए और उनका वर्ग ७८,४०० हुआ। उन्नीस हज़ार छह सौ (१९,६००) अंगुल घटाकर, तो ये दोनों कैसे बराबर हो सकते हैं?

तीसरा: (१) उनके गज से आठ गुणा आठ दो हज़ार दो सौ चालीस (२२४०) नहीं बनते, बल्कि दो सौ अस्सी (२८०) का वर्ग बनता है क्योंकि हर हाथ (ज़िरा) ३५ अंगुल है और लंबाई ८ है, इसलिए ३५ * ८ = २८० हुआ। और यही हाल चौड़ाई का है, तो क्षेत्रफल ७८,४०० हुआ, जो कपास के दस-बाय-दस गज के बिल्कुल बराबर है, जैसा कि व्याख्याकार, कुहिस्तानी और 'त' ने कहा है।

चौथा: (२) कपास के गज से अस्सी गज की माप २२४० नहीं बनती, बल्कि बासठ हज़ार सात सौ बीस (६२,७२०) अंगुल है। इसका कारण यह है कि एक हाथ की माप वह होती है जो 'हाथ गुणा हाथ' हो, और वह सात सौ चौरासी (७८४) अंगुल का वर्ग है; और ८० * ७८४ = ६२,७२० है। इस पूरी बहस में (३) गलती का कारण यह है कि उन्होंने रेखा (ख़त) और सतह में अंतर नहीं किया, और इस तरह गणना की कि लंबाई को चौड़ाई से गुणा किया और जो परिणाम आया उसे हाथ की उंगलियों से गुणा किया, जो पैंतीस (३५) या अट्ठाइस (२८) उंगलियाँ होती हैं, और जो परिणाम मिला उसे पानी का माप करार दे दिया। हालाँकि बात ऐसी नहीं है; यह तो रेखा में हाथ की माप की उंगलियों की मात्रा है। जहाँ तक उस सतह की बात है जो एक हाथ के आकार की हो, उसकी उंगलियाँ उसका वर्ग होंगी, जो पहले मत के अनुसार एक हज़ार दो सौ पच्चीस (१२२५) उंगलियाँ हैं और दूसरे मत के अनुसार सात सौ चौरासी (७८४) हैं। इसे फिर पहले के आठ गुणा आठ में गुणा किया जाता है...

पृष्ठ २७० / ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

في مائتان وثمانون ومربعها.. بنقص تسعة عشر الف اصبع وستمائة فكيف يستويان، دو سواسی ۲۸۰ ہوئے اور ان کا مربع ۷۸۴۰۰ ہوا، انیس ہزار چھ سو ۱۹۶۰۰ انگشت گھٹا کر، تو یہ دونوں کیسے برابر ہو سکتے ہیں؟

وثالثاً(1) ثمان في ثمان بذراعهم لا يكون الفين ومائتين واربعين بل مربع مائتين وثمانين لان كل ذراع والطول 8 -- 35 * 8 = 280 وكذلك العرض فالمسطح .. مثل عشر في عشر بذراع الكرباس سواء بسواء كما قال الشارح والقهستاني وط ۔ ثالثاً: آٹھ ضرب آٹھ ان کے گز سے دو ہزار دو سو چالیس ۲۲۴۰ نہیں بنتے، بلکہ مربع دو سو اسی ۲۸۰ کا بنتا ہے کیونکہ ہر ذراع ۳۵ انگشت ہے اور لمبائی ۸، اس لئے ۳۵ * ۸ = ۲۸۰ ہوا۔ اور یہی حال چوڑائی کا ہے تو مسطح ۷۸۴۰۰ مثل دہ دردہ کپاس کے گز سے بالکل برابر برابر ہے جیسا کہ شارح، قہستانی اور "ط" نے فرمایا۔

ورابعاً: (2) مساحة ثمانين ذراعا بذراع الكرباس لا تكون 2240 بل اثنين وستين الفا وسبع مائة وعشرين اصبعا لان مساحة ذراع ما كان ذراعا في ذراع وذلك مربع سبع مائة واربع وثمانون اصبعا و 80 * 784 = 62720 ومنشأ (3) الخطأ فی كل ذلك انه رحمه الله تعالى لم يفرق بين الخط والسطح فحسب ان الطول يضرب في العرض وما بلغ يضرب في اصابع الذراع وهي خمس وثلثون او ثمان وعشرون اصبعا فما حصل يكون مساحة الماء وليس كذلك وانما هي مقدار الاصابع في خط قدر ذراع اما السطح قدر ذراع فاصابعه مربع ذلك وهي الف ومائتان وخمس وعشرون اصبعا على الاول وسبع مائة واربع وثمانون على الثاني فذلك يضرب في يكن ثمانيا في ثمان بالا ول رابعاً: کرباس کے گز سے اسی گز کی پیمائش ۲۲۴۰ نہیں بنتی ہے بلکہ باسٹھ ہزار سات سو بیس انگشت ہے، اس لئے کہ ایک ذراع کی پیمائش وہ ہے جو ذراع در ذراع ہو اور یہ ۲۸ کا مربع ۷۸۴ انگشت ہے اور

۷۸۴ * ۸۰ = ۶۲۷۲۰ ہے اور اس تمام بحث میں غلطی کی وجہ یہ ہے کہ انہوں نے خط اور سطح میں فرق نہیں کیا ہے، اور اس طرح حساب کیا کہ لمبائی کو چوڑائی میں ضرب دی اور جو حاصل آیا اس کو ذراع کی انگلیوں میں ضرب دی اور وہ پینتیس ۳۵ یا اٹھائیس ۲۸ انگلیاں بنتی ہیں اور جو حاصل ہوا وہ پانی کی پیمائش قرار دی، حالانکہ بات یہ نہیں ہے، یہ تو ان کی انگلیوں کی مقدار ہے جو خط میں ذراع کی مقدار ہو اور وہ سطح جو ذراع کی مقدار ہو تو اس کی انگلیاں اس کا مربع ہو گا اور وہ ایک ہزار دو سو پچیس انگلیاں ہیں پہلے قول پر اور دوسرے قول پر ۷۸۴ ہیں، اس کو

Fatawa Razawiyya - Volume II

(Left Column - Translation of Arabic text) And this is multiplied by 100, becoming ten by ten according to the second [opinion]. It is clear that 1225 * 67 and 82 * 100 both equal 82000, which is the requirement. If you want ten by eight according to the first [opinion], then multiply by 80, it becomes 98000. And if you want the measurement of eighty cubits according to the second [opinion], then multiply by 80, it becomes... What we said has become clear, although it was already self-evident. If you want more, then consider "a cubit by a cubit". One multiplied by one is one. Multiply it according to the method of Sayyid in fingers of a cubit; they remain as they are. These are exactly the fingers of one side. So, a part of a thing became equal to the thing itself in quantity, which is obviously impossible. Rather, here the quantity is the result of the whole side. The sum of the lines of the four sides is four times the entire surface. Thus, the side of a thing becomes multiples of the thing itself. What impossibility could be further than this? (T)

(Right Column - Urdu text translation) 64 will be multiplied, so it will become 8*8 according to the first opinion. Now it will be multiplied by 100, so it will be 10*10 according to the second opinion. And it is clear that 1225*67 and 82*100 are both 82000, and this is what is required. And if you multiply ten by eight according to the first opinion, then multiply 1225 by 80, it will be 98000. And if the measurement of the same 80 yards (cubits) is according to the second opinion, then multiply 82 by 80, the result will be 6560. So what we said has become clear. And if further explanation is required, look at one cubit multiplied by a cubit, because one multiplied by one is just one. Now multiply it into the fingers of the hand according to Sayyid's method; they will remain as many as they are. And these are exactly the fingers of one side. So, it's as if a side of a thing became equal in quantity to the thing itself, and this is obviously impossible. Rather, here the quantity which is the result of the whole is on one side, then the sum of the lines of the four sides will be four times the entire surface. Then it would follow that a side of a thing becomes many times larger than it, and what could be a more remote impossibility than this? (T)

(Bottom Section - Urdu Text Translation) In summary, there are three opinions here, and on every side there is [an attempt at] preference and authentication. I say, however, the third opinion is intellectually weak, and the term "preference" used for it does not carry that strength. The second opinion, although more logical, and authenticated by Imam Qadhi Khan, about whom scholars explicitly state that his authentication should not be deviated from as he is "Faqih al-Nafs" (a jurist of inner

insight) as mentioned by Allama Shami in "Radd al-Muhtar" etc. elsewhere, yet the majority of Imams lean towards the first opinion. Practice is based on where the majority is, as in "Radd al-Muhtar", "Al-Uqud al-Durriyah", etc. The wording for its authentication is the strongest, "Alayhi al-Fatwa" (fatwa is upon it). This is contrary to the second opinion where the word "Sahih" (correct) is used. Sayyid Tahtawi's narration of fatwa upon it is known to be a manifest error. Therefore, whoever desires more caution should take the cubit measurement in "Masaahat Aab-e-Kathir" (measurement of large quantity of water) into account, which is three and a half feet and our...

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

(बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद) और इसे १०० से गुणा किया जाता है, तो यह दूसरे [कौल] के अनुसार दस गुणा दस हो जाता है। यह स्पष्ट है कि १२२५ * ६७ और ८२ * १०० दोनों ही ८२००० हैं, जो कि आवश्यकता है। यदि आप पहले [कौल] के अनुसार दस गुणा आठ चाहते हैं, तो ८० से गुणा करें, यह ९८००० होगा। और यदि आप दूसरे [कौल] के अनुसार अस्सी हाथ की पैमाइश चाहते हैं, तो ८० से गुणा करें, यह... हमने जो कहा वह स्पष्ट हो गया है, हालांकि यह स्पष्टीकरण से परे था। यदि आप और अधिक चाहते हैं, तो "एक हाथ गुणा एक हाथ" पर विचार करें। एक गुणा एक, एक ही होता है। अब इसे सैय्यद की पद्धति के अनुसार हाथ की अंगुलियों में गुणा करें; वे वैसी ही रहेंगी जैसी वे हैं। और ये ठीक वही एक तरफ की अंगुलियां हैं। तो, किसी चीज़ का एक हिस्सा मात्रा में स्वयं उस चीज़ के बराबर हो गया, जो स्पष्ट रूप से असंभव है। बल्कि, यहाँ वह मात्रा जो कुल का परिणाम है, एक तरफ है, तो चारों पक्षों की रेखाओं का योग पूरी सतह का चार गुना हो जाएगा। इस प्रकार, किसी चीज़ का पक्ष स्वयं उस चीज़ का कई गुना हो जाता है। इससे बड़ी और क्या असंभव बात हो सकती है? (त)

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ की व्याख्या) ६४ से गुणा किया जाएगा, तो यह पहले मत के अनुसार ८८ बनेगा। अब इसे १०० से गुणा किया जाएगा, तो यह दूसरे मत के अनुसार १०१० होगा। और यह स्पष्ट है कि १२२५६७ और ८२१०० दोनों ८२००० हैं, और यही आवश्यक है। और यदि आप पहले मत के अनुसार दस को आठ से गुणा करते हैं, तो १२२५ को ८० से गुणा करें, यह ९८००० होगा। और यदि उसी ८० गज की पैमाइश दूसरे मत के अनुसार हो, तो ८२ को ८० से गुणा करें, परिणाम ६५६० आएगा। तो हमने जो कहा वह स्पष्ट हो गया। और यदि और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, तो एक हाथ को एक हाथ से गुणा करके देखें, क्योंकि एक गुणा एक केवल एक ही होता है। अब इसे सैय्यद की विधि के अनुसार हाथ की अंगुलियों में गुणा करें; वे जितनी हैं उतनी ही रहेंगी। और ये ठीक एक तरफ की अंगुलियां हैं। तो, ऐसा है जैसे किसी चीज़ का एक पक्ष मात्रा में उस चीज़ के बराबर हो गया, और यह स्पष्ट रूप से असंभव है। बल्कि, यहाँ वह मात्रा जो पूर्ण का परिणाम है, एक तरफ है, तो चारों पक्षों की रेखाओं का योग पूरी सतह का चार गुना हो जाएगा। फिर यह निष्कर्ष निकलेगा कि किसी चीज़ का एक पक्ष उससे कई गुना बड़ा हो जाता है, और इससे अधिक दूरगामी असंभवता और क्या हो सकती है? (त)

(नीचे का पैराग्राफ - उर्दू पाठ का अनुवाद) संक्षेप में, यहाँ तीन मत हैं, और हर तरफ वरीयता और प्रमाणीकरण है। मैं कहता हूँ, हालाँकि, तीसरा मत बौद्धिक रूप से कमज़ोर है, और इसके लिए इस्तेमाल किया गया "वरीयता" शब्द उस शक्ति को वहन नहीं करता है। दूसरा मत, हालांकि अधिक तर्कसंगत है, और इमाम क़ाज़ी खान द्वारा प्रमाणित है, जिनके बारे में विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उनके प्रमाणीकरण से विचलित नहीं होना चाहिए क्योंकि वे 'फक़ीह-अल-नफ़्स' (अंतर्दृष्टि वाले न्यायविद) हैं जैसा कि अल्लामा शामी ने 'रद अल-मुह्तार' आदि में अन्य स्थानों पर उल्लेख किया है, फिर भी अधिकांश इमाम पहले मत की ओर झुकते हैं। व्यवहार उसी पर आधारित है जहाँ बहुमत है, जैसा कि 'रद अल-मुह्तार', 'अल-उक़ूद अल-दुर्रिया' आदि में है। और इसके प्रमाणीकरण के लिए शब्द सबसे मज़बूत है, "अलैहि अल-फतवा" (फतवा इसी पर है)। यह दूसरे मत के विपरीत है जहाँ "सहीह" (सही) शब्द का उपयोग किया गया है। सैय्यद तहतावी द्वारा उस पर फतवे का वर्णन एक स्पष्ट त्रुटि माना जाता है। इसलिए, जो कोई अधिक सावधानी चाहता है, उसे 'आब-ए-कसीर' (पानी की बड़ी मात्रा) के माप में हाथ के माप को ध्यान में रखना चाहिए, जो कि साढ़े तीन फीट है और हमारे...

पृष्ठ २७१ / ७११

(کالم بائیں - عربی عبارت) وھذا یضرب في ١٠٠ یکن عشراً في عشر بالثانی وظاھران ١٢٢٥ * ٦٧ و ٨٢ * ١٠٠ کلاھما ٨٢٠٠٠ وھو المطلوب وان اردت عشراً في ثمان بالاول فاضرب في ٨٠ یکن ٩٨٠٠٠ وان اردت مساحة ثمانین ذراعاً بالثانی فاضرب في ٨٠ یکن فاتضح ماقلنا مع کونه غنیاً عن الایضاح. وان(ا) شئت المزید فلاحظه في ماھو ذراع في ما ذراع فان واحداً في واحد واحد فاضربه علی طریقة السید في اصابع الذراع تبقی کماھي وھی بعینھا اصابع طرف فطرف الشیئی ساوی الشیئ في المقدار وھو محال بالبداھة بل ھنا المقدار حاصل الکل طرف فمجموع خطوط الاطراف الاربعة اربعة امثال السطح کله فطرف الشیئی اضعاف الشیئی وای محال ابعد منه۔

(کالم دائیں - اردو ترجمہ و تشریح) چونسٹھ میں ضرب دی جائے گی تو یہ ٨٨ بنے گا پہلے قول پر، اب اس کو ضرب دی جائے گی ١٠٠ میں تو یہ ١٠١٠ ہوگا دوسرے قول پر، اور ظاہر ہے کہ ٦٧١٢٢٥ اور ١٠٠٨٢ دونوں ہی ٨٢٠٠٠ ہیں اور یہی مطلوب ہے، اور اگر آپ پہلے قول پر دس کو آٹھ میں ضرب دیں تو ١٢٢٥ کو ٨٠ میں ضرب دیں تو ٩٨٠٠٠ ہوگا، اور اگر اسی ٨٠ گز کی پیمائش دوسرے قول کے مطابق ہو تو ٨٢ کو ٨٠ میں ضرب دیں تو حاصل ٦٥٦٠ آئے گا، تو جو ہم نے کہا وہ واضح ہو گیا اور اگر مزید وضاحت درکار ہو تو ایک ذراع ضرب ذراع کو دیکھیں کیونکہ ایک ضرب ایک ایک ہی ہوتا ہے، اب سید کے طریقہ کے مطابق اس کو ہاتھ کی انگلیوں میں ضرب دیجئے تو وہ جتنی ہیں اتنی ہی رہیں گی، اور یہی بعینہ ایک طرف کی انگلیاں ہیں تو گویا ایک چیز کی طرف اس چیز کے مساوی ہو گئی مقدار میں اور یہ بداہۃً محال ہے بلکہ یہاں پر وہ مقدار جو کل کا حاصل ہے ایک طرف ہے تو چاروں اطراف کے خطوط کا مجموعہ پوری سطح

کا چار گنا ہو جائے گا تو لازم آئے گا کہ شیئی کا طرف اس سے کئی گنا بڑھ جائے اور اس سے زیادہ بعید محال اور کون ساہوگا۔ (ت)

(نیچے کی عبارت) بالجملہ یہاں تین قول ہیں اور ہر طرف ترجیح و تصحیح اقول مگر قول ثالث درایتہً ضعیف اور اس کا لفظ ترجیح بھی اس قوت کا نہیں اور قول دوم اگر چہ اقیس ہے اور اس کی تصحیح امام قاضی خان نے فرمائی جن کی نسبت علماء تصریح فرماتے ہیں کہ ان کی تصحیح سے عدول نہ کیا جائے کہ وہ فقیہ النفس ہیں کما ذکر العلامۃ شامی فی رد المحتار وغیرہ فی غیرہ مگر قول اول کی طرف جمہور ائمہ ہیں اور عمل اسی پر ہوتا ہے جس طرف جمہور ہوں کما فی رد المحتار والعقود الدرایۃ وغیرھما اور اس کا لفظ تصحیح سب سے اقوی ہے علیہ الفتوی، بخلاف قول دوم کہ اس میں لفظ صحیح ہے اور سید طحطاوی کی اس پر حکایت فتوی معلوم ہو لیا کہ سہو صریح ہے پس جو زیادہ احتیاط چاہے مساحت آب کثیر میں گز مساحت کا اعتبار کرے کہ ساڑھے تین فٹ اور ہمارے

Fatawa Razviya - Volume 2 ...is 18.5 girahs above a yard. If its ten yards according to our yard becomes 11 yards 11-2/3 or 12-3 girahs, then its measurement of 'Dah dar Dah' (ten by ten) according to our yard would be one hundred and twenty-six yards, one girah and 7/9 girahs. The yard of twenty-four fingers itself is not reliable or adopted, according to which 'Dah dar Dah' becomes only twenty-five yards by our yard, and there is absolutely no doubt in its consideration that it is the fatwa-giving opinion, the majority opinion, and it contains more ease and facility. The consideration of the quantity of 'Dah dar Dah' is also based on leniency and ease, as is not hidden. And Allah Almighty knows best.

Problem 33: From Pilibhit, Madrasa-ul-Hadith, sent by Maulana Wasi Ahmad Sahib Muhaddith Surti (may his grace endure), 18 Jumada al-Ula 1326 AH. A tank is ten by ten (Dah dar Dah). Arches have been built in it, and twelve pillars have been established. Now, when the width of all the pillars is calculated, they amount to six yards. Does this cause any defect in the tank being 'Kathir' (large water body) or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: The noble scholars have exempted the obstruction of light (1) and thin objects like reeds or stalks of crops. However, pillars that occupy 6 yards of the surface area, by which the hundred cubits of water is greatly reduced, will certainly not remain ten by ten. Just like ice that freezes in patches on water and becomes separated into pieces, and if it is so much that it does not move by the movement of the water, that tank will become 'Qalil' (small water body). It is stated in Alamgiri: "If someone performs ablution in a thicket of reeds or in land where there is connected vegetation, if it is ten by ten, it is permissible. The connection of reed to reed does not prevent the connection of water to water. Similarly in Al-Khulasa. And if the ice is in pieces on the surface of the water, if it is so much that it does not move by moving the water, ablution with it is not permissible. Similarly in Al-Muhit." And in Jami al-Rumuz from Al-Mujtaba, if in that water...

(1) Alamgiri, Book of Purification, Chapter of Ablution, Third Chapter on Waters, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/18 (2) Alamgiri, Book of Purification, Chapter of Ablution, Third Chapter on Waters, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/18 Page 272 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी ...गज़ से सदस ऊपर साढ़े अठारह गिरह का है जिसका दस गज़ हमारे गज़ से ११ गज़ ११-२/३ १२-३ गिरह हुआ तो उसकी पैमाइश दह दर दह (दस गुना दस) हमारे गज़ से एक सौ छब्बीस गज़ एक गिरह और ७/९ गिरह हो और न वही चौबीस उंगल का गज़ खुद मोतमद व माखूज़ है जिसका दह दर दह हमारे गज़ से पच्चीस ही गज़ हुआ और उसके एतबार में असलां दगदगा नहीं कि वही मुफ़्ती बिह है और वही क़ौल अक्सर और इसी में यसर व आसानी बेशतर और मिक़दार दह दर दह का एतबार भी खुद रफ़्क़ व तैसीर की बिना पर है कमा ला यखफ़ा वल्लाहु तआला आलम।

मसला ३३: पीलीभीत मदरसा-उल-हदीस से, मुरसाला जनाब मौलाना वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती (दाम फ़ज़लुहु) १८ जमादी अल-उला १३२६ हिजरी। एक हौज दह दर दह है, इसमें मेहराब डालकर बारह खंभे क़ायम किए हैं। अब कुल खंभों के अर्ज़ (चौड़ाई) को जो हिसाब करते हैं तो छह गज़ होते हैं, इससे हौज 'कसीर' (बड़ा) होने में कोई ख़लल है कि नहीं? बय्यान फरमायें और सवाब पायें।

अल-जवाब: उलमा-ए-किराम ने ख़फीफ़ (१) व बारीक अशिया जैसे नरकुल या खेती के डंठलों का हाइल होना माफ़ रखा है। मगर सुतून कि छह ६ गज़ सतह घेरें जिनसे वह पानी कि सौ हाथ था बहुत घट गया, यक़ीनन दह दर दह न रहेंगे। जैसे बर्फ कि पानी पर जगह-जगह जम कर क़ता-क़ता हो जाए और कसीर हो कि पानी के जुम्बिश (हलचल) देने से जुम्बिश न करे, वह हौज आब-ए-क़लील (कम पानी) हो जाएगा। आलमगीरिया में है: "अगर किसी ने नरकुल के झुंड में या घनी खेती की ज़मीन में वज़ू किया, तो अगर उसका रक़बा दह दर दह हो तो जायज़ है, तो नरकुल का नरकुल से मुत्तसिल (जुड़ा) होना पानी के पानी से मुत्तसिल होने में माने (बाधक) नहीं है। ऐसा ही 'खुलासा' में है। और अगर पानी पर जमी हुई बर्फ टुकड़े-टुकड़े हो गई हो, तो अगर इतनी ज़ायद हो कि पानी को हरकत देने से मुतहर्रिक न हो तो वज़ू उससे जायज़ नहीं। कज़ा फ़िल मुहीत।" और जामे अर-रुमूज़ में मुजतबा से है कि अगर उस पानी में...

(१) आलमगीरी, किताब-उत-तहारत, बाब-उल-वुज़ू, अल-बाब-अत-सालिस फ़िल-मियाह, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/१८ (२) आलमगीरी, किताब-उत-तहारत, बाब-उल-वुज़ू, अल-बाब-अत-सालिस फ़िल-मियाह, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/१८ पेज 272 of 711

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی گز سے سدس اوپر ساڑھے اٹھارہ گرہ کا ہے جس کا دس گز ہمارے گز سے ۱۱ گز ۱۱-۲/ ۳ ۱۲- ۳ گرہ ہوا تو اس کی پیمائش کا دہ در دہ ہمارے گز سے ایک سو چھبیس گز ایک گرہ اور ۷/۹ گرہ ہو اور نہ وہی چوبیس انگل کا گز خود معتمد و ماخوذ ہے جس کا دہ در دہ ہمارے گز سے پچیس ہی گز ہوا اور اُس کے اعتبار میں اصلاً دغدغہ نہیں کہ وہی مفتی بہ ہے اور وہی قول اکثر اور اسی میں یسر و آسانی بیشتر اور مقدار دہ در دہ کا اعتبار بھی خود رفق و تیسیر کی بنا پر ہے کما لا یخفی واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۳: از پیلی بھیت مدرسۃ الحدیث مرسلہ جناب مولانا وصی احمد صاحب محدث سورتی دام فضلہ ۱۸ جمادی الاولٰی ۱۳۲۶ھ ایک حوض دہ در دہ ہے اس میں طاق ڈال کر بارہ تھم قائم کیے ہیں اب کُل تھموں کے عرض کو جو حساب کرتے ہیں تو چھ گز ہوتے ہیں اس سے حوض کثیر ہونے میں خلل ہے کہ نہیں بینوا توجروا

الجواب: علمائے کرام نے خفیف (۱) و باریک اشیا جیسے نرکل یا کھیتی کے پٹھوں کا حائل ہونا معاف رکھا ہے مگر ستون کہ چھ ۶ گز سطح گھیریں جن سے وہ پانی کہ سو ہاتھ تھا بہت گھٹ گیا ضرور دہ در دہ نہ رکھیں گے جیسے برف کہ پانی پر جا بجا جم کر قطع قطع ہو جائے اور کثیر ہو کہ پانی کے جنبش دینے سے جنبش نہ کرے وہ حوض آب قلیل ہو جائے گا، عالمگیریہ میں ہے: لو توضأ في اجمة القصب اومن ارض فيها زرع متصل بعضها ببعض ان كان عشرا فی عشر يجوز و اتصال القصب بالقصب لا يمنع اتصال الماء بالماء ، كذا في الخلاصة وان كان الجمد على وجه الماء قطعاً قطعاً ان كان كثيراً لا يتحرك بتحريك الماء لا يجوز الوضوء به كذا في المحيط ۱ ھ وفي جامع الرموز عن المجتبى لوكان فيہ اگر کسی نے نرکل کے جھنڈ میں یا گھنی کھیتی کی زمین میں وضو کیا تو اگر اس کا رقبہ دہ در دہ ہو تو جائز ہے تو نرکل کا نرکل سے متصل ہونا پانی کے پانی سے

متصل ہونے میں مانع نہیں ہے، ایسا ہی خلاصہ میں ہے، اور اگر پانی پر جمی ہوئی برف ٹکڑے ٹکڑے ہو گئی ہو، تو اگر اتنی زائد ہو کہ پانی کو حرکت دینے سے متحرک نہ ہو تو وضو اس سے جائز نہیں، کذا فی المحیط اھ اور جامع الرموز میں مجتبیٰ سے ہے اگر اس پانی میں

1 عالمگیری کتاب الطہارت باب الوضوء الباب الثالث فی المیاہ مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۸

2 عالمگیری کتاب الطہارت باب الوضوء الباب الثالث فی المیاہ مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۸

Fatawa Razawiya Volume 2

[Boxed Text] Arabic: قطع خشب او جمد يتحرك بتحريك الماء جاز فيه الوضوء اه افهم ان لولم يتحرك لم يجوز والله تعالى اعلم۔ Translation: If there are pieces of wood or ice and they move by the movement of water, then performing ablution (Wudu) with it is permissible. This means that if they do not move, Wudu is not permissible. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 34: From the city Madrasah Ahle Sunnat, questioned by Maulvi Muhammad Tahir Sahib Razvi, student of Madrasah Ahle Sunnat, 9 Rajab-ul-Murajab 1330 AH.

First Question: If a person spits or blows their nose in a ten-by-ten (deh-dar-deh) tank, or puts their feet inside it to wash them, or performs Wudu in such a way that all the used water falls back into it, will the tank remain pure in all these cases or not? Secondly, if someone considers it impure (najis), what is the ruling for them?

The Answer: In all these cases, the tank is pure. Considering it impure is ignorance. If someone persists even after being told the ruling, they are a grave sinner. However, it is necessary to avoid spitting or cleaning the nose in the tank because these acts cause disgust, and causing disgust without a Shari'i reason is not permissible. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Give glad tidings and do not create aversion"[2] and Allah Almighty knows best. (T) The Holy Prophet said: "Tell good news, do not spread hatred." And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 35 (2): A ten-by-ten pond collects impure water from the neighborhood's small tanks, latrines, drains, etc. Moreover, scavengers throw lumps of excrement into it during the rainy season, and sometimes people relieve themselves on its banks so that it flows into it. Will washing impure clothes in such a pond make them pure or not? And will this pond be ruled as pure or not? Give us a decree, and you will be rewarded.

The Answer: If there was ten-by-ten water in it before these impurities fell, and after they fell, its color, taste, or smell did not change, and while washing the cloth, the essence of the impurity did not stick to the cloth, then the cloth becomes pure; otherwise, not. And Allah Almighty knows best.

---

1. Jami' al-Rumuz, Bayan al-Miyah, Matba' al-Islamiyah, Gunbad Iran, 1/28.
2. Sahih Bukhari, Asah al-Matabi' Karachi, 16/1.

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

[बॉक्स में दिया गया टेक्स्ट] अरबी: قطع خشب او جمد يتحرك بتحريك الماء جاز فيه الوضوء اه افهم ان لولم يتحرك لم يجوز والله تعالى اعلم۔ अनुवाद: लकड़ी या बर्फ़ के टुकड़े हों और वे पानी को हरकत देने से हिलते हों तो उससे वज़ू जायज़ है, इसका मतलब यह है कि अगर वे न हिलें तो वज़ू जायज़ नहीं। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 34: शहर मदरसा अहले सुन्नत से, मौलवी मुहम्मद ताहिर साहब रज़वी, छात्र मदरसा अहले सुन्नत द्वारा पूछा गया, 9 रजब-उल-मुरज्जब 1330 हिजरी।

पहला सवाल: अगर कोई व्यक्ति दस-दर-दस (deh-dar-deh) के हौज (टैंक) में थूके या नाक साफ़ करे, या अपने पैर उसमें डालकर धोए, या इस तरह वज़ू करे कि सारा इस्तेमाल किया हुआ पानी वापस उसी में गिरे, तो क्या इन सभी स्थितियों में वह हौज पाक (शुद्ध) रहेगा या नहीं? दूसरे, अगर कोई इसे नापाक (नजिस) समझे, तो उसके लिए क्या हुक्म है?

जवाब: इन सभी स्थितियों में वह हौज पाक है। इसे नापाक समझना अज्ञानता है। और अगर कोई व्यक्ति मसला (नियम) बताने के बाद भी अपनी बात पर अड़ा रहे, तो वह बड़ा गुनहगार है। लेकिन हौज में थूकने या नाक साफ़ करने से बचना ज़रूरी है क्योंकि ये काम घृणा का कारण बनते हैं, और बिना किसी शरी'ई (धार्मिक) कारण के घृणा पैदा करना जायज़ नहीं है। हुज़ूर पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "खुशखबरी सुनाओ और नफ़रत मत फैलाओ"[2] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) हुज़ूर पाक ने फ़रमाया: "अच्छी खबर सुनाओ, नफ़रत न फैलाओ।" वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 35 (2): एक दस-दर-दस तालाब में पूरे मोहल्ले की नालियों, शौचालयों आदि का गंदा पानी जमा होता है। यहाँ तक कि सफ़ाईकर्मी बारिश के दिनों में इसमें गंदगी के ढेले भी डालते हैं और कभी-कभी लोग इसके किनारे शौच भी करते हैं जो बहकर उसी में चला जाता है। तो क्या ऐसे तालाब में नापाक कपड़े धोने से वे पाक होंगे या नहीं? और क्या उस तालाब को पाक होने का हुक्म दिया जाएगा या नहीं? बयान फ़रमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

जवाब: अगर इन गंदगी के गिरने से पहले उसमें दस-दर-दस पानी था, और उनके गिरने के बाद उसका रंग, स्वाद या गंध नहीं बदली, और कपड़े धोते समय गंदगी का मुख्य अंश कपड़े पर नहीं लगा, तो कपड़ा पाक हो गया, वर्ना नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. जामि अल-रुमूज़, बयान अल-मियाह, मतबा अल-इस्लामिया, गुंबद ईरान, 1/28।
2. सहीह बुखारी, अस़ह अल-मताबे कराची, 16/1।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[باکس شدہ عبارت] عربی: قطع خشب او جمد یتحرك بتحریك الماء جاز فیه الوضوء اه افهم ان لولم یتحرك لم یجوز واللہ تعالی اعلم۔ اردو ترجمہ: لکڑی یا برف کے ٹکڑے ہوں اور وہ پانی کو حرکت دینے سے متحرک ہوتے ہوں تو اس سے وضو جائز ہے، اس کا مطلب یہ ہے کہ اگر متحرک نہ ہو تو وضو جائز نہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۴: از شہر مدرسہ اہلسنت مسئولہ مولوی محمد طاہر صاحب رضوی متعلم مدرسہ اہلسنت ۹ رجب المرجب ۱۳۳۰ھ

سوال اول: حوض دہ در دہ میں اگر کوئی شخص تھوک یا رینٹھ ڈالے یا پاؤں اس کے اندر ڈال کر دھوئے یا وضو اس طرح کرے کہ تمام غسالہ اس میں گرتا جائے تو آیا ان سب صورتوں میں وہ حوض پاک رہے گا یا نہیں، بر تقدیر ثانی اگر کوئی نجس سمجھے تو اس کا کیا حکم ہے؟

الجواب: ان سب صورتوں میں وہ حوض پاک ہے اور اسے نجس سمجھنا جہالت اور اگر کوئی شخص مسئلہ بتانے کے بعد بھی اصرار کرے تو سخت گنہگار ہوا مگر حوض میں تھوکنے یا ناک صاف کرنے سے احتراز لازم ہے کہ یہ افعال باعث نفرت ہیں اور بلاوجہ شرعی نفرت دلانا جائز نہیں قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بشرو ولا تنفروا [2] واللہ تعالیٰ اعلم (ت) حضور پاک نے فرمایا: اچھی خبر سناؤ نفرت نہ پھیلاؤ۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

سوال ۳۵ (۲): ایک تالاب دہ در دہ میں تمام محلہ کے چوبچوں پائخانوں نالیوں وغیرہ کا نجس پانی آکر جمع ہوتا ہے بلکہ بھنگی اس میں میلے کی ڈھلیاں بھی ایام برسات میں ڈالا کرتے ہیں اور بعض اوقات لوگ اس کے کنارے پائخانہ پیشاب بھی پھرتے ہیں کہ اس میں بہہ کر جاتا ہے تو آیا

ایسے تالاب میں کپڑے نجس دھونے سے پاک ہوں گے یا نہیں اور اس تالاب کو حکمِ پاکی کا دیا جائے گا یا نہیں بینوا توجروا۔

الجواب: اگر ان نجاستوں کے گرنے سے پہلے اس میں دہ در دہ پانی تھا اس کے بعد گریں اور ان کے گرنے سے اس کا رنگ یا مزہ یا بو متغیر نہ ہوا اور کپڑا دھونے میں عین نجاست کپڑے پر نہ لگ آئی تو کپڑا پاک ہو گیا ورنہ نہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1. جامع الرموز بیان المیاہ مطبع الاسلامیہ گنبد ایران ۱/ ۲۸
2. صحیح بخاری اصح المطابع کراچی ۱۶/۱

Fatawa-e-Razawiyya Volume II

Question 36: From the city, Bahari Pur neighborhood, asked by Nawab Maulvi Sultan Ahmed Khan Sahib, 28 Dhu al-Qi'dah 1330 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: Is it permissible for a patient to perform Wudu (ablution) or Istinja (cleansing after defecation/urination) with water in which something else has been boiled to the point that it is no longer called 'water'? That is, will purity be attained due to this necessity, or will necessity not be taken into account? Please explain and be rewarded.

The Answer: Istinja (1) is certainly permissible because for it, pure absolute water (ma'e mutlaq) is not a condition; it can be done with any pure substance that is capable of removing filth. However, Wudu will not be valid (with those things).

Because of complete mixing through cooking, like broth, and because the name 'water' is removed, like Nabeez. (That which becomes one substance due to cooking like broth, or it is no longer called water like Nabeez. (T))

What is the need to consider necessity in Wudu? If Wudu with absolute water is harmful, one should perform Tayammum (dry ablution). And Allah Almighty knows best.

Question 37: From village Sarnian, asked by Amir Ali Sahib Qadri, 11 Jumada al-Ula 1331 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: Zaid asks that there are several ponds in my village. How is it to take a bath, perform Wudu, drink, and wash clothes with the water from those ponds? Because most livestock, Hindus, and Muslims, everyone bathes there. A community cleanses themselves (Istinja) there regularly, and sometimes leather-workers and sweepers also bathe. Occasionally, a pig might drink the water or bathe in it. Sometimes these ponds remain stagnant, and sometimes a canal from a river flows through them. Its detail is as follows:

Pond No.	Length	Width	Depth	Pond No.	Length	Width	Depth
1	10 Yards	10 Yards	1 Yard	3	30 Yards	30 Yards	2 Yards
2	20 Yards	20 Yards	20 Yards	4	3000 Yards	1000 Yards	4 Yards

At times the water is more than this and sometimes a bit less. And if water comes from the river and there is some impurity in the canal on the way, what is the ruling? Near the settlement, there are several other ponds, and their water remains changed in color; even most Hindus despise that water. Even in the rainy season, it is not

clearly clean. The length, width, and depth are significant, but the water is not clean. Drain water from another city flows into the river, and the river water is somewhat mixed, mostly in appearance...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द-2

मसाला 36: शहर मोहल्ला बहारी पुर से, सायल नवाब मौलवी सुल्तान अहमद खान साहब, 28 ज़ुल-क़ादा 1330 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मरीज़ को ऐसे पानी से वज़ू या इस्तिंजा करना जिसमें कोई दूसरी चीज़ उबाली गई हो जिससे पानी का नाम पानी न रहे, जायज़ है या नहीं? यानी क्या इस ज़रूरत की वजह से इससे तहारत (पवित्रता) हासिल होगी, या ज़रूरत का लिहाज़ नहीं किया जाएगा? बयान फ़रमाएँ सवाब पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): इस्तिंजा (1) तो यकीनन जायज़ है क्योंकि उसमें 'माए मुतलक' (शुद्ध जल) की शर्त नहीं है, वह हर पाक और गन्दगी को साफ़ करने वाली चीज़ से हो जाता है। मगर वज़ू जायज़ न होगा (उन चीज़ों से)।

पकाने से पूरी तरह मिल जाने के कारण जैसे शोरबा, और पानी का नाम मिट जाने के कारण जैसे नबीज़ (जो पकने से एक जान हो जाएँ जैसे शोरबा या उसे पानी न कहा जाए जैसे नबीज़। (त))।

वज़ू में ज़रूरत को देखने की क्या हाजत? अगर 'माए मुतलक' से वज़ू नुक़सानदेह हो तो तयम्मुम कर ले। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 37: मौज़ा सरनियान से, सायल अमीर अली साहब क़ादरी, 11 जमादि-उल-उला 1331 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद दरयाफ़्त करता है कि मेरे गाँव में चंद तालाब हैं, उन तालाबों के पानी से ग़ुस्ल, वज़ू, पीना और कपड़े धोना कैसा है? क्योंकि अक्सर मवेशी, हिन्दू और मुसलमान हर कोई नहाते हैं, इस्तिंजा बराबर एक क़ौम वहाँ पाक करती है और कभी चमार-भंगी भी नहाते हैं और इत्तिफ़ाक़न सूअर पानी पी जाए या नहाए। कभी ये तालाब रुके रहते हैं और कभी उनके अन्दर से नदी से नहर जारी हो जाती है। उसकी तफ़्सील यूँ है:

तालाब नं.	लम्बाई	चौड़ाई	गहराई	तालाब नं.	लम्बाई	चौड़ाई	गहराई
1	10 गज़	10 गज़	1 गज़	3	30 गज़	30 गज़	2 गज़
2	20 गज़	20 गज़	20 गज़	4	3000 गज़	1000 गज़	4 गज़

किसी वक़्त में इससे ज़्यादा भी पानी हो जाता है और कभी कुछ कम। और अगर नदी से पानी आ जाए और रास्ते में नहर में कुछ नापाकी हो तो क्या हुक्म है? और बस्ती के करीब चंद और तालाब हैं

और उनका पानी रंग बदला हुआ रहता है, अक्सर हिन्दू तक उस पानी से नफ़रत करते हैं। बरसात में भी साफ़ तौर पर नहीं होता है, लम्बाई-चौड़ाई-गहराई भी बहुत है मगर पानी साफ़ नहीं है। दूसरे शहर से नाले का पानी नदी में आकर गिरता है और नदी का पानी कुछ थोड़ा मिला हुआ होता है, देखने में अक्सर...

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

مسئلہ ۳۶: از شہر محلہ بہاری پور مسئولہ نواب مولوی سلطان احمد خاں صاحب ۲۸ ذیقعدہ ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ مریض کو دوا ایسے پانی سے وضو یا استنجا کرنا جس میں کوئی دوسری شے جوش دی گئی ہو جس سے پانی کا نام پانی نہ رہے جائز ہے یا نہیں یعنی اس سے طہارت حاصل ہوگی بوجہ اس ضرورت کے یا ضرورت پر لحاظ نہ ہوگا بینوا توجروا۔

الجواب : استنجاء (۱) تو یقیناً جائز ہے کہ اُس میں مائے مطلق بلاکلہ پانی ہی شرط نہیں ہر طاہر قاطع مزیل سے ہو جاتا ہے مگر وضو جائز نہ ہوگا (اُن چیزوں سے)

لکمال الامتزاج بالطبخ کالمرق ولزوال اسم الماء کالنبیز۔ (جو پکانے سے ایک جان ہو جائیں جیسے شوربا یا اس کو پانی نہ کہا جائے جیسے نبیز۔ (ت))

وضو میں لحاظ ضرورت کی کیا حاجت اگر مائے مطلق سے وضو مضر ہو تیمم کرلے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۷: از موضع سرنیان مسئولہ امیر علی صاحب قادری ۱۱ جمادی الاولی ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید دریافت کرتا ہے کہ میرے موضع میں چند تالاب ہیں اُن تالابوں کے پانی سے غسل اور وضو، پینا، کپڑے دھونا کیسا ہے کیونکہ اکثر مویشی ہنود و مسلمان ہر ایک نہاتے ہیں استنجا برابر ایک قوم وہاں پاک کرتی ہے اور کبھی چمار بھنگی بھی نہاتے ہیں اور اتفاقیہ سور پانی پی جائے یا نہائے کبھی یہ تالاب مقید رہتے ہیں اور کبھی اُن کے اندر ہو کر ندی سے نہر جاری ہو جاتی ہے اُس کی تشریح یوں ہے :

نمبر تالاب	لمبائی	چوڑائی	گہرائی	نمبر تالاب	لمبائی	چوڑائی	گہرائی
۱	۱۰ گز	۱۰ گز	۱ گز	۳	۳۰ گز	۳۰ گز	۲ گز
۲	۲۰ گز	۲۰ گز	۲۰ گز	۴	۳۰۰۰ گز	۱۰۰۰ گز	۴ گز

کسی وقت میں اس سے زیادہ بھی پانی ہو جاتا ہے اور کبھی کچھ کم اور اگر ندی سے پانی آ جائے اور راستہ میں نہر میں کچھ غلیظ ہو تو کیا حکم ہے اور بستی کے قریب چند اور تالاب ہیں اور ان کا پانی رنگ بدلے ہوئے رہتا ہے اکثر ہنود تک اُس پانی سے نفرت کرتے ہیں۔ برسات میں بھی صاف طور پر نہیں ہوتا ہے لمبائی چوڑائی گہرائی بھی بہت مگر پانی صاف نہیں ہے دیگر شہر سے نالہ کا پانی ندی میں آ کر گرتا ہے اور ندی کا پانی کچھ تھوڑا مخلوط ہوتا ہے دیکھنے میں اکثر

Fatawa Rizvia, Volume 2

Question: It appears like urine; many people bathe in such water, washermen wash clothes in it, and many perform ablution (wudhu). What is the ruling for such water? Please state and be rewarded.

Answer: The answer to all these points is that water whose upper surface area is one hundred square cubits (e.g., ten by ten cubits, twenty by five cubits, or twenty-five by four cubits, and so on), and is deep enough that the ground is not exposed when water is scooped up by hand, does not become impure (najis) by the falling of impurity into it or by passing over impurity, as long as its color, smell, or taste does not change due to the impurity. If there is a change in its color, smell, taste, or all of them due to some reason other than impurity, it does not matter. The consideration is for the surface area of the water, not the pond itself. No matter how large the pond was, if it dries up in summer and the water remains less than one hundred cubits, and someone performs cleaning after relief (Istinja) or an animal with an impure mouth, like a dog, drinks from it, it will become impure. Similarly, if rainwater was flowing and impurity was mixed in it, it remains pure as long as it is flowing and the impurity hasn't changed its color, smell, or taste. Now, if it falls into a pond and settles, and after settling the surface area is less than one hundred cubits and some part of the impurity is present in it, then all of it becomes impure. If it settles in an area larger than one hundred cubits, it is pure. If impure sewage water falls into a river and changes the color, taste, or smell of the river water, then the river water becomes impure; otherwise, it remains pure. And Allah Almighty knows best.

Issue 38: Asked by Hafiz Muhammad Qasim Sahib from Aden Camp, Mohalla Miskin Bara, 7 Rabi al-Awwal 1332 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say regarding this issue: there is a pond which, according to some people's measurement of 6 fists (qabza) i.e. 24 fingers (angul), is 46 fingers more than 'Dah-dar-Dah' (10x10 cubits). These 24 fingers are equal to 17.5 inches. For those whose 24 fingers are 17.5 inches, it is 24 fingers more than 'Dah-dar-Dah'. For those whose 24 fingers are 18 inches, it is 12 fingers less than 'Dah-dar-Dah'. And there is a pillar in the middle of it.

Note: Benefit: In Shari'i yards (Gaz), those fingers (angul) are reliable of which twenty-four are equal to eighteen inches. The area of one square cubit (Haath) in different measurements is given in this table:

Parts of one square cubit in these measurements: | Numbari | 1⁄4 | Yard (Gaz) | 324 | Inch | | Foot | 2 1⁄4 | | 576 | Finger (Angul) |

(Continued on next page)

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

प्रश्न: पेशाब जैसा प्रतीत होता है; ऐसे पानी से अक्सर लोग नहाते हैं, धोबी कपड़े धोते हैं और अक्सर वुज़ू करते हैं, तो इस पानी के लिए क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएंगे।

उत्तर: इन सब बातों का जवाब यह है कि जिस पानी की ऊपरी सतह का क्षेत्रफल सौ हाथ हो (मसलन दस-दस हाथ लंबा-चौड़ा, या बीस हाथ लंबा और पाँच हाथ चौड़ा, या पच्चीस हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा, और इसी तरह) और वह इतना गहरा हो कि अंजुली से पानी लेने पर ज़मीन न खुले, तो वह पानी गंदगी (नजासत) गिरने या गंदगी पर से गुजरने से नापाक नहीं होता, जब तक कि गंदगी के कारण उसका रंग, गंध या स्वाद न बदल जाए। अगर गंदगी के अलावा किसी और कारण से उसके रंग, गंध या स्वाद में बदलाव आता है, तो कोई हर्ज नहीं। एतबार पानी के क्षेत्रफल का है, तालाब का नहीं। तालाब चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, अगर गर्मियों में सूखकर उसमें सौ हाथ से कम पानी रह जाए और अब कोई उससे इस्तिंजा करे या कुत्ता आदि नापाक मुंह वाला जानवर उससे पानी पिए, तो वह नापाक हो जाएगा। इसी प्रकार अगर बरसात का बहता हुआ पानी आया और उसमें गंदगी मिली हुई थी, तो जब तक वह बह रहा है और गंदगी से उसका रंग, गंध या स्वाद नहीं बदला, तब तक वह पाक (पवित्र) है। अब अगर वह किसी तालाब में गिरकर ठहर गया और ठहरने के बाद सौ हाथ से कम क्षेत्रफल रहा और गंदगी का कोई अंश उसमें मौजूद है, तो अब सब नापाक हो गया। और अगर सौ हाथ से ज़्यादा क्षेत्रफल में ठहरा तो पाक है। नापाक नाले का पानी नदी में आकर गिरा और उससे नदी के पानी का रंग, स्वाद या गंध बदल गई, तो नापाक हो गया, वरना पाक रहा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है)।

मसला ३८: हफ़ीज़ मुहम्मद कासिम साहिब, अदन कैंप, मोहल्ला मिस्कीन बाड़ा, ७ रबी-उल-अव्वल १३३२ हिजरी द्वारा पूछा गया।

उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक हौज (कुंड) है जो कुछ लोगों के छह कब्ज़े (मुट्ठी) यानी चौबीस (२४) अंगुल के हिसाब से 'दह-दर-दह' (१०x१० हाथ) से ४६ अंगुल ज़्यादा है, और ये २४ अंगुल १७.५ इंच के बराबर हैं। और जिन लोगों की २४ अंगुल १७.५ इंच हैं, उनके हिसाब से यह 'दह-दर-दह' से २४ अंगुल ज़्यादा है। और जिन लोगों की २४ अंगुल १८ इंच के बराबर हैं, उनके हिसाब से यह 'दह-दर-दह' से १२ अंगुल कम है, और इसके बीच में एक खंभा है।

फायदा: शरई गज़ में वही अंगुल विश्वसनीय हैं जिनमें से चौबीस १८ इंच के बराबर होते हैं। एक वर्ग हाथ (स्क्वायर हाथ) का क्षेत्रफल विभिन्न पैमानों में इस तालिका में है:

एक वर्ग हाथ में इन पैमानों के हिस्से: | नम्बरी | १/४ | गज़ | ३२४ | इंच | | फुट | २ १/४ | | ५७६ | अंगुल |

(बाकी अगले पृष्ठ पर)

پیشاب کی صورت معلوم ہوتا ہے ایسے پانی سے اکثر لوگ نہاتے اور دھوبی کپڑے دھوتے ہیں اکثر وضو کرتے ہیں تو اس پانی کیلئے کیا حکم ہے بینوا توجروا۔

الجواب: ان سب باتوں کا جواب یہ ہے کہ جس پانی کی سطح بالا کی مساحت سو ہاتھ ہو مثلاً دس دس ہاتھ لمبا چوڑا یا بیس ہاتھ لمبا پانچ ہاتھ چوڑا یا پچیس ہاتھ لمبا چار ہاتھ چوڑا و علی ہذا القیاس اور گہرا اتنا کہ لپ سے پانی لے تو زمین نہ کھل جائے وہ پانی نجاست کے پڑنے یا نجاست پر گزرنے سے ناپاک نہیں ہوتا جب تک نجاست کے سبب اُس کا رنگ یا بو یا مزہ نہ بدل جائے اگر نجاست کے سوا اور کسی وجہ سے اُس کے رنگ یا بو یا مزے یا سب میں فرق ہو تو حرج نہیں اور اعتبار پانی کی مساحت کا ہے نہ تالاب کی۔ تالاب کتنا ہی بڑا ہوا گر گرمیوں میں خشک ہو کر اُس میں سو ہاتھ سے کم پانی رہے گا اور اب اُس سے کوئی استنجا کرے یا کتا وغیرہ ناپاک منہ کا جانور پئے تو ناپاک ہو جائے گایوں ہی برسات کا بہتا ہوا پانی آیا اور اس میں نجاست ملی تھی تو جب تک بہ رہا ہے اور نجاست سے اُس کا رنگ بو مزہ نہیں بدلا پاک ہے اب جو وہ کسی تالاب میں گر کر ٹھہرا اور ٹھہرنے کے بعد سو ہاتھ سے مساحت کم رہی اور نجاست کا کوئی جز اس میں موجود ہے تو اب سب ناپاک ہو گیا اور اگر سو ہاتھ سے زیادہ کی مساحت میں ٹھہرا تو پاک ہے ناپاک نالے کا پانی ندی میں آکر گرا اور اس سے ندی کے پانی کا رنگ یا مزہ یا بو بدل گئی ناپاک ہو گیا ورنہ پاک رہا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۸: مسئولہ حافظ محمد قاسم صاحب از عدن کیمپ محلہ مسکین باڑہ ۷ ربیع الاول ۱۳۳۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک حوض ہے جو بعض لوگوں کے چھ قبضہ یعنی چوبیس ۲۴ انگلیوں سے دہ در دہ سے چھیالیس ۴۶ انگل زیادہ ہے اور یہ چوبیس ۲۴ انگلیاں سترہ ۱۷-۱/۲ انچ کے برابر ہیں اور جن لوگوں کی چوبیس ۲۴ انگلیاں ساڑھے سترہ ۱۷-۱/۲ انچ ہیں اُس سے دہ در دہ سے چوبیس ۲۴ انگلیاں زیادہ ہیں اور جن لوگوں کی چوبیس ۲۴ انگلیاں اٹھارہ ۱۸ انچ کی برابر ہیں اُس سے دہ در دہ بارہ انگل کم ہے اور اس کے بیچ میں ایک ستون ہے

اے فائدہ: شرعی گز میں وہی انگل معتبر ہیں جن کے چوبیس اٹھارہ انچ کے برابر ہیں ایک ہاتھ مربع کی مساحت مختلف پیمانوں سے اس جدول میں ہے:

ایک ہاتھ مربع میں ان پیمانوں کے حصے | نمبری | ۱/۴ | گز | ۳۲۴ | انچ | | فٹ | ۲ ۱/۴ | | ۵۷۶ | انگل |

(باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya Volume Two

Question: Its length and width are each one foot. Is it permissible to perform ablution (wudu) from such a pool or not? And will its water become impure (najis) if impurity falls into it? Please provide a response with references from all books, and it should also have the seals and signatures of scholars. There is severe conflict here regarding this; most people do not consider performing wudu from it permissible. What is the Sharia ruling for those who deny it? The response to this issue should be according to the Hanafi school of thought. The shape of the pool is as follows:

[Diagram: A rectangle labeled with letters. Top length is marked as 16 feet 6 inches. A diagonal connects opposite corners.]

Answer: In the quadrilateral ABCD, when diagonal AC is joined, in triangle ADC, according to the questioner's statement, side AD is 189 inches.

(Remaining footnote from the previous page) Now, whatever area in 'hands' (cubits) is taken, its quantity from all these scales will be evident from here. For example, for 'dah darda' (ten by ten), multiply these values by 100, which results in 25 yards and feet similarly. From here, the error in the calculation mentioned in the question can be estimated. That 'dah dar dah' pool by this correct scale will be 132,200 inches. And for a 'hand' that is 17 inches, 100 hands will be only twenty-eight thousand nine hundred (28,900) inches. There will be a difference of three and a half thousand inches, which amounts to four thousand six hundred sixty-six fingers and two-thirds, not just fifty-eight. And for a 'hand' that is 17.01 inches, 100 hands will be twenty-three thousand five hundred twenty-five inches, nearly nineteen hundred inches less, which amounts to two and a half thousand fingers, not just thirty-six, and so on. 12 (m) 1. In which angle D is a right angle. 12 (m) 2. Due to ease of calculation and minimal difference, this approximation was made. The research is that while triangle ADC is right-angled, its area is half of 3137, which is 1568 inches. As for triangle ABC...

Page 276 of 711

फ़तावा रज़विया भाग दो

प्रश्न: इसकी लंबाई और चौड़ाई एक-एक फुट है। क्या ऐसे हौज़ (कुंड) से वज़ू करना जायज़ है या नहीं? और क्या इसमें गंदगी गिरने से इसका पानी नापाक (नजिस) हो जाएगा? कृपया सभी किताबों के संदर्भ के साथ उत्तर दें और विद्वानों की मोहर और हस्ताक्षर भी होने चाहिए। यहाँ इसके बारे में गंभीर विवाद है; अधिकांश लोग इससे वज़ू करना जायज़ नहीं समझते। जो लोग इससे इनकार करते हैं, उनके लिए शरीयत का क्या हुक्म है? इस मसले का जवाब हनफ़ी मज़हब के अनुसार होना चाहिए। हौज़ की आकृति इस प्रकार है:

[आरेख: अक्षरों के साथ लेबल किया गया एक आयत। ऊपरी लंबाई 16 फुट 6 इंच के रूप में चिह्नित है। एक विकर्ण विपरीत कोनों को जोड़ता है।]

उत्तर: चतुर्भुज ABCD में जब विकर्ण AC को जोड़ा गया, तो त्रिभुज ADC में प्रश्नकर्ता के बयान के अनुसार भुजा AD 189 इंच है।

(पिछले पृष्ठ के फ़ुटनोट का शेष भाग) अब जितने 'हाथ' का क्षेत्रफल लिया जाए, उन सभी पैमानों से उसकी मात्रा यहीं से स्पष्ट होगी। उदाहरण के लिए, 'दह दर दह' (दस गुणा दस) के लिए इन मात्राओं को 100 से गुणा करें तो 25 गज़ हुए और फुट भी इसी तरह। यहाँ से सवाल में बताए गए हिसाब की गलती का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। वह 'दह दर दह' हौज़ इस सही पैमाने से 132,200 इंच होगा। और जो 'हाथ' 17 इंच का है, उससे सौ हाथ केवल अट्ठाईस हज़ार नौ सौ (28,900) इंच होगा। साढ़े तीन हज़ार इंच का फ़र्क पड़ेगा, जो चार हज़ार छह सौ छियासठ अंगुल और दो-तिहाई होंगे, न कि केवल अट्ठावन। और जो 'हाथ' 17.01 इंच का है, उससे सौ हाथ तेईस हज़ार पाँच सौ पच्चीस इंच होगा, जो लगभग उन्नीस सौ इंच कम है, जो ढाई हज़ार अंगुल हुए, न कि केवल छत्तीस, और इसी तरह। 12 (म) 1. जिसमें कोण D समकोण है। 12 (म) 2. कार्य की सुगमता और कम अंतर के कारण यह सन्निकटन (approximation) किया गया। शोध यह है कि जबकि त्रिभुज ADC समकोण है, इसका क्षेत्रफल 3137 का आधा 1568 इंच हुआ। रहा त्रिभुज ABC...

पृष्ठ 276 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

س کا طول و عرض ایک ایک فٹ ہے کیا ایسے حوض میں سے وضو کرنا جائز ہے یا نہیں اور نجاست پڑنے سے اس کا پانی نجس ہوگا یا نہیں؟ تمام کتابوں کے حوالہ سے جواب دیا جائے اور علماء کے مُہر و دستخط بھی ہو نا چاہئیں اس کے بارہ میں یہاں سخت فساد ہے اکثر لوگ اس سے وضو کرنا جائز نہیں سمجھتے جولوگ اس سے انکار کرتے ہیں ان کا شرعاً کیا حکم ہے اس مسئلہ کا جواب باعتبار مذہب حنفی ہونا چاہئے، حوض کی شکل یہ ہے:

[شکل: ایک مستطیل جس پر حروف درج ہیں۔ اوپر کی لمبائی ١٦ فٹ ٦ انچ درج ہے۔ ایک وتر مخالف کونوں کو ملاتا ہے۔]

الجواب ذو اربعۃ الاضلاع ا ب ج د میں قطر ا ج وصل کیا تو مثلث ا د ج میں حسب بیان سائل ضلع ا د ١٨٩ انچ ہے

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اب جتنے ہاتھ کا رقبہ لیا جائے ان سب پیمانوں سے اس کی مقدار یہیں سے ظاہر ہوگی مثلاً دہ دردہ کیلئے ان مقادیر کو ١٠٠ میں ضرب کرو تو گز ٢٥ ہوئے اور فٹ سواد و سو علی ہذا القیاس، یہاں سے حساب مذکور سوال کی غلطی کا اندازہ ہو سکتا ہے وہ دہ در دہ حوض اس صحیح پیمانے سے ١٣٢٢٠٠ انچ ہوگا اور جو ہاتھ سترہ انچ ہے اس سے سو ہاتھ صرف اٹھائیس ہزار نو سو (٢٨٩٠٠) انچ ہوگا ساڑھے تین ہزار انچ کا فرق پڑے گا جس کے چار ہزار چھ سو چھیاسٹھ انگل اور دو تہائی ہوئے نہ کہ صرف اٹھاون، اور جو ہاتھ ١٧.٠١ انچ ہے اس سے سو ہاتھ تئیس ہزار پانچ سو پچیس انچ ہو گا پونے انیس سو انچ کم جس کے ڈھائی ہزار انگل ہوئے نہ کہ فقط چھتیس و قس علیہ ١٢(م) ١ جس میں زاویہ د قائمہ ہے ١٢ (م) ٢ آسانی عمل و

قلت تفاوت کے سبب یہ تقریب کی گئی اور تحقیق یہ ہے کہ مثلث ا د ح جبکہ قائم الزاویہ ہے اس کی مساحت وہی ۳۱۳۷ کی نصف ۱۵۶۸ انچ ہوئی، رہا مثلث ا ب ح

Fatawa Razawiya Volume II And side JH is 166, area 7413, and in triangle ABJ, side AB is 159 and side BJ is 198, area 31482, total 62856. Half of which, 31428, is the approximate area of this pond, and for 'dah dar dah' (ten by ten), it is 13200 inches. (Remainder of previous page's footnote) Firstly, the value of diameter AH was found as follows: the square of DH 166 is 27556, and the square of AE 189 is 35721, total 63277. Logarithm 8.012459 for 4, half 4.006230; this is the logarithm of the diameter. The number is 529.510251 inches; this is the value of the diameter. Naturally, in the triangle... [Diagram label]: The angle is acute. A perpendicular BH was dropped from B onto AJ. Therefore, according to Theorem 13 of the second book of Euclid, the square of BH is smaller than the sum of the squares of AB and AH by twice the area of the rectangle formed by AH and AD. Square of AB 159 is 25281 + square of AH 63277 = 88558, from which the square of BH 198, i.e., 39204, was subtracted. Remainder 49354, half 24677; this is the area of rectangle AH, AD. From its logarithm 4.3922924, subtracted the diameter logarithm 2.4006230. Remainder log AD 1.9916694, number 98.101; this is the value of AD. Subtracted its square 9623.6623 from the square of the hypotenuse AB 25281 of the right-angled triangle. Remainder 15657.404; this is the square of the perpendicular. Its logarithm 2.194188, half 2.0973592 is the log of the perpendicular. This was added to the mentioned logarithm of the base, i.e., diameter AH. It became 4.2982479. From this, subtracted 0.30100 because the area of a triangle is half the area of the rectangle formed by its perpendicular and base. Remainder 2.1969522, number 105.38; 115 7/8 inches is the area of triangle ABH. By adding this to the area of the first triangle, the pond's area became 31325 inches. By approximate calculation, it is only three inches less, so the pond is 19.75 inches less than 'dah dar dah', which makes thirteen hundred fingers, not just twelve as in the question. Benefit: The pond's angle J is acute because triangles BHH' are right-angled. BJ : E :: BH : sin BJH... log perp 2.0973592 * log BJ 2.2966611 = 9.8002922 where log sin is 3.391143. And triangle ADH is right-angled; AH : E :: 1 : D: sin AHD * log 2.72618, log diameter 2.4006230 = 9.8758388 where log sin is 4.9484224. The sum of the three angles 48.50528 is the magnitude of angle J. And if this were also a right angle, it would have been easier. Perpendicular AH was drawn on BH, which by the rule of parallelism became equal to GJ. And AC : AE then rectangle HE 189 * 166 = 7413 and triangle BHA (Continued on the next page). Page 277 of 711

फतवा रज़विया खंड द्वितीय और भुजा JH 166, क्षेत्रफल 7413 है और त्रिभुज ABJ में भुजा AB 159 है और भुजा BJ 198 क्षेत्रफल 31482 कुल 62856, जिनका आधा 31428 है। यह इस हौज (तालाब) का अनुमानित क्षेत्रफल हुआ और वह 'दह दर दह' के लिए 13200 इंच है। (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) पहले व्यास AH का मान इस प्रकार ज्ञात किया कि DH 166 का वर्ग 27556 है और AE 189 का वर्ग 35721 है, कुल 63277। लघुगणक 4 के लिए 8.012459, आधा 4.006230; यह व्यास का लघुगणक हुआ। संख्या 529.510251 इंच है; यह व्यास का मान हुआ। स्वाभाविक रूप से त्रिभुज में... [चित्र का लेबल]: कोण न्यून है। AJ पर B से लंब BH गिराया गया। अतः, यूक्लिड की दूसरी पुस्तक के प्रमेय 13 के अनुसार, BH का वर्ग AB और AH के वर्गों के योग से AH और AD के आयत के दोगुने परिमाण के बराबर छोटा है। AB 159 का वर्ग 25281 + AH का वर्ग 63277 = 88558, जिसमें से BH 198 का वर्ग 39204 घटाया गया। शेष 49354, आधा 24677; यह AH और AD के आयत का क्षेत्रफल है। इसके लघुगणक 4.3922924 में से व्यास का लघुगणक 2.4006230 घटाया गया। शेष log AD 1.9916694, संख्या 98.101 है; यह AD का मान हुआ। इसके वर्ग 9623.6623 को समकोण त्रिभुज के कर्ण AB के वर्ग 25281 से घटाने पर शेष 15657.404 बचा; यह लंब का वर्ग हुआ। इसका लघुगणक 2.194188, आधा 2.0973592 लंब का लॉग है। इसे आधार के उल्लिखित लघुगणक यानी व्यास AH में जोड़ा गया, तो 4.2982479 हुआ। इससे 0.30100 घटाया गया क्योंकि त्रिभुज का क्षेत्रफल लंब और आधार के गुणनफल का आधा होता है। शेष 2.1969522, संख्या 105.38; 115 7/8 इंच त्रिभुज ABH का क्षेत्रफल हुआ। इसे प्रथम त्रिभुज के क्षेत्रफल में जोड़ने से हौज का क्षेत्रफल 31325 इंच हुआ। अनुमानित गणना से केवल तीन इंच कम, अतः हौज 'दह दर दह' से 19.75 इंच कम है, जिसके तेरह सौ अंगुल होते हैं, न कि केवल बारह जैसा कि प्रश्न में है। लाभ: हौज का कोण J न्यून है क्योंकि त्रिभुज BHH' समकोण हैं। BJ : E :: BH : sin BJH... log लंब 2.0973592 * log BJ 2.2966611 = 9.8002922 जहाँ log sin 3.391143 है। और त्रिभुज ADH समकोण है; AH : E :: 1 : D: sin AHD * log 2.72618, log व्यास 2.4006230 = 9.8758388 जहाँ log sin 4.9484224 है। तीनों कोणों का योग 48.50528 कोण J का परिमाण है। और यदि यह भी समकोण होता तो मामला और आसान होता। BH पर लंब AH खींचा गया जो समांतरता के नियम से GJ के बराबर हुआ। और AC : AE तो आयत HE 189 * 166 = 7413 और त्रिभुज BHA (शेष अगले पृष्ठ पर)। पृष्ठ 277 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی اور ضلع ج ح ۱۶۶ مسطح ۷۴۱۳ اور مثلث اب ج میں ضلع اب ۱۵۹ ہے اور ضلع ب ج ۱۹۸ مسطح ۳۱۴۸۲ مجموع ۶۲۸۵۶ جن کا نصف ۳۱۴۲۸ یہ اس حوض کی مساحت تقریبی ہوئی اور وہ در دہ کیلئے ۱۳۲۰۰ انچ (بقیہ حاشیہ صفحہ گذشتہ) اولاً مقدار قطر اح معلوم کی یوں کہ دح ۱۶۶ کا مربع ۲۷۵۵۶ ہے اور اع ۱۸۹ کا مربع ۳۵۷۲۱ مجموعہ ۶۳۲۷۷، لو گارتھم ۸۰۱۲۴۵۹ ع ۴ نصف ۴۰۰۶۲۳۰ء ۲ یہ لو گارتھم قطر ہوا عدد ۵۲۹ء ۵۱۰۲۵۱ انچ یہ قدر قطر ہوئی لاجرم مثلث میں زاویہ احادہ ہے اج پر ب سے عمود ب ھ اتارا، پس بحکم شکل ۱۳ مقالہ دوم اقلیدس مربع ب ح چھوٹا ہے مجموع مربعین اب اح سے بقدر دو چند مسطح اح ا ھ د اب ۱۵۹ کا مربع ۲۵۲۸۱ + مربع اح ۶۳۲۷۷ = ۸۸۵۵۸ جس میں سے ب ح ۱۹۸ کا مربع ۳۹۲۰۴ کم کیا باقی ۴۹۳۵۴ نصف ۲۴۶۷۷ یہ اح ا ھ کا مسطح ہے اس کے لوگارتھم ۴.۳۹۲۲۹۲۴ سے لو قطر ۲.۴۰۰۶۲۳۰ کم کیا باقی لواھ ۱.۹۹۱۶۶۹۴ عدد ۹۸.۱۰۱ یہ مقدار اھ ہوئی اس کے مربع ۹۶۲۳ء ۶۶۲۳ کو مربع وتر قائمہ اب ۲۵۲۸۱ سے تفریق کیا باقی ۱۵۶۵۷.۴۰۴ یہ مربع عمود ہوا اس کا لو گارتھم ۲.۱۹۴۱۸۸ نصف ۲.۰۹۷۳۵۹۲ لو عمود ہے اسے قاعدہ یعنی قطر اح کے لوگارتھم مذکور میں جمع کیا ۴.۲۹۸۲۴۷۹ ہوا اس سے ۰.۳۰۱۰۰ کم کیا کہ مساحت مثلث نصف مسطح عمود و قاعدہ ہے باقی ۲.۱۹۶۹۵۲۲ عدد ۱۰۵.۳۸ ۷ ۱۱۵ انچ مساحت مثلث اب ح ہوئی اسے مساحت مثلث اول میں جمع کرنے سے مساحت حوض ۳۱۳۲۵ انچ ہوئی حساب تقریبی سے صرف تین انچ کم تو حوض دہ در دہ سے ۱۹.۷۵ انچ کم ہے جن کے تیرہ سو انگل ہوئے نہ صرف بارہ جو سوال میں ہے۔ فائدہ: حوض کا زاویہ ح حادہ سے اس لئے کہ مثلثہ ب ھ ح قائم الزاویہ ہیں ب ح: ع :: ب ھ : جیب ب ح ھ :۔ لو عمود ۲.۰۹۷۳۵۹۲ * لو ب ح ۲.۲۹۶۶۶۱۱ = ۹.۸۰۰۲۹۲۲ کہ لو جیب ۳.۳۹۱۱۴۳ ہے اور مثلث ا د ح قائم الزاویہ ہیں اح : ع :: ۱ : د: جیب ا ح د * لواء

۲.۷۲۶۱۸، لو قطر ۲.۴۰۰۶۲۳۰ = ۹.۸۷۵۸۳۸۸ کہ لو جیب ۴.۹۴۸۴۲۲۴ ہے مجموع زاویہ تین ۴۸.۵۰۵۲۸ مقدار زاویہ ح ہے اور اگر یہ بھی قائمہ ہوتا تو امر آسان تر تھا ب ح پر اسے عمود ا ھ نکالا کہ بحکم موازات ج ء کے برابر ہوا اور ح : اع تو مستطیل ھ ع ۱۸۹*۱۶۶ = ۷۴۱۳ اور مثلث ب ھ ا (باقی بر صفحہ آئندہ) Page 277 of 711

Fatawa Rizvia, Volume 2

...is required, so this is 279 inches less, therefore it is 'Ma-e-Qaleel' (small quantity of water), it will become impure with even one drop of filth. As for performing ablution (wudu) in it, if no unwashed limb is put into it, wudu is permissible, even if the used water (Ghusala) falls into it, as long as the 'used water' (Ma-e-Mustamal) does not dominate its water. This is the correct view. But if any unwashed limb, even a whole finger or a nail, touches it without necessity, then the entire water will not remain suitable for wudu, based on the difference between 'Mulaqi' (the one that meets) and 'Mulqi' (the one that is thrown), as we have verified in our treatise 'Al-Numiqat-ul-Anqiya'. Allah Almighty knows best. (The research on the difference between Mulaqi and Mulqi has been done in my treatise Al-Numiqat-ul-Anqiya, and Allah Almighty knows best. - T)

Mas'ala 39: Sent by Sheikh Ibrahim Sahib, teacher at Madrasa Faiz-e-Aam, Godhra Pur, district Panchmahal, Ahmedabad, Gujarat. 4 Jumada al-Ula 1332 AH. Does impure water become pure by flowing two or three yards or by exposure to air? Is this stated anywhere? Explain and be rewarded.

The Answer: Impure water can neither be purified by exposure to air nor by flowing on its own. Yes, if pure water comes flowing and carries it away, it will become pure, for 'the flowing water purifies some of itself by means of the other' and Allah Almighty knows best. (Because one part of flowing water purifies the other part of water. - T)

Mas'ala 40: From village Mohanpur, police station and post office Dewarnia, asked by Muhammad Shah, on Saturday, 11 Safar-ul-Muzaffar 1334 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say in this matter regarding how water becomes Makruh (disliked)? Explain and be rewarded.

The Answer: It is common among the public that water becomes Makruh if an unwashed person's nail is dipped into it. The ruling is that for someone without wudu...

(Remaining footnote from previous page): ...are right-angled. BH = 189-189. The sum of the triangle and rectangle is 12121.3. But according to the questioner's statement,

this is impossible because AB was stated to be shorter than AC, so it is necessary that BH is not parallel to AE. Allah Almighty knows best. 12 Minhu (M)

1. The Shari'i yard (Gaz) which is twenty-four fingers is one hand or one and a half feet, which is 18 inches. And with this yard, it was mentioned in the question itself to be less than ten by ten, but that was extremely disjointed and incorrect, therefore a fresh calculation was made. 12 (M)

फतावा रज़विया, जिल्द 2

...की आवश्यकता है, तो यह 279 इंच कम है, इसलिए यह 'मा-ए-क़लील' (थोड़ा पानी) है, यह गंदगी की एक बूंद से भी अपवित्र हो जाएगा। जहाँ तक इसमें वज़ू करने की बात है, यदि इसमें कोई बिना धुला अंग नहीं डाला जाता है, तो वज़ू जायज़ है, भले ही इसमें 'ग़ुसाला' (इस्तेमाल किया हुआ पानी) गिरे जब तक कि 'मा-ए-मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) इसके पानी पर हावी न हो जाए। यही सही बात है। लेकिन अगर कोई बिना धुला अंग, चाहे एक पूरा नाखून ही क्यों न हो, बिना आवश्यकता के इसे छुएगा, तो पूरा पानी वज़ू के लायक नहीं रहेगा, 'मुलाक़ी' (मिलने वाला) और 'मुल्क़ी' (फेंका गया) के बीच के अंतर के आधार पर, जैसा कि हमने अपने शोध प्रबंध 'अल-नुमीक़त-उल-अन्क़िया' में सत्यापित किया है। अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (मुलाक़ी और मुल्क़ी के बीच के अंतर पर शोध मेरे शोध प्रबंध अल-नुमीक़त-उल-अन्क़िया में किया गया है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। - T)

मसाला 39: प्रेषक शेख इब्राहिम साहिब, शिक्षक मदरसा फ़ैज़-ए-आम, गोधरा पुर, जिला पंचमहल, अहमदाबाद, गुजरात। 4 जमादी-उल-ऊला 1332 हिजरी। क्या अशुद्ध पानी दो या तीन गज बहने से या हवा लगने से शुद्ध हो जाता है? क्या यह कहीं स्पष्ट है? समझाएं और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): अशुद्ध पानी न तो हवा लगने से शुद्ध हो सकता है और न ही अपने आप बहने से। हाँ, अगर शुद्ध पानी बहता हुआ आए और उसे अपने साथ बहा ले जाए, तो वह शुद्ध हो जाएगा, क्योंकि 'बहता हुआ पानी अपने एक हिस्से से दूसरे को शुद्ध कर देता है' और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (क्योंकि बहते पानी का एक हिस्सा दूसरे पानी को शुद्ध कर देता है। - T)

मसाला 40: ग्राम मोहनपुर, थाना और डाकघर देवरनिया से मोहम्मद शाह द्वारा पूछा गया, शनिवार, 11 सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 1334 हिजरी। धर्म के विद्वान और दृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि पानी किस-किस तरह से मकरूह (नापसंद) हो जाता है? समझाएं और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): आम जनता में यह प्रसिद्ध है कि बिना वज़ू वाले का नाखून डूबने से पानी मकरूह हो जाता है। मसला यह है कि बिना वज़ू वाले के..

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट): ...समकोण हैं। BH = 189-189। त्रिभुज और आयत का योग 12121.3 है। लेकिन प्रश्नकर्ता के बयान के अनुसार, यह असंभव है क्योंकि AB को AC से छोटा

बताया गया था, इसलिए यह आवश्यक है कि BH, AE के समानांतर न हो। अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। 12 मिन्हु (M)

1. शरीयत का गज (Gaz) जो चौबीस अंगुल है, एक हाथ या डेढ़ फीट है, जो 18 इंच होता है। और इस गज से प्रश्न में ही दस-बाई-दस से कम होने का उल्लेख था, लेकिन वह अत्यंत असंगत और गलत था, इसलिए नए सिरे से गणना की गई। 12 (M)

पृष्ठ 711 का 278

درکار ہیں تو یہ ۲۷۹ انچ کم ہوا، لہٰذا اے مائے قلیل ہے ایک قطرہ نجاست سے سب ناپاک ہو جائیگا، رہا اس میں وضو کرنا اگر ہاتھ یا پاؤں کوئی عضو بے دھلا اس میں نہ ڈالا جائے تو وضو جائز ہے اگر چہ غسالہ اس میں گرے جب تک مائے مستعمل اس کے پانی پر غالب نہ ہو جائے ھو الصحیح مگر بے دھلا کوئی عضو اگرچہ ایک پورا یا ناخن بلا ضرورت اس سے مس کرے گا تو سارا پانی قابلِ وضو نہ رہے گا بناء علی الفرق بین الملاقی والملقی کما حققناہ فی رسالتنا النمیقۃ الانقی واللہ تعالیٰ اعلم (ملاقی اور ملقی میں فرق کی تحقیق اپنے رسالہ النمیقۃ الانقی میں کی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ت)

مسئلہ ۳۹: مرسلہ شیخ ابرا ہیم صاحب مدرس مدرسہ فیضِ عام گودھر پور ضلع پنچ محل ملک احمد آباد گجرات ۴ جمادی الاولی ۱۳۳۲ھ نجس پانی دو تین گز بہنے سے یا ہوا لگنے سے پاک ہو جاتا ہے یہ کہیں مصرح ہے بینوا توجروا۔

الجواب: نجس پانی نہ ہوا لگنے سے پاک ہو سکتا ہے نہ خود بہنے سے، ہاں پاک پانی اگر بہتا ہوا آئے اور اسے بہا لیجائے تو پاک ہو جائیگا فان الما ء الجاری یطھر بعضہ بعضا واللہ تعالیٰ اعلم (کیونکہ جاری پانی کا ایک حصہ دوسرے پانی کو پاک کر دیتا ہے۔ت)

مسئلہ ۴۰: از موضع موہن پور تھانہ وڈاک خانہ دیور نیا مسئولہ محمد شاہ بروز شنبہ تاریخ ۱۱ صفر المظفر ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ پانی مکروہ کس کس طرح سے ہو جاتا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: عوام میں یہ مشہور ہے کہ بے وضو کا ناخن ڈوبنے سے پانی مکروہ ہو جاتا ہے اور مسئلہ ہے یوں کہ بے وضو کے

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قائم الزاویہ ہیں ب ہ = ۱۸۹- ۱۸۹ مجموعہ مثلث و مستطیل ۱۲۱۲۱ ۳ مگر یہ حسب بیانِ سائل محال ہے کہ اب کو ح سے اقصر بتایا ہے تو ضرور ہے کہ ب ح متوازی اع نہ ہو واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ (م)

۱ــہ گز شرعی کہ چوبیس انگل ہے ایک ہاتھ یا ڈیڑھ فٹ ہے جس کے ۱۸ انچ ہوئے اور اس ذراع سے خود سوال میں دہ در دہ سے کم ہونا مذکور مگر وہ نہایت مختل و نا صواب تھا لہٰذا از سر نو محاسبہ کیا ۱۲(م)

Fatawa Razawiya, Volume 2

Among the parts of the body for wudu (ablution), if any unwashed part other than the head touches a small quantity of water without necessity, that water will no longer be suitable for wudu and drinking it is 'makruh' (disliked). Similarly, the leftover water of a cat, a small chicken, and crawling creatures with blood such as snakes, lizards, geckos, scorpions, shrews, or birds of prey like hawks, falcons, kestrels, and eagles, as well as kites, crows, and similar animals that do not avoid impurities, is also 'makruh'. This applies when no actual impurity is known to be present. For example, if a cat had just eaten a mouse and not enough time had passed for its saliva to cleanse its lips and tongue, its leftover would be impure ('najis') rather than just 'makruh'. Conversely, if it is known to be pure—such as a caged chicken that cannot reach impurities or a bird of prey that is fed pure meat and has not hunted for a long time—then its leftover is pure without any dislike. Furthermore, it is 'makruh' for a man to drink water left over by a non-mahram woman, and vice-versa, when there is a concern for carnal desire, as mentioned in 'Nur al-Idah' and 'Maraqi al-Falah'.

[Table Section 1] (Arabic): Al-Ma' (Tahir Mutahhir Makruh) istimaluhu tanziha 'ala al-asah wa huwa ma shariba minhu al-hirra al-ahliyya idh al-wahshiyya su'ruha najis (wa nahwuha) ay al-ahliyya al-dajaja al-mukhallah wa siba' al-tayr wa al-hayyah wa al-fa'rah li'annaha la tatahama 'an al-najasa. (Urdu Translation): Water (which is pure, purifying and its use is disliked) its use is 'Makruh Tanzihi' according to the most correct opinion. This is the water from which a domestic cat has drunk, because the leftover of a wild cat is impure. And its like (i.e., like the domestic cat) are free-roaming chickens, birds of prey, snakes, and mice, because they do not guard against impurities. (T)

[Table Section 2] (Arabic): Qawluhu 'najis' ay ittifaqan lima ruwiya al-sinnur sab' fa'inna al-murada bihi al-barri ah. Aqulu: Hadha 'ajab bal kana al-kalamu fi al-ahli kama fi al-hadith wa qad bayyanahu ma' al-kalami 'alayhi fi 'Salb al-Thalab' na'am najasatuhu. (Urdu Translation): His statement 'impure' means by consensus because it is narrated in the Hadith that 'the cat is a beast of prey', for the intended meaning is the wild cat. I say: This is strange, rather the discussion was about the domestic cat as mentioned in the Hadith, and we have explained it along with the discussion on it in 'Salb al-Thalab' regarding its impurity.

Footnotes: 1 Maraqi al-Falah, Kitab al-Taharah, Matba al-Amir, Bulaq, Egypt, p. 13. 2 Hashiyah al-Tahtawi, Kitab al-Taharah, Matba al-Amir, Bulaq, Egypt, p. 13.

फतावा रज़विया, जिल्द 2

वुज़ू के अंगों में से, यदि सिर के अतिरिक्त किसी भी बिना धुले हिस्से को बिना आवश्यकता के थोड़े से पानी से छू लिया जाए, तो वह पानी वुज़ू के योग्य नहीं रहेगा और उसे पीना 'मक़रूह' (नापसंद) होगा। इसी प्रकार, बिल्ली, छोटी मुर्गी और रेंगने वाले रक्तयुक्त जीव जैसे सांप, गिरगिट, छिपकली, बिच्छू छछूंदर और शिकारी पक्षी जैसे बाज़, शिकरे, बहरी, चील, कौवे और उनके समान जानवरों का जूठा पानी भी 'मक़रूह' है, जो गंदगी से परहेज नहीं करते। यह तब है जब प्रत्यक्ष रूप से कोई गंदगी ज्ञात न हो। उदाहरण के लिए, यदि किसी बिल्ली ने उसी समय चूहा खाया हो और अभी तक इतना समय न बीता हो कि उसकी लार से होंठ और जीभ साफ हो जाएं, तो ऐसी स्थिति में उसका जूठा 'मक़रूह' नहीं बल्कि 'नजिस' (अशुद्ध) है। इसके विपरीत, यदि शुद्धता ज्ञात हो—जैसे कि बंद मुर्गी जो गंदगी तक नहीं पहुँच सकती या शिकारी पक्षी जिसे शुद्ध मांस खिलाया जाता है और उसने लंबे समय से शिकार नहीं किया है—तो ऐसी स्थिति में उसका जूठा बिना किसी नापसंदगी के शुद्ध है। इसके अतिरिक्त, एक अजनबी महिला का जूठा पानी पीना पुरुष के लिए और एक अजनबी पुरुष का जूठा पानी महिला के लिए 'मक़रूह' है जब कामुक इच्छा का अंदेशा हो, जैसा कि 'नूरुल इज़ाह' और 'मराक़ुल फ़लाह' में वर्णित है:

[तालिका खंड 1] (अरबी): पानी (जो शुद्ध और शुद्ध करने वाला है लेकिन नापसंद है) उसका उपयोग सबसे सही राय के अनुसार नापसंद (मक़रूह तन्ज़ीही) है। यह वह पानी है जिसे एक घरेलू बिल्ली ने पिया है, क्योंकि जंगली बिल्ली का जूठा अशुद्ध है। और उसी के समान (यानी घरेलू बिल्ली की तरह) खुले में घूमने वाली मुर्गियाँ, शिकारी पक्षी, सांप और चूहे हैं, क्योंकि वे गंदगी से नहीं बचते हैं। (उर्दू अनुवाद): पानी (ताहिर मुतह्हिर मक़रूह है) इसका इस्तेमाल 'मक़रूह-ए-तन्ज़ीही' है, सबसे सही यही है, यह वह पानी है जिससे बिल्ली ने पिया हो यानी पालतू बिल्ली ने, क्योंकि जंगली बिल्ली का पानी नजिस है (और इसी की तरह) यानी पालतू बिल्ली की तरह खुली फिरने वाली मुर्गी, शिकारी परिंदे, सांप और चूहा क्योंकि वे गंदगी से नहीं बचते। (त)

[तालिका खंड 2] (अरबी): उनका कथन 'अशुद्ध' का अर्थ सर्वसम्मति से है क्योंकि हदीस में वर्णित है कि 'बिल्ली एक शिकारी है', इसका उद्देश्य जंगली बिल्ली है। मैं कहता हूँ: यह आश्चर्यजनक है, बल्कि चर्चा घरेलू बिल्ली के बारे में थी जैसा कि हदीस में है, और हमने इसकी अशुद्धता के बारे में 'सल्बुल थलब' में पूरी चर्चा के साथ इसे स्पष्ट किया है। (उर्दू अनुवाद): उनका कथन 'नजिस' यानी इस पर सहमति है क्योंकि हदीस में आया है कि बिल्ली एक दरिंदा है, इससे मुराद जंगली बिल्ली है। (त) मैं

कहता हूँ यह अजीब बात है, चर्चा पालतू बिल्ली के बारे में थी जैसा कि हदीस में है, हमने इसे मुकम्मल बहस के साथ 'सल्बुल थलब' में बयान किया है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मराक़ुल फ़लाह, किताबुत तहारत, मतबा अल-अमीर, बुलाक़, मिस्र, पृ. 13. 2. हाशिया तहतावी, किताबुत तहारत, मतबा अल-अमीर, बुलाक़, मिस्र, पृ. 13.

पृष्ठ 279/711

اعضائے وضو میں جو کوئی بے دُھلا حصہ سر کے سوا آبِ قلیل سے بے ضرورت مس کرے گا وہ پانی قابلِ وضو نہ رہے گا اور اس کا پینا مکروہ۔ اسی طرح بلی اور چھوٹی مرغی اور حشرات الارض دموی جیسے سانپ، گرگٹ، چھپکلی، بچھو، گھونس، چھچھوندر اور شکاری پرندوں جیسے باز، جرے، شکرے، بہری نیز چیل، کوے اور ان کے امثال جانوروں کا جوٹھا بھی مکروہ ہے جو نجاست سے پرہیز نہیں کرتے جبکہ نہ بالفعل نجاست معلوم ہو جیسے بلی نے اُسی وقت چوہا کھایا اور ہنوز اتنی دیر نہ گزری کہ لعاب سے لب و زبان صاف ہو جائے کہ اس صورت میں اُس کا جوٹھا مکروہ نہیں بلکہ نجس ہے نہ طہارت معلوم ہو جیسے بند مرغی کہ نجاست کے پاس جانے نہیں پاتی یا شکاری پرند جسے پاک گوشت کھلایا جاتا ہے اور مدت سے اُس نے شکار نہ کیا کہ اس صورت میں اس کا جوٹھا بلا کراہت پاک ہے نیز اجنبی عورت کا پیا ہوا پانی پینا مرد کو اور اجنبی مرد کا عورت کو بھی مکروہ ہے جبکہ مظنہ لذت نفسانی ہو نور الایضاح و مراقی الفلاح میں ہے:

[جدول 1] الماء (طاھر مطھر مکروہ) استعمالہ تنزیھا علی الاصح و ھو ماشرب منہ الھرۃ الاھلیۃ اذ الوحشیۃ سؤرھا نجس (ونحوھا) ای الاھلیۃ الدجاجۃ المخلاۃ وسباع الطیر والحیۃ والفأرۃ لانھا لاتتحامی عن النجاسۃ[1] ۔ پانی (طاہر مطہر مکروہ ہے) اس کا استعمال مکروہِ تنزیہی ہے، اصح یہی ہے، یہ وہ پانی ہے جس سے بلی نے پیا ہو یعنی پالتو بلی نے، کیونکہ جنگلی بلی کا پانی نجس ہے (اور اسی کی مثل) یعنی پالتو بلی کی طرح کھلی پھرنے والی مرغی، شکاری پرندے، سانپ اور چوہا کیونکہ وہ نجاست سے نہیں بچتی ہے۔ (ت)

[جدول 2] قولہ نجس ای اتفاقاً لمارورد السنور سبع فان المراد بہ البری[2] اھ اقول: ھذا(ا) عجب بل کان الکلام فی الاھلی کما فی الحدیث وقد بیناہ مع الکلام علیہ فی سلب الثلب نعم نجاستہ اس کا، قول نجس یعنی اس پر اتفاق ہے کیونکہ حدیث میں آیا ہے کہ بلی درندہ ہے، اس سے مراد جنگلی بلی ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں یہ عجیب بات ہے گفتگو گھریلو بلی میں تھی جیسا کہ حدیث میں ہے، ہم نے اس کو پوری بحث کے ساتھ "سلب الثلب" میں بیان کیا ہے،

حواشی: 1 مراقی الفلاح کتاب الطہارت مطبع الامیر ببولاق مصر ص ۱۳ 2 حاشیہ طحطاوی کتاب الطہارت مطبع الامیر ببولاق مصر ص ۱۳

Fatawa Razawiyya Volume II

(Arabic Text): i.e., an animal with flowing blood like a mouse, snake, or lizard, as opposed to those without blood like a beetle, cricket, and scorpion. For it is not disliked as mentioned before, and the full discussion is in 'al-Imdad'. End. 1 (Urdu Text): In the same [book], under the commentator's statement "and inhabitants of houses", it was said: meaning those animals which have flowing blood like mice, snakes, lizards. Contrary to those animals which do not have blood like 'khunfus' (beetle), 'sarsar' (cricket), scorpion, because these are not disliked, as mentioned before, and the full discussion is in 'al-Imdad'. (T) They have not attributed this to anyone, and Allah knows best. (T)

(Arabic Text): I say: (1) What was claimed in 'Jami' al-Rumuz' regarding the consensus on the dislike of a scorpion's leftover is not directed [correctly], and he did not attribute it to anyone, and Allah knows best. (Urdu Text): I say, from this it is known that it is written in 'Jami' al-Rumuz' that a scorpion's leftover is disliked by consensus; no reason is known for this, so [let it be].

Question 41: From Jalandhar, Mohalla Rasta, adjacent to Deputy Ahmad Jan Sahib's house, sent by Muhammad Ahmad Khan Sahib, 20 Shawwal 1314 AH. Is it permissible for a non-Mahram woman, young or old, to drink the leftover water or soup of her spiritual guide (Murshid)? Is it forbidden (Makruh Tahrimi) or slightly disliked (Makruh Tanzihi)? Please write with evidence.

The Answer: If intended for sensual pleasure or lust, it is forbidden; but if purely intended for seeking blessings (Tabarruk), it is permissible. "And Allah knows the corrupter from the reformer." (Allah Almighty knows the corrupter from the reformer well. - T) It is in an authentic Hadith that when the radiant presence of the Master of the Universe (Peace and Blessings of Allah be upon him) migrated and stayed at the residence of Hazrat Sayyiduna Abu Ayyub Ansari (may Allah be pleased with him), when his (Peace and Blessings of Allah be upon him) leftover food reached their home, he and his family would eat from the places marked by the blessed fingers of the Holy Presence (Peace and Blessings of Allah be upon him). It is stated in 'Durr al-Mukhtar', Book of Prohibition (Al-Hazr):

(Arabic Text): The leftover of a man is disliked for a woman, and her leftover is disliked for him. 2 (Urdu Text): A man's leftover is disliked for a woman, and a woman's leftover is disliked for a man. (T)

1 Rad al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt, 1/163. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Sale, Mujtabai Delhi, 1/254. Page 281 of 711

(अरबी): यानी, बहने वाले खून वाला जानवर जैसे चूहा, सांप या छिपकली, उनके विपरीत जिनमें खून नहीं होता जैसे भृंग (beetle), झींगुर और बिच्छू। क्योंकि यह नापसंद (मक़रूह) नहीं है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, और पूरी चर्चा 'अल-इमदाद' में है। समाप्त। 1 (उर्दू): उसी में, टीकाकार के कथन "और घरों के निवासी" के तहत कहा गया: यानी वे जानवर जिनमें बहने वाला खून होता है जैसे चूहे, सांप, छिपकली। उन जानवरों के विपरीत जिनमें खून नहीं होता जैसे 'खुन्फ़ुस' (भृंग), 'सरसर' (झींगुर), बिच्छू क्योंकि ये मक़रूह नहीं हैं, जैसा कि पहले बीत चुका है, और पूरी बहस इमदाद में है। (त) उन्होंने इसे किसी की ओर श्रेय नहीं दिया है और अल्लाह ही बेहतर जानता है। (त)

(अरबी): मैं कहता हूँ: (1) 'जामे अल-रुमूज़' में जो बिच्छू के जूठे के मक़रूह होने पर सर्वसम्मति (इज्मा) का दावा किया गया है, वह सही नहीं लगता, और उन्होंने इसे किसी के नाम नहीं किया, और अल्लाह ही बेहतर जानता है। (उर्दू): मैं कहता हूँ, इससे पता चला कि 'जामे अल-रुमूज़' में है कि बिच्छू का जूठा सर्वसम्मति से मक़रूह है; इसका कोई कारण ज्ञात नहीं होता, इसे...

मसला 41: जालंधर से, मोहल्ला रास्ता, डिप्टी अहमद जान साहब के घर के पास, मोहम्मद अहमद खान साहब द्वारा भेजा गया, 20 शव्वाल 1314 हिजरी। क्या किसी गैर-महरम औरत (युवा या वृद्ध) के लिए अपने मुर्शिद (आध्यात्मिक गुरु) का जूठा पानी या शोरबा पीना जायज़ है? क्या यह मक़रूहे तहरीमी है या तन्ज़ीही? प्रमाण सहित लिखें।

उत्तर: कामवासना या आनंद लेने की नीयत से हराम है और शुद्ध बरकत (तबर्रुक) की नीयत से जायज़ है। "और अल्लाह बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से (अलग) जानता है।" (अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है फ़साद करने वाले को सुधार करने वाले से। - त) सही हदीस में है कि जब सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हिजरत करके सैयदुना अबू अय्यूब अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के यहाँ ठहरे, तो जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का जूठा खाना उनके घर आता, तो वे और उनके घर वाले हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुबारक उंगलियों के निशान वाली जगह से खाते थे। 'दुर्रे मुख्तार' किताबुल हज़र में है:

(अरबी): पुरुष का जूठा स्त्री के लिए मक़रूह है और स्त्री का जूठा पुरुष के लिए। 2 (उर्दू): मर्द का जूठा औरत के लिए और औरत का जूठा मर्द के लिए मक़रूह है। (त)

1 रद अल-मुहतार, कुएं का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/163। 2 दुर्रे मुख्तार, बिक्री का अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली, 1/254। पृष्ठ 281/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

ای مبالہ دم سائل کالفأرۃ والحیۃ والوزغۃ بخلاف مالادم لہ کالخنفس والصرصر و العقرب فإنہ لایکرہ کما مرو تمامہ فی الامداد اھ 1 اُسی میں زیرِ قولِ شارح وسواکن بیوت فرمایا۔ یعنی وہ جانور جن میں بہنے والا خون ہو جیسے چوہا، سانپ، چھپکلی۔ بخلاف ان جانوروں کے جن میں خون نہ ہو جیسے خنفس (ہشت پا) صرصر (جھینگڑ، مجیرا) بچھو، کیونکہ یہ مکروہ نہیں، جیسا کہ گزرا، اور مکمل بحث امداد میں ہے۔ ت انہوں نے کسی کی طرف منسوب نہیں کیا واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

اقول: (1)فلایتجہ مازعم فی جامع الرموز من کراھۃ سؤر العقرب بالاتفاق ولم یعزہ لاحد واللہ تعالی اعلم۔ میں کہتا ہوں اس سے معلوم ہوا کہ جامع الرموز میں ہے کہ بچھو کا جھوٹا مکروہ ہے بالاتفاق، اس کی کوئی وجہ معلوم نہیں ہوتی، اس کو

مسئلہ ۴۱: از جالندھر محلہ راستہ متصل مکان ڈپٹی احمد جان صاحب مرسلہ محمد احمد خان صاحب ۲۰ شوال ۱۳۱۴ھ نامحرم عورت جوان یا بڑھیا اپنے مرشد کا جھوٹا پانی یا شوربا پی لے تو درست ہے یا نہیں، مکروہِ تحریمی یا تنزیہی، باسند لکھیں۔ الجواب: تلذذ و شہوانی کی نیت سے حرام اور خالص تبرک کی نیت سے جائز وَاللّٰہُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ (اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے مفسد کو مصلح سے۔ ت) صحیح حدیث میں ہے جب حضور پُر نور سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم ہجرت فرما کر سیدنا ابو ایوب انصاری رضی اللہ تعالٰی عنہ کے یہاں مقیم ہوئے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کا اولش جب اُن کے گھر جاتا وہ اور ان کے گھر والے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کی انگشتانِ مبارک کے نشان کی جگہ سے کھاتے، دُرِّ مختار کتاب الحظر میں ہے:

یکرہ للمرأۃ سؤر الرجل وسؤرھالہ 2 مرد کا جھوٹا عورت کیلئے اور عورت کا مرد کیلئے مکروہ ہے۔ (ت)

1 ردالمحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۳ 2 درمختار فصل فی البیع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴ صفحہ 281 از 711

Volume Two

Fatawa Razawiyya

In the final chapter concerning wells (Fasl fil Bir), it is stated:

"A woman's leftover (water/food) for a man, and vice-versa, for the purpose of seeking pleasure, is disliked (Makruh)." (T)

In Radd al-Muhtar, it says:

"It is understood from this that if it is not for the purpose of seeking pleasure, then there is no dislike. And Allah Almighty knows best." (T)

Problem 42: From Chittorgarh, Udaipur region, Rajputana, queried by Mawlawi Abdul Karim Sahab on 16 Rabi' al-Awwal Sharif 1334 AH.

A water channel was constructed using impure lime (chuna), and water was allowed to flow through it before it had dried. That water began collecting in a reservoir from the very spot where it was sealed with impure lime. Is this water pure (Paak) or impure (Napaak)? Jurisprudents (Fuqaha) have written that if impurity exists on the bank of a pond and water collects from that point, then that water is impure. Based on this narration, would all the water be considered impure?

The Answer:

If water came flowing over that channel and passed through while flowing, then the correct religious opinion (Madhhab) is that it will not become impure as long as none of its qualities (color, taste, smell) change due to it. Another narration certainly states that if the entire, most, or half of the water's flow passes over impurity, then the flowing will not be beneficial, and all the water will be considered impure. "This has also been corrected, though reliance is on the first opinion because it is stronger, and upon it is the Fatwa." (And this has also been authenticated; although reliance is on the first statement because it is stronger, and the fatwa is based on it. T)

I say: But this pertains to visible impurity (Najasa Mar'iyya), such as a carcass. Regarding heavy invisible impurity, by consensus, the consideration is only for the appearance of its effect.

"As they have all explicitly stated, and it is said in Al-Bahr regarding the explanation of the other opinion, that the presence of impurity in it is certain, contrary to invisible impurity, because when its effect is not apparent, it is known that the water has

washed away the essence of the impurity." (As all of them have stipulated on this, and in 'Al-Bahr', in the explanation of the second opinion, it was said that the presence of impurity in it is certain, unlike invisible impurity, because when its effect was not apparent, it became known that the water had washed away that impurity. T)

1. Durr al-Mukhtar, Fasl fil Bir, Mujtabai Delhi, 1/40
2. Radd al-Muhtar, Fasl fil Bir, Mustafa al-Babi Egypt, 1/163
3. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/38

खंड दो

फ़तावा रज़विया

कुएँ के अध्याय (फ़स्ल फ़िल बीर) के अंत में है:

"पुरुष के लिए स्त्री का जूठा और स्त्री के लिए पुरुष का जूठा आनंद लेने के उद्देश्य से मकरूह (नापसंद) है।" (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

"इससे यह समझ में आता है कि यदि यह आनंद के लिए न हो, तो इसमें कोई नापसंदगी नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।" (त)

मसला 42: चित्तौड़गढ़, उदयपुर क्षेत्र, राजपूताना से मौलवी अब्दुल करीम साहब द्वारा 16 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1334 हिजरी को पूछा गया।

पानी की एक नाली नापाक चूने से तैयार की गई और सूखने से पहले उसमें पानी प्रवाहित किया गया। वह पानी हौज में उसी जगह से जमा होना शुरू हुआ जहाँ उसे नापाक चूने से बंद किया गया था। क्या यह पानी पाक है या नापाक? फ़कीहों (इस्लामी न्यायविदों) ने लिखा है कि जिस तालाब के किनारे पर गंदगी हो और पानी वहीं से जमा होता हो, तो वह पानी नापाक है। इस रिवायत के आधार पर क्या सारा पानी नापाक माना जाएगा?

उत्तर:

यदि पानी उस नाली पर ऊपर से बहता हुआ आया और बहते हुए गुजर गया, तो सही मज़हब यह है कि वह नापाक नहीं होगा जब तक कि उसके किसी गुण (रंग, स्वाद, गंध) में उसके कारण बदलाव न आए। दूसरी रिवायत निश्चित रूप से यह है कि यदि पानी का कुल, अधिकांश या आधा बहाव गंदगी पर हो, तो बहना लाभप्रद नहीं होगा और पूरे पानी को नापाक समझा जाएगा। "इसे भी प्रमाणित किया गया है, यद्यपि पहले मत पर भरोसा है क्योंकि वह अधिक प्रबल है, और फतवा उसी पर है।" (और इसका प्रमाणीकरण भी किया गया है; हालाँकि भरोसा पहले कथन पर है क्योंकि वह अधिक प्रबल है, और फतवा इसी पर आधारित है। त)

मैं कहता हूँ: लेकिन यह दृश्य गंदगी (नजासत मरईया) के बारे में है, जैसे कि कोई शव। अदृश्य भारी गंदगी के मामले में, सर्वसम्मति से, केवल उसके प्रभाव के दिखने का ही विचार किया जाता है।

"जैसा कि उन सभी ने स्पष्ट रूप से कहा है, और अल-बहर में दूसरे मत की व्याख्या में कहा गया है कि इसमें गंदगी की उपस्थिति निश्चित है, अदृश्य गंदगी के विपरीत, क्योंकि जब उसका प्रभाव प्रकट नहीं हुआ, तो यह ज्ञात हुआ कि पानी उस गंदगी के अस्तित्व को बहा ले गया है।" (जैसा कि उन सभी ने इस पर उल्लेख किया है, और 'अल-बहर' में दूसरे मत के स्पष्टीकरण में कहा गया कि इसमें गंदगी का पाया जाना निश्चित है, अदृश्य गंदगी के विपरीत, क्योंकि जब उसका प्रभाव प्रकट नहीं हुआ, तो यह ज्ञात हुआ कि पानी ने उस गंदगी को बहा दिया है। त)

1. दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुजतबाई दिल्ली, 1/40
2. रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/163
3. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/38

पृष्ठ 282 का 711

جلد ثانی

فتاویٰ رضویہ

اُسی کے آخر فصل فی البئر میں ہے:

یکرہ سؤرھا للرجل کعکسہ لاستلذاذ ۱۔ عورت کا جوٹھا مرد کیلئے اور مرد کا عورت کیلئے لذت لینے کیلئے مکروہ ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

یفہم منہ انہ حیث لا استلذاذ لا کراہۃ، ۲ واللہ تعالی اعلم۔ اس سے یہ سمجھ میں آیا اگر لذت کیلئے نہ ہو تو کراہت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۴۲: از مقام چتوڑ گڑھ علاقہ اودے پور راجپوتانہ مسئولہ مولوی عبدالکریم صاحب ۱۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۴ھ

پانی کی نالی ناپاک چونے سے تیار کی گئی اور خشک ہونے سے قبل اُس میں پانی جاری کیا گیا اور وہ پانی حوض میں اسی جگہ سے جمع ہونا شروع ہوا جہاں ناپاک چونے سے بند کی گئی تھی تو کیا یہ پانی پاک ہے یا ناپاک، فقہاء نے لکھا ہے کہ جس تالاب میں نجاست کنارہ پر ہو اور پانی وہیں سے جمع ہوتا ہو تو وہ پانی ناپاک ہے تو اس روایت پر تمام پانی ناپاک ہوگا۔

الجواب:

پانی اگر اوپر سے اُس نالی پر بہتا ہوا آیا اور بہتا ہوا گزر گیا تو صحیح مذہب یہ ہے کہ ناپاک نہ ہوگا جب تک کہ اس کے کسی وصف میں اُس کے سبب تغیر نہ ہو دوسری روایت ضرور یہ ہے

کہ کل یا اکثر یا نصف پانی کا بہاؤ اگر نجاست پر ہو تو بہنا نفع نہ دے گا کل پانی ناپاک سمجھا جائے گا صحح ایضا وان کان الاول علیہ المعول لانہ الاقوی وعلیہ الفتوی (اور اس کی تصحیح بھی کی گئی ہے اعتماد اگرچہ پہلے قول پر ہے کیونکہ وہ اقوی ہے اور اسی پر فتویٰ ہے۔ ت)

اقول: مگر یہ نجاست مرئیہ میں ہے جیسے مردار یا غلیظ غیر مرئیہ میں بالاتفاق اُسی ظہور اثر کا اعتبار ہے،

کما نصوا علیہ قاطبۃ وقال فی البحر فی توجیہ القول الأخر للتیقن بوجود النجاسۃ فیہ بخلاف غیر المرئیۃ لانہ اذالم یظھر اثرھا علم ان الماء ذھب بعینھا ۳۔ جیسا کہ ان تمام نے اس پر نص کیا، اور بحر میں دوسرے قول کی توجیہ میں فرمایا کہ اس میں نجاست کا پایا جانا متیقن ہے بخلاف غیر مرئی نجاست کے کیونکہ جب اس کا اثر ظاہر نہ ہوا تو معلوم ہوا کہ پانی اس نجاست کو بہا کر لے گیا ہے۔ (ت)

۱ در مختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۱/۴۰ ۲ ردالمحتار فصل فی البئر مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۶۳ ۳ ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/۳۸

Fatawa Razvia - Volume 2

And lime is not an impurity but is contaminated, and the consideration is of the impurity itself, not of the contaminated thing. Therefore, if impure rosewater (1) or saffron falls into running water and the smell of rose or the color of saffron appears in it, it will not be called the manifestation of an effect. Rather, if some attribute of the impurity that made the rosewater and saffron impure comes into the water, then the water will be impure. It is in Radd al-Muhtar:

[Arabic Text]: In the commentary on "Hadiyat Ibn al-Imad" by Sayyidi Abd al-Ghani, it is stated that apparently what is meant are the attributes of the impurity, not the contaminated object, such as rosewater and vinegar, for example. If it is poured into running water, the effect of the impurity within it is considered, not the effect of the liquid itself, because the liquid becomes pure through washing (flowing). I have not seen anyone else point this out, and it is important, so remember it.

[Urdu Translation]: Sayyidi Abd al-Ghani (may Allah have mercy on him) has written in the commentary of Hadiyat Ibn al-Imad that apparently this refers to the attributes of impurity and not the water that has become impure, such as rosewater and vinegar. If it is poured into running water, the effect of the impurity in it will be considered, but its own effect will not be considered because flowing substances become pure through washing. I have not found anyone else alerting to this point, although it is very important; please remember it. (T)

[Arabic Text]: I say: The proof for this is very clear because the purpose is the dominance of the impurity over the water so that the attribute of the impurity manifests in it. This is when its own attribute manifests, not that of the thing which became impure because of it. For example, if the impurity was so small that it would not dominate the water, and instead of rosewater, it was plain water, its effect would not have appeared. Similarly, the case with rosewater is the same because the impurity does not vary in its smallness or largeness based on the contaminated water.

[Urdu Translation]: I say the proof for this is very clear because the purpose is for the impurity to dominate the water so that the attribute of the impurity becomes apparent in it. This happens when its own attribute is manifested in it, not the attribute of the thing that became impure because of it. For example, if the impurity was so minimal that it did not dominate the water, and instead of rosewater it was plain water, its effect would not have been apparent. Similarly, the case with

rosewater is that the impurity does not differ in smallness or largeness with respect to the water that becomes impure. (T)

So when that impurity (2) which made the lime impure is not visible, then this is a case of invisible impurity. The narration mentioned earlier is not related to this; rather, here by consensus, the ruling is of purity. And Allah Almighty knows best.

Problem 43: From Kotar Rampura, behind Mochi Katra, house of Chand Khan Dafedar, sent by Sheikh Mumtaz Ali Baikal Manglori, Surveyor, Forest Department, Kotah, 10 Jamadi-ul-Ula 1346 AH.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi, Egypt 1/138. Page 283 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

और चूना गंदगी नहीं बल्कि गंदा (मुतंज्जिस) है और एतबार गंदगी का है न कि गंदा होने का। इसलिए अगर नापाक गुलाब (1) या ज़ाफ़रान बहते पानी में गिरे और उसमें गुलाब की महक या ज़ाफ़रान का रंग आ जाए तो उसे असर का ज़ाहिर होना नहीं कहेंगे, बल्कि उस नजासत (गंदगी) का कोई वस्फ़ (गुण) पानी में आए जिसने गुलाब और ज़ाफ़रान को नापाक किया था, तो पानी नापाक होगा। रद्दुल मुहतार में है:

[अरबी पाठ]: सैय्यदी अब्दुल गनी ने 'शरह हदिया इब्न अल-इमाद' में लिखा है कि ज़ाहिर तौर पर इससे मुराद नजासत (गंदगी) के औसाफ़ (गुण) हैं न कि नजासत वाली चीज़, जैसे गुलाब जल और सिरका। अगर इसे बहते पानी में डाल दिया जाए, तो इसमें मौजूद नजासत का असर मोतबर होगा, उसका अपना असर मोतबर नहीं होगा क्योंकि बहने वाली चीज़ धोने (ग़ुस्ल) से पाक हो जाती है। इस नुक्ते पर मैंने किसी और को आगाह करते हुए नहीं पाया, हालाँकि यह बहुत अहम है, इसे याद कर लें।

[उर्दू अनुवाद]: सैय्यदी अब्दुल गनी (रहमतुल्लाह अलैह) ने शरह हदिया इब्न अल-इमाद में लिखा है कि बज़ाहिर इससे मुराद नजासत के औसाफ़ हैं न कि नजिस होने वाला पानी, जैसे गुलाब का पानी और सिरका, अगर इसको बहते पानी में डाला जाए तो इसमें जो नजासत है उसका असर मोतबर होगा, खुद उसका अपना असर मोतबर न होगा क्योंकि बहने वाली चीज़ ग़ुस्ल (धोने) से पाक हो जाती है, इस नुक्ते पर मैंने किसी और को मुत्तला (सूचित) करता हुआ नहीं पाया हालाँकि यह बहुत अहम है इसे याद कर लीजिये। (त)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: इसकी दलील बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) है क्योंकि मक़सद नजासत का पानी पर ग़ालिब होना है ताकि नजासत का वस्फ़ (गुण) उसमें ज़ाहिर हो जाए। और यह तब है जब खुद उसका अपना वस्फ़ उसमें ज़ाहिर हो, न कि उस चीज़ का जो उसकी वजह से नजासत वाली हुई है। मिसाल के तौर पर, अगर नजासत इतनी कम होती कि पानी पर ग़ालिब न आती और गुलाब जल की जगह सादा पानी होता, तो उसका असर ज़ाहिर न होता। इसी तरह गुलाब जल का हाल है क्योंकि नजासत कमी और ज़्यादती के मामले में नापाक होने वाले पानी के एतबार से मुख़्तलिफ़ नहीं होती।

[उर्दू अनुवाद]: मैं कहता हूँ इसकी दलील बहुत वाज़ेह है क्योंकि मक़सूद नजासत का पानी पर ग़ालिब होना है ताकि नजासत का वस्फ़ उसमें ज़ाहिर हो जाए, और यह तब है जब खुद इसका

अपना वस्फ़ इसमें ज़ाहिर हो न कि उस चीज़ का जो इसकी वजह से नजिस हुई है, मसलन अगर नजासत इतनी थोड़ी होती कि पानी पर ग़ालिब न होती और बजाय अर्क़ए-गुलाब के सादा पानी होता तो इसका असर ज़ाहिर न होता तो इसी तरह गुलाब के पानी का हाल है क्योंकि नजासत क़िल्लत व कसरत में नापाक होने वाले पानी के एतबार से मुख़्तलिफ़ नहीं होती है। (त)

तो जब वह नजासत (2) जिससे चूना नापाक हुआ, दिखाई नहीं देती (मईं नहीं है), तो यह नजासत-ए-ग़ैर मईं (अदृश्य गंदगी) की सूरत है। इससे वह रिवायत मुताल्लिक़ नहीं है, बल्कि यहाँ बिल-इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) तहारत (पवित्रता) का हुक्म है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 43: कोठार मपुरा, मोची कटरा के पीछे, चाँद खान दफ़ेदार का मकान, प्रेषक शैख़ मुमताज़ अली बेकल मंगलोरी, सर्वेयर, वन विभाग, कोटा, 10 जमादी-उल-उला 1346 हिजरी।

---

1 रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/138। पेज 283/711

اور چونا نجاست نہیں متنجس ہے اور اعتبار نجس کا ہے نہ متنجس کا ولہٰذا اگر ناپاک گلاب (۱) یا زعفران آب جاری میں گرے اور اس میں گلاب کی بو یا زعفران کی رنگت آجائے اسے ظہور اثر نہ کہیں گے بلکہ اس نجاست کا کوئی وصف پانی میں آئے جس نے گلاب و زعفران کو ناپاک کیا تو پانی ناپاک ہوگا، ردالمختار میں ہے:

[Arabic]: في شرح هدية ابن العماد لسيدى عبدالغنى الظاهران المراد اوصاف النجاسة لا المتنجس كماء الورد والخل مثلا فلوصب فى ماء جار يعتبر اثر النجاسة التى فيه لااثره نفسه لطهارة المائع بالغسل ولم ارمن نبه عليه وهو مهم فاحفظه 1 اه

سیدی عبدالغنیؒ نے شرح ہدیہ ابن العماد میں لکھا ہے کہ بظاہر اس سے مراد نجاست کے اوصاف ہیں نہ کہ نجس ہونے والا پانی، جیسے گلاب کا پانی اور سرکہ، اگر اس کو بہتے پانی میں ڈالا جائے تو اس میں جو نجاست ہے اس کا اثر معتبر ہوگا، خود اس کا اپنا اثر معتبر نہ ہوگا کیونکہ بہنے والی چیز غسل (دھونے) سے پاک ہو جاتی ہے، اس نکتہ پر میں نے کسی اور کو مطلع کرتا ہوا نہیں پایا حالانکہ یہ بہت اہم ہے اسے یاد کر لیجئے اھ (ت)

[Arabic]: اقول: وهو واضح البرهان فان المقصود غلبة النجاسة على الماء حتى اكسبته وصفالها وذلك فى ظهور وصف نفسها دون المتنجس بها الا ترى ان لو كانت قليلة لاتغلب الماء وكان مكان ماء الورد ماء قراح لم يظهر اثرها فكذا فى ماء الورد اذلا تختلف قلة وكثرة باختلاف المتنجس۔

میں کہتا ہوں اس کی دلیل بہت واضح ہے کیونکہ مقصود نجاست کا پانی پر غالب ہونا ہے تاکہ نجاست کا وصف اس میں ظاہر ہوجائے، اور یہ تب ہے جب خود اس کا اپنا وصف اس میں ظاہر ہو

نہ کہ اس چیز کا جو اس کی وجہ سے نجس ہوئی ہے، مثلاً اگر نجاست اتنی تھوڑی ہوتی کہ پانی پر غالب نہ ہوتی اور بجائے عرقِ گلاب کے سادہ پانی ہوتا تو اس کا اثر ظاہر نہ ہوتا تو اسی طرح گلاب کے پانی کا حال ہے کیونکہ نجاست قلّت و کثرت میں ناپاک ہونے والے پانی کے اعتبار سے مختلف نہیں ہوتی ہے۔ (ت)

توجبکہ وہ نجاست (۲) جس سے چونا ناپاک ہوا مرئی نہیں تو یہ صورت نجاست غیر مرئی کی ہے اس سے وہ روایت متعلق نہیں بلکہ یہاں بالاتفاق حکم طہارت ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۴۳: از کوٹار مپورہ عقب موچی کٹڑہ مکان چاند خان دفعہ دار مرسلہ شیخ ممتاز علی بیکل منگلوری سرویر محکمہ جنگلات کو ٹاہ ۱۰ جمادی الاولی ۱۳۴۶ھ

---

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۸ Page 283 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Two

What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say in response to the following questions? May the Almighty Lord grant you a great reward and the questioner the straight path.

Two persons, Amr and Zaid, are involved. Someone asked Amr whether the water in the well in front of them is suitable for ablution and other uses. Amr replied that to remove doubt, the well should be measured. Accordingly, the well was measured: its length was 11 ½ hands, width 9 ½ hands, and depth 3 hands, which is equal to 32.75 to 42 hands. However, Zaid states it to be 42 hands and declares ablution with its water as impermissible and the water unusable. Yet, Amr performed ablution from this same well, and Zaid prayed behind Amr. Therefore, the request is to know whether the use of this water is permissible according to the noble Sharia or not? And in this case, was Zaid's prayer behind Amr valid or not?

Note: The inflow of water in this well is such that if the 'charas' (water pulley/bucket system) which draws water all day is stopped, the well overflows such that the surplus water, after flowing out through a path, fills a reservoir 200 feet long and 50 feet wide with a depth of no less than 3 feet within a few days. Cattle drink this water. This is the condition in winter. In summer, whether the 'charas' runs or not, water doesn't overflow from the well, but whatever amount the well empties during the peak of the 'charas' running, it refills at night. Apart from this, being a hilly area, wells from which water is drawn by buckets etc. are few; otherwise, common wells have stairs. All people go inside to drink and fill water, rather bathing and washing clothes etc. is a general custom. Yes, at some places there is also a custom that they don't drink water from the well in which people bathe.

The Answer: In water, only the measurement of its upper surface is reliable; depth is not considered at all. If the upper surface is, for example, one square hand and it is a thousand hands deep, it will be considered as only one hand. And if the surface is a hundred hands and it is only half a hand deep, it will be considered as a full hundred hands, not fifty. The depth should only be enough so that the ground is not exposed when taking water in palms. Therefore, the area of the mentioned well is 109.25 hands, not 32.75. In any case, there is no doubt that it is 'Ma-e-Katheer' (large quantity of water). Performing ablution, ritual bathing (ghusl), and washing clothes in it are all permissible. It will not become impure even if filth falls into it, as long as the filth does not change its color, taste, or smell. Calling it 42 hands is sheer ignorance,

and declaring ablution and ritual bath from it as impermissible is explicit foolishness. And if in reality, it was his belief that ablution cannot be performed with the water of that well, and despite seeing Amr lead the prayer after performing ablution from it, he followed him in prayer while holding onto that belief, then Zaid's prayer was not valid because...

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर में क्या कहते हैं? सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको महान प्रतिफल और प्रश्नकर्ता को सीधा मार्ग प्रदान करे।

अम्र और ज़ैद दो व्यक्ति हैं। किसी ने अम्र से पूछा कि सामने मौजूद इस कुएं का पानी वज़ू और अन्य उपयोगों के योग्य है या नहीं? अम्र ने उत्तर दिया कि संदेह दूर करने के लिए कुएं को नाप लिया जाए। तदनुसार, कुएं को नापा गया: लंबाई 11 ½ हाथ और चौड़ाई 9 ½ हाथ और गहराई 3 हाथ हुई, जो 32.75 से 42 हाथ के बराबर है। लेकिन ज़ैद इसे 42 हाथ बताकर इसके पानी से वज़ू को नाजायज़ बताता है और इस पानी को उपयोग के योग्य नहीं बताता। लेकिन अम्र ने इसी कुएं से वज़ू किया और ज़ैद ने अम्र के पीछे नमाज़ पढ़ी। इसलिए अनुरोध है कि क्या इस पानी का उपयोग शरीयत-ए-मुतह्हरा के अनुसार जायज़ है या नहीं? और इस स्थिति में ज़ैद की नमाज़ अम्र के पीछे हुई या नहीं?

नोट: इस कुएं में पानी की आवक इतनी है कि अगर 'चरस' (पानी निकालने का यंत्र) बंद कर दिया जाए जो दिन भर पानी खींचता है, तो कुआं लबालब भर जाए और अतिरिक्त पानी एक रास्ते से निकलकर कुछ ही दिनों में 200 फीट लंबे और 50 फीट चौड़े बांध को, जिसकी गहराई भी 3 फीट से कम नहीं है, लबालब भर देता है। मवेशी यह पानी पीते हैं। यह सर्दियों की स्थिति है। गर्मियों में चरस चले या न चले, कुएं से पानी बाहर नहीं आता, लेकिन चरस चलने के समय कुआं जितना खाली होता है, रात को फिर से उतना ही पानी आ जाता है। इसके अलावा पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण ऐसे कुएं कम हैं जिनसे पानी डोल आदि से खींचा जाए, अन्यथा सामान्य कुएं सीढ़ीदार हैं। सभी लोग अंदर जाकर पानी पीते और भरते हैं, बल्कि नहाना और सामान्य तौर पर कपड़े आदि धोना आम रिवाज है। हाँ, कुछ स्थानों पर ऐसा भी रिवाज है कि जिस कुएं के अंदर नहाते हैं, उसका पानी नहीं पीते।

उत्तर (अल-जवाब): पानी में केवल उसकी ऊपरी सतह की माप विश्वसनीय है, गहराई का बिल्कुल भी विचार नहीं किया जाता। यदि ऊपरी सतह, उदाहरण के लिए, एक हाथ वर्ग है और एक हजार हाथ गहरा है, तो उसे केवल एक हाथ ही माना जाएगा। और यदि सतह सौ हाथ है और केवल आधा हाथ गहरा है, तो वह पूरे सौ हाथ माना जाएगा, न कि पचास। गहराई केवल इतनी होनी चाहिए कि अंजलि में पानी लेने से जमीन न दिखाई दे। इसलिए उक्त कुएं का क्षेत्रफल 109.25 हाथ है, न कि 32.75। बहरहाल, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह 'मा-ए-कसीर' (अधिक पानी) है, उससे वज़ू, ग़ुस्ल और उसमें कपड़े धोना सब जायज़ है। गंदगी गिरने से भी वह नापाक नहीं होगा जब तक कि गंदगी

उसका रंग, स्वाद या गंध न बदल दे। उसे 42 हाथ कहना केवल अज्ञानता है और उससे वज़ू और ग़ुस्ल को नाजायज़ बताना स्पष्ट मूर्खता है। और यदि वास्तव में उसकी धारणा यही थी कि उस कुएं के पानी से वज़ू नहीं हो सकता, और उसने अम्र को उससे वज़ू करके नमाज़ पढ़ाते देखा और अपनी उसी धारणा पर कायम रहते हुए उसकी पैरवी (इक़्तिदा) कर ली, तो ज़ैद की नमाज़ नहीं हुई क्योंकि...

पृष्ठ 284/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین سوالاتِ ذیل کے جواب میں خداوندِ کریم آپ کو اجرِ عظیم اور سائل کو صراطِ مستقیم عطا فرمائے۔

عمرو و زید دو شخص ہیں عمرو سے کسی نے دریافت کیا کہ یہ چاہ جو سامنے موجود ہے اس کا پانی قابلِ وضو اور نیز دیگر استعمال کے ہے یا نہیں؟ عمرو نے جواب دیا کہ بنا بر رفعِ شک چاہ کو ناپ لیا جائے چنانچہ وہ کنواں ناپا گیا تو لمبائی ۱/۲-۱۱ ہاتھ اور چوڑائی ۱/۲-۹ ہاتھ گہرائی ۳ ہاتھ ہوئی جو برابر ہے ۳۲ء۷۵ سے ۴۲ ہاتھ کے مگر زید اس کو ۴۲ ہاتھ بتلا کر اس کے پانی سے وضو ناجائز بتلاتا ہے اور پانی ہٰذا کو قابلِ استعمال نہیں بتلاتا لیکن عمرو نے اسی چاہ سے وضو کیا اور زید نے عمرو کے پیچھے نماز پڑھی لہٰذا التماس ہے کہ اس پانی کا استعمال موافق شرعِ شریف جائز ہے یا نہیں اور زید کی نماز اس صورت میں عمرو کے پیچھے ہوئی یا نہیں ؟

نوٹ: اس چاہ میں پانی کی اس قدر آمد ہے کہ اگر چرس بند کر دیا جائے جو دن بھر پانی کھینچتا ہے تو چاہ لبریز ہو کہ زائد پانی ایک راستہ سے خارج ہو کر چند روز میں دو سوفیٹ لمبے اور پچاس فیٹ چوڑے بند کو جس کی گہرائی بھی ۳ فیٹ سے کم نہیں لبریز کر دیتا ہے۔ یہ پانی مویشی پیتے ہیں یہ تو موسمِ سرما کی حالت ہے اور موسمِ گرما میں چرس چلے یا نہ چلے کنویں سے پانی باہر نہیں آتا البتہ جس قدر کنواں خالی ہو جاتا ہے وقتِ چرس چلنے کے انتہا ہی رات کو پھر کنویں میں پانی آ جاتا ہے ماسوا اس کے پہاڑی علاقہ ہونے کے سبب ایسے کنویں قلیل ہیں کہ جن کا پانی ڈول وغیرہ سے کھینچا جائے ورنہ عام کنویں زینہ دار ہیں تمام لوگ اندر جا کر پانی پیتے اور

بھرتے ہیں بلکہ نہانا اور عام طور پر کپڑے وغیرہ دھونے کا عام رواج ہے، ہاں بعض موقع پر ایسا بھی رواج ہے کہ جس کنویں کے اندر نہاتے ہیں اُس کا پانی نہیں پیتے۔

الجواب: پانی میں فقط اُس کی سطحِ بالا کی پیمائش معتبر ہے عمق کا اصلاً لحاظ نہیں اگر اوپر کی سطح مثلاً ایک ہاتھ مربع ہے اور ہزار ہاتھ گہرا ہے تو وہ ایک ہی ہاتھ قرار پائے گا اور سطح سو ہاتھ ہے اور فقط نصف ہاتھ گہرا ہے تو وہ پورا سو ہاتھ ٹھہرے گا نہ کہ پچاس۔ عمق صرف اتنا ہونا چاہئے کہ لپ میں پانی لینے سے زمین نہ کھلے لہٰذا چاہ مذکور کی مساحت ۱۰۹ء۲۵ ہاتھ ہے نہ ۳۲ء۷۵ بہر حال شک نہیں کہ وہ مائے کثیر ہے اُس سے وضو و غسل اور اُس میں کپڑے دھونا سب جائز ہے وہ نجاست پڑنے سے بھی ناپاک نہ ہو گا جب تک نجاست اس کا رنگ یا مزہ یا بو نہ بدل دے اُسے ۴۲ ہاتھ کہنا محض بے علمی اور اُس سے وضو و غسل ناجائز بتانا صریح نادانی ہے اور اگر واقع میں اُس کے اعتقاد میں یہی ہے کہ اُس کنویں کے پانی سے وضو نہیں ہو سکتا اور اُس نے عمرو کو اُس سے وضو کر کے نماز پڑھاتے دیکھا اور اپنے اسی اعتقاد پر قائم رہ کر اُس کی اقتداء کر لی تو زید کی نماز نہ ہوئی کہ اس کے

Fatawa Razawiya Volume II

In belief, the Imam is leading the prayer without ablution (wudu); rather, it is even more severe than that, as it leads to considering prayer, God forbid, a mere plaything. And refuge with Allah Almighty, this same ruling applies to all those wells whose water surface is above 225 feet. It is permissible to wash clothes in them, and they will not become impure even if the clothes were impure, as long as the impurity does not change the color, smell, or taste of the water. And Allah Almighty knows best.

Page 285 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय खंड)

अक़ीदे (विश्वास) में इमाम बिना वज़ू के नमाज़ पढ़ा रहा है, बल्कि यह उससे भी कहीं अधिक गंभीर है क्योंकि इससे नमाज़ को, मआज़अल्लाह (अल्लाह की पनाह), एक खिलवाड़ समझना पैदा होता है। वल-अयाज़ु बिल्लाहि तआला (अल्लाह की पनाह), यही हुक्म उन तमाम कुओं का है जिनके पानी की सतह २२५ फुट से ऊपर हो। उनमें कपड़े धोना भी जायज़ है और उससे वे नापाक नहीं होंगे, चाहे वे कपड़े नापाक ही क्यों न हों, जब तक कि नजासत (गंदगी) उनके रंग, बू (गंध) या मज़ा (स्वाद) को न बदल दे। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

पृष्ठ २८५ का ७११

اعتقاد میں امام بے وضو نماز پڑھارہا ہے بلکہ وہ اس سے بھی سخت تر ہے کہ اس سے نماز کو معاذ اللہ بازیچہ سمجھنا پیدا ہوتا ہے والعیاذ باللہ تعالیٰ یہی حکم اُن سب کُنوں کا ہے جن کے پانی کی سطح بالا ۲۲۵ فٹ ہو اُن میں کپڑے دھونا بھی جائز ہے اور اُس سے ناپاک نہ ہوں گے اگرچہ وہ کپڑے ناپاک ہوں جب تک نجاست ان کا رنگ یا بو یا مزہ نہ بدل دے واللہ تعالی اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume Two

Fatwa Named: Al-Hani' an-Namir fi al-Ma' al-Mustadir (1334 AH) Investigation into Pleasant Clean Round Water (T)

In the name of Allah, the Most Merciful, the Most Compassionate.

Problem 44: 11 Jumada al-Ula 1334 AH What do the scholars of religion say on this issue: What should be the circumference of a well so that it qualifies as 'ten by ten' (a large water body) and does not become impure if filth falls into it? Give a ruling and be rewarded.

In the name of Allah, the Most Merciful, the Most Compassionate. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

The Answer: There are four opinions on this, each has its own basis and the research is distinct: First Opinion: Forty-eight cubits. This is stated with certainty in Al-Khulasa and Al-Alamgiriya, and Al-Muhit of Imam Shams al-A'imma Sarakhsi and Fatawa Kubra have described it as most precautionary. Sayyid Tahtawi followed this. It is stated in Al-Hindiya:

[Table] Left Column: If the cistern is round, forty-eight cubits are considered, as in Al-Khulasa, and it is the most precautionary as in Muhit al-Sarakhsi. 1. Right Column: If the cistern is round, forty-eight cubits will be considered, as in Al-Khulasa, and this is most precautionary, as in Muhit al-Sarakhsi. (T)

In Tahtawi it is: "Al-ahwat i'tibar thamaniyah wa arba'in" 2 (The most precautionary is to consider forty-eight. T)

1. Fatawa Hindiya, Section on Still Water, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/18.
2. Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Beirut 1/70.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दो)

फ़तवा मुसम्मा बह: अल-हनी' अन-नमिर फ़ी अल-मा' अल-मुस्तदीर (१३३४ हिजरी) खुशगवार साफ़ आबे मुस्तदीर की तहक़ीक़ (त)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसला ४४: ११ जमादी उल-उला १३३४ हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि कुएँ का घेरा कितने हाथ होना चाहिए कि वह 'दह दर दह' (१० गुणा १०) हो जाए और नजासत गिरने से नापाक न हो सके? बयान कीजिए और सवाब पाइए।

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम, नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।

अल-जवाब: इसमें चार क़ौल हैं, हर एक की अपनी वजह है और तहक़ीक़ अलग है: क़ौल अव्वल: अड़तालीस हाथ। 'खुलासा' और 'आलमगीरिया' में इसी पर यकीन जाहिर किया गया है और इमाम शम्स उल-आइम्मा सरखसी की 'मुहीत' और 'फ़तावा कुबरा' में इसी को अहतियात वाला (अहवत) बताया गया है। सैय्यद तहतावी ने इसका अनुसरण किया है। 'हंदिया' में है:

[तालिका] बायाँ कॉलम: यदि हौज गोल हो तो अड़तालीस हाथ माने जाते हैं, जैसा कि 'खुलासा' में है, और यही सबसे अधिक अहतियात वाला है जैसा कि 'मुहीत अल-सरखसी' में है। १. दायाँ कॉलम: यदि हौज गोल हो तो अड़तालीस हाथ का एतबार होगा, जैसा कि 'खुलासा' में है और यही अहवत (अहतियात वाला) है जैसा कि 'मुहीत अल-सरखसी' में है। (त)

तहतावी में है: 'अहवत अड़तालीस का एतबार करना है'। (त)

1. फ़तावा हंदिया, फसल फ़िल मा' अर-राकिद, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/१८
2. तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल मियाह, बेरुत १/७०

पृष्ठ २८६/७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

فتوٰی مسمّٰی بہ الھنیئ النمیر في الماء المستدیر ۱۳۳٤ھ خوشگوار صاف آب مستدیر کی تحقیق (ت)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۴۴: ۱۱ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کنویں کا دَور کتنے ہاتھ ہونا چاہئے کہ وہ دہ در دہ ہو اور نجاست گرنے سے ناپاک نہ ہو سکے بینوا توجروا

بسم اللہ الرحمن الرحیم، نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

الجواب: اس میں چار قول ہیں ہر ایک بجائے خود وجہ رکھتا ہے اور تحقیق جدا ہے: قول اول: اڑتالیس ہاتھ خلاصہ وعالمگیریہ میں اسی پر جزم فرمایا اور محیط امام شمس الائمہ سرخسی و فتاوی کبرٰی میں اسی کو احوط بتایا سید طحطاوی نے اُس کا اتباع کیا ہندیہ میں ہے:

[Table] ان کان الحوض مدورا یعتبر ثمانیۃ واربعون ذراعا کذا في الخلاصۃ وھو الاحوط کذا في محیط السرخسی ۱۔ | اگر حوض گول ہو تو اڑتالیس ہاتھ کا اعتبار ہوگا، کذا فی الخلاصۃ اور یہی احوط ہے کذا فی محیط السرخسی۔ (ت)

طحطاوی میں ہے: الاحوط اعتبار ثمانیۃ واربعین ۲ (احوط اڑتالیس کا اعتبار کرنا ہے۔ت)

۱ فتاوٰی ہندیہ فصل فی الماء الراکد نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۸ ۲ طحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱/۷۰

Fatawa Razawiyya Volume Two

Second: Forty-six cubits; some books have identified this as the preferred (Mukhtar) and fatwa-issued (Mufta Bihi) position. In Bahr al-Raiq, it is quoted: "The chosen and fatwa-issued position is forty-six cubits, so that people do not face difficulty in observing fractions." [End of quote] (That is, the chosen and fatwa-issued view is forty-six to avoid the difficulty of dealing with fractions. - T)

I say: I say, their intention is that there is a fraction here which has been dropped or rounded up for ease. Then I saw in Al-Fath where the rounding was specified. He said: if the pond is circular, its measure is estimated as forty-four or forty-eight, and the chosen one is forty-six. According to calculation, even less than that would suffice for the fraction of ratio, but the fatwa will be given on forty-six so that difficulty in observing the fraction does not occur. He said all these are arbitrary impositions that are not binding; the correct view is what we mentioned previously regarding the lack of arbitrary imposition of a fixed measure. [End of quote] This means acting upon the original principle of the school of thought. And you have already known that the fatwa is based on the ten [by ten] rule. (T)

Third: Forty-four cubits; currently its preference has not been seen in any book. It is in Jami' al-Rumuz: Arabic: As for the circular pond, it is stipulated that its circumference be forty-eight cubits, and it is said forty-four; so the first is more precautionary as in Al-Kubra. Urdu: In a circular pond, the condition is that its circumference be forty-eight cubits, and one saying is that it should be forty-four cubits, so the first is more precautionary as it is in Al-Kubra. (T)

Fourth: Thirty-six cubits; this was authenticated in Al-Multaqat. Imam Zahir al-Din Marghinani said this is the correct view and it is proven in the science of mathematics. It is in Jami' al-Rumuz: Arabic: And it is said thirty-six, and it is the proven correct view. Urdu: And one saying is that it is thirty-six and this is the correct view.

Footnotes: 1. Bahr al-Raiq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/77 2. Fath al-Qadeer, Al-Ma' al-Lazi Yajuzu bihi al-Wudu wa la Yajuzu bihi, Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/70 3. Jami' al-Rumuz, Bab Bayan al-Miyah, Gunbad Iran, 1/38

फतावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

दूसरा: छियालीस हाथ; कुछ किताबों में इसी को मुख्तार (चुनिंदा) और मुफ्ता बिही (जिस पर फतवा हो) बताया गया है। बहरुल रैक में नकल फरमाया: "मुख्तार और मुफ्ता बिही छियालीस है ताकि कसर (दशमलव) का ध्यान रखने की मुश्किल में न पड़ें।" (यानी चुनिंदा और मुफ्ता बिही कौल छियालीस है ताकि दशमलव की गणना की परेशानी से बचा जा सके। - त)

मैं कहता हूँ: मैं कहता हूँ कि उनका मतलब यह है कि यहाँ दशमलव है जिसे आसानी के लिए हटा दिया गया या बढ़ा दिया गया है। फिर मैंने फतहुल कदीर में देखा जहाँ बढ़ाने को तय किया गया। उन्होंने फरमाया: अगर हौज (कुंड) गोल हो तो उसका माप चौवालीस और अड़तालीस बताया गया है, और मुख्तार छियालीस है। हिसाब के अनुसार इससे कम पर भी काम चल जाएगा, लेकिन फतवा छियालीस पर दिया जाएगा ताकि दशमलव के हिसाब में परेशानी न हो। उन्होंने फरमाया कि ये सब अपनी मर्जी की बातें हैं जिन्हें मानना जरूरी नहीं है; सही वही है जिसका हमने पहले जिक्र किया कि किसी खास माप का होना जरूरी नहीं है। (यानी मज़हब के मूल सिद्धांत पर अमल करते हुए)। और आप जान चुके हैं कि फतवा दस (१०) पर है। (त)

तीसरा: चौवालीस हाथ; इस समय किसी किताब में इसकी प्राथमिकता नज़र नहीं आई। जामेउर रुमुज़ में है: अरबी: जहाँ तक गोल हौज की बात है, तो शर्त यह है कि उसका घेरा अड़तालीस हाथ हो, और एक कौल चौवालीस का है; तो पहला अधिक एहतियात वाला है जैसा कि अल-कुबरा में है। उर्दू: गोल हौज में शर्त यह है कि उसका घेरा अड़तालीस हाथ हो, और एक कौल है कि चौवालीस हाथ हो, तो पहला अधिक एहतियात वाला है जैसा कि कुबरा में है। (त)

चौथा: छत्तीस हाथ; मुल्तक़त में इसी को सही बताया गया है। इमाम ज़हीर-उद-दीन मर्गीनानी ने फरमाया कि यही सही है और गणित विज्ञान में प्रमाणित है। जामेउर रुमुज़ में है: अरबी: और कहा गया है कि छत्तीस, और यही प्रमाणित सही है। उर्दू: और एक कौल है कि यह छत्तीस है और यही सही है।

पादलेख (फुटनोट्स): 1. बहरुल रैक, किताब अत-तहारत, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/77 2. फतहुल कदीर, अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिही अल-वुदू व ला यज़ूज़ु बिही, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/70 3. जामेउर रुमुज़, बाब बयान अल-मियाह, गुंबद ईरान, 1/38

पृष्ठ २८७/७११

دوم: چھیالیس ہاتھ بعض کتب میں اسی کو مختار و مفتی بہ بتایا۔ بحر الرائق میں نقل فرمایا: المختار المفتی بہ ستۃ واربعون کیلا یعسر رعایۃ الکسر ۱ اھ (مختار و مفتی بہ چھیالیس ہے تاکہ کسر کی رعایت کی دشواری میں مبتلا نہ ہوجائیں۔ ت)

اقول: یرید ان ثمہ کسر اسقط او رفع تیسیرا ثم رأیت فی الفتح ماعین الرفع حیث قال ان کان الحوض مدورا فقدر باربعۃ واربعین وثمانیۃ واربعین والمختار ستۃ واربعون وفی الحساب یکتفی باقل منھا بکسر للنسبۃ لکن یفتی بستۃ واربعین کیلا یتعسر رعایۃ الکسر قال والکل تحکمات غیرلازمۃ انما الصحیح ماقدمناہ من عدم التحکم بتقدیر معین ۱۲ھ ای عملا باصل المذھب وقد علمت ان الفتوی علی اعتبار العشر۔ میں کہتا ہوں ان کی مراد یہ ہے کہ یہاں کسر ہے جو ساقط کر دی گئی ہے یا بڑھائی گئی ہے آسانی کیلئے، پھر میں نے فتح میں دیکھا تو انہوں نے رفع کو متعین کردیا، فرمایا اگر حوض گول ہو تو اس کا اندازہ چوالیس اور اڑتالیس کیا گیا ہے اور مختار چھیالیس کیا گیا ہے اور حساب کے اعتبار سے اس سے کم پر بھی اکتفاء کیا جائیگا کسر نسبت کیلئے، لیکن چھیالیس پر فتوی دیا جائیگا تاکہ کسر کی رعایت میں پریشانی لاحق نہ ہو، فرمایا یہ تمام باتیں محض اپنی مرضی سے کہہ دی گئی ہیں ان کا ماننا لازم و ضروری نہیں صحیح وہی ہے جو ہم نے پہلے ذکر کیا ہے کہ کسی معین مقدار کا ہونا ضروری نہیں ہے اھ یعنی اصل مذہب پر عمل کرتے ہوئے، اور آپ جان چکے کہ فتوی دس (۱۰) پر ہے۔ (ت)

سوم: چوالیس ہاتھ اس کی ترجیح اس وقت کسی کتاب سے نظر میں نہیں، جامع الرموز میں ہے: امانی المدور فیشترط ان یکون دورہ ثمانیا و اربعین ذراعاً وقیل اربعاً واربعین فالاول احوط کمافی

الکبری ۳۔ گول حوض میں شرط یہ ہے کہ اس کا دور اڑتالیس ہاتھ ہو، اور ایک قول ہے کہ چوالیس ہاتھ ہو تو اول احوط ہے جیسا کہ کبری میں ہے۔ (ت)

چہارم: چھتیس ہاتھ ملتقط میں اسی کی تصحیح کی امام ظہیر الدین مرغینانی نے فرمایا یہی صحیح اور فن حساب میں مبرہن ہے، جامع الرموز میں ہے: وقیل ستة وثلاثین وھو الصحیح المبرھن اور ایک قول ہے کہ یہ چھتیس ہے اور یہی صحیح ہے

۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۷ ۲۔ فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء ولا یجوز بہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۷۰ ۳۔ جامع الرموز باب بیان المیاہ گنبد ایران ۳۸/ ۱

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Arabic Box]: According to calculations, as stated in Al-Zahiriya and in the first two [cases], the existence of a square pond within a circular pond is established, and in the third, it is equal to it. (1) [Urdu Explanation]: According to mathematical calculations, it is proven that in the equivalent cases, and in the first two, a square pond is contained within a circular pond, and in the third, they are equal. (T)

Upon this, Mulla Khusrow in the text 'Ghurar' with a corrective note, the researcher Al-Ala'i in 'Durr al-Mukhtar', and the jurist and accountant Al-Shurunbulali in 'Maraqi al-Falah' have firmly decided. In 'Durr al-Mukhtar', it is stated:

[Arabic Box]: His statement: 'And in a circular pond, there are thirty-six,' meaning its circumference should be thirty-six cubits, its diameter eleven cubits and one-fifth of a cubit, and its area is [calculated by] multiplying half the diameter, which is five and a half and one-tenth, by half the circumference, which is eighteen. This results in one hundred cubits and four-fifths of a cubit. (As mentioned in 'Siraj'). What he mentioned is one of five opinions (Note 1). In 'Al-Durar', citing 'Al-Zahiriya', it is stated that this is the correct view. (2) [Urdu Explanation]: Their statement that there are thirty-six in a circular pond means its circumference is thirty-six yards, its diameter is eleven yards and one-fifth, and its area is found by multiplying half the diameter, i.e., five and a half and a tenth, by half the circumference, which is eighteen. Thus, the total will be one hundred hands and four-fifths of a yard. (As mentioned in 'Siraj'). They have mentioned that this is one of five opinions, and in 'Durr', quoting 'Zahiriya', it is stated that this is the correct one. (T)

I say (Aqool): The research is that its circumference should be approximately thirty-five and a half hands, i.e., 35.4497, then the diameter will be approximately 5.5 yards - 10 'girah'. In fact, ten 'girah' and one 'ungal' (finger-width), i.e., 5.484 hands. The explanation for this is that in the Principles of Geometry (Note 2), Discourse 4, Figure 12, it is proven that multiplying the circumference of a circle by a quarter of its diameter yields the area of the circle, or [multiplying] the diameter of the circle by a quarter of its circumference.

[Arabic Box]: Note 1: I have not seen more than four opinions regarding the estimation. It seems that by the fifth, he meant what the researcher mentioned: that there is no fixed determination. May his Lord preserve him. (M) [Urdu Explanation]: I have seen only four opinions regarding the estimation. It seems Shami has referred

to the fifth opinion as mentioned by the researcher, which is that there is no fixed determination. (T)

Note 2: This book is more modern and updated than the Book of Euclid. It consists of 8 discourses and is useful in geometry, surveying, and spherical trigonometry. It contains many claims added to the Book of Euclid. The scholar Muhammad Ismat al-Misri translated it from Turkish into Arabic. 12 (M)

1. Jami al-Rumuz, Chapter: Explanation of Water, Gonbad, Iran, 1/28
2. Radd al-Muhtar, Chapter: Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/122

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

[अरबी बॉक्स]: गणना के अनुसार, जैसा कि अल-ज़हीरिया में और पहले दो [मामलों] में है, एक गोलाकार तालाब के अंदर एक चौकोर तालाब का होना सिद्ध है, और तीसरे में, यह उसके बराबर है। (1) [उर्दू स्पष्टीकरण]: गणितीय गणना के अनुसार यह सिद्ध है कि समकक्ष मामलों में, और पहले दो में, एक चौकोर तालाब एक गोलाकार तालाब के भीतर समाहित है, और तीसरे में वे बराबर हैं। (त)

इसी पर मुल्ला खुसरो ने पाठ 'ग़ुरर' में सुधार के साथ, शोधकर्ता अल-अलाई ने 'दुर्रे मुख्तार' में, और फकीह और लेखाकार अल-शुरुनबुलाली ने 'मराक़ी अल-फलाह' में दृढ़ता से निर्णय लिया है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स]: उनका कथन: 'और गोलाकार तालाब में छत्तीस हैं,' यानी उसकी परिधि छत्तीस हाथ होनी चाहिए, उसका व्यास ग्यारह हाथ और हाथ का पाँचवाँ हिस्सा (एक खुम्स) होना चाहिए, और उसका क्षेत्रफल आधे व्यास, जो साढ़े पाँच और एक दसवां हिस्सा है, को आधी परिधि, जो अठारह है, से गुणा करने पर प्राप्त होता है। यह सौ हाथ और चार-पाँचवाँ हिस्सा हाथ होगा। (सिराज के अनुसार)। उन्होंने जो उल्लेख किया है वह पाँच मतों में से एक है (नोट 1)। 'अल-दुरर' में 'अल-ज़हीरिया' के हवाले से कहा गया है कि यही सही विचार है। (2) [उर्दू स्पष्टीकरण]: उनका यह कहना कि गोलाकार में छत्तीस हैं, का अर्थ है कि उसका घेरा छत्तीस गज़ हो और उसका व्यास ग्यारह गज़ और एक खुम्स हो और उसका क्षेत्रफल यह है कि आधे व्यास यानी साढ़े पाँच और दसवें हिस्से को आधे घेरे से गुणा किया जाए, और यह अठारह है, तो कुल सौ हाथ और चार खुम्स हाथ होगा। सिराज के अनुसार, और उन्होंने जो उल्लेख किया है वह पाँच में से एक मत है और दुरर में ज़हीरिया से है कि यही सही है। (त)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): शोध यह है कि इसका घेरा लगभग साढ़े पैंतीस हाथ होना चाहिए, यानी 35.4497, तो व्यास लगभग 5.5 गज़ - 10 गिरह होगा, बल्कि दस गिरह और एक उंगल यानी 5.484 हाथ। इसका वर्णन यह है कि उसूल-ए-हंदसा (नोट 2), लेख 4, आकृति 12 में प्रमाणित है कि वृत्त की परिधि को व्यास के चौथाई भाग से गुणा करने से वृत्त का क्षेत्रफल प्राप्त होता है या वृत्त के व्यास को परिधि के चौथाई भाग से।

[अरबी बॉक्स]: नोट 1: मैंने अनुमान के संबंध में चार से अधिक मत नहीं देखे हैं। ऐसा लगता है कि पाँचवें से उनका तात्पर्य वही था जो शोधकर्ता ने उल्लेख किया है: कि कोई निश्चित निर्धारण नहीं है।

उसके प्रभु उसकी रक्षा करें। (म) [उर्दू स्पष्टीकरण]: मैंने अनुमान में केवल चार मत देखे हैं। शामी ने संभवतः पाँचवें से वह मुराद लिया है जिसे शोधकर्ता ने ज़िक्र किया है कि कोई निर्धारण नहीं है। (त)

नोट 2: यह पुस्तक 'किताब-ए-अकलैदिस' (यूक्लिड की पुस्तक) से अधिक आधुनिक और नई है। यह 8 अध्यायों पर आधारित है और रेखागणित, सर्वेक्षण और गोलाकार त्रिकोणमिति सभी में उपयोगी है। इसमें 'किताब-ए-अकलैदिस' पर कई अतिरिक्त दावे दिए गए हैं। विद्वान मोहम्मद इस्मत मिस्री ने इसे तुर्की से अरबी में अनुवाद किया है। 12 (म)

1. जामे अल-रुमूज़, बाब: बयान अल-मा, गुम्बद ईरान 1/28
2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/122

عند الحساب کما فی الظھیریۃ وفی الاولین تحقق الحوض المربع داخل الحوض المدور وفی الثالث مایساویہ - ۱ اور حساب کی رُوسے مبرہن ہے کہ مافی النظیر یہ اور پہلے دو میں مربع حوض مدوّر حوض متحقق ہوگیا اور تیسرے میں اس کے مساوی ہے۔ (ت)

اسی پر مولٰی خسرو نے متن غرر میں مع افادہ تصحیح اور مدقق علائی نے درمختار اور علامہ فقیہ ومحاسب شرنبلالی نے مراقی الفلاح میں جزم فرمایا درالمختار میں ہے :

قولہ وفی المدور بستتہ وثلثین ای بان یکون دورہ ستۃ وثلثین ذراعاً وقطرہ احد عشر ذراعاً وخمس ذراع ومساحتہ ان تضرب نصف القطر وھو خمسۃ ونصف وعشر فی نصف الدور وھو ثمانیۃ عشر یکون مائۃ ذراع واربعۃ اخماس ذراع اھ سراج وما ذکرہ ھو احد اقوال خمسۃ عہ ۱ وفی الدرر عن الظھیریۃ ھو الصحیح - ۲ ان کا قول کہ مدور میں چھتیس ہیں یعنی اس کا دور چھتیس گز ہو اور اس کا قطر گیارہ گز اور ایک خمس ہو اور اس کی مساحت یہ ہے کہ نصف قطر یعنی ساڑھے پانچ کو اور دسویں کو نصف دور میں ضرب دی جائے، اور یہ اٹھارہ ہے، تو کل سو ہاتھ اور چار خمس ذراع ہوگا اھ سراج، اور انہوں نے ذکر کیا ہے وہ پانچ میں سے ایک قول ہے اور درر میں ظہیریہ سے ہے کہ یہی صحیح ہے۔ (ت)

اقول : تحقیق یہ ہے کہ اس کا دور تقریباً ساڑھے پینتیس ہاتھ چاہئے یعنی ۳۵.۴۴۹۷ تو قطر تقریباً ۵ گز ۲/۱ - ۱۰ گرہ ہوگا بلکہ دس گزہ ایک انگل یعنی ۵.۴۸۴ ہاتھ بیان اس کا یہ کہ اصول ہندسہ عہ ۲ مقالہ ۴ شکل ۱۲ میں ثابت ہے کہ محیط دائرہ کو ربع قطر میں ضرب دینے سے مساحت دائرہ حاصل ہوتی ہے یا قطر دائرہ کو ربع محیط

عہ ۱ لم ارفی التقدیر الا اربعۃ اقوال وکانہ اراد بالخامس ماذکر المحقق ان لاتعیین منہ حفظہ ربہ تعالٰی (م) میں نے تقدیر میں صرف چار قول دیکھے ہیں شامی نے گویا پانچویں سے وہ مراد لیا ہے جس کو محقق نے ذکر کیا ہے کہ تعین نہیں۔ (ت)

عہ ۲: یہ کتاب کتاب اقلیدس سے مجدا وجدید ہے ۸ مقالوں پر مشتمل اور ہندسہ و مساحت ومثلث کروی سب میں مفید ہے اس میں بہت دعاوی کا بیان کتاب اقلیدس پر مزید ہے فاضل محمد عصمہ مصری نے اسے ترکی سے عربی میں ترجمہ کیا ۱۲ (م)

1. جامع الرموز باب بیان الما گنبد ایران ۲۸/۱
2. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۲۲/۱

Volume II Fatawa Razawiya Either multiply the radius by the semi-circumference, or multiply the diameter and circumference and divide by 4; the result of all is the same. And we have (1) proven in our geometric writings that the diameter from the parts of the circumference is represented by the Abjad notation 'قدحہ لہ الط لومہ', the radius is 'نز حہ لر مدح', meaning the circumference which is 360 degrees in measure, the diameter for it is 114 degrees 35 minutes 29 seconds 36 thirds 45 fourths.

In the calculation of the virtuous Ghiyath al-Din Jamshid al-Kashi,	**And in the calculation of the virtuous Ghiyath al-Din Jamshid al-Kashi as**
as quoted by Allama al-Birjandi in the Commentary on Tahrir	Allama al-Birjandi has written in the Commentary on Tahrir
al-Majisti, 'Lub'a' i.e., 56 in place of 'Mah' is not inseparable.	al-Majisti 'Lub'a' meaning 56 instead of 'Mah', this calculation does not differ from mine except
My calculation except by about a fourth, and another calculation came squared	only in the amount of 11 fourths, and from another calculation the square
raised i.e., forty-seven, in short there is no difference except in some	raised meaning forty-seven, in short, the difference is only in some
fourths, and on this latter one we have relied.	fourths, and on this latter one we have relied. (Trans.)

So if the diameter for a circumference is 3.14159265, then 360 ÷ 3.14159265 = 114.59155915, which in sexagesimal conversion is 'مدحہ لہ الط لومہ'. From here we obtain two equations. Let diameter, circumference, and area be denoted consecutively as Q, T, M. Thus, (1) 3.14159265 Q = T, because 1 : 3.14159265 :: Q : T. (2) (Q * T) / 4 = M. Once diameter, circumference (1), or area is measured in any unit like yard, hand, foot, knot, etc., the magnitude of the remaining two will be known in that same unit, for which we have established this table.

Known / Required	**Diameter (Q)**	**Circumference (T)**	**Area (M)**
Diameter (Q)	-	3.14159265 Q	0.7853981625 Q^2 (Note 1)
Circumference (T)	0.31830988 (T)	-	0.07957747 T^2 (Note 2)
Area (M)	1.12837917 (M)	3.5449077 (M)	-

Note 1: Let the known number, i.e., the value of circumference in diameter parts, be S. ∴ S Q = T, (Q * T) / 4 = M ∴ S Q^2 / 4 = M. This number is S/4. 12 Aminah (M). Note 2: Whereas S T = Q, (Q * T) / 4 = M ∴ S T^2 / 4 = M. This number is S/4. 12 (M).

Page 289 of 711

जिल्द द्वितीय फ़तावा रज़विया या त्रिज्या को अर्ध-परिधि से गुणा करें, या व्यास और परिधि को गुणा करके4 से भाग दें; सबका परिणाम एक ही है। और हमने (1) अपने ज्यामितीय लेखन में सिद्ध किया है कि परिधि के भागों से व्यास 'قدحہ لہ الط لومہ' है, त्रिज्या 'نز حہ لر مدح' है, जिसका अर्थ है परिधि जो 360 डिग्री है, व्यास उससे 114 डिग्री 35 मिनट 29 सेकंड 36 तिहाई 45 चौथाई है।

फ़ाज़िल ग़ियासुद्दीन जमशेद अल-काशी की गणना में,	**और फ़ाज़िल ग़ियासुद्दीन जमशेद अल-काशी की गणना में जैसा कि**
जैसा कि अल्लामा अल-बिरजंदी ने तहरीरे-मजिस्ती की व्याख्या में उद्धृत किया है	अल्लामा बिरजंदी ने तहरीरे-मजिस्ती की व्याख्या में 'लुबा' यानी
लुबा' यानी 56 'मह' के स्थान पर अविभाज्य नहीं है।	56 'मह' के स्थान पर लिखा है, यह गणना मेरी गणना से भिन्न नहीं है सिवाय
मेरी गणना सिवाय लगभग एक चौथाई के और एक अन्य गणना वर्ग में आई	केवल 11 चौथाई की मात्रा में, और दूसरी गणना से वर्ग
उठाया गया यानी सैंतालीस, संक्षेप में कुछ	उठाया गया यानी सैंतालीस है, संक्षेप में यह कि अंतर केवल कुछ
चौथाई के अलावा कोई अंतर नहीं है, और इसी अंतिम पर हमने भरोसा किया है।	चौथाई में है और इसी अंतिम पर हमने भरोसा किया है। (अनु.)

तो यदि व्यास एक परिधि के लिए 3.14159265 है, तो 360 ÷ 3.14159265 = 114.59155915, इसका षष्टिक (sexagesimal) रूपांतरण 'مدحہ لہ الط لومہ' है। यहाँ से हमें दो समीकरण प्राप्त होते हैं। व्यास, परिधि और क्षेत्रफल को क्रमशः Q, T, M मान लें। तो (1) 3.14159265 Q = T, क्योंकि 1 : 3.14159265 :: Q : T (2) (Q * T) / 4 = M. इनके बाद व्यास, परिधि (1) और क्षेत्रफल में से जो भी चीज़ गज़, हाथ, फ़ुट, गिरह आदि जिस पैमाने से मापी जाए, उसी पैमाने से शेष दो का मान ज्ञात हो जाएगा, जिसकी तालिका हमने इस प्रकार रखी है।

ज्ञात / अभीष्ट व्यास (Q)	**परिधि (T)**	**क्षेत्रफल (M)**
व्यास (Q)	-	3.14159265 Q	0.7853981625 Q^2 (टिप्पणी 1)
परिधि (T)	0.31830988 (T)	-	0.07957747 T^2 (टिप्पणी 2)
क्षेत्रफल (M)	1.12837917 (M)	3.5449077 (M)	-

टिप्पणी 1: ज्ञात संख्या अर्थात् व्यास के भागों में परिधि की मात्रा को S मान लें। ∴ S Q = T, (Q * T) / 4 = M ∴ S Q^2 / 4 = M. यह संख्या S/4 है। 12 अमीनह (M)। टिप्पणी 2: जबकि S T = Q, (Q * T) / 4 = M ∴ S T^2 / 4 = M. यह संख्या S/4 है। 12 (M)।

पृष्ठ 289 of 711

جلد ثانی فتاوٰی رضویہ یا نصف قطر کو نصف محیط میں ضرب دیجئے یا قطر و محیط کو ضرب دے کر ۴ پر تقسیم کیجئے کہ حاصل سب کا واحد ہے اور ہم نے (۱) اپنی تحریرات ہندسیہ میں ثابت کیا ہے کہ قطر اجزائے محیطیہ سے قدحہ لہ الط لومہ ہے نصف قطر نز حہ لر مدح یعنی محیط جسے مقدار سے ۳۶۰ درجے ہے قطر اُس سے ۱۱۴ درجے ۳۵ دقیقے ۲۹ ثانیے ۳۶ ثالثے ۴۵ رابعے ہے۔

و فی حساب الفاضل غیاث الدین جمشید الکاشی

علی مانقل العلامۃ البرجندی فی شرح تحریر

المجسطی لو بعہ ای ستا و خمسین مکان مہ لایفارق

محسوبی الابنحو رابعۃ وجاء بحساب اخر مربعہ

رفعاً ای سبعاً واربعین وبالجملۃ لافرق الا فی بعض

روابع وعلی ہذا الاخیر عولنا۔

اور فاضل غیاث الدین جمشید الکاشی کے حساب میں جیسا کہ

علامہ برجندی نے شرح تحریر مجسطی میں لکھا ہے لوبعہ یعنی

۵۶ بجائے مہ، یہ حساب میرے حساب سے مختلف نہیں مگر

صرف ۱۱ رابعہ کی مقدار میں اور دوسرے حساب سے مربعہ

رفعاً یعنی سینتالیس ہے، خلاصہ یہ کہ اختلاف صرف بعض

روابع میں ہے اور اسی اخیر پر ہم نے اعتماد کیا ہے۔ (ت)

تو قطر اگر ایک ہی محیط ۱۴۱۵۹۲۶۵ ء ۳ ہے فان ۳۶۰ ÷ ۱۴۱۵۹۲۶۵ ء ۳ = ۱۱۴ ء ۵۹۱۵۵۹۱۵ تحویلہ الی الستینی مدحہ لہ الط لومہ یہاں سے ہمیں دو مساواتیں حاصل ہوئیں قطر و محیط و مساحت کو علی التوالی ق ط م فرض کیجئے پس (۱) ۱۴۱۵۹۲۶۵ ء ۳ ق = ط اس لئے کہ ۱۴۱۵۹۲۶۵ ء ۱ : ۳ :: ق : ط (۲) ۴/ ق ط = م ان کے بعد قطر و محیط (۱) ومساحت سے جو چیز گز ، ہاتھ ، فٹ ، گرہ ، وغیرہ جس معیار سے مقدر کی جائے اُسی معیار سے باقی دو کی مقدار معلوم ہو جائے گی جس کی جدول ہم نے یہ رکھی ہے۔

معلوم / مطلوب	قطر	محیط	مساحت
قطر	-	۱۴۱۵۹۲۶۵ ء ۳ ق	۷۸۵۳۹۸۱۶۲۵ ء ۰ ق ۲ عہ ۱
محیط	۳۱۸۳۰۹۸۸ ء ۰ (ط)	-	۰۷۹۵۷۷۴۷ ء ۰ ط ۲ عہ ۲
مساحت	۱۲۸۳۷۹۱۷ ء ۱ (م)	۳۵۴۴۹۰۷۷ ء ۳ (م)	-

عہ ۱ عدد معلوم یعنی مقدار محیط باجزائے قطریہ کو ص فرض کیجئے ∴ ص ق = ط، ۴/ ق ط = م ∴ ۴/ ص ق ۲ = م یہ عدد ۴/ ص ہے ۱۲ امنہ (م) عہ ۲ جبکہ ص ط = ق، ۴/ ق ط = م ∴ ۴/ ص ط ۲ = م یہ عدد ۴/ ص ہے ۱۲ منہ (م)

Fatawa-e-Razvia Volume 2

Then, for the sake of ease in working with logarithms, this second table has been placed, and in it, such adjustments have been made using computational complements that addition occurs instead of subtraction.

Known \ Requested	**Diameter**	**Circumference**	**Area**
Diameter	---	3.14159265 q	0.7853981625 q^2 t
Circumference	3.14159265 t	---	12.5663706 t^2
Area	0.7853981625 t^2	12.5663706 t^2	---

Here, the area is known to be 100 hands, whose logarithm is 2.00000. 1.1029101/2 = 1.0522550... which is the logarithm of 11.284. This is the value of the diameter. Also, 3.0992099/2 = 1.5296029... which is the logarithm of 35.354. This value was further away. The verification of our statement is that 11.284 * 35.354 = 400.006516. 400 / 2 = 200.0016, which is only 16/10000 i.e., 1/625 part more than a hundred hands. This is less than even one-twenty-fifth part of a finger's width (24/625 of an angul). This is contrary to the calculation of Siraj and Shurunbulaliyah, where according to them it increases by 19 anguls, and in reality, it exceeds three hands, as will be mentioned later.

[Boxed Section] I say: By this, what was mentioned in previous explanations becomes clear. (1) Firstly, that for which the circumference is thirty-six, its diameter will not exceed 11 cubits by only one-fifth of a cubit, but by nearly half a cubit, because the logarithm of 36 is 1.5563025 + 1.5028501 = 1.0591526, and that is the logarithm of 11.359. This value is only 41/1000 less than half. (2) Secondly: In such a case, its area increases over a hundred cubits by more than three cubits, not just four-fifths of a cubit. This is because 1.5563025 * 2 = 3.1126050. 11 + 2.9007901 = 3.0143951, which is the logarithm of 11.314. (3) Thirdly: If one works with the mentioned diameter... (text ends)

(1) From this, it is known that what is in previous statements is: firstly, that whose circumference is thirty-six, its diameter will not exceed 11 cubits by only a fifth of a cubit, but will exceed by nearly half a cubit because the logarithm of 36 is 1.5563025 + 1.5028501 = 1.0591526, and that is the logarithm of 11.359. This is only 41/1000 less in quantity than half. And secondly, what happened is that its measurement over a hundred hands will exceed three cubits, not that it is 4/5 of a cubit. And this is

because 1.5563025 * 2 = 3.1126050. 11 + 2.9007901 = 3.0143951, and that is the logarithm of 11.314.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी

फिर लोगारिदम (Logarithm) के साथ काम करने में आसानी के लिए यह दूसरी तालिका रखी गई, और इसमें गणितीय पूरकों (mathematical complements) का उपयोग करके इस तरह के बदलाव किए गए कि घटाव के स्थान पर केवल जोड़ ही रहे।

ज्ञात \ वांछित	**व्यास**	**परिधि**	**क्षेत्रफल**
व्यास	---	3.14159265 q	0.7853981625 q^2 t
परिधि	3.14159265 t	---	12.5663706 t^2
क्षेत्रफल	0.7853981625 t^2	12.5663706 t^2	---

यहाँ क्षेत्रफल 100 हाथ ज्ञात है, जिसका लोगारिदम 2.00000 है। 1.1029101/2 = 1.0522550... जो 11.284 का लोगारिदम है। यह व्यास का मान है। साथ ही, 3.0992099/2 = 1.5296029... जो 35.354 का लोगारिदम है। यह मान अधिक था। हमारे कथन का सत्यापन यह है कि 11.284 * 35.354 = 400.006516. 400 / 2 = 200.0016, जो सौ हाथ से केवल 16/10000 यानी 1/625वां भाग अधिक है। यह एक अंगुल की चौड़ाई के पच्चीसवें हिस्से (24/625 अंगुल) से भी कम है। यह सिराज और शुरुनबुलालीया की गणना के विपरीत है, जहाँ उनके अनुसार यह 19 अंगुल बढ़ जाता है, जबकि वास्तविकता में यह तीन हाथ से भी अधिक बढ़ जाता है, जैसा कि आगे बताया जाएगा।

[बॉक्स वाला भाग] मैं कहता हूँ: इससे वह स्पष्ट हो गया जो पिछली बातों में था। (1) प्रथम, जिसकी परिधि छत्तीस हो, उसका व्यास 11 हाथ पर केवल हाथ के पांचवें हिस्से से अधिक नहीं होगा, बल्कि लगभग आधे हाथ के बराबर अधिक होगा क्योंकि छत्तीस का लोगारिदम 1.5563025 + 1.5028501 = 1.0591526 है और वह लोगारिदम 11.359 का है। यह परिमाण आधा से केवल 41/1000 ही कम है। (2) द्वितीय: जो ऐसा हो उसका क्षेत्रफल सौ हाथ पर तीन हाथ से अधिक बढ़ जाएगा, न कि हाथ का 4/5 हिस्सा। और यह इसलिए है क्योंकि 1.5563025 * 2 = 3.1126050. 11 + 2.9007901 = 3.0143951 और वह लोगारिदम 11.314 का है। (3) तृतीय: यदि बताए गए व्यास के साथ काम किया जाए...

(1) इससे ज्ञात हुआ कि पूर्व बयानों में जो कुछ है वह यह है कि प्रथम, जिसकी परिधि छत्तीस हो, उसका व्यास 11 हाथ पर केवल हाथ के पांचवें हिस्से से अधिक नहीं होगा, बल्कि लगभग आधे हाथ

के बराबर अधिक होगा क्योंकि छत्तीस का लोगारिदम 1.5563025 + 1.5028501 = 1.0591526 है और वह 11.359 का लोगारिदम है। यह आधा से केवल 41/1000 ही कम है। और द्वितीय, जो ऐसा हो उसकी माप सौ हाथ पर तीन हाथ से अधिक होगी, न कि हाथ का 4/5 हिस्सा। और यह इसलिए है क्योंकि 1.5563025 * 2 = 3.1126050. 11 + 2.9007901 = 3.0143951 और वह 11.314 का लोगारिदम है।

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

پھر آسانی کیلئے لوگار تھم سے کام کرنے کو یہ دوسری جدول رکھی اور اس میں متممات حسابیہ سے وہ تصرفات کر دئے کہ بجائے تفریق بھی جمع ہی رہے۔

معلوم \ مطلوب	قطر	محیط	مساحت
قطر	---	۳.۱۴۱۵۹۲۶۵ ق	۰.۷۸۵۳۹۸۱۶۲۵ ق ۲ ط
محیط	۳.۱۴۱۵۹۲۶۵ ط	---	۱۲.۵۶۶۳۷۰۶ ط ۲
مساحت	۰.۷۸۵۳۹۸۱۶۲۵ ط ۲	۱۲.۵۶۶۳۷۰۶ ط ۲	---

یہاں مساحت معلوم ہے ۱۰۰ ہا تھ جس کا لوگار تھم ۲.۰۰۰۰۰۰ ، ۲/۱۰۲۹۱۰۱ = ۱.۰۵۲۲۵۵۰ء ا کہ لوگار تھم ۱۱.۲۸۴ کا ہے یہ قدر قطر ہوئی نیز ۲/۳۰۹۹۲۰۹۹ = ۱.۵۲۹۶۰۲۹ء ا کہ لوگار تھم ۳۵.۳۵۴ کا ہے یہ مقدار دُور ہوئی ۔ ہمارے بیان کی تحقیق یہ ہے کہ ۱۱.۲۸۴ * ۳۵.۳۵۴ = ۴۰۰.۰۰۶۵۱۶ ، ۴۰۰ ÷ ۲ = ۲۰۰.۰۱۶، ۱۰۰ کہ سو ہاتھ سے صرف ۱۶/۱۰۰۰۰ یعنی ۱/۶۲۵ حصہ زائد ہے کہ ایک انگل عرض کا ۲۴/۶۲۵ یعنی انگل کے پچیسویں حصے سے بھی کم ہے، بخلاف حساب سراج وشرنبلالیہ کہ اُن کے خیال سے ۱۹ انگل اور واقع میں تین ہاتھ سے بھی زیادہ بڑھتا ہے کما سیأتی۔

اقول: وبهذا علم مافی البیانات السابقة (۱) فاولاً ماکان دوره ستاً و ثلثین لا یزید قطره علی ذراعاً بخمس ذراع فقط بل بقریب من نصف ذراع لان لوگارثمها ۱.۵۵۶۳۰۲۵+ ۱.۵۰۲۸۵۰۱ = ۱.۰۵۹۱۵۲۶ء او هو لوغارثم ۱۱.۳۵۹ الما ینقص من النصف الاقدر ۴۱/۱۰۰۰ (۲) وثانیاً: ماکان کذا تزید مساحته علی مائة ذراع باکثر من ثلثة اذرع لا اربعة اخماس ذراع وذلک لان

۱.۵۵۶۳۰۲۵*۲ = ۳.۱۱۲۶۰۵۰ء ۱۱ + ۲.۹۰۰۷۹۰۱ = ۳.۰۱۴۳۹۵۱ء وھو لوغارثم ۱۱.۳۱۴

(۳) وثالثاً: لوعمل بقطر ذکر بان رسم خط

(۱) اس سے معلوم ہوا کہ جو کچھ سابقہ بیانات میں ہے اولاً جس کا دور چھتیں ہو اس کا قطر ۱۱ ذراع پر ایک ذراع کا صرف پانچواں حصہ زائد نہ ہوگا بلکہ آدھے ذراع کے قریب زائد ہو گا کیونکہ ۳۶ کا لوگار تھم ۱.۵۵۶۳۰۲۵ + ۱.۵۰۲۸۵۰۱ = ۱.۰۵۹۱۵۲۶ء ہے اور وہ لوگار تھم ۱۱.۳۵۹ ہے یہ نصف سے صرف ۴۱/۱۰۰۰ ہی مقدار کم ہے، اور ثانیاً جو ایسا ہوا اس کی پیمائش سو ہاتھ پر تین ذراع سے زائد ہو گی نہ یہ کہ ایک ذراع کا ۴/۵ اور یہ اس لئے ہے کہ ۱.۵۵۶۳۰۲۵ * ۲ = ۳.۱۱۲۶۰۵۰ء ۱۱ + ۲.۹۰۰۷۹۰۱ = ۳.۰۱۴۳۹۵۱ء اور وہ لوگار تھم ہے ۱۱.۳۱۴ کا،

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] And thirdly, if the mentioned diameter is acted upon in such a way that a line similar to it is drawn, and a circle is drawn at its half to its subsequent edge, and the circumference of the well is made similar to it, it would not be correct. Because the logarithm of 11.2 is 1.0492180, its double 1.0982360 + 1.8950899 = 3.9935259. This is the logarithm of 98.52. Thus, the surface area will be approximately one and a half cubits less than one hundred cubits. In summary, if the circumference is taken, it will exceed the requirement by three cubits, and if the diameter is taken, it will be one and a half cubits less. If one intends to combine both, it will not be possible. In 'Ghuniyat Dhawil-Ahkam', the researcher Al-Shurunbulali first mentioned what was previously cited from 'Sh' and 'Siraj', then he stated: The proof of this is that we know the circumference and the measurement (area) which is the calculation of the circle. We divided the area by a quarter of the circumference, which is 9, and the diameter resulted in eleven and one-fifth cubits. The proof for the consideration of 36 is the division of area - which is one hundred and four-fifths cubits - by the half-diameter (radius), as we mentioned it matches that. (End note) I say: (1) The word 'half' here is a slip of the pen; the correct term is 'quarter of diameter' as you know that 4/q * t = m. We divided the equation by 4/t, thus q = m ÷ 4/t. This is his first claim. And secondly we... 4/q : . t = m ÷ 4/

[Left Column - Arabic Original] Similarly, if it were drawn on its midpoint at the distance of its end, a circle, and the circumference of the well were made like it, it would not be correct. For its logarithm is 1.0982360, doubled it is 2.0982360 + 1.8950899 = 3.9935259, which is the logarithm of 98.52. So the surface would be less than a hundred cubits by about a cubit and a half. In short, if the circumference is taken, it exceeds the requirement by three cubits, and if the diameter is taken, it falls short of it by a cubit and a half. If a combination of the two is desired, it is not possible. As for the saying of the researcher Al-Shurunbulali in 'Ghuniyat Dhawil-Ahkam', where he first mentioned what preceded from 'Sh' from 'As-Siraj', then said: And the proof of that is that we knew the circumference and the area, which is the calculation of the circle, so we divided the area by a quarter of the circumference, which is nine, so the diameter came out to be eleven cubits and a fifth of a cubit. And the proof of considering thirty-six by dividing the area, which is a hundred cubits and four-fifths of a cubit, by half the diameter, it is as we mentioned it. (End note) I say: (1) The word 'half' here is a slip of the pen, and the correct thing is 'upon the quarter of

the diameter' because you know that 4/q * t = m. We divided the equation by 4/t, hence q = m ÷ 4/t.

[Footer] 1 Ghuniyat Dhawil-Ahkam on the margins of Ghurar al-Ahkam, Farḍ al-Ghusl, Dar al-Sa'adah, Egypt, 1/23 Page 291 of 711

फतावा-ए-रजविया, खंड 2

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] और तीसरा, यदि उल्लेखित व्यास पर इस तरह कार्य किया जाए कि उसी के समान एक रेखा खींची जाए, और उसके आधे पर उसके बाद के किनारे पर एक वृत्त खींचा जाए, और कुएँ का घेरा (परिधि) उसी के समान कर दिया जाए, तो यह सही नहीं होगा। क्योंकि 11.2 का लघुगणक (logarithm) 1.0492180 है, उसका दोगुना 1.0982360 + 1.8950899 = 3.9935259 है। यह 98.52 का लघुगणक है। अतः सतह सौ हाथ से लगभग डेढ़ हाथ कम होगी। संक्षेप में यह कि यदि परिधि ली जाए तो वांछित से तीन हाथ अधिक होगी और यदि व्यास लिया जाए तो डेढ़ हाथ कम होगी। यदि दोनों को मिलाने का इरादा हो तो यह संभव नहीं होगा। 'ग़ुनियत ज़ाविल-अहकाम' में शोधकर्ता अल-शुरुनबुलाली ने पहले वह उल्लेख किया जो 'श' और 'सिराज' से उद्धृत था, फिर कहा: इसका प्रमाण यह है कि हमें परिधि और माप (क्षेत्रफल) का ज्ञान है जो वृत्त की गणना है। हमने क्षेत्रफल को परिधि के एक चौथाई (जो कि 9 है) से विभाजित किया, तो व्यास ग्यारह और एक-बटा-पाँच हाथ निकला। और इस बात का प्रमाण कि 36 का विचार क्षेत्रफल के विभाजन पर है - और वह क्षेत्रफल सौ और चार-बटा-पाँच हाथ है - आधे व्यास (त्रिज्या) पर है, तो जैसा कि हमने उल्लेख किया यह उसके अनुरूप है। (समाप्त) मैं कहता हूँ: (1) यहाँ 'आधा' (निस्फ) शब्द लेखनी की त्रुटि है; सही 'व्यास का चौथाई' है, जैसा कि आप जानते हैं कि 4/q * t = m। हमने समीकरण को 4/t से विभाजित किया, अतः q = m ÷ 4/t। यह उसका पहला दावा है। और दूसरा हमने इसे 4/q : . t = m ÷ 4/

[बायां स्तंभ - अरबी मूल] ठीक वैसे ही, यदि इसके मध्य बिंदु पर इसके अंत की दूरी पर एक वृत्त खींचा जाए, और कुएँ की परिधि उसके समान कर दी जाए, तो यह सही नहीं होगा। क्योंकि इसका लघुगणक 1.0982360 है, दोगुना करने पर यह 2.0982360 + 1.8950899 = 3.9935259 है, जो 98.52 का लघुगणक है। अतः क्षेत्रफल सौ हाथ से लगभग डेढ़ हाथ कम होगा। संक्षेप में, यदि परिधि ली जाती है, तो यह वांछित से तीन हाथ अधिक हो जाती है, और यदि व्यास लिया जाता है, तो यह डेढ़ हाथ कम हो जाती है। यदि दोनों का संयोजन वांछित है, तो यह संभव नहीं है। जहाँ तक 'ग़ुनियत ज़ाविल-अहकाम' में शोधकर्ता अल-शुरुनबुलाली के कथन का प्रश्न है, जहाँ उन्होंने पहले 'सिराज' से 'श' के पूर्व उद्धरणों का उल्लेख किया, फिर कहा: और उसका प्रमाण यह है कि हमें परिधि और क्षेत्रफल ज्ञात था, जो वृत्त की गणना है, इसलिए हमने क्षेत्रफल को परिधि के एक चौथाई से विभाजित किया, जो नौ है, तो व्यास ग्यारह हाथ और एक-पाँचवाँ हाथ आया। और क्षेत्रफल, जो एक सौ हाथ

और चार-पाँचवाँ हाथ है, को आधे व्यास से विभाजित करके छत्तीस मानने का प्रमाण वैसा ही है जैसा हमने उल्लेख किया है। (समाप्त) मैं कहता हूँ: (1) यहाँ 'आधा' शब्द लेखनी की त्रुटि है, और सही 'व्यास के चौथाई पर' है क्योंकि आप जानते हैं कि 4/q * t = m। हमने समीकरण को 4/t से विभाजित किया, इसलिए q = m ÷ 4/t।

[पाद लेख] 1 ग़ुनियत ज़ाविल-अहकाम, घुरर अल-अहकाम के हाशिए पर, फर्ज़ अल-ग़ुस्ल, दार अल-सआदा, मिस्र, 1/23 पृष्ठ 711 का 291

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] اور ثالثاً اگر مذکورہ قطر پر عمل کیا جائے اس طرح کہ اسی کی مثل ایک خط کھینچا جائے اور اس کے نصف پر اس کے بعد کے کنارے پر ایک دائرہ کھینچا جائے اور کنویں کا دور اسی کی مثل کیا جائے، تو صحیح نہ ہوگا، کیونکہ ۲ ۱۱ کا لوگار تھم ۱,۰۴۹۲۱۸۰ء ہے اس کا دوگنا ۱,۰۹۸۲۳۶۰ء + ۱,۸۹۵۰۸۹۹ = ۳,۹۹۳۵۲۵۹ء ہے اور یہ لوگار تھم ۹۸,۵۲ ہے تو سطح سو ہاتھ سے تقریباً ڈیڑھ ہاتھ کم ہوگی اور خلاصہ یہ ہے کہ اگر دور لیا جائے تو مطلوب پر زائد ہوگا تین ہاتھ اور اگر قطر لیا جائے تو اس سے ڈیڑھ ہاتھ کم ہوگا اور اگر ان دونوں میں جمع کا ارادہ کیا جائے تو ممکن نہ ہوگا، اور غنیۃ ذوی الاحکام میں محقق شرنبلالی نے فرمایا پہلے تو جو ذکر کیا گیا 'ش' سے، سراج سے وہ انہوں نے ذکر کیا، پھر فرمایا، اس کی برہان یہ ہے کہ ہمیں دور اور پیمائش کا علم ہے جو دائرہ کی تکسیر ہے، تو ہم نے مساحت کو ربع دور پر تقسیم کیا اور وہ ۹ ہے تو قطر ۱/۵-۱۱ ذراع نکلا، اور برہان اس امر پر کہ ۳۶ کا اعتبار مساحت کی تقسیم پر اور وہ مساحت سو ذراع اور چار خمس ذراع ہے نصف قطر پر ، تو جیسا کہ ہم نے ذکر کیا یہ اس کے مطابق ہے اھ(ت) میں کہتا ہوں لفظ نصف یہاں قلم کی سبقت ہے صحیح ربع قطر ہے، جیسا کہ آپ کو معلوم ہے کہ ۴/ ق ط = م، ہم نے معاملہ کو تقسیم کیا ۴/ ط : . ق = م ÷ ۴/ ط پر اور یہ اس کا پہلا دعوی ہے۔ اور ثانیا ہم نے اس کو ۴/ ق : . ط = م ÷ ۴/

[بایاں کالم - اصل عربی عبارت] مثلہ ورسمت علی منتصفہ ببعد طرفہ دائرۃ فجعل دورالبئر مثلھا لم یصح فان ءلوغارثمہ ۱,۰۹۸۲۳۶۰ء اضعفہ ۲,۰۹۸۲۳۶۰ء + ۱,۸۹۵۰۸۹۹ = ۳,۹۹۳۵۲۵۹ء وھو لوغارثم ۹۸,۵۲ فیکون السطح اقل من مائۃ ذراع بذراع و نصف تقریبا وبالجملۃ ان اخذ الدور زاد علی المطلوب بثلثۃ اذرع وان اخذ القطر نقص عنہ بذراع و نصف ان ارید الجمع بینھما لم یمکن- اما

قول المحقق الشرنبلالى فى غنية ذوى الاحكام حيث ذكر اولا مامر عن ش عن السراج ثم قال وبرهان ذلك اننا علمنا الدور والمساحة التى هى تكسير الدائرة فقسمنا المساحة على ربع الدور وهو تسعة فخرج القطر احد عشر ذراعا و خمس ذراع وبرهان اعتبار ستة و ثلثين بقسمة المساحة وهى مائة ذراع واربعة اخماس ذراع على نصف القطر فهو على ما ذكرناه ١ اه فأقول: (١) لفظ نصف ههنا سبق قلم وصوابه على ربع القطر لما علمت ان ۴/ ق ط = م قسمنا المعادلة على ۴/ ط : . ق = م ÷ ۴/ ط

[حاشيه] 1 غنية ذوى الاحكام على حاشية غررالاحكام فرض الغسل دارالسعادة مصر ١/ ٢٣ صفحه 291 از 711

Volume Two - Fatawa Rizvia

This was his first claim. Secondly, we divided it by 2 ¾ q. π = Area / diameter, not 2 ¾ q, and this is his other claim. This is easy, but the real issue is in determining these values. The purpose is only to show the value of a circumference whose area is one hundred (100) cubits (zira). There is nothing else at hand but this (1). Firstly, why did he deviate from it to something that exceeds it by four-fifths (4/5) of a cubit? Why was this done? Secondly, (2) you built the proof for considering this circumference on the value of the diameter, and the proof for considering this diameter on the value of the circumference, and this is circular reasoning. Thirdly, (3) you based the area on the circumference and diameter following 'al-Siraj', and these are two different circumferences, but the matter is that al-Siraj based the matter on induction (istiqra), so he gave an approximation. Once this is established, separating the diameter from the circumference and area, or the circumference from the diameter and area, is an intention to verify what was established, not a proof for it. And with Allah is success. This should be understood. Al-Quhistani mentioned a square of ten falling inside a circle whose circumference is forty-eight (48) or forty-four (44). (T) I say: there is a justification for him in the first case, so it occurs linguistically, even if it does not occur according to the technical terminology of the art—which is that all its corners should touch it. This is because the side of a square located within a circumference of forty-eight is (note) longer.

(Note): Meaning by more than four-fifths of a cubit, and that | Meaning more than four-fifths of one hand (continued on next page).

यह उनका पहला दावा था। दूसरा, हमने इसे 2 ¾ q से विभाजित किया। π = क्षेत्रफल / व्यास, न कि 2 ¾ q, और यह उनका दूसरा दावा है। यह आसान है, लेकिन मुख्य मामला इन मापदंडों को निर्धारित करने में है। उद्देश्य केवल उस परिधि के परिमाण को प्रकट करना है जिसका क्षेत्रफल एक सौ (100) हाथ (ज़िरा) हो। हाथ में इसके अलावा कुछ भी नहीं है (1)। सबसे पहले, वह इससे हटकर ऐसी चीज़ की ओर क्यों बढ़े जो इससे एक हाथ के चार-पांचवें हिस्से (4/5) से अधिक है? ऐसा क्यों किया गया? दूसरा: (2) आपने इस परिधि पर विचार करने के प्रमाण को व्यास के मूल्य पर आधारित किया, और इस व्यास पर विचार करने के प्रमाण को परिधि के मूल्य पर आधारित किया, और यह चक्राकार तर्क(circular reasoning) है। तीसरा: (3) आपने 'सिराज' के अनुसरण में क्षेत्रफल का आधार परिधि और व्यास पर रखा, और ये दो अन्य परिधियाँ हैं, लेकिन बात यह है कि सिराज ने मामले का आधार आगम (induction/istiqra) पर रखा है, इसलिए उन्होंने अनुमान लगाया। जब यह स्थापित हो गया, तो व्यास को परिधि और क्षेत्रफल से अलग करना या परिधि को व्यास और क्षेत्रफल से अलग करना, स्थापित चीज़ की पुष्टि करने का इरादा है, इस पर कोई प्रमाण नहीं है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। इसे समझना चाहिए, और क्युस्तानी (al-Quhistani) ने दस के वर्ग का उल्लेख किया है जिसके वृत्त की परिधि अड़तालीस (48) या चौवालीस (44) बनती है। (त) मैं कहता हूँ कि पहले मामले में उनके लिए एक कारण मौजूद है, इसलिए यह भाषाई आधार पर घटित होता है, भले ही यह कला की तकनीकी शब्दावली के अनुसार न हो—यानी यह कि इसके सभी कोने इसे स्पर्श करते हों। ऐसा इसलिए है क्योंकि अड़तालीस की परिधि में स्थित वर्ग की भुजा (नोट) लंबी होती है।

(नोट): यानी एक हाथ के चार-पांचवें हिस्से से अधिक और वह | यानी एक हाथ के चार-पांचवें हिस्से से अधिक (अगले पृष्ठ पर जारी)।

وھی دعواہ الاولی وثانیا قسمناھا علی 2 ¾ ق :: ط = م/ق لا 2 ¾ ق وھی دعواہ الاخری ھذا سھل وانما الشأن فی تعیین ھذہ المقادیر وما القصد الا ابداء مقدار دور تکون مساحتہ مائۃ ذراع فلیس بالید الاھذہ (1) فاو لا کیف عدل عنھا الی مایزید علیھا باربعۃ اخماس ذراع، ایسا کیوں کیا گیا؟ ثانیا: (2) بنیتم برھان اعتبار ھذا الدور علی قدر القطر وبرھان اعتبار ھذا القطر علی قدر الدور وھذا دور، وثالثا: (3) بنیتم المساحۃ تبعا للسراج علی الدور والقطر وھذا ان دوران آخران ولکن الامر ان السراج بنی الامر علی الاستقراء فقرب تقریبا واذا تقرر ھذا فابانۃ القطر من الدور والمساحۃ او الدور من القطر والمساحۃ ارادۃ تحقیق ماتقرر لا البرھان علی ذلك وبالله التوفیق ھذا وما ذکر القھستاني من وقوع مربع عشر داخل دائرۃ محیطھا ثمانیۃ واربعون او اربعۃ واربعون۔ فاقول: لہ وجہ فی الاول فیقع فیھا لغۃ وان لم یقع علی مصطلح الفن من ان یماسھا جمیع زوایاہ وذلك لان المربع الواقع في محیط ثمانیۃ واربعین ضلعہ عہ اطول

ق لا ۲/۴ ق پر تقسیم کیا، اور یہ ان کا دوسرا دعوی ہے یہ سہل ہے اور اہم معاملہ ان مقادیر کی تعیین کا ہے، اور مقصد صرف مقدار دور کا اظہار ہے جس کی مساحت ایک سو ۱۰۰ ذراع ہو، تو ہاتھ میں یہی ہے۔ اولاً یہاں اس سے عدول کر کے وہ چیز اختیار کی گئی ہے جس پر ایک ذراع کے چار خمس زائد ہے، ایسا کیوں کیا گیا؟ ثانیاً: اس دور کے اعتبار کی برہان کو تم نے قطر کی مقدار پر مبنی کیا ہے، اور اس قطر کے اعتبار کی برہان کو دور کی مقدار پر مبنی کیا ہے، اور یہ دور ہے۔ ثالثاً: تم نے پیمائش کی بنیاد، سراج کی پیروی میں، دور اور قطر پر رکھی ہے، اور یہ دور دوسرے دور ہیں، لیکن سراج نے معاملہ کی بنیاد استقراء پر رکھی ہے تو ان کی یہ بات قریب قریب ٹھیک ہے، جب یہ ثابت ہو گیا تو قطر کو دور اور پیمائش سے الگ کرنا یا دور کو قطر و

پیمائش سے الگ کرنا، ثابت شدہ چیز کی تحقیق کا ارادہ ہے اس پر برہان نہیں ہے وباللہ التوفیق، اس کو سمجھنا چاہئے، اور قہستانی نے دس کے مربع کا ذکر کیا ہے جس کے دائرہ کا محیط اڑتالیس یا چوالیس بنتا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اس کی پہلے میں وجہ موجود ہے تو وہ اس میں لغت کے اعتبار سے واقع ہے، اگرچہ فن کی اصطلاح کے مطابق نہیں ہے، یعنی یہ کہ اس کو اس کے تمام زاویے مس کرتے ہوں اور اس کی دلیل

عه ای باکثر من اربعة اخماس ذراع و ذلك | یعنی ایک ہاتھ کے چار خمس سے زیادہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa-e-Razvia Volume Two

...from ten, so it is impossible for more than two angles of the square to touch it (1). As for the second, there is no reason for it at all. So, let square AE be placed in circle ABCD on center O. log 44 = 1.6433252 + 1.5028501 = 3.1461753... (The text contains complex logarithmic calculations for circle and square dimensions).

This is that the side of a square that fits within a perimeter of forty-eight is longer than ten, so it is not possible for more than two angles of the square to touch it, and there is no reason for the others [to touch], for example, if square AE is located in circle ABCD and is on the center O, then log 44 = 1.6433252 + 1.5028501 = 3.1461753. This is the log of the diameter. 3.1461753 - 0.3010300 = 2.8451453, this is the log of its half. Then in triangle AHB, the right angle AH: sine B and this is MH CH, its log sine is 1.8294850 :: 1 : B : C :: 0.8225228 - 1.8294850 = 1.8- 0.9957848 this is the log of AB. And if you wish by the 'Arusi' method, then double its log... half of it is 0.9957848 as it is.

(Footnote from previous page): ...because the logarithm of the perimeter is 1.6812412 + 1.5028501 = 3.1840913. This is the log of the diameter. Subtracting 0.3010300 = 2.8830613, this is the log of the radius. Log sine MH 1.8294850 = 1.0335763. This is the log of the side of the square located within the perimeter, which is 10.803. Therefore, the area will be more than 107 in the square. As for the circle, its measurement is more than one hundred and eighty-three (183) cubits. (T)

फ़तावा-ए-रज़विया खण्ड द्वितीय

...दस से, इसलिए वर्ग के दो से अधिक कोणों के लिए इसे स्पर्श करना असंभव है (1)। जहाँ तक दूसरे का प्रश्न है, इसका कोई कारण ही नहीं है। अत; केंद्र O पर वृत्त ABCD में वर्ग AE को स्थित होने दें। log 44 = 1.6433252 + 1.5028501 = 3.1461753... (पाठ में वृत्त और वर्ग के आयामों के लिए जटिल लघुगणकीय गणनाएँ शामिल हैं)।

यह है कि जो वर्ग अड़तालीस के परिमाप में होता है, उसकी भुजा दस से लंबी होती है, इसलिए वर्ग के दो से अधिक कोणों के लिए इसे स्पर्श करना संभव नहीं है, और दूसरों के लिए [स्पर्श करने का] कोई कारण नहीं है, उदाहरण के लिए, यदि वर्ग AE वृत्त ABCD में स्थित है और केंद्र O पर है, तो log 44 = 1.6433252 + 1.5028501 = 3.1461753। यह व्यास का लॉग है। 3.1461753 - 0.3010300 = 2.8451453, यह इसके आधे का लॉग है। फिर त्रिभुज AHB में, समकोण AH: साइन B और यह MH CH है, इसका लॉग साइन 1.8294850 :: 1 : B : C :: 0.8225228 - 1.8294850 = 1.8- 0.9957848 है, यह AB का लॉग है। और यदि आप 'अरूसी' विधि से चाहें, तो इसके लॉग को दोगुना करें.. इसका आधा 0.9957848 है जैसा कि है।

(पिछले पृष्ठ से पाद टिप्पणी): ...क्योंकि परिधि का लघुगणक 1.6812412 + 1.5028501 = 3.1840913 है। यह व्यास का लॉग है। 0.3010300 घटाने पर = 2.8830613, यह त्रिज्या का लॉग है। लॉग साइन MH 1.8294850 = 1.0335763। यह परिधि के भीतर स्थित वर्ग की भुजा का लॉग है, जो 10.803 है। इसलिए, वर्ग में क्षेत्रफल 107 से अधिक होगा। जहाँ तक वृत्त का प्रश्न है, उसका माप एक सौ तिरासी (183) हाथ से अधिक है। (T)

पृष्ठ 293 ऑफ़ 711

من عشرة فلا يمكن ان يماسها اكثر من زاويتين من المربع (۱) اما فی الثانی فلا وجه له اصلا فليقع مربع ا ء فی دائرة ا ب ج ء علی مرکز ہ ولو ۴۴ = ۱،۶۴۳۳۲۵۲ + ۱،۵۰۲۸۵۰۱ = ۱،۳۶۳۰۲۸ هذا لو القطر - ۰،۳۰۱۰۳۰۰ = ۰،۸۲۲۵۲۲۸ هذا لو نصفه ا هـ ثم في مثلث ا هـ ب القائم الزاوية ا هـ : جيب ب و هي مه حه لو جيبها ۱،۸۲۹۴۸۵۰ :: ا ب : ع :: ۰،۸۲۲۵۲۲۸ - ۱،۸۲۹۴۸۵۰ = ۰،۹۹۵۷۸۴۸ هذا لو ا ب و ان شئت بالعروسی فضعف لواه

یہ ہے کہ جو مربع اڑتالیس کے محیط میں ہوتا ہے، اس کا ضلع دس سے لمبا ہوتا ہے تو یہ ممکن نہیں کہ مربع کے دو سے زائد زاویے اس کو مس کریں، اور دوسرے میں اس کی کوئی وجہ موجود نہیں، مثلاً اء کا مربع اب ج ء کے دائرہ میں واقع ہو اور ہ کے مرکز پر ہو اور لو ۴۴ = ۱،۶۴۳۳۲۵۲ + ۱،۵۰۲۸۵۰۱ = ۱،۳۶۳۰۲۸ یہ لو قطر ہے۔ ۰،۳۰۱۰۳۰۰ - ۱،۳۶۳۰۲۸ = ۰،۸۲۲۵۲۲۸ یہ لو اس کا آدھا ہے اہ پھر مثلث میں ا ھ ب زاویہ قائمہ اھ : جیب ب اور یہ مہ حہ لو اس کا جیب یہ ہے ۱،۸۲۹۴۸۵۰ : : ۱ : ب : ع : ۰،۸۲۲۵۲۲۸ - ۱،۸۲۹۴۸۵۰ = ۰،۹۹۵۷۸۴۸ یہ لو ا ب ہے اور اگر تم چاہو شکل عروسی سے تو اھ کا دوگنا لو ا ۶۹۰۵۲۵۶۵، ۱۱ اس کا عدد ۲۹،۰۳۹۲۵۶۸ کا دوگنا ۱،۸۹۱۳۶۷ع ۱۹۸ اس کا لو گارتھ ۵۶ ۷ ۹۹۱۵ء ۱۱ اس کا نصف ۸ ۷ ۴ ۹۹۵ء ۰ ہے جیسا کہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) عه لان لو المحيط ۱،۶۸۱۲۴۱۲ + ۱،۵۰۲۸۵۰۱ = ۱،۸۲۰۹۱۳ هذا لو القطر ۰،۳۰۱۰۳۰۰- = ۰،۸۸۳۰۶۱۳ هذا لو نصف القطر لو جيب مه ۱،۸۲۹۴۸۵۰ = ۱،۰۳۳۵۷۶۳ هذا لو ضلع المربع الواقع فيه فهی ۱۰،۸۰۳ فالمساحة تكون اكثر من ۱ هذا في المربع اما الدائرة فمساحتها اكثر من مائة وثلث و ثمانين ذراعا اه منہ (م

کیونکہ محیط کا لو گارتھ ہے ۱،۶۸۱۲۴۱۲ + ۱،۵۰۲۸۵۰۱ = ۱،۸۲۰۹۱۳ یہ قطر کا لو گارتھ ہے ۰،۳۰۱۰۳۰۰ - = ۰،۸۸۳۰۶۱۳ یہ نصف قطر کا لو گارتھ ہے۔ لو جیب مہ ۱،۸۲۹۴۸۵۰ = ۱،۰۳۳۵۷۶۳ یہ محیط میں واقع ہونے والے مربع کے ضلع کا لو گارتھ ہے ۱۰،۸۰۳ لہٰذا مساحت ۱۰۷ سے زیادہ ہوگی یہ مربع میں ہے، رہا دائرہ تو اس کی پیمائش ایک سو تراسی ۱۸۳ ہاتھ سے زیادہ ہے۔ (ت)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

(Right Column) ...passed, and that is the logarithm of 9.9035. This is the measure of the side, and it has not been able to reach ten, as you see. Then the measurement 98.79 is approximately two cubits less than a hundred because you know that this is double the square. And double the square of the radius is the measurement of the square because its measurement is now the square of side AB, and it is double the square of 'AH' according to the "Shakl-e-Aroosi" (Pythagorean context). So, where can a ten by ten square fit in it?! (T) Note: Allama Shurunbulali has declared all statements invalid except the fourth one. He says the statement of Zahiriyya is correct, and no one else should be chosen. He also said there is no reason to make a quantity exceeding thirty-six mandatory when the estimate is ten by ten; this is the view of all mathematicians. I say this points towards the answer to a doubt. The doubt is that there are two statements in this, and each of them has been corrected. Rather, regarding the second statement, it has been said that the fatwa is based on it. So how can returning to it be prohibited? Instead, one should rely on it, because the reliable and issued fatwa is the estimate of one hundred, and the goal of all statements is also this. This thing is based on calculation; there is no room for long, broad legal discussions here, especially against the fatwa. The matter of calculation is not ambiguous. So when we know for certain that this is correct, it becomes obligatory...

(Left Column) Its double is 49.0394568, its number is 29.05256. 98.789136, if the logarithm is there 9915756, half of it 0.995788 like what passed, and it is the logarithm of 9.9035. This is the value of the side, and it did not reach ten as you see. Then the area 98.79 is less than a hundred by about two cubits because you know it is double the square of 'AH'. And double the square of the radius is the area of the square because its area is the square of side AB, and it is double the square of 'AH' according to the "Aroosi" shape. So how can a square of ten by ten fit in it? Note: The ruling of Allama Shurunbulali declaring all opinions invalid except the fourth, where he said: "The correct view is the statement of Zahiriyya, and one should not deviate from it to any other." He also said: "There is no reason to mandate an amount exceeding thirty-six on the estimation of ten by ten according to all mathematicians." I say: This points to the answer to what might be imagined that there are two corrected opinions, rather the second one is adorned with the status of a fatwa. So how can one be prevented from turning to it? Rather, it is only proper to rely on it. This is because the relied-upon fatwa is the estimation of one hundred, and all

opinions aim for it. Its basis is on calculation, not on obscure legal deep-thoughts in which we have no say, especially against the fatwa. The matter of calculation is not ambiguous. So when we know for certain that this is correct, it becomes obligatory...

1 Ghunyat Dhawi al-Ahkam, Hashiya 'ala al-Ghurar, Fard al-Ghusl 1/23 Page 294 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द दूसरी

(दायां कॉलम) ...निकाला गया और वह 9.9035 का लघुगणक (लॉगिरदम) है, यह भुजा (ضلع) का माप है और जैसा कि आप देख रहे हैं, यह दस तक नहीं पहुँच पाया है। फिर माप 98.79 सौ से लगभग दो हाथ (धिरह) कम है क्योंकि आप जानते हैं कि यह वर्ग का दोगुना है और त्रिज्या (अर्ध-व्यास) के वर्ग का दोगुना ही वर्ग का माप है क्योंकि इसकी माप अब भुजा का वर्ग है और वह 'अह' (AH) के वर्ग का दोगुना है 'शक्ल-ए-अ़रूसी' के अनुसार, तो इसमें दस गुणा दस का वर्ग कहाँ समा सकता है! (त) चेतावनी: अल्लामा शुरुनबुलाली ने चौथे कथन के अलावा बाकी सभी कथनों को अमान्य घोषित किया है, वे कहते हैं कि ज़हीरिया का कथन सही है और इसके अलावा किसी और को नहीं चुना जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी मात्रा को अनिवार्य बनाने का कोई कारण नहीं है जो छत्तीस से अधिक हो, जबकि दस गुणा दस का अनुमान हो; सभी गणितज्ञों के अनुसार यही है। मैं कहता हूँ कि यह एक वहम (संदेह) के जवाब की ओर इशारा है, वहम यह है कि इसमें दो कथन हैं और उनमें से प्रत्येक को सही ठहराया गया है, बल्कि दूसरे कथन के बारे में कहा गया है कि फतवा इसी पर है, तो इसकी ओर लौटने से कैसे रोका जा सकता है? बल्कि इस पर तो भरोसा करना चाहिए, क्योंकि विश्वसनीय और फतवा वाला पैमाना सौ का अनुमान है और सभी कथनों का उद्देश्य भी यही है, यह चीज़ गणना पर आधारित है, इसमें लंबी-चौड़ी फिक़ही (कानूनी) चर्चाओं की कोई गुंजाइश नहीं है, विशेष रूप से...

(बायां कॉलम) इसका दोगुना 49.0394568 है, संख्या 29.05256 है। 98.789136, यदि वहां लघुगणक 9915756 है, तो इसका आधा 0.995788 है जैसा कि पहले बताया गया है, और यह 9.9035 का लघुगणक है। यह भुजा का मान है और जैसा कि आप देखते हैं यह दस तक नहीं पहुँचा। फिर क्षेत्रफल 98.79 सौ से लगभग दो हाथ कम है क्योंकि आप जानते हैं कि यह 'अह' के वर्ग का दोगुना है। और त्रिज्या के वर्ग का दोगुना वर्ग का क्षेत्रफल होता है क्योंकि इसका क्षेत्रफल भुजा AB का वर्ग है, और यह 'अ़रूसी' आकार के अनुसार 'अह' के वर्ग का दोगुना है। तो इसमें दस गुणा दस का वर्ग कैसे आ सकता है? नोट: अल्लामा शुरुनबुलाली का चौथे के अलावा अन्य सभी मतों को अमान्य करने का निर्णय, जहाँ उन्होंने कहा: "सही बात ज़हीरिया का कथन है, और इससे हटकर किसी अन्य की ओर नहीं जाना चाहिए।" उन्होंने यह भी कहा: "सभी गणितज्ञों के अनुसार दस गुणा दस के अनुमान पर छत्तीस से अधिक मात्रा निर्धारित करने का कोई कारण नहीं है।" मैं कहता हूँ: यह उस वहम के उत्तर की ओर इशारा करता है कि इसमें दो सही कथन हैं, बल्कि दूसरे कथन को फतवे

के दर्जे से सजाया गया है। तो उसकी ओर लौटने से कैसे रोका जा सकता है? बल्कि उसी पर भरोसा करना उचित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वसनीय फतवा सौ का अनुमान है, और सभी मतों का लक्ष्य भी यही है। इसका आधार गणना पर है, न कि उन अस्पष्ट कानूनी गहन विचारों पर जिनमें हमारी कोई राय नहीं है, विशेष रूप से फतवे के विरुद्ध। गणना का मामला स्पष्ट है। अतः जब हमें निश्चित रूप से ज्ञात हो जाए कि यही सही है, तो यह अनिवार्य हो जाता है...

1 ग़ुनियत ज़वी अल-अहकाम, हाशिया अ़ला अल-ग़ुरर, फ़र्ज़ अल-ग़ुस्ल 1/23 पृष्ठ 711 में से 294

گزارا اور وہ لوگارثم ہے ۹.۹۰۳۵ کا، یہ ضلع کی مقدار ہے اور یہ دس تک نہیں پہنچ سکی ہے جیسا آپ دیکھتے ہیں پھر پیمائش ۹۸.۷۹ سو سے تقریباً دو ذراع کم ہے کیونکہ آپ کو معلوم ہے کہ یہ مربع کا دو گنا ہے اھ اور نصف قطر کے مربع کا دو گنا ہی مربع کی پیمائش ہے کیونکہ اس کی پیمائش اب ضلع کا مربع ہے اور وہ اھ کے مربع کا دو گنا ہے شکل عروسی کے اعتبار سے ، تو اس میں دہ در دہ کا مربع کہاں سما سکتا ہے ! (ت) تنبیہ : علامہ شرنبلالی نے سوائے چوتھے قول کے تمام اقوال کو باطل قرار دیا ہے ، وہ فرماتے ہیں صحیح ظہیریہ کا قول ہے اور اس کے علاوہ کسی اور کو اختیار نہ کیا جائے نیز فرمایا ایسی مقدار کا لازم قرار دینا جو چھتیں ۳۶ سے زائد ہو اس کی کوئی وجہ نہیں جبکہ دہ در دہ کا اندازہ ہو ، یہی تمام حساب دانوں کے نزدیک ہے اھ میں کہتا ہوں یہ اشارہ ہے وہم کے جواب کی طرف، وہم یہ ہے کہ اس میں دو قول ہیں اور ان میں سے ہر ایک کی تصحیح کی گئی ہے بلکہ دوسرے قول کی بابت کہا گیا ہے کہ فتوی اسی پر ہے ، تو اس کی طرف رجوع کرنے کو کیونکر منع کیا جاسکتا ہے ؟ بلکہ اس پر تو اعتماد کرنا چاہئے، کیونکہ معتمد اور مفتی بہ سو کا اندازہ ہے اور تمام اقوال کا مقصود بھی یہی ہے ، یہ چیز تو حساب پر مبنی ہے ، اس میں لمبی چوڑی فقیہانہ ابحاث کا کوئی موقعہ نہیں ، خاص

ضعفه ۴۹.۰۳۹۴۵۶۸ عددها ۲۹.۰۵۲۵۶ ۹۸.۷۸۹۱۳۶ لو غار ثمه ۹۹۱۵۷۵۶ نصفه ۰.۹۹۵۷۸۸ مثل مآمر وهو لوغارثم ۹.۹۰۳۵ هذا قدر الضلع و لم تبلغ عشرا كما ترى ثم المساحة ۷۹.۹۸ اقل من مائة بنحو ذراعين لما علمت انها ضعف مربع اه وضعف مربع نصف القطر هي مساحة المربع لان مساحته مربع ضلع ا ب وهو ضعف مربع اه بالعروسی فانی یقع فیها مربع عشر فی عشر۔ تنبیه: حكم العلامة الشرنبلالی ببطلان سائر الاقوال سوی الرابع حیث قال والصواب كلام الظهیریة ولا یعدل عنه

الى غيره وقال فالزام قدر يزيد على الستة والثلاثين لاوجه له على التقدير بعشر فى عشر عند جميع الحساب اه اقول: وقد اشار الى الجواب عما يتوهم ان فيها قولين مصححين بل الثانى مذيل بطراز الفتوى فكيف يمنع المصير اليه بل انما ينبغى التعويل عليه وذلک ان المفتى به المعتمد هو التقدير بمائة والاقوال جميعا انما ترومه ومبنى ذلک على الحساب دون التفقهات الغامضة التى لاقول لنا فيها لاسيما على خلاف الفتوى و امر الحساب لا يلتبس فأذا علمنا قطعاً ان الصواب هذا وجب

1 غنية ذوى الاحكام حاشية على الغرر فرض الغسل ١/ ٢٣ Page 294 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume II

[Left Column (Translated from Arabic)] Leaving aside everything else, the leader of mathematicians, Allama Abdul Ali al-Birjandi (may Allah Almighty have mercy on him), in his commentary on al-Niqayah, attempted to justify my statement by attributing it to al-Kubra. What I saw in Sharh al-Quhistani is that in al-Kubra, the first opinion was declared most cautious, and Allah Almighty knows best. It seems he did not encounter the other opinion. He stated that the investigation of the discourse here is based on three premises: (1) The square of the hypotenuse in a right-angled triangle is equal to the sum of the squares of its two sides. (2) The circumference of a circle is greater than three times its diameter by one-seventh of its diameter. (3) If the area of a circle is known, and it is divided into eleven equal parts, and three parts are added to the total area, and the square root of the sum is taken, it will be the diameter of the circle. All of this is proven in the sciences of geometry and arithmetic. So we say: if each side of a square pool is ten cubits, the sum of the squares of the two sides will be two hundred, and their square root will be approximately fourteen and a tenth and half of a tenth (Note: ah). This is the length of the line connecting two opposite corners, which is the longest possible extent in the mentioned square, based on the first premise. So consider it.

[Right Column (Urdu Text)] There is no room to speak against the fatwa, and the matter of calculation is quite clear. Now that we know what is correct, abandoning other opinions has become mandatory. However, the leader of mathematicians, Allama Abdul Ali al-Birjandi, in his commentary on al-Niqayah, tried to explain the two opinions of 48 and 47, attributing them to al-Kubra. I saw in Sharh al-Quhistani that in al-Kubra, the first opinion was declared more cautious, and Allah Almighty knows best. Probably he was not aware of the opinion of 46. So he said: here the investigation of the discourse is based on three premises: (1) The square of the hypotenuse in a triangle is equal to the sum of the squares of its two sides. (2) The circumference of a circle is greater than three times its diameter by one-seventh of its diameter. (3) If the area of a circle is known and it is divided equally by eleven, and three parts are added to the total measurement, and the square root of the sum is taken, the diameter of the circle will be found. All this is proven in geometry and arithmetic. Now we say that when both sides of a square pool are ten cubits (dhira), the sum of the squares of both sides will be two hundred, and their square root will be approximately fourteen and a tenth and half of a tenth. And this same measurement...

[Footnotes] ah: Rather, one part out of twenty-five parts and a small amount, for it is approximately 14.12. From him. (M) Rather, one part out of twenty-five and a small amount because it is approximately 14.12. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[बायाँ कॉलम (अरबी से अनुवादित)] अन्य सभी को छोड़ते हुए, गणितज्ञों के नेता अल्लामा अब्दुल अली अल-बिरजंदी (अल्लाह उन पर दया करें) ने अपनी अल-निकाया की व्याख्या में मेरे कथन को अल-कुबरा की ओर निर्दिष्ट करके उसे सही ठहराने का प्रयास किया। मैंने शरह अल-कुहिस्तानी में जो देखा वह यह है कि अल-कुबरा में पहले कथन को सबसे सुरक्षित (अहवत) घोषित किया गया था, और अल्लाह बेहतर जानता है। ऐसा लगता है कि उन्हें [दूसरे] कथन का पता नहीं चला। अतः उन्होंने कहा: यहाँ बात की पुष्टि तीन प्रस्तावों पर आधारित है: (1) एक समकोण त्रिभुज में कर्ण का वर्ग उसके दो भुजाओं के वर्गों के योग के बराबर होता है। (2) वृत्त की परिधि उसके व्यास के तीन गुना से उसके व्यास के सातवें हिस्से के बराबर अधिक होती है। (3) यदि किसी वृत्त का क्षेत्रफल ज्ञात हो और उसे ग्यारह बराबर भागों में विभाजित किया जाए और उनमें से तीन भाग कुल क्षेत्रफल में जोड़ दिए जाएं और योग का वर्गमूल लिया जाए, तो वह वृत्त का व्यास होगा। यह सब रेखागणित और अंकगणित के विज्ञान में प्रमाणित है। तो हम कहते हैं: यदि एक वर्गाकार तालाब की प्रत्येक भुजा दस हाथ (ज़िरा) की है, तो दो भुजाओं के वर्गों का योग दो सौ होगा और उनका वर्गमूल लगभग चौदह और दसवाँ हिस्सा और दसवें का आधा (नोट: अह) होगा। यह विपरीत कोनों को जोड़ने वाली रेखा की लंबाई है, जो पहले प्रस्ताव के आधार पर उक्त वर्ग में सबसे लंबी संभव सीमा है। अतः इस पर विचार करें।

[दायाँ कॉलम] फ़तवा के खिलाफ बोलने की कोई गुंजाइश नहीं है, और गणना का मामला बिल्कुल स्पष्ट है। अब जबकि हमें पता चल गया है कि क्या सही है, तो अन्य मतों को त्यागना अनिवार्य हो गया है। हालाँकि, गणितज्ञों के मार्गदर्शक अल्लामा अब्दुल अली अल-बिरजंदी ने शरह अल-निकाया में 48 और 47 के दो मतों की व्याख्या करने की कोशिश की और उन्हें अल-कुबरा से जोड़ा। मैंने शरह अल-कुहिस्तानी में देखा कि अल-कुबरा में पहले मत को अधिक सुरक्षित माना गया था, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। संभवतः उनका ध्यान 46 के मत की ओर नहीं गया। तो उन्होंने कहा: यहाँ चर्चा की जाँच तीन प्रस्तावों पर आधारित है: (1) त्रिभुज में कर्ण का वर्ग उसकी दो भुजाओं के वर्गों के योग के बराबर होता है। (2) वृत्त की परिधि उसके व्यास के तीन गुने से उसके व्यास के सातवें हिस्से के बराबर अधिक होती है। (3) यदि किसी वृत्त का क्षेत्रफल ज्ञात हो और उसे ग्यारह से समान रूप से विभाजित किया जाए, और कुल माप में तीन भाग जोड़े जाएँ, और योग का वर्गमूल निकाला जाए, तो वृत्त का व्यास प्राप्त होगा। यह सब रेखागणित और अंकगणित में सिद्ध है। अब हम

कहते हैं कि जब एक वर्गाकार तालाब की दोनों भुजाएँ दस हाथ (ज़िरा) की होंगी, तो दोनों भुजाओं के वर्गों का योग दो सौ होगा और उनका वर्गमूल लगभग चौदह और दसवाँ और दसवें का आधा होगा। और यही माप...

[पाद-टिप्पणियाँ] अह: बल्कि पच्चीस भागों में से एक भाग और थोड़ी मात्रा, क्योंकि यह लगभग 14.12 है। उनकी ओर से। (म) बल्कि पच्चीस भागों में से एक भाग और थोड़ी मात्रा क्योंकि वह लगभग 14.12 है। (त)

पृष्ठ 295 / 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم (ترجمہ)] باقی سب کو چھوڑ کر، یہ کہ قدوۃ الریاضیین علامہ عبدالعلی البرجندی رحمہ اللہ تعالٰی نے شرح النقایہ میں میرے قول کی توجیہ کی کوشش کی اور اسے الکبرٰی کی طرف منسوب کیا، اور جو کچھ میں نے شرح القہستانی میں دیکھا وہ یہ ہے کہ الکبرٰی میں پہلے قول کو احوط قرار دیا گیا ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ اور ایسا لگتا ہے کہ وہ اس قول سے واقف نہ ہوئے تو فرمایا کہ یہاں کلام کی تحقیق تین مقدمات پر مبنی ہے: (۱) قائمہ الزاویہ مثلث میں وتر کا مربع اس کے دو ضلعوں کے مربعوں کے مجموعے کے برابر ہوتا ہے۔ (۲) دائرہ کا محیط اس کے قطر کے تین گنا سے قطر کے ساتویں حصے کے برابر زیادہ ہوتا ہے۔ (۳) اگر دائرہ کا رقبہ معلوم ہو اور اسے گیارہ برابر حصوں پر تقسیم کیا جائے اور اس میں تین حصوں کا اضافہ کر کے مجموعہ کا جزر لیا جائے تو دائرہ کا قطر نکل آئے گا۔ یہ سب علمِ ہندسہ اور حساب میں مبرہن ہے۔ اب ہم کہتے ہیں کہ جب ایک مربع حوض کا ہر ضلع دس ذراع کا ہو گا تو دونوں ضلعوں کے مربعوں کا مجموعہ دو سو ہو گا اور ان کا جزر تقریباً چودہ اور دسواں اور دسویں کا آدھا (عہ) ہو گا، اور یہی مقدار اس مربع میں دو آمنے سامنے کے زاویوں کو ملانے والی لکیر کی ہے جو کہ اس میں سب سے لمبا فاصلہ ہے، یہ پہلے مقدمہ کی بنیاد پر ہے، پس غور کرو۔

[دایاں کالم] طور پر فتوٰی کے خلاف کہنے کی گنجائش نہیں، اور حساب کا معاملہ تو بالکل واضح ہوتا ہے، اب جبکہ ہمیں معلوم ہو گیا کہ صحیح یہی ہے تو دوسرے اقوال کا ترک لازم ہو گیا، البتہ قدوۃ الریاضیین علامہ عبدالعلی برجندی نے شرح نقایہ میں ۴۸ اور ۴۷ کے دو قول کی تشریح کی کوشش کی ہے، اس کو کبرٰی کی طرف منسوب کیا ہے، اور میں نے شرح قہستانی میں دیکھا کہ کبرٰی میں پہلے قول کو احوط قرار دیا ہے واللہ تعالٰی اعلم اور غالباً ۴۶ کے قول کی طرف وہ

متوجہ نہ ہوئے تو فرمایا یہاں تحقیق کلام تین مقدمات پر مبنی ہے، (۱) قائمۃ کے وتر کا مربع مثلث میں اس کے دو ضلعوں کے دو مربعوں کے مجموعہ کے برابر ہوتا ہے۔ (۲) اور دائرہ کا محیط اس کے قطر کی تین مثل سے اس کے قطر کے سبع جتنا زیادہ ہوتا ہے۔ (۳) اگر ایک دائرہ کی مساحت معلوم ہو اور گیارہ پر برابر تقسیم کی جائے اور اس میں سے تین اقسام کا اضافہ کیا جائے مجموعی پیمائش پر اور مجموعہ کا جزر لیا جائے تو دائرہ کا قطر نکل آئے گا۔ یہ سب علم ہندسہ اور حساب میں مبرہن ہے، اب ہم کہتے ہیں کہ جب ایک مربع حوض کے دونوں ضلع دس ذراع ہوں گے تو دونوں ضلعوں کے دونوں مربعوں کا مجموعہ دو سو ہوگا اور دونوں کا جذر چودہ اور دسواں اور دسویں کا آدھا ہوگا تقریباً، اور یہی مقدار

[حواشی] عہ : بلکہ پچیس اجزاء میں سے ایک جز اور تھوڑی مقدار کیونکہ وہ ۱۴.۱۲ ہے تقریباً۔ (م) بلا کہ پچیس اجزاء میں سے ایک جز اور تھوڑی مقدار کیونکہ وہ ۱۴.۱۲ ہے تقریباً۔ (ت)

Fatawa Razawiya Volume II

It is stated in Al-Fatawa al-Kubra that the diameter of a circular pond must be equal to the longest possible extent within a square pond. This ensures that a square, fulfilling the specified conditions, can fit inside the circular pond. Furthermore, the distance between any two opposite points on the circumference of the circle should not be shorter than the longest extent of the square at any point. Thus, the circumference of the circular pond will be three and one-seventh times that extent, which amounts to forty-four cubits, four-tenths, and two-thirds of a tenth, based on the second premise. Since the additional fraction was less than half, it was omitted, as is standard practice among mathematicians. The author of Al-Khulasa also adopted the same consideration as Al-Fatawa al-Kubra, but lacked precision in calculation; they rounded the additional fraction to one for the sake of caution. Consequently, they estimated the longest extent as fifteen cubits. Therefore, if we take this as the diameter, the circumference would be forty-seven and one-seventh cubits. They considered it as forty-eight to complete the fraction... (and the Judge).

Column 2 (Urdu explanation): This line connects two opposite angles and is the longest possible extent within the aforementioned square. The proof for this is the first premise. Thus, in Fatawa al-Kubra, it was considered that the diameter of a circular pond should be the longest of the assumed extents of a square pond, so that placing the square in the circular pond under the mentioned conditions remains possible. The distance between two opposite parts of the circular pond's circumference should nowhere be less than the longest extent of the square. Therefore, the circumference of the circular pond will be three times plus one-seventh of that extent, meaning forty-four cubits, four-tenths, and two-thirds of a tenth. This is proven by the second premise. Since the additional fraction is less than half, it was dropped, following the method of mathematicians. The author of Khulasa followed the same reasoning as Fatawa al-Kubra, but without fine-grained calculation, choosing to round the fraction to one as a precaution. Thus, they considered the longest extent to be fifteen cubits.

Footnotes: Note 1: Rather, according to what he mentioned, the fraction is 14 4/7 out of 45. This is four-tenths and more than two-thirds of a tenth by approximately 6/125. According to our statement, it is 46 3/7, which is four-tenths and less than two-thirds of a tenth by 51/250, i.e., more than one-fifth of a tenth. End. (M) Note 2: I say: The seventh part (1) is not complete, and there is no true caution in this 'caution'; therefore, it was mandatory to abandon it. End. (M)

Rather, according to their mention, the fraction is 14 4/7, which is more than four-tenths and two-thirds of a tenth by an amount of approximately 6/125. According to our statement, it is 46 3/7, which is less than four-tenths and two-thirds of a tenth by 51/250, meaning more than one-fifth of a tenth. (T) I say that the seventh part is not complete, and there is no caution in this caution; therefore, it was necessary to abandon it. (T)

फ़तावा रज़विया जिल्द द्वितीय

अल-फ़तावा अल-कुबरा में उल्लेख है कि एक वृत्ताकार हौज़ का व्यास वर्गाकार हौज़ के भीतर कल्पित विस्तारों में सबसे लंबे विस्तार के बराबर होना चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि निर्दिष्ट शर्तों को पूरा करने वाला एक वर्ग वृत्ताकार हौज़ के अंदर फिट हो सके। इसके अलावा, वृत्त की परिधि पर किसी भी दो विपरीत बिंदुओं के बीच की दूरी किसी भी स्थान पर वर्ग के सबसे लंबे विस्तार से कम नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार, वृत्ताकार हौज़ की परिधि उस विस्तार का तीन और सातवाँ हिस्सा होगी, जो दूसरे प्रस्ताव के आधार पर चवालीस हाथ, चार दशांश और दसवें हिस्से का दो-तिहाई है। चूंकि अतिरिक्त भिन्न आधे से कम था, इसलिए इसे गणितज्ञों की मानक पद्धति के अनुसार छोड़ दिया गया। अल-खुलासा के लेखक ने भी वही बात मानी जो फतावा अल-कुबरा में मानी गई थी, लेकिन गणना में सटीकता की कमी के कारण; उन्होंने सावधानी के तौर पर अतिरिक्त भिन्न को एक मान लिया। फलस्वरूप, उन्होंने सबसे लंबे विस्तार को पंद्रह हाथ माना। इसलिए, यदि हम इसे व्यास के रूप में लें, तो परिधि सैंतालीस और सातवाँ हिस्सा (47 1/7) हाथ होगी। उन्होंने भिन्न को पूरा करने के लिए इसे अड़तालीस माना... (और काज़ी)।

कॉलम 2 (उर्दू व्याख्या): यह रेखा दो विपरीत कोणों को जोड़ती है और उक्त वर्ग के भीतर संभावित विस्तारों में सबसे लंबी है। इसका प्रमाण पहला प्रस्ताव है। अत; फ़तावा कुबरा में यह माना गया कि एक वृत्ताकार हौज़ का व्यास एक वर्गाकार हौज़ के कल्पित विस्तारों में सबसे लंबा होना चाहिए, ताकि वर्णित शर्त के साथ वृत्ताकार हौज़ में वर्ग का होना संभव बना रहे। वृत्ताकार हौज़ की परिधि के दो विपरीत भागों के बीच की दूरी कहीं भी वर्ग के सबसे लंबे विस्तार से कम नहीं होनी चाहिए। इसलिए, वृत्ताकार हौज़ की परिधि उस विस्तार का तीन गुना प्लस सातवाँ हिस्सा होगी, जिसका अर्थ है चवालीस हाथ, चार दशांश और दसवें हिस्से का दो-तिहाई। यह दूसरे प्रस्ताव से सिद्ध है। चूंकि अतिरिक्त भिन्न आधे से कम है, इसलिए गणितज्ञों की पद्धति के अनुसार इसे छोड़ दिया गया। खुलासा के लेखक ने फतावा कुबरा के समान तर्क का पालन किया, लेकिन सूक्ष्म गणना के बिना, सावधानी के रूप में भिन्न को एक मान लिया। इस प्रकार, उन्होंने सबसे लंबे विस्तार को पंद्रह हाथ माना।

पादलेख: नोट 1: बल्कि, उनके उल्लेख के अनुसार, भिन्न 45 में से 14 4/7 है। यह चार दशांश और दसवें के दो-तिहाई से लगभग 6/125 की मात्रा में अधिक है। हमारे कथन के अनुसार, यह 46 3/7 है, जो चार दशांश और दसवें के दो-तिहाई से 51/250 की मात्रा में कम है, अर्थात दसवें के पांचवें

हिस्से से अधिक। समाप्त। (म) नोट 2: मैं कहता हूँ: सातवाँ हिस्सा (1) पूरा नहीं होता है, और इस 'सावधानी' में कोई वास्तविक सावधानी नहीं है; इसलिए इसे छोड़ना अनिवार्य था। समाप्त। (म)

बल्कि, उनके उल्लेख के अनुसार, भिन्न 14 4/7 है, जो चार दशांश और एक दशांश के दो-तिहाई हिस्से से लगभग 6/125 की मात्रा में अधिक है। हमारे कथन के अनुसार, यह 46 3/7 है, जो चार दशांश और 51/250 की मात्रा में दसवें हिस्से के दो-तिहाई से कम यानी दसवें हिस्से के पांचवें हिस्से से ज्यादा है। (त) मैं कहता हूँ कि सातवाँ हिस्सा पूरा नहीं होता, और इस सावधानी में कोई सावधानी नहीं है; इसलिए इसे छोड़ देना आवश्यक था। (त)

पृष्ठ 296 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

فی الفتاوی الکبرٰی ان یکون قطر الحوض المدور مساویا لا طول الامتدادات المفروضة فی الحوض المربع لیکن وقوع مربع بالشرط المذکور داخل الحوض المدور ولا یکون البعد بین جزئین متقابلین من محیط المدور فی شیئ من المواضع اقصر من اطول امتدادات المربع فیکون محیط الحوض المدور ثلثة امثال ذلك الامتداد وسبعه اعنی اربعا واربعین ذراعاً واربعة اعشار وثلثی عہ۱ عشر للمقدمة الثانیة ولما کان الکسر الزائد اقل من النصف اسقطوه کما هو عادة اهل الحساب وصاحب الخلاصة اعتبر ایضا ما اعتبر في الکبرٰی لکنه لم یتدنق فی الحساب فاخذ الکسر الزائد واحدا للاحتیاط فاخذ الامتداد الاطول خمسة عشر فاذا اعتبرناه قطرا یکون المحیط سبعا واربعین ذراعاً وسبع ذراع فاعتبر ثمانیا واربعین تتمیما عہ۲ للکسر والقاضی

اس خط کی ہے جو دو متقابل زاویوں کے درمیان متصل ہے، اور یہ مربع مذکور میں ممکنہ امتدادات میں سب سے لمبا ہے اس کی دلیل پہلا مقدمہ ہے تو فتاوٰی کبرٰی میں اس امر کا اعتبار کیا گیا ہے کہ گول حوض کا قطر مربع حوض کے مفروضہ امتدادات میں سب سے طویل ہوتا کہ گول حوض میں شرط مذکور کے ساتھ مربع کا ہونا ممکن ہو، اور گول حوض کے محیط سے دو متقابل اجزا کا درمیانی بُعد کسی جگہ بھی مربع کے امتدادات میں سے طویل تر سے چھوٹا نہ ہو تو گول حوض کا محیط اس امتداد سے تین گنا اور ساتواں ہوگا یعنی چوالیس ہاتھ اور چار اعشار اور دسویں کے دو ثلث ہوں گے، یہ دوسرے مقدمہ سے ثابت ہے اور چونکہ کسر زائد نصف سے کم ہے تو اس کو ساقط کر دیا گیا، جیسا کہ حساب دانوں کا طریقہ ہے، اور خلاصہ کے مصنف نے وہی اعتبار کیا ہے جو فتاوٰی کبرٰی میں کیا ہے، لیکن انہوں نے حساب میں باریک بینی نہ کی، تو انہوں نے کسر زائد کو ایک اعتبار کیا احتیاطاً، تو انہوں نے طویل ترین امتداد کا اعتبار پندرہ ذراع

عہ۱: بل الکسر علی ما ذکرہ ۱۴/۷ ۴۵ وہو اربعۃ اعشار واکثر من ثلثی عشر بقدر ۶/۱۲۵ تقریباً و علی ماذکر ناء وہو اربعۃ اعشار واقل بثلثی عشر بقدر ۵۱/۲۵۰ ای اکثر من خمس العشر اہ منہ (م)

عہ۲: اقول السبع (۱) لایتم ولا احتیاط فی الاحتیاط فکان یجب ترکہ اہ منہ۔ (م)

بلا کہ ان کے ذکر کے مطابق کسر ۴/۷ ۱۴ ہے اور یہ چار عشر اور ایک عُشر کے دو تہائی حصے سے تقریباً ۶/۱۲۵ کی مقدار میں زیادہ ہے اور ہمارے بیان کے مطابق ۳/۷ ۴۶ ہے اور یہ چار عشر اور ۵۱/۲۵۰ کی مقدار میں دسویں حصے کے دو ثلث سے کم یعنی دسویں حصے کے پانچویں حصے سے زیادہ۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ ساتواں حصہ مکمل نہیں ہوتا اور اس احتیاط میں احتیاط نہیں ہے لہذا اس کا ترک کرنا واجب تھا۔ (ت)

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Arabic Text Column:] Imam Zahir al-Din considered the area of a circular pond to be equal to the area of a square one. Thus, the water in it would be equal to the water in the square pond. It appears that this is taken from what was narrated from Muhammad bin Ibrahim al-Maydani as mentioned before. We say: If the area was one hundred, and we divided it into eleven parts, each part would be nine and one-eleventh. When we add three times that to the hundred, we get one hundred and twenty-seven and three parts of eleven. Its square root is eleven and a fifth and a half [Note 1] of a sixth approximately. This is the diameter of a circle whose area is one hundred according to the third premise. Three times that plus its seventh—meaning the circumference of the circular pond—would be thirty-five cubits and half a cubit minus half [Note 2] of a tenth. They counted this fraction as one and took its circumference as thirty-six. We have only mentioned these discussions so that the validity of the statements of these Imams may be revealed, and that none of them is a clear error as some have imagined. And how many there are who find fault with a correct statement! [Note: 1. Khulasa al-Fatawa, section on ponds, Nawalkishore, Lucknow, 1/3]

[Urdu Text Column:] And Qazi Zahir al-Din declared the measurement of a circular pond to be equal to the measurement of a square one, so its water will be equal to the water of a square pond. Probably this is derived from the narration of Muhammad bin Ibrahim Maydani, as mentioned earlier. We say the measurement was one hundred, we divided it by eleven, so each part was nine and one component of eleven. When its threefold was added to one hundred, then one hundred and twenty-seven and three parts of eleven (127 3/11) were obtained. Its square root was eleven, and approximately half of the fifth and sixth parts, and that is the diameter of the circle whose measurement is one hundred. The proof for this is the third premise. Its threefold along with the seventh, meaning the circumference of the circular pond, will be thirty-five cubits and half a cubit minus half of a tenth. They counted this fraction as a whole one and took its circumference as thirty-six. We have mentioned these discussions so that the reason for the correctness of the statements of these Imams may be known and that none of them is clearly wrong as some have presumed, and many people find fault with correct statements. (Intaha/End of note by the author)

[Footnotes:] Note 1: i.e., slightly less than it, for it is approximate. (End of note from the author). Meaning slightly less than that because it is approximately 2.81518 (End

of note by the translator). Note 2: Rather, the subtracted part is less than that; according to what he mentioned it is 7/105 [Arabic]/4/105 [Urdu] and according to what we mentioned it is 219/5000. (End of note from the author). Rather, the subtracted part is less than that; according to their mention it is 4/105 and according to our mention it is 219/5000. (End of note by the translator).

1. Khulasa al-Fatawa, Section on Ponds, Nawalkishore, Lucknow, 1/3 Page 297 of 711

फतावा रज़विया, खंड 2

[अरबी पाठ स्तंभ:] इमाम ज़हीर उद्दीन ने माना कि एक गोल तालाब का क्षेत्रफल एक वर्गाकार तालाब के क्षेत्रफल के बराबर होना चाहिए। इस प्रकार, उसमें पानी वर्गाकार तालाब के पानी के बराबर होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-मैदानी से जो पहले उल्लेख किया गया था, उससे लिया गया है। हम कहते हैं: यदि क्षेत्रफल सौ था, और हमने उसे ग्यारह भागों में विभाजित किया, तो प्रत्येक भाग नौ और एक-ग्यारहवां हिस्सा होगा। जब हम इसके तीन गुना को सौ में जोड़ते हैं, तो हमें एक सौ सत्ताइस और ग्यारह के तीन हिस्से प्राप्त होते हैं। इसका वर्गमूल लगभग ग्यारह और पांचवां और छठे का आधा [नोट 1] हिस्सा है। यह उस वृत्त का व्यास है जिसका क्षेत्रफल तीसरी प्रस्तावना के अनुसार सौ है। उसका तीन गुना और सातवां हिस्सा—यानी गोल तालाब की परिधि—पैंतीस हाथ और आधा हाथ में से दसवें का आधा कम [नोट 2] होगी। उन्होंने इस अंश को एक गिना और इसकी परिधि छत्तीस ली। हमने ये चर्चाएं केवल इसलिए की हैं ताकि इन इमामों के बयानों की वैधता स्पष्ट हो सके, और यह कि उनमें से कोई भी स्पष्ट रूप से गलत नहीं है जैसा कि कुछ लोगों ने कल्पना की थी। और कितने ही ऐसे लोग हैं जो एक सही कथन में दोष ढूंढते हैं! [नोट: 1. खुलासा अल-फतावा, तालाबों का खंड, नवलकिशोर, लखनऊ, 1/3]

[उर्दू पाठ स्तंभ:] और काज़ी ज़हीर उद्दीन ने गोल तालाब की पैमाइश को वर्गाकार तालाब की पैमाइश के बराबर करार दिया है, तो उसका पानी वर्गाकार तालाब के पानी के बराबर होगा। संभवतः यह मुहम्मद बिन इब्राहिम मैदानी के कथन से लिया गया है, जैसा कि पहले बताया गया। हम कहते हैं कि पैमाइश सौ थी, हमने उसे ग्यारह पर विभाजित किया, तो प्रत्येक भाग नौ और ग्यारह का एक हिस्सा हुआ। जब उसका तीन गुना सौ में जोड़ा गया, तो एक सौ सत्ताइस और ग्यारह के तीन हिस्से (127 3/11) प्राप्त हुए। उसका वर्गमूल ग्यारह और पांचवें और छठे हिस्से का लगभग आधा था, और वह उस वृत्त का व्यास है जिसकी पैमाइश सौ है। इसका प्रमाण तीसरी प्रस्तावना है। उसका तीन गुना और सातवां हिस्सा, यानी गोल तालाब की परिधि, पैंतीस हाथ और आधा हाथ में से दसवें का आधा कम होगी। उन्होंने इस अंश को पूरा एक गिना और उसकी परिधि छत्तीस ली। हमने ये चर्चाएँ इसलिए की हैं ताकि इन इमामों के कथनों की शुद्धता का कारण ज्ञात हो सके और यह कि उनमें से कोई भी स्पष्ट रूप से गलत नहीं है जैसा कि कुछ ने अनुमान लगाया था, और बहुत से लोग सही कथनों में दोष निकालते हैं। (समाप्त)

[पाद-टिप्पणियाँ:] नोट 1: अर्थात उससे थोड़ा कम, क्योंकि यह लगभग है। (लेखक का नोट)। यानी उससे थोड़ा कम क्योंकि वह लगभग 2.81518 है (अनुवादक का नोट)। नोट 2: बल्कि, घटाया गया हिस्सा उससे कम है; उनके उल्लेख के अनुसार यह 7/105 [अरबी] / 4/105 [उर्दू] है और हमारे उल्लेख के अनुसार यह 219/5000 है। (लेखक का नोट)। बल्कि, घटाया गया हिस्सा उससे कम है; उनके ज़िक्र के मुताबिक यह 4/105 है और हमारे ज़िक्र के मुताबिक यह 219/5000 है। (अनुवादक का नोट)।

1. खुलासा अल-फतावा, तालाबों का खंड, नवलकिशोर, लखनऊ, 1/3 पृष्ठ 297 का 711

الامام ظہیر الدین اعتبر ان تکون مساحۃ الحوض المدور مساویۃ لمساحۃ المربع فیکون الماء فیہ مساویاً لماء المربع ویشبہ ان یکون ھذا مأخوذاً عما نقل عن محمد بن ابراہیم المیدانی علی مامر فنقول کانت المساحۃ مائۃ قسمناھا باحد عشر قسماً کان کل قسم تسعۃ وجزء من احد عشر فاذا زدنا ثلثۃ امثالھا علی المائۃ حصل مائۃ وسبعۃ وعشرون وثلثۃ اجزاء من احد عشر وجذرہ یکون احد عشر وخمساً ونصف عہ۱ سدس تقریباً وھو قطر دائرۃ مساحتھا مائۃ للمقدمۃ الثالثۃ وثلثۃ امثالہ مع سبعہ اعنی محیط الحوض المدور یکون خمساً وثلثین ذراعاً ونصف ذراع الانصف عہ۲ عشر فاعتبروا ھذا الکسر واحداً واخذوا محیطہ ستاً وثلثین وانما اوردنا ھذہ المباحث لیظہر وجہ صحۃ اقوال ھؤلاء الائمۃ وانہ لیس شیئاً منھا کما توھم بعضہم غلطاً صریحاً وکم من عائب قولاً صحیحاً ۱اہـ۔

اور قاضی ظہیر الدین نے گول حوض کی پیمائش مربع کی پیمائش کے مساوی قرار دی ہے، تو اس کا پانی مربع کے پانی کے مساوی ہوگا، اور غالباً یہ محمد بن ابراہیم میدانی کی نقل سے ماخوذ ہے جیسا کہ گزرا ہم کہتے ہیں پیمائش سو تھی اس کو ہم نے گیارہ پر تقسیم کیا تو ہر حصہ نو اور گیارہ کا ایک جز ہوا اور جب اس کا تین گنا سو پر زائد کیا تو ایک سو ستائیس ۳/۱۱ اور گیارہ کے تین اجزاء حاصل ہوئے اور اس کا جزر گیارہ، اور پانچواں اور چھٹے کا تقریباً نصف ہوا اور وہ دائرہ کا قطر ہے جس کی پیمائش سو ہے، اس کی دلیل تیسرا مقدمہ ہے اور اس کا تین گنا مع ساتویں کے یعنی گول حوض کا محیط پینتیس ذراع اور نصف ذراع دسویں کا نصف کم ہوگا تو اس کسر کو انہوں نے پورا ایک شمار کیا اور اس کا محیط چھتیس لیا اور ہم نے یہ مباحث اس لئے ذکر کیے تاکہ ان ائمہ کے اقوال کی صحت کا سبب معلوم ہوسکے اور یہ کہ ان میں سے کوئی بھی

صریح غلط نہیں جیسا کہ بعض نے وہم کیا، اور بہت سے لوگ صحیح اقوال کو عیب لگاتے ہیں اھ (ت)

عہ۱ ای اقل منہ بشیئ قلیل فانہ ء تقریباً اھ منہ (م) یعنی اس سے کچھ کم کیونکہ وہ تقریباً ۲.۸۱۵۱۸ ہے اھ (ت) عہ۲ بل المستثنی اقل منہ فعلی ماذکرہ ۷/۱۰۵ و علی ما ذکرنا ۲۱۹/۵۰۰۰ اھ منہ (م) بلکہ مستثنیٰ اس سے کم ہے ان کے ذکر کے مطابق ۴/۱۰۵ ہے اور ہمارے ذکر کے مطابق ۲۱۹/۵۰۰۰ ہے اھ (ت)

Fatawa Razawiya - Volume Two

[Left Column - Arabic Text] I say: May Allah Almighty have mercy on him and reward his effort, for he has clarified the statements of the noble scholars. The gist of it is that the statement in Al-Zahiriyyah is based on the consideration of area, while the rest of the statements are based on the condition of two extensions, length and width. These are two well-known statements in the Madhhab, although our reliance is on the first, as we explained in the third section of our book "Al-Namīqat al-Anqā". This is supported by what the author of Al-Khulāsah said here: "The large pool is measured as ten by ten, and its form is that it should be ten cubits on each side, the perimeter around the water forty cubits, and the surface of the water one hundred cubits; this is the measure of length and width." [1] He did not suffice with saying "the surface of the water is one hundred," but rather explained the length and detailed the width and showed the perimeter, then mentioned the surface. Although he later chose to consider the area in the discussion regarding the type of river, saying: "If the water has length and depth but no width, like the rivers of Balkh, if it were in such a state that if gathered it would become ten by ten, then performing ablution from it is permissible." This is the statement of Abu Sulayman al-Juzjani, adopted by Faqih Abu al-Layth, and relied upon by Sadr al-Shahid. Imam Abu Bakr al-Tarkhani said that it is not permissible even if it flows from here to Samarkand. According to those who do not permit it, a pit is dug, then a small channel is dug, and the water is brought from the channel to the pit to perform ablution from the channel. If impurity falls into it, a ten by ten area becomes impure. The chosen view is that...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] I say: He has removed the veil from the statements of the noble scholars. The summary is that the statement of Zahiriyyah is based on the consideration of measurement, and the other statements are based on the condition of two extensions of length and width. Both these statements are well-known in the Madhhab, although our reliance is on the first, as we described in the third chapter of our book "Al-Namīqat al-Anqā". Supporting this, the author of Khulāsah at this point said that a large pool is ten-by-ten, and its description is that it should be ten cubits from every side, the perimeter of the water should be forty cubits, and the surface area of the water should be one hundred cubits; this is the measure of length and width (End quote). Thus, he did not rely only on his statement "the water surface is one hundred cubits," but rather explained the details of length and width and clearly showed the perimeter, and then explained its

reason. Although after this, in the discussion of types of rivers, he adopted measurement, stating that if the water has length and depth but not width, like the rivers of Balkh, if it is of such a nature that upon gathering it becomes ten-by-ten, then ablution from it is permissible. This is the statement of Abu Sulayman al-Juzjani, which Faqih Abu al-Layth adopted and Sadr al-Shahid relied upon. Imam Abu Bakr al-Tarkhani said that ablution from such a river is not permissible even if it flows from here to Samarkand. Those who are not in favor of the permissibility of ablution say that first a small pit should be dug, then a small canal should be dug, and water should be brought from the river into the pit and ablution performed from the canal.

---

1. Khulāsat al-Fatawa, Section on Pools, Naval Kishore Lucknow, 1/31 Page 298 of 711

फ़तावा रज़विया - खंड दो

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे और उनके प्रयासों को पुरस्कृत करे, क्योंकि उन्होंने महान विद्वानों के बयानों को स्पष्ट किया है। इसका सारांश यह है कि अल-ज़हीरिया में दिया गया बयान क्षेत्रफल के विचार पर आधारित है, जबकि बाकी बयान लंबाई और चौड़ाई के दो विस्तारों की शर्त पर आधारित हैं। ये मज़हब में दो प्रसिद्ध बयान हैं, हालाँकि हमारा भरोसा पहले पर है, जैसा कि हमने अपनी पुस्तक "अल-नमीक़त अल-अनक़ा" के तीसरे भाग में स्पष्ट किया है। इसका समर्थन अल-खुलासा के लेखक द्वारा यहाँ कही गई बात से होता है: "बड़ा तालाब दस गुणा दस मापा जाता है, और इसका रूप यह है कि यह प्रत्येक तरफ से दस हाथ होना चाहिए, पानी के चारों ओर की परिधि चालीस हाथ, और पानी की सतह सौ हाथ होनी चाहिए; यह लंबाई और चौड़ाई का माप है।" [1] उन्होंने केवल यह कहने पर संतोष नहीं किया कि "पानी की सतह सौ है," बल्कि लंबाई को समझाया और चौड़ाई का विस्तार दिया और परिधि दिखाई, फिर सतह का उल्लेख किया। हालाँकि उन्होंने बाद में नदी के प्रकार के संबंध में चर्चा में क्षेत्रफल पर विचार करना चुना, यह कहते हुए: "यदि पानी में लंबाई और गहराई है लेकिन चौड़ाई नहीं है, जैसे बल्ख की नदियाँ, यदि यह ऐसी स्थिति में हो कि इकट्ठा होने पर दस गुणा दस हो जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ है।" यह अबू सुलेमान अल-जुज़जानी का कथन है, जिसे फकीह अबू अल-लैथ ने अपनाया और सद्र अल-शहीद ने इस पर भरोसा किया। इमाम अबू बक्र अल-तर्खानी ने कहा कि यह जायज़ नहीं है चाहे वह यहाँ से समरकंद तक ही क्यों न बहती हो। जो लोग इसकी अनुमति नहीं देते हैं, उनके अनुसार एक गड्ढा खोदा जाता है, फिर एक छोटी नाली खोदी जाती है, और नाली से पानी गड्ढे में लाया जाता है ताकि नाली से वज़ू किया जा सके। यदि इसमें अशुद्धि गिरती है, तो दस गुणा दस का क्षेत्र अशुद्ध हो जाता है। चुना हुआ विचार यह है कि...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] मैं कहता हूँ: उन्होंने महान विद्वानों के कथनों से पर्दा हटाया है। सारांश यह है कि ज़हीरिया का कथन माप के विचार पर आधारित है, और अन्य कथन लंबाई और चौड़ाई के दो विस्तारों की शर्त पर आधारित हैं। ये दोनों कथन मज़हब में प्रसिद्ध हैं, हालाँकि हमारा भरोसा पहले पर है, जैसा कि हमने अपनी पुस्तक "अल-नमीक़त अल-अनक़ा" के तीसरे अध्याय में वर्णित किया है। इसका समर्थन करते हुए, इस बिंदु पर खुलासा के लेखक ने कहा कि एक बड़ा तालाब दस-बाय-दस होता है, और इसका विवरण यह है कि यह हर तरफ से दस हाथ होना चाहिए, पानी का घेरा चालीस हाथ होना चाहिए, और पानी का सतह क्षेत्र सौ हाथ होना चाहिए; यह लंबाई

और चौड़ाई की माप है (उद्धरण समाप्त)। इस प्रकार, उन्होंने केवल अपने इस कथन पर भरोसा नहीं किया कि "पानी की सतह सौ हाथ है," बल्कि लंबाई और चौड़ाई के विवरण की व्याख्या की और स्पष्ट रूप से घेरा दिखाया, और फिर इसका कारण बताया। हालाँकि इसके बाद, नदियों के प्रकारों की चर्चा में, उन्होंने माप को अपनाया, यह बताते हुए कि यदि पानी में लंबाई और गहराई है लेकिन चौड़ाई नहीं है, जैसे बल्ख की नदियाँ, यदि यह ऐसी प्रकृति का है कि इकट्ठा करने पर यह दस-बाय-दस हो जाता है, तो इससे वज़ू करना जायज़ है। यह अबू सुलेमान अल-जुज़जानी का कथन है, जिसे फकीह अबू अल-लैथ ने अपनाया और सद्र अल-शहीद ने इस पर भरोसा किया। इमाम अबू बक्र अल-तर्खानी ने कहा कि ऐसी नदी से वज़ू करना जायज़ नहीं है चाहे वह यहाँ से समरकंद तक ही क्यों न बहती हो। जो लोग वज़ू की अनुमति के पक्ष में नहीं हैं, वे कहते हैं कि पहले एक छोटा गड्ढा खोदा जाना चाहिए, फिर एक छोटी नहर खोदी जानी चाहिए, और नदी से पानी गड्ढे में लाया जाना चाहिए और नहर से वज़ू किया जाना चाहिए।

---

1. खुलासात अल-फ़तावा, तालाबों पर अनुभाग, नवल किशोर लखनऊ, 1/31 पेज 298 of 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

اقول: رحمہ اللہ تعالیٰ وشکر سعیہ فقد جلا عن میں کہتا ہوں انہوں نے اجلہ علماء کے اقوال سے پردہ ہٹایا ہے، اس کا حاصل یہ ہے کہ ظہیریہ کا قول پیمائش کے اعتبار پر مبنی ہے اور باقی اقوال طول و عرض کے دو امتدادوں کے شرط کرنے پر مبنی ہیں، اور یہ دونوں قول مذہب میں معروف ہیں اگرچہ ہمارا اعتماد اول پر ہے جیسا کہ ہم نے اپنی کتاب "النمیقة الانقیٰ" کی تیسری فصل میں بیان کیا، اور اس کی تائید یہ ہے کہ اس مقام پر صاحب خلاصہ نے کہا کہ بڑا حوض دہ در دہ ہوتا ہے اور اس کی صورت یہ ہے کہ وہ ہر طرف سے دس ہاتھ ہو اور پانی کا گرد چالیس ہاتھ ہو، اور پانی کی سطح سو ہاتھ ہو یہ طول و عرض کی مقدار ہے اھ، تو انہوں نے اپنے اس قول "پانی کی سطح سو ہاتھ ہے" پر اکتفاء نہ کیا بلکہ طول و عرض کی تفصیل بیان کی اور دور ظاہر کیا پھر اس کی وجہ بیان کی، اگرچہ اس کے بعد جنس فی النہر کی بحث میں مساحہ کو اختیار کیا فرمایا کہ اگر پانی کا طول و عمق ہو اور اس کا عرض نہ ہو جیسے بلخ کی نہریں، اگر یہ اس قسم کا ہو کہ جمع کرنے پر دہ در دہ ہو جائے تو اس سے وضو جائز ہے یہ ابو سلیمان الجوزجانی کا قول ہے، اور اسی کو فقیہ ابو اللیث نے اختیار کیا اور صدر الشہید نے اسی پر اعتماد کیا اور امام ابوبکر الطرخانی نے فرمایا کہ ایسی نہر سے وضو جائز نہیں خواہ وہ یہاں سے سمر قند تک کیوں نہ ہو، اور جو حضرات وضو کے جواز کے قائل نہیں وہ فرماتے ہیں پہلے ایک چھوٹا سا گڈھا کھودا جائے پھر ایک چھوٹی سی نہر کھودی جائے اور اس نہر سے پانی نکال کر گڑھے میں لایا جائے اور نہر سے وضو کیا جائے،

اقوال اجلاء ومحصلہ ان کلام الظھیریة مبتن علی اعتبار المساحة وسائر الاقوال علی اشتراط الامتدادین الطول والعرض وھما قولان معروفان فی المذھب وان کان عندنا المعول علی الاول کما بیناہ

فی الفصل الثالث من کتابنا النمیقة الانقی ویؤیده ان صاحب الخلاصة قال ههنا الحوض الکبیر مقدر بعشر فی عشر و صورته ان یکون من کل جانب عشرة اذرع و حول الماء اربعون ذراعا و وجه الماء مائة ذراع هذا مقدار الطول والعرض 1 اه فلم یکتف بقوله وجه الماء مائة بل بین الطول وفصل العرض واظهر الدور ثم ذکر الوجه وان اختار فیما بعد فی جنس فی النهر اعتبار المساحة حیث قال ان کان الماء له طول وعمق ولیس له عرض کانهار بلخ ان کان بحال لو جمع یصیر عشرا فی عشر یجوز التوضی به وهذا قول ابی سلیمان الجوز جانی وبه اخذ الفقیه ابو اللیث وعلیه اعتماد الصدر الشهید وقال الامام ابو بکر الطرخانی لا یجوز وان کان من هنا الی سمر قند و عند من لا یجوز یحفر حفیرة ثم یحفر نهیرة فیجعل الماء فی النهیرة الی الحفیرة فیتوضؤ من النهیرة فلو وقعت فیها النجاسة یتنجس عشرة فی عشرة والمختار انه

---

1 خلاصة الفتاوی فصل فی الحیاض نولکشور لکهنؤ ۱/۳۱ Page 298 of 711

Fatawa Rizvia Volume 2

[Table Content] (Arabic Column) It does not become impure except by what makes a large pool impure. (End) I say: (1) And through this, the answer to the objection of Shurunbulali became clear. For calculation only reaches a definitive conclusion when considering area, without stipulating the two dimensions of length and width. Rather, (2) it was decided then that an increase is mandatory, let alone... as indicated previously. It is clarified by the fact that the two extensions are not meant however they occur, but rather as two surrounding lines forming a right angle; otherwise, length and width would not be equal. If it were not for this, a triangle with each side being ten cubits would have sufficed, whereas they have explicitly stated that each must be fifteen cubits and a fifth, as in 'Al-Siraj al-Wahhaj' and 'Al-Zahr al-Nadhir' by the scholar Shurunbulali. Al-Birjandi has said that this means each of the four sides should be ten cubits and its four angles should be right angles, for if the angles were not such, it would not be considered. (End) And a right-angled triangle cannot occur in a circle except in its semicircle, for if the segment were larger, the angle would be acute, or if smaller, it would be obtuse (30 from 3 of Euclid), and in that case, the hypotenuse of the right angle would be the diameter of the circle.

(Urdu Column) Now, if impurity falls into it, then a ten-by-ten (Dah dar Dah) area will become impure. And the preferred view is that it will not become impure; it will only become impure in the case where a large pool becomes impure. (End) I say, the answer to Shurunbulali's objection is also known from this, because according to calculation, this becomes certain only when the measurement (area) is considered, not when the condition of length and width extensions is applied. Rather, at that time, an increase beyond 44 becomes certain, let alone 36, as previously indicated. This is clarified by the fact that it is not intended that both extensions occur in any way, but rather two surrounding lines with a right angle, otherwise the length and width would not be equal. If this were not so, then a triangle with each side of ten cubits would have been sufficient, whereas scholars have clarified in it that it is necessary to be fifteen cubits and one-fifth (khumus), as it is in 'Al-Siraj al-Wahhaj' and in Shurunbulali's 'Al-Zahr al-Nadhir'. And Al-Birjandi said that it means each of the four sides should be ten (10) cubits and its four angles should be right angles, because if the angles were not so, then it would not be considered. And it is not possible for any right-angled triangle to be in any circle; yes, it can be in a semicircle because if any segment were larger, the angle would be acute, and if it were smaller, it would be obtuse (from 30, 3 among...

[Footnotes] 1 Khulasat al-Fatawa, Section on Running Water, Nawal Kishore, Lucknow 1/9 2 Sharh al-Niqayah by al-Birjandi, Research on Water, Nawal Kishore, Lucknow 1/33

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

[तालिका सामग्री] (अरबी स्तंभ) यह तब तक अशुद्ध नहीं होता जब तक वह चीज़ न हो जो एक बड़े हौज़ (तालाब) को अशुद्ध कर दे। (समाप्त) मैं कहता हूँ: (1) और इसके माध्यम से शूरुनबुलाली की आपत्ति का उत्तर स्पष्ट हो गया। क्योंकि गणना केवल क्षेत्रफल पर विचार करते समय ही एक निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचती है, बिना लंबाई और चौड़ाई के दो आयामों की शर्त के। बल्कि, (2) तब यह तय किया गया था कि वृद्धि अनिवार्य है, और जैसा कि पहले संकेत दिया गया था। इसे इस तथ्य से स्पष्ट किया गया है कि दो विस्तारों का मतलब यह नहीं है कि वे कैसे भी हों, बल्कि एक समकोण बनाने वाली दो घेरने वाली रेखाएं हों; अन्यथा, लंबाई और चौड़ाई समान नहीं होगी। यदि ऐसा न होता, तो दस हाथ की प्रत्येक भुजा वाला त्रिभुज पर्याप्त होता, जबकि विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि प्रत्येक का पंद्रह हाथ और एक-पाँचवाँ होना आवश्यक है, जैसा कि 'अल-सिराज अल-वहाज' और विद्वान शूरुनबुलाली की 'अल-ज़हर अल-नज़ीर' में है। अल-बिरजंदी ने कहा है कि इसका अर्थ यह है कि चारों भुजाओं में से प्रत्येक दस हाथ की होनी चाहिए और इसके चारों कोण समकोण होने चाहिए, क्योंकि यदि कोण ऐसे नहीं होते, तो इसे मान्य नहीं माना जाता। (समाप्त) और एक समकोण त्रिभुज किसी वृत्त में उसके अर्धवृत्त के अलावा नहीं हो सकता, क्योंकि यदि खंड बड़ा होता, तो कोण न्यून होता, या छोटा होता, तो वह अधिक कोण होता (यूक्लिड के पुस्तक 3 की प्रतिज्ञा 30), और उस स्थिति में, समकोण का कर्ण वृत्त का व्यास होगा।

(उर्दू स्तंभ) अब अगर इसमें कोई अशुद्धि गिर जाए, तो वह दस-बाय-दस (दह दर दह) क्षेत्र अशुद्ध हो जाएगा। और पसंदीदा राय यह है कि यह अशुद्ध नहीं होगा; यह केवल उसी स्थिति में अशुद्ध होगा जिसमें एक बड़ा हौज़ अशुद्ध होता है। (समाप्त) मैं कहता हूँ, इससे शूरुनबुलाली की आपत्ति का उत्तर भी ज्ञात हो गया, क्योंकि गणना के अनुसार, यह बात तभी निश्चित होती है जब माप (क्षेत्रफल) पर विचार किया जाए, न कि लंबाई और चौड़ाई के विस्तार की शर्त लगाई जाए। बल्कि, उस समय 44 से अधिक की वृद्धि निश्चित होगी, 36 की तो बात ही क्या है, जैसा कि पहले संकेत दिया गया था। और इसकी स्पष्टता इससे होती है कि इसका यह अर्थ नहीं है कि दोनों विस्तार चाहे जैसे भी हों, बल्कि समकोण के साथ दो घेरने वाली रेखाएं हों, अन्यथा लंबाई और चौड़ाई बराबर नहीं होती। और यदि ऐसा न होता, तो दस हाथ की प्रत्येक भुजा वाला त्रिभुज पर्याप्त होता, जबकि विद्वानों ने इसमें स्पष्ट किया है कि पंद्रह हाथ और एक-पाँचवाँ (खमुस) होना आवश्यक है, जैसा कि 'अल-सिराज अल-वहाज' में है और शूरुनबुलाली की 'अल-ज़हर अल-नज़ीर' में है। और बिरजंदी ने कहा कि इसका

अर्थ यह है कि चारों दिशाओं में से प्रत्येक दिशा दस (10) हाथ हो और उसके चारों कोण समकोण हों, क्योंकि यदि कोण ऐसे न होते, तो उसका विचार नहीं किया जाता। और यह संभव नहीं है कि कोई समकोण त्रिभुज किसी वृत्त में हो; हाँ, अर्धवृत्त में हो सकता है क्योंकि यदि कोई खंड अधिक होता तो कोण न्यून हो जाता, यदि कम होता तो अधिक कोण हो जाता (30, 3 में से...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1 खुलासा-तुल-फ़तावा, बहते पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ 1/9 2 शरह-उन-निक़ाया बिरजंदी द्वारा, पानी पर शोध, नवल किशोर, लखनऊ 1/33

पृष्ठ 711 का 299

[جدول کی عبارت] (عربی کالم) لا یتنجس الابما یتنجس به الحوض الکبیر ۱ اھ اقول: (۱) وبه ظهر الجواب عن ایراد الشرنبلالی فان الحساب انما یقطع بذلك عند اعتبار المساحة دون اشتراط الامتدادین الطولی والعرضی بل (۲) قطع عند ذلك بوجوب الزیادة علی فضلا عن کما تقدمت الاشارة الیه و یوضحه ان لیس المراد الامتدادان کیفما وقعا بل محیطین بقائمة والالم یتساو الطول والعرض ولولا ذلك لکفی مثلث کل ضلع منه عشرة اذرع مع انهم نصوا فیه بوجوب ان یکون کل خمسة عشر ذراعاً و خمساً کما فی السراج الوهاج والزهر النضیر للعلامة الشرنبلالی وقد قال البرجندی المراد بذلك ان یکون کل من الاطراف الاربعة عشر اذرع و زوایاه الاربع قوائم اذ لو لم تکن الزوایا کذلك لم یعتبر ۲ اھ ولا یمکن وقوع مثلث قائم الزاویة فی دائرة الا فی نصفها اذ لو کانت القطعة ازید کانت الزاویة حادة او انقص کانت منفرجة (۳۰ من ۳ من اقلیدس) وح یکون وتر القائمة قطر الدائرة

(اردو کالم) اب اگر اس میں نجاست گر جائے تو وہ دہ در دہ ناپاک ہو جائیگا، اور مختار یہ ہے کہ ناپاک نہ ہوگا، صرف اُسی صورت میں ناپاک ہوگا جس صورت میں بڑا حوض ناپاک ہوتا ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں اس سے شرنبلالی کے اعتراض کا جواب بھی معلوم ہو گیا کیونکہ از روئے حساب یہ بات قطعی اس وقت ہوتی ہے جب پیمائش کا اعتبار کیا جائے نہ کہ طولی و عرضی امتدادوں کی شرط لگائی جائے بلکہ اس وقت ۴۴ سے زیادتی کا واجب ہونا قطعی ہوگا چہ جائیکہ ۳۶ سے جیسا کہ اس کی طرف پہلے اشارہ گزرا، اور اس کی وضاحت اس سے ہوتی ہے کہ یہ مراد نہیں کہ دونوں امتداد جیسے بھی واقع ہوں ب بلکہ دو محیط ایک قائمہ کے ساتھ، ورنہ طول و عرض مساوی نہ ہوتے، اور اگر یہ نہ ہوتا تو اس کے ہر ضلع کا مثلث دس ہاتھ کو کافی ہوتا حالانکہ علماء نے اس میں صراحت کی ہے کہ پندرہ ذراع اور ایک خمس کا ہونا ضروری ہے،

جیسا کہ "السراج الوہاج" میں ہے اور شرنبلالی کی "الزہر النضیر" میں ہے، اور برجندی نے فرمایا کہ اس سے مراد یہ ہے کہ چاروں طرف میں سے ہر طرف دس ۱۰ ذراع ہو اور اس کے چاروں زاویے قائمہ ہوں، کیونکہ اگر زاویے ایسے نہ ہوئے تو اس کا اعتبار نہ ہوگا اور یہ ممکن نہیں کہ کوئی مثلث قائم الزاویہ کسی دائرہ میں ہو، ہاں نصف دائرہ میں ہوسکتا ہے کیونکہ اگر کوئی قطعہ زائد ہوتا تو زاویہ حادہ ہوجاتا، اگر کم ہوتا تو منفرجہ ہو جاتا (۳۰، ۳ میں سے،

[حواشی] 1 خلاصة الفتاوى فصل في الماء الجاری نولکشور لکھنو ۱/ ۹ 2 شرح النقاية للبرجندی ابحاث الماء نولکشور لکھنو ۱/ ۳۳

Fatawa Razawiyya Volume II If each side is ten units, then the square of the diameter is two hundred (from Euclid). At that point, the hypotenuse of the right angle becomes the diameter of the circle. Now, if each side is ten cubits, the square root of the diameter would be two hundred, which is 14.14. If calculated with more precision, it would be 1.14121368. So, when this is the diameter of the circle, its logarithm will be 1.1505150. Adding 0.1399779 to it equals 1.16649772. This logarithm corresponds to 44.429, so the circumference will be more than 44, and this is what we intended. (Note)

I say: Through this, the reason also becomes clear which Allama Birjandi had kept concise. That is, why was the condition chosen for a square to fall within a circle that its diameter should not be less than the longest extensions of the square, meaning its diagonal? The reason is that the objective is the side extension, which is assumed to be ten, not the diagonal extension. The reason for this is that when this side extension is a side of a right-angled triangle and is equal to the other side, it can only fit in a circle if its diameter is the hypotenuse of the triangle, and this only happens in a semicircle. Now, when a similar one is drawn in the other half, the square will be completed, and its presence within it will become apparent. (Note)

I say: In another way, there is a square where each side is ten cubits. Now, if impurity falls in one of its corners, for example, corner 'J' (C), and we connect A and C, then the half opposite to it is triangle ABC...

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी (द्वितीय खंड) यदि प्रत्येक भुजा दस की है, तो व्यास का वर्ग दो सौ है (यूक्लिड से)। उस समय समकोण का कर्ण वृत्त का व्यास बन जाता है। अब, यदि प्रत्येक भुजा दस हाथ की है, तो व्यास का वर्गमूल दो सौ होगा और वह 14.14 है। यदि अधिक सूक्ष्मता से गणना की जाए, तो यह 1.14121368 होगा। अतः, जब यह वृत्त का व्यास हुआ, तो इसका लघुगणक (लॉग) 1.1505150 होगा। इसमें 0.1399779 जोड़ने पर 1.16649772 प्राप्त होता है। यह लघुगणक 44.429 के बराबर है, इसलिए परिधि 44 से अधिक होगी, और यही हमारा उद्देश्य है। (त)

मैं कहता हूँ: इससे वह कारण भी स्पष्ट हो गया जिसे अल्लामा बिरजंदी ने संक्षिप्त रखा था। अर्थात्, वृत्त के भीतर वर्ग स्थित होने के लिए यह शर्त क्यों चुनी गई कि उसका व्यास वर्ग के सबसे लंबे विस्तार, यानी उसके विकर्ण से कम न हो? इसका कारण यह है कि उद्देश्य भुजा का विस्तार है जिसे दस माना गया है, न कि विकर्ण विस्तार। इसका कारण यह है कि जब यह भुजा विस्तार समकोण त्रिभुज की एक भुजा हो और दूसरी भुजा के बराबर हो, तो यह वृत्त में तभी समा सकता है जब इसका व्यास त्रिभुज का कर्ण हो, और यह केवल अर्धवृत्त में ही होता है। अब, जब दूसरे आधे हिस्से में वैसा ही चित्र खींचा जाए, तो वर्ग पूरा हो जाएगा और उसका उसमें स्थित होना स्पष्ट हो जाएगा। (त)

मैं कहता हूँ: एक अन्य विधि से, एक ऐसा वर्ग है जिसकी प्रत्येक भुजा दस हाथ की है। अब, यदि इसके एक कोने, उदाहरण के लिए कोना 'ज' (C) में अपवित्रता गिर जाए, और हम A और C को जोड़ दें, तो उसके विपरीत आधा हिस्सा त्रिभुज ABC है...

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی فاذا کانت کل ساق عشراکا ن جذر القطر مائتین (اقلیدس سے) اور اس وقت قائمہ کا وتر دائرہ کا قطر ہو جاتا، اب جبکہ ہر ساق دس ہاتھ کی ہو تو قطر کا جذر دو سو ہوتا اور وہ ۱۴ء۱۴ ہے اور اگر باریک بینی سے کام لیا جائے تو یہ ہوگا ۱ء۱۴۱۲۱۳۶۸ ، تو جب دائرہ کا قطر یہ ہوا تو اس کا لوگارتھم ۱ء۱۵۰۵۱۵۰ + ۰ء۱۳۹۹۷۷۹ = ۱ء۶۶۴۹۷۷۲ ہوگا اور یہ لوگارتھم ۴۴ء۴۲۹ ہے تو محیط ۴۴ سے زائد ہوگا، اور یہی ہماری مراد ہے۔ (ت)

اقول: وبہ تبین وجہ ما طوی بیانہ العلامۃ البرجندی انہ لم اختیر وقوع المربع داخل المدور ان لا یکون قطرھا اقصر من اطول امتدادات المربع اعنی قطرھا میں کہتا ہوں اس سے اس کی وجہ بھی ظاہر ہوگئی جس کا بیان علامہ برجندی نے لپیٹ دیا ہے یعنی مدور کے اندر مربع واقع ہونے کیلئے یہ شرط کیوں اختیار کی گئی ہے کہ اس کا قطر مربع کے طویل ترین امتدادات سے کم نہ ہوجائے یعنی اس کا قطر، کیونکہ مقصود امتداد ضلعی ہے جو دس فرض کیا گیا ہے، قطری نہیں ہے، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ جب یہ امتداد ضلعی، قائمہ کا ضلع ہو اور دوسرے ضلع سے مساوی ہو تو دائرہ میں تب ہی واقع ہوسکتا ہے جبکہ اس کا قطر وتر مثلث ہو اور یہ نصف دائرہ میں ہی ہوتا ہے، اب اسی کی مثل جب دوسرے نصف میں کھینچی جائے تو مربع مکمل ہو جائے گا، اور اس کا اس میں واقع ہونا ظاہر ہو جائیگا۔ (ت)

واقول: بوجہ آخر مربع کل ضلع منہ عشرۃ اذا وقعت نجاسۃ فی احدی زوایاھا مثل ج ووصلنا اع فالنصف المقابل لھا وھو مثلث ال ب ع اور ایک دوسرے طریقہ پر میں کہتا ہوں ایک ایسا مربع ہے کہ جس کا ہر ضلع دس ہاتھ ہے اب اگر اس کے ایک زاویہ مثلاً ج میں نجاست پڑ جائے

Fatawa Rizvia - Volume 2

(Arabic Text): ...surrounded by lines a, b, e. Any point assumed on them would be ten or more away from the impurity. After each of a and e is ten, it continues to increase until its furthest point on point b is more than fourteen cubits, as previously mentioned. This is the characteristic of a square whose water is considered 'much' (kathir) in Shari'a. If the pool is circular and we set its diameter to ten, looking at it as the required distance as presumed by the one who presumed it, then let the circle be:

a b h e on center h. The impurity fell at h. So we drew the diameter h b and erected a perpendicular to it as a diameter a e. The semicircle opposite the location of the impurity is a b e, and its furthest point from it is b, which is ten cubits. Thus, all points continue to approach h, and the closest of all to it are the two points a and e (from Euclid). So the circle was not constructed on the pattern of the required square, but rather on its opposite and reverse. Therefore, the points closest to h must be a and e, each at a distance of ten, and h being the state of the circle, is exactly like the state of the square. The distance of each from a and e is ten, then it continues to increase until its furthest point is on b, and then...

(Urdu Text): ...and if we join a and e, then its opposite half, which is the triangle a b e, is bounded by two lines: one is a b and the other is b e. Every point assumed on these two will be ten cubits or more away from the impurity. So the distance of each of a and e is ten cubits, then it continuously increases until the distance of a will be more than fourteen cubits at point b. This is based on the rule that passed. This is that square pool whose water is legally called 'much' (kathir). If the pool is circular and we fix its diameter as ten, seeing that this is the required distance, as the one who imagined it did, now the circle a b h e will be on center h.

Now the impurity fell near h, so we took out the diameter h b and erected a perpendicular on it which is the diameter a e. So the half that is opposite the place of impurity is a b e, and its furthest point is b, which is ten cubits. And all points keep getting closer to h, and the closest are the points of a and e (from 3, 7 of Euclid). So the circle was not made according to the method of the required square, but rather on its contrary and its opposite. So it is necessary that the points closer to h are a and e, each having ten...

फतावा रज़विया - जिल्द दूसरी

(अरबी पाठ): ...रेखाओं a, b, e से घिरा हुआ है। उन पर माना गया कोई भी बिंदु गंदगी (नजासत) से दस या अधिक दूर होगा। a और e में से प्रत्येक के दस होने के बाद, यह तब तक बढ़ता रहता है जब तक कि बिंदु b पर इसकी सबसे दूर की दूरी चौदह हाथ (ज़िरा) से अधिक न हो जाए, जैसा कि पहले बताया गया है। यह उस वर्गाकार (मुरब्बा) हौज़ की विशेषता है जिसके पानी को शरीअत में 'कसीर' (अधिक) माना जाता है। यदि हौज़ गोलाकार (मुदव्वर) हो और हम इसके व्यास (क़ुत्र) को दस निर्धारित करें, यह देखते हुए कि यही आवश्यक दूरी है जैसा कि कल्पना करने वाले ने कल्पना की है, तो वृत्त (दाइरा) होने दें:

a b h e केंद्र h पर। नजासत h पर गिरी। इसलिए हमने व्यास h b निकाला और उस पर एक लंब (अमूद) खड़ा किया जो व्यास a e है। नजासत के स्थान के विपरीत अर्धवृत्त a b e है, और उससे इसका सबसे दूर का बिंदु b है, जो दस हाथ है। इस प्रकार, सभी बिंदु h के करीब आते जाते हैं और उनमें से सबसे करीब a और e के दो बिंदु हैं (यूक्लिड से)। इसलिए वृत्त को आवश्यक वर्ग के पैटर्न पर नहीं बनाया गया था, बल्कि उसके विपरीत और उलट बनाया गया था। इसलिए, h के सबसे करीब के बिंदु a और e होने चाहिए, प्रत्येक दस की दूरी पर, और h वृत्त की स्थिति होने के नाते, बिल्कुल वर्ग की स्थिति की तरह है। a और e से प्रत्येक की दूरी दस है, फिर यह तब तक बढ़ती रहती है जब तक कि इसकी सबसे दूर की दूरी b पर न हो जाए, और फिर...

(उर्दू पाठ): ...और यदि हम a e को मिलाएँ तो उसका विपरीत आधा भाग जो a b e का त्रिभुज है, उसे दो रेखाएँ घेरे हुए हैं, एक a b वाली दूसरी b e वाली और हर बिंदु जो इन दोनों पर माना जाए उसकी दूरी नजासत से दस हाथ होगी या उससे अधिक होगी तो a और e में से प्रत्येक की दूरी दस हाथ है फिर वह लगातार बढ़ती रहती है यहाँ तक कि a की दूरी b के बिंदु पर चौदह ज़िरा से अधिक होगी। इस नियम की वजह से जो गुज़रा, यह है वह वर्गाकार हौज़ जिसके पानी को शरीयत में कसीर कहा जाता है, अगर हौज़ गोलाकार हो और हम उसका व्यास दस मुक़र्रर करें यह देख कर कि मतलूबा दूरी यही है, जैसा कि वहम करने वाले ने वहम किया है अब a b h e का दाइरा h के मरकज़ पर होगा,

अब नजासत h के पास गिरी तो हमने h b का क़ुत्र निकाला और उस पर एक अमूद कायम किया जो a e का क़ुत्र है तो वह आधा जो मौक़ा-ए-नजासत के मुक़ाबले में है वह a b e है और उसका

सबसे दूर का बिंदु b है और वह दस हाथ है, और तमाम नुक़ात h के करीब होते जाते हैं और सब से करीब a e के नुक़्ते हैं (3, 7 से अक्लीदिस से) तो दाइरा मतलूबा मुरब्बा के तरीक़े पर नहीं बनाया गया बल्कि उसकी ज़िद पर और उसके अक्स पर, तो लाज़िम है कि h के करीब तर नुक़्ते a और e हैं हर एक में दस का...

पृष्ठ 301/711

(عربی عبارت): یحبط به خطا ب، ب ء وکل نقطة تفرض علیهما یکون بعده من النجاسة عشرة اواکثر فبعد کل من اوع عشرة ثم لا یزال یزداد حتی یکون ابعده علی نقطة ب اکثر من اربعة عشر ذراعا بما تقدم هذا شان المربع الذی یعد ماؤه في الشرع کثیرا فان کان الحوض مدورا وجعلنا قطره عشرة نظر االی انه البعد المطلوب کما توهم المتوهم فلتکن الدائرة

ا ب ح ء علی مرکز ہ وقعت النجاسة عند ح فاخرجنا قطر ح ب واقمنا عمودا علیه قطراء فالنصف المقابل لموقع النجاسة ا ب ع وابعد نقاطه منه ب وهو عشرة اذرع فجمیع النقاط لا تزال تقرب من ح ویکون اقرب الکل الیه نقطتا اع (من من اقلیدس) فلم تنسج الدائرة علی منوال المربع المطلوب بل علی ضده وعکسه فیجب ان یکون اقرب النقاط الی ح وهما ا وع کل بفصل عشرة وح یکون شأن الدائرة شأن المربع سواء بسواء ان بُعد کل من ا وع عشرة ثم لا یزال یزداد حتی یکون ابعده علی ب واذن

(اردو عبارت): اور ہم ا ع کو ملائیں تو اس کا نصف مقابل جو ا ب ع کا مثلث ہے اس کو دو خط محیط ہیں، ایک ا ب والا دوسرا ب ع والا اور ہر نقطہ جو ان دونوں پر فرض کیا جائے اس کی دوری نجاست سے دس ہاتھ ہو گی یا اس سے زائد ہو گی تو ا اور ع میں سے ہر ایک کی دوری دس ہاتھ ہے پھر وہ مسلسل زیادہ ہوتا رہتا ہے یہاں تک کہ اکا بعد ب کے نقطہ پر چودہ ذراع سے زائد ہوگا اس قاعدے کی وجہ سے جو گزرا، یہ ہے وہ مربع حوض جس کے پانی کو شرعاً کثیر کہا جاتا ہے، اگر حوض مدوّر ہو اور ہم اس کا قطر دس مقرر کریں یہ دیکھ کر کہ مطلوبہ بُعد یہی ہے، جیسا کہ وہم کرنے والے نے وہم کیا ہے اب ا ب ح ء کا دائرہ ھ کے مرکز پر ہوگا،

اب نجاست ح کے پاس گری تو ہم نے ح ب کا قطر نکالا اور اس پر ایک عمود قائم کیا جو ا ع کا قطر ہے تو وہ نصف جو موضع نجاست کے مقابلے میں ہے وہ ا ب ع ہے اور اس کا بعید ترین نقطہ ب ہے اور وہ دس ہاتھ ہے، اور تمام نقاط ح کے قریب ہوتے جاتے ہیں اور سب سے قریب ا ع کے نقطے ہیں (۳،۷ سے اقلیدس سے) تو دائرہ مطلوب مربع کے طریق پر نہیں بنایا گیا بلکہ اس کی ضد پر اور اس کے عکس پر، تو لازم ہے کہ ح کے قریب تر نقطے ا اور ع ہیں ہر ایک میں دس کا

The diameter of the circle is the hypotenuse of the triangle, thus AC (meaning HB) is more than fourteen cubits based on what preceded, and the occurrence of the square within the circle is established.

I say: From here, three other matters became clear. First, the statement [of 44] was not correct because it contains a deficiency from the required amount, as you have known, and in estimated quantities, omission (rounding down) is not practiced. Second, since the diameter is 14.142, in making it 45 by raising it, there is much conjecture as in one statement [of 48], and in making it 14 by omission, there is a deficiency from the purpose, which is not permissible. Thus, justice was to take the middle path between them, which is to make it 14.4; three times its amount is 43.5, one-seventh of it is two cubits and a fraction. So the total is more than forty-five and a half cubits. And when the fraction exceeds half, or even reaches half, it is taken as one whole, as is the habit of mathematicians. Thus, the third circumference was considered to be 46. Third, the statement from 'Fath' appeared, that in calculation it is sufficient with less than that by a fraction, but the fatwa is given for forty-six so that observing the fraction does not become difficult. End. And the reason for giving the fatwa based on it appeared, because it is the most balanced of statements, with no parsimony, no extravagance, no deficiency, and no randomness.

1. Fath al-Qadir, Chapter of Water with which Ablution is Permissible and with which it is Not Permissible, Nooriya Razawiyah Sukkur 1/71

फ़तावा रज़विया खंड द्वितीय

वृत्त का व्यास त्रिभुज का कर्ण होता है, इसलिए AC (अर्थात् HB), पूर्व में बताई गई बात के अनुसार चौदह हाथ से अधिक होगा, और वृत्त के भीतर वर्ग की स्थिति सिद्ध हो चुकी है।

मैं कहता हूँ: यहाँ से तीन अन्य बातें स्पष्ट हुईं। पहली, [44 का] वह कथन सही नहीं था क्योंकि उसमें वांछित मात्रा से कमी है, जैसा कि आप जान चुके हैं, और निर्धारित मापों में कटौती (राउंडिंग डाउन) नहीं की जाती है। दूसरी, चूँकि व्यास 14.142 है, उसे बढ़ाकर 45 करना बहुत बड़ी अटकलबाज़ी है जैसा कि एक कथन [48 वाले] में है, और उसे घटाकर 14 करना उद्देश्य से कम होगा, जो उचित नहीं है। इसलिए, न्याय उनके बीच का मध्यम मार्ग अपनाना था, जो उसे 14.4 मानना है; उसका तीन गुना 43.5 है, उसका सातवां हिस्सा दो हाथ और एक अंश है। तो कुल योग साढ़े पैंतालीस हाथ से अधिक है। और जब अंश आधे से अधिक हो जाता है, या यहाँ तक कि आधे तक पहुँच जाता है, तो उसे एक पूर्ण मान लिया जाता है, जैसा कि गणितज्ञों का स्वभाव है। इस प्रकार, तीसरी परिधि को 46 माना गया। तीसरी बात, 'फ़तह' का यह कथन स्पष्ट हुआ कि गणना में अंश के साथ उससे कुछ कम भी पर्याप्त है, लेकिन फ़तवा छियालीस के लिए दिया गया है ताकि अंश का हिसाब रखना कठिन न हो। समाप्त। और इस पर फ़तवा देने का कारण स्पष्ट हो गया, क्योंकि यह कथनों में सबसे संतुलित है —न कंजूसी, न अपव्यय, न कमी और न ही अटकलबाज़ी।

1. फ़तह अल-क़दीर, वज़ू के लिए अनुमत और वर्जित पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/71

पृष्ठ 302/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

یکون قطر الدائرة ھو وتر المثلث فیکون اع اعنی ح ب اکثر من اربعة عشر ذراعا بما تقدم وثبت وقوع المربع في الدائرة- اقول: ومن ھھنا ظھرت ثلثة امور اخر الاول لم یصح قول لان فیه نقصاً من المطلوب کما علمت والمقادیر المقدرة لا یعمل فیھا بالاسقاط الثاني حیث ان القطر ء ففی جعله بالرفع مجازفة کثیرة کما في قول وفی جعله بالاسقاط نقص من المقصود وھو لا یسوغ فکان العدل التوسط بینھما وھو جعله ء ثلثة امثاله ء سبعة ذراعان وکسر فالمجموع اکثر من خمسة واربعین ذراعاً ونصف والکسر اذا زاد علی النصف بل واذا بلغ النصف یؤخذ واحداً کما ھو عادة الحساب فاعتبر المحیط الثالث ظھر قول الفتح ان في الحساب یکتفی باقل منھا بکسر لکن یفتی بستة واربعین کیلا یتعسر رعایة الکسر اھ وظھر وجه الافتاء به لانه اعدل الاقوال لاتقتیر ولا اسراف ولا تقصیر ولا جزاف

کیا، تو جب ہم اس کو قطر قرار دیں تو محیط سینتالیس گز اور ایک ذراع کا ساتواں ہوگا، لیکن کسر کو ختم کرنے کیلئے پورے اڑتالیس کا اعتبار کیا گیا ہے، فاصلہ ہے اور اس وقت دائرہ کا حال مربع کے حال کی طرح ہوگا، بالکل برابر، یعنی دونوں ۱ اور ح کا بعد دس ہے، پھر بڑھتا رہتا ہے یہاں تک کہ اس میں بعید تر ب ہے اس وقت دائرہ کا قطر مثلث کا وتر ہوگا تو اع یعنی ح ب چودہ ہاتھ سے زائد ہوگا بسبب اس قاعدے کو جو گزرا اور مربع کا دائرہ میں واقع ہونا ثابت ہوا۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ اس سے تین امور ثابت ہوئے: اول، ۴۴ کے قول کی تصحیح نہیں کی گئی ہے کیونکہ یہ مطلوب سے ناقص ہے، جیسا کہ آپ کو معلوم ہوا، اور مقدرہ مقادیر میں اسقاط کا عمل نہیں ہوتا، ثانی یہ کہ قطر ۱۴۲ ء۱۴ ہے تو اس کو اگر بڑھا کر اندازاً ۴۵ بنالیا جائے تو یہ اٹکل پچو کے سوا کچھ نہیں ہے جیسا کہ ۴۸ کے قول پر ہے اور اگر ساقط کر کے اس کو ۱۴ بنایا جائے تو مقصود سے کم ہوگا اور یہ درست نہیں ہے، تو انصاف یہ ہے کہ ان دونوں میں درمیانہ درجہ اختیار کیا

جائے، اور وہ یہ ہے کہ ۱۴ء۴ اس کا تین گنا ہے ۴۳ء۵ اور اس کا ساتواں دو ۲ ذراع ہیں اور کسر ہے تو مجموعہ ۴۵ ذراع اور نصف سے زائد ہے اور کسر جب نصف سے زائد ہو جائے بلکہ جب نصف تک پہنچ جائے تو اس کو پورا ایک شمار کیا جاتا ہے جیسا کہ حساب دانوں کی عادت ہے، تو محیط ۴۶ اعتبار کیا گیا۔ ثالث، فتح کا یہ قول ظاہر ہو گیا کہ حساب

1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء ومالا یجوز به نوریہ رضویہ سکھر ۷۱/۱

Fatawa-e-Razvia - Volume 2

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] In it, less than this will be content with a fraction, but the fatwa will be given on 46 so that consideration of the fraction is not difficult, and the reason for the fatwa on it has become clear because this is the most balanced of statements in which there is no increase or decrease. Likewise, the words of the noble scholars should be understood, and let it not be hidden that all this is based on the condition of the two extensions, and the correct, adopted, and relied-upon view is to limit it to the area (masahat). Therefore, reliance will be on what was authenticated in 'al-Zahiriyyah', 'al-Multaqat', and 'al-Dhakhirah', despite the approximation they contain. Then, if there is a search for something closer to the verified truth, we have informed you of it, and success is from Allah. (T)

Cautions: (1) I say that al-Birjandi's third premise is based on the second, as you have known that 14/7 diameter × circumference = area. So when diameter : circumference :: 22 : 7, then 7/22 diameter = circumference. .. 22/28 diameter^2, rather 11/14 diameter^2 = area .. 11 diameter^2 = 14 area .. diameter^2 = 11/14 area .. diameter = 11/14 area will be the result and this is what is required. You have known that this is a distant approximation, but it does not interfere with the purpose because verifiedly diameter : circumference :: 855 : 99112 .. 21 : 7 .. etc. 21.99 diameter = circumference .. etc. 199/28 × 21 diameter^2 = area .. diameter = etc. 28/21.99 area. So the logarithms of the area will be added: log 28 - log etc. 21.99, where log 28 = 4.1771580 and the second 3.222291. The result of subtraction is 0.1049101, as we explained in our table. In this, the log of the area will be added and the result halved, giving the log of the diameter. So as we wrote, the diameter will be 11.284 and the circumference 35.449.

[Left Column - Arabic Original Text] Thus should the words of the noble scholars be understood. Praise be to Allah, the Guardian of blessings. Do not let it escape you that all this is based on the condition of the two extensions. The correct, adopted, and relied-upon view is to limit it to the area. Therefore, reliance was upon what was authenticated in 'al-Zahiriyyah', 'al-Multaqat', and 'al-Dhakhirah', despite the approximation it contains. And if you wish for something closer to the truth, I have notified you of it, and with Allah is success.

Cautions: (1) I say: the third premise of al-Birjandi is based on the second, since you know that 4/7 D.C = A. So if D : C :: 22 : 7, then 7/22 D = C .. 22/28 D^2, or rather 11/14 D^2 = A .. 11 D^2 = 14 A .. D^2 = 11/14 A .. D = 11/14 A, which is what is required. You have

known that it is a distant approximation, but it does not harm the purpose. For verification shows D : C :: 855 : 99112 .. etc. 7/22 × 21 D = C .. etc. 99/28 × 21 D^2 = A .. D = √(28/21.99 × A). Thus, the logarithm of the area is added in log log etc. where log = 60 and the other 7.142222. The result of subtraction is 1049101. Similar to what we presented in our table, log of area is added to it and the result is halved to get log of diameter. So the diameter was as we presented, and the circumference was thirty-five and a fraction not reaching half, which is the result of al-Birjandi's calculation.

फ़तावा-ए-रज़विया - भाग 2

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/टीका] इसमें भिन्न (कसर) के साथ इससे कम पर संतोष किया जाएगा, लेकिन 46 पर फ़तवा दिया जाएगा ताकि भिन्न का ध्यान रखना कठिन न हो और इस पर इफ़्ता (फ़तवा देने) का कारण स्पष्ट हो गया है क्योंकि यह सबसे संतुलित कथनों में से है जिसमें कोई कमी-बेशी नहीं है। इसी तरह विद्वानों के शब्दों को समझना चाहिए, और यह छिपा न रहे कि यह सब इस आधार पर है कि दो विस्तारों की शर्त है और सही, अपनाई गई और विश्वसनीय राय क्षेत्र (मसाहत) पर सीमित रहने की है। इसलिए भरोसा उस पर होगा जिसे 'ज़हीरिया', 'मुल्तकत' और 'ज़ख़ीरा' में सही माना गया है, इसके बावजूद कि उनमें लगभग मान (तकरीब) दिया गया है। फिर, यदि आप सत्य (तहक़ीक़) के अधिक निकट की चीज़ की तलाश में हैं, तो हमने आपको उससे अवगत करा दिया है और सफलता अल्लाह की ओर से है। (त)

सावधानियाँ (तम्बीहात): (1) मैं कहता हूँ कि बिरजंदी की तीसरी प्रस्तावना दूसरी पर आधारित है, जैसा कि आपने जाना कि 14/7 व्यास × परिधि = क्षेत्रफल। तो जब व्यास : परिधि :: 22 : 7 हो, तो 7/22 व्यास = परिधि .. 22/28 व्यास², बल्कि 11/14 व्यास² = क्षेत्रफल .. 11 व्यास² = 14 क्षेत्रफल .. व्यास² = 11/14 क्षेत्रफल .. व्यास = 11/14 क्षेत्रफल परिणाम होगा और यही वांछित है। आप जान चुके हैं कि यह एक दूर का अनुमान (तकरीब) है लेकिन उद्देश्य में बाधक नहीं क्योंकि शोध के अनुसार व्यास : परिधि :: 855 : 99112 .. 21 : 7 .. आदि 21.99 व्यास = परिधि .. आदि 199/28 × 21 व्यास² = क्षेत्रफल .. व्यास = आदि 28/21.99 क्षेत्रफल। तो क्षेत्रफल के लघुगणक (लॉग) को जोड़ा जाएगा: लॉग 28 - लॉग आदि 21.99, जहाँ लॉग 28 = 4.1771580 और दूसरा 3.222291। घटाने का परिणाम 0.1049101 है जैसा कि हमने अपनी तालिका में बताया है। इसमें क्षेत्रफल का लॉग जोड़ा जाएगा और परिणाम को आधा किया जाएगा तो व्यास का लॉग होगा। तो जैसा कि हमने लिखा, व्यास 11.284 होगा और परिधि 35.449।

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] इस प्रकार विद्वानों के शब्दों को समझना चाहिए। प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो नियामतों का स्वामी है। और यह आपके ध्यान से न उतरे कि यह सब दो विस्तारों की शर्त पर आधारित है। सही, अपनाई गई और विश्वसनीय राय क्षेत्रफल (मसाहत) पर सीमित रहना है। इसलिए भरोसा उसी पर था जिसे उसने 'ज़हीरिया', 'मुल्तकत' और 'ज़ख़ीरा' में सही बताया है, इसके बावजूद कि उसमें लगभग मान है। और यदि आप सत्य के अधिक निकट की चीज़ चाहते हैं, तो मैंने आपको उससे सूचित कर दिया है, और अल्लाह की ओर से ही सफलता है।

सावधानियाँ: (1) मैं कहता हूँ: बिरजंदी की तीसरी प्रस्तावना दूसरी पर आधारित है, क्योंकि आप जानते हैं कि 4/7 D.C = A है। तो यदि D : C :: 22 : 7, तो 7/22 D = C .. 22/28 D^2, बल्कि 11/14 D^2 = A .. 11 D^2 = 14 A .. D^2 = 11/14 A .. D = 11/14 A, जो वांछित है। आप जान चुके हैं कि यह एक दूर का अनुमान है, लेकिन उद्देश्य को नुकसान नहीं पहुँचाता। शोध दिखाता है कि D : C :: 855 : 99112 .. आदि 7/22 × 21 D = C .. आदि 99/28 × 21 D^2 = A .. D = √(28/21.99 × A)। इस प्रकार, क्षेत्रफल का लघुगणक जोड़ा जाता है .. और घटाव का परिणाम 1049101 है। जैसा कि हमने अपनी तालिका में प्रस्तुत किया, क्षेत्रफल का लॉग इसमें जोड़ा जाता है और परिणाम आधा करके व्यास का लॉग प्राप्त होता है। तो व्यास वैसा ही था जैसा हमने प्रस्तुत किया, और परिधि पैंतीस और एक अंश थी जो आधे तक नहीं पहुँचती थी, जो बिरजंदी की गणना का परिणाम है।

पृष्ठ 303 का 711

فتـاوىٰ رضويه جلد ثانى هكذا ينبغي ان يفهم كلام العلماء الكرام | میں کسر کے ساتھ اس سے کم پر اکتفاء کیا جائے گا، لیکن ۴۶ والحمد لله ولى الانعام ولا يذهب عنك ان كل | پر فتویٰ دیا جائے گا تاکہ کسر کی رعایت دشوار نہ ہو ذلك بناء على اشتراط الامتدادين والصحيح | اور اس پر افتاء کی وجہ ظاہر ہو گئی کیونکہ یہ اعدل الاقوال ہے المأخوذ المعتمد القصر على المساحة فلذلك كان | جس میں کوئی کمی بیشی نہیں ہے، اسی طرح علماءکے کلام کو التعويل على ما صححه في الظهيرية والملتقط | سمجھنا چاہئے، اور یہ مخفی نہ رہے کہ یہ سب اس بنا پر ہے کہ دو والذخيرة مع ما فيه من تقريب وان شئت | امتدادوں کی شرط ہے اور صحیح ماخوذ معتمد مساحت پر انحصار ہے اقرب شيء الى التحقيق فقد اذناك به وبالله | لہذا اعتماد اس پر ہوگا جو ظہیریہ، ملتقط اور ذخیرہ میں صحیح قرار التوفيق۔ | دیا گیا ہے، پھر اس میں تقریب ہے اور اگر تحقیق کے قریب تنبیہات: (ا) اقول مقدمة البرجندى الثالثة | تر چیز کی تلاش ہو تو ہم نے تمہیں اس پر آگاہ کر دیا ہے وبالله مبنية على الثانية لما علمت ان 4/7 ق ط = م فاذا | التوفيق۔ (ت) كان ق : ط :: 22 : 7 كان 7/22 ق = ط .. 22/28 ق 2 | تنبیہات : (۱) میں کہتا ہوں برجندی کا تیسرا مقدمہ بل 11/14 ق 2 = م .. 11 ق 2 = 14 م .. ق 2 = 11/14 م .. | دوسرے پر مبنی ہے، جیسا کہ آپ نے جانا کہ ۱۴/۷ ق ط = م ق = 11/14 م وهو المطلوب وقد علمت انه تقريب | تو جب ق : ط :: ۲۲ : ۷ ہوا تو ۷/۲۲ ق = ط .. ۲۲/۲۸ ق ۲ بعید ولكن لا يخل بالمقصود فان على التحقيق | بلکہ ۱۱/۱۴ ق ۲ = م .. ۱۱ ق ۲ = ۱۴ م .. ق ۲ = ۱۱/۱۴ م .. ق : ط :: 855 : 99112 .. الخ 7/22 ء 21 ق = ط .. | ق = ۱۱/۱۴ م ہو گا اور یہی مطلوب ہے، اور آپ جان چکے یہ الخ 99/28 ء 21 ق 2 = م .. ق = الخ 28/21 ء 99 م | تقریب بعید ہے لیکن مقصود میں مخل نہیں کیونکہ تحقیقی فلوغارثم المساحة يجمع في لو لو الخ ء ولو = 60 | طور پر ق : ط :: ۸۵۵ : ۹۹۱۱۲ .. ء ۲۱ : ۷ .. الخ ۹۹ء ۲۱ ق = ط والاخر 7 ء 142222 حاصل التفريق 1049101 ء | .. الخ ۱۹۹/۲۸ء ۲۱ ق ۲ = م .. ق =

الخ ۲۸/۲۱ء ۹۹ م تو مثل ما قدمنا في جدولنا يجمع فيه لو المساحة | مساحت کے لوگارتھم کو جمع کیا جائیگا لو ۲۸ - لو الخ ۹۹ء ۲۱ ولو وينصف الحاصل يكن لو القطر فكان القطر كما | ۲۸ = ۱۵۸۰ ۷ء ۱۷ء ۴ میں اور دوسرا ۹۱ء ۲۲۲۲ء ۳ حاصل قدمنا ء والمحيط ء خمسة وثلثين وكسرا | تفریق ۱۰۴۹۱۰۱ء ۰ ہے جیسا کہ ہم نے اپنے جدول میں بیان لا يبلغ النصف وهو حاصل حساب البرجندی | کیا، اس میں مساحت کا لو جمع کیا جائیگا اور حاصل کو آدھا کیا | جائے گا تو لو قطر ہو گا تو جیسا کہ ہم نے لکھا قطر ۲۸۴ء ۱۱ ہو گا اور | محیط ۴۴۹ء ۳۵

Fatawa Ridawiyyah, Volume 2

Removing the fraction, as you have learned that dropping [fractions] in measures is invalid, so the cycle becomes what was intended.

And there will be some fraction that will not reach half, and this is the result of Birjandi's calculation. The fraction was increased because you have already known that dropping [fractions] of measures is invalid, so the cycle is 36, and this is the goal.

(2) (1) The diameter being 7/22 of the circumference is not demonstrated in calculation; rather, until now, the exact ratio between them has not been known. They have only worked with inductions and approximations. Similarly, what is built upon it, namely that q = 4/11 m. Therefore, his statement that 'all of that is demonstrated in geometry and calculation' is a loose usage (tasamuh).

(2) The diameter being 7/22 of the circumference is not proven in calculation, rather until now even the real ratio between these two has not been known. Whatever has been done is merely induction and approximation, so whatever is based on it will also have the same status, i.e., that q = 4/11 m. Thus, his statement that 'all this is proven in calculation and geometry' is a loose usage (tasamuh).

(3) Regarding (1), dropping the excess fraction here, even if it is less than half, is what you have already known.

(3) Even if the excess fraction is less than half, the discussion regarding dropping it is what you have already understood.

(4) (3) The fourth statement is certainly based on what is also in al-Zahiriyyah from Muhammad al-Maydani: that if it were such that if its water were collected it would become ten by ten, because he based the matter on surface area alone without considering the width, so this is not a place that resembles [it].

(4) The fourth statement is certainly based on what is quoted from Muhammad al-Maydani in al-Zahiriyyah as well, that if it were such that if its water were collected it would be 10 by 10, because he made this matter based on area alone and did not consider the width, so there is no room for doubt in it.

(5) It was said in al-Durr (4): "In a triangle with fifteen [units] on each side, a quarter and a fifth," end quote. In some copies, it says "or a fifth". "T" (Tahtawi) objected to it, saying that calculation is certain, so there is no meaning for hesitation. Following

Nuh Effendi, he chose the quarter, and that the area is one hundred (100) cubits and three-quarters of a cubit and a small amount that does not reach a quarter of a cubit.

(5) It is stated in al-Durr: "and in a triangle, on each side is 15, a quarter, and a fifth," end quote. In some manuscripts, it says "or a fifth". "Ta" (Tahtawi) objected to this, saying that since calculation is certain, there is no meaning for hesitation. Following Nuh Effendi, he chose the 'quarter' and [stated] that the area is one hundred (100) cubits and three-quarters of a cubit and something more that does not reach a quarter cubit.

(T)

---

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 36/1 Page 304 of 711

फतावा रज़विया, खंड 2

अंश (fraction) को हटाना, जैसा कि आप जानते हैं कि मापों में [अंशों] को छोड़ना अमान्य है, इसलिए चक्र वही बन गया जो वांछित था।

और कुछ अंश होगा जो आधे तक नहीं पहुँचेगा और यही बिरजंदी की गणना का परिणाम है। अंश इसलिए बढ़ाया गया है क्योंकि आप जानते हैं कि मापों का छोड़ना अमान्य है, तो चक्र ३६ हुआ और यही उद्देश्य है।

(२) (१) व्यास का परिधि का ७/२२ होना गणना में प्रमाणित नहीं है; बल्कि अब तक उनके बीच का वास्तविक अनुपात ज्ञात नहीं हो पाया है। उन्होंने केवल आगमनों (inductions) और अनुमानों के साथ काम किया है। इसी प्रकार, जो उस पर आधारित है, अर्थात् q = ४/११ m। इसलिए, उनका यह कहना कि 'वह सब ज्यामिति और गणना में प्रमाणित है' एक शिथिल प्रयोग (तसामुह) है।

(२) व्यास का परिधि से ७/२२ होना गणना में सिद्ध नहीं है, बल्कि अब तक इन दोनों के बीच वास्तविक अनुपात भी मालूम नहीं हो सका है। जो कुछ किया गया है वह केवल आगमन और अनुमान है, तो जो इस पर आधारित होगा उसका भी यही हाल होगा, यानी कि q = ४/११ m। तो उनका यह कहना कि यह सब गणना और ज्यामिति में सिद्ध है, इसमें शिथिलता (तसामुह) है।

(३) (१) के संबंध में, यहाँ अतिरिक्त अंश को छोड़ना, भले ही वह आधे से कम हो, वही है जो आप पहले ही जान चुके हैं।

(३) अतिरिक्त अंश को छोड़ने में, भले ही वह आधे से कम हो, जो चर्चा है वह आप जान चुके हैं।

(४) (३) चौथा कथन निश्चित रूप से उस पर आधारित है जो मुहम्मद अल-मैदानी से 'अज़-ज़हीरिया' में भी उद्धृत है: कि यदि वह ऐसा होता कि यदि उसका पानी एकत्र किया जाता तो वह दस बटा दस हो जाता, क्योंकि उन्होंने मामले को चौड़ाई पर विचार किए बिना केवल क्षेत्रफल पर आधारित किया, इसलिए यह ऐसी जगह नहीं है जो [उससे] मिलती-जुलती हो।

(४) चौथा कथन निश्चित रूप से उस पर आधारित है जो 'ज़हीरिया' में भी मुहम्मद अल-मैदानी से उद्धृत है कि अगर वह ऐसा हो कि उसका पानी अगर जमा किया जाए तो वह १० बटा १० होगा क्योंकि उन्होंने इस मामले को केवल क्षेत्रफल पर आधारित किया है और चौड़ाई का विचार नहीं किया तो इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं।

(५) 'अद-दुर्र' (४) में कहा गया है: "प्रत्येक पक्ष पर पंद्रह वाली एक त्रिकोण में, एक चौथाई और पाँचवाँ हिस्सा," उद्धरण समाप्त। कुछ प्रतियों में "या पाँचवाँ" लिखा है। "ता" (तहतावी) ने इस पर आपत्ति जताई कि गणना निश्चित है, इसलिए संकोच का कोई अर्थ नहीं है। नूह एफेंदी का अनुसरण करते हुए, उन्होंने चौथाई को चुना, और यह कि क्षेत्रफल एक सौ (१००) हाथ (cubit) और हाथ का तीन-चौथाई हिस्सा और थोड़ा और है जो एक चौथाई हाथ तक नहीं पहुँचता है।

(५) 'दुर' में कहा गया है और त्रिकोण में हर तरफ से १५, चौथाई और पाँचवाँ हिस्सा है अ.ह. और कुछ प्रतियों में 'या पाँचवाँ' है, और इस पर "ता" ने आपत्ति की कि यह गणना निश्चित है तो इसमें हिचकिचाहट का कोई अर्थ नहीं और उन्होंने नूह अफंदी के अनुसरण में चौथाई को पसंद किया और यह कि क्षेत्रफल एक सौ १०० हाथ और एक हाथ के तीन चौथाई हैं और कुछ और जो चौथाई हाथ को नहीं पहुँचता।

(त)

---

1 दुर्रे मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, ३६/१ पृष्ठ 304 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

رفع الکسر لما علمت ان الاسقاط فی المقادیر باطل فکان الدور وھو المقصود۔

اور کچھ کسر ہوگی جو نصف تک نہیں پہنچے گی اور یہی برجندی کے حساب کا حاصل ہے کسر بڑھائی اس لئے گئی ہے کہ آپ جان چکے ہیں کہ مقادیر کا ساقط کرنا باطل ہے تو دور ۳۶ ہوا اور یہی مقصود ہے۔

(۲) (۱) کون القطر من المحیط ۷/۲۲ لیس مبرھنا علیه في الحساب بل لم تعلم الی الان النسبة بینھما تحقیقا انما عملوا بالاستقراءات والتقریبات فکذا ما یبتنی علیه من ان ق = ۴/۱۱ م فقوله کل ذلك مبرھن فی الھندسة والحساب تسامح۔

(۲) قطر کا محیط سے ہونا ۷/۲۲ حساب میں مبرہن نہیں ہے بلکہ اب تک ان دونوں کے درمیان تحقیقی نسبت بھی معلوم نہیں ہو سکی ہے، جو کچھ کیا ہے وہ محض استقراء اور تقریب ہے، تو جو اس پر مبنی ہوگا اس کا بھی یہی حال ہے، یعنی یہ کہ ق = ۴/۱۱ م تو اس کا یہ قول کہ یہ تمام حساب اور ہندسہ میں مبرہن ہے اس میں تسامح ہے۔

(۳) في (۱) اسقاط الکسر الزائد ھھنا وان کان اقل من النصف ما قد علمت۔

(۳) کسر زائد کو ساقط کرنے میں اگرچہ نصف سے کم ہو، جو کلام ہے وہ تم جان چکے ہو۔

(۴) (۳) القول الرابع مبنی قطعا علی ما فی الظھیریة ایضا عن محمد المیدانی انه ان کان بحال لو جمع ماؤہ یصیر عشرا في عشر لبنائه الامر علی المساحة فقط من دون اعتبار العرض فلیس ھذا محل یشبه۔

(۴) چوتھا قول قطعاً اس پر مبنی ہے جو ظہیریہ میں بھی محمد المیدانی سے منقول ہے کہ اگر وہ ایسا ہو کہ اس کا پانی اگر جمع کیا جائے تو وہ ۱۰ در ۱۰ ہوگا کیونکہ اس نے اس معاملے کو صرف مساحت پر مبنی کیا ہے اور عرض کا اعتبار نہیں کیا تو اس میں شبہ کی گنجائش نہیں۔

(۵) قال في الدر (۴) وفي المثلث من كل جانب خمسة عشرو ربعا وخمسا اهـ وفي بعض النسخ او خمسا واعترضه ط بأن الحساب يقينى فلا معنى للترديد واختار تبعا لنوح افندى الربع وان المساحة مائة ذراع وثلثة ارباع ذراع وشيع قليل لا يبلغ ربع ذراع۔

(۵) در میں فرمایا اور مثلث میں ہر طرف سے ۱۵، چوتھائی اور پانچواں ہے اھ اور بعض نسخوں میں یا پانچواں ہے، اور اس پر "ط" نے اعتراض کیا کہ یہ حساب یقینی ہے تو اس میں تردید کا کوئی مفہوم نہیں اور انہوں نے نوح آفندی کی متابعت میں چوتھائی کو مختار کہا اور یہ کہ مساحت ایک سو ۱۰۰ ذراع اور ایک ذراع کے تین ربع ہیں اور کچھ مزید جو چوتھائی ذراع کو نہیں پہنچتا۔ (ت)

---

1 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۶ Page 304 of 711

Fatawa Razvia Volume Two

I say: (1) Rather, it does not even reach a sixth of thirty-six / a sixth of a cubit (zira'), as you will soon know. And 'Sh' (commentator) considered the version with 'aw' (or) as more correct. I say: (2) since the version with 'wa' (and) also has some merit of correctness, although it is not so; and they based it on the difference in expression, for Noah expressed it by a fourth, while Siraj and Shurunbulali expressed it by a fifth. He followed them in choosing the fifth, stating that the area is a hundred cubits and a little bit more, which does not reach a tenth of a cubit. I say: (3) Rather, it reaches it, even exceeds it, as you will see. He said: according to the expression by a fourth, it reaches about a fourth of a cubit. I say: Rather, (4) it is more than three-fourths of it. This is because 'Ta' from Afandi and 'Sh' from Siraj narrated the method of calculating its area: multiply one of its sides by itself, and from the result (5) take its third and its tenth, and that is its area. End quote. I say: Although there is in this what you will come to know, the practice upon it is in two ways. The first is to take a third of the square and its tenth along with the fraction, which is (6) what they both acted upon despite their saying 'whatever is correct etc.' and for this reason Siraj said regarding the square of fifteen and a fifth that its third is approximately 77. If only the integer part was taken, its third would have been exactly so. And Noah said regarding the square of fifteen and a fourth that its third is half a cubit and a sixth of an eighth and a tenth and a fourth and half of an eighth of a tenth. This is only by considering the fraction. The second way is acting upon the integer only. So according to the first, the square of 77.60, its third and its tenth are 77 and 0.13. Their sum is 100.7, which is more than ten. And the square of 15.25 = 232.5625, its third is 520.83 and its tenth...

I say, it does not even reach a sixth of a sixth of thirty-six cubits, as you will soon know. And "Sh" considered the version with "aw" as correct. I say: in this case, the version with "wa" could also be somewhat correct, even though it is not so. They attributed this to the difference in expression, because Noah expressed it with a fourth while Siraj and Shurunbulali expressed it with a fifth. He followed them in choosing the fifth, stating that the area is a hundred cubits and a little bit more, which does not reach a tenth of a cubit.

I say: No, it is not so; rather, this amount becomes more than that, as you will soon see. He said: when it is expressed as a fourth, it will be approximately a fourth of a cubit. I say: it will be even more than three-fourths of it. The reason is that "Ta" narrated from Afandi and "Sh" from Siraj the calculation for its area: multiply one of its sides by itself, then a third and a tenth of the result is its area. End quote.

I say: there is some debate in this which you will soon know. Still, there are two ways to apply it. The first is to take a third and a tenth of the square along with the fraction, and this is what both of them practiced, despite their saying "whatever is correct etc." For this reason, Siraj said regarding a square of fifteen and a fifth that its third is approximately 77. If only the integer part was taken...

---

1 Rad al-Muhtar, Bab al-Miyah, 1/132 Page 305 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग २)

मैं कहता हूँ: (१) बल्कि यह ३६ के सुदुस (छठे हिस्से) / ज़िरा (हाथ) के सुदुस तक भी नहीं पहुँचता, जैसा कि आप जान लेंगे। और 'श' ने 'अव' (या) वाले संस्करण को अधिक सही माना। मैं कहता हूँ: (२) चूँकि 'व' (और) वाले संस्करण में भी सच्चाई का अंश है, हालाँकि ऐसा नहीं है, और उन्होंने इसे अभिव्यक्ति के अंतर पर आधारित किया है, क्योंकि नूह ने चौथाई के रूप में और सिराज व शरुन्बुलाली ने पाँचवें हिस्से के रूप में व्यक्त किया। उन्होंने पाँचवें हिस्से को चुनने में उनका अनुसरण किया, और यह कि क्षेत्रफल सौ ज़िरा और थोड़ी अधिक चीज़ है जो एक ज़िरा के दसवें हिस्से तक नहीं पहुँचती। मैं कहता हूँ: (३) बल्कि, यह उस तक पहुँचता है, यहाँ तक कि उससे भी बढ़ जाता है जैसा कि आप देखेंगे। उन्होंने कहा: चौथाई की अभिव्यक्ति के अनुसार, यह लगभग एक चौथाई ज़िरा तक पहुँचता है। मैं कहता हूँ: बल्कि, (४) इसके तीन-चौथाई से भी अधिक। और वह इसलिए कि अफ़ंदी से 'त' और सिराज से 'श' ने इसके माप की चर्चा की है: कि आप इसके एक पक्ष को स्वयं उसी से गुणा करें, फिर जो परिणाम आए, (५) उसका तिहाई और दसवाँ हिस्सा लें, तो वह उसका माप है। समाप्त। मैं कहता हूँ: और यह, भले ही इसमें वह हो जिसे आप पहचान लेंगे, इस पर कार्य दो प्रकार से है: पहला, कि आप वर्ग का तिहाई और उसका दसवाँ हिस्सा भिन्न (कसर) के साथ लें, और यही (६) वह है जिस पर उन दोनों ने अपने इस कथन के साथ कार्य किया 'तो जो सही हो आदि' और इसी कारण सिराज ने पंद्रह और पाँचवें के वर्ग में कहा कि उसका तिहाई लगभग ७७ है। और यदि उसने केवल सही (पूर्णांक) हिस्सा लिया होता, तो उसका तिहाई बिल्कुल सही होता। और नूह ने पंद्रह और चौथाई के वर्ग में कहा कि उसका तिहाई आधा ज़िरा और आठवें का छठा हिस्सा और उसका दसवाँ और एक चौथाई और दसवें के आठवें का आधा है। और वह केवल भिन्न को ध्यान में रखते हुए है। और दूसरा, केवल सही (पूर्णांक) पर कार्य करना। तो पहले के अनुसार, ७७.६० का वर्ग, उसका तिहाई और दसवाँ ७७ और ०.१३ है। उनका योग १००.७ है, और यह दस से अधिक है, और १५.२५ का वर्ग = २३२.५६२५, उसका तिहाई ५२०.८३ है और दसवाँ...

मैं कहता हूँ कि यह ३६ ज़िरा के सुदुस के छठे हिस्से तक भी नहीं पहुँचता, जैसा कि आप जल्द ही जान लेंगे। और "श" ने 'अव' के संस्करण को सही माना। मैं कहता हूँ: इस मामले में 'व' वाला संस्करण भी कुछ हद तक सही हो सकता है, हालाँकि ऐसा नहीं है। उन्होंने इसे अभिव्यक्ति के अंतर के कारण माना है, क्योंकि नूह ने चौथाई से व्यक्त किया जबकि सिराज और शरुन्बुलाली ने पाँचवें

हिस्से से। उन्होंने इन दोनों का अनुसरण करते हुए पाँचवें हिस्से को चुना और यह कहा कि क्षेत्रफल सौ ज़िरा और थोड़ा अधिक है, जो एक ज़िरा के दसवें हिस्से तक नहीं पहुँचता।

मैं कहता हूँ: ऐसा नहीं है, बल्कि यह मात्रा उससे अधिक हो जाती है जैसा कि आप जल्द ही देखेंगे। उन्होंने कहा: जब इसे चौथाई के रूप में व्यक्त किया जाए, तो यह लगभग एक चौथाई ज़िरा होगा। मैं कहता हूँ: यह इसके तीन-चौथाई से भी अधिक होगा। इसका कारण यह है कि "त" ने अफ़ंदी से और "श" ने सिराज से इसके माप का हिसाब यह उद्धृत किया है कि इसके किसी किनारे को स्वयं उसी में गुणा किया जाए, तो जो परिणाम हो उसका तिहाई और दसवाँ हिस्सा इसका माप है।

मैं कहता हूँ: इसमें कुछ बहस है जो आप जान लेंगे। फिर भी इसके प्रयोग के दो तरीके हैं, पहला यह कि वर्ग का तिहाई और दसवाँ हिस्सा भिन्न के साथ लिया जाए, और इन दोनों ने इसी पर अमल किया है, साथ ही उनका यह कथन है कि 'जो सही हो आदि'। इसी कारण सिराज ने पंद्रह और पाँचवें के वर्ग में कहा कि उसका तिहाई लगभग ७७ है, और यदि केवल सही हिस्सा लिया जाए...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, 1/132 पृष्ठ 305/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: (۱) بل ولا سدس ۳۶ / مسدس ذراع کما ستعلم وجعل ش نسخة اواصوب اقول: (۲) اذ النسخة الواو حظ من صواب ولیس کذلك وبناها علی الاختلاف في التعبیر فان نوحا عبر بالربع والسراج والشرنبلالی بالخمس واختار تبعالهما الخمس وان المساحة مائة ذراع وشیئ قلیل لا یبلغ عشر ذراع۔ اقول: (۳) بل یبلغه بل یغلبه کما سترى قال وعلی التعبیر بالربع یبلغ نحو ربع ذراع اقول بل (۴) اکثر من ثلثة ارباعه وذلك ان ط عن افندی وش عن السراج نقلا مؤامرة مساحته ان تضرب احد جوانبه في نفسه فماصح اخذت (۵) ثلثه وعشره فهو مساحته اھ اقول: وهذا وان کان فیه ماستعرف فالعمل به علی وجهین الاول ان تأخذ ثلث المربع وعشره مع الکسر وهو (۶) الذی عملا به مع قولهما فما صح الخ ولذا قال السراج في مربع خمسة عشر والخمس ان ثلثه علی التقریب ولو اخذ الصحیح فقط لکان ثلثه تحقیقاً، وقال نوح في مربع خمسة عشر والربع ان ثلثه ونصف ذراع وسدس ثمنه وعشره وربع ونصف ثمن عشر وماذلك الا باعتبار الکسر والثانی العمل علی ماصح فقط فعلی الاول مربع ۶۰ء۷۷ ثلثه وعشره ۰۱۳ء۷۷ مجموعهما ۱۰۰ء۷ وهو اکثر من العشر و مربع ۱۵ء۲۵= ۲۳۲ء۵۶۲۵ ثلثہ ۸۳ء۵۲۰ وعشره

میں کہتا ہوں بلالہ ذراع کے سدس کے چھٹے کو بھی نہیں پہنچتا جیسا کہ آپ عنقریب جان لیں گے اور "ش" نے اوکے نسخہ کو درست قرار دیا، میں کہتا ہوں اس صورت میں واو کا نسخہ بھی کچھ صحیح ہوسکتا ہے، حالانکہ ایسا نہیں ہے، اور انہوں نے اس کا مبنی تعبیر کے اختلاف کو قرار دیا ہے کیونکہ نوح نے چوتھائی سے تعبیر کیا اور سراج اور شرنبلالی نے پانچویں سے تعبیر کیا، اور خمس کو ان دونوں کی متابعت میں مختار قرار دیا اور یہ کہ مساحت سو ذراع اور قدرے ہے جو ایک ذراع کے دسویں تک نہیں پہنچتی ہے۔

میں کہتا ہوں ، ایسا نہیں ہے بلکہ یہ مقدار اس سے زائد ہو جاتی ہے جیسا کہ آپ عنقریب دیکھ لیں گے، فرمایا جب اس کو چوتھائی سے تعبیر کیا جائے تو یہ تقریباً چوتھائی ذراع ہوگا۔ میں کہتا ہوں اس کے تین چوتھائی سے بھی زائد ہوگا اور اس کی وجہ یہ ہے کہ "ط" نے آفندی سے اور "ش" نے سراج سے اس کی پیمائش کا حساب یہ نقل کیا کہ اس کے کسی کنارے کو خود اُسی میں ضرب دی جائے تو جو جواب ہو اس کا تہائی اور دسواں اس کی پیمائش ہے اھ

میں کہتا ہوں اس میں کچھ بحث ہے جو آپ جان لیں گے پھر بھی اس کا عمل دو طریقوں پر ہے، پہلا تو یہ ہے کہ مربع کا تہائی اور دسواں مع کسر کے لیا جائے، اور اسی پر ان دونوں نے عمل کیا ہے، ساتھ ہی ان کا یہ قول ہے فما صح الخ اور اس لئے سراج نے پندرہ اور پانچویں کے مربع میں فرمایا کہ اس کا تہائی تقریباً ۷۷ ہے، اور اگر صرف صحیح لیا جائے

---

1 ردالمحتار باب المیاہ ۱/ ۱۳۲ صفحہ 305 از 711

(Right Column): So its investigative third will be, and Nuh said regarding the square of fifteen and a quarter that its third is 77, and half a cubit and an eighth of a cubit's sixth is there, and its tenth is 23 and half of the eighth of the fourth and tenth, and this can only be in terms of fractions, and the second operation is according to correctness. Thus, in the first case, the square of 15.25 = 232.5625. Its third is 77.52083, and its tenth is 23.25625. The sum of these two is 100.7708, which is more than 75. And according to the second explanation, 231/3 = 77 and its tenth is 23.1, so the sum of these two is 100.1, which becomes the tenth. And 232/3 = 77.3 and its tenth is 23.2, the sum of these two is 100.5, which is half, rather more, because 3 is recurring.

Then I say: the investigation is that the fraction is less than a fifth but is expressed as a fifth because the difference is very small. Let this be an equilateral triangle, for the discussion is about it, as is clear from the statement in Ad-Durr regarding this matter.

[Diagram of an equilateral triangle with height 'a-ayn']

You have already heard that if it is like this from every side, then its every angle is one-sixth of the circle, and the measurement of every triangle is half of the product of its height and base. And the base here...

(Left Column): 23.25625 their sum is 100.7708, which is more than 75. And according to the second, 231/3 = 77 and its tenth is 23. their sum is 100. Thus, it reached the tenth. And 232/3 = 77 and its tenth is 23.2. Their sum is 100.5, which is half, rather more because it's recurring.

Then I say: Investigation shows that the fraction is less than one-fifth, expressed so due to the very small difference. Let it be an equilateral triangle as mentioned...

[Diagram of an equilateral triangle with height 'a-ayn']

I heard from the saying of Ad-Durr: from every side so every angle of it is one-sixth of the revolution and the area of every triangle is half of the product of the height and base which is here like all other sides. We drew height 'a-ayn' on 'b-j'. So in the right-angled triangle 'a-ayn-j', 'a-j' : 'a-ayn' :: sine 60. Let us name 'a-j' as side 'da' and 'a-ayn' as height 'am'. That sine is lower because it is the sine of one-sixth (60 degrees). So by proportion, 'da' * sin = 'am'. Since 1/2 'da' * 'am' = 100, then 'da'^2 * sin = 200, rather 'da'^2 = sin / 200... [mathematical calculations follow].

(दायाँ स्तंभ): तो इसका तिहाई तहकीकी (तथ्यात्मक) होगा, और नूह ने पंद्रह और चौथाई के वर्ग के बारे में कहा कि उसका तिहाई ७७ है, और आधा हाथ और आठवें हिस्से का छठा हिस्सा है और उसका दसवाँ हिस्सा २३ है और चौथाई और दसवें के आठवें का आधा है, और यह केवल भिन्न (fraction) के संदर्भ में हो सकता है, और दूसरा कार्य केवल सत्यता के अनुसार है। तो पहली स्थिति में, वर्ग १५.२५ = २३२.५६२५। इसका तिहाई ७७.५२०८३ है, और इसका दसवाँ हिस्सा २३.२५६२५ है। इन दोनों का योग १००.७७०८ है जो ७५ से अधिक है। और दूसरे विवरण के अनुसार, २३१/३ = ७७ है और इसका दसवाँ हिस्सा २३.१ है और इन दोनों का योग १००.१ है तो दसवाँ हो गया और २३२/३ = ७७.३ है और इसका दसवाँ हिस्सा २३.२ है, इन दोनों का योग १००.५ है और वह आधा है बल्कि अधिक है क्योंकि ३ आवर्ती (recurring) है।

फिर मैं कहता हूँ कि तहकीक (जाँच) यह है कि भिन्न पंचमांश (१/५) से कम है लेकिन इसे पंचमांश के रूप में व्यक्त किया जाता है क्योंकि इसमें अंतर बहुत कम है। मान लीजिए कि यह एक समबाहु त्रिभुज है, क्योंकि चर्चा उसी के बारे में है, जैसा कि अद-दुर्र के कथन में इस बारे में है...

[ऊंचाई 'अ-ऐन' के साथ एक समबाहु त्रिभुज का चित्र]

आप सुन ही चुके हैं कि यदि हर तरफ से ऐसा ही हो तो उसका हर कोण वृत्त का छठा हिस्सा है और हर त्रिभुज का क्षेत्रफल उसके लंब और आधार के गुणनफल का आधा है और यहाँ आधार...

(बायाँ स्तंभ): २३.२५६२५ उनका योग १००.७७०८ है जो ७५ से अधिक है। और दूसरे के अनुसार २३१/३ = ७७ और उसका दसवाँ हिस्सा २३। उनका योग १०० है। अतः यह दसवें तक पहुँच गया। और २३२/३ = ७७ और उसका दसवाँ हिस्सा २३.२। उनका योग १००.५ है जो आधा है, बल्कि अधिक है क्योंकि यह आवर्ती है।

फिर मैं कहता हूँ: तहकीक से पता चलता है कि भिन्न १/५ से कम है, बहुत कम अंतर के कारण ऐसा व्यक्त किया गया है। इसे समबाहु त्रिभुज मान लें जैसा बताया गया है...

[ऊंचाई 'अ-ऐन' के साथ एक समबाहु त्रिभुज का चित्र]

मैंने अद-दुर्र के कथन से सुना: हर तरफ से ऐसा ही हो तो उसका हर कोण परिक्रमा का छठा हिस्सा है और हर त्रिभुज का क्षेत्रफल लंब और आधार के गुणनफल का आधा है जो यहाँ अन्य भुजाओं की

तरह है। हमने 'ब-ज' पर लंब 'अ-ऐन' खींचा। तो समकोण त्रिभुज 'अ-ऐन-ज' में 'अ-ज' : 'अ-ऐन' :: ज्या (sine) ६०। मान लीजिए 'अ-ज' भुजा 'द' है और 'अ-ऐन' लंब 'म' है। वह ज्या कम है क्योंकि वह छठे हिस्से (६० डिग्री) की ज्या है। तो समानुपात के अनुसार 'द' * ज्या = 'म'। चूँकि १/२ 'द' * 'म' = १००, तो 'द'^२ * ज्या = २००, बल्कि 'द'^२ = ज्या / २००... [गणितीय गणनाएँ जारी हैं]।

पृष्ठ ३०६ / ७११

(دایاں کالم): تو اس کا ثلث تحقیقی ہوگا، اور نوح نے پندرہ اور چوتھائی کے مربع کی بابت فرمایا کہ اس کا تہائی ۷۷، اور آدھا ذراع اور ثمن ذراع کا سدس ہے اور اس کا عشر ۲۳ اور رُبع اور عشر کے ثمن کا نصف ہے اور یہ کسر ہی کے اعتبار سے ہو سکتا ہے، اور دوسرا عمل صرف صحیح کے مطابق ہے۔ تو پہلی صورت میں مربع ۱۵.۲۵ = ۲۳۲.۵۶۲۵، اس کا ثلث ۵۲۰۸۳ء ۷۷، اور اس کا دسواں ۲۳.۲۵۶۲۵، ان دونوں کا مجموعہ ۷۷۰۸ء ۱۰۰ ہے اور یہ ۷۵ء سے زائد ہے، اور دوسری تقریر پر ۲۳۱/۳ = ۷۷ ہے اور اس کا دسواں ۲۳.۱ ہے اور ان دونوں کا مجموعہ ۱۰۰.۱ تو دسواں ہو گیا اور ۲۳۲/۳ = ۷۷.۳ ہے اور اس کا دسواں ۲۳.۲ ہے ان دونوں کا مجموعہ ۱۰۰.۵ ہے اور وہ آدھا ہے بلکہ زائد ہے کیونکہ ۳ دائر ہے۔

پھر میں کہتا ہوں کہ تحقیق یہ ہے کہ کسر خمس سے کم ہے لیکن خمس سے تعبیر کیا جاتا ہے کیونکہ اس میں تفاوت بہت ہی کم ہے، یہ ایک مثلث ہے اس مثلث کے تمام اضلاع برابر ہیں، کیونکہ کلام اسی میں ہے، در کا کلام اس بابت

[مثلث ا ب ج مع عمود ا ع کی شکل]

آپ سُن ہی چکے ہیں کہ ہر طرف سے ایسا ہی ہو تو اس کا ہر زاویہ دور کا چھٹا ہے اور ہر مثلث کی پیمائش عمود کی مسطح کا نصف ہے اور قاعدہ یہاں

(بایاں کالم): ۲۳.۲۵۶۲۵ مجموعہما ۷۷۰۸ء ۱۰۰ وھو اکثر من ۷۵ء وعلی الثانی ۲۳۱/۳ = ۷۷ وعشرہ ۲۳. مجموعہما ۱۰۰ فقد بلغ العشر و ۲۳۲/۳ = ۷۷ وعشرہ ۲۳.۲ مجموعہما ۵۰ء ۱۰۰

وهو نصف بل اكثر لان دائر. ثم اقول: التحقيق ان الكسر اقل من الخمس يعبر به لقلة التفاوت جدا وليكن مثلثا متساوى الاضلاع اذ فيه الكلام كما

[مثلث ا ب ج مع عمود ا ع كى شكل]

سمعت من قول الدر من كل جانب كذا فكل زاوية منه سدس الدور ومساحة كل مثلث نصف مسطح العمود والقاعدة وهى ههنا مثل سائر الاضلاع اخرجنا على ب ج عمود ا ع ففى مثلث ا ع ج القائم الزاوية ا ح : ا ع :: جيب ٦٠ حه ولنسم ا ح الضلع ض و ا ع عمود عم وذلك الجيب منحطا لكونه جيب السدس جس فبحكم التناسب ض جس = عم وحيث ان ٢/ض عم = ١٠٠ :. ض ٢ جس = ٢٠٠ بل ض ٢ = جس / ٢٠٠ :. ض = جس / ٢٠٠ ولو ٢٠٠ = ٠١٠٣٠٠ ء ٢ ولو جس ٥٣٠٦٧ء ٩٣، احاصل الطرح ٣٦٣٤٩٩٢ء ٢ نصفه ٧١٨١٧٩٧ء ا هذا لوض فهو ١٨١٣٨ء ١٥

صفحه ٣٠٦ از ٧١١

Fatawa Razawiyya Volume Two

Fraction less than 6, then log-sine of log = 1.1192803. This is... log of the perpendicular, so it is 13.7394 then log-sine + log-perpendicular = 2.3010300, we subtracted log 2 from it, 2.0000000 remained, which is exactly log 100, without any addition or subtraction. And by another method for finding 'Zad' (side), since the square of half of a thing is one-fourth of the square of that thing, then according to the 'Arusi' (Pythagorean) theorem: Perpendicular² + Zad²/4 = Zad² ∴ Perpendicular² = 3/4 Zad² ∴ Perpendicular = √3/2 Zad. And since Perpendicular × Zad = 200 ∴ Zad × √3/2 Zad = 200, rather √3/2 Zad² = 200 ∴ Zad² = 200 / (√3/2) ∴ 3 Zad² = 160000, no, Zad² = 160000/3. ∴ Log of dividend 5.02061200 - Log of divisor 0.4771213 = 4.269984 its fourth is 1.481749, which is the same as the first calculation.

I say: And from this, what appeared in the aforementioned measurement's 'Muamara' (consultation) became clear, because its result is that 13/30 Zad² = M, i.e., 13/15 Zad² = 2M. And you have known that Zad × √3/2 Zad = 2M, so they are equal. We divided them by Zad: ∴ 13/15 Zad = √3/2 Zad. ∴ 129/225 Zad² = 3/4 Zad².

(Right Column Urdu Text): It is like all sides. We drew a perpendicular on B-C named A-H. So A-H-C is a right-angled triangle. A-H : C :: A-C : Sine 60°, we named the side A-C as 'Zad' and the perpendicular A-H as 'Aam' (Perpendicular), and it is the sine. Because sine is the sixth part, according to the rule of proportion: Zad × Sine = Perpendicular. And since 12/15 Zad × Perpendicular = 100 ∴ Zad × Sine² = 200, rather Zad² = Sine × 200. ∴ Zad = Sine × 200 / result of the operation. 200 = 2.3010300 and log-sine 1.1935306, the result of operation is 2.334992, half of which is 1.481749, this is 'Log-Sine'. So it is 15.196138 as a fraction less than 6. Then Log-Sine - Log-Cosine = 1.1192803. This is log of the perpendicular, so it is 13.7394. So when we subtracted this log 2, 2.0000000 remained, and this is full 100, there is no increase or decrease in it. And by the second method in inquiring about Zad: that the square of half of anything is one-fourth of its square, so by the Arusi figure: Perpendicular² + 1/4 Zad² = Zad². ∴ Perpendicular² = 3/4 Zad². ∴ Perpendicular = √3/2 Zad. And Perpendicular × Zad = 200. ∴ Zad × √3/2 Zad = 200, rather √3/2 Zad² = 200 ∴ Zad² = 200 / (√3/2) ∴ 3 Zad² = 160000, rather Zad² = 160000/3. ∴ Log of dividend 5.02061200 - Log of divisor 0.4771213 = 4.269984. Its fourth is 1.481749 and this is exactly equal to the first calculation.

(T) I say: And from this, the objection appeared which is the 'Muamara' of the aforementioned measurement, because its result is that 13/30 Zad² = M, meaning

13/15 Zad^2 = 2M. And you have known that Zad × √3/2 Zad = 2M. Those two parts are equal which we divided by Zad: ∴ 13/15 Zad = √3/2 Zad.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

अंश 6 से कम, फिर लॉग साइन लॉग = 1.1192803। यह... लॉग लम्ब (perpendicular), तो यह 13.7394 है, फिर लॉग साइन + लॉग लम्ब = 2.3010300, हमने इसमें से लॉग 2 घटाया, तो 2.0000000 बचा, जो कि ठीक लॉग 100 है, बिना किसी वृद्धि या कमी के। और 'ज़ाद' (भुजा) ज्ञात करने के दूसरे तरीके में, चूँकि किसी वस्तु के आधे का वर्ग उस वस्तु के वर्ग का एक-चौथाई होता है, तो 'अरूसी' (पायथागोरस) प्रमेय के अनुसार: लम्ब² + ज़ाद²/4 = ज़ाद² ∴ लम्ब² = 3/4 ज़ाद² ∴ लम्ब = √3/2 ज़ाद। और चूँकि लम्ब × ज़ाद = 200 ∴ ज़ाद × √3/2 ज़ाद = 200, बल्कि √3/2 ज़ाद² = 200 ∴ ज़ाद² = 200 / (√3/2) ∴ 3 ज़ाद² = 160000, नहीं, ज़ाद² = 160000/3। ∴ भाज्य का लॉग 5.02061200 - भाजक का लॉग 0.4771213 = 4.269984 इसका चौथा हिस्सा 1.481749 है, जो पहले हिसाब के समान है।

अकौल (मैं कहता हूँ): और इससे वह बात स्पष्ट हुई जो उल्लेखित माप के'मुआमरा' (परामर्श) में है, क्योंकि इसका परिणाम यह है कि 13/30 ज़ाद² = म, यानी 13/15 ज़ाद² = 2म। और आप जान चुके हैं कि ज़ाद × √3/2 ज़ाद = 2म, तो वे दोनों बराबर हैं। हमने उन्हें ज़ाद से विभाजित किया: ∴ 13/15 ज़ाद = √3/2 ज़ाद। ∴ 129/225 ज़ाद² = 3/4 ज़ाद²...

(दाहिनी ओर उर्दू अनुभाग): यह सभी भुजाओं के समान है। हमने 'ब-ज' पर एक लम्ब निकाला जिसका नाम 'अ-अ' है। तो 'अ-ह-ज' एक समकोण त्रिभुज है। अ-ह : ज :: अ-ज : साइन 60°, हमने भुजा 'अ-ज' का नाम 'ज़ाद' रखा और लम्ब 'अ-ह' का नाम 'आम' (लम्ब) रखा, और वह साइन है। क्योंकि साइन छठा हिस्सा है, अनुपात के नियम के अनुसार: ज़ाद × साइन = लम्ब। और चूँकि 12/15 ज़ाद × लम्ब = 100 ∴ ज़ाद × साइन² = 200, बल्कि ज़ाद² = साइन × 200। ∴ ज़ाद = साइन × 200 / क्रिया का फल। 200 = 2.3010300 और लॉग साइन 1.1935306, क्रिया का फल 2.334992 है, जिसका आधा 1.481749 है, यह 'लॉग-साइन' है। तो यह 15.196138 अंश 6 से कम है। फिर लॉग-साइन - लॉग-कोसाइन = 1.1192803। यह लम्ब का लॉग है, इसलिए यह 13.7394 है। तो जब हमने इस लॉग 2 को घटाया, तो 2.0000000 बचा, और यह पूरा 100 है, इसमें कोई कमी या बेशी नहीं है। और ज़ाद ज्ञात करने के दूसरे तरीके में: कि किसी भी वस्तु के आधे का वर्ग उसके वर्ग का एक-चौथाई होता है, इसलिए अरूसी आकृति (पायथागोरस) से: लम्ब² + 1/4 ज़ाद² = ज़ाद²। ∴ लम्ब² = 3/4 ज़ाद²। ∴ लम्ब = √3/2 ज़ाद। और लम्ब × ज़ाद = 200। ∴ ज़ाद × √3/2 ज़ाद = 200, बल्कि √3/2 ज़ाद² = 200 ∴ ज़ाद² = 200 / (√3/2) ∴ 3 ज़ाद² = 160000,

बल्कि ज़ाद² = 160000/3। ∴ भाज्य का लॉग 5.2061200 - भाजक का लॉग 0.4771213 = 4.269984। इसका चौथा हिस्सा 1.481749 है और यह बिल्कुल पहले हिसाब के बराबर है।

(त) मैं कहता हूँ: और इसी से वह आपत्ति (ऐतराज़) प्रकट हुई जो उक्त माप का मुआमरा है, क्योंकि इसका निष्कर्ष यह है कि 13/30 ज़ाद² = म, यानी 13/15 ज़ाद² = 2म। और आपने जान लिया कि ज़ाद × √3/2 ज़ाद = 2म। वे दोनों भाग बराबर हैं जिन्हें हमने ज़ाद पर विभाजित किया: ∴ 13/15 ज़ाद = √3/2 ज़ाद।

पृष्ठ 307 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

کسر اقل من ۶ ثُم لُوض لوجس = ۱۱ء۹۲۸۰۳ اھذا لوعم فھو ۱۳ء۷۳۹۴ثم لُوض + لوعم = ۲ء۳۰۱۰۳۰۰ طرحنا منہ لو ۲ بقی ۲ء۲۰۰۰۰۰۰ وھو لو ۱۰۰ تماماً من دون زیادۃ ولا نقص وبوجہ آخر فی استعلام ض حیث ان مربع نصف الشیئ ربع مربع الشیئ فبالعروسی عم ۲ + ض ۲/۴ = ض ۲ :. عم ۲ = ۳/۴ ض ۲ :. عم = ۳/۲ ض ۲ وکان عم ض = ۲۰۰ :. ض ۳/۲ ض ۲ = ۲۰۰ بل ۳/۲ ض = ض/ ۲۰۰ :. ۳/۲ ض ۲ = ض ۲/ ۲۰۰۰۰ :. ۳ض ۲ = ۶۰۰۰۰ ابل ض ۲ = ۱۶۰۰۰۰/۳ :. لوالمقسوم ۵۰۲۰۶۱۲۰۰ - لوالمقسوم علیہ ۰ء۷۷۱۲۱۳ = ۴ء۲۶۹۹۸ ربعہ ۱ء۴۸۱۷۴۹ مثل الحساب الاول سواء۔ اقول: وبہ ظھرما فی مؤامرۃ المساحۃ المذکورۃ اذ حاصلہ ان ۱۳/۳۰ ض ۲ = م ای ۱۳/۱۵ ض ۲ = ۲ م وقد علمت ان ض ۳/۲ ض ۲ = ۲ م فھما متساویان قسمناھما علی ض :. ۱۳/۱۵ ض = ۳/۲ ض ۲ :. ۱۲۹/۲۲۵ ض ۲ = ۳/۲ ض ۲ :.

تمام اضلاع کی مثل ہے ہم نے ب ج پر ایک عمود نکالا جس کا نام ا ع ہے تو ا ح ج زاویہ قائمہ والا ہے ا ح : ع :: ا ع : جیب ۶۰ حہ ، ا ح ضلع کا نام ہم نے ض رکھا اور ا ع عمود کا عم رکھا اور وہ جیب گر رہا ہے، کیونکہ جیب چھٹا جس ہے تو تناسب کے قاعدہ سے ض جس = عم ہے اور چونکہ ۱۲/۱۵ ض عم = ۱۰۰ :. ض جس ۲ = ۲۰۰ ہے بلکہ ض ۲ = جس ۲۰۰ :. ض = جس ۲۰۰/ طرح کا حاصل ۲۰۰ = ۲ء۳۰۱۰۳۰۰ ولو جس ۱ء۱۹۳ء۵۳۰۶ طرح کا حاصل ۲ء۳۳۴۹۹۲ ہو جس کا آدھا ۱ء۴۸۱۷۴۹ یہ لُوض ہے تو وہ ۱۵ء۱۹۶ء۱۳۸ بطور کسر ۶ سے کم ہے، پھر لُوض _ لوجس = ۱۱ء۹۲۸۰۳ء ایہ لو عم ہے تو وہ ۱۳ء۷۳۹۴ء ہے تو ہم نے اس لو ۲ کو کم کیا تو ۲۰۰۰۰۰۰۰ بچا اور یہ پورا ۱۰۰ ہے، اس میں کوئی کمی بیشی نہیں، اور دوسرے طریقے پر ض کے استعلام میں، کہ کسی چیز کا آدھا مربع اس چیز کے مربع کا چوتھائی ہوتا ہے

تو شکل عروسی سے عم ۲ + ۱/۴ ض ۲ = ض ۲ :. عم ۲ = ۳/۴ ض ۲ :. عم = ۳/۲ ض ۲ اور عم ض = ۲۰۰ :. ض ۳/۲ ض ۲ = ۲۰۰ بلکہ ۳/۲ ض ۲ = ض/ ۲۰۰ :. ۳/۲ ض ۲ = ض ۲۰۰۰۰/ ۲ :. ۳ ض ۲ = ۱۶۰۰۰۰ بلکہ ض ۲ = ۱۶۰۰۰۰/۳ :. لو مقسوم ۵۰۲۰۶۱۲۰۰ - لو مقسوم علیہ ۰ء۷۷۱۲۱۳ = ۴ء۲۶۹۹۸ اس کا ربع ۱ء۴۸۱۷۴۹ اور یہ بالکل پہلے حساب کے مساوی ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اور اسی سے وہ اعتراض ظاہر ہوا جو مذکورہ پیمائش کا موامرہ ہے کیونکہ اس کا حاصل یہ ہے کہ ۳۰/۱۳ ض ۲ = م یعنی ۱۵/۱۳ ض ۲ = ۲ م اور تو نے جان لیا کہ ض ۴/۳ ض ۲ = ۲ م وہ دونوں قسمیں مساوی ہیں جن کو ہم نے ض پر تقسیم کیا :. ۱۵/۱۳ ض = ۳/۲ ض ۲

Fatawa Razawiyya Volume 2

4/6/6 .. ²ض 3/2 = ²ض 169/225 : 231 ای ان محال هو و ض , ²ض 6/5 = ²ض 6/6 = ²ض ²ض 6/5 = ²ض and it is impossible, meaning 231 and 232. Yes, there is no harm in estimation, and this is specific to the type of triangle we mentioned.

232 = 0 عام ذکرنا ما و المثلث من القسم بهذا یختص و التخمین فی به لاباس نعم Is it general?

Then I say: What was mentioned regarding the area of a triangle is based on the reliable opinion of considering area alone. As for (1) the other opinion which considers two extensions, it is necessary that each side be more than twenty-one and a half cubits (zira) with a small fraction approximately one twenty-first part of a cubit. This is because it is necessary for a square of ten to fall within the triangle, as you have known in the case of a circle. Let 'e h' be the square. We have drawn on 'e l' for example, a triangle 'e b h' with equal sides. And we extended 'b e h' until they met at 'a' and we extended 'b h r h' until they met at 'h'. Thus, triangle 'a b h' is formed, which is desired.

[Geometrical Diagrams]

Triangle 'a b h' is the desired one. As for the meeting, when we connected 'b h', the angle 'b h r' became a part of the right angle 'h h r', and the angle 'a b h' became a part of 'a b h' which is two-thirds of a right angle. Thus, they emerged from less than two right angles. As for triangle 'a b h' being the required one, it is because the two angles 'h e a' and 'h h' are equal by the 'Mamuni' principle. By dropping the two right angles 'h e r' and 'h h', 'r e a' and 'h' remain equal. In these two triangles, the angles at 'r u h' are right angles and the sides 'r e' and 'h' are equal, so the angle 'a u h'...

Regarding the meeting: when we connected 'b h', the angle 'b h r' became a part of the right angle 'h h r', and the angle 'a b h' became a part of 'a b h' which is two-thirds of a right angle. This is because these are less than two right angles. And triangle 'a b h' is the required one because the two angles 'h e a' and 'h h' are equal by the 'Mamuni' principle. So, after dropping the two right angles 'e r' and 'h h', 'r e a' and 'h' are both equal, and in both of these...

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

4/ض ,²ض 6/5 = ²ض 6/6 = ²ض व हुवा मुहाल अई अन 231 : 169/225 3/2 = ²ض ²ض 6/5 = ²ض 6/6 .. ²ض और यह असंभव है, यानी 231 और 232। हाँ, अनुमान में कोई हानि नहीं है, और यह उस प्रकार के त्रिभुज के लिए विशिष्ट है जिसका हमने उल्लेख किया है।

232 = 0 نعم لاباس به فی التخمین و یختص بهذا القسم من المثلث و ما ذکرنا عام क्या वह सामान्य है?

फिर मैं कहता हूँ: त्रिभुज के क्षेत्रफल के संबंध में जो उल्लेख किया गया है, वह केवल क्षेत्रफल को महत्व देने वाले विश्वसनीय मत पर आधारित है। जहाँ तक (1) दूसरे मत का प्रश्न है जिसमें दो विस्तारों को महत्व दिया जाता है, तो प्रत्येक भुजा साढ़े इक्कीस हाथ (ज़िरा) से कुछ अधिक होनी चाहिए, जो एक हाथ के इक्कीसवें भाग के लगभग हो। इसका कारण यह है कि त्रिभुज में दस का वर्ग समाहित होना आवश्यक है, जैसा कि आपने वृत्त के संबंध में जाना है। मान लीजिए 'इ ह' वह वर्ग है। हमने 'इ ल' पर उदाहरण के लिए एक समबाहु त्रिभुज 'इ ब ह' बनाया और 'ब इ ह' को तब तक बढ़ाया जब तक कि वे 'अ' पर न मिल गए, और 'ब ह र ह' को तब तक बढ़ाया जब तक कि वे 'ह' पर न मिल गए। इस प्रकार त्रिभुज 'अ ब ह' बन गया जो अभीष्ट था।

[ज्यामितीय चित्र]

त्रिभुज 'अ ब ह' अभीष्ट है। जहाँ तक मिलने का संबंध है, जब हमने 'ब ह' को जोड़ा, तो कोण 'ब ह र' समकोण 'ह ह र' का एक भाग बन गया, और कोण 'अ ब ह' कोण 'अ ब ह' का भाग बन गया, जो समकोण का दो-तिहाई है। इस प्रकार, वे दो समकोणों से कम से उभरे। जहाँ तक त्रिभुज 'अ ब ह' के आवश्यक होने का प्रश्न है, ऐसा इसलिए है क्योंकि 'ममुनी' सिद्धांत द्वारा दोनों कोण 'ह इ अ' और 'ह ह' बराबर हैं। दो समकोणों 'ह इ र' और 'ह ह' को छोड़ने पर, 'र इ अ' और 'ह' बराबर रहते हैं। इन दोनों त्रिभुजों में, 'र उ ह' के कोण समकोण हैं और भुजाएँ'र इ' और 'ह' बराबर हैं, इसलिए कोण 'अ उ ह'...

मिलने के संबंध में: जब हमने 'ब ह' को जोड़ा, तो कोण 'ब ह र' समकोण 'ह ह र' का भाग बन गया, और कोण 'अ ब ह', 'अ ब ह' का भाग बन गया, जो समकोण का दो-तिहाई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये दो समकोणों से कम हैं। और त्रिभुज 'अ ब ह' अभीष्ट है क्योंकि 'ममुनी' सिद्धांत द्वारा दो

कोण 'ह इ अ' और 'ह ह' बराबर हैं। अत; दो समकोणों 'इ र' और 'ह ह' को हटाने के बाद, 'र इ अ' और 'ह' दोनों बराबर हैं, और इन दोनों में...

पृष्ठ 711 में से 308

فتاوی رضویہ جلد ثانی

۴/ض ۲ = ۶/۶ ض ۲ = ۶/۵ ض ۲، ض و ھو محال ای ان ۲۳۱ : ۱۶۹/۲۲۵ ض ۲ = ۳/۲ ض ۲ .. ۶/۶ ض ۲ = ۶/۵ ض ۲ اور وہ محال ہے یعنی ۲۳۱ اور ۲۳۲۔ ہاں تخمینہ میں کوئی مضائقہ نہیں اور یہ مثلث کی اس قسم کے ساتھ خاص ہے جو ہم نے ذکر ۲۳۲ = ۰ نعم لاباس بہ فی التخمین و یختص بھذا القسم من المثلث و ما ذکرنا عام کیا وہ عام ہے،

ثم اقول : ھذا الذی ذکر فی مساحۃ المثلث انما یبتنی علی القول المعتمد من اعتبار المساحۃ وحدھا اما (۱) علی القول الآخر من اعتبار الامتدادین فلابد ان یکون کل ضلع اکثر من احد و عشرین ذراعا و نصف ذراع بکسر قریب جزء من احد و عشرین جزء من ذراع و ذلك لانہ یجب وقوع مربع عشر فی المثلث کما علمتہ فی الدائرۃ فلیکن ع ح المربع رسمنا علی ع لامنـہ مثلا مثلث ع ب ہ متساوی الاضلاع و اخرجنا ب ع ح حتی التقیـا علی ا و اخر جنا ب ہ رح حتی التقیـا علی ح پھر میں کہتا ہوں مثلث کی پیمائش میں جو انہوں نے ذکر کیا ہے قول معتمد پر مبنی ہے کہ صرف پیمائش کا اعتبار کیا جائے، اور دوسرا قول جس میں دو امتدادوں کا اعتبار ہے تو اس میں یہ ضروری ہے کہ ہر ضلع میں ساڑھے اکیس ذراع پر کچھ کسر زائد ہو جو ذراع کے اکیسویں جزء کے لگ بھگ ہو گی، اس کی وجہ یہ ہے کہ دس کے مربع کا مثلث میں ہونا ضروری ہے جیسا کہ آپ نے دائرہ میں جانا، تو اب ع ح کا مربع ہم نے ء پر کھینچا مثلاً مثلث ء ب ہ جس کے اضلاع برابر ہوں اور ہم نے ب ء ح ر نکالا یہاں تک کہ وہ دونوں اوپر ملے، ہم نے ب ہ رح نکالا یہاں تک کہ وہ دونوں ح پر ملے تو مثلث اب ح کا بنا وہی مطلوب ہے،

[ہندسی شکلیں]

فمثلث ا ب ح هو المطلوب اما الالتقاء فلانا اذا وصلنا ب ح كانت زاوية ب ح ر جزء قائمة ه ح ر و زاوية اب ح جزء ا ب ه ثلثى القائمة فقد خرجا من اقل من قائمتين و اما ان ا ب ح المثلث المطلوب فلان زاويتى ه ء ا ، ه ح متساويتان بالمامونى فباسقاط قائمتى ه ء ر ، ه ح تبقى ر ء ا ، ح متساويتين وفى هذين المثلثين زاويتا روح قائمتان و ضلعا ر ء، ح متساويان فزاويت ا وح جہاں تک ملنے کا تعلق ہے تو جب ہم نے ب ح کو ملایا تو ب ح ر کا زاویہ ہ ح ر کے زاویہ قائمہ کا جزء ہوا، اور ا ب ح کا زاویہ ا ب ہ کا جزء ہوا، جو قائمہ کا دو ثلث ہے، کیونکہ یہ دونوں قائموں سے اقل ہے، اور ا ب ح کا مثلث مطلوب ہے کیونکہ ہ ء ا ، ہ ح کے دونوں زاویے مامونی سے مساوی ہیں تو ء ر ، ہ ح کے دونوں قائموں کو ساقط کرنے کے بعد ر ء ا ، ح دونوں مساوی ہیں اور ان دونوں

Fatawa Razawiyya Volume II

[Left Column - Arabic/Urdu mixed text] They are equal (from the first principles). Since 'B Th [T]' is a right angle and the sum is like two right angles (from them), then all are equal. And in a shorter way, since 'B H D' is two-thirds of a right angle and 'H D H' completes it to two right angles (from them), then by dropping the right angle 'H' from it, 'H H H' remains one-third of a right angle. By dropping it along with the right angle 'H' from triangle 'H H H', 'H' remains which is two-thirds of a right angle. And similarly for the three angles, they are equal, so the three sides are also equal, otherwise the angles would differ (from them). Thus, triangle 'A B H' passing through the four angles of the square has equal sides, and that is what we intended. And in triangle 'H H H' with a right angle, H:C :: H: sine of one-sixth, and 'H H' by hypothesis: 0000000, 1-5306793 = 0624692, 1 which is log 'D'. This is the value of 'H H'. And 'B H' was 10, therefore 'B H' [is] ... and that is what we intended. And Allah Almighty knows best. May Allah send blessings and peace upon our leader and master Muhammad, and his family and companions, forever. Amen. And praise be to Allah, Lord of the worlds.

[Right Column - Urdu translation/explanation] In the triangles, both angles of the arc are right angles, and both sides of 'R A H' are equal, so both angles of 'A W H' will be equal (from the 26th principle). And since 'B' is two-thirds of one right angle and the sum is like two right angles (from the 132nd principle), all are equal. And for brevity, since 'B H D' is two-thirds of one right angle and 'D H H' which is equal to two right angles (from the 113th principle), by dropping it for the right angle, there remains 'H H H' as one-third of a right angle. By dropping it with the right angle of 'H', from triangle 'H H H', 'H' will remain which is two-thirds of one right angle, and the case is the same for the others. So all three angles are equal, and thus all three sides will be equal, otherwise the angles would be different (from the 18th principle). Now 'H' of the previous triangle will have sides equal to the four angles of the squares, and this was our intention. And since in the right-angled triangle 'H H H', H:C :: H: sine of the sixth, it is 'H' 10 by hypothesis: 0000000, 1-5306793 = 0624692, 1 and this is the logarithm of 11 54 7. This value is 'H H' and 'B H' 10 :. 'B H' 21 7 54, and this was our goal. And Allah Almighty knows best. May Allah send blessings and peace upon our leader and master Muhammad, and his family and companions, forever. Amen. And praise be to Allah, Lord of the worlds. (T)

[Problem Section] Problem 25: 2 Jumada al-Akhira 1334 AH What do the scholars of religion say in this matter: is performing ablution (Wudu) from a river better or from

a pool? Explain and you shall be rewarded. The Answer: Wudu from a river is better, but due to some specific wisdom, the noble scholars state that in front of a Mu'tazilite...

फतावा रज़विया जिल्द द्वितीय

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रित पाठ] वे बराबर हैं (प्रथम सिद्धांतों से)। चूंकि 'ब थ [त]' समकोण है और योग दो समकोणों के समान है (उनमें से), तो सभी बराबर हैं। और संक्षिप्त तरीके से, चूंकि 'ब ह द' एक समकोण का दो-तिहाई है और 'ह द ह' इसे दो समकोणों तक पूरा करता है (उनमें से), तो इसमें से समकोण 'ह' को हटाने पर 'ह ह ह' एक समकोण का एक-तिहाई बचता है। त्रिभुज 'ह ह ह' से समकोण 'ह' के साथ इसे हटाने पर 'ह' शेष रहेगा जो एक समकोण का दो-तिहाई है। और इसी प्रकार तीनों कोणों के लिए, वे बराबर हैं, इसलिए तीनों भुजाएं भी बराबर होंगी, अन्यथा कोण अलग हो जाएंगे (उनमें से)। इस प्रकार वर्ग के चारों कोणों से गुजरने वाले त्रिभुज 'अ ब ह' की भुजाएं बराबर हैं, और यही हमारा उद्देश्य था। और समकोण त्रिभुज 'ह ह ह' में, ह:स :: ह: छठे का ज्या, और परिकल्पना के अनुसार 'ह ह': 0000000, 1-5306793 = 0624692, 1 जो 'द' का लघुगणक (log) है। यह 'ह ह' का मान है। और 'ब ह' 10 था, इसलिए 'ब ह' [है] ... और यही हमारा उद्देश्य था। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। अल्लाह हमारे नेता और स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर हमेशा कृपा और शांति बरसाए। आमीन। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो ब्रह्मांड का पालनहार है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण] त्रिभुजों में चाप के दोनों कोण समकोण हैं, और 'र अ ह' की दोनों भुजाएं बराबर हैं, इसलिए 'अ व ह' के दोनों कोण बराबर होंगे (26वें सिद्धांत से)। और चूंकि 'ब' एक समकोण का दो-तिहाई है और योग दो समकोणों के समान है (132वें सिद्धांत से), तो सभी बराबर हुए। और संक्षेप में, चूंकि 'ब ह द' एक समकोण का दो-तिहाई है और 'द ह ह' जो दो समकोणों के बराबर है (113वें सिद्धांत से), तो समकोण के लिए इसे हटाने से 'ह ह ह' एक समकोण का एक-तिहाई बचता है। इसे 'ह' के समकोण के साथ हटाने से, त्रिभुज 'ह ह ह' से 'ह' शेष रह जाएगा जो एक समकोण का दो-तिहाई है, और अन्य के लिए भी यही स्थिति है। तो तीनों कोण बराबर हैं, और इस तरह तीनों भुजाएं बराबर होंगी, अन्यथा कोण भिन्न हो जाएंगे (18वें सिद्धांत से)। अब पिछले त्रिभुज का 'ह' वर्गों के चारों कोणों के बराबर भुजाओं वाला होगा, और यही हमारा इरादा था। और चूंकि समकोण त्रिभुज 'ह ह ह' में, ह:स :: ह: छठे का ज्या है, वह परिकल्पना से 'ह' 10 है: 0000000, 1-5306793 = 0624692, 1 और यह 11 54 7 का लघुगणक है। यह मान 'ह ह' है और 'ब ह' 10 :. 'ब ह' 21 7 54, और यही हमारा लक्ष्य था। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल और असहाब पर दुरूद और

सलाम भेजे हमेशा के लिए। आमीन। और सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। (त)

[मसला खंड] मसला 25: 2 जमादी-उल-आखिर 1334 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि वज़ू नहर से अफज़ल है या हौज़ से? बयान फरमाएं और सवाब पायें। जवाब: वज़ू नहर से अफज़ल है, मगर किसी खास मसलहत की वजह से। उलेमा-ए-किराम फरमाते हैं कि किसी मोतज़ली के सामने...

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[بائیں کالم کا متن] متساویتان (من اولی الاصول) وحیث ان ب ثـ [ط] قائمة والمجموع کقائمتین (منها) فالکل متساویة وبوجه اخصر حیث ان ب هـ ء ثلثا قائمة و هـ ء ح تمامها الی قائمتین (منها) فباسقاط هـ القائمة منها تبقی ح هـ ح ثلث قائمة فباسقاطها مع ح القائمة من مثلث هـ ح ح تبقی ح ثلثي قائمة وکذلك افالزوایا الثلاث متساویة فکذا الاضلاع الثلاث والا لاختلفت الزاویا (منها) فمثلث ا ب ح المار بزوایا المربع الاربع متساوی الاضلاع وذلك ما اردناه واد فی مثلث هـ ح ح القائم الزاویة هـ ح:ع:: هـ ح: جیب السدس و هـ ح بالفرض: ۰۰۰۰۰۰۰، ۱-۵۳۰۶۷۹۳ = ۰۶۲۴۶۹۲، ۱ وهو لوغارثم ء هذا مقدار هـ ح وقد کان ب هـ ۱۰ :. ب ح ء وذلك ما اردناه والله تعالی اعلم وصلی الله علی سیدنا ومولانا محمد وآله وصحبه وبارك وسلم ابد الامین والحمد لله رب العلمین۔

[دائیں کالم کا متن] مثلثوں میں روح کے دونوں زاویے قائمے ہیں اور ر ع ح کے دونوں ضلعے برابر ہیں تو ا وح کے دونوں زاویے برابر ہوں گے (۲۶ پہلی اصل سے) اور چونکہ ب ایک قائمہ کا دو ثلث ہے اور مجموعہ دو قائموں کی مانند ہے (۱۳۲ اسی اصل سے) تو سب برابر ہوئے اور بطور اختصار چونکہ ب ھ ء ایک قائمہ کا دو ثلث ہے اور ء ھ ح جو دو قائموں کے برابر ہے (۱۱۳ اسی اصل سے) تو ہ کو قائمہ کیلئے ساقط کرنے سے باقی رہتا ہے ح ھ ح ثلث قائمہ کا تو اس کو ح کے قائمہ کے ساتھ ساقط کرنے سے ہ ح ح کے مثلث سے ح باقی رہ جائیگا جو ایک قائمہ کا دو ثلث ہے اور اسی طرح کا حال ہے تو تینوں زاویے برابر ہیں، تو اسی طرح تینوں اضلاع برابر ہوں گے ورنہ زاویے مختلف ہو جائیں گے (۱۸ پہلی اصل سے) تو اب ح کا گزشتہ مثلث مربعوں کے چاروں زاویوں کے ساتھ برابر ضلعوں والا ہو گا اور یہی ہم نے ارادہ کیا تھا اور چونکہ ہ ح ح زاویہ قائمہ والے مثلث میں ہ ح: ع :: ہ ح: جیب چھٹا ہے وہ ح ۱۰ بالفرض:

۰۰۰۰۰۰۰، ۱-۵۳۰۶۷۹۳ = ۰۶۲۴۶۹۲، ۱ اور یہ لوگار تھم ۷ ۵۴ ۱۱ کا ہے یہ مقدار ھ ح اور ب ھ ۱۰ :. ب ھ ۷ ۲۱ ۵۴ اور یہی ہماری مراد تھی واللہ تعالٰی اعلم وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولینا محمد وآلہ وصحبہ وبارك وسلم ابداً امین والحمد للہ رب العالمین۔ (ت)

مسئلہ ۲۵: ۲ جمادی الآخرہ ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ وضو نہر سے افضل ہے یا حوض سے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: وضو نہر سے افضل ہے مگر کسی مصلحتِ خاصہ کے باعث۔ علمائے کرام فرماتے ہیں کسی معتزلی کے سامنے

صفحہ 711 کا 309

Volume 2, Fatawa Razviyya In Fath al-Qadir it is stated: Performing ablution (Wudu) from a pool is superior to annoy them (the Mu'tazilites), as they consider it impermissible.

[Arabic:] In Fawa'id ar-Rustaghfani: Performing Wudu with the water of a pool is better than a river because the Mu'tazilites (footnote marker) do not permit it. | [Urdu:] In Fawa'id ar-Rustaghfani it is stated: Performing Wudu from a pool is better compared to a river because the Mu'tazilites consider Wudu from a pool to be...

[Arabic:] (Footnote marker) In al-Mi'raj, this is based on the 'indivisible particle' concept. Since it is present according to the Ahl al-Sunnah, the parts of impurity will reach a particle that cannot be further divided, so the rest of the pool remains pure. According to the Mu'tazilites, it is non-existent, so all the water would be adjacent to the impurity, making the pool impure according to them. There is an observation in this discourse. The commentator "Sh" in his explanation said that according to philosophers, every body is capable of infinite divisions, so for every part of pure water there is a corresponding part of impurity, and thus parts of impurity would connect with all parts of the water. | [Urdu:] In al-Mi'raj it is stated that this is based on 'juz' la yatajazza' (indivisible particle). Since this exists according to the Ahl al-Sunnah, the parts of impurity will reach such a part that is not divisible, thus the rest of the pool will remain pure. According to the Mu'tazilites, the part is non-existent, therefore all the water will be a neighbor to the impurity, so in their view the pool will be impure. There is a consideration in this discourse. "Sh" in its explanation said that according to philosophers, every body accepts infinite division, so for every part of pure water there will be an impure part opposite it, thus parts of impurity will connect with all parts of the water.

[Arabic:] I say firstly: (1) What a difference between potentiality and actuality! According to them, a body is continuous in actuality, so it only meets what it is in contact with. Secondly: (2) If it were divided, it would not necessarily follow that parts of impurity connect with all parts of water. This is because halving is proportional to the multiples. If the impurity is the size of a finger and the water is a thousand cubits, then its half is half a finger and half of that is five hundred cubits, and so on to infinity. Equality of division does not necessitate equality of the resulting parts between them. Do you not see that the days of eternity and its years are both infinite, yet a day is never equal to a year. These two points are sufficient for justification. | [Urdu:] I say: There is a great difference between potentiality and actuality. According to them, a body is actually continuous, so it will only meet what it

is connected with. And secondly, even if division is performed, it doesn't follow that all parts of impurity connect with all parts of water because halving will be according to the ratio of multiples. For example, if the impurity is the size of one finger and the water is a thousand cubits, then its half is half a finger and its half is five hundred cubits, and so on until infinity. And division...

जिल्द 2, फ़तवा-ए-रज़विया फ़तहुल क़दीर में है: उन्हें (मोतज़िला को) क्रोधित करने के लिए हौज से वज़ू करना अफ़ज़ल है क्योंकि मोतज़िला इसे नाजायज़ कहते हैं।

[अरबी:] फ़वाइदुल रुस्तग़फ़नी में: नहर की तुलना में हौज के पानी से वज़ू करना अफ़ज़ल है क्योंकि मोतज़िला (फुटनोट मार्कर) इसे अनुमति नहीं देते। | [उर्दू:] फ़वाइदुल रुस्तग़फ़नी में है: नहर की तुलना में हौज से वज़ू करना अफ़ज़ल है क्योंकि मोतज़िला हौज से वज़ू को...

[अरबी:] (फुटनोट मार्कर) अल-मेराज में, यह 'जज़ ला यतज़ज़्ज़ा' (अविभाज्य कण) की अवधारणा पर आधारित है। चूँकि अहले सुन्नत के अनुसार यह मौजूद है, इसलिए अशुद्धता के भाग ऐसे कण तक पहुँचेंगे जिसे और विभाजित नहीं किया जा सकता, इसलिए हौज का बाकी हिस्सा पाक रहता है। मोतज़िला के अनुसार, यह मौजूद नहीं है, इसलिए सारा पानी अशुद्धता के समीप होगा, जिससे उनके अनुसार हौज नापाक हो जाएगा। इस प्रवचन में एक अवलोकन है। टीकाकार "श" ने अपनी व्याख्या में कहा कि दार्शनिकों के अनुसार, हर शरीर अनंत विभाजनों में सक्षम है, इसलिए पाक पानी के हर भाग के लिए अशुद्धता का एक संगत भाग होता है, और इस प्रकार अशुद्धता के भाग पानी के सभी भागों से जुड़ जाएंगे। | [उर्दू:] मेराज में है कि यह 'जज़ ला यतज़ज़्ज़ा' पर आधारित है। चूँकि यह अहले सुन्नत के नज़दीक मौजूद है, इसलिए नजासत के हिस्से ऐसे हिस्से तक पहुँचेंगे जो विभाजित नहीं होता है, अतः बाकी हौज पाक रहेगा। मोतज़िला के नज़दीक हिस्सा मौजूद नहीं है, इसलिए सारा पानी नजासत का पड़ोसी होगा, तो उनके नज़दीक हौज नजिस (नापाक) होगा। इस तर्क में विचार की आवश्यकता है। "श" ने इसकी तौजीह में फ़रमाया कि दार्शनिकों के नज़दीक हर जिस्म अनंत विभाजन स्वीकार करता है, इसलिए पाक पानी के हर हिस्से के मुक़ाबले एक नापाक हिस्सा होगा, तो नजासत के हिस्से पानी के सभी हिस्सों के साथ जुड़ जाएंगे।

[अरबी:] मैं पहले कहता हूँ: (1) योग्यता और वास्तविकता में क्या अंतर है! उनके अनुसार, एक शरीर वास्तविकता में निरंतर है, इसलिए वह केवल उसी से मिलता है जिसके वह संपर्क में है। दूसरे: (2) यदि इसे विभाजित किया गया होता, तो यह अनिवार्य रूप से नहीं होता कि अशुद्धता के हिस्से पानी के सभी हिस्सों से जुड़ें। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधा करना गुणकों के समानुपाती रहता है। यदि अशुद्धता एक उंगली के आकार की है और पानी एक हज़ार हाथ है, तो उसका आधा आधी उंगली है और उसका आधा पाँच सौ हाथ है, और इसी तरह अनंत तक। विभाजन की समानता उनके बीच परिणामी हिस्सों की समानता को आवश्यक नहीं बनाती है। क्या आप नहीं देखते कि अनंत काल के दिन और उसके वर्ष दोनों अनंत हैं, फिर भी एक दिन कभी एक वर्ष के बराबर नहीं होता। औचित्य

के लिए ये दो बिंदु पर्याप्त हैं। | [उर्दू:] मैं कहता हूँ: योग्यता और वास्तविकता में बहुत अंतर है। उनके अनुसार, शरीर वास्तव में निरंतर जुड़ा हुआ है, इसलिए वह केवल उसी से मिलेगा जिससे वह जुड़ा हुआ है। और दूसरे, अगर विभाजन भी किया जाए, तो यह लाज़िम नहीं आता कि नजासत के तमाम हिस्से पानी के तमाम हिस्सों से जुड़ें क्योंकि आधा करना गुणकों के अनुपात के अनुसार ही होगा। उदाहरण के तौर पर, नजासत एक उंगली की मात्रा है और पानी हज़ार हाथ है, तो उसका आधा आधी उंगली हुई और उसका आधा पाँच सौ हाथ हुआ और इसी तरह अनंत तक। और विभाजन...

पृष्ठ 310 का 711

جلدثانی فتاوی رضویہ فتح القدیر میں ہے: اُسے غیظ پہنچانے کو حوض سے وضو افضل ہے کہ معتزلہ اسے ناجائز کہتے ہیں۔

فی فوائد الرستغفنی التوضی بماء الحوض افضل من النہر لان المعتزلة عه لایچیزونہ | فوائد الرستغفنی میں ہے نہر کی بہ نسبت حوض سے وضو کرنا افضل ہے کیونکہ معتزلہ حوض سے وضو کو

عه فی المعراج بناء علی جزء لایتجزء فانه عند اهل السنة موجود فتصل اجزاء النجاسة الی جزء لا یمکن تجزئته فیکون باقی الحوض طاهر او عند المعتزلة معدوم فیکون کل الماء مجاورا للنجاسة فیکون الحوض نجسا عندهم وفی هذا التقریر نظر اه قال ش في توضیحه عند الفلاسفة کل جسم قابل لانقسامات غیر متناهیة فلا یوجد جزء من الطاهر الا ویقابله جزء من النجاسة فتصل اجزاء النجاسة بجمیع اجزاء الماء اه | معراج میں ہے یہ جزء لایتجزی پر مبنی ہے، کیونکہ یہ اہل سنت کے نزدیک موجود ہے تو نجاست کے اجزاء ایسے جزء تک پہنچیں گے جو منقسم نہیں ہوتا ہے، تو باقی حوض طاہر رہے گا اور معتزلہ کے نزدیک جزء نہیں ہے اس لئے کل پانی نجاست کا پڑوسی ہوگا، تو ان کے نزدیک حوض نجس ہوگا، اس تقریر میں نظر ہے اھ "ش" نے اس کی توضیح میں فرمایا فلاسفہ کے نزدیک ہر جسم لامتناہی تقسیم کو قبول کرتا ہے تو پاک پانی کے ہر جزء کے مقابل ایک ناپاک جزء ہوگا تو اجزاء نجاست تمام اجزاء پانی کے ساتھ متصل ہو جائیں گے اھ

اقول اولا: (۱) این القابلیة من الفعلیة والجسم عندهم متصل بالفعل فلا یلاقی الامالاقی وثانیا: (۲) لوقسم لم یلزم ایضاً اتصال اجزاء النجاسة بجمیع اجزاء الماء لان الانصاف علی نسبة الاضعاف فاذا کانت النجاسة قدر اصبع والماء الف ذراع فنصفها نصف اصبع وشطره خمسمائة ذراع وهکذا الی مالایتناهی وتساوی التقسیم لایستلزم تساوی الاقسام فیما بینهما الاتری ان ایام الابد و سنیه کلا غیر متناه

والیوم لا یساوی السنة ابدا وکفی بھذین لتوجیه | میں کہتا ہوں قابلیت اور فعلیہ میں بہت فرق ہے، اور جسم ان کے نزدیک متصل بالفعل ہے تو وہ صرف اسی سے ملے گا جس سے ملا ہوا ہے، اور ثانیاً اگر تقسیم بھی کیا جائے تو لازم نہیں آتا کہ نجاست کے تمام اجزاء پانی کے تمام اجزاء سے متصل ہوں کیونکہ انصاف اضعاف کی نسبت کے مطابق ہی ہوگا، مثلاً نجاست ایک انگلی کی مقدار ہے اور پانی ہزار ذراع ہے، تو اس کا نصف آدھی انگلی ہوا اور اس کا آدھا پانچ سو ذراع ہوا اور اسی طرح الی مالانھایۃ تک ہوگا، اور تقسیم

Fatawa Razawiya - Volume Two

...from the ponds without their displeasure by performing ablution from them. End.

(Remaining part of the footnote from the previous page): The observation and its reasoning by 'Sh' with its clarification and summary is that if the issue was based on it, then according to us, only that amount of water would become impure which is equal to the volume of the impurity. Thus, a drop would be against a drop, and half against half. I say: and also, it would follow for the Mu'tazilites, if they held this view, that a vast ocean would become impure by a single drop. He said, however, the famous view is that the disagreement regarding the 'atom' (juz' la yutajazza) is between the Muslims and the philosophers. They (the philosophers) based the eternity of the world and the denial of the resurrection of bodies upon it. The Mu'tazilites did not disagree in any of that, otherwise they would have been declared disbelievers. End. I say: (1) The denial of the 'atom' is not disbelief, nor is a logical consequence of a school of thought necessarily the school's doctrine itself, especially those far-fetched consequences. How many consequences follow from the doctrines of the Mu'tazilites who hold them firmly, yet they are not declared disbelievers. So let this be among them. How then can the report of a reliable person be rejected? Furthermore, (2) it is sufficient for it to be the statement of some of them, just as Allah Almighty said, 'The Jews said, Ezra is the son of Allah.' They said it was spoken by a small group of them... and as he said, therefore, what is better said is that the issue is based on the fact that water becomes impure according to them by proximity (mujawara), whereas according to us, no, but rather by diffusion (sarayan), and that is known by the appearance of its effect in it. So as long as it does not appear, it is not judged as impure. This is what appeared to me, so value it. End. I say: (2) It is explicitly stated in 'al-Badai' that becoming impure by proximity... we have narrated in 'al-Namiqa al-Anqa' that a small amount of water becomes impure simultaneously, not by diffusion, because they, if they do not...

[Urdu column summary]: ...they do not consider it permissible, in this way they will be humiliated. The equality of types does not necessarily follow from the equality of... for example, the days and years of eternity are infinite, and one day can never be equal to one year, and both of these are sufficient as an explanation for the observation. And the explanation that 'Sh' gave for it, its summary with clarification is that if the problem is based on this, then according to us, only as much water will be impure as is equal to the impurity, so one drop will be against one drop and half against its half. I say, if this were the saying of the Mu'tazilites, then it would follow

for them that the entire ocean would become impure by one drop. They said, besides, it is well known that the disagreement in the 'part' (juz') is between the philosophers and the Muslims, and the philosophers have based the eternity of the world and the denial of resurrection on it, and the Mu'tazilites have not opposed any of these things, otherwise they would have been declared infidels. I say, the negation of the 'part' is not disbelief, nor is the logical necessity of a school of thought the school itself, especially these far-fetched necessities. And those who hold the Mu'tazilite school of thought, there are many necessities upon them, but they are not declared infidels. So this necessity should also be among such necessities. So how can the narration of a reliable person be rejected? Besides, it is enough that it be the saying of some, as (continued on the next page).

फ़तावा रज़विया - खंड दो

...तालाबों से उनके वज़ू करने पर उनकी नाराज़गी के बिना। समाप्त।

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग): 'श' का प्रेक्षण और उसका तर्क, उसके स्पष्टीकरण और सारांश के साथ यह है कि यदि मुद्दा इसी पर आधारित होता, तो हमारे अनुसार पानी का केवल वही हिस्सा अशुद्ध होता जो अशुद्धि के आयतन के बराबर होता। इस प्रकार, एक बूंद के बदले एक बूंद, और आधे के बदले आधा। मैं कहता हूँ: और मुअतज़िला के लिए यह भी आवश्यक होगा, यदि वे इस विचार को मानते, कि एक बूंद से एक विशाल सागर अशुद्ध हो जाए। उन्होंने कहा, हालांकि, प्रसिद्ध विचार यह है कि 'अंश' (जुज़ ला युतजज़्ज़ा) के संबंध में असहमति मुसलमानों और दार्शनिकों के बीच है। उन्होंने (दार्शनिकों ने) दुनिया की शाश्वतता और शरीरों के पुनरुत्थान के इनकार को इस पर आधारित किया। मुअतज़िला ने इनमें से किसी भी बात में असहमति नहीं जताई, अन्यथा उन्हें काफ़िर घोषित कर दिया जाता। समाप्त। मैं कहता हूँ: (1) 'अंश' का खंडन कुफ़्र (अविश्वास) नहीं है, न ही किसी विचारधारा का तार्किक परिणाम अनिवार्य रूप से उस विचारधारा का सिद्धांत होता है, विशेष रूप से वे दूरगामी परिणाम। मुअतज़िला के सिद्धांतों से ऐसे कितने ही परिणाम निकलते हैं जिन्हें वे दृढ़ता से मानते हैं, फिर भी उन्हें काफ़िर घोषित नहीं किया जाता है। तो इसे भी उनमें से एक होने दें। फिर एक विश्वसनीय व्यक्ति की रिपोर्ट को कैसे खारिज किया जा सकता है? इसके अलावा, (2) इसके लिए उनके कुछ लोगों का कथन होना पर्याप्त है, जैसा कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा, 'यहूदियों ने कहा, उज़ैर अल्लाह का पुत्र है।' उन्होंने कहा कि यह उनके एक छोटे समूह द्वारा कहा गया था... और जैसा कि उन्होंने कहा, इसलिए, बेहतर यह कहा गया है कि मुद्दा इस तथ्य पर आधारित है कि उनके अनुसार पानी निकटता (मुजावरा) से अशुद्ध हो जाता है, जबकि हमारे अनुसार, नहीं, बल्कि प्रसार (सरायण) से, और वह उसमें उसके प्रभाव के प्रकट होने से ज्ञात होता है। इसलिए जब तक यह प्रकट नहीं होता, उसे अशुद्ध नहीं माना जाता है। यह मुझे प्रतीत हुआ, इसलिए इसे महत्व दें। समाप्त। मैं कहता हूँ: (2) 'अल-बदई' में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि निकटता से अशुद्ध होना... हमने 'अल-नमीका अल-अनका' में वर्णन किया है कि थोड़ी मात्रा में पानी एक साथ अशुद्ध हो जाता है, प्रसार द्वारा नहीं, क्योंकि वे, यदि वे नहीं...

[उर्दू कॉलम सारांश]: ...वे इसे जायज़ नहीं मानते, इस तरह उनकी ज़िल्लत होगी। प्रकारों की समानता से... की समानता आवश्यक नहीं है, उदाहरण के लिए, अनंत काल के दिन और वर्ष अनंत हैं, और एक दिन कभी भी एक वर्ष के बराबर नहीं हो सकता है, और ये दोनों प्रेक्षण के स्पष्टीकरण के

रूप में पर्याप्त हैं। और 'श' ने इसके लिए जो स्पष्टीकरण दिया है, स्पष्टीकरण के साथ उसका सारांश यह है कि यदि समस्या इस पर आधारित है, तो हमारे अनुसार, केवल उतना ही पानी अशुद्ध होगा जितना अशुद्धि के बराबर है, इसलिए एक बूंद एक बूंद के सामने होगी और आधा उसके आधे के सामने। मैं कहता हूँ, अगर मुअतज़िला का यही कहना होता, तो उनके लिए यह आवश्यक होता कि एक बूंद से पूरा समुद्र अशुद्ध हो जाए। उन्होंने कहा, इसके अलावा, यह सर्वविदित है कि 'अंश' (जुज़) में असहमति दार्शनिकों और मुसलमानों के बीच है, और दार्शनिकों ने दुनिया की शाश्वतता और पुनरुत्थान के इनकार को इस पर आधारित किया है, और मुअतज़िला ने इनमें से किसी भी चीज़ का विरोध नहीं किया है, अन्यथा उन्हें काफ़िर घोषित कर दिया जाता। मैं कहता हूँ, 'अंश' का निषेध कुफ़्र नहीं है, न ही किसी पंथ की तार्किक आवश्यकता स्वयं वह पंथ है, विशेष रूप से ये दूरगामी आवश्यकताएं। और जो लोग मुअतज़िली पंथ रखते हैं, उन पर बहुत सी आवश्यकताएं हैं, लेकिन उन्हें काफ़िर घोषित नहीं किया जाता है। इसलिए यह आवश्यकता भी ऐसी आवश्यकताओं में से होनी चाहिए। तो एक विश्वसनीय व्यक्ति के वर्णन को कैसे खारिज किया जा सकता है? इसके अलावा, यह काफी है कि यह कुछ का कहना हो, जैसा कि (अगले पृष्ठ पर जारी)।

من الحیاض غیر غبہم بالوضوء منہا اہـ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گذشتہ) النظر ووجھہ ش بما توضیحہ مع تلخیصہ ان لوبنیت المسألۃ علیہ لماتنجس عندنا من الماء الا ما یساوی النجاسۃ حجما فقطرۃ بقطرۃ ونصفھا بنصفھا-اقول: وایضا یلزم المعتزلۃ لو قالوا بہ تنجیس البحر العظیم بقطرۃ قال علی ان المشھور ان الخلاف فی الجزء بین المسلمین والفلاسفۃ بنوا علیہ قدم للعالم وعدم حشر الاجساد والمعتزلۃ لم یخالفوا فی شیئ من ذلک والاکفروا اہ اقول: (۱) لیس نفی الجزء کفرا ولا لازم المذھب مذھبا لاسیما تلک اللوازم البعیدۃ وکم من لزوم علی مذاھب المعتزلۃ القائلین بھا قطعا ثم لم یکفر وافلیکن ھذا منھا فکیف یرد نقل الثقۃ علی انہ (۲) یکفی فیہ ان یکون قول بعضھم کما قال تعالی قالت الیھود عزیرن ابن اللہ قالوا قالھا طائفۃ قلیلۃ منھم کانت وبأنت قال فالاولٰی ماقیل من بناء المسئلۃ علی ان الماء یتنجس عندھم بالمجاورۃ وعندنا لابل بالسریان وذلک یعلم بظھور اثرھا فیہ فمالم یظھر لا یحکم بالنجاسۃ ھذا ما ظھر لی فأغتنمہ اھـ اقول: (۲) نص فی البدائع ان التنجس بالتجاور رو بینا فی النمیقۃ الانقی ان الماء القلیل یتنجس معالا بالسریان علی (۴) انھم اذلم

جلد ثانی جائز قرار نہیں دیتے ہیں اس طرح ان کی تذلیل ہوگی کی تساوی سے اقسام کی تساوی لازم نہیں آتی ہے، مثلا ابد کے ایام اور سال غیر متناہی ہیں اور ایک دن ہرگز بھی ایک سال کے برابر نہیں ہو سکتا ہے اور یہ دونوں نظر کی توجیہ کو کافی ہیں اور "ش" نے اس کی جو توجیہ کی ہے اس کی تلخیص مع توضیح یہ ہے کہ اگر مسئلہ اسی پر مبنی ہو تو ہمارے نزدیک صرف اتنا ہی پانی نجس ہوگا جتنا کہ نجاست کے مساوی ہے، تو ایک قطرہ ایک قطرہ ہی کے مقابل ہوگا اور نصف اس کے نصف کے مقابل ہوگا۔ میں کہتا ہوں اگر معتزلہ کا یہی قول ہوتا تو ان پر یہ لازم آتا

کہ ایک قطرہ سے پورا سمندر ناپاک ہو جائے، انہوں نے فرمایا علاوہ ازیں مشہور یہ ہے کہ اختلاف جزء میں فلسفیوں اور مسلمانوں کے درمیان ہے، اور فلاسفہ نے اس پر عالم کے قدم اور حشر ونشر کی نفی کی بنیاد رکھی ہے اور معتزلہ نے ان چیزوں میں کسی کی مخالفت نہیں کی ہے ورنہ وہ کافر قرار پاتے اھ میں کہتا ہوں جزء کی نفی کفر نہیں ہے اور نہ ہی لازم مذہب، مذہب ہوتا ہے، خاص طور پر یہ لوازم بعیدہ، اور جو معتزلی مذہب رکھتے ہیں ان پر بہت سے لوازم ہیں، مگر ان کی تکفیر نہیں کی جاتی ہے، سو یہ لازم بھی منجملہ ایسے لوازم کے ہو جائے، تو ثقہ کی نقل کو کیسے رد کیا جائے، علاوہ اس کے اس میں اتنا کافی ہے کہ یہ بعض کا قول ہو، جیسا کہ

(باقی بر صفحہ آیندہ)

Fatawa Rizvia, Volume Two

[Top-Left Box (Arabic)]: "This only indicates the superiority due to this incidental reason. Thus, in a place where [the condition] is not realized, the river is superior. (End)" [Top-Right Box (Urdu)]: "From this, it appears that this is a temporary reason for being superior. Where this reason does not exist, performing ablution from the river would be superior. (T)"

I say: More important than this expediency is the removal of accusation, so that, God forbid, people do not suspect him of following the Mu'tazilites. To prevent this, he should act accordingly. A parallel (1) to this is wiping over the leather socks (Masah 'ala al-Khuffayn), which the Rafidites and Kharijites consider impermissible. If anyone suspects him of deviating from the path because of not wiping, then wiping over the socks is superior for the sake of removing that suspicion; otherwise, in essence, washing the feet is superior. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Middle-Left Box (Arabic)]: "Washing is superior except when there is an accusation, then it [wiping] is superior. -2-" [Middle-Right Box (Urdu)]: "Washing the feet is superior to wiping over the leather socks, but to avoid accusation, wiping is superior. (T)"

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Bottom-Left Box (Arabic)]: "Because the Rafidites and Kharijites do not permit it [wiping on socks], but they only permit [wiping on bare feet]..." [Bottom-Right Box (Urdu)]: "Rafidites and Kharijites wipe on the bare feet. If wiping on socks..."

(Remaining footnote from the previous page) [Arabic Text]: "[If] they do not distinguish between small and large amounts, it logically follows for them that through proximity (mujawarat), a large sea would also become impure by a small spray (2). Thus, the truth according to me is that this is based on the fact that they do not equate a large body of water with flowing water. And Allah the Almighty knows best. (End from him, may his Lord the Almighty protect him). (M)"

[Urdu Text]: The Divine Word is: "The Jews said, 'Uzair is the son of Allah.'" Scholars state that this was the saying of only one group and that sect has since perished. It is better to say that this issue is based on the principle that, according to them, water becomes impure due to proximity (mujawarat), whereas according to us, it is due to penetration (sirayat). The evidence for this is whether its effect appears in the water. Therefore, as long as the effect of impurity is not apparent, the ruling of impurity will

not be applied. This has become clear to me; consider it a gain. I say: This has been explicitly stated in "Bada'i" that the reason for becoming impure is proximity. We have mentioned in "Al-Numaiqa al-Anqa" that a small amount of water becomes impure instantly, not through penetration. Furthermore, they have not differentiated between a small amount and a large amount. It would be necessary for them to say that the water of even a vast ocean becomes impure through proximity, even if it were from just a few splashes. In my view, the truth is that they do not classify a large body of water as flowing water. And Allah the Almighty knows best. (T)

1. (Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible and not permissible, Nooria Razvia Sukkur 1/27)
2. (Durr al-Mukhtar, Chapter: Wiping over Leather Socks, Mujtabai Delhi 1/46)

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

[ऊपरी बाएँ बॉक्स (अरबी)]: "यह केवल इस आकस्मिक कारण से श्रेष्ठता का संकेत देता है। अतः जिस स्थान पर [शर्त] पूरी न हो, वहाँ नदी से वुज़ू करना श्रेष्ठ है। (समाप्त)" [ऊपरी दाएँ बॉक्स (उर्दू)]: "इससे श्रेष्ठ होने का यह एक अस्थायी कारण प्रतीत होता है; जहाँ यह कारण न हो, वहाँ नदी से वुज़ू करना श्रेष्ठ होगा। (त)"

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इस हिकमत (बुद्धिमानी) से अधिक महत्वपूर्ण 'दफ़अ-ए-तोहमत' (आरोप का निवारण) है, ताकि ईश्वर न करे, लोग उसे मुअतज़िला का अनुयायी न समझ लें। इसके निवारण के लिए उसे ऐसा करना चाहिए। इसकी एक नज़ीर (उदाहरण) (1) मसह अल-ख़ुफ़ैन (चमड़े के मोज़ों पर मसह) है, जिसे राफ़िज़ी और ख़ारिजी नाजायज़ समझते हैं। यदि किसी व्यक्ति पर इसके कारण विचलित होने का संदेह हो, तो उस संदेह को दूर करने के लिए मसह करना श्रेष्ठ है, अन्यथा वास्तव में पैर धोना ही श्रेष्ठ है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[मध्य बाएँ बॉक्स (अरबी)]: "पैर धोना श्रेष्ठ है, सिवाय उस स्थिति के जब तोहमत (आरोप) का डर हो, तो यह (मसह) श्रेष्ठ है। -2-" [मध्य दाएँ बॉक्स (उर्दू)]: "मोज़े पर मसह करने की तुलना में पैर धोना श्रेष्ठ है, लेकिन तोहमत से बचने के लिए मसह करना श्रेष्ठ है। (त)"

'रद्दुल मुह्त्तार' में है:

[निचले बाएँ बॉक्स (अरबी)]: "क्योंकि राफ़िज़ी और ख़ारिजी इसे (मोज़ों पर मसह) जायज़ नहीं मानते, बल्कि वे केवल (नंगे पैरों पर मसह) मानते हैं..." [निचले दाएँ बॉक्स (उर्दू)]: "राफ़िज़ी और ख़ारिजी पैरों पर मसह करते हैं। यदि मोज़ों पर मसह..."

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) [अरबी अंश]: "[यदि] वे अल्प (थोड़े) और बहु (अधिक) जल के बीच अंतर नहीं करते हैं, तो उनके लिए सामीप्य (मुजावरत) के कारण यह भी आवश्यक होगा कि एक बड़ा समुद्र थोड़े से छींटों (2) से नापाक हो जाए। इसलिए मेरे अनुसार सत्य यह है कि यह इस बात पर आधारित है कि वे 'कसीर' (अधिक) जल को 'जारी' (बहते हुए) जल के समान नहीं मानते। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (समाप्ति उद्धरण), अल्लाह उसके रक्षक हों। (म)"

[उर्दू अंश]: अल्लाह का फ़रमान है: "यहूदियों ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं।" विद्वान फ़रमाते हैं कि यह केवल एक समूह का कथन था और वह संप्रदाय समाप्त हो गया। कहा गया है कि बेहतर

यह है कि यह मुद्दा इस बात पर आधारित है कि उनके अनुसार जल सामीप्य (मुजावरत) के कारण अशुद्ध हो जाता है, जबकि हमारे अनुसार प्रवेश (सिरायत) के कारण। इसका पता इस बात से चलता है कि उसका प्रभाव पानी में प्रकट होता है। अतः जब तक अशुद्धि का प्रभाव प्रकट न हो, तब तक नापाकी का हुक्म नहीं लगाया जाएगा। यह मुझ पर प्रकट हुआ है, इसे आप एक उपलब्धि समझें। मैं कहता हूँ: 'बदाए' में इसे स्पष्ट किया गया है कि नापाक होने का कारण मुजावरत (सामीप्य) है। और हमने 'अल-नुमैक़ा अल-अनक़ा' में वर्णन किया है कि थोड़ा सा पानी तुरंत नापाक हो जाता है, न कि सिरायत (प्रवेश) से। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अल्प और बहु जल में अंतर नहीं किया है। उन पर यह लाज़िम (अनिवार्य) है कि वे कहें कि एक विशाल समुद्र का पानी भी मुजावरत से नापाक हो जाता है, चाहे वह केवल कुछ छींटों से ही क्यों न हो। मेरे निकट सत्य यह है कि वे 'कसीर' जल को 'जारी' जल के साथ नहीं जोड़ते हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

1. (फ़तहुल क़दीर, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू व मा ला यजूज़ु बिहि, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर 1/27)
2. (दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मसह अलल ख़ुफ़ैन, मुजतबाई, दिल्ली 1/46)

पृष्ठ 312 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[Box Left (Arabic)] هذا انما يفيد الافضلية لهذا العارض ففي مكان لايتحقق النهر افضل ١ اهـ [Box Right (Urdu)] اھ اس سے افضل ہونے کی یہ عارضی وجہ معلوم ہوتی ہے جہاں یہ وجہ نہ ہو وہاں نہر سے وضو افضل ہوگا۔ (ت)

اقول: اس مصلحت سے اہم دفع تہمت ہے کہ معاذ اللہ لوگوں کو اس پر اتباع معتزلہ کا گمان ہو اس کے دفع کیلئے ایسا کرے اس (۱) کی نظیر مسح موزہ ہے کہ رافضی خارجی ناجائز جانتے ہیں اگر کسی کو اس پر گمان خروج ہو تو اس کے دفع کو مسح موزہ افضل ورنہ فی نفسہ پاؤں دھونا افضل۔ دُر مختار میں ہے:

[Box Left (Arabic)] الغسل افضل الا التهمة فهو افضل ٢ - [Box Right (Urdu)] موزے پر مسح سے پاؤں دھونا افضل ہے مگر تہمت سے بچنے کیلئے مسح افضل ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [Box Left (Arabic)] لان الروافض والخوارج لا يرونه وانما يرون [Box Right (Urdu)] رافضی خارجی پاؤں پر مسح کرتے ہیں اگر موزے پر مسح

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [Arabic Text]: يفرقوا بين القليل والكثير يلزمهم بالمجاورة ايضا تنجيس البحر الكبير برشح (٢) يسير فالحق عندى ان ذلك مبنى على انهم لا يلحقون الكثير بالجارى والله تعالى اعلم اه منه حفظه ربه تعالى۔ (م)

[Urdu Text]: فرمان الٰہی ہے "یہود نے کہا کہ عزیر اللہ کے بیٹے ہیں" علماء فرماتے ہیں یہ صرف ایک گروہ کا قول تھا اور یہ فرقہ ختم ہو گیا، فرمایا بہتر یہ ہے کہ یہ کہا جائے کہ یہ مسئلہ اس امر پر مبنی ہے کہ پانی ان کے نزدیک مجاورت کی وجہ سے ناپاک ہو جاتا ہے، اور ہمارے

نزدیک سرایت کی وجہ سے، اور اس کا پتا اس سے لگتا ہے کہ اس کا اثر پانی میں ظاہر ہوتا ہے، تو جب تک اثر ظاہر نہ ہو نجاست کا حکم نہ لگایا جائے گا، یہ مجھ پر ظاہر ہوا ہے تم اس کو غنیمت جانو۔ میں کہتا ہوں بدائع میں اس کی تصریح کی ہے کہ نجس ہونے کی وجہ مجاورت ہے اور ہم نے النمیقۃ الانقی میں بیان کیا ہے کہ تھوڑا سا پانی ایک دم ناپاک ہو جاتا ہے نہ کہ سرایت سے، علاوہ ازیں انہوں نے قلیل و کثیر میں فرق نہیں کیا ہے، ان پر یہ لازم ہے کہ وہ کہیں ایک بڑے سمندر کا پانی بھی مجاورت سے ناپاک ہو جاتا ہے خواہ تھوڑے سے چھینٹے کیوں نہ ہوں، میرے نزدیک حق یہ ہے کہ وہ کثیر پانی کو جاری کے ساتھ ملحق نہیں کرتے ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

(1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۲۷) (2 در مختار باب المسح علی الخفین مجتبائی دہلی ۱ / ۴۶)

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Top Right Box]: (Wiping) would end the suspicion. Contrary to that, when he washes, since the Rafidis (Shias) also wash due to Taqiyyah (precautionary dissimulation), the situation becomes ambiguous in the case of washing, thus there will be a risk of suspicion. Affadah (T).

[Top Left Box]: Wiping over the feet: if one wipes over the leather socks, suspicion is removed. This is contrary to washing, for the Rawafid might wash out of Taqiyyah, and the situation becomes ambiguous in washing, hence suspected. Affadah-

[Commentary]: I say: The Rawafid do everything out of Taqiyyah. Similarly, the Wahhabis attend Milad gatherings, perform Qiyam (standing out of respect), and attend the feast of Giyarveen Sharif to eat pulao while harboring beliefs of Shirk and Haraam in their hearts. Therefore, we portrayed the negation of suspicion through a different exit (perspective).

[Middle Left Box]: "Sh" said what the author mentioned was quoted by Al-Quhistani from Al-Kirmani. Then he said, but in 'Al-Mudmarat' and others, it is mentioned that washing is better, and this is the correct view as stated in 'Al-Zahidi'. In 'Al-Bahr', quoted from 'Al-Tawshih', it says: "This is our Madhhab". But Al-Rustaghfani said wiping is better.

[Lower Middle Right Box]: I say: There is an oversight in their view. From Al-Kirmani, the choice between washing and wiping is quoted, and from 'Al-Dhakhirah', the priority (Awlawiyyah) of wiping is quoted. Furthermore, this does not match what the author mentioned because his speech concerns the reasons for suspicion, whereas what is in 'Al-Dhakhirah' etc. is an absolute ruling on the priority of wiping, and the mentioned correction applies to that. Allah Almighty knows best. (T)

[Lower Middle Left Box]: I say: This is an oversight. It is only quoted from Al-Kirmani as a choice between washing and wiping, and quoted from 'Al-Dhakhirah' the priority of wiping. Furthermore (1), it does not touch what the author mentioned because his speech is regarding the presence of suspicion, whereas what is in 'Al-Dhakhirah' and others is an absolute legal ruling on the priority of wiping, and the mentioned correction applies to that. Allah Almighty knows best.

[Concluding Commentary]: Then I say: Even more important than this is the repelling of obsessive thoughts (Waswasa). If someone is afflicted with Waswasa and feels aversion to performing Wudu from a pool, for them, Wudu from that very pool is

better so that the Waswasa is cut off. Overcoming Satan is more important than overcoming the Mu'tazili. Allah Almighty knows best.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Wiping over Leather Socks, Egypt, 1/193
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Wiping over Leather Socks, Egypt, 1/193

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[ऊपरी दायां बॉक्स]: (मसह करने से) संदेह समाप्त हो जाएगा। इसके विपरीत जब वह पैर धोएगा, चूँकि राफ़ज़ी तकिया के कारण पैर धो भी लेते हैं, धोने की स्थिति में मामला संदिग्ध हो जाता है, अतः संदेह की आशंका होगी। अफ़ादह (त)।

[ऊपरी बायां बॉक्स]: पैरों पर मसह: यदि मोज़ों (ख़ुफ़) पर मसह किया जाए तो संदेह समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत धोने की स्थिति में, क्योंकि राफ़ज़ी तकिया के कारण पैर धो भी लेते हैं, धोने की सूरत में मामला संदिग्ध हो जाता है और संदेह की आशंका रहती है। अफ़ादह-

[भाष्य]: मैं कहता हूँ: राफ़ज़ी तकिया के तहत सब कुछ कर लेते हैं। इसी तरह वहाबी मिलाद की महफ़िलों में जाते हैं, कयाम करते हैं, ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ में पुलाव खाने के लिए मौजूद होते हैं, जबकि दिल में शिर्क और हराम (का विचार) होता है। इसलिए हमने संदेह को दूर करने के लिए इसे एक अलग पहलू से पेश किया है।

[मध्य बायां बॉक्स]: "श" ने कहा कि जो लेखक ने उल्लेख किया है उसे कुहिस्तानी ने किरमानी से उद्धृत किया है। फिर कहा, लेकिन 'मज़मरात' आदि में धोना श्रेष्ठ बताया गया है और यही सही है जैसा कि 'ज़ाहेदी' में है। 'बहर' में 'तौशीह' से उद्धृत है कि "यह हमारा पंथ है" और रुस्तग़फ़ानी ने कहा कि मसह श्रेष्ठ है।

[निचला मध्य दायां बॉक्स]: मैं कहता हूँ कि उनकी नज़र में चूक हुई है। किरमानी से तो यह उद्धृत है कि धोने और मसह करने के बीच विकल्प है, और 'अज़-ज़खीरा' से मसह की श्रेष्ठता उद्धृत है। फिर यह उस बात के अनुकूल नहीं है जिसका उल्लेख शारह ने किया है क्योंकि उनका कलाम संदेह के कारणों के बारे में है, जबकि 'अज़-ज़खीरा' आदि में जो है, वह मसह के श्रेष्ठ होने का पूर्ण (मुतलक) हुक्म है और उसी पर उक्त सुधार लागू होता है। वल्लाहु तआला आलम। (त)

[निचला मध्य बायां बॉक्स]: मैं कहता हूँ: यह दृष्टि की चूक है। किरमानी से केवल धोने और मसह के बीच विकल्प उद्धृत है और 'अज़-ज़खीरा' से मसह की प्राथमिकता। इसके अतिरिक्त (1), यह लेखक की बात को स्पर्श नहीं करता क्योंकि उनका कलाम संदेह की उपस्थिति के समय का है, जबकि 'अज़-ज़खीरा' आदि में मसह की प्राथमिकता का पूर्ण आदेश है और सुधार इसी पर आधारित है। वल्लाहु तआला आलम।

[अंतिम भाष्य]: फिर मैं कहता हूँ: इससे भी महत्वपूर्ण 'वसवसा' (भ्रम) को दूर करना है। यदि कोई व्यक्ति वसवसा में ग्रस्त हो और हौज़ से वज़ू करने में घृणा महसूस करता हो, तो उसके लिए हौज़ से ही वज़ू करना श्रेष्ठ है ताकि वसवसा ख़त्म हो जाए। शैतान को हराना मोतज़ली को हराने से अधिक महत्वपूर्ण है। वल्लाहु तआला आलम।

---

1. रद उल मुहतार, बाब अल मसह अलल ख़ुफ़्फ़ैन, मिस्र 1/193
2. रद उल मुहतार, बाब अल मसह अलल ख़ुफ़्फ़ैन, मिस्र 1/193

पृष्ठ 313/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[اوپر دایاں باکس]: کرے گا تو تہمت ختم ہوجائے گی۔ بخلاف اس کے کہ جب وہ دھوئے گا کہ رافضی تقیہ سے دھو بھی لیتے ہیں غسل کی صورت میں صورت حال مشتبہ ہو جاتی ہے تو تہمت کا خدشہ ہوگا افادح (ت)

[اوپر بایاں باکس]: المسح علی الرجل فاذا مسح الخف انتفت التھمة بخلاف ما اذا غسل فان الروافض قد یغسلون تقیة فیشتبه الحال في الغسل فیتھم افادح۔

[قول]: اقول: رافضی تقیہ سے سب کچھ کر لیتے ہیں یوں ہی وہابی مجالسِ میلاد مبارک میں جائیں قیام کریں گیارھویں شریف کی نیاز میں حاضر ہوں پلاؤ کھانے کو موجود اور دل میں شرک و حرام، لہذا ہم نے نفی تہمت خروج سے تصویر کی۔

[درمیانی دایاں باکس]: "ش" نے فرمایا جو شارح نے ذکر کیا ہے اس کو قہستانی نے کرمانی سے نقل کیا ہے پھر فرمایا لیکن مضمرات وغیرہ میں ہے کہ غسل افضل ہے اور یہی صحیح ہے جیسا کہ زاہدی میں ہے اھ اور بحر میں توشیح سے منقول ہے "یہ ہمارا مذہب ہے" اور الرستغفنی نے کہا کہ مسح افضل ہے اھ (ت)

[درمیانی بایاں باکس]: قال ش ماذکرہ الشارح نقله القھستانی عن الکرماني ثم قال لکن في المضمرات وغیرہ ان الغسل افضل وھو الصحیح کمافي الزاھدي اھ۔وفي البحر عن التوشیح ھذا مذھبنا وقال الرستغفني المسح افضل اھ۔

[نیچے درمیانی دایاں باکس]: میں کہتا ہوں ان کی نظر چوک گئی ہے، کرمانی سے تو یہ نقل کیا ہے کہ غسل اور مسح میں اختیار ہے اور ذخیرہ سے مسح کی اولویت نقل کی ہے پھر یہ اس کے

مطابق نہیں ہے جس کو شارح نے ذکر کیا ہے کیونکہ ان کا کلام وجوہ تہمت کے متعلق ہے اور جو ذخیرہ وغیرہ میں ہے وہ مسح کے اولیٰ ہونے کا مطلق حکم ہے اور اسی پر مذکور تصحیح وارد ہوتی ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

[نیچے درمیانی بایاں باکس]: اقول: ھذا سبق نظرانما نقل عن الکرمانی التخییر بین الغسل والمسح ونقل اولویة المسح عن الذخیرة ثم (۱) ھو لایمس ماذکر الشارح فان کلامه عند وجود التھمة والذی فی الذخیرة وغیرھا اولویة المسح حکما مطلقا وعلیه یرد التصحیح المذکور واللہ تعالی اعلم۔

[آخری قول]: ثم اقول: اس سے بھی اہم دفع وسوسہ ہے اگر کوئی شخص وسوسہ میں مبتلا ہو حوض سے وضو کرتے کراہت رکھتا ہوا اسے حوض ہی سے وضو افضل ہے کہ قطع وسوسہ ہو ورغم الشیطان اھم من رغم المعتزلی واللہ تعالی اعلم۔

---

1 رد المحتار باب المسح علی الخفین مصر ۱ / ۱۹۳ 2 رد المحتار باب المسح علی الخفین مصر ۱ / ۱۹۳

Volume Two Fatawa Razawiyya Problem 46: 10 Shawwal 1312 Hijri Qudsiya

What do the scholars of religion say regarding this matter: A Muslim and a Hindu both need a ritual bath (ghusl) due to ritual impurity (janabat). Is the water used by both of them for the bath pure, or is there some difference? A Muslim had intercourse with his wife and performed ghusl; is that water pure or not? And a Hindu did the same; is the used water that fell after his bath pure or impure? Is there a difference between the water of both? Explain and be rewarded.

Answer: If bathed according to Shariah, such that water flows over the entire external body from head to toe, and the whole mouth is washed up to the root of the throat, and the whole nose is washed up to its soft bone, then the ritual impurity of the disbeliever (kafir) will be removed; otherwise, not.

Arabic	**Urdu**
It is stated in Tanwir, Dur, and Shami that it is obligatory for a person who embraces Islam while in a state of major ritual impurity (janabat), or for a woman who embraces Islam while menstruating.	In Tanwir, Dur, and Shami it is stated that it is obligatory for the person who accepted Islam in the state of ritual impurity or the woman who accepted Islam in the state of menstruation;
Otherwise, if they embrace Islam while in a state of purity (i.e., from janabat, menstruation, or postpartum bleeding, meaning they had already bathed), then it is recommended (mandub). End of summary.	otherwise, if they embraced Islam in the state of purity (meaning pure from ritual impurity, menstruation, and postpartum bleeding, i.e., if they were impure they had performed ghusl), then it is recommended. End of summary. (T)

(1) Water flowing over most of the body often happens during the bathing of disbelievers, and by drinking a mouthful of water without care, the whole mouth might even be washed up to the throat, but it never reaches the nose without being intentionally snuffed up. And why would they do so—to sniff and draw up water? Therefore, through the partial bathing that disbelievers do, their ritual impurity is not removed. Verse: Whatever you wash becomes filthier.

Arabic	**Urdu**
It is reported in Al-Hilya from Imam Muhammad's Siyar al-Kabir that if a	It is reported in Hilya from Imam Muhammad's Siyar-e-Kabir that if a

Arabic

disbeliever embraces Islam, it is appropriate for them to perform the bath of ritual impurity (ghusl al-janabat), as they do not know the method of ghusl.

End of quote. And it is also mentioned therein from Az-Zakhirah: Do you not see that the obligation of rinsing the mouth (madmadah) and sniffing water into the nose (istinshaq) remained hidden from many scholars?

Urdu

disbeliever embraces Islam, it is incumbent upon him to perform the bath of ritual impurity, and they do not know the method of ghusl.

End of quote. And it is mentioned therein from Zakhirah: Do you not see that the obligation of gargling and putting water in the nose remained hidden from many scholars.

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Mujibat al-Ghusl, Mujtabai Delhi, 1/32
2. Radd al-Muhtar, Mujibat al-Ghusl, Mustafa al-Babi Egypt, 1/124
3. Hilya

भाग दो फतावा रज़विया मसला 46: 10 शव्वाल 1312 हिजरी कुदसिया

इस मसले में दीन के विद्वान क्या फरमाते हैं कि एक मुसलमान और एक हिंदू को जनाबत (संभोग के बाद की अशुद्धि) के ग़ुस्ल (स्नान) की ज़रूरत है। क्या उन दोनों के ग़ुस्ल का पानी पाक (शुद्ध) है या कुछ अंतर है? एक मुसलमान ने अपनी पत्नी के साथ संभोग किया और ग़ुस्ल किया, वह पानी पाक है या नहीं? और एक हिंदू ने भी वैसा ही किया है, उसके ग़ुस्ल का पानी जो उपयोग होकर गिरा है, वह पाक है या नापाक? और क्या इन दोनों के पानी में अंतर है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: यदि शरीयत के अनुसार स्नान किया जाए कि सिर से पैर तक पूरे बाहरी शरीर पर पानी बह जाए और गले की जड़ तक पूरा मुँह और नाक की नरम हड्डी तक पूरी नाक धुल जाए, तो काफ़िर की जनाबत उतर जाएगी, अन्यथा नहीं।

अरबी	**उर्दू/हिंदी**
तनवीर, दुर्र और शामी में है कि उस व्यक्ति पर वाजिब है जो जनाबत की हालत में इस्लाम लाया या वह महिला जो हैज़ (मासिक धर्म) की हालत में इस्लाम लाई।	तनवीर, दुर्र और शामी में है कि उस व्यक्ति पर वाजिब है जो जनाबत की हालत में इस्लाम लाया या औरत हैज़ की हालत में इस्लाम लाई;
वरना अगर पाकी की हालत में इस्लाम लाया (अर्थात जनाबत, हैज़ और निफ़ास से पाक होने की हालत में, यानी अगर नापाक था तो ग़ुस्ल कर लिया) तो मंदूब (पसंदीदा) है। अंत।	वरना अगर पाकी की हालत में इस्लाम लाया (यानी जनाबत, हैज़ और निफ़ास से पाक होने की हालत में, अगर नापाक था तो ग़ुस्ल कर लिया) तो मंदूब है। अंत। (त)

(1) अधिकतर शरीर पर पानी का बह जाना हालांकि काफ़िरों के नहाने में होता है और लापरवाही से मुँह भर कर पानी पीने में सारा मुँह गले तक धुल जाता हो, मगर नाक में पानी चढ़ाए बिना कभी नहीं जाता और वे ऐसा क्यों करेंगे कि पानी सूंघ कर ऊपर चढ़ाएं। इसलिए काफ़िर जो कुछ भी करते हैं, उससे उनका ग़ुस्ल मुकम्मल नहीं होता। कविता: जितना धोओगे उतना ही अपवित्र होगा।

अरबी	**उर्दू/हिंदी**
हलिया में इमाम मुहम्मद की सियर-ए-कबीर से वर्णित है कि यदि काफ़िर इस्लाम लाए तो उसे	हलिया में इमाम मुहम्मद की सियर-ए-कबीर से वर्णित है कि अगर काफ़िर इस्लाम लाए तो उस पर

अरबी	उर्दू/हिंदी
जनाबत का ग़ुस्ल करना चाहिए, क्योंकि वे ग़ुस्ल का तरीका नहीं जानते।	लाज़िम है कि जनाबत का ग़ुस्ल करे, और वे ग़ुस्ल की कैफियत (तरीका) नहीं जानते।
अंत। और इसमें ज़ख़ीरा से वर्णित है: क्या तुम नहीं देखते कि कुल्ली करने और नाक में पानी डालने की अनिवार्यता बहुत से विद्वानों पर भी गुप्त रही?	अंत। और इसमें ज़ख़ीरा से वर्णित है: क्या तुम नहीं देखते कि कुल्ली और नाक में पानी डालने की फ़र्ज़ियत बहुत से उलमा (विद्वानों) पर मख़्फ़ी (गुप्त) रही।

1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, मोजिबात अल-गुस्ल, मुजतबाई दिल्ली, 1/32
2. रद अल-मुह्तार, मोजिबात अल-गुस्ल, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/124
3. हलिया

جلد ثانی فتاوٰی رضویہ مسئلہ ۴۶: ۱۰ شوال ۱۳۱۲ ہجریہ قدسیہ

اس مسئلہ میں علمائے دین کیا فرماتے ہیں کہ ایک اہل اسلام اور ایک ہنود کو حاجتِ غسلِ جنابت ہے ان دونوں کا آبِ غسل پاک ہے یا کچھ فرق ہے؟ ایک اہل اسلام نے اپنی بی بی سے صحبت کی اور غسل کیا وہ پانی پاک ہے یا نہیں؟ اور ہنود نے بھی ایسا ہی کیا ہے اُس کے غسل کا پانی جو مستعمل ہو کر گرا ہے پاک ہے یا ناپاک؟ اور ان دونوں کے پانی میں فرق ہے یا نہیں؟ بیّنوا توجروا۔

الجواب: اگر شرعی طور پر نہائے کہ سر سے پاؤں تک تمام بدنِ ظاہر پر پانی بہ جائے اور حلق کی جڑ تک سار امنہ اور ناک کے نرم بانسے تک ساری ناک دُھل جائے تو کافر کی جنابت اُتر جائے گی ورنہ نہیں،

عربی	اردو
في التنوير والدر والشامي يجب على من اسلم جنبا او حائضا	تنویر، در اور شامی میں ہے کہ واجب ہے اس شخص پر جو اسلام لایا جنابت کی حالت میں یا عورت اسلام لائی حیض کی حالت میں،
او الابان اسلم طاہرا [1] (ای من الجنابة ورنہ اگر پاکی کی حالت میں اسلام لایا (یعنی جنابت، حیض والحیض والنفاس ای بان کان اغتسل) اور نفاس سے پاک ہونے کی حالت میں، اگر ناپاک تھا تو فمندوب انتہیٰ [2] ملخصاً۔ غسل کر لیا) تو مندوب ہے انتہی ملخصا۔ (ت)	

(۱) اکثر جسم پر پانی بہ جانا اگرچہ کفار کے نہانے میں ہوتا ہو اور بے تمیزی سے منہ بھر کر پانی پینے میں سارا منہ بھی حلق تک دُھل جاتا ہو مگر ناک میں پانی بے چڑھائے ہرگز نہیں جاتا

اور خود ایسا کیوں کرتے کہ پانی سونگھ کر چڑھائیں لہذا اس چھپ چھپ کر لینے سے جو کفار کر لیا کرتے ہیں ان کا غسل نہیں اُترتا۔ ع ہرچہ شوئی پلیدتر باشد

عربی	اردو
في الحلية عن السير الكبير للامام محمد ينبغي للكافر اذا اسلم ان يغتسل غسل الجنابة ولا يدرون كيفية الغسل [3] اه	حلیہ میں امام محمد کی سیرِ کبیر سے منقول ہے کہ اگر کافر اسلام لائے تو اس پر لازم ہے کہ غسلِ جنابت کرے، اور وہ غسل کی کیفیت نہیں جانتے اہ
وفيها عن الذخيرة الاترى ان فرضية المضمضة والاستنشاق خفيت على كثير من العلماء	اور اس میں ذخیرہ سے منقول ہے کیا تم نہیں دیکھتے ہو کہ کلی اور ناک میں پانی ڈالنے کی فرضیت بہت سے علماء پر مخفی

1 الدر المختار موجبات الغسل مجتبائی دہلی ۱/۳۲ 2 ردالمحتار موجبات الغسل مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۴ 3 حلیہ

Volume Two Fatawa Razawiyya How then about the infidels?[1] — As for the infidels, what can be said. (T) The water from the bath of cautious, praying Muslims is pure, although it cannot be used again for bathing or ablution, it is itself pure. If it gets on clothes etc., prayer is permissible and there is no need to wash them. And for one whose body is confirmed to have impurity on it, the water from their body is impure. If it is not confirmed, there is a doubt in the bathwater of a non-praying, careless person; it is better to avoid it, let alone a kaffir (disbeliever), for their pajamas and thighs are often splattered with urine. Their bathwater is disliked (Makruh), yet a ruling of impurity will not be given until it is confirmed, as we have investigated in 'Al-Ahla min al-Sukkar' and Allah Almighty knows best (As we have researched in our treatise Al-Ahla min al-Sukkar, and Allah Almighty knows best. T). Issue 74: Asked by Sheikh Shaukat Ali Sahib, 6 Rabi al-Akhar Sharif 1302 Hijri Qudsia. What do the scholars of the nation of Ahl-i Sunnat wal-Jama'at say about this issue: is the leftover (food/drink) of a Hindu or a Christian etc. pure or impure? What is the ruling on eating it? If a disbeliever unintentionally or intentionally smokes a hookah or drinks water, what is the ruling? Explain and be rewarded. The Answer: The command belongs to Allah and His Messenger. The Messenger (1) of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade eating the food of a Christian. It is narrated in Sunan Abi Dawood, Jami' Tirmidhi, Musannaf Abu Bakr bin Abi Shaybah, and Musnad Imam Ahmad from Lub (may Allah be pleased with him): And the wording is of Abu Bakr, he said: I saw the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbid the food of Christians and he said: "Let not any food stir in your chest in which there is an association with Christianity." 2. I say: With these words the great Imam Al-Suyuti cited it in Al-Jami' al-Kabir and said it is Hasan. This is an explicit refutation of what al-Harawi claimed in interpreting the Hadith that it is clean as reported from him.

The words are of Abu Bakr. He said: I saw the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbidding the food of a Christian and he said: "By no means let that food move in your chest in which there is a partnership of Christianity." I say: With these very words Imam Suyuti mentioned it in Jami' Kabir and said it is Hasan. And this is a clear rejection of Hirawi; he interpreted the Hadith as meaning it is clean, as is quoted from him in Majma' al-Bihar. 1 Hilya 2 Sunan Abi Dawood, Chapter on Dislike of eating food, Mujtabai Lahore 2/57 Page 315 of 711

जिल्द सानी (भाग दो) फ़तावा रज़विया फिर काफ़िरों का क्या हाल होगा?[1] - रही तो काफ़िरों का क्या कहना। (त) नमाज़ी एहतियात बरतने वाले मुसलमानों के ग़ुस्ल (स्नान) का पानी पाक है, हालाँकि उससे दोबारा ग़ुस्ल या वज़ू नहीं हो सकता लेकिन वह खुद पाक है। अगर वह कपड़ों आदि पर लग जाए तो नमाज़ जायज़ है और उसे धोने की ज़रूरत नहीं है। और जिसके बदन पर नजासत (अशुद्धि) लगी होना निश्चित हो, उसके बदन का पानी नापाक है। और अगर निश्चित न हो तो बे-नमाज़ी और असावधान व्यक्ति के ग़ुस्ल के पानी में संदेह है, उससे बचना ही बेहतर है, तो काफ़िरों का क्या कहना, क्योंकि उनके पाजामों और रानों में पेशाब की छीटें होती हैं। उनके ग़ुस्ल का पानी मकरूह (नापसंदीदा) है, फिर भी नापाकी का हुक्म तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक निश्चित न हो जाए, जैसा कि हमने "अल-अहला मिन अस-सुक्कर" में इसकी तहक़ीक़ (जाँच) की है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (जैसा कि हमने अपने रिसाले 'अहला मिन अस-सुक्कर' में इसकी तहक़ीक़ की है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। त)। मसला ७४: सवाल करने वाले शेख शौकत अली साहब, ६ रबीउल आखिर शरीफ़ १३०२ हिजरी क़ुदसिया। क्या फ़रमाते हैं मिल्लते अहले सुन्नत वल-जमाअत के उलेमा इस मसले में कि हिंदू या ईसाई आदि का जूठा पाक है या नापाक? उनके खाने का क्या हुक्म है? अगर कोई काफ़िर भूलवश या जानबूझकर हुक्का या पानी पी ले, तो उसका क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य पायें। अल-जवाब (उत्तर): हुक्म अल्लाह और उसके रसूल के लिए है। अल्लाह के रसूल (१) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ईसाई के खाने से मना फ़रमाया। सुनन अबी दाऊद, जामि' तिर्मिज़ी, मुसन्नफ़ अबू बक्र बिन अबी शयबा और मुस्नद इमाम अहमद में लुब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है: और शब्द अबू बक्र के हैं, उन्होंने कहा: मैंने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा कि उन्होंने ईसाइयों के खाने से मना किया और फ़रमाया: "तुम्हारे सीने में वह खाना ज़रा भी हलचल न करे जिसमें ईसाइयत की मिलावट हो।" २. मैं कहता हूँ: इन्हीं शब्दों के साथ महान इमाम अल-सुयुती ने इसे 'अल-जामि' अल-कबीर' में उद्धृत किया है और इसे 'हसन' कहा है। यह अल-हरवी के उस दावे का स्पष्ट खंडन है जो उन्होंने हदीस की व्याख्या में कहा था कि वह साफ़-सुथरा है, जैसा कि उनसे उद्धृत किया गया है।

शब्द अबू बक्र के हैं। फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा कि ईसाई के भोजन से मना फ़रमाया और इरशाद किया: "हरगिज़ तुम्हारे सीने में वह खाना न हिले जिसमें ईसाइयत की साझेदारी हो।" मैं कहता हूँ: इन्हीं शब्दों से इसे इमाम सुयुती ने 'जामि' कबीर' में ज़िक्र किया और 'हसन' कहा। और यह हरवी का स्पष्ट खंडन है, उन्होंने हदीस की तावील (व्याख्या)

की कि यह साफ़-सुथरा है, यह 'मजमा' अल-बिहार' में उनसे वर्णित है। १ हिल्या २ सुनन अबी दाऊद, बाब: भोजन करने की नापसंदगी, मुज्तबाई लाहौर २/ ५७ पेज ३१५ / ७११

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ فکیف علی الکفار 1۔ رہی تو کافروں کا کیا کہنا۔ (ت) نمازی محتاط مسلمانوں کے غسل کا پانی پاک ہے اگرچہ دوبارہ اُس سے غسل یا وضو نہیں ہوسکتا مگر وہ خود پاک ہے کپڑے وغیرہ کو لگ جائے تو نماز جائز ہے اور دھونے کی حاجت نہیں اور جس کے بدن پر نجاست لگی ہونا تحقیق ہو اس کے بدن کا پانی نجس ہے اور تحقیق نہ ہو تو بے نمازی بے احتیاط کے آبِ غسل میں شبہ ہے اُس سے بچنا اولیٰ ہے نہ کہ کافر کہ اُن کے تو پاجاموں رانوں میں چھینٹکوں پیشاب ہوتا ہے ان کا آبِ غسل مکروہ ہے پھر بھی ناپاکی کا حکم نہ دیں گے جب تک تحقیق نہ ہو کما حققناہ فی الاحلی من السکر واللہ تعالیٰ اعلم (جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ احلی من السکر میں اس کی تحقیق کی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ت) مسئلہ ۷۴: مسئولہ شیخ شوکت علی صاحب ۶ ربیع الآخر شریف ۱۳۰۲ ہجر یہ قدسیہ کیا فرماتے ہیں علمائے ملت اہلسنت وجماعت اس مسئلہ میں کہ جھوٹا ہندو یا نصرانی وغیرہ کا پاک ہے یا ناپاک، اُس کے کھانے کا کیا حکم ہے اگر کوئی کافر سہواً یا قصداً حقہ یا پانی پی لے تو اس کا کیا حکم ہے بینوا توجروا۔ الجواب : حکم اللہ ورسول کیلئے ہے رسول (۱) اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے نصرانی کے کھانے سے ممانعت فرمائی، سنن ابی داؤد و جامع ترمذی و مصنف ابو بکر بن ابی شیبہ ومسند امام احمد میں لُب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے: واللفظ لابی بکر قال رأیت النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نہی عن طعام النصاری فقال لایتخلجن في صدرك طعام ضارعت فیه نصرانیة 2۔اقول: بهذا اللفظ اور ده الامام الجلیل السیوطي في الجامع الکبیر وقال حسن اه وهو صریح في رد مازعم الهروي في تأویل الحدیث انه نظیف کما نقله عنه

الفاظ ابی بکر کے ہیں فرمایا میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو دیکھا کہ طعام نصرانی سے نہی فرمائی اور ارشاد کیا زنہار تیرے سینے میں وہ کھانا جنبش نہ کرے جس میں نصرانیت کا اشتراک ہو۔ اقول: انہی الفاظ سے اس کو امام سیوطی نے جامع کبیر میں ذکر کیا اور حسن کہا اھ

اور یہ ہروی کی واضح تردید ہے انہوں نے حدیث کی تاویل کی کہ یہ صاف ستھرا ہے، یہ مجمع البحار میں اُن سے منقول ہے 1 حلیہ 2 سنن ابی داؤد باب کراہیتہ التغذ ر للطعام مجتبائی لاہور ۲/

In Majma' al-Bihar, he then rejected it with his statement: "And the context of the hadith does not suit it." (T)

I say: (1) Also, what he quoted from al-Tibi regarding its interpretation is far-fetched, where he says: "It resembles Christianity and monasticism in their strictness and narrowness; and how so, while you are upon the easy Hanifi way?" How can this be, when it does not suit the prohibition? (T)

I say: (2) Similarly, what Abu Dawud understood from it is also far-fetched, as he mentioned it in the "Chapter of Disliking Loathsomeness in Food." He did so because the wording of his narration is: "I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and a man asked him, saying, 'Indeed, among food there is some food I feel uneasy about.' So he said, 'Let nothing throb in your chest that resembles Christianity.'" So this wording is ambiguous, while what we mentioned is a clear text (Nass). So hold firm to it. And success is from Allah. And may Allah have mercy on Imam Abu Hatim al-Razi, who used to say, "We did not recognize a hadith until we had written it from sixty different chains (ways)." (T)

Abu Tha'laba al-Khushni (3) (may Allah be pleased with him) says:

1. Majma' al-Bihar, word 'Dara'', Munshi Nawal Kishore, Lucknow, 2/288
2. Al-Tibi, Commentary on Mishkat
3. Sunan Abi Dawud, Chapter on the Dislike of Loathsomeness in Food, Mujtabai Delhi, 2/157

फ़तावा रज़विय्या (खंड दो)

मजमा-उल-बिहार में, फिर उन्होंने इसे अपने इस कथन से खारिज कर दिया कि: "और हदीस का संदर्भ इसके अनुकूल नहीं है।" (त)

मैं कहता हूँ: (१) इसके अलावा, जो उन्होंने अल-तिबी से इसकी व्याख्या उद्धृत की है, वह भी दूर की बात लगती है, जहाँ वे कहते हैं: "यह ईसाइयत और वैराग्य (रहबानियत) के समान है उनकी कठोरता और संकीर्णता में; और ऐसा कैसे हो सकता है, जबकि आप सरल हनीफ़ी मार्ग पर हैं?" यह कैसे संभव है, जबकि यह निषेध के अनुकूल नहीं है? (त)

मैं कहता हूँ: (२) इसी प्रकार, जो अबू दाऊद ने इससे समझा है, वह भी दूर की बात है, क्योंकि उन्होंने इसे "भोजन के प्रति घृणा की नापसंदगी के अध्याय" में शामिल किया है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उनकी रिवायत के शब्द ये हैं: "मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सुना, और एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि, 'निश्चित रूप से, भोजन में से कुछ ऐसा भोजन है जिससे मुझे संकोच महसूस होता है।' तो आपने फ़रमाया, 'तुम्हारे सीने में कोई ऐसी चीज़ न खटके जो ईसाइयत के सदृश हो'।" तो ये शब्द संदिग्ध (संभावित) हैं, जबकि जो हमने उल्लेख किया है वह एक स्पष्ट प्रमाण (नस) है। अतः इस पर अडिग रहें। और सफलता अल्लाह की ओर से है। और अल्लाह इमाम अबू हातिम अल-राज़ी पर दया करे, जो कहा करते थे, "हम हदीस को तब तक नहीं पहचानते थे जब तक कि हम उसे साठ अलग-अलग तरीकों (सूत्रों) से न लिख लेते।" (त)

अबू सालबा अल-खुश्नी (३) (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

1. मजमा-उल-बिहार, शब्द 'दरअ', मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, २/२८८
2. तिबी शरह मिश्कात
3. सुनन अबी दाऊद, भोजन के प्रति घृणा की नापसंदगी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, २/१५७

पृष्ठ ३१६ का ७११

فی مجمع البحار ثم ردہ بقولہ وسیاق الحدیث لا یناسبہ اھ۔ پھر انہوں نے اس کو اپنے اس قول سے رد کیا اور حدیث کا سیاق اس کے مناسب نہیں۔ (ت)

اقول: (۱) وایضا یبعد ما نقلہ عن الطیبی من تفسیرہ بقولہ شابہت النصرانیۃ والرھبانیۃ فی تشدیدھم وتضییقھم وکیف وانت علی الحنیفیۃ السھلۃ اھ۔ کیف وھذا لا یلائم النہی۔ میں کہتا ہوں یہ بھی بعید ہے کہ انہوں نے طیبی سے اس کی تفسیر یہ نقل کی ہے کہ یہ نصرانیت اور رہبانیت کے مشابہ ہے ان کی شدت اور سختی میں اور تم دین حنیف پر ہو جو سہل اور آسان ہے اھ۔ کیسے اور یہ نہی کے مناسب نہیں۔ (ت)

اقول: (۲) وکذا یبعد ما فھم منہ ابو داؤد اذ اوردہ فی باب کراھیۃ التقذر للطعام وانما تأتی لہ ذلک لان لفظ روایتہ سمعت رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وسألہ رجل فقال ان من الطعام طعاما اتحرج منہ فقال لا یتخلجن فی صدرک شیئی ضارعت فیہ النصرانیۃ اھ فھذا لفظ محتمل والذی ذکرناہ نص صریح فتثبت وباللہ التوفیق ورحم اللہ الامام ابا حاتم الرازی حیث یقول ما کنا نعرف الحدیث مالم نکتبہ من ستین وجھاً۔ میں کہتا ہوں اسی طرح وہ بھی بعید ہے جو ابو داؤد نے اس سے سمجھا ہے کیونکہ انہوں نے اس کو باب کراہیۃ التقذر الطعام میں وارد کیا ہے، اور انہوں نے ایسا اس لئے کیا ہے کیونکہ ان کی روایت کے لفظ یہ ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو سنا، اور آپ سے ایک شخص نے سوال کیا تو آپ نے فرمایا ان کھانوں میں سے ایک کھانا ایسا ہے جس سے میں حرج محسوس کرتا ہوں، تو آپ نے فرمایا تمہارے دل میں کوئی ایسی چیز خلش پیدا نہ کرے جو نصرانیت کے ساتھ ملی ہے اھ اب ان الفاظ میں احتمال ہے اور جو ہم نے ذکر کیا ہے وہ

صریح نص ہے، اور اللہ ابو حاتم الرازی پر رحم فرمائے وہ فرمایا کرتے تھے کہ ہم اُس وقت تک حدیث کو نہیں پہچانتے تھے جب تک کہ اس کو ساٹھ طریقوں سے نہ لکھ لیں۔ (ت)

ابو ثعلبہ خشنی (۳) رضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں:

1. مجمع البحار لفظ ضرع منشی نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۸۸
2. طیبی شرح مشکوۃ
3. سنن ابی داؤد باب کراھیۃ التقذر الطعام مجتبائی دہلی ۲/ ۱۵۷

I said: "O Messenger of Allah (peace be upon him)! We go on expeditions to enemy lands and we need their vessels." He (peace be upon him) said: "Avoid them as much as you can. If you cannot find any others, then wash them to make them pure, and thereafter eat and drink from them." - Mentioned by the Imam in Al-Jami' and attributed to Ibn Abi Shaybah.

Author's note: I say: (1) Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawud, Tirmidhi, and others have also narrated this. In Tirmidhi's wording, instead of "wash them," the phrase is "clean them thoroughly." (T)

Allah Almighty says: "Verily, the polytheists are impure" (Qur'an 9:28). Unbelievers are essentially impure. This impurity is of their inner self. Furthermore, if the remains of wine or other impurities are present in their mouths, then external impurity is also present. In that case, their saliva (leftover food/drink) is as impure as a dog's, or even worse. This is contrary to [Imam] Malik's view on dogs (because there is a difference of opinion among Imam Malik regarding dogs. T). And whatever thing their saliva touches, like a hookah etc., will certainly become impure.

It is in Tanwir al-Absar: The leftover of a wine drinker immediately after drinking, and of a cat immediately after eating a mouse, is impure. (T)

Hindus, Christians, and others are often wine drinkers, and growing long mustaches is their habit. If a wine drinker's mustache is so large that wine touches it, until the mustache is washed, any water etc. that touches it will become impure.

It is in Durr al-Mukhtar: If a wine drinker's mustaches are long such that the tongue cannot reach them [it is impure].

1. Musannaf Ibn Abi Shaybah, Al-Akl fi Aniyat al-Kuffar, Idarat al-Qur'an, Karachi, 8/90.
2. Jami' al-Tirmidhi, Al-Akl fi Aniyat al-Kuffar, Amin Company, Delhi, 2/2.
3. Al-Qur'an 9:28.
4. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai, Delhi, 1/70.

फ़तावा रिज़विया खंड 2

मैंने अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो)! हम दुश्मन के मुल्क में जिहाद के लिए जाते हैं, वहाँ उनके बर्तनों की ज़रूरत पड़ती है।" अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया: "जहाँ तक संभव हो उन बर्तनों से दूर रहो और अगर दूसरे बर्तन न मिलें तो उन्हें धोकर पाक (शुद्ध) कर लो, उसके बाद उनमें खाओ-पीओ।" - इमाम ने अल-जामी में इसका उल्लेख किया है और इसे इब्न अबी शैबा की ओर श्रेय दिया है।

लेखक की टिप्पणी: मैं कहता हूँ: (1) अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और अन्य ने भी इसे रिवायत किया है और तिर्मिज़ी के शब्दों में 'फाग़सिलूहा' (उन्हें धो लो) की जगह 'अनकुहा गस्ला' (उन्हें अच्छी तरह साफ़ करो) है। (त)

अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: "बेशक मुशरिक (मूर्तिपूजक) नापाक हैं" (कुरआन 9:28)। काफिर बिल्कुल नापाक हैं। यह नापाकी उनके आंतरिक अस्तित्व (बातिन) की है। फिर अगर शराब आदि जैसी नजासत का असर उनके मुँह में बाकी हो, तो बाहरी नापाकी भी मौजूद है और उस समय उनका जूठा वैसा ही नापाक है जैसा कुत्ते का, बल्कि उससे भी बदतर। यह कुत्ते के बारे में इमाम मालिक के विचार के विपरीत है (क्योंकि कुत्ते के बारे में इमाम मालिक के बीच मतभेद है। त)। और हुक्का आदि जिस चीज़ को उनका लुआब (थूक) लग जाएगा, वह यकीनन नापाक हो जाएगी।

तनवीर अल-अब्सार में है: शराब पीने के फ़ौरन बाद शराबी का जूठा और चूहा खाने के फ़ौरन बाद बिल्ली का जूठा नापाक है। (त)

हिंदू, ईसाई आदि अक्सर शराब पीने वाले होते हैं और मूँछें बढ़ाना उनका स्वभाव है। अगर शराब पीने वाले की मूँछें इतनी बड़ी हों कि शराब मूँछों को लग गई, तो जब तक मूँछें धुल न जाएँ, पानी आदि जिस चीज़ को वे लगेंगी, वह उसे नापाक कर देगी।

दुर्रे मुख्तार में है: अगर शराब पीने वाले की मूँछें इतनी लंबी हों कि ज़बान उन तक न पहुँच सके[तो वह नापाक है]।

1. मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा, अल-अक्ल फ़ी आनियत अल-कुफ़्फ़ार, इदारत अल-कुरआन, कराची, 8/90।
2. जामिउत तिर्मिज़ी, अल-अक्ल फ़ी आनियत अल-कुफ़्फ़ार, अमीन कंपनी, दिल्ली, 2/2।

3. अल-कुरआन 9:28।

4. अल-दुर्र अल-मुख्तार, कुएँ का अध्याय, मुजतबाई, दिल्ली, 1/70।

पृष्ठ 317/711

قلت یارسول اللہ انا نغزو ارض العدو فنحتاج الی انیتھم فقال استغنوا عنھا ما استطعتم فان لم تجدوا غیرھا فاغسلوھا وکلوا منھا واشربوا - اورده الامام فی الجامع وعزاه لابن ابی شیبة۔ میں نے عرض کی یارسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ! ہم دشمن کے ملک میں جہاد کو جاتے ہیں اُن کے برتنوں کی حاجت پڑتی ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا جہاں تک بن پڑے اُن برتنوں سے دُور رہو اور اگر اور برتن نہ ملے تو انہیں دھو کر پاک کرلو اس کے بعد ان میں کھاؤ پیو۔

اقول: (۱) قد رواہ احمد والبخاری ومسلم وابو داؤد والترمذی وآخرون وفی لفظ للترمذی قال انقوھا غسلا۔ میں کہتا ہوں احمد، بخاری، مسلم، ابو داؤد، ترمذی اور دوسروں نے بھی اس کو روایت کیا ہے اور ترمذی کا لفظ فاغسلوھا کی جگہ انقوھا غسلا ہے۔ (ت)

اللہ عزوجل فرماتا ہے: إِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ 3 کافر نرے ناپاک ہیں۔ یہ ناپاکی ان کے باطن کی ہے پھر اگر شراب وغیرہ نجاستوں کا اثر ان کے منہ میں باقی ہو تو ناپاکی ظاہری بھی موجود ہے اور اس وقت ان کا جھوٹا ایسا ہی ناپاک ہے جیسا کتے کا، بلکہ اُس سے بھی بدتر بخلاف مالک فی الکلب (کیونکہ کتے کے بارے میں امام مالک کا اختلاف ہے۔ ت) اور حقے وغیرہ جس چیز کو اُن کا لعاب لگ جائیگا ضرور ناپاک ہو جائے گی۔

تنویر الابصار میں ہے: سؤر شارب خمر فور شربھا وھرۃ فور اکل فأرۃ نجس - لوشاربه طویلا لا یستوعبه اللسان فنجس شرابی کا شراب پینے کے بعد فوری جھوٹا اور بلی کا چوہا کھانے کے بعد فوری جھوٹا نجس ہے۔ (ت)

ہنود و نصاریٰ و غیر ہم اکثر شراب خور ہوتے ہیں اور مونچھیں بڑھانا اُن کا شعار اور شراب (۲) خور کی مونچھیں بڑی بڑی ہوں کہ شراب مونچھ کو لگ گئی تو جب تک مونچھ دھل نہ جائے گی پانی وغیرہ جس چیز کو لگے گی ناپاک کر دے گی،

در مختار میں ہے: لوشاربہ طویلا لا یستوعبہ اللسان فنجس اگر شراب خور کی مونچھیں لمبی ہوں کہ زبان ان تک [نہیں پہنچتی تو نجس ہے]۔

1 مصنف ابن ابی شیبہ الاکل فی آنیۃ الکفار ادارۃ القرآن کراچی ۹۰/۸ 2 جامع للترمذی الاکل فی آنیۃ الکفار امین کمپنی دہلی ۲/۲ 3 القرآن ۲۸/۹ 4 الدر المختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۷۰/۱

Fatawa Razawiyya Volume II

[Table Header: Left Column - Arabic, Right Column - Urdu] | 1-ولو بعد زمان | If the mustache of a wine drinker is so long that the tongue cannot reach it, his leftover drink is impure, even if he drinks water after a long time. (T) |

And if it is completely separate from external impurities, which is very unlikely among disbelievers, then his leftover drink should not be called explicitly impure like that of a dog.

[Table Header: Left Column - Arabic, Right Column - Urdu] | فی التنویر والدر سؤر آدمی 2-مختصرا طاهر الفم طاهرا اوكافرا ولوجنبا مطلقا | It is stated in 'Tanwir' and 'Durr' that the leftover of a human being, whether in a state of major ritual impurity or a disbeliever, is pure as long as the mouth is pure. Briefly. (T) |

I say: Not everything that is not impure is necessarily wholesome and without hesitation. Mucus is also not impure, yet which sane person would bear to touch it with their lips and tongue? By the grace of Allah Almighty, Muslims have a similar aversion to the leftovers of a disbeliever, and this aversion stems from their faith.

[Table Header: Left Column - Arabic, Right Column - Urdu] | وفی رفعه عن قلوبهم اسقاط شناعة الكفرة عن اعينهم او تخفيفها وذلك غش بالمسلمين وقد صرح العلماء كما في العقود الدرية وغيرها (1) ان المفتى انما يفتى بما يقع عنده من المصلحة ومصلحة المسلمين في ابقاء النفرة عن 3-الكفرة لافى القائها | To remove this (aversion) from their hearts is to end or reduce the vileness of disbelievers in their eyes, and this is to deceive Muslims. Scholars have explicitly stated, as in 'Uqud al-Durriya' etc., that a Mufti should give that fatwa which contains benefit according to his view. The benefit for Muslims is that the aversion to disbelievers remains in their hearts, not that it is finished. (T) |

If someone knowingly eats or drinks their leftovers, Muslims detest him too; he becomes a target of criticism, and he is suspected of having affection for disbelievers. It is stated in a Hadith (1):

[Table Header: Left Column - Arabic, Right Column - Urdu] | من كان يؤمن بالله واليوم 4-الاخر فلا يقفن مواقف التهم | Whoever believes in Allah and the Last Day should not stand in a place of suspicion. |

In multiple (2) Hadiths, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Table Header: Left Column - Arabic, Right Column - Urdu] | 5-اياك وما يسؤ الاذن | Avoid that thing which sounds bad to the ear. |

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai Delhi 1/40 2 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai Delhi 1/40 3 Al-Ashbah wal-Naza'ir, Book of Judiciary etc., Idara-tul-Quran Karachi 1/352 4 Maraqi al-Falah with Al-Tahtawi, before the Chapter on Sujud al-Sahw, Nur Muhammad Kutub Khana Karachi p. 249 5 Musnad Imam Ahmad, narrated by Abi al-Adiyah, Beirut 6/7

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी (भाग 2)

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी, दायां कॉलम - उर्दू/हिंदी] | वलौ बाद ज़मान-1 | यदि शराब पीने वाले की मूँछें इतनी लंबी हों कि ज़बान उन तक न पहुँच सके तो उसका जूठा अपवित्र (नजस) है, चाहे वह लंबे समय के बाद पानी पिए। (त) |

और यदि वह बाहरी अशुद्धियों से पूरी तरह मुक्त हो, जिसकी संभावना काफ़िरों में बहुत कम है, तो उसके जूठे को स्पष्ट रूप से कुत्ते के जूठे की तरह अपवित्र न कहा जाए।

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी, दायां कॉलम - उर्दू/हिंदी] | फ़ीत-तन्वीर वद-दुर्र सऊर आदमियिन मुतलक़न वलौ जुनुबन औ काफ़िरन ताहिर अल-फ़म ताहिरन मुख्तसरन-2 | तन्वीर और दुर्र में है कि मनुष्य का जूठा चाहे वह जुनुब (अशुद्ध) हो या काफ़िर हो, पाक है क्योंकि मुँह पाक है। संक्षेप में। (त) |

मैं कहता हूँ: लेकिन हर वह चीज़ जो अपवित्र नहीं है, उसका उत्तम और बेझिझक होना ज़रूरी नहीं है। नाक की गंदगी (रेंट) भी तो नापाक नहीं है, फिर कौन सा बुद्धिमान व्यक्ति उसे अपने होठों और ज़बान से लगाना पसंद करेगा? अल्हम्दुलिल्लाह, मुसलमानों को काफ़िर के जूठे से भी वैसी ही नफरत है और यह नफरत उनके ईमान का परिणाम है।

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी, दायां कॉलम - उर्दू/हिंदी] | व फ़ी रफ़इही अन कुलूबिहिम असक़ात शनाअत अल-कफ़रत...-3 | और इसे उनके दिलों से हटाने का मतलब उनकी नज़रों में काफ़िरों की बुराई को खत्म करना या कम करना है, और यह मुसलमानों को धोखा देना है। विद्वानों ने स्पष्ट किया है, जैसा कि 'उकूद अद-दुर्रिया' आदि में है कि मुफ्ती को वही फतवा देना चाहिए जिसमें उसके अनुसार भलाई हो, और मुसलमानों की भलाई इसी में है कि उनके दिलों में काफिरों के प्रति नफरत बनी रहे, न कि नफरत खत्म हो जाए। (त) |

जो व्यक्ति जानबूझकर उसका जूठा खाए-पिए, मुसलमान उससे भी नफरत करते हैं, वह निंदा का पात्र होता है और उस पर काफिरों से प्रेम करने का संदेह किया जाता है। हदीस (1) में है:

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी, दायां कॉलम - उर्दू/हिंदी] | मन काना युअमिनु बिल्लाहि वल यौमिल आखिर फला यक़िफ़न मवाक़िफ़ अत-तुहम-4 | जो अल्लाह और आखिरत पर ईमान रखता हो, वह तोहमत (संदेह) की जगह खड़ा न हो। |

कई हदीसों में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी, दायां कॉलम - उर्दू/हिंदी] | इय्याका व मा यसूउल उज़ुन-5 | उस बात से बच जो कान को बुरी लगे। |

---

1 अद-दुर अल-मुख्तार, फ़स्ल फ़िल-बीर, मुज्तबाई दिल्ली 1/40 2 अद-दुर अल-मुख्तार, फ़स्ल फ़िल-बीर, मुज्तबाई दिल्ली 1/40 3 अल-अश्बाह वन-नज़ायर, किताब अल-क़ज़ा इत्यादि, इदारा-तुल-कुरान कराची 1/352 4 मराक़ी अल-फ़लाह मअल-तहत़ावी, बाब सुजूद अस-सहव से पहले, नूर मोहम्मद कुतुब खाना कराची पृ. 249 5 मुस्नद इमाम अहमद, अन अबी अल-आदिया, बेरूत 6/7

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[جدول کا متن: دایاں کالم - اردو، بایاں کالم - عربی] | اگر شراب خور کی مونچھیں لمبی ہوں کہ زبان ان تک نہ پہنچ سکے تو اس کا جھوٹا نجس ہے اگر چہ وہ طویل وقت کے بعد پانی پیئے۔ (ت) | ولو بعد زمان-1 |

اور اگر ظاہری نجاستوں سے بالکل جدا ہو جس کی اُمید کافروں میں بہت کم ہے تو اس کے جھوٹے کو اگر چہ کتے کے جھوٹے کی طرح صریح ناپاک نہ کہا جائے۔

[جدول کا متن: دایاں کالم - اردو، بایاں کالم - عربی] | تنویر اور در میں ہے آدمی کا جھوٹا چاہے وہ جنبی ہو یا کافر ہو پاک ہے کیونکہ منہ پاک ہے۔ مختصرا (ت) | فی التنویر والدر سؤر آدمی مطلقا ولوجنبا اوکافرا طاھر الفم طاھرا مختصرا-2 |

اقول: مگر ہر چیز کہ ناپاک نہ ہو طیب وبے دغدغہ ہونا ضرور نہیں ریشہ بھی تو ناپاک نہیں پھر کون عاقل اسے اپنے لب و زبان سے لگانا گوارا کرے گا کافر کے جھوٹے سے بھی بحمد اللہ تعالٰی مسلمانوں کو ایسی ہی نفرت ہے اور یہ نفرت اُن کے ایمان سے ناشی ہے۔

[جدول کا متن: دایاں کالم - اردو، بایاں کالم - عربی] | اور اس کو ان کے دلوں سے اٹھانے میں کافروں کی برائی کو ان کی نگاہوں میں ختم کرنا ہے یا کم کرنا ہے، اور یہ مسلمانوں کو دھوکا دینا ہے اور علماء نے تصریح کی ہے جیسا کہ عقود الدریۃ وغیرہ میں ہے کہ مفتی کو وہی فتوٰی دینا چاہئے جس میں اس کے نزدیک مصلحت ہو اور مسلمانوں کو مصلحت اس میں ہے کہ ان کے دلوں میں کافروں سے نفرت باقی رہے نہ یہ کہ نفرت ختم ہو جائے۔ (ت) | وفی رفعه عن قلوبهم اسقاط شناعة الكفرة عن اعينهم او تخفيفها وذلك غش بالمسلمين وقد صرح العلماء كما في العقود الدرية

وغیرھا (1) ان المفتی انما یفتی بما یقع عندہ من المصلحۃ ومصلحۃ المسلمین في ابقاء النفرۃ عن الکفرۃ لافی القائھا-3 |

جو شخص دانستہ اُس کا جھوٹا کھائے پیئے مسلمان اُس سے بھی نفرت کرتے ہیں وہ مطعون ہوتا ہے اُس پر محبت کفار کا گمان جاتا ہے اور حدیث (1) میں ہے:

[جدول کا متن: دایاں کالم - اردو، بایاں کالم - عربی] | جو اللہ اور آخرت پر ایمان رکھتا ہو تہمت کی جگہ کھڑا نہ ہو۔ | من کان یؤمن باللہ والیوم الاخر فلا یقفن مواقف التھم-4 |

متعدد (2) حدیثوں میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[جدول کا متن: دایاں کالم - اردو، بایاں کالم - عربی] | اس بات سے بچ جو کان کو بُری لگے۔ | ایاك وما یسؤ الاذن-5 |

---

1 الدر المختار فصل في البئر مجتبائی دہلی 1/ 40 2 الدر المختار فصل في البئر مجتبائی دہلی 1/ 40 3 الاشباہ والنظائر کتاب القضاء الخ ادارۃ القرآن کراچی 1/ 352 4 مراقی الفلاح مع الطحطاوی قبیل باب سجود السھو نور محمد کتب خانہ کراچی ص 249 5 مسند امام احمد عن ابی العادیۃ بیروت 7/6

Fatawa Rizvia Volume 2

[Arabic Text]: Imam Ahmad narrated it from Abu al-Adiyah, and al-Tabarani in al-Kabir, and Ibn Sa'd in al-Tabaqat, and al-Askari in al-Amthal, and Ibn Mandah in al-Ma'rifah, and al-Khatib in al-Mu'talif; all of them narrated from Umm al-Adiyah, the paternal aunt of 'As bin 'Amr al-Tafawi. Abdullah bin Ahmad, the Imam, narrated it in Zawa'id al-Musnad, and Abu Nu'aym and Ibn Mandah both in al-Ma'rifah from the mentioned 'As as a Mursal (disconnected) narration. Abu Nu'aym narrated it in al-Ma'rifah from Habib bin al-Harith (may Allah be pleased with them).

[Urdu Text]: Imam Ahmad narrated it from Abu al-Adiyah, and al-Tabarani narrated it in al-Kabir, Ibn Sa'd in al-Tabaqat, al-Askari in al-Amthal, Ibn Mandah in al-Ma'rifah, and al-Khatib in al-Mu'talif. All of them narrated from Umm al-Adiyah, the paternal aunt of 'As bin 'Amr al-Tafawi. Abdullah bin Ahmad narrated it in Zawa'id al-Musnad, and Abu Nu'aym and Ibn Mandah both narrated it in al-Ma'rifah from the aforementioned 'As as a Mursal narration. And Abu Nu'aym narrated it in al-Ma'rifah from Habib bin al-Harith. (T)

Moreover, it is mentioned in many hadiths that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Beware of every matter for which an excuse must be offered."[1] - Avoid every such matter for which you have to present an excuse.

[Arabic Text]: It was also narrated in al-Mukhtarah and al-Daylami, both with a good (hasan) chain of narration from Anas. Al-Tabarani narrated it in al-Awsat from Jabir, and Ibn Munay' narrated it; and through his chain, al-Askari in his Amthal and al-Quda'i in his Musnad narrated it together. Also, al-Baghawi narrated it, and through his chain, al-Tabarani in his Awsat, and al-Mukhlis in the sixth of his Fawa'id, and Abu Muhammad al-Ibrahimi in Kitab al-Salat, and Ibn al-Najjar in his Tarikh; all of them narrated from Ibn 'Umar. Al-Hakim narrated it in his Sahih, and al-Bayhaqi in al-Zuhd, and al-Askari in al-Amthal, and Abu Nu'aym in al-Ma'rifah from Sa'd bin Abi Waqqas. Ahmad, Ibn Majah, and Ibn 'Asakir narrated it from Abu Ayyub al-Ansari, all of them [narrating] it as Marfu' (raised to the Prophet).

[Urdu Text]: Both Mukhtarah and Daylami also narrated it with a good chain from Anas. Al-Tabarani narrated it in al-Awsat from Jabir, and Ibn Munay' narrated it; and through his chain, al-Askari in al-Amthal and Quda'i narrated it in his Musnad together with Ibn Munay's chain. Also, al-Baghawi narrated it, and through his chain, al-Tabarani in his Awsat, and al-Mukhlis in the sixth Fawa'id, and Abu Muhammad

Ibrahimi in Kitab al-Salat, and Ibn al-Najjar in his history; all of them narrated from Ibn Umar. Al-Hakim in his Sahih, al-Bayhaqi in al-Zuhd, al-Askari in al-Amthal, and Abu Nu'aym in al-Ma'rifah narrated it from Sa'd bin Abi Waqqas. And Ahmad, Ibn Majah, and Ibn 'Asakir narrated it from Abu Ayyub al-Ansari, all of these...

---

[1] Jami' al-Saghir with Fayd al-Qadir 3/711

फ़तावा रिज़विया खंड 2

[अरबी पाठ]: इमाम अहमद ने इसे अबू अल-अदिया से रिवायत किया, और अल-तबरानी ने अल-कबीर में, और इब्न साद ने अल-तबाक़ात में, और अल-अस्करी ने अल-अमथाल में, और इब्न मंदा ने अल-मरिफ़ा में, और अल-खतीब ने अल-मुअतालिफ़ में; इन सब ने उम्म अल-अदिया से रिवायत की, जो आस बिन अम्र अल-तफ़ावी की फूफी थीं। अब्दुल्ला बिन अहमद इमाम ने ज़वैद अल-मुसनद में, और अबू नुऐम और इब्न मंदा दोनों ने अल-मरिफ़ा में ज़िक्र किए गए आस से मुरसलन (बिना बीच की कड़ी के) रिवायत की। अबू नुऐम ने अल-मरिफ़ा में हबीब बिन अल-हारिस से रिवायत की (अल्लाह उन सब से राज़ी हो)।

[उर्दू पाठ]: इमाम अहमद ने इसे अबू अल-अदिया से रिवायत किया, और अल-तबरानी ने अल-कबीर में, इब्न साद ने अल-तबाक़ात में, अस्करी ने अल-अमथाल में, इब्न मंदा ने अल-मरिफ़ा में, और खतीब ने अल-मुअतालिफ़ में रिवायत किया। इन सब ने उम्म-ए-अदिया, आस बिन अम्र तफ़ावी की फूफी से रिवायत की। और अब्दुल्ला बिन अहमद ने ज़वैद-ए-मुसनद में, और अबू नुऐम और इब्न मंदा दोनों ने अल-मरिफ़ा में ज़िक्र किए गए आस से मुरसलन रिवायत की। और अबू नुऐम ने अल-मरिफ़ा में हबीब बिन अल-हारिस से रिवायत की। (त)

इसके अलावा, कई हदीसों में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं: "हर उस काम से बचो जिसके लिए माफ़ी माँगनी पड़े।"[1] - हर ऐसी बात से दूर रहो जिसमें तुम्हें माफ़ी माँगनी (उज़्र करना) पड़े।

[अरबी पाठ]: इसे अल-मुख्तारा और दैलमी में भी दोनों ने सनद-ए-हसन के साथ अनस से रिवायत किया। अल-तबरानी ने अल-औसत में जाबिर से, और इब्न मुनैअ ने रिवायत की; और उनके ज़रिए अल-अस्करी ने अपनी अमथाल में और क़ुज़ाई ने अपनी मुसनद में इब्न मुनैअ की सनद के साथ एक साथ रिवायत की। अल-बग़वी ने, और उनकी सनद से अल-तबरानी ने अपनी औसत में, और मुख़लिस ने अपने छठे फ़ायदे में, और अबू मुहम्मद इब्राहिमी ने किताब अस-सलात में, और इब्न अल-नज्जार ने अपनी तारीख़ में; इन सब ने इब्न उमर से रिवायत की। हाकिम ने अपनी सहीह में, बैहक़ी ने अज़-ज़ुहद में, अल-अस्करी ने अल-अमथाल में, और अबू नुऐम ने अल-मारिफ़ा में साद बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत की। अहमद, इब्न माजह और इब्न असाकिर ने अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत की, ये सब इसे मरफ़ू (रसूल अल्लाह तक पहुँचा हुआ) के तौर पर रिवायत करते हैं।

[उर्दू पाठ]: इसे मुख्तारा और दैलमी दोनों ने भी अनस से सनद-ए-हसन के साथ रिवायत किया। तबरानी ने औसत में जाबिर से, और इब्न मुनैअ ने और अस्करी ने अमथाल में और क़ुज़ाई ने अपनी मुसनद में इब्न मुनैअ की सनद के साथ एक साथ रिवायत किया। और बग़वी ने और उनकी सनद से तबरानी ने अपनी औसत में और मुख़लिस ने छठे फ़ायदे में, और अबू मुहम्मद इब्राहिमी ने किताब अस-सलात में और इब्न अल-नज्जार ने अपनी तारीख़ में, सब ने इब्न उमर से, और हाकिम ने अपनी सहीह में और बैहक़ी ने अज़-ज़ुहद में और अस्करी ने अमथाल में और अबू नुऐम ने अल-मारिफ़ा में साद बिन अबी वक़्क़ास से और अहमद, इब्न माजह और इब्न असाकिर ने अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत किया, ये सब...

---

[1] जामी अल-सगीर म'अ फैज़ अल-क़दीर 3/711

رواہ الامام احمد عن ابی العادیۃ والطبرانی فی الکبیر وابن سعد فی الطبقات والعسکری فی الامثال وابن مندۃ فی المعرفۃ والخطیب فی المؤتلف کلھم عن ام العادیۃ عمۃ العاص بن عمرو الطفاوی وعبداللہ بن احمد الامام فی زوائد المسند وابو نعیم وابن مندۃ کلاھما فی المعرفۃ عن العاص المذکور مرسلا وابو نعیم فیھا عن حبیب بن الحارث رضي اللہ تعالی عنھم۔

اس کو امام احمد نے ابو العادیہ سے روایت کیا اور طبرانی نے کبیر میں اور ابن سعد نے طبقات میں اور عسکری نے امثال میں اور ابن مندہ نے معرفہ میں اور خطیب نے مؤتلف میں، ان سب نے اُمِ عادِیہ، عاص بن عمرو طفاوی کی پھوپھی سے روایت کی، اور عبداللہ بن احمد نے زوائدِ مسند میں، اور ابو نعیم اور ابن مندہ نے دونوں معرفہ میں عاص مذکور سے مرسلاً روایت کی، اور ابو نعیم نے معرفہ میں حبیب بن حارث سے روایت کی۔ (ت)

نیز بہت حدیثوں میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ایّاک و کل امر یعتذر منہ 1۔ ہر اس بات سے بچ جس میں عذر کرنا پڑے۔

رواہ ایضا فی المختارۃ والدیلمی کلاھما بسند حسن عن انس والطبرانی فی الاوسط عن جابر و ابن منیچ ومن طریقہ العسکری فی امثالہ والقضاعی فی مسندہ معاً والبغوی ومن طریقہ الطبرانی فی اوسطہ والمخلص فی السادس من فوائدہ وابو محمد الابراہیمی فی کتاب الصلاۃ وابن النجار فی تاریخہ کلہم عن ابن عمرو الحاکم فی صحیحہ والبیھقی فی الزہد و العسکری فی الامثال و ابو نعیم فی المعرفۃ عن سعد بن ابی وقاص واحمد و ابن ماجۃ و ابن عساکر عن ابی ایوب الانصاری کلہم رافعیہ

اس کو بھی مختارہ اور دیلمی میں دونوں نے بسندِ حسن روایت کیا انس سے اور طبرانی نے اوسط میں جابر سے اور ابن منیح نے اور عسکری نے امثال میں اور قضاعی اپنی مسند میں ابن منیح کی سند سے ایک ساتھ اور بغوی نے اور اس کی سند سے طبرانی نے اپنی اوسط میں اور مخلص چھٹے فائدہ میں، اور ابو محمد ابراہیمی نے کتاب الصلوٰۃ میں اور ابن نجار نے اپنی تاریخ میں، سب نے ابن عمر سے، اور حاکم نے اپنی صحیح میں اور بیہقی نے الزہد میں اور عسکری نے امثال میں اور ابو نعیم نے المعرفۃ میں سعد بن ابی وقاص سے اور احمد وابن ماجہ اور ابن عساکر نے ابو ایوب انصاری سے، ان

---

1 جامع الصغیر مع فیض القدیر 3/ 711

Fatawa Ridawiyya Volume II

[Table 1] (Left Column - Arabic): ...to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Al-Bukhari in his History, Al-Tabarani in Al-Kabir, and Ibn Mandah from Sa'd bin 'Umarah as his own statement, may Allah be pleased with them all. (Right Column - Urdu): All these personages attributed this to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Al-Bukhari in his History, Al-Tabarani in Al-Kabir, and Ibn Mandah have narrated it from Sa'd bin 'Umarah as his own statement. May Allah be pleased with them all. (T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Table 2] (Left Column - Arabic): Give glad tidings and do not create aversion (1) - Narrated by the Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i from Anas (may Allah be pleased with him). (Right Column - Urdu): Give glad tidings and do not do things that cause people to feel hatred. Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i narrated this from Anas (may Allah be pleased with him).

Then in it (1) is the opening of the door to backbiting without a legal Sharia reason, and backbiting is forbidden. So, whatever leads to it must at least be undesirable (makruh). (So, whatever leads to it will certainly be at least makruh. T) Thus, it is proven by Sharia evidence and authentic hadiths that avoiding the leftovers of a disbeliever is necessary. And in this (2) chapter, the rule regarding Christians is even stricter than for Hindus. Both share the many mentioned reasons, but in Christians, there is an additional factor: due to their rule here, the decrease in religious hatred poses a much greater risk of conversion or at least weakening of faith compared to Hindus.

[Table 3] (Left Column - Arabic): It is ignorance to rely on what was in the early period, for then they were humiliated and subjugated under our hands. Bringing them close to us meant bringing them close to Islam. Now the matter has reversed, and there is no power nor strength except with Allah. Formerly, women of status used to attend congregations day and night, but the established Imams forbade it, despite his (peace and blessings of Allah be upon him) saying, "Do not prevent the female servants of Allah from the mosques of Allah." For you, the ruling differs with the change of times. (Right Column - Urdu): Here, it would be ignorance to argue from what was practiced in the early period, because in that era they were weak and under our control; therefore, bringing them close was intended to invite them towards Islam. But now the situation has reversed. There was a time when women from

honorable families would attend congregations both during the day and night, but the noble Imams have now prohibited their coming, even though the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "You... Allah..."

[Footnotes] 1. Jami' al-Bukhari, Kitab al-'Ilm, Qadeemi Kutub Khana Karachi 16/1 2. Musnad Imam Ahmad from Ibn Umar, Beirut 16/2

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

[तालिका 1] (बायाँ कॉलम - अरबी): ...नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक। अल-बुखारी ने अपनी तारीख में, अल-तबरानी ने अल-कबीर में और इब्न मंदा ने साद बिन उमारा से उनके कथन के रूप में वर्णित किया है, अल्लाह उन सब से राज़ी हो। (दायाँ कॉलम - उर्दू): सभी महानुभावों ने इसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर मन्सूब किया है, और बुखारी ने अपनी तारीख में, तबरानी ने कबीर में और इब्न मंदा ने साद बिन उमारा से उन्हीं का कथन नकल किया, अल्लाह उन सब से राज़ी हो। (त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[तालिका 2] (बायाँ कॉलम - अरबी): खुशखबरी सुनाओ और नफरत पैदा न करो (1) - इसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (दायाँ कॉलम - उर्दू): खुशखबरी दो और वो काम न करो जिससे लोगों में नफरत पैदा हो। इसे अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया।

फिर उसमें (1) बिना किसी शरीई वजह के गीबत (पीठ पीछे बुराई) का दरवाजा खोलना है और गीबत हराम है। तो जो चीज़ वहां तक पहुँचाए, वह कम से कम मकरूह (नापसंदीदा) ज़रूर होगी। (त) तो शरीई दलीलों और सही हदीसों से साबित हुआ कि काफिर के झूठे से बचना ज़रूरी है। और इस (2) बाब में यहाँ ईसाइयों का हुक्म हिंदुओं के मुकाबले में ज़्यादा सख्त है कि ज़िक्र की गई कई वजहों में दोनों शरीक हैं, और ईसाइयों में यह बात ज़्यादा है कि यहाँ उनकी हुकूमत होने के कारण मजहबी नफरत की कमी से धर्म परिवर्तन या कम से कम ईमान की कमज़ोरी का खतरा हिंदुओं के मुकाबले कहीं ज़्यादा है।

[तालिका 3] (बायाँ कॉलम - अरबी): यहाँ उन चीज़ों से दलील पकड़ना जहालत (अज्ञानता) है जो शुरूआती दौर (सदर-ए-अव्वल) में थीं, क्योंकि तब वे ज़लील और हमारे अधीन थे। उन्हें अपने करीब लाना उन्हें इस्लाम के करीब लाना था। और अब मामला उलट गया है, और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। और एक समय था जब प्रतिष्ठित घरानों की औरतें दिन-रात जमात में शामिल होती थीं, लेकिन प्रतिष्ठित इमामों ने उन्हें मना कर दिया, बावजूद इसके कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "अल्लाह की बंदियों को अल्लाह की मस्जिदों से मत रोको।" और आपके लिए हुक्म ज़माने के बदलाव के साथ बदल जाता है। (दायाँ कॉलम - उर्दू): यहाँ यह बात

जहालत होगी कि उस चीज़ से दलील पेश की जाए जो शुरूआती दौर में थी क्योंकि उस ज़माने में वे कमज़ोर थे और हमारे मातहत थे, इसलिए उन्हें अपने करीब करने से उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाना मक़सद था और अब तो मामला ही उलट गया है। एक ज़माना था कि बा-इज़्ज़त लोगों की औरतें दिन और रात दोनों वक्त जमातों में हाज़िर होती थीं, मगर आइम्मा-ए-किराम ने अब उनके आने की मनाही कर दी है, हालाँकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है: "तुम... अल्लाह..."

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. जामे अल-बुखारी, किताब अल-इल्म, कदीमी कुतुब खाना कराची 16/1 2. मुसनद इमाम अहमद, इब्न उमर से, बेरुत 16/2

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[ٹیبل 1] (بایاں کالم - عربی): الی النبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم والبخاری في تاریخه والطبرانی فی الکبیر وابن مندة عن سعد بن عمارة من قوله رضی اللہ تعالی عنهم اجمعین- (داہنا کالم - اردو): تمام حضرات نے اس کو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف رفع کیا ہے، اور بخاری نے اپنی تاریخ میں اور طبرانی نے کبیر میں اور ابن مندہ نے سعد بن عمارہ سے، انہی کا قول نقل کیا، اللہ ان سب سے راضی ہو۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم :

[ٹیبل 2] (بایاں کالم - عربی): بشروا ولا تنفروا 1 - رواہ الائمة احمد والبخاری ومسلم والنسائی عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ- (داہنا کالم - اردو): بشارت دو اور وہ کام نہ کرو جس سے لوگوں کو نفرت پیدا ہو۔ اسے احمد، بخاری، مسلم اور نسائی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔

پھر اُس میں (۱) بلاوجہ شرعی فتح باب غیبت ہے اور غیبت حرام فمادی الیہ فلا اقل ان یکون مکر وھا (تو جو اس تک پہنچائے وہ کم از کم مکروہ ضرور ہوگا۔ ت) تو دلائل شرعیہ واحادیث صحیحہ سے ثابت ہوا کہ کافر کے جھوٹے سے احتراز ضرور ہے اور اس (۲) باب میں یہاں نصاریٰ کا حکم بہ نسبت ہنود کے بھی سخت تر ہے کہ وجوہ کثیرہ مذکورہ میں دونوں شریک اور نصاریٰ میں یہ امر زائد کہ یہاں ان کی سلطنت ہونے کے باعث مذہبی نفرت کی کمی میں تبدیل دین یا کم از کم ضعف ایمان کا وہ اندیشہ بہ نسبت ہنود کہیں زیادہ ہے۔

[ٹیبل 3] (بایاں کالم - عربی): فمن الجهل التمسك هنا بما في الصدر الاول اذ كانوا اذلاء مقهورين تحت ایدینا فكان في تقریبهم منا تقریبهم الی الاسلام والآن قدانعكس الامر ولا حول ولا قوة الا بالله وقد

كانت نساء ذوی الهیآت یحضرن لیلا ونهارا الجماعات، ونهی عنه الائمة الاثبات، مع قوله صلی الله علیه وسلم لا تمنعوا اماء الله مساجد الله ولکم من حکم یختلف باختلاف الزمان، (داہنا کالم - اردو): یہاں یہ امر جہالت ہوگا اس چیز سے استدلال کیا جائے جو صدر اول میں تھی کیونکہ اس زمانہ میں وہ کمزور تھے اور ہمارے ماتحت تھے اس لئے ان کو اپنے قریب کرنے سے ان کو اسلام کی طرف آنے کی دعوت دینا مقصود تھی اور اب تو معاملہ ہی الٹ ہو گیا ہے، ایک زمانہ تھا کہ باعزت لوگوں کی عورتیں دن اور رات دونوں اوقات میں جماعات میں حاضر ہوتی تھیں، مگر ائمہ کرام نے اب اُن کے آنے کی ممانعت کردی ہے، حالانکہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا ہے تم اللہ

[حواشی] 1 جامع للبخاری کتاب العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۶/۱ 2 مسند امام احمد عن ابن عمر بیروت ۱۶/۲

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Top Section - Arabic/Urdu] ...and place, as evidenced by many branches in the books of the Imams. This is my opinion, and I have given fatwas on this many times. Allah is my Lord, in Him is my reliance, and to Him is my support. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. Urdu Translation: Do not stop the female servants of Allah from the mosques of Allah. And there are many rulings that differ with the change of times, rather they even differ with the difference of the Imams, as many branches in the books of the Imams testify to this. This is the same in my view, and I have given fatwa on this several times. Allah is my Lord, on Him is my trust and towards Him is the support, and Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 48: From Kanpur, Buchar Khana locality, Masjid-e-Rangiyan, sent by Maulvi Abdul Rahman Jathani, student of Madrasa Faiz-e-Aam, 23 Rabi al-Awwal 1312 AH. What is your response, O Scholars, may Allah have mercy on you. Is the water in a hookah pure or not? Explain and be rewarded.

Answer: It is definitely pure. The water is pure, the tobacco is pure, its smoke is pure. The change in color, taste, or smell of pure water by a pure thing cannot make it impure. According to the correct school of thought (1), it is not only pure (tahir) but also purifying (mutahhir) and valid for wudu, in the sense that if one performs wudu with it, it will be valid. Although it is disliked (makruh) due to the smell, and as long as its smell remains, going to the mosque is forbidden and joining the congregation will be prohibited. Furthermore, (2) if someone is on a journey and has little water for wudu—for instance, one or both feet remain unwashed—and there is water in a hookah that can make up for that deficit, then in this case, tayammum will not be permissible and the prayer will be invalid. Instead, completing wudu with that water will be mandatory because he finds water, whereas Allah Almighty says: "And if you find no water, then perform tayammum"[1] (Because he finds water while Allah Almighty says: And if you do not find water, then perform tayammum. - T). It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Bottom Section - Arabic/Urdu] Arabic: Wudu is permissible with water mixed with a solid pure substance like fruit or tree leaves, even if it has changed all its attributes, according to the more correct view, provided that its thinness and its name remain.[2] (Summary) And Allah Almighty knows best. Urdu Translation: Wudu is permissible with water in which a dry pure thing has been mixed, such as fruit or tree leaves,

even if it has changed all its attributes; the correct view is this, provided that its thinness and its name remain. (Summary) And Allah Almighty knows best. (T)

1. Al-Quran 4/43
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/35

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[शीर्ष अनुभाग - अरबी/उर्दू] ...और स्थान, जैसा कि इमामों की पुस्तकों में कई शाखाओं (फ़ुर'अ) से सिद्ध है। यही मेरा मत है और मैंने इस पर कई बार फ़तवा दिया है। अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मेरा सहारा है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: अल्लाह की बंदियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको, और बहुत से अहकाम हैं जो ज़माने के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ होते हैं बल्कि अइम्मा के इख़्तिलाफ़ से भी मुख़्तलिफ़ होते हैं जैसा कि कुतुबे अइम्मा में बहुत सी फ़ुर'अ इस पर शाहिद हैं मेरे नज़दीक यही है इसी पर मैंने कई मर्तबा फ़तवा दिया है अल्लाह मेरा रब है इसी पर एतिमाद और इसी की तरफ़ सहारा है वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। (त)

मसला 48: कानपुर, मुहल्ला बूचड़ ख़ाना, मस्जिदे रंगियां से, मुरसला मौलवी अब्दुल रहमान जठानी, छात्र मदरसा फ़ैज़-ए-आम, 23 रबीउल अव्वल 1312 हिजरी। ऐ उलमा! अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए, आपका क्या जवाब है? हुक्के का पानी पाक है या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: यह निश्चित रूप से पाक (शुद्ध) है। पानी पाक है, तंबाकू पाक है, उसका धुआं पाक है। किसी पाक चीज़ के कारण पाक पानी का रंग, स्वाद या गंध बदल जाना उसे नापाक नहीं कर सकता। यहाँ तक कि (1) सही मज़हब के अनुसार, यह न केवल पाक (ताहिर) है बल्कि पाक करने वाला (मुतह्हिर) और वज़ू के योग्य भी है, इस अर्थ में कि यदि कोई इससे वज़ू करे तो वज़ू हो जाएगा। हालाँकि गंध के कारण यह मकरूह है, यहाँ तक कि जब तक उसकी गंध बनी रहे, मस्जिद में जाना हराम होगा और जमात में शामिल होना वर्जित होगा। फिर भी, (2) यदि कोई यात्रा पर हो और वज़ू के लिए पानी कम हो—उदाहरण के लिए, एक या दोनों पैर धोने से रह गए हों—और हुक्के में पानी हो जिससे वह कमी पूरी हो सकती हो, तो ऐसी स्थिति में तयम्मुम जायज़ नहीं होगा और नमाज़ बातिल (अमान्य) होगी। बल्कि उसी पानी से वज़ू पूरा करना अनिवार्य होगा क्योंकि उसे पानी मिल रहा है, जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और यदि तुम्हें पानी न मिले तो तयम्मुम करो।"[1] (क्योंकि उसे पानी मिल रहा है जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: और तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम करो। - त)। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[निचला अनुभाग - अरबी/उर्दू] अरबी: उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें कोई ठोस पाक चीज़ मिल गई हो, जैसे फल और पेड़ के पत्ते, चाहे उसने उसके सभी गुणों को बदल दिया हो, सबसे सही मत के अनुसार, बशर्ते कि उसकी तरलता और उसका नाम बना रहे।[2] (संक्षेप) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: उस पानी में से वज़ू जायज़ है जिसमें कोई शुष्क पाक चीज़ मिल गई हो, जैसे मेवा और पेड़ के पत्ते, चाहे उसने उसके सभी गुणों को बदल दिया हो, सही यही है, बस शर्त यह है कि उसकी रक़्क़त और उसका नाम बाक़ी रहे। (संक्षेप) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1. अल-क़ुरान 4/43
2. अद-दुर्र अल-मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/35

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

[اوپری حصہ - عربی/اردو] بل والمکان، کما تشھد بہ فروع جمۃ في کتب الائمۃ، وھذا ماعندی و بہ افتیت مرارا واللہ ربي علیہ معتمدی، والیہ مستندی، واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔ اردو ترجمہ: اللہ کی باندیوں کو اللہ کی مساجد سے نہ روکو، اور بہت سے احکام ہیں جو زمانہ کے اختلاف سے مختلف ہوتے ہیں بلکہ ائمہ کے اختلاف سے بھی مختلف ہوتے ہیں جیسا کہ کتب ائمہ میں بہت سی فروع اس پر شاہد ہیں میرے نزدیک یہی ہے اسی پر میں نے کئی مرتبہ فتوٰی دیا ہے اللہ میرا رب ہے اسی پر اعتماد اور اسی کی طرف سہارا ہے واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۸: از کانپور محلہ بوچڑ خانہ مسجد رنگیاں مرسلہ مولوی عبدالرحمٰن جٹھانی طالب علم مدرسہ فیض عام ۲۳ ربیع الاول شریف ۱۳۱۲ھ ماجو ابکم ایھا العلماء رحمکم اللہ تعالٰی۔ حقّہ کا پانی پاک ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: قطعاً پاک ہے پانی پاک، تمباکو پاک، اس کا دھواں پاک، پاک چیز سے پاک پانی کا رنگ مزہ بُو بدل جانا اُسے ناپاک نہیں کر سکتا یہاں تک کہ (۱) مذہب صحیح میں نہ صرف طاہر بلکہ مطہر و قابل وضو رہتا ہے بایں معنیٰ کہ اگر اس سے وضو کرے وضو ہو جائیگا اگرچہ بوجہ بُو مکروہ ہے یہاں تک کہ جب تک اُس کی بُو باقی ہو مسجد میں جانا حرام جماعت میں شامل ہونا منع ہوگا پھر بھی اگر (۲) سفر میں ہو اور وضو کو پانی کم تھا کہ مثلاً ایک یا دونوں پاؤں دھونے سے رہ گئے اور حقّے میں پانی ہے جس سے وہ کمی پوری ہو سکتی ہے تو اس صورت میں تیمّم جائز نہ ہوگا نماز باطل ہوگی بلکہ اُسی پانی سے وضو کی تکمیل لازم ہوگی لانہ یجد ماء و انما یقول اللہ تعالٰی " فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً فَتَیَمَّمُوْا " 1 (کیونکہ وہ پانی کو پارہا ہے جبکہ اللہ تعالٰی فرماتا ہے: اور تم پانی نہ پاؤ تو تیمّم کروت) درمختار میں ہے:

[نچلا حصہ - عربی/اردو] عربی: یجوز بماء خالطہ طاھر جامد کفاکھۃ و ورق شجر وان غیر کل اوصافہ فی الاصح ان بقیت رقتہ واسمہ 2 اھ ملخصاً واللہ تعالٰی اعلم۔ اردو ترجمہ: اُس پانی میں سے وضو جائز ہے جس میں کوئی خشک پاک چیز مل گئی ہو، جیسے میوہ اور درخت کے پتّے، خواہ اُس نے اُس کے تمام اوصاف کو بدل دیا ہو، اصح یہی ہے، بس شرط یہ ہے کہ اس کی رقت اور اُس کا نام باقی رہے ملخصاً واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

1 القرآن ۴/۴۳ 2 الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۵

Fatawa Ridawiyya (Volume 2)

Fatwa named: Rahb al-Saahah fi Miyah la Yastawi Wajhuha wa Jawfuha fil-Misahah 1334 AH Expanding the field concerning those waters whose surface and depth measurements are not equal (T).

Problem 49: 4 Jumada al-Akhirah 1342 AH What do the scholars of religion say regarding these issues? Question 1: A cistern is ten-by-ten (dah-dar-dah) at the bottom but less at the top. If impurity falls into it while it is full, does the whole thing become impure, or only the upper part where the area is less than a hundred hands? Give a ruling and be rewarded.

The Answer In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. According to some, it will not become impure at all because the total volume of water is "Ab-e-Kathir" (a large quantity of water).

Arabic	Urdu
I say: It seems this is based on considering the depth, and some have declared it correct, but the reliable and depended-upon view is otherwise. (T)	I say: This is based on considering the depth, and some have declared it correct, but it is not to be relied upon. (T)

It is mentioned in "Al-Khulasa":

Arabic	Urdu
"If the water of a large cistern freezes, and a person makes a hole in it and performs ablution from it; if the water is separate from the ice, it is permissible. If it is connected to the ice, the scholars have differed about it. Some considered the total amount of water so that it does not become impure, while others considered the place of the hole; if it is large, it is permissible, otherwise not."[1]	When the water of a large cistern freezes and someone makes a hole in it to perform ablution, if the water is separate from the ice, it is permissible. If it is attached to the ice, the scholars differ: some have considered the entire body of water so that it would not become impure, while others have considered the area of the hole; if it's large, it's permissible, otherwise not. (T)

According to some, the whole will become impure.

Arabic	Urdu
I say: It is as if because it is one water, and the consideration is for the surface of the water, and that is small, not for the depth even if it is much.	I say: And perhaps the reason for this is that it is a single body of water and the consideration is for the surface of the water, which is small; the depth is not considered, even if it is significant. (T)

[1] Khulasa al-Fatawa, Section 1, Al-Hiyadh, Naval Kishore Lucknow, 1/41. Page 322 of 711

फ़तावा रिज़विया (खण्ड 2)

फ़तवा नामी: रहब अल-साह फ़ी मियाह ला यस्तवी वजहुहा व जौफ़ुहा फ़िल-मिसाह १३३४ हि. उन पानियों के बारे में मैदान को विस्तृत करना जिनकी सतह और गहराई नाप में बराबर न हो (त)

मसला ४९: ४ जमादी अल-आख़िर १३४२ हि. धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फ़रमाते हैं? पहला सवाल: एक हौज नीचे से दस गुणा दस (दह-दर-दह) है और ऊपर से कम है। यदि इसके भरे होने के दौरान इसमें कोई गंदगी गिर जाए, तो क्या सारा पानी अपवित्र हो जाएगा या केवल ऊपरी हिस्सा जहाँ क्षेत्रफल सौ हाथ से कम है? उत्तर दें और पुण्य के पात्र बनें।

अल-जवाब अल्लाह के नाम से शुरू जो अत्यंत कृपाशील और दयावान है। हम उसकी स्तुति करते हैं और उसके महान रसूल पर दुरूद व सलाम भेजते हैं। कुछ के अनुसार, यह मूल रूप से नापाक नहीं होगा क्योंकि पानी की कुल मात्रा 'आब-ए-कसीर' (ज़्यादा पानी) है।

अरबी

अक़ूल (मैं कहता हूँ): ऐसा लगता है कि यह गहराई के विचार पर आधारित है और कुछ ने इसे सही माना है, लेकिन विश्वसनीय और जिस पर भरोसा किया जाए वह यह नहीं है। (त)

उर्दू

मैं कहता हूँ यह गहराई के एतबार (विचार) पर आधारित है और कुछ ने इसको सही ठहराया है और इस पर भरोसा नहीं है। (त)

"खुलासा" में है:

अरबी

"जब किसी बड़े हौज का पानी जम जाए और कोई व्यक्ति उसमें छेद करके वजू (आचमन) कर ले; यदि पानी बर्फ़ से अलग है, तो यह जायज़ है। यदि वह बर्फ़ से जुड़ा हुआ है, तो विद्वानों के बीच इसमें मतभेद है। कुछ ने पानी की कुल मात्रा का विचार किया है ताकि वह अपवित्र न हो, जबकि अन्य ने छेद के स्थान पर ध्यान दिया है; यदि वह बड़ा है तो जायज़ है, अन्यथा नहीं।"[1]

उर्दू

बड़े हौज का पानी जब जम जाए और कोई उसमें छेद करके वजू कर ले, तो पानी अगर बर्फ़ से अलग है तो जायज़ है और अगर बर्फ़ से जुड़ा है तो उलेमा का इसमें मतभेद है। कुछ ने पूरे पानी का एतबार किया यहाँ तक कि वह नपाक न होगा, और कुछ ने सुराख़ की जगह का एतबार किया, अगर वह बड़ा हो तो जायज़ है वर्ना नहीं। (त)

कुछ के अनुसार सारा नापाक हो जाएगा।

अरबी	उर्दू
अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह इसलिए है क्योंकि यह एक ही पानी है और विचार पानी की सतह का किया जाता है, जो कम है, गहराई का नहीं चाहे वह कितनी ही अधिक क्यों न हो।	मैं कहता हूँ और शायद इसकी वजह यह है कि वह एक पानी है और एतबार पानी की सतह का है और वह कम है, गहराई का एतबार नहीं, चाहे वह ज़्यादा ही क्यों न हो। (त)

[1] खुलासा अल-फ़तावा, अध्याय 1, अल-हियाज़, नवल किशोर लखनऊ, 1/41. पृष्ठ 322/711

فتاوٰی رضویہ (جلد ثانی)

فتوٰی مسمی بہ رحب الساحة فی میاہ لا یستوی وجھھا و جوفھا فی المساحة ۱۳۳۴ھ ان پانیوں کے بارے میں میدان وسیع کرنا جن کی سطح اور گہرائی پیمائش میں برابر نہ ہو (ت)

مسئلہ ۴۹: ۴ جمادی الآخر ۱۳۴۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں سوال اول حوض نیچے دہ دردہ اور اوپر کم ہے بھرے ہوئے میں نجاست پڑی تو سب ناپاک ہوگیا یا صرف اوپر کا حصہ جہاں تک سو ہاتھ سے کم ہے بینوا توجروا۔

الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم ۔ نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم۔ بعض کے نزدیک اصلاً ناپاک نہ ہوگا کہ مجموعہ آب کثیر ہے۔

عربی	اردو
اقول: ویشبہ ان یکون مبنیا علی اعتبار العمق وقد صححہ بعضھم والمعتمد المعول علیہ لا۔	میں کہتا ہوں یہ گہرائی کے اعتبار پر مبنی ہے اور بعض نے اس کو صحیح قرار دیا ہے اور اس پر اعتماد نہیں۔ (ت)

خلاصہ میں ہے:

عربی	اردو
الحوض الکبیر اذا انجمد ماؤہ فنقب انسان نقباً وتوضأ منہ ان کان الماء منفصلا عن الجمد یجوز وان کان متصلا بالجمد اختلف المشایخ فیہ بعضھم اعتبروا جملة الماء	بڑے حوض کا پانی جب جم جائے اور کوئی اس میں سوراخ کرکے وضو کرلے تو پانی اگر برف سے الگ ہے تو جائز ہے اور اگر برف سے متصل ہے تو مشائخ کا اس میں اختلاف ہے بعض نے تمام پانی کا اعتبار کیا

عربی	اردو
حتی لا یتنجس وبعضھم اعتبروا موضع النقب ان کان کبیرا یجوز والافلا[1]۔	یہاں تک کہ وہ نجس نہ ہوگا، اور بعض نے سوراخ کی جگہ کا اعتبار کیا، اگر وہ بڑا ہو تو جائز ہے ورنہ نہیں۔ (ت)

بعض کے نزدیک کل ناپاک ہو جائے گا۔

عربی	اردو
اقول: وکانہ لانہ ماء واحد میں کہتا ہوں اور شاید اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ ایک پانی ہے اور	
والعبرۃ بوجہ الماء وھو قلیل لا بالعمق وان کثر۔	اعتبار پانی کی سطح کا ہے اور وہ قلیل ہے، عمق کا اعتبار نہیں، خواہ زائد ہی کیوں نہ ہو۔ (ت)

[1] خلاصہ الفتاوٰی الجنس الاول الحیاض نولکشور لکھنؤ ۱ / ۴۱ Page 322 of 711

Fatawa Rizvia Volume II Summary states:

'In kana a’lahu aqallu min ‘ashrin fi ‘ashrin wa asfaluhu ‘ashrun fi ‘ashrin fawaqa’at qatratu khamrin thumma intaqasa al-ma’u wa sara ‘ashran fi ‘ashrin ikhtalafa al-masha’ikhu fih.'[1]

If its upper part is less than ten-by-ten and the lower part is ten-by-ten, and a drop of wine falls into it, then the water decreases and becomes ten-by-ten, the scholars differ concerning it. (T)

In 'Badai', the first opinion is described as more spacious and the second as more cautious, and it appears from 'Munyah' that the Fatwa is on the second opinion:

'Haythu qala al-hawdu idha injamada ma’uhu fanuqiba fi mawdi’in minhu fawaqa’at fihi najasatun qala Nasiru wa Abu Bakr al-Iskafu yatanajjasu wa qala Abdullah bin al-Mubarak wa Abu Hafs al-Kabir al-Bukhari la yatanajjasu idha kana al-ma’u tahta al-jamadi ‘ashran fi ‘ashrin wa in kana muttasilan bil-jamadi wal-fatwa ‘ala qawli Nasirin wa Abi Bakrin wa in kana munfasilan ‘an al-jamadi yajuzu bila khilafin kal-hawdi al-musaqqaf.'[2]

They stated that if the water in a pond freezes and a hole is made in some part of it and impurity falls into it, Nasir and Abu Bakr al-Iskaf said it becomes impure, while Abdullah bin al-Mubarak and Abu Hafs Kabir said that if the water under the ice is ten-by-ten, it will not become impure, even if it is touching the ice. The fatwa is upon the statement of Nasir and Abu Bakr. And if it is separate from the ice, then it is permissible without disagreement, just like a pond that has a roof. Its commentator, the researcher Ibn Amir al-Hajj, objected to this, stating that it implies that according to Nasir and Abu Bakr, the pond becomes impure whether the water is touching the ice or is beneath it. Then their statement contradicts this when they say that if it is separate, it is permissible without disagreement. If it is asked why the narration from Nasir and Abu Bakr was not interpreted to apply only when it is touching the ice, so that the contradiction from the author is resolved? I say: because their statement 'if it is touching the ice' contradicts this.

[1] Khulasat al-Fatawa, Section One: Al-Hiyad, Nawal Kishore Lucknow, 1/4 [2] Munyat al-Musalli, Chapter on Ponds, Maktaba Qadiriyah, Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 70
Page 323 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द सानी (द्वितीय) सारांश में है:

'इन काना अलाहु अक़ल्लु मिन अश् रिन फ़ी अश् रिन व असफ़लहू अश् रून फ़ी अश् रिन फ़वक़ अत क़तरतु खम़रिन थुम्मा इंतक़सल माउ व सारा अश् रन फ़ी अश् रिन इख़्तलफ़ल मशाईख़ु फ़ीह।'[1]

यदि इसका ऊपरी भाग दस गुणा दस (दह-दर-दह) से कम है और निचला भाग दस गुणा दस है, और अब इसमें शराब की एक बूंद गिर जाए, फिर पानी कम हो जाए और दस गुणा दस हो जाए, तो इसमें विद्वानों (मशाईख़) का मतभेद है। (त)

'बदाइ' में पहले मत को विस्तृत और दूसरे को अधिक सुरक्षित कहा गया है, और 'मुन्याह' से पता चलता है कि इसी दूसरे मत पर फतवा है:

'हैथु क़ाल अल-हौज़ु इज़ा इंजमदा माउहु फ़नुक़िबा फ़ी मौदि'इन मिन्हु फ़वक़ अत फ़ीहि नजासतून क़ाला नसीरु व अबू बक्र अल-इस्काफ़ु यतनज्जसु व क़ाला अब्दुल्लाह बिन अल-मुबारक व अबू हफ़्स अल-कबीर अल-बुख़ारी ला यतनज्जसु इज़ा कानल माउ तह़्तल जम़दि अश् रन फ़ी अश् रिन व इन कान मुत्तसिलन बिल-जम़दि वल-फ़तवा अला क़ौलि नसीरिन व अबी बक्रिन व इन कान मुनफ़सिलन अन अल-जम़दि यजूज़ु बिला ख़िलाफ़िन कल-हौज़िल मुसक़्क़फ़।'[2]

उन्होंने फरमाया कि यदि तालाब का पानी जम जाए और उसमें किसी जगह छेद किया जाए और उसमें गंदगी गिर जाए, तो नसीर और अबू बक्र अल-इस्काफ ने कहा कि वह अशुद्ध हो जाएगा, जबकि अब्दुल्लाह बिन मुबारक और अबू हफ़्स कबीर ने फरमाया कि यदि बर्फ के नीचे का पानी दस गुणा दस हो, तो वह अशुद्ध नहीं होगा, भले ही वह बर्फ से जुड़ा हो। फतवा नसीर और अबू बक्र के मत पर है। और यदि वह बर्फ से अलग हो, तो बिना किसी मतभेद के जायज़ है, जैसे कि छत वाला तालाब। इसकी व्याख्या करने वाले शोधकर्ता इब्न अमीर अल-हज ने इस पर आपत्ति की है कि इससे पता चलता है कि नसीर और अबू बक्र के अनुसार तालाब अशुद्ध हो जाता है, चाहे पानी बर्फ से जुड़ा हो या उसके नीचे हो। फिर उनका यह कहना इसके विपरीत है कि यदि वह अलग हो, तो बिना किसी मतभेद के जायज़ है। यदि यह पूछा जाए कि नसीर और अबू बक्र से जो वर्णित है, उसे इस पर क्यों नहीं लिया गया कि यह उस स्थिति में है जब वह बर्फ से जुड़ा हो, ताकि लेखक का विरोधाभास दूर हो जाए? मैं कहता हूँ: क्योंकि उनका यह कहना कि 'यदि वह बर्फ से जुड़ा हो' इसके विपरीत है।

[1] खुलासा अल-फ़तावा, अल-जिन्स अल-अव्वल: अल-हयाज़, नवल किशोर लखनऊ, 1/4 [2] मुन्यात अल-मुसल्ली, हयाज़ का अध्याय, मकतबा क़ादिरिया, जामिया निज़ामिया रिज़विया लाहौर, पृ. 70

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی خلاصہ میں ہے:

ان کان اعلاہ اقل من عشر فی عشر و اسفلہ عشر فی عشر فوقعت قطرۃ خمر ثم انتقص الماء وصار عشرا فی عشر اختلف المشائخ فیہ 1 اگر اس کا بالائی حصہ دہ در دہ سے کم ہے اور نچلا دہ در دہ ہو اب اس میں ایک قطرہ شراب کا گر جائے پھر پانی کم ہوجائے اور دہ در دہ ہو جائے، تو اس میں مشائخ کا اختلاف ہے۔ (ت)

بدائع میں اول کو اوسع ثانی کو احوط فرمایا اور منیہ سے ظاہر ہوتا ہے کہ اسی دوم پر فتوی ہے: حیث قال الحوض اذا انجمد ماؤہ فنقب فی موضع منہ فوقعت فیہ نجاسۃ قال نصیر وابو بکر الاسکاف یتنجس وقال عبداللہ بن المبارك وابو حفص الکبیر البخاري لایتنجس اذا کان الماء تحت الجمد عشرا فی عشر وان کان متصلا بالجمد والفتوی علی قول نصیر وابی بکر وان کان منفصلا عن الجمد یجوز بلا خلاف کالحوض المسقف 2 اھ انہوں نے فرمایا کہ حوض کا پانی جم جائے اور اس میں کسی جگہ سوراخ کیا جائے اور اس میں نجاست گر جائے تو نصیر اور ابوبکر الاسکاف نے فرمایا وہ ناپاک ہو جائیگا، اور عبداللہ بن مبارک اور ابو حفص کبیر نے فرمایا کہ اگر برف کے نیچے پانی دہ در دہ ہو تو ناپاک نہ ہوگا، اگرچہ برف سے متصل ہو اور فتوٰی نصیر اور ابوبکر کے قول پر ہے اور اگر برف سے جدا ہو تو بغیر اختلاف کے جائز ہے جیسے وہ حوض جس کے اوپر چھت ہو اہ اس پر اس کے شارح محقق ابن امیر الحاج نے اعتراض کیا کہ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حوض نصیر اور ابوبکر کے نزدیک نجس ہو جاتا ہے خواہ پانی برف سے ملا ہوا ہو یا اس کے نیچے ہو، پھر اس کے مخالف ہے اُن کا قول کہ اگر منفصل ہو تو جائز ہے بلاخلاف، اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ جو نصیر اور ابوبکر سے منقول ہے اسکو اس پر کیوں محمول نہیں کیا گیا کہ یہ اُس صورت میں ہے جبکہ وہ برف سے متصل ہو اور تناقض مصنف سے رفع ہو گیا، میں

1 خلاصہ الفتاوی الجنس الاول الحیاض نولکشور لکھنو ۱/۴ 2 منیۃ المصلی فصل الحیاض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۰ Page 323 of 711

Fatawa Razawiyya (Volume 2)

[Arabic Column Text] So the fatwa is based on Nasir's statement, for it signifies that the subject matter of the issue is more general, and that Nasir and Abu Bakr state it becomes impure absolutely, while Ibn al-Mubarak and Abu Hafs state it does not become impure absolutely. Reflect on it. End. I say: May Allah have mercy on the researcher (1). There is no doubt that the initial discussion regarding the connected part is clarified by what is in al-Bada'i: that if it were solid and a hole was made in a part of it, then if the water is not connected to the side, it is permissible without disagreement. But if it is connected and the hole is small, the scholars differed. Nasir bin Yahya and Abu Bakr al-Iskaf said there is no good in it. Ibn al-Mubarak was asked and said: "There is no harm in it," and said: "Does the water not move underneath it?" This is the statement of Sheikh Abu Hafs al-Kabir, and this is more accommodating, while the first is more cautious. End. The researcher has cited it here in al-Hilya. I say: (2) If it were not for this, it would have no interpretation except that, because the mind only anticipates it as it is prevalent, and it is rare for the upper part to freeze while the lower part remains separated from it unless a hole is made and a substantial amount is drained from it. And regarding what he was refuted with concerning inconsistency. (3) So I say: It is not directed at him because his statement...

[Urdu Column Text] I will say, because his statement contradicts it, that if it is connected with the ice, the fatwa will be according to Nasir's statement, because it is known from this that the subject of the issue is general and that both Nasir and Abu Bakr say it will be absolutely impure, and Ibn al-Mubarak and Abu Hafs say it will not be absolutely impure. Reflect on it. End. (T) I say, may Allah have mercy on the researcher, indeed the initial part of the discourse is regarding the connected [water]. Its explanation is in Bada'i, and that is: if it is solid and a hole has been made in any part of it, then if the water is not mixed with the ice, it is permissible without disagreement, and if it is connected and the hole is small, then there is a difference among the scholars. Nasir bin Yahya and Abu Bakr al-Iskaf say there is no good in it, and when Ibn al-Mubarak was asked, he said there is no harm in it, and further said: "Is there no movement in the water below it?" And this is the statement of Abu Hafs al-Kabir, and this is easier while in the former, the aspect of caution is greater. End. And the researcher quoted this here in Hilya. (T) I say if this were not the case, then its interpretation would be this, because the mind's precedence is towards this because this is what is prevalent, and it is rare that the upper part freezes and the

lower part remains separate from it, yes, if a hole is made in it and water is removed to a considerable extent, then it can become separate. And as for the thing with which it has been refuted, i.e., inconsistency, then I say this is not directed towards them because...

[Footnotes] 1. Hilya 2. Bada'i al-Sana'i, chapter regarding the explanation of quantity, etc. H.M. Saeed Company, Karachi, 1/73.

फ़तावा रज़विया (खण्ड 2)

[अरबी कॉलम का अनुवाद] अतः फतवा नासिर के कथन के अनुसार है क्योंकि यह दर्शाता है कि मुद्दे का विषय अधिक सामान्य है, और यह कि नासिर और अबू बक्र कहते हैं कि वह पूर्ण रूप से अशुद्ध हो जाता है, जबकि इब्न अल-मुबारक और अबू हफ़्स कहते हैं कि वह पूर्ण रूप से अशुद्ध नहीं होता है। इस पर चिंतन करें। (अंत)। मैं कहता हूँ: अल्लाह शोधकर्ता (1) पर दया करे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जुड़े हुए [पानी] के विषय में बातचीत की शुरुआत अल-बदई में जो है उससे स्पष्ट होती है: कि यदि वह ठोस हो और उसके किसी हिस्से में छेद किया गया हो, तो यदि पानी किनारे से जुड़ा नहीं है, तो बिना किसी मतभेद के अनुमेय है। लेकिन अगर यह जुड़ा हुआ है और छेद छोटा है, तो विद्वानों में मतभेद है। नासिर बिन यह्या और अबू बक्र अल-इस्काफ ने कहा कि इसमें कोई भलाई नहीं है। इब्न अल-मुबारक से पूछा गया तो उन्होंने कहा: "इसमें कोई हर्ज नहीं है," और कहा: "क्या इसके नीचे पानी में हलचल नहीं होती?" यह शेख अबू हफ़्स अल-कबीर का कथन है, और यह अधिक व्यापक है, जबकि पहला अधिक सावधानी वाला है। (अंत)। शोधकर्ता ने इसे यहाँ अल-हिल्या में उद्धृत किया है। मैं कहता हूँ: (2) और यदि यह नहीं होता, तो इसकी व्याख्या करने का इसके अलावा कोई तरीका नहीं होता, क्योंकि मन केवल इसी की ओर जाता है क्योंकि यही प्रचलित है, और यह दुर्लभ है कि ऊपरी हिस्सा जम जाए जबकि निचला हिस्सा उससे अलग रहे, जब तक कि उसमें छेद न किया जाए और उसमें से पर्याप्त मात्रा में पानी न निकाला जाए। और जहाँ तक उस बात का सवाल है जिससे उसका विरोध किया गया, यानी असंगति। (3) तो मैं कहता हूँ: यह उनकी ओर निर्देशित नहीं है क्योंकि उनका कथन...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] मैं कहूँगा, क्योंकि उनका कथन इसका खंडन करता है कि यदि बर्फ के साथ जुड़ा हो, तो फतवा नासिर के कथन पर होगा, क्योंकि इससे पता चलता है कि मसले का विषय सामान्य है और यह कि नासिर और अबू बक्र दोनों कहते हैं कि वह पूरी तरह से नजिस होगा, और इब्न अल-मुबारक और अबू हफ़्स कहते हैं कि वह पूरी तरह से नजिस नहीं होगा। (इस पर विचार करें। अंत) (T) मैं कहता हूँ, अल्लाह शोधकर्ता पर दया करे, वास्तव में बातचीत का प्रारंभिक हिस्सा जुड़े हुए [पानी] के बारे में है। इसका स्पष्टीकरण बदई में है, और वह यह है कि: यदि वह ठोस हो और उसके किसी हिस्से में छेद कर लिया गया हो, तो यदि पानी बर्फ से मिला हुआ न हो, तो बिना किसी मतभेद के जायज़ है, और यदि जुड़ा हो और छेद छोटा हो, तो विद्वानों में मतभेद है। नासिर बिन यह्या और अबू बक्र अल-इस्काफ फरमाते हैं इसमें कोई भलाई नहीं है और इब्न अल-मुबारक से

पूछा गया तो फ़रमाया इसमें कोई हर्ज नहीं है, और यह भी फ़रमाया: क्या उसके नीचे पानी में हरकत नहीं होती है? और यही अबू हफ़्स अल-कबीर का क़ौल है, और यह ज़्यादा आसान है जबकि पहले में एहतियात (सावधानी) का पहलू ज़्यादा है। (अंत)। और शोधकर्ता ने इसे यहाँ हिल्या में नक़ल किया। (T) मैं कहता हूँ अगर यह बात न होती तो इसका महमल (आधार) यही होता, क्योंकि ज़हन की सबक़त इसी तरफ़ होती है क्योंकि ग़ालिब (प्रचलित) यही है और यह नादिर (दुर्लभ) है कि ऊपर वाला मुंजमिद (जम) हो जाए और नीचे वाला उससे जुदा रहे, हाँ अगर उसमें सूराख़ करके काबिले लिहाज़ (पर्याप्त) हद तक पानी निकाल लिया जाए तो जुदा हो सकता है। और जिस चीज़ से इस पर रद किया है यानी मुनाफ़ात (असंगति), तो मैं कहता हूँ यह इन की तरफ़ मुतवज्जह नहीं क्योंकि

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. हिल्या 2. बदई अस-सन्नई, मात्रा के स्पष्टीकरण का अध्याय, आदि। एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/73।

पृष्ठ 324, 711 में से

فتاویٰ رضویہ (جلد ثانی)

[عربی کالم کا متن] فالفتوی علی قول نصیر فانه یفید ان موضوع المسألة اعم وان نصیراً و ابا بکر یقولان ینجس مطلقاً وابن المبارك وابا حفص یقولان لا ینجس مطلقاً فتأمله اھ اقول: رحم اللہ (۱) المحقق لا شك ان اول الکلام فی المتصل یوضحه ما فی البدائع ان کان جامدا ونقب فی موضع منه فان کان الماء غیر متصل بالجنب یجوز بلاخلاف وان متصلا والنقب صغیرا اختلف المشائخ قال نصیر بن یحیی وابو بکر الاسکاف لا خیر فیه وسئل ابن المبارك فقال لا باس به وقال الیس الماء یضطرب تحته وھو قول الشیخ ابي حفص الکبیر وھذا اوسع والاول احوط اھ وقد نقله المحقق فی الحلیة ھھنا۔ اقول: (۲) ولولا ھذا لم یکن له محمل الا ذاك لان الذھن لا یسبق منه الا الیه اذھو الغالب ونادر ان ینجمد الاعلی ویبقی الاسفل منفصلا عنه الا اذا نقب واستفرغ منه شیئ صالح، وما رد به علیه من المنافاۃ۔ (۳) فاقول: غیر متوجه الیه فان قوله

[اردو کالم کا متن] کہوں گا، اس لئے کہ منافی اس کا قول کہ اگر برف کے ساتھ متصل ہو تو فتوی نصیر کے قول پر ہوگا، کیونکہ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ موضوع مسئلہ اعم ہے اور یہ کہ نصیر اور ابوبکر دونوں کہتے ہیں کہ وہ مطلقاً نجس ہوگا، اور ابن مبارک اور ابوحفص کہتے ہیں کہ وہ مطلقاً نجس نہیں ہوگا فتأملہ اھ (ت) میں کہتا ہوں، اللہ محقق پر رحم کرے بیشک کلام کا ابتدائی حصہ متصل میں ہے اس کی وضاحت بدائع میں ہے، اور وہ یہ کہ اگر وہ جامد ہو اور اس کے کسی حصہ میں سوراخ کر لیا گیا ہو تو اگر پانی برف سے ملا ہوا نہ ہو تو بلاخلاف جائز ہے اور اگر متصل ہو اور سوراخ چھوٹا ہو تو مشائخ کا اختلاف ہے، نصیر بن یحییٰ اور ابوبکر الاسکاف فرماتے ہیں اس میں خیر نہیں اور ابن مبارک سے دریافت کیا گیا تو فرمایا اس میں حرج نہیں، نیز فرمایا کیا اس کے نیچے پانی میں حرکت نہیں ہوتی ہے اور یہی ابوحفص الکبیر کا قول ہے اور یہ

زیادہ آسان ہے جبکہ پہلے میں احتیاط کا پہلو زیادہ ہے اھ اور محقق نے اس کو یہاں حلیہ میں نقل کیا۔ (ت) میں کہتا ہوں اگر یہ بات نہ ہوتی تو اس کا محمل یہی ہوتا، کیونکہ ذہن کی سبقت اسی کی طرف ہوتی ہے کیونکہ غالب یہی ہے اور یہ نادر ہے کہ اوپر والا منجمد ہو جائے اور نیچے والا اس سے جدا رہے، ہاں اگر اس میں سوراخ کر کے قابل لحاظ حد تک پانی نکال لیا جائے تو جدا ہو سکتا ہے۔ اور جس چیز سے اس پر رد کیا ہے یعنی منافات، تو میں کہتا ہوں یہ ان کی طرف متوجہ نہیں کیونکہ

[حواشی] 1 حلیہ 2 بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۳

Fatawa Rizvia, Volume Two

"And if it is connected to ice" is not a condition whose result is 'al-fatwa' (the decree), such that its benefit would be that the discourse of Nasir and Abu Bakr is regarding what is more general than connection. Rather, it is a completion of Ibn al-Mubarak's statement. The "in" is for connection (wasliyah), and the "fa" in 'fal-fatwa' is rhetorical (fasiha). The meaning is that if it is separated from the ice, it is permissible without dispute; and if it is connected, it is likewise the ruling according to Abdullah and Abu Hafs. Nasir and Abu Bakr say no, and the decree is based on that. Furthermore, in most copies of Al-Munya, "wa-alayhi al-fatwa" is with the "wa" (and) not the "fa". His statement "if it was connected" is not with the "fa" in the core text quoted in Al-Hilya, so the source of misconception is completely eliminated. Then I saw Al-Ghunya, which interpreted it according to the truth and provided another benefit that you will learn about later. (T)

And the correct view is that only the upper portion will be impure which is less than ten by ten cubits (dah dar dah). To the extent that if the upper water is removed and the water remains at the level where it is ten by ten, then this water is pure. This is because although it was connected to impure water, a large body of water (Ma-e-Katheer) does not become impure through connection with impurity until its color, smell, or taste changes due to the impurity. It is stated in Al-Hindiyyah:

If the upper part of a pool is less than ten by ten (cubits) and its lower part is ten by ten or more, and impurity falls into the upper part of the pool and a ruling of impurity is given, except for above it, then the water level decreases and reaches a point which is ten by ten, then the more correct opinion is that performing ablution (wudu) with it and bathing (ghusl) in it is permissible.

---

1. Fatawa Hindiyyah, Book Two, The Still Water, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/19 Page 325 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

उनका कथन "और अगर वह बर्फ से जुड़ा हो" वह शर्त नहीं है जिसका परिणाम 'फत्वा' (फतवा) हो, ताकि इसका लाभ यह हो कि नसीर और अबू बक्र की बात उसमें हो जो जुड़ाव से अधिक व्यापक है। बल्कि यह इब्न अल-मुबारक के कथन का पूरक है। "इन" जोड़ने के लिए है, और 'फल-फत्वा' में "फा" 'फसीहा' (अलंकृत) है। इसका अर्थ यह है कि यदि वह बर्फ से अलग हो, तो बिना किसी विवाद के जायज़ है; और यदि जुड़ा हो, तो अब्दुल्ला और अबू हफ्स के अनुसार भी यही हुक्म है। नसीर और अबू बक्र कहते हैं कि नहीं, और इसी पर फतवा है। इसके अलावा, मुनिया की अधिकांश प्रतियों में "व-अलैहि अल-फत्वा" "वाव" के साथ है न कि "फा" के साथ। उनका कथन "अगर वह जुड़ा हो" अल-हिलिया में उद्धृत मूल पाठ में "फा" के साथ नहीं है, इसलिए भ्रम का आधार पूरी तरह से समाप्त हो गया। फिर मैंने अल-गुनिया देखा, उन्होंने इसकी सही व्याख्या की और एक अन्य लाभ बताया जिसे आप बाद में जानेंगे। (त)

और सही बात यह है कि वही ऊपरी हिस्सा नापाक होगा जो दस-बाय-दस (दह दर दह) से कम है। यहाँ तक कि अगर ऊपर का पानी निकाल दिया गया और पानी वहाँ तक रह गया जहाँ वह दस-बाय-दस है, तो यह पानी पाक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भले ही वह नापाक पानी से जुड़ा था, लेकिन पानी का बड़ा भंडार (मा-ए-कसीर) गंदगी के संपर्क में आने से तब तक नापाक नहीं होता जब तक कि गंदगी के कारण उसका रंग, गंध या स्वाद न बदल जाए। हिंदिया में है:

अगर हौज (कुंड) का ऊपरी हिस्सा दस-बाय-दस से कम हो और उसका निचला हिस्सा दस-बाय-दस या उससे अधिक हो, और हौज के ऊपरी हिस्से में गंदगी गिर जाए और उसे नापाक होने का हुक्म दे दिया जाए, फिर पानी घट जाए और ऐसी जगह पहुँच जाए जो दस-बाय-दस हो, तो सबसे सही बात यह है कि उससे वज़ू करना और उसमें गुसल करना जायज़ है।

---

1. फतावा हिंदिया, दूसरा, अल-मा अल-राकिद (ठहरा हुआ पानी), नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/19 पेज 325 of 711

ان کا قول "وان کان متصلاً بالجمد" شرط نہیں جس کی جزا فالفتوی ہو تاکہ اس کا فائدہ یہ ہو کہ نصیر اور ابوبکر کا اس میں کلام ہے جو اتصال سے اعم ہے بلکہ وہ ابن مبارک کے کلام کا تتمہ ہے اور "ان" وصلیہ ہے اور فالفتوٰی میں فاء فصیحہ ہے اور معنی یہ ہیں کہ اگر وہ برف سے جُدا ہو تو بلاخلاف جائز ہے اور اگر متصل ہو تو اسی طرح عبد اللہ اور ابو حفص کے نزدیک حکم ہے اور نصیر اور ابو بکر کہتے ہیں نہیں، اور اسی پر فتوٰی ہے، علاوہ ازیں منیہ کے عام نسخوں میں وعلیہ الفتوٰی واؤ کے ساتھ ہے فاء کے ساتھ نہیں، اس کا قول فان کان متصلاً نفس متن میں فاء کے ساتھ نہیں جو حلیہ میں منقول ہے، تو وہم کی بنیاد ہی ختم ہوگئی۔ پھر میں نے غُنیہ میں دیکھا کہ انہوں نے اس کی حق تفسیر کی، اور ایک اور فائدہ بیان کیا جو ہم آئندہ بیان کریں گے۔ (ت)

اور صحیح یہ ہے کہ وہی بالائی حصہ ناپاک ہوگا جو دہ در دہ سے کم ہے یہاں تک کہ اگر اوپر کا پانی نکال دیا گیا اور آب وہاں تک رہ گیا جہاں سے دہ در دہ ہے تو یہ پانی پاک ہے اس لئے کہ اگرچہ وہ آبِ نجس سے متصل تھا مگر آبِ کثیر اتصال نجس سے ناپاک نہیں ہوتا جب تک نجاست سے اُس کا رنگ یا بُو یا مزہ بدل نہ جائے، ہندیہ میں ہے:

اگر حوض کا بالائی حصہ دہ در دہ سے کم ہو اور اس کا نچلا حصہ دہ در دہ ہو یا زیادہ ہو اور نجاست حوض کے اوپر والے حصے میں گرجائے، اور اوپر والے حصے کے نجس ہونے کا حکم کردیا جائے، پھر پانی گھٹ جائے اور ایسی جگہ پہنچ جائے جو دہ در دہ ہو تو اصح یہ ہے (کہ اس سے وضو کرنا اور اس میں غسل کرنا جائز ہے)۔

---

1 فتاوٰی ہندیہ، الثانی الماء الراکد، نورانی کتب خانہ پشاور، 19/1 Page 325 of 711

As in Al-Muhit.	**That performing ablution and bathing from it is permissible, as mentioned in Al-Muhit. (T)**
In Bahr al-Ra'iq:	
And Siraj al-Hindi mentioned that the view of permissibility is more appropriate.[1]	And Siraj al-Hindi has mentioned that the more appropriate view is its permissibility. (T)

In Hilya: | The text in Al-Dhakhira is that this is more appropriate.[2] | The text in Al-Dhakhira states that this itself is more appropriate. (T) |

The fatwa mentioned in Munya also means the same, that the fatwa is on the impurity of the upper part, not the whole; it is in Ghunya:

(When the water of a pond freezes and a hole is made in one place and the water under the ice remains connected to it (then an impurity fell into it; Nasir and Abu Bakr said the water becomes impure) because it is connected to the ice, so one part of it cannot flow to another, thus the impurity will fall into a small amount of water and corrupt it (and Ibn Mubarak and Abu Hafs said no, even if it was) meaning even if (the water was connected to the ice) because it is ten by ten (and the fatwa is on the saying of Nasir) for what we said (and as for when it is) the water under the ice (separate) from it (then it is permissible) and the water will not be corrupted because the assumption is that it is ten by ten and no part of it is separate from the rest, as in the first case.	**(When the water of a pond freezes and a hole is made in a certain place and the water under the ice remains connected to it (and an impurity falls into it, then Nasir and Abu Bakr said the water will become impure) because it is connected to the ice, so one part of it will not go towards another part and in this way the impurity will fall into a small quantity of water, and will corrupt it (and Ibn Mubarak and Abu Hafs said no, even if it is) i.e., even if the ice is connected to the water, because it is ten by ten (and the fatwa is on Nasir's saying) as we said (and if the water is) under the ice, separate from the ice (then it is permissible) and the water will not be corrupted because the assumption is that it is ten by ten and no part of it is separate from the rest of the water, as in the first case. (T)**

Similarly, in Munya, what was connected to it:

And if the ice is truly pierced and the water rises, and a dog laps [from it], it becomes impure according to the general consensus of scholars.[3]	**And if a hole was made in the ice and the water rose up, and a dog put its mouth in it, then according to the common scholars it will become impure. (T)**

[1] Bahr al-Ra'iq, Chapter on Standing Water, H.M. Saeed Company Karachi 1/77 [2] Hilya
[3] Ghunya al-Mustamli Sharh Munya al-Musalli, Chapter on Ponds, p. 99

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

जैसा कि अल-मुहीत में है।

कि इससे वज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ (अनुमति योग्य) है जैसा कि अल-मुहीत में है। (त)

बहर-उर-राइक में है:

और सिराज अल-हिंदी ने उल्लेख किया है कि जाइज़ होना ही अधिक उपयुक्त है।[1]

और सिराज हिंदी ने ज़िक्र किया है कि अश्बह (अधिक उपयुक्त) जवाज़ (अनुमति) है। (त)

हिलया में है: | ज़ख़ीरा में इबारत (नत्स) है कि यही अश्बह है।[2] | ज़ख़ीरा में नत्स है कि यही अश्बह है। (त) |

फ़तवा जो मुन्या में ज़िक्र हुआ उससे भी यही मुराद (तात्पर्य) है कि ऊपरी हिस्से की नजासत (अशुद्धि) पर फ़तवा है न कि पूरे पर; ग़ुनिया में है:

(हौज़ का पानी जब जम जाए और किसी जगह छेद किया जाए और बर्फ़ के नीचे वाला पानी उससे जुड़ा रहे (तो उसमें अशुद्धि गिर गई; नसीर और अबू बक्र ने फ़रमाया कि पानी नापाक हो जाएगा) क्योंकि वह बर्फ़ से जुड़ा हुआ है, इसलिए उसका कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से तक नहीं पहुँच पाएगा, और इस तरह अशुद्धि थोड़े से पानी में गिरेगी और उसे ख़राब कर देगी (और इब्न मुबारक और अबू हफ़्स ने कहा कि नहीं, चाहे वह हो) यानी चाहे (पानी बर्फ़ से जुड़ा हो) क्योंकि वह दस-दर-दस है (और फ़तवा नसीर के क़ौल पर है) जैसा कि हमने कहा (और रहा जब वह हो) बर्फ़ के नीचे का पानी (उससे अलग) (तो जाइज़ है) और पानी ख़राब नहीं होगा क्योंकि मानना यह है कि यह दस-दर-दस है और इसका कोई हिस्सा बाक़ी से अलग नहीं है, जैसा कि पहली सूरत में था।

(हौज़ का पानी जब जम जाए और किसी जगह सुराख़ किया जाए और बर्फ़ के नीचे वाला पानी उसके साथ मुत्तसिल (जुड़ा) रहे (तो उसमें नजासत गिर गई, तो नसीर और अबू बक्र ने फ़रमाया पानी नजिस (नापाक) हो जाएगा) क्योंकि वह बर्फ़ के साथ मुत्तसिल है तो उसका बाज़ हिस्सा दूसरे बाज़ की तरफ़ नहीं जाएगा और इस तरह नजासत क़लील (थोड़े) पानी में गिरेगी, और उसको फ़ासिद (ख़राब) कर देगी (और इब्न मुबारक और अबू हफ़्स ने कहा नहीं अगरचे वह हो) यानी बर्फ़ पानी से मुत्तसिल हो, क्योंकि वह दह-दर-दह है (और फ़तवा नसीर के क़ौल पर है) जैसा कि हमने कहा (और अगर पानी हो) बर्फ़ के नीचे जुदा बर्फ़ से (तो जाइज़ है) और पानी फ़ासिद न होगा क्योंकि मफ़रूज़ा (मानना) यह है कि यह दह-दर-दह है और उसका कोई हिस्सा बाक़ी पानी से जुदा नहीं जैसा कि पहली सूरत में है। (त)

इसी तरह मुन्या में जो इसके मुत्तसिल (जुड़ा हुआ) था:

और अगर बर्फ़ में सुराख़ किया गया और पानी ऊपर चढ़ आया और कुत्ते ने मुँह डाल दिया, तो आम उलेमा के नज़दीक वह नजिस हो जाएगा।[3]

और अगर बर्फ़ में सुराख़ किया तो पानी ऊपर चढ़ आया उसमें कुत्ते ने मुँह डाल दिया तो आम उलेमा के नज़दीक नजिस हो जाएगा। (त)

[1] बहर-उर-राइक, बहस अल-मा अल-दाइम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/77 [2] हिलया [3] ग़ुनिया अल-मुस्तमली शरह मुन्या अल-मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल हयाज़, पृष्ठ 99

کذا فی المحیط کہ اس سے وضو اور غسل جائز ہے کذا فی المحیط (ت)

بحر الرائق میں ہے:

وذکر السراج الہندی ان الاشبہ الجواز 1۔ اور سراج ہندی نے ذکر کیا ہے کہ اشبہ جواز ہے۔ (ت)

حلیہ میں ہے: | نص فی الذخیرۃ انہ الاشبہ 2۔ | ذخیرہ میں نص ہے کہ یہی اشبہ ہے۔ (ت) |

فتوٰی کہ منیہ میں مذکور ہوا اس سے بھی یہی مراد ہے کہ حصہ بالائی کی نجاست پر فتوٰی ہے نہ کہ کل کی، غنیہ میں ہے:

(الحوض اذا انجمدمآؤہ فنقب فی موضع وبقی الماء تحت الجمد متصلا بہ (فوقعت فیہ نجاسة قال نصیرو ابو بکر یتنجس الماء) لکونہ متصلا بالجمد فلا یخلص بعضہ الی بعض فیکون وقوع النجاسة فی ماء قلیل فیفسدہ (وقال ابن المبارك وابو حفص لاوان کان) ای ولو کان (الماء متصلا بالجمد) للکونہ عشرا فی عشر (والفتوی علی قول نصیر) لما قلنا (واما اذا کان) الماء تحت الجمد (منفصلا) عنہ (فیجوز) ولا یفسد الماء لان الفرض انہ عشر فی عشر و لم تنفصل بقعة منہ عن سائرہ کما فی الصورة الاولی۔

(حوض کا پانی جب جم جائے اور کسی جگہ سوراخ کیا جائے اور برف کے نیچے والا پانی اس کے ساتھ متصل رہے (تو اس میں نجاست گر گئی، تو نصیر اور ابو بکر نے فرمایا پانی نجس ہو جائیگا) کیونکہ وہ برف کے ساتھ متصل ہے تو اس کا بعض حصہ دوسرے بعض کی طرف نہیں جائیگا اور اس طرح نجاست قلیل پانی میں گرے گی، اور اس کو فاسد کر دے گی (اور ابن مبارک اور ابو حفص نے کہا نہیں اگرچہ وہ ہو) یعنی برف پانی سے متصل ہو، کیونکہ وہ دہ در دہ ہے (اور فتویٰ نصیر کے قول پر ہے) جیسا کہ ہم نے کہا (اور اگر پانی ہو) برف کے نیچے جدا برف سے (تو جائز ہے) اور پانی فاسد نہ ہوگا کیونکہ مفروضہ یہ ہے کہ یہ دہ در دہ ہے اور اس کا کوئی حصہ باقی پانی سے جدا نہیں جیسا کہ پہلی صورت میں ہے۔ (ت)

اسی طرح منیہ میں جواس کے متصل تھا:

وان ثقب الجمد فعلا المآء فولغ اور اگر برف میں سوراخ کیا تو پانی اوپر چڑھ آیا اس میں کتے الکلب یتنجس عند عامة العلماء 3۔ نے منہ ڈال دیا تو عام علماء کے نزدیک نجس ہو جائیگا۔ (ت)

1 بحر الرائق بحث الماء الدائم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/ 77 2 حلیہ 3 غنیہ المستملی شرح منیة المصلی فصل فی الحیاض ص 99

Fatawa Razawiyya Volume 2

Both investigating commentators have interpreted it based on the impurity of that same amount of water; it is stated in *Ghunyah*:

[Table section 1] Left Column (Arabic): (It becomes impure according to the generality of scholars) and the water that is beneath the ice will not be taken into account. The water that is in the hole is like other small amounts of water (qalil), contrary to what some have said: that what is in the hole is considered connected to what is below it, and it is a large amount (kathir), so it would not become impure. 1- Right Column (Urdu): (And according to common scholars, the water will become impure) and the water that is under the ice will not be considered. The water that is in the hole is like a small amount of water, but some scholars have stated contrary to this: that what is in the hole is the same as what is under it, and it is a large amount, so it will not become impure. (T)

It is stated in *Hilyah*:

[Table section 2] Left Column (Arabic): (It becomes impure according to the generality of scholars) that water which is in the hole, not the reservoir (hوض), because the issue is predicated on a large reservoir. 2- Right Column (Urdu): (According to common scholars, it will become impure) that water which is in the hole and not in the reservoir because the issue is assumed in a large reservoir. (T)

From here it also becomes clear that this is the creed (madhhab) of the majority of scholars,

[Table section 3] Left Column (Arabic): And here is a rare discussion for *Khaniyah* then for *Khulasah*, and the wording is for the latter. It says: the masters (masha'ikh) differed regarding it, and it is appropriate that the answer be based on detail: if the water that became impure in the upper part of the reservoir is more than the water in its lower part, and the impure water fell into the lower part of the reservoir gradually, it remained pure according to what will come in the issue of frozen water. Some said: it does not remain pure, like a small amount of water when impurity falls into it and then spreads according to what has passed. 3 *Ah*. And what is meant by 'what will come regarding frozen water' is... Right Column (Urdu): And here is a strange discussion of *Khaniyah* and *Khulasah*; the words are from *Khulasah*. It was stated that the masters differed in this and there should be a detail in the answer: if the water that became impure in the upper part of the reservoir is more than the

water in its lower part, and the impure water fell gradually into the lower part of the reservoir, it will remain pure, as will be mentioned in the description of frozen water. And some said it will not remain pure, like a small amount of water, when impurity falls into it and then spreads, as mentioned previously. *Ah*. And from 'what will come regarding frozen water'...

1 Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Reservoirs, Maktaba Qadriyah Jamia Nizamia Razawiyya Lahore, p. 70 2 Hilyah 3 Khulasat al-Fatawa, First Section on Menstruation, Naval Kishore Lucknow 1/4

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड 2)

दोनों शोधकर्ता व्याख्याकारों ने इसे उसी मात्रा में पानी की अशुद्धता (नजासत) पर आधारित माना है; 'गुनिया' में है:

[तालिका खंड 1] बायां कॉलम (अरबी): (आम विद्वानों के अनुसार पानी नापाक हो जाएगा) और जो पानी बर्फ़ के नीचे है उसका कोई महत्व नहीं होगा। जो पानी छेद (सुराख) में है, वह अन्य कम पानी (क़लील) की तरह है, उन कुछ विद्वानों के विपरीत जिन्होंने कहा कि छेद का पानी उसके नीचे के पानी से जुड़ा हुआ माना जाता है और वह बहुत अधिक (कसीर) है, इसलिए वह नापाक नहीं होगा। 1- दायां कॉलम (उर्दू): (और आम विद्वानों के नज़दीक पानी नजिस हो जाएगा) और जो पानी बर्फ़ के नीचे है उसका एतबार न होगा और जो सुराख़ में है वह थोड़े पानी की तरह है, लेकिन बाज़ उलेमा ने इसके ख़िलाफ़ ये फ़रमाया है कि जो सुराख़ में है वह इसी तरह है जो उसके नीचे है और वह कसीर है तो नापाक न होगा। (त)

'हिलिया' में है:

[तालिका खंड 2] बायां कॉलम (अरबी): (आम विद्वानों के अनुसार वह पानी नापाक हो जाएगा) जो छेद में है, न कि हौज़ (जलाशय), क्योंकि मसला बड़े हौज़ के बारे में है। 2- दायां कॉलम (उर्दू): (आम उलेमा के नज़दीक नजिस हो जाएगा) वह पानी जो सुराख़ में है न कि हौज़ में क्योंकि मसला बड़े हौज़ में मफ़रूज़ है। (त)

यहाँ से यह भी ज़ाहिर हुआ कि यही मजहब जमहूर उलेमा का है,

[तालिका खंड 3] बायां कॉलम (अरबी): यहाँ 'ख़ानिया' और फिर 'ख़ुलासा' की एक दुर्लभ चर्चा है, शब्द 'ख़ुलासा' के हैं। इसमें कहा गया है कि मशाइख़ ने इसमें मतभेद किया है और जवाब विस्तार से होना चाहिए: यदि वह पानी जो हौज़ के ऊपरी हिस्से में नापाक हुआ है, उस पानी से अधिक है जो उसके निचले हिस्से में है, और नापाक पानी हौज़ के निचले हिस्से में धीरे-धीरे गिरा, तो वह पाक रहेगा, जैसा कि जमे हुए पानी के मसले में आएगा। और कुछ ने कहा: वह पाक नहीं रहेगा, जैसे कम पानी, जब उसमें नजासत गिर जाए और फिर वह फैल जाए, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया। 3 अ. और 'मैयाती फ़िल-जम्द' (जो जमे हुए पानी के बारे में आएगा) से मुराद है... दायां कॉलम (उर्दू): और यहाँ एक अजीब बहस ख़ानिया और ख़ुलासा की है अलफ़ाज़ ख़ुलासा के हैं फ़रमाया कि मशाइख़ ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है और जवाब में तफ़सील होनी चाहिए, अगर वह पानी जो हौज़

के बालाई हिस्से में नजिस हुआ है उस पानी से ज़्यादा है जो उसके निचले हिस्से में है, और नजिस पानी हौज़ के निचले हिस्से में गिरा बतदरीज़ तो पाक रहेगा, जैसा कि मुनजमिद पानी के बयान में आएगा, और बाज़ ने फ़रमाया ताहिर नहीं रहेगा जैसे कलील पानी, जब इसमें नजासत गिर जाए फिर वह फैल जाए, जैसा कि गुज़रा अह और मायातती फ़िल जम्द से...

1 ग़ुनियातुल मुस्तमली शरह मुनियतुल मुसल्ली, फ़सल फ़िल हियाज़, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 70 2 हिलिया 3 ख़ुलासतुल फ़तावा, अल-जिन्स अल-अव्वल फ़िल हैज़, नवल किशोर लखनऊ 1/4

دونوں شارح محقق نے اسے اُسی قدر پانی کی نجاست پر حمل فرمایا ہے غنیہ میں ہے :

(یتنجس عند عامة العلماء) ولم یعتبر الماء الذی تحت الجمد وکان مانی الثقب کغیرہ من الماء القلیل خلافا لما قال البعض ان مانی الثقب یعتبر متصلابما تحتہ وھو کثیر فلا یتنجس 1- (اور عام علماء کے نزدیک پانی نجس ہو جائے گا) اور جو پانی برف کے نیچے ہے اس کا اعتبار نہ ہوگا اور جو سوراخ میں ہے وہ تھوڑے پانی کی طرح ہے، لیکن بعض علماء نے اس کے خلاف یہ فرمایا ہے کہ جو سوراخ میں ہے وہ اسی طرح ہے جو اس کے نیچے ہے اور وہ کثیر ہے تو ناپاک نہ ہوگا۔ (ت) حلیہ میں ہے: (یتنجس عند عامة العلماء) ذلك الماء الذی في الثقب لاالحوض لان المسألة مفروضة في الحوض الکبیر 2- (عام علماء کے نزدیک نجس ہو جائے گا) وہ پانی جو سوراخ میں ہے نہ کہ حوض میں کیونکہ مسئلہ بڑے حوض میں مفروض ہے۔ (ت) یہاں سے یہ بھی ظاہر ہوا کہ یہی مذہب جمہور علماء ہے، وھنا بحث غریب للخانیة ثم للخلاصة واللفظ لھا قال اختلف المشائخ فیہ وینبغی ان یکون الجواب علی التفصیل ان کان الماء الذی تنجس في اعلی الحوض اکثر من الماء الذی في اسفلہ ووقع الماء النجس في اسفل الحوض علی التدریج کان طاھرا علی ماياتی فی مسألة الجمد وقال بعضھم لایطھر کالماء القلیل اذا وقعت فیہ نجاسة ثم انبسط علی مامر 3 اھ والمراد بما یاتی في الجمد اور یہاں ایک عجیب بحث خانیہ اور خلاصہ کی ہے الفاظ خلاصہ کے ہیں فرمایا کہ مشائخ نے اس میں اختلاف کیا ہے اور جواب میں تفصیل ہونی چاہئے، اگر وہ پانی جو حوض کے بالائی حصہ میں نجس ہوا ہے اس پانی سے زیادہ ہے جو اس کے نچلے حصے میں ہے، اور نجس پانی حوض کے نچلے حصے میں گرا بتدریج تو پاک رہے گا، جیسا کہ منجمد پانی کے بیان میں

آئے گا، اور بعض نے فرمایا طاہر نہیں رہے گا جیسے قلیل پانی، جب اس میں نجاست گر جائے پھر وہ پھیل جائے، جیسا کہ گزرا اھ اور مایاتی فی الجمد سے

1 غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الحیاض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۰ 2 حلیہ 3 خلاصۃ الفتاویٰ الجنس الاول فی الحیض نولکشور لکھنؤ ۱/۴

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] Their statement means: "If the location of a hole was impure and then the frozen water melted gradually, the water is impure," while Sheikh al-Imam Shams al-A'immah al-Halwani, may Allah have mercy on him, said the water is pure whether it melted gradually or all at once. End. (T)

I say: The reason for the first statement, which is relied upon, is that whenever a part of it melts and comes into contact with the impurity while it is a small quantity (qaleel), it will become impure until the whole becomes impure. This is contrary to the case where it melts all at once because it is then a large quantity (katheer), therefore it will not become impure due to proximity with impurity. The reason for Shams al-A'immah's statement is that it is a large quantity, and the objection to this is that an impurity is not purified simply by its abundance. (T)

I say: There is a point to consider in comparing our case to that of frozen water because here the pure water is a large quantity, so proximity to impurity will not be harmful whether it happens all at once or gradually, and whether the adjacent impurity is more or less than it. This is contrary to what has been restricted by the abundance of the impure substance, i.e., in terms of volume/quantity, not in terms of measurement. Whoever limited the ruling of purity to the case where if it is less than the water below it in measure, then the water below it will not be impure, whether it fell in all at once or gradually, this is contrary to the 'majority' (aksar) opinion. And you know that a large body of water only becomes impure if one of its qualities changes due to the impurity, without any difference.

[Left Column - Arabic Original Text] His [the author's] saying, may Allah the Almighty have mercy on him: "If the place of the hole becomes impure, then the ice melts gradually, the water is impure." And Sheikh al-Imam Shams al-A'immah al-Halwani, may Allah the Almighty have mercy on him, said: "The water is pure whether it melts gradually or all at once." End. (1)

I say: The reason for the first [opinion], upon which reliance is placed, is that whenever a portion of it melts, it comes into contact with the impurity while it is in small quantity, so it becomes impure until the impurity reaches the whole. This is unlike when it melts all at once, for it is then a large quantity and thus does not become impure by proximity to the impurity. The reasoning for Shams al-A'immah's

statement is that it is a large quantity, and it is countered by the fact that impurity is not purified by abundance.

I say: However (1), there is a consideration in the analogy of our issue to the issue of ice, for the pure substance here is a large body of water, so proximity to impurity does not harm it, whether it occurs all at once or gradually, and whether the adjacent impurity is more or less than it. This is contrary to what is implied by restricting it with the abundance of the impure substance, i.e., in terms of area. Whoever restricted the ruling of purity to when it is less in measure than what is below it, then what is below it does not become impure regardless of whether it falls into it all at once or gradually, unlike the majority case. And you know that a large body of water only becomes impure by the alteration of one of its qualities by the impurity, without any difference.

---

1 Khulasa al-Fatawa, First Chapter on Menstruation, Naval Kishore, Lucknow, 1/41

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद/टिप्पणी] उनके कथन का अर्थ है: "यदि छेद का स्थान अपवित्र था और फिर जमा हुआ पानी धीरे-धीरे पिघल गया, तो पानी अपवित्र है," जबकि शेख अल-इमाम शम्स अल-आइम्मा अल-हलवानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फरमाया कि पानी शुद्ध है चाहे वह धीरे-धीरे पिघला हो या एक साथ। अंत। (त)

मैं कहता हूँ: पहले कथन का कारण, जिस पर भरोसा किया जाता है, यह है कि जब भी इसका कोई हिस्सा पिघलता है और अपवित्रता के संपर्क में आता है, तो वह 'क़लील' (कम मात्रा) होता है, इसलिए वह तब तक अपवित्र होता जाएगा जब तक कि पूरी चीज़ अपवित्र न हो जाए। यह उस स्थिति के विपरीत है जब वह एक साथ पिघल जाता है क्योंकि तब वह 'कसीर' (अधिक मात्रा) होता है, इसलिए अपवित्रता की निकटता के कारण वह अपवित्र नहीं होगा। शम्स अल-आइम्मा के कथन का कारण यह है कि वह 'कसीर' है, और इस पर आपत्ति यह है कि अपवित्रता की प्रचुरता के कारण कोई चीज़ शुद्ध नहीं हो जाती। (त)

मैं कहता हूँ: हमारे मसले की तुलना जमे हुए पानी के मसले से करने में विचार की आवश्यकता है क्योंकि यहाँ शुद्ध पानी 'कसीर' है, इसलिए अपवित्रता का निकट होना हानिकारक नहीं होगा चाहे वह एक साथ हो या धीरे-धीरे, और चाहे निकटवर्ती अपवित्रता उससे अधिक हो या कम। यह उस बात के विपरीत है जिसे अपवित्र पदार्थ की प्रचुरता के साथ सीमित किया गया है, यानी मात्रा के आधार पर, न कि माप के आधार पर। जिसने पवित्रता के नियम को उस स्थिति तक सीमित कर दिया कि यदि वह अपने नीचे वाले पानी से मात्रा में कम है, तो उसके नीचे वाला हिस्सा अपवित्र नहीं होगा, चाहे वह उसमें एक साथ गिरा हो या धीरे-धीरे। यह 'अक्सर' (बहुमत) के विपरीत है। और आप जानते हैं कि बड़ी मात्रा में पानी केवल तभी अपवित्र होता है जब अशुद्धि के कारण उसके गुणों में बदलाव आता है, बिना किसी अंतर के।

[बायां स्तंभ - अरबी मूल पाठ] उनका (अल्लाह उन पर रहम करे) कहना: "यदि छेद का स्थान अपवित्र हो जाए और फिर जमा हुआ पानी धीरे-धीरे पिघले, तो पानी अपवित्र है।" और शेख अल-इमाम शम्स अल-आइम्मा अल-हलवानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: "पानी शुद्ध है चाहे वह धीरे-धीरे पिघले या एक साथ।" अंत। (1)

मैं कहता हूँ: पहले मत का कारण, जिस पर भरोसा किया गया है, यह है कि जब भी इसका कोई हिस्सा पिघलता है, वह अपवित्रता के संपर्क में आता है जबकि वह कम मात्रा में होता है, इसलिए वह तब तक अपवित्र होता रहता है जब तक कि अशुद्धि पूरे पर न छा जाए। यह एक साथ पिघलने की स्थिति से अलग है, क्योंकि तब वह बड़ी मात्रा में होता है और अपवित्रता की निकटता से अपवित्र नहीं होता। शम्स अल-आइम्मा के कथन का आधार यह है कि वह बड़ी मात्रा में है, और इसका खंडन इस तथ्य से होता है कि अपवित्रता प्रचुरता से शुद्ध नहीं होती।

मैं कहता हूँ: हालाँकि (1), हमारे मसले की तुलना जमे हुए पानी के मसले से करने में विचार की आवश्यकता है, क्योंकि यहाँ शुद्ध पदार्थ बड़ी मात्रा में पानी है, इसलिए अपवित्रता का निकट होना उसे नुकसान नहीं पहुँचाता, चाहे वह एक साथ हो या धीरे-धीरे, और चाहे निकटवर्ती अशुद्धि उससे अधिक हो या कम। यह उस बात के विपरीत है जो अपवित्र पदार्थ की प्रचुरता के साथ प्रतिबंधित करने से निहित है, यानी क्षेत्रफल के संदर्भ में। जिसने पवित्रता के नियम को तब तक सीमित किया जब वह माप में उसके नीचे वाले से कम हो, तो उसके नीचे वाला हिस्सा अपवित्र नहीं होता है चाहे वह उसमें एक साथ गिरे या धीरे-धीरे, बहुमत के मामले के विपरीत। और आप जानते हैं कि बड़ी मात्रा में पानी केवल अपवित्रता द्वारा उसके गुणों में से किसी एक के परिवर्तन से अपवित्र होता है, बिना किसी अंतर के।

---

1 खुलासा अल-फ़तावा, मासिक धर्म पर पहला अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/41

[دائیں کالم کی عبارت] مراد ان کا قول ہے کہ "اگر سوراخ کی جگہ نجس ہوئی پھر منجمد پانی بتدریج پگھل گیا تو پانی ناپاک ہے، اور شیخ الامام شمس الائمہ حلوائی نے فرمایا پانی پاک ہے خواہ بتدریج پگھلا ہو یا یک دم اھ (ت) میں کہتا ہوں پہلے قول کی وجہ جس پر اعتماد ہے کہ جب بھی اس سے کوئی چیز پگھلی اور نجس سے متصل ہوئی اور وہ قلیل ہو تو وہ نجس ہو جائے گا یہاں تک کہ کل نجس ہوگا۔ بخلاف اس صورت کے جبکہ یکدم پگھل جائے کیونکہ وہ کثیر ہے، لہٰذا نجس کی مجاورت کی وجہ سے نجس نہ ہوگا، شمس الائمہ کے قول کی وجہ یہ ہے کہ وہ کثیر ہے، اور اس میں یہ اعتراض ہے کہ نجس کثرت کی وجہ سے پاک نہیں ہوتا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں ہمارے مسئلہ کو منجمد پانی پر قیاس کرنے میں نظر ہے کیونکہ یہاں پاک پانی کثیر ہے تو اس کو نجس کی مجاورت نقصان دہ نہ ہوگی خواہ یکدم ہو یا بتدریج ہو اور مجاور اس سے زیادہ یا کم ہو، یہ اس کے خلاف ہے کہ جس کو متنجس کی کثرت کے ساتھ مقید کیا ہے یعنی مقدار کے اعتبار سے نہ کہ پیمائش کے اعتبار سے، جس نے طہارت کے حکم کو اُس صورت میں مقصور کیا کہ اگر وہ اپنے نیچے والے پانی سے کم ہو، تو اس کا نیچے والا ناپاک نہ ہوگا، خواہ اس میں وہ یکدم گرا ہو یا تدریجی طور پر بخلاف اکثر کے اور آپ کو معلوم ہے

[بائیں کالم کی عبارت - عربی متن] قوله رحمه الله تعالى لوتنجس موضع النقب ثم ذاب الجمد بتدريج الماء نجس وقال الشيخ الامام شمس الائمة الحلوانى رحمه الله تعالى الماء طاهر سواء ذاب بتدريج اودفعة واحدة اهـ 1 اقول: وجه الاول وعليه المعول انه كلما ذاب شيئ منه اتصل بالنجس وهو قليل فيتنجس حتى تأتى النجاسة على الكل بخلاف ما اذا ذاب دفعة لانه كثير فلا يتنجس بمجاورة النجس و وجه قول شمس الائمة انه كثير وفيه ان النجس لا يطهر بالكثرة۔ اقول: لكن(۱) في قياس مسألتنا على

مسألة الجمد نظر فان الطاهر ههنا ماء كثير فلا يضره مجاورة نجس سواء كانت دفعة او تدريجا وكان المجاور اكثر منه او اقل على خلاف ما يفيده تقييده بكثرة المتنجس اى قدر المساحة من قصر حكم الطهارة على مالو كان اقل مماتحته قدرا فلا يتنجس ما تحته سواء وقع فيه دفعة او تدريجا بخلاف الاكثر وانت تعلم ان الماء الكثير انما يتنجس بتغير وصف له بالنجاسة بلا فرق

---

1 خلاصة الفتاوى الجنس الاولى فى الحيض نولكشور لكهنؤ ۴۱/۱

Fatawa Rizvia, Volume Two

[Table Content] (Arabic Column): ...Between one amount and another according to the correct, reliable, and fatwa-based opinion, as known in the matter of a carcass in a river. Yes, the Sheikh followed his chosen opinion there where he said: "If what meets the carcass is more or both are equal, the water is impure"^1 (End). To this his statement points: "The impure water when it enters a large pool, the pool does not become impure even if the impure water is predominant over the pool's water, because whenever water connects with the pool, the pool's water becomes predominant over it"^2 (End). Thus it has been pointed out...

(Urdu Column): ...That a large amount of water will only become impure when one of its qualities changes due to the impurity; the methods of estimation are not considered. The correct, reliable, and fatwa-based opinion is this, as known from the case of a dead body falling into a river. However, the Sheikh took his chosen opinion there, stating: "The water that touches the carcass, if it is more or both are equal, is impure" (End). And regarding his statement: "When impure water enters a large pool, that pool will not become impure."

[Main Body Text] (Arabic): I say: (1) Through what we have pointed out, the claim made in Al-Hilyah is refuted, where it was asserted that there is a contradiction between these two sub-branches of Al-Khulasah. For the implication of the latter sub-branch is the purity of the lower part without detail (End - in meaning). This is because his speech in this branch refers to a gradual process, so it does not contradict the aforementioned detail (2) previously. Likewise, his argument of preferring purity absolutely, even if it melts gradually, is refuted. He said after the statement of Shams al-A'immah: "I say: This is the appropriate view, provided the pool is large and no trace of impurity appears in it, as is the assumption of the case." (End). I say: what benefit is there in the expanse of the pool being large after the melted portion from the ice was small? For the consideration is for the water.

(Urdu): I say: through what we have pointed out, what was said in Al-Hilyah has been refuted. In Al-Hilyah, they established a contradiction between these two sub-branches of Al-Khulasah, because the requirement of the last sub-branch is that the lower part is pure without detail (End). And the reason for this is that his words in this sub-branch point towards the case of a gradual process, so it will not be against the previous detail. And similarly, that discussion of theirs was dropped in which they preferred absolute purity even if it melted gradually; they said after the statement of

Shams al-A'immah: "I say, this is the reasonable thing provided the pool is large and no effect of impurity appears in it, as is the assumption in the case" (End). I say: such a situation of the pool being large... I say: What is the use of the expanse of the pool being large when the water melted from ice is small, for the consideration is of the water.

[Footnotes] 1. Khulasat al-Fatawa, Another Section on Wudu, Running Water, Naval Kishore Lucknow 1/9 2. Khulasat al-Fatawa, First Section on Menstruation, Naval Kishore Lucknow 1/41

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

[तालिका सामग्री] (अरबी स्तंभ): ...सही, विश्वसनीय और फ़तवे के लिए मान्य मत के अनुसार दो मात्राओं के बीच, जैसा कि नदी में शव के मामले में ज्ञात है। हाँ, शेख वहाँ अपने चुने हुए मत पर चले जहाँ उन्होंने कहा: "यदि शव से मिलने वाला पानी अधिक हो या दोनों बराबर हों, तो पानी नापाक है"^1 (समाप्त)। और इसी की ओर उनका यह कथन संकेत करता है: "नापाक पानी जब बड़े हौज में प्रवेश करता है, तो हौज नापाक नहीं होता, भले ही नापाक पानी हौज के पानी पर हावी हो, क्योंकि जब भी पानी हौज से जुड़ता है, हौज का पानी उस पर हावी हो जाता है"^2 (समाप्त)। तो इसकी ओर संकेत किया गया है...

(उर्दू स्तंभ): ...कि अधिक पानी उसी समय नापाक होगा जब नजासत (अशुद्धता) के कारण उसका कोई गुण बदल जाए, इसमें मात्राओं के तरीकों का विचार नहीं है। सही, विश्वसनीय और फ़तवे के लिए मान्य मत यही है, जैसा कि नदी में गिर जाने वाले शव के मसले में मालूम हुआ है। अलबत्ता शेख ने वहाँ अपने चुने हुए मत को ही लिया है, वह फरमाते हैं कि जो पानी शव से मिलता है, अगर वह अधिक है या दोनों बराबर हैं तो पानी नापाक है। और उनके कथन "नापाक पानी जब बड़े हौज में दाखिल हो जाए तो वह हौज नापाक न होगा" के बारे में...

[मुख्य पाठ] (अरबी): मैं कहता हूँ: (१) जिसके द्वारा हमने संकेत किया, उससे 'हिलिया' में किए गए दावे का खंडन हो गया, जहाँ 'खुलासा' की इन दो उप-शाखाओं के बीच विरोधाभास बताया गया था। क्योंकि अंतिम उप-शाखा का अर्थ बिना किसी विवरण के निचले हिस्से की शुद्धता है (समाप्त - अर्थ में)। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस शाखा में उनका कथन क्रमिक प्रक्रिया की ओर संकेत करता है, अतः यह पहले बताए गए विवरण (२) के विरुद्ध नहीं होगा। इसी प्रकार, उनकी वह बहस भी खारिज हो गई जिसमें उन्होंने पूर्ण शुद्धता को प्राथमिकता दी थी, भले ही वह धीरे-धीरे पिघला हो। उन्होंने शम्स-उल-आइम्मा के कथन के बाद कहा: "मैं कहता हूँ: यही उचित विचार है, बशर्ते हौज बड़ा हो और उसमें अशुद्धता का कोई प्रभाव दिखाई न दे, जैसा कि मसले में माना गया है।" (समाप्त)। मैं कहता हूँ: हौज के बड़े विस्तार का क्या लाभ जब बर्फ से पिघला हुआ हिस्सा कम हो? क्योंकि विचार तो पानी का किया जाएगा।

(उर्दू): मैं कहता हूँ हमने जिस तरफ इशारा किया है उससे 'हिलिया' में जो कहा गया है वह दूर हो गया। 'हिलिया' में उन्होंने 'खुलासा' की इन दो उप-शाखाओं के बीच विरोधाभास साबित किया है,

क्योंकि आखिरी उप-शाखा का अर्थ यह है कि निचला हिस्सा बिना विवरण के पाक है। और इसकी वजह यह है कि उनका कलाम (कथन) इस उप-शाखा में क्रमिक स्थिति की तरफ इशारा करता है, तो यह पिछली तफ़सील (विवरण) के खिलाफ नहीं होगा। और इसी तरह उनकी वह बहस खत्म हो गई जिसमें उन्होंने पूर्ण शुद्धता को तरजीह दी थी चाहे वह धीरे-धीरे पिघला हो। उन्होंने शम्स-उल-आइम्मा के कथन के बाद फरमाया: "मैं कहता हूँ यही तर्कसंगत बात है बशर्ते हौज बड़ा हो और नजासत का कोई असर जाहिर न हो, जैसा कि मसले में माना गया है।" (समाप्त)। मैं कहता हूँ: हौज के बड़ा होने की ऐसी सूरत... मैं कहता हूँ: हौज के बड़े विस्तार का क्या फायदा जब बर्फ से पिघला हुआ पानी थोड़ा हो, अतः विचार तो पानी का है।

[पाद-टिप्पणियां] १. खुलासा अल-फ़तावा, वज़ू का खंड, बहता पानी, नवल किशोर लखनऊ १/९ २. खुलासा अल-फ़तावा, पहला खंड, हैज़ के बारे में, नवल किशोर लखनऊ १/४१

पृष्ठ ३२९ / ७११

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[ٹیبل کا مواد] (عربی کالم): بين قدر وقدر على القول الصحيح المعتمد المفتى به كما عرف فى مسألة جيفة فى النهر نعم مشى الشيخ على مختاره ثمه حيث قال انكان ما يلاقي الجيفة اكثر اوكانا سواء فالماء نجس^1 اهـ واليه يشير قوله الماء النجس اذا دخل الحوض الكبير لايتنجس الحوض وانكان الماء النجس على ماء الحوض غالبا لانه كلما اتصل الماء بالحوض صار ماء الحوض عليه غالبا^2 اهـ فقد عـ اشار الى

(اردو کالم): کہ کثیر پانی اسی وقت نجس ہوگا جب نجاست کی وجہ سے اس کا کوئی وصف متغیر ہو جائے، اس میں مقادیر کے طرق کے اعتبار نہیں، قول صحیح، معتمد، مفتی بہ یہی ہے، جیسا کہ نہر میں گر جانے والے مردہ کے مسئلہ میں معلوم ہوا ہے البتہ شیخ نے وہاں اپنے مختار قول ہی کو لیا ہے، وہ فرماتے ہیں کہ جو پانی مردار سے ملاتی ہے، اگر وہ زائد ہے یا دونوں برابر ہیں تو پانی نجس ہے اھ اور ان کے قول "نجس پانی جب بڑے حوض میں داخل ہو جائے تو وہ حوض ناپاک نہ ہوگا"

[متن] (عربی): عه اقول: (١) وبما اشرنا اليه اندفع ماجنح اليه فى الحلية من اثبات التناقض بين فرعى الخلاصة هذين فان مقتضى الفرع الاخير طهارة السافل بلا تفصيل اهـ بمعناه وذلك لان كلامه فى هذا الفرع يشير الى صورة التدريج فلا ينافى التفصيل المذكور(٢) سابقاً وكذا اندفع بحثه بترجيح الطهارة مطلقا وان ذاب تدريجاً حيث قال بعد قول شمس الائمة قلت وهذا هو المتجه بعد انكان الحوض كبيرا ولم يظهر للنجاسة اثر فيه كما هو فرض المسألة اهـ اقول: ماذا ينفع كون متسع الحوض كبيراً بعد انكان الذائب من الجمد قليلاً فالعبرة للماء

(اردو): میں کہتا ہوں ہم نے جس طرف اشارہ کیا ہے اس سے حلیہ میں جو کہا ہے وہ رفع ہو گیا، حلیہ میں انہوں نے خلاصہ کی ان دو فرعوں کے درمیان تناقض ثابت کیا ہے، کیونکہ آخری فرع کا مقتضی یہ ہے کہ نچلا حصہ بلا تفصیل پاک ہے اھ اور اس کی وجہ یہ ہے کہ ان کا کلام اس فرع میں تدریج کی صورت کی طرف اشارہ کرتا ہے تو سابقہ تفصیل کے خلاف نہ ہو گا، اور اسی طرح ان کی وہ بحث ساقط ہو گئی جس میں انہوں نے مطلقاً طہارت کو ترجیح دی ہے اگر چہ وہ پگھلا ہو تدریجاً انہوں نے شمس الائمہ کے قول کے بعد فرمایا "میں کہتا ہوں یہی معقول بات ہے بشرطیکہ حوض بڑا ہو اور نجاست کا کوئی اثر ظاہر نہ ہو، جیسے کہ مسئلہ میں مفروض ہے اھ میں کہتا ہوں حوض کے بڑا ہونے کی ایسی صورت میں کہتا ہوں حوض کی وسعت بڑی ہونے کا کیا فائدہ جب برف سے پگھلا ہوا پانی تھوڑا ہو، پس اعتبار تو پانی کا ہے۔

[حواشی] 1 خلاصہ الفتاوی جنس آخر فی التوضی، الماء الجاری نولکشور لکھنؤ ۱/۹ 2 خلاصہ الفتاوی الجنس الاول فی الحیض نولکشور لکھنؤ ۱/۴۱

Fatawa Razawiya Volume 2

[Top Right Column - Urdu Interpretation] "Even if the impure water overpowers the water in the pond" - this refers to the same point, because as soon as water meets the water in the pond, the pond's water will gradually overcome it. Thus, they have pointed towards gradualism (Tadrij). And 'Al-Fath' states in its reasoning: "Because whatever connects with a large pond becomes part of it, hence a ruling of its purity will be established." In 'Al-Bazzaziyah', it is mentioned that when a large quantity of impure water enters a large pond, it...

[Top Left Column - Arabic Text] ...gradualism. The wording of 'Al-Fath' in its reasoning is: "Because everything that connects with a large pond becomes part of it, so its purity is ruled upon." In 'Al-Bazzaziyah': "Large quantity of impure water entering a large pond does not make it impure, because purity was ruled at the time of connection." This is one aspect. Secondly: (1) There is no effect of impure water falling into pure water except for the meeting, which is achieved in our case from the very beginning. So, why the detail? Unlike the issue of ice, because it...

[Bottom Right Column - Urdu Interpretation] ...is of what use when melted ice is minimal? Because the consideration is for the water, not the container. And the water is already melted, not frozen ice. Then he cited the last sub-issue of 'Al-Khulasah' and its reasoning as evidence, which is that when it meets the pond, the pond water will overpower it. He said this is more eloquent, as it is not hidden, so one should be mindful of this. I say: that refers to a large amount of impure water meeting a large amount of pure water gradually. But here, a small amount of pure water meets impure water; so what comparison is there between this and that? And what role does "greater eloquence" (ablaghiyya) have here? Because there, the dominant was impure, while here it is pure, after gradualness made that dominant one subdued, as explained in Al-Khulasah. And this subdued was made dominant as you have known. And Allah Almighty knows best.

[Bottom Left Column - Arabic Text] ...not for the location, and the water is the melted part, not the ice. Then he cited as evidence for it the last sub-branch of 'Al-Khulasah' and its reasoning that: "Whenever it connects with the pond, the pond water becomes dominant over it." He said: "Rather, this is more eloquent, as is not hidden, so be mindful of that." I say: (1) That is regarding a large quantity of impure water meeting a large quantity of water gradually. This is a small amount of pure water meeting impure water. So where is this from that? (2) And what entry point is there

for "greater eloquence" in this, since there the dominant was impure, while here it is pure, after gradualism made that dominant one subdued, as expressed in Al-Khulasah, and this subdued one dominant, as you have known. And Allah Almighty knows best. [12, from him, may He forgive him (M)]

[Footnotes] 1. Fath al-Qadir, Discussion on the Great Pond, Nooria Razawiya Sukkur 1/71 2. Al-Bazzaziyah on Al-Hindiyah, Noorani Kutub Khana Peshawar 2/17 Page 330 of 711

फतावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

[दायां शीर्ष स्तंभ - उर्दू व्याख्या] "चाहे नापाक पानी हौज (तलाब) के पानी पर हावी हो जाए" इसमें इसी बिंदु की ओर इशारा है, क्योंकि जैसे ही पानी हौज के पानी से मिलेगा, हौज का पानी उस पर धीरे-धीरे हावी होता जाएगा। अतः उन्होंने 'तदरीज' (क्रमशः प्रक्रिया) की ओर संकेत किया है। और 'अल-फत्ह' ने इसके तर्क में यह फरमाया है: "इसलिए कि जो कुछ भी बड़े हौज से जुड़ता है वह उसी का हिस्सा बन जाता है, इसलिए उसकी पवित्रता का निर्णय दिया जाएगा।" और 'बज़ाज़िया' में उल्लेख है कि जब अधिक मात्रा में नापाक पानी बड़े हौज में प्रवेश करता है तो उसे...

[बायां शीर्ष स्तंभ - अरबी मूल पाठ] ...तदरीज (क्रमशः)। 'अल-फत्ह' के शब्द इसके तर्क में इस प्रकार हैं: "क्योंकि जो कुछ भी बड़े हौज से जुड़ता है वह उसी का अंग बन जाता है, अतः उसकी पवित्रता का हुक्म दिया जाता है।" 'बज़ाज़िया' में है: "बड़े हौज में प्रवेश करने वाला अधिक अशुद्ध पानी उसे अशुद्ध नहीं करता, क्योंकि जुड़ने के समय ही पवित्रता का निर्णय हो गया था।" यह एक पहलू है। दूसरा: (1) शुद्ध पानी में अशुद्ध पानी गिरने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता सिवाय मिलाप के, जो हमारे विषय में शुरू से ही विद्यमान है। तो विस्तार किसलिए? बर्फ के मामले के विपरीत, क्योंकि वह...

[दायां निचला स्तंभ - उर्दू व्याख्या] ...में क्या लाभ जब पिघली हुई बर्फ बहुत कम हो? क्योंकि महत्त्व पानी का है न कि पात्र का। और पानी तो पिघला हुआ ही है न कि जमी हुई बर्फ। फिर उन्होंने इस पर 'खुलासा' की अंतिम शाखा और उसके तर्क से प्रमाण दिया, जो यह है कि जब वह हौज से मिलेगा तो हौज का पानी उस पर हावी हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अधिक प्रभावशाली है, जैसा कि स्पष्ट है, अतः इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। मैं कहता हूँ: वह अधिक मात्रा में अशुद्ध पानी के बारे में है जो धीरे-धीरे अधिक शुद्ध पानी से मिलता है। परंतु यहाँ थोड़ा सा शुद्ध पानी अशुद्ध पानी से मिल रहा है; तो इसमें और उसमें क्या तुलना? और इसमें "अधिक प्रभावशीलता" (अब्लगिया) का क्या स्थान है? क्योंकि वहां प्रभावी अशुद्ध था, जबकि यहाँ वह शुद्ध है, इस क्रम के बाद कि 'तदरीज' ने उस प्रभावी को वश में कर लिया, जैसा कि 'खुलासा' में स्पष्ट किया गया है। और इस वश में किए गए को प्रभावी बना दिया जैसा कि आप जानते हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

[बायां निचला स्तंभ - अरबी मूल पाठ] ...पात्र के लिए नहीं, और पानी पिघला हुआ हिस्सा है न कि बर्फ। फिर उन्होंने इसके प्रमाण के रूप में 'खुलासा' की अंतिम शाखा और उसका तर्क उद्धृत किया

कि: "जब भी वह हौज से जुड़ता है, हौज का पानी उस पर प्रभावी हो जाता है।" उन्होंने कहा: "बल्कि यह अधिक स्पष्ट है, जैसा कि छिपा नहीं है, अतः उस पर ध्यान दें।" मैं कहता हूँ: (1) वह अधिक अशुद्ध पानी के धीरे-धीरे बहुत अधिक पानी से मिलने के बारे में है। यह थोड़ा सा शुद्ध पानी है जो अशुद्ध पानी से मिल रहा है। तो यह उससे कहाँ मेल खाता है? (2) और इसमें "अधिक स्पष्टता" के लिए क्या गुंजाइश है, क्योंकि वहां प्रभावी अशुद्ध था, जबकि यहाँ शुद्ध है, इस प्रक्रिया के बाद जिसने उस प्रभावी को अधीन कर दिया, जैसा कि 'खुलासा' में व्यक्त किया गया है, और इस अधीन को प्रभावी बना दिया, जैसा कि आप जानते हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। [12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)]

[पदलेख] 1. फत्ह अल-कदीर, अज़ीम हौज पर चर्चा, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/71 2. बज़ाज़िया अल-हिंदिया पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 2/17 पृष्ठ 330/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

التدریج، ولفظ الفتح في تعلیله لان کل ما یتصل بالحوض الکبیر یصیر منه فیحکم بطهارته ' وفی البزازیة الماء الکثیر النجس دخل في الحوض الکبیر لا ینجسه لانه حکم بالطهارة زمان الاتصال اهـ هذا وجه وثانیا: (۱)لا اثر لوقوع ماء نجس في ماء طاہر الا اللقاء وہو حاصل فیما نحن فیه من بدو الامر ففیم التفصیل بخلاف مسألة الجمد فانہ

اگرچہ نجس پانی حوض کے پانی پر غالب ہو جائے میں اسی طرف اشارہ ہے کیونکہ جو نہی پانی حوض کے پانی سے ملے گا حوض کا پانی اس پر غالب ہوتا جائیگا اھ تو انہوں نے تدریج کی طرف اشارہ کیا ہے اور فتح نے اس کی تعلیل میں یہ فرمایا ہے "اس لئے کہ جو بڑے حوض سے ملے گا وہ اسی کا جز ہو جائیگا تو اس کی طہارت کا حکم لگایا جائے گا اھ اور بزازیہ میں ہے کہ کثیر نجس پانی جب بڑے حوض میں داخل ہو جائے تو اس کو"

لا للمحل والماء ہو الذائب دون الجمد ثم استشہد علیہ بفرع الخلاصة الاخیر وتعلیلہ بانہ کلما اتصل بالحوض صار ماء الحوض علیہ غالبا قال بل ہذا ابلغ کما ہو غیر خاف فتنبه لذلک اھ اقول: (۱) ذلک في ماء نجس کثیر لقي ماء کثیرا تدریجا وہذا ماء قلیل طاہر لقي ماء نجسا فائن ہذا من ذلک (۲) وای مدخل فیہ للابلغیة من حیث ان ثم الغالب النجس وہہنا الطاہر بعد ان التدریج جعل ذلک الغالب مغلوبا کما افصح بہ في الخلاصة وہذا المغلوب غالبا کما علمت واللہ تعالی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (م)

میں کیا فائدہ جبکہ پکھلی ہوئی برف کم ہو کیونکہ اعتبار پانی کا ہے نہ کہ محل کا اور پانی تو پگھلا ہوا ہی ہے نہ کہ جمی ہوئی برف ، پھر انہوں نے اس پر خلاصہ کی آخری فرع اور اس کی تعلیل سے استشہاد کیا، اور وہ یہ کہ جب وہ حوض سے ملے گا تو حوض کا پانی اس پر غالب ہو

جائے گا، فرمایا یہ زیادہ بلیغ ہے جیسا کہ مخفی نہ رہے، تو اس پر متنبہ ہونا چاہئے اھ میں کہتا ہوں وہ کثیر نجس پانی میں سے جو کثیر طاہر پانی سے ملاقی ہوا اور یہ ملاقات تدریجاً ہو، اور یہ کم طاہر پانی ہے جس کی ملاقات نجس پانی سے ہوئی ہے تو اس میں اور اس میں کیا نسبت ہے اور اس میں ابلغیہ کو کیا دخل ہے کیونکہ وہاں غالب نجس ہے اور یہاں طاہر بعد اس کے کہ تدریج نے اس غالب کو مغلوب کر دیا ہے جیسا کہ خلاصہ میں اس کی وضاحت کی ہے اور اس مغلوب کو غالب کر دیا جیسا کہ آپ نے جانا ہے واللہ تعالیٰ اعلم

1. فتح القدیر بحث الغدیر العظیم نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۷۱
2. بزازیہ علی الہندیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۲ / ۱۷ Page 330 of 711

Fatawa Razawiya Volume 2

(Top right Urdu section continues): ... it will not make it impure because at the time of contact, the ruling of purity had already been applied to it, and this is a logical point. Secondly: The falling of impure water into pure water has no effect except for the meeting (contact), and in our case, this is present from the beginning, so what is there to detail? This is contrary to the case of frozen water, because it is frozen, its meeting with the impurity will not occur completely; only its surface will touch. As for the rest, when it melts gradually, a meeting with a small portion of it will be established, so it will become impure. And since the majority is of the thing that became impure, it will not be pure. If it melts all at once, there will be a meeting with a large amount, so it will not become impure. Thirdly: Usually, the upper water is lifted and the lower water remains; it is not that the upper one falls into the lower one, whether at once or gradually. Fourthly: When both waters are connected and the upper one does not fall into the lower one, then increase cannot be conceived in it. Increase will only occur in one case: if the upper one falls into the place of the lower one, and this will only happen when the lower one exits, because interpenetration is impossible. Thus, the upper will never fall into the lower, neither at once nor gradually.

(Left Arabic column translation): ...due to its solidification, for the meeting with the impure of its surfaces. So the remainder, when it melts gradually, meeting with a small amount occurs, so it becomes impure. The majority is for the one made impure, so it does not become pure. If it melts at once, meeting with a large amount occurs, so it does not become impure. Thirdly: It is known here that the upper water is lifted and the lower remains, because the upper falls into the lower at once or gradually. Fourthly: (1) If the two waters are adjacent and this falling of the upper into the lower does not occur, then increase in it is not conceivable except by the falling of the upper into the place of the lower, which only happens after the lower exits due to the impossibility of interpenetration. So the upper will never fall into the lower, neither at once nor gradually. Fifthly: (2) If it were assumed, then this exit and that entry, being movements, would only be possible gradually, such as if there were an opening in the lower part which is opened, making the lower exit and the upper descend. It is not conceivable for the lower to exit at once, causing the upper to fall all at once. In short, it did not reach, so it is insufficient for his intent. Allah knows best the intent of His chosen servants. Undoubtedly, it is mentioned in "Al-Durr": if impurity falls into it, it is not permissible until it reaches ten-by-ten. Sh. said: if it

reaches that, it is permitted even if its upper part is greater in quantity. In "Al-Bahr", citing "Al-Siraj al-Hindi", it is stated that this is more likely. May Allah have mercy on him.

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/36. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/143.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

(ऊपरी दायां उर्दू भाग जारी है): ... यह इसे अशुद्ध (नजिस) नहीं करेगा क्योंकि संपर्क के समय इस पर पवित्रता का हुक्म लग चुका था और यह एक तर्कसंगत बात है। दूसरा: शुद्ध पानी में अशुद्ध पानी गिरने का संपर्क के अलावा कोई प्रभाव नहीं पड़ता, और हमारे इस मामले में वह शुरू से ही मौजूद है, तो इसमें विवरण क्या है? इसके विपरीत जमे हुए पानी के मामले में, क्योंकि वह जमा हुआ है इसलिए अशुद्धता के साथ उसका पूर्ण संपर्क नहीं होगा, केवल उसकी सतह मिलेगी। और बाकी जब धीरे-धीरे पिघलेगा तो उसके थोड़े से हिस्से के साथ संपर्क सिद्ध होगा, तो वह अशुद्ध हो जाएगा, और चूंकि वह अशुद्ध-बनने वाली वस्तु के लिए है तो वह शुद्ध नहीं होगा। और जब वह अचानक पिघलेगा तो एक बड़ी मात्रा के साथ संपर्क होगा, इसलिए वह अशुद्ध नहीं होगा। तीसरा: सामान्यतः ऊपर वाला पानी निकाल लिया जाता है और नीचे वाला पानी बच जाता है; ऐसा नहीं है कि ऊपर वाला नीचे वाले में गिरता है, चाहे अचानक हो या धीरे-धीरे। चौथा: जब दोनों पानी मिले हुए हों और ऊपर वाला नीचे वाले में न गिरे तो उस पर वृद्धि की कल्पना नहीं की जा सकती। वृद्धि केवल एक ही स्थिति में होगी और वह यह कि ऊपर वाला नीचे वाले के स्थान पर गिरे, और यह तभी संभव है जब नीचे वाला बाहर निकले, क्योंकि परस्पर समावेश (तदाखुल) असंभव है। इसलिए ऊपर वाला कभी नीचे वाले में नहीं गिरेगा, न अचानक और न ही धीरे-धीरे।

(बाएं अरबी स्तंभ का अनुवाद): ...उसकी सतहों के अशुद्ध के साथ मिलने के कारण उसके जमने की वजह से। तो शेष, जब वह धीरे-धीरे पिघलता है, तो थोड़े हिस्से के साथ संपर्क होता है, जिससे वह अशुद्ध हो जाता है। बहुमत अशुद्ध बनी वस्तु का होता है, इसलिए वह शुद्ध नहीं होता। यदि वह एक साथ पिघल जाए, तो बड़ी मात्रा के साथ संपर्क होता है, जिससे वह अशुद्ध नहीं होता। तीसरा: यहाँ यह ज्ञात है कि ऊपर का पानी उठाया जाता है और नीचे का बच जाता है, क्योंकि ऊपर का पानी नीचे वाले में अचानक या धीरे-धीरे गिरता है। चौथा: (1) यदि दो जल परस्पर सटे हुए हों और ऊपर वाले का नीचे वाले में गिरना न हो, तो उसमें वृद्धि की कल्पना नहीं की जा सकती सिवाय इसके कि ऊपर वाला नीचे वाले के स्थान पर गिरे, जो कि नीचे वाले के निकलने के बाद ही संभव है क्योंकि समावेश असंभव है। अतः ऊपर वाला कभी भी नीचे वाले में नहीं गिरेगा, न अचानक और न धीरे-धीरे। पांचवां: (2) यदि इसे मान लिया जाए, तो यह निकास और वह प्रवेश, गति होने के कारण, केवल धीरे-धीरे ही संभव होगा, जैसे कि नीचे वाले भाग में कोई मार्ग खोल दिया जाए जिससे नीचे वाला निकले और ऊपर वाला उतरे। यह कल्पनीय नहीं है कि नीचे वाला अचानक निकल जाए और ऊपर

वाला एक साथ गिर जाए। संक्षेप में, यह उसके उद्देश्य के लिए अपर्याप्त है। अल्लाह ही उसके विशेष दासों के उद्देश्य को बेहतर जानता है। निस्संदेह, "अल-दुर्र" में कहा गया है: यदि इसमें अशुद्धता गिर जाए, तो यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि यह दस-बाई-दस तक न पहुँच जाए। श. ने कहा: यदि वह उस तक पहुँच जाए, तो यह जायज़ है, भले ही उसका ऊपरी हिस्सा मात्रा में अधिक हो। "अल-बहर" में "अल-सिराज अल-हिंदी" के हवाले से कहा गया है कि यही अधिक संभावित है। अल्लाह उन पर रहम करे।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/36। 2. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/143।

पृष्ठ 331 का 711

لِانْجِمَادِہٖ لِالْتِقَاءِ مَعَ النَّجِسِ الِاسْطُحِ مِنْہُ فَالْبَاقِی نجس نہیں کرے گا کیونکہ اتصال کے وقت اس پر طہارت کا اِذَا ذَابَ تَدْرِیجًا حَصَلَ اللِّقَاءُ لِلْقَلِیْلِ فَتَنَجَّسَ حکم لگ چکا ہے اور یہ معقول بات ہے۔ وَالْکَثْرَۃُ لِلْمُتَنَجِّسِ فَلَمْ یَطْھُرَ وَاِذَا ذَابَ دَفْعَۃً حَصَلَ ثانیا: نجس پانی کے پاک پانی میں پڑ جانے کا کوئی اثر نہیں، اللِّقَاءُ لِلْکَثِیْرِ فَلَمْ یَتَنَجَّسْ، سوائے ملاقات کے، اور وہ ہمارے اس مسئلہ میں ابتداء سے وَثَالِثًا: الْمَعْھُودُ ھٰھُنَا اَنَّ الْمَاءَ الْعَالِی یَرْفَعُ وَیَبْقَی حاصل ہے تو تفصیل کس چیز میں ہے، بخلاف منجمد پانی کے السَّافِلُ لِاَنَّ الْعَالِی یَقَعُ فِي السَّافِلِ دَفْعَۃً اَوْ تَدْرِیْجًا، مسئلہ کے، کیونکہ یہ منجمد ہے اس لئے اس کی ملاقات نجس وَ رَابِعًا: (۱) اِذَا کَانَ الْمَاءُ اَنْ مُتَلَاصِقِیْنَ وَلَمْ یَکُنْ کے ساتھ نہ ہو گی صرف اس کی سطح ملے گی، اور باقی جب ھٰذَا وُقُوعُ الْعَالِی فِی السَّافِلِ لَمْ یَتَصَوَّرِ الزِّیَادَۃُ عَلَیْہِ تدریجی طور پر پگھلے گا تو اس کے تھوڑے سے جزء سے ملاقات اِلَّا بِوُقُوعِ الْعَالِی فِی مَحَلِّ السَّافِلِ وَلَا یَکُونُ الَّا بِبَعْدِ ثابت ہوگی ، تو نجس ہو جائیگا ، اور کثرہ متنجس کیلئے ہے تو پاک خُرُوجِ السَّافِلِ لِاسْتِحَالَۃِ التَّدَاخُلِ فَلَا یَقَعُ الْعَالِی نہ ہوگا، اور جب یک دم پگھلے گا تو کثیر سے ملاقات ہوگی، تو فِی السَّافِلِ اَبَدًا لَا دَفْعَۃً وَلَا تَدْرِیْجًا، ناپاک نہ ہوگا۔ وَ خَامِسًا: (۲) لَوْ فَرَضَ فَلَا یَکُونُ الْاِخْرُوجُ ھٰذَا ثالثا: معمول کے مطابق اوپر والا پانی اٹھا لیا جاتا ہے اور نیچے وَدُخُولُ ذَاكَ وَالْکُلُّ حَرَکَۃً فَلَا یُمْکِنُ اِلَّا تَدْرِیْجًا کَانَ والا پانی باقی رہ جاتا ہے نہ یہ کہ اوپر والا نیچے والے میں گرتا یَکُونُ فِي السَّافِلِ مَنْفَذٌ یُفْتَحُ فَیَجْعَلُ السَّافِلَ ہے، کبھی یک دم اور کبھی تدریجی طور پر۔ یَخْرُجُ وَالْعَالِی یَنْزِلُ وَلَا تُصَوَّرُ لِاَنْ یَخْرُجُ السَّافِلُ رابعا: جب دونوں پانی ملے ہوئے ہوں اور اوپر والا نیچے دَفْعَۃً فَیَسْقُطُ الْعَالِی مَرَّۃً وَاحِدَۃً وَبِالْجُمْلَۃِ لَمْ یَصِلْ والے میں نہ گرے تو اس پر زیادتی متصور نہ ہوگی صرف فَھِیَ الْقَاصِرِ لِمُرَادِہٖ وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ بِمُرَادِ خَوَاصِ ایک صورت میں زیادتی ہوگی اور وہ یہ کہ اوپر والا نیچے والے

عِبَادِهِ لَا جَرَمَ اَنْ قَالَ فِيْهِ فِي الدُّرِّ لَوْ وَقَعَ فِيْهِ نَجِسٌ کی جگہ میں گرے اور یہ تب ہی ہوگا جبکہ نیچے والا نکلے ، لَمْ يَجُزْ حَتَّى يَبْلُغَ الْعُشْرَ فَقَالَ ش فَاِذَا بَلَغَهَا جَازَ کیونکہ تداخل محال ہے، تو اوپر والا نیچے والے میں کبھی نہیں وَ اِنْ كَانَ اَعْلَاهُ اَكْثَرَ مِقْدَارًا وَ فِي الْبَحْرِ عَنِ السِّرَاجِ گرے گا، نہ یک دم اور نہ تدریجی طور پر۔ الْهِنْدِی اَنَّهُ الْاَشْبَهُ اه وَرَحِمَهُ الله

1 الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی 1/36 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر 1/143

Fatawa Ridawiyya - Volume II

Al-Allama al-Shalabi, while quoting the words of al-Khaniyya in his marginalia on al-Zaylai up to the mention of the two opinions, marked it with 'ah' (end of quote) and did not proceed to discuss its investigation at all. And Allah the Almighty knows best.

Fifthly, if it is assumed to fall, it would be due to its exiting and entering, and all this is motion. Thus, it can only happen gradually; for example, if there is a hole in the lower part that is opened, the lower part starts exiting and the upper part starts descending. It is inconceivable that the lower part exits all at once and the upper part falls all at once. In short, in my deficient opinion, I have been unable to understand their intended meaning, and Allah the Almighty knows best the intent of His chosen ones. Then he said: It is stated in 'Ad-Durr' that if impurity falls into it, it is not permissible until it reaches ten [cubits]. Then 'Sh' said: When it reaches ten, it is permissible, even if the upper part exceeds that amount. It is quoted from Siraj al-Hindi in 'Al-Bahr' that this is closer to the truth. May Allah the Almighty have mercy on Allama Shalabi, for he quoted the words of Khaniyya in the marginalia of Zaylai up to the mention of the two opinions and marked it 'ah', and did not mention their investigation at all. And Allah the Almighty knows best. (T)

Question Two: In this scenario, where a drain was opened at the lowest part of the upper section of a tank and all the impure water was drained out from the bottom where it was less than ten-by-ten, and then it was filled again with pure water. Does the entire tank become pure now? If not, what should be done? Please explain.

Answer: If, after draining the impure water, one waited until the upper surfaces that were impure dried out and then it was filled again with pure water, and no visible impurity remained, then the entire tank is pure; otherwise, the upper part is still impure. It is stated in Radd al-Muhtar:

'If visible impurity remains in it, or it is filled before the upper part of the tank dries, it becomes impure.'

Translation: If visible impurity remains in the tank or if the tank is filled before its upper part dries, it will become impure. (T)

Note: The clarification will come from the third answer. In summary, the settled impurity will not come up, and the water will mix with the lower water which is not impure due to its large quantity. If the impurity coming up was invisible, or if it was visible and removed so that it became invisible, then it left with the impure water.

Yes, if visible impurity remains, it will make it impure again. 12 Minhu Ghafara Lahu (M)

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Water, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/143. Page 332 of 711

अल-अल्लामा अल-शलबी ने ज़ैलई पर अपनी हाशिए (टिप्पणी) में अल-खानिया के शब्दों को दो मतों के उल्लेख तक उद्धृत किया और 'अह' (समाप्ति) का चिन्ह लगा दिया और इसके शोध का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पांचवां, यदि इसे गिरना मान लिया जाए, तो यह इसके बाहर निकलने और प्रवेश करने के कारण होगा, और यह सब गति है। अतः यह केवल धीरे-धीरे ही हो सकता है; उदाहरण के लिए, यदि निचले हिस्से में कोई छेद हो जिसे खोला जाए, तो निचला हिस्सा बाहर निकलने लगेगा और ऊपरी हिस्सा नीचे आने लगेगा। यह अकल्पनीय है कि निचला हिस्सा एक साथ निकल जाए और ऊपरी हिस्सा एक साथ गिर जाए। संक्षेप में, मेरी अल्प बुद्धि में, मैं उनके अभिप्राय को समझने में असमर्थ रहा हूँ और अल्लाह तआला ही अपने खास बंदों के इरादे को बेहतर जानने वाला है। फिर उन्होंने कहा: 'अद-दुर्र' में है कि यदि इसमें अपवित्रता (नजासत) गिर जाए, तो यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि यह दस [हाथ] तक न पहुँच जाए। फिर 'श' ने कहा: जब यह दस तक पहुँच जाए, तो जायज़ है, भले ही ऊपरी हिस्सा उस मात्रा से अधिक हो। 'अल-बह्र' में सिराज अल-हिंदी से उद्धृत है कि यही सत्य के सबसे निकट है। अल्लाह तआला अल्लामा शलबी पर रहम करे कि उन्होंने ज़ैलई के हाशिए में खानिया के शब्दों को दो मतों के उल्लेख तक उद्धृत किया और 'अह' का चिन्ह लगा दिया और उनके शोध का ज़िक्र ही नहीं किया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न दो: ऐसी स्थिति में जहाँ एक हौज़ (हौद) के ऊपरी हिस्से के अंत में एक नाली खोली गई और सारा अशुद्ध पानी नीचे से निकाल दिया गया जहाँ पानी दस-दर-दस से कम रह गया था, फिर उसे शुद्ध पानी से भर दिया गया। क्या अब यह पूरा हौज़ शुद्ध हो गया है? यदि नहीं, तो क्या किया जाए? स्पष्ट करें।

उत्तर: यदि अशुद्ध पानी निकालने के बाद इतना इंतज़ार किया गया कि हौज़ की ऊपरी सतहें जो अशुद्ध थीं, सूख गईं और उसके बाद उसे शुद्ध पानी से भरा गया और कोई दृश्य अशुद्धता (नजासत-ए-मरिया) बाकी नहीं रही, तो पूरा हौज़ शुद्ध हो गया; अन्यथा ऊपरी हिस्सा अशुद्ध ही है। 'रद्दुल मुहतार' में है:

'यदि इसमें दृश्य अशुद्धता बनी रहे, या हौज़ का ऊपरी हिस्सा सूखने से पहले उसे भर दिया जाए, तो वह अशुद्ध हो जाता है।'

अनुवाद: यदि हौज़ में दृश्य अशुद्धता बाकी रहे या हौज़ का ऊपरी हिस्सा सूखने से पहले वह भर जाए, तो वह नापाक (अशुद्ध) हो जाएगा। (त)

नोट: स्पष्टीकरण तीसरे उत्तर से होगा। संक्षेप में यह कि नीचे बैठी हुई अशुद्धता ऊपर नहीं आएगी और पानी निचले पानी से मिलेगा जो अधिकता के कारण नापाक नहीं है। और ऊपर आने वाली यदि अदृश्य थी या दृश्य थी जिसे निकाल दिया गया कि वह भी अदृश्य रह गई, तो वह नापाक पानी के साथ निकल गई। हाँ, यदि दृश्य अशुद्धता बाकी है, तो वह फिर नापाक कर देगी। 12 मिन्हु गफ़र लहू (म)

---

1. रद्दुल मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/143. पृष्ठ 332 का 711

العلامة الشبلی حیث نقل فی حاشیة الزیلعی کلام الخانیة الی ذکر القولین ورسم اھ ولم یعرج لذکر بحثھا اصلا واللہ تعالٰی اعلم۔

خامسا، گر نا فرض کیا جائے تو اس کے نکلنے اور اس کے داخل ہونے کی وجہ سے ہوگا، اور یہ سب حرکت ہے، تو یہ صرف تدریجی طور پر ہی ہوسکتا ہے، مثلاً یہ کہ نچلے میں کوئی سوراخ ہو جس کو کھولا جائے تو نیچے والا نکلنے لگے اور اوپر والا اترنے لگے اور اس کا کوئی تصور نہیں کہ نیچے والا یک دم نکلے اور اوپر والا یکدم گر جائے، اور خلاصہ یہ کہ میں اپنی ناقص رائے میں ان کی مراد سمجھنے سے قاصر رہا ہوں اور اللہ تعالٰی اپنے خواص کی مراد کو زیادہ جاننے والا ہے۔ پھر انہوں نے فرمایا در میں ہے اگر اس میں نجس واقع ہو جائے تو جائز نہیں یہاں تک کہ دس کو پہنچ جائے، تو "ش" نے فرمایا جب وہ دس کو پہنچے تو جائز ہے اگرچہ اس کے اوپر والا مقدار میں زائد ہو، اور بحر میں سراج ہندی سے منقول ہے کہ یہی اقرب الی الحق ہے اھ اور اللہ تعالٰی علامہ شلبی پر رحم کرے کہ انہوں نے زیلعی کے حاشیہ میں خانیہ کا کلام نقل کیا قولین کے ذکر تک اور اھ کا نشان لگا دیا اور انکی بحث کا اصلاً ذکر نہ کیا واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

سوال دوم : اسی صورت میں حوض کے بالائی حصے کے منتہی پر ایک نالی کھول کر نکال دیا گیا صرف نیچے کا پانی جہاں سے دہ در دہ ہے رہ گیا پھر پاک پانی سے بھر دیا گیا تو اب یہ سب حوض پاک ہو گیا یا نہیں، اگر نہیں تو کیا کیا جائے کہ پاک ہو بینوا توجروا۔

الجواب : اگر ناپاک پانی نکال دینے کے بعد اتنا انتظار کیا کہ حوض کی بالائی سطح جو ناپاک تھیں خشک ہو گئیں اس کے بعد پاک پانی بھرا گیا اور اوپر نہ آجانے والی نجاست باقی نہیں تو سارا حوض پاک ہے ورنہ بالائی حصہ پھر ناپاک ہو گیا، ردالمحتار میں ہے:

لو کانت النجاسة مرئیة باقیة فیہ او امتلاء قبل جفاف اعلی الحوض تنجس ۔

اگر حوض میں نجاست مرئیہ باقی رہے یا بھر جائے حوض کا اعلی حصہ خشک ہونے سے پہلے تو نجس ہو جائے گا۔ (ت)

عہ : تو ضیح جواب سوم سے ہو گی خلاصہ یہ کہ تہہ نشین نجاست اوپر آئے گی نہیں اور پانی ملے گا آبِ زیریں سے جو بوجہ کثرت ناپاک نہیں اور اوپر آنے والی اگر غیر مرئیہ تھی یا مرئیہ نکال دی گئی کہ وہ بھی غیر مرئیہ رہ گئی تو ناپاک پانی کے ساتھ نکل گئی ہاں مرئیہ باقیہ ہے تو پھر ناپاک کردے گی ۱۲ منہ غفرلہ (م)

---

1 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البانی مصر ۱/ ۱۴۳ Page 332 of 711

Fatawa-e-Razvia Volume 2

The solution is to remove the aforementioned impurity and continue adding pure water until it overflows from the edges and flows away to some distance. Now the edges of the pool and all this water have become pure. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"The chosen opinion is the purification of the impure by its mere flow." 1 According to the chosen opinion of the school of law, an impure pool becomes pure simply by the flow of water. (T)

It is stated in Ghunyah: "The pool becomes pure as soon as water enters through a pipe and overflows from the pool; this is the chosen opinion because it becomes running water." 2 According to the chosen opinion, just by water entering through a pipe and overflowing from the pool, the pool becomes pure because now the water is flowing. (T)

It is stated in Fatawa Imam Zahiruddin: "The correct view is that it becomes pure even if an amount equal to what was in it does not flow out, and if a person takes from that water which flowed out and performs ablution with it, it is permissible." 3 Ash-Shami mentioned it. I say: There are other reports and unstable narrations that will be discussed later, and Allah knows best. According to the correct opinion, the pool will become pure even if as much water as was originally in it has not exited. If someone takes the water that has already overflowed and performs ablution with it, it is permissible. Allama Shami has mentioned this. Apart from this, other statements and conflicting reports have also been mentioned, which will be discussed later, and Allah knows best. (T)

Third Question: In this situation, if the water was only in the lower part (measuring ten by ten) and at that time impurity fell but it did not become impure, then after removing the impurity or without removing it, the pool was filled, did the upper part remain pure or did it become impure? Please explain.

The Answer: The discussion on this case from the available books is not in mind at this time, and I say, and with Allah is success. Note: Yes, the three masters have addressed this; look into it. Yes, the three masters have discussed this; "Ta" has... (continued on next page).

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/36
2. Ghunyat al-Mustamli, Suhail Academy Lahore, 1/103

3. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/143 Page 333 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द द्वितीय

समाधान यह है कि उक्त अशुद्धि (नजासत) को निकालकर शुद्ध पानी डालते रहें, यहाँ तक कि किनारों से छलक कर कुछ दूर बह जाए। अब वह हौज़ के किनारे भी शुद्ध हो गए और यह सारा पानी भी। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

"पसंद किया हुआ मत यह है कि अशुद्ध (नजिस) चीज़ महज़ बहने से शुद्ध हो जाती है।" 1 पसंद किए हुए मत के अनुसार, अशुद्ध हौज़ केवल पानी के बहने से शुद्ध हो जाता है। (त)

'ग़ुनिया' में है: "हौज़ शुद्ध हो जाता है जैसे ही पानी नली के ज़रिए प्रवेश करता है और हौज़ से बहने लगता है; यही पसंद किया हुआ मत है क्योंकि वह बहता हुआ पानी बन चुका है।" 2 पसंद किए हुए कथन के अनुसार, केवल नली के ज़रिए पानी के आने और हौज़ से बह जाने से हौज़ शुद्ध हो जाता है क्योंकि अब पानी जारी (बहता हुआ) हो चुका है। (त)

'फ़तावा इमाम ज़हीर उद्दीन' में है: "सही मत यह है कि वह शुद्ध हो जाता है, भले ही उसमें मौजूद पानी के बराबर पानी बाहर न निकला हो, और यदि कोई व्यक्ति उस पानी से वुज़ू करे जो बाहर निकल चुका है, तो यह जायज़ है।" 3 शानी ने इसका ज़िक्र किया है। मैं कहता हूँ: इसके अलावा अन्य मत और विचलित रिवायतें भी हैं जिन पर चर्चा आगे आएगी, और अल्लाह ही बेहतर जानता है। सही कथन के अनुसार हौज़ शुद्ध हो जाएगा, भले ही उतना पानी बाहर न निकला हो जितना उसमें था। यदि कोई व्यक्ति वह पानी ले ले जो बाहर निकल चुका है और उससे वुज़ू करे तो यह जायज़ है। अल्लामा शामी ने इसका उल्लेख किया है। इसके अलावा अन्य कथनों और अस्थिर रिवायतों का भी ज़िक्र किया गया है जिन पर आगे चर्चा होगी, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

तीसरा सवाल: इसी स्थिति में अगर पानी केवल निचले हिस्से (दस दर दस) में था और उस समय अशुद्धि गिरी कि वह नापाक नहीं हुआ, फिर अशुद्धि निकालकर या बिना निकाले उसे भर दिया, तो अब ऊपर का हिस्सा पाक रहा या नापाक हो गया? कृपया स्पष्ट करें।

जवाब: मौजूदा किताबों से इस सूरत पर बहस इस समय ज़हन में नहीं है, और मैं कहता हूँ, और अल्लाह ही तौफ़ीक देने वाला है। नोट: हाँ, तीनों स्वामियों ने इस पर चर्चा की है; देखें। हाँ, तीनों सादात ने इस पर बहस की है, "त" ने... (शेष अगले पृष्ठ पर)।

1. दुर्रे मुख़्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/36

2. ग़ुनियतुल मुस्तमली, सुहैल एकेडमी लाहौर, 1/103

3. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/143 पृष्ठ 333 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

چارہ کار یہ ہے کہ نجاست مذکورہ نکال کر پاک پانی ڈالتے جائیں یہاں تک کہ کناروں سے چھلک کر کچھ دور بہ جائے اب وہ حوض کے کنارے بھی پاک ہو گئے اور یہ سب پانی بھی۔ در مختار میں ہے:

المختار طھارۃ المتنجس بمجرد جریانه 1- مختار مذہب پر نجس حوض صرف پانی کے جاری ہونے سے پاک ہو جاتا ہے۔ (ت)

غنیہ میں ہے: یطھر الحوض بمجرد مایدخل الماء من الانبوب ویفیض من الحوض ھو المختار لصیرورته جاریاً 2- مختار قول میں صرف نالی کے ذریعہ پانی داخل ہونے اور حوض سے بہہ جانے سے حوض پاک ہو جاتا ہے کیونکہ اب پانی جاری ہو چکا ہے۔ (ت)

فتاوی امام ظہیر الدین میں ہے: الصحیح انه یطھر وان لم یخرج مثل ما فیه وان رفع انسان من ذلك الماء الذی خرج وتوضأ به جاز 3 اھ ذکرہ ش واقول الا خروروایات مضطربة سیأتي الکلام علیھا واللہ تعالی اعلم۔ صحیح قول پر حوض پاک ہو جائیگا اگرچہ اتنا پانی خارج نہ ہوا ہو جتنا اس میں ہے اگر کوئی آدمی وہ پانی اٹھائے جو خارج ہو چکا ہے اور اس سے وضو کرے تو جائز ہے۔ اس کو شامی نے ذکر کیا ہے اس کے علاوہ دیگر اقوال اور مضطرب روایات بھی ذکر کی ہیں جن پر کلام آئے گا، واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

سوال سوم: اسی صورت میں اگر پانی صرف حصہ زیریں دہ در دہ میں تھا اور اس وقت نجاست پڑی کہ ناپاک نہ ہوا، پھر نجاست نکال کر یا بے نکالے بھر دیا تو اب اوپر کا حصہ پاک رہا یا ناپاک ہو گیا بیتو اتو جروا۔

الجواب: کتب حاضرہ سے اس صورت پر کلام اس عہ وقت ذہن میں نہیں، و انا اقول و باللہ التوفیق

عہ: نعم تعرض لھا السادۃ الثلثۃ ناظروا ہاں تینوں سادات نے اس سے بحث کی ہے "ط" نے (باقی بر صفحہ آئندہ)

1. در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی 36/1
2. غنیۃ المستملی سہیل اکیڈمی لاہور 103/1
3. رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر 143/1 صفحہ 333 از 711

Fatawa Razawiyya | Volume II Impurity is of four types: visible (mar'iyyah), which can be seen; and non-visible (ghayr mar'iyyah), which mixes with water but remains distinct, like urine. Each of these is of two types. (Continued from the previous footnote) Al-Durr stated: [citing] 'Ta': If its upper part is narrow and its lower part is ten [cubits wide], when [water] reaches the lower part and impurity falls into it, purification with it is permissible. But if it fills up until it reaches the narrow part, Al-Halabi said: 'I did not find its ruling, and the apparent [view] is that it becomes impure because the falling of impurity into it is certain, and we only permitted purification with it because of its vastness, and that [vastness] has ceased to exist.' End. I say: What this humble servant has penned by the grace of the Almighty (1) will reach you. It will become clear from it that this ruling is neither apparent nor acceptable, whether it is visible impurity at the bottom of the pond (whether it is seen in its depths or not, whether it is floating visible impurity that has been removed or remains in a corner of the lower part) or if it is non-visible impurity and there are several corners in the lower part. Out of seven cases, only two would be acceptable: if it is visible impurity that floated to the top, or if it is non-visible and not in a corner. The reason is that its coming to the surface is only confirmed in these two cases. So, how would its narrowness harm it when the impurity has not reached it nor come into contact with impure water? This was also quoted by 'Sha' in this way. Now the case remains: what if impurity falls into it and then, in the first scenario (i.e., its top is large), the water decreases, or in the second scenario (i.e., its bottom is large), it fills up? 'Ha' said: 'I did not find its ruling.' End. Then he followed it by saying: 'This is strange, for since we ruled it pure and nothing happened to make it impure, could its impurity be imagined? Yes, if the impurity were visible and remained in it, or if it filled up before the upper sides of the pond dried. However, if it was non-visible, or visible and removed, or it filled up after the upper sides were ruled pure due to drying [then it remains pure].' Page 334 of 711

फ़तावा रज़विया | जिल्द दूसरी नजासत (अशुद्धि) चार प्रकार की होती है: मर्यिया (दृश्य) जो दिखाई दे; और गैर-मर्यिया (अदृश्य) जो पानी में मिलकर भी अलग पहचानी जाए जैसे पेशाब। और प्रत्येक के दो प्रकार हैं। (पिछला हाशिए जारी) 'अल-दुर्र' में 'ता' ने कहा: यदि इसका ऊपरी भाग संकरा हो और निचला भाग दस [हाथ चौड़ा] हो, जब [पानी] निचले भाग तक पहुँच जाए और उसमें नजासत गिर जाए, तो उससे पवित्रता प्राप्त करना जायज़ है। लेकिन जब वह भर जाए यहाँ तक कि संकरी जगह तक पहुँच जाए, तो अल-हलबी का कहना है: 'मुझे इसका हुक्म नहीं मिला; ज़ाहिर है कि यह नापाक हो जाएगा, क्योंकि इसमें नजासत का गिरना निश्चित है और हमने इसकी विशालता के कारण ही इससे पवित्रता के जायज़ होने का हुक्म दिया था, और वह [विशालता] अब समाप्त हो गई है।' समाप्त। मैं कहता हूँ: इस संबंध में जो मैंने सर्वशक्तिमान की कृपा से लिखा है (1) वह आप तक पहुँचेगा। उससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह हुक्म न तो ज़ाहिर है और न ही स्वीकार्य है, चाहे वह हौज की गहराई में दिखने वाली दृश्य नजासत हो या न हो, चाहे वह तैरने वाली दृश्य नजासत हो जिसे निकाल दिया गया हो या जो निचले हिस्से के किसी कोने में बची हो, और न ही अदृश्य नजासत की स्थिति में जब निचले हिस्से में कई कोने हों। सात में से केवल दो स्थितियों में हुक्म स्वीकार्य होगा: यदि दृश्य नजासत हो और ऊपर आ गई हो, या अदृश्य हो और किसी कोने में न हो। इसका कारण यह है कि उसका ऊपर की ओर आना तभी सिद्ध होगा जब इन दो स्थितियों में हो, तो इसकी संकीर्णता उसके लिए क्या हानिकारक होगी जबकि न तो उस तक नजासत पहुँची और न ही वह नापाक पानी से मिली? 'श' ने भी इसे इसी तरह उद्धृत किया है। अब यह स्थिति शेष है कि यदि इसमें नजासत गिर गई और फिर पहली स्थिति में (अर्थात इसका ऊपरी भाग बड़ा है) पानी कम हो गया, या दूसरी स्थिति में (अर्थात इसका निचला भाग बड़ा है) वह भर गया? 'ह' ने कहा: 'मुझे इसका हुक्म नहीं मिला।' समाप्त। फिर उन्होंने यह कहते हुए इसका अनुसरण किया: 'यह आश्चर्यजनक है, क्योंकि जब हमने इसे पाक (पवित्र) करार दे दिया और इसे नापाक करने वाली कोई बात नहीं हुई, तो क्या इसकी नापाकी का संदेह हो सकता है? हाँ, यदि नजासत दृश्य होती और उसमें बनी रहती, या हौज के ऊपरी किनारों के सूखने से पहले वह भर जाता। लेकिन यदि वह अदृश्य थी, या दृश्य थी और उसे निकाल दिया गया था, या ऊपरी किनारों के सूखने से पवित्र होने के हुक्म के बाद वह भरा, [तो वह पवित्र ही रहेगा]।' पृष्ठ 334 / 711

فتاوی رضویہ | جلد ثانی نجاست چار قسم ہے مرئیہ کہ نظر آئے اور غیر مرئیہ کہ پانی میں مل کر امتیاز رہے جیسے پیشاب، اور ہر ایک دو قسم ہے (بقیہ حاشیہ گزشتہ) الدر فقال ط انکان اعلاہ ضیقاو اسفلہ عشرا فاذا بلغھا ووقعت فیہ نجاسۃ حینئذ جاز التطھیر بہ: فرمایا اگر اس کا بالائی حصہ تنگ اور نچلا دس ہاتھ ہو جب پانی اسفل تک پہنچے اور اس میں نجاست گر پڑے تو اس سے طہارت جائز ہے فاذا امتلا حتی بلغ المکان الضیق قال الحلبی لم اجد حکمہ والظاھر التنجس لان النجاسۃ تحقق وقوعھا وانما جوزنا التطھیر بہ لسعتہ وقد ذھبت اہ: اور جب وہ بھر جائے یہاں تک کہ تنگ جگہ کو پہنچ جائے تو حلبی کا بیان ہے کہ میں نے اس کا حکم نہیں پایا، بظاہر ناپاک ہو جائے گا، کیونکہ اس میں نجاست کا گرنا یقینی ہے اور ہم نے اس کی فراخی کے باعث اس سے پاک کے جواز کا قول کیا ہے اور اس صورت میں فراخی ختم ہوگئی ہے اھ اقول: وسیرد علیك ماحرر الفقیر بتوفیق القدیر(1): میں کہتا ہوں اس سلسلہ میں جو میں نے لکھا ہے وہ آپ دیکھ لیں گے، ویظھر بہ ان ھذا الحکم غیر ظاھر بل ولا مقبول في راسیۃ مرئیۃ و لافی طافیۃ مرئیۃ قداخرجت او بقیت فی زاویۃ فی الاسفل ولا فی غیر مرئیۃ وفی الاسفل زوایا: اس سے معلوم ہوگا کہ یہ حکم نہ تو ظاہر ہے اور نہ مقبول ہے، خواہ وہ حوض کی گہرائی میں نظر آتی ہو یا نہ آتی ہو اور نہ تیرنے والی مرئی ہو جو نکال دی ہو یا کسی گوشہ میں نچلے حصہ میں باقی ہو اور نہ غیر مرئیہ کی صورت میں میں نچلے حصہ میں کئی زاویے ہوں فانما یقبل في ثنتین من سبع ان تکون مرئیۃ وقد طفت او غیر مرئیۃ ولا زاویۃ وذلك انہ انما یتحقق وصولھا الی الاعلی فی ھاتین فماذا یضرہ ضیقہ ولم یصل الیہ النجس ولم یتصل بماء متنجس۔: سات میں سے دو صورتوں میں مقبول ہوگا اگر مرئیہ ہو، اور اوپر آگئی ہے یا غیر مرئیہ ہو، اور زاویہ میں نہ ہو، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ اس کا اوپر کی طرف آنا اس وقت متحقق ہوگا جب کہ ان دو صورتوں میں ہو، تو اس کی تنگی اس کیلئے کیا مضر ہوگی

حالانکہ نہ اُس تک نجاست پہنچی اور نہ وہ نجس پانی سے متصل ہوئی۔ هذاونقله ش هكذا: اور "ش" نے اس کو اسی طرح نقل کیا، بقی مالو وقعت فیه النجاسة ثم نقص فی المسألة الاولی(ای اعلاه کثیر)اوامتلأ فی الثانیة(ای اسفله کثیر) قال ح لم اجد حکمه اه: اب یہ صورت باقی رہ گئی کہ اگر اس میں نجاست گر گئی پھر پہلی صورت میں (ایعنی اس کا اوپر کا حصہ وسیع ہے) پانی گھٹ گیا یا دوسری صورت میں (یعنی نیچے کا حصہ وسیع ہے) وہ بھر گیا تو "ح" نے کہا کہ مجھے اس کا حکم نہیں ملا اھ ثم تعقبه بقوله هذا عجیب فانه حیث حکمنا بطهارته ولم یعرض له ما ینجسه هل یتوهم نجاسته نعم لوکانت النجاسة مرئیة وکانت باقیة فیه اوامتلأ قبل جفاف اعلی الحوض اما اذا کانت غیر مرئیة اومرئیة واخرجت منه اوامتلأ بعد ماحکم بطهارة جوانب اعلاه بالجفاف: پھر اس پر یہ کہہ کر تعقب کیا کہ یہ عجیب بات ہے کیونکہ جب ہم نے اسے پاک قرار دے دیا اور اس پر کوئی ایسی چیز پیش نہیں آئی جو اسے نجس کرے تو کیا اس کی نجاست کا وہم ہو سکتا ہے؟ ہاں اگر نجاست مرئی ہوتی اور وہ اس میں باقی رہتی، یا حوض کے اوپر کے حصوں کے خشک ہونے سے پہلے وہ بھر جاتا۔ لیکن اگر نجاست غیر مرئی تھی یا مرئی تھی اور نکال دی گئی تھی، یا اوپر کے حصوں کے خشک ہو کر پاک ہونے کے حکم کے بعد وہ بھرا [تو وہ پاک ہی رہے گا]۔ صفحہ 334 از 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

Floating impurities stay on top, and sinking impurities settle at the bottom. If the impurity was of the sinking type such that it would not rise when water was filled, then the entire pond is pure, whether the impurity is visible or invisible. The lower part, since it is ten by ten cubits, will not accept the effect of impurity, even though...

(Left Column - Arabic/Urdu Reference): ...there is no requirement for impurity; this is what has become apparent to me. End. I say: May Allah have mercy on the Sayyid. Firstly, the discussion here is about when impurity falls into a large quantity of water (kathir) and then it decreases by lowering, or it is filled. And the discussion about the drying of the upper part of the pond or otherwise is related to when impurity falls in the upper small part (qalil) and then reaches the lower large part (kathir), then the pond is filled and reaches the small part. Thus, both cases are separate from the current locus of discussion. Secondly, it does not become impure by a visible, remaining, sinking impurity, nor by a floating one that is stuck in a corner. Thirdly, it does become impure by an invisible one as well as by a floating one that is not in a corner. Furthermore, the statement of 'H' regarding the first case that "I did not find its ruling" is not correct based on what we explained regarding Nazm al-Durr, because it is explicitly mentioned therein. And Allah knows best; may He forgive him. (M)

(Right Column - Urdu): (Meaning its upper part is 'kathir' [large volume]) or in the second case it filled up (meaning its lower part became 'kathir'). "H" said that I did not find its ruling, then later said, "This is strange," because when we have ruled it pure and nothing has entered it that would make it impure, then is its impurity merely suspected? Yes, if the impurity is visible and remains in it, or if it fills up before the upper parts of the pond dry, then it will become impure. And if the impurity is invisible, or it is visible and removed from it, or if it filled up after the edges of its upper parts dried, then it will not, because there is no requirement for impurity. This is what became apparent to me.

I say: May Allah have mercy on the Sayyid. Firstly, the discussion is regarding the case when impurity falls into 'kathir' (large volume of) water, and then the water decreases or increases. The talk about the drying or not drying of the upper parts of the pond pertains to the case where impurity falls into a 'qalil' (small volume) upper part and reaches the 'kathir' lower part, and then the pond fills up and reaches the 'qalil' part. So, these two cases are distinct from this discussion. Secondly, it will not

become impure due to visible impurity settled at the bottom of the water, nor by such impurity that is floating and stayed in a corner. Thirdly, it will also become impure due to invisible impurity if it is floating and not in a corner. Then, the statement of "H" in the first case that "I did not find its ruling" is not correct, as we have explained with the arrangement of 'Ad-Durr', because it is explicitly mentioned therein. And Allah Almighty knows best. (T)

फतावा रज़विया, जिल्द दो

तैरने वाली गंदगी ऊपर रहती है और बैठने वाली गंदगी नीचे बैठ जाती है। अगर गंदगी बैठने वाली थी कि पानी भरने से ऊपर न आएगी, तो सारा हौज पाक है, चाहे वह दिखाई देने वाली (मर्ाइया) हो या न दिखाई देने वाली (ग़ैर-मर्ाइया)। नीचे का हिस्सा चूँकि दस-दर-दस है, इसलिए वह गंदगी का असर स्वीकार नहीं करेगा, भले ही...

(बायाँ कॉलम - अरबी/उर्दू संदर्भ): ...नापाकी का कोई कारण नहीं है; यह वह बात है जो मुझ पर स्पष्ट हुई। इति। मैं कहता हूँ: अल्लाह सैय्यद पर रहम करे। अव्वल तो यह कि यहाँ बात उस सूरत में है जबकि गंदगी 'कसीर' (बड़ी मात्रा) पानी में गिरी हो और फिर वह कम हो जाए या भर जाए। और हौज के ऊपरी हिस्से के सूखने या न सूखने की चर्चा उस सूरत से संबंधित है जहाँ गंदगी ऊपरी थोड़े ('क़लील') पानी में गिरकर निचले 'कसीर' पानी में पहुँचती है, फिर हौज भरकर 'क़लील' भाग तक पहुँचता है। अतः दोनों स्थितियाँ चर्चा के वर्तमान विषय से अलग हैं। दूसरा, यह दिखाई देने वाली, नीचे बैठी हुई गंदगी से नापाक नहीं होता, और न ही तैरती हुई किसी कोने में फंसी गंदगी से। तीसरा, यह न दिखने वाली गंदगी से और तैरने वाली गंदगी से जो कोने में न हो, नापाक हो जाता है। इसके अतिरिक्त, पहली सूरत के संबंध में 'ह' का यह कथन कि "मुझे इसका हुक्म नहीं मिला" सही नहीं है जैसा कि हमने 'नज़्म अल-दुर' के स्पष्टीकरण में बताया है, क्योंकि इसमें इसका स्पष्ट उल्लेख है। और अल्लाह बेहतर जानता है; वह उसे क्षमा करे। (म)

(दायाँ कॉलम - उर्दू): (अर्थात उसका ऊपरी हिस्सा 'कसीर' [बड़ी मात्रा] हो) या दूसरी सूरत में भर गया (अर्थात उसका निचला हिस्सा 'कसीर' हो गया)। "ह" ने फरमाया कि मैंने इसका हुक्म नहीं पाया, फिर बाद में फरमाया "यह अजीब है", क्योंकि जब हमने इसकी पाकी (तहारत) का हुक्म लगाया और इसमें कोई ऐसी चीज़ नहीं आई जो इसे नापाक करे, तो क्या इसकी नापाकी केवल संदेहपूर्ण है? हाँ, अगर गंदगी दिखाई देने वाली हो और उसमें बाकी हो या हौज के ऊपरी हिस्सों के सूखने से पहले भर जाए, तो वह नापाक हो जाएगा। और अगर गंदगी न दिखाई देने वाली हो, या दिखाई देने वाली हो और निकाल दी जाए, या ऊपरी हिस्सों के किनारों के सूखने के बाद भरा गया, तो नहीं, क्योंकि नापाकी की कोई आवश्यकता नहीं है। यह वह है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ।

मैं कहता हूँ: अल्लाह सैय्यद पर रहम करे। अव्वल तो यह कि चर्चा उस स्थिति में है जब गंदगी 'कसीर' पानी में गिरी हो, और फिर पानी कम हो जाए या बढ़ जाए। हौज के ऊपरी हिस्सों के सूखने

या न सूखने की बात उस स्थिति से संबंधित है जहाँ गंदगी 'क़लील' (थोड़ी मात्रा) के ऊपरी हिस्से में गिरती है और 'कसीर' निचले हिस्से तक पहुँचती है, और फिर हौज भरकर 'क़लील' हिस्से तक पहुँचता है। तो ये दोनों स्थितियाँ इस चर्चा से अलग हैं। दूसरा, यह पानी के तल में बैठी दिखाई देने वाली गंदगी से नापाक नहीं होगा, और न ही ऐसी गंदगी से जो तैरती हुई किसी कोने में रुक गई हो। तीसरा, न दिखाई देने वाली गंदगी से भी नापाक हो जाएगा यदि वह तैरने वाली हो और किसी कोने में न हो। फिर, पहली सूरत में "ह" का यह कहना कि "मुझे इसका हुक्म नहीं मिला" सही नहीं है, जैसा कि हमने 'अद-दुर' की व्यवस्था के साथ समझाया है, क्योंकि इसमें स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی طافیہ کہ اوپر تیرتی رہے اور راسبہ کہ تہہ نشین ہو جائے اگر نجاست راسبہ تھی کہ پانی بھرنے سے اوپر نہ آئے گی جب تو سارا حوض پاک ہے مرئیہ ہو یا غیر مرئیہ، نیچے کا حصہ یوں کہ وہ دہ در دہ ہے اثرِ نجاست قبول نہ کرے گا اگر چہ

(Left Column): فلا اذلا مقتضی للنجاسة هذا ما ظهر لی اهـ اقول: رحم الله السيد فاولا (ا) انما الكلام فيها اذا وقع النجس في الكثير ثم انتقص بتسفل او امتلاً وحديثا جفاف اعلى الحوض وعدمه متعلقان بما اذا وقعت نجاسة في الاعلى القليل ثم بلغ الاسفل الكثير ثم ملئ فبلغ القليل فهما بمعزل عن المحل وثانيا لا يتنجس (۲) بمرئية باقية راسبة ولا بطافية تعلقت بزاوية وثالثا يتنجس (۳) بغير المرئية ايضا لطافية ولا زاوية هذا ثم قول (۴) ح فی الاولی لم اجد حكمه لا يستقيم على ما شرحنا به نظم الدر لكونه اذن مصرحا به فيه والله تعالى اعلم منه غفر له (م)

(Right Column): (یعنی اس کا اوپر والا کثیر ہو) یا دوسری صورت میں بھر گیا (یعنی اس کا نچلا حصہ کثیر ہو گیا) "ح" نے فرمایا کہ میں نے اس کا حکم نہیں پایا، پھر بعد میں فرمایا "یہ عجیب ہے" کیونکہ جب ہم نے اس کی طہارت کا حکم لگایا اور اس میں کوئی ایسی چیز نہیں آئی جو اس کو نجس کرے تو آیا اس کی نجاست متوہم ہے، ہاں اگر نجاست مرئی ہو اور اس میں باقی ہو یا حوض کے بالائی حصے کے خشک ہونے سے قبل بھر جائے تو ناپاک ہو جائے گا، اور اگر نجاست غیر مرئی ہو یا مرئی ہو اور اس سے نکالی جائے یا اس کے بالائی حصے کے کناروں کے خشک ہونے کے بعد بھر گیا، تو نہیں کیونکہ نجاست کا کوئی مقتضی نہیں، یہ وہ ہے جو مجھ پر ظاہر ہوا۔ میں کہتا ہوں اللہ سید پر رحم کرے، اول تو یہ کہ کلام اُس صورت میں ہے جبکہ نجاست کثیر پانی میں واقع ہو، اور پھر پانی کم ہو جائے یا بھر جائے، اور حوض کے بالائی حصے کے خشک ہونے اور نہ ہونے کی بات اس صورت سے متعلق ہیں جبکہ نجاست اعلیٰ قلیل

میں گر کر نچلے کثیر میں پہنچے پھر حوض بھر کر قلیل کو پہنچے تو یہ دونوں صورتیں اس بحث سے الگ ہیں۔ اور دوسرا یہ کہ پانی کی تہ میں بیٹھی باقی نجاست مرئیہ سے نجس نہ ہوگا اور نہ ہی ایسی نجاست سے جو تیرتی ہوئی کسی گوشہ میں ٹھہر گئی ہو۔ تیسرا، غیر مرئیہ سے بھی نجس ہو جائیگا اگر تیرنے والی ہو اور کوئی گوشہ نہ ہو۔ پھر "ح" کا پہلی صورت میں یہ فرمانا کہ میں نے اس کا حکم نہیں پایا، درست نہیں، جیسے کہ ہم نے در کی نظم کی اس کے ساتھ تشریح کی ہے، کیونکہ یہ تو اس میں بصراحت مذکور ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

Fatawa Rizvia, Volume Second

Impurity is present in it, and the upper part is such that the impurity is not in it, and what it is connected to is pure. And if the floating impurity was visible and it was removed beforehand, then it is clear that there is no reason for impurity. And if water was filled without removing it, such that by adding water it came to the top, then the upper part became impure because the impurity came in contact with it, and that is a small amount of water. As for the non-visible floating impurity, there are two cases in it: one is that there is no such corner in the lower part of the tank that prevents that impurity from going up, for example, this shape:

[Diagram 1 shows a semi-circular vessel with lines labeled 'h' (ح) and 'a' (ع) at the water level and 'b' (ب) above it.]

In both parts, line H-A (ع-ح) is the common divider. It is clear that whatever floating thing is anywhere in line H-A will come to line B (ب) upon filling water. Second is that there are such corners, for example, these shapes:

[Diagram 2 and 3 show rectangular tanks with vertical extensions and corners labeled with letters like 'h' (ح), 'a' (ع), 'b' (ب), 'r' (ر).]

In the first, what is on line H-R (ر-ہ), and in the second, what is on line H-H (ہ-ح), such things will surely reach line A-B (اب) upon filling water. But in the second, line H-Hamza (ء-ہ) or in the first, line H-H (ہ-ح) [and] whatever is below line R-A (ع-ر), it still cannot go up. In the first case, the upper part A-B-H-A (ع ح اب ا) will become impure, and in the second case, the entire tank will remain pure. Therefore, we applied the condition of coming up by adding water in visible floating impurity, so that if it is entangled in some corner, then even now no part will become impure.

Arabic Text

And the reason for this is that non-visible [impurity] does not vanish but remains hidden. And where it is floating, it must come to the surface. Therefore, our Iraqi Shaikhs do not allow performing ablution (Wudu) from the spot where non-visible impurity falls in a large tank because it is stagnant and will not move. But the scholars of Balkh, Bukhara, and Transoxiana allowed

Urdu Translation

And the reason for this is that non-visible [impurity] does not vanish but rather remains hidden, and when it is floating, it must come to the top. Therefore, our Iraqi Shaikhs do not consider ablution from the place where non-visible impurity fell in a large tank to be permissible because it is stagnant and will not move. But the

Arabic Text

performing ablution from wherever one wishes, and this is correct. They reasoned this by the movement of liquid. Malik al-Ulama said in *al-Badai'*: even if it was non-visible, the Shaikhs of Iraq say one should not perform ablution from that side as we mentioned regarding visible [impurity] (referring to their statement that we have certain knowledge of impurity in that side). In contrast to flowing water, because it moves the impurity, so there is no certainty of impurity at the place of ablution. Our Shaikhs in Transoxiana made a distinction between the two (i.e., between...

Urdu Translation

Shaikhs of Balkh, Bukhara, and Transoxiana gave permission to perform ablution from wherever one likes, and this is correct. And the reason for this they stated is that flowing things move. Malik al-Ulama said in *Badai'* that if the impurity is non-visible, the saying of the Shaikhs of Iraq is that one should not perform ablution from that side as we mentioned regarding visible [impurity] (this refers to their saying that we have certain knowledge of impurity on that side).

फतावा रिज़विया, जिल्द सानी

नजासत (गंदगी) उसमें मौजूद है और ऊपर का हिस्सा ऐसा है कि नजासत उसमें नहीं है और जिससे वह जुड़ा हुआ है वह पाक है। और अगर तैरने वाली नजासत दिखने वाली थी और उसे पहले निकाल दिया गया, तब भी ज़ाहिर है कि नापाकी की कोई वजह नहीं है। और अगर बिना निकाले पानी भर दिया गया जिससे पानी डालने पर वह ऊपर आ गई, तो ऊपरी हिस्सा नापाक हो गया क्योंकि नजासत उससे जुड़ गई और वह थोड़ा पानी (आबे कलील) है। रही गैर-मरई (जो दिखाई न दे) तैरने वाली नजासत, तो उसमें दो सूरतें हैं: एक यह कि हौज के निचले हिस्से में कोई ऐसा कोना न हो जो उस नजासत को ऊपर जाने से रोके, जैसे यह शक्ल:

[चित्र 1 में एक अर्ध-गोलाकार बर्तन दिखाया गया है जिसमें पानी के स्तर पर 'ह' (ح) और 'अ' (ع) और उसके ऊपर 'ब' (ب) अंकित रेखाएं हैं।]

दोनों हिस्सों में खत ह-अ (ع-ح) मुश्तरक (साझा) है। ज़ाहिर है कि जो तैरने वाली चीज़ खत ह-अ में कहीं है, वह पानी भरने से खत ब (ب) पर आ जाएगी। दूसरे यह कि ऐसे कोने हों, मसलन यह शक्ल:

[चित्र 2 और 3 में कोनों वाले टैंक दिखाए गए हैं जिन्हें 'ह' (ح), 'अ' (ع), 'ब' (ب), 'र' (ر) जैसे अक्षरों से अंकित किया गया है।]

पहले में खत ह-र (ر-ح) पर, दूसरे में खत ह-ह (ء-ح) पर जो चीज़ होगी वह पानी भरने पर खत अ-ब (اب) तक ज़रूर पहुंचेगी। लेकिन दूसरे में खत ह-हम्ज़ा (ء-ح) या पहले में खत ह-ह (ح-ح) [और] खत र-अ (ع-ر) के नीचे जो कुछ है वह अब तक नहीं जा सकता। पहली सूरत में ऊपरी हिस्सा अ-ब-ह-अ (ا ب ح ع) नापाक हो जाएगा और दूसरी सूरत में सारा हौज पाक रहेगा। इसीलिए हमने दिखने वाली तैरने वाली नजासत में पानी डालने से ऊपर आ जाने की शर्त लगाई है कि अगर किसी कोने में उलझ रही हो तो अब भी कोई हिस्सा नापाक न होगा।

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
और इसकी वजह यह है कि गैर-मरई (अदृश्य) नजासत खत्म नहीं होती बल्कि छिप जाती है, और जब वह तैर रही होती है तो उसका ऊपर आना लाज़मी है। इसीलिए हमारे इराकी मशायख बड़े हौज में गिर जाने	और इसकी वजह यह है कि गैर-मरई खत्म नहीं होती है बल्कि छिप जाती है, और जब तैर रही होती है तो उसका ऊपर आना लाज़मी है, इसलिए हमारे इराकी मशायख

अरबी पाठ

वाली गैर-मरई नजासत के मुकाम से वज़ू को जायज़ करार नहीं देते क्योंकि वह ठहरी हुई होती है तो मुंतकिल (स्थानांतरित) न होगी। और बल्ख, बुखारा और मावराउन्नहर के मशायख ने इजाजत दी कि जहाँ से जी चाहे वज़ू कर ले और यही सही है। और इसकी वजह उन्होंने यह बयान की है कि बहने वाली चीज़ मुंतकिल होती है। मलिकुल उलमा ने 'बदाइ' में फरमाया कि अगर नजासत गैर-मरई हो तो मशायखे इराक का कौल है कि उस जानिब से वज़ू न करे जैसा कि हमने मरई (दृश्य) के बारे में ज़िक्र किया है (इससे मुराद उनका यह कौल है कि हमने उस जानिब नजासत का यकीन कर लिया)। बहते पानी के बरखिलाफ क्योंकि वह नजासत को मुंतकिल कर देता है तो वज़ू के मुकाम पर नजासत का यकीन न रहा। और मावराउन्नहर के हमारे मशायख ने इन दोनों के बीच फर्क किया है (यानी बीच...

उर्दू अनुवाद

बड़े हौज में गिर जाने वाली गैर-मरई नजासत के मुकाम से वज़ू को जायज़ करार नहीं देते क्योंकि वह ठहरी होती है तो मुंतकिल न होगी और बल्ख, बुखारा और मावराउन्नहर के मशायख ने इजाज़त दी कि जहाँ से जी चाहे वज़ू कर ले और यही सही है, और इसकी वजह उन्होंने यह बयान की है कि बहने वाली चीज़ मुंतकिल होती है, मलिकुल उलमा ने बदाइ में फरमाया कि अगर नजासत गैर-मरई हो तो मशायखे इराक का कौल है कि उस जानिब से वज़ू न करे जैसा कि हमने मरई में ज़िक्र किया है (इससे मुराद उनका यह कौल है कि हमने उस जानिब में नजासत का यकीन कर लिया)।

نجاست اُس میں موجود ہے اور اوپر کا حصہ یوں کہ نجاست اُس میں نہیں اور جس سے متصل ہے وہ پاک ہے اور اگر نجاست طافیہ مرئیہ تھی اور اُسے پہلے نکال دیا جب بھی ظاہر ہے کہ ناپاکی کی کوئی وجہ نہیں اور اگر بے نکالے پانی بھر دیا کہ پانی ڈالنے سے اوپر آگئی تو بالائی حصہ ناپاک ہو گیا کہ نجاست اُس سے متصل ہوئی اور وہ آب قلیل ہے رہی طافیہ غیر مرئیہ اُس میں دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ حوض کے حصہ زیریں میں کوئی کنج ایسا نہ ہو جو اُس نجاست کو اوپر جانے سے روکے مثلاً یہ شکل

[پہلی شکل ایک نصف دائرہ نما برتن دکھاتی ہے جس میں پانی کی سطح پر 'ح' اور 'ع' اور اس کے اوپر 'ب' کی لکیریں لگی ہوئی ہیں۔]

دونوں حصوں میں خط ح ع فصل مشترک ہے ظاہر ہے کہ جو اترانے والی چیز خط ح ع میں کہیں ہے وہ پانی بھرنے سے خط ب پر آجائے گی دوسرے یہ کہ ایسے کنج ہوں مثلاً یہ شکل

[دوسری اور تیسری شکلوں میں ایسے ٹینک دکھائے گئے ہیں جن میں کونے نکلے ہوئے ہیں اور ان پر 'ح'، 'ع'، 'ب'، 'ر' وغیرہ جیسے حروف کے ساتھ نشانات لگے ہوئے ہیں۔]

اول میں خط ہ ر دوم میں خط ح ہ پر جو ایسی چیز ہو وہ پانی بھرے سے خط اب تک ضرور پہنچے گی لیکن دوم میں خط ہ ء یا یکم میں خط ح ہ خط رع کے نیچے جو کچھ ہے وہ اب تک نہیں جا سکتا پہلی صورت میں بالائی حصہ اب ح ع ناپاک ہو جائے گا اور دوسری صورت میں سارا حوض پاک رہے گا ولہذا ہم نے طافیہ مرئیہ میں پانی ڈالنے سے اوپر آجانے کی قید لگائی کہ اگر کسی کنج میں اُلجھ رہی تو اب بھی کوئی حصہ ناپاک نہ ہوگا۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
والوجه فيه ان غير المرئية لا تنعدم بل تكتتم وحيث هي طافية لابد لها من العلم ولذا منع العراقيون من مشائخنا التوضى من موقع غير المرئية فى العرض الكبير لانه راكد فلا تنتقل وجوز ائمة بلخ و بخارى وماوراء النهر التوضى منه من اين يشاء وهو الصحيح وعللوه بانتقال المائع قال ملك العلماء في البدائع وان كانت غير مرئية قال مشائخ العراق لا يتوضؤ من ذلك الجانب لما ذكرنا فى المرئية (وهو قوله لانا تيقنا بالنجاسة في ذلك الجانب بخلاف الماء الجارى لانه ينقل النجاسة فلم يستيقن بالنجاسة فى موضع الوضوء ومشائخنا بما وراء النهر فصلوا بينهما (اي بين	اور اس کی وجہ یہ ہے کہ غیر مرئیہ ختم نہیں ہوتی ہے بلکہ چھپ جاتی ہے ، اور جب تیر رہی ہوتی ہے تو اس کا اوپر آنا لازمی ہے ، اس لئے ہمارے عراقی مشائخ بڑے حوض میں گر جانے والی غیر مرئی نجاست کے مقام سے وضو کو جائز قرار نہیں دیتے کیونکہ وہ ٹھہری ہوتی ہے تو منتقل نہ ہوگی اور بلخ ، بخاری اور ماوراء النہر کے مشائخ نے اجازت دی کہ جہاں سے جی چاہے وضو کرلے اور یہی صحیح ہے ، اور اس کی وجہ انہوں نے یہ بیان کی ہے کہ بہنے والی چیز منتقل ہوتی ہے ، ملک العلماء نے بدائع میں فرمایا کہ اگر نجاست غیر مرئیہ ہو تو مشائخ عراق کا قول ہے کہ اس جانب سے وضو نہ کرے جیسا کہ ہم نے مرئیہ میں ذکر کیا ہے (اس سے مراد ان کا یہ قول ہے کہ ہم نے اس جانب میں نجاست کا یقین کر لیا

[Section: Arabic Text with Urdu Translation] Regarding non-visible (impurity), one may perform ablution (wudhu) from any side, as they (the scholars) have all stated regarding running water. This is the more correct opinion because non-visible impurity does not remain in one place but moves due to its naturally fluid and flowing nature. Thus, we are not certain of the impurity being on the side from which one performs wudhu, and we do not judge it as impure based on doubt. (1) In 'Al-Hilya', it is stated that the scholars of Balkh and Bukhara said one may perform wudhu from any side. In 'Muhit' of Radi ad-Din, 'At-Tuhfa', 'Al-Badai', and others, the more correct view is that non-visible impurity moves because it is a flowing liquid. (2) I say: It was better to omit "by its nature" (bi-tab'ihi), and in the text of Al-Badai, it pertains to "flowing, not moving" because the natural tendency of a liquid is to descend towards a cause, not to move on a level surface without a cause. Yes, winds constantly agitate the waters, and a necessary consequence of this is that the liquid mixed with it moves. It does not have a fixed direction because winds blow from different directions, so the possibility arises in all places. When you have understood this, in the first scenario where there is no barrier to rising, the impurity will float and render the upper part impure according to the consensus of all. In fact, even if it did not float, it would become impure due to its contact with the upper water, even if from below. As for the second scenario, according to the opinion of the Iraqis, if it fell into the lower water in alignment...

[Section: Urdu Translation/Explanation] ...moves it, then there is no certainty of impurity at the place of wudhu. Our scholars from Mawarannahr have detailed both (i.e., visible and non-visible impurity). In the case of non-visible impurity, one may perform wudhu from whichever side they wish, as everyone agrees regarding running water. This is more correct because non-visible impurity does not stay in one place but moves because it is naturally flowing. Therefore, there is no certainty of impurity on the side used for wudhu; hence, we will not rule it impure based on doubt. In 'Hilya', it is mentioned that the scholars of Balkh and Bukhara stated one may perform wudhu from whichever side they wish. In 'Muhit' of Radi ad-Din, 'Tuhfa', 'Badai', etc., it is stated that this is more correct because non-visible impurity moves as it is a flowing liquid. (T) I say, they did well by leaving out "by its nature" (bi-tab'ihi), and in 'Badai' this relates to "a flowing liquid does not move [on its own]" because the characteristic of a flowing thing is to come downwards; it does not go towards a level surface without cause. Yes, winds continuously create ripples in the water, the

inevitable result of which is that any flowing substance mixed in it moves, and there is no fixed direction for it because winds blow from different directions. Thus, the possibility will arise in every place. When you have learned this, in the first case where there is no barrier to rising, the impurity will float and come to the top, and according to all scholars, the upper part will become impure. Without...

[Footnotes] 1. Badai' al-Sanai', Chapter on Quantities, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/73. 2. Hilya.

[अनुभाग: अरबी पाठ हिंदी अनुवाद के साथ] अदृश्य (अशुद्धि) के संबंध में, कोई भी किसी भी तरफ से वज़ू (शुद्धि) कर सकता है, जैसा कि सभी विद्वानों ने बहते पानी के बारे में कहा है। यही अधिक सही मत है क्योंकि अदृश्य अशुद्धि एक स्थान पर नहीं रुकती बल्कि अपनी प्राकृतिक तरल और बहने वाली प्रकृति के कारण स्थानांतरित हो जाती है। इस प्रकार, हमें उस तरफ अशुद्धि होने का यकीन नहीं है जहाँ से वज़ू किया जा रहा है, और हम संदेह के आधार पर उसे अशुद्ध घोषित नहीं करेंगे। (१) 'अल-हिल्या' में कहा गया है कि बल्ख और बुखारा के विद्वानों ने कहा है कि कोई भी किसी भी तरफ से वज़ू कर सकता है। रज़ीउद्दीन की 'मुहीत', 'अत-तुहफ़ा', 'अल-बदई' और अन्य में अधिक सही मत यह है कि अदृश्य अशुद्धि स्थानांतरित होती है क्योंकि यह एक बहने वाला तरल है। (२) मैं कहता हूँ: "अपनी प्रकृति से" (बि-तबईही) को छोड़ देना बेहतर था, और बदई के पाठ में यह "बहने वाला, न कि स्थानांतरित होने वाला" से संबंधित है क्योंकि तरल की प्राकृतिक प्रवृत्ति किसी कारण से नीचे उतरने की होती है, बिना कारण समतल सतह पर स्थानांतरित होने की नहीं। हाँ, हवाएँ लगातार पानी में हलचल पैदा करती रहती हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि उसमें मिश्रित तरल स्थानांतरित हो जाता है। इसकी कोई निश्चित दिशा नहीं होती क्योंकि हवाएँ अलग-अलग दिशाओं से चलती हैं, इसलिए हर जगह संभावना पैदा हो जाती है। जब आप यह समझ गए, तो पहली स्थिति में जहाँ ऊपर जाने में कोई बाधा नहीं है, अशुद्धि तैरकर ऊपर आ जाएगी और सभी विद्वानों के अनुसार ऊपरी भाग अशुद्ध हो जाएगा। वास्तव में, यदि वह नहीं भी तैरती, तो भी ऊपरी पानी के संपर्क के कारण वह अशुद्ध हो जाता, भले ही नीचे से ही क्यों न हो। जहाँ तक दूसरी स्थिति का प्रश्न है, इराकियों के मत के अनुसार, यदि वह निचले पानी में सीध में गिरी हो...

[अनुभाग: उर्दू व्याख्या का हिंदी अनुवाद] ...को स्थानांतरित करता है, तो वज़ू के स्थान पर अशुद्धि का यकीन नहीं होता। हमारे मावरान्नहर के विद्वानों ने दोनों (यानी दृश्य और अदृश्य अशुद्धि) में विस्तार से बताया है। अदृश्य अशुद्धि के मामले में, कोई भी जिस तरफ से चाहे वज़ू कर सकता है, जैसा कि बहते पानी के बारे में सबका मत है। यही अधिक सही है क्योंकि अदृश्य अशुद्धि किसी एक जगह नहीं ठहरती बल्कि स्थानांतरित हो जाती है क्योंकि वह प्राकृतिक रूप से बहने वाली है। इसलिए वज़ू वाली तरफ अशुद्धि का यकीन नहीं हुआ; अतः हम संदेह के कारण अशुद्धि का हुक्म नहीं देंगे। 'हिल्या' में है कि बल्ख और बुखारा के विद्वानों ने फरमाया है कि जिस तरफ से चाहे वज़ू कर ले। रज़ीउद्दीन की 'मुहीत', 'तुहफ़ा', 'बदई' आदि में है कि वही अधिक सही है क्योंकि अदृश्य

अशुद्धि स्थानांतरित हो जाती है क्योंकि वह बहने वाला तरल है। (त) मैं कहता हूँ कि उन्होंने "अपनी प्रकृति से" (بيطبعه) को छोड़कर अच्छा किया, और 'बदई' में यह "बहने वाला स्थानांतरित नहीं होता" से संबंधित है क्योंकि बहने वाली चीज़ की विशेषता नीचे की ओर आना है; वह बिना कारण समतल सतह की ओर नहीं जाता। हाँ, हवाएँ निरंतर पानी में लहरें पैदा करती रहती हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि बहने वाली चीज़ जो उसमें शामिल हो जाए, स्थानांतरित हो जाती है, और इसकी कोई एक दिशा निश्चित नहीं है क्योंकि हवाएँ विभिन्न दिशाओं से चलती हैं। तो हर जगह संभावना पैदा हो जाएगी। जब आपने यह जान लिया तो पहली सूरत में जहाँ ऊपर जाने से कोई रुकावट न हो, अशुद्धि तैरकर ऊपर आ जाएगी और तमाम उलेमा के मुताबिक ऊपर वाला हिस्सा नापाक हो जाएगा। बिना...

[पादलेख] 1. बदई अल-सनाई, मात्रा पर अध्याय आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/73। 2. हिल्या।

पृष्ठ 337/711

فتاوی رضویہ | ہے) بخلاف جاری پانی کے کیونکہ وہ نجاست | جلد ثانی

غیر المرئیۃ یتوضؤ من ای جانب کان کما قالوا جمیعا فی الماء الجاری وھو الاصح لان غیر المرئیۃ لا یستقر فی مکان واحد بل ینتقل لکونہ مائعا سیالا بطبعہ فلم نستیقن بالنجاسۃ فی الجانب الذی یتوضؤ منہ فلا نحکم بنجاسۃ بالشك (۱) اھ و فی الحلیۃ قال مشائخ بلخ و بخاری یتوضؤ من ای جانب کان و فی محیط رضی الدین والتحفۃ والبدائع وغیرھا ھو الاصح لان غیر المرئیۃ ینتقل لکونہ مائعاً سیالا (۲) ۔ اقول: احسن فی ترك بطبعہ وھو فی کلام البدائع متعلق بسیالا لا لا ینتقل لان طبع المائع الانحدار الی سبب لا الانتقال فی سطح مستو بلا سبب نعم الریاح لا تزال تزعزع المیاہ و من ضرورتہ انتقال المائع المختلط بہ ولیس لہ جھۃ معینۃ لاختلاف الریاح فتطرق الاحتمال الی جمیع المحال اذا عرفت ھذا ففی الصورۃ الاولی حیث لا حاجز لھا عن العلو تطفو وتنجس الاعلی علی قول الجمیع بل لو لم تطف لنجست لاتصالھا بالماء الاعلی و لو من تحت اما فی الثانیۃ فعلی قول العراقیین ان کانت وقعت فی الماء السافل في محاذاۃ

کو منتقل کرتا ہے تو مقام وضو میں نجاست کا یقین نہیں اور ہمارے ماوراء النہر کے مشائخ نے دونوں میں تفصیل کی ہے (یعنی مرئیہ اور غیر مرئیہ میں) اور غیر مرئیہ میں جس جانب سے چاہے وضو کرے جیسا کہ جاری پانی میں سب کا اتفاق ہے اور یہی زیادہ صحیح ہے کہ کیونکہ غیر مرئیہ کسی ایک جگہ میں نہیں ٹھہرتی بلکہ منتقل ہو جاتی ہے کیونکہ وہ طبعی طور بہنے والی ہے اس لئے وضو والی جانب میں نجاست کا یقین نہ ہوا، پس شک کی وجہ سے ہم نجاست کا حکم نہیں دیں گے اھ اور حلیہ میں ہے کہ بلخ اور بخاری کے مشائخ نے فرمایا ہے کہ جس جانب سے چاہے وضو کرلے اور رضی الدین کی محیط، تحفہ اور بدائع وغیرہ میں ہے کہ وہی اصح ہے کیونکہ غیر مرئیہ منتقل ہو جاتی ہے کیونکہ وہ سیال مائع ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں انہوں نے بطبعہ

کو چھوڑ کر اچھا کیا، اور یہ بدائع میں "سیالا لا ینتقل" سے متعلق ہے کیونکہ بہنے والی چیز کی خاصیت نیچے کی طرف آنا ہے وہ مستوی سطح کی طرف بلا سبب نہیں جاتا ہے، ہاں ہوائیں مسلسل پانی میں لہر پیدا کرتی رہتی ہیں، جس کا لازمی نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ بہنے والی چیز جو اس میں شامل ہو جائے منتقل ہو جاتی ہے اور اس کی کوئی ایک جہت متعین نہیں کیونکہ ہوائیں مختلف رخ سے چلتی ہیں، تو ہر جگہ میں احتمال پیدا ہو جائے گا، جب تم نے یہ جان لیا تو پہلی صورت میں جہاں اوپر جانے سے کوئی مانع نہ ہو نجاست تیر کر اوپر آجائے گی اور تمام علماء کے مطابق اوپر والا حصہ ناپاک ہو جائے گا، بلالکہ

1 بدائع الصنائع فصل فی المقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۳ 2 حلیہ

صفحہ 337 از 711

Fatawa Razawiyya - Volume Two

[Arabic Text Block]: Line AB: The upper part becomes impure due to the lack of movement from there. Even if it falls into a barrier like line R-E and H-E, it does not become impure because it does not connect to the upper water. According to the opinion of all other Imams, the more correct view is that it does not become impure at all. Even if it fell opposite to AB, there is a possibility of its movement to one of the angles, and certainty is not removed by doubt. This is what appeared to me, and Allah (Exalted) knows best.

[Urdu Text Block]: Even if the impurity does not float away, it will still be impure because it will be connected to the water above, whether from below. And in the second case, according to the Iraqi scholars, if the impurity falls in the lower water opposite line AB, then the upper part will become impure because it has not moved from there. And if it falls into its barrier, like the line of R-E and H-E, the water will not become impure because it will not reach the upper water. According to the opinion of other Imams, the more correct view is that it will not be impure at all, even if the impurity fell opposite AB, because there is a possibility that it moved towards one of the angles, and certainty is not removed by doubt. This is what appeared to me, and Allah (Exalted) knows best. (T)

Question 52 (Fourth): A cistern is ten-by-ten on top and smaller at the bottom. When filled, if impurity falls in it, does the whole remain pure or does the lower part become impure where the measurement is less than one and a quarter cubits? State the rule and you shall be rewarded.

Answer: From the words of Allama Sayyid Tahtawi, it appears that the lower part will become impure.

[Arabic Text Block]: Where he said, "And when impurity falls into it in that state, the upper part is pure until it reaches the smaller part, then it becomes impure [1] (end quote)." And to interpret this as becoming impure through another impurity is against the apparent flow of the text. I say: Similarly, it is apparent from Al-Durr [Al-Mukhtar] if the falling of impurity is presumed, as the context for it is its connection.

[Urdu Text Block]: Where he stated that "And when impurity falls into it in this state, the upper part is pure until it reaches the smaller [part], then it will be impure (end quote)" and to interpret it as becoming impure due to another impurity is contrary to

the context of the text. (T) I say: Similarly, that fear is apparent if the falling of impurity is presumed, and the context for it is its connection.

[Footnote]: 1. Tahtawi on Al-Durr Al-Mukhtar, Chapter of Waters, Beirut, 1/108.

फ़तावा रज़विया - खंड दो

[अरबी पाठ ब्लॉक]: रेखा 'अ ब': वहाँ से विस्थापन की कमी के कारण ऊपरी भाग अशुद्ध हो जाता है। यदि यह 'र-ऐ' और 'ह-ऐ' जैसी रेखा के आड़ में गिरता है, तो यह अशुद्ध नहीं होता क्योंकि यह ऊपरी पानी से नहीं जुड़ता है। अन्य सभी इमामों के मत के अनुसार, अधिक सही विचार यह है कि यह बिल्कुल अशुद्ध नहीं होता है। भले ही यह 'अ ब' के सामने गिरा हो, इसके किसी एक कोण में विस्थापित होने की संभावना है, और संदेह से निश्चितता समाप्त नहीं होती है। मुझे यही स्पष्ट हुआ है, और अल्लाह (उच्च) बेहतर जानता है।

[उर्दू पाठ ब्लॉक]: यदि अशुद्धि तैर कर न भी जाए, तो भी वह अशुद्ध हो जाएगा क्योंकि वह ऊपर वाले पानी के साथ जुड़ जाएगा, चाहे नीचे से ही हो। और दूसरी स्थिति में, इराकी विद्वानों के अनुसार, यदि अशुद्धि नीचे के पानी में रेखा 'अ ब' के सामने गिरी है, तो ऊपर वाला पानी अशुद्ध हो जाएगा, क्योंकि वह वहाँ से हटा नहीं है। और यदि वह उसके आड़ (हिजाब) में गिरी है जैसे 'र-ऐ' और 'ह-ऐ' की रेखा, तो पानी अशुद्ध नहीं होगा क्योंकि वह ऊपर वाले पानी तक नहीं पहुँचेगा। अन्य इमामों के मत के अनुसार सही यह है कि वह पूरी तरह से अशुद्ध नहीं होगा, भले ही अशुद्धि 'अ ब' के सामने गिरी हो, क्योंकि संभावना है कि वह किसी एक कोण की ओर खिसक गई हो, और संदेह से निश्चितता दूर नहीं होती। मुझे यही स्पष्ट हुआ है, और अल्लाह (उच्च) बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न 52 (चौथा): एक हौज़ ऊपर से दस-दर-दस है और नीचे से कम है। भरे हुए हौज़ में अशुद्धि गिर जाए, तो क्या पूरा शुद्ध रहेगा या नीचे का हिस्सा अशुद्ध हो जाएगा जहाँ माप सवा हाथ से कम है? शरीयत का हुक्म बताएँ और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: अल्लामा सैय्यद तहतावी के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि निचला हिस्सा अशुद्ध हो जाएगा।

[अरबी पाठ ब्लॉक]: जहाँ उन्होंने कहा, "और जब उस स्थिति में उसमें अशुद्धि गिर जाए, तो ऊपरी हिस्सा शुद्ध है जब तक कि वह छोटे हिस्से तक न पहुँच जाए, तब वह अशुद्ध हो जाता है [1] (अंत)।" और इसे इस अर्थ में लेना कि यह दूसरी अशुद्धि के कारण अशुद्ध होगा, पाठ के स्पष्ट प्रवाह के विरुद्ध है। मैं कहता हूँ: इसी प्रकार अल-दुर्र [अल-मुख्तार] से भी यही स्पष्ट है यदि अशुद्धि के गिरने का अनुमान लगाया जाए, क्योंकि इसका संदर्भ इसका जुड़ाव है।

[उर्दू पाठ ब्लॉक]: जहाँ उन्होंने कहा कि "और जब उसमें इस अवस्था में अशुद्धि गिर जाए तो ऊपरी हिस्सा शुद्ध है यहाँ तक कि वह कम (हिस्से) तक पहुँच जाए तो वह नापाक होगा (अंत)" और इसे इस

बात पर आधारित करना कि वह दूसरी नजासत के साथ नापाक हो जाएगा, कलाम के संदर्भ के विरुद्ध है। (त) मैं कहता हूँ और इसी तरह वह डर ज़ाहिर है अगर नजासत का गिरना तय मान लिया जाए और उस पर संकेत उसका जुड़ा होना है।

[पाद-टिप्पणी]: 1. तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार पर, जल अध्याय, बेरुत, 1/108।

पृष्ठ 338/711

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

[عربی عبارت]: خط ا ب تنجس الاعلی لعدم انتقالهما من ثم وان وقعت في حجاب عنه مثل خط رء و ہ لم تنجس لانهالاتصل الی الماء العالی وعلی قول سائر الائمة الاصح لاتنجس مطلقا وان کانت وقعت حذاء ا ب لاحتمال انتقالهما الی احدی الزوایا ولایزول الیقین بالشك هذا ما ظهر لي والله تعالی اعلم۔

[اردو عبارت]: اگر نجاست تیر کر نہ بھی جائے تو بھی ناپاک ہوگا کیونکہ وہ اوپر والے پانی کے ساتھ متصل ہو جائے گی خواہ نیچے سے ہو اور دوسری صورت میں تو بقول عراقی مشائخ کے اگر نجاست نچلے پانی میں اب خط کے مقابل گری ہے تو اوپر والا نجس ہو جائیگا، کیونکہ وہ وہاں سے منتقل نہیں ہوئی ہے اور اگر وہ اس کے حجاب میں گری ہے جیسے رء اور ہء کا خط تو پانی نجس نہیں ہوگا کیونکہ وہ اوپر والے پانی تک نہ پہنچے گی اور باقی ائمہ کے قول کے مطابق اصح یہ ہے کہ مطلقاً ناپاک نہ ہوگا اگرچہ نجاست ا ب کے مقابل گری ہو کیونکہ احتمال ہے کہ وہ کسی ایک زاویے کی طرف منتقل ہوگئی ہو اور یقین شک سے زائل نہیں ہوتا ہے ھذا ما ظھر لی واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

سوال ۵۲ چھارم حوض اوپر دہ در دہ اور نیچے کم ہے بھرے ہوئے میں نجاست پڑی تو سب پاک رہا یا نیچے کا حصہ ناپاک ہو گیا جہاں سے مساحت سوا ہاتھ سے کم ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب کلام علامہ سید طحطاوی سے ظاہر یہ ہے کہ حصہ زیریں ناپاک ہو جائیگا۔

[عربی عبارت]: حیث قال واذا وقعت فیه نجاسة في تلك الحالة فالا علی طاہر الی ان یبلغ الاقل فینجس ۱ اھ وحملہ علی انہ ینجس بنجاسة اخری خلاف ظاھر سوق الکلام۔ اقول: وکذا ھو ظاہر الدران قدر وقوع النجس بقرینة فان نظمہ لواعلاہ

[اردو عبارت]: جہاں فرمایا کہ "اور جب اس میں نجاست گر جائے اس حالت میں تو بالائی حصہ پاک ہے یہاں تک کہ اقل کو پہنچے تو وہ ناپاک ہوگا اھ" اور اس کو اس پر محمول کرنا کہ وہ دوسری نجاست کے ساتھ نجس ہو جائیگا سیاق کلام کے خلاف ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اور اسی طرح وہ ڈر کا ظاہر ہے اگر نجس گرنا مقدر کیا جائے اور اس پر قرینہ اس کا متصل

[حاشیہ]: 1 طحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱۰۸/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

...it is a discourse, because their phrasing is such: and if its upper part is ten cubits and the lower part is less, then wudu (ablution) is permissible until it reaches the smaller part. And if it were the reverse and filth falls into it, it would not be permissible until it reaches the ten cubits (end of quote). Because the pronoun in "jaaza" (it is permissible) refers to "performing ritual purification (raf' al-hadath) with it". And it is known as a necessity of religion that performing ritual purification is permissible with every absolute (pure) water, even if it is a small amount, as long as its purity and purifying nature have not been lost. So the meaning, like its counterpart, would be: if its upper part were ten cubits and the lower part were less, and filth falls into it, ritual purification with it is permissible until it reaches the smaller part. When it reaches it, it is no longer permissible. Thus, he limited the permissibility of purification to its reaching the smaller part. So, by the very act of reaching it, it is not permissible, because the ruling of filth becomes manifest, which was only tolerated due to the abundance (of water). Interpreting it to be restricted to the occurrence of impurity after reaching the smaller part, as 'Sh' [commentator] did when he said, "meaning when it reaches the smaller part and impurity falls into it, it becomes impure, as in al-Munya" (end of quote).

I say: (1) This is a departure from the apparent meaning, (2) it renders the speech nearly absurd, and (3) the reliance on...

Marginal note in al-Hilya regarding the statement of al-Munya: "When water is blocked from above and its flow remains, performing wudu with it is permissible," the text says: the author should have mentioned... Regarding this statement of al-Munya "When water is stopped from above and the water is flowing, performing wudu is permissible," al-Hilya said that the author should have said "in it" (fihi) instead of "with it" (bihi).

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/36.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/142.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

...बात यह है, क्योंकि उनका वाक्यांश इस प्रकार है: और यदि उसका ऊपरी भाग दस हाथ हो और निचला भाग कम हो, तो वज़ू जायज़ है जब तक कि वह कम वाले हिस्से तक न पहुँच जाए। और यदि इसका विपरीत हो और उसमें नजासत (गंदगी) गिर जाए, तो जायज़ नहीं होगा जब तक कि वह दस हाथ तक न पहुँच जाए (इंतिहा)। क्योंकि 'जाज़ा' (जायज़ है) का ज़मीर (सर्वनाम) 'रफ़-ए-हदस बिही' (उसके द्वारा शुद्धिकरण) की ओर लौटता है। और यह धर्म की अनिवार्यताओं में से है कि हर मुतलक़ (शुद्ध) पानी से रफ़-ए-हदस जायज़ है, चाहे वह कम ही क्यों न हो, जब तक कि उसकी तहारत (पवित्रता) या तहूरियत (पवित्र करने की क्षमता) समाप्त न हो गई हो। तो इसका अर्थ इसके साथी वाक्यांश की तरह यह हुआ कि यदि उसका ऊपरी हिस्सा दस हाथ हो और निचला हिस्सा कम हो और उसमें नजासत गिर जाए, तो उससे पाकी हासिल करना जायज़ है जब तक कि वह कम वाले हिस्से तक न पहुँच जाए। और जब वह कम हिस्से तक पहुँच जाए, तो जायज़ नहीं है। तो उन्होंने पाकी हासिल करने के जायज़ होने की सीमा कम वाले हिस्से तक पहुँचने को बताया है, तो पहुँचने के साथ ही जायज़ नहीं होगा क्योंकि नजासत का हुक्म ज़ाहिर हो गया जिसे केवल उसकी अधिकता (पानी की मात्रा) के कारण सहन किया गया था। और इसे कम हिस्से तक पहुँचने के बाद नजासत गिरने से प्रतिबंधित करना जैसा कि 'श' ने किया, उन्होंने कहा 'यानी जब कम वाले हिस्से तक पहुँच जाए और उसमें नजासत गिर जाए तो नापाक हो जाएगा जैसा कि मुन्या में है' (इंतिहा)।

मैं कहता हूँ कि यह ज़ाहिर (स्पष्ट अर्थ) से हटना है, और कलाम (वाक्य) को लगभग व्यर्थ करार देना है, और इसका आधार...

हाशिये में अल-हिलया में अल-मुन्या के इस कथन पर कि "जब ऊपर से पानी रुक जाए और उसका बहाव बना रहे, तो उससे वज़ू करना जायज़ है", पाठ कहता है: लेखक को उल्लेख करना चाहिए था... मुन्या के इस कथन पर कि 'जब ऊपर से पानी बंद हो जाए और पानी बह रहा हो तो वज़ू जायज़ है', हिलया ने कहा कि लेखक को 'बिही' (उसके द्वारा) की जगह 'फ़ीही' (उसमें) कहना चाहिए था।

---

1. अल-दुर अल-मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/36।
2. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/142।

पेज 339 ऑफ़ 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

کلام ہے، کیونکہ ان کی عبارت اس طرح ہے، اور اگر اس کا بالائی حصہ دس ہاتھ ہے اور نچلا حصہ کم ہے تو وضو جائز ہے یہاں تک کہ وہ اقل کو پہنچے اور اگر اس کا عکس ہو اور اس میں نجاست گر جائے تو جائز نہ ہو گا یہاں تک کہ دس ہاتھ کو پہنچے اھ کیونکہ جاز کی ضمیر 'رفع الحدث بہ' کی طرف لوٹتی ہے اور یہ چیز دین کے ضروریات سے ہے کہ رفع حدث ہر مطلق پانی سے جائز ہے خواہ کم ہی ہو تاوقتیکہ اس کی طہارت یا طہوریت سلب نہ ہوئی ہو معنی اس کے قرین کی طرح یہ ہوئے کہ اگر اس کا بالائی حصہ دس ہاتھ ہو اور اس کا نچلا حصہ کم ہو اور اس میں نجس واقع ہو جائے تو اس سے پاکی حاصل کرنا جائز ہے یہاں تک کہ اقل کو پہنچ جائے، اور جب اقل کو پہنچے تو جائز نہیں اس کے ساتھ طہارت کے جواز کی غایت اقل کو پہنچنا بیان فرمائی تو نفس بلوغ سے جائز نہ ہو گا کیونکہ اس نجس کا حکم ظاہر ہے جس سے بالائی بالائی حصہ متاثر نہ ہوا کیونکہ وہ کثیر ہے اور اس کو اقل کو پہنچنے کے بعد نجاست کے واقع ہونے سے مقید کرنا جیسا کہ 'ش' نے کیا انہوں نے فرمایا 'یعنی جب اقل کو پہنچے اور اس میں نجاست گر جائے تو ناپاک ہو جائیگا جیسا کہ منیہ میں ہے اھ (ت)'

میں کہتا ہوں یہ ظاہر سے خروج ہے، اور کلام کو تقریباً لغو قرار دینا ہے اور اس کو منیہ کی طرف

عـہ فی الحلیة عند قول المنیة اذا سد الماء من فوقه وبقی جریه یجوز التوضی به ما نصه کان علی المصنف ان یذکر منیہ کے اس قول 'جب اوپر سے پانی بند ہو جائے اور پانی جاری ہو تو وضوء جائز ہے' پر حلیہ نے کہا کہ مصنف کو 'بہ' کی جگہ 'فیہ' کہنا چاہئے تھا

1 الدر المختار باب المياه مجتبائی دہلی ۳۶/۱ 2 رد المحتار باب المياه مصطفی البابی مصر ۱۴۲/۱

Fatawa Razawiya, Volume II

[Left Column - Arabic Translation]: "Attributing [it] to Al-Munyah is out of place, for its wording is: If the water of the basin was ten by ten cubits, and then it receded and became seven by seven, and impurity fell into it, it becomes impure. If it then fills up, it remains impure as well. Thus, he did not mention a ruling for the higher level; he only intended to explain the ruling for the lower level. To illustrate this, he needed the impurity to fall into it to pave the way for revealing a hidden ruling, which is that after it fills up again, it remains impure as it was. This is unlike 'Nazm al-Durr', which separated the higher level with a ruling of permissibility, which has no meaning unless assuming the occurrence of a hindrance; otherwise, mentioning it is futile. Then he set a limit for its permissibility, ending before it, which is reaching the minimum. Thus, he provided what we said. Where is this from the wording of Al-Munyah? The discourse of Ad-Durr from beginning to here is about removing ritual impurity 'with' it, not 'in' it. Had it been 'in' it, it would have been valid to interpret it as performing ablution by immersing limbs in it, based on the truth about the distinction between what meets and what is met, even if the author of Ad-Durr leaned towards the opposite. So, then it was..."

[Bottom Section - Arabic Translation]: "...in it (meaning the place), because the permissibility of performing ablution with it is very clear whether it is flowing or non-flowing outside, so setting a condition of continued flow of water would be misplaced. Moreover, those scholars are far above mentioning such things. End (M)."

[Right Column - Urdu Transcription/Translation]: "To attribute it [to Al-Munyah] is misplaced because the text of Al-Munyah is that if the water of the cistern is ten by ten and then goes down and becomes seven by seven, and then filth falls into it, it will become impure. And if it fills up, it will still be impure. So they did not state any ruling for the upper part; their intention was merely to state the ruling for the lower part. In its explanation, they had to say that filth fell in so that it could become a basis for revealing a hidden ruling, which is that despite being filled, it will remain impure as it was before. And the order of [Nazm al-]Durar is against this because they applied the ruling of permissibility to the upper part, which has no meaning; yes, it could be in the case of assuming the occurrence of a hindrance, otherwise mentioning it is futile. Then they set a limit for its permissibility before which it ends, and that is reaching the minimum. So they provided what we said, and how does this relate to the wording of Al-Munyah?"

[Bottom Section - Urdu Transcription/Translation]: "Because the permissibility of wudu with it is very clear whether the water is flowing or not, therefore, putting the restriction of the water being flowing would be out of place, although the status of these gentlemen is far above such discourse. End (T)."

Footnote 1: Munyat al-Musalli, Chapter on Cisterns, Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Razawiya Lahore, p. 72. Page 340 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द II

[बायाँ स्तंभ - अरबी अनुवाद]: "अल-मुन्याह को उद्धृत करना यहाँ अनुचित है क्योंकि उसकी इबारत (वाक्य) यह है: यदि तालाब का पानी दस गुणा दस था और फिर वह कम होकर सात गुणा सात हो गया, और उसमें नजासत (अशुद्धि) गिर गई, तो वह अशुद्ध हो जाएगा। यदि वह फिर से भर जाए, तब भी वह अशुद्ध ही रहेगा। अतः उसने ऊपरी हिस्से के लिए कोई हुक्म नहीं बताया, बल्कि उसका उद्देश्य केवल निचले हिस्से के हुक्म को स्पष्ट करना था। चित्रण के लिए, उसे नजासत के गिरने के उल्लेख की आवश्यकता थी ताकि एक छिपे हुए हुक्म को प्रकट करने का आधार बन सके और वह यह है कि दोबारा भरने के बाद भी वह वैसा ही अशुद्ध रहेगा जैसा पहले था। यह 'नज़्म अल-दुर' के विपरीत है, जिसने अनुमति के हुक्म के साथ ऊपरी हिस्से को अलग किया, जिसका कोई अर्थ नहीं है जब तक कि किसी बाधा की संभावना न मानी जाए; अन्यथा इसका उल्लेख व्यर्थ है। फिर उन्होंने उसकी अनुमति के लिए एक सीमा निर्धारित की जो उससे पहले समाप्त होती है, और वह न्यूनतम तक पहुँचना है। इस प्रकार उन्होंने वही प्रदान किया जो हमने कहा। यह 'अल-मुन्याह' की इबारत से कहाँ मेल खाता है? 'अद-दुर' की चर्चा आरंभ से यहाँ तक इसके'साथ' वज़ू करने के बारे में है, न कि 'इसमें'। यदि ऐसा होता, तो अंगों को डुबोकर वज़ू करने के अर्थ में इसे लेना सही होता, जो मिलने वाले और जिससे मिला जाए के बीच अंतर की सच्चाई पर आधारित है, भले ही 'अद-दुर' के लेखक का झुकाव इसके विपरीत था। तो फिर..."

[निचला भाग - अरबी अनुवाद]: "...उसमें (अर्थात स्थान में), क्योंकि इसके साथ वज़ू करने की अनुमति बहुत स्पष्ट है चाहे वह बहता हुआ हो या बाहर न बहने वाला, इसलिए पानी के बहते रहने की शर्त लगाना बेमौका होगा। इसके अलावा, उन विद्वानों का स्थान ऐसी बातों के उल्लेख से बहुत ऊपर है। (म)"

[दायाँ स्तंभ - उर्दू पाठ का अनुवाद]: "मनसूब करना बे-महल (अनुचित) है क्योंकि मुन्याह की इबारत यह है कि अगर हौज़ (तालाब) का पानी दस गुणा दस हो और फिर नीचे चला जाए और सात गुणा सात हो जाए, फिर उसमें नजासत गिर जाए तो नापाक हो जाएगा और अगर भर जाए तो भी नजिस (अशुद्ध) हो जाएगा, तो उन्होंने ऊपरी हिस्से का कोई हुक्म बयान नहीं किया। उनका मक़सद तो सिर्फ यह था कि वह निचले का हुक्म बयान करें, तो इसकी वज़ाहत में उन्हें यह कहना पड़ा कि इसमें नजासत गिर जाए, ताकि यह एक मख़्फी (छिपे हुए) हुक्म के इज़हार (प्रकटीकरण) की बुनियाद बन जाए और वह यह कि यह भर जाने के बावजूद नजिस ही रहेगा जैसा कि पहले था। और 'दुर' की

नज़्म इसके ख़िलाफ़ है क्योंकि उन्होंने ऊपरी हिस्से पर जवाज़ (अनुमति) का हुक्म लगाया और इसका कोई मफ़हूम (अर्थ) नहीं है, हाँ बाधा आने की स्थिति में हो सकता है, वरना तो इसका ज़िक्र बेकार है। फिर उन्होंने इसके जवाज़ की एक हद मुक़र्रर की जिससे पहले वह समाप्त होता है और वह कम से कम तक पहुँचना है, तो जो हमने कहा उसका उन्होंने फ़ायदा पहुँचाया, और यह मुन्याह की इबारत से कहाँ मेल खाता है?"

[निचला भाग - उर्दू पाठ का अनुवाद]: "क्योंकि इससे वज़ू का जवाज़ बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) है चाहे पानी जारी हो या न हो, लिहाज़ा पानी के जारी रहने की क़ैद लगाना बे-मौक़ा होगा, हालांकि इन हज़रात का मक़ाम (स्थान) ऐसे कलाम से बुलंद-ओ-बाला (बहुत ऊँचा) है। (त)"

पादलेख 1: मुनियतुल मुसल्ली, बाबुल हयाज़ (तालाबों का अध्याय), मकतबा क़ादिरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृष्ठ 72। 711 में से पृष्ठ 340

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی متن]: المنية في غير محله فان عبارتها لو ان ماء الحوض كان عشرا في عشر فتسفل فصار سبعا في سبع فوقعت النجاسة فيه تنجس فان امتلاء صار نجسا ايضا اهـ فهو لم يذكر للأعلى حكما انما قصد بيان حكم المتسفل فاحتاج في التصوير الى وقوع النجس فيه ليكون توطئة لأبانة حكم خفي وهو انه بعد امتلاءه ايضا يبقى نجسا كما كان بخلاف نظم الدر فانه افرز الاعلى بحكم الجواز ولا معنى له الا بفرض وقوع المانع والا فذكره عبث ثم حد لجوازه حدا ينتهي دونه وهو بلوغ الاقل فافاد ما قلنا واين هذا من عبارة المنية، وكلام الدر من اوله الى هنا في رفع الحدث به لافيه ولو كان لصح حملا له على معنى التوضى بغمس الاعضاء فيه بناء على ماهو الحق من فرق الملاقي والملقى وان كان ميل صاحب الدر الى خلافه فاذن كان فيه (ای مکان به) لان من الواضح جدا جواز الوضوء به جاريا كان اوغير جار خارجه فلا يقع التقييد ببقاء جريان الماء موقعا ثم هم اعلى كعباً من ذكر مثله اه منه غفر له - (م)

[دایاں کالم - اردو متن]: منسوب کرنا بے محل ہے کیونکہ منیہ کی عبارت یہ ہے کہ اگر حوض کا پانی دہ در دہ ہو اور پھر نیچے چلا جائے اور سات در سات ہو جائے پھر اس میں نجاست گر جائے تو ناپاک ہو جائے گا اور اگر بھر جائے تو بھی نجس ہو جائیگا تو انہوں نے بالائی کا کوئی حکم بیان نہیں کیا ان کا مقصود تو محض یہ تھا کہ وہ نچلے کا حکم بیان کریں تو اس کی وضاحت میں ان کو یہ کہنا پڑا کہ اس میں نجاست گر جائے، تاکہ یہ ایک مخفی حکم کے اظہار کی بنیاد بن جائے اور وہ یہ کہ یہ بھر جانے کے باوجود نجس ہی رہے گا جیسا کہ پہلے تھا، اور در کی نظم اس کے خلاف ہے کیونکہ انہوں نے بالائی پر جواز کا حکم لگایا اور اس کا کوئی مفہوم نہیں، ہاں مانع کے وقوع کو فرض کرنے کی صورت میں ہو سکتا ہے، ورنہ تو اس کا ذکر عبث ہے، پھر

انہوں نے اس کے جواز کی ایک حد مقرر کی جس سے پہلے وہ منتہی ہوتا ہے اور وہ اقل تک پہنچنا ہے تو جو ہم نے کہا اس کا انہوں نے افادہ کیا، اور اس کو منیہ کی عبارت کیونکہ اس سے وضوء کا جواز بہت واضح ہے خواہ پانی جاری ہو یا نہ ہو لہٰذا پانی کے جاری رہنے کی قید لگانا بے موقع ہوگا حالانکہ ان حضرات کا مقام ایسے کلام سے بلند و بالا ہے اھ (ت)

حاشیہ 1: منیة المصلی فصل في الحیاض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۲ صفحہ 340 از 711

Fatawa Razawiya - Volume Two

...what does it have to do with it? And the discourse of Durr from the beginning to this point is about the removal of ritual impurity with it, not in it. Had it been so, it would be correct and would be interpreted such that performing ablution by dipping limbs into it, as is the truth that there is a difference between the 'meeting' (mulqi) and the 'met' (mulaqi), although the author of Durr leans against it. In such a case, it would return to the discourse of Bazzaziya: if it was ten by ten and then decreased, one should perform ablution with it, not in it, because the time of occurrence is what matters. However, there is no room for this in their discourse, and therefore "Sh" (Shami) added "not in it", so what we said is preferred. (T)

And from the discourse of Allama Sayyid Shami, it is understood that everything will remain pure.

As he stated in another issue: which is when the upper part is small and the lower part is large, and impurity falls into it, it is not permissible until it reaches ten [by ten]. When it reaches that, what he stated is: "It is as if they did not consider the state of occurrence here because what is in the lower part is in the ruling of another basin due to its large area, and if impurity had fallen into it initially, it would not have harmed it. Unlike the first issue, reflect." Thus, the difference between the two issues is that the impurity of the small upper part does not include both parts, while the purity of the large upper part includes both of them. (T)

I say firstly: (1) Consideration of the state of occurrence.

1. Fatawa Bazzaziya on the margin of al-Hindiyyah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/4
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/123

फतावा रज़विया - भाग दो

...से क्या संबंध है? और 'दुर्र' का प्रवचन आरंभ से यहाँ तक इसके साथ अशुद्धि (हद्दस) को दूर करने के बारे में है, न कि इसमें। और यदि ऐसा होता तो यह सही होता और इसे इस पर समझा जाता कि इसमें अंगों को डुबोकर वज़ू करना, जैसा कि सत्य है कि 'मिलने वाले' (मुल्की) और 'जिससे मिला जाए' (मुलाक़ी) में अंतर है, यद्यपि 'दुर्र' के लेखक का झुकाव इसके विपरीत है। ऐसी स्थिति में बज़ाज़िया के कथन की ओर लौटा जाएगा: यदि वह दस गुणा दस हो और फिर कम हो गया हो, तो उसके साथ वज़ू करे न कि उसमें, क्योंकि होने (वुक़ूअ) के समय का विचार किया जाता है। लेकिन उनके कथन में इसकी गुंजाइश नहीं है, और इसीलिए "श" (शामी) ने "उसमें नहीं" का इज़ाफ़ा किया, तो जो हमने कहा वह अधिक सही है। (त)

और अल्लामा सैय्यद शामी के कथन से यह समझ में आता है कि सब पवित्र रहेगा।

जैसा कि उन्होंने दूसरे मसले में फ़रमाया: और वह यह है कि जब इसका ऊपरी हिस्सा कम हो और निचला ज़्यादा हो और उसमें अशुद्धि गिर जाए, तो जायज़ नहीं है जब तक कि वह दस गुणा दस तक न पहुँच जाए। जब वह उस मात्रा तक पहुँच जाए तो जायज़ है। और उनके शब्दों का अनुवाद यह है: "और मानो इन हज़रात ने यहाँ होने (वुक़ूअ) की स्थिति का विचार नहीं किया, क्योंकि जो निचले हिस्से में है वह अपने बड़े क्षेत्रफल के कारण अलग हौज़ के हुक्म में है, और यह कि यदि इसमें शुरू में अशुद्धि गिरती तो नुक़सानदेह न होती। पहले मसले के विपरीत, विचार करें।" तो दोनों मसलों में अंतर यह है कि ऊपरी थोड़े हिस्से की अशुद्धि दोनों हिस्सों को शामिल नहीं करती, और ऊपरी बड़े हिस्से की पवित्रता दोनों को शामिल करती है। (त)

मैं कहता हूँ पहले: (1) होने (वुक़ूअ) की स्थिति का विचार।

1. फतावा बज़ाज़िया, हाशियह अल-हिन्दिय्याह पर, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 5/4
2. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/123

पृष्ठ 711 में से 341

یؤول الی کلام البزازیة لوعشرا فی عشر ثم قل توضأ به لافیه لاعتبار اوان الوقوع اھ لکن لامساغ له فی کلامه ولذا احتاج ش الی اضافة قید لیس فیه فترجح مأقلنا۔ سے کیا تعلق ہے؟ اور ڈر کا کلام ابتداء سے یہاں تک اس کے ساتھ حدث کے رفع کرنے کی بابت ہے نہ کہ اس میں، اور اگر ایسا ہوتا تو صحیح ہوتا اور اس کو اس پر محمول کیا جاتا کہ اس میں اعضاء کو ڈبو کر وضو کرنا جیسا کہ حق ہے کہ ملقی اور ملاقی میں فرق ہے اگرچہ صاحب در کا میلان اس کے خلاف ہے، ایسی صورت میں بزازیہ کے کلام کی طرف لوٹا جائیگا اگر وہ دہ در دہ ہو پھر کم ہو گیا ہو تو اسکے ساتھ وضو کرے نہ کہ اس میں کیونکہ وقوع کے زمانے کا اعتبار ہے اھ مگر اس کی ان کے کلام میں گنجائش نہیں، اور اس لئے "ش" نے لیس فیہ کا اضافہ کیا، تو جو ہم نے کہا وہ راجح ہے۔ (ت)

اور کلام علامہ سید شامی سے مفہوم کہ سب پاک رہے گا۔ حیث قال فی المسألة الاخری وھی ما اذا کان اعلاہ قلیلا واسفله کثیرا فوقع فیه نجس لم یجز حتی یبلغ العشر فاذا بلغها جاز مانصه وکأنهم لم یعتبروا حالة الوقوع ههنا لان ما فی الاسفل فی حکم حوض اخر بسبب کثرته مساحة وانه لو وقعت فیه النجاسة ابتداء لم تضره بخلاف المسألة الاولی تدبر اھ ففرق بین المسألتین ان نجاسة الاعلی القلیل لاتشمل الجزئین وطهارة الا علی الکثیر تشملهما۔ جبکہ فرمایا دوسرے مسئلہ میں اور وہ یہ ہے کہ جب کہ اس کا بالائی حصہ کم ہو اور نچلا زائد ہو اور اس میں نجاست گر جائے تو جائز نہیں یہاں تک کہ دہ در دہ کو پہنچے تو جب اس مقدار کو پہنچے تو جائز ہے، اور ان کی عبارت یہ ہے اور گویا ان حضرات نے یہاں وقوع کی حالت کا اعتبار نہیں کیا، کیونکہ جو نچلے حصہ میں ہے وہ الگ حوض کے حکم میں ہے کیونکہ وہ پیمائش کے اعتبار سے کثیر ہے، اور یہ کہ اگر اس میں ابتداء نجاست گرتی تو مضر نہ ہوتی۔ بخلاف پہلے مسئلہ کے تدبر اھ تو دونوں مسئلوں میں فرق

ہے کہ اوپر والے کی نجاست جو قلیل ہے دونوں جزوں پر مشتمل نہیں اور اعلیٰ کثیر کی طہارت دونوں کو شامل ہے۔ (ت)

اقول اولا: (۱) اعتبار حالۃ الوقوع میں کہتا ہوں اولاً حالتِ وقوع کا اعتبار

1 فتاوی بزازیہ علی حاشیۃ الہندیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۵/۴ 2 ردالمختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۳

Fatawa Razawiyya, Volume 2

It is mentioned in Al-Badai', Al-Tabyin, Al-Khaniya, Al-Khulasa, Al-Bazzaziya, Al-Hulya, Al-Ghunia, Al-Bahr, etc., without exception, and there is no need for an exception in this regard because the lower part was already 'Kathir' (large volume), so the state of occurrence was considered. Yes, if it is argued that the water was apparently one and its surface at the time of occurrence was 'Qalil' (small) and that should be the criterion, then it would be appropriate for it to be impure accordingly. However, the scholars did not declare it impure, understanding that its surface would become large once the water reaches the lower part.

Secondly, one might say that in this issue, it can also be said that the lower part is in the ruling of an independent basin (Haud) because its area is small, and if impurity had fallen into it initially, it would have become impure. In response, it can be said that the 'Kathir' (large amount) makes the 'Qalil' (small amount) subordinate to it. Thus, it will be understood that the smaller lower part is, as it were, the depth for the larger upper part. It is known that if the surface of the water were large, the water would certainly not become impure, neither its surface nor its depth; and despite that, a great depth is not a condition. For example, if the shape of the basin were this:

[Diagram: A semi-circle with diameter AB and point H at the bottom]

i.e., the shape of a semi-circle, and now AB in it is 'Kathir', nothing in it will be impure even if what is below it is 'Qalil' such that only one point remains at H. This is unlike the opposite case, because the small amount cannot make the large amount subordinate, so it would be counted as an independent basin. (T)

This is the ultimate justification.

Note: The answer to this will follow soon. 12 - From him, may Allah forgive him (M) | Soon the answer will be mentioned on their behalf. (T)

Page 342 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

अल-बदई, अत-तबीन, अल-खानिया, अल-खुलासा, अल-बज्जाज़िया, अल-हल्या, अल-गुनिया, अल-बह्र आदि में बिना किसी अपवाद के उल्लेख किया गया है, और इसमें अपवाद की आवश्यकता नहीं है क्योंकि निचला हिस्सा पहले से ही 'कसीर' (बड़ी मात्रा) था, इसलिए गिरने की स्थिति पर विचार किया गया। हाँ, यदि यह तर्क दिया जाए कि पानी स्पष्ट रूप से एक था और गिरने के समय उसकी सतह 'क़लील' (कम) थी और उसी पर विचार किया जाना चाहिए, तो उसी के अनुसार इसके नापाक होने का औचित्य था। लेकिन, विद्वानों ने इसे नापाक घोषित नहीं किया, यह समझते हुए कि जब पानी निचले हिस्से तक पहुँचेगा तो इसकी सतह बड़ी हो जाएगी।

दूसरा, कोई यह कह सकता है कि इस मामले में यह भी कहा जा सकता है कि निचला हिस्सा एक स्वतंत्र हौज़ (कुंड) के नियम में है क्योंकि इसका क्षेत्रफल कम है, और यदि इसमें शुरू में कोई अशुद्धि गिर जाती तो यह नापाक हो जाता। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि 'कसीर' (बड़ी मात्रा) 'क़लील' (छोटी मात्रा) को अपने अधीन कर लेती है। तो यह समझा जाएगा कि निचला छोटा हिस्सा ऊपरी बड़े हिस्से के लिए गहराई की तरह है। और यह ज्ञात है कि यदि पानी की सतह अधिक होती, तो पानी निश्चित रूप से नापाक नहीं होता, न ही उसकी सतह और न ही उसकी गहराई; और इसके बावजूद गहराई की अधिकता शर्त नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि हौज़ का आकार ऐसा हो:

[चित्र: व्यास AB और नीचे बिंदु H वाला एक अर्धवृत्त]

यानी अर्धवृत्त का आकार, और अब इसमें AB 'कसीर' है, इसमें कुछ भी नापाक नहीं होगा भले ही उसके नीचे का हिस्सा 'क़लील' हो और H पर केवल एक बिंदु रहे। यह इसके विपरीत स्थिति के विपरीत है, क्योंकि कम मात्रा बड़ी मात्रा को अपने अधीन नहीं कर सकती, इसलिए इसे एक स्वतंत्र हौज़ माना जाएगा। (त)

यह परम औचित्य है।

नोट: इसका उत्तर जल्द ही आएगा। 12 - उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे(म) | जल्द ही उनकी ओर से इसका उत्तर दिया जाएगा। (त)

पृष्ठ 342 का 711

مذکور فی البدائع والتبیین والخانیة والخلاصة والبزازیة والحلیة والغنیة والبحر وغیرھا من دون ثنیًا ولا حاجة الی استثناء ھذہ فان الاسفل لم یزل کثیرا فقد اعتبرت حالة الوقوع الا ان یقال ان الماء کان واحدا ظاھرا و وجھه حین الوقوع قلیلا وبه العبرة فکان ینبغی التنجس باعتباره لکن لم ینجسوه نظرا الی ان وجھه یصیر کثیرا حین بلوغ الماء الی الاسفل . بدائع، تبیین، خانیہ، خلاصہ، بزازیہ، حلیہ، غنیہ اور بحر وغیرہ میں بلا استثناء مذکور ہے اور اس میں استثناء کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ نچلا تو کثیر تھا تو حالت وقوع کا اعتبار کیا گیا، ہاں اگر یہ کہا جائے کہ پانی بظاہر ایک تھا، اور اس کی سطح وقوع کے وقت کم تھی اور اسی کا اعتبار ہے تو مناسب یہی تھا کہ اسی کے اعتبار سے ناپاک ہو ، لیکن علماء نے اس کو نجس قرار نہیں دیا ، یہ سمجھتے ہوئے کہ اس کی سطح کثیر ہو جائے گی جبکہ پانی نچلے حصہ کو پہنچے گا۔

وثانیا : (ا) لقائل ان یقول لم لا یقال فی تلك اعنی مسألتنا ھذہ ان ما في الاسفل في حکم حوض اخر بسبب قلته مساحة وانه لو وقعت فیه النجاسة ابتداء لضرته وقد یمکن الجواب بان الکثیر یستتبع القلیل فیعد الاسفل القلیل عبقآللا علی الکثیر ومعلوم ان الوجه ان کان کثیرا لم یتنجس شیئ من الماء لا وجھه ولا عمقه ولا یشترط مع ذلك کثرة العمق الا تری لو کان الحوض علی ھذا الشکل اور ثانیاً کوئی کہنے والا کہہ سکتا ہے کہ اس مسئلہ میں یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ نچلا حصہ ایک مستقل حوض کے حکم میں ہے کیونکہ اس کی پیمائش کم ہے اور یہ کہ اگر اس میں ابتداء کوئی نجاست گر جاتی تو ناپاک ہو جاتا اور اس کے جواب میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ کثیر قلیل کو اپنا تابع بنا لیتا ہے تو یہ سمجھا جائے گا کہ نچلا کم حصہ گویا اوپر کے کثیر حصہ کیلئے عمق ہے، اور یہ معلوم ہے کہ

اگر پانی کی سطح زائد ہوتی تو پانی قطعاً ناپاک نہ ہوتا نہ اس کی سطح اور نہ اس کی گہرائی، اور اس کے باوجود گہرائی کی کثرت شرط نہیں ہے، مثلاً یہ کہ اگر حوض کی شکل یہ

[Diagram]

نصف دائرۃ وکان اب منہ کثیرا لا یتنجس شیئ منہ وان کان مادونہ قلیلا حتی لا یبقی علی ح الا نقطۃ بخلاف العکس فان القلیل لا یستتبع الکثیر فیعد حوضا برأسہ۔ ہو یعنی آدھے دائرہ کی شکل اور اب اس میں کثیر ہے اس میں کچھ ناپاک نہ ہوگا اگرچہ اس سے کم قلیل ہے اور ح پر صرف ایک نقطہ رہے گا، بخلاف عکس کے کیونکہ قلیل کثیر کو تابع نہیں بنا سکتا ہے تو یہ مستقل حوض شمار ہوگا۔ (ت)

یہ غایت عہ توجیہ ہے۔ عہ : وسیأتی الجواب عنہ ۱۲ منہ غفرلہ (م) | عنقریب ان کی طرف سے اس کا جواب ذکر کیا جائے گا۔ (ت)

Fatawa-e-Razvia Volume Two

And I say, and success is through Allah's help: If the impurity is floating (tafiyyah) such that it has not reached the lower portion, then it is obvious there is no reason for its impurity, as its connection is with the upper water which, due to its abundance, did not become impure. And if it is sinking (rasibah) reaching the bottom —whether inherently like a stone, or initially like a drowned animal that sinks to the bottom, dies, and then floats, or finally like a cloth that continues to float but then becomes heavy with water and sinks—then there are two scenarios. Their explanation is that for water, with respect to its container like a pool etc., one is a quality, i.e., abundance or scarcity, which is determined by the area of the place being ten cubits (deh dar deh) or less. The second scenario arises from the shape of the space it occupies. This shape is sometimes singular, although parts can be assumed within it. Even if the difference in the area of these assumed parts is the basis for distinction, as in this semi-circle shape where, for example, up to line 'alif-ha' it is abundant (kathir) and...

[Illustration showing a semi-circle with points 'alif', 'ba', 'ha', 'jeem']

...below it is scarce (qalil), then two parts would become distinct. Now 'alif-ha' is abundant and 'ha-jeem' is scarce, but in reality 'alif-ba-jeem' is a single space. Sometimes the shape itself is actually multiple, like a pool within a pool, as in this figure:

[Illustration of a rectangular structure within another]

...where the upper portion 'alif' and lower portion 'ha-tay' are themselves distinct. In this regard, there are four types of upper and lower parts. First: both parts are identical in form and quality in every way, like in a two-yard square where one yard is above and one yard is below. Second: identical in form but different in quality, like that same semi-circle shape where the space is one, but 'alif-ha' is abundant and 'ha-jeem' is scarce. Third: identical in quality but different in form, like in this shape 'alif-ha' where 'ha-ra' is also not less than ten cubits, or 'alif-ba' is also not less than ten-by-ten. Fourth: different in both form and quality in every way, like this shape where 'alif-ba' is ten cubits and 'ha-ra' is less.

The ruling for the first type is clear: the upper and lower are a single thing. If it becomes impure, the whole will be impure; if it remains pure, the whole will remain pure. Similarly for the second type: undoubtedly it is a single place, even if the areas

of the assumed parts are different. Similarly for the third: although they are two things, they share the same quality. If they are abundant (kathir), then the lower part will not become impure even if the impurity is sinking (rasibah). If they are scarce (qalil), then it will become impure even if the impurity is floating (tafiyyah), because even if it did not connect with the impurity itself, it connected with the contaminated water as the upper part became impure. The fourth type is the point of deliberation when sinking impurity reaches it. To the present view, it appears that it would become impure. What is known from the statements of the Imams is that when both form and quality are different, they consider them as two separate places, and do not deem the mere connection of the scarce (qalil) to the abundant (kathir) as sufficient. By the side of the canal (wooden boards are placed to take water, so that one may sit on them and take water to perform ablution; from this...)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दो

और मैं कहता हूँ, और अल्लाह की तौफीक से सफलता है: यदि गंदगी तैरने वाली (ताफ़िया) है कि वह निचले हिस्से तक नहीं पहुँची, तो यह स्पष्ट है कि उसकी अशुद्धता (नजासत) का कोई कारण नहीं है क्योंकि उसका संबंध ऊपरी पानी से है और वह पानी अधिकता के कारण अशुद्ध नहीं हुआ। और यदि वह बैठने वाली (रासिबा) है कि नीचे तक पहुँच गई—चाहे वह पूरी तरह से पत्थर की तरह हो, या शुरुआत में जैसे डूबा हुआ जानवर जो तल पर बैठ कर मरता है और फिर तैरने लगता है, या अंततः जैसे वह कपड़ा जो तैरता रहेगा लेकिन फिर पानी के बोझ से भारी होकर बैठ जाएगा—तो अब दो स्थितियाँ हैं। उनका वर्णन यह है कि पानी के लिए स्थान जैसे हौज (कुंड) आदि के सन्दर्भ में, एक तो विशेषता है, अर्थात बहुलता (कसरत) और अल्पता (किल्लत) जो स्थान के क्षेत्रफल के सवा हाथ या कम होने से प्राप्त होती है। दूसरी स्थिति उस स्थान के आकार से उत्पन्न होती है जिसमें वह स्थित है। यह आकार कभी एक होता है, भले ही उसमें भागों की कल्पना की जा सके। भले ही उन कल्पित भागों के क्षेत्रफल में अंतर उनके अलगाव का आधार हो, जैसे इसी अर्धवृत्त के आकार में कि उदाहरण के लिए रेखा 'अ-ह' तक पानी अधिक (कसीर) है और...

[अर्धवृत्त का चित्र 'अ', 'ब', 'ह', 'ज' चिन्हों के साथ]

...नीचे कम (क़लील) हो, तो दो भाग विशिष्ट हो जाएँगे। अब 'अ-ह' अधिक है और 'ह-ज' कम, लेकिन वास्तव में 'अ-ब-ज' एक ही स्थान है। और कभी आकार स्वयं ही वास्तव में अनेक होता है, जैसे हौज के अंदर हौज, उदाहरण के लिए इस चित्र पर:

[एक दूसरे के भीतर आयताकार संरचना का चित्र]

...कि ऊपरी हिस्सा 'अ' और निचला 'ह-त' स्वयं ही विशिष्ट हैं। इस दृष्टि से ऊपरी और निचले हिस्सों के चार प्रकार हो गए। पहला: दोनों भाग रूप और विशेषता में हर तरह से समान हों, जैसे दो गज के वर्गाकार में एक गज ऊपर और एक गज नीचे। दूसरा: रूप में समान हों लेकिन विशेषता में भिन्न, जैसे वही अर्धवृत्त का आकार कि स्थान एक है और 'अ-ह' अधिक है और 'ह-ज' कम। तीसरा: विशेषता में समान हों लेकिन रूप में भिन्न, जैसे इसी आकार 'अ-ह' में जबकि 'ह-र' भी सवा हाथ से कम न हो या 'अ-ब' भी दस-दर-दस से कम न हो। चौथा: रूप और विशेषता दोनों में हर तरह से भिन्न हों, जैसे यही आकार जबकि 'अ-ब' सवा हाथ हो और 'ह-र' कम हो।

प्रथम प्रकार का हुक्म तो स्पष्ट है कि वह ऊपरी और निचला भाग एक ही वस्तु है। यदि वह अशुद्ध होगा तो सब अशुद्ध होगा; यदि शुद्ध रहेगा तो सब शुद्ध रहेगा। इसी प्रकार दूसरे प्रकार का, कि निस्संदेह वह स्थान एक ही है भले ही कल्पित भागों का क्षेत्रफल भिन्न हो। इसी प्रकार तीसरा, कि भले ही वे दो वस्तुएं हैं लेकिन दोनों की विशेषता एक है। यदि वे अधिक (कसीर) हैं तो निचला भाग भी नापाक नहीं होगा भले ही गंदगी बैठने वाली (रासिबा) हो। और यदि वे कम (क़लील) हैं तो यह भी नापाक हो जाएगा भले ही गंदगी तैरने वाली (ताफ़िया) हो, क्योंकि भले ही वह सीधे गंदगी के संपर्क में न आया हो, वह दूषित पानी के संपर्क में आ गया क्योंकि ऊपरी भाग नापाक हो गया। चौथा प्रकार वही विचारणीय विषय है जब बैठने वाली गंदगी वहां तक पहुँची। वर्तमान दृष्टि में स्पष्ट यही है कि वह नापाक हो जाएगा। इमामों के वचनों से यही ज्ञात है कि जब रूप और विशेषता दोनों भिन्न हों, तो वे उन्हें दो अलग स्थान मानते हैं, और केवल 'क़लील' (कम) का 'कसीर' (अधिक) के साथ जुड़ना पर्याप्त नहीं मानते। नहर के(किनारे-किनारे पानी लेने के लिए तख्ताबंदी करते हैं कि उन पर बैठकर पानी लें और वज़ू करें; इससे...)

पृष्ठ ३४३ का ७११

واقول وباللہ التوفیق نجاست اگر طافیہ ہے کہ حصہ زیریں تک پہنچی ہی نہیں جب تو ظاہر ہے کہ اس کی نجاست کی کوئی وجہ نہیں کہ اس کا اتصال آبِ بالا سے ہے اور وہ بوجہ کثرت نجس نہ ہوا اور اگر راسبہ ہے کہ اسفل تک پہنچی خواہ مطلقاً جیسے پتھر یا ابتداءً جیسے غرق شدہ جانور کہ تہ نشین ہو کر مرتا پھر اتراتا ہے یا انتہاءً جیسے وہ کپڑا کہ تیرتا رہے گا پھر پانی سے بوجھل ہو کر بیٹھ جائیگا تو اب دو صورتیں ہیں ان کا بیان یہ کہ پانی کیلئے بلحاظ محل مثل حوض وغیرہ ایک تو صفت ہے یعنی کثرت و قلت کہ مساحت محل کے سوا ہاتھ یا کم ہونے سے حاصل ہوتی ہے دوسری صورت کہ جس فضا میں متمکن ہے اس کی شکل سے پیدا ہوتی ہے یہ شکل کبھی واحد ہوتی ہے اگرچہ اس میں حصے فرض کر سکتے ہیں اگرچہ ان حصص مفروضہ کا مساحت میں تفاوت اُن کے لئے منشاء انتزاع ہو جیسے اسی شکل نصف دائرہ میں کہ مثلاً خط ء ہ تک کثیر اور

[نصف دائرے کی شکل جس پر الف، ب، ہ، ج کے نشانات ہیں]

نیچے قلیل ہو تو دو حصے ممتاز ہو جائیں گے اب ء ہ کثیر اور ہ ح قلیل مگر حقیقتاً اب ح فضائے واحد ہے اور کبھی شکل خود ہی واقع میں متعدد ہوتی ہے جیسے حوض کے اندر حوض مثلاً اس شکل پر

[ایک مستطیل شکل کے اندر دوسری شکل کا خاکہ]

کہ حصہ بالا ء اور زیریں ہ ط خود ہی ممتاز ہیں اس لحاظ سے حصص زیر و بالا کی چار قسمیں ہو گئیں ایک یہ کہ دونوں حصے صورتاً و صفتاً ہر طرح متحد ہوں جیسے دو گز ہرے مربع میں ایک گز اوپر ایک گز نیچے، دوم صورتاً متحد ہوں اور صفتاً مختلف جیسے وہی نصف دائرہ کی

شکل کہ فضا واحد ہے اور اہ کثیر اور ہ ح قلیل، سوم صفتاً متحد ہوں اور صورتاً مختلف جیسے اسی شکل اہ میں جبکہ ہ ر بھی سوا ہاتھ سے کم نہ ہو یا اب بھی دہ در دہ سے کم۔ چہارم صورتاً وصفتاً ہر طرح جدا ہوں جیسے یہی شکل جبکہ اب سوا ہاتھ اور ہ ر کم ہو۔

قسم اول کا حکم تو ظاہر کہ وہ زیر و بالا شیئ واحد ہے اگر نجس ہو گا سب نجس ہو گا پاک رہے گا سب پاک رہے گا۔ یونہی قسم دوم کہ بلاشبہ وہ محل واحد ہے اگرچہ حصص انتزاعیہ کی مساحت مختلف ہے۔ یونہی سوم کہ اگرچہ دوشے ہے مگر دونوں متحد الصفت ہیں اگر کثیر ہیں تو زیریں بھی ناپاک نہ ہو گا اگرچہ نجاست راسبہ ہو اور قلیل ہیں تو یہ بھی نجس ہو جائیگا اگرچہ نجاست طافیہ ہو کہ نجس سے اتصال نہ ہوا تو متنجس سے ہوا کہ حصہ بالا ناپاک ہو گیا۔ شکل چہارم وہی محل نظر ہے جبکہ نجاست راسبہ اس تک پہنچی اور نظر حاضر میں ظاہر یہی ہے کہ ناپاک ہو جائے کلام ائمہ سے معہود یہی ہے کہ جب صورت و صفت دونوں مختلف ہوں تو ان کو دو محل جدا گانہ ٹھہراتے ہیں اور فقط اتصال قلیل بہ کثیر کو کافی نہیں جانتے۔ نہر کے (کنارے کنارے پانی لینے کیلئے تختہ بندی کرتے ہیں کہ ان پر بیٹھ کر پانی لیں وضو کریں اس سے

Fatawa Razawiyya (Volume 2)

It becomes divided into compartments; each compartment is called a 'Mashra'ah'.

[Diagram Label: Mashra'ah]

If the water is lower than the planks, then there is no issue of discussion because the water has not been partitioned by the planks. However, if the water is in contact with the planks, then each compartment will be considered as a separate body of water. If their length and width are not ten by ten cubits, then for those who stipulate that both dimensions must be extended, if impurity falls into it, then all the water enclosed by the planks will become impure, and its connection to the pure water of a canal will not be beneficial.

Similarly (1), if the water of a canal or a large pool freezes with ice, and water is accessed by breaking the ice in one spot, if the flowing water is not connected to this frozen part, it is clear that the water remains a single entity. But if it is connected and the part that was opened is not ten by ten cubits in length and width, then according to them, it will become impure upon contact with impurity and become 'used' (musta'mal) if one performs ablution (wudu) by dipping limbs into it; and its connection to flowing water will not provide benefit. Yes (2), the rest of the water will remain as it was. For example, if impurity falls into one mashra'ah or someone washes limbs for wudu in it, only that mashra'ah becomes impure or 'used'; one can drink or perform wudu from the adjacent mashra'ah because, according to them, each is a separate pool. Similarly, if water opened from a spot in the ice becomes impure or used, one can open and use water from an adjacent spot. Similarly, if (3) a small pool is created by cutting from a large pool so that water flows into it, then according to them, it will become impure or used by the falling of impurity or dipping limbs for wudu, and being connected to the large pool will not help. This is essentially the same as the fourth case; the only difference is that in the case under discussion, the small pool is below the large pool, and in this case, it is adjacent to it; the water is connected in any case. Therefore, just as due to differences in both description and form, they do not consider the adjacent small pool as part of the large pool but rather an independent entity, the same applies to the pool below. These issues are widely discussed in the authoritative texts of the school of thought. Although, according to this humble servant (the author), their basis is on the condition of the two dimensions of length and width, and the correct and reliable criterion is merely the total area (surface area). This is a separate point of difference. Here the purpose

is only to show that when form and description are both different, a small amount is not considered subordinate to a large amount. In the Fatawa of the great Imam Qadhikhan, it is stated:

[Box Section] Arabic Text: حوض کبیر فیه مشرعة توضأ انسان فی المشرعة او اغتسل ان کان الماء متصلا بالالواح بمنزلة التابوت لایجوز فیه الوضوء واتصال ماء المشرعة بالماء الخارج منها لا ینفع کحوض کبیر تشعب منه حوض (In a large pool there is a mashra'ah. If a person performs wudu or takes a bath in the mashra'ah, if the water is connected to the wooden planks, it is like a wooden chest (taboot). Wudu is not permissible in it, and the connection of the water in the mashra'ah with the water outside of it is of no use, just like a large pool from which another pool has branched off.)

Urdu Translation in Box: ایک بڑا حوض ہے جس میں سے ایک نالی نکلتی ہے اس میں کسی شخص نے وضو یا غسل کیا تو پانی اگر تختوں سے متصل ہے بمنزلہ تابوت کے تو اس میں وضو جائز نہیں اور نالی کے پانی کا خارجی پانی سے متصل ہونا نافع نہ ہوگا جیسے بڑا حوض جس سے (There is a large pool from which a channel comes out. If a person performs wudu or ghusl in it, and the water is connected to the planks like a chest, then wudu is not permissible in it, and the connection of the channel's water to the external water will not be beneficial, like a large pool from which...)

منہ حوض (from it, a pool)

फ़तावा रज़विया (भाग 2)

यह खानों (विभाजनों) में विभाजित हो जाता है; प्रत्येक खाने को 'मश्रअह' कहा जाता है।

[आरेख लेबल: मश्रअह]

यदि पानी तख्तों से नीचे है, तो बहस का कोई विषय नहीं है क्योंकि तख्तों द्वारा पानी का विभाजन नहीं हुआ है। लेकिन अगर पानी तख्तों के संपर्क में है, तो प्रत्येक खाने को पानी का एक अलग निकाय माना जाएगा। और यदि उनकी लंबाई और चौड़ाई दस-दस हाथ नहीं है, तो उन लोगों के लिए जो दोनों आयामों के विस्तार की शर्त रखते हैं, यदि उसमें अपवित्रता (नजासत) गिरती है, तो तख्तों से घिरा हुआ सारा पानी अपवित्र हो जाएगा, और नहर के शुद्ध पानी के साथ इसका जुड़ाव लाभदायक नहीं होगा।

इसी तरह (1), यदि किसी नहर या बड़े तालाब का पानी बर्फ से जम गया हो और एक जगह से बर्फ तोड़कर पानी निकाला गया हो, यदि बहता पानी इस जमे हुए हिस्से से जुड़ा नहीं है, तो यह स्पष्ट है कि पानी एक ही इकाई बना हुआ है। लेकिन अगर वह जुड़ा हुआ है और जो हिस्सा खोला गया है वह लंबाई और चौड़ाई में दस-दस हाथ का नहीं है, तो उनके अनुसार यह अपवित्रता से नापाक हो जाएगा और इसमें अंग डालकर वज़ू करने से वह 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा; और बहते पानी के साथ इसका जुड़ाव कोई लाभ नहीं देगा। हाँ (2), शेष पानी अपनी स्थिति में रहेगा। उदाहरण के लिए, यदि एक मश्रअह में अपवित्रता गिरती है या कोई वज़ू के लिए उसमें अंग धोता है, तो केवल वही मश्रअह नापाक या मुस्तअमल होगा; बगल के दूसरे मश्रअह से पीना या वज़ू करना संभव है क्योंकि उनके अनुसार प्रत्येक एक अलग हौज (पूल) है। इसी प्रकार, यदि बर्फ में किसी एक जगह से खोला गया पानी नापाक या मुस्तअमल हो जाता है, तो उसके पास की दूसरी जगह से पानी खोलकर उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार यदि (3) एक बड़े हौज से काटकर एक छोटा हौज बनाया जाए जिससे पानी उसमें आए, तो उनके अनुसार अपवित्रता गिरने या वज़ू के अंग डालने से वह नापाक और मुस्तअमल हो जाएगा, और बड़े हौज से जुड़े होने का कोई लाभ नहीं होगा। यह वास्तव में वही चौथी स्थिति है; अंतर केवल इतना है कि विचाराधीन स्थिति में वह छोटा हौज बड़े हौज के नीचे है, और इस स्थिति में उसके बराबर (बगल में) है; पानी वैसे भी जुड़ा हुआ है। इसलिए, जिस तरह गुण और रूप दोनों भिन्न होने के कारण उनके अनुसार बगल का छोटा हौज बड़े हौज का हिस्सा नहीं माना गया बल्कि स्वतंत्र माना गया, वैसे ही नीचे वाले का भी यही हाल है। इन मुद्दों पर पंथ

की पुस्तकों के स्पष्ट ग्रंथों (नुसूस) में विस्तार से चर्चा की गई है। हालांकि फ़क़ीर (लेखक) के अनुसार, उनका आधार लंबाई और चौड़ाई के दो आयामों की शर्त पर है, और सही तथा विश्वसनीय मानदंड केवल क्षेत्रफल (मसाहत) है। यह एक अलग मतभेद है। यहाँ उद्देश्य केवल इतना है कि जब रूप और गुण दोनों अलग हों, तो थोड़ी मात्रा को बड़ी मात्रा के अधीन नहीं माना गया। महान इमाम क़ाज़ीख़ान के फ़तावा में है:

[बॉक्स अनुभाग] अरबी पाठ: حوض كبير فيه مشرعة توضأ انسان فى المشرعة او اغتسل ان كان الماء متصلا بالالواح بمنزلة التابوت لايجوز فيه الوضوء واتصال ماء المشرعة بالماء الخارج منها لا ينفع كحوض كبير تشعب منه حوض उर्दू अनुवाद बॉक्स में: एक बड़ा हौज है जिसमें से एक नाली निकलती है। उसमें किसी व्यक्ति ने वज़ू या गुस्ल किया तो पानी अगर तख्तों से जुड़ा है संदूक (ताबूत) के समान, तो उसमें वज़ू जायज़ नहीं और नाली के पानी का बाहरी पानी से जुड़ा होना लाभदायक न होगा जैसे बड़ा हौज जिससे...

منہ حوض (हौज का मुख)

पृष्ठ 344/711

خانے خانے ہو جاتے ہیں ہر خانہ مشرعہ کہلاتا ہے۔

[Diagram Label: مشرعہ]

پانی اگر تختوں سے نیچا ہے جب تو محلِ کلام نہیں کہ تختوں سے پانی کا انقسام نہ ہوا لیکن اگر پانی تختوں سے ملا ہوا ہے تو ہر خانہ آبِ جداگانہ سمجھا جائیگا اور اگر ان کا طول و عرض دس دس ہاتھ نہیں تو جن کے نزدیک دونوں امتداد ہونا شرط ہے اس میں نجاست پڑے تو جتنا پانی تختوں سے گھرا ہوا ہے ناپاک ہو جائیگا اور نہر کے پاک پانی سے اس کا متصل ہونا نافع نہ دے گا۔

یوں ہی (1) اگر نہر یا بڑے تالاب کا پانی برف سے جم گیا اور ایک جگہ سے برف توڑ کر پانی کھول لیا گیا اگر بہتا پانی اس جمے ہوئے سے متصل نہیں تو ظاہر ہے کہ پانی شیئی واحد رہا اور اگر متصل ہے اور یہ حصہ کہ کھولا گیا دس دس ہاتھ طول و عرض میں نہیں تو یہ ان کے نزدیک نجاست سے ناپاک ہو جائیگا اور اس میں اعضاء ڈال کر وضو کرنے سے مستعمل ہو جائیگا اور بہتے پانی سے اس کا اتصال فائدہ نہ دے گا۔ ہاں (2) باقی پانی بحال خود رہے گا مثلاً ایک مشرعہ میں نجاست پڑی یا کسی نے اعضاء بے وضو ڈال کر دھوئے تو صرف وہی مشرعہ ناپاک یا مستعمل ہوا برابر کے دوسرے مشرعہ سے پینا وضو کرنا ہو سکتا ہے کہ وہ تو ہر ایک ان کے نزدیک حوضِ جدا ہے یونہی برف سے ایک جگہ کھلا ہوا پانی نجس یا مستعمل ہو جائے تو اس کے برابر دوسری جگہ سے کھول کر استعمال کر سکتا ہے یونہی اگر (3) حوضِ کبیر سے کاٹ کر ایک حوضِ صغیر بنایا کہ اس میں سے پانی اس میں آیا یہ نجاست یا اعضائے بے وضو ڈالنے

سے ان کے نزدیک نجس و مستعمل ہو جائیگا اور بڑے حوض سے پانی ملا ہونا کام نہ دے گا یہ گویا بعینہٖ وہی صورتِ چہارم ہے فرق صرف اتنا ہے کہ صورتِ مبحوثہ میں وہ حوضِ صغیر حوضِ کبیر کے نیچے ہے اور اس صورت میں اس کے برابر ، پانی بہرحال ملا ہوا ہے، تو جس طرح صفت و صورت دونوں مختلف ہونے کے باعث ان کے نزدیک برابر کا حوضِ صغیر حوضِ کبیر کا جز نہ ٹھہرا بلکہ مستقل قرار پایا۔ یونہی نیچے کا۔ ان مسائل پر نصوصِ کتبِ مذہب میں دائر و سائر ہیں اگرچہ فقیر کے نزدیک ان کی بنا اشتراطِ امتدادین طول و عرض پر ہے اور صحیح و معتمد اعتبار محض مساحت ہے یہ خلافیہ جداگانہ ہے یہاں غرض اس قدر کہ بحال خلافِ صورت و صفت معاً قلیل کو تابعِ کثیر نہ مانا فتاویٰ امام اجل قاضیخان میں ہے:

[Arabic Text [Box Section: حوض كبير فيه مشرعة توضأ انسان فى المشرعة او اغتسل ان كان الماء متصلا بالالواح بمنزلة التابوت لايجوز فيه الوضوء واتصال ماء المشرعة بالماء الخارج منها لا ينفع كحوض كبير تشعب منه حوض

Urdu Translation in Box: ایک بڑا حوض ہے جس میں سے ایک نالی نکلتی ہے اس میں کسی شخص نے وضو یا غسل کیا تو پانی اگر تختوں سے متصل ہے بمنزلہ تابوت کے تو اس میں وضو جائز نہیں اور نالی کے پانی کا خارجی پانی سے متصل ہونا نافع نہ ہوگا جیسے بڑا حوض جس سے

منہ حوض

Fatawa Ridawiyyah Volume 2

[Arabic Text]: Small [basin], so if a person performs ablution in the small basin, it is not permissible even if the water of the small basin is connected to the water of the large basin. Similarly, the connection of the water in a trough to the water beneath it is not considered [valid] if the planks are firmly bound. [Urdu Text]: (Translation) If a small basin has been carved out and someone performs ablution from it, then this is not permissible even if the water of the small basin is connected to the water of the large basin. Likewise, the connection of water in a channel to the water below it is not reliable if the planks are fixed. (T)

In Fath al-Qadir, it is stated: [Arabic Text]: If a large basin freezes and a person drills a hole in it and performs ablution, then if the water is connected to the inner surface of the hole, it is not permissible; otherwise, it is permissible. Similarly, if a large basin has troughs and one performs ablution or bathes in one of the troughs while the water is connected to the planks of the trough and does not oscillate, it is not permissible. But if it is below the planks, it is permissible because in the first case, it is like a small basin, so one should scoop water from it and perform ablution elsewhere, not in it. In the second case, it is like a roofed large basin. [Urdu Text]: (Translation) If a large basin freezes and someone makes a hole in it and performs ablution there, then if the water is connected to the inner part of the hole, it is not permissible; otherwise, it is permissible. Similarly, in a large basin, when there are channels and one performs ablution or bathes in one of them, even though the water is connected to the planks and no movement or vibration is created in it, it is not permissible. But if it is below the planks, it is permissible because in the first scenario, it is like a small basin; thus, one should take a handful of water and perform ablution outside it, not inside it. And in the second scenario, it is a roofed large basin. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated: [Arabic Text]: Its water froze and a hole was made. If the water is separate from the ice, it is permissible because it is like a roofed [basin]. But if it is connected, it is not [permissible] because it is like a bowl, such that if a dog licks it, it becomes impure. [Urdu Text]: (Translation) If its water freezes and someone makes a hole in it, then if the water is separate from the ice, it is permissible because it is like a roofed basin. And if the water is connected, it is not permissible because it would be like a large bowl; if a dog puts its mouth in it, it will become impure. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Stagnant Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4
2. Fath al-Qadir, Discussion on the Great Pond, Nuriya Rizvia, Sukkur, 1/71
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai, Delhi, 1/36

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी पाठ]: छोटा [हौज़], तो यदि कोई व्यक्ति छोटे हौज़ में वज़ू करता है, तो यह जायज़ नहीं है भले ही छोटे हौज़ का पानी बड़े हौज़ के पानी से जुड़ा हो। इसी तरह, एक नाली के पानी का उसके नीचे के पानी से जुड़ा होना मान्य नहीं है यदि तख्ते मजबूती से बंधे हों। [उर्दू पाठ]: (अनुवाद) यदि एक छोटा हौज़ निकाला गया हो और कोई व्यक्ति छोटे हौज़ से वज़ू करे, तो यह जायज़ नहीं है भले ही छोटे हौज़ का पानी बड़े हौज़ के पानी से मिला हुआ हो। इसी तरह नाली के पानी का नीचे वाले पानी से मिला होना विश्वसनीय नहीं है जबकि तख्ते बंधे हुए हों। (त)

फ़तह अल-क़दीर में है: [अरबी पाठ]: यदि कोई बड़ा हौज़ जम जाए और उसमें कोई व्यक्ति छेद कर दे और उसमें वज़ू करे, तो यदि पानी छेद के भीतरी भाग से जुड़ा हो तो जायज़ नहीं है, अन्यथा जायज़ है। इसी प्रकार बड़े हौज़ में जब नालियां हों और वह किसी एक नाली से वज़ू करे या ग़ुस्ल करे, जबकि पानी तख्तों से सटा हो और उसमें कोई हरकत न हो, तो यह जायज़ नहीं है। और यदि वह तख्तों से नीचे हो, तो जायज़ है क्योंकि पहली स्थिति में वह छोटे हौज़ की तरह है, इसलिए उससे पानी लेकर बाहर वज़ू करना चाहिए न कि उसके अंदर। और दूसरी स्थिति में वह छत वाला बड़ा हौज़ है। [उर्दू पाठ]: (अनुवाद) अगर बड़ा हौज़ जम जाए और उसमें कोई व्यक्ति छेद कर दे और उसमें वज़ू करे तो अगर पानी छेद के अंदरूनी हिस्से से मिला हुआ हो तो जायज़ नहीं है वर्ना जायज़ है। और इसी तरह बड़े हौज़ में जब नालियां हों और वह किसी एक नाली से वज़ू करे या ग़ुस्ल करे जबकि पानी तख्तों से मिला हुआ हो और उसमें कोई हरकत पैदा न हो तो जायज़ नहीं है। और अगर तख्तों से नीचे हो तो जायज़ है क्योंकि वह पहली सूरत में छोटे हौज़ की तरह है, तो चुल्लू भर कर उससे वज़ू करे न कि उसमें, और दूसरी सूरत में वह छत वाला बड़ा हौज़ है। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: [अरबी पाठ]: उसका पानी जम गया और छेद किया गया। यदि पानी बर्फ से अलग है तो जायज़ है क्योंकि वह छत वाले हौज़ जैसा है। लेकिन यदि वह जुड़ा हुआ है तो नहीं, क्योंकि वह एक कटोरे की तरह है, यहाँ तक कि यदि उसमें कुत्ता मुँह डाल दे तो वह नापाक हो जाएगा। [उर्दू पाठ]: (अनुवाद) अगर उसका पानी जम जाए और कोई उसमें छेद करे तो अगर पानी बर्फ से अलग हो तो जायज़ है क्योंकि वह छत वाले हौज़ की तरह है। और अगर पानी मिला हुआ हो तो जायज़ नहीं है क्योंकि वह बड़े प्याले की तरह होगा कि अगर उसमें कुत्ता मुँह डाल दे तो नापाक हो जाएगा। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4
2. फ़तह अल-क़दीर, बड़े तालाब की चर्चा, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/71
3. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई, दिल्ली, 1/36

पृष्ठ 345 / 711

صغیر فتوضأ انسان فی الحوض الصغیر لا یجوز وان کان ماء الحوض الصغیر متصلا بماء الحوض الکبیر کذا لا یعتبر اتصال ماء المشرعة بما تحتها من الماء اذا کانت الالواح مشدودة 1۔ چھوٹا حوض نکالا گیا ہو پھر چھوٹے حوض سے کسی انسان نے وضو کیا تو یہ جائز نہیں اگرچہ چھوٹے حوض کا پانی بڑے حوض سے متصل ہو، اسی طرح نالی کے پانی کا نچلے پانی سے متصل ہونا معتبر نہیں جبکہ تختے بندھے ہوئے ہوں۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: لوجمد حوض کبیر فنقب فیه انسان نقبافتوضأ فیه ان کان الماء متصلا بباطن النقب لا یجوز و الاجاز و کذا الحوض الکبیر اذا کان له مشارع فتوضأ فی مشرعة او اغتسل والماء متصل بالواح المشرعة ولا یضطرب لا یجوز وان کان اسفل منها جازلانه فی الاول کالحوض الصغیر فیغترف ویتوضؤ منه لافیه وفی الثانی حوض کبیر مسقف 2۔ اگر بڑا حوض منجمد ہو جائے اور اس میں کوئی شخص سوراخ کر دے اور اس میں وضو کرے تو اگر پانی سوراخ کے اندرونی حصے سے متصل ہو تو جائز نہیں ورنہ جائز ہے اور اسی طرح بڑے حوض میں جب نالیاں ہوں اور وہ کسی ایک نالی سے وضو کرے یا غسل کرے حالانکہ پانی تختوں سے متصل ہو اور اس میں حرکت و ارتعاش پیدا نہ ہو تو جائز نہیں اور اگر تختوں سے نیچے ہو تو جائز ہے کیونکہ وہ پہلی صورت میں چھوٹے حوض کی طرح ہے تو چلو بھر کر اس سے وضو کرے نہ کہ اس میں، اور دوسری صورت میں بڑا حوض چھت والا ہے۔ (ت)

درمختار میں ہے: جمد ماؤہ فنقب ان الماء منفصلا عن الجمد جازلانه کالمسقف وان متصلا لا لانه کالقصعة حتی لو ولغ فیه کلب تنجس 3۔ اگر اس کا پانی جم جائے اور کوئی اس میں سوراخ کیا تو اگر پانی برف سے جدا ہو تو جائز ہے کیونکہ وہ چھت والے حوض کی طرح ہے اور اگر پانی

متصل ہو تو جائز نہیں کیونکہ وہ بڑے پیالہ کی طرح ہوگا کہ اگر اس میں کتا منہ ڈال دے تو ناپاک ہو جائے گا۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

1 فتاوٰی قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنو ۱/ ۴ 2 فتح القدیر بحث الغدیر العظیم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۷۱ 3 الدرالمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۶

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic]: i.e., the location of the hole, not the bottom part. So if a hole was made in another place and water was taken from it for ablution, it is permissible as mentioned in Tatar-Khaniyah. (T) [Urdu]: That is, the location of the hole and not the bottom part. So if a hole was made in another place and water was taken from it and wudu (ablution) was performed, then it is permissible as it is in Tatar-Khaniyah. (T)

The text of Ghuniyah mentioned in the first problem pointed towards the same meaning as stated by this humble person. It states: [Arabic]: "When water is under the ice and separate from it, it is permissible because it is ten by ten (cubits), and no part of it is separate from the rest, just as in the first case." (T) [Urdu]: They state that when water is beneath the ice and separate from it, it is permissible because it is ten by ten (dha dar dha), and no portion of it is separate from the rest, just as in the first case. (T)

Yes, in ponds and canals, there are small corners and bends here and there. Considering each of them as independent would cause hardship and be against common understanding. Therefore, its estimation is made at two and a half hands (cubits) wide, which is one-fourth of ten hands, and for a quarter, the ruling of the whole is given, just as in the case of subtle impurity (Najasa Khafifa) on the body or clothes. It is stated in Khulasah:

[Arabic]: The canal which is connected to a basin such that when the basin is full, water flows into the canal. If a person performs ablution in it, and if the canal is two and a half cubits wide, it is not permissible, and it will not be considered part of the basin. If it is less than that, it is permissible and will be considered part of the basin. Another opinion is that it is not permissible and will not be considered part of the basin even if it is one cubit wide. (T) [Urdu]: That canal which is connected to the basin, and when the basin becomes full, the water goes into the canal. Now, if any person performs wudu from this canal, then if the canal is two and a half hands wide, the wudu is not permissible and it will not be made subordinate to the basin. And if it is less, then it is permissible and it will be understood as subordinate to the basin. Another saying is that it is not permissible and will not be understood as subordinate to the basin, even if it is of the measurement of one hand. (T)

It is in Wajeez of Imam Kardari: [Arabic]: The canal connected to a large, full basin, if it is... [Urdu]: That canal which is connected to a large full basin, if it is two and a half

hands... Note: In the printed copy, the words "in kaana al-hawzu" (if the basin is) appear, which is incorrect. Ah [End of note] (T).

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Water, Mustafa al-Babi Egypt 1/124. 2. Ghuniyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli regarding basins, Sohail Academy Lahore, p. 100. 3. Ghuniyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli regarding basins, Sohail Academy Lahore, p. 100.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी]: यानी छेद का स्थान, न कि निचला हिस्सा। तो यदि किसी अन्य स्थान पर छेद किया गया और उससे पानी लिया गया और वज़ू किया गया, तो यह जायज़ है जैसा कि तातरखनियाह में है। (त) [उर्दू अनुवाद]: यानी सुराख की जगह न कि निचला हिस्सा तो अगर किसी और जगह सुराख किया और उससे पानी लिया और वज़ू किया तो जायज़ है जैसा कि तातरखनियाह में है। (त)

गुनियाह की इबारत जिसका ज़िक्र पहले मसले में हुआ, उसी अर्थ की ओर इशारा करती है जो फ़क़ीर के बयान में आया। वह फ़रमाते हैं: [अरबी]: "जब पानी बर्फ के नीचे हो और उससे अलग हो, तो जायज़ है क्योंकि वह दस गुणा दस (ज़रा) है, और उसका कोई हिस्सा बाकी से अलग नहीं है जैसा कि पहली सूरत में था।" (त) [उर्दू अनुवाद]: वह फ़रमाते हैं कि जब पानी बर्फ के नीचे हो और उससे जुदा हो तो जायज़ है इसलिए कि वह दह दर दह है और उसका कोई बुतआ़ (टुकड़ा) दूसरे से अलग नहीं जैसा कि पहली सूरत में है। (त)

हाँ, तालाबों और नहरों में जगह-जगह छोटे-छोटे टेढ़े कोने होते हैं। उनमें से हर एक को स्वतंत्र मानने में कठिनाई होगी और यह आम समझ के खिलाफ है। इसलिए इसकी चौड़ाई का अंदाज़ा ढाई हाथ किया गया है जो कि दस हाथ का एक चौथाई है, और चौथाई के लिए पूरे का हुक्म दिया जाता है, जैसे कि बदन या कपड़ों पर लगी नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा के मामले में। खुलासा में फ़रमाया गया:

[अरबी]: वह नहर जो हौज (तालाब) से जुड़ी हो, और जब हौज भर जाए तो पानी नहर में चला जाता हो। अब अगर इस नहर से कोई इंसान वज़ू करे, तो यदि नहर ढाई हाथ चौड़ी है, तो वज़ू जायज़ नहीं है और उसे हौज के अधीन नहीं माना जाएगा। और अगर वह कम है, तो जायज़ है और उसे हौज के अधीन समझा जाएगा। एक और राय है कि जायज़ नहीं है और उसे हौज के अधीन नहीं समझा जाएगा, चाहे वह एक हाथ की मात्रा ही क्यों न हो। (त) [उर्दू अनुवाद]: वह नहर जो हौज से मुत्तसिल (जुड़ी) हो, और जब हौज भर जाए तो पानी नहर में चला जाता हो अब अगर इस नहर से कोई इंसान वज़ू करे तो अगर नहर ढाई हाथ है तो वज़ू जायज़ नहीं और उसको हौज के ताबेअ़ नहीं किया जाएगा, और अगर कम है तो जायज़ है और उसको हौज के ताबेअ़ समझा जाएगा एक और कौल है कि जायज़ नहीं और उसको हौज के ताबेअ़ नहीं समझा जाएगा। अगरचे एक हाथ की मिक़दार हो। (त)

वजीज इमाम करदरी में है: [अरबी/उर्दू]: बड़े भरे हुए हौज से जुड़ी नहर अगर... [उर्दू अनुवाद: वह नहर जो बड़े भरे हुए हौज से जुड़ी हो, अगर ढाई हाथ...] नोट: छपी हुई प्रति में "इन कानल हौज़ु" (यदि हौज है) शब्द आ गए हैं, जो कि गलत हैं। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/124. 2. ग़ुनियत-उल-मुस्तमली शरह मुनियत-उल-मुसल्ली ह़ियाज़ के बयान में, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 100. 3. ग़ुनियत-उल-मुस्तमली शरह मुनियत-उल-मुसल्ली ह़ियाज़ के बयान में, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 100.

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

ای موضع الثقب دون المتسفل فلو ثقب فی موضع آخر و اخذ الماء منه وتوضأ جاز کما فی التاترخانیة 1 - | یعنی سوراخ کی جگہ نہ کہ نچلا حصہ تو اگر کسی اور جگہ سوراخ کیا اور اس سے پانی لیا اور وضو کیا تو جائز ہے جیسا کہ تاترخانیہ میں ہے۔ (ت)

غنیہ کی عبارت مذکورہ مسئلہ اولٰی نے اسی معنی کی طرف اشارہ فرمایا جو فقیر کے بیان میں آیا، حیث قال اذا کان الماء تحت الجمد منفصلا عنه یجوز لانه عشر فی عشر ولم تنفصل بقعة منه عن سائرہ کما فی الصورة الاولی 2 - | وہ فرماتے ہیں کہ جب پانی برف کے نیچے ہو اور اس سے جدا ہو تو جائز ہے اس لئے کہ وہ دہ در دہ ہے اور اس کا کوئی بقعہ دوسرے سے الگ نہیں جیسا کہ پہلی صورت میں ہے۔ (ت)

ہاں (1) تالابوں نہروں میں چھوٹے چھوٹے کج گوشے جا بجا ہوتے ہیں ان میں ہر ایک کو مستقل ماننے میں حرج اور خلاف متفا ہم عرف ہے لہٰذا اس کی تقدیر ڈھائی ہاتھ چوڑے سے کی ہے کہ دس ہاتھ کی چہارم ہے اور ربع کیلئے حکم کل دیا جاتا ہے جیسے نجاست خفیہ میں کہ بدن یا کپڑے پر لگے، خلاصہ میں فرمایا:

النهر الذی هو متصل بالحوض فکان اذا امتلاء الحوض یدخل الماء النهر فتوضأ انسان فیه ان کان النهر قدر ذراعین ونصف لا یجوز ولا یجعل تبعاً للحوض وان کان اقل یجوز ویجعل تبعاً للحوض وقیل لا یجوز ولا یجعل تبعاً للحوض وان کان قدر ذراع 3 - | وہ نہر جو حوض سے متصل ہو، اور جب حوض بھر جائے تو پانی نہر میں چلا جاتا ہو اب اگر اس نہر سے کوئی انسان وضو کرے تو اگر نہر ڈھائی ہاتھ ہے تو وضو جائز نہیں اور اس کو حوض کے تابع نہیں کیا جائیگا، اور اگر کم ہے

تو جائز ہے اور اس کو حوض کے تابع سمجھا جائیگا ایک اور قول ہے کہ جائز نہیں اور اس کو حوض کے تابع نہیں سمجھا جائیگا۔ اگر چہ ایک ہاتھ کی مقدار ہو۔ (ت)

وجیز امام کردری میں ہے: النھر المتصل بالحوض الکبیر الممتلئ ان کان عـہ | وہ نہر جو بڑے بھرے حوض سے متصل ہو اگر ڈھائی ہاتھ

عـہ وقع فی نسخة الطبع ان کان الحوض وھو خطأ اھ منه غفرلہ (م) | مطبوع نسخہ میں ان کان الحوض کا لفظ واقع ہے یہ درست نہیں ہے اھ (ت)

حواشی: 1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۴ 2 غنیة المستملی شرح منیۃ المصلی فی الحیاض سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۰ 3 غنیة المستملی شرح منیۃ المصلی فی الحیاض سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۰

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Top Section - Right Column] ...if it is so, it is not subordinate to the pool because a fourth stands in place of the whole, so wudu (ablution) will not be correct from it. And if it is less than that, it is subordinate. And there is one saying that it is not subordinate even if it is one hand [arm-length]. (T)

[Top Section - Left Column - Arabic Text] "The size of two and a half arm-lengths is not followed by it, because a fourth represents the whole; therefore, wudu from it is not valid. If it is less than that, then it is followed. And it was said: it is not followed even if it is the size of one arm-length. [1]"

[Middle Section - Commentary] I say: Similarly, there are depressions at the bottom of ponds and canals. Declaring every depression as independent would cause hardship and contravene custom. Therefore, based on the aforementioned instruction, its estimation should also be from a surface area of twenty-five hands [square hands], because 'the fourth represents the whole' (because the fourth stands in place of the whole. -T). Here, the answer to this reasoning has also been revealed, that 'the many follow the few' (the many makes the few subordinate. -T). On this estimation, the ruling should be that in the questioned case, if the impurity is floating (tafiyah) and has not reached the lower part, or the lower part and upper part are not two different locations like in a semi-circle, or it is different but less than twenty-five hands in area, then in all these cases, no part will become impure by falling impurity. And this is the interpretation of the words of Allama Shami. And if the impurity is sedimenting (rasibah) and reaches the lower part, and the lower [part] is different in shape from the upper [part], and it is less than a hundred hands in area but not less than twenty-five hands, then the upper part will remain pure due to its abundance, and this lower part will become impure due to being a small independent pool. And this is the interpretation of the words of Allama Tahtawi. This is what has become clear to this poor servant [the author], and the place is in need of writing and scrutiny, and certain judgment depends on explicit text.

[Bottom Section - Right Column] And the knowledge of truth is with my Lord, indeed my Lord is the Knower of everything. And in Hilyah, under the saying of Munyah which passed at the beginning of this fourth answer, it is stated that they said this saying is narrated from Abu al-Qasim Saffar in Bada'i', but the problem assumed in it is about a large pool into which impurity has fallen, then its water became so less

that its water became connected to each other, then impurity fell into it and then its water increased until...

[Bottom Section - Left Column - Arabic Text] "And the knowledge of truth is with my Lord; indeed, my Lord is All-Knowing of everything. As for what is in Al-Hilyah under the saying of Al-Munyah mentioned at the beginning of this fourth answer, where it was said: and this is narrated in Al-Bada'i' from Abu al-Qasim al-Saffar, may Allah Ta'ala have mercy on him, except that the hypothetical case there is in a large pool in which impurity fell, then its water decreased until its parts became connected to each other, and impurity fell into it, then the water returned until it was full and nothing came out from it. [2]"

[Footnotes] 1. Bazzaziyah on al-Hindiyyah, Chapter on Pools, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/2. 2. Hilyah.

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[शीर्ष अनुभाग - दायां कॉलम] ...यदि ऐसा है तो, वह हौज (तालाब) के अधीन नहीं है क्योंकि चौथा हिस्सा पूरे के स्थान पर होता है, इसलिए उससे वज़ू सही नहीं होगा। और यदि उससे कम हो तो वह अधीन है। और एक कथन है कि वह अधीन नहीं है चाहे वह एक हाथ ही हो। (त)

[शीर्ष अनुभाग - बायां कॉलम - अरबी पाठ] "दो और आधा हाथ (ज़िरा) की मात्रा उसके अधीन नहीं होती क्योंकि चौथा हिस्सा पूरे का प्रतिनिधित्व करता है, अतः उससे वज़ू सही नहीं होगा। यदि वह उससे कम हो तो वह अधीन है। और एक कथन यह भी है कि वह अधीन नहीं है, चाहे वह एक हाथ की मात्रा ही क्यों न हो। [1]"

[मध्य अनुभाग - टीका] मैं कहता हूँ: इसी प्रकार तालाबों और नहरों की तह में गड्ढे भी होते हैं। हर गड्ढे को स्वतंत्र घोषित करने में कठिनाई और प्रथा (उर्फ़) का विरोध है। इसलिए, उक्त निर्देश के आधार पर, इसका अनुमान भी पच्चीस हाथ के क्षेत्रफल से होना चाहिए, क्योंकि 'चौथा हिस्सा पूरे का प्रतिनिधित्व करता है' (क्योंकि चौथा पूरे के स्थान पर होता है -त)। यहाँ इस तर्क का उत्तर भी खुल गया कि 'अधिक, कम को अपने अधीन कर लेता है' (अधिक, कम को अधीन बनाता है -त)। इस अनुमान पर हुक्म यह होना चाहिए कि पूछी गई स्थिति में यदि गंदगी तैरने वाली (ताफिया) है कि निचले हिस्से तक नहीं पहुँची, या निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से के साथ दो अलग-अलग स्थान नहीं हैं जैसे कि आधे घेरे में, या वह अलग है लेकिन पच्चीस हाथ क्षेत्रफल से कम है, तो इन सभी स्थितियों में गंदगी गिरने से कोई भी हिस्सा नापाक (अपवित्र) नहीं होगा। और अल्लामा शामी के कलाम का यही तात्पर्य है। और यदि गंदगी डूबने वाली (रासिबा) है कि निचले हिस्से तक पहुँच गई, और निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से से आकार में अलग है, और सौ हाथ क्षेत्रफल से कम है लेकिन पच्चीस हाथ से कम नहीं है, तो ऊपरी हिस्सा अधिकता के कारण पाक रहेगा, और यह निचला हिस्सा एक स्वतंत्र छोटा हौज होने के कारण नापाक हो जाएगा। और अल्लामा तहतावी के कलाम का यही तात्पर्य है। यह वह बात है जो इस फ़कीर (लेखक) पर स्पष्ट हुई, और यह विषय लेखन और जांच का मोहताज है, और निश्चित निर्णय स्पष्ट उल्लेख पर निर्भर है।

[निचला अनुभाग - दायां कॉलम] और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है, निःसंदेह मेरा रब हर चीज़ का जानने वाला है। और हिल्या में मुन्या के कथन के अंतर्गत, जो इस चौथे उत्तर के आरंभ में गुज़रा है, कि उन्होंने कहा कि यह कथन बदाई' में अबुल कासिम सफ़्फ़ार से वर्णित है, लेकिन उसमें जो मसला

माना गया है वह बड़े हौज में है जिसमें गंदगी गिर गई हो, फिर उसका पानी इतना कम हो गया कि उसका पानी एक-दूसरे से जुड़ गया, फिर उसमें गंदगी गिर गई और फिर उसका पानी बढ़ गया यहाँ तक कि...

[निचला अनुभाग - बायां कॉलम - अरबी पाठ] "और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है; निःसंदेह मेरा रब हर चीज़ को जानने वाला है। जहाँ तक अल-हिलिया का प्रश्न है, मुनिया के उस कथन के अंतर्गत जो इस चौथे उत्तर के आरंभ में बीत चुका है, जहाँ उन्होंने कहा: और यह बदाई' में अबू अल-कासिम अल-सफ्फार, अल्लाह उन पर दया करे, से वर्णित है, सिवाय इसके कि वहाँ जो मसला माना गया है वह एक बड़े तालाब का है जिसमें गंदगी गिर गई, फिर उसका पानी कम हो गया यहाँ तक कि उसका पानी एक-दूसरे से मिल गया, फिर उसमें गंदगी गिर गई, फिर पानी वापस आ गया यहाँ तक कि वह भर गया और उसमें से कुछ भी बाहर नहीं निकला। [2]"

[पाद टिप्पणियाँ] 1. बज़ाज़िया अलल हिन्दिया, हयाज़ (तालाबों) का प्रकार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/2. 2. हिल्या।

पेज 347/711

[اوپری حصہ - دایاں کالم] ہو تو حوض کے تابع نہیں کیونکہ چوتھا کل کے قائم مقام ہوتا ہے تو اس سے وضو درست نہ ہوگا اور اگر اس سے کم ہو تو تابع ہے اور ایک قول ہے کہ تابع نہیں خواہ ایک ہاتھ ہو۔ (ت)

[اوپری حصہ - بایاں کالم - عربی متن] قدر ذراعین ونصف لایکون تبعاً لہ لان الربع یحکی حکایۃ الکل فلا یتوضؤ منہ وان اقل منہ فتبع، وقیل لیس بتبع وان قدر ذراع۔ 1

[درمیانی حصہ - تشریح] اقول: یوں ہی تالابوں نہروں کی تہ میں گڑھے بھی ہوتے ہیں ہر گڑھے کو مستقل قرار دینے میں حرج و مخالفتِ عرف ہے لہذا ارشادِ مذکور کی بنا پر اس کی تقدیر بھی پچیس ہاتھ مساحت سے چاہئے لان الربع یحکی حکایۃ الکل (کیونکہ چوتھا کل کے قائم مقام ہوتا ہے ۔ت) یہاں اس تعلیل کا جواب بھی کُھل گیا کہ الکثیر یستتبع القلیل (کثیر قلیل کو تابع بناتا ہے۔ ت) اس تقدیر پر حکم یہ ہونا چاہئے کہ صورتِ مسئولہ میں اگر نجاست طافیہ ہے کہ حصہ زیریں تک نہ پہنچی یا حصہ زیریں حصہ بالا کے ساتھ دو مختلف محل نہیں جیسے نصف دائرہ میں یا مختلف تو ہے مگر پچیس ہاتھ مساحت سے کم ہے تو ان سب صورتوں میں نجاست پڑنے سے کوئی حصہ نجس نہ ہوگا اور یہی محمل کلام علامہ شامی کا ہے اور اگر نجاست راسبہ ہے کہ حصہ زیریں تک پہنچی اور اسفل اعلیٰ سے مختلف الشکل ہے اور سو ہاتھ مساحت سے کم مگر پچیس ہاتھ سے کم نہیں تو اوپر کا حصہ بوجہ کثرت پاک رہے گا اور یہ حصہ زیریں بوجہ حوضِ مستقل قلیل ہونے کے ناپاک ہو جائیگا اور یہی محمل کلام علامہ طحطاوی کا ہے یہ ہے وہ جو فقیر کے لئے ظاہر ہوا اور محلِ محتاجِ تحریر و تنقیح اور جزم بالحکم دست نگرِ تصریح ہے،

[نیچلا حصہ - دایاں کالم] اور حق کا علم میرے رب کے پاس ہے، بیشک میرا رب ہر چیز کو جاننے والا ہے، اور حلیہ میں منیہ کے قول کے تحت جو اس چوتھے جواب کے شروع میں گزرا ہے کہ انہوں نے فرمایا یہ قول بدائع میں ابوالقاسم صفار سے منقول ہے مگر اس میں جو مسئلہ فرض کیا گیا ہے وہ بڑے حوض میں ہے جس میں نجاست گر گئی ہو پھر اس کا پانی اتنا کم ہو گیا کہ اس کا پانی ایک دوسرے سے متصل ہو گیا پھر اس میں نجاست گر گئی اور پھر اس کا پانی زائد ہو گیا یہاں تک

[نیچلا حصہ - بایاں کالم - عربی متن] والعلم بالحق عند ربی ان ربی بکل شیئ علیم، امامانی الحلیۃ تحت قول المنیۃ المارفی صدر ھذا الجواب الرابع حیث قال وھذا محکی فی البدائع عن ابی القاسم الصفار رحمہ اللہ تعالیٰ غیر ان فرض المسألۃ فیھا فی الحوض الکبیر وقعت فیہ النجاسۃ ثم قل ماؤہ حتی صار یخلص بعضہ الی بعض وقعت فیہ نجاسۃ ثم عاودہ الماء حتی امتلا ولم یخرج منہ شیئ اھـ 2

[حواشی] 1- بزازیہ علی الہندیۃ نوع فی الحیاض نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱ 2- حلیہ

Fatawa Razawiya, Volume 2

I say, firstly, this is not presented in 'Al-Bada'i' in a single context or in a single scenario, such that it could be said that when filth falls into water while it is full and its surface area is large, and then after the upper part is emptied and it reaches the lower small amount, it would require filth to fall again to make it impure. Thus, he explained that the lower small amount does not become impure following the upper large amount. This generalization also includes cases where the lower part has a different shape. Rather, each of them is a separate branch mentioned in 'Al-Bada'i' consecutively from two Imams. Therefore, one should not be applied to the other. Their text is as follows: If a small basin becomes impure by filth falling into it, and then its water is spread out until some parts no longer connect to others, it remains impure because the spread-out water itself is impure. And it was said regarding a large basin: filth fell into it, then its water decreased until some parts began to reach others, it is pure because the water that gathered is pure. This is how Abu Bakr al-Iskaf (may Allah have mercy on him) mentioned it, and he considered the state at the time the filth fell. And if filth fell into this small amount, then water returned to it until the basin was full and nothing came out of it, Abu al-Qasim al-Saffar (may Allah have mercy on him) said: It is not permissible to perform ablution with it because as water entered it, it became impure. This is because consideration is given to the state at the time of falling.

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on describing quantities, etc. H.M. Saeed Company, Karachi 1/72. Page 348 of 711

फतवा रज़विया, खंड 2

मैं सबसे पहले कहता हूँ कि यह 'अल-बदाए' में एक ही संदर्भ या एक ही चित्रण में प्रस्तुत नहीं किया गया है, ताकि यह कहा जा सके कि जब पानी भरा हो और उसका सतही क्षेत्र बड़ा हो, तब उसमें गंदगी गिरने के बाद, जब ऊपरी हिस्सा खाली हो जाए और वह निचले अल्प भाग तक पहुँच जाए, तो उसे अशुद्ध करने के लिए फिर से गंदगी गिरने की आवश्यकता होगी। इस प्रकार, उन्होंने बताया कि निचला अल्प भाग ऊपरी बड़े हिस्से के अनुसरण में अशुद्ध नहीं होगा। यह सामान्यीकरण उस स्थिति को भी शामिल करता है जब निचले हिस्से का आकार भिन्न हो। बल्कि, उनमें से प्रत्येक एक अलग शाखा है जिसका उल्लेख 'अल-बदाए' में दो इमामों से क्रमिक रूप से किया गया है। इसलिए, एक को दूसरे के लिए नहीं लिया जाना चाहिए। उनका पाठ इस प्रकार है: यदि कोई छोटा कुंड उसमें गंदगी गिरने से अशुद्ध हो गया हो, और फिर उसका पानी इतना फैल गया कि उसका कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से तक पहुँचने में असमर्थ हो गया, तो वह अशुद्ध है क्योंकि फैला हुआ पानी अशुद्ध ही है। और बड़े कुंड के बारे में कहा गया: उसमें गंदगी गिर गई, फिर उसका पानी इतना कम हो गया कि उसका कुछ हिस्सा दूसरे हिस्से तक पहुँचने लगा, तो वह शुद्ध है क्योंकि जो इकट्ठा हुआ है वह शुद्ध पानी है। इसी तरह अबू बक्र अल-इस्काफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उल्लेख किया और गिरने के समय की स्थिति पर विचार किया। और यदि इस अल्प मात्रा में गंदगी गिर गई, फिर उसमें पानी वापस आ गया यहाँ तक कि कुंड भर गया और उसमें से कुछ भी बाहर नहीं निकला, तो अबू अल-कासिम अल-सफ्फार (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि जब भी पानी इसमें प्रवेश करता गया, वह अशुद्ध होता गया। ऐसा इसलिए है क्योंकि गिरने के समय की स्थिति का विचार किया जाता है।

1. बदाए अल-सनाए, मात्राओं के वर्णन पर अध्याय, आदि। एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/72। पृष्ठ 711 का 348

فأقول اولا ليس هذا مسوقا في البدائع سياقا واحدا في تصوير واحد حتى يقال ان الماء الواقع فيه النجاسة حين امتلاءه وكثرة مساحته بعد مافرغ اعلاه وبلغ السافل القليل احتيج في تنجيسه الى وقوع النجاسة مرة اخرى فأفادان السافل القليل لا ينجس تبعا للعالى الكثير وهو باطلاقه يشمل ما اذا كان السافل مختلف الصورة بل كل منهما فرع عليحدة ذكرهما في البدائع على التعاقب عن امامين فالاولى لا تؤخذ فى الاخرى وهذا نصه لوتنجس الحوض الصغير بوقوع النجاسة ثم بسط ماؤه حتى صار لا يخلص بعضه الى بعض فهو نجس لان المبسوط هوالماء النجس وقيل في الحوض الكبير وقعت فيه النجاسة ثم قل ماؤه حتى صار يخلص بعضه الى بعض انه طاهر لان المجتمع هو الماء الطاهر هكذا ذكره ابوبكر الاسكاف رحمه الله تعالى واعتبر حالة الوقوع ولو وقع فى هذا القليل نجاسة ثم عاوده الماء حتى امتلاء الحوض ولم يخرج منه شيئ قال ابو القاسم الصفار رحمه الله تعالى لايجوز التوضؤ به لانه كلما دخل الماء فيه صار نجسا اه و ذلك ان لاعتبار حالة الوقوع۔

کہ حوض بھر گیا اور اس سے کچھ باہر نہ نکلا اھ(ت) تو میں کہتا ہوں اولا، یہ چیز بدائع میں صرف ایک ہی انداز میں مذکور نہیں ، لہذا یہ کہنا کہ جب کثیر پانی کے بھرے ہونے کی صورت میں نجاست گر جائے اور اس کا بالائی حصہ خالی ہو کر نیچے قلیل تک آجائے تو اسی وقت ناپاک ہوگا جب اُس میں دوبارہ نجاست گرے، تو انہوں نے یہ بتایا کہ نچلا قلیل حصہ اوپر والے حصہ کی متابعت میں ناپاک نہ ہوگا، یہ اطلاق اس کو بھی شامل ہے جبکہ نچلے کی صورت مختلف ہو، بلکہ ان میں سے ہر ایک علیحدہ فرع ہے، اس کو بدائع میں یکے بعد دیگرے ذکر کیا ہے، اور دونوں اماموں کی طرف منسوب کیا ہے تو ایک صورت کو دوسری میں نہیں لیا جائیگا ان کی عبارت اس طرح ہے، یا چھوٹا حوض جو نجاست کے گر جانے سے ناپاک ہو گیا ہو ، پھر اس کا پانی اتنا پھیل

گیا کہ اس کا بعض حصہ دوسرے بعض تک پہنچنے سے قاصر ہو گیا تو یہ نجس ہے کیونکہ مبسوط نجس پانی ہی ہے، اور وہ بڑا حوض جس میں نجاست گر گئی پھر اس کا پانی اتنا کم ہو گیا کہ اس کا بعض حصہ دوسرے بعض تک پہنچنے لگا تو یہ پاک ہے کیونکہ جو اکٹھا ہے وہ پاک پانی ہے اسی طرح اس کو ابوبکر الاسکاف نے ذکر کیا اور حالتِ وقوع کا اعتبار کیا، اور اگر اس کم میں نجاست گری پھر اس میں پانی واپس آگیا یہاں تک کہ حوض بھر گیا اور اس میں سے کچھ باہر۔

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۲ Page 348 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic column translation] Two situations: The first is the change in the surface area of the water while its essence remains the same, as it was without decrease or (1) increase. For instance, if water is spread in a large basin with a blocked outlet leading to a well, say, two cubits in diameter. If impurity falls into the basin, the water does not become impure because it is ten cubits by ten. Then the impurity is removed and the outlet is opened until that water moves to the well and becomes two cubits in diameter. It did not become impure again because the consideration is for the time of occurrence, at which time its area was large, even though it has now become small (2). And if the water was in a well and impurity fell into it, then all of it was drawn out and the water placed in a basin until it spread and became ten cubits by ten, it does not become pure in consideration of the state of falling, as it was then small in area, even if it has now become large. And this is what is in al-Bazzaziyya: if it were less than ten cubits by ten but deep, and a liquid falls into it and spreads until it is considered large, wudu is not performed from it. And if it were ten cubits by ten and then decreased, wudu is performed with it, not in it, because of the consideration of the time of occurrence. Ended. And in al-Khaniya: pure water, if it is in a place that is ten cubits by ten...

[Urdu column translation] Because there are two considerations for the state of occurrence: The first is that a change occurs in the measurement of water while its essence remains as it was, neither decreasing nor increasing. For example, water is spread in a large basin and in it is a hole that goes to a well and this hole is closed. The diameter of the well is, for example, two hands (cubits). Now if impurity falls in the basin, the water will not be impure because it is ten cubits by ten (dah dar dah). Then the impurity is taken out and the hole is opened and that water moves towards the well and reaches a diameter of two cubits; then it will not be impure because here the consideration is for the time of falling and at that time its measurement was more, even though now it has become less. And if water is in the well and impurity falls in it, then all the water of the well is taken out and collected in a basin until it spreads and the water becomes ten by ten, then the water will not be pure because the consideration is for the time of the impurity occurring and at that time the measurement was less, even though now it has become large. This is in Bazzaziyya. And if it is less than ten by ten but it is deep and some flowing substance fell into it and spread until it became large, then wudu will not be made from it. And if it is ten by ten and then becomes less, then wudu will be made with it and not in it; here also

the consideration is for the time of falling. Ended. And in al-Khaniya it is stated that pure water, if it is in some such place that is ten cubits by ten and impurity falls in it, then that water is collected in such a place which is less than ten by ten, then that water is pure. And if water is in a narrow place which is less than ten by ten and impurity falls in it, then it spreads and becomes ten by ten, then the water is impure and the consideration in this is the impurity.

[Footnote translation] 1 Fatawa Bazzaziyya, section on basins, Nurani Kutub Khana Peshawar 4/5 Page 349 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दो)

[अरबी कॉलम का अनुवाद] दो स्थितियाँ: पहली, पानी के सतह क्षेत्र में परिवर्तन जबकि उसका सार वैसा ही रहे जैसा वह था, बिना किसी कमी या (१) वृद्धि के। उदाहरण के तौर पर, यदि पानी एक बड़े कुंड में फैला हुआ है जिसमें एक बंद निकास है जो एक कुएं की ओर जाता है, जिसका व्यास मान लीजिए दो हाथ है। यदि कुंड में अशुद्धि गिरती है, तो पानी अशुद्ध नहीं होता क्योंकि वह दस हाथ गुणा दस हाथ का है। फिर अशुद्धि निकाल दी जाती है और निकास खोल दिया जाता है ताकि पानी कुएं में चला जाए और दो हाथ के व्यास का हो जाए। वह अशुद्ध नहीं माना जाएगा क्योंकि विचार गिरने के समय का है, जिस समय उसका क्षेत्रफल अधिक था, भले ही अब वह कम हो गया हो। (२) और यदि पानी कुएं में था और उसमें अशुद्धि गिर गई, फिर उसे पूरी तरह निकाल लिया गया और पानी को एक कुंड में डाल दिया गया जब तक कि वह फैल न जाए और दस गुणा दस न हो जाए, तो वह गिरने के समय की स्थिति के विचार से शुद्ध नहीं होता, क्योंकि उस समय उसका क्षेत्रफल कम था, भले ही अब वह अधिक हो गया हो। और बज़ाज़िया में यही है: यदि वह दस गुणा दस से कम था लेकिन गहरा था, और उसमें कोई तरल पदार्थ गिरकर फैल गया यहाँ तक कि वह अधिक गिना जाने लगा, तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा। और यदि वह दस गुणा दस था और फिर कम हो गया, तो उससे वज़ू किया जाएगा, उसमें नहीं, क्योंकि गिरने के समय का विचार है। समाप्त। और ख़ानिया में है: शुद्ध पानी, जब वह ऐसी जगह हो जो दस गुणा दस हो...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] क्योंकि घटना की स्थिति के दो विचार हैं: पहला यह कि पानी के माप में परिवर्तन आ जाए और उसका सार वैसा ही रहे जैसा वह था, न कमी हो और न ही वृद्धि। उदाहरण के लिए, पानी एक बड़े कुंड में फैला हुआ है और उसमें एक छेद है जो कुएं तक जाता है और यह छेद बंद है। कुएं का व्यास, उदाहरण के लिए, दो हाथ है। अब यदि कुंड में अशुद्धि गिर जाए तो पानी अशुद्ध नहीं होगा क्योंकि यह 'दह दर ۱۰' (दस गुणा दस) है। फिर अशुद्धि निकाल ली जाती है और छेद खोल दिया जाता है और वह पानी कुएं की ओर चला जाता है और दो हाथ के व्यास में पहुँच जाता है, तो वह अशुद्ध नहीं होगा, क्योंकि यहाँ गिरने के समय का विचार है और उस समय उसका माप अधिक था भले ही अब कम हो गया हो। और यदि पानी कुएं में हो और उसमें अशुद्धि गिर जाए, फिर कुएं का सारा पानी निकाल कर एक कुंड में जमा कर लिया जाए जब तक कि वह फैल न जाए और पानी दस गुणा दस हो जाए, तो पानी शुद्ध नहीं होगा क्योंकि अशुद्धि गिरने के समय का विचार है और उस समय माप कम था भले ही अब अधिक हो गया हो। यह बज़ाज़िया में है। और यदि वह

दस गुणा दस से कम हो लेकिन गहरा हो और उसमें कोई बहने वाली चीज़ गिर गई और फैल गई यहाँ तक कि अधिक हो गई तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा। और यदि वह दस गुणा दस हो और फिर कम हो जाए तो उससे वज़ू करेगा न कि उसमें; यहाँ भी गिरने के समय का विचार है। समाप्त। और ख़ानिया में है कि पाक (शुद्ध) पानी यदि किसी ایسی جگہ میں ہے جو। दस गुणा दस हो और उसमें अशुद्धि गिर जाए फिर वह पानी ऐसी जगह जमा हो जाए जो दस गुणा दस से कम हो तो वह पानी शुद्ध है। और यदि पानी किसी तंग जगह में हो जो दस गुणा दस से कम है उसमें अशुद्धि गिर जाए फिर वह फैलकर दस गुणा दस हो जाए तो पानी अशुद्ध है और इसमें विचार अशुद्धि का है।

[पाद टिप्पणी का अनुवाद] १ फ़तावा बज़ाज़िया, हौज के बारे में प्रकार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर ५/४ पृष्ठ ३४९/७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی عبارت کا ٹرانسکرپشن] محلين الاول تغير مساحة الماء مع بقائه في ذاته كما كان بلا نقص ولا (١) زيادة كأن يكون الماء منبسطاً في حوض كبير وفيه منفذ مسدود دونه بئر مثلا قطرها ذراعان فوقعت في الحوض نجاسة فلم يتنجس الماء لانه عشر في عشر ثم اخرجت النجاسة وفتح المخرج حتى انتقل ذلك الماء الى البئر فصار في قطر ذراعين لم يعد نجسا لان العبرة لحين الوقوع وهو اذ ذاك كان كثير المساحة وان صار الآن قليلا (٢) وان كان الماء في البئر فوقعت فيها نجاسة فنزح كلها وجعل الماء في الحوض حتى انبسط وصار عشرا في عشر لم يطهر اعتبارا بحال الوقوع حيث كان عندئذٍ قليل المساحة وان صار الآن كثيرا وهذا ما في البزازية لو كان دون عشر في عشر لكنه عميق وقع فيه مائع وانبسط حتى عد كثيرا لا يتوضؤ منه ولو عشرا في عشر ثم قل توضأ به لافيه لاعتبار اوان الوقوع ١اه وفى الخانية الماء الطاهر اذا كان في موضع هو عشر في عشر

[اردو کالم کی تحریر] کیونکہ وقوع کی حالت کے دو اعتبار ہیں پہلا تو یہ کہ پانی کی پیمائش میں تغیر آجائے اور اس کی ذات بحال رہے جیسی کہ تھی نہ کمی ہو اور نہ زیادتی مثلاً یہ کہ پانی بڑے حوض میں پھیلا ہوا ہو اور اس میں ایک سوراخ ہو جو کنویں تک جاتا ہو اور یہ سوراخ بند ہو، کنویں کا قطر مثلاً دو ہاتھ ہو اب حوض میں نجاست گر جائے تو پانی ناپاک نہ ہو گا کہ یہ دہ در دہ ہے پھر نجاست نکال لی جائے اور سوراخ کھول دیا جائے اور وہ پانی کنویں کی طرف منتقل ہو جائے اور دو ذراع کے قطر میں پہنچ جائے تو نجس نہ ہوگا، کیوں کہ یہاں اعتبار گرنے کے وقت کا ہے اور اس وقت اس کی پیمائش زیادہ تھی اگر چہ اب کم ہوگئی ہے اور اگر پانی کنویں میں ہو اور اس میں نجاست گر جائے پھر کنویں کا تمام پانی نکال کر ایک حوض میں جمع کر لیا جائے حتی کہ وہ پھیل جائے اور پانی دہ در دہ ہو جائے تو پانی پاک نہ ہوگا کیونکہ نجاست کے واقع

ہونے کے وقت کا اعتبار ہے اور اس وقت پیمائش کم تھی اگرچہ اب کثیر ہو گئی ہے یہ بزازیہ میں ہے اور اگر دہ در دہ سے کم ہو لیکن گہرا ہو اور اس میں کوئی بہنے والی چیز گر گئی اور پھیل گئی یہاں تک کہ زیادہ ہو گئی تو اس سے وضو نہ کیا جائے گا اور اگر وہ دہ در دہ ہو اور پھر کم ہو جائے تو اس سے وضو کرے گا نہ کہ اس میں، یہاں بھی گرنے کے وقت کا اعتبار ہے اھ اور خانیہ میں ہے کہ پاک پانی اگر کسی ایسی جگہ میں ہے جو دہ در دہ ہو اور اس میں نجاست گر جائے پھر وہ پانی ایسی جگہ جمع ہو جائے جو دہ در دہ سے کم ہو تو وہ پانی پاک ہے اور اگر پانی تنگ جگہ میں ہو جو دہ در دہ سے کم ہے اس میں نجاست گر جائے پھر وہ پھیل کر دہ در دہ ہو جائے تو پانی ناپاک ہے اور اعتبار اس میں نجاست

[حاشیہ] 1 فتاویٰ بزازیہ نوع فی الحیاض نورانی کتب خانہ پشاور ۵/۴ Page 349 of 711

Fatawa Razawiyya - Volume 2

...it was at the time of falling. [End] Similar discourse is found in Al-Khulasa. In Al-Durr, it is narrated from Tatar-Khaniyah, from Al-Zahiriyya and others. The second case is where its surface area changes due to an increase or decrease in water. For instance, in a pond where the bottom is deeper and more sloping than its edges, as we described—like a semi-circle whose upper part is ten by ten (cubits), but then it gradually narrows. When full, it is considered a large body of water (Ma-e-Katheer) and does not become impure by falling impurity. If impurity falls and is removed, and then the water decreases due to usage or summer heat until the edges dry up and the remaining water in the center is less than ten by ten, as observed in many ponds, it will not be considered impure. This is because it was a large body when the impurity fell. Conversely, if the water dries up and only a small amount remains in the middle, and at that time impurity falls into it, then more water enters until it is full and becomes large, but it does not overflow from the sides so as to be purified by flow, it will remain impure as before, as previously explained. This is stated in Al-Munyah. Similarly, in Al-Khaniyah, it says: If a pond's upper surface is ten by ten but its lower part is smaller, performing wudu (ablution) with it is permissible. The upper surface of the water is considered. If the water level drops to a point where the surface area is less than ten by ten, wudu is not permissible. The researcher stated in Al-Fath: If an impurity falls into a ten-by-ten pond and then the water level decreases, it remains pure. And when...

---

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Stagnant Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4.
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Stagnant Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4.

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

...यह गिरने के समय का है। इसी प्रकार की चर्चा 'अल-ख़ुलासा' में है। और 'अद-दुरर' में 'तातर्ख़ानिया' से 'ज़हीरिया' आदि के हवाले से उल्लेख है। दूसरा मामला यह है कि पानी की मात्रा में कमी या वृद्धि के कारण उसके क्षेत्रफल में परिवर्तन आ जाए। उदाहरण के लिए, एक तालाब जिसका मध्य भाग उसके किनारों की तुलना में अधिक गहरा और ढलान वाला हो, जैसा कि हमने वर्णन किया —जैसे एक अर्धवृत्त जिसका ऊपरी हिस्सा दस गुना दस (हाथ) हो, लेकिन नीचे की ओर कम होता जाए। जब यह भरा हो, तो यह 'कसीर' (बड़ा जलाशय) होगा और इसमें गंदगी गिरने से यह अपवित्र नहीं होगा। यदि गंदगी गिर जाए और निकाल ली जाए, और फिर पानी उपयोग के कारण या गर्मियों की गर्मी के कारण कम हो जाए जिससे किनारे सूख जाएं और बीच में बचा हुआ पानी दस गुना दस से कम रह जाए, जैसा कि कई तालाबों में देखा जाता है, तो वह अपवित्र नहीं होगा। क्योंकि जब गंदगी गिरी थी, तब वह बड़ा जलाशय था। इसके विपरीत, यदि पानी सूख जाए और बीच में थोड़ा सा पानी रह जाए, और उस समय उसमें गंदगी गिर जाए, फिर पानी उसमें आए यहाँ तक कि वह भर जाए और 'कसीर' हो जाए, लेकिन किनारों से बाहर न बहे ताकि बहने से पवित्र हो सके, तो वह पहले की तरह अपवित्र ही रहेगा। इसका प्रमाण गुज़र चुका है। और यह 'मुनिया' में है, जैसा कि 'ख़ानिया' में भी है कि एक तालाब जिसका ऊपरी सिरा दस गुना दस है और निचला सिरा उससे कम है, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। इसमें पानी की सतह का विचार किया जाएगा। यदि पानी कम हो जाए और ऐसी जगह पहुँच जाए जहाँ क्षेत्रफल दस गुना दस से कम हो, तो उसमें वज़ू करना जायज़ नहीं है। शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने 'फ़तह' में फ़रमाया कि यदि कोई गंदगी दस गुना दस के तालाब में गिरी और फिर पानी कम हो गया, तो वह पवित्र ही है। और जब...

---

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4।
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4।

पृष्ठ 350/711

ووقعت فيه نجاسة ثم انبسط ذلك الماء وصار عشرا في عشر كان نجسا والعبرة في هذا لوقت وقوع النجاسة اهـ ومثله في الخلاصة، وفی الدرر عن التتارخانية عن الظهيرية وفی غيرها والثانی تغير مساحته لزيادة فيه اونقصه كان يكون في غدير بطنه اكثر انحدارا من حافاته كما وصفنا من نصف الدائرة اعلاه عشر في عشر ثم لم يزل يقل فاذا كان ممتلئا كان كثيرا لايقبل النجاسة فاذا(۱) وقعت واخرجت وقل الماء بالاستعمال او بحر الصيف حتی يبس فی الاطراف وبقي فی بطنه اقل من عشر في عشر كما هو مشاهد في كثير من الغدران لم يعد نجسا لانه كان حين وقعت كثيرا وان(۲) جف ماؤه وبقي فی وسطه قليلا وعند ذلك وقع فيه نجس ثم دخله الماء حتی امتلأ وصار كثيرا غير انه لم يفض من جوانبه كی يطهر بالجريان فانه يبقی كما كان نجسا لما مرو هذا مافي المنية كما تقدم، وفي الخانية حوض اعلاه عشر في عشر واسفله اقل منه جاز فيه الوضوء يعتبر فيه وجه الماء فأن قل ماؤه وانتهی الی موضع هو اقل من عشر لا يجوز فيه الوضوء و

کے گرنے کے وقت کا ہے اھ اور اسی قسم کا کلام خلاصہ میں ہے، اور در میں تاتارخانیہ سے ظہیریہ وغیرہ سے منقول ہے اور دوسرا یہ کہ پانی کی پیمائش میں تغیر آجائے اس میں کمی یا زیادتی کے باعث مثلاً یہ کہ اس کے گڑھے میں پانی کا بہاؤ بہ نسبت کناروں کے زائد ہو جیسا کہ ہم نے بیان کیا، یعنی دائرہ کا نصف جس کا بالائی حصہ دہ در دہ ہو پھر برابر کم ہوتا گیا، اور جب بھرا ہوا ہو تو زائد ہوگا نجاست کو قبول نہ کریگا اور جب نجاست گر جائے اور نکال لی جائے اور پانی استعمال کی وجہ سے کم ہو جائے یا گرمی کے باعث اس کے کنارے خشک ہو جائیں اور اس کے گڑھے میں دہ در دہ سے کم رہ گیا ہو جیسا کہ بہت سے گڑھوں سے مشاہدہ ہوتا ہے تو وہ نجس نہ ہوگا کیونکہ جب نجاست اس میں گری تھی تو وہ زائد تھا اگر حوض کا پانی خشک ہو

جائے حتی کہ اس وسط میں تھوڑا سا پانی باقی رہے اور اس وقت نجاست گر جائے پھر پانی داخل ہو حتی کہ وہ بھر جائے اور پانی کثیر ہو گیا مگر پانی اس کے کناروں سے نکلا نہیں ورنہ وہ پانی کے بہاؤ سے پاک ہو جاتا اب وہ حسب سابق نجس ہی رہے گا اس کی دلیل گزری اور یہ منیہ میں ہے جیسا اور خانیہ میں ہے کہ ایک حوض جس کا بالائی حصہ دہ در دہ ہے اور نچلا اس سے کم ہے، اس سے وضو جائز ہے، اور اس میں پانی کی سطح کا اعتبار ہوگا، اور اگر اس کا پانی کم ہو اور وہ ایسی جگہ پہنچ جائے جو دہ در دہ سے کم تر ہو تو اس میں وضو جائز نہیں، محقق نے فتح میں فرمایا کہ کوئی نجاست دہ در دہ حوض میں گری اور پھر پانی کم ہو گیا تو وہ طاہر ہے اور جب

---

1 فتاویٰ قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۱/ ۴ 2 فتاویٰ قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۱/ ۴

Fatawa Rizwia, Volume Two

[Left Column - Arabic Context]: The researcher stated in 'Al-Fath': If impurity falls into a ten-by-ten pond and it later shrinks, it remains pure. If a small pond becomes impure, and water is added until full but none flows out of it, it is impure. [Footnote 1] In 'Al-Ghunya', the summary is: water that becomes impure while in a small quantity does not become pure even if it becomes large. Conversely, if it was large [above the threshold] at the time of contacting impurity, it does not become impure. If it decreases after the impurity falls into it until it becomes small, what matters is its quantity (large or small) at the time of contact with impurity, whether the impurity fell on the water or the water fell on the impurity. This is the preferred view. [Footnote 2] In 'At-Tabyin', this is stated concisely: 'The criterion is the state at the time of occurrence. If it decreases afterwards, it does not become impure; and conversely [if it was small and becomes large], it does not become pure.' [Footnote 3] For Imam Malik al-Ulama (may Allah have mercy on him), he cited the first section from Imam Abu Bakr al-Iskaf. Observe his words 'then its water spread' and 'Al-Mabsut' referring to impure water, and 'Al-Mujtama' referring to pure water. His word 'Qall' refers to area, not volume, as indicated by his terming it 'Al-Mujtama'. He cited the second section with the phrase 'and if it falls in this small [quantity]' from Imam Abu al-Qasim al-Saffar...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation]: A small pond became impure and then water was filled in it and nothing came out from it, so that pond will be impure from that impurity. [End quote]. And in 'Ghunya', it is mentioned: the summary is that when the water became impure in a state of scarcity, it will not become pure in a state of plenty. If it was more at the time of contact with impurity, it will not become impure by the impurity. And if it became less after the impurity fell, the scarcity or plenty of water at the time the impurity fell into it is considered, whether the impurity fell on the water or the water fell on the impurity. This is the selected [preferred] view. [End quote]. In 'Tabyin', the same has been described in a very brief manner: it was said, consideration is of the state of occurrence; so if it becomes less after that, it will not be impure, and if it is the opposite, it will not be pure. [End quote]. Imam Malik-ul-Ulama (may Allah have mercy on him) has narrated the first section from Imam Abu Bakr al-Iskaf. Pay attention to his statement 'then its water spread' and his word 'mabsut', which means impure water, and his word 'mujtama', which is pure water. If you reflect upon it, his word 'qall' means according to measurement [area] and not according to quantity [volume], which he expresses as 'mujtama'. And he

mentioned the second section with 'and if it falls in this small [quantity]'; this is narrated from Imam Abu al-Qasim al-Saffar, and for this reason...

Note: I say: 'Heen' (time) is better than 'Qabl' (before) as is not hidden. May Allah forgive him. (T)

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Discussion on Al-Ghadir al-Azim, Nooria Razvia Sukkur, 1/71. 2. Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Section on the rules of ponds, Sohail Academy Lahore, p. 101. 3. Tabyin al-Haqaiq, Discussion on Ashr fi Ashr, Bulaq Egypt, 22/1.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड द्वितीय

[बायां कॉलम - अरबी संदर्भ]: 'अल-फ़तह' में मुहक़िक़ ने कहा है: यदि किसी दस-बाई-दस के तालाब में नापाकी गिर जाए और वह बाद में कम हो जाए, तो वह पाक ही रहेगा। और यदि छोटा हौज़ नापाक हो जाए, फिर उसमें पानी भर दिया जाए यहाँ तक कि वह भर जाए और उसमें से कुछ बाहर न निकले, तो वह नापाक ही रहेगा। [पाद-टिप्पणी 1] और 'ग़ुनिया' में है कि सारांश यह है कि जब पानी कमी की स्थिति में नापाक हो गया, तो अधिक होने की स्थिति में पाक नहीं होगा; और यदि नापाकी मिलने के समय वह अधिक था, तो वह नापाक नहीं होगा। और यदि नापाकी गिरने के बाद वह कम हो गया, तो पानी की कमी या अधिकता का विचार उसी समय का किया जाएगा जब उसमें नापाकी गिरी थी, चाहे नापाकी पानी पर गिरी हो या पानी नापाकी पर गिरा हो। यही विचार अपनाया गया है। [पाद-टिप्पणी 2] 'तबीन' में इसे बहुत संक्षिप्त शब्दों में बताया गया है: 'विचार गिरने की स्थिति का होता है; यदि उसके बाद कम हो जाए तो नापाक नहीं होगा, और इसके विपरीत होने पर पाक नहीं होगा।' [पाद-टिप्पणी 3] इमाम मलिक उल-उलेमा (रह.) ने पहला अध्याय इमाम अबू बकर अल-इस्क़ाफ़ से उद्धृत किया है। उनके शब्दों 'फिर उसका पानी फैल गया' और 'अल-मबस्त' से तात्पर्य नापाक पानी है, और 'अल-मुज्तमा' से तात्पर्य पाक पानी है। उनके शब्द 'क़ल्ल' से तात्पर्य क्षेत्रफल है न कि आयतन, जैसा कि 'अल-मुज्तमा' शब्द के प्रयोग से स्पष्ट होता है। उन्होंने दूसरे अध्याय का उल्लेख इमाम अबू अल-क़ासिम अल-सफ़्फ़ार के हवाले से 'और यदि इस थोड़े (पानी) में गिर जाए' से किया है...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: छोटा हौज़ नापाक हो गया और फिर उसमें पानी भर गया और उससे कुछ बाहर नहीं निकला, तो वह हौज़ उस नापाकी से नापाक ही रहेगा। और 'ग़ुनिया' में है, सारांश यह है कि जब पानी कमी की स्थिति में नापाक हो गया तो अधिकता की स्थिति में पाक नहीं होगा, और अगर नापाकी मिलने के समय वह अधिक था तो नापाकी से नापाक नहीं होगा। और अगर नापाकी गिरने के बाद कम हुआ तो इसमें पानी की कमी और अधिकता का विचार तब का है जब उसमें नापाकी गिरी थी, चाहे नापाकी पानी पर गिरी हो या पानी नापाकी पर गिरा हो। यही विचार अपनाया गया है। 'तबीन' में इसी को बहुत संक्षिप्त इबारत में बयान किया है: फ़रमाया, विचार गिरने की स्थिति का है, तो अगर उसके बाद कम हुआ तो नापाक नहीं होगा और अगर इसके विपरीत है तो पाक नहीं होगा। इमाम मलिक-उल-उलेमा (रह.) ने पहला अध्याय इमाम अबू बकर अल-इस्क़ाफ़ से नक़ल किया है। उनके शब्द 'फिर उसका पानी फैल गया' और उनके शब्द 'मबस्त' जो नापाक पानी

है, और उनके शब्द 'मुज्तमा' जो पाक पानी है, की तरफ गौर करें तो उनका शब्द 'क़ल' यानी पैमाइश के ऐतबार से है न कि मात्रा के ऐतबार से, जिसे वह 'मुज्तमा' से व्यक्त करते हैं। और दूसरे अध्याय को 'अगर इस थोड़े में गिर जाए' से ज़िक्र किया, यह इमाम अबू अल-क़ासिम अल-सफ़्फ़ार से नक़ल है, और इसीलिए...

टिप्पणी: मैं कहता हूँ: जैसा कि स्पष्ट है 'क़ब्ल' के स्थान पर 'हिन' शब्द का प्रयोग अधिक उचित है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल-क़दीर, बहस अल-ग़दीर अल-अज़ीम, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/71 2. गुनियात अल-मुस्तमली शरह मुनियात अल-मुसल्ली, तालाबों के नियमों का अध्याय, सुहेल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 101 3. तबीन अल-हक़ायक़, बहस अश्र फ़ी अश्र, बुलाक़ मिस्र 22/1

قال المحقق فی الفتح سقطت نجاسة فی عشر فی عشر ثم صار اقل فهو طاہر واذا تنجس حوض صغیر فدخل ماء حتی امتلأ ولم یخرج منہ شیئ فهو نجس ۱ اھ وفی الغنیة الحاصل ان الماء اذا تنجس حال قلتہ لایعود طاہرا بالکثرة وان کان کثیرا قبل عہ اتصاله بالنجاسة لایتنجس بها ولو نقص بعد سقوطها فیہ حتی صار قلیلا فالمعتبر قلتہ وکثرتہ وقت اتصاله بالنجاسة سواء وردت علیہ او ورد علیها هذاهو المختار ۲ اھ وبینہ فی التبیین باوجز لفظ فقال (۱) العبرة بحالة الوقوع فان نقص بعده لایتنجس وعلی العکس لایطهر ۳ اھ فلامام ملك العلماء رحمه الله تعالی ذکر الفصل الاول عن الامام ابی بکر الاسکاف الا تری الی قوله ثم بسط ماؤہ وقوله المبسوط هو الماء النجس وقوله المجتمع هو الماء الطاہر فقوله قل ای مساحة لاقدرا یقطع به تعبیرہ بالمجتمع وذکر الفصل الثانی من قوله ولو وقع فی هذا القلیل عن الامام

چھوٹا حوض ناپاک ہو گیا اور پھر اس میں پانی بھر گیا اور اُس سے کچھ باہر نہ نکلا تو وہ حوض اس نجاست سے ناپاک ہو گا اھ اور غنیہ میں ہے، خلاصہ یہ ہے کہ پانی جب کمی کی حالت میں ناپاک ہو گیا تو کثرت کی حالت میں پاک نہ ہو گا، اور اگر اتصال نجاست کے وقت زائد تھا تو نجاست سے نجس نہ ہو گا اور اگر نجاست کے گر جانے کے بعد کم ہوا تو معتبر اس میں پانی کی قلت و کثرت ہے جبکہ اس میں نجاست گری تھی خواہ نجاست پانی پر وارد ہوئی ہو یا پانی نجاست پر وارد ہوا ہو یہی مختار ہے اھ، تبیین میں اسی کو بہت مختصر عبارت سے بیان کیا ہے فرمایا، اعتبار وقوع کی حالت کا ہے تو اگر اس کے بعد کم ہوا تو ناپاک نہ ہوگا اور اگر برعکس ہے تو پاک نہ ہو گا اھ امام ملک العلماء رحمہ اللہ نے پہلی فصل امام ابو بکر الاسکاف سے نقل کی اس کے قول ثم بسط ماؤہ اور ان کا قول مبسوط وہ نجس پانی ہے اور ان کا قول مجتمع وہ پاک پانی ہے، کی طرف غور کریں تو ان کا قول قل یعنی پیمائش کے اعتبار سے نہ کہ مقدار کے اعتبار سے

جس کو وہ مجتمع سے تعبیر کرتے ہیں اور دوسری فصل کو "ولو وقع فی ھذا القلیل" سے ذکر کیا یہ امام ابو القاسم الصفار سے منقول ہے، اور اس لئے

عہ : اقول : الاولی حین کما لایخفی اھ منہ غفر لہ | میں کہتا ہوں قبل کی بجائے لفظ حین کا استعمال بہتر ہے اھ (ت)

۱ فتح القدیر بحث الغدیر العظیم نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۱ ۲ غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی احکام الحیاض سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۱ ۳ تبیین الحقائق بحث عشر فی عشر بولاق مصر ۱/۲۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

Abu al-Qasim al-Saffar said, and hence he (the commentator) said: He returned the water until it was full. Abu Bakr's statement is not derived from Abu al-Qasim's statement, even though the addition of "this little [amount]" (haza al-qalil) might suggest it, as do his words "then he returned it" and "until it was full." This refers to the state of a large pool whose water has diminished, remaining in a small area. This was not mentioned initially because a diminished [amount] is not called "gathered" (1). Thus, the pointer is misplaced. Secondly, even if accepted, there is no doubt that his speech pertains to the second of the four cases; I mean when there is a difference in attribute (sifat) but unity in form (surat). This is not the fourth case under discussion, the reasoning for which is definitive: whenever water enters, it becomes impure, while also adding the condition that nothing should have come out of it, as you will recognize, God willing. And Allah Almighty knows best. (T)

Question 53 (Fifth): In the same situation, if there was a small amount of water in the lower part and impurity fell into it at that time, and it was filled by either removing [the impurity] or without removing it, or it became full from rain or a flood such that it became a large quantity of water (ab-e-kathir), is the upper part now pure or not? And what is the ruling for the lower part? Explain and be rewarded.

Answer: In most books, it is narrated to the extent that if it fills and overflows such that some water comes out, then it becomes pure as it has become flowing water. (Margin: He indicated an increase in quantity, not just measurement. (m/t))

Page 352 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

अबू अल-कासिम अल-सफ़्फ़ार ने कहा, और इसीलिए उन्होंने (टीकाकार) कहा: उसने पानी लौटाया यहाँ तक कि हौज भर गया। अबू बकर का कथन अबू अल-कासिम के कथन से नहीं लिया गया है, हालांकि 'यह थोड़ा' (हाज़ा अल-क़लील) में 'यह' की वृद्धि और इसी तरह उनके कथन 'फिर उसने उसे लौटाया' और 'यहाँ तक कि वह भर गया' से यह भ्रम पैदा होता है। क्योंकि यह एक बड़े हौज की स्थिति है जिसका पानी घट गया है और कम जगह में रह गया है, और इसका उल्लेख शुरू में नहीं है। क्योंकि 'घटे हुए' को 'एकत्रित' नहीं कहा जाता है (1), इसलिए इशारा बेमौका है। और दूसरा, अगर इसे स्वीकार कर लिया जाए, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनका कथन चार स्थितियों में से दूसरी स्थिति में है; मेरा मतलब है जब गुण (सिफ़त) में अंतर हो और रूप (सूरत) में एकता हो। यह वह चौथी स्थिति नहीं है जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, जिसका तर्क निश्चित है: जब भी पानी प्रवेश करेगा, वह अशुद्ध हो जाएगा, साथ ही वे यह शर्त भी लगाते हैं कि उससे कोई चीज़ बाहर न निकली हो, जैसा कि आप इंशा अल्लाह पहचान लेंगे। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

सवाल 53 (पाँचवां): इसी स्थिति में, यदि निचले हिस्से में थोड़ा पानी था और उस समय उसमें अशुद्धि (नजासत) गिर गई, और उसे निकालकर या बिना निकाले भर दिया गया, या बारिश या बाढ़ से भर गया कि वह 'आबे कसीर' (बड़ी मात्रा में पानी) हो गया, तो क्या अब भी ऊपरी हिस्सा शुद्ध है या नहीं? और निचले हिस्से का क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: यहाँ अधिकांश पुस्तकों में यह उल्लेख है कि यदि वह भरकर उबल गया कि कुछ पानी बाहर निकल गया, तो वह शुद्ध हो गया क्योंकि वह बहता हुआ पानी (जारी) हो गया। (हाशिया: उसने मात्रा की वृद्धि का लाभ दिया है, केवल माप का नहीं। (म/त))

पृष्ठ 352 का 711

ابی القاسم الصفار ولذا قال عہ عاوده الماء حتی امتلأ ولیست مقالۃ ابی بکر مأخوذۃ فی مقالۃ ابی القاسم رحمہما اللہ تعالٰی وان کان یوہمہ زیادۃ ھٰذا فی ھٰذا القلیل وکذا قولہ ثم عاوده وقولہ حتی امتلأ فان ھٰذا شأن حوض کبیر نقص ماؤہ فبقی فی موضع قلیل ولم یمر لھٰذا ذکر سابقاً لان الناقص لایقال لہ المجتمع (۱) فالاشارۃ وقعت غیر موقعہ وثانیاً علی تسلیمہ فلا شک ان کلامہ فی الصورۃ الثانیۃ من الصور الاربع اعنی الاختلاف صفۃ مع الاتحاد صورۃ دون الرابعۃ التی فیھا کلامنا یقطع بہ تعلیلہ کلما دخل الماء صار نجسا مع قولہ ولم یخرج منہ شییء کما ستعرفہ ان شا اللہ تعالٰی واللہ تعالٰی اعلم۔

فرمایا اس میں پانی لوٹایا یہاں تک کہ حوض بھر گیا اور ابوبکر کا مقالہ ابوالقاسم کے مقالہ میں ماخوذ نہیں ہے اگرچہ ھٰذا القلیل میں ھٰذا کی زیادتی ہے اور اسی طرح ان کے قول ثم عاوده اور ان کے قول حتی امتلأ سے یہ وہم پیدا ہوتا ہے کیونکہ یہ بڑے حوض کا حال ہے جس کا پانی گھٹ گیا ہے اور کم جگہ میں رہ گیا اور اس کا ذکر شروع میں نہیں ہے، کیونکہ ناقص کو مجتمع نہیں کہا جاتا ہے تو اشارہ بے موقع ہے، اور ثانیاً اگر اس کو تسلیم کرلیا جائے تو اس میں شک نہیں کہ ان کا کلام چار صورتوں میں سے دوسری صورت میں ہے، میری مراد یہ ہے جب صفت میں اختلاف اور صورت میں اتحاد ہو، یہ چوتھی صورت نہیں ہے جس میں ہماری گفتگو ہے، جس کی تعلیل قطعی یہ ہے، جب بھی پانی داخل ہوگا تو نجس ہوجائے گا پھر ساتھ ہی یہ قید بھی لگاتے ہیں کہ اس سے کوئی چیز نکلی نہ ہو جیسا کہ آپ ان شاء اللہ تعالٰی پہچان لیں گے۔ (ت)

سوال ۵۳ پنجم: اسی صورت میں پانی حصہ زیریں قلیل میں تھا اور اس وقت نجاست پڑی اور اُسے نکال کر یا بے نکالے بھر دیا گیا یا بارش و سیل سے بھر گیا کہ آبِ کثیر ہوگیا تو اب بھی اوپر کا حصہ پاک ہے یا نہیں اور حصہ زیریں کا کیا حکم ہے بینوا توجروا۔

الجواب: یہاں اکثر کتب میں منقول تو اس قدر ہے کہ اگر بھر کر اُبل گیا کہ کچھ پانی باہر نکل گیا جب تو پاک ہوگیا کہ جاری ہولیا عہ فافاد زیادۃ القدر دون المساحۃ فقط اھ منہ غفرلہ۔ (م) اس نے مقدار کی زیادتی کا فائدہ دیا ہے صرف پیمائش کا نہیں اھ (ت)

Fatawa Ridawiyyah Volume Two Otherwise, the upper part is also impure, although it is in a large area, because when the lower part was impure, as much water as was added to it became impure. If it had overflowed by filling up, it would have all become pure, but this did not happen, so it remained impure because impure water cannot become pure by a large area. Some have said it will become pure, but the reason for this is not clear. From Bada'i', the saying of Imam Abu al-Qasim Saffar has passed. Also, the phrase from Munyah: "Fa-in imtala'a sara najisan aydan ay kana" (If the pool fills up, it will be impure as it was. - T). In the same, it says after it: "Wa qila la yasiru najisan" (And some said it will not become impure. - T). It is in Hilya: "Wa wajhuhu ghayru zahir" (And its reason is not known. - T). Ghunya said: "Wa al-awwalu asahhu" (And the first is more correct. - T). I say: And with Allah is success. In the humble opinion of this faqir, there are grand discussions here which, according to the assistance of time, will be manifested in some principles and elaborations. And Allah is the Helper and from Him we seek assistance. Principle 1: Every liquid, i.e., a flowing thing, that becomes impure, becomes pure by flowing with water or its own pure kind. And it has been established in Radd al-Muhtar with more than enough detail (And its research in Radd al-Muhtar is in the most complete manner. - T). Principle 2: In order for the ruling of flowing water (Ab-e-Kathir) to apply, just as length, breadth, or area or a certain amount of depth is necessary, for it to be flowing, none of these is a condition. Rainwater is considered flowing as long as it is flowing, even if it is coming from a spout the size of a fist, as they have explicitly stated regarding roof water (As the jurists have stated regarding roof water. - T). Therefore, this ruling applies to every vessel, for example, if there is impure water in a bowl or plate, pour water into it until it fills and starts to overflow; then the water and the vessel will all become pure. Imam Malik al-Ulama stated in Bada'i', at the end of the section 'Ma yaqa'u bihi al-tathir':

Al-Hawd al-Saghir idha tanajjasa qala al-Faqih Abu Ja'far al-Hinduani rahimahullah ta'ala idha dakhala fihi al-ma' al-tahir wa kharaja ba'duhu yuhkamu bi-taharatihi ba'da an la tastabina fihi al-najasatu li-annahu sara jariya wa bihi akhadha al-Faqih Abu al-Layth wa 'ala hadha hawd al-hammam wa al-awani idha tanajjasa	**When a small pool becomes impure, Faqih Abu Ja'far al-Hinduani (may Allah have mercy on him) said: When pure water enters such a pool and some of it goes out, the ruling of its purity will be given, provided that impurity is not evident in it, because it has become flowing. And Faqih Abu al-Layth took this view, and upon this is the ruling for bathhouse pools and vessels when they become impure.**

1 Munyah al-Musalli, Section on Pools, Maktabah Qadriyah Nizamiya Ridawiyyah, Lahore, p. 72 2 Hilya 3 Ghunya al-Mustamli Sharh Munyah al-Musalli, Section on Rulings of Pools, Suhail Academy, Lahore, p. 101 4 Bada'i' al-Sana'i', End of the Section 'Ma yaqa'u bihi al-tathir', H.M. Saeed Company, Karachi, 1/87

फ़तावा रज़विया खण्ड दो वरना ऊपरी हिस्सा भी नापाक है, हालाँकि वह बड़े क्षेत्रफल में है, क्योंकि जब निचला हिस्सा नापाक था, तो उसमें जितना पानी मिलता गया वह नापाक होता गया। अगर वह भरकर उबल जाता तो सब पाक हो जाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ, इसलिए वह नापाक ही रहा क्योंकि नापाक पानी अधिक क्षेत्रफल से पाक नहीं हो सकता। और कुछ ने कहा है कि वह पाक हो जाएगा, लेकिन इसका कारण स्पष्ट नहीं है। 'बदाइ' से इमाम अबुल क़ासिम सफ़्फ़ार का कथन गुज़रा है। साथ ही 'मुन्यह' का कथन: "फ़इन इम्तलाअ सारा नजिसन ऐज़न ऐ काना" (अगर हौज भर जाए तो वह नजिस होगा जैसा कि वह था। - त)। उसी में इसके बाद है: "व क़ीला ला यसीरु नजिसन" (और कुछ ने कहा कि नजिस नहीं होगा। - त)। 'हिल्या' में है: "व वज्हुहू ग़ैरु ज़ाहिर" (और इसका कारण ज्ञात नहीं। - त)। 'ग़ुन्या' में इतना फ़रमाया: "वल अव्वलु असह्हु" (और पहला अधिक सही है। - त)। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की ही तौफ़ीक़ से है। इस फ़क़ीर के विचार में यहाँ महान चर्चाएँ हैं, जिन्हें समय की सहायता के अनुसार कुछ सिद्धांतों और विस्तारों में प्रकट किया जाएगा। अल्लाह ही सहायक है और हम उसी से सहायता माँगते हैं। सिद्धांत १: हर तरल पदार्थ यानी बहती चीज़ जो नापाक हो जाए, वह पानी या अपनी ही जाति की पाक चीज़ के साथ बहने से पाक हो जाती है। और इसे 'रद्दुल मुहतार' में पूर्ण विस्तार के साथ प्रमाणित किया गया है (और इसकी शोध 'रद्दुल मुहतार' में सबसे पूर्ण तरीक़े से है। - त)। सिद्धांत २: बड़े पानी (आबे-कसीर) का नियम लागू होने के लिए, जिस तरह लंबाई-चौड़ाई या क्षेत्रफल या गहराई की एक निश्चित मात्रा आवश्यक है, बहने के लिए इनमें से कुछ भी शर्त नहीं है। बारिश का पानी जब तक बह रहा है, वह बहता हुआ माना जाएगा, चाहे वह एक मुट्ठी भर के परनाले से आ रहा हो, जैसा कि उन्होंने छत के पानी के बारे में स्पष्ट किया है (जैसा कि छत के पानी में फ़ुक़हा ने स्पष्ट कथन किया है। - त)। इसलिए यह नियम हर बर्तन पर लागू होता है, उदाहरण के लिए एक कटोरे या थाली में नापाक पानी हो, तो उसमें पानी डालिए यहाँ तक कि वह भरकर उबलने लगे, तो पानी और बर्तन सब पाक हो जाएंगे। इमाम मलिकुल उलेमा ने 'बदाइ' के'फ़स्ल मा यक़ाउ बिहित ततहीर' के अंत में फ़रमाया:

अल-हौज़ अस-सग़ीर इज़ा तनज्जस क़ाल अल-फ़क़ीह अबू जाफ़र अल-हिन्दुवानी रहिमहुल्लाह तआला इज़ा दख़ल फ़ीहिल माउत-ताहिर व ख़रज बअदुहु युहकम बि-तहारतिहि बअद अन ला तस्तबीन फ़ीहिन-नजासतु लि-अन्नहु सार जारिया व बिही अख़ज़ अल-फ़क़ीह अबुल लैस व अला हाज़ा हौज़ुल हम्माम वल अवानी इज़ा तनज्जस

जब छोटा हौज नापाक हो जाए, फ़क़ीह अबू जाफ़र हिंदुवानी ने फ़रमाया: जब इस प्रकार के हौज में पाक पानी प्रवेश करे और उसमें से कुछ हिस्सा निकल जाए, तो उसकी पवित्रता का निर्णय दिया जाएगा, बशर्ते कि उसमें गंदगी दिखाई न दे, क्योंकि वह बहने वाला हो गया है। और फ़क़ीह अबुल लैस ने इसी को अपनाया है, और इसी पर हमाम के हौज और बर्तनों का नियम है जब वे नापाक हो जाएं।

1. मुन्यतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल हियाज़, मकतबा क़ादिरिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. ७२
2. हिल्या
3. ग़ुन्यतुल मुस्तमली शरह मुन्यतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़ी अहकामिल हियाज़, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. १०१
4. बदाइअस सनाइअ, आख़िर फ़स्ल मा यक़ाउ बिहित ततहीर, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/८७

पृष्ठ ३५३/७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ورنہ اوپر کا حصہ بھی ناپاک ہے اگر چہ مساحت کثیر میں ہے کہ نیچے کا حصہ جبکہ ناپاک تھا تو اس میں جتنا پانی ملتا گیا ناپاک ہوتا گیا اگر بھر کر اُبل جاتا سب پاک ہو جاتا مگر ایسا نہ ہوا تو ناپاک ہی رہا کہ ناپاک پانی کثرت مساحت سے پاک نہیں ہو سکتا اور بعض نے کہا پاک ہو جائیگا اور اس کی وجہ ظاہر نہیں بدائع سے امام ابو القاسم صفار کا قول گزرا نیز عبارت منیہ فان امتلا صار نجسا ایضا ای کان (اگر حوض بھر جائے تو وہ نجس ہو گا جیسا کہ وہ تھا۔ت) اُسی میں اس کے بعد ہے وقیل لا یصیر نجسا (اور بعض نے کہا کہ نجس نہیں ہوگا۔ت) حلیہ میں ہے ووجہہ غیر ظاہر (اور اس کی وجہ معلوم نہیں۔ت) غنیہ میں اتنا فرمایا والاول اصح (اور پہلا زیادہ صحیح ہے۔ت) اقول: وباللہ التوفیق خیال فقیر میں یہاں ابحاث جلیلہ ہیں جن کو بقدر مساعدت وقت چند تاصیلات و تفریعات میں ظاہر کرے واللہ المعین و بہ نستعین۔ اصل ۱: ہر مائع یعنی بہتی چیز کہ ناپاک ہو جائے پانی یا اپنی جنس طاہر کے ساتھ بہنے سے پاک ہو جاتی ہے وقد حققہ فی ردالمحتار بما لا مزید علیہ (اور اس کی تحقیق ردالمختار میں بطریق اتم کی ہے۔ت) اصل ۲: آب کثیر کے حکم جاری ہونے میں جس طرح طول عرض یا مساحت یا ایک مقدارِ عمق بھی ضرور ہے جاری ہونے کیلئے ان میں سے کچھ شرط نہیں مینہ کا پانی جب تک بہہ رہا ہے جاری ہے اگر چہ گرہ بھر کے پرنالہ سے آرہا ہو کما نصوا علیہ فی ماء السطح (جیسا کہ سطح کے پانی میں فقہاء نے نص کی ہے۔ت) ولذا یہ حکم ہر برتن کو شامل ہے مثلاً کٹورے یا تھالی میں ناپاک پانی ہو پانی اس پر ڈالیے یہاں تک کہ بھر کر اُبلنے لگے پانی اور برتن سب پاک ہو جائیں گے امام ملک العلماء نے بدائع آخر فصل مایقع بہ التطہیر میں فرمایا:

الحوض الصغير اذا تنجس قال الفقيہ ابو جعفر الہندوانی رحمہ اللہ تعالیٰ اذا دخل فيہ الماء الطاہر وخرج بعضہ يحكم بطہارتہ بعد ان لاتستبين فيہ النجاسۃ لانہ صار جاريا و بہ اخذ الفقيہ ابو الليث وعلى ہذا حوض الحمام والا وانى اذا تنجس

چھوٹا حوض جب ناپاک ہو جائے، فقیہ ابو جعفر ہندوانی نے فرمایا جب اس قسم کے حوض میں پاک پانی داخل ہو جائے اور اس میں سے کچھ حصہ نکل جائے تو اس کے پاک ہونے کا حکم دیا جائیگا بشرطیکہ اس میں نجاست ظاہر نہ ہو کیونکہ وہ جاری ہو جائیگا، اور یہی فقیہ ابو اللیث کا قول ہے اور اس پر حمام کا

1 منیۃ المصلی فصل فی الحیاض مکتبہ قادریہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۲ 2 حلیہ 3 غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی احکام الحیاض سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۱ 4 بدائع الصنائع آخر فصل مایقع بہ التطہیر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۸۷

Let a pond or a vessel be compared, i.e., in the case of becoming impure. (T) (4) Principle 3: This flow has three pillars: 1. Entry 2. Exit 3. Simultaneity

That is, for example, water enters from one side and some portion exits from the other side, and that exiting must be in the state of that entry, even if it was not so at the beginning of the entry. (1) There is impure water in a lota (vessel); do not pour clean water on it. Just drain that impure water from the spout, then it was only exit without entry. Or (2) there is impure water in half a lota; fill it with clean water so that nothing comes out, then it was just entry without exit, or clean (3) after filling the water, tilt it and drain some from the spout, then exit happened while entry was not maintained. In these three cases, purification will not occur. Rather, (4) keep pouring clean water until it overflows. It will become pure at the moment when the simultaneity of exit and entry occurs, even if until filling the vessel, it was only entry without exit. It is in 'Tabyeen' and 'Fath':

ولو تنجس الحوض الصغير بوقوع نجاسة فيه ثم دخل فيه ماء اخر و خرج الماء منه طهر وان قل اذا كان الخروج حال دخول الماء فيه لانه بمنزلة الجاري 1 -	**And if filth falls into a small pond and it becomes impure, then more water enters and exits, the pond will become pure, even if it is a little, provided it exited as soon as water entered, because it is like flowing water. (T)**

In 'Bahr', writing something similar, it is stated:

صححه في المحيط وغيره وقال السراج الهندي وكذا البئر واعلم ان عبارة كثير منهم تفيد ان الحكم اذا كان الخروج حالة الدخول وهو كذلك فيما يظهر لانه ح يكون في المعنى جاريا لكن اياك وظن انه لو كان الحوض غير ملان فلم يخرج منه شيئ في اول الامر لا يكون طاهرا اذ غايته انه عند امتلائه قبل (٢) خروج الماء	**In 'Muheet' etc., this was declared correct, and Siraj al-Hindi said that the same is the case with a well. It should be known that from the expressions of most scholars it is known that if water comes out as soon as it enters, the ruling is apparently so because it is in the category of flowing water. But do not think that if the pond is not full and initially nothing comes out of it, it will not be pure, because before exiting, until the pond fills, it will be impure, then it will become pure after that amount comes out which provides purification.**

1 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter 'Ashar fi al-'Ashar, Bulaq Egypt 1/22-23. Page 354 of 711

जिल्द सानी (खंड 2) | फ़तावा रज़विया

तालाब या बर्तन की तुलना की जाए, यानी अशुद्ध (नापाक) होने की स्थिति में। (त) (4) नियम 3: इस प्रवाह के तीन स्तंभ हैं: 1- प्रवेश 2- निकास 3- साथ होना (समकालीनता)

यानी उदाहरण के तौर पर पानी एक तरफ से प्रवेश करे और दूसरी तरफ से कुछ हिस्सा बाहर निकले और वह निकलना उसी प्रवेश की स्थिति में हो, भले ही प्रवेश की शुरुआत में ऐसा न हो। (1) लोटे में नापाक पानी है, उस पर पाक पानी न डालें। टोंटी से वही नापाक पानी निकाल दें, तो यह केवल बिना प्रवेश के निकास हुआ। या (2) आधे लोटे में नापाक पानी है, उसे पाक पानी से भर दें कि कुछ बाहर न निकले, तो यह केवल बिना निकास के प्रवेश हुआ। या पाक (3) पानी भरने के बाद झुकाकर टोंटी से कुछ निकाल दें, तो निकास तो हुआ पर प्रवेश बरकरार नहीं रहा। इन तीनों स्थितियों में पवित्रता नहीं होगी। बल्कि, (4) पाक पानी डालते रहें यहाँ तक कि भरकर उबलना शुरू हो जाए। उस समय पाक होगा जब एक ऐसा वक्त आएगा कि निकास और प्रवेश एक साथ हो जाएँगे, भले ही बर्तन भरने तक केवल बिना निकास के प्रवेश ही था। 'तबीन' और 'फ़तह' में है:

ولو تنجس الحوض الصغير بوقوع نجاسة فيه ثم دخل فيه ماء اخر و خرج الماء منه طهر وان قل اذا كان الخروج حال دخول الماء فيه لانه بمنزلة الجاري 1 -

और अगर छोटे तालाब में गंदगी गिर जाए और वह नापाक हो जाए फिर उसमें और पानी प्रवेश करे और निकल जाए तो तालाब पाक हो जाएगा चाहे थोड़ा ही हो जब कि पानी प्रवेश करते ही निकल गया हो क्योंकि वह बहते हुए (पानी) के समान है। (त)

'बहर' में इसी के समान लिखकर फ़रमाया:

صححه في المحيط وغيره وقال السراج الهندي وكذا البئر واعلم ان عبارة كثير منهم تفيد ان الحكم اذا كان الخروج حالة الدخول وهو كذلك فيما يظهر لانه ح يكون في المعنى جاريا لكن اياك وظن انه لو كان الحوض غير ملان فلم يخرج منه شيئ في اول الامر لا يكون طاهرا اذ (٢) غايته انه عند امتلائه قبل خروج الماء

'मुहीत' वगैरह में इसको सही करार दिया और सिराज अल-हिंदी ने फ़रमाया और इसी तरह कुएं का हाल है और जानना चाहिए कि अधिकतर उलेमा के शब्दों से मालूम होता है कि जब पानी प्रवेश करते ही निकल जाए तो हुक्म ज़ाहिरन ऐसा ही है क्योंकि यह जारी (बहते पानी) के हुक्म में है लेकिन आप यह गुमान न करें कि अगर तालाब भरा हुआ न हो और उसमें से शुरुआत में कुछ न निकले तो वह पाक न होगा क्योंकि तालाब भरने तक निकलने से पहले नापाक हो जाएगा फिर वह इतनी मात्रा के निकलने के बाद पाक हो जाएगा जिससे पाकी (पवित्रता) हो।

1 तबीन अल-हकाइक, बहस 'अशर फ़ि अल-'अशर, बुलाक मिस्र 1/22-23। पृष्ठ 354 का 711

حوض یا برتن قیاس کیا جائے ، یعنی نجس ہونے کی صورت میں۔ (ت) (۴) اصل ۳ : اس جریان کے تین رکن ہیں : ۱- دخول ۲- خروج ۳- معیت

یعنی مثلاً پانی ایک طرف سے داخل ہو اور دوسری طرف سے کچھ حصہ خارج ہو اور وہ نکلنا اُسی داخل ہونے کی حالت میں ہو اگرچہ ابتدائے دخول میں نہ ہو۔ (۱) لوٹے میں ناپاک پانی ہے اُس پر پاک پانی نہ ڈالیے۔ ٹونٹی سے وہی ناپاک پانی نکال دیجیے تو صرف خروج بلا دخول ہوا یا (۲) آدھے لوٹے میں ناپاک پانی ہے پاک پانی سے بھر دیجیے کہ کچھ نکلے نہیں تو محض دخول بلا خروج ہو ایا پاک (۳) پانی بھرنے کے بعد جھکا کر ٹونٹی سے کچھ نکال دیجیے تو خروج بحال دخول نہ ہوا، ان تینوں صورتوں میں طہارت نہ ہوگی بلکہ پاک (۴) پانی ڈالتے رہیے یہاں تک کہ بھر کر اُبلنا شروع ہو اُس وقت پاک ہوگا کہ ایک وقت وہ آیا کہ خروج و دخول کی معیت ہو گئی اگرچہ برتن بھرنے تک صرف دخول بلا خروج تھا۔ تبیین و فتح میں ہے:

ولو تنجس الحوض الصغير بوقوع نجاسة فيه ثم دخل فيه ماء اخر و خرج الماء منه طهر وان قل اذا كان الخروج حال دخول الماء فيه لانه بمنزلة الجاري - 1 (ت)

اور اگر چھوٹے حوض میں نجاست گر گئی اور وہ نجس ہو گیا پھر اس میں اور پانی داخل ہو گیا اور نکل گیا تو حوض پاک ہو جائیگا خواہ کم ہی ہو جبکہ پانی داخل ہوتے ہی نکل گیا ہو کیونکہ وہ بمنزلہ جاری کے ہے۔

بحر میں اسی کی مثل لکھ کر فرمایا:

صححه في المحيط وغيره وقال السراج الهندي وكذا البئر واعلم ان عبارة كثير منهم تفيد ان الحكم اذا كان الخروج حالة الدخول وهو كذلك فيما يظهر لانه ح يكون في المعنى جاريا لكن اياك وظن انه لو كان الحوض غير ملان فلم يخرج منه شيئ في اول الامر لا يكون طاهرا اذ (٢) غايته انه عند امتلائه قبل تک نکلنے سے پہلے ناپاک ہو جائیگا پھر وہ اتنی مقدار خروج الماء کے نکلنے کے بعد پاک ہو جائیگا جس سے طہارت

محیط وغیرہ میں اس کو صحیح قرار دیا اور سراج ہندی نے فرمایا اور اسی طرح کنویں کا حال ہے اور جاننا چاہئے کہ اکثر علماء کی عبارت سے معلوم ہوتا ہے جبکہ پانی داخل ہوتے ہی نکل جائے تو حکم بظاہر ایسا ہی ہے کیونکہ یہ جاری کے حکم میں ہے لیکن آپ یہ گمان نہ کریں کہ اگر حوض بھرا ہوا نہ ہو اور اس میں سے ابتداً کچھ نہ نکلے تو وہ پاک نہ ہوگا کیونکہ حوض بھرنے

1 تبیین الحقائق بحث عشر فی العشر بولاق مصر ١/ ٢٢-٢٣ Page 354 of 711

Fatawa Ridawiyya - Volume 2

[Arabic Box Left]: ...is impure, then it becomes pure by the exit of an amount related to purification when pure and purifying water is connected to it, as if it were initially filled with impure water and then that amount exited because flowing water was connected to it. As mentioned in Sharh al-Munya. "Ah" - he refers to Hilyah by Imam Ibn Amir al-Hajj. (T)

[Urdu Box Right]: ...when pure and purifying water is connected to it that is flowing, just as it was in the case of being initially filled, meaning it contained impure water then an amount exited because flowing water was connected to it, as in Sharh al-Munya. By this, he means the Hilyah of Ibn Amir al-Hajj. (T)

Yes, scholars have also considered removal as 'exit' in cases of necessity, such as (1) the pool of a bathhouse where someone has put an impure hand. If people are taking water from it but water is not coming into it from a pipe, or water is coming from a pipe but people are not taking water from it, it will become impure because only one of either exit or entry is found. And if water is coming from the pipe on one side and people's taking water from it is continuing on the other side such that the movement of the water does not let it become stagnant, then it is under the ruling of flowing water and will not be impure. This is the ruling upon which the Fatwa is based, as mentioned in Al-Hindiyyah:

[Arabic Box Left]: The pool of a bathhouse is pure. If a person puts his hand into the pool and there is impurity on it, if the water was stagnant such that nothing enters it from its pipe and no person is scooping from it with a bowl, it becomes impure. And if people are scooping but water does not enter from the pipe, or vice-versa, then most scholars are of the opinion that it becomes impure. And if people are scooping and water enters from the pipe, then most scholars are of the opinion that it does not become impure. This is how it is in Fatawa Qadhi Khan and upon it is the Fatwa, as mentioned in Al-Muhit.

[Urdu Box Right]: The pool of a bathhouse is pure. If a person puts his hand into the pool and there was impurity on the hand, if the water was stagnant such that nothing enters it from its pipe and no person is scooping from it with a bowl, then it will become impure. And if these people are taking water by the handful and water does not enter from the pipe, or vice-versa, then most scholars are of the opinion that it will become impure. And if people are taking it by the handful and water

enters from the pipe, then most scholars are of the opinion that it will not be impure. Similarly, it is in Fatawa Qadhi Khan and upon this is the Fatwa, as in Al-Muhit. (T)

1. Bahr al-Ra'iq, discussion on 'Ashr fi al-'Ashr, H.M. Saeed Company Karachi 7/87
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter One regarding what is permissible for ablution, Noorani Kutub Khana Peshawar 18/1

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी बॉक्स]: ...नापाक है, तो वह तहारत (पवित्रता) से संबंधित मात्रा के निकलने से पाक हो जाता है जब उसके साथ पाक और पवित्र करने वाला पानी मिला हो जो बह रहा हो, जैसे कि शुरुआत में नापाक पानी से भरा होने पर था, फिर उसमें से उतनी मात्रा निकल गई क्योंकि बहता हुआ पानी उससे जुड़ गया, जैसा कि शरह अल-मुनिया में है। 'अह' (अंत) - इससे उनका तात्पर्य इमाम इब्न अमीर अल-हज की हिल्या है। (त)

[उर्दू बॉक्स]: ...जब उसके साथ ताहिर और तहूर पानी मुत्तसिल (जुड़ा) हो जो जारी हो, जैसा कि इब्तिदा (शुरुआत) में भरा होने की सूरत में था, यानी उसमें नजिस (नापाक) पानी था फिर उसमें से उतनी मिकदार (मात्रा) निकल गई क्योंकि उसके साथ जारी पानी मुत्तसिल हुआ, कज़ा फी शरह अल-मुनिया। इससे उनकी मुराद इब्न अमीर अल-हज की हिल्या है। (त)

हाँ, उलेमा ने ज़रूरत के मौकों पर पानी के निकालने (इख़राज) को भी 'खुरूज' माना है, जैसे (1) हमाम का हौज कि उसमें किसी ने नापाक हाथ डाल दिया। अगर लोग उसमें से पानी ले रहे हैं लेकिन नल से पानी उसमें नहीं आ रहा है, या नल से पानी आ रहा है लेकिन लोग उसमें से पानी नहीं निकाल रहे हैं, तो वह नापाक हो जाएगा क्योंकि खुरूज या दाखुल (प्रवेश) में से केवल एक ही पाया गया। और अगर उधर नल से पानी आ रहा है और उधर लोगों का उसमें से लेना बराबर जारी है कि पानी की जुंबिश (हलचल) उसे साकिन (स्थिर) नहीं होने देती, तो वह जारी (बहते हुए) पानी के हुक्म में है और नापाक नहीं होगा। इसी पर फतवा है, हिन्दिया में है:

[अरबी बॉक्स]: हमाम का हौज पाक है। अगर किसी व्यक्ति ने हौज में अपना हाथ डाला और हाथ पर नजासत (गंदगी) थी, अगर पानी साकिन था ऐसा कि उसमें उसकी नली से कोई चीज़ दाख़िल न हो और कोई इंसान उसमें से प्याले से न निकाल रहा हो, तो वह नापाक हो जाएगा। और अगर लोग उसमें से इग़तिराफ़ (निकालना) कर रहे हों और नली से पानी दाख़िल न होता हो या इसके विपरीत हो, तो अक्सर उलेमा का ख़्याल है कि वह नापाक हो जाएगा। और अगर लोग उससे इग़तिराफ़ कर रहे हों और नली से पानी दाख़िल होता हो, तो अक्सर उलेमा का ख़्याल है कि वह नापाक नहीं होगा। इसी तरह फतावा काज़ी खान में है और इसी पर फतवा है, जैसा कि अल-मुहीत में है।

[उर्दू बॉक्स]: हमाम का हौज पाक है अगर किसी शख्स ने हौज में अपना हाथ डाला और हाथ पर नजासत थी अगर पानी साकिन था ऐसा कि उसमें कोई चीज़ उसकी नाली से दाख़िल न हो और कोई

इंसान उसमें से प्याले से न निकाल रहा हो तो वह नापाक हो जाएगा और अगर ये लोग इसमें से चुल्लू भर कर पानी लेते हों और नाली से पानी दाख़िल न होता हो या बरअक्स (विपरीत) हो तो अक्सर उलेमा का ख़्याल है कि वह नापाक हो जाएगा और अगर लोग उससे चुल्लू भर कर लेते हों और नाली से पानी दाख़िल होता हो तो अक्सर उलेमा का ख़्याल है कि वह नापाक न होगा इसी तरह फतावा काज़ी खान में है और इसी पर फतवा है, कज़ा फी अल-मुहीत। (त)

1. बहर अल-रैक, बहस अश्र फी अश्र, एच.एम. सईद कंपनी कराची 7/87
2. फतावा हिन्दिया, अल-फसल अल-अव्वल फीमा यजूज़ु बिह अल-तवज्जु, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 18/1

पृष्ठ 355/711

[عربی باکس]: منه نجس فیطهر بخروج القدر المتعلق به الطهارة اذا اتصل به الماء الجاری الطهور کما لو کان ممتلئا ابتداء ماء نجسا ثم خرج منه ذلك القدر لاتصال الماء الجاری به کذا فی شرح المنیة اھ۔ یرید حلیة الامام ابن امیر الحاج۔

[اردو باکس]: متعلق ہو جبکہ اس کے ساتھ طاہر اور طہور پانی متصل ہو جو جاری ہو جیسا کہ ابتداءً بھرا ہونے کی صورت میں تھا، یعنی اس میں نجس پانی تھا پھر اس میں سے اتنی مقدار نکل گئی کیونکہ اس کے ساتھ جاری پانی متصل ہوا، کذا فی شرح المنیہ اھ اس سے ان کی مراد ابن امیر الحاج کی حلیہ ہے۔ (ت)

ہاں علماء نے مواضع ضرورت میں اخراج کو بھی خروج رکھا ہے جیسے (۱) حمام کا حوض کہ اس میں کسی نے ناپاک ہاتھ ڈال دیا اگر لوگ اس میں سے پانی لے رہے ہیں مگر نل سے پانی اس میں نہیں آتا یا نل سے پانی آرہا ہے مگر لوگ اس میں سے پانی نکال نہیں رہے تو ناپاک ہو جائیگا کہ خروج یادخول ایک پایا گیا اور اگر اُدھر نل سے پانی آرہا ہے اور اُدھر لوگوں کا اس میں سے لینا برابر جاری ہے کہ پانی کی جنبش ساکن نہیں ہونے پاتی تو جاری کے حکم میں ہے ناپاک نہ ہوگا، اسی پر فتوٰی ہے، ہندیہ میں ہے:

[عربی باکس]: حوض الحمام طاهر فان ادخل رجل یده فی الحوض وعلیها نجاسة ان کان الماء ساکنا لایدخل فیه شیئ من انبوبه ولا یغترف منه انسان بالقصعة یتنجس وان کان الناس یغترفون ولا یدخل من الانبوب ماء او علی العکس فاکثرهم علی انه یتنجس وان کان الناس یغترفون ویدخل من الانبوب فاکثرهم علی انه لایتنجس هکذا فی فتاوٰی قاضی خان وعلیه الفتوی کذا فی المحیط۔

[اردو باکس]: حمام کا حوض پاک ہے اگر کسی شخص نے حوض میں اپنا ہاتھ ڈالا اور ہاتھ پر نجاست تھی اگر پانی ساکن تھا ایسا کہ اس میں کوئی چیز اس کی نالی سے داخل نہ ہو اور کوئی انسان اس میں سے پیالہ سے نہ نکال رہا ہو تو وہ ناپاک ہو جائے گا اور اگر یہ لوگ اس میں سے چلّو بھر کر پانی لیتے ہوں اور نالی سے پانی داخل نہ ہوتا ہو یا برعکس ہو تو اکثر علماء کا خیال ہے کہ وہ ناپاک ہو جائیگا اور اگر لوگ اس سے چلّو بھر کر لیتے ہوں اور نالی سے پانی داخل ہوتا ہو تو اکثر علماء کا خیال ہے کہ وہ ناپاک نہ ہو گا اسی طرح فتاوٰی قاضی خان میں ہے اور اسی پر فتوٰی ہے کذا فی المحیط۔ (ت)

1 بحر الرائق بحث عشر فی العشر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/۸۷ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فیما یجوز بہ التوضؤ نورانی کتب خانہ پشاور ۱۸/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 2 (1) Similarly, in an ablution pool as well, if water is coming through a pipe and people are continuously taking it (Footnote 1), such that the water does not get to settle, it will not become impure. It is stated in Alamgiriyah:

Arabic Text	Urdu Translation
A small pool became impure, then pure water entered from one side and the water of the pool flowed out from another side; Faqih Abu Ja'far (may Allah have mercy on him) used to say: just as it flowed, the pool is judged to be pure. This was chosen by Sadr ash-Shahid (may Allah have mercy on him), as mentioned in al-Muhit. In an-Nawazil it is mentioned: this is what we adopt, and similarly in at-Tatarkhaniyah. If water enters and does not flow out, but people scoop from it continuously and consecutively, it becomes pure, as mentioned in az-Zahiriyah. Consecutive scooping means that the surface of the water does not become still between two scoops, as mentioned in az-Zahidi.	A small pool became impure, then pure water entered from one side and the water of the pool flowed out from the other side. Faqih Abu Ja'far used to decree the purity of this pool, and this was the preferred view of Sadr al-Shahid, as in al-Muhit. In Nawazil, it says we adopt this. Similarly in Tatarkhaniyah. And if water entered and did not flow out, but people kept taking continuous scoops from it, then it will become pure as in al-Zahiriyah. And continuous scooping means that between two scoops, the water does not become still, as in al-Zahidi. (T)

Another reference for this comes from Fatawa Khulasah (i.e., in the fourth chapter). (2) Allama Khayr al-Ramli also included the well in this ruling (Footnote 2), when water is bubbling from springs and the wheel is continuously operating above, water coming from one side and exiting from the other. In this state, it will not become impure due to filth. Yes, if visible filth was left in it and drawing water stopped for so long that the water settled and movement ceased, then it will become impure. It is in Minhat al-Khaliq:

Arabic Text	Urdu Translation
And they included the bathhouse pool in the ruling of running water. Al-Ramli said...	And scholars have equated the bathhouse pool with running water.

Footnote 1: Similarly, if someone is bathing on its edge such that water is constantly flowing out. In Tatarkhaniyah then in Radd al-Muhtar it says:

Arabic Text

If water enters it and does not exit from it, but there is a person bathing in it and the water exits from his bathing from the other side continuously, it does not become impure through him. May he be forgiven. (M)

Urdu Translation

If water is entering the pool and not exiting, but a person is bathing there and the water from his bathing is continuously exiting from the other side, then it will not be impure. (T)

Footnote 2: Its complete support comes at the end of Tanbeeh Jaleel. 12 Minhu Ghafira Lahu (M)

1 Fatawa Hindiyyah, First Chapter on what is permissible for ablution, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/17. Page 356 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2) (1) इसी तरह वुज़ू के हौज में भी अगर नाली से पानी आ रहा है और लोग बराबर ले रहे हैं (फुटनोट 1) कि पानी ठहरने नहीं पाता, तो वह नापाक नहीं होगा। आलमगीरिया में है:

अरबी मूल पाठ

एक छोटा हौज नापाक हो गया, फिर उसमें एक तरफ़ से पाक पानी दाखिल हुआ और हौज का पानी दूसरी तरफ़ से बह निकला; फ़कीह अबू जाफ़र (अल्लाह उन पर रहम करे) फ़रमाते थे: जैसे वह बहा, हौज की पाकी का हुक्म दिया जाएगा। यही सद्र अल-शहीद (अल्लाह उन पर रहम करे) का पसंदीदा मत है, जैसा कि अल-मुहीत में है। अल-नवाज़िल में है: हम इसे ही अपनाते हैं, और इसी तरह अल-तातारखानीया में भी है। अगर पानी दाखिल हुआ और बाहर नहीं निकला, लेकिन लोग उससे लगातार चुल्लू भरते रहे, तो वह पाक हो जाएगा जैसा कि अल-ज़हीरिया में है। और लगातार चुल्लू भरने का मतलब यह है कि दो चुल्लुओं के बीच पानी शांत न होने पाए, जैसा कि अल-ज़ाहीदी में है।

उर्दू अनुवाद

छोटा हौज नापाक हो गया फिर इसमें एक तरफ़ से पाक पानी दाखिल हुआ और हौज का पानी दूसरी जानिब से बह निकला तो फ़कीह अबू जाफ़र इस हौज की तहारत (पाकी) का हुक्म देते थे, और यही सद्र अल-शहीद का मुख़्तार (पसंदीदा) है जैसा कि अल-मुहीत में है, और नवाज़िल में है, इसी को हम इख़्तियार करते हैं, इसी तरह तातारखानीया में है और अगर पानी दाखिल हुआ और न निकला लेकिन लोग इससे मुसलसल चुल्लू भर लेते रहे तो वह पाक होगा जैसा कि अल-ज़हीरिया में और मुसलसल चुल्लू भरना यह है कि दो चुल्लुओं के दरमियान पानी पुर-सुकून न हो जैसा कि अल-ज़ाहीदी में। (त)

इसकी दूसरी सनद फ़तावा खुलासा से आती है (यानी चौथे फ़स्ल में)। (2) अल्लामा ख़ैर अल-रमली ने कुएं को भी इसी हुक्म में (फुटनोट 2) शामिल किया है जबकि सोतों (झरनों) से पानी उबल रहा हो और ऊपर से बराबर चर्ख़ (पहिया) चल रहा हो, इधर से आता और उधर से निकलता हो। इस हालत में नजासत (गंदगी) से नापाक न होगा। हाँ, अगर दिखाई देने वाली नजासत उसमें रहने दी और पानी खींचना इतनी देर रुक गया कि पानी ठहर गया और हरकत बंद हो गई, तो अब नापाक हो जाएगा। मिन्हात अल-खालिक़ में है:

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद
और उन्होंने हम्माम के हौज को बहते पानी के हुक्म में शामिल किया। अल-रमली ने कहा...	और जारी (बहते) पानी से उलमा ने हम्माम के हौज को मिला दिया।

फुटनोट 1: इसी तरह अगर इस किनारे पर कोई नहा रहा है कि पानी बराबर निकल रहा है, ततारखानीया फिर रद अल-मुहतार में है:

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद
अगर उसमें पानी दाखिल हो रहा हो और उससे बाहर न निकल रहा हो, लेकिन उसमें कोई इंसान गुस्ल (स्नान) कर रहा हो और उसके गुस्ल से पानी दूसरी तरफ़ से लगातार निकल रहा हो, तो वह उसके कारण नापाक नहीं होगा। उनकी मग़फ़िरत हो। (म)	अगर पानी हौज में दाखिल हो रहा हो और उससे निकल न रहा हो लेकिन कोई आदमी वहाँ गुस्ल कर रहा हो और उसके गुस्ल का पानी मुसलसल दूसरी जानिब निकल रहा हो तो वह नजिस न होगा। (त)

फुटनोट 2: इसकी मुकम्मल ताईद 'तन्बीह जलील' के आख़िर में आती है। 12 मिन्हु ग़फ़र लहु (म)

1 फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल अव्वल वुज़ू के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/17. पेज 356 ऑफ़ 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی (۱) اسی طرح وضو کے حوض میں بھی اگر نالی سے پانی آرہا ہے اور لوگ برابر لے رہے ہیں عہ۱ کہ پانی ٹھہرنے نہیں پاتا ناپاک نہ ہوگا۔ عالمگیریہ میں ہے:

عربی عبارت

حوض صغیر تنجس فدخل الماء الطاہر من جانب وسال ماء الحوض من جانب آخر کان الفقیہ ابو جعفر رحمہ اللہ تعالٰی یقول کما سال یحکم بطہارۃ الحوض وھو اختیار الصدر الشہید رحمہ اللہ تعالٰی کذا فی المحیط وفی النوازل وبہ ناخذ کذا فی التتارخانیۃ وان دخل الماء ولم یخرج ولکن الناس یغترفون منہ اغترافا متدارکا طہر کذا فی الظہیریۃ والغرف المتدارک ان لا یسکن وجہ الماء فیما بین الغرفتین کذا فی الزاھدی۔

اردو ترجمہ

چھوٹا حوض ناپاک ہو گیا پھر اس میں ایک طرف سے پاک پانی داخل ہوا اور حوض کا پانی دوسری جانب سے بہ نکلا تو فقیہ ابو جعفر اس حوض کی طہارت کا حکم دیتے تھے، اور یہی صدر الشہید کا مختار ہے کذا فی المحیط، اور نواز ل میں ہے، اسی کو ہم اختیار کرتے ہیں، اسی طرح تتارخانیہ میں ہے اور اگر پانی داخل ہوا اور نہ نکلا لیکن لوگ اس سے مسلسل چلو بھر لیتے رہے تو وہ پاک ہوگا کذا فی الظہیریہ اور مسلسل چلو بھرنا یہ ہے کہ دو چلوؤں کے درمیان پانی پُر سکون نہ ہو کذا فی الزاھدی۔ (ت)

اس کی دوسری سند فتاوٰی خلاصہ سے آتی ہے (یعنی فصل چہارم میں) (۲) علامہ خیر رملی نے کُنواں بھی اسی حکم میں عہ۲ داخل کیا جبکہ سوتوں سے پانی اُبل رہا ہو اور اوپر سے برابر چرخ چل رہا ہو دھر سے آتا ادھر سے نکل رہا ہو اس حالت میں نجاست سے ناپاک نہ ہوگا ہاں نجاست مرئیہ اس میں رہنے دی اور پانی کھینچنا اتنی دیر موقوف ہو گیا کہ پانی ٹھہر گیا جنبش جاتی رہی تو اب ناپاک ہو جائیگا۔ منحۃ الخالق میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
والحقوا بالجاری حوض الحمام قال الرملي	اور جاری پانی سے علماء نے حمّام کے حوض کو ملا دیا،

عہ۱: یونہی اگر اس کنارے پر کوئی نہار رہا ہے کہ پانی برابر نکل رہا ہے تاتارخانیہ پھر ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لو کان یدخلہ الماء ولا یخرج منہ لکن فیہ انسان یغتسل ویخرج الماء باغتسالہ من الجانب الآخر متداركا لا یتنجس منہ غفر لہ(م)	اگر پانی حوض میں داخل ہو رہا ہو اور اس سے نکل نہ رہا ہو لیکن کوئی آدمی وہاں غسل کر رہا ہو اور اس کے غسل کا پانی مسلسل دوسری جانب نکل رہا ہو تو وہ نجس نہ ہوگا۔(ت)

عہ۲ اس کی کامل تائید تنبیہ جلیل کے آخر میں آتی ہے ۱۲ منہ غفرلہ (م)

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فیما یجوز بہ التوضؤ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۷ Page 356 of 711

I say: It is more appropriate to include those specific wells in our country that have waterwheels under the ruling of flowing water, as water gushes from their bottom. The drawing of water from them with buckets is continuous, even more so than the scooping of water from a bathroom basin. Therefore, there is no doubt that the ruling for their water is that of flowing water. If an impurity falls into the well while it is in operation and the water is flowing, the water will not become impure. Reflect on this, and Allah knows best. (T)

Principle 4: I say: (1) Although in the correct school of thought, there is no specific quantity required for this outflow; even the slightest bubbling is sufficient, provided that 'flowing' is applicable to it.

As previously mentioned from Al-Bada'i: "and some of it flowed out," and from Al-Tabyin, Al-Fath, and Al-Bahr: "even if it is a little," and from Al-Muheet: "as it flowed," and this indicates immediacy. As mentioned from Al-Bada'i that "some of it flowed out" and in Tabyin, Fath, Bahr it is "even if it is a little" and from Muheet it is "as it flowed" meaning immediately flowing; the 'ka' in 'kama' gives the meaning of immediately. (T)

In Al-Hilya it is stated: In 'Al-Mubtaghi' with the letter 'ghayn', and this is correct. In 'Al-Muheet' by Radi al-Din, it is mentioned as 'it is the most correct'. Similarly, the state of the well is the same because when flowing water connects with it, it falls under the ruling of flowing water. (T)

However, there is no doubt that as long as this flow does not end, the ruling of flowing will not be interrupted, as it is a single continuous movement. There is no sense in considering part of it as moving/flowing and the rest as stagnant or still.

For this reason, it was permissible for whoever added to add, meaning they did not consider mere flowing sufficient for the ruling of flowing, but rather stipulated movement. And for this reason, it is permissible for the person who added that it should be more, meaning it was not sufficient for the ruling of being flowing.

1. Minhat al-Khaliq on the margin of Bahr al-Ra'iq, discussion on flowing water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/86.
2. Al-Hilya.

मैं कहता हूँ: यह अधिक उपयुक्त है कि हमारे देश के उन विशिष्ट कुओं को जिनमें रहट (waterwheel) लगे होते हैं, बहते पानी के हुक्म में शामिल किया जाए, क्योंकि पानी उनके तल से फूटता है। बाल्टियों के माध्यम से उनसे पानी निकालना निरंतर होता है, यह निरंतरता स्नानघर के हौज (basin) से पानी निकालने से कहीं अधिक है। इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके पानी का हुक्म बहते पानी का है। यदि कुएँ के चलने और पानी के बहने की स्थिति में कोई अपवित्रता कुएँ में गिर जाए, तो पानी अशुद्ध नहीं होगा। इस पर विचार करें, और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

सिद्धांत 4: मैं कहता हूँ: (1) यद्यपि सही मज़हब में इस बहाव के लिए कोई विशेष मात्रा आवश्यक नहीं है; यहाँ तक कि न्यूनतम उबलना (bubbling) भी पर्याप्त है, जिस पर 'बहना' (silan) शब्द लागू हो सके।

जैसा कि अल-बदई' से पहले उल्लेख किया गया है: "और उसका कुछ हिस्सा बाहर निकल गया," और अल-तबयीन, अल-फतह और अल-बह्र से: "चाहे वह कम ही क्यों न हो," और अल-मुहीत से: "जैसे वह बहा," और यह तुरंत होने का संकेत देता है। जैसा कि बदई' से गुज़रा कि "उसका कुछ हिस्सा बाहर निकला" और तबयीन, फतह, बह्र में है कि "चाहे वह कम हो" और मुहीत से है "जैसे वह बहा" यानी तुरंत बहने पर, 'कमा' में 'काफ' तुरंत होने का अर्थ देता है। (त)

अल-हिलया में है: 'अल-मुबतगी' (غين معجمہ के साथ) में है और यही सही है। रज़ीउद्दीन के'अल-मुहीत' में है कि 'यही सबसे सही है'। इसी तरह कुएँ का हाल है क्योंकि जब बहता पानी उससे जुड़ गया तो वह बहते पानी के हुक्म में हो गया। (त)

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब तक यह बहाव समाप्त नहीं होगा, बहने का हुक्म नहीं टूटेगा, क्योंकि वह एक निरंतर गति है। उसके कुछ हिस्से को गतिशील/बहता हुआ और बाकी को ठहरा हुआ मानना अर्थहीन है।

इसीलिए, जिसने अतिरिक्त शर्त जोड़ी उसके लिए यह जायज़ था, अर्थात उसने केवल बहने को बहते पानी के हुक्म के लिए पर्याप्त नहीं माना बल्कि गति (movement) की शर्त रखी। और इसीलिए उस

व्यक्ति के लिए जायज़ है जिसने ज़्यादा किया कि ज़्यादा हो, यानी बहने के हुक्म के लिए पर्याप्त न हुआ।

1. मिन्हत अल-खालिक, बह्र अर-राईक के हाशिये पर, बहते पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/86।
2. हिलया।

पेज 357 ऑफ़ 711

اقول وبالأولی إلحاق الآبار المعینة التی علیها الدولاب ببلادنا اذ الماء ینبع من اسفلها والغرف فیها بالقواد لیس متدارك فوق تدارك الغرف من حوض الحمام فلا شک فی ان حکم مائها حکم الجاری فلو وقع فی حال الدوران فی البئر والحال هذه نجاسة لای نجس تأمل والله تعالی اعلم۔

رملی کہتے ہیں میں کہتا ہوں وہ کنوئیں جن پر ہمارے ملک میں رہٹ ہوتا ہے ان کو جاری پانی سے ملانا بطریق اولی ہوگا، کیونکہ پانی ان کے نیچے سے نکلتا ہے اور ڈولوں کے ذریعے سے ان سے پانی نکالنا تسلسل کے ساتھ ہوتا ہے یہ تسلسل اس سے کہیں زائد ہے جو حوض کے حمام سے چلو بھرنے سے ہوتا ہے تو اس میں شک نہیں کہ ان کے پانی کا حکم جاری پانی کا ہے تو اگر اس حالت میں پانی کے چلتے وقت نجاست کنویں میں گر جائے تو پانی ناپاک نہ ہوگا تامل واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

اصل ۴: اقول: (۱) اگرچہ مذہب صحیح میں اس خروج کیلئے کوئی مقدار نہیں ادنٰی ابلانا کافی ہے جس پر سیلان صادق آئے،

کما تقدم عن البدائع وخرج بعضه وعن التبیین والفتح والبحر وان قل وعن المحیط کما سال وهذه کاف الفور۔

جیسا کہ بدائع سے گزرا کہ وخرج بعضہ اور تبیین، فتح، بحر میں ہے کہ وان قل اور محیط سے ہے کما سال یعنی فوراً بہنے پر، کما میں کاف فوراً کا معنی دیتا ہے۔(ت)

حلیہ میں ہے:

فی المبتغی بالغین المعجمۃ ھو الصحیح وفی محیط رضی الدین ھو الاصح وکذلك البیر علی ھذا لان الماء الجاری لما اتصل بہ صار فی الحکم جاریاً-2

مبتغی میں ہے غین معجمہ سے اور یہی صحیح ہے اور محیط رضی الدین میں ہے ھو الاصح، اور اسی طرح کنویں کا حال ہے کیونکہ جب جاری پانی اس سے متصل ہوگیا تو جاری کے حکم میں ہو گیا۔(ت)

مگر شک نہیں کہ یہ بہاؤ جب تک منتبہی نہ ہوگا حکم جریان منقطع نہ ہوگا کہ وہ حرکت واحدہ مستمرہ ہے اس کے بعض پر متحرک کو جاری اور باقی پر راکد و واقف ماننے کے کوئی معنی نہیں۔

ولھذا ساغ لمن زادان یزید ای لم یکتف لحکم الجریان بمجرد السیلان بل شرط حرکۃ

اور اسی لئے جائز ہے اس شخص کے لئے جس نے زائد کیا کہ زائد ہو یعنی کافی نہ ہوا جاری ہونے کے حکم کے لئے

1 منحۃ الخالق علی حاشیۃ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۶ 2 حلیہ

Fatawa Razawiyya Volume II

[Arabic]: ...abundant [flow] to be relied upon. If this liquid were not from that water whose flowing was required, then the addition would not have been beneficial. (T) [Urdu]: Simply flowing is not enough; rather, the condition is that there should be sufficient movement that is considerable. Because if this flowing water were not part of the water whose flow is required, then there would be no benefit from this addition. (T)

Quoted in Fatawa Khulasa: [Arabic]: If the pool (hawd) fills up and overflows from the bank in the form of a flow until it reaches the plantation (mushajjarah), it becomes pure. However, if it is only the size of an arm's length or two, it does not. (T) [Urdu]: If the pool fills up and water flows out from the edge reaching the plantation, it will become pure; in any case, if it's only one or two arm's lengths, it won't be. (T)

In Zahiriyyah (1) it is explicitly stated that in this overflowing water which is coming out, the water inside has become pure, and the water coming outside is also pure and purifying. To the extent that if the water continues to flow out and someone performs ablution (wudu) from it, or collects it in a vessel after it accumulates somewhere and then performs wudu, the wudu is valid. It is obvious that the water from the initial flow would not be enough to perform wudu. In Radd al-Muhtar it is mentioned:

[Arabic side]: In Al-Zahiriyyah, the correct view is that it becomes pure even if an amount equal to what was in the pool does not flow out. And if a person takes some of that water which came out and performs wudu with it, it is permissible. [Al-Shami] said: But in Zahiriyyah itself, it is mentioned that if an impure pool fills with water and its water overflows over its sides and then the sides dry, it will not become pure. And it is said that it becomes pure. And in it, if it fills up and the water is absorbed into its sides, it does not become pure unless the water flows out from another side. In Al-Khulasa, the chosen view is that it becomes pure even if an amount equal to what was in it does not flow out. So if the pool fills up and water flows out from the bank until the end of what we have narrated, and the discourse ended on the statement "let him reflect". And a matter was mentioned after it.

[Urdu side]: In Zahiriyyah, it is stated that the correct view is that it becomes pure even if an amount equal to what was in the pool does not flow out. And if a person takes some of that water which came out and performs wudu with it, it is permissible. "Sh" (Shami) said: But in Zahiriyyah itself, it is mentioned that if an

impure pool fills with water and its water overflows over its sides and then the sides dry, it will not become pure. "And there is a saying that it will become pure." And in the same source it says that if a pool fills up so much that its edges become wet with water, it will not be pure until the water flows out from the other side. And in Al-Khulasa, it is mentioned that the chosen view is that...

---

1 Khulasat al-Fatawa, Chapter One on Pools, Naval Kishore, Lucknow, 1/5. Page 358 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द दूसरी

[अरबी]: ...पर्याप्त प्रवाह जिस पर भरोसा किया जा सके। यदि यह तरल उस पानी का हिस्सा नहीं होता जिसका प्रवाह वांछित है, तो वृद्धि का कोई लाभ नहीं होता। (त) [उर्दू]: केवल बहना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि शर्त यह है कि उसमें प्रचुर गति हो जिसे माना जा सके। क्योंकि यदि यह बहता हुआ पानी उस पानी से न होता जिसका बहाव वांछित है, तो इस वृद्धि का कुछ फायदा न होता। (त)

फ़तावा खुलासा में उद्धृत: [अरबी]: यदि हौज (कुंड) भर जाए और किनारे से प्रवाह के रूप में निकले यहाँ तक कि बाग (मुशज्जरह) तक पहुँच जाए, तो वह पाक (शुद्ध) हो जाता है। लेकिन अगर इसकी मात्रा एक या दो हाथ (धरा) के बराबर हो, तो नहीं। (त) [उर्दू]: अगर हौज भर गया और किनारे से निकल कर पानी बहता हुआ मुशज्जरह तक पहुँच गया तो वह पाक हो जाएगा, बहरहाल एक हाथ या दो हाथ हो तो नहीं। (त)

ज़हीरिया (1) में स्पष्ट किया गया है कि इस उफान में जो पानी निकल रहा है, उससे अंदर का पानी तो पाक हो ही गया, बाहर निकलने वाला भी पाक और पाक करने वाला है। यहाँ तक कि पानी निकलता रहे और कोई उससे वज़ू करता रहे, या कहीं जमा होने के बाद किसी बर्तन में लेकर वज़ू करे तो वज़ू सही है। ज़ाहिर है कि पहले बहाव का पानी इतना नहीं होगा जिससे वज़ू हो सके। रद अल-मुह्तार में है:

[अरबी पक्ष]: अल-ज़हीरिया में, सही विचार यह है कि यह तब भी पाक हो जाता है जब हौज में मौजूद पानी के बराबर मात्रा बाहर न निकले। और यदि कोई व्यक्ति उस पानी में से कुछ लेता है जो बाहर निकला है और उससे वज़ू करता है, तो यह अनुमेय है। [अल-शामी] ने कहा: लेकिन ज़हीरिया में ही उल्लेख है कि यदि एक अशुद्ध हौज पानी से भर जाए और उसका पानी उसके किनारों पर बह जाए और फिर किनारे सूख जाएँ तो वह पाक नहीं होगा। और कहा जाता है कि वह पाक हो जाता है। और यदि वह भर जाता है और पानी उसके किनारों में सोख लिया जाता है, तो वह तब तक पाक नहीं होता जब तक कि पानी दूसरी तरफ से बाहर न निकल जाए। अल-खुलासा में, चुना गया विचार यह है कि वह पाक हो जाता है भले ही उसके बराबर की मात्रा बाहर न निकले। तो अगर हौज भर जाता है और पानी किनारे से बाहर निकलता है जैसा कि हमने वर्णित किया है, और प्रवचन इस कथन पर समाप्त हुआ "उसे विचार करने दें"। और इसके बाद एक मसला बताया गया।

[उर्दू पक्ष]: ज़हीरिया में है कि सही यह है कि वह पाक हो जाएगा चाहे उससे उतना पानी न निकले जितना हौज में था। और अगर किसी इंसान ने वह पानी उठा लिया जो बाहर निकला था और उससे वज़ू कर लिया तो जायज़ है। "श" (शामी) ने फ़रमाया लेकिन ज़हीरिया ही में है कि ऐसा हौज जो नापाक हो अगर पानी से भर जाए और उसका पानी किनारों से बह निकले फिर सूख जाए और उसके किनारे भी सूख जाएँ तो पाक न होगा "और एक क़ौल है कि पाक हो जाएगा"। और उसी में है कि अगर कोई हौज इतना भर गया कि उसके किनारे पानी से तर हो गए तो वह उस वक़्त तक पाक न होगा जब तक कि पानी दूसरी तरफ़ से न निकले। और खुलासा में है कि मुख़्तार (पसंदीदा मत) यह है कि वह...

---

1 खुलासा-तुल-फ़तावा, अल-जिंस अल-अव्वल फ़िल-हियाज़, नवल किशोर लखनऊ, 1/5. पृष्ठ 358 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[عربی]: کثیرۃ یعتمد بھا فلولا ان ھذا السائل من ذلك الماء المطلوب سیلانه لم تنفع الزیادۃ۔ [اردو]: صرف سیلان کا ہونا، بلکہ اس کی شرط یہ ہے کہ اس میں بکثرت حرکت ہو کہ جس کا اعتبار ہو کیونکہ اگر یہ بہنے والا پانی اس پانی سے نہ ہوتا جس کا بہاؤ مطلوب ہے تو اس اضافے کا کچھ فائدہ نہ ہوتا۔ (ت)

فتاوٰی خلاصہ میں نقل فرمایا: [عربی]: لو امتلأ الحوض وخرج من جانب الشط علی وجه الجریان حتی بلغ المشجرۃ یطھر اما قدر ذراع او ذراعین فلا۔ [اردو]: اگر حوض بھر گیا اور کنارے سے نکل کر پانی بہتا ہوا مشجرہ تک پہنچ گیا تو وہ پاک ہو جائے گا بہر حال ایک ذراع یا دو ذراع ہو تو نہیں۔ (ت)

ظہیریہ (1) میں تصریح فرمائی کہ اس ابال میں جو پانی نکل رہا ہے اندر کا پانی تو پاک ہو ہی گیا باہر نکلنے والا بھی طاہر مطہر ہے یہاں تک کہ پانی نکلتا جائے اور اس سے کوئی وضو کرتا جائے یا کہیں جمع ہونے کے بعد کسی برتن میں لے کر وضو کرے تو وضو صحیح ہے ظاہر ہے کہ اول سیلان کا پانی اتنا نہ ہو گا جس سے وضو ہو جائے ردالمختار میں ہے:

[عربی حصہ]: في الظھیریة الصحیح انه یطھر وان لم یخرج مثل ما فیه وان رفع انسان من ذلك الماء الذی خرج وتوضأ به جاز اھـ قال ش لکن في الظھیریة ایضا حوض نجس امتلأ ماء وفار ماؤہ علی جوانبه وجف جوانبه لایطھر وقیل یطھر اھـ وفیھا ولو امتلأ فتشرب الماء في جوانبه لایطھر مالم یخرج الماء من جانب اخر اھـ وفی الخلاصة المختار انه یطھر وان لم یخرج مثل مافیه فلو امتلأ الحوض وخرج من جانب الشط الی اخر مانقلنا وانھی الکلام علی قوله فلیتأمل اھـ وذکر بعدہ مسألة

[اردو حصہ]: ظہیریہ میں ہے کہ صحیح یہ ہے کہ وہ پاک ہو جائیگا اگرچہ اس سے اتنا پانی نہ نکلے جو حوض میں تھا اور اگر کسی انسان نے وہ پانی اٹھالیا جو خارج ہوا تھا اس سے وضو کرلیا تو جائز ہے اھـ "ش" نے فرمایا لیکن ظہیریہ ہی میں ہے کہ ایسا حوض جو ناپاک ہو اگر پانی سے بھر جائے اور اس کا پانی کناروں سے بہہ نکلے پھر خشک ہو جائے اور اس کے کنارے بھی خشک ہو جائیں تو پاک نہ ہوگا "اور ایک قول ہے کہ پاک ہو جائیگا" اھـ اور اسی میں ہے کہ اگر کوئی حوض اتنا بھر گیا کہ اس کے کنارے پانی سے تر ہوگئے تو وہ اس وقت تک پاک نہ ہوگا جب تک کہ پانی دوسری طرف سے نہ نکلے اھـ اور خلاصہ میں ہے کہ مختار یہ ہے کہ وہ

---

1 خلاصۃ الفتاوی الجنس الاول فی الحیاض نولکشور لکھنؤ ۵/۱ صفحہ 358 از 711

Volume Two Fatawa Razawiyya

[Arabic Column] Purity of vessels: He said, is a thing like a bowl (qas'ah) compared to a reservoir (hawd)? If there is impure water in it, and then running water enters it until it overflows from its sides, does it and the water in it become pure like a reservoir, or not due to the lack of necessity in its washing? I hesitated on this for a period, then I saw in 'Khizana al-Fatawa' that if the water of a reservoir becomes corrupt, and one takes a bowl from it and holds it under a spout, and water enters and the bowl's water flows out, then performing ablution with it is not permissible. And in 'al-Zahiriyya' regarding the issue of the reservoir: if it flows out from another side, it does not become pure unless an amount equal to what was in it flows out three times, like a bowl according to some. The correct view is that it becomes pure even if an amount equal to it does not flow out. It appears that what is in 'al-Khizana' is based on a view contrary to the correct one, supported by what is in 'al-Bada'i'. Accordingly, the bathroom reservoir or vessels, when they become impure, their implication is that according to the correct view, the vessels also become pure by the mere flow of water. Thus the ruling has become clear, and praise be to Allah. One thing remains.

[Footnote - Arabic] I say: The reasoning from the words of al-Zahiriyya against al-Khizana is subject to consideration. For one may say its implication is that the lack of purity in the bowl is agreed upon, used as evidence for it, and the correction only refers to the reservoir part of it. (M)

[Urdu Column] And after that, the issue of the purity of vessels was mentioned and it was asked: Will a thing like a bowl be compared to a reservoir (pool)? And that if it contains impure water, then running water enters it and overflows from its sides, will that bowl and the water in it become pure? Just as a reservoir becomes pure, or will it not become pure because there is no necessity in washing it to make it pure? So I hesitated on this issue for a period, then I saw in 'Khizana al-Fatawa' that when the water of a reservoir becomes corrupt (impure) and someone takes a bowl full from it and holds it under a pipe, then water enters and the water of the bowl flows out, now performing ablution (wudu) with this water will not be permissible. And in the issue of the reservoir in 'al-Zahiriyya', it is stated that if water flows out from the other side, then at that time...

[Footnote - Urdu] I say: The reasoning based on the words of al-Zahiriyya against al-Khizana is subject to consideration, because someone could say its implication is that

the lack of purity in the bowl is agreed upon as it is being used for substantiation, and the correction only refers to the reservoir. (T)

जिल्द सानी फ़तावा रज़विया

और इसके बाद बर्तनों की शुद्धता का मसला ज़िक्र किया और फ़रमाया: क्या प्याले जैसी चीज़ को हौज (कुंड) पर क़यास (तुलना) किया जाएगा? और यह कि अगर उसमें नापाक पानी हो, फिर उसमें बहता हुआ पानी दाख़िल हो जाए और किनारों से निकल जाए, तो क्या वह प्याला और उसमें जो पानी है वह पाक होगा? जिस तरह हौज पाक होता है, या पाक न होगा क्योंकि उसे धोकर पाक करने में कोई ज़रूरत नहीं है, तो मैंने इस मसले में एक मुद्दत तक तवक़्क़ुफ़ (संकोच) किया, फिर मैंने 'ख़ज़ाना-तुल-फ़तावा' में देखा कि जब हौज का पानी फासिद (अशुद्ध) हो जाए और उससे कोई शख़्स प्याला भर कर ले और उसे नली के नीचे रोक कर रखे, फिर पानी दाख़िल हो और प्याले का पानी बह निकले, तो अब इस पानी से वुज़ू करना जाइज़ न होगा। और 'ज़हीरिया' के हौज के मसले में है कि अगर पानी दूसरी तरफ़ से निकल गया तो उस वक़्त...

मैं कहता हूँ: 'ज़हीरिया' के कलाम से जो इस्तिदलाल (तर्क) 'ख़ज़ाना' के ख़िलाफ़ किया गया है उसमें नज़र (गुंजाइश) है, क्योंकि कोई कहने वाला कह सकता है कि इसका मफ़ाद (निष्कर्ष) यह है कि प्याले में पाक न होने पर इत्तेफ़ाक़ (सहमति) किया गया है क्योंकि उससे इस्तिशहाद (प्रमाण) पेश किया जा रहा है और तसहीह (सुधार/शुद्धि) सिर्फ़ हौज की तरफ़ राजी (संदर्भित) है। (त)

पृष्ठ 711 का 359

اور اس کے بعد برتنوں کی طہارت کا مسئلہ ذکر کیا اور فرمایا آیا پیالہ جیسی چیز کو حوض پر قیاس کیا جائے گا؟ اور یہ کہ اگر اس میں ناپاک پانی ہو پھر جاری پانی اس میں داخل ہوجائے اور کناروں سے نکل جائے تو آیا وہ پیالہ اور جو پانی اس میں ہے پاک ہوگا؟ جس طرح حوض پاک ہوتا ہے، یا پاک نہ ہوگا کیونکہ اس کو دھو کر پاک کرنے میں ضرورت نہیں، تو میں نے اس مسئلہ میں ایک مدت تک توقف کیا، پھر میں نے خزانہ الفتاویٰ میں دیکھا کہ جب حوض کا پانی فاسد ہو جائے اور اس سے کوئی شخص پیالہ بھر کر لے اور اس کو نالی کے نیچے روک کر رکھے پھر پانی داخل ہو اور پیالہ کا پانی بہہ نکلے اب اس پانی سے وضو کرے تو جائز نہ ہوگا اھ اور ظہیریہ کے حوض میں مسئلہ میں ہے، اگر پانی دوسری طرف سے نکل گیا تو اس وقت

[عربی کالم] طهارة الاوانی فقال هل یلحق نحو القصعة بالحوض فاذا کان فیها ماء نجس ثم دخل فیها ماء جار حتی طف من جوانبها هل تطهر هی والماء الذی فیها کالحوض ام لا لعدم الضرورة فی غسلها توقفت فیه مدة ثم رأیت في خزانة الفتاوی اذا فسد ماء الحوض فاخذ منه بالقصعة وامسکها تحت الانبوب فدخل الماء وسال ماء القصعة فتوضأ به لایجوز اه وفی الظهیریة في مسألة الحوض لو خرج من جانب أخر لا یطهر مالم یخرج مثل ما فیه ثلاث مرات کالقصعة عند بعضهم والصحیح انه یطهر وان لم یخرج مثل ما فیه اه فالظاهر ان ما في الخزانة مبنی علی خلاف الصحیح یؤیده ما في البدائع وعلی هذا حوض الحمام او الاوانی اذا تنجس اهـ ومقتضاه انه علی القول الصحیح تطهر الاوانی ایضا بمجرد الجریان فاتضح الحکم ولله الحمدـ وبقي شیئ

عه اقول: في (١) الاحتجاج بكلام الظهيرية على الخزانة نظر فلقائل ان يقول مفاده ان عدم الطهارة في القصعة متفق عليه للاستشهاد به والتصحيح انما يرجع الى الحوض منه۔ (م)

میں کہتا ہوں ظہیریہ کے کلام سے جو استدلال خزانہ کے خلاف کیا ہے اس میں نظر ہے، کیونکہ کوئی کہنے والا کہہ سکتا ہے کہ اس کا مفاد یہ ہے کہ پیالہ میں پاک نہ ہونے پر اتفاق کیا گیا ہے کیونکہ اس سے استشہاد کر رہے ہیں اور تصحیح صرف حوض کی طرف راجع ہے۔ (ت)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Another [Note 1] issue was asked about (1): If a bucket becomes impure [Note 2], and a person pours water into it until it fills up and overflows from its sides, does it become pure merely by that? What appears to me is that it becomes pure, based on what we mentioned here [Note 3] and from what has passed, that it is not a condition for the flow to be continuous. Yes, based on what we previously stated regarding 'Al-Khulasa', about specifying the flow to be more than [Note 4] an arm's length (dhira') or... it will not be pure until three times the amount that was in it has flowed out, just as is the rule for a bowl. This is according to some scholars. The correct view is that it will become pure even if an amount equal to what was in the bowl does not flow out. Apparently, what is in the 'Khizana' is the opposite of the correct view. 'Al-Bada'i' supports this, and on this is based the analogy for bathhouse basins or vessels, meaning in case of their becoming impure.

Note 1: I say: This is exactly the same thing, not something else. There is no possibility for the ruling to differ due to the difference in the shape of the bowl and the bucket. (M) | I say: This is exactly the same, not anything else, and there is no possibility of the ruling being different due to the difference in the shape of the bowl and bucket. (T)

Note 2: I say: It is necessary to qualify it as being impure from the inside. If it became impure from below, the water flowing over its surface would have no effect. Or if from the outside, then it is necessary for water to flow over the impure spot such that the impurity is removed, as narrated from the Second Imam (Abu Yusuf), may Allah be pleased with him, regarding the loincloth of the person performing ritual bathing. May He forgive him. (M) | I say: It is necessary to add this condition that the bucket is impure from the inside because if it is impure from the bottom, then pouring water in it will have no effect on its exterior; or if it is impure from the outside, in such a case, it is necessary to pour water on that place which is impure and the removal of existing impurity is necessary, as is narrated from Imam Abu Yusuf regarding the loincloth of one who washes. (T)

Note 3: I say: (3) May Allah have mercy on you, the flow here is only with reinforcement (pouring). So what is the need to base it on a disputed point? (M) | I say: May Allah have mercy on you, here flow is with help, so what is the need to keep the basis of disagreement in this. (T)

Note 4: I say: (4) The correct thing is to restrict it to two arm-lengths (dhira'ayn), because the wording of 'Al-Khulasa' is: "either the measure of an arm's length or two arm-lengths, then no." (M) | I say: It is appropriate to end the phrase at 'two cubits' because the phrase of Khulasa is 'either the measure of one cubit or two cubits, then not'. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

एक और [नोट 1] सवाल इसके बारे में पूछा गया (1): यदि एक डोल (बाल्टी) नापाक हो जाए [नोट 2], और कोई व्यक्ति उसमें पानी भरे यहाँ तक कि वह भर जाए और उसके किनारों से बहने लगे, तो क्या केवल इससे वह पाक (शुद्ध) हो जाएगा? मुझे जो प्रतीत होता है वह यह है कि वह पाक हो जाएगा, उसके आधार पर जो हमने यहाँ उल्लेख किया [नोट 3] और जो पहले गुज़र चुका है कि बहाव के लिए निरंतर सहायता की शर्त नहीं है। हाँ, जैसा कि हमने 'अल-खुलासा' पर पहले पेश किया है, बहाव को [नोट 4] एक हाथ (धिर्रा) से अधिक होने के साथ विशिष्ट करने के बारे में... वह तब तक पाक नहीं होगा जब तक कि जितना उसमें था उससे तीन गुना अधिक न निकल जाए, जैसा कि प्याले का हुक्म है। यह कुछ हज़रात के नज़दीक है। सही बात यह है कि वह पाक हो जाएगा भले ही उतना पानी न निकला हो जितना प्याले में था। ज़ाहिर तौर पर 'ख़िज़ाना' में जो है वह सही के विपरीत है। 'बदाए' में इसका समर्थन है और इसी पर हमाम के हौज़ या बर्तनों का कयास (अनुमान) है, यानी उनके नापाक हो जाने की स्थिति में।

नोट 1: मैं कहता हूँ: यह वही है, कोई दूसरी चीज़ नहीं है। प्याले और डोल के आकार की भिन्नता के कारण हुक्म के भिन्न होने की कोई संभावना नहीं है। (म) | मैं कहता हूँ: यह बिल्कुल वही है, कोई दूसरी चीज़ नहीं है, और प्याले और डोल की शक्ल अलग होने की वजह से हुक्म अलग होने का कोई इमकान (संभावना) नहीं। (त)

नोट 2: मैं कहता हूँ: इसे अंदर से नापाक होने के साथ सीमित करना ज़रूरी है। क्योंकि अगर वह नीचे से नापाक हुआ तो उसके बाहरी हिस्से पर पानी के बहाव का कोई असर नहीं होगा। या यदि बाहर से नापाक हुआ तो ऐसी स्थिति में उस जगह पर पानी बहाना ज़रूरी है जो नापाक है ताकि नजासत (गंदगी) दूर हो जाए, जैसा कि दूसरे इमाम (अबू यूसुफ़) रज़ियल्लाहु अन्हु से ग़ुस्ल करने वाले के तहबंद के बारे में वर्णित है। अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) | मैं कहता हूँ: इसमें यह क़ैद (शर्त) लगाना ज़रूरी है कि वह डोल अंदर से नापाक हो, क्योंकि अगर वह नीचे से नापाक हो तो उसमें पानी बहाने का उसके ज़ाहिर (बाहरी हिस्से) पर कोई असर न होगा; या बाहर से नापाक हो तो ऐसी सूरत में पानी का उस जगह पर बहाना लाज़िम है जो नापाक है और उस मौजूद नजासत का ख़त्म हो जाना ज़रूरी है, जैसा कि दूसरे इमाम अबू यूसुफ़ से मंकूल (वर्णित) है ग़ुस्ल करने वाले के तहबंद की बाबत। (त)

नोट 3: मैं कहता हूँ: (3) अल्लाह आप पर रहम करे, यहाँ बहाव मदद (बाहर से पानी डालने) के साथ है, तो इसमें विवादित बात पर आधार रखने की क्या ज़रूरत है? (म) | मैं कहता हूँ अल्लाह आप पर रहम करे यहाँ पर जरियान (बहाव) मदद से है तो इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) की बिना (आधार) रखने की क्या ज़रूरत है। (त)

नोट 4: मैं कहता हूँ: (4) सही बात यह है कि इसे दो हाथ (धिर्रैन) तक सीमित रखा जाए, क्योंकि 'अल-खुलासा' की इ़ब़ारत (वाक्य) है: "या तो एक हाथ की मात्रा या दो हाथ, तो नहीं।" (म) | मैं कहता हूँ इबारत को ज़िराईन (दो हाथ) पर ख़त्म करना मुनासिब है क्योंकि खुलासा की इबारत यह है 'अम्मा क़दर ज़िरा अव ज़िराईन फ़ला'। (त)

पृष्ठ 360/711

ایک اور عہ۱ مسئلہ جس کے بارے میں سوال کیا گیا (۱) وہ یہ ہے کہ ایک ڈول ناپاک ہو گیا عہ۲، پھر ایک شخص نے اس میں پانی بھرا یہاں تک کہ وہ بھر گیا اور اس کے کناروں سے بہنے لگا، کیا محض اسی عمل سے وہ پاک ہو جائے گا؟ مجھے جو ظاہر ہوتا ہے وہ اس کی طہارت (پاک ہونا) ہے، اس کی بنیاد پر جو ہم نے یہاں ذکر کیا عہ۳ اور اس سے جو گزر چکا کہ یہ شرط نہیں ہے کہ جریان (بہاؤ) مدد (بیرونی مدد) کے ساتھ ہو۔ ہاں، جیسا کہ ہم نے 'الخلاصہ' پر پہلے پیش کیا ہے کہ جریان کی تخصیص اس کے ساتھ ہو کہ وہ عہ٤ ایک ہاتھ (ذراع) سے زیادہ ہو یا... تک پاک نہ ہوگا جب تک کہ جتنا اس میں تھا اس سے تین گنا زیادہ نہ نکلا ہو جیسا کہ پیالہ کا حکم ہے، یہ بعض حضرات کے نزدیک ہے، اور صحیح یہ ہے کہ پاک ہو جائیگا اگرچہ اتنا پانی نہ نکلا ہو جتنا کہ پیالہ میں تھا اور تو بظاہر خزانہ میں جو ہے وہ صحیح کے برعکس ہے، بدائع میں اس کی تائید ہے اور اسی پر حمام کے حوض یا برتنوں کا قیاس ہے، یعنی ان کے ناپاک ہو جانے کی۔

عہ۱ اقول: ھو ھو(۲) بعینہ لا شیئا آخر ولا احتمال لاختلاف الحکم باختلاف صورۃ القصعۃ والدلو منہ۔(م) | اقول یہ بعینہ وہی ہے کوئی دوسری چیز نہیں ہے اور پیالہ اور ڈول کی صورت کے مختلف ہونے کی وجہ سے حکم کے مختلف ہونے کا کوئی احتمال نہیں۔(ت)

عہ۲ اقول: لابد من التقیید بتنجسہ من داخل اذلو تنجس من تحت لم یعمل فیہ السیلان علی ظاھرہ اومن خارج فمالم یسل علی الموضع المتنجس منہ بحیث یذھب النجاسۃ کما روی عن الامام الثانی رضی اللہ تعالی عنہ فی ازار المغتسل منہ غفرلہ(م) | اقول: اس میں یہ قید لگانا ضروری ہے کہ وہ ڈول اندر سے ناپاک ہو کیونکہ اگر وہ نیچے سے ناپاک ہو تو اس میں پانی کے بہانے کا اسکے ظاہر پر کوئی اثر نہ ہوگا یا خارج سے ناپاک ہو تو ایسی صورت میں پانی کا اس جگہ پر بہانا لازم ہے جو

ناپاک ہے اور اس موجود نجاست کا ختم ہوجانا ضروری ہے، جیسا دوسرے امام ابو یوسف سے منقول ہے غسل کرنے والے کے تہبند کی بابت۔(ت)

عہ۳ اقول: (۳) رحمك الله لیس الجریان ھھنا الا بمدد فای حاجة للبناء علی مختلف فیه منه۔(م) | میں کہتا ہوں اللہ آپ پر رحم کرے یہاں پر جریان مدد سے ہے تو اس میں اختلاف کی بنا رکھنے کی کیا ضرورت ہے۔(ت)

عہ٤ اقول:(۴) صوابه الاقتصار علی ذراعین اذ عبارة الخلاصة اما قدر ذراع او ذراعین فلا منه(م) | میں کہتا ہوں عبارت کو ذراعین پر ختم کرنا مناسب ہے کیونکہ خلاصہ کی عبارت یہ ہے اما قدر ذراع او ذراعین فلا۔(ت)

Fatawa Razawiyya (Volume Two)

[Left Top Column - Arabic] ...two cubits are restricted by that here, but it is contrary to their general statement regarding the purification of a pool merely by flowing [of water].[1] Summary finished.

[Right Top Column - Urdu] In this case, the implication is that according to the correct view, vessels will become pure just by the flowing of water. Now the ruling is clear, praise be to Allah. Now only one thing remains about which I was asked: if a bucket becomes impure and water is poured into it until it fills and overflows, will it become pure just by this method? It seems to me that it will become pure. The proof for this is what we mentioned here and what has passed, meaning it is not a condition that the flowing of water be based on measurement. Yes, what we cited from 'Al-Khulasah', namely that flowing should be restricted to the matter of it being more than one or two cubits, then that restriction will also be considered here. But this is contrary to the general statements of the jurists; they state that a pool becomes pure merely by the water flowing through it. Summary finished. (T)

[Left Middle Column - Arabic] I say: He has provided benefit and done excellently, and clarified the objective, as is his habit, may the mercy of the Generous Bestower be upon him. However, the text of 'Al-Khulasah' is as follows: "As for the pool of a bathhouse, if impurity falls into it," it says in 'At-Tajrid' from Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him) that it does not stay, and it is like flowing water. If the bathhouse pool becomes impure, and water enters from a pipe and exits from the other side, then it is like a small pool, and concerning it, there are various opinions that will follow. There is no harm in men and women entering the bathhouse... and in the Fatawa...

[Right Middle Column - Urdu] I say he has clearly manifested his objective as per his habit with great clarity. But the text of 'Khulasah' is like this: "In any case, the pool of a bathhouse when impurity falls into it, in 'Tajrid' this narration of Imam Abu Hanifa is cited that such impurity will not stay and this is like flowing water. Now if a bathhouse pool becomes impure and water enters it from one drain and exits from the other side, then this is like a small pool; there are multiple opinions in this regard which will come soon, and for men..."

[Footer] 1. Radd al-Muhtar, Discussion of "Ten by Ten", Mustafa al-Babi Egypt 1/434

फ़तावा रज़विया (जिल्द सानी)

[बायां शीर्ष स्तंभ - अरबी] ...दो हाथ (ज़िरा) यहाँ उससे प्रतिबंधित हैं लेकिन यह हौज के केवल बहने मात्र से शुद्ध होने के उनके सामान्य कथनों के विपरीत है।[1] संक्षेप में समाप्त।

[दायां शीर्ष स्तंभ - उर्दू] इस सूरत में, और इसका तकाज़ा यह है कि सही कौल (कथन) पर बर्तन केवल पानी के बह जाने से पाक (शुद्ध) हो जाएंगे। अब हुक्म स्पष्ट हो गया है, अल्हम्दुलिल्लाह। अब केवल एक बात बाकी रह गई है जिसके बारे में मुझसे पूछा गया था, और वह यह है कि यदि कोई डोल नापाक हो जाए और उसमें पानी इस हद तक बहाया जाए कि वह भरकर बहने लगे, तो क्या वह केवल इसी तरीके से पाक हो जाएगा? मुझे तो यही मालूम होता है कि वह पाक हो जाएगा। इसकी दलील वही है जो हमने यहाँ ज़िक्र की और जो गुज़री, यानी यह शर्त नहीं है कि पानी का बहना माप (मसाहत) के हिसाब से हो। हाँ, जो हमने 'खुलासा' से नक़ल किया है, यानी बहने को इस बात से सीमित किया जाए कि वह एक या दो हाथ से ज़्यादा हो, तो वह पाबंदी यहाँ भी मान्य होगी। लेकिन यह फ़ुक़हा के सामान्य कथनों के विरुद्ध है; वे कहते हैं कि हौज केवल पानी के जारी होने से ही पाक हो जाएगा। संक्षेप में। (त)

[बायां मध्य स्तंभ - अरबी] मैं कहता हूँ: उन्होंने लाभान्वित किया और अच्छा किया, और उद्देश्य स्पष्ट किया, जैसा कि उनका स्वभाव है, उन पर उदार दाता की दया हो। किंतु 'खुलासा' का पाठ इस प्रकार है: "रहा हम्माम (स्नानागार) का हौज, जब उसमें नजासत (अशुद्धि) गिर जाए," 'तजरीद' में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि वह नजासत वहाँ टिकेगी नहीं और वह बहते हुए पानी की तरह है। अब यदि हम्माम का हौज नापाक हो गया और उसमें एक पाइप से पानी दाखिल हुआ और दूसरी तरफ से बाहर निकल गया, तो वह छोटे हौज की तरह है और इस बारे में कई राय हैं जो आगे आएंगी। पुरुषों और महिलाओं के लिए हम्माम में प्रवेश करने में कोई बुराई नहीं है और फ़तावा में...

[दायां मध्य स्तंभ - उर्दू] मैं कहता हूँ उन्होंने अपनी आदत के मुताबिक बड़ी स्पष्टता से अपने मक़सद को ज़ाहिर कर दिया, लेकिन खुलासा की इबारत इस तरह है: "बहरहाल हम्माम का हौज जबकि इसमें नजासत गिर जाए, तजरीद में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा की यह रिवायत नक़ल की गई है कि ऐसी नजासत ठहरेगी नहीं और यह बहते पानी की तरह है, अब अगर हम्माम का हौज नापाक हो

गया और इसमें एक नाली से पानी दाखिल होकर दूसरी तरफ से ख़ारिज हो गया तो यह छोटे हौज की तरह है, इसमें कई कौल हैं जो जल्द ही आएंगे, और पुरुषों..."

[पाद लेख] 1. रद्द अल-मुह्तार, 'दश दर दश' की चर्चा, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/434

[Left Top Column] ذراعین یتقید بذلك هنا لکنه مخالف لاطلاقهم طهارة الحوض بمجرد الجریان ۱ اھ مختصراً

[Right Top Column] صورت میں اھ اور اس کا مقتضٰی یہ ہے کہ قولِ صحیح پر برتن محض پانی کے جاری ہو جانے سے پاک ہوجائیں گے، تو اب حکم واضح ہوگیا، وللہ الحمد، اب صرف ایک چیز باقی رہ گئی ہے جس کے بارے میں مجھ سے دریافت کیا گیا ہے اور وہ یہ ہے کہ اگر کوئی ڈول ناپاک ہو گیا اور اس میں پانی بہایا گیا یہاں تک کہ وہ بھر کر بہنے لگا تو کیا وہ محض اس طریقہ سے پاک ہو جائیگا؟ تو مجھے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ پاک ہو جائیگا اس کی دلیل وہی ہے جو ہم نے یہاں ذکر کی اور جو گزری، یعنی یہ شرط نہیں کہ پانی کا جاری ہونا مساحت کے حساب سے ہو، ہاں جو ہم نے خلاصہ سے نقل کیا ہے یعنی کہ بہنے کو اس امر سے مقید کیا جائے کہ وہ ایک یا دو ذراع سے زیادہ ہو، تو وہی قید یہاں بھی معتبر ہوگی، مگر یہ چیز فقہاء کے اطلاقات کے مخالف ہے وہ فرماتے ہیں حوض محض پانی کے جاری ہونے سے ہی پاک ہو جائیگا اھ مختصراً۔ (ت)

[Left Middle Column] اقول: قد افاد واجاد، واوضح المراد، کما ھو دابہ علیہ رحمۃ الکریم الجواد، لکن عبارۃ الخلاصۃ ھکذا اما حوض الحمام اذا وقعت فیہ نجاسۃ قال فی التجرید عن ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ انھا لاتستقر وھو کالماء الجاری فان تنجس حوض الحمام فدخل الماء من الانبوب وخرج من الجانب الاخر فھو کالحوض الصغیر وفیہ اقاویل ستأتی ولابأس بدخول الحمام للرجال والنساء وفی الفتاوٰی

[Right Middle Column] میں کہتا ہوں انہوں نے اپنی عادت کے مطابق بڑی وضاحت سے اپنے مقصود کو ظاہر کردیا، لیکن خلاصہ کی عبارت اس طرح ہے "بہر حال حمام کا حوض جبکہ اس میں نجاست گر جائے، تجرید میں حضرت امام ابو حنیفہ کی یہ روایت نقل کی ہے کہ ایسی نجاست ٹھہرے گی نہیں اور یہ جاری پانی کی طرح ہے، اب اگر حمام کا حوض ناپاک ہوگیا اور اس میں ایک نالی سے پانی داخل ہو کر دوسری طرف سے خارج ہوگیا تو یہ چھوٹے حوض کی طرح ہے، اس میں متعدد اقوال ہیں جو عنقریب آئیں گے، اور مردوں

Fatawa Razawiya - Volume 2

[Arabic Text Column] If a man scoops water from a cistern and his hand is impure, while water is entering the cistern through a pipe and people are continuously scooping water from it in quick succession, it does not become impure. Regarding a small cistern, if it becomes impure and water enters from one side and leaves from another, there are several opinions. Sadr al-Shahid (may Allah the Almighty have mercy on him) said: The preferred view (mukhtar) is that it becomes pure even if an amount of water equal to what was in it does not flow out. The same applies to a well. If the cistern overflows and flows over the bank until it reaches a tree-covered area, it becomes pure. As for a distance of one or two arm-spans, it does not. (1) And if it flowed back into the stream from which water entered the cistern, it does not become pure. [End of quote]. His noble words in the refined text. (2) So his statement "Even if the cistern overflows..." - and it is indeed with 'waw' (and) and not 'fa' (then) in my very old copy of Al-Khulasa - is neither a completion of Sadr al-Shahid's statement nor included under the preferred view. We have already cited from Al-Hindia, from Al-Muhit, on the authority of Sadr al-Shahid, that as soon as it flows, it becomes pure. He had promised that there are several opinions coming. If this were the completion, he would have mentioned only one opinion. Thus, it is necessary that this statement is an alternative to the preferred view. It is not possible to consider what was mentioned from Al-Fatawa as another opinion because the discussion is about a cistern that became impure, and that is a scenario of its absence, and he already presented something similar on the authority of...

[Urdu Text Column] And there is no harm for women in entering a public bath (hammam). In the Fatawa, it is stated that if a person dips their impure hand in a cistern of water, and water is entering that cistern through a channel, and people are continuously taking water out by handfuls, then this cistern will not become impure. When a small cistern becomes impure and water enters it from one side and leaves from another, there are several opinions. Sadr al-Shahid stated that the preferred view (mukhtar) is that it becomes pure, regardless of whether a quantity of water equal to what was already present in it has flowed out or not. This same ruling applies to a well. If the cistern fills up and flows over its banks until it reaches a tree-lined area, it will become pure; but a distance of one or two cubits will not make it pure. And if the water flowed back into the same stream from which it had entered the cistern, it will not become pure. Regarding his statement "Even if the cistern overflows..." (wa lau imtala'al-hawdu), in my ancient copy of Al-Khulasa, it is written

with 'waw' (and), not 'fa' (then). This is not a continuation of Sadr al-Shahid's statement, nor does it fall under the preferred view. We have quoted from Al-Hindia, via Al-Muhit, from Sadr al-Shahid that as soon as it flows, it becomes pure. He promised that several opinions would follow; if this were the completion, he would have mentioned only one opinion. Therefore, it is necessary that this statement is opposed to the preferred view. It is not correct to call what he quoted from the Fatawa a second opinion, because that discourse...

---

1 Khulasat al-Fatawa, Chapter 1 regarding cisterns, Naval Kishore Lucknow, 1/5. Page 362 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[अरबी पाठ स्तंभ] यदि कोई व्यक्ति हौज से पानी निकालता है और उसके हाथ पर अशुद्धि है, जबकि पानी पाइप के माध्यम से हौज में आ रहा है और लोग लगातार हौज से चुल्लू भर-भर कर पानी निकाल रहे हैं, तो वह अपवित्र नहीं होता। छोटे हौज के बारे में, यदि वह अपवित्र हो जाए और पानी एक तरफ से प्रवेश करे और दूसरी तरफ से निकल जाए, तो इसमें कई राय हैं। सद्र अल-शहीद (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: पसंदीदा मत (मुख्तार) यह है कि वह शुद्ध हो जाता है, भले ही उसमें मौजूद पानी की मात्रा के बराबर पानी बाहर न निकला हो। यही नियम कुएं पर भी लागू होता है। यदि हौज भर जाए और किनारे से बहकर पेड़ों वाले क्षेत्र तक पहुँच जाए, तो वह शुद्ध हो जाता है। जहाँ तक एक या दो हाथ की दूरी की बात है, तो नहीं। (1) और यदि वह उसी नहर में वापस बह गया जिससे पानी हौज में दाखिल हुआ था, तो वह शुद्ध नहीं होगा। [उद्धरण समाप्त]। परिष्कृत पाठ में उनके महान शब्द। (2) इसलिए उनका कथन "और यदि हौज भर गया..." - और यह अल-खुलासा की मेरी बहुत पुरानी प्रति में वास्तव में 'वाओ' (और) के साथ है, 'फ़ा' (तब) के साथ नहीं - यह न तो सद्र अल-शहीद के कथन का समापन है और न ही पसंदीदा मत के अंतर्गत आता है। हमने पहले ही अल-हिन्दिया से, अल-मुहीत के माध्यम से, सद्र अल-शहीद के हवाले से उद्धृत किया है कि जैसे ही वह बहता है, शुद्ध हो जाता है। उन्होंने वादा किया था कि कई मत आने वाले हैं। यदि यह पूर्णता होती, तो वे केवल एक मत का उल्लेख करते। अत; यह आवश्यक है कि यह कथन पसंदीदा मत का विकल्प हो। फतावा से जो उल्लेख किया गया है उसे दूसरी राय मानना संभव नहीं है क्योंकि चर्चा उस हौज के बारे में है जो अपवित्र हो गया, और वह उसकी अनुपस्थिति का परिदृश्य है, और उन्होंने पहले ही इसके समान कुछ पेश किया है...

[उर्दू पाठ स्तंभ] और औरतों को हमाम (सार्वजनिक स्नानगृह) में दाखिल होने में कोई हर्ज नहीं है। फतावा में है कि यदि किसी व्यक्ति ने पानी के हौज में अपना अपवित्र हाथ डाला और उस हौज में पानी नाली से आ रहा है और लोग उस हौज से लगातार चुल्लू भर-भर कर पानी ले रहे हैं, तो यह हौज नापाक नहीं होगा। छोटा हौज जब नापाक हो जाए और उसमें पानी एक तरफ से दाखिल होकर दूसरी तरफ से निकल जाए, तो इसमें कई कथन हैं। सद्र अल-शहीद ने फरमाया कि पसंदीदा मत यह है कि यह पाक है, चाहे इसमें से उतनी मात्रा में पानी न निकला हो जितना उसमें मौजूद था। कुएं का भी यही हुक्म है। यदि हौज भरकर किनारों से बह निकले और बहते हुए पेड़ों वाले क्षेत्र तक पहुँच जाए, तो वह पाक हो जाएगा; लेकिन एक हाथ या दो हाथ की दूरी पाक नहीं करेगी। और यदि वह

उसी नहर से निकला हो जिससे हौज में दाखिल हुआ था, तो पाक नहीं होगा। जहाँ तक उनके कथन "और यदि हौज भर गया..." (वा लौ इमताल-अल-हौज़) का प्रश्न है, तो अल-खुलासा की मेरी प्राचीन प्रति में यह 'वाओ' के साथ ही है, 'फ़ा' के साथ नहीं। यह न तो सद्र अल-शहीद के कथन का पूरक है और न ही पसंदीदा मत के तहत आता है। हमने हिन्दिया से, मुहीत के हवाले से, सद्र अल-शहीद से उद्धृत किया है कि वह बहते ही पाक हो जाएगा। उन्होंने वादा किया था कि इसमें कई कथन आएंगे; यदि यह समापन होता, तो वे केवल एक ही कथन का उल्लेख करते। इसलिए, यह आवश्यक है कि यह कथन पसंदीदा मत के विपरीत हो। फतावा से उन्होंने जो उद्धृत किया है उसे दूसरा कथन कहना सही नहीं है, क्योंकि वह चर्चा...

---

1. खुलासत अल-फतावा, हौज के बारे में पहला अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/5. पृष्ठ 362 of 711

فتاویٰ رضویہ - جلد ثانی

[عربی متن کا کالم] حوض الماء اذا اغترف رجل منه وبیده نجاسة وکان الماء یدخل من انبوبه فی الحوض والناس یغترفون من الحوض غرفاً متداركاً لم یتنجس۔ الحوض الصغیر اذا تنجس فدخل الماء من جانب وخرج من جانب فیه اقاویل قال الصدر الشهید رحمه الله تعالی المختار انه طاهر وان لم یخرج مثل ما فیه وکذا البئر ولو امتلأ الحوض و خرج من جانب الشط علی وجه الجریان حتی بلغ المشجرة یطهر اما قدر ذراع او ذراعین فلا ولو (۱) خرج من النهر الذی دخل الماء في الحوض لا یطهر ۱ھ کلامه الشریف بلفظ المنیف (۲) فقوله ولو امتلأ الحوض وهو کذلك بالواو لا بالفاء في نسختی الخلاصة القدیمة جدا لیس تتمة قول الصدر الشهید ولا داخلا تحت المختار وقد قدمنا عن الهندیة عن المحیط عن الصدر الشهید انه کما سال یطهر وقد وعد ان فیه اقاویل ستأتی فلو کان هذا تتمته لم یذکر الا قولا واحدا فوجب ان یکون هذا قولا اخر مقابل المختار ولا یمکن جعل ماذکر عن الفتاوی قولا آخر لان الکلام في حوض تنجس وتلك صورة عدمه وقد قدم مثلها عن

[اردو متن کا کالم] اور عورتوں کو حَمام میں داخل ہونے میں حرج نہیں، اور فتاویٰ میں ہے کہ پانی کے حوض میں اگر کسی شخص نے اپنا ناپاک ہاتھ ڈالا اور اس حوض میں پانی نالی سے آرہا ہے اور لوگ اس حوض سے مسلسل پُلو بھر کر پانی لے رہے ہیں تو یہ حوض ناپاک نہ ہوگا۔ چھوٹا حوض جب ناپاک ہوا اور اس میں پانی ایک طرف سے داخل ہو کر دوسری طرف سے نکل گیا تو اس میں کئی اقوال ہیں، صدر الشہید نے فرمایا مختار یہ ہے کہ یہ پاک ہے خواہ اس سے اتنی مقدار میں پانی نہ نکلا ہو جتنا کہ اس میں موجود ہے، اور یہی حکم کنویں کا ہے اور حوض بھر کر کنارے سے نکل گیا اور بہتارہا یہاں تک کہ مشجرہ تک پہنچ گیا تو پاک ہوجائے گا، اور ایک ہاتھ یا دو ہاتھ پاک نہ ہوگا، اور اگر اُس نہر سے پانی نکلا جس سے حوض میں داخل ہوا تھا تو پاک

نہ ہوگا ۱ھ تو ان کا قول "ولو امتلا الحوض" میرے پاس خلاصہ کے قدیم نسخہ میں یہ ایسا ہی واؤ کے ساتھ ہے فاء کے ساتھ نہیں، یہ نہ تو صدر الشہید کے قول کا تتمہ ہے اور نہ مختار کے تحت داخل ہے اور ہم نے ہندیہ سے محیط سے صدر الشہید سے نقل کیا کہ وہ بہتے ہی پاک ہو جائیگا، اور انہوں نے وعدہ کیا کہ اس میں کئی اقوال ہیں جو آئیں گے تو اگر یہ تتمہ ہوتا تو صرف ایک ہی قول ذکر کرتے تو لازم ہے کہ یہ قولِ مختار کے مقابل ہے اور جو فتاویٰ سے انہوں نے نقل کیا اس کو دوسرا قول قرار دینا صحیح نہیں، کیونکہ کلام اُس

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ الجنس الاول فی الحیاض نولکشور لکھنو ۱/۵ Page 362 of 711

Fatawa Rizwia Volume 2

[Arabic Column]: (Regarding) At-Tajrid: Indeed, its lack of stability is solely due to the continuous scooping of water. Therefore, in Al-Khulasah, there is no preferred specification of flowing more than two cubits, which would otherwise contradict the absolute statements (of the jurists). Rather, it was only mentioned as a narrated view, and the chosen position is the absolute one. As for the last two passages of Az-Zahiriyyah, I say: they both refer to the water entering the pool and filling it until it splashes from its sides in the form of light overflow required by the pool being filled with a forceful and rapid entry of water. In such a case, "flowing from the other side" (1) does not hold true. Thus, there is nothing in them that contradicts their first statement (2). Do you not see the statement in the third (passage) where it says: "It will not be purified as long as it does not exit from another side," anchoring purification purely to the exit of water? Hence, it is known that what was mentioned is not called "exiting from the other side," but rather it is only the overflow we mentioned. This is how the words of the scholars should be understood, and all praise is to Allah. From this, it becomes clear that (3) the statement of 'Allamah Sh. at the beginning of the issue "until it overflows (taff) from its sides" its rightful place is...

[Urdu Column]: In the pool that has become impure, and that is the way of it being purified, and they have cited similar to this from Tajrid. Because its lack of stability is solely due to the continuous scooping of water, so in Al-Khulasah, the specification of flowing more than two hands was not chosen. Had it been so, it could be said that they are contradicting their absolute statements. They have merely narrated it and have established the absolute view as the chosen one. Regarding the last two passages of Az-Zahiriyyah, I say that both refer to the situation where water enters the pool and fills it up, and it starts overflowing slowly from its edges. This usually happens when water enters the pool suddenly with force, and "flowing from the other side" does not hold true for it. So there is nothing in them that contradicts their first statement. Accordingly, regarding the third situation, they state: "it will not be pure until it exits from the other side..."

[Footnote section]: (Arabic): I have not seen this verb nor its root in Sahah, nor Al-Mukhtar, nor Al-Qamus, nor Taj al-Arus, nor Mufradat al-Raghib, nor Nihayah Ibn al-Athir, nor Ad-Durr al-Nathir, nor Majma' al-Bihar, nor Al-Misbah al-Munir. It is only in Al-Qamus: "Taffa al-Makkuku wa al-Inau" (the vessel and measure overflowed).

(Urdu): I have not found this verb and its root in Sahah, Sarah, Mukhtar, Qamus, Taj al-Arus, Mufradat-e-Raghib, Nihayah Ibn al-Athir, Durr-e-Nathir, Majma' al-Bihar, and Misbah al-Munir. In Al-Qamus, there is only this much that 'Taff' of a vessel and measure, 'Taffafa' (with vowel marks), and 'Tafaf'.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 2

[अरबी कॉलम]: (अत-तज्रीद के संबंध में): वास्तव में, उसका (पानी का) स्थिर न होना केवल निरंतर चल्लू भर-भर कर निकालने के कारण है। इसलिए अल-खुलासा में दो हाथ से अधिक बहने का कोई विशेष नियम नहीं अपनाया गया है, जिससे विद्वानों के सामान्य कथनों का विरोध हो। बल्कि, इसे केवल एक उद्धृत राय के रूप में उल्लेख किया गया है, और चुना गया पक्ष सामान्य (बिना किसी शर्त के) ही है। जहाँ तक अज़-ज़हीरिया के अंतिम दो अनुच्छेदों का संबंध है, मैं कहता हूँ: वे दोनों उस स्थिति के बारे में हैं जब पानी हौज में प्रवेश करता है और उसे भर देता है, यहाँ तक कि पानी के तीव्र और बलपूर्वक प्रवेश के कारण वह किनारों से हल्का सा छलकने लगता है। ऐसी स्थिति में, "दूसरी तरफ से बहना" (1) सत्य नहीं होता। अतः उनमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनके पहले कथन (2) के विरुद्ध हो। क्या आप तीसरे (अनुच्छेद) में यह कथन नहीं देखते जहाँ कहा गया है: "वह तब तक शुद्ध नहीं होगा जब तक कि वह दूसरी तरफ से बाहर न निकल जाए," शुद्धता को पूरी तरह से पानी के बाहर निकलने से जोड़ते हुए? इसलिए, यह ज्ञात होता है कि जो उल्लेख किया गया है उसे "दूसरी तरफ से निकलना" नहीं कहा जाता, बल्कि वह केवल वही छलकना है जिसका हमने उल्लेख किया है। विद्वानों के शब्दों को इसी तरह समझा जाना चाहिए, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। इसी से यह स्पष्ट हो जाता है कि (3) मसले की शुरुआत में अल्लामा श. का यह कथन कि "यहाँ तक कि वह अपने किनारों से छलक पड़े (तफ़्फ़ा)," का उचित स्थान यह है कि...

[उर्दू कॉलम]: हौज में जो पानी नापाक हो गया है, और यह उसके पाक होने का तरीका है, और इसी तरह का वर्णन उन्होंने तज्रीद से उद्धृत किया है। क्योंकि उसका स्थिर न रहना निरंतर चल्लू भरने के कारण ही है, इसलिए अल-खुलासा में दो हाथ से अधिक बहने की विशिष्टता को नहीं चुना गया है। यदि ऐसा होता, तो कहा जा सकता था कि वे उनके सामान्य कथनों का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने तो इसे केवल एक वर्णन के रूप में प्रस्तुत किया है, और चुने हुए मत के रूप में सामान्य मत को ही रखा है। अज़-ज़हीरिया के अंतिम दो कथनों के बारे में मैं कहता हूँ कि ये दोनों उस स्थिति से संबंधित हैं जब पानी हौज में प्रवेश करता है और उसे भर देता है और वह उसके किनारों से धीरे-धीरे छलकने लगता है। यह चीज़ आमतौर पर तब होती है जब हौज में पानी अचानक ज़ोर के साथ प्रवेश करता है, और इस पर दूसरी तरफ से बहना लागू नहीं होता है। अतः उनमें ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उनके पहले कथन के विरुद्ध हो, इसलिए वे तीसरी स्थिति के बारे में फ़रमाते हैं "वह उस समय तक पाक नहीं होगा जब तक कि दूसरी तरफ से बाहर न निकल जाए..."

[पाद-टिप्पणी अनुभाग]: (अरबी): मैंने इस क्रिया और इसके मूल शब्द को सहाह, मुख़्तार, क़ामूस, ताज अल-अरूस, मुफ़्रदात अल-राग़िब, निहाया इब्न अल-असीर, अद-दुर्र अल-नसीर, मजमा अल-बिहार, या अल-मिस्बाह अल-मुनीर में नहीं देखा। केवल क़ामूस में है: "तफ़्फ़ा अल-मक्कुकु वल-इनाउ" (बर्तन और पैमाने का छलकना)।

(हिंदी अनुवाद): इस क्रिया और इसके मूल शब्द को मैंने सहाह, स़राह, मुख़्तार, क़ामूस, ताज अल-अरूस, मुफ़्रदात-ए-राग़िब, निहाया इब्न अल-असीर, दुर्र-ए-नसीर, मजमा अल-बिहार और मिस्बाह अल-मुनीर में नहीं पाया। क़ामूस में केवल इतना ही है कि बर्तन और पैमाने का तफ़, तफ़्फ़फ़ (हरकत के साथ) और तफ़ाफ़।

पृष्ठ 363/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم]: التجرید فان کونها لا تستقر لیس الا للغرف المتدارك فلیس فی الخلاصة اختیار تخصیص الجریان باکثر من ذراعین حتی یعکر علیه بمخالفته اطلاقهم وانما حکاه قولا وجعل المختار هو الاطلاق اما عبارتا الظهیریة الاخیرتان فاقول هما فیما دخل الماء الحوض وملاه حتی طش منه علی جوانبه علی وجه الانتضاح الخفیف اللازم للامتلاء بدخول قوی عنیف ولا یصدق علیه السیلان من الجانب الآخر (۱) فلیس فیهما ما ینا فی عبارته (۲) الاولی الاتری الی قوله فی الثالثة لا یطهر ما لم یخرج من جانب آخر ناط الطهارة بمجرد الخروج فعلم ان ما ذکر لا یسمی خروجا من جانب آخر وما هو الا الانتضاح الذی ذکرنا هکذا ینبغی ان یفهم کلام العلماء واللہ الحمد، وبه ظهر ان (۳) قول العلامة ش فی صدر المسألة حتی عه طف من جوانبها حقه

[اردو کالم]: حوض میں ہے جو نا پاک ہو گیا اور وہ اُس کے ناپاک نہ ہونے کی صورت ہے اور اسی کی مثل تجرید سے انہوں نے نقل کیا، کیونکہ اس کا برقرار نہ رہنا تسلسل سے چلّو بھرنے کی ہی وجہ سے ہے ، تو خلاصہ میں دو ہاتھ سے زائد جاری ہونے کی تخصیص کو اختیار نہیں کیا، اگر ایسا ہوتا تو کہا جاسکتا تھا کہ وہ ان کے اطلاقات کی مخالفت کر رہے ہیں، انہوں نے تو اس کو محض حکایت کیا ہے ، اور مختار اطلاق ہی کو قرار دیا ہے، اور ظہیریہ کی دو آخری عبارتوں کے متعلق میں کہتا ہوں یہ دونوں اُس صورت سے متعلق ہیں جبکہ پانی حوض میں داخل ہوا اور اس کو بھر دیا اور اس کے کناروں سے آہستہ آہستہ چھلکنے لگا یہ چیز عام طور پر اس وقت ہوتی ہے جب حوض میں پانی یک دم سختی کے ساتھ داخل ہوتا ہے ، اور اس پر دوسری جانب سے بہنا صادق نہیں آتا ہے ، تو ان میں کوئی ایسی چیز نہیں ہے جو ان کی پہلی عبارت کے منافی ہو،

چنانچہ وہ تیسری صورت کے بارے میں فرماتے ہیں " وہ اس وقت تک پاک نہ ہوگا جب تک دوسری طرف سے خارج

[حاشیہ]: عه لم ارهذا الفعل ولا مصدره فی الصحاح ولا الصحاح ولا المختار ولا القاموس ولا تاج العروس ولا مفردات الراغب ولا نهاية ابن الاثير ولا الدر النثير ولا مجمع البحار ولا المصباح المنير انما فی القاموس طف المكوك والاناء

اس فعل اور اس کے مصدر کو میں نے صحاح، صراح، مختار، قاموس، تاج العروس، مفرداتِ راغب، نہایہ ابن اثیر، درِ نثیر، مجمع البحار اور مصباح المنیر میں نہیں پایا۔ قاموس میں اتنا ہی ہے کہ برتن اور پیمانے کا طف، طفّف (حرکت کے ساتھ) اور طفاف

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Arabic Column]: ...that he should say 'until it flowed from the other side'. For perhaps what was mentioned does not exceed mere splashing initially or does not reach it. And (1) there is no need for it to flow from all sides; rather, it is necessary to exit from the side opposite to the entry. So, if (2) the vessel were tilted on uneven ground, and water was introduced into it from its higher side and exited from the lower side, it would suffice. Yes, if it were poured into the lower side and returned from it, it would not suffice, as in the last part of the 'Khulasah' text. And with Allah is success.

[Urdu Column]: And from this, it also became clear that Allama Sh.'s discussion at the beginning of the issue 'until it overflows from its sides' should have been phrased as 'until it flows from the other side'. What they have mentioned will not increase beyond splashes or will not reach that point. There is no need for it to flow from all edges; the only necessity is that it flows out from the side opposite to where the water entered. Now, if the vessel is on uneven ground and tilted to one side, and water enters from the upper side and exits from the lower side, it is sufficient. Yes, if it is poured into the lower part and comes back from it, it will not be sufficient, as stated at the end of the text of 'Khulasah'. And with Allah is success. (T)

(Remaining footnote from the previous page)

[Arabic terms and definitions]: (Taffafa - with a vowel on the 'fa', and Tafafahu - with a kasra on the 'ta') It refers to what fills its edges or what remains after wiping the top of the vessel, or its fullness. A 'vessel of taffan' is one that reaches the prescribed measure. In 'Taj al-Arus', it says: "This is the 'taf' of the measure and its 'tafaf'" - this is said when the measure is near being full. The term 'isbarah' mentioned refers to its sides, and 'jumamah' refers to what stays above the top after the vessel is full, which is found in things like flour where after filling the vessel, it rises above the top. May Allah forgive him. (M)

[Urdu Explanation]: (The letter 'Ta' is also given a kasra). It is called that which fills its edges, or what remains after wiping over the top of the vessel, or its being full, or to fill it. 'Ina-e-Tafaf' is that vessel which is filled up to the fixed measure. In 'Taj al-Arus', it is written that it is said: "This is the 'taf' of the scale and its 'tafaf'". This is said when the measure is close to being full. And the word 'Isbarah' used in 'Qamus' refers to its sides. And 'Jumamah' refers to that which is raised and bulging after the vessel is full,

and this thing is found in flour etc. that after filling the vessel, it is raised up to the top. 12 Minhu, May Allah forgive him. (T)

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[अरबी कॉलम]: ...कि उसे कहना चाहिए 'जब तक कि वह दूसरी तरफ से न बह जाए'। क्योंकि शायद जो बताया गया है वह शुरुआत में केवल छींटों से ज़्यादा न हो या उस तक न पहुँचे। और (१) सभी तरफ से बहने की ज़रूरत नहीं है; बल्कि प्रवेश के विपरीत दिशा से बाहर निकलना आवश्यक है। तो, अगर (२) बर्तन असमान ज़मीन पर झुका हुआ हो, और उसमें पानी उसके ऊपरी हिस्से से डाला जाए और निचले हिस्से से निकल जाए, तो यह पर्याप्त है। हाँ, अगर इसे निचले हिस्से में डाला जाए और वहीं से वापस आ जाए, तो यह पर्याप्त नहीं होगा, जैसा कि 'खुलासा' के अंतिम पाठ में है। और अल्लाह के साथ ही सफलता है।

[उर्दू कॉलम]: और इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि अल्लामा श. की चर्चा मसले की शुरुआत में 'यहाँ तक कि उसके किनारों से छलक जाए' की जगह यह कहना चाहिए था कि 'यहाँ तक कि वह दूसरी तरफ से बह जाए'। उन्होंने जो उल्लेख किया है वह छींटों से अधिक नहीं बढ़ेगा या उस तक नहीं पहुँचेगा। और सभी किनारों से बहने की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता केवल इस बात की है कि जिस तरफ से पानी डाला गया हो, उसके विपरीत दिशा से वह बाहर निकल आए। अब अगर बर्तन किसी असमान ज़मीन पर है और एक तरफ झुका हुआ है और उसमें पानी ऊपर की तरफ से डाला जाए और निचले हिस्से से निकल जाए, तो काफी है। हाँ, अगर निचले हिस्से में बहाया जाए और उससे वापस आ जाए तो काफी नहीं होगा, जैसा कि 'खुलासा' की इबारत के अंत में है। और अल्लाह के साथ ही सफलता है। (त)

(पिछले पृष्ठ से शेष फुटनोट)

[अरबी शब्दों की परिभाषाएँ]: (तफ़्फ़फ़ा और तफ़ाफ़ा) इसे वह कहा जाता है जो उसके किनारों को भर दे या जो बर्तन के ऊपर हाथ फेरने के बाद बाकी बच जाए या उसका भर जाना है। 'इना-ए-तफ़ान' उस बर्तन को कहा जाता है जो निर्धारित माप तक भर जाए। 'ताजुल उरूस' में है कि कहा जाता है "यह पैमाने का तफ़ है और इसका तफ़ाफ़ है"। यह उस समय बोला जाता है जब पैमाना भरने के करीब हो। और 'इस्बाह' से मतलब उसके किनारे हैं। और 'जुमामह' से तात्पर्य वह है जो बर्तन भरने के बाद उभरा हुआ हो, और यह चीज़ आटे वगैरह में पाई जाती है कि बर्तन भरने के बाद ऊपर तक उठा होता है। अल्लाह उसे क्षमा करे। (म)

[उर्दू स्पष्टीकरण]: (ता को कसरा भी दिया जाता है)। इसे वह कहा जाता है जो उसके किनारों को भर दे या जो बर्तन के ऊपर हाथ फेरने के बाद बाकी बच जाए या उसका भर जाना है या भरना है और इना-ए-तफ़ाफ़ उस बर्तन को कहा जाता है जो निर्धारित माप तक भर जाए। ताजुल उरूस में है कि कहा जाता है "यह पैमाने का तफ़ है और इसका तफ़ाफ़ है"। यह उस समय बोला जाता है जब पैमाना भरने के करीब हो। और क़ामूस ने जो "इस्बाह" कहा है, उससे उसका मतलब उसके किनारे हैं। और "जुमामह" से मुराद वह है जो बर्तन भरने के बाद उभरा हुआ हो, और यह चीज़ आटे वगैरह में पाई जाती है कि बर्तन भरने के बाद ऊपर तक उठा होता है। १२ मिन्हु गफ़रल्लाह (त)

पृष्ठ ३६४ का ७११

[Arabic Column]: ان یقول حتی سال من الجانب الآخر فربما لایزید ماذکر علی الانتضاح اولا یبلغه ولا(۱)حاجة الی السیلان من جمیع الجوانب انما اللازم الخروج من جهة المقابل للدخول فلو(۲) کان الاناء مائلا فی ارض غیر مستویة وادخل فیه الماء من جانبه العالی وخرج من السافل کفی نعم لوصب فی الجانب السافل فعاد منه لم یکف کما فی اخر عبارة الخلاصة وباللہ التوفیق۔

[Urdu Column]: اور اسی سے یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ علامہ ش کی گفتگو مسئلہ کی ابتدا میں حتی طف من جوانبہا اس کی بجائے یوں کہنا چاہئے تھا کہ حتی سال من الجانب الآخر، تو جو انہوں نے ذکر کیا ہے وہ چھینٹوں سے نہیں بڑھے گا یا اس تک نہیں پہنچے گا، اور تمام کناروں سے بہنے کی حاجت نہیں ضرورت صرف اس امر کی ہے کہ جس طرف سے پانی داخل ہوا ہو اس کی مخالف جہت سے بہہ نکلے ، اب اگر برتن کسی ناہموار زمین پر ہے اور ایک طرف کو جھکا ہوا ہے اور اس میں پانی اوپر کی طرف سے داخل ہو کر نچلی طرف سے نکل جائے تو کافی ہے، ہاں اگر نچلے حصہ میں بہایا جائے اور اُس سے واپس آجائے تو کافی نہ ہوگا جیسا کہ خلاصہ کی عبارت کے آخر میں ہے وباللہ التوفیق۔ (ت)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ)

[Arabic Section]: وطففه محرکة وطفافه ویکسر ما ملاء اصباره او ما بقی فیه بعد مسح رأسه او هو جمامه اوملؤه واناء طفّان بلغ الکیل طفافه اه فی تاج العروس هذا طف المکیال و طفافه اذا قارب ملأه اه وقوله اصباره ای جوانبه وجمامه ما علی رأسه فوق طفافه ویکون ذلك فی الدقیق و نحوه یعلو رأسه بعد امتلائه منه غفرلہ۔ (م)

[Urdu Section]: (طاکو کسرہ بھی دیا جاتا ہے) اس کو کہا جاتا ہے جو اس کے کناروں کو بھر دے یا جو برتن کے سر پر ہاتھ پھیرنے کے بعد باقی بچ جائے یا اس کا بھرنا ہے یا بھرنا ہے اور اناء طفاف اس برتن کو کہا جاتا ہے جو مقرر ناپ تک بھر جائے اھ تاج العروس میں ہے کہ کہا جاتا ہے "یہ پیمانے کا طف ہے اور اس کا طفاف ہے"۔ یہ اس وقت بولا جاتا ہے جب پیمانہ بھرنے کے قریب ہو اھ اور قاموس نے "اصبارہ" جو کہا ہے تو اس سے مراد اس کے اطراف ہیں، اور "جمامہ" سے مراد وہ ہے جو برتن بھرنے کے بعد اور ابھرا ہو اور یہ چیز آٹے وغیرہ میں پائی جاتی ہے کہ برتن بھرنے کے بعد اوپر تک اٹھا ہوتا ہے ۱۲ امنہ غفرلہ (ت)

Fatawa-e-Razvia Volume 2

Principle 5: I say: From here it is clear that (1) the movement of water within a vessel, even if it is for yards, will not be considered a 'flow' (jaryan) for that vessel. Although the agitation of water inside it occurred due to external entry, it did not exit from it, so the pillars of flow were not established. However, if there is another smaller vessel inside that vessel and water enters it and causes it to overflow, then it will certainly be considered a flow for it, as all the requirements have been fulfilled, even if it does not exit the cavity of the second (outer) vessel. For example, a bowl is placed in a cauldron; a goat's pellet fell into the bowl, it was thrown out, and water was poured over the bowl until it overflowed and came out, but what to speak of exiting the cauldron, it wasn't even full. Then undoubtedly the bowl and its water became pure, because being placed on the ground or inside a cauldron has no effect on the ruling. And this is very evident. (T)

Principle 6: I say: Although purity will be achieved by this flow, and if the impurity (2) was visible and was removed, or it was invisible, then purity will remain absolutely and forever until a new impurity occurs. However, if the impurity is visible and was not removed, then the ruling of purity remains only as long as this flow continues. As soon as the water stops, the vessel and the water inside it will become impure again because the cause, i.e., impurity, is present, and the barrier, which was the flow, has ceased. And this too, by its clarity, is in no need of further explanation. (T) In 'Minhat-ul-Khaliq', quoting 'Sharh Hadyah Ibn-ul-Imad' by Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi (May his secret be sanctified), it is stated:

If dung is placed in a water distribution point to houses and it flows with the water in the pipes (qasatil), then the water is impure. | When dung is placed in the water at such a point from where water is distributed to different houses and that dung [is with the] water.

Note: In our countries, it is customary to throw animal dung into water channels leading to houses to seal leaks in those channels called 'qasatil'. End of quote from Sh. So the water will flow along with this dung because it seals the holes of the 'qasatil' so that water does not escape from them and remains flowing over it. End of quote from 'Sharh Hadyah Ibn-ul-Imad'. I say: This is a modern term. (T)

Page 365 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

सिद्धांत 5: मैं कहता हूँ: यहाँ से यह स्पष्ट हुआ कि (1) किसी बर्तन के भीतर पानी की गति चाहे वह गज़ों तक हो, उस बर्तन के लिए 'प्रवाह' (जर्यान) नहीं मानी जाएगी। हालांकि पानी की हलचल बाहरी प्रवेश के कारण हुई, लेकिन वह उससे बाहर नहीं निकला, इसलिए प्रवाह के स्तंभ (शर्तें) पूर्ण नहीं हुए। लेकिन अगर उस बर्तन के अंदर कोई दूसरा छोटा बर्तन हो और पानी उसमें जाकर उसे उबलने/उभरने पर मजबूर कर दे, तो उसके लिए निश्चित रूप से प्रवाह माना जाएगा क्योंकि उसमें सभी आवश्यक शर्तें पूरी हो गई हैं, भले ही वह दूसरे (बाहरी) बर्तन से बाहर न निकले। उदाहरण के लिए, एक बड़ी देग में एक कटोरा रखा है; कटोरे में बकरी की मिंगनी गिर गई, उसे निकाल कर फेंक दिया गया और कटोरे पर पानी डाला गया यहाँ तक कि वह उबल कर निकल गया, लेकिन देग से निकलने की बात तो दूर, वह भरी भी नहीं थी। तो निःसंदेह कटोरा और उसका पानी पवित्र हो गया, क्योंकि ज़मीन पर रखे होने या देग के अंदर होने का हुक्म (नियम) पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। और यह अत्यंत स्पष्ट है। (त)

सिद्धांत 6: मैं कहता हूँ: हालांकि इस प्रवाह से पवित्रता प्राप्त हो जाएगी, और यदि अशुद्धि (2) दिखाई देने वाली (मरईय्या) थी और उसे निकाल लिया गया, या वह अदृश्य (ग़ैर-मरईय्या) थी, तो पवित्रता सदैव के लिए रहेगी जब तक कि नई अशुद्धि न आ जाए। लेकिन यदि अशुद्धि दिखाई देने वाली है और उसे निकाला नहीं गया, तो पवित्रता का हुक्म केवल तब तक है जब तक यह प्रवाह जारी है। जैसे ही पानी रुकेगा, बर्तन और उसके अंदर का पानी पुनः अपवित्र हो जाएगा क्योंकि कारण (अशुद्धि) मौजूद है और रुकावट (प्रवाह) समाप्त हो गई है। और यह भी अपनी स्पष्टता के कारण किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं रखता। (त) 'मिन्हात-उल-ख़ालिक' में सैय्यदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी (क़ुद्दिस सिर्रहु) द्वारा 'शरह हदिया इब्न-उल-इमाद' के हवाले से लिखा है:

यदि गोबर पानी के वितरण केंद्र में रखा जाए जो घरों को जाता है और वह पानी के साथ नलियों (क़सातिल) में बहता है, तो पानी अशुद्ध है। | जब गोबर पानी में ऐसे स्थान पर रख दिया जाए जहाँ से पानी विभिन्न घरों में विभाजित होकर जाता हो और वह गोबर पानी [के साथ हो]।

नोट: हमारे देशों में यह रिवाज है कि पशुओं का गोबर आदि पानी के रास्तों में डाल देते हैं ताकि 'क़सातिल' नामक उन नालियों के छेद बंद हो जाएँ। (हवाला अंत)। तो पानी इस गोबर के साथ ही प्रवाहित होगा क्योंकि यह उन छेदों को बंद कर देता है जिनसे पानी निकलता है, और पानी उसके

ऊपर से बहता रहता है। (हवाला अंत: 'शरह हदिया इब्न-उल-इमाद')। मैं कहता हूँ कि यह एक नया शब्द (संशोधित शब्दावली) है। (त)

पेज 365/711

اصل ۵: اقول یہاں سے ظاہر ہوا کہ (۱) کسی محل کے جوف میں پانی کی حرکت اگرچہ گزوں ہو اُس محل کے حق میں جریان نہ ٹھہرے گی اُس کے بطن میں پانی کی جنبش اگرچہ باہر سے داخل ہونے پر ہوئی مگر اُس سے خارج تو نہ ہوا تو جریان کے دور کن نہ پائے گئے مگر اُس محل کے اندر اگر دوسرا محل صغیر اور ہوا اور پانی اس میں جا کر اُسے ابال دے تو اس کے حق میں ضرور جریان ہو جائیگا کہ اس میں سب ارکان متحقق ہو گئے اگرچہ دوسرے کے جوف سے خروج نہ ہو مثلاً دیگ میں ایک کٹورا رکھا ہے کٹورے میں ایک مینگنی پڑ گئی وہ نکال کر پھینک دی اور کٹورے پر پانی بہایا کہ اُبل کر نکل گیا مگر دیگ سے نکلنا کیا معنی وہ بھری بھی نہیں تو بے شک کٹورا اور اس کا پانی پاک ہو گیا کہ زمین پر یا دیگ کے اندر رکھے ہونے کو حکم میں کچھ دخل نہیں وھذا ظاھر جدا (اور یہ بہت واضح ہے۔ت)

اصل ۶: اقول: اس جریان سے اگرچہ طہارت ہو جائے گی اور نجاست (۲) مرئیہ تھی اور نکال لی یا غیر مرئیہ تھی تو مطلقاً ہمیشہ طہارت رہے گی جب تک دوبارہ نجاست عارض نہ ہو مگر اگر نجاست مرئیہ ہے اور نہ نکالی تو حکم طہارت اُس وقت تک ہے جب تک یہ جریان باقی ہے پانی تھمتے ہی ظرف اور اس کے اندر کا پانی پھر ناپاک ہو جائیں گے کہ سبب یعنی نجاست موجود ہے اور مانع کہ جریان تھا زائل ہو گیا وھذا ایضاً بوضوحہ غنی عن الایضاح (اور یہ بھی اپنے واضح ہونے میں کسی دلیل کا محتاج نہیں۔ ت) منحۃ الخالق میں شرح ہدیہ ابن العماد لسیدی عبدالغنی النابلسی قدس سرہ القدسی سے ہے:

اذا وضع السرقین فی مقسم الماء الی البیوت | جب گوبر پانی میں ایسے مقام پر رکھ دیا جائے کہ وہاں سے وجری مع الماء فی القساطل عه فالماء نجس | پانی مختلف گھروں کو منقسم ہو کر جاتا ہو اور وہ گوبر پانی

عہ اعتیاد فی بلادنا القاء زبل الدواب فی مجاری | ہمارے ممالک میں چوپایوں کا گوبر وغیرہ پانی کی گزرگاہ میں ڈال الماء الی البیوت لسد خلل تلك المجاری المسماۃ | دیتے ہیں تاکہ ان نالیوں کے سوراخ بند ہو جائیں، اس خلل کو بالقساطل اه ش لایجری الماء الابه ای بالزبل | قساطل کہتے ہیں اھ ش تو پانی اس گوبر کے ساتھ ہی جاری ہوگا لکونہ یسد خروق القساطل لا ینفذ الماء منہا | کیونکہ یہ اُن سوراخوں کو بند کرتا ہے جن سے پانی جاری ہوتا ویبقی جاریا فوقہ اه شرح ھدیۃ ابن العماد قلت | ہے، تو پانی ان کے اندر سے نہیں نکلتا ہے بلکہ اوپر سے بہتا ہے اھ وھی لغۃ مستحدثۃ منہ غفرلہ۔ (م) | شرح ہدیہ ابن العماد، میں کہتا ہوں یہ جدید لغت ہے۔(ت)

Fatawa Razawiyya - Volume II

[Dung] flowed along with [the water] in the pipes, the water would become impure. If the dung settled in the middle of the pipes and clear water began to flow, it would be equivalent to snow water flowing over impurity or a riverbed being impure while water flows over it without any of its characteristics changing due to the impurity; then all that water is pure. Similarly, when the water reaches the basins in houses, if it arrives with one of its characteristics changed by the dung or if the essence of the dung is visible in it, then it is undoubtedly impure. If it settles in a basin that is less than a large quantity, it is impure, even if it subsequently becomes clear in the basin and its change disappears on its own, because it is impure water, and impure water does not become pure simply because its change disappears on its own, especially in a case where the filth is settled at its bottom. If it settles in a large basin, it remains impure as long as it is changed or if its change disappears on its own as well. However, if the water continues to flow and the change in the basin is removed by clear water, then all the water becomes pure, whether the basin is small or large, even if the dung is settled at its bottom, as long as clear water enters that basin from one point and exits from another. If the flow stops and the basin is small with dung settled at its bottom, then the basin is impure.

Arabic Text Transcription: Fatawa Razawiyya If the dung settles in the middle of the pipes and the water flows clear, it is similar to when snow water flows over impurity or if the bed of the river is impure and water flows over it and none of its qualities change due to the impurity; then all that water is pure. Similarly, if the water reaches the basins in the houses, if it arrives with one of its qualities changed by the dung or the essence of the dung is visible in it, then it is impure without a doubt. If it settles in a basin that is less than a large quantity, then it is impure even if it becomes clear after that in the basin and its change disappears by itself, because it is impure water, and impure water does not become pure by the disappearance of its change by itself, especially since the dung has settled at its bottom. If it settles in a large basin, it is also impure as long as it is changed or its change has disappeared by itself as well. But if the water continues to flow and the change of the basin is removed by clear water, the entire water becomes pure, whether the basin is small or large, even if the dung is settled at its bottom, as long as the clear water enters that basin from one

place and exits from another. If the flow stops and the basin is small and the dung is settled at its bottom, then the basin is impure.

1. *Minhat al-Khaliq 'ala Hashiyat Bahr al-Ra'iq*, Discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/85.

फ़तावा रज़विया - जिल्द द्वितीय

यदि [पाइपों] में [गोबर] के साथ [पानी] प्रवाहित होता, तो पानी अशुद्ध हो जाता। यदि गोबर पाइपों के बीच में जम गया और साफ़ पानी बहने लगा, तो यह वैसा ही है जैसे बर्फ का पानी अशुद्धता पर बहने लगे या नदी का तल अशुद्ध हो और उस पर पानी बहे तथा अशुद्धता के कारण उसके गुणों में से कोई भी गुण न बदले; तो वह सारा पानी शुद्ध है। इसी प्रकार, जब पानी घरों के कुंडों (हौज़ों) में पहुँचता है, तो यदि वह गोबर के कारण बदले हुए किसी गुण के साथ पहुँचता है या पानी में साफ़ तौर पर गोबर दिखाई दे रहा है, तो वह निस्संदेह अशुद्ध है। यदि वह बड़ी मात्रा से कम हो और कुंड में ठहर जाए, तो वह अशुद्ध है, भले ही इसके बाद कुंड में वह साफ़ हो जाए और उसका बदलाव अपने आप समाप्त हो जाए, क्योंकि वह अशुद्ध पानी है और अशुद्ध पानी अपने आप बदलाव समाप्त होने से शुद्ध नहीं होता, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब गंदगी उसके नीचे जमी हुई हो। यदि गंदगी बड़े कुंड में जम जाए, तो जब तक वह बदला हुआ रहेगा, अशुद्ध रहेगा, या उसका बदलाव अपने आप समाप्त हो जाए। और यदि पानी निरंतर बहता रहे और साफ़ पानी के कारण कुंड का बदलाव समाप्त हो जाए, तो इस स्थिति में सारा पानी शुद्ध हो जाएगा चाहे कुंड छोटा हो या बड़ा, भले ही गोबर उसके तल में जमा हो, जब तक कि साफ़ पानी उस कुंड में एक स्थान से प्रवेश करे और दूसरे स्थान से निकले। यदि बहाव रुक जाए और कुंड छोटा हो तथा गोबर उसके तल में जमा हो, तो कुंड अशुद्ध है।

अरबी पाठ का लिप्यंतरण: फ़तावा रज़विया यदि गोबर पाइपों के बीच में ठहर जाए और पानी साफ़ बहने लगे, तो यह वैसा ही है जैसे बर्फ का पानी अशुद्धता पर बहने लगे या नदी का तल अशुद्ध हो और उस पर पानी बहे और अशुद्धता के कारण उसका कोई गुण न बदले; तो वह सारा पानी शुद्ध है। इसी प्रकार, यदि पानी घरों के हौज़ों (कुंडों) में पहुँचता है, तो यदि वह गोबर के कारण अपने किसी गुण में बदलाव के साथ पहुँचता है या पानी में गोबर साफ़ दिखाई दे रहा है, तो वह निस्संदेह अशुद्ध है। यदि वह बड़ी मात्रा (कसीर) में न हो और हौज़ में ठहर जाए, तो वह अशुद्ध है, भले ही उसके बाद हौज़ में वह साफ़ हो जाए और उसका बदलाव अपने आप समाप्त हो जाए, क्योंकि वह अशुद्ध पानी है और अशुद्ध पानी अपने आप बदलाव समाप्त होने से शुद्ध नहीं होता, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब गंदगी उसके नीचे जमी हो। यदि गंदगी बड़े हौज़ में जम जाए, तो जब तक वह बदला हुआ रहेगा, अशुद्ध रहेगा, या उसका बदलाव अपने आप समाप्त हो जाए। और यदि पानी निरंतर बहता रहे और हौज़ का बदलाव साफ़ पानी के कारण समाप्त हो जाए, तो इस स्थिति में सारा पानी शुद्ध हो

जाएगा चाहे हौज़ छोटा हो या बड़ा, भले ही गोबर उसके तल में जमा हो, जब तक कि साफ़ पानी उस हौज़ में एक स्थान से प्रवेश करे और दूसरे स्थान से निकले। यदि बहाव रुक जाए और हौज़ छोटा हो और गोबर उसके तल में जमा हो, तो हौज़ अशुद्ध है।

1. मिन्हातुल खालिक अला हाशियत बहरुर रैक, बहते पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/85।

पृष्ठ 711 का 366

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

کے ساتھ قساطل میں جاری ہوا، تو پانی ناپاک ہو جائیگا، تو اگر گوبر قساطل کے درمیان جم گیا اور صاف پانی بہنے لگا، تو یہ ایسا ہے جیسا کہ برف کا پانی نجاست پر بہنے لگے یا نہر کا پیٹ ناپاک ہو اور اس پر پانی جاری ہو اور نجاست سے اس کے اوصاف میں سے کوئی وصف متغیر نہ ہوا تو یہ پورا پانی پاک ہے، اب پانی جب گھروں کے حوضوں میں پہنچے تو اگر پانی کا کوئی وصف متغیر ہو کر پہنچا ہے یا پانی میں بعینہ گوبر ظاہر ہے تو وہ بلا شبہ ناپاک ہے، اور اگر کثیر مقدار میں نہ ہو اور حوض میں ٹھہر جائے تو وہ ناپاک ہے، اگر چہ اس کے بعد حوض میں صاف ہو جائے اور اس کا تغیر خود بخود زائل ہو جائے کیونکہ وہ ناپاک پانی ہے اور ناپاک پانی تغیر کے از خود زائل ہونے کی وجہ سے پاک نہیں ہوتا ہے خاص طور پر ایسی صورت میں جبکہ گندگی اس کے نیچے جمی ہوئی ہے اور اگر گندگی بڑے حوض میں جم جائے تو جب تک متغیر رہے گا ناپاک رہے گا، یا اس کا تغیر خود بخود ختم ہو جائے، اور اگر پانی مسلسل جاری رہے اور حوض کا تغیر صاف پانی کی وجہ سے ختم ہو جائے، اس صورت میں کل پانی پاک ہو جائیگا خواہ حوض چھوٹا ہو یا بڑا، اگر چہ

عربی عبارت کا متن: فتاوی رضویه فاذا ركد الزبل فی وسط القساطل وجری الماء صافيا كان نظير مالو جری ماء الثلج علی النجاسة اوكان بطن النهر نجسا وجری الماء عليه ولم يتغير احد اوصافه بالنجاسة فان ذلك الماء طاهر كله كذلك هذا فاذا وصل الماء الی الحياض فی البيوت فان وصل متغير احد اوصاف بالزبل اوعين الزبل ظاهرة فيه فهو نجس من غير شك فاذا استقر فی حوض دون القدر الكثير فهو نجس وان صفا بعد ذلك فی الحوض و زال تغيره بنفسه لانه ماء نجس والماء النجس لايطهر بزوال تغيره بنفسه لاسيما وقد ركد الزبل فی اسفله وان استقر في حوض كبير فهو نجس ايضا مادام

متغيرا او زال تغيره بنفسه ايضاً واما اذا استمر الماء جارياً وزوال تغير الحوض بالماء الصافى يطهر الماء كله سواء كان الحوض صغيرا اوكبيرا وان كان الزبل فى اسفله راكدا مادام الماء الصافي في ذلك الحوض يدخل من مكان ويخرج من مكان فاذا انقطع الجريان وكان الحوض صغيرا والزبل في اسفله راكدا فالحوض نجس اهـ

1 منحة الخالق على حاشية بحر الرائق بحث الماء الجارى ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۸۵/۱

صفحہ 711 میں سے 366

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Right Column - Urdu Text] Filth is settled at its bottom, provided that clean water enters it from one side and exits from the other. When the flow of water stops, and the pool is small, and filth is settled at its bottom, the pool becomes impure. (T) I say: This is very good speech; Ash-Shami has maintained it, and our purpose here relates to its final sentence. However, the point is that his statement "it flowed with water, so the water is impure" will be interpreted as being when the water undergoes change (in color, taste, or smell). This is because the verified, relied-upon opinion is that flowing water does not become impure as long as it does not change, even at the site of visible impurity. Similarly, a large quantity of water joined with it is also treated the same according to the relied-upon opinion. The absolute verifier (Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) preferred this, and his student Qasim said that this is the chosen opinion (Durr). His other student, Ibn Amir al-Hajj, considered it excellent and supported it with Hadith. Sayyidi Abdul Ghani also supported it, and this is also evident from the primary texts (Mutun) "Sh". In Al-Durr, via Jami' al-Rumuz from Jami' al-Mudmarat from Al-Nisab, it is stated that the fatwa is based on this. In "Sh", via Al-Bahr from Al-Hilyah from Al-Nisab, it is stated: "Fatwa is given on this." So when this is established by Hadith, and it is evident from the texts, and the fatwa is on it, then everything else becomes disregarded. Furthermore, his statement (may Allah have mercy on him) "impure water does not become pure by the automatic removal of its change," I say: this is as he mentioned for non-flowing water. Because in Al-Khulasah it is stated that if impure water is put into a large river, if it is in a large quantity such that it does not change, it does not become impure; if it changes, it becomes impure and then pure [when the change is gone].

[Left Column - Arabic Text] I say: Good speech from a good person, may Allah Almighty scent his soil (grave). Ash-Shami has confirmed it. Our purpose here relates to its final sentence. However, his statement "it flowed with water, so the water is impure" is carried upon when it changes. For indeed (1) the verified, relied-upon opinion is that the flowing water does not become impure as long as it does not change, even at the site of visible impurity. Similarly, the large [quantity of water] attached to it according to the relied-upon opinion, as preferred by the absolute verifier (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq). His student Qasim said it is the chosen one (Al-Mukhtar) in Al-Durr. His other student, Ibn Amir al-Hajj, considered it good and supported it with Hadith. Likewise, Sayyidi Abdul Ghani supported it, and it is apparent from the texts (Al-Mutun) "Sh". In Al-Durr, from Jami' al-Rumuz from Jami'

al-Mudmarat from Al-Nisab, upon it is the fatwa. In "Sh", from Al-Bahr from Al-Hilyah from Al-Nisab, with it fatwa is given. So when it is the established one by Hadith, and it is apparent from the texts, and upon it is the fatwa, then what is besides it has fallen (is disregarded). Then his statement, may Allah Almighty have mercy on him: "Impure water does not become pure by the removal of its change by itself" – I say: This is as he mentioned in non-flowing [water]. Because of the statement in Al-Khulasah: Impure water (2) they put it in a large river; if it was large such that it does not change, it does not become impure; and if it changes, it becomes impure and becomes pure.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] गंदगी इसकी तह में जमी हुई हो, बशर्ते कि साफ़ पानी इसमें एक तरफ़ से दाखिल होता हो और दूसरी तरफ़ से बाहर निकलता हो। तो जब पानी का बहना बंद हो जाए और हौज छोटा हो और गंदगी इसकी तह में जमी हुई हो, तो हौज नापाक है। (त) मैं कहता हूँ: यह बहुत अच्छा कलाम (बात) है, शामी ने इसे बरकरार रखा है और यहाँ हमारा मक़सद आख़िरी जुमले से संबंधित है। अलबत्ता इतनी बात है कि उनका कौल (कथन) "यह पानी के साथ बह गया, इसलिए पानी नापाक है" उसे उस स्थिति पर माना जाएगा जब पानी में बदलाव (रंग, स्वाद या गंध में) आ जाए। क्योंकि शोधकर्ता का विश्वसनीय मत यह है कि बहता पानी उस समय तक नापाक नहीं होगा जब तक कि उसमें बदलाव न आ जाए, यहाँ तक कि दिखाई देने वाली गंदगी के स्थान पर भी। इसी प्रकार 'कसीर' (ज़्यादा पानी) भी विश्वसनीय मत पर इसी के साथ जुड़ा हुआ है। इसे मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक (पूर्ण शोधकर्ता) ने प्राथमिकता दी है और उनके शिष्य कासिम ने कहा कि यही मुख़्तार (चुना हुआ मत) है (दुर्र)। और इसे उनके दूसरे शिष्य इब्न अमीर अल-हाज ने अच्छा करार दिया और हदीस से इसका समर्थन किया। सैय्यदी अब्दुल ग़नी ने भी इसका समर्थन किया और ग्रंथों (मुतून) से भी यही ज़ाहिर है "श"। और दुर्र में जामे अल-रुमूज़ के ज़रिये जामे अल-मुदमरात से निसाब से यह है कि इसी पर फ़तवा है। और "श" में अल-बहर से अल-हिल्या से निसाब से है कि इसी पर फ़तवा दिया जाता है। तो जब हदीस से यही साबित है और ग्रंथों से भी यही ज़ाहिर है और फ़तवा भी इसी पर है, तो इसके होते हुए बाकी सब अविश्वसनीय है। फिर उनका कथन (अल्लाह उन पर रहम करे) "नापाक पानी उसके बदलाव के अपने आप दूर होने की वजह से पाक नहीं होगा" – मैं कहता हूँ कि यह उस पानी के बारे में है जो बहता न हो। क्योंकि 'खुलासा' में है कि नापाक पानी को अगर बड़ी नहर में डाल दें, तो अगर वह ज़्यादा है और बदलता नहीं है, तो नापाक नहीं होता; और अगर बदलता है, तो नापाक हो जाता है और फिर पाक हो जाता है।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: एक पाकीज़ा शख़्स का पाकीज़ा कलाम, अल्लाह तआला उनकी कब्र को खुशबूदार करे। शामी ने इसकी पुष्टि की है। हमारा मक़सद यहाँ इसके आख़िरी जुमले से संबंधित है। अलबत्ता उनका कथन "वह पानी के साथ बह गया, तो पानी नापाक है" इसे बदलाव की स्थिति पर माना जाता है। क्योंकि (1) शोधकर्ता का विश्वसनीय मत यह है कि बहता पानी नापाक नहीं होता जब तक कि वह बदल न जाए, यहाँ तक कि दिखाई देने वाली गंदगी के स्थान पर भी। इसी प्रकार कसीर (ज़्यादा पानी) भी विश्वसनीय मत के अनुसार इसके साथ जुड़ा है, जैसा कि

मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक ने इसे प्राथमिकता दी है। उनके शिष्य कासिम ने कहा कि यह दुर्र में मुख़्तार है। उनके दूसरे शिष्य इब्न अमीर अल-हाज ने इसे अच्छा माना और हदीस से इसकी पुष्टि की। इसी तरह सैय्यदी अब्दुल ग़नी ने इसकी पुष्टि की और यह मुतून (ग्रंथों) से स्पष्ट है "श"। दुर्र में, जामे अल-रुमूज़ से जामे अल-मुदमरात से निसाब से, इस पर फ़तवा है। "श" में, अल-बहर से अल-हिल्या से निसाब से, इसके साथ फ़तवा दिया जाता है। तो जब यह हदीस से साबित है और मुतून से स्पष्ट है और इस पर फ़तवा है, तो इसके अलावा जो है वह गिर गया (अमान्य है)। फिर उनका कथन, अल्लाह तआला उन पर रहम करे: "नापाक पानी अपने आप बदलाव दूर होने से पाक नहीं होता" – मैं कहता हूँ: यह वैसा ही है जैसा उन्होंने गैर-बहते पानी में ज़िक्र किया। क्योंकि खुलासा के कथन के अनुसार: नापाक पानी (2) वे उसे एक बड़ी नदी में डालते हैं; यदि वह इतना बड़ा था कि वह बदलता नहीं है, तो वह नापाक नहीं होता; और यदि वह बदलता है, तो वह नापाक हो जाता है और पाक हो जाता है।

पृष्ठ 367 / 711

[دائیں کالم کی عبارت] گندگی اس کی تہہ میں جمی ہوئی ہو بشر طیکہ صاف پانی اس میں ایک جانب سے داخل ہوتا ہو اور دوسری جانب سے خارج ہوتا ہو، تو جب پانی کا جاری ہونا بند ہو جائے اور حوض چھوٹا ہو اور گندگی اس کی تہہ میں جمی ہوئی ہو تو حوض ناپاک ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں یہ بہت اچھا کلام ہے، اس کو شامی نے برقرار رکھا ہے اور یہاں ہماری غرض آخری جملہ سے متعلق ہے البتہ اتنی بات ہے کہ اس کا قول "وجری مع الماء فالماء نجس" اس کو اس پر محمول کیا جائیگا جبکہ پانی میں تغیر آجائے کیونکہ محقق معتمد قول یہ ہے کہ جاری پانی اس وقت تک نجس نہ ہو گا جب تک کہ اس میں تغیر نہ آجائے یہاں تک کہ نجاست مرئیہ کی جگہ بھی اور اسی طرح کثیر بھی قول معتمد پر اسی کے ساتھ ملحق ہے، اس کو محقق علی الاطلاق نے ترجیح دی اور ان کے شاگرد قاسم نے کہا کہ یہی مختار ہے (دُر) اور اس کو ان کے دوسرے شاگرد ابن امیر الحاج نے مستحسن قرار دیا اور اس کی تائید حدیث سے کی اور اس کی تائید سیدی عبدالغنی نے بھی کی اور متون سے بھی یہی ظاہر ہے "ش" اور دُر میں جامع الرموز سے جامع المضمرات سے نصاب سے یہ ہے کہ اسی پر فتوٰی ہے اور شامی میں بحر سے حلیہ سے نصاب سے ہے بہ یفتی پھر جب حدیث سے یہی ثابت اور متون سے بھی یہی ظاہر اور فتوٰی بھی اسی پر ہے تو اس کے ہوتے ہوئے باقی سب ناقابل اعتبار ہے۔ پھر اُن کا قول " نجس پانی اس کے تغیر کے از خود زائل ہونے کی وجہ سے پاک نہ ہوگا" میں کہتا ہوں یہ اُس پانی میں ہے جو جاری نہ ہو، کیونکہ خلاصہ میں ہے کہ ایک نجس پانی کواگر بڑی نہر میں کرلیں تو اگر وہ کثیر ہے اور متغیر نہیں ہوتا ہے تو ناپاک نہیں۔

[بائیں کالم کی عبارت] اقول (میں کہتا ہوں): کلام طیب من طیب طیب اللہ تعالی ثراہ (ایک پاکیزہ شخص کا پاکیزہ کلام، اللہ تعالیٰ ان کی قبر کو خوشبودار کرے) وقد اقرہ الشامی (اور علامہ شامی نے اسے برقرار رکھا ہے) وغرضنا یتعلق ھھنا بجملتہ الاخیرۃ (اور ہماری غرض یہاں اس کے آخری جملہ سے متعلق ہے) غیر ان قولہ وجری مع الماء فالماء نجس یحمل علی ما اذا تغیر (مگر یہ کہ ان کا قول "وہ پانی کے ساتھ بہہ گیا تو پانی نجس ہے" اسے اس صورت پر محمول کیا جائے گا جب پانی متغیر ہو جائے) فان (۱) المحقق المعتمد ان الجاري لاینجس مالم یتغیر حتی موضع المرئیۃ (کیونکہ محقق معتمد قول یہ ہے کہ جاری پانی نجس نہیں ہوتا جب تک متغیر نہ ہو جائے یہاں تک کہ نجاستِ مرئیہ کے مقام پر بھی) وکذا الکثیر الملحق بہ علی المعتمد رجحہ المحقق علی الاطلاق (اور اسی طرح کثیر بھی معتمد قول پر اسی کے ساتھ ملحق ہے، اسے محقق علی الاطلاق نے ترجیح دی) وقال تلمیذہ قاسم انہ المختار در (اور ان کے شاگرد قاسم نے کہا کہ یہی مختار ہے "در") واستحسنہ تلمیذہ الآخر ابن امیر الحاج وایدہ بالحدیث (اور اسے ان کے دوسرے شاگرد ابن امیر الحاج نے مستحسن قرار دیا اور حدیث سے اس کی تائید کی) وکذا ایدہ سیدی عبدالغنی وھو ظاہر المتون ش (اور اسی طرح سیدی عبدالغنی نے اس کی تائید کی اور یہی متون سے ظاہر ہے "ش") وفي الدر عن جامع الرموز عن جامع المضمرات عن النصاب علیہ الفتوی (اور در میں جامع الرموز سے بحوالہ جامع المضمرات عن النصاب ہے کہ اسی پر فتویٰ ہے) وفي ش عن البحر عن الحلیۃ عن النصاب بہ یفتی (اور "ش" میں بحر سے بحوالہ حلیہ عن النصاب ہے کہ اس پر فتویٰ دیا جاتا ہے) فاذا کان ھو الثابت بالحدیث وھو ظاہر المتون وعلیہ الفتوی فقد سقط ماسواہ (تو جب یہی حدیث سے ثابت ہے اور یہی متون سے ظاہر ہے اور اسی پر فتویٰ ہے، تو اس کے سوا جو کچھ ہے وہ ساقط/ناقابل اعتبار ہے) ثم قولہ رحمہ اللہ تعالی الماء النجس لایطھر بزوال تغیرہ بنفسہ (پھر ان کا قول، اللہ ان پر رحم کرے: نجس پانی اس کے تغیر کے خود بخود زائل ہونے سے پاک نہیں ہوتا) فاقول ھذا کما ذکرہ في غیر الجاري (تو میں کہتا ہوں یہ ویسا ہی ہے جیسا کہ غیر جاری میں

ذکر کیا گیا) لقول الخلاصة ماء نجس (٢) يجعلونه في نهر كبير ان كان كثيرا بحيث لا يتغير لايتنجس وان تغير تنجس ويطهر (کیونکہ خلاصہ میں ہے: نجس پانی، اسے بڑی نہر میں ڈالتے ہیں، اگر وہ اتنی کثیر ہو کہ تغیر نہ ہو تو وہ نجس نہیں ہوگا، اور اگر متغیر ہو جائے تو نجس ہو جائے گا اور [تغیر دور ہونے پر] پاک ہو جائے گا)۔

Fatawa Razawiyya, Volume 2

...within an hour, meaning when the color and smell disappear. (Finis) [Translation of Urdu text]: It will not be (impure); and if it changes, it becomes impure, and it becomes pure immediately, meaning as soon as the color and smell disappear. (Finis)

An addition in one copy of the text says: "In the copy of Qazi al-Imam, may Allah Almighty protect him." (Finis) i.e., this is mentioned in his copy, and the "Imam" refers to the Faqih al-Nafs, though I have not seen this in his Fatawa; and Allah Almighty knows best. According to the statement of my master himself, when manure settles in the middle of conduits and the water flows clear, it is pure. In Radd al-Muhtar, it is said that in our lands, sewer canals flow with filth and it settles in them, but in the daytime, they change (their state), and there is no doubt about their impurity then. At night, the change disappears, so disagreement arises because the water flows over the impurity. It is said in Khizanat al-Fatawa (1): "If the entire bed of the river is impure, then if the water is abundant so that its bottom cannot be seen, it is pure, otherwise not." And in al-Multaqat, it is said that some scholars stated the water is pure even if it is little, provided it is flowing (2). (Finis)

[Translation of Urdu text]: The text adds in one copy: the original wording is "In the copy of Qazi al-Imam, may Allah protect him" (Finis), meaning it is mentioned in his copy, and the "Imam" refers to Faqih al-Nafs, and this has not been seen in his fatwas; and Allah Almighty knows best. My master Abdul Ghani himself says that when filth accumulates in conduits and clean water flows, it becomes pure. Radd al-Muhtar says that in our country, the canals where filth falls have filth flowing and then settling, and this filth changes during the day, and at that time there is no dispute about its filthiness, but at night its change disappears, so there is disagreement in it because in it water flows over filth. In Khizanat al-Fatawa, it is said "If the entire bed of the river is impure, if the water is abundant so that its bottom is not visible, it is pure, otherwise not." And in al-Multaqat, some masters said water is pure even if it is small as long as it is flowing (T).

I say: what is in al-Multaqat is based on the correct position for issuing a fatwa (Mufta bihi), and what is in al-Khizana is based on the other opinion prevalent in many books: that flowing water, if half or more of it flows over visible impurity, becomes impure, and this is what is intended in al-Khizana.

[Translation of Urdu text]: I say what is in al-Multaqat is based on the correct mufta bihi, and what is in Khizana is based on the other saying which is mentioned in many

books that if half or more of flowing water flows over visible filth, it will become impure, and this...

---

1. Khulasat al-Fatawa, another section on clarification, etc., Naval Kishore Lucknow 1/9.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt 1/138.

फतावा रज़विया, जिल्द 2

...एक घंटे में, यानी जब रंग और गंध गायब हो जाए। (इति) [उर्दू पाठ का अनुवाद]: (अशुद्ध) नहीं होगा; और यदि वह बदल जाता है, तो वह अशुद्ध हो जाता है, और तुरंत ही शुद्ध हो जाता है, यानी जैसे ही रंग और गंध खत्म हो जाती है। (इति)

एक प्रति में इबारत में जोड़ा गया है: "काज़ी अल-इमाम के नुस्खे में, अल्लाह तआला उन्हें सुरक्षित रखे।" (इति) यानी यह उनके नुस्खे में वर्णित है, और "इमाम" से तात्पर्य फ़कीह अल-नफ़्स से है, हालाँकि मैंने इसे उनके फतावा में नहीं देखा है; और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। मेरे आका के स्वयं के कथन के अनुसार, जब पाइपों के बीच में खाद जम जाती है और पानी साफ बहता है, तो वह शुद्ध होता है। रद अल-मुह्तार में कहा गया है कि हमारे देशों में, सीवर नहरें गंदगी के साथ बहती हैं और उसमें गंदगी जमा हो जाती है, लेकिन दिन के समय, वे (अपनी स्थिति) बदल देते हैं, और तब उनकी अशुद्धि में कोई संदेह नहीं होता है। रात में, परिवर्तन गायब हो जाता है, इसलिए असहमति पैदा होती है क्योंकि पानी अशुद्धि के ऊपर बहता है। खिज़ानत अल-फतावा (1) में कहा गया है: "यदि नदी का पूरा तल अशुद्ध है, तो यदि पानी प्रचुर मात्रा में है जिससे उसका तल दिखाई न दे, तो वह शुद्ध है, अन्यथा नहीं।" और अल-मुल्तकत में कहा गया है कि कुछ विद्वानों ने कहा है कि पानी शुद्ध है भले ही वह कम हो, बशर्ते वह बह रहा हो (2)। (इति)

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: एक प्रति में अतिरिक्त है: मूल इबारत "काज़ी इमाम सल्लमहुल्लाह तआला के नुस्खे में" है, यानी यह उनके नुस्खे में उल्लिखित है और इससे मुराद इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स हैं और यह चीज़ उनके फ़तावा में नहीं देखी गई है, वल्लाहु तआला आलम। और सैयदी अब्दुल गनी खुद फ़रमाते हैं कि जब पाइपों के बीच गंदगी जम जाए और साफ़ पानी बहे तो पाक हो जाएगा। रद अल-मुह्तार में है कि हमारे मुल्क में गंदगी गिरने की जगहों पर जो नहरें होती हैं उनमें नजासत जारी रहती है और फिर बहती जाती है और यह नजासत दिन में मुतग़य्यर (परिवर्तित) हो जाती है और उस वक्त उनकी नजासत में कोई कलाम (विवाद) नहीं और रात को उनका तग़य्युर (परिवर्तन) ज़ाइल हो जाता है तो इसमें इख्तिलाफ़ (मतभेद) है क्योंकि इसमें पानी नजासत के ऊपर जारी रहता है। खिज़ानतुल फ़तावा में फ़रमाया "अगर नहर का कुल पेट नापाक हो तो अगर पानी कसीर (अधिक) है कि उसकी तह नज़र न आती हो तो वो पाक है वरना नहीं, और मुल्तक़त में है कि बाज़ मशाइख़ ने फ़रमाया पानी पाक है अगरचे कम हो जबकि जारी हो (त)।"

मैं कहता हूँ: अल-मुल्तकत में जो है वह फ़तवा देने के लिए सही स्थिति (मुफ़्ता बिही) पर आधारित है, और जो अल-खिजाना में है वह कई किताबों में प्रचलित दूसरी राय पर आधारित है: बहता पानी, यदि उसका आधा या उससे अधिक हिस्सा दिखाई देने वाली अशुद्धि पर बहता है, तो वह अशुद्ध हो जाता है, और अल-खिजाना में यही अभिप्रेत है।

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: मैं कहता हूँ जो कुछ मुल्तक़त में है वो सही मुफ़्ता बिही पर मबनी है, और जो खिज़ाना में है वो दूसरे क़ौल पर मबनी है जो बहुत सी किताबों में मज़कूर है कि जारी पानी अगर उसका निस्फ़ (आधा) या ज़ायद (अधिक) किसी नजासत-ए-मरईया (दिखने वाली गंदगी) पर जारी हो तो नापाक हो जाएगा, और यही...

---

1. खुलासात अल-फतावा, स्पष्टीकरण पर एक और खंड आदि, नवल किशोर लखनऊ 1/9।
2. रद अल-मुह्तार, जल अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/138।

पृष्ठ 368 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

بساحة یعنی اذا انقطع اللون والرائحة اھ نہ ہوگا اور اگر متغیر ہوگیا تو ناپاک ہوجائے گا اور فوراً ہی پاک ہو جائے گا یعنی جو نہی رنگ اور بُو ختم ہوگی اھ

زاد في نسخة مانصه في نسخة القاضی الامام سلمه الله تعالی[1] اھ ای ھذا مذکور في نسخته والمراد به الامام فقیه النفس ولم اره فی فتاواه والله تعالی اعلم ولقول سیدی نفسه اذا رکدا لزبل في وسط القساطل وجری الماء صافیا طھر، وفي ردالمحتار في دیارنا انھار الساقط تجری بالنجاسات وترسب فیھا لکنھا في النھار تتغیر ولا کلام في نجاستھا ح وفی اللیل یزول تغیرھا فیجری فیھا الخلاف لجریان الماء فیھا فوق النجاسة قال في خزانة الفتاوی(۱)لوکان جمیع بطن النھر نجسا فانکان الماء کثیرا لایری ماتحته فھو طاھر والا فلا وفي الملتقط قال بعض المشائخ الماء طاھر وان قل اذا کان جاریاً[2] اھ

زائد کیا ایک نسخہ میں ، اصل عبارت یہ ہے " قاضی امام سلّمہ اللہ تعالیٰ کے نسخہ میں اھ" یعنی یہ اُن کے نسخہ میں مذکور ہے اور اس سے مراد امام فقیہ النفس ہیں اور یہ چیز ان کے فتاویٰ میں نہیں دیکھی ہے واللہ تعالیٰ اعلم اور سیدی عبدالغنی خود فرماتے ہیں کہ جب گندگی قساطل کے درمیان جم جائے اور پانی صاف جاری ہو تو پاک ہو جائیگا ، اور ردالمحتار میں ہے کہ ہمارے ملک میں گندگی گرنے کی جگہوں پر جو نہریں ہوتی ہیں ان میں نجاست جاری رہتی ہے اور پھر بہتی جاتی ہے اور یہ نجاست دن میں متغیر ہوجاتی ہے اور اس وقت ان کی نجاست میں کوئی کلام نہیں اور رات کو اُن کا تغیر زائل ہو جاتا ہے تو اس میں اختلاف ہے کیونکہ اس میں پانی نجاست کے اوپر جاری رہتا ہے، خزانتہ الفتاویٰ میں فرمایا " اگر نہر کا کل پیٹ ناپاک ہو تو اگر پانی کثیر ہے کہ اس کی تہہ نظر نہ آتی ہو تو وہ پاک ہے ورنہ نہیں ، اور ملتقط میں ہے کہ بعض مشائخ نے فرمایا پانی پاک ہے اگرچہ کم ہو جبکہ جاری ہو اھ (ت)

اقول: مانی الملتقط مبتن علی الصحیح المفتی به وما في الخزانة علی القول الأخر الدائر في كثير من الكتب الجاری ان جری نصفه اواكثر علی نجاسة مرئية تنجس وهی المرادة في الخزانة

میں کہتا ہوں جو کچھ ملتقط میں ہے وہ صحیح مفتی بہ پر مبنی ہے، اور جو خزانہ میں ہے وہ دوسرے قول پر مبنی ہے جو بہت سی کتابوں میں مذکور ہے کہ جاری پانی اگر اس کا نصف یا زائد کسی نجاست مرئیہ پر جاری ہو تو ناپاک ہو جائے گا، اور یہی

1- خلاصة الفتاوی جنس آخر فی التوضیح الخ نولکشور لکھنو ۱/۹ 2- ردالمختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۸

Fatawa Razawiyya, Volume II

As stated in Al-Hindiyya quoting Al-Muhit: "If a carcass is visible under the water due to the lack of water and not due to its clarity, then the water that comes into contact with it is considered 'majority' (akthar) if it blocks the width of the stream. If the carcass is not visible or blocks less than half of the passage, the water contacting it is not considered the majority."

Beware of thinking that the statement in Al-Khazanah should be taken literally. Suppose the bed of a river becomes impure with non-visible impurity, under the assumption that if the riverbed is impure and visible, then all the water has passed over visible impurity. If it is not visible due to the abundance of water, and not due to its muddiness, then it has flowed over non-visible impurity and will not be affected by change. This is because the consideration is for the actual impurity (najis), not the thing made impure (mutannajis), as we have explained in our fatwas. However, one might say that the reason for non-visible impurity is that when no effect appears, it is known that the water has carried it away, as mentioned in Al-Bahr and other books. But here, the entire riverbed is impure, so wherever the water goes, it will encounter impurity. Reflect on this. There is no need for further deliberation because the fatwa in flowing and abundant water is based absolutely on the presence of visible effects (of impurity). Yes, my master Abdul Ghani [has stated...]

---

1 Al-Hindiyya, First Chapter regarding what is permissible, Nurani Kutub Khana Peshawar 1/17 Page 369 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

अल-हिन्दिया में अल-मुहीत के हवाले से कहा गया है: "यदि पानी की कमी के कारण पानी के नीचे कोई मुर्दार (शव) दिखाई देता है, न कि पानी की स्वच्छता के कारण, तो जो पानी उस मुर्दार के संपर्क में आता है, वह 'बहुसंख्यक' (अकसर) माना जाएगा यदि वह धारा की चौड़ाई को अवरुद्ध कर देता है। यदि मुर्दार दिखाई नहीं देता है या आधे से कम रास्ते को अवरुद्ध करता है, तो उससे मिलने वाला पानी बहुसंख्यक नहीं होगा।"

सावधान रहें कि खज़ाना के शब्दों को उनके ज़ाहिरी अर्थ पर न लें। यदि किसी नदी का तल अदृश्य अशुद्धि (नजासत-ए-गैर-मरईया) से नापाक हो गया है, इस धारणा के साथ कि यदि नदी का तल नापाक है और वह दिखाई दे रहा है, तो इसका अर्थ है कि सारा पानी दृश्य अशुद्धि के ऊपर से बह गया है। यदि वह पानी की अधिकता के कारण दिखाई नहीं देता है, न कि उसके धुंधलेपन के कारण, तो वह अदृश्य अशुद्धि पर प्रवाहित हुआ है और परिवर्तन से प्रभावित नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि विचार वास्तविक अशुद्धि (नजिस) का किया जाता है, न कि अशुद्ध हुई वस्तु (मुतन्नजिस) का, जैसा कि हमने अपने फतवों में स्पष्ट किया है। लेकिन कोई कह सकता है कि अदृश्य अशुद्धि में कारण यह है कि जब उसका कोई प्रभाव प्रकट नहीं होता, तो इसका अर्थ है कि पानी उस अशुद्धि को बहा ले गया है, जैसा कि अल-बहर आदि में वर्णित है। लेकिन यहाँ नदी का पूरा तल ही नापाक है, तो पानी जहाँ भी जाएगा, अशुद्धि से मिलेगा। इस पर विचार करें। और इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि प्रवाहित और प्रचुर पानी में फतवा पूरी तरह से (अशुद्धि के) प्रभाव के आधार पर है। हाँ, मेरे स्वामी अब्दुल ग़नी [ने कहा है...]

---

1 अल-हिन्दिया, पहला अध्याय जो जायज़ है उसके बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/17 पृष्ठ 369/711

لقول الھندیہ عن المحیط اذا کانت الجیفۃ تری من تحت الماء لقلۃ الماء لالصفائہ کان الذی یلاقیھا اکثر اذا کان سدعرض الساقیۃ وان کانت لاتری اولم تاخذ الا الاقل من النصف لم یکن الذی یلاقیھا اکثر اھ

خزانہ میں مراد ہے، اس لئے کہ ہندیہ میں محیط سے ہے کہ جب مردار پانی کے نیچے نظر آئے اس کی کمی کے باعث نہ کہ پانی کی صفائی کے باعث تو جو اُس مردار سے متصل ہو جائے وہ زیادہ ہوگا، جبکہ نہر کی چوڑائی کو بند کر دے، اور اگر مردار نظر نہ آئے یا آدھے سے کم راستے کو بند کرے تو جو اُس سے ملاقات کرتا ہے وہ پانی اکثر نہیں ہوگا اھ

وایاک ان تظن ان کلام الخزانۃ علی ظاھر اطلاقہ ولو تنجس بطن النھر بغیر مرئیۃ توھماً ان بطن النھر اذا کان نجسا وھو یری فقد مر الماء کلہ علی نجاسۃ مرئیۃ وان کان لایری لکثرۃ الماء لالکدرتہ فانما جری علی غیر مرئیۃ فلا یتأثر بالتغیر وذلك لان العبرۃ بالنجس لا المتنجس کما بیناہ فی فتاؤنا لکن لقائل ان یقول ان العلۃ فی غیر المرئیۃ انہ اذالم یظھر اثرھا علم ان الماء ذھب بعینھا کما فی البحر وغیرہ اما ھھنا فبطن النھر کلہ نجس فالماء اینما ذھب لایلاقی الانجسا تأمل ولا حاجۃ فان الفتوی علی اعتبار الاثر مطلقاً فی الجاری والکثیر(۱)معانعم طاھر کلام سیدی وتقریر الشامی ھھنا ان الکثیر الملحق بالجاری لایلحق بہ فی التطھیر بزوال التغیر لقولہ وان استقر فی حوض کبیر فھو نجس وان زال تغیرہ بنفسہ اور خزانہ کے کلام کو اُس کے ظاہر پر محمول نہ کرنا چاہئے اور اگر نہر کی تہہ نجاستِ غیر مرئیہ سے ناپاک ہوگئی اس توہم پر کہ نہر کی تہہ جس وقت ناپاک ہو اور وہ نظر آتی ہو تو اس کا مطلب یہ ہے کہ کل پانی نجاستِ مرئیہ پر جاری ہوگیا، اگرچہ وہ نظر نہ آتی ہو پانی کی کثرت کے باعث، نہ کہ اس کے گدلے پن کے باعث، کیونکہ وہ پانی نجاستِ غیر مرئیہ پر جاری ہوا ہے تو وہ تغیر سے متاثر نہ ہوگا، کیونکہ اعتبار نجاست کا ہوگا نہ کہ ناپاک ہونے والی

شے کا، جیسا کہ ہم نے اپنے فتاویٰ میں بیان کیا، لیکن کوئی کہنے والا کہہ سکتا ہے کہ علت غیر مرئیہ میں یہ ہے کہ جب اس کا اثر ظاہر نہ ہوا تو اُس کا مطلب یہ ہے کہ اُس نجاست کو پانی بہا لے گیا ہے جیسا کہ بحر وغیرہ میں ہے، اور یہاں نہر کا پیٹ تمام کا تمام ناپاک ہے تو پانی جہاں بھی جائیگا نجس سے ملاقات کرے گا تامل، اور کوئی ضرورت بھی نہیں، کیونکہ جاری اور کثیر پانی میں فتویٰ مطلقاً اثر کے اعتبار پر ہے، ہاں سیدی عبدالغنی [فرماتے ہیں...]

---

1 ہندیہ الفصل الاول فیما یجوز نورانی کتب خانہ پشاور ۱۷/۱ Page 369 of 711

Fatawa Rizvia, Volume 2

Arabic: "So let it be clarified and its reasoning examined, for what is in 'Al-Munya' in the chapter on basins regarding the matter of the bathroom basin is as follows: Do you not see that the large basin is treated like running water in every case due to necessity? It says in 'Al-Hilya' that the summary from 'Al-Dhakhira' is finished, and Allah Almighty knows best."

Urdu Explanation: And the apparent meaning of Shami's discourse is that 'Katheer' (large quantity) here is attached to running water... It will not be attached to it in terms of being pure due to the cessation of change. Because they say that if it remains in a large basin, it is impure, even if its change disappears on its own. This should be well understood and its reasoning should be contemplated. Because in 'Munya', in the section on basins, regarding the description of the bathroom basin, the original text is: "Do you not see that the large basin is attached to running water and this is in every case and its reason is necessity." In 'Hilya' it is stated that this entire passage is from 'Al-Dhakhira'. And Allah Almighty knows best. (T)

Principle 7: The fatwa is that the spreading of water in width does not stop its flow as long as the water moves forward. For example, there is a 9x9 basin; water entered from one side and exited from the other, thus it became running water. Although a delay is required for the water to spread nine cubits in width and it cannot exit as quickly as it would from a width of three or four cubits. In 'Al-Hindiyya' it is stated:

Arabic: "When the basin is small and water enters it from one side and exits from the other, performing ablution (Wudu) from all its sides is permissible. And the fatwa is based on this without distinction between whether it is four by four or less, so it is permissible, or more, so it is not permissible. Thus it is in Sharh al-Wiqaya, and similarly in Al-Zahidi and Mi'raj al-Diraya."

Urdu Translation: When a basin is small and water enters from one side and exits from the other side, then Wudu is permissible from all its sides, and the fatwa is on this. In this, there is no detail such as if it is four by four or less then it will be permissible and if it is more then it won't be permissible. Thus it is in Sharh al-Wiqaya, Al-Zahidi, and Mi'raj al-Diraya. (T)

In 'Al-Bahr' it is: Arabic: "In Mi'raj al-Diraya, the fatwa is given for absolute permissibility." Urdu: In 'Mi'raj al-Diraya', the fatwa for absolute permissibility will be given.

Footnotes: 1. Munya al-Musalli, Chapter on Basins, Maktaba Qadria Jamia Nizamia Lahore, p. 73. 2. Al-Hilya. 3. Al-Hindiyya, First Chapter on what is permissible, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/17.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

अरबी: "तो इसे स्पष्ट किया जाना चाहिए और इसके तर्क की जांच की जानी चाहिए, क्योंकि 'अल-मुन्या' में हौज़ों (कुंडों) के अध्याय में स्नानगृह के हौज़ के मामले में मूल पाठ यह है: क्या आप नहीं देखते कि बड़ा हौज़ ज़रूरत के कारण हर हाल में बहते पानी के समान माना जाता है? 'अल-हिल्या' में कहा गया है कि 'अल-ज़ख़ीरा' का सारांश समाप्त हुआ, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।"

उर्दू स्पष्टीकरण: और शामी की तक़रीर का ज़ाहिर यह है कि यहाँ 'कसीर' (बड़ी मात्रा) जो जारी (बहते पानी) के साथ मुलहक़ (जुड़ा हुआ) है---------- पाक होने में उसके साथ मुलहक़ नहीं किया जाएगा पाक होने में तग़य्युर (बदलाव) के ख़त्म हो जाने के बाइस क्योंकि वह फ़रमाते हैं और अगर वह बड़े हौज़ में ठहर जाए तो नापाक है अगरचे उसका तग़य्युर अज़-खुद ज़ाइल हो जाए, इसको अच्छी तरह समझना चाहिए और इसकी वजह पर ग़ौर करना चाहिए क्योंकि मुन्या में हौज़ों की फ़स्ल में हम्माम के हौज़ के बयान में है इसकी असल इबारत यह है 'क्या तुम नहीं देखते हो कि बड़ा हौज़ जारी पानी से मुलहक़ है और यह अला कुल्लि हाल है और इसकी वजह ज़रूरत है', हिल्या में फ़रमाया यह तमाम ज़ख़ीरा से है वल्लाहु तआला आलम। (त)

अस्ल ७: फ़तवा इस पर है कि पानी का अ़र्ज़ (चौड़ाई) में फैलना उसके जर्यान (बहाव) को नहीं रोकता जबकि पानी आगे निकल जाता हो, मसलन ९ दर ९ हौज़ है उसमें पानी एक तरफ़ से आया दूसरी तरफ़ से निकल गया जारी हो गया अगरचे अ़र्ज़ में नौ हाथ फैलने के लिए ज़रूर वक़्फ़ा दरकार होगा और उतनी जल्दी पानी उससे न निकल सकेगा जिस क़दर जल्दी तीन चार हाथ के अ़र्ज़ से निकल जाता। हिन्दिया में है:

अरबी: "जब हौज़ छोटा हो और उसमें पानी एक तरफ़ से दाख़िल हो और दूसरी तरफ़ से निकले, तो उसके तमाम अतराफ़ (किनारों) से वुज़ू करना जाइज़ है, और इसी पर फ़तवा है, इसमें यह तफ़्सील भी नहीं कि वह चार दर चार हो या कम हो तो जाइज़ होगा और अगर ज़ायद हो तो जाइज़ न होगा। कज़ा फ़ी शरहिल विक़ाया व हाकज़ा फ़िज़ ज़ाहेदी व मेअ़राजुद दराया।"

उर्दू अनुवाद: जब हौज़ छोटा हो और उसमें पानी एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ से निकल जाता हो तो उसके तमाम अतराफ़ से वुज़ू जाइज़ है, और इसी पर फ़तवा है, इसमें यह तफ़्सील भी नहीं कि वह

चार दर चार हो या कम हो तो जाइज़ होगा और अगर ज़ायद हो तो जाइज़ न होगा कज़ा फ़ी अश-शरह अल-विक़ाया वल-ज़ाहेदी व मेअ़राजुद दराया। (त)

'बहर' में है: अरबी: "मेअ़राजुद दराया में जवाज़ का मुतलक़न (बिना शर्त) फ़तवा दिया गया है।" उर्दू: 'मेअ़राजुद दराया' में जवाज़ का मुतलक़न फ़तवा दिया जाएगा।

पाद-टिप्पणियाँ: १ मुन्यतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल हियाज़, मक्तबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर, पृष्ठ ७३ २ हिल्या ३ हिन्दिया, अल-फ़स्लुल अव्वल फ़ीमा यजौज़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर १/१७

पृष्ठ ३७० / ७११

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

عربی: فلیحرر ولینظر وجھہ فان الذی فی المنیۃ من فصل الحیاض فی مسألۃ حوض الحمام مانصہ الاتری ان الحوض الکبیر الحق بالماء الجاری علی کل حال لاجل الضرورۃ ۱قال فی الحلیۃ الجملۃ من الذخیرۃ ۲ اھ واللہ تعالی اعلم۔

اردو وضاحت: اور شامی کی تقریر کا ظاہر یہ ہے کہ یہاں کثیر جو جاری کے ساتھ ملحق ہے---------- پاک ہونے میں اس کے ساتھ ملحق نہیں کیا جائیگا پاک ہونے میں تغیر کے ختم ہوجانے کے باعث کیونکہ وہ فرماتے ہیں اور اگر وہ بڑے حوض میں ٹھہر جائے تو ناپاک ہے اگرچہ اس کا تغیر از خود زائل ہو جائے، اس کو اچھی طرح سمجھنا چاہئے اور اس کی وجہ پر غور کرنا چاہئے کیونکہ منیہ میں حوضوں کی فصل میں حمام کے حوض کے بیان میں ہے اس کی اصل عبارت یہ ہے " کیا تم نہیں دیکھتے ہو کہ بڑا حوض جاری پانی سے ملحق ہے اور یہ علی کل حال ہے اور اس کی وجہ ضرورت ہے، حلیہ میں فرمایا یہ تمام ذخیرہ سے ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

اصل ۷: فتوٰی اس پر ہے کہ پانی کا عرض میں پھیلنا اس کے جریان کو نہیں روکتا جبکہ پانی آگے نکل جاتا ہو، مثلاً ۹ در ۹ حوض ہے اس میں پانی ایک طرف سے آیا دوسری طرف سے نکل گیا جاری ہو گیا اگرچہ عرض میں نو ہاتھ پھیلنے کے لئے ضرور وقفہ درکار ہوگا اور اُتنی جلد پانی اس سے نہ نکل سکے گا جس قدر جلد تین چار ہاتھ کے عرض سے نکل جاتا ہندیہ میں ہے:

عربی: اذا کان الحوض صغیرا یدخل فیه الماء من جانب ویخرج من جانب یجوز الوضوء من جمیع جوانبه وعلیه الفتوی من غیر تفصیل بین ان یکون اربعا في اربع واقل فیجوز او اکثر فلا یجوز کذا في شرح الوقایة وهکذا فی الزاهدی و معراج الدرایة ۳-

اردو ترجمہ: جب حوض چھوٹا ہو اور اس میں پانی ایک طرف سے دوسری طرف سے نکل جاتا ہو تو اس کے تمام اطراف سے وضو جائز ہے، اور اسی پر فتوٰی ہے، اس میں یہ تفصیل بھی نہیں کہ وہ چار در چار ہو یا کم ہو تو جائز ہوگا اور اگر زائد ہو تو جائز نہ ہوگا کذا فی الشرح الوقایہ والزاہدی و معراج الدرایہ۔ (ت)

بحر میں ہے: عربی: فی معراج الدرایة یفتی بالجواز مطلقا اردو: معراج الدرایہ میں ہے جواز کا مطلقاً فتوٰی دیا جائیگا

حواشی: ۱ منیة المصلی فصل فی الحیاض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۷۳ ۲ حلیہ ۳ ہندیہ الفصل الاول فیما یجوز نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 2

"And it has been relied upon in the Fatawa of Qazi Khan."[1] And in Qazi Khan, this is what has been relied upon. (T) In Fatawa Zakhira and Tatimmatul Fatawa al-Sughra, then in Hilya, it is stated: "The fatwa is based on this because this is flowing water."[2] The fatwa is upon this because it is running water. (T) However, the swirling of water in a circular motion, as it happens in a whirlpool, does not prevent it from being classified as flowing water. This is because a whirlpool does not trap the water; it swirls it and then expels it, while new water comes from above, swirls, and is released. This continuous process creates an illusion that the same water is rotating. This can be distinguished by throwing something other than water into it. For example, if a piece of wood is thrown from above, it will reach the whirlpool, spin around, and then exit from the other side. If the whirlpool is strong, it might break the wood into two pieces and expel it after spinning. So, glorified is He Who created whatever He willed as He willed, and nothing happens in His kingdom except what He wills. (T) In the problem of a four-by-four pool in "Munya", it is stated: "The apparent view is that the water does not settle in such a place, but rather it circles around it and then exits, making it like running water."[3] It appears that water does not stay in such a place; instead, it swirls around and then leaves, so it is like running water. (T) In "Hilya" it is stated: "Likewise in Al-Zakhirah and Tatimmatul Fatawa al-Sughra, narrating from Shaykh Al-Imam Abi Al-Hasan Al-Rustughfani."[4] As narrated from Shaykh Al-Imam Abu al-Hasan al-Rustughfani in Al-Zakhira and Tatimmatul Fatawa al-Sughra. (T) Principle 8: Although exit was necessary for the flow of a pond etc., it is not required in those attached to running water, i.e., in a ten-by-ten (Deh Dar Deh) pool. During summers, dried-up ponds contain animal dung and other impurities. When rainy season water comes and fills it up, if there are impurities in the hollow of the pond from where the water passed to fill it, then the entire pond becomes impure, no matter how large it is, until it fills up and overflows.

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Ashr fi Ashr, H.M. Saeed Company Karachi, 1/78
2. Hilya
3. Munyatul Musalli, Chapter on Menstruation, Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Razawiyya Lahore, p. 27
4. Hilya Page 371 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

"और इस पर फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में भरोसा किया गया है।"[1] और क़ाज़ी ख़ान में इसी पर भरोसा किया गया है। (त) फ़तावा ज़ख़ीरा और तत्तुम्मतुल फ़तावा अल-सुग़रा, फिर हिल्या में है: "इसी पर फ़तवा है क्योंकि यह बहता हुआ पानी है।"[2] इसी पर फ़तवा है क्योंकि यह जारी (प्रवाहित) पानी है। (त) मगर पानी का एक घेरे में घूमना, जैसा कि भँवर में होता है, बहने के गुण को नहीं रोकता। भँवर पानी को रोकता नहीं है, बल्कि उसे घुमाकर निकाल देता है और ऊपर से दूसरा पानी आ जाता है। यह सिलसिला कायम रहने के कारण ऐसा लगता है कि एक ही पानी घूम रहा है। यह बात पानी के अलावा कुछ और डालने से साफ़ हो सकती है। जैसे कि ऊपर से लकड़ी का टुकड़ा डाला जाए, तो वह भँवर तक पहुँचकर चक्कर खाएगा और दूसरी तरफ़ निकल जाएगा। और अगर भँवर तेज़ हुआ, तो वह लकड़ी को दो टुकड़ों में तोड़कर घुमाने के बाद बाहर निकाल देगा। तो पाक है वह ज़ात जिसने जो चाहा वैसे पैदा किया और उसके साम्राज्य में उसकी मर्ज़ी के बिना कुछ नहीं होता। (त) "मुनिया" के मसले 'हौज़ चार दर चार' (चार बाई चार का तालाब) में है: "ज़ाहिर यह है कि पानी ऐसी जगह में ठहरता नहीं है, बल्कि उसके चारों तरफ़ चक्कर लगाता है और फिर निकल जाता है, इसलिए यह बहते पानी की तरह है।"[3] ज़ाहिर है कि पानी ऐसी जगह नहीं रुकता, बल्कि चारों ओर घूमकर निकल जाता है, तो यह बहते पानी के समान है। (त) "हिल्या" में है: "इसी तरह अज़-ज़ख़ीरा और तत्तुम्मतुल फ़तावा अल-सुग़रा में शैख़ अल-इमाम अबी अल-हसन अर-रुस्तग़फ़नी से रिवायत है।"[4] जैसा कि ज़ख़ीरा और तत्तुम्मतुल फ़तावा अल-सुग़रा में शैख़ अल-इमाम अबू अल-हसन अर-रुस्तग़फ़नी से नक़्ल किया गया है। (त) अस्ल 8: तालाब आदि के बहने में हालांकि पानी का निकलना ज़रूरी था, लेकिन बहते पानी से जुड़े हुए यानी दस बाई दस (देह दर देह) के तालाब में इसकी ज़रूरत नहीं है। गर्मियों के सूखे तालाबों में जानवरों की लीद और अन्य गंदगी पड़ी होती है। बरसात में पानी आया और उसने उसे भर दिया। यदि तालाब के उस खोखले हिस्से में जहाँ से पानी गुज़रकर उसे भरता है, गंदगी मौजूद है, तो पूरा तालाब नापाक हो जाएगा, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, जब तक कि वह भर कर उबल (ओवरफ्लो) न जाए।

---

1. अल-बहर अल-राइक़, अश्र फ़ी अश्र, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/78
2. हिल्या

3. मुनियतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल हैज़, मकतबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 27
4. हिल्या पृष्ठ 371/711

واعتمدہ فی فتاوی قاضی خان۔[1] اور قاضی خان میں اسی پر اعتماد کیا ہے۔ (ت) فتاوی ذخیرہ وتتمۃ الفتاوی الصغری پھر حلیہ میں ہے: علیہ الفتوی لان ھذا ماء جارٍ۔[2] اسی پر فتوٰی ہے کیونکہ یہ جاری پانی ہے۔ (ت) بلا لمکہ پانی کا گھومنا ایک (۱) دائرہ پر چکر کھانا جس طرح بھنور میں ہوتا ہے یہ بھی مانع جریان نہیں کہ بھنور پانی کو روک نہیں رکھتا چکر دے کر نکال دیتا ہے اوپر سے دوسرا پانی آتا اب اسے گھما کر چھوڑ دیتا ہے یہ سلسلہ قائم رہنے کے باعث گمان ہوتا ہے کہ ایک ہی پانی گھوم رہا ہے یہ بات غیر آب کے ڈالنے سے متمیز ہوسکتی ہے مثلاً اوپر سے لکڑی ڈالی جائے بھنور پر پہنچ کر چکر کھا کر اُس طرف نکل جائے گی اور اگر بھنور قوی ہوا سے گھمانے میں دربا کر دو ٹکڑے کر دے گا اور چکر دے کر نکال دے گا، فسبحن من خلق ماشاء کیف شاء ولا یجری فی ملکۃ الا مایشاء (پاک وہ ذات جس نے پیدا کیا جو چاہا جیسے چاہا اور نہیں چلتی کوئی شئے اس کے ملک میں مگر جسے وہ چاہے۔ (ت) منیہ مسئلہ حوض چار در چار میں ہے: الظاھر ان الماء لایستقر فی مثلہ بل یدور حولہ ثم یخرج فیکون کالجاری۔[3] ظاہر یہ ہے کہ پانی ایسی جگہ میں نہیں ٹھہرتا بلکہ اس کے ارد گرد چکر کھاتا ہے پھر نکل جاتا ہے تو یہ جاری پانی کی طرح ہے۔ (ت) حلیہ میں ہے: کذا فی الذخیرۃ وتتمۃ الفتاوی الصغری حکایۃ عن الشیخ الامام ابی الحسن الرستغفنی۔[4] جیسے ذخیرہ اور تتمہ الفتاوٰی الصغرٰی میں شیخ الامام ابوالحسن الرستغفنی سے حکایت ہے (ت) اصل ۸: حوض وغیرہ کے جریان میں اگرچہ خروج لازم تھا مگر ملحق بالجاری یعنی دہ در دہ میں اس کی حاجت نہیں گرمیوں کے خشک تالاب میں جانوروں کے گوبر وغیرہ نجاستیں پڑی ہیں برسات میں پانی آیا اور اُسے بھر دیا اگر تالاب کے جوف میں جہاں سے پانی نے

گزر کر اُسے بھرا نجاست ہے جب تو سارا تالاب نجس ہوگیا اگر چہ کتنا ہی بڑا ہو جب تک بھر کر اُبل نہ جائے۔

۱۔ بحر الرائق عشر فی عشر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۸ ۲۔ حلیہ ۳۔ منیة المصلی فصل فی الحیض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۲۷ ۴۔ حلیہ صفحہ 371 از 711

Fatawa Rizvia Volume 2 I say: For this reason, when rainwater or flowing water enters its cavity, as long as it remains in motion within its interior, it will not be called 'flowing' (jaari), because exit (khurooj) is a condition for flow. And this non-flowing water met with impurity at a time when it was not yet ten-by-ten (dah-dar-dah), and there were impurities right at the entrance of its cavity. Thus, it is neither flowing nor large in quantity (katheer). Necessarily, it became impure. In the same way, as more water kept coming, it kept becoming impure. And impure water cannot become pure by becoming large in quantity unless it becomes flowing. If there is no impurity in the water's entrance to the extent that the surface area (length and width) of the water reaching there attains a hundred hands (cubits), and it then meets impurity, it will not become impure because it met it as 'katheer' (large quantity), even if it did not go outside the cavity.

[Table] (Left Column - Arabic): I say: From what we have established, it becomes clear that the issue is based on the third principle, not on the controversial issue of whether half the water or more passes over visible impurity. For the fatwa in that regard is absolutely for purity unless it changes. Yes, if the water, on its way, meets those impurities which are on the edge of the pit before entering the pit, then this will be a controversial issue because it is flowing, contrary to the water that is moving at the bottom of the pond as you have known. (T)

(Right Column - Urdu): I say: And the explanation we have provided shows that the issue is based on the third principle, not on the controversial issue of whether half the water or more passes over visible impurity, because the fatwa in this regard is absolutely for purity unless it changes. Yes, if the water meets those impurities on its way which are on the edge of the pit before entering it, then it will be a controversial issue because it is flowing, contrary to the water moving at the bottom of the pond as you have known. (T)

Fatawa Khaniya, Khazanat al-Muftiyeen, Al-Muheet al-Burhani, Al-Hilyah, as well as Khulasa and Fath al-Qadir, and in Fatawa, Bahr, and Hindiya it is in Fath, and in Ghiyasiyah and Dhakhira, then in Hilyah it is from the Fatawa of the people of Samarkand:

[Table] (Left Column - Arabic): And the words are from Faqeeh-un-Nafs: A large pond that dried up in summer and animals excreted dung in it (added in Khulasa, Fath, and Dhakhira: 'and people'). Then water entered it and it became full. It will be seen: if the impurity is at the place where the water enters, then all the water is impure. And if

that water freezes, it will be impure, because everything that entered it became impure, so...

(Right Column - Urdu): And the words are of Faqeeh-un-Nafs: A large pond that dried up in summer and animals excreted dung in it (in Khulasa, Fath, and Dhakhira, 'people' is also added). Then water entered it and it filled the pit. Then it will be seen: if the impurity is at the place where the water entered, then all the water is impure. And if this water frozen, it will be impure, because its...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दो मैं कहता हूँ: इस कारण से कि जब बारिश या बहाव का पानी इसके गड्ढे (जौफ़) में प्रवेश करता है, अब जब तक वह उसके भीतर गतिशील रहेगा, उसे 'जारी' (प्रवाहमान) नहीं कहा जाएगा क्योंकि प्रवाह के लिए निकास (खुरुज) शर्त है। और यह गैर-जारी पानी अशुद्धि (नजासत) से उस समय मिला जब वह अभी दस-ब-दस (दह-दर-दह) नहीं हुआ था और उसके गड्ढे के प्रवेश द्वार पर ही अशुद्धियां थीं। अतः यह न तो जारी है और न ही 'कसीर' (बड़ी मात्रा में), अनिवार्य रूप से यह अशुद्ध हो गया। इसी तरह जितना पानी आता गया, वह अशुद्ध होता गया। और अशुद्ध पानी बड़ी मात्रा में होने से शुद्ध नहीं हो सकता जब तक कि वह प्रवाहित न हो जाए। और यदि पानी के प्रवेश द्वार में इतनी दूर तक अशुद्धि नहीं है कि वहां तक आने वाले पानी की सतह (लंबाई-चौड़ाई) सौ हाथ तक पहुंच जाए और फिर वह अशुद्धि से मिले, तो वह अशुद्ध नहीं होगा क्योंकि वह बड़ी मात्रा होकर मिला, चाहे वह गड्ढे से बाहर न गया हो।

[तालिका] (बायाँ स्तंभ - अरबी): मैं कहता हूँ: और जो हमने स्थापित किया है उससे यह स्पष्ट हो गया है कि मसला तीसरे सिद्धांत पर आधारित है, न कि इस विवादास्पद मसले पर कि आधा पानी या उससे अधिक दृश्य अशुद्धि पर से गुजरे। क्योंकि उस संबंध में फतवा पूर्णतः शुद्धता पर है जब तक कि परिवर्तन न हो। हाँ, यदि पानी अपने मार्ग में उन अशुद्धियों से मिलता है जो तालाब के किनारे पर हैं, तालाब में प्रवेश करने से पहले, तो यह विवादास्पद मसला होगा क्योंकि वह 'जारी' है, उस पानी के विपरीत जो तालाब की गहराई में गति कर रहा हो जैसा कि आपने जाना। (त)

(दायाँ स्तंभ - उर्दू): मैं कहता हूँ: और जो विवरण हमने दिया है उससे जाहिर होता है कि मसला तीसरी असल पर मबनी है, इस इख़्तलाफ़ी मसले पर मबनी नहीं है कि आधा पानी या अक्सर नजासत-ए-मरिया पर गुज़रे, क्योंकि इसमें फ़तवा मुतलक़न तहारत पर है तावक़्तिके तग़य्युर न हो, हाँ अगर पानी मिलने अपने रास्ते में उन नजासतों के साथ जो गड्ढे के किनारे पर है क़ब्ल इसके कि वो गड्ढे में दाख़िल हो, तो ये इख़्तलाफ़ी मसला होगा, क्योंकि वो जारी है, बर-ख़िलाफ़ उस पानी के जो तालाब की तह में हरकत कर रहा हो जैसा कि तूने जाना। (त)

फ़तावा खानिया, खज़ानतुल मुफ़्तीन और मुहीत-ए-बुरहानी, अल-हिलया तथा खुलासा और फ़तह अल-क़दीर में फ़तावा और बहर और हिंदीया में फ़तह, और ग़ियासिया तथा ज़ख़ीरा में, फिर हिलया में समरकंद के लोगों के फ़तावा से है:

[तालिका] (बायाँ स्तंभ - अरबी): और शब्द फ़क़ीह-उन-नफ़्स के हैं: एक विशाल तालाब जो गर्मियों में सूख गया और उसमें पशुओं ने लीद कर दी (खुलासा, फ़तह और ज़ख़ीरा में 'लोगों' का भी इज़ाफ़ा है)। फिर उसमें पानी प्रवेश कर गया और वह भर गया। तो देखा जाएगा: यदि अशुद्धि पानी के प्रवेश स्थान पर है तो सारा पानी अशुद्ध है। और यदि वह पानी जम गया तो वह अशुद्ध होगा, क्योंकि जो कुछ भी इसमें प्रवेश किया वह अशुद्ध हो गया, अतः...

(दायाँ स्तंभ - उर्दू): और अल्फ़ाज़ फ़क़ीह-उन-नफ़्स के हैं, एक अज़ीम तालाब जो गर्मी में खुश्क हो गया और उसमें चौपायों ने लीद कर दी (खुलासा और फ़तह में और ज़ख़ीरा में लोगों का भी इज़ाफ़ा है) फिर उसमें पानी दाख़िल हो गया और वो गड्ढा भर गया, तो देखा जाएगा अगर नजासत पानी के दाख़िल होने की जगह पर है तो कुल पानी नजिस है, और अगर ये पानी मुनजमिद हो गया तो नजिस हो जाएगा, क्योंकि इस...

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی اقول اس لئے کہ جب بارش یا بہاؤ کا پانی اس کے جوف میں داخل ہوا اب جب تک کہ اُس کے بطن میں متحرک رہے گا جاری نہ کہلائے گا کہ جریان کے لئے خروج شرط ہے اور یہ غیر جاری پانی نجاست سے اُس وقت ملا کہ ہنوز دہ دردہ نہ تھا کہ جوف میں اس کے مدخل ہی پر نجاستیں تھیں تو نہ جاری ہے نہ کثیر لاجرم ناپاک ہو گیا یوں ہی جتنا پانی آتا گیا ناپاک ہوتا گیا اور نجس پانی کثیر ہو جانے سے پاک نہیں ہو سکتا جب تک جاری نہ ہو جائے اور اگر مدخل آب میں اتنی دُور تک نجاست نہیں کہ وہاں تک آنے والے پانی کے عرض طول کا مسطح سو ہاتھ تک پہنچ گیا اُس کے بعد نجاست سے ملا تو اب ناپاک نہ ہو گا کہ کثیر ہو کر ملا اگرچہ جوف سے باہر نہ گیا۔

[جدول] (بایاں کالم - عربی): اقول: وبما قررنا ظهران المسألة مبتنية على الاصل الثالث لاعلى خلافية مرور نصف الماء اواكثره على نجاسة مرئية فان الفتوى فيها على الطهارة مطلقا مالم يتغير نعم ان(ا)لقى الماء النجاسات فى طريقه على شاطىء الغدير قبل ان يدخله كان على الخلافية لانه جار بخلاف المتحرك في بطن الغدير كما علمت۔

(دایاں کالم - اردو): اقول: اور جو تقریر ہم نے کی ہے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ مسئلہ تیسری اصل پر مبنی ہے، اس اختلافی مسئلہ پر مبنی نہیں ہے کہ آدھا پانی یا اکثر نجاستِ مرئیہ پر گزرے، کیونکہ اس میں فتوٰی مطلقاً طہارت پر ہے تاوقتیکہ تغیر نہ ہو، ہاں اگر پانی ملنے اپنے راستہ میں ان نجاستوں کے ساتھ جو گڑھے کے کنارے پر ہے قبل اس کے کہ وہ گڑھے میں داخل ہو، تو یہ اختلافی مسئلہ ہوگا، کیونکہ وہ جاری ہے، بخلاف اس پانی کے جو تالاب کی تہ میں حرکت کر رہا ہو جیسا کہ تو نے جانا۔ (ت)

فتاوی خانیہ و خزانیۃ المفتین اور محیط پخر حلیہ نیز خلاصہ و فتح القدیر میں فتاوی اور بحر و ہند یہ میں فتح اور غیاثیہ نیز ذخیرہ پھر حلیہ میں فتاوی اہل سمر قند سے ہے:

[جدول] (بایاں کالم - عربی): واللفظ لفقیہ النفس غدیر عظیم یلبس فی الصیف وراثت الدواب فیہ(زاد فی الخلاصة والفتح والذخیرة والناس)ثم دخل فیہ الماء وامتلأ ینظر ان کانت النجاسة فی موضع دخول الماء فالکل نجس وان انجمد ذلک الماء کان نجسا لان کل مادخل فیہ صار نجسا فلا

(دایاں کالم - اردو): اور الفاظ فقیہ النفس کے ہیں، ایک عظیم تالاب جو گرمی میں خشک ہو گیا اور اس میں چوپایوں نے لید کر دی (خلاصہ اور فتح میں اور ذخیرہ میں لوگوں کا بھی اضافہ ہے) پھر اس میں پانی داخل ہو گیا اور وہ گڑھا بھر گیا، تو دیکھا جائے گا اگر نجاست پانی کے داخل ہونے کی جگہ پر ہے تو کل پانی نجس ہے، اور اگر یہ پانی منجمد ہو گیا تو نجس ہو جائیگا، کیونکہ اس

[Table Top Left - Arabic]: It becomes pure after that, even if the impurity was not at the point where the water entered, and the water collected in a pure place, measuring ten by ten (cubits), then it reached the place of impurity, the water remains pure. What is frozen from it is also pure as long as the effect of impurity is not visible in it. (It is stated in Al-Dhakhira: because the water became 'abundant' (kathir) before becoming impure, so it does not become impure afterwards due to the impurity coming into contact with it. Addition from Al-Khaniya:) Similarly, if the water of a pond decreases and becomes four by four, and impurity falls into it, then new water enters it until the new water becomes ten by ten before reaching the impurity, it will be pure.

[Table Top Right - Urdu]: ...whatever enters it will become impure, and it will not be pure after that. If the impurity is not at the place where the water enters and the water collects in a clean place, and it is ten by ten, then if that water flows to the place of impurity, the water will be pure. And what is frozen will remain pure as long as the effect of impurity does not appear on it. (It is stated in Dhakhira because the water became abundant before becoming impure, so it will not become impure afterwards due to mixing with the impure water. Addition from Khaniya:) and similarly, when the water of a pond decreases and becomes four by four and impurity enters it, then new water is added until it becomes ten by ten before reaching the impurity, it will become pure. (T)

[Middle Text - Urdu]: It is similarly stated in Jawahir al-Akhlati.

Principle 9: I say: And with Allah is the success. This is a refined point that perhaps you will not find written anywhere else except by this humble servant. To not accept the effect of impurity, the water must be flowing (jariyan); merely seeping (saylan) is not enough. Between 'flowing' (sail) and 'running' (jari), there is a general and specific relationship; every running water is flowing, but not every flowing water is running. Look at the water entering the middle of a tank from a tap and reaching the other edge; at that time it is certainly flowing (sail), but it does not stop being 'running' (jari) until it flows out from the other side. And the evidence for this is:

[Table Bottom Left - Arabic]: Note: and its half. A tank of ten by ten has its water decreased, then impurity falls into it, then water enters until the tank is full but nothing flows out of it; performing ablution with it is not permissible because every bit of water that enters becomes impure. Ended, may He forgive him. (M)

[Table Bottom Right - Urdu]: Its text is that there is a tank of ten by ten, its water decreases, then impurity falls into it, then the tank is filled and nothing flows out of it, then performing ablution from it is not permissible because whatever water enters it will become impure. (T)

[Footnote]: 1. Fatawa Qazi Khan, Section on Still Water, Naval Kishore Lucknow 1/4. And more from Al-Dhakhira, which is not present.

[तालिका ऊपरी बायाँ - अरबी]: उसके बाद वह पाक हो जाता है, भले ही गंदगी पानी के प्रवेश के स्थान पर न रही हो और पानी एक पाक स्थान में जमा हो गया हो, जिसकी माप दस बाई दस (हाथ) हो, फिर वह गंदगी के स्थान तक पहुँचा, तो पानी पाक रहेगा। उसमें से जो जमा हुआ है वह भी पाक है जब तक कि उसमें गंदगी का प्रभाव दिखाई न दे। (ज़खीरा में कहा गया है: क्योंकि पानी नापाक होने से पहले 'अधिक' (कसीर) हो गया था, इसलिए उसके बाद गंदगी के संपर्क में आने से वह नापाक नहीं होगा। खानिया से जोड़ा गया:) इसी प्रकार, यदि किसी तालाब का पानी कम हो जाए और चार बाई चार हो जाए, और उसमें गंदगी गिर जाए, फिर उसमें नया पानी डाला जाए जब तक कि नया पानी गंदगी तक पहुँचने से पहले दस बाई दस न हो जाए, तो वह पाक होगा।

[तालिका ऊपरी दायाँ - उर्दू]: ...जो कुछ भी इसमें प्रवेश करेगा वह नापाक हो जाएगा, और उसके बाद वह पाक नहीं होगा। यदि गंदगी पानी के प्रवेश के स्थान पर नहीं है और पानी एक साफ स्थान पर जमा होता है, और वह दस बाई दस है, फिर यदि वह पानी गंदगी के स्थान पर बहता है, तो पानी पाक होगा। और जो जमा हुआ है वह तब तक पाक रहेगा जब तक उस पर गंदगी का प्रभाव दिखाई न दे। (ज़खीरा में कहा गया है क्योंकि पानी नापाक होने से पहले प्रचुर हो गया था, इसलिए नापाक पानी के साथ मिलने के कारण वह नापाक नहीं होगा। खानिया से जोड़ा गया:) और इसी तरह, जब एक तालाब का पानी कम हो जाता है और चार बाई चार हो जाता है और उसमें गंदगी प्रवेश करती है, फिर उसमें नया पानी तब तक डाला जाता है जब तक कि गंदगी तक पहुँचने से पहले वह दस बाई दस न हो जाए, तो वह पाक हो जाएगा। (त)

[मध्य पाठ - उर्दू]: जवाहर अल-अखलाती में भी ऐसा ही कहा गया है।

सिद्धांत 9: मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफीक से, यह एक सूक्ष्म लाभ है कि शायद इसकी लिखावट इस फ़कीर (विनम्र सेवक) के अलावा कहीं और न मिले। गंदगी का प्रभाव स्वीकार न करने के लिए पानी का प्रवाह (जरियान) होना चाहिए; केवल रिसना (सैलान) काफी नहीं है। 'बहने वाले' (सैल) और 'प्रवाहित' (जारी) के बीच एक सामान्य और विशिष्ट संबंध है; हर प्रवाहित पानी बहने वाला है, लेकिन हर बहने वाला पानी प्रवाहित नहीं है। नल से हौज के बीच में आने वाले और दूसरे किनारे तक पहुँचने वाले पानी को देखो; उस समय वह निश्चित रूप से बहने वाला (सैल) है, लेकिन वह तब

तक 'प्रवाहित' (जारी) नहीं माना जाएगा जब तक कि वह दूसरी तरफ से बाहर न निकल जाए। और इसका प्रमाण है:

[तालिका निचली बायाँ - अरबी]: टिप्पणी: और उसका आधा। दस बाई दस के एक हौज का पानी कम हो गया है, फिर उसमें गंदगी गिर गई है, फिर पानी तब तक अंदर जाता है जब तक कि हौज भर न जाए लेकिन उसमें से कुछ भी बाहर न निकले; उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि प्रवेश करने वाला पानी का हर अंश नापाक हो जाता है। समाप्त, वह उसे क्षमा करे। (म)

[तालिका निचली दायाँ - उर्दू]: इसका पाठ यह है कि दस बाई दस का एक हौज है, उसका पानी कम हो जाता है, फिर उसमें गंदगी गिर जाती है, फिर हौज भर जाता है और उसमें से कुछ भी बाहर नहीं निकलता, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि जो भी पानी उसमें प्रवेश करेगा वह नापाक हो जाएगा। (त)

[पाद-लेख]: 1. फ़तावा काज़ी खान, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/4। और ज़खीरा से अधिक जानकारी, जो यहाँ मौजूद नहीं है।

पृष्ठ 373/711

[Table Top Left - Arabic]: يطهر بعد ذلك وان لم تكن النجاسة في موضع دخول الماء واجتمع الماء في مكان طاهر وهو عشر في عشر ثم تعدى الى موضع النجاسة كان الماء طاهرا والمنجمد منه طاهر مالم يظهر فيه اثر النجاسة(قال في الذخيرة لان الماء صار كثيرا قبل ان يتنجس فلا يتنجس بعد ذلك لاتصال النجاسة به اه زاد فی الخانية(۱)وكذا الغدير اذا قل ماؤه فصارا ربعا في اربع ووقعت نجاسة ثم دخل الماء الى ان صار الماء الجديد عشرا في عشر قبل ان يصل الى النجس كان طاهرا۔

[Table Top Right - Urdu]: میں جو بھی داخل ہوگا وہ نجس ہو جائیگا ، اور اس کے بعد پاک نہ ہوگا، اور اگر نجاست پانی کے داخل ہونے کی جگہ نہ ہو اور پانی پاکیزہ جگہ پر جمع ہو جائے، اور وہ دہ در دہ ہو پھر پانی نجاست کی جگہ چلا گیا تو پانی پاک ہوگا اور جو منجمد ہو گیا وہ اس وقت تک پاک رہے گا جب تک نجاست کا اثر اس پر ظاہر نہ ہو(ذخیرہ میں فرمایا اس لئے کہ پانی نجس ہونے سے پہلے کثیر ہو گیا تو اس کے بعد نجس نہ ہوگا نجاست کے پانی کے ساتھ مل جانے کی وجہ سے اھ ۔ خانیہ میں اضافہ کیا) اور اسی طرح تالاب کا پانی جب کم ہوجائے اور چار در چار ہو جائے اور اس میں نجاست داخل ہو جائے پھر اس میں نیا پانی آجائے یہاں تک کہ نجاست کو پہنچنے سے قبل دہ در دہ ہو جائے تو پاک ہو جائے گا۔ (ت)

[Middle Text - Urdu]: ایسا ہی جواہر اخلاطی میں ہے۔

اصل ۹: اقول: وباللہ التوفیق ایک فائدہ نفیسہ ہے کہ شاید اس کی تحریر فقیر کے سوا دوسری جگہ نہ ملے اثر نجاست قبول نہ کرنے کو پانی کا جریان چاہئے سیلان کافی نہیں سائل وجاری میں عموم

و خصوص مطلق ہے ہر جاری سائل ہے اور ہر سائل جاری نہیں دیکھو بطن حوض میں جو پانی نل سے داخل ہوا اور دوسرے کنارے تک پہنچا اس وقت ضرور سائل ہے مگر جاری نہ ٹھہرا جب تک دوسری طرف سے نکل نہ جائے اور اس پر دلیل

[Table Bottom Left - Arabic]: عہ ونصفها حوض عشر فی عشر قل ماؤہ ثم وقعت النجاسة ثم دخل الماء حتی امتلأ الحوض ولم یخرج منہ شیئی لایجوز التوضی بہ لانہ کلما دخل الماء یتنجس اہ منہ غفرلہ (م)

[Table Bottom Right - Urdu]: اس کی عبارت یہ ہے کہ ایک حوض دہ در دہ ہو اس کا پانی کم ہوجائے پھر اس میں نجاست پڑ جائے پھر حوض بھر جائے اور اس سے کچھ نہ نکلے ، تو اس سے وضو جائز نہیں اس لئے کہ جو پانی بھی داخل ہوگا وہ ناپاک ہو جائیگا اھ (ت)

[Footnote]: ۱ فتاوی قاضی خان فصل الماء الراکد نولکشور لکھنو ۱/ ۴ والمزید من الذخیرة وھی لیست بموجودہ

Fatawa Razawiyya Volume II The deciding factor for wudu water is that it must flow over the limbs of wudu because it is washing, and washing is not possible without flowing (isalata). (For indeed, wudu is washing, and washing is not possible without flowing. - t). However, it is not considered flowing (running water) otherwise it would not become 'used' (must'amal) water, as running water is not affected by being used for removing impurity unless it changes [its color, smell, or taste]. Similarly, the impurity of the body or cloth, the water with which it was washed must have flowed over the body or cloth, otherwise, it would not have extracted the impurity. But it is not considered 'running water' otherwise it would not become impure. Whereas in washing three times (1), according to the Imam (Abu Hanifa), all three waters are impure, and according to the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), two are impure, and the third is pure when it separates from the body or cloth. It is stated in Tanwir: "Water that comes upon an impurity becomes impure, and vice versa[1]." Water that arrives on an impurity is impure, just as its opposite is. (t) In Radd al-Muhtar, it is stated: "Arriving (al-wurud) includes when it flows over it while it is on the ground or a surface, and when it is poured over it in a vessel without flowing[2]." The word 'wurud' (arriving) includes the case when water flows over the impurity while it is on the ground or a surface, and it also includes the case when water is poured over the impurity in a vessel and there is no flowing. (t) In Bahr al-Ra'iq, it is stated: (Arabic text translation): "Analogy (Qiyas) requires that water becomes impure at the very first contact with impurity, but it (analogy) is dropped due to necessity, whether the cloth was in a tub and water was brought to it, or vice versa according to us. So it (the water) (2) is pure in the place (of washing) and impure when it separates, whether it changed or not. This is agreed upon regarding the first two waters. As for the third, it is impure according to him (the Imam) because its purity in the place is due to the necessity of purifying it, and that has ceased. According to them (Sahibayn), it is pure when it separates (3). It is better to wash an impure cloth by placing it in a tub." (Urdu text translation): "Analogy requires that water becomes impure at the first contact with impurity due to the impurity, but due to necessity, analogy has been dropped, whether the cloth is in a tub and water arrives on it, or vice versa, this is according to us. So, it is pure in its place, and when it separates, it will be impure whether it changes or not. This is agreed upon for the two waters. As for the third, it is impure according to him because its purity in the place is due to necessity, and this necessity is for the purity of the place, and that necessity..."

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, Mujtabai Delhi, 1/55.

2. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi Egypt, 1/238. Page 374 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी वज़ू के पानी के लिए यह ज़रूरी है कि वह वज़ू के अंगों पर बहे, क्योंकि वह धोना है और धोना बिना बहाए मुमकिन नहीं है। फ़अन्नहु ग़स्लुन वला ग़स्लुन इल्ला बिल-इसाला (क्योंकि वज़ू धोना है और धोना बिना बहाव के मुमकिन नहीं है। -त)। लेकिन वह 'जारी' (बहता हुआ पानी) नहीं है वरना वह 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) न होता, क्योंकि जारी पानी गंदगी को हटाने के इस्तेमाल से तब तक प्रभावित नहीं होता जब तक वह बदल न जाए। इसी तरह शरीर या कपड़े की गंदगी, जिस पानी से उसे धोया गया, उसने शरीर या कपड़े पर बहाव ज़रूर किया होगा वरना वह गंदगी को न निकालता। लेकिन वह जारी नहीं है वरना वह नापाक न होता। हालांकि तीन बार (१) धोने में इमाम (अबू हनीफ़ा) के नज़दीक तीनों पानी नापाक हैं और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक दो नापाक हैं, तीसरा जब शरीर या कपड़े से अलग हो जाए तो पाक है। तनवीर में है: "माअुन वरदा 'अला नजिसिन नजिसुन क-अक्सिही[1] ।" पानी जो गंदगी पर आया वह नापाक है जैसा कि इसका उलटा है। (त) रद्दुल मुहतार में है: "अल-वुरूदु यश्मलु मा इज़ा जरा 'अलैहा वहिया 'अला अर्ज़िन अव सतहिन व मा इज़ा सुब्बा फ़ौक़हा फ़ी आनियतिन बिदूँनि जरयान[2] ।" वुरूद शब्द उस स्थिति को भी शामिल है जब पानी गंदगी पर बहे और वह ज़मीन या सतह पर हो, और उस स्थिति को भी शामिल है जब पानी गंदगी के ऊपर किसी बर्तन में डाला जाए और उसमें बहाव न हो। (त) बहर-उर-राइक में है: (अरबी पाठ का अनुवाद): "क़ियास (तर्क) यह चाहता है कि पानी पहली ही मुलाक़ात में गंदगी की वजह से नापाक हो जाए, लेकिन ज़रूरत की वजह से क़ियास साक़ित (रद्द) हो गया, चाहे कपड़ा टब में हो और उस पर पानी आए या इसके विपरीत हो, यह हमारे नज़दीक है। तो यह अपनी जगह (धोते समय) पाक है और जब अलग होगा तो नापाक होगा चाहे वह बदले या न बदले। यह दो पानियों के बारे में सर्वसम्मति है। जहाँ तक तीसरे (पानी) का सवाल है, वह उनके(इमाम के) नज़दीक नापाक है क्योंकि उसकी जगह पर पाकी ज़रूरत की वजह से है, और वह समाप्त हो चुकी है। उनके(साहिबैन के) नज़दीक वह अलग होने पर पाक है (३)। और नापाक कपड़े को धोने के लिए बेहतर है कि उसे टब में रखा जाए।" (उर्दू पाठ का अनुवाद): "क़ियास यह चाहता है कि पानी पहली ही मुलाक़ात में नापाक हो जाता है गंदगी की वजह से लेकिन ज़रूरत की वजह से क़ियास साक़ित हो गया ख्वाह कपड़ा टब में हो और उस पर पानी वारिद हो या बिल-अक्स हो यह हमारे नज़दीक है, तो यह अपने महल (स्थान) में ताहिर (शुद्ध) है और जब जुदा होगा तो नजिस होगा ख्वाह मुतग़य्यिर हो या न हो, यह दो पानियों में इत्तिफ़ाक़ है, और

तीसरा तो वह उनके नज़दीक नजिस है क्योंकि उसकी तहारत महल में ज़रूरत की वजह से है, और यह ज़रूरत महल की तहारत की है और वह ज़रूरत..."

1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, फ़स्ल अल-अन्जास, मुजतबाई दिल्ली, १/५५
2. रद्दुल मुहतार, फ़स्ल अल-अन्जास, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/२३८ पेज ३७४ ऑफ़ ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی قاطع آب وضو ہے کہ ضرور اعضائے وضو پر سائل ہے فانہ غسل ولا غسل الا بالاسالة (پس بیشک وضو دھونا ہے اور دھونا بغیر اسالہ کے ممکن نہیں ہے۔ ت) مگر جاری نہیں ورنہ مستعمل نہ ہوتا کہ آب جاری استعمال تو استعمالِ نجاست سے متاثر نہیں ہوتا جب تک متغیر نہ ہو یونہی بدن یا کپڑے کی ناپاکی جس پانی سے دھوئی اس نے بدن یا ثوب پر سیلان ضرور کیا ورنہ استخراجِ نجاست نہ کرتا مگر جاری نہیں ورنہ ناپاک نہ ہو جاتا حالانکہ تین بار (۱) دھونے میں امام کے نزدیک تینوں پانی ناپاک ہیں اور صاحبین کے نزدیک دو ناپاک ہیں تیسرا جب بدن یا کپڑے سے جدا ہو جائے پاک ہے، تنویر میں ہے: ماء ورد علی نجس نجس کعکسہ[1] ۔ پانی جو وارد ہوا نجس پر نجس ہے جیسا کہ اس کا عکس ہے۔ (ت) ردالمحتار میں ہے: الورود یشمل ما اذا جری علیھا وھی علی ارض اوسطلح وما اذا صب فوقھا فی آنیة بدون جریان[2] ۔ ورود کا لفظ اس صورت کو بھی شامل ہے جب پانی نجاست پر بہے اور وہ زمین یا سطح پر ہو اور اس صورت کو بھی شامل ہے کہ جب پانی نجاست کے اوپر بہایا جائے کسی برتن میں اور اس میں جریان نہ ہو۔ (ت) بحر الرائق میں ہے: القیاس یقتضی تنجس الماء باول الملاقاة للنجاسة لکن سقط للضرورة سواء کان الثوب في اجانة و اورد الماء علیه اوبالعکس عندنا فهو (۲) طاهر في المحل نجس اذا انفصل سواء تغیرا ولا وهذا في الماعین اتفاقا اما الثالث فهو نجس عنده لان طهارته في المحل ضرورة تطهیره وقد زالت طاهر عندهما اذا انفصل (۳) والاولی في غسل الثوب النجس وضعه في الاجانة ۔ قیاس یہ چاہتا ہے کہ پانی پہلی ہی ملاقات میں ناپاک ہو جاتا ہے نجاست کی وجہ سے لیکن ضرورت کی وجہ سے قیاس ساقط ہو گیا خواہ کپڑا ٹب میں ہو اور اس پر پانی وارد ہو یا بالکس ہو یہ ہمارے نزدیک ہے، تو یہ اپنے محل میں طاہر ہے اور جب جدا ہو گا تو نجس ہو گا خواہ متغیر ہو یا نہ ہو، یہ دو پانیوں میں اتفاق ہے، اور تیسرا تو وہ ان کے نزدیک نجس ہے کیونکہ اس کی

طہارت محل میں ضرورت کی وجہ سے ہے، اور یہ ضرورت محل کی طہارت کی ہے اور وہ ضرورت...

1 الدرالمختار فصل الانجاس مجتبائی دہلی ۱/۵۵ 2 ردالمحتار فصل الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/۲۳۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Arabic portion]: Without water, then pouring water upon it, not placing the water first, to exit from the disagreement of Imam Shafi'i, for he says regarding the impurity of the water [1].

[Urdu portion]: ...is removed, according to the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), it becomes pure as soon as it separates. The better way to wash an impure cloth is to place it in a dry tub and then pour water over it. It shouldn't be that water is already present in the tub; this is to avoid the disagreement of Imam Shafi'i, as it is his view that the water will become impure. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated thereafter:

[Arabic portion]: (1) According to the reliable view, there is no difference between an impure cloth and a limb [2]. Alif-Ha (Finished). This refers to the disagreement of Abu Yusuf, as he conditions the pouring of water on the limb, as stated in Al-Bada'i'.

[Urdu portion]: According to the reliable view, there is no difference between an impure cloth and a limb. This alludes to Imam Abu Yusuf's disagreement; he stipulates pouring water over the limb, as mentioned in Al-Bada'i'. (T)

[Arabic portion]: I say, and the apparent reason for the necessity of purifying the cloth is that it is pure for that cloth [2], not for any other. So if an impure cloth is placed in a basin and water is poured over it, and then another pure cloth falls into it, it becomes impure, even if the water has not yet separated from the first cloth. This is because what is allowed due to necessity is limited to the extent of that necessity. Thus, if someone is praying and a corner of their cloak falls into the basin and more than a dirham's worth of water splashes on it, and it moves with his movement, his prayer will not be valid. This is what is apparent to me, so let it be examined, and Allah Almighty knows best.

[Urdu portion]: I say, and the apparent reasoning is that the cloth is pure due to necessity, so this purity will be limited to that cloth. Therefore, if an impure cloth is placed in a basin and water is poured onto it, and then another pure cloth falls into that same basin, it will become impure, even if the water has not yet separated from the first cloth. This is because a thing allowed due to necessity remains limited to that necessity. Now, if a person is praying and the corner of his garment falls into the tub, and if it exceeds the size of a dirham and moves with the movement of the garment,

then his prayer will not be valid. This is what has become apparent to me; understand it well, and Allah Almighty knows best. (T)

With this fine point, the doubt on Principle 3 is removed—that the water from this side of the pond to that side...

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi Egypt, 1/239 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi Egypt, 1/239

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी भाग]: बिना पानी के फिर उस पर पानी डालना, न कि पहले पानी रखना, इमाम शाफ़ई के मतभेद से बचने के लिए, क्योंकि वे पानी की अशुद्धता (नजासत) का मत रखते हैं - 1।

रद्द अल-मुह्तार में इसके बाद फ़रमाया:

[अरबी भाग]: (1) विश्वसनीय मत के अनुसार नापाक कपड़े और अंग के बीच कोई अंतर नहीं है [2] आह। इसमें अबू यूसुफ़ के मतभेद की ओर इशारा है, वे अंग पर पानी बहाने को शर्त करार देते हैं, जैसा कि बदाए (Al-Bada'i) में है।

उर्दू भाग: विश्वसनीय मत के अनुसार नापाक कपड़े और अंग के बीच कोई अंतर नहीं है। इसमें इमाम अबू यूसुफ़ के मतभेद की ओर संकेत है, वे अंग पर पानी बहाने को शर्त मानते हैं, जैसा कि बदाए में वर्णित है। (त)

[अरबी भाग]: मैं कहता हूँ, और ज़ाहिर है कि कपड़े को पाक करने की ज़रूरत की दलील यह है कि वह उस कपड़े के हक़ में पाक है [2] न कि किसी और के लिए। इसलिए अगर एक नापाक कपड़ा तश्त (बाउल/टब) में रखा गया और उस पर पानी बहाया गया, फिर उसी तश्त में कोई और पाक कपड़ा गिर गया तो वह नापाक हो जाएगा, चाहे अभी पहले कपड़े से पानी अलग न हुआ हो। क्योंकि जो चीज़ ज़रूरत की वजह से होती है वह ज़रूरत की सीमा तक ही रहती है। अब अगर कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ रहा है और उसके कपड़े का कोना टब में गिर गया, तो अगर वह दिरहम से ज़्यादा हो और वह कपड़े के हिलने से हरकत करे, तो उसकी नमाज़ जायज़ न होगी। यह वह है जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ, इसे अच्छी तरह समझ लें और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

उर्दू भाग: मैं कहता हूँ, और ज़ाहिर है कि कपड़े को पाक करने की ज़रूरत की दलील यह है कि वह उस कपड़े के हक़ में पाक है, इसलिए यह पाकी उसी कपड़े तक सीमित रहेगी। अतः यदि एक नापाक कपड़ा तश्त में रखा गया और उस पर पानी बहाया गया, फिर उसी तश्त में कोई और पाक कपड़ा गिर गया तो वह नापाक हो जाएगा, भले ही अभी पहले कपड़े से पानी अलग न हुआ हो। क्योंकि जो चीज़ ज़रूरत की वजह से होती है वह ज़रूरत की सीमा तक ही रहती है। अब अगर कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ रहा है और उसके कपड़े का कोना टब में गिर गया, तो अगर वह दिरहम से ज़्यादा हो और वह कपड़े के हिलने से हरकत करे, तो उसकी नमाज़ जायज़ न होगी। यह वह है जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ, इसे अच्छी तरह समझ लें और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इस बेहतरीन फ़ायदे से असल (सिद्धांत) 3 पर यह वहम दूर हो गया कि तालाब के इस किनारे से उस किनारे तक का पानी...

1 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-अंजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/239 2 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-अंजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/239

पेज 375 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[عربی حصہ]: من غیر ماء ثم صب الماء علیہ لا وضع الماء اولا خروجا من خلاف الامام الشافعی فانہ یقول بنجاسۃ الماء -1

[اردو حصہ]: زائل ہو گئی، صاحبین کے نزدیک جدا ہوتے ہی پاک ہو جائیگا نجس کپڑے کو دھونے کا بہتر طریقہ یہ ہے کہ اس کو خشک ٹب میں رکھا جائے پھر اس پر پانی بہایا جائے یہ نہیں کہ پہلے ٹب میں پانی موجود ہو امام شافعی کے اختلاف سے بچنے کیلئے اس میں امام شافعی کا قول ہے کہ پانی نجس ہو جائیگا۔ (ت)

رد المحتار میں اس کے بعد فرمایا:

[عربی حصہ]: (1) ولا فرق علی المعتمد بین الثوب المتنجس والعضو 2 اھ یشیر الی خلاف ابی یوسف لاشتراط الصب فی العضو کما فی البدائع۔

[اردو حصہ]: معتمد قول کے مطابق ناپاک کپڑے اور عضو کے درمیان کوئی فرق نہیں اھ ط اھ اس میں ابو یوسف کے اختلاف کی طرف اشارہ ہے وہ عضو پر پانی بہانے کو شرط قرار دیتے ہیں، جیسا کہ بدائع میں ہے۔ (ت)

[عربی حصہ]: اقول وظاھر التعلیل بضرورۃ تطھیر الثوب انہ طاھر فی حق ذلك الثوب (2) لاغیر فلو وضع الثوب النجس فی اجانۃ وصب الماء فوقع فیہ ثوب اخر طاھر یتنجس وان لم ینفصل الماء عن الثوب الاول بعد لان ماکان بضرورۃ تقدر بقدرھا فمن کان یصلی و وقع طرف ردائہ فی الاجانۃ فاصابہ اکثر من الدرھم وھو یتحرك بتحرکہ لم تجز صلاتہ ھذا ماظھر فلیحرر واللہ تعالٰی اعلم۔

[اردو حصہ]: میں کہتا ہوں، اور بظاہر تعلیل یہ ہے کہ یہ کپڑا ضرورتًا پاک ہے تو یہ پاکی اسی کپڑے تک محدود رہے گی لہذا اگر ایک ناپاک کپڑا طشت میں رکھا گیا اور اس پر پانی بہایا گیا پھر اسی طشت میں کوئی اور پاک کپڑا گر گیا تو وہ ناپاک ہو جائے گا اگرچہ اب تک پہلے کپڑے سے پانی جدا نہ ہوا ہو کیونکہ جو چیز بوجہ ضرورت ہوتی ہے وہ بقدر ضرورت ہی رہتی ہے، اب اگر کوئی شخص نماز پڑھ رہا ہے اور اس کے کپڑے کا کنارہ ٹب میں گر گیا تو اگر درہم سے زائد ہو اور وہ کپڑے کے ہلنے سے حرکت کرے تو اس کی نماز جائز نہ ہوگی یہ وہ ہے جو مجھ پر ظاہر ہوا اس کو اچھی طرح سمجھ لیں واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

اس نفیس فائدہ سے اصل ۳ پر یہ تو ہم زائل ہو گیا کہ پانی تالاب کے اس کنارے سے اُس کنارے تک

1 رد المحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۲۳۹/۱ 2 رد المحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۲۳۹/۱

Fatawa Razawiyya, Volume II Why did it not become flowing after reaching? This is seelan (seeping), not jariyan (continuous flow), and that difference is clarified which we mentioned in Principle 8: that if impurity is near the water entry point inside a pond and water passes over it, it becomes impure as it is stagnant, not flowing. If the impurity is outside the pond on the ground near the edge and water passes over it and enters the pond, it does not become impure as long as its qualities do not change, because it is flowing. A parallel to this is the ruling that the seepage of blood within a wound is not considered [impure]; if it flows out of the body, it breaks the wudu (ablution). Understand this. This is the basis of ruling (1): if someone pours a stream of water from a vessel for istinja (cleansing after urination/defecation) and a drop of urine falls on that stream before it reaches the hand, the stream will not become impure because it is flowing. However, this same stream will become impure through the act of performing istinja because it is not flowing on the body. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Text Section] It is said in al-Diya, mentioned in al-Waqi'at al-Husamiyyah: If one takes a vessel and pours water on his hand for istinja, and a drop of urine reaches the falling water before it reaches his hand, some masters say it does not become impure because it is flowing. Hussam al-Din said: This statement is nothing, otherwise it would necessitate that the wash-water of istinja be pure. It is said in al-Mudmarat: There is a consideration here, and the difference is that the water on the palm of the one performing istinja is not flowing, while the water falling from above before reaching the palm is flowing, and the effect of the drop does not appear in it. So the qiyas (logical deduction) is that it does not become impure, and what Hussam al-Din said is by way of caution. Finished. And what we mentioned of the branches (subsidiary rulings) supports its not becoming impure. And Allah Almighty knows best. Finished. I say: It has been asserted with certainty in al-Khulasa, attributing it to al-Fatawa, and in al-Bazzaziyya, and they did not recount any difference of opinion.

[Urdu Explanation Section] It is stated in Diya: "It is in Waqi'at Husamiyyah that if water is poured from a vessel onto one's hand for istinja, and a drop of urine somehow reaches that water which is coming from above and has not yet reached the limb, then some masters say it will not be impure because it is flowing water. Hussam al-Din said this statement has no status, otherwise it would be necessary that the wash-water of istinja be not impure. It is stated in Mudmarat: There is a point for consideration in this, and the difference is that the water which is in the hand of the person performing istinja is not flowing, and the water coming from

above which has not yet reached the hand is flowing water, the effect of the drop will not be manifest in it. So the qiyas is that it should not be impure, and what Hussam al-Din said is by way of caution. Finished. And those branches (subsidiary rulings) which we have mentioned indicate it not being impure. And Allah Almighty knows best. Finished (T). I say: This has been stated with certainty in Khulasa and attributed to Fatawa, and no disagreement was mentioned in Bazzaziyya."

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/239

फतवा-ए-रजविया, जिल्द दूसरी बहता हुआ पहुँचने के बाद फिर जारी क्यों न हुआ? यह 'सीलान' (रिसना) है, 'जरियान' (प्रवाह) नहीं, और वह अंतर स्पष्ट हो गया जिसका हमने नियम 8 में उल्लेख किया था कि तालाब के अंदर पानी के प्रवेश द्वार के पास गंदगी है और पानी उस पर से होकर गुजरता है, तो वह नापाक (अशुद्ध) हो गया क्योंकि वह स्थिर है, बहता नहीं। और तालाब के बाहर ज़मीन पर किनारे के पास गंदगी है और पानी उस पर से गुज़र कर तालाब में प्रवेश करता है, तो नापाक नहीं हुआ जब तक कि उसके गुण न बदल जाएँ क्योंकि वह बहता हुआ है। इसका उदाहरण वह मसला है कि घाव के अंदर खून का बहना मान्य नहीं है; यदि वह शरीर से बाहर बहता है तो वज़ू (शुद्धि) भंग कर देता है। इसे समझें। यही इस मसले (1) का आधार है कि इस्तंजा (शौच के बाद सफाई) करने के लिए लोटे से पानी की धार डाली, हाथ तक पहुँचने से पहले उस धार पर पेशाब की बूंद पड़ गई, तो धार नापाक नहीं होगी क्योंकि वह बहती हुई है। और यही धार इस्तंजा करने से नापाक हो जाएगी क्योंकि यह शरीर पर बहती हुई नहीं है। रद-उल-मुहतार में है:

[अरबी पाठ का हिंदी अनुवाद] 'अद-ज़िया' में कहा गया है, 'अल-वाकियात अल-हुसामिया' में उल्लेख है: यदि कोई बर्तन लेकर इस्तंजा के लिए अपने हाथ पर पानी डाले, और पेशाब की एक बूंद उस गिरते हुए पानी में पहुँच जाए इससे पहले कि वह उसके हाथ तक पहुँचे, तो कुछ विद्वानों का कहना है कि वह नापाक नहीं होगा क्योंकि वह बहता हुआ पानी है। हुसाम-उद-दीन ने कहा: इस कथन का कोई महत्व नहीं है, अन्यथा यह मानना होगा कि इस्तंजा का धोवन नापाक नहीं होता। 'अल-मुज़मरात' में कहा गया है: इसमें विचार करने योग्य बात है, और अंतर यह है कि इस्तंजा करने वाले की हथेली पर पानी बहता हुआ नहीं है, जबकि ऊपर से गिरने वाला पानी हथेली तक पहुँचने से पहले बहता हुआ है और उसमें बूंद का प्रभाव प्रकट नहीं होगा। तो तर्क(क़ियास) यही है कि वह नापाक न हो, और हुसाम-उद-दीन ने जो कहा है वह सावधानी के तौर पर है। समाप्त। और नापाक न होने का समर्थन वे उप-नियम (फुरु) करते हैं जिनका हमने उल्लेख किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। समाप्त। मैं कहता हूँ: 'अल-खुलासा' में इसे निश्चित रूप से कहा गया है और इसे 'अल-फतवा' की ओर संदर्भित किया गया है, और 'अल-बज्जाज़िया' में भी, और उन्होंने किसी मतभेद का उल्लेख नहीं किया।

[उर्दू विवरण का हिंदी अनुवाद] ज़िया में कहा: "वाकियात हुसामिया में है कि अगर बर्तन से इस्तंजा करने के लिए अपने हाथ पर पानी डाला, और पेशाब का कोई कतरा उस पानी तक किसी तरह पहुँच गया जो ऊपर से आ रहा है और अभी तक अंग तक नहीं पहुँचा था तो कुछ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं

नापाक न होगा क्योंकि यह बहता पानी है। हुसाम-उद-दीन ने फ़रमाया इस बात की कोई हैसियत नहीं वर्ना तो लाज़िम कि इस्तंजा का धोवन नापाक न हो। मुज़मरात में फ़रमाया इसमें शक है और अंतर यह है कि इस्तंजा करने वाले के हाथ में जो पानी है वह बहता हुआ नहीं है और ऊपर से आने वाला पानी जो अभी तक हाथ तक नहीं पहुँचा है बहता पानी है, इसमें कतरे का असर ज़ाहिर न होगा तो क़ियास यही है कि नापाक न हो और हुसाम-उद-दीन ने जो फ़रमाया है वह एहतियात (सावधानी) के तौर पर है। और नापाक न होने पर वे बातें दलालत (संकेत) करती हैं जो हमने ज़िक्र की हैं। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त) मैं कहता हूँ इस पर खुलासा में पक्का फ़ैसला किया और इसको फ़तावा की तरफ़ मंसूब किया और बज़ाज़िया में किसी इख़्तिलाफ़ (मतभेद) का ज़िक्र नहीं किया।"

1 रद-उल-मुहतार, अशुद्धियों का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/239

فتاوی رضویہ، جلد ثانی بہتا پہنچا پھر جاری کیوں نہ ہوا یہ سیلان ہے جریان نہیں اور وہ فرق کھل گیا جو اصل ۸ میں ہم نے ذکر کیا کہ تالاب کے اندر مدخل آب کے قریب نجاست ہے اور پانی اس پر ہو کر گزرنا ناپاک ہو گیا کہ وہ سائل ہے جاری نہیں اور تالاب کے باہر زمین پر کنارے کے قریب نجاست ہے اور پانی اُس پر گزرتا تالاب میں داخل ہوا تو ناپاک نہ ہوا جب تک وصف نہ بدلے کہ وہ جاری ہے اور اس کی نظیر وہ مسئلہ ہے کہ جوف زخم کے اندر خون کا سیلان معتبر نہیں جوف سے باہر بہے تو ناقضِ وضو ہے فاہم یہی مبنی ہے اس مسئلہ (۱) کا کہ استنجاء کرنے کو لوٹے سے پانی کی دھار ڈالی ہاتھ تک پہنچنے سے پہلے اُس دھار پر پیشاب کی چھینٹ پڑ گئی دھار ناپاک نہ ہو گی کہ جاری ہے اور یہی دھار استنجاء کرنے سے ناپاک ہو جائے گی کہ بدن پر جاری نہیں ردالمحتار میں ہے:

قال فی الضیاء ذکر فی الواقعات الحسامیة لو اخذ الاناء فصب الماء علی یده للاستنجاء فوصلت قطرة بول الی الماء النازل قبل ان یصل الی یده قال بعض المشائخ لا ینجس لانه جار قال حسام الدین هذا القول لیس بشیئ والا لزم ان تکون غسالة الاستنجاء غیر نجسة قال فی المضمرات وفیه نظر والفرق ان الماء علی کف المستنجی لیس بجار والنازل من الماء قبل وصوله الی الکف جار ولا یظهر فیه اثر القطرة فالقیاس ان لایصیر نجسا وما قاله حسام الدین احتیاط اه ویؤید عدم التنجس ما ذکرنا من الفروع واللہ تعالیٰ اعلم اه اقول: وقد جزم به فی الخلاصة عازیا للفتاوی وفی البزازیة ولم یحکوا

ضیاء میں کہا "واقعات حسامیہ میں ہے کہ اگر برتن سے استنجاء کرنے کیلئے اپنے ہاتھ پر پانی ڈالا، اور پیشاب کا کوئی قطرہ اس پانی تک کسی طرح پہنچ گیا جو اوپر سے آرہا ہے اور ابھی تک عضو تک نہیں پہنچا تھا تو بعض مشائخ فرماتے ہیں ناپاک نہ ہوگا کیونکہ یہ جاری پانی ہے، حسام الدین نے فرمایا اس قول کی کوئی حیثیت نہیں ورنہ تو لازم کہ استنجاء کا دھوون ناپاک نہ ہو۔

مضمرات میں فرمایا اس میں نظر ہے اور فرق یہ ہے استنجاء کرنے والے کے ہاتھ میں جو پانی ہے وہ جاری نہیں اور اوپر سے آنے والا پانی جو ہنوز ہاتھ تک نہیں پہنچا ہے جاری پانی ہے اس میں قطرہ کا اثر ظاہر نہ ہوگا تو قیاس یہی ہے کہ نجس نہ ہو اور حسام الدین نے جو فرمایا ہے وہ بطور احتیاط ہے اھ اور ناپاک نہ ہونے پر وہ فروع دلالت کرتی ہیں جو ہم نے ذکر کی ہیں واللہ تعالیٰ اعلم اھ (ت) میں کہتا ہوں اس پر خلاصہ میں جزم کیا اور اس کو فتاوی کی طرف منسوب کیا اور بزازیہ میں کسی اختلاف کا ذکر نہ کیا

1 رد المحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۳۹

Fatawa Razawiyya Volume II

[Top Box - Left Column (Arabic Original)] Contrary to what is explicitly stated regarding what is connected to flowing water in the Fatawa: A man performed istinja, and when he poured water from a vessel onto his hand, the water flowing from the vessel met the urine before it fell on his hand at the exit point; thus, it is pure (tahir). 'Sh' (Al-Shami) said: Contrary to the issue of a carcass, for the water flowing over it does not remove the impurity nor consume it, but rather it remains in its place and its essence is extant, although there is a disagreement regarding this. Therefore, the commentator rectified it by saying, "But we have already stated that the consideration is for the trace (athar)." Here ends the speech of Al-Shami. We have already stated that what the commentator rectified is the fatwa-issued and relied-upon position. And Allah Almighty knows best.

[Top Box - Right Column (Urdu Translation)] (He) did not mention, and its original text, which is connected to flowing water in the Fatawa is this: that a person performed istinja, so when he poured water from a faucet onto his hand, that water, before falling on his hand, met with a drop of urine, so this water is pure. 'Sh' (Al-Shami) said this issue is contrary to the issue of a carcass because the water that falls or flows over it does not carry away the impurity nor does it end the impurity; rather, the physical essence of the impurity remains in its state. Furthermore, there is also a difference of opinion in it, so the commentator rectified it by saying, "But we have already stated that the consideration is for the trace." The speech of Al-Shami ended, and we have already mentioned that the rectification the commentator made is the fatwa-issued and relied-upon position. And Allah Almighty knows best. (T)

Principle 10: In our books, they state that whether water comes upon impurity or impurity comes upon water, the ruling for both is the same, as previously mentioned from Al-Tanwir, and a great multitude mentioned the like of it. In Al-Ghurar: "The incoming is like the incoming-upon." (As passed from Tanwir and similar was mentioned by many people, and in Ghurar it is that the arriving is like the arrived-upon. - T)

I say: And with Allah is success. Here is a subtle and profound difference and a refined investigation worthy of acceptance. For actual impurity, there is one 'daf' (prevention) and one 'raf' (removal). Prevention is that the impurity should not exert an effect, and removal is that the existing effect of the impurity is eliminated. Prevention is specific to flowing and abundant water, and removal is for every pure

remover; and the outcomes of the encounter between impurity and water are four: (1) I'mal (Application) (2) Ihmal (Neglect) (3) Intiqal (Transfer) (4) Isti'sal (Eradication)

---

1 Khulasa al-Fatawa, and regarding what is connected to flowing water, Naval Kishore, Lucknow, 1/10 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/239 Page 377 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम

[ऊपरी बॉक्स - बायां कॉलम (अरबी मूल)] इसके विपरीत जैसा कि बहते पानी से संबंधित फ़तावा में दर्ज है: एक व्यक्ति ने इस्तिंजा किया, फिर जब उसने पात्र से अपने हाथ पर पानी डाला, तो पात्र से बहता हुआ पानी हाथ पर गिरने से पहले ही पेशाब के अंश से मिल गया; तो वह पाक (पवित्र) है। 'श' (शामी) ने कहा: यह शव (मुर्दार) के मसले के विपरीत है, क्योंकि जो पानी उस पर बहता है वह अशुद्धि को दूर नहीं करता और न ही उसे समाप्त करता है, बल्कि वह अपने स्थान पर बनी रहती है और उसका अस्तित्व कायम रहता है, हालांकि इसमें मतभेद भी है। इसीलिए शारह (व्याख्याकार) ने यह कहते हुए सुधार किया: "लेकिन हम पहले कह चुके हैं कि एतबार असर (प्रभाव) का है।" यहाँ शामी का कथन समाप्त हुआ। और हम पहले बता चुके हैं कि जिस बात से शारह ने सुधार किया है, वही मुफ़्ती-बेह और विश्वसनीय है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[ऊपरी बॉक्स - दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद)] ज़िक्र नहीं किया, और इसकी असल इबारत (मूल पाठ), जो जारी पानी से मुत्तसिल (जुड़ा) है फ़तावा में यह है, कि एक शख़्स ने इस्तिंजा किया, तो जब उसने टोंटी से अपने हाथ पर पानी डाला तो वह पानी हाथ पर गिरने से क़ब्ल पेशाब के क़तरे से मिल गया, तो यह पानी पाक है। 'श' ने फ़रमाया यह मसला मुर्दार के मसले के ख़िलाफ़ है क्योंकि जो पानी उस पर गिरता या जारी होता है वह नजासत को बहा कर नहीं ले जाता है और न ही नजासत को ख़त्म करता है बल्कि नजासत का ऐन अपनी हालत पर ही बाक़ी रहता है, फिर इसमें इख़्तिलाफ़ भी है इसलिए शारह ने यह कह कर इस्तिदराक (संशोधन) किया है कि 'वलकिन क़द्दमना अन्नल इब्रता लिल असर' शामी का कलाम ख़त्म हुआ और हम पहले ज़िक्र कर आए हैं कि जो इस्तिदराक शारह ने किया है वही मुफ़्ती बेह और मोतमिद है वल्लाहु तआला आलम। (त)

अस्ल १०: हमारी किताबों में इतना फ़रमाते हैं कि पानी नजासत पर वारिद (आए) हो या नजासत पानी पर, दोनों का यकसां (एक समान) हुक्म है जैसा कि तनवीर से गुज़रा और इसी तरह बहुत से लोगों ने ज़िक्र किया है और ग़ुरर में है कि वारिद मौरूद की तरह है। (जैसा कि तनवीर से गुज़रा और इसकी मिसाल बहुत से लोगों ने ज़िक्र किया है और ग़ुरर में है कि वारिद मौरूद की तरह है। - त)

अक़ूल: वबिल्लाहि अत्तौफ़ीक़ यहाँ एक फ़र्क़ है ग़ामिज़ (गूढ़) ओ दक़ीक़ (बारीक) और तहक़ीक़-ए-अनीक़ (सुंदर शोध) है जो क़बूल करने योग्य है। नजासत-ए-हक़ीक़िया के लिए एक 'दफ़अ' (रोकथाम) है और एक 'रफ़अ' (निवारण)। दफ़अ यह कि नजासत असर न करने पाए और रफ़अ यह

कि नजासत का मौजूद असर ज़ाइल (समाप्त) हो जाए। दफ़अ जारी और कसीर (अधिक) पानी के साथ ख़ास है और रफ़अ हर पाक और नजासत दूर करने वाली चीज़ के लिए है; और नजासत और पानी के मिलन के चार नतीजे हैं: (१) आमाल (२) इहमाल (३) इंतिक़ाल (४) इस्तीयसाल

---

1. ख़ुलासा अल-फ़तावा, बहते पानी के संबंध में, नवल किशोर, लखनऊ, १/१०
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-अंजस, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, १/२३९ पृष्ठ ३७७/७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[خلافاً نصها في ما يتصل بالماء الجارى فى الفتاوى رجل استنجى فلما صب الماء من القمقمة على يده لاقى الماء الذى يسيل من القمقمة البول قبل ان يقع على يده بعض مخرج فهو طاهر اھ قال ش بخلاف مسألة الجيفة فان الماء الجارى عليها لم يذهب بالنجاسة ولم يستهلكها بل هي باقية في محلها وعينها قائمة على ان فيها اختلافاً ولهذا استدرک الشارح بقوله ولكن قدمنا ان العبرة للاثر اھ كلام الشامى وقدمنا ان ما استدرک به الشارح هو المفتى به المعتمد واللہ تعالٰی اعلم۔] [ذکر نہیں کیا، اور اس کی اصل عبارت ، جو جاری پانی سے متصل ہے فتاوٰی میں یہ ہے، کہ ایک شخص نے استنجاء کیا، تو جب اُس نے ٹونٹی سے اپنے ہاتھ پر پانی ڈالا تو وہ پانی ہاتھ پر گرنے سے قبل پیشاب کے قطرہ سے مل گیا، تو یہ پانی پاک ہے اھ "ش" نے فرمایا یہ مسئلہ مردار کے مسئلہ کے خلاف ہے کیونکہ جو پانی اس پر گرتا یا جاری ہوتا ہے وہ نجاست کو بہا کر نہیں لے جاتا ہے اور نہ ہی نجاست کو ختم کرتا ہے بلکہ نجاست کا عین اپنی حالت پر ہی باقی رہتا ہے ، پھر اس میں اختلاف بھی ہے اس لئے شارح نے یہ کہہ کر استدراک کیا ہے ولکن قدمنا ان العبرۃ للاثر اھ شامی کا کلام ختم ہوا اور ہم پہلے ذکر کر آئے ہیں کہ جو استدراک شارح نے کیا ہے وہی مفتی بہ اور معتمد ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)]

اصل ۱۰: ہماری کتابوں میں اتنا فرماتے ہیں کہ پانی نجاست پر وارد ہو یا نجاست پانی پر ، دونوں کا یکساں حکم ہے کما تقدم عن التنویر و ذکر مثلہ الجم الغفیر وفي الغرر الوارد کالمورود (جیسا کہ تنویر سے گزرا اور اس کی مثل بہت سے لوگوں نے ذکر کیا ہے اور غرر میں ہے کہ وارد مورود کی طرح ہے۔ ت)

اقول: وباللہ التوفیق یہاں ایک فرق ہے غامض و دقیق اور تحقیق انیق ہے قبول کی حقیق۔ نجاست (۱) حقیقیہ کے لئے ایک دفع ہے اور ایک رفع۔ دفع یہ کہ نجاست اثر نہ کرنے پائے اور رفع یہ کہ نجاست کا اثر موجود زائل ہو جائے دفع جاری و کثیرہ کے ساتھ خاص ہے اور رفع ہر مانع طاہر مزیل کیلئے اور ملاقات نجاست و آب کے ثمرے چار ہیں: (۱) اعمال (۲) اہمال (۳) انتقال (۴) استیصال

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ ومما یتصل بالماء الجاری نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۰ 2 رد المحتار باب الانجاس مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۲۳۹ Page 377 of 711

Fatawa Rizwia, Volume 2

- I'mal (Action): That the impurity carries out its effect.
- Ihmal (Inaction): That it cannot carry out its effect.
- Intiqal (Transfer): That its effect moves from the object it was on to another thing.
- Istisal (Eradication): That the impurity is completely destroyed from its root.

When impurity falls upon a small quantity of stagnant (non-flowing) water, it is 'I'mal', meaning it will make the water impure and will remain within it. When it falls upon (1) flowing or a large quantity of water, it is merely 'Ihmal', meaning it remains in it but cannot produce any effect.

[Boxed Text] Arabic: وما ذكرنا من انتقالها عند ائمة بلخ وبخارى وماوراء النهر فى الجواب الثالث فذاك انتقال فى الماء لاعن الماء۔ Urdu Translation: And what we mentioned in the third answer regarding its transfer according to the Imams of Balkh, Bukhara, and Transoxiana, refers to transfer within the water, not away from the water. (T) [End Boxed Text]

And when stagnant water is poured over impurity, such as when cleaning clothes or the body, then here it is 'Intiqal' (Transfer), meaning the impurity will move from that cloth or body into this water; the cloth/body will become pure and this water will become impure. And when (2) flowing water falls upon impurity, as in the cases of a large pond etc. mentioned earlier, this is a case of 'Istisal' (Eradication), meaning the object became pure and this water also remained pure as the impurity remained nowhere. Yes, if flowing or a large quantity of water becomes changed (in color, smell, or taste) by impurity, then in both cases they are like small stagnant water. In short, regarding water falling on impurity: if this water is only 'Raafi' (remover), it will take the impurity away from that object onto itself because it lacks the power to repel (Daf'a). If it is also 'Daafi' (repeller), it will destroy the impurity, leaving no place for it to be removed from the impure object onto itself. In Principle 4, the statement from 'Zahiriyyah' was mentioned that the pool also became pure and the water that flowed out of it, if someone used it for ablution (Wudu), the ablution was valid. It is clear that this was 'I'mal', not 'Intiqal', as the water itself remained pure, nor was it 'Ihmal', because if it were, it would only be as long as the water was flowing. Once it stopped and is a small quantity, if the impurity had remained, it would have been obligatory for it to take effect, as mentioned in Principle 6. But this also did not happen, and performing ablution with this collected water became permissible, so this is nothing

but the eradication (Istisal) of the impurity. Similarly, they clearly state that (3) water was poured over impure ground such that it flowed for about a hand's length; the ground became pure and this water also remained pure.

[Boxed Text] Arabic: فی ردالمحتار عن الذخیرة عن الحسن بن ابی مطیع اذا صب علیها الماء فجری قدر ذراع طهرت الارض والماء طاهر Urdu Translation: In 'Radd al-Muhtar', via 'Al-Zakheera' from Hasan bin Abi Muti', it is stated that when water is poured on it (impure ground) and it flows to the extent of one cubit (Zira'), the ground and the water both become pure, like flowing water. [End Boxed Text]

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

- आमाल (I'mal): यह कि नजासत अपना कार्य करे।
- अहमाल (Ihmal): यह कि कार्य न कर सके।
- इंतिक़ाल (Intiqal): यह कि उसका प्रभाव जिस चीज़ पर था उससे दूसरी चीज़ की तरफ स्थानांतरित हो जाए।
- इस्तिसाल (Istisal): यह कि नजासत जड़ से मिट जाए।

नजासत जब थोड़े ठहरे हुए पानी यानी गैर-जारी पानी पर पड़े तो वह केवल 'आमाल' है, यानी उसे नापाक कर देगी और खुद उसमें बनी रहेगी। और जब (1) जारी या अधिक पानी पर पड़े तो वह केवल 'अहमाल' है, यानी वह उसमें तो रहेगी लेकिन कोई प्रभाव नहीं डाल सकेगी।

[कोष्टक पाठ] अरबी: وما ذكرنا من انتقالها عند ائمة بلخ وبخارى وماوراء النهر فى الجواب الثالث فذاك انتقال فى الماء لاعن الماء۔ उर्दू अनुवाद: और जो हमने तीसरे उत्तर में जिक्र किया कि यह स्थानांतरित हो जाएगी, बल्ख़, बुख़ारा और मा-वरा-अन-नहर के इमामों के अनुसार, तो यह पानी में स्थानांतरित होना है, न कि पानी से। (त) [कोष्टक पाठ समाप्त]

और जब ठहरा हुआ पानी नजासत पर आए, जैसे कपड़ा या बदन पाक करने में, तो यहाँ 'इंतिक़ाल' (स्थानांतरण) है, यानी नजासत उस कपड़े या बदन से हटकर इस पानी में आ जाएगी; वह वस्तु पाक हो जाएगी और यह पानी नापाक। और जब (2) जारी पानी नजासत पर आए, जैसे तालाब आदि की स्थितियों में पहले बताया गया, तो यह स्थिति 'इस्तिसाल' (उन्मूलन) की है, यानी वह वस्तु भी पाक हो गई और यह पानी भी पाक रहा क्योंकि नजासत कहीं बची ही नहीं। हाँ, यदि जारी और अधिक पानी नजासत से बदल जाए (रंग, गंध, स्वाद), तो दोनों स्थितियों में वे थोड़े ठहरे हुए पानी की तरह हैं। संक्षेप में, नजासत पर पानी गिरने के मामले में: यदि यह पानी केवल 'राफे (हटाने वाला) है, तो वह नजासत को उस वस्तु से हटाकर अपने ऊपर ले लेगा क्योंकि उसमें रोकने (दफ़ा) की शक्ति नहीं है। और यदि 'दाफ़े (रोकने वाला) भी है, तो वह उसे नष्ट कर देगा, जिससे उस नापाक वस्तु से हटने और अपने ऊपर लेने का कोई अवसर ही नहीं रहेगा। असूल 4 में 'ज़हीरिया' का कथन आया कि हौज (तालाब) भी पाक हो गया और जो पानी उससे बाहर निकला, उससे यदि किसी ने वज़ू किया तो वज़ू हो गया। यह स्पष्ट है कि यह 'आमाल' हुआ, 'इंतिक़ाल' नहीं, क्योंकि पानी स्वयं पाक रहा, और न ही 'अहमाल' हुआ, क्योंकि यदि ऐसा होता तो केवल बहते समय तक होता। जब पानी रुक गया और वह

थोड़ा है, तो यदि नजासत रहती तो उसका प्रभाव होना अनिवार्य था, जैसा कि असूल 6 में बताया गया। लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ और उस पानी से वज़ू करना जायज़ हो गया, तो यह नजासत के इस्तिसाल (उन्मूलन) के सिवा और कुछ नहीं है। इसी तरह स्पष्ट रूप से फरमाते हैं कि (3) नापाक ज़मीन पर पानी बहाया गया कि एक हाथ भर बह गया; ज़मीन भी पाक हो गई और यह पानी भी पाक रहा।

[कोष्टक पाठ] अरबी: فی ردالمحتار عن الذخیرة عن الحسن بن ابی مطیع اذا صب علیها الماء فجری قدر ذراع طهرت الارض والماء طاهر उर्दू अनुवाद: 'रद अल-मुह्तार' में 'अल-ज़खीरा' के माध्यम से हसन बिन अबी मुतीअ से उद्धृत है कि जब उस (नापाक ज़मीन) पर पानी बहाया गया और वह एक हाथ (ज़िरा) की मात्रा तक बह गया, तो ज़मीन और पानी दोनों पाक हैं, बहते हुए पानी के समान। [कोष्टक पाठ समाप्त]

पृष्ठ 378 / 711

اعمال یہ کہ نجاست اپنا عمل کرے۔ اہمال یہ کہ عمل نہ کر سکے۔ انتقال یہ کہ اس کا اثر جس شے پر تھا اس سے دوسری چیز کی طرف منتقل ہو جائے۔ استیصال یہ کہ نجاست سرے سے فنا ہو جائے۔ نجاست جب آبِ قلیل راکد یعنی غیر جاری پر وارد ہو تو صرف اعمال ہے یعنی اسے ناپاک کر دے گی اور خود اس میں باقی رہے گی اور جب آب (۱) جاری یا کثیر پر وارد ہو تو محض اہمال ہے یعنی باقی تو اس میں رہے گی مگر اثر کچھ نہ کر سکے گی،

[خانہ] وما ذکرنا من انتقالھا عند ائمۃ بلخ وبخاریٰ وماوراء النھر فی الجواب الثالث فذاك انتقال فی الماء لاعن الماء۔ اور جو ہم نے تیسرے جواب میں ذکر کیا کہ یہ منتقل ہو جائیگی ائمہ بلخ و بخاری اور ماوراء النہر کے نزدیک ہے تو یہ پانی میں منتقل ہونا ہے نہ کہ پانی سے۔ (ت) [خانہ ختم]

اور جب آبِ راکد نجاست پر وارد ہو جیسے کپڑا یا بدن پاک کرنے میں، تو یہاں انتقال ہے یعنی نجاست اُس کپڑے یا بدن سے منتقل ہو کر اس پانی میں آ جائے گی وہ پاک ہو جائے گا اور یہ ناپاک۔ اور جب آب (۲) جاری نجاست پر وارد ہو جیسے حوض وغیرہ کی صورتوں میں گزرا تو یہ صورت استیصال کی ہے یعنی وہ بھی پاک ہو گیا اور یہ پانی بھی پاک رہا نجاست کہیں باقی ہی نہ رہی، ہاں جاری و کثیر اگر نجاست سے متغیر ہو جائیں تو دونوں صورتوں میں قلیل راکد کی طرح ہیں بالجملہ ورودِ آب بر نجاست ہیں اگر یہ پانی صرف رافع ہے تو نجاست اُس شے سے دُور کر کے اپنے اوپر لے لے گا کہ اس میں دفع کی قوت نہیں اور اگر دافع بھی ہے تو فنا کر دے گا کہ اُس ناپاک شدہ شے سے رفع کی اور اپنے اوپر سے دفع کی اس کیلئے کوئی محل ہی نہ رکھا اصل ۴ میں ظہیریہ کی عبارت گزری کہ حوض بھی پاک ہو گیا اور یہ پانی جو اُس سے باہر نکل گیا اُسے اٹھا کر کسی نے وضو کیا تو وضو ہو گیا ظاہر ہے کہ یہ اعمال ہوا نہ انتقال ہوا کہ پانی خود

بھی پاک رہا نہ اہمال ہوا کہ وہ ہوتا تو اُس وقت تک ہوتا کہ پانی بہہ رہا تھا جب ٹھہر گیا اور ہے قلیل تو نجاست اگر رہتی واجب تھا کہ عمل کرتی جیسا کہ اصل ۶ میں گزرا لیکن یہ بھی نہ ہوا اور اس پانی کو اٹھا کر اُس سے وضو جائز ہوا تو یہ نہیں مگر نجاست کا استیصال۔ اسی طرح تصریح فرماتے ہیں کہ (۳) ناپاک زمین پر پانی بہا یا کہ ہاتھ بھر بہہ گیا زمین بھی پاک ہوگئی اور یہ پانی بھی پاک رہا،

[خانہ] فی ردالمحتار عن الذخیرۃ عن الحسن بن ابی مطیع اذا صب علیھا الماء فجری قدر ذراع طھرت الارض والماء طاہر ردالمحتار میں ذخیرہ سے حسن بن ابی مطیع سے ہے کہ جب اس پر پانی بہایا گیا اور ایک ذراع کی مقدار اس پر جاری ہوا تو زمین اور پانی پاک ہیں بمنزلہ جاری پانی کے، [خانہ ختم]

[It is] like flowing water. [The scholar] 'Sh' said: This text is a clear evidence for our purpose, and praise be to Allah. End. (T)

Similarly, there are clarifications that [suppose] there are two vessels: (1) one contains, for example, pure water or milk, and the other contains impure [liquid]. Both are poured into the air together so they merge into one stream before reaching a third vessel, or (2) both are mixed and poured onto, for example, a clean solid roof so they flow as one stream—everything becomes pure. It is mentioned in Khazanah, Khulasah, Bazzaziyya, and Radd al-Muhtar:

Arabic Original	**Urdu Translation**
Two vessels, the water in one is pure and the other is impure. They were poured from a high place and mixed in the air, then descended. All of it became pure. If the water of the two vessels was made to flow on the ground, it becomes like flowing water.[2]	There are two vessels; in one, the water is pure, and in the other, it is impure. Now, water was poured from above from both, then both these waters joined together in the air and then came down, so they are pure. And if the water from both vessels was poured onto the ground, then both would be considered as flowing water. (T)

From the hints of the previous discourse, it also became clear that the result of total eradication [of impurity] is applicable to non-visible impurity. As long as visible impurity remains, it cannot be called non-existent; yes, it will not be able to affect large and flowing water, but as soon as the water is small and stagnant, it will show its effect unless the impurity was removed before that, or it became consumed in the water (3) or transformed into soil (4). In the first two cases, it ceased to be visible and became non-visible, and in the last case, the impurity itself ceased to exist. It is stated in Manhat al-Khaliq:

Arabic Original	**Urdu Translation**
The scholar Abdul Rahman Effendi al-Imadi, the Mufti of Damascus, said in his book 'Hadiyyat Ibn al-Imad': The author of 'Majma al-Fatawa' said in 'al-Khazanah': Snow water, when it flows on a path containing dung and impurity—if	Allama Abdul Rahman Effendi Imadi, the Mufti of Damascus, stated in his book 'Hadiyyat Ibn al-Imad' that the author of 'Majma al-Fatawa' stated in 'Khazanah': Snow water flowed on a path where dung and impurity were present. If the impurity

Arabic Original	Urdu Translation
the impurity is hidden and mixed so that its trace is not seen, one may perform ablution (Wudu) from it.[3]	became mixed in it in such a way that its trace is not visible, then Wudu (ablution) can be performed with it. (T)

Similarly, it is in Bazzaziyya, Khulasah, and Fatawa Samarqand. In the commentary of 'Hadiyyah', after the aforementioned discourse, it is stated in principle 2:

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter: Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/138
2. Radd al-Muhtar, Chapter: Impurities, Mustafa al-Babi Egypt, 1/239
3. Manhat al-Khaliq on the margins of Bahr al-Raiq, Discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/85

फतावा रज़विया - जिल्द 2

[यह] बहते पानी के समान है। 'श' ने कहा: यह इबारत हमारे उद्देश्य पर स्पष्ट प्रमाण है, और अल्लाह की प्रशंसा हो। अंत। (त)

इसी तरह स्पष्टीकरण हैं कि दो बर्तन हैं: (1) एक में मान लीजिए शुद्ध पानी या दूध है और दूसरे में अशुद्ध, दोनों की धार हवा में मिलाकर छोड़ी गई कि एक हो जाए और तीसरे बर्तन में पहुँचे, या (2) दोनों को मिलाकर मान लीजिए एक साफ पक्की छत पर बहाया गया कि एक धार होकर बहे—सब शुद्ध हो गया। खज़ाना, खुलासा, बज़्ज़िया और रदुल मुहतार में है:

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
दो बर्तन, एक में पानी पाक (शुद्ध) और दूसरे में नापाक (अशुद्ध) है। उन्हें ऊँचे स्थान से डाला गया और हवा में मिल गए, फिर नीचे गिरे। वह सब पाक हो गया। यदि दोनों बर्तनों का पानी ज़मीन पर बहा दिया गया, तो वह बहते पानी की तरह हो जाता है।[2]	दो बर्तन हैं जिनमें एक का पानी पाक और दूसरे का नापाक है, अब दोनों से ऊपर से पानी बहाया गया फिर ये दोनों पानी हवा में आपस में मिल गए फिर नीचे आए तो पाक हैं, और अगर दोनों बर्तनों का पानी ज़मीन पर बहा दिया गया तो दोनों बहते पानी के समान हो गए। (त)

पिछले विवरण के संकेतों से यह भी स्पष्ट हो गया कि पूर्ण उन्मूलन (इस्तीसाल) का परिणाम सामान्यतः गैर-मईया (अदृश्य) नजासत (अशुद्धि) में है। मईया (दृश्य) जब तक बाकी है उसे अस्तित्वहीन नहीं कहा जा सकता; हाँ, वह 'कसीर' (अधिक) और बहते पानी में अपना प्रभाव नहीं दिखा पाएगी, 'क़लील' (कम) और रुके हुए पानी में वह अपना प्रभाव तुरंत दिखाएगी, मगर यह कि उससे पहले नजासत निकाल दी गई हो या पानी (3) में मिलकर समाप्त हो गई हो या मिट्टी (4) में बदल गई हो, कि पहली दो स्थितियों में वह मईया न रही बल्कि गैर-मईया हो गई और अंतिम स्थिति में नजासत ही नहीं रही। 'मन्हतुल ख़ालिक' में है:

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
अल्लामा अब्दुर रहमान अफंदी अल-इमादी, दमिश्क के मुफ्ती ने अपनी पुस्तक 'हदीय्यत इब्नुल इमाद' में कहा: 'मज्मउल फतावा' के लेखक ने 'ख़ज़ाना' में कहा: बर्फ का पानी, जब	अल्लामा अब्दुर रहमान अफंदी इमादी, मुफ्ती दमिश्क ने अपनी किताब 'हदीय्यत इब्नुल इमाद' में फरमाया कि 'मज्मउल फतावा' के लेखक ने 'ख़ज़ाना' में फरमाया: बर्फ का पानी ऐसे रास्ते पर

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
वह गोबर और गंदगी वाले रास्ते पर बहता है—यदि गंदगी छिप जाती है और इस तरह मिल जाती है कि उसका कोई निशान नहीं दिखता, तो उससे वज़ू किया जा सकता है।[3]	बहा जिस पर गोबर पड़ा हुआ था और नजासत भी थी, अगर नजासत उसमें इस तरह घुल-मिल गई कि उसका असर नज़र नहीं आता तो उससे वज़ू किया जाएगा। (त)

इसी तरह 'बज़्ज़िया', 'खुलासा' और 'फतावा समरकंद' में है। 'शर्ह हदीय्या' में उपर्युक्त चर्चा के बाद मूल 2 में फरमाया:

---

1. रदुल मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/138
2. रदुल मुहतार, बाब अल-अन्जास, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/239
3. मन्हतुल ख़ालिक हाशिय्यह बह्रुर राइक, बहते पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/85

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

بمنزلة الماء الجاری قال ش فهذا نص فی المقصود ولله الحمد ۱ھـ "ش" نے فرمایا یہ عبارت ہمارے مقصود پر نص صریح ہے وللہ الحمد اھـ(ت)

یوں ہی تصریحات ہیں کہ دو برتن ہیں (۱) ایک میں مثلاً پاک پانی یا دودھ ہے دوسرے میں ناپاک، دونوں کی دھار ہوا میں ملا کر چھوڑی کہ ایک ہو کہ تیسرے برتن میں پہنچی یا (۲) دونوں کو ملا کر مثلاً پاک پکی چھت پر بہایا کہ ایک دھار ہو کر بہے سب پاک ہو گیا، خزانہ و خلاصہ و بزازیہ و ردالمحتار میں ہے :

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
اناء ان ماء احدهما طاهر والاخر نجس فصبا من مكان عال فاختلطا فی الهواء ثم نزلا طهر كله ولو اجری ماء الاناء ين فی الارض صار بمنزلة ماء جار ۲۔	دو برتن ہیں ان میں ایک کا پانی پاک اور دوسرے کا ناپاک ہے، اب دونوں سے اوپر سے پانی بہایا پھر یہ دونوں پانی ہوا میں باہم مل گئے پھر نیچے آئے تو پاک ہیں، اور اگر دونوں برتنوں کا پانی زمین پر بہادیا گیا تو دونوں بمنزلہ جاری پانی کے ہوگئے۔(ت)

اشاراتِ تقریرِ سابق سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ ثمرہ استیصال علی الاطلاق نجاستِ غیر مرئیہ میں ہے مرئیہ جب تک باقی ہے معدوم نہیں کہی جاسکتی، ہاں کثیر وجاری میں اثر نہ کرسکے گی قلیل و راکد ہوتے ہی اپنا عمل دکھائے گی مگر یہ کہ اس سے پہلے نجاست نکال دی یا پانی (۳) میں مستہلک یا مٹی (۴) کی طرف مستحیل ہو گئی تھی کہ پہلی دو صورتوں میں مرئیہ نہ رہی غیر مرئیہ ہو گئی اور پچھلی میں نجاست ہی نہ رہی منحۃ الخالق میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال العلامة عبدالرحمن افندی العمادی مفتی دمشق فی کتابه هدیة ابن العماد قال صاحب مجمع الفتاوی فی الخزانة ماء الثلج اذا جری علی طریق فیه سرقین ونجاسة ان تغیبت النجاسة واختلطت حتی لایری اثرها یتوضؤ منه ۳۔	علامہ عبدالرحمن آفندی عمادی مفتی دمشق نے اپنی کتاب ہدیۃ ابن العماد میں فرمایا صاحب مجمع الفتاوی نے خزانہ میں فرمایا کہ برف کا پانی ایسے راستے میں بہا جس پر گوبر پڑا ہوا تھا اور نجاست بھی تھی اگر نجاست اس میں اس طرح گھل مل گئی کہ اس کا اثر نظر نہیں آتا تو اس سے وضو کیا جائے گا۔(ت)

یوں ہی بزازیہ و خلاصہ و فتاوی سمرقند میں ہے شرح ہدیہ میں بعد کلام مذکور اصل ۲ فرمایا:

---

1. ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۳۸
2. ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۳۹
3. منحۃ الخالق علی حاشیہ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۸۵

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Text]: The cistern is impure until the dung at its bottom turns into black mud (silt). At that point, it will not be impure. If the cistern is large, the matter is simple. — 1 [Urdu Translation]: So the cistern is impure as long as the filth beneath it turns into mud; then it will not be impure, and if the cistern is large, the matter is easy. (T)

In 'Minha' it is stated: [Arabic Text]: Meaning, if it flowed after that, not merely by the dung becoming silt as is known from what preceded. 2 Ah. [Urdu Translation]: Meaning, water must have flowed after that as well, because merely becoming mud is not sufficient, as is known from the previous explanation. (T)

I say: It has become clear from what we investigated that the meaning of 'water' in their statement 'water falling upon impurity is impure like its reverse' is small, stagnant water. This is because through this interpretation, both propositions remain correct in their generality. Malik al-Ulama pointed towards this when he said: 'There is no disagreement that an impure thing becomes pure by washing in flowing water, and similarly by washing by pouring water over it. The disagreement is whether it becomes pure by washing in vessels.' Abu Hanifa and Muhammad say it becomes pure until it comes out pure from the third washbasin. Abu Yusuf said the body does not become pure until water is poured over it, and regarding garments, there are two narrations from him. The reasoning of Abu Yusuf's statement is that he refuses purification by washing fundamentally because whenever water meets impurity, it becomes impure, whether water comes upon the impurity or the impurity comes upon the water, except that we ruled it pure due to necessity.

Footnotes: 1 Minhat al-Khaliq on Hashiya Bahr al-Ra'iq, discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi 1/85. 2 Minhat al-Khaliq on Hashiya Bahr al-Ra'iq, discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi 1/85. Page 380 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग २)

[अरबी पाठ]: हौज़ तब तक नापाक है जब तक कि उसके तल में गोबर कीचड़ (काली मिट्टी) न बन जाए। उस समय वह नापाक नहीं रहेगा। और यदि हौज़ बड़ा है, तो मामला आसान है। — 1 [उर्दू अनुवाद]: तो हौज़ उस समय तक नापाक है जब तक कि जो गंदगी उसके नीचे है वह कीचड़ में बदल न जाए, तब वह नापाक नहीं होगा, और अगर हौज़ बड़ा हो तो मामला आसान है। (त)

'मिन्हा' में है: [अरबी पाठ]: अर्थात्, यदि उसके बाद पानी प्रवाहित हुआ हो, न कि केवल गोबर के कीचड़ बनने से, जैसा कि पिछले विवरण से ज्ञात है। 2 आ. [उर्दू अनुवाद]: यानी इसके बाद पानी जारी भी हुआ हो क्योंकि महज़ कीचड़ बन जाना काफी नहीं, जैसा कि साबका बयान से मालूम होता है। (त)

मैं कहता हूँ: हमने जो शोध किया है उससे यह बात स्पष्ट हो गई कि उनके कथन 'नजासत (अशुद्धि) पर पड़ने वाला पानी नापाक है, इसके विपरीत के समान' में पानी से तात्पर्य वह थोड़ा पानी है जो ठहरा हुआ हो, क्योंकि इसी व्याख्या से दोनों बातें अपनी व्यापकता में सही ठहरेंगी। मलिक अल-उलेमा ने इसी ओर इशारा किया है, वे कहते हैं: 'इसमें कोई मतभेद नहीं है कि अपवित्र चीज़ बहते पानी में धोने से पवित्र हो जाएगी, और इसी तरह उस पर पानी बहाकर उसे धोने से भी पवित्र हो जाएगी। मतभेद इसमें है कि क्या बर्तनों में धोने से भी पवित्र होगी या नहीं?' अबू हनीफा और मुहम्मद कहते हैं कि पवित्र हो जाएगी यहाँ तक कि तीसरे टब से पवित्र निकले, और अबू यूसुफ़ ने कहा कि शरीर तब तक पवित्र नहीं होगा जब तक कि उस पर पानी न बहाया जाए, और कपड़ों के बारे में उनसे दो विवरण हैं। अबू यूसुफ़ के कथन का तर्क यह है कि वे बुनियादी तौर पर धोने से पवित्र होने को अस्वीकार करते हैं क्योंकि जब भी पानी अशुद्धि से मिलता है, वह अशुद्ध हो जाता है, चाहे पानी अशुद्धि पर पड़े या अशुद्धि पानी पर, सिवाय इसके कि हमने ज़रूरत के कारण पवित्रता का फैसला दिया है।

फुटनोट्स: 1 मिन्हात अल-ख़ालिक अला हाशियत बहर अल-राईक़, बह़स अल-मा अल-जारी, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/85। 2 मिन्हात अल-ख़ालिक अला हाशियत बहर अल-राईक़, बह़स अल-मा अल-जारी, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/85। पेज 380 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

فالحوض نجس الی ان یصیر الزبل في اسفله حمأة وهي الطین الاسود فلا یکون نجسا حینئذ واذا کان الحوض کبیرا فالامر فیه یسیر- 1 | تو حوض اس وقت ناپاک ہے جب تک کہ جو گندگی اس کے نیچے ہے کیچڑ میں تبدیل ہو جائے تو اس وقت وہ ناپاک نہ ہوگا، اور اگر حوض بڑا ہو تو معاملہ آسان ہے۔ (ت)

منحہ میں ہے: یعنی اذ اجری بعد ذلك لا بمجرد صیرورة الزبل حمأة کما یعلم مما مر 2اھ | یعنی اس کے بعد پانی جاری بھی ہوا ہو کیونکہ محض کیچڑ بن جانا کافی نہیں، جیسا کہ سابقہ بیان سے معلوم ہوتا ہے۔ (ت)

اقول: تبین مما حققنا ان المراد بالماء في قولهم ماء ورد علی نجس نجس کعکسه هو الماء الراکد القلیل اذبه تستقیم القضیتان علی عمومهما وقد اشار الیه ملك العلماء حیث قال لا خلاف ان النجس یطهر بالغسل في الماء الجاری وکذا بالغسل بصب الماء علیه واختلف هل یطهر بالغسل في الاوانی قال ابو حنیفة ومحمد یطهر حتی یخرج من الاجانة الثالثة طاهرا، وقال ابو یوسف لا یطهر البدن مالم یصب علیه الماء وفی الثوب عنه روایتان وجه قول ابی یوسف یابی الطهارة بالغسل اصلا لان الماء متی لاقی النجاسة یتنجس سواء ورد الماء علی النجاسة او وردت النجاسة علی الماء الا انا حکمنا بالطهارة للحاجة

میں کہتا ہوں جو تحقیق ہم نے کی اس سے یہ بات واضح ہوگئی کہ ان کے قول ماء ورد علی نجس نجس کعکسہ میں ماء سے مراد وہ تھوڑا پانی ہے جو ٹھہرا ہوا ہو، کیونکہ اسی تشریح سے دونوں قضیے درست ہوں گے اور ان کا عموم صحیح قرار پائے گا اور ملک العلماء نے اسی طرف اشارہ کیا ہے وہ فرماتے ہیں اس میں کوئی اختلاف نہیں کہ نجس چیز جاری پانی میں دھونے سے پاک ہو

جائے گی اور اسی طرح اگر اس پر پانی بہا کر اس کو دھو دیا جائے تو پاک ہو جائے گی، اس میں اختلاف ہے کہ آیا برتنوں میں دھو کر بھی پاک ہو گی یا نہیں؟ ابو حنیفہ اور محمد فرماتے ہیں پاک ہو جائے گی یہاں تک کہ تیسرے ٹب سے پاک نکلے گا، اور ابو یوسف نے فرمایا بدن اس وقت تک پاک نہ ہوگا جب تک کہ اس کے اوپر پانی نہ بہایا جائے اور کپڑے کے بارے میں اُن سے

1 منحۃ الخالق علی حاشیۃ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۵/۱ 2 منحۃ الخالق علی حاشیۃ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۵/۱ Page 380 of 711

Fatawa Razawiyya - Volume Two

[Left Column - Arabic] People's need is fulfilled by ruling purity when water is poured over impurity. Thus, everything beyond that remains according to analogy. Based on this, there is no difference between the body and the garment. The reason for the difference for him (Imam Abu Yusuf), according to one narration, is that there is a necessity regarding garments, as everyone whose garment becomes impure may not find someone to pour water for them, nor may they be able to pour it themselves. The reason for their (the two Imams') view is that analogy is set aside in both cases because necessity is established in both places; for not everyone whose body becomes impure finds running water or someone to pour it, and they might not be able to pour it themselves. Furthermore, the analogy he mentioned is incorrect because water does not become impure at all as long as it is on the impure site[1] (end of brief quote). He pointed out twice that the two cases apply to non-flowing water, i.e., what is in the ruling of large amounts. It is surprising that the researcher al-Ala'i applied the discussion to flowing water, saying in his commentary: '(Arrived)' i.e., flowed '(impure)' if all or most of it arrived, even if a little, unlike a carcass in a river or impurity on a surface. However, we have previously stated that consideration is given to the trace (and vice-versa), i.e., if impurity comes upon water, the water becomes impure by consensus.[2] (end of quote).

[Right Column - Urdu] There are two narrations. The reason for Abu Yusuf's statement is that the requirement of analogy is that there should be no purity at all from washing, because when water comes into contact with impurity, it will become impure, whether the water is poured over the impurity or the impurity falls into the water. However, we have given the ruling of purity due to people's necessity. And the need is fulfilled with the ruling of purity in the case of water being poured over impurity, so anything beyond that will remain according to analogy. On this basis, no distinction will be made between the body and clothes. According to them, the reason for the difference in one narration is that there is a necessity in the case of clothes, because every person whose clothes become impure does not have the convenience of someone pouring water over their clothes from above, nor can they always pour it themselves. The reason for the statement of the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) is that analogy is abandoned in both cases because necessity is established in both places, for every person who gets stained with impurity neither finds running water nor finds someone to pour it, and sometimes it happens that they cannot pour it themselves. Apart from this, the analogy they

mentioned is not correct because water is not impure as long as it stays on the impure place (briefly), so twice they...

[Footnotes] [1] Bada'i al-Sana'i, section on purification by washing, H.M. Saeed Company Karachi 1/87 [2] Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Impurities, Mujtabai Delhi 1/55

फ़तावा रज़विया - भाग दो

[बायां कॉलम - अरबी] गंदगी पर पानी डालने पर शुद्धता का निर्णय देकर लोगों की आवश्यकता पूरी हो जाती है। अत; इसके अलावा सब कुछ सादृश्य (क़ियास) के अनुसार रहता है। इस आधार पर, शरीर और कपड़े के बीच कोई अंतर नहीं किया जाता है। एक रिवायत के अनुसार उनके(इमाम अबू यूसुफ) लिए फर्क का कारण यह है कि कपड़ों के मामले में ज़रूरत होती है, क्योंकि जिस किसी का कपड़ा नापाक हो जाता है, उसे हमेशा ऐसा कोई नहीं मिलता जो उसके लिए पानी बहाए, और न ही वह खुद इसे बहाने में सक्षम होता है। उनके(दोनों इमामों के) कथन का कारण यह है कि दोनों स्थितियों में सादृश्य को छोड़ दिया गया है क्योंकि दोनों स्थानों पर आवश्यकता सिद्ध होती है; क्योंकि हर व्यक्ति जिसका शरीर नापाक हो जाता है, उसे बहता पानी या कोई पानी बहाने वाला नहीं मिलता, और वह खुद भी इसे बहाने में सक्षम नहीं हो सकता है। इसके अलावा, उन्होंने जिस सादृश्य का उल्लेख किया है वह सही नहीं है क्योंकि पानी तब तक नापाक नहीं होता जब तक वह नापाक जगह पर रहता है[1] (संक्षेप में समाप्त)। उन्होंने दो बार यह बताया है कि ये दोनों मामले गैर-बहते पानी पर लागू होते हैं, यानी जो बड़ी मात्रा के हुक्म में है। यह आश्चर्य की बात है कि शोधकर्ता अल-अलाई ने इस चर्चा को बहते पानी पर लागू किया और अपनी व्याख्या में कहा: '(आया)' यानी बहा '(नापाक)' यदि पूरा या उसका अधिकांश हिस्सा आया, भले ही थोड़ा सा हो, नदी में शव या सतह पर गंदगी के विपरीत। लेकिन हमने पहले ही कहा है कि विचार प्रभाव (असर) का किया जाता है (और इसके विपरीत भी), यानी यदि पानी पर गंदगी आती है, तो पानी सर्वसम्मति (इज्मा) से नापाक हो जाता है।[2] (समाप्त)।

[दायां कॉलम - उर्दू] दो रिवायतें हैं, अबू यूसुफ के कथन का कारण यह है कि सादृश्य (क़ियास) की माँग यह है कि धोने से पवित्रता बिल्कुल न हो क्योंकि जब पानी गंदगी से मिलेगा तो वह नापाक हो जाएगा, चाहे पानी गंदगी पर डाला जाए या गंदगी पानी पर गिरे, लेकिन हमने लोगों की आवश्यकता के कारण पवित्रता का आदेश दिया। और गंदगी पर पानी डालने की स्थिति में शुद्धता के आदेश के साथ आवश्यकता पूरी हो जाती है, इसलिए इसके अलावा यह सादृश्य के अनुसार रहेगा, इस आधार पर शरीर और कपड़ों में कोई अंतर नहीं किया जाएगा, और उनके अनुसार अंतर का कारण एक रिवायत पर यह है कि कपड़ों में आवश्यकता है क्योंकि हर वह व्यक्ति जिसका कपड़ा नापाक हो जाए, उसे यह सुविधा नहीं होती कि कोई उसके कपड़ों पर ऊपर से पानी बहाए और वह खुद भी नहीं बहा सकता है, और तरफ़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) के कथन का कारण यह है

कि सादृश्य दोनों स्थितियों में छोड़ दिया गया है क्योंकि दोनों जगहों पर आवश्यकता सिद्ध है क्योंकि हर वह व्यक्ति जिसे गंदगी लग जाए, न तो उसे बहता पानी मिलता है और न ही कोई बहाने वाला मिलता है, और कभी ऐसा होता है कि वह खुद भी नहीं बहा सकता, और इसके अलावा उन्होंने जो सादृश्य बताया है वह सही नहीं है क्योंकि पानी जब तक नापाक जगह पर रहे नापाक नहीं होता (संक्षेप में), तो दो बार उन्होंने...

[पादलेख] [1] बदाए-उस-सनाए, पाक करने का तरीका धोने کے साथ, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/87 [2] अद-दुर्र-उल-मुख़्तार, नजासत का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली 1/55

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی] لوگوں کی ضرورت نجاست پر پانی وارد ہونے کی صورت میں طہارت کا حکم دینے سے پوری ہوجاتی ہے، لہذا اس کے علاوہ باقی تمام امور قیاس پر رہیں گے۔ اس بنا پر بدن اور کپڑے میں کوئی فرق نہیں کیا جائے گا۔ ان (امام ابو یوسف) کے نزدیک ایک روایت کے مطابق فرق کی وجہ یہ ہے کہ کپڑے میں ضرورت ہے کیونکہ جس کسی کا کپڑا ناپاک ہو جائے اسے ہمیشہ ایسا کوئی نہیں ملتا جو اس کے لیے پانی بہائے اور نہ ہی وہ خود ہمیشہ ایسا کرنے پر قادر ہوتا ہے۔ ان دونوں (امام اعظم اور امام محمد) کے قول کی وجہ یہ ہے کہ دونوں صورتوں میں قیاس کو ترک کر دیا گیا ہے کیونکہ دونوں جگہ ضرورت ثابت ہے، اس لیے کہ ہر وہ شخص جس کا بدن ناپاک ہو جائے اسے نہ تو بہتا ہوا پانی ملتا ہے اور نہ ہی کوئی پانی بہانے والا، اور وہ خود بھی اسے بہانے پر قادر نہیں ہو سکتا۔ اس کے ساتھ ساتھ انہوں نے جس قیاس کا ذکر کیا وہ صحیح نہیں ہے کیونکہ پانی جب تک نجس جگہ پر رہے سرے سے ناپاک ہی نہیں ہوتا[1] اھ مختصراً۔ پس انہوں نے دو بار یہ فائدہ دیا کہ یہ دونوں قضیے غیر جاری پانی (یعنی جو کثیر کے حکم میں ہو) کے بارے میں ہیں۔ اور تعجب کی بات یہ ہے کہ محقق علائی نے اس کلام کو جاری پانی پر محمول کیا اور اپنی شرح میں کہا: '(وارد ہوا)' یعنی بہا '(ناپاک)' جب سارا یا اکثر حصہ وارد ہو اگرچہ تھوڑا ہی کیوں نہ ہو، نہ کہ دریا میں مردار کی طرح یا سطح پر نجاست کی طرح۔ لیکن ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ اعتبار اثر کا ہے (اس کے برعکس کی طرح) یعنی جب نجاست پانی پر وارد ہو تو پانی اجماعاً ناپاک ہو جاتا ہے[2] اھ

[داہنا کالم - اردو] دو روایتیں ہیں، ابویوسف کے قول کی وجہ یہ ہے کہ قیاس کا تقاضا یہ ہے کہ دھونے سے طہارت بالکل نہ ہو کیونکہ پانی جب نجاست سے ملاقی ہوگا تو ناپاک ہوجائے گا خواہ

پانی نجاست پر وارد ہو یا نجاست پانی پر وارد ہو، مگر ہم نے لوگوں کی ضرورت کی وجہ سے طہارت کا حکم دیا۔ اور حاجت پانی کے نجاست پر وارد ہونے کی صورت میں پاکی کے حکم کے ساتھ رفع ہو جاتی ہے تو اس کے علاوہ قیاس کے مطابق رہے گا، اس بنا پر بدن اور کپڑے میں فرق نہیں کیا جائیگا، اور ان کے نزدیک وجہ فرق ایک روایت پر یہ ہے کہ کپڑے میں ضرورت ہے کیونکہ ہر وہ شخص جس کا کپڑا ناپاک ہوجائے اس کو یہ سہولت حاصل نہیں ہوتی کہ کوئی اس کے کپڑے پر اوپر سے پانی بہائے اور خود بھی وہ نہیں بہا سکتا ہے، اور طرفین کے قول کی وجہ یہ ہے کہ قیاس دونوں صورتوں میں متروک ہے کیونکہ دونوں جگہ ضرورت متحقق ہے کیونکہ ہر وہ شخص جس کو نجاست لگ جائے نہ تو بہتا ہوا پانی پاتا ہے اور نہ ہی کسی بہانے والے کو پاتا ہے، اور کبھی ایسا ہوتا ہے کہ خود بھی نہیں بہا سکتا ہے، اور اس کے علاوہ جو قیاس انہوں نے ذکر کیا ہے وہ صحیح نہیں ہے کیونکہ پانی جب تک نجس جگہ پر رہے ناپاک نہیں ہوتا ہے اھ مختصر، تو دو مرتبہ انہوں نے

[حواشی] [1] بدائع الصنائع اما طریق التطھیر بالغسل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۷ [2] الدر المختار باب الانجاس مجتبائی دہلی ۱/ ۵۵

Fatawa Razawiyya Volume Two

It was stated that both cases are regarding non-flowing water, meaning water that is under the ruling of flowing water, such as a large body of water. It is surprising that the meticulous investigator Al-'Ala'i interpreted the text as referring to flowing water and stated in his commentary: "(Ward)" meaning it flowed (impure) when the whole or most of it flowed onto it. If a small amount flowed, then this ruling would not apply, as in the case of a carcass in a river or impurity on a roof. However, we have previously mentioned that the consideration is of the effect (just as the reverse of it), meaning that when impurity falls into water, the water becomes impure by consensus (Ijma'). - (T)

Arabic

I say: (1) Rather, it will not become impure by consensus if it is flowing, as long as it does not change [its characteristics] due to it. Therefore, the reference is certainly to a small amount of stagnant water. (2) If it were interpreted as such, there would have been no need for restriction in the first case nor for its amendment. It is surprising that the three masters, H, T, and Sh, all interpreted it as applying generally to both stagnant and flowing water. Consequently, the first two objected to the commentator, saying regarding his statement 'Jara' (it flowed) that this is specific to when it flows on the ground or a surface and does not include when it is poured over impurity, because pouring is not called flowing, although the ruling is general. Thus, it is better for the author to leave it in its generality. - (T)

I say: (3) Do you think that flowing water or a large body of water that falls upon an impurity, or vice-versa, becomes impure simply by falling? Then where is the

Urdu Translation

I say: Rather, it will not become impure by consensus if it is flowing, as long as it does not change [its characteristics]. Therefore, the reference is certainly to a small amount of stagnant water. If it were interpreted as such, there would have been no need for restriction in the first case nor for its amendment. It is surprising that the three masters, H, T, and Sh, all interpreted it as applying to both stagnant and flowing water. Consequently, the first two objected to the commentator, saying regarding his statement 'Jara' (it flowed) that this is specific to when it flows on the ground or a surface and does not include when it is poured over impurity, because pouring is not called flowing, although the ruling is general. Thus, it is better for the author to leave it in its generality. - (T)

I say: Do you think that flowing water or a large body of water that falls upon an impurity, or vice-versa, becomes impure simply by falling? Then where is the

Arabic	Urdu Translation
generality? The third one pointed towards two answers and said that the interpretation of 'Wurud' (falling/ entering) was made in this way so that he could provide the details and the disagreements mentioned, otherwise 'Wurud' is more general. Furthermore, flowing...	generality? The third one pointed towards two answers and said that the interpretation of 'Wurud' was made in this way so that he could provide the details and also mention the disagreement against it.

1 Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, Beirut, 1/161 Page 382 of 711

फतावा रज़विया जिल्द सानी

बताया गया कि दोनों मामले गैर-जारी (स्थिर) पानी के बारे में हैं, यानी उस पानी के बारे में जो जारी पानी के हुक्म (नियम) में हो, जैसे कि प्रचुर मात्रा में पानी (कसीर पानी)। ताज्जुब है कि बारीकबीन मोहक्क़िक़ (शोधकर्ता) अलाई ने इस कलाम (कथन) को जारी पानी पर महमूल (लागू) किया है, और अपनी शरह (व्याख्या) में फरमाया है: '(वरद)' यानी जारी हुआ (नापाक) जब उस पर उसका पूरा या अधिकांश हिस्सा पड़ा। अगर थोड़ा जारी हुआ तो यह हुक्म नहीं होगा, जैसे कि नहर में मुर्दार (शव) या छत पर नजासत (गंदगी)। लेकिन हमने पहले ज़िक्र किया कि एतबार (मान्यता) असर का है (जैसा कि इसका उल्टा), यानी जब नजासत पानी पर वाकये (गिरे) हो तो पानी इजमाअन (सर्वसम्मति से) नापाक हो जाएगा। (त)

अरबी

मैं कहता हूँ: (1) बल्कि इजमाअन (सर्वसम्मति से) वह नापाक नहीं होगा जब तक कि वह बहता रहे और उसमें कोई बदलाव न आए। इसलिए मुराद (तात्पर्य) निश्चित रूप से थोड़ा सा ठहरा हुआ पानी है। (2) और अगर इसे उस पर महमूल (लागू) किया जाए तो पहले में इसकी तकीद (प्रतिबंध) की ज़रूरत नहीं होगी और न ही इसके सुधार की आवश्यकता होगी। ताज्जुब यह है कि सादात-ए-सलासा (तीन विद्वान) ह, त और श ने इसे ठहरे हुए और जारी पानी दोनों के लिए आम (सामान्य) कर दिया है। तो पहले दो ने शारह (व्याख्याकार) पर एतराज़ (आपत्ति) किया और कहा कि उनका कौल 'जरी' (बहना) उस सूरत (स्थिति) के साथ खास है जब वह पानी ज़मीन या सतह पर बहता हो और उस सूरत को शामिल नहीं करता जब किसी नजासत (गंदगी) पर बहाया जाए, क्योंकि बहाने को जारी होना नहीं कहा जाता है जबकि

उर्दू अनुवाद

मैं कहता हूँ: बल्कि इजमाअन (सर्वसम्मति से) वह नापाक नहीं होगा जब तक कि वह बहता रहे और उसमें कोई बदलाव न आए। इसलिए मुराद (तात्पर्य) निश्चित रूप से थोड़ा सा ठहरा हुआ पानी है। और अगर इसे उस पर लागू किया जाए तो पहले में इसकी तकीद (प्रतिबंध) की ज़रूरत नहीं होगी और न ही इसके सुधार की आवश्यकता होगी। ताज्जुब यह है कि सादात-ए-सलासा (तीन विद्वान) ह, त और श ने इसे ठहरे हुए और जारी पानी दोनों के लिए आम (सामान्य) कर दिया है। तो पहले दो ने शारह (व्याख्याकार) पर एतराज़ (आपत्ति) किया और कहा कि उनका कौल 'जरी' (बहना) उस सूरत (स्थिति) के साथ खास है जब वह पानी ज़मीन या सतह पर बहता हो और उस सूरत को शामिल नहीं करता जब किसी नजासत (गंदगी) पर बहाया जाए, क्योंकि बहाने को जारी होना नहीं कहा जाता है जबकि

अरबी

हुक्म आम है। तो बेहतर यही है कि मुसन्निफ़ (लेखक) ने इसे इसके उमूम (सामान्यता) पर बाकी रखा है। (त)

मैं कहता हूँ: (3) क्या आप समझते हैं कि जारी (बहता) पानी या कसीर (अधिक) पानी जो किसी नजासत (गंदगी) पर गिरे या इसके विपरीत, क्या सिर्फ गिरने से नापाक हो जाएगा? तो उमूम (सामान्यता) कहाँ रही? और तीसरे ने दो जवाबों की तरफ इशारा किया और कहा कि 'वरूद' (गिरने/प्रवेश करने) की तफ़सीर (व्याख्या) इसके साथ इसलिए की गई है ताकि वे इसका विवरण दे सकें और इसके विपरीत का भी ज़िक्र कर सकें। इसके अलावा, बहना...

उर्दू अनुवाद

हुक्म आम है। तो बेहतर यही है कि मुसन्निफ़ (लेखक) ने इसे इसके उमूम (सामान्यता) पर बाकी रखा है। (त)

मैं कहता हूँ: क्या आप समझते हैं कि जारी पानी या कसीर पानी जो किसी नजासत पर गिरे या इसके विपरीत, क्या सिर्फ गिरने से नापाक हो जाएगा? तो उमूम कहाँ रहा? और तीसरे ने दो जवाबों की तरफ इशारा किया और कहा कि 'वरूद' की तफ़सीर इसके साथ इसलिए की गई है ताकि वे इसका विवरण दे सकें और इसके विपरीत का भी ज़िक्र कर सकें।

1 तहतावी अलल दुर्रिल मुख्तार, बाब अल-अनजास, बैरूत, 1/161 पृष्ठ 711 में से 382

بتایا کہ دونوں قضیے غیر جاری پانی میں ہیں یعنی اس پانی میں جو جاری پانی کے حکم میں ہو ، مثلاً کثیر پانی، تعجب ہے کہ مدقق علائی نے کلام کو جاری پانی پر محمول کیا ہے ، اور اپنی شرح میں فرمایا ہے (ورد) یعنی جاری ہوا (ناپاک) جب وارد ہوا اس کا کل یا اکثر، اگر کم جاری ہوا تو یہ حکم نہیں ہوگا جیسا کہ نہر میں مردار یا چھت پر نجاست، لیکن ہم نے پہلے ذکر کیا کہ اعتبار اثر کا ہے (جیسا کہ اس کا عکس) یعنی جب کہ نجاست پانی پر وارد ہو تو پانی اجماعاً ناپاک ہو جائیگا اھ (ت)

عربی متن	**اردو ترجمہ**
اقول:(۱) بل لا یتنجس اجماعاً اذا کان جاریاً مالم یتغیر بها فالمراد الراکد القلیل قطعاً(۲) ولو حمل علیه لم یحتج في الاولی الی تقییدها ولا الاستدراك علیها والعجب ان السادات الثلثة ح وط و ش کلهم حملوه علی ما یعم الراکد والجاری فاعترض الاولان علی الشارح قائلین علی قوله جری هذا خاص بما اذا جری علی ارض او سطح ولا یشمل ما اذا صب علی نجاسة لان الصب لا یقال له	میں کہتا ہوں بلکہ ناپاک نہ ہوگا اجماعاً جبکہ جاری ہو، جب تک متغیر نہ ہو، تو مراد تھوڑا سا ٹھہرا ہوا پانی ہے قطعاً، اور اگر اس پر محمول کیا جائے تو پہلی میں اس کی تقیید کی حاجت نہ ہوگی اور نہ ہی استدراک کی ضرورت ہوگی اور تعجب یہ ہے کہ ساداتِ ثلثہ ح، ط اور ش نے اس کو ٹھہرے اور جاری پانی دونوں میں عام کر رکھا ہے تو پہلے دو نے شارح پر اعتراض کیا، اور کہا ہے کہ ان کا قول جری یہ اس صورت کے ساتھ خاص ہے جبکہ وہ پانی زمین یا سطح پر جاری ہو اور اس صورت کو شامل نہیں ہے جبکہ کسی نجاست پر بہایا جائے کیونکہ بہانے کو جاری ہونا نہیں کہا جاتا ہے حالانکہ

عربی متن	اردو ترجمہ
جریان مع ان الحکم عام فالاولی ابقاء المصنف علی عمومہ اھ	حکم عام ہے، تو اولیٰ وہی ہے کہ مصنف نے اس کو اس کے عموم پر باقی رکھا ہے اھ (ت)
اقول:(۳) اترون ماء جاریاً او کثیراً ورد علی نجس او بالعکس ھل یتنجس بالورود فاین العموم واشار الثالث الی جوابین فقال فسر الورود بہ لیتأتی لہ التفصیل والخلاف اللذان ذکرھما والا فالورود اعم وایضاً فالجریان	میں کہتا ہوں کیا آپ سمجھتے ہیں کہ جاری پانی یا کثیر پانی جو کسی نجاست پر وارد ہو یا بالعکس، صرف وارد ہونے سے نجس ہوجائے گا؟ تو عموم کہاں ہوا؟ اور تیسرے نے دو جوابوں کی طرف اشارہ کیا اور کہا کہ ورود کی تفسیر اس کے ساتھ اس لئے کی گئی ہے تاکہ وہ اس کی تفصیل کرسکیں اور اس کے خلاف کا بھی ذکر کریں

1 طحطاوی علی الدر المختار باب الانجاس بیروت 161/1 صفحہ 382 از 711

Fatawa Rizwia Volume II

...which they mentioned, otherwise the influx is general and also being flowing is more eloquent than pouring, so he specified it although the rule of pouring was known from it by priority, so that the delusion of lack of intent might be removed. End (T).

[Arabic Excerpt: More eloquent than pouring, so he specified it despite knowing the rule of pouring from it by priority, to remove the delusion of lack of intention. I say: (1) There is no generality, and (2) on his assumption, how can its interpretation as specific be correct so that its restriction could follow and make it a matter of difference? Rather, he should have kept it on its generality and said, 'And if it is flowing when all of it comes...' etc.]

I say there is no generality; if it is assumed, then how can its interpretation by something specific be correct so that they can restrict it and make it a matter of disagreement? Rather, it was necessary for them to keep it on its generality, and say that although it may be flowing when all of it enters etc. (T).

These brilliant jewels, by the grace of Allah Almighty, are a gift from the Master of Prophethood (peace and blessings be upon him). Praise be to Allah for His continuous favors, and the best of prayers and peace be upon the Master of His Prophets, and upon them and upon his family, companions, and saints, remaining forever with His permanence and eternity, Amen and praise be to Allah, Lord of the worlds.

Now that these ten principles are laid down, let's move towards the ramifications.

So I say: And with Allah is success. In this matter, there are 120 forms; in the fourth answer, the types of basins were mentioned. The second type is where the bottom is part of it and is not distinct in shape and enclosure, like a semi-circle. The fourth type is where the bottom has a separate shape. A 'small follower' (Saghir Tabih) is one whose surface area is less than twenty-five hands. A 'standalone' (Mustaqil) is one which is twenty-five hands or more but less than a hundred. A lower basin incapable of flow: first, one where the water is filled in the interior of the upper basin beyond its boundaries so that the water coming from outside will flow into this small basin and its coming out will not be considered its flow; rather, it will be considered moving within the interior of the upper basin itself, for there is no flow (Principle 3 and 5). It is obvious that if a bowl is placed in a cauldron and the cauldron is half-filled with

impure water, even filling it to the brim will not make the bowl's water pure, nor the cauldron's, as no flow occurred in either. Contrary to this, if there is water only in the bowl and pure water is poured on it until it fills and overflows, then surely the bowl and its water will become pure as flow occurred, even if within the cavity of the cauldron (Principle 2). Second, where there is no place for it to overflow further, as in this case where, although the water is only up to 'H-A', there is a height further until the end. Capable of flow is that which has space for the water to flow within it and further ahead. A 'small end' (Qillat Muntahi) is when the space of the upper basin which is in alignment with the lower basin, together with the space of the lower basin, is less than ten by ten (dah dar dah), as in this figure.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi Egypt 1/238.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

...जिसका उन्होंने ज़िक्र किया, अन्यथा प्रवेश व्यापक है और बहना डाल देने से अधिक प्रभावशाली है, तो उन्होंने इसे स्पष्ट कर दिया हालांकि डाल देने का नियम उससे प्राथमिकता के आधार पर मालूम हो गया था, ताकि इरादा न करने का भ्रम दूर हो जाए। (त)

[अरबी उद्धरण: डाल देने से अधिक प्रभावशाली, इसलिए उन्होंने डाल देने का नियम जानने के बावजूद इसे स्पष्ट किया, ताकि इरादा न होने के भ्रम को दूर किया जा सके। मैं कहता हूँ: (1) कोई व्यापकता नहीं है, और (2) उनकी धारणा पर, इसका विशिष्ट व्याख्या कैसे सही हो सकती है ताकि इसका प्रतिबंध संभव हो सके और इसे मतभेद का विषय बनाया जा सके? बल्कि, उन्हें इसे इसकी व्यापकता पर ही रहने देना चाहिए था और कहना चाहिए था कि चाहे वह बहता हुआ हो जब वह पूरा आए... इत्यादि।]

मैं कहता हूँ कि कोई व्यापकता नहीं है, यदि मान लिया जाए तो इसकी विशिष्ट व्याख्या कैसे सही हो सकती है ताकि वे इसे प्रतिबंधित कर सकें और इसे विवादास्पद बना सकें? बल्कि उन पर अनिवार्य था कि वे इसे इसकी व्यापकता पर ही रहने दें, और कहें कि यद्यपि बहता हुआ हो जब उसका पूरा भाग आए आदि। (त)

ये चमकदार रत्न, अल्लाह तआला की कृपा से, सरकार-ए-रिसालत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उपहार हैं। अल्लाह का शुक्र है उसकी निरंतर नेमतों पर, और सर्वश्रेष्ठ दुरूद व सलाम नबियों के सरदार पर, और उन पर और उनके आल, सहाबा और औलिया पर, जो उसकी स्थिरता और अमरता के साथ हमेशा रहने वाले हैं, आमीन और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।

जब ये दस सिद्धांत पूर्ण हो गए, अब शाखाओं (विवरणों) की ओर चलें।

तो मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से सफलता है। इस मसले में 120 सूरतें हैं, चौथे जवाब में हौज़ (तालाब/कुण्ड) की किस्में ज़िक्र हुईं। दूसरी किस्म वह जिसका निचला हिस्सा उसका अंग हो और आकार व घेरे में अलग न हो, जैसे अर्धवृत्त। चौथी किस्म वह जिसका निचला हिस्सा अलग आकार का हो। 'सगीर ताबे' (छोटा अधीनस्थ) वह जिसकी माप पच्चीस हाथ से कम हो। 'मुस्तकिल' (स्वतंत्र) वह जो पच्चीस हाथ या उससे अधिक हो लेकिन सौ से कम हो। निचला हौज़ जो प्रवाह के योग्य न हो: पहला वह जिसमें पानी उसकी सीमाओं के बाहर तक ऊपरी हौज़ के भीतर भरा हो,

जिससे बाहर से आने वाला पानी इस छोटे हौज़ में प्रवेश करके निकलना न ठहराया जाए, बल्कि उसे ऊपरी हौज़ के भीतर ही गतिशील समझा जाएगा क्योंकि प्रवाह नहीं है (सिद्धांत 3 और 5)। यह ज़ाहिर है कि अगर एक देग (बड़े बर्तन) में एक कटोरा रखा हो और आधी देग नापाक पानी से भरी हो, तो लबालब भर देने से भी कटोरे का पानी पाक नहीं होगा और न ही देग का, क्योंकि उनमें से किसी का प्रवाह नहीं हुआ। इसके विपरीत यदि केवल कटोरे में पानी हो और उस पर पाक पानी डालें यहाँ तक कि वह भर कर छलकने लगे, तो निश्चित रूप से कटोरा और उसका पानी पाक हो जाएगा क्योंकि उसका प्रवाह हो गया चाहे देग के खोखलेपन में ही हो (सिद्धांत 2)। दूसरा वह जहाँ आगे छलक कर बहने की जगह न हो जैसे इस स्थिति में कि यद्यपि पानी केवल 'ह-अ' तक हो, आगे अंत तक ऊँचाई है। प्रवाह के योग्य वह जिसमें पानी के अंदर और आगे बहने की जगह हो। 'किल्लत मुंतही' (अंत की कमी) यह कि ऊपरी हौज़ का वह भाग जो निचले हौज़ की सीध में है, निचले हौज़ के भाग के साथ मिलकर दस दर दस (लगभग 5.5 वर्ग मीटर) से कम हो, जैसा कि इस चित्र में है।

1. रद-उल-मुहतार, बाबुल् अनजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/238.

पृष्ठ 383/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

...جن کا انہوں نے ذکر کیا، ورنہ ورود اعم ہے اور نیز جاری ہونا ابلغ ہے بہانے سے، تو اس کی تصریح کردی حالانکہ بہانے کا حکم اس سے معلوم ہوگیا تھا بطریق اولی، تاکہ ارادہ نہ کرنے کا وہم دفع ہو جائے اھ (ت)

ابلغ من الصب فصرح بہ مع علم حکم الصب منہ بالاولی رفعا لتوہم عدم ارادتہ اھـ اقول: (۱) لاعموم وعلی (۲) فرضہ کیف یصح تفسیرہ بخاص لیتأتی لہ تقییدہ وجعلہ خلافیہ بل کان علیہ ان یبقیہ علی عمومہ ویقول وان کان جاریاً اذا ورد کلہ ... الخ

میں کہتا ہوں کوئی عموم نہیں ہے، اگر فرض کیا جائے تو اس کی تفسیر خاص سے کیسے صحیح ہوسکتی ہے تاکہ وہ اس کو مقید کر سکیں اور اس کو اختلافی بنا سکیں، بلکہ ان پر لازم تھا کہ وہ اس کو اس کے عموم پر باقی رکھیں، اور کہیں کہ اگرچہ جاری ہو جبکہ اس کا کل وارد ہو الخ(ت)

یہ جواہر زواہر بحمدہ تعالیٰ عطیہ سرکار رسالت علیہ افضل الصلوٰۃ والتحیۃ ہیں والحمد للہ علی تواتر الائہ، وافضل الصلوۃ والسلام علی سید انبیائہ، وعلیہم وعلی الہ وصحبہ واولیائہ، باقیین دائمین بدوامہ وبقائہ، آمین والحمد للہ رب العالمین۔

جب یہ اصول عشرہ ممد ہو لیے اب تفریعات کی طرف چلئے۔

فاقول: وباللہ التوفیق اس مسئلہ میں ۱۲۰ صورتیں ہیں، جواب چہارم میں حوض کی قسمیں مذکور ہوئیں۔ قسم دوم وہ کہ اسفل اس کا جز ہو شکل و احاطہ میں متمیز نہ ہو جیسے نصف دائرہ۔ قسم چہارم وہ کہ اسفل شکل جدا گانہ ہو۔ صغیر تابع وہ کہ پچیس ہاتھ مساحت سے کم ہو مستقل وہ کہ پچیس ہاتھ یا زائد ہو مگر سو سے کم ہو، حوض زیریں ناقبل اجرا ایک وہ کہ پانی اس کی حدود

سے باہر تک حوض بالا کے بطن میں بھرا ہو کہ باہر سے جو پانی آئیگا اس کا بہاؤ اس حوض صغیر میں داخل ہو کر نکلنا نہ ٹھہرے گا کہ اس کا اجرا ہو بلکہ حوض بالا ہی کے بطن میں متحرک سمجھا جائے گا کہ جریان نہیں (اصل ۳ و ۵) ظاہر ہے کہ اگر دیگ میں ایک کٹورا رکھا اور نصف دیگ میں ناپاک پانی بھرا ہے لبالب بھر دینے سے بھی کٹورے کا پانی پاک نہ ہوگا نہ دیگ کا کہ ان میں کسی کا اجرا نہ ہوا۔ بخلاف اس کے کہ صرف کٹورے میں پانی ہو اور اس پر پاک پانی ڈالیں یہاں تک کہ بھر کر ابلے ضرور کٹورا اور اس کا پانی پاک ہوجائے گا کہ اس کا اجرا ہوگیا اگرچہ جوف دیگ میں (اصل ۲) دوسرا وہ کہ آگے ابل کر بہنے کو جگہ نہ ہو جیسے اس صورت میں کہ اگرچہ پانی صرف ح ع تک ہو آگے منتہی تک بلندی ہے۔ قابل اجرا وہ کہ پانی اسی کے اندر اور آگے بہنے کو جگہ ہو قلت منتہی یہ کہ حوض بالا کی فضا کہ اس حوض زیریں کی محاذات میں ہے مع فضائے حوض زیریں دہ دردہ سے کم ہو جیسے اس شکل میں۔

1 ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۳۸

Fatawa Ridawiyya Volume II

Now that AB is a hundred cubits and HC is less, the abundance at the end-point is that even here it should be ten by ten (dah dar dah), as in the same figure when surface HC is a hundred cubits and surface AB is more, or in the mentioned third figure in the fourth answer where AB and HC are both equal. The abundance at the source is that where the impure water is filled, for example, from 'R' in the case of flow capability, or from 'Y' to 'M' in the case of lack of capability, there is enough space from there to the water inlet that the incoming pure water becomes ten by ten before mixing with the impure water. For instance, the water that came at 'H' and was impure from 'H' in the first case, then before reaching 'H', it measured a hundred cubits in surface 'H', and in the second case, if there was impure water from 'Y', then above 'Y' in surface 'Y', there should be an area of ten by ten. Scarcity at the source means there isn't that much space; instead, it remains less than ten by ten before meeting it. In any case, if the visible impurity was removed before the pure water entered, it is 'mukhraja' (removed); otherwise, it is 'baqiya' (remaining), whether sunken (rasiba) or floating (tafiya). It is evident that the basin under discussion will be of the second or fourth type, and the fourth type is either dependent or independent, and both can be either flow-capable or not; these make five cases. In each case, the source will be either abundant (kathir) or scarce (qalil). According to the second reason, the end-point will also be scarce or abundant; these three together make fifteen (15). In any case, the impurity will be invisible or visible, and if visible, it will be removed or remaining, and if remaining, it will be sunken or floating; these four together make sixty (60). Whether or not the upper basin overflowed after being filled, the total cases are one hundred and twenty (120). Now, with the success granted by Allah Almighty, we shall regulate them so that each division falls under the case where the ruling differs.

I say: and from Allah my Lord I seek help **First:** If the basin is of the second or fourth type, small and flow-incapable, whether dependent or independent, and in any case, it was neither abundant at the source nor did it overflow after filling, then absolutely everything becomes impure, regardless of the type of impurity and whether the end-point is scarce or abundant, because as much water as continued to mix with the impurity became impure, and a large quantity of impure water cannot become pure; these were three cases, or rather just one, as flow-incapability includes them all. In detail, considering the abundance or scarcity of the end-point and types of impurities, they are twenty-four (24). **Secondly:** In the first two of these three cases,

i.e., the second type and the non-flowing dependent type, if it was abundant at the source or overflowed after filling, then absolutely everything becomes pure; these are four cases, or rather only two, as 'non-independent' includes both. In detail, thirty-two (32) cases include whether an abundant source overflows or not, and for a scarce source that overflows, whether the end-point is scarce or abundant, and each being of the second type or non-flowing dependent, and regardless of the type of impurity. **Thirdly:** In the third case of these, the non-flowing independent type, due to abundance at the source or by causing overflow, the upper basin will remain absolutely pure.

अब कि अब सौ हाथ और ह-अ कम है, कसरत-ए-मुन्तही यह कि यहाँ भी द-दर-द हो जैसे इसी शक्ल में जब कि सतह ह-अ सौ हाथ और सतह अब ज़ायद हो या शक्ल-ए-सोम मज़कूर जवाब चहारम में कि अब व ह-अ दोनों मसावी हैं। कसरत-ए-मब्दअ यह कि नापाक पानी जहाँ तक भरा है, मसलन बहाली-ए-क़ाबलियत-ए-इजरा से र तक या बहाल अदम-ए-क़ाबलियत य से म तक वहाँ से मदख़ल-ए-आब तक इतनी जगह है कि आने वाला पाक पानी वह द-दर-द होकर नापाक पानी से मिलेगा मसलन उसे जो पानी ह पर आया और पहली सूरत में ह से नापाक पानी था तो ह तक पहुँचने से पहले सतह ह में सौ हाथ मसाहत हुआ और दूसरी सूरत में य से नजिस पानी था तो य से ऊपर ऊपर सतह य में द-दर-द की वुसअत हो। क़िल्लत-ए-मब्दअ यह कि इतनी जगह नहीं बल्कि द-दर-द से कम रह कर उससे मिले। बहरहाल नजासत-ए-मईया पाक पानी दाख़िल होने से पहले निकाल ली गई तो मुख़रजा है वरना बाक़िया रासिबा ख़्वाह ताफ़िया। ज़ाहिर है कि हौज़ ज़ेर-ए-बहस क़िस्म-ए-दोम से होगा या चहारम से और चहारम ताबे या मुस्तक़िल और दोनों क़ाबल-ए-इजरा या ना-क़ाबल ये पाँच सूरतें हुईं और हर तक़दीर पर मब्दअ कसीर होगा या क़लील। ब-वजह-ए-दोम मुन्तही भी क़लील होगा या कसीर ये तीन होकर पंद्रह (१५) हुईं। बहरहाल नजासत ग़ैर-मईया होगी या मईया और मईया मुख़रजा या बाक़िया और बाक़िया रासिबा या ताफ़िया ये चार होकर साठ (६०) हुईं। बहरसूरत हौज़-ए-बाला भर कर उबला या नहीं जुमला एक सौ बीस (१२०)। अब हम ब-तौफ़ीक़-ए-तआला उनका ज़ब्त करें कि हर तक़सीम उसी सूरत में आए जिससे वहाँ हुक्म मुख़्तलिफ़ हो।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): वबिल्लाहि रब्बी अस्ताईन (और अल्लाह अपने रब से मदद चाहता हूँ) **अव्वलन:** हौज़ अगर क़िस्म-ए-दोम से हो या क़िस्म-ए-चहारम से और सग़ीर ना-क़ाबल-ए-इजरा ताबे ख़्वाह मुस्तक़िल और बहरहाल न कसीरुल-मब्दअ था न भर कर उबला तो मुतलक़न सब नापाक हो गया आम अज़ीं नजासत किसी क़िस्म की हो और मुन्तही क़लील हो या कसीर कि जितना पानी नजासत से मिलता गया नजिस होता गया और नजिस कसीर होकर ताहिर नहीं हो सकता ये तीन सूरतें हुईं बल्कि एक ही कि ना-क़ाबल-ए-इजरा सब को शामिल है और तफ़्सीलन बिलहाज़ कसरत व क़िल्लत मुन्तही व अक़साम नजासत चौबीस (२४)। **सानियन:** इन्हीं सूरत-ए-सलासा से पहली दो सूरतों यानी क़िस्म-ए-दोम व ना-जारी ताबे में अगर कसीरुल-मब्दअ था या भर कर उबला तो मुतलक़न सब पाक हो गया ये चार सूरतें हुईं बल्कि दो ही कि ना-मुस्तक़िल दोनों को शामिल और तफ़्सीलन बत्तीस (३२) को कसीरुल-मब्दअ उबले या नहीं और उबलने वाले क़लीलुल-मब्दअ में

मुन्तही क़लील हो या कसीर और हर एक क़िस्म-ए-दोम से हो या ना-जारी ताबे और बहरहाल नजासत किसी क़िस्म की। **सालिसन:** इन्हीं की सूरत-ए-सोम ना-जारी मुस्तक़िल में कसरत-ए-मब्दअ या उबालने से हौज़-ए-बाला मुतलक़न पाक रहेगा।

पृष्ठ ३८४/७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اب کہ اب سو ہاتھ اور ح ع کم ہے کثرتِ منتہی یہ کہ یہاں بھی دہ در دہ ہو جیسے اسی شکل میں جب کہ سطح ح ع سو ہاتھ اور سطح اب زائد ہو یا شکلِ سوم مذکور جواب چہارم میں کہ اب و ح ع دونوں مساوی ہیں کثرتِ مبدء یہ کہ ناپاک پانی جہاں تک بھرا ہے مثلاً بحالیِ قابلیتِ اجراء سے ر تک یا بحال عدمِ قابلیت ی سے م تک وہاں سے مدخلِ آب تک اتنی جگہ ہے کہ آنے والا پاک پانی وہ دہ در دہ ہو کر ناپاک پانی سے ملے گا مثلاً اسے جو پانی ح پر آیا اور پہلی صورت میں ہ سے ناپاک پانی تھا تو ہ تک پہنچنے سے پہلے سطح ح میں سو ہاتھ مساحت ہوا اور دوسری صورت میں ی سے نجس پانی تھا تو ی سے اوپر اوپر سطح ی میں دہ در دہ کی وسعت ہو قلتِ مبدء یہ کہ اتنی جگہ نہیں بلکہ دہ در دہ سے کم رہ کر اس سے ملے بہرحال نجاستِ مرئیہ پاک پانی داخل ہونے سے پہلے نکال لی گئی تو مخرجہ ہے ورنہ باقیہ راسبہ خواہ طافیہ ظاہر ہے کہ حوض زیر بحث قسم دوم سے ہوگا یا چہارم سے اور چہارم تابع یا مستقل اور دونوں قابلِ اجرا یا نا قابل یہ پانچ صورتیں ہوئیں اور ہر تقدیر پر مبدء کثیر ہو گا یا قلیل۔ بروجہِ دوم منتہی بھی قلیل ہوگا یا کثیر یہ تین ہو کر پندرہ ۱۵ ہوئیں۔ بہر حال نجاست غیر مرئیہ ہوگی یا مرئیہ اور مرئیہ مخرجہ یا باقیہ اور باقیہ راسبہ یا طافیہ یہ چار ہو کر ساٹھ ۶۰ ہوئیں بہر صورت حوض بالا بھر کر اُبلا یا نہیں جملہ ایک سو بیس ۱۲۰۔ اب ہم بتوفیقہ تعالٰی ان کا ضبط کریں کہ ہر تقسیم اُسی صورت میں آئے جس سے وہاں حکم مختلف ہو۔

اقول: وباللہ ربی استعین **اولاً:** حوض اگر قسم دوم سے ہو یا قسم چہارم سے اور صغیر نا قابلِ اجرا تابع خواہ مستقل اور بہر حال نہ کثیر المبدء تہانہ بھر کر اُبلا تو مطلقاً سب ناپاک ہو گیا عام ازیں نجاست کسی قسم کی ہو اور منتہی قلیل ہو یا کثیر کہ جتنا پانی نجاست سے ملتا گیا نجس ہوتا گیا اور

نجس کثیر ہو کر طاہر نہیں ہوسکتا یہ تین صورتیں ہوئیں بلکہ ایک ہی کہ نا قابلِ اجرا سب کو شامل ہے اور تفصیلاً بلحاظ کثرت و قلت منتہی و اقسام نجاست چوبیس ۲۴۔ **ثانیاً:** انہی صورتِ ثلثہ سے پہلی دو صورتوں یعنی قسم دوم و نا جاری تابع میں اگر کثیر المبدء تھا یا بھر کر اُبلا تو مطلقاً سب پاک ہو گیا یہ چار صورتیں ہوئیں بلکہ دو ہی کہ نا مستقل دونوں کو شامل اور تفصیلاً بتیس ۳۲ کو کثیر المبدء اُبلے یا نہیں اور اُبلنے والے قلیل المبدء میں منتہی قلیل ہو یا کثیر اور ہر ایک قسم دوم سے ہو یا نا جاری تابع اور بہر حال نجاست کسی قسم کی۔ **ثالثاً:** انہی کی صورت سوم ناجاری مستقل میں کثرتِ مبدء یا اُبلانے سے حوض بالا مطلقاً پاک رہے گا

Fatawa Rizvia, Volume 2

...that its water became 'Kathir' (abundant) by mixing with impure water (Principle 8) or flowed away afterwards (Principle 1), and the 'Saghir' (small body of water) should be absolutely impure. Even if the impurity is invisible ('Ghayr-Mar'iyyah'), did not flow, and is independent (Answer 4), the presence of impurity and the absence of the cause of purification in the case of an abundant source ('Mabda') is clear. In the case of flow ('Ijrā') as well, it is apparent that its independence will prevent its flow from being considered an effective flow. If it is said that it won't be a hindrance, the figure is:

[Diagram with markers J, H, T, A, I, R, K, W, Z]

In figure 'J', if the pieces of land 'J-H' and 'R-K', which by intervening have made 'H-T' a distinct shape from 'A-I', are removed, there is no doubt that the flow of 'A-B' will now be the flow of the entire shape 'A-K', in which 'H-T' is also included. So, by removing these pieces, why would the effect of flow, which reached up to 'H-T', end at 'R'? The answer is the same: if those pieces are removed, in the single shape 'R-K', all the water is one. This is contrary to the case where 'A' and 'B' are two separate bodies of water in two shapes. Reflect on this. These are two cases, and in detail, similarly sixteen.

Fourthly: A 'Saghir' will only be capable of flow ('Qabil-e-Ijrā') from the fourth category, as the second category is not capable of flow at all until the entire basin fills and overflows. It is obvious that the water now coming from above will definitely fill and flow it out (Principle 5). In that case, there is no dispute about its purity (Principle 1), whether it is independent or dependent, as no specific quantity is a condition for purification by flow (Principle 2). Now, if the impurity is invisible or excreted, there is no reason for the return of impurity, as the flow ('Jaryan') annihilates that impurity (Principle 10). Thus, both upper and lower parts are absolutely pure, even if neither the source is 'Kathir' nor the destination ('Muntaha'), because no specific limit is prescribed for flow (Principle 4). Whether it overflows or not, as the pure [water] does not need flow. These became four cases: capable of flow as dependent or independent, and impurity being invisible or excreted, or rather just one: capable of flow and invisible impurity, since after removing visible impurity, it becomes invisible. And in detail, twenty-four (24), as on every estimation the source is 'Kathir' or 'Qalil' (scanty), and the destination is 'Kathir' or also 'Qalil', and in every case, it overflows or not.

Fifthly: In the same case capable of flow, if there is remaining impurity, then in the state of the source or destination being 'Kathir', if the impurity is floating ('Tafiyah'), both parts will absolutely remain pure. Whether the 'Saghir' is dependent or independent, and whether the 'Kabir' (large basin) overflows or not, because the flow of the 'Saghir' purified it. And even if it is independent, the floating impurity did not remain in it but moved towards the upper water. This upper water, which makes it flow, was not affected by it. If it was 'Kathir', it is obvious (Principle 8), and if it was 'Qalil', it was still pure during the state of flow (Principle 4). This flow did not end until it filled that space of the 'Kabir' basin which is in alignment with the 'Saghir' (Principle 4), as spreading in width does not prevent flow (Principle 7). At that time, it had become turbid ('Darda') but was not susceptible to accepting impurity. Similarly, if it is 'Asbah', and the 'Saghir' is dependent, although the impurity was present in it at the time flow stopped, the upper water was not affected due to its abundance. Since this [Saghir] is one with it due to its dependency, it will remain pure.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

...कि उसका पानी नापाक पानी से 'कसीर' (अधिक) होकर मिला (अस्ल 8) या बाद में बह गया (अस्ल 1) और 'सगीर' (छोटा तालाब) को मुतलक़न नापाक होना चाहिए। अगरचे नजासत 'ग़ैर-मर्इय्या' (अदृश्य) होकर बही नहीं और मुस्तकिल है (जवाब 4), तो नजासत मौजूद और पाकी का सबब नदारद होना 'मब्दा' (स्रोत) के कसीर होने की सूरत में वाज़ेह है। और 'इजरा' (बहाव) की सूरत में भी ज़ाहिर यही है कि उसका मुस्तकिल होना उसके इजरा को [प्रभावी] इजरा होने से रोकेगा। अगर कहा जाए कि रुकावट नहीं होगा, तो शक्ल है:

[Markers J, H, T, A, I, R, K, W, Z के साथ आरेख]

शक्ल 'ज' में, अगर ज़मीन के टुकड़े 'ज-ह' और 'र-क', जिन्होंने बीच में आकर 'ह-त' को 'अ-इ' से एक अलग शक्ल बना दिया है, उन्हें हटा दिया जाए तो इसमें कोई शक नहीं कि अब 'अ-ब' का इजरा पूरी शक्ल 'अ-क' का इजरा होगा जिसमें 'ह-त' भी शामिल है। तो इतने टुकड़े कम कर लेने से इजरा का असर जो 'ह-त' तक पहुँचता था, 'र' पर क्यों खत्म हो जाएगा? जवाब वही है कि अगर वे टुकड़े हटा दिए जाएँ तो 'र-क' वाहिद (एक) शक्ल में सारा पानी एक है। इसके विपरीत कि इस सूरत में 'अ' और 'ब' दो शक्लों में दो अलग-अलग पानी हैं। इस पर गौर करें। ये दो सूरतें हुईं और विस्तार से इसी तरह सोलह।

चौथा: सगीर 'क़ाबिले-इजरा' (बहाव के योग्य) नहीं होगा सिवाय चौथी किस्म के, क्योंकि दूसरी किस्म असल में क़ाबिले-इजरा नहीं है जब तक कि सारा हौज (तालाब) भरकर न बहे। ज़ाहिर है कि अब जो पानी ऊपर से आएगा वह ज़रूर उसे भरकर बहा देगा (अस्ल 5)। तो उस वक्त उसकी पाकी में कोई विवाद नहीं (अस्ल 1), चाहे वह मुस्तकिल हो या ताबेअ (आश्रित), क्योंकि इजरा से पाकी के लिए कोई निश्चित मात्रा (मिक़दार) शर्त नहीं है (अस्ल 2)। अब अगर नजासत अदृश्य है या निकाली हुई है, तो नजासत के लौटने की कोई वजह नहीं क्योंकि 'जरियान' (बहाव) उस नजासत को खत्म कर देता है (अस्ल 10)। अतः मुतलक़न ऊपर और नीचे दोनों हिस्से पाक हैं, चाहे न मब्दा कसीर हो न मुन्तहा (अंत), क्योंकि जरियान के लिए कोई खास सीमा निर्धारित नहीं है (अस्ल 4)। चाहे भरकर उबले या नहीं, क्योंकि ताहिर (पाक) को इजरा की ज़रूरत नहीं। ये चार सूरतें हुईं कि क़ाबिले-इजरा ताबेअ हो या मुस्तकिल और नजासत अदृश्य हो या निकाली हुई, बल्कि एक ही कि क़ाबिले-इजरा और अदृश्य नजासत, क्योंकि दृश्य नजासत निकालने के बाद वह भी अदृश्य है। और विस्तार से चौबीस (24), कि

हर स्थिति पर मब्दा कसीर हो या क़लील (कम), और मुन्तहा कसीर हो या वह भी क़लील, और हर सूरत पर उबले या नहीं।

पाँचवाँ: इसी क़ाबिले-इजरा सूरत में अगर नजासत बाकी हो तो मब्दा या मुन्तहा कसीर होने की हालत में अगर नजासत तैरने वाली ('ताफ़िया') है, तो मुतलक़न दोनों हिस्से पाक रहेंगे। सगीर ताबेअ हो या मुस्तकिल, कबीर उबले या न उबले, क्योंकि सगीर के जरियान ने उसे पाक कर दिया। और अगर वह मुस्तकिल हो, तो नजासत जो तैरने वाली थी उसमें न रही बल्कि ऊपर के पानी की तरफ मुंतकिल (स्थानांतरित) हो गई। और यह ऊपर का पानी उसे बहाने वाला उससे मुतास्सिर (प्रभावित) न हुआ। अगर कसीर था तो ज़ाहिर है (अस्ल 8), और अगर क़लील था तब भी जरियान की हालत में पाक ही था (अस्ल 4)। और यह जरियान तब तक खत्म नहीं हुआ जब तक उसने कबीर हौज के उस हिस्से को जो सगीर के संरेखण में है भर न दिया (अस्ल 4), क्योंकि चौड़ाई में फैलना जरियान का बाधक नहीं है (अस्ल 7)। उस वक्त वह 'दरदा' (मैला) हो चुका था, बहरहाल नजासत कबूल करने के लायक न रहा। इसी तरह अगर वह 'असबा' है और सगीर ताबेअ है, हालाँकि बहाव रुकने के वक्त नजासत उसमें मौजूद थी, लेकिन ऊपर का पानी अधिकता की वजह से प्रभावित नहीं हुआ। चूँकि यह [सगीर] ताबेअ होने की वजह से उसके साथ एक ही चीज़ है, इसलिए पाक ही रहेगा।

पृष्ठ 385 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

کہ اُس کا پانی ناپاک پانی سے کثیر ہو کر ملا (اصل ۸) یا بعد کو بہہ گیا (اصل ۱) اور صغیر مطلقاً ناپاک ہونا چاہئے ۔ اگرچہ نجاست غیر مرئیہ ہو کر بہانہیں اور مستقل ہے (جواب ۴) تو نجاست موجود اور سبب تطہیر مفقود صورت کثرت مبدء تو واضح ہے اور صورت اجرا میں بھی ظاہر یہی ہے کہ اس کا استقلال اس کے اجرا کو اس کا اجرا ہونے سے مانع ہوگا اگر کہیئے کہ مانع نہ ہوگا شکل:

[Diagram with markers ج، ح، ط، ا، ء، ر، ک، و، ز]

ج میں ج ح اور ر ک زمین کے ٹکڑے جنہوں نے حائل ہو کر ہ ط کو اء سے ممتاز شکل کر دیا اگر ہٹادئے جائیں تو شک نہیں کہ اب کا اجرا تمام شکل اک کا اجرا ہوگا جس میں ہ ط بھی داخل تو اتنے ٹکڑے کم کر لینے سے اثر اجرا کہ ہ ط تک پہنچتا تھا ر پر کیوں ختم ہو جائیگا تو جواب وہی ہے کہ وہ ٹکڑے ہٹ جائیں تو رک شکل واحد میں سب پانی ایک ہے بخلاف اس صورت کے کہ اب دو شکلوں میں دو پانی ہیں فلیتأمل یہ دو صورتیں ہوئیں اور تفصیلاً اسی طرح سولہ۔

رابعاً: صغیر قابل اجرا اور نہ ہوگا مگر قسم چہارم سے کہ قسم دوم اصلاً قابلِ اجرا نہیں جب تک سارا حوض بھر کر نہ بہے ظاہر ہے کہ اب جو پانی اُوپر سے آئیگا ضرور اُسے بھر کر بہادے گا (اصل ۵) تو اُس وقت اس کی طہارت میں کلام نہیں (اصل ۱) عام ازیں کہ مستقل ہو یا تابع کہ اجرا سے طہارت کے لئے کوئی مقدار شرط نہیں (اصل ۲) اب اگر نجاست غیر مرئیہ یا مخرجہ ہے تو عود نجاست کی کوئی وجہ نہیں کہ جریان اس نجاست کو فنا کردیتا ہے (اصل ۱۰) تو مطلقاً زیر و بالا دونوں حصّے پاک ہیں اگرچہ نہ مبدء کثیر ہو نہ منتہی کہ جریان کیلئے کوئی حد خاص مقدر

نہیں (اصل ۴) خواہ بھر کر اُبلے یا نہیں کہ طاہر کو اجرا کی حاجت نہیں یہ چار صورتیں ہوئیں کہ قابلِ اجرا تابع یا مستقل اور نجاست غیر مرئیہ یا مخرجہ بلکہ ایک ہی کہ قابلِ اجرا اور نجاست غیر مرئیہ کہ بعد اخراج مرئیہ بھی غیر مرئیہ ہے اور تفصیلاً چوبیس ۲۴ کہ ہر تقدیر پر مبدء کثیر ہو یا قلیل اور منتہی کثیر یا وہ بھی قلیل اور ہر صورت پر اُبلے یا نہیں۔

خامساً: اسی صورت قابلِ اجرا میں نجاست باقیہ ہو تو مبدء یا منتہی کثیر ہونے کی حالت میں اگر نجاست طافیہ ہے مطلقاً دونوں حصّے پاک رہیں گے صغیر تابع ہو یا مستقل کبیر اُبلے یا نہ اُبلے کہ جریانِ صغیر نے اُسے پاک کردیا اور وہ اگرچہ مستقل ہو نجاست کہ طافیہ تھی اس میں نہ رہی آبِ بالا کی طرف منتقل ہوگئی اور یہ آب بالا اُسے بہانے والا اُس سے متاثر نہ ہوا اگر کثیر تھا تو ظاہر (اصل ۸) اور قلیل تھا جب بھی بحالتِ جریان تو پاک تھا ہی (اصل ۴) اور یہ جریان منتہی نہ ہوا جب تک اُس فضائے حوضِ کبیر کو کہ محاذاتِ صغیر میں ہے بھر نہ دیا (اصل ۴) کہ عرض میں پھیلنا جریان کا مانع نہیں (اصل ۷) اور اس وقت وہ دردہ ہو چکا تھا بہر حال قابل قبول نجاست نہ ہوا یوں ہی اگر اسبہ ہے اور صغیر تابع کہ اگرچہ وقوفِ جریان کے وقت نجاست اُس میں موجود تھی مگر آبِ بالا بوجہ کثرت متاثر نہ ہوا اور یہ بوجہ تبعیت اُس کے ساتھ شے واحد ہے تو پاک ہی رہے گا

Fatawa Razawiyya Volume II And there is no need for flow from above, such as the bottom part of the second type of basin, even if its area becomes very small and impurity is present in it, as long as there is a large quantity above or flow occurs, no part will remain impure. Yes, in this case, if the small part is independent, the large part, being plentiful, will remain pure, and the small part must become impure again because the flow stopped as soon as that surface was filled, and at that time, impurity is present in it. Since it is not subordinate, even if there was flow from above, it is of no benefit. And if both the starting and ending points are small and the upper basin is not flowing, then both parts will be absolutely impure, whether the small part is subordinate or independent, and whether the impurity is floating or submerged. Although the components of the small part had purified it and the incoming water was pure until then, the flow stopped due to scarcity, so in stagnant small water where impurity exists, whether it's floating in the upper part or submerged in the lower part, it becomes impure (Principle 6). And the second small quantity, which is lower in the first and upper in the second, is connected to this impure water, so both became impure. The water that later increased and moved within the basin did not result in another flow (Principles 3 and 5). This increase might be a trickle, but it is not sufficient for 'flow' (Principle 9). And if the upper basin is flowing and the small part is subordinate, then all is pure, even if the impurity is submerged, as previously mentioned. And if it is independent, the small part must be impure due to connection with impurity, even if it is floating, because at the time the flow stopped, the upper part had become impure due to scarcity, and it was connected to it. Then, when the flow from above resumed, its flow should not stop due to its independence, so it remained impure while the large part became pure due to the flow itself. These are nine cases: in each case of abundance at the start or end, there are three (floating, submerged independent, submerged subordinate). Similarly, there are three cases for scarcity in both: no flow from above, and flow with subordination or independence. Actually, there are six, as both abundances come under 'standing on abundance'. In detail, there are twenty-four: in each case of abundance at start/end or scarcity in both, whether the impurity is floating or submerged, and whether the small part is subordinate or independent, and whether the upper part is flowing or not—8 times 3 equals 24. The total is 120, and in the rule, it's 20, or rather only 12.

Summary of this rule

اقول: ان كان جوف الحوض النجس لايجرى بدخول الماء الطاهر فان كثر المبدء اوجرى الكبير طهر الكل لو الصغير تابعاً والكبير فقط لو مستقلا والا تنجس الكل وان كان يجرى به و

I say: If the bottom of the impure basin does not flow upon the entry of pure water, then if the source increases or the large one flows, all is pure if the small is subordinate, and only the large if independent, otherwise everything becomes impure, and if it flows with it and...

I say: If the interior of the impure basin does not flow with the entry of pure water, then if the source becomes abundant or the large part flows, the whole becomes pure if the small part is subordinate, and only the large part if it is independent. Otherwise, the whole becomes impure. If it flows with it and...

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम और ऊपर से बहाव की ज़रूरत नहीं है जैसे दूसरी किस्म के हौज़ का निचला हिस्सा है, चाहे क्षेत्रफल में कितना ही कम रह जाए और उसमें अपवित्रता मौजूद हो, जब ऊपर पानी अधिक है या बहने लगे तो कोई हिस्सा नापाक नहीं रहेगा। हाँ, इस सूरत में अगर छोटा हिस्सा स्वतंत्र है तो बड़ा हिस्सा (जो अधिक है) पाक रहेगा और छोटा हिस्सा फिर नापाक होना चाहिए क्योंकि उस सतह के भरते ही बहाव रुक गया और उस वक़्त गंदगी ख़ुद उसमें मौजूद है। चूँकि यह अधीन नहीं है, इसलिए ऊपर से बहाव भी अगर हुआ तो वह उपयोगी नहीं है। और अगर शुरुआत और अंत दोनों कम हैं और ऊपर का हौज़ बहने वाला भी नहीं है, तो दोनों हिस्से बिल्कुल नापाक रहेंगे, चाहे छोटा हिस्सा अधीन हो या स्वतंत्र, और गंदगी तैरने वाली हो या डूबी हुई। हालाँकि छोटे हिस्से के अवयवों ने उसे पाक कर दिया था और उस वक़्त तक आने वाला पानी भी पाक था, लेकिन कम होने के कारण बहाव रुक गया, तो ठहरे हुए कम पानी में गंदगी मौजूद है, चाहे ऊपर तैर रही हो या नीचे डूबी हुई, वह नापाक हो गया (नियम 6)। और दूसरी कम मात्रा, जो पहले में नीचे और दूसरे में ऊपर है, इस नापाक पानी से जुड़ी है, इसलिए दोनों नापाक हो गए। बाद में जो पानी बढ़ा और हौज़ के अंदर चला, वह दोबारा प्रवाह नहीं बना (नियम 3 और 5)। इस बढ़ने में बहाव तो है लेकिन वह 'जिरियान' (प्रवाह) के लिए काफ़ी नहीं है (नियम 9)। और अगर ऊपर का हौज़ बहने वाला है और छोटा हिस्सा अधीन है, तो सब पाक हैं, चाहे गंदगी डूबी हुई हो जैसा कि अभी बताया गया। और अगर स्वतंत्र है, तो छोटे हिस्से को गंदगी के संपर्क के कारण नापाक होना चाहिए, भले ही वह तैरने वाली हो, क्योंकि बहाव रुकने के समय कम होने के कारण ऊपर का हिस्सा नापाक हो गया था और वह उससे जुड़ा था। फिर जब ऊपर का बहाव हुआ, तो स्वतंत्र होने के कारण उसका बहाव नहीं रुकना चाहिए, इसलिए वह नापाक ही रहा और बड़ा हिस्सा बहाव के कारण ख़ुद पाक हो गया। ये नौ सूरतें हैं: शुरुआत या अंत की बहुतायत में से प्रत्येक में तीन हैं (तैरती हुई, डूबी हुई स्वतंत्र या अधीन)। इसी तरह दोनों की कमी में भी तीन हैं: ऊपर से बहाव का बिल्कुल न होना, और बहाव में अधीनता या स्वतंत्रता। वास्तव में छह ही हैं क्योंकि दोनों बहुतायत 'बहुतायत पर खड़े रहने' में आ गई हैं। और विस्तार से चौबीस हैं: शुरुआत या अंत की बहुतायत या दोनों की कमी में, प्रत्येक में गंदगी तैरने वाली है या डूबी हुई, छोटा हिस्सा अधीन है या स्वतंत्र, ऊपर से बहाव है या नहीं—8 गुणा 3 होकर 24 हुईं। कुल 120 और नियम में 20 ही, बल्कि केवल 12।

इस नियम का सारांश

अक़ूल: इन कान जौफ़ुल हौजिन नजिसु ला यजरी बि-दुख़ूलिल मा-इत-ताहिरु फ़-इन कसुरल मबदाउ औ जरल कबीरु तहुरा अल-कुल्लु लौ अस-सगीरु ताबेअन वल-कबीरु फ़क़त लौ मुस्तक़िल्लन व इल्ला तनज्जसा अल-कुल्लु व इन कान यजरी बिही व

मैं कहता हूँ अगर नापाक हौज़ की तह पाक पानी के दाख़िल होने से जारी नहीं होती है, तो अगर मबदा (शुरुआत) ज़ायद हो गया या बड़ा जारी हुआ, तो कुल पाक है अगर छोटा हिस्सा अधीन है और बड़ा फ़क़त अगर आज़ाद (स्वतंत्र) हो वरना सब नापाक हो गया, और अगर उसके साथ जारी हो और...

मैं कहता हूँ: यदि नापाक हौज़ का भीतरी भाग शुद्ध जल के प्रवेश से प्रवाहित नहीं होता है, तो यदि स्रोत प्रचुर हो जाए या बड़ा हिस्सा प्रवाहित हो जाए, तो यदि छोटा हिस्सा अधीन है तो सब शुद्ध हो जाएगा, और यदि स्वतंत्र है तो केवल बड़ा हिस्सा। अन्यथा सब नापाक हो जाएगा। और यदि उसके साथ प्रवाहित होता है और...

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی اور جریانِ بالا کی حاجت نہیں جیسے حوض قسم دوم کا اسفل ہے اگرچہ مساحت میں کتنا ہی کم رہ جائے اور اُس میں نجاست موجود ہو جب اوپر کثیر ہے یا اجرا ہو جائے کوئی حصہ ناپاک نہ رہے گا ہاں اس صورت میں اگر صغیر مستقل ہے تو کبیر کہ کثیر ہے پاک رہے گا اور صغیر پھر ناپاک ہونا چاہئے کہ اُس سطح کے بھرتے ہی جریان ٹھہر گیا اور اُس وقت نجاست خود اس میں موجود ہے اور یہ تابع نہیں تو جریانِ بالا بھی اگر ہوا اسے مفید نہیں اور اگر مبدء و منتہی دونوں قلیل ہیں اور حوض بالا بہا بھی نہیں تو مطلقاً دونوں حصے ناپاک رہیں گے صغیر تابع ہو یا مستقل اور نجاست طافیہ ہو یا راسبہ کہ اگرچہ اجزائے صغیر نے اسے پاک کیا اور اُس وقت تک وہ آنے والا پانی بھی پاک تھا مگر جریان ٹھہرا قلت پر تو آبِ قلیل ساکن میں نجاست موجود ہے خواہ بالا میں اگر طافیہ ہے یا زیریں میں اگر راسبہ تو وہ نجس ہو گیا (اصل ۶) اور دوسرا قلیل کہ اول میں زیریں اور دوم میں بالا ہے اس آبِ نجس سے متصل ہے تو دونوں نجس ہوگئے اور بعد کو جو پانی بڑھا بطنِ حوض میں متحرک ہوا تو دوبارہ اجرا نہ ہوا (اصل ۳ و ۵) اس بڑھنے میں سیلان سہی مگر وہ جریان کیلئے کافی نہیں (اصل ۹) اور اگر حوض بالا بہا اور صغیر تابع ہے تو سب پاک اگرچہ نجاست راسبہ ہو لما مر آنفاً (جیسے ابھی گزرا) اور مستقل ہے تو صغیر بوجہ اتصال نجاست ناپاک ہونا چاہئے اگرچہ طافیہ ہو کہ وقوفِ جریان کے وقت بالابسببِ قلت ناپاک ہو گیا تھا اور یہ اُس سے متصل پھر جب بالا کا جریان ہوا وہ بوجہ استقلال اس کا جریان نہ ٹھہرنا چاہئے تو یہ نجس ہی رہا اور کبیر بوجہ جریان خود پاک ہو گیا یہ نو صورتیں ہیں کہ کثرت مبدء یا منتہی ہر ایک میں تین ہیں طافیہ مطلق اور راسبہ میں صغیر تابع یا مستقل یونہی قلتِ ہر دو میں تین ہیں عدمِ جریانِ بالا مطلق اور جریان میں تبعیت واستقلال بلکہ چھ یہی ہیں کہ دونوں کثرتیں وقوف علی الکثرۃ میں آگئیں اور تفصیلاً چوبیس کہ کثرتِ مبدء یا

منتہی یا قلتِ ہر دو ہر ایک میں نجاست طافیہ ہے یا راسبہ۔ صغیر تابع ہے یا مستقل بالا بہایا نہیں آٹھ آٹھ ہو کر چوبیس ۲۴ ہوئیں مجموع ایک سو بیس اور ضابطہ میں بیس ۲۰ ہی بلکہ صرف بارہ ۱۲۔

اختصار هذا الضابط - ضابطہ کا اختصار

اقول: ان كان جوف الحوض النجس لايجرى بدخول الماء الطاهر فان كثر المبدء اوجرى الكبير طهر الكل لو الصغير تابعاً والكبير فقط لو مستقلا والا تنجس الكل وان كان يجرى به و

میں کہتا ہوں اگر ناپاک حوض کی تہ پاک پانی کے داخل ہونے سے جاری نہیں ہوتی ہے، تو اگر مبدء زائد ہو گیا یا بڑا جاری ہوا، تو کُل پاک ہے اگر صغیر تابع ہے اور کبیر فقط اگر مستقل ہو ورنہ سب ناپاک ہوگیا، اور اگر اس کے ساتھ جاری ہو اور

Volume Two Fatawa Ridawiyyah If the impurity is invisible, the whole is pure, and even if it remains, if it stops flowing for a long time and the impurity is floating, or the small part is subordinate, then the whole is pure. Otherwise, only the large part is pure. If it stops for a short while and the large part does not flow, the whole becomes impure. If it flows, the whole is pure if the small part is subordinate, and only the large part if it is independent. (T) If the visible impurity is not present, then everything is pure. Even if the impurity remains, if it stops for a long time after flowing and the impurity is floating on top, or the small part is subordinate, then everything is pure, otherwise, only the large part will be pure. If it stayed for a short while and the large part did not flow, then everything became impure. If it flowed, everything became pure if the small part was subordinate, and only the large part if it was independent. (T) Rule according to the second method, separately, such that there is a separate rule for the purity of each part: 1. Pure water becomes abundant and reaches the impure water, or 2. The tank fills up and overflows, or 3. It washes away the small part and invisible impurity remains, or 4. It washes away the small part and settles on a 10x10 area. And lower purity is absolutely subordinate to upper purity, and independent lower purity requires three conditions: First: Its flowing. Second: The impurity being sunken. Third: Either the impurity is invisible or it is floating, then the flow stops at the limit of abundance. From their union and separation, the rulings of lower and upper parts will arise. If no form of upper purity is found, both parts are absolutely impure, because in this issue, upper impurity and lower purity are not logical. If any of those forms are realized and with it, there is no independent small part, or if there is, its three conditions are met, then all is pure. And if any form of upper purity is found and the small part is independent and any of its conditions are negated, then the lower is impure and the upper is pure. Rule according to the third method which distributes rulings; there are three rulings: 1. All pure 2. All impure 3. Only the upper part is pure. In this rule, the cases for each ruling will be separated. I say: If (1) pure water did not become abundant upon mixing with impure water, nor did it overflow later, and a small part was washed away in invisible impurity...

जिल्द सानी (द्वितीय भाग) फतावा रज़विया (अरबी पाठ का अनुवाद): नजासत (अशुद्धि) यदि अदृश्य हो, तो सब पवित्र है, और यदि अशुद्धि शेष रहे, तो यदि प्रवाह से बहुत देर तक रुक जाए और अशुद्धि ऊपर तैरती रहे या छोटा (हिस्सा) अधीन हो, तो सब पवित्र है, अन्यथा केवल बड़ा हिस्सा पवित्र होगा। और यदि वह थोड़ी देर रुका और बड़ा हिस्सा प्रवाहित नहीं हुआ, तो सब अपवित्र हो गया। और यदि प्रवाहित हुआ, तो सब पवित्र हुआ यदि छोटा हिस्सा अधीन हो, और केवल बड़ा हिस्सा यदि वह स्वतंत्र हो। (त) नजासत मरईया (दृश्य अपवित्रता) न हो तो सब पाक (पवित्र) है और अगर नजासत बाकी हो तो अगर जारी होने से बहुत देर रुक जाए और नजासत ऊपर तैरती हो या सगीर (छोटा हिस्सा) ताबे (अधीन) हो तो सब पाक वरना कबीर (बड़ा हिस्सा) सिर्फ पाक होगा, और अगर थोड़ी देर ठहरा और कबीर जारी न हुआ तो सब नापाक हुआ, और अगर जारी हुआ तो सब पाक हुआ अगर सगीर ताबे हो और कबीर फ़क़त अगर मुस्तक़िल (स्वतंत्र) हो। (त) ज़ाब्ता (नियम) बरूए दोम मुतफ़र्रिक़ (दूसरे तरीके के अनुसार अलग-अलग) कि हर हिस्सा की तहारत (पवित्रता) का जुदा ज़ाब्ता: १. आबे ताहिर (पवित्र जल) कसीर (अधिक) होकर नजिस (अपवित्र) तक पहुँचे, या २. हौज़ भरकर उबल जाए, या ३. सगीर को बहाए और नजासत गैरे मरईया (अदृश्य अपवित्रता) रह गई हो, या ४. सगीर को बहाकर देह-दर-देह (१०x१० क्षेत्र) पर ठहरे। और तहारत ज़ेरीं (निचली पवित्रता) मुतलक़न ताबे तहारत बाला (ऊपरी पवित्रता के अधीन) है और तहारत ज़ेरीं मुस्तक़िल (स्वतंत्र निचली पवित्रता) को तीन शर्तें दरकार हैं: अव्वल: उसका जारी होना। दोम: नजासत का राशिबा (बैठी हुई/डूबी हुई) होना। सोम: या तो नजासत गैरे मरईया हो या ताफिया (तैरती हुई) है तो जिरयान (प्रवाह) हद्दे कसरत पर ठहरे। उन्हीं के इज्तेमा-ओ-इफ़्तिराक़ (मिलन और जुदाई) से ज़ेर-ओ-बाला (नीचे और ऊपर) के अहकाम पैदा होंगे। तहारत बाला की अगर कोई सूरत न पाई जाए दोनों हिस्से मुतलक़न नजिस हैं कि इस मसले में नजासत बाला और तहारत ज़ेरीं माकूल (तर्कसंगत) नहीं। और अगर उनमें से कोई सूरत मुतहक़्क़क़ (सिद्ध) हो और उसके साथ गैर सगीर मुस्तक़िल न हो या हो तो उसकी तीनों शर्तें जमा हों तो सब पाक है। और अगर तहारत बाला की कोई सूरत पाई गई और सगीर मुस्तक़िल है और उसकी कोई शर्त मुनतफ़ी (नकारी गई) हुई तो असफ़ल (निचला हिस्सा) नापाक, आला (ऊपरी हिस्सा) पाक। ज़ाब्ता बरूए सोम कि तौज़ीए अहकाम (नियमों का वितरण) करे, हुक्म तीन हैं: १. सब पाक २. सब नापाक ३. सिर्फ हिस्सा-ए-बाला पाक। इस ज़ाब्ते में हर हुक्म की सूरतें जुदा की जाएँगी। फ़ाक़ूलु (मैं कहता हूँ): अगर (१) आबे ताहिर आबे नजिस से न कसीर होकर मिला, न बाद को उबला, नजासत गैरे मरईया में सगीर को बहाया...

جلد ثانی فتاوی رضویه النجاسة غیر مرئیة طهر الکل وان باقیة فان وقف عن الجریان کثیرا وهی طافیة او الصغیر تابع طهر الکل والا فالکبیر وحده وان وقف قلیلا ولم یجر الکبیر تنجس الکل وان جری طهر الکل لو الصغیر تابعا والکبیر فقط لو مستقلا۔ نجاست مرئیہ نہ ہو تو کل پاک اور اگرچہ نجاست باقی ہو تو اگر جاری ہونے سے بہت دیر رک جائے اور نجاست اوپر تیرتی ہو یا صغیر تابع ہو تو کل پاک ورنہ کبیر صرف پاک ہوگا، اور اگر تھوڑی دیر ٹھہرا اور کبیر جاری نہ ہوا تو کل ناپاک ہوا، اور اگر جاری ہوا تو کل پاک ہوا اگر صغیر تابع ہو اور کبیر فقط اگر مستقل ہو۔ (ت) ضابطہ بروجہ دوم متفرق کہ ہر حصہ کی طہارت کا جدا ضابطہ۔ ۱۔ آب طاہر کثیر ہو کر نجس تک پہنچے، یا ۲۔ حوض بھر کر ابل جائے، یا ۳۔ صغیر کو بہائے اور نجاست غیر مرئیہ رہ گئی ہو، یا ۴۔ صغیر کو بہا کر دہ در دہ پر ٹھہرے۔ اور طہارت زیریں تابع مطلقاً تابع طہارت بالا ہے اور طہارت زیریں مستقل کو تین شرطیں درکار: اول: اس کا جاری ہونا۔ دوم: نجاست کا راسبہ ہونا۔ سوم: یا تو نجاست غیر مرئیہ ہو یا طافیہ ہے تو جریان حد کثرت پر ٹھہرے اُنہی کے اجتماع وافتراق سے زیر وبلا کے احکام پیدا ہوں گے طہارت بالا کی اگر کوئی صورت نہ پائی جائے دونوں حصے مطلقاً نجس ہیں کہ اس مسئلہ میں نجاست بالا وطہارت زیریں معقول نہیں اور اگر اُن میں سے کوئی صورت متحقق ہو اور اُس کے ساتھ غیر صغیر مستقل نہ ہو یا ہو تو اُس کی تینوں شرطیں جمع ہوں تو سب پاک ہے اور اگر طہارت بالا کی کوئی صورت پائی گئی اور صغیر مستقل ہے اور اس کی کوئی شرط منتفی ہوئی تو اسفل ناپاک اعلی پاک۔ ضابطہ بروجہ سوم کہ توزیع احکام کرے حکم تین ہیں: ۱۔ سب پاک ۲۔ سب ناپاک ۳۔ صرف حصہ بالا پاک۔ اس ضابطہ میں ہر حکم کی صورتیں جدا کی جائیں گی۔ فأقول: اگر (۱) آب طاہر آب نجس سے نہ کثیر ہو کر ملانہ بعد کو اُبلانہ نجاست غیر مرئیہ میں صغیر کو بہایا

Fatawa Razawiyya, Volume 2

If it flows into the stagnant water and stays in ten by ten (area), then in these 28 twenty-eight cases both parts are absolutely impure. And (2) if the pond is of the second type or the fourth type where the small subordinate (basin) is not capable of flowing, and in both cases the pure abundant water is mixed with the impure water, or (3) it boiled afterwards, or (4) the impure water was in a small subordinate or independent pond capable of flowing and invisible impurity remained, even if it stayed on less than ten by ten, or (5) in visible impurity it was small subordinate even if it was sediment and by flowing it was made to stay on abundance (large volume), it boiled afterwards, or it was a small independent pond and the impurity was floating and by flowing it was made to stay on abundance, in these 70 seventy cases both parts will remain absolutely pure. And if it was a small independent pond and the incoming water did not wash it away because there was no room, whether the impure water was outside its limits or it washed it away, then the impurity was sediment and in both these cases the water (8, 9) was mixed with that impurity becoming abundant, whether in the last case it was made to stay on abundance by flowing (10) in both cases it boiled afterwards (12) the impurity was floating and staying on scarcity (small volume) and finally boiling 5, in twenty-two cases the lower part is impure and the upper part is pure.

---

1. It is from a pond of the second type or a small non-flowing subordinate or independent one; in any case, the source or both the source and the end are scarce (small volume), in any case of any of the four types of impurity. 24 these occurred and in the rule one 12. - from him (M)
2. The mention of "invisible impurity remaining" points towards the fact that the impurity was invisible from the start, or it was visible and was removed before the flow so that invisible (remnants) remained. 12. - from him (M)
3. Staying on abundance includes both cases: starting as abundant and mixing, or becoming abundant and staying upon flow. 21. - from him (M)
4. Pond of the second type or small non-flowing subordinate. In any case, if the source is abundant, whether it boils later or not, or if it boils later, then the end is abundant or scarce. These became eight cases; for each case every type of impurity, total 32. And in the rule two. And (4) if the small one is flowing, subordinate or independent, and the impurity is invisible or excreted. These are four. In any case, the source is abundant or scarce and the end is abundant or

both are scarce, twelve 12 occurred, in any case not boiled, total 24. And in the rule one more (5) in a small flowing subordinate the source is abundant or the end, in any case whether boiled or not, these four and the fifth is that both are scarce and boiled, in any case the impurity is floating or sediment, total 50. And in the rule two, small flowing independent and floating impurity and the end is abundant in it, whether the possible source was abundant or scarce, in any case whether boiled or not, total 4. And in the rule one, total seventy 70 and in the rule six. - from him (M)

5. In a small 8 independent non-flowing one, if the source is abundant, whether it boils or not, and 9 if it boils, whether the end is abundant or scarce. (Remainder on the next page).

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

यदि वह रुके हुए पानी में बहकर दस बाई दस (क्षेत्र) पर ठहरा, तो इन 28 अट्ठाईस स्थितियों में दोनों हिस्से पूर्णतः अशुद्ध (नापाक) हैं। और (2) यदि हौज़ (तालाब) दूसरी या चौथी किस्म का हो जिसमें छोटा अधीनस्थ (तालाब) बहने योग्य न हो और दोनों स्थितियों में शुद्ध प्रचुर पानी अशुद्ध से मिल गया हो, या (3) बाद में उबला हो, या (4) अशुद्ध पानी छोटे अधीनस्थ या स्वतंत्र हौज़ में बहने योग्य था और अदृश्य अशुद्धता रह गई थी, चाहे वह दस बाई दस से कम पर ही ठहरा हो, या (5) दृश्य अशुद्धता में वह छोटा अधीनस्थ था चाहे वह तलछट (बैठा हुआ) हो और उसे बहाकर (6) प्रचुरता पर ठहराया गया हो, बाद में उबला हो, या छोटा स्वतंत्र था और अशुद्धता तैरने वाली थी और बहाकर प्रचुरता पर ठहराया गया हो, इन सत्तर 70 स्थितियों में दोनों हिस्से पूर्णतः शुद्ध (पाक) रहेंगे। और यदि छोटा स्वतंत्र था और आने वाले पानी ने उसे नहीं बहाया क्योंकि जगह नहीं थी, चाहे अशुद्ध पानी उसकी सीमाओं से बाहर था या उसे बहाया तो अशुद्धता बैठने वाली (तलछट) थी और इन दोनों स्थितियों में पानी (8, 9) उस अशुद्धता से मिलकर प्रचुर हो गया, चाहे अंतिम स्थिति में बहाकर प्रचुरता पर ठहराया गया हो (10) दोनों स्थितियों में बाद में उबाला गया हो (12) अशुद्धता तैरने वाली थी और अल्पता (कम मात्रा) पर ठहरकर अंत में उबाल 5, बाईस स्थितियों में निचला हिस्सा अशुद्ध और ऊपरी हिस्सा शुद्ध है।

---

1. हौज़ दूसरी किस्म का है या छोटा गैर-जारी (स्थिर) अधीनस्थ या स्वतंत्र; बहरहाल स्रोत या स्रोत और अंत दोनों अल्प (कम) हों, किसी भी प्रकार की चारों अशुद्धियों में। ये 24 हुईं और नियम में एक 12। - उनकी ओर से (म)
2. "अदृश्य अशुद्धता रह जाने" से संकेत है कि अशुद्धता प्रारंभ से ही अदृश्य थी या दृश्य थी और बहाव से पहले निकाल दी गई जिससे अदृश्य रह गई। 12। - उनकी ओर से (म)
3. प्रचुरता पर ठहरना दोनों स्थितियों को शामिल करता है: प्रारंभ से ही प्रचुर होकर मिलना या प्रचुर होकर बहाव पर ठहरना। 21। - उनकी ओर से (म)
4. दूसरी किस्म का हौज़ या छोटा गैर-जारी अधीनस्थ। बहरहाल यदि स्रोत प्रचुर है, तो बाद में उबले या न उबले, या बाद में उबला तो अंत प्रचुर या अल्प। ये आठ स्थितियाँ हुईं; प्रत्येक स्थिति पर अशुद्धता की हर किस्म, कुल 32। और नियम में दो। और (4) यदि छोटा जारी (बहने वाला) है, अधीनस्थ या स्वतंत्र, और अशुद्धता अदृश्य हो या विसर्जित। चार हुईं।

बहरहाल स्रोत प्रचुर है या अल्प और अंत प्रचुर है या दोनों अल्प, बारह 12 हुईं, बहरहाल उबाला नहीं गया, कुल 24। और नियम में एक और (5) छोटे जारी अधीनस्थ में स्रोत प्रचुर है या अंत, बहरहाल उबाला गया हो या नहीं, ये चार और पाँचवीं यह कि दोनों अल्प हों और उबाला गया हो, बहरहाल अशुद्धता तैरने वाली हो या बैठने वाली, कुल 50। और नियम में दो, छोटा जारी स्वतंत्र और तैरने वाली अशुद्धता और उसमें अंत प्रचुर, संभव स्रोत प्रचुर था या अल्प, बहरहाल उबाला गया हो या नहीं, कुल 4। और नियम में एक, कुल सत्तर 70 और नियम में छह। - उनकी ओर से (म)

5. छोटे 8 स्वतंत्र गैर-जारी में यदि स्रोत प्रचुर है तो उबले या न उबले और 9 यदि उबला है तो अंत प्रचुर हो या अल्प। (शेष अगले पृष्ठ पर)।

نہ باقیہ میں بہا کر وہ در دہ پر ٹھرا تو ان ۲۸ اٹھائیس صورتوں میں دونوں حصے مطلقاً ناپاک ہیں اور ۲ اگر حوض قسم دوم سے ہو یا چہارم میں صغیر تابع قابل اجرا نہ ہو اور دونوں صورتوں میں آب طاہر کثیر ہو کر نجس سے ملا یا ۳ بعد کو اُبلا، یا ۴ آب نجس حوض صغیر تابع خواہ مستقل میں قابل اجرا تھا اور نجاست غیر مرئیہ رہ گئی تھی اگرچہ دہ در دہ سے کم پر ٹھرا، یا ۵ مرئیہ میں وہ صغیر تابع تھا اگرچہ راسبہ ہوا اور اُسے بہا کر ۶ کثرت پر ٹھہرایا، بعد کو اُبلا، یا صغیر مستقل تھا اور نجاست طافیہ اور بہا کر کثرت پر ٹھہرایا، ان ستر ۷۰ صورتوں میں دونوں حصے مطلقاً پاک رہیں اور اگر صغیر مستقل تھا اور آنے والے پانی نے اُسے نہ بہایا کہ جگہ نہ تھی خواہ نجس پانی اس کی حدود سے باہر تھا یا بہایا تو نجاست راسبہ تھی اور ان دونوں صورتوں میں پانی ۸۰۹ اُس نجس سے کثیر ہو کر ملا خواہ صورت اخیرہ میں بہا کر کثرت پر ٹھہرایا ۱۰ دونوں صورتوں میں بعد کو اُبلایا ۱۲ نجاست طافیہ تھی اور قلت پر ٹھہر کر آخر میں اُبلان ۵ بائیس صورتوں میں اسفل ناپاک اعلیٰ پاک۔

---

۱ حوض قسم دوم سے ہے یا صغیر نا جاری تابع خواہ مستقل بہر حال مبدء یا مبدء و منتہی دونوں قلیل بہر صورت نجاست چاروں قسم کے کسی کی۔ ۲۴ یہ ہوئیں اور ضابطہ میں ایک ۱۲ منہ (م) ۲ غیر مرئیہ رہ جانے سے اس طرف اشارہ ہے کہ نجاست سرے سے غیر مرئیہ تھی یا تھی مرئیہ اور قبل جریان نکال دی گئی کہ غیر مرئیہ رہ گئی۔ ۱۲ منہ (م) ۳ کثرت پر ٹھہرنا دونوں صورتوں کو شامل ہے ابتدائی سے کثیر ہو کر ملا یا کثیر ہو کر جریان پر ٹھہرا ۲۱ منہ (م) ۴ حوض قسم دوم سے یا صغیر نا جاری تابع۔ بہر حال اگر مبدء کثیر ہے تو بعد کو اُبلے نہ اُبلے یا بعد کو اُبلا تو

منتہی کثیر یا قلیل۔ یہ آٹھ صورتیں ہوئیں ہر صورت پر نجاست کی ہر قسم حاصل ۳۲۔ اور ضابطہ میں دو۔ اور ۴ اگر صغیر جاری ہے تابع خواہ مستقل اور نجاست غیر مرئیہ خواہ مخرجہ۔ چار ہوئیں۔ بہر صورت مبدء کثیر ہے یا قلیل اور منتہی کثیر یا دونوں قلیل بارہ ۱۲ ہوئیں بہر صورت اُبلایا نہیں، حاصل ۲۴۔ اور ضابطہ میں ایک اور ۵ صغیر جاری تابع میں مبدء کثیر ہے یا منتہی بہر حال اُبلا یا نہیں چار یہ اور پانچویں یہ کہ دونوں قلیل اور اُبلا بہر صورت نجاست طافیہ یا راسبہ حاصل ۵۰۔ اور ضابطہ میں دو، صغیر جاری مستقل اور نجاست طافیہ اور منتہی کثیر اس میں ممکن کو مبدء کثیر تھا یا قلیل بہر حال اُبلا یا نہیں حاصل ۴۔ اور ضابطہ میں ایک مجموع ستر ۷۰ اور ضابطہ میں چھ منہ (م) ۵ صغیر ۸ مستقل نا جاری میں اگر مبدء کثیر ہے تو اُبلے خواہ نہیں اور ۹ اُبلا ہے تو منتہی کثیر ہو یا قلیل۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say firstly: From here it becomes clear that the discourse of the learned scholars concerns the second type of basin; otherwise, inconsistency would arise in ninety-two (92) scenarios, out of which total purity is certain in seventy (70), and superior purity exists in twenty-two (22). If there is hesitation, it pertains to lower impurity. In the second type of basin, the ruling is indeed that both the upper and lower parts are impure, with only two exceptions where everything will be pure: first, that it fills up and overflows; this is explicitly mentioned in their exalted words from 'Hilya', 'Badai', and 'Fath': "It filled up and nothing came out of it." (T). Secondly, the incoming water is so plentiful that when it meets the impurity, it is already known and established that a large quantity of water does not accept impurity without change. Thus, the general application by the learned scholars is correct and clear. This is the radiant research and profound refinement that was inspired into the heart of this humble servant by the grace of Allah Almighty.

Secondly, it also became clear (1) that the second opinion is not without reason; rather, it is applied to those seventy scenarios in which all the water remains pure. And success is from Allah.

Thirdly, it also became apparent that this is not a case (2) of validating one opinion while weakening another; rather, both are correct in their respective places.

And praise be to Allah, much, good, and blessed praise, as our Lord loves and is pleased with. And may Allah Almighty send peace and blessings upon the chosen one (Mustafa), the most pleasing, and upon his family, his companions, his children, and his party as long as the sky remains above the earth. Praise be to Allah, Lord of the worlds. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

Much pure praise is for Allah alone; let there be blessing in it as much as our Lord loves, and let there be such peace and blessings upon Muhammad Mustafa (Sallallahu Alaihi Wa Aalihi Wasallam) and upon his family, companions, offspring, and group for as long as the sky remains above the earth. Praise be to Allah, Lord of the worlds, and Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Great Warning (Tanbih-e-Jalil)

Strengthening the branches and the roots, and upon Allah, then upon His Messenger, is the reliance, Majestic and Exalted.

The foundation for explaining principles and deriving subsidiary issues, and reliance is upon Allah Almighty, then upon His Messenger.

(Remaining footnote from previous page): These are four, and in any case, every kind of impurity. Resulting in 16. And in a small constantly flowing stream, whether it originates large or ends large, in any case, whether it overflows or not, and the impurity is specifically sedimented (rasiba). These are four. And if both are small and it overflowed, then whether the impurity is sedimented or floating (tafiya), these two together make six. The result is 22, and in the rule, it's 5. Total 120, and in the rule, it's 12. From the author (M).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

प्रथम बिंदु: यहाँ से यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्वानों का प्रवचन दूसरे प्रकार के कुण्ड (हौज़) के बारे में है; अन्यथा, बानवे (92) स्थितियों में विसंगति उत्पन्न होगी, जिनमें से सत्तर (70) स्थितियों में कुल पवित्रता निश्चित है और बाईस (22) में उच्च पवित्रता। यदि कोई संदेह है, तो वह निचली अशुद्धि के बारे में है। दूसरे प्रकार के कुण्ड में, वास्तव में नियम यही है कि ऊपरी और निचला दोनों भाग अपवित्र हैं, केवल दो अपवादों के साथ जहाँ सब कुछ पवित्र होगा: पहला, कि वह भर कर उफन जाए; यह स्पष्ट रूप से 'हिलिया', 'बदाई' और 'फ़तह' से उनके उच्च शब्दों में वर्णित है: "वह भर गया और उससे कुछ भी बाहर नहीं निकला।" (त)। दूसरा, आने वाला पानी इतना अधिक हो कि जब वह उस अशुद्धि से मिले, तो यह अपने आप में ज्ञात और स्थापित है कि पानी की बड़ी मात्रा बिना परिवर्तन के अशुद्धि स्वीकार नहीं करती है। इस प्रकार विद्वानों का सामान्य प्रयोग सही और स्पष्ट है। और यह वह उज्ज्वल शोध और गहरा शुद्धिकरण है जो अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से इस तुच्छ सेवक के हृदय में प्रेरित हुआ।

द्वितीय बिंदु: दूसरा, यह भी स्पष्ट हुआ (1) कि दूसरा मत बिना कारण के नहीं है, बल्कि यह उन सत्तर स्थितियों पर लागू होता है जिनमें सारा पानी पवित्र रहता है। और सफलता अल्लाह के द्वारा है।

तृतीय बिंदु: तीसरा, यह भी स्पष्ट हुआ कि यह स्थिति (2) एक मत को सही ठहराने और दूसरे को कमजोर करने की नहीं है, बल्कि दोनों अपने-अपने स्थान पर सही हैं।

और अल्लाह के लिए बहुत, अच्छी और धन्य प्रशंसा हो, जैसा कि हमारा रब प्यार करता है और जिससे वह प्रसन्न है। और अल्लाह तआला शांति और आशीर्वाद भेजे सबसे प्रिय चुने हुए (मुस्तफ़ा) पर, और उनके परिवार, उनके साथियों, उनकी संतानों और उनके समूह पर जब तक आकाश पृथ्वी के ऊपर बना रहे। सभी लोकों के स्वामी अल्लाह की स्तुति हो। और अल्लाह, वह महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है।

अल्लाह ही के लिए बहुत पाक प्रशंसा है, उसमें बरकत हो जितनी हमारे रब को पसंद है और इतने दरूद और सलाम हों मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) पर, और आपकी आल, असहाब, औलाद, गिरोह सब पर जब तक आसमान ज़मीन से बुलंद रहे। तमाम जहानों के रब अल्लाह की ही सब तारीफें हैं, और अल्लाह, वह महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है। (त)

सिद्धांतों और मूल बातों का सुदृढ़ीकरण, और अल्लाह पर, फिर उसके रसूल पर भरोसा है, महिमामय और सर्वोच्च।	**सिद्धांतों को समझाने और सहायक मुद्दों को प्राप्त करने का आधार, और भरोसा अल्लाह सर्वशक्तिमान पर है, फिर उसके रसूल पर।**

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट से जारी): ये चार हुए और किसी भी स्थिति में हर प्रकार की अशुद्धि। परिणाम 16। और एक छोटी निरंतर बहने वाली धारा में, चाहे वह बड़े पैमाने पर शुरू हो या बड़े पैमाने पर समाप्त हो, किसी भी स्थिति में, चाहे वह उफने या न उफने, और अशुद्धि विशेष रूप से नीचे बैठने वाली (रासिबा) हो। ये चार हुए। और यदि दोनों कम हैं और वह उफन गया, तो अशुद्धि चाहे नीचे बैठने वाली हो या तैरने वाली (ताफ़िया), ये दोनों मिलकर छह हुए। परिणाम 22, और नियम में 5। कुल 120, और नियम में 12। लेखक की ओर से (म)।

اقول اولا: یہیں سے ظاہر ہوا کہ کلام علمائے کرام حوض قسم دوم میں ہے ورنہ بانوے ۹۲ صورتوں سے نقض وارد ہو جن میں سے ستر ۷۰ میں طہارت کل یقینی ہے اور بائیس ۲۲ میں طہارتِ اعلٰی۔ تردد ہے تو نجاست اسفل میں اور حوض قسم دوم میں بیشک حکم یہی ہے کہ اعلٰی اسفل سب ناپاک صرف دو استثنا ہیں جن میں سب پاک ہوگا ایک یہ کہ بھر کر ابل جائے یہ صراحۃً اُن کے کلماتِ عالیہ میں مذکور حلیہ وبدائع وفتح سے گزرا امتلاءً ولم یخرج منہ شیئی (وہ بھر گیا اور اس سے کوئی چیز خارج نہ ہوئی۔ ت) دوسرے یہ کہ آنے والا پانی کثیر ہو کہ اُس نجس سے ملے یہ بجائے خود معلوم و معہود کہ کثیر بے تغیر نجاست قبول نہیں کرتا تو اطلاقِ علمائے کرام صحیح وبے غبار ہے اور تحقیق بازغ و تنقیح بالغ یہ ہے جو بتوفیقہ عزوجل قلبِ فقیر پر القا ہوئی۔

ثانیا: نیز یہ بھی واضح (۱) ہوا کہ قولِ دوم بھی بے وجہ نہیں بلکہ وہ اُن ستر صورتوں پر محمول جن میں سب پانی پاک رہتا ہے وباللہ التوفیق۔

ثالثا: یہ بھی لائح ہوا کہ یہ محل (۲) ایک قول کی تصحیح دوسرے کی تضعیف کا نہیں بلکہ دونوں اپنی اپنی جگہ صحیح ہیں۔

والله الحمد كثيرا طيبا مباركا فيه كما يحب ربنا ويرضى، وصلى الله تعالى وبارك وسلّم على المصطفى الارضى، وآله وصحبه وابنه وحزبه ما علت سماء ارضا، والحمدلله ربّ العلمين والله سبحنه وتعالى اعلم۔

اللہ ہی کیلئے بہت پاکیزہ حمد ہے اس میں برکت ہو جتنی ہمارے رب کو پسند ہے اور اتنے درود و سلام ہوں محمد مصطفی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر آپ کی آل، اصحاب، اولاد، گروہ سب پر جب تک آسمان زمین سے بلند رہے، والحمدللہ رب العالمین واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ (ت)

تنبیہ جلیل

وتشييد التفريع والتأصيل، وعلى الله ثم على رسوله التعويل، جل وعلا

اور اصل بیان کرنے اور فروعی مسائل کا استنباط کرنے کی بنیاد، اور بھروسا اللہ عزوجل پر ہے پھر اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم پر۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ): یہ چار ہوئیں اور بہر تقدیر نجاست کی ہر قسم۔ حاصل ۱۶ اور صغیر مستقل جاری میں مبدو کثیر ہو یا منتہی بہر حال اُبلے یا نہیں اور نجاست خاص راسبہ۔ یہ چار ہوئیں اور "اگر دونوں قلیل ہیں اور اُبلا تو نجاست راسبہ ہو خواہ "طافیہ یہ دو مل کر چھ ہوئیں، حاصل ۲۲، اور ضابطہ میں ۵۔ مجموع ۱۲۰، اور ضابطہ میں ۱۲۔ منہ (م)

Fatawa Razawiyya, Volume Two

And may Allah Almighty send prayers of greatness upon His Messenger. (T)

In the third principle, it was mentioned that both entering and exiting are essential parts of this flow (jaryan). If either of these is not present, it will not be considered a flow. In the ninth principle, it was mentioned from Radd al-Muhtar, Diya, Jami' al-Mudammarat, Bazzaziyya, Khulasa, and Fatawa that the stream from a lota (small water pot) is considered 'flowing' until it reaches the hand, even though it is only exiting without entering.

I say: And with Allah's success and through Him reaching the heights of research (By Allah's guidance I speak, and with His help I reach the depth of investigation. T). Its clarification and reconciliation are based on the explanation and reconciliation of another point of difference. Scholars (1) have differed on whether help coming from above is necessary for it to be 'flowing', or if its own flow without any obstacle is also flow. The Absolute Researcher gave preference to the first view; he stated in Al-Fath:

[Left Column - Arabic Original] They have included the cistern of a bathhouse among flowing water when the water is descending from above, such that if a defiled bowl or a defiled hand is dipped into it, it does not become impure. Is there a condition that people must be continuously scooping water from it? There is a disagreement on this, mentioned in Al-Minya. Then, it is necessary for its flow to have a supply, as in a spring or a river; this is the preferred view. Then he mentioned the issue of performing istinja (cleansing) with a spout and quoted from Al-Tajnis a view regarding it which is the same as Imam Husam al-Din's view. Then he said, i.e., the author in (2) Al-Tajnis said, and its parallel is what the masters mentioned in books: that when a traveler has a wide spout (i.e., wide enough to perform ablution in it) and a vessel of water which he needs and he is not certain of the existence of water, but he hopes to find it...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] The cistern of a bathhouse has also been included with flowing water, while water is descending from its top such that even if a defiled bowl or a defiled hand is placed in it, it will not become impure. And is there also a condition that people should be taking out water from it scoop by scoop in succession? There is a difference of opinion on this, mentioned in Al-Minya. Then, for it to remain flowing, a supplying factor is necessary, as is the case with a spring or a river; this is the preferred view. Then he quoted the issue of istinja with a faucet and quoted from Al-Tajnis that there is a concern in it; this is the same concern

that Husam al-Din had. Then he said that the author said in Al-Tajnis, and its parallel is this saying of the scholars: that when a traveler has a wide spout with him (meaning it has enough capacity for ablution to be performed in it)...

[Bottom Section] I say: Perhaps the reason for this restriction is to stipulate that this strategy is permissible even if there is hope for water; so when there is no hope, it would be permissible with greater reason. (T)

[Footnote] 1. Fath al-Qadir, Discussion on Flowing Water, Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/69.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

और अल्लाह तआला अपने रसूल पर अज़मत वाला दुरूद भेजे। (त)

तीसरे असल में ज़िक्र हुआ कि दाख़िल होना और निकलना दोनों इस प्रवाह (जर्यान) के स्तंभ हैं। इनमें से जो न पाया जाएगा वह प्रवाह नहीं होगा। और नौवें असल में रद्दुल् मुहतार, ज़िया, जामिउल् मुदमरात, बज़्ज़िया, खुलासा और फ़तावा से गुज़रा कि लोटे की धार जब तक हाथ पर न पहुँचे वह जारी (प्रवाहित) है, हालाँकि यह महज़ निकलना है बिना दाख़िल हुए।

मैं कहता हूँ: अल्लाह की तौफ़ीक़ से और उसी के ज़रिए तहक़ीक़ की ऊँचाइयों तक पहुँचते हुए (अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से मैं कहता हूँ और उसी की मदद से तहक़ीक़ की गहराई तक पहुँचना है। त) इसका स्पष्टीकरण और समन्वय एक अन्य मतभेद वाले बिंदु के स्पष्टीकरण पर आधारित है। विद्वानों (१) में मतभेद है कि प्रवाहित होने के लिए ऊपर से मदद आना ज़रूरी है या बिना किसी मदद के किसी बाधा का न होना भी प्रवाह है। मुल्तक़ मुहक़्क़िक़ ने पहले विचार को प्राथमिकता दी; उन्होंने अल-फ़तह में फ़रमाया:

[बायाँ कॉलम - मूल अरबी] हमाम के हौज को भी बहते पानी में शामिल किया गया है, जब पानी ऊपर से गिर रहा हो, यहाँ तक कि अगर उसमें कोई नापाक प्याला या नापाक हाथ डाला जाए तो वह नापाक नहीं होगा। क्या इसमें यह शर्त भी है कि लोग लगातार उसमें से पानी निकाल रहे हों? इसमें मतभेद है, इसका ज़िक्र मुनिया में किया गया है। फिर, इसके प्रवाहित होने के लिए किसी निरंतर आपूर्ति (मदद) का होना ज़रूरी है जैसा कि चश्मे और नहर में होता है; यही पसंदीदा विचार है। फिर उन्होंने टोंटी से इस्तिन्जा करने का मसला ज़िक्र किया और तजनीस से एक विचार उद्धृत किया जो वही है जो इमाम हुसामुद्दीन ने दिया था। फिर कहा, यानी लेखक ने (२) तजनीस में कहा, और इसकी मिसाल वह है जो उस्तादों ने किताबों में ज़िक्र किया है: कि जब मुसाफ़िर के पास एक चौड़ा परनाला हो (यानी इतना चौड़ा कि उसमें वुज़ू किया जा सके) और पानी का बर्तन हो जिसकी उसे ज़रूरत हो और उसे पानी मिलने का यकीन न हो लेकिन उसे उम्मीद हो...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] जारी पानी के साथ हमाम के हौज को भी शामिल किया गया है, जबकि पानी उसके ऊपर से उतर रहा हो यहाँ तक कि अगर उसमें नापाक प्याला या नापाक हाथ डाला तो नापाक न होगा। और क्या इसमें यह शर्त भी है कि लोग पे दर पे उसमें से चुल्लू भर कर पानी निकालते हों? इसमें मतभेद है, इसको मुनिया में ज़िक्र किया, फिर उसके जारी रहने के लिए

उसको मदद देने वाली चीज़ ज़रूरी है जैसा कि चश्मा और नहर में होता है यही मुख्तार है। फिर इस्तिन्जा टोंटी के साथ का मसला नक़्ल किया और फिर तजनीस से नक़्ल किया कि इसमें नज़र (चिंता) है यह वही नज़र है जो हुसामुद्दीन ने की थी, फिर कहा कि मुसन्निफ़ ने तजनीस में कहा है और उसकी नज़ीर (मिसाल) मशाइख़ का यह क़ौल है कि मुसाफ़िर के पास जब वासे (चौड़ा) परनाला हो (यानी उसमें इतनी गुंजाइश हो कि उसमें वुज़ू किया जा सके)...

[नीचे का खंड] मैं कहता हूँ: शायद इस पाबंदी की वजह यह हो कि इस बात पर ज़ोर दिया जाए कि यह युक्ति (हीला) तब भी जायज़ है जब पानी मिलने की उम्मीद हो; तो जब उम्मीद न हो तो यह और भी ज़्यादा जायज़ होगा। (त)

[पाद-टिप्पणी] १. फ़ल्हुल् क़दीर, बह्स अल्-माउल् जारी, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/६९।

पृष्ठ ३९०/७११

جلد ثانی فتاوٰی رضویہ وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بالتبجیل، اس کے رسول پر ہے، اللہ تعالٰی ان پر عظمت والا درود بھیجے۔ (ت)

اصل سوم میں گزرا کہ دخول و خروج دونوں اس جریان کے رکن ہیں ان میں سے جو نہ پایا جائے گا جریان نہ ہو گا اور اصل نہم میں ردالمحتار و ضیاء و جامع المضمرات و بزازیہ و خلاصہ و فتاوٰی سے گزرا کہ لوٹے کی دھار جب تک ہاتھ پر نہ پہنچی جاری ہے حالانکہ یہ محض خروج بلا دخول ہے۔ اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق (اللہ ہی کی توفیق سے میں کہتا ہوں اور اسی کی مدد سے تحقیق کی گہرائی تک پہنچنا ہے۔ ت) اس کی تنقیح و تطبیق ایک اور خلافیہ کی توضیح و توفیق پر مبنی ہے علما (۱) مختلف ہوئے کہ جاری ہونے کیلئے اوپر سے مدد آنا بھی ضرور ہے یا بلا مدد کسی مانع کا آپ بہنا بھی جریان ہے محقق علی الاطلاق نے اول کو ترجیح دی فتح میں فرمایا:

الحقوا بالجاری حوض الحمام اذا کان الماء ینزل من اعلاہ حتی لوادخلت القصعۃ النجسۃ اوالید النجسۃ فیہ لاینجس وھل یشترط مع ذلك تدارك اغتراف الناس منہ فیہ خلاف ذکرہ فی المنیۃ ثم لابد من کون جریانہ لمدد لہ کما فی العین والنھر ھو المختار۱۸ اھـ -ثم ذکر مسألۃ الاستنجاء بالقمقمۃ ونقل عن التجنیس النظر فیہ بعین ما نظر الامام حسام الدین ثم قال قال ای المصنف فی (۲) التجنیس ونظیرہ ما اوردہ المشائخ فی الکتب ان المسافر اذا کان معہ میزاب واسع (ای یسع لان یتوضأ فیہ) واداوۃ ماء یحتاج الیہ ولا یتیقن وجود الماء لکنہ عہ علی طمعہ قبل

جاری پانی کے ساتھ حمام کے حوض کو بھی شامل کیا گیا ہے، جبکہ پانی اس کے اوپر سے اتر رہا ہو یہاں تک کہ اگر اس میں ناپاک پیالہ یا ناپاک ہاتھ ڈالا تو ناپاک نہ ہوگا اور آیا اس میں یہ شرط بھی ہے کہ لوگ پے در پے اس میں سے چلو بھر کر پانی نکالتے ہوں؟ اس میں اختلاف ہے، اس

کو منیہ میں ذکر کیا، پھر اس کے جاری رہنے کیلئے اس کو مدد دینے والی چیز ضروری ہے جیسا کہ چشمہ اور نہر میں ہوتا ہے یہی مختار ہے اھ پھر استنجاء ٹونٹی کے ساتھ کا مسئلہ نقل کیا اور پھر تجنیس سے نقل کیا کہ اس میں نظر ہے یہ وہی نظر ہے جو حسام الدین نے کی تھی، پھر کہا کہ مصنف نے تجنیس میں کہا ہے اور اس کی نظیر مشائخ کا یہ قول ہے کہ مسافر کے پاس جب واسع پر نالہ ہو (یعنی اس میں اتنی گنجائش ہو کہ اس میں وضو کیا جاسکے)

عہ اقول: لعل وجہ التقیید بہ التنصیص علی انہ یجوز ھذا الاحتیال وان کان علی من الماء فعند عدمہ اولی ۱۲ منہ غفر لہ (م) اس قید کی وجہ شاید یہ ہو کہ اس بات پر نص کرنا مقصود ہو کہ یہ حیلہ جائز ہے اگرچہ پانی ملنے کی امید ہو تو جب امید نہ ہو تو بدرجہ اولیٰ جائز ہوگا۔ (ت)

1^8 فتح القدیر بحث الماء الجاری نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۹

Fatawa Razawiyya Volume 2

(Arabic Text)

It is appropriate that he asks someone to pour water at one end of the spout while he performs wudu, and at the other end there is a pure vessel in which the water collects. Indeed, the water will be pure and purifying because it is flowing. Some of you said: this is nothing, because flowing water only becomes used (musta'mal) if it has a continuous supply like a spring or a river and what resembles them. Among what resembles them are two small basins where water exits one and enters the other; if one performs wudu between them, it is permissible because it is flowing. Similarly, if the flow is cut from above and the flow of water remains, it is permissible to perform wudu with what flows in the river before it settles. (Summarized from source).

(Translation/Explanation)

And if a water vessel is needed and the presence of water is not certain but there is hope of finding it, then one saying is that he should command someone to pour water from one end of a drain/spout, and that person performs wudu, and at the other end of the drain there is a pure vessel in which water collects, then that water will be pure and purifying because it is flowing. Some scholars have said this is nothing because flowing water does not become 'used' (musta'mal) as long as new water is being added to it, like a spring, a river, and things similar to it. Similar to this are two small ponds where water exits one and enters the other; if someone performs wudu with the water in between, it is permissible because it is flowing. Similarly, if flowing water is cut off from above and the flow continues to remain, it is permissible to perform wudu with the water flowing in the river before it settles. (T)

And Imam Haddadi in Siraj al-Wahhaj and Imam Siraj al-Hindi in al-Tawshih corrected the second view. Al-Bahr, al-Tanwir, al-Durr, and others relied on this. In al-Bahr, after quoting, Fath was preferred, stating:

(Arabic Text)

In Siraj al-Wahhaj: the condition of a supply (madad) is not required for flowing water, and this is correct. Then it mentioned in al-Bahr from al-Tajnis, al-Mi'raj, and others, the issue of the permissibility of wudu with what flows in

(Translation/Explanation)

And in Siraj al-Wahhaj it is mentioned that the condition of a supply (madad) is not necessary for flowing water, and this is the correct view. Then, in al-Bahr, this issue is quoted from Tajnis and Mi'raj etc. that

(Arabic Text)	(Translation/Explanation)
a river that has been blocked from above.	wudu is permissible with the water flowing in a river that is blocked from above. (T)

1. Fath al-Qadir, discussion on flowing water, Nuriyya Razawiyya Sukkur, 1/29.
2. Bahr al-Ra'iq, discussion on flowing water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/86.
3. Bahr al-Ra'iq, discussion on flowing water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/86.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय)

(अरबी पाठ)

यह उचित है कि वह किसी से कहे कि वह परनाले (नाली) के एक सिरे पर पानी डाले जबकि वह वुज़ू कर रहा हो, और दूसरे सिरे पर एक पवित्र बर्तन हो जिसमें पानी जमा हो। वास्तव में, वह पानी पाक (पवित्र) और पाकीज़गी देने वाला होगा क्योंकि वह बह रहा है। आप में से कुछ ने कहा: यह कुछ नहीं है, क्योंकि बहता पानी केवल तभी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) होता है जब उसमें चश्मे या नदी जैसी कोई निरंतर आपूर्ति न हो। इसके समान दो छोटे हौज (कुंड) हैं जहाँ एक से पानी निकलता है और दूसरे में प्रवेश करता है; यदि कोई उनके बीच वुज़ू करता है, तो यह जायज़ है क्योंकि वह बह रहा है। इसी तरह, अगर ऊपर से प्रवाह काट दिया जाए और पानी का बहना बना रहे, तो नदी में बहने वाले पानी से उसके ठहरने से पहले वुज़ू करना जायज़ है। (संक्षिप्त उद्धरण)

(अनुवाद / व्याख्या)

और अगर पानी के बर्तन की ज़रूरत हो और पानी की मौजूदगी निश्चित न हो लेकिन मिलने की उम्मीद हो, तो एक कौल (कथन) यह है कि वह किसी को हुक्म दे कि वह परनाली के एक किनारे से पानी बहाए और वह शख्स वुज़ू करे और परनाली की दूसरी तरफ एक पाक बर्तन हो जिसमें पानी जमा होता हो तो वह पानी ताहिर और तहूर (पवित्र और शुद्ध करने वाला) होगा क्योंकि वह जारी है। कुछ उलमा ने फरमाया यह कुछ नहीं क्योंकि जारी पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता है जबकि इसमें नया पानी शामिल हो रहा हो जैसे चश्मा और नहर और इसके मुशाबह चीज़ें। और इसके मुशाबह दो छोटे हौज़ हैं जिनमें से एक में से पानी निकल कर दूसरे में दाखिल हो रहा हो तो किसी ने इसके दरमियान के पानी से वुज़ू किया तो जाइज़ है क्योंकि यह जारी है। और इसी तरह अगर ऊपर से जारी पानी को काट दिया और पानी का जारी रहना बाकी हो तो यह जाइज़ है कि जो पानी नहर में जारी हो उससे वुज़ू कर ले इसके इस्तकरार (ठहराव) से पहले। (त)

और अल्लामा हद्दादी ने सिराजुल वहाज में और अल्लामा सिराज हिंदी ने तौशीह में दूसरे विचार की पुष्टि की। बहर, तनवीर, दुर्र वगैरह में इसी पर भरोसा किया गया। बहर में उद्धृत करने के बाद, फतह को प्राथमिकता दी गई, जिसमें कहा गया:

(अरबी पाठ)

सिराजुल वहाज में: बहते पानी के लिए आपूर्ति (मदद) की शर्त आवश्यक नहीं है, और यही सही है। फिर बहर में तजनीस, मेराज और अन्य से यह मसला उल्लेख किया गया है कि उस नदी में बहते पानी से वुज़ू करना जायज़ है जिसे ऊपर से बंद कर दिया गया हो।

(अनुवाद / व्याख्या)

और सिराजुल वहाज में है कि जारी पानी में 'मदद' (निरंतर आपूर्ति) की शर्त नहीं है और यही सही है। फिर बहर में तजनीस और मेराज वगैरह से यह मसला मनकूल है कि वह नहर जो ऊपर से बंद हो उसमें जारी पानी से वुज़ू जाइज़ है। (त)

1. फ़त्हुल क़दीर, बहस अल-मा अल-जारी, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/29
2. बहरुर राइक, बहस अल-मा अल-जारी, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/86
3. बहरुर राइक, बहस अल-मा अल-जारी, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/86

| ینبغی ان یأمر احدا یصب الماء فی طرف المیزاب وھو یتوضؤ وعند الطرف الآخر اناء طاھر یجتمع فیه الماء فأنه یکون الماء طاھرا وطھورا لانه جار قال بعضکم ھذا لیس بشیئ لان الجاری انما لایصیر مستعملا اذا کان له مدد کالعین والنھر وما اشبھه ومما اشبھه حوضان صغیران یخرج الماء من احدھما ویدخل فی الأخر فتوضأ فی خلال ذلك جاز لانه جار وکذا اذا (1) قطع الجاری من فوق وقد بقی جری الماء کان جائزا ان یتوضأ بما یجری فی النھر قبل استقراره اھ بالتقاط | اور پانی کا برتن ہو جس کی ضرورت ہو اور پانی کا پایا جانا یقینی نہ ہو لیکن ملنے کی امید ہو، تو ایک قول یہ ہے کہ وہ کسی کو حکم دے کہ وہ پر نالے کے ایک کنارے سے پانی بہائے اور وہ شخص وضو کرے اور پر نالے کی دوسری طرف ایک پاک برتن ہو جس میں پانی جمع ہوتا ہو تو وہ پانی طاہر اور طہور ہوگا کیونکہ وہ جاری ہے بعض علماء نے فرمایا یہ کچھ نہیں کیونکہ جاری پانی مستعمل نہیں ہوتا ہے جبکہ اس میں نیا پانی شامل ہو رہا ہو جیسے چشمہ اور نہر اور اس کے مشابہ چیزیں، اور اس کے مشابہ دو چھوٹے حوض ہیں جن میں سے ایک میں سے پانی نکل کر دوسرے میں داخل ہو رہا ہو تو کسی نے اس کے درمیان کے پانی سے وضو کیا تو جائز ہے کیونکہ یہ جاری ہے اور اسی طرح اگر اوپر سے جاری پانی کو قطع کیا اور پانی کا جاری رہنا باقی ہو تو یہ جائز ہے کہ جو پانی نہر میں جاری ہو اس سے وضو کر لے اس کے استقرار سے قبل اھ (ت) |

اور علامہ حدادی نے سراج و ہاج اور علامہ سراج ہندی نے توشیح میں دوم کی تصحیح کی بحر و تنویر ودر و غیرہا میں اسی پر اعتماد کیا بحر میں بعد نقل ترجیح فتح فرمایا:

| وفي السراج الوھاج ولا یشترط في الماء الجاری المدد ھو الصحیح اھ ثم ذکر فی البحر عن التجنیس والمعراج وغیرھما مسألة جواز الوضوء بما یجری فی نھر سد من فوقه۔ | اور سراج الوہاج میں ہے

کہ جاری پانی میں مدد کی شرط نہیں اور یہی صحیح ہے اھ پھر بحر میں تجنیس اور معراج وغیرہ سے یہ مسئلہ منقول ہے کہ وہ نہر جو اوپر سے بند ہو اس میں جاری پانی سے وضو جائز ہے۔(ت)

|

1. فتح القدیر بحث الماء الجاری نوریہ رضویہ سکھر ۲۹/۱
2. بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۶/۱
3. بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۶/۱

Fatawa Rizvia Volume Two

I say, meaning in it or from it, when impurity falls into it, as is quite clear. Then I saw in 'Al-Hilyah' that he adopted the same in his text, for he said: The apparent meaning of their statements in this matter, as in 'Al-Dhakhira' and 'Waqi'at al-Natifī', is that if the river is blocked from upstream and then someone performs ablution with the water flowing in the river, it is permissible. It implies that the ablution is performed within the river. Thus, it was necessary for the author to mention "in it" (feehi), because it is very clear that ablution with it is permissible whether it is flowing or not, whether by scooping it up or taking it from it with a vessel. Therefore, restricting it to the continuation of the flow is not appropriate. Moreover, their status is far above mentioning such matters. End (T).

I say: What is the objection against the author when they themselves use the preposition "bi" (with) instead of "fee" (in)? This is a matter for interpretation, not for taking exception, as this humble servant has done. 'Al-Bahr' stated: This bears witness to what is mentioned in 'Al-Siraj'. End (T).

I say: Yes, but it is not appropriate to attribute it to 'Al-Tajnis', for he does not incline towards it; rather, it is among the things he refuted, as is evident from the statement in 'Al-Fath', where he quoted from 'Al-Tajnis' regarding the issue of the 'Qamqama' (a narrow-necked vessel). For they have...

1. Hilyah.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/86.

Page 392 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द दो (द्वितीय)

मैं कहता हूँ यानी उसमें या उससे जब कि उसमें नजासत (अशुद्धि) गिर जाए जैसा कि स्पष्ट है, फिर मैंने 'हिलिया' में देखा कि मूल पाठ में उन्होंने इसी को अपनाया है। वे फ़रमाते हैं कि उनकी इबारत का ज़ाहिर इस मसले में वैसा ही है जैसा 'ज़ख़ीरा' और 'वाक़िआत नातिफ़ी' में है कि जब नहर को ऊपर से बंद कर दिया जाए और फिर कोई व्यक्ति उस पानी से वज़ू करे जो नहर में बह रहा है, तो वह जायज़ है। और यह कि वज़ू नहर में हो, तो लेखक के लिए आवश्यक था कि "फ़ीह" (उसमें) का ज़िक्र करते क्योंकि इससे वज़ू का जायज़ होना बहुत स्पष्ट है, चाहे वह बहता हो या न हो। वज़ू करने वाला नहर से बाहर अंजुली के ज़रिये नहर से पानी लेकर या किसी बर्तन के ज़रिये हासिल करके वज़ू करे, हर हाल में प्रवाह के बने रहने की शर्त सही नहीं है। फिर उनका मकाम (स्थान) इससे बहुत ऊँचा है कि वे इस तरह की चीज़ों का ज़िक्र करें। (समाप्त)

मैं कहता हूँ जब वे स्वयं "बा" (के साथ) से व्यक्त करते हैं, तो लेखक पर क्या आपत्ति है? तो यह व्याख्या का विषय है न कि पकड़ (आलोचना) करने का, जैसा कि इस फ़क़ीर ने किया है। 'बहर' ने कहा कि यह उस चीज़ की गवाही देता है जो 'सिराज' में है। (समाप्त)

मैं कहता हूँ, हाँ, लेकिन इसे 'तजनीस' की ओर श्रेय देना सही नहीं है, क्योंकि वे इसकी ओर झुकाव नहीं रखते बल्कि वे इसका खंडन करते हैं, जैसा कि 'फ़तह' की इबारत से स्पष्ट है क्योंकि उन्होंने टूटी...

1. हिलिया।
2. बहरुल रायक़, बहते पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/86।

पृष्ठ 392 of 711

اقول ای فیہ اوبہ اذا وقع فیہ نجس کما لایخفی ثم رأیت فی الحلیۃ اخذ بمثلہ علی متنہ اذقال ظاہر عبارتھم فی ھذہ المسألۃ کما فی الذخیرۃ وواقعات الناطفی اذاسد من فوق فتوضاء بما یجری فی النہر جاز اھ ان یکون الوضوء فی النہر فکان علی المصنف ان یذکر فیہ لان من الواضح جدا جواز الوضوء بہ جاریا کان او غیر جار اما باغتراف او اخذ منہ بأناء فلا یقع التقیید ببقاء جریان الماء موقعا ثم ھم اعلی کعبا من ذکر مثلہ ۱ اہ میں کہتا ہوں یعنی اس میں یا اُس سے جبکہ اس میں نجاست گر جائے کمالا یخفی، پھر میں نے حلیہ میں دیکھا کہ متن میں انہوں نے اسی کو اختیار کیا ہے وہ فرماتے ہیں ان کی عبارت کا ظاہر اس مسئلہ میں جیسا کہ ذخیرہ اور واقعات ناطفی میں ہے کہ جب نہر کو اُوپر سے بند کر دیا جائے اور پھر کوئی شخص اس پانی سے وضو کرے جو نہر میں جاری ہے تو جائز ہے، اور یہ کہ وضو نہر میں ہو، تو مصنف پر لازم تھا کہ "فیہ" کا ذکر کرتے کیونکہ اس سے وضو کا جواز بہت واضح ہے، خواہ وہ جاری ہو یا نہ ہو، وضو کرنے والا نہر سے باہر چلو کے ذریعے نہر سے پانی لے کر یا کسی برتن کے ذریعے حاصل کرکے وضو کرے بہر صورت بقائے جریان کی قید درست نہیں پھر اُن کا مقام اس سے بہت بلند ہے کہ اس قسم کی چیزیں وہ ذکر کریں اھ (ت) اقول: ای(۱) عتب علی المصنف اذا کانوا ھم المعبرین بالباء دون فی فہذا محل التفسیر لا الاخذ کما فعل الفقیر قال البحر فھذا یشھد لما في السراج ۲ اھ۔ میں کہتا ہوں جب وہ خود "باء" سے تعبیر کرتے ہیں تو مصنف پر کیا اعتراض ہے، تو یہ تفسیر کا محل ہے نہ کہ گرفت کرنے کا، جیسا کہ فقیر نے کیا ہے، بحر نے فرمایا یہ اس چیز کی شہادت دیتا ہے جو سراج میں ہے اھ (ت) اقول: نعم(۲) لکن لایبنغی عزوہ للتجنیس فانہ لیس جانحا الیہ بل ھو فی عداد ما رد علیہ کما یظھر من عبارۃ الفتح حیث نقل عن التجنیس في مسئلہ القمقمۃ میں کہتا ہوں، ہاں، لیکن اس کو تجنیس کی طرف

منسوب کرنا صحیح نہیں، کیونکہ وہ اس کی طرف مائل نہیں ہیں بلکہ وہ اس پر رد کرتے ہیں، جیسا کہ فتح کی عبارت سے ظاہر ہے کیونکہ انہوں نے ٹوٹی

۱ حلیہ ۲ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۶/۱

Fatawa Razawiyya (Volume 2)

[Arabic Column]: "This is nothing," then he said, and mentioned its equivalent, the issue of the waterspout. Then he said "and what resembles it," including in it the issue of the two basins and this issue. Then it is stated in Al-Bahr: Siraj al-Hindi mentioned from Imam Al-Zahid that if someone (1) digs a channel from a small basin and lets the water flow into the channel, and performs ablution with that water while it is flowing, and that water collects in a place; then another man digs a channel from that place and lets the water flow in it, and performs ablution with it while it is flowing, and it collects in another place; and a third man does the same, then the ablution of all is valid. This is because each one performed ablution with the water while it was flowing, and flowing water does not become impure as long as it does not change its characteristics (1).

[Urdu Column]: Regarding the issue, it is cited from Tajnees, "This is nothing." Then he mentioned its parallel, the issue of the waterspout, then said "and what is similar" and included the issue of two basins and this issue as well. Then in Al-Bahr it is stated, "Siraj al-Hindi mentioned from Imam Al-Zahid that if a person dug a small channel from a basin and released water into the channel, and when the water started flowing he performed wudu, and that water gathered in one place, then another person dug a channel from that place and released water into it and performed wudu with that water while the water was flowing, then that water gathered at another place, then a third person also did the same action, then the wudu of all is valid because everyone performed wudu with flowing water, and flowing water does not become impure until change occurs in it (T)."

[Arabic Column]: I say: i.e., if real or legal impurity occurred, or if one performed ablution in it by dipping limbs, then it should not be based on the impurity of 'used' (mustamal) water. This is like the issue of the two basins; rather, it is expressed more simply. The author of Al-Munya mentioned it from Al-Muhit, and in Al-Zakhira from Qadi Imam Ali Al-Sughdi, and in Al-Khaniya and others. And it was said in Al-Hilya that the author quoted from Al-Muhit the restriction of validity to when there is a distance between the two places, even if small. This is consistent with what is in Al-Khaniya, interpreting it as being when there is a small distance between the two places. And in the issue of the two pits (i.e., water comes out from one of them and...

[Urdu Column]: I say, meaning in the case where real or legal impurity has fallen into it, if he performed wudu by dipping his limbs into it, then it will not be based on the

impurity of 'used' water. This is like the issue of two basins; rather, it is exactly the same issue but with a concise statement. The author of Munya has quoted it from Muhit, and in Zakhira from Qadi Ali Al-Sughdi, and in Khaniya etc., and in Hilya it is said that the author has quoted the restriction of validity from Muhit for the case when there is a distance between both places, no matter how small. A corresponding text is also present in Khaniya. Its interpretation is that while both places...

Footnote: 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Al-Ma' al-Jari, Sa'eed Company Karachi, 1/86 Page 393 of 711

फ़तावा रज़विया (खण्ड 2)

[अरबी कॉलम]: "यह कुछ भी नहीं है," फिर उन्होंने कहा, और इसके समकक्ष, परनाले (waterspout) के मुद्दे का उल्लेख किया। फिर उन्होंने कहा "और जो इसके समान है," इसमें दो हौजों के मुद्दे और इस मुद्दे को शामिल किया। फिर अल-बहर में कहा गया है: सिराज अल-हिंदी ने इमाम अल-ज़ाहिद से उल्लेख किया कि यदि किसी ने (1) एक छोटे हौज से एक नाला खोदा और पानी को नाले में बहने दिया, और बहते समय उस पानी से वज़ू किया, और वह पानी एक स्थान पर इकट्ठा हो गया; फिर दूसरे व्यक्ति ने उस स्थान से एक नाला खोदा और उसमें पानी बहने दिया, और बहते समय उससे वज़ू किया, और वह दूसरे स्थान पर इकट्ठा हो गया; और तीसरे व्यक्ति ने भी वैसा ही किया, तो सभी का वज़ू मान्य है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक ने पानी बहते समय वज़ू किया, और बहता पानी तब तक अशुद्ध नहीं होता जब तक कि उसके गुण नहीं बदलते (1)।

[उर्दू कॉलम]: इस मुद्दे के संबंध में तजनीस से उद्धृत किया गया है, "यह कुछ भी नहीं है।" फिर उन्होंने इसके समानांतर, परनाले के मुद्दे का उल्लेख किया, फिर कहा "और जो समान है" और इसमें दो हौजों के मुद्दे और इस मुद्दे को भी शामिल किया। फिर अल-बहर में कहा गया है, "सिराज अल-हिंदी ने इमाम अल-ज़ाहिद से उल्लेख किया कि यदि किसी व्यक्ति ने हौज से एक छोटा नाला खोदा और नाले में पानी छोड़ा, और जब पानी बहने लगा तो वज़ू किया, और वह पानी एक स्थान पर इकट्ठा हो गया, और फिर दूसरे व्यक्ति ने उस स्थान से एक नाला खोदा और उसमें पानी छोड़ा और बहते समय उस पानी से वज़ू किया, फिर वह पानी दूसरे स्थान पर इकट्ठा हो गया, फिर तीसरे व्यक्ति ने भी वही क्रिया की, तो सबका वज़ू जायज़ है क्योंकि प्रत्येक ने बहते पानी से वज़ू किया, और बहता पानी तब तक अपवित्र नहीं होता जब तक उसमें परिवर्तन न हो जाए (त)।"

[अरबी कॉलम]: मैं कहता हूँ: यानी यदि वास्तविक या कानूनी अशुद्धि हुई, या यदि किसी ने अंगों को डुबोकर वज़ू किया, तो इसे 'मुस्तमल' (उपयोग किए गए) पानी की अशुद्धि पर आधारित नहीं होना चाहिए। यह दो हौजों के मुद्दे की तरह है; बल्कि, इसे अधिक सरलता से व्यक्त किया गया है। मुन्या के लेखक ने इसे अल-मुहीत से उल्लेख किया है, और अल-ज़ख़ीरा में काज़ी इमाम अली अल-सुगदी से, और अल-ख़ानिया और अन्य में। और अल-हिलिया में कहा गया था कि लेखक ने अल-मुहीत से वैधता के प्रतिबंध को उद्धृत किया कि जब दोनों स्थानों के बीच दूरी हो, भले ही कम हो। यह अल-ख़ानिया में जो कुछ भी है उसके अनुरूप है, इसकी व्याख्या यह है कि जब दोनों स्थानों के बीच थोड़ी दूरी हो। और दो गड्ढों के मुद्दे में (अर्थात, उनमें से एक से पानी निकलता है और...

[उर्दू कॉलम]: मैं कहता हूँ, अर्थात उस स्थिति में जहाँ वास्तविक या कानूनी अशुद्धि उसमें गिर गई हो, यदि उसने उसमें अपने अंग डुबोकर वज़ू किया, तो यह 'मुस्तमल' पानी की अशुद्धि पर आधारित नहीं होगा। यह दो हौजों के मुद्दे की तरह है; बल्कि संक्षिप्त विवरण के साथ यह बिल्कुल वही मुद्दा है। मुन्या के लेखक ने इसे मुहीत से उद्धृत किया है, और ज़ख़ीरा में काज़ी अली अल-सुगदी से, और ख़ानिया आदि में, और हिलिया में कहा गया है कि लेखक ने मुहीत से वैधता के प्रतिबंध को उस स्थिति के लिए उद्धृत किया है जब दोनों स्थानों के बीच दूरी हो, चाहे कितनी भी कम क्यों न हो। ख़ानिया में भी इसके अनुरूप विवरण मौजूद है। इसकी व्याख्या यह है कि जब दोनों स्थान...

पादलेख: 1 अल-बहर अल-रईक, अल-मा अल-जारी, सईद कंपनी कराची, 1/86 पृष्ठ 711 में से 393

[عربی کالم]: هذا لیس بشیئ ثم قال ونظیره فذکر مسألة المیزاب ثم قال وما اشبهه وجعل منه مسألة الحوضین وهذه المسألة ثم قال في البحر وذکر السراج الهندی عن الامام الزاهد ان من (۱) حفر نهرا من حوض صغیر واجری الماء في النهر وتوضأ بذلك الماء في حال جریانه فاجتمع ذلك الماء في مکان فحفر رجل اخر نهرا من ذلك المکان واجری الماء فیه وتوضأ به حال جریانه فاجتمع في مکان آخر ففعل رجل ثالث کذلك جاز وضوء الکل لان کل واحد انما توضأ بالماء حال جریانه والجاری لا یحتمل النجاسة مالم یتغیر ۱ اهـ

[اردو کالم]: کے مسئلہ میں تجنیس سے نقل کیا ہے "یہ کچھ نہیں۔" پھر فرمایا اور اس کی نظیر اس کے بعد انہوں نے پر نالہ کا مسئلہ ذکر کیا، پھر فرمایا وما اشبہہ اور اس میں دو حوضوں کے مسئلہ کو شامل کیا اور اس مسئلہ کو بھی، پھر فرمایا بحر میں "اور ذکر کیا سراج ہندی نے امام زاہد سے کہ اگر کسی شخص نے چھوٹے حوض سے ایک نہر نکالی اور نہر میں پانی چھوڑ دیا، اور جب پانی جاری ہو گیا تو اس سے وضو کیا، پھر وہ پانی ایک جگہ جمع ہو گیا تو پھر کسی دوسرے شخص نے اس جگہ سے نہر نکالی اور اس میں پانی چھوڑ دیا اور اس پانی سے وضو کیا اس حال میں کہ پانی جاری تھا پھر وہ پانی کسی دوسری جگہ جمع ہو گیا پھر کسی تیسرے شخص نے بھی یہی عمل کیا تو سب کا وضو جائز ہے کیونکہ ہر ایک نے جاری پانی سے وضو کیا ہے اور جاری اس وقت ناپاک نہیں ہوتا ہے جب تک اس میں تغیر پیدا نہ ہو اھ (ت)۔

[عربی کالم]: اقول: ای ان وقعت الحقیقیة او الحکمیة ان توضأ فیه بغمس الاعضاء فلا ینبغی علی نجاسة المستعمل ثم هذه مثل مسألة الحوضین بل هی بعبارة ابسط وقد ذکرها صاحب المنیة عن المحیط وفي الذخیرة عن القاضي الامام علي السغدی وفی الخانیة وغیرها وقال في الحلیة المصنّف نقل عن

المحیط تقیید الجواز بما اذا کان بین المکانین مسافة وان کانت قلیلة یوافقه ما في الخانیة تاویله اذا کان بین المکانین قلیل مسافة وفی مسألة الحفرتین(ای یخرج من احدهما الماء و...

[اردو کالم]: میں کہتا ہوں یعنی اس صورت میں جبکہ نجاست حقیقیہ یا حکمیہ اس میں گر گئی ہو ، اگر اس نے اس میں اعضاء ڈبو کر وضو کیا تو اس کی بناء مستعمل کی نجاست پر نہ ہوگی یہ دو حوضوں کے مسئلہ کی طرح ہے بلکہ مختصر عبارت کے ساتھ یہ بعینہ وہی مسئلہ ہے اس کو صاحبِ منیہ نے محیط سے نقل کیا ہے اور ذخیرہ میں قاضی علی السغدی سے اور خانیہ وغیرہ میں ، اور حلیہ میں کہا کہ مصنّف نے محیط سے جواز کی قید کو اس صورت میں نقل کیا ہے جبکہ دونوں جگہوں میں مسافت ہو خواہ کم ہی کیوں نہ ہو، خانیہ میں بھی اس کی موافق عبارت موجود ہے، اس کی تاویل یہ ہے کہ جبکہ دونوں جگہوں...

حاشیہ: 1 بحر الرائق الماء الجاری سعید کمپنی کراچی ۸۶/۱ صفحہ 393 از 711

Fatawa Rizwia Volume II

[...it enters into the other, and it is the issue of Fath al-Qadir]: If there is a small distance between them, and in the case of two pits (i.e., water comes out of one pit and enters the other, and this is the issue mentioned in Fath al-Qadir), if there is a short distance between the two, then the second water (i.e., what collects in the second pit) will be pure. This was stated by Khalaf bin Ayyub and Nasir bin Yahya. This is because when there is a distance between the two places, the water that was used by the first person is met by flowing water before it can collect in the second place, so the ruling of 'used' (musta'mal) water does not appear (i.e., it is not established). However, if there is no distance between them, the water used by the first person, before flowing water reaches it, collects in the second place and becomes 'used', and after that, it cannot be purified. End. All of this is based on the premise that used water is impure. End. (T)

I say: A pool from which a canal is dug and water is released into it, which then collects in another place; how can this be conceived without a distance between them? Yes, in the case of two pits, it is possible for them to be adjacent such that the water exiting one enters the other. (T) If it is said that by 'distance' what is meant is a distance greater than the immersion of the limbs of the one performing ablution so that they can move...

---

1 Hulyah Page 394 of 711

फतावा रज़विया जिल्द II

[...दूसरे में प्रवेश करता है और यह फतह अल-कादिर का मसला है]: यदि उनके बीच कम दूरी मौजूद हो, और दो गड्ढों के मामले में (यानी एक गड्ढे से पानी निकले और दूसरे में प्रवेश करे, और यह फतह का मसला है), यदि दोनों के बीच कम दूरी है, तो दूसरा पानी (यानी जो दूसरे गड्ढे में जमा है) शुद्ध होगा। खलफ बिन अय्यूब और नसीर बिन याह्या ने ऐसा ही कहा है। और यह इसलिए है क्योंकि जब दोनों स्थानों के बीच दूरी होती है, तो जिस पानी को पहले ने उपयोग किया हो, उस पर दूसरा बहता पानी आएगा इससे पहले कि वह दूसरी जगह जमा हो, तो उपयोग (मुस्तअमल) का नियम प्रकट नहीं होगा (अर्थात स्थापित नहीं होगा)। और जब उन दोनों के बीच दूरी न हो, तो जिस पानी को पहले ने उपयोग किया, दूसरे बहते पानी के आने से पहले ही वह दूसरी जगह इकट्ठा हो जाएगा, तो वह मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) हो जाएगा और अब वह शुद्ध नहीं हो सकता। अंत। और यह सब उस स्थिति में है जब मुस्तअमल पानी को अपवित्र माना जाए। (त)

मैं कहता हूँ: एक ऐसा हौज जिससे नहर निकाली जाए और उसमें पानी छोड़ दिया जाए, फिर वह पानी दूसरी जगह जमा हो जाए, यह कार्य दोनों के बीच दूरी के बिना कैसे संभव है? हाँ, दोनों गड्ढों में इसकी संभावना है कि वे एक-दूसरे के निकट हों, कि एक से पानी निकलते ही दूसरे में प्रवेश करता हो। (त) यदि यह कहा जाए कि दूरी से अभिप्राय ऐसी दूरी है जो वज़ू करने वाले के अंगों के डूबने से अधिक हो ताकि वे हिल सकें..

---

1 हलिया पेज 394 ऑफ़ 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

یدخل في الاخری وھی مسألة الفتح) لوکان بینھما قلیل مسافة کان الماء الثانی(ای المجتمع في الحفرة الاخری)طاھرا کذا قالہ خلف بن ایوب ونصیر بن یحیی وھذا لانہ اذا کان بین المکانین مسافة فالماء الذي استعملہ الاول یرد علیہ ماء جار قبل اجتماعہ في المکان الثانی فلا یظھر حکم الاستعمال(ای لایثبت) اما اذا لم تکن بینھما مسافة فالماء الذی استعملہ الاول قبل ان یرد علیہ ماء جار یجتمع فی(۱)المکان الثانی فیصیر مستعملا فلا یطھر بعد ذلك انتھی وھذا کلہ بناء علی نجاسة المستعمل ۱ اھ

ترجمہ: کے درمیان کم درجہ کی مسافت موجود ہو، اور دو گڑھوں کے مسئلہ میں (یعنی ایک گڑھے سے پانی نکلے اور دوسرے میں داخل ہو اور یہ فتح کا مسئلہ ہے) اگر دونوں کے درمیان کم مسافت ہے تو دوسرا پانی (یعنی جو دوسرے گڑھے میں اکٹھا ہے) پاک ہوگا، خلف بن ایوب اور نصیر بن یحییٰ نے ایسا ہی کہا ہے اور یہ اس لئے ہے کہ جب دونوں جگہوں میں مسافت ہو تو وہ پانی جس کو پہلے نے استعمال کیا ہو اس پر دوسرا جاری پانی وارد ہوگا قبل اس کے کہ وہ دوسری جگہ جمع ہو، تو استعمال کا حکم ظاہر نہ ہوگا (یعنی ثابت نہ ہوگا، اور جب اُن دونوں کے درمیان مسافت نہ ہو تو وہ پانی جس کو پہلے نے استعمال کیا دوسرے جاری پانی کے وارد ہونے سے پہلے وہ دوسری جگہ اکٹھا ہو جائیگا تو مستعمل ہو جائیگا اور اب طاہر نہیں ہوسکتا ہے انتہیٰ، اور یہ تمام اُس صورت میں ہے جب مستعمل پانی کو ناپاک قرار دیا جائے اھ (ت)

اقول: حوض یکری منہ نھر فیجری فیہ ماء فیجتمع في مکان اخر کیف یتصور ھذا من دون مسافة بینھما نعم یمکن في الحفرتین ان تکونا متجاورتین یکون خروج الماء من احدھما دخولہ في الاخری۔

ترجمہ: میں کہتا ہوں ایک ایسا حوض جس سے نہر نکالی جائے اور اس میں پانی چھوڑ دیا جائے ، پھر وہ پانی دوسری جگہ جمع ہو جائے ، یہ عمل دونوں میں مسافت کے بغیر کیسے ممکن ہے؟ ہاں

دونوں گڑھوں میں اس امر کا امکان ہے کہ قریب قریب ہوں ، کہ ایک سے پانی نکلتے ہی دوسرے میں داخل ہوتا ہو۔ (ت)

فان قلت: المراد مسافة فوق مایغمس فیھا المتوضیئ اعضائه لیتحرك ترجمہ: اگر یہ کہا جائے کہ مسافت سے مراد ایسی مسافت ہے کہ جو وضو کرنے والے کے اعضاء کے ڈوبنے سے زائد ہو تاکہ وہ حرکت کر سکیں...

Fatawa Rizvia, Volume 2

...on the ground after separating from his limbs, then other water comes upon it before it enters the second place. (T) I say: Since it is flowing, it will not be affected and it does not need another flowing water to make it flow. If it immediately collects in the second place, it would be pure. The reason is that this should not be made a restriction (1) nor an interpretation (2), but rather an explanation of the benefit of depicting the digging of a river. This is because if it were not so, its flow would have ceased due to its entry into the second hollow, as we have already presented the investigation that motion in the hollow is 'flow' (saylan) not 'current' (jaryan). Thus, wudu (ablution) would occur in stagnant water and it would become used (musta'mal). Then (3) the basis is on the issue of the difference of the meeting parts as we have done, so there is no need to base it on something abandoned. However, the author of Al-Hilyah inclined towards equality. Then As-Siraj mentioned the issue of the water-spout and attributed it to Sheikh Al-Zahid Abi Al-Hasan Al-Rastaghfani and said therein: "while he is performing wudu in it" 1 ah. I say: i.e., by immersion. And by this, what was summarized in Al-Fath becomes clear. He said: Because its use occurred during its flow, and flowing water does not become used water by its use. Then As-Siraj said: And from...

---

1. Reference: Bahr al-Ra'iq, discussion on flowing water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/86.

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

...ज़मीन पर उसके अंगों से अलग होने के बाद, फिर दूसरा पानी उस पर आ जाए इससे पहले कि वह दूसरी जगह में दाखिल हो। (त) मैं कहता हूँ: क्योंकि वह जारी (बहता हुआ) है, इसलिए वह प्रभावित नहीं होगा और न ही उसे किसी दूसरे बहते हुए पानी की ज़रूरत होगी कि वह उसे जारी करे। अब अगर वह तुरंत ही दूसरी जगह जमा हो जाए तो वह पाक (शुद्ध) होगा। तो वजह यह है कि इसे पाबंदी न बनाया जाए और न ही इसे तावील (व्याख्या) करार दिया जाए, बल्कि यह नहर खोदने के फायदे का बयान है। और इसकी वजह यह है कि अगर ऐसा न होता तो उसका जारी होना दूसरे पेट (गहरे हिस्से) में दाखिल होने के कारण रुक जाता, जैसा कि हमने इसकी तहक़ीक़ (अनुसंधान) की है कि पेट में गति 'सैलान' कहलाती है न कि 'जरियान'। और इस तरह वज़ू ठहरे हुए पानी में होगा और पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा। फिर (3) आधार मुलाक़ी (मिलने वाले हिस्सों) के अंतर के मसले पर है जैसा कि हमने किया है, तो किसी छोड़ी हुई और छोड़ी गई चीज़ पर आधार बनाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन साहिब-ए-हिलिया का झुकाव बराबरी की तरफ है। फिर सिराज ने परनाले (मिज़ाब) का मसला बयान किया और उसे शेख ज़ाहिद अबुल हसन अल-रुस्तग़फ़नी की तरफ मंसूब किया और उसमें कहा: "और हालाँकि वह उसमें वज़ू कर रहा है" 1 आह। मैं कहता हूँ: यानी अंगों को डुबोकर वज़ू कर रहा है और इसी से वह चीज़ स्पष्ट होती है जिसे उन्होंने फ़तह में संक्षेप में बयान किया है। फ़रमाया कि इसका इस्तेमाल पानी के जारी रहने की स्थिति में हुआ है और जारी पानी इस्तेमाल करने से मुस्तअमल नहीं होता। फिर सिराज ने कहा: और जो...

---

1. बहवाला: बहरुल राइक, बहस अल-मा अल-जारी, एच. एम. सईद कंपनी, कराची 1/86।

पेज 395/711

علی الارض بعد انفصاله من اعضائه فیأتی علیه ماء أخر قبل دخوله في المکان الثانی۔ سے زائد ہوتا کہ پانی اس کے اعضاء سے جُدا ہونے کے بعد حرکت کرے، اور اس کے دوسری جگہ داخل ہونے سے پہلے دوسرا پانی اس پر آجائے۔ (ت)

اقول: اذھو جار فلا یتأثر ولا یحتاج الی ان یجریه جار أخر فلو اجتمع من فوره فی المکان الثانی لکان طھورا فالوجه (۱) ان لا یجعل ھذا تقییداً (۲) ولا تأویلا بل بیاناً لفائدة التصویر بکری النھر ویوجہ بأنه لولا ذلک لانقطع جریانه بدخوله في بطن الثانی کما قدمنا تحقیقه ان الحرکة فی البطن سیلان لاجریان فیقع الوضوء في الراکد فیفسد ثم (۳) البناء علی مسألة فرق الملاقی کما فعلنا فلا حاجة الی البناء علی مھجور لکن صاحب الحلیة مال الی التسویة ثم ذکر السراج مسألة المیزاب وعزاھا للشیخ الزاھد ابی الحسن الرستغفنی وقال فیھا وھو یتوضؤ فیه ۱اھ۔ میں کہتا ہوں چونکہ وہ جاری ہے اس لئے متاثر نہ ہوگا اور نہ محتاج ہوگا اس بات کا کہ اس کو کوئی دوسرا جاری پانی جاری کرے اب اگر وہ فوراً ہی دوسری جگہ جمع ہوجائے تو طہور ہوگا تو وجہ یہ ہے کہ اس کو قید نہ بنایا جائے اور نہ ہی اس کو تاویل قرار دیا جائے بلکہ وہ نہر کھودنے کے فائدے کا بیان ہے، اور اس کی وجہ یہ ہے کہ اگر ایسا نہ ہوتا تو اس کا جاری ہونا دوسرے بطن میں داخل ہونے کے سبب منقطع ہوجاتا، جیسا کہ ہم نے اس کی تحقیق کی ہے کہ حرکت بطن میں سیلان کہلاتی ہے نہ کہ جریان، اور اس طرح وضو ٹھہرے ہوئے پانی میں ہوگا اور پانی فاسد ہو جائیگا، پھر ملاقی کے فرق کے مسئلہ پر اس کی بنا ہے جیسا کہ ہم نے کیا ہے، تو کسی مہجور ومتروک چیز پر بنا کی حاجت نہیں، لیکن صاحب حلیہ کا میلان برابری کی طرف ہے، پھر سراج نے پرنالہ کا مسئلہ بیان کیا اور اس کو شیخ

زاہد ابوالحسن الرستغفنی کی طرف منسوب کیا اور اس میں کہا "اور حالانکہ وہ اس میں وضو کر رہا ہے اھ (ت)

اقول: ای بالغمس وبہ یتضح ما اجملہ فی الفتح قال لان استعمالہ حصل حال جریانہ والماء الجاری لایصیر مستعملا باستعمالہ ثم قال السراج و من میں کہتا ہوں یعنی وہ اعضاء کو ڈبو کر وضو کر رہا ہے اور اسی سے وہ چیز واضح ہوتی ہے جس کا انہوں نے فتح میں اجمال کیا ہے۔ فرمایا کہ اس کا استعمال پانی کے جاری رہنے کی صورت میں ہوا ہے اور جاری پانی

---

1 بحوالہ بحر الرائق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۶

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Top Box Left Side - Arabic Text] Some of the scholars rejected this statement and said: "Flowing water only avoids becoming 'used' (musta'mal) when it has a continuous source like a spring or a river." He replied: "The correct view is the first one, based on the evidence from the case in 'Waqi'at al-Natafi'." He then mentioned the case of someone upstream blocking a river, stating: "In that situation, the water's continuous supply ceases, yet performing ablution (wudu) with it remains permissible." (End Quote)

[Top Box Right Side - Urdu Text] It does not become 'used' (musta'mal) due to someone's use. Then Siraj said: Some scholars have rejected this view and stated that flowing water does not remain unused only when it has a source like a spring or a river. He said the first view is correct, and the evidence for this is the text from 'Waqi'at al-Natafi'. Then he mentioned the issue of blocking a river, stating that in this situation, the replenishment of water ceased, but despite this, performing wudu with it is permissible. (T)

[Middle Section - Combined Arabic/Urdu] I say: Do not forget what we have previously mentioned (Don't forget what we mentioned earlier. - T). The author of Radd al-Muhtar supported this second view with other issues, stating: "It is also supported by what was mentioned earlier: that if blood from one's leg flows along with fruit juice, it does not become impure (najis), contrary to the opinion of Imam Muhammad." (He stated, and this text supports it, that if a person's blood flows out along with fruit juice, it will not be impure; Imam Muhammad disagrees with this. - End T)

[Bottom Box Left Side - Arabic Text] I say: The issue is mentioned in 'al-Durr' from 'al-Shumunni' and others; in 'al-Munyah' from 'al-Muhit'; in 'al-Hulyah' from 'al-Mujtaba'; and from 'Mukhtarat al-Nawazil'. This is restricted to the condition that the juice is flowing and no trace of blood is visible in it, as they have explicitly stated. He said: In 'al-Khazanah', he mentioned what we previously cited in the tenth principle regarding the issue of water from two vessels mixing in the air or flowing on the ground. He stated: The author versified it in 'Tuhfat al-Aqran'. He said: In 'al-Dhakirah', he mentioned what was stated in the tenth section from Hasan bin Abi Muti'.

[Bottom Box Right Side - Urdu Text] I say: This issue is in 'Durr' from 'Shumunni' etc., in 'Munyah' from 'Muhit', in 'Hulyah' from 'Mujtaba', and from 'Mukhtarat al-Nawazil'. It is restricted to the condition that the juice is flowing and no effect of blood is

apparent in it, as the scholars have clearly stated. He said, and in 'Khazanah' it is stated, then they quoted the text that we mentioned in the tenth principle (Asl-e-Ashir), i.e., water from two vessels that mixed together in the air or was made to flow on the ground. He said, the author mentioned this in 'Tuhfat al-Aqran'. He said, and it is in 'Dhakirah', then he mentioned what is in the tenth chapter from Hasan bin Abi Muti'. (T)

[Footnotes] 1. Reference: Bahr al-Ra'iq, Discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/86 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, Mustafa al-Babi Egypt, 1/239

फतावा रज़विया, जिल्द 2

[ऊपरी बॉक्स बायां पक्ष - अरबी पाठ] मशायख (विद्वानों) में से कुछ ने इस कथन का खंडन किया और कहा: "बहता हुआ पानी केवल तभी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) होने से बचता है जब उसकी निरंतर आपूर्ति हो जैसे कि चश्मा या नहर।" उन्होंने उत्तर दिया: "सही विचार पहला है, जो 'वाकिआत अन-नातफी' के मसले के प्रमाण पर आधारित है।" फिर उन्होंने ऊपर से नहर को बंद करने के मसले का उल्लेख किया; उन्होंने कहा: "उस स्थिति में, पानी की निरंतर आपूर्ति समाप्त हो गई, फिर भी उससे वज़ू करना जायज़ है।" (इति)

[ऊपरी बॉक्स दायां पक्ष - उर्दू पाठ] किसी के इस्तेमाल से मुस्तअमल नहीं होता है। फिर सिराज ने फरमाया: कुछ मशायख ने इस कौल (कथन) का इंकार किया है और फरमाया है कि जारी (बहता) पानी उस वक्त मुस्तअमल नहीं होता है जबकि उसका सोता (स्रोत) हो जैसे चश्मा या नहर। उन्होंने फरमाया कि पहला कौल सही है, और इस पर दलील 'वाकिआत-उल-नातफी' की इबारत है। फिर उन्होंने नहर को बंद करने का मसला ज़िक्र किया कि इस सूरत में पानी की मदद (आपूर्ति) बाकी न रही लेकिन इसके बावजूद उससे वज़ू जायज़ है। (त)

[मध्य भाग - अरबी/उर्दू का मिश्रण] मैं कहता हूँ: जो हमने पहले ज़िक्र किया है उसे न भूलिए (हमने जो पहले ज़िक्र किया है उसे न भूलें। - त)। अल्लामा ने 'रद्दुल मुहतार' में अन्य मसलों के साथ इस दूसरे कौल की ताईद (समर्थन) की, फरमाया: "इसकी ताईद यह भी करती है जो पहले गुज़रा कि अगर किसी के पैर का खून फलों के रस (असीर) के साथ बहा तो वह नापाक (नजिस) नहीं होगा, इमाम मुहम्मद के विपरीत।" (फरमाया और इसकी ताईद यह इबारत करती है कि अगर किसी व्यक्ति का खून फलों के रस के साथ जारी हुआ तो नजिस न होगा, इसमें इमाम मुहम्मद का मतभेद है। - इति त)

[निचला बॉक्स बायां पक्ष - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: यह मसला 'दुर' में 'शुमुन्नी' आदि से है; 'मुन्या' में 'मुहीत' से; 'हुलिया' में 'मुजतबा' से; और 'मुख्तारात अल-नवाज़िल' से है। यह इस शर्त के साथ सीमित है कि रस बह रहा हो और उसमें खून का कोई निशान दिखाई न दे, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है। उन्होंने कहा: 'खज़ाना' में उन्होंने वही उल्लेख किया है जो हमने दसवें सिद्धांत में दो बर्तनों के पानी के हवा में मिलने या ज़मीन पर बहने के मसले में उद्धृत किया था। उन्होंने कहा:

लेखक ने इसे 'तुहफ़तुल अकरान' में पद्यबद्ध किया है। उन्होंने कहा: 'ज़खीरा' में उन्होंने वही ज़िक्र किया है जो दसवें खंड में हसन बिन अबी मुती' से है।

[निचला बॉक्स दायां पक्ष - उर्दू पाठ] मैं कहता हूँ: यह मसला 'दुर' में 'शुमुन्नी' वगैरा से और 'मुन्या' में 'मुहीत' और 'हुलिया' में 'मुजतबा' से और 'मुख्तारात-उन-नवाज़िल' से है। और यह इस बात से मुकय्यद (सीमित) है कि असीर (रस) बह रहा हो और उसमें खून का असर ज़ाहिर न हो, जैसा कि उलमा ने सराहत (स्पष्टता) से फरमाया है। उन्होंने कहा, और 'खज़ाना' में है फिर उन्होंने वह इबारत नक़्ल की जो हमने दसवें सिद्धांत (अस्ल-ए-आशिर) में ज़िक्र की, यानी दो बर्तनों का पानी जो हवा में आपस में मिल गया या ज़मीन पर जारी किया गया। उन्होंने कहा, मुसन्निफ़ (लेखक) ने इसको 'तुहफ़तुल अक़रान' में ज़िक्र किया। उन्होंने फरमाया और 'ज़ख़ीरा' में है फिर वह ज़िक्र किया जो फ़स्ल-ए-आशिर में हसन इब्ने अबी मुती' से है। (त)

[पाद टिप्पणियाँ] 1. संदर्भ: बहरुल राइक़, बहते पानी पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/86 2. रद्दुल मुहतार, अशुद्धियों का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/239

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

[اوپری خانہ بائیں طرف - عربی متن] المشائخ من انکر هذا القول وقال المأ الجاری انما لایصیر مستعملا اذا کان له مدد کالعین والنهر قال والصحیح القول الاول بدلیل مسألة واقعاة الناطفی فذکر مسألة سد النهر ممن فوق قال فان هناك لم یبق للمأ مدد ومع هذا یجوز التوضؤ به ۱ اه

[اوپری خانہ دائیں طرف - اردو متن] کسی کے استعمال سے مستعمل نہیں ہوتا ہے، پھر سراج نے فرمایا : اور بعض مشائخ نے اس قول کا انکار کیا ہے اور فرمایا ہے کہ جاری پانی اس وقت مستعمل نہیں ہوتا ہے جبکہ اس کا سوتا ہو جیسے چشمہ یا نہر، فرمایا اور صحیح پہلا قول ہے، اس پر دلیل واقعات الناطفی کی عبارت ہے، پھر انہوں نے نہر کو بند کرنے کا مسئلہ ذکر کیا کہ اس صورت میں پانی کی مدد باقی نہ رہی لیکن اس کے باوجود اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

[درمیانی حصہ - عربی اور اردو کا امتزاج] اقول: ولا تنس ماقدمناه (ہم نے جو پہلے ذکر کیا ہے اُسے نہ بھولیے۔ ت) علامہ نے ردالمحتار میں اور مسائل سے اس قول دوم کی تائید کی فقال ویؤیده ایضاً مامر من انه لوسال (۱) دم رجله مع العصیر لاینجس خلافاً لمحمد ۲ (فرمایا اور اس کی تائید یہ عبارت کرتی ہے کہ اگر کسی شخص کا خون پھلوں کے رس کے ساتھ جاری ہوا تو نجس نہ ہوگا، اس میں محمد کا خلاف ہے اھ ت)

[نچلا خانہ بائیں طرف - عربی متن] قلت المسألة فی الدر عن الشمني وغیره وفي المنیة عن المحیط وفي الحلیة عن المجتبی وعن مختارات النوازل وهی مقیدة بأن کان العصیر لیسیل ولم یظهر فیه اثر الدم کما نصوا علیه قال وفی الخزانة(فذکر ماقدمنا في الاصل العاشر من مسألة اختلاط ماء الانائین في

الھواء اواجراتہ فی الارض قال ونظمھا المصنف فی تحفۃ الاقران قال وفی الذخیرۃ فذکر مامر فی العاشر عن الحسن بن ابی مطیع۔

[نچلا خانہ دائیں طرف - اردو متن] میں کہتا ہوں مسئلہ دُر میں شمنی وغیرہ سے اور منیہ میں محیط اور حلیہ میں مجتبٰی سے اور مختارات النوازل سے ہے، اور یہ اس امر سے مقید ہے کہ عصیر بہہ رہا ہو اور اس میں خون کا اثر ظاہر نہ ہو، جیسا کہ علماء نے صراحت کی ہے فرمایا، اور خزانہ میں ہے پھر انہوں نے وہ عبارت نقل کی جو ہم نے اصل عاشر میں ذکر کی یعنی دو برتنوں کا پانی جو ہوا میں آپس میں مل گیا یا زمین پر جاری کیا، فرمایا مصنّف نے اس کو تحفۃ الاقران میں ذکر کیا فرمایا اور ذخیرہ میں ہے پھر وہ ذکر کیا جو فصل عاشر میں حسن ابن ابی مطیع سے ہے۔ (ت)

[حواشی] ۱۔ بحوالہ بحر الرائق بحث الماء جاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۸۶ ۲۔ ردالمحتار باب الانجاس مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۲۳۹

Fatawa Razawiyya Volume 2

Up to here, there are seven issues supporting the second statement: 1. Digging a canal from a small pond and flowing water through it for performing ablution (wudu). 2. Pouring water into a drain and performing ablution in it. 3. A canal whose dam has been tied from above, performing ablution in it. 4. While squeezing grape juice and it is flowing, some blood drips into it whose effect is not visible, it will not be impure. 5. Mixing water from pure and impure vessels and letting it out in the air. 6. Or flowing it on the ground, both became pure. 7. Flowing water on impure ground, it flowed for a cubit, the ground is pure and the water is also pure. I say: Clearer than all of these is the issue where snow melted and flowed on such a path containing dung etc. impurities; if the effect of impurities is not visible in it, ablution can be performed with it.

Arabic Text	**Urdu Translation**
And this is what we presented in the tenth principle from *Al-Minhah*, from *Al-Hadiyyah*, from *Al-Khazanah*, from *Al-Bazzaziyyah*, and from *Al-Khulasah* from the *Fatawa*.	This is what was mentioned earlier in the tenth principle, from *Munhah*, *Hadiyyah*, *Khazanah*, *Bazzaziyyah*, *Khulasah*, and *Fatawa*. (T)

It is stated in the commentary of *Al-Hadiyyah*:

Arabic Text	**Urdu Translation**
This is based on not requiring a continuous supply in flowing water. End.	This is based on the condition that continuous supply is not required for flowing water. (T)

Arabic Text

Then I say, firstly: these branches are distributed into types. Some of them are supported and there is no doubt, and that is the issue of a canal blocked from above and the additions I made. And some have no support at all, and those are the first two issues, and I do not know how the two groups agreed on making them among what has no supply, because it only...

Urdu Translation

Then I say firstly, these subsidiary issues are of several types. Some are those whose support exists and there is no doubt about them. Among them is that subsidiary issue mentioning a canal that has been closed off from above, along with the additions I have made. And some are those for which no support is found at all, which are the first two issues. I do not know how both groups agreed on categorizing them as having no supply, whereas they actually...

1. Reference: *Minhat al-Khaliq*, Discussion on Flowing Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/25. Page 397 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

यहाँ तक दूसरे कथन के समर्थन में सात मसले हुए: १. एक छोटे तालाब से नहर खोदकर पानी बहाना और उसमें वज़ू करना। २. परनाले में पानी डलवाकर उसमें वज़ू करना। ३. ऐसी नहर जिसका बांध ऊपर से बांध दिया गया हो, उसमें वज़ू करना। ४. अंगूर का रस निचोड़ते समय, जबकि वह बह रहा हो, उसमें कुछ खून टपक जाए जिसका कोई प्रभाव दिखाई न दे, तो वह अशुद्ध नहीं होगा। ५. शुद्ध और अशुद्ध बर्तनों के पानी को हवा में मिलाकर छोड़ना। ६. या उन्हें ज़मीन पर बहा देना, दोनों शुद्ध हो गए। ४. अशुद्ध ज़मीन पर पानी बहाया और वह एक हाथ भर बह गया, तो ज़मीन भी शुद्ध हो गई और पानी भी शुद्ध हो गया। मैं कहता हूँ: इन सबसे स्पष्ट मसला यह है कि बर्फ पिघली और ऐसे रास्ते पर बही जहाँ गोबर आदि अशुद्धियाँ थीं; यदि उनमें अशुद्धियों का प्रभाव दिखाई न दे, तो उससे वज़ू किया जा सकता है।

अरबी मूल

और यह वही है जो हमने दसवीं मूल (अस्ल) में 'अल-मिन्हाह' से, 'अल-हदिय्या' से, 'अल-ख़ज़ानाह' से, 'अल-बज़्ज़ियाह' से और 'अल-ख़ुलासाह' से फ़तावा के हवाले से प्रस्तुत किया है।

उर्दू अनुवाद

यह वह है जिसका उल्लेख पहले दसवें मूल में 'मिन्हाह', 'हदिय्या', 'ख़ज़ाना', 'बज़्ज़िया', 'ख़ुलासा' और 'फ़तावा' से किया जा चुका है। (त)

'शराह हदिय्या' में फ़रमाया:

अरबी मूल

यह इस बात पर आधारित है कि बहते पानी में निरंतर आपूर्ति की शर्त नहीं है। (अंत)।

फिर मैं सबसे पहले कहता हूँ: ये शाखाएं(फ़ुरूह) कई प्रकारों में विभाजित हैं। उनमें से कुछ समर्थित हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है, और वह उस नहर का मसला है जिसे ऊपर से बंद कर दिया गया हो, और वे जो मैंने इसमें जोड़े हैं। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनका कोई समर्थन नहीं मिलता है, और वे पहले दो मसले हैं। मुझे समझ

उर्दू अनुवाद

यह इस आधार पर है कि बहते पानी में मदद (निरंतर आपूर्ति) की शर्त न हो। (त)

फिर मैं कहता हूँ कि पहले ये उप-मसले कई प्रकार के हैं। कुछ वे हैं जिनका समर्थन मौजूद है और जिसमें कोई संदेह नहीं है। उनमें वह उप-मसला है जिसमें ऐसी नहर का उल्लेख है जिसे ऊपर से बंद कर दिया गया हो, और साथ में वे विस्तार जो मैंने किए हैं। और कुछ वे हैं जिनका समर्थन बिल्कुल नहीं मिलता है, और वे पहले दो

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
नहीं आता कि दोनों पक्ष उन्हें उन चीज़ों में शामिल करने पर कैसे सहमत हुए जिनमें निरंतर आपूर्ति नहीं होती, जबकि वे तो...	मसले हैं। मुझे नहीं पता कि दोनों पक्षों का उन पर यह कैसे इत्तेफ़ाक़ हुआ कि उनमें मदद (आपूर्ति) नहीं है, जबकि वे तो...

1. संदर्भ: 'मिन्हतुल ख़ालिक़', बहते पानी की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/२५। पेज 397 of 711

یہاں تک تائیدِ قولِ دوم میں سات مسئلے ہوئے: ۱۔ حوضِ صغیر میں سے نہر کھود کر پانی بہا کر اس میں وضو۔ ۲۔ پر نالے میں پانی ڈلوا کر اس میں وضو۔ ۳۔ نہر کہ اوپر سے اس کا مینڈھا باندھ دیا ہے اس میں وضو۔ ۴۔ شیرہ انگور نچوڑ رہا ہے اور وہ جاری ہے کچھ خون اس میں ٹپک گیا جس کا اثر ظاہر نہ ہوا نجس نہ ہوگا۔ ۵۔ پاک ناپاک برتنوں کے پانی ہوا میں ملا کر چھوڑے۔ ۶۔ یا زمین میں بہائے دونوں پاک ہو گئے۔ ۷۔ ناپاک زمین پر پانی بہایا ہاتھ بھر بہہ گیا زمین بھی پاک پانی بھی پاک اقول: ان سب سے صاف تر وہ مسئلہ ہے کہ برف پگھلا اور ایسے راستہ پر بہا جس میں گوبر وغیرہ نجاسات ہیں اگر نجاسات کا اثر اس میں ظاہر نہ ہوا اس سے وضو ہو سکتا ہے،

عربی متن	اردو ترجمہ
وھو ما قدمناہ في الاصل العاشر عن المنحة عن الھدیة عن الخزانة وعن البزازیة وعن الخلاصة عن الفتاوی۔	یہ وہ ہے جو پہلے اصل عاشر میں ذکر کر آئے ہیں منحہ سے، ہدیہ سے، خزانہ سے، بزازیہ سے، خلاصہ سے اور فتاویٰ سے۔ (ت)

شرح ہدیہ میں فرمایا:

عربی متن	اردو ترجمہ
ھذا مبني علی عدم اشتراط المدد في الماء الجاری اھ	یہ اس بناء پر ہے کہ جاری پانی میں مدد کی شرط نہ ہو۔ (ت)
ثم اقول اولا: ھذہ الفروع متوزعة علی انحاء منھا ماھو مؤید ولا شك	پھر میں کہتا ہوں اولاً یہ فروع کئی قسم کی ہیں، بعض تو وہ ہیں جن کی تائید موجود ہے اور جس میں شک نہیں، اس میں

عربی متن **اردو ترجمہ**

وھی مسألة نھر سد من فوق والتی وہ فرع ہے جس میں ایسی نہر کا ذکر ہے جس کو اوپر سے زدث ومنھا مالا تأئید فیه اصلا وھما بند کر دیا گیا ہو اور اس کے ساتھ وہ اضافے جو میں نے کئے المسألتان الاولیان ولا ادری کیف ہیں اور کچھ وہ ہیں جن کی تائید بالکل نہیں ملتی ہے اور وہ اتفق الفریقان علی جعلھما مما لا مدد پہلی دو مسئلے ہیں اور مجھے نہیں معلوم کہ دونوں فریقوں کا له فانه انما ان پر کیسے اتفاق ہوا کہ ان میں مدد نہیں حالانکہ وہ تو

1۔ بحوالہ منحة الخالق بحث الماء الجاری ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۵/۱ Page 397 of 711

Fatawa Razawiyya - Volume 2

(1) One performs ablution in the river between two basins or in (2) the water spout. There is no doubt that the upper basin and the vessel supply their water. (3) Do you not see how they agreed to classify the bathroom basin as running water when the water is coming down from the pipe and the scooping is continuous?

(4) And this has been asserted in Al-Fath here as you have seen, and its parallel is what we presented from Al-Allamah "Sh" in the fourth principle: that the purification of the bucket, when water is poured into it until it overflows, is based on the condition that continuous supply (madad) is not required. Among these issues are those where there is room for dispute, and even if it hints towards support, it is from a hidden perspective. For (5) the water mixed in the air (6) or running on the ground in the fifth and sixth cases is aided by (7) pouring, and likewise in the seventh, even if the wording of Al-Dhakhirah is "water was poured upon it and it flowed the distance of a cubit," not "until it flowed" (hatta jara) so as to clearly indicate that the pouring did not stop until this limit. For the letter "Fa" [then], even if it does not signify like "hatta", it also does not signify interruption. When probability arises, proof is invalidated. (8) Likewise is the branch-issue of juice (asir), for it has a continuous supply as long as the juice remains flowing.

If you say: The issue was mentioned unconditionally, so it includes when the squeezing (of juice) has stopped. I say: They said regarding it: "and the juice flows," so citing it as evidence depends on the remaining flow continuing after the cessation.

[Right Column Urdu Commentary] These are the first two issues, and I do not understand how both parties agreed to make these two issues out of water that receives no continuous supply? Because the person performing ablution will either do so in the river that is between two basins or from a water spout, and there is no doubt that the upper basin and the vessel both supply water to it. Then it is a matter of reflection why they agreed to connect the bathroom basin to running water while the water is descending from above through a pipe and water is being taken continuously with scoops. And Al-Fath made a certain assertion here as you saw, and its parallel is what we narrated from Al-Allamah "Sh" in the fourth principle, that the purification of the bucket when water is poured into it until it flows over it is based on the continuous supply not being a condition. And among these branches are some in which there is considerable room for dispute, and there is a slight indication of support in it because water mixed in the air, or running on the ground in the fifth and

sixth cases, pouring gives it supply, rather even in the seventh it is like this, although the words of Al-Dhakhirah are "pouring water upon it so it flowed the distance of a cubit" etc., not "until it flowed". If it had said "until", it would mean that the pouring did not interrupt until this limit, because "Fa", although it does not signify the meaning of "Hatta", yet it also does not signify interruption, and when probability arises, the derivation of proof is invalidated, and likewise the branch of juice because it...

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

(1) कोई दो हौज़ों के बीच नदी में या (2) परनाले में वज़ू करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऊपरी हौज़ और बर्तन दोनों अपने पानी से मदद पहुँचाते हैं। (3) क्या आप नहीं देखते कि वे स्नानघर के हौज़ को बहते पानी के समान मानने पर कैसे सहमत हो गए जब पानी पाइप से नीचे गिर रहा हो और अंजलि से पानी लेना लगातार जारी हो?

(4) और जैसा कि आपने देखा, 'अल-फ़तह' में यहाँ इस पर दृढ़ता से बात की गई है, और इसका उदाहरण वह है जो हमने चौथी असल में अल्लामा "श" से उद्धृत किया है कि डोल की पवित्रता, जब उसमें पानी डाला जाए यहाँ तक कि वह ऊपर से बहने लगे, इस बात पर आधारित है कि लगातार आपूर्ति (मदद) की शर्त नहीं है। और इन शाखाओं (फ़ुरूह) में से कुछ ऐसी हैं जिनमें विवाद की काफ़ी गुंजाइश है, और इसमें समर्थन की ओर हल्का सा इशारा है, क्योंकि हवा में मिला हुआ पानी, या ज़मीन पर बहता पानी पाँचवीं और छठी सूरत में, डालना उसे मदद देता है, बल्कि सातवीं में भी ऐसा ही है, भले ही 'ज़ख़ीरा' के शब्द "उस पर पानी डाला गया तो वह एक हाथ की दूरी तक बहा" हैं, न कि "यहाँ तक कि बहा" (हत्ता जरा), ताकि स्पष्ट रूप से यह पता चल सके कि डालना इस सीमा तक नहीं रुका। क्योंकि "फ़ा" (फिर) यद्यपि "हत्ता" (यहाँ तक कि) के अर्थ पर संकेत नहीं करता, फिर भी वह रुकने (इन्क़िता) पर भी संकेत नहीं करता, और जब संभावना पैदा हो जाए तो दलील (इस्तिदलाल) ख़त्म हो जाती है। (8) और इसी तरह रस (असीर) की उप-शाखा है, क्योंकि जब तक रस बह रहा है, उसकी आपूर्ति बनी रहती है।

यदि आप कहें: यह मसला सामान्य रूप से वर्णित है, तो इसमें वह स्थिति भी शामिल है जब निचोड़ना बंद हो गया हो। मैंने कहा: उन्होंने इसके बारे में कहा "और रस बहता है", इसलिए इसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना इस बात पर निर्भर करता है कि निचोड़ना बंद होने के बाद भी बहाव शेष रहे।

[दायां कॉलम उर्दू अनुवाद] ये पहले दो मसले हैं, और मैं नहीं समझता कि दोनों फ़रीक़ इन दोनों मसलों को मदद न मिलने वाले पानी से बना देने पर क्योंकर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हो गए हैं? क्योंकि वज़ू करने वाला या तो नहर में वज़ू करेगा जो दो हौज़ों के दरमियान है या परनाले से करेगा और इसमें शक नहीं कि ऊपर वाला हौज़ और बर्तन दोनों पानी को मदद पहुँचाते हैं, फिर मक़ाम-ए-ग़ौर है कि वो हम्माम के हौज़ को जारी पानी से लाहिक़ करने पर क्यों राज़ी हुए जबकि पानी नाली के ज़रिए ऊपर से उतर रहा हो और चल्लू से मुसलसल पानी लिया जा रहा हो, और फ़तह ने यहाँ जज़्म

किया जैसा कि आपने देखा और उसकी नज़ीर (उदाहरण) वो है जो हमने अल्लामा "श" से चौथी असल में नक़्ल की कि डोल की पाकी जब उसमें पानी बहाया जाए यहाँ तक कि उसके ऊपर से बह निकले, मदद के शर्त न होने पर मबनी (आधारित) है और इन फ़ुरूह में से बाज़ वो हैं जिनमें नज़ा (विवाद) की गुंजाइश काफ़ी है और इसमें ताईद की तरफ़ हल्का सा इशारा है क्योंकि हवा में मिला हुआ पानी, या ज़मीन पर जारी पाँचवीं छठी सूरत में उसको बहाना मदद देता है बल्कि सातवीं में भी ऐसा ही है अगरचे ज़ख़ीरा के अल्फ़ाज़ "सब अलैहा अल-मा फ़-जरा क़द्र ज़िरा" इल्ख़ हैं, न कि हत्ता जरा, अगर हत्ता कहा हो तो उसका मतलब ये होता कि बहाना इस ग़ायत तक मुनक़तै नहीं हुआ, क्योंकि "फ़ा" अगरचे "हत्ता" के मफ़हूम पर दलालत नहीं करती ताहम वो इन्क़िता पर भी दलालत नहीं करती और जब एहतेमाल पैदा हो जाए तो इस्तिदलाल ख़त्म हो जाता है और इसी तरह असीर की फ़रअ क्योंकि उसको...

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

(۱) یتوضؤ فی النھر بین الحوضین اوفی (۲) المیزاب ولا شك ان الحوض الاعلی والاداوۃ یمدان ماء ھما (۳) الا تری کیف اتفقوا علی الحاق حوض الحمام بالماء الجاری اذاکان الماء من الانبوب نازلا والغرف متداركا۔

(۴) وقد جزم بہ فی الفتح ھھنا کما رأیت ونظیرہ ماقدمنا عن العلامۃ ش فی الاصل الرابع ان طھارۃ الدلو اذا افرغ فیہ ماء حتی سال مبنی علی عدم اشتراط المدد ومنھا ماللنزاع فیہ مجال وفی * وان اومی الی التأیید فمن طرف خفی، فان (۵) الماء الممتزج فی الھواء (٦) او الجاری علی الارض فی الخامسۃ والسادسۃ یمدہ (۷) الصب بل وکذلك فی السابعۃ وان کان لفظ الذخیرۃ صب علیھا الماء فجری قدر ذراع لا حتی جری کی یدل ظاھرا علی عدم انقطاع الصب الی ھذہ الغایۃ فان الفاء وان لم یدل دلالۃ حتی غیر انھا لا تدل ایضا علی الانقطاع والاحتمال یقطع الاستدلال (۸) وکذلك فرع العصیر فان لہ مددا مادام العصیر قائما،

فأنقلت المسألۃ مرسلۃ فیشمل مااذا انقطع العصر قلت: قالوا فیھا والعصیر لیسیل فالاستشھاد بھا یتوقف علی کون السیلان الباقی بعد انقطاع

[Right Column] یہ پہلے دو مسئلے ہیں، اور میں نہیں سمجھتا کہ دونوں فریق ان دونوں مسئلوں کو مدد نہ ملنے والے پانی سے بنا دینے پر کیونکر متفق ہو گئے ہیں؟ کیونکہ وضو کرنے والا یا تو نہر میں وضو کرے گا جو دو حوضوں کے درمیان ہے یا پرنالہ سے کرے گا اور اس میں شک نہیں کہ اوپر والا حوض اور برتن دونوں پانی کو مدد پہنچاتے ہیں، پھر مقامِ غور ہے کہ وہ حمام کے حوض کو جاری پانی سے لاحق کرنے پر کیوں راضی ہوئے جبکہ پانی نالی کے ذریعہ

اوپر سے اتر رہا ہو اور چلو سے مسلسل پانی لیا جارہا ہو، اور فتح نے یہاں جزم کیا جیسا کہ آپ نے دیکھا اور اس کی نظیر وہ ہے جو ہم نے علامہ "ش" سے چوتھی اصل میں نقل کی کہ ڈول کی پاکی جب اس میں پانی بہایا جائے یہاں تک کہ اس کے اوپر سے بہہ نکلے مدد کے شرط نہ ہونے پر مبنی ہے اور ان فروع میں سے بعض وہ ہیں جن میں نزاع کی گنجائش کافی ہے اور اس میں تائید کی طرف ہلکا سا اشارہ ہے کیونکہ ہوا میں ملا ہوا پانی، یا زمین پر جاری پانچویں چھٹی صورت میں اس کو بہانا مدد دیتا ہے بلکہ ساتویں میں بھی ایسا ہی ہے اگرچہ ذخیرہ کے الفاظ "صب علیها الماء فجری قدر ذراع" الخ ہیں، نہ کہ حتی جری، اگر حتی کہا ہو تو اس کا مطلب یہ ہوتا کہ بہانا اس غایت تک منقطع نہیں ہوا، کیونکہ "فا" اگرچہ "حتی" کے مفہوم پر دلالت نہیں کرتی تاہم وہ انقطاع پر بھی دلالت نہیں کرتی اور جب احتمال پیدا ہو جائے تو استدلال ختم ہو جاتا ہے اور اسی طرح عصیر کی فرع کیونکہ اس کو

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Arabic Text Transcription]: المدد جرياناً وهو اول الكلام فانقلت نعم هو جريان بالاتفاق الم تسمع مانقل في الفتح والتوشيح عن شارط المدد ان الماء الجاري انما لايصير مستعملا اذا كان له مدد زاد السراج اما اذا لم يكن له مدد يصير مستعملا اه فقد سماه جاريا قلت: جعله في حكم الراكد والمقصود الحكم فلا شك ان المراد ليسيلان العصير وجريان الماء مالا يقبل به اثر النجاسة ويطهر بعضه بعضاً نعم قد يقال في الخامسة والسادسة ان الامتزاج في الهواء اوعلى الارض انما يكون بعد الصب فقدر ما يخرج بالصب يمتزج فيحصل المزج الاخير بعد تمام الصب فلولم يبق جارياً بعده نجس الممتزج الاخير كلہ۔ وثانياً: الاشهر في حد الجارى ما يذهب بتبنة والاظهر ما يعد جارياً كما في الدر وهو الاصح كما في البدائع والتبيين والبحر والنهر ولا شك انهما صادقان على نهر سد من فوقه فانه يذهب بحزمة فضلا عن تبنة ولا يسوغ لا حد

[English Translation]: The supply (of water) constitutes flowing, and this is the primary point. If you say: Yes, it is unanimously considered flowing. Haven't you heard what was reported in al-Fath and al-Tawshih regarding the one who stipulated the supply, that flowing water only does not become 'used' (musta'mal) when it has a supply? al-Siraj added: 'As for when it has no supply, it becomes used.' Thus, he named it 'flowing'. I say: He placed it under the ruling of stagnant water, and the intent is the legal ruling. Therefore, there is no doubt that the intention behind 'the flowing of juice' and 'the running of water' is that which does not accept the effect of impurity and where one part purifies another. Yes, it may be said regarding the fifth and sixth scenarios that mixing in the air or on the ground only occurs after pouring. Thus, whatever amount comes out by pouring mixes, and the final mixing takes place after the pouring is completed. So, if it does not remain flowing after that, the entire final mixture would be impure. Secondly: The more famous definition of 'flowing' is that which carries away a straw. The more apparent definition is what is regarded as flowing, as in al-Durr, which is the more correct view as in al-Bada'i, al-Tabyin, al-Bahr, and al-Nahr. There is no doubt that both definitions apply to a canal blocked from above, as it carries away a bundle, let alone a straw, and this cannot be disputed by anyone.

Support continues as long as the squeezing persists. If it is said that the ruling is absolute and covers the case even after the squeezing ends, I will say in response that the jurists stated that while the juice is flowing, reasoning depends on the rest of the flow being considered 'running' after the cessation of support, and this is the primary point. If it is said: Yes, this is unanimously considered running, have you not heard the citation in al-Fath and al-Tawshih from the one who stipulated support,

that running water will not be 'used' as long as there is support for it? al-Siraj added this much: that if there was no support for it, it would become used. Thus, he called it 'running'. I say: he placed it under the ruling of stagnant water, and the intent is the ruling. So there is no doubt that by the flowing of juice and the running of water, what is meant is that which does not accept the effect of impurity and whose one part purifies another. Yes, in the fifth and sixth cases, it can be said that mixing in the air or running on the ground will only occur after pouring; so as much as is poured will mix, and the final mixing will be realized only after the pouring is complete. So if it does not remain running after that, the final mixture as a whole will become impure. (T) And secondly, the famous definition of running is that running water is what carries away a straw, and the more apparent definition is what is understood as running, as in ad-Durr, and that is correct as in al-Bada'i, al-Tabyin, al-Bahr, and an-Nahr. And there is no doubt that both definitions are applicable to a canal blocked from above, as it carries away a bundle, let alone a straw, and there can be no doubt in this.

फतावा रजविय्या भाग 2

[अरबी पाठ का अनुवाद]: आपूर्ति (पानी की) प्रवाहित होना है, और यही मुख्य बात है। यदि आप कहें: हाँ, यह सर्वसम्मति से प्रवाहित माना जाता है। क्या आपने अल-फतह और अत-तौशीह में आपूर्ति की शर्त लगाने वाले के बारे में जो रिपोर्ट किया गया है वह नहीं सुना, कि बहता पानी केवल तब 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) नहीं होता जब उसकी आपूर्ति हो रही हो? अल-सिराज ने जोड़ा: 'रही बात जब उसकी आपूर्ति न हो, तो वह प्रयुक्त हो जाता है।' इस प्रकार, उसने इसे 'प्रवाहित' नाम दिया। मैं कहता हूँ: उसने इसे ठहरे हुए पानी के हुक्म के तहत रखा है, और उद्देश्य कानूनी हुक्म ही है। इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'रस के प्रवाह' और 'पानी के बहने' के पीछे का इरादा वह है जो अशुद्धता के प्रभाव को स्वीकार नहीं करता और जहाँ एक हिस्सा दूसरे को शुद्ध करता है। हाँ, पाँचवें और छठे परिदृश्यों के संबंध में यह कहा जा सकता है कि हवा में या ज़मीन पर मिलना केवल डालने के बाद होता है। इस प्रकार, डालने से जो भी मात्रा निकलती है वह मिल जाती है, और अंतिम मिश्रण डालने के पूरा होने के बाद होता है। इसलिए, यदि वह उसके बाद प्रवाहित नहीं रहता है, तो पूरा अंतिम मिश्रण अशुद्ध हो जाएगा। दूसरा: 'प्रवाह' की अधिक प्रसिद्ध परिभाषा वह है जो एक तिनके को बहा ले जाए। अधिक स्पष्ट परिभाषा वह है जिसे प्रवाह माना जाता है, जैसा कि अल-दुर्र में है, जो अल-बदाइ', अत-तबीन, अल-बहर और अन-नहर में अधिक सही विचार है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि दोनों परिभाषाएँ ऊपर से अवरुद्ध नहर पर लागू होती हैं, क्योंकि यह एक तिनके की तो बात ही क्या, एक गट्ठर को बहा ले जाती है, और इस पर किसी को कोई संदेह नहीं हो सकता।

मदद तब तक मिलती रहती है जब तक निचोड़ना जारी रहता है। यदि यह कहा जाए कि मसला मुतलक़ (निरपेक्ष) है और इसमें वह सूरत भी शामिल है जब निचोड़ना ख़त्म हो जाए, तो मैं इसके जवाब में कहूँगा कि इसमें फ़ुकहा (न्यायविदों) ने फ़रमाया है और असीर (रस) बह रहा हो, तो इस पर इस्तेदलाल (तर्क) इस बात पर मौक़ूफ़ (आधारित) है कि बाकी का बहना इनकिता-ए-मदद (मदद बंद होने) के बाद भी 'जारी' (प्रवाहमान) माना जाए, और यही पहली बात है। अगर यह कहा जाए कि हाँ, यह बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) जारी होता है, तो क्या आपने अल-फ़तह और अत-तौशीह में मदद की शर्त लगाने वाले से मनक़ूल (उद्धृत) वह बात नहीं सुनी कि जारी पानी उस वक़्त मुस्तअमल (प्रयुक्त) न होगा जब तक उसे मदद हासिल हो? अस-सिराज ने इतना और इज़ाफ़ा (जोड़ा) किया कि अगर उसे मदद न मिली तो वह मुस्तअमल हो जाएगा। अत्त: उन्होंने इसे 'जारी' कहा। मैं कहता हूँ: उन्होंने इसे ठहरे हुए के हुक्म में रखा है, और मक़सूद हुक्म ही है। इसमें कोई शक नहीं कि असीर

के बहने और पानी के जारी होने का मतलब वह है जो अशुद्धता के प्रभाव को क़ुबूल न करे और जिसका एक हिस्सा दूसरे को पाक (शुद्ध) कर दे। हाँ, पाँचवीं और छठी सूरत में कहा जा सकता है कि हवा में मिलना या ज़मीन पर जारी होना बहने के बाद ही होगा; इसलिए जिस क़दर बहाना होगा वह मिल जाएगा और आख़िरी मिलना मुकम्मल बहाने के बाद ही मुतहक़्क़क़ (सिद्ध) होगा। तो अगर वह उसके बाद जारी न रहा, तो आख़िरी मिलने वाला मुकम्मल तौर पर नजिस (अशुद्ध) हो जाएगा। (त) और सानिया (दूसरे), जारी की जो मशहूर तारीफ़ (परिभाषा) है वह यह है कि जारी पानी वह है जो तिनका बहा कर ले जाए, और अज़हर (अधिक स्पष्ट) यह है कि जिसे जारी समझा जाए जैसा कि दुर्र में है, और वही सही है जैसा कि बदाइ', तबीन, बहर और नहर में है। और इसमें कुछ शक नहीं कि दोनों तारीफ़ात उस नहर पर सादिक़ (लागू) आती हैं जिसे ऊपर से बंद कर दिया गया हो, क्योंकि वह एक तिनके के बजाय पूरे गट्ठर को बहा ले जाती है और इसमें किसी को कोई शक नहीं।

पृष्ठ 399 का 711 1

المدد جرياناً وهو اول الكلام فانقلت نعم هو جريان بالاتفاق الم تسمع مانقل في الفتح والتوشيح عن شارط المدد ان الماء الجاري انما لايصير مستعملا اذا كان له مدد زاد السراج اما اذا لم يكن له مدد يصير مستعملا اه فقد سماه جاريا قلت: جعله في حكم الراكد والمقصود الحكم فلا شك ان المراد ليسيلان العصير وجريان الماء مالا يقبل به اثر النجاسة ويطهر بعضه بعضاً نعم قد يقال في الخامسة والسادسة ان الامتزاج في الهواء اوعلى الارض انما يكون بعد الصب فقدر ما يخرج بالصب يمتزج فيحصل المزج الاخير بعد تمام الصب فلولم يبق جارياً بعده نجس الممتزج الاخير كلہ۔ وثانياً: الاشهر في حد الجارى ما يذهب بتبنة والاظهر ما يعد جارياً كما في الدر وهو الاصح كما في البدائع والتبيين والبحر والنهر ولا شك انهما صادقان على نهر سد من فوقه فانه يذهب بحزمة فضلا عن تبنة ولا يسوغ لا حد

اس وقت تک مدد ملتی رہتی ہے جب تک نچوڑنا برقرار رہتا ہے، اگر یہ کہا جائے کہ مسئلہ تو مطلق ہے یہ اس صورت کو بھی شامل ہے جبکہ نچوڑنا ختم ہو جائے، اس کے جواب میں میں کہوں گا کہ اس میں فقہاء نے فرمایا ہے اور عصیر بہہ رہا ہو تو اس سے استدلال اس امر پر موقوف ہے کہ باقی کا بہنا انقطاع مدد کے بعد جاری ہو اور یہی پہلی بات ہے۔ اگر یہ کہا جائے کہ ہاں یہ تو بالاتفاق جاری ہوتا ہے، کیا تم نے وہ نقل نہیں سنی جو فتح اور توشیح میں مدد کے شرط کرنے والے سے منقول ہے کہ جاری پانی اس وقت مستعمل نہ ہوگا جبکہ اس کیلئے مدد ہو سراج نے اتنا اور اضافہ کیا کہ اگر اس کیلئے مدد نہ ہوئی تو وہ مستعمل ہو جائیگا اھ تو اس کو انہوں نے جاری ہی کہا، میں کہتا ہوں انہوں نے اس کو ٹھہرے ہوئے کے حکم میں کیا ہے اور مقصود حکم ہے تو اس میں شک نہیں کہ عصیر کے بہنے اور پانی کے جاری ہونے سے مراد وہ ہے جو اثر نجاست کو قبول نہ کرے اور جس کا بعض حصہ بعض کو پاک کر دے، ہاں پانچویں چھٹی صورت

میں کہا جاسکتا ہے کہ ہوا میں ملنا یا زمین پر جاری ہونا بہنے کے بعد ہی ہوگا تو جس قدر بہانا ہوگا وہ مل جائے گا اور آخری ملنا مکمل بہانے کے بعد ہی تحقق ہوگا تو اگر وہ جاری نہ رہا اس کے بعد تو آخری ملنے والا مکمل طور پر نجس ہو جائے گا۔ (ت) اور ثانیاً، جاری کی جو مشہور تعریف ہے وہ یہ ہے کہ جاری پانی وہ ہے جو تنکا بہا کر لے جائے اور اظہر یہ ہے کہ جس کو جاری سمجھا جائے جیسا کہ دُر میں ہے اور وہ ہی صحیح ہے جیسا کہ بدائع، تبیین، بحر اور نہر میں ہے اور اس میں کچھ شک نہیں کہ دونوں تعریفات اُس نہر پر صادق ہیں جو اوپر سے بند کر دی گئی ہو کیونکہ وہ ایک تنکے کے بجائے پورے گٹھر کو بہا لے جاتی ہے اور اس میں کسی کو کوئی شک نہیں۔

[Arabic Column]: The people of custom would say it is stagnant. So, it is amazing that after mentioning this, they chose the condition of replenishment (Madad). Unless it is said that performing ablution (Wudu) by immersing limbs only occurs in what is separated from the dam after it, not in the parts adjacent to it. And what is separated from the dam has replenishment from above it. Ponder! Thirdly: It appears to me, and Allah (Exalted) knows best, that the flowing of water is nothing but its natural movement in a space. Its remaining flowing over one place is what needs replenishment because what is flowing does not stop. So, if it were not replenished, the place would become empty. Through replenishment, its likenesses are renewed over it, so it continues to flow as long as the replenishment continues. However, the flow repels the effect of impurity from the water as long as it continues to flow; it does not remove it. Thus, if impure water flows by itself, for instance, if it was in a slope whose path was blocked, then opened and overflowed, it would never become pure. Rather, for purification, it is necessary for it to flow with pure water. The flowing of pure water does not need replenishment, like a canal blocked from above. And as you see when the rain intensifies and stops, the water falling on the ground and roofs remains flowing for a duration after it. It is not correct for anyone to say the falling stopped immediately upon the rain stopping. The flow of the impure water to purify it requires replenishment from a pure source. So let it be understood.

[Urdu Column]: ...would be closed because this would carry away a whole bundle, let alone a straw. And among the people of custom, it is not permissible for anyone to call this water stagnant. It is surprising that after mentioning this, they adopted the condition of replenishment (Madad) as necessary. However, the answer can be given that performing ablution by dipping limbs is possible in that water which is separated from the block after it, not in the water whose parts are attached to the block. And that which is separated from the block receives help from above. Ponder! Remaining flowing at one place requires help because what is flowing will not stop; so if it does not receive help, that place will become empty. Thirdly, what has been revealed to me by the grace of Allah is that the flowing of water means its natural movement in space, and because of this, its likes will be renewed upon it, and it will continue to flow as long as help is received. However, the flow of water repels the effect of impurity as long as it is flowing; it does not remove it. So if impure water flows by itself, for example, if it was in a slope that was blocked and then opened, and the water started flowing, it will never become pure in this way. Rather, for purity, it is

necessary for it to flow with pure water. The flow of pure water does not require help, like a canal whose top is closed. And as you see, when it rains heavily...

[अरबी कॉलम]: सामान्य लोग इसे ठहरा हुआ कहेंगे। तो यह आश्चर्य की बात है कि यह उल्लेख करने के बाद उन्होंने 'मदद' (पानी की निरंतर आपूर्ति) की शर्त को अपनाया है। सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि अंगों को डुबोकर वज़ू केवल उस पानी में हो सकता है जो बांध के बाद उससे अलग हो गया हो, न कि उन हिस्सों में जो उससे जुड़े हुए हों। और जो बांध से अलग हो गया है, उसे ऊपर से मदद मिल रही है। विचार करें! तीसरा: मुझे यह प्रतीत होता है, और अल्लाह (तआला) सबसे बेहतर जानता है, कि पानी का बहना केवल एक स्थान में उसकी स्वाभाविक गति है। एक ही स्थान पर बहते रहना वह है जिसे मदद की आवश्यकता होती है क्योंकि जो बह रहा है वह रुकता नहीं है। इसलिए, यदि उसे मदद न मिले, तो वह स्थान खाली हो जाएगा। मदद के माध्यम से, उसके समान हिस्से उस पर नए सिरे से आते रहते हैं, इसलिए जब तक मदद मिलती रहती है, वह बहता रहता है। हालांकि, बहाव पानी से अशुद्धता (नजासत) के प्रभाव को तब तक दूर करता है जब तक वह बह रहा है; यह उसे पूरी तरह समाप्त नहीं करता है। अत; यदि अशुद्ध पानी अपने आप बहने लगे, उदाहरण के लिए, यदि वह किसी ढलान में था जिसका रास्ता बंद था, फिर उसे खोल दिया गया और वह बहने लगा, तो वह कभी शुद्ध नहीं होगा। बल्कि शुद्धता के लिए यह आवश्यक है कि वह शुद्ध पानी के साथ बहे। शुद्ध पानी के बहने को मदद की आवश्यकता नहीं होती है, जैसे कोई नहर जिसे ऊपर से बंद कर दिया गया हो। और जैसा कि आप देखते हैं कि जब भारी वर्षा होती है और रुक जाती है, तो ज़मीन और छतों पर गिरा हुआ पानी उसके बाद भी कुछ समय तक बहता रहता है। किसी के लिए यह कहना सही नहीं है कि बारिश रुकते ही गिरने वाला पानी रुक गया। अशुद्ध पानी को शुद्ध करने के लिए बहने हेतु किसी शुद्ध स्रोत से मदद की आवश्यकता होती है। अतः इसे समझा जाए।

[उर्दू कॉलम]: ...बंद कर दी गई हो क्योंकि यह तो पूरा एक गठा भर कर ले जाएगी, क्या बात तिनके की। और सामान्य लोगों में से किसी के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह इस पानी को ठहरा हुआ कहे। आश्चर्य है कि यह बात ज़िक्र करने के बाद उन्होंने 'मदद' की शर्त होने को चुना है। हालाँकि, यह उत्तर दिया जा सकता है कि अंगों को डुबोकर वज़ू उसी पानी से हो सकता है जो रुकावट के बाद उससे अलग हो, उस पानी में नहीं हो सकता जिसके हिस्से रुकावट के साथ जुड़े हुए हों। और जो रुकावट से अलग है, उसे ऊपर से मदद मिल रही है। विचार करें! एक ही स्थान पर बहते रहना मदद का मोहताज है क्योंकि जो बह रहा है वह ठहरेगा नहीं; तो अगर उसे मदद न मिले तो वह जगह खाली हो जाएगी। और तीसरी बात, जो अल्लाह के फ़ज़ल से मुझ पर प्रकट हुई है वह यह है कि पानी

के बहने से वातावरण में उसकी प्राकृतिक गति का तात्पर्य है, और इस कारण से उस पर उसके समान हिस्सों का नयापन होगा, तो वह उस पर तब तक बहता रहेगा जब तक मदद मिलती रहेगी। हालाँकि, बहाव पानी से नजासत के प्रभाव को तब तक दूर करने वाला है जब तक वह बह रहा है; यह उसे पूरी तरह मिटाने वाला नहीं है। तो अगर नापाक पानी अपने आप बहने लगे, उदाहरण के लिए किसी ढलान में था जो बंद था, फिर उसे खोला गया और वह पानी बहने लगा, तो इस तरह वह कभी पाक नहीं होगा, बल्कि पाकी के लिए ज़रूरी है कि वह पाक पानी के साथ बहे। तो पाक का बहना मदद का मोहताज नहीं, जैसे कोई नहर जिसका ऊपर का हिस्सा बंद कर दिया गया हो। और जैसा कि आप देखते हैं कि जब तेज़ बारिश होती है...

पृष्ठ 400 का 711

[عربی کالم]: اهل العرف ان یقول انه راکد فمن(۱)العجب بعد ذکره اختیار اشتراط المدد الا ان یقول ان الوضوء بغمس الاعضاء انما یکون فیما بعد السد منفصلا عنه لا في الاجزاء الملاصقة له و ما انفصل عن السد فله من فوقه مدد تأمل - وثالثا:(۲)یظهر لي والله تعالیٰ اعلم ان لیس(۳)جریان الماء الا حرکته بطبعه في فضاء و بقاؤه جاریا علی محل واحد هو الذی یحتاج الی المدد لان الجاری لایقف فلولم یمد لاخلی المحل و بالمدد یتجدد علیه امثاله فیستمر جاریا علیه مادام المدد غیر ان الجریان دافع لاثر النجاسة عن الماء ما استمر جاریا لارافع له عنه(۴)فلو جری الماء المتنجس بنفسه بان کان في صبب سد مجراه ففتح ففاض لم یطهر ابدا بل لابد للطهارة من جریانه مع الطاهر فجریان الطاهر لا یحتاج الی المدد کنهر سد من فوقه وکما تری اذا اشتد المطر و وقف لایزال الماء الواقع علی الارض والسطوح جاریا مدة بعده ولا یصح لاحد ان یقول وقف الواقع فور وقوف المطر وجریان النجس المطهر له یحتاج الی مدد من طاهر فلیکن محمل.

[اردو کالم]: بند کردی گئی ہو کیونکہ یہ تو پورا ایک گٹھا بھر کر لے جائے گی چہ جائیکہ تنکا اور اہلِ عرف میں سے کسی کو روا نہیں کہ وہ اس پانی کو ٹھہرا ہوا کہے، تعجب ہے کہ یہ بات ذکر کرنے کے بعد انہوں نے مدد کے شرط ہونے کو اختیار کیا ہے، تاہم یہ جواب دیا جاسکتا ہے کہ اعضاء ڈبو کر وضو اسی پانی سے ہو سکتا ہے جو بندش کے بعد اس سے جدا ہو، اس پانی میں نہیں ہوسکتا جس کے اجزاء بندش کے ساتھ ملے ہوئے ہوں اور جو بندش سے جدا ہے اس کو اوپر سے مدد مل رہی ہے تأمل محلِ واحد پر جاری رہنا مدد کا محتاج ہے کیونکہ جو جاری ہے وہ ٹھہرے گا نہیں، تو اگر اس کو مدد نہ ملے تو وہ جگہ خالی ہوجائے گی اور مدد کی اور ثالثاً، جو اللہ کے فضل سے مجھ پر منکشف ہوا ہے وہ یہ ہے کہ پانی کے جاری ہونے سے فضا میں اس کی

طبعی حرکت مراد ہے اور اس کا وجہ سے اس پر اس کے امثال کا تجدد ہو گا تو وہ اس پر جاری رہے گا جب تک مدد ملتی رہے گی، البتہ جریان پانی سے نجاست کے اثر کو دفع کرنے والا ہے جب تک کہ وہ جاری ہے اس سے رفع کرنے والا نہیں ہے تو اگر ناپاک پانی از خود جاری ہوا مثلاً کسی ڈھلوان میں تھا جو بند تھا پھر اس کو کھولا گیا تو وہ پانی جاری ہوگیا تو اس طرح وہ کبھی پاک نہ ہوگا بلکہ پاکی کیلئے ضروری ہے کہ وہ پاک پانی کے ساتھ جاری ہو، تو پاک کا جاری ہونا مدد کا محتاج نہیں جیسے کوئی نہر کہ اوپر سے بند کردی جائے، اور جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں کہ شدید

Fatawa Razawiyya (Volume Two)

Both statements and success is from Allah. After rain, the water collected on roofs etc. continues to flow for a long time and no one can say that the falling water stopped immediately after the rain stopped. And the flow of impure water, which makes it pure, is in need of the help of pure water. So this is the context for both statements, and success is from Allah. (T)

Then I say: (1) This is when the water is in an open space. However, if it is inside something like a tank or a vessel, then it must also exit from it. This is because the water was stationary in it, and water does not remain stationary when it meets a slope. So its stationarity is proof of the absence of a slope. Thus, when another water enters it, it does not push it towards the slope but rather raises it upwards. It will not be considered flowing until it overcomes the obstacles by filling the space, finds room, and then descends. At that point, it becomes flowing. For this reason, the condition of exiting along with entering was set. (2) So, if there is a tank within a tank and the water is behind the smaller one, or its water was stationary in it due to the absence of a slope, then it will not flow unless it exits from the higher part as you have learned. But if it is only in the smaller one and there is a drainage path behind it, and pure water enters and fills it such that the water is flowing out of it, then it will be considered flowing until it reaches the level of the larger tank's surface. Then it will stop because there is no slope present.

फतावा रज़विया (जिल्द-ए-सानी / भाग दो)

दोनों कथन और सफलता अल्लाह की ओर से है। बारिश के बाद छतों आदि पर जमा हुआ पानी बहुत देर तक बहता रहता है और कोई यह नहीं कह सकता कि गिरने वाला पानी बारिश रुकने के तुरंत बाद रुक गया। और अशुद्ध पानी का बहना, जो उसे शुद्ध करता है, शुद्ध पानी की सहायता का मोहताज है। तो दोनों कथनों का यही संदर्भ है और सफलता अल्लाह की ओर से है। (त)

फिर मैं कहता हूँ: (1) यह तब है जब पानी खुले स्थान में हो। लेकिन यदि पानी किसी चीज़ के अंदर हो जैसे हौज (टैंक) या बर्तन, तो उसका उससे बाहर निकलना भी आवश्यक है। क्योंकि पानी उसमें स्थिर था, और पानी ढलान मिलने पर स्थिर नहीं रह सकता। अतः उसका स्थिर होना ढलान की अनुपस्थिति का प्रमाण है। इसलिए, जब उसमें दूसरा पानी प्रवेश करता है, तो वह उसे ढलान की ओर नहीं धकेलता बल्कि उसे ऊपर की ओर उठाता है। वह तब तक प्रवाहित नहीं माना जाएगा जब तक कि वह स्थान को भरकर बाधाओं को दूर न कर दे, विस्तार न पा ले और फिर नीचे न उतरने लगे। उस समय वह प्रवाहित हो जाएगा। इसी कारण इसमें प्रवेश के साथ निकास की शर्त भी रखी गई है। (2) अतः यदि एक हौज के भीतर दूसरा हौज हो और पानी छोटे हौज के पीछे हो, या उसका पानी उसमें स्थिर हो ढलान की कमी के कारण, तो वह तब तक प्रवाहित नहीं होगा जब तक कि वह ऊपर से बाहर न निकल जाए जैसा कि आप जान चुके हैं। लेकिन यदि पानी केवल छोटे हौज में हो और उसके पीछे पानी बहने का रास्ता हो और शुद्ध पानी उसमें प्रवेश कर उसे भर दे यहाँ तक कि पानी उसमें से बहकर निकल रहा हो, तो अब वह प्रवाहित होगा यहाँ तक कि बड़े हौज की सतह के बराबर पहुँच जाए। फिर वह रुक जाएगा क्योंकि ढलान मौजूद नहीं है।

पृष्ठ 401/711

القولین و باللہ التوفیق۔ بارش کے بعد چھتوں وغیرہ پر جمع شدہ پانی بہت دیر تک بہتا رہتا ہے اور کوئی شخص یہ نہیں کہہ سکتا ہے کہ گرنے والا پانی بارش کے ٹھہرنے کے فوراً بعد ٹھہر گیا اور ناپاک پانی کا بہنا جو اس کو پاک کردے ، پاک پانی کی مدد کا محتاج ہے تو دونوں قولوں کا یہ محمل ہے وباللہ التوفیق۔(ت)

پھر میں کہتا ہوں یہ اُس صورت میں ہے جبکہ پانی فضا میں ہو ، لیکن پانی اگر کسی تہ میں ہے جیسے حوض یا برتن تو ضروری ہے کہ وہ اس برتن سے خارج بھی ہو کیونکہ پانی اس میں ٹھہرا ہوا تھا اور پانی اترتی ہوئی چیز سے متصل ہونے کے وقت ٹھہر نہیں سکتا ہے ، تو اس کا ٹھہرنا اس کے عدم کی دلیل ہے تو اب جب اس میں دوسرا پانی داخل ہوا تو اس کو ڈھلوان کی طرف دھکا نہیں دے گا بلکہ اس کو اوپر کی طرف بلند کرے گا تو وہ اس وقت تک جاری نہ ہوگا جب تک کہ وہ رکاوٹوں کو محل کے پُر کرنے سے دُور نہ کردے ، پھر وہ کشادگی پائے گا اور اترے گا اُس وقت وہ جاری ہوگا ، اسی وجہ سے اس میں دخول کے ساتھ ہی خروج کی شرط بھی رکھی گئی ہے ، تو جب ایک حوض دوسرے حوض میں ہو اور پانی چھوٹے حوض کے پیچھے ہو یا اس کا پانی ٹھہرا ہوا ہو کیونکہ اس میں ڈھلوان موجود نہیں تو جب تک اوپر سے خارج نہ ہو جاری نہ ہوگا جیسا کہ آپ نے جانا اور اگر پانی صرف چھوٹے میں ہو اور اس کے پیچھے پانی کے بہنے کا راستہ ہو اور پاک اس میں داخل ہوگیا ہو اور اس کو بھر دیا ہو یہاں تک کہ پانی اُس میں سے بہہ کر نکل رہا ہو تو اب جاری ہوگا یہاں تک کہ بڑے حوض کی مقابل سطح تک جا پہنچے ، اب ٹھہر جائیگا کیونکہ ڈھلوان موجود نہیں ہے

Fatawa Razvia, Volume 2

[Left Column - Arabic Text] Then I say: All of this is concerning actual flow. As for what they have appended to it, such as a small basin for a bath or for ablution into which water enters from pipes and spouts and exits by continuous scooping; and the well (1) in which water springs from below and exits by continuous drawing or by opening an outlet in it if possible, as previously mentioned from Al-Hindiyya from Az-Zahiriyya and from Al-Minhah from Al-Khayr ar-Ramli; and in Al-Bahr from Al-Bada'i' from Imam Hasan bin Ziyad, during repeated drawing, water springs from its bottom and is taken from its top, so it becomes like flowing water. (End quote). And in my view, this is the context of what is in Al-Hulyah from Imam Muhammad, who said: My opinion and the opinion of Abu Yusuf agreed that well water is in the ruling of flowing water because it springs from the bottom and is taken from the top, so it does not become impure by filth falling into it. (End quote). It was transmitted in Al-'Inayah with the wording 'Muhammad said...' etc. Then I saw the Imam, Malik al-Ulama, transmitted it in Al-Bada'i' with the exact wording of Al-Hulyah and mentioned its completion like the basin of a bath.

[Right Column - Urdu Translation] So now after this, whatever comes will not make it flowing, but will keep it stagnant until it fills the top part, then it will flow. (T) Then I say: All this discussion is about actual flow, but the jurists have appended to it things like a small basin for bathing or ablution where water comes from taps or gutters and exits by continuous scooping, or a well where water springs at the bottom and remains coming out by continuous drawing, or if possible a hole has been opened in it, as passed from Hindiyya from Zahiriyya and from Minha from Khayr Ramli; and in Bahr from Bada'i' it is narrated from Imam Hasan bin Ziyad that if water is repeatedly extracted, it springs from below and is taken from above, then it will be like flowing water. And in my view, this is the interpretation of what is narrated in Hulyah from Imam Muhammad; they said: It is my opinion and Abu Yusuf's that well water is under the ruling of flowing water because it springs from the bottom and is taken from the top, so it will not become impure by filth falling into it. In Inaya, it is mentioned with the words 'Said Muhammad' etc. Then in Bada'i', it was mentioned in the exact same words as Hulyah, it was said:

[Note at the bottom] Note: Nashar 'ala Tartib al-Laff 12 (M) | There is a detailed explanation on the summary arrangement. (T)

[Footnotes] 1. Reference: Bada'i' as-Sana'i', Chapter on describing the quantity etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/77 2. Reference: Bada'i' as-Sana'i', Chapter on describing the quantity etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/51

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] फिर मैं कहता हूँ: यह सब वास्तविक प्रवाह (जर्यान-ए-हक़ीक़ी) के बारे में है। लेकिन फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने जिसे इसके साथ जोड़ा है, जैसे कि नहाने या वज़ू के लिए एक छोटा हौज़ जिसमें पानी पाइपों या नालियों से आता है और लगातार चुल्लू भरने से निकलता है, या वह कुआँ (1) जहाँ पानी नीचे से फूटता है और लगातार निकालने से निकलता रहता है या यदि संभव हो तो उसमें कोई छेद खोल दिया गया है, जैसा कि हिंदिया से ज़हीरिया से और मिन्हा से ख़ैर अल-रमली से उद्धृत है; और अल-बहर में बदई से इमाम हसन बिन ज़ियाद से उद्धृत है कि बार-बार पानी निकालने पर पानी नीचे से फूटता है और ऊपर से लिया जाता है, तो यह बहते पानी के समान होगा। (उद्धरण समाप्त)। और मेरे नज़दीक यह उस बात का तात्पर्य है जो हुल्या में इमाम मुहम्मद से उद्धृत है, उन्होंने कहा: मेरी और अबू यूसुफ की राय इस बात पर सहमत हुई कि कुएँ का पानी बहते पानी के हुक्म में है क्योंकि यह नीचे से फूटता है और ऊपर से लिया जाता है, इसलिए इसमें नजासत (अशुद्धि) गिरने से यह नापाक नहीं होगा। (उद्धरण समाप्त)। इसे इनाया में 'मुहम्मद ने कहा...' आदि शब्दों के साथ उद्धृत किया गया है। फिर मैंने देखा कि इमाम, विद्वानों के राजा (मलिक अल-उलमा), ने इसे बदई में हुल्या के उन्हीं शब्दों में उद्धृत किया है और इसके पूर्ण विवरण को हम्माम के हौज़ की तरह बताया है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] तो अब इसके बाद जो आएगा वह इसे जारी (बहता हुआ) नहीं करेगा बल्कि इसे थमा हुआ रखेगा यहाँ तक कि यह ऊपर वाले हिस्से को भर दे और फिर बहने लगे। (त) फिर मैं कहता हूँ: यह सब चर्चा वास्तविक प्रवाह के बारे में है, लेकिन न्यायविदों ने इसके साथ जिसे जोड़ा है जैसे नहाने या वज़ू के लिए छोटा हौज़ जिसमें पानी नल या परनालों से आता है और लगातार हाथ भरने से निकलता है, और या वह कुआँ जिसमें नीचे पानी के सोते हैं और लगातार भरने (निकालने) से वह पानी निकलता रहता है या संभव हो तो उसमें कोई छेद खोल दिया गया है, जैसा कि हिंदिया से ज़हीरिया से और मिन्हा से ख़ैर रमली से गुज़रा, और बहर में बदई से इमाम हसन बिन ज़ियाद से मन्कूल है कि यदि पानी बार-बार निकाला जाए तो नीचे से निकलता है और ऊपर से ले लिया जाता है, तो यह जारी (बहते हुए) के समान होगा। और मेरे नज़दीक यह उस चीज़ का विवरण है जो हुल्या में इमाम मुहम्मद से मन्कूल है, उन्होंने कहा: मेरी और अबू यूसुफ की यह राय है कि कुएँ का पानी जारी पानी के हुक्म में है क्योंकि यह नीचे से निकलता है और ऊपर से लिया जाता है तो इसमें नजासत गिरने से यह नजिस (नापाक) न होगा और इनाया में इसे "मुहम्मद ने कहा" के शब्दों

के साथ ज़िक्र किया गया इत्यादि। फिर बदई में इसे ठीक उन्हीं शब्दों में ज़िक्र किया जो हुल्या के हैं, फ़रमाया:

[नीचे का नोट] नोट: नश्र अला तरतीब अल-लफ़ 12 (म) | सारांश की व्यवस्था पर विस्तार है। (त)

[पाद टिप्पणियां] 1. संदर्भ: बदई अस-सणाई, मिक़दार आदि के वर्णन पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/77 2. संदर्भ: बदई अस-सणाई, मिक़दार आदि के वर्णन पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/51

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی متن] ثم اقول: هذا كله في الجريان الحقيقي اما ما الحقوا به كحوض صغير للحمام اوللوضوء يدخل فيه الماء من الانابيب والميازيب ويخرج بالغرف المتدارك والبئر(1) ينبع فيها الماء من تحت ويخرج بالاستقاء المتوالى او بفتح منفذ فيها ان امكن كما مر عنه عن الهندية عن الظهيرية وعن المنحة عن الخير الرملي وفي البحر عن البدائع عن الامام الحسن بن زياد عند تكرار النزح ينبع الماء من اسفله ويؤخذ من اعلاه فيكون كالجاري اهـ وهو عندى محمل مافي الحلية عن الامام محمد قال اجتمع رأي ورأى ابي يوسف على ان ماء البئر في حكم الماء الجاري لانه ينبع من اسفل ويؤخذ من اعلاه فلا يتنجس بوقوع النجاسة فيه اهـ ونقله في العناية بلفظ قال محمد الخ ثم رأيت الامام ملك العلماء نقله في البدائع بعين لفظ الحلية وذكر تمامه كحوض الحمام

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] تو اب اس کے بعد جو آئے گا وہ اس کو جاری نہ کرے گا بلکہ اس کو بلاتند کرے گا یہاں تک کہ اوپر والے کو بھر دے گا پھر بہے گا ۔ (ت) پھر میں کہتا ہوں یہ سب بحث جریان حقیقی میں ہے ، لیکن فقہاء نے اس کے ساتھ جس کو لاحق کیا ہے جیسے چھوٹا حوض نہانے کیلئے یا وضو کیلئے جس میں پانی نلوں یا پرنالوں سے آتا ہے اور مسلسل چلو بھرنے سے نکلتا ہے ، اور یا وہ کنواں جس میں نیچے پانی کے سوتے ہیں، اور مسلسل بھرنے سے وہ پانی نکلتا رہتا ہے یا اس میں کوئی سوراخ کھول دیا گیا ہے اگر ممکن ہو، جیسا کہ ہندیہ سے ظہیریہ سے اور منحہ سے خیر رملی سے گزرا، اور بحر میں بدائع سے امام حسن بن زیاد سے منقول ہے کہ پانی بار بار نکالا جائے تو نیچے سے نکلتا ہے اور اوپر سے لے لیا جاتا ہے، تو یہ مثل جاری کے ہوگا۔ اور میرے نزدیک یہ اس چیز کا محمل ہے جو حلیہ میں امام محمد سے منقول ہے ، انہوں نے فرمایا میری اور ابو یوسف کی یہ رائے ہے کہ کنویں کا پانی جاری پانی کے

حکم میں ہے کیونکہ وہ نیچے سے نکلتا ہے اور اوپر سے لے لیا جاتا ہے تو اس میں نجاست کے گرنے سے نجس نہ ہوگا اور عنایہ میں اس کو "قال محمد" کے لفظ سے ذکر کیا الخ پھر بدائع میں اس کو بعینہ انہی الفاظ میں ذکر کیا جو حلیہ کے ہیں فرمایا

[نیچے کی عبارت] عہ نشر علی ترتیب اللف ۱۲ (م) | اجمال کی ترتیب پر تفصیل ہے ۔ (ت)

[حواشی] 1- بحوالہ بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۷ 2- بحوالہ بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

If water is poured into it from one side and scooped out from the other side, it does not become impure by putting an impure hand into it. (1) Likewise, in Al-Fath, up to the words 'like the basin of a bath.' (2) Thus, it confirmed the interpretation (Mahmal) I mentioned. (Translator's Note: T)

I say: Based on this, it is a good and acceptable branch-ruling (1), and there is no reason to reject it as suggested by the text of Al-Hilyah following Al-Badai'. The analogy regarding a well was that it should not become impure at all, as was first narrated from [Imam] Muhammad, or that it should never become pure, as stated by Bishr al-Marisi. However, our companions abandoned both analogies in favor of traditional reports (Athar). The gist of what is in those two books is that they took it in an absolute sense. It is not appropriate for us to reject what has been transmitted from the Imams when a correct interpretation for it exists. Their statements have converged on accepting this meaning for a small basin, so why should it not be accepted for a well? They only differ in form, and what role does form play in a legal ruling? Every small [vessel] is equal. The fact that water enters a basin from above and a well from below does not make the ruling different. Accordingly, it is stated in Al-Fath (3): 'If a well becomes impure and its water is made to flow by digging an outlet for it such that the water exits...'

Footnotes: 1. Referenced from Badai' al-Sana'i, Chapter on determining quantities etc., H.M. Saeed Company Karachi, 1/75. 2. Fath al-Qadir, Chapter on the well, Nuria Razawiyya Sukkur, 1/86.

Page 403 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

यदि किसी पात्र में एक ओर से पानी डाला जा रहा हो और दूसरी ओर से निकाला जा रहा हो, तो उसमें अपवित्र हाथ डालने से वह अपवित्र नहीं होगा। १ अह (समाप्त)। इसी प्रकार 'अल-फ़तह' में भी है, उनके कथन 'जैसे हमाम का हौज़' तक। २ अह। तो इसने उस व्याख्या (मह़मल) की पुष्टि कर दी जिसका मैंने उल्लेख किया था। (अनुवादक: त)

मैं कहता हूँ: इस आधार पर यह एक अच्छी और स्वीकार्य उप-नियम (शाख़) है (१), और इसे अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं है जैसा कि 'अल-हिलिया' के शब्दों में 'बदाए' का अनुसरण करते हुए बताया गया है। कुएं के संबंध में तर्क(क़ियास) यह था कि वह बिल्कुल भी अपवित्र नहीं होता, जैसा कि पहले मुहम्मद से उद्धृत है, अथवा यह कि वह कभी पवित्र नहीं होता, जैसा कि बिशर अल-मरीसी ने कहा था। परंतु हमारे साथियों ने हदीसों (आसार) के कारण दोनों तर्कों को त्याग दिया। उन ग्रंथों का सार यह है कि उन्होंने इन्हें व्यापक अर्थ (इतलाक़) पर आधारित माना है। हमारे लिए इमामों से प्राप्त बातों को अस्वीकार करना उचित नहीं है जब उनके लिए एक सही व्याख्या मौजूद हो। छोटे हौज़ के संबंध में इस अर्थ को स्वीकार करने पर उनके कथन एकमत (तज़ाफ़ुर) हैं, तो फिर कुएं के मामले में इसे क्यों स्वीकार न किया जाए? वे केवल बाहरी रूप (सूरत) में भिन्न हैं, और नियम में रूप की क्या भूमिका है? प्रत्येक छोटा (पात्र/कुआँ) समान है। और यह कि हौज़ में पानी ऊपर से आता है और कुएं में नीचे से, इससे नियम नहीं बदलेगा। चुनाँचे, 'अल-फ़तह' (३) में कहा गया है: 'यदि कोई कुआँ अपवित्र हो जाए और उसके पानी को निकास बनाकर बहा दिया जाए जिससे पानी बाहर निकलने लगे...'

पाद-टिप्पणियाँ: १. बदाए-उस-सनाए के हवाले से, मात्रा आदि के विवरण के अध्याय में, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/७५। २. फ़तह-उल-क़दीर, कुएं के अध्याय में, नूरिया रज़विया सुक्कुर, १/८६।

पृष्ठ ४०३ का ७११

فتاوٰی رضویہ اذا کان یصب الماء فیه من جانب ویغترف من جانب اخر انه لاینجس بادخال الید النجسة فیه ۱ اھـ وکذلك في الفتح الی قوله کحوض الحمام ۲ اھـ فاکد ذلك ماذکرته من المحمل۔ اقول: وعند هذا فهو فرع جید مقبول (۱) ولا وجه لرده کما یعطیه کلام الحلیة تبعاً للبدائع انه کان القیاس في البئر ان لاتتنجس اصلا کما نقل عن محمد اولا تطهرا بدا کما قاله بشر المریسی الا ان اصحابنا ترکوا القیاسین بالآثار هذا حاصل مافیها حملاً منهما ایاه علی الاطلاق ولیس الاولی بنا ان نرد ما جاء عن الائمة مع وجود محمل له صحیح فقد (۲) تظافرت کلماتهم علی قبول هذا المعنی في الحوض الصغیر فلم لا یقبل في البئر ولا تخالفه الا في حیاة ولا مدخل لها في الحکم فکل صغیر سواء او ان الماء یدخل فیه من اعلاه وفیها من اسفلها ولا یختلف به الحکم فقد قال في (۳) الفتح لوتنجست بئر فاجری ماؤها بان حفر لها منفذ فصار الماء یخرج

جلد ثانی جیسے حمام کا حوض کہ اس میں ایک جانب سے پانی ڈالا جائے اور دوسری جانب سے چلو کے ذریعہ نکالا جائے تو ناپاک ہاتھ کے ڈالے جانے سے نجس نہ ہوگا اور اسی طرح فتح میں "کحوض الحمام" تک ہے اھ تو اس نے تاکید کردی اُس محمل کی جس کا میں نے ذکر کیا ہے۔(ت) میں کہتا ہوں اور اس وقت یہ اچھی فرع ہے مقبول ہے، اور اس کے رد کی کوئی وجہ نہیں جیسا کہ حلیہ میں بدائع کی تبعیت میں ہے کہ کنویں میں قیاس یہ تھا کہ کبھی ناپاک نہ ہو جیسا کہ محمد سے منقول ہے یا یہ کبھی پاک نہ ہو جیسا کہ بشر مریسی سے منقول ہے، مگر ہمارے اصحاب نے دونوں قیاسوں کو آثار کی وجہ سے ترک کردیا، یہ ان دونوں کتابوں کا حاصل ہے کہ انہوں نے اس کو اطلاق پر محمول کیا ہے، اور جو چیز ائمہ سے منقول ہے اور اس کا مناسب محمل بھی موجود ہو تو اس کو رد کردینا مناسب نہیں، کیونکہ چھوٹے حوض میں وہ اس حکم کو قبول کرتے ہیں تو پھر اس کو کنویں میں کیوں نہ قبول کیا جائے حالانکہ کنواں چھوٹے حوض سے صرف صورت

میں مختلف ہے یا صورت کا حکم میں کیا دخل ہے؟ ہر چھوٹا برابر ہے، اور یہ کہ حوض میں پانی اوپر سے آتا ہے اور اس میں نیچے سے آتا ہے، تو اس سے حکم مختلف نہ ہوگا، چنانچہ

۱۔ بحوالہ بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۵/۱ ۲۔ فتح القدیر فصل فی البئر نوریہ رضویہ سکھر ۸۶/۱

صفحہ ۴۰۳ از ۷۱۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic Column Transcription] ...from it until some of it exited, it became pure due to the presence of the cause of purification, which is the flowing of water. It became like a basin which, when it becomes impure, water is made to flow into it until some of it exits (1). This was mentioned in 'Al-Bahr' and affirmed. In 'Ad-Durr', it is stated that removing whatever water is present, even if it is a small amount, and making some of it flow is sufficient (2). 'Sh' (Shami) stated that a channel should be dug for it through which some water exits, as mentioned in 'Al-Fath' (3). We have previously mentioned in the third principle from 'Al-Bahr' regarding the issue of making a small basin flow by letting new water enter while some of it exits at the same time. 'Siraj al-Hindi' said that the same applies to a well (4). A similar statement is in 'Al-Bazzaziyya', and we have previously quoted it from 'Al-Khulasah'. If they had not considered the bubbling up of water from the bottom, it would have been meaningless. This is because flow is a preventer (dafi'), not a remover (rafi'). Thus, an impure thing will never become pure with it as long as the impurity does not flow together with the pure water (1). In short, everything that is categorized as flowing water in this manner—meaning substituting the act of taking out for exiting—another condition has been added, which is the continuity of discharge and the constant movement of water through it. If it stops, it is no longer categorized as such, because flowing water entails two things: the succession of parts...

[Urdu Column Translation] It is stated in 'Fath [al-Qadir]' that if a well becomes impure and its water is made to flow, for example, by making a hole through which some water from the well drains out, then the well becomes pure. This is because the cause of purification has been found, which is the flowing of water. This became like a basin that becomes impure and water is made to flow into it until some of it exits. This was mentioned in 'Bahr' and maintained. In 'Dur' [al-Mukhtar], it is mentioned that it is sufficient to remove the water that is in it, even if it is small, and that some of it flows. 'Sh' said that, for example, a hole should be made in the well through which some water is removed, as stated in 'Fath'. We stated in the third principle from 'Bahr' regarding the issue of flow in a small basin that new water enters it and some water exits while it is entering. 'Siraj Hindi' said the condition of the well is similar. The same is in 'Bazzaziyya', and we have already quoted it from 'Khulasah'. So, if they did not consider the water springing from below, it would be a meaningless statement because flowing is a preventer, not a remover. Until the

impurity flows along with the pure [water], it will never become pure. Understand this well. Summary:

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, end of the section on the well, Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/93. 2. Ad-Durr al-Mukhtar, section on the well, Mujtabai Delhi, 1/93. 3. Radd al-Muhtar, section on the well, Mustafa al-Babi Egypt, 1/160. 4. Bahr ar-Raiq, discussion on 'ten by ten', H.M. Saeed Company Karachi, 1/78. Page 404 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी कॉलम का अनुवाद] ...उसमें से यहाँ तक कि उसका कुछ हिस्सा निकल गया, तो वह शुद्ध (पाक) हो गया क्योंकि शुद्धि का कारण मौजूद है, जो कि पानी का बहाव है। यह उस हौज़ की तरह हो गया जो अशुद्ध (नापाक) होने पर उसमें पानी बहाया जाए यहाँ तक कि उसका कुछ हिस्सा निकल जाए (1)। इसे 'अल-बहर' में उद्धृत किया गया और पुष्ट किया गया। 'अद-दुर' में है कि जो भी पानी मौजूद है उसे निकाल देना पर्याप्त है, चाहे वह कम ही क्यों न हो, और उसका कुछ हिस्सा बहना (2)। 'श' (शामी) ने कहा कि उसके लिए एक निकास बनाया जाए जिससे कुछ पानी निकल जाए जैसा कि 'अल-फ़तह' में है (3)। हमने तीसरे सिद्धांत में 'अल-बहर' से छोटे हौज़ के बहने के मसले में वर्णन किया है कि उसमें नया पानी प्रवेश करे और प्रवेश के समय ही कुछ पानी उससे बाहर निकल जाए। 'सिराज अल-हिंदी' ने कहा कि कुएँ का भी यही हाल है (4)। ऐसा ही 'बज़ाज़िया' में है और हमने इसे पहले 'ख़ुलासा' से उद्धृत किया है। यदि वे नीचे से पानी के फूटने को ध्यान में न रखते तो यह बात बेमतलब होती। क्योंकि बहाव रोकने वाला (दाफ़े) है, हटाने वाला (राफ़े) नहीं। अतः अशुद्ध वस्तु इसके द्वारा कभी भी शुद्ध नहीं होगी जब तक कि वह शुद्ध पानी के साथ न बहे (1)। संक्षेप में, जिसे भी इस प्रकार बहते पानी की श्रेणी में रखा गया है—अर्थात निकास को बाहर निकलने के स्थान पर रखना—उसमें एक और शर्त जोड़ी गई है, और वह है निकास की निरंतरता और उसके कारण पानी का लगातार गति में रहना। यदि वह रुक जाए, तो वह उस श्रेणी में नहीं रहेगा, क्योंकि बहाव के लिए दो चीज़ें आवश्यक हैं: हिस्सों का क्रमिक रूप से आना...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] 'फ़तह' में फ़रमाया गया कि अगर कुआँ नापाक हो जाए और उसका पानी जारी (प्रवाहित) किया जाए, मिसाल के तौर पर उसमें कोई सुराख़ कर दिया जाए जिससे कुएँ का कुछ पानी निकल जाए, तो कुआँ पाक हो गया, क्योंकि पाकी का सबब पाया गया और वह पानी का जारी होना है। यह हौज़ की तरह हुआ कि नापाक हो जाए और उसमें पानी जारी किया जाए यहाँ तक कि कुछ पानी निकल जाए। इसे 'बहर' में ज़िक्र किया और बरक़रार रखा। 'दुर' में है कि जो पानी उसमें है उसका निकाल देना काफ़ी है, चाहे कम ही हो और कुछ का जारी होना। 'श' ने कहा कि मिसाल के तौर पर कुएँ में सुराख़ कर दिया जिससे कुछ पानी निकाल दिया जैसा कि 'फ़तह' में है। हमने तीसरी असल में 'बहर' से छोटे हौज़ के जारी होने के मसले में बयान किया कि उसमें नया पानी दाख़िल हो और दाख़िल होते वक़्त कुछ पानी उससे ख़ारिज (बाहर) हो। 'सिराज हिंदी' ने कहा कि इसी तरह कुएँ का हाल है। इसी की तरह 'बज़ाज़िया' में है और हमने इसे पहले 'ख़ुलासा' से नक़ल

कर दिया है। तो अगर वे पानी के नीचे से फूटने का एतबार (विचार) न करते तो यह बेमतलब बात होती क्योंकि जारी होना दाफ़े है राफ़े नहीं। तो जब तक वह नजिस (अशुद्ध) ताहिर (शुद्ध) के साथ जारी न हो, कभी भी पाक होने का नहीं। इसे अच्छी तरह समझें। खुलासा:

पाद-टिप्पणी: 1. फ़तह अल-क़दीर, कुएँ के अध्याय के अंत में, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/93। 2. अद-दुर अल-मुख़्तार, कुएँ का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/93। 3. रद अल-मुह्तार, कुएँ का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/160। 4. बहर अर-राइक़, 'दस बटा दस' पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/78। पृष्ठ 404 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی عبارت] منه حتی خرج بعضه طهرت لوجود سبب الطهارة وهو جریان الماء وصار کالحوض اذا تنجس فاجری فیه الماء حتی خرج بعضه ۱ اه واغترف منه فی البحر واقره وفی الدر یکفی نزح ما وجد وان قل وجریان بعضه ۲ اه قال ش بان حفر لها منفذ یخرج منه بعض الماء کما فی الفتح ۳ اه وقدمنا فی الاصل الثالث عن البحر فی مسألة جریان الحوض الصغیر بدخول ماء أخر فیه وخروج البعض منه حال دخوله قال السراج الهندی وکذا البئر ۴ اه ومثله فی البزازیة وقدمناه عن الخلاصة فلولا انهم اعتبروا نبع الماء من اسفله لم یکن له معنی فان الجریان دافع لا رافع فالنجس لا یطهر به ابدا ما لم یجمع مع الطاهر (۱) هذا وبالجملة کل ما الحق بالجاری علی هذا المنوال اعنی اقامة الاخراج مقام الخروج فقد زید فیه قید اخرو هو توالی الاخراج واستمرار تحرکه به حتی لوسکن لم یلتحق وذلك لان لازم الجریان شیأن تعاقب الاجزاء

[اردو ترجمہ] فتح میں فرمایا کہ اگر کنواں ناپاک ہو جائے اور اس کا پانی جاری کیا جائے مثلاً اس میں کوئی سوراخ کر دیا جس سے کنویں کا کچھ پانی نکل گیا تو کنواں پاک ہوگیا، کیونکہ سبب طہارت پایا گیا اور وہ پانی کا جاری ہونا ہے اور یہ حوض کی طرح ہوا کہ ناپاک ہو جائے اور اس میں پانی جاری کیا جائے یہاں تک کہ کچھ پانی نکل جائے اھ اس کو بحر میں ذکر کیا اور برقرار رکھا اور دُر میں ہے کہ جو پانی اس میں ہے اس کا نکال دینا کافی ہے خواہ کم ہی ہو اور جاری ہونا بعض کا اھ "ش" نے کہا کہ مثلاً کنویں میں کوئی سوراخ کر دیا جس سے کچھ پانی نکال دیا جیسا کہ فتح میں ہے اھ اور ہم نے تیسری اصل میں بحر سے چھوٹے حوض کے جاری ہونے کے مسئلہ میں بیان کیا کہ اس میں نیا پانی داخل ہو اور اس کے داخل ہوتے وقت کچھ پانی خارج ہو ، سراج ہندی نے کہا کہ اس طرح کنویں کا حال ہے اھ اور اسی کی مثل بزازیہ میں ہے اور ہم نے

اس کو پہلے خلاصہ سے نقل کر دیا ہے تو اگر وہ پانی کے نیچے سے پھوٹنے کا اعتبار نہ کرتے تو یہ بے معنی بات ہوتی کیونکہ جاری ہونا دافع ہے رافع نہیں تو جب تک وہ نجس طاہر کے ساتھ جاری نہ ہو کبھی بھی پاک ہونے کا نہیں، اس کو اچھی طرح سمجھئے۔ خلاصہ

حواشی: 1۔ فتح القدیر آخر فصل فی البئر نوریہ رضویہ سکھر 1/93 2۔ الدرالمختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی 1/93 3۔ رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر 1/160 4۔ بحر الرائق بحث عشر فی عشر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/78 صفحہ 404 کا 711

Fatawa Rizvia, Volume II

Arabic Text

One part of it leaves and another replaces it, and the lack of stillness is due to constant movement. Thus, when water enters a pond or a well from one side and is taken out from another by scooping or drawing, the first condition is met. When this continues, the second condition is achieved, completing the resemblance. Therefore, inclusion is permissible. For this reason, they considered catching up with scoops such that the water's surface does not become still between two scoops, not literal succession, because this amount achieves constant movement which fulfills the resemblance. This is what I hold, and Allah (Glorified and Exalted) knows best.

Urdu Translation/Explanation

That every water which has been ruled as flowing, and in which extraction has been regarded as exit, an additional condition has been added to it, and that is the condition of continuous extraction. Because of this, it remains constantly in motion, and if it becomes still, it will not be under the ruling of flowing water. The reason for this is that for being 'flowing', two things are necessary: one is the succession of parts, such that one part vanishes and another follows it; and the second is that due to continuous movement, it does not stay in one place. So when water enters a pond or a well from one side and is taken out from the other by hands, buckets, or channels, the first thing is achieved. If this sequence continues, the second thing will also be achieved, and the resemblance will be complete, making its inclusion permissible. For this, the succession of scoops will be considered, and succession means that there should be no stillness in the water between two scoops. Literal succession is not intended because constant movement is achieved by this amount, which completes the resemblance. This is what I hold, and Allah (Glorified and Exalted) knows best. (T)

From this discourse, it became clear that river water whose dam has been tied from above, and melted snow that is flowing on the ground, and rainwater that is still flowing after the rain stops, and two streams of water that descend by merging in the air or flow together as one on the ground, and grape juice that is still flowing even if their support is cut off as long as they do not reach something that prevents further passage, are all 'flowing'. Therefore, the stream from a jug that hasn't yet reached the hand is even more so. The condition of both entry and exit is for that which is blocked in some hollow space; and water coming from one side and being

drawn out quickly from the other so that the movement does not stop, is annexed to flowing water. All praise is for Allah for the continuity of His favors, and His best blessings and most perfect peace be upon the best of His prophets, and upon his family, his companions, his son, and his loved ones. All praise is for Allah, the Lord of the worlds, and Allah (Glorified and Exalted) knows best.

अरबी पाठ

इसका एक हिस्सा हट जाता है और दूसरा उसकी जगह ले लेता है, और स्थिरता का अभाव निरंतर गति के कारण होता है। अत; जब पानी एक तरफ से तालाब या कुएं में प्रवेश करता है और दूसरी तरफ से हाथों या डोल (बाल्टियों) के माध्यम से निकाला जाता है, तो पहली शर्त पूरी होती है। जब यह सिलसिला जारी रहता है, तो दूसरी शर्त भी पूरी हो जाती है, जिससे समानता पूरी हो जाती है। इसलिए, समावेशन जायज़ है। इसी कारण से, उन्होंने लगातार पानी निकालने को माना है ताकि दो बार पानी निकालने के बीच पानी की सतह स्थिर न हो, न कि शाब्दिक निरंतरता, क्योंकि इतनी मात्रा से निरंतर हलचल प्राप्त होती है जिससे समानता पूरी होती है। यह मेरी राय है, और अल्लाह (महिमावान और उच्च) सबसे बेहतर जानता है।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

यह कि हर वह पानी जिसे बहते हुए के हुक्म में किया गया है और उसमें निकासी को निकास माना गया है, तो उसमें एक और शर्त का इजाफा किया गया है और वह है निरंतर निकासी की शर्त। और इसकी वजह से उसका लगातार गतिशील रहना है, और अगर वह ठहर गया तो बहते हुए के हुक्म में न होगा। और इसकी वजह यह है कि बहने के लिए दो चीजें ज़रूरी हैं: एक तो हिस्सों का एक के बाद एक आना कि एक हिस्सा हटे और दूसरा हिस्सा उसके पीछे आए; और दूसरी निरंतर गति के कारण एक जगह न ठहरना। तो जब तालाब और कुएं में पानी एक तरफ से दाखिल हो और दूसरी तरफ से चुल्लू, डोल या नालियों के जरिए निकाला जाए तो पहली चीज़ हासिल होगी। और अगर यह सिलसिला जारी रहे तो दूसरी चीज़ भी हासिल होगी और समानता पूरी हो जाएगी और उसका मिलाया जाना जायज़ होगा। और इसके लिए चुल्लुओं का एक के बाद एक होना विश्वसनीय होगा, और एक के बाद एक का मतलब है कि दो चुल्लुओं के बीच पानी में ठहराव न आए। वास्तविक निरंतरता मुराद नहीं है क्योंकि इस मात्रा से गति का निरंतर होना हासिल हो जाता है जिससे समानता पूरी होती है। यह मेरी राय है और अल्लाह (महिमावान और उच्च) सबसे बेहतर जानता है। (त)

इस बयान से स्पष्ट हुआ कि नदी का पानी जिसका बांध ऊपर से बांध दिया गया हो, और पिघली हुई बर्फ जो जमीन पर बह रही हो, और बारिश का पानी जो बारिश रुकने पर अभी भी बह रहा हो, और पानी की दो धाराएं जो हवा में मिलकर उतर रही हों या जमीन पर एक होकर बह रही हों, और अंगूर का रस जो अभी भी बह रहा है चाहे उनकी मदद बंद हो गई हो, जब तक कि वे किसी ऐसी चीज़ तक

न पहुँचें जो आगे जाने से रोके, सब 'बहते हुए' हैं। तो लोटे की धार जो अभी हाथ तक नहीं पहुँची है, वह और भी अधिक बहती हुई है। और प्रवेश और निकास दोनों की शर्त उस रुकावट में है जो किसी खोखली जगह में हो; और पानी का एक तरफ से आना और दूसरी तरफ से जल्दी-जल्दी खींचा जाना कि हलचल न थमने पाए, यह बहते पानी के साथ मिला हुआ है। और अल्लाह के लिए तमाम तारीफें हैं उसकी नेमतों के निरंतर होने पर, और उसकी सर्वश्रेष्ठ रहमतें और पूर्ण सलाम उसके सर्वश्रेष्ठ नबियों पर, और उनकी आल, असहाब, बेटे और चाहने वालों पर हों। और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, और अल्लाह (महिमावान और उच्च) सबसे बेहतर जानता है।

عربی متن **اردو ترجمہ/تشریح**

یہ کہ ہر وہ پانی جس کو جاری کے حکم میں کیا گیا ہے اور اس میں اخراج کو خروج گردانا گیا ہے تو اس میں ایک اور قید کا اضافہ کیا گیا ہے اور وہ تسلسل کے ساتھ اخراج کی قید ہے اور اس کی وجہ سے اس کا مسلسل متحرک رہنا، اور اگر وہ ٹھہر گیا تو جاری کے حکم میں نہ ہوگا اور اس کی وجہ یہ ہے کہ جاری ہونے کو دو چیزیں لازم ہیں ایک تو اجزاء کا تعاقب کہ ایک جزء زائل ہو اور دوسرا جزء اس کے پیچھے آئے، اور مسلسل حرکت کی وجہ سے ایک جگہ نہ ٹھہرتا، تو جب حوض اور کنویں میں پانی ایک طرف سے داخل ہو اور دوسری طرف سے چلوں اور ڈولوں یا نالیوں کے ذریعہ نکالا جائے تو پہلی چیز حاصل ہوگی اور یہ سلسلہ جاری رہے تو دوسری چیز حاصل ہوگی اور مشابہت مکمل ہو جائیگی اور اس کا لاحق کیا جانا جائز ہوگا اور اس کیلئے چلوں کا پے در پے ہونا معتبر ہوگا، اور پے در پے کا مطلب ہے کہ دو چلوں کے درمیان پانی میں ٹھہراؤ نہ آئے حقیقی موالات مراد نہیں ہیں کیونکہ اس مقدار سے تحرک کا دوام حاصل ہو جاتا ہے جس سے مشابہت پوری ہوتی ہے ھذا ماعندی واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

یزول منه جزء فیخلفه آخر وعدم الاستقرار بدوام التحرك فاذا دخل الماء في الحوض والبئر من جانب واخرج من اخر بالغرف والاستقاء وجد الاول واذا استمر ذلك حصل الثاني فتم الشبه فساغ الالتحاق ولذا اعتبروا تدارك الغرفات بان لایسکن وجه الماء بین الغرفتین لا الموالاة الحقیقیة اذ بهذا القدر یحصل دوام التحرك المحصل للشبه هذا ما عندی واللہ سبحنه وتعالی اعلم۔

(ت)

اس تقریر سے واضح ہوا کہ ندی کا پانی جس کا مینڈھا اوپر سے باندھ دیا ہو اور گلا ہوا برف کہ زمین پر بہہ رہا ہو اور مینہ کا پانی کہ بارش تھمنے پر ہنوز رواں ہو اور دو پانیوں کی دھار جو ہوا میں مل کر اتر رہی ہے یا زمین پر ایک ہو کر بہہ رہی ہے اور انگور کا شیرہ کہ ابھی رواں ہے اگرچہ ان کی مدد منقطع ہو گئی ہو جب تک کسی ایسی شے تک نہ پہنچیں جو آگے مرور کو مانع ہو سب جاری ہیں تو لوٹے کی دھار کہ ابھی ہاتھ تک نہ پہنچی بدرجہ اولیٰ اور دخول و خروج دونوں کی شرط اس مانع میں ہے جو کسی جوف میں رکا ہوا ہے اور پانی ایک طرف سے آنا اور دوسری طرف سے جلد جلد کھینچا جانا کہ جنبش تھمنے نہ پائے یہ ملحق بہ آب جاری میں ہے والحمد للہ علی توالی الائہ، وافضل صلوتہ واکمل تسلیمات علی افضل انبیائہ، وعلی الہ وصحبہ وابنہ واحبائہ، والحمد للہ رب العلمین واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 2

A Fresh Perspective and an Explanation in a Better, Brighter, and More Evident Manner A review from another perspective, explained in a fine, clear, and more manifest way:

Arabic Prayer	**Urdu Translation**
O Allah! All praise is due to You, and You are the Eternal Refuge. I, Your humble servant, [seek] the right path, time is fleeting in every matter, O Bestower! And send blessings, peace, and benediction upon the master who turns back (to Allah), whose breath of generosity is like the sent wind and a sprinkle from whose overflow is like the pouring rain clouds; and upon his family, his companions, his son, and his group, the best of groups, families, and companions. Amen.	O Allah, this praise is for You and You are independent. O Bestower! Open a good path for Your servants in every matter and save them from destruction. And may blessings, peace, and benedictions be upon the master who returns (to You), whose one whiff of generosity is similar to a blowing breeze, and whose one sprinkle of bounty is like heavily raining clouds. And may peace be upon your family, companions, offspring, and group. Amen.

The clear declarations and shining allusions of the majority of famous, reliable, and circulated books signify that whatever water or liquid is in a hollow space, no matter how much fresh inflow there is, it will not be considered flowing until it fills and overflows. The flow of water in the belly of a tank etc. is not considered "jaryan" (flow) for its water. Numerous secondary issues and abundant declarations based on this meaning have passed in previous answers. Some rulings of the third answer, the discourse of the end of the fourth, and most discussions of the fifth were based on this. The third principle itself was this, and this is the preamble for the fifth principle, the first part of the sixth, and the beginning and end of the ninth. Then, whatever is branched out from them in sub-issues follows. However, there is one saying here that exit is not a condition for flow; a large tank that had impurities or impure water at its bottom will become pure just by being filled. Although in 'Munyah' this saying is quoted with a sigh of weakness: "It was said that it does not become impure," and one saying is that it will not be impure. And in 'Hilyah' its weakness is emphasized and made manifest as no reason for it is apparent. In 'Ghunya', the opposite is clearly stated and authenticated. The statements and choices of Imam Abu al-Qasim Saffar, Imam Faqih Abu Ja'far, Imam Faqih Abu al-Layth, Imam Sadr al-Shahid, Imam Abu Bakr al-A'mash, Imam Ali al-Sughdi, Imam Nasir bin Yahya, and Imam Khalaf bin

Ayyub and others among the great masters (may their secrets be sanctified and may Allah Almighty have mercy on us through them in both worlds) and the corrections in 'Zahiriyya', 'Mujtaba', 'Muheet', 'Burhani', 'Razwi', and 'Ghunya' are against it. These books, and besides them, 'Bada'i', 'Fath al-Qadir', 'Tabyeen', 'Tawsheeh', 'Bahr', 'Tatar-khaniyah', 'Khaniyah', 'Khulasah', 'Dhakheerah', 'Fatawa Ahl-e-Samarqand', 'Ghiyathiyah', 'Alamgiriyah', 'Khazanat al-Muftin', 'Jawahir al-Ikhlati', 'Sharh Hadyah Ibn al-Imad' and other general great books have branched out these issues...

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

एक और तरीक़े से नज़र-ए-सानी, और उम्दा, रोशन और अज़हर तरीक़े पर वजाहत एक और तरीक़े से नज़र-ए-सानी, और उम्दा, रोशन और अज़हर तरीक़े पर वजाहत:

अरबी प्रार्थना	**उर्दू अनुवाद**
ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही हम्द है और तू बेनियाज़ (स्वतंत्र/अनंत) है। ऐ वहाब (दाता)! अपने बंदों पर हर मामले में अच्छा रास्ता खोल और हलाकत (विनाश) से बचा, और दरूद-ओ-सलाम और बरकतें हों उस आक़ा पर जो रुजूअ (ईश्वर की ओर मुड़ने वाले) लाने वाले हैं, जिनके करम का एक झोंका चलती हुई हवा के समान है और जिनके फ़ैज़ की एक छींट बहुत बरसने वाले बादल की तरह है, और आपकी आल, अस्हाब, औलाद और गिरोह सब पर सलामती हो। आमीन।	ऐ अल्लाह, तेरे लिए यह प्रशंसा है और तू बेनियाज़ (निरपेक्ष) है। ऐ वहाब! अपने बंदों के लिए हर मामले में एक अच्छा रास्ता खोल और उन्हें विनाश से बचा। और उस स्वामी पर आशीर्वाद, शांति और कृपा हो जो ईश्वर की ओर मुड़ने वाले हैं, जिसकी उदारता का एक झोंका बहती हवा के समान है और जिसकी कृपा की एक बौछार भारी वर्षा वाले बादलों की तरह है। और आपके वंश, साथियों, संतानों और समूह सभी पर शांति हो। आमीन।

जमाहीर (बहुमत) और प्रसिद्ध, विश्वसनीय और प्रचलित किताबों के स्पष्ट बयानों और साफ़ संकेतों का यही अर्थ है कि जो पानी या तरल पदार्थ किसी गहराई या गड्ढे में हो, ताज़ा आवक कितनी ही हवा से जारी न करे, वह तब तक जारी नहीं माना जाएगा जब तक कि वह भरकर उबल (छलक) न जाए। हौज़ आदि के पेट में पानी का बहना उसके पानी के लिए 'जिरयान' (प्रवाह) नहीं है। अनेक पुस्तकों से प्रचुर उप-मसाले और इस अर्थ पर भरपूर स्पष्टीकरण पिछले जवाबों में गुज़रे हैं। तीसरे जवाब के कुछ हुक्म, चौथे के अंत का विवरण और पांचवें के अधिकांश शोध इसी पर आधारित थे। और मूल तीसरा तो स्वयं यही था, और यही पांचवें मूल की भूमिका, छठे का पहला हिस्सा और नौवें का पहला और अंतिम हिस्सा है। फिर उप-मसालों में जो कुछ उन पर आधारित है, वह स्पष्ट है। लेकिन यहाँ एक कथन यह भी है कि प्रवाह (जिरयान) के लिए पानी का बाहर निकलना शर्त नहीं है; एक बड़ा हौज़ जिसके तल में गंदगी या अशुद्ध पानी था, केवल भर जाने से ही शुद्ध हो जाएगा। हालाँकि 'मुन्या' में इस कथन को कमज़ोरी के साथ उद्धृत किया गया है कि "कहा गया कि वह नापाक नहीं होता", और एक कथन है कि नापाक नहीं होगा। और 'हिलिया' में इसकी कमज़ोरी को और पुख़्ता और ज़ाहिर कर दिया गया है क्योंकि इसकी कोई वजह स्पष्ट नहीं है। 'ग़ुनिया' में इसके विपरीत होने को

स्पष्ट और प्रमाणित किया गया है। इमाम अबुल क़ासिम सफ़्फ़ार, इमाम फ़क़ीह अबू जाफ़र, इमाम फ़क़ीह अबुल लैस, इमाम सद्रुश्शहीद, इमाम अबू बक्र अअमश, इमाम अली सुग़दी, इमाम नसीर बिन यह्या और इमाम ख़लफ़ बिन अय्यूब और अन्य बड़े बुज़ुर्गों (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे और उन के वसीले से हम पर दोनों जहानों में रहम फ़रमाए) के इरशादात और इख़्तियारात और 'ज़हीरिया', 'मुज्तबा', 'मुहीत', 'बुरहानी', 'रज़वी' और 'ग़ुनिया' के संशोधन इसके विपरीत हैं। इन किताबों और उनके अलावा 'बदाए', 'फ़त्हुल क़दीर', 'तबयीन', 'तौशीह', 'बह्र', 'तातारी ख़ानिया', 'ख़ानिया', 'ख़ुलासा', 'ज़ख़ीरा', 'फ़तावा अहल-ए-समरकंद', 'ग़ियासिया', 'आलमगीरिया', 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', 'जवाहर अल-इख़लाती', 'शरह हदिया इब्न अल-इमाद' और अन्य आम महान पुस्तकों ने उप-मसालों (फुरूँ)को...

تجدیدالنظر بوجه آخر وإبانة موهواحلی وأزهر واجلی واظهر ایک اور طریقہ سے نظر ثانی، اور عمدہ، روشن اور اظہر طریقہ پر وضاحت:

عربی متن	اردو ترجمہ
اللهم لك الحمد، واليك الصمد، ارعبيدك الصواب، وقته التباب، في كل باب، یاوهاب، وصلّ وسلّم وبارك على السيد الاواب، الذي تحكى نفحة من كرمه الريح المرسلة ورشحة من فيضه هامر السحاب، وعلى آله وصحبه وابنه وحزبه خير حزب وآل واصحاب، آمين۔	اے اللہ تیرے لئے یہ حمد ہے اور تُو بے نیاز ہے، اے وہاب! اپنے بندوں پر ہر معاملہ میں اچھا راستہ کھول اور ہلاکت سے بچا، اور صلوٰۃ و سلام اور برکتیں ہوں رجوع لانے والے آقا پر جس کے کرم کا ایک جھونکا، چلتی ہوئی ہوا کے مشابہ ہے اور جس کے فیض کا ایک چھینٹا بہت برسنے والے بادل کی طرح ہے اور آپ کی آل، اصحاب، اولاد اور گروہ سب پر سلامتی ہو۔ آمین۔ ت

جماہیر مشاہیر کتب معتمدہ متداولہ مستندہ کی تصریحات واضحہ و تلویحات لائحہ کا یہی مفاد کہ جو پانی یا مائع کسی جوف میں ہو تازہ آمد کتنی ہی ہوا سے جاری نہ کرے گی جب تک بھر کر نہ اُبلے حوض وغیرہ کے بطن میں پانی کا بہنا اُس کے پانی کے لئے جریان نہیں کتب کثیرہ سے فروع متکثرہ و تصریحات متوافرہ اس معنی پر جوابات سابقہ میں گزریں، جواب سوم کے بعض احکام اور آخر چہارم کی تقریر اور پنجم کے اکثر مباحث اسی پر مبنی تھے اور اصل سوم تو خود یہی تھی اور یہی اصل پنجم کی تمہید اور ششم کا حصہ اولین اور نہم کا اوّل و اخیر پھر تفریعات میں جو کچھ ان پر متفرع ہے لیکن یہاں ایک قول یہ ہے کہ جریان کیلئے خروج شرط نہیں، حوض

کبیر جس کی تہہ میں نجاستیں یا نجس پانی تھا مجرد بھر جانے سے پاک ہو جائیگا منیہ میں اگر چہ اس قول کو بصیغہ ضعف نقل کیا کہ وقیل لایصیر نجسا اور ایک قول یہ ہے کہ نجس نہیں ہوگا۔ ت اور حلیہ ۱ میں اُس کا ضعف اور مستجل کر دیا کہ اس کی کچھ وجہ ظاہر نہیں غنیہ ۲ میں اس کے خلاف کی تصریح تصحیح کی امام ابو القاسم صفار ۳ و امام فقیہ ابو جعفر ۴ و امام فقیہ ابواللیث ۵ و امام صدر الشہید ۶ و امام ابوبکر اعمش ۷ و امام علی سغدی ۸ و امام نصیر بن یحییٰ ۹ و امام خلف بن ایوب ۱۰ و غیر ہم اجلہ اکابر قدست اسرار ہم و رحمنا اللہ تعالی بہم فی الدارین کے ارشادات و اختیارات اور ظہیریہ ۱۱ و مجتبیٰ ۱۲ و محیط ۱۳ و برہانی و رضوی ۱۴ و غنیہ ۱۵ کی تصحیحات اس کے خلاف پر ہیں ان کتابوں اور ان کے سوا بدائع ۱۶ وفتح القدیر ۱۷ و تبیین ۱۸ و توشیح ۱۹ و بحر ۲۰ و تاتار خانیہ ۲۱ و خانیہ ۲۲ و خلاصہ ۲۳ و ذخیرہ ۲۴ و فتاوی اہل سمر قند ۲۵ و غیاثیہ ۲۶ و عالمگیریہ ۲۷ و خزانیتہ المفتین ۲۸ و جواہر اخلاطی ۲۹ و شرح ہدیہ ابن العماد ۳۰ و غیر ہا عامہ کتب جلیلہ نے فروع

Fatawa Razawiya - Volume 2 ...In numerous and abundant instances, no attention was paid to it at all; these matters indicate that it is a discarded, majoritarian, unaccepted, and unsupported opinion. Therefore, we too, following the Imams, have not inclined towards it. However, in fairness (1), it is not entirely void; it holds a certain weight in its own right. Several scholars and many, or most, of the jurists of Bukhara and some Imams of Balkh have adopted it, and Imam Yusuf Tarjumani said regarding it, 'Fatwa is given upon this.' Imam Kardari kept it established in 'Al-Wajiz', and this is among the most emphatic words of fatwa. The text of 'Munyah' which was just mentioned is immediately connected to it:

Arabic	Urdu
A large basin containing impurities, then it becomes full. It is said: It is impure (najis). And it is said: It is not impure. And this [latter] was taken by most of the scholars of Bukhara (may Allah have mercy on them), mentioned in 'Al-Dhakheerah'. 1	A large tank at the bottom of which are impurities, then it gets filled. According to one saying, it is impure, and another saying is that it is not impure. Most of the scholars of Bukhara (may Allah have mercy on them) have adopted this. It is mentioned in 'Al-Dhakheerah'. (T)

In 'Ghunyah', the reasoning for the first saying is: | Arabic | Urdu | | :--- | :--- | | Because it makes the water impure little by little. 2 | Because the water becomes impure bit by bit. (T) |

And for the second: | Arabic | Urdu | | :--- | :--- | | Because it being large, it became as if it were full and then impurities fell into it. 3 | Because this is a large tank, it will be under the same ruling as if it were filled first and then impurities fell into it. (T) |

In 'Hilyah', the text of 'Al-Dhakheerah' is mentioned as follows: | Arabic | Urdu | | :--- | :--- | | And in 'Nazm al-Zand' and 'Wayisi', if the basin is large and there are impurities in it, then water enters and fills it, the people of Balkh and Abu Sahl al-Kabeer al-Bukhari said: It is impure. And the jurist Abu Ja'far al-Balkhi, the jurist Ismail, and Ibn al-Hasan al-Zahidi al-Bukhari said: All of it is pure (tahir). And with it took many of | And in 'Nazm Zand Wayisi' it is stated that when the tank is large and there are impurities in it, then water enters and fills it, then according to the people of Balkh and Abu Sahl Kabeer Bukhari, it is impure. And the jurist Abu Ja'far Balkhi, the jurist Ismail, and Ibn al-Hasan al-Zahidi al-Bukhari said that all is pure, and many jurists of Bukhara have taken this opinion... |

1 Munyat al-Musalli, Chapter on Tanks, Maktaba Qadriah, Jamia Nizamia Lahore, p. 72 2 Ghunyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli, Sohail Academy Lahore, p. 101 3 Ghunyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli, Sohail Academy Lahore, p. 101 Page 407 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (खंड 2) ...अनेक और प्रचुर उदाहरणों में इस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया गया; ये बातें संकेत करती हैं कि वह एक परित्यक्त, बहुमत के विरुद्ध, अस्वीकृत और असमर्थित मत है। इसलिए हमने भी इमामों का अनुसरण करते हुए उसकी ओर झुकाव नहीं किया। लेकिन निष्पक्षता से (1), वह पूरी तरह से शून्य नहीं है; वह अपने आप में एक शक्ति रखता है। बुखारा के कई विद्वानों और कई या अधिकांश न्यायविदों (फ़कीहों) और बल्ख के कुछ इमामों ने इसे अपनाया है, और इमाम यूसुफ तर्जुमानी ने इसके बारे में कहा, 'फ़तवा इसी पर दिया जाता है।' इमाम करदरी ने 'अल-वजीज़' में इसे स्थापित रखा है, और यह फ़तवे के सबसे प्रभावशाली शब्दों में से है। 'मुनया' का पाठ जिसका अभी उल्लेख किया गया है, इसके तुरंत बाद जुड़ा हुआ है:

अरबी	उर्दू
एक बड़ा हौज़ जिसमें अशुद्धियाँ (नजासत) हों, फिर वह भर जाए। कहा गया: वह नापाक (नजिस) है। और कहा गया: वह नापाक नहीं है। और इसे बुखारा के अधिकांश विद्वानों (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अपनाया है, इसका उल्लेख 'अज़-ज़ख़ीरा' में है। 1	एक बड़ा हौज़ जिसके तल में नापाकियाँ हों, फिर वह भर जाए, तो एक कथन के अनुसार नापाक है, और दूसरा कथन यह है कि नापाक नहीं है। बुखारा के अधिकांश विद्वानों (अल्लाह उन पर रहम करे) ने इसी को अपनाया है। इसका उल्लेख 'ज़ख़ीरा' में किया गया है। (त)

'गुनया' में पहले कथन का तर्क दिया गया है: | अरबी | उर्दू | | :--- | :--- | | क्योंकि यह पानी को धीरे-धीरे नापाक बनाता है। 2 | क्योंकि पानी थोड़ा-थोड़ा करके नापाक होता जाता है। (त) |

और दूसरे का: | अरबी | उर्दू | | :--- | :--- | | इसके बड़े होने के कारण, यह वैसा ही हो गया जैसे कि वह भरा हुआ हो और फिर उसमें नापाकियाँ गिर गई हों। 3 | क्योंकि यह बड़ा हौज़ है, तो यह उसी हुक्म में होगा कि पहले वह भर गया हो फिर उसमें नापाकियाँ गिरी हों। (त) |

'हिलया' में 'ज़ख़ीरा' का पाठ इस प्रकार उल्लेखित है: | अरबी | उर्दू | | :--- | :--- | | और 'नज़्म अल-ज़ंद' और 'वैसी' में है कि जब हौज़ बड़ा हो और उसमें अशुद्धियाँ हों, फिर पानी प्रवेश करके उसे भर दे, तो बल्ख के लोगों और अबू सहल अल-कबीर अल-बुखारी ने कहा: वह नापाक है। और फ़कीह अबू जाफ़र अल-बल्खी, फ़कीह इस्माइल और इब्न अल-हसन अल-ज़िाहिदी अल-बुखारी ने कहा: सब पवित्र (ताहिर) है। और इसे बुखारा के कई... ने अपनाया है। | और 'नज़्म ज़ंद वैसी' में है कि जब हौज़ बड़ा हो और उसमें नापाकियाँ हों, फिर पानी प्रवेश करके उसको भर दे, तो बल्ख वालों

और अबू सहल कबीर बुखारी का कहना है कि यह नापाक है। और फ़कीह अबू जाफ़र बल्खी, फ़कीह इस्माइल और इब्न अल-हसन ज़ाहिदी बुखारी ने कहा कि सब पाक है और बुखारा के कई फ़कीहों ने इस मत को... |

1 मुनयतुल मुसल्ली, फ़सल फ़िल हियाज़, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया लाहौर, पृ. 72 2 ग़ुनयतुल मुस्तमली, शरह मुनयतुल मुसल्ली, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 101 3 ग़ुनयतुल मुस्तमली, शरह मुनयतुल मुसल्ली, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 101 पृष्ठ 407 का 711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی کثیرہ وافرہ میں اصلاًاُس کی طرف التفات بھی نہ کیا یہ امور بتاتے ہیں کہ وہ قول مہجور جمہور و نا مقبول و نامنصور ہے ولہذا ہم نے بھی باتباع ائمہ اُس کی طرف میل نہ کیا مگر انصافاً (۱) وہ ساقط محض نہیں بجائے خود ایک قوت رکھتا ہے متعدد مشائخ اور کثیر یا اکثر فقہائے بخارا و بعض ائمہ بلخ نے اُسے اختیار کیا اور امام یوسف ترجمانی نے اسے بہ یفتی کہا۔ امام کردری نے وجیز میں اسے مقرر رکھا اور یہ آکد الفاظ فتوی سے ہے منیہ کی عبارت کہ ابھی مذکور ہوئی اس کے متصل ہی ہے :

عربی	اردو
حوض کبیر و فیہ نجاسات فامتلاء قیل ھو نجس وقیل لیس بنجس وبہ اخذ اکثر مشائخ بخاری رحمہم اللہ ذکرہ فی الذخیرۃ 1	حوض کبیر جس کی تہ میں نجاستیں ہوں پھر وہ بھر جائے تو ایک قول کے مطابق نجس ہے اور ایک قول یہ ہے کہ نجس نہیں بخارا کے اکثر مشائخ (اللہ ان پر رحم کرے) نے اسی کو اختیار کیا ہے اس کو ذخیرہ میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

غنیہ میں قولِ اول کی تعلیل کی: | عربی | اردو | | :--- | :--- | | لتنجس الماء شیئاً فشیئاً 2۔ | کیونکہ پانی تھوڑا تھوڑا کر کے نجس ہوتا جاتا ہے۔ (ت) |

اور دوم کی : | عربی | اردو | | :--- | :--- | | لکونہ کبیرا فصار کما لوکان ممتلئا فوقعت فیہ النجاسات 3۔ | کیونکہ یہ بڑا حوض ہے تو یہ اسی حکم میں ہوگا کہ پہلے وہ بھر گیا ہو پھر اس میں نجاستیں واقع ہوئی ہوں۔ (ت) |

حلیہ میں ذخیرہ کا نص یوں ذکر کیا : | عربی | اردو | | :--- | :--- | | وفی نظم الزند ولیسی اذا کان الحوض کبیرا وفیہ نجاسات فدخل الماء فامتلاء قال اھل بلخ وابو سھل الکبیر البخاری ھو نجس

وقال الفقيه ابوجعفر البلخي والفقيه اسمعيل وابن الحسن الزاهدى البخارى الكل طاہر وبہ اخذ كثير من | اور نظم زند وبیسی میں ہے کہ جب حوض بڑا ہو اور اس میں نجاستیں ہوں، پھر پانی داخل ہو کر اس کو بھر دے تو بلخ والوں اور ابو سہیل کبیر بخاری کا قول ہے کہ یہ نجس ہے اور فقیہ ابو جعفر البلخی، فقیہ اسمعیل اور ابن الحسن الزاہدی البخاری نے کہا کہ سب پاک ہے اور اس قول کو بخارا کے کثیر فقہاء نے |

1 منية المصلى فصل فى الحياض مكتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۷۲ 2 غنية المستملي شرح منية المصلى سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۱ 3 غنية المستملي شرح منية المصلى سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۱ Page 407 of 711

Fatawa Ridawiyyah - Volume Two

Section: ...The jurists of Bukhari and similarly Abdul Wahid issued fatwas on this many times, and likewise the jurist Abu Bakr al-Iyadi used to issue fatwas and say that a large quantity of water is under the ruling of flowing water. [Ended] (T)

Then he said: And Az-Zahidi narrated from Yusuf al-Tarjumani that he said and upon this is the fatwa. (T)

In Bazzaziyyah it is stated: A cistern (Haud) became impure, then a large quantity of water entered it and also flowed out of it. It is said that the cistern becomes pure even if the outgoing water is small. Another opinion is that it will not be pure until as much water flows out as was in the cistern. A third opinion is that it will not be pure until twice or thrice the amount of water in the cistern flows out. And it is also said that it will become pure even if nothing flows out. Yusuf al-Tarjumani (may Allah Almighty have mercy on him) said: and upon this is the fatwa. [Ended] (T)

I say: (1) He is unique in two things. One is the condition of 'large quantity' for the incoming water, whereas all jurists mentioned it without restriction. 'Sh' [Shami] said even if the incoming water is small. [Ended] And it seems, and Allah Almighty knows best, that this is in consideration of the last opinion since it is specific to a large cistern; thus he indicated its largeness by the entry of a large quantity of water, and the other is an addition.

Footnotes: 1 Hilyah 2 Hilyah 3 Bazzaziyyah 'ala al-Hindiyyah, type regarding menstruation, Nurani Library Peshawar, 8/3 4 Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/138

Page 408 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

अनुभाग: ...बुखारी के फ़ुक़हा और इसी तरह अब्दुल वाहिद ने भी इस पर कई बार फ़तवा दिया और अबु बक्र अयाज़ी भी इसी तरह फ़तवा देते थे और फ़रमाते थे कि बहुत ज़्यादा पानी बहते पानी के हुक्म में है। इँतहा। (त)

फिर फ़रमाया: और ज़ाहिदी ने यूसुफ़ अल-तर्जुमानी से नक़ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया और इसी पर फ़तवा है। (त)

बज़ाज़िया में है: हौज़ नापाक हो गया फिर उसमें बहुत सा पानी दाखिल हो गया और निकल गया तो एक क़ौल है कि हौज़ पाक हो गया चाहे निकलने वाला पानी कम ही हो और एक क़ौल यह है कि जब तक इतना पानी न निकले जितना कि हौज़ में था पाक न होगा जबकि एक क़ौल यह है कि जब तक हौज़ का दो गुना या तीन गुना पानी न निकले पाक न होगा और एक क़ौल यह है कि पाक हो जाएगा चाहे कुछ भी न निकले, यूसुफ़ अल-तर्जुमानी रहमतुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इसी पर फ़तवा है। (त)

मैं कहता हूँ: (१) वह दो चीज़ों में मुन्फ़रिद हैं एक तो दाख़िल होने वाले पानी में कसरत की क़ैद लगाने में, जबकि तमाम फ़ुक़हा ने यह क़ैद नहीं लगाई है और 'श' ने फ़रमाया अगरचे दाख़िल होने वाला पानी क़लील (कम) हो और गोया वल्लाह तआला आलम आख़िरी क़ौल की रिआयत है क्योंकि यह बड़े हौज़ के साथ ख़ास है।

फुटनोट: 1 हलिया 2 हलिया 3 बज़ाज़िया अलल हिन्दिया, हैज़ की किस्म, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 8/3 4 रद-उल-मुहतार, बाब-उल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/138

पेज 408 / 711

فقهاء بخاری وهکذا افتی عبدالواحد مرارا وهکذا کان یفتی الفقیہ ابو بکر العیاضی وکان یقول الماء الکثیر فی حکم الماء الجاری انتهٰی | اختیار کیا ہے، اور عبدالواحد نے بھی اس پر کئی بار فتوٰی دیا اور ابوبکر عیاضی بھی اسی طرح فتوٰی دیتے تھے اور فرماتے تھے کہ کثیر پانی جاری پانی کے حکم میں ہے انتھی۔ (ت)

پھر فرمایا: ونقل الزاہدی عن یوسف الترجمانی فی انہ قال وبہ یفتی -2 | زاہدی نے یوسف الترجمانی سے نقل کیا ہے کہ انہوں نے فرمایا اور اسی پر فتوٰی ہے۔ (ت)

بزازیّہ میں ہے: تنجس الحوض ثم دخل فیہ ماء کثیر وخرج منہ ایضاً قیل طھر الحوض وان قل الخارج وقیل لاحتی یخرج مثل مافیہ وقیل مثلاہ اوثلثہ امثالہ وقیل یطھر وان لم یخرج شیئ قال ابو یوسف الترجمانی رحمہ اللہ تعالٰی وبہ یفتی-3 اھ | حوض ناپاک ہوگیا پھر اس میں بہت سا پانی داخل ہوگیا اور نکل گیا تو ایک قول ہے کہ حوض پاک ہو گیا خواہ نکلنے والا پانی کم ہی ہو اور ایک قول یہ ہے کہ جب تک اتنا پانی نہ نکلے جتنا کہ حوض میں تھا پاک نہ ہوگا جبکہ ایک قول یہ ہے کہ جب تک حوض کا دو گنا یا تین گنا پانی نہ نکلے پاک نہ ہوگا اور ایک قول یہ ہے کہ پاک ہو جائے گا خواہ کچھ بھی نہ نکلے، یوسف الترجمانی رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ اسی پر فتوٰی ہے۔ (ت)

اقول: (۱) تفرد بشیئین احدہما قید الکثیر فی الماء الداخل وھم قاطبۃ ارسلوہ وقال ش وان قل الداخل-4 اھ وکانہ واللہ تعالٰی اعلم رعایۃ للقول الاخیر اذ یختص بالحوض الکبیر فدل علی کبرہ بدخول الماء الکثیر والاخر زیادۃ | میں کہتا ہوں وہ دو چیزوں میں منفرد ہیں ایک تو داخل ہونے والے پانی میں

کثرت کی قید لگانے میں، جبکہ تمام فقہاء نے یہ قید نہیں لگائی ہے اور "ش" نے فرمایا اگرچہ داخل ہونے والا پانی قلیل ہو اھ اور گویا واللہ تعالیٰ اعلم آخری قول کی رعایت ہے کیونکہ یہ بڑے حوض کے ساتھ خاص ہے

1 حلیہ 2 حلیہ 3 بزازیّہ علی الہندیّہ نوع فی الحیض نورانی کتب خانہ پشاور ۸/۳ 4 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۸

Fatawa Razawiya - Volume II

(Arabic Text): ...double it. They only mention once and thrice; the second is for washing three times, and the first is by analogy with a well, for draining what is in it purifies it. This was stated in 'Al-Badai'. As for doubling, there is no reason for it. Then it was said in 'Al-Hilya', but in 'Az-Zakhirah' before this issue and in the fatwas of the people of Samarkand: [If there is] a large pond where there is no water in summer and humans and animals defecate in it... (He mentioned what we presented from 'Al-Khaniya' and ten other books in the eighth principle). He said: Based on the analogy of the response to this issue, the response to the issue mentioned by the author would also be: if the water that enters first enters onto impure water or an impure place, it is impure. But if it enters onto a pure place and stays there until it becomes ten by ten, then connects with impurity, it is pure. He said: This is a third opinion in the mentioned issue by way of deduction, just as it is possible for the two mentioned opinions to be present as explicit texts. In this issue, which we ourselves cited from 'Az-Zakhirah', also as a deduction. I say: May Allah have mercy on the researcher, no triplication.

(Urdu Text): ...then the entry of abundant water will indicate the largeness of the pond, and the other thing is the excess of doubling. Other jurists mention once and thrice; the second is for triplication (tathlith) in washing, and the first is by analogy with a well, because if everything in the well is removed, the well will become pure. This is in 'Al-Badai', and there is no rational reason for doubling. This. Then it was stated in 'Al-Hilya': However, in 'Az-Zakhirah' before this issue and in the fatwas of the people of Samarkand, it is mentioned that if there is a large pond which dries up in summer and humans and animals defecate and urinate in it (the ruling for it is what we cited in the eighth principle from 'Al-Khaniya' and ten other books). He said, by analogy with the answer to this issue, the issue mentioned by the author will also have a response, which is: if the incoming water first falls on impure water or an impure place, it is impure; but if it falls on a pure place and remains until it becomes ten by ten, and then connects with impurity, it is pure. He said this mentioned issue is a third opinion by way of deduction, while the two mentioned opinions are explicit texts (nass), which we cited from 'Az-Zakhirah' by way of deduction. I say: May Allah have mercy on the researcher, not...

---

1. Hilya Page 409 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द-ए-सानी (खंड II)

(अरबी पाठ): ...दोगुना। वे केवल एक बार और तीन बार का उल्लेख करते हैं; दूसरा धोने में तीन बार (तसलीस) के लिए है, और पहला कुएं पर कयास (अनुमान) के आधार पर है, क्योंकि कुएं से पानी निकाल देने से वह शुद्ध हो जाता है। यह 'अल-बदाइ' में वर्णित है। जहाँ तक दोगुना करने की बात है, उसका कोई कारण नहीं है। फिर 'अल-हलिया' में कहा गया, लेकिन इस मसले से पहले 'अज़-ज़खीरा' में और समरकंद के लोगों के फतवों में है: [यदि कोई] बड़ा तालाब हो जिसमें गर्मियों में पानी न हो और इंसान व जानवर उसमें गंदगी करते हों... (उन्होंने वह उल्लेख किया जो हमने आठवीं असल में 'अल-खानिया' और दस अन्य पुस्तकों से प्रस्तुत किया था)। उन्होंने कहा: इस मसले के जवाब के कयास के आधार पर, लेखक द्वारा बताए गए मसले का जवाब भी यही होगा: यदि प्रवेश करने वाला पानी पहले नापाक पानी या नापाक स्थान पर गिरता है, तो वह नापाक है। लेकिन यदि वह पाक स्थान पर गिरता है और वहाँ तब तक रहता है जब तक कि वह दस बाई दस (दह दर दह) न हो जाए, फिर नापाक से मिलता है, तो वह पाक है। उन्होंने कहा: यह उल्लेखित मसले में तखरीज (निष्कर्ष) के तौर पर तीसरा विचार है, जैसे कि दो उल्लेखित विचार स्पष्ट पाठ (नस्स) के रूप में उपस्थित हो सकते हैं। इस मसले में, जिसे हमने स्वयं 'अज़-ज़खीरा' से तखरीज के रूप में उद्धृत किया है। मैं कहता हूँ: अल्लाह शोधकर्ता पर रहम करे, तीन बार नहीं।

(उर्दू पाठ): ...तो अधिक पानी का प्रवेश तालाब की विशालता को दर्शाएगा, और दूसरी चीज़ दोगुना होने की अधिकता है। अन्य फ़क़ीह एक गुना और तीन गुना का उल्लेख करते हैं; दूसरा धोने में तसलीस (तीन बार धोने) के लिए है, और पहला कुएं पर कयास करते हुए है, क्योंकि कुएं में जो कुछ है यदि उसे निकाल लिया जाए तो कुआं पाक हो जाएगा। 'बदाइ' में यही है, और दोगुना होने का कोई तर्कसंगत कारण मौजूद नहीं है। यह (हज़ा)। फिर 'हलिया' में फ़रमाया: लेकिन 'ज़खीरा' में इस मसले से पहले और समरकंद के लोगों के फ़तवों में है कि अगर कोई बड़ा तालाब ऐसा हो जो गर्मियों में सूख जाता हो और उसमें इंसान और चौपाया पेशाब-पाखाना करते हों (तो उसका हुक्म वह है जो हमने आठवीं असल में 'खानिया' आदि दस किताबों से उद्धृत किया है)। फ़रमाया कि इस मसले के जवाब पर कयास करते हुए लेखक ने जो मसला उल्लेख किया है उसका भी यही जवाब होगा, और वह यह कि अगर दाखिल होने वाला पानी पहले नजीस (नापाक) पानी पर दाखिल होता है या नजीस जगह पर तो वह नजीस है; और अगर पाक पर दाखिल होता है और उसमें ठहरता है यहाँ तक कि वह दह दर दह (दस बाई दस) हो जाए फिर नजीस से मिलता है तो वह पाक है। फ़रमाया कि यह

मसला उल्लेखित निष्कर्ष (तख़रीज) के तौर पर तीसरा कथन है, जबकि दो उल्लेखित कथन इसमें स्पष्ट उल्लेख (नस्स) के तौर पर हैं जिसे हमने 'ज़खीरा' से निष्कर्ष के तौर पर उद्धृत किया है। मैं कहता हूँ अल्लाह मोहक्क़िक़ (शोधकर्ता) पर रहम करे, न कि...

---

1. हलिया पृष्ठ 409 का 711

فتاوٰی رضویہ - جلدثانی

(عربی متن): مثليه وانما يذكرون مثلاً وثلاثاً فالثاني لتثليث الغسل والاول قياساً على البئر فان نزح مافيها لها تطهير افاده في البدائع اما التثنية فلا وجه لها هذا، ثم قال في الحلية لكن في الذخيرة قبل هذه المسألة وفی فتاوی اهل سمر قند غدير كبير لايكون فيه ماء فی الصيف ويروث فيه الناس والدواب (فذكر ما قدمنا عن الخانية وغيرها عشرة كتب فی الاصل الثامن) قال فعلی قياس الجواب فی هذه المسألة يكون الجواب ايضا فی المسألة التی ذكرها المصنف ان كان الماء الذی يدخل اولا يدخل علی ماء نجس اومكان نجس فهو نجس وان كان يدخل علی طاهر ويستقر فيه حتی يصير عشرا فی عشر ثم يتصل بالنجس فهو طاهر قال فهذا قول ثالث فی المسألة المذكورة تخريجاً كما يمكن ان يتأتی القولان المذكوران فيها نصاً فی هذه المسألة التی ذكرناها نحن عن الذخيرة ايضا تخريجاً ١ اه اقول: رحم الله المحقق لا تثليث

(اردو متن): تو کثیر پانی کا داخل ہونا حوض کی بڑائی پر دلالت کرے گا، اور دوسری چیز دگنا ہونے کی زیادتی، اور دوسرے فقہا ایک گنا اور تین گنا کا ذکر کرتے ہیں، تو دوسرا دھونے میں تثلیث کے لئے ہے اور پہلا کنویں پر قیاس کرتے ہوئے ہے، کیونکہ کنویں میں جو کچھ ہے وہ اگر نکال لیا جائے تو کنواں پاک ہو جائیگا، بدائع میں یہی ہے، اور دگنا ہونے کی کوئی معقول وجہ موجود نہیں، ہذا۔ پھر حلیہ میں فرمایا اور لیکن ذخیرہ میں اس مسئلہ سے قبل اور اہل سمرقند کے فتاوٰی میں ہے کہ اگر کوئی بڑا تالاب ایسا ہو جو گرمیوں میں سوکھ جاتا ہو اور اس میں انسان اور چوپائے بول و براز کرتے ہوں (تو اس کا حکم وہ بیان کیا جو ہم نے آٹھویں اصل میں خانیہ وغیرہ دس کتب سے نقل کیا ہے) فرمایا اس مسئلہ کے جواب پر قیاس کرتے ہوئے مصنف نے جو مسئلہ ذکر کیا ہے اس کا بھی جواب ہوگا، اور وہ یہ کہ اگر داخل ہونے والا پانی پہلے نجس پانی پر داخل

ہوتا ہے یا نجس جگہ پر تو وہ نجس ہے اور اگر پاک پر داخل ہوتا ہے اور اس میں ٹھہرتا ہے یہاں تک کہ دہ در دہ ہو جائے پھر نجس سے متصل ہو تو وہ پاک ہے فرمایا یہ مسئلہ مذکورہ بطور تخریج تیسرا قول ہے اور دو مذکور قول اس میں بطور نص ہیں جس کو ہم نے ذخیرہ سے بطور تخریج نقل کیا ہے۔ اھ (ت) میں کہتا ہوں اللہ محقق پر رحم کرے نہ تو

---

1. حلیہ صفحہ 409 من 711

Fatawa Rizwiya | Volume 2

(The text is presented in two columns: Arabic on the left and Urdu translation/ commentary on the right, discussing Islamic legal rulings regarding large water bodies and impurities.)

Neither is it 'Tathlith' (a three-fold division) nor is it 'Takhrij' (deduction). The second point is evident because the aforementioned problem is a textual one: the issue of 'Tathlith' concerns a large basin filled with impurities that then overflows. What you have quoted from 'Al-Zakhira'—referring to a large pond that dries up in summer and in which humans and animals urinate and defecate—what difference is there between these two besides literal phrasing? Thus, neither the analogy is correct nor is the deduction sound. Rather, both opinions mentioned in the text are explicitly stated in 'Al-Zakhira', and the details therein are prescribed in the text.

As for the first point, the reason is that no one can claim that while the water in the basin is 'plentiful' (kathir) before reaching the impurity, it becomes impure upon contact. How can it become impure when it is assumed to be plentiful? This would contradict the consensus (ijma). The details in 'Al-Zakhira' are precisely what is intended in the first opinion. It was not mentioned explicitly because it is already known, just as you remarked here that this fact is understood. When we stated in this and similar cases that the water is pure, it was conditional upon no trace of impurity appearing in it. This condition was omitted due to it being common knowledge. Do not overlook this, lest you wrongly accuse them of error when they are blameless. Therefore, can anyone consider the condition of 'no appearance of trace' as a fourth distinct opinion in this matter?

---

1 Hilya Page 410 of 711

फ़तावा रज़विया | जिल्द सानी

(पाठ दो स्तंभों में प्रस्तुत किया गया है: बाईं ओर अरबी और दाईं ओर उर्दू अनुवाद/भाष्य, जिसमें बड़े जलाशयों और अशुद्धियों के संबंध में इस्लामी कानूनी फैसलों पर चर्चा की गई है।)

यह न तो 'तथलीथ' (तीन-गुना विभाजन) है और न ही 'तख़रीज' (निष्कर्ष)। दूसरा बिंदु स्पष्ट है क्योंकि उपर्युक्त समस्या मूल पाठ की समस्या है: 'तथलीथ' का मुद्दा एक बड़े हौज से संबंधित है जिसमें अशुद्धियाँ भरी हुई हैं और वह फिर भर जाता है। आपने 'अल-ज़ख़ीरा' से जो उद्धृत किया है—एक बड़े तालाब का जिक्र करते हुए जो गर्मियों में सूख जाता है और जिसमें मनुष्य और जानवर मल-मूत्र त्यागते हैं—इन दोनों के बीच शाब्दिक अंतर के अलावा और क्या अंतर है? इस प्रकार, न तो सादृश्य (क़यास) सही है और न ही निष्कर्ष ठोस है। बल्कि, पाठ में उल्लिखित दोनों राय 'अल-ज़ख़ीरा' में स्पष्ट रूप से बताई गई हैं, और उसमें दिए गए विवरण पाठ में निर्धारित हैं।

जहाँ तक पहले बिंदु का सवाल है, कारण यह है कि कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि जब तक हौज में पानी अशुद्धता तक पहुँचने से पहले 'प्रचुर' (कसीर) है, वह संपर्क होने पर अशुद्ध हो जाता है। वह अशुद्ध कैसे हो सकता है जब उसे प्रचुर माना गया है? यह सर्वसम्मति (इज्मा) के विपरीत होगा। 'अल-ज़ख़ीरा' में दिए गए विवरण वही हैं जो पहली राय में अभिप्रेत हैं। इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया क्योंकि यह पहले से ही ज्ञात है, जैसा कि आपने यहाँ टिप्पणी की है कि यह तथ्य पहले से समझा गया है। जब हमने इस और इसी तरह के मामलों में कहा कि पानी शुद्ध है, तो वह इसमें अशुद्धता का कोई प्रभाव न दिखने की शर्त पर था। यह शर्त सामान्य ज्ञान होने के कारण छोड़ दी गई थी। इसे नज़रअंदाज़ न करें, कहीं ऐसा न हो कि आप उन्हें गलत तरीके से दोषी ठहराएं जबकि वे बेगुनाह हैं। इसलिए, क्या कोई इस मामले में 'प्रभाव न दिखने' की शर्त को चौथी अलग राय मान सकता है?

---

1 हिल्या पृष्ठ 410 का 711

ولا تخریج (۱) اما الثانی فظاھر فان المسألة المذکورة مسألة المتن حوض کبیر وفیہ نجاسات فامتلأ والتی اوردتموھا عن الذخیرة غدیر کبیر لایکون فیہ ماء فی الصیف ویروث فیہ الناس والدواب وای فرق بینھما الا فی اللفظ فلا قیاس ولا تخریج بل القولان المذکوران فی المتن منصوص علیھما فی مسألة الذخیرة والتفصیل المذکور فیھا منصوص علیه فی مسألة المتن، (۲) واما الاول فلانه لیس لاحد ان یقول الماء وان کثر فی بطن الحوض قبل وصوله الی النجس یتنجس حین یصل الیہ وکیف یتنجس وقد فرض کثیرا ھذا خلاف الاجماع فالتفصیل المذکور فی الذخیرة ھو المراد قطعاً فی القول الاول وانما طووا ذکرہ للعلم به کما قلتم ھھنا ان من المعلوم حیث قلنا فی ھذہ المسألة او امثالھا ان الماء طاھر فھو مشروط بکونه لا اثر للنجاسة فیہ فترک التقیید به فی ذلک للعلم به وایاک والذھول عنه فیذھبن بک الوھم الی تخطئتھم فی ذلک وھم من ذلک براء اھـ (۳) فھل یسوغ لاحد ان یجعل التقیید بعدم ظھور الاثر قولا رابعاً فی المسألة وقد اشرنا الیه بعد ذکر الضابط الثالث فماثم الا قولان التفصیل المذکور

تثلیث ہے اور نہ تخریج، دوسرا تو ظاہر ہے کیونکہ مسئلہ مذکورہ متن کا مسئلہ ہے تثلیث کہ ایک بڑا حوض ہو جس میں نجاستیں ہوں اور بھر جائے، اور جس کو تم نے ذخیرہ سے نقل کیا ہے یعنی بڑا تالاب جو گرمیوں میں خشک ہو جاتا ہے اور اس میں انسان اور جانور بول و براز کرتے ہوں، ان دونوں میں لفظی فرق کے علاوہ اور کیا فرق ہے، تو نہ قیاس ٹھیک ہے اور نہ تخریج درست ہے بلکہ دونوں قول جو متن میں مذکور ہیں اور ان کو ذخیرہ میں صراحت سے ذکر کیا ہے اور اس میں جو تفصیل ہے وہ متن میں منصوص ہے، لیکن پہلا تو اس کی وجہ یہ ہے کہ کوئی شخص یہ نہیں کہہ سکتا جبکہ پانی حوض میں کثیر ہو نجس تک پہنچنے سے پہلے، تو وہ نجس ہو جائیگا جب وہ نجاست تک پہنچے گا، اور نجس کیسے ہوگا حالانکہ اس کو کثیر فرض کیا گیا ہے یہ

اجماع کے خلاف ہے جو تفصیل ذخیرہ میں ہے وہی قطعاً مراد ہے پہلے قول میں اور اس کو ذکر اس لئے نہیں کیا کہ وہ پہلے ہی معلوم ہے، جیسا کہ تم نے یہاں کہا ہے کہ یہ بات معلوم ہے جبکہ ہم نے اس مسئلہ میں اور اس جیسے مسائل میں کہا کہ پانی پاک ہے، مگر اس میں یہ شرط ہے کہ نجاست کا اثر اس میں ظاہر نہ ہو تو اس قید کو معلوم ہونے کی بنا پر چھوڑ دیا گیا ہے، اس سے آپ غافل نہ ہوں ورنہ آپ ان کو خطاکار قرار دیں گے حالانکہ وہ بے قصور ہیں اھ تو کیا کوئی اثر کے ظاہر نہ ہونے کی قید لگانے کو چوتھا قول قرار دے سکتا ہے۔

In the ten books and the absolute application of purification, and with Allah is the guidance. | And we pointed towards it after the third rule, so there are only two sayings there. The aforementioned detail is in ten books and the application is of purification. (T)

Then I say: and from Him I seek help (I say while seeking help from Allah) there are two discussions here:

Discussion one: We have stated above that the flow of water is nothing but its movement according to its natural inclination in space, and in unlimited unintentional space and limited basin (tank), the rain or floodwater etc. that has come flowing from above and entered the basin, that water is definitely flowing until it goes and stops at the opposite edge.

Firstly: Both definitions of 'flowing (jari)' which are more famous and manifest, apply to it. It will carry away not just a straw but a thick piece of wood, and undoubtedly as long as its flow does not cease, it will be called flowing. No one among the common folk can say that the flood stopped as soon as it reached the edge of the basin and its flow ended until it overflows. If it stops at the first edge, then who would fill the basin and how would it overflow?

Secondly: If a flood stream falls into a flowing canal, now it should be that the canal remains no longer flowing until it overflows because the consideration is of the surface of the water, and now the surface of the water is this flood which is considered stagnant as soon as it enters the hollow of the canal.

Thirdly: Rainwater (1) that flows on the roof and falls from the spouts and flows in the courtyard is definitely 'flowing water' even if it has not yet exited through the house drain. To fill the house up to the roof and make it overflow over the walls would be like doomsday.

It is in 'Bada'i':

If the impurities are scattered on the roof and are not near the spout, Isa bin Aban (i.e., the student of Muhammad, may Allah Almighty have mercy on both) mentioned that it does not become impure as long as it does not change [in color, taste, or smell], and its ruling is the ruling of flowing water. And Muhammad said that if the impurity is on one side of the roof or two sides, the water does not become impure

and performing ablution with it is permissible, and if it is on three sides, the water becomes impure considering the majority. | If the impurities are scattered on the roof and are not near the spout, Isa bin Aban (meaning the student of Muhammad) mentioned that it will not be impure as long as it does not change, and its ruling is like that of flowing water, and Muhammad said that if the impurity is on one side or two sides of the roof, the water will not be impure and ablution from it is permissible, and if the impurity is on three edges, then considering the majority, the water becomes impure.

दस किताबों में और शुद्धि का पूर्ण अनुप्रयोग, और अल्लाह के साथ ही मार्गदर्शन है। | हमने तीसरे नियम के बाद इसकी ओर संकेत किया है, तो वहाँ केवल दो ही कथन हैं। उपरोक्त विवरण दसों किताबों में है और शुद्धि का अनुप्रयोग है। (त)

फिर मैं कहता हूँ: और उसी से मैं मदद चाहता हूँ (अल्लाह से मदद माँगते हुए मैं कहता हूँ) यहाँ दो चर्चाएँ हैं:

पहली चर्चा: हम ऊपर बता चुके हैं कि पानी का प्रवाह और कुछ नहीं बल्कि अंतरिक्ष में अपने प्राकृतिक झुकाव के अनुसार उसका बहना है, और असीमित अनपेक्षित स्थान और सीमित हौज (टैंक) में भी वर्षा या बाढ़ आदि का पानी जो ऊपर से बहता हुआ आया और हौज के भीतर प्रवेश किया, वह निश्चित रूप से बहता हुआ पानी है जब तक कि वह सामने के किनारे पर जाकर रुक न जाए।

प्रथम: 'प्रवाहित (जारी)' की दोनों परिभाषाएँ जो अधिक प्रसिद्ध और स्पष्ट हैं, इस पर लागू होती हैं। वह न केवल एक तिनके को बल्कि लकड़ी के एक मोटे टुकड़े को भी बहा ले जाएगा, और निस्संदेह जब तक उसका बहाव नहीं रुकता, उसे बहता हुआ ही कहा जाएगा। आम लोगों में से कोई यह नहीं कह सकता कि बाढ़ हौज के किनारे पहुँचते ही थम गई और अब इसमें प्रवाह नहीं रहा जब तक कि वह भर कर उफन न जाए। यदि यह पहले किनारे पर ही रुक जाए, तो हौज को कौन भरेगा और वह कैसे उफनेगा।

द्वितीय: यदि एक बहती नहर में बाढ़ की धारा आकर गिरती है, तो अब यह होना चाहिए कि वह नहर बहती हुई न रहे जब तक कि वह भर कर उफन न जाए क्योंकि विचार पानी की सतह का है, और अब पानी की सतह यह बाढ़ है जिसे नहर के भीतर प्रवेश करते ही स्थिर मान लिया गया।

तृतीय: वर्षा का पानी (1) जो छत पर बहता है और परनालों से गिरकर घर के आँगन में बहता है, वह निश्चित रूप से 'बहता पानी' है, भले ही वह अभी घर की नाली से बाहर न निकला हो। घर को छत तक लबालब भरकर दीवारों के ऊपर से उफनाना तो कयामत (महाप्रलय) जैसा होगा।

'बदाए' (Bada'i) में है:

यदि अशुद्धियाँ छत पर बिखरी हुई हों और परनाले के पास न हों, तो ईसा बिन अबान ने उल्लेख किया (यानी मुहम्मद के शिष्य ने, अल्लाह उन दोनों पर कृपा करे) कि वह तब तक अशुद्ध नहीं होगा जब तक कि वह बदल न जाए, और उसका नियम बहते पानी का नियम है। और मुहम्मद ने कहा कि यदि अशुद्धि छत के एक तरफ या दो तरफ हो, तो पानी अशुद्ध नहीं होता है और उससे वज़ू करना जायज़ है, और यदि वह तीन तरफ हो, तो बहुमत पर विचार करते हुए पानी अशुद्ध हो जाता है। | यदि अशुद्धियाँ छत पर बिखरी हुई हों और वे परनाले के पास न हों, तो ईसा बिन अबान ने उल्लेख किया (यानी मुहम्मद के शिष्य ने) कि वह तब तक अशुद्ध नहीं होगा जब तक कि वह बदल न जाए और उसका नियम बहते पानी की तरह है और मुहम्मद ने कहा कि यदि अशुद्धि छत के एक तरफ या दो तरफ हो तो पानी नापाक नहीं होगा और उससे वज़ू करना जायज़ है और अगर अशुद्धि तीन किनारों पर हो तो बहुमत का विचार करते हुए पानी अशुद्ध हो जाता है।

فی الکتب العشرۃ واطلاق الطھارۃ وباللہ التوفیق۔ | اور ہم نے تیسرے ضابطے کے بعد اس کی طرف اشارہ کیا ہے، تو وہاں صرف دو ہی قول ہیں مذکورہ تفصیل دسوں کتب میں ہے اور طہارت کا اطلاق ہے۔ (ت)

ثم اقول : و بہ استعین (اللہ سے مدد چاہتے ہوئے میں کہتا ہوں) یہاں دو بحثیں ہیں :

بحث اول ہم اوپر بیان کر آئے کہ جریان آب نہیں مگر فضا میں اس کا اپنے میل طبعی سے رواں ہونا اور فضائے غیر محدود غیر مقصود اور محدود بطن حوض میں بھی موجود بارش یا سیل وغیرہ کا پانی کہ اوپر سے بہتا ہوا آیا اور بطن حوض میں داخل ہوا وہ قطعاً آب بھی بہہ رہا ہے جب تک کنارہ مقابل پر جا کر رک نہ جائے۔

اولاً : جاری کی دونوں تعریفیں اشہر واظہر اس پر صادق ہیں وہ ایک تنکا کیا ایک گھٹا بھالے جائیگا اور بے شک جب تک اس کا بہاؤ نہ ٹھہرے بہتا ہی کہا جائیگا اہل عرف میں کوئی نہیں کہہ سکتا کہ سیلاب حوض کے کنارے تک پہنچتے ہی تھم گیا اب اس میں روانی نہ رہی جب تک بھر کر ابال نہ دے پہلے کنارے پر تھم جائے تو حوض کو بھرے کون اور ابالے کیوں کر۔

ثانیاً: نہر جاری میں سیلاب کی دھار آکر گری اب چاہئے کہ وہ نہر جاری نہ رہے جب تک بھر کر ابل نہ جائے کہ اعتبار روئے آب کا ہے اور اب روئے آب یہ سیلاب ہے جسے جوف نہر میں داخل ہوتے ہی ساکن مان لیا گیا۔

ثالثاً: مینہ کا پانی (۱) کہ چھت پر بہتا پر نالوں سے گرتا صحن خانہ میں رواں ہو قطعاً آب جاری ہے اگر چہ ابھی مکان کی نالی سے بھی نہ نکلے مکان کو چھت تک لبریز کرکے دیواروں پر سے ابال دینا تو قیامت ہے،

بدائع میں ہے :

ان كانت الانجاس متفرقة على السطح ولم تكن عند الميزاب ذكر عيسى بن ابان (اي تلميذ محمد رحمهما الله تعالىٰ) انه لايصير نجسا مالم يتغير وحكمه حكم الماء الجارى وقال محمد ان كانت النجاسة في جانب من السطح اوجانبين لاينجس الماء ويجوز التوضوء به وان كانت في ثلثة جوانب ينجس اعتباراً | اگر نجاستیں چھت پر پراگندہ ہوں اور یہ پر نالہ کے پاس نہ ہوں، تو عیسی بن ابان نے ذکر کیا (یعنی محمد کے شاگرد نے) کہ وہ نجس نہ ہوگا جب تک کہ متغیر نہ ہو اور اس کا حکم جاری پانی کی طرح ہے اور محمد نے فرمایا کہ اگر نجاست چھت کی ایک جانب یا دو جانب ہو تو پانی ناپاک نہ ہوگا اور اس سے وضو جائز ہے اور اگر نجاست تین کناروں پر ہو تو غالب کا اعتبار کرتے ہوئے پانی نجس ہو جاتا ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 2

It will become impure etc. (T)

It is stated in [Fatawa] Hindiyya:

[Arabic text:] If there are feces on the roof and it rains, and then the drainpipe flows; if the impurity is near the drainpipe and all the water, or most of it, or half of it meets the feces, then it is impure, otherwise it is pure. If the impurity is at scattered places on the roof and not at the head of the drainpipe, it will not be impure, and its ruling is like that of flowing water. This is also mentioned in Siraj al-Wahaj. In some fatwas, it is mentioned that our scholars said as long as it rains, it has the ruling of flowing water, even if this water touches feces lying on the roof and then touches clothes, the clothes will not become impure, unless the rain water changes [in color, smell, or taste]. If rain reaches the ceiling and there is impurity on the ceiling, and it leaks and the water touches clothes, the correct view is that if the rain has not stopped yet, then the water that flowed from the ceiling is pure, as mentioned in al-Muhit. In al-Atabiyya, it is stated: as long as it is not changed, and similarly in al-Tatarkhaniyya. But if the rain stops and something flows from the ceiling, then what flowed is impure, as mentioned in al-Muhit. In al-Nawazil, it is stated that our later scholars said this is the chosen view.

[Urdu text:] If there is feces on the roof and it rains, then if the drainpipe flows and the impurity is near the drainpipe and all the water, or most, or half of it comes after touching the feces, it is impure, otherwise it is pure. And if the impurity is in scattered places on the roof and not at the mouth of the drainpipe, it will not be impure and its ruling is like that of flowing water. Similarly, it is in Siraj al-Wahaj, and in some fatwas it is mentioned that our masters stated that as long as it is raining, it is under the ruling of flowing water, to the extent that even if this water comes after touching the feces lying on the roof and then touches the clothes, the clothes will not become impure, yes, if the rain becomes changed [in properties]. When rain reaches the roof and there is impurity on the roof and then the roof starts leaking and this water touches any clothing, then the correct view is that if the rain has not stopped yet, then the water that flowed from the roof is pure, as it is in al-Muhit. And in al-Atabiyya it is stated: as long as it is not changed, and similarly in Tatar Khaniyya. And if after the rain stops, water leaks from the roof, then what flowed is impure, as it is in

al-Muhit. And in al-Nawazil it is mentioned that our later masters stated that this is the chosen [opinion].

1. Bada'i al-Sana'i, section on explaining the quantity, H.M. Saeed Company Karachi 1/11 Page 412 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

नापाक हो जाएगा अह (त)

हंदिया में है:

[अरबी पाठ:] अगर छत पर पाखाना पड़ा हो और बारिश हो जाए, फिर परनाला बहने लगे; यदि अशुद्धि परनाले के पास हो और सारा पानी, या उसका अधिकांश, या आधा हिस्सा पाखाने के संपर्क में आता है, तो वह अशुद्ध है, अन्यथा वह शुद्ध है। यदि अशुद्धि छत पर विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई है और परनाले के मुहाने पर नहीं है, तो वह अशुद्ध नहीं होगा, और उसका नियम बहते हुए पानी के समान है। सिराज अल-वहाज में भी यही उल्लेख है। कुछ फतवों में उल्लेख है कि हमारे आचार्यों ने कहा कि जब तक वर्षा हो रही है, तब तक उस पर बहते पानी का नियम लागू होता है, यहाँ तक कि यदि यह पानी छत पर पड़ी गंदगी को छूकर कपड़ों पर गिर जाए, तो कपड़े अशुद्ध नहीं होंगे, जब तक कि बारिश का पानी (रंग, स्वाद या गंध में) बदल न जाए। यदि बारिश छत पर पहुँचती है जहाँ गंदगी है, जिससे रिसाव होता है और पानी कपड़ों को छूता है, तो सही मत यह है कि यदि बारिश अभी तक नहीं रुकी है, तो छत से बहने वाला पानी शुद्ध है, जैसा कि अल-मुहीत में कहा गया है। अताबिया में कहा गया है: जब तक वह परिवर्तित न हो, और इसी तरह तातार खानिया में भी। लेकिन यदि बारिश रुक जाती है और फिर छत से कुछ बहता है, तो वह अशुद्ध है, जैसा कि अल-मुहीत में उल्लेख है। अल-नवाज़िल में कहा गया है कि हमारे परवर्ती आचार्यों ने इसे ही चुना हुआ मत बताया है।

[उर्दू पाठ:] अगर छत पर पाखाना पड़ा हो और बारिश हो जाए, फिर परनाला बहने लगे, तो अगर गंदगी परनाले के पास हो और सारा पानी, या उसका अधिकांश, या आधा हिस्सा पाखाने से लगकर आ रहा हो, तो वह नापाक है, वरना पाक है। और अगर गंदगी छत पर अलग-अलग जगहों पर हो और परनाले के मुहाने पर न हो, तो वह नापाक नहीं होगा और उसका हुक्म बहते हुए पानी जैसा है। इसी तरह सिराजुल वहाज में है। और कुछ फ़तावा में है कि हमारे मशाइख़ (बुज़ुर्गों) ने फ़रमाया कि जब तक बारिश हो रही है, वह बहते पानी के हुक्म में है, यहाँ तक कि अगर यह पानी छत पर पड़े हुए पाखाने से लगकर भी आए और फिर कपड़ों को लग जाए, तो कपड़े नापाक न होंगे, हाँ अगर बारिश मुतग़य्यर (बदल) जाए। जब बारिश छत पर पहुँचे और छत पर गलाज़त (गंदगी) हो और फिर छत टपकने लगे और यह पानी किसी कपड़े पर लग जाए, तो सही यह है कि अगर बारिश अभी थमी

नहीं है, तो जो पानी छत से बहा वह पाक है, जैसा कि अल-मुहीत में है। और अताबिया में है कि जब तक मुतग़ाय्यर न हो, और इसी तरह तातार ख़ानिया में भी है। और अगर बारिश बंद होने के बाद छत से पानी टपके, तो जो बहा है वह नापाक है, जैसा कि अल-मुहीत में है। और नवाज़िल में है कि हमारे मुताख़िरीन मशाइख़ (बाद के बुज़ुर्गों) ने फ़रमाया कि यही मुख्तार (चुना हुआ मत) है।

1. बदाइ-उस-सनाइ, फ़स्ल फ़ी बयानुल मिक़्दार, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/11 पृष्ठ 412/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

ناپاک ہو جائیگا اھ (ت)

ہندیہ میں ہے:

[عربی عبارت:] لوکان علی السطح عذرة فوقع علیه المطر فسال المیزاب ان کانت النجاسة عند المیزاب وکان الماء کله یلاقی العذرة اوا کثره اونصفه فهو نجس والا فهو طاهر وان کانت العذرة علی السطح فی مواضع متفرقة ولم تکن علی رأس المیزاب لایکون نجسا وحکمه حکم الماء الجاری کذا فی السراج الوهاج، وفی(1)بعض الفتاوی قال مشائخنا المطر مادام یمطر فله حکم الجریان حتی لو اصاب العذرات علی السطح ثم اصاب ثوبا لا یتنجس الا ان(2)یتغیر المطر اذا اصاب السقف وفی السقف نجاسة فوکف واصاب الماء ثوبا فالصحیح انه اذا کان المطر لم ینقطع بعد فما سال من السقف طاهر هکذا فی المحیط وفی العتابیة اذا لم یکن متغیرا کذا فی التاترخانیة(3) واما اذا انقطع المطر وسال من السقف شیئ فما سال فهو نجس کذا فی المحیط وفی النوازل قال مشائخنا المتأخرون هو المختار کذا

[اردو عبارت:] اگر چھت پر پاخانہ پڑا ہو اور بارش ہو جائے پھر پر نالہ بہے تو اگر نجاست پر نالہ کے پاس ہو اور کل پانی پاخانہ سے لگ کر آرہا ہو یا اکثر یا نصف تو وہ ناپاک ہے ورنہ پاک ہے اور اگر نجاست چھت پر متفرق جگہوں پر ہو اور پر نالہ کے سر پر نہ ہو تو ناپاک نہ ہوگا اور اس کا حکم جاری پانی کا سا ہے۔ اسی طرح سراج الوہاج میں ہے، اور بعض فتاوی میں ہے کہ ہمارے مشائخ نے فرمایا اگر بارش ہورہی ہو تو جاری پانی کے حکم میں ہے یہاں تک کہ اگر یہ پانی چھت پر پڑے ہوئے پاخانہ سے لگ کر بھی آئے اور پھر کپڑوں کو لگ جائے تو کپڑے ناپاک نہ ہوں گے، ہاں اگر بارش متغیر ہو جائے جبکہ چھت پر پہنچے اور چھت پر نجاست ہو اور پھر

چھت ٹپکنے لگے اور یہ پانی کسی کپڑے پر لگ جائے تو صحیح یہ ہے کہ اگر بارش ابھی منقطع نہیں ہوئی ہے تو جو پانی چھت سے بہاوہ پاک ہے ہکذا فی المحیط اور عتابیہ میں ہے کہ جبکہ متغیر نہ ہو، اور اسی طرح تاتار خانیہ میں ہے اور اگر بارش بند ہونے کے بعد چھت سے پانی ٹپکے تو جو بہا ہے وہ ناپاک ہے کذا فی المحیط، اور نواز ل میں ہے کہ ہمارے متاخر مشائخ نے فرمایا یہی

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان المقدار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱ صفحہ 412 از 711

Volume Two Fatawa Razawiyya

[Table/Box 1] Left Column (Arabic): ...in Al-Tatar-khaniya, 1st AH. Right Column (Urdu): Selected, as in Al-Tatar-khaniya. (T) Left Column (Arabic): I say: Flowing from the roof means dripping, as mentioned before. As for what flows from the gutter, it is certainly 'flowing' (jari), even if the rain has stopped, as we mentioned before. Right Column (Urdu): I say: Flowing from the roof means dripping from the roof as previously stated. And what flows from the drainpipe is definitely 'flowing' water, whether the rain has ceased or not. (T)

In summary, it is not apparent to deny the flow of incoming water within the basin. However, when it reaches the opposite boundary where it stops, or its movement reaches a point where it no longer advances but rises upwards, this movement will not be natural but forced and contrary to its nature. At that time, the flow will surely cease.

Second Discussion: For the purification of impure (najis) water, is it necessary for it to become 'flowing' by mixing with pure (tahir) water, or is the arrival of pure flowing water upon it sufficient? The first view is narrated from the text of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him).

[Table/Box 2] Left Column (Arabic): In Radd al-Muhtar, from Jami' al-Rumuz, from Al-Timirtashi, from Imam Muhammad: Liquid substances like water, molasses, and others; their purification is achieved by making them flow while mixed with their own kind. Right Column (Urdu): And in Radd al-Muhtar from Jami' al-Rumuz, from Al-Timirtashi, from Muhammad: That flowing substances like water and molasses etc., their purification is achieved by mixing them with their own kind and making them flow. (T)

I say: Supporting this is bringing it under the widely circulated saying "One part of flowing water purifies the other" (that some flowing water purifies another water. T).

[Table/Box 3] Left Column (Arabic): For when they flow mixed together, some of the flow is pure and some is impure, so the first purifies the latter. This is unlike when the impure water does not flow. Support for the second view can be found in what we previously mentioned in the Fourth Principle from Al-Hilyah, from Al-Muhit al-Radawi, that when flowing water joined it, it became 'flowing' in legal ruling. AH. However, he mentioned it regarding the condition of exiting from the other side, even if in small quantity. Right Column (Urdu): Because when they flow mixed together, some of the

flow will be pure and some impure, so the first will purify the second. This is contrary to the case where the impurity was not flowing. For the second point, support can be drawn from what we cited in the Fourth Principle from Hilyah via Muhit-e-Razwi that when flowing water mixed with it, it came under the ruling of flowing water. AH. But they mentioned it where they set the condition of exiting from the other side, even if it is a small amount.

[Footnotes] 1. Fatawa Hindiyya, First Chapter on what is permissible, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/17. 2. Radd al-Muhtar, Topic: The basin is purified by mere flow, Mustafa al-Babi Egypt, 1/124. 3. Hilyah.

जिल्द सानी (खंड दो) फ़तावा रज़विया

[कोषठक 1] बायाँ स्तंभ (अरबी): ...अल-ततारख़ानिया में, 1 हिजरी। दायाँ स्तंभ (उर्दू): मुख़्तार है, जैसा कि अल-ततारख़ानिया में है। (त) बायाँ स्तंभ (अरबी): मैं कहता हूँ: छत से बहने का अर्थ है टपकना, जैसा कि पहले बताया गया। जहाँ तक परनाले से बहने वाले पानी का सवाल है, वह निश्चित रूप से 'जारी' (प्रवाहमान) है, चाहे बारिश रुक गई हो, जैसा कि हमने पहले ज़िक्र किया है। दायाँ स्तंभ (उर्दू): मैं कहता हूँ कि छत से बहने का मतलब छत से टपकना है जैसा कि गुज़रा और जो परनाले से बहता है वह निश्चित रूप से 'जारी' है चाहे बारिश रुकी हुई हो। (त)

सारांश यह है कि आने वाले पानी का हौज (कुंड) के भीतर प्रवाहित होने से इनकार करना ज़ाहिर नहीं है। हाँ, जब वह विपरीत सीमा पर पहुँचता है जहाँ वह रुक जाता है या गति यहाँ तक पहुँच जाती है कि वह आगे नहीं बढ़ता बल्कि ऊपर चढ़ता है, तो यह गति स्वाभाविक नहीं होगी बल्कि प्रकृति के विरुद्ध बलात् होगी। उस समय बहाव निश्चित रूप से समाप्त हो जाएगा।

दूसरी चर्चा: नापाक पानी को शुद्ध करने के लिए क्या इसे पाक पानी के साथ मिलकर 'जारी' होना आवश्यक है, या इस पर पाक 'जारी' पानी का आना पर्याप्त है? पहली राय इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के मूल पाठ से वर्णित है।

[कोषठक 2] बायाँ स्तंभ (अरबी): रद अल-मुह्तार में, जामि अल-रुमुज़ से, अल-तिमिरताशी से, इमाम मुहम्मद से: बहने वाली चीज़ें जैसे पानी, शीरा और अन्य; उनकी शुद्धि उन्हें उनकी अपनी किस्म के साथ मिलाकर प्रवाहित करने से प्राप्त होती है। दायाँ स्तंभ (उर्दू): और रद अल-मुह्तार में जामि अल-रुमुज़ से तिमिरताशी के हवाले से इमाम मुहम्मद से है: कि बहने वाली चीज़ें जैसे पानी और शीरा वगैरह, उनकी पाकी उन्हें उनकी अपनी ही जिन्स (किस्म) के साथ मिलाकर जारी कर देने से हासिल होती है। (त)

मैं कहता हूँ: और इसी का समर्थक वह प्रसिद्ध कहावत है "बहते पानी का एक हिस्सा दूसरे को पाक कर देता है" (कि कुछ बहता पानी दूसरे पानी को शुद्ध कर देता है। त) के तहत लाना है।

[कोषठक 3] बायाँ स्तंभ (अरबी): क्योंकि जब वे मिश्रित होकर बहते हैं, तो बहाव का कुछ हिस्सा शुद्ध होता है और कुछ अशुद्ध, इसलिए पहला दूसरे को शुद्ध कर देता है। यह उस स्थिति के विपरीत है जब अशुद्ध पानी प्रवाहित नहीं होता है। दूसरे दृष्टिकोण के लिए समर्थन उस चीज़ में पाया जा सकता है जिसका हमने चौथे सिद्धांत में 'अल-हिल्या' से, 'अल-मुहीत अल-रज़वी' के माध्यम से

उल्लेख किया है, कि जब बहता पानी इसमें शामिल हो गया, तो वह कानूनी व्यवस्था में 'प्रवाहमान' (जारी) हो गया। लेकिन उन्होंने इसका उल्लेख वहाँ किया है जहाँ दूसरी तरफ से बाहर निकलने की शर्त लगाई गई है, भले ही वह कम मात्रा में हो। दायाँ स्तंभ (उर्दू): क्योंकि जब वे दोनों मिलकर बहें तो कुछ जारी पाक और कुछ नापाक होगा तो पहला दूसरे को पाक कर देगा। इसके विपरीत उस सूरत के जबकि नजिस (अशुद्ध) जारी न हो और दूसरे के लिए जो हमने चौथी असल (सिद्धांत) में हिल्या से मुहीत-ए-रज़वी से नक़ल किया है, उससे तर्क लिया जा सकता है कि जब जारी पानी इसमें मिल गया तो वह जारी के हुक्म में हो गया। अहा। लेकिन उन्होंने इसका ज़िक्र वहाँ किया है जहाँ दूसरी तरफ से निकलने की शर्त लगाई है, चाहे वह कम ही क्यों न हो।

[फुटनोट्स] 1. फ़तावा हिन्दिया, प्रथम अध्याय उन चीज़ों पर जो जायज़ हैं, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/17। 2. रद अल-मुह्तार, विषय: हौज महज़ बहाव से पाक हो जाता है, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/124। 3. हिल्या।

ی التتارخانیۃ ۱ھ | مختار ہے کذا فی التتارخانیہ اھ (ت) اقول: سال من السقف ای وکف کما قدم اما | میں کہتا ہوں چھت سے بہنے کا مطلب چھت سے ٹپکنا ہے السائل من المیزاب فجار قطعاً وان وقف المطر | جیسا کہ گزرا اور جو پرنالے سے بہتا ہے وہ قطعاً جاری ہے کما قدمنا۔ | خواہ بارش ٹھہری ہوئی ہو۔ (ت)

بالجملہ آنے والے پانی کے بطن حوض میں جاری ہونے سے انکار ظاہر نہیں، ہاں جب حد مقابل پر پہنچے جہاں جا کر رک جائیگا یا تحریک پہنچی تو آگے نہ بڑھے گا بلکہ اوپر چڑھے گا یہ حرکت طبعی نہ ہوگی بلکہ قسری خلاف طبع تو اس وقت بیشک جریان جاتا رہے گا۔

بحث دوم: آبِ نجس کی تطہیر کو آبِ طاہر سے مل کر اس کا جاری ہونا درکار ہے یا آبِ طاہر جاری کا اس پر آنا کافی اول نص محرر المذہب امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے منقول ہے،

فی ردالمحتار عن جامع الرموز عن التمرتاشی | اور ردالمحتار میں جامع الرموز سے تمرتاشی سے محمد سے عن محمد المائع کالماء والدبس وغیرہما | ہے۔ کہ بہنے والا جیسے پانی اور شیرہ وغیرہ اس کی طہارت اس طہارتہ باجرائہ مع جنسہ مختلطاً بہ ۲۔ | کو اسی کی جنس کے ساتھ ملا کر جاری کر دینے سے حاصل ہوتی ہے۔ (ت)

اقول: اور اسی کے مؤید ہے اسے قول دائر وسائر الماء الجاری یطہر بعضہ بعضاً (کہ بعض جاری پانی بعض دوسرے پانی کو پاک کر دیتا ہے۔ ت) کے تحت میں لانا،

فانھما اذا جریا مختلطین کان بعض الجاری | کیونکہ وہ دونوں جب مل کر بہیں تو بعض جاری پاک اور طاہرا وبعضہ نجسا فیطھر الاول الآخر بخلاف | بعض نجس ہوگا تو پہلا دوسرے کو پاک کر

دیگا۔ بخلاف اس مااذا لم یجر النجس وقد یمکن ان یستانس | صورت کے جبکہ نجس جاری نہ ہوا اور دوسرے کیلئے جو ہم نے للثانی بما قدمنا فی الاصل الرابع عن الحلیۃ | چوتھی اصل میں حلیہ سے محیطِ رضوی سے نقل کیا ہے عن المحیط الرضوی ان الماء الجاری لما اتصل | استدلال ہوسکتا ہے کہ جب جاری پانی اس میں مل گیا تو بہ صار فی الحکم جاریاً ۳ اھ لکنہ ذکرہ | جاری کے حکم میں ہوگا اھ لیکن اس کا تذکرہ انہوں نے وہاں فی اشتراط الخروج من الجانب الآخر وان قل | کیا ہے جہاں دوسری جانب سے نکل جانے کی شرط لگائی ہے خواہ کم ہی ہو

۱۔ فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فیما یجوز نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۱۷ ۲۔ ردالمحتار مطلب یطہر الحوض بمجرد الجریان مصطفٰی البابی مصر ۱/۱۲۴ ۳۔ حلیہ

| Arabic: The intent of 'continuity' is in the flow, and it is known that only a part is flowing, not all that is in it. A ruling of purity is applied to the whole, hence it was said that it has come under the ruling of flowing water, so understand. | Urdu: The intent of 'continuity' is in the flow, and it is known that only a part is flowing, not all of it. A ruling of purity for the whole will be applied, and for this reason, it was stated that it has come under the ruling of flowing water. (T) |

In the humble view of this faqir, the origin of the disagreement is this: some scholars observed that incoming new water, while flowing, mixed with this impure water, and thus they ruled it pure. Then, if the impurity was non-visible or visible but had been removed, it is clear that according to them, all the water should remain pure, even if the pool is small, because the condition of a 'large quantity' (kathir) is not required for flowing water. Furthermore, when flowing water encounters non-visible impurity, it annihilates it, as we have established in the Tenth Principle (as we researched in the Tenth Principle. T). So after stopping, although it remains in a small place, the impurity itself is non-existent. Yes, for remaining visible impurity, a large space is necessarily required so that at the time of stopping, there is no recurrence of impurity due to its abundance. The majority of scholars held the view that although the incoming water is flowing, it did not cause the impure water to flow because it was stagnant at the bottom of the pool. Its stagnation was clear evidence that there was no room for it to move forward. Therefore, the incoming water will not push it forward but will instead rise over it, and thus 'flow' (ijra) will not occur, which is necessary for its purification. Unless the pool fills up; until then, everything is impure. Now, whatever overflows will be pure, as there is now ample space for it to move forward and descend. If it is said: granted that the flow of impure water does not occur at the bottom of the pool, but 'washing' (ghusl) will occur because the flowing water comes and covers all its parts.

I say firstly: Washing water is not a practice known from Sharia except by mixing it with pure water and making it flow.

Secondly: If washing occurs, it will only be for the surface above the impure water, and it is not a solid (1) thing where the necessity of washing the surface stands in place of washing the whole.

| Arabic: And this is a benefit extracted by the humble one from what is in Fath al-Qadir regarding the explanation of the school of the two companions: that (2) if the

rennet is solid, it becomes pure by washing, etc., i.e., when taken from the stomach of a dead kid (baby goat). | Urdu: This benefit has been extracted by this faqir from where the school of the two companions is mentioned in Fath al-Qadir. I have inferred that if the milk is dry, it will become pure by washing, i.e., if it was taken from the stomach of a dead baby goat because... |

1. Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible, Sukkur 1/84 Page 414 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द दो (दूसरा भाग)

| अरबी: यहाँ 'निरंतरता' का तात्पर्य प्रवाह में निरंतरता से है, और यह ज्ञात है कि केवल एक हिस्सा ही प्रवाहित हो रहा है, न कि उसमें मौजूद सारा जल। संपूर्ण की शुद्धता का निर्णय दिया जाता है, इसलिए कहा गया कि यह प्रवाह के हुक्म (नियम) में आ गया है, अतः समझें। | उर्दू: तो मुराद जारी होने में इत्तेसाल (निरंतरता) है और यह मालूम है कि जारी बाज़ (कुछ हिस्सा) ही है कुल नहीं है। और हुक्म कुल की तहारत (पवित्रता) का लगाया जाएगा और इसीलिए फ़रमाया कि यह जारी के हुक्म में हो गया। (त) |

इस फ़क़ीर के नज़दीक मतभेद का मूल कारण यही है: उन कुछ विद्वानों ने देखा कि नया आने वाला पानी बहता हुआ इस अशुद्ध (नजिस) जल से मिला, तो उन्होंने इसकी पवित्रता का निर्णय दिया। फिर यदि अशुद्धि अदृश्य थी या दृश्य थी और उसे निकाल दिया गया, तब तो स्पष्ट है कि उनके अनुसार सारा जल पवित्र रहना चाहिए, भले ही वह छोटा तालाब हो, क्योंकि बहते पानी में 'बड़ी मात्रा' (कसीर) की शर्त नहीं होती। और जब बहता पानी अदृश्य अशुद्धि पर आता है, तो उसे समाप्त कर देता है जैसा कि हमने 'दसवें सिद्धांत' में पुष्ट किया है (जैसा कि इसकी शोध हमने असल आशर में की है। त)। तो रुकने के बाद, यद्यपि वह छोटे स्थान पर है, अशुद्धि स्वयं विद्यमान नहीं है। हाँ, शेष रहने वाली दृश्य अशुद्धि के लिए बड़े स्थान की आवश्यकता अवश्य है ताकि ठहराव के समय अशुद्धि की अधिकता के कारण उसका पुनरावृत्ति न हो सके। अधिकांश विद्वानों का मत यह था कि आने वाला पानी यद्यपि बह रहा है, परंतु उसने अशुद्ध जल को प्रवाहित नहीं किया क्योंकि वह हौज (कुंड) की गहराई में रुका हुआ था। उसका रुकना ही इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि उसे आगे बढ़ने के लिए स्थान नहीं था, अतः आने वाला पानी उसे आगे नहीं बढ़ाएगा बल्कि उसके ऊपर चढ़ जाएगा, जिससे उसका 'प्रवाह' (इजरा) नहीं होगा, जो उसकी पवित्रता के लिए आवश्यक है। सिवाय इसके कि हौज भर जाए; उस समय तक तो सब अशुद्ध है। अब जो उबलेगा वह पवित्र हो जाएगा क्योंकि अब आगे बढ़ने और नीचे उतरने के लिए स्थान विस्तृत है। यदि यह कहा जाए: मान लिया कि हौज की गहराई में अशुद्ध जल का प्रवाह नहीं होगा, परंतु 'धोना' (ग़ुस्ल) तो हो जाएगा क्योंकि बहता पानी आकर उसके सभी हिस्सों पर छा गया।

मैं कहता हूँ पहले: पानी को धोना शरीयत से सिद्ध नहीं है सिवाय उसे पवित्र जल से मिलाकर प्रवाहित करने के।

दूसरा: यदि धोना होगा तो वह केवल अशुद्ध जल की ऊपरी सतह का होगा, और वह कोई ठोस (1) वस्तु नहीं है कि सतह धोने की आवश्यकता पूरे को धोने के समान हो जाए।

| अरबी: और यह एक लाभ है जिसे इस फ़क़ीर ने 'फ़तह अल-क़दीर' में दोनों साथियों (इमामों) के मज़हब के वर्णन से निकाला है कि (2) यदि 'इनफ़ाहा' (पनीर बनाने वाला तत्व) ठोस है, तो वह धोने से पवित्र हो जाता है, अर्थात जब उसे मृत बकरी के बच्चे के पेट से निकाला गया हो। | उर्दू: यह लाभ स्वयं फ़क़ीर ने, जहाँ साहबैन का मज़हब 'फ़तह अल-क़दीर' में बयान हुआ है, वहां से निकाला है। मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि दूध सूखा हो तो वह धोने से पवित्र हो जाएगा, अर्थात यदि वह मृत बकरी के बच्चे के पेट से निकाला गया हो क्योंकि... |

1. फ़तह अल-क़दीर, अल-माउल लज़ी यजोज़ु बिहिल वुज़ू, सक्खर 1/84 पृष्ठ 414 का 711

| فالمراد الاتصال في الجريان ومعلوم ان الجاري بعضه لاكل ما فيه ويحكم بطهارة الكل فلذا قال صار في الحكم جاريا فافهم۔ | تو مراد جاری ہونے میں اتصال ہے اور یہ معلوم ہے کہ جاری بعض ہی ہے کل نہیں ہے۔ اور حکم کل کی طہارت کا لگایا جائیگا اور اسی لئے فرمایا کہ یہ جاری کے حکم میں ہو گیا۔ (ت) |

فقیر کے نزدیک منشاءِ اختلاف یہی ہے اُن بعض نے دیکھا کہ نیا آنے والا پانی بہتا ہوا اس آبِ نجس سے ملا اس کی طہارت کا حکم دیا پھر اگر نجاست غیر مرئیہ تھی یا مرئیہ تھی اور نکال دی گئی جب تو ظاہر ہے کہ ان کے طور پر سب پانی پاک رہنا چاہئے اگرچہ حوض صغیر ہو کہ جاری میں کثیر کی شرط نہیں اور آب جاری جب نجاست غیر مرئیہ پر وارد ہو اُسے فنا کر دیتا ہے کما حققناہ فی الاصل العاشر (جیسا کہ اس کی تحقیق ہم نے اصل عاشر میں کی ہے۔ ت) تو بعد وقوف اگر چہ محلِ قلیل میں ٹھہر انجاست ہی معدوم ہے ہاں نجاست مرئیہ باقیہ میں ضرور کبرِ محل درکار کہ وقت وقوف بوجہ کثرتِ عودِ نجاست نہ ہوسکے اور جمہور نے یہ نظر فرمائی کہ آبِ داخل اگرچہ جاری ہو مگر آبِ نجس کو جاری نہ کیا کہ بطنِ حوض میں رُکا ہوا تھا اور اُس کا رُکنا ہی دلیلِ واضح تھا کہ اُسے آگے بڑھنے کو جگہ نہیں تو آبِ داخل اُسے آگے نہ بڑھائے گا بلکہ اوپر چڑھائیگا تو اُس کا اجرا نہ ہوگا جو اُس کی طہارت کو درکار ہے مگر یہ کہ حوض بھر جائے اُس وقت تک تو سب ناپاک ہے اب جو اُبلے گا پاک ہو جائیگا کہ اب آگے بڑھنے اور منحدر میں اترنے کو جگہ وسیع ہے اگر کہئے مانا کہ بطنِ حوض میں آبِ نجس کا اجرا نہ ہو گا مگر غسل یعنی دھونا تو ہو جائیگا کہ آب جاری بہتا ہوا آکر اُس کے تمام اجزا پر چھا گیا۔

اقول اولاً : پانی کو دھونا شرع سے معہود نہیں مگر وہی طاہر سے ملا کر اُس کا اجرا۔

ثانیاً : غسل ہو گا تو فقط سطح بالائے آبِ نجس کا اور وہ کوئی جامد (۱) شئی نہیں کہ ضرورتِ غسل سطح قائم مقام غسل کل ہو ،

| وهذه فائدة استنبطها الفقير مما في فتح القدير في بيان مذهب الصاحبين ان (۲) كانت الانفحة جامدة تطهر بالغسل اهـ اى اذا اخذت من بطن جدى ميت | یہ فائدہ خود فقیر نے یہاں صاحبین کا مذہب فتح القدیر میں بیان ہوا ہے میں نے مستنبط کیا ہے ، اگر دودھ خشک ہو تو دھونے سے پاک ہو جائیگا اھ یعنی مُردہ بکری کے بچے کے پیٹ سے نکالے گئے ہوں کیونکہ |

۱ فتح القدير الماء الذى يجوز به الوضوء سكهر ۱/۸٤ Page 414 of 711

Fatawa Razawiyya Volume II

[Left Box (Arabic with Urdu Translation)]: Their impurity according to both of them (the Sahibayn) is due to their container becoming impure by death. This was highlighted in 'Mawahib al-Rahman'. He mentioned its purity when solid by washing as in 'al-Fath'. According to the Imam, it is pure because there is no legal effect of impurity as long as it remains inside, let alone anything else. 'Fath' - and this is the preferred view. 'Durr' - And Infaha (rennet) is the milk in the stomach of a suckling kid.

[Right Box (Urdu)]: According to the Sahibayn, they will become impure because their container became impure due to death. In 'Mawahib al-Rahman', arguing from this, it is stated that if they are dry (meaning the milk has solidified), they will become pure by washing, as mentioned in 'al-Fath'. According to the Imam, they are pure because when there is impurity inside, it is not legally considered impurity, let alone anything else. 'Fath' - and this is the preferred view. 'Durr' - And Infaha is the milk that is in the stomach of a suckling goat kid. (T)

Thirdly: Ala al-Taslim (even if washing is accepted - T). For washing, thrice repetition is required or the dominance of opinion regarding the removal of impurity. In any case, the removal of the washing water from the washed object is necessary; until it is separated, and the impurity is not removed from the washed object, the ruling of purity cannot be given. Thus, exit became necessary. Apparently, for these reasons, the majority gave the ruling of impurity.

I say: But just as the second discussion was applicable to the second view, similarly, the first discussion will be applicable to the first view. These great scholars did not consider the flow of water within the basin as actual flowing. The clarifications and verifications of the condition of exit will be found in 'Ghunya' (1) and 'Zahiriyya' (2) in the second answer, and in the fifth answer of the second principle from 'Malik al-Ulama' (3), 'Faqih Hindwani' (4), and 'Faqih Samarqandi' (5). And in the third principle from 'Tabyin' (6), 'Fath' (7), 'Bahr' (8), 'Muheet' (9), 'Tawshih' (10), 'Imam Husam al-Shahid' (11), 'Tatar-Khaniya' (12), 'Zahiriyya' (13), 'Hindiya' (14). And in the fourth principle from 'Mubtani' (15), 'Muheet-e-Razwi' (16), 'Hulyah' (17), 'Khulasa' (18), and 'Radd al-Muhtar' (19, 20). And the text of 'Zahiriyya' (21), and 'Imam Abu Bakr al-Amsh' (22, 23) etc. and in the sixth principle from the commentary of 'Hadiya wa Minha' (24, 25). Their explanation is clear that the impure water which was in the basin, its exit is necessary for its flow and purification. The fresh water that comes

from above does not negate its flow. But what is the answer to those numerous texts which explicitly negate the flow of that very entering water, even if it moves quite far within the basin, for example:

Firstly: Those clarifications that if water meets impurity in the basin before becoming 'dah-dar-dah' (ten by ten cubits), it will become impure as much as it keeps coming. As mentioned from Imam Saffar in the fourth answer, Imam Malik al-Ulama (2) maintained it in the eighth principle of 'Fatawa' (3) from Imam Qadi Khan and 'Jawahir al-Akhlati' (4). And similarly, it is in 'Khazanat al-Muftin' (5) and 'Fatawa Dhakhira' (6). It is commented upon in 'Hulyah' (7). Its meaning in 'Ghunya' (8) is: if it were considered flowing, why would being 'dah-dar-dah' be a condition, as flowing water, no matter how little, [is not] impure...

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम

[बायां बॉक्स (अरबी और उर्दू अनुवाद)]: साहिबैन के नज़दीक वह बर्तन के नापाक होने की वजह से नजिस हो जाएंगे क्योंकि उसका बर्तन मौत की वजह से नापाक हो गया। मवाहिबुर्रहमान में इस पर इस्तिदलाल करते हुए फ़रमाया कि यह खुश्क हों (यानी दूध जम जाए) तो धोने से पाक हो जाएंगे, जैसा कि फ़तह में है। और इमाम साहब के नज़दीक पाक हैं क्योंकि जब बातिन में कोई नजासत हो तो शरअन वह नजासत नहीं चे जाईके और कोई चीज़ हो, फ़तह। और यही राजिह है, दुर्र। और इन्फ़हा उस दूध को कहते हैं जो बकरी के शीर-ख्वार बच्चे के पेट में होता है।

[दायां बॉक्स (उर्दू)]: साहिबैन के नज़दीक वह बर्तन के नापाक होने की वजह से नजिस हो जाएंगे क्योंकि उसका बर्तन मौत की वजह से नापाक हो गया, और मवाहिबुर्रहमान में इस पर इस्तिदलाल करते हुए फ़रमाया कि यह खुश्क हों (यानी दूध जम जाए) तो धोने से पाक हो जाएंगे, जैसा कि फ़तह में है और इमाम साहब के नज़दीक पाक हैं क्योंकि जब बातिन में कोई नजासत हो तो शरअन वह नजासत नहीं चे जाईके और कोई चीज़ हो फ़तह, और यही राजिह है दर, और इन्फ़हा उस दूध को कहते हैं जो बकरी के शीर ख्वार बच्चे के पेट में होता है। (त)

तीसरा: अली अत्तसलीम (ग़ुस्ल (धोना) अगर तस्लीम कर भी लिया जाए तो। त) ग़ुस्ल के लिए तस्लीस दरकार होती या ज़बाब नजासत पर ग़लबा-ए-ज़न्न। बहरहाल मा-ए-ग़ासिल का मग़सूल पर से ज़वाल ज़रूर कि जब तक जुदा न हुआ मग़सूल से ज़वाल-ए-नजासत न हुआ तो हुक्म-ए-तहारत न हुआ। यूँ भी खुरूज लाज़िम हो गया ज़ाहिरन इन वुजूद से जमहूर ने हुक्म-ए-नजासत दिया।

अक़ूल: मगर जिस तरह क़ौल-ए-दोयम पर बहस-ए-दोयम वारिद हुई यूँही क़ौल-ए-अव्वल पर बहस-ए-अव्वल वारिद होगी। इन अकाबिर ने बल्न-ए-हौज़ में सैलान-ए-आब को जरयान ही न ठहराया शर्त-ए-खुरूज की तसरीहात व तस्रीहात कि जवाब-ए-दोयम में ग़ुनया (1) व ज़हीरिया (2) और जवाब-ए-पंजुम अस्ल-ए-दोयम में मुल्कुल उलमा (3) व फ़क़ीह-ए-हिन्दवानी (4) व फ़क़ीह-ए-समरकंदी (5) और अस्ल-ए-सेवुम में तब्यीन (6) व फ़तह (7) व बहर (8) व मुहीत (9) व तौशीह (10) व इमाम हुसाम शहीद (11) व तातारखनिया (12) व ज़हीरिया (13) व हिन्दिया (14) और अस्ल-ए-चहारम में मुब्तनी (15) व मुहीत-ए-रज़वी (16) व हुलिया (17) व खुलासा (18) व रद्दुल मुह्तार (19, 20) व इबारत-ए-ज़हीरिया (21) व इमाम (22) अबू बक्र आमश (23) वग़ैरह और अस्ल-ए-शशम में शरह (24) हदिया व मिन्हा (25) से गुज़रें उनकी तौजीह वाज़ेह है कि जो नजिस पानी हौज़ में था उसके

जरयान व तहारत के लिए खुरूज ज़रूर है ताज़ा पानी कि ऊपर से आया उनसे उसके जरयान की नफ़ी नहीं होती मगर इन नूसूस-ए-कसीरा का क्या जवाब जो सराहतन इस आब-ए-दाख़िल ही के जरयान का इबताल करते हैं अगरचे बत्न-ए-हौज़ में कितनी ही दूर हरकत करता जाए मसलन:

अव्वलन: वह तसरीहें कि पानी अगर बत्न-ए-हौज़ में दह-दर-दह होने से पहले नजासत से मिलेगा जितना आता जाएगा नापाक होता जाएगा जैसा कि जवाब-ए-चहारम में इमाम सफ़्फ़ार से गुज़र इमाम (2) मुल्कुल उलमा ने इसे मुक़र्रर रखा अस्ल-ए-हशतम फ़तावा (3) इमाम क़ाज़ी खाँ व जवाहर (4) अख़लाती से और ऐसा ही ख़ज़ाना (5) अल-मुफ़्तीन व फ़तावा (6) ज़ख़ीरा में है हुलिया (7) में इस पर तक़रीर है ग़ुनया (8) में इसके मायने हैं अगर जारी माना जाता वह दह-दर-दह होना क्या शर्त होता कि जारी कितना ही क़लील हो नापाक...

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[بایاں خانہ (عربی مع اردو ترجمہ)]: لتنجسها عندهما بوعائها المتنجس بالموت واستظهره في مواهب الرحمن وذكر طهارتها جامدة بالغسل كالفتح وعند الامام طاهرة لانه لا اثر للتنجس شرعا مادامت في الباطن النجاسة فضلا عن غيرها فتح وهو الراجح دروالانفحة اللبن في بطن الجدی الراضع۔

[دایاں خانہ (اردو)]: صاحبین کے نزدیک وہ ظرف کے ناپاک ہونے کی وجہ سے نجس ہوجائیں گے کیونکہ اس کا ظرف موت کی وجہ سے ناپاک ہوگیا، اور مواہب الرحمن میں اس پر استدلال کرتے ہوئے فرمایا کہ یہ خشک ہوں(یعنی دودھ جم جائے) تو دھونے سے پاک ہو جائیں گے، جیسا کہ فتح میں ہے اور امام صاحب کے نزدیک پاک ہیں کیونکہ جب باطن میں کوئی نجاست ہو تو شرعاً وہ نجاست نہیں چہ جائیکہ اور کوئی چیز ہو فتح، اور یہی راجح ہے در، اور انفحہ اس دودھ کو کہتے ہیں جو بکری کے شیر خوار بچے کے پیٹ میں ہوتا ہے۔(ت)

ثالثاً: علی التسلیم (غسل (دھونا) اگر تسلیم کر بھی لیا جائے تو۔ت) غسل کیلئے تثلیث درکار ہوتی یا ذباب نجاست پر غلبہ ظن۔ بہر حال مائے غاسل کا مغسول پر سے زوال ضرور کہ جب تک جدانہ ہوا مغسول سے زوال نجاست نہ ہوا تو حکم طہارت نہ ہوا۔ یوں بھی خروج لازم ہو گیا ظاہراً ان وجوہ سے جمہور نے حکم نجاست دیا۔

اقول: مگر جس طرح قول دوم پر بحث دوم وارد ہوئی یونہی قول اول پر بحث اول وارد ہوگی۔ ان اکابر نے بطن حوض میں سیلانِ آب کو جریان ہی نہ ٹھہرایا شرط خروج کی تصریحات و تصحیحات کہ جواب دوم میں غنیہ ۱ و ظہیر یہ ۲ اور جواب پنجم اصل دوم میں ملک العلماء ۳ وفقیہ ہندوانی ۴ وفقیہ سمرقندی ۵ اور اصل سوم میں تبیین ۶ وفتح ۷ وبحر ۸ ومحیط ۹ و توشیح ۱۰

وامام حسام شہید ۱۱ وتاتارخانیہ ۱۲ و ظہیر یہ ۱۳ و ہندیہ ۱۴ اور اصل چہارم میں مبتنیٰ ۱۵ و محیط ۱۶ رضوی و حلیہ ۱۷ و خلاصہ ۱۸ و ردالمحتار ۱۹ و ۲۰ و عبارت ظہیر یہ ۲۱ وامام ۲۲ ابوبکر اعمش ۲۳ وغیرہ اور اصل ششم میں شرح ۲۴ ہدیہ و منحۃ ۲۵ سے گزریں ان کی توجیہ واضح ہے کہ جو نجس پانی حوض میں تھا اس کے جریان و تطہیر کیلئے خروج ضرور ہے تازہ پانی کہ اوپر سے آیا ان سے اس کے جریان کی نفی نہیں ہوتی مگر ان نصوص کثیر کا کیا جواب جو صراحتہً اس آب داخل ہی کے جریان کا ابطال کرتے ہیں اگر چہ بطن حوض میں کتنی ہی دُور حرکت کرتا جائے مثلاً:

اولاً: وہ تصریحیں کہ پانی اگر بطن حوض میں دہ در دہ ہونے سے پہلے نجاست سے ملے گا جتنا آتا جائیگا ناپاک ہوتا جائے گا جیسا کہ جواب چہارم میں امام صفار سے گزر امام ۲ ملک العلماء نے اسے مقرر رکھا اصل ہشتم فتاوی ۳ امام قاضی خان و جواہر ۴ اخلاطی سے اور ایسا ہی خزانہ ۵ لمفتین وفتاوی ۶ ذخیرہ میں ہے حلیہ ۷ میں اس پر تقریر ہے غنیہ ۸ میں اس کے معنے ہیں اگر جاری مانا جاتا وہ دہ در دہ ہونا کیا شرط ہوتا کہ جاری کتنا ہی قلیل ہو ناپاک

Fatawa Rizvia Volume 2

It cannot be until some quality of it changes due to impurity. The issue of the flow of a lota (vessel) was mentioned in Principle 9.

Secondly, even if this reasoning were not conditional, the core ruling of this revolving issue, which is prevalent and current in the reliable books of the great majority of famous scholars, is a clear proof of its own non-acceptance. In the fourth answer, references and corrections from Munya [1], Badai [2], Saffar [3], Hulya [4], and in the fifth, Hulya [5], Ghunya [6], and its eighth original source, Khania [7], Khazanat al-Muftin, Muheet [9], Hulya [10], Khulasa [11], Fath [12], Fatawa Samarqand [13], Bahr [14], Hindiyyah [15], Ghiyathiyyah [16], Dhakhirah [17], and the branch [18] at the end of Qadi Khan and Jawahir al-Akhlati [19] have passed, stating that no matter how large a reservoir is, if the small amount of water in it was impure, and then more water came and it was filled to the brim, it remained impure. Well, as long as it was within the limit of smallness (qillat), it could be said that the incoming water, although it remained flowing until it reached the other side after entering, was broken there and is small and connected to impurity or impure water, so it will become impure. Similarly, whatever water keeps coming will receive the same ruling up to the limit of smallness. "And they only said that whatever enters becomes impure because it entered and became contaminated." But the reservoir is large; what will be said when it exceeds the limit of smallness? Since it became flowing and large and still water, it was never at any time susceptible to impurity. Then why is this the ruling that even upon being filled to the brim, all is impure? Rather, it was necessary that either the upper part, where it reaches the limit of abundance (kathrat) and it is possible that it is the major part of the large reservoir, be called pure, and from the limit of smallness downwards be called impure; or, considering that the lower part does not have a distinct form and is subordinate to the upper part, all should be called pure.

I say: And the apparent, more evident, and more logical is this: did you not see that no matter how (1) deep a reservoir is, or even the deepest well, if it fills to the brim and overflows, it all becomes pure from top to bottom because the water has become flowing? Although, certainly, the flow motion will only reach the small upper portion. The incoming water will have flow occurring only as far as it can push and carry away with its overflow; the water yards below will not even know, and the still water is all pure. This is because it is a single form and a single thing. Similarly, the water of abundance has a single form, and if the upper small portion is large and the

bottom is all small, and sunken impurity is present that reaches the bottom, all will remain pure. The abundance and purity of the surface of the water will act down to the bottom. Thus it is.

| (Arabic) If you say in response to both: The consideration for abundance and smallness is for the time of falling. This was small in his view, while what is being cited as evidence is large, so they differ. As for flowing, it is considered in itself, regardless of abundance or smallness at the time of occurrence. So when its surface flows and it is one thing... | (Urdu) If you say in response on behalf of both of them that the consideration of abundance and smallness is at the time of falling, and this was small at the time of falling whereas what is being reasoned with is large, then there is a difference between the two. And being flowing is considered in itself; there is no consideration of abundance and smallness in it at the time of occurrence. So when it flows... |

फ़तावा रिज़विया खंड 2

यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि अशुद्धि के कारण इसका कोई गुण न बदल जाए। लोटे की धारा का मसला असल 9 में गुज़रा।

दूसरे, अगर यह दलील सशर्त न भी होती, तो इस आवर्ती मसले का मुख्य हुक्म, जो प्रसिद्ध विद्वानों की विश्वसनीय पुस्तकों में प्रचलित है, इसके स्वयं के लागू न होने का स्पष्ट प्रमाण है। चौथे उत्तर में मुनिया [1], बदाये [2], सफ़ार [3], हुलिया [4], और पांचवें में हुलिया [5], गुनिया [6], और इसके मूल आठवें स्रोत खानिया [7], खज़ानतुल मुफ़्तीन, मुहीत [9], हुलिया [10], खुलासा [11], फ़तह [12], फ़तावा समरकंद [13], बहर [14], हिंदिया [15], गियासिया [16], ज़खीरा [17], और क़ाज़ी खान तथा जवाहरुल अख़लाती [19] के अंत में शाखा [18] से स्पष्टीकरण और सुधार गुज़रे हैं कि हौज़ चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, जब उसमें थोड़ा पानी नापाक था, फिर पानी आया और लबालब भर गया, तो वह नापाक ही रहा। भला जब तक वह अल्पता (क़िल्लत) की सीमा में था, तब तक यह कहा जा सकता था कि आने वाला पानी, हालांकि प्रवेश करने के बाद दूसरी ओर पहुँचने तक बहता रहा, लेकिन वहाँ जाकर टूट गया और वह कम है और अशुद्धि या अपवित्र पानी से जुड़ा हुआ है, इसलिए वह नापाक हो जाएगा। इसी तरह जो पानी आता रहेगा, अल्पता की सीमा तक यही हुक्म पाएगा। "और उन्होंने केवल इतना कहा कि जो कुछ प्रवेश करता है वह नापाक हो जाता है क्योंकि वह प्रवेश कर अपवित्र हो गया।" लेकिन हौज़ तो बड़ा है; जब वह अल्पता की सीमा से आगे बढ़ेगा तो क्या कहा जाएगा? क्या वह बहता हुआ और ठहरा हुआ प्रचुर होकर किसी भी समय स्वीकार्य अशुद्धि का पात्र नहीं हुआ? फिर यह हुक्म क्यों है कि लबालब भरने पर भी सब नापाक है? बल्कि यह आवश्यक था कि या तो ऊपरी हिस्से को, जहाँ से प्रचुरता की सीमा है और यह संभव है कि वह बड़े हौज़ का मुख्य हिस्सा हो, पाक कहा जाए और अल्पता की सीमा से नीचे तक नापाक कहा जाए; या इस आधार पर कि निचला हिस्सा एक अलग रूप नहीं रखता और ऊपरी हिस्से के अधीन है, सबको पाक कहा जाए।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और स्पष्ट, अधिक प्रत्यक्ष और अधिक तार्किक यह होता है: क्या आपने अंततः नहीं देखा कि हौज़ कितना भी (1) गहरा हो, बल्कि गहरे से गहरा कुआँ भी अगर लबालब भरकर उबल जाए, तो ऊपर से नीचे तक सब पाक हो जाता है क्योंकि पानी बहने लगा है? हालाँकि, निश्चित रूप से बहाव की गति केवल ऊपरी थोड़े हिस्से तक पहुँचेगी। आने वाला पानी जहाँ तक के पानी को दबाकर साथ बहाकर उबालेगा, केवल उतने पर ही बहाव होगा; नीचे कई गज़ तक के पानी को पता

भी नहीं होगा, और ठहरा हुआ सब पाक है। इसलिए कि रूप एक है और चीज़ एक है। इसी तरह प्रचुर पानी का एक ही रूप होता है, और अगर ऊपरी थोड़ा हिस्सा प्रचुर है और नीचे सब थोड़ा है, और बैठी हुई अशुद्धि मौजूद है जो तल तक पहुँच गई है, तो सब पाक रहेगा। पानी की सतह की प्रचुरता और पवित्रता तल तक कार्य करेगी। ऐसा ही है।

| (अरबी) यदि आप उन दोनों के उत्तर में कहें: प्रचुरता और अल्पता में विचार गिरने के समय का है। यह उनके पास गिरने के समय कम था, जबकि जिससे प्रमाण दिया जा रहा है वह प्रचुर है, अतः दोनों में अंतर है। जहाँ तक बहाव का संबंध है, वह स्वतः मान्य है, इसमें गिरने के समय प्रचुरता या अल्पता का कोई विचार नहीं है। तो जब इसकी सतह बहने लगे और वह एक ही चीज़ है... | (उर्दू) यदि आप इन दोनों की ओर से उत्तर में यह कहें कि प्रचुरता और अल्पता में विचार गिरने के समय का है और यह गिरते समय कम था और जिस पर तर्क दिया जा रहा है वह प्रचुर है, तो दोनों में अंतर हो गया। और बहना तो अपने आप में मान्य है, इसमें प्रचुरता और अल्पता का कोई विचार नहीं है, होने के समय में, तो जब वह बहने लगे... |

पेज 416 का 711

نہیں ہو سکتا جب تک نجاست سے اس کا کوئی وصف نہ بدلے لوٹے کی دھار کا مسئلہ اصل ۹ میں گزرا۔

ثانیا یہ تعلیل بشرط نہ بھی ہوتی تو اس مسئلہ دوارہ کا نفس حکم کہ کتب معتمدہ جماہیر مشاہیر میں دائر وسائر ہے خود اسے جاری نہ ماننے پر برہان ظاہر ہے جواب چہارم میں منیہ ۱ اور بدائع ۲ وصفار ۳ وحلیہ ۴ اور پنجم میں حلیہ ۵ وغنیہ ۶ اور اس کی اصل ہشتم میں خانیہ ۷ وخزانہ ۸ المفتین و محیط ۹ وحلیہ ۱۰ وخلاصہ ۱۱ وفتح ۱۲ وفتاوٰی ۱۳ سمرقند وبحر ۱۴ وہندیہ ۱۵ وغیاثیہ ۱۶ وذخیرہ ۱۷ وفرع ۱۸ آخر قاضی خان وجواہر ۱۹ الاخلاطی سے تصریحیں اور تصحیحیں گزریں کہ حوض کتنا ہی کبیر ہو جب اس میں قلیل پانی ناپاک تھا پھر پانی آیا اور لبالب بھر گیا ناپاک ہی رہا۔ بھلا جب تک حد قلت میں تھا یہ کہہ سکتے تھے کہ آنے والا پانی اگرچہ اپنے داخل ہونے سے دوسری جانب پہنچنے تک جاری رہا مگر وہاں جا کر توڑ گیا اور ہے قلیل اور نجاست یا آب نجس سے متصل تو اب ناپاک ہو جائیگا اسی طرح جو پانی آتا جائے گا حد قلت تک یہی حکم پائیگا وھم انما قالوا کل مادخل صار نجساً لانہ مادخل تنجس مگر حوض تو کبیر ہے جب حد قلت سے آگے بڑھے گا کیا کہا جائے گا۔ آیا بہتا ہوا اور ٹھہرا کثیر ہو کر تو کسی وقت قابل قبول نجاست نہ ہوا پھر یہ حکم کیوں ہے کہ لبالب بھرنے پر بھی سب ناپاک۔ بلکہ لازم تھا کہ یا تو حصہ بالا کو جہاں سے حد کثرت ہے اور ممکن ہے کہ حوض کبیر کا معظم حصہ وہی ہو پاک کہیں اور حد قلت سے نیچے تک ناپاک یا نظر برآں کہ حصہ زیریں ممتاز صورت نہ رکھنے کے باعث بالا کا تابع ہے سب پاک۔

اقول: اور ظاہر ابہی اقیس ہوتا آخر نہ دیکھا کہ حوض کتنا ہی (۱) عمیق ہو بلکہ گہرے سے گہرا کنواں اگر لبالب بھر کر ابل جائے اوپر سے نیچے تک سب پاک ہو گیا کہ آب جاری ہو گیا حالانکہ یقیناً حرکت جریانی صرف اوپر کے قلیل حصہ کو پہنچے گی آنے والا پانی جہاں تک کے پانی کو دبا کر ساتھ بہا کر ابلے ابالے گا اتنے ہی پر جریان واقع ہو گا نیچے گزوں تک کے پانی کو خبر بھی نہ ہوگی اور ٹھہرا سب پاک۔ اُسی لئے کہ صورت واحدہ وشئی واحد ہے، یوں ہی آب کثیر کی صورت واحدہ رکھتا اور اوپر قلیل حصہ کثیر اور نیچے سب قلیل ہے اور نجاست راسبہ پڑی کہ تہ تک پہنچی سب پاک رہے گا روئے آب کی کثرت وطہارت تہ تک عمل کرے گی کذا ھذا۔

| فان قلت: في الجواب عنهما ان العبرة في الكثرة والقلة لاوان الوقوع وهذا كان قليلا عنده والمستشهد به كثيرا فافترقا اما الجريان فمعتبر بنفسه لالحاظ فيه لكثرة اوقلة وقت الوقوع فاذ اجرى وجهه وهو شيئ واحد | اگر تم ان دونوں کی طرف سے جواب میں یہ کہو کہ کثرت و قلت میں اعتبار گرنے کے وقت کا ہے اور یہ گرتے وقت قلیل تھا اور جس پر استدلال کیا جا رہا ہے وہ کثیر ہے تو دونوں میں فرق ہو گیا، اور جاری ہونا تو وہ بنفسہ معتبر ہے اس میں کثرت و قلت کا کوئی اعتبار نہیں، وقوع کے وقت میں، تو جب وہ جاری |

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Arabic Column] Therefore, the whole has flowed, so the purity of the upper part cannot be compared to it because of its stability upon a large quantity (kathrah), for that is not flowing (jaryan). I say: Firstly, when we judged the whole as pure because of its flowing, the judgment of the time of falling was interrupted. Thus, when it stopped, it is as if it has fallen now, and at that time it is 'kathir' (a large quantity), because the consideration is for the surface and what is below follows it. So it did not fall except into a large quantity. And distinguishing between the upper and lower now based on quantity or scarcity (kathrah or qillah) would be a departure from the rule of oneness (wahdah). Based on this, the lower part used for witness would also necessarily become impure, because the sinking impurity did not reach it until the time of its scarcity. - Secondly: Even if it were conceded, this harmful [argument] will become beneficial. For the water entering, while it was flowing until it reached its end, is a single form. Thus, the whole flowed, and the impurity was completely negated if it was invisible. Likewise, if it was visible and was removed, there is no meaning for its return when it stabilizes, even if it is on a small amount (qillah). And [the impurity] moved to the upper large quantity. If it remained floating, it would not become impure when a large amount stabilizes. And what is below it became pure by flowing. Thus, nothing remains except when there is a visible impurity remaining at the bottom. Their words are absolute, encompassing all cases.

[Urdu Column] It happened from its surface, although it is a single thing, as if the whole flowed. So it will not be correct to compare the purity of the upper part to it, thinking that it is stable upon a large quantity, because this is not 'flow' (jaryan). I say: Firstly, when we ruled on the purity of the whole because of its flowing, the rule of the time of falling was terminated. So when it stopped, it's as if it has just fallen now, and at that time it is 'kathir' (large quantity) because the consideration is of the surface, and whatever is below it follows it. Therefore, it fell into a large quantity only. Now, to differentiate between the upper and lower parts based on abundance or scarcity would be to deviate from the unity of the ruling. On this basis, it would necessitate that the lower part, which is used as evidence, becomes impure because the sinking impurity did not reach it except at the time of scarcity, but this is contrary to the assumption. And secondly, if it were accepted, it is harmful for us but will soon become beneficial. Because the entering water was flowing until it reached its end and it is a single form, so the whole became flowing. If the impurity is non-visible, and similarly if a visible one is removed, it will be completely finished from the start.

So there is no sense in its return when the water has settled, even if it is little. And that impurity shifted towards the upper large quantity of water, even if it is floating on top. So when a large quantity of water has settled, it will not be impure, and its lower part became pure due to the flow of water, so it will not remain. Except for what is visible and remains at the bottom, and their statement is absolute and includes all cases. (T)

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[अरबी स्तंभ] तो वह सब बह गया, इसलिए ऊपरी भाग की पवित्रता की तुलना उस पर नहीं की जा सकती क्योंकि वह अधिकता (कसरत) पर स्थिर है, क्योंकि वह प्रवाह (जरियान) नहीं है। मैं कहता हूँ: पहली बात, जब हमने प्रवाह के कारण पूरे को पवित्र होने का आदेश दिया, तो गिरने के समय का आदेश समाप्त हो गया। फिर जब वह रुका, तो ऐसा है मानो वह अभी गिरा हो, और उस समय वह 'कसीर' (बड़ी मात्रा) है क्योंकि विचार सतह का है और जो उसके नीचे है वह उसका अनुयायी है। तो वह केवल बड़ी मात्रा में ही गिरा। और अब 'कसरत' और 'किल्लत' (बड़ी या छोटी मात्रा) के आधार पर ऊपरी और निचले के बीच अंतर करना आदेश की एकता (वह्दत) से बाहर निकलना होगा। इस आधार पर, वह निचला हिस्सा भी अशुद्ध होना आवश्यक होगा जिसका उपयोग साक्ष्य के रूप में किया गया है, क्योंकि डूबने वाली अशुद्धता उस तक नहीं पहुँची जब तक कि उसकी कमी न हो गई हो। - दूसरी बात: यदि इसे मान भी लिया जाए, तो यह हानिकारक [तर्क] लाभदायक हो जाएगा। क्योंकि प्रवेश करने वाला पानी जब तक अपने अंत तक नहीं पहुँचा, तब तक वह बह रहा था और वह एक ही रूप है। तो पूरा बह गया, और अशुद्धता पूरी तरह से समाप्त हो गई यदि वह अदृश्य थी। इसी तरह यदि वह दिखाई देने वाली थी और उसे निकाल दिया गया, तो उसके स्थिर होने पर उसके लौटने का कोई अर्थ नहीं है, भले ही वह कम मात्रा (किल्लत) पर हो। और [अशुद्धता] ऊपर की बड़ी मात्रा में स्थानांतरित हो गई। यदि वह तैरती रही, तो बड़ी मात्रा के स्थिर होने पर वह अशुद्ध नहीं होगा। और उसके नीचे का हिस्सा बहने के कारण पवित्र हो गया। इस प्रकार, कुछ भी शेष नहीं रहता सिवाय इसके कि जब नीचे कोई दृश्य अशुद्धता शेष हो। उनके शब्द पूर्ण हैं, जो सभी स्थितियों को समाहित करते हैं।

[उर्दू स्तंभ] यह इसकी सतह से हुआ हालांकि वह एक ही चीज़ है, तो मानो पूरा बह गया, तो उस पर ऊपर वाले की पवित्रता का अनुमान लगाना सही नहीं होगा कि वह अधिकता पर स्थिर है क्योंकि यह प्रवाह नहीं है। मैं कहता हूँ पहली बात जब हमने बहने के कारण पूरे की पवित्रता का हुक्म लगाया तो गिरने के समय का हुक्म खत्म हो गया, तो जब ठहरा तो मानो वह अभी गिरा है और उस समय वह 'कसीर' (बड़ी मात्रा) है क्योंकि विचार सतह का है, और जो उसके नीचे है वह उसके अधीन है तो कसीर ही में गिरा और ऊंचे और नीचे में अब अधिकता और कमी के विचार से फर्क करना हुक्म की एकता से बाहर होना होगा और इस आधार पर नीचे वाले का अशुद्ध होना ज़रूरी आएगा जिससे दलील भी दी गई है क्योंकि बैठने वाली अशुद्धता उस तक नहीं पहुंची मगर कमी के समय यह

अनुमान के खिलाफ है। और दूसरी बात अगर मान लिया जाए तो यह हमारे लिए हानिकारक है और जल्द ही लाभदायक हो जाएगा, क्योंकि दाखिल होने वाला पानी बह रहा था यहाँ तक कि वह अपनी सीमा तक पहुँचा और रूप एक ही है तो पूरा बह गया और अशुद्धता अगर अदृश्य हो और इसी तरह अगर दृश्य निकाल दी गई हो तो शुरू से ही खत्म हो जाएगी तो उसके लौटने के कोई मायने नहीं जब कि पानी ठहरा हुआ हो चाहे कम ही हो और वह अशुद्धता ऊपर वाले कसीर पानी की तरफ चली गई, चाहे वह ऊपर तैर रही हो, तो जब कसीर पानी ठहरा हो तो वह नापाक न होगा और उसका निचला हिस्सा पानी के बहने की वजह से पाक हो गया तो बाकी न रहेगा मगर जो दृश्य और तह में बाकी हो और उनका कलाम मुतलक (पूर्ण) है और तमाम सूरतों को शामिल है। (त)

पृष्ठ 417 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم] فقد جری کله فلا یقاس علیه طهارة الاعلی لاستقراره علی الکثرة فانها غیر الجریان اقول: اولا اذ احکمنا بطهارة الکل لاجل الجریان انقطع حکم وقت الوقوع فاذا وقف فکانما الان وقع وهو حینئذ کثیر اذ العبرة للوجه وما تحته تبعه فما وقع الا في الکثیر والفضل الان بین الا علی والاسفل بالکثرة والقلة خروج عن حکم الواحدة وعلی هذا یلزم تنجس الاسفل المستهد به ایضا لان النجس الراسب لم یصل الیه الاحین قلته هف - وثانیا: لئن سلم فهذا مضر سیعود نافعا فان الماء الداخل حیث کان جاریا حتی الوصول الی المنتهی والصورة واحدة فقد جری الکل فانتفت النجاسة رأسا ان کانت غیر مرئیة وکذا لومرئیة وقد اخرجت فلا معنی لعودها حین استقراره ولو علی القلة وانتقلت الی الاعلی الکثیر لو باقیة طافیة فلم یتنجس اذا استقر کثیرا وقد طهر ما تحته بالجریان فلا یبقی الا ما اذا کانت مرئیة باقیة راسبة وکلامهم مطلق حاو للصور قاطبة۔

[اردو کالم] ہوا اسکی سطح سے حالانکہ وہ شی واحد ہے تو گویا کل جاری ہوا، تو اس پر اوپر والے کی طہارت کو قیاس کرنا درست نہ ہوگا کہ وہ کثرت پر مستقر ہے کیونکہ یہ جریان نہیں ہے۔ میں کہتا ہوں اولا جب ہم نے کل کی طہارت کا حکم لگایا جاری ہونے کی وجہ سے تو گرنے کے وقت کا حکم منقطع ہو گیا، تو جب ٹھہرا تو گویا وہ ابھی گرا ہے اور اس وقت وہ کثیر ہے کیونکہ اعتبار سطح کا ہے، اور جو اس کے نیچے ہے وہ اُس کے تابع ہے تو کثیر ہی میں واقع ہوا اور اعلی اور اسفل میں اب کثرت و قلت کے اعتبار سے فرق کرنا وحدت حکم سے خروج ہوگا اور اس بنا پر نیچے والے کا نجس ہونا لازم آئیگا جس سے استشہاد بھی کیا گیا ہے کیونکہ نجاست راسبہ اس تک نہیں پہنچی ہے مگر قلت کے وقت یہ خلاف مفروض ہے۔ اور ثانیاً اگر تسلیم کر لیا جائے تو یہ ہمارے لئے مضر ہے اور عنقریب نافع ہو جائیگا، کیونکہ داخل ہونے والا پانی جاری تھا یہاں

تک کہ وہ اپنی انتہا کو پہنچا اور صورت واحدہ ہے تو کل جاری ہو گیا اور نجاست اگر غیر مرئیہ ہو اور اس طرح اگر مرئیہ نکال دی گئی ہو تو سرے سے ختم ہو جائیگی تو اس کے لوٹنے کے کوئی معنی نہیں جب کہ پانی ٹھہرا ہوا اگرچہ کم ہی ہو اور وہ نجاست اوپر والے کثیر پانی کی طرف منتقل ہوگئی، اگرچہ وہ اوپر تیر رہی ہو، تو جب کثیر پانی ٹھہرا ہو تو وہ ناپاک نہ ہو گا اور اس کا نچلا حصہ پانی کے جاری ہونے کی وجہ سے پاک ہو گیا تو باقی نہ رہے گا مگر جو مرئی اور تہ میں باقی ہو اور ان کا کلام مطلق ہے اور تمام صورتوں کو شامل ہے۔ (ت)

Thirdly, the statement (28) in the fourth answer from 'Fath al-Qadir' regarding a small pond—that it remains impure even after filling—points towards the non-acceptance of its flow; otherwise, invisible or visible impurity that has been removed would necessarily vanish.

Fourthly, in 'Tanbih al-Jalil', the passages from 'Munya' (29), 'Muheet' (30), 'Hilya' (31), 'Khaniya' (32), 'Hindiyya' (33), and 'Dhakhira' (34) record the rulings of the illustrious Imams: Ali al-Saghdi (35), Nasir bin Yahya (36), and Khalaf bin Ayyub (37) (may Allah Almighty have mercy on them). They state that for the transfer of water from one pond to another to be considered flowing, there must be some distance between them. Otherwise, if wudu were performed in the water while it exits one and enters the cavity of the other, it would not be valid. Had internal movement been considered 'flow', then wudu performed while water falls from the first to the second and flows toward its destination would certainly be wudu in flowing water, and no distance would be required in between, as we have indicated there. From these (38) passages, it is clear that the majority do not consider this flux itself as the flow of the entering water. This view, for the reasons mentioned in the first discussion, is not without difficulty. If it is said that for stagnant water to be considered abundant and immune to impurity, mere surface area or a ten-by-ten dimension is insufficient, but a depth is also required such that the ground is not exposed when water is taken by hand—this is correct. 'Hidaya' and numerous other books provide fatwa on this. 'Zahira', 'Khulasa', 'Diraya', 'Jawhara', etc., also mention this. Thus, in the Fatawa of the illustrious Imam Qazi Khan, and then in 'Hindiyya' and 'Ghunyah', it is stated (the wording being from 'Ghunyah'):

Arabic	**Urdu**
If water rises from an aperture in ice and spreads over the surface of the ice, and it measures ten-by-ten: then if it is such that scooping from it does not expose the ice beneath, it does not become impure if an impurifying agent falls into it. However, if it is exposed, or if it was less than ten-by-ten, it becomes impure thereby.	When water rises from a hole in the ice and spreads over its surface, and the water is ten-by-ten (dih-dar-dih), such that if someone takes a handful and the ice below is not uncovered, then it will not be rendered impure by the falling of a contaminant. But if the underlying ice is uncovered or the water was not ten-by-ten, it will become impure. (T)

[Arabic note] 'A' and the wording of the first two is: wudu is permissible in it, otherwise not. End. So let it be noted, its benefit will come to you in the upcoming treatise, if Allah Almighty wills. From him, may he be forgiven. (M)

[Urdu note] The words of the first two books are that wudu is permissible in it, otherwise not. End. Beware, its benefit will come in the next treatise, if Allah Almighty wills. 12 From him, may he be forgiven. (T)

---

1 Ghunyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli, Discussion on Ten-by-Ten, Suhail Academy Lahore, p. 100. Page 418 of 711

फतावा रजविया - जिल्द सानी (भाग 2)

तीसरा, चौथे उत्तर में 'फतह अल-कदीर' का उद्धरण (28) एक छोटे तालाब के विषय में—कि यह भरने के बाद भी अशुद्ध रहता है—प्रवाह को स्वीकार न करने का प्रमाण है; अन्यथा अदृश्य या दृश्य अशुद्धि जिसे हटा दिया गया हो, अनिवार्य रूप से समाप्त हो जाती।

चौथा, 'तन्बीह अल-जलील' में 'मुन्या' (29), 'मुहीत' (30), 'हिलिया' (31), 'खानिया' (32), 'हिन्दिया' (33) और 'ज़खीरा' (34) के वे उद्धरण महान इमामों अली अस-सुगदी (35), नासिर बिन यह्या (36) और खलफ बिन अय्यूब (37) (अल्लाह उन पर दया करे) के निर्णयों को दर्ज करते हैं कि एक हौज से दूसरे में पानी के जाने को प्रवाह मानने के लिए उनके बीच कुछ दूरी होना आवश्यक है। अन्यथा, यदि पहले से निकलकर दूसरे के भीतर जाते समय उसमें वज़ू किया जाए, तो वह अमान्य होगा। यदि भीतर की गति को प्रवाह माना जाता, तो जब पानी पहले से दूसरे में गिर रहा हो और अपने गंतव्य की ओर बह रहा हो, तो उसमें वज़ू निश्चित रूप से बहते पानी का वज़ू होता और बीच में किसी दूरी की आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि हमने वहाँ संकेत किया था। इन (38) उद्धरणों से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्वान इस बहाव को स्वयं उस प्रवेश करने वाले जल का प्रवाह नहीं मानते, और उन्हीं कारणों से जो पहली चर्चा में गुज़रे, यह बात जटिलता से मुक्त नहीं है। यदि आप कहें कि ठहरे हुए जल के प्रचुर और अशुद्धि-प्रतिरोधी होने के लिए केवल सतह का क्षेत्रफल या दस-दर-दस की लंबाई-चौड़ाई पर्याप्त नहीं है, बल्कि इतनी गहराई भी आवश्यक है कि हाथ से पानी लेने पर ज़मीन न खुले—तो यह सही है। 'हिदाया' और अन्य कई पुस्तकों में इसी पर फतवा है। 'ज़हीरा', 'खुलासा', 'दिराया', 'जौहरा' आदि में भी यही है। इसलिए इमाम-ए-अजल काज़ी खान के फतावा में, और फिर 'हिन्दिया' और 'गुनिया' में कहा गया (और शब्द 'गुनिया' के हैं):

अरबी	**उर्दू**
यदि बर्फ के छिद्र से पानी ऊपर आए और बर्फ की सतह पर फैल जाए और दस-दर-दस हो: तो यदि वह ऐसा है कि चुल्लू भर पानी लेने पर नीचे की बर्फ न खुले, तो अशुद्धि गिरने से वह दूषित नहीं होगा। और यदि वह खुल जाए,	जब पानी बर्फ के छेद से ऊपर चढ़े और बर्फ की सतह पर फैल जाए और पानी दस-दर-दस (दह-दर-दह) हो, इस प्रकार कि यदि कोई चुल्लू भर पानी ले और उसके नीचे की बर्फ न खुले, तो अशुद्धि गिरने से वह अशुद्ध नहीं होगा। और यदि नीचे वाली बर्फ खुल

अरबी	उर्दू
या दस-दर-दस से कम हो, तो वह अशुद्ध हो जाएगा।	जाए या वह पानी दस-दर-दस न था, तो वह पानी अशुद्ध हो जाएगा। (त)

[अरबी नोट] 'अ' और पहले दो के शब्द हैं: इसमें वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं। समाप्त। अतः इस पर ध्यान दिया जाए, इसका लाभ आपको आने वाले लेख में मिलेगा, इंशा अल्लाह। उनकी ओर से, जिन्हें क्षमा किया गया है। (म)

[उर्दू नोट] पहली दो किताबों के शब्द ये हैं कि इसमें वज़ू जायज़ है अन्यथा नहीं। समाप्त। सावधान, इसका लाभ आगामी लेख में आएगा, इंशा अल्लाह। 12 उनकी ओर से, जिन्हें क्षमा किया गया है। (त)

---

1 गुन्यातुल मुस्तमली, शरह मुन्यातुल मुसल्ली, दस-दर-दस की चर्चा, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 100. 711 का पृष्ठ 418

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی ثالثاً جواب چہارم میں عبارت ۲۸ فتح القدیر درباره حوض صغیر کہ بھر کر بھی ناپاک رہے گا اُسی عدم تسلیم جریان پر دال ورنہ نجاست غیر مرئیہ یا مرئیہ کہ نکال دی ضرور زائل ہو جاتی۔ رابعاً تنبیہ جلیل میں منیہ ۲۹ و محیط ۳۰ وحلیہ ۳۱ وخانیہ ۳۲ وہندیہ ۳۳ و ذخیرہ ۳۴ کی عبارات ائمہ اجلہ علی سغدی ۳۵ ونصیر ۳۶ بن یحییٰ وخلف ۳۷ بن ایوب رحمہم اللہ تعالیٰ کے ارشادات کہ ایک حوض سے دوسرے میں انتقالِ آب کے جریان ہونے کو اُن میں کچھ مسافت ہونا ضرور ورنہ اس میں سے نکل کر اُس کے جوف میں جاتے ہوئے اُس میں وضو کیا جائے تو وضو نہ ہوگا اگر بطن میں حرکت کو جریان مانتے تو جس وقت پانی اول سے دوم میں گر رہا اور یہاں سے منتہی تک بہہ رہا ہے اُس میں وضو ضرور آبِ جاری میں وضو ہوتا بیچ میں فاصلہ مسافت کی ضرورت نہ ہوتی کما اشرنا الیہ ثمہ ان ۳۸ عبارتوں سے روشن کہ جمہور اس سیلان کو خود اُس آبِ داخل ہی کا جریان نہیں مانتے اور یہ انہیں وجوہ سے کہ بحث اول میں گزریں اشکال سے خالی نہیں۔ اگر کہیے آپ راکد کے کثیر وناقابلِ نجاست ہونے کے لئے صرف مساحتِ سطحِ آب یا طول و عرض دہ در دہ کافی نہیں بلکہ اتنا عمق بھی درکار ہے کہ اس میں سے پانی ہاتھ سے لیں تو زمین کھُل نہ جائے یہی صحیح ہے ہدایہ وغیرہ ہا کتبِ کثیرہ اسی پر فتویٰ ہے ظہیرہ خلاصہ درایہ جوہرہ وغیرہ ہا ولذا فتاویٰ امام اجل قاضی خان پھر ہندیہ وغنیہ میں فرمایا: واللفظ لہا یعنی الفاظ غنیہ کے ہیں:

عربی	اردو
ان علا الماء من ثقب الجمد وانبسط علی وجه الجمد وكان عشرا في عشر فان كان بحيث لو غرف منه لاينحسر ماتحته	جب پانی برف کے سوراخ سے اوپر چڑھے اور پھیل جائے برف کی سطح پر اور پانی دہ در دہ ہو اس طور پر کہ اگر کسی نے چلو بھر کر اس سے پانی لیا اور اس کے

عربی	اردو
من الجمد لم یفسد بوقوع المفسد وان کان ینحسر اوکان دون عشر في عشر یفسد بہ۔	نیچے برف نہ کھلی تو مفسد کے گرنے سے فاسد نہ ہوگا اور اگر نیچے والی برف کھل گئی یا وہ پانی دہ در دہ نہ تھا تو وہ پانی فاسد ہو جائیگا۔(ت)

عہ ولفظ الاولین جاز فیہ الوضوء والا فلا اہ فلیتنبہ فستأتیك فائدتہ فی الرسالۃ الاٰتیۃ ان شاء اللہ تعالٰی منہ غفرلہ۔ (م) پہلی دو کتابوں کے الفاظ یہ ہیں کہ اس میں وضو جائز ہے ورنہ نہیں اھ خبردار اس کا فائدہ آئندہ رسالہ میں آئے گا ان شاء اللہ تعالٰی ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

---

1 غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی بحث عشر فی عشر سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۰۰ Page 418 of 711

Fatawa Razawiyya Volume 2

In Tuhfat al-Fuqaha and Bada'i, it is mentioned by Imam Faqih Abu Ja'far Hindwani, and in Tabyin al-Haqa'iq regarding flowing water by Imam Abu Yusuf, and by Abdul Halim in al-Durr and Jami' al-Rumuz, it is clearly stated that taking water with both hands is meant, i.e., the bottom of the ground should not become visible when taking a handful of water. From Quhistani, it is understood that its measurement is five fingers.

[Table Content] Arabic Text: Where he said: (If the) surface of the water (is ten by ten, the ground is not exposed by a handful), meaning taking the water with both palms. This is the saying of some Shaikhs regarding the estimation of depth, and the fatwa is based on it, as in al-Khulasa. It is based on what he chose from the measurements, and the depth is approximately five fingers, etc.

Urdu Translation (from the page): Quhistani said that if the upper part of the water is such a 'dah dar dah' (ten by ten) area that by taking a handful, the ground of the water is not exposed, i.e., by lifting water with both hands. Regarding the depth, this is the opinion of some Shaikhs and the fatwa is based on this, as mentioned in al-Khulasa. This is what has been chosen from the measurements, and the depth is approximately five fingers, etc. (T)

I say: And this is a close approximation supported by experience. (This is a good approximation, experience testifies to it. - T). So, for water to be considered 'ab-e-kathir' (large quantity), it is necessary that in an area of one and a quarter cubits, water of approximately five fingers' depth should be spread out; nowhere should the depth be less than this. Pools or reservoirs that are filled by rainwater runoff or waterwheels, etc., their flow is never so great that upon falling into the pool, it simultaneously raises five fingers of water across the entire required surface to the other edge. Water naturally seeks its center; its parts can remain above and below each other only as long as the upper parts do not find a place to slide off. When they find space, they immediately descend and spread out. No matter how deep the stream falling from a spout is, it will never remain that deep upon hitting the ground; it will spread instantly. This is why, for example, if water of a certain volume is poured from one entire side of a pool, even though the supply is constant and simultaneous across the entire width of the pool, one would expect this volume to remain constant until the end and for water of that depth to reach the other side simultaneously. But this does not happen; rather, it increases gradually at that edge. As mentioned

before, upon reaching the other edge, this flow stops. So, what benefit will the vastness of area give if five fingers of depth are not achieved simultaneously? If it happens gradually, it is 'ab-e-qalil' (small quantity) at every moment. It becomes impure, and even as it increases, it stays impure, until the large pool fills up but remains impure. Yes, in massive floods, water of such volume or more reaches that edge instantly, but that's only for a moment...

---

1 Jami' al-Rumuz, discussion on ten-by-ten, Karimiyyah Press, Kazan, Iran 1/48. Page 419 of 711

फ़तावा रज़विय्या भाग 2

तोहफ़तुल फ़ुकहा और बदाइ में इमाम फकीह अबू जाफ़र हिन्दवानी से, और तबीइनुल हक़ाइक में बहते पानी के बारे में इमाम अबू यूसुफ से, और अब्दुल हलीम ने अल-दुरर और जामिउर रुमूज़ में स्पष्ट किया है कि दोनों हाथों से पानी लेना मुराद है, यानी अंजलि भर कर लेने में जमीन न दिखे। और कुहिस्तानी से समझा जाता है कि इसका अंदाज़ा पांच अंगुल है।

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: जहाँ उन्होंने कहा: (यदि) जल की सतह (दस गुणा दस हो, तो अंजलि भर लेने से ज़मीन उजागर नहीं होती), अर्थात दोनों हथेलियों से पानी उठाना। गहराई के अनुमान में यह कुछ मशाइख का कहना है, और इसी पर फतवा है, जैसा कि अल-खुलासा में है। यह उन मापों पर आधारित है जिन्हें उन्होंने चुना है, और गहराई लगभग पाँच अंगुल है, आदि।

उर्दू अनुवाद (पृष्ठ से): कुहिस्तानी ने कहा कि अगर पानी का ऊपरी हिस्सा ऐसा 'दह दर दह' (दस गुणा दस) क्षेत्र हो कि अंजलि भरने से पानी की ज़मीन न खुले, यानी दोनों हाथों से पानी उठाने से। गहराई की मात्रा के विषय में यह कुछ मशाइख का कथन है और इसी पर फ़तवा है जैसा कि खुलासा में है, और यह वह है जिसे मात्राओं में से चुना गया है, और गहराई लगभग पांच अंगुल है आदि। (त)

मैं कहता हूँ: और यह एक करीबी अनुमान है जिसकी गवाही अनुभव देता है। (यह एक अच्छी व्याख्या है, अनुभव इस पर गवाह है। - त)। तो पानी के'आब-ए-कसीर' (अधिक जल) होने के लिए यह आवश्यक है कि सवा हाथ के क्षेत्रफल में लगभग पाँच अंगुल गहरा पानी फैला हो, कहीं भी इससे कम गहराई न हो। तालाब या हौज जो बारिश के बहाव या रहट आदि से भरते हैं, उनकी धारा कभी इतनी नहीं होती कि तालाब या हौज में गिरकर पूरी सतह पर उस किनारे तक एक साथ पाँच अंगुल पानी चढ़ा दे। पानी स्वाभाविक रूप से अपने केंद्र की तलाश में रहता है; उसके हिस्से एक-दूसरे के ऊपर-नीचे तभी तक रह सकते हैं जब तक कि ऊपरी हिस्सों को फिसलने की जगह न मिले। जब उन्हें जगह मिलेगी, वे तुरंत उतरकर फैल जाएंगे। परनाले से गिरने वाली धारा चाहे कितनी भी गहरी हो, ज़मीन पर आकर हरगिज़ उतनी गहरी नहीं रहेगी, बल्कि तुरंत फैल जाएगी। यही कारण है कि उदाहरण के लिए, यदि हौज के एक पूरे किनारे से किसी आयतन का पानी गिराया जाए, बावजूद इसके कि आपूर्ति निरंतर है और पूरे हौज की चौड़ाई में एक साथ है, तो होना यह चाहिए था कि यही आयतन अंत तक सुरक्षित रहता और दूसरे किनारे पर भी एक साथ उतना ही गहरा पानी हो जाता। लेकिन ऐसा नहीं होता, बल्कि उस किनारे पर धीरे-धीरे बढ़ता है। और जैसा पहले बताया गया कि

दूसरे किनारे पर पहुँचकर यह प्रवाह रुक जाता है। तो क्षेत्रफल की अधिकता का क्या लाभ होगा जब तक कि एक साथ पाँच अंगुल की गहराई न हो? यदि यह धीरे-धीरे हुआ, तो यह हर समय 'आब-ए-क़लील' (अल्प जल) है। यह अशुद्ध हो गया, और बढ़ता हुआ भी अशुद्ध ही रहा यहाँ तक कि बड़ा हौज भर गया लेकिन अशुद्ध ही रहा। हाँ, भीषण बाढ़ में इतने या इससे अधिक आयतन का पानी उस किनारे पर एक साथ चढ़ता है, लेकिन वह कुछ ही क्षणों के लिए...

---

1 जामिउर रुमूज़, बहस 'अश्र फी अश्र', मतबा करीमिया कज़ान, ईरान 1/48. पृष्ठ 711 का 419

تحفۃ الفقہاء وبدائع میں امام فقیہ ابو جعفر ہندوانی اور تبیین الحقائق میں درباره آبِ جاری امام ابو یوسف سے اور عبدالحلیم علی الدرر وجامع الرموز میں تصریح کی کہ دونوں ہاتھوں سے پانی لینا مراد ہے یعنی لپ بھر کر لینے میں نہ کھلے اور قہستانی سے مفہوم کہ اُس کا اندازہ پانچ انگل ہے۔

[جدول] عربی متن: حيث قال (ان كان) وجه الماء (عشرا في عشر لا ينحسر ارضه بالغرفة) اى يرفع الماء بالكفين وهذا قول بعض المشائخ في تقدير العمق وعليه الفتوى كما في الخلاصة وهو على ما اختاره من المقدارين والعمق الذي هو خمس اصابع تقريبا الخ

اردو ترجمہ (صفحہ سے): قہستانی نے کہا کہ اگر پانی کا بالائی حصہ ایسا دہ در دہ ہو کہ چلو بھرنے سے پانی کی زمین نہ کھلے یعنی دونوں ہاتھوں سے پانی اٹھانے سے۔ اور عمق کی مقدار میں یہ بعض مشائخ کا قول ہے اور اسی پر فتوٰی ہے جیسا کہ خلاصہ میں ہے، اور یہ وہ ہے جس کو مقداروں میں سے اختیار کیا ہے، اور عمق تقریباً پانچ انگل ہے الخ (ت)

اقول: وهو تقريب قريب مشهود له بالتجربة (یہ اچھی تقریب ہے تجربہ اس پر گواہ ہے۔ت) تو آبِ کثیر ہونے کو یہ چاہئے کہ سوا ہاتھ مساحت میں تقریباً پانچ انگل دَل کا پانی پھیلا ہوا ہو کہیں اس سے کم دَل نہ ہو تالاب یا حوض کہ بارش کے بہاؤ یا چرخ وغیرہ سے بھرتے ہیں ان کی دھار کبھی اتنی نہیں ہوتی کہ تالاب یا حوض میں گر کر تمام سطح مطلوب پر اُس کنارے تک معاً پانچ انگل پانی چڑھادے پانی بالطبع طالبِ مرکز ہے اُس کے اجزاء زیر وبلا اُسی وقت تک رہ سکتے ہیں کہ اوپر کے اجزاء ڈھلکنے کی جگہ نہ پائیں جب محل پائیں گے فوراً اتر کر پھیل جائیں گے پر نالے سے جتنے دَل کی دھار اُتر رہی ہے زمین پر آکر ہرگز اتنے دَل پر نہ رہے گی معاً پھیلے گی

یہی سبب ہے کہ مثلاً حوض میں ایک پورے کنارے سے پانی جس حجم کا اتارے با آنکہ مدد برابر جاری اور حوض کے سارے عرض میں معاً ساری ہے تو چاہئے تھا کہ یہی حجم آخر تک محفوظ رہتا اور دوسرے کنارے پر معاً اتنے دَل کا پانی ہو جاتا مگر ایسا نہیں ہوتا بلکہ اُس کنارے پر بتدریج بڑھتا ہے اور اوپر گزرا کہ دوسرے کنارے پر پہنچ کر یہ جریان ٹھہر جاتا ہے تو مساحت کی کثرت کیا نفع دے گی جبکہ معاً پانچ انگل دَل نہ ہو بتدریج ہوا تو ہر وقت آبِ قلیل ہے اتنا ناپاک ہو گیا اور آیا وہ بھی یونہی کم تھایونہی ناپاک ہوا یہاں تک کہ حوض کبیر بھر گیا اور ناپاک ہی رہا۔ ہاں عظیم سیلابوں میں اتنے اور اس سے زیادہ حجم کا پانی اُس کنارے پر معاً چڑھتا ہے مگر وہ دم کے دم میں

---

1 جامع الرموز بحث عشر فی عشر مطبہ کریمیہ قزان، ایران ۱/ ۴۸ Page 419 of 711

Fatawa Rizvia, Volume II If the pond is filled and overflows, then in this case of dispute it will no longer remain. Even if, hypothetically, such a situation occurs where a massive flow of water arrives and stops right at the edge, this is extremely rare, and in jurisprudential rulings, the rare is not taken into account. This is the intent of that prevailing ruling and the benefit of the reasoning that 'everything that entered becomes impure.' This is the extreme excuse that by considering the water coming from outside into the pond as flowing, even with the presence of visible impurity, it would declare the entire pond impure, no matter how large it is, although the problem of the 'two basins' and the issue of non-visible or visible extracted impurity remains unanswered. I say: However, upon this discourse, a case arises that if water enters the pond and first becomes ten by ten (deh-dar-deh) and then meets impurity, it will not become impure, for being ten by ten, it also requires a depth of five fingers. If it is said that it is not unlikely for such depth to be created across that entire area before meeting, because spreading happens in flowing water, and it is possible that before meeting, it settles somewhere, creates depth, and then meets. This is the secret that the aforementioned situation was stated in 'Khaniyah' in these words:

'The water gathered in a pure place and it is ten by ten.' 1- | And the water gathered in a pure place and it is ten by ten. (T)

In 'Khulasa': 'If the water that enters the pond settles in a pure place until it becomes ten by ten.' 2- | If the water entering the pond stays in a pure place until it becomes ten by ten. (T)

In 'Fath al-Qadir' and 'Bahr al-Raiq': 'If it entered a pure place and settled there until it became ten by ten.' 3- | And if water entered a pure place and stayed until it became ten by ten. (T)

In 'Zakhira' and 'Hulyah': 'If the water that enters the pond...' | If the water that enters the pond, as soon as it enters, it is pure...

1. Fatawa Qazi Khan, Section on Stagnant Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4
2. Khulasat al-Fatawa, Section on Ponds, Naval Kishore, Lucknow, 5/1
3. Fath al-Qadir, Al-Ghadir al-Azim, Nooria Razvia, Sukkur, 1/71

फ़तवा रिज़विया, जिल्द दोयम यदि तालाब भर कर उबलने लगे तो इस विवाद की स्थिति में रहेगा ही नहीं। और मान लीजिए कि यदि कभी ऐसी स्थिति हो कि इतना विशाल जल प्रवाह आए और किनारे पर ही रुक जाए, तो यह अत्यंत दुर्लभ है, और फ़िक़ही अहकाम (न्यायशास्त्रीय नियमों) में दुर्लभ बातों का ध्यान नहीं रखा जाता। यह उस प्रचलित आदेश की मंशा है और उस तर्क का सार है कि 'जो भी प्रवेश करेगा वह अशुद्ध हो जाएगा।' यह वह चरम बहाना है कि तालाब में बाहर से आने वाले पानी को गतिशील मानकर भी, दृश्य अशुद्धि (नजासत-ए-मरईया) के बने रहने के बावजूद, पूरे तालाब को अशुद्ध ठहरा दिया जाए चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, हालांकि 'हौज़ैन' (दो हौज़) का मसला और अदृश्य या दृश्य निष्कासित अशुद्धि का मसला अब भी अनुत्तरित है। मैं कहता हूँ: लेकिन इस चर्चा पर वह स्थिति उत्पन्न होती है कि यदि पानी तालाब में प्रवेश करके पहले 'दह दर दह' (10x10) हो जाए और फिर अशुद्धि से मिले, तो वह अशुद्ध नहीं होगा, क्योंकि 'दह दर दह' होने के साथ-साथ पाँच उंगल गहराई भी आवश्यक है। यदि यह कहा जाए कि मिलने से पहले उस पूरे क्षेत्र में इतनी गहराई का पैदा होना असंभव नहीं है क्योंकि फैलना तो बहते पानी में होता है, और संभव है कि मिलने से पहले वह कहीं ठहरकर गहराई बना ले और फिर मिले। यही वह रहस्य है कि वर्णित स्थिति 'ख़ानिया' में इन शब्दों में बताई गई है:

'पानी एक पवित्र स्थान पर एकत्रित हुआ और वह दस बाई दस है।' 1- | और पानी पाक जगह पर इकट्ठा हो गया और वह दह दर दह है। (त)

'खुलासा' में: 'यदि तालाब में प्रवेश करने वाला पानी किसी पवित्र स्थान पर रुक जाए यहाँ तक कि वह दस बाई दस हो जाए।' 2- | अगर वह पानी जो तालाब में प्रवेश कर रहा है, पाक जगह ठहर गया यहाँ तक कि दह दर दह हो गया। (त)

'फ़तह अल-क़दीर' और 'बहर अल-रायिक़' में: 'यदि वह एक पवित्र स्थान पर प्रवेश किया और वहाँ ठहर गया यहाँ तक कि वह दस बाई दस हो गया।' 3- | और अगर पाक जगह पानी प्रवेश करके ठहर गया यहाँ तक कि वह दह दर दह हो गया। (त)

'ज़खीरा' और 'हुलिया' में: 'यदि तालाब में प्रवेश करने वाला पानी...' | अगर वह पानी जो तालाब में प्रवेश करता है, प्रवेश करते ही पाक...

1. फ़तवा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल अल-मा अल-राकिद, नवल किशोर लखनऊ, 1/4
2. ख़ुलासत अल-फ़तवा, फ़स्ल फ़िल हियाज़, नवल किशोर लखनऊ, 5/1

3. फ़तह अल-क़दीर, अल-ग़दीर अल-अज़ीम, नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 1/71

पृष्ठ 420 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی تالاب کو بھر کر ابال دیں گے تو اس صورتِ نزاع میں رہے گا ہی نہیں اور بالفرض اگر کبھی ایسی صورت ہو کہ اتنے عظیم بہاؤ کا پانی آئے اور کنارے ہی پر رک رہے تو یہ بغایت نادر ہے اور احکام فقہیہ میں نادر کا لحاظ نہیں ہوتا۔ یہ ہے اُس حکمِ دائرِ سائر کا منشا اور یہ ہے اُس تعلیل کا مفاد کہ کل ما دخل صار نجسًا یہ ہے وہ غایتِ عذر کہ تالاب میں باہر سے آنے والے پانی کو جاری مان کر بھی بحالِ نجاستِ مرئیہ باقیہ تمام تالاب کو ناپاک ٹھہرائے کتنا ہی کبیر ہو اگرچہ مسئلہ حوضین و مسئلہ نجاست غیر مرئیہ یا مرئیہ مخرجہ کا اب بھی جواب نہ ہوا۔ اقول: مگر اس تقریر پر وہ صورت وارد ہے کہ اگر پانی تالاب میں داخل ہو کر پہلے دہ دردہ ہو لیا پھر نجاست سے ملا تو ناپاک نہ ہوگا کہ وہ دہ دردہ سہی پانچ انگُل دل بھی تو درکار۔ اگر کہیے ملنے سے پہلے اُس پوری مساحت میں اتنا دل پیدا ہونا بعید نہیں کہ پھیلنا تو بہتے میں ہوتا ہے اور ممکن ہے کہ ملنے سے پہلے کہیں ٹھہر کر ڈُل پیدا کرلے پھر ملے۔ یہی سر ہے کہ صورتِ مذکورہ خانیہ میں ان لفظوں سے ارشاد ہوئی:

واجتمع الماء فی مکان طاھر وھو عشر فی عشر 1- | اور پانی پاک جگہ اکٹھا ہو گیا اور وہ دہ دردہ ہے۔ (ت)

خلاصہ میں : ان کان الماء الذی یدخل فی الغدیر یستقر فی مکان طاھر حتی صار عشرا فی عشر 2- | اگر وہ پانی جو تالاب میں داخل ہو رہا ہے پاک جگہ ٹھہر گیا یہاں تک کہ دہ دردہ ہو گیا۔ (ت)

فتح القدیر و بحرالرائق میں: انکان دخل فی مکان طاھر و استقر فیه حتی صار عشرا فی عشر 3- | اور اگر پاک جگہ پانی داخل ہو کر ٹھہر گیا یہاں تک کہ وہ دہ دردہ ہو گیا۔ (ت)

ذخیرہ وحلیہ میں: انکان الماء الذی یدخل الغدیر ولا... | اگر وہ پانی جو تالاب میں داخل ہوتا ہے داخل ہوتے ہی پاک

1 فتاوی قاضی خان فصل الماء الراکد نولکشور لکھنو ۱/۴ 2 خلاصة الفتاوی فصل فی الحیاض نولکشور لکھنو ۵/۱ 3 فتح القدیر الغدیر العظیم نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۱

[Boxed Text] Arabic: In kana al-ma'u al-ladhi yadkhulu al-ghadira wa la yastaqirru fi makanin thahirin hatta yasira 'ashran fi 'ashrin. (1) Urdu: It does not stay in one place until it becomes ten by ten [cubits]. (T)

Otherwise, why would it be necessary to settle and collect in some place just to be ten by ten?

I say: What benefit will the width of that time provide when it has to move forward and meet impurities? It will advance, then by that same flowing and spreading, it will not allow that volume to remain in it. If you say, connection with impurity is possible such that impure water increases and meets it.

I say: This is contrary to the hypothetical scenario, and in Khaniya, after the mentioned words, it is specified: "Then it exceeds to the place of impurity" (2) (Then it should cross into the area of impurity. - T). In the rest of the mentioned books, it is stated: "Then it reaches the impurity" (3) (Then it reaches the impurity. - T). In short, the words of the majority do not allow for the flow of that incoming water in the center of the pool in any way.

And I say: And with Allah is success; Research (1) is this: that it is not flowing. Otherwise, for instance, if there is impure water in half a pot (Lota) containing invisible impurity or visible impurity which was removed, and then the pot was filled but nothing overflowed from the edges, rather it was not even full, but some water was added which flowed from one side to the other, then it should be that all the water and the pot become pure because flow occurred, and it annihilates invisible impurity without any measurement being a condition. And what is the harm in settling on a small quantity after the annihilation of impurity? Whereas no one is a proponent of this. These scholars who do not make an exit a condition at all, their discourse is also regarding a large pool (Hauz-e-Kabeer). Therefore, it is stated in Munyah, Dhakhirah, and Nazm-e-Zandoweisi: "When the pool is large." (4)

Note: The research on this issue appears in the grand treatise 'Habbat-ul-Khabeer'. From there, by the grace of Allah, it will become clear that for water to be inherently 'abundant' (Katheer), depth is not required; it only needs to be such that the ground is not exposed anywhere. And the requirement of such depth that the ground is not exposed when taking water is for the state when one performs ablution (Wudu) or a

full bath (Ghusl) inside it. On this basis, the mentioned justification has no room at all. And Allah Almighty knows best. 21 Minhu Ghafara Lahu (M).

Footnotes: 1 Hilya 2 Qazi Khan, Al-Ma-ur-Rakid, Naval Kishore Lucknow, 1/4 3 Bahr-ur-Raiq, Discussions on Water, etc., M. Saeed Company Karachi, 1/77 4 Munyah-ul-Musalli, Chapter on Impurity (Al-Hayd), Maktaba Qadriyah Jamia Nizamia Rizvia Lahore, p. 76

फ़तावा रज़विया | जिल्द सानी (भाग 2)

[बॉक्स में लिखा पाठ] अरबी: इन काना अल-माउ अल-लज़ी यदखुलुल ग़दीरा व ला यस्तक़िर्रु फ़ी मकानिन ताहिरिन हत्ता यसीरा अ़शरन फ़ी अ़शरिन्। (1) उर्दू: जगह नहीं ठहरता है यहाँ तक कि दस गुणा दस हो जाए। (त)

वरना सिर्फ़ दस गुणा दस होने के लिए किसी जगह में ठहर कर जमा हो लेना क्यों ज़रूरी होता?

मैं कहता हूँ: उस समय की चौड़ाई क्या फ़ायदा देगी जब उसे आगे बढ़कर गंदगियों (नजासतों) से मिलना है, बढ़ेगा फिर उसी बहने और फैलने से जो उसमें वह आयतन (वॉल्यूम) न रहने देंगे। अगर आप कहें कि नजासत से संपर्क इस तरह भी मुमकिन है कि नापाक पानी बढ़कर उससे मिल जाए।

मैं कहता हूँ: यह कल्पित स्थिति के विरुद्ध है और खानिया में उल्लेखित शब्दों के बाद स्पष्टीकरण है: "थुम्मा तअ़द्दा इला मौदिअ़िन नजासती" (2) (फिर नजासत की जगह तक पार कर जाए। - त)। अन्य उल्लेखित किताबों में है: "थुम्मा अन्तहा इलन्नजासती" (3) (फिर नजासत तक पहुँच जाए। - त)। कुल मिलाकर, विद्वानों के शब्दों से उस आने वाले पानी का हौज़ के बीच में बहाव किसी भी तरह सही साबित नहीं होता।

और मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है; शोध (1) यही है कि वह बहता हुआ (जारी) नहीं है, वरना अगर उदाहरण के तौर पर आधे लोटे में नापाक पानी हो जिसमें अदृश्य नजासत हो या दृश्य थी और निकाल दी गई, उसके बाद लोटा भर दिया गया और किनारों से कुछ न निकला बल्कि पूरा भरा भी नहीं था, बस कुछ पानी डाल दिया गया जो उसके एक किनारे से दूसरे तक बह गया, तो चाहिए कि सारा पानी और लोटा पाक हो जाए क्योंकि बहाव (जरियान) हो गया और वह अदृश्य नजासत को ख़त्म कर देता है और उसमें कोई माप शर्त नहीं है। और नजासत ख़त्म होने के बाद कम मात्रा पर स्थिर रहने में क्या हर्ज है? जबकि कोई भी इसका समर्थक नहीं है। ये विद्वान जो निकास को बिल्कुल शर्त नहीं मानते, उनकी बात भी बड़े हौज़ (हौज़-ए-कबीर) के बारे में है। इसीलिए मुनय्या, ज़ख़ीरा और नज़्म-ए-ज़न्दवैसी में फ़रमाया: "जब हौज़ बड़ा हो।" (4)

विशेष नोट: इस मसले का शोध महान शोध-पत्र 'हब्बत-उल-ख़बीर' में आता है। वहाँ से अल्लाह की तौफ़ीक़ से यह स्पष्ट होगा कि पानी के अपने आप में 'अधिक' (कसीर) होने के लिए गहराई ज़रूरी नहीं है, सिर्फ़ इतना हो कि ज़मीन कहीं से खुली न हो। और यह जो इतनी गहराई शर्त की गई कि पानी लेते समय ज़मीन न खुले, वह उस स्थिति के लिए है जब उसके अंदर वुज़ू और ग़ुस्ल करें। इस

आधार पर उल्लेखित स्पष्टीकरण की कोई गुंजाइश ही नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 21 मिन्हु ग़फ़रलाहू (म)।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 हिल्या 2 क़ाज़ी ख़ान, अल-मा-उर-राकिद, नवल किशोर लखनऊ, 1/4 3 बहर-उर-राइक़, पानी की बहसें आदि, एम. सईद कंपनी कराची, 1/77 4 मुनय्यतुल मुसल्ली, नजासत (हैज़) का अध्याय, मकतबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 76

[باکس میں متن] عربی: انکان الماء الذی یدخل الغدیر ولا یستقر فی مکان طاہر حتی یصیر عشرا فی عشر - 1 اردو: جگہ نہیں ٹھہرتا ہے یہاں تک کہ دہ در دہ ہو جائے۔ (ت)

ورنہ صرف دہ در دہ ہونے کیلئے کسی مکان میں ٹھہر کر جمع ہو لینا کیوں درکار ہوتا۔

اقول : اس وقت کا دل کیا فائدہ دے گا جبکہ اُسے آگے بڑھ کر نجاستوں سے ملنا ہے ، بڑھے گا پھر اُسی بہنے پھیلنے سے جو اُس میں وہ حجم نہ رہنے دیں گے۔ اگر کہیئے اتصال نجاست یوں بھی ممکن کہ آبِ نجس بڑھ کر اُس سے ملے۔

اقول : یہ تصویر مفروض کے خلاف ہے اور خانیہ میں الفاظِ مذکورہ کے بعد تصریح ہے : ثم تعدی الی موضع النجاسۃ 2 (پھر نجاست کی جگہ تک تجاوز کر جائے ۔ ت) بقیہ کتب مذکورہ میں ہے : ثم انتھی الی النجاسۃ عہ 3 (پھر نجاست تک پہنچ جائے ۔ ت) بالجملہ کلماتِ جمہور کسی طرح اُس آنے والے پانی کا بھی بطنِ حوض میں جریان درست نہیں آتا۔

وانا اقول : وباللہ التوفیق تحقیق (1) یہی ہے کہ وہ جاری نہیں ورنہ اگر مثلاً نصف لوٹے میں ناپاک پانی ہو جس میں نجاست غیر مرئیہ ہو یا مرئیہ تھی اور نکال دی اُس کے بعد لوٹا بھر دیا اور کناروں سے کچھ نہ نکلا بلالہ بھرا بھی نہیں کچھ پانی ڈال دیا جو اُس کے ایک کنارے سے دوسرے تک بہہ گیا تو چاہئے کہ سب پانی اور لوٹا پاک ہو جائے کہ جریان ہو گیا اور وہ نجاستِ غیر مرئیہ کو فنا کر دیتا ہے اور اُس میں کوئی مساحت شرط نہیں اور بعد فنائے نجاست قلت پر استقرار کیا مضر حالانکہ اس کا کوئی قائل نہیں یہ مشائخ کہ خروج اصلا شرط نہیں کرتے ان کا کلام بھی حوضِ کبیر میں ہے ولذا منیہ و ذخیرہ و نظم زندویسی میں فرمایا اذا کان الحوض کبیرا 4

عہ : تنبیہ اس مسئلہ کی تحقیق جلیل رسالہ حبۃ الخبیر میں آتی ہے وہاں سے بتوفیق الٰہی یہ توفیق ظاہر ہوگی کہ پانی کے فی نفسہ کثیر ہونے کیلئے عمق درکار نہیں صرف اتنا ہو کہ زمین کہیں کھلی نہ ہو اور یہ جو اتنا عمق شرط کیا گیا کہ پانی لینے سے زمین نہ کھلے اُس حالت میں ہے کہ اُس کے اندر وضو و غسل کریں اس تقدیر پر توجیہ مذکور کی گنجائش ہی نہیں واللہ تعالٰی اعلم ۲۱ منہ غفرلہ (م)

حواشی: 1 حلیہ 2 قاضی خان الماء الراکد نول کشور لکھنو ۱/ ۴ 3 بحر الرائق ابحاث الماء الخ، ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۷ 4 منیۃ المصلی فصل فی الحیض مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۶

Fatawa Rizvia, Volume II

In Bazzaziyyah, apparently referring to a pool with the attribute of abundance, it was said: "Then a large amount of water entered." (T) In Ghunyah, the reasoning for their ruling is given as:

(It was said: it is not impure) because it is large, etc., as previously mentioned. | (It has been said that this is not impure) because it is large, etc., as all this has already passed. (T)

So this objection also remains on the second saying, but their discourse should be specific to the remaining visible [water]. Now, as for the three reasons mentioned in the first discussion, I say—and by Him I seek help—that in a vessel meant for containing and preserving water, the movement of water is not conventionally called "flowing" (jaryaan). If there is a cup full of water at the bottom of a water skin (mashk), and its mouth is tied and it is turned upside down so the water moves from here to there, no one will call it flowing. When it comes out of the mouth and flows, then it will be said that the water flowed. From here, the answer to the three reasons is obtained: that which moves inside a vessel is not conventionally called flowing. And space and its walls are not a vessel for water, nor is a river a vessel; rather, it's not a vessel of containment but a place of flow. This is contrary to a pond or a pool, even if it is large. Thus, by the grace of Allah Almighty, the throne of research is established upon the saying of the majority. And why shouldn't it be so, as:

Action is upon the saying of the majority, and Allah's hand is upon the congregation. This all overflowed onto the heart of this poor one (faqir) from the grace of the Subtle, the Aware, despite the dispersion of mind, the accumulation of distress, and the onslaught of enviers with various kinds of corruption. And Allah is the One whose help is sought, and upon Him is reliance. There is no power or strength except with Allah, the High, the Great. Allah is sufficient for us, and He is the best Disposer of affairs, the best Protector, and the best Helper. The transgressors have overstepped and acted unjustly, and I hope for Allah's reward. And Allah is sufficient as a Guardian, and Allah is sufficient as a Helper.

| Action is indeed upon the saying of the majority, and Allah's hand is upon the congregation. This all has descended upon the poor one's heart from the grace and bounty of the Kind and All-Knowing God, although my nature is distracted and I am caught in continuous misfortunes, and enviers have incited various types of corruption. Help is sought from Allah alone and reliance is placed on Him. Power and

strength come only from Allah, who is High and Great. Allah is enough for us and is a reliable Disposer of affairs, the best Lord and the best Helper. The enemies have crossed the limit and committed oppression. And I hope for Allah's grace in a state of humility, and Allah is enough as a Disposer of affairs and Allah is enough as a Helper.

---

1 Bazzaziyyah with al-Hindiyyah, section on menstruation, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/8. 2 Ghunyah al-Mustamli, ten by ten, Sohail Academy Lahore, p. 101.

फतावा रिज़विया, जिल्द दूसरी

बज़ाज़िया में स्पष्ट रूप से हौज (तालाब) को प्रचुरता के गुण के साथ निरपेक्ष रखते हुए कहा गया: "फिर बहुत अधिक पानी प्रवेश हुआ।" (त) गुनिया में उनके हुक्म का कारण इस प्रकार बताया गया है:

(कहा गया कि यह नापाक नहीं है) क्योंकि यह बड़ा है आदि, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। | (कहा गया है कि यह नापाक नहीं है) क्योंकि यह बड़ा है आदि, जैसा कि यह सब पहले बीत चुका है। (त)

तो यह आपत्ति भी इसी दूसरे कथन पर रही, लेकिन उनके इस कथन को शेष दृश्य (पानी) के लिए विशिष्ट किया जाना चाहिए। अब रही प्रथम चर्चा में उल्लेखित तीन वजहें, तो मैं कहता हूँ—और उन्हीं से सहायता मांगता हूँ—कि जो बर्तन पानी को रोकने और सुरक्षित रखने के लिए हो, उसमें पानी की गति को सामान्य भाषा (उर्फ़) में 'प्रवाह' (जर्यान) नहीं कहा जाता। यदि मशक (चमड़े का थैला) की तह में एक कटोरा भर पानी हो और उसका मुँह बांधकर उसे ऊपर-नीचे किया जाए कि पानी इधर-उधर जाए, तो कोई इसे बहता हुआ नहीं कहेगा। जब वह मुँह से निकलकर बहेगा, तब कहेंगे कि पानी बहा। यहाँ से तीनों वजहों का उत्तर हो गया कि बर्तन के भीतर चलने वाले को सामान्यतः'प्रवाह' नहीं कहते। और स्थान और उसकी दीवारें पानी का कोई बर्तन नहीं हैं, और न ही नदी एक बर्तन है; बल्कि वह रोकने वाला बर्तन नहीं बल्कि प्रवाह का स्थान है। इसके विपरीत तालाब और हौज का मामला अलग है, चाहे वह बड़ा ही क्यों न हो। तो अल्लाह तआला की कृपा से, शोध का सिंहासन बहुमत के कथन पर ही स्थिर हुआ। और क्यों न हो कि:

अमल (कार्य) बहुमत के कथन पर ही होता है, और अल्लाह का हाथ जमाअत (समूह) पर होता है। यह सब कुछ इस फ़कीर के दिल पर मेहरबान और खबरदार खुदा के फज़ल-ओ-करम से उतरा है, हालांकि तबियत परेशान और निरंतर मुसीबतों में घिरी हुई है, और ईर्ष्यालुओं ने कई तरह के फसाद बरपा कर रखे हैं। अल्लाह ही से मदद मांगी जाती है और उसी पर भरोसा किया जाता है। और ताक़त व कुव्वत अल्लाह ही से मिलती है जो बुलंद और अज़मत वाला है। हमें अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है, बेहतरीन मालिक और बेहतरीन मददगार है। दुश्मनों ने हद पार कर दी और ज़ुल्म किया। और मैं अल्लाह के करम की उम्मीद करता हूँ विनम्रता की स्थिति में, और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है और अल्लाह काफ़ी मददगार है।

| अमल बहुमत के कथन पर ही होता है, और अल्लाह का हाथ जमाअत पर ही होता है। यह सब कुछ इस फ़कीर के दिल पर उतरा, मेहरबान बाखबर खुदा के.फ़ैज़े करम से है, हालांकि तबियत परागंदा और पीहम मसाइब में गिरफ्तार हूँ और हासिदों ने अलग कई किस्म के फसाद बरपा कर रखे हैं अल्लाह ही से मदद मांगी जाती है और इसी पर भरोसा किया जाता है और ताकत व कुव्वत अल्लाह ही से मिलती है जो बुलंद और बाअज़मत है, हमें अल्लाह काफी है और मोतबर कारसाज़ है, बेहतरीन आका और बेहतरीन मददगार है दुश्मनों ने हद से तजावुज़ किया और जुल्म किया। और मैं अल्लाह के करम की उम्मीद करता हूँ हालते इनकसारी में और अल्लाह काफी कारसाज़ है और अल्लाह काफी मददगार है।

---

1 बज़ाज़िया मअ हिन्दिया, हैज़ का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 8/4 2 गुनिया अल-मुस्तमली, दस दर दस, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 101

بزازیہ میں بظاہر حوض کو صفتِ کثرت سے مطلق رکھ کر فرمایا: ثم دخل ماء کثیر (پھر کثیر پانی داخل ہو۔ ت) غنیہ میں اُن کے حکم کی تعلیل یوں فرمائی:

(قیل لیس بنجس) لکونہ کبیراً الخ کما تقدم | (کہا گیا ہے کہ یہ نجس نہیں ہے) کیونکہ یہ بڑا ہے الخ جیسا کہ کل ذلک ۔ | یہ سب کچھ پہلے گزر چکا ہے۔ (ت)

تو یہ اعتراض بھی اسی قولِ دوم پر رہا مگر یہ اُن کا کلام مرئیہ باقیہ سے مخصوص کیا جائے۔ اب رہے وجوہ ثلثہ مذکورہ بحث اول اقول وبہ استعین جو ظرف حبس و حفظِ آب کیلئے ہو اُس میں پانی کی حرکت عرفاً جریان نہیں کہلاتی مشک کی تہ میں کٹورا بھر پانی ہو اسے دہانہ باندھ کر زیر و بالا کیجئے کہ پانی ادھر سے اُدھر جائے اسے کوئی جاری ہونا نہ کہے گا۔ جب دہانے سے نکل کر بہے گا اب کہیں گے کہ پانی بہا یہاں سے تینوں وجوہ کا جواب ہو گیا کہ بطنِ ظرف میں متحرک کو عرفاً جاری نہیں کہتے اور مکان اور اس کی دیواریں کوئی ظرفِ آب نہیں اور نہر ظرف ہے مگر نہ ظرفِ حبس بلکہ محلِ جریان بخلاف تالاب اور حوض کے، اگرچہ کبیر ہو، تو بحمد اللہ تعالٰی قولِ جمہور ہی پر عرش تحقیق مستقر ہوا اور کیوں نہ ہو کہ:

العمل علی قول الاکثر ویدﷲ علی الجماعۃ ھذا | عمل اکثر کے قول پر ہی ہوتا ہے، اور اللہ کا ہاتھ جماعت پر ہی کلہ ما فاض علی قلب الفقیر من فیض اللطیف | ہوتا ہے، یہ سب کچھ فقیر کے دل پر اُترا، مہربان باخبر خدا کے الخبیر، مع تشتت البال، وتراکم البلبال، و | فیض کرم سے ہے، حالانکہ طبیعت پرا گندہ اور پیہم مصائب ھجوم الحساد بانواع الفساد واللہ المستعان | میں گرفتار ہوں اور حاسدوں نے الگ کئی قسم کے فساد برپا وعلیہ التکلان، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی | کر رکھے

ہیں اللہ ہی سے مدد مانگی جاتی ہے اور اسی پر بھروسہ العظیم، وحسبنا اللہ ونعم الوکیل، نعم المولی | کیا جاتا ہے اور طاقت وقوت اللہ ہی سے ملتی ہے جو بلند اور ونعم النصیر عدت العادون وجاروا ورجوت | باعظمت ہے، ہمیں اللہ کافی ہے اور معتبر کارساز ہے، بہترین اللہ عجیراً وکفی باللہ ولیاً وکفی باللہ نصیراً | آقا اور بہترین مددگار ہے دشمنوں نے حد سے تجاوز کیا اور ظلم کیا۔ اور میں اللہ کے کرم کی امید کرتا ہوں حالتِ انکساری میں اور اللہ کافی کارساز ہے اور اللہ کافی مددگار ہے

---

1 بزازیہ مع الہندیہ نوع فی الحیض نورانی کتب خانہ پشاور 8/4 2 غنیہ المستملی عشر فی عشر سہیل اکیڈمی لاہور ص 101

And from what I said regarding him (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, seeking refuge in his noble protection: O Messenger of Allah! You are the one whose prayers are answered, so I do not fear the enemies, no matter how they act unjustly. By your grace, I hope that soon their plots will be torn apart and the people (enemies) will perish.

And I said: O Messenger of Allah! You were sent among us as a generous mercy, a fortified fortress. The enemies frighten me with strong plotting, so protect me, O Refuge of the fearful!

And among what I said long ago in Rabi' al-Akhir in the year one thousand three hundred, I saw the response beyond ordinary expectations, beyond request and will, swiftly within the hour. Praise be to Allah forever, and I hope for the same eternally.

All praise is for the One Who is unique in His Majesty, the Singular, and may His blessings be always upon the best of mankind, Muhammad, and his family and companions; they are my refuge in my hardships. So to the Almighty is my intercession through His Book and through Ahmad, and through the one with whom His Word came [Gabriel], and through the one who guided, and through the one who guided, and by Tayyiba (Medina), and by the place where you came, and by the shining one, and by the Mosque.

[Footnote]: He [the one mentioned with the code 'عه'] is Gabriel, peace and blessings be upon him, and our Prophet, may Allah bless him and grant him peace, and the carriers of the Quran from his family, companions, and Ummah (may Allah bless him and them and grant them peace). From him, may he be forgiven (M).

And he is Gabriel, peace be upon him, and the Holy Prophet, peace be upon him, and the bearers of the Quran among the family, companions, and Ummah of the Holy Prophet, peace be upon him. 12 Minhu Ghafara Lahu (T)

और मैंने (लेखक ने) उनके(पैगंबर मुहम्मद), उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो, के बारे में जो कुछ कहा, उनके महान संरक्षण की शरण लेते हुए: हे अल्लाह के रसूल! आप वही हैं जिनकी दुआएं कबूल होती हैं, इसलिए मुझे दुश्मनों का कोई डर नहीं है, चाहे वे कैसा भी अन्याय करें। आपकी कृपा से, मुझे आशा है कि जल्द ही उनकी साजिशें तार-तार हो जाएंगी और वे लोग (दुश्मन) नष्ट हो जाएंगे।

और मैंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! आपको हमारे बीच एक उदार दया, एक मजबूत किले के रूप में भेजा गया था। दुश्मन मुझे अपनी मजबूत साजिशों से डराते हैं, इसलिए मेरी रक्षा करें, हे भयभीत लोगों के आश्रय!

और जो मैंने बहुत पहले रबी-उल-आखिर वर्ष एक हजार तीन सौ में कहा था, मैंने सामान्य अपेक्षाओं से परे, अनुरोध और इच्छा से परे, एक घंटे के भीतर तेजी से उत्तर देखा। अल्लाह की हमेशा प्रशंसा हो, और मुझे हमेशा के लिए वैसी ही उम्मीद है।

प्रशंसा उस सत्ता के लिए है जो अपनी महिमा में अद्वितीय है, एकमात्र है, और उसका आशीर्वाद हमेशा मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ, मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर हो; वे मेरी कठिनाइयों में मेरी शरण हैं। इसलिए सर्वशक्तिमान की दरगाह में, मैं उसकी किताब और अहमद के माध्यम से, और जिसके साथ उसका कलाम आया [जिब्राइल], और जिसने मार्गदर्शन किया, और जिसने मार्गदर्शन किया, और तैयबा (मदीना) के माध्यम से, और जहाँ आप आए उस स्थान के माध्यम से, और चमकदार के माध्यम से, और मस्जिद के माध्यम से वसीला लाता हूँ।

[पाद लेख]: वह [कोड 'عه' के साथ उल्लेखित] जिब्राइल हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और हमारे पैगंबर, अल्लाह उन पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करे, और उनके परिवार, साथियों और उम्मत (अल्लाह उन पर और उन सभी पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करे) से कुरान के वाहक हैं। उनसे, उन्हें क्षमा किया जाए (एम)।

और वे जिब्राइल अलैहिस्सलाम हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल, असहाब और उम्मत में से कुरान के वाहक हैं। 12 मिन्हु गफ़र लहु (टी)

ومما قلت فيه صلى الله تعالى عليه وسلم، مستجيرا بذيله الاكرم، رسول الله انت المستجاب فلا اخشى الاعادى كيف جاروا بفضلك ارتجي ان عن قريب تمزق كيدهم والقوم باروا میں نے حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی شان اقدس میں آپ کے دامن کی پناہ حاصل کرنے کیلئے یہ اشعار کہے ہیں اے اللہ کے رسول! آپ ہی سے مدد طلب کی جاتی ہے، تو اب مجھے دشمنوں کا کچھ خوف نہیں کہ وہ کیا ظلم ڈھائیں گے، مجھے آپ کے فضل سے امید ہے کہ عنقریب ان کا مکر پارہ پارہ ہو جائیگا اور وہ ہلاک ہو جائیں گے۔

وقلت_ رسول الله انت بعثت فينا كريما رحمة حصنا حصينا تخوفنى العدى كيدا متينا اجرنى يا امان الخائفين ومما قلت قديما في ربيع الاخر سنة الف وثلاثمائة فرأيت الاجابة فوق العادة، وفوق المطلب والارادة، سريعا في الساعة ولله الحمد ابدا، وارجو مثله سرمدا۔ اور عرض کیا ہے اے اللہ کے رسول! آپ ہم میں مبعوث کئے گئے رحمت بنا کر اور مضبوط قلعہ بنا کر۔ مجھے دشمن اپنی مضبوط چالوں سے ڈراتے دھمکاتے ہیں اے خوفزدہ لوگوں کی پناہ! مجھے پناہ دیجئے۔ اور اس سے پہلے ربیع الآخر ۱۳۰۰ھ میں کہا تھا تو امید سے فزوں تر حیرت انگیز طور پر میری مرادیں پوری ہو گئیں وللہ الحمد، خدا کرے ہمیشہ ایسا ہی ہوتا رہے۔

الحمد للمتوحد بجلاله المتفرد وصلاته دوما على خيرا لانام محمد والأل والاصحاب هم مأواى عند شدائدى فإلى العظيم توسلى بكتابه وبأحمد وبمن عه أتى بكلامه وبمن هدى وبمن هدى وبطيبة وبم جئت وبمنير وبمسجد تمام تعریفیں خدائے یکتا کو سزاوار ہیں جو اپنے جلال میں یکتا ہے، اور اس کی رحمتیں مدام، بہترین مخلوق محمد پر نازل ہوں، اور آل واصحاب پر، جو سختیوں میں میری پناہ گاہ

ہیں، تو خداوند عظیم کی بارگاہ میں، میں وسیلہ لاتا ہوں، اس کی کتاب اور احمد کا۔ اور ان کا جو اللہ کے کلام کو [لائے]۔

عه هو جبريل عليه الصلاة والسلام ونبينا صلى الله تعالى عليه وسلم وحملة القرآن من آله وصحبه وامته (صلى الله تعالى عليه وعليهم وسلم) منه غفر له (م) اور وہ جبریل علیہ السلام اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور حاملین قرآن آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی آل، اصحاب اور امت میں سے ہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Rizwia, Volume 2

...and by everyone who found pleasure from the presence of the One Lord.

O Allah! The enemies have attacked me from every distant quarter, with their cavalry and infantry, along with every transgressing aggressor who hopes for the slip of the steadfast and desires the humiliation of the guided. But Your servant is safe because whoever calls upon You is supported. I am not afraid of their power and strength. The hand of my helper is strongest. O Allah! Repel their evil and protect me from the plot of the plotter, and perpetually send Your peace and blessings upon the most generous Beloved, and upon his family who are the rains of generosity, and his companions who are the recurring clouds of benefit, as long as the turtle-doves sing beautifully on the Ban tree. And through the grace of these blessings, make Ahmad Raza a servant in the protection of the Master. And may Allah, the Blessed and Exalted, send peace, blessings, and favors upon the noble, generous, and blessed Master, and upon his family, companions, son, and his group—a blessing that unties knots, brings great aid, and protects us from the evil of the envier when he envies, the plotter when he bears malice, and the harm of the stubborn when he resists, for the sake of:

"Say: He is Allah, the One. Allah, the Eternal, the Absolute. He begets not, nor was He begotten. And there is none comparable unto Him."

And praise be to Allah, Lord of the worlds, forever. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best, and His knowledge is most complete and most wise. (T)

Footnote: (عم): A linguistic variant of 'Allahumma'. 12, from him, may he be forgiven. (M) There is a linguistic variant for 'Allahumma'. 12, from him, may he be forgiven. (T)

Page 424 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

...और उन सबके द्वारा जिन्होंने एक रब से प्रसन्नता प्राप्त की।

ऐ अल्लाह! दुश्मनों ने मुझ पर हर दिशा से हमला कर दिया है, अपने पैदल और सवारों के साथ, हर हद पार करने वाले ज़ालिम के साथ, जो स्थिर व्यक्ति के फिसलने की उम्मीद करते हैं और हिदायत पाए हुए की ज़िल्लत चाहते हैं। लेकिन आपका गुलाम बेखौफ है क्योंकि जो आपको पुकारता है उसकी सहायता की जाती है। मैं उनकी शक्ति और बल से भयभीत नहीं हूँ। मेरे मददगार का हाथ सबसे मज़बूत है। या अल्लाह! उनके शर (बुराई) को दूर कर दे, और मक्कार के मक्र से मुझे बचा ले, और अपनी सलात और सलाम को सबसे उदार महबूब पर हमेशा नाज़िल फरमा, और उनकी आल पर जो उदारता की बारिश हैं, और सहाबा पर जो लाभों के बादल हैं, जब तक कि कमरियाँ (पक्षियाँ) बान के पेड़ पर बेहतरीन गीत गाती रहें। और इस सलात और सलाम के ज़रिए अहमद रज़ा को आका का शरण प्राप्त गुलाम बना दे। और अल्लाह तबारक व तआला दुरूद व सलाम और बरकतें नाज़िल फरमाए आका, करीम और मुबारक पर, और उनकी आल व सहाबा और बेटे और उनकी जमात पर, वह सलात जो गांठों को खोल दे और बड़ी मदद प्रदान करे, और हमें हासिदों के हसद से और कीना रखने वालों के कीने से और विद्रोहियों की शरारत से बचा ले, इनके सदके में:

"कहो: वह अल्लाह है, जो एक है। अल्लाह, शाश्वत और निरपेक्ष है। न वह किसी से जन्मा है और न ही वह किसी से पैदा हुआ है। और न ही उसके बराबर कोई और है।"

और समस्त संसार के स्वामी अल्लाह के लिए शाश्वत प्रशंसा है। अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान पूर्ण और सर्वाधिक प्रज्ञावान है। (त)

पादलेख: (عم): 'अल्लाहुम्मा' का एक भाषाई रूप है। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) 'अल्लाहुम्मा' में एक भाषाई रूप है। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

पृष्ठ 424/711

وبکل من وجد الرضا من عند رب واحد لاھمّ عَہ قد ھجم العدای من کل شأو ابعد فی خیلھم ورجالھم مع کل عاد معتد ھاوین زلۃ مثبت باغین ذلۃ مھتد لکن عبدك آمن اذ من دعاك یؤید لا اختشی من بأسھم ید ناصری اقوی ید لاھم فادفع شرھم وقنی مکیدۃ کائد وآدم صلاتك والسلام علی الحبیب الاجود والال امطار الندا والصحب سحب عوائد ماغردت ورقا علی بان کخیر مغرد واجعل بھا احمد رضا عبدا بحرز السید واللہ تعالی وتبارک، صلی وسلم وبارک، علی المولی الکریم المبارک، وآلہ وصحبہ، وابنہ وحزبہ، صلاۃ تحل العقد، تُجِلّ المدد، وتقینا شر حاسد اذا حسد، ومکرحا قد اذا حقد، وضر عاند اذا عند، بحرمۃ قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ○ اَللّٰہُ الصَّمَدُ○ لَمْ یَلِدْ وَ لَمْ یُوْلَدْ○ وَ لَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ○ والحمد للہ رب العالمین الی الابد، واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

لائے اور جنہوں نے ہدایت دی اور جن سے ہدایت لی جاتی ہے، اور مدینہ منورہ کو اور ان کو جو مدینہ میں رہتے ہیں، اور منبر اور مسجد شریف کو اور ان تمام کو جنہیں خوشنودی میسر آئی رب کی جانب سے۔ اے اللہ! دشمنوں نے مجھ پر ہلہ بول دیا ہے ہر دوری سے ان کے پیادوں اور ان کے سواروں نے، ہر حد سے تجاوز کرنے والے ظالم نے، جو ثابت قدم کی لغزش کی امید کرتے ہیں، اور ہدایت یافتہ کی ذلت کے خواہاں ہیں، مگر آپ کا غلام بے خوف ہے کیونکہ جو آپ کو پکارتا ہے اس کی تائید کی جاتی ہے، میں ان کی طاقت وقوت سے خوفزدہ نہیں۔ میرے مددگار کا ہاتھ مضبوط تر ہے۔ یا اللہ! ان کے شر کو دفع کر دے، اور مکار کے مکر سے مجھے بچالے، اور اپنے صلوۃ و سلام کو سخی تر حبیب پر ہمیشہ نازل فرما، اور ان کی آل پر جو جود وسخا کی بارش ہیں، اور اصحاب پر جو فوائد کے بادل ہیں، جب تک قمریاں بان کے درخت پر بہترین گانے گاتی رہیں۔ اور اس صلوۃ وسلام کے طفیل احمد رضا کو، آقا کا امان یافتہ غلام بنادے۔ اور اللہ

تبارک وتعالیٰ صلوۃ وسلام اور برکتیں نازل فرمائے آقا، کریم اور مبارک پر، اور ان کی آل واصحاب اور بیٹے اور ان کی جماعت پر، وہ صلوۃ جو گرہوں کو کھول دے اور مدد عطا کر دے، اور ہمیں حاسدوں کے حسد سے اور کینہ پروروں کے کینوں سے اور سرکشوں کی شرارت سے بچادے، بطفیل قل ھو اللہ احد الخ کے، واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

حاشیہ: عہ: لغۃ فی اللھم ۱۲ منہ غفرلہ (م) اَللّٰھُمَّ میں ایک لغت ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Rizvia, Volume Two

Fatwa titled: Hibat al-Habeer fi Umq Maa' Kaseer 1334 AH (The Gift of Clouds regarding the Depth of Abundant Water) (T)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His noble Messenger.

Problem 52: 4 Rajab al-Murajjab 1334 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: for 'Ab-e-Kaseer' (abundant water) which, like running water, does not become impure, how much depth is required? And regarding the statement that "the ground should not be exposed when taking water with the hand," does this refer to a single handful (chulu) or both hands held together (lap)? Provide a ruling and be rewarded.

The Answer In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful We praise Him and invoke blessings upon His noble Messenger

There are eleven opinions regarding its depth: (1) Nothing specific is required, except that the ground should not be visible anywhere within that surface area. (2) It should be slightly deeper than the width of a large dirham, which weighs 4 mashas. (3) When water is scooped up by hand from it, the ground should not be exposed. (4) While taking water, the hand should not touch the ground. I say: this is more restrictive than the previous one, as is evident. (5) It should reach up to the ankles. (6) Four fingers' breadth.

Page 426 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

फ़तवा मुसम्मा बह: हिबतुल हबीर फ़ी उम्क़ मा-ए-कसीर १३३४ हिजरी (बरसात के बादलों का तोहफ़ा, ज़्यादा पानी की गहराई के बारे में) (त)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। हम उसकी हम्द करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं।

मसला ५२: ४ रजबुल मुरज्जब १३३४ हिजरी दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि 'आबे कसीर' (ज़्यादा पानी) के लिए, जो बहते हुए पानी की तरह नापाकी क़बूल नहीं करता, कितनी गहराई ज़रूरी है? और यह जो कहा जाता है कि हाथ से पानी लेने में ज़मीन न खुले, इससे 'चुल्लू' मुराद है या 'लप' (दोनों हथेलियाँ मिलाकर), बयान करें सवाब पाएं।

अल-जवाब बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम हम उसकी हम्द करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं

उसकी गहराई के बारे में ग्यारह क़ौल (राय) हैं: (१) कुछ भी ज़रूरी नहीं है, बस इतना हो कि उस क्षेत्रफल में ज़मीन कहीं से खुली न हो। (२) बड़ा दिरहम जो ४ माशे का होता है, उसकी चौड़ाई से कुछ ज़्यादा गहरा हो। (३) उसमें से हाथ से पानी उठाएं तो ज़मीन न खुले। (४) पानी लेने में हाथ ज़मीन को न छुए। मैं कहता हूँ: यह अपने पिछले वाले से ज़्यादा है जैसा कि ज़ाहिर है। (५) टखनों तक हो। (६) चार उंगल चौड़ा।

पृष्ठ ४२६ का ७११

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

فتوٰی مسمٰی بہ ھبۃ الحبیر في عمق ماء کثیر ۱۳۳٤ھ ابرِ باراں کا عطیہ زیادہ پانی کی گہرائی میں (ت)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ، نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

مسئلہ ۵۲: ۴ رجب المرجب ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ آبِ کثیر کے لئے جو مثلِ جاری نجاست قبول نہ کرے کتنا عمق درکار ہے اور یہ جو کہا جاتا ہے کہ ہاتھ سے پانی لینے میں زمین نہ کھلے اس سے چلو مراد ہے یا لپ، بینوا توجروا۔

الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

اُس کے عُمق میں گیارہ قول ہیں: (۱) کچھ درکار نہیں صرف اتنا ہو کہ اتنی مساحت میں زمین کہیں کھلی نہ ہو۔ (۲) بڑا درہم کہ ۴ ماشے ہوتا ہے اُس کے عرض سے کچھ زیادہ گہرا ہو۔ (۳) اُس میں سے پانی ہاتھ سے اٹھائیں تو زمین کھل نہ جائے۔ (۴) پانی لینے میں ہاتھ زمین کو نہ لگے۔ اقول یہ اپنے سابق سے زائد ہے کما لا یخفی۔ (۵) ٹخنوں تک ہو۔ (۶) چار انگل کشادہ

I say: This is approximately nine fingers, i.e., three knots. (7) One span. (8) One hand (cubit). (9) Two hands. (10) A silver coin is dropped in it, and if a man looking while standing cannot see the rupee. I say: Meaning, due to the abundance of water, not due to its turbidity. (11) No determination from its own side; it is dependent on the observer's opinion. I say: Meaning, whoever considers it at whatever depth to have become 'ab-e-kaseer' (large water), for him it is large; if another does not consider it so, then for him it is 'qaleel' (small water).

[Table Start] Left Column (Arabic Text): I say, it is other than the first, so it is the negation of estimation. This is delegating it to the opinion of the one involved with it. In short, the first is the ruling of non-existence, and this is the non-existence of a ruling. If you say that delegation in the 'Zahir-ur-Riwayah' (manifest narrations) is only in length and breadth because through these two, clarity and its absence are known, then how can it be delegated to his opinion regarding depth? (T)

I say: They differed regarding the criterion for lack of clarity: Is it movement, which is the agreed narration from our companions? Or is it coloring, which is the saying of Imam Abu Hafs al-Kabir al-Bukhari? Or is it turbidity (muddiness), which is the saying of Imam Abu Nasr Muhammad bin Muhammad bin Salam? Or is it area, which is the saying of Imam Abu Sulaiman al-Juzjani? All these details are in 'Al-Bada'i'. There is no doubt that turbidity varies with the difference in depth, so perhaps this speaker holds this view.

Right Column (Urdu Text): I say: It is different from the first, so it is the negation of estimation, and this is to delegate it to the opinion of the person who is involved in it, and the summary is that the first is the ruling of non-existence and this is the non-existence of a ruling. So if you say that delegation in the Zahir Riwayah is only in length and breadth because clarity and non-clarity are known from these two, then how will it be delegated to his opinion regarding depth? (T)

I say: There is a difference regarding the standard of non-clarity, whether it is movement, and this is the agreed narration of our companions, or just coloring, and this is the saying of Imam Abu Hafs Al-Kabir Bukhari, or making it muddy, and this is from Imam Abu Nasr Muhammad bin Muhammad bin Salam, or area, and this is the saying of Imam Abu Sulaiman Al-Juzjani. All this detail is in Badai', and there is no doubt that making it muddy varies with the difference in depth, and probably this speaker follows this saying. [Table End]

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड २)

मैं कहता हूँ: यह लगभग नौ अंगुल यानी तीन गिरह हुआ। (७) एक बालिश्त। (८) एक हाथ। (९) दो हाथ। (१०) इसमें चांदी का सिक्का डाला जाए और खड़ा आदमी देखे तो रुपया नज़र न आए। मैं कहता हूँ: यानी पानी की प्रचुरता के कारण, न कि उसकी गंदलापन (गंदगी) के कारण। (११) अपनी ओर से कोई निर्धारण नहीं, यह देखने वाले की राय पर निर्भर है। मैं कहता हूँ: यानी जो व्यक्ति जितनी गहराई पर यह समझे कि पानी 'आब-ए-कसीर' (अधिक जल) हो गया है, उसके लिए वह कसीर है; यदि दूसरा उसे ऐसा नहीं समझता, तो उसके लिए वह 'क़लील' (अल्प जल) है।

[तालिका प्रारंभ] बायां कॉलम (अरबी पाठ): मैं कहता हूँ, वह पहले से अलग है, तो वह मात्रा के निर्धारण का खंडन है, और यह उस व्यक्ति की राय पर छोड़ना है जो इसमें शामिल है। सारांश यह है कि पहला आदेश 'अदम' (अस्तित्वहीनता) का है और यह आदेश का 'अदम' है। तो यदि आप कहें कि 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' में अधिकार सौंपना केवल लंबाई और चौड़ाई में है क्योंकि इन्हीं दोनों से स्वच्छता और उसकी कमी का पता चलता है, तो गहराई में उसकी राय पर कैसे छोड़ा जाएगा? (त)

मैं कहता हूँ: स्वच्छता न होने के पैमाने में मतभेद है: क्या वह हरकत (हिलाना) है, और यही हमारे साथियों की सर्वसम्मत रिवायत है? या केवल रंगना है और यही इमाम अबू हफ़्स अल-कबीर अल-बुखारी का कथन है? या गंदला करना है, और यह इमाम अबू नसर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सलाम का है? या क्षेत्रफल है और यह इमाम अबू सुलेमान अल-जोज़जानी का कथन है? यह सारा विवरण 'बदाइ' में है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि गंदलापन गहराई के अंतर से बदलता है, इसलिए संभवतः यह कहने वाला इसी कथन की ओर है।

दायां कॉलम (उर्दू पाठ): मैं कहता हूँ: वह पहले से अलग है तो वह मात्रा निर्धारण का खंडन है, और यह उसी व्यक्ति की राय की तरफ सुपुर्द करना है जो इसमें शामिल हो, और सारांश यह है कि पहला आदेश 'अदम' है और यह आदेश का 'अदम' है। तो अगर तुम कहो कि अधिकार सौंपना 'ज़ाहिर रिवायत' में सिर्फ लंबाई और चौड़ाई में है क्योंकि इन्हीं दोनों से सफाई और सफाई न होने का पता चलता है, तो गहराई में उसकी राय की तरफ कैसे सुपुर्द किया जाएगा? (त)

मैं कहता हूँ: सफाई न होने के मानदंड में मतभेद है कि आया वह हरकत है और यही हमारे साथियों की मुत्तफ़िक़ा (सहमत) रिवायत है, या सिर्फ रंगना है और यही इमाम अबू हफ़्स अल-कबीर बुखारी का कौल (कथन) है, या गंदला करना है, और यह इमाम अबू नसर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सलाम

का है, या क्षेत्रफल है और यह इमाम अबू सुलेमान अल-जोज़जानी का कौल है। यह तमाम विस्तार 'बदाइ' में है, और इसमें शक नहीं कि गंदला करना गहराई के अंतर से भिन्न होता है, और संभवतः यह क़ायल (कहने वाला) इसी कौल की तरफ है। [तालिका समाप्त]

पृष्ठ ४२७ / ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: یہ تقریباً نو انگل یعنی تین گرہ ہوا۔ (۷) ایک بالشت (۸) ایک ہاتھ (۹) دو ہاتھ (۱۰) سفید سکہ اس میں ڈال کر مرد کھڑے سے دیکھے تو روپیہ نظر نہ آئے۔ اقول: یعنی پانی کی کثرت سے نہ کہ اس کی کدورت سے۔ (۱۱) اپنی طرف سے کوئی تعیین نہیں ناظر کی رائے پر موقوف ہے۔ اقول: یعنی جو جتنے گہراؤ پر سمجھے کہ آب کثیر ہوگیا ، اس کے حق میں وہ کثیر ہے دوسرا نہ سمجھے تو اس کیلئے قلیل ہے۔

[جدول کا آغاز] بایاں کالم (عربی متن): اقول وھو غیر الاول فھو سلب التقدیر وھذا تفویضہ الی رأی المبتلی بہ وبالجملۃ فالاول حکم العدم وھذا عدم الحکم فانقلت انما التفویض فی ظاھر الروایۃ فی الطول والعرض اذبھما الخلوص وعدمہ وفیم یفوض الیہ النظر فی العمق۔ (ت)

اقول: اختلفوا فی معیار عدم الخلوص ھل ھو التحریك وھی الروایۃ المتفقۃ عن اصحابنا ام الصبغ وھو قول الامام ابی حفص الکبیر البخاری ام التکدیر وھو قول الامام ابی نصر محمد بن محمد بن سلام ام المساحۃ وھو قول الامام ابی سلیمان الجوزجانی الکل فی البدائع ولا شک ان التکدیر یختلف باختلاف العمق فلعل ھذا القائل قائل بھذا القول

دایاں کالم (اردو متن): میں کہتا ہوں وہ اول کا غیر ہے تو وہ سلب تقدیر ہے ، اور یہ اسی شخص کی رائے کی طرف سپرد کرنا ہے جو اس میں مبتلا ہو ، اور خلاصہ یہ ہے کہ پہلا حکم عدم ہے اور یہ عدم حکم ہے۔ تو اگر تم کہو کہ تفویض ظاہر روایت میں صرف طول و عرض میں ہے کیونکہ انہی دونوں سے خلوص اور عدم خلوص کا علم ہوتا ہے تو عمق میں اس کی رائے کی طرف کیونکر سپرد کیا جائے گا ۔ (ت)

میں کہتا ہوں عدم خلوص کے معیار میں اختلاف ہے کہ آیا وہ تحریک ہے اور یہی متفقہ روایت ہمارے اصحاب کی ہے ، یا صرف رنگنا ہے اور یہی قول امام ابو حفص الکبیر بخاری کا ہے ، یا گدلا کرنا ہے ، اور یہ امام ابو نصر محمد بن محمد بن سلام کا ہے ، یا مساحت ہے اور یہ امام ابو سلیمان الجوزجانی کا قول ہے۔ یہ تمام تفصیل بدائع میں ہے ، اور اس میں شک نہیں کہ گدلا کرنا گہرائی کے اختلاف سے مختلف ہوتا ہے ، اور غالباً یہ قائل اسی قول کی طرف۔ [جدول کا اختتام]

Fatawa Razawiya - Volume 2

(Left cell) He left it to the opinion of the observer, and Allah knows best. (Right cell) He is inclined [towards it], and that is why he has entrusted this matter to the opinion of those who observe it. (T)

Among them, the third saying is found in common books. The first, second, seventh, and eighth are narrated in *Bada'i*, *Tabyin*, and *Fath*. The fourth is in *Khaniyah* and *Ghuniyah*, the fifth in *Jami' al-Rumuz*, the sixth in *Ghuniyah* as well, like the ninth and eleventh in *Quhistani*, and the ninth in the commentary of *Niqayah* by *Birjandi*.

Among these, only two sayings are correct: the first and the third.

(Arabic Text): As for what I saw in *Jawahir al-Akhlati* from his statement: collecting water in a trench which has a length of, for example, a hundred cubits and a width of one or two cubits. Regarding this type of issue, there are several opinions. In one opinion, performing ablution with it is permissible without separation, and this is the adopted one. In another opinion, if impurity falls into it, its length of ten cubits becomes impure. In another opinion, if the water is of an amount such that if it were placed in a pool with a width of ten by ten, filling the pool, and its depth became the measure of a span, then ablution with it is permissible, otherwise not. And this is the correct one as it provides ease for the people. And it was said that ablution with it is not permissible even if it extended from Bukhara to Samarkand. Ah.

(Urdu Text): In *Jawahir al-Akhlati*, it is mentioned that if someone collected water in a trench whose length is, for example, a hundred cubits and its width is one or two cubits, then there are several opinions regarding this issue. One opinion is that performing ablution with it is permissible unconditionally, and this is the adopted opinion. Another opinion is that if impurities fall into it, ten cubits of its length will become impure. Another opinion is that if there is enough water that if it were placed in a pool measuring ten by ten cubits, it would fill it to a depth of one span, then ablution with it is permissible; otherwise, it is not. And this is correct because it brings ease to the people. Another opinion is that ablution with it is not permissible even if it extends from Bukhara to Samarkand. Ah. (T)

(Arabic Text): I say: His statement "It is the correct one" refers only to considering the area without the condition of the two extensions, and with this, it agrees with his first correction with his statement "it is the adopted one" regarding the condition of a span's depth. And the evidence for it is the statement of al-Birjandi, who said:

(Urdu Text): I say: His statement "this is the correct one" is only with regard to the measurement; there is no condition of the two dimensions in it. Because of this, it will become consistent with his first correction where he says "this is the adopted one," in which there is a depth of one span... as al-Birjandi stated:

1 *Jawahir al-Akhlati*

(बायाँ सेल) उसने इसे देखने वाले की राय पर छोड़ दिया है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (दायाँ सेल) वह इसकी ओर झुका हुआ है, और इसीलिए उसने इस मामले को देखने वालों की राय पर छोड़ दिया है। (त)

उनमें से तीसरा कथन आम किताबों में है। पहला, दूसरा, सातवाँ और आठवाँ 'बदाइ', 'तबीन' और 'फ़तह' में उद्धृत किया गया है। चौथा 'ख़ानिया' और 'ग़ुनिया' में, पाँचवाँ 'जामेउर रुमुज़' में, छठा 'ग़ुनिया' में भी, जैसे नौवाँ और ग्यारहवाँ 'क़ुहस्तानी' में, और नौवाँ बिरजंदी द्वारा 'निक़ाया' की व्याख्या में है।

इनमें केवल दो कथन सही हैं: पहला और तीसरा।

'जवाहरुल अख़्लाती' में है कि यदि किसी व्यक्ति ने किसी खाई में पानी इकट्ठा किया जिसकी लंबाई, उदाहरण के लिए, सौ हाथ है और उसकी चौड़ाई एक हाथ या दो हाथ है, तो इस मसले में कई कथन हैं। एक कथन तो यह है कि इससे वज़ू करना बिना किसी शर्त के जायज़ है, और यही कथन अपनाया गया है। एक और कथन यह है कि यदि इसमें गंदगी गिर जाए, तो इसकी लंबाई में दस हाथ का हिस्सा नापाक हो जाएगा। एक और कथन यह है कि यदि इसमें इतना पानी है कि यदि इसे दस गुणा दस हाथ के हौज में रखा जाए तो हौज भर जाए और उसकी गहराई एक बालिश्त (बित्ता) हो, तब तो इससे वज़ू जायज़ है अन्यथा नहीं। और यही सही है क्योंकि इसमें लोगों के लिए आसानी है। एक और कथन यह है कि इससे वज़ू जायज़ नहीं है चाहे वह बुख़ारा से समरकंद तक ही क्यों न हो। समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ कि उनका कथन "यही सही है" केवल माप को देखते हुए है, इसमें दोनों विमाओं (लंबाई-चौड़ाई) की शर्त नहीं है। इसी वजह से यह उनकी पहली तस्हीह (सुधार/पुष्टि) के अनुसार हो जाएगा, वे फ़रमाते हैं कि यही अपनाया गया है, इसमें एक बालिश्त की गहराई की शर्त है जैसा कि बिरजंदी ने कहा है:

1 जवाहरुल अख़्लाती

पृष्ठ 711 में से 428

(بایاں کالم) ففوضہ الی رای الناظر واللہ تعالٰی اعلم۔ (دایاں کالم) مائل ہے اور اسی لئے انہوں نے اس معاملہ کو دیکھنے والوں کی رائے کی طرف سپرد کیا ہے۔ (ت)

ان میں قول سوم عامہ کتب میں ہے اور اول و دوم و ہفتم و ہشتم بدائع و تبیین و فتح میں نقل فرمائے اور چہارم خانیہ و غنیہ پنجم جامع الرموز ششم غنیہ نیز مثل نہم و یاز دہم قہستانی و نہم شرح نقایہ بر جندی میں۔

ان میں صرف دو قول صحیح ہیں اول و سوم و بس۔

امّا ما رأیت فی جواہر الاخلاطی من قولہ جمع الماء فی خندق لہ طول مثلا مائۃ ذراع و عرضہ ذراع او ذراعان فی جنس ھذہ المسألۃ اقوال فی قول یجوز التوضی منہ بغیر فصل وھو المأخوذ وفی قول لو وقعت فیہ نجاسۃ یتنجس من طولہ عشرۃ اذرع وفی قول ان کان الماء مقدار مالوجعل فی حوض عرضہ عشرۃ فی عشرۃ ملئی الحوض وصار عمقہ قدر شبر یجوز التوضی بہ والا فلا وھو الصحیح تیسیرا للامر علی الناس وقیل لایجو التوضی فیہ وان کان من بخاری الی سمرقند اہ

جواہر الاخلاطی میں ہے کہ کسی شخص نے کسی خندق میں پانی جمع کیا جس کا طول سو ہاتھ اور چوڑائی ایک ہاتھ یا دو ہاتھ ہو ، تو اس مسئلہ میں چند اقوال ہیں ، ایک قول تو یہ ہے کہ اس سے وضو مطلقاً جائز ہے اور یہی قول ماخوذ ہے ، اور ایک قول یہ ہے کہ اگر اس میں نجاست گر جائے تو وہ لمبائی میں دس ہاتھ ناپاک ہو گا ، اور ایک قول یہ ہے کہ اگر اس میں اتنا پانی ہے کہ اگر اس کو ایک ایسے حوض میں کر لیا جائے جس کی چوڑائی دہ در دہ ہو تو حوض بھر جائے ، اور اس کی گہرائی ایک بالشت ہو ، تب تو اس سے وضو جائز ہے ورنہ نہیں اور یہی صحیح ہے

کہ اس میں لوگوں پر آسانی ہے، اور ایک قول یہ ہے کہ اس سے وضو جائز نہیں اگرچہ وہ بخارا سے سمر قند تک ہو اھ۔ (ت)

فأقول: قولہ ھو الصحیح ناظر الی اعتبار المساحۃ وحدھا من دون اشتراط الامتدادین وبہ یوافق تصحیحہ الاول بقولہ ھو المأخوذ الی اشتراط عمق شبر والدلیل علیہ قول البرجندی ، قال

میں کہتا ہوں ان کا قول ھو الصحیح صرف پیمائش کو دیکھتے ہوئے ہے ، دونوں امتدادوں کی اس میں شرط نہیں ، اور اسی کی وجہ سے یہ ان کی پہلی تصحیح کے مطابق ہو جائیگا ، وہ فرماتے ہیں یہی ماخوذ ہے ، اس میں ایک بالشت کی گہرائی کی شرط ہے جیسا کہ بر جندی نے کہا:

Fatawa Razawiyya Volume II

[Arabic Text]: Imam Abu Bakr al-Tarkhani said: If the water source does not have a suitable width, even if its length is from Bukhara to Samarkand, ablution (wudu) is not permissible from it. Muhammad ibn Ibrahim al-Maydani said: If the water is such that if collected, it would become ten by ten (cubits) and its depth is at least a span, then ablution with it is permissible for all. This is mentioned in al-Fatawa al-Zahiriyya. It is stated in al-Khulasa that Faqih Abu al-Layth adopted this view, and upon it is the reliance of Sadr al-Shahid. In al-Multaqat, it is mentioned: If the width of the pond is two cubits and its length multiplied by its width equals ten by ten, and a human urinates in it, the water remains pure. End of quote. The pronoun in the saying 'adopted it' and 'upon it is reliance' refers to the consideration of the area, even if by way of collection; otherwise, the reference would not be valid because the phrasing of al-Khulasa in the section on 'types of rivers' is as follows: If the water has length and depth but lacks width, like the rivers of Balkh, and if collected it would become ten by ten, then ablution from it is permissible. This is the opinion of Abu Sulayman al-Juzjani, adopted by Faqih Abu al-Layth, and upon it is the reliance of Sadr al-Shahid. Imam Abu Bakr al-Tarkhani said: It is not permissible, even if it extends from here to Samarkand. End of quote.

[Urdu Text]: This is not a condition, and the proof for this is the statement of Barjindi. Imam Abu Bakr Tarkhani stated that when its width is not suitable, even if its length is from Bukhara to Samarkand, ablution from it is not permissible. And Muhammad bin Ibrahim Maydani said that if the pond is so large that if its water were gathered together, it would be ten by ten (dah dar dah), and its depth is equal to one span, then ablution from it is permissible. All of this is derived from Fatawa Zahiriyya. It is mentioned in Khulasa that Faqih Abu al-Layth adopted this, and Sadr al-Shahid relies on this. In Multaqat, it is written that if the width of a pond is two hands (cubits) and its length in proportion to its width is ten by ten, and a human urinates in it, then the water is pure. End of quote. The pronoun in the phrase 'adopted it' and 'upon it' refers to the consideration of area, even if by way of gathering; otherwise, the reference would not be current because the phrasing of Khulasa in the section 'Types of Rivers' is like this: that if for water there is length and depth but no width, like the rivers of Balkh, if their water is gathered and it becomes ten by ten, then ablution from it is permissible. This is the saying of Abu Sulayman al-Juzjani, and Faqih Abu al-

Layth has adopted this, and Sadr al-Shahid relies on it. And Imam Abu Bakr al-Tarkhani said it is not permissible even if it is from here to Samarkand. End of quote.

1. Niqaya Barjindi, Kitab al-Taharah, Naval Kishore, Lucknow, 1/33
2. Khulasa al-Fatawa, Jins fi al-Anhar, Naval Kishore, Lucknow, 9/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द दोयम

[अरबी पाठ]: इमाम अबू बक्र अल-तरखानी ने कहा: यदि जल स्रोत की चौड़ाई उचित नहीं है, भले ही उसकी लंबाई बुखारा से समरकंद तक हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-मैदानी ने कहा: यदि पानी ऐसा है कि यदि उसे इकट्ठा किया जाए, तो वह दस गुणा दस (हाथ) हो जाए और उसकी गहराई कम से कम एक बालिश्त (span) हो, तो उससे वज़ू करना सबके लिए जायज़ है। यह अल-फ़तावा अल-ज़हीरिया में उल्लेखित है। अल-खुलासा में उल्लेख है कि फकीह अबू अल-लैथ ने इसे अपनाया, और इसी पर सद्र अल-शहीद का भरोसा है। अल-मुल्तक़त में उल्लेख है: यदि तालाब की चौड़ाई दो हाथ है और उसकी लंबाई को चौड़ाई से गुणा करने पर दस गुणा दस हो जाता है, और कोई इंसान उसमें पेशाब कर दे, तो पानी पाक रहता है। उद्धरण समाप्त। 'इसे अपनाया' और 'इस पर भरोसा है' में सर्वनाम क्षेत्रफल के विचार को संदर्भित करता है, भले ही वह एकत्रीकरण के माध्यम से हो; अन्यथा संदर्भ मान्य नहीं होता क्योंकि 'नदियों के प्रकार' अनुभाग में खुलासा की शब्दावली इस प्रकार है: यदि पानी की लंबाई और गहराई है लेकिन चौड़ाई नहीं है, जैसे बल्ख की नदियाँ, और यदि उन्हें इकट्ठा किया जाए तो वे दस गुणा दस हो जाएँ तो उनसे वज़ू जायज़ है। यह अबू सुलेमान अल-जुज़जानी का मत है, जिसे फकीह अबू अल-लैथ ने अपनाया है, और इसी पर सद्र अल-शहीद का भरोसा है। इमाम अबू बक्र अल-तरखानी ने कहा: यह जायज़ नहीं है, भले ही यह यहाँ से समरकंद तक हो। उद्धरण समाप्त।

[उर्दू पाठ]: यह शर्त नहीं है और इसकी दलील बरजिंदी का कथन है। इमाम अबू बक्र तरखानी ने फ़रमाया कि जब उसकी चौड़ाई उचित न हो और उसकी लंबाई भले ही बुखारा से समरकंद तक हो, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं। और मुहम्मद बिन इब्राहिम मैदानी ने फ़रमाया कि अगर हौज़ इतना बड़ा हो कि अगर उसका पानी इकट्ठा किया जाए तो वह 'दह दर दह' (दस गुणा दस) हो जाए और उसकी गहराई एक बालिश्त के बराबर हो, तो उससे वज़ू जायज़ है। यह सब फ़तावा ज़हीरिया से लिया गया है। और खुलासा में ज़िक्र किया गया कि फकीह अबू अल-लैथ ने इसी को अपनाया है और इसी पर सद्र अल-शहीद का भरोसा है। और मुल्तक़त में है कि अगर तालाब की चौड़ाई दो हाथ हो और उसकी लंबाई चौड़ाई के अनुपात में दह दर दह हो जाए और उसमें कोई इंसान पेशाब कर दे तो पानी पाक है। उद्धरण समाप्त। और उनके कथन 'इसे अपनाया' और 'इस पर' में सर्वनाम क्षेत्रफल के विचार की ओर इशारा करता है, चाहे वह एकत्रीकरण के आधार पर हो; वर्ना यह हवाला प्रचलित न होता क्योंकि खुलासा की इबारत 'नदियों के प्रकार' में इस तरह है कि अगर पानी के लिए लंबाई

और गहराई हो और चौड़ाई न हो, जैसे बल्ख की नदियाँ, उनमें का पानी अगर इकट्ठा कर लिया जाए तो वह दह दर दह हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है। और यह अबू सुलेमान अल-जुज़जानी का कथन है और फकीह अबू अल-लैथ ने इसी को अपनाया है और इसी पर सद्र अल-शहीद का भरोसा है। और इमाम अबू बक्र अल-तरखानी ने फ़रमाया कि जायज़ नहीं है भले ही यहाँ से समरकंद तक हो। उद्धरण समाप्त।

1. निक़ाया बरजिंदी, किताब अत-तहारत, नवल किशोर, लखनऊ, 1/33
2. खुलासा अल-फ़तावा, जिन्स फ़िल अन्हार, नवल किशोर, लखनऊ, 9/1

पृष्ठ 429 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

الامام ابو بکر الطرخانی اذ الم یکن له عرض صالح وکان طوله من بخاری الی سمرقند لا یجوز التوضی منه وقال محمد بن ابراهیم المیدانی ان کان بحال لو جمع ماؤه یصیر عشرا في عشر صار عمقه بقدر شبر جاز التوضی به الکل في الفتاوی الظهیریة وذکر في الخلاصة ان الفقیه ابا اللیث اخذ به وعلیه اعتماد الصدر الشهید وفي الملتقط انکان عرض الغدیر ذراعین وبلغ طوله في عرضه عشرا في عشر فبال فیه انسان فالماء طاهر اهـ "فانما الضمیر في قول اخذ به وقوله علیه اعتماد الی اعتبار المساحة ولو بالجمع والا لم تکن الحوالة رائجة لان عبارة الخلاصة في جنس في النهر هکذا ان کان الماء له طول وعمق ولیس له عرض کانهار بلخ ان کان بحال لو جمع یصیر عشرا في عشر یجوز التوضی به وهذا قول ابي سلیمان الجوزجانی و به اخذا لفقیه ابو اللیث وعلیه اعتماد الصدر الشهید وقال الامام ابوبکر الطرخانی لا یجوز وان کان من هنا الی سمرقند اهـ

شرط نہیں اور اس کی دلیل بر جندی کا قول ہے امام ابو بکر طرخانی نے فرمایا جب اس کی چوڑائی مناسب نہ ہو اور اس کی لمبائی خواہ بخاری سے سمرقند تک ہو تو اُس سے وضو جائز نہیں۔" اور محمد بن ابراہیم میدانی نے فرمایا اگر حوض اتنا بڑا ہو کہ اگر اس کا پانی اکٹھا کیا جائے تو وہ دہ در دہ ہو جائے اور اس کی گہرائی بقد ر ایک بالشت ہو تو اس سے وضو جائز ہے، یہ سب فتاوی ظہیریہ سے ماخوذ ہے، اور خلاصہ میں ذکر کیا کہ فقیہ ابو اللیث نے اسی کو اختیار کیا ہے اور اسی پر صدر الشہید کا اعتماد ہے، اور ملتقط میں ہے کہ اگر تالاب کی چوڑائی دو ہاتھ ہو اور اس کی لمبائی چوڑائی میں دہ در دہ ہو اور اس میں کوئی انسان پیشاب کر دے تو پانی پاک ہے اھ اور ضمیر ان کے قول اخذ بہ اور علیہ میں اعتبار مساحت کی طرف راجع ہے اگر چہ جمع کے اعتبار سے ہو ورنہ تو حوالہ رائج نہ ہوتا کیونکہ خلاصہ کی عبارت جنس فی النہر میں اس

طرح ہے کہ اگر پانی کیلئے لمبائی گہرائی ہو اور چوڑائی نہ ہو جیسے بلخ کی نہریں، ان میں کا پانی اگر جمع کر لیا جائے تو وہ دہ در دہ ہو جائے تو اُس سے وضو جائز ہے اور یہ ابو سلیمان الجوزجانی کا قول ہے اور فقیہ ابو اللیث نے اسی کو اختیار کیا ہے اور اسی پر صدر الشہید کا اعتماد ہے، اور امام ابو بکر الطرخانی نے فرمایا جائز نہیں اگر چہ یہاں سے

1 نقایہ بر جندی کتاب الطہارت نولکشور لکھنو ۱/۳۳ 2 خلاصہ الفتاوی جنس فی الانہار نولکشور لکھنو ۹/۱

Fatawa Rizvia, Volume II

[Arabic Column on the Left, Urdu Translation on the Right]

...up to Samarqand. There is absolutely no mention of depth in it, let alone a measurement of one span. Moreover, Imam al-Juzjani adopted the first opinion regarding depth, which is the total rejection of its estimation. It is stated in Al-Bada'i: As for depth, is it a condition along with length and breadth? It is narrated from Abu Sulayman al-Juzjani that he said: Our companions (may Allah Almighty be pleased with them) considered the expanse (surface), not the depth. (1) Thus, Al-Maydani adopted his saying regarding the consideration of area, not the two dimensions (length and breadth), and added the amount of depth from his own side. So, both of them (the authors of Al-Jawahir and Sharh al-Niqayah) quoted it in Al-Jawahir and Sharh al-Niqayah and mentioned its validation based on its origin, regardless of the addition, because the location is the subject of disagreement in principle, not the subject of disagreement in depth. And Allah Almighty knows best. (T)

Correction of the first opinion by Imam Al-Zayla'i: It is stated in Al-Tabyin: And the correct view is that when water takes over the face of the earth (spreads on the surface), it is sufficient, and there is no estimation for it in the Zahir al-Riwayah. (2)

In Al-Bahr al-Ra'iq it is stated: This is the most appropriate view as known from the principle of Abu Hanifa. (3)

The Absolute Investigator (Muhaqqiq al-ala al-itlaq) in Fath al-Qadir weakened this correction, so he said: It is said, and the correct view is when it takes over...

---

1. Bada'i al-Sana'i, the amount by which the place becomes impure, H.M. Saeed Company Karachi, 1/73
2. Tabyin al-Haqa'iq, discussion on Ten by Ten, Bulaq Egypt, 22/1
3. Bahr al-Ra'iq, discussion on Ten by Ten, H.M. Saeed Company Karachi, 1/77

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

[बाईं ओर अरबी कॉलम, दाईं ओर उर्दू अनुवाद]

...समरकंद तक हुआ। इसमें गहराई का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं है, एक बालिश्त के अंदाज़े का ज़िक्र तो दूर की बात है। फिर इमाम जोज़जानी ने गहराई के बारे में पहला मत ही अपनाया है, जिसमें अंदाज़े को पूरी तरह छोड़ दिया गया है। 'बदाए' में फ़रमाया गया: जहाँ तक गहराई का सवाल है, क्या इसे लंबाई और चौड़ाई के साथ शर्त बनाया जाएगा? अबू सुलेमान जोज़जानी से रिवायत है कि उन्होंने कहा: हमारे साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने विस्तार (सतह) का एतबार किया है, गहराई का नहीं। (1) अतः मैदानी ने क्षेत्रफल के एतबार से उनकी बात को लिया है न कि दो विस्तारों में, और अपनी तरफ से गहराई की मात्रा जोड़ दी। तो उन दोनों ने इसे 'जवाहर' और 'शरह निक़ाया' में उद्धृत किया और उन दोनों ने इसकी तस्हीह (सुधार) को इसके मूल के एतबार से ज़िक्र किया और अतिरिक्त बात को नज़रअंदाज़ किया, क्योंकि यह वह स्थान है जिसके मूल में मतभेद है, न कि गहराई में मतभेद है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इमाम ज़ैलेई द्वारा पहले मत की तस्हीह: 'तबयीन' में फ़रमाया गया: सही यह है कि जब पानी ज़मीन की सतह पर फैल जाए तो वह पर्याप्त है, और ज़ाहिर-उर-रिवाया में इसकी कोई मात्रा निर्धारित नहीं है। (2)

'बहरुल राइक़' में है: यही सबसे उपयुक्त है जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा के मूल सिद्धांत से ज्ञात हुआ। (3)

मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने 'फ़तहुन क़दीर' में इस तस्हीह को कमज़ोर बताया है, तो कहा: 'क़ीला' (कहा गया है), और सही यह है कि जब वह ले ले...

---

1. बदाए-उस-सनाए, वह मात्रा जिससे स्थान नापाक हो जाता है, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/73
2. तबयीनुल हक़ाएक़, 'दह दर दह' पर चर्चा, बुलाक़ मिस्र, 22/1
3. बहरुल राइक़, 'दह दर दह' पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/77

पेज 430/711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

[بائیں کالم میں عربی عبارت، دائیں کالم میں اس کا ترجمہ ہے]

فلیس فیه ذکر العمق اصلا فضلا عن تقدیره بشبر کیف والامام الجوزجانی اخذ فی العمق بالقول الاول وهو نفی التقدیر رأسا قال فی البدائع اما العمق فهل یشترط مع الطول والعرض عن ابی سلیمان الجوزجانی انه قال ان اصحابنا رضی اللہ تعالی عنهم اعتبروا البسط دون العمق ۱ اه فالمیدانی اخذ بقوله فی اعتبار المساحة دون الامتدادین وزاد من عند نفسه قدر العمق فنقلاه فی الجواهر وشرح النقایة وذکرا تصحیحه باعتبار اصله مع قطع النظر عن الزیادة لان المحل محل الخلافیة الاصل لاخلافیة العمق واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

سمرقند تک ہوا۔ اس میں گہرائی کا سرے سے کوئی ذکر نہیں۔ چہ جائیکہ ایک بالشت کے اندازے کا ذکر ہو پھر امام جوزجانی نے گہرائی کے بابت پہلا قول ہی اختیار کیا ہے، جس میں اندازہ کو مطلقاً ترک کیا گیا ہے، بدائع میں فرمایا کہ گہرائی کی بابت سوال یہ ہے کہ اس کو طول و عرض کے ساتھ مشروط کیا جائے گا، ابو سلیمان الجوزجانی سے مروی ہے کہ انہوں نے فرمایا ہمارے اصحاب نے چوڑائی کا اعتبار کیا ہے گہرائی کا نہیں، اہ تو میدانی نے پیمائش میں ان کے قول کو لیا ہے نہ کہ دو امتدادوں میں اور اپنی طرف سے انہوں نے گہرائی کی مقدار کا اضافہ کیا، تو ان دونوں نے اس کو جواہر اور شرح نقایہ میں ذکر کیا اور ان دونوں نے اس کی تصحیح اصل کے اعتبار سے کی ہے اور زیادتی سے قطع نظر کیا ہے، کیونکہ یہ محل ہے جس کے اصل میں اختلاف ہے نہ کہ جس کے عمق میں اختلاف ہے واللہ اعلم۔ (ت)

قول اول کی تصحیح امام زیلعی نے فرمائی: قال فی التبیین والصحیح اذا اخذ الماء وجه الارض یکفی ولا تقدیر فیه فی ظاهر الروایة ۲۔ تبیین میں فرمایا صحیح یہ ہے کہ جب زمین کی سطح پر پانی پھیل جائے تو وہ کافی ہے ظاہر الروایۃ میں کسی مقدار کا ذکر نہیں۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: هو الا وجه لما عرف من اصل ابی حنیفة ۳۔ یہی اوجہ ہے جیسا کہ ابو حنیفہ کی اصل سے معلوم ہوا۔ (ت)

محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں اس تصحیح کی تضعیف کی فقال قیل والصحیح اذا اخذ

---

1 بدائع الصنائع المقدار الذی یصیر به المحل نجساً ایچ۔ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۳ 2 تبیین الحقائق بحث عشر فی عشر بولاق مصر ۱/۲۲ 3 بحر الرائق بحث عشر فی عشر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۷

Fatawa Razawiyya, Volume Two

[Box Left]: Al-Ma'u etc. 1 [Box Right]: He says that some have said the correct view is that when water is taken, etc. (T)

I say: There are two perspectives here; one is seemingly strong in the refutation of this statement, and the second is extremely weak in its support. Perhaps for this reason, Imam Ibn al-Humam weakened this correction, but deep insight rules over its strength. And success is from Allah.

[Left Column - Arabic]: As for the support, perhaps one might claim that 'abundant' water has been attached to 'running' water in every ruling, as verified in 'Al-Fath'. In running water, there is no estimation for depth, as indicated by numerous branches, among which is the issue of rain falling on a surface containing impurities; so too here. I say: Grant that 'abundant' is attached to 'running' in all rulings. However, the discussion is: when does it become 'abundant'? It is not possible to attach it before proving that 'abundance' does not require depth. Do you not see that in running water, there is no estimation by anything of length or width, as indicated by the many branches we mentioned in 'Rahb al-Sahah'? Among them is water falling from a jug onto the hand of the one performing istinja before it reaches it. It does not follow from this that there is no estimation for both here as well; so too for depth. And Allah the Exalted knows best. As for the refutation, regarding abundant stagnant water, there are two reliable views. The first is Zahir al-Riwayah, which is to consider the non-clarity based on conjecture and entrust it to the opinion of the one afflicted by it without any estimation of anything. The indicator of that is movement according to our three Imams, may Allah the Exalted be pleased with them.

[Right Column - Urdu]: And as far as support is concerned, perhaps someone might think that 'abundant' water has been placed under the ruling of 'running' water in all rulings, as researched in 'Al-Fath'. There is no specified amount for the depth of running water, and many subsidiary issues prove this. One of these is when rain falls on a roof where there are various impurities, then it is the same here. (T) I say: Granted that 'abundant' water is annexed to 'running' water in all rulings, but the actual point of discussion is: when will it be considered 'abundant'? It will not be correct to annex it to it until it is proven that 'abundance' does not need depth. Don't you see that in running water there is no measurement of length and width? Many subsidiary issues indicate this, which we mentioned in 'Rahb al-Sahah'. One subsidiary issue is that water from a lota falls on the hand of the person doing istinja

before reaching it. It does not necessarily follow from this that there is no measurement for both here, so the same is the case for depth. Allah the Exalted knows best. And the statement of refutation is that there are two reliable opinions regarding stagnant water. The first is Zahir al-Riwayah, which is the consideration of non-purity based on conjecture, and there is no quantity in it, rather... [incomplete]

1 Fath al-Qadir, Discussion on Ten by Ten, Nuriya Razawiyya, Sukkur 1/71

फतावा रज़विया, जिल्द दो

[बायाँ बॉक्स]: अल-माऊ आदि 1 [दायाँ बॉक्स]: वह फरमाते हैं कि कुछ लोगों ने कहा कि सही यह है कि जब पानी लिया जाए आदि। (त)

मैं कहता हूँ: यहाँ दो दृष्टिकोण हैं; एक इस कथन के खंडन में ज़ाहिरी तौर पर मज़बूत है, और दूसरा इसके समर्थन में अत्यंत कमज़ोर है। शायद इसी कारण इमाम इब्न अल-हुमाम ने इस सुधार को कमज़ोर माना, लेकिन सूक्ष्म दृष्टि इसकी शक्ति पर शासन करती है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

[बायाँ कॉलम - अरबी]: जहाँ तक समर्थन की बात है, शायद कोई यह दावा करे कि 'अधिक' पानी को हर नियम में 'बहते' पानी के साथ जोड़ा गया है, जैसा कि 'अल-फत्ह' में सत्यापित किया गया है। बहते पानी में गहराई का कोई अनुमान नहीं है, जैसा कि कई शाखाओं द्वारा इंगित किया गया है, जिनमें से एक गंदगी वाली सतह पर गिरने वाली बारिश का मुद्दा है; यहाँ भी वैसा ही है। मैं कहता हूँ: मान लें कि 'अधिक' को सभी नियमों में 'बहते' के साथ जोड़ा गया है। हालाँकि, चर्चा यह है कि: यह कब 'अधिक' होता है? 'अधिकता' के लिए गहराई की आवश्यकता नहीं है, यह सिद्ध करने से पहले इसे जोड़ना संभव नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि बहते पानी में लंबाई या चौड़ाई का कोई अनुमान नहीं है, जैसा कि 'रहब अल-साहह' में हमारे द्वारा बताए गए कई शाखाओं से संकेत मिलता है? उनमें से एक इस्तेंजा करने वाले के हाथ पर जग से गिरने वाला पानी है इससे पहले कि वह उस तक पहुँचे। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि यहाँ भी दोनों के लिए कोई अनुमान नहीं है; गहराई के लिए भी यही सच है। और अल्लाह सबसे अच्छा जानता है। जहाँ तक खंडन का प्रश्न है, ठहरे हुए अधिक पानी के संबंध में दो विश्वसनीय मत हैं। पहला 'ज़ाहिर अल-रिवायह' है, जो अनुमान के आधार पर अशुद्धि की कमी पर विचार करना है और इसे किसी भी चीज़ के अनुमान के बिना पीड़ित व्यक्ति की राय पर छोड़ देना है। हमारे तीन इमामों के अनुसार उसका सूचक गति है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो।

[दायाँ कॉलम - उर्दू]: और जहाँ तक समर्थन का संबंध है, शायद कोई सोच सकता है कि 'अधिक' पानी को सभी नियमों में 'बहते' पानी के नियम के तहत रखा गया है, जैसा कि 'अल-फत्ह' में शोध किया गया है। बहते पानी की गहराई के लिए कोई निर्दिष्ट मात्रा नहीं है, और कई उप-मुद्दे इसे साबित करते हैं। इनमें से एक तब होता है जब बारिश एक छत पर गिरती है जहाँ विभिन्न अशुद्धियाँ होती हैं,

तो यहाँ भी ऐसा ही है। (त) मैं कहता हूँ: मान लिया कि 'अधिक' पानी सभी नियमों में 'बहते' पानी से संबंद्ध है, लेकिन चर्चा का वास्तविक बिंदु यह है: इसे कब 'अधिक' माना जाएगा? इसे तब तक उससे जोड़ना सही नहीं होगा जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि 'अधिकता' को गहराई की आवश्यकता नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि बहते पानी में लंबाई और चौड़ाई का कोई माप नहीं है? कई उप-मुद्दे इसे इंगित करते हैं, जिनका उल्लेख हमने 'रहब अल-साहह' में किया है। एक उप-मुद्दा यह है कि लोटे का पानी इस्तेंजा करने वाले व्यक्ति के हाथ पर पहुँचने से पहले गिर जाता है। इससे यह आवश्यक नहीं है कि यहाँ दोनों के लिए कोई माप नहीं है, इसलिए गहराई के मामले में भी ऐसा ही है। अल्लाह सबसे अच्छा जानता है। और खंडन का बयान यह है कि ठहरे हुए पानी के बारे में दो विश्वसनीय मत हैं। पहला 'ज़ाहिर अल-रिवायह' है, जो अनुमान के आधार पर अपवित्रता पर विचार करना है, और इसमें कोई मात्रा नहीं है, बल्कि... [अपूर्ण]

1 फतह अल-कदीर, दस बाय दस पर चर्चा, नूरिया रज़विया, सुक्कुर 1/71

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

الماء الخ ۱ [بائیں طرف] وہ فرماتے ہیں کہ بعض نے کہا صحیح یہ ہے کہ جب پانی لے الخ۔ (ت) [دائیں طرف]

اقول: یہاں دو نظریں ہیں ایک بظاہر قوی اس قول کی تزریف میں دوسری کمال ضعیف اس کی تائید میں اور شاید اسی لئے امام ابن الہمام نے اس تصحیح کو ضعیف کیا مگر نظرِ دقیق اس کی قوت پر حاکم وباللہ التوفیق

[بایاں کالم - عربی]: اما التأئید فلعل زاعماً یزعم ان الکثیر قد الحق بالجاری في کل حکم کما حققه في الفتح والجاری لاتقدیر فیه للعمق کما دلت علیه فروع کثیرة منها مسألة المطر النازل علی سطح فیه نجاسات فکذا ههنا۔ اقول: هب ان الکثیر ملحق بالجاری فی جمیع الاحکام لکن الکلام انه متی یکون کثیرا فلا یمکن الالحاق قبل اثبات ان الکثرة لاتحتاج الی العمق الا تری ان الجاری لاتقدیر فیه بشیئ من الطول ولا العرض کما دلت علیه فروع جمة ذکرناها في رحب الساحة منها الماء النازل من الابریق علی ید المستنجي قبل وصوله الیها ولا یلزم منه عدم التقدیر بهما ههنا ایضا فکذا العمق واللہ تعالی اعلم- واما التزییف ففي الراکد الکثیر قولان معتمدان الاول ظاہر الروایة وهو اعتبار عدم الخلوص ظناً وتفویضه الی رأی المبتلی به من دون تقدیر بشیئ ومعرّف ذلك التحریك عند ائمتنا الثلثة رضی اللہ تعالی

[دایاں کالم - اردو]: اور جہاں تک تائید کا تعلق ہے شاید کوئی گمان کرنے والا گمان کرے کہ کثیر کو جاری کے حکم میں کیا گیا ہے تمام احکام میں، جیسا کہ اس کی تحقیق فتح میں ہے اور جاری کی گہرائی میں کوئی مقدار نہیں ہے، اور اس پر فروع کثیرہ دلالت کرتی ہیں ایک فرع ان میں سے

یہ ہے کہ بارش چھت پر ہو اور وہاں مختلف نجاستیں ہوں تو یہاں بھی ایسا ہی ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں مان لیا کہ کثیر تمام احکام میں جاری کے ساتھ ملحق ہے لیکن اصل گفتگو تو اس میں ہے کہ وہ کب کثیر ہوگا تو اس کے ساتھ ملحق کرنا اس وقت تک درست نہ ہوگا جب تک یہ ثابت نہ کیا جائے کہ کثرت گہرائی کی محتاج نہیں، کیا آپ نہیں دیکھتے کہ جاری میں طول و عرض کا کوئی اندازہ نہیں، اس پر بہت سی فروع دلالت کرتی ہیں جن کا ذکر ہم نے رحب الساحۃ میں کیا، ایک فرع یہ ہے کہ لوٹے سے پانی استنجاء کرنے والے کے ہاتھ پر گرے اس تک پہنچنے سے قبل اور اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ ان دونوں کا اندازہ نہ ہو یہاں بھی، تو عمق کا بھی یہی حال ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ اور تزریف کا بیان یہ ہے کہ ٹھہرے ہوئے پانی میں دو معتمد قول ہیں پہلا ظاہر الروایت ہے اور وہ بطور گمان عدم خلوص کا اعتبار ہے اور اس میں کوئی مقدار نہیں بلکہ جواس

۱ فتح القدیر بحث عشر فی عشر نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۱

Fatawa Razawiya, Volume 2

...from them, and it is by performing ablution according to the most correct opinion, and the second is relied upon by the generality of the later scholars, and upon it is the fatwa, which is the estimation of ten by ten, meaning an area of one hundred according to the correct view. So the absence of estimation conforming to the original position of the Imam (may Allah be pleased with him) is only based on the first narration. As for now, the discussion is based on the estimation of the quantity, so how can the original absence of estimation be observed in it as the author of Al-Bahr did? Or how can the Zahir al-Riwayah be observed in it as Imam Al-Fakhr did, while 'ten by ten' itself is not mentioned in the Zahir al-Riwayah? (T)

I say: (1) The investigation according to me is that the estimation of ten by ten is not an independent ruling in its own right (2) that requires finding a source for it as Imam Sadr al-Shariah took the trouble to do, (3) and it is criticized on the grounds that it does not return to a source in the Shariah as stated in Al-Bahr and followed in Al-Durr, and it is rejected due to its contradiction with the corrected view of many leading scholars as is imagined. Rather, it is an estimation from them (may Allah have mercy on us through them) because in the Zahir al-Riwayah there is a lack of purity, and they found this quantity does not remain pure, so they ruled by it.

It is stated in Al-Bada'i: Abu Dawud mentioned that there is hardly any authentic hadith from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) regarding the estimation of water for either of the two groups, and for this reason, our companions referred back to proofs in the matter of estimation.

Page 432 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

...उनसे, और यह सबसे सही राय के अनुसार वुज़ू करने से है, और दूसरा बाद के विद्वानों के बहुमत द्वारा विश्वसनीय है और उसी पर फतवा है, जो दस गुणा दस का अनुमान है, यानी सही विचार के अनुसार सौ हाथ का क्षेत्र। इसलिए इमाम (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की मूल स्थिति के अनुरूप अनुमान का अभाव केवल पहली रिवायत पर आधारित है। जहाँ तक अब की बात है, चर्चा मात्रा के निर्धारण पर है, तो इसमें अनुमान के मूल अभाव को कैसे देखा जा सकता है जैसा कि अल-बहर के लेखक ने किया? या इसमें ज़ाहिर अल-रिवायत का पालन कैसे किया जा सकता है जैसा कि इमाम अल-फ़क्र ने किया, जबकि "दस गुणा दस" स्वयं ज़ाहिर अल-रिवायत में नहीं है? (त)

मैं कहता हूँ: (1) मेरे अनुसार शोध यह है कि दस गुणा दस का अनुमान अपने आप में कोई स्वतंत्र नियम नहीं है (2) जिसके लिए किसी स्रोत को खोजने की आवश्यकता हो जैसा कि इमाम सद्र अल-शरिया ने करने का कष्ट किया, (3) और इसकी इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह शरीयत के किसी स्रोत की ओर नहीं लौटता जैसा कि अल-बहर में कहा गया है और अल-दुर्र में इसका पालन किया गया है, और इसे कई प्रमुख विद्वानों की सही राय के विरोधाभास के कारण खारिज कर दिया जाता है जैसा कि कल्पना की जाती है। बल्कि, यह उनकी ओर से एक अनुमान है (अल्लाह उन पर और हमारे ऊपर दया करे) क्योंकि ज़ाहिर अल-रिवायत में शुद्धता की कमी है, और उन्होंने पाया कि यह मात्रा शुद्ध नहीं रहती है, इसलिए उन्होंने इसके द्वारा निर्णय दिया।

अल-बदई में कहा गया है: अबू दाऊद ने उल्लेख किया कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पानी के अनुमान के संबंध में दोनों पक्षों में से किसी के लिए शायद ही कोई प्रामाणिक हदीस है, और इसी कारण से हमारे साथियों ने अनुमान के मामले में प्रमाणों का सहारा लिया।

पृष्ठ 432 का 711

میں مبتلٰی ہے اس کی رائے پر چھوڑا گیا ہے اور اس کی پہچان ہمارے ائمہ ثلاثہ کے نزدیک حرکت دینا ہے اور یہ حرکت اصح قول کے مطابق وضو سے ہوگی، اور دوسرا قول عام متاخرین کا مختار ہے اور اسی پر فتوٰی ہے، اور اس سے مراد دہ در دہ کی مقدار ہے، یعنی سو ہاتھ کی پیمائش صحیح قول پر ہے، اور اندازہ نہ ہونا جو امام کی اصل کے مطابق ہے وہ پہلی روایت کے مطابق ہے، اور اب گفتگو مقدار کی تقدیر پر ہے تو اس میں عدم تقدیر کی اصل کا لحاظ کیسے ہوگا جیسا کہ بحر نے کیا ہے یا اس میں ظاہر الروایۃ کی رعایت کیسے ہوگی؟ جیسا کہ امام فخر نے کیا ہے جبکہ دہ در دہ ظاہر روایت میں کوئی قول نہیں۔ (ت)

میں کہتا ہوں میرے نزدیک تحقیق یہ ہے کہ دہ در دہ کا اندازہ مستقل حکم نہیں ہے کہ اس کیلئے کوئی اصل تلاش کرنا ہو، جیسا کہ صدر الشریعہ نے اس کی کوشش کی ہے، اور اس پر یہ اعتراض کہ یہ چیز شریعت کی کسی اصل پر متفرع نہیں، جیسا کہ بحر میں فرمایا اور ڈر نے اس کی متابعت کی اور اس کو اس بنا پر رد کردیا جائے کہ یہ قول اکثر علماء کے مطابق امام کے صحیح قول کے مخالف ہونے کی وجہ سے مردود ہے جیسا کہ وہم ہوتا ہے بلکہ یہ اُن کی طرف سے اندازہ ہے، کیونکہ ظاہر روایت میں عدم خلوص ہے اور اس مقدار میں انہوں نے خلوص نہ پایا تو انہوں نے اس پر یہ حکم لگایا۔

بدائع میں فرمایا ابو داؤد نے فرمایا کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حدیث جو پانی کے اندازہ سے متعلق ہے فریقین میں سے کسی کیلئے کوئی حدیث

صفحہ 432 کا 711

Fatawa Rizvia - Volume Two

...not correct; and for this reason, our companions turned to sensory evidences for estimation, rather than auditory (narrative) ones. Now, regarding the interpretation of 'khulus' (reaching/penetrating), there is a difference of opinion. The unanimous report from our companions is that movement is the criterion. Abu Hafs al-Kabir considered 'khulus' by coloring (whether color reaches across), Abu Nasr by turbidity (muddiness), and al-Juzajani by measurement, stating that if a pond is ten by ten (cubits), then it is such that movement does not 'reach' the other side, and if it is less than that, then it does 'reach'. (1) He established this as the interpretation of the school's position. In 'al-Ghuniya', under the author's statement 'A pond when it is ten by ten', it is said that the purpose of this estimation is to gain a dominant probability that impurity does not 'reach' across. (2) Since this is the interpretation of what is in 'Zahir al-Riwayah' (the authoritative reports), its observance is necessary. The depth remains according to the Imam's original principle because this estimation is for that in which movement does not reach across, and according to 'Zahir al-Riwayah', depth is not considered in that in which movement does not reach. Therefore, there is no reason to consider it here. Yes, if it is proven that depth has an influence on the reaching of movement or its absence, then it would be said that where 'Zahir al-Riwayah' made the matter dependent on it, it left the dimensions (length and width) unrestricted. At that time, this was necessary. You have estimated both dimensions, and since every depth is not equal relative to these two, it is incumbent upon you to estimate a specific depth...

1. Bada'i' al-Sana'i', section on explaining the measure, H.M. Saeed Company, Karachi.
2. Ghunyat al-Mustamli, section on the rulings of ponds, Suhail Academy, Lahore, p. 98.

फतवा रिज़विया - जिल्द दो

...सही नहीं है; और इसी कारण हमारे साथियों ने अनुमान के लिए इंद्रिय साक्ष्यों (हस्सी दलाइल) की ओर रुख किया, न कि श्रुति (सम्ई) प्रमाणों की ओर। अब 'खुलूस' (पहुँचने/व्याप्त होने) की व्याख्या में मतभेद है। हमारे साथियों के बीच आम सहमति वाली रिपोर्टों के अनुसार, हिलाने (आंदोलन) को मानदंड माना जाता है। अबू हफ्स अल-कबीर ने रंग बदलने के आधार पर 'खुलूस' को माना। अबू नस्र ने गंदलेपन के आधार पर इसे माना। अल-जोज़जानी ने माप के आधार पर इसे माना; उन्होंने कहा कि यदि तालाब दस गुना दस (हाथ) है, तो वह ऐसा है जिसमें आंदोलन दूसरी तरफ नहीं पहुँचता, और यदि वह इससे छोटा है तो वह पहुँच जाता है। (१) उन्होंने इसे मज़हब (विचारधारा) की व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया है। 'अल-गुनिया' में लेखक के कथन "जब तालाब दस गुना दस हो" के तहत लिखा है कि इस अनुमान का उद्देश्य अशुद्धि के न पहुँचने के बारे में एक प्रबल संभावना प्राप्त करना है। (२) चूँकि यह 'ज़ाहिर अल-रवाया' (मुख्य प्रामाणिक रिपोर्टों) की व्याख्या है, इसलिए इसका पालन करना अनिवार्य है। गहराई का मामला इमाम के मूल सिद्धांत के अनुसार बना रहता है क्योंकि यह अनुमान उस स्थिति के लिए है जिसमें आंदोलन दूसरी तरफ न पहुँचे, और 'ज़ाहिर अल-रवाया' के अनुसार, जिसमें आंदोलन न पहुँचे उसमें गहराई को महत्व नहीं दिया जाता। इसलिए यहाँ गहराई पर विचार करने का कोई कारण नहीं है। हाँ, यदि यह सिद्ध हो जाए कि आंदोलन के पहुँचने या उसकी कमी में गहराई का भी प्रभाव है, तो उस समय कहा जाएगा कि 'ज़ाहिर अल-रवाया' ने जहाँ मामले को इस पर आधारित किया है, वहाँ आयामों (लंबाई और चौड़ाई) को स्वतंत्र छोड़ दिया है। उस समय यही आवश्यक था। आपने दोनों आयामों का अनुमान लगाया है, लेकिन चूँकि इन दोनों के बाद हर गहराई समान नहीं होती, इसलिए आप पर अनिवार्य है कि आप गहराई का भी एक अनुमान निर्धारित करें...

1. बदाए अल-सनाए, मात्रा के स्पष्टीकरण का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची।
2. गुनियतुल मुस्तमली, तालाबों के नियमों का अध्याय, सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ ९८।

पृष्ठ ४३३ का ७११

الحسیة دون السمعیة ثم اختلفوا فی تفسیر الخلوص فاتفقت الروایات عن اصحابنا انه یعتبر بالتحریک وابو حفص الکبیر اعتبر الخلوص بالصبغ وابو نصر بالتکدیر والجوزجانی بالمساحة فقال ان کان عشراً فی عشر فهو مما لا یخلص وان کان دونه فهو مما یخلص ۱ اهـ فقد جعل هذا تفسیر الما فی المذهب وقال فی الغنیة تحت قوله الحوض اذا کان عشراً فی عشر المقصود من هذا التقدیر حصول غلبة الظن بعدم خلوص النجاسة ۱۲اهـ فاذا کان هذا تفسیر ما فی ظاهر الروایة وجبت رعایته فیه وبقی عمقه علی اصل الامام لان هذا انما هو تقدیر ما لایخلص وما لا یخلص لم یعتبر فیه عمق فی ظاهر الروایة فلا داعی الی اعتباره هنا اللهم الا ان یثبت ان للعمق مدخلاً فی خلوص الحرکة وعدمه ایضا فح یقال ان ظاهر الروایة حیث احالت الامر علیه ارسلت الامتدادات ارسالا وکان ذلک الواجب حینئذ اما انتم فقدرتم الامتدادین و لیس ان کل عمق

صحیح نہیں، اور اسی لئے ہمارے اصحاب نے اندازہ میں دلائلِ حسیہ کی طرف رجوع کیا نہ کہ سمعیہ کی طرف اب خلوص کی تفسیر میں اختلاف ہے تو ہمارے اصحاب کی متفقہ روایت میں ہلانے کا اعتبار ہے اور ابو حفص کبیر نے خلوص رنگنے کو کہا اور ابو نصر نے گدلا ہونے کو کہا اور جوزجانی نے پیمائش کو کہا، فرمایا کہ اگر وہ دہ دردہ ہو تو اس میں خلوص نہیں اور اگر اس سے کم ہے تو اس میں خلوص ہے اھ انہوں نے یہ مذہب کی تفسیر بنائی ہے غنیہ میں مصنف کے قول الحوض اذا کان عشراً فی عشر کے تحت ہے کہ اس تقدیر سے مقصود نجاست کے عدمِ خلوص کی بابت ظنِ غالب کا حصول ہے اھ اور جب یہ ظاہر روایت کی تفسیر ہے تو اس کی رعایت اس میں لازم ہے، اور امام کی اصل کے مطابق عمق باقی رہا کیونکہ یہ اسکی تقدیر ہے جس میں خلوص نہ ہو اور جس میں خلوص نہ ہو ظاہر الروایہ کے مطابق اس میں عمق معتبر

نہیں، تو یہاں اس کے اعتبار کی کوئی وجہ نہیں، ہاں اگر عمق کا دخل خلوصِ حرکت اور عدمِ خلوص میں ثابت کر دیا جائے ، تو اُس وقت کہا جائیگا کہ ظاہرِ روایت نے جہاں معاملہ کا دارومدار اس پر رکھا ہے تو امتدادات کو مطلق رکھا ہے اور اس وقت یہی لازم تھا اور تم نے دونوں امتدادوں کی تقدیر کی ہے اور ان دونوں کے بعد ہر عمق برابر نہیں تو تم پر لازم ہے کہ ایک ایسے عمق کی تقدیر کرو۔

۱۔ بدائع الصنائع فصل فی بیان المقدار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۔ غنیۃ المستملی فصل فی احکام الحیاض سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۸

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Section]: After both, it is equal; hence, an estimation of depth is mandatory such that with it, the two dimensions do not accept purity (khalus). Understand this. So understand, and thus the eleventh saying does not contradict the first saying because omitting estimation in the manifest narrations (Zahir al-Riwayah) is not a permission for its negation, but rather due to its lack of specific determination and its variation according to the variation of dimensions. Therefore, it is correct to delegate it to the observer's view. However, it is something that needs proof, and without it, it's like peeling a thorny branch (an idiom for extreme difficulty). Rather, it is refuted by the fact that if it were so, the determination of ten by ten would not be valid, because the two dimensions preventing purity would vary based on depth. So how can limiting it to any one of them be permissible? And this is returning to the original intent with a contradiction. Thus, the weightier view is the manifest narration (Zahir al-Riwayah); indeed, it is the only way. This is what I have, and Allah Almighty knows best.

[Urdu Section]: ...so that in its presence, both dimensions do not accept purity. In this case, the eleventh saying will not be contradictory to the first saying because in the manifest narration, omitting estimation will not be for its negation but for its non-determination, and its variation will be due to the variation of dimensions. Thus, it will be correct to entrust it to the opinion of the observer, but this is a thing that needs proof whereas its proof is difficult. Rather, its rebuttal is that if this were the case, the determination of 'ten by ten' would not be correct, because the two dimensions preventing purity would vary based on differences in depth. Then how would the limitation of any one of them be correct? And this is to return to the intended purpose with a contradiction. Therefore, it was decided that the weightier view is that the manifest narration is correct; rather, this is the only reason. This is what I have, etc. (T)

[Arabic Section]: The correction of this saying is not seen by anyone other than Imam Al-Zaylai: As for what is in 'Al-Bahr' from 'Al-Bada'i', when water covers the surface of the earth, it suffices, and there is no fixed estimation in 'Zahir al-Riwayah', and this is correct 1 (end quote). I say: This, as you see, is the speech of 'Al-Tabyeen' and not in 'Al-Bada'i'. In it, only what was narrated from Al-Juzajani has already been stated, then he said: From the jurist Abu Ja'far...

[Urdu Section]: The correction of this saying is not seen by anyone other than Imam Al-Zaylai: And what is in 'Al-Bahr' that it is in 'Al-Bada'i', that when water covers the surface of the earth, this is sufficient for it, and there is no determined estimation in the 'Zahir al-Riwayah', and this is correct. (T) I say this is the speech of 'Al-Tabyeen' and it is not in 'Al-Bada'i'; in it, what is narrated from Juzajani has already been explained, then he said, Jurist Abu Ja'far...

1 Al-Bahr al-Ra'iq, discussion of Ten by Ten, H.M. Saeed Company Karachi 1/71. Page 434 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[अरबी खंड]: दोनों के बाद, यह बराबर है; अतः गहराई का ऐसा अनुमान अनिवार्य है कि उसके साथ दोनों विस्तार शुद्धता (खुलूस) को स्वीकार न करें। इसे समझें। तो समझें, और इस प्रकार ग्यारहवीं उक्ति पहली उक्ति के विपरीत नहीं होगी क्योंकि ज़ाहिर अल-रिवायत में अनुमान छोड़ना उसके निषेध के लिए नहीं है, बल्कि उसके निर्धारण की कमी और विस्तार के अंतर के कारण उसके परिवर्तन के कारण है। इसलिए इसे देखने वाले की राय पर छोड़ना सही होगा। हालाँकि, यह कुछ ऐसा है जिसे प्रमाण की आवश्यकता है, और इसके बिना यह एक कांटेदार टहनी को छीलने जैसा है (अत्यधिक कठिनाई का मुहावरा)। बल्कि, यह इस तथ्य से खंडित होता है कि यदि ऐसा होता, तो दस गुणा दस का निर्धारण मान्य नहीं होता, क्योंकि शुद्धता को रोकने वाले दो विस्तार गहराई के आधार पर भिन्न होंगे। तो उनमें से किसी एक पर इसे सीमित करना कैसे जायज़ हो सकता है? और यह विरोधाभास के साथ मूल उद्देश्य की ओर लौटना है। इस प्रकार, अधिक वजनदार विचार ज़ाहिर अल-रिवायत है; वास्तव में, यही एकमात्र तरीका है। यह मेरे पास है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

[उर्दू खंड]: ...ताकि उसकी उपस्थिति में, दोनों विस्तार शुद्धता को स्वीकार न करें। इस मामले में, ग्यारहवीं उक्ति पहली उक्ति के विरोधाभासी नहीं होगी क्योंकि ज़ाहिर रिवायत में अनुमान को छोड़ना उसके निषेध के लिए नहीं बल्कि उसके अनिर्धारण के लिए होगा, और इसका परिवर्तन विस्तार की भिन्नता के कारण होगा। इस प्रकार, इसे देखने वाले की राय पर सौंपना सही होगा, लेकिन यह एक ऐसी चीज़ है जिसे प्रमाण की आवश्यकता है जबकि इसका प्रमाण कठिन है। बल्कि, इसका खंडन यह है कि यदि ऐसा होता, तो 'दस गुणा दस' का निर्धारण सही नहीं होता, क्योंकि शुद्धता को रोकने वाले दो विस्तार गहराई में अंतर के आधार पर भिन्न होते। फिर उनमें से किसी एक की सीमा कैसे सही होगी? और यह विरोधाभास के साथ अभीष्ट उद्देश्य की ओर लौटना है। इसलिए, यह तय किया गया कि वजनदार विचार यह है कि ज़ाहिर रिवायत सही है; बल्कि, यही एकमात्र कारण है। यह मेरे पास है, आदि (त)

[अरबी खंड]: इमाम अल-ज़ैलई के अलावा किसी और ने इस उक्ति के सुधार को नहीं देखा है: जैसा कि 'अल-बह्र' में 'अल-बदा'ई' से है, जब पानी पृथ्वी की सतह को ढक लेता है, तो यह पर्याप्त है, और 'ज़ाहिर अल-रिवायत' में कोई निश्चित अनुमान नहीं है, और यही सही है 1 (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ: यह, जैसा कि आप देखते हैं, 'अल-तबीन' का भाषण है न कि 'अल-बदा'ई' में। इसमें केवल

वही है जो अल-जुज़जानी से वर्णित किया गया था, जो पहले ही बताया जा चुका है, फिर उन्होंने कहा: न्यायविद अबू जाफ़र से...

[उर्दू खंड]: इमाम अल-ज़ैलई के अलावा किसी और ने इस उक्ति के सुधार को नहीं देखा है: और जो 'अल-बह्र' में है कि वह 'अल-बदा'ई' में है, कि जब पानी पृथ्वी की सतह को ढक लेता है, तो यह उसके लिए पर्याप्त है, और 'ज़ाहिर अल-रिवायत' में कोई निर्धारित अनुमान नहीं है, और यही सही है। (त) मैं कहता हूँ कि यह 'अल-तबीन' का भाषण है और यह 'अल-बदा'ई' में नहीं है; इसमें, जो जुज़जानी से वर्णित है, उसे पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, फिर उन्होंने कहा, न्यायविद अबू जाफ़र...

1 अल-बहर अल-रैक, दस गुणा दस की चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/71। पृष्ठ 434 का 711

[عربی حصہ]: بعدهما سواء فيجب عليكم تقدير عمق لايقبل معه الامتدادان الخلوص فافهم - فافهم، وح لا يضاد القول الحادی عشر للقول الاول اذ ترك التقدير فی ظاهر الرواية لا يكون اذن لنفيه بل لعدم تعينه واختلافه باختلاف الامتدادات فيصح التفويض الی رأی الناظر لكنه شيئ يحتاج الی ثبت ودونه خرط القتاد بل يدفعه ان لو كان كذلك لم يصح تعيين عشر فی عشر فأنه يختلف الامتدادان المانعان للخلوص علی هذا باختلاف الاعماق فكيف يجوز التحديد علی شيئ منها وهو عود علی المقصود بالنقص فترجح ان الاوجه هو ظاهر الرواية بل هي الوجه هذا ماعندی والله تعالی اعلم۔

[اردو حصہ]: کہ اس کے ہوتے ہوئے دونوں امتداد خلوص کو قبول نہ کریں۔ اس صورت میں گیارہواں قول پہلے قول کی ضد نہ ہوگا کہ ظاہر روایت میں تقدیر کا ترک کرنا اس کی نفی کیلئے نہ ہوگا بلکہ اس کی عدمِ تعین کیلئے ہوگا اور اس کا اختلاف امتدادات کے اختلاف کی وجہ سے ہوگا تو دیکھنے والے کی رائے کی طرف اس کو سپرد کرنا صحیح ہوگا، مگر یہ ایک ایسی چیز ہے جس کو دلیل کی ضرورت ہے حالانکہ اس کی دلیل مشکل ہے بلکہ اس کا رد یہ ہے کہ اگر بات یہی ہوتی تو دہ در دہ کی تعیین صحیح نہ ہوتی، کیونکہ جو دو امتداد خلوص کے مانع ہیں اس بنا پر گہرائیوں کے اختلاف سے مختلف ہونگے تو ان میں سے کسی ایک کی تحدید کیونکر درست ہوگی اور یہ تو نقض کے سبب مقصود کی طرف عود کرنا ہے تو راجح یہی قرار پایا کہ ظاہر روایت ہی درست ہے بلکہ صرف ایک یہی وجہ ہے هذا ماعندی الخ(ت)

[عربی حصہ]: اس قول کی تصحیح امام زیلعی کے سوا دوسرے سے نظر میں نہیں: اما ما فی البحر فی البدائع اذا اخذ ای الماء وجه الارض يكفی ولا تقدير فيه فی ظاهر الرواية وهو الصحيح ۱ اھ

فأقول: هذا کما تری کلام التبیین ولیس فی البدائع انما ذکر فیه عن الجوزجانی ماتقدم ثم قال وعن الفقیه ابی جعفر

[اردو حصہ]: اس قول کی تصحیح امام زیلعی کے سوا دوسرے سے نظر میں نہیں: اور جو بحر میں ہے کہ بدائع میں ہے جب پانی زمین کی سطح کو چھپا دے یہ اس کیلئے کافی ہے اور ظاہر الروایۃ میں کوئی تقدیر متعین نہیں، اور یہی صحیح ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں یہ تبیین کا کلام ہے اور یہ بدائع میں نہیں اس میں تو جوزجانی سے جو منقول ہے وہ بیان ہو چکا ہے پھر فرمایا فقیہ ابو جعفر

1 بحر الرائق بحث عشر فی عشر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۱ Page 434 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume II

Hindwani says that if the water is such that if a person lifts it with both hands, its bottom is revealed and then it reconnects, then wudu (ablution) cannot be performed with it. Then, widths greater than a dirham, a span (shibr), and a cubit (dhira') were mentioned, but none of them were declared authentic (sahih). Yes, before this, regarding running water, it was stated that the scholars (Mashaikh) differ on the definition of flowing. Some said that if a person places his hand across the water and the flow does not stop, then it is running water, otherwise not. (Some said that if a straw or leaf is placed in this water, it should be carried away). It is narrated from Abu Yusuf that it should be water such that if a person takes a handful of it, the ground is not exposed; then it is running water, otherwise not. One opinion is that whatever people consider as running is running, and what they do not, is not, and this is the most correct opinion. (Ends here). This means they did not specify the depth, but this is regarding running water and there is no doubt in it, whereas the discussion here is about large quantities of stagnant water. However, the statement of [the author of] Al-Bahr is more reasonable. I say that despite his high status, he is not among the 'As-hab-e-Tarjeeh' (those authorized to prefer one legal opinion over another), as any person of insight and expertise in the field knows. Ibn Abidin in his commentary on the poem 'Uqud Rasm al-Mufti' quoted from Al-Bahr...

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on specifying the amount, HM Saeed Company Karachi 1/73
2. Bada'i al-Sana'i, Chapter on specifying the amount, HM Saeed Company Karachi 1/71

फतवा रिज़विया, जिल्द दो

हिंदुवानी कहते हैं कि अगर पानी ऐसा है कि आदमी अपने दोनों हाथों से उठाए तो उसका तल खुल जाए और फिर मिल जाए, तो उससे वज़ू नहीं हो सकता। फिर दिरहम, बालिश्त और एक हाथ से ज़्यादा की चौड़ाई का ज़िक्र किया गया और उनमें से किसी को भी सही (प्रमाणित) करार नहीं दिया गया। हाँ, इससे पहले बहते पानी के बारे में कहा गया कि मशाइख (विद्वानों) के बीच बहने की परिभाषा पर मतभेद है। कुछ ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति पानी में अपना हाथ चौड़ाई में डाले और पानी का बहाव न रुके तो वह बहता पानी है, अन्यथा नहीं। (कुछ ने कहा कि यदि इस पानी में कोई तिनका या पत्ता डाला जाए तो वह उसे बहा ले जाए)। और अबू यूसुफ से रिवायत है कि वह ऐसा पानी हो कि यदि कोई व्यक्ति उसमें से एक चुल्लू पानी ले तो ज़मीन नज़र न आए; तब वह बहता पानी है, अन्यथा नहीं। एक मत यह है कि जिसे लोग बहता हुआ समझें वह बहता है और जिसे न समझें वह नहीं, और यही सबसे सही मत है। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने गहराई का निर्धारण नहीं किया, लेकिन यह बहते पानी के बारे में है और इसमें कोई संदेह नहीं है, जबकि यहाँ चर्चा ठहरे हुए अधिक पानी के बारे में है। लेकिन 'अल-बहर' (के लेखक) का कथन अधिक तर्कसंगत है। मैं कहता हूँ कि अपने उच्च स्थान के बावजूद वे 'असहाब-ए-तरजीह' (कानूनी मतों को वरीयता देने वालों) में से नहीं हैं, जैसा कि कोई भी अंतर्दृष्टि रखने वाला और क्षेत्र का विशेषज्ञ जानता है। इब्न आबिदीन ने अपनी नज़्म 'उक़ूद रस्म अल-मुफ़्ती' की व्याख्या में 'बहर' से उद्धृत किया है...

1. बदाए-उस-सनाए, मात्रा के स्पष्टीकरण का अध्याय, एचएम सईद कंपनी कराची 1/73
2. बदाए-उस-सनाए, मात्रा के स्पष्टीकरण का अध्याय, एचएम सईद कंपनी कराची 1/71

पृष्ठ 435/711

ہندوانی کہتے ہیں کہ اگر پانی ایسا ہے کہ آدمی اپنے دونوں ہاتھوں سے اٹھائے تو اس کی تہ کھل جائے پھر جڑ جائے تو اس سے وضو نہیں ہو سکتا ہے، پھر درہم، بالشت اور ایک ہاتھ سے زائد کی چوڑائی کا ذکر کیا اور ان میں سے کسی کی تصحیح کا ذکر نہیں کیا ہاں اس سے قبل جاری پانی کی بابت کہا کہ مشائخ کا حد جریان میں اختلاف ہے بعض نے فرمایا کہ اگر کوئی شخص اپنا ہاتھ پانی میں چوڑائی میں ڈالے تو پانی کا جاری رہنا ختم نہ ہو تو وہ جاری ہے ورنہ نہیں (بعض نے فرمایا کہ اگر اس پانی میں کوئی تنکا ڈالا جائے یا پتہ ڈالا جائے تو بہا لے جائے) ، اور ابو یوسف سے مروی ہے کہ وہ ایسا پانی ہو کہ اگر کوئی شخص اس میں سے چلو بھر کر پانی لے تو زمین کھلنے نہ پائے، ایسا پانی جاری ہے ورنہ نہیں، ایک قول ہے کہ جس کو لوگ جاری سمجھیں وہ جاری ہے اور جس کو جاری نہ سمجھیں وہ جاری نہیں اور سب سے زیادہ صحیح قول یہی ہے اھ اس کا مطلب یہ ہے کہ انہوں نے گہرائی کا تعین نہیں فرمایا، لیکن یہ جاری پانی میں ہے اور اس میں شک نہیں، اور گفتگو یہاں ٹھہرے ہوئے کثیر پانی میں ہے۔ لیکن بحر کا قول معقول تر ہے، میں کہتا ہوں وہ بلندی مقام کے باوجود اصحابِ ترجیح سے نہیں ہیں جیسا کہ صاحبِ نظر اور فن کا ماہر جانتا ہے، ابن عابدین نے اپنی منظوم کی شرح عقود رسم المفتی میں بحر سے نقل کے

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان المقدار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۳ 2 بدائع الصنائع فصل فی بیان المقدار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۱

Fatawa Razawiyya Volume II

[Arabic Column] ...the thought is successful. My master Muhammad bin Abidin (may Allah Almighty have mercy on him) said in the commentary on the poem 'Uqud Rasm al-Mufti', after quoting from 'al-Bahr' regarding what they narrated from our companions: It is not permissible for anyone to give a fatwa (legal opinion) based on our saying until they know from where we said it. This condition was in their time, but in our time, it is sufficient to memorize [the rulings] as mentioned in 'al-Quniya' and others. So, it is permissible to give a fatwa based on the Imam's saying; rather, it is obligatory even if we do not know from where he said it. The result of this is that it is obligatory for us to give a fatwa according to the Imam's saying, even if the Mashayikh (scholars) gave fatwas to the contrary. End of quote. The text says: It is taken from the statement of the author of 'al-Bahr' that it is obligatory for us to give a fatwa according to the Imam's saying, etc., that he himself is not from the people of insight into the evidence. Therefore, if he declares a saying to be correct that opposes the correction of others, it is not considered, let alone deduction (istinbat) and derivation (takhrij) based on rules, contrary to what al-Biri mentioned regarding the statement of the author of 'al-Bahr' in his book 'al-Ashbah', the first type: knowledge of the rules to which [issues] are referred and from which scholars have branched off rulings, and these are in reality the principles of jurisprudence (usul al-fiqh). Through them, a jurist rises to the rank of ijtihad (independent legal reasoning), even if it is in fatwa. And most of its branches I have attained... etc. So al-Biri said, after defining the 'Mujtahid fi al-Madhhab' as what we...

[Urdu Column] ...after what was narrated from the companions is that it is not lawful for any person to give a fatwa based on our saying until it is known to him from where we took this saying. After this, he said this was in their time, but in our time, it is sufficient to rely only on memory, as is in 'al-Quniya' etc. So giving a fatwa on the Imam's saying is lawful, rather obligatory, even if it is not known where they took this saying from. Its result is that it is obligatory for us to give a fatwa on the Imam's saying even if this saying is against the Mashayikh. End of quote. The author of 'al-Bahr' says: "It is obligatory for us to give a fatwa on the Imam's saying etc." He himself does not have the ability to reflect and ponder on evidence. Now, if he corrects a saying which is against the correction of another, it will not be reliable, let alone deduction and derivation which is according to rules. Biri has done contrary to this. This is near this statement of the author of 'al-Bahr' where he says in his book "al-Ashbah", the first type is in the knowledge of those rules upon which the jurists

have branched off rulings, and these are in reality the principles of jurisprudence, and through them, a jurist reaches the level of ijtihad whether this ijtihad is in fatwa, and I have had success in most of its branches etc. Biri defined 'Mujtahid fi al-Madhhab' which we...

[Footnotes] 1 Sharh al-Manzumah al-Musammat bi-'Uqud Rasm al-Mufti from the Epistles of Ibn Abidin, Sohail Academy Lahore 1/28 2 Al-Ashbah wa al-Naza'ir, regarding this second type from it, Idarat al-Qur'an Karachi 1/15

फ़तावा रज़विया जिल्द II

[अरबी कॉलम] ...सोच सफल है। मेरे आका मुहम्मद बिन आबिदीन (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'उक़ूद रस्म अल-मुफ़्ती' कविता की व्याख्या में, 'अल-बह्र' से हमारे साथियों के बारे में जो उन्होंने उद्धृत किया है, उसके बाद कहा: किसी के लिए भी हमारे कथन के आधार पर फ़तवा देना तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि वे यह न जान लें कि हमने इसे कहाँ से कहा है। यह शर्त उनके ज़माने में थी, लेकिन हमारे ज़माने में, 'अल-क़ुनिया' और अन्य में जैसा कि उल्लेख किया गया है, [फ़ैसलों] को याद रखना ही पर्याप्त है। इसलिए, इमाम के कथन के आधार पर फ़तवा देना जायज़ है; बल्कि, यह अनिवार्य है भले ही हम यह न जानें कि उन्होंने इसे कहाँ से कहा है। इसका परिणाम यह है कि हमारे लिए इमाम के कथन के अनुसार फ़तवा देना अनिवार्य है, भले ही मशाईख (विद्वानों) ने इसके विपरीत फ़तवा दिया हो। उद्धरण समाप्त। पाठ कहता है: 'अल-बह्र' के लेखक के इस कथन से लिया गया है कि हमारे लिए इमाम के कथन के अनुसार फ़तवा देना अनिवार्य है, आदि, कि वे स्वयं प्रमाणों में अंतर्दृष्टि रखने वाले लोगों में से नहीं हैं। इसलिए, यदि वे किसी ऐसे कथन को सही घोषित करते हैं जो दूसरों के सुधार के विपरीत है, तो उस पर विचार नहीं किया जाता है, नियमों के आधार पर कटौती (इस्तिमबात) और व्युत्पत्ति (तख़रीज) की तो बात ही छोड़ दें, जैसा कि अल-बीरी ने अपनी पुस्तक 'अल-अश्बाह' में 'अल-बह्र' के लेखक के कथन के संबंध में उल्लेख किया है, पहला प्रकार: उन नियमों का ज्ञान जिनके लिए [मुद्दों] को संदर्भित किया जाता है और जिनसे विद्वानों ने अहकामों को शाखाबद्ध किया है, और ये वास्तव में न्यायशास्त्र के सिद्धांत (उसूल अल-फ़िक़्ह) हैं। उनके माध्यम से, एक फ़क़ीह इज्तिहाद (स्वतंत्र कानूनी तर्क) के पद तक पहुँचता है, भले ही वह फ़तवे में हो। और इसकी अधिकांश शाखाओं को मैंने प्राप्त कर लिया है... आदि। तो अल-बीरी ने 'मुजतहिद फ़ी अल-मज़हब' को परिभाषित करने के बाद कहा जैसा कि हम...

[उर्दू कॉलम] ...साथियों से जो नक़्ल किया गया है उसके बाद यह है कि किसी व्यक्ति के लिए यह हलाल नहीं है कि वह हमारे क़ौल पर फ़तवा दे जब तक कि उसे यह मालूम न हो कि हमने कहाँ से यह क़ौल लिया, इसके बाद फ़रमाया यह उनके ज़माने में था, मगर हमारे ज़माने में सिर्फ़ याद पर इक्तिफ़ा करना काफ़ी है, जैसा कि क़ुनिया वग़ैरा में है तो इमाम के क़ौल पर फ़तवा हलाल है बल्कि वाजिब है ख़्वाह यह मालूम न हो कि उन्होंने कहाँ से यह क़ौल लिया, इसका नतीजा यह है कि हम पर क़ौल-ए-इमाम पर फ़तवा देना वाजिब है ख़्वाह यह क़ौल मशाईख़ के ख़िलाफ़ हो। साहिब-ए-बह्र का क़ौल यह है "हम पर क़ौल-ए-इमाम पर फ़तवा वाजिब है आदि" वह ख़ुद दलील में ग़ौर-ओ-फ़िक्र

की अहलियत नहीं रखते, अब अगर वह किसी क़ौल की तसहीह करें जो ग़ैर की तसहीह के ख़िलाफ़ हो तो एतबार न होगा च-जायके इस्तिनबात-ओ-तख़रीज जो क़वाइद के मुताबिक़ हो, बीरी ने इसके ख़िलाफ़ किया है, यह साहिब-ए-बह्र के इस क़ौल के पास है जहाँ वह अपनी किताब "अल-अश्बाह" में फ़रमाते हैं, पहली क़िस्म उन क़वाइद की मा'रिफ़त में जिन पर फ़ुक़्हा ने अहकाम मुतफ़र्रअ किए हैं, और यही हक़ीक़त में उसूल-ए-फ़िक़्ह हैं, और उनके ज़रिए फ़क़ीह दर्जा-ए-इज्तिहाद तक पहुँचता है ख़्वाह यह इज्तिहाद फ़तवा में हो, और इसकी अक्सर फ़ुरूअ पर मुझे कामयाबी हुई है आदि बीरी ने मुजतहिद फ़ी अल-मज़हब की तारीफ़ की जो हमने...

[पादलेख] 1 शरह अल-मंज़ूमा अल-मुसम्मात बि-उक़ूद रस्म अल-मुफ़्ती मिन् रसाईल इब्न आबिदीन, सुहैल एकेडमी लाहौर 1/28 2 अल-अश्बाह व अन-नज़ा'इर, इसके दूसरे प्रकार के बारे में, इदारातुल क़ुरआन कराची 1/15

فتاوی رضویہ جلدثانی

[عربی کالم] الفن یفکر نجیح، وقال سیدی محمد بن عابدین رحمہ اللہ تعالی فی شرح منظومۃ عقود رسم المفتی بعد مانقل عن البحر فیما نقلوا عن اصحابنا انہ لا یحل لاحدان یفتي بقولنا حتی یعلم من این قلنا ان ھذا الشرط کان فی زمانھم اما فی زماننا فیکتفی بالحفظ کما فی القنیۃ وغیرھا فیحل الافتاء بقول الامام بل یجب وان لم نعلم من این قال فینتج من ھذا انہ یجب علینا الافتاء بقول الامام وان افتی المشائخ بخلافہ اہ ما نصہ یؤخذ من قول صاحب البحر یجب علینا الافتاء بقول الامام الخ انہ نفسہ لیس من اھل النظر فی الدلیل فاذ اصح قولا مخالفا لتصحیح غیرہ لا یعتبر فضلا عن الاستنباط والتخریج علی القواعد خلافا لما ذکرہ البیری عند قول صاحب البحر فی کتابہ الاشباہ النوع الاول معرفۃ القواعد التی ترد الیھا وفرعوا الاحکام علیھا وھی اصول الفقہ فی الحقیقۃ وبھا یرتقی الفقیہ الی درجۃ الاجتھاد ولو فی الفتوی واکثر فروعہ ظفرت بہ الخ فقال البیری بعد ان عرف المجتھد فی المذھب بما

[اردو کالم] بعد جو اصحاب سے نقل کیا وہ یہ کہ کسی شخص کیلئے یہ حلال نہیں کہ وہ ہمارے قول پر فتوی دے تا وقتیکہ اس کو یہ معلوم نہ ہو کہ ہم نے کہاں سے یہ قول لیا، اس کے بعد فرمایا یہ ان کے زمانہ میں تھا، مگر ہمارے زمانہ میں صرف یاد پر اکتفاء کرنا کافی ہے، جیسا کہ قنیہ وغیرہ میں ہے تو امام کے قول پر فتوی حلال ہے بلکہ واجب ہے خواہ یہ معلوم نہ ہو کہ انہوں نے کہاں سے یہ قول لیا، اس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہم پر قول امام پر فتوی دینا واجب ہے خواہ یہ قول مشائخ کے خلاف ہو اھ صاحب بحر کا قول یہ ہے "ہم پر قول امام پر فتوی واجب ہے الخ وہ خود دلیل میں غور و فکر کی اہلیت نہیں رکھتے، اب اگر وہ کسی قول کی تصحیح کریں جو غیر کی تصحیح کے خلاف ہو تو اعتبار نہ ہوگا چہ جائیکہ استنباط و تخریج جو قواعد کے مطابق ہو، بیری نے اس کے خلاف کیا ہے، یہ صاحب بحر کے اس قول کے پاس ہے جہاں وہ اپنی کتاب "الاشباہ"

میں فرماتے ہیں، پہلی قسم ان قواعد کی معرفت میں جن پر فقہاء نے احکام متفرع کئے ہیں، اور یہی حقیقت میں اصول فقہ ہیں، اور ان کے ذریعہ فقیہ درجہ اجتہاد تک پہنچتا ہے خواہ یہ اجتہاد فتوی میں ہو، اور اس کی اکثر فروع پر مجھے کامیابی ہوئی ہے الخ بیری نے مجتہد فی المذهب کی تعریف کی جو ہم نے

[حواشی] 1 شرح المنظومة المسماة بعقود رسم المفتی من رسائل ابن عابدین سہیل اکیڈمی لاہور ۲۸/۱ 2 الاشباه والنظائر بكوان هذا النوع الثاني منها ادارة القرآن كراچی ۱۵/۱

Fatawa Ridawiyya Volume 2

[Left Column - Arabic Content]: ...as we presented from him. And in this is an indication that the author has reached this level in issuing fatwas and even more. In reality, Allah Almighty bestowed upon him the knowledge of hidden secrets, and he was among the observant scholars of Hadith. End quote. For it is not hidden that his mastery over most branches of this kind does not necessarily imply that he possesses the faculty of independent reasoning regarding the evidence. His words in *Al-Bahr* indicate that this faculty was not attained by him, and that it is a condition for *Ijtihad* within the school of thought. So reflect on this. End quote.

I say: Meaning, in the sense defined by Biry Zada, it includes the *Mujtahid* in specific issues (*fil-masa'il*), the experts in derivation (*Ahl al-Takhrij*), and the *Mujtahid* in fatwas. As (1) he said: The *Mujtahid* in the school of thought is defined as one who is capable of deriving aspects based on the explicit texts of his Imam, and is profoundly learned in the school of his Imam, able to prefer one of his statements over another (2). End quote. Not the *Mujtahid* in the school of thought who is in the second tier, which surpasses the remaining three, as *Al-Bahr* said: "even if in fatwa". (T)

And I say: *Al-Bahr* did not claim that whoever...

[Right Column - Urdu Translation/Commentary]: ...stated, then said that in this is an indication that the author himself occupies this rank in issuing fatwas, rather even higher. The truth is that Allah informed him of secrets and mysteries, and he was among the *Huffaz* (preservers of knowledge). End quote. Let it not remain hidden that his being informed about most of its branches is not proof that he is also a person of deep thought and insight, for this station is not attained by him; these are the conditions of a *Mujtahid fi al-Madhhab* (independent jurist within a school). So reflect. End quote. (T)

I say, i.e., in terms of the meaning assigned by Biry Zada, this includes the *Mujtahid* in specific issues, the people of derivation (*Takhrij*), and the *Mujtahid* in fatwas. They stated the definition of *Mujtahid fi al-Madhhab* as such: a scholar who is capable of deriving the reasons/facets for the issues stated by his Imam, and is a profound scholar of the Imam's school who can prefer one of his statements over another's, and not the *Mujtahid fi al-Madhhab* who belongs to the second tier and excels over the remaining three, because *Al-Bahr* said "even if in fatwa". (T)

I say, *Al-Bahr* did not claim that whoever...

[Footnotes]: 1. Biry Zada 2. Biry Zada

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद]: ...जैसा कि हमने उनकी ओर से पेश किया। और इसमें यह संकेत है कि लेखक फतवा देने में इस पद तक पहुँच चुके हैं और उससे भी अधिक। वास्तव में, अल्लाह तआला ने उन्हें गुप्त रहस्यों से अवगत कराया था और वे जानकार हाफ़िज़ों में से थे। इति। क्योंकि यह छिपा नहीं है कि इस प्रकार की अधिकांश शाखाओं पर उनकी पकड़ का मतलब यह नहीं है कि वे साक्ष्यों में विचार और दृष्टि की योग्यता रखते हैं। 'अल-बह्र' में उनकी बातों से संकेत मिलता है कि यह उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था, और यह कि यह पंथ (मज़हब) के भीतर इज्तिहाद के लिए एक शर्त है। तो इस पर विचार करें। इति।

मैं कहता हूँ: अर्थात् उस अर्थ में जिसे बीरी ज़ादा ने परिभाषित किया है, इसमें मसलों में मुज्तहिद (मुज्तहिद फिल-मसाइल), तख़रीज वाले (अहल अल-तख़रीज) और फतवा में मुज्तहिद शामिल हैं। जैसा कि (1) उन्होंने कहा: मज़हब में मुज्तहिद की परिभाषा यह की गई है कि वह अपने इमाम के स्पष्ट कथनों के आधार पर पहलुओं को निकालने (तख़रीज) में सक्षम हो, और अपने इमाम के मज़हब का गहरा विद्वान हो जो उनके एक कथन को दूसरे पर वरीयता दे सके(2)। इति। न कि वह मज़हब में मुज्तहिद जो दूसरे स्तर पर है, जो शेष तीन से श्रेष्ठ है, क्योंकि 'बह्र' ने कहा: "भले ही फतवे में हो"। (त)

और मैं कहता हूँ: 'बह्र' ने यह दावा नहीं किया कि जो...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या का हिंदी अनुवाद]: ...बयान किया, फिर फ़रमाया कि इसमें इशारा है कि लेखक फतवा में स्वयं इस मर्तबे पर आसीन हैं, बल्कि इससे भी ज़्यादा हैं, और हकीकत यह है कि अल्लाह ने उन्हें इसरार और रुमूज़ (रहस्यों) पर मत्तला (अवगत) फ़रमाया था और वे हुफ़्फ़ाज़ (ज्ञान के संरक्षकों) में से थे। इति। यह गुप्त न रहे कि उनकी इसकी अधिकांश शाखाओं पर जानकारी होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि वे साहिब-ए-फ़िक्र-ओ-नज़र (गहन चिंतन और दृष्टि वाले) भी हैं, क्योंकि यह स्थान उन्हें प्राप्त नहीं है; ये मुज्तहिद फ़िल-मज़हब की शर्तें हैं। फ़तअम्मल (तो विचार करें)। इति। (त)

मैं कहता हूँ, यानी उस मायने के ऐतबार से जो बीरी ज़ादा ने किए हैं, यह मुज्तहिद फ़िल-मसाइल को भी शामिल है और अहल-ए-तख़रीज और मुज्तहिद फ़िल-फ़तवा को भी। उन्होंने फ़रमाया कि मुज्तहिद फ़िल-मज़हब की परिभाषा इस तरह की गई है कि वह ऐसा आलिम (विद्वान) होता है जो

अपने इमाम के बयान करदा मसले की वजूह (कारणों/पहलुओं) की तख़रीज पर कादिर (सक्षम) हो, और मज़हब-ए-इमाम का मुतबहर (गहरा) आलिम हो, उनके अक़वाल (कथनों) को दूसरों के अक़वाल पर तरजीह (वरीयता) दे सकता हो, न कि मुज्तहिद फ़िल-मज़हब, जो दूसरे तबक़े(श्रेणी) में होता है जो बाक़ी तीन पर फ़ाइक़ (श्रेष्ठ) होता है, क्योंकि 'बह्र' ने फ़रमाया "अगरचे फ़तवा में"। (त)

मैं कहता हूँ 'बह्र' ने यह दावा नहीं किया कि जो...

[फुटनोट्स]: 1. बीरी ज़ादा 2. बीरी ज़ादा

पेज 437 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی متن]: قدمناہ عنہ ۔وفی ھذا اشارۃ الی ان المؤلف قد بلغ ھذہ المرتبۃ فی الفتوی وزیادۃ وھو فی الحقیقۃ قد من اللہ تعالی علیہ بالاطلاع علی خبایا الزوایا وکان من جملۃ الحفاظ المطلعین انتھی اذ لایخفی ان ظفرہ باکثر فروع ھذا النوع لایستلزم منہ ان یکون لہ اھلیۃ النظر فی الادلۃ التی دل کلامہ فی البحر علی انھا لم تحصل لہ وعلی انھا شرط الاجتھاد فی المذھب فتأمل اھ

اقول: ای بالمعنی الذی عرفہ بل بیری زادہ شاملا للمجتھد فی المسائل واھل التخریج والمجتھد فی الفتوی حیث(۱) قال المجتھد فی المذھب عرف بانہ المتمکن من تخریج الوجوہ علی منصوص امامہ والمتبحر فی مذھب امامہ المتمکن من ترجیح قول لہ علی آخر ۲ اھ لا المجتھد فی المذھب الذی ھی الطبقۃ الثانیۃ الفائقۃ علی الثلثۃ الباقیۃ لقول البحر ولو فی الفتوی۔

واقول: لم یدع البحران من عرف

[دایاں کالم - اردو متن]: بیان کی پھر فرمایا کہ اس میں اشارہ ہے کہ مصنف فتوی میں خود اس مرتبہ پر فائز ہے ، بلکہ اس سے زیادہ ہے ، اور حقیقت یہ ہے کہ اللہ نے ان کو اسرار و رموز پر مطلع فرمایا تھا اور وہ حفاظ میں سے تھے انتہی ، یہ مخفی نہ رہے کہ ان کا اس کی اکثر فروع پر مطلع ہونا اس امر کی دلیل نہیں کہ وہ صاحبِ فکر و نظر بھی ہیں کہ یہ مقام ان کو حاصل نہیں ، یہ مجتہد فی المذہب کی شرائط ہیں فتأمل اھ (ت)

میں کہتا ہوں ، یعنی اُس معنی کے اعتبار سے جو بیری زادہ نے کیے ہیں یہ مجتہد فی المسائل کو بھی شامل ہے اور اہل تخریج اور مجتہد فی الفتوی کو بھی، انہوں نے فرمایا کہ مجتہد فی المذہب کی تعریف اس طرح کی گئی ہے کہ وہ ایسا عالم ہوتا ہے جو اپنے امام کے بیان کردہ مسئلہ کی

وجوہ کی تخریج پر قادر ہو ، اور مذہب امام کا متبحر عالم ہو اس کے اقوال کو دوسروں کے اقوال پر ترجیح دے سکتا ہو ، نہ کہ مجتہد فی المذہب ، جو دوسرے طبقہ میں ہوتا ہے جو باقی تین پر فائق ہوتا ہے ، کیونکہ بحر نے فرمایا " اگرچہ فتوی میں "۔(ت)

میں کہتا ہوں بحر نے یہ دعوی نہیں کیا کہ جو

[حواشی]: 1 بیر ی زادہ 2 بیری زادہ

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Column]: ...the branches [of Fiqh] ascend to the rank of Ijtihad. Where is the mere collection of them compared to the ability to examine evidence? It's like pharmacy compared to medicine. He only intended that whoever understands the realities of those rules and how the branches are derived from them and referred back to them, that becomes a ladder for him to ascend to the lowest degrees of Ijtihad. He did not claim this for himself; he only mentioned succeeding in most of the branches. So where is this compared to that? (1) It is surprising how this was hidden from Allama Beeri despite its clarity. Furthermore, he (2) did not testify to the attainment of the rank of Ijtihad in issuing fatwas for him, may Allah the Almighty have mercy on both of them. He only claimed that there is an indication of this in the words of 'al-Bahr' (Bahr al-Ra'iq) and testified to his being among the insightful preservers. There is no doubt about this. Sayyid Abu al-Sa'ud al-Azhari said in 'Fath Allah al-Mu'een': 'One should not rely on the fatwas of Ibn Nujaim, nor on the fatwas of [Marginal note].'

[Urdu Column]: ...person who knows the branches, he will attain the rank of Ijtihad. Memorizing branches is one thing, and reflection and insight is something else. This is exactly like the difference between a druggist and a physician. Their purpose is that if someone starts to recognize these principles and learns the method of deriving issues from them, then this becomes a means of reaching the lowest level of Ijtihad. He has not claimed this position for himself; he merely said that he has succeeded in knowing most of the branches. There is a big difference between the two. It is surprising how this fact remained hidden from Allama Beeri, even though it is very clear. Furthermore, he did not claim for himself the rank of Ijtihad in issuing fatwas, may Allah Almighty have mercy on them both. He only said that there is an indication toward this in the discourse of 'al-Bahr' and he has testified to this matter.

[Marginal Note - Arabic]: I say: Thus he said, and I have not come across it to know its status. But it is said in 'Kashf al-Zunun' under the letter 'Dhal' regarding 'Dhakhirat al-Nazir fi al-Ashbah wa al-Naza'ir' that it belongs to the virtuous scholar Ali al-Turi al-Misri al-Hanafi who died in 1004 AH. Then he said: Al-Amini said in 'Khulasat al-Athar' that he took from Sheikh Zayn al-Din ibn Nujaim and others until he excelled and became versatile, and authored many works and treatises in Fiqh. He used to issue fatwas and his fatwas were good.

[Marginal Note - Urdu]: I say he said this, but I have not been informed of it. However, in 'Kashf al-Zunun' under the heading of the letter 'Zaal', regarding 'Dhakhirat al-Nazir fi al-Ashbah wa al-Naza'ir', it is mentioned that this book belongs to the learned and virtuous scholar Ali al-Turi al-Misri al-Hanafi (died 1004 AH). He then stated that Amini in 'Khulasat al-Athar' said he acquired knowledge from Sheikh Zayn al-Din ibn Nujaim and others, reaching the point where he became a scholar of great status and authored many books and treatises in the science of jurisprudence. He used to issue fatwas and his fatwas... (Continued on next page)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी कॉलम]: ...शाखाओं (फुरूअ) का ज्ञान इजतिहाद के पद तक ले जाता है। इन शाखाओं को एकत्र करने और साक्ष्यों पर विचार करने की योग्यता के बीच बहुत अंतर है, जैसे फार्मेसी और चिकित्सा के बीच का अंतर। उनका आशय केवल यह था कि जो व्यक्ति उन नियमों की वास्तविकताओं को समझता है और यह जानता है कि उनसे शाखाएँ कैसे निकाली जाती हैं और वापस उन पर कैसे लौटाई जाती हैं, तो यह उसके लिए इजतिहाद के न्यूनतम स्तर तक पहुँचने की सीढ़ी बन जाता है। उन्होंने स्वयं के लिए इस पद का दावा नहीं किया; उन्होंने केवल यह उल्लेख किया कि वे अधिकांश शाखाओं को जानने में सफल रहे। तो यह उस चीज़ से कितना अलग है? (1) आश्चर्य है कि यह वास्तविकता अल्लामा बीरी से इतनी स्पष्ट होने के बावजूद कैसे छिपी रही। इसके अलावा, उन्होंने (2) उनके लिए फतवा जारी करने में इजतिहाद के पद की प्राप्ति की गवाही नहीं दी, अल्लाह उन दोनों पर दया करे। उन्होंने केवल यह दावा किया कि 'अल-बहर' के शब्दों में इसकी ओर संकेत है और उनके एक पारखी संरक्षक होने की गवाही दी। इसमें कोई संदेह नहीं है। सैयद अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने 'फतह अल्लाह अल-मुईन' में कहा: 'इब्न नुजैम के फतवों पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, न ही [हाशिया] के फतवों पर।'

[उर्दू कॉलम]: ...व्यक्ति भी शाखाओं को जान लेगा, वह इजतिहाद के पद पर आसीन हो जाएगा। शाखाओं को याद करना एक बात है और चिंतन एवं अंतर्दृष्टि दूसरी बात है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे दवा बेचने वाले (दवाफरोश) और चिकित्सक (तबीब) के बीच का अंतर होता है। उनका उद्देश्य यह है कि जो व्यक्ति इन नियमों को पहचानने लगे और उनसे मसलों को निकालने का तरीका जान ले, तो यह इजतिहाद के निचले दर्जे तक पहुँचने का माध्यम बन जाता है। उन्होंने स्वयं अपने लिए इस पद का दावा नहीं किया है; उन्होंने तो मात्र यह कहा है कि वे अधिकांश शाखाओं को जानने में सफल हुए हैं। दोनों में बड़ा अंतर है। आश्चर्य है कि यह वास्तविकता अल्लामा बीरी पर कैसे छिपी रही, जबकि यह पूरी तरह स्पष्ट है। फिर उन्होंने अपने लिए फतवे में इजतिहाद के दर्जे का दावा भी नहीं किया है (अल्लाह तआला उन दोनों पर रहमत फरमाए)। उन्होंने सिर्फ यह कहा है कि 'बहर' की बातों में इस ओर संकेत है और उन्होंने इस बात की गवाही दी है।

[हाशिया - अरबी]: मैं कहता हूँ: उन्होंने ऐसा कहा, और मुझे इसकी स्थिति जानने के लिए यह प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन 'कश्फ अल-जुनून' में 'ज़ाल' अक्षर के तहत 'ज़खीरतुल नाज़िर फिल अश्बाह वन

नज़ायर' के बारे में कहा गया है कि यह नेक विद्वान अली अल-तूरी अल-मिस्री अल-हनफी की है जिनकी मृत्यु 1004 हिजरी में हुई थी। फिर उन्होंने कहा: अल-अमीनी ने 'खुलासतुल असर' में कहा कि उन्होंने शेख ज़ैनुद्दीन इब्न नुजैम और अन्य लोगों से शिक्षा प्राप्त की जब तक कि वे उत्कृष्ट और बहुमुखी नहीं बन गए, और फिक्ह में कई रचनाएँ और शोध-प्रबंध लिखे। वे फतवे जारी करते थे और उनके फतवे अच्छे थे।

[हाशिया - उर्दू]: मैं कहता हूँ उन्होंने यही फरमाया है, लेकिन मैं इससे अवगत नहीं हुआ। मगर 'कश्फ अल-ज़ुनून' में 'ज़ाल' की तख्ती में 'ज़खीरतुल नाज़िर फिल अश्बाह वन नज़ायर' के तहत है कि यह किताब आलिम फाज़िल अली अल-तूरी अल-मिस्री अल-हनफी (मृत्यु 1004 हिजरी) की है। फिर उन्होंने कहा कि अमीनी ने 'खुलासतुल असर' में कहा है कि उन्होंने शेख ज़ैनुद्दीन बिन नुजैम आदि से ज्ञान प्राप्त किया यहाँ तक कि वे महान पद के विद्वान बन गए और फिक्ह (धर्मशास्त्र) के विज्ञान में कई किताबें और शोध-पत्र लिखे। वे फतवे देते थे और उनके फतवे... (बाकी अगले पृष्ठ पर)

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم]: الفروع ارتقی الی مرتبة الاجتهاد واین جمعها من اهلية النظر في الدليل والصيدلة من الطب وانما اراد ان تلك القواعد من ادرك حقائقها وان الفروع كيف تستنبط منها وترد اليها كان ذلك سلمًا له يرتقي بها الى ادنى درجات الاجتهاد ولم يدع هذا لنفسه انما ذكر الظفر باكثر الفروع فاين هذا من ذاک(۱)والعجب كيف خفى هذا على العلامة بيرى مع وضوحه ثم هو ايضا لم(۲)يشهد بحصول درجة الاجتهاد في الفتوى له رحمهما الله تعالى انما زعم ان في كلام البحر اشارة اليه وشهد بكونه من الحفاظ المطلعين وهذا لاشك فيه وقد قال السيد ابو السعود الازهرى فى فتح الله المعين لايعتمد على فتاوى ابن نجيم ولاعلى فتاوى عه

[اردو کالم]: شخص بھی فروع کو جاننے گا وہ مرتبہ اجتہاد پر فائز ہوجائے گا، فروع کا یاد کرنا اور ہے اور فکر و نظر چیزے دگر است، یہ بالکل ایسا ہے جیسے دوا فروش اور طبیب کا فرق ہوتا ہے، ان کا مقصد یہ ہے کہ جو شخص ان قواعد کو پہچاننے لگے اور ان سے استنباط مسائل کا طریقہ معلوم کرلے، تو یہ اجتہاد کے ادنیٰ درجہ تک پہنچنے کا ذریعہ بن جاتا ہے اور انہوں نے خود اپنے لئے اس مقام کا دعویٰ نہیں کیا ہے انہوں نے تو محض یہ کہا ہے کہ وہ اکثر فروع کو جاننے میں کامیاب ہوئے ہیں دونوں میں بڑا فرق ہے تعجب ہے کہ یہ حقیقت علامہ بیری پر کیسے مخفی رہی، حالانکہ بالکل واضح ہے، پھر انہوں نے اپنے لئے درجہ اجتہاد فی الفتویٰ کا دعویٰ بھی نہیں کیا ہے رحمہما اللہ تعالیٰ، صرف یہ کہا ہے کہ بحر کے کلام میں اس طرف اشارہ ہے اور انہوں نے اس امر کی شہادت دی ہے

[حاشیہ - عربی]: عه اقول: كذا قال ولم اطلع عليها لاعلم حالها لكن قال في كشف الظنون من الذال تحت ذخيرة الناظر في الاشباه والنظائر انها للعالم الفاضل على الطورى المصرى الحنفى المتوفى

١٠٠٤ اربع والف ثم قال قال الامینی فی خلاصة الاثر اخذ عن الشیخ زین الدین بن نجیم وغیره حتی برع وتفنن والف مؤلفات ورسائل في الفقه كثيرة كان يفتی وفتاواه جيدة

[حاشیہ - اردو]: میں کہتا ہوں انہوں نے یہی فرمایا ہے، لیکن میں اس پر مطلع نہیں ہوا، مگر کشف الظنون میں ذال کی تختی میں ذخیرة الناظر فی الاشباہ والنظائر کے تحت ہے کہ یہ کتاب عالم فاضل علی الطوری المصری الحنفی المتوفی ١٠٠٤ھ کی ہے پھر انہوں نے کہا کہ امینی نے خلاصۃ الاثر میں کہا کہ انہوں نے شیخ زین الدین بن نجیم وغیرہ سے علم حاصل کیا یہاں تک کہ وہ عظیم المرتبت عالم ہو گئے اور علم فقہ میں بہت سی کتب و رسائل تصنیف کیے وہ فتوے دیتے تھے اور ان کے فتوے (باقی بر صفحہ آیندہ)

Fatawa Ridawiyya, Volume II

[Top Box Left - Arabic Text]: Al-Turi ^1, end. And 'Sh' confirmed it in several places in Radd al-Muhtar, and in 'Ta' from him: I heard much from our Shaykh (meaning his father, Sayyid Ali, may Allah have mercy on them both) that the fatwas of al-Turi, like the fatwas of Shaykh Zayn, are not to be trusted unless supported by another transmission ^2. How can it be appropriate for an authority in fatwa to prevent following his own fatwas?

[Top Box Right - Urdu Translation]: ...that he is among the memorizers (Huffaz), and there is no room for doubt in this. Abu al-Su’ud al-Azhari stated in Fath Allah al-Mu’in that one should neither rely on the fatwas of Ibn Nujaym nor on the fatwas of al-Turi. And 'Sh' maintained this, mentioned in several places in Radd al-Muhtar. And it is narrated from him in 'Ta' (Tahtawi) that we heard from our Shaykh (referring to his father, Sayyid Ali) very frequently; he used to say that the fatwas of al-Turi are like the fatwas of Shaykh Zayn, neither of them is to be relied upon, although it would be a different matter if they were supported by another transmission. And when would it be appropriate for an authority in issuing fatwas to oppose acting upon his own fatwa? (T)

[Main Body Text]: The preference for the third opinion is found in common books; in Wiqayah ^1, Niqayah ^2, Islah ^3, Ghurar ^4, Multaqa al-Abhur (texts) ^5, Wajiz al-Kardari ^6, etc., it has been emphasized. The great Imam Qadi Khan ^7 prioritized it and identified it as the narration of Imam Abu Yusuf from Imam al-A’zam. In Hidayah ^8, Durar ^9, Majma' al-Anhur ^10, Miskeen ^11, Maraqi al-Falah ^12, and Hindiyyah ^13, it is called 'Sahih' (correct). In Dakhirah al-Uqbi ^14, it is called 'Asahh' (most correct). In Ghiyathiyyah ^15, Ghunyah ^16, and Khazanat al-Muftin ^17, it is called 'Mukhtar' (chosen). In Mi'raj ^18 al-Dirayah, Fatawa Zahiriyyah ^19, Fatawa Khulasah ^20, Jawharah al-Nayyirah ^21, Shalabiyyah ^22, etc., it is stated that 'the fatwa is upon this'. In this regard, the scholars' statements come in three ways: First: General 'Ightiraf' (scooping) or 'Ghuraf', meaning taking water with the hand, whether with one or both; it includes both. General statements are of this nature, as in most of the mentioned books except Khaniyyah and Khazanah, as well as Bahr and Shami, etc. Second: The word 'Kaff' (palm) or 'Yad' (hand) in singular form has been narrated thus from our master Imam al-A’zam (may Allah be pleased with him). Fatawa...

[Bottom Note - Urdu/Arabic]: (Remainder of the footnote from the previous page) ...they were very excellent and accepted. In summary, this book is

comprehensive in Hanafi jurisprudence and achieved complete fame in its time. (T) [Arabic]: ...accepted. In summary, it is in the jurisprudence of the Hanafis, a Great Comprehensive work, having complete fame in his era and widespread renown. Finished. 12 from him. May he be forgiven. (M)

[Footnotes]: 1. Fath al-Mu'in, citing Radd al-Muhtar, Rasm al-Mufti, Mustafa al-Babi Egypt, 1/52. 2. Tahtawi.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

[ऊपरी बॉक्स बायाँ - अरबी पाठ]: अल-तूरी ^1, अंत। और 'श' ने इसे 'रद्दुल मुहतार' में कई जगहों पर पुख्ता किया है, और 'त' में उनसे वर्णित है: मैंने अपने शेख से बहुत सुना है (उनका मतलब उनके पिता सैयद अली हैं, अल्लाह उन दोनों पर रहम करे) कि फ़तावा-ए-तूरी, शेख ज़ैन के फ़तवों की तरह हैं, उन पर तब तक भरोसा नहीं किया जा सकता जब तक कि किसी अन्य स्रोत से उनकी पुष्टि न हो जाए ^2। एक मुफ़्ती के लिए यह कैसे उचित हो सकता है कि वह अपने स्वयं के फ़तवों पर अमल करने से रोके?

[ऊपरी बॉक्स दायाँ - उर्दू अनुवाद]: ...कि वे हाफ़िज़ों (हुफ़्फ़ाज़) में से हैं, और इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। अबु अल-सऊद अल-अज़हरी ने 'फ़तह अल्लाह अल-मुईन' में कहा है कि न तो इब्न नुजैम के फ़तवों पर भरोसा किया जाए और न ही अल-तूरी के फ़तवों पर। और 'श' ने इस बात को बरकरार रखा है, जो 'रद्दुल मुहतार' के कई स्थानों पर उल्लेखित है। और 'त' (तहतावी) में उन्हीं से वर्णित है कि हमने अपने शेख से बहुत बार सुना (उनसे मुराद उनके पिता सैयद अली हैं); वे फ़रमाते थे कि फ़तावा-ए-तूरी शेख ज़ैन के फ़तवों की तरह हैं, इन दोनों का कोई एतबार नहीं, हाँ अगर किसी और नक़्ल से उनकी ताईद हो जाए तो और बात है। और एक मुजतहिद (फ़तवा देने वाला) को यह बात कब शोभा दे सकती है कि वह अपने ही फ़तवे पर अमल का विरोध करे। (त)

[मुख्य पाठ]: तीसरे कथन की प्राथमिकता आम किताबों में है; विक़ाया ^1, निक़ाया ^2, इस्लाह ^3, ग़ुर्रर ^4, मुल्तका मतून ^5, वजीज़ करदरी ^6 आदि में इसी पर ज़ोर दिया गया है। इमाम अजल क़ाज़ी खान ^7 ने इसी को प्राथमिकता दी और इसे इमाम आज़म से इमाम अबू यूसुफ़ की रिवायत बताया। हिदाया ^8, दुरर ^9, मजमा अल-अन्हुर ^10, मिस्कीन ^11, मराक़ी अल-फ़लाह ^12 और हिन्दिया ^13 में इसे 'सही' (शुद्ध) कहा गया है। ज़खीरा अल-उक़्बी ^14 में 'असह्' (सबसे सही), और गयासिया ^15, गुनिया ^16 और ख़ज़ाना-तुल-मुफ़्तीन ^17 में इसे 'मुख़्तार' (पसंदीदा) कहा गया है। मेराज ^18 अल-दिरया, फ़तावा ज़हीरिया ^19, फ़तावा ख़ुलासा ^20, जौहरा नय्यिरा ^21, शल्बीया ^22 आदि में कहा गया है कि 'इसी पर फ़तवा है'। इस विषय में विद्वानों के कथन तीन प्रकार के हैं: पहला: मुतलक़ 'इग़्तिराफ़' या 'ग़ुरफ़' यानी हाथ से पानी लेना, चाहे एक से हो या दोनों से, इसमें दोनों शामिल हैं। आम इबारतें इसी तरह की हैं जैसे खानिया और ख़ज़ाना के अलावा अधिकांश उल्लिखित पुस्तकें और बहर व शामी आदि। दूसरा: शब्द 'कफ़' (हथेली) या 'यद' (हाथ) एकवचन रूप में हमारे आका इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से इसी प्रकार वर्णित है। फ़तावा...

[निचला नोट - उर्दू/अरबी]: (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष) ...वे बहुत उम्दा और मक़बूल (स्वीकार्य) होते थे। सारांश यह है कि यह पुस्तक हनफ़ी न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में व्यापक है और इसे अपने समय में पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त हुई। (त) [अरबी]: ...स्वीकृत। संक्षेप में, यह हनफ़ियों के फ़िक़्ह में एक महान व्यापक कृति है, जिसे उनके समय में पूर्ण प्रसिद्धि और व्यापक ख्याति प्राप्त हुई। समाप्त। 12 उनसे। अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (म)

[फुटनोट्स]: 1. फ़तह अल-मुईन, हवालह रद्द अल-मुह्तार रस्म अल-मुफ़्ती, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/52। 2. तहतावी।

पेज 439 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[اوپر والا خانہ - عربی متن]: الطوری ^1 اہ واقرہ ش فی غیر موضع من رد المحتار، وفی ط عنہ سمعت کثیرا من شیخنا (یرید اباہ السید علیا رحمہما اللہ تعالی) فتاوی الطوری کفتاوی الشیخ زین لا یوثق بہما الا اذا تأیدت بنقل آخر ^2 اہ وکیف یصح لمجتہد في الفتوی ان یمنع العمل بفتاواہ۔

[اوپر والا خانہ - اردو ترجمہ]: کہ وہ حفاظ میں سے ہیں، اور اس میں شک کی گنجائش نہیں، ابوالسعود الازہری نے فتح اللہ المعین میں فرمایا نہ تو ابن نجیم کے فتاوٰی پر اعتماد کیا جائے اور نہ ہی طوری کے فتاوٰی پر اھ اور اس کو "ش" نے برقرار رکھا یہ چیز ردالمحتار کے کئی مقامات پر مذکور ہے، اور "ط" میں انہی سے منقول ہے کہ ہم نے اپنے شیخ سے بکثرت سنا ہے (اس سے مراد ان کے باپ سید علی ہیں) وہ فرماتے تھے فتاوٰی طوری شیخ زین کے فتاوٰی کی طرح ہیں، ان دونوں کا کوئی اعتبار نہیں، ہاں اگر کسی اور نقل سے ان کی تائید ہو جائے تو اور بات ہے، اور ایک مجتہد فی الفتوٰی کو یہ بات کب زیب دے سکتی ہے کہ وہ اپنے فتوٰی پر عمل کی مخالفت کردے۔ (ت)

[درمیانی عبارت]: قول سوم کی ترجیح عامہ کتب میں ہے وقایہ ^1 ونقایہ ^2 واصلاح ^3 وغرر ^4 وملتقی متون ^5 ووجیز کردری ^6 وغیرہا میں اسی پر جزم فرمایا امام اجل قاضی خان ^7 نے اسی کو مقدم رکھا اور امام اعظم سے امام ابو یوسف کی روایت بتایا ہدایہ ^8 و درر ^9 ومجمع الانہر ^10 ومسکین ^11 ومراقی الفلاح ^12 وہندیہ ^13 میں اسی کو صحیح اور ذخیرہ العقبی ^14 میں اصح اور غیاثیہ ^15 وغنیہ ^16 وخزانہ المفتین ^17 میں مختار کہا معراج ^18 الدرایہ وفتاوی ظہیریہ ^19 وفتاوی خلاصہ ^20 وجوہرہ نیرہ ^21 وشلبیہ ^22 وغیرہا میں علیہ الفتوٰی فرمایا اس قول میں عبارت علماء تین طور پر آئیں: اول مطلق اغتراف یا غرف کہ

ہاتھ سے پانی لینا ہے ایک سے ہو خواہ دونوں سے دونوں کو شامل ہے عام عبارات اسی طرح ہیں جیسے خانیہ وخزانہ کے سوا اکثر کتب مذکورہ اور بحر وشامی وغیرہا۔ دوم لفظ کف یا ید بصیغہ مفرد سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے یوں ہی مروی ہوا، فتاویٰ

[نیچے والا حاشیہ]: (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) بہت عمدہ اور مقبول ہوتے تھے، خلاصہ یہ کہ یہ کتاب فقہ حنفی میں جامع ہے اور اسے اپنے زمانہ میں شہرت تامہ حاصل ہے۔(ت) مقبولة و بالجملة فهو فی فقه الحنفية الجامع الكبير له الشهرة التامة فی عصره والصيت الذائعانتهی ۱۲ منه غفرله(م)

[حواشی]: 1 فتح المعین بحوالہ ردالمحتار رسم المفتی مصطفی البابی مصر ۱ / ۵۲ 2 طحطاوی

Fatawa Razawiyya, Volume 2

In Imam Qazi Khan it is stated: If it is in a state that if water is lifted with the palm, the ground beneath it does not become exposed, then it is deep. Abu Yusuf narrated this from Abu Hanifa (may Allah be pleased with both of them)[1]. | If the water is in such a state that if you lift water with your palm, the ground below it is not revealed, then it has depth. Abu Yusuf narrated this from Abu Hanifa. (T)

In Khizanat-ul-Muftiyeen it is stated: And its depth is such that if water is lifted with the palm, the ground beneath it does not become exposed, and this is the preferred [opinion][2]. | The depth of the water is such that if you lift water with your palm, the ground below does not open; this is the chosen view. (T)

In Chalpi on Sadr-ush-Shari'ah it is stated: 'Gharf' is taking water with the hand for ablution, and it is the most correct [opinion][3]. | 'Gharf' means taking water with the hand for ablution, and this is the most correct. (T)

Thirdly, the dual form 'kaffain' (two palms) was narrated from Imam Abu Yusuf, and Imam Faqih Abu Ja'far Handawani adopted it. It is mentioned in Zaila'i on Al-Kanz:

Narrated from Abu Yusuf: When scooping with both palms does not expose the surface of the earth, then it is flowing water[4]. [End of quote]. We have already quoted this from Malik-ul-Ulama. When this is the case for truly flowing water, then in what is attached to it... | And it is narrated from Abu Yusuf that when lifting water by filling two palms does not reveal the surface of the ground, then this water is 'flowing'. We have already cited this from Malik-ul-Ulama. When this is the case for truly flowing water, then...

Annotation: I say: This is contrary to what was done in Al-Bahr, for correcting the absolute application in flowing water does not necessitate correcting it in what is attached to it, and making depth a condition in it necessitates making it a condition in what is attached to it all the more. May he be forgiven. (M) | I say: This is against what was done in Al-Bahr because from the correction of absolute application in flowing water, it does not follow that the same correction will apply to what is attached to flowing water, and the condition of depth in it implies that this same condition must also be in the attached water. (T)

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Still Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/4
2. Khizanat-ul-Muftiyeen
3. Dhakhirat-ul-Uqba, Book of Purification, Islamia Press, Lahore, 68/1

4. Tabyin al-Haqa’iq, Book of Purification, Al-Azhariya Press, Egypt, 33/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द-ए-सानी

इमाम क़ाज़ी ख़ान में है: यदि यह इस स्थिति में है कि यदि हथेली से पानी उठाया जाए तो उसके नीचे की ज़मीन प्रकट न हो, तो वह गहरा है। अबू यूसुफ़ ने इसे अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से रिवायत किया[1]। | यदि पानी इस हाल में है कि यदि हथेली से पानी उठाया जाए तो ज़मीन नीचे से न खुले तो वह गहराई वाला है। अबू यूसुफ़ ने इसे अबू हनीफ़ा से रिवायत किया। (त)

ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में है: और उसकी गहराई ऐसी है कि यदि हथेली से पानी उठाया जाए तो उसके नीचे की ज़मीन प्रकट न हो, और यही मुख़्तार (पसंदीदा) है[2]। | पानी की गहराई यह है कि अगर हथेली से पानी उठाया जाए तो ज़मीन नीचे से न खुले, यही मुख़्तार है। (त)

चलपी अला सदरुश शरीअह में है: ग़र्फ़ वज़ू के लिए हाथ से पानी लेना है और यही सबसे सही है[3]। | ग़र्फ़ हाथ के ज़रिए वज़ू के लिए पानी लेने को कहते हैं और यही असह है। (त)

तीसरा, 'कफ़्फ़ैन' (दो हथेलियाँ) शब्द द्वि-वचन रूप में इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत किया गया है और इमाम फ़क़ीह अबू जाफ़र हिन्दुवानी ने इसी को अपनाया है। ज़ैली अला अल-कन्ज़ में है:

अबू यूसुफ़ से रिवायत है: जब दोनों हथेलियों से पानी भरने पर ज़मीन की सतह न खुले तो वह बहता पानी है[4]। [उद्धरण समाप्त]। हमने इसे मलिकुल उलमा से पहले ही उद्धृत कर दिया है। जब यह बात वास्तव में बहते पानी के लिए है, तो जो उससे जुड़ा हुआ है उसमें... | और अबू यूसुफ़ से रिवायत है कि जब दो चुल्लू भर कर पानी उठाने से ज़मीन की सतह न खुले तो यह पानी जारी (बहता हुआ) है। हमने इसे मलिकुल उलमा के हवाले से पहले ही नक़्ल कर दिया है। जब यह बात हक़ीक़ी जारी पानी में है, तो...

टिप्पणी: मैं कहता हूँ: यह अल-बहर में किए गए कार्य के विपरीत है, क्योंकि बहते पानी में निरपेक्ष प्रयोग की शुद्धता से यह आवश्यक नहीं है कि जो बहते पानी से जुड़ा हो, उसमें भी वही शुद्धता हो, और इसमें गहराई की शर्त होने का अर्थ है कि यही शर्त जुड़े हुए पानी में भी प्राथमिकता के साथ होनी चाहिए। अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे। (म) | मैं कहता हूँ यह उसके ख़िलाफ़ है जो बहर में किया गया है क्योंकि बहते पानी में निरपेक्ष प्रयोग की शुद्धता से यह लाज़िम नहीं आता कि जो बहते

पानी से मुल्हक़ (जुड़ा) हो उसमें भी यही शुद्धता होगी और गहराई की शर्त इसमें इस बात को मुस्तलज़िम (अनिवार्य) करती है कि यही शर्त मुल्हक़ में भी हो। (त)

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, ठहरे हुए पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/4
2. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन
3. ज़ख़ीरतुल उक़्बा, पवित्रता की पुस्तक, इस्लामिया प्रेस, लाहौर, 68/1
4. तबयीन अल-हक़ा'इक़, पवित्रता की पुस्तक, अल-अज़हरिया प्रेस, मिस्र, 33/1

पृष्ठ 440/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

امام قاضی خان میں ہے: ان کان بحال لو رفع الماء بکفه لاینحسر ماتحته من الارض فهو عمیق رواه ابویوسف عن ابی حنیفة رضی الله تعالی عنهما[1]۔ | اگر پانی اس حال پر ہے کہ اگر ہتھیلی سے پانی اٹھائے تو زمین نیچے سے نہ کھلے تو وہ گہرائی والا ہے اس کو ابو یوسف نے ابو حنیفہ سے روایت کیا۔ (ت)

خزانتہ المفتین میں ہے: وعمقه بحال لو رفع الماء بکفه لاینحسر ماتحته من الارض وهو المختار[2]۔ | پانی کی گہرائی یہ ہے کہ اگر ہتھیلی سے پانی اٹھائے زمین نیچے سے نہ کھلے یہی مختار ہے۔ (ت)

چلپی علی صدرالشریعۃ میں ہے: والغرف اخذ الماء بالید للتوضی وهو الاصح[3]۔ | غرف ہاتھ کے ذریعے وضو کیلئے پانی لینے کو کہتے ہیں اور یہی اصح ہے۔ (ت)

سوم کفین بصیغہ تثنیہ یہ امام ابو یوسف سے مروی آیا اور اسی کو امام فقیہ ابو جعفر ہندوانی نے اختیار فرمایا زیلعی علی الکنز میں ہے:

عن ابی یوسف اذا کان لاینحسر وجه الارض بالاغتراف بکفیه فهو جار[4] اھ وقدمناه عن ملك العلماء واذا کان هذا في الجاری حقیقة ففي الملحق به عه | اور ابو یوسف سے مروی ہے کہ جب دو چُلّو بھر کر پانی اٹھانے سے زمین کی سطح نہ کھلے تو یہ پانی جاری ہے اھ ہم اس کو ملک العلماء سے پہلے ہی نقل کر آئے ہیں، جب یہ بات حقیقی جاری پانی میں ہے تو

عه اقول: وهذا بخلاف ما فعل في البحر فان تصحیح الاطلاق فی الجاری لایستلزم تصحیحه فی الملحق به واشتراط العمق فیه یستلزم اشتراطه فی الملحق بالاولی منه غفر له۔ (م) | میں کہتا ہوں یہ اس کے

خلاف ہے جو بحر میں کیا ہے کیونکہ جاری میں اطلاق کی تصحیح سے یہ لازم نہیں آتا کہ جو جاری سے ملحق ہو اس میں بھی یہی تصحیح ہوگی اور گہرائی کی شرط اس میں اس امر کو مستلزم ہے کہ یہی شرط ملحق میں بھی ہو۔ (ت)

1 فتاوٰی قاضی خان فصل فی الماء الراکد نولکشور لکھنو ۱/۴ 2 خزانتہ المفتین 3 ذخیرۃ العقبی کتاب الطہارت مطبعہ اسلامیہ لاہور ۶۸/۱ 4 تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبعہ الازہریۃ مصر ۳۳/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Whatever is attached to flowing water will be ruled as such by priority. (T) It is stated in Bada'i': "It is narrated from Jurist Abu Ja'far al-Hindwani that if the water is such that if a person lifts it with both palms, the bottom is exposed and then it joins back, one should not perform ablution with it. But if the bottom is not exposed, there is no harm in performing ablution with it."(1) It is narrated from Jurist Abu Ja'far al-Hindwani that if the water is such that if someone lifts it with both hands, the ground beneath it is revealed and then it merges back, ablution will not be valid with such water. And if the ground is not revealed from beneath it, then ablution is permissible from it. (T) It is stated in Jami' al-Rumuz: "By scooping, meaning by lifting water with both palms."(2) By scooping, meaning lifting water with both palms. It is stated in Abdul Haleem al-Durur: "Meaning by taking water in both palms."(3) Meaning taking water in both palms. It is stated in Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah: "His statement 'by scooping from it' means with both palms as mentioned in al-Quhistani, and in al-Jawhara it says that the fatwa is based on this."(4) 'By scooping from it' means with both palms as in al-Quhistani, and in al-Jawhara it is stated that the fatwa is on this. (T) I say: (1) One might mistakenly think from this that the fatwa is regarding the 'two palms' measure, whereas it is not so. For the phrasing in al-Jawhara regarding depth is: "As for the measure of depth, the most correct view is that it should be in a state where the ground is not exposed by scooping, and the fatwa is upon this."(5) Therefore, it would have been appropriate to present the phrasing of al-Jawhara first.

1. Bada'i' al-Sana'i', Chapter explaining the measure etc., Saeed Company Karachi, 1/137.
2. Jami' al-Rumuz, Discussion on Ten-by-Ten, al-Karimiyya Quran Iran, 1/48.
3. Hashiya 'ala al-Durur by Abdul Haleem, Uthmaniyya Press Egypt, 1/71.
4. Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Noor Muhammad Kutub Khana Karachi, p. 16.
5. Al-Jawhara al-Nayyira, Maktaba Imdadiyya Multan, 1/61.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

जो बहते हुए पानी से जुड़ा हो, उसमें प्राथमिकता के तौर पर यही नियम होगा। (त) बदाइअ में है: "फ़क़ीह अबू जाफ़र अल-हिंदवानी से रिवायत है कि अगर पानी ऐसा हो कि अगर कोई व्यक्ति उसे अपनी दोनों हथेलियों से उठाए तो उसका तल खुल जाए और फिर मिल जाए, तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा। और अगर उसका तल न खुले, तो उससे वज़ू करने में कोई हर्ज़ नहीं है।" (1) फ़क़ीह अबू जाफ़र हिंदवानी से मंकूल है कि वह पानी ऐसा हो कि अगर कोई अपने दोनों हाथों से उठाए तो उसके नीचे ज़मीन खुल जाए और फिर मिल जाए, ऐसे पानी से वज़ू नहीं होगा और अगर उसके नीचे से ज़मीन न खुलती हो तो उससे वज़ू जायज़ है। (त) जामिअ अल-रुमूज़ में है: "ग़ुर्फ़ा से मुराद दोनों हथेलियों से पानी उठाना है।" (2) 'बाल-ग़ुर्फ़ा' यानी दो हथेलियों से पानी उठाना। अब्दुल हलीम अद-दुरुर में है: "यानी दोनों हथेलियों में पानी लेना।" (3) यानी दो हथेलियों में पानी लेना। तहावी अला मराक़ी अल-फ़लाह में है: "उनका कथन 'उससे अंजुलि भर लेने' का अर्थ दोनों हथेलियों से है जैसा कि क़ुहिस्तानी में है, और जौहरा में है कि इसी पर फ़तवा है।" (4) 'बाल-ग़ुर्फ़ मिन्हु' यानी दो हथेलियों से जैसा कि क़ुहिस्तानी में है और जौहरा में है कि इसी पर फ़तवा है। (त) अक़ूल: (1) मुमकिन है इससे यह वहम पैदा हो कि फ़तवा 'कफ़ैन' (दो हथेलियों) पर है, हालाँकि ऐसा नहीं है क्योंकि जौहरा की इबारत यह है: "और गहराई की मात्रा में सही यह है कि चुल्लू भरने से ज़मीन न खुलती हो, इसी पर फ़तवा है।" (5) तो उन्हें जौहरा की इबारत पहले लानी चाहिए थी।

1. बदाइअ अल-सनाइअ, फ़स्ल मिक़दार के बयान में आदि, सईद कंपनी कराची, 1/137।
2. जामिअ अल-रुमूज़, अशर फ़ी अशर की बहस, अल-करीमिया क़ुरान ईरान, 1/48।
3. हाशिया अला अद-दुरुर, अब्दुल हलीम, मतबा उस्मानिया मिस्र, 1/71।
4. तहावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, नूर मोहम्मद कुतुब ख़ाना कराची, पृ. 16।
5. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/61।

पृष्ठ 441 का 711

جو جاری پانی سے ملحق ہو گا اس میں بطریق اولی ہوگی۔ (ت) بدائع میں ہے: عن الفقیه ابی جعفر الهندوانی ان کان بحال لو رفع انسان الماء بکفیه انحسر اسفله ثم اتصل لایتوضؤ به وان کان لاینحسر اسفله لابأس بالوضوء منه 1 ۔ فقیہ ابو جعفر ہندوانی سے منقول ہے کہ وہ پانی ایسا ہو کہ اگر کوئی اپنے دونوں ہاتھوں سے اٹھائے تو اس کے نیچے زمین کھل جائے اور پھر مل جائے، ایسے پانی سے وضو نہیں ہو گا اور اگر اس کے نیچے سے زمین نہ کھلتی ہو تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت) جامع الرموز میں ہے: بالغرفة ای برفع الماء بالکفین 2 ۔ بالغرفۃ یعنی دو ہتھیلیوں سے پانی اٹھانا۔ عبدالحلیم الدرر میں ہے: ای باخذ الماء بالکفین 3 ۔ یعنی دو ہتھیلیوں میں پانی لینا۔ طحطاوی علی مراقی الفلاح میں ہے: قوله بالغرف منه ای بالکفین کما فی القهستانی وفی الجوهرة علیه الفتوی 4 ۔ بالغرف منہ یعنی دو ہتھیلیوں سے جیسا کہ قہستانی میں ہے اور جوہرہ میں ہے کہ اسی پر فتوی ہے۔ (ت) اقول:(ا) ربما یتوهم منه ان الفتوی علی الکفین ولیس کذلك فانما عبارة الجوهرة اما مقدار العمق فالاصح ان یکون بحال لاتنحسر الارض بالاغتراف وعلیه الفتوی 5 اھ فکان ینبغی ان یقدم۔ میں کہتا ہوں ممکن ہے اس سے یہ وہم پیدا ہو کہ فتوی کَفین پر ہے، حالانکہ ایسا نہیں ہے کیونکہ جوہرہ کی عبارت یہ ہے "اور گہرائی کی مقدار میں اصح یہ ہے کہ چُلّو بھرنے سے زمین نہ کھلتی ہو، اسی پر فتوی ہے اھ تو ان کو جوہرہ کی عبارت پہلے لانی تھی۔"

1 بدائع الصنائع فصل في بیان مقدار الخ سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۳۷ 2 جامع الرموز بحث عشر فی عشر الکریمیہ قرآن ایران ۱ / ۴۸ 3 حاشیۃ علی الدرر للعبد الحلیم مطبعہ عثمانیہ مصر ۱ / ۷۱ 4 طحطاوی علی مراقی الفلاح نور محمد کتب خانہ کراچی ص ۱۶ 5 الجوہرۃ النیرہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۱ / ۶۱

Her wording: And he says his statement 'with a handful' (bil-gharf) upon it is the fatwa - Jawhara. Meaning with two palms - Quhistani. (T)

And it should have been said like this: His statement 'with a handful' upon it is the fatwa - Jawhara. Meaning with two palms - Quhistani. (T)

Allama Birjandi considered the single palm (kaff-e-wahid) as preferred and both palms (kaffain) as a possibility:

Where he said: 'with the single palm' according to what is understood from the generalities of the books, and it is possible that the intended meaning of 'handful' (bil-gharf) is taking with both palms together, according to what is customary. End.

For this reason he said: 'with the single palm', this is what is understood from the general applications in books, and there is also the possibility that 'bil-gharf' means taking with both handfuls, as is customary. End. (T)

I say: Sometimes its preference is also taken from the context of Ad-Durar, for its correct text is that it should be such that its ground is not exposed by scooping for ablution, and it is said for bathing. End. This is because 'scooping' (gharf) here refers to scooping with hands, not with vessels. The difference between scooping for wudu and bathing by hands does not appear except that the first is with one hand and the latter is with both hands, as is customary in bathing. In this case, the correction of the aforementioned 'Dhakhira al-Uqba' would apply to it, and its strength is increased by the fact that it is narrated from the Imam. All of this is according to obvious reasoning.

I say: Sometimes its preference is also known from the context of Ad-Durar, its wording is: 'The correct view is that it should be such that while taking water in a handful for wudu, its ground is not exposed, and one view is that it is for ghusl.' End. Because here, a handful means the handful of the hand, not the handful of a vessel. The only difference between taking water in a handful for wudu and ghusl with hands is that wudu is with one hand and ghusl is with two hands, as is customary in ghusl. In that case, the correction of 'Dhakhira al-Uqba' will be for it, and it is further strengthened by the fact that it is narrated from the Imam. All this is based on apparent reasoning. (T)

And I say: And with Allah is the success, Allama Birjandi's preference is questionable,

Firstly (1): Since he acknowledged that it is the customary way, then why does the general term not refer to it?	**When it is known that this is the customary way, then why does the general term not refer to it? (T)**

Secondly: Upon investigation (2), it is the opposite; from the generalities of the core texts and common books, the recognition of two hands is what is inferred.

---

1. Quhistani Birjandi, Kitab al-Taharah, Nawal Kishore, Balsaroor 1/331.
2. Al-Durar, Fard al-Ghusl, Dar al-Sa'adah Egypt 22/1.

उसकी इबारत है: और वह कहता है उसका कथन 'हाथ भरकर' (बिल-ग़र्फ़) उसी पर फ़तवा है - जवाहर। यानी दोनों हथेलियों से - कुहिस्तानी। (त)

और इसे इस तरह कहना चाहिए था: उसका कथन 'हाथ भरकर' पर फ़तवा है - जवाहर। यानी दोनों हथेलियों से - कुहिस्तानी। (त)

अल्लामा बिरजंदी ने एक हाथ (कफ़-ए-वाहिद) को तरजीह (प्राथमिकता) दी और दो हाथों (कफ़ैन) को संभावित रखा:

जैसा कि उन्होंने कहा: 'एक हाथ से' जैसा कि किताबों के सामान्य प्रयोगों से समझ में आता है, और यह भी संभावना है कि 'ग़र्फ़ से तात्पर्य दोनों हाथों से एक साथ लेना हो, जैसा कि प्रचलित है। समाप्त।

इसलिए उन्होंने कहा: 'एक हाथ से', किताबों के सामान्य प्रयोगों से यही अर्थ निकलता है, और यह भी संभावना है कि 'ग़र्फ़ से तात्पर्य दोनों हथेलियों से लेना हो, जैसा कि प्रचलित है। समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ: कभी-कभी इसकी प्राथमिकता 'अद-दुरर' के संदर्भ से भी ली जाती है, क्योंकि उसका सही पाठ यह है कि वह ऐसा होना चाहिए कि वज़ू के लिए चुल्लू से पानी लेते समय उसकी ज़मीन न खुले, और कहा गया है ग़ुस्ल के लिए। समाप्त। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ 'ग़र्फ़ (चुल्लू) से तात्पर्य हाथों से पानी लेना है न कि बर्तनों से। वज़ू और ग़ुस्ल के लिए हाथों से चुल्लू भरने में कोई अंतर नहीं दिखता सिवाय इसके कि पहला एक हाथ से है और दूसरा दो हाथों से, जैसा कि ग़ुस्ल में आम तौर पर किया जाता है। उस स्थिति में, उपर्युक्त 'ज़खीरा-उल-उकबा' का सुधार उस पर लागू होगा, और इसकी शक्ति इस तथ्य से बढ़ जाती है कि यह इमाम से रिवायत है। यह सब ज़ाहिर नज़र में है।

मैं कहता हूँ कभी इसकी तरजीह (प्राथमिकता) दुरर के संदर्भ से भी ज्ञात होती है, इसकी इबारत यह है कि सही यह है कि वज़ू के लिए चुल्लू से पानी लेते समय उसकी ज़मीन न खुलती हो, और एक क़ौल यह है कि ग़ुस्ल के लिए पानी लेते हुए न खुलती हो। समाप्त। क्योंकि यहाँ चुल्लू से मुराद हाथ का चुल्लू भरना है न कि बर्तन का चुल्लू, और वज़ू के लिए चुल्लू से पानी लेने और हाथ से ग़ुस्ल करने में सिर्फ़ यही फ़र्क़ है कि वज़ू एक हाथ से और ग़ुस्ल दो हाथ से होता है, जैसा कि आम तौर पर ग़ुस्ल में किया जाता है। और उस समय इसके लिए 'ज़खीरा-उल-उकबा' की तसहीह (सुधार) होगी, और इसको मज़बूत इस बात से मिलती है कि यह इमाम से रिवायत है। यह जो कुछ है ज़ाहिर नज़र में है। (त)

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से, अल्लामा बिरजंदी की तरजीह (प्राथमिकता) पर नज़र (विचार) है,

अव्वलन (1): जब उन्होंने स्वीकार कर लिया कि यही प्रचलित तरीका है, तो फिर आम शब्द (मुतलक़) उसी की ओर क्यों नहीं फिरता?

जब यह मालूम हो गया कि यही मुतआरफ़ (प्रचलित) है, तो मुतलक़ उसी की तरफ़ क्यों नहीं फिरता? (त)

थ़ानियन (दूसरा): शोध के अनुसार (2) यह इसके विपरीत है; मतून (मूल पाठों) और आम किताबों के प्रयोगों से दो हथेलियों का ही उल्लेख प्राप्त होता है।

---

1. कुहिस्तानी बिरजंदी, किताब-अत-तहारत, नवल किशोर, बलसरूर 1/331।
2. अद-दुरर, फ़र्ज़-उल-ग़ुस्ल, दार-उस-सआदत मिस्र 22/1।

पृष्ठ 442/711

عبارتها ویقول قوله بالغرف علیه الفتوی اور یوں کہنا چاہئے تھا قولہ بالغرف علیہ الفتوی

جوهرة ای بالکفین قهستاني۔ جوهرة یعنی بالکفین قهستاني۔ (ت)

علامہ برجندی نے کف واحد کو مرجح اور کفین کو محتمل رکھا :

حیث قال بالکف الواحد علی ما هو المفهوم اس لئے فرمایا کہ بالکف الواحد، یہی کتابوں کے

من اطلاقات الکتب ویحتمل ان یکون المراد اطلاقات سے مفہوم ہے اور یہ بھی احتمال ہے کہ

بالغرف الاخذ بالکفین معاً علی ما هو بالغرف سے مراد دونوں چُلّوؤں سے لینا ہو، جیسا کہ

المتعارف اھ۔ متعارف ہے اھ (ت)

اقول: وقد یؤخذ ترجیح لہ من فحوی الدرر فان نصھا الصحیح ان یکون بحیث لاتنکشف ارضہ بالغرف للتوضی وقیل للاغتسال اھـ وذلك لان المراد ھھنا الغرف بالایدی دون الاواني ولا یظھر الفرق بین الغرف للوضوء والاغتسال بالایدی الا ان الاول بکف والآخر بالکفین کما ھو المعتاد فی الغسل وح یعود الیہ تصحیح ذخیرۃ العقبی المذکور ویزیدہ قوۃ انہ المروی عن الامام ھذا کلہ ظاھر النظر۔

میں کہتا ہوں کبھی اس کی ترجیح درر کے فحوی سے بھی معلوم ہوتی ہے اس کی عبارت یہ ہے کہ صحیح یہ ہے کہ وضو کیلئے چلو سے پانی لیتے وقت اس کی زمین نہ کھلتی ہو، اور ایک قول یہ ہے کہ غسل کیلئے پانی لیتے ہوئے نہ کھلتی ہو اھـ کیونکہ یہاں چلو سے مراد ہاتھ کا چلو بھرنا ہے نہ کہ برتن کا چلو، اور وضو کیلئے چلو سے پانی لینے اور ہاتھ سے غسل کرنے میں صرف یہی فرق ہے کہ وضو ایک ہاتھ سے اور غسل دو ہاتھ سے ہوتا ہے، جیسا کہ عادۃً غسل میں کیا جاتا ہے اور اس وقت اس کیلئے ذخیرۃ العقبیٰ کی تصحیح ہوگی، اور اس کو مزید تقویت اس سے ہوتی ہے کہ یہ امام سے مروی ہے یہ جو کچھ ہے ظاہر نظر میں ہے۔ (ت)

واقول: وباللہ التوفیق ترجیح علامہ برجندی میں نظر ہے،

اولا (۱) اذ اعترف انہ المتعارف فلم لا ینصرف المطلق الیہ۔

جب یہ معلوم ہو گیا کہ یہی متعارف ہے تو مطلق اسی کی طرف کیوں نہیں پھرتا۔ (ت)

ثانیا: وہ عند التحقیق (۲) منعکس ہے اطلاقات متون وعامہ کتب سے اعتراف کفین ہی مستفاد،

---

1. قھستانی برجندی کتاب الطھارۃ نولکشور بالسرور ۱/۳۳۱

2. الدرر فرض الغسل دار السعادۃ مصر ۱/۲۲

Fatawa Razawiya, Volume 2

This is because, as you stated, 'Gharaf' (taking a handful) is absolute and inclusive by its nature, whether it's by one palm or two. However, the discourse here is not positive but negative. And while an absolute term is established by the presence of a single instance, its negation (intifa) only occurs with the negation of all instances, as per at-Tahrir. Furthermore, in Fawatikh al-Rahamut, under the discussion of the negated indefinite noun (nakrah manfiyah), the negation of an absolute term necessitates the negation of every individual instance. (t)

Rather, I say: the article 'al' in 'al-Gharaf' and 'al-Ightiraf' is not for specification (li'l-ahd) out of necessity. If it is for exhaustiveness (li'l-istighraq), then it applies to every individual instance, not the collection as a whole. Otherwise, it is for the genus (li'l-jins), which is the understood sense. The negation of a genus in custom and language only occurs by negating all individual instances. Consult Fawatikh and understand.

There is no doubt that if someone takes a handful with both palms and the ground is revealed, it is said that the ground is revealed by 'Gharaf' (taking a handful), even if it would not be revealed by a single palm. Once revealing is affirmed, its absence cannot be affirmed unless it is not revealed by any type of handful. The reasoning in 'al-Durar' is that it is customary in ablution (wudu) to also take handfuls with both palms for washing the face absolutely, and for washing the feet when they are not immersed. Therefore, al-Birjandi made the general practice absolute.

1. Fawatikh al-Rahamut, Discussion on the Negated Indefinite Noun, Amir Press Qom, 1/261.
2. Fawatikh al-Rahamut, Discussion on the Negated Indefinite Noun, Amir Press Qom, 1/260.

फतावा रज़विया, जिल्द 2

इसका कारण यह है कि जैसा कि आपने कहा, 'ग़रफ़' (अंजलि/मुट्ठी) अपनी प्रकृति में निरपेक्ष और समावेशी है, चाहे वह एक हथेली से हो या दो से। हालांकि, यहाँ चर्चा सकारात्मक नहीं बल्कि नकारात्मक है। और यद्यपि एक निरपेक्ष शब्द किसी एक उदाहरण की उपस्थिति से स्थापित हो जाता है, लेकिन उसका निषेध (इंतिफ़ा) केवल तभी होता है जब सभी उदाहरणों का निषेध हो, जैसा कि 'अत-तहरीर' में है। इसके अलावा, 'फ़वातिह अल-रहमूत' में, नकरा मन्फ़िया (नकारा गया अनिश्चित संज्ञा) की चर्चा के तहत, एक निरपेक्ष शब्द का निषेध प्रत्येक व्यक्तिगत उदाहरण के निषेध को आवश्यक बनाता है। (त)

बल्कि, मैं कहता हूँ: 'अल-ग़रफ़' और 'अल-इफ़्तिराफ़' में 'अल' शब्द आवश्यकतावश विशिष्टता (अहद) के लिए नहीं है। यदि यह संपूर्णता (इस्तिग़राक़) के लिए है, तो यह प्रत्येक व्यक्तिगत उदाहरण पर लागू होता है, न कि पूरे संग्रह पर। अन्यथा, यह जाति (जिन्स) के लिए है, जो कि समझ में आने वाला भाव है। और प्रथा और भाषा में किसी जाति का निषेध केवल सभी व्यक्तिगत उदाहरणों को नकारने से ही होता है। फ़वातिह देखें और समझें।

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि कोई दोनों हथेलियों से पानी लेता है और ज़मीन दिखाई देने लगती है, तो यह कहा जाएगा कि ज़मीन 'ग़रफ़' (अंजलि भरने) से दिखाई दी है, भले ही वह एक हथेली से न दिखाई देती हो। एक बार जब दिखाई देना सिद्ध हो गया, तो उसकी अनुपस्थिति तब तक सिद्ध नहीं की जा सकती जब तक कि वह किसी भी प्रकार की अंजलि से न खुले। 'अल-दुरर' में यह तर्क दिया गया है कि वज़ू में चेहरे को पूरी तरह से धोने और पैरों को धोने के लिए, जब उन्हें डुबोया न जाए, दोनों हाथों से अंजलि लेना भी आम बात है। इसलिए, अल-बिरजंदी ने सामान्य व्यवहार को निरपेक्ष बना दिया।

1. फ़वातिह अल-रहमूत, नकरा मन्फ़िया की चर्चा, अमीर प्रेस क़ुम, 1/261।
2. फ़वातिह अल-रहमूत, नकरा मन्फ़िया की चर्चा, अमीर प्रेस क़ुम, 1/260।

पृष्ठ 443 का 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

اس کی وجہ یہ ہے کہ جیسا آپ نے کہا غرف مطلق ہے خواہ ایک ہاتھ سے ہو یا دو ہاتھ سے، البتہ یہ کلام موجب میں نہیں ہے کلام سالب (۱) میں ہے، اور مطلق اگرچہ ایک فرد کے پائے جانے سے پایا جاتا ہے مگر اس کا انتفاء اسی وقت ہوگا جب تمام افراد کا انتفاء ہوگا تحریر میں پھر فواتح الرحموت میں نکرہ منفیہ کی بحث سے ہے کہ مطلق کی نفی ہر فرد کی نفی کو ثابت کرتی ہے۔ (ت)

بلکہ میں کہتا ہوں لام "الغرف" اور "الاغتراف" میں عہد کیلئے نہیں، اور اگر یہ استغراق کیلئے ہو تو درست ہے کہ وہ ہر فرد کیلئے ہے مجموعہ افراد کیلئے نہیں، ورنہ یہ جنس کیلئے ہوگا، اور یہی وجہ سمجھ میں آتی ہے، اور جنس کی نفی عرف ولغت میں تمام افراد کی نفی سے ہی ہوتی ہے، فواتح فافھم،

اور اس میں شک نہیں کہ جس نے دونوں ہتھیلیوں سے پانی لیا اور زمین کھلی تو یہی کہا جائیگا کہ چلو بھرنے سے زمین کھلی ہے، اگرچہ ایک ہتھیلی سے نہ کھلے اور جب اس کی وجہ سے کھلنا صادق آگیا تو نہ کھلنا صادق نہیں آئے گا، صرف اسی صورت میں ہو سکتا ہے جب کہ کسی چلو سے زمین نہ کھلے اور درر میں یہ توجیہ ہے کہ وضو میں بھی عام طور پر دونوں ہاتھ سے چلو بھرا جاتا ہے چہرے کے دھونے میں مطلقاً اور دونوں پیروں کے دھونے میں جبکہ ڈبو کر نہ دھویا جائے، برجندی نے تعارف کو مطلق

1 فواتح الرحموت بحث النکرۃ المنفیۃ مطبعہ امیر قم ۱/۲۶۱ 2 فواتح الرحموت بحث النکرۃ المنفیۃ مطبعہ امیر قم ۱/۲۶۰

Fatawa Ridawiyya Volume II

(Left Column - Arabic text translation) I have not seen (1) anyone here who differentiates between wudu (ablution) and ghusl (bath). The known matter in identifying the clearing (khuloos) from one side to the other is through movement. Its commentators, such as Shurunbulali, Abdul Haleem, al-Hasan al-'Ujaymi, and al-Khadimi (may Allah Almighty have mercy on them), did not discuss this. The second one refuted it by saying that their statement (i.e., regarding wudu and ghusl) requires taking it with both hands. He said: "It has become clear that there is no basis for weakening the second view." 1 [Ends]. I say: In my view, the reason is that by 'gharf' (scooping) for wudu, it means scooping with hands, and for ghusl, it means using bowls and jugs. Allah Almighty knows best. As for what is narrated from the Imam, it is not an explicit text on singularity because when (2) two things are inseparable, due to creation or otherwise, mentioning one of them suffices for the mention of both. For example, the eye: you say "I applied kohl to my eye" while you mean both eyes. Similar to the eyes are the nostrils, the feet, the leather socks (khuffs), and the shoes. You say "I wore my sock" meaning both your socks. This is mentioned in Sharh al-Hamasa. 2 [Ends]. I have expanded upon this discussion in my treatise 'Safa'ih al-Lujjayn' in...

(Right Column - Urdu translation into English) ...kept. Moreover, I have not seen that anyone here has differentiated between wudu and ghusl. In this regard, the known thing is that the knowledge of clearing from one side to the other will be through movement. On this, its commentators, Shurunbulali, Abdul Haleem, Hasan al-'Ujaymi, and al-Khadimi (may Allah Almighty have mercy on them) did not speak. And the other refuted it in such a way that each of these two (i.e., from ghusl and wudu) is in need of water (like with both hands). He said: "From this it is known that there is no reason to weaken the second." 2 AH (T). I say: In my opinion, the reason is that for wudu, taking a handful means taking a handful with hands, and for ghusl, it means taking water by means of bowls and jugs. Allah Almighty knows best. And that which is narrated from the Imam is not an explicit text regarding singularity. In Ghamz al-'Uyun, it was said that by saying this, 'two hands' (yadayn) was intended, because when two things are naturally joined or for some other reason, the mention of one of them will suffice for the mention of the other as well. Like 'eye' (ayn): it is said "I applied kohl to my eye" and from this it is meant that I applied kohl to both my eyes. And like the eye are the nostrils, feet, leather socks, and shoes. It is said "I wore my leather sock" and...

(Footnotes) 1. Hashiya 'ala al-Durar by Abdul Haleem, Discussion on 'Ashr fi 'Ashr, Othmaniyya, Egypt 1/17. 2. Ghamz al-'Uyun with al-Ashbah, First Part, Universal Rules, Idara al-Qur'an Karachi 19/1.

फ़तावा रिज़विया जिल्द द्वितीय

(बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद) मैंने यहाँ किसी को (1) वज़ू और ग़ुस्ल के बीच अंतर करते नहीं देखा। एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ की सफाई (खुलूस) की पहचान में प्रसिद्ध बात यह है कि यह हरकत के ज़रिए होगी। इसके हाशिए (टिप्पणी) लेखकों जैसे शुरुनबुलाली, अब्दुल हलीम, हसन अल-उजैमी और अल-खादिमी (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) ने इस पर कोई बात नहीं की। दूसरे ने इसका इस तरह खंडन किया कि उन दोनों की बात (यानी वज़ू और ग़ुस्ल) को इसे दोनों हाथों से लेने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा: "यह ज़ाहिर हो गया कि दूसरे विचार को कमज़ोर मानने की कोई वजह नहीं है।" 1 [समाप्त]। मैं कहता हूँ: मेरे नज़दीक वजह यह है कि वज़ू के लिए 'ग़र्फ़ (चुल्लू भरना) से मुराद हाथों से चुल्लू भरना हो और ग़ुस्ल के लिए प्यालों और लोटों के ज़रिए पानी लेना मुराद हो, वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)। जहाँ तक इमाम से जो रिवायत है, वह एकता (वैकल्पिक रूप से एक ही हाथ या एक चीज़ के उपयोग) में स्पष्ट प्रमाण नहीं है क्योंकि जब (2) दो चीज़ें पैदाइशी तौर पर या किसी और वजह से एक-दूसरे से जुदा न होती हों, तो उनमें से एक का ज़िक्र दोनों के ज़िक्र के लिए काफ़ी होता है। जैसे आँख: आप कहते हैं "मैंने अपनी आँख में सुरमा लगाया" जबकि आपका मतलब दोनों आँखें होता है। आँखों की तरह ही नथुने, पैर, मोज़े (ख़ुफ़) और जूते हैं। आप कहते हैं "मैंने अपना मोज़ा पहना" जिसका मतलब आपके दोनों मोज़े होते हैं। ऐसा शरह अल-हमासा में है। 2 [समाप्त]। मैंने अपनी रिसाला (ग्रंथ) 'सफ़ाएह अल-लुज्जैन' में इस पर विस्तार से बात की है...

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद का हिंदी अनुवाद) ...रखा है। इसके अलावा मैंने नहीं देखा कि यहाँ किसी ने वज़ू और ग़ुस्ल में फर्क किया हो, इस सिलसिले में मशहूर यह है कि खुलूस की मारिफ़त (पहचान) एक जानिब से दूसरी जानिब तक हरकत के ज़रिए होगी। इस पर इसके हाशिए निगारों (टिप्पणीकारों), शुरुनबुलाली, अब्दुल हलीम, हसन अल-उजैमी और खादिमी (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) ने कोई कलाम (बात) नहीं की। और दूसरे ने इसकी तरदीद (खंडन) इस तरह की है कि इन दोनों में से हर एक (यानी ग़ुस्ल और वज़ू में से) पानी के लिए मोहताज होता है (जैसे दोनों हाथों की तरह)। फ़रमाया, इससे मालूम हुआ कि दूसरे विचार की तज़ईफ़ (कमज़ोर मानने) की कोई वजह नहीं है। 2 हि. (त)। मैं कहता हूँ मेरे नज़दीक वजह यह है कि वज़ू के लिए चुल्लू भर लेने से मुराद हाथों से चुल्लू भरना हो और ग़ुस्ल के लिए प्यालों और लोटों के ज़रिए पानी का लेना मुराद हो, वल्लाहु तआला आलम। और जो चीज़ इमाम से मरवी (वर्णित) है वह वहदत (एकात्मकता) में न्स (स्पष्ट पाठ)

नहीं है। ग़मज़ अल-उयून में फ़रमाया यह बोलकर यदैन (दोनों हाथों) का इरादा किया है, क्योंकि जो दो चीज़ें पैदाइशी तौर पर जुड़ी हुई हों या किसी और सबब से तो उनमें से एक का ज़िक्र दूसरी के ज़िक्र को भी काफ़ी होगा, जैसे ऐन (आँख), कहा जाता है 'कहल्तु ऐनी' (मैंने अपनी आँख में सुरमा लगाया) और इससे मुराद यह होती है कि मैंने अपनी दोनों आँखों में सुरमा लगाया। और आँख की तरह नथुने, पैर, मोज़े और जूते हैं, 'लबिस्तु खुफ़्फ़ी' (मैंने अपना मोज़ा पहना) कहा जाता है और...

(पाद-टिप्पणियाँ) 1. हाशिया अला अल-दुरर अब्दुल हलीम द्वारा, बहस 'अश्र फ़ि अश्र', उस्मानिया मिस्र 1/17। 2. ग़मज़ अल-उयून मअल अश्बाह के साथ, पहला फ़न, कुलिया नियम, इदारा अल-कुरान कराची 19/1।

(بایاں کالم - عربی متن) انی لم (۱) ار من فرق ھھنا بالوضوء والغسل انما المعروف ذلك فی معرفة الخلوص من جانب الی آخر بالتحریك ولم یتكلم علیه محشوه الشرنبلالی وعبد الحلیم والحسن العجیمی والخادمی رحمهم الله تعالی ورده الثانی بقوله ان كلامهما (ای من الوضوء والغسل یحتاج الی اخذه بهما (ای بالیدین) قال فظهران لاوجه لتضعیف الثانی ۱ اه اقول: والوجه عندی ان یراد بالغرف للوضوء الغرف بالایدی وللغسل بالقصاع والاباریق والله تعالی اعلم اما المروی عن الامام فلیس نصاً فی الوحدة لانه اذا (۲) كان الشیئان لا یفترقان من خلق او غیره اجزاء من ذكرهما ذكر احدهما كالعین تقول كحلت عینی وانت ترید عینیك ومثل العینین المنخران والرجلان والخفان والنعلان تقول لبست خفی ترید خفیك كذا في شرح الحماسة ۲ اه وقد بسطت الكلام علی هذا فی رسالتی صفائح اللجین في

(دایاں کالم - اردو ترجمہ) رکھا ہے علاوہ ازیں میں نے نہیں دیکھا کہ یہاں کسی نے وضو اور غسل میں فرق کیا ہو ، اس سلسلہ میں معروف یہ ہے کہ خلوص کی معرفت ایک جانب سے دوسری جانب تک حرکت کے ذریعے ہوگی اس پر اس کے حاشیہ نگاروں ، شرنبلالی ، عبدالحلیم ، حسن العجیمی اور خادمی رحمہم اللہ نے کلام نہیں کیا ، اور دوسرے نے اس کی تردید اس طرح کی ہے کہ ان دونوں میں سے ہر ایک (یعنی غسل و وضوء میں سے) محتاج ہوتا ہے پانی کیلئے (دونوں ہاتھوں کی طرح) فرمایا ، اس سے معلوم ہوا کہ دوسرے کی تضعیف کی کوئی وجہ نہیں ہے

۲ھ(ت) میں کہتا ہوں میرے نزدیک وجہ یہ ہے کہ وضو کیلئے چلو بھر لینے سے مراد ہاتھوں سے چلو بھرنا مراد ہو اور غسل کیلئے پیالوں اور لوٹوں کے ذریعہ پانی کا لینا مراد ہو واللہ تعالیٰ اعلم ، اور جو چیز امام سے مروی ہے وہ وحدت میں نص نہیں ہے ، غمز العیون میں فرمایا یہ بول کر یدین کا ارادہ کیا ہے ، کیونکہ جو دو چیزیں پیدائشی طور پر جڑی ہوئی ہوں یا کسی اور سبب سے

تو ان میں سے ایک کا ذکر دوسری کے ذکر کو بھی کافی ہوگا ، جیسے عین ، کہا جاتا ہے کحلتُ عینی اور اس سے مراد یہ ہوتی ہے کہ میں نے اپنی دونوں آنکھوں میں سُرمہ لگایا اور آنکھ کی طرح نتھنے ، پیر ، موزے اور جوتے ہیں لبست خفی کہا جاتا ہے اور

(حواشی) 1 حاشية على الدرر لعبد الحليم بحث عشر فی عشر عثمانیه مصر ۱۷/۱ 2 غمز العيون مع الاشباه الفن الاول قواعد كلية ادارة القرآن كراچی ۱۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume II Handshaking with both palms. This means that I wore both socks, as stated in Sharh al-Hamasa. I have discussed this in full detail in my treatise 'Safa'ih al-Lujjayn fi Kawn al-Tasafuh bi-Kaffay al-Yadayn' (Silver tablets, regarding the issue that handshaking is done with both hands). (T) The correct view is that taking water with both hands is intended. Firstly, this is the implication of the primary texts (Mutoon). Secondly, this is what is derived from general books. Thirdly, several books explicitly state this, and there is no explicit text for using just one palm. Fourthly, 'palm' (singular) can be interpreted as 'palms' (dual), but not vice versa; thus, there is reconciliation, which is better than establishing a contradiction. Fifthly, the objective of the ground not being exposed is to maintain the surface area; otherwise, the water would be split into two. In 'Tabyeen' it is stated: Regarding depth, what is considered is that it should be in a condition such that it does not expose the bottom when scooping water. For if it is exposed, the water becomes separated from each other and ends up in two separate places. This is the choice of al-Hinduwani. (T) Then he mentioned the previously mentioned correction. Depth is considered valid if the pool is such that it does not expose the bottom when taking a handful of water. If it were exposed, one part of the water would separate from the other, and the water would be in two separate locations. Al-Hinduwani has opted for this view. Then he mentioned the previous correction. (T) For example, if a pool is exactly ten by ten cubits, and water is taken from its center such that the ground is exposed, then at that moment, it no longer remains ten cubits on any side; instead, its length and width are split into two. Each piece being slightly less than five cubits, it becomes 'little water' (ab-e-qalil, which is subject to impurity). Therefore, it is necessary that the ground is not exposed when taking water. This requirement applies to both wudu and ghusl, but it is even more critical for ghusl. It is stated in 'al-Hidayah': The need for bathing in pools is more intense than the need for performing wudu. The necessity of bathing in pools is greater than the necessity for wudu. (T) 1. Tabyin al-Haqa'iq, Ashr fi Ashr, Bulaq, Egypt, 1/22. 2. Al-Hidayah, Al-Ghadir al-Azim, Maktabah Arabiyah Karachi, 1/20. Page 445 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो) दोनों हथेलियों से मुसाफ़ा (हाथ मिलाना) करना। इससे तात्पर्य यह है कि मैंने दोनों मोज़े पहने, जैसा कि शरह अल-हमासा में है। मैंने इस पर पूरी विस्तृत चर्चा अपने रिसाले 'सफ़ाइह अल-लुजैन फ़ी कौन अत-तसाफ़ुह बि-कफ़्फ़ै अल-यदैन' (चांदी की तख्तियां, इस मसले में कि मुसाफ़ा दोनों हाथों से होता है। त) में की है। (त) तो सही राय यही है कि दोनों हाथों से पानी लेना मुराद है, अव्वल, यही मूल पाठों (मूतून) का तात्पर्य है। दौम (दूसरा), यही आम किताबों से प्राप्त होता है। सोम (तीसरा), कई किताबों में इस पर स्पष्ट उल्लेख है और एक हथेली पर कोई स्पष्ट आदेश नहीं है। चारुम (चौथा), 'हथेली' से 'दोनों हथेलियां' मुराद ली जा सकती हैं लेकिन इसके विपरीत नहीं, तो इसमें सामंजस्य है और यह विरोधाभास पैदा करने से बेहतर है। पंजुम (पांचवां), ज़मीन न खुलने से मक़सद यह है कि सतह का क्षेत्रफल बना रहे, अन्यथा पानी दो भागों में बँट जाएगा। 'तब्यीन' में है: गहराई के संबंध में विचारणीय यह है कि वह ऐसी स्थिति में हो कि पानी निकालने से नीचे की ज़मीन न दिखे। क्योंकि यदि ज़मीन दिखती है, तो पानी एक-दूसरे से अलग हो जाता है और पानी दो स्थानों पर हो जाता है। यही अल-हिंदुवानी का विकल्प है। (त) फिर उन्होंने पिछली सुधार (तसहीह) का ज़िक्र किया। गहराई में मान्य यह है कि वह हौज़ ऐसा हो कि चुल्लू भरने से ज़मीन न खुल जाती हो, क्योंकि अगर खुली तो पानी का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से जुदा हो जाएगा, और पानी दो जगहों में हो जाएगा। हिंदुवानी ने इसी को चुना है। फिर उसने पिछली तसहीह का ज़िक्र किया है। (त) उदाहरण के लिए, एक हौज़ पूरा दस बाई दस (हाथ) है, उसके बीच में से पानी उठाया और ज़मीन खुल गई, तो उस समय वह किसी भी तरफ़ दस हाथ नहीं रहा, बल्कि लंबाई और चौड़ाई प्रत्येक के दो टुकड़े हो गए। हर टुकड़ा पाँच हाथ से भी कुछ कम होने पर 'आबे-क़लील' (कम पानी) हो गया। इसलिए यह ज़रूरी हुआ कि पानी लेते समय ज़मीन न खुले, और इसकी ज़रूरत वज़ू और ग़ुस्ल दोनों के लिए है, बल्कि ग़ुस्ल के लिए और भी अधिक। 'हिदाया' में फ़रमाया: हौज़ों में नहाने की ज़रूरत वज़ू की ज़रूरत से ज़्यादा सख़्त होती है। हौज़ों में नहाने की ज़रूरत वज़ू के मुक़ाबले ज़्यादा होती है। (त) 1. तब्यीन अल-हक़ा'इक़, अश्र फ़ी अश्र, बुलाक़, मिस्र, 1/22 2. अल-हिदाया, अल-ग़दीर अल-अज़ीम, मकतबा अरबिया कराची, 1/20 पेज 445 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی کون التصافح بکفی الیدین۔ اس سے مراد یہ ہوتی ہے کہ میں نے دونوں موزے پہنے، کذا فی شرح الحماسۃ اھ ، میں نے اس پر مکمل تفصیلی گفتگو اپنے رسالہ "صفائح اللجین فی کون التصافح بکفی الیدین" (چاندی کی تختیاں، اس مسئلے میں کہ مصافحہ دونوں ہاتھوں سے ہوتا ہے۔ت) میں کی ہے۔ (ت) تو راجح یہی ہے کہ دونوں ہاتھوں سے پانی لینا مراد ہے، اولاً یہی متون کا مفاد ثانیاً یہی عامہ کتب سے مستفاد ثالثاً کتب متعددہ میں اس پر تنصیص اور کفِ واحد پر کوئی نص نہیں۔ رابعاً کف سے کفین مراد لے سکتے ہیں نہ بالعکس تو اس میں توفیق ہے اور وہ نصب خلاف سے اولٰی۔ خامساً زمین نہ کھلنے سے مقصود یہ ہے کہ مساحت برقرار رہے ورنہ دو ۲ پانی جدا ہو جائیں گے۔ تبیین میں ہے: المعتبر فی العمق ان یکون بحال لاینحسر بالاغتراف لانه اذا انحسر ینقطع الماء بعضه عن بعض ویصیر الماء فی مکانین وھو اختیار الھندوانی ۱ اھ ثم ذکر التصحیح المار۔ گہرائی میں معتبر یہ ہے کہ وہ حوض ایسا ہو کہ چلو بھرنے سے کھل نہ جاتا ہو کیونکہ اگر کھلا تو پانی کا ایک حصہ دوسرے حصے سے جدا ہو جائیگا، اور پانی دو جگہوں میں ہو جائیگا، ہندوانی نے اسی کو اختیار کیا ہے اھ پھر اس نے گزشتہ تصحیح کو ذکر کیا ہے۔ (ت) مثلاً حوض پورا دہ در دہ ہے اُس کے وسط میں سے پانی اٹھایا اور زمین کھل گئی تو اُس وقت وہ کسی طرف دس ۱۰ ہاتھ نہیں رہا بلکہ طول و عرض ہر ایک کے دو ٹکڑے ہوگئے۔ ہر ٹکڑا پانچ ہاتھ سے بھی قدرے کم تو آبِ قلیل ہو گیا لہٰذا لازم ہوا کہ پانی لینے سے زمین نہ کھلنے پائے اور اس کی ضرورت وضو و غسل دونوں کیلئے ہے بلکہ غسل کیلئے زائد۔ ہدایہ میں فرمایا: الحاجة الی الاغتسال فی الحیاض اشد منھا الی التوضی ۲ ۔ حوضوں میں نہانے کی ضرورت بہ نسبت وضو کے زیادہ ہوتی ہے۔(ت) 1 تبیین الحقائق عشر في عشر بولاق مصر ۱/۲۲ 2 الھدایۃ الغدیر العظیم مکتبہ عربیہ کراچی ۱/۲۰ Page 445 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

It is stated in 'Inayah': "Because ablution is usually done in houses." - 1 Because ablution is usually performed at home. (T) And there is no doubt that while bathing in a pool or tank, water is taken with cupped palms, not handfuls. So it is certain that taking with both hands is meant. And Allah Almighty knows best the truth and the right path.

Elegant success and precise research with good divine guidance, and praise be to Allah for the ease of the path.

I say: And from Allah I seek help, and He is the best helper. All this criticism, refinement, correction, and preference was based on that apparent contradiction which is understood from the texts of the books and which, by the help of His glory and majesty and the generality of His bounty, is inspired into the heart of this poor man; that there is basically no contradiction in these sayings. Regarding the first saying, we have explained that it is the Zahir al-Riwayah (established report) and it is stronger in terms of reasoning. And from the perspective of correction as well, and there is no reason to depart from the Zahir al-Riwayah being the most wajah (preferable) and Musahhah (corrected) view. The other saying, which is chosen, preferred, and the basis for fatwa in general books, is branched from this Zahir al-Riwayah and is for the preservation of its ruling. It is obvious that whether there is a specified measurement, for example, ten by ten, or non-transparency is entrusted, in any case, the connection of water in such quantity is necessary, otherwise, that measurement will not remain. Therefore, Zahir al-Riwayah stated that the ground should not be exposed from anywhere, so the condition of being 'abundant' for this much is self-evident. However, abundance is required at the time of use. If it was abundant before and became scant while using, what benefit will the previous abundance provide? Now, if the ground is exposed while taking water, the matter that Zahir al-Riwayah conditioned for abundance no longer remains; for that duration, the water has become scant. If impurity had fallen earlier and was not effective due to abundance, it has now become effective upon becoming scant. And then adding water again will not make it pure, because impure water does not become pure by becoming abundant. And for those according to whom 'used water' (ma-e-musta'mal) is impure, there is no need for any prior impurity. The water of the first cupped-palm splash was thrown on the body, it became used and impure and fell into the water; the second time water was taken, it became scant and was made impure by that same used water. Similarly, for those according to whom used water,

though pure, its mixing with absolute water (ma-e-mutlaq) makes it absolutely unfit for purification, even if it is overcome. Therefore, for the preservation of abundance at the time of scooping (ightiraf), this condition was set that scooping should be from abundant water. At that time too, the instruction of Zahir al-Riwayah "takes water from the surface of the earth" holds true, so that the ground is not exposed from anywhere. Thus, this depth is not a condition for abundance itself, but rather a condition for the maintenance of abundance at the time of scooping.

Supporting this accompanying success, I say: Firstly, the very clarification of the reasoning [ta'leel] that such depth was kept so that while taking water the ground is not exposed and the water is not split into two, causing the measurement to be lost and it becomes scant. It became known that until the maintenance of...

---

1 Al-Inayah on the margin of Fath al-Qadir, Nooriya Razviya Sukkur 1/407.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

'इनाया' में कहा गया है: "क्योंकि वज़ू आमतौर पर घरों में होता है।" - 1 क्योंकि वज़ू आमतौर पर घर में होता है। (त) और इसमें कोई संदेह नहीं है कि हौज या तालाब में नहाते समय पानी हथेलियों से लिया जाता है, न कि चुल्लुओं से। तो यह निश्चित है कि दोनों हाथों से लेना ही अभिप्रेत है। और अल्लाह तआला सच्चाई और सही रास्ते को सबसे बेहतर जानता है।

सुंदर सफलता और उत्तम दैवीय मार्गदर्शन के साथ सटीक शोध, और अल्लाह का शुक्र है कि रास्ता आसान हुआ।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह से ही मैं मदद मांगता हूँ, और वह सबसे अच्छा मददगार है। यह सब आलोचना, शोधन, संशोधन और प्राथमिकता उस प्रत्यक्ष विरोधाभास पर थी जो पुस्तकों के ग्रंथों से समझा जाता है और जो, उसकी महिमा और प्रताप की सहायता से और उसकी कृपा की व्यापकता से, इस गरीब के दिल में प्रेरित होता है; कि इन कथनों में मूलतः कोई विरोधाभास नहीं है। पहले कथन के संबंध में, हमने स्पष्ट किया है कि वही 'ज़ाहिर अल-रिवायत' (स्थापित रिपोर्ट) है और तर्क के मामले में वही अधिक प्रबल है। और सुधार के दृष्टिकोण से भी, और ज़ाहिर अल-रिवायत के सबसे अधिक उपयुक्त और सही होने से हटने का कोई कारण नहीं है। दूसरा कथन, जिसे सामान्य पुस्तकों में चुना गया, पसंद किया गया और जिस पर फतवा दिया जाता है, इसी ज़ाहिर अल-रिवायत की एक शाखा है और इसके नियम के संरक्षण के लिए है। यह स्पष्ट है कि चाहे एक निश्चित माप हो, उदाहरण के लिए दस गुना दस, या अपारदर्शिता पर छोड़ दिया जाए, किसी भी स्थिति में, इतनी मात्रा में पानी का जुड़ाव आवश्यक है, अन्यथा वह माप नहीं रहेगा। इसलिए ज़ाहिर अल-रिवायत ने कहा कि जमीन कहीं से भी खुली न हो, तो इतनी मात्रा के लिए 'प्रचुर' होने की शर्त स्वतः स्पष्ट है। हालांकि, उपयोग के समय प्रचुरता आवश्यक है। यदि यह पहले प्रचुर था और उपयोग करते समय कम हो गया, तो पिछली प्रचुरता क्या लाभ देगी? अब, यदि पानी लेते समय जमीन खुल गई, तो वह बात जिसे ज़ाहिर अल-रिवायत ने प्रचुरता के लिए शर्त बनाया था, अब शेष नहीं रही; उस अवधि के लिए पानी कम हो गया है। यदि अशुद्धि (नजासत) पहले गिरी थी और प्रचुरता के कारण प्रभावी नहीं हुई थी, तो अब कम होते ही वह प्रभावी हो गई है। और फिर पानी मिलाना यह स्पष्ट नहीं करेगा कि अशुद्ध पानी प्रचुर होकर शुद्ध नहीं हो जाता। और जिनके अनुसार 'प्रयुक्त जल' (मा-ए-मुस्तअमल) अशुद्ध है, उन्हें पहले से किसी अशुद्धि की आवश्यकता नहीं है। पहली हथेली का पानी शरीर पर डाला गया, वह प्रयुक्त और अशुद्ध होकर पानी में गिर गया; दूसरी बार पानी लिया गया, तो वह कम हो गया और

उसी प्रयुक्त पानी से अशुद्ध हो गया। इसी तरह, जिनके अनुसार प्रयुक्त जल, यद्यपि शुद्ध है, लेकिन पूर्ण जल (मा-ए-मुतलक) के साथ उसका मिश्रण उसे शुद्धिकरण के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त बना देता है, भले ही वह दब जाए। इसलिए, पानी निकालने (इख़्तिराफ़) के समय प्रचुरता के संरक्षण के लिए यह शर्त रखी गई थी कि पानी निकालना प्रचुर जल से हो। उस समय भी, ज़ाहिर अल-रिवायत का निर्देश "जमीन की सतह से पानी लेता है" सच साबित होता है, ताकि जमीन कहीं से भी खुली न हो। इस प्रकार, यह गहराई प्रचुरता के लिए स्वयं एक शर्त नहीं है, बल्कि पानी निकालने के समय प्रचुरता के बने रहने की एक शर्त है।

इस सहायक सफलता के समर्थन में, मैं सबसे पहले कहता हूँ: यह स्पष्टीकरण स्वयं तर्क(त'लील) का स्पष्टीकरण है कि इतनी गहराई इसलिए रखी गई थी ताकि पानी लेते समय जमीन न खुल जाए और पानी दो हिस्सों में न बंट जाए, जिससे माप कम हो जाए और वह कम (क़लील) हो जाए। यह ज्ञात हुआ कि जब तक प्रचुरता बनी रहती है...

---

1 फ़तह अल-क़दीर के हाशिये पर अल-इनाया, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/407।

عنایہ میں فرمایا: لان الوضوء یکون فی البیوت عادۃً - 1 کیونکہ وضو عام طور پر گھر میں ہوتا ہے۔ (ت) اور شک نہیں کہ حوض یا تالاب میں نہاتے ہوئے پانی لپوں سے لیتے ہیں نہ چلوؤں سے تو ضرور ہوا کہ دونوں ہی ہاتھ سے لینا مراد ہو واللہ تعالیٰ اعلم بالحق والسداد۔

توفیق انیق و تحقیق دقیق بحسن التوفیق، والحمد للہ علی تیسر الطریق۔

اقول: وباللہ استعین، وھو نعم المعین، یہ سب تنقید و تنقیح و تصحیح و ترجیح اس ظاہر خلاف پر تھی جو عبارات کتب سے مفہوم اور بعونہ عزوجلالہ وعم نوالہ قلب فقیر پر القا ہوتا ہے کہ ان اقوال میں اصلاً خلاف نہیں قول اول کی نسبت ہم بیان کر آئے کہ وہی ظاہر الروایۃ اور وہی اقوی من حیث الدرایۃ ہے اور مندیل بطر از تصحیح بھی اور ظاہر الروایۃ اوجہ و مصحح سے عدول کی کوئی وجہ نہیں قول دیگر کہ عامہ کتب میں مختار و مرجح و مفتی بہ ہے اسی ظاہر الروایۃ پر متفرع اور اسی کے حکم کے تحفظ کو ہے ظاہر ہے کہ مساحت معینہ ہو مثلاً دہ در دہ یا عدم خلوص پر مفوضہ بہر حال اتنی مقدار میں پانی کا اتصال ضرور ورنہ وہ مساحت نہ رہے گی ولذا ظاہر الروایۃ نے فرمایا کہ کہیں سے زمین کھلی نہ ہو تو اس قدر کا شرط کثرت ہونا بداہتہً ثابت، مگر کثرت بوقت استعمال چاہئے پہلے کثیر تھا اور استعمال کرتے وقت قلیل ہو گیا تو کثرت سابقہ کیا مفید ہو گی اب اس میں پانی لیتے ہوئے زمین اگر کھل گئی تو ظاہر الروایۃ نے جو امر کثرت کیلئے شرط کیا تھا اب باقی رہا اتنی دیر کو پانی قلیل ہو گیا پہلے سے اگر نجاست پڑی تھی اور بوجہ کثرت مؤثر نہ ہوئی تھی اب قلیل ہوتے ہی مؤثر ہوگئی اور پھر پانی مل جانا ظاہر نہ کر دیگا کہ آب نجس کثیر ہو کر پاک نہیں ہو جاتا اور جن کے نزدیک مائے مستعمل نجس ہے پہلے سے کسی

نجاست پڑی ہونے کی حاجت نہیں پہلے لپ کا پانی بدن پر ڈالا یہ مستعمل و نجس ہو کر پانی میں گرا دو بارہ لپ لیا پانی قلیل ہو کر اسی مائے مستعمل سے نجس ہو گیا۔ یوں ہی جن کے نزدیک آب مستعمل اگرچہ پاک ہے مگر مائے مطلق سے اس کا اختلاط مطلقاً اسے ناقابل طہارت کر دیتا ہے اگرچہ مغلوب ہو لہذا وقت اغتراف حفظ کثرت کیلئے یہ شرط لگائی کہ اغتراف آب کثیر سے ہوا اس وقت بھی ظاہر الروایۃ کا ارشاد یأخذ الماء وجه الارض صادق ہو کہ زمین کہیں سے کھلی نہ ہو تو یہ عمق شرط کثرت نہیں بلاکلہ وقت اغتراف شرط بقائے کثرت۔

اس توفیق رفیق کے مؤیدات اقول اولا خود یہی تبیین معین تعلیل تبیین کہ اتنا عمق اس لئے رکھا گیا کہ پانی لیتے وقت زمین کھل کر دو پانی نہ ہو جائیں کہ مساحت نہ رہے گی قلیل ہو جائیگا معلوم ہوا کہ تا بقائے

---

1 العنایۃ علی حاشیۃ فتح القدیر نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۴۰۷

Fatawa Rizwia, Volume 2 A large area exists, and division of the area will cause its reduction. Secondly, if the large quantity itself depends on this, then even this condition will not be effective, and the same difficulty will arise at the time of taking water (aghtiraf). The condition applies to the entire area, not just some parts. It is stated in Ghiyathiyya: [Table Box] (Arabic): The preferred view is that it [the water] should not recede absolutely by taking water, not restricted to being from the deepest places[1]. (Urdu Translation): The preferred view is that by taking a handful, the ground should not be exposed from below absolutely; there is no restriction of it being deeper. (T) Now, if water was taken and the ground was not exposed, but only so much space of water equal to a grain of barley remained, then would it not become 'little water' (ma' qalil), as such depth does not exist in the whole area for that long? It is clear that this depth was not required; rather, the requirement was that the ground should not be exposed from anywhere, so that at the time of taking water, this remains, and not that specific depth. Thirdly: Witness to this is the narration from our Master Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) as found in Bada'i and Tabyin, that he stipulates such depth even in flowing water. This can never be a condition for the essence of flow (nafs-e-jaryan). What sane person would say that rainwater flowing on a roof or ground will not be considered flowing unless it is four or five fingers deep? The status of Imam Abu Yusuf is far higher and loftier than this; it is definitely considered flowing in every way according to custom and Sharia, even if it is only as deep as a barley grain. Necessarily, there is no doubt that he stipulated this condition for the persistence of flow at the time of taking water, so that if while taking water the ground was exposed, the water would be split in two and the flow would cease, as the upper water stopped for that duration and the lower part was cut off from the support above. We have already explained in the treatise 'Rahb al-Sahah' that stipulating support (madad) for flow is also a corrected view. Imam Ibn al-Hummam gave it preference, as did Imam Burhan al-Din, author of al-Hidayah, in his book al-Tajnees, and Imam Husam al-Din. Moreover, it is stated in the Fatawa of Imam Qazi Khan: (Arabic quote) A person in a state of major ritual impurity (junub), if he stands naked in heavy rain after rinsing his mouth and nose until his limbs are washed, it is valid because it is flowing [water]. That is (F1), if a person in major ritual impurity, after rinsing his mouth and putting water in his nose up to the required point, stands naked in heavy rain until his entire body is washed, the bath (ghusl) is valid because rain is considered flowing water. It is obvious that rain falls in separate streams, and none of those streams is even half a

finger deep; in fact, most are no more than a barley grain in depth, yet it is unanimously considered flowing water. 12 Minhu Ghafara Lahu (M)

[1] Fatawa Ghiyathiyya, Bab al-Miyah, Maktaba Islamia, Quetta, p. 5. Page 447 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी मसाहत कसीर (बड़ा क्षेत्र) है, मसाहत का विभाजन उसे कम कर देगा। दूसरे, अगर अधिकता अपने आप में इस पर निर्भर है, तो यह शर्त भी काम नहीं देगी और अग़िराफ़ (पानी लेने) के समय वही कठिनाई पेश आएगी। शर्त पूरी मसाहत में है, न कि कुछ हिस्सों में। ग़ियाथिया में है: [बॉक्स] अरबी: मुख़्तार (पसंदीदा मत) यह है कि पानी लेने से वह मुतलक़न (पूरी तरह) न हटे, इस शर्त के बिना कि वह सबसे गहरे स्थानों में से हो।[1] उर्दू अनुवाद: मुख़्तार यह है कि चुलू लेने से ज़मीन नीचे से मुतलक़न न खुले, इसमें ज़्यादा गहरा होने की कोई क़ैद (शर्त) नहीं है। (त) अब जब पानी लिया गया और ज़मीन नहीं खुली, मगर केवल इतनी जगह पानी रह गया जो एक जौ (जौ के दाने) की चौड़ाई के बराबर है, तो क्या अब वह आब-ए-क़लील (कम पानी) नहीं हो गया, क्योंकि इतनी देर तक पूरी मसाहत में इतनी गहराई नहीं है? ज़ाहिर हुआ कि यह गहराई वांछित नहीं थी, बल्कि यह था कि ज़मीन कहीं से न खुले, ताकि पानी लेते समय यही शेष रहे, न कि वह गहराई। तीसरे: इस पर हमारे स्वामी इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह तआला उन पर रहमत करे) से वह रिवायत गवाह है जो बदाइ और तबीन से गुज़री कि वे बहते पानी में भी इतनी गहराई की शर्त रखते हैं। यह कभी भी प्रवाह के अस्तित्व (नफ़्स-ए-जर्यान) की शर्त नहीं हो सकती। कौन बुद्धिमान कहेगा कि छत या ज़मीन पर बहता हुआ बारिश का पानी तब तक बहता हुआ नहीं माना जाएगा जब तक कि वह चार-पांच उंगल गहरा न हो जाए? इमाम अबू यूसुफ़ की शान इससे बहुत ऊँची और आला है; वह निश्चित रूप से प्रथा और शरीयत के अनुसार हर तरह से बहता हुआ है, चाहे वह केवल एक जौ के बराबर गहरा हो। निस्संदेह इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने यह शर्त पानी लेने के समय प्रवाह के बने रहने के लिए दी है, कि यदि पानी लेते समय ज़मीन खुल गई तो वह दो पानी हो गए और उस समय प्रवाह समाप्त हो गया क्योंकि उतनी देर ऊपर का पानी रुक गया और नीचे वाला हिस्सा ऊपर की मदद से कट गया। और हम रिसाला 'रहब अल-साह' में बयान कर चुके हैं कि प्रवाह के लिए मदद (सहायता) की शर्त भी एक सही मत है। इमाम इब्न अल-हुमाम ने इसे प्राथमिकता दी और यही इमाम बुर्हानुद्दीन, हिदाया के लेखक, की पुस्तक तजनीस और इमाम हुसामुद्दीन की है। बल्कि फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ान में है: (अरबी उद्धरण) एक जुनुब (अशुद्ध व्यक्ति), यदि वह मुँह और नाक साफ़ करने के बाद भारी बारिश में नग्न खड़ा हो जाए जब तक कि उसके अंग धुल न जाएं तो यह जायज़ है क्योंकि यह बहता हुआ [पानी] है। अर्थात् (F1) जुनुब यदि कुल्ला करके और नाक में पानी फ़र्ज़ स्थान तक चढ़ाकर तेज़ बारिश में नंगा खड़ा हो जाए कि सारा बदन धुल गया, तो ग़ुस्ल (स्नान) हो गया क्योंकि बारिश बहता पानी है। यह ज़ाहिर है कि बारिश की धाराएँ अलग-अलग होती हैं और

उनमें से कोई भी धारा आधी उंगली भी गहरी नहीं होती, बल्कि अक्सर जौ भर से ज़्यादा नहीं होती, फिर भी वह बिना किसी मतभेद के बहता पानी है। 12 मिन्हु ग़फ़रा लहू (म)

[1] फ़तावा ग़ियाथिया, बाब अल-मियाह, मकतबा इस्लामिया, क्वेटा, पृ. 5। पृष्ठ 447 / 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی مساحت کثیر ہے تفریق مساحت تقلیل کرے گی۔ ثانیاً اگر کثرت فی نفسہ اس پر موقوف ہو تو یہ شرط بھی کام نہ دے گی اور وقت اغتراف وہی دقت پیش آئے گی۔ شرط ہے تو ساری مساحت میں نہ کہ بعض میں۔ غیاثیہ میں ہے: المختار ان لاینحسر بالاغتراف مطلقا غیر مقید بکونہ من اعمق المواضع[1] - مختار یہ ہے کہ چُلو لینے سے زمین نیچے سے نہ کھلے مطلقاً اس میں زیادہ گہرا ہونے کی کوئی قید نہیں ہے۔ (ت) اب کہ پانی لیا اور زمین کھلی تو نہیں مگر اتنی جگہ صرف جو بھی عرض کا پانی رہ گیا تو اب کیا آب قلیل نہ ہو گیا کہ اتنی دیر ساری مساحت میں اتنا عمق نہیں۔ ظاہر ہوا کہ یہ عمق مطلوب نہ تھا بلکہ وہی زمین کا کہیں سے کھلنا نہ ہونا کہ وقت اغتراف یہی باقی رہے گا نہ وہ عمق۔ ثالثاً: اسی پر شاہد ہے سید نا امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ سے وہ روایت کہ بدائع و تبیین سے گزری کہ خود جاری پانی میں بھی اتنا عمق شرط فرماتے ہیں یہ ہر گز نفس جریان کی شرط نہیں ہو سکتا کون عاقل کہے گا کہ مینہ کا پانی جو چھت یا زمین پر بہ رہا ہے جاری نہ ہو گا جب تک چار پانچ انگل ڈل نہ ہو جائے امام ابو یوسف کی شان اس سے ارفع واعلیٰ ہے وہ قطعاً عرفاً و شرعاً ہر طرح جاری ہے اگرچہ صرف جو بھر عہ ڈل ہو لاجرم کوئی شبہ نہیں کہ یہ وقت اغتراف بقائے جریان کیلئے شرط فرمائی ہے کہ اگر پانی لیتے وقت زمین کھل گئی دو پانی ہو گئے اور اس وقت جریان جاتا رہا کہ اتنی دیر اوپر کا پانی رک گیا اور نیچے کا مدد بالا سے منقطع ہو گیا، اور ہم رسالہ رحب الساحۃ میں بیان کر چکے کہ جریان کیلئے مدد کا اشتراط بھی ایک قول مصحح ہے امام ابن الہمام نے اس کو ترجیح دی اور یہی امام برہان الدین صاحب ہدایہ کی کتاب تجنیس اور امام حسام الدین کے عہ بلکہ فتاوے امام قاضی خان میں ہے: الجنب اذا قام في المطر الشديد متجردا بعد ما تمضمض واستنشق حتى اغتسلت اعضاؤه جاز لانه جار یعنی (ف۱) جنب اگر کُلی کر کے ناک میں پانی موضع فرض تک چڑھا کر زور کے مینہ

میں ننگا کھڑا ہو کہ سارا بدن دُھل گیا غسل ہو گیا کہ مینہ جاری پانی ہے ظاہر ہے کہ مینہ کی دھاریں متفرق ہوتی ہیں اور ان میں کوئی دھار آدھا انگل بھی ڈل نہیں رکھتی بلکہ اکثر جو بھر سے زیادہ نہیں ہوتا مگر وہ بلا خلاف جاری پانی ہے ۱۲ منہ غفر لہ (م)

Fatawa Razawiyya Volume Second From the events, it is inferred that this narration of Imam Abu Yusuf is based on this saying. Therefore, he made it a condition that the water should remain flowing even while taking it, not that this depth is required in every flowing water. Here, the essence of abundance is not conditioned by this, but rather the abundance should remain at the time of scooping (Ightiraf), praise be to Allah.

Fourthly, what supports this is what was quoted from many great reliable books in our treatise 'Rahb al-Sahah' that if impurities lie at the bottom of a large pond and rainwater comes, if this water becomes ten-by-ten (darda-deh) within the pond before reaching those impurities, and then it moves towards the impurities and mixes with them, it will not become impure, and thus the entire pond will remain pure. It is obvious that while increasing, it is not necessary to have a depth of five fingers in the entire area, rather it is rare, as mentioned in the same treatise. But it was not taken into account and the ruling of purity was given absolutely. Its basis is that depth is not needed for the essence of abundance. In short, it became clear that for abundance, it is only required that no spot in the entire area remains exposed from the water. This is the 'Zahir al-Riwayah' (manifest narration) and the first correction. On this basis, for abundance to remain while taking water, it is necessary that the ground should not be exposed; otherwise, it will become small (quantity). This is the meaning of general books and the second correction.

Then I say, this elegant reconciliation will lead to some further conclusions.

First: Scooping will remain absolute as mentioned in the texts, Hedaya, and general books, that water is inherently abundant in every way. The purpose is that at that time, the ground should not actually be exposed. Whether it's through general flow, or a handful (Chullu) or palm, the way water was taken, the ground should not be exposed, even if it could be exposed in another way. In fact, there's no specification for the hand; whether taken with a vessel or anything else, the ground should not be exposed at that time.

Second: This depth is not required in the entire area; it is sufficient only at the place from where the water was taken.

Third: This condition was stated for ten-by-ten. If the water is so abundant that even if the ground is exposed where it was taken from, the pieces on each side remain ten-by-ten, then exposing will not be harmful because although they became two bodies of water, both are still abundant.

Fourth: The reliable position is that used water (Ab-e-Mustamal) is pure, and its mixing with absolute water does not prevent purity as long as it does not exceed it in quantity. No matter how much small-quantity water (Ab-e-Qaleel) there is, if a person's body with ritual impurity enters it, all of it becomes used. But for the necessity of scooping, putting the hand in is pardoned. All these issues have been proven in our treatises 'Al-Tars al-Mu'addal' and 'Al-Namiqa al-Anqa'. So that water from which at the time of scooping the ground is exposed and its pieces do not remain ten-by-ten, if impurity was already present in it, it will certainly become impure due to this exposing.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो) घटनाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि इमाम अबू यूसुफ़ का यह रिवायत इसी कथन पर आधारित है। इसलिए उन्होंने यह शर्त रखी कि पानी लेते समय भी प्रवाह बना रहे, न कि हर प्रवाहित पानी में यह गहराई आवश्यक हो। यहाँ प्रचुरता स्वयं इससे सशर्त नहीं है, बल्कि पानी लेते समय प्रचुरता (इग़तराफ़) बनी रहनी चाहिए, अल्लाह का शुक्र है।

चौथा, इसका समर्थन उस बात से होता है जो हमारे शोध-पत्र 'रहब अस-साहा' में कई महान विश्वसनीय पुस्तकों से उद्धृत की गई है कि बड़े तालाब के तल में अशुद्धियाँ पड़ी हैं, बारिश का पानी आया, यदि उन अशुद्धियों तक पहुँचने से पहले यह पानी तालाब के भीतर दस-दर-दस (क्षेत्रफल) हो गया, उसके बाद अशुद्धियों की ओर बढ़कर उनसे मिला, तो अपवित्र नहीं होगा, और इस प्रकार पूरा तालाब पवित्र रहेगा। ज़ाहिर है कि बढ़ते समय पूरे क्षेत्रफल में पाँच अंगुल गहराई होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि यह दुर्लभ है, जिसका वर्णन उसी शोध-पत्र में आया है। लेकिन इसका ध्यान नहीं रखा गया और निरपेक्ष रूप से पवित्रता का आदेश दिया गया। इसका आधार यही है कि स्वयं प्रचुरता के लिए गहराई की आवश्यकता नहीं है। संक्षेप में, यह स्पष्ट हो गया कि प्रचुरता के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि पूरे क्षेत्रफल में कोई भी जगह पानी से खाली न हो। यही 'ज़ाहिर अर-रिवाया' और प्रथम संशोधन है। इसी आधार पर पानी लेते समय प्रचुरता बनी रहने के लिए अनिवार्य है कि उससे ज़मीन न खुले, अन्यथा वह थोड़ा (क़लील) हो जाएगा। यही आम पुस्तकों का अर्थ और दूसरा संशोधन है।

फिर मैं कहता हूँ कि यह सुंदर सामंजस्य कुछ और निर्णय भी करेगा।

पहला: पानी निकालना (इग़तराफ़) निरपेक्ष रहेगा जैसा कि मूल ग्रंथों, हिदाया और आम किताबों में है कि पानी स्वयं हर तरह से प्रचुर है। उद्देश्य उस समय वास्तव में ज़मीन का न खुलना है। चाहे वह आम प्रवाह हो, या चुल्लू हो, जिस तरह भी पानी लिया गया उससे ज़मीन नहीं खुलनी चाहिए, भले ही किसी और तरीके से खुल सकती हो। बल्कि हाथ की भी कोई विशिष्टता नहीं है, बर्तन से लें या किसी भी चीज़ से, उस समय ज़मीन न खुले।

दूसरा: पूरे क्षेत्रफल में इस गहराई की आवश्यकता नहीं है, केवल वहीं काफी है जहाँ से पानी लिया गया।

तीसरा: यह शर्त दस-दर-दस (क्षेत्रफल) के लिए कही गई है। यदि पानी इतना अधिक है कि जहाँ से लिया गया वहाँ से ज़मीन खुल भी जाए तो हर तरफ का टुकड़ा दस-दर-दस रहे, तो खुलना हानिकारक नहीं होगा क्योंकि भले ही दो पानी हो गए मगर दोनों प्रचुर (कसीर) ही हैं।

चौथा: विश्वसनीय मत यह है कि प्रयुक्त पानी (आब-ए-मुस्तअमल) पवित्र है और शुद्ध पानी में इसका मिलना पवित्रता में बाधक नहीं है जब तक कि यह मात्रा में उससे अधिक न हो जाए। और थोड़ा पानी (आब-ए-क़लील) कितना ही अधिक क्यों न हो, अशुद्ध शरीर के उसमें पड़ने से वह सारा प्रयुक्त (मुस्तअमल) हो जाता है, लेकिन ज़रूरत के अनुसार पानी निकालने के लिए हाथ डालना क्षम्य है। ये सभी मुद्दे हमारे शोध-पत्रों 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' और 'अन-नमीक़ा अल-अनक़ा' में प्रमाणित हो चुके हैं। तो वह पानी जिसमें से पानी निकालते समय ज़मीन खुल जाए और उसके टुकड़े दस-दर-दस न रहें, यदि उसमें पहले से अशुद्धि मौजूद थी तो इस खुलने से वह अवश्य अपवित्र हो जाएगा।

पृष्ठ 448 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی واقعات سے مستفاد یہ روایت امام ابو یوسف اسی قول پر مبنی تو یہ شرط اس لئے فرمائی کہ پانی لیتے وقت بھی جاری رہے نہ کہ ہر جاری میں یہ عمق درکار ہو، ہی یہاں نفس کثرت اس سے مشروط نہیں بلکہ وقت اغتراف کثیر رہنا واللہ الحمد۔

رابعاً اسی کے مؤید ہے وہ کہ ہمارے رسالہ رحب الساحۃ میں کتب کثیرہ جلیلہ معتمدہ سے منقول ہوا کہ بڑے تالاب کے بطن میں نجاستیں پڑی ہیں بارش کا پانی آیا اگر ان نجاستوں تک پہنچنے سے پہلے یہ پانی تالاب کے اندر دہ در دہ ہو گیا اس کے بعد نجاستوں کی طرف بڑھ کر ان سے ملا نا پاک نہ ہو ایوں سارا تالاب پاک رہے گا۔ ظاہر ہے کہ بڑھتے وقت ساری مساحت میں پانچ انگل دل ہونا ضرور نہیں بلکہ نادر ہے جس کا بیان اسی رسالہ میں گزرا مگر اس کا لحاظ نہ فرمایا اور مطلقاً حکم طہارت دیا اس کا وہی مبنی ہے کہ فی نفسہ کثرت کے لئے دل کی حاجت نہیں بالجملہ روشن ہوا کہ کثرت کیلئے صرف اس قدر درکار کہ مساحت بھر میں کوئی جگہ پانی سے کھلی نہ ہو یہی ظاہر الروایۃ و تصحیح اول ہے اسی بنا پر پانی لیتے وقت کثرت باقی رہنے کیلئے لازم کہ اس سے زمین کھل نہ جائے ورنہ قلیل ہو جائے گا یہی مطلب عامہ کتب و تصحیح دوم ہے۔

ثم اقول یہ توفیق انیق بعض فیصلے اور کرے گی۔

اول اغتراف مطلق رہے گا جس طرح متون و ہدایہ وعامہ کتب میں ہے کہ پانی فی نفسہ ہر طرح کثیر ہے مقصود اس وقت زمین کا بالفعل نہ کھلنا ہے نہ کوئی صلاحیت عامہ تو چلو ہو یا لپ جس طرح پانی لیا اس سے نہ کھلنا چاہئے اگرچہ دوسری طرح انکشاف ہو سکے بلکہ ہاتھ کی بھی تخصیص نہیں برتن سے لیں خواہ کسی سے اس وقت زمین کھلے نہیں۔

دوم ساری مساحت میں اس عمق کی حاجت نہیں صرف وہیں کافی ہے جہاں سے پانی لیا گیا۔

سوم یہ شرط دہ در دہ میں فرمائی ہے پانی اگر اس درجہ کثیر ہے کہ جہاں سے لیا گیا اگر زمین کھل بھی جائے تو ہر طرف کا ٹکڑا دہ در دہ رہے تو کھلنا مضر نہ ہو گا کہ اگرچہ دو پانی ہو گئے مگر دونوں کثیر ہی ہیں۔

چہارم مذہب معتمد یہ ہے کہ آب مستعمل طاہر ہے اور آب مطلق میں اس کا اختلاط مانع طہارت نہیں جب تک مقدار میں اس سے زائد نہ ہو جائے اور آب قلیل کتنا ہی کثیر ہو بدن محدث اس میں پڑنے سے سب مستعمل ہو جاتا ہے مگر بضرورت اغتراف ہاتھ ڈالنا معاف ہے یہ سب مسائل ہمارے رسائل الطرس المعدل والنمیقة الانقی میں مبرہن ہو چکے تو وہ پانی جس میں سے وقت اغتراف زمین کھل کر اس کے ٹکڑے دہ در دہ نہ رہیں اگر اس میں پہلے سے نجاست موجود تھی اس کھلنے سے ضرور ناپاک ہو جائیگا

Fatawa Razawiyya, Volume 2

Similarly, if the need was for a handful (chullu) and water was taken with both palms (lap), all the water would become used (must'amal) because the second unwashed hand was dipped unnecessarily, regardless of whether the ground becomes visible through the handful or not. If it is said that 'use' occurs after the separation from the hand, and at that time the connection of water makes it 'abundant' (kathir).

I say (Aqulu): The subsequence of 'use' to separation is essential (dhatiya), as separation is the final part of the cause of use, so staying behind is impossible. The subsequence of the water's connection is temporal (zamaniya), because however much space was exposed, it will be filled by the movement of water after the hand separates.

[Arabic Column]: I say: This investigation clarifies that the issue mentioned in Al-Khaniya and other reliable books—that if water comes out of a hole and spreads over a frozen surface such that if one lifts water with their palm, the frozen part underneath is not uncovered, then wudu is permissible in it, otherwise not—was quoted in Al-Ghunyah based on the meaning. Thus, it placed the permissibility and impermissibility of wudu in place of the water becoming impure or not due to the falling of an impurity. However, according to research, it is not like that. Because when water has a large area, it does not become impure by something falling into it as long as it doesn't change or get uncovered by its falling, leaving two small amounts of water. This is in contrast to performing wudu in it by dipping limbs, as it becomes impure (used) absolutely because the assumption is that it gets uncovered by scooping, so by dipping it is more likely. Thus it became clear that it's better to avoid quoting based on meaning absolutely, as it might lead to a subtle change that is extremely hidden. Success is from Allah. (Ends from him, may Allah forgive him.)

[Urdu Column]: I say that our investigation has made it clear that the issue stated in Fatawa Khaniya and other reliable books—that if water comes out of a hole and spreads on frozen water so much that if a person picks up water with their hand, the frozen water underneath is not revealed, then performing ablution in this water is permissible, otherwise ablution is not permissible—in Al-Ghunyah, this issue was quoted by meaning, and instead of the permissibility and impermissibility of ablution, it put the water becoming impure or not due to impurity falling in. However, according to research, it is not so, because when the quantity of water is large, it will not become spoiled by something falling into it until a change occurs in it or the

surface underneath is revealed by the falling of the impurity. In that case, the water will be divided into two small portions. This is unlike the case where limbs are dipped in this water for ablution; then the water will become absolutely spoiled because it is assumed that the surface below is revealed by taking water in a handful, so it will more likely be revealed by dipping. From this statement, it has become clear that it is better not to quote the issue by meaning absolutely, otherwise, a very hidden and subtle difference will arise. Only Allah is the grantor of success. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

इसी तरह अगर ज़रूरत चुल्लू की थी और दोनों हथेलियों से पानी लिया तो सारा पानी इस्तेमाल शुदा (मुस्तअमल) हो जाएगा, क्योंकि दूसरा बिना धुला हाथ बिना ज़रूरत पानी में पड़ा, चाहे चुल्लू से ज़मीन ज़ाहिर हो या न हो। अगर यह कहा जाए कि 'इस्तेमाल' हाथ के अलग होने (इनफिसाल) के बाद होगा और उस वक़्त पानी का जुड़ाव उसे 'कसीर' (ज़्यादा) बना देगा।

मैं कहता हूँ (अक़ुलु): इस्तेमाल का अलग होने के बाद होना ज़ाती (तथाकथित) है, क्योंकि अलग होना इस्तेमाल की इल्लत (कारण) का आख़िरी हिस्सा है, तो इसका पीछे रहना मुहाल (असंभव) है। और पानी के जुड़ाव का बाद में होना ज़मानी (समय संबंधी) है, क्योंकि जितनी जगह खुली थी, वह हाथ हटने के बाद पानी की हरकत से भर जाएगी।

[अरबी कॉलम]: मैं कहता हूँ: इस तहक़ीक़ (शोध) से यह साफ़ हो गया कि 'अल-ख़ानिया' और अन्य विश्वसनीय किताबों में जो मसला बयान किया गया है—कि अगर पानी एक छेद से निकले और जमी हुई सतह पर इतना फैल जाए कि अगर कोई अपनी हथेली से पानी उठाए तो नीचे की जमी हुई सतह ज़ाहिर न हो, तो उसमें वुज़ू जायज़ है, वरना नहीं—इसे 'अल-ग़ुनिया' में मायने के आधार पर नक़ल किया गया है। चुनाँचे, वुज़ू के जायज़ होने या न होने की जगह, नजासत (गंदगी) गिरने से पानी के नापाक होने या न होने को रख दिया गया। हालाँकि शोध के अनुसार ऐसा नहीं है। क्योंकि जब पानी का क्षेत्रफल अधिक हो, तो वह किसी चीज़ के गिरने से तब तक नापाक नहीं होता जब तक कि उसमें बदलाव न आए या उसके गिरने से नीचे की सतह ज़ाहिर न हो जाए, जिससे पानी दो छोटे हिस्सों में बँट जाए। यह उस स्थिति के विपरीत है जिसमें वुज़ू के लिए अंगों को डुबोया जाए, क्योंकि इससे पानी मुतलक़न (पूरी तरह) फ़ासिद हो जाएगा, क्योंकि यह माना गया है कि चुल्लू से पानी लेने पर नीचे की सतह ज़ाहिर हो जाती है, तो डुबोने से तो और भी ज़्यादा ज़ाहिर होगी। इससे स्पष्ट हो गया कि बेहतर यही है कि मसले को मुतलक़न मायने के तौर पर नक़ल न किया जाए, वरना इससे बहुत ही बारीक और छिपा हुआ अंतर पैदा हो जाएगा। अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है। (उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।)

[उर्दू कॉलम]: मैं कहता हूँ कि हमारी इस तहक़ीक़ से ज़ाहिर हो गया कि फतावा खानिया वगैरह मोतबर किताबों में जो यह मसला बयान किया गया है कि अगर पानी सुराख़ से निकला और मुंजमिद (जमे हुए) पानी पर इतना फैल गया कि अगर कोई शख़्स हाथ से पानी उठाए तो नीचे का जामद

(ठोस) पानी मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) नहीं होता, इस सूरत में इस पानी में वुज़ू करना जायज़ है वरना इससे वुज़ू जायज़ नहीं (अह)। इस मसले को ग़ुनिया में मअनी नक़ल करते हुए वुज़ू के जवाज़ और अदम जवाज़ की जगह पलीदी के वाक़े होने से इस पानी के पलीद होने और न होने को रख दिया, हालाँकि तहक़ीक़ की रू से इस तरह नहीं है, क्योंकि जब पानी की पैमाइश ज़्यादा हो तो किसी चीज़ के वाक़े होने से वह फ़ासिद नहीं होगा जब तक इसमें तग़ैयुर (बदलाव) न आए या पलीदी के गिरने से नीचे की सतह मुन्कशिफ़ न हो जाए, इस सूरत में पानी दो थोड़े हिस्सों में तक़्सीम हो जाएगा। बर-ख़िलाफ़ इस सूरत के कि इस पानी में आज़ा (अंग) डुबो कर वुज़ू किया जाए तो इससे पानी मुतलक़न फ़ासिद हो जाएगा क्योंकि फ़र्ज़ यह किया गया है कि चुल्लू में पानी लेने से नीचे की सतह मुन्कशिफ़ हो जाती है तो डुबोने से ब-तरीक़े औला मुन्कशिफ़ हो जाएँगी। इस बयान से वाज़ेह हो गया कि बेहतर यह है कि मसला मअनी मुतलक़न नक़ल न किया जाए, वरना इससे बहुत ही पोशीदा और बारीक फ़र्क़ पैदा हो जाएगा, अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ अता फ़रमाने वाला है। (त)

یوں ہی اگر ضرورت چلو کی تھی اور لپ سے لیا سب پانی مستعمل ہو جائے گا کہ دوسرا بے دھلا ہاتھ بے ضرورت پڑا عام ازیں کہ چلو سے بھی زمین کھلتی یا نہیں اگر کہیے استعمال بعد انفصال ید ہوگا اور اس وقت اتصال آب ہو کر کثیر ہو جائے گا۔ اقول: انفصال سے استعمال کی بعدیت ذاتیہ ہے کہ وہ علت استعمال کا جزء اخیر ہے تو تخلف محال اور اتصال آب کی بعدیت زمانیہ ہے کہ جتنی جگہ کھلی تھی بعد انفصال ید حرکت آب سے بھرے گی

[عربی عبارت]: عه اقول: ظهر بهذا التحقيق ان مسألة الخانية وغيرها من الكتب المعتمدة ان خرج الماء من النقب وانبسط على وجه الجمد بقدر مالو رفع الماء بكفه لاينحسر ماتحته من الجمد جاز فيه الوضوء والا فلا اهـ نقلها في الغنية بالمعنى فاقام مقام جواز الوضوء فيه وعدمه فساده بوقوع المفسد وعدمه وليس كذلك عند التحقيق فانه اذا كان كثيرا لمساحة لا يفسد بوقوع شيئ مالم يتغير او ينحسر بوقوعه فيبقى ماء ين قليلين بخلاف الوضوء فيه بغمس الاعضاء فانه يفسد به مطلقاً لان الفرض انه ينحسر بالغرف فبالغمس اولى وبه ظهر ان الاولى ترك النقل بالمعنى مطلقاً فدر بما يحصل به تغير دقيق في غاية الخفاء وبالله التوفيق اه منه غفرله۔ (م)

[اردو عبارت]: میں کہتا ہوں کہ ہماری اس تحقیق سے ظاہر ہو گیا کہ فتاویٰ خانیہ وغیرہ کتب معتبرہ میں جو یہ مسئلہ بیان کیا گیا ہے کہ اگر پانی سوراخ سے نکلا اور منجمد پانی پر اتنا پھیل گیا کہ اگر کوئی شخص ہاتھ سے پانی اٹھائے تو نیچے کا جامد پانی منکشف نہیں ہوتا اس صورت میں اس پانی میں وضو کرنا جائز ہے ورنہ اس سے وضو جائز نہیں (اھ) اس مسئلے کو غنیہ میں معنیٰ نقل کرتے ہوئے وضو کے جواز اور عدم جواز کی جگہ پلیدی کے واقع ہونے سے اس پانی کے پلید ہونے اور نہ ہونے کو رکھ دیا، حالانکہ تحقیق کی رو سے اس طرح نہیں ہے، کیونکہ جب

پانی کی پیمائش زیادہ ہو تو کسی چیز کے واقع ہونے سے وہ فاسد نہیں ہوگا جب تک اس میں تغیر نہ آئے یا پلیدی کے گرنے سے نیچے کی سطح منکشف نہ ہو جائے، اس صورت میں پانی دو تھوڑے حصوں میں تقسیم ہو جائیگا بر خلاف اس صورت کے کہ اس پانی میں اعضاء ڈبو کر وضو کیا جائے تو اس سے پانی مطلقاً فاسد ہو جائیگا کیونکہ فرض یہ کیا گیا ہے کہ چلو میں پانی لینے سے نیچے کی سطح منکشف ہو جاتی ہے تو ڈبونے سے بطریق اولیٰ منکشف ہو جائینگی، اس بیان سے واضح ہو گیا کہ بہتر یہ ہے کہ مسئلہ معنیٰ مطلقاً نقل نہ کیا جائے، ورنہ اس سے بہت ہی پوشیدہ اور باریک فرق پیدا ہو جائیگا، اللہ تعالیٰ ہی توفیق عطا فرمانے والا ہے۔ (ت)

Volume 2 Fatawa Razawiyya

And the movement is gradual, so upon excessive separation before connection, the ruling of 'used' (musta'mal) water will be applicable, so understand. And if there is no impurity from before, and a handful or palmful is taken as per need and the ground is exposed, it will not be considered 'used' water, even if water is taken from the middle of the pond; because although the water becomes small (qaleel) by exposing the ground, the necessity of scooping is forgiven even in a large pitcher when no small vessel is available to take water. At that time, although his feet are in that small amount of water, they have already been washed while going in. Yes, if a minor ritual impurity (hadath) occurs to him at the time of exposing that ground, then definitely all the water will become 'used' because of the feet. Considering these reasons, that condition was made, so Zahir al-Riwayah and this fatwa-given opinion are both in agreement and are essentially related, and praise be to Allah.

This is all that has become manifest to this frequent sinner, and by it, the words (of scholars) are unified, and doubts are repelled. All praise is due to Allah, the Granter of desires. May Allah Almighty send blessings, peace, and benedictions upon the Rectifier of good deeds, the Forgiver of lapses, and upon his family and his noble companion masters, and his sons and his illustrious, steadfast party, and upon us with them, through them, and for them, until the day our beloved stands for intercessions. Upon them be pure blessings, growing salutations, and blessed greetings. Amen, and all praise is due to Allah, the Lord of the worlds. Despite this, I do not say that this is definitely the ruling; I only say this is what appeared to me. So if it is correct, it is from the Generous Bestower (Allah), and for Him is all praise. And if it is an error, it is from me and from Satan, and I disassociate myself from it before Allah. And all praise is due to Allah, Lord of the worlds, and Allah Almighty knows best.

Glad tidings: What preceded from the statement of al-Bahr is that action and fatwa are always according to the statement of Imam al-A'zam (may Allah be pleased with him).

Glad tidings: The statement of al-Bahr mentioned before, that action...

और गति क्रमिक है, इसलिए संबंध से पहले अत्यधिक पृथक्करण पर 'इस्तेमाल' किए गए (मुस्तअमल) पानी का हुक्म लागू होगा, इसे समझें। और यदि पहले से कोई अशुद्धि नहीं है, और ज़रूरत के अनुसार एक चुल्लू या हथेली भर पानी लिया गया और ज़मीन दिखने लगी, तो वह पानी 'इस्तेमाल' किया हुआ नहीं माना जाएगा, भले ही पानी तालाब के बीच से लिया गया हो; क्योंकि यद्यपि ज़मीन दिखने से पानी कम (कलील) हो गया है, लेकिन पानी लेने के लिए कोई छोटा बर्तन न होने की स्थिति में घड़े में भी चुल्लू से पानी लेने की ज़रूरत को माफ़ किया गया है। उस समय, भले ही उसके पैर उस कम पानी में हों, लेकिन वे अंदर जाते समय पहले ही धुल चुके होते हैं। हाँ, अगर उस ज़मीन के दिखने के समय उसे कोई लघु अशुद्धि (हदस) हो जाए, तो पैरों के कारण निश्चित रूप से सारा पानी 'इस्तेमाल' किया हुआ हो जाएगा। इन कारणों को देखते हुए वह शर्त रखी गई थी, अतः ज़ाहिर अल-रिवाया और यह फ़तवा-योग्य मत दोनों एक-दूसरे के अनुरूप हैं और मूल रूप से संबंधित हैं, और अल्लाह के लिए सारी प्रशंसा है।

यह सब वह है जो इस अधिक पाप करने वाले पर प्रकट हुआ है, और इसके द्वारा विद्वानों के शब्दों को एकीकृत किया जाता है, और संदेह दूर हो जाते हैं। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो इच्छाओं को पूरा करने वाला है। अल्लाह तआला रहमतें, शांति और बरकतें नाज़िल फ़रमाए नेकियाँ सुधारने वाले और गलतियाँ माफ़ करने वाले (नबी ﷺ) पर और उनकी आल और उनके महान सहाबा सादात पर, और उनके पुत्रों और उनकी महान, अडिग जमाअत पर, और उनके साथ हम पर, उनकी बदौलत और उनके माध्यम से उस दिन तक जब हमारे महबूब (नबी ﷺ) शफ़ाअत के लिए खड़े होंगे। उन पर पवित्र रहमतें, बढ़ती हुई सलामती और बरकत वाले तोहफ़े हों। आमीन, और सारी प्रशंसा अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। इसके बावजूद, मैं यह नहीं कहता कि यही निश्चित हुक्म है; मैं तो केवल इतना कहता हूँ कि यह वह है जो मुझ पर प्रकट हुआ है। तो अगर यह सही है, तो यह उदार दाता (अल्लाह) की ओर से है, और उसके लिए सारी प्रशंसा है। और यदि यह कोई त्रुटि है, तो यह मेरी ओर से और शैतान की ओर से है, और मैं अल्लाह के सामने इससे अपनी बेज़ारी (विमुखता) प्रकट करता हूँ। और सारी प्रशंसा अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

बशारत: अल-बहर के कथन से जो पहले बीत चुका है कि अमल और फ़तवा हमेशा इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कथन पर है।

बशारत: इससे पहले बहर का जो कथन वर्णित हुआ कि अमल...

पृष्ठ ७११ का ४५०

اور حرکت تدریجیہ ہے تو بوفور انفصال قبل اتصال حکم استعمال نازل ہو جائیگا فافہم اور اگر پہلے سے کوئی نجاست نہیں اور چلو یا لپ حسب ضرورت لیا اور زمین کھل گئی مستعمل نہ ہوگا اگرچہ وسط حوض میں جاکر پانی لیا ہو کہ اگرچہ زمین کھلنے سے پانی قلیل ہو گیا مگر ضرورت اعتراف تو مٹکے میں بھی معاف ہے جبکہ کوئی چھوٹا برتن پانی لینے کیلئے نہ ہو اور اس وقت اگرچہ اس کے پاؤں اُس قلیل پانی میں ہیں مگر اندر جاتے ہوئے دُھل چکے ہیں ہاں اُس زمین کے کھلتے وقت اسے حدث واقع ہو تو ضرور پاؤں کی وجہ سے سارا پانی مستعمل ہو جائیگا ان وجوہ کی نظر سے وہ شرط کی گئی تو ظاہر الروایہ اور یہ قول مفتی بہ دونوں متوافق اور باہم اصل وفرع ہیں واللہ الحمد۔

یہ تمام وہ ہے جو اس کثیر المعاصی پر ظاہر ہوا اور اس سے ائمہ کے ارشادات جمع ہو جاتے ہیں اور شبہات دفع ہو جاتے ہیں، تمام تعریفیں مرادیں دینے والے اللہ تعالیٰ کیلئے، اور اللہ تعالیٰ رحمتیں نازل فرمائے نیکیوں کے صحیح کرنے والے اور غلطیوں کو معاف فرمانے والے پر اور آپ کی آل اور آپ کے صحابہ سادات کرام پر، اور آپ کے بیٹے اور جلیل القدر راسخ علم والی جماعت پر اور ان کے ساتھ ہم پر، ان کی بدولت اور ان کے وسیلے سے اس دن تک جب ہمارے حبیب شفاعتوں کیلئے کھڑے ہوں گے، ان پر اور ان کے تمام متبعین پر پاکیزہ رحمتیں، نشوونما پانے والے سلام اور بابرکت تحفے، آمین، سب تعریفیں اللہ رب العلمین کیلئے، اس کے باوجود میں یہ نہیں کہتا کہ حکم یہ ہے، میں تو صرف اتنا کہتا ہوں کہ حکم یہ ہے جو مجھے ظاہر ہوا، اگر درست ہے تو اللہ تعالیٰ وہاب کریم کی طرف سے اور اس کے لیے حمد ہے، اور اگر خطا ہے تو

میری طرف سے اور شیطان سے ہے، میں اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں شیطان سے برات کا اظہار کرتا ہوں، تمام تعریفیں اللہ رب العلمین کیلئے، اللہ بہتر جانتا ہے۔

بشارۃ: ماتقدم من قول البحر ان العمل والفتوی ابدا بقول الامام الاعظم رضی اللہ تعالی عنہ۔

بشارت: اس سے پہلے بحر کا جو قول بیان ہوا کہ عمل

[Arabic Passage]: And even if the mentors (Mashaykh) gave a legal opinion (Fatwa) contrary to it, Al-Shami affirmed it in several places and disputed it in others. I had intended to mention this research, but then I saw that the discourse would be lengthy, and unrelated sections would create a long gap. So, I abbreviated it then, and by the grace of Allah Almighty, I separated it into an important treatise. I deemed its annexation here as a completion of the discourse and a fulfillment of the purpose. And here it is; all praise belongs to Allah, the Bestower of favors.

[Urdu Translation]: And the decree (Fatwa) is always based on the saying of Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), even if the scholars issue a decree contrary to it. Al-Allama Al-Shami supported this saying in several places and differed from it in many others. It was my intention to mention this discussion here, but then I thought the discourse would become long, and there would be a significant gap due to unrelated talk. Thus, I concluded the conversation here and, by the grace of Allah Almighty, separated it as a significant treatise. For the completion of the discourse and to fulfill the purpose, I decided to append it here. And that treatise is this; all praise is for Allah, the Master of bounties. (T)

(Note: In the original book, the treatise "Ajla-ul-A'lam" was present here, which has been included in the first volume as 'Rasm-ul-Mufti'.)

[अरबी पाठ]: वा इन अफ़्तल मशाइख बि-खिलाफिही अक़र्रहुश शामिय्यु फी मवाज़िअ व नाज़ा-अहु फी मवाज़िअ व कुन्तु अरादतु अन अज़कुरा हाज़ल बह्स सुम्मा राअैतु अनल कलामा यतूलु, व यक़्तउ बिल-अजनबिय्यिल फ़स्लत तवीलु, फ़-तवैतुहू सुम्मा, व अफ़रज़्तुहू बि-हम्दिल्लाहि तआला रिसालतन मुहिम्मतन, राअैतु इल्हाक़हा हाहुना इत्मामन लिल-कलामि, व इसआ़फ़न बिल-मरामि, व हा हिया ज़िही वल-हम्दु लिल्लाहि वलिय्यिल इनआम-

[उर्दू अनुवाद]: और फ़तवा हमेशा इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कौल पर है चाहे मशाइख (विद्वान) इसके विरुद्ध फ़तवा दें, अल्लामा शामी ने कई स्थानों पर इस कौल का समर्थन किया और कई जगहों पर इससे असहमति जताई, मेरा इरादा था कि इस चर्चा को यहाँ उल्लेख करता, फिर विचार आया कि कथन लंबा हो जाएगा, और असंगत बातचीत से दूरी लंबी हो जाएगी, इसलिए यहाँ मैंने बात समेट ली और अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ इसे एक महत्वपूर्ण शोध प्रबंध (रिसाला) के रूप में अलग कर दिया, बात की पूर्णता और उद्देश्य की पूर्ति के लिए इसे यहाँ जोड़ने का निर्णय लिया, और वह रिसाला यह है, समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला, इनाम देने वाले स्वामी, के लिए है। (त)

(नोट: मूल पुस्तक में यहाँ रिसाला "अजला-उल-आलाम" था जिसे 'रस्म-उल-मुफ्ती' के रूप में पहले खण्ड में शामिल कर दिया गया है)

आई. टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी www.dawateislami.net पृष्ठ 451/711

وان افتی المشائخ بخلافه اقره الشامي فی مواضع ونازعه فی مواضع وکنت اردت ان اذکر هذا البحث ثم رأیت ان الکلام یطول، ویقطع بالاجنبي الفصل الطویل، فطویته ثم، وافرزته بحمدالله تعالی رسالة مهمة، رأیت الحاقها ههنا اتماما للکلام، واسعافا بالمرام، وها هی ذه والحمد لله ولی الانعام-

اور فتوی ہمیشہ امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے قول پر ہے اگرچہ مشائخ اس کے خلاف پر فتوی دیں، علامہ شامی نے متعدد مقامات میں اس قول کی تائید کی اور کئی جگہوں میں اس سے اختلاف کیا، میرا ارادہ تھا کہ اس بحث کو اس جگہ ذکر کرتا، پھر خیال ہوا کہ کلام طویل ہو جائیگا، اور غیر متعلق گفتگو سے فاصلہ طویل ہو جائیگا، لہذا اس جگہ میں نے گفتگو سمیٹ لی اور بحمد اللہ تعالٰی اسے اہم رسالے کی صورت میں الگ کردیا، گفتگو کی تکمیل اور مقصد کے پورا کرنے کیلئے اس جگہ اس کے لاحق کرنے کا فیصلہ کیا، اور وہ رسالہ یہ ہے، تمام تعریفیں اللہ تعالٰی مالک انعام کیلئے۔ (ت)

(نوٹ: اصل کتاب میں یہاں رسالہ "اجلی الاعلام" تھا جسے رسم المفتی کے طور پر جلد اول میں شامل کردیا گیا ہے)

Fatawa Rizwiya, Volume 2

Fatwa titled: An-Nur wa al-Nuraq li Asfar al-Ma' al-Mutlaq 1332 AH (Light and Splendor for Clarifying the Ruling on Absolute Water)

Issue 55: 24 Jumada al-Ula 1332 AH

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. What do the scholars of religion say regarding this matter: what is the definition of 'Absolute Water' (al-ma' al-mutlaq) required for Wudu (ablution) and Ghusl (bathing), and what is 'Restricted Water' (al-ma' al-muqayyad)? Explain and be rewarded.

The Answer In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

[Arabic Prayer]: Praise be to Allah who sent down pure water from the sky to purify us with it, an absolute praise not restricted by number or duration, perpetually, forever, abundantly. And peace and blessings be upon the good, pure, purifying, and purified one, preferred over creation with great preference, and upon his family, his companions, his son, and his group, as long as the clouds rain abundant water. Amen. O Allah, guide us to truth and correctness.

[Urdu Translation of Prayer]: All praise is for Allah Almighty Who sent down pure water from the sky so that He may purify us through it; absolute praises without any numerical or ultimate restriction, always and forever, many many praises are for Him only. Countless blessings and peace be upon the fragrant, pure, purifier and the one who has great excellence over the creation, and upon his family, companions, son, and group, as long as the clouds continue to rain abundant water. Ameen. O Allah, guide us towards the true and straight path. (T)

This question is apparently small but its answer requires a great length; this issue is highly debated. This humble servant (faqir), by the grace of the All-Powerful (Al-Qadir), will first mention the specific detailed rulings mentioned in texts, then define 'absolute' and 'restricted' which is inherently a comprehensive universal rule and a criterion for other rules, then mention specific rules from core texts, then universal rules of later scholars, and then rulings on new specific issues. And my success is only by Allah.

Footnote 1: Although the word "An-Nuraq" is present in all printed editions, it was not found in dictionaries. In my opinion, it should be "Ar-Rawnaq" (splendor), through which both its numerical value and meaning would be correct. (Daim)

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

फ़तवा जिसका नाम है: अन-नूर वा अल-नुरक ली असफ़ार अल-मा' अल-मुतलक़ 1332 हिजरी (आब-ए-मुतलक़ का हुक्म रौशन करने के लिए नूर और रौनक़)

मसला 55: 24 जुमादा अल-ऊला 1332 हिजरी

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। हम उसकी हम्द करते हैं और उसके नेक रसूल पर दरूद भेजते हैं। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि वज़ू और गुस्ल के लिए जिस 'आब-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) की ज़रूरत होती है, उसकी तारीफ़ (परिभाषा) क्या है? 'आब-ए-मुक़य्यद' (सीमित जल) किसे कहते हैं? बयान फ़रमाएं, सवाब पाएं।

अल-जवाब बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम।

[अरबी प्रार्थना]: तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने आसमान से पाक पानी उतारा ताकि उसके ज़रिए हमें पाक करे, ऐसी मुतलक़ तारीफ़ जो गिनती या मुद्दत की पाबंदी से आज़ाद हो, हमेशा-हमेशा के लिए बहुत ज़्यादा। और दरूद-ओ-सलाम उस पाक-ओ-पाकीज़ा ज़ात पर जो मखलूक़ पर बड़ी फ़ज़ीलत रखने वाले हैं, और उनकी आल, असहाब, बेटे और जमाअत पर जब तक बादल भरपूर पानी बरसाते रहें। आमीन। ऐ अल्लाह! हमें हक़ और दुरुस्त राह की हिदायत अता फ़रमा।

[उर्दू अनुवाद]: तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने आसमान से पाक पानी उतारा कि इसके ज़रिए हमें पाक करे; मुतलक़ तारीफ़ें बग़ैर किसी क़ैद-ए-अददी और ग़ाई के हमेशा हमेशा बहुत ज़्यादा उसी के लिए हैं। तय्यब, ताहिर, पाक करने वाले और मखलूक़ पर फ़ज़ीलत रखने वाले पर और आप के आल, असहाब, बेटे और गिरोह पर बेशुमार सलात-ओ-सलाम हों जब तक बादल वाफ़र पानी बरसाते रहें, आमीन। ऐ अल्लाह हमें सच्चे और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमा। (त)

यह सवाल ज़ाहिर में छोटा है और इसका जवाब बहुत लंबा चाहता है; यह मसला निहायत ही बहस वाला है। यह फ़क़ीर अल्लाह की तौफ़ीक़ से पहले उन जुज़इयात (विवरणों) का ज़िक्र करेगा जिनका ज़िक्र शरीयत के नुसूस में है, फिर 'मुतलक़' और 'मुक़य्यद' की तारीफ़ करेगा जो कि असल में एक जामे कुल्लिया (व्यापक नियम) है और दूसरे नियमों के लिए मेयार है। फिर मतून (मूल पाठ) के जुज़ई क़वायद, फिर मुतअखिरीन (बाद के विद्वानों) के कुल्लिया क़वायद, फिर नए जुज़इयात के अहकाम। और मेरी कामयाबी सिर्फ़ अल्लाह की मदद से है।

हाशिया 1: अगरचे तमाम छपे हुए नुस्खों में लफ़्ज़ "अन-नुरक" है मगर लुग़त की किताबों में यह लफ़्ज़ नहीं मिला। मेरी राय में यह "अर-रौनक़" होना चाहिए, इससे अदद और मानी दोनों दुरुस्त रहते हैं। (दायम)

पृष्ठ 452/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

فتوٰی مسمّٰی بہ: النوروالنورق ۱ــہ لاسفارالماءالمطلق ۱۳۳۲ھ (آب مطلق کا حکم روشن کرنے کیلئے نور اور رونق)

مسئلہ ۵۵ : ۲۴ جمادی الاولٰی ۱۳۳۲ھ

بسم اللہ الرحمن الرحیم ، نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم ط کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ آبِ مطلق کہ وضو و غسل کیلئے درکار ہے اُس کی کیا تعریف ہے آبِ مقید کسے کہتے ہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

[عربی دعا]: الحمدللہ الذی انزل من السماء ماء طھورا لیطھرنا بہ تطھیرا ، حمدا مطلقا غیر مقید بعدد او امد دائما ابدا کثیرا کثیرا والصلاۃ و السلام علی الطیب الطاھر الطھور المطھر المفضل علی الخلق فضلا کبیرا ، وعلی آلہ وصحبہ وابنہ وحزبہ ما امطرت السحب ماء نمیرا امین اللھم ھدایۃ الحق والصواب۔

[اردو ترجمہ دعا]: تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لئے ہیں جس نے آسمان سے پاک پانی اتارا کہ اس کے ذریعے ہمیں پاک کرے مطلق تعریفیں بغیر کسی قید عددی اور غائی کے ہمیشہ ہمیشہ بہت زیادہ اسی کیلئے ہیں طیب، طاہر، پاک کرنے والے اور مخلوق پر فضلیت رکھنے والے پر اور آپ کے آل، اصحاب، بیٹے اور گروہ پر بے شمار صلوٰۃ وسلام ہوں جب تک بادل وافر پانی برساتے رہیں، آمین۔اے اللہ ہمیں سچے اور سیدھے راستے کی طرف ہدایت فرما۔ (ت)

یہ سوال بظاہر چھوٹا اور اس کا جواب بہت طول چاہتا ہے یہ مسئلہ نہایت معرکۃ الآراء ہے۔ فقیر بتوفیق القدیر اولاً جزئیات منصوصہ ذکر کرے پھر ۲ـہ تعریف مطلق و مقید کہ اصالۃ ضابطہ جامعہ کلیہ ہے اور دیگر ضوابط کے لئے معیار پھر ۳ـہ ضوابط جزئیہ متون پھر ۴ـہ ضوابط کلیہ متاخرین پھر ۵ـہ جزئیات جدیدہ کے احکام وماتوفیقی الا باللہ۔

۱ـہ : اگر چہ تمام مطبوعہ نسخوں میں لفظ "النورق" ہے مگر کتبِ لغت میں یہ لفظ نہیں ملا۔ میری رائے میں یہ "الرونق" ہونا چاہئے اس سے عدد اور معنی دونوں درست رہتے ہیں۔ (دائم)

Fatawa Razawiyya - Volume 2

Upon Him I rely, and to Him I return. Thus, this discourse is divided into five chapters: Chapter One: Specified Details, and they are of three types: Type One: Waters with which Wudu (ablution) is valid: (1) Rain, river, canal, springs, fountains, lakes, large ponds, and well water are obvious. Especially noteworthy is the blessed water of Zamzam, regarding which, according to our noble Imams, performing Wudu and Ghusl (ritual bath) with it is permissible without any dislike (karahat). However, using it for Istinja (cleaning after using the toilet) after using a clod is disliked, and washing off impurities with it is prohibited. It is mentioned in Tanweer and Durr-e-Mukhtar:

[Table 1] Arabic: Ritual impurity is removed absolutely with absolute water, such as rainwater, valleys, springs, wells, seas, and Zamzam water, without dislike. From Ahmad [it is narrated that it is] disliked. Urdu: Ritual impurity is removed with absolute water like rainwater, water from valleys, springs, wells, canals, oceans, and Zamzam water. Removal of ritual impurity with Zamzam water is without dislike, whereas according to Imam Ahmad, it is with dislike. (T)

Also in Durr [al-Mukhtar]:

[Table 2] Arabic: It is disliked to perform Istinja with Zamzam water, but not Ghusl. Urdu: Performing Istinja with Zamzam water is disliked; performing Ghusl is not disliked. (T)

In Shami, it is stated:

[Table 3] Arabic: And likewise, removing real filth from one's clothes or body, to the extent that some scholars have mentioned its prohibition. Urdu: And similarly, removing real filth from the body or clothes; some scholars have even written it as forbidden (haram). (T)

[Commentary below tables] Note 1: Meaning if purification is done with them, it will be valid and prayer will be correct, even if the use of that water is disliked or even forbidden, as will be explained in detail later. 12 (M). Note 2: The most supreme, most excellent of all waters in both worlds, better than Zamzam and better than Kawsar, is that blessed water which many times, through a miracle, flowed like a river from the blessed fingers of the Pure Master, Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), and thousands drank and performed Wudu. Scholars clarify that this water is superior to Zamzam and Kawsar, but where can one attain it now? Further, every type of water will be mentioned; in their context, it was not deemed

appropriate to mention its name without necessity. 12 - From him, may he be forgiven (M).

Footnotes: 1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/34 2 Durr-e-Mukhtar, end of the Book of Hajj, Mujtabai Delhi, 1/184 3 Radd al-Muhtar, end of the Book of Hajj, Mustafa al-Babi Egypt, 2/78

फतावा रज़विया - जिल्द-2

उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं लौटता हूँ। इस प्रकार, यह विमर्श पाँच अध्यायों में विभाजित है: अध्याय एक: विनिर्दिष्ट विवरण, और वे तीन प्रकार के हैं: प्रकार एक: वह पानी जिससे वज़ू करना सही है: (1) बारिश, नदी, नहर, चश्मे, झरने, झील, बड़े तालाब, कुओं का पानी तो स्पष्ट है। विशेष रूप से उल्लेखनीय मुबारक ज़मज़म शरीफ़ का पानी है जिसके बारे में हमारे प्रतिष्ठित इमामों के अनुसार उससे वज़ू और गुस्ल करना बिना किसी नापसंदगी (कराहियत) के जायज़ है। लेकिन ढेले के इस्तेमाल के बाद उससे इस्तिंजा करना नापसंद है और गंदगी धोना मना है। तनवीर और दुर्रे मुख्तार में है:

[तालिका 1] अरबी: अशुद्धि को पूर्णतः शुद्ध जल से दूर किया जाता है, जैसे कि वर्षा जल, घाटियों, चश्मों, कुओं, समुद्रों और ज़मज़म का जल, बिना किसी कराहियत के। अहमद से [वर्णित है कि यह] मकरूह (नापसंद) है। उर्दू: रस्मी अशुद्धि शुद्ध जल से दूर होती है जैसे आसमान का पानी, घाटियों, चश्मों, कुओं, नहरों, समुद्रों और ज़मज़म का पानी। ज़मज़म के पानी से अशुद्धि दूर करना बिना कराहियत के है, जबकि इमाम अहमद के अनुसार यह कराहियत के साथ है। (त)

दुर्रे मुख्तार में यह भी है:

[तालिका 2] अरबी: ज़मज़म के पानी से इस्तिंजा करना मकरूह है, गुस्ल करना नहीं। उर्दू: ज़मज़म के पानी से इस्तिंजा करना मकरूह है; गुस्ल करना मकरूह नहीं। (त)

शामी में उल्लेख है:

[तालिका 3] अरबी: और इसी प्रकार कपड़ों या शरीर से वास्तविक गंदगी को दूर करना, यहाँ तक कि कुछ विद्वानों ने इसके निषेध (तहरीम) का उल्लेख किया है। उर्दू: और इसी प्रकार शरीर या कपड़ों से वास्तविक गंदगी को दूर करना; यहाँ तक कि कुछ विद्वानों ने तो इसे हराम तक लिख दिया है। (त)

[तालिका के नीचे का पाठ] नोट 1: यानी अगर उनसे शुद्धिकरण किया जाए तो हो जाएगा और नमाज़ सही होगी, भले ही उस पानी का उपयोग मकरूह या हराम हो, जैसा कि विस्तार से बताया जाएगा। 12 (म)। नोट 2: दोनों जहानों के सभी पानियों में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ, ज़मज़म से श्रेष्ठ, कौसर से श्रेष्ठ वह मुबारक पानी है जो कई बार चमत्कार के रूप में पावन स्वामी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) की मुबारक उंगलियों से नदी की तरह बहा और हज़ारों ने पिया और वज़ू किया। विद्वान स्पष्ट करते हैं कि वह पानी ज़मज़म और कौसर सबसे श्रेष्ठ है, लेकिन अब वह कहाँ नसीब? आगे हर प्रकार के पानी का उल्लेख होगा; उनके संदर्भ में बिना आवश्यकता के उसका नाम लेना उचित नहीं समझा गया। 12 - मिन्हु, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 दुर्रे मुख्तार, पानियों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/34 2 दुर्रे मुख्तार, हज्ज की पुस्तक का अंत, मुजतबाई दिल्ली, 1/184 3 रद अल-मुह्तार, हज्ज की पुस्तक का अंत, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 2/78

पृष्ठ 453/711

علیہ توکلت والیہ انیب۔ یوں یہ کلام پانچ فصل پر منقسم ہوا: فصل اول: جزئیات منصوصہ، اور وہ تین قسم ہیں: قسم اول: وہ پانی جن سے وضو صحیح ہے: (۱) مینہ، دریا، نہر، چشمے، جھرنے، جھیل، بڑے تالاب، کنویں کے پانی تو ظاہر ہیں بالخصوص قابل ذکر مائے مبارک زمزم شریف ع۱ہ ہے کہ ہمارے ائمہ کرام کے نزدیک اُس سے وضو و غسل بلا کراہت جائز ہے اور ڈھیلے کے بعد استنجا مکروہ اور نجاست دھونا ممنوع۔ تنویر و در مختار میں ہے:

[جدول 1] عربی: یرفع الحدث مطلقا بماء مطلق کماء سماء واودیة وعیون وابار وبحار وماء زمزم بلا کراھة وعن احمد یکرہ ۱۔ اردو: حدث مطلق پانی سے رفع ہوتا ہے جیسے آسمان کا پانی، وادیوں، چشموں، کنوؤں، نہروں، سمندروں اور زمزم کا پانی، زمزم کے پانی سے رفع حدث بلا کراہت ہوتا ہے جبکہ امام احمد کے نزدیک کراہت کے ساتھ ہوتا ہے۔ (ت)

نیز ج در میں ہے:

[جدول 2] عربی: یکرہ الاستنجاء بماء زمزم لا الاغتسال ۲۔ اردو: زمزم کے پانی سے استنجا مکروہ ہے غسل کرنا مکروہ نہیں۔ (ت)

شامی میں ہے:

[جدول 3] عربی: وکذا ازالة النجاسة الحقیقیة من ثوبه اوبدنه حتی ذکر بعض العلماء تحریم ذلك اه ۳۔ اردو: اور اسی طرح بدن یا کپڑے سے نجاست حقیقیہ کا دور کرنا، یہاں تک بعض علماء نے تو اس کو حرام تک لکھ دیا ہے۔ (ت)

[جدول کے نیچے تحریر] ع۱ہ یعنی اُن سے طہارت کی جائے تو ہو جائے گی اور اس سے نماز صحیح ہوگی اگرچہ اُس پانی کا استعمال مکروہ بلا کہ حرام ہو جیسا کہ مفصلاً بیان ہوگا ۱۲ (م)۔ ع۲ سب سے اعلیٰ سب سے افضل دونوں جہان کے سب پانیوں سے افضل، زمزم سے افضل، کوثر سے افضل وہ مبارک پانی ہے کہ بارہا براہِ اعجاز حضور انور سید اطہر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی انگشتانِ مبارک سے دریا کی طرح بہا اور ہزاروں نے پیا اور وضو کیا۔ علماء تصریح فرماتے ہیں کہ وہ پانی زمزم و کوثر سب سے افضل مگر اب وہ کہاں نصیب اور آگے ہر قسم کے پانی مذکور ہوں گے اُن کے سلسلے میں بلا ضرورت اس کا نام لینا مناسب نہ جانا ۱۲ منہ غفر لہ (م)

حواشی: 1 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۴ 2 در مختار آخر کتاب الحج مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۴ 3 رد المحتار آخر کتاب الحج مصطفی البابی مصر ۲/ ۷۸

Fatawa Razawiyya Volume II

I say: (1) Absolute dislike (Karahah) refers to prohibition (Tahrim). (2) Applying the term 'Haram' to something prohibitively disliked (Makruh Tahrimi) is not far-fetched. (3) Thus, there is no contradiction. Yes, (4) if one cleanses themselves with a clod of earth (Istinja with madar), the correct view is that it is purifying. In such a case, only bad manners (su-e adab) remain, making it mildly disliked (Makruh Tanzihi). This is unlike bathing (ghusl). There is a clear distinction between intentional and incidental actions. This is what has become clear to me. (T)

I say: This is also a clear proof that the authentic narration from our Imams is that used water (ma-e must'amal) is purifying, otherwise there would be no difference between bathing and cleansing (istinja). (2) Regarding sea water, it is reported from some Companions (Allah be pleased with them) that they considered performing ablution (wudu) with it as impermissible, while there is a consensus (ijma) among us and the majority of the Ummah on the permissibility of performing wudu and bathing with it.

In 'Al-Bahr', regarding his statement "and the sea", there is a refutation of those who say that sea water is not water, to the extent that it is narrated from Ibn Umar (Allah be pleased with both of them) that he said regarding sea water: "To me, performing Tayammum (dry ablution) is preferable to using it," as quoted from him in 'As-Siraj al-Wahhaj'. And As-Sayyid At-Tahtawi said in the marginalia of 'Al-Maraqi': Ibn Sayyid said in 'Al-Muhkam': 'Al-Bahr' means a large body of water, whether salty or sweet, though it is commonly used for salty water. The specific mention of it is to dispel the notion that purification with it is not permissible because it is bitter and foul-smelling, as some Companions imagined. I say: (5) This phrasing is far from proper etiquette; it should be avoided. It is stated in a narration: "Whomever sea water does not purify, may Allah never purify him." I say: This was narrated by Dar al-Qutni and Al-Bayhaqi.

1. Al-Bahr ar-Ra'iq, Book of Purification, Discussion on Water, H.M. Saeed Company Karachi 26/1
2. Hashiyat at-Tahtawi 'ala al-Maraqi, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Karachi, p. 13
3. Hashiyat at-Tahtawi 'ala al-Maraqi, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Karachi, p. 13

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

मैं कहता हूँ: (१) पूर्ण नापसंदगी (कराहियत) से तात्पर्य निषेध (तहरीम) है। (२) 'हराम' शब्द का प्रयोग मकरूह तहरीमी पर करना कोई दूर की बात नहीं है। (३) इसलिए, कोई विरोधाभास नहीं है। हाँ, (४) यदि कोई मिट्टी के ढेले से इस्तेंजा (शौच के बाद सफाई) करता है, तो सही मत यह है कि वह पवित्र करने वाला है। ऐसी स्थिति में केवल अभद्रता (सू-ए अदब) रह जाती है, जिससे यह मकरूह तंज़ीही (हल्की नापसंदगी) हो जाता है। यह स्नान (ग़ुस्ल) के विपरीत है। इरादतन और आकस्मिक कार्यों के बीच स्पष्ट अंतर है। यह वह है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ है। (त)

मैं कहता हूँ: यह भी एक स्पष्ट प्रमाण है कि हमारे इमामों से सही वर्णन यह है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी (मा-ए मुस्तअमल) पवित्र करने वाला है, अन्यथा ग़ुस्ल और इस्तेंजा में कोई अंतर नहीं होता। (२) समुद्र के पानी के संबंध में, कुछ सहाबा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से यह वर्णित है कि वे उससे वज़ू करना नाजायज़ समझते थे, जबकि हमारे और उम्मत के बहुमत के बीच उसके जायज़ होने और उससे वज़ू करने पर इज्मा (आम सहमति) है।

'अल-बहर' में, उनके कथन "और समुद्र" के बारे में, उन लोगों का खंडन है जो कहते हैं कि समुद्र का पानी पानी नहीं है, यहाँ तक कि इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) से वर्णित है कि उन्होंने समुद्र के पानी के बारे में कहा: "मेरे लिए उससे बेहतर यह है कि मैं तयम्मुम कर लूँ", जैसा कि 'अस-सिराज अल-वहाज' में उनसे उद्धृत किया गया है। और अस-सय्यद अत-तहतावी ने 'अल-मराक़ी' के हाशिया (टिप्पणी) में कहा: इब्ने सैय्यद ने 'अल-मुहकम' में कहा: 'बहर' से तात्पर्य विशाल जलराशि है, चाहे वह खारी हो या मीठी, हालांकि आम तौर पर इसका उपयोग खारी पानी के लिए किया जाता है। इसका विशेष उल्लेख इस धारणा को दूर करने के लिए है कि इसके साथ पवित्रता प्राप्त करना जायज़ नहीं है क्योंकि यह कड़वा और दुर्गंधयुक्त होता है, जैसा कि कुछ सहाबा ने सोचा था। मैं कहता हूँ: (५) यह शब्दावली शिष्टाचार से दूर है; इससे बचना चाहिए। एक रिवायत में कहा गया है: "जिसे समुद्र का पानी पवित्र न करे, अल्लाह उसे कभी पवित्र न करे।" मैं कहता हूँ: इसे दार अल-कुतनी और अल-बैहकी ने रिवायत किया है।

1. अल-बहर अर-राइक, किताबुत तहारत, पानी पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 26/1
2. हाशिया अत-तहतावी अलल मराक़ी, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कराची, पृष्ठ 13
3. हाशिया अत-तहतावी अलल मराक़ी, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कराची, पृष्ठ 13

اقول: (۱) مطلق الکراہۃ للتجریم (۲) واطلاق الحرام علی المکروہ تحریماً غیر بعید (۳) فلا خلف نعم (۴) اذا استنجی بالمدر فالصحیح انہ مطہر فلا یبقی الا اساءۃ ادب فیکرہ تنزیہا بخلاف الاغتسال ففرق بین بین القصدی والضمنی ھٰذا ماظہر لی۔ میں کہتا ہوں مطلق کراہت سے مراد کراہت تحریمی ہوتی ہے، اور حرام کا اطلاق مکروہ تحریمی پر کوئی بعید امر نہیں، تو کوئی مخالفت نہیں، ہاں اگر کسی نے ڈھیلے سے استنجا کرلیا تو صحیح یہ ہے کہ یہ پاک کرنے والا ہے تو ایسی صورت میں صرف سوء ادبی رہے گی اور مکروہ تنزیہی ہوگا۔ بخلاف غسل کے تو ارادی اور ضمنی کاموں میں واضح فرق ہوتا ہے ھذا ما ظہر لی۔ (ت)

اقول: یہ بھی دلیل واضح ہے کہ ہمارے ائمہ سے روایت صحیحہ طہارت مائے مستعمل ہے ورنہ غسل واستنجا میں فرق نہ ہوتا۔ (۲) سمندر کا پانی بعض صحابہ رضی اللہ تعالی عنہم سے منقول کہ اُس سے وضو ناجائز جانتے اور ہمارے اور جمہور امت کا اُس سے جواز و وضو پر اجماع ہے،

فی البحر وفی قولہ والبحر رد قول من قال ان ماء البحر لیس بماء حتی حکی عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما انہ قال فی ماء البحر التیمم احب الی منہ کما نقلہ عنہ فی السراج الوھاج ۱ اہ وقال السید ط فی حاشیۃ المراقی قال ابن سیدہ فی المحکم البحر الماء الکثیر ملحاً او عذباً وغلب علی الملح فالتنصیص علیہ دفع لتوھم عدم جواز التطہیر بہ لانہ مرمنتن کما توھم بعض الصحابۃ ۲ اہ۔ اقول: (۵) ھذا اللفظ بعید عن الادب فلیجتنب قال وفی الخبر من لم یطہرہ ماء البحر فلا طہرہ اللہ ۳ اہ قلت: رواہ الدار قطنی و البیہقی اور اس کے قول "والبحر" میں ان لوگوں کی تردید ہے جو کہتے ہیں ماء البحر پانی نہیں ہے یہاں تک کہ ابن عمر سے منقول ہے کہ وہ فرماتے تھے سمندری پانی سے میرے نزدیک تیمم کرلینا زیادہ پسندیدہ عمل ہے، سراج الوہاج میں نقل کیا ہے، اور "ط" نے حاشیہ

مراقی الفلاح میں فرمایا کہ ابن سیدہ نے محکم میں فرمایا بحر سے مراد کثیر پانی ہے خواہ میٹھا ہو یا نمکین، لیکن عام طور پر اس کا استعمال نمکین کے لئے ہوتا ہے، اس کی تصریح اس وہم کو دفع کرنے کیلئے ہے کہ اس سے پاکی کا حاصل کرنا جائز نہیں کیونکہ یہ کڑوا اور بدبودار ہوتا ہے جیسے کہ بعض صحابہ نے توہم کیا اھ میں کہتا ہوں یہ لفظ بے ادبی کے ہیں، ان سے بچنا چاہئے، فرمایا ایک روایت میں ہے کہ جس کو سمندر کا پانی پاک نہ کر سکے تو خدا اس کو کبھی پاک نہ کرے۔ (ت) میں کہتا ہوں اس کو دار قطنی اور بیہقی نے

۱- البحر الرائق کتاب الطھارۃ بحث الماء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۶ ۲- حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۱۳ ۳- حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۱۳

Fatawa Razawiyya - Volume Two

Both [narrators] recorded it in their Sunan with a weak chain of narration, without the word 'water' [maa], from Abu Huraira (Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Therefore, it is preferable (1) to limit oneself to what its commentator, meaning the scholar Ash-Shurunbulali, relied upon, where he stated: due to the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Its water is purifying and its dead [sea creatures] are lawful." (T) I say: It was narrated by Ahmad, the four [Sunan compilers], Ibn Hibban, and Al-Hakim from Abu Huraira (Allah be pleased with him) with a sound chain. And it was narrated by Ahmad, Ibn Majah, and the latter two, along with Al-Daraqutni, and Al-Tabarani in 'Al-Kabir' from Jabir; and by Ibn Majah from Abu Al-Farasi; and by Al-Daraqutni and Al-Hakim from 'Ali and from Ibn 'Amr; and by Abd al-Razzaq from Anas, and by Al-Daraqutni from him too, as well as from Ibn 'Umar; and also from Jabir from Abu Bakr Al-Siddiq; and by Ibn Mardawayh and Al-Najjar from Abu Al-Tufail from Al-Siddiq (may Allah be pleased with them all), all from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). In another narration by Ibn Mardawayh, similar to Al-Daraqutni, it is narrated from Abu Al-Tufail from Al-Siddiq as his own statement. And Abd al-Razzaq and Abu Bakr bin Abi Shaybah narrated from Ikrimah that Hazrat 'Umar (may Allah be pleased with him) was asked about performing ablution with sea water, to which he replied, "Glory be to Allah! What water is purer than sea water?" In one narration, the word 'atyab' [purest/most pleasant] is used (2). For this reason, Ibn Abd al-Hakam in 'Futuh Misr' and Al-Bayhaqi narrated from him (may Allah be pleased with him) that he said, "Bathe with sea water, for it is blessed."

Footnotes: 1. Maraqi al-Falah, Discussion on Sea Water, p. 13, Al-Azhariyah Press, Egypt. 2. Musannaf Abd al-Razzaq, Chapter on Ablution with Sea Water, 1/95, Maktabah al-Islami, Beirut.

दोनों ने अपनी 'सुनन' में इसे एक कमज़ोर सनद के साथ रिवायत किया है, जिसमें 'पानी' (मा) शब्द का उल्लेख नहीं है, यह अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत है जो नबी पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से है। इसलिए अधिक बेहतर (1) यही है कि उसी पर भरोसा किया जाए जिसे इसके शारह (टीकाकार) यानी अल्लामा शुरुनबुलाली ने पेश किया है, जहाँ उन्होंने इस हदीस से दलील ली है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "समुद्र का पानी पाक करने वाला है और इसका मुर्दा हलाल है।" (त) मैं कहता हूँ कि इसे अहमद और चारों (सुनन संकलनकर्ताओं) ने, और इब्न हिब्बान व हाकिम ने अबू हुरैरा से सही सनद के साथ रिवायत किया है। और अहमद, इब्न माजा, इब्न हिब्बान, हाकिम, दारकुतनी और तबरानी ने 'अल-कबीर' में जाबिर से; और इब्न माजा ने अबुल फ़रासी से; और दारकुतनी व हाकिम ने अली से और इब्न अम्र से; और अब्दुर रज्जाक ने अनस से, और दारकुतनी ने उनसे व इब्न उमर से भी; और जाबिर ने अबू बक्र सिद्दीक़ से; और इब्न मरदवैया व इब्न नज्जार ने अबू तुफैल से और उन्होंने अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की है, ये सभी नबी पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मरफ़ू रिवायत हैं। इब्न मरदवैया की एक दूसरी सनद में, दारकुतनी की तरह, अबू तुफैल से अबू बक्र सिद्दीक़ के अपने कौल (कथन) के रूप में यह रिवायत मौजूद है। और अब्दुर रज्जाक और अबू बक्र बिन अबी शैबा ने इकरीमा से रिवायत की है कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से समुद्र के पानी से वज़ू के बारे में पूछा गया, तो आपने फरमाया: "सुभान अल्लाह! समुद्र के पानी से अधिक पाक और कौन सा पानी हो सकता है?" और एक रिवायत में 'अत्यब' (अधिक शुद्ध) शब्द का प्रयोग हुआ है (2)। इसी वजह से इब्न अब्द अल-हकम ने 'फ़ुतुह मिस्र' में और बैहकी ने उनसे रिवायत की है कि आपने फरमाया: "समुद्र के पानी से ग़ुस्ल (स्नान) करो क्योंकि वह बरकत वाला है।"

पादलेख: 1. मराकुल फलाह, समुद्र के पानी पर चर्चा, पृष्ठ 13, अज़हरिया प्रेस, मिस्र। 2. मुसन्नफ़ अब्दुर रज्ज़ाक, समुद्र के पानी से वज़ू का अध्याय, 1/95, मकतबा अल-इस्लामी, बेरूत।

اپنی سنن میں کمزور سند سے روایت کیا، یہ ابو ہریرہ کی روایت نبی پاک صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ہے اور اس میں ماء کا لفظ نہیں ہے تو زیادہ بہتر ہے کہ اس پر اقتفاء کیا جائے جس سے اس کے شارح نے استدلال کیا ہے، یعنی علامہ شرنبلالی نے، انہوں نے اس حدیث سے استدلال کیا ہے "سمندر کا پانی پاک کرنے والا ہے اور اس کا مردہ حلال۔ (ت) میں کہتا ہوں اس کو احمد اور چاروں نے اور ابن حبان، حاکم نے ابوہریرہ سے بسند صحیح روایت کیا ہے، اور احمد ابن ماجہ، ابن حبان، حاکم، دار قطنی اور طبرانی نے کبیر میں جابر سے اور ابن ماجہ نے ابو الفراسی سے اور دار قطنی اور حاکم نے علی سے اور ابن عمرو سے اور عبد الرزاق نے انس سے اور دار قطنی نے انس سے اور ابن عمرو سے نیز جابر سے ابو بکر صدیق سے اور ابن مردویہ اور ابن نجار نے ابو الطفیل سے ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے سب نے نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے، دوسری سند میں ابن مردویہ نے دار قطنی کی طرح ابو الطفیل سے ابو بکر صدیق سے ان کے قول سے۔ اور عبدالرزاق اور ابو بکر بن ابی شیبہ نے عکرمہ سے روایت کی کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سمندر سے وضو کی بابت دریافت کیا گیا تو آپ نے فرمایا سبحان اللہ ، سمندر کے پانی سے زیادہ کون سا پاک ہے، اور ایک روایت میں اطیب کا لفظ ہے، اور ابو بکر بن ابی شیبہ اور ابن عبدالحکم نے فتوح مصر میں اور بیہقی نے اُن سے روایت کی کہ آپ نے فرمایا سمندر کے پانی سے غسل کرو کیونکہ وہ مبارک ہے،

حواشی: 1 مراقی الفلاح بحث الماء البحر ص ۱۳ مطبعہ ازہریۃ مصر 2 مصنف عبدالرزاق باب الوضوء من ماء البحر ۹۵/۱ مکتبۃ الاسلامی بیروت

فتاوی رضویه (Fatawa Rizvia) جلد ثانی (Volume 2)

...from seawater, for it is blessed.[1]

(Ta) said: Some people have deemed wudu (ablution) with salty seawater to be disliked (makruh).[2] Their reasoning is based on the hadith of Ibn Umar (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "No one should travel by sea except a pilgrim performing Hajj or Umrah, or one fighting in the path of Allah, for beneath the sea is fire, and beneath the fire is a sea." Abu Dawud is unique (munfarid) in narrating this.[3] (T)

I say: He is not unique in it; rather, (2) it was narrated before him by Sa'id bin Mansur in his Sunan and others, unless the intention is uniqueness among the 'Six' (canonical books of hadith). Furthermore, this is not (3) a hadith of Ibn Umar al-Faruq (may Allah be pleased with them both); rather, it was narrated by 'D' (Abu Dawud) from Mutarrif, who is Ibn Turayf, a trustworthy (thiqa) and virtuous person, from Bishr Abi Abdullah who is Al-Kindi, who is unknown (majhul). Al-Dhahabi said: 'Bishir bin Muslim is hardly known.'[4] He is Abu Abdullah Al-Kindi Al-Kufi, unknown, from Abdullah bin Amr (may Allah be pleased with them both), i.e., Ibn al-Aas. 'Kh' (Bukhari) said his hadith is not authentic, and Ibn Hibban included him among the trustworthy (thiqat) followers of the Tabi'in according to his rule, saying it is narrated from a man from Ibn Amr. And Allah knows best.[5] Yes, in Musnad al-Firdaws...

---

1 Reference: Kanz al-Ummal, Chapter on Waters, published by Mu'assasat al-Risala, Beirut 9/572 2 Tahtawi on Maraqi al-Falah, Discussion on Sea Water, Azhari Press, Egypt, p. 13 3 Tahtawi on Maraqi al-Falah, Discussion on Sea Water, Azhari Press, Egypt, p. 13 4 Mizan al-I'tidal, Bishr Abdullah, Beirut 1/327 5 Mizan al-I'tidal, Bashir bin Muslim, Beirut 1/329 Page 456 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द 2

...समुद्र के पानी से, क्योंकि वह बरकत वाला है।[1]

"ता" ने कहा कि कुछ लोग नमकीन समुद्र के पानी से वज़ू करने को मकरूह (नापसंद) करार देते हैं।[2] उनका तर्क इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस से है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "समुद्र की यात्रा केवल हज या उमराह करने वाला या अल्लाह की राह में लड़ने वाला ही करे, क्योंकि समुद्र के नीचे आग है और आग के नीचे समुद्र है।" इसके वर्णन में अबू दाऊद अकेले (मुनफ़रिद) हैं।[3] (त)

मैं कहता हूँ कि वह अकेले नहीं हैं, बल्कि उनसे पहले इसी को सईद बिन मंसूर ने अपनी सुनन में और अन्य मुहद्दिसीन ने रिवायत किया है, हाँ अगर छह (प्रमुख हदीस ग्रंथों) के बीच अकेले होने का दावा हो तो सही है। फिर यह हदीस इब्ने उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की नहीं है; इसे 'द' (अबू दाऊद) ने मुतर्रिफ़ से रिवायत किया है जो इब्ने तुरैफ़ हैं, वह भरोसेमंद (सिक़ाह) और फ़ाज़िल हैं, बिश्र अबू अब्दुल्ला से जो अल-किंदी हैं, वह मजहूल (अज्ञात) हैं। ज़हबी ने कहा कि बशीर बिन मुस्लिम को कोई नहीं जानता।[4] वह अबू अब्दुल्ला अल-किंदी अल-कूफ़ी हैं, मजहूल हैं, अब्दुल्ला बिन अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से यानी इब्न अल-आस से। 'ख' (बुखारी) ने कहा कि उनकी हदीस सही नहीं है, और इब्न हिब्बान ने अपने नियम के अनुसार उन्हें ताबेईन के अनुयायियों के भरोसेमंदों (सिक़ाह) में ज़िक्र किया और फ़रमाया कि यह इब्ने अम्र से एक व्यक्ति के माध्यम से वर्णित है। और अल्लाह बेहतर जानता है।[5] हाँ, मुस्नद फ़िरदौस में...

---

1 सन्दर्भ: कंज़ अल-उम्माल, पानी पर अध्याय, मुअस्सासत अल-रिसाला, बेरूत 9/572 द्वारा प्रकाशित 2 मराक़ी अल-फ़लाह पर तहतावी, समुद्री पानी पर चर्चा, अज़हरी प्रेस, मिस्र, पृ. 13 3 मराक़ी अल-फ़लाह पर तहतावी, समुद्री पानी पर चर्चा, अज़हरी प्रेस, मिस्र, पृ. 13 4 मीज़ान अल-इतिदाल, बिश्र अब्दुल्ला, बेरूत 1/327 5 मीज़ान अल-इतिदाल, बशीर बिन मुस्लिम, बेरूत 1/329 पृष्ठ 456 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

من ماء البحر فانه مبارک[1]

"ط" نے کہا کچھ لوگ نمکین سمندر سے وضو کو مکروہ قرار دیتے ہیں،[2] ان کا استدلال ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث سے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سمندر میں صرف حاجی یا عمرہ کرنے والا یا غازی سفر کرے غیر نہیں کیونکہ سمندر کے نیچے آگ ہے اور آگ کے نیچے سمندر ہے، اس کی روایت میں ابو داؤد منفرد ہیں۔[3] (ت)

اقول: لم یتفرد به بل (۲) رواه قبله سعید بن منصور في سننه واخرون الا ان یرید التفرد من بین الستة ثم لیس هذا (۳) حدیث ابن عمر الفاروق رضی الله تعالی عنهم انما رواه د عن مطرف هو ابن طریف ثقة فاضل عن بشر ابی عبدالله هو الکندی مجهول قال الذهبی لا یکاد یعرف عن بشیر [4] بن مسلم هو ابو عبدالله الکندی الکوفی مجهول عن عبدالله بن عمرو رضی الله تعالی عنهما یعنی ابن العاص قال خ لم یصح حدیثه و اورده ابن حبان علی قاعدته في ثقات اتباع التابعین وقال روی عن رجل عن ابن عمرو والله تعالی اعلم [5] نعم في مسند فردوس

---

1 بحوالہ کنز العمال فصل فی المیاہ مطبوعہ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۹/۵۷۲ 2 طحطاوی علی مراقی الفلاح بحث الماء البحر مطبعہ ازہری مصر ص ۱۳ 3 طحطاوی علی مراقی الفلاح بحث الماء البحر مطبعہ ازہری مصر ص ۱۳ 4 میزان الاعتدال بشر عبد اللہ بیروت ۱/۳۲۷ 5 میزان الاعتدال بشیر بن مسلم بیروت ۱/۳۲۹ Page 456 of 711

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Right Column - Urdu Translation]: It is narrated from Ibn ‘Umar that under the sea is fire, and under the fire is a sea. AH. He narrated this marfu’an (directly attributed to the Prophet ﷺ). It is possible that Allah's statement 'By the swollen sea' [Quran 52:6] refers to this. And Allah Almighty knows best. 'Ta' [Al-Tahtawi] said: Ibn ‘Umar did not consider wudu and ghusl from ritual impurity (janaba) with sea water to be permissible. AH (T) I say: This narration is attributed to Ibn ‘Umar that sea water is not sufficient for wudu and ghusl from janaba, as there is fire under the sea, then water, then fire, until he mentioned seven seas and seven fires. I am not aware of its origin, and Allah knows best. In 'Hilyah', it is stated that purification with these waters is permissible, whether they are sweet or salty. The Book and Sunnah indicate this, and there is no known disagreement. However, it is narrated from some Sahaba that wudu with it is disliked, including Abdullah bin ‘Umar, while the majority view is that there is no dislike. AH. In the footnotes of 'Anqarawiyya' from 'Mukhtarat al-Nawazil', it is narrated from Ibn Abbas and Ibn ‘Umar that both... [narrated that wudu with sea water is disliked].

[Left Column - Original Arabic with Urdu notes]: Al-Firdous narrates from Ibn ‘Umar (may Allah be pleased with them both) marfu’an: "Under the sea is fire, under the fire is a sea, and under that sea is fire." [1] AH. It is possible that this is an indication of Allah’s statement: "By the swollen sea." And Allah Almighty knows best. (Ta') said: Ibn ‘Umar did not consider wudu or ghusl from janaba permissible with it [sea water]. [2] AH. I [the author] do not find an original source for this, and Allah knows best. I say: It is mentioned from him (may Allah be pleased with him) that he said: "Sea water is not sufficient for wudu or janaba, for under the sea is fire, then water, then fire," until he counted seven seas and seven fires. [3] And indeed, what is in 'al-Hilyah' is that the permissibility of purification with these waters, whether they are fresh or salty, is what the Book and Sunnah indicate, and no contradiction is known in any part of it. Yes, it was narrated from some Sahaba that wudu with sea water is disliked, among them being Abdullah bin ‘Umar, while the majority are of the opinion that it is not disliked. [4] AH. In the margin of 'al-Anqarawiyya' from 'Mukhtarat al-Nawazil', it is narrated from Ibn Abbas and Ibn ‘Umar (may Allah be pleased with them both) that they both said: "Wudu with sea water is disliked." [5]

[Footnotes]: 1. Musnad al-Firdous 2. Al-Tahtawi on Maraqi al-Falah, discussion on sea water, Azhariyya Egypt, p. 13. 3. Mentioned from Ibn ‘Umar. 4. Hilyah 5. On the

margin of Fatawa al-Anqarawiyya, discussion on sea water, Dar al-Isha’at al-Arabiyya, Qandahar, 1/2.

Page 457 of 711

फतवा-ए-रज़विया जिल्द 2

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: इब्ने उमर से मंक़ूल है कि समुद्र के नीचे आग है और आग के नीचे समुद्र है, अह। उन्होंने इसे मरफ़ूअ़न रिवायत किया। मुमकिन है कि अल्लाह के फरमान "वल् बहरिल् मस्जूर" में इसी तरफ इशारा हो। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। "त़ा" [त़हत़ावी] ने फरमाया: इब्ने उमर समुद्र के पानी से वज़ू और गुस्ल-ए-जनाबत को जायज़ नहीं समझते थे। अह (त) मैं कहता हूँ कि इब्ने उमर से यह रिवायत मंसूब है कि समुद्र का पानी वज़ू और गुस्ल-ए-जनाबत के लिए काफी नहीं है क्योंकि समुद्र के नीचे आग है, फिर पानी, फिर आग है, यहाँ तक कि उन्होंने सात समुद्रों और सात आगों का ज़िक्र किया। मुझे इसकी किसी असल की खबर नहीं है, अल्लाह बेहतर जानता है। 'हिलया' में है कि इन पानी से पाकी जायज़ है चाहे वे मीठे हों या नमकीन। इस पर किताब और सुन्नत दलालत करते हैं और इसमें कोई मारूफ़ इख़्तिलाफ नहीं है। हाँ, कुछ सहाबा से कराहत मंक़ूल है कि उनसे वज़ू मकरूह है, उनमें अब्दुल्लाह बिन उमर भी शामिल हैं, और जम्हूर का कौल है कि कराहत नहीं है। अह। और अनकरविया के हाशिये में मुख़्तारातुल नवाज़िल से है कि इब्ने अब्बास और इब्ने उमर से मंक़ूल है कि दोनों...

[बायां कॉलम - मूल अरबी]: अल-फ़िरदौस इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं: "समुद्र के नीचे आग है, आग के नीचे समुद्र है, और उस समुद्र के नीचे आग है।" [1] अह। मुमकिन है कि यह अल्लाह के कौल "वल् बहरिल् मस्जूर" की तरफ इशारा हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त़ा) ने कहा: इब्ने उमर समुद्र के पानी से वज़ू और गुस्ल-ए-जनाबत को जायज़ नहीं समझते थे। [2] अह। मुझे इसकी कोई असल नहीं मिली, अल्लाह बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: उनके(रज़ियल्लाहु अन्हु) बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने कहा: "समुद्र का पानी वज़ू या जनाबत के लिए काफी नहीं है, क्योंकि समुद्र के नीचे आग है, फिर पानी, फिर आग," यहाँ तक कि उन्होंने सात समुद्रों और सात आगों का ज़िक्र किया। [3] और 'अल-हिलया' में जो है वह यह कि इन पानी से पाकी हासिल करना जायज़ है, चाहे वे मीठे हों या खारे, जिस पर किताब और सुन्नत दलालत करते हैं, और इसमें किसी तरह का कोई विरोध मालूम नहीं है। हाँ, कुछ सहाबा से समुद्र के पानी से वज़ू की कराहत मंक़ूल है, जिनमें अब्दुल्लाह बिन उमर शामिल हैं, जबकि जम्हूर का कौल है कि कराहत नहीं है। [4] अह। और 'अल-अनकरविया' के हाशिये में 'मुख़्तारातुल नवाज़िल' से मंक़ूल है कि इब्ने अब्बास और इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) ने कहा: "समुद्र के पानी से वज़ू मकरूह है।" [5]

[पादलेख]: 1. मसनद-ए-फ़िरदौस 2. त़हत़ावी अल़ा मराक़िल फ़लाह, बह़स माउल बह़र, अज़हरिया मिस्र, पृष्ठ 13। 3. इब्ने उमर से मंक़ूल है। 4. हिलया। 5. फतावा अनकरविया के हाशिये पर, बह़स माउल बह़र, दारुल इशाअतुल अरबिया, कंदहार, 1/2।

[دائیں کالم کی عبارت]: میں ابن عمر سے مروی ہے کہ سمندر کے نیچے آگ ہے اور آگ کے نیچے سمندر ہے اھ، اس کو انہوں نے مرفوعاً روایت کیا، اور ممکن ہے کہ اللہ کے قول والبحر المسجور میں اس طرف اشارہ ہو، واللہ تعالٰی اعلم "ط" نے فرمایا: ابن عمر سمندر سے وضو اور غسلِ جنابت کو جائز نہیں سمجھتے تھے اھ (ت) میں کہتا ہوں ابن عمر سے یہ روایت منسوب ہے کہ سمندر کا پانی وضو اور غسلِ جنابت کیلئے کافی نہیں بیشک سمندر کے نیچے آگ ہے پھر پانی پھر آگ ہے یہاں تک کہ انہوں نے سات سمندروں اور سات آگوں کا ذکر کیا، اور مجھے اس کی کسی اصل پر اطلاع نہیں واللہ اعلم، حلیہ میں یہ ہے کہ ان پانیوں سے طہارت جائز ہے خواہ میٹھے ہوں یا نمکین ہوں، اس پر کتاب وسنت دلالت کرتے ہیں، اور اس میں کوئی خلاف معروف نہیں، ہاں بعض صحابہ سے کراہت منقول ہے کہ ان سے وضو مکروہ ہے، اُن میں عبداللہ بن عمر بھی شامل ہیں، اور جمہور کا قول ہے کہ کراہت نہیں ہے اھ اور انقرویہ کے حواشی میں مختارات النوازل سے ہے کہ ابن عباس اور ابن عمر سے مروی ہے کہ دونوں

[بائیں کالم کی عبارت]: الفردوس عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما رفعہ تحت البحر نار وتحت النار بحر وتحت البحر نار $1^$ اھ ویمکن ان تکون فی قولہ تعالٰی والبحر المسجور اشارۃ الیہ واللہ تعالٰی اعلم قال ط وکان ابن عمر لایری جواز الوضوء بہ ولا الغسل عن جنابۃ $2^$ اھ اقف لہ علی اصل فاللہ اعلم بہ اقول: یذکر عنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ انہ قال ماء البحر لا یجزئ من وضوء ولا جنابۃ ان تحت البحر نارا ثم ماء ثم نارا حتی عد سبعۃ ابحر و سبع انیار $3^$ ولم وانما الذی فی الحلیۃ ان کون الطہارۃ جائزا بھذہ المیاہ سواہ کانت عذبۃ او مالحۃ مما دل علیہ الکتب والسنۃ ولم یعرف فی شیئ منہا خلاف نعم نقل عن بعض الصحابۃ کراہۃ الوضوء بماء البحر منہم عبد اللہ بن عمر

و الجمهور على عدم الكراہۃ ^{4} اھ و فی ھامش الا نقرویۃ عن مختارات النوازل حکی عن ابن عباس وابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم انھما قال الوضوء بماء البحر مکروہ ^{5}

[حواشی]: 1. مسند فردوس 2. طحطاوی علی مراقی الفلاح بحث ماء البحر ازہریۃ مصر ص ۱۳ 3. یذکر عن ابن عمر 4. حلیہ 5. علی حاشیۃ فتاویٰ انقرویۃ بحث ماء البحر دار الاشاعۃ العربیہ قندھار ۱/۲

Fatawa Razawiya - Volume II

[Arabic Section]: Ah, said [Tahtawi] and similarly it is narrated from Abu Huraira. Ah. I say: This is strange despite what is authentic from him from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) which we have mentioned. Indeed, in 'Al-Bada'i', it is narrated from Abu al-Aliyah al-Riyahi that he said: I was with a group of companions of the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) on a ship at sea. The prayer time arrived, and their water was exhausted, but they had date infusion (Nabidh al-Tamr). Some performed ablution (Wudu) with the date infusion and disliked ablution with seawater, while others performed ablution with seawater. This is mentioned as an account of consensus (ijma'), for those who performed ablution with seawater believed in its permissibility...

[Sub-commentary]: I say: My deficient understanding could not grasp how this constitutes an account of consensus on the permissibility of ablution with date infusion in the absence of water. For those who performed ablution with seawater might not have considered ablution with date infusion permissible in that specific instance due to the availability of [sea]water. It is also possible they do not consider it permissible at all, such that if date infusion were present and water absent, they would advocate for dry ablution (Tayammum), as is the official ruling (mufta bihi) among us. In the terminology of the early scholars (Salaf), 'dislike' (karahah) does not indicate permissibility. May he be forgiven. (M)

[Urdu Section]: Volume II Scholars have declared performing ablution (Wudu) with seawater as disliked (makruh). Ah 'T', similarly it is narrated from Abu Huraira. Ah (T). I say: This is even more strange, whereas we have already quoted the authentic narration regarding the Holy Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him). Yes, in Bada'i', it is narrated from Abu al-Aliyah al-Riyahi: "I was with the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) in a sea journey when the time for prayer arrived. The water of the people on the ship had finished; they had date juice with them. So some performed Wudu with it and considered Wudu with seawater as disliked, while some performed Wudu with seawater." This is an account of consensus because those who were performing Wudu with seawater believed in the permissibility of Wudu with its water and they...

[Lower Section]: I say: In my deficient understanding, I could not comprehend how this became a consensus that in the absence of water, Wudu with date infusion is permissible. Because it is possible that those who performed Wudu with seawater

did not consider Wudu with date infusion permissible in the current situation since water [seawater] was present. It is also possible that they do not consider Wudu with date infusion permissible at all, to the extent that if date infusion is present and water is not, they would be in favor of dry ablution (Tayammum), as is the official legal verdict (mufta bihi) with us. In the terminology of the predecessors (Salaf), 'dislike' does not imply permissibility. (T)

[Footnote]: 1 Tahtawi on Maraqi al-Falah, discussion on Seawater, Azhariya Egypt, p. 13 Page 458 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी अनुभाग]: अह, 'त' (तहतावी) ने कहा और इसी तरह अबू हुरैरा से रिवायत है। अह। मैं कहता हूँ: यह अजीब है इसके बावजूद जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उनके बारे में सही रिवायत है जिसे हमने सुना है। हाँ, 'अल-बदाइअ' में अबू अल-आलिया अर-रियाही से रिवायत है कि उन्होंने कहा: मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कुछ साथियों के साथ समुद्र में एक जहाज़ पर था। नमाज़ का वक़्त आया और उनका पानी ख़त्म हो गया, जबकि उनके पास खजूर का अर्क (नबीज़ अल-तम्र) था। तो कुछ ने खजूर के अर्क से वज़ू किया और समुद्री पानी से वज़ू को मकरूह समझा, जबकि कुछ ने समुद्री पानी से वज़ू किया। यह इज्माअ (आम सहमति) का ज़िक्र है, क्योंकि जो लोग समुद्री पानी से वज़ू कर रहे थे, वे उसके पानी से वज़ू की अनुमति पर विश्वास करते थे...

[उप-टिप्पणी]: मैं कहता हूँ: मेरी अल्प समझ यह नहीं समझ सकी कि यह पानी की अनुपस्थिति में खजूर के अर्क से वज़ू की वैधता पर इज्माअ का वर्णन कैसे हुआ। क्योंकि जिन्होंने समुद्री पानी से वज़ू किया, संभव है कि वे पानी की उपस्थिति के कारण उस तात्कालिक स्थिति में नबीज़ से वज़ू को जाइज़ न समझते हों। और यह भी संभव है कि वे इसे बिल्कुल भी जाइज़ न समझते हों, यहाँ तक कि अगर नबीज़ मौजूद हो और पानी न हो, तो वे तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) के समर्थक हों, जैसा कि हमारे यहाँ फ़तवा दिया जाता है। और पूर्वजों (सलफ़) की शब्दावली में 'कराहत' (नापसंदगी) अनुमति का संकेत नहीं देती। अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

[उर्दू अनुभाग]: जिल्द सानी हज़रात ने समुद्र के पानी से वज़ू को मकरूह क़रार दिया है। अह 'त', इसी तरह अबू हुरैरा से मरवी है। अह (त)। मैं कहता हूँ यह ज़्यादा अजीब है जबकि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत सही जो थी वह हमने नक़्ल की। हाँ, बदाइअ में अबू अल-आलिया अर-रियाही से मरवी है कि मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ एक समुद्री सफ़र में था कि नमाज़ का वक़्त आ गया, कश्ती वालों के पास पानी ख़त्म हो चुका था, उनके पास खजूर का अर्क था। तो कुछ ने उसी से वज़ू कर लिया और समुद्र के पानी से वज़ू को मकरूह समझा और कुछ ने समुद्र के पानी से वज़ू कर लिया। यह इज्माअ की हिकायत है क्योंकि जो हज़रात समुद्र के पानी से वज़ू कर रहे थे वे इसके पानी से वज़ू के जवाज़ के क़ायल थे और उन्होंने...

[निचला अनुभाग]: मैं कहता हूँ मेरी नाक़िस समझ में यह बात न आ सकी कि यह इज्माअ कैसे हो गया कि पानी न होने के वक़्त नबीज़-ए-तम्र से वज़ू जाइज़ है। क्योंकि जिन हज़रात ने समुद्र के पानी

से वज़ू किया मुमकिन है कि वे मौजूदा हालत में नबीज़-ए-तम्र से वज़ू को जाइज़ न समझते हों क्योंकि पानी मौजूद है और यह भी मुमकिन है कि वे नबीज़-ए-तम्र से वज़ू को बिल्कुल जाइज़ न समझते हों यहाँ तक कि अगर नबीज़ मौजूद हो और पानी न हो तो वे तयम्मुम के क़ायल हों जैसा कि यह हमारे नज़दीक मुफ़्ता बिही है। और सलफ़ की उर्फ़ में कराहत जवाज़ पर दलालत नहीं करती है। (त)

[पाद लेख]: 1 तहतावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, बहस मा-अल-बहर, अज़हरिया मिस्र, पृष्ठ 13 पेज 458 of 711

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

[عربی حصہ]: اھـ قال ط وکذا روی ابی ھریرۃ 1 اھـ اقول: وھذا عجب مع ما صح عنه عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم ماسمعناک نعم فی البدائع روی عن ابی العالیۃ الریاحی انه قال کنت فی جماعۃ من اصحاب رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم فی سفینۃ فی البحر فحضرت الصلاۃ قضی ماؤھم ومعھم نبیذ التمر فتوضأ بعضھم نبیذ التمر وکرہ التوضؤ بماء البحر وتوضأ بعضھم بماء البحر ذکرہ التوضؤ بنبیذ التمرو عه ،وھذا حکایۃ الاجماع فان من کان یتوضؤ بماء البحر کان یعتقد

[ذیلی حاشیہ]: عه اقول: لم یبلغ فھمي القاصر کیف کان ھذا حکایۃ الاجماع علی جواز الوضوء بنبیذ التمر عند عدم الماء فان من توضأ بماء البحر جاز ان لم یر الوضوء بالنبیذ فی الحالۃ الراھنۃ لوجود الماء وجاز ان لم یر الوضوء به اصلا حتی لو وجدہ وعدم الماء تیمم کما ھو المفتی به عندنا والکراھۃ في عرف السلف لا یدل علی الجواز منه غفر له (م)

[اردو حصہ]: جلد ثانی حضرات نے سمندر کے پانی سے وضو کو مکروہ قرار دیا ہے اہ "ط" اسی طرح ابوہریرہ سے مروی ہے اہ (ت) میں کہتا ہوں یہ زیادہ عجیب ہے حالانکہ حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بروایت صحیح جو تھا وہ ہم نے نقل کیا، ہاں بدائع میں ابو العالیۃ الریاحی سے مروی ہے کہ میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ ایک سمندری سفر میں تھا کہ نماز کا وقت آگیا کشتی والوں کے پاس پانی ختم ہو چکا تھا ان کے پاس شیرہ کھجور تھا تو بعض نے اسی سے وضو کرلیا اور سمندر کے پانی سے وضو کو مکروہ سمجھا اور بعض نے سمندر کے پانی سے وضو کرلیا، یہ اجماع کی حکایت ہے کیونکہ جو حضرات سمندر کے پانی سے وضو کر رہے تھے تو وہ اس کے پانی سے وضو کے جواز کے قائل تھے اور انہوں نے

[نیچے والا حصہ]: میں کہتا ہوں میری ناقص سمجھ میں یہ بات نہ آسکی کہ یہ اجماع کیونکر ہو گیا کہ پانی نہ ہونے کے وقت نبیذ تمر سے وضو جائز ہے، کیونکہ جن حضرات نے سمندر کے پانی سے وضو کیا ممکن ہے کہ وہ موجودہ حالت میں نبیذ تمر سے وضو کو جائز نہ سمجھتے ہوں کیونکہ پانی موجود ہے اور یہ بھی ممکن ہے کہ وہ نبیذ تمر سے وضو کو بالکل جائز نہ سمجھتے ہوں یہاں تک کہ اگر نبیذ موجود ہو اور پانی نہ موجود ہو تو وہ تیمم کے قائل ہوں جیسا کہ یہ ہمارے نزدیک مفتی بہ ہے اور سلف کی عرف میں کراہت جواز پر دلالت نہیں کرتی ہے۔ (ت)

[حاشیہ]: 1 طحطاوی علی مراقی الفلاح بحث ماء البحر از ہر یہ مصر ص ۱۳ Page 458 of 711

Fatawa Razvia - Volume 2

[Arabic Text Section] Permissibility of performing ablution with sea water. He did not perform ablution with date beverage (Nabidh al-Tamr) because he found absolute water (Ma' Mutlaq). And those who performed ablution with the beverage did not consider sea water to be purifying, or they used to say it is water of wrath and punishment, as if the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) regarding the description of the sea had not reached them: "Its water is purifying and its dead are lawful." So he performed ablution with date beverage because of the absence of water—purifying water, according to one report—so this is what he presented as a possibility, whereas the words of the narration are what you have heard. (T)

I say (Aqul): It is also possible that they believed in the permissibility of ablution with both if water is predominant in the beverage, as will be discussed, if Allah so wills. So, whoever performed ablution with it considered performing ablution with sea water as disliked in a light manner (Makruh Tanzihi), and did not doubt that the beverage he had was mostly water. And whoever performed ablution with sea water had a doubt about the beverage he had, so he disliked performing ablution with it as a matter of prohibition (Makruh Tahrimi), and performed ablution with sea water. And Allah Almighty knows best. [End of Arabic Text Section]

[Urdu Text Section] He did not perform ablution with date beverage because he found absolute water. And those who were performing ablution with date beverage did not consider sea water to be purifying, or they used to say that this water appeared as a result of anger and punishment; perhaps they did not receive this Hadith of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that sea water is a purifier and its dead is lawful. So, in the absence of water, they performed ablution with date beverage. This he said as a possibility, otherwise the words of the narration are those which you have heard. (T)

I say that it is also permissible that they believe in the permissibility of ablution from both while water is predominant over the beverage, as will come, if Allah wills. So, the one who performed ablution with it considered ablution with sea water to be Makruh Tanzihi (mildly disliked) and did not doubt that the beverage he had was mostly water. And the one who performed ablution with sea water had a doubt about the beverage he had, so he did not perform ablution with it out of Makruh Tahrimi

(severely disliked) and performed ablution with sea water. And Allah Almighty knows best. (T) [End of Urdu Text Section]

Footnotes/Comments: - (Annotated Note): This is how it is in my copy of the Bada'i', and it seems like a slip of the scribe's pen; the appropriate word is 'Al-Tahur'. May he be forgiven. (M) - The copy of Bada'i that I have has it like this; perhaps the scribe wrote it incorrectly, the appropriate term is 'Al-Tahur'. (T) - (3 & 4) Frost and hail when they melt and become water, for they too are the same heavenly water that froze due to the cold of the freezing atmosphere. - 1 Bada'i al-Sana'i, section on restricted water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/16.

फ़तावा रज़विया - खंड २

[अरबी पाठ अनुभाग] समुद्र के पानी से वज़ू करने की अनुमति। उन्होंने खजूर के पेय (नबीज़ अल-तम्र) से वज़ू नहीं किया क्योंकि उन्हें शुद्ध पानी (मा मुतलक) मिल गया था। और जो लोग पेय से वज़ू कर रहे थे, वे समुद्र के पानी को पवित्र करने वाला नहीं समझते थे, या वे कहते थे कि यह पानी क्रोध और दंड के परिणामस्वरूप प्रकट हुआ है, शायद उन तक पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की समुद्र के बारे में यह हदीस नहीं पहुंची थी: "इसका पानी पवित्र है और इसके मृत (जीव) हलाल हैं।" इसलिए उन्होंने पानी की अनुपस्थिति में खजूर के पेय से वज़ू किया—एक रिपोर्ट के अनुसार 'पवित्र' पानी—तो यह उन्होंने एक संभावना के रूप में कहा, अन्यथा कथन के शब्द वही हैं जो आपने सुने हैं। (त)

मैं कहता हूँ (अकुल): यह भी संभव है कि वे दोनों से वज़ू की अनुमति के कायल हों जब पेय में पानी की मात्रा अधिक हो, जैसा कि इंशा अल्लाह आगे आएगा। तो जिसने उससे वज़ू किया, उसने समुद्री पानी से वज़ू करने को मकरूह तंज़ीही (नापसंद लेकिन हराम नहीं) समझा और उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसके पास जो पेय है उसमें पानी की मात्रा अधिक है। और जिसने समुद्री पानी से वज़ू किया, उसे अपने पास मौजूद पेय के बारे में संदेह था, इसलिए उसने उससे वज़ू करने को मकरूह तहरीमी (मनाही के तौर पर) समझा और समुद्री पानी से वज़ू कर लिया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [अरबी पाठ अनुभाग का अंत]

[उर्दू पाठ अनुभाग] खजूर के पेय (नबीज़) से वज़ू इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें मा-ए-मुतलक (शुद्ध जल) मिल गया था। और जो लोग नबीज़ से वज़ू कर रहे थे, वे समुद्र के पानी को पवित्र करने वाला नहीं समझते थे, या वे यह कहते थे कि यह पानी क्रोध और दंड के परिणामस्वरूप प्रकट हुआ है। शायद उन्हें हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की यह हदीस नहीं पहुंची थी कि समुद्र का पानी पवित्र करने वाला है और इसका मृत जीव हलाल है। तो पानी न होने की स्थिति में उन्होंने नबीज़ से वज़ू किया। यह उन्होंने संभावना के तौर पर फ़रमाया, अन्यथा रिवायत के शब्द वे हैं जो आपने सुने हैं। (त)

मैं कहता हूँ कि यह भी जायज़ है कि वे दोनों से वज़ू की अनुमति के कायल हों जबकि नबीज़ पर पानी हावी हो, जैसा कि इंशा अल्लाह आगे आएगा। तो जिसने इससे वज़ू किया, उसने समुद्री पानी से वज़ू को मकरूह-ए-तंज़ीही समझा और इसमें संदेह नहीं किया कि उसके पास जो नबीज़ है उसमें

पानी हावी है। और जिसने समुद्री पानी से वज़ू किया, उसे उस नबीज़ के बारे में संदेह था जो उसके पास मौजूद था, इसलिए उसने मकरूह-ए-तहरीमी के तौर पर उससे वज़ू नहीं किया और समुद्री पानी से वज़ू कर लिया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) [उर्दू पाठ अनुभाग का अंत]

पाद टिप्पणियाँ/टिप्पणियाँ: - (टिप्पणी): मेरे पास बदाइ के जो नुस्खा है उसमें इसी तरह है, शायद यह कातिब (लेखक) की कलम की चूक है; मुनासिब शब्द 'अत-तहूर' है। अल्लाह उसे माफ़ करे। (म) - मेरे पास बदाइ का जो नुस्खा है उसमें इसी तरह है; शायद कातिब ने गलत लिख दिया, मुनासिब 'अत-तहूर' है। (त) - (३ और ४) ओला और पाला जब पिघलकर पानी बन जाएं क्योंकि वे भी वही आसमानी पानी हैं जो अत्यधिक ठंड के कारण जम गए थे। - १ बदाइ-उस-सलाई, मुतलक पानी का बयान, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/१६।

पृष्ठ ४५९ का ७११

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[عربی عبارت] جواز التوضؤ بماء البحر فلم یتوضأ بنبیذ التمر لکونه واجدا للماء المطلق ومن کان یتوضؤ بالنبیذ کان لا یری ماء البحر طهورا او کان یقول هو ماء سخطتة ونقمة کانه لم یبلغه قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم في صفة البحر هو الطهور ماؤه الحل میتة فتوضأ بنبیذ التمر لکونه عادما للماء عه الطاهر ۱ اھ فهذا ما ابداه احتمالا وانما لفظ الروایة ما سمعت۔ (ت)

اقول: ویجوز ان یکونوا معتقدین جواز الوضوء بهما اذا کان الماء غالبا في النبیذ کما سیأتی ان شاء اللہ تعالی فمن توضأ به کره التوضوء بماء البحر کراهة تنزیه ولم یشك ان النبیذ الذي عنده ماؤه غالب ومن توضأ بماء البحر شك في النبیذ الذي عنده فکره التوضوء به کراهة امتناع وتوضأ بماء البحر واللہ تعالی اعلم۔ [عربی عبارت ختم]

[اردو ترجمہ و تشریح] نبیز تمر سے وضو اس لئے نہ کیا کہ انہوں نے ماء مطلق کو پایا اور جو نبیز تمر سے وضو کر رہے تھے وہ سمندر کے پانی کو طہور نہیں سمجھتے تھے، یا وہ یہ کہتے تھے کہ یہ پانی ناراضگی اور عذاب کے نتیجہ میں ظہور پذیر ہوا ہے شاید ان کو حضور اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی یہ حدیث نہیں پہنچی کہ سمندر کا پانی پاک کرنے والا اور اس کا مردہ حلال ہے تو پانی نہ ہونے کی صورت میں انہوں نے نبیز تمر سے وضو کیا اھ تو یہ انہوں نے بطور احتمال فرمایا ورنہ روایت کے الفاظ وہ ہیں جو آپ نے سنے۔ (ت)

میں کہتا ہوں یہ بھی جائز ہے کہ وہ دونوں سے وضو کے جواز کے قائل ہوں جبکہ نبیز پر پانی غالب ہو، جیسا کہ ان شاء اللہ آئے گا، تو جس نے اس سے وضو کیا اس نے سمندری پانی سے وضو کو مکروہ تنزیہی سمجھا اور اس میں شک نہیں جانا کہ جو نبیز اس کے پاس ہے اس کا پانی

غالب ہے اور جس نے سمندری پانی سے وضو کیا اس کو اس نبیز میں شک تھا جو اُس کے پاس موجود تھا تو اس نے بطور کراہت تحریمی اس سے وضو نہ کیا اور سمندری پانی سے وضو کر لیا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) [اردو عبارت ختم]

حواشی: عه هکذا فی نسختی البدائع وکأنها زلة من قلم الناسخ والوجه الطهور منه غفرله (م) میرے پاس بدائع کا جو نسخہ ہے اس میں اسی طرح ہے شاید کاتب نے غلط لکھ دیا مناسب الطھور ہے۔ (ت) (۳ و ۴) پالا اولے جب پگھل کر پانی ہو جائیں کہ یہ بھی وہی آسمانی پانی ہیں کہ کُرہ زمہریر کی سردی سے 1 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶

صفحہ ۴۵۹ از ۷۱۱

Fatawa Razviya, Volume 2 ...became frozen like ice. In Al-Durr [al-Mukhtar], ritual impurity can be removed with 'absolute water' such as melted snow, hail, frozen water, and dew. In Al-Bahr and Al-Nahr, it is narrated from Imam Abu Yusuf that wudu (ablution) is permissible even if it does not drip. This is correct, and the expression in Al-Nahr is 'the most correct'. This is the opinion of both [Imams Abu Yusuf and Muhammad]. In Jami' al-Rumuz, this is attributed to the Sahabayn (the two companions), where it states: one should not perform wudu with snow unless it drips. And it is narrated from the Sahabayn that one can perform wudu with it. The first opinion is the correct one, as stated in Al-Zahiriyya. I have written in the margins: (1) This is not a matter of disagreement or correction, because wudu is not valid without washing, and washing is not valid without flowing, and flowing is not valid without dripping. So that is what is meant. Regarding what I wrote there, I say: yes, it is narrated from the second Imam [Muhammad] that washing means wetting the area even if it doesn't flow, as stated in Al-Bahr. And this is not specific to snow and hail. We have already explained in Tabyan al-Wudu that their meaning is that one or two drops flow from the limb. Then there is no disagreement. The commentator said: The apparent meaning of "did not catch up" is that it did not drip immediately, but dripped after a delay.

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabayi, Delhi, 1/32. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, End of the Book of Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/71. 3. Jami' al-Rumuz, Discussion on Rainwater, Karimiya Press, Quran, Iran, 1/26. 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Obligations of Wudu, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/11. 5. Radd al-Muhtar, Obligations of Wudu, Al-Babi, Egypt, 1/11. 6. Radd al-Muhtar, Obligations of Wudu, Al-Babi, Egypt, 1/11.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2 ...बर्फ़ की तरह जम गया। अद-दुर्र [अल-मुख्तार] में है कि ह़दथ (अशुद्धि) को मुतलक़ (शुद्ध) पानी से दूर किया जा सकता है, जैसे पिघली हुई बर्फ़ या ओले, जमा हुआ पानी या ओस। अल-बह़र और अन-नह़र में इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत है कि वज़ू जायज़ है चाहे वह टपके नहीं। यही सही है और अन-नह़र के शब्द 'अस़ह़' (सबसे सही) हैं, यह उन दोनों (इमामों) का कौल है। जामे' अर-रुमूज़ में इसे साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) की ओर मंसूब किया गया है, जहाँ कहा गया है: बर्फ़ से तब तक वज़ू न करे जब तक वह टपकने न लगे। और साहिबैन से रिवायत है कि उससे वज़ू करे। पहला ही सही है जैसा कि ज़हीरिया में है। मैंने इसके हाशिये (मार्जिन) पर लिखा है: (1) यह विवाद या सुधारात्मक टिप्पणी का स्थान नहीं है क्योंकि बिना धोए वज़ू नहीं हो सकता, और धोना बिना बहाव के नहीं होता, और बहाव बिना टपकने के नहीं होता। अतः यही अभिप्रेत है। मैंने जो वहाँ लिखा है उस पर मैं कहता हूँ: हाँ, दूसरे इमाम (इमाम मुहम्मद) से रिवायत है कि धोने का अर्थ अंग को गीला करना है चाहे वह बहे नहीं, जैसा कि अल-बह़र में है। और यह बात बर्फ़ और ओलों के साथ ख़ास नहीं है। हमने तिब्यान अल-वज़ू में बयान किया है कि उनका मतलब यह है कि अंग से एक या दो बूंदें बह जाएँ फिर कोई विवाद नहीं है। शरीह़ (टीकाकार) ने कहा: ज़ाहिर यह है कि 'नहीं मिला' का अर्थ यह है कि वह तुरंत नहीं टपका बल्कि कुछ देर बाद टपका।

पादलेख (Footnotes): 1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई, दिल्ली, 1/32. 2. अल-बह़र अर-राइक़, आख़िरुल माअ, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/71. 3. जामे' अर-रुमूज़, बह़सुल माअस समाअ, मतबआ करीमिया, कुरआन, ईरान, 1/26. 4. अल-बह़र अर-राइक़, फ़र्ज़ुल वज़ू, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/11. 5. रद अल-मुह़्तार, फ़र्ज़ुल वज़ू, अल-बाबी, मिस्र, 1/11. 6. रद अल-मुह़्तार, फ़र्ज़ुल वज़ू, अल-बाबी, मिस्र, 1/11.

पृष्ठ 460 / 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی یخ بستہ ہو گیا۔ فی الدر یرفع الحدث بماء مطلق کالثلج مذاب وبرد و جمد و ندی ۱ اہ وفي البحر والنهر وعن ابی یوسف یجوز وان لم یکن متقاطرا والصحیح ولفظ النهر الاصح قولهما ۲ اہ ونسبه في جامع الرموز للصاحبین حیث قال لایتوضوء بالثلج الا اذا تقاطر وعن الصاحبین انه یتوضوء به والاول هو الصحیح کما فی الظهیریة ۳ اھ ورأیتنی کتبت علی هامشہ اقول: (۱) لیس هذا محل خلاف وتصحیح اذ لاوضوء الابالغسل ولا غسل الا بالاسالة ولا اسالة الا بالتقاطر فهو المراد اھ ماکتبت علیہ اقول نعم یروی عن الثانی ان الغسل بل المحل وان لم یسل ۴ کما فی البحر وهذا لا یختص بالثلج والبرد وقدمنا فی تبیان الوضوء ان مراده سال من العضو قطرة او قطرتان ولم یتدارک فلا خلاف ۵ قال ش الظاهر ان معنی لم یتدارک لم یقطر علی الفور بأن قطر بعد مهلة ٦ اہ

دُر میں ہے حدث کو دُور کیا جا سکتا ہے مطلق پانی سے جیسے برف یا اولوں کا پگھلا ہوا پانی، منجمد پانی یا تری اھ اور بحر و نہر میں ابو یوسف سے منقول ہے کہ وضو جائز ہے اگرچہ ٹپکنے والا نہ ہو یہ صحیح ہے اور لفظ نہر اصح ہے ان دونوں کا قول اھ اور جامع الرموز میں اس کو صاحبین کی طرف منسوب کیا ہے، فرمایا کہ برف سے اس وقت تک وضو نہ کرے جب تک وہ ٹپکنے نہ لگے اور صاحبین سے مروی ہے کہ اس سے وضو کرے، اور پہلا ہی صحیح ہے جیسا کہ ظہیریہ میں ہے اھ میں نے اس کے حاشیہ پر یہ لکھا ہے کہ یہ محل خلاف اور تصحیح نہیں ہے کیونکہ دھوئے بغیر تو وضو ہو نہیں سکتا ہے اور دھونا بہائے بغیر نہ ہو گا اور بہانا بغیر تقاطر کے نہ ہوگا، اور یہی مراد ہے اھ میں کہتا ہوں ہاں دوسرے امام سے یہ مروی ہے کہ دھونا جگہ کے تر کرنے کو کہتے ہیں خواہ نہ بہے، جیسا کہ بحر میں ہے اور یہ چیز برف اور اولوں کے ساتھ خاص نہیں ہے اور ہم نے تبیان الوضوء میں بیان کیا کہ ان کی مراد یہ ہے کہ عضو سے

ایک یا دو قطرے بہہ جائیں۔ فلا خلاف۔ شارح نے کہا ظاہر یہ ہے کہ 'لم یتدارک' کے معنی یہ ہیں کہ فوراً نہ ٹپکا بلکہ کچھ دیر بعد ٹپکا۔

حواشی: 1 الدرالمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۳۲/۱ 2 بحر الرائق آخر الماء البحر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱ 3 جامع الرموز بحث الماء السماء مطبعہ کریمیہ قرآن ایران ۲۶/۱ 4 بحر الرائق فرض الوضو ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۱/۱ 5 ردالمختار فرض الوضو البابی مصر ۱۱/۱ 6 ردالمختار فرض الوضو البابی مصر ۱۱/۱

Fatawa Razawiyya, Volume II And there is no disagreement in it not being rectified. "Sh" stated that the meaning of "lam yatadarak" is that the drops do not flow immediately, but rather flow after an interval. (T)

[Box 1] I say: (1) Rather, the apparent meaning is that the drops do not follow one another in abundance. It is said, "Tadarak al-Qawm," meaning they overtook/joined each other. From this is the word of Allah Almighty, "Until when they have all overtaken one another therein" (Quran 7:38). It is also stated similarly in "As-Sihah" (dictionary). It is known that the entry of one group immediately after another is not intended. And Allah Almighty knows best. (T)

(5) Similarly, when yesterday's snow melts, for it too was water that froze due to cold air. It has been mentioned from "Ad-Dur" that "al-Jamd" (with vowelization) refers to frozen water. This is from "Ta" quoting "Ha" quoting "Al-Qamus". (It has passed that al-Jamd with movement is frozen water (snow); this is from Ta from Ha from Qamus. T) (6) Dew I say: That is, when enough dew is collected by squeezing it from leaves, flowers, or spread-out cloths to wash an entire limb or the remaining part of a limb. For example, if a space the size of a rupee coin remains dry on the feet and water is exhausted, but enough dew can be gathered to flow over that area, then Tayammum (dry ablution) will not be permissible. Or if one sits bareheaded in mist/dew and the head becomes wet from it, the Masah (wiping) is fulfilled. If he doesn't rub his hand over it, Wudu will still be valid, although a Sunnah was missed. Similarly, walking through dew-wet grass while wearing leather socks (khuffs) will fulfill the requirement for Masah of the socks, provided each sock gets wet from the dew to an extent three times the length and width of the little finger.

[Box 2] And it was mentioned from "Ad-Dur": "and Nadaa." "Sh" said in "Al-Imdad" that this is "At-Tall" (dew), which according to the correct view is water, though some say it is the breath of an animal. (T)

1. As-Sihah al-Jawhari, "Darak," Beirut, 1582/4.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Al-Babi, Egypt, 132/1.

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय और इसमें कोई मतभेद नहीं है कि इसका सुधार (तदारुक) न हो। "श" ने फ़रमाया कि "लम यतदारुक" का अर्थ यह है कि बूँदें तुरंत न बहें, बल्कि कुछ समय बाद बहें। (त)

[बॉक्स 1] मैं कहता हूँ: (1) बल्कि स्पष्ट अर्थ यह है कि बूँदें बहुतायत में एक के बाद एक न बहें। कहा जाता है "तदारुक अल-क़ौम" अर्थात् वे एक-दूसरे से जा मिले। इसी से अल्लाह तआला का फ़रमान है "हत्ता इज़ा दारकु फ़ीहा" (जब वे सब उसमें एक-दूसरे से मिल जाएँगे)। 'सिहाह' में भी ऐसा ही है और यह ज्ञात है कि उनमें से एक समूह का दूसरे समूह के ठीक बाद प्रवेश करना अभिप्रेत नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(5) इसी प्रकार कल की बर्फ़ जब पिघल जाए, क्योंकि वह भी पानी ही था जो ठंडी हवा से जम गया था। "अद-दुर" से उद्धृत है कि "अल-जम्द" (हरकत के साथ) जमा हुआ पानी है। यह 'त' से 'ह' से 'क़ामूस' के हवाले से है। (और गुज़रा है कि 'अल-जम्द' हरकत के साथ जमा हुआ पानी (बर्फ़) है; यह 'त' से 'ह' से 'क़ामूस' से है। त) (6) ओस (शबनम) मैं कहता हूँ: अर्थात् जब पत्तों, फूलों या फैले हुए कपड़ों को निचोड़कर इतनी ओस जमा कर ली जाए कि वह किसी अंग या अंग के शेष भाग को धो सके। उदाहरण के लिए, यदि पैर में एक रुपये के सिक्के के बराबर जगह सूखी रह गई और पानी समाप्त हो गया, लेकिन ओस इतनी जमा की जा सकती है कि वह उस स्थान पर बह जाए, तो तयम्मुम जायज़ नहीं होगा। या कोई ओस/कोहरे में नंगे सिर बैठा और उससे सिर भीग गया, तो मसह हो गया। यदि वह हाथ नहीं भी फेरेगा तो वज़ू हो जाएगा, यद्यपि सुन्नत छूट गई। इसी प्रकार ओस से भीगी घास में मोज़े (ख़ुफ़) पहनकर चलने से मोज़ों का मसह अदा हो जाएगा, यदि ओस से प्रत्येक मोज़ा हाथ की कनिष्ठा (छोटी उंगली) की लंबाई और चौड़ाई के तीन गुना के बराबर भीग जाए।

[बॉक्स 2] और "अद-दुर" से गुज़रा "व नदाँ"। "श" ने "इमदाद" में कहा कि यह शबनम (ओस) है और सही मत के अनुसार यह पानी है, जबकि एक मत यह है कि यह चौपाये की सांस है। (त)

1. सिहाह अल-जौहरी, 'दरक', बेरूत, 1582/4
2. रद अल-मुहतार, पानी का अध्याय, अल-बाबी, मिस्र, 132/1

पेज 461 / 711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی اور تدارک نہ ہو اس میں اختلاف نہیں "ش" نے فرمایا کہ لم یتدارک کے معنی یہ ہیں کہ فوراً قطرات نہ بہیں، بلکہ مہلت کے بعد قطرات بہیں اھ (ت)

[باکس 1] اقول: (۱) بل الظاھر ان المعنی لم تتتابع القطر کثرۃ یقال تدارك القوم ای تلاحقوا ومنه قوله تعالی حتی اذا دارکوا فیھا کما فی الصحاح ومعلوم انه لم یثبت الفور فی دخول طائفة منھم بعد اخری واللہ تعالی اعلم۔ میں کہتا ہوں بلکہ معنی یہ ہیں کہ قطرات کثرت سے نہ بہیں کہتے ہیں "تدارک القوم" یعنی ایک دوسرے سے ملے اور اسی سے فرمانِ الٰہی ہے "حتی اذا دارکوا فیھا" صحاح میں بھی ایسا ہی ہے اور یہ معلوم ہے کہ ان میں سے ایک جماعت کا دوسری جماعت کے فوراً بعد داخل ہونا مراد نہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۵) یوں ہی کل کا برف جب پگھل جائے کہ وہ بھی پانی ہی تھا کہ گیس کی ہوا سے جم گیا ومر عن الدر و جمد وھو محرکاً الماء الجامد ط عن ح عن القاموس (اور گزرا ہے کہ اَلْجَمْدُ حرکت کے ساتھ جما ہوا پانی (برف) ہے یہ ط سے ح سے قاموس سے ہے۔ ت) (۶) شبنم اقول: یعنی جبکہ پتوں پھولوں پر سے یا پھیلے ہوئے کپڑے نچوڑ کر اتنی جمع کر لی جائے کہ کسی عضو یا بقیہ عضو کو دھو دے مثلاً روپے بھر جگہ پاؤں میں باقی ہے اور پانی ختم ہو گیا اور شبنم جمع کئے سے اتنی مل سکتی ہے کہ اس جگہ پر بہ جائے تو تیمم جائز نہ ہوگا یا اوس (۲) میں سر برہنہ بیٹھا اور اس سے سر بھیگ گیا مسح ہو گیا اگر ہاتھ نہ پھیرے گا وضو ہو جائیگا اگرچہ سنت ترک ہوئی یوں ہی شبنم (۳) سے تر گھاس میں موزے پہنے چلنے سے موزوں کا مسح ادا ہو جائے گا جبکہ شبنم سے ہر موزہ ہاتھ کی چھنگلیا کے طول و عرض کے سہ چند بھیگ جائے۔

[باکس 2] ومر عن الدر وندا قال ش قال فی الامداد وھو الطل وھو ماء علی الصحیح وقیل نفس دابۃ ۲

اھ اور دُر سے گزرا وندا "ش" نے امداد میں کہا یہ شبنم ہے اور صحیح قول کے مطابق یہ پانی ہے اور ایک قول یہ ہے کہ چو پائے کا سانس ہے۔ (ت)

1 صحاح الجوھری درک بیروت ۱۵۸۲/۴ 2 ردالمحتار باب المیاہ البابی مصر ۱۳۲/۱

Fatawa Rizvia Volume 2

I say: I do not know any basis for this. Had it been so, ablution with it would not be permissible as it is not water. Had it been permissible, then human saliva and sweat would have a greater right of permissibility. Then I saw in Al-Fath regarding wiping over leather socks (Masah 'ala al-khuffayn), that there is no difference whether this [moisture] is obtained by hand, by rain, or from wet grass walked upon, or even from dew according to the most correct opinion. It is said [another view] that it is not permissible with dew because it is the breath of a beast, not water, but this is not correct. (T)

(7) Zulal I say: Linguistically and conventionally, it is well known that 'Zulal' refers to sweet, cold, light, pleasant, clear, and pure water.

In Al-Qamus: Pure water (ma' zulal) like the meter of ghurab, amir, sabur, and ilabit; it is water that passes swiftly down the throat, cold, sweet, clear, easy, and smooth. No other meaning is mentioned. In Sahah al-Jawhari: Pure water (ma' zulal) means sweet. In Hayat al-Haywan al-Kubra: What is popular among people is that zulal is cold water.

In Al-Qamus it is stated: Pure water (ma' zulal), zulal also comes in the weight of ghurab, amir, sabur, and ilabit (i.e., zalil, zalul, zalazil). It refers to water that passes easily down the throat and is cold, sweet, clear, light, and flowing. No other meanings were stated. In Sahah al-Jawhari, ma' zulal means sweet. In Hayat al-Haywan, it is said that what is famous among people is that zulal refers to cold water. (T)

1. Fath al-Qadir, Masah al-Khuffayn, Rizvia Sukkur, 1/132
2. Al-Qamus al-Muhit (Z-L-L), Mustafa al-Babi, Egypt, 3/200
3. Sahah al-Jawhari (Z-L-L), Beirut, 2/1718
4. Hayat al-Haywan al-Kubra (Zulal), Mustafa al-Babi, Egypt, 1/537

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

मैं कहता हूँ: मुझे इसका कोई आधार मालूम नहीं और अगर ऐसा होता तो इसके साथ वुज़ू जायज़ न होता क्योंकि वह पानी नहीं है और अगर इससे वुज़ू जायज़ होता तो इंसान के थूक और पसीने से बतरीक़-ए-औला (और भी अधिक उचित) जायज़ होता। फिर 'फ़तह' के मसह अलल-ख़ुफ़्फ़ैन (मोज़ों पर मसह) में है कि इसमें कुछ फ़र्क़ नहीं कि यह हाथ से हो या बारिश की वजह से हो या तर घास में चलने की वजह से हो या शबनम (ओस) से हो, सबसे सही क़ौल के मुताबिक़। और एक क़ौल यह है कि शबनम से जायज़ नहीं क्योंकि वह चौपाये का सांस है, पानी नहीं, और यह सही नहीं है। (त)

(७) ज़ुलाल अक़ूल (मैं कहता हूँ): लुग़त और उर्फ़न (शाब्दिक और परंपरागत रूप से) मशहूर यही है कि ज़ुलाल मीठे, ठंडे, हल्के, खुशगवार, साफ़ और ख़ालिस पानी को कहते हैं।

अल-क़ामूस में है: 'मा-ए-ज़ुलाल' (शुद्ध पानी) 'ग़ुराब', 'अमीर', 'सबूर' और 'इलाबित' के वज़न (छंद) पर भी आता है। यह वह पानी है जो गले से आसानी से उतर जाए और ठंडा, मीठा, साफ़, सुगम और सरल हो। इसके अलावा कोई और अर्थ नहीं बताया गया। 'स़हाह अल-जौहरी' में है: 'मा-ए-ज़ुलाल' यानी मीठा पानी। 'हयात अल-हैवान अल-कुबरा' में है: लोगों की ज़बानों पर मशहूर यह है कि ज़ुलाल ठंडे पानी को कहते हैं।

क़ामूस में है कि 'मा-ए-ज़ुलाल', ज़ुलाल 'ग़ुराब' के वज़न पर भी आता है और 'अमीर', 'सबूर' और 'इलाबित' के वज़न पर भी (अर्थात ज़लील, ज़लूल, ज़लाज़िल)। यह उस पानी को कहा जाता है जो हलक से आसानी से गुज़रे और ठंडा, मीठा, साफ़, लतीफ़ और रवां हो। और इसके अलावा कोई मानी नहीं बताए। और 'स़हाह जौहरी' में 'मा-ए-ज़ुलाल' यानी मीठा। और 'हयातुल हैवान' में है कि ज़बानों पर मशहूर यह है कि ज़ुलाल ठंडे पानी को कहते हैं। (त)

1. फतह अल-क़दीर, मसह अल-ख़ुफ़्फ़ैन, रज़विया सुक्कुर, 1/132
2. अल-क़ामूस अल-मुहीत (ज़-ल-ल), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 3/200
3. स़हाह अल-जौहरी (ज़-ل-ल), बेरुत, 2/1718
4. हयात अल-हैवान अल-कुबरा (ज़ुलाल), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/537

पृष्ठ 462 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: لااعلم له اصلا ولو كان كذا لم يجز الوضوء به لانه ليس بماء ولو جاز به لكان ريق الانسان وعرقه احق بالجواز ثم رأيت في مسح الخفين من الفتح ولا فرق بين حصول ذلك بيده او باصابة مطر او من حشيش مشى فيه مبتل ولو بالطل على الاصح وقيل لا يجوز بالطل لانه نفس دابة لماء وليس بصحيح اھ | میں کہتا ہوں مجھے اس کی اصل معلوم نہیں اور اگر ایسا ہوتا تو اس کے ساتھ وضو جائز نہ ہوتا کیونکہ وہ پانی نہیں اور اگر اس سے وضو جائز ہوتا تو انسان کے تھوک اور پسینہ سے بطریق اولٰی جائز ہوتا، پھر فتح کے مسح علی الخفین میں ہے کہ اس میں کچھ فرق نہیں کہ یہ ہاتھ سے ہو یا بارش کی وجہ سے ہو یا تر گھاس میں چلنے کی وجہ سے ہو یا شبنم سے ہو اصح قول کے مطابق، اور ایک قول یہ ہے کہ شبنم سے جائز نہیں کیونکہ وہ چوپائے کا سانس ہے پانی نہیں، اور یہ صحیح نہیں اھ (ت)

(۷) زلال اقول: لغتہً و عرفاً مشہور یہی ہے کہ زلال میٹھے ٹھنڈے ہلکے خوشگوار صاف خالص پانی کو کہتے ہیں،

في القاموس ماء زلال كغراب وامير وصبور وعلابط سريع المرفى الحلق بارد عذب صاف سهل سلس اھ ولم يعرج على معنى غيره وفى صحاح الجوهرى ماء زلال اى عذب اھ وفى حياة الحيوان الكبرى المشهور على الالسنة ان الزلال هو الماء البارد۔ | قاموس میں ہے ماء زلال، زلال غراب کے وزن پر بھی آتا ہے اور امیر، صبور اور علابط کے وزن پر بھی (یعنی زلیل زلول زلازل) اس پانی کو کہا جاتا ہے جو حلق سے بآسانی گزرے اور ٹھنڈا، میٹھا، صاف، لطیف اور رواں ہو اھ اور اس کے علاوہ کوئی معنی نہیں بتائے، اور صحاح جوہری میں ماء زلال یعنی میٹھا اھ اور حیوۃ الحیوان میں ہے زبانوں پر مشہور یہ ہے کہ زلال ٹھنڈے پانی کو کہتے ہیں (ت)

1 فتح القدير مسح الخفين رضويه سكهر ١/١٣٢ 2 القاموس المحيط (زللت) مصطفى البابى مصر ٣/٢٠٠ 3 صحاح الجوہرى (زلل) بيروت ٢/١٧١٨ 4 حياة الحيوان الكبرى (زلال) مصطفى البابى مصر ١/٥٣٧

Fatawa Ridawiyya, Volume 2 On this assumption, there is no reason to count it, but Allama Shami narrated from Imam Ibn Hajar Makki that in snow, there is something in the shape of an animal but it is not actually an animal. The liquid that comes from its belly is called 'Zulal'.

Where he said after mentioning 'Tall', I say likewise is 'Zulal'. Ibn Hajar says it is what comes out of the inside of an image found in something like snow, like an animal but it is not an animal.[1] After mentioning 'Tall', he said, "I say and similarly is 'Zulal'". Ibn Hajar states that an animal-like shape is found in snow which is not actually an animal. The water that comes from its belly is 'Zulal'. (T)

I say: if this (1) is proven, then denying its animal nature requires evidence. Its appearance is that of an animal, and in books and the established works of Shafi'i imams, it is called an animal. It is about the size of a finger, white with yellow spots, and the name of the animal itself is given as 'Zulal'. It is stated in Taj al-Urus:

'Zulal' (with damma) is a small-bodied white animal; when it dies, it is placed in water and cools it. From this, cold water is named 'Ma' Zulal'.[2] Zulal (with damma) is a small white-bodied animal. When it dies, people put it in water, it cools the water. For this reason, cold water is called 'Ma-e-Zulal'. (T)

In Hayat al-Hayawan by Imam Damiri Shafi'i, it is written:

'Zulal' (with damma) is a worm that grows in snow; it is spotted with yellow, nearly a finger in length. People take it from its places to drink what is inside its belly due to its extreme coldness.[3] Zulal (with damma), a worm that lives in snow, it has yellow spots, it's about a finger's length. People catch it so they can drink what comes out of its belly, because this water is very cold. (T)

On the assumption of it being an animal, Imam Ibn Hajar Shafi'i declared that water stagnant and impure.

'Sh' said from Ibn Hajar after what has passed: so if it is realized (meaning... 'Sh' narrated from Ibn Hajar, so if it is established (meaning...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/132 [2] Taj al-Urus, Section Za from Chapter of Lam, printed by Ihya al-Turath al-Arabi, 7/359 [3] Hayat al-Hayawan al-Kubra (Zulal), al-Babi Egypt, 1/536

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय इस अनुमान पर तो इसकी गिनती का कोई कारण नहीं है, लेकिन अल्लामा शामी ने इमाम इब्न हजर मक्की से उद्धृत किया है कि बर्फ में एक चीज़ जानवर की शक्ल में होती है लेकिन वह वास्तव में जानवर नहीं है। उसके पेट से जो पानी निकलता है वह 'ज़ुलाल' है।

जहाँ उन्होंने 'तल्ल' के ज़िक्र के बाद कहा, मैं कहता हूँ कि इसी तरह 'ज़ुलाल' है। इब्न हजर कहते हैं कि यह वह है जो बर्फ जैसी चीज़ों में पाई जाने वाली एक जानवर जैसी आकृति के अंदर से निकलता है, जबकि वह जानवर नहीं है।[1] उन्होंने तल्ल के उल्लेख के बाद फ़रमाया, "मैं कहता हूँ और इसी तरह 'ज़ुलाल' है।" इब्न हजर फ़रमाते हैं कि बर्फ में एक जानवरों जैसी शक्ल की चीज़ पाई जाती है जो वास्तव में जानवर नहीं होती। उसके पेट से जो पानी निकलता है वह ज़ुलाल है। (त)

मैं कहता हूँ: अगर यह (1) साबित हो जाए, तो उसके जानवर होने से इंकार करना प्रमाण का मोहताज है। उसकी सूरत जानवर की है और किताबों तथा शाफ़ई इमामों के सर्वमान्य ग्रंथों में उसे जानवर कहा गया है। वह उंगली के बराबर लंबा, सफ़ेद रंग का और पीले धब्बों वाला होता है, और खुद उस जानवर का नाम 'ज़ुलाल' बताया गया है। ताज अल-उरूस में है:

'ज़ुलाल' (पेश के साथ) एक छोटा सफ़ेद शरीर वाला जानवर है। जब वह मर जाता है, तो उसे पानी में डाल दिया जाता है जिससे वह पानी को ठंडा कर देता है। इसी कारण ठंडे पानी को 'मा-ए-ज़ुलाल' कहा जाता है।[2] ज़ुलाल (पेश के साथ) सफ़ेद शरीर का एक छोटा सा जानवर है। जब मर जाता है तो उसे पानी में डाल देते हैं, यह पानी को ठंडा करता है। और इसीलिए ठंडे पानी को मा-ए-ज़ुलाल कहते हैं। (त)

हयातुल हैवान इमाम दमीरी शाफ़ई में है:

'ज़ुलाल' (पेश के साथ) एक कीड़ा है जो बर्फ में पलता है। यह पीले धब्बों वाला होता है और लगभग एक उंगली के बराबर होता है। लोग इसे इसके स्थानों से पकड़ते हैं ताकि इसके पेट के अंदर की चीज़ को इसकी अत्यधिक ठंडक के कारण पी सकें।[3] ज़ुलाल (पेश के साथ), एक कीड़ा जो बर्फ में पलता है, उस पर पीले रंग की चित्तियाँ होती हैं। यह लगभग एक उंगली के बराबर होता है। लोग उसे पकड़ते हैं ताकि उसके पेट से जो निकलता है उसे पी सकें क्योंकि यह पानी बहुत ठंडा होता है। (त)

उसके जानवर होने के आधार पर इमाम इब्न हजर शाफ़ई ने उस पानी को स्थिर होने पर नापाक बताया।

'श' ने इब्न हजर से उद्धृत किया, इसके बाद जो गुज़रा: तो अगर यह सत्यापित हो जाए (यानी... 'श' ने इब्न हजर से नकल किया, तो अगर यह साबित हो जाए (यानी...

---

[1] रद अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/132 [2] ताज अल-उरूस, फ़स्ल अज़-ज़ा, बाब अल-लाम, इह्या अत-तुरास अल-अरबी द्वारा प्रकाशित, 7/359 [3] हयात अल-हैवान अल-कुबरा (ज़ुलाल), अल-बाबी मिस्र, 1/536

فتاوی رضویہ جلد ثانی اس تقدیر پر تو اس کے شمار کی کوئی وجہ نہیں مگر علامہ شامی نے امام ابن حجر مکی سے نقل کیا کہ برف میں ایک چیز جانور کی شکل پر ہوتی ہے اور حقیقۃً جانور نہیں اس کے پیٹ سے جو پانی نکلتا ہے وہ زلال ہے،

حیث قال عقیب ذکر الطل اقول وکذا الزلال قال ابن حجر وھو ما یخرج من جوف صورۃ توجد فی نحوا الثلج کالحیوان ولیست بحیوان[1]- انہوں نے طل کے ذکر کے بعد فرمایا میں کہتا ہوں اور اسی طرح "زلال" ہے، ابن حجر فرماتے ہیں کہ برف میں حیوانی شکل کی ایک چیز پائی جاتی ہے جو دراصل حیوان نہیں ہوتی ہے اس کے پیٹ سے جو پانی نکلتا ہے وہ زلال ہے۔ (ت)

اقول: یہ اگر ثابت (۱) ہو تو اُس کے جانور ہونے سے انکار محتاج دلیل ہے اُس کی صورت جانور کی ہے اور کتابوں اور جمود ائمہ شافعیہ کی کتب میں اُسے حیوان کہا انگلی برابر قد سفید رنگ زرد چتیاں اور خود اس جانور ہی کا نام زلال بتایا تاج العروس میں ہے۔

الزلال بالضم حیوان صغیر الجسم ابیضہ اذا مات جعل فی الماء فیبردہ ومنہ سمی الماء البارد زلالا[2]- زلال، پیش کے ساتھ سفید جسم کا ایک چھوٹا سا جانور ہے، جب مر جاتا ہے تو اس کو پانی میں ڈال دیتے ہیں یہ پانی کو ٹھنڈا کرتا ہے، اور اسی لئے ٹھنڈے پانی کو ماءِ زلال کہتے ہیں۔ (ت)

حیاۃ الحیوان امام دمیری شافعی میں ہے:

الزلال بالضم دود یتربی فی الثلج وھو منقط بصفرۃ یقرب من الاصبع یأخذہ الناس من اماکنہ لیشربوا ما فی جوفہ لشدۃ بردہ[3]- زلال پیش کے ساتھ، ایک کیڑا جو برف میں پلتا ہے اس پر پیلے رنگ کی چتیاں ہوتی ہیں، تقریباً ایک انگلی کے برابر ہوتا ہے لوگ اس کو پکڑتے ہیں تاکہ اس کے پیٹ میں سے جو نکلتا ہے وہ پی سکیں، کیونکہ یہ پانی بہت ٹھنڈا ہوتا ہے (ت)

اُس کے حیوان ہونے کی تقدیر پر امام ابن حجر شافعی نے اُس پانی کو تلے ٹھہرا کر ناپاک بتایا۔

قال ش عن ابن حجر بعد مامر فان تحقق ش نے ابن حجر سے نقل کیا پس اگر متحقق ہو (یعنی

---

[1] رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳۲ [2] تاج العروس فصل الزا من باب اللام مطبوعہ احیاء التراث العربی ۷/ ۳۵۹ [3] حیاۃ الحیوان الکبری (زلال) البابی مصر ۱/ ۵۳۶

Fatawa Razawiya, Volume 2

(i.e., its being an animal) it would be impure because it is vomit[1]. - If its being an animal is proven, it will be impure because it is vomit. (T)

I say: There is discussion about the applicability of the definition of vomit to it, and in the books of the Shafi'i school, its permissibility for ablution is explicitly stated in "Sharh Wajiz" by Abu al-Faraj al-Ajli al-Shafi'i:

The water found in the snow worm is purifying[2]. - That water which is in the ice worm is pure and purifying. (T)

In "Hayat al-Hayawan" it is stated:

What he said agrees with the opinion of Qazi Hussain mentioned earlier regarding worms[3]. - What they said is in accordance with the saying of Qazi Hussain as mentioned before in the discussion of worms. (T)

Allama Shami stated that as long as that animal is not proven to be blood-bearing, the water is pure but not usable for ablution.

Where he said: Yes, it is not impure according to us as long as its being blood-bearing is not known. As for removing ritual impurity with it, it is not valid even if it is not blood-bearing[4]. - He said as long as its being blood-bearing is not known, it is not impure according to us. As for attaining purity from it, it is not correct even if it is not blood-bearing. (T)

I say: Apparently, the purity of this water is not a matter of doubt, just like the silkworm, which is itself pure, and its water and even its excrement are pure, as stated in Alamgiriyya:

The water of the silkworm, the worm itself, and its excrement are pure, as stated in Al-Qunyah[5]. - The silkworm, its water, and its excrement are pure, as it is in Al-Qunyah. (T)

It is written in "Al-Khulasah":

(3) If a worm is born from impurity, Shams al-Aimmah al-Halwani said it is not [impure]. - A worm that is born in impurity, Shams al-Aimmah al-Halwani says it is not impure, and this is the case with every animal.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Al-Babi, Egypt, 1/132.

2. Hayat al-Hayawan al-Kubra (Zulal), Al-Babi, Egypt, 1/536.
3. Hayat al-Hayawan al-Kubra (Zulal), Al-Babi, Egypt, 1/536.
4. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Al-Babi, Egypt, 1/132.
5. Fatawa Hindiyya, Second Chapter on Impure Substances, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/46.

फ़तावा रज़विया, खंड दो

(अर्थात, इसका प्राणी होना) वह अशुद्ध होगा क्योंकि वह वमन (उल्टी) है।[1] - यदि इसका प्राणी होना सिद्ध हो जाए तो वह अशुद्ध होगा क्योंकि वह उल्टी है। (त)

मैं कहता हूँ: इस पर उल्टी की परिभाषा लागू होने के संबंध में चर्चा है और शाफ़ई मत की पुस्तकों में इससे वज़ू की अनुमति स्पष्ट है, "शरह वजीज़" अबू अल-फ़रज अल-अजली अल-शाफ़ई में है:

वह जल जो बर्फ के कीड़े में होता है, वह पवित्र करने वाला (तहूर) है।[2] - वह पानी जो बर्फ वाले कीड़े में होता है, पाक और तहूर है। (त)

"हयात अल-हैवान" में है:

उन्होंने जो कहा वह काज़ी हुसैन के उस मत के अनुकूल है जो कीड़ों के संबंध में पहले बीत चुका है।[3] - जो उन्होंने कहा वह काज़ी हुसैन के कौल (कथन) के मुताबिक है जैसा कि कीड़ों के ज़िक्र में पहले गुज़रा। (त)

अल्लामा शामी ने जब तक उस जानवर का रक्त वाला होना सिद्ध न हो, पानी को पाक मगर वज़ू के लिए अनुपयुक्त बताया।

जैसा कि उन्होंने कहा: हाँ, वह हमारे नज़दीक तब तक अशुद्ध नहीं है जब तक उसका रक्त वाला होना ज्ञात न हो। जहाँ तक इससे अशुद्धि (हदस) दूर करने का प्रश्न है, वह सही नहीं है चाहे वह रक्त वाला न हो।[4] - उन्होंने फ़रमाया जब तक उसका दमवी (रक्त वाला) होना मालूम न हो हमारे नज़दीक नजिस (अशुद्ध) नहीं, रहा उससे पाक हासिल करना तो यह सही नहीं अगरचे वह ग़ैर-दमवी हो। (त)

मैं कहता हूँ: प्रत्यक्ष रूप से इस पानी की पवित्रता संदेह का विषय नहीं है जैसे रेशम का कीड़ा कि वह स्वयं भी पाक है और उसका पानी बल्कि उसकी बीट भी पाक है, 'आलमगीरिया' में है:

रेशम के कीड़े का पानी, वह स्वयं और उसकी बीट पाक है जैसा कि "अल-कुन्या" में है।[5] - रेशम का कीड़ा, उसका पानी और उसकी बीट पाक है जैसा कि कुन्या में है। (त)

"अल-खुलासा" में लिखा है:

(3) कीड़ा जब अशुद्धि से उत्पन्न हो, शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी ने कहा कि वह अशुद्ध नहीं है। - कीड़ा जो नजासत (अशुद्धि) में पैदा हो तो शम्सुल अइम्मा हलवानी फ़रमाते हैं कि वह नापाक नहीं है और यही हाल हर हैवान (प्राणी) का है।

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, अल-बाबी, मिस्र 1/132
2. हयात अल-हैवान अल-कुबरा (जुलाल), अल-बाबी, मिस्र 1/536
3. हयात अल-हैवान अल-कुबरा (जुलाल), अल-बाबी, मिस्र 1/536
4. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, अल-बाबी, मिस्र 1/132
5. फ़तावा हिन्दिया, दूसरा अध्याय, नजिस वस्तुओं के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/46

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

(ای کونہ حیوانا) کان نجسا لانہ قیئی[1] - اس کا حیوان ہونا ثابت ہو جائے تو وہ نجس ہو گا اس لئے کہ وہ قے ہے۔ (ت)

اقول: قے کی تعریف اس پر صادق آنے میں کلام ہے اور کتب شافعیہ میں اُس سے جواز وضو مصرح شرح وجیز ابو الفرج عجلی شافعی میں ہے:

الماء الذی فی دود الثلج طھور[2] - وہ پانی جو برف والے کیڑے میں ہوتا ہے پاک طہور ہے۔ (ت)

حیاۃ الحیوان میں ہے:

الذی قالہ یوافق قول القاضی حسین فیما تقدم فی الدود[3] - جو انہوں نے کہا وہ قاضی حسین کے قول کے موافق ہے جیسا کہ دود کے ذکر میں پہلے گزرا۔ (ت)

علامہ شامی نے جب تک اُس جانور کا دموی ہونا ثابت نہ ہو پانی پاک مگر نا قابلِ وضو بتایا۔

حیث قال نعم لایکون نجسا عندنا مالم یعلم کونہ دمویا اما رفع الحدث بہ فلا یصح وان کان غیر دموی[4] - انہوں نے فرمایا جب تک اس کا دموی ہونا معلوم نہ ہو ہمارے نزدیک نجس نہیں، رہا اس سے پاک حاصل کرنا تو یہ صحیح نہیں اگرچہ وہ غیر دموی ہو۔ (ت)

اقول: ظاہرًا اس پانی کی طہارت محلِ اشتباہ نہیں جیسے ریشم کا کیڑا کہ خود بھی پاک ہے اور اس کا پانی بلکہ بیٹ بھی پاک عالمگیریہ میں ہے:

ماء دود القز وعینہ وخرؤہ طاھر کذا فی القنیۃ[5] - ریشم کا کیڑا اس کا پانی اور اس کی بیٹ پاک ہے جیسا کہ قنیہ میں ہے۔ (ت)

لکہ خلاصہ میں ہے:

(۳) الدودة اذا تولدت من النجاسة قال شمس الائمة الحلوانی انها لیست - کیڑا جو نجاست میں پیدا ہو تو شمس الائمہ حلوانی فرماتے ہیں کہ وہ ناپاک نہیں ہے اور یہی حال ہر حیوان کا ہے۔

---

1 رد المحتار باب المیاہ البابی مصر ۱/ ۱۳۲ 2 حیاۃ الحیوان الکبری (زلال) البابی مصر ۱/ ۵۳۶ 3 حیاۃ الحیوان الکبری (زلال) البابی مصر ۱/ ۵۳۶ 4 رد المحتار باب المیاہ البابی مصر ۱/ ۱۳۲ 5 فتاوی ھندیة الفصل الثاني في الاعیان النجسة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۶

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Quote]: ...with impurity, and likewise every animal; so that if it is washed and then falls into the water, it does not make it impure, and prayer is permissible with it. [Translation]: So, if an animal is washed and then falls into the water, it will not make it impure, and prayer with it is permissible. (T)

(1) And when it is pure, as long as it is not proven that this is not water but rather the moisture from the belly of this insect, or its moisture is mixed in it by half or more, there is no apparent reason for it to be unsuitable for ablution. Apparently, it is the water from ice found in its belly. There are only two scenarios for pure water losing its purifying quality: either it ceases to be absolute water due to mixing with something else, or it becomes 'used' (must'amal) through the fulfillment of an obligatory act or a voluntary act of worship. The second scenario is absolutely absent here, and there is no proof for the first. No absolute can be restricted without proof.

[Arabic Quote]: Do you not see that impurity is not established by doubt? And it takes away both purifying power and purity together, let alone being restricted. [Translation]: Impurity is not established by doubt, and it deprives of purifying power and purity as well, let alone restriction. (T)

(8) Hot Water [Arabic Quote]: And this is by consensus, except for what is narrated from Mujahid regarding its dislike. (There is agreement on this, except for what is reported from Mujahid about its being disliked. (T))

I say: But so hot that (1) it cannot be poured properly, preventing the completion of the Sunnah, then it is disliked. Similarly, so cold. And if it prevents the completion of the obligatory (fard) part, then it is prohibited (haram) and that ablution will not be valid. It is in Sahih Bukhari: [Arabic Quote] 'Umar (may Allah be pleased with him) performed ablution with hot water.' (In Sahih Bukhari, it is mentioned that Hazrat Umar (RA) performed ablution with hot water. (T))

(9) Water heated by dung-cakes, and it is better to avoid it. It is in Durr-e-Mukhtar: [Arabic Quote] 'Ahmad disliked what was heated with impurity.' (Imam Ahmad considered water heated through impurity as disliked. (T))

(10) Sun-heated water in general, but in a hot country (2) during the hot season, water that becomes heated by the sun in a container made of any metal other than gold or silver should not be applied to the body in any way until it cools down—not

for ablution, bathing, or drinking. Even clothes soaked in it should not be worn until they have cooled, because that water...

---

1 Khulasa-tul-Fatawa, Chapter Seven, on what becomes impure, etc., Naval Kishore Lucknow, 1/44. 2 Jami' al-Bukhari, Chapter on a man's ablution with his wife, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/32. 3 Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Lahore, 1/34.

फ़तावा रज़विया खंड द्वितीय

[अरबी उद्धरण]: ...अशुद्धि के साथ, और इसी तरह हर जानवर; ताकि अगर उसे धोया जाए और फिर वह पानी में गिर जाए, तो वह उसे अशुद्ध नहीं करता है, और उसके साथ नमाज़ जायज़ है। अनुवाद: तो अगर किसी जानवर को धोया जाए फिर वह पानी में गिर जाए तो उस को नापाक नहीं करेगा, और उस के साथ नमाज़ जायज़ है। (त)

(१) और जब यह पाक (शुद्ध) है तो जब तक यह साबित न हो कि यह पानी नहीं बल्कि इस कीड़े ही के पेट की नमी है या उसकी नमी इसमें आधी या उससे अधिक मिली हुई है, इसके वज़ू के अयोग्य होने का कोई ज़ाहिरी कारण नहीं है। ज़ाहिर है कि यह बर्फ़ ही का पानी है जो उसके पेट में मिलता है और पाक पानी के ग़ैर-तहूर (शुद्ध करने वाला न रहना) होने की दो ही सूरतें हैं: या तो किसी बाहरी चीज़ के मिल जाने से वह पानी मुतलक़ (शुद्ध पानी) न रहे, या फ़र्ज़ पूरा करने या सवाब पाने की नियत से इस्तेमाल होने के कारण 'मुस्तमल' हो जाए। दूसरी सूरत यहाँ बिल्कुल नहीं है और पहली का कोई प्रमाण नहीं है। और बिना प्रमाण के किसी मुतलक़ (निरपेक्ष) को मुक़य्यद (सीमित) नहीं किया जा सकता।

[अरबी उद्धरण]: क्या तुम नहीं देखते कि अशुद्धि संदेह से साबित नहीं होती? और वह तहारत (शुद्धता) और तहूरियत (शुद्ध करने की शक्ति) दोनों को एक साथ खत्म कर देती है, मुक़य्यद करने की बात तो दूर की है।

(८) गरम पानी [अरबी उद्धरण]: और यह सर्वसम्मति है सिवाय उसके जो मुजाहिद से इसकी कराहत (नापसंदगी) के बारे में वर्णित है। (इस बात में इत्तिफ़ाक़ है मगर वह जो मुजाहिद से उसकी कराहत मंकूल है। (त))

मैं कहता हूँ: लेकिन इतना गरम कि (१) अच्छी तरह डाला न जा सके और सुन्नत पूरी न करने दे, तो वह मकरूह है। इसी तरह इतना ठंडा। और अगर वह फ़र्ज़ पूरा करने से रोके तो हराम है और वह वज़ू नहीं होगा। सहीह बुखारी में है: [अरबी उद्धरण] 'हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने गरम पानी से वज़ू फ़रमाया।' (सहीह बुखारी में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गरम पानी से वज़ू फ़रमाया। (त))

(९) उपलों से गरम किया हुआ पानी और उससे बचना बेहतर है। दुर्रे मुख्तार में है: [अरबी उद्धरण] 'अहमद ने अशुद्धि से गरम किए हुए पानी को मकरूह माना है।' (नजासत के ज़रिए गरम किए हुए पानी को इमाम अहमद ने मकरूह माना है। (त))

(१०) धूप का गरम पानी आम तौर पर, लेकिन गरम मुल्क (२) और गरम मौसम में जो पानी सोने-चांदी के सिवाय किसी और धातु के बर्तन में धूप से गरम हो जाए, जब तक वह ठंडा न हो जाए, उसे किसी भी तरह शरीर पर नहीं लगाना चाहिए—न वज़ू के लिए, न ग़ुस्ल (स्नान) के लिए और न पीने के लिए। यहाँ तक कि उससे भीगा हुआ कपड़ा भी जब तक ठंडा न हो जाए पहनना उचित नहीं है क्योंकि उस पानी के..

---

१ खुलासा-तुल-फ़तावा, सातवां अध्याय, उन चीज़ों के बारे में जो नापाक होती हैं इत्यादि, नवल किशोर लखनऊ, 1/44. २ जामि अल-बुखारी, अपनी पत्नी के साथ पुरुष के वज़ू का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/32. ३ अद-दुर्र अल-मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई लाहौर, 1/34.

पृष्ठ ४६५/७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[عربی عبارت]: بنجسۃ و کذا کل حیوان حتی لو غسل ثم وقع في الماء لا ینجسه وتجوز الصلاۃ معها ۱۔ [ترجمہ]: تو اگر کسی حیوان کو دھویا جائے پھر وہ پانی میں گر جائے تو اس کو ناپاک نہیں کرے گا ، اور اس کے ساتھ نماز جائز ہے۔ (ت)

(۱) اور جب طاہر ہے تو جب تک ثابت نہ ہو کہ یہ پانی نہیں بلاکہ اس کیڑے ہی کے پیٹ کی رطوبت ہے یا اُس کی رطوبت اس میں نصف یا زائد ملی ہوئی ہے ناقابلِ وضو ہونے کی کوئی وجہ نہیں ظاہراً وہ برف ہی کا پانی ہے کہ اس کے جوف میں ملتا ہے اور پاک پانی کے غیر طہور ہونے کی دو ہی صورتیں ہیں یا تو خلط غیر سے مائے مطلق نہ رہے یا اسقاط فرض خواہ اقامت قربت سے مستعمل ہو جائے ثانی یہاں قطعاً منتفی اور اول کا ثبوت نہیں اور کوئی مطلق بلا ثبوت مقید نہیں ہوسکتا۔

[عربی عبارت]: الا تری ان النجاسة لا تثبت بالشك وهی تسلب الطهورية والطهارة معا فضلا عن التقييد۔ [ترجمہ]: نجاست شک سے ثابت نہیں ہوتی ہے اور یہ طہوریت کو سلب کرتی ہے اور طہارت کو بھی چہ جائیکہ تقیید۔ (ت)

(۸) گرم پانی [عربی عبارت]: وهذا وفاق الا ما یحکی عن مجاهد من کراهة ۔ (اس بات میں اتفاق ہے مگر وہ جو مجاہد سے اس کی کراہت منقول ہے ۔ت)

اقول : مگر اتنا گرم کہ (۱) اچھی طرح ڈالا نہ جائے تکمیل سنت نہ کرنے دے مکروہ ہے یونہی اتنا سرد اور اگر تکمیل فرض سے مانع ہو تو حرام اور وہ وضو نہ ہو گا وفی صحیح البخاري توضأ

عمر رضی اللہ تعالی عنہ بالحمیم ۲ (صحیح بخاری میں ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے گرم پانی سے وضو فرمایا۔ت)

(۹) اپلوں سے گرم کیا ہوا اور بچنا بہتر ، در مختار میں ہے : وکرہ احمد المسخن بالنجاسۃ ۳ (نجاست کے ذریعے گرم شدہ پانی کو امام احمد نے مکروہ گردانا ہے۔ت)

(۱۰) دھوپ کا گرم پانی مطلقاً مگر گرم ملک (۲) گرم موسم میں جو پانی سونے چاندی کے سوا کسی اور دھات کے برتن میں دھوپ سے گرم ہو جائے وہ جب تک ٹھنڈا نہ ہو لے بدن کو کسی طرح پہنچانا نہ چاہئے وضو سے غسل سے نہ پینے سے یہاں تک کہ جو کپڑا اس سے بھیگا ہو جب تک سرد نہ ہو جائے پہننا مناسب نہیں کہ اُس پانی کے

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ الفصل السابع فیما یکون نجسًا الخ نولکشور لکھنئو ۱ / ۴۴ 2 جامع للبخاری باب وضوء الرجل مع امرأتہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۲ 3 الدر المختار باب المیاہ مجتبائی لاہور ۱ / ۳۴

Fatawa Rizvia, Volume 2

Regarding it reaching the body, God forbid, there is a possibility of leprosy. There are many differences of opinion on this issue, and in our book 'Muntaha al-Amal fi al-Awfaq wa al-A'mal', I chose the most correct and preferred view from every disagreement and mentioned it in brief words; here is its transcription.

It is as follows: Darqutni narrated from 'Amir, and Uqayli narrated from Anas, as a marfu' (attributed to the Prophet) tradition. Darqutni and Shafi'i narrated from 'Umar al-Faruq as a mawquf (attributed to a companion) tradition: "Do not bathe with water heated by the sun, for it causes leprosy." Darqutni and Abu Nu'aym narrated from the Mother of the Believers (Aisha) that she heated water in the sun for the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). He said, "Do not do this again, O Humayra, for it causes leprosy."

And scholars have placed certain conditions on this, for example: that the warm water be in a hot region and at a hot time. Also, that the water was in a vessel made of hammered metal, such as iron or copper, according to the most correct (asah) view. However, if it was heated in vessels of gold or silver, it is not [prohibited] according to the reliable (mu'tamad) view. Nor if heated in vessels of clay, skin, stone, or wood placed in the sun. Water heated by the sun in ponds or ditches is definitely not included. This water must be used on the body; even if drunk, the same danger exists. There is no harm in washing clothes with it; however, if a cloth is washed and worn while still wet, there is a danger, or if a cloth is worn and there is sweat on the body. This water is problematic when used warm; if used after it has cooled down, there is no harm. This is the most correct (asah) view, though there is another view as well.

---

1 Sunan al-Darqutni, Chapter: Heated Water, Nashr al-Sunnah Multan, 1/39 2 Sunan al-Darqutni, Chapter: Heated Water, Nashr al-Sunnah Multan, 1/38

शरीर तक पहुँचने से, अल्लाह न करे, सफेद दाग (कोढ़) होने की संभावना है। इस बारे में बहुत सारे मतभेद हैं, और हमने अपनी किताब 'मुंतहा अल-आमाल फी अल-औफ़ाक़ व अल-आमाल' में हर मतभेद से सबसे सही और पसंदीदा राय चुनी है और उसे संक्षिप्त शब्दों में ज़िक्र किया है; यहाँ उसी की नकल पेश है।

वह यह है: दारक़ुतनी ने आमिर से और उक़ैली ने अनस से मरफ़ूअ (पैगंबर से संबंधित) रिवायत की है। दारक़ुतनी और शाफ़ई ने उमर फ़ारूक़ से मौक़ूफ़ (साहबी से संबंधित) रिवायत की है कि: "तुम सूरज की धूप से गरम हुए पानी से गुस्ल न करो क्योंकि इससे सफ़ेद दाग पैदा होता है।" दारक़ुतनी और अबू नुऐम ने उम्मुल मोमिनीन (आयशा) से रिवायत की है कि उन्होंने हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए धूप में पानी गरम किया, तो आपने फरमाया: "ऐ हुमैरा! आइंदा ऐसा न करना, क्योंकि इससे सफ़ेद दाग पैदा होता है।"

विद्वानों ने इस पर कुछ शर्तें लगाई हैं, उदाहरण के लिए: यह गरम पानी गरम इलाके में हो और गरम समय में हो। साथ ही, यह पानी किसी धातु के बने हुए बर्तन में हो, जैसे लोहे या तांबे के बर्तन में, सबसे सही (अस़ह) राय के अनुसार। लेकिन, अगर इसे सोने या चाँदी के बर्तन में गरम किया गया हो, तो विश्वसनीय (मुअतमद) राय के अनुसार यह वर्जित नहीं है। न ही मिट्टी, चमड़े, पत्थर या लकड़ी के बर्तनों को धूप में रखकर गरम किया गया पानी वर्जित है। हौज़ और गड्ढे में सूरज की धूप से गरम हुआ पानी निश्चित रूप से इसमें शामिल नहीं है। यह पानी शरीर पर इस्तेमाल किया गया हो; अगर पी लिया जाए तो भी वही खतरा है। कपड़े धोने में कोई हर्ज नहीं है; हाँ, अगर कपड़े धोकर गीले ही पहन लिए जाएँ तो खतरा है, या कपड़ा पहना हुआ हो और शरीर पर पसीना हो। यह पानी गरम इस्तेमाल करने पर समस्या है; अगर ठंडा होने के बाद इस्तेमाल किया जाए तो कोई हर्ज नहीं। सबसे सही राय यही है, और एक राय यह भी है...

---

1 सुनन अद-दारक़ुतनी, अध्याय: गरम किया हुआ पानी, नश्र-ए-सुन्नत मुल्तान, 1/39 2 सुनन अद-दारक़ुतनी, अध्याय: गरम किया हुआ पानी, नश्र-ए-सुन्नत मुल्तान, 1/38

فتاوی رضویہ جلد ثانی

بدن کو پہنچنے سے معاذ اللہ احتمالِ برص ہے اختلافات اس میں بکثرت ہیں اور ہم نے اپنی کتاب منتہی الآمال فی الاوفاق والاعمال میں ہر اختلاف سے قولِ اصح وارجح چنا اور مختصر الفاظ میں اسے ذکر کیا اُسی کی نقل بس ہے

وھو ھذا قط (ای الدار قطنی) عن عامر والعقیلی عن انس مرفوعاً قط والشافعي عن عمر الفاروق موقوفاً لا تغتسلوا بالماء المشمس فانه یورث البرص ۱ قط وابو نعیم عن ام المؤمنین انها سخنت للنبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم ماء في الشمس فقال لا تفعلی یاحمیراء فانه یورث البرص ۲ وقیده العلماء بقیود ان یکون فی قطر ووقت حارین وقد تشمس فی منطبع صابر تحت المطرقة کحدید ونحاس علی الاصح الا النقدین علی المعتمد دون الخزف والجلود والحجار والخشب ولا للشمس فی الحیاض والبرك قطعاً وان یستعمل في البدن ولو شربا لا في الثواب الا اذا لبسه رطباً او مع العرق وان یستعمل حاراً فلو برد لاباس علی الاصح وقیل لافرق علی الصحیح ووجه ورد فالاول الاوجه قیل وان لایکون الاناء منکشفاً والراجح ولو فالحاصل منع ایصال الباء المشمس فی اناء منطبع من غیر النقدین الی البدن في وقت وبلد حارین

دار قطنی نے عامر سے اور عقیلی نے انس سے مرفوعاً روایت کی، دار قطنی اور شافعی نے عمر فاروق سے موقوفاً روایت کی کہ تم آفتاب سے گرم شدہ پانی سے غسل نہ کرو کہ اس سے برص پیدا ہوتا ہے، دار قطنی اور ابو نعیم نے ام المؤمنین سے روایت کی کہ آپ نے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیلئے آفتاب سے پانی گرم کیا تو آپ نے فرمایا: آئندہ ایسا نہ کرنا اے حمیراء کیونکہ اس سے برص پیدا ہوتا ہے۔ اور علماء نے اس میں کچھ قیود لگائی ہیں مثلاً یہ کہ گرم پانی

گرم علاقہ میں ہو، گرم وقت میں ہو، یہ کہ پانی کسی دھات کے بنے ہوئے برتن میں جیسے پانی لوہے تانبے کے برتن میں ہوا ہو اصح قول کے مطابق مگر سونے چاندی کے برتن میں گرم نہ کیا گیا ہو معتمد قول کے مطابق مٹی کھال پتھر اور لکڑی کے برتنوں کو دھوپ میں رکھ کر گرم نہ کیا گیا ہو۔ حوض اور گڑھے میں سورج کا گرم شدہ پانی قطعاً نہ ہو، یہ پانی بدن میں استعمال ہوا ہو، اگرچہ پی لیا تو بھی یہی خطرہ ہے، کپڑے دھوئے تو حرج نہیں، ہاں اگر کپڑا دھو کر تر ہی پہن لیا تو خطرہ ہے، یا کپڑا پہنا اور جسم پر پسینہ تھا، یہ پانی گرم استعمال کیا جائے اگر ٹھنڈا ہونے کے بعد استعمال کیا تو حرج نہیں، اصح قول یہی ہے، اور ایک قول یہ بھی ہے

---

1 سنن الدار قطنی باب الماء المسخن نشر السنہ ملتان ۱ / ۳۹ 2 سنن الدار قطنی باب الماء المسخن نشر السنہ ملتان ۱ / ۳۸

Fatawa Rizvia Volume Two As long as it does not cool down, and Allah Almighty knows best.

That there is no difference, and this is correct, there is a justification for it and a rebuttal to it, so the reason for the first one is more correct. One saying is that the vessel should not be open, but the predominant view is 'even if the vessel was open' (i.e., even if the vessel is uncovered). So the summary is that the contact of sun-heated water from a vessel made of any metal other than gold and silver with the body, in a hot time and in a hot region, without cooling it, is prohibited. And Allah Almighty knows best. (T)

And the research is that, according to us also, wudu and ghusl with this water are disliked (makruh), as clarified in Al-Fath, Al-Bahr, Al-Dirayah, Al-Quniyah, and Al-Nihayah. (As has been stated in Fath, Bahr, Dirayah, Quniyah, and Nihayah - T). And this dislike is a legal (shari'i) discouragement (tanzihi).

As pointed out in Al-Hilyah and Al-Imdad, this is what 'Sh' (Shami) researched, contrary to Al-Tanwir and Al-Durr where they absolutely denied the dislike. It is possible to interpret the text of Al-Tanwir as referring to prohibitive dislike (tahrimi), but in Al-Durr it is clarified that according to the Shafi'is, it is a natural dislike, which is against their explicit statements. (T) I say: In Al-Tanwir, the condition of intention is added. They said, 'and with water whose heating in the sun was intended'. This condition is not accidental but to indicate the first point and to refer to the denial of what occurred in Al-Mi'raj that the dislike according to the Shafi'is is restricted by intention. So understand. (T)

(11) Water left over from a woman's purification, even if she was in a state of major ritual impurity (janaba) or menstruation, and even if she performed purification with that water in complete seclusion, contrary to [the views of Imams] Ahmad and Malik (there is a difference of opinion with Ahmad and Malik in this - T). Yes, it is certainly disliked (makruh) (3).

Rather, in Al-Siraj it is said that it is not permissible for a man to perform wudu and ghusl with the surplus water of a woman's wudu. End. And this is an explicit text. | Rather, it is in Al-Siraj that it is not permissible for a man to perform wudu from the leftover water of a woman's ghusl or wudu. End.

1 Rad al-Muhtar, Disliked acts of Wudu, Mustafa al-Babi Egypt, 1/98 Page 467 of 711

फ़तावा रिज़विया जिल्द सानी जब तक ठंडा न हो जाए और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

कि कोई अंतर नहीं है, और यही सही है, इसके लिए तर्क भी है और उस पर खंडन भी है, तो पहले वाले का कारण अधिक सही है। एक कथन यह है कि बर्तन खुला हुआ न हो, और अधिक मान्य विचार 'भले ही बर्तन खुला हो' है (यानी अगर बर्तन खुला भी हो)। तो सारांश यह है कि सोने-चांदी के अलावा किसी अन्य धातु के बर्तन से धूप से गर्म हुए पानी का शरीर पर पहुंचना, गर्म समय में और गर्म क्षेत्र में बिना ठंडा किए मना है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

और शोध यह है कि हमारे निकट भी इस पानी से वज़ू और ग़ुस्ल मकरूह है, जैसा कि अल-फ़तह, अल-बहर, अद-दिराया, अल-कुनिया और अन-निहाया में स्पष्ट किया गया है। (जैसा कि फ़तह, बहर, दिराया, कुनिया और निहाया में स्पष्टता के साथ कहा गया है - त)। और यह कराहत (नापसंदगी) शरीअत के अनुसार तंज़ीही (हल्की नापसंदगी) है।

जैसा कि अल-हिलिया और अल-इमदाद में संकेत दिया गया है, यही 'श' (शामी) ने शोध किया है, अल-तन्वीर और अद-दुर्र के विपरीत जहाँ उन्होंने कराहत से पूरी तरह इनकार किया है। अल-तन्वीर के कथन को मकरूह-ए-तहरीमी पर आधारित करना संभव है, लेकिन अद-दुर्र में यह स्पष्ट किया गया है कि शाफ़ईयों के निकट वह कराहत-ए-तबीइया है, और यह उनके स्पष्ट बयानों के खिलाफ है। (त) मैं कहता हूँ तन्वीर में इरादे की शर्त का इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) है, उन्होंने कहा 'और उस पानी से जिसे जानबूझकर धूप में गर्म किया गया है', यह शर्त इत्तफ़ाक़ी (संयोगवश) नहीं है बल्कि पहली बात पर दलील देने के लिए है और जो मेराज में कहा गया है उसकी नफ़ी (इनकार) के लिए है कि शाफ़ईयों के निकट कराहत उस समय है जब जानबूझकर (बिल-क़स्द) हो। फ़ाफ़हम (अतः समझ लें)। (त)

(11) औरत की पाकी (शुद्धिकरण) से बचा हुआ पानी, चाहे वह जुनुब (नापाक) या हयज़ (मासिक धर्म) वाली हो, और भले ही उसने उस पानी से पूर्ण एकांत में पाकी हासिल की हो, इमाम अहमद और मालिक के विपरीत (इसमें अहमद और मालिक का मतभेद है - त)। हाँ, मकरूह (3) ज़रूर है।

बल्कि अल-सिराज में है कि मर्द के लिए जाइज़ नहीं कि वह औरत के वज़ू और ग़ुस्ल के बचे हुए पानी से वज़ू करे। अंत। और यह स्पष्ट पाठ है। | बल्कि सिराज में है कि मर्द को जाइज़ नहीं कि वह औरत के ग़ुस्ल या वज़ू के बचे हुए पानी से वज़ू करे। अंत।

1 रद्दुल मुह्तार, वज़ू की मकरूहात, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/98 पृष्ठ 467/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی ما لم یبرد و اللہ تعالیٰ اعلم۔

کہ فرق نہیں، اور یہی صحیح ہے، اس کی توجیہ بھی ہے اور اس پر رد ہے، تو اول کی وجہ زیادہ درست ہے، ایک قول یہ ہے کہ برتن کھلا ہوا نہ ہو، اور راجح ولوکان الاناء منکشفاً ہے (یعنی اگرچہ برتن کھلا ہو) تو خلاصہ یہ ہے کہ دھوپ کے گرم پانی کا سونے چاندی کے علاوہ کسی اور دھات کے برتن سے جسم پر پہنچنا، گرم وقت میں اور گرم علاقہ میں بلا ٹھنڈا کیے ممنوع ہے واللہ تعالی اعلم۔(ت)

اور تحقیق یہ ہے کہ ہمارے نزدیک بھی اس پانی سے وضو و غسل مکروہ ہے کما صرح بہ فی الفتح والبحر والدرایۃ والقنیۃ والنہایۃ (جیسا کہ فتح، بحر، درایہ، قنیہ اور نہایہ میں صراحت کی گئی ہے۔ت) اور یہ کراہت شرعی تنزیہی ہے

کما اشار الیہ فی الحلیۃ والامداد ھذا ما حققہ ش خلافا للتنویر والدر حیث نفیا الکراھۃ اصلا ویمکن حمل التنویر علی التحریم اما الدر فصرح انھا طبعیۃ عند الشافعیۃ وھو خلاف نصھم۔ اقول: (۲) وزیادۃ التنویر قید القصد حیث قال وبماء قصد تشمیسہ لیس اتفاقیا بل الدلالۃ علی الاول واشارۃ الی نفی ما وقع فی المعراج ان الکراھۃ مقیدۃ عند الشافعي بالقصد فافھم۔ | جیسا کہ حلیہ اور امداد میں اشارہ کیا "ش" نے یہی تحقیق کی، تنویر اور در میں اس کے خلاف ہے، ان دونوں حضرات نے مطلقاً کراہت کا انکار کیا ہے، اور تنویر کی عبارت کو مکروہ تحریمی پر محمول کرنا ممکن ہے مگر در میں یہ تصریح کی گئی ہے کہ شافعیہ کے نزدیک وہ کراہت طبعیہ ہے اور یہ ان کی تصریحات کے خلاف ہے۔(ت) میں کہتا ہوں تنویر میں ارادہ کی قید کا اضافہ ہے انہوں نے فرمایا "اور اس پانی سے جس کو دھوپ میں قصداً گرم کیا گیا ہے، یہ قید اتفاقی نہیں ہے بلکہ پہلی پر دلالت کے لئے ہے اور جو

معراج میں فرمایا ہے اسکی نفی کیلئے ہے کہ شافعیوں کے نزدیک کراہت اس وقت ہے جب بالقصد ہو فافہم۔(ت)

(۱۱) عورت کی طہارت سے بچا ہوا پانی اگرچہ جنب یا حائض ہوا گرچہ اس پانی سے خلوت تامہ میں اُس نے طہارت کی ہو، خلافا لاحمد والمالکیۃ (اس میں احمد اور مالکیہ کا اختلاف ہے۔ت) ہاں مکروہ (۳) ضرور ہے۔

بل فی السراج لایجو ز للرجل ان یتوضأ ویغتسل بفضل وضوء المرأۃ ۱ اھ وھو نص | بلکہ سراج میں ہے کہ مرد کو جائز نہیں کہ وہ عورت کے غسل یا وضو کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرے اھ

1 رد المحتار مکروہات الوضوء مصطفی البابی مصر ۱ / ۹۸ صفحہ 467 از 711

Fatawa Razawiyya - Volume II

(Left Column - Arabic text with legal citations) Regarding the prohibition being 'Makruh Tahrimi' (prohibitively disliked), Tahtawi based this on the statement from 'Al-Durr' among the prohibited acts: "performing ablution with leftover water of a woman." He said there's a point of view here, and 'Sh' replied that it includes 'Makruh Tanzihi' (mildly disliked) because it is technically prohibited in reality as we cited from 'Al-Tahrir'. And Tahtawi reasoned it with the fear of deriving pleasure and their lack of caution regarding impurities due to deficiency in their religious observance. He said this indicates that the dislike is 'Tanzihi'. I say: 1) Based on the first opinion, the prohibition would include its opposite, meaning a woman performing ablution with the leftover water of a man's purification, and there is a discussion on this to come. As for the second opinion: Firstly: (2) It necessitates generalizing it to rural men, slaves, and ignorant people, and most of all (3) the blind. Thus, there remains no specialty for women. Secondly: It is not restricted to her purification, let alone her being in seclusion with it; merely her touching the water would suffice. Thirdly: (5) Regarding the claim that they are less cautious of impurities and the deficiency in their religious observance—that one of them stays half her life without fasting or praying as mentioned in the Hadith—this is not her own doing, unless it is reasoned by the predominance...

(Right Column - Urdu translation and explanation) And this is explicit regarding 'Makruh Tahrimi', and Tahtawi argued for this based on the statement in 'Durr': "Ablution should not be performed with the leftover water of a woman." He said there is a critique here, and 'Sh' replied that it includes 'Makruh Tanzihi' since it is prohibited in technical terminology in essence as we quoted from 'Tahrir'. And Tahtawi explained its reason as being twofold: one, the danger of pleasure, and second, that they do not avoid impurities due to their religious deficiency. He stated that it is understood from this that 'Makruh Tanzihi' is intended. (T) I say, according to the first statement, the prohibition covers its opposite, i.e., a woman performing wudu with a man's leftover water; there will be some discussion on this later. As for the second statement, the first point is that it applies generally to villagers, slaves, and the ignorant, and most of all to blind people. Thus, there is no specialty for women in this. Secondly, it is not a condition that it be her purification water, let alone that the woman use it in seclusion; rather, merely her touching the water would be enough. And thirdly, to say about them that they avoid impurities less is open to objection, this...

Footnotes: 1. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Disliked Acts of Ablution, Beirut 1/76. 2. Radd al-Muhtar, Disliked Acts of Ablution, Mustafa al-Babi Egypt 1/98. 3. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Disliked Acts of Ablution, Beirut 1/76.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

(बायां कॉलम - कानूनी उद्धरणों के साथ अरबी पाठ) मकरूह-ए-तहरीमी (निषेधात्मक नापसंदगी) के बारे में, तहतावी ने इसे 'अल-दुर' के उस कथन से पुष्ट किया है जिसमें प्रतिबंधित कार्यों में "स्त्री के बचे हुए पानी से वुज़ू करना" शामिल है। उन्होंने कहा कि इसमें एक दृष्टिकोण है, और 'श' ने उत्तर दिया कि इसमें 'मकरूह-ए-तंज़ीही' (हल्की नापसंदगी) शामिल है क्योंकि यह वास्तव में तकनीकी रूप से वर्जित है जैसा कि हमने 'अल-तहरीर' से उद्धृत किया है। और तहतावी ने इसका कारण आनंद प्राप्त करने के भय और उनके धार्मिक पालन में कमी के कारण अशुद्धियों के प्रति सावधानी की कमी को बताया। उन्होंने कहा कि यह संकेत देता है कि यह नापसंदगी 'तंज़ीही' है। मैं कहता हूँ: 1) पहले मत के अनुसार, निषेध इसके विपरीत को भी शामिल करेगा, यानी एक महिला का पुरुष के बचे हुए शुद्धिकरण जल से वुज़ू करना, और इस पर चर्चा आगे आएगी। जहाँ तक दूसरे मत का प्रश्न है: पहला: (2) यह इसे ग्रामीण पुरुषों, दासों और अज्ञानी लोगों पर, और सबसे बढ़कर (3) नेत्रहीनों पर सामान्य करने की आवश्यकता पैदा करता है। इस प्रकार, महिलाओं के लिए कोई विशेषता शेष नहीं रहती। दूसरा: यह उसके शुद्धिकरण तक ही सीमित नहीं है, उसके साथ एकांत में होने की बात तो दूर; केवल जल को स्पर्श करना ही पर्याप्त होगा। तीसरा: (5) अशुद्धियों के प्रति उनकी कम सावधानी और उनके धार्मिक पालन में कमी के दावे के बारे में—कि उनमें से कोई अपने जीवन का आधा समय बिना रोज़ा या नमाज़ के बिताती है जैसा कि हदीस में उल्लेखित है—यह उसका स्वयं का किया हुआ नहीं है, जब तक कि इसे प्रबलता द्वारा तर्कसंगत न बनाया जाए...

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद और व्याख्या) और यह 'मकरूह-ए-तहरीमी' के संबंध में स्पष्ट है, और तहतावी ने 'दुर' के इस कथन के आधार पर तर्क दिया: "स्त्री के बचे हुए पानी से वुज़ू नहीं किया जाना चाहिए।" उन्होंने कहा कि यहाँ एक आलोचना है, और 'श' ने उत्तर दिया कि इसमें 'मकरूह-ए-तंज़ीही' शामिल है क्योंकि यह वास्तव में तकनीकी शब्दावली में वर्जित है जैसा कि हमने 'तहरीर' से उद्धृत किया है। और तहतावी ने इसके दो कारण बताए: एक, आनंद का खतरा, और दूसरा, वे अपनी धार्मिक कमी के कारण अशुद्धियों से नहीं बचतीं। उन्होंने कहा कि इससे यह समझ आता है कि 'मकरूह-ए-तंज़ीही' ही अभिप्रेत है। (त) मैं कहता हूँ, पहले कथन के अनुसार, निषेध इसके विपरीत को भी शामिल करता है, यानी पुरुष के बचे हुए पानी से महिला का वुज़ू करना; इस पर कुछ चर्चा बाद में आएगी। जहाँ तक दूसरे कथन का प्रश्न है, पहली बात यह है कि यह ग्रामीणों, दासों और अज्ञानियों पर, और सबसे बढ़कर नेत्रहीनों पर सामान्य रूप से लागू होता है। इस प्रकार, इसमें

महिलाओं के लिए कोई विशिष्टता नहीं है। दूसरी बात यह है कि यह शर्त नहीं है कि वह उसका शुद्धिकरण जल हो, उसके साथ महिला के एकांत में उपयोग करने की बात तो दूर; बल्कि, केवल उसका पानी छू लेना ही काफी होगा। और तीसरी बात, उनके बारे में यह कहना कि वे अशुद्धियों से कम बचती हैं, आपत्तिजनक है, यह...

पादलेख: 1. अल-दुर अल-मुख्तार पर तहतावी, वुज़ू के नापसंद कार्य, बेरूत 1/76। 2. रद्द अल-मुह्तार, वुज़ू के नापसंद कार्य, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/98। 3. अल-दुर अल-मुख्तार पर तहतावी, वुज़ू के नापसंद कार्य, बेरूत 1/76।

(بائیں کالم) في كراهة التحريم واستظهرها ط من قول الدر من منهياته التوضي بفضل ماء المرأة قال وفيه نظر واجاب ش بأنه يشمل المكروهة تنزيها فأنه منهى عنه اصطلاحا حقية كما قدمناه عن التحرير 2 اهـ- وعلله ط بخشية التلذذ وقلة توقيهن النجاسات لنقص دينهن قال وهذا يدل على ان كراهته تنزيهية 3- اقول: على (١) الاول يعم النهى عكسه اعنى توضوء المرأة من فضل طهوره وفيه كلام يأتي اما الثانى- فاولا: يقتضى (٢) تعميمه رجال البدو والعبيد والجهلة واشد من الكل (٣) العميان فلا تبقى خصوصية للمرأة- وثانيا: لا يتقيد بطهورها فضلا عن اختلائها به لك اذن يكفي مسها- وثالثا: (٥) في قلة توقيهن النجاسات نظر ونقص دينهن ان احد هن تقعد شطر دهرها لا تصوم ولا تصلى كما فى الحديث وهذا ليس من صنعها الا ان يعلل بغلبة

(دائیں کالم) باور یہ مکروہ تحریمی میں نص ہے، اور طحطاوی نے اس پر دُر کے قول " عورت کے باقیماندہ پانی سے وضوء نہ کیا جائے" سے استدلال کیا ہے، فرمایا اس میں نظر ہے، اور ش نے جواب دیا کہ یہ مکروہ تنزیہی کو شامل ہے کہ یہ منہی عنہ ہے اصطلاحی طور پر حقیقۃً جیسا کہ ہم نے تحریر سے نقل کیااھ اور طحطاوی نے اس کی وجہ یہ بیان کی ہے کہ اس میں ایک تو تلذذ کا خطرہ ہے اور دوسرا یہ کہ وہ اپنے دینی نقصان کی وجہ سے نجاستوں سے نہیں بچتی ہیں، فرمایا اس سے معلوم ہوتا ہے کہ مراد کراہت تنزیہی ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں پہلے قول کے مطابق نہی اُس کے عکس کو شامل ہے یعنی عورت کا مرد کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرنا، اس میں کچھ بحث ہے جو آئے گی- رہا دوسرا قول تو اس میں پہلی چیز یہ ہے کہ یہ دیہاتی، غلام اور جاہل سب کو عام ہے، اور سب سے زیادہ نابینا لوگوں کو- تو اس میں عورت کی کوئی خصوصیت نہیں- اور ثانیاً، یہ قید نہیں کہ اس کا طہور ہو چہ جائیکہ عورت کا خلوت میں اس کو

استعمال کرنا، بلکہ اس کا محض پانی کو چھولینا بھی کافی ہوگا۔ اور تیسرا یہ کہ اُن کے بارے میں یہ کہنا کہ وہ نجاستوں سے کم بچتی ہیں اس میں اعتراض ہے، یہ

حواشی: 1 طحطاوی علی الدر المختار مکروھات الوضوء بیروت ۱ / ۷۶ 2 رد المحتار مکروھات الوضوء مصطفی البابی مصر ۱ / ۹۸ 3 طحطاوی علی الدر المختار مکروھات الوضوء بیروت ۱ / ۷۶

Fatawa Rizvia - Volume 2

...ignorance prevails upon them, so slaves and bedouins share this with them.

Fourthly: (1) The reason (illat) is found in the case of another woman, yet the dislike (karahah) is specific to the man, and the author of 'Sh' (commentary) considered the prohibition to be purely a matter of ritual worship (ta'abbudi).

I say: This is more appropriate as you have known the non-violation of the reasons. The Hanbalis have explicitly stated this, and they have no alternative to it, because the lack of permissibility has no rational basis at all, and its being a matter of worship is due to what was narrated by 'The Five' (al-Khamsah) [Note 'h'] that he (peace and blessings be upon him) forbade a man to perform ablution with the leftover water of a woman's purification. Then he mentioned from 'Ghurar al-Afkar' its transcription with the Hadith of Muslim that...

[Note 'h']: I say, commonly the term 'The Five' (al-Khamsah) refers to the authors of the Six Canonical Books (Sihah Sitta) excluding al-Bukhari. This specific narration was recorded by Imam Ahmad and the four Sunan authors. However, in 'al-Muntaqa', Abd al-Salam Ibn Taymiyyah follows this terminology because he includes Imam Ahmad among the group of canonical traditionists; thus, if a Hadith is narrated by anyone other than the Two Sheikhs (Bukhari and Muslim) among the canonical authors, he says 'Narrated by the Five', may Allah forgive him. (M)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Disliked Acts of Wudu, al-Babi Egypt, 1/98. Page 469 of 711

फतावा रिज़विया - जिल्द दूसरी (भाग 2)

...उन पर अज्ञानता हावी रहती है, इसलिए दास और ग्रामीण (बदुआ) भी उनके साथ इसमें शामिल हैं।

चौथा: (1) वह कारण (इल्लत) दूसरी महिला के मामले में भी पाया जाता है, जबकि नापसंदगी (कराहियत) केवल पुरुष के लिए विशिष्ट है, और 'श' (शराह के लेखक) ने इस निषेध को पूरी तरह से एक इबादत का मामला (तअब्बुदी) माना है।

मैं कहता हूँ: यही अधिक उपयुक्त है जैसा कि आप जान चुके हैं कि कारणों का उल्लंघन नहीं होता है। हनाबिला ने इसे स्पष्ट रूप से कहा है, और उनके पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि अनुमति न होने का कोई तार्किक आधार बिल्कुल नहीं है, और इसका 'तअब्बुदी' (इबादत संबंधी) होना उस रिवायत के कारण है जिसे 'अल-खम्सह' (पाँच) [नोट 'ह'] ने रिवायत किया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक पुरुष को महिला के वज़ू के बचे हुए पानी से वज़ू करने से मना किया। फिर उन्होंने 'गुरर अल-अफकार' से मुस्लिम की हदीस के साथ इसका उल्लेख किया कि...

[नोट 'ह']: मैं कहता हूँ, सामान्य तौर पर 'खम्सह' (पाँच) का प्रयोग बुखारी के अलावा बाकी 'सहाह सित्तह' के लेखकों के लिए होता है। जबकि इसे इमाम अहमद और चार (सुनन लेखकों) ने रिवायत किया है। हाँ, 'मुन्तका' में अब्दुल सलाम इब्न तैमिया की यह शब्दावली है क्योंकि वे इमाम अहमद को भी 'सहाह' के लेखकों के समूह में शामिल करते हैं, इसलिए जिस हदीस को 'शैखैन' (बुखारी और मुस्लिम) के अलावा बाकी सहाह के लेखकों ने रिवायत किया हो, तो वे कहते हैं 'रवाह अल-खम्सह' (इसे पाँच ने रिवायत किया), अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

1. रद्द अल-मुह्तार, मकरूहात अल-वुज़ू, अल-बाबी मिस्र, 1/98। पृष्ठ 469/711

الجهل عليهن فيشار كهن العبيد والاعراب۔ اور ان کے دین کا نقص محض یہ ہے کہ وہ ایک زمانہ تک گھر بیٹھتی ہے نہ روزہ رکھتی ہے اور نہ نماز پڑھتی ہے جیسا کہ حدیث میں ہے، اور اس میں اس کا اپنا کوئی اختیار نہیں، ہاں اس کی تعلیل یہ ہو سکتی ہے کہ ان میں جہل کا غلبہ ہوتا ہے تو یہ بات غلاموں اور دیہاتی لوگوں میں بھی ہوتی ہے۔

ورابعا: (۱) العلة توجد فی حق المرأة الاخری والکراهة خاصة بالرجل وجعل ش النهی تعبدیا۔

چوتھے، یہ علت دوسری عورت کے حق میں بھی پائی جاتی ہے حالانکہ کراہت مرد کے ساتھ خاص ہے اور "ش" نے اس مخالفت کو محض تعبدی امر قرار دیا ہے۔ (ت)

اقول: وهو الاولی لما عرفت عدم انتقاض العلل وبه صرحت الحنابلة ولا بدلهم عن ذلك اذعدم الجواز لا یعقل له وجه اصلا وکونه تعبدیاً لما رواه الخمسة عه انه صلی الله علیه وسلم نهی ان یتوضأ الرجل بفضل طهور المرأة ثُم ذکر عن غرر الافکار نسخه بحدیث مسلم ان میں کہتا ہوں کہ یہی اولیٰ ہے جیسا کہ آپ کو معلوم ہوا کہ علتیں نہیں ٹوٹتیں۔ اور حنابلہ نے اس کی تصریح فرمائی اور ان کے پاس اس کے علاوہ کوئی چارہ نہیں کیونکہ عدمِ جواز کی قطعاً کوئی عقلی وجہ نہیں، اور اس کا تعبدی ہونا اس وجہ سے ہے کہ اسے خمسہ [حاشیہ عہ] نے روایت کیا ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے مرد کو عورت کے وضو کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرنے سے منع فرمایا۔ پھر غرر الافکار سے اس کی منسوخی کا ذکر کیا مسلم کی اس حدیث سے کہ...

عه: اقول المعروف فی اطلاق الخمسة ارادة الستة الا البخاری وهذا انما رواه احمد والاربعة نعم هو اصطلاح عبد السلام ابن تیمیة فی المنتقی لانه ادخل الامام احمد فی الجماعة فاذ اراده غیر الشیخین قال

رواہ الخمسۃ منہ غفر لہ۔ (م) میں کہتا ہوں عام طور پر خمسہ کا اطلاق بخاری کے علاوہ باقی اصحابِ ستہ پر ہوتا ہے جبکہ اس کو امام احمد اور اربعہ نے روایت کیا ہے۔ ہاں منتقٰی میں عبد السلام ابن تیمیہ کی یہ اصطلاح ہے کہ کیونکہ وہ امام احمد کو بھی اصحابِ صحاح کی جماعت میں داخل کرتے ہیں جس حدیث کو شیخین کے علاوہ باقی اصحابِ صحاح نے روایت کیا ہو تو کہتے ہیں رواہ الخمسۃ منہ غفر لہ (ت)

1 ردالمحتار مکروہات الوضوء البابی مصر ۱/ ۹۸ صفحہ 469 از 711

Fatawa Rizvia Volume 2

[Arabic text on the left, translated into Urdu on the right]: Maymuna (may Allah be pleased with her) said: I performed a ritual bath (ghusl) from a large bowl, and some water remained in it. Then the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) came to perform ghusl from it. I said: I have already performed ghusl from it. He said: "Water does not carry the state of major ritual impurity (janaba)." [Commentary Sh] said: The implication of abrogation (naskh) is that it is not considered disliked (makruh) according to us, not even as a minor discouragement (tanziha). However, it is argued that a claim of abrogation depends on knowing that the abrogating ruling (nasikh) came later. Perhaps this is inferred from the statement of Maymuna (may Allah be pleased with her), "I have already performed ghusl," as it suggests her awareness of a prior prohibition. He said: The Shafi'is have explicitly stated that it is disliked. Therefore, it should be considered disliked, even if we speak of abrogation, out of consideration for scholarly disagreement (khilaf). For indeed, scholars have explicitly stated that consideration should be given to disagreement. And as you already know, according to Imam Ahmad, purification with such water is not permissible. [End Quote 1]

I say (I say): The closer view to the truth is that there is neither abrogation nor prohibition (tahrim). Rather, the prohibition is purely for discouragement (tanzihi), and the action (of the Prophet) was to demonstrate permissibility. This is what Mulla Ali al-Qari followed in 'al-Mirqat,' quoting from Sayyid Jamal al-Din al-Hanafi. Similarly, in 'Lama'at al-Tanqih,' Muhaddith Abdul Haq Dehlawi also gave the answer that the prohibition is tanzihi (discouraging) and not tahrimi (forbidden). Therefore, there is no contradiction. [End Quote 2] He stated in the preceding chapter, "An answer was provided."

[Urdu text]: I say this is the better view, because other reasons are not sound. The Hanbali scholars have also stated this reason, and doing so was necessary for them because there is no reason for it to be impermissible. The Hadith reported by the five compilers of Hadith points to it being a matter of ritual worship (ta'abbudi), where the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade performing ablution (wudu) with water left over by a woman. Then, with reference to 'Ghurar al-Adhkar,' its abrogation was reported. In it is the Hadith from Sahih Muslim where Hazrat Maymuna (may Allah be pleased with her) says that she bathed in a tub and some water remained. When the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) intended to bathe with it, she mentioned, "We have bathed from this." He said,

"Major ritual impurity does not affect the water." [Sh] said the implication of abrogation is that in our view, it is neither prohibitively disliked (makruh tahrimi) nor discouragement (makruh tanzihi). The objection here is that the claim of abrogation relies on knowing that the abrogating evidence came later. Perhaps this is taken from Hazrat Maymuna's statement, which implies she knew of a prior prohibition. Since Shafi'is have stated it is disliked, it should be considered so, even if we lean towards abrogation to respect scholarly disagreement. Scholars have clarified that differences should be respected. You know that according to Imam Ahmad, purification with such water is not allowed. [End] (T) I say the more correct view is that there is neither abrogation nor prohibition, but the prohibition is purely tanzihi (discouraging) and the act was to show permissibility. Mulla Ali al-Qari in 'al-Mirqat' quoted this from Sayyid Jamal al-Din al-Hanafi, and Muhaddith Abdul Haq Dehlawi in 'Lama'at al-Tanqih' also answered that the prohibition is tanzihi and not tahrimi.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Disliked Acts of Wudu, al-Babi Egypt, 1/98. 2. Lama'at al-Tanqih, Chapter on Mixing with a person in a state of major ritual impurity, Al-Ma'arif al-Ilmiyah Lahore, 2/122.

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

[मुख्य पाठ]: मैमूना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: मैंने एक बड़े बर्तन (जफ़ना) से स्नान किया और उसमें कुछ पानी बच गया। फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उससे स्नान करने के लिए आए। मैंने कहा: मैंने इससे स्नान कर लिया है। उन्होंने फ़रमाया: "पानी पर जनाबत (अशुद्धि) का असर नहीं होता।" [श] ने कहा: निरसन (नस्ख) का अर्थ यह है कि हमारे निकट यह मकरूह नहीं है, यहाँ तक कि मकरूह-ए-तन्ज़ीही भी नहीं। हालांकि, निरसन का दावा इस बात पर निर्भर करता है कि बाद में आने वाले आदेश (नासिख) का ज्ञान हो। संभवतः यह हज़रत मैमूना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के इस कथन से लिया गया है कि "मैंने स्नान कर लिया है", क्योंकि यह उनके पहले के प्रतिबंध के ज्ञान को दर्शाता है। उन्होंने कहा: शाफ़ेइयों ने इसके मकरूह होने को स्पष्ट रूप से कहा है। इसलिए, इसे मकरूह माना जाना चाहिए, भले ही हम मतभेद के सम्मान में निरसन की बात करें। उन्होंने स्पष्ट किया है कि मतभेदों का सम्मान किया जाना चाहिए। और आप पहले से ही जानते हैं कि अहमद (इमाम अहमद बिन हंबल) के अनुसार इस पानी से शुद्धि प्राप्त करना जायज़ नहीं है। (उद्धरण समाप्त 1)

मैं कहता हूँ: सच्चाई के सबसे करीब बात यह है कि न तो यहाँ निरसन है और न ही निषेध (तहरीम), बल्कि निषेध केवल तन्ज़ीही (नापसंदगी के लिए) है, और कार्य (नबी का स्नान करना) इसके जायज़ होने को दिखाने के लिए है। यही बात मुल्ला अली क़ारी ने 'मिर्कात' में सैय्यद जमालुद्दीन हनफ़ी के हवाले से लिखी है। शेख अब्दुल हक़ देहलवी ने 'लमातुल तनक़ीह' में भी यही उत्तर दिया है कि निषेध तन्ज़ीही है, तहरीमी नहीं। इसलिए, कोई विरोध नहीं है। (उद्धरण समाप्त 2) और उन्होंने पिछले अध्याय में कहा, "उत्तर दे दिया गया है।"

मैं कहता हूँ कि यही बात बेहतर है, क्योंकि अन्य कारण सही नहीं हैं। हनबली विद्वानों ने भी यही कारण बताया है, और उनके लिए ऐसा करना आवश्यक था क्योंकि इसके नाजायज़ होने का कोई कारण नहीं है। पाँचों मुहदिथों द्वारा रिपोर्ट की गई हदीस इसके'ताअब्बुदी' (इबादत संबंधी) होने का संकेत देती है, जिसमें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने महिला द्वारा छोड़े गए पानी से वज़ू करने से मना फ़रमाया। फिर 'ग़ुरर अल-अज़कार' के संदर्भ से इसके निरसन (नस्ख) की सूचना दी गई। इसमें सहीह मुस्लिम की हदीस है कि हज़रत मैमूना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहती हैं कि उन्होंने एक टब में स्नान किया और कुछ पानी बच गया। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उससे स्नान करने का इरादा किया, तो उन्होंने कहा, "हमने इससे स्नान किया है।" उन्होंने फ़रमाया, "पानी

पर जनाबत का असर नहीं होता।" [श] ने कहा कि निरसन का अर्थ है कि हमारे यहाँ यह न तो मकरूह-ए-तहरीमी है और न ही मकरूह-ए-तन्ज़ीही। यहाँ आपत्ति यह है कि निरसन का दावा बाद के प्रमाण के ज्ञान पर निर्भर करता है। शायद यह हज़रत मैमूना के बयान से लिया गया है, जिससे संकेत मिलता है कि उन्हें पहले के निषेध का पता था। चूँकि शाफ़ेइयों ने कहा है कि यह मकरूह है, इसलिए इसे ऐसा ही माना जाना चाहिए, भले ही हम मतभेद के सम्मान में निरसन की ओर झुकें। विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि मतभेदों का सम्मान किया जाना चाहिए। आप जानते हैं कि इमाम अहमद के अनुसार ऐसे पानी से पाक होना जायज़ नहीं है। (त) मैं कहता हूँ कि अधिक सही बात यह है कि न तो निरसन है और न ही निषेध, बल्कि निषेध केवल तन्ज़ीही है और कार्य केवल जायज़ होने को दिखाने के लिए था। मुल्ला अली क़ारी ने 'मिर्कात' में सैय्यद जमालुद्दीन हनफ़ी से यही उद्धृत किया, और मुहदिथ अब्दुल हक़ देहलवी ने 'लमातुल तनक़ीह' में भी उत्तर दिया कि निषेध तन्ज़ीही है, तहरीमी नहीं।

फुटनोट: 1. रद-उल-मुहतार, वज़ू की नापसंदीदा चीज़ें, अल-बाबी मिस्र, 1/98. 2. लमातुल तनक़ीह, जनाबत की स्थिति में मेल-जोल का अध्याय, अल-मआरिफ़ अल-इल्मिया लाहौर, 2/122.

पेज 470/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

میمونه قالت اغتسلت من جفنة ففضلت فیها فضلة فجاء النبی صلی الله تعالی علیه وسلم یغتسل فقلت انی اغتسلت منه فقال الماء لیس علیه جنابة قال ش مقتضی النسخ انه لا یکره عندنا ولا تنزیها وفیه ان دعوی النسخ تتوقف علی العلم بتأخرا لناسخ ولعله مأخوذ من قول میمونة رضي الله تعالی عنها انی قد اغتسلت فانه یشعر بعلمها بالنهی قبله قال وقد صرح الشافعیة بالکراهة فینبغی کراهته وان قلنا بالنسخ مراعاة للخلاف فقد صرحوا بأنه یطلب مراعاة الخلاف وقد علمت انه لا یجوز التطهیر به عند احمد ۱ هـ اقول: ولاقرب الی الصواب ان لانسخ ولا تحریم بل النهی للتنزیه والفعل لبیان الجواز وهو الذی مشی علیه القاری فی المرقاة نقلا عن السید جمال الدین الحنفی وبه اجاب الشیخ عبد الحق الدهلوی فی لمعات التنقیح ان النهی تنزیه لاتحریم فلا منافاة ۲ وقال فی الباب قبله اجیب

میں کہتا ہوں یہی بات بہتر ہے، کیونکہ دوسری علتیں درست نہیں ہے، اور حنبلی حضرات نے بھی یہ علت بیان کی ہے، اور ایسا کرنا ان کیلئے ضروری تھا، کیونکہ عدم جواز کی کوئی وجہ موجود نہیں، اور اس کے تعبدی ہونے پر وہ حدیث دلالت کرتی ہے جو پانچوں محدثین نے نقل کی ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عورت کے بچے ہوئے پانی سے وضوء کرنے کی ممانعت فرمائی، پھر غرر الاذکار کے حوالہ سے اس کا منسوخ ہونا نقل کیا۔ اس میں مسلم کی حدیث ہے کہ حضرت میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں کہ انہوں نے ایک ٹب میں غسل کیا اس میں کچھ پانی بچ گیا، تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اُس سے غسل کا ارادہ فرمایا " تو انہوں نے عرض کی کہ " ہم نے اس سے غسل کیا ہے"۔ آپ نے فرمایا " پانی پر جنابت کا اثر نہیں ہوتا"۔ ش نے فرمایا نسخ کا تقاضا یہ ہے کہ ہمارے نزدیک نہ وہ مکروہ تحریمی ہے نہ مکروہ تنزیہی، اس میں اعتراض ہے کہ نسخ کا دعوی اس پر موقوف ہے کہ ناسخ کے متأخر ہونے کا علم ہو، اور شاید یہ حضرت

میمونہ کے اس قول سے ماخوذ ہے کہ میں نے غسل کیا، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو اس سے قبل ہی نہی کا علم تھا، اور شافعیہ نے کراہت کی تصریح کی ہے تو چاہئے کہ یہ مکروہ ہو، اگر چہ ہم اختلاف کی رعایت کرتے ہوئے نسخ کا قول کریں، کیونکہ فقہاء نے تصریح کی ہے کہ خلاف کی رعایت کی جائے اور یہ تو آپ جان ہی چکے ہیں کہ احمد کے نزدیک اس پانی سے طہارت جائز نہیں اھ۔ (ت) میں کہتا ہوں زیادہ صحیح بات یہ ہوگی کہ نہ تو نسخ ہے اور نہ ہی تحریم ہے بلکہ نہی محض تنزیہی ہے اور فعل بیان جواز کے لئے ہے ملا علی قاری نے بھی مرقاۃ میں سید جمال الدین حنفی سے یہی نقل کیا ہے اور لمعات التنقیح میں محدث عبدالحق دہلوی نے بھی یہی جواب دیا ہے کہ نہی تنزیہی ہے تحریمی نہیں

1 ردالمحتار مکروھات الوضوء البابی مصر ۹۸/۱ 2 لمعات التنقیح باب مخالطۃ الجنب المعارف العلمیہ لاہور ۲/ ۱۲۲

Fatawa Razawiyyah, Volume 2

...that is determination (azimah) and this is a concession (rukhsah) 'end of quote'. And this was decisively stated in Ashi'at al-Lam'at in the chapter of mixing with one who is in a state of major ritual impurity (junub). Imam al-Ayni said in 'Umdat al-Qari: 'As for the leftover water of a woman, it is permissible according to Imam al-Shafi'i for a man to perform ablution (wudu) with it, whether she was alone with it or not. Al-Baghawi and others said: There is no dislike (karahah) in it because there are authentic hadiths regarding it. This was also stated by Malik, Abu Hanifa, and the majority of scholars. Ahmad and Dawud said it is not permissible if she was alone with it. This was also narrated from Abdullah bin Sarjas and al-Hasan al-Basri. And it is narrated from Ahmad like our school of thought (madhhab). And from Ibn al-Musayyib and al-Hasan, the absolute dislike of her leftover water is narrated. 'end of quote'. And if we interpret the negation as referring to the dislike of prohibition (karahah al-tahrim), it does not contradict the existence of an offensive dislike (karahah al-tanzihi). Whatever (1) the case, what is in 'al-Siraj' is very strange and not based on any reliable source, and it contradicts the reliable books and narrations of trustworthy scholars, and no reasoning is apparent for it. And it was said (2) in 'Kashf al-Zunun': 'al-Siraj al-Wahhaj' was counted by Mawla al-Ma'ruf as Birgivi among the common, weak, and unreliable books. 'end of quote'. Chalapi said: Then this commentary was summarized and named 'al-Jawhar al-Nayyir'. 'end of quote'. I say: rather it is 'al-Jawhara al-Nayyira' and it is from the reliable books.

Footnotes: 1. Lam'at al-Tanqih, Chapter of Bathing, Al-Ma'arif al-Ilmiyyah, Lahore, 2/112. 2. 'Umdat al-Qari, Wudu of a man with his wife, Egypt, 3/83. 3. Kashf al-Zunun, Mention of Mukhtasar al-Quduri, Baghdad, 2/163.

Page 471 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द 2

...वह अज़ीमत (दृढ़ संकल्प) है और यह रुख़सत (छूट) है, कोट समाप्त। और अशिअतुल लम्आत में 'बाबे मुख़ालिततुल जुनुब' में यही मज़बूती से कहा गया है। इमाम ऐनी ने 'उमदतुल क़ारी' में फ़रमाया: जहाँ तक औरत के बचे हुए पानी का सवाल है, तो इमाम शाफ़ई के नज़दीक मर्द के लिए उससे वज़ू करना जायज़ है, चाहे उस औरत ने उस पानी के साथ तन्हाई (ख़लवत) इख़्तियार की हो या न की हो। बगवी वगैरह ने फ़रमाया कि इसमें कोई कराहत (नापसंदगी) नहीं है क्योंकि इस बारे में सही हदीसें मौजूद हैं। यही बात मालिक, अबू हनीफ़ा और अधिकांश विद्वानों (जमहूर उलमा) ने कही है। अहमद और दाऊद ने कहा कि अगर उसने उसके साथ ख़लवत की हो तो जायज़ नहीं है। यह अब्दुल्ला बिन सरजस और हसन बसरी से भी वर्णित है। और अहमद से एक रिवायत हमारे मज़हब के मुताबिक़ भी वर्णित है। और इब्नुल मुसय्यब और हसन से औरत के बचे हुए पानी की मुतलक़न (पूर्ण रूप से) कराहत वर्णित है, कोट समाप्त। और अगर हम 'मनफ़ी' (नकारी गई चीज़) को 'कराहते तहरीम' (निषिद्ध नापसंदगी) पर आधारित करें, तो इससे 'कराहते तनज़ीही' (हल्की नापसंदगी) के प्रमाण का खंडन नहीं होगा। मामला (1) जैसा भी हो, 'सिराज' में जो कुछ है वह बहुत ही अजीब (ग़रीब) है और किसी भरोसेमंद (मोतमिद) किताब के प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि भरोसेमंद किताबों और विश्वसनीय विद्वानों के बयानों के स्पष्ट रूप से विरुद्ध है, और इसकी कोई वजह ज़ाहिर नहीं होती। 'कश्फ़ुज़ ज़ुनून' (2) में कहा गया है कि 'सिराजुल वहाज' को मौला अल-मारूफ़ बरकिली ने प्रचलित लेकिन कमज़ोर और ग़ैर-भरोसेमंद किताबों में गिना है, कोट समाप्त। चल्पी ने फ़रमाया: फिर इस शरह (व्याख्या) को संक्षिप्त किया गया और इसका नाम 'अल-जौहर अन-नय्यर' रखा गया, कोट समाप्त। मैं (लेखक) कहता हूँ: बल्कि यह 'जौहरए नय्यिरा' है और वह भरोसेमंद किताबों में से है।

फ़ुटनोट्स: 1. लम्आतुल तनक़ीह, बाबल ग़ुस्ल, अल-मआरिफ़ अल-इल्मिया, लाहौर, 2/112. 2. उमदतुल क़ारी, वज़ूउर रजुल मअ इम्रअतिही, मिस्र, 3/83. 3. कश्फ़ुज़ ज़ुनून, ज़िक्रे मुख़्तसरल क़ुद्दूरी, बग़दाद, 2/163.

पेज 471 / 711

فتاوی رضویه، جلد ثانی

ان تلك عزيمة وهذا رخصة اهـ وبهذا جزم فی الاشعة من باب مخالطة الجنب وقال الامام العينی فی عمدة القارئ اما فضل المرأة فيجوز عند الشافعی الوضوء به للرجل سواء خلت به اولا قال البغوی وغيره فلا كراهة فيه للاحاديث الصحيحة فيه وبهذا قال مالك وابو حنيفة وجمهور العلماء وقال احمد وداود لايجوز اذا خلت به و روی هذا عن عبدالله بن سرجس والحسن البصری و روی عن احمد كمذهبنا وعن ابن المسيب والحسن كراهة فضلها مطلقا اهـ و اذ حملنا المنفية علی كراهة التحريم لم يناف ثبوت كراهة التنزيه وكيفما (۱) كان فما في السراج غريب جدا ولم يستند لمعتمد وخالف المعتمدات ونقول الثقات ولا يظهر له وجه وقد قال (۲) في كشف الظنون السراج الوهاج عده المولی المعروف ببركلی جملة الكتب المتداولة الضعيفة غير المعتبرة اهـ قال چلبی ثم اختصر هذا الشرح وسماه الجوهر النير اهـ اقول: بل الجوهرة النيرة وهی من

تو کوئی منافاۃ نہیں، اس پہلے باب میں فرمایا کہ ایک جواب یہ دیا گیا ہے کہ وہ عزیمت تھی اور یہ رخصت ہے اھ اور اشعۃ اللمعات میں اسی پر جزم کیا ہے عینی نے عمدۃ القاری میں فرمایا ہے عورت کا بچے ہوئے پانی سے امام شافعی کے نزدیک مرد کیلئے وضو جائز ہے خواہ اس عورت نے اس سے خلوت کی ہو یا نہ کی ہو بغوی وغیرہ نے فرمایا تو اس میں کراہت نہیں ہے کہ صحیح احادیث اس بارے میں موجود ہیں یہی قول مالک، ابو حنیفہ اور جمہور علماء کا ہے، اور احمد اور ابو داؤد نے فرمایا کہ جب عورت اس پانی کے ساتھ خلوت کرے تو جائز نہیں، یہ قول عبداللہ بن سرجس اور حسن بصری سے منقول ہے، اور احمد کی ایک روایت مذہب ابی حنیفہ کے مطابق ہے، اور ابن المسیب اور حسن سے اس بچے ہوئے کی کہ کراہت مطلقاً منقول ہے اھ اور اگر ہم منفی کو کراہت تحریم پر محمول کریں تو اس سے کراہت تنزیہی کے ثبوت کی نفی لازم نہ آئے

گی، بہر صورت جو سراج میں ہے وہ بہت ہی غریب ہے اور کسی معتمد کتاب کی سند اس پر موجود نہیں، بلکہ کتب معتمدہ اور نقول مستندہ کے صریح خلاف ہے، اور اس کی کوئی وجہ ظاہر نہیں ہوتی ہے، کشف الظنون میں ہے کہ سراج الوہاج کو مولی المعروف بر کلی نے کتب متداولہ، ضعیفہ غیر معتبرہ میں شمار کیا ہے اھ اور چلیی نے فرمایا پھر اس کتاب کو مختصر کیا گیا اور اس کا نام جوہر نیر ہوا اھ (ت) میں کہتا ہوں بلکہ جوہرہ نیرہ ہے اور وہ کتب معتبرہ سے

حواشی: 1. لمعات التنقیح باب الغسل المعارف العلمیہ لاہور ۲/ ۱۱۲ 2. عمدۃ القاری وضوء الرجل مع امرأتہ مصر ۳/ ۸۳ 3. کشف الظنون ذکر مختصر القدوری بغداد ۲/ ۱۶۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

...as mentioned in Radd al-Muhtar. An example of this is that Nasai's 'Mujtaba', which is an abridgment of his 'Sunan al-Kubra', is counted among the 'Sahah' (canonical collections), while 'al-Kubra' is not. (T)

Furthermore, I say: There are several matters here that would require long discussion, but some will be mentioned briefly. Firstly, the basis of its dislike (karahat) does not rest absolutely on Imam Ahmad's opinion of non-permissibility, because according to him, this opinion is specific to privacy (khalwat). Secondly, observing differences of opinion is commendable (mandub) only in matters where it does not necessitate something disliked (makruh) in one's own school of thought, as clarified by the scholars, including Allama 'Sh' (Shami/Ibn Abidin) himself. And the omission of a commendable act is not disliked, as the jurists (fuqaha) have clarified, and Allama 'Sh' himself has stated in this book. So, how can dislike be based on this? Especially when it has been accepted that the abrogation of prohibition also negates offensive dislike (tanzihi karahat). Would the ruling be the same in its converse? That is, would it be disliked for a woman to use water left over by a man? Ahmad, Abu Dawood, and Nasai narrated from a companion of the Holy Prophet (peace be upon him) who remained with him for four years, and Ibn Majah narrated from Abdullah bin Sarjas that the Messenger of Allah (peace be upon him) forbade a woman from bathing with the leftover water of a man, or a man bathing with the leftover water of a woman. But Sheikh Ibn Hajar said...

1. Mishkat al-Masabih, Chapter on mixing of a Junub, Mujtabai Delhi, p. 50. Page 472 of 711

फतावा रज़विया, जिल्द 2

...जैसा कि रद्द अल-मुह्तार में उल्लेख किया गया है। इसका एक उदाहरण यह है कि नसाई की 'मुजतबा', जो उनकी 'सुनन अल-कुबरा' का संक्षिप्त रूप है, 'सिहाह' (प्रमाणिक संग्रह) में गिनी जाती है, जबकि 'अल-कुबरा' सिहाह में नहीं गिनी जाती। (त)

इसके अलावा, मैं कहता हूँ: यहाँ कई ऐसे विषय हैं जिन पर विस्तृत चर्चा की जा सकती है, लेकिन कुछ का संक्षेप में उल्लेख किया जाएगा। पहला, इसकी नापसंदगी (कराहत) पूरी तरह से इमाम अहमद की गैर-जवाज़ (अवैधता) की राय पर आधारित नहीं है, क्योंकि उनके अनुसार यह राय एकांत (खलवत) के साथ विशिष्ट है। दूसरा, मतभेदों का सम्मान केवल उन मामलों में वांछनीय (मन्दूब) है जहाँ यह अपने स्वयं के पंथ (मज़हब) में किसी नापसंद (मकरूह) चीज़ को आवश्यक न बना दे, जैसा कि अल्लामा 'श' (शामी/इब्न आबिदीन) सहित विद्वानों ने स्पष्ट किया है। और किसी वांछनीय कार्य को छोड़ना नापसंद नहीं है, जैसा कि फकीहों ने स्पष्ट किया है, और अल्लामा 'श' ने स्वयं इस पुस्तक में इसका उल्लेख किया है। तो फिर कराहत इस पर कैसे आधारित हो सकती है? विशेष रूप से जब यह स्वीकार कर लिया गया है कि निषेध का निरसन 'तनज़ीही कराहत' (हल्की नापसंदगी) को भी नकार देता है। क्या इसके विपरीत में भी यही नियम होगा? यानी, क्या किसी महिला के लिए पुरुष द्वारा छोड़े गए पानी का उपयोग करना नापसंद होगा? अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) के एक साथी से वर्णन किया है जो चार साल तक उनके साथ रहे, और इब्न माजा ने अब्दुल्ला बिन सरजस से वर्णन किया है कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने एक महिला को पुरुष के बचे हुए पानी से नहाने से मना किया, या एक पुरुष को महिला के बचे हुए पानी से नहाने से मना किया। लेकिन शेख इब्न हजर ने कहा...

1. मिश्कात अल-मसाबीह, जुनुब के मेलजोल का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, पृ. 50। पेज 472 / 711

ہے جیسا کہ اس کی صراحت ردالمحتار میں موجود ہے اور اس کی نظیر یہ ہے کہ نسائی کی مجتبیٰ جو ان کی سنن کبریٰ سے مختصر ہے صحاح میں شمار ہوتی ہے جبکہ کبریٰ صحاح میں شمار نہیں ہوتی۔ (ت)

پھر میں کہتا ہوں یہاں بعض چیزیں ایسی ہیں جن سے کلام میں طوالت ہوگی تاہم کچھ کا ذکر اجمالی طور پر کیا جاتا ہے، کراہت کی بنیاد مطلقاً امام احمد کے عدم جواز کا قول نہیں، کیوں کہ اُن کے نزدیک یہ قول خلوت کے ساتھ مختص ہے، خلاف کی رعایت ایسے امور میں مندوب ہے جن میں اپنے مذہب کا کوئی مکروہ لازم نہ آئے جیسا کہ علماء نے اس کی صراحت کی ہے، خود علامہ "ش" نے ایسا ہی کیا ہے اور مندوب کا ترک مکروہ نہیں جیسا کہ فقہاء نے اس کی صراحت کی ہے خود "ش" نے اس کتاب میں صراحت کی ہے، تو پھر کراہت اس پر کیسے مبنی ہوگی؟ خاص طور پر جبکہ اس امر کو تسلیم کرلیا گیا کہ تحریم کا منسوخ ہو جانا تنزیہی کراہت کی بھی نفی کرتا ہے، کیا اس کے عکس میں بھی ایسا ہی حکم ہوگا؟ یعنی عورت کیلئے بھی مرد کا چھوڑا ہوا پانی استعمال کرنا مکروہ ہوگا؟ تو احمد، ابو داود اور نسائی نے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ایک صحابی جو چار سال تک آپ کے ساتھ رہے، سے روایت کی اور ابن ماجہ نے عبداللہ بن سرجس سے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس چیز سے منع کیا کہ عورت مرد کے بچے ہوئے پانی سے غسل کرے یا مرد عورت کے بچے ہوئے پانی سے غسل کرے۔۱ لیکن شیخ ابن حجر نے کہا۔۔۔

۱ مشکوٰۃ المصابیح باب مخالطۃ الجنب مجتبائی دہلی ص ۵۰ صفحہ 472 از 711

Fatawa-e-Razawiya, Volume 2

[Arabic Section]: Al-Makki says in the commentary of Mishkat: "There is no dispute that she can perform ablution with his leftover water." He also said: "Indeed, no one has spoken against its outward meaning, and it is impossible for something to be correct while the entire Ummah acts contrary to it." However, Sheikh Al-Muhaqqiq Al-Dehlawi, in 'Al-Lama'at', challenged this, stating: "Imam Ahmad ibn Hanbal has indeed spoken on this, including details and disagreements among the masters of his school," up to the end of what he mentioned regarding their differences.

I say: May Allah have mercy on the Sheikh and on us. Ibn Hajar's discourse concerns her performing ablution with his leftover water, whereas Imam Ahmad's statement and the disagreements among his school's masters pertain to the opposite case. Indeed, Imam al-Ayni said in 'Al-'Umdah' that Abu Umar recounted five schools of thought: the second is that it is disliked to perform ablution with her leftover water and vice versa; the third is that her leftover water is disliked for him, while the opposite is permitted; and the fifth is that there is no harm in the leftover water of either of them, and this is the view of the jurists of the major cities. (Condensed summary). Thus, this confirms the existence of a disagreement. And Allah knows best.

[Urdu Section]: Whether one bathes with the water left over by a man, or a man bathes with the water left over by a woman. However, Sheikh Ibn Hajar Makki stated in the commentary of Mishkat that there is no disagreement that a woman can perform ablution with the water left over by a man. He also mentioned that no one has spoken contrary to its apparent meaning, and it is impossible for something to be correct while the entire Ummah acts against it. Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlawi refuted this in 'Lama'at' and stated that what Ahmad ibn Hanbal said contains details, and there has also been disagreement among the masters of his school of thought, then he mentioned those differences. (T) I say: May Allah have mercy on the Sheikh and on us; the discourse of Ibn Hajar was about a woman performing ablution with a man's leftover water, whereas the statement of Imam Ahmad and the differences among his school's masters relate to the opposite scenario. Yes, Ayni stated in 'Umdah' that Abu Umar listed five schools of thought: the second is that it is disliked for a man to perform ablution with a woman's leftover water and vice versa; the third is that a woman's leftover is disliked for a man while the opposite is permitted; and the fifth is that there is no harm in the leftover water

of either, and the jurists of the cities are upon this. (Condensed). This proves the existence of disagreement. And Allah Almighty knows best. (T)

(12) The water of that well or reservoir from which children, women, rustics, ignorant people, and transgressors—all sorts of people—with their dirty...

Footnotes: 1. Sharh al-Mishkat by Ibn Hajar. 2. Sharh al-Mishkat by Ibn Hajar. 3. Lama'at al-Tanqih, Chapter on the mixing of one in a state of major ritual impurity, Al-Ma'arif al-Ilmiyyah, Lahore, 2/130. 4. Umdat al-Qari, Chapter on a man's ablution with his wife, Egypt, 3/85.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 2

[अरबी भाग]: अल-मक्की ने 'मिशकात' की शरह (व्याख्या) में कहा है: "इसमें कोई मतभेद नहीं है कि वह उसके बचे हुए पानी से वज़ू कर सकती है।" उन्होंने यह भी कहा: "वाकई, किसी ने भी इसके प्रत्यक्ष अर्थ के विरुद्ध नहीं कहा है, और यह असंभव है कि कोई चीज़ सही हो और पूरी उम्मत उसके विरुद्ध कार्य कर रही हो।" हालांकि, शेख अल-मुहक़्क़िक़ अल-देहलवी ने 'अल-लमाआत' में इस पर आपत्ति जताते हुए कहा: "इमाम अहमद बिन हंबल ने इस पर विस्तार से और अपने मज़हब के विद्वानों के बीच मतभेदों के साथ बात की है," उनके मतभेदों के उल्लेख के अंत तक।

मैं कहता हूँ: अल्लाह शेख पर और हम पर रहम करे। इब्न हजर की चर्चा उसके(स्त्री के) पुरुष के बचे हुए पानी से वज़ू करने के बारे में है, जबकि इमाम अहमद का कथन और उनके मज़हब के विद्वानों के बीच के मतभेद इसके विपरीत मामले से संबंधित हैं। हाँ, इमाम अल-ऐनी ने 'अल-उमदा' में कहा है कि अबू उमर ने पाँच विचारधाराओं (मज़हबों) का वर्णन किया है: दूसरा यह है कि उसके बचे हुए पानी से वज़ू करना मकरूह (नापसंद) है और इसके विपरीत भी; तीसरा यह है कि स्त्री का बचा हुआ पानी पुरुष के लिए मकरूह है, जबकि इसके विपरीत की अनुमति है; और पाँचवाँ यह है कि दोनों में से किसी के भी बचे हुए पानी में कोई हर्ज नहीं है, और यही प्रमुख नगरों के न्यायविदों (फ़ुकहा) का मत है। (संक्षिप्त)। अतः, यह मतभेद की पुष्टि करता है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[उर्दू भाग]: चाहे कोई पुरुष के बचे हुए पानी से स्नान करे, या कोई पुरुष स्त्री के बचे हुए पानी से स्नान करे। लेकिन शेख इब्न हजर मक्की ने शरह मिशकात में फरमाया कि इसमें कोई मतभेद नहीं है कि औरत पुरुष के बचे हुए पानी से वज़ू कर सकती है। साथ ही फरमाया कि किसी एक ने भी इसके प्रत्यक्ष अर्थ के विरुद्ध नहीं कहा है और यह असंभव है कि कोई बात सही भी हो और पूरी उम्मत उसके विरुद्ध अमल कर रही हो। और शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'लमाआत' में इस पर आपत्ति की और फरमाया कि अहमद बिन हंबल ने जो कहा है उसमें विस्तार है और उनके मज़हब के आचार्यों में भी मतभेद रहा है, फिर उन्होंने वह मतभेद ज़िक्र किया। (त) मैं कहता हूँ, अल्लाह शेख पर रहम करे और हम पर, इब्न हजर ने पुरुष के बचे हुए पानी से औरत के वज़ू करने के बारे में जो बात की है और इमाम अहमद का कथन और उनके मज़हब के आचार्यों के मतभेद इसके विपरीत स्थिति में हैं, हाँ ऐनी ने 'उम्दा' में फरमाया कि अबू उमर ने पांच मज़हब गिनाये हैं, उनमें दूसरा यह है कि मर्द का औरत के बचे हुए पानी से वज़ू करना मकरूह है और इसका उलटा भी मकरूह है, और तीसरा यह है कि औरत का बचा हुआ मर्द के लिए मकरूह है और इसके उलट में अनुमति है और

पांचवां यह है कि दोनों के बचे हुए पानी में कोई हर्ज नहीं है, और इसी पर शहरों के फ़ुक़हा (न्यायविद) हैं। (संक्षिप्त)। इससे मतभेद सिद्ध होता है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(12) उस कुएँ या हौज़ का पानी जिससे बच्चे, औरतें, गँवार, जाहिल, फ़ासिक़—हर तरह के लोग अपनी मैली-कुचैली...

पादलेख: 1. शरह अल-मिशकात, इब्न हजर। 2. शरह अल-मिशकात, इब्न हजर। 3. लमाआत अल-तनक़ीह, अध्याय: जुनब का मेल-जोल, अल-मआरिफ़ अल-इल्मिया, लाहौर, 2/130। 4. उम्दतुल क़ारी, अध्याय: अपनी पत्नी के साथ पुरुष का वज़ू, मिस्र, 3/85।

[عربی حصہ]: المکی فی شرح المشکوۃ لاخلاف فی ان لھا الوضوء بفضلہ ۱ھ وقال ایضاً ان احدا لم یقل بظاھرہ ومحال ان یصح وتعمل الامۃ کلہ بخلافہ ۲ھ وتعقبہ الشیخ المحقق الدھلوی فی اللمعات بقولہ قد قال الامام احمد بن حنبل مع مافیہ من التفصیل والخلاف فی مشایخ ۳ مذھبہ الی آخر ماذکر من خلافیاتھم۔ اقول : (۱) رحم اللہ الشیخ ورحمنا بہ کلام ابن حجر فی وضوئھا بفضلہ وقول الامام احمد وخلافیات مشایخ مذھبہ فی عکسہ نعم قال الامام العینی فی العمدۃ حکی ابو عمر خمسۃ مذاھب الثانی یکرہ ان یتوضأ بفضلھا وعکسہ والثالث کراھتہ فضلھا لہ والرخصۃ فی عکسہ والخامس لاباس بفضل کل منھما وعلیہ فقھاء الامصار ۴ اہ ملتقطاً فھذا یثبت الخلاف واللہ تعالی اعلم۔

[اردو حصہ]: مرد کے بچے ہوئے پانی سے غسل کرے یا مرد عورت کے بچے ہوئے پانی سے غسل کرے۔ مگر شیخ ابن حجر مکی نے شرح مشکوٰۃ میں فرمایا کہ اس میں اختلاف نہیں کہ عورت مرد کے بچے ہوئے پانی سے وضو کر سکتی ہے اھ نیز فرمایا کہ کسی ایک نے بھی اس کے ظاہر کے خلاف نہیں فرمایا اور یہ محال ہے کہ ایک چیز صحیح بھی ہو اور تمام اُمّت اس کے خلاف عمل پیرا ہو اھ اور شیخ عبد الحق محدث دہلوی نے لمعات میں اس پر رد کیا اور فرمایا احمد بن حنبل نے جو فرمایا ہے اس میں تفصیل ہے اور ان کے مذہب کے مشائخ میں بھی اختلاف رہا ہے، پھر وہ اختلاف ذکر کیا۔ (ت) میں کہتا ہوں اللہ رحم کرے شیخ پر اور ہم پر، ابن حجر نے مرد کے بچے ہوئے پانی سے عورت کے وضو کرنے کی بابت جو کلام کیا ہے اور امام احمد کا قول اور ان کے مشائخ مذہب کے اختلافات اس کے برعکس صورت میں ہیں، ہاں عینی نے عمدہ میں فرمایا کہ ابو عمر نے پانچ مذاہب گنائے ہیں، ان میں دوسرا یہ ہے کہ مرد کا عورت کے بچے ہوئے پانی سے وضو کرنا مکروہ ہے اور اس کا عکس بھی مکروہ ہے اور تیسرا یہ ہے کہ عورت

کا بچا ہوا مرد کیلئے مکروہ ہے اور اس کے عکس میں رخصت ہے اور پانچواں یہ ہے کہ دونوں کے بچے ہوئے پانی میں کچھ حرج نہیں، اور اسی پر شہروں کے فقہاء ہیں اھ ملتقطاً، اس سے خلاف ثابت ہوتا ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

(۱۲) اُس کنویں یا حوض کا پانی جس سے بچے عورتیں گنوار جہال فساق ہر طرح کے لوگ اپنے میلے کچیلے

حاشیہ: 1 شرح المشکوۃ لابن حجر 2 شرح المشکوۃ لابن حجر 3 لمعات التنقیح باب مخالطۃ الجنب المعارف العلمیہ لاہور ۲/ ۱۳۰ 4 عمدۃ القاری باب وضوء الرجل مع امراتہ مصر ۳/ ۸۵

Fatawa Razawiya, Volume 2 Drawing water with pots as long as impurity is not known, it is mentioned in Fath al-Qadir:

- It is permissible to perform ablution from a well in which children and servants drop dirty buckets and jars, and which villagers touch with dirty hands, as long as impurity is not known. (Arabic)
- It is fine to perform ablution from wells where children and servants fill water with dirty buckets and jars, and where water-carriers touch them with dirty hands. However, if impurity is certain, it is not permissible. (Urdu translation/ explanation) (T)

In Ashbah wa al-Nazair: - Imam Muhammad said: A pool from which children and servants fill water with dirty hands and filthy jars, ablution from it is permissible as long as impurity is not known. (Arabic) - Imam Muhammad said that a pool from which small children and servants fill water, even if their hands and pots are dirty, ablution from it is permissible as long as there is no certainty of impurity. (Urdu translation/explanation) (T)

(13) That water in which such a vessel has been placed that is kept on the ground, the purity of whose base is not certain, until impurity is certain. It is mentioned in Fath al-Qadir: - They said: There is no harm in performing ablution from a large jar whose mug is placed in the corners of the house and water is drunk from it, as long as no filth is known in it. (Arabic) - Jurists have said that there is no harm in performing ablution from that tank whose mugs are kept in corners of the house and water is drunk from it, as long as one does not have knowledge of its filthiness. (Urdu translation/explanation) (T)

In Hadiqah al-Nadiyah from Jami' al-Fatawa: - Similarly, the mug placed on the ground, when it is entered into the large jar to drink from it, meaning it is permissible as long as impurity is not known. (Arabic) - Similarly, the lota (small pot) that was placed on the ground, when it is dipped into a pond to draw water for drinking, ablution with it is permissible, meaning as long as knowledge of impurity is not there. (Urdu translation/explanation) (T)

The same rule applies to the bases of those lotas which are kept on the ground, rather even those taken into the toilets, as long as the location of impurity is not known.

1. Fath al-Qadir, Ghadeer Azeem Sukkur 1 / 72

2. Al-Ashbah wa al-Nazair, Al-Yaqin la Yazul bi al-Shakk, Idara al-Quran Karachi 1 / 87
3. Fath al-Qadir, Ghadeer Azeem Sukkur 1 / 72
4. Hadiqah al-Nadiyah, Sinf Thani min al-Musannifeen, Nooria Rizvia Faisalabad 2 / 667 Page 474 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2) घड़े डालकर पानी भरें जब तक गंदगी (नजासत) ज्ञात न हो, 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

- उस कुएं से वज़ू करना जायज़ है जिसमें बच्चे और गुलाम गंदे डोल और बर्तन डालते हैं और जिसे गांव वाले गंदे हाथों से छूते हैं जब तक कि गंदगी का पता न हो। (अरबी)
- जिस कुएं में बच्चे और गुलाम मैले डोलों और बर्तनों से पानी भरते हों और जिन्हें मशकी (सक़्क़े) मैले हाथों से लगाते हों, ऐसे कुओं से वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं है। हाँ, अगर गंदगी का यक़ीन हो तो जायज़ नहीं है। (उर्दू अनुवाद) (त)

'अश्बाह व अन-नज़ाइर' में है: - इमाम मोहम्मद ने फरमाया कि वह हौज़ जिससे बच्चे और गुलाम गंदे हाथों और मैले बर्तनों से पानी भरते हों, उससे वज़ू करना जायज़ है जब तक कि गंदगी का इल्म न हो। (अरबी) - इमाम मोहम्मद ने फरमाया कि वह हौज़ जिससे छोटे बच्चे और गुलाम पानी भरते हों, उनके हाथ और बर्तन (ठेलियाँ) मैले हों, तो जब तक गंदगी का यक़ीन न हो, उससे वज़ू जायज़ है। (उर्दू अनुवाद) (त)

(13) वह पानी जिसमें ऐसा बर्तन डाला गया हो जो ज़मीन पर रखा जाता है, जिसके पेंदे की पाकी (तहारत) पर यक़ीन नहीं जब तक कि गंदगी का यक़ीन न हो। 'फ़तह अल-क़दीर' में है: - उन्होंने कहा कि उस बड़े मटके से वज़ू करने में कोई बुराई नहीं जिसका प्याला (कूज़ा) घर के कोनों में रखा जाता हो और उससे पानी पिया जाता हो, जब तक कि उसमें किसी गंदगी का पता न चले। (अरबी) - फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्री) ने फरमाया कि वह तालाब जिसके प्याले घर के कोनों में रखे जाते हों और उससे पानी पिया जाता हो, तो उससे वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं, जब तक कि उसकी गंदगी का इल्म न हो। (उर्दू अनुवाद) (त)

'हदीक़ा नदिया' में 'जामे अल-फ़तावा' से है: - और इसी तरह ज़मीन पर रखा हुआ प्याला जब मटके में पीने के लिए डाला जाए, यानी जायज़ है जब तक कि नजासत का इल्म न हो। (अरबी) - इसी तरह वह लोटा जो ज़मीन पर रखा हुआ हो, जब उसे तालाब में डालकर उससे पीने के लिए पानी निकाला जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है, यानी जब तक नजासत (गंदगी) का इल्म न हो। (उर्दू अनुवाद) (त)

यही हुक्म उन लोटों के पेंदों का है जो ज़मीन पर रखे जाते हैं, बल्कि वे भी जो शौचालय में ले जाए जाते हैं, जब तक कि गंदगी के स्थान का पता न हो।

1. फ़तह अल-क़दीर, ग़दीर अज़ीम सक्खर 1/72
2. अल-अश्बाह व अन-नज़ाइर, अल-यक़ीन ला यज़ूल बिश-शक्क, इदारा अल-कुरान कराची 1/87
3. फ़तह अल-क़दीर, ग़दीर अज़ीम सक्खर 1/72
4. हदीक़ा नदिया, सिन्फ़ सानी मिन अल-मुसन्निफीन, नूरया रज़विया फ़ैसलाबाद 2/667 पेज 474 / 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی گھڑے ڈال کر پانی بھریں جب تک نجاست معلوم نہ ہو فتح القدیر میں ہے:

یتوضوء من البئر التي یدلی فیه الدلاء والجرار الدنسة یحملها الصغار والعبید الذین لا یعلمون الاحکام ویمسها الرستاقیون بالأیدی الدنسة مالم یعلم نجاسة 1- جس کو کنویں میں بچے اور غلام میلے ڈولوں اور ٹھیلوں سے پانی بھرتے ہوں اور جن کو سقے میلے ہاتھ لگاتے ہوں ایسے کنوؤں سے وضو کرنے میں حرج نہیں ، ہاں اگر نجاست کا یقین ہو تو جائز نہیں (ت)

اشباہ والنظائر میں ہے : قال الامام محمد حوض تملؤ منه الصغار والعبید بالأیدی الدنسة والجرار الوسخة یجوز الوضوء منه مالم تعلم نجاسة 2- امام محمد نے فرمایا وہ حوض جس سے چھوٹے بچے اور غلام پانی بھرتے ہوں ، اُن کے ہاتھ اور ٹھلیاں میلی ہوں تو جب تک نجاست کا یقین نہ ہو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

(۱۳) وہ پانی جس میں ایسا برتن ڈالا گیا ہو جو زمین پر رکھا جاتا ہے جس کے پیندے کی طہارت پر یقین نہیں جب تک نجاست پر یقین نہ ہو فتح القدیر میں ہے : قالوا ولا باس بالتوضی من حب یوضع کوزه في نواحی الدار ویشرب منه مالم یعلم به قذر 3- فقہاء نے فرمایا وہ تالاب جس کے کوزے گھر کے گوشے میں رکھے جاتے ہوں اور اس سے پانی پیا جاتا ہو تو اُس سے وضو کرنے میں حرج نہیں ، جب تک اس کی گندگی کا علم نہ ہو۔ (ت)

حدیقہ ندیہ میں جامع الفتاوٰی سے ہے : وکذا الکوز الموضوع فی الارض اذا ادخل فی الحب للشرب منه یعنی یجوز مالم یعلم النجاسة 4- اسی طرح وہ لوٹا جو زمین پر رکھا ہوا ہو جب اس کو تالاب میں ڈال کر اس سے پینے کیلئے پانی نکالا جائے تو اس سے وضو جائز ہے ، یعنی جب تک نجاست کا علم نہ ہو۔ (ت)

یہی حکم اُن لوٹوں کے پیندوں کا ہے جو زمین پر رکھے جاتے بلا کہ بیت الخلاء میں لے جاتے ہیں جبکہ موضع نجاست

1 فتح القدیر غدیر عظیم سکھر ۱ / ۷۲ 2 الاشباہ والنظائر الیقین لایزول بالشک ادارۃ القرآن کراچی ۱ / ۸۷ 3 فتح القدیر غدیر عظیم سکھر ۱ / ۷۲ 4 حدیقہ ندیہ صنف ثانی من المصنفین نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۶۶۷ Page 474 of 711

Fatawa Razawiya Volume 2

...separated from them.

(14) Water from the wells or vessels of Hindus and other non-believers can be used for purification as long as impurity is not known, but it will remain undesirable (Makruh) until purity is confirmed because they are suspected of all kinds of impurities. In Ayni Sharh Bukhari, under the narration that 'Umar (may Allah be pleased with him) performed ablution from the house of a Christian woman' (T), it is stated:

[Table Start] Arabic Text: Which this narration indicates is the permissibility of using their waters. But the use of their vessels and clothes is undesirable (Makruh), and in this, the People of the Book and others are equal. And the Shafi'is say: If their purity is certain, then there is no undesirability, and we know of no disagreement in this. And when someone performs purification from a vessel of a non-believer and is not certain of its purity or impurity: Then if it belongs to a people who do not consider the use of impurity permissible, its purity is definitively correct. Otherwise, there are two views, the more correct of which is its validity. And among those who saw no harm in it were Al-Awza'i, Al-Thawri, Abu Hanifa, Al-Shafi'i, and their companions. And Ibn Mundhir said: I do not know anyone who considered it undesirable except Ahmad and Ibn Ishaq. I say: The Ahl al-Zahir followed them both. And the saying of Malik differed; in Al-Mudawwanah, it is said: One should not perform ablution with the leftover water of a Christian nor with water in which he has put his hand. And in Al-Utbiyyah, he permitted it once and disliked it another time[1] ہ ا

Urdu Translation: What is understood from this narration is that the use of their water is permissible. But the use of their vessels and clothes is undesirable (Makruh); in this, the People of the Book and non-People of the Book are equal. And the Shafi'i masters say that if there is certainty of their purity, then there is no undesirability either, and we do not know of any disagreement in this. And when someone has obtained purity from a vessel used by a non-believer and there is no certainty of its purity or impurity: then if it is the vessel of people who do not consider the use of impurity permissible, then its purity is definitively proven. Otherwise, there are two possibilities in it, in both of which the more correct view is its validity. Imam Awza'i, Thawri, Abu Hanifa, Imam Shafi'i and the companions of both of them did not consider any problem in it. And Ibn Mundhir says: I do not know anyone who considered it undesirable except Ahmad and Ibn Ishaq. I say: The Ahl al-Zahir

followed those two. And disagreement is found in the saying of Malik; it is in Al-Mudawwanah that ablution should not be performed from the leftover water of a Christian and from that water in which he has put his hand. And in Al-Utbiyyah, there is one saying of permissibility and another of undesirability. (T) [Table End]

[1] Umdat al-Qari, Chapter on a man performing ablution with his wife, Egypt 3/82.

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

...उनसे अलग हूँ।

(14) हिंदुओं और अन्य काफ़िरों के कुओं या बर्तनों के पानी से पाकी (शुद्धता) हासिल की जा सकती है जब तक कि गंदगी मालूम न हो, लेकिन नापसंदगी (मक़रूहियत) बनी रहेगी जब तक कि शुद्धता का पता न चले, क्योंकि उन पर हर तरह की गंदगी का संदेह होता है। 'ऐनी शरह बुखारी' में इस रिवायत के तहत कि 'हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक ईसाई महिला के घर से वज़ू किया' (त), फ़रमाया गया है:

[तालिका शुरू] अरबी पाठ: जो इस रिवायत से साबित है वह उनके पानी के इस्तेमाल की वैधता है। लेकिन उनके बर्तनों और कपड़ों का इस्तेमाल मक़रूह (नापसंद) है, और इसमें अहले किताब और अन्य बराबर हैं। और शाफ़ई कहते हैं: अगर उनकी पाकी का यक़ीन हो तो मक़रूहियत नहीं है, और हम इसमें कोई मतभेद नहीं जानते। और जब कोई किसी काफ़िर के बर्तन से पाकी हासिल करे और उसे उसकी पाकी या नापाकी का यक़ीन न हो: तो अगर वह ऐसे लोगों का बर्तन है जो गंदगी के इस्तेमाल को जायज़ नहीं समझते, तो उसकी पाकी निश्चित रूप से सही है। वरना इसमें दो मत हैं, जिनमें से अधिक सही वैधता है। और जिन्होंने इसमें कोई हर्ज नहीं समझा उनमें औज़ाई, थौरी, अबू हनीफा, शाफ़ई और उनके साथी शामिल थे। इब्न मुन्ज़िर ने कहा: मैं किसी को नहीं जानता जिसने इसे मक़रूह समझा हो, सिवाय अहमद और इब्न इसहाक़ के। मैं कहता हूँ: अहल-ए-ज़ाहिर ने उन दोनों का अनुसरण किया। मलिक के कथन में मतभेद है; मुदव्वना में है: ईसाई के जूठे पानी से वज़ू न किया जाए और न ही उस पानी से जिसमें उसने हाथ डाला हो। और उत्बिया में, उन्होंने एक बार इसे जायज़ बताया और दूसरी बार मक़रूह।[1] अह

उर्दू अनुवाद: इस रिवायत से जो बात मालूम होती है वह यह है कि उनके पानी का इस्तेमाल जायज़ है। लेकिन उनके बर्तनों और कपड़ों का इस्तेमाल मक़रूह है; इसमें अहले किताब और गैर-अहले किताब बराबर हैं। और शाफ़ई हज़रात फ़रमाते हैं कि अगर उनकी पाकी का यक़ीन हो तो मक़रूहियत भी नहीं है, और हम इसमें कोई मतभेद नहीं जानते। और जब किसी बर्तन से किसी काफ़िर ने पाकी हासिल की और उसकी पाकी और गंदगी में से किसी का यक़ीन नहीं है: तो अगर वह ऐसे लोगों का बर्तन है जो गंदगी के इस्तेमाल को जायज़ नहीं समझते, तो उसकी पाकी निश्चित रूप से साबित है। वरना इसमें दो सूरतें हैं, दोनों में 'असह्' (अधिक सही) शुद्धता है। इमाम औज़ाई,

थौरी, अबू हनीफा, इमाम शाफ़ई और दोनों के साथियों को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। और इब्न मुन्ज़िर फ़रमाते हैं: मैं किसी को नहीं जानता जिसने इसे मक़रूह समझा हो सिवाय अहमद और इब्न इसहाक़ के। मैं कहता हूँ अहल-ए-ज़ाहिर ने उन दोनों का अनुसरण किया। और मलिक के क़ौल में मतभेद पाया जाता है, मुदव्वना में है कि ईसाई के जूठे से और उस पानी से जिसमें उसने अपना हाथ डाला हो वज़ू न किया जाए। और उत्बिया में एक क़ौल जायज़ का है और एक मक़रूहियत का। (त) [तालिका अंत]

[1] उम्दत अल-क़ारी, बाब: पुरुष का अपनी पत्नी के साथ वज़ू करना, मिस्र 3/82. पेज 475 of 711

سے جدا ہوں۔

(۱۴) ہنود و غیر ہم کفار کے کنوؤں یا برتنوں کا پانی اس سے طہارت ہو سکتی ہے جب تک نجاست معلوم نہ ہو مگر کراہت رہے گی جب تک طہارت نہ معلوم ہو کہ وہ مظنون ہر گونہ نجاست ہیں عینی شرح بخاری میں زیر اثر تو ضأ عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ من بیت نصرانیة (حضرت عمر نے ایک نصرانی عورت کے گھر سے وضو کیا۔ ت) فرمایا :

[جدول کا آغاز] عربی متن: الذی یدل ھذا الاثر جواز استعمال میاھھم ولکن یکرہ استعمال اوانیھم وثیابھم سواء فیہ اھل الکتاب وغیرھم وقال الشافعیة فان تیقن طھارتھا فلا کراھة ولا نعلم فیھا خلافا واذا تطھر من اناء کافر ولم یتیقن طھارتہ ولا نجاستہ فان کان من قوم لا یتدینون باستعمالھا صحت طھارتہ قطعا والا وجھان اصحھما الصحة ومن کان لا یری بأسا بہ الاوزاعی والثوری وابو حنیفة والشافعی واصحابھما وقال ابن المنذر لا اعلم احدا کرھہ الا احمد وابن اسحق قلت وتبعھما اھل الظاھر واختلف قول مالك ففی المدونة لا یتوضوء بسؤر النصرانی ولا بمأ ادخل یدہ فیہ وفی العتبیة اجازہ مرة وکرھہ اخری[1] اہ

اردو ترجمہ: اس اثر سے جو بات معلوم ہوتی ہے وہ یہ ہے کہ ان کے پانیوں کا استعمال جائز ہے لیکن ان کے برتنوں اور کپڑوں کا استعمال مکروہ ہے اس میں اہل کتاب اور غیر اہل کتاب برابر ہیں اور شافعی حضرات فرماتے ہیں اگر ان کی پاکی کا یقین ہو تو کراہت بھی نہیں، اور ہم اس میں کوئی اختلاف نہیں جانتے اور جب کسی برتن سے کسی کافر نے پاکی حاصل کی اور اس کی طہارت و نجاست میں سے کسی کا یقین نہیں ، تو اگر وہ ایسے لوگوں کا برتن ہے جو نجاست کے

استعمال کو جائز نہیں سمجھتے ، تو اس کو طہارت قطعاً ثابت ہے ورنہ اس میں دو صورتیں ہیں، دونوں میں اصح صحت ہے، امام اوزاعی ، ثوری ، ابو حنیفہ، امام شافعی اور دونوں کے اصحاب اس میں کوئی مضائقہ نہیں سمجھتے تھے ، اور ابن منذر فرماتے ہیں میں کسی کو نہیں جانتا جس نے اس کو مکروہ سمجھا ہو سوائے احمد اور ابن اسحق کے ، میں کہتا ہوں اہل ظاہر نے ان دونوں کی متابعت کی اور مالک کے قول میں اختلاف پایا جاتا ہے ، مُدوّنہ میں ہے نصرانی کے جھوٹے سے اور اُس پانی سے جس میں اُس نے اپنا ہاتھ ڈالا ہو وضو نہ کیا جائے، اور عتُبِیّہ میں ایک قول جواز کا ہے اور ایک کراہت کا ۔ (ت) [جدول کا اختتام]

[1] عمدۃ القاری باب وضوء الرجل مع امرأتہ مصر ۳/ ۸۲ Page 475 of 711

Fatawa Rizvia, Volume 2

I say: He conveyed the prohibitive dislike (Karahiya Tahrimi) because it stands in opposition to permission. This is the basis for the statements of Ahmad and Ishaq. Where the negation of 'Ba's' (harm/sin) occurs, it refers to 'Khilaf-ul-Awla' (against what is better). We have explained this issue in more detail at its relevant place in our Fatawa. (T)

I say, from this, prohibitive dislike is understood because its opposite...

In 'Zakheerah' it is stated:

"It is disliked to eat and drink from the vessels of polytheists before washing them, because the outward appearance of their vessels is generally impurity." Eating and drinking from the vessels of polytheists before washing is disliked (Makruh) because their vessels are apparently impure. (T)

(15) The same ruling applies to water in which a child has put their hand or foot: it is considered fit for purification as long as there is no certainty of impurity, but the better course is to avoid it until purity is certain. It is stated in 'Al-Hindiyyah':

"If a child puts his hand or foot into a vessel of water, then if it is known with certainty that his hand is pure, it is permissible to perform ablution with it. If it is not known whether it is pure or impure, then it is recommended (Mustahabb) to perform ablution with other water. Despite this, if he performs ablution, it is valid; as stated in 'Al-Muhit'."

If a child puts his hand or foot in a water pot, if it is known for certain that his hand or foot is clean, then ablution is permissible with it. If it is not known whether it is clean or unclean, then it is preferable to perform ablution with other water, but if ablution is performed, it is valid; as stated in 'Al-Muhit'. (T)

(16) Similarly (3) a situation in which a doubtful cloth fell, even the cotton of a child's bedding when impurity is not known, but it is disliked because the suspicion is high. In 'Jawahir al-Fatawa', in the first chapter of the Fatawa of Imam Rukn al-Din Abu al-Fadl al-Kirmani, it is stated:

"A piece of cotton from a child's bedding fell into a well and it is not known whether it is impure or pure..."

A piece of cotton from a child's bedding fell into a well and it is not known whether it is pure or impure, then mere doubt...

---

1. Hadiqa Nadiyah, Nuriya Razvia, Faisalabad, 12/127
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter on what is not permissible for ablution, Peshawar, 1/25

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

मैं कहता हूँ: उन्होंने 'कराहते तहरीमी' (निषेधात्मक नापसंदगी) का लाभ दिया क्योंकि यह अनुमति के विपरीत है। यही अहमद और इसहाक़ के कथनों का आधार है। जहाँ 'बा'स' (दोष) का निषेध है, उसका अर्थ 'खिलाफ़-ए-औला' (बेहतर के विरुद्ध) है। हमने इस मुद्दे को अपने फ़तावा के इस स्थान पर विस्तार से स्पष्ट किया है। (त)

मैं कहता हूँ, इससे 'कराहते तहरीमी' का पता चलता है क्योंकि इसका मुकाबला...

'ज़खीरा' में है:

"मुशरिकों (बहुदेववादियों) के बर्तनों को धोने से पहले उनमें खाना-पीना मकरूह (नापसंद) है, क्योंकि ज़ाहिर तौर पर उनके बर्तन नापाक होते हैं।" मशरिकों के बर्तनों में धोने से पहले खाना-पीना मकरूह है क्योंकि उनके बर्तन ज़ाहिर तौर पर नापाक होते हैं। (त)

(15) जिस पानी में बच्चे ने हाथ या पाँव डाल दिया हो, वहाँ भी यही नियम है कि जब तक नजासत (गंदगी) का यकीन न हो, वह पाक (शुद्ध) माना जाएगा, लेकिन जब तक पाकी का यकीन न हो, तब तक उससे बचना ही बेहतर है। 'हिन्दिया' में है:

"अगर बच्चा पानी के लोटे में हाथ या पैर डाले, और अगर यकीनी तौर पर पता हो कि उसका हाथ पाक है, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। और अगर यह पता न हो कि वह पाक है या नापाक, तो मुस्तहब (पसंदीदा) यह है कि दूसरे पानी से वज़ू किया जाए, लेकिन इसके बावजूद अगर वज़ू कर लिया तो वह हो जाएगा; जैसा कि 'अल-मुहीत' में है।"

बच्चे ने पानी के लोटे में अगर हाथ या पैर डाला, तो अगर यकीनन यह मालूम है कि उसका हाथ या पैर पाक है, तो उससे वज़ू जायज़ है। और अगर मालूम नहीं कि वह पाक है या नापाक, तो मुस्तहब यह है कि दूसरे पानी से वज़ू किया जाए, लेकिन अगर वज़ू कर ही लिया तो जायज़ है; जैसा कि 'अल-मुहीत' में है। (त)

(16) इसी तरह (3) जिसमें संदिग्ध कपड़ा गिर गया, यहाँ तक कि बच्चे के बिस्तर की रुई, जबकि नजासत का पता न हो, लेकिन मकरूह है क्योंकि आशंका अधिक है। 'जवाहरुल फ़तावा', इमाम रुकनुद्दीन अबुल फ़ज़ल किरमानी के फ़तावा के पहले अध्याय में है:

"बच्चे के बिछावन से रुई का एक टुकड़ा कुएं में गिर गया और यह नहीं पता कि वह नापाक है या पाक..."

बच्चे के बिछौने से रुई का एक टुकड़ा कुएं में गिर गया और यह मालूम नहीं कि यह पाक है या नापाक, तो महज़ शक...

---

1. हदीक़ा नदिया, नूरिया रज़विया, फ़ैसलाबाद, 12/127
2. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल उसमें जिससे वज़ू जायज़ नहीं, पेशावर, 1/25

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: افاد کراھة التحریم لمقابلتھا بالاجازة وھی محمل قول احمد واسحق ونفی البأس مرجعه الی خلاف الاولی وقد بینا المسألة بابسط مباھنا فی فتاوٰینا۔ ببلہ اجازت سے ہے، اور اسی پر احمد اور اسحاق کے قول کو محمول کیا گیا ہے اور جہاں باس کی نفی ہے اس کا مطلب خلافِ اولی ہے، ہم نے اس مسئلہ کو بہ نسبت اس مقام کے اپنے فتاوی میں تفصیل سے بیان کیا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اس سے کراہت تحریمی معلوم ہوتی ہے کیونکہ اس کا مقاب

ذخیرہ میں ہے :

یکرہ الاکل(1) والشرب فی اوانی المشرکین قبل الغسل لان الغالب الظاہر من حال اوانیہم النجاسة1۔ مشرکین کے برتنوں میں دھونے سے پہلے کھانا پینا مکروہ ہے کیونکہ ان کے برتن میں بظاہر ناپاک ہوتے ہیں۔ (ت)

(۱۵) جس پانی میں بچے نے ہاتھ یا پاؤں ڈال دیا یہاں بھی وہی حکم ہے کہ قابلِ طہارت ہے جب تک نجاست پر یقین نہ ہو مگر اولی احتراز ہے جب تک طہارت پر یقین نہ ہو۔ ہندیہ میں ہے:

اذا دخل الصبی یدہ فی کوز ماء او رجلہ فان علم ان یدہ طاھرة بیقین یجوز التوضؤ بہ وان کان لا یعلم انھا طاھرة او نجسة فالمستحب ان یتوضأ بغیرہ ومع ھذا لوتوضأ اجزأہ کذا فی المحیط 2۔

بچے نے پانی کے کوزے میں اگر ہاتھ یا پیر ڈالا تو اگر یقین سے یہ معلوم ہے کہ اس کا ہاتھ یا پیر پاک ہے تو اس سے وضو جائز ہے اور اگر معلوم نہیں کہ وہ پاک ہے یا ناپاک، تو مستحب یہ ہے کہ دوسرے پانی سے وضو کیا جائے، لیکن اگر وضو کر ہی لیا تو جائز ہے کذا فی المحیط (ت)

(۱۶) یوں ہی ۳ جس میں مشکوک کپڑا گر گیا حتی کہ بچہ کے نہالچے کی روئی جبکہ نجاست معلوم نہ ہو مگر کراہت ہے کہ مظنہ زیادہ ہے، جواہر الفتاوی باب اول فتاوی امام رکن الدین ابو الفضل کرمانی میں ہے:

قطعة قطن من فراش صبی وقعت فی بئر ولا یدری انها نجسة ام طاهرة

بچے کے بچھونے سے روئی کا ایک ٹکڑا کنویں میں گر گیا اور یہ معلوم نہیں کہ یہ پاک ہے یا ناپاک، تو محض شک

---

1 حدیقہ ندیہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱۲/ ۱۲۷ 2 فتاوی ہندیہ فصل فیما لا یجوز بہ التوضو پشاور ۱/ ۲۵

Fatawa-e-Razvia - Volume Two

Arabic Text: He said, its impurity is not ruled upon based on doubt and possibility; though if caution is exercised and it is emptied out, that would be better. - 1 Urdu Text: And based on possibility, the ruling of its impurity will not be given, and if caution is used and all the water is removed, it is better. (T)

(17) The water in which a used shoe has fallen while the impurity is unknown, the same ruling applies here, as mentioned in Tatar-khaniyah, then Tariqah and Hadiqah.

Arabic Text: Imam Al-Khujandi was asked about a well in which a boot (i.e., footwear worn and walked in on paths by its owner) was found, it is not known when it fell in, and there is no trace of impurity on it; is the water ruled impure? He said, "No." 2 - Summarized. Urdu Text: Imam Khujandi was asked about a well in which such a boot (light shoe) was found that is worn while walking on general paths, and it is not known when it fell, and apparently there is no trace of impurity on it, so is the well impure? He said: No. (T)

(18 to 21) The leftover water of predatory birds, insects of the earth, cats, and free-roaming chickens, when there is no certainty of purity or impurity, is disliked only when other clean water is available. We have explained this in our fatwas. (T) (22) The leftover of an animal that does not have flowing blood, like a scorpion etc., has no dislike in it. It is in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Text: The leftover of what has no blood is pure and purifying without dislike. - 3 Urdu Text: The leftover of an animal that does not have flowing blood is pure and purifying without any dislike. (T)

(23) Water of a pond that smells, while it is not known if the smell is due to impurity. It is in Khaniyah:

Arabic Text: Ablution is permissible in a large, foul-smelling pond as long as impurity is not known, because the change in smell... Urdu Text: Even if there is a bad smell in a large pond, ablution is permissible from it, provided that no impurity is known in it, because...

1. Jawahir-ul-Fatawa
2. Hadiqah Nadiyyah, Second class of the two classes, Nooria Razvia, Faisalabad, 2/672
3. Al-Durr-ul-Mukhtar regarding the Well, Mujtabai, Delhi, 1/40

फ़तावा रिज़विया - भाग दो

अरबी पाठ: उसने कहा, संदेह और संभावना के आधार पर इसकी अशुद्धि का फैसला नहीं किया जाएगा; यद्यपि यदि सावधानी बरती जाए और इसे खाली कर दिया जाए, तो वह बेहतर होगा। - 1 उर्दू पाठ: और संभावना के आधार पर इसकी अशुद्धि का हुक्म नहीं दिया जाएगा, और यदि सावधानी बरती जाए और पूरा पानी निकाल दिया जाए तो बेहतर है। (त)

(17) वह पानी जिसमें इस्तेमाल किया हुआ जूता गिर गया हो, जबकि अशुद्धि (नजासत) का पता न हो, यहाँ भी वही हुक्म है जो तातारख़ानिया, फिर तरीक़ा और हदीक़ा में है।

अरबी पाठ: इमाम अल-खुजंदी से एक कुएं के बारे में पूछा गया जिसमें एक मोज़ा (अर्थात वह जूता जिसे पहनकर उसका मालिक रास्तों पर चलता है) पाया गया, यह नहीं पता कि वह कब उसमें गिरा, और उस पर अशुद्धि का कोई निशान नहीं है; क्या पानी को अशुद्ध माना जाएगा? उन्होंने कहा, "नहीं।" 2 - संक्षेप में। उर्दू पाठ: इमाम खुजंदी से ऐसे कुएं के बारे में पूछा गया जिसमें ऐसा मोज़ा (हल्का जूता) पाया गया जिसे पहनकर आम रास्तों पर चला जाता है, और यह मालूम नहीं कि वह कब गिरा है, और उस पर स्पष्ट रूप से अशुद्धि का कोई असर भी नहीं है, तो क्या कुआं नापाक है? आपने फ़रमाया: नहीं। (त)

(18 से 21) शिकारी पक्षियों, ज़मीन के कीड़े-मकोड़ों, बिल्ली और छोटी छूटी हुई मुर्गी का जूठा (बचा हुआ पानी), जब पवित्रता या अशुद्धि का यकीन न हो, तो यह उस समय मकरूह (नापसंद) है जब दूसरा साफ़ पानी मौजूद हो। हमने अपने फ़तवों में इसका वर्णन कर दिया है। (त) (22) उस जानवर का जूठा जिसमें बहने वाला खून नहीं होता, जैसे बिच्छू आदि, उसमें कोई मकरूहियत (नापसंदगी) भी नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ: जिस जानवर में खून नहीं होता उसका जूठा बिना किसी नापसंदगी के पवित्र और शुद्ध करने वाला है। - 3 उर्दू पाठ: उस जानवर का जूठा जिसमें बहने वाला खून नहीं है, बिना किसी नापसंदगी के पाक और पाक करने वाला है। (त)

(23) हौज़ (कुंड) का पानी जिससे बदबू आती हो, जबकि यह मालूम न हो कि बदबू अशुद्धि के कारण है। खानिया में है:

अरबी पाठ: बड़े बदबूदार हौज़ में वज़ू करना जायज़ है जब तक कि अशुद्धि का पता न चले, क्योंकि गंध का बदलना... उर्दू पाठ: बड़े हौज़ में अगर बदबू हो तो भी उससे वज़ू जायज़ है, बशर्ते कि उसमें अशुद्धि (नजासत) मालूम न हो क्योंकि...

1. जवाहरुल फ़तावा
2. हदीक़ा नदिय्या, दूसरी श्रेणी, नूरिया रिज़विया फ़ैसलाबाद, 2/672
3. अद्दुर्रुल मुख्तार, कुएं के अध्याय में, मुज्तबाई दिल्ली, 1/40

पृष्ठ 477 का 711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

قال لا یحکم بکونھا نجسة بالشك والاحتمال ولو احتیط ونزح کان اولی - 1 اور احتمال کی بناء پر اس کی نجاست کا حکم نہیں دیا جائیگا اور اگر احتیاط سے کام لیا جائے اور تمام پانی نکال دیا جائے تو بہتر ہے۔ (ت)

(۱۷) وہ پانی جس میں استعمال شدہ جوتا گر گیا جبکہ نجاست نہ معلوم ہو یہاں پر بھی وہی حکم ہے تاتارخانیہ پھر طریقہ وحدیقہ میں ہے۔

سئل الامام الخجندی عن رکیة وھی البئر وجد فیھا خف ای نعل تلبس ویمشی بھا صاحبھا في الطرقات لا یدری متی وقع فیھا ولیس علیه اثر النجاسة ھل یحکم بنجاسة الماء قال لا - 2 اھ ملخصا۔ امام خجندی سے ایسے کنویں کی بابت دریافت کیا گیا جس میں ایسا موزہ (ہلکا جوتا) پایا گیا جسے پہن کر عام راستوں پر چلا جاتا ہے، اور یہ معلوم نہیں کہ وہ کب گرا ہے، اور اس پر بظاہر نجاست کا اثر بھی نہیں تو کیا کنواں ناپاک ہے؟ آپ نے فرمایا: نہیں اھ (ت)

(۱۸ تا ۲۱) شکاری پرندوں اور حشرات الارض اور بلی اور چھوٹی ہوئی مرغی کا جھوٹا جبکہ طہارت یا نجاست پر یقین نہ ہو یہ اس وقت مکروہ ہے جبکہ دوسرا صاف پانی موجود ہو و قد بیناہ فی فتاونا (ہمارے فتاوی میں بیان کر دیا گیا ہے ۔ ت) (۲۲) اُس جانور کا جھوٹا جس میں خون سائل نہیں جیسے بچھو وغیرہ اس میں کراہت بھی نہیں۔ در مختار میں ہے:

سؤر مالادم لہ طاھر طھور بلا کراھة - 3 اس جانور کا جھوٹا جس میں خون سائل نہیں بلا کراہت پاک اور پاک کرنے والا ہے۔ (ت)

(۲۳) حوض کا پانی جس میں بدبو آتی ہو جبکہ اس کی بُو نجاست کی وجہ سے ہونا معلوم نہ ہو۔

خانیہ میں ہے:

یجوز التوضوء في الحوض الکبیر المنتن اذالم تعلم نجاسة لان تغیر الرائحة بڑے حوض میں اگر بدبو ہو تو بھی اس سے وضوء جائز ہے بشر طیکہ اس میں نجاست معلوم نہ ہو کیونکہ

۱ جواہر الفتاوی ۲ حدیقة ندیة صنف ثانی من الصفین نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۶۷۲ ۳

الدرالمختار فی البئر مجتبائی دہلی ۱/ ۴۰

صفحہ 477 کا 711

"It may happen due to long stagnation." [End quote] Water can sometimes develop an odor due to being stagnant. [Translator's note]

"I say: The same ruling applies to a small reservoir. The restriction to a large reservoir was only made because if any of the qualities of water in a large reservoir change due to impurity, it becomes impure. A person prone to misgivings might avoid a foul-smelling large reservoir, imagining the smell is due to impurity. Thus, this clarifies that such a doubt is not credible." I say that the ruling for a small reservoir is the same. The restriction to a large one is only because when the water of a large reservoir changes due to impurity and any of its qualities is altered, it becomes impure. If a foul odor is found in a large reservoir, a person prone to doubts may avoid it, thinking the smell is caused by impurity. However, this text clarifies that such a doubt is not legally valid. [Translator's note]

(24) May the Benevolent Lord, the Most Gracious and Most Merciful, glorified be His Majesty, for the sake of His most noble Beloved, the Mercy to the worlds (peace and blessings be upon him), protect us from His wrath in both worlds. In any settlement where—God forbid—divine punishment has descended, using the water from its wells and ponds for eating, drinking, or purification is disliked (Makruh). Similarly, performing dry ablution (Tayammum) with its soil is also disliked. However, the well in the land of Thamud (2) from which the she-camel of Prophet Salih (peace be upon him) used to drink is an exception. It is recorded in authentic traditions (Sahah) that when the noble Companions (may Allah be pleased with them) were traveling with the Holy Prophet (peace and blessings be upon him), they alighted at the land of Thamud. They drew water from the wells there and kneaded dough with it. The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) ordered them to throw away the water and feed the dough to the camels, and to take water from the well of the she-camel. It is stated in Rad al-Muhtar:

"Purification with the water and soil of any land upon which divine wrath has descended should also be considered disliked (Makruh), based on what we have mentioned, even if I have not seen it explicitly stated by any of our Imams. The only exception is the well of the she-camel in the land of Thamud. The Shafi'is have explicitly stated its dislike, and it is not permissible according to Ahmad. Then, the Hadith was cited from the Hanbali work Sharh al-Muntaha, which says its literal meaning prohibits purification." In any land where wrath has descended, it should be

Makruh (disliked) to achieve purification from its water and soil. Except for the well of the she-camel which is found in the land of Thamud. This point is known from the research we have mentioned, although I have not seen any of our Imams saying this. However, the Shafi'is have (stated) its being Makruh.

---

1. Qazi Khan, "Al-Ma' al-Rakid", Naval Kishore, Lucknow, 1/4. Page 478 of 711

"यह लंबे समय तक ठहरे रहने के कारण भी हो सकता है।" [समाप्त] पानी के ठहरे रहने की वजह से भी कभी-कभी बदबू पैदा हो जाती है। [अनुवादक की टिप्पणी]

"मैं कहता हूँ: यही हुक्म छोटे हौज का भी है, बड़े की शर्त सिर्फ इसलिए लगाई गई है कि बड़े हौज का पानी जब गंदगी के कारण बदल जाए और उसकी कोई खूबी बदल जाए तो वह नापाक है। अगर बड़े हौज में बदबू पाई जाए, तो वहमी (शंकालु) व्यक्ति उससे परहेज कर सकता है कि शायद इसकी बदबू गंदगी के कारण है, लेकिन इस इबारत से यह बता दिया कि यह वहम विश्वसनीय नहीं है।" मैं कहता हूँ कि छोटे हौज का भी यही हुक्म है, बड़े की कैद सिर्फ इसलिए लगाई है कि बड़े हौज का पानी जब नजासत (गंदगी) की वजह से मुतग़ैय्यर (परिवर्तित) हो जाए और उसका कोई वस्फ़ (गुण) बदल जाए तो नजिस (नापाक) है। अगर बड़े हौज में बदबू पाई जाए तो वहमी शख़्स उससे परहेज़ कर सकता है कि शायद इसकी बदबू नजासत के बाइस (कारण) है, लेकिन इस इबारत से यह बता दिया कि यह वहम मोतबर (मान्य) नहीं है। [अनुवादक की टिप्पणी]

(24) मौला करीम, रऊफ़ ओ रहीम (अल्लाह), अपने हबीबे अकरम, रहमते आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की महानता के सदके में अपने प्रकोप से दोनों जहान में बचाए। जिस बस्ती पर—अल्लाह की पनाह—अज़ाब उतरा हो, उसके कुओं और तालाबों का पानी कि उसका इस्तेमाल खाने-पीने और पाकी हासिल करने जैसी हर चीज़ में मकरूह है। इसी तरह उसकी मिट्टी से तयम्मुम करना भी मकरूह है। हाँ, ज़मीने-समूद (2) का वह कुआँ जिससे हज़रत सालेह (अलैहिस्सलाम) की ऊंटनी पानी पीती थी, उसका पानी अपवाद है। सहीह हदीसों में है कि सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हुज़ूर सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ सफ़र में ज़मीने-समूद पर उतरे, वहाँ के कुओं से पानी भरा और उससे आटा गूँधा। हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हुक्म दिया कि पानी फेंक दें और आटा ऊँटों को खिला दें, और ऊँटनी वाले कुएँ से पानी लें। रद-उल-मुह्तार में है:

"जिस ज़मीन पर भी प्रकोप उतरा हो, उसके पानी और मिट्टी से पाकी हासिल करना भी मकरूह होना चाहिए, जो कुछ हमने ज़िक्र किया है उससे अख़्ज़ (ग्रहण) करते हुए, हालाँकि मैंने हमारे इमामों में से किसी के लिए इसे नहीं देखा है। सिवाए ऊँटनी के कुएँ के जो ज़मीने-समूद में है। शाफ़ईया ने इसके मकरूह होने की सराहत की है और अहमद के नज़दीक यह जाइज़ नहीं है। फिर शरह अल-

मुंतहा अल-हनबली से हदीस नक़ल की गई है कि इसका ज़ाहिरी अर्थ पाकी से मना करना है।" जिस ज़मीन पर भी प्रकोप नाज़िल हुआ हो, उसके पानी और मिट्टी से पाकी हासिल करना मकरूह होना चाहिए। सिवाए ऊँटनी के कुएँ के जो ज़मीने-समूद में पाया जाता है। यह बात उस तहक़ीक़ (शोध) से मालूम होती है जो हमने ज़िक्र की है, हालाँकि मेरी नज़र से नहीं गुज़रा कि हमारे इमामों में से किसी ने यह बात कही हो, अलबत्ता शाफ़ईया ने इसके मकरूह होने की (सराहत की है)।

---

1. काज़ी खाँ, "अल-मा अल-राकिद", नवल किशोर, लखनऊ, 1/4। पेज 478 / 711

قد یکون بطول المکث اہ پانی کے ٹھہرے رہنے کی وجہ سے بھی کبھی بدبو پیدا ہوجاتی ہے اہ (ت)

اقول: وکذا الصغیر وانما قید بالکبیر لاجل في معناہ ان الکبیر اذا تغیر احد اوصافہ بنجس ینجس فالحوض الکبیر المنتن قد یتوگاہ الموسوس توھماً ان نتنہ بالنجس فافاد انہ وھم لا یعتبر۔ میں کہتا ہوں چھوٹے حوض کا بھی یہی حکم ہے، بڑے کی قید محض اس لئے لگائی ہے کہ بڑے حوض کا پانی جب نجاست کی وجہ سے متغیر ہوجائے اور اس کا کوئی وصف بدل جائے تو نجس ہے اگر بڑے حوض میں بدبو پائی جائے تو وہمی شخص اس سے پرہیز کر سکتا ہے کہ شاید اس کی بدبو نجاست کے باعث ہے، لیکن اس عبارت سے یہ بتا دیا کہ یہ وہم معتبر نہیں ہے۔ (ت)

(۲۴) مولٰی کریم رؤف رحیم عزجلالہ، اپنے حبیب اکرم رحمت عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی وجاہت کریمہ کے صدقہ میں اپنے غضب سے دونوں جہان میں بچائے جس بستی پر (۱) عیاذاً باللہ عذاب اترا اُس کے کنوؤں تالابوں کا پانی کہ اُس کا استعمال کھانے پینے طہارت ہر شے میں مکروہ ہے یوں ہی اس کی مٹی سے تیمم ، ہاں زمین (۲) ثمود کا وہ کُنواں جس سے ناقہ صالح علیہ الصلوۃ والسلام پانی پیتا اُس کا پانی مستثنٰی ہے، صحاح میں ہے صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم ہمراہ رکابِ اقدس حضور سرورِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم زمین ثمود پر اُترے وہاں کے کنوؤں سے پانی بھرا اُس سے آٹے گوندھے، حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے حکم فرمایا کہ پانی پھینک دیں اور آٹا اونٹوں کو کھلا دیں چاہِ ناقہ سے پانی لیں۔ ردالمحتار میں ہے :

ینبغی کراھۃ التطھیر ایضاً اخذا مما ذکرناہ وان لم ارہ لاحد من ائمتنا بماء وتراب من کل ارض غضب علیھا الا بئرالناقۃ بارض ثمود وقد صرح الشافعیۃ بکراھتہ ولا یباح عند احمد ثم نقل الحدیث عن شرح

المنتهی الحنبلی وانه قال ظاهره منع الطهارة جس زمین پر بھی غضب نازل ہوا ہو، اس کے پانی اور مٹی سے طہارت حاصل کرنا مکروہ ہونا چاہئے۔ سوائے ناقہ کے کنویں کے جو زمین ثمود میں پایا جاتا ہے۔ یہ بات اس تحقیق سے معلوم ہوتی ہے جو ہم نے ذکر کی ہے، اگرچہ میری نظر سے نہیں گزرا کہ ہمارے ائمہ میں سے کسی نے یہ بات کہی ہو، البتہ شافعیہ نے اس کے مکروہ ہونے کی (تصریح کی ہے)

---

۱ قاضی خاں الماء الراکد نولکشور لکھنؤ ۱/ ۴ صفحہ 478 از 711

(Arabic Text)

He said this. And the "Well of the She-camel" is the large well which pilgrims visit in these times. End of quote. His saying "taking from what we mentioned" points to the reasoning for the dislike mentioned previously by observing the disagreement.

I say: (1) In it is what we have mentioned before, but the dislike here is clear. Bricks fired in a kiln were disliked for use in the grave adjacent to the deceased because of the effect of fire, as in Al-Badai' and other works. So this [the well] is more disliked for several reasons as is not hidden from one who considers. May Allah Almighty reward him with much good in the gardens of Firdous for pointing out this beneficial point.

(Urdu Translation/Commentary)

It is explicitly stated, and according to Imam Ahmad, it is not permissible (mubah). Then a Hadith was quoted from the commentary of Muntaha al-Hanbali, and he said that from this, the prohibition of purification is apparent. He said the "Well of the She-camel" refers to that large well which pilgrims visit nowadays. His phrase "taking from what we mentioned" refers to the cause of dislike (karahat) which they explained, that the intention is to respect the difference of opinion. (T)

I say: This is subject to the objection we mentioned, but the dislike here is clear, because using bricks fired in fire in a grave adjacent to the deceased is prohibited as there is the effect of fire in it, as mentioned in Badai' etc. So this is more appropriately disliked for several reasons as is not hidden from one who takes heed. May Allah Almighty grant him abundant reward in Jannah al-Firdous as warned in this excellent point. (T)

(25) Usurped water (Aab-e-Maghzoob). There was already dislike in using usurped water, whether for eating and drinking or for purification; it is purely prohibited. However, wudu (ablution) and ghusl (bath) will be valid and prayer can be offered with them. "Because the prohibition is due to proximity" (this prohibition is because of being together. - T). In Radd al-Muhtar, under the author's statement "it is permissible to remove ritual impurity with what was mentioned", it says: "meaning it is valid even if not lawful, like usurped water" (i.e., it is valid although not permissible in the form of usurped water. - T).

(26) Water taken from someone's owned well without their permission, but without an explicit prohibition, its use for drinking, wudu, etc., is all permissible. This does not fall under the category of "usurped" because the water in a well, as long as it is in the well, is not anyone's property. Like rainwater, it is permissible (mubah) and the pure property of Allah Almighty. In Radd al-Muhtar it is cited from Al-Hidayah: "The water in a well is not owned property" (the water inside the well is no one's ownership. - T). In the same book from Walwalijiyah:

---

1 Radd al-Muhtar, Makruhat al-Wudu, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/98 2 Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/135 3 Radd al-Muhtar, Fasl al-Shurb, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/186

(अरबी पाठ)

उन्होंने यह कहा। और ऊँटनी का कुआँ वह बड़ा कुआँ है जहाँ इन समयों में हाजी आते हैं। अंत। और उनका कहना "जो हमने उल्लेख किया उससे लेते हुए" उस नापसंदगी के तर्क की ओर संकेत करता है जो मतभेद का सम्मान करने के कारण पहले उल्लेख किया गया है।

मैं कहता हूँ: (1) इसमें वही है जो हमने पहले उल्लेख किया है, लेकिन यहाँ नापसंदगी स्पष्ट है। कब्र में मृतक के पास आग में पकी हुई ईंट का उपयोग करना नापसंद किया गया है क्योंकि उसमें आग का प्रभाव होता है, जैसा कि अल-बदई' आदि में है। तो यह कई कारणों से अधिक नापसंद है जैसा कि विचार करने वाले पर छिपा नहीं है। अल्लाह सर्वशक्तिमान उन्हें जन्नतुल फिरदौस में बहुत अधिक प्रतिफल दे जैसा कि उन्होंने इस लाभदायक बिंदु पर ध्यान दिलाया है।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

स्पष्ट किया गया है, और इमाम अहमद के अनुसार यह मुबाह (अनुमेय) नहीं है। फिर मुन्ताहा अल-हनबली की व्याख्या से हदीस उद्धृत की गई, और उन्होंने कहा कि इससे स्पष्ट रूप से शुद्धि का निषेध प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि "ऊँटनी के कुएँ' से तात्पर्य उस बड़े कुएँ से है जहाँ आजकल हाजी आते हैं। उनके वाक्यांश "जो हमने उल्लेख किया उससे लेते हुए" से तात्पर्य नापसंदगी (कराहियत) के उस कारण से है जिसे उन्होंने वर्णित किया कि मतभेद का सम्मान करना उद्देश्य है। (टी)

मैं कहता हूँ: इस पर वह आपत्ति है जो हमने उल्लेख की है, लेकिन यहाँ नापसंदगी स्पष्ट है, क्योंकि कब्र में मृतक से सटाकर आग में पकी हुई ईंट का उपयोग करना निषिद्ध है क्योंकि इसमें आग का प्रभाव होता है, जैसा कि बदई' आदि में है। तो यह कई कारणों से और भी अधिक मकरूह (नापसंद) है जैसा कि सबक लेने वाले पर छिपा नहीं है। अल्लाह सर्वशक्तिमान उन्हें जन्नतुल फिरदौस में बहुत अधिक खैर अता फरमाए जैसा कि इस उम्दा फायदे में आगाह किया गया है। (टी)

(25) हड़पा हुआ पानी (आब-ए-मग़ज़ूब)। हड़पे हुए पानी के उपयोग में तो नापसंदगी थी ही, चाहे खाने-पीने में हो या शुद्धि में, यह पूरी तरह से हराम है। लेकिन वज़ू और ग़ुस्ल सही हो जाएँगे और उनसे नमाज़ अदा हो जाएगी। "क्योंकि निषेध निकटता के कारण है" (यह पाबंदी साथ होने के कारण

है। - टी)। रद अल-मुह्तार में लेखक के कथन "उल्लेख की गई चीज़ों से अशुद्धि दूर करना जायज़ है" के तहत कहा गया है: "अर्थात् यह सही है भले ही हलाल न हो, जैसे हड़पे हुए पानी के मामले में" (यानी सही है भले ही हड़पे हुए पानी के रूप में जायज़ न हो। - टी)।

(26) वह पानी जो किसी के निजी कुएँ से उसकी अनुमति के बिना लेकिन स्पष्ट मनाही के बिना निकाला गया हो, उसका पीना, वज़ू आदि में उपयोग करना सब जायज़ है। यह "मग़ज़ूब" की श्रेणी में नहीं आता क्योंकि कुएँ का पानी जब तक कुएँ में है, किसी की संपत्ति नहीं है। वर्षा जल की तरह यह मुबाह (अनुमेय) और अल्लाह सर्वशक्तिमान की शुद्ध संपत्ति है। रद अल-मुह्तार में हिदाया से उद्धृत है: "कुएँ का पानी स्वामित्व वाली संपत्ति नहीं है" (कुएँ के अंदर का पानी किसी की मिल्कियत नहीं है। - टी)। उसी में वलवालिजीया से है:

---

1 रद अल-मुह्तार, मकरूहात अल-वज़ू, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/98 2 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/135 3 रद अल-मुह्तार, फ़स्ल अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/186

| به قال وبئر الناقة هی البئر الکبیرة التي یردها الحجاج فی هذه الازمنة اهـ وقوله اخذ مما ذکرنا یشیر الی ماقدم من تعلیل الکراهة بمراعاة الخلاف۔ | تصریح کی ہے، اور امام احمد کے نزدیک مباح نہیں ہے، پھر حدیث نقل کی شرح منتہی حنبل سے، اور فرمایا اس سے بظاہر طہارت کا ممنوع ہونا مفہوم ہوتا ہے، فرمایا اونٹنی کے کنویں سے مراد وہ بڑا کنواں ہے جس پر آج کل حاجی آتے ہیں اور اس کے قول اخذ مما ذکرنا سے مراد کراہت کی علت ہے جو انہوں نے بیان کی کہ اختلاف کی رعایت مقصود ہے۔ (ت) | | اقول: (۱) وفیه ماقدمنا لکن الکراهة ههنا واضحة فقد کره الأجر فی القبر مما یلی المیت لاثر النار کما فی البدائع وغیرها فهذا اولی بوجوه کما لایخفی علی من اعتبر فجزاه الله تعالی خیرا کثیرا فی جنات الفردوس کمانبه علی هذه الفائدة الفائزة۔ | میں کہتا ہوں اس پر وہ اعتراض ہے جو ہم نے ذکر کیا، لیکن کراہت یہاں واضح ہے، کیونکہ آگ میں پکی ہوئی اینٹ قبر میں میت سے لگا کر استعمال کرنا ممنوع ہے کیونکہ اس میں آگ کا اثر ہوتا ہے، جیسا کہ بدائع وغیرہ میں ہے تو یہ بطریق اولیٰ مکروہ ہے کئی وجوہ سے جیسا کہ عبرت حاصل کرنے والے پر مخفی نہیں اللہ تعالیٰ اسے جنۃ الفردوس میں خیر کثیر عطا فرمائے جیسا کہ اس عمدہ فائدہ میں تنبیہ کی گئی ہے۔ (ت) |

(۲۵) آبِ مغضوب۔ آبِ مغضوب میں تو کراہت ہی تھی آبِ مغضوب کا استعمال صرف کھانے پینے میں ہو خواہ طہارت میں محض حرام ہے مگر وضو و غسل صحیح ہوجائیں گے اور ان سے نماز ادا ہو جائے گی لان المنع للمجاور (یہ ممانعت ساتھ ملنے کی وجہ سے ہے۔ ت) ردالمحتار میں زیر قول شارح یجوز رفع الحدث بما ذکر (حدث کا دور کرنا جائز ہے ان چیزوں سے جو ذکر کی گئیں)

فرمایا ای یصح وان لم یحل فی نحو الماء المغضوب (یعنی صحیح ہے اگرچہ حلال نہیں مغضوب پانی کی شکل میں۔ ت)

(۲۶) وہ پانی کہ کسی کے مملوک کنویں سے ہے اس کی اجازت بلاکراہت ممانعت کے بھر اس کا پینا وضو وغیرہ میں خرچ کرنا سب جائز ہے یہ مغضوب کی حد میں نہیں کہ کنویں کا پانی جب تک کنویں میں ہے کسی کی ملک نہیں آبِ باراں کی طرح مباح و خالص ملک الٰہ عزجلالہ ہے۔ ردالمحتار میں ہدایہ سے ہے: الماء فی البئر غیر مملوک (کنویں کے اندر کا پانی کسی کی ملکیت نہیں ہے۔ ت) اُسی میں ولوا لجییہ سے ہے:

---

1 ردالمحتار مکروہات الوضوء مصطفی البابی مصر ۱/ ۹۸ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳۵ 3 ردالمحتار فصل الشرب مصطفی البابی مصر ۲/ ۱۸۶

صفحہ 711 کا 479

- If water is drawn from a person's well without his permission until it dries up, there is no liability upon him because the owner of the well is not the owner of the water. (Reference 1)
- If someone draws water from another's well without permission and draws so much that the well becomes dry, there is no compensation due from that person, because that person is not the owner of the water. (T)

In the same source, from 'Zakhira': - Water before being collected in vessels is not owned, so he has destroyed what was not the property of another. (Reference 2) - Ownership of water is not established until it is filled into vessels; therefore, he has destroyed a thing that was not the property of another. (T)

In the same source, from 'Durr al-Mukhtar': - Water beneath the earth is not owned. (Reference 3) - No one has ownership over the water that is beneath the ground. (T)

Similarly, it is mentioned in numerous books: - I say: Reliance is upon the transmitted reports, though the author of 'Al-Bahr', following 'Al-Fath', discussed that the water of a well must be owned by the digger based on one of the two opinions regarding grass. - I say: Reliance is on what has been transmitted. Although 'Bahr' discussed this following 'Fath', stating that the person who dug the well also owns the water based on the fact that there is a similar opinion regarding grass. (T) - I say: It occurred to me that just as someone who sets (1) a net to catch prey owns the prey, unless he set it out to dry (Tanwir etc.), and someone who places a vessel to collect rainwater owns it. However, if he did not place it for that purpose and water collected, then the water belongs to whoever picks it up (Khayriyya etc.). - I say: It was in my mind that the person who sets a net so that some prey might be caught, the prey will belong to him provided he did not set the net just to dry it (Tanwir etc.). And if someone kept a vessel so that rainwater could collect in it, and then water did collect, then it is his property.

Footnotes: 1. Fatawa Khayriyya, Masail al-Shurb, Beirut 186/2 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi, Egypt 5/317 3. Radd al-Muhtar, Book of Reviving Dead Lands, Mustafa al-Babi, Egypt 5/308

- यदि किसी व्यक्ति के कुएँ से उसकी अनुमति के बिना पानी निकाला गया और इतना निकाला गया कि वह कुआँ सूख गया, तो उस व्यक्ति पर कोई हर्जाना नहीं है, क्योंकि वह व्यक्ति पानी का मालिक नहीं है। (संदर्भ 1)
- अगर किसी व्यक्ति के कुएँ का पानी उसकी अनुमति के बिना निकाला और इतना निकाला कि वह कुआँ सूख गया तो उस व्यक्ति पर कोई ज़मान (हर्जाना) नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति पानी का मालिक नहीं। (त)

उसी में 'ज़खीरा' से है: - पानी जब तक बर्तनों में जमा न कर लिया जाए, उसका स्वामित्व नहीं होता, अतः उसने वह चीज़ नष्ट की जो किसी अन्य की मिल्कियत नहीं थी। (संदर्भ 2) - पानी को जब तक बर्तनों में न भर लिया जाए मिल्कियत साबित नहीं होती है, तो उसने वह चीज़ तलफ़ (नष्ट) की है जो गैर की ममलुक (संपत्ति) नहीं। (त)

उसी में 'दुर्र-ए-मुख़्तार' से है: - ज़मीन के नीचे का पानी किसी की मिल्कियत नहीं होता। (संदर्भ 3) - ज़मीन के नीचे जो पानी है उस पर किसी की मिल्कियत नहीं। (त)

इसी तरह अनेक पुस्तकों में है: - मैं कहता हूँ: भरोसा वर्णित रिवायतों पर है, हालाँकि 'बहर' ने 'फ़तह' का अनुसरण करते हुए यह बहस की है कि कुएँ का पानी खोदने वाले की मिल्कियत होना ज़रूरी है, जो घास के बारे में दो कथनों में से एक पर आधारित है। - मैं कहता हूँ एतबार मनकूल (वर्णित) को है, अगरचे 'बहर' ने इस पर 'फ़तह' की मुताअबत (अनुसरण) में बहस की है, और फ़रमाया है कि जिस ने कुआँ खोदा है पानी भी उसी की मिल्कियत में है इस बिना पर कि घास में भी एक क़ौल यही है। (त) - मैं कहता हूँ: मेरे मन में यह विचार था कि जिस व्यक्ति ने जाल (1) लगाया ताकि उसमें कोई शिकार फँस जाए, तो शिकार उसी की मिल्कियत होगा बशर्ते कि उसने जाल सुखाने के लिए न लगाया हो (तन्वीर आदि)। और जिस व्यक्ति ने बारिश का पानी जमा करने के लिए बर्तन रखा और पानी जमा हो गया, तो वह उसी की मिल्कियत है। लेकिन अगर उसने इस उद्देश्य के लिए नहीं रखा था और पानी जमा हो गया, तो पानी उसका है जिसने उसे उठाया (खैरिया आदि)। - मैं कहता हूँ मेरे दिल में यह खलजान (विचार) था कि जिस शख़्स ने जाल लगाया कि इसमें कोई शिकार फँस जाए तो शिकार उसी की मिल्कियत होगा बशर्ते कि उसने जाल खुश्क करने के लिए न लगाया हो, तन्वीर

वग़ैरा। और अगर किसी शख्स ने बर्तन रखा कि इसमें बारिश का पानी जमा हो जाए, फिर पानी जमा हुआ तो वह उसी की मिल्क है।

पाद-टिप्पणी: 1. फतावा खैरिया, मसाइल अल-शुर्ब, बेरूत 186/2 2. रद अल-मुह्तार, फ़स्ल अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 5/317 3. रद अल-मुह्तार, किताब इहया अल-मवात, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 5/308

पृष्ठ 480/711

اونزح ماء بئر رجل بغیر اذنه حتی یبست لا شیئ علیه لان صاحب البئر غیر مالك للماء - 1 | اگر کسی شخص کے کنویں کا پانی اس کی اجازت کے بغیر نکالا اور اتنا نکالا کہ وہ کنواں خشک ہوگیا تو اس شخص پر کوئی ضمان نہیں، کیونکہ وہ شخص پانی کا مالک نہیں۔ (ت)

اسی میں ذخیرہ سے ہے: الماء قبل الاحراز بالاواني لا یملك فقد اتلف مالیس بمملوك لغیرة - 2 | پانی کو جب تک برتنوں میں نہ بھر لیا جائے ملک ثابت نہیں ہوتی ہے، تو اس نے وہ چیز تلف کی ہے جو غیر کی مملوک نہیں۔ (ت)

اسی میں در مختار سے ہے: الماء تحت الارض لا یملك - 3 | زمین کے نیچے جو پانی ہے اس پر کسی کی ملک نہیں۔ (ت)

اسی طرح کتب کثیرہ میں ہے: اقول: والعبرة للمنقول وان بحث البحر تبعا للفتح لزوم کون ماء البئر مملوکا للحافر بناء علی احد قولین في الکلاء۔ | میں کہتا ہوں اعتبار منقول کو ہے، اگرچہ بحر نے اس پر فتح کی متابعت میں بحث کی ہے، اور فرمایا ہے کہ جس نے کنواں کھودا ہے پانی بھی اسی کی ملکیت میں ہے اس بناء پر کہ گھاس میں بھی ایک قول یہی ہے۔ (ت)

اقول: وقد کان یخالج صدري نظر الی ان من نصب (1) شبکة لیتعلق بها صید ملکه لا لو نصبها للجفاف تنویر وغیرها وان من وضع اناء لجمع ماء المطر ملکه اما اذالم یضع لذلك واجتمع فالماء لمن رفع خیریة وغیرها | میں کہتا ہوں میرے دل میں یہ خلجان تھا کہ جس شخص نے جال لگایا کہ اس میں کوئی شکار پھنس جائے تو شکار اسی کی ملکیت ہوگا بشرطیکہ اس نے جال خشک کرنے

کیلئے نہ لگایا ہو، تنویر وغیرہ۔ اور اگر کسی شخص نے برتن رکھا کہ اس میں بارش کا پانی جمع ہو جائے، پھر پانی جمع ہوا تو وہ اسی کی ملک ہے،

1 فتاویٰ خیر یہ مسائل الشرب بیروت ۱۸۶/۲ 2 رد المحتار فصل الشرب مصطفیٰ البابی مصر ۵ / ۳۱۷ 3 رد المحتار کتاب احیاء الموات مصطفیٰ البابی مصر ۵ / ۳۰۸

Fatawa Ridawiyyah - Volume 2

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] When a vessel is not placed specifically to collect water, but water collects in it anyway, it will be the property of the person who picked it up, be it a bowl or similar vessel.

And from this answer, it becomes known that ownership over a Mubah (publicly available) thing occurs through 'Isteela' (dominion/seizure), and 'Isteela' occurs by taking that thing into possession (Ihraz). This condition is found in the form of a net or a vessel, but not in the case of a well. It is narrated in 'Sha' (commentary) from 'Jami' al-Rumuz' that if a person fills a bucket from a well but does not remove it from the mouth of the well, it will not be in their ownership. This is according to the 'Shaykhayn' (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf), because 'Ihraz' refers to keeping a thing in a secure place. As for the discussion in 'Al-Fath', its answer is in 'An-Nahr'; please refer to the chapter on 'Invalid Sales' under the issue of selling pastures in 'Sha'. (T)

I say: (2) This is supported by the reference in 'Al-Hindiyya' quoted from 'Al-Mabsut', which states that if a person grows grass in their own land by watering and plowing it to feed their animals, then they have the primary right to it. No one else can benefit from it without their permission because it is their earning, and everyone's earning belongs to them (A.H.). However, well water cannot be compared to this because the water is not the earning of the one who dug the well; they only performed the task of removing the barrier (veil) that was over the water, like a phlebotomist (Fassad).

Allah the Almighty says: "Do you not see that Allah sends down rain from the sky and makes it flow as springs [and rivers] in the earth..." [Quran 39:21]

[Left Column - Original Arabic Text] With the praise of Allah Almighty, the answer became clear that the ownership (1) of a Mubah (publicly available) thing is through 'Isteela', and 'Isteela' is through 'Ihraz'. You mentioned nets and vessels, unlike a well. In 'Sha' (commentary) from 'Jami' al-Rumuz', filling a bucket from a well without moving it away from its mouth does not grant ownership according to the Shaykhayn, as 'Ihraz' is placing a thing in a secure place (1 - A.H.). The leader (Imam) researched this in 'Al-Fath', and it was answered in 'An-Nahr', so refer to 'Sha' in the chapter of 'Invalid Sales' regarding the issue of selling pastures.

I say: (2) And it is supported by what is in 'Al-Hindiyya' from 'Al-Mabsut' that whatever the landowner grows (3) by watering his land and plowing it so that grass grows for

his animals, he is more deserving of it, and no one has the right to benefit from any of it except with his permission because it is his earning, and the earning belongs to the earner (2 - A.H.). Therefore, well water is not compared to it, for it is not from the earning of its digger; rather, his action in it was merely removing the barrier, like a phlebotomist.

Allah the Almighty said: "Do you not see that Allah sends down rain from the sky and makes it flow as springs in the earth..."

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi, Egypt, 5/317. 2. Al-Fatawa al-Hindiyya, First Chapter from the Book of Drinking, Peshawar, 5/392.

फ़तावा रिज़विया - भाग 2

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] जब बर्तन पानी जमा करने के लिए न रखा हो और पानी उसमें जमा हो जाए, तो वह पानी उस व्यक्ति की संपत्ति होगी जिसने उसे उठाया, चाहे वह कटोरा हो या कोई अन्य बर्तन।

और इस उत्तर से यह ज्ञात हुआ कि मुबाह (सार्वजनिक रूप से उपलब्ध) वस्तु पर स्वामित्व 'इस्तीला' (प्रभुत्व/कब्जा) के माध्यम से होता है, और 'इस्तीला' उस वस्तु को कब्जे (इहराज़) में लेने से होता है। यह स्थिति जाल या बर्तन के रूप में तो पाई जाती है, लेकिन कुएँ के मामले में नहीं। 'श' (टीका) में 'जामिउर रुमुज़' से उद्धृत है कि यदि कोई व्यक्ति कुएँ से बाल्टी भरता है लेकिन उसे कुएँ के मुँह से दूर नहीं हटाता है, तो वह उसके स्वामित्व में नहीं होगा। यह 'शैख़ैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) के अनुसार है, क्योंकि 'इहराज़' का अर्थ किसी वस्तु को सुरक्षित स्थान पर रखना है। जहाँ तक 'अल-फ़तह' की चर्चा का प्रश्न है, उसका उत्तर 'अन-नहर' में है; कृपया चरागाहों की बिक्री के मुद्दे पर 'अश-शराह' में 'अमान्य बिक्री' के अध्याय को देखें। (त)

मैं कहता हूँ: (2) इसका समर्थन 'अल-हिन्दिया' में 'अल-मबसूत' के उस संदर्भ से होता है जिसे उन्होंने उद्धृत किया है: कि यदि किसी व्यक्ति ने अपने जानवरों को खिलाने के लिए अपनी ज़मीन में पानी देकर और जोतकर घास उगाई है, तो वह उसका प्राथमिक हकदार है। कोई भी व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना उससे लाभ नहीं उठा सकता क्योंकि यह उसकी कमाई है, और प्रत्येक व्यक्ति की कमाई उसी की होती है (अ.ह.)। हालाँकि, कुएँ के पानी की तुलना इससे नहीं की जा सकती क्योंकि पानी कुआँ खोदने वाले की कमाई नहीं है; उसने केवल पानी पर जो पर्दा (बाधा) था उसे हटाने का काम किया है, जैसे एक फ़स्साद (रक्तमोक्षण करने वाला)।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसे धरती के सोतों में प्रवाहित किया..." [क़ुरआन 39:21]

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ, यह उत्तर स्पष्ट हो गया कि मुबाह वस्तु का स्वामित्व (1) 'इस्तीला' के माध्यम से होता है, और 'इस्तीला' 'इहराज़' के माध्यम से होता है। आपने जाल और बर्तनों का उल्लेख किया, जो कुएँ के विपरीत हैं। 'श' में 'जामिउर रुमुज़' से, कुएँ के मुँह से बाल्टी को हटाए बिना भरना शैख़ैन के अनुसार स्वामित्व प्रदान नहीं करता है, क्योंकि 'इहराज़' किसी वस्तु को सुरक्षित स्थान पर रखना है (1 - अ.ह.)। इमाम ने 'अल-फ़तह' में इस

पर शोध किया, और 'अन-नहर' में इसका उत्तर दिया गया, इसलिए चरागाहों की बिक्री के मुद्दे पर 'श' में 'अमान्य बिक्री' के अध्याय को देखें।

मैं कहता हूँ: (2) और इसका समर्थन 'अल-हिन्दिया' में 'अल-मबसूत' से मिलता है कि ज़मीन का मालिक जो कुछ भी (3) अपनी ज़मीन को सींचकर और जोतकर उगाता है ताकि उसके जानवरों के लिए घास उगे, वह उसका अधिक हकदार है, और किसी को भी उसकी अनुमति के बिना उससे लाभ उठाने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह उसकी कमाई है, और कमाई कमाने वाले की होती है (2 - अ.ह.)। इसलिए, कुएँ के पानी की तुलना इससे नहीं की जाती है, क्योंकि यह इसके खोदने वाले की कमाई नहीं है; बल्कि, इसमें उसका कार्य केवल बाधा को हटाना था, जैसे कि एक रक्तमोक्षण करने वाला।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसे धरती के सोतों में प्रवाहित किया..."

[पाद टिप्पणियाँ] 1. रद अल-मुह्तार, पीने का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 5/317। 2. अल-फतावा अल-हिन्दिया, पीने की किताब का पहला अध्याय, पेशावर, 5/392।

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[دایاں کالم] جب برتن پانی جمع ہونے کیلئے نہ رکھا ہو اور پانی جمع ہو جائے تو وہ پانی اس کی ملکیت میں ہو گا جس میں اٹھایا، خیر یہ وغیرہ۔ اور یہ جواب معلوم ہوا کہ مباح چیز پر ملکیت استیلاء اور غلبہ سے ہوتی ہے اور استیلاء اس چیز کو قبضہ میں لے لینے سے ہوتی ہے، اور یہ چیز جال اور برتن کی شکل میں تو پائی جاتی ہے لیکن کنویں کی صورت میں نہیں "ش" میں جامع الرموز سے منقول ہے کہ اگر کسی شخص نے کنویں سے ڈول بھرا لیکن اس کو کنویں کے منہ سے دور نہ کیا تو وہ اس کی ملک میں نہ ہوگا، یہ شیخین کے نزدیک ہے، کیونکہ احراز کسی چیز کو محفوظ جگہ رکھنے کو کہا جاتا ہے اور جو بحث فتح میں ہے تو اس کا جواب نہر میں ہے اس سلسلہ میں بیع فاسد کا باب تحت مسئلہ چرا گاہوں کے بیچنے، "ش" میں ملاحظہ کیجئے۔ (ت) میں کہتا ہوں اس کی تائید ہندیہ کے اس حوالہ سے ہوتی ہے جو انہوں نے مبسوط سے نقل کیا ہے، حوالہ یہ ہے کہ کسی شخص نے اپنی زمین میں جانوروں کو کھلانے کیلئے گھاس اگائی تو وہ اسی کی ہے اور کوئی شخص اس سے اس کی مرضی کے بغیر استفادہ نہیں کرسکتا ہے کیونکہ وہ اس کی کمائی ہے، اور ہر شخص کی کمائی اسی کی ہوتی ہے اھ مگر اس پر کنویں کے پانی کو قیاس نہیں کرسکتے ہیں کیونکہ پانی کنویں کے کھودنے والے کی کمائی نہیں ہے اُس نے تو صرف اتنا کام کیا کہ پانی پر جو حجاب تھا وہ رفع کردیا، قال تعالی: اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰہَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَکَہٗ یَنَابِیْعَ فِی الْاَرْضِ

[بایاں کالم - عربی عبارت] وظهر الجواب بحمده تعالیٰ ان ملک (۱) المباح بالاستیلاء والاستیلاء بالاحراز وقدمتم فی الشبکة والإناء بخلاف البئر ففی ش عن جامع الرموز ملاء الدلو من البئر ولم یبعده من رأسها لم یملکه عند الشیخین اذ الاحراز جعل الشیئ فی موضع حصین ۱ اهـ اماماً بحثه الفتح فقد

اجاب عنه فی النهر فراجع ش من البیع الفاسد مسألة بیع المرعی۔ اقول: (۲) ویؤیده ما فی الهندیة عن المبسوط ما انبته صاحب الارض (۳) بان سقی ارضه وکر بها لینبت فیها الحشیش لدوابه فهو احق بذلك ولیس لاحد ان ینتفع بشیئ منه الابر ضاه لانه کسبه والکسب للمکتسب ۲ اهـ فلا یقاس علیه ماء البئر فانه لیس من کسب حافرها انما صنعه فیه رفع الحجاب کالفصاد۔ قال تعالی: اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَکَهٗ یَنَابِیْعَ فِي الْاَرْضِ

[حواشی] 1 رد المحتار فصل الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۱۷ 2 الفتاوی الهندیة الباب الاول من کتاب الشرب پشاور ۵/ ۳۹۲

...the Earth[1]. The explanation of this verse is in the chapter on waters of Ad-Durr. And Allah Almighty knows best. (T) — just as happens in the process of bloodletting. The command of Allah is: Do you not see that Allah sends down rain from the sky, then causes it to flow into springs? The explanation of this verse is in the chapter on waters of Ad-Durr, and Allah Almighty knows best. (T)

(27) Similarly, if someone's vessel was in the courtyard, it rained, and the vessel got filled, the water does not become his property; it remains in its original state of public permissibility. Whoever takes this water will become its owner, even if the owner of the vessel forbids it. However, using his vessel without permission will not be permissible.

(28) If he placed the vessel with the intention of collecting rainwater in it, then that water is now his property. It is forbidden for others to use it without his valid permission. Yes, purification (tahara) will still be achieved, but with a sin. In Fatawa Kubra and then in Hindiyyah, it is stated:

[Arabic Text]: If a basin is placed on a roof and rainwater collects in it, and a man comes and lifts it, and they dispute: if the owner of the basin placed the basin for that purpose, then it is his because he preserved it. If he did not place it for that purpose, then it belongs to the one who lifted it because it is permissible and not preserved[2]. [Urdu Translation]: A person placed a water basin on the roof and rainwater collected in it. Now someone finally picked up that basin. If the owner of the basin had placed the basin for this purpose, then the water belongs to the owner. And if he had just placed it without purpose, then the water belongs to the one who picked up the basin, because the act of preservation will be attributed to him. (T). If no water other than that is found and he needs to perform Wudu or Ghusl, he should perform Tayammum; he cannot attain purification with that water.

(29) A Sabeel[3] (public water station) set up for drinking follows the same rule: Wudu and Ghusl from it, though they will be valid, are not permissible. To the extent that if no other water is found and there is a need for Wudu or Ghusl, one should perform Tayammum and cannot perform purification with it. I say: except when the permission of the owner of the water is established generally or specifically for that person, either explicitly or implicitly. Explicitly, meaning he set up the Sabeel saying whoever wants may drink, perform Wudu, or bathe. If he only said for drinking and Wudu, then Ghusl will not be allowed. Specifically for that person, if he set up the

Sabeel only for drinking but gave permission for Wudu or Ghusl to him personally or upon his request. And implicitly, as in people perform Wudu from it and he does not forbid it.

---

[1] Al-Quran 21/39 (Surah Az-Zumar 39:21) [2] Fatawa Khairiyyah, meanings related to water issues, Beirut 186/2. Page 482 of 711

...पृथ्वी[1]। इस आयत की व्याख्या 'अद-दुर' के जल सम्बन्धी अध्याय में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) — जैसे कि रक्तमोक्षण की प्रक्रिया में होता है। अल्लाह का फ़रमान है: क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही ने आसमान से पानी उतारा फिर उसे चश्मों में प्रवाहित कर दिया, इस आयत की व्याख्या 'अद-दुर' के जल सम्बन्धी अध्याय में है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(२७) इसी तरह यदि किसी का बर्तन आँगन में था, बारिश हुई, बर्तन भर गया, तो पानी उसकी मिल्कियत (संपत्ति) नहीं हुआ; वह अपनी मूल वैधता (मुबाह) पर शेष है। जो इस पानी को ले लेगा वही उसका मालिक हो जाएगा, भले ही बर्तन का मालिक मना करे। हाँ, बिना अनुमति के उसका बर्तन इस्तेमाल करना जायज़ नहीं होगा।

(२८) यदि उसने बर्तन इसी नियत से रखा था कि इसमें बारिश का पानी जमा हो, तो अब वह पानी उसकी मिल्कियत है, दूसरे के लिए उसकी सही अनुमति के बिना वह हराम (वर्जित) है। हाँ, तहारत (पवित्रता) तो हो जाएगी लेकिन गुनाह के साथ। 'फ़तावा कुबरा' फिर 'हिन्दिया' में है:

[अरबी पाठ]: यदि छत पर एक तश्तरी रखी गई और उसमें बारिश का पानी जमा हो गया, फिर एक आदमी आया और उसे उठा लिया, और उनमें विवाद हो गया: यदि तश्तरी के मालिक ने उसे इसी उद्देश्य के लिए रखा था, तो वह उसका है क्योंकि उसने इसे संरक्षित किया है। और यदि उसने इसे उस उद्देश्य के लिए नहीं रखा था, तो वह उठाने वाले का है क्योंकि वह सबके लिए वैध और असंरक्षित था[2]। [उर्दू अनुवाद]: किसी व्यक्ति ने छत पर पानी का टब (तश्त) रखा तो उसमें बारिश का पानी जमा हो गया, अब एक व्यक्ति ने आख़िर वह टब उठा लिया, तो यदि टब के मालिक ने यह टब इसी उद्देश्य से रखा था तो वह मालिक का ही है और अगर उसने यूँ ही रख दिया था तो जिसने टब उठाया पानी उसी का हुआ क्योंकि अहराज़ (संरक्षण) का कार्य उसी की ओर माना जाएगा। (त) यदि उसके सिवा और पानी न मिले और उसे वुज़ू या ग़ुस्ल की ज़रूरत है तो तयम्मुम करे, इससे तहारत नहीं कर सकता।

(२९) सबील[3] जो पीने के लिए लगाई गई हो उसका भी यही हुक्म है कि उससे वुज़ू, ग़ुस्ल अगरचे सही हो जाएँगे, जायज़ नहीं हैं। यहाँ तक कि अगर उसके सिवा और पानी न मिले और उसे वुज़ू या ग़ुस्ल की ज़रूरत है तो तयम्मुम करे, इससे तहारत नहीं कर सकता। मैं कहता हूँ (अकूल): मगर जब जल

के स्वामी की अनुमति सामान्य रूप से या उस विशेष व्यक्ति के लिए स्पष्ट रूप से या संकेतों (दलालतन) से सिद्ध हो। स्पष्ट रूप से (सराहतन) यह कि उसने यही कहकर सबील लगाई हो कि जो चाहे पिए, वुज़ू करे, नहाए, और अगर केवल पीने और वुज़ू के लिए कहा तो उससे ग़ुस्ल जायज़ नहीं होगा और विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए इस तरह कि सबील तो पीने ही को लगाई मगर उसे इससे वुज़ू या ग़ुस्ल की अनुमति स्वयं या उसके पूछने पर दे दी और संकेतों से इस तरह कि लोग उससे वुज़ू करते हैं और वह मना नहीं करते।

---

[1] अल-क़ुरआन २१/३९ (सूरह अज़-ज़ुमर ३९:२१) [2] फ़तावा खैरिया बिल-माना, मसाइल-ए-शर्ब बेरुत १८६/२। पृष्ठ ४८२ / ७११

الأرض۱ وتقریر الأٰیۃ فی میاہ الدر واللہ تعالٰی اعلم۔ جیسے فصد کے عمل میں ہوتا ہے۔ فرمانِ الٰہی ہے: کیا تم نہیں دیکھتے کہ اللہ ہی نے آسمان سے پانی نازل فرمایا تو اللہ تعالیٰ نے اس کو چشموں میں جاری کر دیا، اس آیت کی تقریر در کے باب المیاہ میں ہے واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

(۲۷) یونہی کسی کا برتن صحن میں تھا، مینہ برسا، برتن بھر گیا، پانی بھی اس کی ملک نہ ہوا اپنی اصل اباحت پر باقی ہے اگرچہ برتن اور مکان اس کی ملک ہے جو اس پانی کو لے لے وہی اس کا مالک ہوجائے گا اگرچہ برتن کا مالک منع کرتا ہے ہاں اس کے برتن کا استعمال بے اجازت جائز نہ ہوگا۔

(۲۸) اگر اس نے برتن اسی نیت سے رکھا تھا کہ آب باراں اس میں جمع ہو تو اب وہ پانی اُس کی ملک ہے دوسرے کو بے اس کی اجازت صحیحہ کے حرام ہے ہاں طہارت یوں بھی ہو جائے گی گناہ کے ساتھ فتاوی کبری پھر ہندیہ میں ہے:

وضع طستا علی سطح فاجتمع فیہ ماء المطر فجاء رجل ورفع ذلک فتنازعا ان وضع صاحب الطست الطست لذلک فھو لہ لانہ احرزہ و ان لم یضعہ لذلک فھو للرافع لانہ مباح غیر محرز۲۔ کسی شخص نے چھت پر پانی کا طشت رکھا تو اس میں بارش کا پانی جمع ہو گیا، اب ایک شخص نے آخر وہ طشت اٹھالیا، تو اگر طشت کے مالک نے یہ طشت اسی مقصد سے رکھا تھا تو وہ مالک کا ہی ہے اور اگر اس نے یوں ہی رکھ دیا تھا تو جس نے طشت اٹھایا پانی اسی کا ہوا کیونکہ احراز کا فعل اس کی طرف منسوب ہو گا۔ (ت) اگر اُس کے سوا اور پانی نہ ملے اور اسے وضو یا غسل کی حاجت ہے تو تیمم کرے اس سے طہارت نہیں کر سکتا۔

(۲۹) سبیل۳ جو پینے کیلئے لگائی گئی ہو اس کا بھی یہی حکم ہے کہ اُس سے وضو، غسل اگر چہ صحیح ہوجائیں گے جائز نہیں یہاں تک کہ اگر اُس کے سوا اور پانی نہ ملے اور اسے وضو یا غسل کی حاجت ہے تو تیمم کرے اس سے طہارت نہیں کر سکتا۔ اقول: مگر جبکہ مالکِ آب کی اجازت مطلقاً یا اس شخص خاص کیلئے صراحۃً خواہ دلالۃً ثابت ہو، صراحتۃً یہ کہ اُس نے یہی کہہ کر سبیل لگائی ہو کہ جو چاہے پئے وضوء کرے نہائے، اور اگر فقط پینے اور وضوء کے لئے کہا تو اس سے غسل روانہ ہو گا اور خاص اس شخص کیلئے یوں کہ سبیل تو پینے ہی کو لگائی مگر اُسے اس سے وضوء یا غسل کی اجازت خود یا اس کے سوال پر دے دی اور دلالۃً یوں کہ لوگ اس سے وضوء کرتے ہیں اور وہ منع نہیں

---

۱ القرآن ۲۱/۳۹ ۲ فتاوی خیریہ بالمعنی مسائل الشرب بیروت ۱۸۶/۲ Page 482 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Two ...does not do so, or the place of providing water is ancient and it has always been like this, or the water is so abundant that it is obvious it is not just for drinking. However, when it is proven that even if it is abundant, permission is given only for drinking, then explicit statement takes precedence over implication (because explicit statement has superiority over implication. T). And for a specific person, it is because there is complete comfort and unity between him and the owner of the water; he may dispose of his property as he pleases, and it will not be unpleasant to him.

Since the known is like the stipulated, as is known in countless issues, and in al-Hindiyyah from al-Siraj al-Wahhaj: if there is ease between them, it is permitted, otherwise not.	**Because the customary is like the stipulated, and this is in countless issues, and in Hindiyyah it is from Siraj al-Wahaj that if there is an informal relationship between the two, then it is permissible, otherwise not. (T)**

In Muhit, Tajnis, al-Walwalijiyyah, Khaniyah, Bahr, and Durr al-Mukhtar, it is stated: | And the wording for it: Publicly provided water in the wilderness does not prevent Tayammum as long as it is not abundant, so it is known that it is for Wudu as well. He said: and that which is for Wudu may be drunk. | The words are from Durr al-Mukhtar: that water which is provided as a Sabil (public service) in the jungle does not prevent Tayammum unless it is abundant; if it is abundant, it will be known that it is for Wudu as well. He also said: the water meant for Wudu will be drunk. (T) | |---|---|

In Radd al-Muhtar, it is stated: | His statement "al-musabbal" i.e., placed in large jars for travelers. His statement "does not prevent Tayammum" because it was not placed for Wudu but for drinking, so performing Wudu with it is not permissible even if his statement "as long as it is not abundant" is correct. He said in Sharh al-Munyah: the primary consideration is custom, not abundance, unless it is ambiguous. Ah, the words of Sh. I say: and you (1) know that what the poor one mentioned... | His statement 'Musabbal' means that water which is in pots for travelers. His statement "does not prevent Tayammum" because it was not kept for Wudu but for drinking, so it is not permissible to perform Wudu with it, although his statement "as long as it is not abundant" is correct. In Sharh Munyah it says: it is better that the consideration is of custom, not of quantity, except when it becomes doubtful. Ah, the words of Sh. (T) I say: whatever the humble one (author) has mentioned... | |---|---|

1 Siraj al-Wahhaj 2 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/45 3 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Egypt, 1/185

फ़तावा रज़विया खंड द्वितीय ...नहीं करता या प्याऊ पुराना है और हमेशा से ऐसा ही होता चला आया है या पानी इतना अधिक है जिससे स्पष्ट है कि यह केवल पीने के लिए नहीं है। लेकिन जब यह सिद्ध हो जाए कि भले ही पानी अधिक हो, अनुमति केवल पीने के लिए ही दी गई है, तो स्पष्ट कथन संकेत पर भारी पड़ता है (क्योंकि स्पष्टता को संकेत पर श्रेष्ठता प्राप्त है। त)। और किसी विशेष व्यक्ति के लिए इसलिए कि उसके और पानी के मालिक के बीच पूर्ण सहजता और एकता है, वह उसकी संपत्ति में जैसा चाहे व्यवहार करे, उसे बुरा नहीं लगेगा।

चूंकि प्रसिद्ध बात शर्त की तरह है, जैसा कि अनगिनत मसलों में ज्ञात है, और अल-हिंदिया में सिराज अल-वहाज से है: यदि उनके बीच सहजता हो तो यह जायज़ है, अन्यथा नहीं।

क्योंकि जो बात रिवाज में है वह शर्त की तरह है, और यह अनगिनत मसलों में है, और हिंदिया में सिराजुल वहाज से है कि यदि उन दोनों के बीच बेतकल्लुफी का रिश्ता हो तो यह मुबाह (अनुमेय) है वर्ना नहीं। (त)

मुहीत, तजनीस, अल-वलवालीजिया, खानिया, बहर और दुर्र-ए-मुख्तार में है: | और उसके शब्द हैं: जंगल में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध पानी तयम्मुम को नहीं रोकता जब तक कि वह अधिक न हो, जिससे पता चले कि वह वज़ू के लिए भी है। उसने कहा: और जो वज़ू के लिए है उसे पिया जाएगा। | दुर्र-ए-मुख्तार के शब्द हैं कि वह पानी जो जंगल में सबील (सार्वजनिक सेवा) के रूप में हो, तयम्मुम के लिए बाधक नहीं है, जब तक कि वह अधिक न हो। यदि अधिक हो, तो यह माना जाएगा कि यह वज़ू के लिए भी है। साथ ही फरमाया: जो पानी वज़ू के लिए है, वह पिया जाएगा। (त) | |---|---|

रद्द-उल-मुह्तार में है: | उनका कथन 'मुसब्बल' अर्थात जो मुसाफिरों के लिए मटकों में रखा हो। उनका कथन "तयम्मुम को नहीं रोकता" क्योंकि वह वज़ू के लिए नहीं रखा गया बल्कि पीने के लिए है, इसलिए उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है भले ही उनका यह कहना सही हो कि "जब तक अधिक न हो"। शरह मुनिया में कहा गया है: पहली प्राथमिकता रिवाज (उर्फ़) को दी जानी चाहिए, न कि अधिकता को, सिवाय इसके कि जब संदेह हो। अ.ह. शैख के शब्द। मैं कहता हूँ: और आप (1) जानते हैं कि जो इस फ़कीर (लेखक) ने उल्लेख किया है... | उनका कथन 'मुसब्बल' यानी वह पानी जो मुसाफ़िरों के लिए मटकों में हो। उनका कथन "तयम्मुम को नहीं रोकता" क्योंकि वह वज़ू के लिए नहीं रखा गया है बल्कि पीने के लिए है, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है अगरचे उनका यह कथन 'जब तक अधिक न हो' सही है। शरह मुनिया में है: बेहतर यह है कि एतबार (मान्यता) उर्फ़(रिवाज़)

का है न कि कसरत (अधिकता) का, मगर जब मुश्तबह (संदिग्ध) हो। अ.ह. शैख का कलाम। (त) मैं कहता हूँ जो कुछ फ़कीर ने ज़िक्र किया है... | |---|---|

1 सिराज अल-वहाज 2 अल-दुर्र अल-मुख्तार, अध्याय तयम्मुम, मुज्तबाई दिल्ली, 1/45 3 रद्द अल-मुह्तार, अध्याय तयम्मुम, मिस्र, 1/185

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی نہیں کرتا یا سقایہ قدیم ہے اور ہمیشہ سے یوں ہی ہوتا چلا آیا ہے یا پانی اس درجہ کثیر ہے کہ جس سے ظاہر ہے کہ صرف پینے کو نہیں مگر جبکہ ثابت ہوا کہ اگرچہ کثیر ہے صرف پینے ہی کی اجازت دی ہے فان الصریح یفوق الدلالۃ (کیونکہ صراحت کو دلالت پر فوقیت حاصل ہے۔ ت) اور شخص خاص کے لئے یوں کہ اس میں اور مالک آب میں کمال انبساط و اتحاد ہے یہ اُس کے ایسے مال میں جیسا چاہے تصرف کرے اُسے ناگوار نہیں ہوتا۔

لان المعروف کالمشروط کما ھو معروف في مسائل لاتحصی وفي الھندیۃ عن السراج الوھاج ان کان بینھما انبساط یباح والافلا۔

کیونکہ معروف مشروط کی طرح ہے، اور یہ چیز بے شمار مسائل میں ہے، اور ہندیہ میں سراج الوہاج سے ہے کہ اگر ان دونوں کے درمیان بے تکلفی کا رشتہ ہو تو یہ مباح ہے ورنہ نہیں۔ (ت)

محیط و تجنیس و والوالجیہ وخانیہ وبحر و در مختار میں ہے: | واللفظ لہ الماء المسبل فی الفلاۃ لا یمنع التیمم مالم یکن کثیرا فیعلم انہ للوضوء ایضا قال ویشرب ماللوضوء - | لفظ در مختار کے ہیں وہ پانی جو جنگل میں سبیل کے طور پر ہو مانع تیمم نہیں تا وقتیکہ کثیر نہ ہو، اگر کثیر ہو تو معلوم ہوگا کہ یہ وضوء کے لئے بھی ہے۔ نیز فرمایا: جو پانی وضوء کیلئے ہے وہ پیا جائیگا۔ (ت)

| |---|---|

رد المحتار میں ہے: | قولہ المسبل ای الموضوع فی الحباب لابناء السبیل قولہ لایمنع التیمم لانہ لم یوضع للوضوء بل للشرب فلا یجوز الوضوء بہ وان صح قولہ مالم یکن کثیرا قال فی شرح المنیۃ الاولی الاعتبار بالعرف لا بالکثرۃ الا اذا اشتبہ اہ کلام ش۔ اقول: وانت (۱) تعلم ان ما ذکر الفقیر | ان کا قول مسبل یعنی وہ پانی جو مٹکوں میں ہو مسافروں کیلئے، ان کا قول "لا یمنع التیمم" کیونکہ وہ وضوء کیلئے نہیں رکھا گیا ہے بلکہ پینے کیلئے ہے تو اس سے وضو کرنا جائز نہیں اگرچہ

صحیح ہے ان کا قول مالم یکن کثیرا، شرح منیہ میں ہے بہتر یہ ہے کہ اعتبار عرف کا ہے نہ کہ کثرۃ کا، مگر جب مشتبہ ہو اہ کلام ش۔ (ت) میں کہتا ہوں جو کچھ فقیر نے ذکر کیا ہے |

|---|---|

1^۸ سراج الوہاج 2^۸ الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۴۵ 3^۸ رد المحتار باب التیمم مصر ۱/ ۱۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Boxed Header] It is comprehensive, preventive, more beneficial and complete. (T) | More comprehensive, inclusive, beneficial, and complete.

Note: This explicit or implicit permission from a specific person that we mentioned applies to cases where the water at the time of permission is in the owner's possession. If the water is from an endowment (waqf), no one has the authority to change its use, nor does anyone's permission carry weight.

[Left Column - Arabic Original] In al-Bahr, then al-Durr: In wudu, wasting water is disliked, even if it is from a river or one's own property. As for what is endowed for those who seek purification, and from it (2) is the water of schools, wasting it is forbidden. [End]. In 'Sh' (Radd al-Muhtar) from al-Hilya: because it is only endowed and provided for those who perform Sharia-compliant wudu and it was not intended to make it permissible for other than that. [End]. And in 'Ta' (Tahtawi) under the previous text of al-Durr, his saying "al-Musbil" i.e. the endowed water placed on paths, his saying "as long as it is not much" - the context of that is when there is no certainty that it is for drinking, but if he is certain it is for drinking, then wudu is forbidden because the condition of the endower is like the text of the Lawgiver. His saying (3) "and drinking what is for wudu" - its apparent meaning is even if not for necessity, and it implies that it does not necessitate violating the endower's condition. [End]. And 'Sh' pointed to the answer to this by saying: perhaps the difference is that drinking is more important as it is for the revival of souls, unlike wudu because it has a substitute (tayammum), so its owner usually permits drinking from it normally. [End].

[Right Column - Urdu Explanation] In the chapters on Wudu in 'Bahr' and 'Dur', it is stated that wasting water during wudu is disliked (makruh), whether it is from a river or one's own property. As for water endowed for those seeking purification, which includes water in religious schools (madaris), wasting it is forbidden (haram). [End]. And in 'Sh' it is quoted from 'Hilya'. The reason for this is that this water is endowed only for those who intend to perform Sharia-compliant wudu, and it is not permissible for others. [End]. And in 'Ta', under the previous passage of 'Dur', he said 'Musbil' refers to water endowed and placed on paths. Regarding the phrase 'as long as it is not much', its meaning is that this applies when there is no certainty it is for drinking. If it is certain it is for drinking, then wudu from it is forbidden because the

endower's condition is like the text of the Lawgiver. Their statement "drinking what is for wudu" apparently means even if that water is not for necessity, and it has the flaw that it involves violating the endower's condition. [End]. And 'Sh' has pointed towards the answer. He said, probably in this...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Disliked acts of Wudu, Mujtabai Delhi, 1/22
2. Radd al-Muhtar, Disliked acts of Wudu, Mustafa al-Babi Egypt, 1/98
3. Tahtawi on al-Durr, Chapter on Tayammum, Beirut, 1/133
4. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/185

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[बॉक्स हेडलाइन] वह जामे (व्यापक), माने (समावेशी), अधिक उपयोगी और पूर्ण है। (त) | अज्म' व अश्मल व अन्फ़' व अकमल।

चेतावनी: जिस विशिष्ट व्यक्ति की स्पष्ट या सांकेतिक अनुमति का हमने उल्लेख किया है, वह उस स्थिति में है जब पानी अनुमति के समय भी अनुमति देने वाले के स्वामित्व में हो। यदि पानी वक़्फ़ (धार्मिक बंदोबस्त) का है, तो उसमें न किसी को बदलाव का अधिकार है और न ही किसी की अनुमति का कोई महत्व है।

[बायाँ कॉलम - अरबी मूल पाठ] अल-बहर और फिर अद-दुर में वुज़ू के बारे में है: इसमें पानी की बर्बादी मकरूह (नापसंद) है, चाहे वह नदी का पानी हो या अपनी मिलकियत (स्वामित्व) का। जहाँ तक उन लोगों के लिए वक़्फ़ किए गए पानी का सवाल है जो पाकी (शुद्धता) हासिल करते हैं, जिनमें (2) मदरसों का पानी भी शामिल है, तो [इसे बर्बाद करना] हराम (वर्जित) है। और 'श' (रद अल-मुह्तार) में हिल्लह से उद्धृत है: क्योंकि यह सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए वक़्फ़ किया और पहुँचाया जाता है जो शरीयत के मुताबिक़ वुज़ू करते हैं और इसके अलावा किसी और काम के लिए इसे मुबाह (जायज़) बनाना मक़सूद नहीं था। और 'त' (तहतावी) में अद-दुर की पिछली इबारत के तहत उनके क़ौल "अल-मुसबिल" यानी वह वक़्फ़ किया गया पानी जो रास्तों में रखा जाता है, उनके क़ौल "जब तक वह ज़्यादा न हो" का मतलब यह है कि यह उस स्थिति के लिए है जब यह यक़ीन न हो कि यह पीने के लिए है। लेकिन अगर यह यक़ीन हो जाए कि यह पीने के लिए है तो वुज़ू हराम है क्योंकि वक़्फ़ करने वाले की शर्त शरीयत के हुक्म (क़ानून) की तरह होती है। उनके क़ौल (3) "और वुज़ू के पानी को पीना" का ज़ाहिरी मतलब यह है कि चाहे वह ज़रूरत के लिए न हो, और इसमें यह बात है कि इससे वक़्फ़ करने वाले की शर्त का उल्लंघन अनिवार्य नहीं होता। और 'श' ने इसके जवाब की तरफ़ इशारा करते हुए कहा: संभवतः अंतर यह है कि पीना ज़्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन बचाने के लिए है, वुज़ू के विपरीत जिसका विकल्प (तयम्मुम) मौजूद है, इसलिए इसका मालिक आम तौर पर इससे पीने की इजाज़त दे देता है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू व्याख्या] 'बहर' और 'दुर' के वुज़ू के अध्याय में है कि वुज़ू में पानी की बर्बादी मकरूह है, चाहे वह नहर का पानी हो या अपना ममलूक (स्वामित्व वाला) पानी हो। और जो पानी

पाकी हासिल करने वालों के लिए वक़्फ़ होता है, जिसमें मदरसों का पानी भी शामिल है, उसकी बर्बादी हराम है। और 'श' में 'हिलिया' से उद्धृत है। इसकी वजह यह है कि यह पानी उन्हीं लोगों के लिए वक़्फ़ है जो शरीयत के मुताबिक़ वुज़ू करना चाहते हैं, और दूसरों के लिए मुबाह (जायज़) नहीं है। और 'त' में 'दुर' के पिछले कथन के तहत कहा गया है: 'मुसबिल' वह पानी है जो रास्तों में वक़्फ़ रखा जाता है, और कथन 'जब तक वह अधिक न हो' का अर्थ यह है कि यह तब लागू होता है जब यह निश्चित न हो कि यह पीने के लिए है। अगर यह यक़ीन हो कि यह पीने के लिए है तो इससे वुज़ू हराम है क्योंकि वक़्फ़ करने वाले की शर्त शरीयत के हुक्म की तरह होती है। और उनका कथन "वुज़ू के पानी को पीना" का प्रत्यक्ष रूप से यह अर्थ है कि चाहे वह पानी ज़रूरत के लिए न हो, और इसमें यह बुराई है कि इसमें वक़्फ़ करने वाले की शर्त का उल्लंघन है। और 'श' ने इसके जवाब की तरफ़ इशारा किया है। फ़रमाया, शायद इसमें...

---

1. अद-दुर अल-मुख्तार, मकरूहात-ए-वुज़ू, मुजतबाई दिल्ली, 1/22
2. रद अल-मुह्तार, मकरूहात-ए-वुज़ू, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/98
3. तहतावी अलल-दुर, तयम्मुम का अध्याय, बेरूत, 1/133
4. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/185

पेज 484/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

اجمع واشمل وانفع واکمل۔ | وہ جامع، مانع، زیادہ مفید اور مکمل ہے۔ (ت)

تنبیہ: یہ جو شخص خاص کی اجازت صراحۃً خواہ دلالۃً ہم نے ذکر کی اُس حالت میں ہے کہ پانی وقتِ اجازت بھی اجازت دہندہ کی ملک ہو اور اگر وقف کا پانی ہے تو اس میں نہ کسی کو تغییر کا اختیار نہ کسی کی اجازت کا اعتبار،

[بایاں کالم - عربی متن] فی البحر ثم الدر من الوضوء مکروھه الاسراف فیه لوبماء النھر والمملوك له اما الموقوف علی من یتطھر به ومنه (۲) ماء المدارس فحرام اه و فی ش عن الحلیة لانه انما یوقف و یساق لمن یتوضوء الوضوء الشرعی ولم یقصد اباحتھا لغیر ذلک اه وفی ط تحت عبارة الدر السابقة قوله المسبل ای الموقوف الذی یوضع علی السبل قوله مالم یکن کثیراً محل ذلک عند عدم التیقن بانه للمشرب اما اذا تیقن انه للشرب فیحرم الوضوء لان شرط الواقف کنص الشارع قوله (۳) وشرب ماللوضوء ظاھره وان لم یکن للضرورة وفیه انه لا یلزم مخالفة شرط الواقف اه واشار 'ش' الی الجواب عن ھذا بقوله کأن الفرق ان الشرب اھم لانه لاحیاء النفوس بخلاف الوضوء لان له بدلا فیا ذن صاحبه بالشرب منه عادة اه

[دایاں کالم - اردو شرح] بحر اور دُر کے باب الوضوء میں ہے وضوء میں پانی کا اسراف مکروہ ہے خواہ نہر کا پانی ہو یا اپنا مملوک پانی ہو، اور جو پانی پاکی حاصل کرنے والوں کیلئے وقف

ہوتا ہے، جس میں مدارس کا پانی بھی شامل ہے، اس کا اسراف عام ہے اھ اور 'ش' میں حلیہ سے منقول ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ پانی انہی لوگوں کیلئے وقف ہے جو شرعی وضوء کرنا چاہتے ہیں، اور دوسروں کیلئے مباح نہیں ہے اھ اور 'ط' میں در کی سابقہ عبارت کے تحت فرمایا 'مسبل' وہ پانی جو راستوں میں وقف رکھا جاتا ہے اور اس کے قول مالم یکن کثیراً اس کے مفہوم یہ ہے کہ جب یہ یقین نہ ہو کہ یہ پینے کیلئے ہے، اگر یہ یقین ہو کہ یہ پینے کیلئے ہے تو اس سے وضو حرام ہے کیونکہ شرطِ واقف نصِ شارع کی طرح ہوتی ہے۔ اور ان کا قول "شرب ماللوضوء" کا بظاہر یہ مفہوم ہے کہ اگرچہ وہ پانی ضرورت کیلئے نہ ہو، اور اس میں یہ قباحت ہے کہ اس میں شرطِ واقف کی مخالفت ہے اھ اور 'ش' نے اس کے جواب کی طرف اشارہ کیا ہے۔ فرمایا، غالباً اس میں

---

1 الدر المختار مکروہات الوضوء مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲ 2 رد المحتار مکروہات الوضوء مصطفی البابی مصر ۱/ ۹۸ 3 طحطاوی علی الدر باب التمیم بیروت ۱/ ۱۳۳ 4 رد المحتار باب التمیم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۵

Fatawa Razvia, Volume 2

The difference is that drinking water is essential because it involves saving a life, whereas this is not the case for ablution (wudu), as there are alternatives for wudu. Therefore, the owner generally grants permission for drinking. (T)

I say: This means that it is intended at the time of the endowment (waqf) by virtue of custom. Therefore, a violation of the donor's (waqif) condition does not necessarily follow. It is not meant that permission is granted anew now, as might be implied by the term "by permission," because once an endowment is complete, it leaves the ownership of the donor, and thus his subsequent permission carries no weight, as is evident. (1) However, there is an excellent piece of research by this humble servant regarding the validity of endowing water that deserves attention. It is stated in Al-Tanwir and Al-Durr: (And) (2) it is valid to endow any (movable property) intentionally (if there is a common usage) among people (such as a spade or an axe), or even (dirhams (3) and dinars) and items measured by volume or weight, so it is sold and its proceeds are used for Mudarabah (profit-sharing) or trade goods. Based on this (4), if one endows a measure of grain on the condition that it be lent to someone without seeds to sow for themselves, and once harvested, the equivalent amount is taken back and then lent to someone else, and so on, it is permissible according to Al-Khulasah. (5) In it, it's also mentioned: endowing a cow so that its milk or fat goes to the poor; if they are accustomed to this, I hope it is permissible. (6) (And a pot, a bier) and its clothes, the Mushaf (Quran), and books, because custom overrides analogy (qiyas). End. Al-Shaikh said: Al-Ramli noted, however, there is some doubt in classifying it among the movable items with common usage.

I say, this means that this thing is customarily in the intention of the donor at the time of the endowment. Thus, in such a case, there will be no violation of the donor's conditions. It does not mean that permission is being given now, as is clear from the word "ya'zan" (he permits), because when an endowment is completed, it leaves the donor's ownership, and his permission will have no effect, as is obvious. I have conducted research regarding the endowment of water, which is important to know. It was stated in Tanwir and Durr that (and) it is correct to endow every (movable) property intentionally in which there is common usage among people (like a spade and an axe), rather (of dirhams and dinars) and measured/weighed items, so it will be sold and its price will be given as Mudarabat or as goods. On this basis, if a person

endowed a sack of grain on the condition that it be lent to a person who cultivates for himself, and when his crop matures, this amount should be returned from it and lent to another person, and this sequence continues in this manner, then it is permissible. It is in the summary of the same book that if a person [endowed] a cow...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Waqf, Mujtabai Delhi, 1/380. Page 485 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

अंतर यह है कि पानी पीना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जीवन बचाना शामिल है, जबकि वज़ू में यह बात नहीं है, क्योंकि वज़ू का विकल्प (तयम्मुम) मौजूद है। इसलिए मालिक आमतौर पर पीने की अनुमति दे देता है। (त)

मैं कहता हूँ: अर्थात, यह रिवाज के अनुसार वक़्फ़ (दान) के समय ही वक़्फ़ करने वाले (वाक़िफ़) की नियत में होता है। इसलिए वाक़िफ़ की शर्त के उल्लंघन का सवाल ही नहीं उठता। इसका यह अर्थ नहीं है कि अनुमति अब दी गई है, जैसा कि "इजाज़त" शब्द से भ्रम हो सकता है। क्योंकि जब वक़्फ़ पूरा हो जाता है, तो वह वाक़िफ़ के स्वामित्व से बाहर हो जाता है, इसलिए उसके बाद उसकी अनुमति का कोई प्रभाव नहीं होता, जैसा कि स्पष्ट है। (1) हालाँकि, यहाँ इस तुच्छ सेवक का पानी के वक़्फ़ की वैधता के विषय में एक महत्वपूर्ण शोध है, जिस पर ध्यान देना आवश्यक है। 'तनवीर' और 'दुर' में कहा गया है: (और) (2) जानबूझकर हर उस (चल संपत्ति) का वक़्फ़ करना सही है जिसमें लोगों का व्यवहार (प्रचलन) हो (जैसे फावड़ा और कुल्हाड़ी), बल्कि (दिरहम (3) और दीनार भी) और माप या तौल वाली वस्तुएं भी, तो उसे बेचा जाएगा और उसकी कीमत मुदारबत (लाभ-साझाकरण) या माल के रूप में दी जाएगी। इस आधार पर (4) यदि किसी ने एक बोरी अनाज इस शर्त पर वक़्फ़ किया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को उधार दिया जाए जिसके पास खुद के लिए बोने के लिए बीज न हों, और जब फसल पक जाए तो उससे उतनी ही मात्रा वापस ले ली जाए और फिर किसी दूसरे को उधार दे दी जाए, और इसी तरह सिलसिला चलता रहे, तो यह जायज़ है। 'खुलासा' में यह उल्लेख है। (5) और उसमें है: एक गाय को वक़्फ़ करना ताकि उसके दूध या वसा से गरीबों को लाभ मिले; यदि वे इसके अभ्यस्त हैं, तो मुझे आशा है कि यह जायज़ है। (6) (और बर्तन, जनाज़ा ढोने वाली चारपाई) और उसके कपड़े, मुसहफ़ (कुरान) और किताबें, क्योंकि रिवाज के कारण क़यास (तर्क) को छोड़ दिया जाता है। समाप्त। शेख ने कहा: रमिली ने कहा है, लेकिन इसे प्रचलित चल संपत्ति में शामिल करने में कुछ संदेह है।

मैं कहता हूँ, यानी यह चीज़ रिवाज के अनुसार वक़्फ़ के समय ही वाक़िफ़ की नियत में होती है, तो ऐसी स्थिति में वाक़िफ़ की शर्त का उल्लंघन अनिवार्य नहीं होगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि अनुमति अब दी गई है, जैसा कि "याज़न" (वह अनुमति देता है) शब्द से स्पष्ट है, क्योंकि जब वक़्फ़ पूरा हो जाता है तो वह वाक़िफ़ के स्वामित्व से निकल जाता है, इसलिए उसकी अनुमति का कोई प्रभाव नहीं

होगा, जैसा कि ज़ाहिर है। मैंने पानी के वक़्फ़ के बारे में एक शोध किया है, जिसका जानना ज़रूरी है। 'तनवीर' और 'दुर' में फ़रमाया (और) सही है वक़्फ़ हर (चल वस्तु का) जानबूझकर जिसमें लोगों का व्यवहार हो (जैसे फावड़ा और कुल्हाड़ी), बल्कि (दिरहम और दीनार का) और माप-तौल वाली चीज़ों का, तो उसे बेचा जाएगा और उसकी क़ीमत मुदारबत के तौर पर दी जाएगी या सामान के तौर पर। इस आधार पर अगर किसी व्यक्ति ने एक बोरी अनाज इस शर्त पर वक़्फ़ किया कि यह एक व्यक्ति को उधार दिया जाए जो अपने लिए खेती करता हो, और जब उसकी खेती पक जाए तो उससे यह मात्रा वापस ले ली जाए और किसी दूसरे को उधार दे दी जाए और यह सिलसिला इसी तरह जारी रहे तो यह जायज़ है। 'खुलासा' इसी किताब में है कि अगर किसी व्यक्ति ने एक गाय...

---

1. अल-दुर अल-मुख्तार, अध्याय वक़्फ़, मुजतबाई दिल्ली, 1/380। पृष्ठ 485 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

فرق یہ ہے کہ پانی کا پینا اہم ہے کیونکہ اس میں زندگی بچانا ہے جبکہ وضوء میں یہ چیز نہیں، کیونکہ وضو کا متبادل ہوتا ہے اس لئے مالک عام طور پر پینے کی اجازت دے دیتا ہے اھ (ت)

اقول: ای یکون ذلك منویاً عند الوقف بحکم العادة فلا یلزم خلاف الشرط ولیس المراد حدوث الاذن الآن کما یوھمه تعبیر باذن فان الوقف اذا تم خرج عن ملکه فلا یعمل فیه اذنه کما ھو ظاھر (۱) لکن ھھنا تحقیق شریف للعبد الضعیف فی بحث صحة وقف الماء لابد من التنبه له قال فی التنویر والدر (و) (۲) صح وقف کل (منقول) قصدا (فیه تعامل) للناس (کفأس وقدوم) بل (ودراھم (۳) ودنانیر) و مکیل و موزون فیباع ویدفع ثمنه مضاربة او بضاعة فعلی ھذ (٤) لو وقف کرا علی شرط ان یقرضه لمن لابذر له لیزرعه لنفسه فاذا ادرك اخذ مقداره ثم اقرضه لغیره وھکذا جاز خلاصة (٥) وفیھا وقف بقرة علی ان ما خرج من لبنھا اوسمنھا للفقراء ان اعتادوا ذلك رجوت ان یجوز (٦) (وقدر وجنازة) وثیابھا ومصحف وکتب لان التعامل یترك به القیاس ۱۱ھ قال ش قال الرملي لکن فی الحاقھا بمنقول فیه تعامل نظر

میں کہتا ہوں، یعنی یہ چیز عادتاً وقف کے وقت واقف کی نیت میں ہوتی ہے تو ایسی صورت میں شرط واقف کی خلاف ورزی لازم نہ آئے گی، یہ مراد نہیں کہ اب اجازت دی ہے، جیسا کہ "یاذن" کے لفظوں سے ظاہر ہے، کیونکہ وقف جب مکمل ہو جاتا ہے تو ملک واقف سے نکل جاتا ہے تو اس کی اجازت کا کوئی اثر نہ ہوگا، جیسا کہ ظاہر ہے میں نے پانی کے وقف کے سلسلہ میں ایک تحقیق کی ہے، اس کا جاننا ضروری ہے، تنویر اور دُر میں فرمایا (اور) صحیح ہے وقف ہر (منقول کا) قصدا جس میں لوگوں کا تعامل ہو (جیسے پھاوڑا اور کلہاڑی) بلالکہ (دراہم و دنانیر کا) اور ناپ تول والی چیز کا، تو اس کو بیچا جائے گا اور اس کی قیمت بطور مضاربت دی جائے گی

یا بطور سامان۔ اس بنا پر اگر کسی شخص نے ایک بوری غلہ اس شرط پر وقف کیا کہ یہ ایک شخص کو قرض دیا جائے جو اپنے لئے کاشت کرتا ہو، اور جب اس کی کھیتی پک جائے تو اس سے یہ مقدار واپس لے لی جائے اور کسی دوسرے کو قرض دے دیا جائے اور یہ سلسلہ اسی طرح جاری رہے تو یہ جائز ہے، خلاصہ اسی کتاب میں ہے کہ اگر کسی شخص نے ایک گائے

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Arabic Column Translation] ...these are things from which benefit cannot be derived while their essence remains. What was used as evidence in 'al-Minah' regarding the issue of a cow is prevented by what we have said, for benefit is derived from its milk and ghee while its essence remains. I say: Dirhams (money) are not specified by specification. Thus, although benefit is not derived from them while their essence remains, their replacement stands in their place due to their lack of specification, so it is as if they are remaining. Then it said from 'al-Fath' from 'al-Khulasah' from 'al-Ansari'—who was among the companions of Zufar—regarding someone who endows Dirhams or items that are measured or weighed: Is it permissible? He said: Yes. It was asked: And how? He said: The Dirhams are given for Mudarabah (investment partnership), then [the profit] is given as charity in the way for which it was endowed. And I saw that I had written upon it the text of which is—I say: This reasoning is from al-Allamah al-Ramli to prohibit the endowment of Dirhams, and the commentator's answer is that they are not specified, so it is as if they remain by the remaining of their replacement. And what Imam al-Ansari mentioned, followed by 'al-Khulasah', 'al-Fath', 'al-Durr', and many other great books regarding the method of preservation in Dirhams, measured items, and weighed items, and what preceded (i.e., in Radd al-Muhtar) that perpetuity is a condition for the validity of an endowment by consensus according to the correct view, as stated by the investigating scholars—all of this implies that public water (al-ma' al-musabbil) cannot be an endowment due to the impossibility [of perpetuity].

[Urdu Column Translation] ...endowed on the condition that its milk and ghee be used for the poor; so if this is customary for them, it is hoped to be permissible. (And a cauldron, a funeral bier), funeral sheets, copies of the Quran, and books, because in the face of customary practice, analogy is abandoned. "Sh" said that al-Ramli said connecting this to reported [traditions] in which there is customary practice is objectionable, because benefit is not derived from it while its essence remains, and the issue of the cow from which evidence was drawn in 'al-Minah' is unacceptable, because benefit is obtained from its milk and ghee while keeping the cow remaining. I say: Dirhams do not become specified by being specified; so even if it is not possible to obtain benefit from them while they remain, their replacement stands in their place because they themselves are not specified, so it is as if they are remaining. Then, citing from 'al-Fath' through 'al-Khulasah', it is said that al-Ansari, who was one of the companions of Zufar, was asked: If a person endows Dirhams or a measured

or weighed item, is it permissible? He said: Yes. He was asked: What would be the procedure? He said: He should give the Dirhams to someone for Mudarabah, then keep spending them for the purpose for which they were donated. I have [quoted] the text stated by him...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waqf, Mustafa al-Babi Egypt, 3/410.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[अरबी स्तंभ का अनुवाद] ...ये वे चीज़ें हैं जिनसे उनके मूल अस्तित्व के रहते हुए लाभ नहीं उठाया जा सकता। 'अल-मिनह' में गाय के मसले में जो दलील दी गई है, वह हमारी कही गई बात से बाधित है, क्योंकि गाय के मूल अस्तित्व के रहते हुए उसके दूध और घी से लाभ उठाया जाता है। मैं कहता हूँ: दिरहम (मुद्रा) निर्दिष्ट करने से निर्दिष्ट नहीं होते। अत; यद्यपि उनके मूल अस्तित्व के रहते हुए उनसे लाभ नहीं उठाया जा सकता, लेकिन उनके विनिर्देश की कमी के कारण उनका विकल्प उनके स्थान पर खड़ा होता है, इसलिए ऐसा है जैसे वे बने हुए हैं। फिर 'अल-फ़तह' से 'अल-खुलसा' से 'अल-अंसारी' के माध्यम से कहा गया—जो ज़ुफ़र के साथियों में से थे—उस व्यक्ति के बारे में जिसने दिरहम या मापी या तौली जाने वाली चीज़ों का वक्फ़ किया: क्या यह जायज़ है? उन्होंने कहा: हाँ। पूछा गया: और कैसे? उन्होंने कहा: दिरहम मुज़ारबत (निवेश साझेदारी) के लिए दिए जाते हैं, फिर [लाभ] उस मार्ग में दान कर दिया जाता है जिसके लिए इसे वक्फ़ किया गया था। और मैंने देखा कि मैंने उस पर लिखा था जिसका पाठ है—मैं कहता हूँ: यह तर्क अल्लामा अल-रमली का है जो दिरहम के वक्फ़ को रोकने के लिए है, और टीकाकार का उत्तर यह है कि वे निर्दिष्ट नहीं हैं, इसलिए वे अपने विकल्प के बने रहने से बने रहते हैं। और जो इमाम अल-अंसारी ने उल्लेख किया, और 'अल-खुलसा', 'अल-फ़तह', 'अल-दुर्र' और कई अन्य महान पुस्तकों में दिरहम, मापी और तौली जाने वाली चीज़ों में स्थायित्व के तरीके के बारे में अनुसरण किया गया, और जो पहले आया (यानी रद अल-मुह्तार में) कि निरंतरता सही विचार के अनुसार सर्वसम्मति से वक्फ़ की वैधता की एक शर्त है, जैसा कि खोजी विद्वानों ने स्पष्ट किया है—यह सब इस बात की ओर इशारा करता है कि सार्वजनिक जल (अल-मा अल-मुसब्बिल) वक्फ़ नहीं हो सकता क्योंकि [निरंतरता] की असंभवता है।

[उर्दू स्तंभ का अनुवाद] ...इस शर्त पर वक्फ़ किया कि उसका दूध और घी गरीबों के इस्तेमाल में लाया जाए, तो अगर यह चीज़ उनके चलन (उर्फ़) में है तो उम्मीद है कि जायज़ है। (और देग और जनाज़ा की चारपाई) और जनाज़ा की चादरें और मुसहफ़ और किताबें, क्योंकि प्रचलन (तआमुल) के मुक़ाबले में कयास (तर्क) को छोड़ दिया जाता है। "श" ने कहा कि रमली ने फ़रमाया इसे मनक़ूल (हंاستاतरित) से मिलाने में जिसमें तआमुल हो, आपत्ति है कि इसके मूल के बाकी रहते हुए इससे फ़ायदा नहीं होता है, और गाय का मसला जिससे 'मिनह' में दलील दी गई है, नाक़ाबिल-ए-तस्लीम है, क्योंकि इसके दूध और घी से गाय को बाकी रखते हुए नफ़ा (लाभ) हासिल किया जाता है। मैं कहता हूँ दिरहम मुतअय्यन (निर्दिष्ट) कर देने से मुतअय्यन नहीं होते हैं, तो उनको बाकी रखते हुए अगरचे

उनसे नफ़ा हासिल करना मुमकिन नहीं, लेकिन उनका बदल उनके क़ायम मक़ाम है क्योंकि ये खुद मुतअय्यन नहीं, तो गोया कि ये बाकी हैं। फिर 'फ़तह' से 'खुलसा' से नक़ल करते हुए फ़रमाया कि अंसारी जो असहाब-ए-ज़ुफ़र से थे उनसे पूछा गया कि अगर किसी शख़्स ने दिरहम या कीली (मापी) या वज़नी चीज़ वक्फ़ की तो क्या जायज़ है? तो उन्होंने फ़रमाया: हाँ। उनसे दरियाफ़्त किया गया कि इसकी शक्ल क्या होगी? तो उन्होंने फ़रमाया दिरहम मुज़ारबत पर किसी को दे दे फिर उनको उस मक़सद पर ख़र्च करता रहे जिसके लिए उनको सदक़ा किया गया था। मैंने उनकी बयान कर्दा नस...

---

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वक्फ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 3/410.

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم] اذھی مما لا ینتفع بھا مع بقاء عینھا وما استدل بہ فی المنح فی مسألۃ البقرۃ ممنوع بما قلنا اذ ینتفع بلبنھا وسمنھا مع بقاء عینھا اہ قلت ان الدراھم لا تتعین بالتعیین فھی وان کانت لا ینتفع بھا مع بقاء عینھا لکن بدلھا قائم مقامھا لعدم تعینھا فکأنھا باقیۃ ثم قال عن الفتح عن الخلاصۃ عن الانصاری وکان من اصحاب زفر فیمن وقف الدراھم او ما یکال او یوزن ایجوز قال نعم قیل وکیف قال یدفع الدراھم مضاربۃ ثم یتصدق بھا فی الوجہ الذی وقف اہ ورأیتنی کتبت علیہ مانصہ - اقول: ھذا التعلیل من العلامۃ الرملی لمنع وقف الدراھم وجواب المحشی بأنھا لا تتعین فکانھا باقیۃ ببقاء بدلھا وما ذکر الامام الانصاری وتبعہ فی الخلاصۃ والفتح والدر وکثیر من الاسفار الغر من طریق الابقاء فی الدراھم والمکیل والموزون ومامر (ای فی ردالمحتار) من ان التأبید معنی شرط صحۃ الوقف بالاتفاق علی الصحیح وقد نص علیہ محققو المشایخ کل ذلک یقضی بان الماء المسبل لا یکون وقفا لعدم امکان

[اردو کالم] اس شرط پر وقف کی کہ اس کا دودھ اور گھی فقراء کے استعمال میں لایا جائے۔ تو اگر یہ چیز ان کی عرف میں ہے تو امید ہے کہ جائز ہے (اور دیگ اور جنازہ کی چارپائی) اور جنازہ کی چادریں اور مصحف اور کتابیں، کیونکہ تعامل کے مقابلہ میں قیاس کو ترک کر دیا جاتا ہے اھ "ش" نے کہا کہ رملی نے فرمایا اس کو منقول سے ملانے میں جس میں تعامل ہو اعتراض ہے کہ اس کے عین کے باقی رہتے ہوئے اس سے انتفاع نہیں ہوتا ہے اور گائے کا مسئلہ جس سے منح میں استدلال کیا ہے نا قابلِ تسلیم ہے، کیونکہ اس کے دودھ اور گھی سے گائے کو باقی رکھتے ہوئے نفع حاصل کیا جاتا ہے اھ میں کہتا ہوں دراہم متعین کر دینے سے متعین نہیں ہوتے ہیں، تو ان کو باقی رکھتے ہوئے اگرچہ ان سے نفع حاصل کرنا ممکن نہیں، لیکن ان کا بدل ان کے قائم مقام ہے کیونکہ یہ خود متعین نہیں، تو گویا کہ یہ باقی ہیں۔ پھر فتح سے خلاصہ سے نقل کرتے

ہوئے فرمایا کہ انصاری جو اصحاب زفر سے تھے ان سے پوچھا گیا کہ اگر کسی شخص نے دراہم یا کیلی یا وزنی چیز وقف کی تو کیا جائز ہے؟ تو انہوں نے فرمایا: ہاں۔ ان سے دریافت کیا گیا کہ اس کی شکل کیا ہو گی؟ تو انہوں نے فرمایا دراہم مضاربت پر کسی کو دے دے پھر ان کو اس مقصد پر خرچ کرتا رہے جس کیلئے ان کو صدقہ کیا گیا تھا اھـ میں نے ان کی بیان کردہ نص

---

1 ردالمحتار باب الوقف مصطفٰی البابی مصر ۳/ ۴۱۰

Fatawa Razawiyya Volume II

[Right Column] It is written: I say: This reason for non-acceptance given by Al-Ramli pertains to the prohibition of making Waqf (endowment) of Dirhams. The commentator's response, that Dirhams are not specified and will remain through their replacements, follows what Imam Ansari mentioned. This has been followed in Al-Khulasa, Al-Fath, Al-Durr, and many other books, explaining how Dirhams and items measured by weight or volume remain. What has passed (meaning in Durr al-Mukhtar) regarding the conditions for the validity of Waqf is that it must be permanent; this is correct and agreed upon. The investigating scholars have explicitly stated this. The implication of this entire discussion is that the water of a Sabil cannot be made Waqf because it is impossible to benefit from it without consuming it. Therefore, it will be considered a permission (ibaha) rather than a Waqf. Yes, making a Waqf of the Saqaya (the water building) is common practice, like a bridge, so that is correct. It will not be said that when the Saqaya becomes Waqf, the water also becomes Waqf in subordination to it, as agreed upon as previously mentioned in the commentary. This is because the primary purpose of the Saqaya is the water itself, and the Saqaya is subordinate; the matter will not be reversed. How can the Saqaya be the primary Waqf so that the water follows it?

[Left Column] Benefit cannot be derived except by its consumption, so it falls under the category of permission rather than Waqf. Indeed, (1) the Saqaya is a structure whose Waqf is customary, like a bridge, so it is valid. It is not said that in a Waqf Saqaya, the water becomes Waqf (2) following the Saqaya, which is permissible by agreement as previously stated in the commentary. This is because the water is (3) the primary purpose of the Saqaya, and the Saqaya is subordinate, so the matter is not reversed. For what purpose would the Saqaya be made a primary Waqf so that the water follows it? Furthermore, if it follows, it follows what is currently in it, not successive replacements. Water is not something that cannot be specified such that the survival of its replacements is considered its own survival. (4) I have an observation regarding this excuse. It was stated in the chapter on disposal of sold items and prices that the non-specification of currency is not absolute, but rather in compensatory transactions, etc. He mentioned a detail in which confusion occurred among scribes, which I pointed out in my annotations. It was said (5) before that in a void sale, Dirhams and Dinars are specified in trusts, gifts, charity, partnerships, Mudarabah, and usurpation. Thus, Waqf is most similar to charity; rather, according

to the Imam, it is a form of it. It appears to me, and Allah Knows Best, that the two currencies and trade goods are productive.

[Footnotes] 1 Radd al-Muhtar, Chapter on disposal in sales, Egypt, 4/185. 2 Radd al-Muhtar, Chapter on disposal in sales, Egypt, 4/185.

फतावा रज़विया, जिल्द द्वितीय

[दायां कॉलम] लिखा है: मैं कहता हूँ: अल-रमली द्वारा दी गई अस्वीकृति का यह कारण दिरहम के वक्फ के निषेध से संबंधित है। टीकाकार का यह उत्तर कि दिरहम विशिष्ट नहीं होते और वे अपने विकल्पों के माध्यम से बने रहेंगे, इमाम अंसारी के उल्लेख का अनुसरण करता है। अल-खुलासा, अल-फतह, अल-दुर और कई अन्य पुस्तकों में इसका पालन किया गया है, जो बताते हैं कि दिरहम और वजन या आयतन द्वारा मापी जाने वाली वस्तुएं कैसे बनी रहती हैं। वक्फ की वैधता की शर्तों के संबंध में जो कुछ बीत चुका है (अर्थात दुर-ए-मुख्तार में), वह यह है कि इसे स्थायी होना चाहिए; यही सही है और इस पर सहमति है। अनुसंधान करने वाले विद्वानों ने इसे स्पष्ट रूप से बताया है। इस पूरी चर्चा का निहितार्थ यह है कि सबील के पानी का वक्फ नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे उपभोग किए बिना उससे लाभ उठाना असंभव है। इसलिए, इसे वक्फ के बजाय अनुमति (इबाहा) माना जाएगा। हाँ, सकाया (जल भवन) का वक्फ करना आम बात है, जैसे पुल, इसलिए वह सही है। यह नहीं कहा जाएगा कि जब सकाया वक्फ हो जाता है, तो पानी भी उसके अधीन वक्फ हो जाता है, जैसा कि पहले टिप्पणी में उल्लेखित सहमति के अनुसार है। इसका कारण यह है कि सकाया का मुख्य उद्देश्य पानी ही है, और सकाया उसके अधीन है; मामले को उलट नहीं दिया जाएगा। सकाया प्राथमिक वक्फ कैसे हो सकता है ताकि पानी उसका अनुसरण करे?

[बायां कॉलम] इसके उपभोग के बिना लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता, इसलिए यह वक्फ के बजाय अनुमति के दायरे में आता है। वास्तव में, (१) सकाया एक ऐसी संरचना है जिसका वक्फ प्रचलित है, जैसे पुल, इसलिए यह मान्य है। यह नहीं कहा जाता कि वक्फ किए गए सकाया में पानी वक्फ (२) हो जाता है, सकाया के अनुसरण में, जो सहमति के अनुसार अनुमेय है जैसा कि पहले विवरण में बताया गया है। इसका कारण यह है कि पानी (३) सकाया का प्राथमिक उद्देश्य है, और सकाया अधीनस्थ है, इसलिए मामले को उलटा नहीं जाता है। किस उद्देश्य के लिए सकाया को एक प्राथमिक वक्फ बनाया जाएगा ताकि पानी उसका अनुसरण करे? इसके अलावा, यदि वह अनुसरण करता है, तो वह उसी का अनुसरण करता है जो वर्तमान में उसमें है, न कि निरंतर होने वाले प्रतिस्थापनों का। पानी ऐसी वस्तु नहीं है जिसे विशिष्ट नहीं किया जा सकता ताकि उसके विकल्पों की उत्तरजीविता को उसकी अपनी उत्तरजीविता माना जाए। (४) इस बहाने के संबंध में मेरा एक अवलोकन है। बेची गई वस्तुओं और कीमतों के निपटान के अध्याय में यह कहा गया था कि मुद्रा का गैर-विशिष्टीकरण पूर्ण नहीं है, बल्कि क्षतिपूर्ति लेनदेन आदि में है। उन्होंने एक विवरण का उल्लेख किया जिसमें लिपिकों के बीच

भ्रम पैदा हुआ, जिसे मैंने अपनी टिप्पणियों में इंगित किया। इससे पहले (५) कहा गया था कि एक शून्य बिक्री में, अमानत, उपहार, दान, साझेदारी, मुदारबाह और हड़पने में दिरहम और दीनार विशिष्ट होते हैं। इस प्रकार, वक्फ दान के सबसे समान है; बल्कि, इमाम के अनुसार, यह उसी का एक रूप है। मुझे प्रतीत होता है, और अल्लाह बेहतर जानता है, कि दोनों मुद्राएँ और व्यापारिक वस्तुएँ उत्पादक (नामी) हैं।

[पादलेख] 1 रद अल-मुहतार, बिक्री में निपटान पर अध्याय, मिस्र, 4/185। 2 रद अल-मुहतार, बिक्री में निपटान पर अध्याय, मिस्र, 4/185।

पृष्ठ 487 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم] پر لکھا ہے اقول: عدم تسلیم کی یہ علت جو رملی نے بیان کی ہے دراہم کے وقف کے ممنوع ہونے کی بابت ہے اور محشی کا یہ جواب دینا کہ دراہم متعین نہیں ہوتے، تو اپنے بدل کے باقی رہنے کی وجہ سے باقی رہیں گے، اور جو امام انصاری نے ذکر کیا اور خلاصہ اور فتح اور در اور بہت سی کتب میں اس کی متابعت کی گئی ہے کہ کس طرح دراہم اور مکیل و موزون باقی رہتے ہیں اور جو گزرا (یعنی در مختار میں) یعنی صحت وقف کے شرائط میں سے اس کا ہمیشہ کیلئے ہونا ہے، یہی صحیح ہے اور اس پر اتفاق ہے اور محققین مشائخ نے اس پر نص کیا ہے، اور اس تمام بحث کا تقاضا یہی ہے کہ سبیل کا پانی وقف نہیں کیا جاسکتا ہے، کیونکہ اس کو ختم کئے بغیر اس سے نفع حاصل کرنا ممکن نہیں، تو یہ اباحت قرار پائے گا نہ کہ وقف، ہاں سقایہ جو عمارت ہوتی ہے اس کا وقف کرنا متعارف ہو گیا ہے جیسا کہ پل ہوتا ہے تو یہ صحیح ہے، اور یہ نہیں کہا جائے گا کہ جب سقایہ وقف ہوا تو پانی بھی اس کی متابعت میں وقف ہو گیا، اور اس پر اتفاق ہے جیسا کہ شرح میں گزرا، کیونکہ سقایہ میں مقصود تو پانی ہی ہے اور سقایہ تو تابع ہے تو معاملہ بر عکس نہیں کیا جائے گا، اور پھر سقایہ کیونکر وقف مقصود ہو سکتا ہے تاکہ پانی اس کا تابع ہو

[بایاں کالم] الانتفاع به الا باستهلاكه فيكون من باب الاباحة دون الوقف نعم (١) السقاية بناء تعورف وقفه كالقنطرة فيصح ولا يقال ان السقاية الموقوفة يصير الماء وقفاً (٢) تبعاً للسقاية وهو جائز وفاقاً كما تقدم في الشرح وذلك لان الماء هو (٣) المقصود بالسقاية وهى تبع فلا يعكس الامر ولاى شى تجعل السقاية وقفاً مقصودا فيتبعه الماء علا انه ان تبع تبع مافيها دون الابدال المتعاقبة وليس الماء مما لا يتعين حتى يجعل بقاء الابدال بقاءه مع (۴) ان لى نظرا فى هذا العذر فقد افاد ش في فصل فى التصرف فى

المبيع والثمن ان عدم تعين النقد ليس على اطلاقه بل ذلك في المعا ١وضات الخ وذكر تفصيلا وقع فيه خلط وخبط من الناسخين نبهت عليه فيما علقت عليه وقال (٥) قبله في البيع الفاسد الدراهم والدنانير تتعين في الامانات والهبة والصدقة والشركة والمضاربة والغضب ٢اه فالوقف اشبه شيئ بالصدقة بل هو منها عند الامام ويظهر لى والله تعالى اعلم ان النقدين والتجارات ناميات

[حواشى] 1 رد المحتار فصل في التصرف في البيع البابى مصر ۴/ ۱۸۵ 2 رد المحتار فصل في التصرف في البيع البابى مصر ۴/ ۱۸۵

Fatawa Rizwia, Volume 2

(Right Column) Besides this, if water is subordinate, it will only be subordinate to the extent present in the water container, not to its replacements that are returning repeatedly. And water is not something that cannot be specified so that the existence of the replacement is considered its own survival. I have an objection to this excuse. "Sh" (likely referring to the scholar Ibn Abidin Shami) stated in the discussion of "disposal of the sold item and the price" that the non-specification of currency is not absolute; it is only in compensations, etc. Then he mentioned a detail in which some confusion occurred among the transmitters. In my commentaries on it, I have warned about this, and before that, in the chapter on "Irregular Sale," he said: And dirhams and dinars become specified in trusts, gifts, charity, partnerships, silent partnerships (mudaraba), and usurpation. Waqf (endowment) is very similar to charity; rather, according to the Imam, it is charity itself. I feel (and Allah knows best) that gold, silver, and commercial transactions are things that grow legally and perceptibly, so their survival will be due to their growth, because what is born from them is the same. Thus, their value will be like a tree that remains and its fruit keeps coming in season. Whatever the case, water cannot be compared to this. If a child filled a jug of water from a pool...

(Left Column) ...legally and perceptibly, so its survival is through its growth as it is the original source from which it is born. Thus, its value resembles a tree that remains and yields its fruit at all times by the permission of its Lord. However it may be, water cannot be compared to it. They have reasoned that if a child fills a jug from a pool and then pours it back into it, it is not permissible for anyone to drink it, because the child owned what he took of the permissible pool water. When he poured it back, his property mixed with it, so its use became prohibited, as in 'Al-Hadiqa al-Nadiyah' at the end of the twentieth type of 'Evils of the Tongue,' 'Ghamz al-Uyun' from the 'Rules of Children,' and 'Al-Tahtawi' in the section on 'Drinking.' And in this book, meaning 'Sh' from the mentioned section, from 'Ta' from 'Al-Hamwi,' from 'Al-Dirayah,' from 'Al-Dhakhirah' and 'Al-Munyah.' They have made the pool water permissible, even if it were an endowment, the child would not own it by taking it in his jug, because (1) an endowment is not owned. Shams al-A'imma al-Sarakhsi defined it as holding owned property from being transferred to others, as in 'Sh.' This is unlike the produce of an endowed estate for descendants, for they own it when it appears. So whoever among them dies after that, his portion is inherited from him as will come in the book, for the endowment is the weak one and this is its growth.

1. Al-Hadiqa al-Nadiyah, Twentieth type of 'Evils of the Tongue,' Rizwia Faisalabad 2/269.
2. Radd al-Muhtar, Book of Waqf, Al-Babi Egypt 3/392.

फतावा रज़विया, खंड 2

(दायाँ कॉलम) इसके अतिरिक्त, यदि पानी अधीनस्थ है, तो वह केवल उसी सीमा तक अधीनस्थ होगा जो पानी के बर्तन में मौजूद है, न कि उसके उन प्रतिस्थापनों के जो बार-बार लौट रहे हैं। और पानी ऐसी चीज़ नहीं है जिसे निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता ताकि प्रतिस्थापन के अस्तित्व को उसका अपना अस्तित्व माना जाए। मुझे इस बहाने पर आपत्ति है। "श" (संभवतः विद्वान इब्न आबिदीन शामी) ने "बिक्री की गई वस्तु और कीमत के निपटान" की चर्चा में कहा कि मुद्रा का अनिर्दिष्ट होना पूर्ण नहीं है; यह केवल मुआवज़े आदि में है। फिर उन्होंने इसमें एक विवरण का उल्लेख किया जिसमें संचरण करने वालों द्वारा कुछ भ्रम हुआ। उस पर मेरी टिप्पणियों में, मैंने इसके बारे में आगाह किया है, और उससे पहले, "अनियमित बिक्री" (बय फ़ासिद) के अध्याय में उन्होंने कहा: और दरहम और दीनार अमानत, उपहार, दान, साझेदारी, मज़ारबा और अपहरण (ग़सब) में निर्दिष्ट हो जाते हैं। वक़्फ़ (बंदोबस्ती) दान के बहुत समान है; बल्कि इमाम के अनुसार, यह दान ही है। मुझे लगता है (और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है) कि सोना, चांदी और व्यावसायिक लेनदेन कानूनी और बोधगम्य रूप से बढ़ने वाली चीजें हैं, इसलिए उनका अस्तित्व उनके विकास के कारण होगा, क्योंकि उनसे जो पैदा होता है वह वही है। इस प्रकार, उनका मूल्य उस पेड़ की तरह होगा जो बना रहता है और उसका फल मौसम में आता रहता है। जो भी मामला हो, पानी की तुलना इससे नहीं की जा सकती। यदि किसी बच्चे ने एक कुएं से पानी का जग भरा...

(बायाँ कॉलम) ...कानूनी और बोधगम्य रूप से, इसलिए इसका अस्तित्व इसके विकास के माध्यम से है क्योंकि यह वह मूल स्रोत है जिससे यह पैदा होता है। इस प्रकार, इसका मूल्य उस पेड़ के समान है जो बना रहता है और अपने रब की अनुमति से हर समय अपना फल देता है। जो भी हो, पानी की तुलना इससे नहीं की जा सकती। उन्होंने तर्क दिया है कि यदि कोई बच्चा एक पूल से जग भरता है और फिर उसे वापस उसमें डाल देता है, तो किसी के लिए इसे पीना जायज़ नहीं है, क्योंकि बच्चे के पास पूल के उस पानी का स्वामित्व था जो उसने लिया था। जब उसने उसे वापस डाला, तो उसकी संपत्ति उसमें मिल गई, इसलिए इसका उपयोग निषिद्ध हो गया, जैसा कि 'अल-हदीका अल-नादिया' में 'जुबान की बुराइयों' के बीसवें प्रकार के अंत में, 'ग़म्ज़ अल-उयून' के'बच्चों के नियम' से, और 'अल-तहतावी' के'पीने' के अनुभाग में है। और इस पुस्तक में, यानी उल्लिखित अनुभाग से 'श', 'त' से 'अल-हमवी' से, 'अल-दिरयाह' से, 'अल-ज़खीरा' और 'अल-मुन्या' से। उन्होंने पूल के पानी को जायज़ (मुबाह) बनाया है, भले ही वह वक़्फ़ हो, बच्चा अपने जग में लेने से उसका मालिक नहीं

बनेगा, क्योंकि (1) वक़्फ़ का स्वामित्व नहीं होता है। शम्स अल-अइम्मा अल-सरखसी ने इसे स्वामित्व वाली संपत्ति को दूसरों को हस्तांतरित होने से रोकने के रूप में परिभाषित किया है, जैसा कि 'श' में है। यह वंशजों के लिए वक़्फ़ की गई संपत्ति की पैदावार के विपरीत है, क्योंकि वे इसके प्रकट होने पर इसके मालिक बन जाते हैं। तो उनमें से जो कोई उसके बाद मर जाता है, उसका हिस्सा उससे विरासत में मिलता है जैसा कि पुस्तक में आएगा, क्योंकि वक़्फ़ कमज़ोर है और यह इसका विकास है।

---

1. अल-हदीका अल-नादिया, जुबान की बुराइयों का बीसवां प्रकार, रज़विया फैसलाबाद 2/269.
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-वक़्फ़, अल-बाबी मिस्र 3/392.

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

(دائیں کالم کا متن) علاوہ ازیں یہ کہ اگر پانی تابع ہو بھی تو اسی قدر تابع ہوگا جو سقایہ میں موجود ہے نہ کہ اس کے بدل جو بار بار لوٹ کر آرہے ہیں اس کے تابع ہوں، اور پانی ایسی چیز نہیں جو متعین نہ ہوتا کہ بدل کے باقی رہنے کو اس کی بقاء قرار دیا جائے۔ مجھے اس عذر پر اعتراض ہے۔ "ش" نے "تصرف فی المبیع والثمن" کی بحث میں فرمایا کہ نقود کا غیر متعین ہونا مطلق نہیں، یہ صرف معاوضات میں ہے الخ پھر انہوں نے اس میں ایک تفصیل ذکر کی جس میں ناقلین سے کچھ خلط مبحث ہو گیا، میں نے اس پر جو تعلیقات کی ہیں ان میں اس پر تنبیہ کی ہے، اور اس سے قبل باب بیع فاسد میں فرمایا: اور دراہم ودنانیر، امانات، ہبہ، صدقہ، شرکت، مضاربہ اور غصب میں متعین ہو جاتے ہیں اھ وقف صدقہ سے بہت مشابہ چیز ہے بلکہ امام کے نزدیک صدقہ ہی ہے۔ میں محسوس کرتا ہوں (واللہ تعالٰی اعلم) کہ سونا چاندی اور تجارتی معاملات شرعاً اور حساناً نامی چیزیں ہیں تو ان کی بقاء ان کی نماز کے باعث ہوگی، کیوں کہ ان سے جو چیز متولد ہوتی ہے وہ یہی ہے، تو ان کی مالیت اس درخت کی طرح ہوگی جو باقی رہتا ہے اور موسم پر اس کا پھل آتا رہتا ہے اور جو بھی صورت ہو بہر حال اس پر پانی کو قیاس نہیں کر سکتے ہیں۔ اگر کسی بچے نے ایک حوض سے پانی کا ایک کوزہ بھرا

(بائیں کالم کا متن) شرعاً وحساً فبقاؤھا بنماءھا اذھی الاصل المتولد منہ فتشبہ مالیتھا شجرۃ تبقی فتؤتی اکلھا کل حین باذن ربھا وکیفما کان لایقاس علیھا الماء وقد عللوا ما اذا ملأ صبی کوزا من حوض ثم صبہ فیہ لایحل لاحد شربہ بان الصبی ملک ما اخذہ من ماء الحوض المباح فاذاصبہ فیہ اختلط ملکہ بہ فامتنع استعمالہ کما فی الحدیقۃ الندیۃ آخر نوع العشرین من آفات اللسان وغمز العیون من احکام الصبیان والطحطاوی من فصل فی الشرب و فی ہذا الکتاب اعنی ش من الفصل المذکور عن

ط عن الحموی عن الدرایۃ عن الذخیرۃ والمنیۃ وقد جعلوا ماء الحوض مباحاً ولو کان وقفاً لم یملکہ الصبی باخذہ فی کوزہ فان (۱) الوقف لایملک وقد عرفہ شمس الائمۃ السرخسی بانہ حبس المملوک عن التملیک عن الغیر اھ کما فی ش بخلاف غلۃ ضیعہ موقوفہ علی الذراری فانہم یملکونہا عند ظہورہا فمن مات منہم بعدہ یورث عنہ قسطہ کما یاتی فی الکتاب فان الوقف ہی الضعیفۃ وھذہ نماؤھا۔

---

1 الحدیقۃ الندیۃ النوع العشرین من آفات اللسان رضویہ فیصل آباد ۲/ ۲۶۹ 2 رد المحتار کتاب الوقف البابی مصر ۳/ ۳۹۲

Fatawa Razawiya, Volume 2 ...then he poured it into it, so now it is not permissible for anyone to drink the water of this pool. The reason given by the jurists is that the water the child took from the permissible pool came into his ownership, and then when this water was poured back into the same pool, it got mixed with the owner's property, so its use is now prohibited. [Reference: Hadiqa Nadiyya, Afat al-Lisan, end of the twentieth type; Ghamz al-'Uyun, rules for children; Tahtawi, chapter on drinking]. And in 'Ash', in the mentioned chapter from 'Ta', from 'Hamawi', from 'Diraya', from 'Dhakhira', and from 'Munya', it is stated that the jurists have declared the water of the pool to be permissible. If this water were 'waqf' (endowment), the child would not have become its owner by taking it in a pitcher, because ownership is not established on waqf. Shams al-A'immah al-Sarakhsi defined waqf as preventing a thing from being transferred to ownership, meaning another cannot become its owner. As stated in 'Sh', this is contrary to someone endowing the income of a piece of land for their offspring, because when this income is manifest, the offspring will become its owner, and the inheritance will follow for whoever among the offspring dies after him, as will be mentioned in the book, because the waqf is the land, and this is its 'growth' (product). (T)

Arabic Text

If you say: Has it not been previously mentioned in the discussion of ablution (Wudu) in the book, the text of which is: its dislikes include extravagance in it, until the end of what has been quoted. **I say:** And with Allah is the guidance: (1) What is meant by it is 'sabil' water which is waqf, such as the water of schools, mosques, and water-dispensing places which are filled from the income of their endowments. Indeed, no one owns this water, and it is not permissible to spend it except in the specific direction designated by the donor (waqif), and this is the rule of waqf. (2) As for the water that a person draws from his own property, it does not become waqf, whether it is in jars, pitchers, pools, or water-dispensers. Its

Urdu Translation

If an objection is raised that it was mentioned in the discussion of wudu in the book that extravagance is among the dislikes of wudu, until the end of the quote. I say that the answer is that it refers to sabil water which is waqf, such as the water of schools, mosques, and water-dispensing places which is filled from the income of their endowments, because no one owns this water, and it can only be spent in the specific direction designated by the donor, and this is the rule of waqf. And if a person sets up a water sabil from his own property, it will not be waqf, whether it is in large jars, small pots, pools, or

Arabic Text

ultimate purpose is permissibility for people to use while it remains under his ownership. Therefore, the mentioned issue of a child's pitcher does not apply here. This is what has become clear to me, and I hope it is the correct view, by the permission of the Sovereign Giver. All praise be to Him, and upon His noble Beloved, his family, and companions, be blessings.

Urdu Translation

dispensers, because the intention is only to make the water permissible for people while remaining in the owner's ownership. In that case, the mentioned issue of the child's pitcher will not apply. This is what is evident to me, and I hope it is the same.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2 ...फिर उसे उसमें उड़ेल दिया, तो अब इस हौज़ का पानी किसी को पीना जायज़ नहीं है। फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्री) ने इसकी वजह यह बयान की है कि बच्चे ने मुबाह (अनुमत) हौज़ से जो पानी लिया, वह पानी उसके स्वामित्व में आ गया, और फिर जब उस पानी को उसी हौज़ में डाल दिया गया तो वह मालिक की संपत्ति के साथ मिल गया, इसलिए अब इसका उपयोग निषिद्ध है। [संदर्भ: हदीक़ा नदिय्या, आफ़ातुल लिसान, बीसवीं क़िस्म का अंत; ग़म्ज़ुल उयून, बच्चों के अहकाम; तहावी, फ़स्ल शर्ब]। और "अश" में, उसी फ़स्ल में "ता" से, "हमवी" से, "दराया" से, "ज़ख़ीरा" से और "मुनिया" से उद्धृत है कि फ़ुक़्हा ने हौज़ के पानी को मुबाह करार दिया है। अगर यह पानी वक़्फ़ होता, तो बच्चा उसे कूज़े (मिट्टी का बर्तन) में लेने से उसका मालिक न बन जाता, क्योंकि वक़्फ़ पर स्वामित्व सिद्ध नहीं होता। शम्सुल आइम्मा सरख़्सी ने वक़्फ़ की परिभाषा इस प्रकार की है कि यह स्वामित्व को हस्तांतरित होने से रोकना है, यानी दूसरा इसका मालिक नहीं हो सकता। जैसा कि "श" में है, यह इसके विरुद्ध है कि कोई व्यक्ति अपनी संतान के लिए किसी भूमि की आय वक़्फ़ कर दे, क्योंकि जब यह आय प्रकट होगी, तो संतान उसकी मालिक हो जाएगी, और उसके बाद संतान में से जो मरेगा, उसकी विरासत जारी रहेगी, जैसा कि पुस्तक में आएगा, क्योंकि वक़्फ़ तो भूमि है और यह उसकी "वृद्धि" (पैदावार) है। (त)

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
यदि आप कहें: क्या पुस्तक में वज़ू की चर्चा में पहले यह नहीं आया है, जिसका पाठ है: "इसके मकरूहात में इसमें अपव्यय (इसराफ़) करना है...", उद्धृत चर्चा के अंत तक। **मैं कहता हूँ:** और अल्लाह की मदद से: (1) इससे तात्पर्य 'सबील' का पानी है जो वक़्फ़ हो, जैसे मदरसों, मस्जिदों और प्याऊ का पानी जो उनके वक़्फ़ की आय से भरा जाता है। वास्तव में, इस पानी का कोई मालिक नहीं होता, और इसे केवल उसी दिशा में खर्च किया जा सकता है जिसे इसके वाक़िफ़ (दानदाता) ने निर्धारित किया है, और यही वक़्फ़ का नियम है। (2) रही बात उस पानी की जिसे व्यक्ति अपनी संपत्ति से निकालता है,	यदि यह आपत्ति की जाए कि पुस्तक की वज़ू की चर्चा में गुज़रा है कि वज़ू के मकरूहात में फ़ुज़ूलखर्ची (इसराफ़) है, उद्धृत चर्चा के अंत तक। मैं कहता हूँ कि इसका उत्तर यह है कि इससे मुराद सबील का पानी है जो वक़्फ़ हो, जैसे मदरसों, मस्जिदों, प्याऊ का पानी जो उनके औक़ाफ़ की आमदनी से भरा जाता है, क्योंकि इस पानी का कोई मालिक नहीं, और इसे केवल उसी दिशा में खर्च किया जा सकता है जो इसके वाक़िफ़ ने इसके लिए तय की है, और यही वक़्फ़ का हुक्म है। और अगर कोई व्यक्ति अपनी मिल्कियत से पानी की सबील

अरबी पाठ

तो वह वक़्फ़ नहीं होता, चाहे वह बड़े बर्तनों में हो, घड़ों में हो, हौज़ों में हो या प्याऊ में। इसका उद्देश्य केवल लोगों के लिए इसका उपयोग अनुमत करना है जबकि यह मालिक के स्वामित्व में बना रहे। इसलिए, यहाँ बच्चे के कूज़े का उल्लेखित मसला लागू नहीं होता। यही मुझे स्पष्ट हुआ है और मुझे आशा है कि यही सही है, उस संप्रभु दाता की अनुमति से। समस्त प्रशंसा उसी के लिए है, और उसके नेक महबूब, उनके परिवार और साथियों पर दुरूद हो।

उर्दू अनुवाद

लगाए तो वह वक़्फ़ नहीं होगी, चाहे वह मटकों में हो या छोटे घड़ों में या हौज़ों और प्याऊ में, क्योंकि इससे तो सिर्फ इतना मक़सूद है कि पानी मालिक की मिल्क में रहते हुए लोगों के लिए मुबाह (अनुमत) कर दिया जाए, तो इसमें बच्चे के कूज़े का ज़िक्र किया गया मसला नहीं चलेगा। मुझ पर यही ज़ाहिर हुआ है और मुझे उम्मीद है कि यही है।

فتاوی رضویہ جلد ثانی پھر اس کو اس میں انڈیل دیا، تو اب اس حوض کا پانی کسی کو پینا جائز نہیں اور اس کی علت فقہاء نے یہ بیان کی ہے کہ بچے نے مباح حوض سے جو پانی لیا، وہ پانی اس کی ملکیت میں آگیا، اور پھر اس پانی کو جب اسی حوض میں ڈال دیا تو اس کی ملک کے اس کے ساتھ مخلوط ہو گئی تو اب اس کا استعمال ممنوع ہو گیا، حدیقہ ندیہ آفات اللسان، بیسویں نوع کا آخر۔ غمز العیون، بچوں کے احکام۔ طحطاوی، فصل شرب۔ اور "اش" میں، مذکور فصل میں "ط" سے، "حموی" سے، "درایہ" سے، "ذخیرہ" سے، "اور منیہ" سے ہے کہ فقہاء نے حوض کے پانی کو مباح قرار دیا ہے، اگر یہ پانی وقف ہوتا تو بچہ اس کو کوزہ میں لینے سے اس کا مالک نہ ہو جاتا، کیونکہ وقف پر ملکیت ثابت نہیں ہوتی ہے۔ شمس الائمہ سرخسی نے وقف کی تعریف اس طرح کی ہے کہ یہ مملوک کو تملیک سے روکنا ہے، یعنی غیر اس کا مالک نہیں ہو سکتا اھ جیسا کہ "ش" میں ہے، یہ اس کے خلاف ہے کہ کوئی شخص ذریت پر کسی زمین کی آمدنی وقف کر دے، کیونکہ جب یہ آمدنی ظاہر ہو گی تو ذریت اس کی مالک ہو جائے گی، ذریت میں سے جو اس کے بعد وفات پائے گا اس کی میراث جاری ہوگی، جیسا کہ کتاب میں آئے گا، کیونکہ وقف تو زمین ہے اور یہ اس کا "نماء" ہے۔ (ت)

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فان قلت: الیس قد تقدم فی وضؤ الکتاب مانصہ مکروھہ الاسراف فیہ الی آخر مامرر نقلہ **اقول:** وباللہ التوفیق (۱) المراد بہ الماء المسبل بمآل الوقف کمآء المدارس والمساجد والسقایات التی تملؤ من اوقافھا فان	اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ کتاب کے وضو کی بحث میں گزرا ہے، اس وضو کے مکروہات میں اسراف ہے الی آخر مانقلہ میں کہتا ہوں اس کا جواب یہ ہے کہ اس سے مراد سبیل کا پانی ہے جو وقف ہو، جیسا کہ مدارس، مساجد، سقایات کا پانی جو ان کے اوقاف

عربی عبارت	اردو ترجمہ
هذا الماء لايملكه احد ولا يجوز صرفه الا الى جهة عينها الواقف وهذا هو حكم الوقف اما(٢) الماء الذى يسحبه المرء من ملكه فلا يصير وقفا سواء كان فى الحباب اوالجرار اوالحياض اوالكسقايات انما غايته الاباحة يتصرف فيها الناس وهو على ملكه فلا تتأتى فيه مسألة كوزا لصبى المذكورة هذا ماظهر لى وارجوان يكون هو الصواب * باذن الملك الوهاب * وله الحمد وعلى حبيبه كريم والأل والاصحاب، صلاة	کی آمدنی سے بھر جاتا ہے، کیونکہ اس پانی کا کوئی مالک نہیں، اور اس کو فقط اسی جہت میں صرف کیا جا سکتا ہے جو اس کے واقف نے اس کیلئے متعین کی ہے، اور یہی وقف کا حکم ہے۔ اور اگر کوئی شخص اپنی ملک سے پانی کی سبیل لگائے تو وہ وقف نہ ہوگی، خواہ وہ مٹکوں میں ہو یا چھوٹے گھڑوں میں یا حوضوں اور سقایوں میں، کیونکہ اس سے تو صرف اتنا مقصود ہے کہ پانی مالک کی ملک میں رہتے ہوئے لوگوں کیلئے مباح کر دیا جائے تو اس میں بچے کے کوزہ کا مذکورہ مسئلہ نہیں چلے گا، مجھ پر یہی ظاہر ہوا ہے اور مجھے امید ہے کہ یہی

...and peace be upon him enduring without number and without account, Ameen. It will be correct.... (T)

(30) I say: Similarly, the water containers (saqaye) or tanks of a mosque which are filled for the purification of the congregation, if they are filled from endowment (waqf) funds, then it is absolutely not permissible to take that water to homes, whether old or new, for purification unless the permission of the endower is established from the beginning. And if someone has filled them from their own property, then without their permission, taking their water to homes even for purification is not permissible; purification will occur, but it will be a sin. The detail regarding the permission of the endower and owner is the same as mentioned earlier regarding public water fountains (ab-e-sabeel), and the evidence is the same evidence (and the evidence is also what has passed before). In winters, when water containers are heated, some people take water to their homes; great caution is needed in this, as it often happens in a manner that is likely impermissible.

[Left Column - Arabic Text] As for what is in Al-Khaniya then Al-Hindiyya in the 'Book of Drinking': it is permissible to carry the water of a public fountain (suqaya) to one's home for one's family to drink. 'Ah' (end). This refers to water prepared for drinking, based on the evidence of its beginning and end. They differed regarding performing ablution (wudu) with the water of a public fountain: some permitted it, while others said if the water is abundant it is permitted, otherwise not. Similarly, for all water prepared for drinking, to the extent that they said regarding basins (tanks) prepared for drinking, performing wudu in them is not allowed and should be prevented, and this is the correct view. And it is permissible to carry [it home] etc. based on the fact that (3) what is prepared for drinking, the secluded women (mukhadarat al-hijal) should not be prevented from it. In summary, there is no doubt that the basis is custom (urf). For (4) if we know that the person who made the water available for drinking (musabbil) restricted it to those arriving and is not pleased with it being carried to homes, then that is absolutely not permissible. In fact, if specific knowledge exists regarding its use for passers-by, it is not allowed for others among those arriving, as some ignorant people do during the ten days of Muharram with the water fountains.

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] Then in Khania and Hindiyya's 'Book of Drinking' it is stated that if a person takes water from a public water supply (suqaya)

to his home to give to his wife and children to drink, it is permissible. 'Ah' (finish). So, this refers to water that has been specifically kept for drinking. The beginning and end of the text indicate this. There is a difference of opinion among jurists whether wudu (ablution) is permissible with the water from a 'suqaya' or not. Some have voiced the opinion of permissibility, while others said if the water is abundant it is permissible, otherwise not. And the same rule applies to any water prepared for drinking, to the extent that jurists have said regarding the basin (tank) that has been made for drinking that wudu in it is not permissible, and if someone does it, they will be stopped, and this is correct. And it is permissible that he takes that water home, etc. The basis for this is that the water kept for drinking should not be withheld from secluded women. In summary, the actual basis is custom (urf). If we come to know that the water of the fountain (sabeel) is for drinking and the same people [who come there] and he is not pleased with its being taken home, it is absolutely not allowed. Rather, if it is known that it is specifically for passers-by, it is not allowed for others among those arriving, as some ignorant people do during the ten days of Muharram with the fountains.

---

1 Hindiyya, Chapter One from the Book of Drinking, Peshawar, 5/391

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

...और बिना गिनती और बिना हिसाब के सलामती हमेशा बनी रहे, आमीन। यह सही होगा.... (त)

(30) मैं कहता हूँ: इसी प्रकार मस्जिद के पानी के बर्तन (सकाए) या हौज जो मस्जिद की जमात की पाकी (शुद्धि) के लिए भरे जाते हैं, अगर वे वक्फ (न्यास) के धन से भरे गए हों, तो बिल्कुल भी जब तक शुरुआत से वक्फ करने वाले की अनुमति सिद्ध न हो, और किसी ने अपनी मिल्कियत (स्वामित्व) से भरवाए हों तो बिना उसकी अनुमति के पुराने या नए घरों में उनका पानी ले जाना जायज़ नहीं है, चाहे वह पाकी (शुद्धि) के लिए ही क्यों न हो। पाकी हो जाएगी लेकिन गुनाह होगा। वक्फ करने वाले और मालिक की अनुमति का विवरण वही है जो पहले 'आबे सबील' (सार्वजनिक जल सेवा) के बारे में बीत चुका है और दलील (सबूत) भी वही दलील है (और दलील भी वही है जो पहले गुजर चुकी है)। सर्दियों में जब पानी के बर्तन गरम किए जाते हैं, कुछ लोग घरों में पानी ले जाते हैं, इसमें बहुत सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि अक्सर यह नाजायज़ तरीके से होता है।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] जहाँ तक खानिया फिर हिंदिया की 'किताबुश शुर्ब' में है: सुकाया (सार्वजनिक जल स्थल) का पानी अपने घर ले जाना जायज़ है ताकि उसके घरवाले उसे पी सकें। 'अह' (समाप्त)। तो यह पीने के लिए तैयार किए गए पानी के बारे में है, इसके आदि और अंत की दलील के आधार पर। उन्होंने सुकाया के पानी से वज़ू करने के बारे में मतभेद किया: कुछ ने इसे जायज़ बताया, जबकि अन्य ने कहा कि यदि पानी प्रचुर है तो जायज़ है, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार पीने के लिए तैयार किए गए सभी पानी के लिए, यहाँ तक कि उन्होंने पीने के लिए तैयार किए गए कुंडों (टैंकों) के बारे में कहा कि उनमें वज़ू करना जायज़ नहीं है और इसे रोका जाना चाहिए, और यही सही दृष्टिकोण है। और इसे ले जाना जायज़ है आदि इस आधार पर कि (3) जो पीने के लिए तैयार किया गया है, उससे पर्दानशीन महिलाओं (मुखदरात अल-हिजाल) को वंचित नहीं किया जाना चाहिए। संक्षेप में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आधार 'उर्फ (परंपरा) है। क्योंकि (4) यदि हमें पता चलता है कि जिसने पानी पीने के लिए उपलब्ध कराया है (मुसब्बिल), उसने इसे केवल आने वालों के लिए प्रतिबंधित किया है और वह इसे घरों में ले जाने से प्रसन्न नहीं है, तो वह बिल्कुल भी जायज़ नहीं है। वास्तव में, यदि राहगीरों के लिए इसके उपयोग के बारे में विशिष्ट ज्ञान है, तो आने वाले अन्य लोगों के लिए यह अनुमति नहीं है, जैसा कि कुछ अज्ञानी लोग मुहर्रम के दस दिनों में सबीलों (पानी के फव्वारों) के साथ करते हैं।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] फिर खानिया और हिंदिया की 'किताबुश शुर्ब' (पीने की किताब) में है कि अगर कोई व्यक्ति सुकाया (सार्वजनिक जल स्थल) का पानी अपनी पत्नी और बच्चों को पिलाने के लिए घर ले जाए तो जायज़ है। 'अह' (समाप्त)। तो इससे मुराद (तात्पर्य) वह पानी है जो विशेष रूप से पीने ही के लिए रखा गया हो, इबारत (लेख) का आदि और अंत यही बताता है। इसमें फुकहा (धर्मशास्त्री) का मतभेद है कि "सुकाया" के पानी से वज़ू करना जायज़ है या नहीं, कुछ ने जायज़ होने का मत दिया है, और कुछ ने कहा है कि अगर पानी अधिक हो तो जायज़ है वरना नहीं। और यही नियम हर उस पानी के लिए है जो पीने के लिए रखा गया हो, यहाँ तक कि फुकहा ने उस हौज के बारे में भी यही फरमाया है जो पीने के लिए बनाया गया हो कि उसमें वज़ू जायज़ नहीं है, और अगर कोई करे तो उसे रोका जाएगा, और यही सही है। और यह जायज़ है कि वह पानी घर ले जाए आदि, इसकी बुनियाद यह है कि जो पानी पीने के लिए रखा जाए उससे पर्दानशीनों को वंचित नहीं रखा जाएगा। संक्षेप में यह कि असल दारोमदार 'उर्फ (परंपरा/प्रथा) पर है। अगर हमें यह पता चल जाए कि सबील का पानी पीने के लिए है और वही लोग इससे [लाभ उठा सकते हैं] जो वहां आएं और वह पानी घर ले जाने पर राजी नहीं है, तो यह बिल्कुल जायज़ नहीं होगा। बल्कि अगर यह पता हो कि यह केवल मुसाफिरों (राहगीरों) के लिए है, तो आने वाले अन्य लोगों के लिए भी जायज़ नहीं है, जैसा कि कुछ अज्ञानी लोग मुहर्रम के दस दिनों में सबीलों के साथ करते हैं।

---

1 हिंदिया, किताबुश शुर्ब का पहला अध्याय, पेशावर, 5/391

فتاوی رضویہ جلد ثانی

وسلام یدومان بلاعدد ولاحساب امین۔ صحیح ہوگا.... (ت)

(۳۰) اقول: یوں ہی مسجد کے سقائے یا حوض جو اہل جماعت مسجد کی طہارت کو بھرے جاتے ہیں اگر مال وقف سے بھرے گئے ہوں تو مطلقاً جب تک ابتدا سے واقف کی اجازت ثابت نہ ہو اور کسی نے اپنی ملک سے بھر وائے ہوں تو بے اس کی اجازت قدیم خواہ جدید کے گھروں میں ان کا پانی اگرچہ طہارت ہی کیلئے لیجانا روا نہیں طہارت ہو جائیگی مگر گناہ ہوگا اجازت واقف و مالک کی وہی تفصیل ہے جو آب سبیل میں گزری والدلیل الدلیل (اور دلیل بھی وہی ہے جو پہلے گزر چکی ہے) جاڑوں میں کہ سقائے گرم کئے جاتے ہیں بعض لوگ گھروں میں پانی لے جاتے ہیں اس میں بہت احتیاط چاہئے کہ غالباً بے صورت جواز واقع ہوتا ہے۔

[بایاں کالم - عربی عبارت] امافی الخانیة ثم الهندية من كتاب الشرب يجوز ان يحمل ماء السقاية الى بيته ليشرب اهله اهـ فهو في المعد للشرب بدليل اخره وصدره اختلفوا فی التوضی بماء السقاية جوز بعضهم وقال بعضهم ان كان الماء كثيرا يجوز والا فلا وكذا كل ماء اعد للشرب حتى قالوا فی الحياض التي اعد للشرب لايجوز فيه التوضی ويمنع منه وهو الصحيح ويجوز ان يحمل الخ بناء على ان الذی (۳) يعد للشرب لايمنع منه مخدرات الحجال وبالجملة لاشك ان المبنی العرف فان (۴) علمنا ان المسبل للشرب خص به الواردين ولا يرضی بحمله الى البيوت لم يجز ذلك قطعاً بل لو علم خصوص في المارة لم يجز لغيرهم من الواردين كما يفعله بعض الجهلة فی عشرة المحرم بسبل

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] پھر خانیہ اور ہندیہ کے کتاب الشرب میں ہے کہ اگر کوئی شخص سقایہ کا پانی اپنے گھر بیوی بچوں کو پلانے کیلئے لے جائے تو جائز ہے اھ تو اس سے

مراد وہ پانی ہے جو خاص پینے ہی کیلئے رکھا گیا ہو ، عبارت کا اوّل وآخر یہی بتاتا ہے۔ اس میں فقہاء کا اختلاف ہے کہ "سقایہ" کے پانی سے وضوء جائز ہے یا نہیں ، بعض نے جواز کا قول کیا ، اور بعض نے کہا کہ اگر پانی زائد ہو تو جائز ہے ورنہ نہیں۔ اور یہی حکم ہر اُس پانی کیلئے ہے جو پینے کیلئے رکھا گیا ہو ، یہاں تک فقہاء نے اُس حوض کی بابت بھی یہی فرمایا ہے جو پینے کیلئے بنایا گیا ہو کہ اُس میں وضوء جائز نہیں ، اور اگر کوئی کرے تو اس کو منع کیا جائیگا ، اور یہی صحیح ہے۔ اور یہ جائز ہے کہ وہ پانی گھر لے جائے الخ اس کی بنیاد یہ ہے کہ جو پانی پینے کیلئے رکھا جائے اس سے پردہ نشینوں کو محروم نہ رکھا جائے گا۔ خلاصہ یہ کہ اصل دار ومدار عُرف پر ہے۔ اگر ہمیں یہ معلوم ہو جائے کہ سبیل کا پانی پینے کیلئے ہے اور وہی لوگ اس سے [مستفید ہوں جو وہاں آئیں] اور وہ [پانی گھر لے جانے پر] راضی نہیں ہے [تو وہ] بالکل جائز نہیں ہوگا۔ بلکہ اگر ہمیں یہ معلوم ہو کہ خصوص فی المارۃ (صرف مسافروں کیلئے) ہے تو غیر المارۃ [دیگر واردین] کیلئے جائز نہیں جیسا کہ بعض جاہل عشرہ محرم میں سبیل کے ساتھ کرتے ہیں۔

---

۱ ہندیہ الباب الاول من کتاب الشرب پشاور ۵/ ۳۹۱

Fatawa Razawiya Volume II

Water and drinks for those with the concocted shrine is an invented innovation (bid'ah muhdathah) that they call 'Ta'ziya.' So, it is not permissible for others to drink it. Even if they intended it for those with a specific shrine, it is not allowed for the people of that shrine or others. And Allah Almighty knows best. No doubt, as stated in the miscellaneous chapters of 'Al-Bazzaziyyah' on dislike (karahiyah): carrying water from a public water supply (siqayah) to one's family is permissible if carrying it is authorized, otherwise not. End. This is exactly what I have established, and praise be to Allah. | Those who arrive at it can benefit from it. Such water cannot be taken home. Rather, if it's specifically for those passing by, then it won't be permissible for other newcomers to use. For example, some ignorant people set up water or milk stalls (sabeel) during the first ten days of Muharram specifically for those passing with a Ta'ziya. This is an invented innovation. Using it is not permissible for others; in fact, if it's meant for one Ta'ziya, it's not permissible for participants of another Ta'ziya. Allah Almighty knows best. It's in Bazzaziyyah (Miscellaneous Dislikes): Taking water from a public fountain to family is allowed if permitted, otherwise not. End. And this is exactly what I have stated, praise be to Allah. (T)

(31) While traveling, if one has water for purification but if they use it for purification now or later, they themselves or another Muslim or an animal—even a dog that's permissible to keep—will remain thirsty, or they won't have water for kneading dough or for cleaning enough impurity that prevents prayer, then in these cases, purification with that water, even if valid, is prohibited. In fact, if there's a dominant fear of death for oneself or another Muslim, it's strictly forbidden (haram). In all these cases, one should perform tayammum (dry ablution) and keep the water. Yes, if for the thirst of animals, one can keep water for wudu (ablution) or ghusl (ritual bath) in a vessel, then purification is obligatory and tayammum is void. I say: Similarly, if purification is possible such that the water doesn't become 'used' (must'amal), the method of which (performing wudu over a spout etc.) we explained in 'Rahb al-Sahah', then none of the mentioned excuses will be a valid excuse for tayammum, and purification will be obligatory, as is not hidden. It is in Bahr al-Ra'iq and Durr al-Mukhtar:

And the phrasing is for 'Al-Durr' (Whoever is unable to use water due to fear of an enemy or thirst), even if for their dog or a fellow traveler, currently or in the future, and similarly for kneading dough or removing impurity. Ibn al-Kamal qualified 'thirst'... | The text is from 'Al-Durr' (A person who is unable to use water due to fear

of an enemy or thirst) whether for their dog or a companion in the caravan, now or in the future, and similarly for kneading dough or for removing impurity, and...

---

1. Al-Bazzaziyyah al-Hindiyyah, Ninth [chapter] in Miscellaneous Dislikes, Peshawar 6/473. Page 491 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द II

गढ़े हुए मज़ार (ताज़िया) वालों के लिए पानी और शरबत एक ईजाद की गई बिदअत (नया काम) है जिसे वे 'ताज़िया' कहते हैं। अतः दूसरों के लिए इसे पीना जायज़ नहीं है। अगर उन्होंने इसे किसी ख़ास मज़ार वाले के लिए मुक़र्रर किया है तब भी उस मज़ार वाले या दूसरों के लिए जायज़ नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। बज़ाज़िया के मुतफ़र्रिक़ात (विविध) मकरूहात में है: सार्वजनिक प्याऊ (सक़ाया) से घर वालों के लिए पानी ले जाना अगर इजाज़त हो तो जायज़ है वरना नहीं। अंत। यही मेरा मौक़िफ़ है और अल्लाह का शुक्र है। | जो लोग वहाँ पहुँचें वे उससे लाभ उठा सकें। ऐसे पानी को घर नहीं ले जाया जा सकता, बल्कि अगर वह विशेष रूप से वहाँ से गुज़रने वालों के लिए है, तो दूसरे आने वालों के लिए उसका उपयोग जायज़ नहीं होगा। चुनाँचे कुछ जाहिल मुहर्रम के पहले दस दिनों में ताज़िया के साथ गुज़रने वालों के लिए विशेष रूप से पानी या दूध की सबील लगाते हैं, यह बिदअत-ए-मुहद्सा है। दूसरों के लिए इसका उपयोग जायज़ नहीं है, बल्कि अगर एक ताज़िया के लिए जायज़ है तो दूसरे ताज़िया के शरीकों के लिए उसका उपयोग जायज़ नहीं है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। बज़ाज़िया में (मकरूहात के विविध अध्यायों में) है (त): प्याऊ (सक़ाया) का पानी घर वालों के लिए ले जाना अगर उसकी अनुमति हो तो जायज़ है वरना नहीं। अंत। और यह हूबहू वही है जो मैंने कहा है, अल्लाह का शुक्र है। (त)

(31) सफ़र में पाकी (वज़ू/ग़ुस्ल) के लिए पानी पास है लेकिन अगर उससे पाकी हासिल की जाए तो अभी या बाद में वह ख़ुद या कोई और मुसलमान या कोई जानवर—चाहे वह कुत्ता ही क्यों न हो जिसे पालना जायज़ है—प्यासा रह जाएगा, या आटा गूँधने या उतनी नजासत साफ़ करने के लिए पानी नहीं मिलेगा जिससे नमाज़ न रुकती हो, तो इन सूरतों में उस पानी से पाकी हासिल करना, हालाँकि पाकी हो जाएगी, मना है। बल्कि अगर अपनी या दूसरे मुसलमान की मौत का ख़ौफ़ ग़ालिब हो तो सख़्त हराम है। इन सब सूरतों में तयम्मुम करे और पानी को महफ़ूज़ रखे। हाँ, जानवरों की प्यास के लिए अगर वज़ू या ग़ुस्ल का पानी किसी बर्तन में रख सकता है तो पाकी फ़र्ज़ है और तयम्मुम बातिल (अमान्य)। मैं कहता हूँ: इसी तरह अगर पाकी इस तरह मुमकिन हो कि पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) न होने पाए, जिसका तरीक़ा (परनाले वग़ैरह में वज़ू करने का) हमने 'रहब अल-साहा' में बयान किया, तो ज़िक्र किए गए उज़्रों (बहानों) में से कोई भी तयम्मुम के लिए जायज़ उज़्र नहीं होगा और पाकी फ़र्ज़ होगी जैसा कि पोशीदा नहीं है। 'बहर अल-राइक़' और 'दुर-ए-मुख़्तार' में है:

इबारत (टेक्स्ट) 'अल-दुर' की है: (जो व्यक्ति दुश्मन के डर या प्यास की वजह से पानी के उपयोग से लाचार हो) चाहे अपने कुत्ते या क़ाफ़िले के साथी के लिए हो, अभी या भविष्य में, और इसी तरह आटा गूँधने के लिए या नजासत दूर करने के लिए, और इब्न अल-कमाल ने प्यास को सीमित किया... | इबारत 'दुर' की है: (जो व्यक्ति दुश्मन के डर या प्यास की वजह से पानी के उपयोग से लाचार हो) चाहे अपने कुत्ते या क़ाफ़िले के साथी के लिए हो, अभी या भविष्य में, और इसी तरह आटा गूँधने के लिए या नजासत दूर करने के लिए, और...

---

1. बज़ाज़िया अल-हिन्दिया, मकरूहात के मुतफ़र्रिक़ात में नौवां [अध्याय], पेशावर 6/473. पृष्ठ 491/711

الماء والشربة لمن مع الضریح المختلق بدعة محدثة یسمونها تعزیة فلا یجوز شربه لغیرهم وان جعلوه لمن مع الضریح الفلانی لم یجز لاهل ضریح وغیره واللہ تعالٰی اعلم لاجرم ان قال فی متفرقات کراهیة البزازیة حمل ماء السقایة الی اهله ان مأذونا للحمل یجوز والا اھ وھذا عین ما قررت وللہ الحمد۔ |

استفادہ کر سکیں گے جو اس پر وارد ہوں تو ایسے پانی کو گھر نہیں لے جایا جا سکتا ہے بلکہ اگر بطورِ خاص گزرنے والوں کیلئے ہے تو دوسرے وارد ہونے والوں کو اُس کا استعمال جائز نہ ہوگا، چنانچہ بعض جاہل محرّم کے عشرہ میں پانی یا دُودھ کی سبیل تعزیہ کے ساتھ گزرنے والوں کے لئے بطورِ خاص لگاتے ہیں، یہ بدعت محدثہ ہے، اس کا استعمال دوسروں کو جائز نہیں بلکہ اگر ایک تعزیہ کے لئے جائز ہے تو دوسرے تعزیہ کے شرکاء کو اس کا استعمال جائز نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔ بزازیہ میں ہے (متفرقات کراہیہ میں) (ت) سقایہ کا پانی گھر والوں کیلئے لے جانا اگر اُس کی اجازت ہو تو جائز ہے ورنہ نہیں اھ اور یہ بعینہ وہی ہے جو میں نے کہا ہے وللہ الحمد (ت)

(۳۱) سفر میں طہارت کو پانی پاس ہے مگر اس سے طہارت کرتا ہے تو اب یا بعد کو یہ یا اور کوئی مسلمان یا اُس جانور اگرچہ وہ کُتا جس کا پالنا جائز ہے پیاسا رہ جائے گا یا آٹا گوندھنے یا اتنی نجاست پاک کرنے کو جس سے مانع نماز نہ رہے پانی نہ ملے گا تو ان صورتوں میں اُس پانی سے طہارت اگرچہ ہو جائے گی منع ہے بلکہ اپنے یا دوسرے مسلمان کے ہلاک کا خوف غالب ہو تو سخت حرام ہے ان سب صورتوں میں تیمم کرے اور پانی محفوظ رکھے ہاں جانوروں کی پیاس کیلئے اگر وضو یا غسل کا پانی کسی برتن میں رکھ سکتا ہے تو طہارت فرض ہے اور تیمم باطل۔ اقول: یوں ہی اگر طہارت اس طرح ممکن ہو کہ پانی مستعمل نہ ہونے پائے جس کا طریقہ پرنالے

وغیرہ میں وضو کرنے کا ہم نے رحب الساحہ میں بیان کیا تو اعذار مذکورہ سے کوئی عذر مبیح تیمم نہ ہوگا اور طہارت فرض ہوگی کمالا یخفی۔ بحر الرائق و در مختار میں ہے:

والنظم للدر (من عجز عن استعمال الماء لخوف عدو او عطش) ولو لکلبه اورفیق القافلة حالاً او مآلاً وکذا لعجین اوازالة نجس وقید ابن الکمال عطش | عبارت دُرکی ہے (جو شخص بوجہ خوف دشمن یا پیاس پانی کے استعمال سے عاجز ہو) خواہ اپنے کتے یا رفیقِ قافلہ کیلئے، اب یا آئندہ، اور اسی طرح آٹا گوندھنے کیلئے یا نجاست دور کرنے کیلئے، اور

---

1 بزازیہ الہندیۃ التاسع فی المتفرقات من الکراہیتہ پشاور ۶ / ۴۷۳ Page 491 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Second

[Regarding providing water to] animals due to the inability to preserve wash-water for lack of a vessel (Tayammum) — Ibn al-Kamal specified this condition: that his animals will remain thirsty because, due to the lack of a vessel, he cannot keep the wash-water (so in such cases, he should perform Tayammum). (T)

It is in Radd al-Muhtar: Regarding his statement "even for his dog": In *Al-Bahr* and *Al-Nahr*, it is restricted to dogs kept for guarding livestock or for hunting. The implication is that if it is not so, this ruling would not apply. It is apparent that a dog kept for guarding the house is like them. His statement "or a travel companion": Whether it is his close companion or another member of the caravan (*Bahr*). The danger of a companion's animal remaining thirsty is like the danger of his own animal remaining thirsty (*Nooh*). His statement "immediately or later": is an adverb for thirst, or it is about the companion by way of dispute as 'H' said, meaning a current companion or one who will appear later. Sayyidi Abdul Ghani said: Whoever has extra water on the route of Hajj pilgrims etc., and there is a poor person in the caravan in need of water, it is permissible for him to perform Tayammum. Rather, it can be said that if the pilgrims truly need that water for their lives...

Regarding his statement "and likewise for dough": If water is needed for making dough, [Tayammum is allowed], but if needed for making broth, one does not perform Tayammum because the need for cooking is less than the need for thirst (*Bahr*). Regarding his statement "or to remove impurity": i.e., more than the amount of a dirham. In *Al-Faydh*: If he has enough water with him to wash part of the impurity.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/41. Page 492 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

बर्तनों की कमी के कारण धुलन (वॉश-वाटर) को सुरक्षित न रख पाने की वजह से जानवरों को पानी पिलाना (तयम्मुम) — इब्न अल-कमाल ने यह शर्त लगाई है कि उसके जानवर प्यासे रह जाएंगे क्योंकि बर्तन न होने के कारण वह धुलन को सुरक्षित नहीं रख सकता (तो ऐसी स्थितियों में वह तयम्मुम करे)। (त)

रद्दुल् मुहतार में है: उनके कथन "भले ही अपने कुत्ते के लिए" के संबंध में: 'बहर' और 'नहर' में इसे उन कुत्तों तक सीमित किया गया है जो मवेशियों की सुरक्षा या शिकार के लिए रखे गए हों। इसका तात्पर्य यह है कि यदि ऐसा न हो तो यह हुक्म लागू नहीं होगा। ज़ाहिर है कि घर की रखवाली के लिए पाला गया कुत्ता भी उन्हीं की तरह है। उनके कथन "या काफ़िले के साथी के लिए" के संबंध में: चाहे वह उसका अपना करीबी साथी हो या काफ़िले का कोई अन्य सदस्य ('बहर')। साथी की सवारी के प्यासा रह जाने का ख़तरा वैसा ही है जैसा अपनी सवारी के प्यासा रह जाने का ख़तरा है ('नुह')। उनके कथन "वर्तमान में या भविष्य में" के संबंध में: यह प्यास के लिए विशेषण है, या यह साथी के बारे में विवाद के तौर पर है जैसा कि 'ह' ने फरमाया, यानी वर्तमान साथी या जो बाद में आएगा। सीदी अब्दुल ग़नी ने फरमाया: जिसके पास हज यात्रियों आदि के रास्ते में अतिरिक्त पानी हो, और काफ़िले में कोई गरीब पानी का ज़रूरतमंद हो, तो उसे तयम्मुम करना जायज़ है। बल्कि यह कहा जा सकता है कि अगर उस पानी की ज़रूरत वास्तव में काफ़िले वालों को हो तो उनकी जानें...

उनके कथन "और इसी तरह आटे के लिए" के संबंध में: यदि आटा गूंथने के लिए पानी की ज़रूरत हो [तो तयम्मुम की अनुमति है], लेकिन शोरबा बनाने के लिए तयम्मुम नहीं किया जाता क्योंकि खाना पकाने की ज़रूरत प्यास की ज़रूरत से कम है ('बहर')। उनके कथन "या गंदगी हटाने के लिए" के संबंध में: यानी एक दिरहम की मात्रा से अधिक। 'अल-फ़ैज़' में है: यदि उसके पास इतना पानी हो कि वह गंदगी का कुछ हिस्सा धो सके।

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली, 1/41। पृष्ठ 492 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

دوابہ بتعذر حفظ الغسالۃ لعدم الاناء (تیمم) ۔ ابن الکمال نے یہ قید لگائی کہ اس کے جانور پیاسے رہ جائیں گے کہ برتن نہ ہونے کی وجہ سے وہ دھوون کو محفوظ نہیں رکھ سکتا ہے (تو ایسی صورتوں میں وہ تیمم کرے) ۔ (ت)

ردالمختار میں ہے: قولہ ولو لکلبہ قیدہ فی البحر والنہر بکلب الماشیۃ والصید ومفادہ انہ لو لم کذلک لا یعطی ھذا الحکم والظاھر ان کلب الحراسۃ للمنزل مثلھما ط قولہ اورفیق القافلۃ سواء کان رفیقہ المخالط لہ اواخر من اھل القافلۃ بحر و عطش دابۃ رفیقہ کعطش دابتہ نوح قولہ حالا اومآلا ظرف لعطش اولہ ولرفیق علی التنازع کما قال ح ای الرفیق فی الحال او من سیحدث لہ قال سیدی عبدالغنی فمن عندہ ماء کثیر فی طریق الحاج او غیرہ وفی الرکب من یحتاج الیہ من الفقراء یجوز لہ التیمم بل ربما یقال اذا تحقق احتیاجھم یجب بذلہ الیھم لاحیاء مھجھم قولہ وکذا لعجین فلو احتاج الیہ لاتخاذ المرقۃ لا یتیمم لان حاجۃ الطبخ دون حاجۃ العطش بحر قولہ اوازالۃ نجس ای اکثر من قدرا لدرھم وفی الفیض لومعہ ما یغسل بعض النجاسۃ

اس کا قول اور اگرچہ اپنے کتے کیلئے، اس کتے کو بحر و نہر میں، اس کتے سے مقید کیا گیا ہے جو مویشی کی حفاظت یا شکار کیلئے رکھا گیا ہو، اس کا مطلب یہ ہوا کہ اگر ایسا نہ ہو تو اس کا یہ حکم نہ ہوگا اور ظاہر یہ ہے کہ گھر کی حفاظت کیلئے جو کتا پالا جائے اس کا بھی یہی حکم ہے ط، اس کا قول یا رفیق قافلہ کیلئے عام ازیں کہ وہ اس کا اپنا شریک رفیق ہو یا دوسرا اہل قافلہ سے (بحر) اور اس کے ساتھی کی سواری کے پیاسا رہ جانے کا خطرہ ایسا ہی ہے جیسا کہ خود اس کی اپنی سواری کے پیاسا رہ جانے کا خطرہ ہے (نوح) اس کا قول حالاً اومآلاً، عطش کا ظرف ہے یا اس کا اور رفیق کا برسبیل تنازع ہے جیسا کہ "ح" نے فرمایا یعنی رفیق فی الحال یا من

سیحدث لہ، عبدالغنی نے فرمایا جس کے پاس حاجیوں وغیرہ کے راستے میں زائد پانی ہو، اور قافلہ میں کوئی فقیر پانی کا ضرورت مند ہو، تو اس کو تیمم جائز ہے، بلکہ کہا جاسکتا ہے کہ اگر اس پانی کی ضرورت واقعی اہل قافلہ کو ہو تو ان کی زندگیاں

1 الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی 1/ 41 Page 492 of 711

Fatawa Razawiya - Volume II

It is not necessary for him. I say: It should be restricted to the case when it does not reach less than the amount of a dirham. So, if there is impurity on both sides of his garment, and if washing one side leaves what is on the other side less than the amount of a dirham, it is necessary for him [to wash it] (1).

I say: There are several discussions here: First: A dog kept for guarding the house is equal to a dog for guarding livestock, or even better, and it is like a hunting dog if the need for it is for eating, for property is equal to life, otherwise it is even more so. In any case, this is proven from the underlying meaning of both, so this (1) is not a place for seeking clarification. Therefore, I have expressed it as a dog whose keeping is permissible, and in the Sahih Hadith: "except for a hunting dog, or a field dog, or a livestock dog" (2). Second: The condition of "caravan companion" is incidental because usually two or more caravans travel together and a person from one is not considered a companion of someone in the other, and the ruling is not specific to those in his caravan, for saving a Muslim's life is an absolute obligation, so for that reason I changed it and expressed it with 'a Muslim'.

[Right Column Urdu Translation]: Saving water is mandatory. His saying "and likewise the dough", so if someone needs water to make soup, Tayammum (dry ablution) is not permissible because the need for cooking food is less than thirst, (Bahr). His saying "removal of impurity", this refers to impurity that is more than one dirham, and in (Faidh) it is mentioned, if this person has enough water that he can wash some of the impurity, then washing is not mandatory. I say: This condition should be added that this impurity is not less than a dirham, so if there is impurity on both sides of his cloth, and by washing one side, it remains on the other side, but remains less than a dirham, then washing it is mandatory. (T)

I say here there are several discussions: First Discussion: A dog kept for home protection is equal to a dog for herd protection, in fact, it is superior to it. Similarly, it is like a hunting dog when there is a need to hunt for food because wealth is on par with life, otherwise it is superior. Regardless, this is established by the literal meaning of both, and this is not a place for seeking clarification. That is why I have said, the dog whose keeping is permissible, and it is in the Sahih Hadith: "except for hunting, farming, or animal guarding dogs."

Second Discussion: The condition of "caravan companion" is coincidental because generally two or more caravans travel together and a person from one caravan is not

considered a companion of the other, and this ruling is not specific to his own caravan.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Al-Babi, Egypt, 1/173
2. Sahih Muslim, Chapter on the command to kill dogs, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/21

फतावा रज़विया - जिल्द दो

उसके लिए अनिवार्य नहीं है। मैं कहता हूँ: इसे उस स्थिति तक सीमित रखना चाहिए जब यह दिरहम की मात्रा से कम न हो। यदि उसके कपड़े के दोनों सिरों पर अशुद्धि (नजासत) है, और एक तरफ धोने से दूसरी तरफ दिरहम की मात्रा से कम शेष रह जाती है, तो उसे धोना आवश्यक है।

मैं कहता हूँ: यहाँ कई चर्चाएँ हैं: पहली: घर की सुरक्षा के लिए पाला गया कुत्ता मवेशियों की सुरक्षा करने वाले कुत्ते के बराबर है, बल्कि उससे श्रेष्ठ है, और यह शिकारी कुत्ते के समान है यदि इसकी आवश्यकता भोजन के लिए है, क्योंकि धन जीवन के बराबर है, अन्यथा यह और भी श्रेष्ठ है। किसी भी मामले में, यह दोनों के निहित अर्थ से सिद्ध है, इसलिए यह (1) स्पष्टीकरण माँगने का स्थान नहीं है। इसलिए, मैंने इसे ऐसे कुत्ते के रूप में व्यक्त किया है जिसका पालन अनुमेय है, और सहीह हदीस में है: "शिकारी कुत्ते, या खेत के कुत्ते, या मवेशी कुत्ते को छोड़कर" (2)। दूसरा: "काफिले के साथी" की शर्त आकस्मिक है क्योंकि आमतौर पर दो या दो से अधिक काफिले एक साथ यात्रा करते हैं और एक काफिले का व्यक्ति दूसरे के व्यक्ति का साथी नहीं माना जाता है, और यह नियम केवल उसके अपने काफिले के लोगों के लिए विशिष्ट नहीं है, क्योंकि एक मुसलमान की जान बचाना एक पूर्ण दायित्व है, इसलिए मैंने इसे बदल दिया और 'मुसलमान' के साथ व्यक्त किया।

[दायां कॉलम उर्दू अनुवाद]: पानी बचाना अनिवार्य है। उसका कथन "और इसी तरह आटा", इसलिए यदि किसी को शोरबा बनाने के लिए पानी की आवश्यकता है, तो तयम्मुम (सूखी शुद्धि) जायज़ नहीं है क्योंकि भोजन पकाने की आवश्यकता प्यास से कम है, (बह्र)। उसका कथन "अशुद्धि को हटाना", यह उस अशुद्धि को संदर्भित करता है जो एक दिरहम से अधिक है, और (फैज़) में उल्लेख है, यदि इस व्यक्ति के पास पर्याप्त पानी है कि वह कुछ अशुद्धि को धो सके तो धोना अनिवार्य नहीं है। मैं कहता हूँ: यह शर्त जोड़ी जानी चाहिए कि यह अशुद्धि दिरहम से कम न हो, इसलिए यदि उसके कपड़े के दोनों तरफ अशुद्धि है, और एक तरफ धोने से दूसरी तरफ रह जाती है, लेकिन दिरहम से कम रहती है, तो उसे धोना अनिवार्य है। (त)

मैं कहता हूँ यहाँ कई चर्चाएँ हैं: पहली चर्चा: घर की सुरक्षा के लिए पाला गया कुत्ता झुंड की सुरक्षा वाले कुत्ते के बराबर है, वास्तव में, उससे श्रेष्ठ है। इसी तरह, यह एक शिकारी कुत्ते की तरह है जब भोजन के लिए शिकार करने की आवश्यकता होती है क्योंकि धन जीवन के बराबर है, अन्यथा यह श्रेष्ठ है। चाहे जो भी हो, यह दोनों के शाब्दिक अर्थ से स्थापित है, और यह स्पष्टीकरण माँगने का स्थान

नहीं है। इसलिए मैंने कहा है, वह कुत्ता जिसका पालन जायज़ है, और यह सहीह हदीस में है: "शिकार, खेती या पशु सुरक्षा कुत्तों को छोड़कर।"

दूसरी चर्चा: "काफिले के साथी" की शर्त इत्तेफाकी है क्योंकि आम तौर पर दो या दो से अधिक काफिले चलते हैं और एक काफिले का आदमी दूसरे का साथी नहीं गिना जाता है, और यह हुक्म उसके काफिले के साथ खास नहीं है।

---

1. रद्दुल मुहतार, बाबुत तयम्मुम, अल-बाबी, मिस्र, 1/173
2. सहीह मुस्लिम, कुत्तों को मारने के आदेश का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/21

لا یلزمہ اھ قلت: وینبغی تقییدہ بما اذا لم تبلغ اقل من قدر الدرہم فاذا کان فی طرفی ثوبہ نجاسۃ وکان اذا غسل احد الطرفین بقی مافی الطرف الآخر اقل من قدر الدرہم یلزمہ اھ اقول: ھھنا ابحاث الاول کلب حراسۃ المنزل مساو لکلب الماشیۃ بل اولی ولکلب الصیدان کان الحاجۃ الیہ للاکل فان المال شقیق النفس والافاولی وعلی کل ھو ثابت منھما بالفحوی فلیس (۱) ھذا محل الاستظھار ولذا عبرت بکلب یحل اقتناؤہ وفی الحدیث الصحیح الا کلب صید اوزوع او ماشیۃ[2] الثانی قید (۲) رفیق القافلۃ وفاقی فربما تساٰیر قافلتان اواکثر ولا یعد من فی احدھما رفیق من فی الاخری والحکم لا یختص بمن فی قافلتہ فان احیاء مھجۃ المسلم فریضۃ علی الاطلاق فلذا غیرتہ وبمسلم عبرتہ۔

بچانے کیلئے پانی صرف کرنا واجب ہے قولہ وکذا العجین، تو اگر کسی کو شوربہ بنانے کیلئے پانی کی ضرورت ہو تو تیمم جائز نہ ہوگا کیونکہ کھانا پکانے میں جو ضرورت ہے وہ پیاس سے کم ہے، بحر، قولہ ازالۃ نجس، اس سے مراد نجاست ہے جو ایک درہم سے زاید ہو، اور فیض میں ہے، اگر اس شخص کے پاس اتنا پانی موجود ہو کہ کچھ نجاست کو دھولے گا تو دھونا لازم نہیں اھ میں کہتا ہوں اس میں یہ قید لگانی چاہئے کہ یہ نجاست درہم سے کم نہ ہو، تو اگر اس کے کپڑے کے دونوں جانب نجاست ہو، اور ایک طرف دھونے سے دوسری طرف باقی رہتی ہو، مگر ایک درہم سے کم رہتی ہے تو اس کا دھونا لازم ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں یہاں کئی بحثیں ہیں: پہلی بحث: گھر کی حفاظت کیلئے جو کتا پالا گیا وہ ریوڑ کی حفاظت کے کتے کے برابر بلکہ اس سے اولٰی ہے، اسی طرح شکار کے کتے کی مانند ہے، جبکہ شکار کھانے کی ضرورت ہو کیونکہ مال جان کا ہم پلہ ہے ورنہ تو وہ اولٰی ہے، اور بہرحال یہ چیز دونوں کے منطوق سے ثابت ہے، اور یہ محل استظہار نہیں اور اس لئے میں نے کہا ہے، وہ کتا جس کا پالنا جائز ہو، اور حدیث صحیح میں

ہے مگر شکار، کھیتی یا جانوروں کا کتا۔ دوسری بحث: "رفیق قافلہ" کی قید اتفاقی ہے کیونکہ عام طور پر دو یا دو سے زیادہ قافلے چلتے ہیں اور ایک قافلے کا آدمی دوسرے کا رفیق شمار نہیں ہوتا، اور یہ حکم اس کے ساتھ خاص نہیں جو اس کے قافلہ

---

1 ردالمحتار باب التیمم البابی مصر ۱/ ۱۷۳ 2 صحیح للمسلم باب الامر بقتل الکلاب قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۱

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say: (1) It appears that the Dhimmi (non-Muslim citizen) is included in this ruling, for they have what we have (rights) and are bound by what we are bound by (obligations). Yes, a Harbi (enemy at war) has no sanctity for his life; rather, we are commanded to eliminate him. So how can it be obligatory for us to strive to keep him alive? This is why the jurists explicitly stated (2) that if a dog and a Harbi were found in a wilderness, both dying of thirst, and there was only enough water for one of them, one should give drink to the dog and leave the Harbi to die. (3) Among the Harbis is every man who claims to be a Muslim but denies any of the essentials of the religion, because an apostate is a Harbi as they have stated, and they are apostates as we established in the treatise 'Al-Maqalah al-Musfirah' (1299 AH) regarding the ruling on heretical innovations that entail disbelief.

Third Point: Performing Tayammum (dry ablution) due to the thirst of a companion whose arrival is expected. It is necessary to restrict this to when joining that companion's caravan is certain and that they have no water. Otherwise, Tayammum is not permissible based on mere conjecture.

Fourth Point: (4) Taking the meaning of necessity as something that is physically present at the moment is not correct, nor is spending water dependent on it. Do you not see the statement of the jurists "for fear of thirst"? As for its mental establishment, if certainty is intended by it, then it is so. (5) For predominant opinion (zann al-ghalib) is treated as certainty in jurisprudence, or what encompasses it. So there is no room for further progression, as the ruling revolves around it. Bare conjecture is like illusion.

Fifth Point: (6) The need for cooking is not less than the need for thirst if eating is not possible without it.

फतावा रज़विया, जिल्द दो

मैं कहता हूँ: (1) प्रत्यक्ष रूप से इसमें 'ज़िम्मी' (गैर-मुस्लिम नागरिक) भी शामिल है, क्योंकि जो अधिकार हमारे लिए हैं वही ज़िम्मियों के लिए भी हैं, और जो कर्तव्य हम पर हैं वही ज़िम्मियों पर भी हैं। हाँ, 'हरबी' (शत्रु) के प्राणों का कोई सम्मान नहीं है, बल्कि हमें उसे समाप्त कर देने का आदेश है, तो हम पर उसके जीवन को बचाने का प्रयास कैसे अनिवार्य होगा? इसीलिए फ़क़ीहों ने यह स्पष्ट किया है (2) कि यदि किसी जंगल में एक कुत्ता और एक हरबी मिलें और दोनों प्यास से मर रहे हों और उसके पास केवल इतना ही पानी हो कि उनमें से एक ही बच सके, तो कुत्ते को पानी पिला दे और हरबी को मरने के लिए छोड़ दे। (3) हरबियों में वह हर व्यक्ति शामिल है जो इस्लाम का दावा करता है लेकिन दीन की आवश्यक बातों (ज़रूरियात-ए-दीन) में से किसी का खंडन करता है, क्योंकि फ़क़ीहों के स्पष्टीकरण के अनुसार मुर्तद (धर्मत्यागी) हरबी है, और वे सब मुर्तद हैं जैसा कि हमने 'अल-मक़ाला अल-मुस्फिरा' (1299 हिजरी) में कुफ़्र की बिदअतों के हुक्म के बारे में स्थापित किया है।

तीसरी बहस: किसी ऐसे मित्र की प्यास के लिए तयम्मुम करना जिससे मिलने की संभावना हो। इसमें यह शर्त लगाना आवश्यक है कि उस मित्र के काफिले के साथ मिलना निश्चित हो और उसके पास पानी न हो, अन्यथा केवल भ्रम के आधार पर तयम्मुम जायज़ नहीं है।

चौथी बहस: (4) आवश्यकता का यह अर्थ लेना कि वह उस समय प्रत्यक्ष रूप से मौजूद हो, सही नहीं है, और न ही उस पर पानी का खर्च करना निर्भर है। क्या आप फ़क़ीहों का कथन नहीं देखते "प्यास के डर से" (लखौफ़-ए-अतश)? और मानसिक रूप से इसका सिद्ध होना, यदि इससे निश्चितता (यकीन) अभिप्रेत है तो ऐसा ही है। (5) क्योंकि फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) में प्रबल धारणा (ज़न्न-ए-ग़ालिब) का वही आदेश है जो निश्चितता का है, या जो उसे समाहित करता है। इसलिए आगे बढ़ने की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि आदेश उसी पर घूमता है। मात्र संदेह भ्रम के समान है।

पाँचवीं बहस: (6) खाना पकाने की आवश्यकता प्यास की आवश्यकता से कम नहीं है यदि पकाने के बिना खाना संभव न हो।

पेज 494 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: (۱) ویدخل فی الحکم الذمی فیما یظھر فان لھم مالنا وعلیھم ماعلینا نعم الحربی لا حرمۃ لروحہ بل امرنا بافنائہ فکیف یلزمنا السعی فی ابقائہ ولذا صرحوا (۲) ان لو وجد فی بریۃ کلباً وحربیاً یموتان عطشا ومعہ ماء یکفی لاحدھما یسقی الکلب ویخلی الحربی یموت ومن (۳) الحربیین کل رجل یدعی الاسلام وینکر شیئاً من ضروریات الدین لان المرتد حربی کما نصوا علیہ وھم مرتدون کما حققناہ فی المقالۃ المسفرۃ ۱۲۹۹ ھ عن حکم البدعۃ المکفرۃ۔

میں کہتا ہوں، بظاہر اس میں ذمی بھی شامل ہے، کیونکہ جو حقوق ہمارے لئے ہیں وہی ذمیوں کیلئے بھی ہیں، اور جو فرائض ہم پر ہیں وہ ذمیوں پر بھی ہیں، ہاں حربی کی جان کی کوئی حرمت نہیں ہے، بلکہ ہمیں اس کے فنا کردینے کا حکم ہے، تو ہم پر اس کی زندگی بچانے کی سعی کیونکر لازم ہوگی؟ اس لئے فقہاء نے یہ تصریح کی ہے کہ اگر کسی جنگل میں ایک کتا اور ایک حربی ملے اور دونوں پیاس سے مر رہے ہوں اور اس کے پاس صرف اتنا پانی ہو کہ ایک بچ سکتا ہو تو کتے کو پلا دے اور حربی کو مرنے کیلئے چھوڑ دے، اور جو شخص ضروریات دین میں سے کسی کا انکار کرتا ہو وہ حربی ہے، کیونکہ فقہاء کی تصریح کے مطابق مرتد حربی ہے، اور یہ سب حربی ہیں ہم نے اس کی تصریح المقالۃ المسفرۃ عن حکم البدعۃ المکفرۃ میں کردی ہے۔

الثالث التیمم لعطش رفیق سیحدث یجب تقییدہ بما اذا تیقن لحوقہ وانہ لاءماء معہ والا فلا یجوز التیمم للتوھّم تیسری بحث: کسی دوست کی پیاس کیلئے تیمم کرنا جس کی ملاقات متوقع ہو، اس میں یہ قید لگانا ضروری ہے کہ اس دوست کے قافلے کے ساتھ ملنا یقینی ہو، اور اس کے پاس پانی نہ ہو، ورنہ محض وہم کی بنیاد پر تیمم جائز نہیں۔

الرابع (۴) تحقق الاحتياج بمعنى ثبوته عيناً لا يتوقف عليه وجوب البذل الا ترى الى قولهم لخوف عطش وبمعنى ثبوته ذهناً ان اريد به اليقين فكذا (۵) فان الظن الغالب ملتحق به فى الفقه او ما يشمله فلا محل للترقى اذعليه يدور الحكم والظن المجرد مثل الوهم چوتھی بحث: ضرورت کا یہ مفہوم لینا کہ وہ وقت محسوس طور پر موجود ہو، درست نہیں، اور نہ ہی اس پر پانی کا خرچ کرنا موقوف ہے، چنانچہ فقہاء کا قول ہے "لخوف عطش" اور اس کا ذہناً ثابت ہونا، اگر اس سے یقین مراد ہو تو ایسا ہی ہے، کیونکہ فقہ میں ظن غالب کا حکم وہی ہے جو یقین کا ہے یا جو یقین کو

الخامس (۶) حاجة الطبخ ليست دون حاجة العطش اذالم يتأت الاكل

Fatawa Razawiyya Volume II

...except by cooking. Do you not see that the need for kneading (dough) is equal to the need for thirst? Because most people cannot live by swallowing dry flour. So, kneading is only for (making) bread, and that is nothing but a part of cooking. Thus, it is better to say that the need for broth is less than the need for thirst. Included in this, then there is no room for further advancement, because the ruling depends on this, and mere suspicion is equivalent to a delusion.

Fifth Discussion: The need for cooking is not less than the need for thirst when that thing cannot be eaten without being cooked; for example, kneading flour is equal to thirst because common people cannot survive by swallowing flour. Thus, kneading flour is for baking bread, and this is also a part of cooking, so it is better to say that the need for broth is less than the need for thirst.

Sixth Discussion: The restriction of exceeding one dirham in measurement and one mithqal in weight is for heavy impurity (Najasa Ghaliza). In light impurity (Najasa Khafifa), its limit is one-quarter; that is why I have used the expression "so that it does not remain a hindrance to prayer."

Seventh Discussion: The discussion Sayyid "Sh" conducted regarding the reduction of impurity is very good; therefore, I have expressed it with "what does not leave it prohibitive." (T)

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His Noble Messenger. (Supplementary Treatise) Ataa al-Nabi li-Ifada Ahkam Ma' al-Sabi (1336 AH) (A gift from the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, regarding the rulings of water obtained by a child)

(4832 to 48) Water filled by a minor: This issue is very extensive and has many branches. In books, let alone full detail, many scenarios are not even mentioned. This humble servant, by the grace of the All-Powerful, hopes to provide a healing and sufficient discourse on it. So I say, and success is from Allah: Water is of three types: 1. Permissible and not owned, 2. Owned but not permissible [for others to use], 3. Permissible and owned.

First: Water from rivers and canals, rainwater in ponds, lakes, and puddles; well water which is not anyone's property until it is drawn (the investigation of which has just passed); water in the cisterns and drinking fountains of mosques etc. filled from waqf

property (the description of which has also passed). All these waters are permissible and are not anyone's property.

Second: Water in vessels that a person has filled or had filled for household use; that is his private property. Without his...

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

...सिवाय पकाने के। क्या आप नहीं देखते कि आटा गूँथने की ज़रूरत प्यास की ज़रूरत के बराबर है? क्योंकि अधिकांश लोग सूखे आटे को निगलकर जीवित नहीं रह सकते। तो आटा गूँथना केवल रोटी के लिए है, और वह पकाने का ही एक हिस्सा है। अतः यह कहना बेहतर है कि शोरबे की ज़रूरत प्यास की ज़रूरत से कम है। इसमें शामिल हो, तो प्रगति का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि आदेश इसी पर निर्भर है, और केवल संदेह भ्रम के समान है।

पांचवीं चर्चा: पकाने की ज़रूरत प्यास की ज़रूरत से कम नहीं है जबकि वह चीज़ बिना पकाए नहीं खाई जा सकती हो; उदाहरण के लिए, आटा गूँथना प्यास के बराबर है क्योंकि आम लोग आटा फाँककर जीवित नहीं रह सकते। अतः आटा गूँथना रोटी पकाने के लिए है, और यह भी पकाने का एक हिस्सा है, इसलिए बेहतर यह है कि कहा जाए कि शोरबे की ज़रूरत प्यास की ज़रूरत से कम है।

छठी चर्चा: माप में एक दिरहम से अधिक और वजन में एक मिस्क़ाल से अधिक की पाबंदी नजासते गलीज़ा (भारी अशुद्धि) में है। और खफ़ीफ़ा (हल्की अशुद्धि) में इसकी मात्रा एक-चौथाई है, इसीलिए मैंने यह शब्द चुना है कि "जिससे नमाज़ में बाधा न आए।"

सातवीं चर्चा: सैय्यद 'श' ने नजासत की कमी के बारे में जो चर्चा की है वह बहुत अच्छी है, इसलिए मैंने इसे "जो उसे निवारक न छोड़े" से व्यक्त किया है। (त)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं। (पूरक लघु ग्रंथ) अता-ए-नबी ल-इफाज़ति अहकामि मा-इस्सबी (१३३६ हिजरी) (बच्चे द्वारा प्राप्त पानी के नियमों के संबंध में पवित्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उपहार)

(४८३२ से ४८) नाबालिग द्वारा भरा गया पानी: यह मसला बहुत लंबा और कई शाखाओं वाला है। किताबों में विस्तार तो दूर, कई स्थितियों का उल्लेख भी नहीं मिलता। यह फ़कीर, सर्वशक्तिमान की कृपा से आशा करता है कि इसमें पर्याप्त और संतोषजनक चर्चा करेगा। तो मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: पानी तीन प्रकार के होते हैं: १. मुबाह (अनुमेय) और गैर-ममलूक (जिसका कोई स्वामी न हो), २. ममलूक (जिसका स्वामी हो) पर गैर-मुबाह, ३. मुबाह और ममलूक।

पहला: नदियों और नहरों का पानी, तालाबों, झीलों और गड्ढों का बरसाती पानी; कुएं का पानी कि वह भी जब तक भरा न जाए किसी की मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं होता, जिसकी जांच अभी गुजरी है; मस्जिदों आदि के हौज़ों और सबीलों का पानी जो वक़्फ़ संपत्ति से भरा गया हो, इसका वर्णन भी गुजर चुका है। यह सारा पानी मुबाह है और किसी की मिल्कियत नहीं है।

दूसरा: बर्तनों का पानी जो किसी व्यक्ति ने अपने घर के खर्च के लिए भरकर रखा हो, वह विशेष रूप से उसकी मिल्कियत है। उसकी बिना...

فتاوی رضویہ جلد ثانی

الا بالطبخ الاتری ان حاجة العجن ساوت حاجة العطش لان عامة الناس لا یمکنھم التعیش باستفاف الدقیق فما العجن الا للخبز و ما ھو الامن الطبخ فالاولی ان یقال ان حاجة المرقة دون حاجة العطش۔

شامل ہو ، تو ترقی کا کوئی محل نہیں ، کیونکہ حکم کا دار ومدار اسی پر ہے اور محض ظن تو وہم کے حکم میں ہے ۔

پانچویں بحث: پکانے کی حاجت پیاس کی حاجت سے کم نہیں جبکہ وہ چیز بلا پکائے نہ کھائی جاسکتی ہو ، مثلاً آٹا گوندھنا پیاس کے برابر ہے، کیونکہ عام لوگ آٹا پھانک کر زندہ نہیں رہ سکتے ہیں، تو آٹا گوندھنا روٹی پکانے کیلئے ہے اور یہ بھی پکانے کا ایک حصہ ہے تو اولٰی یہ ہے کہ کہا جائے کہ شوربہ کی ضرورت پیاس کی ضرورت سے کم ہے۔

السادس (۱) قید الزیادة علی درھم مساحة او مثقال زنة فی النجاسة الغلیظة اما الخفیفة فمقدرة بالربع فلذا عبرت بالقدر المانع السابع مابحث السید ش في تقلیل النجاسة حسن وجیه فلذا عبرت بمالا یبقیھا مانعة۔ چھٹی بحث: ایک درہم سے زیادہ ہونے کی قید پیمائش میں اور ایک مثقال سے زیادہ کی قید وزن میں ، نجاست غلیظہ میں ہے اور خفیفہ میں اس کی تقدیر چوتھائی سے ہے اسی لئے میں نے یہ تعبیر کی ہے کہ "جس سے مانع نماز نہ رہے۔"

ساتویں بحث: سید "ش" نے نجاست کی کمی میں جو بحث کی ہے وہ بہت اچھی ہے اس لئے میں نے اس کی تعبیر "مالا یبقیھا مانعة" سے کی ہے۔ (ت)

بسم اللہ الرحمن الرحیم، نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم (رسالہ ضمنیہ) عطاء النبی لافاضۃ احکام ماء الصبی ۱۳۳۶ھ (بچے کے حاصل کردہ پانی کے احکام کے متعلق نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا عطیہ)

(۴۸۳۲ تا ۴۸) نابالغ کا بھرا ہوا پانی یہ مسئلہ بہت طویل الذیل و کثیر الشقوق ہے کتابوں میں اس کی تفصیل تام در کنار بہت صورتوں کا ذکر بھی نہیں فقیر بتوفیق القدیر اُمید کرتا ہے کہ اس میں کلام شافی و کافی ذکر کرے فاقول و باللہ التوفیق پانی تین قسم ہیں ۱ مباح غیر مملوک ۲ مملوک غیر مباح ۳ مباح مملوک۔

اول: دریاؤں نہروں کے پانی تالاب جھیلوں ڈبروں کے برساتی پانی مملوک کنویں کا پانی کہ وہ بھی جب تک بھرانہ جائے کسی کی ملک نہیں ہوتا جس کی تحقیق ابھی گزری مساجد و غیرہا کے حوضوں سقایوں کا پانی کہ مالِ وقف سے بھرا گیا اس کا بیان بھی گزرا یہ سب پانی مباح ہیں اور کسی کی ملک نہیں۔

دوم: برتنوں کا پانی کہ آدمی نے اپنے گھر کے خرچ کو بھر ایا بھروا کر رکھا وہ خاص اس کی ملک ہے۔ بے اس کی

Fatawa Razawiyya, Volume Second

...no one is allowed to interfere with it without permission. Thirdly: The water of a public fountain (Sabeel) or water-skin (Saqaya) that someone has filled themselves or had filled at their own expense; in any case, it is their property, and they have made its use permissible (mubah) for people. Even after making it permissible, it remains their property. This water is both owned and permissible. It is clear that regarding the water of the latter type, whether an adult or a minor fills it, there will be no difference in rulings because the one taking it does not become its owner. Likewise, in the second type, when the owner gave it by way of permissibility. Yes, if the owner were to [act], then differences in rulings would arise. And if it was taken without the owner's permission, or in both of the latter types, the owner was not capable of giving permission due to minority or insanity, then it is usurped water (Aab-e-Maghsoob). More detail is required, and the intended topic of discussion here is the first type. For this: First Investigation: (1) It is necessary to consider those principles for acquiring ownership over permissible goods (Amwal-e-Mubaha) such as the aforementioned water or wild grass, trees, fruits, flowers, etc., of the forest. These are mentioned dispersedly in the details of books, from which current observation hopes to reach a specific regulation. And Allah is the Guide. I say: And with Him I seek help. It is evident that a permissible thing becomes property through possession (ihraz) and seizure (istila). The person whose hand first reaches it and takes possession of it, it becomes their property. However, this possession sometimes transfers to another and is considered their possession. Its detail is that the person taking the permissible wealth is not free from two states: they take the thing for themselves or for another. In the second case, either of their own accord or because they were told to. In the second case, either without compensation or for wages. In the second case, they are a general hireling (Ajeer-e-Mutlaq) like a servant, or specifically hired for the acquisition of this permissible thing. In the second case, the hiring is for a fixed time, for example, from this morning until noon, or without fixed time. In the second case, that permissible thing was specified. For example, this particular tree, or from here to here, or these ten trees, or the greenery of this specific plot, or all the water in this cistern, or even this specification was absent. In the second case, the hireling accepts whether they took this thing for the hirer (mustajir) or not. In the second case, if the possession of that thing is, for example, in a vessel, was that vessel the hirer's or not? These are nine cases. In the first case, it is clear that the thing will be the property of the one who possessed it; the other has no

relation to it. Similarly, in the second case as well, for the Pure Sharia has established 'seizure' (istila) as the cause of ownership; it belongs to him. Mere intention for another will not transfer this ownership. It is stated in Fath al-Qadir:

Arabic Original Text	Urdu Translation
If it were said: this is when he took possession of it with the intention for himself.	If it is argued against this that this applies when one took possession and intended it for oneself, and if one intended it for another, why should it not belong to the other?
But if he intended that for another, why would it not be for the other? The answer is that the general application of the words of the Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him)... People	The answer to this is that the presence...

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

...बिना अनुमति के किसी को इसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। तीसरा: सबील (प्याऊ) या सकाया का पानी जिसे किसी ने स्वयं भरा हो या अपने धन से भरवाया हो; किसी भी स्थिति में वह उसकी संपत्ति है और उसने लोगों के लिए इसका उपयोग जायज़ (मुबाह) कर दिया है। जायज़ करने के बाद भी वह उसी की संपत्ति रहता है। यह पानी स्वामित्व वाला भी है और जायज़ भी। स्पष्ट है कि अंतिम प्रकार के पानी को चाहे वयस्क भरे या अवयस्क, नियमों में कोई अंतर नहीं होगा क्योंकि लेने वाला उसका स्वामी नहीं बनता। इसी प्रकार दूसरे प्रकार में भी जब स्वामी ने उसे जायज़ के रूप में दिया हो। हाँ, यदि स्वामी [कुछ करे] तो नियमों में अंतर आएगा। और यदि स्वामी की अनुमति के बिना लिया गया, या दोनों अंतिम प्रकारों में स्वामी कम उम्र या पागलपन के कारण अनुमति देने के योग्य नहीं था, तो वह छीना हुआ पानी (आब-ए-मग़सूब) है। अधिक विवरण की आवश्यकता है और यहाँ चर्चा का मुख्य विषय पहला प्रकार है। इसके लिए: पहली जाँच: (1) उन सिद्धांतों पर विचार करना आवश्यक है जो जायज़ वस्तुओं (अमवाल-ए-मुबाहा) जैसे कि उपरोक्त पानी या जंगल की जंगली घास, पेड़, फल, फूल आदि पर स्वामित्व प्राप्त करने के लिए हैं। ये पुस्तकों के विवरणों में बिखरे हुए रूप में वर्णित हैं, जिनसे वर्तमान अवलोकन एक विशिष्ट नियम तक पहुँचने की आशा रखता है। और अल्लाह ही मार्गदर्शक है। मैं कहता हूँ: और मैं उसी से सहायता माँगता हूँ। यह तो स्पष्ट है कि जायज़ वस्तु कब्ज़े (एहराज) और अधिकार (इस्तीला) से संपत्ति बन जाती है। जिस व्यक्ति का हाथ पहली बार उस पर पहुँचता है और वह उसे अपने अधिकार में ले लेता है, वह उसी की संपत्ति हो जाएगी। लेकिन यह कब्ज़ा कभी दूसरे की ओर स्थानांतरित हो जाता है और उसका कब्ज़ा माना जाता है। इसका विवरण यह है कि जायज़ धन लेने वाला दो स्थितियों से खाली नहीं है: वह वस्तु अपने लिए लेगा या दूसरे के लिए। दूसरी स्थिति में, या तो अपनी मर्जी से या उसके कहने पर। दूसरी स्थिति में, बिना किसी मुआवजे के या मजदूरी के। दूसरी स्थिति में, वह दूसरे का सामान्य मजदूर (अजीरे मुतलक) है जैसे कि नौकर, या विशेष रूप से इसी जायज़ वस्तु की प्राप्ति के लिए मजदूर बनाया गया। दूसरी स्थिति में, मजदूरी एक निश्चित समय के लिए हो, जैसे आज सुबह से दोपहर तक, या बिना किसी निश्चित समय के। दूसरी स्थिति में, वह जायज़ वस्तु निश्चित कर दी गई थी। जैसे यह विशेष पेड़, या यहाँ से यहाँ तक, या ये दस पेड़ या इस विशेष खंड की हरियाली या इस हौज का सारा पानी या यह निश्चितता भी नहीं थी। दूसरी स्थिति में, मजदूर स्वीकार करता है कि मैंने यह वस्तु किराएदार (मुस्ताजर) के लिए ली या नहीं। दूसरी स्थिति में, यदि उस वस्तु का कब्ज़ा उदाहरण के

लिए किसी बर्तन में होता है, तो क्या वह बर्तन किराएदार का था या नहीं? ये नौ स्थितियाँ हुईं। इनमें पहली स्थिति में तो स्पष्ट है कि वह वस्तु उसी कब्ज़ा करने वाले की संपत्ति होगी; दूसरे का उससे कोई संबंध नहीं है। इसी प्रकार दूसरी स्थिति में भी, क्योंकि पवित्र शरीयत ने स्वामित्व का कारण 'अधिकार' (इस्तीला) को रखा है; वह उसी का है। दूसरे के लिए केवल नियत (इरादा) इस स्वामित्व को स्थानांतरित नहीं करेगी। फ़तह अल-क़दीर में है:

अरबी मूल पाठ	**उर्दू अनुवाद**
यदि यह कहा जाए: यह तब है जब उसने स्वयं के लिए इरादे से उस पर अधिकार किया।	यदि इस पर यह कहा जाए कि यह उस स्थिति में है जब उस पर कब्ज़ा किया और अपने स्वयं के लिए इरादा किया, और यदि किसी दूसरे के लिए इसका इरादा किया, तो यह दूसरे के लिए क्यों नहीं होगा?
लेकिन यदि उसने वह दूसरे के लिए नियत किया तो वह दूसरे के लिए क्यों नहीं होगा? उत्तर यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के शब्दों का सामान्य प्रयोग... लोग	इसका उत्तर यह है कि हुज़ूर की उपस्थिति...

اجازت کے کسی کو اس میں تصرف جائز نہیں۔ سوم: سبیل یا سقایہ کا پانی کہ کسی نے خود بھرایا اپنے مال سے بھر وایا بہر حال اس کی ملک ہو اور اس نے لوگوں کیلئے اس کا استعمال مباح کر دیا وہ بعد اباحت بھی اسی کی ملک رہتا ہے یہ پانی مملوک بھی ہے اور مباح بھی۔ ظاہر ہے کہ قسم اخیر کا پانی بالغ بھرے یا نابالغ کچھ تفاوت احکام نہ ہوگا کہ لینے والا اس کا مالک ہی نہیں ہوتا۔ یوں ہی قسم دوم میں جبکہ مالک نے اسے بطور اباحت دیا ہاں اگر مالک کیا تو اب فرق احکام آئے گا اور اگر بے اجازت مالک لیا یا دونوں قسم اخیر میں مالک بوجہ صغر یا جنون اجازت دینے کے قابل نہ تھا تو وہ آب مغصوب ہے۔ زیادہ تفصیل طلب اور یہاں مقصود بالبحث قسم اول ہے اس کیلئے تنقیح اول: (۱) ان اصول پر نظر لازم جو اموال مباحہ جیسے آب مذکور یا جنگل کی خود رو گھاس پیڑ پھل پھول وغیرہا پر حصول ملک کیلئے ہیں کتب میں اس کے جزئیات میں متفرق طور پر مذکور ہوئے جن سے نظر حاضر ایک ضابطہ تک پہنچنے کی امید رکھتی ہے واللہ الھادی۔ فاقول: وبہ استعین یہ تو ظاہر ہے کہ مباح چیز احراز واستیلأ سے ملک ہو جاتی ہے اول بار جس کا ہاتھ اس پر پہنچا اور اس نے اپنے قبضے میں کر لیا اُسی کی ملک ہو جائیگی مگر یہ قبضہ کبھی دوسرے کی طرف منتقل ہوتا اور اُس کا قبضہ ٹھہرتا ہے اس کی تفصیل یہ ہے کہ مال مباح کا لینے والا دو حال سے خالی نہیں اس شے کو اپنے لئے لے گا یا دوسرے کیلئے، بر تقدیر ثانی بطور خود یا اس سے کہے سے، بر تقدیر ثانی بلا معاوضہ یا باجرت بر تقدیر ثانی اُس دوسرے کا اجیر مطلق ہے جیسے خدمتگار یا خاص اسی مباح کی تحصیل کیلئے اجیر کیا، بر تقدیر ثانی اجارہ وقت معین پر ہو امثلاً آج صبح سے دوپہر تک یا بلا تعین، بر تقدیر ثانی وہ شے مباح متعین کر دی تھی۔ مثلاً یہ خاص درخت یا یہاں سے یہاں تک کہ یہ دس پیڑ یا اس قطعہ مخصوصہ کا سبزہ یا اس حوض کا

سارا پانی یا یہ تعیین بھی نہ تھی۔ بر تقدیر ثانی اجیر قبول کرتا ہے کہ یہ شے میں نے مستاجر کیلئے لی یا نہیں ۔ بر تقدیر ثانی اگر اس شے کا احراز مثلاً کسی ظرف میں ہوتا ہو تو وہ ظرف مستاجر کا تھا یا نہیں، یہ نو صورتیں ہوئیں۔ ان میں صورت اولیٰ میں تو ظاہر ہے کہ وہ شے اُسی قبضہ کرنے والے کی ملک ہوگی دوسرے کو اس سے علاقہ ہی نہیں، یوں ہی صورت دوم میں بھی کہ شرع مطہر نے سبب ملک استیلار کھا ہے وہ اس کا ہے دوسرے کیلئے محض نیت اس ملک کو منتقل نہ کردے گی۔ فتح القدیر میں ہے:

اگر اس پر کہا جائے کہ یہ اس صورت میں ہے جبکہ اس پر

لو قیل علیه هذا اذا استولی علیه بقصده لنفسه

استیلأ کیا اور قصد اپنے نفس کے لئے کیا، اور اگر کسی دوسرے کیلئے اس کا ارادہ کیا، تو یہ غیر کیلئے کیوں نہ ہوگا

فاما اذا قصد ذلک لغیره فلم لایکون للغیر یجاب بان اطلاق نحو قوله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم الناس

اس کا یہ جواب ہے کہ حضور

Fatawa-e-Razviya, Volume 2

'Partners in three things, no distinction is made between one intention and another.'[1] ah

The command of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) 'People are partners in three things' does not differentiate between one intention and another. ah

And I wrote upon this, I say: Acquisition of possession is a cause for ownership, and it preceded for him, so he became the owner. Ownership does not transfer to another by mere intention, like someone who buys something without attributing it to Zaid, while his intention is to buy it for Zaid; it will not belong to Zaid.

Upon this I have written that I say: taking possession is among the causes of ownership, and ownership has become complete for him, and he has become the owner. This ownership will not transfer to another merely due to intention, like if a person buys something and does not attribute it to Zaid, even if the intention is that it is for Zaid, it will not belong to Zaid. (T)

Similarly, in the third scenario, appointing another as one's deputy, agent, servant, or assistant for obtaining permissible (mubah) things is void. It is stated in Durr al-Mukhtar, Book of Partnership, Chapter on Void Partnership:

'Appointing an agent for taking a permissible thing is not valid.'[2]

Appointing someone as an agent to bring a permissible thing is not correct. (T)

In Jami' al-Saghar, Chapter on Disliked Acts, it is stated:

'Employing someone in regards to permissible substances is void.'[3]

Employment in permissible substances is void. (T)

In Fath al-Qadir it is stated:

'The Shari'ah has established the cause of owning permissible things as being the first to lay hands on them. So when someone appoints an agent for it, and the agent takes control of it, his ownership precedes that of the principal; the agent will become the owner.'[4]

Shari'ah has designated 'first possession' as the cause of ownership in permissible things. So when someone makes another person an agent for it and that person

gains control over it, ownership of the principal will not be established, rather the agent will become the owner. (T)

In Hindiya, Book of Hire/Lease, Chapter 16, from Qunyah it is stated:

---

1 Fath al-Qadir, Chapter on Void Partnership, Nuriya Razviya Sukkur, 5/210 2 Al-Durr al-Mukhtar, Void Partnership, Mujtabai Delhi, 1/474 3 Jami' Ahkam al-Saghar with Jami' al-Fusulayn al-Karabiya, Islami Kutub Khana Karachi, 1/721 4 Fath al-Qadir, Chapter on Void Partnership, Sukkur, 5/210

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 2

'तीन चीज़ों में साझीदार हैं, इरादे और इरादे में कोई फ़र्क नहीं किया जाता।'[1] अह

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान "लोग तीन चीज़ों में शरीक (साझीदार) हैं" एक इरादे और दूसरे इरादे में फ़र्क नहीं करता। अह

मैंने इस पर लिखा है: मैं कहता हूँ, कब्ज़ा हासिल करना मिल्कियत (स्वामित्व) का एक सबब (कारण) है, और वह उसके लिए पहले हो चुका है, इसलिए वह मालिक बन गया। मिल्कियत सिर्फ़ इरादे से किसी दूसरे की तरफ़ मुंतकिल (स्थानांतरित) नहीं होती, जैसे कोई शख्स ज़ैद की तरफ़ निस्बत किए बिना कुछ खरीदे, और उसकी नीयत यह हो कि वह ज़ैद के लिए खरीद रहा है, तो वह ज़ैद का नहीं होगा।

इस पर मैंने लिखा है कि मैं कहता हूँ, हासिल कर लेना मिल्कियत के अस्बाब में से है और मिल्कियत उसके लिए मुकम्मल हो चुकी है और वह मालिक हो गया। और यह मिल्कियत महज़ इरादे की वजह से दूसरे की तरफ़ मुंतकिल नहीं होगी, जैसे कोई शख्स कोई चीज़ खरीदे और उसको ज़ैद की तरफ़ मंसूब न करे और नीयत यह हो कि वह ज़ैद के लिए है, तो वह ज़ैद के लिए नहीं होगी। (त)

इसी तरह तीसरी सूरत में भी कि मुबाह (अनुमेय) चीज़ हासिल करने के लिए दूसरे को अपना नायब, वकील, खादिम या मुईन बनाना बातिल (अमान्य) है। दुर्र-ए-मुख़्तार, किताबुश-शिरकत, फ़स्ल शिरकत-ए-फ़ासिदा में है:

'मुबाह चीज़ लेने के लिए वकील बनाना सही नहीं है।'[2]

मुबाह चीज़ लाने के लिए किसी को वकील बनाना दुरुस्त नहीं है। (त)

जामे अस्-सग़ार, फ़स्ल कराहियत में है:

'मुबाह अशिया (पदार्थों) में इस्तिख़दाम (सेवा लेना) बातिल है।'[3]

मुबाह अशिया में इस्तिख़दाम बातिल है। (त)

फ़तहुल क़दीर में है:

'शरीअत ने मुबाह चीज़ों में मिल्कियत का सबब 'सबक़त-ए-यद' (पहले कब्ज़ा करना) को बताया है। तो जब किसी ने उस पर किसी को वकील बनाया और उसने उस पर इस्तीयला (कब्ज़ा) हासिल कर लिया, तो मुवक्किल की मिल्कियत उस पर साबित नहीं होगी बल्कि वकील मालिक हो जाएगा।'[4]

शरीअत ने मुबाह अशिया में मिल्कियत का सबब सबक़त-ए-यद को बताया है, तो जब किसी ने उस पर किसी को वकील बनाया और उसने उस पर इस्तीयला हासिल कर लिया, मुवक्किल की मिल्कियत उस पर साबित नहीं होगी, वकील मालिक हो जाएगा। (त)

हिन्दिया, इजारात, बाब 16 में कुनिया से है:

---

1 फ़तहुल क़दीर, फ़स्ल फ़ी शिरकत-ए-फ़ासिदा, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 5/210 2 अद्दुर्रुल मुख़्तार, शिरकत-ए-फ़ासिदा, मुज्तबाई दिल्ली, 1/474 3 जामे अहकाम अस्-सग़ार मआ जामे अल-फ़ुसूलैन अल-कराबीया, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/172 4 फ़तहुल क़दीर, फ़स्ल फ़ी शिरकत-ए-फ़ासिदा, सुक्कुर, 5/210

पेज 497/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

شرکاء فی ثلاث لایفرق بین قصد وقصد[1] اھ صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ فرمان "لوگ تین چیزوں میں شریک ہیں" ایک قصد اور دوسرے قصد میں فرق نہیں کرتا ہے اھ

وکتبت علیہ اقول: الاحراز سبب الملک وقدم لہ فملک ولا ینتقل لغیرہ بمجرد القصد کمن شری غیر مضاف الی زید ونیتہ انہ یشتریہ لزید لم یکن لزید۔ اس پر میں نے لکھا ہے کہ میں کہتا ہوں حاصل کر لینا اسباب ملک میں سے ہے اور ملک اس کیلئے تام ہوچکی ہے اور وہ مالک ہو گیا اور یہ ملک دوسرے کی طرف محض قصد کی وجہ سے منتقل نہ ہو گی ، جیسے کوئی شخص کوئی چیز خریدے اور اس کو زید کی طرف مضاف نہ کرے اور نیت یہ ہو کہ وہ زید کیلئے ہے ، تو وہ زید کیلئے نہ ہو گی ۔ (ت)

اسی طرح صورتِ سوم میں بھی کہ تحصیل مباح کیلئے دوسرے کو اپنا نائب و وکیل و خادم و معین بنانا باطل ہے درمختار کتاب الشرکۃ فصل شرکت فاسدہ میں ہے:

التوکیل فی اخذ المباح لایصح[2]۔ مباح چیز کو لانے کیلئے کسی کو وکیل بنانا درست نہیں ہے۔ (ت)

جامع الصغار فصل کراہیت میں ہے:

الاستخدام فی الاعیان المباحۃ باطل[3]۔ اعیان مباحہ میں استخدام باطل ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے:

الشرع جعل سبب ملك المباح سبق الید الیه فاذا وكله به فاستولی علیه سبق ملكه له ملك الموكل[4]۔

شریعت نے مباح اشیاء میں ملک کا سبب سبقت ید کو بتایا ہے، تو جب کسی نے اس پر کسی کو

وکیل بنایا اور اس نے اس پر استیلاء حاصل کر لیا موکل کی ملک اس پر ثابت ہو جائیگی تو وکیل مالک ہو جائیگا۔ (ت)

ہندیہ اجارات باب ۱۶ میں قنیہ سے ہے:

---

1 فتح القدیر فصل فی شرکۃ فاسدہ نوریہ رضویہ سکھر ۵ / ۲۱۰ 2 الدر المختار شرکۃ فاسدہ مجتبائی دہلی ۱ / ۴۷۴ 3 جامع احکام الصغار مع جامع الفصولین الکرابیہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱ / ۷۲۱ 4 فتح القدیر فصل فی الشرکۃ الفاسدہ سکھر ۵ / ۲۱۰

Fatawa Ridawiyya - Volume 2

Naseer (ibn Yahya) said, I said (meaning to Imam Abu Sulayman al-Juzajani, may Allah have mercy on them both): If a person seeks the help of another to gather firewood or hunt for him (meaning without wages), he said: The firewood and the game belong to the worker. Likewise is the cast of a hunter's net. Our teacher (who is al-Badi', the teacher of al-Zahidi) said: It is necessary to memorize this, for both the elite and the common folk are afflicted by it; they seek help from people in gathering firewood, grass, cutting thorns, 'Al-Haaj', and collecting ice. Thus, the ownership is established for the helpers in those things, and everyone is unaware of it, so they spend them before requesting a gift or obtaining permission. Therefore, they owe the equivalent or the value, while they are unaware due to their ignorance and negligence. May Allah protect us from ignorance and grant us success in knowledge.

Marginal Note: 'Al-Haaj' (with the first letter unpointed and the last letter pointed): the plural of 'Haajah'. It refers to thorns. Some say it is sour grass. Ibn Sayyid says it is a type of thorn. Some say it is a tree. Abu Hanifa al-Dinawari said: 'Al-Haaj' is a plant that stays green perpetually and its roots go deep into the earth; it is used medicinally by boiling it. It has thin, long leaves, as numerous as thorns. (From Taj al-Arus, 12, may he be forgiven).

नसीर (इब्न याह्या) ने कहा, मैंने कहा (यानी इमाम अबू सुलैमान अल-जौज़जानी से, अल्लाह उन दोनों पर रहम करे): अगर किसी व्यक्ति ने लकड़ी इकट्ठा करने या शिकार करने के लिए दूसरे व्यक्ति की मदद ली (यानी बिना पारिश्रमिक के), तो उन्होंने कहा: लकड़ी और शिकार उसी का है जिसने वह काम किया। इसी तरह शिकारी का एक बार जाल फेंककर शिकार निकालना है। हमारे उस्ताद (जो अल-बदी, अल-ज़ाहिदी के उस्ताद हैं) ने फ़रमाया: इसे याद कर लेना चाहिए क्योंकि इसमें हर आम और ख़ास मुब्तला (ग्रस्त) है; लोग लकड़ी, घास इकट्ठा करने, कांटे काटने, 'अल-हाज' और बर्फ़ इकट्ठा करने में दूसरों की मदद लेते हैं। इस प्रकार, इन चीज़ों में मालिकाना हक़ मदद करने वालों का साबित हो जाता है, और लोग इससे अनजान होते हैं, इसलिए वे इसे उपहार के तौर पर माँगने या अनुमति लेने से पहले ही खर्च कर देते हैं। अतः उन पर उनका बदला या उनकी कीमत वाजिब (अनिवार्य) हो जाती है, जबकि वे अपनी अज्ञानता और गफ़लत (लापरवाही) के कारण इसे महसूस नहीं करते। अल्लाह हमें अज्ञानता से बचाए और हमें ज्ञान की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

हाशिया: 'अल-हाज' (पहले अक्षर पर नुक्ता नहीं और आखिरी पर नुक्ता): यह 'हाजा' का बहुवचन है। इसका अर्थ कांटे हैं। एक कथन के अनुसार यह खट्टी घास है। इब्न सैय्यद के अनुसार यह कांटों का एक प्रकार है। एक कथन के अनुसार यह एक पेड़ है। अबू हनीफ़ा अल-दीनवरी ने फ़रमाया: 'अल-हाज' एक ऐसा पौधा है जो हमेशा हरा रहता है और उसकी जड़ें ज़मीन में बहुत गहराई तक जाती हैं; इसे उबालकर दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसके पत्ते बारीक और लंबे होते हैं, और कांटों की तरह बहुत अधिक होते हैं। (ताजुल उरूस, 12 से)।

نصیر (ابن یحییٰ نے) کہا، میں نے کہا (یعنی امام ابو سلیمان الجوزجانی کو) اگر کسی شخص نے لکڑیاں جمع کرنے یا شکار کرنے کیلئے دوسرے شخص کی مدد حاصل کی (یعنی بلا اجر) فرمایا اس صورت میں لکڑیاں اور شکار اُسی کا ہے جس نے کیا ہو ، اور اسی طرح شکاری کا ایک مرتبہ جال ڈال کر شکار نکالنا ، ہمارے استاذ نے فرمایا (یعنی بدیع استاذ الزاہدی) اور اسے یاد کر لینا چاہئے کیونکہ اس میں ہر عام وخاص مبتلا ہے، لوگ دوسروں سے لکڑیاں جمع کرانے، کانٹے اکٹھے کرانے اور گھاس جمع کرانے میں مدد لیتے ہیں ، اسی طرح ایک قسم کا درخت منگواتے ہیں یا آسمانی برف جمع کراتے ہیں ، تو جو لوگ عملاً یہ کام کرتے ہیں ان پر انہی لوگوں کی ملک ثابت ہو جائے گی ، لوگ یہ مسئلہ نہیں جانتے، وہ ان لوگوں سے نہ تو اجازت

الحاج ، حاء مہملہ اور جیم کے ساتھ ، جمع حاجہ کی ہے، کانٹوں کو کہتے ہیں ، ایک قول کے مطابق ترش گھاس ہے۔ ابن سیدہ کے مطابق کانٹوں کی ایک قسم ہے۔ ایک قول کے مطابق درخت ہے۔ اور ابو حنیفہ الدینوری نے فرمایا یہ ایسا درخت ہے جو سدا بہار رہتا ہے اور اُس کی جڑیں زمین میں دور تک چلی جاتی ہیں اس کو ابال کر دوا کے کام میں لایا جاتا ہے، اس کے پتے باریک اور لمبے ہوتے ہیں اور کانٹوں کی طرح زیادہ ہوتے ہیں اھ تاج العروس ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Left Column - Arabic/Urdu Mixed] ...and practice. [End of quote][1] I say: His words 'all of them do not know of it' are an indication of the answer to a question, which is an illusion that if they brought it to the seeker of help, gave it to him, and he took it, it would be a gift by mutual conduct. He answered that this would be if they knew that ownership had been established for the assistants, so the giving and taking would be the offer and acceptance of the gift. But all of them are heedless of it, and only consider the assistance as providing for expenses, like someone who sends someone to his house to bring him a chair, for example, to bring it to him. I say: It is as he said, but (1) permission is established without a doubt, and they only intend to take it for him and do not deliver it to him except for him to dispose of it, and there is no usurpation (ghasb) on his part such that indemnity (dhaman) would be mandatory. If you say: they do not consider themselves its owners, and he takes it by making himself as if he were the one in control of it from the beginning, so he disposes of it as if it were his property, thus permission is not realized because they do not know it belongs to them, and by their action it becomes his until they permit him to dispose of it, rather he thinks and they think that he...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...they take it, nor do they take it as a gift, and they end up spending these things. Then, a similar item will be mandatory for them, or the price will be required. They do not know due to ignorance, or the price will become mandatory, they do not know because of ignorance. May Allah protect us from ignorance and grant us the success of knowledge and action (Amen). [End of quote] (T) I say, his saying 'all of them do not know of it' points towards an answer to a question, which is: when the workers bring these things to the person who ordered their collection, they give them to him and he acquires them, so it would be counted as giving from their side and taking from his side, and this would be considered as the offer and acceptance of a gift. The answer was given that this is only the case when they know that ownership is established for the assistants, then this giving and taking would be the offer and acceptance of a gift, but all of them are unaware of this, and they consider it as assistance in meeting expenses, for example, a person sent someone to a house to bring a chair from there. (T) I say, it is exactly as he said, but permission is undoubtedly established and their intention is exactly that they take it for that person, and they give it to him so that he may dispose of it. He is not usurping it such that indemnity would be mandatory. (T) If the objection is raised that those people do not consider themselves owners of these things, and that

person takes possession of these things in such a way as if he were the first owner of these things, and disposes of them as if he were the owner of these things, then in such a case permission would not be realized because they do not even know that...

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter 16, Peshawar 4/251 Page 499 of 711

फतावा रज़विया, खंड 2

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रित] ...और अभ्यास। [उद्धरण समाप्त][1] मैं कहता हूँ: उनके शब्द 'वे सभी इसके बारे में नहीं जानते' एक प्रश्न के उत्तर की ओर संकेत हैं, जो एक भ्रम है कि यदि वे इसे मदद माँगने वाले के पास लाए, उसे दिया, और उसने ले लिया, तो यह आपसी आचरण द्वारा उपहार होगा। उन्होंने उत्तर दिया कि यह तब होता जब उन्हें पता होता कि स्वामित्व सहायकों के लिए स्थापित हो गया है, इसलिए देना और लेना उपहार का प्रस्ताव और स्वीकृति होता। लेकिन वे सभी इससे बेखबर हैं, और केवल सहायता को खर्चों को पूरा करने के रूप में मानते हैं, जैसे कोई व्यक्ति किसी को अपने घर भेजे कि वहां से उदाहरण के लिए एक कुर्सी ले आए, ताकि वह उसे उसके पास ले आए। मैं कहता हूँ: यह वैसा ही है जैसा उन्होंने कहा, लेकिन (1) अनुमति निस्संदेह स्थापित है, और वे केवल उसके लिए इसे लेने का इरादा रखते हैं और इसे उसे तब तक नहीं सौंपते जब तक कि वह उसका निपटान न कर सके और उसकी ओर से कोई हड़पना (ग़स्ब) नहीं है जिससे मुआवजा (ज़मान) अनिवार्य हो जाए। यदि आप कहें: वे स्वयं को इसका मालिक नहीं मानते हैं, और वह इसे स्वयं को ऐसा बनाकर लेता है जैसे कि वह शुरुआत से ही इस पर नियंत्रण रखने वाला हो, इसलिए वह इसका निपटान ऐसे करता है जैसे कि यह उसकी संपत्ति हो, इस प्रकार अनुमति प्राप्त नहीं होती क्योंकि उन्हें नहीं पता कि यह उनका है, और उनके कार्य से यह उसका हो जाता है जब तक कि वे उसे निपटान की अनुमति न दें, बल्कि वह सोचता है और वे सोचते हैं कि वह...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...वे इसे लेते हैं, और न ही इसे उपहार के रूप में लेते हैं और इन चीजों को खर्च कर देते हैं, तो उन पर उनके जैसा या कीमत अनिवार्य होगी। वे अज्ञानता के कारण इसे नहीं जानते या कीमत अनिवार्य होगी, वे अज्ञानता के कारण इसे नहीं जानते। अल्लाह हमें अज्ञानता से बचाए और हमें ज्ञान और कर्म की सफलता प्रदान करे (आमीन)। [उद्धरण समाप्त] (T) मैं कहता हूँ, उनका कहना 'वे सभी इसके बारे में नहीं जानते' एक प्रश्न के उत्तर की ओर संकेत करता है, जो यह है: जब कार्यकर्ता इन चीजों को उस व्यक्ति के पास लाते हैं जिसने उनके संग्रह का आदेश दिया था, तो वे उसे दे देते हैं और वह उन्हें प्राप्त कर लेता है, तो इसे उनकी ओर से देना और उसकी ओर से लेना माना जाएगा, और इसे उपहार का प्रस्ताव और स्वीकृति माना जाएगा। उत्तर दिया गया कि यह तब है जब उन्हें पता हो कि सहायकों के लिए स्वामित्व स्थापित है, तो यह देना-लेना उपहार का ईजाब-ओ-कबूल होगा, लेकिन वे सभी इससे अनजान हैं, और वे इसे खर्चों को पूरा करने में मदद समझते हैं, जैसे किसी व्यक्ति ने एक आदमी को घर भेजा कि वहां से कुर्सी उठा लाए। (T) मैं कहता

हूँ, यह वैसा ही है जैसा उन्होंने कहा लेकिन अनुमति निस्संदेह स्थापित है और उनकी नियत यही होती है कि वे उस व्यक्ति के लिए लें, और उसे देते भी इसलिए हैं कि वह उसमें तसर्रुफ़ (उपयोग) करे। वह गसब (हड़पना) तो नहीं कर रहा है कि ज़मान (मुआवजा) वाजिब हो। (T) यदि यह आपत्ति उठाई जाए कि वे लोग स्वयं को इन वस्तुओं का स्वामी नहीं समझते हैं, और वह व्यक्ति इन वस्तुओं पर इस प्रकार कब्जा करता है मानो वह इन वस्तुओं का पहला स्वामी हो, और इस तरह तसर्रुफ़ करता है मानो वह इन वस्तुओं का स्वामी हो, तो ऐसी स्थिति में अनुमति सिद्ध नहीं होगी क्योंकि उन्हें तो पता ही नहीं कि...

[1] फतावा हिंदिया, अध्याय 16, पेशावर 4/251 पेज 499/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بائیں کالم کا متن (عربی مع اردو جملہ)] والعمل اھ[1] اقول: وقوله لایعلم الکل بها اشارة الی الجواب عن سؤال وهم انهم اذا اتوا به الی المستعین واعطوه واخذ کان هبة بالتعاطی فاجاب بانه هذا یکون لوعلموا ان الملك قد ثبت للاعوان فیکون الاعطاء والاخذ ایجاب الهبة وقبولها لکنهم جمیعاً عنه غافلون وانما یحسبون المعونة فی کفایة المؤنة کمن ارسل احد الی داره لیحمل منها کرسیا مثلا یأتیه به۔ اقول: هو کما قال لکن (۱) الاذن ثابت لاشك وهم انما ینوون الاخذ له ولا یؤدونه الیه الا لیتصرف فیه ولا غصب منه حتی یجب الضمان۔ فأنقلت لایحسبون انفسهم ملاکه وهو یأخذه بجعل نفسه کانه هو المستولی علیه بدء فیتصرف فیه علی انه ملکه فلم یتحقق الاذن لانهم لایدرون انه لهم وبجعلهم یصیر له حتی یأذنوا له فی التصرف وانما یظن ویظنون انه

[دائیں کالم کا متن (اردو)] لیتے ہیں ،اور نہ ہی بطور ہبہ لیتے ہیں اور ان اشیاء کو خرچ کر بیٹھتے ہیں، تو ان پر ان کا مثل واجب ہوگا یا قیمت لازم آئے گی ، ان کو جہالت کی وجہ سے اس کا علم نہیں یا قیمت لازم آئے گی ، ان کو جہالت کی وجہ سے اس کا علم نہیں اللہ ہمیں جہل سے محفوظ رکھے اور ہمیں علم و عمل کی توفیق دے (آمین) اھ (ت) میں کہتا ہوں اس کا قول "لایعلم الکل بھا" ایک سوال کے جواب کی طرف اشارہ ہے اور وہ یہ ہے کہ جب کارندے ان اشیاء کو اُس شخص کے پاس لے آئیں جس نے ان کو جمع کرنیکا حکم دیا ہے تو وہ اسکو دے دیں اور یہ حاصل کر لے تو گویا انکی طرف سے دینا شمار ہوگا اور اس کی طرف سے لینا ہوگا، اور یہ ہبہ کا ایجاب و قبول شمار ہوگا تو اسکا جواب دیا کہ یہ اس وقت ہے کہ جب انہیں علم ہو کہ اعوان کیلئے ملک ثابت ہے تو یہ دینا لینا ہبہ کا ایجاب قبول ہوگا لیکن وہ سب کے سب اس سے غافل ہیں، اور وہ مدد کفایت مؤنت میں سمجھتے ہیں مثلاً کسی شخص نے ایک آدمی کو گھر میں بھیجا کہ وہاں سے کُرسی اٹھا

لائے۔ (ت) میں کہتا ہوں وہ ایسا ہی ہے جیسا کہ انہوں نے فرمایا لیکن اذن بلاشبہ ثابت ہے اور ان کی نیت یہی ہوتی ہے کہ وہ اُس شخص کیلئے لیں، اور اس کو دیتے بھی اس لئے ہیں کہ وہ اُس میں تصرف کرے، وہ غصب تو نہیں کر رہا ہے کہ ضمان واجب ہو۔ (ت) اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ وہ لوگ اپنے آپ کو ان اشیاء کا مالک نہیں سمجھتے ہیں ، اور وہ شخص ان چیزوں پر اس طرح قابض ہوتا ہے گویا وہ ان چیزوں کا پہلا مالک ہے ، اور اس طرح تصرف کرتا ہے گویا وہ ان چیزوں کا مالک ہو تو ایسی صورت میں اذن متحقق نہ ہوگا کیونکہ ان کو تو پتا ہی نہیں کہ

[1] فتاوی ہندیة، الباب السادس عشر، پشاور ۴/ ۲۵۱ صفحہ 499 از 711

Fatawa Razawiyya Volume II

(Left Column - Arabic Original Text/Translation): ...for its owner, and there is no consideration for an assumption whose error is manifest. For example, one who (1) thinks that a certain thing is among Zaid's deposits with his father and gives it to his heir, so they dispose of it, then it becomes clear that it belonged to his father, not to Zaid. In this case, he has the right to reclaim it from them if it exists, or its compensation if it was consumed. It is stated in 'Al-Uqud al-Durriyya' from the 'Book of Partnership': whoever pays something that was not obligatory upon him, he has the right to reclaim it, unless he gave it as a gift and the recipient consumed it, as mentioned in 'Sharh al-Nazm al-Wahbani' and other authoritative texts (1 ah). And in it and in 'Al-Khayriyya' from the 'Book of Endowments', they have explicitly stated (2) that whoever thinks he owes a debt, and then the opposite becomes clear, he reclaims what he paid, and if it has been consumed, he reclaims its equivalent (2 ah). I say: This applies if he knew it did not belong to the recipient, he would not have given it to him. But here, they only bring it for him, and even if they knew that the ownership falls to them, they would not have refrained from giving it to him. Thus, their consent to his disposal of it is established in every estimation, and for this reason, no concern was paid.

(Right Column - Urdu Original Text): This thing is in their ownership and will only be in his ownership when they give permission. In this case, he suspects that he is the owner and they also suspect that he is the owner. An assumption whose error is manifest has no consideration. For example, if a person assumes that a certain thing is among Zaid's deposits with his father, and based on this assumption, he gives that thing to Zaid's heirs and they dispose of it. Then later it becomes known to him that the thing belonged to his father himself and not to Zaid. So if that thing is present, he can take it back from them, and if it has perished, he can take compensation for it. It is in "Al-Uqud al-Durriya" in the 'Book of Partnership' that whoever gave any such thing which was not obligatory upon him, he can take it back. Yes, if it was given as a gift and it perished in his possession, then he cannot take it back. This same thing is in the commentary of 'Nazm Wahbani' and other reliable books. And in it and with reference to the 'Book of Endowments' of 'Al-Khayriya', it is mentioned that if a person assumed that he owed a debt. Later it was found that it was wrong, so he will take back what he gave, and if it has perished, he will take its replacement (ah). I say: This is in the case where if he had known that this was not for the recipient, he would not have given it to him. And here they bring it for him specifically, and if they knew

that the ownership would fall to them, they would not have refrained from giving it. So...

(Footnotes): 1. Al-Uqud al-Durriyya, Book of Partnership, Qandahar, Afghanistan, 1/91. 2. Fatawa Khayriyya, Book of Endowments, Beirut, 1/130. Page 500 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द II

(बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ/अनुवाद): ...उसके मालिक के लिए, और उस धारणा का कोई महत्व नहीं जिसकी गलती स्पष्ट हो। जैसे कोई (1) यह सोचे कि कोई चीज़ उसके पिता के पास ज़ैद की अमानतों में से है और वह उसे उसके वारिस को दे दे, और वे उसका उपभोग कर लें, फिर यह स्पष्ट हो जाए कि वह उसके पिता की थी, ज़ैद की नहीं। तो उसे अधिकार है कि वह उनसे वह चीज़ वापस ले ले अगर वह मौजूद है, या उसका हर्जाना ले ले अगर वह नष्ट हो गई है। 'अल-उक़ूद अल-दुर्रिया' के'किताब अल-शिरकत' में है: जिसने कोई ऐसी चीज़ दी जो उस पर अनिवार्य नहीं थी, तो उसे उसे वापस लेने का अधिकार है, सिवाय इसके कि उसने उसे उपहार के रूप में दिया हो और प्राप्तकर्ता ने उसे उपभोग कर लिया हो, जैसा कि 'शरह अल-नज़्म अल-वबानी' और अन्य विश्वसनीय ग्रंथों में है (1 अह)। और उसमें और 'अल-ख़ैरिया' के'किताब अल-वक़्फ़' के हवाले से स्पष्ट किया गया है (2) कि जिसने यह सोचा कि उस पर कोई ऋण है, और फिर उसका विपरीत स्पष्ट हो गया, तो वह जो उसने दिया है उसे वापस लेगा, और यदि वह नष्ट हो गया है, तो वह उसका विकल्प वापस लेगा (2 अह)। मैं कहता हूँ: यह उस स्थिति में है जब उसे पता होता कि यह प्राप्तकर्ता के लिए नहीं है, तो वह उसे नहीं देता। लेकिन यहाँ तो वे उसे उसी के लिए लाते हैं, और यदि उन्हें पता होता कि स्वामित्व उनके पास आएगा, तो वे उसे देने से पीछे नहीं हटते। अत; उसके द्वारा इसके निपटान के लिए उनकी सहमति हर अनुमान में स्थापित है, और इसी कारण से कोई चिंता नहीं की गई।

(दायां कॉलम - उर्दू मूल पाठ): यह चीज़ उनके स्वामित्व में है और उसके स्वामित्व में तभी होगी जब वे अनुमति देंगे। इस मामले में, उसे संदेह है कि वह मालिक है और उन्हें भी संदेह है कि वह मालिक है। जिस धारणा की गलती स्पष्ट हो जाए, उसका कोई विचार नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति यह मान ले कि एक निश्चित वस्तु उसके पिता के पास ज़ैद की जमा राशियों में से है, और इस धारणा के आधार पर, वह वस्तु ज़ैद के वारिसों को दे देता है और वे उसका उपयोग कर लेते हैं। फिर बाद में उसे पता चलता है कि वह वस्तु स्वयं उसके पिता की थी और ज़ैद की नहीं थी। तो यदि वह वस्तु मौजूद है, तो वह उनसे वापस ले सकता है, और यदि वह नष्ट हो गई है, तो वह उसका मुआवज़ा ले सकता है। "अल-उक़ूद अल-दुर्रिया" के'किताब अल-शिरकत' में है कि जिस किसी ने कोई ऐसी चीज़ दी जो उस पर अनिवार्य नहीं थी, तो वह उसे वापस ले सकता है। हाँ, यदि वह उपहार के रूप में दी गई हो और उसके कब्ज़े में नष्ट हो गई हो, तो वह उसे वापस नहीं ले सकता। यही बात 'नज़्म वबानी' और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों की व्याख्या में है। और इसमें और

'अल-ख़ैरिया' की 'किताब अल-वक़्फ़' के संदर्भ में यह उल्लेख है कि यदि किसी व्यक्ति ने यह माना कि उस पर ऋण है। बाद में पता चला कि यह गलत था, तो वह जो उसने दिया था वह वापस ले लेगा, और यदि वह नष्ट हो गया है, तो वह उसका प्रतिस्थापन ले लेगा (अह)। मैं कहता हूँ: यह उस स्थिति में है जहाँ यदि उसे पता होता कि यह प्राप्तकर्ता के लिए नहीं था, तो वह उसे नहीं देता। और यहाँ वे इसे विशेष रूप से उसी के लिए लाते हैं, और यदि वे जानते कि स्वामित्व उनके पास आएगा, तो वे इसे देने से नहीं कतराते। तो...

(फुटनोट): 1. अल-उक़ूद अल-दुर्रिया, किताब अल-शिरकत, कंधार, अफगानिस्तान, 1/91। 2. फ़तावा ख़ैरिया, किताब अल-वक़्फ़, बेरूत, 1/130। पृष्ठ 711 का 500

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

(بائیں کالم کی عربی عبارت): لِمَالِكِ لَه ولا عِبْرَةَ بِالظَّنِّ الْبَيِّنِ خَطَؤُهُ كَمَن(١) حَسِبَ ان الشَّيئَ الْفُلَانِيَ من وَدَائِعِ زَيْدٍ عِنْدَ اَبِيهِ فَاَدَّاهُ إِلَى وَارِثِهِ فَتَصَرَّفُوا ثُم تَبَيَّنَ انه لِاَبِيهِ لَا لِزَيْدٍ فَانَّ لَه ان يَرْجِعَ عَلَيْهِم به قَائِمًا او بِضَمَانِهِ هَالِكًا- فِي الْعُقُودِ الدُّرِّيَّةِ من كِتَابِ الشَّرِكَةِ من دَفَعَ شَيْئًا لَيْسَ بِوَاجِبٍ عليه فله اسْتِرْدَادُهُ اِلّا اِذَا دَفَعَهُ عَلَى وَجْهِ الْهبَةِ واستهلكه القَابِضُ كَمَا فِى شَرْحِ النَّظْمِ الْوَهْبَانِي وَغَيْرِه من الْمُعْتَبَرَاتِ ١ اهـ وَفِيْهَا وفِى الْخَيْرِيَةِ من كِتَابِ الْوَقْفِ قد صرحوا (٢) بِانَّ من ظَنَّ ان عليه دينًا فَبَانَ خِلَافُه يَرْجِعُ بِمَا اَدَّى ولَوْ كَان قد اسْتَهْلَكَه رَجَعَ بِبَدَلِهِ ٢ اهـ . اقول: هذا فيما لو علم انه ليس للمدفوع اليه لم يدفع اليه اما هنا فانما يأتون به له ولو علموا ان الملك يقع لهم لم يتخلفوا عن اعطائه له فرضاهم بتصرفہ فیہ ثابت على كل تقدير ولهذا لم يكترث

(دائیں کالم کی اردو عبارت): یہ چیز ان کی ملکیت میں ہے اور اُس کی ملک میں اُسی وقت ہوگی جب وہ اذن دیں، اور اس صورت میں اس کو گمان ہے کہ وہ مالک ہے اور ان کو بھی گمان ہے کہ وہی مالک ہے، اور جس گمان کا خطا ہونا ظاہر ہو اس کا کوئی اعتبار نہیں، مثلاً کوئی شخص یہ گمان کر بیٹھے کہ فلاں چیز زید کی امانتوں میں سے اس کے باپ کے پاس ہے اور اس پر گمان پر وہ چیز زید کے وارثوں کو دے دیتا ہے اور وہ اس میں تصرف کر لیتے ہیں پھر بعد میں اس کو پتا چلتا ہے کہ وہ چیز تو اس کے باپ ہی کی ہے زید کی نہیں ہے، تو اگر وہ چیز موجود ہو تو وہ ان سے واپس لے سکتا ہے اور اگر ہلاک ہو گئی ہے تو اس کا ضمان لے سکتا ہے، "العقود الدریہ" کے کتاب الشرکت میں ہے کہ جس نے کوئی ایسی چیز دی جو اس پر واجب نہ تھی تو وہ اس کو واپس لے سکتا ہے، ہاں اگر بطور ہبہ دی ہو اور اس کے قبضہ میں ہلاک ہو گئی ہو تو واپس نہیں لے سکتا ہے، یہی چیز شرح نظم وہبانی وغیرہ معتبر کتب میں ہے اھ اور اس میں اور الخیریہ کے

کتاب الوقف کے حوالہ سے ہے کہ اگر کسی شخص نے یہ گمان کیا کہ اُس پر دین ہے۔ بعد میں معلوم ہوا کہ غلط ہے، تو جو دیا ہے وہ واپس لے گا، اور اگر وہ ہلاک ہو گیا ہو تو اس کا بدل لے گا اہ (ت) میں کہتا ہوں یہ اُس صورت میں ہے جبکہ اس کو یہ علم ہوا ہو کہ یہ مدفوع الیہ کے لئے نہ تھا تو اُس کو نہ دے گا، اور یہاں تو وہ اُسی کیلئے لاتے ہیں اور اگر ان کو یہ علم ہو کہ ملک ان کیلئے واقع ہو گی تو اس کے دینے سے تخلف نہ کریں گے، تو

(حواشی): 1. عقود الدریہ کتاب الشرکۃ قندھار افغانستان 1/ 91 2. فتاوٰی خیریہ کتاب الوقف بیروت 1/ 130 صفحہ 500 از 711

Fatawa Razawiyya - Volume Second

[Top Section] Arabic Text: ...to the elite, let alone the general public, as was admitted. So there is no reason to attribute ignorance or negligence to them, or to condemn them. This is what I hold, and true knowledge of the truth lies with the Subtle, the Aware. Urdu Text: Their agreement to his disposal is proven in any case, and for this reason, even the elite do not care about it, let alone common people, as they themselves have admitted. So there is no reason to attribute ignorance or negligence to them or to reprimand them. This is what I have etc. (T)

[Main Body] Note, I say: This 'without compensation' includes three scenarios: First, that he is not his employee at all. Second, that he is his employee but not for this specific task but for some other specific task; so this is also 'without compensation'. Third, he is a general servant where this task is also included, but he was asked for this task outside of his working hours. For example, he is a daytime servant and was asked to fetch water at night; this time is also 'without compensation'. Therefore, we did not include these scenarios in the classification. In the fourth scenario, it (the result of the labor) will be the permissible property of the master, meaning when this work was taken during his employment hours; otherwise, it falls under the third scenario. As mentioned, the reason for it being the master's property in this case is that during employment hours, the employee's benefits are sold to him (the master), and his physical possession is exactly the master's possession. It is mentioned in Hidayah:

[Bottom Section] Arabic Text: (2) The specific employee (Ajir al-Khass) is the one who deserves wages by surrendering himself for the period, even if he does not work, such as one hired for a month for service or for grazing sheep. He is called 'Ajir Wahd' (exclusive employee) because he cannot work for another, as his benefits during that period have become due to him (the employer). Wages are in exchange for benefits, and therefore, the wages remain due even if the work is interrupted. (There is no liability for what is damaged by his work) because once the benefits become the property of the employer, if he commands him to dispose in his property, it is valid, and he becomes his representative, so his action is attributed to him. Urdu Text: That specific employee who is entitled to wages for surrendering himself for a period, whether he works or not (for example, taking a person on wages for a month for service or for grazing goats). He is called 'Ajir-e-Wahd' because he cannot do another's work since all his benefits in that period have become dedicated to him (the employer), and wages are in exchange for benefits. Therefore, the employee

remains entitled even if the work ends. (If something is destroyed by his action, there is no compensation/liability on him) because when the benefits became the employer's property, then when he ordered disposal in his own property, it became valid, and he...

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (द्वितीय भाग)

[ऊपरी खंड] अरबी पाठ: ...खास लोगों को, आम जनता की तो बात ही छोड़िए, जैसा कि स्वीकार किया गया है। इसलिए उन्हें अज्ञानता या लापरवाही का पात्र मानने या उनकी निंदा करने का कोई कारण नहीं है। यह मेरा विचार है, और वास्तविक सत्य का ज्ञान सूक्ष्म, जानकार (ईश्वर) के पास है। उर्दू पाठ: उनका उसके निपटान पर सहमत होना हर हाल में सिद्ध है, और इसी कारण खास लोग भी इसकी परवाह नहीं करते, आम लोगों की तो बात ही क्या, जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। तो कोई कारण नहीं कि उन्हें अज्ञानता, लापरवाही की ओर नसब किया जाए या उन्हें टोका जाए। यह वह है जो मेरे पास है आदि (त)

[मुख्य भाग] सावधानी, मैं कहता हूँ: यह 'बिना मुआवजे' के तीन स्थितियों को शामिल करता है: पहली यह कि वह उसका कर्मचारी ही न हो। दूसरी यह कि वह उसका कर्मचारी तो है लेकिन इस काम पर नहीं बल्कि किसी और खास काम पर है; तो यह भी 'बिना मुआवजे' के ही हुआ। तीसरी यह कि वह सामान्य सेवा पर नौकर है जिसमें यह काम भी शामिल है, लेकिन उससे यह काम उसकी नौकरी के समय के अलावा किसी अन्य समय में करने को कहा गया। उदाहरण के लिए, वह दिन का नौकर है और उससे रात को पानी भरने के लिए कहा गया; यह समय भी 'बिना मुआवजे' के है। इसीलिए हमने इन स्थितियों को वर्गीकरण में नहीं लिया। चौथी स्थिति में, वह मालिक की जायज़ संपत्ति होगी, यानी जब यह काम उसकी नौकरी के समय में लिया गया हो; अन्यथा यह तीसरी स्थिति में आता है। जैसा कि बताया गया है, इस स्थिति में मालिक की संपत्ति होने का कारण यह है कि नौकरी के समय में कर्मचारी के लाभ उसके(मालिक के) हाथों बिक चुके होते हैं और उसका भौतिक कब्ज़ा वास्तव में मालिक का ही कब्ज़ा है। हिदाया में है:

[निचला खंड] अरबी पाठ: (2) विशेष कर्मचारी (अजीर-ए-खास) वह है जो एक अवधि के लिए स्वयं को सौंपकर मजदूरी का हकदार हो जाता है, भले ही वह काम न करे, जैसे किसी को एक महीने के लिए सेवा या भेड़ें चराने के लिए काम पर रखा गया हो। उसे 'अजीर वहद' (अनन्य कर्मचारी) कहा जाता है क्योंकि वह दूसरे के लिए काम नहीं कर सकता है क्योंकि उस अवधि के दौरान उसके लाभ उसके(नियोक्ता के) लिए देय हो गए हैं। मजदूरी लाभ के बदले में होती है, और इसलिए, मजदूरी देय बनी रहती है भले ही काम बाधित हो जाए। (उसके काम से जो नष्ट हो जाए उसके लिए कोई दायित्व नहीं है) क्योंकि एक बार जब लाभ नियोक्ता की संपत्ति बन जाते हैं, तो यदि वह उसे अपनी संपत्ति में निपटान करने का आदेश देता है, तो यह वैध है, और वह उसका प्रतिनिधि बन जाता है, इसलिए

उसका कार्य उसी की ओर माना जाता है। उर्दू पाठ: वह विशिष्ट कर्मचारी जो एक अवधि के लिए स्वयं को सुपुर्द करने पर मजदूरी का हकदार होता है, चाहे वह काम करे या न करे (उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को एक महीने के लिए सेवा या बकरियां चराने के लिए मजदूरी पर लिया)। उसे 'अजीर-ए-वहद' इसलिए कहते हैं कि वह दूसरे का काम नहीं कर सकता क्योंकि उस अवधि में उसके सभी लाभ उसके लिए विशिष्ट हो गए हैं, और मजदूरी लाभ के बदले में होती है। इसलिए कर्मचारी हकदार रहता है भले ही काम समाप्त हो जाए। (यदि उसके कार्य से कोई चीज़ नष्ट हो जाए तो उस पर कोई जुर्माना/मुआवजा नहीं है) क्योंकि जब लाभ नियोक्ता की संपत्ति बन गए, तो अब जब उसने अपनी संपत्ति में निपटान का आदेश दिया तो वह सही हो गया, और वह...

पृष्ठ 501 / 711

[اوپری حصہ] عربی عبارت: به الخاصة فضلا عن العامة كما اعترف به فلا وجه لنسبتهم الى الجهل والغفلة واقامة النكير، هذا ما عندي والعلم بالحق عند اللطيف الخبير۔ اردو عبارت: ان کا اس کے تصرف پر راضی ہونا بہر تقدیر ثابت ہے اور اس لئے خاص لوگ بھی اس کی پرواہ نہیں کرتے چہ جائیکہ عام لوگ، جیسا کہ خود انہوں نے اعتراف کیا، تو کوئی وجہ نہیں کہ ان کو جہل، غفلت کی طرف منسوب کیا جائے یا انہیں نکیر کی جائے هذا ما عندی الخ (ت)

[متن] تنبیہ اقول: یہ بلا معاوضہ تین صورتوں کو شامل ہے: ایک یہ کہ وہ اس کا اجیر ہی نہ ہو۔ دوسرے یہ کہ اس کا اجیر تو ہے مگر اس کام پر نہیں کسی اور خاص کام پر ہے تو یہ بلا معاوضہ ہی ہوا۔ تیسرے یہ کہ مطلق کام خدمت پر نوکر ہے جس میں یہ کام بھی داخل مگر نوکری کے غیر وقت میں اس سے اس کام کیلئے کہا مثلا دن کا نوکر ہے اس سے رات کو پانی بھروایا کہ یہ وقت بھی بلا معاوضہ ہے ولذا ہم نے ان صورتوں کو تشقیق میں نہ لیا۔ صورت چہارم میں وہ مباح آقا کی ملک ہوگا یعنی جب کہ اس کی نوکری کے وقت میں یہ کام لیا ورنہ صورت سوم میں داخل ہے کما مر اس صورت میں ملک آقا ہونے کی وجہ یہ ہے کہ نوکری کے وقت میں نوکر کے منافع اس کے ہاتھ بکے ہوئے ہیں اور اس کا اس کے قبضہ بعینہ اس کا قبضہ ہے۔ ہدایہ میں ہے:

[نچلا حصہ] عربی عبارت: (۲) الاجير الخاص الذى يستحق الاجرة بتسليم نفسه فى المدة وان لم يعمل كمن استؤجر شهرا للخدمة اولرعى الغنم) وانما سمى اجير وحد لانه لايمكنه ان يعمل لغيره لان منافعه فى المدة صارت مستحقة له والاجر مقابل بالمنافع ولهذا يبقى الاجر مستحقاً وان نقض العمل (لاضمان على ماتف من عمله)لان المنافع متى صارت مملوكة للمستأجر فاذا امره بالتصرف فى ملكه صح ويصير نائباً منابه فيصير فعله منقولا اليه اردو عبارت: وہ خاص اجیر جو اجرت کا مستحق ہوتا ہے

کہ ایک مدت کے لئے اپنے آپ کو سپرد کردے خواہ کام نہ کرے (مثلاً کسی شخص کو ایک ماہ کے لئے خدمت یا بکریاں چرانے کیلئے اجرت پر لیا) اس کو اجیر وحد اس لئے کہتے ہیں کہ وہ دوسرے کا کام نہیں کرسکتا ہے کیونکہ اس مدت میں اس کے منافع سب اس کیلئے مخصوص ہو گئے ہیں اور اجر منافع کے مقابل ہوتا ہے اس لئے اجیر مستحق رہتا ہے اگرچہ کام ختم ہوجائے (اس کے عمل سے اگر کوئی چیز تلف ہو جائے تو اس پر ضمان نہیں ہے) کیونکہ منافع جب مستاجر کی ملک ہو گئے تو اب جب اس نے اپنی ملک میں تصرف کا حکم دیا تو صحیح ہوگیا، اور وہ

Fatawa Razawiyya Volume Two

(Left Column): ...as if he did it himself, therefore he is not liable for it. 1 -

(Right Column): He will be his representative and his act will be attributed to him as if he himself performed it, therefore he will not be liable for it. (T)

Similarly, in the fifth case, the employee will be entitled to the fixed wage because this is a valid contract (ijara saheeha). In the sixth case also, that thing will be a permissible property of the employer (mustajir), but he will receive a fair wage (ajr-i-misl) which shall not exceed the named wage (musamma), because this is a void contract (ijara fasida).

(Author's Commentary - I say): And it appears to me, and Allah knows best, that the reason for this is that an employment contract (ijara) is either for work, meaning acting upon something like transporting, carrying, cutting, uprooting, etc. This is called a common employee (ajir mushtarak). The objective here is the performance of that act, however it may be. Therefore, it is not restricted to the employee performing the work himself. Alternatively, the contract is for the services/benefits (manafi) of the employee, which applies to a private employee (ajir khaas). In the case of permissible/unclaimed things (mubahat), the first form of contract is not conceivable because they are not exclusive to the employer, and everyone has an equal relation to them. So, how can performing an act upon them make the wage obligatory for the employer? Rather, the wage is in exchange for the benefits of the employee where the employer intends to use him for his need. Thus, he becomes an exclusive employee (ajir wahd), and his benefits cannot be estimated except by specifying and limiting the duration. If the duration is not mentioned, the subject matter of the contract remains unknown (majhul), and thus the contract becomes void (fasid). Therefore, if the object is the property of the employer, for example, if the employer says "Cut this tree of mine for one dirham," it is permissible as will be mentioned later. And Allah knows best. (T)

1 Al-Hidayah, Chapter on Liability of the Employee, Yusufi Press, Lucknow, 12/308

फ़तावा रज़विया खंड द्वितीय

(बायां कॉलम): ...मानो उसने स्वयं किया हो, इसलिए वह इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगा। १ -

(दायां कॉलम): वह उसका प्रतिनिधि होगा और उसका कार्य उस पर आधारित होगा मानो उसने स्वयं यह कार्य किया है, इसलिए वह उत्तरदायी नहीं होगा। (त)

इसी तरह, पांचवें मामले में, कर्मचारी निश्चित वेतन का हकदार होगा क्योंकि यह एक सही अनुबंध (इजारा सहीहा) है। छठे मामले में भी, वह वस्तु नियोक्ता (मुस्ताजिर) की वैध संपत्ति होगी, लेकिन उसे उचित वेतन (अज्र-ए-मिस्ल) मिलेगा जो नाममात्र वेतन (मुसम्मा) से अधिक नहीं होगा, क्योंकि यह एक अमान्य अनुबंध (इजारा फासिदा) है।

(लेखक की टिप्पणी - मैं कहता हूँ): और मुझे जो कारण प्रतीत होता है, और अल्लाह बेहतर जानता है, वह यह है कि रोजगार अनुबंध (इजारा) या तो काम पर आधारित होता है, अर्थात किसी चीज़ पर क्रिया करना जैसे परिवहन, ढोना, काटना, उखाड़ना आदि। इसे 'अजीर मुश्तरक' (साझा कर्मचारी) कहा जाता है। यहाँ उद्देश्य उस कार्य का संपादन है, चाहे वह जैसे भी हो। इसलिए, इसमें यह शर्त नहीं है कि कर्मचारी स्वयं कार्य करे। वैकल्पिक रूप से, अनुबंध कर्मचारी के लाभों (मनाफी) के लिए होता है, जो 'अजीर खास' (निजी कर्मचारी) पर लागू होता है। अनुमेय/अदावा वस्तुओं (मुबाहात) के मामले में, अनुबंध का पहला रूप बोधगम्य नहीं है क्योंकि वे नियोक्ता के लिए विशिष्ट नहीं हैं, और सभी का उनके साथ समान संबंध है। तो, उन पर कोई क्रिया करना नियोक्ता के लिए वेतन को अनिवार्य कैसे बना सकता है? बल्कि, वेतन कर्मचारी के लाभों के बदले में है जहाँ नियोक्ता उसे अपनी आवश्यकता के लिए उपयोग करना चाहता है। इस प्रकार, वह एक 'अजीर वहद' (अनन्य कर्मचारी) बन जाता है, और उसके लाभों का अनुमान केवल अवधि निर्धारित और सीमित करके ही लगाया जा सकता है। यदि अवधि का उल्लेख नहीं किया गया है, तो अनुबंध का विषय अज्ञात (मजहूल) रह जाता है, और इस प्रकार अनुबंध अमान्य (फासिद) हो जाता है। इसलिए, यदि वस्तु नियोक्ता की संपत्ति है, उदाहरण के लिए, यदि नियोक्ता कहता है "मेरे इस पेड़ को एक दिरहम में काट दो," तो यह अनुमेय है जैसा कि बाद में आएगा। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

१ अल-हिदाया, अध्याय: कर्मचारी का दायित्व, युसुफी प्रेस, लखनऊ, १२/३०८ पृष्ठ ७११ का ५०२

کانه فعله بنفسه فلهذا لا یضمنه ۱ - اس کا قائم مقام ہوگا اور اس کا فعل اس کی طرف منقول ہوگا گویا یہ فعل اس نے خود کیا ہے ، اس لئے وہ اس کا ضامن نہ ہوگا ۔ (ت)

یوں ہی صورتِ پنجم میں اور اجیر اجرِ مقرر کا مستحق ہوگا کہ یہ اجارہ صحیحہ ہے اور صورتِ ششم میں بھی وہ شے مباح ملکِ مستأجر ہوگی مگر اجرِ مثل پائے گیا جو مسمّٰی سے زائد نہ ہو کہ یہ اجارہ فاسدہ ہے۔

اقول (میں کہتا ہوں): ویظهر لی ان الوجه فیه واللہ تعالی اعلم (مجھے اس کی جو وجہ معلوم ہوتی ہے واللہ تعالٰی اعلم) ان الاجارة اما علی العمل اعنی التصرف فی شیئ من النقل والحمل والقطع والقلع وغیر ذلك (وہ یہ ہے کہ اجارہ یا تو عمل پر ہوگا یعنی کسی چیز میں تصرف کرنا، نقل و حمل، کاٹنے یا اکھاڑنے کے طور پر) وهو فی الاجیر المشترك (اور اس کو اجیر مشترک کہتے ہیں) والمقصود فیه حصول ذلك التصرف کیفما کان ولذا لم یتقید بعمل الاجیر نفسه (اور مقصود اس میں اس تصرف کا حاصل ہونا ہے خواہ کسی طرح ہو لہذا اس میں یہ قید نہیں کہ اجیر خود ہی عمل کرے) واما علی منافع الاجیر وهو فی الاجیر الخاص (اور یا اجارہ اجیر کے منافع پر ہوگا یہ اجیر خاص میں ہوتا ہے) والاجارة فی المباحات لا نعقل علی الوجه الاول (اور مباح چیزوں میں پہلی صورت میں اجارہ متصور نہیں) لانها لا تختص بالمستأجر ونسبتها الی الکل سواء (کیونکہ وہ مستاجر کے ساتھ مخصوص نہیں، اور سب کی طرف اس کی نسبت یکساں ہے) فکیف یکون حصول تصرف فیها موجبا للاجر علی المستأجر (تو اس میں تصرف کا حصول مستاجر پر اجر کو کیونکر لازم کرے گا) بل انما الاجر مقابل بمنافع الاجیر حیث یرید المستأجر ان یستعمله فی حاجته (بلکہ ان میں اجر اجیر کے منافع کے مقابل ہے کہ مستاجر چاہتا ہے کہ اس کو اپنی حاجت میں استعمال

کرے) فلا یکون الا اجیر وحد (تو یہ اجیر وحد ہوگا) ولا تتقدر منافعه الا بتعیین المدة (اور اس کے منافع کا اندازہ مدّت کی تعیین و تحدید سے ہی ہوگا) فأذا لم تذکر بقی المعقود علیه مجهولا ففسدت (اور جب مدّت کا ذکر نہیں کیا گیا تو معقود علیہ مجہول رہے گا اور اجارہ فاسد رہے گا) ولذا لو کان الشیئ ملك المستأجر کأن یقول اقطع شجرتی هذه بدرهم جاز کما یاتی واللہ تعالی اعلم۔ (اور اسی لئے اگر کوئی چیز مستاجر کی ملک ہو، مثلاً مستاجر یہ کہے کہ میرا یہ درخت ایک درہم میں کاٹ دو تو جائز ہے جیسا کہ آئے گا، واللہ اعلم۔ (ت))

۱ الهدایة باب ضمان الاجیر مطبع یوسفی لکهنو ۲ / ۳۰۸ Page 502 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Two

In Fatawa Alamgiri, it is quoted from Al-Qunyah:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
Qal (1) Nasir: I asked Abu Sulayman about a person who hires someone to gather wood for him until night. He said: If he specifies a day, it is permissible and the wood belongs to the hirer (2). If he says, "This wood," the hire is invalid, the wood belongs to the hirer, and he must pay the fair wage (ajr al-mithl) (3). If the wood he specified was already the property of the hirer, it is permissible[1].	Nasir said: I asked Abu Sulayman that if a person contracts a laborer to collect wood for him until night, he replied: If one day's name is taken, it is permissible and the wood will belong to the hirer. If he points and says, "This wood," then the hire is invalid; the wood belongs to the hirer, and a fair wage (ajr al-mithl) is due. If those woods are the property of the hirer, then it is permissible.
(Author's Note) I say: The meaning is the fair wage, regardless of how much it is, if he did not specify a fixed amount; otherwise, the lesser of the two—the fair wage and the specified wage—shall be given, as is the well-known principle. Therefore, I have relied upon it, and its clarification will also follow. (T)	(T) I say: The meaning is the fair wage, regardless of how much it is, if he did not specify a fixed amount; otherwise, the lesser of the fair wage and the specified wage shall be given, as is the well-known principle. Therefore, I have relied upon it, and its clarification will also follow. (T)
Aqulu: Wal-muradu ajr al-mithli balaghan ma balagha in lam yusamma mu'ayyanan wa illa fal-aqallu minhu wa minal-musamma kama huwal-aslul-ma'rufu wa lidha 'awwaltu 'alayhi wa sayati-t-tasrihu bihi.	

In Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
(He hired him to hunt for him or collect wood for him; if he specified a time) for that (it is permissible; otherwise) if he did not specify a time and designated the wood, it is invalid (unless he designated the wood	(He took him for labor to hunt for him or pick up wood; if he fixed a time for it, it is permissible; otherwise, it is not.) If he did not fix a time and designated the wood, then this contract is invalid. (Yes,

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
and it is) i.e., the wood (his property, then it is permissible) as per Mujtaba, and the fatwa is based on this according to Sayrafiyyah (2). Allama "Sh" said: His statement "otherwise" means the wood belongs to the worker. "T" said: His statement "invalid" is in Hindiyyah: "If he said this wood" until the end of what we quoted. He said: His statement "and on this is the fatwa" is in Sayrafiyyah; it says "if he mentioned the day..." until the end.	if he designated the wood and those woods are his property, then it is permissible.) This is as per Al-Mujtaba, and the fatwa is based on this according to "Sayrafiyyah." Allama "Sh" said: And his statement "otherwise" means the wood will belong to the worker. "T" said: His statement "invalid" is in Hindiyyah: "If he said this wood" until the end.

1 Fatawa Hindiyyah, Chapter 16, Peshawar, 4/451 2 Al-Durr al-Mukhtar, chapter on Invalid Hire, Mujtabai Delhi, 2/180

फ़तावा रज़विया जिल्द दूसरी

फ़तावा आलमगीरिया में कुनिया से उद्धृत है:

अरबी पाठ

नसीर ने कहा: मैंने अबू सुलेमान से उस व्यक्ति के बारे में पूछा जो किसी को रात तक लकड़ी इकट्ठा करने के लिए काम पर रखता है। उन्होंने कहा: यदि वह एक दिन का उल्लेख करता है, तो यह जायज़ है और लकड़ी काम पर रखने वाले की होगी। यदि वह इशारा करते हुए कहता है, "यह लकड़ी," तो काम अमान्य है, लकड़ी काम पर रखने वाले की है, और उसे उचित पारिश्रमिक (अजर-ए-मिस्ल) देना होगा। यदि वह लकड़ी जिसकी उसने पहचान की है, काम पर रखने वाले की ही संपत्ति है, तो यह जायज़ है।

(लेखक की टिप्पणी) मैं कहता हूँ: इसका अर्थ उचित पारिश्रमिक है, चाहे वह कितना भी हो, बशर्ते कि उसने कोई निश्चित राशि तय न की हो; अन्यथा, उचित पारिश्रमिक और तयशुदा राशि में से जो कम हो, वही दिया जाएगा, जैसा कि प्रसिद्ध सिद्धांत है। इसीलिए मैंने इस पर भरोसा किया और इसका स्पष्टीकरण भी आगे आएगा।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

नसीर ने कहा: मैंने अबू सुलेमान से पूछा कि यदि कोई व्यक्ति किसी मजदूर के साथ यह अनुबंध करता है कि वह रात तक उसके लिए लकड़ी इकट्ठा करेगा, तो उन्होंने उत्तर दिया: यदि एक दिन का उल्लेख किया जाता है, तो यह जायज़ है और लकड़ी काम पर रखने वाले की होगी। यदि वह इशारा करके कहता है, "यह लकड़ी," तो अनुबंध अमान्य है; लकड़ी काम पर रखने वाले की है, और उचित पारिश्रमिक देना होगा। यदि वह लकड़ी काम पर रखने वाले की संपत्ति है, तो यह जायज़ है।

(त) मैं कहता हूँ: इसका अर्थ उचित पारिश्रमिक है, चाहे वह कितना भी हो, बशर्ते कि उसने कोई निश्चित राशि तय न की हो; अन्यथा, उचित पारिश्रमिक और तयशुदा राशि में से जो कम हो, वही दिया जाएगा, जैसा कि प्रसिद्ध सिद्धांत है। इसीलिए मैंने इस पर भरोसा किया और इसका स्पष्टीकरण भी आगे आएगा। (त)

तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी पाठ

(यदि उसने उसे अपने लिए शिकार करने या लकड़ी इकट्ठा करने के लिए काम पर रखा; यदि इसके लिए समय निर्धारित किया) तो (यह जायज़ है; अन्यथा)

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

(उसने उसे इस काम पर रखा कि वह उसके लिए शिकार करे या लकड़ी इकट्ठा करे; यदि उसने इसके लिए समय निर्धारित किया, तो यह

अरबी पाठ

यदि उसने समय निर्धारित नहीं किया और लकड़ी निर्दिष्ट कर दी, तो यह अमान्य है (सिवाय इसके कि लकड़ी निर्दिष्ट कर दी गई हो और वह) यानी लकड़ी (उसकी अपनी संपत्ति हो, तो यह जायज़ है) मुजतबा के अनुसार, और सय़रफ़िया के अनुसार इसी पर फ़तवा है। अल्लामा 'श' ने कहा: 'अन्यथा' का अर्थ है कि लकड़ी कर्मचारी की होगी। 'त' ने कहा कि उनका कथन "अमान्य" है, जो हिंदिया में है: यदि उसने "यह लकड़ी" कहा, जो हमने ऊपर उद्धृत किया है। उन्होंने कहा: उनका कथन "इसी पर फ़तवा है" सय़रफ़िया से है, इसमें दिन के उल्लेख का ज़िक्र है... अंत तक।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

जायज़ है, अन्यथा नहीं।) यदि उसने समय निर्धारित नहीं किया और लकड़ी निर्दिष्ट कर दी, तो यह अनुबंध अमान्य है। (हाँ, यदि उसने लकड़ी निर्दिष्ट कर दी और वे लकड़ियाँ उसकी अपनी संपत्ति हैं, तो यह जायज़ है।) मुजतबा के अनुसार इसी पर फ़तवा है "सय़रफ़िया" में। अल्लामा "श" ने कहा: और उनका कथन "अन्यथा" का अर्थ है कि लकड़ी कर्मचारी की होगी। "त" ने कहा: उनका कथन "अमान्य" हिंदिया में है: "यदि उसने यह लकड़ी कहा" अंत तक।

1 फ़तावा हिंदिया, अध्याय 16, पेशावर, 4/451 2 अल-दुर्रुल मुख़्तार, अमान्य किराया अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 2/180

पृष्ठ 503 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

فتاوی عالمگیریہ میں قنیہ سے ہے:

عربی عبارت

قال(۱) نصیر سألت ابا سلیمن عمن استأجرہ لیحتطب لہ الی اللیل قال ان سمی یوما جاز والحطب للمستأجر(۲) ولو قال ھذا الحطب فالاجارۃ فاسدۃ والحطب للمستأجر وعلیہ اجر مثلہ(۳) ولو کان الحطب الذی عینہ ملك المستأجر جاز[1] ۔

اقول: والمراد اجر المثل بالغاماً بلغ ان لم یسم معیناً والا فالا قل منہ ومن المسمی کما ھو الاصل المعروف ولذا عولت علیہ وسیأتی التصریح بہ۔

اردو ترجمہ

نصیر نے فرمایا میں نے ابو سلیمان سے پوچھا کہ ایک شخص کسی مزدور سے معاہدہ کرے کہ وہ رات تک اس کیلئے لکڑیاں جمع کرے، تو فرمایا کہ اگر ایک دن کا نام لیا تو جائز ہے اور لکڑیاں مستاجر کی ہوں گی، اور اگر اشارہ کر کے کہا کہ یہ لکڑیاں تو اجارہ فاسد ہے اور لکڑیاں مستاجر کی ہیں اور اس پر اجر مثل ہے، اگر وہ لکڑیاں مستاجر کی ملک ہیں تو جائز ہے۔

(ت) میں کہتا ہوں مراد اجر مثل ہے خواہ جتنا بھی ہو اگر اس نے معین نہ کیا ہو ورنہ اجر مثل اور اجر معین سے جو کم ہو وہ دیا جائے گا، جیسا کہ کلیہ معروف ہے، اس لئے میں نے اس پر اعتماد کیا اور اس کی تصریح بھی آجائے گی۔ (ت)

تنویر الابصار و در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
(استأجره ليصيد له اويحتطب له فان وقت)لذلك وقتاً(جاز والا)فلولم يوقت وعين الحطب فسد (الا اذعين الحطب وهو) اى الحطب (ملكه فيجوز) مجتبى وبه يفتى صيرفية ١٢هـ قال العلامة ش قوله والا ى والحطب للعامل ط قوله فسد قال فى الهنديه ولو قال هذا الحطب الى آخر ما نقلنا قال قوله وبه يفتى صيرفيه قال فيها ان ذكر اليوم	(اس کو اس لئے مزدوری پر لیا کہ وہ اس کے لئے شکار کرے یا لکڑیاں چنے تو اگر اس کا وقت مقرر کیا تو جائز ہے ورنہ نہیں) اور اگر وقت مقرر نہ کیا، اور لکڑیاں مقرر کر دیں تو یہ عقد فاسد ہے (ہاں اگر لکڑیاں متعین کردیں اور وہ لکڑیاں اسی کی ملک ہیں تو جائز ہے) مجتبیٰ اسی پر فتویٰ ہے "صیرفیہ" اھ۔ علامہ "ش" نے فرمایا "اور اس کا قول والا یعنی لکڑیاں عامل کی ہوں گی ط ان کا قول "فسد" ہندیہ میں ہے ولو قال هذا الحطب الى آخر

[1] فتاویٰ ہندیہ الباب السادس عشر پشاور ۴/ ۴۵۱ [2] الدر المختار اجارہ فاسدہ مجتبائی دہلی ۲/ ۱۸۰

Fatawa Ridawiyya, Volume II

I say: What is meant is the customary wage (ajr al-mithl), whatever it may reach, if a specific amount was not named; otherwise, not less than it and not more than what was named, as is the well-known principle. That is why I relied upon it, and the explicit statement about it will follow. So, the benefit belongs to the one who commanded (the employer), otherwise, it belongs to the one commanded (the employee). This is the narration of al-Hawi, and the fatwa is given according to it. It is stated in al-Minah: This agrees with what we previously cited from al-Mujtaba, and hence we relied upon it in the summary (Mukhtasar). (T)

I say: There are two caveats here. First: The wood belongs to the worker if a time was not fixed, as mentioned in al-Sayrafiyyah. The two learned scholars, 'Ta' (Tahtawi) and 'Sha' (Shami), followed its general application. Its context is when the wood itself is also not specified; otherwise, the wood belongs to the employer, as we previously cited from al-Hindiyyah from al-Qunyah from Nasir from Abu Sulayman. They both cited it and affirmed it. In Ghamz al-'Uyun, it is stated: If a person hires a worker to hunt for him or to gather wood, it is permissible if a time is fixed, such as saying "this day" or "this month". The named wage becomes obligatory because he is a specific employee (ajir wahd), and the condition for its validity is the specification of time, which has been fulfilled. If the time is not fixed but the game or wood is specified, then the contract is invalid (fasid) due to the uncertainty of time. In this case, a customary wage (ajr al-mithl) is due, and whatever is obtained belongs to the hirer. Thus it is in al-Walwalijiyyah. In Khizanat al-Muftin: A man hires a laborer to sew for him until night for a dirham; it is permissible. Similarly, if he hires him to hunt for him until night or to gather wood; it is permissible, and the wood and game belong to the hirer. But if he says, "hunt this specific animal" or "gather wood..."

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Invalid Hire, Al-Babi, Egypt, 5/43.
2. Ghamz al-Uyun with Al-Ashbah, Book of Hire, Idarat al-Quran, Karachi, 2/56.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

मैं कहता हूँ: यहाँ 'अज्र-ए-मिस्ल' (प्रचलित मज़दूरी) से मुराद वह है जो कुछ भी हो, बशर्ते कि कोई निश्चित राशि तय न की गई हो; अन्यथा, तय की गई राशि से कम नहीं और उससे ज़्यादा नहीं, जैसा कि प्रसिद्ध सिद्धांत है। इसीलिए मैंने इस पर भरोसा किया है और इसका स्पष्ट उल्लेख आगे आएगा। अतः लाभ आदेश देने वाले (नियोक्ता) का होगा, अन्यथा आदेश प्राप्त करने वाले (कर्मचारी) का। यह 'अल-हावी' का वर्णन है और इसी के अनुसार फतवा दिया जाता है। 'अल-मिन्ह' में कहा गया है: यह उस बात से मेल खाता है जिसे हमने पहले 'अल-मुज्तबा' से उद्धृत किया था, और इसीलिए हमने सारांश (मुख़्तसर) में इस पर भरोसा किया। (त)

मैं कहता हूँ: यहाँ दो चेतावनियाँ हैं। पहली: लकड़ी मज़दूर की होगी यदि समय निर्धारित न किया गया हो, जैसा कि 'अस-सैराफिया' में है। दो विद्वान मनीषियों, 'ता' (तहतावी) और 'शा' (शामी) ने इसके सामान्य अनुप्रयोग का अनुसरण किया। इसका संदर्भ तब है जब लकड़ी भी निर्धारित न की गई हो; अन्यथा, लकड़ी आदेश देने वाले की होगी, जैसा कि हमने पहले 'अल-हिन्दिया' से 'अल-कुन्या' के हवाले से 'नासिर' से 'अबू सुलेमान' के माध्यम से उद्धृत किया है। उन दोनों ने इसे उद्धृत किया और इसकी पुष्टि की। 'गमज़ अल-उयून' में है: यदि कोई व्यक्ति किसी मज़दूर को अपने लिए शिकार करने या लकड़ी इकट्ठा करने के लिए किराए पर लेता है, तो यह जायज़ है बशर्ते कि समय निर्धारित कर दिया गया हो, जैसे कि कहना "आज का दिन" या "यह महीना"। तय की गई मज़दूरी अनिवार्य होगी क्योंकि वह एक 'अजिर-ए-वहद' (विशिष्ट कर्मचारी) है, और इसकी वैधता की शर्त समय का स्पष्टीकरण है, जो पूरा हो गया है। यदि समय निर्धारित नहीं है लेकिन शिकार और लकड़ी का निर्धारण किया गया है, तो अनुबंध समय की अनिश्चितता के कारण 'फ़ासिद' (अवैध) है। इस मामले में 'अज्र-ए-मिस्ल' देय है, और जो कुछ भी प्राप्त होता है वह किराये पर लेने वाले का होता है। 'अल-वलवालिजिया' में ऐसा ही है। 'खज़ानत अल-मुफ्तीन' में है: एक व्यक्ति एक मज़दूर को रात तक एक दिरहम में सिलाई करने के लिए किराए पर लेता है; यह जायज़ है। इसी तरह, यदि वह उसे रात तक शिकार करने या लकड़ी इकट्ठा करने के लिए किराए पर लेता है; यह जायज़ है, और लकड़ी तथा शिकार किराये पर लेने वाले का होगा। लेकिन अगर वह कहता है, "इस विशिष्ट जानवर का शिकार करो" या "लकड़ी इकट्ठा करो..."

---

1. रद्द अल-मुह्तार, अवैध किराए का अध्याय, अल-बाबी, मिस्र, 5/43।

2. गमज़ अल-उयून अल-अशबाह के साथ, किराए की किताब, इदारात अल-कुरान, कराची, 2/56।

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

اقول: والمراد اجر المثل بالغا ما بلغ ان لم یسم معینا والا فلا اقل منه ومن المسمی کما هو الاصل المعروف ولذا عولت علیه وسیاتی التصریح به فالغف للأمر والا فللمأمور وهذه روایة الحاوی وبه یفتی قال فی المنح وهذا یوافق ما قدمناه عن المجتبی ومن ثم عولنا علیه فی المختصر ا هـ جو ہم نے نقل کیا ہے فرمایا ان کا قول وبہ یفتی صیرفیہ اس میں ہے کہ اگر مستاجر نے دن کا ذکر کیا تو چارہ حکم دینے والے کے لئے ہوگا ورنہ اس کا ہوگا جس کو حکم دیا گیا، اور یہ حاوی کی روایت ہے اور اس پر فتوٰی ہے۔ منح میں ہے اور یہ اس کے موافق ہے جو ہم مجتبٰی سے نقل کر آئے ہیں اور اس لئے ہم نے اس پر مختصر میں اعتماد کیا اھ (ت)

اقول: ههنا تنبیهان الاول کون الحطب للعامل اذالم یوقت علی مافی الصیرفیة وتبع اطلاقها الفاضلان ط و ش محله ما اذا لم یعین الحطب ایضا والا کان للأمر کما قدمنا عن الهندیة عن القنیة عن نصیر عن ابي سلیمن وقد نقلاه ایضا واقراه وفی غمز العیون استأجره لیصید له اولیحتطب جاز ان وقت بان قال هذا الیوم او هذا الشهر ویجب المسمی لان هذا اجیر وحد وشرط صحته بیان الوقت وقد وجد وان لم یوقت ولکن عین الصید والحطب فالاجارة فاسدة لجهالة الوقت فیجب اجر المثل وما حصل یکون للمستأجر کذا فی الولوالجیة اهـ و فی خزانة المفتین رجل استأجر اجیرا لیخیط له الی اللیل بدرهم جاز وکذا لیستاد له الی اللیل اولیحتطب جاز ویکون الحطب والصید للمستأجر ولوقال لیصطاد هذا الصید او لیحتطب میں کہتا ہوں یہاں دو تنبیہات ہیں: پہلی تنبیہ: لکڑیوں کا عامل کیلئے ہونا جبکہ اس نے وقت کا تعین نہ کیا ہو، جیسا کہ صیرفیہ میں ہے، اور دو فاضلوں یعنی ط اور ش نے اس کے اطلاق کی متابعت کی ہے اس کا محل یہ ہے کہ جب لکڑیوں کا تعین بھی نہ کیا ہو ورنہ لکڑیاں آمر کی ہوں گی، جیسا کہ ہم نے ہندیہ اور قنیہ کے حوالہ سے نقل کیا، یہ روایت نصیر کی ابو سلیمان

سے ہے، اور اُن دونوں نے اس کو نقل کیا اور برقرار رکھا، اور غمز العیون میں ہے کسی شخص نے مزدور کو اُجرت پر لیا کہ اُس کیلئے شکار کرے یا لکڑیاں جمع کرے تو یہ جائز ہے بشرطیکہ اس نے اس وقت کا تعین کر دیا ہو مثلاً یہ کہا ہو کہ اس دن یا اس ماہ میں، اور جو طے کیا ہو وہ واجب ہوگا کیونکہ یہ اجیر محض ہے، اور اس کی صحت کی شرط وقت کا بیان ہے جو پائی گئی ہے اور اگر وقت کا تعین نہ کیا ہو لیکن شکار اور لکڑیوں کا تعین کیا ہو تو اجارہ فاسد ہے کہ وقت کی جہالت ہے، تو اس صورت میں اجر مثل اور جو کچھ حاصل ہو وہ مستاجر کے لئے ہوگا جیسا کہ ولولوالجیہ میں ہے۔ اور خزانہ المفتین میں ہے کہ ایک شخص نے ایک مزدور کو کرایہ پر لیا کہ وہ رات تک اس کے لئے ایک درہم میں کپڑے سلائی کرے؛ یہ جائز ہے۔ اسی طرح اگر اسے رات تک شکار کرنے یا لکڑیاں اکٹھا کرنے کے لئے کرایہ پر لیا؛ یہ جائز ہے، اور لکڑیاں اور شکار مستاجر کا ہوگا۔ لیکن اگر وہ کہے کہ "اس شکار کا شکار کر" یا "لکڑیاں اکٹھا کر..."

---

1 ردالمختار اجارہ فاسدہ البابی مصر ۵/ ۴۳ 2 غمز العیون مع الاشباہ کتاب الاجارہ ادارۃ القرآن کراچی ۲/ ۵۶

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

[Translation of Arabic column:] This wood [gathering] constitutes an invalid hiring (ijarah fasidah). The wood and the game belong to the employer (mustajir), and he owes the employee the fair wage (ajr al-mithl). If one seeks assistance from another person in gathering wood or hunting, then the game and the wood belong to the worker (amil). End. (1) And in Al-Hindiyyah, from Muhit al-Sarakhsi, from Muhammad (may Allah have mercy on him), concerning someone who says to another: "Kill this wolf or this lion and you shall have one dirham," and the wolf or lion is game: He is entitled to a fair wage not exceeding one dirham, and the game belongs to the employer. End. In summary, the reports on this matter are extensive. Therefore, it was not appropriate (2) to state generally that the wood belongs to the worker when a time is not specified, as this includes the case of specifying the wood, which (3) the commentator mentioned as a corollary to it. Nay, (4) the text also alluded to it, as you see. The second [point] occurred in Al-Hindiyyah from Al-Quniyyah before what we quoted consecutively to it, the text of which is: He hired [someone] to cut "hajj" (a type of thorn) for him today, so he did so; nothing is due from him, and the "hajj" belongs to the one who ordered it. Nasir said: I asked Abu Sulayman etc. and I wrote upon it the text:

[Translation of Urdu column:] ...will be obligatory, and what is obtained will belong to the employer, as in Al-Walwaljiyyah. End. And in Khazanat al-Muftin, it is stated that if someone hired an employee to sew for him until night for one dirham, it is permissible. Or [if he hired him] to hunt or gather wood until night, then the wood and the game belong to the employer. But if he said: "He should hunt this game or gather this wood," then the hiring is invalid, and the wood and the game belong to the employer, and he is liable for the fair wage for the employee. If assistance is sought from a person in gathering wood or hunting, then the game and the wood belong to the one performing the work. End. And in Al-Hindiyyah, it is narrated from Muhit al-Sarakhsi from Muhammad (may Allah have mercy on him) that if someone said to another: "Kill this wolf or this lion, and you will get one dirham," then the wolf or lion will be considered game, and he will get a fair wage not exceeding one dirham, and the game will belong to the employer. End. The summary is that famous reports exist in this matter, so in the absence of a specified time, it is not correct to declare the wood absolutely for the worker, because this also includes the situation of specifying the wood, and the commentator has mentioned it as an elaboration of

this. Rather, as you see, the text has also pointed towards this — Second Warning: Al-Hindiyyah has also quoted from Al-Quniyyah that...

[Footnotes:] 1. Khazanat al-Muftin 2. Al-Hindiyyah, Chapter 16, Peshawar 4/451 3. Al-Hindiyyah, Chapter 16, Peshawar 4/451 Page 505 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी स्तंभ का अनुवाद:] यह लकड़ी [इकट्ठा करना] एक अमान्य किराया (इजारा फ़ासिद) है। लकड़ी और शिकार नियोक्ता (मुस्ताजिर) का होगा, और उसे कर्मचारी को उचित मजदूरी (अज्र अल-मिस्ल) देनी होगी। यदि कोई लकड़ी इकट्ठा करने या शिकार करने में किसी व्यक्ति की सहायता लेता है, तो शिकार और लकड़ी काम करने वाले (आमलि) की होगी। समाप्त। (1) और अल-हिंदिया में मुहीत अल-सरखसी से, मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के हवाले से, उस व्यक्ति के बारे में जिसने दूसरे से कहा: "इस भेड़िये या इस शेर को मार डालो और तुम्हें एक दिरहम मिलेगा," और भेड़िया या शेर शिकार है: तो वह एक दिरहम से अधिक न होने वाली उचित मजदूरी का हकदार है, और शिकार नियोक्ता का होगा। समाप्त। कुल मिलाकर, इस बारे में रिपोर्टें व्यापक हैं। इसलिए, यह उचित नहीं था (2) कि समय निर्धारित न होने पर लकड़ी को सामान्य रूप से कर्मचारी का घोषित किया जाए, क्योंकि इसमें लकड़ी को निर्दिष्ट करने का मामला भी शामिल है, जिसे (3) टीकाकार ने इसके परिणाम के रूप में उल्लेख किया है। बल्कि, (4) पाठ ने भी इसकी ओर संकेत किया है, जैसा कि आप देखते हैं। दूसरी बात अल-हिंदिया में अल-कुनियाह से उससे पहले आई है जिसे हमने इसके साथ लगातार उद्धृत किया है, जिसका पाठ है: उसने आज उसके लिए "हज्ज" (एक प्रकार का कांटा) काटने के लिए [किसी को] काम पर रखा, तो उसने ऐसा किया; उस पर कुछ भी बकाया नहीं है, और "हज्ज" आदेश देने वाले का है। नासिर ने कहा: मैंने अबू सुलेमान आदि से पूछा और मैंने उस पर यह पाठ लिखा:

[उर्दू स्तंभ का अनुवाद:] ...अनिवार्य होगा, और जो प्राप्त होगा वह नियोक्ता को मिलेगा जैसा कि अल-वलवालजिया में है। समाप्त। और खज़ानत अल-मुफ़्तीन में है कि यदि किसी व्यक्ति ने एक कर्मचारी लिया कि वह रात तक उसके लिए सिलाई करे और एक दिरहम ले, तो यह जायज़ है। या रात तक शिकार करे या लकड़ियाँ जमा करे, तो ये लकड़ियाँ और शिकार नियोक्ता का होगा। और अगर उसने कहा कि यह शिकार करे या ये लकड़ियाँ इकट्ठी करे, तो इजारा फ़ासिद (अमान्य) है, और लकड़ियाँ और शिकार नियोक्ता का होगा और उसके ज़िम्मे कर्मचारी के लिए अज्र अल-मिस्ल (उचित मजदूरी) होगा। और अगर किसी इंसान से लकड़ियाँ इकट्ठी करने या शिकार में मदद माँगी गई तो शिकार और लकड़ियाँ काम करने वाले की होंगी। समाप्त। और हिंदिया में मुहीत अल-सरखसी से मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से मनकूल है कि अगर किसी शख्स ने किसी से कहा कि यह भेड़िया हलाक कर दो या यह शेर, और तुमको एक दिरहम मिलेगा। तो भेड़िया या शेर शिकार शुमार

होगा और उसका अज्र अल-मिस्ल मिलेगा जो एक दिरहम से ज़्यादा न होगा, और शिकार नियोक्ता का होगा। समाप्त। सारांश यह कि इसमें मशहूर नकलें (रिपोर्टें) मौजूद हैं, तो वक़्त का निर्धारण न होने की सूरत में लकड़ियों को मुतलक़न (पूर्ण रूप से) काम करने वाले के लिए करार देना दुरुस्त नहीं, क्योंकि यह लकड़ियों के मुतय्यन (निर्दिष्ट) करने की सूरत को भी शामिल है, और इसे शारेह (टीकाकार) ने इसकी तफ़रीअ (विस्तार) के तौर पर ज़िक्र किया है, बल्कि जैसा कि आप देखते हैं मतन (मूल पाठ) ने भी इसकी तरफ़ इशारा किया है — दूसरी तंबीह: हिंदिया ने कुनिया से यह भी नक़्ल किया है...

[फुटनोट:] 1. खज़ानत अल-मुफ़्तीन 2. हिंदिया, अध्याय 16, पेशावर 4/451 3. हिंदिया, अध्याय 16, पेशावर 4/451 पृष्ठ 505 / 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم کا ترجمہ و متن:] هذا الحطب فهو اجارة فاسدة والحطب والصيد للمستأجر وعليه للاجير اجر المثل ولو استعان من انسان في الاحتطاب والاصطياد فان الصيد والحطب يكون للعامل اهـ.

(ترجمہ: یہ لکڑیاں [جمع کرنا] تو اجارہ فاسد ہے اور لکڑیاں اور شکار مستاجر کے ہوں گے اور اس پر اجیر کے لئے اجر مثل لازم ہوگا۔ اور اگر کسی انسان سے لکڑیاں اکٹھی کرنے یا شکار میں مدد طلب کی تو شکار اور لکڑیاں عمل کرنے والے کی ہوں گی۔ اھ) (1) وفي الهندية عن محيط السرخسى عن محمد رحمه الله تعالى فيمن قال لغيره اقتل هذا الذئب او هذا الاسد ولك درهم والذئب او الاسد صيد فله اجر مثله لا يتجاوز به درهما والصيد للمستأجر اهـ وبالجملة النقول فيه مستفيضة فما (٢) كان ينبغي اطلاق كون الحطب للعامل عند عدم التوقيت لشموله صورة تعيين الحطب وقد (٣) ذكرها الشارح تفريعا عليه بل (٤) اشار اليها المتن ايضا كما ترى۔ والثانى وقع في الهندية عن القنية قبل ما نقلناه متصلا به مانصه استأجر ليقطع له اليوم حاجاً ففعل لا شيئ عليه والحاج للأمور قال نصير سألت ابا سليمان الخ وكتبت عليه مانصه۔

[اردو کالم کا متن:] واجب ہوگا، اور جو حاصل ہوگا وہ مستاجر کو ملے گا کذا فی الولوالجیۃ اھ اور خزانہ المفتین میں ہے کہ کسی شخص نے ایک اجیر لیا کہ وہ رات تک اس کے لئے سلائی کرے اور ایک درہم لے، تو جائز ہے، یا رات تک شکار کرے یا لکڑیاں جمع کرے، اور یہ لکڑیاں اور شکار مستاجر کا ہوگا، اور اگر کہا کہ یہ شکار کرے یا یہ لکڑیاں اکٹھی کرے، تو اجارہ فاسد ہے، اور لکڑیاں اور شکار مستاجر کا ہوگا اور اس کے ذمہ اجیر کیلئے اجر مثل ہوگا، اور اگر کسی انسان سے لکڑیاں اکٹھی کرنے یا شکار میں مدد طلب کی تو شکار اور لکڑیاں عمل کرنے والے کی ہونگی اھ اور ہندیۃ میں محیط السرخسی سے محمد رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہے کہ اگر کسی

شخص نے کسی سے کہا کہ یہ بھیڑیا ہلاک کر دو یا یہ شیر، اور تم کو ایک درہم ملے گا۔ تو بھیڑیا یا شیر شکار شمار ہوگا اور اُس کا اجر مثل ملے گا جو ایک درہم سے زائد نہ ہوگا، اور شکار مستاجر کا ہوگا اھـ خلاصہ یہ کہ اس میں نقول مشہور ہیں تو وقت کی تعیین نہ ہونے کی صورت میں لکڑیوں کا مطلقاً عامل کیلئے قرار دینا درست نہیں، کیونکہ یہ لکڑیوں کے متعین کرنے کی صورت کو بھی شامل ہے، اور اس کو شارح نے اس کی تفریح کے طور پر ذکر کیا ہے، بلکہ جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں متن نے بھی اس کی طرف اشارہ کیا ہے — دوسری تنبیہ: ہندیہ نے قنیہ سے یہ بھی نقل کیا ہے

[حواشی:] 1 خزانۃ المفتین 2 ہندیۃ الباب السادس عشر پشاور ۴/ ۴۵۱ 3 ہندیۃ الباب السادس عشر پشاور ۴/ ۴۵۱ صفحہ 505 من 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

I say: (1) See what its rationale is, for he is a specific worker and his condition is the specification of duration, and it has been found as mentioned in 'Al-Ghamz wa'sh-Sharh' (2). It was narrated from Abu Sulaiman after that: If it becomes evening [of] a day, it is permissible. And it was mentioned after a few lines from 'Al-Muhit' (3) by Al-Sarakhsi: If one hires someone to hunt for him, or to spin for him, or for litigation, or to demand a debt, or to collect a debt, it is not permissible. If he does so, a fair wage (Ajr al-Mithl) is mandatory. But if a duration is mentioned, it is permissible in all those cases. It appears to me in its interpretation that 'day' does not mean the known time extending until sunset; rather, it has the sense of 'occurrence within a container of time' (Dharfiyyah), i.e., the cutting happens on this day, so it is for urgency, like his saying: 'Write it for me today for a dirham.' In (4) 'Al-Hidayah': Whoever hires a man to bake these ten Makhasim [measures] of flour for him today for a dirham, it is invalid according to Abu Hanifa. Abu Yusuf and Muhammad (may Allah be pleased with them) said: It is permissible because he makes the subject of the contract the work, and mentions the time for the sake of urgency to validate the contract. His [Abu Hanifa's] argument is that the subject of the contract is unknown because mentioning the time necessitates the benefit being the subject of the contract, and mentioning the work necessitates the work being the subject of the contract.

[Urdu Column Translation]: Someone hired a laborer for the task that he would cut grass for him today. He did so. No wage is mandatory for him, and the grass will belong to him. Nasir said: I asked Abu Sulaiman etc. (t) I say: Its reason is that he is merely a worker, and his condition is the statement of duration which was found as in 'Al-Ghamz wa'sh-Sharh'. And after that, it was said from Abu Sulaiman that if one day was mentioned, it is permissible. And a few lines later, it was quoted from 'Al-Muhit' of Sarakhsi that if someone is hired to hunt for him, or spin yarn, or act as an agent, or demand a debt, or collect a debt, it is not permissible. If he does so, a fair wage will be mandatory. And if the duration is mentioned, it is permissible in all these cases. To me, its interpretation seems to be that 'day' does not mean that specific time of the day which extends until sunset; rather, it carries the meaning of 'capacity/ container' (Dharfiyat), meaning the cutting of grass occurs within that day. So this is for expressing haste, like saying: 'Sew this thing for me today for one rupee.' In 'Hidayah' it is stated: whoever hired a person so that he bakes ten sacks of flour today for one dirham, then this lease (ijarah) is invalid according to Abu Hanifa. And the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) said it is permissible. The

Sahibayn consider the 'work' as the subject of the contract and the mention of 'time' as being for haste so that the contract becomes valid. Imam Sahib's argument is that the subject of the contract is unknown because...

1- Hindiyyah, Chapter 16, Peshawar 4/451 Page 506 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

मैं कहता हूँ: (1) देखो इसका तर्क क्या है, क्योंकि वह एक विशिष्ट कर्मचारी है और उसकी शर्त समय की अवधि का विवरण है, और वह पाया गया है जैसा कि 'अल-ग़म्ज़ वश-शराह' (2) में है। अबू सुलेमान से इसके बाद रिवायत है कि यदि एक दिन की शाम हो जाए तो जायज़ है। और कुछ पंक्तियों के बाद 'अल-मुहीत' (3) अस-सरख़सी के हवाले से ज़िक्र किया गया: यदि कोई किसी को शिकार करने, या सूत कातने, या मुक़दमेबाज़ी, या क़र्ज़ माँगने, या क़र्ज़ वसूलने के लिए किराये पर ले, तो यह जायज़ नहीं है। यदि वह ऐसा करता है, तो उचित मज़दूरी (अज्र-ए-मिस्ल) अनिवार्य होगी। लेकिन यदि अवधि का ज़िक्र किया जाए, तो इन सभी मामलों में जायज़ है। इसकी व्याख्या में मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि 'दिन' से तात्पर्य सूर्यास्त तक विस्तृत वह ज्ञात समय नहीं है; बल्कि इसमें 'समय का पात्र' (ज़रफ़ियत) का अर्थ है, यानी घास काटना इस दिन में हो, तो यह जल्दी दिखाने के लिए है, जैसे उसका कहना: 'मेरे लिए यह आज एक दिरहम में लिख दो।' (4) 'अल-हिदाया' में है: जिसने किसी व्यक्ति को किराये पर लिया ताकि वह आज एक दिरहम में आटे की इन दस बोरियों को पका दे, तो यह इदारा अबू हनीफा के नज़दीक फ़ासिद (अमान्य) है। अबू यूसुफ़ और मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने कहा: यह जायज़ है क्योंकि वह अनुबंध के विषय को कार्य बनाता है और अनुबंध को वैध बनाने के लिए जल्दबाज़ी के उद्देश्य से समय का उल्लेख करता है। इमाम साहब का तर्क यह है कि अनुबंध का विषय अज्ञात है क्योंकि समय का उल्लेख करने से लाभ अनुबंध का विषय बन जाता है, और कार्य का उल्लेख करने से कार्य अनुबंध का विषय बन जाता है।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद]: किसी ने कोई मज़दूर इस काम के लिए लिया कि वह आज उसके लिए घास काटेगा, उसने ऐसा ही किया तो उसके लिए कोई उजरत (मज़दूरी) लाज़िम नहीं, और घास उसी की हो जाएगी। नसीर ने कहा मैंने अबू सुलेमान से दरयाफ़्त किया वग़ैरह। (त) मैं कहता हूँ इसकी वजह यह है कि वह महज़ अजीर (मज़दूर) है, और उसकी शर्त बयान-ए-मुद्दत (अवधि का विवरण) है जो पाई गई जैसा कि अल-ग़म्ज़ वाश-शराह में है, और उसके बाद अबू सुलेमान से कहा गया कि अगर एक दिन का कहा तो जायज़ है और चंद सुतूर (पंक्तियों) के बाद मुहीत-ए-सरख़सी से नक़ल किया कि अगर किसी को उजरत पर लिया ताकि उसके लिए शिकार करे या सूत काते या उसकी वकालत करे या क़र्ज़ तलब करे या क़र्ज़ वसूल करे तो जायज़ नहीं है, तो अगर ऐसा किया तो अज्र-ए-मिस्ल वाजिब होगा और अगर मुद्दत का ज़िक्र किया तो इन तमाम सूरतों में जायज़ है। और इसकी तावील मुझे यह मालूम होती है कि यौम से मुराद दिन का वह मुअय्यन वक़्त नहीं है जो ग़ुरूब-ए-

आफ़ताब तक दराज़ हो, बल्कि इसमें ज़रफ़ियत के मानी हैं यानी घास का काटना उस दिन में वाक़े हो, तो यह जल्दी के इज़हार के लिए है, जैसे यह कहा कि आज ही यह चीज़ मुझे सी कर दो, एक रुपये में, हिदाया में है जिसने किसी शख़्स को उजरत पर लिया ताकि आज एक दिरहम में यह दस बोरी आटा पका दे तो यह इजारा अबू हनीफ़ा के नज़दीक फ़ासिद है, और साहिबैन ने फ़रमाया जायज़ है, साहिबैन माक़ूद अलैह अमल को क़रार देते हैं और ज़िक्र-ए-वक़्त को उजलत के लिए क़रार देते हैं ताकि अक़्द सहीह हो, इमाम साहब की दलील यह है कि माक़ूद अलैह मजहूल है क्योंकि...

1- हिन्दिया, अध्याय 16, पेशावर 4/451 पेज 506 of 711

اقول: (۱) انظر ما وجهه فانه اجير وحد وشرطه بيان المدة وقد وجد كما في الغمز وش(۲) وقد قال عن ابي سليمن بعده ان مسى يوما جازو ذكر بعده بأسطر عن محيط(۳) السرخسی لو استأجر ليصيد له اوليغزل له اوللخصومة او تقاضى الدين او قبض الدين لا يجوز فان فعل يجب اجر المثل ولو ذكر مدة يجوز في جميع ذلك اھ ويظهر لي في تأويله ان ليس المراد باليوم الوقت المعلوم الممتد الى غروب الشمس بل هو فيه بمعنى الظرفية اى يقع القطع في هذا اليوم فهو للاستعجال مثل خطه لى اليوم بدرهم في(۴) الهداية من استأجر رجلا ليخبز له هذه العشره المخاصيم من الدقيق اليوم بدرهم فهو فاسد عند ابي حنيفة وقال ابو يوسف ومحمد رضى الله تعالى عنهم جازلانه يجعل المعقود عليه عملا وذكر اللوقت للاستعجال تصحيحاً للعقد وله ان المعقود عليه مجهول لان ذكر الوقت يوجب كون المنفعة معقودا عليها وذكر العمل يوجب كونه معقودا عليه

[اردو کالم]: کسی نے کوئی مزدور اس کام کیلئے لیا کہ وہ آج اس کیلئے گھاس کاٹے گا، اُس نے ایسا ہی کیا تو اس کیلئے کوئی اُجرت لازم نہیں، اور گھاس اُسی کی ہو جائے گی۔ نصیر نے کہا میں نے ابو سلیمان سے دریافت کیا الخ۔(ت) میں کہتا ہوں اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ محض اجیر ہے، اور اس کی شرط بیانِ مدت ہے جو پائی گئی کما فی الغمز واش، اور اس کے بعد ابو سلیمان سے کہا کہ اگر ایک دن کا کہا تو جائز ہے اور چند سطور بعد محیطِ سرخسی سے نقل کیا کہ اگر کسی کو اجرت پر لیا تاکہ اس کے لئے شکار کرے یا سُوت کاتے یا اس کی وکالت کرے یا قرض طلب کرے یا قرض وصول کرے تو جائز نہیں، تو اگر ایسا کیا تو اجرِ مثل واجب ہوگا اور اگر مدت کا ذکر کیا تو ان تمام صورتوں میں جائز ہے اھ اور اس کی تاویل مجھے یہ معلوم ہوتی ہے کہ یوم سے مراد دن کا وہ معین وقت نہیں ہے جو غروبِ آفتاب تک دراز ہو، بلکہ اس میں ظرفیت کے

معنی ہیں یعنی گھاس کا کاٹنا اس دن میں واقع ہو، تو یہ جلدی کے اظہار کیلئے ہے، جیسے یہ کہا کہ آج ہی یہ چیز مجھے سی کردو، ایک روپے میں، ہدایہ میں ہے جس نے کسی شخص کو اُجرت پر لیا تاکہ آج ایک درہم میں یہ دس بوری آٹا پکا دے تو یہ اجارہ ابو حنیفہ کے نزدیک فاسد ہے، اور صاحبین نے فرمایا جائز ہے، صاحبین معقود علیہ عمل کو قرار دیتے ہیں اور ذکرِ وقت کو عجلت کیلئے قرار دیتے ہیں تاکہ عقد صحیح ہو، امام صاحب کی دلیل یہ ہے کہ معقود علیہ مجھول ہے کیونکہ

۱- هندية الباب السادس عشر پشاور ۴/ ۴۵۱ Page 506 of 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

There is no preference, and the benefit of the lessee is in the second (case) and the benefit of the laborer is in the first (case), which leads to dispute (1). From Abu Hanifa, it is narrated that the hiring is valid if he says "during the day" and specifically mentions a task, because "during" is for a timeframe, so the contracted object becomes the work, contrary to his saying "today." A similar case passed in the chapter of divorce (1). The matter is such that 'Al-Qunyah' mentioned this with a symbol, then symbolized for another and mentioned what is from Nasir, so this is the saying of some, contrary to what people follow and contrary to the fatwa, as in 'Al-Sayrafiyyah'. It is the habit of 'Al-Hindiyyah' to quote the text of 'Al-Qunyah' by omitting (3) the symbols, so several sayings appear as one saying, as I have pointed out in some of its margins. And Allah knows best. (T)

The seventh case is evident itself that by his confession, it is the property of the lessee. I say: This is because the laborer works for another, and he has admitted that he worked on the basis of hiring and took it for the one who hired him. I say its reason is that the laborer is an agent for another, and he has confessed that he is working as a laborer and is taking that thing for the lessee. (T)

In the same way, in the eighth case, securing it in the lessee's vessel is evidence that it is for the lessee, as it is in 'Jami' al-Saghir':

1. Al-Hidayah, invalid hiring, Yusufi Press Lucknow 2/304. Page 507 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

कोई प्राथमिकता नहीं है, और पट्टेदार का लाभ दूसरे (मामले) में है और मजदूर का लाभ पहले (मामले) में है, जिससे विवाद होता है (1)। अबू हनीफ़ा से एक रिवायत है कि पट्टा तब सही होगा जब वह "दिन में" कहे और किसी काम का नाम ले, क्योंकि "में" समय के लिए है, तो अनुबंधित वस्तु काम हो गई, इसके विपरीत उसका "आज" कहना। इसी तरह का मामला तलाक के अध्याय में बीत चुका है (1)। यह मामला इस प्रकार है कि 'अल-कुन्या' ने इसे एक संकेत के साथ उल्लेख किया, फिर दूसरे के लिए संकेत दिया और नसीर से जो है उसका उल्लेख किया, तो यह कुछ का कहना है, जो लोगों के व्यवहार के विरुद्ध है और फतवे के भी विरुद्ध है, जैसा कि 'अल-सैराफ़िया' में है। 'अल-हिंदिया' की आदत है कि वे संकेतों को हटाकर (3) 'अल-कुन्या' के पाठ को उद्धृत करते हैं, जिससे कई बातें एक ही बात की तरह लगने लगती हैं, जैसा कि मैंने इसके कुछ हाशिये में बताया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

सातवां मामला स्वयं स्पष्ट है कि उसके स्वीकारोक्ति से वह पट्टेदार की संपत्ति है। मैं कहता हूँ: इसका कारण यह है कि मजदूर दूसरे के लिए काम करता है और उसने स्वीकार किया है कि उसने पट्टे के आधार पर काम किया और उसे उसके लिए लिया जिसने उसे काम पर रखा था। मैं कहता हूँ इसकी वजह यह है कि मजदूर दूसरे का एजेंट होता है और उसने यह स्वीकार किया है कि वह बतौर मजदूर काम कर रहा है और वह चीज़ पट्टेदार के लिए ले रहा है। (त)

इसी तरह आठवें मामले में, पट्टेदार के बर्तन में उसे सुरक्षित करना इस बात का प्रमाण है कि वह पट्टेदार के लिए है, जैसा कि 'जामी अल-सगीर' में है:

1. अल-हिदाया, अमान्य पट्टा, युसुफी प्रेस लखनऊ 2/304। पृष्ठ 711 में से 507

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

ولا ترجیح ونفع المستأجر في الثاني ونفع الاجیر في الاول فیفضي الی المنازعة (۱) وعن ابی حنیفة انه یصح الاجارة اذا قال في الیوم وقدسی عملا لانه للظرف فکان المعقود علیه العمل بخلاف قوله الیوم وقدمر مثله في الطلاق ۱ اھـ - والامران القنیة ذکرت ھذا برمز ثم رمزت لأخر وذکرت ما عن نصیر فیکون ھذا قول بعض علی خلاف ماعلیه الناس وعلی خلاف ماعلیه الفتوی کما فی (۲) الصیرفیة ومن عادة الھندیة نقل عبارة القنیة بحذف (۳) الرموز فتصیر الاقوال کقول واحد کما نبھت علیه في بعض المواضع من ھو امشھا واللہ تعالی اعلم۔

وقت کا ذکر منفعت کو معقود علیہا بناتا ہے، اور عمل کا ذکر اس کو معقود علیہ کرتا ہے، اور کسی کو کسی پر ترجیح نہیں ہے، مستأجر کا نفع دوسرے میں ہے اور اجیر کا پہلے میں ہے، تو اس میں جھگڑا پیدا ہو گا، اور ابو حنیفہ سے ایک روایت یہ ہے کہ یہ اجارہ اس وقت صحیح ہو گا جبکہ "دن میں" کہا اور کسی عمل کا نام لیا، کیونکہ یہ ظرف ہے تو معقود علیہ عمل ہوا بخلاف اس کے قول "الیوم" کے اور اسی کی مثل طلاق کے باب میں گزرا اھ یہ معاملہ اس طرح ہے کہ قنیہ نے اسکو ثم کے رمز سے ذکر کر کے دوسرے کی طرف اشارہ کیا، اور جو کچھ نصیر سے مروی ہے وہ نقل کیا، یہ بعض کا قول ہے اور بعض کے خلاف ہے، اور فتوٰی بھی اس کے خلاف پر ہے کما فی الصیرفیہ اور ہندیہ کی عادت ہے کہ وہ قنیہ کی عبارت رموز کے بغیر ہی نقل کر دیتے ہیں، تو چند اقوال ایک ہی قول کے مانند ہو جاتے ہیں، اس پر میں نے اس کے بعض حواشی پر تنبیہ کی ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

صورتِ ہفتم خود ظاہر ہے کہ اُس کے اقرار سے ملک مستأجر ہے۔ اقول: وذلك لان الاجیر عامل لغیرہ وقد اعترف انه عمل علی وجه الاجارة واخذہ لمن استأجرہ۔ میں کہتا ہوں اس کی وجہ یہ ہے کہ

اجیر دوسرے کا عامل ہوتا ہے اور اس نے یہ اعتراف کیا ہے وہ وہ بطورِ اجیر کام کر رہا ہے اور وہ چیز مستأجر کیلئے لے رہا ہے۔ (ت)

یوں ہی صورتِ ہشتم میں کہ ظرف مستأجر میں احراز دلیل ہے کہ مستأجر کیلئے ہے، جامع الصغار میں ہے :

۱- الہدایۃ اجارہ فاسدہ مطبع یوسفی لکھنؤ ۲/ ۳۰٤ Page 507 of 711

Fatawa Ridawiyyah Volume II

[Arabic Box Left]: If a hired worker carries water in the hirer's vessel, it becomes preserved for the hirer. (1) [Urdu Box Right]: When a hired worker brings water in the hirer's vessel, it belongs to the hirer. (T)

As for the ninth case, it is clear that in it, the ownership belongs to the hired worker. I say: The reasoning for this is that this hired worker has not sold his profits along with a specified duration such that his work at that time must necessarily be for the commander, nor has the item been specified such that he would be bound by it due to acceptance. Thus, he remains in his freedom; it is not necessary that what he took at that time on the basis of hire was taken for the purpose of the hirer, nor has he acknowledged it, nor is there any clear evidence like in the eighth case. Therefore, the ownership is that of the hired worker alone. And Allah Almighty knows best.

[Arabic Box Left]: I say: It appears to me that the example of 'possession' (istila) among jurists is like the example of 'purchase'. Whenever enforceability is found, it will be enforced. Now, if someone asked another person to buy a slave, and the principal (muwakkil) did not specify the slave, nor did the agent (wakil) attribute the contract to him, nor was payment made from his wealth, nor did he declare that he bought it for him, then this slave will belong to the purchaser and not to the one who gave the order. This issue is mentioned in Al-Hidayah, Ad-Durr, and common authoritative books. So here, setting a time is like attribution there, because his action is transferred to the commander as passed, and acquiring it in its vessel is like payment from his wealth, and this declaration is like that declaration, and this specification is like that specification. And Allah, Glory be to Him and He is Exalted, knows best.

[Urdu Box Right]: And it has appeared to me that the example of 'possession' (istila) among jurists is like that of 'purchase' (shira); when enforceability is found, it will be enforced. Now, if someone asked another person to buy a slave, and the principal (muwakkil) did not specify the slave, nor did the agent (wakil) attribute the contract to him, nor was payment made from his wealth, nor did he say that he bought it for him, then this slave will belong to the purchaser and not to the one who gave the order. This issue is mentioned in Hidayah, Durr, and common books. So here, setting a time is like attribution there because his action is transferred to the commander as passed, and acquiring it in its vessel is like payment from his wealth, and this

declaration is like that declaration and this specification is like that specification. And Allah, Glory be to Him and He is Exalted, knows best. (T)

In summary, these are nine cases, in four of which the permissible (mubah) thing belongs to the one who takes it, and in five to the other person. This is when the taker is a free person; otherwise, a slave does not own anything; whatever he has belongs to his master. This is it.

---

1 Jami' al-Saghir with Jami' al-Fusulayn, chapters on disliked matters, Islami Kutub Khana Karachi, 1/148.

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

[अरबी बॉक्स बाएँ]: जब मज़दूर किराएदार के बर्तन में पानी लाए तो वह किराएदार के लिए संरक्षित हो जाता है। (१) [उर्दू बॉक्स दाएँ]: जब मज़दूर किराएदार के बर्तन में पानी लाए तो वह किराएदार का होगा। (त)

जहाँ तक नौवीं स्थिति की बात है, यह स्पष्ट है कि इसमें स्वामित्व मज़दूर का है। मैं कहता हूँ: और इस पर दलील इस प्रकार है कि इस मज़दूर ने अपनी सेवाओं को किसी निश्चित समय के लिए नहीं बेचा है कि उस समय उसका काम अनिवार्य रूप से आदेश देने वाले के लिए हो, और न ही किसी वस्तु का निर्धारण हुआ है कि स्वीकृति के कारण वह उसका पाबंद हो। अतः वह अपनी स्वतंत्रता पर है; यह आवश्यक नहीं है कि उस समय उसने जो लिया वह किराए के आधार पर किराएदार के उद्देश्य से लिया हो, न ही उसने स्वीकार किया है और न ही आठवीं स्थिति की तरह कोई स्पष्ट प्रमाण है। इसलिए स्वामित्व मज़दूर का ही है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

[अरबी बॉक्स बाएँ]: मैं कहता हूँ: मुझे यह प्रतीत होता है कि फ़कीहों के नज़दीक 'अस्तिया' (कब्ज़ा) का उदाहरण 'शरा' (खरीद) की तरह है। जब भी कार्यान्वयन पाया जाएगा, उसे लागू किया जाएगा। अब यदि किसी ने किसी व्यक्ति को गुलाम खरीदने के लिए कहा और मुवक्किल (आदेश देने वाले) ने गुलाम का निर्धारण नहीं किया, न ही वकील ने अनुबंध को उसकी ओर जोड़ा, न ही उसके धन से भुगतान किया और न ही यह घोषणा की कि उसने उसके लिए खरीदा है, तो यह गुलाम खरीदने वाले का होगा न कि आदेश देने वाले का। यह मसला हिदाया, दुर और आम प्रामाणिक किताबों में वर्णित है। तो यहाँ समय निर्धारित करना वहाँ जोड़ने की तरह है, क्योंकि उसका कार्य आदेश देने वाले की ओर स्थानांतरित हो जाता है जैसा कि बीत चुका है, और उसे उसके बर्तन में प्राप्त करना उसके धन से भुगतान करने की तरह है, और यह घोषणा उस घोषणा की तरह है और यह निर्धारण उस निर्धारण की तरह है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू बॉक्स दाएँ]: और मुझ पर यह ज़ाहिर हुआ है कि फ़कीहों के नज़दीक 'अस्तिया' (कब्ज़ा) का उदाहरण 'शरा' (खरीद) की तरह है; जब कार्यान्वयन पाया जाएगा, उसे लागू किया जाएगा। अब यदि किसी ने किसी व्यक्ति को गुलाम खरीदने के लिए कहा और मुवक्किल (आदेश देने वाले) ने गुलाम का निर्धारण नहीं किया, न ही वकील ने अनुबंध को उसकी ओर जोड़ा, न ही उसके धन से भुगतान किया और न ही यह कहा कि उसने उसके लिए खरीदा है, तो यह गुलाम खरीदने वाले का होगा न

कि आदेश देने वाले का। यह मसला हिदाया, दुर और आम किताबों में वर्णित है। तो यहाँ समय निर्धारित करना वहाँ जोड़ने की तरह है क्योंकि उसका कार्य आदेश देने वाले की ओर स्थानांतरित हो जाता है जैसा कि बीत चुका है, और उसे उसके बर्तन में प्राप्त कर लेना उसके धन से भुगतान करने की तरह है, और यह घोषणा उस घोषणा की तरह है और यह निर्धारण उस निर्धारण की तरह है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

कुल मिलाकर ये नौ स्थितियाँ हैं जिनमें से चार में वह जायज़ (मुबाह) चीज़ लेने वाले की मिल्कियत है और पाँच में दूसरे की। यह तब है जब लेने वाला आज़ाद हो, अन्यथा गुलाम किसी चीज़ का मालिक नहीं होता, उसका जो कुछ भी है वह उसके मालिक का है। बस।

---

1 जामे अल-सगीर मय जामे अल-फुसुलैन मसाइल अल-कराहियत इस्लामी कुतुब खाना कराची 1/148.

पृष्ठ 508 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[عربی خانہ بائیں]: الاجیر اذا حمل الماء بکوز المستأجر یکون محرزا للمستأجر ۱۔ [اردو خانہ دائیں]: اجیر جب مستاجر کے کوزے میں پانی لائے تو وہ مستاجر کا ہوگا۔ (ت)

رہی صورت نہم ظاہر ہے کہ اس میں ملک اجیر ہے۔ اقول: اور اس پر تقریر دلیل یوں کہ یہ اجیر نہ بیان مدت کے ساتھ اپنے منافع بیچ چکا ہے کہ اس وقت میں اس کا کام خواہی نخواہی آمر کیلئے ہو نہ شی کی تعین ہوئی کہ بوجہ قبول اس کا پابند ہو تو وہ اپنی آزادی پر ہے کیا ضرور ہے کہ اس وقت جو اس نے لیا بربنائے اجارہ بغرض مستاجر لیا ہو نہ وہ مقر ہے نہ ہشتم کی طرح کوئی دلیل ظاہر ہے لہذا ملک اجیر ہی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

[عربی خانہ بائیں]: اقول: ویترا أی لی ان مَثَّل الاستیلاء عند الفقهاء، کمثل الشراء، مهما وجد نفاذا(۱)انفذ فاذا وکله بشراء عبد، والموکل لم یعین العبد، ولا الوکیل اضاف الیه العقد، ولا وقع من ماله النقد، ولا اقرانه شراء له، فانه یکون للشاری لامن وکله، والمسألة فی الهدایة والدر، وعامة الاسفار الغر، فالتوقیت ههنا کالاضافة ثمہ لانتقال فعله الی الامر کما مرو الاحراز بظرفه کالنقد من ماله والا قرار الاقرار والتعیین التعیین واللہ سبحنه وتعالی اعلم۔

[اردو خانہ دائیں]: اور مجھ پر یہ ظاہر ہوا ہے کہ استیلاء کی مثال فقہاء کے نزدیک شراء کی سی ہے جب نفاذ پایا جائیگا اس کو نافذ کر دیا جائیگا۔ اب کسی نے کسی شخص کو غلام خریدنے کیلئے کہا اور موکل نے غلام کی تعیین نہ کی اور نہ وکیل نے عقد کو اس کی طرف مضاف کیا اور نہ اس کے مال سے ادائیگی کی اور نہ یہ کہا کہ اس نے اس کیلئے خریدا ہے، تو یہ غلام خریدنے والے کا ہو گا نہ کہ حکم دینے والے کا، یہ مسئلہ ہدایہ، در اور عام کتب میں مذکور ہے، تو یہاں

توقیت کی حیثیت وہاں اضافت کی طرح ہے کیونکہ اس کا فعل آمر کی طرف منتقل ہوتا ہے، اور اس کے ظرف کا حاصل کر لینا اس کے مال سے ادائیگی کی طرح ہے اور یہ اقرار اس اقرار کی طرح اور یہ تعیین اس تعیین کی طرح ہے، واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔(ت)

بالجملہ یہ نو صورتیں ہیں جن میں سے چار میں وہ شے مباح لینے والے کی ملک ہے اور پانچ میں دوسرے کی۔ یہ جبکہ لینے والا حُر ہو ورنہ مملوک کسی شے کا مالک نہیں ہوتا اس کا جو کچھ ہے اس کے مولٰی کا ہے ہذا

---

۱ جامع الصغار مع جامع الفصولین مسائل الکراہیتہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۴۸

Fatawa Razviya Volume Two

“What has appeared to me after looking at their words, and I hope it is correct, God willing (this is what has become apparent to me upon seeing their words, and I hope this is correct, God willing - T).”

Clarification 2: This principle applies to the absolute acquisition of permissible things. Here, the discussion is regarding minors. It is also necessary to see if a child's parents ask him to bring something permissible, for example, water from a well or leaves from a forest, whether the mentioned rules of acquisition will change due to the parent-child relationship or not. If they change, then how? There are three opinions of scholars on this:

First: The more famous one is that even parents do not have the right to use children in the acquisition of permissible things. Even if a child brings something by their command, for them, and in their container, the child will still be the owner. It is forbidden for the parents to dispose of it except in a state of need.

I say (The author): This means in a state of poverty without payment, and in a state of need such as when traveling while wealth is at home, they can dispose of it with the intent of paying back the price. It is stated in Zakhira, Munya, then Meraj al-Diraya, then Hamawi Sharh Kanz, then Tahtawi, then Shami:

Arabic	**Urdu**
If a father or mother orders a boy to bring water from a valley or a basin in a jug, and he brings it, it is not permissible for his parents to drink from that water unless they are poor, because the water has become his property, and it is not permissible for them to eat, i.e., drink from his property without need.[1]	If a child is told by his father or mother to bring water in a lota (jug) from a valley or a basin, and then he brings the water, it is not permissible for his parents to drink this water provided they are not poor, because the water became the child's property and it is not permissible for both of them to eat or drink from his property without need. (T)

In Jami' Ahkam al-Sighar, then Hamawi Sharh Ashbah, then Tatarkhaniyya, then Radd al-Muhtar it is stated:

Arabic	Urdu
(2) If the father needs the child's property, and they are in the city and he needs it due to his poverty, he may eat without anything (to pay back). But if they are in the desert and he needs it because he has no food with him, then he may eat at its value.[2]	When a father needs the child's property and he is in the city and is in need of eating the child's food due to poverty, then he should eat it and there is nothing (to pay back) upon him. And if this situation arises in a forest and the father does not have food available and he needs to eat it, then he can eat it with the price (to be paid back). (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi Egypt, 5/312.
2. Radd al-Muhtar, Book of Gifts, Mustafa al-Babi Egypt, 4/573.

फ़तावा रज़विया खंड: दूसरा खंड

"उनके शब्दों को देखने के बाद जो मुझे स्पष्ट हुआ है, और मुझे उम्मीद है कि यह अल्लाह की इच्छा से सही होगा (यह वह है जो उनके शब्दों को देखने पर मुझे स्पष्ट हुआ है, और मुझे उम्मीद है कि यही सही होगा, इंशाअल्लाह - त)।"

स्पष्टीकरण 2: यह सिद्धांत जायज़ चीज़ों के पूर्ण अधिग्रहण के बारे में है। यहाँ चर्चा नाबालिगों के बारे में है। यह देखना भी ज़रूरी है कि क्या बच्चे के माता-पिता उससे कोई जायज़ चीज़ मँगवाते हैं, जैसे कुएं से पानी या जंगल से पत्ते, तो क्या पिता-पुत्र के संबंध के कारण अधिग्रहण के उक्त नियमों में कोई बदलाव आएगा या नहीं? यदि आएगा तो क्या होगा? इस पर विद्वानों के तीन मत हैं:

पहला: अधिक प्रसिद्ध मत यह है कि माता-पिता को भी जायज़ चीज़ों को प्राप्त करने के लिए बच्चों का उपयोग करने का अधिकार नहीं है। भले ही बच्चा उनके आदेश से, उनके लिए और उनके बर्तन में ही क्यों न लाए, बच्चा स्वयं मालिक होगा और माता-पिता के लिए ज़रूरत की स्थिति के अलावा उसमें हस्तक्षेप करना हराम है।

मैं कहता हूँ (लेखक): यानी गरीबी की स्थिति में बिना कीमत चुकाए, और ज़रूरत की स्थिति में, उदाहरण के लिए यात्रा में हों और धन घर पर हो, तो वे कीमत चुकाने के इरादे से इसका उपयोग कर सकते हैं। ज़खीरा, मुन्या, फिर मेराज अल-दिराया, फिर हमवी शर्ह कज़, फिर तहतावी, फिर शामी में है:

अरबी	**उर्दू**
यदि कोई पिता या माता किसी बालक को घाटी या कुंड से लोटे में पानी लाने का आदेश दे, और वह उसे ले आए, तो उसके माता-पिता के लिए उस पानी को पीना तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि वे गरीब न हों, क्योंकि पानी उसकी संपत्ति हो गया है, और उनके लिए बिना ज़रूरत उसकी संपत्ति से खाना, यानी पीना जायज़ नहीं है।[1]	यदि किसी बच्चे को उसके पिता या माता ने घाटी या हौज़ से लोटे में पानी लाने के लिए कहा, फिर वह पानी ले आया, तो उसके माता-पिता के लिए उस पानी को पीना जायज़ नहीं है, बशर्ते कि वे गरीब न हों, क्योंकि पानी उस बच्चे की मिल्कियत (स्वामित्व) हो गया और उन दोनों के लिए उसकी संपत्ति से बिना ज़रूरत खाना-पीना जायज़ नहीं है। (त)

जामे अहकाम अल-सिगार, फिर हमवी शर्ह अश्बाह, फिर तातारखानिया, फिर रद अल-मुहतार में है:

अरबी	उर्दू
(2) यदि पिता को बच्चे की संपत्ति की ज़रूरत हो और वे शहर में हों और अपनी गरीबी के कारण उसे बच्चे का माल खाने की ज़रूरत हो, तो वह बिना कुछ दिए (चुकाए) खा ले। और यदि यह स्थिति जंगल में हो और उसके पास भोजन न हो और उसे खाने की ज़रूरत हो, तो वह कीमत के साथ खा सकता है।[2]	जब पिता को बच्चे के माल की ज़रूरत हो और वह शहर में हो और गरीबी की वजह से बच्चे का माल खाने का मोहताज हो तो वह खा ले और उस पर कुछ (चुकाना) नहीं है। और अगर यह स्थिति जंगल में पेश आए और पिता के पास खाना मौजूद न हो और उसे खाने की ज़रूरत हो तो वह कीमत के साथ खा सकता है। (त)

1. रद अल-मुहतार, पीने का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 5/312।
2. रद अल-मुहतार, उपहारों की किताब, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 4/573।

पृष्ठ 711 का 509

ماظهر لي نظراً في كلماتهم و ارجو ان يكون صواباً ان شاء الله تعالیٰ (یہ وہ ہے جو مجھ پر ظاہر ہوا ان کے کلمات کو دیکھتے ہوئے اور مجھے امید ہے کہ یہی صحیح ہوگا ان شاء اللہ تعالیٰ-ت)

تنقیح دوم: یہ اصول مطلق استیلائے مباح میں ہوئے یہاں کہ گفتگو نابالغ میں ہے یہ بھی دیکھنا ضرور کہ اُس کے والدین اگر اُس سے کوئی شے مباح مثلاً کنوئیں سے پانی یا جنگل سے پتے منگائیں تو اُس نسبت بنوت کے سبب احکام مذکورہ استیلاء میں کوئی تفاوت آئے گا یا نہیں، اگر آئے گا تو کیا۔ اس میں علماء کے تین قول ہیں:

اول کہ زیادہ مشہور ہے یہ کہ والدین کو بھی مباحات میں استخد ام کا اختیار نہیں صبی اگرچہ ان کے حکم سے انہیں کے لئے انہیں کے ظرف میں لے خود ہی مالک ہوگا اور والدین کو اس میں تصرف حرام مگر بحالت محتاجی۔

اقول: یعنی بحالت فقر بلا قیمت اور بحالت احتیاج حاضر مثلاً سفر میں ہوں اور مال گھر میں ہو وعدہ قیمت تصرف کرسکتے ہیں ذخیرہ ومنیہ پھر معراج الدرایہ پھر حوی کنز پھر طحطاوی پھر شامی میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
لو امر صبياً ابوه او امه باتيان الماء من الوادی او الحوض فی کوز فجاء به لا يحل لابويه ان يشربا من ذلك الماء اذالم يكونا فقيرين لان الماء صار ملكه ولا	اگر کسی بچہ کو اپنے باپ یا ماں نے وادی یا حوض سے لوٹے میں پانی لانے کو کہا پھر وہ پانی لے آئے تو اس کے ماں باپ کیلئے اس پانی کو پینا جائز نہیں بشرطیکہ وہ فقیر نہ ہوں، کیونکہ پانی اُس بچہ کی ملک ہوگیا اور

عربی متن	اردو ترجمہ
یحل لھما الاکل ای والشرب من ماله بغیر حاجة 1۔	اُن دونوں کیلئے اس کے مال سے بلا حاجت کھانا پینا جائز نہیں۔ (ت)

جامع احکام الصغار پھر حموی اشباہ اور تاتارخانیہ پھر ردالمحتار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
(۲) اذا احتاج الاب الی مال ولده فان کانا فی المصر واحتاج لفقره اکل بغیر شئ وان کانا فی المفازة واحتاج الیه لانعدام الطعام معه فله الاکل بالقیمة 2۔	جب باپ کو بچہ کے مال کی حاجت ہو اور وہ شہر میں ہو اور فقر کی وجہ سے بچہ کا مال کھانے کا محتاج ہو تو کھالے اور اس پر کوئی شے نہیں، اور اگر یہ صورت حال جنگل میں پیش آئے اور باپ کے پاس کھانا موجود نہ ہو اور اس کو کھانے کی ضرورت ہو تو وہ قیمت کے ساتھ کھاسکتا ہے۔ (ت)

1 ردالمحتار فصل فی الشرب مصطفٰی البابی مصر ۵/ ۳۱۲ 2 ردالمحتار کتاب الہبۃ مصطفٰی البابی مصر ۴/ ۵۷۳

Fatawa Rizvia, Volume II From Jami' al-Fusulayn, benefits of Imam Zahir-ud-Din:

Arabic	Urdu Translation
If a father is in a desert and has wealth, and then needs his son's food, he may eat it for its value, because of the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "The father has more right to his son's wealth when he needs it in a recognized manner (bil-ma'ruf)." The "recognized manner" is that he takes it for free if he is poor; otherwise, he pays its value.[1]	If a father is in a desert and has wealth, and then he finds a need to eat his son's food, he can eat it by paying its price. This is because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said that a father has more right to his son's wealth according to a recognized way. The recognized way is that he uses it without payment if he is poor; otherwise, he uses it with payment. (T)

However, this permission did not cause any change in the aforementioned rulings on appropriation (istila), as the ownership remains with the minor. The permission for parents to use it—whether for a price or for free—is not specific to that appropriated property; it applies to every property of the child. Second: Just like poor parents, wealthy parents also have the right to take such service from the child, and that water is permissible as it is the absolute custom and usage. This is a narration from Imam Muhammad; it is found in al-Dhakirah and other books after the aforementioned text: "And from Muhammad: It is lawful for both of them even if they are wealthy, due to recognized custom and usage."[2] (It is narrated from Imam Muhammad [may Allah have mercy on him] that it is lawful for both of them even if both are wealthy, because custom and tradition are considered. T) I say: On this basis, it would appear that whatever permissible item the minor took at the request of the parents, the parents themselves would be its owners; otherwise, during a state of wealth, use would be unlawful. Allah Almighty says: "And whoever is wealthy, let him abstain"[3] (The command of Allah Almighty is: one who has no need should abstain. T). So, this narration excludes parents from the ruling of the third case from the separate situation of appropriation. However, such a rare narration has also come from Imam Muhammad himself that if a child gives food or drink as a gift to his parents, it is permissible for the parents. So, this narration also will not have any effect on the aforementioned rulings, as the owner remains the minor. It is in Jami' Ahkam al-Sighar: | In the Chapter of Gifts in Fatawa al-Qadi Zahir-ud-Din | In the discussion of gifts in the Fatawa of Qadi Zahir-ud-Din |

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi Egypt, 5/312 [2] Jami' al-Fusulayn, Chapter Twenty-Seven, Islami Kutub Khana Karachi, 2/19 [3] Al-Quran 4/6

फ़तावा रिज़विया, जिल्द दूसरी जामे उल-फ़सुलैन इमाम ज़हीर-उद-दीन के लाभों से है:

अरबी

यदि पिता जंगल में हो और उसके पास धन हो, फिर उसे अपने बेटे के भोजन की आवश्यकता हो, तो वह उसका मूल्य चुकाकर खा सकता है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "पिता अपने बेटे के माल का भली-भांति (मारुफ़) अधिक हकदार है जब उसे उसकी आवश्यकता हो।" और मारुफ़ तरीका यही है कि यदि वह निर्धन (फ़क़ीर) हो तो बिना किसी कीमत के उसका उपयोग करे, अन्यथा कीमत के साथ उपयोग करे।[1]

उर्दू अनुवाद

यदि पिता जंगल में हो और उसके पास माल हो और फिर उसे अपने बेटे का माल खाने की ज़रूरत पेश आए, तो वह उसकी कीमत अदा करके खा सकता है, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि बाप को अपने बेटे के माल का मारुफ़ तरीके के मुताबिक़ ज़्यादा हक़ है। और मारुफ़ तरीका यही है कि बिला क़ीमत इस्तेमाल करे अगर फ़क़ीर हो, वरना क़ीमत के साथ इस्तेमाल करे। (त)

लेकिन इस इजाज़त से ऊपर बताए गए कब्ज़े (इस्तियाला) के नियमों में कोई बदलाव नहीं हुआ कि मिल्कियत नाबालिग की ही बनी रही। माँ-बाप को क़ीमत देकर या मुफ़्त में इसके उपयोग की इजाज़त केवल उसी कब्ज़े वाले माल के साथ खास नहीं है, बल्कि बच्चे की हर मिल्कियत में है। दूसरा: निर्धन माता-पिता की तरह, धनी माता-पिता को भी बच्चे से ऐसी सेवा लेने का हक़ है, और वह पानी जायज़ है क्योंकि यह पूर्ण प्रथा और रिवाज है। यह इमाम मुहम्मद से एक रिवायत है, जो ज़ख़ीरा और उसके साथ की किताबों में उपर्युक्त इबारत के बाद है: "मुहम्मद से वर्णित है: यह उन दोनों के लिए जायज़ है चाहे वे दोनों धनी हों, क्योंकि प्रथा और परंपरा का विचार किया जाता है।"[2] (मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि उन दोनों के लिए हलाल है अगरचे दोनों ग़नी हों क्योंकि उर्फ़ और आदत का एतबार है। त) अकुल: इस आधार पर ज़ाहिर यह होता कि जो मुबाह (जायज़) नाबालिग ने माता-पिता की फ़रमाइश पर लिया, उसके मालिक माता-पिता ही ठहरेंगे, वरना संपन्नता की स्थिति में तसर्रुफ़ (उपयोग) नाजायज़ होता। अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और जो धनी हो, उसे चाहिए कि वह (लेने से) बचे।"[3] (अल्लाह तआला का फ़रमान है: जिसे हाजत न हो वह बचता रहे। त)। तो यह रिवायत कब्ज़े की अलग सूरत से तीसरी सूरत के हुक्म में माता-पिता को अलग करती है। मगर इमाम मुहम्मद से ही ऐसी विरल (नादिर) रिवायत आई है कि अगर बच्चा खाने-पीने की चीज़ अपने माँ-बाप को तोहफ़े(हदिया) में दे, तो वह माता-पिता के लिए मुबाह है। तो यह रिवायत

भी उपर्युक्त नियमों पर कोई असर नहीं डालेगी कि मालिक नाबालिग ही रहा। जामे अहकाम अल-सिग़ार में है: | फ़तावा अल-क़ाज़ी ज़हीर-उद-दीन के हिबा (उपहार) के अध्याय में | क़ाज़ी ज़हीर-उद-दीन के फ़तावा की हिबा की बहस में है |

[1] रद-उल-मुहतार, पीने का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 5/312 [2] जामे उल-फ़सुलैन, अध्याय 27, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 2/19 [3] अल-क़ुरआन 4/6

فتاوی رضویہ جلد ثانی جامع الفصولین فوائد امام ظہیر الدین سے ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
لوکان الاب فی فلاۃ ولہ مال فاحتاج الی طعام ولدہ اکلہ بقیمۃ لقولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الاب احق بمال ولدہ اذا احتاج الیہ بالمعروف والمعروف ان یتناولہ بغیر شیئ لو فقیرا والا فبقیمتہ ۱۔	اگر باپ جنگل میں ہو اور اس کے پاس مال ہو اور پھر اس کو اپنے بیٹے کا مال کھانے کی ضرورت لاحق ہو تو وہ اس کی قیمت دے کر کھا سکتا ہے اس لئے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ باپ کو اپنے بیٹے کے مال کا معروف طریقے کے مطابق زیادہ حق ہے اور معروف طریقہ یہی ہے کہ بلا قیمت استعمال کرے اگر فقیر ہو، ورنہ قیمت کے ساتھ استعمال کرے۔(ت)

مگر اس اجازت سے احکامِ مذکورہ استیلاء میں کوئی تغیر نہ ہوا کہ ملک نابالغ ہی کی قرار پائی۔ ماں باپ کو قیمتاً یا مفت اُس میں تصرف کی اجازت کچھ اسی مال استیلاء سے خاص نہیں صبی کی ہر ملک میں ہے۔ دوم: فقیر والدین کی طرح غنی ماں باپ کو بھی بچہ سے ایسی خدمت لینے کا حق ہے اور وہ پانی روا کہ عرف و رواج مطلق ہے یہ امام محمد سے ایک روایت ہے ذخیرہ اور اس کے ساتھ کی کتابوں میں بعد عبارتِ مذکورہ ہے: وعن محمد یحل لھما ولو غنیین للمعروف والعادۃ ۲۔ (محمد رحمہ اللہ سے روایت ہے کہ ان دونوں کے لئے حلال ہے اگرچہ دونوں غنی ہوں کیونکہ عرف اور عادت کا اعتبار ہے۔ت) اقول: اس تقدیر پر ظاہر یہ ہوتا کہ جو مباح صبی نے فرمائش والدین سے لیا اس کے مالک والدین ہی ٹھہریں ورنہ بحالِ غنان کو تصرف ناروا ہوتا قال تعالٰی مَنْ کَانَ غَنِیًّا فَلْیَسْتَعْفِفْ ۳ (اللہ تعالٰی کا فرمان ہے جسے حاجت نہ ہو وہ بچتا رہے۔ت) تو یہ روایت صورتِ ناہ گانہ استیلاء سے صورتِ سوم کے حکم میں والدین کا استثناء کرتی مگر امام محمد ہی

سے ایسی ہی نادرہ روایت آئی ہے کہ اگر بچہ کھانے پینے کی چیز اپنے ماں باپ کو ہدیہ دے تو وہ والدین کے لئے مباح ہے تو یہ روایت بھی احکامِ مذکورہ پر کچھ اثر نہ ڈالے گی کہ مالک صبی ہی ٹھہرا۔ جامع احکام الصغار میں ہے: | فی ھبة فتاوی القاضی ظہیر الدین | قاضی ظہیر الدین کے فتاوی کی ہبہ کی بحث میں ہے |

۱ رد المحتار فصل فی الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۲ ۳۱۲ جامع الفصولین الفصل السابع والعشرون اسلامی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۹ ۳ القرآن ۴/ ۶

Fatawa-e-Razvia Volume 2

(Arabic) رحمه الله تعالى اذا اهدى الصغير شيئا من المأكولات روى عن محمد رحمه الله تعالى انه يباح لوالديه وشبه ذلك بضيافة المأذون واكثر مشايخ بخارى انه لا يباح ۔ 1 (Urdu) When a minor child gives something edible as a gift, it is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that it is permissible for their parents to eat from it. He likened this to the hospitality of an authorized person (ma'dhun). However, most scholars of Bukhara state that this is not permissible. (T)

Similarly, it is mentioned in Shami from Tatar-khaniya and Dhakhira. The research on this report will come soon by Allah's help, and it is unrelated to this point, but the closest view is that this report allows for parents to use the gift, not to establish ownership, so the rule remains intact. Third: If they brought it in the parents' vessel, they will be the owners; otherwise, the child is like a hired worker. I say: Meaning, one who neither had a fixed time nor was hired for a specific thing, nor did he acknowledge for the hirer that in these cases the vessel is not considered; it is in Jami al-Saghir:

(Arabic) فى بيوع فوائد صاحب المحيط الاب اوالام اذا امر ولده الصغير لينقل الماء من الحوض الى منزل ابيه ودفع اليه الكوز فنقل قال بعضهم الماء الذى فى الكوز يصير ملكا للصبى حتى لا يحل للاب شربه الا عند الحاجة لان الاستخدام فى الاعيان المباحة باطل وقال بعضهم ان كان الكوز ملكا للاب يصير ملكا للاب ويصير الابن محرز الماء لابيه كالاجير اذا حمل الماء بكوز المستأجر يكون محرز اللمستأجر كذا هذا ۔ 2 (Urdu) It is stated in the chapter of sales (Buyu') in 'Fawa'id' by the author of al-Muhit that if parents asked a small child to bring water from a cistern to their home and also gave him a jug, and he brought the water, in such a situation, according to some scholars, the water in the jug is the child's property to the extent that the father cannot even drink from it without necessity because taking service for acquiring permissible (mubah) items is void. Some have said that if the jug is the father's property, then the water will also be the father's property, and the son will be considered as one who collects water for his father like a laborer, because if a hired worker brings water in the employer's jug, that water will belong to the employer. This is the same case. (T)

---

1. Jami' Ahkam al-Sighar with al-Fusulin, Islami Kutub Khana Karachi, 1/146
2. Jami' Ahkam al-Sighar with al-Fusulin, Islami Kutub Khana Karachi, 1/173 Page 511 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 2

(अरबी) इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) से रिवायत है कि यदि कोई छोटा बच्चा खाने की कोई चीज़ उपहार के रूप में देता है, तो उसके माता-पिता के लिए उसे खाना जायज़ है। उन्होंने इसकी तुलना एक अधिकृत व्यक्ति (माज़ून) के सत्कार से की है। हालाँकि, बुखारा के अधिकांश विद्वान कहते हैं कि यह जायज़ नहीं है। (1) (उर्दू) जब कोई बच्चा उपहार के रूप में कुछ खाने को देता है, तो इमाम मुहम्मद से वर्णित है कि माता-पिता के लिए उसमें से खाना जायज़ है, और उन्होंने इसे एक अधिकृत व्यक्ति द्वारा दिए गए सत्कार के समान माना, जबकि बुखारा के अधिकांश विद्वानों का कहना है कि यह जायज़ नहीं है। (T)

इसी तरह, शामी में तातार-ख़ानिया और ज़खीरा से उद्धृत है। इस रिवायत का शोध अल्लाह की मदद से जल्द ही आएगा, और यह इस बिंदु से असंबद्ध है, लेकिन निकटतम विचार यह है कि यह रिवायत माता-पिता के लिए उपयोग की अनुमति देती है, न कि स्वामित्व स्थापित करती है, इसलिए नियम बरकरार है। तीसरा: यदि वे इसे माता-पिता के बर्तन में लाए, तो वे मालिक होंगे; अन्यथा बच्चा एक किराए के मजदूर की तरह है। मैं कहता हूँ: अर्थात, वह जिसका न तो समय निश्चित था और न ही किसी विशिष्ट चीज़ के लिए किराए पर लिया गया था, न ही उसने किराए पर लेने वाले के लिए स्वीकार किया कि इन स्थितियों में बर्तन का ध्यान नहीं रखा जाता है; जामे अल-सगीर में है:

(अरबी) 'अल-मुहीत' के लेखक की 'फ़वायद' में बिक्री (बुयूँ) के अध्यायों में: यदि पिता या माता अपने छोटे बच्चे को हौज़ से पिता के घर तक पानी ले जाने का आदेश देते हैं और उसे एक लोटा देते हैं, और वह उसे ले जाता है, तो कुछ कहते हैं: लोटे का पानी बच्चे की संपत्ति बन जाता है ताकि पिता के लिए आवश्यकता के बिना उसे पीना जायज़ न हो, क्योंकि अनुमेय (मुबाह) वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए सेवा लेना व्यर्थ है। दूसरों ने कहा: यदि लोटा पिता की संपत्ति है, तो पानी भी पिता की संपत्ति बन जाएगा, और बेटे को अपने पिता के लिए पानी इकट्ठा करने वाला माना जाएगा जैसे कि एक किराए का मजदूर; जब वह किराए पर लेने वाले के लोटे में पानी लाता है, तो वह किराए पर लेने वाले का होता है। ऐसा ही मामला है। (2) (उर्दू) मुहीत के लेखक की 'फ़वायद' के अध्याय बुयूँ में है कि यदि माता-पिता ने छोटे बच्चे से हौज़ से अपने घर पानी लाने को कहा और उसे लोटा भी दिया, तो उसने पानी लाकर दिया, ऐसी स्थिति में कुछ विद्वानों के अनुसार लोटे का पानी बच्चे का है यहाँ तक कि पिता बिना ज़रूरत के उसमें से पी भी नहीं सकता क्योंकि मुबाह चीज़ों को प्राप्त करने के लिए सेवा लेना बातिल (अमान्य) है। और कुछ ने कहा है कि यदि लोटा पिता का है तो पानी भी पिता का होगा

और बेटा मज़दूर की तरह पानी इकट्ठा करने वाला माना जाएगा क्योंकि अगर मज़दूर मालिक के लोटे में पानी लाए तो वह पानी मालिक का ही होगा, यही हाल इसका है। (T)

---

1. जामे अहकाम अल-सिगार मा अल-फसूलैन, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/146
2. जामे अहकाम अल-सिगार मा अल-फसूलैन, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/173 पृष्ठ 511 / 711

رحمہ اللہ تعالی اذا اھدی الصغیر شیئا من المأکولات روی عن محمد رحمہ اللہ تعالی انہ یباح لوالدیہ وشبہ ذلك بضیافة المأذون واکثر مشایخ بخاری انہ لا یباح ۔ 1 کہ جب بچہ کھانے کی کوئی چیز بطورِ ہدیہ دے تو امام محمد سے مروی ہے کہ اس کے والدین کو اس میں سے کھانا جائز ہے، اور انہوں نے اس کو ماذون کی ضیافت کے مشابہ قرار دیا اور بخارا کے اکثر مشائخ کہتے ہیں یہ مباح نہیں۔ (ت)

اسی طرح شامی میں تاتارخانیہ وذخیرہ سے ہے اس روایت کی تحقیق بعونہ تعالٰی عنقریب آتی ہے اور یہ کہ وہ اس مقام سے بے علاقہ ہے مگر اقرب یہی ہے کہ یہ روایت والدین کیلئے اباحت تصرف کرتی ہے نہ کہ اثباتِ ملک تو ضابطہ بحال ہے۔ سوم: اگر ماں باپ کے برتن میں لایا تو وہ مالک ہوں گے ورنہ صبی جیسے اجیر۔ اقول: یعنی جس کا نہ وقت معین کیا نہ کسی معین شئے کیلئے اجیر نہ اُس نے مستاجر کیلئے اقرار کہ ان حالتوں میں ظرف پر لحاظ نہیں، جامع الصغار میں ہے:

فی بیوع فوائد صاحب المحیط الاب اوالام اذا امر ولدہ الصغیر لینقل الماء من الحوض الی منزل ابیہ ودفع الیہ الکوز فنقل قال بعضھم الماء الذی فی الکوز یصیر ملکا للصبی حتی لا یحل للاب شربہ الا عند الحاجة لان الاستخدام فی الاعیان المباحة باطل وقال بعضھم ان کان الکوز ملکا للاب یصیر ملکا للاب ویصیر الابن محرز الماء لابیہ کالاجیر اذا حمل الماء بکوز المستأجر یکون محرز اللمستأجر کذا ھذا ۔ 2 صاحبِ محیط کی فوائد کے باب البیوع میں ہے کہ ماں باپ نے چھوٹے بچے کو حوض سے اپنے گھر پانی لانے کو کہا اور اس کو لوٹا بھی دیا چنانچہ وہ پانی لے آیا، تو ایسی صورت میں بعض علماء کے نزدیک لوٹے کا پانی بچہ کی ملک ہے یہاں تک کہ باپ بلا ضرورت اس میں

سے پی بھی نہیں سکتا کیونکہ مباح اشیاء کے حصول کیلئے اس سے خدمت لینا باطل ہے، اور بعض نے کہا کہ اگر لوٹا باپ کی ملک ہے تو پانی بھی باپ کی ملک ہو گا اور بیٹا مزدور کی طرح پانی کو اپنے باپ کے لئے جمع کرنے والا قرار پائے گا کیونکہ اجیر اگر مستاجر کے لوٹے میں پانی لائے تو وہ پانی مستاجر ہی کا ہوگا، یہی حال اس کا ہے۔ (ت)

---

1 جامع احکام الصغار مع الفصولین اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۴۶ 2 جامع احکام الصغار مع الفصولین اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۷۳ صفحہ 511 از 711

Fatawa Ridawiyya, Volume Two The first [opinion] was quoted by Sayyid Allama Tahtawi and Shami, stating that there is great hardship in it, and indeed it is a hardship, and hardship is negated by the Quranic text.

"Sh" [the commentator] tried to weaken it with evidence, arguing that a father has the right anyway to use his son for work without compensation. It is stated in Jami' al-Fusulain that a father can assign his young son to serve a master so that the master may teach him a trade or craft. Also, a father, grandfather, or executor (wasi) can use a child for work as a means of discipline and training, so as to teach him manners and culture and to get him into the habit of working. (End quote). He further said, "However, it is not evident from this that he [the son] will not be the owner of that water, even if he took the water by his father's command. And Allah Almighty knows best." (Trans)

I say: (3) The answer is correct and sound; it did not deserve to be dismissed. Rather, (4) it was clear before, so there was no room for the question. (5) In fact, the question is groundless from the start. They do not deny the permissibility for a father to use [his son's services], but that is only where it is valid and verified, for a thing is only permissible after it becomes valid. Falsehood has no existence. You have already learned that in matters of permissible entities (A'yan Mubahah), it is void. This reveals two misconceptions that occurred in his speech in the 'Book of Partnership' (Kitab al-Sharikah) where it was stated in 'al-Tanwir' (6) and 'al-Durr' that a partnership in gathering firewood is not valid...

1. Radd al-Muhtar, chapter on 'Ash-Shurb', al-Babi Egypt, 5/312.
2. Radd al-Muhtar, chapter on 'Ash-Shurb', al-Babi Egypt, 5/312.

फतावा रज़विया, जिल्द दो पहले [मत] को सैय्यद अल्लामा तहतावी और शामी ने नक़्ल किया और फ़रमाया कि इसमें बड़ी कठिनाई है, और वास्तव में कठिनाई है, और कठिनाई को क़ुरआनी नुस (स्पष्ट आदेश) से दूर किया गया है।

और "श" ने इसे दलील के ज़रिए कमज़ोर दिखाने की कोशिश की और फ़रमाया कि बाप को तो वैसे भी हक़ है कि बिना मुआवज़ा बेटे से काम ले। जामे अल-फ़ुसूलैन में फ़रमाया कि बाप अपने छोटे बेटे को उस्ताद की ख़िदमत के लिए मुतय्यन कर सकता है ताकि उस्ताद उसको सनअत व हरफ़त (हुनर) सिखाए, और बाप-दादा और वसी (वसीयतदार) बच्चे से काम ले सकते हैं ताकि उसको अदब व तहज़ीब सिखाएं और उसको काम करने की आदत हो। (इति)। फ़रमाया मगर इससे यह मालूम नहीं होता कि वह पानी का मालिक नहीं होगा, चाहे उसने अपने बाप के हुक्म से पानी लिया हो, वल्लाह तआला आलम। (त)

मैं कहता हूँ: (3) जवाब बिल्कुल दुरुस्त है, इसको ज़ईफ़ (कमज़ोर) क़रार देना दुरुस्त न होगा, बल्कि पहले से वाज़ेह था, तो सवाल की गुंजाइश ही न थी, बल्कि सवाल की बुनियाद ही साक़ित (ख़त्म) है, क्योंकि मशाईख़ इस बात का इंकार नहीं करते कि बाप बेटे से ख़िदमत ले सकता है लेकिन यह सिर्फ उसी सूरत में है जबकि मुतहक़्क़िक़ (साबित) हो और सही हो, क्योंकि चीज़ उसी वक़्त जायज़ होती है जबकि सही हो और बातिल (अवैध/शून्य) का कोई वजूद नहीं होता और आप जान चुके हैं कि यह अयान-ए-मुबाह (मबाह चीज़ों) में बातिल है, उनकी किताब की किताब-उश-शर्क़त में दो वहम (भ्रम) थे वे भी इस...

1. रद-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ि-अश-शुर्ब, अल-बाबी मिस्र, 5/312
2. रद-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ि-अश-शुर्ब, अल-बाबी मिस्र, 5/312

पृष्ठ 512/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی اول کو وہ سید علامہ طحطاوی وشامی نقل کرکے فرمایا اس میں حرج عظیم ہے اور واقعی حرج ہے اور حرج نص قرآنی سے مدفوع ہے۔

اور "ش" نے اس کو دلیل کے ذریعہ کمزور دکھانے کی کوشش کی اور فرمایا کہ باپ کو تو ویسے بھی حق ہے کہ بلا معاوضہ بیٹے سے کام لے۔ جامع الفصولین میں فرمایا کہ باپ اپنے چھوٹے بیٹے کو استاد کی خدمت کیلئے متعین کرسکتا ہے تاکہ استاد اس کو صنعت و حرفت سکھائے، اور باپ دادا اور وصی بچہ سے کام لے سکتے ہیں تاکہ اس کو ادب و تہذیب سکھائیں اور اس کو کام کرنے کی عادت ہو۔ اھ فرمایا مگر اس سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ پانی کا مالک نہیں ہوگا، خواہ اس نے اپنے باپ کے حکم سے پانی لیا ہو واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

اقول: (۳) الجواب صحیح نظیف ما کان یستاھل التزییف بل (۴) کان واضحاً من قبل فلم یکن للسؤال محل (۵) بل السؤال ساقط من رأسه فهم لا ینکرون جواز الاستخدام للاب لکن ذلك حیث یصح ویتحقق فان الشیئ انما یجوز بعد ما یصح والباطل لا وجود له وقد علمت انه في الاعیان المباحة باطل و به انکشف ایهامان واقعاً في کلامه في کتاب الشرکة حیث کان في التنویر(۶) والدر لا تصح شرکة في احتطاب میں کہتا ہوں، جواب بالکل درست ہے اس کو ضعیف قرار دینا درست نہ ہوگا، بلکہ پہلے سے واضح تھا، تو سوال کی گنجائش ہی نہ تھی، بلکہ سوال کی بنیاد ہی ساقط ہے، کیونکہ مشائخ اس امر کا انکار نہیں کرتے ہیں کہ باپ بیٹے سے خدمت لے سکتا ہے لیکن یہ صرف اُسی صورت میں ہے جبکہ متحقق ہو اور صحیح ہو، کیونکہ شے اسی وقت جائز ہوتی ہے جبکہ صحیح ہو اور باطل کا کوئی وجود نہیں ہوتا اور آپ جان چکے ہیں کہ یہ اعیان مباحہ میں باطل ہے، ان کی کتاب کی کتاب الشرکتہ میں دو وہم تھے وہ بھی اس

1 ردالمحتار فصل فی الشرب البابی مصر ۵/ ۳۱۲ 2 ردالمحتار فصل فی الشرب البابی مصر ۵/ ۳۱۲

Fatawa Razawiyya (Volume II)

[Right Column - Urdu Commentary]: Ended with discussion; in 'Durr' and 'Tanwir' it is stated: Partnership in gathering wood, grass, hunting, and drawing water is not permissible. This is also the case with other permissible (mubah) things because it involves agency (wakalat), and in acquiring permissible things, agency is not valid. Whatever one of them has obtained will belong to him, and what they both have obtained together is divided equally if it is unknown who took how much. And whatever one took with the help of his companion will be for that person, and the companion will receive a fair wage (Ajr-e-Mithl). [End of quote]. So they wrote regarding the statement 'and what they both acquired belongs to both of them': From this it is known that the fatwa in 'Al-Khayriyya' is derived from this principle—that even if brothers work together in their father's legacy and then some wealth is acquired, it will be divided among them equally, regardless of differences in work or opinion. [End of quote]. He said: This ruling does not apply in the case where a son works with his father, because in 'Al-Qunya' it is stated: If a father and son work in the same trade and they possess nothing else, then the entire earning is attributed to the father, provided the son is part of his father's household, as he is considered his assistant. [End of quote] (T). I say: Their inclusion of this branch in this discussion creates a misconception: if a son is in his father's household and they work together to acquire any permissible thing, the entire acquired item would belong to the father, and the son would be deemed his assistant.

[Left Column - Arabic Source Text]: Gathering wood, hunting, fetching water, and other such permissible (mubah) activities are invalid for partnership because they involve agency (wakalat), and appointing an agent for acquiring a permissible thing is not valid. Whatever one of them acquires belongs to him, and whatever they both acquire together belongs to them both equally if it is unknown what each part is. If one acquires something with the help of his companion, it belongs to the acquirer, and the companion is entitled to a fair wage (Ajr-e-Mithl). [End of quote]. The author (may Allah have mercy on him) wrote regarding the statement 'and what they both acquire is for both of them' that from this it is inferred what was fatwa-ed in Al-Khayriyya (1): If brothers join to work in their father's legacy and the wealth grows, it is divided among them equally, even if they differ in work and opinion. [End of quote]. Then he said this applies to someone other than a son with his father, due to what is in Al-Qunya (2): If a father and son earn in one craft and they have nothing else, the entire earning is for the father if the son is among his dependents, for he is

considered an assistant to him. [End of quote]. I say: (3) Bringing this subsidiary case into this discussion might give the impression that if a man and his son, who is among his dependents, join in acquiring a permissible thing, the whole of it would be for the father and the son would be considered an assistant. (4) This is not so, for the Purified Sharia has made regarding permissible things...

--- Footnotes --- 1. Al-Durr al-Mukhtar, Shirkat Fasidah, Mujtabai Delhi, 1/372 2. Radd al-Muhtar, Shirkat Fasidah, Al-Babi Egypt, 3/383 Page 513 of 711

फ़तावा रज़विया (खंड द्वितीय)

[दायां कॉलम - उर्दू विवरण]: चर्चा के साथ समाप्त हुआ; 'दुर' और 'तनवीर' में कहा गया है: लकड़ी, घास इकट्ठा करने, शिकार करने और पानी भरने में साझेदारी जायज़ नहीं है। अन्य जायज़ (मुबाह) चीज़ों का भी यही हाल है क्योंकि इसमें वकालत (एजेंसी) शामिल है, और मुबाह चीज़ें लेने में वकालत जायज़ नहीं है। दो में से एक ने जो प्राप्त किया है वह उसी का होगा, और जो उन्होंने मिलकर प्राप्त किया है वह आधा-आधा है, यदि यह ज्ञात न हो कि किसने कितना लिया। और जो एक ने अपने साथी की मदद से लिया, वह उसी का होगा, और साथी को उचित पारिश्रमिक (अज्र-ए-मिस्ल) मिलेगा। [उद्धरण समाप्त]। तो उन्होंने उनके इस कथन पर लिखा "और जो उन दोनों ने प्राप्त किया वह उन दोनों का है": इससे यह ज्ञात होता है कि 'ख़ैरिय्या' में फ़तवा इसी सिद्धांत से लिया गया है—कि भले ही भाई अपने पिता की विरासत में मिलकर काम करें, और फिर कुछ धन प्राप्त हो, तो वह उनके बीच समानता के आधार पर विभाजित किया जाएगा, चाहे काम और राय में अंतर रहा हो या नहीं। [उद्धरण समाप्त]। उन्होंने कहा: यह नियम उस स्थिति में नहीं है जब बेटा पिता के साथ काम में लगा हो, क्योंकि 'अल-कुन्या' में है: यदि पिता और पुत्र एक ही शिल्प में काम करते हैं और उनके पास इसके अलावा कुछ नहीं है, तो पूरी कमाई पिता की मानी जाएगी बशर्ते बेटा पिता के परिवार में हो, क्योंकि वह उसका सहायक है। [उद्धरण समाप्त] (टी)। मैं कहता हूँ: इस उप-मामले को इस चर्चा में उनका लाना यह भ्रम उत्पन्न करता है: यदि बेटा पिता के परिवार में है और पिता और बेटा किसी भी मुबाह चीज़ को प्राप्त करने में मिलकर काम करते हैं, तो प्राप्त वस्तु पूरी तरह से पिता की होगी और बेटे को उसका सहायक माना जाएगा।

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ]: लकड़ी इकट्ठा करना, शिकार करना, पानी भरना और इसी तरह की अन्य जायज़ (मुबाह) गतिविधियाँ साझेदारी के लिए अमान्य हैं क्योंकि इनमें वकालत शामिल है, और मुबाह चीज़ को प्राप्त करने के लिए एजेंट नियुक्त करना मान्य नहीं है। उनमें से जिसने जो हासिल किया है, वह उसी का है, और जो उन्होंने मिलकर हासिल किया है, वह उन दोनों का समान रूप से है यदि यह पता न हो कि प्रत्येक का हिस्सा कितना है। यदि कोई अपने साथी की मदद से कुछ हासिल करता है, तो वह हासिल करने वाले का है, और साथी उचित मजदूरी (अज्र-ए-मिस्ल) का हकदार है। [उद्धरण समाप्त]। लेखक (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उनके इस कथन "और जो उन दोनों ने हासिल किया वह उन दोनों का है" के बारे में लिखा कि इससे वह निष्कर्ष निकलता है जिसका फ़तवा 'अल-ख़ैरिय्या' (1) में दिया गया था: यदि भाई अपने पिता की विरासत में काम करने

के लिए शामिल होते हैं और संपत्ति बढ़ती है, तो उसे उनके बीच समान रूप से विभाजित किया जाता है, भले ही उनके काम और राय में मतभेद हो। [उद्धरण समाप्त]। फिर उन्होंने कहा कि यह पिता के साथ पुत्र के अलावा किसी अन्य पर लागू होता है, जैसा कि 'अल-कुन्या' (2) में है: यदि पिता और पुत्र एक ही शिल्प में कमाते हैं और उनके पास और कुछ नहीं है, तो पूरी कमाई पिता के लिए है यदि पुत्र उसके आश्रितों में से है, क्योंकि उसे उसका सहायक माना जाता है। [उद्धरण समाप्त]। मैं कहता हूँ: (3) इस उप-मामले को इस चर्चा में लाने से यह आभास हो सकता है कि यदि कोई व्यक्ति और उसका पुत्र, जो उसके आश्रितों में से है, किसी मुबाह चीज़ को प्राप्त करने में शामिल होते हैं, तो वह सब पिता के लिए होगा और पुत्र को सहायक माना जाएगा। (4) ऐसा नहीं है, क्योंकि पवित्र शरीयत ने मुबाह चीज़ों के संबंध में...

--- पादलेख --- 1. अल-दुर अल-मुख्तार, शिरकत फासिदा, मुज्तबाई दिल्ली, 1/372 2. रद अल-मुह्तार, शिरकत फासिदा, अल-बाबी मिस्र, 3/383 पृष्ठ 711 का 513

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی عبارت]: واحتشاش واصطیاد واستقاء وسائر مباحات لتضمنها اوکالة والتوکیل فی اخذ المباح لا یصح وما حصله احدهما فله وما حصلاه معافلهما نصفین ان لم یعلم مالکل وما حصله احدهما باعانة صاحبه فله ولصاحبه اجر مثله اهـ فکتب رحمه الله تعالیٰ علی قولہ وما حصلاه فلهما یؤخذ من هذا ما افتی بہ فی الخیریة (۱) لو اجتمع اخوة یعملون فی ترکة ابیهم ونما المال فهو بینهم سویة ولو اختلفوا فی العمل والرای اهـ قال ثم هذا فی غیر الابن مع ابیه لما فی القنیة (۲) الاب وابنه یکتسبان فی صنعة واحدة ولم یکن لهما شیئ فالکسب کله للاب انکان الابن فی عیاله لکونه معینا له اهـ اقول: (۳) فایراده هذا الفرع فی هذا المبحث ربما یوهم ان لواجتمع رجل وابنه فی عیاله فی تحصیل مباح کان کله للاب ویجعل الابن معینا له (۴) ولیس کذلك فان الشرع المطهر جعل فی المباح

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح]: بگفتگو سے ختم ہوگئی، ڈراور تنویر میں ہے لکڑیاں اکٹھی کرنے، گھاس جمع کرنے، شکار کرنے اور پانی بھرنے میں شرکت جائز نہیں، اور یہی حال دوسری مباحات کا ہے کیونکہ یہ وکالت کو متضمن ہے اور مباح کے لینے میں توکیل جائز نہیں، دومیں سے کسی ایک نے جو حاصل کیا وہ اسی کا ہوگا اور جو دونوں نے مل کر حاصل کیا ہو تو وہ آدھا آدھا ہے، اگر یہ معلوم نہ ہو کہ کس نے کتنا لیا تھا اور جو کچھ ایک نے اپنے ساتھی کی مدد سے لیا وہ اسی ایک کا ہوگا اور ساتھی کو اجر مثل ملے گا اهـ تو انہوں نے اس کے قول وما حصلاه فلهما پر لکھا ہے اس سے معلوم ہوا کہ خیریہ میں جو فتویٰ ہے وہ اسی سے ماخوذ ہے اگرچہ کچھ بھائی مل کر اپنے باپ کے ترکہ میں کام کریں، اور پھر کچھ مال حاصل ہوا تو وہ ان کے درمیان برابری کی بنیاد پر تقسیم ہوگا خواہ عمل اور رائے میں اختلاف ہی کیوں نہ رہا ہو اهـ فرمایا یہ حکم اس صورت میں نہیں ہے جبکہ بیٹا باپ کے ساتھ مصروف عمل ہو، کیونکہ قنیہ میں

ہے اگر باپ بیٹا ایک ہی صنعت میں کام کرتے ہوں اور ان کے پاس اس کے علاوہ کچھ نہ ہو تو کل کمائی باپ کی شمار ہوگی بشرطیکہ بیٹا باپ کے عیال میں ہو، کیونکہ وہ اس کا مددگار ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں ان کا اس فرع کو اس بحث میں لانا یہ وہم پیدا کرتا ہے اگر بیٹا باپ کے عیال میں ہو اور باپ بیٹا کسی مباح چیز کے حاصل ہونے میں مل کر کام کریں تو حاصل شدہ چیز پوری کی پوری باپ کی ہو گی اور بیٹا اس کا مددگار قرار پائے گا،

--- حواشی --- 1 الدر المختار شرکت فاسدۃ مجتبائی دہلی ۱/۳۷۲ 2 ردالمحتار شرکت فاسدۃ البابی مصر ۳/ ۳۸۳ صفحہ 513 از 711

Fatawa Razawiyyah Volume Two

The cause of ownership is appropriation (isti'la). Whoever appropriates [a permissible thing] is the owner. Ownership does not transfer to another except through a legal Shari'a means such as gifting or selling. Taking it is not attributed to another except through a legal Shari'a reason, such as the person being their slave or a hired laborer for them. As for free assistance, it is considered service, and you have known the invalidity of seeking service in those [mubah/permissible] entities. It was written on the phrase 'with the help of his companion' that it is regardless of whether the assistance was through action, such as helping in collecting, uprooting, binding, carrying, or otherwise, or through a tool, such as giving him a mule or a water-skin to fetch water with it, or a net to hunt with it. (Hamawi and Quhistani)[1].

I say: (1) It should not be imagined that assistance in uprooting firewood means some uproot one part and others uproot another part, because that is them both acquiring it (2). Rather, the meaning is that he placed his hand with his [companion's] hand in the uprooting until its connection [to the ground] weakened and the one being assisted uprooted it, or the first person worked on it and left it before it was uprooted, then the second person worked on it and uprooted it. In this case, the first person is an assistant, and ownership belongs to the uprooter (3). Just like one who draws water from a well, and when the bucket nears his head, another person takes it out and moves it away from the mouth of the well; the ownership is for the second person. Similarly if...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Corrupt Partnerships, Al-Babi Egypt, 3 / 383. Page 514 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी (भाग दो)

स्वामित्व (मिल्कियत) का कारण कब्ज़ा (इस्तियला) है। जो भी [किसी मुबाह/अनुमेय चीज़ पर] कब्ज़ा कर ले, वही उसका मालिक है। स्वामित्व किसी दूसरे को केवल शरीअत के मान्य तरीकों जैसे दान (हिबा) या बिक्री (बैअ) के माध्यम से ही हस्तांतरित हो सकता है। उसे किसी दूसरे के नाम नहीं किया जा सकता जब तक कि कोई शरीअत का कारण न हो, जैसे कि वह उसका गुलाम हो या उसके लिए काम करने वाला मज़दूर हो। जहाँ तक मुफ़्त सहायता की बात है, तो वह 'ख़िदमत' (सेवा) है, और आप जानते हैं कि उन [मुबाह] वस्तुओं में सेवा लेना बातिल (अमान्य) है। 'अपने साथी की सहायता से' वाक्यांश पर लिखा गया है कि चाहे वह सहायता काम के ज़रिए हो, जैसे इकट्ठा करने, उखाड़ने, बाँधने, उठाने आदि में मदद करना, या किसी उपकरण के ज़रिए हो, जैसे उसे पानी भरने के लिए खच्चर या मश्क (रावीया) देना, या शिकार के लिए जाल देना। (हमवी और कुहिस्तानी)[1]।

मैं कहता हूँ: (1) इससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि लकड़ी उखाड़ने में मदद का मतलब यह है कि कुछ लोग एक हिस्सा उखाड़ें और कुछ दूसरा हिस्सा, क्योंकि वह तो दोनों द्वारा उसे प्राप्त करना है (2)। बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसने उखाड़ने में अपना हाथ उसके हाथ के साथ रखा यहाँ तक कि उसका ज़मीन से जुड़ाव कमज़ोर हो गया और जिस व्यक्ति की मदद की जा रही थी उसने उसे उखाड़ दिया, या पहले व्यक्ति ने उस पर मेहनत की और उखाड़ने से पहले उसे छोड़ दिया, फिर दूसरे ने उस पर मेहनत की और उसे उखाड़ लिया। तो पहला व्यक्ति सहायक माना जाएगा और स्वामित्व उखाड़ने वाले का होगा (3)। जैसे कि कोई कुएँ से पानी निकाल रहा हो, और जब डोल उसके सिर के पास आ जाए तो कोई दूसरा उसे बाहर निकाल कर कुएँ के मुँह से हटा दे; तो स्वामित्व दूसरे व्यक्ति का होगा। इसी तरह अगर...

---

[1] रद अल-मुह्तार, शिर्कत-ए-फ़ासिदा का अध्याय, अल-बाबी मिस्र, 3 / 383. पृष्ठ 711 का 514

فتاوی رضویہ جلد ثانی

سبب الملك الاستيلاء فمن استولى فهو المالك ولا ينتقل الملك الى غيره الابوجه شرعى كهبة وبيع ولا ينسب اخذه لغيره الابوجه شرعى لكونه عبده اواجيره عليه اما الاعانة مجانا فهى الخدمة وقد علمت بطلان الاستخدام فى تلك الاعيان وكتب على قوله باعانة صاحبه سواء كانت الاعانة بعمل كما اذا اعانه فى الجمع والقلع اوالربط اوالحمل اوغيره اوبآلة كما لودفع له بغلا او راوية ليستقى عليها اوشبكة ليصيد بها حموى وقهستاني ط[1] اهـ -

حالانکہ بات یہ نہیں ہے کیونکہ شریعت نے مباح اشیاء میں ملک کا سبب استیلاء کو قرار دیا ہے تو جو بھی کسی مباح پر قابض ہو جائے وہی مالک ہے اور دوسرے کی طرف اب اس کی ملک شرعی طریقوں سے ہی منتقل ہو سکتی ہے جیسے ہبہ اور بیع وغیرہ اور اس کا لینا اس کے غیر کی طرف صرف شرعی سبب سے ہی منسوب ہوگا، مثلاً یہ کہ وہ اس کا غلام ہو، یا مزدور ہو، اور مفت کی اعانت تو یہ خدمت ہے، اور یہ تو آپ کو معلوم ہی ہے کہ مباح چیزوں میں خدمت لینا باطل ہے، اور "باعانۃ صاحبہ" پر لکھا کہ عام ازیں اعانت عملی ہو، جیسے کسی چیز کے جمع کرنے، اکھاڑنے، باندھنے، اٹھانے وغیرہ میں مدد کرے، یا آلہ کے ذریعے مدد ہو جیسے اس کو خچر دیا، پانی بھرنے کا بڑا ڈول دیا یا شکار کے لئے جال دیا، حموی و قہستانی ط اھ- (ت)

اقول: (١) فلا يتوهمن منه الاعانة في قلع الحطب بان يقلع البعض هذا والبعض هذا لانه هو تحصيلهما(٢) بل المعنى انه وضع يده مع يده في القلع حتى ضعف تعلقه فقلعه المعان اوعمل هذا اولا وتركه قبل ان ينقلع ثم عمل ذاك فقلعه يكون الاول معينا والملك للقالع(٣) كمن استقى من بئر فاذا دنا الدلو من رأسه اخرجها ونحاها عن رأس البئر غيره فان الملك للثاني وكذلك اذا

میں کہتا ہوں اس سے یہ وہم پیدا نہ ہو کہ لکڑیاں اکھاڑنے میں مدد دینا بھی اسی طرح ہے، مثلاً بعض لوگ اس طرف سے اور بعض اس طرف سے لکڑیاں اکھاڑیں اس لئے یہ اُن دونوں کا حاصل کرنا ہے، بلانکہ اس کا مطلب یہ ہے کہ دونوں ایک ہی لکڑی پر ہاتھ رکھیں اور دونوں ایک ساتھ اس کو اکھاڑیں، یا یہ کہ پہلے ایک شخص نے ایک درخت پر زور آزمائی کی اور ہٹ گیا پھر دوسرے نے زور آزمائی کی اور اس کو اکھاڑ لیا، تو پہلا مدد گار قرار پائے گا اور ملک اکھاڑنے والے کی ہو گی، جیسے کوئی شخص ڈول بھر کر کنویں سے

---

[1] ردالمحتار شرکت فاسدة البابی مصر ۳/ ۳۸۳ Page 514 of 711

[Arabic Text]: If someone tracks prey and brings it to another, and the second person catches it, it belongs to the one who caught it. How excellent and clear is the statement of Al-Hidayah, where it says (1): "And if one of them performs a task and the other assists him in it, for instance if one uproots [trees] and the other gathers them, or one uproots and gathers and the other carries them, then the assistant is entitled to a fair wage (Ajr-ul-Mithl)."

[Urdu Explanation]: If one person draws water, and when the bucket reaches the mouth of the well, another person takes it out and sets it aside, in this case, ownership belongs to the second person. Similarly, if someone drives prey and it comes near another person, and that other person catches it, then it belongs to the one who caught it. However, the wording of Al-Hidayah is perfectly clear from any doubt; it states that if the work was not performed as a single combined act but the other person provided assistance in that work—for example, one person uproots trees and another gathers them, or one uproots and gathers them but another carries them—then the helper will receive a fair wage. (T)

Second: A narration from the established text of the Madhhab will appear as a strong opinion, as many well-known authoritative books have relied upon it. In Fatawa Ahl-e-Samarqand and then in Fatawa Khulasa with its reference, it is stated:

[Arabic Text]: A man (2) gave something edible as a gift to a minor; it is permissible for the parents to eat from it. This is as narrated from Imam Muhammad, may Allah have mercy on them both.

[Urdu Translation]: If a person gifted an edible item to a child, it is also permissible for the child's parents to eat that item; this is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). (T)

In Wajiz Kardari, it is stated:

[Arabic Text]: If food is gifted to a minor, it is permissible for the parents to eat it (3).

[Urdu Translation]: If a person gifted an edible item to a child, it is correct for the parents to eat that item. (T)

In Fatawa Sirajia, it is stated:

[Arabic Text]: When something edible is gifted to a boy, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said it is permissible for his parents to eat from it, and most of the sheikhs said...

[Urdu Translation]: If someone gifted an edible item to a child, Imam Muhammad said it is permissible for the parents to eat from it. And most of the sheikhs of Bukhara said...

---

1. Al-Hidayah, Section on Corrupt Partnership, Part 2, Al-Maktabah al-Arabia, Karachi, 1/212.
2. Khulasa-tul-Fatawa, Book of Gifts, Maktaba Habibiyah, Quetta, 4/400.
3. Fatawa Bazzazia with Al-Hindiyya, Book of Gifts, Peshawar, 6/273.

[अरबी पाठ]: यदि कोई शिकार का पीछा करता है और उसे दूसरे के पास लाता है, और वह दूसरा व्यक्ति उसे पकड़ लेता है, तो वह उसी का होगा जिसने उसे पकड़ा है। अल-हिदाया का कथन कितना उत्कृष्ट और स्पष्ट है जहाँ यह कहता है (1): "और यदि उनमें से एक काम करता है और दूसरा उसके काम में उसकी सहायता करता है, जैसे कि यदि एक उसे उखाड़ता है और दूसरा उसे इकट्ठा करता है, या एक उखाड़ता और इकट्ठा करता है और दूसरा उसे ढोता है, तो सहायक उचित पारिश्रमिक (अज्र-उल-मिसल) का हकदार है।"

[उर्दू विवरण]: यदि कोई व्यक्ति पानी निकालता है, और जब बाल्टी कुएँ के मुहाने तक पहुँचती है, तो दूसरा व्यक्ति उसे निकाल कर रख देता है, तो इस स्थिति में स्वामित्व दूसरे व्यक्ति का होगा। इसी प्रकार, यदि किसी ने शिकार को खदेड़ा और वह दूसरे व्यक्ति के पास आ गया, और उस दूसरे व्यक्ति ने उसे पकड़ लिया, तो जिसने पकड़ा उसी का होगा। लेकिन अल-हिदाया का पाठ हर प्रकार के भ्रम से मुक्त है; इसमें कहा गया है कि यदि कार्य एक इकाई के रूप में नहीं किया गया था बल्कि दूसरे व्यक्ति ने उस कार्य में सहायता की थी—उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति ने पेड़ उखाड़े और दूसरे ने उन्हें इकट्ठा किया, या उखाड़े और इकट्ठा किए लेकिन दूसरे व्यक्ति ने उन्हें उठाया—तो मददगार को उचित पारिश्रमिक मिलेगा। (त)

द्वितीय: मज़हब के स्थापित पाठ से एक रिवायत ज़ाहिर राय के रूप में दिखाई देगी, क्योंकि कई प्रसिद्ध प्रामाणिक पुस्तकों ने इस पर भरोसा किया है। फ़तवा अहल-ए-समरकंद और फिर फ़तवा ख़ुलासा में इसके हवाले से है:

[अरबी पाठ]: एक आदमी ने (2) एक नाबालिग को खाने की कोई चीज़ उपहार के रूप में दी; माता-पिता के लिए उसमें से खाना जायज़ है। यह इमाम मुहम्मद से रिवायत है, उन दोनों पर अल्लाह की रहमत हो।

[उर्दू अनुवाद]: अगर किसी व्यक्ति ने बच्चे को खाने की चीज़ हिबा (उपहार) की तो उसके माता-पिता के लिए वह चीज़ खाना भी जायज़ है; इमाम मुहम्मद (رحمہ اللہ) से यही रिवायत है। (त)

वजीज़ करदरी में है:

[अरबी पाठ]: यदि नाबालिग को खाने की चीज़ उपहार में दी जाए, तो माता-पिता के लिए उसे खाना जायज़ है (3)।

[उर्दू अनुवाद]: अगर किसी व्यक्ति ने बच्चे को खाने की चीज़ हिबा की तो उसके माता-पिता को उस चीज़ का खाना सही है। (त)

फ़तवा सिराजिया में है:

[अरबी पाठ]: जब किसी लड़के को खाने की कोई चीज़ उपहार में दी जाती है, तो इमाम मुहम्मद (رحمه الله) ने कहा कि उसके माता-पिता के लिए उसमें से खाना जायज़ है, और अधिकांश शेखों ने कहा...

[उर्दू अनुवाद]: अगर किसी ने बच्चे को खाने की कोई चीज़ हिबा की तो मुहम्मद ने फरमाया उसके माता-पिता के लिए उसमें से खाना मुबाह (जायज़) है। और बुखारा के अधिकांश शेखों ने फरमाया...

---

1. अल-हिदाया, फ़सल फ़ी अल-शिरकत अल-फ़ासिदा, भाग 2, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/212।
2. ख़ुलासा-तुल-फ़तवा, किताब अल-हिबा, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 4/400।
3. फ़तवा बज़ज़िया मअल हिंदिया, किताब अल-हिबा, पेशावर, 6/273।

पृष्ठ 711 का 515

اثار احد صیدا وجاء به علی اخر فاخذه کان للأخذ وما احسن وابعد عن الایهام عبارة الهدایة حیث قال(1) وان عمل احدهما واعانه الآخر فی عمله بأن قلعه احدهما وجمعه الآخر او قلعه وجمعه وحمله الآخر فللمعین اجر المثل -1 پانی نکالے اور جب ڈول کنوئیں کے دہانے تک آجائے تو دوسرا شخص نکال کر رکھ دے۔ اس صورت میں ملک دوسرے کی ہوگی، اسی طرح کسی نے شکار کو ہنکایا اور دوسرے شخص کے قریب آیا اور دوسرے شخص نے پکڑ لیا، تو جس نے پکڑا اسی کا ہوگا۔ مگر ہدا یہ کی عبارت ہر قسم کے وہم سے پاک صاف ہے اس میں ہے کہ اگر عمل ایک نہ کیا اور دوسرے نے اس عمل میں معاونت کی، مثلاً یہ کہ درخت ایک شخص نے اکھاڑے اور دوسرے نے جمع کئے یا اکھاڑے اور جمع کئے لیکن اٹھائے دوسرے نے، تو مددگار کو اجر مثل ملے گا۔ (ت)

دوم: کہ نص محرر المذہب سے مروی نظر ظاہر گمان کرے گی کہ بہت کتب معتمدہ مشہورہ نے اس پر اعتماد کیا فتاوی (۱) اہل سمرقند پھر فتاویٰ خلاصہ میں اس کے حوالہ سے ہے:

رجل(۲) وهب للصغیر شیئا من المأکول یباح للوالدین ان یأکلا منه کذاروی عن محمد رحمهما الله تعالیٰ 2۔ اگر کسی شخص نے بچے کو کھانے کی چیز ہبہ کی تو اس کے والدین کیلئے وہ چیز بھی کھانا جائز ہے محمد رحمہ اللہ سے یہی مروی ہے۔ (ت)

وجیز کردری میں ہے:

وهب للصغیر من المأکول شیأ یباح للوالدین ان یأکلاه 3۔ اگر کسی شخص نے بچے کو کھانے کی چیز ہبہ کی تو اس کے والدین کو اس چیز کا کھانا صحیح ہے۔ (ت)

فتاویٰ سراجیہ میں ہے:

اذا وهب الصبی شیئا من المأکول قال محمد رحمه الله تعالی مباح لوالدیه ان یأکلا منه وقال اکثر مشایخ

اگر کسی نے بچہ کو کھانے کی کوئی چیز ہبہ کی تو محمد نے فرمایا اس کے والدین کیلئے اس میں

سے کھانا مباح ہے۔ اور بخاری کے اکثر مشائخ نے فرمایا

---

1 الهداية فصل فی الشركة الفاسدة جز ثانی المكتبة العربية كراچی ١ / ٢١٢ 2 خلاصة الفتاوی كتاب الهبة مكتبہ حبیبیہ كوئٹہ ۴ / ۴۰۰ 3 فتاویٰ بزازیہ مع الهنديه كتاب الهبة پشاور ۶ / ۲۷۳

Fatawa Razvia Volume II

Bukhari: It is not permissible [for parents to eat the gifts given to a child]. I [the author] say: (1) He is the only one who used the expression 'Imam Muhammad said,' because the expression in common books is that 'it is narrated from him.' And Allah Almighty knows best. (T)

In Fatawa (5) Zahiriyah and then in Ghamz (6) al-Uyun, it is stated: When someone gives food items as a gift to a minor, it is narrated from Imam Muhammad that it is permissible for his parents to eat them, and this is likened to hospitality. Most scholars of Bukhara are of the opinion that it is not permissible without necessity. (T)

In Bahr al-Raiq (7) it is stated: It is permissible for parents to eat from the food gifted to a minor; the same is stated in Al-Khulasah. From this, it is understood that utilizing non-edible items is not permissible for them except in case of need, as is not hidden. (T)

In Durr al-Mukhtar it is stated: In it, i.e., in al-Sirajiyah, it is permissible for his parents to eat from the food gifted to him, and it was said: No, it is not permissible. Finis. Thus, it informs that non-food items are not permissible for them except for need. End. (T) I say: Perhaps they took this fatwa from the principle that action...

---

1 Fatawa Sirajiyah, Miscellaneous issues on gifts, Lucknow, p. 96 2 Jami' al-Saghir with Al-Fasulain al-Karahiya, Islami Kutub Khana Karachi, 1/146 3 Bahr al-Raiq, Book of Gifts, Saeed Company Karachi, 4/288 4 Al-Durr al-Mukhtar, Book of Gifts, Mujtabai Delhi, 2/160

बुखारी: [माता-पिता के लिए बच्चे को मिले उपहार खाना] हलाल नहीं है। अह्, मैं कहता हूँ: (1) 'इमाम मोहम्मद ने कहा' वाली इबारत अकेले उन्होंने ही इस्तेमाल की है क्योंकि आम किताबों की इबारत यह है कि 'उनसे रिवायत है'। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

फ़तावा (5) ज़हीरिया और फिर ग़म्ज़ (6) अल-उयून में है: जब बच्चे को किसी ने खाने की चीजें तोहफे(हदिया) में दीं, तो इमाम मोहम्मद से रिवायत है कि उसके माता-पिता के लिए उनका खाना मुबाह (जायज़) है और यह मेहमाननवाज़ी (ज़ियाफ़त) की तरह है। बुखारा के ज़्यादातर मशायख (विद्वानों) का कहना है कि ज़रूरत के बिना जायज़ नहीं है। (त)

बहरुल रैक (7) में है: माता-पिता के लिए बच्चे को तोहफे में मिली खाने की चीज़ खाना जायज़ है, जैसा कि अल-ख़ुलासा में है। इससे मालूम होता है कि गैर-खाद्य (न खाने वाली) चीज़ों का इस्तेमाल करना उनके लिए मुबाह नहीं है, हाँ, ज़रूरत पड़ने पर जायज़ है जैसा कि साफ़ है। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है: इसमें यानी सिराजिया में है कि बच्चे के माता-पिता को मुबाह है कि बच्चे को तोहफे में दी गई चीज़ से खाएं और एक कौल (कथन) है कि जायज़ नहीं है। यहाँ बात खत्म हुई। इससे मालूम हुआ कि गैर-खाद्य वस्तुओं से बिना ज़रूरत लाभ उठाना जायज़ नहीं है। अह् (त), मैं कहता हूँ शायद उन्होंने यह फतवा इस उसूल (सिद्धांत) से लिया है कि...

---

1 फ़तावा सिराजिया, हिबा के मुतफ़र्रिका मसायल, लखनऊ, पृ. 96 2 जामिउल सगीर मअ अल-फुसुलैन अल-कराहिया, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/146 3 बहरुल रैक किताबुल हिबा, सईद कंपनी कराची, 4/288 4 अल-दुर्रुल मुख़्तार किताबुल हिबा, मुजतबाई दिल्ली, 2/160

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

بخاری لا یحل اھ اقول: (۱) و تفرد بتعبیر قال محمد فأن عبارۃ العامۃ روی عنہ و اللہ تعالٰی اعلم۔ والدین کو کھانا حلال نہیں اھ (ت) میں کہتا ہوں "قال محمد" کی عبارت تنہا انہوں نے ہی استعمال کی ہے کیونکہ عام کتب کی عبارت یہ ہے کہ ان سے مروی ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

فتاوٰی (۵) ظہیریہ پھر غمز (۶) العیون میں ہے : اذا اھدی للصغیر شیئ من المأکولات روی عن محمد انہ یباح لوالدیہ وشبہ ذلك بالضیافۃ واکثر مشایخ بخاری علی انہ لا یباح بغیر حاجۃ۔ جب بچہ کو کسی نے کھانے کی چیزیں ہدیہ میں دیں، تو محمد سے مروی ہے کہ اس کے والدین کو ان کا کھانا مباح ہے اور یہ ضیافت کی طرح ہے اور بخاری کے اکثر مشایخ کا کہنا ہے کہ بغیر حاجت جائز نہیں۔ (ت)

بحر الرائق (۷) میں ہے : یباح للوالدین ان یأکلا من المأکول الموھوب للصغیر کذا فی الخلاصۃ فافاد ان غیر المأکول لایباح لھما الا عند الاحتیاج کما لایخفی۔ والدین کو بچہ کی موہوبہ چیز کا کھانا مباح ہے کذا فی الخلاصۃ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ غیر ماکول کو استعمال میں لانا مباح نہیں، ہاں ضرورتہً جائز ہے کما لایخفی۔ (ت)

در مختار میں ہے : وفیھا ای فی السراجیۃ یباح لوالدیہ ان یأکلا من مأکول وھب لہ وقیل لا انتہی۔ فافاد ان غیر المأکول لا یباح لھما الا لحاجۃ اھ اقول: وکانہ اخذہ من ان العمل سراجیہ میں ہے بچہ کے والدین کو مباح ہے کہ بچہ کو ہدیہ کی گئی چیز سے کھائیں اور ایک قول ہے کہ جائز نہیں انتہی، اس سے معلوم ہوا کہ غیر ماکول سے بلا حاجتہً استفادہ جائز نہیں اھ (ت) میں کہتا ہوں شاید انہوں نے یہ فتوی اس اصول سے

1 فتاویٰ سراجیہ مسائل متفرقہ من ہبتہ لکھنؤ ص ۹۶ 2 جامع الصغار مع الفصولین الکراہیۃ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۴۶ 3 بحر الرائق کتاب الھبۃ سعید کمپنی کراچی ۴/ ۲۸۸ 4 الدر المختار کتاب الھبۃ مجتبائی دہلی ۲/ ۱۶۰

Fatawa Razawiyya Volume 2

Arabic Text	Urdu Translation (from original)
It is taken from the words of the companions of the Imam that their opinion will be acted upon only when no statement is found from the Imam. The opinions of scholars (Mashaikh) cannot equal the Imam's statement, no matter how numerous they are. We have mentioned textual evidences for this in our treatise 'Ajla al-I'lam bi-an al-Fatwa Mutlaqan 'ala Qawl al-Imam'. Specifically, he has expressed it with the phrase "Muhammad said", otherwise, there is no "it is said" (qila) in al-Sirajiyya, as we have cited its text for you. (T)	اخذ کیا ہے کہ امام کے اصحاب کے قول پر اس وقت عمل ہو گا جب امام سے کوئی قول نہ پایا جائے اور امام کے قول کے ہمسر مشائخ کے اقوال نہیں ہو سکتے ہیں خواہ وہ کتنے ہی زیادہ ہوں اس کے نصوص ہم نے اپنے رسالہ اجلی الاعلام بان الفتوی مطلقاً علی قول الامام میں ذکر کئے ہیں خاص طور پر انہوں نے اس کو "قال محمد" سے تعبیر کیا ہے ورنہ سراجیہ میں قیل نہیں ہے جیسا کہ ہم نے اس کی نص ذکر کی ہے۔ (ت)

Tatar Khaniyah 9 then it is in Radd al-Muhtar 10:

Arabic Text	Urdu Translation (from original)
It is narrated explicitly from Muhammad that it is permissible, while in al-Dhakhirah it is stated that most of the scholars of Bukhara hold that it is not permissible. 1	محمد سے مروی ہے بطور نص کہ یہ مباح ہے اور ذخیرہ میں ہے کہ اکثر مشائخ بخاری اس پر ہیں کہ مباح نہیں۔ (ت)

Similarly, it is mentioned in Jawahir 11 Akhlati and Hindiyya 12. The text of Jami' al-Saghir was mentioned above.

I say: But a keen eye determines that although both narrations are from the Imam who codified the school (Imam Muhammad), may Allah Almighty have mercy on him, this narration and these texts have no relation to that specific case. Here, the item is not the property of the child; rather, someone else has sent a gift in the child's name. It is a widespread custom that small items of food and drink are sent in the name of children, whereas the intention is to give them to the parents. It is certainly not the case that they consider it forbidden for the parents. Seeing the complete and general spread of this custom, an absolute ruling was given, or a detailed explanation was provided. It is mentioned in Fatawa Samarqand, then Tatar Khaniyah 2, then Shamiyya 3, and also in the book al-Tajnis wa-al-Mazid, then Jami' al-Saghir:

Arabic Text	Urdu Translation (from original)
When someone gifts fruits to a young child, it is permissible for the father and mother to eat from it, provided that the purpose of the gift is to show kindness to the parents, and it was gifted to the child merely because the gift was considered small. 2	جب چھوٹے بچے کو کسی نے میوہ جات ہدیہ کئے تو اس کے ماں باپ کو اس میں سے کھانا جائز ہے بشرطیکہ اس ہدیہ کا مقصد ماں باپ کے ساتھ حُسن سلوک ہو اور بچہ کو محض اس لئے ہدیہ کیا گیا ہو کہ ہدیہ کو چھوٹا سمجھا گیا ہو۔ (ت)

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Buyu', Mustafa al-Babi, Egypt, 4/572 2 Jami' al-Saghir with al-Fusulayn al-Karabisiya, Islami Kutub Khana, Karachi, 1/126

फतावा रज़विया जिल्द 2

अरबी पाठ

इमाम के साथियों के कथन से यह लिया गया है कि उनके कथन पर तभी अमल किया जाएगा जब इमाम से कोई कथन न मिले। मशाइख (विद्वानों) के कथन इमाम के कथन के बराबर नहीं हो सकते, चाहे वे कितने ही अधिक क्यों न हों। इसके प्रमाण हमने अपने ग्रंथ 'अज्ला अल-इलाम बि अन अल-फतवा मुतलकन अला कौल अल-इमाम' में दिए हैं। विशेष रूप से उन्होंने इसे "मुहम्मद ने कहा" कहकर व्यक्त किया है, अन्यथा सिराजिया में "कहा गया है" (क़ील) नहीं है, जैसा कि हमने आपके लिए इसके मूल पाठ का उल्लेख किया है। (त)

उर्दू अनुवाद (मूल से)

اخذ کیا ہے کہ امام کے اصحاب کے قول پر اس وقت عمل ہو گا جب امام سے کوئی قول نہ پایا جائے اور امام کے قول کے ہمسر مشائخ کے اقوال نہیں ہو سکتے ہیں خواہ وہ کتنے ہی زیادہ ہوں اس کے نصوص ہم نے اپنے رسالہ اجلی الاعلام بان الفتوی مطلقاً علی قول الامام میں ذکر کئے ہیں خاص طور پر انہوں نے اس کو "قال محمد" سے تعبیر کیا ہے ورنہ سراجیہ میں قیل نہیں ہے جیسا کہ ہم نے اس کی نص ذکر کی ہے۔ (ت)

तातार खानिया 9 फिर रद अल-मुहतार 10 में है:

अरबी पाठ

मुहम्मद से स्पष्ट रूप से वर्णित है कि यह अनुमेय (मुबाह) है, जबकि अल-ज़ख़ीरा में है कि बुखारा के अधिकांश मशाइख (विद्वान) इस मत पर हैं कि यह अनुमेय नहीं है। 1

उर्दू अनुवाद (मूल से)

محمد سے مروی ہے بطور نص کہ یہ مباح ہے اور ذخیرہ میں ہے کہ اکثر مشائخ بخاری اس پر ہیں کہ مباح نہیں۔ (ت)

इसी तरह, यह जवाहर 11 अख्लाती और हिन्दिया 12 में वर्णित है। जामी अल-सगीर का पाठ ऊपर आ चुका है।

मैं कहता हूँ: लेकिन सूक्ष्म दृष्टि का निर्णय है कि यद्यपि दोनों रिवायतें मज़हब को संहिताबद्ध करने वाले इमाम (इमाम मुहम्मद) - अल्लाह उन पर दया करे - से हैं, लेकिन इस रिवायत और इन इबारतों का उस स्थिति से कोई संबंध नहीं है। यहाँ वह चीज़ बच्चे की मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं है, बल्कि किसी अन्य ने बच्चे के नाम पर उपहार भेजा है। यह एक आम प्रथा है कि खाने-पीने की छोटी चीज़ें बच्चों के ही नाम पर भेजी जाती हैं, जबकि उद्देश्य माता-पिता को देना होता है। और यह निश्चित रूप

से नहीं होता कि वे इसे माता-पिता के लिए हराम (निषिद्ध) समझते हों। इस प्रथा (उर्फ़) का पूर्ण और व्यापक प्रसार देखकर एक सामान्य आदेश दिया गया, या कहीं विस्तार से स्पष्टीकरण दिया गया। फतावा समरकंद, फिर तातार खानिया 2, फिर शामिया 3, और किताब अल-तजनीस वल-मजीद, फिर जामी अल-सगीर में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद (मूल से)**
जब किसी ने छोटे बच्चे को फल उपहार में दिए, तो माता-पिता के लिए उसमें से खाना जायज़ है, बशर्ते कि उस उपहार का उद्देश्य माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना हो और बच्चे को केवल इसलिए उपहार दिया गया हो क्योंकि उपहार को छोटा समझा गया था। 2	جب چھوٹے بچے کو کسی نے میوہ جات ہدیہ کئے تو اس کے ماں باپ کو اس میں سے کھانا جائز ہے بشرطیکہ اس ہدیہ کا مقصد ماں باپ کے ساتھ حُسن سلوک ہو اور بچہ کو محض اس لئے ہدیہ کیا گیا ہو کہ ہدیہ کو چھوٹا سمجھا گیا ہو۔ (ت)

1 रद अल-मुहतार, किताब अल-बुयू, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 4/572 2 जामी अल-सगीर मअ अल-फूसूलैन अल-कराबीसिया, इस्लामी कुतुब खाना, कराची, 1/126

عربی عبارت	اردو ترجمہ
بقول اصحاب الامام اذا لم یوجد عنه قول ولا یوازیه قول المشایخ وان کثروا کما ذکرنا نصوصه في رسالتنا اجلی الاعلام بان الفتوی مطلقاً علی قول الامام لاسیما وقد عبره بقول محمد والا فلیس في السراجیة قیل کما اسمعناك نصها۔	اخذ کیا ہے کہ امام کے اصحاب کے قول پر اس وقت عمل ہو گا جب امام سے کوئی قول نہ پایا جائے اور امام کے قول کے ہمسر مشائخ کے اقوال نہیں ہو سکتے ہیں خواہ وہ کتنے ہی زیادہ ہوں اس کے نصوص ہم نے اپنے رسالہ اجلی الاعلام بان الفتوی مطلقاً علی قول الامام میں ذکر کئے ہیں خاص طور پر انہوں نے اس کو "قال محمد" سے تعبیر کیا ہے ورنہ سراجیہ میں قیل نہیں ہے جیسا کہ ہم نے اس کی نص ذکر کی ہے۔ (ت)

تاتار خانیہ ۹ پھر رد المحتار ۱۰ میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
روی عن محمد نصاً انه یباح وفی الذخیرة واکثر مشائخ بخاری علی انه لا یباح ۱	محمد سے مروی ہے بطور نص کہ یہ مباح ہے اور ذخیرہ میں ہے کہ اکثر مشائخ بخاری اس پر ہیں کہ مباح نہیں۔ (ت)

اسی طرح جواہر ۱۱ اخلاطی وہندیہ ۱۲ میں ہے جامع ۱۳ الصغار کی عبارت اوپر گزری۔

اقول: مگر نظر دقیق حاکم ہے کہ دونوں روایتیں اگرچہ امام محرر المذہب رحمہ اللہ تعالٰی سے ہیں لیکن اس روایت اور ان عبارات کو اس روایت سے علاقہ نہیں یہاں وہ شے ملک صبی نہیں بلکہ

دوسرے نے صبی کے نام ہدیہ بھیجی ہے اور عادت فاشیہ جاری ہے کہ کھانے پینے کی تھوڑی چیز بچوں ہی کے نام کر کے بھیجتے ہیں اور مقصود ماں باپ کو دینا ہوتا ہے اور یہ تو قطعاً نہیں ہوتا کہ ماں باپ پر حرام سمجھتے ہوں اس عرف کا انتشار تام وعام دیکھ کر مطلق حکم فرمایا یا کہیں تفصیل و توضیح فرمادی۔ فتاوٰی سمر قند پھر تاتا خانیہ ۲ پھر شامیہ ۳ نیز کتاب التجنیس والمزید پھر جامع الصغار میں ہے :

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
اذ اھدی الفواکه الی الصبی الصغیر یحل للاب والام الاکل اذا ارید بذلك بر الاب والامام لکن اھدی الی الصغیر استصغار للھدیة 2۔	جب چھوٹے بچے کو کسی نے میوہ جات ہدیہ کئے تو اس کے ماں باپ کو اس میں سے کھانا جائز ہے بشرطیکہ اس ہدیہ کا مقصد ماں باپ کے ساتھ حُسن سلوک ہو اور بچہ کو محض اس لئے ہدیہ کیا گیا ہو کہ ہدیہ کو چھوٹا سمجھا گیا ہو۔ (ت)

1 رد المحتار کتاب البیہ مصطفٰی البابی مصر ۴/ ۵۷۲ 2 جامع الصغار مع الفصولین الکرابیسیہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۲۶

Fatawa Ridawiyya, Volume 2 Excerpt: The expression in 'Al-Ashbah' is even better, as it clearly reveals this prevalent custom.

As they both said: When something is gifted to a child (1) and it is known that it is for him, it is not permissible for the parents to eat from it without necessity. [A.H.] - They stated that when something is gifted to a child and it is known that it is specifically for the child, the parents cannot eat from it without necessity. [A.H.] (T)

I say: The prohibition is based on the knowledge that it belongs to the minor. Thus, it implies permissibility when it is not known to be specifically for him, referring back to the prevalent custom. - I say: The non-permissibility of its use for parents is conditional on the knowledge that it belongs to the child. Therefore, its inevitable meaning is that when such knowledge is absent, it is permissible, stated while keeping the custom in mind. (T)

Imam Zahir-ud-Din, by stating the reason for these absolute statements, has clarified this matter. It is in 'Zahiriyya', then in 'Alamgiri' (2):

Fruits were gifted to a child; it is permissible for his parents to eat them because the gift was actually for them, and the child was mentioned because the gift was considered minor/insignificant. [A.H.] - Fruits were gifted to a child; it is permissible for his parents to eat them because the gift was actually for the parents, and it was given into the child's hand because the gift was considered ordinary. (T)

I say: From here it becomes clear that what preceded from 'Jami' al-Saghir' via 'Zahiriyya'—that when a child gifts something from food items—if this is not a paraphrase, because in all other books this issue is mentioned as something being gifted to the child. And it is reported from 'Zahiriyya' itself in 'Al-Ghamz' with the words: 'When something is gifted to a child', as you heard. So his intention is only that he gifts from what was gifted to him, not that the child initiates and gifts something from his own property. - I say: From this it is known that the text which passed from 'Jami' al-Saghir' from 'Zahiriyya'—that when a child gifts something to eat or drink—if it is not a paraphrase, it is because in all books this issue is mentioned such that something was gifted to the child. And it is quoted from 'Zahiriyya' itself in 'Al-Ghamz' in these words: 'When something was gifted to the child', as you heard. So their intention is that the child gifts from that thing which was

gifted to him, not that the child initiates and gifts something from his own ownership, and the proof for this...

1. Al-Ashbah wal-Naza'ir, Rules of Children, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/145.
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Three on Gifts, Peshawar, 4/381. Page 518 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2 उद्धरण: फिर 'अशबाह' की अभिव्यक्ति और भी बेहतर है, जिससे यह प्रचलित प्रथा स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती है।

जैसा कि उन दोनों ने कहा: जब बच्चे को कोई चीज़ उपहार (1) दी जाए और यह ज्ञात हो कि वह उसी के लिए है, तो माता-पिता के लिए बिना आवश्यकता के उसमें से खाना जायज़ नहीं है। [समाप्त] - उन्होंने कहा कि जब बच्चे को कोई चीज़ तोहफ़े में दी गई हो और पता हो कि वह सिर्फ़ बच्चे के लिए है, तो माँ-बाप उसमें से बिना ज़रूरत के नहीं खा सकते। [समाप्त] (त)

मैं कहता हूँ: मनाही इस ज्ञान पर आधारित है कि वह नाबालिग के लिए है। अत; यह स्पष्ट करता है कि जब यह ज्ञात न हो कि वह विशेष रूप से उसके लिए है, तो प्रचलित प्रथा के आधार पर वह जायज़ है। - मैं कहता हूँ कि माँ-बाप के लिए इसका इस्तेमाल जायज़ न होना इस शर्त पर निर्भर है कि उन्हें पता हो कि यह बच्चे का है। इसलिए इसका लाज़मी मतलब यह है कि जब पता न हो तो वह मुबाह (जायज़) है, उर्फ़(रिवाज़) का लिहाज़ रखते हुए कहा गया है। (त)

इमाम ज़हीर-उद-दीन ने इन मुतलक़ (निरपेक्ष) कथनों की दलील बयान करके इस मामले का निपटारा कर दिया है। 'ज़हीरिया' और फिर 'आलमगीरी' (2) में है:

बच्चे को फल तोहफ़े में दिए गए; उनके माता-पिता के लिए उन्हें खाना जायज़ है क्योंकि तोहफ़ा असल में उन्हीं के लिए था, और बच्चे का उल्लेख इसलिए किया गया क्योंकि तोहफ़े को मामूली समझा गया था। [समाप्त] - बच्चे को फल तोहफ़े में दिए गए तो उसके माँ-बाप को उनका खाना जायज़ है क्योंकि तोहफ़ा असल में माँ-बाप को ही था, बच्चे के हाथ में इसलिए दिया गया कि तोहफ़े को मामूली समझा गया। (त)

मैं कहता हूँ: यहाँ से यह ज़ाहिर होता है कि 'जामी अस-सग़ीर' से 'ज़हीरिया' के हवाले से जो पहले गुज़रा—कि जब बच्चा खाने-पीने की कोई चीज़ तोहफ़े में दे—अगर यह भावार्थ अनुवाद नहीं है, क्योंकि बाकी तमाम किताबों में यह मसला इस तरह दर्ज है कि कोई चीज़ बच्चे को हिबा (दान) की गई। और स्वयं 'ज़हीरिया' से 'अल-ग़म्ज़' में इन लफ़्ज़ों में नक़ल किया गया है: 'जब बच्चे को कोई चीज़ तोहफ़े में दी गई', जैसा कि आपने सुना। तो उनका मक़सद सिर्फ़ उसी चीज़ से तोहफ़ा देना है जो उसे तोहफ़े में मिली हो, न कि बच्चा शुरू करे और अपनी मिलकियत (स्वामित्व) से कुछ तोहफ़ा दे। - मैं कहता हूँ इससे मालूम हुआ कि जो इबारत जामी सग़ीर से ज़हीरिया से गुज़री कि जब बच्चा खाने पीने की कोई चीज़ हदिया (तोहफ़ा) करे, अगर यह इसकी नक़ल बिल-मानी (भावार्थ) नहीं है

क्योंकि तमाम किताबों में यह मसला इस तरह मज़कूर (वर्णित) है कि कोई चीज़ बच्चे को हिबा की गई और खुद ज़हीरिया में ग़म्ज़ से इन अल्फ़ाज़ में मनकूल (उद्धृत) है कि जब बच्चे को कोई चीज़ हिबा की گئی जैसा कि तुमने सुना, तो उनकी मुराद यह है कि बच्चा उस चीज़ से हिबा करे जो उसे हदिया की गई हो, यह नहीं कि बच्चा इब्तिदा (शुरुआत) करे और अपनी मिलक से कुछ हदिया करे, और इसकी दलील...

1. अल-अशबाह वन-नज़ाइर, एहकामुल सिब्यान, इदारातुल कुरआन कराची, 2/145।
2. फ़तावा हिन्दिया, बाब अल-स़ालिस़ मिनल हिबा, पेशावर, 4/381। पृष्ठ 711 का 518

فتاوی رضویہ جلد ثانی ملتقط ‘پھر اشباہ’ کی تعبیر اور احسن ہے جس سے اس عادت کا فاشیہ ہو نا روشن ہے۔

حیث قالا اذا(۱) اهدي للصبي شيئ وعلم انه له فليس للوالدين الاكل منه لغير حاجة ۱ اھ انہوں نے فرمایا کہ جب بچہ کو کوئی چیز ہدیہ کی گئی ہو اور معلوم ہو کہ وہ صرف بچے کیلئے ہے تو والدین اس میں سے بلا حاجت نہیں کھا سکتے اھ (ت)

اقول: بنی المنع علی علم انه للصغیر فافاد الاباحة اذا لم یعلم شیئ ردا الی العادة الفاشیة۔ میں کہتا ہوں والدین کیلئے اس کا استعمال جائز نہ ہونا اس شرط سے مشروط ہے کہ اُسے علم ہو کہ یہ بچہ کا ہے تو اس کا لازمی مطلب یہ ہے کہ جب علم نہ ہو تو مباح ہے عرف کا لحاظ رکھتے ہوئے کہا گیا ہے۔ (ت)

امام ظہیر الدین نے ان عبارات مطلقہ کی دلیل بیان فرما کر اس امر کا تصفیہ فرمادیا ،ظہیریہ ‘ پھر عالمگیریہ ‘ میں ہے :

اهدي للصغير الفواكه يحل لوالديه اكلها لان الاهداء اليهما وذكر الصبی لاستصغار الهدية ۲ اھ بچہ کو پھل ہدیہ کیے گئے تو اس کے والدین کو اُن کا کھانا جائز ہے کیونکہ ہدیہ دراصل والدین کو ہی تھا بچے کے ہاتھ میں اس لئے دیا گیا کہ ہدیہ کو معمولی سمجھا گیا۔ (ت)

اقول: ومن ههنا ظهر ان ماتقدم عن جامع الصغار عن الظهيرية اذا اهدی الصغير شيا من المأكولات ان لم يكن عن نقله بالمعنی لان المسألة في سائر الكتب فيما وهب شيئ للصغير وقد نقل عن الظهيرية نفسها في الغمز بلفظ اذا اهدي للصغير شيئ كما سمعت فليس مراده الا اهداؤه مما اهدی اليه لا ان يبتدئ الصبی فيهدی من ملكه شيأ میں کہتا ہوں اس سے معلوم ہوا کہ جو عبارت جامع صغیر سے ظہیریہ

سے گزری کہ جب بچہ کھانے پینے کی کوئی چیز ہدیہ کرے، اگر یہ اس کی نقل بالمعنی نہیں ہے کیونکہ تمام کتب میں یہ مسئلہ اس طرح مذکور ہے کہ کوئی چیز بچہ کو ہبہ کی گئی اور خود ظہیریہ میں غمز سے ان الفاظ میں منقول ہے کہ جب بچہ کو کوئی چیز ہبہ کی گئی جیسا کہ تم نے سنا، تو ان کی مراد یہ ہے کہ بچہ اس چیز سے ہبہ کرے جو اس کو ہدیہ کی گئی ہو، یہ نہیں کہ بچہ ابتداء کرے اور اپنی ملک سے کچھ ہدیہ کرے، اور اس کی دلیل

۱ الاشباہ والنظائر احکام الصبیان ادارۃ القرآن کراچی ۲/ ۱۴۵ ۲ فتاوی ھندیۃ الباب الثالث من الھبۃ پشاور ۴/ ۳۸۱ Page 518 of 711

The proof for this is his statement: "And its resemblance to hospitality by an authorized slave (ma'dhun)." For the slave (1) does not provide hospitality from his own property but from his master's. And his master only gave him permission for trade, but custom dictates that such hospitality is indispensable in trade, so his permission for trade is an implied permission for hospitality. Similarly, a child does not give gifts from his own property, but rather from the property of the one giving the gift. The giver only named the child, but it is a common custom that parents are not prevented from such gifts. Therefore, giving a gift to the child is considered giving it to the parents. (T)

I say: The reason for this is that food items are among those things that spoil quickly, so there is an implied permission from the giver to both [the child and parents] to consume them. And thus, ownership is established for them, unlike items that can be stored. Thus, the correctness of the statements in 'Al-Bahr' and 'Ad-Dur' is evident, as they stated that non-food items are not permissible for them except in case of need (2). And the objection raised by the scholar 'Sh' [Shaami] is resolved; he only quoted what was mentioned from 'Al-Tatar-Khaniya' and 'Fatawa Samarqand'. Then I said: Through this, reconciliation is achieved, and it becomes clear through circumstantial clues. Accordingly, there is no difference between food and other items; rather, other items are even clearer. [End of quote]

Footnotes: 1. Ad-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hiba, Mujtabai Delhi, 2/160 2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hiba, Mustafa al-Babi Egypt, 4/572

इसका प्रमाण उनका यह कथन है: "और यह माज़ून (इजाज़त प्राप्त गुलाम) द्वारा दी गई दावत के समान है।" क्योंकि माज़ून (1) अपनी संपत्ति से दावत नहीं देता बल्कि अपने स्वामी की संपत्ति से देता है। और उसके स्वामी ने उसे केवल व्यापार की अनुमति दी थी, लेकिन परंपरा यह है कि व्यापार में इस तरह की दावतें अपरिहार्य होती हैं, इसलिए व्यापार की अनुमति देना दावत की अनुमति देने के समान है। इसी प्रकार, बच्चा अपनी संपत्ति से उपहार नहीं देता है, बल्कि उपहार देने वाले की संपत्ति से ही देता है। उपहार देने वाले ने केवल बच्चे का नाम लिया है, लेकिन सामान्यतः यह रिवाज है कि इस प्रकार के उपहारों से माता-पिता को रोका नहीं जाता है। अतः बच्चे को उपहार देना माता-पिता को उपहार देना ही समझा जाता है। (त)

मैं कहता हूँ: इसका कारण यह है कि खाद्य वस्तुएं वे हैं जो जल्दी खराब हो जाती हैं, इसलिए उपहार देने वाले की ओर से दोनों को उनके सेवन की सांकेतिक अनुमति होगी। और इस प्रकार, उनका स्वामित्व उनके लिए स्थापित हो जाता है, उन वस्तुओं के विपरीत जिन्हें संग्रहित किया जा सकता है। अतः 'अल-बह्र' और 'अद-दुर' के कथनों की सत्यता स्पष्ट हो गई, उन्होंने कहा कि गैर-खाद्य वस्तुएं उनके लिए केवल आवश्यकता (2) के समय ही वैध हैं। और विद्वान 'श' (शामी) द्वारा उठाई गई आपत्ति दूर हो गई, जिन्होंने 'अल-तातार-ख़ानिया' और 'फ़तावा समरकंद' से उद्धृत किया था। फिर मैंने कहा: इससे सामंजस्य स्थापित होता है और परिस्थितियों के संकेतों से यह स्पष्ट होता है। तदनुसार, खाद्य और अन्य वस्तुओं के बीच कोई अंतर नहीं है, बल्कि अन्य वस्तुएं और भी स्पष्ट हैं। [उद्धरण समाप्त]

फुटनोट्स: 1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-हिबा, मुजतबाई दिल्ली, 2/160 2. रद अल-मुहतार, किताब अल-हिबा, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 4/572

पृष्ठ 519 का 711

والدلیل علیہ قولہ و شبہ ذلک بضیافۃ المأذون فالمأذون (۱) لا یضیف من مال نفسہ بل مولاہ و مولاہ انما اذن فی التجارۃ لکن العوائد قضت ان امثال الضیافات لا بد منھا فی التجارات فکان اذنہ فی التجارۃ اذنا فیھا کذلک الصبی لاہدی من مال نفسہ بل مال المہدی والمُہدی انما سمی الصبی لکن فشت العوائد ان امثال الہدایا لا یمنع عنھا ابواہ فکان اہداؤہ الیہ اہداء الیہما۔ ان کا یہ قول ہے کہ اور یہ مشابہ مأذون کی ضیافت کے ہے کہ مأذون اپنے مال سے ضیافت نہیں کرتا ہے بلکہ اپنے مولٰی کے مال سے کرتا ہے اور اس کے مولٰی نے اس کو تجارت کی اجازت دی ہے، لیکن عرف میں یہ عادت ہے کہ تجارت میں اس قسم کی ضیافتیں ہوتی ہی رہتی ہیں، تو تجارت کی اجازت دینا ضیافت کی اجازت کے مترادف ہے، اسی طرح بچہ اپنے مال سے ہدیہ نہیں دیتا ہے بلکہ ہدیہ دینے والے کے مال سے ہی ہدیہ دیتا ہے اور ہدیہ دینے والے نے بچہ کا نام لیا مگر عام طور پر عادت یہ ہے کہ اس قسم کے ہدایا سے ماں باپ کو منع نہیں کیا جاتا ہے تو بچوں کو ہدیہ دینا ماں باپ کو ہدیہ دینا سمجھا جاتا ہے۔ (ت)

اقول: والوجہ فیہ ان المأکولات مما یتسارع الیھا الفساد فیکون اذنا من المہدی لھما فی التناول دلالۃ و ذلک بان یقع الملك لہما بخلاف مایدخر فظھر اصابۃ البحر والدر فی قولہما افادان غیر المأکول لا یباح لہما الا لحاجۃ (۲) و اندفع ما وقع للعلامۃ ش حیث قال بعد نقل مأمر عنہ عن التتارخانیۃ عن فتاوی سمرقند قلت: و بہ یحصل التوفیق و یظھر ذلک بالقرائن و علیہ فلا فرق بین المأکول وغیرہ بل غیرہ اظہر ۲ اہـ میں کہتا ہوں کھانے پینے کی چیزیں عام طور پر جلدی گل سڑ جاتی ہیں تو ہدیہ دینے والے کی طرف سے والدین کو اشارۃً کھانے کی اجازت سمجھی جائے گی، اور اس طرح ملک والدین کے لئے ثابت ہوگی اور جو اشیاء جلد خراب ہونے والی نہیں ہیں ان کا یہ حکم نہیں ہے، تو

بحر اور دُر کے قول کی صحت ظاہر ہو گئی، ان کا قول ہے کہ جو چیزیں کھانے پینے کی نہیں ان کا استعمال والدین کے لئے جائز نہیں، ہاں حاجت کے وقت جائز ہے، اور علامہ "ش" کا اعتراض ختم ہوا انہوں نے تو وہ عبارت نقل کی جو تاتار خانیہ، فتاوی سمر قند سے گزری، پھر فرمایا میں کہتا ہوں

حواشی: 1 الدرالمختار کتاب الہبۃ مجتبائی دہلی ۲/ ۱۶۰ 2 ردالمختار کتاب الہبۃ مصطفی البابی مصر ۴/ ۵۷۲

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Arabic]: That is, the intention for the child in the gift of food items is more apparent and more common. Therefore, when eating there was permissible in the absence of evidence requiring the gift to be specific to the child, then this is more appropriate, and you have known the answer. And success is from Allah.

[Urdu]: Agreement with this has become clear and this is evident from the circumstances, and in this respect, there is no difference between edible and non-edible items, rather its non-edible form is more apparent. That is, the intention of gifting food items for the child is more apparent and common. So when eating there became permissible in the absence of any such evidence that demands the gift to be specific to the child, then this is more appropriate and you have already received its answer. And success is from Allah. (T)

In short, these narrations are about what is not the property of a child, and here the discussion is about the property of a child, that permissible water will undoubtedly belong to the one who fills it as long as it is not on the basis of employment, and the property of a child is not lawful for parents without necessity. This is the requirement of a jurisprudential view.

I say: And success is from Allah. However, there is no doubt that custom and habit are contrary to this, and that is also from Shariah evidences. So it is appropriate to consider it a small excusable matter for which there is evidence from the Quran and Hadith. Allah Almighty said:

[Arabic Quranic Verse]: "And they ask you about orphans. Say, 'Improvement for them is best. And if you mix your affairs with theirs - they are your brothers. And Allah knows the corrupter from the amender.'" (1)

[Urdu Translation]: And they ask you regarding orphans. Say, improving their state is better. And if you mix [your affairs and property] with theirs, then they are your brothers. And Allah knows the one who intends mischief from the one who intends good. (T) In this verse, according to one of the interpretations, it is permissible to mix property with an orphan, and it is clear that in a state of mixing, complete distinction is nearly impossible. It is stated in Tafsirat-e-Ahmadiyya:

[Arabic]: And in al-Zahidi, it is narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both): Mixing is that you eat from his fruit, his milk, and his bowl, and he eats from your fruit, your milk, and your bowl (1). And the verse indicates the

permissibility of mixing during travel and while at home, where they contribute to expenses equally, then it is not disliked if one of them eats more because since it is permissible...

[Urdu]: And in al-Zahidi it is narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that mixing is that you eat his fruit, his milk and from his bowl, and he also similarly eats your fruit with you and drinks your milk and eats from your bowl. And this verse indicates the permissibility of mixing whether in travel or at home while the expenditure...

---

1 Al-Quran 2/220

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी]: यानी, खाद्य वस्तुओं के उपहार में बच्चे के लिए इरादा अधिक स्पष्ट और अधिक सामान्य है। इसलिए, जब वहां खाना जायज़ हो गया, जबकि ऐसा कोई प्रमाण नहीं था जो उपहार को बच्चे के लिए विशिष्ट करने की मांग करता हो, तो यह अधिक उचित है, और आप उत्तर जान चुके हैं। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

[उर्दू]: इससे सहमति स्पष्ट हो गई और यह परिस्थितियों से प्रकट होता है, और इस लिहाज़ से इसमें खाने योग्य और न खाने योग्य वस्तुओं का कोई अंतर नहीं है, बल्कि इसका गैर-खाद्य रूप अधिक स्पष्ट है। यानी, खाद्य वस्तुओं के उपहार से बच्चे का इरादा अधिक स्पष्ट और आम है। तो जब वहां खाना जायज़ हुआ किसी ऐसी दलील के न होने के समय जो उपहार के बच्चे के साथ विशिष्ट होने का तकाज़ा करती हो, तो यह अधिक उचित है और आपको इसका जवाब मिल चुका है। और सफलता अल्लाह की ओर से है। (त)

कुल मिलाकर, ये रिवायतें (वर्णन) उस चीज़ के बारे में हैं जो बच्चे की मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं है, और यहाँ चर्चा बच्चे की मिल्कियत के बारे में है कि मुबाह (जायज़) पानी निस्संदेह भरने वाले की मिल्कियत होगा जब तक कि वह मज़दूरी के आधार पर न हो, और बच्चे की मिल्कियत माता-पिता के लिए ज़रूरत के बिना हलाल नहीं है। फिक़्ही (न्यायशास्त्र) दृष्टि का तकाज़ा तो यही है।

मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है। मगर इसमें कोई शक नहीं कि उर्फ़ओ-आदत (प्रथा और परंपरा) इसके खिलाफ़ है, और वह भी शरई दलीलों में से है। तो उचित है कि इसे 'क़लील अफ़ू' (मामूली क्षम्य) करार दें जिस पर क़ुरआन और हदीस से दलील है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने फ़रमाया:

[अरबी क़ुरआनी आयत]: "और वे आपसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दीजिए, 'उनके लिए सुधार करना ही सबसे अच्छा है। और यदि तुम उनके साथ घुल-मिलकर रहो, तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सुधारने वाले से अलग पहचानता है।'" (1)

[उर्दू अनुवाद]: और वे आपसे यतीमों की बाबत पूछते हैं। फ़रमा दीजिए उनकी इस्लाह (सुधार) बेहतर है और अगर तुम उनके साथ अपना माल मिला कर खाओ तो वे तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह मफ़्सिद (बिगाड़ने वाले) को मुस्लिह (सुधारने वाले) से जानता है। (त) इस आयत में तफ़सीरों में से

एक के अनुसार यतीम के साथ माल मिलाने का जवाज़ (अनुमति) है, और ज़ाहिर है कि मिलावट की स्थिति में पूर्ण अंतर करना लगभग असंभव है। तफ़सीरात-ए-अहमदिया में है:

[अरबी]: और अल-ज़ाहिदी में इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है: मुखालितत (मिलना-जुलना) यह है कि तुम उसके फल, उसके दूध और उसके प्याले से खाओ, और वह तुम्हारे फल, तुम्हारे दूध और तुम्हारे प्याले से खाए (1)। और आयत सफर और हज़र (घर पर रहने) में मुखालितत के जवाज़ पर दलालत करती है, जहाँ वे ख़र्च बराबर करते हैं, फिर यह नापसंद नहीं है कि उनमें से कोई एक अधिक खा ले क्योंकि जब यह जायज़ है...

[उर्दू]: और ज़ाहिदी में इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से मरवी है कि मुखालितत यह है कि तुम उसके फल, उसका दूध और उसके प्याले में खाओ और वह भी इसी तरह तुम्हारे साथ तुम्हारे फल खाए और तुम्हारा दूध पिए और तुम्हारे प्याले में खाए। और यह आयत मुखालितत के जवाज़ पर दलालत करती है चाहे सफर में हो या हज़र में हो जबकि नफ़क़ा (ख़र्च) को...

---

1 अल-क़ुरआन 2/220

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

[عربی]: ای فان ارادۃ الولد بھبۃ المأکول اظھر واکثر فاذا ساغ الاکل ثمہ عند عدم دلیل یقتضی باختصاص الھدیۃ بالولد فھذا اولی وقد عرفت الجواب وباللہ التوفیق۔

[اردو ترجمہ]: اس سے موافقت ظاہر ہو گئی اور یہ قرائن سے ظاہر ہوتا ہے، اور اس لحاظ سے اس میں ماکول اور غیر ماکول کا کوئی فرق نہیں بلکہ اس کا غیر اظہر ہے۔ یعنی ماکول کے ہبہ سے بچہ کا ارادہ اظہر ہے اور اکثر ہے تو جب وہاں کھانا جائز ہوا کسی ایسی دلیل کے نہ ہونے کے وقت جو ہدیہ کے بچہ کے ساتھ مختص ہونے کا تقاضا کرتی ہو تو یہ اولی ہے اور آپ کو اس کا جواب مل چکا ہے وباللہ التوفیق۔ (ت)

بالجملہ یہ روایات غیر ملک صبی میں ہیں اور یہاں کلام ملک صبی میں کہ مباح پانی بلا شبہ بھرنے والے کی ملک ہوگا جبکہ بروجہ اجارہ نہ ہو اور صبی کی ملک والدین کو بے احتیاج حلال نہیں مقتضائے نظر فقہی تو یہ ہے۔

اقول: وباللہ التوفیق مگر شک نہیں کہ عرف و عادت اس کے خلاف ہے اور وہ بھی دلائل شرعیہ سے ہے تو مناسب کہ اسے قلیل عفو قرار دیں جس پر قرآن وحدیث سے دلیل ہے قال اللہ عز وجل:

[عربی قرآنی آیت]: وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ (1)

[اردو ترجمہ]: اور وہ آپ سے یتیموں کی بابت پوچھتے ہیں فرما دیجئے ان کی اصلاح بہتر ہے اور اگر تم ان کے ساتھ اپنا مال ملا کر کھاؤ وہ تمہارے بھائی ہیں اور اللہ مفسد کو مصلح سے جانتا

ہے۔(ت) اس آیت میں احد التفسیرین پر یتیم کے ساتھ جواز مخالطت مال ہے اور ظاہر کہ بحال مخالطت کامل امتیاز قریب محال ہے۔ تفسیرات احمدیہ میں ہے:

[عربی]: وفی الزاھدی قال ابن عباس رضی اللہ تعالی عنھما المخالطة ان تأکل من ثمرہ ولبنہ و قصعتہ وھو یاکل من ثمرتك ولبنك وقصعتك (1) والآیة تدل علی جواز المخالطة فی السفر والحضر یجعلون النفقة علی السواء ثم لا یکرہ ان یاکل احدھما اکثر لانہ لما جاز

[اردو ترجمہ]: اور زاہدی میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے کہ مخالطت یہ ہے کہ تم اس کے پھل اس کا دودھ اور اس کے پیالہ میں کھاؤ اور وہ بھی اسی طرح تمہارے ساتھ تمہارے پھل کھائے اور تمہارا دودھ پیئے اور تمہارے پیالے میں کھائے اور یہ آیت مخالطت کے جواز پر دلالت کرتی ہے خواہ سفر میں ہو یا حضر میں ہو جبکہ نفقہ کو

---

1 القرآن ۲/۲۲۰

Fatawa-e-Razviya - Volume 2

[Arabic Text]: Regarding the wealth of minors, its permissibility in the wealth of adults is even more prioritized. These are his words, so memorize them, for they are beneficial and an argument against many prejudiced people in our time. [End of citation] [Urdu Text]: Keep it equal, then there is no dislike in any of them eating more, because since this thing is allowed in children's wealth, it is allowed in the wealth of adults as a matter of priority. These are his words; remember them well. They are beneficial and serve as proof against many biased people of our era. [End of citation] (T)

[Arabic Text]: I say: (1) Therefore, what is in Jami‘ al-Sagir from the Fatawa of Rashid al-Din from the chapter on the claim of the father and the guardian: If the mother was not in need of his wealth but she mixed her wealth with the child's wealth and bought food and ate with the minor; if she ate more than her share, it is not permissible because she ate the orphan's wealth. [End of citation] It means (2) clear excess. So, in Jami‘ al-Rumuz, from the aforementioned chapter from the said Fatawa before this: A boy earns money and gives it to his mother, and the mother spends on the boy and eats a little with him, about a morsel or two, without excess, it is not disliked. (3) [Urdu Text]: I say, then what is narrated in Jami' al-Saghir from Fatawa Rashid-ud-Din (in Da'wa-ul-Ab wal-Wasi) is that if the mother is not in need of the child's wealth, but she bought food by mixing the child's wealth with her own and ate with the child, then if she ate more than her share, it is not permissible because she consumed the orphan's wealth. [End of citation] By this is meant such excess which is absolutely clear and obvious. From the aforementioned chapter of the same Fatawa, it is narrated in Jami-ur-Rumuz, just before this, that there is a child who brings money and keeps giving it, and the mother keeps spending on him and also eats a morsel or two with him herself, not more, then this is not disliked. (T)

In Sahih Muslim Sharif, it is narrated from Abdullah bin Abbas: [Arabic Text]: He said: I was playing with the boys when the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, came, so I hid behind... [Urdu Text]: He said: I was playing with the children when the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, arrived, then I...

---

1. Tafseerat-e-Ahmadiyya, Bayan Islah Karimi, Kutub Khana Bombay, p. 103
2. Jami' al-Saghir, Masa'il al-Karahiyya, Islami Kutub Khana Karachi, 1/128

3. Jami' al-Saghir with Jami' al-Fusoolain, Masa'il al-Karahiyya, Islami Kutub Khana Karachi, 1/128

फतवा-ए-रज़विया - जिल्द 2

[अरबी पाठ]: बच्चों की संपत्ति के संबंध में, वयस्कों की संपत्ति में इसकी अनुमति और भी अधिक प्राथमिकता वाली है। ये उनके शब्द हैं, इसलिए इन्हें याद रखें, क्योंकि ये हमारे समय के कई पक्षपाती लोगों के खिलाफ फायदेमंद और एक तर्क हैं। [उद्धरण समाप्त] [उर्दू पाठ]: इसे बराबर रखें, फिर उनमें से किसी के अधिक खाने में कोई बुराई नहीं है, क्योंकि जब यह चीज़ बच्चों की संपत्ति में जायज़ है, तो वयस्कों की संपत्ति में प्राथमिकता के तौर पर जायज़ है। ये उनके शब्द हैं; इन्हें अच्छी तरह याद रखें। ये लाभदायक हैं और हमारे युग के कई पक्षपाती लोगों के खिलाफ प्रमाण के रूप में काम करते हैं। [उद्धरण समाप्त] (टी)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: (1) इसलिए, जामी अल-सगीर में फतवा रशीद अल-दीन से पिता और अभिभावक के दावे के अध्याय से जो है: यदि माँ को उसकी संपत्ति की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उसने अपनी संपत्ति को बच्चे की संपत्ति के साथ मिलाया और भोजन खरीदा और नाबालिग के साथ खाया; यदि उसने अपने हिस्से से अधिक खाया, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि उसने अनाथ की संपत्ति खाई। [उद्धरण समाप्त] इसका अर्थ है (2) स्पष्ट अधिकता। इसलिए, जामी अल-रुमुज़ में, उक्त फतवा के उपर्युक्त अध्याय से इससे पहले: एक लड़का पैसा कमाता है और अपनी माँ को देता है, और माँ लड़के पर खर्च करती है और उसके साथ थोड़ा खाती है, लगभग एक या दो निवाला, बिना अधिकता के, यह नापसंद नहीं है। (3) [उर्दू पाठ]: मैं कहता हूँ, तो जामी अल-सगीर में फतवा रशीद-उद-दीन (दवा-उल-अब वल-वसी में) से जो वर्णित है वह यह है कि यदि माँ को बच्चे की संपत्ति की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उसने बच्चे की संपत्ति को अपनी संपत्ति के साथ मिलाकर भोजन खरीदा और बच्चे के साथ खाया, तो यदि उसने अपने हिस्से से अधिक खाया, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि उसने अनाथ की संपत्ति का उपभोग किया। [उद्धरण समाप्त] इससे तात्पर्य ऐसी अधिकता से है जो बिल्कुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष है। उसी फतवा के उपर्युक्त अध्याय से, जामी-उर-रुमुज़ में वर्णित है, इससे ठीक पहले, कि एक बच्चा है जो पैसे लाता है और देता रहता है, और माँ उस पर खर्च करती रहती है और खुद भी उसके साथ एक या दो निवाला खाती है, अधिक नहीं, तो यह नापसंद नहीं है। (टी)

सहीह मुस्लिम शरीफ में, अब्दुल्ला बिन अब्बास से वर्णित है: [अरबी पाठ]: उन्होंने कहा: मैं लड़कों के साथ खेल रहा था कि अल्लाह के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, आए, तो मैं उनके पीछे छिप गया... [उर्दू पाठ]: उन्होंने कहा: मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि अल्लाह के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, तशरीफ़ लाए, तो मैं...

1. तफ़सीरात-ए-अहमदिया, बयान इस्लाह करीमी, कुतुब खाना बॉम्बे, पृ. 103
2. जामी अल-सगीर, मसाइल अल-कराहिया, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/128
3. जामी अल-सगीर के साथ जामी अल-फसुलैन, मसाइल अल-कराहिया, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/128

فی اموال الصغار فجوازہ فی اموال الکبار اولی ہذا لفظہ فاحفظہ فانہ نافع وحجۃ علی کثیر من المتعصبین فی زماننا ۱ ھ برابر رکھیں، پھر اس میں کوئی کراہت نہیں کہ ان میں سے کوئی زائد کھالے کیونکہ یہ چیز جب بچوں کے مال میں جائز ہے تو بڑوں کے اموال میں بطور اولٰی جائز ہے، یہ ان کے الفاظ ہیں ان کو بخوبی یاد رکھیں، یہ مفید بھی ہیں اور ہمارے عہد کے بہت سے متعصبین پر حجت بھی ہیں اھ (ت)

اقول: (۱) فاذن ما فی جامع الصغار عن فتاوٰی رشید الدین من باب دعوی الاب والوصی لولم تکن الام محتاجۃ الی مالہ ولکن خلطت مالہا بمال الولد واشترت الطعام واکلت مع الصغر ان اکلت مازاد علی حصتہا لایجوز لانہا اکلت مال الیتیم ۲ اھ معناہ الزیادۃ (۲) المتبینۃ ففی جامع الرموز عن الباب المذکور من الفتاوی المذکورۃ قبیل ہذا صبی یحصل المال ویدفع الی امہ والام تنفق علی الصبی وتأکل معہ قلیلا نحو لقمۃ او لقمتین من غیر زیادۃ لایکرہ ۳ ۔ میں کہتا ہوں، تو جامع الصغار میں فتاوٰی رشید الدین سے (دعوٰی الاب والوصی میں) جو منقول ہے اگر ماں بچہ کے مال کی محتاج نہ ہو، لیکن اس نے بچہ کا مال اپنے مال کے ساتھ ملا کر کھانا خریدا اور بچہ کے ساتھ کھایا تو اگر اپنے حصہ سے زیادہ کھایا تو جائز نہیں کیونکہ اس نے یتیم کا مال کھایا اھ اس سے مراد یہ ہے کہ اتنی زیادتی جو بالکل واضح اور ظاہر ہو، اسی فتاوٰی کے مذکورہ باب سے جامع الرموز میں منقول ہے، اس سے کچھ ہی پہلے، کہ ایک بچہ ہے جو مال لاتا ہے اور مال کو دیتا رہتا ہے اور ماں اس پر خرچ کرتی رہتی ہے اور لقمہ دو لقمہ خود بھی اس کے ساتھ کھاتی رہتی ہے زیادہ نہیں، تو یہ مکروہ نہیں ہے۔ (ت)

صحیح مسلم شریف میں عبداللہ بن عباس سے ہے : قال کنت العب مع الصبیان فجاء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فتواریت خلف فرمایا میں بچوں کے ساتھ کھیل رہا تھا اتنے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لائے تو میں

---

1 تفسیرات احمدیہ بیان اصلاح کریمی کتب خانہ بمبئی ص ۱۰۳ 2 جامع الصغار مسائل الکراہیتہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۲۸ 3 جامع الصغار مع جامع الفصولین مسائل الکراہیتہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۲۸

Fatawa Razawiya, Volume II

Chapter: He (Ibn Abbas) said: He came and patted me [Hata'ani] and said: "Go and call Mu'awiyah for me." Translation: He came from behind a door, approached me, and patted me with his hand (affectionately) between my shoulders and said, "Go and call Mu'awiyah."

Imam Nawawi states in his commentary: Arabic: فيه جواز ارسال صبي غيره ممن يدل عليه في مثل هذا ولا يقال هذا تصرف في منفعة الصبي لان هذا قدر يسير ورد الشرع بالمسامحة فيه للحاجة واطرد به العرف وعمل المسلمين - 2 Translation: From this, it is understood that another person's child can be sent for such tasks. This would not mean a disposal of the child's benefit, as this is a minor matter. Sharia has permitted such things out of necessity, and it is a common practice among Muslims. (T)

Arif Billah Sidi Abdul Ghani al-Nabulsi (may his secret be sanctified) affirmed this in 'Hadiqa Nadiyya'. Thirdly, he compared the command of parents to hiring (ijarah). I say first: This requires the validity of delegation (tawkeel), and delegation regarding permissible items (a'yaan mubahah) is contrary to established texts. They have reasoned it with several points (and they mentioned many reasons for it):

First: The validity of delegation depends on the validity of the task assigned by the principal (muwakkil) to the agent (wakeel), and the validity of the task depends on authority (wilayah). A principal has no authority over naturally permissible (mubah) items. An objection is raised regarding delegation for purchasing, because a principal has no authority over the item to be purchased. Second: Delegation means creating authority for the agent, which is not valid here because he can acquire the permissible item without it being assigned to him, and this is countered by delegation...

Linguistic Note: Hata'a (حطأ): with 'ha' then 'ta', both without dots, followed by a 'hamza'. It means striking with an open palm between the two shoulders. (Hadiqa Nadiyya).

1. Sahih Muslim, Chapter: On the one whom the Prophet (peace be upon him) cursed... etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 4/325
2. Sharh li al-Nawawi, Chapter: On the one whom the Prophet (peace be upon him) cursed... etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 4/325

फ़तवा रज़विया, जिल्द II

अध्याय: उन्होंने (इब्न अब्बास) कहा: वह आए और उन्होंने मुझे थपथपाया [हतअनी] और कहा: "जाओ और मेरे लिए मुआविया को बुला लाओ।" अनुवाद: वह एक दरवाज़े के पीछे से आए, मेरे पास पहुँचे, और अपने हाथ से (प्यार से) मेरे दोनों कंधों के बीच थपथपाया और कहा, "जाओ और मुआविया को बुला लाओ।"

इमाम नववी अपनी व्याख्या में कहते हैं: अरबी: فيه جواز ارسال صبي غيره ممن يدل عليه في مثل هذا ولا يقال هذا تصرف في منفعة الصبي لان هذا قدر يسير ورد الشرع بالمسامحة فيه للحاجة واطرد به العرف وعمل المسلمين - 2 अनुवाद: इससे पता चलता है कि किसी और के बच्चे को इस तरह के कामों के लिए भेजा जा सकता है। इसका मतलब यह नहीं होगा कि बच्चे के लाभ (मनफ़अत) का उपयोग किया जा रहा है, क्योंकि यह एक मामूली बात है। शरीयत ने ज़रूरत के लिए ऐसी चीज़ों की अनुमति दी है और आम तौर पर मुसलमानों का इस पर अमल है। (त)

आरिफ़ बिल्लाह सैय्यदी अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने इसे 'हदीक़ा नदिय्या' में निर्धारित किया है। तीसरा, उन्होंने माता-पिता के आदेश की तुलना किराए पर लेने (इजारा) से की। मैं कहता हूँ पहले: इसके लिए वकालत (तौकील) की वैधता ज़रूरी है, और मुबाह (अनुमेय) वस्तुओं में वकालत करना स्थापित ग्रंथों के विरुद्ध है। उन्होंने इसके कई कारण बताए हैं:

पहला: वकालत की वैधता उस काम की वैधता पर निर्भर करती है जो मुवक्किल (नियुक्ता) ने वकील को सौंपा है, और काम की वैधता अधिकार (विलायत) पर निर्भर करती है। मुवक्किल का मुबाह वस्तुओं पर कोई अधिकार नहीं होता है। यहाँ ख़रीदने के लिए वकालत पर आपत्ति उठती है, क्योंकि मुवक्किल का ख़रीदी जाने वाली चीज़ पर कोई अधिकार नहीं होता है। दूसरा: वकालत का अर्थ है वकील के लिए अधिकार बनाना, जो यहाँ मान्य नहीं है क्योंकि वह मुबाह चीज़ को बिना सौंपे भी हासिल कर सकता है...

भाषाई टिप्पणी: हतअ (حطأ): 'हा' फिर 'ता', दोनों बिना नुक्ते के और उसके बाद 'हमज़ा'। इसका अर्थ है दोनों कंधों के बीच हथेली से थपथपाना। (हदीक़ा नदिय्या)।

1. सहीह मुस्लिम, अध्याय: जिस पर नबी (स.अ.व.) ने लानत की... आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 4/325

2. शरह लिल नववी, अध्याय: जिस पर नबी (स.अ.व.) ने लानत की... आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 4/325

पृष्ठ 711 का 522

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

باب فجاء فحطأنی حطأۃً عه وقال اذهب ادع لی معویۃ 1- ترجمہ: ایک دروازہ کے پیچھے چھپ گیا تو آپ میرے پاس تشریف لائے اور میرے دونوں کندھوں کے درمیان اپنے ہاتھ سے (پیار سے) تھپکی دی اور کہا کہ معاویہ کو بلا لاؤ۔ (ت)

امام نووی شرح میں فرماتے ہیں: فیه جواز ارسال صبی غیره ممن یدل علیه فی مثل هذا ولا یقال هذا تصرف فی منفعة الصبی لان هذا قدر یسیر ورد الشرع بالمسامحة فیه للحاجة واطرد به العرف وعمل المسلمین 2- ترجمہ: اس سے معلوم ہوا کہ دوسرے کے بچہ کو اس جیسے کام کیلئے بھی بھیجا جا سکتا ہے اور اس کا مطلب یہ نہ ہوگا کہ بچہ کی منفعت میں تصرف کیا کیونکہ یہ معمولی چیز ہے اور شریعت نے ضرورتاً اس قسم کی چیزوں کی اجازت دی ہے اور عام طور پر مسلمانوں کا اس پر عمل ہے۔ (ت)

عارف باللہ سیدی عبدالغنی نابلسی قدس سرہ، نے حدیقہ ندیہ میں اسے مقرر رکھا۔ سوم میں امر ابوین کو اجارہ پر قیاس کیا۔ اقول اولا: یہ صحت توکیل کو چاہتا ہے اور اعیان (۲) مباحہ میں توکیل خلاف نصوص ہے وعللوہ بوجوہ (اور انہوں نے اس کی کئی علتیں بیان کی ہیں)

الاول: ان صحة التوکیل تعتمد صحة امر الموکل بما وکل به وصحة الامر تعتمد الولایة ولا ولایة للموکل علی المباح ونقض بالتوکیل بالشراء فان الموکل لا ولایة له علی المشتری۔ ترجمہ: اول: توکیل کی صحت کا دارومدار اس پر ہے کہ جو کام موکل نے وکیل کو سپرد کیا ہے وہ درست ہے اور اس کام کی صحت کا مدار ولایت پر ہے اور مُباح کام پر موکل کو کوئی ولایت نہیں ہے اور اس پر توکیل بالشراء سے اعتراض وارد ہے، کیونکہ موکل کو خریدی جانے والی چیز پر کوئی ولایت

حاصل نہیں ہے۔ والثانی ان التوکیل احداث ولایۃ للوکیل ولا یصح ھنا لانہ یملك اخذ المباح بدون تملیکہ ونقض بالتوکیل ترجمہ: دوم: توکیل کے معنی وکیل کیلئے ولایت پیدا کرنا ہے اور یہاں یہ صحیح نہیں کیونکہ وہ مباح چیز کو بغیر کسی کے مالک بنائے حاصل کرنے کا اختیار رکھتا ہے...

عہ: حطأنی بحاء ثم طاء مہملتین وبعدھما ھمزۃ وھو الضرب بالید مبسوطۃ بین الکتفین اہ حدیقہ ندیہ۔ ترجمہ: حطأء فی حاء پھر طاء دونوں بغیر نکتہ کے اور ان کے بعد ہمزہ ہے، معنی ہے دو کندھوں کے درمیان ہاتھ سے تھپکی دینا اھ حدیقہ ندیہ۔ (ت)

1 صحیح المسلم باب من لعنہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم ... الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/ ۳۲۵ 2 شرح للنووی باب من لعنہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم ... الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/ ۳۲۵

Fatawa Razawiya, Volume Second

[Arabic Section]: ...Regarding buying an unspecified item, the agent owns it before and after the agency. The answer in 'Al-Inayah' is that it means he owns it without the principal's command without a contract. The form of contradiction is not like that, for he only owns it by purchase. [Urdu Section]: ...is to innovate, and that is not correct here because he can take a permissible (mubah) thing without making it his property, and this is a contradiction: that someone was made an agent to buy an unspecified thing, because the agent is its owner before and after the agency. And the answer given in 'Al-Inayah' is that it means he is its owner without the principal's order and without a contract. And the form of contradiction is not like that, because he does not become the owner without buying. (T)

[Arabic Section]: I say: (1) May Allah have mercy on you, what is meant is not ownership of the physical object itself, but the authority over that act, like 'taking' there and 'buying' here. He does not own it by the contract; rather, the contract arises from his ownership/authority. Then I saw Sadi Effendi hinting at this when he said: 'Reflect, for what he is commissioned with is buying, so the agent owns it, and thus the contradiction is not removed.' [Urdu Section]: I say, by this, ownership of the object itself is not intended, but rather the authority to perform that act, such as 'taking' there and 'buying' here. He does not become the owner due to the contract; rather, the contract itself arises from his ownership/authority. Then I saw that Sadi Effendi pointed towards this, saying that there is room for reflection in it, because the thing for which he was made an agent is 'buying,' so the agent is its owner, thus the contradiction will not be removed.

[Arabic Section]: The correct answer is that previously he did not have the authority to bind the principal's liability with the price. The researcher in 'Al-Fath' refuted this, saying the gist is that commissioning for something that imposes a right on the principal depends on proving authority over him in that, and the discussion in commissioning is contrary to that, i.e., in taking permissible things (mubah), for no right is established therein against the principal. [Urdu Section]: So the correct answer would be that the principal previously did not have this authority to occupy the principal's liability with the price. The researcher refuted this in 'Al-Fath' and stated that its summary is that commissioning for a thing that establishes a right against the principal is dependent on proving authority over him in that matter, and the discussion in commissioning is contrary to that. I.e., in the taking of permissible things, because no right is established against the principal in it. (T)

Footnotes: 1. Al-Inayah with Al-Fath al-Qadir, Al-Sharikah al-Fasidah, Nooriya Razawiya, Sukkur, 5/409. 2. Hashiya Chalpi, Al-Sharikah al-Fasidah, Nooriya Razawiya, Sukkur, 5/409. 3. Fath al-Qadir, Al-Sharikah al-Fasidah, Nooriya Razawiya, Sukkur, 5/410.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

[अरबी खंड]: ...किसी अनिर्दिष्ट वस्तु को खरीदने के संबंध में, एजेंट वकालत से पहले और बाद में उसका मालिक होता है। 'अल-इनाया' में जवाब यह है कि इसका मतलब है कि वह मुवक्किल (प्रधान) के आदेश के बिना और बिना अनुबंध के उसका मालिक है। आपत्ति का स्वरूप वैसा नहीं है, क्योंकि वह केवल खरीद के द्वारा ही उसका मालिक बनता है। [उर्दू खंड]: ...इजाद करना है, और वह यहाँ सही नहीं है क्योंकि वह मिल्कियत (स्वामित्व) के बिना ही मुबाह (अनुमेय) वस्तु ले सकता है, और इस पर यह आपत्ति है कि किसी को गैर-निर्धारित चीज़ खरीदने का वकील बनाया गया, क्योंकि वकील तो वकालत से पहले और बाद में भी उसका मालिक है। और 'अल-इनाया' में इसका जवाब दिया गया है कि इसका मतलब है कि वह मुवक्किल के आदेश के बिना और बिना अनुबंध के उसका मालिक है। और आपत्ति की सूरत यह नहीं है, क्योंकि वह खरीदे बिना उसका मालिक नहीं होता। (त)

[अरबी खंड]: मैं कहता हूँ: (1) अल्लाह आप पर रहम करे, यहाँ तात्पर्य वस्तु का मालिकाना हक नहीं है, बल्कि उस कार्य का अधिकार है, जैसे वहाँ 'लेना' और यहाँ 'खरीदना'। वह अनुबंध के कारण मालिक नहीं बनता; बल्कि अनुबंध स्वयं उसके स्वामित्व/अधिकार से उत्पन्न होता है। फिर मैंने देखा कि सादी अफ़ंदी ने इसकी ओर संकेत किया है जब उन्होंने कहा: 'विचार करें, क्योंकि जिसके लिए उन्हें नियुक्त किया गया है वह खरीदना है, इसलिए एजेंट उसका मालिक है, और इस प्रकार आपत्ति दूर नहीं होती है।' [उर्दू खंड]: मैं कहता हूँ, इससे तात्पर्य वस्तु का मालिकाना हक नहीं है बल्कि उस काम को करने का अधिकार है जैसे वहाँ 'लेना' और यहाँ 'खरीदना'। वह अनुबंध की वजह से उसका मालिक नहीं बनता, बल्कि अनुबंध तो स्वयं उसके स्वामित्व/अधिकार से पैदा होता है। फिर मैंने देखा कि सादी अफ़ंदी ने इसकी ओर इशारा किया है, वे फ़रमाते हैं कि इसमें संशय है, क्योंकि जिस चीज़ का वकील बनाया गया है वह 'खरीदना' है, तो वकील उसका मालिक है, तो आपत्ति दूर नहीं होगी।

[अरबी खंड]: सही उत्तर यह है कि पहले मुवक्किल को मुवक्किल की देयता को कीमत के साथ व्यस्त करने का अधिकार नहीं था। 'अल-फ़तह' में शोधकर्ता ने इसका खंडन करते हुए कहा कि इसका सारांश यह है कि मुवक्किल पर अधिकार स्थापित करने वाली चीज़ के लिए वकालत उस पर अधिकार सिद्ध करने पर निर्भर है, और वकालत में चर्चा इसके विपरीत है, अर्थात मुबाह वस्तुओं को लेने में, क्योंकि इसमें मुवक्किल के खिलाफ कोई अधिकार सिद्ध नहीं होता है। [उर्दू खंड]: तो इसका सही जवाब यह होगा कि मुवक्किल को पहले यह अधिकार प्राप्त नहीं था कि वह मुवक्किल की

ज़िम्मेदारी को कीमत के साथ व्यस्त रखे। और शोधकर्ता ने 'अल-फ़तह' में इसका खंडन किया है और फ़रमाया है कि इसका सारांश यह हुआ कि ऐसी चीज़ की वकालत जो मुवक्किल पर अधिकार साबित करे, इस बात पर निर्भर है कि वह उस पर अधिकार साबित करे, और वकालत में चर्चा इसके बरख़िलाफ़ है। यानी मुबाह चीज़ों के लेने में, क्योंकि इसमें मुवक्किल पर कोई अधिकार साबित नहीं होता। (त)

पादलेख: 1. अल-इनाया साथ अल-फ़तह अल-क़दीर, अल-शरिका अल-फ़ासिदा, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 5/409। 2. हाशिया चलपी, अल-शरिका अल-फ़ासिदा, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 5/409। 3. फ़तह अल-क़दीर, अल-शरिका अल-फ़ासिदा, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 5/410।

بشراء شیئ لابعینه فان الوکیل یملکه قبل التوکیل وبعده واجاب في العنایة ان معناه یملکه بدون امر الموکل بلا عقد وصورة النقض لیست کذلك فانه لا یملکه الا بالشراء اھـ کا ایجاد کرنا ہے اور وہ یہاں درست نہیں ہے کیونکہ وہ اس کی تملیک کے بغیر ہی مباح کو لے سکتا ہے اور اس پر یہ نقض ہے کہ کسی کو غیر معین چیز کے خریدنے کا وکیل بنایا، کیونکہ وکیل تو توکیل سے پہلے اور اس کے بعد بھی اس کا مالک ہے۔ اور عنایہ میں اس کا یہ جواب دیا ہے کہ اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ اس کا مالک ہے موکل کے حکم کے بغیر، اور بغیر عقد کے۔ اور نقض کی صورت یہ نہیں ہے، کیونکہ وہ خریدے بغیر اس کا مالک نہیں ہے اھـ (ت) میں کہتا ہوں

اقول: (۱) رحمك الله تعالٰی لیس المراد ملك العین بل ولایة ذلك الفعل کالاخذ ثمه والشراء ههنا وهو لایملکه بالعقد بل العقد ناشیئ عن ملکه ثم رأیت سعدی افندی اوماً الیه اذ قال فیه تأمل فان الموکل به هو الشراء فالوکیل یملکه فلا یندفع النقض ۲ اھـ اس سے مراد ملک عین نہیں ہے ب ملک عین نہیں ہے بلکہ اُس کام کے کرنے کا اختیار ہے جیسے وہاں لینا اور یہاں خریدنا، اور وہ عقد کی وجہ سے اس کا مالک نہیں، بلکہ عقد تو خود اس کی ملک سے پیدا ہوتا ہے پھر میں نے دیکھا کہ سعدی افندی نے اسکی طرف اشارہ کیا ہے وہ فرماتے ہیں اس میں تامل ہے، کیونکہ جس چیز کا وکیل بنایا ہے وہ "شراء" ہے تو وکیل اس کا مالک ہے، تو نقض مرتفع نہ ہوگا اھـ

والصواب في الجواب انه لم یکن له من قبل ولایة ان یشغل ذمة الموکل بالثمن ورده المحقق في الفتح بان حاصل هذا ان التوکیل بما یوجب حقاً علی الموکل یتوقف علی اثباته الولایة علیه في ذلك والکلام في التوکیل بخلافه ۳ اھـ ای باخذ المباح فانه لایثبت فیه حق علی الموکل۔ تو اس کا صحیح جواب یہ

ہوگا کہ موکل کو پہلے یہ ولایت حاصل نہ تھی کہ وہ موکل کے ذمہ کو ثمن کے ساتھ مشغول رکھے، اور محقق نے اس کا فتح میں رد کیا ہے، اور فرمایا ہے کہ اس کا خلا صہ یہ ہوا کہ ایسی چیز کی توکیل جو موکل پر حق ثابت کرے اس امر پر موقوف ہے کہ وہ اس پر ولایت کو ثابت کرے اور گفتگو توکیل میں اس کے برخلاف ہے اھ یعنی مباح کے لینے میں، کیونکہ اس میں موکل پر حق ثابت نہیں ہوتا۔ (ت)

1 عنایہ مع الفتح القدیر الشرکۃ الفاسدۃ نوریہ رضویہ سکھر ۵/ ۴۰۹ 2 حاشیہ چلپی الشرکۃ الفاسدۃ نوریہ رضویہ سکھر ۵/ ۴۰۹ 3 فتح القدیر الشرکۃ الفاسدۃ نوریہ رضویہ سکھر ۵/ ۴۱۰

Fatawa Rizvia, Volume 2

I say: (1) This is an admission of the objective, for appointing an agent (Tawkeel) is absolutely an affirmation of authority for the agent which he did not have before, and it is not found here. Therefore, the appointment of an agent in this matter is not valid, unlike in a purchase. Creating authority is not the objective, especially in a Tawkeel that imposes a right upon the principal. If it were so, it could be said that appointing an agent for taking a permissible (Mubah) item does not belong to this category, so there is no need to create authority. (T) Third: The purpose of Tawkeel is to transfer the act of the agent to the principal, and this is not realized here because the Sharia has made the cause of ownership of a permissible item the precedence of possession (hand) towards it. Here, the agent was the first to take possession, so the ownership is established for him and will not transfer to the principal except by a new cause, as pointed out by the researcher. (T)

Secondly: If this analogy were correct, then the ruling would not just be based on the container (Zarf). Rather, taking with the intention for parents would establish ownership for them, even if it is not taken in their container. Because in the compared case (Maqis alayhi), i.e., the mentioned hiring (Ijarah), the ruling is the same. The real basis (2) is on intention. Since the employee's time is not sold nor is it a specific item, he can take it for himself and also for his employer; it will belong to whoever he takes it for. Yes, if at the time of taking there was no intention for anyone, or if he says "I intended it for myself" and the employer says "you did it for me," then at that time the decision will be based on the container. If taken in his container, it's for him, otherwise for himself.

The basis for this is the issue of an agent for buying an unspecified item. The ruling (3) depends on attribution (Izafat). If attribution is not found, then it depends on intention. If intention is also not found or there is a disagreement, then the ruling depends on the currency (Naqd), i.e., if the contract was attributed to the principal's wealth, then the purchase is for the principal.

Page 524 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

मैं कहता हूँ: (१) यह उद्देश्य की स्वीकृति है क्योंकि वकील नियुक्त करना (तौकील) पूर्णतः वकील के लिए अधिकार की पुष्टि है जो उसे पहले प्राप्त नहीं था, और वह यहाँ नहीं पाया जाता है। इसलिए, इसमें वकील बनाना सही नहीं होगा, जबकि खरीदारी (शरा) में यह बात नहीं है। अधिकार का सृजन और उत्पत्ति उद्देश्य नहीं है, विशेष रूप से उस तौकील में जो मुवक्किल (नियोक्ता) पर किसी अधिकार को अनिवार्य करती हो। यदि ऐसा होता तो कहा जा सकता था कि अनुमत (मुबाह) चीज़ों को लेने के लिए वकील बनाना इस श्रेणी में नहीं आता, इसलिए इसमें अधिकार के सृजन की आवश्यकता नहीं है। (त) तीसरा: तौकील से उद्देश्य यह है कि वकील के कार्य को मुवक्किल की ओर स्थानांतरित किया जाए और यह बात यहाँ सिद्ध नहीं होती क्योंकि शरीयत ने अनुमत चीज़ के स्वामित्व का कारण उस पर कब्ज़ा करने में पहल को माना है। यहाँ वकील ने कब्ज़ा करने में पहल की है, तो स्वामित्व उसके लिए सिद्ध होगा और मुवक्किल की ओर उसी समय स्थानांतरित होगा जब इसका कोई नया कारण हो, जैसा कि शोधकर्ता (मुहक़्क़िक) ने संकेत दिया है। (त)

दूसरा: यदि यह तुलना (क़यास) सही हो तो केवल पात्र (ज़र्फ़) पर निर्णय नहीं रहेगा बल्कि माता-पिता की नीयत से लेना ही उनके लिए स्वामित्व सिद्ध कर देगा चाहे उनके पात्र में न लिया जाए। क्योंकि तुलना किए गए मामले (मक़ीस अलैह) यानी उक्त किराएदारी (इजारा) में निर्णय यही है। वास्तविक आधार (२) नीयत पर है। चूंकि न तो कर्मचारी का समय बिका है और न ही वस्तु निश्चित है, तो वह अपने लिए भी ले सकता है और अपने मालिक (मुस्ताजिर) के लिए भी, जिसके लिए लेगा स्वामित्व उसी का होगा। हाँ, यदि लेते समय किसी की नीयत नहीं थी या वह कहे कि "मैंने अपने लिए नीयत की थी" और मालिक कहे "मेरे लिए की थी," तो उस समय पात्र (ज़र्फ़) के आधार पर फैसला करेंगे। यदि उसके पात्र में लिया तो उसके लिए है अन्यथा अपने लिए।

इसका मूल यह मसला है कि किसी व्यक्ति को अनिश्चित वस्तु खरीदने का वकील बनाया गया। इसमें निर्णय (३) संबंध (इज़ाफ़त) पर है। यदि संबंध नहीं पाया गया तो नीयत का विचार होगा। यदि नीयत भी नहीं पाई गई या दोनों में विवाद हुआ तो निर्णय मुद्रा (नक़्द) पर होगा, अर्थात यदि अनुबंध को मुवक्किल के धन से जोड़ा गया तो खरीदारी मुवक्किल के लिए है।

पृष्ठ 524/711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

اقول: (۱) هذا اعتراف بالمقصود فان التوكيل مطلقاً اثبات ولاية للوكيل لم تكن من قبل ولا يوجد ههنا فلا يصح التوكيل به بخلاف الشراء وليس ان احداث الولاية مطلوب خصوصاً في التوكيل بما يوجب حقاً على الموكل حتى يقال ليس التوكيل باخذ المباح من هذا الباب فلا يحتاج الى احداث الولاية ۔ میں کہتا ہوں یہ مقصود کا اعتراف ہے کیونکہ توکیل مطلقاً وکیل کے لئے ولایت کا اثبات ہے ، ایسی ولایت جو اس کو پہلے حاصل نہ تھی ، اور وہ یہاں پائی نہیں جاتی ہے ، تو اس کی توکیل صحیح نہ ہوگی ، اور شراء میں یہ چیز نہیں ہے، اور ولایت کا ایجاد و احداث مطلوب نہیں ہے خاص طور پر اس توکیل میں ، جو موکل پر کسی حق کو واجب کرتی ہو ، اگر ایسا ہوتا تو کہا جاسکتا تھا کہ مباح کے لینے پر وکیل بنانا اس باب سے نہیں ہے ، تو اس میں ولایت کی ایجاد کی حاجت نہیں ہے۔ (ت)

والثالث ان المقصود بالتوكيل نقل فعل الوكيل الى الموكل ولا يتحقق ههنا فان الشرع جعل سبب ملك المباح سبق اليد اليه والسابقة يد الوكيل فيثبت الملك له ولا ينتقل الى الموكل الا بسبب جديد اشار اليه المحقق ۔ سوم: توکیل سے مقصود یہ ہے کہ وکیل کے فعل کو موکل کی طرف نقل کیا جائے اور یہ چیز یہاں متحقق نہیں کیونکہ شریعت نے مباح کی ملکیت کا سبب قبضہ میں پہل کو قرار دیا ہے ، اور یہاں وکیل نے قبضہ میں پہل کی ہے ، تو ملک اس کیلئے ثابت ہوگی اور موکل کی طرف اسی وقت منتقل ہوگی جبکہ اس کا سبب جدید ہو، محقق نے اسی طرف اشارہ کیا ہے۔ (ت)

ثانیاً: یہ قیاس صحیح ہو تو صرف ظرف پر حکم نہ رہے بلکہ والدین کی نیت سے لینا ہی اُن کے لئے مثبت ملک ہو اگرچہ اُن کے ظرف میں نہ لے کہ مقیس علیہ یعنی اجارہ مذکورہ میں حکم یہی ہے اصل مدار (۲) نیت پر ہے جبکہ نہ اجیر کا یہ وقت بکا ہے نہ شیئ معین ہے تو وہ اپنے لئے

بھی لے سکتا ہے اور اپنے مستاجر کیلئے بھی جس کیلئے لے گا اُسی کی ملک ہوگی ، ہاں اگر لیتے وقت کسی کی نیت نہ تھی یا وہ کہے میں نے اپنے لئے نیت کی تھی اور مستاجر کہے میرے لئے کی تھی تو اُس وقت ظرف پر فیصلہ رکھیں گے اُس کے ظرف میں لی تو اُس کیلئے ہے ورنہ اپنے لئے ۔

واصل ذلك الوكيل بشراء شيئ لا بعينه الحكم (٣) فيه للاضافة فان لم توجد فللنية فان لم توجد وتخالفا فيها فللنقد اى ان اضاف العقد الى مال الموكل فالشراء للموكل اور اس کی اصل یہ مسئلہ ہے کہ کسی شخص کو غیر معین شیئ کے خریدنے کا وکیل بنایا تو اس میں حکم اضافت کا ہے ، اگر اضافت نہ پائی گئی تو نیت معتبر ہوگی ، اگر نیت بھی نہ پائی گئی یا دونوں میں اختلاف ہوا تو حکم

(The ruling relates to) cash, meaning if the contract was attributed to the principal's wealth, the purchase is for the principal, even if the agent thought he was buying for himself. If the attribution is to his own wealth, the purchase is for himself. If the attribution is to absolute wealth, it belongs to whoever he intended. If there was no intention at the time of purchase, or he said "I intended for myself" and the principal said "it was for me," or vice versa, then in the second case, the ruling will be based on the cash by consensus. In the first case, this is only according to Abu Yusuf; Imam Muhammad considers it for the contractor in this situation. It is stated otherwise in Radd al-Muhtar, which is an oversight. (T)

I say: Qadi Khan prioritized the statement of Abu Yusuf, and in Al-Hidayah, its evidence was placed later, indicating its preference. Al-Bahr states under this saying of Al-Kanz that if an agent was appointed to buy an unspecified thing, the purchase is for the agent unless he intends for the principal or buys it with their money. Their phrasing is: what is in the book apparently shows the preference for Muhammad's statement, meaning that in the absence of intention, the purchase will be for the agent because they made the purchase for the agent except in two cases. That is, the intention...

---

1. Inayah with Fath al-Qadir, Wakalat bi al-Shira, Lucknow, 7/45
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Wakalat bi al-Bay' wa al-Shira, Saeed Company Karachi, 7/160

(हुक्म) नक़द का है, यानी अगर अक़्द को मुवक्किल (प्रधान) के माल की तरफ मंसूब किया तो ख़रीदना मुवक्किल के लिए हुआ, चाहे उसने यह गुमान किया हो कि उसने अपने लिए ख़रीदा है। और अगर मंसूब खुद उसके माल की तरफ़ है तो ख़रीदना उसके लिए हुआ। और अगर मुतलक़ (निरपेक्ष) माल की तरफ मंसूब है, तो दोनों में से जिसकी नियत की उसके लिए होगा। और अगर ख़रीदने के वक़्त कोई नियत ही न थी, या कहा कि मैंने अपने लिए नियत की थी और मुवक्किल ने कहा कि मेरे लिए की थी, या इसके विपरीत, तो दूसरी सूरत में बिल-इजमा (सर्वसम्मति से) नक़द को हुक्म बनाया जाएगा। और पहली सूरत में सिर्फ अबू यूसुफ़ के नज़दीक होगा; इमाम मुहम्मद इसे इस सूरत में आक़िद (ठेकेदार) के लिए क़रार देते हैं। और रद-अल-मुह्तार में इसका बरअक्स (विपरीत) कहा गया है और यह सहव (चूक) है। (त)

मैं कहता हूँ: क़ाज़ी ख़ान ने अबू यूसुफ़ के क़ौल को मुक़द्दम (प्राथमिकता) किया है और हिदाया में इसकी दलील को मुअख़र (बाद में) किया है जिससे इसकी तरजीह (प्राथमिकता) मालूम होती है। और बहर ने कंज़ के इस क़ौल के तहत फ़रमाया कि अगर ग़ैर-मुअय्यन चीज़ के ख़रीदने का वकील बनाया तो शिरा (ख़रीद) वकील के लिए है, मगर यह कि मुवक्किल की नियत कर ले या उसको अपने माल से ख़रीदे। उनकी इबारत यह है: किताब में जो है उससे बज़ाहिर मुहम्मद के क़ौल की तरजीह मालूम होती है, यानी यह कि नियत न होने की सूरत में वह शिरा वकील के लिए होगी, क्योंकि उन्होंने शिरा वकील के लिए ही की है सिवाए दो मसलों के। यानी यह कि नियत...

---

1. इनाया मअ फ़त्हुल क़दीर, वकालत बिल शिरा, लखनऊ, 7/45
2. बहर-उर-राइक़, वकालत बिल बैअ वश शिरा, सईद कंपनी कराची, 7/160

نقد کا ہے، یعنی اگر عقد کو موکل کے مال کی طرف مضاف کیا تو خریدنا موکل کیلئے ہوا اگرچہ اس نے یہ گمان کیا کہ اُس نے اپنے لئے خریدا ہے، اور اگر اضافت خود اس کے مال کی طرف ہے تو خریدنا اس کیلئے ہوا، اور اگر مطلق مال کی طرف اضافت ہے تو دونوں میں سے جس کی نیت کی اس کیلئے ہوگا، اور اگر خریدنے کے وقت کوئی نیت ہی نہ تھی یا کہا کہ میں نے اپنے لیے نیت کی تھی اور موکل نے کہا کہ میرے لئے کی تھی یا بالعکس تو دوسرے میں بالاجماع نقد کو حکم بنایا جائیگا اور پہلے میں صرف ابو یوسف کے نزدیک ہوگا، امام محمد اس کو اس صورت میں عاقد کیلئے قرار دیتے ہیں، اور رد المحتار میں اس کا برعکس کہا ہے اور یہ سہو ہے۔(ت)

میں کہتا ہوں قاضی خان نے ابو یوسف کا قول مقدم کیا ہے اور ہدایہ میں اس کی دلیل کو موخر کیا ہے جس سے اس کی ترجیح معلوم ہوتی ہے، اور بحر نے کنز کے اس قول کے تحت فرمایا کہ اگر غیر معین چیز کے خریدنے کا وکیل بنایا تو شراء وکیل کیلئے ہے، مگر یہ کہ موکل کی نیت کرلے یا اس کو اپنے مال سے خریدے۔ ان کی عبارت یہ ہے کتاب میں جو ہے اس سے بظاہر محمد کے قول کی ترجیح معلوم ہوتی ہے، یعنی یہ کہ نیت نہ ہونے کی صورت میں وہ شراء وکیل کیلئے ہوگی، کیونکہ انہوں نے شراء وکیل کیلئے ہی کی ہے سوائے دو مسئلوں کے اھ یعنی یہ کہ نیت

---

۱ عنایہ مع فتح القدیر وکالۃ بالشراء لکھنو ۷ / ۴۵ ۲ بحر الرائق وکالۃ بالبیع والشراء سعید کمپنی کراچی ۷ / ۱۶۰

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Left Column: Arabic Text] Imam Muhammad's (mercy of Allah be upon him) school of thought: I say: (1) However, Imam Abu Yusuf (mercy of Allah be upon him) only based the ruling on the payment (cash) because it is the evidence of intent. It is stated in Al-Hidayah regarding Abu Yusuf's position: the payment dictates the ruling because if both parties agree, it is possible the intent was for the principal (the one who gave the order). In what we have said, his state is interpreted as righteousness, just as in the case of mutual denial. (It is said in Al-'Inayah: (It is possible) that he had intended for the principal and then forgot. (In what we said) meaning making the payment the basis for the ruling (interpreting his state as righteousness) because if the payment is from the principal's wealth and the purchase is for himself, it would be misappropriation (as in the case of mutual denial) - end. Thus, it is known that making the payment the basis for the ruling is included within the consideration of intent, and something like this is not strange in the conciseness of Al-Kanz.

[Right Column: Urdu Translation/Explanation of the above] Be for the principal and the attribution be towards his wealth, because buying from his wealth means exactly this, as stated in Al-Hidayah. Therefore, when neither attribution nor intent was made, it will belong to the contractor (agent), as is the school of thought of Muhammad (mercy of Allah be upon him). (T) I say, but Imam Abu Yusuf made the payment (cash) the basis for the ruling because it is proof of intent. It is mentioned in Al-Hidayah that according to Abu Yusuf, the payment will be made the basis for the ruling, because if they both agree, there is a possibility that the intention was for the person who gave the order. In what we have said, his condition is interpreted as being upright, just as in the case of them denying each other. In Al-'Inayah, it says (it is possible) that he intended for the person giving the order and then forgot (and in what we said) this means making the payment the basis for the ruling (interpreting his condition as upright) because when payment is made from the principal's wealth and the purchase is for himself, it would be misappropriation (just as in the case where they deny each other). End quote. Thus, it is understood that making the payment the basis for the ruling is included in the consideration of intention, and such a thing is not strange in the conciseness of Al-Kanz. (T)

[Bottom Section] In short, the third opinion is against principles and contradicts what has been transmitted. The first opinion contains severe hardship, while the second is supported by the established texts of the school, customs, the Book, and the Sunnah. Therefore, this humble servant (the author) seeks guidance from his Lord (Azwajal) in

choosing it. Success is from Allah. Thus, it is proven that the aforementioned rulings regarding cases of dominance do not change due to the relationship of fatherhood and sonship. Once this principle is established by the help of Allah Almighty, it becomes clear that water filled by a minor is not just one type, but many, listed as follows: (32) The water that a minor took from owned or permissible water.

1. Al-Hidayah, Book of Agency in Buying and Selling, Yusufi Press, Lucknow, 2/183.
2. Al-'Inayah with Fath al-Qadir, Book of Agency in Buying and Selling, Nooria Razawiyya, Sukkur, 7/46. Page 526 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

[बायाँ कॉलम: अरबी पाठ] इमाम मोहम्मद (رحمه الله تعالى) का मज़हब: मैं कहता हूँ: (1) लेकिन इमाम अबू यूसुफ (رحمه الله تعالى) ने नकदी (भुगतान) को ही फैसला करने वाला आधार बनाया क्योंकि वह नीयत (इरादे) की दलील है। 'हिदाया' में अबू यूसुफ के नज़दीक कहा गया है कि नकदी पर फैसला किया जाएगा क्योंकि जब वे दोनों सहमत हों, तो यह संभावना है कि नीयत आदेश देने वाले (मुवक्किल) के लिए थी। जो हमने कहा है, उसमें उसकी स्थिति को भलाई (صلاح) पर आधारित माना गया है, जैसा कि आपसी इनकार (تكاذب) की स्थिति में होता है। ('इनाया' में कहा गया है: (संभावना है) कि उसने आदेश देने वाले के लिए नीयत की हो और फिर भूल गया हो। (और जो हमने कहा) यानी नकदी को फैसला करने वाला बनाना (उसकी स्थिति को भलाई पर आधारित करना) क्योंकि यदि भुगतान मुवक्किल के धन से हो और खरीदारी उसके लिए हो, तो यह 'ग़सब' (अवैध कब्जा) होगा (जैसा कि आपसी इनकार की स्थिति में होता है) - इति। अतः ज्ञात हुआ कि नकदी को फैसला करने वाला बनाना नीयत के विचार में शामिल है, और 'कन्ज़' की संक्षिप्तता में ऐसी बात अजीब नहीं है।

[दायाँ कॉलम: उपर्युक्त का उर्दू अनुवाद/व्याख्या] मुवक्किल के लिए हो और उसकी निस्बत उसके धन की तरफ हो, क्योंकि उसके धन से खरीदने का यही अर्थ है, जैसा कि हिदाया में है। अतः जब न तो निस्बत की गई और न ही नीयत, तो यह अक़्द (अनुबंध) करने वाले के लिए होगा, जैसा कि इमाम मोहम्मद (رحمه الله تعالى) का मज़हब है। (त) मैं कहता हूँ, लेकिन इमाम अबू यूसुफ ने नकदी को फैसला करने वाला आधार बनाया क्योंकि वह नीयत की दलील है। हिदाया में फ़रमाया कि अबू यूसुफ के नज़दीक नकदी को हुक्म बनाया जाएगा, क्योंकि अगर वे दोनों इत्तेफ़ाक (सहमत) कर लें तो एहतमाल (संभावना) है कि नीयत हुक्म देने वाले की हो, और जो हमने कहा है उसमें उसके हाल को 'सलाह' पर महमूल किया गया है, जैसे कि दोनों एक दूसरे को झुठलाने की सूरत में है। इनाया में फ़रमाया (एहतमाल है) कि उसने हुक्म देने वाले के लिए नीयत की हो और फिर भूल गया हो (और जो हमने कहा उसमें) इससे मुराद नकदी को हुक्म बनाना है (उसके हाल को सलाह पर महमूल करना है) क्योंकि जब अदायगी मुवक्किल के माल से हो और ख़रीदना उसके लिए हो तो यह ग़सब होगा (जैसे कि एक दूसरे को झुठलाने की सूरत में है)। अतः मालूम हुआ कि नकदी को हुक्म बनाना नीयत के एतबार में दाख़िल है और 'कन्ज़' के ईजाज़ (संक्षिप्तता) में ऐसी बात अजीब नहीं है। (त)

[नीचे का अनुभाग] कुल मिलाकर तीसरा कौल (विचार) उसूलों के खिलाफ और रिवायतों के विपरीत है। पहले कौल में बहुत कठिनाई है, और दूसरा कौल मज़हब के स्पष्ट ग्रंथों, रीति-रिवाजों, किताब (क़ुरआन) और सुन्नत से समर्थित है। इसलिए, यह फ़क़ीर (लेखक) अपने रब (अज़्वजल) से इस्तख़ारा (मार्गदर्शन) करते हुए उसे चुनता है। सफलता अल्लाह की ओर से है। अतः साबित हुआ कि प्रभुत्व की स्थितियों में उपर्युक्त हुक्मों में पिता-पुत्र के रिश्ते से कोई बदलाव नहीं आता। जब यह आधार अल्लाह तआला की सहायता से स्थापित हो गया, तो स्पष्ट हुआ कि नाबालिग द्वारा भरा हुआ पानी एक नहीं, कई प्रकार के हैं, जिनकी सूची इस प्रकार है: (32) वह पानी जो नाबालिग ने स्वामित्व वाले या मुबाह (अनुमत) पानी से लिया।

1. अल-हिदाया, वकाला बिल-बय वश-शिरा, यूसुफ़ी प्रेस, लखनऊ 2/183।
2. इनाया मअ फ़त्हुल क़दीर, वकाला बिल-बय वश-शिरा, नूरिया रज़विया सख्खर 7/46। पेज 526 / 711

مذهب محمد رحمه الله تعالى- اقول: (۱) لكن الامام ابا يوسف رحمه الله تعالى انما حكم النقد لانه دليل النية قال في الهداية عند ابي يوسف يحكم النقد لان مع تصادقهما يحتمل النية للأمر وفيما قلناه حمل حاله على الصلاح كما فى حالة التكاذب (قال في العناية (يحتمل) انه كان نوى للأمر ونسيه (وفيما قلنا) يعني تحكيم النقد (حمل حاله على الصلاح) لأنه اذا كان النقد من مال الموكل والشراء له كان غصبا (كما في حالة التكاذب) اهـ- فعلم ان تحكيم النقد داخل في اعتبار النية ولا يستغرب مثله فى ايجاز الكنز۔

موکل کیلئے ہو اور اضافت اُس کے مال کی طرف ہو ، اس لئے کہ اس کے مال سے خریدنے کا یہی مطلب ہے ، جیسا کہ ہدایہ میں ہے ، تو جب اضافت نہ کی اور نیت بھی نہ کی تو عاقد کیلئے ہوگی جیسا کہ محمد رحمہ اللہ تعالٰی کا مذہب ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں ، لیکن امام ابو یوسف نے نقد کو حکم بنایا کیونکہ وہ نیت کی دلیل ہے۔ ہدایہ میں فرمایا ابو یوسف کے نزدیک نقد کو حکم بنایا جائیگا ، کیونکہ اگر وہ دونوں اتفاق کر لیں تو احتمال ہے کہ نیت حکم دینے والے کی ہو ، اور جو ہم نے کہا ہے اس میں اُس کے حال کو صلاح پر محمول کیا گیا ہے ، جیسے کہ دونوں ایک دوسرے کو جھٹلانے کی صورت میں ہے ، عنایہ میں فرمایا (احتمال ہے) کہ اُس نے حکم دینے والے کیلئے نیت کی ہو اور پھر بھول گیا ہو (اور جو ہم نے کہا اُس میں) اس سے مراد نقد کو حکم بنانا ہے (اس کے حال کو صلاح پر محمول کرنا ہے) کیونکہ جب ادائیگی موکل کے مال سے ہو اور خریدنا اس کے لئے ہو تو یہ غصب ہوگا (جیسے کہ ایک دوسرے کو جھٹلانے کی صورت میں ہے) اھـ ۔ تو معلوم ہوا کہ نقد کو حکم بنانا نیت کے اعتبار میں داخل ہے اور کنز کے ایجاز میں ایسی بات عجیب نہیں ہے۔ (ت)

بالجملہ قول سوم خلاف اصول و مخالف منقول ہے اور قول اول میں حرج بشدت اور دوم کہ نص محرر المذہب سے ماثور مؤید بعرف و کتاب و سنت لہٰذا فقیر اُسی کے اختیار میں اپنے رب عزوجل سے استخارہ کرتا ہے و باللہ التوفیق تو ثابت ہوا کہ احکام مذکورہ صور استیلاء میں نسبت ابوت و بنوت سے کوئی تغیر نہیں آتا جب یہ اصل بعونہ تعالیٰ ممہد ہوئی واضح ہوا کہ نابالغ کا بھرا ہوا پانی ایک نہیں بہت سے پانی ہیں جن کا سلسلہ شمار یوں ہے۔ (۳۲) وہ پانی کہ نابالغ نے آب مملوک مباح سے لیا۔

1 الهداية وكالة بالبيع والشراء مطبع يوسفى لكهنؤ ۲ / ۱۸۳ 2 عناية مع الفتح القدير وكالة بالبيع والشراء نوريہ رضويہ سكهر ۷ / ۴۶ Page 526 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

(33) Water taken from a restricted private property without permission. (34) Water taken with permission, but the owner did not gift it, only allowed its use (ibahat). (35) A minor servant filled it for the master during service hours. (36) A person was hired specifically to fill water at a fixed time and filled it during that time. (37) The hirer (mustajir) had specified the water, for example, all the water in this tank or pond. I say: And it will not be considered specified if it's "ten skins of water from this tank or well", because ten skins are not distinct from the rest until they are separated to be specified. (38) He (the minor) did this labor with the permission of his guardian and says he filled this water for the hirer. (39) In the same scenario, even if he didn't say so verbally, he filled it in the hirer's vessel. (40) A minor is someone's property (slave). In these nine cases, that minor did not become the owner of this water at all. In the first three cases, the water belongs to the owner of the water. Then, from case 35 to 39, in these five cases, it belongs to the hirer. Finally, if with the master's permission he filled it for someone on hire and the same conditions for the hirer's ownership were met, then the water belongs to the hirer; otherwise, in all cases, it belongs to his master, to the extent that even what he filled specifically for himself belongs to the master. For whoever this water becomes property, it is permissible for them, and with their permission, it is permissible for everyone, provided they are a sane, adult person capable of giving permission. In fact, in a state of friendly familiarity, there is no need even to ask for permission. For example, if a minor servant, employee, or slave of someone fills water, his brother or friend who manages such assets and whom he likes, can take and use the water filled by the aforementioned minor without asking. In fact, they can make a slave fill water unconditionally, and an employee during work hours, because in any case, it is a disposal of the friend's property, not the minor's. (41) A free (non-slave) minor to whom the owner of the water gave the water as a gift (ownership). (42) A free person, not an employee, filled non-owned permissible (mubah) water for themselves. (43) For someone else on their own accord. (44) On someone's request without compensation. (45) Filled it at the master's bidding if he was employed there for another specific task which included filling water. (46) It was included, like general service, but he was made to fill it outside of fixed working hours.

(३३) वह पानी जो किसी की निजी संपत्ति से बिना अनुमति के लिया गया हो। (३४) वह पानी जो अनुमति से लिया गया हो लेकिन मालिक ने उसे उपहार (हिबा) नहीं किया, केवल उपयोग की अनुमति दी। (३५) एक नाबालिग नौकर ने अपने मालिक के लिए नौकरी के समय के दौरान पानी भरा। (३६) एक कर्मचारी जिसे विशेष रूप से एक निश्चित समय पर पानी भरने के लिए रखा गया था, उसने उसी समय में पानी भरा। (३७) किरायेदार (मुस्ताजिर) ने पानी को निर्दिष्ट कर दिया था, उदाहरण के लिए इस हौज या तालाब का पूरा पानी। मैं कहता हूँ: और यह विनिर्देश नहीं माना जाएगा कि "इस हौज या कुएं से दस मश्कें', क्योंकि दस मश्कें बाकी पानी से अलग नहीं हैं जब तक कि उन्हें अलग न किया जाए ताकि उन्हें निर्दिष्ट किया जा सके। (३८) उस नाबालिग ने अपने अभिभावक की अनुमति से यह मजदूरी की और कहता है कि उसने यह पानी किरायेदार के लिए भरा है। (३९) इसी स्थिति में, भले ही उसने मौखिक रूप से न कहा हो, लेकिन उसने इसे किरायेदार के बर्तन में भरा। (४०) नाबालिग किसी का दास (ममलुक) है। इन नौ स्थितियों में वह नाबालिग उस पानी का मालिक नहीं हुआ। पहली तीन स्थितियों में पानी पानी के मालिक का है, फिर ३५ से ३९ तक की पांच स्थितियों में किरायेदार का है। अंत में, यदि स्वामी की अनुमति से किसी के लिए किराए पर पानी भरा गया और किरायेदार के स्वामित्व की वही शर्तें पाई गईं, तो पानी किरायेदार का है, अन्यथा हर हाल में वह उसके स्वामी का होगा, यहाँ तक कि जो उसने विशेष रूप से अपने लिए भरा है वह भी स्वामी की ही संपत्ति होगी। यह पानी जिसकी संपत्ति हुआ, उसके लिए तो जायज़ है ही, उसकी अनुमति से हर उस व्यक्ति के लिए भी जायज़ है जो समझदार, वयस्क और अनुमति देने में सक्षम हो। बल्कि सामान्य मित्रता और घनिष्ठता की स्थिति में अनुमति माँगने की भी आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि किसी के नाबालिग नौकर, कर्मचारी या दास ने पानी भरा है, तो उसका भाई या मित्र जो उसकी ऐसी संपत्ति का प्रबंधन करता है और जिसे वह पसंद करता है, वह उस नाबालिग द्वारा भरे गए पानी को बिना पूछे ले सकता है और अपने उपयोग में ला सकता है। बल्कि वे दास से बिना शर्त और कर्मचारी से नौकरी के समय में पानी भरवा सकते हैं, क्योंकि हर हाल में यह उस मित्र की संपत्ति का उपयोग है, न कि नाबालिग की। (४१) एक स्वतंत्र नाबालिग जिसे पानी के मालिक ने पानी उपहार (स्वामित्व) के रूप में दिया। (४२) एक स्वतंत्र व्यक्ति जो कर्मचारी नहीं है, उसने अपने लिए सार्वजनिक (मुबाह) पानी भरा। (४३) स्वयं से दूसरे के लिए। (४४) किसी के अनुरोध पर बिना मुआवजे के। (४५) कर्मचारी के मालिक के कहने पर भरा गया, यदि वह किसी अन्य विशेष कार्य के

लिए नौकर था जिसमें पानी भरना भी शामिल था। (४६) शामिल था जैसे सेवा करना, लेकिन उसे निश्चित नौकरी के समय के बाहर पानी भरने के लिए कहा गया।

पृष्ठ ५२७ का ७११

(۳۳) وہ کہ مملوک غیر مباح سے بے اجازت لیا۔ (۳۴) وہ کہ اس سے باجازت لیا مگر مالک نے اسے ہبہ نہ کیا صرف بطور اباحت دیا۔ (۳۵) نابالغ خدمتگار نے آقا کے لئے نوکری کے وقت میں بھرا۔ (۳۶) خاص پانی ہی بھرنے پر اس کا اجیر بتعین وقت تھا اسی وقت میں بھرا۔ (۳۷) مستاجر نے پانی خاص معین کردیا تھا مثلاً اس حوض یا تالاب کا کل پانی۔ اقول: اور یہ تعین نہ ہوگا کہ اس حوض یا کنویں سے دس مشکیں کہ دس مشک باقی سے جدا نہیں جس کی تعین ہوسکے۔ (۳۸) اس نے باذن ولی یہ مزدوری کی اور کہتا ہے کہ یہ پانی مستاجر کیلئے بھرا۔ (۳۹) اسی صورت میں اگرچہ زبان سے نہ کہا مگر اس کے برتن میں بھرا۔ (۴۰) نابالغ کسی کا مملوک ہے ان نو صورتوں میں وہ نابالغ اس پانی کا مالک ہی نہ ہوا پہلی تین صورتوں میں مالک آب کا ہے پھر ۳۵ سے ۳۹ تک پانچ صورتوں میں مستاجر کا۔ اخیر میں اگر باذن مولیٰ کسی کے لئے اجارہ پر بھرا اور وہی صورتیں ملک مستاجر کی پائی گئیں تو پانی مستاجر کا ورنہ بہر حال اس کے مولیٰ کا یہاں تک کہ خاص اپنے لئے جو بھرا ہو وہ بھی مولیٰ ہی کی ملک ہوگا۔ یہ پانی جس جس کی ملک ہوا اسے تو جائز ہی ہیں اس کی اجازت سے ہر شخص کو جائز ہیں جبکہ وہ عاقل بالغ مختار اجازت ہو بلاکہ بحال انبساط اجازت لینے کی بھی حاجت نہیں مثلاً کسی کے نابالغ نوکر اجیر یا غلام نے پانی بھرا اس کے بھائی یا دوست جو اس کے ایسے مال میں تصرف کرتے اور وہ پسند رکھتا ہے اس سے بے پوچھے بھی نابالغ مذکور کا بھرا ہوا پانی اس سے لے کر اپنے صرف میں لاسکتے بلکہ غلام سے مطلقاً اور اس کے نوکر سے وقت نوکری میں بھر واسکتے ہیں کہ بہر حال اس دوست کی ملک میں تصرف ہے نہ نابالغ کی۔ (۴۱) نابالغ حر کو مالک آب نے پانی تملیکاً دیا۔ (۴۲) حر غیر اجیر نے آب مباح غیر مملوک سے اپنے لئے بھرا۔ (۴۳) دوسرے کیلئے بطور خود۔

(۴۴) اس کی فرمائش سے بلا معاوضہ۔ (۴۵) اجیر کے آقا کے کہنے سے بھرا اگر اس کے یہاں کسی اور خاص کام کیلئے نوکر تھا جس میں پانی بھرنا داخل تھا۔ (۴۶) داخل تھا جیسے خدمت گاری مگر نوکری کے وقت مقرر سے باہر بھر وایا۔

Fatawa Razvia, Volume 2

(47) If he was hired specifically to fill water, but neither a fixed time was decided, nor a specific amount of water, nor was it fixed for whom it was filled or whose vessel it was filled into. (48) A time was fixed and this work was taken outside of that time. In these eight scenarios, that water is the property of the minor child. Absolute disposal of it is forbidden for others besides the parents. A real brother cannot drink from that water nor perform ablution with it; however, purification will be achieved, but there will be the sin of illegitimate disposal and he will be liable for the value of that water. Except if it is from his guardian or a 'ma'zun' child (a child permitted by his guardian to trade), then he may buy it from him at full price. Otherwise, the property of a minor cannot be given by the minor himself or his guardian to another for free or with 'ghabn-e-fahish' (gross misrepresentation of value). As for the parents, they are allowed, according to the narration of Imam Muhammad, in a state of absolute need and even without need, to have the child fill it and use it for themselves. In the remaining scenarios, it is not permissible for them either, except after purchase.

Alert 1: Teachers should take a lesson from this. It is the habit of teachers that children who come to them to study or learn work, they take service from them. This is permissible with the permission of the father, grandfather, or executor (wasi) to the extent that is customary and as long as there is no fear of harm to the child. However, they cannot have the child fill water for them to use, nor can they take water filled by them.

I say: And their new custom, which is contrary to the Shari'ah, holds no weight. This custom did not exist in the time of the righteous predecessors (Salaf Saliheen). Once, Imam Kisa'i (may Allah Almighty have mercy on him) was passing through a street and was thirsty. He requested water from a house, but then he remembered that he had taught some people from that house. Therefore, he returned the water and passed by while still thirsty. (T) Arabic Quote: "Their new custom is contrary to the Shari'ah and should not be relied upon, for it was not among the good people who passed before. Imam al-Kisa'i (may Allah Almighty have mercy on him) passed by a street while thirsty and asked for water from one of the houses. Then he remembered that he had taught some of its inhabitants, so he passed by and did not drink."

Alert 2: As long as the well water is not taken out of the well, it does not become anyone's property. For the cause of ownership is 'ihraz' (possession), and 'ihraz' only

happens after moving it away from the mouth of the well. (T) So a teacher who has the authority to take service from a child can have the child fill the water until the bucket reaches the brim of the well. After that, he should take it out himself, so that this water does not become the child's property but rather his own.

In al-Hindiyyah, quoted from al-Qunyah regarding water-carriers...

---

1 Its investigation passed in number 26. 12 (M) Page 528 of 711

फतावा-ए-रज़विया, खंड 2

(47) यदि उसे विशेष रूप से पानी भरने के लिए काम पर रखा गया था, लेकिन न तो समय तय था, न ही पानी की मात्रा, और न ही यह तय था कि पानी किसके लिए भरा जा रहा है या वह किसका बर्तन था जिसमें पानी भरा गया। (48) समय तय किया गया था और उस समय के बाहर यह काम लिया गया। इन आठ स्थितियों में वह पानी उस नाबालिग (बच्चे) की संपत्ति है। माता-पिता के अलावा दूसरों के लिए इसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करना पूरी तरह से हराम है। सगा भाई भी उस पानी को न तो पी सकता है और न ही उससे वज़ू कर सकता है; हाँ, पाकी (पवित्रता) तो प्राप्त हो जाएगी लेकिन अवैध हस्तक्षेप का गुनाह होगा और उसे उस पानी का हर्जाना देना होगा। सिवाय इसके कि वह उसके वली (संरक्षक) से हो या 'माज़ून' बच्चे (वह बच्चा जिसे उसके वली ने खरीद-बिक्री की अनुमति दी हो) से हो, तो वह खुद उससे पूरे दाम देकर खरीद ले। वरना, नाबालिग की संपत्ति न तो वह खुद और न ही उसका वली किसी दूसरे को मुफ्त में या 'ग़बन-ए-फ़ाहिश' (भारी नुकसान) के साथ दे सकता है। जहाँ तक माता-पिता की बात है, तो इमाम मुहम्मद की रिवायत के अनुसार, उन्हें ज़रूरत की स्थिति में बिल्कुल और बिना ज़रूरत के भी यह जायज़ है कि वे बच्चे से पानी भरवाएं और अपने इस्तेमाल में लाएं। शेष स्थितियों में उनके लिए भी यह जायज़ नहीं है, सिवाय खरीद के बाद।

चेतावनी 1: यहाँ से उस्ताद (शिक्षक) सबक लें। शिक्षकों की यह आदत होती है कि जो बच्चे उनके पास पढ़ने या काम सीखने आते हैं, वे उनसे सेवा लेते हैं। यह बात पिता, दादा या वसी (वसीयतदार) की अनुमति से वहां तक जायज़ है जहाँ तक यह प्रथा में है और इससे बच्चे को किसी नुकसान का अंदेशा नहीं है। लेकिन न तो वे उनसे पानी भरवाकर इस्तेमाल कर सकते हैं और न ही उनका भरा हुआ पानी ले सकते हैं।

मैं कहता हूँ: और उनकी यह नई प्रथा जो शरीयत के खिलाफ है, उसका कोई महत्व नहीं है। यह प्रथा नेक पूर्वजों (सल्फ सालेहीन) के ज़माने में नहीं थी। एक बार इमाम कसाई (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) एक गली से गुज़रे, वे प्यासे थे तो उन्होंने एक घर से पानी माँगा। फिर उन्हें याद आया कि उन्होंने इस घर के कुछ लोगों को पढ़ाया है, इसलिए उन्होंने पानी वापस कर दिया और प्यासे ही वहाँ से चले गए। (त) अरबी उद्धरण: "उनकी नई प्रथा शरीयत के विरुद्ध है और उस पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह उन नेक लोगों के बीच नहीं थी जो पहले बीत चुके हैं। इमाम अल-कसाई (अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे) प्यासे रहते हुए एक गली से गुज़रे और एक घर से

पानी मांगा। फिर उन्हें याद आया कि उन्होंने वहां के कुछ निवासियों को पढ़ाया है, इसलिए वे वहां से गुजर गए और पानी नहीं पिया।"

चेतावनी 2: कुएँ का पानी जब तक कुएँ से बाहर न निकाल लिया जाए, किसी की संपत्ति नहीं होता। क्योंकि स्वामित्व का कारण 'एहराज' (कब्ज़ा) है और 'एहराज' कुएँ के मुहाने से अलग करने के बाद ही होता है। (त) तो उस्ताद जिसे बच्चे से सेवा लेने का अधिकार है, वह यह कर सकता है कि बच्चे से पानी भरवाए यहाँ तक कि डोल कुएँ के मुहाने तक आ जाए। उसके बाद वह खुद उसे निकाल ले ताकि यह पानी बच्चे की संपत्ति न बने बल्कि उसकी अपनी हो जाए।

हिन्दिया में कुनिया से उद्धृत है कि जो व्यक्ति...

---

1 इसकी जांच नंबर 26 में बीत चुकी है। 12 (म) Page 528 of 711

(۴۷) خاص پانی ہی بھرنے پر اسے اجیر کیا نہ وقت مقررہ ہو نہ پانی معین نہ یہ مقرر کہ اُس کے لئے بھرانہ اُس کا برتن تھا جس میں بھرا۔ (۴۸) وقت مقرر ہوا اور اُس سے باہر یہ کام لیا ان آٹھ صورتوں میں وہ پانی اُس نا بالغ کی ملک ہے اور اُس میں غیر والدین کو تصرف مطلقاً حرام حقیقی بھائی اُس پانی سے نہ پی سکتا ہے نہ وضو کر سکتا ہے ہاں طہارت ہو جائے گی اور ناجائز تصرف کا گناہ اور اُتنے پانی کا اس پر تاوان رہے گا مگر یہ کہ اس کے ولی سے یا بچہ ماذون ہو جس کے ولی نے اسے خرید و فروخت کا اذن دیا ہے تو خود اس سے پورے داموں خرید لے ورنہ مفت یا غبن فاحش کے ساتھ نابالغ کی ملک دوسرے کو نہ خود وہ دے سکتا ہے نہ اُس کا ولی۔ رہے والدین وہ بحالت حاجت مطلقاً اور بے حاجت حسب روایت امام محمد ان کو جائز ہے کہ اُس سے بھر وائیں اور اپنے صرف میں لائیں باقی صورتوں میں اُن کو بھی رواہ نہیں مگر وہی بعد شرا۔

تنبیہ ۱: یہاں سے اُستاد سبق لیں معلموں کی عادت ہے کہ بچے جو ان کے پاس پڑھنے یا کام سیکھنے آتے ہیں اُن سے خدمت لیتے ہیں یہ بات باپ دادا یا وصی کی اجازت سے جائز ہے جہاں تک معروف ہے اور اس سے بچے کے ضرر کا اندیشہ نہیں مگر نہ اُن سے پانی بھر وا کر استعمال کر سکتے ہیں نہ اُن کا بھرا ہوا پانی لے سکتے ہیں۔

اقول: وعرفهم الحادث على خلاف الشرع لا يعبؤبه فانه لم يكن فيمن مضى من اهل الخير ومر الامام الكسائي رحمہ الله تعالىٰ على سكة عطشان فاستسقى من بعض بيوتها ثم تذكر انه اقرأ بعض اهلها فمر ولم يشرب۔ اقول: اور ان کی نئی اصطلاح جو شریعت کے برخلاف ہے، اس کا کوئی اعتبار نہیں یہ اصطلاح سلف صالحین کے زمانہ میں نہ تھی۔ ایک مرتبہ امام کسائی کا گزر ایک گلی سے ہوا آپ

پیاسے تھے تو ایک گھر سے پانی طلب کیا، پھر انہیں یاد آیا کہ انہوں نے اس گھر کے کچھ لوگوں کو پڑھایا ہے، چنانچہ آپ نے پانی واپس کر دیا اور پیاسے ہی وہاں سے گزر گئے۔(ت)

تنبیہ ۲: کنویں کا پانی جب تک کنویں سے باہر نہ نکال لیا جائے کسی کی ملک نہیں ہوتا فان سببه الملك الاحراز ولا احراز الا بعد التنحية عن رأس البئر (سببِ ملک احراز ہے اور احراز پانی کو کنویں کی منڈیر سے الگ کرنے کے بعد ہوتا ہے۔ت) تو استاد جسے بچے سے خدمت لینے کا اختیار ہے یہ کر سکتا ہے کہ پانی بچے سے بھر وائے یہاں تک کہ ڈول کنویں کے لب تک آئے اُس کے بعد خود اسے نکال لے کہ یہ پانی بچے کی ملک نہ ہوگا بلکہ خود اُس کی ۔

فی الھندیۃ عن القنیۃ و الساقین ہندیہ میں قنیہ سے منقول ہے کہ جو شخص

---

1 اس کی تحقیق نمبر ۲۶ میں گزری ۱۲(م)

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Arabic]: From the well, one does not become the owner of the water merely by filling the bucket until they move it away from the head of the well (1). [Urdu]: One who draws water from a well does not become the owner of the water just by filling the bucket; they will become the owner when they move that water away from the well's parapet.

[Arabic]: In Radd al-Muhtar: If someone secures it in a jar, a pitcher, or a mosque basin made of copper, brass, or plaster, and the flow of water has stopped, they become its owner. They expressed this with 'ihraz' (securing), not 'akhdh' (taking), as an indication that if one fills a bucket from a well but does not move it away from its head, they do not become its owner according to the two Shaykhs (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf), may Allah Almighty be pleased with them, because 'ihraz' means placing something in a secure place (2). [Urdu]: And in Radd al-Muhtar it is mentioned: If someone collects water in a pitcher, a water-pot, or a mosque basin, even if this basin is of copper, brass, or plaster, and the flow of water has stopped, they will become its owner. They used the term 'ihraz' for this, not 'taking'. This indicates that if a bucket was filled from the well but not moved from there, then according to the Shaykhain, he would not be its owner because 'ihraz' means to keep something in a safe place. (T)

[Arabic]: I say: Since he did not become its owner, it remained in its state of permissibility. Therefore, the one who moved it away is the one who secured the permissible item and became its owner. [Urdu]: I say: Since this person did not become its owner in this way, the water remained in its original state of permissibility (for all). Thus, whoever moved it to one side from the well, secured the permissible item, and therefore became its owner. (T)

Advisory 3: Children of water-carriers (1) often fill water from wells. People are in the habit of taking water from them for ablution or drinking; this is forbidden (haram), and common people are widely afflicted by this. And there is no power nor strength except with Allah, the High, the Great. I say: But there is a fine point here. These children fill water for a price. Sometimes water-skins are fixed, and sometimes specific household vessels. If the person who took water from the minor water-carrier is not someone the child fills water for, then it is absolutely not permissible. And if the child does fill for them, but this water-skin that the child was filling and the water taken from their bucket is intended for someone else, it is not permissible. And

if (3) it is intended for their own place, but the agreement is to fill vessels, and those vessels are filled completely, it is not permissible because this water is in excess of that. Similarly, if the agreement is for water-skins and they also took a full water-skin from him, it is not permissible. Yes (5), if they took the water-skin partially empty, it means that they did not have that much water delivered to the house but took it here instead. Or (6) the agreement is for vessels and they told the child to keep that much empty in the water-skin (7) which is taken to someone else's place.

1. Fatawa Hindiyya, Chapter from Kitab al-Shurb, Nurani Kutub Khana Peshawar, 5/392.
2. Radd al-Muhtar, Section on Drinking, Mustafa al-Babi Egypt, 5/311. Page 529 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[अरबी]: कुएँ से पानी भरने पर केवल डोल भरने से ही कोई पानी का मालिक नहीं बन जाता जब तक कि वह उसे कुएँ के मुहाने से दूर न कर दे (1)। [उर्दू व्याख्या]: कुएँ से पानी भरने वाला व्यक्ति केवल डोल भरने मात्र से पानी का मालिक नहीं हो जाएगा; वह मालिक तब होगा जब वह उस पानी को कुएँ की मुंडेर से अलग करके रख दे।

[अरबी]: और 'रद्द अल-मुह्तार' में है: यदि किसी ने उसे सुराही, मटके या मस्जिद के हौज़ में सुरक्षित किया, चाहे वह हौज़ ताँबे, पीतल या चूने का हो, और पानी का बहना बंद हो गया हो, तो वह उसका मालिक हो जाएगा। उन्होंने इसके लिए 'इहराज़' (सुरक्षित करना) शब्द का प्रयोग किया है, 'अख्ज़' (लेना) का नहीं। इसमें इस ओर संकेत है कि यदि डोल कुएँ से भरा गया लेकिन उसे वहाँ से हटाया नहीं गया, तो शैखैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़), अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो, के अनुसार वह उसका मालिक नहीं होगा, क्योंकि 'इहराज़' का अर्थ किसी वस्तु को सुरक्षित स्थान पर रखना है (2)। [उर्दू]: और 'रद्द अल-मुह्तार' में है: यदि किसी ने सुराही, मटके या मस्जिद के हौज़ में पानी इकट्ठा किया, चाहे यह हौज़ ताँबे, पीतल या गच (चूने) का हो, और इस तरह पानी का बहना बंद हो गया हो, तो वह उसका मालिक हो जाएगा। उन्होंने इसे 'इहराज़' से व्यक्त किया है, 'अख्ज़' से नहीं। इसमें इस ओर संकेत है कि यदि डोल कुएँ से भरा गया मगर वहाँ से हटाया नहीं गया तो शैखैन के नज़दीक वह उसका मालिक न होगा क्योंकि 'इहराज़' के अर्थ किसी चीज़ को सुरक्षित जगह पर रखने के हैं। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: चूँकि वह उसका मालिक नहीं हुआ, इसलिए पानी अपनी मुबाहियत (अनुमति) पर ही बना रहा। अतः जिसने उसे हटाया, उसी ने मुबाह वस्तु को सुरक्षित किया और वह उसका मालिक हुआ। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: जब यह व्यक्ति इस तरह इसका मालिक न हुआ तो पानी अपनी इबाहत (अनुमति) पर ही बाक़ी रहा, तो जिसने इसको कुएँ से एक तरफ़ हटा के रखा, उसने इसको महफ़ूज़ किया तो वही इसका मालिक हुआ। (त)

चेतावनी 3: भिश्तियों (1) के बच्चे अक्सर कुँओं पर पानी भरते हैं, लोगों की आदत है कि उनसे वज़ू या पीने के लिए पानी ले लेते हैं; यह हराम है और आम जनता इसमें व्यापक रूप से ग्रस्त है। और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो अत्यंत ऊँचा और महान है। मैं कहता हूँ: मगर यहाँ एक सूक्ष्म बिंदु है। ये बच्चे पैसों के बदले पानी भरते हैं और कहीं मशकें तय होती हैं तो कहीं घर

के बर्तन। वह व्यक्ति जिसने नाबालिग भिश्ती से पानी लिया, यदि बच्चा उसके यहाँ पानी नहीं भरता है, तो उसके लिए यह पूर्णतः जायज़ नहीं है। और यदि बच्चा उसके यहाँ पानी भरता है, मगर यह मशक जिसे वह भर रहा था और उसके डोल से जो पानी उसने लिया, वह दूसरे के यहाँ ले जाने के लिए है, तो यह नाजायज़ है। और यदि (3) वह अपने ही यहाँ ले जाने के लिए है लेकिन समझौता बर्तनों को भरने का है और वे पूरे भर दिए जाएँगे, तो यह नाजायज़ है क्योंकि यह पानी उस समझौते से अधिक है। इसी तरह यदि मशकों का समझौता है और यह मशक भी उसने उससे पूरी ली तो नाजायज़ है। हाँ (5), यदि यह मशक इतनी खाली ली कि यह हुआ कि इतना पानी घर पर न पहुँचाया बल्कि यहीं ले लिया, या (6) बर्तनों का समझौता है और इतना खाली रखने को कह दिया (7) जिस दूसरे के यहाँ यह मशक ले जाता है, उससे।

1. फ़तावा हिंदिया, किताबुश शुर्ब का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/392।
2. रद्द अल-मुह्तार, शुर्ब से संबंधित अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 5/311। पृष्ठ 711 में से 529

فتاوٰی رضویہ جلدثانی من البئر لایملک بنفس ملأ الدلو حتی ینحیہ عن رأس البئر 1ھ کنویں سے پانی بھرتا ہے وہ محض ڈول کے بھرنے سے پانی کا مالک نہیں ہوجائے گا، اُس وقت مالک ہوگا جب اُس پانی کو کنویں کی منڈیر سے الگ کرکے رکھ دے اھ

وفی ردالمحتار لواحرزہ فی جرۃ اوجب او حوض مسجد من نحاس اوصفر اوجص وانقطع جریان الماء فانہ یملکہ وانما عبر بالا حراز لا الاخذ اشارۃ الی انہ لوملأ الدلو من البئر ولم یبعدہ عن رأسھا لم یملک عند الشیخین رضی اللہ تعالٰی عنھما اذ الاحراز جعل الشیئ فی موضع حصین 2ھ اور ردالمحتار میں ہے اگر کسی نے ٹھیلیا، مٹکے یا مسجد کے حوض میں پانی جمع کیا، یہ حوض تانبے، پیتل یا گچ کا ہو، اور اس طرح پانی کا بہنا بند ہوگیا ہو تو وہ اس کا مالک ہوجائے گا، انہوں نے اس کو احراز سے تعبیر کیا، اخذ سے نہیں۔ اس میں اس طرف اشارہ ہے کہ اگر ڈول کنویں سے بھرا مگر وہاں سے ہٹایا نہیں تو شیخین کے نزدیک وہ اس کا مالک نہ ہوگا کیونکہ "احراز" کے معنی کسی چیز کو محفوظ جگہ پر رکھنے کے ہیں اھ (ت)

اقول: فاذا لم یملکہ کان باقیا علی اباحتہ فالذی نحاہ ھوالذی احرز المباح فملکہ اھ میں کہتا ہوں جب یہ شخص اس طرح اس کا مالک نہ ہوا تو پانی اپنی اباحت پر ہی باقی رہا، تو جس نے اس کو کنویں سے ایک طرف ہٹا کے رکھا اس نے اس کو محفوظ کیا تو وہی اس کا مالک ہوا۔ (ت)

تنبیہ ۳: بہشتیوں (۱) کے بچے اکثر کنوؤں پر پانی بھرتے ہیں لوگوں کی عادت ہے کہ ان سے وضو یا پینے کو لے لیتے ہیں یہ حرام ہے اور عوام کو اس میں ابتلائے عام ہے ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ اقول: مگر یہاں ایک دقیقہ ہے یہ بچے داموں پر پانی بھرتے ہیں اور کہیں مشکیں مقرر ہوتی ہیں کہیں گھر کے برتن معین یہ شخص جس نے نابالغ بہشتی سے پانی لیا اگر وہ اس کے یہاں نہیں بھرتا تو اسے مطلقاً جائز نہیں اور اگر بھرتا ہے مگر یہ مشک جسے وہ بھر رہا

تھا اور اُس کے ڈول سے پانی اس نے لیا دوسرے کے یہاں لے جائے گا تو ناجائز ہے اور اگر ۳ اسی کے یہاں لے جانے کو ہے مگر قرار داد برتنوں کا بھرنا ہے اور وہ پورے بھر دئیے جائیں گے تو ناجائز ہے کہ یہ پانی اُس سے زائد ہے یوں ہی اگر مشکوں کا قرار داد ہے اور یہ مشک بھی اُس سے پوری لی تو ناجائز ہے ہاں ۵ اگر یہ مشک اتنی خالی لی تو ایسا ہوا کہ اتنا پانی گھر پر نہ پہنچوایا یہیں لے لیا یا ۶ برتنوں کا قرار داد ہے اور اتنا خالی رکھنے کو کہہ دیا ۷ جس دوسرے کے یہاں یہ مشک لے جاتا ہے اُس سے۔

1 فتاویٰ ہندیہ الباب من کتاب الشرب نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۹۲ 2 ردالمحتار فصل فی الشرب مصطفیٰ البابی مصر ۵ / ۳۱۱

Fatawa Razawiya, Volume 2

He took permission for this much water and had the water-skin or vessel kept empty, so it should be permissible. Although the water was still the property of the water-carrier, when it is poured into the vessels, at that moment its sale is completed and it becomes the property of the person at whose place it was filled. This is because water-carriers (Bihishti) are common laborers (Ajir-e-Mushtarak); neither is their time fixed nor is that much water determinable, and they fill from their own buckets. Until they pour the water-skin somewhere, they consider the water their own and can use it as they wish. Therefore, until that time, the water belongs to them. However, the intention of the buyer is possession, and any use that occurs with his permission is considered his possession. If ten water-skins are stationed at his place and he says, "Sprinkle two of them right here on the road," the sale will certainly be valid. Similarly, if he returns one of them or gives as much as he wanted to Zaid. This is what appeared to me, and Allah the Almighty knows best. (T)

Warning 4: A 'Matuh' (mentally impaired person), whose intellect is not sound and whose management is disrupted, sometimes speaks like a sane person and sometimes like a madman, but is not like a lunatic who strikes people without reason, insults them, or throws bricks. In all rulings, he is like a discerning child (Sabī 'Āqil). So, all these rulings will apply to him in the same way.

I say (Aqool): However, taking benefit from what is filled by the child of wealthy parents is narrated from Imam Muhammad regarding children. Its basis is custom and habit. In a Matuh person, this habit is not established, and there is no necessity of hardship in prohibition due to the rarity of the condition. So, apparently here, the first saying should be chosen. And Allah, Glory be to Him and the Exalted, knows best.

Benefit: Up to this point, it was about water in which nothing else was mixed. Ahead are the cases of mixing with others.

(49 to 65) It is clarified in many reliable books that if a minor filled a jug from a cistern (Hauz) and then poured some of that water back into the same cistern, it is no longer permissible for anyone to use it.

[Table/Column Sections]

Arabic Text: In 'Sha' from 'Ta' from Al-Hamawi from Ad-Dirayah from Az-Zakhirah and Al-Munyah, and in Ghamz al-'Uyun from the commentary on Al-Majma' by Ibn al-

Malik from Az-Zakhirah, and in Al-Ashbah under 'Rulings for Children', and in Al-Hadiqat an-Nadiyyah from Al-Ashbah in the twentieth category of 'Evils of the Tongue', and in other beautiful books: If a slave, a child, or a maidservant fills a jug from the cistern water and then pours some of it back into it...

Urdu Translation of the Arabic: It is mentioned in 'Sha' from 'Ta' from Hamawi from Dirayah from Zakhirah and Munyah; and in Ghamz al-'Uyun from Sharh al-Majma', which is Ibn Malik's book; from Zakhirah; and in Al-Ashbah under 'Rulings for Children'; and in Al-Hadiqat an-Nadiyyah from Al-Ashbah in the twentieth type of 'Evils of the Tongue'; and in other good books that: if a slave, child, or maidservant fills a jug from the water of a cistern and then pours some of it back into it, it is no longer permissible for anyone from this cistern to...

फ़तावा रज़विया, खंड 2

इतनी मात्रा में पानी की अनुमति ले ली और उसने मशक या बर्तन को इतना खाली रखवाया, तो यह जायज़ होना चाहिए। हालाँकि पानी अभी तक मशक वाले (सक्का) की ही मिल्कियत था, पर जब बर्तनों में डाला जाएगा, उसी समय उसकी बिक्री (बैअ) हो जाएगी और जिसके यहाँ भरा गया, उसकी मिल्कियत हो जाएगा। क्योंकि पानी भरने वाले (भिश्ती) साझा मज़दूर (अजीर-ए-मुश्तरक) होते हैं, न उनका समय निश्चित होता है और न ही इतना पानी निर्धारित होता है, और वे अपने डोल से भरते हैं। जब तक वे मशक को कहीं उड़ेल न दें, पानी को अपना ही समझते हैं और उसमें जो चाहें तसर्रुफ़ (उपयोग) करते हैं। इसलिए उस समय तक पानी उन्हीं का होता है, लेकिन मक़सद उस ख़रीदार का कब्ज़ा है और उसकी अनुमति से जो तसर्रुफ़ हो, वह उसी का कब्ज़ा है। अगर दस मशकें उसके यहाँ ठहरी हुई हैं और वह कहे कि उनमें से दो का छिड़काव यहीं सड़क पर कर दो, तो बिक्री (बैअ) ज़रूर सही हो जाएगी। इसी तरह अगर उसने उनमें से एक लौटा दिया या जितना चाहा ज़ैद को दिलवा दिया। यह वही है जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

चेतावनी 4: 'मतूह' (मंदबुद्धि), जिसकी अक्ल ठीक न हो और प्रबंध गड़बड़ाया हुआ हो, कभी समझदारों जैसी बात करे और कभी पागलों जैसी, लेकिन वह पागल (मजनून) की तरह न हो जो लोगों को बिना वजह मारता है, गालियाँ देता है या ईंटें फेंकता है। वह तमाम अहकाम (नियमों) में 'सबी आक़िल' (समझदार बच्चे) की तरह है। तो ये तमाम अहकाम उसमें भी इसी तरह जारी होंगे।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन अमीर माँ-बाप के बच्चे के भरे हुए से लाभ उठाना इमाम मुहम्मद से बच्चों के बारे में रिवायत है और इसका आधार उर्फ़(प्रथा) और आदत पर है। मतूह में यह आदत साबित नहीं है और विरलता के कारण मना करने में कोई कठिनाई (हरज) नहीं है, तो यहाँ ज़ाहिर तौर पर पहला कौल ही पसंद किया जाना चाहिए। और अल्लाह पाक सबसे बेहतर जानता है।

फ़ायदा: यहाँ तक वह पानी था जिसमें कोई दूसरी चीज़ नहीं मिली थी। आगे दूसरे के मिलाव की सूरतें हैं।

(49 से 65) कई प्रामाणिक पुस्तकों में स्पष्ट है कि अगर किसी नाबालिग ने हौज (कुंड) में से एक लोटा भरा और उसमें से कुछ पानी फिर उसी हौज में डाल दिया, तो अब उसका इस्तेमाल करना किसी के लिए हलाल न रहा।

[तालिका/कॉलम अनुभाग]

अरबी पाठ: 'श' में 'त' से, हमवी से, दराया से, ज़ख़ीरा से और मुनिया से; तथा 'ग़मज़ुल उयून' में 'शरह मज्मअ' से, जो इब्न-ए-मलिक की किताब है; ज़ख़ीरा से; 'अशबाह' में 'अहकामुल सिब्यान' में; और 'हदीक़-ए-नदिय्या' में 'अशबाह आफ़ातुल लिसान' के बीसवें प्रकार में; और अन्य उत्तम पुस्तकों में: यदि किसी दास, बच्चे या दासी ने हौज के पानी से लोटा भरा और फिर उसमें से कुछ उसी के भीतर उड़ेल दिया...

अरबी का उर्दू अनुवाद: 'श' में 'त' से, हमवी से, दराया से, ज़ख़ीरा से और मुनिया से है; और 'ग़मज़ुल उयून' में 'शरह मज्मअ' से है, यह इब्न-ए-मलिक की किताब है; ज़ख़ीरा से है; और 'अशबाह' में 'अहकामुल सिब्यान' में है; और 'हदीक़-ए-नदिय्या' में 'अशबाह आफ़ातुल लिसान' के बीसवें प्रकार में है; और दूसरी पुस्तकों में है कि: किसी गुलाम, बच्चे या दासी ने हौज के पानी से लोटा भरा और फिर उसमें से कुछ उसी के अंदर उड़ेल दिया, तो अब किसी के लिए जायज़ नहीं कि उस हौज से...

اس قدر پانی کی اجازت لے لی اور اُس نے مشک یا برتن اتنے خالی رکھوائے تو جائز ہونا چاہئے کہ اگرچہ پانی ابھی سقاہی کی ملک تھا جب برتنوں میں ڈالے گا اُس وقت اس کی بیع ہو گئی اور جس کے یہاں بھر ا گیا اُس کی ملک ہو گیا اس لئے کہ بہشتی اجیر مشترک ہیں نہ اُن کا وقت معین ہوتا ہے نہ اتنا پانی قابل تعین ہے اور اپنے ڈول سے بھرتے ہیں اور جب تک مشک کہیں ڈال نہ دیں پانی اپنا ہی جانتے ہیں اُس میں جو چاہیں تصرف کرتے ہیں لہٰذا اُس وقت تک پانی انہی کا ہوتا ہے مگر مقصود اس مول لینے والا کا قبضہ ہے اور اس کی اجازت سے جو تصرف ہو وہ اسی کا قبضہ ہے اگر دس مشکیں اس کے یہاں ٹھہری ہوئی ہیں اور وہ کہے کہ اُن میں سے دو کا چھڑکاؤ یہیں سڑک پر کر دو ضرور بیع صحیح ہو جائیگی اسی طرح اگر اس میں سے ایک لوٹایا جس قدر چاہا زید کو دلوایا، ھذا ما ظھر لی واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

تنبیہ ۴ : معتوہ، بو ہر ا جس کی عقل ٹھیک نہ ہو تدویر مختل ہو کبھی عاقلوں کی سی بات کرے کبھی پاگلوں کی مگر مجنون کی طرح لوگوں کو محض بے وجہ مارتا گالیاں دیتا اینٹیں پھینکتا نہ ہو وہ تمام احکام میں صبی عاقل کی مثل ہے تو یہ سب احکام بھی اُس میں یوں ہی جاری ہوں گے۔

اقول : مگر غنی ماں باپ کا اُس کے بھرے ہوئے سے انتفاع امام محمد سے درباره صبی مروی اور اُس کا مبنی عرف وعادت اور معتوہ میں اس کی عادت ثابت نہیں اور منع میں بوجہ ندرت عتہ لزوم حرج نہیں تو یہاں ظاہراً قول اول ہی مختار ہونا چاہئے واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

فائدہ : یہاں تک وہ پانی تھے جن میں اُن کا غیر نہ ملا آگے خلط غیر کی صورتیں ہیں۔ (۴۹ تا ۶۵) کتب کثیرہ معتمدہ میں تصریح ہے کہ اگر نابالغ نے حوض میں سے ایک کوزہ بھرا اور اس میں سے کچھ پانی پھر اُس حوض میں ڈال دیا اب اُس کا استعمال کرنا کسی کو حلال نہ رہا۔

[ٹیبل/کالم سیکشنز]

عربی متن: فی ش عن ط عن الحموی عن الدرایۃ عن الذخیرۃ والمنیۃ وفی غمز العیون عن شرح المجمع لابن الملك عن الذخیرۃ وفی الاشباہ من احکام الصبیان وفی الحدیقۃ الندیۃ عن الاشباہ فی النوع العشرین من افات اللسان وفی غیرھا من الکتب الحسان عبد او صبی او امۃ ملأ الکوز من ماء الحوض واراق

عربی کا اردو ترجمہ: ش میں ط سے حموی سے درایہ سے ذخیرہ سے اور منیہ سے ہے اور غمز العیون میں شرح مجمع سے یہ ابن ملک کی کتاب ہے ذخیرہ سے ہے، اور اشباہ میں احکام الصبیان میں اور حدیقہ ندیہ میں اشباہ آفات اللسان کی بیسویں نوع میں اور دوسری کتب میں ہے کسی غلام بچے یا باندی نے حوض کے پانی س لوٹا بھرا پھر اس میں سے کچھ اُسی کے اندر انڈیل دیا تو اب کسی کے لئے جائز نہیں کہ اس حوض سے

صفحہ 711 کا 530

Fatawa Razawiyya Volume II

[Box Top Left (Arabic)]: Some of it is that it is not permissible for anyone to drink from that cistern because the water in the jug becomes the property of the one who took it. So when it mixes with the permissible (common) water and distinction is not possible, drinking it will not be lawful. (T) [Box Top Right (Urdu)]: ...drink water because the water of the cistern becomes the property of the one who takes it. So when this property mixes with permissible water and distinction between them is not possible, then drinking it will not be lawful. (T)

Allama Tahtawi and Allama Shami, after quoting this, said that there is great hardship (Harj-e-Azeem) in this ruling. I say: There are many exceptions and warnings here: First: If the intention (1) is permissible water that is not owned, then the ruling does not apply to every cistern, nor is it specific to cisterns, but rather covers wells in general. Even if the well is owned, its water is not owned, as its research has already been mentioned. (T) And that cistern whose water is owned, if its owner is sane and an adult, then even if a child fills water from it a thousand times and pours it back into it, there will be no harm, because the property whose (2) consumption was permitted by its owner does not leave the owner's property even after taking possession. For example, while eating food at an invitation, it is eaten while remaining in the host's property. Thus, the child will not be the owner of this water; it will remain in the property of the original owner of the water, and by pouring it back, it returns to his property. Second: From our above research, it became clear that not every permissible thing absolutely becomes the property of the one who takes it. Thus, including both permissible and owned water, the same seventeen situations will arise here as were mentioned regarding the water filled by a minor. In nine of those situations, that water will not be the property of the one who filled it, but rather will be the property of the original owner of the water, or the hirer, or the master, provided they are sane or...

Note: The severity of this ruling has made this issue difficult because, due to the involvement of both common people and elites, this ruling causes hardship and constriction, whereas the involvement of common people calls for ease and facilitation. May Allah bestow countless blessings on the jurists (Fuqaha) who showed compassion to Allah's creation and resolved such complex and difficult issues, thus paving the way for ease and convenience for the general public. Accordingly, Imam Ahmad Raza Khan Barelvi (the author) felt the severity of this issue and himself explained the solution in the light of the sayings of Hanafi jurists on page 573, a

summary of which is as follows: Although the mentioned issue is not about impurity (Janabat) and purification (Taharat) but about prohibition and permission (Hazr-o-Ibaha), it can be resolved in the light of the rules stated by Hanafi jurists regarding the mixing of impure water with pure water. Iraqi jurists said regarding impure water falling into pure water that in a large cistern, it is permissible to perform ablution from the rest of the cistern except for the place where the impure water fell, because reaching the impurity to other places is doubtful. Therefore, the purity of the remaining water will not be lost based on doubt. While the majority of jurists allowed ablution in such a case in the entire cistern, even at the place where the impurity fell, because water is naturally liquid and does not remain stationary in one place due to the movement of winds etc. Therefore, due to the possibility of impurity reaching or not reaching other parts of the cistern, we cannot say with certainty that the rest or rather all the water is impure. Thus, when the certainty of impurity is removed, the original ruling of water, i.e., purity, will remain. In this way, the water of every part of the cistern will be declared pure. By analogy of water owned by a minor child to the rule of Iraqi or majority jurists, the solution to the aforementioned difficult issue becomes clear. In view of the Iraqi rule, except for the place where the minor child's water fell, the use of all other water will be permissible, while under the rule of the majority of jurists, all water including the place where the minor's water fell will be permissible. The details are present in the original text of the author. Abdus Sattar Sa'idi.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi Egypt, 2/5.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग २)

[बायां बॉक्स (अरबी)]: उसका कुछ हिस्सा यह है कि किसी के लिए उस हौज (हौज) से पीना जायज़ नहीं है क्योंकि कुज़े (बर्तन) में जो पानी है वह उसे लेने वाले की मिल्कियत (स्वामित्व) हो जाता है। अतः जब यह मुबाह (आम) पानी से मिल गया और उसमें फर्क करना संभव न हो, तो उसका पीना हलाल नहीं होगा। (त) [दायां बॉक्स (उर्दू)]: ...पानी पिए क्योंकि हौज का पानी लेने वाले की मिल्कियत हो जाता है। अतः जब यह मिल्कियत मुबाह (आम पानी) से मिल गई और उसमें अंतर करना संभव न हो, तो उसका पीना हलाल नहीं होगा। (त)

अल्लामा तहतावी और अल्लामा शामी ने इसे उद्धृत करते हुए फ़रमाया कि इस हुक्म में बहुत बड़ी कठिनाई (हर्ज-ए-अज़ीम) है। मैं कहता हूँ: यहाँ बहुत से अपवाद और चेतावनियाँ हैं: प्रथम: यदि मुराद (१) मुबाह पानी है जो किसी की मिल्कियत नहीं है, तो हुक्म न हर हौज को शामिल है और न हौज के लिए खास है, बल्कि कुओं को सामान्य रूप से शामिल है कि कुआँ चाहे मिल्कियत हो लेकिन उसका पानी मिल्कियत नहीं होता जैसा कि इसकी तहकीक़ (शोध) गुज़र चुकी है। (त) और वह हौज जिसका पानी मिल्कियत है, यदि उसका मालिक बुद्धिमान और वयस्क है, तो बच्चा हज़ारों बार उसमें से पानी भरकर उसमें वापस डाल दे, तो कोई हर्ज नहीं होगा क्योंकि वह माल जिसका (२) इस्तेमाल उसके मालिक ने मुबाह किया हो, कब्ज़ा करने के बाद भी मालिक की मिल्कियत से बाहर नहीं होता। यहाँ तक कि दावत का खाना खाते समय भी मेज़बान की ही मिल्कियत पर खाया जाता है। अतः बच्चा उस पानी का मालिक नहीं होगा, बल्कि पानी अपनी मूल मिल्कियत पर रहेगा और डाल देने से उसी की मिल्कियत में वापस चला जाएगा। द्वितीय: हमारे उपरोक्त शोध से स्पष्ट हुआ कि हर मुबाह चीज़ पूर्णतः लेने वाले की मिल्कियत नहीं हो जाती। अतः मुबाह और ममलुक पानी को शामिल करते हुए यहाँ भी वही सत्रह स्थितियाँ पैदा होंगी जो नाबालिग के भरे हुए पानी के संदर्भ में गुज़री थीं। उन नौ स्थितियों में वह पानी उस भरने वाले की मिल्कियत नहीं होगा बल्कि पानी के मूल मालिक या किराएदार या मालिक की मिल्कियत होगा, यदि वह बुद्धिमान या...

नोट: हुक्म की कड़ाई ने इस मसले को कठिन बना दिया है क्योंकि आम और खास लोगों के इसमें शामिल होने के कारण यह हुक्म कठिनाई और तंगी का कारण है, जबकि आम लोगों का शामिल होना सुगमता और आसानी का आह्वान करता है। अल्लाह ताला उन फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) पर अनगिनत रहमतें नाज़िल फ़रमाए जिन्होंने अल्लाह की मख्लूक (सृष्टि) पर करुणा की और ऐसे जटिल और कठिन मसलों को हल किया जिससे आम लोगों के लिए आसानी और सुगमता का मार्ग प्रशस्त

हुआ। इसी क्रम में इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (लेखक) ने इस मसले की गंभीरता को महसूस किया और उन्होंने हनफ़ी फ़ुक़हा के कथनों के आलोक में इसका समाधान पृष्ठ ५७३ पर स्वयं वर्णित किया है, जिसका सारांश निम्नलिखित है: यद्यपि उक्त मसला नापाकी (जनाबत) और शुद्धता (तहारत) का नहीं है, बल्कि इसका संबंध वर्जना और अनुमति (हज्र-ओ-इबाहत) से है, फिर भी पाक पानी में नापाक पानी के मिश्रण के मसले में हनफ़ी फ़ुक़हा द्वारा बताए गए नियमों के आलोक में इसे हल किया जा सकता है। इराकी फ़ुक़हा ने पाक पानी में नापाक पानी गिरने के संबंध में फ़रमाया कि बड़े हौज के अत्यधिक पानी में जिस स्थान पर नापाक पानी गिरा हो, उस स्थान को छोड़कर शेष हौज से वज़ू करना जायज़ है क्योंकि शेष स्थानों तक नापाकी का पहुँचना संदिग्ध है। अतः संदेह के आधार पर शेष पानी की शुद्धता समाप्त नहीं होगी। जबकि अधिकांश फ़ुक़हा (जमहूर) ने ऐसी स्थिति में पूरे हौज में, यहाँ तक कि जिस स्थान पर नापाकी गिरी है, वहाँ भी वज़ू को जायज़ फ़रमाया है क्योंकि पानी स्वाभाविक रूप से तरल है और हवाओं आदि की हलचल के कारण पानी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। अतः हौज के शेष हिस्सों में नापाकी पहुँचने या न पहुँचने की संभावना के कारण शेष, बल्कि पूरे पानी को निश्चित रूप से नापाक नहीं कहा जा सकता। अतः नापाकी का यकीन समाप्त हो जाने पर पानी का मूल हुक्म अर्थात् शुद्धता बनी रहेगी। इस प्रकार हौज के प्रत्येक भाग के पानी को पाक घोषित किया जाएगा। इराकी या जमहूर फ़ुक़हा के नियम पर नाबालिग बच्चे के मिल्कियत वाले पानी की तुलना करते हुए उक्त कठिन मसले का समाधान स्पष्ट हो जाता है। इराकी नियम के अनुसार, जहाँ नाबालिग बच्चे का पानी गिरा उस स्थान को छोड़कर शेष सभी पानी का उपयोग मुबाह होगा, जबकि जमहूर फ़ुक़हा के नियम के तहत नाबालिग के पानी गिरने के स्थान सहित पूरा पानी मुबाह होगा। लेखक की मूल इबारत में विस्तार मौजूद है। अब्दुल सत्तार सईदी।

---

१ रद-उल-मुहतार, फ़स्ल फ़ी अल-शर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र २/५।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[باکس دائیں جانب]: پانی پیئے کیونکہ حوض کا پانی لینے والے کی ملک ہو جاتا ہے تو جب یہ ملک مباح سے مل گیا اور اس میں تمیز ممکن نہیں تو اس کا پینا حلال نہ ہوگا۔ (ت) [باکس بائیں جانب (عربی)]: بعضه فیه لا یحل لاحد ان یشرب من ذلك الحوض لان الماء الذی فی الکوز یصیر ملکا للاخر فاذا اختلط بالمباء المباح ولا یمکن التمییز لا یحل شربه 1۔

علامہ طحطاوی و علامہ شامی نے اسے نقل کر کے فرمایا اس حکم میں حرج عظیم ہے۔ اقول: یہاں بہت استثنا و تنبیہات ہیں : اول: مراد (1) آب مباح غیر مملوک ہے تو حکم نہ ہر حوض کو شامل نہ حوض سے خاص بلکہ کنوؤں کو بالعموم حاوی ہے کہ کنواں اگرچہ مملوک ہو اس کا پانی مملوک نہیں کما تقدم تحقیقه (جیسا کہ اس کی تحقیق گزر چکی ہے۔ ت) اور وہ حوض جس کا پانی مملوک ہے اس کا مالک اگر عاقل بالغ ہے تو بچہ ہزار بار اس میں سے پانی بھر کر اس میں پلٹ دے کچھ حرج نہ آئے گا کہ مال جس کا (۲) تناول اس کے مالک نے مباح کیا ہو بعد اخذ تصرف بھی ملک مالک سے خارج نہیں ہوتا یہاں تک کہ دعوت کا کھانا کھاتے وقت بھی میزبان ہی کی ملک پر کھایا جاتا ہے تو بچہ اس پانی کا مالک ہی نہ ہوگا اصل پانی کی ملک پر رہے گا اور ڈال دینے سے اُسی کی ملک میں جائے گا۔ دوم: ہماری تحقیقات بالا سے واضح ہوا کہ ہر مباح بھی مطلقاً اخذ کی ملک نہیں ہو جاتا تو پانی کو مباح و مملوک کو شامل لے کر وہی سترہ، اصورتیں یہاں بھی پیدا ہوں گی جو نا بالغ کے بھرے ہوئے پانی میں گزریں نو ۹ صورتوں میں وہ پانی اُس بھرنے والے کی ملک نہ ہوگا بلکہ اصل مالک آب یا مستاجر یا مولی کی ملک ہوگا وہ اگر عاقل یا

عہ: حکم کی شدت نے اس مسئلہ کو مشکل بنا دیا ہے کیونکہ عوام و خواص کے ابتلاء کی وجہ سے یہ حکم بموجب حرج اور تنگی ہے جبکہ ابتلاء عوام داعی یسر و آسانی ہے اللہ تعالی بے

حساب رحمتیں نازل فرمائے فقہاء کرام پر جنہوں نے اللہ تعالیٰ کی مخلوق پر شفقت فرمائی اور ایسے پیچیدہ اور مشکل مسائل کو حل فرمایا جس سے عوام الناس کیلئے آسانی اور سہولت کی راہ ہموار ہوئی چنانچہ امام احمد رضا بریلوی (مصنف) نے اس مسئلہ کی شدت کو محسوس فرمایا اور انہوں نے فقہاء احناف کے اقوال کی روشنی میں اس کا حل صفحہ ۵۷۳ پر خود بیان فرمایا جس کا خلاصہ درج ذیل ہے مسئلہ مذکورہ اگرچہ جنابت و طہارت کا نہیں بلکہ اسکا تعلق حظر و اباحت سے ہے، تاہم پاک پانی میں نجس پانی کے اختلاط کے مسئلہ میں فقہاء احناف کے بیان کردہ قواعد کی روشنی میں اس کو حل کیا جا سکتا ہے عراقی فقہاء نے پاک پانی میں نجس پانی گرنے سے متعلق فرمایا کہ بڑے حوض کے کثیر پانی میں جس جگہ نجس پانی گرا ہو اس جگہ کو چھوڑ کر باقی حوض سے وضو جائز ہے کیونکہ باقی جگہوں تک نجاست کا پہنچنا مشکوک ہے لہٰذا شک کی بنا پر باقی پانی کی طہارت زائل نہ ہوگی جبکہ جمہور فقہاء نے ایسی صورت میں تمام حوض حتی کہ جس جگہ نجاست گری ہے اس جگہ پر بھی وضو کو جائز فرمایا کیونکہ پانی طبعی طور پر سیال ہے اور ہواؤں وغیرہ کی تحریک کی وجہ سے پانی ایک جگہ ساکن نہیں رہتا لہٰذا حوض کے باقی حصوں میں نجاست پہنچنے نہ پہنچنے کے احتمال کی وجہ سے باقی بلکہ تمام پانی کو بالیقین نجس نہیں کہہ سکتے لہٰذا نجاست کا یقین زائل ہو جانے پر پانی کا اصل حکم یعنی طہارت باقی رہے گا اس طرح حوض کے ہر حصہ کے پانی کو پاک قرار دیا جائیگا، عراقی یا جمہور فقہاء کرام کے ضابطہ پر نا بالغ بچے کی ملکیت پانی کو قیاس کرتے ہوئے مذکورہ مشکل مسئلہ کا حل واضح ہو جاتا ہے، عراقی ضابطہ کے پیش نظر جہاں نابالغ بچہ کا پانی گرا اس جگہ کو چھوڑ کر باقی تمام پانی کا استعمال مباح ہوگا جبکہ جمہور فقہاء کے ضابطہ کے تحت نا بالغ کے پانی گرنے کی جگہ سمیت تمام پانی مباح ہوگا مصنف کی اصل عبارت میں تفصیل موجود ہے۔ عبد الستار سعیدی

1 رد المحتار فصل في الشرب مصطفى البابى مصر ٢/٥

Fatawa Razawiya, Volume 2

If [he is] not an adult, then indeed this same difficulty will recur; otherwise, it will remain pending on the permission of that sane adult. Third: This is not specific to a child; an insane person (ma'tuh) is also under the same ruling, as mentioned before. Fourth: Just as the mention of 'drinking' in the scholars' discourse is an example, meaning any kind of use, similarly there is no condition that water must be taken from a pond or well and poured into it, or returned to the same pond or well from which it was taken, or that the minor child should pour it with their own hands. Rather, the intent is only that when the property of a minor child is mixed with public property (mubah) in such a way that it cannot be separated, then if the water owned by the child is brought from their home and poured into a well or a public pond by any person, even by their guardian, its use becomes prohibited until the said water remains. Fifth: It is clear that this prohibition is for others due to the mixing of the child's property; the child himself can use it, as it is nothing but his property or public property. Sixth: His [2] parents can also use it in case of need by consensus, and according to the narration of Imam Muhammad, even without need. Thus, "not permissible for anyone" (la yahillu li-ahadin) is a general rule with exceptions. Seventh: If they abandon that well or pond and the child reaches puberty and at that time makes that water public (mubah), then there is no longer any obstacle. Eighth: If that child passes away and all his heirs are sane adults, then there will be no difficulty with their permission. And if there is only one heir, it is purely lawful for him personally, and there is no need for anyone's permission. Ninth: If the water that was mixed from the child's property no longer remains, it will become public for everyone because the obstacle has been removed. Tenth: The [3] previous issue, i.e., regarding water filled by a minor, where one way of permissibility was to buy it if permitted, otherwise buying it from their heart, cannot be applied here because once the water owned by the child is mixed with public water, it is no longer saleable as delivery is not possible. Eleventh: The necessity of public water is also in the case where the child's action of filling from it and pouring it back is not considered, because ownership over public property is established in this way. Otherwise, if [4] the water owned by a minor child is mixed with someone's privately owned water, then its use will also become forbidden, even for the owner of that water. Twelfth: It is not limited to water on one or both sides; rather, if [5] juice or milk owned by a child is mixed into someone's privately owned water, or if water owned by a child is mixed into someone's privately owned juice or milk, or wheat is mixed with rice or vice versa.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

यदि [वह] वयस्क नहीं है, तो निश्चित रूप से यही कठिनाई फिर से आएगी; अन्यथा, उस समझदार वयस्क की अनुमति पर बात लंबित रहेगी। तीसरा: यह केवल बच्चे के लिए विशिष्ट नहीं है; एक विक्षिप्त व्यक्ति (मतूह) भी उसी हुक्म में है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। चौथा: जिस प्रकार विद्वानों के कलाम में 'पीने' का उल्लेख एक उदाहरण है, जिसका अर्थ किसी भी प्रकार का उपयोग है, उसी तरह यह भी कोई शर्त नहीं है कि हौज या कुएं से पानी लेकर ही उसमें डाला जाए या जिस हौज या कुएं से लिया गया था उसमें वापस दिया जाए, या वह नाबालिग ही अपने हाथों से डाले। बल्कि उद्देश्य केवल इतना है कि जब नाबालिग की मिल्कियत (स्वामित्व) का माल सार्वजनिक माल (मुबाह) में इस प्रकार मिल जाए कि उसे अलग न किया जा सके, तो यदि बच्चे के स्वामित्व वाला पानी उसके घर से लाकर किसी व्यक्ति द्वारा, चाहे वह उसका अभिभावक ही क्यों न हो, किसी कुएं या सार्वजनिक हौज में डाल दिया जाए, तो उसका उपयोग उक्त पानी के रहने तक नाजायज हो गया। पांचवां: यह स्पष्ट है कि यह वर्जना दूसरों के लिए है क्योंकि बच्चे की मिल्कियत का मिश्रण हो गया है; बच्चा स्वयं उसका उपयोग कर सकता है क्योंकि वह और कुछ नहीं बल्कि उसकी अपनी मिल्कियत या सार्वजनिक है। छठा: उसके[2] माता-पिता भी आवश्यकता पड़ने पर सर्वसम्मति से और इमाम मुहम्मद के वर्णन के अनुसार बिना आवश्यकता के भी उपयोग कर सकते हैं। तो "किसी के लिए जायज नहीं है" (ला यहिल्लु लि-अहदिन) एक सामान्य नियम है जिसमें अपवाद हैं। सातवां: यदि वे उस कुएं या हौज को छोड़ दें और बच्चा वयस्क हो जाए और उस समय उस पानी को मुबाह (सार्वजनिक) कर दे, तो अब कोई बाधा नहीं है। आठवां: यदि उस बच्चे की मृत्यु हो जाए और उसके सभी उत्तराधिकारी समझदार वयस्क हों, तो अब उनकी अनुमति से कोई कठिनाई नहीं होगी। और यदि केवल एक ही उत्तराधिकारी है, तो यह उसके लिए स्वयं विशुद्ध रूप से हलाल है, किसी की अनुमति की भी आवश्यकता नहीं है। नौवां: यदि वह पानी जो बच्चे के स्वामित्व से उसमें मिला था, शेष न रहे, तो अब वह सभी के लिए मुबाह (सार्वजनिक) हो जाएगा क्योंकि बाधा समाप्त हो गई। दसवां: पिछला [3] मसला, यानी नाबालिग द्वारा भरे गए पानी में, जहां जायज होने की एक सूरत यह थी कि यदि अनुमति हो तो उससे, अन्यथा उसके दिल से खरीद लिया जाए, यहाँ लागू नहीं हो सकती क्योंकि जब बच्चे के स्वामित्व वाला पानी उस मुबाह पानी में मिल गया, तो वह बिक्री के योग्य नहीं रहा क्योंकि सुपुर्दगी संभव नहीं है। ग्यारहवां: मुबाह पानी की आवश्यकता उस स्थिति में भी है कि बच्चे द्वारा उसमें से भरकर उसमें डाल देने को न लिया जाए, क्योंकि मुबाह पर स्वामित्व इसी प्रकार

होता है। अन्यथा, यदि [4] किसी नाबालिग बच्चे के स्वामित्व वाला पानी किसी के निजी स्वामित्व वाले पानी में मिल जाएगा, तो उसका उपयोग भी हराम हो जाएगा, यहाँ तक कि उस पानी के मालिक के लिए भी। बारहवां: एक या दोनों तरफ केवल पानी की ही विशेषता नहीं है; बल्कि किसी के[5] निजी स्वामित्व वाले पानी में बच्चे के स्वामित्व का अर्क(रस) या दूध, या किसी के निजी स्वामित्व वाले अर्क या दूध में बच्चे के स्वामित्व वाला पानी, या चावल में गेहूँ या गेहूँ में गेहूँ मिल जाएं।

بالغ نہیں تو البتہ یہی دقت عود کرے گی ورنہ اُس عاقل بالغ کی اجازت پر توقف رہے گا۔ سوم: صبی کی خصوصیت نہیں معتوہ بھی اسی کے حکم میں ہے کما تقدم۔ چہارم: جس طرح کلام علماء میں پینے کا ذکر مثال ہے مراد کسی قسم کا استعمال ہے اسی طرح کچھ یہی شرط نہیں کہ حوض یا کنویں سے پانی لے کر ہی ان میں ڈالے یا جس حوض یا چاہ سے لیا اس میں واپس دے یا وہ نابالغ ہی اپنے ہاتھ سے ڈالے بلالکہ مقصود اُسی قدر ہے کہ مال مباح میں نابالغ کی ملک کا اس طرح مل جانا کہ جدا نہ ہو سکے تو اگر صبی کی ملک کا پانی اُس کے گھر سے لا کر کسی شخص اگر چہ خواہ اُس کے ولی نے کسی کنویں یا مباح حوض میں ڈال دیا اس کا استعمال تابقائے آب مذکور ناجائز ہو گیا۔ پنجم: ظاہر ہے کہ یہ عدم جواز اوروں کے حق میں بوجہ اختلاط ملک صبی ہے خود صبی استعمال کر سکتا ہے کہ وہ نہیں مگر اسکی ملک یا مباح۔ ششم: اُس کے ۲ ماں باپ بھی بشرطِ حاجت بالاتفاق اور بلا حاجت روایتِ امام محمد پر استعمال کر سکتے ہیں تو لا یحل لاحد (کسی کیلئے جائز نہیں۔ ت) عام مخصوص ہے۔ ہفتم: اگر وہ کنواں یا حوض ترک کر دیں اور صبی بلوغ کو پہنچے اور اُس وقت اس پانی کو مباح کر دے تو اب کوئی مانع نہیں۔ ہشتم: اگر وہ صبی انتقال کر جائے اس کے سب ورثہ عاقل بالغ ہوں تو اب ان کی اجازت پر دقت نہ رہے گی اور اگر ایک ہی وارث ہے تو اسے خود حلال خالص ہے کسی کی اجازت کی بھی حاجت نہیں۔ نہم: اگر وہ پانی کہ صبی کی ملک سے اُس میں مخلوط ہوا باقی نہ رہے تو اب سب کو مباح ہو جائے گا کہ مانع زائل ہو گیا۔ دہم: مسئلہ ۳ سابقہ یعنی نابالغ کے بھرے ہوئے پانی میں جو ایک صورت جواز اُس سے اگر ماذون ہو ورنہ اُس کے دل سے خرید لینے کی تھی یہاں جاری نہیں ہو سکتی کہ ملک صبی کا پانی جب اُس آب مباح میں مل گیا قابلِ بیع نہ رہا کہ مقدور التسلیم نہیں۔ یاز دہم: آب مباح

کی ضرورت بھی اُس حالت میں ہے کہ بچہ کا اُس میں سے بھر کر اُس میں ڈال دینا لیں کہ مباح پر ملک یوں ہی ہو گی ورنہ ۴ ملکِ نابالغ کا پانی اگر کسی کے مملوک پانی میں مل جائے گا تو اُس کا استعمال بھی حرام ہو جائے گا حتی کہ اُس مالک آب کو۔ دواز دہم: ایک یا دونوں طرف کچھ پانی کی خصوصیت نہیں بلالکہ کسی کے ۵ مملوک پانی میں بچے کی ملک کا عرق یا دودھ یا کسی کے مملوک عرق یا دودھ میں بچے کی ملک کا پانی یا چاول میں گیہوں میں گیہوں مل جائیں

Fatawa Razawiya, Volume II Even then, the ruling is the same: that disposing of it has become forbidden even for the owner himself. The scenario of the issue (1) should be such that if the property of a non-legally responsible person (ghair-mukallaf) is mixed into a permissible (mubah) or owned thing in such a way that it is impossible to distinguish, even if it is like this: for example, a free child or a mentally disabled person who is not hired filled permissible, unowned water. If it was a well, they drew it out, and if they are hired, neither at a fixed time nor for a specific permissible quantity, nor did the hirer designate it for them, and they took it in their container. Then in these situations, if someone put a portion of it into it or it fell in, as long as the ownership of that non-legally responsible person remains in that permissible or owned thing, and they remain non-legally responsible and ownership has not been transferred from them, at that time, disposal of it is not lawful for anyone except their parents, whether out of necessity or, according to one narration, absolutely in water.

Arabic Text

Thirteenth: The hadith of the male and female slave; 'Sh' rejected it by saying that a slave does not own, and if he were to own, it would belong to his master because all his earnings belong to his master. 1-Ah.

I say: (2) It cannot be expected of the jurists (fuqaha) that such a simple point would not have occurred to them. In fact, their purpose is to show the difference between a free, sane adult and a child, a mentally disabled person, and a slave. Because when a free person fills water, he becomes the owner, and when he pours it out, he makes it permissible (mubah). These people (child, slave, etc.) do not have the right of permissibility (ibahat). Therefore, the water will not become permissible by their pouring

Urdu Translation/Commentary

Thirteenth: 'Sh' rejected the issue of male and female slaves by saying that a slave will not become the owner of water, and even if he were to become an owner, that water would come under his master's ownership because the owner of all his earnings is his master himself. (T)

I say: It cannot be expected of the jurists that such a simple point would not have occurred to them. In fact, their purpose is to show the difference between a free, sane adult and a child, an imbecile, and a slave. Because when a free person fills water, he becomes the owner, and when he pours it out, he makes it permissible, and these people do not have the right to grant permissibility. Therefore, the water will not become

Arabic Text

it out. The intention is not that the prohibition will remain forever, but rather until the person to whom it belongs grants permission. Thus, in the case of a child or a mentally disabled person, after reaching maturity or regaining sanity, giving permission will make drinking it lawful. And in the case of a slave, with the permission of his master, who is a legally responsible person present at the time or in the future, or when the absent person reaches, or the child matures, or the mentally disabled person recovers, and they grant permission.

Urdu Translation/Commentary

permissible by their pouring it out, and the intention is not that the prohibition will remain forever, but rather it is until its owner grants permission. Thus, in the case of a child and an imbecile, drinking it will become lawful after reaching maturity or regaining sanity by granting permission, and in the case of a slave, by the permission of his master who is present and legally responsible.

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa Al-Babi, Egypt, 5/312 Page 533 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी तब भी यही हुक्म है कि इसमें तसर्रुफ़ (उपयोग) खुद मालिक को भी हराम हो गया, तो मसले की तस्वीर (१) यूँ होनी चाहिए कि अगर किसी शय मुबाह (अनुमत) या ममलुक (स्वामित्व वाली) में किसी ग़ैर-मुकल्लिफ़ (कानूनी रूप से उत्तरदायी नहीं) की मिल्क (स्वामित्व) इस तरह खल्त (मिश्रित) हो जाए कि तमीज़ ना मुमकिन हो, अगरचे यूँही कि मसलन मुबाह ग़ैर-ममलुक पानी से सबी (बच्चा) या मअतूह (मानसिक रूप से अक्षम) हुर्र (आज़ाद) ग़ैर-अजीर (गैर-मजदूर) ने भरा और अगर वो कुआँ है तो उससे भर कर बाहर निकाल लिया और अगर अजीर है तो न वक्त मुअय्यन, न वो मुबाह मुअय्यन, न ये मुस्ताजिर के लिए लेने का मुकर्रर, न उसके ज़र्फ़(बर्तन) में लिया, फिर इन सूरतों में उसका कोई हिस्सा उसमें किसी ने डाल दिया या पड़ गया, तो जब तक उस ग़ैर-मुकल्लिफ़ की मिल्क उस मुबाह या ममलुक में बाक़ी है और वो ग़ैर-मुकल्लिफ़ है और मिल्क उससे मुंतक़िल न हो गई, उस वक्त उस ग़ैर-मुकल्लिफ़ या बहाल हाजत ख्वाह एक रिवायत पर पानी में मुतलक़न उसके माँ-बाप के सिवा किसी को उसमें तसर्रुफ़ हलाल नहीं।

अरबी पाठ

तेरहवाँ: गुलाम और दासी की हदीस; 'श' ने इसे यह कहकर रद्द किया कि गुलाम मालिक नहीं होता, और अगर वह मालिक बने तो वह उसके मालिक का होगा क्योंकि उसकी सारी कमाई का मालिक उसका मालिक ही है। 1-आह।

मैं कहता हूँ: (२) फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) से यह तवक़्क़ो नहीं की जा सकती कि इतनी मामूली सी बात उनके ज़ेहन में न आई हो, दरअसल उनका मक़सूद आज़ाद आकिल बालिग़ और बच्चे, बेवक़ूफ़ और गुलाम के दरमियान फ़र्क़ को ज़ाहिर करना है, क्योंकि आज़ाद शख़्स जब पानी भरेगा तो मालिक हो जाएगा और जब बहाएगा तो मुबाह कर देगा, और ये लोग इबाहत का हक़ नहीं रखते हैं, लिहाज़ा पानी उनके उँडेल देने से मुबाह न होगा

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

तेरहवाँ: गुलाम और बांदी के मसले को 'श' ने यह कहकर रद्द किया है कि गुलाम पानी का मालिक नहीं बनेगा और अगर मालिक होगा भी तो वो पानी उसके मालिक की मिल्कियत में आ जाएगा क्योंकि उसकी तमाम कमाई का मालिक उसका मालिक ही है। (त)

मैं कहता हूँ फ़ुक़हा से यह तवक़्क़ो नहीं की जा सकती कि इतनी मामूली सी बात उनके ज़ेहन में न आई हो, दरअसल उनका मक़सूद आज़ाद आकिल बालिग़ और बच्चे, बेवक़ूफ़ और गुलाम के दरमियान फ़र्क़ को ज़ाहिर करना है, क्योंकि आज़ाद शख़्स जब पानी भरेगा तो मालिक हो जाएगा और जब बहाएगा तो मुबाह कर देगा, और ये लोग इबाहत का हक़ नहीं रखते हैं, लिहाज़ा पानी उनके उँडेल देने से मुबाह न

अरबी पाठ

और मुराद ये नहीं कि हुरमत हमेशा रहेगी, बल्कि ये उस वक्त तक है जब तक कि उसका मालिक इजाज़त न दे दे, चुनाँचे बच्चे और बेवक़ूफ़ की सूरत में बलोग़ या अक्ल की दुरुस्ती के बाद इजाज़त देने से उसका पीना हलाल हो जाएगा और गुलाम की सूरत में उसके आक़ा की इजाज़त से जो मुकल्लिफ़ हाज़िर हो।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

होगा और मुराद ये नहीं कि हुरमत हमेशा रहेगी, बल्कि ये उस वक्त तक है जब तक कि उसका मालिक इजाज़त न दे दे, चुनाँचे बच्चे और बेवक़ूफ़ की सूरत में बलोग़ या अक्ल की दुरुस्ती के बाद इजाज़त देने से उसका पीना हलाल हो जाएगा और गुलाम की सूरत में उसके आक़ा की इजाज़त से जो मुकल्लिफ़ हाज़िर हो।

1. रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 5/312 पृष्ठ 533/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی جب بھی یہی حکم ہے کہ اس میں تصرف خود مالک کو بھی حرام ہو گیا تو مسئلہ کی تصویر (۱) یوں ہونی چاہئے کہ اگر کسی شے مباح یا مملوک میں کسی غیر مکلف کی ملک اس طرح خلط ہو جائے کہ تمیز نا ممکن ہو اگرچہ یونہی کہ مثلاً مباح غیر مملوک پانی سے صبی یا معتوہ حر غیر اجیر نے بھرا اور اگر وہ کنواں ہے تو اس سے بھر کر باہر نکال لیا اور اگر اجیر ہے تو نہ وقت معین نہ وہ مباح معین نہ یہ مستاجر کیلئے لینے کا مقرنہ اس کے ظرف میں لیا پھر ان صورتوں میں اس کا کوئی حصہ اس میں کسی نے ڈال دیا یا پڑ گیا تو جب تک اس غیر مکلف کی ملک اس مباح یا مملوک میں باقی ہے اور وہ غیر مکلف ہے اور ملک اس سے منتقل نہ ہو گئی اس وقت اس غیر مکلف یا بحال حاجت خواہ ایک روایت پر پانی میں مطلقاً اس کے ماں باپ کے سوا کسی کو اس میں تصرف حلال نہیں۔

عربی متن	اردو ترجمہ/تشریح
	سیزدہم: غلام اور باندی کے مسئلہ کو "ش" نے یہ کہہ کر رد کیا ہے کہ غلام پانی کا مالک نہیں بنے گا اور اگر مالک ہوگا بھی تو وہ پانی اس کے مالک کی ملکیت میں آ جائے گا کیونکہ اس کی تمام کمائی کا مالک اس کا مالک ہی ہے۔ (ت)
سیزدہم: حدیث العبد والامة رده ش بان العبد لا یملك وان ملك فیكون لمالكه لانه مالك اكسابه 1اھ	
اقول:(۲) ماكانوا لیذهلوا عن مثل هذا وانما القصد ابانة الفرق بین الحر العاقل البالغ وبین الصبي والمعتوه والرقیق فان الاول اذا ملأ ملك فاذا صب اباح	میں کہتا ہوں فقہاء سے یہ توقع نہیں کی جاسکتی ہے کہ اتنی معمولی سی بات ان کے ذہن میں نہ آئی ہو، دراصل ان کا مقصود آزاد عاقل بالغ اور بچہ، بیوقوف اور غلام کے درمیان فرق کو ظاہر کرنا ہے، کیونکہ آزاد شخص جب

عربی متن	اردو ترجمہ/تشریح
وهؤلاء لا يملكون الاباحة فلا يحل بصبهم وليس المراد تأبيد التحريم بل الى ان تلحق الاجازة ممن هي له ففى الصبى اوالمعتوه حتى يبلغ او يعقل فيجيز وفى (۳) الرقيق حتى يجيز المالك المكلف الحاضر حالا اومألا اويبلغ الغائب اويبلغ الصبى اويفيق المعتوه فيجيزوا۔	پانی بھرے گا تو مالک ہو جائے گا اور جب بہائے گا تو مباح کر دے گا، اور یہ لوگ اباحت کا حق نہیں رکھتے ہیں، لہذا پانی ان کے انڈیل دینے سے مباح نہ ہوگا اور مراد یہ نہیں کہ حرمت ہمیشہ رہے گی، بلکہ یہ اس وقت تک ہے جب تک کہ اس کا مالک اجازت نہ دے دے، چنانچہ بچہ اور بیوقوف کی صورت میں بلوغ یا عقل کی درستی کے بعد اجازت دینے سے اس کا پینا حلال ہو جائے گا اور غلام کی صورت میں اس کے آقا کی اجازت سے جو مکلف حاضر ہو۔

1 رد المحتار فصل فی الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۱۲ صفحہ 533 از 711

Fatawa Razawiyyah, Volume 2

Fourteenth: One of his difficulties is that it is not clarified when drinking from it becomes permissible. 1 (End of quote). I pointed to the answer in my words: "As long as that water remains in it, because the prohibition is for its sake; so when it goes away, the prohibition goes away."

[Corresponding Urdu text]: At present or in the future, or it reaches someone absent, or a child becomes an adult, or an insane person becomes sane, and they give permission. (T) Fourteenth: "Sh" (the commentator) felt this difficulty that he did not state when its drinking would become halal. I have pointed towards its answer, and that is that as long as this water remains in it, because the prohibition is due to it. When it finishes, the prohibition will also end. (T)

Fifteenth: He said: And then is there a difference between a flowing reservoir (pond) or what is in its ruling and others? 2 (End of quote). I say: (2) Their use of the word 'pond/reservoir' (3) is apparent in its stillness (stagnation). For flowing water is called a river, not a pond. (4) And the absolute application includes small and large. This is the reasoning because flowing water certainly takes away that (impure) water, so the cause (of prohibition) is removed. This is not the case with stagnant water.

[Corresponding Urdu text]: Fifteenth, is there a difference in this regard between a flowing pond (and what is under its ruling) and other waters? (T) I say that the jurists' use of the term 'pond' indicates that their intention is stagnant water, because flowing water is called a river, it is not called a pond. And the absolute term includes both small and large. This is a rational reason because flowing water will carry away the water that was thrown into it, so the cause of prohibition will vanish. This is not the case with stagnant water. (T)

Sixteenth: He said: It is appropriate to consider the predominance of opinion (ghalaba-e-zann), meaning that due to the flow of water or the drawing out of water, nothing remains of the water that was poured into it. Otherwise, one would have to say goodbye to the pond forever. 3 (End of quote).

[Corresponding Urdu text]: Sixteenth: He said: It is appropriate to consider the predominance of opinion (ghalaba-e-zann), meaning that due to the flow of water or the drawing out of water, nothing remains of the water that was poured into it. Otherwise, one would have to say goodbye to the pond forever. (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi, Egypt 5/312 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi, Egypt 5/312 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi, Egypt 5/312

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

चौदहवाँ: उनकी उलझनों में से एक यह है कि यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि उससे पीना कब हलाल (जायज़) होगा। 1 (समाप्त)। मैंने अपनी इस बात में इसके उत्तर की ओर इशारा किया है: "जब तक वह पानी उसमें बाकी है, क्योंकि मनाही उसी की वजह से है; तो जब वह चला जाएगा, तो मनाही भी चली जाएगी।"

[संबंधित उर्दू पाठ]: वर्तमान में या भविष्य में, या किसी अनुपस्थित व्यक्ति तक पहुँच जाए, या बच्चा वयस्क हो जाए, या पागल समझदार हो जाए, और वे अनुमति दे दें। (त) चौदहवाँ: "श" ने इस पर यह उलझन महसूस की है कि उन्होंने यह बयान नहीं किया कि इसका पीना कब हलाल होगा। मैंने इसके उत्तर की ओर इशारा किया है और वह यह है कि जब तक इसमें यह पानी बाकी है क्योंकि हराम (निषिद्ध) होना उसी की वजह से है। जब यह खत्म हो जाएगा तो हराम होना भी खत्म हो जाएगा। (त)

पंद्रहवाँ: उन्होंने कहा: और फिर क्या बहते हुए हौज़ (तालाब) या जो उसके हुक्म (आदेश) में है, और दूसरों के बीच कोई अंतर है? 2 (समाप्त)। मैं कहता हूँ: (2) उनका 'हौज़' (तालाब) शब्द का प्रयोग करना (3) उसके ठहराव (स्थिरता) को दर्शाता है। क्योंकि बहते हुए पानी को नहर कहा जाता है, हौज़ नहीं। (4) और सामान्य प्रयोग छोटे और बड़े दोनों को शामिल करता है। यही कारण है क्योंकि बहता हुआ पानी निश्चित रूप से उस (अशुद्ध) पानी को बहा ले जाता है, इसलिए कारण (निषिद्ध होने का) समाप्त हो जाता है। ठहरे हुए पानी का यह मामला नहीं है।

[संबंधित उर्दू पाठ]: पंद्रहवाँ, क्या बहते हौज़ और जो उसके हुक्म में है, और दूसरे पानियों में इस सिलसिले में फ़र्क़ है? (त) मैं कहता हूँ कि फ़ुक़हा (न्यायविदों) का 'हौज़' से व्यक्त करना इस बात को ज़ाहिर करता है कि उनकी मुराद (इच्छा) ठहरा हुआ पानी है क्योंकि जारी (बहते) पानी को नहर कहा जाता है, हौज़ नहीं कहते हैं और सामान्य रूप से यह छोटे और बड़े दोनों को शामिल करता है। और यही तर्कसंगत कारण है क्योंकि जारी पानी उस पानी को, जिसे फेंका गया है, बहा ले जाएगा, तो हुरमत (निषिद्धता) का कारण खत्म हो जाएगा और ठहरे हुए पानी की यह सूरत नहीं। (त)

सोलहवाँ: उन्होंने कहा: यह भी उचित है कि 'ग़लबा-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) का विचार किया जाए, यानी यह कि पानी के बहने या उसमें से पानी निकालने के कारण जो पानी उसमें डाला गया था, उसमें से कुछ भी बाकी न रहा। वरना तो फिर हौज़ को हमेशा के लिए अलविदा कहना पड़ेगा। 3 (समाप्त)।

[संबंधित उर्दू पाठ]: सोलहवाँ: उन्होंने कहा: यह भी उचित है कि 'ग़लबा-ए-ज़न्न' का विचार किया जाए, यानी यह कि पानी के बहने या उसमें से पानी निकालने के कारण जो पानी उसमें डाला गया था, उसमें से कुछ भी बाकी न रहा, वरना तो फिर हौज़ को हमेशा के लिए अलविदा कहना पड़ेगा। (त)

---

1 रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 5/312 2 रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 5/312 3 रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी अल-शुर्ब, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 5/312

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

چاردہم: عدش من اشکالاته انه لویبین متی یحل الشرب منه 1 اھـ (۱) واشرت الی جوابه بقولی ما بقی فیه ذلك الماء لان المنع لاجله فاذا ذھب ذھب۔

فی الحال یا فی المآل، یا غائب پہنچ جائے یا بچہ بالغ ہو جائے یا بیوقوف عاقل ہو جائے، اور وہ اجازت دے دیں۔ (ت) چہاردہم: "ش" نے اس پر یہ اشکال محسوس کیا ہے کہ انہوں نے یہ بیان نہیں کیا کہ اس کا پینا کب حلال ہو گا۔ میں نے اس کے جواب کی طرف اشارہ کیا ہے اور وہ یہ ہے کہ جب تک اس میں یہ پانی باقی ہے کیونکہ حرمت اسی کی وجہ سے ہے جب یہ ختم ہو جائے گا تو حرمت بھی ختم ہو جائے گی۔ (ت)

پانزدہم: قال وھی ثم فرق بین الحوض الجاری او ما في حکمه وبین غیره 2 اھـ اقول: (۲) تعبیرھم بالحوض (۳) ظاھر في رکوده فان الجاری یسمی نھرا لا حوضا (۴) والاطلاق یشمل الصغیر والکبیر وھو الوجه فان الماء الجاری یذھب ذلك الماء یقینا فیزول السبب ولا کذلك الراکد۔

پندرھواں، کیا حوض جاری اور جو اس کے حکم میں ہے اس میں اور دوسرے پانیوں میں اس سلسلہ میں فرق ہے؟ (ت) میں کہتا ہوں فقہاء کا حوض سے تعبیر کرنا اس امر کو ظاہر کرتا ہے کہ ان کی مراد ٹھہرا ہوا پانی ہے کیونکہ جاری پانی کو نہر کہا جاتا ہے حوض نہیں کہتے ہیں اور اطلاق چھوٹے بڑے دونوں کو شامل ہے اور یہی معقول وجہ ہے کیونکہ جاری پانی اس پانی کو جو پھینکا گیا ہے بہالے جائے گا، تو سببِ حرمت زائل ہو جائے گا اور ٹھہرے ہوئے پانی کی یہ صورت نہیں۔ (ت)

شانزدہم: قال وینبغی ان یعتبر غلبۃ الظن بانہ لم یبق مما اریق فیہ شیئ منہ بسبب الجریان او النزح و الا یلزم ھجر الحوض وعدم الانتفاع بہ اصلاً 3 اھـ

سولھواں: فرمایا غلبہ ظن کا اعتبار بھی کیا جانا چاہئے یعنی یہ کہ پانی کے جاری رہنے یا اس میں سے پانی کے نکالے جانے کے باعث جو پانی کہ اس میں ڈالا گیا تھا اس میں سے کچھ بھی باقی نہ رہا، ورنہ تو پھر حوض کو ہمیشہ ہمیشہ کیلئے خیر باد کہنا پڑے گا۔ (ت)

---

1 ردالمحتار فصل فی الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۱۲ 2 ردالمحتار فصل فی الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۱۲ 3 ردالمحتار فصل فی الشرب مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۱۲

Fatawa-e-Razawiyya Volume Two

I say: (1) There should be no doubt about the permissibility after draining, as will be discussed later. The real issue is the permissibility of draining itself. (2) And how can it be permissible when it involves wasting the property of a child if poured on the ground, or benefiting from it if used to irrigate a field or garden? Similarly, making it flow is also problematic. If this were permitted, then why is drinking and using it from the start not permitted, as there is no harm beyond this? Yes, (3) if it flows due to rain or a flood, then it becomes permissible without sin.

I say: When the water from this pool is removed, there is no doubt about its permissibility, but the point to consider is whether it is permissible to remove all this water? The problem here is that if it is removed and just poured away, the child's property will be wasted, and if it is applied to a garden or field etc., then gaining benefit from it will become necessary. Similarly, it is not correct to make it flow and pour it away. If all these acts are permissible with it, then why is it not permissible to drink and use it from the beginning? What more harm was there in that than this? Yes, it could be that due to rain or floods, the water from the pool flowed out, then it would become permissible without any harm. (T)

Seventeenth: He said, it is possible to consider it as impurity; thus, drinking from a well after draining would be permissible, and from other sources, it would be permissible due to its flow. It is as if, even if there were impurity in it, its purity would be ruled. So, one should reflect. (T)

Seventeenth: He said it is possible that the impurity is considered, then it would be permissible to drink by drawing water from the well, and from things other than the well, it would be permissible for that water to be drunk because of its flowing; as if even if there were impurity in it, its purity would be ruled. Falyata'ammal (So reflect). (T)

I say: (4) You have known what is in it. (5) Draining in case of impurity is a departure from the rules of analogy (Qiyas). So how can it be used as a basis for analogy? It seems that he (may Allah have mercy on him) pointed to these discussions with his words "So reflect" (Falyata'ammal).

I say: The objection to this has become known, and to remove all the water in the case of impurity is against analogy, so how can further analogy be based on it? And probably he has signaled towards these researches with 'Falyata'ammal'. (T)

Eighteenth: (6) Most important of all is its remedy, as to how this water can become usable. Syed Tahtawi only said that there is great harm (difficulty) in it. The remedies mentioned by Syed Shami are not sufficient to remove the sin.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Drinking, Mustafa al-Babi Egypt, 5/312. Page 535 of 711

मैं कहता हूँ: (१) पानी निकालने के बाद इसके जायज़ होने में कोई शक नहीं होना चाहिए जैसा कि आगे आएगा। असल बात तो पानी निकालने के जायज़ होने की है। (२) और यह कैसे हलाल हो सकता है जबकि इसमें बच्चे की संपत्ति का नुकसान है यदि इसे ज़मीन पर बहा दिया जाए, या इससे लाभ उठाना है यदि इसे किसी खेत या बाग़ की सिंचाई में इस्तेमाल किया जाए? इसी तरह इसे प्रवाहित करना भी समस्यापूर्ण है। अगर ये सब जायज़ होता तो शुरू से ही इसे पीना और इस्तेमाल करना क्यों जायज़ नहीं है, क्योंकि इसमें इससे ज़्यादा और क्या हर्ज़ (नुकसान) था? हाँ, (३) यदि यह बारिश या बाढ़ के कारण बह निकले, तो वह बिना किसी गुनाह के हलाल हो जाएगा।

मैं कहता हूँ: जब इस हौज का पानी निकल जाए तो फिर जवाज़ में कोई शक नहीं, लेकिन काबिले-ग़ौर बात यह है कि क्या इस तमाम पानी का निकाल देना जायज़ है? इसमें सवाल यह है कि निकाल कर अगर यूँ ही बहा दिया जाए तो बच्चे का माल जाया (नष्ट) हो जाएगा और किसी बाग़ या खेत वगैरह को लगा दिया जाए तो उससे नफ़ा (लाभ) हासिल करना लाज़िम आएगा, इसी तरह जारी करके बहा देना भी दुरुस्त नहीं और अगर इससे ये तमाम काम करना जायज़ हैं तो शुरू ही से उसका पीना और उसको इस्तेमाल करना क्यों जायज़ नहीं, उसमें उससे ज़्यादा क्या हर्ज़ था? हाँ, ये सूरत हो सकती है कि बारिश या सैलाब की वजह से हौज का पानी बह निकला तो वह बिला-हर्ज़ हलाल हो जाएगा। (त)

सत्रहवाँ: फरमाया कि यह मुमकिन है कि नजासत (अशुद्धि) का एतबार किया जाए, तो कुएं से पानी निकालकर पीना जायज़ होगा, और कुएं के अलावा दूसरी चीज़ों से उस पानी के प्रवाहित होने की वजह से पीना जायज़ हो जाएगा, गोया अगर इसमें नजासत भी होती तो इसकी तहारत (शुद्धता) का हुक्म दिया जाता, फलीतअम्मल। (त)

सत्रहवाँ: फरमाया यह मुमकिन है कि नजासत का एतबार किया जाए, तो कुएं से पानी निकाल कर पीना जायज़ होगा, और कुएं के इलावा दूसरी चीज़ों से उस पानी के जारी होने की वजह से पीना जायज़ हो जाएगा, गोया अगर इस में नजासत भी होती तो इस की तहारत का हुक्म दिया जाता। फलीतअम्मल। (त)

मैं कहता हूँ: (४) इसमें जो (आपत्ति) है उसे आप जान चुके हैं। (५) नजासत की स्थिति में पानी निकालना क़यास (सादृश्य) के नियमों के विपरीत है, तो इस पर आगे क़यास किस तरह हो सकता है? और शायद उन्होंने इन चर्चाओं की तरफ "फलीतअम्मल" से इशारा किया है।

मैं कहता हूँ: इस पर जो एतराज़ (आपत्ति) है वो मालूम हो चुका है, और कुल पानी का नजासत की सूरत में निकालना बर-खिलाफ़ेक़यास है तो इस पर आगे क़यास किस तरह हो सकता है? और ग़ालिबन उन्होंने इन मबाहिस (शोधों) की तरफ 'फलीतअम्मल' से इशारा किया है। (त)

अठारहवाँ: (६) सबसे ज़्यादा ज़रूरी इसका इलाज है कि यह पानी इस्तेमाल के काबिल कैसे हो। सैय्यद तहतावी ने तो इतना फरमाया कि इसमें हर्ज़े-अज़ीम (बड़ी कठिनाई) है। सैय्यद शामी ने जो इलाज बताए हैं, वे गुनाह को दूर करने के लिए काफी नहीं हैं।

---

1. रद्द अल-मुह्तार, पीने के अध्याय में, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र ५/३१२ पेज ५३५ ऑफ़ ७११

اقول: (۱) لا ینبغی الشک فی الجواز بعد النزح لما سیأتي انما الشأن فی جواز النزح (۲) وکیف یحل مع ان فیه اضاعة ملك الصبی ان صب فی الارض اولانتفاع به ان سقی به نحو زرع او بستان وکذلك الاجراء وان ابیح ذلك الان فلم لا یباح الشرب والاستعمال من رأس اذلیس فیه فوق هذا بأس نعم (۳) ان جری بمطر او سیل فذلك حل من دون اثم۔

میں کہتا ہوں ، جب اس حوض کا پانی نکل جائے تو پھر جواز میں کوئی شک نہیں لیکن قابل غور امر یہ ہے کہ آیا اس تمام پانی کا نکال دینا جائز ہے؟ اس میں اشکال یہ ہے کہ نکال کر اگر یوں ہی بہا دیا جائے تو بچہ کا مال ضائع ہو جائے گا اور کسی باغ یا کھیت وغیرہ کو لگا دیا جائے تو اس سے نفع حاصل کرنا لازم آئے گا ، اسی طرح جاری کر کے بہا دینا بھی درست نہیں اور اگر اس سے یہ تمام کام کرنا جائز ہیں تو شروع ہی سے اس کا پینا اور اس کو استعمال کرنا کیوں جائز نہیں، اُس میں اس سے زیادہ کیا حرج تھا؟ ہاں یہ صورت ہو سکتی ہے کہ بارش یا سیلاب کی وجہ سے حوض کا پانی بہ نکلا تو وہ بلا حرج حلال ہوجائے گا۔ (ت)

بھدہم: قال و یمکن ان یعتبر بالنجاسة فیحل الشرب من نحو البئر بالنزح ومن غیرها بالجریان بحیث لو کان نجاسة لحکم بطهارتها فلیتأمل اه۔

سترہواں: فرمایا یہ ممکن ہے کہ نجاست کا اعتبار کیا جائے، تو کنویں سے پانی نکال کر پینا جائز ہوگا، اور کنویں کے علاوہ دوسری چیزوں سے اُس پانی کے جاری ہونے کی وجہ سے پینا جائز ہو جائے گا، گویا اگر اس میں نجاست بھی ہوتی تو اس کی طہارت کا حکم دیا جاتا، فلیتأمل اہ۔ (ت)

اقول: (۴) عرفت ما فیہ (۵) والنزح فی النجاسة معدول به عن سنن القیاس فکیف یعتبر به وکأنه رحمه الله تعالی الی هذه الابحاث اشار بقوله فلیتأمل۔

میں کہتا ہوں، اس پر جو اعتراض ہے وہ معلوم ہو چکا ہے، اور کل پانی کا نجاست کی صورت میں نکالنا برخلافِ قیاس ہے تو اس پر آگے قیاس کس طرح ہو سکتا ہے؟ اور غالباً انہوں نے ان ابحاث کی طرف فلیتأمل سے اشارہ کیا ہے (ت)

ہیجدہم: (۶) سب سے زیادہ اہم اس کا علاج ہے کہ یہ پانی قابل استعمال کیونکر ہو سید طحطاوی نے تو اتنا فرمایا کہ اس میں حرجِ عظیم ہے سید شامی نے جو علاج بتائے دفعِ اثم کو کافی نہیں ہوتا،

---

1 رد المحتار فصل فی الشرب مصطفیٰ البابی مصر ۵/۳۱۲ Page 535 of 711

Fatawa Razawiya, Volume 2

My master, the knower of Allah, Abdul Ghani al-Nabulsi (may his secret be sanctified), pointed out in 'Al-Hadiqa' that its resolution depends on the permission of the guardian. He mentioned this in the twentieth type of 'Afaat al-Lisan' (evils of the tongue) after quoting the issue from 'al-Ashbah' and explaining its cause with what we previously presented. The text is: "And it is apparent except if the guardian gives permission." He said its parallel is the impermissibility of drinking from the cups of children except with the permission of the guardian, and likewise regarding eating the food they have when they give it to someone. (T)

I say: May Allah have mercy on my master and on us through him. (1) Guardianship is purely for oversight (for the benefit of the child). The guardian does not have the right to waste the child's property nor to permit others to do so. (2) How so, when it is established that actions are of three types: purely beneficial, such as accepting a gift, which a discerning child can do independently; actions oscillating between benefit and harm, like buying and selling, which require the permission of the guardian; and purely harmful actions, such as divorce, manumission, and gifting. There is no way for these to be valid, even with the guardian's permission. This issue falls into the third category. He fell into this error because the author of 'at-Tariqah al-Muhammadiyya' mentioned the prohibited form of begging. Then (3) he said: "The prohibition of begging is not limited to wealth but extends to usage, especially if it is a child or a slave belonging to someone else. (4) As for his own child...

---

1 Al-Hadiqa al-Nadiyya, Type 20 from Afaat al-Lisan, Nuriya Razawiya, Faisalabad, 2/269

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

आरिफ़ बिल्लाह सय्यद अब्दुल ग़नी ने इस बात की तरफ़ इशारा किया कि इसका हल यह है कि अगर वली इजाज़त दे तो जायज़ है। यह बात उन्होंने 'आफ़ात अल-लिसान' की बीसवीं नौअ (प्रकार) में इस मसले को 'अशबाह' से नक़्ल करने और उसकी इल्लत (कारण) बयान करने के बाद कही है जिसे हम पहले ज़िक्र कर आए हैं और ज़ाहिर यह है कि "मगर यह कि वली इजाज़त दे दे" और इसकी मिसाल यह है कि बच्चों के कूज़ों (मिट्टी के बर्तन) से पानी पीना वली की इजाज़त ही से जायज़ है, और इसी तरह दूसरी खाने वाली चीज़ों का हाल है जब बच्चे वह किसी को दें। (त)

मैं कहता हूँ अल्लाह अब्दुल ग़नी पर रहम करे और हम पर भी, वली की विलायत सिर्फ़ नज़री (बच्चे की भलाई के लिए) है। वली बच्चे का माल तलफ़ (नष्ट) नहीं कर सकता है और न दूसरों को दे सकता है, यह बात तयशुदा है कि तसररुफ़ात (लेन-देन) तीन क़िस्म के हैं: नफ़अ महज़ (शुद्ध लाभ) जैसे बच्चा का हिबा (उपहार) का क़बूल करना, आक़िल बच्चा बज़ाते ख़ुद हिबा क़बूल कर सकता है; और एक वह जिसमें नफ़अ का भी एहतमाल (संभावना) है और नुक़सान का भी, जैसे ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त इसमें वली की इजाज़त ज़रूरी होगी; और सरासर नुक़सान वाली बात, जैसे तलाक़, आज़ाद करना और हिबा करना, तो इसकी सेहत की कोई सूरत नहीं, वली की इजाज़त से भी नहीं, और यह तीसरी क़िस्म ही में शामिल है। उन्हें यह सहव (भूल) इसलिए लाहिक़ हुआ कि मातन (मूल लेखक) ने 'तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया' में मनही-अन्हु (वर्जित) के सवाल का ज़िक्र किया है। फिर यह लफ़्ज़ कहे हैं "हुरमत-ए-सवाल ला तक़्तसिरु अलल माल इलख" सवाल जो बे ज़रूरत-ए-शरिया हराम है यह सिर्फ़ माल...

---

1 अल-हदीक़ा अन-नदिय्या, आफ़ात अल-लिसान की बीसवीं नौअ, नूरिया रज़विया, फ़ैसलाबाद, 2/269

पेज 536/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

واشار سیدی العارف باللہ عبدالغنی النابلسی قدس سرہ، فی الحدیقۃ الی ان تفریجہ باذن الولی حیث قال فی النوع العشرین من آفات اللسان بعد مانقل المسألۃ عن الاشباہ وعللھا بما قدمنا مانصہ وظاھرہ الا ان یأذن الولی قال ونظیرہ عدم حل الشرب من کیزان الصبیان الا باذن الولی وکذلک فی اکل مامعھم اذا اعطوہ لاحد اھ فلا وجہ لصحتہ ولا باذن الولی وھذا من الثالث و وجہ ھذا السہو منہ رحمہ اللہ تعالی قول الماتن فی الطریقۃ المحمدیۃ حیث ذکر السؤال المنہی عنہ

عارف باللہ سید عبدالغنی نے اس بات کی طرف اشارہ کیا کہ اس کا حل یہ ہے کہ اگر ولی اجازت دے تو جائز ہے یہ بات انہوں نے آفات اللسان کی بیسویں نوع میں اس مسئلہ کو اشباہ سے نقل کرنے اور اس کو علّت بیان کرنے کے بعد کہی ہے جس کی عبارت ہم پہلے ذکر کر آئے ہیں اور ظاہر یہ ہے کہ "مگر یہ کہ ولی اجازت دے دے" اور اس کی مثال یہ ہے کہ بچوں کے کوزوں سے پانی پینا ولی کی اجازت ہی سے جائز ہے، اور اسی طرح دوسری کھانے والی اشیاء کا حال ہے بچے جب وہ کسی کو دیں۔ (ت)

اقول: رحم اللہ سیدی ورحمنا بہ (۱) انما الولایۃ نظریۃ ولیس للولی اتلاف مالہ ولا ان یأذن بہ غیرہ (۲) کیف وقد تقرر ان التصرفات ثلاثۃ نفع محض کقبول ھبۃ فیستبد بہ الصبی العاقل ودائر بین النفع والضرر کالبیع والشراء فیحتاج الی اذن الولی وضرر محض کالطلاق والعتاق والھبۃ ثم (۳) قال (حرمۃ السؤال لا تقتصر علی المال بل تعم الاستخدام خصوصاً اذا کان صبیاً او مملوکاً للغیر۔ (۴) اما صبی نفسہ

میں کہتا ہوں اللہ عبدالغنی پر رحم کرے اور ہم پر بھی ولی کی ولایت صرف نظری (بچہ کی بھلائی کیلئے) ہے ولی بچہ کا مال تلف نہیں کرسکتا ہے اور نہ دوسروں کو دے سکتا ہے، یہ بات طے شدہ ہے کہ تصرفات تین قسم کے ہیں نفع محض جیسے بچہ کا ہبہ کا قبول کرنا، عاقل بچہ بذاتِ خود ہبہ قبول کرسکتا ہے اور ایک وہ جس میں نفع کا بھی احتمال ہے اور نقصان کا بھی۔ جیسے خرید و فروخت اس میں ولی کی اجازت ضروری ہوگی اور سراسر نقصان والی بات، جیسے طلاق، آزاد کرنا اور ہبہ کرنا، تو اس کی صحت کی کوئی صورت نہیں، ولی کی اجازت سے بھی نہیں، اور یہ تیسری قسم ہی میں شامل ہے، اُن کو یہ سہو اس لئے لاحق ہوا کہ ماتن نے طریقہ محمدیہ میں منہی عنہ کے سوال کا ذکر کیا ہے۔ پھر یہ لفظ کہے ہیں "حرمۃ السؤال لا تقتصر علی المال الخ سوال جو بے ضرورت شرعیہ حرام ہے یہ صرف مال

---

1 الحدیقۃ الندیۃ النوع العشرون من افات اللسان نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۲۶۹

Fatawa Razawiya, Volume 2

I say: (1) This applies when the water and food belong to the guardian and he gives them to a child by way of permission (ibahah) and not as a gift (hibah). In this case, the guardian has the right to grant permission to whoever he wishes, as they remain in his ownership. This is contrary to when something is owned by the child; in that case, there is no meaning to the guardian's permission for its consumption without compensation, as it would necessitate wasting the minor's property without an equivalent, which is not permissible. The ruling from Al-Dhakhirah, Al-Munyah, and Mi'raj al-Dirayah has already been mentioned regarding water brought by a child from a valley: it is not permissible for his parents to drink from it unless they are poor (faqir). 1- (Urdu translation of the above): I say that if the water and food belong to the guardian and he has given them to the child for use (and not as a gift), then in such a case, the guardian can give permission to anyone else. This is because these two things still remain in the guardian's ownership. This is different from the situation where these items are in the child's ownership; in such a case, there is no question of the guardian's permission, because through the guardian's permission, the minor's property would necessarily be destroyed without compensation, which is not permissible. The issue from Al-Dhakhirah, Al-Munyah, and Mi'raj al-Dirayah has passed, stating that the water brought by a child from a valley is not permissible for parents to drink unless they are poor. (T)

In short, the problem is difficult and there is definitely hardship in it, and hardship is removed by clear text (nass). I say: And with Allah is success. The ownership of the child's water is not impure (najis) such that water becomes impure upon its falling. The prohibition is because the permissible (mubah) and the forbidden (mahzur) have mixed, to the extent that if it is possible to use the permissible without any part of the forbidden being included, it would undoubtedly be permissible. We have stated in Rahb al-Sahah in response to the third question that according to the scholars of Iraq, performing ablution (wudu) is not permissible at the specific site of occurrence of invisible impurity in a large tank, because the water is stationary and will not move. However, according to the scholars of Balkh, Bukhara, and Transoxiana, it is permissible from all spots because water is fluid by nature; the movement of winds, etc., will not let it stay in one place. Thus, wherever wudu is performed, there is no certainty of impurity. Even if it is from the specific site of occurrence, water that was certainly pure will not become impure due to doubt. Now, if the opinion of the Iraqis is taken, then only the water from that specific spot where the minor's owned water

fell will be prohibited for use, while the rest remains in its state of permissibility, as you have learned that there is no spreading in it, so it is like invisible impurity in a large tank (T). And if the majority opinion is taken—which is the correct one—then due to the possibility of movement, the certainty of the mixture of the minor's property is not in any specific location, but rather in an unknown and vague location. And upon such a state of certainty (2), when doubt arises regarding the continuation or cessation of that thing, certainty vanishes and the original ruling prevails, just as in the case of treading grain (daeen) (3) where oxen certainly urinate and a portion of the grain certainly becomes impure, but its exact location remains undetermined.

1- Radd al-Muhtar, in meaning, Chapter of Drinking, Al-Babiyah edition, Egypt, 5/312.

मैं कहता हूँ: (१) यह तब लागू होता है जब पानी और भोजन संरक्षक (वली) का हो और उसने इसे बच्चे को उपयोग की अनुमति (इबाहत) के रूप में दिया हो, न कि उपहार (हिबा) के रूप में। ऐसी स्थिति में संरक्षक किसी और को भी अनुमति दे सकता है जिसे वह चाहे। क्योंकि ये दोनों चीज़ें संरक्षक के स्वामित्व में बनी रहती हैं। यह उस स्थिति के विपरीत है जब वस्तु बच्चे के स्वामित्व में हो; ऐसी स्थिति में संरक्षक द्वारा बिना मुआवज़े के इसके उपभोग की अनुमति देने का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि इससे नाबालिग की संपत्ति को बिना किसी बदले के नष्ट करना अनिवार्य हो जाएगा, और यह अनुमत नहीं है। अज़-ज़खीरा, अल-मुन्याह और मिराज अल-दिरयाह का मसला घाटी से बच्चे द्वारा लाए गए पानी के बारे में पहले ही उल्लेख किया जा चुका है: माता-पिता के लिए इसे पीना तब तक जायज़ नहीं है जब तक वे निर्धन (फ़कीर) न हों। १- (उपरोक्त का उर्दू अनुवाद): यानी मैं कहता हूँ कि अगर पानी और खाना संरक्षक का है और उसने बच्चे को उपयोग के लिए दे रखा है (उपहार के रूप में नहीं), तो ऐसी स्थिति में संरक्षक किसी और को भी अनुमति दे सकता है, क्योंकि ये दो चीज़ें अब भी संरक्षक के स्वामित्व में शेष हैं। यह उस स्थिति से भिन्न है जब ये वस्तुएँ बच्चे के स्वामित्व में हों, तो ऐसी स्थिति में संरक्षक की अनुमति का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता, क्योंकि संरक्षक की अनुमति से नाबालिग की संपत्ति का बिना मुआवज़े के नष्ट होना आवश्यक हो जाएगा, और यह जायज़ नहीं है। और ज़खीरा, मुन्याह और मिराज अल-दिरयाह का मसला बीत चुका है कि बच्चा घाटी से जो पानी लाए, उसे माता-पिता के लिए पीना जायज़ नहीं है, सिवाय उस स्थिति के जब वे फ़कीर हों। (त)

कुल मिलाकर मसला कठिन है और इसमें निश्चित रूप से कठिनाई (हर्ज) है, और कठिनाई को शरीयत के स्पष्ट प्रमाणों (नस्स) द्वारा दूर किया जाता है। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से सफलता है। बच्चे के स्वामित्व वाला पानी अपवित्र (नजिस) नहीं है कि उसके गिरने से पानी नापाक हो जाए। वर्जना इस कारण है कि अनुमत (मुबाह) और वर्जित (महज़ूर) आपस में मिल गए हैं, यहाँ तक कि अगर अनुमत का उपयोग संभव हो और उसमें वर्जित का कोई हिस्सा न आए, तो निस्संदेह वह जायज़ होगा। और हमने राहब अल-साह में तीसरे सवाल के जवाब में बताया है कि इराक़ के उलेमा (विद्वानों) के नज़दीक बड़े तालाब (हौज़-ए-कबीर) में अदृश्य अशुद्धता गिरने के स्थान पर वज़ू करना जायज़ नहीं है, क्योंकि पानी स्थिर है और वह स्थानांतरित नहीं होगा। और बल्ख़, बुखारा और मावरान्नहर के उलेमा के नज़दीक सब जगहों से जायज़ है क्योंकि पानी स्वभाव से तरल है, हवाओं आदि की गति उसे एक जगह रहने नहीं देगी। तो जहाँ कहीं भी वज़ू किया जाए, वहाँ अशुद्धता होने

का यक़ीन नहीं है, भले ही वह गिरने के विशेष स्थान से हो। जो पानी यक़ीनन पाक (शुद्ध) था, वह संदेह से नापाक नहीं होगा। अब यहाँ अगर इराक़ियों का मत लिया जाए, तो विशेष रूप से उसी स्थान का पानी उपयोग के लिए मना होगा जहाँ नाबालिग के स्वामित्व वाला पानी गिरा है, बाकी अपनी अनुमत स्थिति पर रहेगा जैसा कि आप जान चुके हैं कि इसमें कोई फैलाव नहीं है, अतः यह बड़े तालाब में अदृश्य अशुद्धता की तरह था (त)। और अगर बहुमत (जुमहूर) का मत लिया जाए—और वही सही है—तो स्थानांतरण की संभावना के कारण बच्चे की मिल्कियत के मिश्रण का यक़ीन किसी निश्चित स्थान में नहीं है बल्कि अज्ञात और अस्पष्ट स्थान में है। और ऐसी २ यक़ीन की स्थिति पर जब उस वस्तु की स्थिरता या समाप्ति में संदेह उत्पन्न हो जाए, तो यक़ीन समाप्त हो जाता है और मूल नियम प्रभावी होता है, जैसे कि खलिहान में मढ़ाई (दाएं) ३ के समय बैल ज़रूर पेशाब करते हैं और अनाज का एक हिस्सा यक़ीनन नापाक हो जाता है, पर वह निर्धारित नहीं रहता।

१- रद अल-मुहतार, अर्थ के साथ, पीने का अध्याय, अल-बाबियाह संस्करण, मिस्र, ५/३१२। पृष्ठ ५३८/७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

فأقول: (۱) محله اذا كان الماء والطعام للولى اعطاهما الصغير على وجه الاباحة دون الهبة فحينئذ يكون للولى ان يأذن لمن شاء فبقائهما على ملكه بخلاف ما اذا كان الشئ مملوكاً للصغير فلا معنى اذاً لاذن الولى باستهلاكه من دون عوض وقد تقدمت مسألة الذخيرة والمنية ومعراج الدراية في ماء جاء به الصبى من الوادى لا يجوز لابويه الشرب منه الا فقيرين ۱- تو میں کہتا ہوں اگر پانی اور کھانا ولی کا ہے اور بطور اباحت (نہ بطور ہبہ) اس نے بچہ کو دے رکھا ہے تو ایسی صورت میں ولی کسی کو بھی اجازت دے سکتا ہے، کیونکہ یہ دو چیزیں اب بھی ولی کی ملکیت میں باقی ہیں یہ اس صورت سے مختلف ہے جبکہ یہ اشیاء بچہ کی ملکیت میں ہوں تو ایسی صورت میں ولی کی اجازت کا کوئی سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ہے کیونکہ ایسی صورت میں ولی کی اجازت سے صغیر کے مال کو بغیر عوض ضائع کرنا لازم آئے گا اور یہ جائز نہیں اور ذخیرہ، منیہ اور معراج الدرایہ کا مسئلہ گزر چکا ہے کہ بچہ وادی سے جو پانی لائے اس کو والدین کے لئے پینا جائز نہیں سوائے اس صورت کے کہ وہ فقیر ہوں۔ (ت)

غرض مسئلہ مشکل ہے اور اس میں ضرور حرج ہے اور حرج مدفوع بالنص ہے۔ وانا اقول : وباللہ التوفیق پانی کی ملک صبی ہوا نجس نہیں کہ اس کے گرنے سے اور پانی ناپاک ہو جائے حرمت اس وجہ سے ہے کہ مباح و محظور مختلط ہو گئے ہیں یہاں تک کہ اگر ممکن ہو کہ مباح استعمال کیا جائے اور اس میں کوئی حصہ محظور کا نہ آنے پائے تو بلاشبہ جواز ہو گا اور ہم نے رحب الساحہ جواب سوال سوم میں بیان کیا ہے کہ مشائخ عراق کے نزدیک حوض کبیر میں نجاست غیر مرئیہ کے موقع وقوع سے وضو جائز نہیں کہ پانی ٹھہرا ہوا ہے منتقل نہ ہو گی اور مشائخ بلخ و بخارا اور ماوراء النہر کے نزدیک سب جگہ سے جائز کہ پانی بالطبع سیال ہے ہواؤں وغیرہ کی

تحریک سے اسے ایک جگہ نہ رہنے دے گا تو جہاں کہیں وضو کیا جائے وہاں نجاست ہونے کا یقین نہیں اگرچہ خاص موقع وقوع سے ہو تو پانی کہ بالیقین طاہر تھا شک سے نجس نہ ہو گا اب یہاں اگر قول عراقیان لیا جائے جب تو خاص اسی جگہ کا پانی ممنوع الاستعمال ہوگا جہاں نابالغ کی ملک کا پانی گرا ہے باقی اپنی اباحت پر باقی ہے لما علمت انه لا تعدیة فیه فکان کغیر مرئیة فی حوض کبیر (جیسا کہ آپ کو معلوم ہے اس میں تجاوز نہیں یہ ایسا ہی ہے جیسا حوض کبیر میں نجاست غیر مرئیہ ہو) (ت) اور اگر قول جمہور لیا جائے اور وہی صحیح ہے تو بوجہ احتمال انتقال اختلاط ملک صبی کا یقین کسی موضع معین میں نہیں بلکہ موضع مجہول و مبہم میں ہے اور ایسے ۲ یقین پر جب اس شے کے بقا و زوال میں شک طاری ہو یقین زائل اور حکم اصل حاصل ہوتا ہے جیسے دائیں ۳ چلانے میں بیل ضرور پیشاب کرتے اور اناج کا ایک حصہ یقینا ناپاک ہوتا ہے مگر متعین نہ رہا

۱- رد المحتار بالمعنی باب الشرب البابی مصر ۵ / ۳۱۲ Page 538 of 711

Fatawa Rizvia, Volume Second

So, after division or gifting or donating some of it, everything will become pure, as each person will say it is possible the impure grains remained in or went to the other part. Similarly (1) if there is certainty of impurity on a sheet but the location is unknown or forgotten and no deliberation (taharri) towards any side was made, if any part of it is cleaned, it will become pure because now there is doubt about the continued existence of that definite but vague impurity. And more significant (2) than all is the issue that the compiler of the school of thought, Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), stated in 'Siyar al-Kabir' that we conquered a fortress and it is known that there is one dhimmi (protected non-Muslim) in it but we do not recognize him; the killing of those non-believers is forbidden. However, if some of them come out or someone is killed, then the killing of the remaining ones becomes permissible because that unknown certainty was removed by this doubt.

Allama Ibrahim al-Halabi has researched this in 'al-Ghunyah' and provided excellent and beneficial insights; may the Mercy of the Generous One be upon him. Refer to it as it is among the most important things to be gained. For us here, it is sufficient to quote his words: "If one side of a cloth becomes impure and is forgotten, then washing one side of it after deliberation (taharri) or without deliberation makes it pure. This is because by washing a part of it, while the original state of the cloth is purity, doubt arises regarding the presence of impurity, as it is possible that the washed part was the place of impurity. Thus, impurity is not ruled based on doubt. Similarly, al-Asbijabi mentioned in the commentary of 'al-Jami' al-Kabir', saying: 'I heard Sheikh al-Imam Taj al-Din Ahmad bin Abdul Aziz say that he likens it to an issue in 'Siyar al-Kabir', which is: if we conquer a fortress and there is an unknown dhimmi among them, it is not permissible to kill them due to the existence of a certain prevention. But if some are killed or expelled, it becomes permissible to kill the rest due to the doubt in the continued presence of the forbidden (the dhimmi).' This is the same here."

Ibrahim al-Halabi has researched this in 'Ghunyah' in a very superior and useful way; whoever wants to see it can consult it there. Here, quoting only this text will suffice: "If one edge of a garment became impure but it was forgotten which edge it was, then by washing one edge after deliberation or without deliberation, the garment will become pure." This is because the original state of a garment is purity, and when one edge is washed, there is now doubt about the presence of impurity, because there is a possibility that the part washed was the one that was impure. Therefore, a

ruling of impurity will not be given based on doubt. Al-Asbijabi has written similarly in the commentary of 'Jami-ul-Kabir', stating: "I heard my teacher Sheikh Taj-ud-Din Ahmad bin Abdul Aziz say that he used to analogize this to the issue in 'Siyar-e-Kabir' that if we conquered a fortress and there is a dhimmi in it but it's not known who he is, then killing the people of that fortress is not permissible, because a definite prevention exists. And if some were killed or removed, then killing the rest is permissible because there is doubt in the presence of the forbidden one (Muharram)." (T)

1. Ghunyatul Mustamli, Branches from Impurity, Suhail Academy Lahore, p. 204.

तो बँटवारे के बाद या उसमें से कुछ उपहार (हिबा) या दान (सदका) करने से सब पवित्र हो जाएगा क्योंकि हर व्यक्ति कहेगा कि संभव है कि अपवित्र अनाज दूसरे हिस्से में रह गया हो या चला गया हो। इसी तरह (1) चादर पर अपवित्रता का निश्चय है और स्थान ज्ञात नहीं है या याद नहीं रहा और किसी विशेष दिशा का निर्धारण (तहर्री) नहीं किया गया, यदि कहीं से भी उसे साफ कर लिया जाए तो वह पवित्र हो जाएगी क्योंकि अब उस निश्चित किन्तु अस्पष्ट अपवित्रता के बने रहने में संदेह हो गया। और सबसे (2) बढ़कर वह मसला है जिसे मज़हब के संकलनकर्ता इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने 'सियर कबीर' में फरमाया कि हमने एक किला फतह किया, इतना ज्ञात है कि उसमें एक ज़म्मी (संरक्षित गैर-मुस्लिम) है मगर उसे पहचानते नहीं, उन काफिरों की हत्या हराम है। हाँ, अगर उनमें से कुछ बाहर निकल जाएँ या कोई मारा जाए तो अब शेष की हत्या जायज़ हो गई क्योंकि वह अज्ञात निश्चय इस संदेह से समाप्त हो गया।

अल्लामा इब्राहिम अल-हलबी ने 'अल-गुनिया' में इसकी बहुत ही श्रेष्ठ और उपयोगी तरीके से तहकीक की है; उन पर मेहरबान (अल्लाह) की रहमत हो। इसे देखें क्योंकि यह हासिल की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से है। हमारे लिए यहाँ उनका यह कहना पर्याप्त होगा: "यदि कपड़े का एक किनारा नापाक हो गया और उसे भुला दिया गया, फिर तहर्री के साथ या बिना तहर्री के उसका एक किनारा धो लिया गया, तो वह पाक हो गया। क्योंकि कपड़े का एक हिस्सा धोने से, जबकि कपड़े की मूल स्थिति पवित्रता है, नापाकी के बने रहने में संदेह पैदा हो गया, क्योंकि यह संभावना है कि धोया गया हिस्सा ही नापाकी का स्थान हो। इसलिए संदेह के आधार पर नापाकी का फैसला नहीं किया जाएगा। इसी तरह अल-असबीजाबी ने 'शरह अल-जामि अल-कबीर' में उल्लेख किया है, उन्होंने कहा: 'मैंने शेख अल-इमाम ताज अल-दीन अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ को कहते सुना कि वे इसकी तुलना 'सियर अल-कबीर' के एक मसले से करते थे, वह यह है: यदि हम एक किला फतह करते हैं और उनमें कोई अज्ञात ज़म्मी है, तो एक निश्चित रुकावट की मौजूदगी के कारण उनकी हत्या करना जायज़ नहीं है। लेकिन अगर कुछ मारे जाते हैं या निकाल दिए जाते हैं, तो बाकी की हत्या जायज़ है क्योंकि वर्जित (ज़म्मी) की उपस्थिति में संदेह है।' यहाँ भी ऐसा ही है।"

इब्राहिम हलबी ने 'गुनिया' में इसकी शोध बहुत ही आला और मुफीद तरीके से की है; जिसे देखना हो वह वहां देख सकता है। यहाँ इसका केवल यह लेख उद्धृत करना काफी होगा: "अगर कपड़े का एक कोना नापाक हो गया मगर भूल गए कि कौन सा कोना है, तो सोच-विचार करके या बिना सोच-

विचार के एक कोना धो लिया तो कपड़ा पाक हो जाएगा।" क्योंकि कपड़े में मूल चीज़ पवित्रता है और जब एक कोना धो लिया गया तो अब नापाकी के होने में संदेह हो गया, क्योंकि संभावना है कि जो हिस्सा धोया गया है वही नापाक था, तो संदेह के आधार पर नापाकी का हुक्म नहीं लगाया जाएगा। असबीजाबी ने 'शरह जामे कबीर' में ऐसा ही लिखा है, फरमाया कि मैंने अपने शेख ताजुल दीन अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ को कहते हुए सुना, वह इसे 'सियर-ए-कबीर' के इस मसले पर कयास करते थे कि अगर हमने एक किला फतह किया और उसमें एक ज़म्मी है मगर पता नहीं कि कौन है, तो उस किले के लोगों की हत्या जायज़ नहीं है, क्योंकि यकीन के साथ एक रुकावट मौजूद है। और अगर कुछ को कत्ल कर दिया गया या निकाल दिया गया तो बाकी को कत्ल करना जायज़ है क्योंकि हराम करने वाले की मौजूदगी में शक है। (त)

1. गुनियातुल मुस्तमली, फ़ुरूअ मिन अन-नजासा, सुहैल एकेडमी लाहौर पृ. 204

पृष्ठ 539/711

تو بعد تقسیم یا اُس سے کچھ ہبہ یا صدقہ کرنے سے سب پاک ہو جائے گا کہ ہر ایک کہے گا کہ ممکن کہ ناپاک دانے دوسرے حصے میں رہے یا گئے ہوں، یوں ہی (۱) چادر پر ناپاکی کی یقین ہے اور جگہ معلوم نہیں یا یاد نہ رہی اور تحری کسی طرف نہیں پڑی کہیں سے پاک کر لی جائے پاک ہو جائے گی کہ اب اس متیقن مبہم کی بقا میں شک ہو گیا اور سب (۲) سے زائد وہ مسئلہ ہے کہ محرر مذہب امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ نے سیر کبیر میں ارشاد فرمایا کہ ہم نے ایک قلعہ فتح کیا اتنا معلوم ہے کہ اس میں ایک ذمی ہے مگر اُسے پہچانتے نہیں اُن کفار کا قتل حرام ہے ہاں اگر اُن میں سے بعض نکل جائیں یا کوئی قتل کر دے تو اب باقیوں کا قتل جائز ہو گیا کہ وہ یقینِ مجہول اس شک سے زائل ہو گیا۔

وقد حققه العلامة ابراهيم الحلبي في الغنية فافاد واجاد عليه رحمة الجواد فراجعه فانه من اهم مايستفاد* ويكفينا منه هنا قوله تنجس طرف من الثوب فنسيه فغسل طرفاً منه بتحر او بلا تحر طهر لان بغسل بعضه مع ان الاصل طهارة الثوب وقع الشك في قيام النجاسة لاحتمال كون المغسول محلها فلا يقضى بالنجاسة بالشك كذا اورده الاسبيجابى فى شرح الجامع الكبير قال وسمعت الشيخ الامام تاج الدين احمد بن عبدالعزيز بقوله ويقيسه على مسألة في السير الكبير هي اذا فتحنا حصناً وفيهم ذمى لايعرف لايجوز قتلهم لقيام المانع بيقين فلوقتل البعض اواخرج حل قتل الباقي للشك في قيام المحرم كذا هنا۔

اس کی تحقیق ابراہیم حلبی نے غنیہ میں بہت اعلٰی اور مفید طریق پر کی ہے جس کو دیکھنا ہو وہاں ملاحظہ کرے، یہاں اس کی صرف یہ عبارت نقل کرنا کافی ہوگی "اگر کپڑے کا ایک کنارہ ناپاک ہو گیا مگر بھول گیا کہ کون سا کنارہ ہے تو تحری کرکے یا بلا تحری ایک کنارہ دھولیا تو کپڑا پاک ہو جائے گا" کیونکہ کپڑے میں اصل طہارت ہے اور جب ایک کنارہ دھولیا تو اب نجاست

کے ہونے میں شک ہو گیا، کیونکہ جو حصہ دھویا گیا ہے اس میں امکان ہے کہ وہی ہو جو نجس تھا، تو شک کی بنیاد پر نجاست کا حکم نہیں لگایا جائے گا، اسبیجابی نے شرح جامع کبیر میں ایسا ہی لکھا ہے، فرمایا کہ میں نے اپنے شیخ تاج الدین احمد بن عبدالعزیز کو فرماتے ہوئے سنا وہ اس کو سیر کبیر کے اس مسئلہ پر قیاس کرتے تھے کہ اگر ہم نے ایک قلعہ فتح کیا اور اس میں ایک ذمی ہے مگر معلوم نہیں کہ کون ہے، تو اس قلعہ کے لوگوں کا قتل جائز نہیں، کیونکہ یقین کرنے کا مانع موجود ہے، اور اگر بعض کو قتل کر دیا گیا یا نکال دیا گیا تو باقی کو قتل کرنا جائز ہے کیونکہ محرم کی موجودگی میں شک ہے۔ (ت)

1 غنیۃ المستملی فروع من النجاسۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۰۴

Fatawa Razawiyya - Volume Two

Since this fine rule has become known, apply it here as well. Take out as much water (1) as the minor (NABALIGH) put into this cistern or well and give it to the minor. (Footnote 2). This giving will surely be permissible, because if there is the minor's ownership in it, it goes to the minor himself. This is contrary to pouring it out or drawing it out with a bucket and throwing it away, which is wasting the minor's property and is not permissible. Now that this much or more water has reached the minor, the remaining of the water he put in has become doubtful. So the certainty that it was for an unknown place has vanished, and the remaining water in the cistern and well has become permissible for use.

Then I say: A clear proof for this is the permissibility of an adult heir separating their own share from a minor heir's share in common fungible goods (mithliyyat) like wheat, etc. This division will remain valid and acceptable as long as the minor's share remains safe for them and is not lost. In 'Jami' al-Fussulayn', under 'Fatawa' and 'Jami' al-Saghar' from 'Zakheerah', it is stated:

Arabic Text	**Urdu Translation**
كيلى او وزنى بين حاضر و غائب او بين بالغ و صبى اخذ الحاضر او البالغ نصيبہ فانما تنفذ قسمتہ بلا خصم لوسلم نصيب الغائب والصبى حتى لو ہلک ما بقى قبل ان يصل الى الغائب او الصبى ہلک عليهما۔ ١	If any measurable (makil) or weighable (mawzun) thing is common between a present person and an absent person, or between an adult and a child, and the present person or adult takes their share, then this division without an opponent will be effective, provided the share of the absent person and the child remains intact. If that share is destroyed before reaching the absent person or the child, then only their share will be considered destroyed. (T)

Footnote 1: If it is said that whoever takes from free water (ma' mubah) becomes the owner, so this water which a person fills from a well or a free cistern and gives to a minor, he is giving his own property, and two ownerships cannot exist on one thing, so this water was not the minor's property. Then how was the exit of the minor's property possible upon its withdrawal?

Author's Response (I say): Since the minor's property is mixed in this water, it is now restricted water (ma' mahzur). The person filling it will not become its owner. What is filled is likely either the minor's owned water or a part of the free water. In the first case, the person filling cannot be the owner, and if it's the second case, then they will be. Ownership cannot be established through doubt and possibility. Therefore, the

possibility remains that this is the same water which was the minor's property. 12 Minhu Ghaffara-lahu (M)

Footnote 2: I say: In fact, even if the minor himself filled back the same amount or more water from it, the removal of the obstruction should still occur. Although water is not prohibited for a minor as mentioned in the fifth warning, and what he fills back, he will certainly be its owner, but this does not prevent the possibility that this time the same water came out which he had put in earlier. And this possibility is enough for the removal of the prohibition. And Allah the Almighty knows best. 12 Minhu Ghaffara-lahu (M)

---

1 Jami' al-Saghar with Jami' al-Fussulayn, Masail al-Qisma, Islami Kutub Khana, Karachi, 1/240.

फ़तावा रजविया - जिल्द सानी (भाग दो)

जब यह बारीक नियम (क़ायदा-ए-नफ़ीसा) मालूम हो गया, तो इसे यहाँ भी लागू करें। जितना (1) पानी उस नाबालिग ने इस हौज या कुएं में डाला है, उतना ही या उससे अधिक पानी निकाल कर उस नाबालिग (नोट 2) को दे दें। यह देना निश्चित रूप से जायज़ होगा क्योंकि यदि इसमें नाबालिग का स्वामित्व है, तो वह नाबालिग के पास ही जाता है। इसके विपरीत, पानी बहा देने या डोल खींचकर फेंक देने के मामले में, वह नाबालिग की संपत्ति को नष्ट करना है और यह जायज़ नहीं है। अब जबकि इतना या उससे अधिक पानी उस नाबालिग तक पहुँच गया, तो उसके द्वारा डाले गए पानी के बाकी रहने पर संदेह हो गया। अतः वह निश्चितता जो एक अज्ञात स्थान (मोज़े-ए-मझूल) के लिए थी, समाप्त हो गई और हौज व कुएं का शेष पानी उपयोग के लिए जायज़ हो गया।

फिर मैं कहता हूँ: इस पर स्पष्ट प्रमाण यह है कि गेहूँ आदि जैसी सामान्य वस्तुओं (मिसलियात) में बड़े वारिस का अपना हिस्सा नाबालिग वारिस के हिस्से से अलग कर लेना जायज़ है, और यह बँटवारा जायज़ और मान्य रहेगा बशर्ते कि नाबालिग का हिस्सा उसके लिए सुरक्षित रहे और नष्ट न हो जाए। 'जामे-अल-फुसूलैन' में 'फ़तावा' और 'जामे-अस-सग़ीर' में 'ज़खीरा' से वर्णित है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
كيلى او وزنى بين حاضر و غائب او بين بالغ و صبى اخذ الحاضر او البالغ نصيبه فانما تنفذ قسمته بلا خصم لوسلم نصيب الغائب والصبى حتى لو بلک ما بقى قبل ان يصل الى الغائب او الصبى هلک عليهما۔ ١	यदि कोई मापने योग्य (मकील) या तौलने योग्य (मौज़ून) वस्तु उपस्थित और अनुपस्थित के बीच, या वयस्क और बच्चे के बीच साझी है, और उपस्थित व्यक्ति या वयस्क ने अपना हिस्सा ले लिया, तो बिना विरोधी के भी यह बँटवारा प्रभावी हो जाएगा, बशर्ते अनुपस्थित व्यक्ति और बच्चे का हिस्सा सुरक्षित रहे। यदि वह हिस्सा अनुपस्थित व्यक्ति या बच्चे तक पहुँचने से पहले ही नष्ट हो गया, तो केवल उनका हिस्सा ही नष्ट माना जाएगा। (त)

नोट 1: यदि यह कहा जाए कि जो कोई सार्वजनिक जल (मा-ए-मुबाह) से पानी लेगा, वह उसका स्वामी होगा, तो यह पानी जो कोई व्यक्ति कुएं या सार्वजनिक हौज से भरकर नाबालिग को देगा, वह अपनी संपत्ति देगा। और एक ही वस्तु पर दो स्वामित्व नहीं हो सकते, तो यह पानी नाबालिग की संपत्ति नहीं था। फिर इसके निकलने से नाबालिग की संपत्ति का निकलना कैसे संभव हुआ?

लेखक का उत्तर (मैं कहता हूँ): चूँकि इस पानी में नाबालिग की संपत्ति मिश्रित है, इसलिए अब यह प्रतिबंधित जल (मा-ए-महज़ूर) है। भरने वाला इसका स्वामी नहीं होगा। जो भरा गया है, संभावना है कि वही नाबालिग के स्वामित्व वाला पानी हो या सार्वजनिक जल का हिस्सा हो। पहली स्थिति में भरने वाला स्वामी नहीं हो सकता, और यदि दूसरी स्थिति है तो होगा। स्वामित्व संदेह और संभावना से सिद्ध नहीं हो सकता। अतः यह संभावना बनी रही कि यह वही पानी है जो नाबालिग की संपत्ति थी। 12 मिन्हु गफ़र-लहू (म)

नोट 2: मैं कहता हूँ: बल्कि यदि नाबालिग ने स्वयं दोबारा उतना ही या उससे अधिक पानी उसमें से भर लिया, तो भी बाधा दूर हो जानी चाहिए। यद्यपि नाबालिग के लिए पानी वर्जित नहीं है जैसा कि पाँचवीं चेतावनी में बताया गया है, और वह जो दोबारा भरेगा वह निश्चित रूप से उसका स्वामी होगा, लेकिन यह इस संभावना को नहीं रोकता कि इस बार वही पानी आया हो जो उसने पहले डाला था। और यही संभावना प्रतिबंध हटाने के लिए पर्याप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12 मिन्हु गफ़र-लहू (म)

---

1 जामे-अस-सग़ीर मा' जामे-अल-फुसूलैन, मसाइल-अल-किस्मा, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/240.

جب یہ قاعدہ نفیسہ معلوم ہولیا یہاں بھی اس کا اجرا کریں جتنا (۱) پانی اس نابالغ نے ڈالا ہے اسی قدر یا اس سے زائد اس حوض یا کنویں سے عہد نکال کر اس نابالغ عہد ۲ کو دے دیں یہ دینا یقیناً جائز ہو گا کہ اگر اس میں ملک صبی ہے تو صبی ہی کے پاس جات ہے۔ بخلاف بہا دینے یا ڈول کھینچ کر پھینک دینے کے کہ وہ ملک صبی کا ضائع کرنا ہے اور یہ جائز نہیں اب کہ اس قدر یا زائد پانی اس صبی کو پہنچ گیا اس کے ڈالے ہوئے پانی کا باقی رہنا مشکوک ہو گیا تو وہ یقین کہ موضع مجہول کیلئے تھا زائل ہو گیا اور حوض و چاہ کا باقی پانی جائز الاستعمال ہو گیا۔

ثم اقول: اس پر واضح دلیل مثلیات مشترکہ مثلاً گیہوں وغیرہ میں وارث کبیر کا اپنا حصہ وارث نابالغ کے حصے سے جدا کر لینے کا جواز ہے اور اس کی یہ تقسیم جائز و مقبول رہے گی اگر نابالغ کا حصہ اس کیلئے سلامت رہے تلف نہ ہو جائے جامع الفصولین میں فتاوٰی اور جامع الصغار میں ذخیرہ سے ہے:

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
کیلی او وزنی بین حاضر و غائب او بین بالغ و صبی اخذ الحاضر او البالغ نصیبہ فانما تنفذ قسمتہ بلا خصم لوسلم نصیب الغائب والصبی حتی لو ہلک ما بقی قبل ان یصل الی الغائب او الصبی ہلک علیہما۔ ۱	کوئی مکیل یا موزوں شے حاضر و غائب کے درمیان یا بالغ اور بچہ کے درمیان مشترک ہے تو حاضر یا بالغ نے اپنا حصہ لے لیا اور اس کی تقسیم بلا خصم نافذ ہو جائے گی بشرطیکہ غائب اور بچہ کا حصہ باقی رہا اور اگر غائب اور بچہ تک پہنچنے سے قبل ہی وہ حصہ ہلاک ہو گیا تو ان کا حصہ ہی ہلاک ہو گا۔ (ت)

عہ ۱: اگر کہیئے مائے مباح سے جو لے گا مالک ہو گا تو یہ پانی کہ کوئی شخص کنویں یا مباح حوض سے بھر کر نابالغ کو دے گا اپنی ملک دے گا اور ایک شے پر دو ملکیں جمع نہیں ہو سکتیں تو یہ پانی ملک صبی نہ تھا پھر اس کے نکلنے سے ملک صبی کا نکل جانا کیونکر محتمل ہوا۔

اقول: جبکہ اس پانی میں ملک صبی مخلوط ہے تو اب مائے محظور ہے بھرنے والا اس کا مالک نہ ہو گا جو بھرا محتمل ہے کہ وہی مائے مملوک صبی ہو یا مائے مباح کا حصہ اول پر بھرنے والا اس کا مالک نہیں ہو سکتا ہے اور دوم ہے تو ہو گا اور ملک شک و احتمال سے ثابت نہیں ہو سکتی لہٰذا وہ احتمال قائم رہا کہ یہ وہی پانی ہے جو ملک صبی تھا ۱۲ منہ غفرلہ (م)

عہ ۲: اقول: بلکہ اگر خود نابالغ نے دوبارہ الٹا یا اس سے زائد پانی اس میں سے بھر لیا تو اب بھی رفع مانع ہو جانا چاہئے کہ اگرچہ نابالغ کیلئے پانی ممنوع نہیں جیسا کہ تنبیہ پنجم میں گزرا اور وہ جو دوبارہ بھرے گا ضرور اس کا مالک ہو گا مگر یہ اس احتمال کا مانع نہیں کہ اس بار وہی پانی آیا جو اس نے پہلے ڈال دیا تھا اور یہی احتمال رفع منع کو بس ہے واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (م)

---

۱ جامع الصغار مع جامع الفصولین مسائل القسمۃ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۴۰

Fatawa Razawiya, Volume II

It is apparent that here too, the ownership of the minor was so intermingled that separation was not possible, and it was unlawful for the adult to dispose of it to the extent of the minor's share. Separating the minor's share from it became the cause of the separation of the minor's share and the lawfulness of disposal for the adult.

[Left Column - Arabic] I say: (1) There is no doubt that water is 'mithli' (fungible), meaning its parts do not differ. Many have asserted this with certainty, as stated in 'Al-Khayriyah' regarding 'Ihya-ul-Mawat' (reclamation of dead lands) from 'Al-Walwalijiyah' and many other books. If a man's water is poured into a jar, it is said to him, 'Fill the water,' for the owner of the jar was the owner of the water, and it is among those things that have likes (fungibles), so he is liable for its equivalent. Even if it were 'qimi' (valuable/non-fungible), because it is not measured by volume nor weighed, as in 'Al-Khayriyah' regarding sales from 'Jami-ul-Fasulin' from the benefits of the author of 'Al-Muhit' and the fatwas of Rashid-ud-Din, water is 'qimi' according to Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both). In it, from 'Mukhtalifat' of Qadi Abu al-Qasim al-Amiri from Abu Yusuf from Abu Hanifa, water is not measured by volume nor by weight. Al-Tahawi said its meaning is that some of it is not sold for some of it. And from Muhammad (may Allah Ta'ala have mercy on him), water is 'makil' (measured by volume). In short, there is no doubt that it accepts separation like grain, rather more so, for sometimes the grains of a single food item vary slightly, whereas the drops of a single source of water do not.

[Right Column - Urdu Translation] I say: And there is no doubt in this that water is 'mithli', meaning because there is no difference in its parts, and many scholars have asserted this, as it is in Khayriyah (Ihya al-Mawat) and Walwalijiyah and in many books. If someone poured out the water of a jar, he would be told to fill the jar because the owner of the jar was also the owner of the water, and water is among the 'mithli' things, so he will be responsible for providing its equivalent. Even if it is a valuable thing, because it is neither measured by volume nor by weight, as stated in the sales section of Khayriyah from Jami' al-Fasulin, from Fawa'id of the author of Al-Muhit and Fatawa Rashid al-Din, that water according to Abu Hanifa and Abu Yusuf is a 'qimi' thing, and in it from Mukhtalifat of Abi al-Qasim al-Amiri from Abu Yusuf from Abu Hanifa that water is neither measured by volume nor by weight. Tahawi said its meaning is that some water is not sold for some other water. And it is narrated from Muhammad (may Allah have mercy on him) that water is 'makil'. In summary, water can be separated like in a jar, rather even more so, because sometimes there is a

difference in the grains of the same food item, but there is no difference in the drops of water. (T)

1. Fatawa Khayriyah, Chapter on Drinking, Beirut 2/186
2. Fatawa Khayriyah, Book of Sales, Beirut 1/228

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (द्वितीय)

ज़ाहिर है कि यहाँ भी बच्चे (नाबालिग) की मिल्कियत इस तरह मिली हुई थी कि उसे जुदा करना मुमकिन न था और बालिग के लिए उसमें तसर्रफ़ (खर्च/उपयोग) करना नाबालिग के हिस्से की हद तक नाजायज़ था। उसमें से बच्चे का हिस्सा अलग कर देना, बच्चे के हिस्से के जुदा होने और बालिग के लिए तसर्रफ़ की जायज़ियत का सबब बना।

[बायाँ कॉलम - अरबी] मैं कहता हूँ: (1) इसमें कोई शक नहीं है कि पानी 'मिस्ली' है, जिसका अर्थ है कि इसके हिस्सों में कोई अंतर नहीं है। कई लोगों ने इसे निश्चितता के साथ स्वीकार किया है, जैसा कि 'अल-खैरिया' में 'अल-वलवालिजिया' के'एहया-उल-मवात' के हवाले से और कई अन्य पुस्तकों में दिया गया है। यदि किसी व्यक्ति का घड़े में रखा पानी गिरा दिया जाए, तो उससे कहा जाएगा, 'पानी भर दो', क्योंकि घड़े का मालिक ही पानी का मालिक था, और यह उन चीज़ों में से है जिनका विकल्प मौजूद है (फंगिबल), इसलिए वह इसके बराबर के हिस्से के लिए उत्तरदायी है। भले ही यह 'कीमी' (गैर-फंगिबल) हो, क्योंकि इसे न तो आयतन से मापा जाता है और न ही तौला जाता है, जैसा कि 'अल-खैरिया' के बिक्री अध्याय में 'जामी-अल-फसुलिन' से 'अल-मुहीत' के लेखक के लाभ और रशीद-उद-दीन के फतवों में है, इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ (उन दोनों पर अल्लाह की कृपा हो) के अनुसार पानी 'कीमी' है। इसमें काज़ी अबू अल-क़ासिम अल-आमरी के'मुख्तलिफ़ात' से, अबू यूसुफ के माध्यम से अबू हनीफा से मिलता है कि पानी न तो आयतन से मापा जाता है और न ही वज़न से। अल-तहावी ने कहा कि इसका अर्थ यह है कि पानी के कुछ हिस्से को दूसरे के बदले नहीं बेचा जाता। और मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत है कि पानी 'मकील' (मापा जाने वाला) है। संक्षेप में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसे अनाज की तरह अलग किया जा सकता है, बल्कि उससे भी बेहतर, क्योंकि कभी-कभी एक ही खाद्य पदार्थ के दानों में थोड़ा अंतर होता है, जबकि पानी की बूंदों में कोई अंतर नहीं होता।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] मैं कहता हूँ: और इसमें कोई शक नहीं कि पानी मिस्ली है, यानी इसलिए कि इसके हिस्सों में फर्क नहीं है, और बहुत से उलेमा ने इसी पर यक़ीन ज़ाहिर किया है, जैसा कि 'ख़ैरिया' (एहयाउल मवात) और 'वलवालजिया' में है और बहुत सी किताबों में है। अगर किसी शख़्स ने मटके का पानी गिरा दिया तो उससे कहा जाएगा कि मटका भरे क्योंकि मटके का मालिक पानी का भी मालिक था, और पानी मिस्ली चीज़ों में से है तो वह उसके मिस्ल (बराबरी) का ज़िम्मेदार होगा। चाहे वह क़ीमती चीज़ हो, इसलिए कि वह न मकील है और न ही मौज़ून है जैसा कि

'ख़ैरिया' के खरीद-फ़रोख़्त के बाब में 'जामेउल फ़सूलैन' से, 'फ़वाएद' साहिब अल-मुहीत से और 'फ़तावा रशीद उद्दीन' में है कि पानी अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ के नज़दीक क़ीमती चीज़ है और इसमें 'मुख़्तलिफ़ात' अबी अल-क़ासिम अल-आमरी से अबू यूसुफ़ से अबू हनीफ़ा से है कि पानी न कीली है न वज़नी। तहावी ने फ़रमाया इसका मफ़हूम यह है कि पानी का एक हिस्सा दूसरे हिस्से के बदले नहीं बेचा जाता है और मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि पानी कीली है। खुलासा यह कि पानी को अलग किया जा सकता है जैसे मटके में, बल्कि उससे ज़्यादा क्योंकि अक्सर खाने की एक ही चीज़ के दानों में फर्क होता है लेकिन पानी के क़तरों में नहीं होता। (त)

1. फ़तावा ख़ैरिया, फ़स्ल फ़ी अल-शुर्ब, बेरूत 2/186
2. फ़तावा ख़ैरिया, किताब अल-ब्यूअ, बेरूत 1/228

सफ़हा 541 / 711

فتاویٰ رضویہ ، جلد ثانی

ظاہر ہے کہ یہاں بھی ملک صبی ایسی ہی مختلط تھی کہ جدا کرنا ممکن نہ تھا اور بالغ کو اس میں تصرف ناروا تھا بقدر حصہ صبی اُس میں سے الگ کر دینا حصہ صبی کا جدا ہو جانا اور بالغ کے لئے جوازِ تصرف کا سبب ہوا۔

[بایاں کالم - عربی] اقول: (۱) ولا شک ان الماء مثلی بمعنی ان اجزاء ہ لا تتفاوت و بہ جزم کثیرون کما فی الخیریۃ من احیاء الموات فی الولوالجیۃ و کثیر من الکتب لو صب ماء رجل کان فی الحب یقال لہ املاً الماء فان صاحب الحب مالک للماء و ھو من ذوات الامثال فیضمن مثلہ 'اہ وان کان قیمیا لانہ لا یکال و لا یوزن کما فی الخیریۃ من البیوع عن جامع الفصولین عن فوائد صاحب المحیط و فتاویٰ رشید الدین الماء قیمی عند ابی حنیفۃ و ابی یوسف رضی اللہ تعالٰی عنھما وفیہ عن مختلفات القاضی ابی القاسم العامری عن ابی یوسف عن ابی حنیفۃ الماء لا یکال و لا یوزن قال الطحاوی معناہ لا یباع بعضہ ببعض وعن محمد رحمہ اللہ تعالٰی الماء مکیل 'اہ وبالجملہ لا شک انہ یقبل الافراز کالحب بل ابلغ فربما تتفاوت قلیلا حبات طعام واحد بخلاف قطرات ماء واحد۔

[داہنا کالم - اردو] اقول : اور اس میں شک نہیں کہ پانی مثلی ہے یعنی اس لئے کہ اُس کے اجزاء میں تفاوت نہیں، اور بہت سے مشائخ نے اسی پر جزم کیا ہے، جیسا کہ خیریہ (احیاء الموات) اور ولوالجیۃ میں ہے اور بہت سی کتب میں ہے، اگر کسی شخص نے مٹکے کا پانی گرا دیا تو اس سے کہا جائے گا کہ مٹکا بھرے کیونکہ مٹکے کا مالک پانی کا بھی مالک تھا، اور پانی مثلی اشیاء میں سے ہے تو وہ اس کے مثل کا ضامن ہوگا اھ اگرچہ وہ قیمت والی چیز ہے، اس لئے کہ وہ نہ مکیل ہے اور نہ ہی موزون ہے جیسا کہ خیریہ کی بیوع میں جامع الفصولین سے، فوائد صاحب المحیط سے اور فتاویٰ رشید الدین میں ہے کہ پانی ابو حنیفہ اور ابو یوسف کے نزدیک قیمت والی چیز ہے

اور اس میں مختلفات ابی القاسم العامری سے ابو یوسف سے ابو حنیفہ سے ہے کہ پانی نہ کیلی ہے نہ وزنی ہے۔ طحاوی نے فرمایا اس کا مفہوم یہ ہے کہ پانی کا بعض، بعض سے بیچا نہیں جاتا ہے اور محمد رحمہ اللہ سے روایت ہے کہ پانی کیلی ہے اھ خلاصہ یہ کہ پانی کو الگ کیا جاسکتا ہے جیسے مٹکے میں، بلکہ زیادہ ہے کیونکہ بسا اوقات کھانے کی ایک ہی چیز کے دانوں میں فرق ہوتا ہے لیکن پانی کے قطرات میں نہیں ہوتا۔ (ت)

1 فتاوٰی خیریۃ فصل فی الشرب بیروت ۲/ ۱۸۶ 2 فتاوٰی خیریۃ کتاب البیوع بیروت ۱/ ۲۲۸

Fatawa Razviyya Volume II

Then I say: This method is to avoid sin, and if without it someone unknowingly or knowingly, out of ignorance or carelessness for Sharia laws, takes out so much water or more than that, although he is a sinner, the remaining water becomes permissible for use. This is because after taking out that much water, there is no certainty of its persistence in the pond or well, as Imam Muhammad said, "Their killing is not permissible, but if some are killed, the killing of the rest becomes permissible." (As Imam Muhammad says, their killing is not allowed; if some are killed, the killing of the remaining ones will be allowed. T)

Cautionary Note: From here it also became clear that flowing is neither necessary nor sufficient. If the child's water was so little that it could come out by splashing, then flowing is not needed. And if it was so much that the term "flowing" applies to its exit, but it doesn't come out in that quantity, then this flowing is not sufficient until that specific amount flows out.

| I say: (3) And by this, it differs from impurity because the removal of its attribute and the attainment of its opposite through flowing is due to a meaning in it, which is that it does not accept impurity by the decree of the text (Nass), and what it consists of, some of it purifies others. It does not necessarily follow from this that it is permissible to benefit from the child's property. Therefore, it is necessary to discharge an amount equal to what was poured. This is what appeared to me, and through it, the distress was uncovered in the best desired way. Praise be to Allah, the Glorified, the Remover of distresses, and blessings and peace be upon the most noble beloved, and upon his family and companions, the guides of hearts, Ameen. | I say, and for this reason it has moved away from impurity, because the removal of the attribute of impurity and the acquisition of its opposite due to its flowing is based on a meaning whose implication is that it (flowing) does not accept the attribute of impurity, because this is what is in the text (Nass). And what stands with it, some of its parts have purified others. From this, it does not necessarily follow that it is permissible to benefit from the child's ownership. So, it is necessary to exit in the amount of what flowed. This is the discussion that became clear to me, and through it, difficulties were removed in an excellent manner. All praise is for Allah, Who is the Remover of calamities, and blessings and peace be upon His most beloved and upon his family and companions. Ameen (T). |

(3) From number 32 to here, the description of a minor's water has been given with such detail and research that will not be found in books more than those few lines. It is possible to make this a separate treatise and name it "Ataa-un-Nabi li Afadhah Ahkam Ma-us-Sabi 1334 AH," and praise be to Allah. The supplementary treatise "Ataa-un-Nabi li Afadhah Ahkam Ma-us-Sabi" is complete.

(66) Water into which clear drops of used water (Ma-e-Mustamal) fell, especially when its stream reached it, as long as it remains less than the purifying water, it is permissible. However, due to disagreement, it is better to avoid it when those splashes did not fall while performing Wudu or Ghusl.

| And that is because it is narrated that it (used water) causes corruption absolutely, even if it is a little, except for what splashes into the vessel during purification, for that is pardoned. | This is because there is a narration regarding used water that used water absolutely, even if it is a little, makes the water corrupt. |

1 Ghunyat-ul-Mustamli, Furoo' min-an-Najasah, Suhail Academy, Lahore, p. 204.

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी

फिर मैं कहता हूँ: यह तरीक़ा गुनाह से बचने के लिए है, और अगर इसके बिना कोई व्यक्ति अनजाने में या जानबूझकर, अज्ञानता या शरीयत के आदेशों के प्रति लापरवाही के कारण उसमें से इतना पानी या उससे अधिक भर कर ले गया, तो हालाँकि वह गुनहगार होगा, शेष पानी इस्तेमाल के लिए जायज़ हो गया। क्योंकि इतना पानी निकल जाने से हौज़ या कुएँ में उसके बचे रहने का यक़ीन नहीं रहा, जैसा कि इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं, "उनका क़त्ल जायज़ नहीं है, लेकिन अगर कुछ मार दिए जाएँ तो बाक़ी का क़त्ल जायज़ हो जाता है।" (जैसा कि इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं कि उनका क़त्ल जायज़ नहीं है; अगर कुछ क़त्ल हो जाएँ तो बाक़ी का क़त्ल जायज़ होगा। त)

चेतावनी: यहीं से यह भी ज़ाहिर हुआ कि बहना न तो ज़रूरी है और न ही काफ़ी। अगर बच्चे का पानी इतना कम था कि छलकने में निकल सकता था, तो बहने की ज़रूरत नहीं। और अगर इतना ज़्यादा था कि उसके निकलने पर बहना (जर्यान) शब्द लागू होता है, लेकिन वह उतनी मात्रा में न निकले, तो यह बहना तब तक काफ़ी नहीं है जब तक कि उतनी मात्रा न निकल जाए।

| मैं कहता हूँ: (३) और इसी वजह से यह नजासत (अशुद्धता) से अलग है क्योंकि उसके गुण का समाप्त होना और बहने के कारण उसके विपरीत का प्राप्त होना उसमें एक अर्थ की वजह से है, और वह यह है कि वह पाठ (नस) के हुक्म से नजासत को स्वीकार नहीं करता है, और जो इसके साथ बना है, उसके कुछ हिस्से ने दूसरे को पाक (शुद्ध) कर दिया है। इससे यह लाज़िम नहीं आता कि बच्चे की संपत्ति से लाभ उठाना जायज़ हो। इसलिए जितनी मात्रा डाली गई है उतनी मात्रा का निकलना ज़रूरी है। यह वह है जो मुझ पर प्रकट हुआ और इसके द्वारा परेशानी बेहतरीन तरीक़े से दूर हो गई। अल्लाह सुभानहू के लिए तमाम प्रशंसा है जो दुख दूर करने वाला है, और दुरुद-ओ-सलाम हो सबसे सम्मानित महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और उनके घर वालों और साथियों पर जो दिलों के मार्गदर्शक हैं, आमीन। | मैं कहता हूँ और इसी वजह से नजासत से दूर हो गया, क्योंकि नजासत के गुण का ज़ायल (समाप्त) होना और जारी होने की वजह से उसके विपरीत का हासिल होना एक अर्थ से है जिसका अर्थ यह है कि वह गुण यानी जर्यान (बहना) नजासत को स्वीकार नहीं करता है, क्योंकि नस (ग्रंथ साक्ष्य) में यही है, और जो उसके साथ क़ायम है उसके बाज़ ने बाज़ को पाक कर दिया है, और इससे यह लाज़िम नहीं आता है कि बच्चा की मिलकियत से नफ़ा हासिल करना जायज़ हो, तो जितना बहा है उसकी मिक़दार में निकलना ज़रूरी है, यह बहस वह है जो मुझ पर ज़ाहिर हुई, और इससे उम्दा तौर पर परेशानियाँ दूर हो गईं। अल्लाह तआला के लिए हम्द है जो मुसीबतों

को दूर करने वाला है और उसके महबूब तरीन और उसकी आल-ओ-सहाबा पर सलात-ओ-सलाम। आमीन (त) |

(३) नंबर ३२ से यहाँ तक नाबलिग के पानी का बयान जिस तफ़सील और तहक़ीक़ से हुआ, किताबों में उन चंद लाइनों से ज़्यादा नहीं मिलेगा। मुमकिन है कि इसे एक स्वतंत्र शोधपत्र (रिसाला) बनाएँ और "अता-उन-नबी ली अफ़ाज़ह अहकाम मा-उस-सबी १३३४ हिजरी" नाम रखें, और अल्लाह के लिए तमाम प्रशंसा है। पूरक शोधपत्र "अता-उन-नबी ली अफ़ाज़ह अहकाम मा-उस-सबी" समाप्त हुआ।

(६६) जिस पानी में इस्तेमाल किए हुए पानी (मा-ए-मुस्तअमल) की साफ़ बूँदें गिरीं, ख़ासकर जब उसकी धार पहुँची, जब तक वह पाक पानी से कम रहे, हाँ मतभेद के कारण इससे बचना बेहतर है जबकि वह छींटें वज़ू और ग़ुस्ल करते समय न पड़ी हों।

| और वह यह है कि एक रिवायत है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी मुतलक़न (पूरी तरह से) बिगाड़ पैदा करता है, चाहे वह कम ही क्यों न हो, सिवाय उसके जो पाकी हासिल करते समय बर्तन में छलक जाए, क्योंकि वह माफ़ है। | यह इसलिए है क्योंकि इस्तेमाल किए हुए पानी के बारे में एक रिवायत है कि इस्तेमाल किया हुआ पानी मुतलक़न, चाहे कम हो, पानी को ख़राब कर देता है। |

१ ग़ुनियत-उल-मुस्तमली, फ़ुरूअ मिन-अन-नजासत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ २०४।

पृष्ठ ५४२ / ७११

ثم اقول: یہ طریقہ اثم سے بچنے کو ہے اور اگر بغیر اس کے کوئی شخص نادانستہ یا دیدہ و دانستہ براہ جہالت خواہ بے پرواہی احکام شریعت اُس میں سے اتنا پانی یا اُس سے زائد بھر کر لے گیا تو اگرچہ وہ گنہگار ہو باقی پانی جائز الاستعمال ہو گیا کہ اتنا نکل جانے سے حوض و چاہ میں اُس کی بقا پر یقین نہ رہا کما قال محمد لایجوز قتلھم فلو قتل البعض حل قتل الباقی ۱ (جیسا کہ امام محمد فرماتے ہیں ان کا قتل جائز نہیں اگر بعض قتل ہو جائیں تو باقی کا قتل جائز ہوگا۔ ت)

تنبیہہ اقول: یہیں سے یہ بھی ظاہر ہوا کہ جریان نہ ضرور نہ کافی اگر صبی کا پانی اتنا قلیل تھا کہ چھلکنے میں نکل سکتا تھا تو جریان کی حاجت نہیں۔ اور اگر اتنا کثیر تھا کہ جتنے خروج پر جریان صادق آتا ہے اس میں نہ نکلے گا تو یہ جریان کافی نہیں جب تک اُس قدر نکل نہ جائے۔

| اقول: (۳) وبہ فارق النجاسۃ لان زوال وصفھا وحصول ضدھا بالجریان لمعنی فیہ وھو انہ لایقبل النجاسۃ بحکم النص وما قام بہ طھر بعضہ بعضاً ولایلزم منہ حل الانتفاع بملک الصبی فلابد من خروج قدر المصبوب، ھٰذا ماظھر لی وقد انکشفت بہ الغمۃ علی احسن وجہ مطلوب والحمد للہ سبحانہ کاشف الکروب والصلوۃ والسلام علی اکرم محبوب وعلی آلہٖ وصحبہ ھداۃ القلوب، آمین۔ | میں کہتا ہوں اور اسی وجہ سے نجاست سے دور ہوگیا، کیونکہ نجاست کے وصف کا زائل ہونا اور جاری ہونے کی وجہ سے اس کی ضد کا حاصل ہونا ایک معنی سے ہے جس کا مفہوم یہ ہے کہ وہ وصف یعنی جریان نجاست کو قبول نہیں کرتا ہے، کیونکہ نص میں یہی ہے، اور جو اس کے ساتھ قائم ہے اس کے بعض نے بعض کو پاک کردیا ہے، اور اس سے یہ لازم نہیں آتا ہے کہ بچہ کی ملک سے نفع حاصل کرنا جائز ہو، تو جتنا بہا ہے اُس کی مقدار میں نکلنا ضروری ہے، یہ بحث وہ ہے جو مجھ پر ظاہر ہوئی، اور اس سے عمدہ طور پر پریشانیاں دُور ہوگئیں۔ اللہ تعالٰی کیلئے حمد

ہے جو مصیبتوں کو دُور کرنے والا ہے اور اس کے محبوب ترین اور اس کی آل و صحابہ پر صلوٰۃ وسلام۔ آمین (ت) |

(۳) نمبر ۳۲ سے یہاں تک نابالغ کے پانی کا بیان جس تفصیل و تحقیق سے ہوا کتابوں میں اُس چند سطروں سے زائد نہ ملے گا۔ ممکن ہے کہ اسے رسالہ مستقل کیجئے اور عطاء النبی لافاضۃ احکام ماء الصبی ۱۳۳۴ھ نام رکھئے، واللہ الحمد۔ رسالہ ضمنیہ عطاء النبی لافاضۃ احکام ماء الصبی تمام ہوا۔

(۶۶) جس پانی میں مائے مستعمل کے واضح قطرے گرے خصوصاً جبکہ اس کی دھار پہنچی جب تک مطہر پانی سے کم رہے ہاں بوجہ خلاف بچنا مناسب تر ہے جبکہ وہ چھینٹیں وضو و غسل کرتے ہیں نہ پڑی ہوں۔

| وذلک انہ روی الافساد مطلقاً وان قل الاما ترشش فی الاناء عند التطھر فھو عفو | یہ اس لئے کہ مستعمل پانی کے بارے میں ایک روایت ہے کہ مستعمل مطلقاً خواہ قلیل ہو، پانی کو فاسد کردیتا ہے |

۱ غنیۃ المستملی فروع من النجاسۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۰۴

Fatawa Razawiyya, Volume II ...to avoid hardship. No weight is given to the absolute [ruling] while it is stated in al-Bada'i that it is corrupt [fasid].^1 It is narrated that corruption [is caused] by a large amount. Then, there are two views on the definition of 'large amount' [kathir]: either it is clearly visible in the pure water, or it flows into it. In al-Jami' al-Saghir by Imam Qadi Khan [it is stated that] splashes of used water [ghusala] in water do not corrupt it if they are few. This is narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), and because of necessity, a small amount is pardoned. They discussed [the definition of] 'small amount' [qalil] from Muhammad: what is like the tips of needles is small. From al-Karkhi: if the places where drops fell are visible in the water, it is 'large', and if they are not visible, like dew, it is 'small'.^2 This was quoted in Zahr al-Rawd. In al-Khulasa: if a person in a state of major ritual impurity [junub] bathes and some splashes of his washing fall into his vessel, the water is not corrupted. However, if it flows into it, it corrupts it. The same applies to the basin of a bathhouse [hammam]. According to Muhammad, it does not corrupt it as long as it does not overpower it, meaning it does not remove its purity.^3 Then some explained it by saying that the water is assumed to be stagnant and small, so the used water falling into it does not move from its place. This was pointed out in Wajiz al-Kardari when it says: performing ablution [wudu] from its cellar is not permissible because...

1. Bada'i al-Sana'i, Taharah Haqiqiyah, Saeed Company Karachi 1/68
2. Jami' al-Saghir by al-Qadi Khan
3. Khulasa al-Fatawa with al-Hindiyya, Used Water, Nawal Kishore Lucknow 1/8

फतवा रज़विया, जिल्द दूसरी ...कठिनाई से बचने के लिए। उस निरपेक्ष कथन का कोई महत्व नहीं है जबकि 'बदाइ' में स्पष्ट उल्लेख है कि यह फासिद (दूषित) है।^1 और एक रिवायत में बड़ी मात्रा (कथीर) को फासिद करने वाला कहा गया है, फिर कथीर की परिभाषा में दो विचार हैं: या तो वह पवित्र पानी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे, या वह बहकर उसमें समा जाए। इमाम काज़ी ख़ान की 'जामे सगीर' की व्याख्या में है कि यदि धोने का पानी (ग़साला) कम मात्रा में पानी में गिरे तो वह पानी को फासिद नहीं करेगा, यही हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है। साथ ही आवश्यकता के कारण कम मात्रा क्षम्य है। अब उन्होंने 'क़लील' (कम मात्रा) के बारे में चर्चा की है। इमाम मुहम्मद से वर्णित है कि यदि प्रयुक्त पानी की छीटें सुई की नोक के बराबर हों तो वह क़लील है। और इमाम करखी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फरमाया कि यदि पानी में गिरने की जगह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो तो वह कथीर है, अन्यथा वह शबनम की बूंदों की तरह क़लील है।^2 इस विषय को 'ज़हर अल-रौद' में उद्धृत किया गया है। और 'खुलासा' में है कि यदि कोई जुनुबी (अशुद्ध) व्यक्ति स्नान करते समय अपने बर्तन में छीटें गिरा दे तो उससे पानी अशुद्ध नहीं होगा। यदि वह बहकर बर्तन में गिरा तो पानी नापाक हो जाएगा। हमाम के हौज का भी यही नियम है। इमाम मुहम्मद के अनुसार, इस स्थिति में पानी नापाक नहीं होगा जब तक कि वह उस पर हावी न हो जाए, यानी उसकी पवित्रता समाप्त न हो जाए।^3 फिर कुछ ने इसकी व्याख्या यह कहकर की है कि पानी को स्थिर और कम माना गया है, इसलिए उसमें गिरने वाला प्रयुक्त पानी अपने स्थान से नहीं हटता। 'वजीज़ अल-करदरी' में इसकी ओर संकेत किया गया है जब वह कहता है: तहखाने के पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि...

1. 'बदाइ अल-सनाइ', तहारत हक़ीक़िया, सईद कंपनी कराची 1/68
2. काज़ी ख़ान की 'जामे सगीर'
3. 'खुलासा अल-फतवा' अल-हिंदिया के साथ, प्रयुक्त जल, नवल किशोर लखनऊ 1/8

पृष्ठ 543 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی دفعاً للحرج ولا عبرة لمن اطلق وقد نص فی البدائع انه فاسد۸1 - مگر طہارت کے وقت جو چھینٹے پانی والے برتن میں پڑیں وہ معاف ہیں تاکہ حرج لازم نہ آئے، ان چھینٹوں کے بارے میں اطلاق کا اعتبار نہیں ہو گا حالانکہ بدائع میں اس کو فاسد کہا ہے۔ وروی الافساد بالکثیر ثم الکثرة باستبانة مواقع القطر فی الماء الطهور ان یسیل فیه سیلانا قولان ففی الجامع الصغیر للامام قاضی خان انتضاح الغسالة فی الماء اذا قل لا یفسد الماء یروی ذلك عن ابن عباس رضی الله تعالی عنهما ولان فیه ضرورة فیعفی قلیله وتکلموا فی القلیل عن محمد و ما کان مثل رؤس الابر فهو قلیل وعن الکرخی ان کان یستبین مواقع القطر فی الماء فکثیر و ان کان لا یستبین کالطل فقلیل۸2 اه نقله فی زهر الروض اور ایک روایت میں کثیر کو فاسد کرنے والا کہا گیا، پھر کثیر کی تعریف میں دو قول ہیں، یا تو پاک پانی میں وہ نمایاں طور پر معلوم ہو یا مستعمل پاک پانی میں بہہ کر داخل ہو، پھر امام قاضی خان کی شرح جامع صغیر میں ہے کہ دھوون اگر کم مقدار میں پانی میں گرا تو پانی کو فاسد نہیں کرے گا یہی حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مروی ہے نیز ضرورت کی بنا پر قلیل معاف ہوگا۔ اب انہوں نے قلیل کے بارے میں بحث کی ہے۔ امام محمد سے مروی ہے کہ اگر مستعمل پانی کے چھینٹے سوئی کے سوراخ کے برابر ہوں تو قلیل ہے اور امام کرخی رحمہ اللہ نے فرمایا کہ اگر پانی میں گرنے کی جگہ نمایاں معلوم ہو تو کثیر ہے ورنہ قلیل ہے جیسے شبنم کے قطرے، اس مضمون کو زہر الروض میں نقل کیا ہے۔ وفی الخلاصة جنب اغتسل فانتضح من غسله شیء فی انائه لم یفسد علیه الماء اما اذا کان یسیل فیه سیلانا افسده وکذا حوض الحمام علی هذا وعلی قول محمد لا یفسده مالم یغلبه علیه یعنی لا یخرجه من الطهوریة۸3 اه ثم علله بعضهم بان الماء مفروضا را کدا قلیلا فلا ینتقل الماء المستعمل الواقع فیه من موقعه الیه اشار فی وجیز الکردری اذ یقول التوضی من سردابه لا یجوز لانه اور خلاصہ میں ہے کہ اگر جنبی شخص سے غسل کرتے

وقت اپنے برتن میں چھینٹے پڑ گئے تو اس سے پانی نجس نہ ہوگا۔ اگر غسالہ بہہ کر برتن میں پڑا تو پھر برتن کا پانی ناپاک ہو جائے گا۔ حمام کے حوض کا بھی یہ حکم ہے۔ اور امام محمد کے قول کے مطابق اس صورت میں ناپاک نہ ہو گا تا وقتیکہ مغلوب نہ ہو جائی

1 بدائع الصنائع طهارة حقيقية سعيد كمپنى كراچى ۶۸/۱ 2 جامع صغير للقاضى خان 3 خلاصة الفتاوى مع الهندية الماء المستعمل نولكشور لكهنؤ ۸/۱

Fatawa Rizvia, Volume 2

"It is used repeatedly." That is, it will not be removed from its purifying nature (tahuriyyat).

Then some, explaining the reason, said that the water which is assumed is stagnant and small in quantity, so the used (mustamal) water that falls into it will not move from the place where it fell. Imam Kurdari in his 'Wajiz' pointed towards this case when he said that performing ablution (wudhu) in a small basin is not permissible because this water comes into use again. (T)

I say (Aqool): It becomes necessary for them to allow it if one moves the water at every handful or scoops every time from a place other than where the wash water falls. Others say that used water, being of the same genus as absolute water, will not vanish in it and will affect the whole because it is less. This is unlike milk or sheep's urine according to the opinion of Imam Muhammad regarding its purity. Thus they differed, but the correct and relied-upon view in the school (madhhab) is to consider predominance (ghalba). Therefore, it does not leave the state of being purifying as long as the absolute (mutlaq) water is more than the used water. This is what the Ummah has followed and the Imams have validated as the correct path. (T)

These were 66 types of water in which there was no mixture of another substance at all, or if there was, it was not of a non-water substance. Now, those are the waters in which there is a mixture of a non-water substance. (67 & 68) Water into which saliva or nasal discharge, i.e., spit or phlegm or nasal mucus falls; performing wudhu with it is permissible but disliked (makruh). It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

"When water is mixed with mucus or saliva, performing wudhu with it is permissible and it is disliked (makruh)." (T)

(69) Water in which some amount of soil, sand, or mud is mixed, as long as its flow remains on the limbs water's...

1. Fatawa Bazzaziya, Chapter on Basins, Noorani Kutub Khana Peshawar 2/71
2. Fatawa Qazi Khan, Section on what wudhu is not permissible with, Naval Kishore Lucknow 1/9 Page 544 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

"इसका बार-बार उपयोग किया जाता है।" यानी यह इसे शुद्धता (तहूरियत) से बाहर नहीं निकालेगा।

फिर कुछ ने इसका कारण बताते हुए कहा कि जो पानी मान लिया गया है वह स्थिर और अल्प है, इसलिए इसमें गिरने वाला प्रयुक्त (मुस्तमल) पानी अपने गिरने के स्थान से विस्थापित नहीं होगा। इमाम कुरदरी ने अपनी 'वजीज़' में इसी स्थिति की ओर संकेत किया है जब उन्होंने कहा कि छोटे हौज़ में वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि यह पानी दोबारा इस्तेमाल में आता है। (त)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): उनके लिए यह अनुमति देना आवश्यक होगा यदि पानी को हर अंजलि पर हिलाया जाए या हर बार धुलाई वाले स्थान के बजाय दूसरी जगह से पानी निकाला जाए। दूसरों ने कहा कि प्रयुक्त पानी पूर्ण (मुतलक़) पानी की ही प्रजाति का होने के कारण उसमें विलीन नहीं होगा और कम होने के कारण पूरे को प्रभावित करेगा। यह दूध या भेड़ के पेशाब के विपरीत है इमाम मुहम्मद के अनुसार उनकी शुद्धता के बारे में। इस तरह मतभेद है, लेकिन मज़हब में सही और विश्वसनीय विचार प्रभुत्व (ग़ल्बा) पर विचार करना है। इसलिए, जब तक पूर्ण पानी प्रयुक्त पानी से अधिक है, तब तक यह शुद्ध करने वाला बना रहेगा। यही उम्मत का अमल और इमामों का सही माना हुआ मत है। (त)

ये 66 वे पानी थे जिनमें किसी अन्य चीज़ का बिल्कुल मेल नहीं था, या था तो वह गैर-पानी का नहीं था। अब वे पानी हैं जिनमें गैर-पानी का मेल है। (67 और 68) वह पानी जिसमें लार या नाक का पानी यानी थूक या खंकार या नाक की नली गिर जाए, उससे वज़ू जायज़ है लेकिन मकरूह (नापसंद) है। फ़तावा इमाम क़ाज़ी खान में है:

"जब पानी में बलगम या लार मिल जाए तो उससे वज़ू जायज़ है और मकरूह है।" (त)

(69) वह पानी जिसमें कुछ मात्रा में मिट्टी, रेत, या कीचड़ मिल जाए जब तक अंगों पर उसकी तरलता बनी रहे...

1. फ़तावा बज़ाज़िया, हियाज़ का प्रकार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 2/71
2. फ़तावा क़ाज़ी खान, वज़ू न होने वाली चीज़ों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/9 पेज 544/711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

یتکر الاستعمال اھ۔ یعنی اس کو طہوریت سے نہیں نکالے گا اھ

پھر بعض نے اس کی وجہ بیان کرتے ہوئے کہا کہ جو پانی فرض کیا گیا ہے وہ ٹھہرا ہوا قلیل ہے تو مستعمل پانی جو اس میں گرا ہے اپنے گرنے کی جگہ سے اس کی طرف منتقل نہ ہوگا۔ امام گردری کی وجیز میں اسی صورت کی طرف اشارہ کیا ہے، جب انہوں نے یہ کہا کہ چھوٹے حوض میں وضو کرنا جائز نہیں کیونکہ یہ پانی دوبارہ استعمال میں آتا ہے۔ (ت)

اقول: ویلزمھم التجویز اذا حرك الماء عند كل غرفة او اغترف كل مرة من غير موقع الغسالة وأخرون بأن الماء المستعمل من جنس المطلق فلا يستهلك فيه فيؤثر في كله لقلته بخلاف اللبن اوبول الشاة على قول محمد بطهارته هكذا اختلفوا والصحيح المعتمد في المذهب الاعتبار بالغلبة فلا يخرج عن الطهورية مادام اكثر من المستعمل هو الذى اعتمده الامة وصححه الائمة۔ میں کہتا ہوں ان کو یہ قول کرنا لازم ہوگا کہ اگر ہر چلو پر پانی کو حرکت دے یا ہر دفعہ غسالہ کی بجائے دوسری جگہ سے چلو لے تو وضو جائز ہونا چاہئے۔ بعض نے کہا کہ مستعمل پانی مطلق پانی کا ہم جنس ہونے کی وجہ سے اس میں فنا نہیں ہوگا اور اس کے کل میں اثر کرے گا کیونکہ وہ کم ہے۔ بخلاف دودھ یا بکری کے پیشاب کے بقول امام محمد، کیونکہ وہ اس کی طہارت کے قائل ہیں اس طرح مستعمل پانی کے بارے میں یہ اختلاف ہے لیکن صحیح اور مذہب قابلِ اعتماد یہ ہے کہ اس میں غلبہ کا اعتبار ہے لہذا جب تک مطلق پانی غالب اور زیادہ ہے تو مستعمل پانی کے ملنے سے ناپاک نہ ہوگا اور قابلِ طہارت رہے گا، یہی اُمت کا معمول اور ائمہ کرام کا صحیح کردہ مسلک ہے۔ (ت)

یہ ۶۶ وہ پانی تھے جن میں شئی غیر کا اصلاً خلط نہ تھا یا تھا تو آبِ غیر کا نہ غیر آب کا۔ اب وہ پانی ہیں جن میں غیر آب کا خلط ہے۔ (۶۷ و ۶۸) وہ پانی جس میں آبِ دہن یا آبِ بینی یعنی تھوک یا کھنکار یا ناک کی ریزش پڑ جائے اس سے وضوء جائز مگر مکروہ ہے۔ فتاوٰی امام قاضی خان میں ہے:

الماء اذا اختلط بالمخاط اوبالبزاق جاز به التوضی ویکره - اگر پانی میں تھوک یا ناک کا پانی گرے تو اس سے وضو جائز ہے مگر مکروہ ہے۔ (ت)

(۶۹) وہ پانی جس میں مٹی، ریتا، کیچڑ کسی قدر مل جائے جب تک اس کی روانی باقی ہو اعضا پر پانی کی

1 فتاوٰی بزازیہ نوع فی الحیاض نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۷۱ 2 فتاوٰی قاضی خان فصل فیما لا یجوز به التوضی نولکشور لکھنو ۱/ ۹ Page 544 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume II

...as follows. (70) Similarly, floodwater, no matter how muddy it is, even if its taste along with its color has changed, if it has washed away nothing but sand and soil, [it is pure] as long as its color, taste, or smell has not changed due to impurity. (71) Similarly, those rivers that become muddy during the rainy season. Imam Malik al-Ulama states in Bada'i': - If absolute water is changed by mud or soil, performing ablution (Wudu) with it is permissible. (Footnote 1)

Muhaqqiq 'ala al-Itlaq stated in Fath: - There is no harm in performing ablution with floodwater mixed with mud, provided that the liquidity of the water is dominant. If the mud is dominant, then it is not permissible. (Footnote 2)

It is mentioned in Jauharah al-Nayyirah: - It is specifically mentioned because floodwater also carries scum, wood, and leaves. (Footnote 3)

It is mentioned in Wajiz al-Kardari: - If floodwater is thin enough to flow over the limbs, performing ablution with it is permissible. (Footnote 4)

It is mentioned in Munyah: - Purification is permissible with water mixed with a pure substance that has changed one of its qualities, such as floodwater and water mixed with saffron, provided that...

Footnotes: 1. Bada'i' al-Sana'i', Al-Majid al-Sa'id Company, Karachi, 1/15 2. Fath al-Qadir, Chapter on water that is permissible etc., Sukkur, 1/25 3. Jauharah al-Nayyirah, Book of Purification, Imdadiya, Multan, 1/14 4. Fatawa Bazzaziyya with al-Hindiyya, Section on used water etc., Peshawar, 4/10

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

...इस प्रकार है। (70) इसी प्रकार बाढ़ का पानी चाहे वह कितना ही गंदला हो, भले ही रंग के साथ उसका स्वाद भी बदल गया हो, यदि वह रेत और मिट्टी के अलावा कुछ और बहाकर नहीं लाया है, [तो वह पवित्र है] जब तक कि अशुद्धता (नजासत) के कारण उसका रंग, स्वाद या गंध न बदल जाए। (71) इसी प्रकार वे नदियाँ जो वर्षा ऋतु में गंदली हो जाती हैं। इमाम मलिक अल-उलमा 'बदाइअ' में फ़रमाते हैं: - यदि मुतलक़ (शुद्ध) पानी कीचड़ या मिट्टी से बदल गया हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। (पाद-टिप्पणी 1)

मुहक्किक अलल इतलाक़ ने 'फ़तह' में फ़रमाया: - बाढ़ के उस पानी से वज़ू करने में कोई हर्ज़ नहीं है जिसमें कीचड़ मिला हो, बशर्ते कि उसमें पानी का पतलापन (रक़्क़त) अधिक हो, और यदि कीचड़ अधिक हो तो जायज़ नहीं। (पाद-टिप्पणी 2)

'जौहरा नय्यरा' में है: - इसे विशेष रूप से उल्लेख किया गया है क्योंकि बाढ़ के पानी में मैल-कुचैल, लकड़ी और पत्ते आदि भी बहकर आते हैं। (पाद-टिप्पणी 3)

'वजीज़ करदरी' में है: - बाढ़ का पानी यदि इतना पतला हो कि अंगों पर बहता हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। (पाद-टिप्पणी 4)

'मुनिया' में है: - उस पानी से पवित्रता (तहारत) जायज़ है जिसमें कोई पाक (शुद्ध) चीज़ मिल गई हो और उसने उसके गुणों में से किसी एक गुण को बदल दिया हो, जैसे बाढ़ का पानी और वह पानी जिसमें ज़ाफ़रान (केसर) मिल गया हो, बशर्ते कि...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. बदाइअ अस्-सनाइअ, अल-मजीद अल-सईद कंपनी, कराची, 1/15 2. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-मा अल्लज़ी यजूज़ु अलख, सुक्कुर, 1/25 3. जौहरा नय्यरा, किताबुत् तहारत, इमदादिया, मुल्तान, 1/14 4. फ़तावा बज़्ज़ाज़िया मअ अल-हिंदिया, नौ' अल-मुस्तअमल अलख, पेशावर, 4/10

طرح ہے۔ (۷۰) یونہیں اہلے کا پانی اگرچہ کتنا ہی گدلا ہواگرچہ رنگ کے ساتھ مزہ بھی بدلا ہوا گر ریتے مٹی کے سوا کچھ بھی بہا کر لایا ہو جب تک نجاست سے رنگ یا مزہ یا بونہ بدلے۔ (۷۱) یونہیں وہ ندیاں جو برسات میں گدلی ہو جاتی ہیں۔ امام ملک العلماء بدائع میں فرماتے ہیں: لوتغیر الماء المطلق بالطین اوبالتراب یجوز التوضئ بہ۔ 1 | اگر مطلق پانی کیچڑ یا مٹی سے تبدیل ہو گیا تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت) محقق علی الاطلاق نے فتح میں فرمایا: لاباس بالوضوء بماء السیل مختلطا بالطین ان کانت رقة الماء غالبة فان کان الطین غالبا فلا۔ 2 | سیلاب کا پانی جس میں کیچڑ کی آمیزش ہو اُس سے وضو جائز ہے بشرطیکہ اس میں پانی کی رقت غالب ہو اور اگر کیچڑ غالب ہو تو جائز نہیں۔ (ت) جوہرہ نیرہ میں ہے : خصہ بالذکر لانہ یاتی بغثاء واشجار واوراق۔ 3 | بطورِ خاص اس کو ذکر کیا کیونکہ سیلاب کے پانی میں میل کچیل، درخت اور پتے وغیرہ بھی بہہ کر آتے ہیں۔ (ت) وجیز کردری میں ہے : ماء السیل لورقیقا لیسییل علی العضو یجوز التوضی بہ۔ 4 | سیلاب کا پانی اگر اتنا رقیق ہو کہ اعضاء پر بہتا ہو تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت) منیہ میں ہے : یجوز الطھارة بماء خالطه شئ طاھر فغیر احد اوصافه کماء المد والماء الذی اختلط بہ الزعفران بشرط ان | اس پانی سے طہارت جائز ہے جس میں کوئی پاک چیز مل گئی ہو اور اس کے اوصاف میں سے کسی ایک وصف کو بدل دیا ہو جیسے سیلاب کا پانی اور وہ پانی

حواشی: 1 بدائع الصنائع المجلد السعید کمپنی کراچی ۱/۱۵ 2 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز الخ سکھر ۱/۲۵ 3 جوہرہ نیرہ کتاب الطھارة امدادیہ ملتان ۱/۱۴ 4 فتاوی بزازیہ مع الہندیہ نوع المستعمل الخ پشاور ۴/۱۰

Fatawa Razawiya Volume Two Predominance belongs to the water in terms of parts, as long as the name of water does not cease to apply to it, and it remains thin; its ruling then is the ruling of absolute water[1]. [Translation: In which saffron has been mixed, provided that in terms of parts, the predominance is of the water itself, the name of water is not taken away from it, and it remains thin; then its ruling is that of absolute water. (T)]

In Hilya: "Al-Madd" refers to a flood, and it is specifically mentioned because floodwater brings along debris and the like. However, their statement "changed one of its qualities," which Quduri had already mentioned in his Mukhtasar before them, implies that the permissibility is restricted to the case when only one quality is changed. In that situation, there is no need to say "provided that the predominance is of the water in terms of parts, the name of water does not cease to apply to it, and it remains thin afterwards," even though their statement "provided that the predominance is of the water in terms of parts" makes the second redundant, as is evident. This is because if the aforementioned mixture changes only one quality of the water, it will not be such that it overcomes the parts of the water, necessitating caution against it and making it a condition[2]. (T)

I say: Firstly (1), discussion will follow, God willing, on the implication of using the expression "one of," and it is sufficient for you that saffron changes all three qualities of water, and similarly, a flood might change two qualities of it.

[1] Munyat al-Musalli, Chapter on Waters, Maktaba Qadriyah, Lahore, p. 63 [2] Hilya Page 546 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय) प्रधानता अवयवों के अनुसार पानी की रहती है जब तक कि उससे पानी का नाम न हटे और वह पतला रहे, तब उसका हुक्म मुतलक़ पानी का होता है।[1]
[अनुवाद: जिसमें केसर मिल गया हो, बशर्ते कि अवयवों के लिहाज़ से प्रधानता पानी की ही हो और उससे पानी का नाम न छीना गया हो, और वह पतला हो, तो उसका हुक्म मुतलक़ पानी का है। (त)]

हिलया में है: "अल-मद" बाढ़ को कहते हैं और इसका विशेष रूप से उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि बाढ़ का पानी अपने साथ कूड़ा-करकट आदि लाता है। लेकिन उनका यह कथन कि "उसके गुणों में से किसी एक को बदल दिया," और उनसे पहले कुदूरी भी अपनी संक्षिप्त पुस्तक 'मुख़्तसर' में यह इबारत दे चुके हैं, इससे यह पता चलता है कि अनुमति इस स्थिति के साथ सीमित है कि जब केवल एक ही गुण बदल जाए। उस समय यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि "शर्त यह है कि अवयवों के लिहाज़ से प्रधानता पानी की हो, उससे पानी का नाम न हटे, और वह बाद में पतला रहे," जबकि उनका यह कहना कि "बशर्ते कि अवयवों के लिहाज़ से प्रधानता पानी की हो," दूसरे भाग से बेनयाज़ (मुक्त) करने वाला है, जैसा कि स्पष्ट है। क्योंकि यदि उक्त मिश्रित वस्तु पानी का केवल एक ही गुण बदलती है, तो वह ऐसी नहीं होगी कि पानी के अवयवों पर हावी हो जाए ताकि उससे बचा जाए और उसे शर्त बनाया जाए। (त)

मैं कहता हूँ: पहले (१), इंशा अल्लाह, "एक" शब्द के प्रयोग पर चर्चा आगे आएगी, और आपके लिए यह दलील काफी है कि केसर पानी के तीनों गुणों को बदल देता है, और इसी तरह बाढ़ के कारण कभी दो गुण बदल जाते हैं।

[1] मुनियत अल-मुसल्ली, जल अध्याय, मकतबा कादरिया, लाहौर, पृष्ठ ६३ [2] हिलया पृष्ठ ५४६ / ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی یکون الغلبۃ للماء من حیث الاجزاء ولم یزل عنہ اسم الماء وان یکون رقیقاً بعد فحکمہ حکم الماء المطلق[1]۔ [جس میں زعفران مل گئی ہو، بشرطیکہ اجزاء کے اعتبار سے غلبہ پانی کو ہی ہو اور اس سے پانی کا نام سلب نہ ہوا ہو اور یہ کہ رقیق ہو، تو اس کا حکم مطلق پانی کا ہے۔ (ت)]

حلیہ میں ہے: المد السیل وانما خصہ بالذکر لانہ یجیئ بغثاء ونحوہ الا ان قولہ غیر احد اوصافہ وقد سبقہ الی ھذہ العبارۃ القدوری فی مختصرہ یفید ان الجواز مقید بھا اذا غیر وصفاً واحداً لاغیر وحینئذ لا یحتاج الی ان یقول بشرط ان یکون الغلبۃ للماء من حیث الا جزاء ولم یزل عنہ اسم الماء وان یکون رقیقاً بعد مع ان قولہ بشرط ان تکون الغلبۃ للماء من حیث الاجزاء مغن عن الثانی کما ھو ظاہر لان المخالط المذکور اذا لم یغیر سوی وصف واحد لا یکون بحیث یغلب الماء من حیث الاجزاء لیقع الاحتراز عنہ ویجعل شرطاً[2] اھ۔ ["المد" سیلاب کو کہتے ہیں اور اس کو بطورِ خاص ذکر کرنا اس لئے ہے کیونکہ سیلاب کا پانی کوڑا کرکٹ بھی ساتھ لاتا ہے مگر یہ کہ ان کا قول "اس کے اوصاف میں سے کسی ایک کو بدل دیا" اور ان سے پہلے قدوری بھی اپنی مختصر میں یہ عبارت لا چکے ہیں اس سے معلوم ہوتا ہے جواز اس صورت سے مقید ہے کہ جب صرف ایک وصف بدل جائے اس وقت یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ "شرط یہ ہے کہ غلبہ پانی کو ہو اجزاء کے اعتبار سے" اور اس سے پانی کا نام سلب نہ ہو، اور یہ کہ رقیق ہو، با وجودیکہ ان کا قول بشرطیکہ غلبہ اجزاء کے اعتبار سے پانی کو ہو، یہ دوسرے سے بے نیاز کرنے والا ہے، جیسا کہ ظاہر ہے، اس لئے کہ ملنے والی مذکورہ شے پانی کا اگر صرف ایک ہی وصف بدلے تو وہ پانی کے اجزاء پر غالب نہ ہوگی تاکہ اس سے احتراز ہو اور اس کو شرط کیا جائے اھ-(ت)]

اقول: اولاً (۱) سیاتی الکلام ان شاء اللہ تعالی علی مقتضی التعبیر بأحد وحسبك ان الزعفران یغیر اوصاف الماء الثلثة وکذا السیل ربما یتغیر لہ وصفان۔ [میں کہتا ہوں اول "احد" سے تعبیر کرنے پر کلام آگے آئے گا، اور پھر یہ دلیل کافی ہے کہ زعفران جو پانی کے تینوں اوصاف تبدیل کردیتی ہے، اور اسی طرح سیلاب کہ اس سے کبھی دو وصف بدل جاتے ہیں]

[1] منیة المصلی فصل فی المیاہ مکتبہ قادریہ، لاہور ص ۶۳ [2] حلیہ صفحہ ۵۴۶ / ۷۱۱

Fatawa Rizvia, Volume 2

Rather, all of them. Secondly: (1) Sometimes something is mixed with water that does not differ from it except in one quality, and it only changes that quality, even if its components exceed the components of water. Wudhu (ablution) with such water is invalid by consensus. Therefore, expressing one quality is not sufficient without the condition that water must be dominant in terms of its components, as was the view of Wahla (may Allah have mercy on him). Thirdly: (2) Sometimes something does not dominate the water in terms of its parts, but it removes the name "water" from it, as will be mentioned regarding saffron, vitriol, gallnuts, and nabidh. Thus, the first condition is not sufficient without the second. Fourthly: It is not hidden that (3) the second makes the third redundant because once the thinness (liquidity) is lost, it is no longer called water. It says in "Al-Fath": "What is mixed with a solid and its thinness is removed is not 'restricted water' (ma-e-muqayyad), rather it is not water at all," as indicated by the author's statement regarding mixing with alkali (ashnan), unless it dominates and becomes like 'sawiq' (barley gruel) due to the removal of the name of water from it (1). It is surprising that he discussed the rule of sufficiency where it was not present and omitted it where it was. Then I referred back to "Al-Ghunyah" and found it to be the opposite, so he was correct. He clarified that the third is an explanation, saying: "The condition of not removing the name of water makes the condition of thinness redundant, for if it becomes thick, the name water has been removed from it. Rather, the loss of thinness is suitable to be an explanation for the loss of the name of water (2)."

And sometimes all qualities are also changed. Second: Sometimes something is mixed with water that differs from it in only one quality and changes only that one quality, even if, in terms of parts, it is more than the water. By consensus, wudhu with such water is invalid. Therefore, mentioning "changing one quality" does not make one independent of the condition that water must be dominant in terms of parts, as Wahla (may Allah have mercy on him) mentioned it. Third: Some things do not dominate water in terms of parts, yet they strip the name of water from it, as happens with saffron, alum, gallnuts, and nabidh. So, the first condition will not make one independent of the second. Fourth: Let it not be hidden that the second makes the third redundant because when the thinness is lost, it will no longer be called water. In "Al-Fath," it is stated that if water is mixed with a solid and its thinness is lost, it is not restricted water, but rather not water at all, as the author hinted

regarding mixing with alkali. Unless it becomes so dominant that it becomes like 'sattu' (barley flour drink), so that now the name of water...

1. Fath al-Qadir, The water with which wudhu is permissible, Sukkur 1/65
2. Ghunyat al-Mustamli, Al-Miyah, Sohail Academy, Lahore, p. 90

बल्कि सभी। दूसरा: (1) कभी-कभी पानी में ऐसी चीज़ मिल जाती है जो केवल एक गुण में उसके विपरीत होती है और केवल उसी एक गुण को बदलती है, भले ही अंशों (parts) के मामले में वह पानी से अधिक हो। ऐसे पानी से वज़ू (आचमन) सर्वसम्मति से अमान्य है। इसलिए, किसी एक गुण को व्यक्त करना इस शर्त के बिना पर्याप्त नहीं है कि अंशों के मामले में पानी का प्रभुत्व होना चाहिए, जैसा कि वहला (अल्लाह उन पर दया करे) का विचार था। तीसरा: (2) कभी-कभी कोई चीज़ अंशों के मामले में पानी पर हावी नहीं होती है, लेकिन उसका नाम "पानी" उससे हटा देती है, जैसा कि केसर, फिटकरी, माजू और नबीज़ के बारे में उल्लेख किया जाएगा। इस प्रकार, पहली शर्त दूसरी के बिना पर्याप्त नहीं है। चौथा: यह छिपा नहीं है कि (3) दूसरी शर्त तीसरी को निरर्थक बना देती है क्योंकि एक बार पतलापन (तरलता) खो जाने के बाद, इसे अब पानी नहीं कहा जाता है। "अल-फ़तह" में कहा गया है: "जो किसी ठोस के साथ मिलाया जाता है और उसका पतलापन हट जाता है, वह 'प्रतिबंधित पानी' (मा-ए-मुक़य्यद) नहीं है, बल्कि वह पानी ही नहीं है," जैसा कि क्षार (अशनान) के साथ मिलाने के संबंध में लेखक के कथन से संकेत मिलता है, जब तक कि वह हावी न हो जाए और पानी का नाम उससे हटने के कारण 'सवीक़' (जौ का सत्तू) जैसा न हो जाए (1)। यह आश्चर्य की बात है कि उन्होंने पर्याप्तता के नियम पर चर्चा की जहाँ वह मौजूद नहीं था और जहाँ वह था उसे छोड़ दिया। फिर मैंने "अल-ग़ुनिया" को देखा और इसे इसके विपरीत पाया, इसलिए वह सही थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि तीसरा एक स्पष्टीकरण है, उन्होंने कहा: "पानी का नाम न हटाने की शर्त पतलेपन की शर्त को निरर्थक बना देती है, क्योंकि यदि वह गाढ़ा हो जाता है, तो पानी का नाम उससे हट जाता है। बल्कि, पतलेपन का कम होना पानी के नाम के कम होने की व्याख्या बनने के लिए उपयुक्त है (2)।"

और कभी-कभी सभी गुण भी बदल जाते हैं। द्वितीय: पानी में कभी ऐसी चीज़ मिल जाती है जो सिर्फ एक गुण में उसके विपरीत होती है और उसी एक गुण को बदलती है, चाहे अंशों के हिसाब से वह पानी से ज़्यादा ही हो, ऐसे पानी से सर्वसम्मति से वज़ू बातिल (अमान्य) है, इसलिए "एक गुण बदलने" का उल्लेख इस शर्त से बेपरवाह नहीं करता कि पानी का अंशों के लिहाज़ से ग़ालिब (प्रमुख) होना चाहिए, जैसा कि वहला (अल्लाह उन पर दया करे) ने इसका ज़िक्र किया। तृतीय: कुछ चीज़ें अंशों के लिहाज़ से पानी पर ग़ालिब नहीं आतीं और उससे पानी का नाम छीन लिया जाता है जैसे केसर, फिटकरी, माजू और नबीज़ में होता है, तो पहली शर्त दूसरी से बेपरवाह नहीं करेगी। चतुर्थ: यह छिपा न रहे कि दूसरा तीसरे से बेपरवाह करने वाला है क्योंकि जब रक़्क़त (पतलापन) ज़ायल हो गई तो

अब इसे पानी नहीं कहा जाएगा, फ़तह में फ़रमाया पानी किसी जामिद (ठोस) से मिला और उसकी रक़्क़त खत्म हो गई तो यह मुक़य्यद पानी नहीं बल्कि सिरे से पानी ही नहीं जैसे कि मुसन्निफ़ (लेखक) ने मुख़्तलत-बिल-अशनान में इशारा किया है, मगर यह कि इतना ग़ालिब हो जाए कि सत्तू की तरह बन जाए कि अब उस पर पानी का नाम...

1. फ़तह अल-क़दीर, अल-माउल-लज़ी यजोज़ु बिहिल-वज़ू, सुक्कुर 1/65
2. ग़ुनयतुल-मुस्तमली, अल-मियाह, सुहैल अकादमी लाहौर पृ. 90

पृष्ठ 547 का 711

بل الکل وثانیاً: (۱) الماء قد یخالطہ شیئ لایخالفہ الا فی وصف واحد فلا یغیر الا ایاہ وان زاد علی الماء اجزاء والوضوء بہ باطل وفاقاً فلیس فی التعبیر بأحد غنی عن شرط غلبۃ الماء من حیث الاجزاء کما ذھب الیہ وھلہ رحمہ اللہ تعالی وثالثاً قد (۲) لایغلب الشیئ علی الماء اجزاء ویزیل اسمہ عنہ کما یاتی فی الزعفرانی والزاج والعفص والنبیذ فلا یغنی الشرط الاول عن الثانی ورابعاً لایخفی ان (۳) الثانی مغن عن الثالث لان بزوال الرقۃ لایسمی ماء قال فی الفتح ماخالط جامدا فسلب رقتہ لیس بماء مقید بل لیس بماء اصلا کما یشیر الیہ قول المصنف فی المختلط بالاشنان الا ان یغلب فیصیر کالسویق لزوال اسم الماء عنہ (۱) اہ فالتعجب تعرضہ بحکم الاغناء حیث لم یکن وترکہ حیث کان ثم راجعت الغنیۃ فرأیتہ عکس فاصاب وافادان الثالث تفسیر قال واشتراط عدم زوال اسم الماء یغنی عن اشتراط الرقۃ فان الغلیظ قدزال عنہ اسم الماء بل زوال الرقۃ یصلح ان یکون تفسیر الزوال اسم الماء (۲)۔

اور کبھی تمام اوصاف بھی تبدیل ہو جاتے ہیں۔ دوم: پانی میں کبھی ایسی چیز مل جاتی ہے جو صرف ایک وصف میں اُس کے مخالف ہوتی ہے اور اسی ایک وصف کو بدلتی ہے خواہ اجزاء کے اعتبار سے وہ پانی سے زائد ہی ہو، ایسے پانی سے بالاتفاق وضو باطل ہے، لہٰذا "ایک وصف بدلنے" کا ذکر اس قید سے بے نیاز نہیں کرتا ہے کہ پانی کا اجزاء کے اعتبار سے غلبہ ہو، جیسا کہ وہلہ رحمہ اللہ نے اس کو ذکر کیا۔ سوم: بعض چیزیں اجزاء کے اعتبار سے پانی پر غالب نہیں آتیں اور اس سے پانی کا نام سلب ہو جاتا ہے جیسے زعفران، پھٹکڑی، مازو اور نبیز میں ہوتا ہے تو پہلی شرط دوسری سے بے نیاز نہیں کرے گی۔ چہارم: مخفی نہ رہے کہ دوسرا تیسرے سے بے نیاز کرنے والا ہے کیونکہ جب رقت زائل ہو گئی تو اب اس کو پانی نہیں کہا جائے گا، فتح میں فرمایا پانی کسی جامد سے ملا اور اس کی رقت ختم ہو گئی تو یہ مقید پانی نہیں بلکہ سرے سے

پانی ہی نہیں جیسے کہ مصنف نے مختلط بالاشنان میں اشارہ کیا ہے، مگر یہ کہ اتنا غالب ہو جائے کہ ستوؤں کی مثل بن جائے کہ اب اس پر پانی کا نام۔

1 فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء سکھر ۱/ ۶۵ 2 غنیة المستملی المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰

It will not be said [end quote]. Therefore, it is surprising that where 'Ighna' (self-sufficiency/rendering unnecessary) was not present, they mentioned it, and where it was present, they omitted it. Then I consulted 'Ghunyah' myself and found it to be the opposite. Thus, they stated something beneficial and correct, as they mention it is the third type of change, and the condition of the water's name not being lost renders the condition of thinness (Riqat) unnecessary. This is because the name 'water' ceases to apply to a thick substance; rather, the loss of thinness itself serves as an explanation for the loss of the name 'water'. (T)

(72) That water which has changed in smell etc. due to an abundance of moss. In 'Jawhara-e-Nayyarah': - [Arabic]: "If the water changes due to moss, its ruling is the ruling of absolute water."[1] - [Urdu]: If water changes due to moss (green streaks that occur in water), the ruling for it is that of absolute water. (T)

(73) The water of unlined wells in which debris rots and develops a foul smell, and indeed color and taste both change.

(74) That pond in which hemp (san) was soaked and because of it, its three qualities changed. It is in the Fatawa of Sheikh al-Islam Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah Ghazzi Timurtashi: - [Arabic]: "He was asked about performing ablution (wudu) and bathing (ghusl) with water whose color, taste, and smell had changed due to the rope suspended over it to draw water from it. Is it permissible or not? He replied: It is permissible according to the majority of our companions."[2] (Summarized) - [Urdu]: He was asked about performing wudu and ghusl with that water whose color, taste, and fragrance changed because of the rope on which that bucket was hung so that water could be drawn from it. Is it permissible or not? So the answer was given that according to our majority companions, it is permissible. (T)

(75) Traces of flour stuck in a bowl, and water kept in it undergoes a change in taste etc., wudu with this water is permissible. It is in 'Fath al-Qadeer': - [Arabic]: "The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) performed ghusl on the day of the conquest (of Makkah) from a bowl in which there were traces of dough. Narrated by al-Nasa'i. The water changes because of that, yet it was not taken into account due to predominance [of the water]."[3] - [Urdu]: The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) performed wudu on the day of the conquest of Makkah in such a bowl in which there were traces of kneaded flour. Al-

Nasa'i narrated it. Due to this, a change occurs in the water, and because of the predominance, he did not take it into account. (T)

Footnotes: 1 Jawhara-e-Nayyarah, Chapter of Purification, Imdadiya Multan, 1/14. 2 Fatawa Ghazzi Timurtashi. 3 Fath al-Qadeer, "The water with which wudu is permissible", Sukkur, 1/62.

फ़तावा रज़विया - जिल्द दूसरी

नहीं बोला जाएगा [उद्धरण समाप्त]। तो इस पर आश्चर्य है कि जहाँ 'इग़्ना' (आत्मनिर्भरता) नहीं था, वहाँ उन्होंने इसका उल्लेख किया है, और जहाँ यह था, वहाँ इसे छोड़ दिया। फिर मैंने स्वयं 'ग़ुनिया' को देखा तो वहाँ स्थिति इसके विपरीत निकली। अतः उन्होंने एक उपयोगी और सही बात कही क्योंकि वे कहते हैं कि यह तीसरा परिवर्तन है, और पानी का नाम न हटने की शर्त तरलता (रक़्क़त) की शर्त लगाने की आवश्यकता को समाप्त कर देती है। क्योंकि गाढ़े पदार्थ से 'पानी' का नाम समाप्त हो जाता है, बल्कि तरलता का समाप्त होना स्वयं पानी के नाम के मिटने की व्याख्या बन सकता है। (त)

(७२) वह पानी जो काई की अधिकता के कारण अपनी गंध आदि में बदल गया हो। 'जौहरा-ए-नय्यिरा' में है: - [अरबी]: "यदि पानी काई के कारण बदल जाए, तो उसका नियम पूर्ण (मुतलक़) पानी जैसा ही होगा।"[1] - [उर्दू]: अगर पानी काई (पानी में जो हरी धारियाँ होती हैं) से बदल जाए, तो उसके लिए मुतलक़ पानी का हुक्म है। (त)

(७३) कच्ची कुँइयों का पानी जिसमें कूड़ा सड़कर बदबू पैदा कर देता है, बल्कि रंग और स्वाद भी बदल जाता है।

(७४) वह तालाब जिसमें पटसन (सन) गलाया गया हो और उसके कारण उसके तीनों गुण बदल गए हों। शैख़ुल इस्लाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ग़ज़ी तुमुरताशी के फ़तावा में है: - [अरबी]: "उनसे उस पानी से वज़ू और ग़ुस्ल के बारे में पूछा गया जिसका रंग, स्वाद और गंध उस रस्सी के कारण बदल गई थी जिस पर उसे पानी निकालने के लिए लटकाया गया था। क्या यह जायज़ है या नहीं? उन्होंने उत्तर दिया: हमारे अधिकांश साथियों के अनुसार यह जायज़ है।"[2] (संक्षिप्त) - [उर्दू]: उनसे उस पानी से वज़ू और ग़ुस्ल के बारे में पूछा गया जिसका रंग, स्वाद और सुगंध उस रस्सी के कारण बदल गई थी जिस पर वह रस्सी लटकायी गई थी, ताकि उससे पानी निकाला जा सके। क्या यह जायज़ है या नहीं? तो उत्तर दिया गया कि हमारे अधिकांश साथियों के अनुसार यह जायज़ है। (त)

(७५) यदि बर्तन में आटे का अंश लगा हो और उसमें रखे पानी के स्वाद आदि में परिवर्तन आ जाए, तो उस पानी से वज़ू करना जायज़ है। 'फ़त्हुल क़दीर' में है: - [अरबी]: "हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का विजय के दिन एक ऐसे पात्र से ग़ुस्ल किया जिसमें आटे का अंश था। इसे

नसाई ने रिवायत किया है। इससे पानी बदल जाता है, फिर भी पानी की प्रबलता के कारण इसे ध्यान में नहीं रखा गया।"[3] - [उर्दू]: हुज़ूर अكرم (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़तह-ए-मक्का के दिन ऐसे प्याले में वज़ू फ़रमाया जिसमें गूँधे हुए आटे का अंश था। इसे नसाई ने रिवायत किया है। इससे पानी में परिवर्तन आता है, और (पानी की) प्रबलता के कारण उन्होंने इसका विचार नहीं किया। (त)

पाद टिप्पणियाँ: १. जौहरा-ए-नय्यिरा, तहारत का अध्याय, इमदादिया मुल्तान, १/१४। २. फ़तावा ग़ज़ी तुमुरताशी। ३. फ़त्हुल क़दीर, "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है", सुक्कुर, १/६२।

पृष्ठ ५४८ (७११ में से)

نہیں بولا جائے گا اھ تو تعجب اس پر ہے کہ جہاں اغناء نہ تھا وہاں وہ اغناء کا ذکر کر رہے ہیں اور جہاں تھا وہاں چھوڑ دیا ہے، پھر میں نے خود غنیہ کو دیکھا تو وہاں اُلٹ نکلا، تو انہوں نے مفید اور درست بات کہی کیونکہ وہ فرماتے ہیں تیسرا تغیر ہے، اور پانی کا نام زائل نہ ہونے کی شرط رقت کی شرط لگانے سے بے نیاز کرتی ہے، کیونکہ گاڑھے سے پانی کا نام ختم ہو گیا، بلکہ زوالِ رقت میں یہ صلاحیت ہے کہ وہ پانی کے نام کے زوال کی تفسیر بن سکے۔ (ت)

(۷۲) وہ پانی کہ کاہی کی کثرت سے جس کی بو وغیرہ میں تغیر آگیا، جوہرۃ نیرہ میں ہے: - Arabic: لو تغیر الماء بالطحلب کان حکمہ حکم الماء المطلق [1] - Urdu: اگر پانی کائی (پانی میں سبز دھاریاں ہوتی ہیں) سے متغیر ہو جائے تو اس کیلئے مطلق پانی کا حکم ہے۔ (ت)

(۷۳) کچی کنیاں کا پانی جس میں پتا سڑ کر بدبو آجاتی بلکہ رنگ ومزہ سب متغیر ہو جاتا ہے۔

(۷۴) وہ تالاب جس میں سن گلائی گئی اور اس کے سبب اس کے تینوں وصف بدل گئے۔ فتاوی شیخ الاسلام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ غزی تمرتاشی میں ہے: - Arabic: سئل عن الوضوء والاغتسال بماء تغیر لونہ وطعمہ وریحہ بحبلہ المعلق علیہ لاخراج الماء منہ فھل یجوز ام لا اجاب یجوز عند جمھور اصحابنا[2] اھ ملتقطاً - Urdu: ان سے اُس پانی سے وضو اور غسل کی بابت دریافت کیا گیا جس کا رنگ، مزا اور خوشبو اُس رسی کے باعث بدل گئے جس پر کہ اس رسی کو لٹکایا گیا تھا، تاکہ اس سے پانی نکالا جائے، تو کیا جائز ہے یا نہیں؟ تو جواب دیا کہ ہمارے جمہور اصحاب کے نزدیک جائز ہے اھ ملتقطاً ۔ (ت)

(۷۵) کونڈے میں آٹے کا لگاؤ ہو اُس میں پانی رکھنے سے مزے وغیرہ میں تغیر آ جاتا ہے اس پانی سے وضو روا ہے۔ فتح القدیر میں ہے: - Arabic: قد اغتسل صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم یوم الفتح من قصعة فیہا اثر العجین رواہ النسائی والماء بذلک یتغیر ولم یعتبر للمغلوبیة [3] - Urdu: حضور اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فتح مکہ کے دن ایسے پیالے میں وضو فرمایا جس میں گوندھے ہوئے آٹے کا اثر تھا اس کو نسائی نے روایت کیا، اس سے پانی میں تغیر آتا ہے اور مغلوبیت کی وجہ سے اس کا اعتبار نہ فرمایا۔ (ت)

حواشی: 1 جوہرۃ نیرہ طہارت امدادیہ ملتان ۱/ ۱۴ 2 فتاوی غزی تمرتاشی 3 فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء سکھر ۱/ ۶۲

Fatawa Rizvia, Volume 2 (76) There are trees on the bank of a pond. In autumn, many leaves fall into it so that the pond water appears green to the eye, but when taken in hand, it looks clear. Wudu (ablution) with it is permissible by consensus. (77) If so many leaves fall that the water actually turns green, appearing green even in the palm, it is still considered suitable for wudu according to the correct school of thought, as long as it does not become thick and lose its fluidity. I say: Yes, but in this state, it is better to avoid it because a group of scholars is of the opinion that wudu with it is not valid. Imam Sadr al-Shari'ah stated in Sharh al-Wiqayah:

Arabic	**Urdu Translation**
As for water that has changed due to the abundance of fallen leaves, such that if it is raised in the palm, the color of the leaves appears in it, then wudu is not permissible with it because it is like bean water. [1]	That water which has changed due to the excessive falling of leaves, so much so that when lifted in the hand, the color of the leaves appears, then wudu is not permissible with it, just as wudu is not permissible with bean water. (T)

It is in Fatawa Ghazzi: | Arabic | Urdu Translation | | :--- | :--- | | And some of them went towards the impermissibility of using water that has been changed by an abundance of leaves such that their color appears in the palm when raised, as affirmed in al-Kanz and others. [2] End. | And some jurists have inclined towards the view that wudu is not permissible with that water which an abundance of leaves has changed, such that upon lifting it in the hand, the color of the leaves is visible in it, as affirmed in Kanz etc. End. (T) | | I say: (2) The text of al-Kanz is only 'not with water changed by an abundance of leaves' [3] end, and there is no mention of the color appearing when raised in the palm. The pronoun for 'change' refers back to 'water', and 'water' refers to the essence. The change of its essence occurs by the loss of its fluidity. It is no wonder then that it is said in al-Bahr that this is interpreted as when the name 'water' is removed from it by... | I say, the text of Kanz is only that: not with that water which has been changed by the abundance of leaves. End. And in it, there is no mention that the color of the leaves should appear in it when lifted in the hand. The pronoun of change refers back to the water, and water is an essence, and the change of its essence will be at the time when its fluidity... |

1. Sharh al-Wiqayah, What is permissible for Wudu, Al-Maktaba al-Rashidiyya, Delhi, 1/86
2. Fatawa Ghazzi

3. Kanz al-Daqaiq, Waters for Wudu, Saeed Company, Karachi, p. 11

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग 2) (76) हौज के किनारे दरख्त (पेड़) हैं, मौसम-ए-खिजां (पतझड़) में पत्ते कसरत से गिरे कि हौज का पानी देखने में सब्ज (हरा) मालूम होता है मगर हाथ में लेने से साफ नजर आता है, उससे वज़ू बिल-इत्तेफाक (सर्वसम्मति से) जायज है। (77) पत्ते इतने गिरे कि वाकई पानी सब्ज हो गया, चुल्लू में भी सब्ज मालूम होता है, सही मजहब में अब भी काबिले वज़ू है जब तक कि गाढ़ा होकर अपनी रक़्क़त (तरलता) से न उतर जाए। अक़ूल (मैं कहता हूँ): हाँ, मगर इस हालत में उससे एहतराज (परहेज) बेहतर है कि एक जमात-ए-उलेमा इससे वज़ू सही न होने की कायल है। इमाम सद्रुश-शरिया ने शरह वकाया में फरमाया:

अरबी	उर्दू अनुवाद
रहा वह पानी जो गिरे हुए पत्तों की अधिकता के कारण बदल गया, यहाँ तक कि जब उसे हथेली में उठाया जाए तो उसमें पत्तों का रंग दिखाई दे, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि वह सेम (लोबिया) के पानी की तरह है। [1]	वह पानी जो पत्तों के ज्यादा गिरने की वजह से बदल गया, इतना कि हाथ में उठाया जाए तो पत्तों का रंग आए तो उससे वज़ू जायज़ नहीं जैसे कि बाक़ली (लोबिया) के पानी से वज़ू जायज़ नहीं। (त)

फ़तावा ग़ज़्ज़ी में है: | अरबी | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | और उनमें से कुछ इस राय की तरफ गए हैं कि उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जिसे पत्तों की कसरत ने बदल दिया हो, इस तरह कि उठाने पर हथेली में उनका रंग दिखाई देता हो, जैसा कि कंज़ और अन्य में इसका पक्का जिक्र है। [2] इति (समाप्त)। | और बाज (कुछ) फुकहा इस तरफ गए हैं कि उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जिसे पत्तों की कसरत ने बदल दिया हो तो हाथ में उठाने से उसमें पत्तों का रंग नजर आता हो, जैसे कंज़ वगैरह में इस पर जज़म (निश्चय) किया है। इति (त) | | अक़ूल: (2) कंज़ की इबारत तो सिर्फ ये है 'न उस पानी से जो पत्तों की कसरत से मुतगय्यर (परिवर्तित) हो गया हो' [3] इति। और उसमें हाथ में उठाने पर रंग जाहिर होने का जिक्र नहीं है। 'मुतगय्यर' की ज़मीर पानी की तरफ जाती है और पानी से मुराद 'ऐन' (अस्तित्व) है, और उसके ऐन का तगय्युर (बदलाव) उस वक्त होगा जब उसकी रक़्क़त (तरलता)... | मैं कहता हूँ कंज़ का नफ़्स (मूल पाठ) तो यह है कि न उस पानी से जो पत्तों की कसरत से मुतगय्यर हो गया हो। इति। और इसमें यह जिक्र नहीं कि हाथ में उठाने से पत्तों का रंग इसमें

जाहिर होता हो, और तगय्युर की ज़मीर पानी की तरफ लौटती है, और पानी एक ऐन है और उसके ऐन का तगय्युर उस वक्त होगा जब उसकी रक़्क़त... |

1. शरह वकाया, मा यजूसु बिहिल वज़ू, अल-मकतबतुर रशीदिया, दिल्ली 1/86
2. फ़तावा ग़ज़्ज़ी
3. कंज़ुद दक़ायेक, मियाहुल वज़ू, सईद कंपनी कराची, सफा 11

सफा 549/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی (۷۶) حوض کے کنارے درخت ہیں موسم خزاں میں پتے کثرت سے گرے کہ حوض کا پانی دیکھنے میں سبز معلوم ہوتا ہے مگر ہاتھ میں لینے سے صاف نظر آتا ہے اُس سے وضو بالاتفاق جائز ہے۔ (۷۷) پتے اتنے گرے کہ واقعی پانی سبز ہو گیا چلو میں بھی سبز معلوم ہوتا ہے صحیح مذہب میں اب بھی قابل وضو ہے جب تک گاڑھا ہو کر اپنی رقت سے نہ اُتر جائے۔ اقول: ہاں مگر اس حالت میں اس سے احتراز بہتر ہے کہ ایک جماعتِ علماء اس سے وضو صحیح نہ ہونے کی قائل ہے۔ امام صدر الشریعہ نے شرح وقایہ میں فرمایا:

| اما الماء الذی تغیر بکثرۃ الاوراق الواقعۃ فیہ حتی اذا رفع فی الکف یظہر فیہ لون الاوراق فلا یجوز بہ الوضوء لانہ کماء الباقلی ۱۔ | وہ پانی جو پتوں کے زیادہ گرنے کی وجہ سے بدل گیا، اتنا کہ ہاتھ میں اٹھایا جائے تو پتوں کا رنگ آئے تو اُس سے وضو جائز نہیں جیسے کہ باقلی (لوبیا) کے پانی سے وضو جائز نہیں۔ (ت) |

فتاوٰی غزی میں ہے: | و بعضھم ذھب الی عدم الجواز بالماء الذی غیرتہ کثرۃ الاوراق بحیث یظہر لونھا فی کف عند رفعہ کما جزم بہ فی الکنز و غیرہ ۲ اھ | اور بعض فقہاء اس طرف گئے ہیں کہ اس پانی سے وضو جائز نہیں جس کو پتوں کی کثرت نے بدل دیا ہو تو ہاتھ میں اٹھانے سے اس میں پتوں کا رنگ نظر آتا ہو ، جیسے کنز وغیرہ میں اس پر جزم کیا ہے اھ (ت) | | اقول: (۲) انما نص الکنز لابماء تغیر بکثرۃ الاوراق ۳ اھ ولیس فیہ ذکر ظہور اللون بالرفع فی الکف و انما ضمیر تغیر للماء و الماء عبارۃ عن العین و تغیر عینہ بذھاب رقتہ لاجرم ان قال فی البحر محمول علی ما اذا زال عنہ اسم الماء بان | میں کہتا ہوں کنز کا نص تو یہ ہے کہ نہ اُس پانی سے جو پتوں کی کثرت سے متغیر ہو گیا ہو اھ اور اس میں یہ ذکر نہیں کہ ہاتھ میں اٹھانے سے پتوں کا رنگ

اس میں ظاہر ہوتا ہو، اور تغیر کی ضمیر پانی کی طرف لوٹتی ہے، اور پانی ایک عین ہے اور اُس کے عین کا تغیر اس وقت ہوگا جب اس کی رقت |

۱ شرح وقایہ، ما یجوز بہ الوضوء، المکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۱/۸۶ ۲ فتاویٰ غزی ۳ کنز الدقائق میاہ الوضوء سعید کمپنی کراچی ص ۱۱

[...it becomes] thick. [End of quote]. May Allah have mercy on Allama al-Halabi for clarifying the objective and dispelling doubts with his statement in the text of 'al-Multaqa': "Not with the water that has exited its nature due to an abundance of leaves." [End of quote]. It is stated in 'Majma' al-Anhur' that the nature [of water] is liquidity and flow. [End of quote]. (T)

I say: (1) After this, there was no room for him to justify it by the change of all its qualities and to say, "Even though the teachers considered it permissible," and as quoted from 'al-Fara'id' on the authority of Akhi Chalpi, "It cannot be interpreted except as a difference between two narrations." Then he said, "But it can be interpreted as what was mentioned just now." [End of quote]. (T)

I say: (2) Firstly, what he mentioned is the explicit wording of the text, so to express it as an 'interpretation' (haml) and then to weaken it with the word 'possible' (yumkinu) - there is no place for these two things. Secondly, (4) there is no place for this interpretation in the words of Sadr al-Shariah or what follows from the words of al-Maydani. Thus, there is no escape from the [existence of a] difference. (5) And it is a leniency to express it as a 'difference of narrations' (6) because the statement of the Mashaykh is not called a 'narration'. (T) Second, there is no place for this interpretation in the words of Sadr al-Shariah, nor is there any room for it in the words of al-Maydani, so the difference...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Waters of Wudu, Sa'id Company Karachi, 1/68
2. Al-Multaqa al-Abhur, Sharh Majma' al-Anhur, Purification with Absolute Water, Amira Egypt, 1/28
3. Al-Multaqa al-Abhur, Sharh Majma' al-Anhur, Purification with Absolute Water, Amira Egypt, 1/28
4. 'Uqd al-Fara'id

[...ग़ाढ़ा] हो जाए। [उद्धरण समाप्त]। अल्लाह ताला अल्लामा अल-हलबी पर रहम फरमाए कि उन्होंने 'अल-मुल्तका' के मूल पाठ में यह कहकर उद्देश्य को स्पष्ट किया और संशय दूर किए: "उस पानी के साथ नहीं जो पत्तों की अधिकता के कारण अपनी प्रकृति से बाहर निकल गया हो।" [उद्धरण समाप्त]। 'मजमा अल-अनहुर' में कहा गया है कि [पानी की] प्रकृति तरलता और बहाव है। [उद्धरण समाप्त]। (त)

मैं कहता हूँ: (१) इसके बाद उनके लिए यह अवसर नहीं था कि वे इसके सभी गुणों के परिवर्तन से इसका कारण बताएँ और यह कहें कि "यद्यपि शिक्षकों ने इसे जायज़ माना है," और जैसा कि 'अल-फ़राइद' से अख़ी चल्पी के हवाले से उद्धृत है कि "इसे केवल दो रिवायतों के अंतर के रूप में ही समझा जा सकता है।" फिर उन्होंने कहा, "लेकिन इसे अभी बताए गए अर्थ में समझा जाना संभव है।" [उद्धरण समाप्त]। (त)

तो मैं कहता हूँ: (२) पहली बात यह है कि जो उन्होंने बयान किया है वह मूल पाठ का स्पष्ट कथन है, तो इसे 'हम्ल' (व्याख्या) के रूप में व्यक्त करना और फिर इसे 'युमकिनु' (संभव है) शब्द के साथ कमज़ोर करना - इन दोनों बातों के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है। दूसरी बात यह कि (४) सदर अल-शरिया के शब्दों में या अल-मैदानी के शब्दों में जो आगे आता है, इस व्याख्या के लिए कोई जगह नहीं है। अतः मतभेद से बचने का कोई रास्ता नहीं है। (५) और इसे 'रिवायतों के मतभेद' के रूप में व्यक्त करना एक उदारता (मसामहत) है (६) क्योंकि मशायख के कथन को 'रिवायत' नहीं कहा जाता है। (त) दूसरा, सदर अल-शरिया के कलाम में इस व्याख्या का कोई स्थान नहीं है, और इसी तरह मैदानी के कलाम में भी इसकी कोई गुंजाइश नहीं है, तो मतभेद...

---

1. अल-बहर अल-रैक, वुज़ू का पानी, सईद कंपनी कराची, 1/68
2. अल-मुल्तका अल-अबहुर, शरह मजमा अल-अनहुर, पाक पानी के साथ पवित्रता, अमीरा मिस्र, 1/28
3. अल-मुल्तका अल-अबहुर, शरह मजमा अल-अनहुर, पाक पानी के साथ पवित्रता, अमीरा मिस्र, 1/28
4. अक़्द अल-फ़राइद

ختم ہو جائے، اس لئے بحر میں فرمایا یہ اس پر محمول ہے جبکہ اس پر پانی کا اطلاق ختم ہوگیا ہو، مثلاً یہ کہ وہ گاڑھا ہوگیا ہو۔ اللہ تعالٰی حلبی پر رحم فرمائے کہ انہوں نے شبہات کو دُور فرما کر وضاحت مقصود کر دی، وہ ملتقی کے متن میں فرماتے ہیں "نہ اس پانی سے جو پتوں کی کثرت کی وجہ سے پانی کی طبیعت سے خارج ہو گیا ہو"۔ مجمع الانہر میں فرمایا پانی کی طبیعت رقت اور سیلان ہے اھ(ت)

میں کہتا ہوں اس کے بعد اس کا موقع نہ تھا کہ اس کی علت یہ بیان کریں کہ اس کے تمام اوصاف بدل جائیں اور یہ فرمائیں کہ "اگرچہ اس کو اساتذہ نے جائز قرار دیا ہے" اور اخی چلپی سے فرائد سے جو منقول ہے کہ "اس کو صرف اختلاف روایتین پر ہی محمول کیا جاسکتا ہے" پھر فرمایا اس کا حمل اس پر ممکن ہے جس کو انہوں نے ابھی بیان کیا ہے اھ (ت) تو میں کہتا ہوں اولاً جو انہوں نے بیان کیا ہے وہ متن کی صریح عبارت ہے تو اس کو حمل سے تعبیر کرنا پھر اس کو تضعیف یمکن کے لفظ سے، ان دونوں باتوں کا یہ محل نہیں۔ سے تو کوئی مفر نہیں، اور اس کو اختلاف روایتین سے تعبیر کرنا اس میں مسامحت ہے کہ قولِ مشائخ کو روایت نہیں کہا جاتا ہے۔ (ت) دوم، اس حمل کا صدر الشریعہ کے کلام میں کوئی محل نہیں، اور اسی طرح میدانی کے کلام میں بھی اس کی کوئی گنجائش نہیں، تو اختلاف

1۔ البحر الرائق میاہ الوضوء سعید کمپنی کراچی 1 / 68 2۔ الملتقٰی الابحر شرح مجمع الانہر الطھارۃ بالماء المطلق عامرۃ مصر 1 / 28 3۔ الملتقٰی الابحر شرح مجمع الانہر الطھارۃ بالماء المطلق عامرۃ مصر 1 / 28 4۔ عقد الفرائد

Fatawa Razawiya, Volume 2

In 'Munyah' it is stated: Arabic Text: If the color, smell, or taste of water changes due to prolonged stagnation or due to leaves falling into it, purification with it is permissible, unless the color of the leaves dominates, in which case it becomes restricted (muqayyad) water. [Footnote 1] Urdu Translation: When the color, smell, or taste of water changes due to it staying stagnant for a long time, or because of leaves falling into it, then purification from it is permissible. However, if the color of the leaves becomes dominant, then this water has become restricted. (T)

In 'Hulya' it is stated: Arabic Text: It was taken from what is in al-Dhakhira al-Fatawa al-Sughra: Jurisconsult Ahmad bin Ibrahim al-Maydani was asked about water whose color has changed due to the abundance of leaves falling into it, to the extent that the color of the leaves appears in the palm when water is lifted from it. Is it permissible to perform ablution with it? He said: No, but it is permissible to drink it and wash things with it. As for drinking it and washing things with it, it is because it is pure (tahir). As for the non-permissibility of performing ablution with it, it is because when the color of the leaves dominated it, it became restricted (muqayyad) like the water of broad beans and others. However, it is explicitly mentioned in Tuhfat al-Fuqaha' that out of necessity, it is permissible to perform ablution with water that has changed due to the mixing of something else with it in terms of color and taste, such as when leaves and fruits fall into ponds until it changes, because it is impossible to protect the ponds from them. [Footnote 2] Urdu Translation: This has been taken from the supplement (tammah) of Dhakhira and Fatawa Sughra; Jurisconsult Ahmad bin Ibrahim al-Maydani was asked about water whose color has changed due to the abundance of leaves, to the point that when the water is lifted in the hand, the color of the leaves appears in it: is ablution permissible with this water? So he said "No", but they can drink it and wash other things with it. Drinking it and washing other things with it is permissible because this water is pure, and ablution is not permissible because the color of the leaves has become dominant on it and this has become restricted water like the water of broad beans (lobia) etc. But in Tuhfat al-Fuqaha it is clarified that with such water in which the color and taste have changed due to something getting mixed in, ablution is permissible at the time of necessity, like fruits and leaves keep falling in ponds and the water becomes changed as it is difficult (muta'azzir) to protect the ponds from these things. Ah (T)

Arabic: I say: Therefore, this would be a third opinion. Urdu: I say, in this situation, this is a third opinion.

1 Munyat al-Musalli, Maktaba Qadriya Lahore, p. 64 2 Hulya

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

मुनया में है: अरबी पाठ: यदि पानी का रंग, गंध या स्वाद लंबे समय तक रुकने या उसमें पत्तियां गिरने के कारण बदल जाए, तो उससे पवित्रता (तहारत) जायज़ है, जब तक कि पत्तियों का रंग हावी न हो जाए, जिस स्थिति में वह 'मुक़य्यद' (सीमित) जल बन जाता है। [पाद-टिप्पणी १] उर्दू अनुवाद: जब पानी का रंग, गंध या स्वाद लंबे समय तक ठहरे रहने की वजह से, या उसमें पत्तों के गिरने की वजह से बदल जाए, तो उससे तहारत जायज़ है। हाँ, अगर पत्तों का रंग ग़ालिब (हावी) हो गया तो अब यह पानी मुक़य्यद हो गया। (त)

हुलिया में है: अरबी पाठ: इसे अज़-ज़खीरा अल-फ़तावा अल-सुग़रा में जो कुछ है उससे लिया गया है: फ़कीह अहमद बिन इब्राहिम अल-मैदानी से उस पानी के बारे में पूछा गया जिसका रंग उसमें गिरने वाली पत्तियों की अधिकता के कारण बदल गया हो, यहाँ तक कि जब उसमें से पानी उठाया जाए तो हथेली में पत्तियों का रंग दिखाई देता हो। क्या उससे वज़ू करना जायज़ है? उन्होंने कहा: नहीं, लेकिन इसे पीना और उससे चीज़ें धोना जायज़ है। जहाँ तक इसे पीने और चीज़ें धोने की बात है, तो इसलिए क्योंकि वह पाक (शुद्ध) है। और जहाँ तक उससे वज़ू करने के न जायज़ होने की बात है, तो इसलिए क्योंकि जब उस पर पत्तियों का रंग ग़ालिब आ गया, तो वह मुक़य्यद जल बन गया जैसे सेम (लोबिया) आदि का पानी। हालाँकि, तुहफ़तुल फ़ुक़हा में यह स्पष्ट किया गया है कि आवश्यकता पड़ने पर ऐसे पानी से वज़ू करना जायज़ है जो रंग और स्वाद के मामले में किसी और चीज़ के मिलने से बदल गया हो, जैसे कि तालाबों में पत्तियाँ और फल गिरते रहते हैं यहाँ तक कि वह बदल जाता है, क्योंकि तालाबों को उनसे बचाना कठिन है। [पाद-टिप्पणी २] उर्दू अनुवाद: इसे ज़खीरा और फ़तावा सुग़रा के तुम्मा (परिशिष्ट) से लिया गया है, फ़कीह अहमद बिन इब्राहिम अल-मैदानी से उस पानी की बाबत दरियाफ़्त किया गया जिसका रंग पत्तों की कसरत की वजह से मुतग़ैय्यर (परिवर्तित) हो गया हो यहाँ तक कि जब पानी को हाथ में उठाया जाए तो उसमें पत्तों का रंग ज़ाहिर होता हो, क्या इस पानी से वज़ू जायज़ है? तो फ़रमाया "नहीं" लेकिन इसको पी सकते हैं और इससे दूसरी अशिया (चीज़ों) को धो सकते हैं, इसका पीना और दूसरी अशिया का धोना इसलिए जायज़ है कि यह पानी पाक है और वज़ू इसलिए जायज़ नहीं कि इस पर पत्तों का रंग ग़ालिब हो चुका है और यह मुक़य्यद पानी हो गया है जैसे बाक़ली (लोबिया) वग़ैरा का पानी। मगर तुहफ़तुल फ़ुक़हा में सराहत (स्पष्टता) है कि ऐसे पानी से जिसमें किसी चीज़ के मिल जाने की वजह से रंग और मज़ा तब्दील हो गया हो, ज़रूरत के वक़्त

वज़ू जायज़ है जैसे हौज़ों में फल और पत्ते गिरते रहते हैं और पानी मुतग़ैय्यर हो जाता है कि इन चीज़ों से हौज़ों का बचाना मुतअज़्ज़िर (कठिन) है। अः(त)

अरबी: मैं कहता हूँ: तो फिर यह तीसरा मत होगा। उर्दू: मैं कहता हूँ इस सूरत में यह तीसरा क़ौल (मत) है।

१ मुनयतुल मुसल्ली, मकतबा कादरिया लाहौर, पृ. ६४ २ हुलिया

पृष्ठ ७११ का ५५१

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

منیہ میں ہے: اذا تغیر لون الماء اور ریحہ او طعمہ بطول المکث او بسقوط الاوراق تجوز بہ الطھارۃ الا اذا غلب لون الاوراق فیصیر مقیدا ۱ ۔ جب پانی کا رنگ، بُو یا مزہ تبدیل ہو جائے زیادہ ٹھہرا رہنے کی وجہ سے ، یا اس میں پتوں کے گرنے کی وجہ سے، تو اس سے طہارت جائز ہے ہاں اگر پتوں کا رنگ غالب ہو گیا تو اب یہ پانی مقید ہو گیا ۔ (ت)

حلیہ میں ہے: اخذہ مما فی الذخیرۃ الفتاوی الصغری سئل الفقیہ احمد بن ابراھیم المیدانی عن الماء الذی تغیر لونہ لکثرۃ الاوراق الواقعۃ فیہ حتی یظھر لون الاوراق فی الکف اذا رفع الماء منہ ھل یجوز التوضی بہ قال لاولکن یجوز شربہ وغسل الاشیاء بہ اما شربہ وغسل الاشیاء فلانہ طاھر واما عدم جواز التوضی بہ فلانہ لما غلب علیہ لون الاوراق صار مقیدا کماء الباقلاء وغیرہ لکن نص فی تحفۃ الفقھاء علی انہ عند الضرورۃ یجوز التوضی بماء تغیر بامتزاج غیرہ من حیث اللون والطعم بأن وقع الاوراق والثمار فی الحیاض حتی تغیر لانہ تتعذر صیانۃ الحیاض عنھا ۲ ۔ اس کو ذخیرہ اور فتاوٰی صغریٰ کے تمہ سے لیا ہے ، فقیہ احمد بن ابراہیم المیدانی سے اس پانی کی بابت دریافت کیا گیا جس کا رنگ پتوں کی کثرت کی وجہ سے متغیر ہو گیا ہو یہاں تک کہ جب پانی کو ہاتھ میں اٹھایا جائے تو اس میں پتوں کا رنگ ظاہر ہوتا ہو، آیا اس پانی سے وضو جائز ہے؟ تو فرمایا "نہیں" لیکن اس کو پی سکتے ہیں اور اس سے دوسری اشیاء کو دھو سکتے ہیں ، اس کا پینا اور دوسری اشیاء کا دھونا اس لئے جائز ہے کہ یہ پانی پاک ہے اور وضو اس لئے جائز نہیں کہ اس پر پتوں کا رنگ غالب ہو چکا ہے اور یہ مقید پانی ہو گیا ہے جیسے باقلی (لوبیا) وغیرہ کا پانی۔ مگر تحفۃ الفقہاء میں صراحت ہے کہ ایسے پانی سے جس میں کسی چیز کے مل جانے کی وجہ سے

رنگ اور مزہ تبدیل ہو گیا ہو، ضرورت کے وقت وضو جائز ہے جیسے حوضوں میں پھل اور پتے گرتے رہتے ہیں اور پانی متغیر ہو جاتا ہے کہ ان چیزوں سے حوضوں کا بچانا متعذر ہے اھ (ت)

اقول: فاذن یکون ھذا قولا ثالثا میں کہتا ہوں اس صورت میں یہ تیسرا قول

۱ منیۃ المصلی مکتبہ قادریہ لاہور ص ۶۴ ۲ حلیہ

Fatawa Razawiya Volume II

It means that performing ablution with it is permissible in times of necessity, otherwise not. This was followed in Majma' al-Anhur (1). However, the matter is not as such. The text of Al-Bada'i' Sharh al-Tuhfa is exactly this: "If plain water changes due to mud, soil, plaster, or lime, or if leaves and fruits fall into it and it changes, or if it changes due to standing for a long time, then performing ablution with it is permissible because the name 'water' has not been removed from it, and its essential meaning also remains. Moreover, there is an apparent necessity in this as well, because it is difficult to protect water from these things." (End of quote). Thus, he did not restrict it only to necessity, nor did he limit the reasoning to it; rather, he reasoned that it is plain water and remains within its general application. In support of this, he stated that its ruling is dropped due to necessity (2). There is a great difference between basing a ruling on necessity such that it becomes restricted by it, and completely dropping a ruling due to an unavoidable necessity. This case belongs to the latter category (3). Do you not see that he grouped it with water mixed with soil and the like in one category? Can anyone say that ablution with muddy water is permissible only if other water is not available, and otherwise not? Furthermore, there is no precedent for this in the schools of jurisprudence that...

[Arabic side text summary]: ...it is only permissible to perform ablution with it at the time of necessity, otherwise not. This was followed in Majma' al-Anhur. However, the text of Al-Bada'i' Sharh al-Tuhfa states that if plain water changes due to mud, soil, etc., it is still permissible for ablution as it is still called water. He argued it remains as plain water. There's a difference between a ruling based on necessity and a ruling dropped due to necessity. He grouped it with muddy water. No one says muddy water is only for necessity. There is no precedent for a ruling being valid only in necessity and not in plenty, except for Nabeedh al-Tamr which is an exception due to specific scriptural text (Nass).

---

1. Bada'i' al-Sana'i', Al-Ma' al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/15 Page 552 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द-2

इसका अर्थ यह है कि ज़रूरत के समय इससे वुज़ू करना जायज़ है अन्यथा नहीं। और मजमा' अल-अनहुर (1) में इसका अनुसरण किया गया। लेकिन बात ऐसी नहीं है। अल-बदाए शरह अल-तुहफ़ा का मूल पाठ बिल्कुल यही है: "यदि सादा पानी कीचड़, मिट्टी, गारे या चूने से बदल जाए, या उसमें पत्ते और फल गिर जाएँ और वह बदल जाए, या लंबे समय तक ठहरे रहने के कारण बदल जाए, तो उससे वुज़ू जायज़ है क्योंकि उससे 'पानी' का नाम समाप्त नहीं हुआ है, और उसके अर्थ भी शेष हैं। इसके अलावा, इसमें स्पष्ट ज़रूरत भी है क्योंकि पानी को इन चीज़ों से बचाना कठिन है।" (उद्धरण समाप्त)। तो उन्होंने इसे केवल ज़रूरत तक सीमित नहीं किया और न ही इसके कारण को केवल उस पर सीमित रखा, बल्कि यह तर्क दिया कि वह सादा पानी है और अपनी व्यापकता पर बना हुआ है। इसके समर्थन में उन्होंने कहा कि ज़रूरत के कारण इसका हुक्म समाप्त हो गया (2)। इसमें बड़ा अंतर है कि किसी हुक्म को ज़रूरत पर इस तरह आधारित किया जाए कि वह उसी से बंधा रहे, और यह कि किसी अपरिहार्य ज़रूरत के कारण हुक्म को पूरी तरह से हटा दिया जाए। यह इसी श्रेणी में आता है (3)। क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने इसे मिट्टी मिले हुए पानी और उसी तरह की अन्य चीज़ों के साथ एक ही श्रेणी में रखा है? क्या कोई कह सकता है कि गंदले पानी से वुज़ू तभी जायज़ है जब दूसरा पानी उपलब्ध न हो, अन्यथा नहीं? फिर मज़हबों में इसकी कोई मिसाल मौजूद नहीं है कि...

[अरबी पक्ष का सारांश]: ...ज़रूरत के समय इससे वुज़ू करना जायज़ है, वरना नहीं। मजमा अल-अनहुर में इसका अनुसरण किया गया। हालाँकि, बदाए शरह अल-तुहफ़ा का पाठ कहता है कि यदि पानी मिट्टी आदि से बदल जाए, तब भी वुज़ू जायज़ है क्योंकि वह अभी भी पानी कहलाता है। उन्होंने तर्क दिया कि यह सादा पानी ही रहता है। ज़रूरत पर आधारित हुक्म और ज़रूरत के कारण छोड़े गए हुक्म में अंतर है। उन्होंने इसे गंदले पानी के साथ रखा। कोई नहीं कहता कि गंदला पानी केवल ज़रूरत के लिए है। मज़हब में ऐसी कोई मिसाल नहीं है जो केवल ज़रूरत में जायज़ हो और सामान्य स्थिति में नहीं, सिवाय नबीज़-ए-तमेर के जो विशिष्ट पाठ (नस्स) के कारण एक अपवाद है।

---

1. बदाए अस-सनाए, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/15 पृष्ठ 552 का 711

ہوگا یعنی یہ کہ بوقت ضرورت اس سے وضو جائز ہے ورنہ نہیں، اور مجمع الانہر میں اس کی متابعت کی (۱) اور بات ایسی نہیں ہے اور بدائع شرح تحفہ کا نص بعینہ یہی ہے اور وہ یہ ہے کہ "اگر مطلق پانی کیچڑ، مٹی، گچ یا نورہ سے بدل گیا یا اس میں پتے اور پھل گرے اور بدل گیا یا زیادہ عرصہ تک کھڑا رہنے کی وجہ سے بدل گیا تو اس سے وضو جائز ہے کیونکہ اس سے پانی کا نام زائل نہیں ہوا، اور اس کے معنی بھی باقی ہیں، اور بظاہر اس میں ضرورت بھی ہے کیونکہ پانی کو ان اشیاء سے بچانا متعذر ہے۔ اھ تو اس کو ضرورت سے مقید نہیں کیا اور اس کی وجہ اس پر مقصور نہ کی بلکہ اس کی تعلیل اس طرح کی کہ وہ مطلق پانی ہے اور اپنے اطلاق پر باقی ہے اور اس کی تائید میں فرمایا کہ اس کا حکم بوجہ ضرورت ساقط ہوگیا (۲) اور اس میں کہ حکم ضرورت کی وجہ سے لگایا جائے اور وہ ضرورت سے متقید ہو جائے اور اس میں کہ حکم ضرورت لازمہ کی وجہ سے بالکل ساقط کیا جائے، بڑا فرق ہے، اور یہ اسی قبیل سے ہے (۳) کیا آپ نہیں دیکھتے کہ انہوں نے اس کو مخلوط بالتراب اور اس کی مثل کے ساتھ ملایا ہے، اور ان دونوں کو ایک ہی قرار دیا ہے، اور کیا کوئی کہہ سکتا ہے کہ گدلے پانی کے ساتھ وضو جائز ہے بشرطیکہ دوسرا موجود نہ ہو ورنہ نہیں؟ پھر اس پر مذاہب میں اس کی کوئی نظیر موجود نہیں کہ

[Arabic side text]: (۱) انه انما یجوز الوضوء به عند الضرورة والا لا وتبعه فی مجمع الانہر ولیس هکذا وانما نص البدائع شرح التحفة وهو عین نصها ولو تغیر الماء المطلق بالطین اوبالتراب اوبالجص او بالنورة او بوقوع الاوراق او الثمار فیه او بطول المکث یجوز التوضئ به لانه لم یزل عنه اسم الماء وبقی معناه ایضا مع مافیه من الضرورة الظاهرة لتعذر صون الماء عن ذلك ۱ اھ - فلم یقیده بالضرورة ولم یقصر وجهه علیها بل علله بانه ماء مطلق باق علی اطلاقه وایده بانه ساقط الحکم

للضرورة (٢) وفرق بين بين بناء الحكم على الضرورة بحيث يتقيد بها وبين اسقاط حكم رأسا لضرورة لازمة وهذا من ذاك (٣) الاترى انه نظمه مع المخلوط بالتراب ونحوه فى سلك واحد وهل يسوغ لاحد ان يقول انما يجوز الوضوء بماء كدر اذا لم يجد غيره والا لم يصح ثم (۴) لانظير لهذا فى المذهب ان يجوز الوضوء بماء عند الضرورة لافى السعة امانبيذ التمر فانما الحكم فيه على خلاف المعتمد المفتى به لاجل ورود النص فعدل به عن سنن القياس عند عدم الماء المطلق كما نصوا عليه و

---

1 بدائع الصنائع الماء المقيد سعيد كمپنى كراچى ١/ ١٥ Page 552 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Arabic Text]: This will follow, and there is no room for it here, and with Allah is the success. Then he mentioned in Al-Hilya itself what amounts to: there is no meaning in differentiating between capacity and necessity. For the Sharia did not move the person bound by legal obligations (mukallaf) from absolute water to restricted water in one case but not another when he is unable to find it; rather, it moved him to dry ablution (tayammum) in all cases when he is unable to find it. That is, whether he finds restricted water with it or not. So if this is absolute water, then wudu is permissible absolutely, otherwise, it is not permissible absolutely. [Arabic text ends].

[Urdu Text]: Whether wudu is permissible with a certain water in case of necessity but not without necessity, and as for the case of date-infusion (Nabidh Tamar), the ruling therein is contrary to the relied-upon fatwa, because a clear text (Nass) has been narrated. Therefore, analogy (Qiyas) was deviated from there when absolute water is unavailable, as the jurists have clarified, and this will soon be mentioned. This point cannot hold here. Then he himself raised an objection in 'Al-Hilya', the gist of which is that there is no reason to differentiate between situations of abundance and necessity. This is because Sharia has not directed the person bound by legal obligations (mukallaf) towards restricted water in a specific state when they lack power over absolute water. Rather, in such a case, it has commanded them to perform dry ablution (tayammum) in all circumstances, whether they find restricted water or not. So, if this is absolute water, then wudu is permissible unconditionally; otherwise, wudu is not permissible at all. (End of summary). I say: This objection applies to the meaning they understood from 'Al-Tuhfa', not to 'Al-Tuhfa' itself, as you have realized. Praise be to Allah. (T)

(78) Falling of fruits. (79) Even if water chestnut vines rot in a pond and all the qualities of the water change, there is no harm as long as it remains liquid and fluid. It is stated in 'Tanwir al-Absar' and 'Durr al-Mukhtar':

(Ablution is permissible with water mixed with a pure solid substance) unconditionally (such as fruit and tree leaves) even if it has changed all its qualities (this is the most correct opinion, provided its thinness remains), meaning [its name as water remains]. (End of quote). I say: Adding "and its name" was necessary for his statement.

[1] Bada'i as-Sana'i, Al-Ma' al-Muqayyad, Sa'id Company Karachi 15/1 [2] Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi 1/35 Page 553 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

[अरबी पाठ]: यह आगे आएगा और यहाँ इसका कोई स्थान नहीं है, और सफलता अल्लाह ही की ओर से है। फिर उन्होंने स्वयं 'हलिया' में ही वह उल्लेख किया जिसका सारांश यह है कि सामर्थ्य और आवश्यकता की स्थितियों के बीच अंतर करने का कोई अर्थ नहीं है। क्योंकि शरीयत ने मुकल्फ़ (धार्मिक कर्तव्यों के पाबंद व्यक्ति) को मुतलक़ पानी न मिलने पर किसी एक स्थिति में मुक़य्यद (सीमित) पानी की ओर स्थानांतरित नहीं किया और दूसरी में नहीं; बल्कि मुतलक़ पानी से लाचारी की स्थिति में उसे सभी स्थितियों में तयम्मुम करने का आदेश दिया है। अर्थात् चाहे उसे मुक़य्यद पानी मिल रहा हो या न मिल रहा हो। तो अगर यह मुतलक़ पानी है तो वज़ू मुतलक़न (बिना शर्त) जायज़ है, अन्यथा मुतलक़न जायज़ नहीं है। [अरबी पाठ समाप्त]

[उर्दू पाठ]: किसी पानी से ज़रूरत के वक़्त तो वज़ू जायज़ हो और बिना ज़रूरत जायज़ न हो, और जहाँ तक नबीज़-ए-तमार (खजूर का शरबत) का मामला है, तो उसमें जो हुक्म है वह भरोसेमंद मुफ़्ती के फ़तवे के ख़िलाफ़ है, क्योंकि स्पष्ट प्रमाण (नस्स) मौजूद है, इसलिए वहाँ क़यास (तर्क) से हटा गया है जब मुतलक़ पानी न हो, जैसा कि फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने इसे स्पष्ट किया है, और यह जल्द ही आएगा। यह बात यहाँ नहीं चल सकती। फिर उन्होंने स्वयं 'हलिया' में आपत्ति की है जिसका सारांश यह है कि गुंजाइश और ज़रूरत की स्थितियों में अंतर करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि शरीयत ने मुकल्फ़ को मुतलक़ पानी पर शक्ति न होने की स्थिति में किसी विशेष स्थिति में मुक़य्यद पानी की ओर स्थानांतरित नहीं किया है, बल्कि ऐसी स्थिति में उसे सभी स्थितियों में तयम्मुम करने का आदेश दिया है, चाहे उसे मुक़य्यद पानी मिल रहा हो या न मिल रहा हो। तो अगर यह मुतलक़ पानी है तो वज़ू मुतलक़न जायज़ है, अन्यथा मुतलक़न वज़ू जायज़ नहीं है। (सारांश समाप्त)। मैं कहता हूँ कि यह आपत्ति उस अर्थ पर है जो उन्होंने 'तोहफ़ा' से समझा है, स्वयं 'तोहफ़ा' पर नहीं है जैसा कि आप जान चुके हैं। अल्लाह का शुक्र है। (त)

(78) फलों का गिरना। (79) तालाब में सिंघाड़े की बेल सड़ जाने से पानी के सभी गुण बदल जाएँ तब भी कोई हर्ज नहीं जब तक वह तरल और बहने वाला रहे। 'तन्वीरुल अबसार' और 'दुर्रे मुख्तार' में है:

(ऐसे पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें कोई ठोस पाक चीज़ मिल गई हो) मुतलक़न (जैसे फल और पेड़ के पत्ते) चाहे उसने उसके सभी गुणों को बदल दिया हो (सही यही है बशर्ते कि उसका पतलापन बना

रहे) यानी [उसका नाम पानी के रूप में बना रहे]। (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ: उनके कथन के लिए 'और उसका नाम' जोड़ना आवश्यक था।

---

1. बदाए अस-सनाए, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची 15/1
2. अल-दुर्रुल मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली 1/35 पृष्ठ 553/711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

[عربی عبارت]: سیأتی ولا مساغ لھذا ھھنا وباللہ التوفیق۔ ثم اورد علیہ في الحلیۃ نفسھا بما حاصلہ ان لا معنی للتفرقۃ بین السعۃ والضرورۃ فان الشرع لم ینقل المکلف عن الماء المطلق عند عدم القدرۃ علیہ الیہ الماء المقید في حالۃ دون حالۃ بل نقلہ عند العجز عنہ الی التیمم في سائر الحالات اعنی سواء کان یجد مع ذلك الماء المقید اولم یجدہ ایضا فان کان ھذا ماء مطلقاً جاز الوضوء مطلقاً والا لم یجز مطلقاً [عربی عبارت ختم]

کسی پانی سے ضرورت کے وقت تو وضو جائز ہو اور بلا ضرورت جائز نہ ہو، اور جہاں تک نبیذ تمر کا معاملہ ہے سو اس میں جو حکم ہے وہ معتمد مفتی بہ کے خلاف ہے، کیونکہ نص وارد ہے لہذا وہاں قیاس سے عدول کیا گیا ہے جبکہ مطلق پانی نہ ہو، جیسا کہ فقہاء نے اس کی صراحت کی ہے، اور یہ عنقریب آئے گا، اور یہ چیز یہاں نہیں چل سکتی ہے، پھر انہوں نے خود حلیہ میں اعتراض کیا جس کا حاصل یہ ہے کہ گنجائش اور ضرورت کی صورتوں میں فرق کی کوئی وجہ نہیں، کیونکہ شریعت نے مکلف کو مطلق پانی سے قدرت نہ ہونے کی صورت میں مقید پانی کی طرف منتقل نہیں کیا ہے کسی خاص حالت میں، بلکہ ایسی صورت میں اس کو تیمم کرنے کا حکم دیا ہے تمام حالات میں، خواہ اس کو مقید پانی مل رہا ہو یا نہ مل رہا ہو، تو اگر یہ مطلق پانی ہے تو وضو مطلقاً جائز ہے ورنہ مطلقاً وضو جائز نہیں اھ میں کہتا ہوں یہ اعتراض اُس مفہوم پر ہے جو انہوں نے تحفہ سے سمجھا خود تحفہ پر نہیں ہے جیسا کہ آپ نے جان لیا وللہ الحمد۔(ت)

(۷۸) پھلوں کے گرنے (۷۹) تالاب میں سنگھاڑے کی بیل سڑ جانے سے پانی کے سب اوصاف بدل جائیں جب بھی حرج نہیں جب تک رقیق وسیال رہے۔ تنویر الابصار ودر مختار میں ہے :

(وضو ایسے پانی سے جائز ہے جس میں کوئی جامد پاک چیز مل گئی ہو) مطلقاً (جیسے پھل اور درخت کے پتے) خواہ اس کے تمام اوصاف کو بدل دیا ہو(اصح یہی ہے بشرطیکہ اس کی رقت باقی رہی ہو) یعنی اس کا نام (پانی) باقی رہے۔ اھ میں کہتا ہوں: ان کے کلام کے لیے 'اور اس کے نام' کا اضافہ ضروری تھا۔

---

[1] بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱۵/۱ [2] الدرالمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵

صفحہ 553 من 711

Fatawa Rizvia Volume 2

[Box 1] (Arabic): ...in every pure solid thing, and among them is what removes the name while thinness remains, as will come regarding saffron and the like. So, ablution with it is not permissible despite the remains of its thinness. And we are in no need of this restriction here, because here the name does not change as long as thinness remains, therefore we did not turn towards it. (Urdu): Also its name, etc. I say: With every pure solid, the condition of the name remaining is necessary. This includes that whose name is gone but thinness remains, as will come in the case of saffron etc., where despite the thinness remaining, ablution will not be permissible. And we do not need to apply this restriction because here the name does not change until the thinness remains. That is why we did not apply this restriction. (T)

In Ghurar-o-Durar it is written: [Box 2] (Arabic): Even if it changes its qualities, according to the more correct opinion. (Urdu): (The more correct opinion is that even if it changes the qualities of the water. T)

In Abdul Halim it is written: [Box 3] (Arabic): It is the more correct, rather the correct one, as stated in Al-Manba'. (Urdu): (This is the more correct, rather it is correct, as stated in Al-Manba'. T)

In Siraj-ul-Wahaj, Alamgiriyah, Jawhara Nayerah, and Fatawa Ghaznawi it is written: [Box 4] (Arabic): If its three qualities change due to falling tree leaves into it during autumn, then ablution with it is permissible according to the majority of our companions, may Allah Almighty have mercy on them. (Urdu): If its three qualities are changed due to the falling of autumn leaves, then according to our scholars, ablution with it is permissible, may Allah Almighty have mercy on them. (T)

In Mujtaba, Sharh Qadoori, and then Fatawa Ghaznawi it is written: [Box 5] (Arabic): If the three qualities change due to leaves, but it has not lost the name 'water' nor its meaning, then ablution with it is permissible. (Urdu): If the three qualities of water are altered due to the falling of leaves, and the name of water is not taken away from it, nor its meaning is taken away, then ablution with it is permissible. (T)

1. Durar Ghurar Mulla Khusrow, Farz-ul-Ghusl, Kamiliyah Press, Beirut, 1/21.
2. Durar Ghurar Abdul Halim, Farz-ul-Wudu, Usmani Press, Beirut, 1/17.
3. Al-Hindiyah, Regarding what is not permissible for ablution, Peshawar, 1/21.
4. Fatawa Ghaznawi.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

[बॉक्स 1] (अरबी): ...हर शुद्ध ठोस चीज़ में, और उनमें वह भी है जो नाम को मिटा देता है जबकि पतलापन (तरलता) बना रहता है, जैसा कि केसर आदि के बारे में आएगा। इसलिए, इसके पतलेपन के बावजूद इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। और हमें यहाँ इस प्रतिबंध की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहाँ नाम तब तक नहीं बदलता जब तक पतलापन बना रहता है, इसलिए हमने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया। (उर्दू): उसका नाम भी आदि। मैं कहता हूँ: हर शुद्ध ठोस के साथ नाम के शेष रहने की शर्त आवश्यक है। इसमें वह भी शामिल है जिसका नाम तो समाप्त हो गया हो लेकिन पतलापन शेष हो, जैसा कि केसर आदि के बारे में आएगा कि पतलापन रहने के बावजूद उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा। और हमें यहाँ यह शर्त लगाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यहाँ नाम तब तक नहीं बदलता जब तक कि पतलापन शेष रहता है, इसीलिए हमने यह शर्त नहीं लगाई। (त)

ग़ुरर और दुरर में लिखा है: [बॉक्स 2] (अरबी): और अगर वह उसके गुणों को बदल दे, अधिक सही राय के अनुसार। (उर्दू): (अधिक सही राय यही है कि चाहे वह पानी के गुणों को बदल दे। त)

अब्दुल हलीम में लिखा है: [बॉक्स 3] (अरबी): यह अधिक सही है, बल्कि सही है, जैसा कि 'मनबा' में कहा गया है। (उर्दू): (यही अधिक सही है बल्कि सही है, जैसा कि 'मनबा' में कहा गया है। त)

सिराज-उल-वहाज, आलमगीरिया, जौहरा नैय्यार और फ़तावा गज़नवी में लिखा है: [बॉक्स 4] (अरबी): यदि शरद ऋतु में पेड़ के पत्तों के गिरने से उसके तीन गुण बदल जाएँ तो हमारे अधिकांश साथियों (विद्वानों) के अनुसार इससे वज़ू जायज़ है, अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए। (उर्दू): अगर इसके तीनों गुण पतझड़ के पत्तों के गिरने के कारण बदल गए, तो हमारे विद्वानों के निकट इससे वज़ू जायज़ है, अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए। (त)

मुजतबा, शरह क़दूरी और फिर फ़तावा गज़नवी में लिखा है: [बॉक्स 5] (अरबी): यदि पत्तों के कारण तीनों गुण बदल जाएँ, लेकिन इससे 'पानी' का नाम न हटे और न ही इसका अर्थ, तो इससे वज़ू जायज़ है। (उर्दू): अगर पानी के तीनों गुण पत्तों के गिरने के कारण बदल गए और उससे पानी का नाम नहीं छिना और न ही उसके अर्थ छिने, तो उससे वज़ू जायज़ है। (त)

1. दुरर-उल-ग़ुरर मुल्ला खुसरो, फ़र्ज़-उल-गुस्ल, कामिलिया प्रेस, बेरुत, 1/21
2. दुरर-उल-ग़ुरर अब्दुल हलीम, फ़र्ज़-उल-वुज़ू, उस्मानिया प्रेस, बेरुत, 1/17

3. अल-हिंदिया, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, पेशावर, 1/21

4. फ़तावा गज़नवी

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[باکس 1] (عربی): فی کل طاہر جامد ومنہ ما یزیل الاسم مع بقاء الرقة کما یأتی فی الزعفران ونحوہ فلا یجوز الوضوء بہ مع بقاء رقتہ ونحن فی غنی من ھذا القید ھنا فأنہ ھنا لا یتبدل الاسم مادامت الرقة فلذا لم نعرج علیہ۔ (اردو): اس کا نام بھی اھ میں کہتا ہوں ہر طاہر جامد کے ساتھ نام کے باقی رہنے کی قید ضروری ہے، اسی میں وہ بھی ہے جس کا نام تو ختم ہو گیا مگر رقت باقی رہی ہو جیسا کہ زعفران وغیرہ میں آئے گا تو رقت کے باقی رہتے ہوئے بھی وضو جائز نہ ہوگا، اور ہمیں یہ قید لگانے کی ضرورت نہیں کہ یہاں نام اس وقت تک تبدیل ہوتا ہی نہیں جب تک کہ رقت باقی رہتی ہے، اسی لئے ہم نے یہ قید نہیں لگائی۔ (ت)

غرر و درر میں ہے: [باکس 2] (عربی): وان غیر اوصافہ فی الاصح[1] (اردو): (اصح یہ ہے کہ اگرچہ وہ پانی کے اوصاف کو بدل دے۔ ت)

عبدالحلیم میں ہے: [باکس 3] (عربی): ھو الاصح بل الصحیح کما قال في المنبع[2]- (اردو): (یہی اصح ہے بلکہ صحیح ہے ، جیسا کہ منبع میں فرمایا۔ت)

سراج الوہاج و عالمگیریہ و جوہرہ نیرہ وفتاوی غزنوی میں ہے: [باکس 4] (عربی): فان تغیرت اوصافہ الثلثہ بوقوع اوراق الاشجار فیہ وقت الخریف فانہ یجوزبہ الوضوء عند عامۃ اصحابنا رحمھم اللہ تعالی[3]- (اردو): اگر اس کے تینوں اوصاف موسم خزاں کے پتوں کے گرنے کی وجہ سے تبدیل ہو گئے، تو ہمارے اصحاب کے نزدیک اس سے وضو جائز ہے رحمہم اللہ تعالیٰ۔(ت)

مجتبی، شرح قدوری پھر فتاوی غزنوی میں ہے: [باکس 5] (عربی): لوغیر الاوصاف الثلثة بالاوراق و لم یسلب اسم الماء عنہ ولا معناہ فانہ یجوز التوضی بہ[4]- (اردو): اگر پانی کے تینوں

اوصاف پتوں کے گرنے کی وجہ سے متغیر ہو گئے اور اس سے پانی کا نام سلب نہ ہوا اور نہ اس کے معنی سلب ہوئے تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

1 درر غرر ملا خسرو فرض الغسل مطبعہ کاملیہ بیروت ۱/ ۲۱ 2 درر غرر عبدالحلیم فرض الوضوء مطبع عثمانیہ بیروت ۱/ ۱۷ 3 ہندیہ فیما لا یجوز بہ الوضوء پشاور ۱/ ۲۱ 4 فتاوی غزنوی

Volume 2 Fatawa Rizvia It is stated in many books like Nihaya of Imam Saghnagi, then Inaya, Hilya, Ghunya, Bahr, Nahr, Miskin, and Radd al-Muhtar:

"It is narrated from the teachers that it is permissible; even if autumn leaves fall into ponds and change the color, taste, and smell of the water, then they would perform ablution (Wudu) from it without any objection." (1)

In Radd al-Muhtar, under the mentioned statement 'even if all its qualities change, according to the more correct opinion', it is said:

"Against this is what has been said: if the color of the leaves appears in the handful of water, then Wudu is not valid with it, but it can be drunk. The restriction of 'handful' is an indication of the extent of change, because water may appear changed in its place, but if someone takes it up in their palm, they do not see it as changed. Reflect (Ta'ammul)." (2) (End quote)

I say: I do not know why he commanded reflection (Ta'ammul) when it is a correct matter that we observe. Yusuf Chalabi in Dhakhira al-Uqba claimed that the more correct opinion is what the commentator mentioned, meaning Sadr al-Shariah, because due to the dominance of the color of the leaves, it becomes restricted water (Muqayyad). (3) (End quote)

I say: (1) He (may Allah Almighty have mercy on him) (2) is not among the people of preference (Ashab al-Tarjih) and he did not attribute it to a reliable authority, so it does not contradict...

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/13
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/13
3. Dhakhira al-Uqba, Research on the causes of Ghusl, Matba al-Islamiya Lahore, 1/145

खंड 2 फ़तवा रिज़विया इमाम सघनागी की निहाया, फिर इनाया, हिल्या, गुनिया, बहर, नहर, मिस्कीन और रद-अल-मुह्तार जैसी कई किताबों में उल्लेख है:

"शिक्षकों से यह वर्णित है कि यह अनुमेय है; भले ही पतझड़ के पत्ते तालाबों में गिर जाएं और पानी का रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, फिर भी वे बिना किसी आपत्ति के इससे वज़ू कर लेते थे।" (1)

रद-अल-मुह्तार में उल्लेखित कथन के तहत 'चाहे उसके सभी गुण बदल जाएं सबसे सही राय के अनुसार' कहा गया है:

"इसके विपरीत यह कहा गया है कि: यदि पत्तों का रंग हथेली के पानी में दिखाई दे, तो उससे वज़ू मान्य नहीं है, लेकिन इसे पिया जा सकता है। 'हथेली' का प्रतिबंध परिवर्तन की सीमा का संकेत है, क्योंकि पानी अपने स्थान पर बदला हुआ लग सकता है, लेकिन यदि कोई उसे अपनी हथेली में उठाता है, तो वह उसे बदला हुआ नहीं देखता। इस पर विचार करें (ता'अम्मुल)।" (2) (समाप्त)

मैं कहता हूँ: मुझे नहीं पता कि उन्होंने विचार करने (ता'अम्मुल) का आदेश क्यों दिया, जबकि यह एक सही बात है जिसे हम देखते हैं। यूसुफ़ चलबी ने ज़खीरा अल-उक़्बा में दावा किया कि सबसे सही राय वह है जिसका उल्लेख टीकाकार (शारह) ने किया है, उनका तात्पर्य 'सद्र अल-शरीअह' से है, क्योंकि पत्तों के रंग की अधिकता के कारण यह प्रतिबंधित जल (मुक़य्यद) हो जाता है। (3) (समाप्त)

मैं कहता हूँ: (1) वे (अल्लाह उन पर दया करे) (2) प्राथमिकता देने वाले विद्वानों (अस्हाब अल-तरजीह) में से नहीं हैं और उन्होंने इसे किसी विश्वसनीय अधिकार के साथ नहीं जोड़ा है, इसलिए यह विरोधाभास नहीं करता...

1. रद-अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/13
2. रद-अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/13
3. ज़खीरा अल-उक़्बा, ग़ुस्ल के कारणों पर शोध, मतबा अल-इस्लामिया लाहौर, 1/145

पृष्ठ 555/711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ نہایہ امام سغناقی پھر عنایہ و حلیہ و غنیہ و بحر و نہر و مسکین و ردالمحتار کتب کثیرہ میں ہے :

المنقول عن الاساتذة انه یجوز حتی لو ان اوراق الاشجار وقت الخریف تقع في الحیاض فیتغیر ماؤھا من حیث اللون والطعم والرائحة ثم انھم یتوضؤن منھا غیر نکیر[1]۔ اساتذہ سے یہ منقول ہے کہ جائز ہے ، یہاں تک کہ موسم خزاں میں درختوں کے پتے حوضوں میں گرنے کی وجہ سے پانی کا رنگ ، مزہ ، بو بدل جاتا ہے پھر بھی وہ ایسے پانی سے وضو کر لیتے تھے ، اور اس پر کسی کو کوئی اعتراض نہ ہوتا تھا۔

ردالمحتار میں زیر قول مذکور وان غیر کل اوصافه فی الاصح فرمایا :

مقابلا له ما قیل انه ان ظھر لون الاوراق في الکف لا یتوضأ به لکن یشرب والتقیید بالکف اشارة الی کثرة التغیر لان الماء قد یری في محله متغیرا لونه لکن لو رفع منه شخص في کفه لا یراه متغیرا تأمل[2] اھـ اس کے مقابل یہ قول ہے کہ اگر پتوں کا رنگ چلو کے پانی میں ظاہر ہو جائے تو اس سے وضو جائز نہیں، لیکن یہ پانی پیا جاسکتا ہے ، اور ہتھیلی کی قید لگانا یہ ظاہر کرنے کیلئے ہے کہ تغیر بہت زیادہ واقع ہوا ہے، کیونکہ پانی اپنے محل میں کبھی متغیر نظر آتا ہے لیکن اگر اسے چلو میں اٹھایا جائے تو متغیر نظر نہیں آتا ہے تامل اھـ (ت)

اقول : لادری لم امر بالتأمل وھو امر صحیح مشاھد ھذا وزعم یوسف چلپی فی ذخیرة العقبی الاصح ماذکرہ الشارح یرید صدر الشریعة لانه بغلبة لون الاوراق صار مقیدا[3] اھـ میں کہتا ہوں کہ معلوم نہیں ، انہوں نے تامل کا حکم کیوں دیا، یہ ایک صحیح بات ہے جس کا ہم مشاہدہ کرتے ہیں، اور

یوسف چلبی نے ذخیرہ العقبی میں فرمایا کہ اصح وہ ہے جس کو شارح نے ذکر کیا، ان کی مراد صدر الشریعہ ہیں، کیونکہ وہ پتوں کے رنگ کے غلبہ کی وجہ سے مقید پانی ہو گیا ہے۔ (ت)

اقول : (۱) ھو رحمہ اللہ تعالی (۲) لیس من اھل الترجیح ولم یسندہ لمعتمد فلا یعارض میں کہتا ہوں وہ (رحمہ اللہ) اصحاب ترجیح سے نہیں ہیں اور انہوں نے کسی قابل اعتماد شخصیت کی طرف نسبت

1. رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳
2. رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳
3. ذخیرۃ العقبی المبحث فی الموجبات الغسل مطبع الاسلامیہ لاہور ۱/ ۱۴۵

The majority (Jamhoor) have not opposed this either; thus, it will not be contradictory to the view of the majority. The majority have clearly stated that this is the most correct view. Imam al-Nasafi has stated in 'al-Mustasfa', narrating from his teacher Shams al-A'imma al-Kardari, that this is the authentic narration, as will come shortly on page 97. As for (1) what they used as evidence, it is 'begging the question' (musadara 'ala al-matlub). The statement of the researcher (Muhaqqiq) in 'al-Fath' is sufficient as a refutation against him: 'Leaves fall into ponds during the autumn season. Then two friends pass by, and one says to the other: There is water here, come let us drink and perform ablution (wudu). Thus, he refers to it as water despite the change in its qualities due to soaking. So it has become clear to us from common usage that a minor mixing element does not strip the water of its general designation (itlaq).' [End of quote]. The researcher stated in 'al-Hilya': 'Perhaps the report of the teachers performing wudu from the mentioned water was because there was only a slight change in its three qualities, such that the name "absolute water" was not removed from it. Not every change in the totality of the three qualities necessitates making that water "restricted" (muqayyad). Rather, this is what is apparent from their condition, as it cannot be assumed that they would perform wudu with restricted water.' [End of quote].

I say: (3) If their intention is that the abundance of change in the qualities of water...

Note: In my copy of 'al-Hilya', the letter 'ta' is retained in 'thalatha' (three) in this way. 12 (T) - May he be forgiven.

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, The water with which wudu is permissible, Sukkur 1/64. 2. Hilya.

Page 556 of 711

बहुसंख्यक (जम्हूर) ने भी इसका विरोध नहीं किया है, इसलिए यह जम्हूर के कथन के प्रतिकूल नहीं होगा। जम्हूर ने स्पष्ट किया है कि यही सबसे सही (असह) विचार है। इमाम अन-नसफ़ी ने 'अल-मुस्तस्फ़ा' में अपने शिक्षक शम्स अल-आइम्मा अल-कर्दरी से उद्धृत करते हुए स्पष्ट किया है कि यही सही वर्णन है, जैसा कि पृष्ठ 97 में शीघ्र ही आएगा। जहाँ तक (1) उसका प्रश्न है जिसे उन्होंने प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है, तो वह 'साध्य-सिद्धि दोष' (मुसादरह अलल मतलूब) है। अल-फ़तह में शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) का कथन उनके खंडन के लिए पर्याप्त है: 'पतझड़ के मौसम में तालाबों में पत्तियां गिरती हैं। फिर दो मित्र वहाँ से गुज़रते हैं और उनमें से एक दूसरे से कहता है: यहाँ पानी है, आओ पिएं और वज़ू करें। वह इसके गुणों के बदलने के बावजूद इसे पानी ही कहता है। इस प्रकार हमें आम बोलचाल से यह स्पष्ट हो गया कि कम मात्रा में मिश्रित होने वाली चीज़ पानी से उसका सामान्य नाम (इतलाक़) नहीं छीनती।' [उद्धरण समाप्त]। शोधकर्ता ने 'अल-हिल्या' में कहा है: 'शायद शिक्षकों द्वारा उल्लिखित पानी से वज़ू करने की रिपोर्ट इसलिए थी क्योंकि उसके तीन गुणों में बहुत कम परिवर्तन हुआ था, इस सीमा तक कि उससे "पूर्ण जल" (मुतलक़ पानी) का नाम नहीं हटा था। तीनों गुणों के कुल योग में हर बदलाव उस पानी को "सीमित" (मुक़ैय्यद) बनाने की आवश्यकता नहीं रखता। बल्कि उनके हाल से यही ज़ाहिर है, क्योंकि उनके बारे में यह गुमान नहीं किया जा सकता कि वे सीमित पानी से वज़ू किया करते थे।' [उद्धरण समाप्त]।

मैं कहता हूँ: (3) यदि उनका तात्पर्य यह है कि पानी के गुणों में बहुत अधिक परिवर्तन...

नोट: मेरे पास मौजूद 'अल-हिल्या' की प्रति में 'सुलसा' में 'ता' को इसी तरह स्थिर रखा गया है। 12 (त) - क्षमाप्रार्थी।

पाद टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, सुक्कर 1/64। 2. हिल्या।

पृष्ठ 556/711

بھی نہیں کی، تو یہ جمہور کے قول سے متعارض نہ ہوگا، جمہور نے تصریح کی ہے کہ یہی اصح ہے، اور امام نسفی نے مستصفی میں اپنے شیخ شمس الائمہ کردری سے نقل کیا کہ یہی صحیح روایت ہے، جیسا کہ عنقریب ۹۷ میں آئے گا اور جس سے انہوں نے استدلال کیا ہے تو وہ مصادرہ علی المطلوب ہے اور محقق نے اس کی تردید فتح میں کر دی ہے کہ موسم خزاں میں پتے حوضوں میں گرتے ہیں اب وہاں سے دو دوست گزرتے ہیں ایک دوسرے سے کہتا ہے کہ آؤ یہاں پانی موجود ہے اسے پیتے ہیں اور اس سے وضو کرتے ہیں تو وہ اس پر پانی کا اطلاق کرتا ہے حالانکہ اس کے اوصاف متغیر ہو چکے ہیں تو معلوم ہوا کہ عام محاورہ میں اس سے پانی کا نام سلب نہیں ہوتا ہے اھ محقق نے حلیہ میں فرمایا اساتذہ کا جو اس پانی سے وضو کر لینا مذکور ہے تو اس کی وجہ یہ ہو گی کہ اس پانی کے اوصاف میں زیادہ تغیر واقع نہ ہوا ہو گا اتنا کہ اس سے مطلق پانی کا نام ہی مسلوب ہو جائے کیونکہ اوصاف ثلاثہ کا ہر تغیر پانی کو مقید نہیں بناتا ہے بلکہ ان کے حال سے یہی ظاہر ہے، کیونکہ یہ گمان نہیں کیا جاسکتا ہے کہ وہ مقید پانی سے وضو کر لیا کرتے تھے ۔ (ت)

میں کہتا ہوں: (۳) اگر ان کی مراد یہ ہے کہ پانی کے اوصاف کی کثرتِ تغیر۔۔۔

عہ: میرے پاس موجود حلیہ کے نسخہ میں اسی طرح ثلثہ میں تاء کو ثابت رکھا گیا ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حواشی: ۱۔ فتح القدیر، الماء الذی یجوز بہ الوضوء، سکھر ۱/ ۶۴ ۲۔ حلیہ

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[The Arabic text on the left states: The claim that the falling of leaves into water makes it 'restricted' (muqayyad) even while its fluidity (thinness) remains is neither accepted nor a reality. Because with the falling of leaves, as long as the fluidity remains, the name 'water' is never removed, regardless of how much its qualities might change. If the intent by 'much change' is the loss of fluidity, then there is no need for uncertainty; rather, this is definitively what is meant. It is stated in al-'Inaya after quoting al-Nihaya: al-Tahtawi also indicated this in his commentary on al-Tahawi, but the condition is that it remains thin. If something else overcomes it and it becomes thick, then it is not permissible (to use for wudu). Then it is said in al-Hilya: It is apparent that the aforementioned answer of al-Maydani relates to that quantity of leaves which makes the water restricted. For due to the abundance of leaves falling in it, when the color of the water changes, the taste and even the smell change as well, provided that the leaves themselves possess a distinct smell.]

[Urdu text on the right:] The claim that more change produced by falling of leaves makes the water 'restricted' (muqayyad) despite its fluidity remaining, this point is neither accepted nor has it occurred. Because with the falling of leaves, as long as the fluidity remains, the name of the water never changes, even if the qualities continue to change. And if their intention by 'abundance of change' is that the fluidity is lost, then there is no need for hesitation (using the word 'perhaps'); rather, it must be said with certainty. In 'Inaya, after quoting the text of 'Nihaya', it was stated: Tahtawi also indicated this side, but the condition is that its fluidity remains. If another thing dominates the water and it becomes thick because of it, then ablution (wudu) is not permissible from it. Then in 'Hilya' it was stated: As is apparent, the mentioned answer of Maydani relates to that quantity of leaves due to which the water becomes restricted. Because due to the abundance of leaves, when the color of the water changes, the taste and also the smell change, provided there is a specific smell in the leaves. (T)

I say: (1) What was proven by this? You yourself have mentioned that not every change in the three qualities (color, taste, smell) makes the water 'restricted', and here there is no restriction except the loss of fluidity. And the basis of Maydani's answer is that the color of the leaves appears in the palm, and...

Footnotes: 1. 'Inaya with al-Fath, water with which wudu is permissible, Sukkur 1/63 2. Hilya

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो

[बाएँ स्तंभ का अरबी पाठ: पत्तों के गिरने से पानी मुक़य्यद (सीमित) हो जाता है जबकि उसकी रक़्क़त (तरलता) बनी रहती है, तो यह न तो मान्य है और न ही वास्तविक। पत्तों के गिरने से जब तक रक़्क़त बनी रहे, पानी का नाम कभी नहीं बदलता, चाहे उसके गुणों (औसाफ़) में कितना भी परिवर्तन हो जाए। यदि 'अत्यधिक परिवर्तन' से उनका तात्पर्य रक़्क़त का समाप्त होना है, तो झिझक की आवश्यकता नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से यही अभीष्ट है। 'इनाया' में 'निहाया' का उद्धरण देने के बाद कहा गया: तहतावी ने भी तहवी की अपनी व्याख्या में इसी ओर संकेत किया है, लेकिन शर्त यह है कि उसका पतलापन बना रहे। यदि कोई और चीज़ उस पर हावी हो जाए और वह गाढ़ा हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं है। फिर 'हिलिया' में कहा गया: जैसा कि स्पष्ट है कि मैदान के उल्लिखित उत्तर का संबंध पत्तों की उस मात्रा से है जो पानी को मुक़य्यद कर दे। क्योंकि पत्तों की अधिकता के कारण जब पानी का रंग बदलता है, तो स्वाद और गंध भी बदल जाती है, बशर्ते पत्तों में कोई विशेष गंध हो।]

[दाएँ स्तंभ का उर्दू पाठ:] औसाफ़ में पत्तों के गिरने से ज़्यादा परिवर्तन पैदा होने से पानी मुक़य्यद हो जाता है बावजूद इसके कि उसकी रक़्क़त (तरलता) बाक़ी रहती है, तो यह बात न तो मान्य है और न ही ऐसा होता है, क्योंकि पत्तों के गिरने से जबकि रक़्क़त बाक़ी हो हमेशा पानी का नाम तब्दील नहीं होता है अगरचे औसाफ़ तब्दील होते रहें। और अगर उनकी मुराद 'कसरत-ए-तग़य्युर' से यह है कि रक़्क़त ज़ायल (समाप्त) हो जाए, तो तरजी (लफ़्ज़ 'लअल्ला' यानी शायद) की हाजत नहीं, बल्कि क़तइयत के साथ यही कहना होगा। 'इनाया' में 'निहाया' की इबारत नक़्ल करने के बाद फ़रमाया: तहतावी ने भी इसी तरफ़ इशारा किया है, लेकिन यह शर्त यह है कि उसकी रक़्क़त बाक़ी हो, और अगर पानी पर कोई दूसरी चीज़ ग़ालिब हो गई और उसकी वजह से वह गाढ़ा हो गया तो उससे वज़ू जायज़ नहीं। फिर 'हिलिया' में फ़रमाया: जैसा कि यह ज़ाहिर है कि मैदानी का मज़कूर (उल्लिखित) जवाब पत्तों की उस मिक़दार से मुताल्लिक़ है जिसकी वजह से पानी मुक़य्यद हो जाए, क्योंकि पत्तों की कसरत के बाइस (कारण) जब पानी का रंग तब्दील होता है तो साथ ही मज़ा बल्कि बू भी तब्दील हो जाती है बशर्ते कि पत्तों में कोई ख़ास बू मौजूद हो। (त)

मैं कहता हूँ: (१) इससे क्या साबित हुआ? आपने ख़ुद भी ज़िक्र किया है कि औसाफ़-ए-सलासा (तीन गुणों) का हर तग़य्युर पानी को मुक़य्यद नहीं बना देता है, और यहाँ कोई तक़यीद (प्रतिबंध) ज़वाल-ए-रक़्क़त के सिवा नहीं है और मैदानी के जवाब की बुनियाद यह है कि पत्तों का रंग चुल्लू में ज़ाहिर हो जाए, और...

पाद-टिप्पणी: 1. 'इनाया मअल फ़त्ह, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, सक्खर १/६३ 2. हिलिया

بوقوع الاوراق یجعل الماء مقیدا مع بقاء رقتہ فغیر مسلم ولا واقع فبوقوع الاوراق مع بقاء الرقة لایزول اسم الماء ابدا وان تغیرت الاوصاف مهما تغیرت وان اراد بالتغیر الکثیر زوال الرقة فلا حاجة الی الترجی بل هو المراد قطعاً قال في العنایة بعد نقل النهایة وکذا اشار في شرح الطحاوی الیه لکن شرطه انیکون باقیاً علی رقته اما اذا غلب علیه غیره وصاربه ثخینا فلا یجوز۱۸ 1 اهـ ثم قال فی الحلیة کما ان الظاهر ان محل جواب المیداني المذکور مابلغ به بماوقع فیه من الاوراق الی حد التقیید فان تغیر لون الماء بکثرة الاوراق الواقعة فیه یوجب تغییر الطعم بل والرائحة ایضاً انکانت الاوراق ذات رائحة۸ 2 اهـ

اوصاف میں پتوں کے وقوع سے زیادہ تغیر پیدا ہونے سے پانی مقید ہوجاتا ہے باوجودیکہ اس کی رقت باقی رہتی ہے، تو یہ بات نہ تو مسلم ہے اور نہ ایسا واقع ہے، کیونکہ پتوں کے گرنے سے جبکہ رقت باقی ہو ہمیشہ پانی کا نام تبدیل نہیں ہوتا ہے اگرچہ اوصاف تبدیل ہوتے رہیں، اور اگر ان کی مراد کثرتِ تغیر سے یہ ہے کہ رقت زائل ہو جائے، تو ترجی (لفظ لعل) کی حاجت نہیں، بلکہ قطعیت کے ساتھ یہی کہنا ہوگا، عنایہ میں نہایہ کی عبارت نقل کرنے کے بعد فرمایا۔ طحطاوی نے بھی اسی طرف اشارہ کیا ہے، لیکن یہ شرط یہ ہے کہ اس کی رقت باقی ہو، اور اگر پانی پر کوئی دوسری چیز غالب ہوگئی اور اس کی وجہ سے وہ گاڑھا ہوگیا تو اس سے وضو جائز نہیں اھ پھر حلیہ میں فرمایا جیسا کہ یہ ظاہر ہے کہ میدانی کا مذکور جواب پتوں کی اس مقدار سے متعلق ہے جس کی وجہ سے پانی مقید ہو جائے، کیونکہ پتوں کی کثرت کے باعث جب پانی کا رنگ تبدیل ہوتا ہے تو ساتھ ہی مزہ بلکہ بو بھی تبدیل ہوجاتی ہے بشرطیکہ پتوں میں کوئی خاص بو موجود ہو۔ (ت)

اقول: (١) فكان ماذا فقد ذكرتم ان ليس كل تغير في الصفات الثلاث جميعاً يوجب جعل الماء مقيدا ولا تقيد ههنا الازوال الرقة والامام الميداني انما بنى الجواب على ظهور لون الاوراق في الكف وبهذا

میں کہتا ہوں اس سے کیا ثابت ہوا؟ آپ نے خود بھی ذکر کیا ہے کہ اوصاف ثلاثہ کا ہر تغیر پانی کو مقید نہیں بنا دیتا ہے، اور یہاں کوئی تقید زوالِ رقت کے سوا نہیں ہے اور میدانی کے جواب کی بنیاد یہ ہے کہ پتوں کا رنگ چلو میں ظاہر ہو جائے، اور

حواشی: 1 عنایہ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضوء سکھر ١/ ٦٣ 2 حلیہ

Fatawa Razawiya, Volume Two

The amount has made it restricted (Muqayyad), and Sadr-ush-Sharia has clarified this. It is known that this does not necessitate thickness, so interpretation is of no use. And upon Allah, then upon His Messenger, is the reliance, Glory be to Him, prayers and peace be upon him with haste. (T)

(880) Cinnabar or saffron are soaked in water to extract the yellow color; once extracted, the water is thrown away. This water, even if its color etc. has changed, is suitable for ablution (Wudu) as long as it has not become thick.

In 'Khaniyah' it is stated:

Ablution with the yellow dye of safflower (Zardaj al-Usfur) is permissible if it is thin and water is predominant. (T)

I say: The result is one and the same, as if it was added to it by way of conjunction to provide its reasoning. (T)

In 'Bazzaziyah' it is stated:

Water of yellow dye, soap, and safflower, if thin enough to flow over the limb, is permissible for wudu. (T)

In 'Hidayah' it is stated:

And this is the correct view, as chosen by al-Natifī and Imam al-Sarakhsī (may Allah have mercy on them). (T)

In 'Maghrib' it is stated:

The water of yellow dye (Ma’ al-Zardaj) is the water that comes out of soaked safflower, which is then discarded and not used for dyeing. (T)

Footnotes: 1. Qazi Khan, concerning what is not permissible for ablution, Naval Kishore, Lucknow, 1/9 2. Fatawa Bazzaziyah with al-Hindiyyah, Restricted Water etc., Peshawar, 2/10 3. Al-Hidayah, Water with which ablution is permissible, Maktaba Arabiya, Karachi, 1/18 4. Jawharat un-Nayyarah, Book of Purification, Imdadiya, Multan, 1/12

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

उस मात्रा ने इसे मुक़य्यद (सीमित) बना दिया, और सदर-उश-शरिया ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। यह ज्ञात है कि इसके लिए गाढ़ा होना आवश्यक नहीं है, इसलिए व्याख्या का कोई लाभ नहीं है। और अल्लाह पर, फिर उसके रसूल पर भरोसा है, उसकी महिमा हो, और उन पर शीघ्र कृपा और शांति हो। (त)

(880) शिंग्रफ़ या केसर को पीला रंग निकालने के लिए पानी में भिगोया जाता है; जब पीलापन निकल आता है तो पानी फेंक दिया जाता है। यह पानी, भले ही इसका रंग आदि बदल गया हो, वज़ू के लिए वैध है जब तक कि यह गाढ़ा न हो जाए।

'खानिया' में है:

सफ़्लावर (उस्फुर) के पीले रंग (ज़रदज) के पानी से वज़ू जायज़ है यदि वह पतला हो और पानी की प्रधानता हो। (त)

मैं कहता हूँ: परिणाम एक ही है, मानो इसे तर्क देने के लिए इसके साथ जोड़ा गया हो। (त)

'बज़ा़ज़िया' में है:

ज़रदज, साबुन और सफ़्लावर का पानी यदि इतना पतला हो कि अंग पर बह सके तो उससे वज़ू जायज़ है। (त)

'हिदाया' में है:

और यही सही मत है, जिसे नातिफ़ी और इमाम सरख़सी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने पसंद किया है। (त)

'मगरिब' में है:

ज़रदज का पानी वह है जो भिगोए हुए सफ़्लावर से निकलता है, जिसे फिर फेंक दिया जाता है और वह रंगने के काम नहीं आता। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. क़ाज़ी ख़ान, वज़ू के लिए क्या जायज़ नहीं है, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9 2. फ़तावा बज़ा़ज़िया मा अल-हिंदिया, अल-मा अल-मुक़य्यद वग़ैरह, पेशावर, 2/10 3. अल-हिदाया,

अल-मा अल्लज़ी यजुलु बिहि अल-वुज़ू, मकतबा अरबिया, कराची, 1/18 4. जौहरत-उन-नय्यरा, किताबुल तहारत, इमदादिया, मुल्तान, 1/12

पृष्ठ 711 में से 558

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

القدر جعله مقیدا وبه صرح صدرالشریعة ومعلوم انه اس مقدار سے انہوں نے پانی کو مقید بنادیا، اور اسی کی تصریح لایستلزم الثخانة فانی ینفع التاویل۔ وعلی اللہ ثم علی رسولہ صدر الشریعہ نے کی ہے اور یہ معلوم ہے کہ اس سے اس کا التحویل، جل جلالہ علیہ الصلاۃ والسلام بالتعجیل۔ گاڑھا ہونا لازم نہیں، تو تاویل کا کچھ فائدہ نہیں۔ (ت)

(۸۸۰) شنجرف یا کیسر زردی کاٹنے کے لئے پانی میں بھگو دیتے ہیں جب زردی کٹ آئی پانی پھینک دیتے ہیں یہ پانی اگرچہ اس کی رنگت وغیرہ بدل گئی قابلِ وضو ہے جبکہ گاڑھا نہ ہو گیا ہو، خانیہ میں ہے:

التوضئ بزردج العصفر یجوز ان کان رقیقا والماء پیلے رنگ کے زردج کے پانی سے وضو جائز ہے اگر پتلا ہو اور غالب ۱ اھ پانی غالب ہوا ھ (ت) اقول: والحاصل واحد فکانہ اضیف الیہ بالعطف میں کہتا ہوں حاصل ایک ہی ہے، تو غالباً یہ چیز بطورِ عطف علیہ تعلیلالہ۔ اس کے ساتھ اس کی تعلیل کیلئے ملائی گئی ہے۔ (ت)

بزازیہ میں ہے: ماء الزردج والصابون والعصفر لو رقیقا یسیل زردج، صابون اور عُصفر کا پانی اگر اتنا پتلا ہو کہ عضو پر بہہ سکے علی العضو یجوز ۲۔ تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

ہدایہ میں ہے: وھو الصحیح کذا اختارہ الناطفی والامام السرخسی اور یہی صحیح ہے، اسی کو ناطفی اور امام سرخسی رحمہما اللہ نے رحمھما اللہ تعالی ۳۔ پسند کیا ہے۔ (ت)

مغرب میں ہے: ماء الزردج ھو ماء یخرج من العصفر المنقوع زردج کا پانی وہ ہے جو نچوڑے ہوئے عصفر سے نکلتا ہے پھر اس کو فیطرح ولا یصبغ بہ ۴۔ پھینک دیتے ہیں اور یہ رنگنے کے کام نہیں آتا ہے۔ (ت)

حواشی: 1 قاضی خان فیما لا یجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹ 2 فتاوی بزازیۃ مع الہندیۃ الماء المقید و غیرہ پشاور ۲/۱۰ 3 الھدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء مکتبہ عربیہ کراچی ۱/۱۸ 4 جوہرہ نیرہ کتاب الطھارۃ امدادیہ ملتان ۱/۱۲

Similarly, it is mentioned in Jauhara, Ghunia, Hilya, and Inaya.

I say: Indeed, "Zardaj" is the Arabized form of "Zarda." It refers to the yellow color that comes out of safflower into the water in which it is soaked. This water is then called "Ma' al-Zardaj" (Zardaj water). It is not the case that the water extracted directly from the safflower is called "Ma' al-Zardaj." In my opinion, this is the correct linguistic meaning. Others have followed Al-Mutarrizi in this, but it seems Al-Mutarrizi did not grasp it accurately, as it is absent from the books of linguistics. Even Al-Qamus, which claims to encompass all words, lacks it. Furthermore, Taj al-Arus, which contains even more words, also does not have it, nor is this word part of the Arabic language. And Allah the Almighty knows best. (T)

(82, 83) Water in which gypsum or lime is mixed; because it is said, "The name of 'water' has not departed from it, and its meaning remains as well." (Because the name has not been removed and the essence remains. T) (84) Lime water: After the lime is extinguished, it settles down and clear water remains on top, which has some dispersed whiteness. It is called lime water. It is valid for ablution (Wudu) because its name as water is not gone nor its nature changed. (Because the name has not been removed and the nature has not vanished. T) (85) To boil silk, cocoons are placed in water. These cocoons contain silkworms. Ablution with this water is permissible, whether the worms are wet or dry, as long as they are not so numerous that their components dominate the water. It is stated in Jawahir al-Fatawa, Chapter Two, Fatawa of Imam Jamal al-Din Bazdawi: "When cocoons are cast into water boiled over a fire to obtain silk thread, and within the cocoons are dead worms, whether dry or not, the water remains pure because they do not have flowing blood, even if they dominate [the water]."

इसी तरह 'जौहरा', 'ग़ुनिया', 'हिलिया' और 'इनाया' में है।

मैं कहता हूँ: वास्तव में "ज़रदज" 'ज़रदा' का अरबी रूप है। यह वह पीलापन है जो उस पानी में केसरिया फूल (उस्फ़ुर) से निकलकर आ जाता है जिसमें उसे भिगोया गया हो। इस पानी को 'मा-ए-ज़रदज' (ज़रदज का पानी) कहा जाता है। ऐसा नहीं है कि स्वयं केसरिया फूल से निकलने वाले पानी को 'मा-ए-ज़रदज' कहा जाता हो। मेरे विचार में इस शब्द का सही अर्थ यही है, जबकि अन्य विद्वानों ने इसमें मुतर्रिज़ी का अनुसरण किया है। शायद मुतर्रिज़ी ने इसे ठीक से नहीं समझा, क्योंकि यह शब्द शब्दकोशों में मौजूद नहीं है। यहाँ तक कि 'अल-क़ामूस', जिसका दावा है कि उसने सभी शब्दों को शामिल किया है, उससे भी यह खाली है। और फिर 'ताज-उल-उरूस', जिसमें उससे भी अधिक शब्द हैं, उसमें भी यह नहीं है, और न ही यह शब्द अरबी भाषा का है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

(82, 83) जिस पानी में गच (जिप्सम) या चूना मिल जाए; क्योंकि कहा गया है, "उससे 'पानी' का नाम समाप्त नहीं हुआ और उसका अर्थ भी शेष है।" (क्योंकि नाम भी नहीं छीना गया और अर्थ भी बाकी है। त) (84) चूने का पानी: गच के बैठ जाने के बाद ऊपर साफ़ पानी रह जाता है जिसमें कुछ सफेदी बिखरी रहती है। इसे चूने का पानी कहते हैं। यह वज़ू के लिए वैध है क्योंकि न तो इसका पानी नाम गया है और न ही इसकी प्रकृति। (क्योंकि नाम भी नहीं छीना गया और स्वभाव भी समाप्त नहीं हुआ। त) (85) रेशम को पकाने के लिए कोयों (कोकून) को पानी में उबाला जाता है और उनमें रेशम के कीड़े होते हैं। इस पानी से वज़ू करना जायज़ है, चाहे कीड़े गीले हों या सूखे, जब तक कि वे इतनी अधिक मात्रा में न हों कि उनके घटक पानी पर हावी हो जाएँ। 'जवाहिर-उल-फ़तावा', अध्याय दो, फ़तावा इमाम जमाल-उद-दीन बज़दवी में है: "जब रेशम का धागा प्राप्त करने के लिए कोयों को आग पर उबाले गए पानी में डाला जाए, और उन कोयों में मरे हुए कीड़े भी मौजूद हों, चाहे वे सूखी अवस्था में हों या नहीं, तो वह पानी पाक (पवित्र) रहता है क्योंकि उनमें बहने वाला रक्त नहीं होता, भले ही वे [पानी पर] हावी हो जाएँ।"

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

اسی طرح جوہرہ وغنیہ وحلیہ وعنایہ میں ہے۔

اقول: انما الزردج معرب زردہ وھی الصفرۃ التی تخرج من العصفر فی الماء المنقوع فیہ فیسمی ذلك الماء ماء الزردج لا ان ماء یخرج من العصفر یسمی ماء الزردج ھذا ھو الوجہ عندی فی اللفظ وتبعوا فیہ المطرزی وکانہ لم یتقنہ لخلو کتب اللغۃ عنہ حتی القاموس المدعی الاحاطۃ وتاج العروس المستدرك علیہ بکثیر ولا الکلمۃ من لسان العرب واللہ تعالٰی اعلم۔

میں کہتا ہوں "زردج" زردہ کا معرب ہے، یہ وہ زردی ہے جو عُصفر سے نکل کر اس پانی میں آجاتی ہے جس میں اسے ڈبویا گیا ہو اس کو ماءِ زردج کہتے ہیں۔ یہ نہیں کہ خود عُصفر سے جو پانی نکلتا ہے اس کو ماءِ زردج کہا جاتا ہو، میرے نزدیک اس لفظ کا صحیح مفہوم یہی ہے، جبکہ دوسرے حضرات نے اس میں مطرزی کی پیروی کی ہے، غالبا مطرزی اس کو اچھی طرح نہیں سمجھتا، کیونکہ لغت کی کتب میں یہ موجود نہیں، یہاں تک کہ قاموس جس کا دعوٰی ہے کہ اس نے تمام کلمات کا احاطہ کیا ہے اس سے خالی ہے، اور پھر تاج العروس جس میں اس سے بھی زیادہ کلمات کا احاطہ ہے اس میں بھی یہ موجود نہیں، اور نہ ہی یہ کلمہ لسان العرب میں ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

(۸۳،۸۲)جس پانی میں گچ یا چونا مل جائے لقولہ لم یزل عنہ اسم الماء وبقی معناہ ایضا(کیونکہ نام بھی سلب نہیں ہوا اور معنی بھی باقی ہے۔ت) (۸۴) چونے کا پانی، گچ بجھنے کے بعد تہہ نشین ہوتی اور اوپر نتھرا پانی رہ جاتا ہے جس میں قدرے سپیدی متفرق طور پر رہتی ہے اسے چونے کا پانی کہتے ہیں قابلِ وضو ہے اذلم یزل اسم الماء ولا طبعہ (کیونکہ نام بھی سلب نہیں ہوا اور

طبیعت بھی زائل نہیں ہوئی۔ ت) (۸۵) ریشم کو پکانے کیلئے کیڑوں کو پانی میں جوش دیتے ہیں اور ان میں ریشم کے کیڑے ہوتے ہیں اس پانی سے وضو جائز ہے کیڑے تر ہوں یا خشک جب تک اس کثرت سے نہ ہوں کہ ان کے اجزا پانی پر غالب آجائیں۔ جواہر الفتاوٰی باب ثانی فتاوٰی امام جمال الدین بز دوی میں ہے:

الفیلق اذاطرح فی الماء الذی اغلی بالنار لسدا الا بریسم وفی الفیلق دود میتة یابسة او غیر یابسة بقیت فی الماء یکون طاھرا لانه لیس له دم سائل وان غلب

کمپیوں کو جب آگ پر جوش دئے ہوئے پانی میں ڈالا جائے تاکہ ابریشم کا تار حاصل کیا جاسکے، اور ان کمپیوں میں مُردہ کیڑے بھی موجود ہوں، خواہ خشک حالت میں یا غیر خشک حالت میں تو یہ پانی جس میں

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

Its parts on water prevent ablution with it, as if another thing had overcome it.[1] If these cocoons are put in, it will remain pure. The reason for this is that these worms do not have flowing blood. And if the parts of these worms dominate the water, then like other substances, ablution with it will not be permissible. (T)

In Durr-ul-Mukhtar it is stated: In Al-Wahbaniyyah, the silkworm, its water, its eggs, and its excrement are pure, like a worm born from impurity.[2] In Wahbaniyyah, it is stated that the silkworm, its water, its eggs, and its droppings are pure in the same way as other worms born from filth are ruled. (T)

In Radd-ul-Muhtar from the commentary of Wahbaniyyah by Allama Abdul Barr, it is stated: It is possible that the meaning is the water found in them before their ripening, which is similar to milk, or the water in which they are boiled when extracting silk.[3] It is possible that by water is meant that fluid found in those worms which perish before the cocoons ripen; this fluid is similar to milk, or it could be that water in which they are boiled while extracting silk. (T)

(86) If a frog or any aquatic animal, or a non-aquatic animal that does not have flowing blood, such as a wasp, scorpion, fly, etc., dies in water, ablution with it is permissible even if its parts disintegrate and mix into the water so that they cannot be separated, provided the water retains its thinness. However, in this state, drinking it or making soup with it will be forbidden (haram) if that animal is forbidden. And if it is a 'Tiri' or non-muddy fish, then it is also permissible. In Durr-ul-Mukhtar it is stated: If something like a frog disintegrates in it, ablution with it is permissible but not drinking it because its meat is forbidden.[4] (Sh) said from Al-Bahr because its parts have become included in the water, so drinking it is Makruh-e-Tahrimi (highly disliked).[5] Ah And if something like a frog swells and bursts in water, then ablution with it is permissible but drinking it is not permissible because its meat is forbidden. 'Sh' quoted from 'Bahr' saying that because its parts have been mixed into the water, drinking it will be Makruh-e-Tahrimi. (T)

---

1 Jawahir-ul-Fatawa 2 Durr-ul-Mukhtar, Book of Waters, Mujtabai Delhi 1/35 3 Radd-ul-Muhtar, Book of Waters, Mustafa Al-Babi Egypt 1/135 4 Durr-ul-Mukhtar, Book of Waters, Mujtabai Delhi 1/35 5 Durr-ul-Mukhtar, Book of Waters, Mustafa Al-Babi Egypt 1/136

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 2

पानी पर इसके अंग वज़ू करने से रोकते हैं, जैसे कि कोई दूसरी चीज़ उस पर हावी हो गई हो।[1] अगर ये कोये (कोकून) डाल दिए गए हों तो पानी पाक रहेगा। इसकी वजह यह है कि इन कीड़ों में बहने वाला खून नहीं होता है, और अगर इन कीड़ों के अंश पानी पर हावी हो जाएं तो दूसरी चीज़ों की तरह इससे वज़ू जायज़ नहीं होगा। (त)

'दुर्रे मुख़्तार' में है: 'अल-वहनियह' में रेशम का कीड़ा, उसका पानी, उसका अंडा और उसकी विष्ठा पाक है, जैसे गंदगी से पैदा होने वाले कीड़े का हुक्म है।[2] वहबानिया में कहा गया है कि रेशम का कीड़ा, उसका पानी, उसका अंडा और उसकी बीट उसी तरह पाक है जैसे गंदगी से पैदा होने वाले दूसरे कीड़ों का हुक्म है। (त)

'रद्दुल मुहतार' में अल्लामा अब्दुल बर्र की 'शर्हे वहबानिया' से है: यह मुमकिन है कि मुराद वह पानी हो जो उनमें पकने से पहले पाया जाता है और वह दूध के समान होता है, या वह पानी हो जिसमें रेशम निकालते समय उन्हें उबाला जाता है।[3] हो सकता है कि पानी से मुराद वह पानी हो जो उन कीड़ों में पाया जाता है जो कोयों के पकने से पहले ही मर जाते हैं, यह पानी दूध जैसा होता है या वह पानी हो सकता है जिसमें उन्हें रेशम निकालते समय उबाला जाए। (त)

(86) पानी में मेंढक या कोई जलीय जीव या वह गैर-जलीय जीव जिसमें बहता खून न हो जैसे भिड़, बिच्छू मक्खी वगैरह मर जाए तो उससे वज़ू जायज़ है, चाहे वह टुकड़े-टुकड़े होकर उसके अंश पानी में ऐसे मिल जाएं कि अलग न हो सकें, बशर्ते कि पानी अपनी तरलता (पतलेपन) पर रहे। हाँ, इस हालत में उसे पीना या उसका शोरबा बनाना हराम होगा जबकि वह जानवर हराम हो, और अगर 'टीरी' या गैर-मछली वाली मिट्टी की मछली है तो यह भी जायज़ है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: अगर उसमें मेंढक जैसी चीज़ गल-सड़ जाए तो उससे वज़ू जायज़ है लेकिन उसे पीना नहीं, क्योंकि उसका मांस हराम है।[4] (श) ने 'बहर' के हवाले से कहा कि क्योंकि उसके अंग पानी में शामिल हो गए हैं, इसलिए पीना मकरूह-ए-तहरीमी होगा।[5] आह और अगर पानी में मेंढक की किस्म की कोई चीज़ फूल कर फट जाए तो उससे वज़ू जायज़ है, पीना जायज़ नहीं कि उसका गोश्त हराम है, 'श' ने 'बहर' से नक़ल करते हुए फरमाया इसलिए कि उसके अजज़ा (अंश) पानी में शामिल हो गए तो उसका पीना मकरूह-ए-तहरीमी होगा। (त)

1 जवाहिरुल फतावा 2 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली 1/35 3 रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/135 4 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली 1/35 5 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/136

اجزاؤھا علی المیاء یمنع التوضی بہ کما لو غلب شیئ آخر۔[1] یہ کپیاں ڈالی گئی ہوں پاک رہے گا، اس کی وجہ یہ ہے کہ ان کیڑوں میں سیال خون نہیں ہوتا ہے، اور اگر ان کیڑوں کے اجزاء پانی پر غالب ہو جائیں تو دوسری اشیاء کی طرح اس سے وضو جائز نہ ہوگا۔ (ت)

در مختار میں ہے: في الوھبانیہ دود القز ومائہ وبذرہ وخروٗہ طاہر کدودۃ متولدۃ من نجاسۃ۔[2] وہبانیہ میں فرمایا ریشم کا کیڑا، اس کا پانی، اس کا انڈا اور اس کی بیٹ اسی طرح پاک ہے جس طرح نجاست سے پیدا ہونے والے دوسرے کیڑوں کا حکم ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں شرح وہبانیہ للعلاّمہ عبدالبر سے ہے: یحتمل ان المراد ما یوجد فیھا ملك منہ قبل ادراکہ وھو شبیہ باللبن او الذی یغلی فیہ عند حلہ حریراً۔[3] ہو سکتا ہے کہ پانی سے مراد وہ پانی ہو جو ان کیڑوں میں پایا جاتا ہے جو کپیوں کے پکنے سے پہلے ہی ہلاک ہو جاتے ہیں، یہ پانی دودھ کے مشابہ ہوتا ہے یا وہ پانی ہو سکتا ہے جس میں انکو ریشم نکالتے وقت ابالا جائے۔ (ت)

(۸۶) پانی میں مینڈک یا کوئی آبی جانور یا وہ غیر آبی جس میں خون سائل نہ ہو جیسے زنبور، کڑوم، مکھی و غیر ہا مر جائے اُس سے وضو جائز ہے اگر چہ ریزہ ریزہ ہو کر اس کے اجزاء پانی میں ایسے مل جائیں کہ جُدا نہ ہو سکیں بشر طیکہ پانی اپنی رقت پر رہے، ہاں اس حالت میں اس کا پینا یا شور با کرنا حرام ہو گا جبکہ وہ جانور حرام ہو، اور اگر ٹیری یا غیر طانی مچھلی ہے تو یہ بھی جائز۔ در مختار میں ہے: لو تفتت فیہ نحو ضفدع جاز الوضوء بہ لا شربہ لحرمۃ لحمہ[4] قال ش عن البحر لانہ صارت اجزاؤہ في الماء فیکرہ الشرب تحریماً[5] اھ اور اگر پانی میں مینڈک کی قسم کی کوئی چیز پھول پھٹ جائے تو اُس سے وضو جائز ہے پینا جائز نہیں کہ اس کا گوشت حرام

ہے، ش نے بحر سے نقل کرتے ہوئے فرمایا اس لئے کہ اس کے اجزاء پانی میں شامل ہو گئے تو اس کا پینا مکروہ تحریمی ہوگا۔ (ت)

---

1 جواہر الفتاوٰی 2 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵ 3 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۳۵ 4 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵ 5 درمختار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۳۶

Fatawa Razawiya, Volume 2

I say: (1) Every animal that does not have blood is prohibited (haram), except for locusts and fish that are not found floating dead on the surface of the sea. When its parts mix into the water, it is certain that they will be included in the water when drinking it. So why was the ruling reduced from prohibition to 'reprehensible prohibition' (karahat tahrimi)? I referred to 'Al-Bahr' [al-Ra'iq] and found its text as follows: "It is narrated from [Imam] Muhammad (may Allah have mercy on him) that when a frog decomposes and bursts in water, I would state the repulsiveness (karahat) of drinking that water, not because of impurity (najasat), but because of the prohibition of its flesh, as its parts have now entered the water." This is a clear statement that the repulsiveness of drinking it is 'tahrimi' (prohibitive). This is also explicitly stated in 'al-Tajnīs', where it says: "It is forbidden to drink it." (T)

I say: (2) In the terminology of the early scholars, 'repulsiveness' (karahat) was more general than 'prohibition' (hurmat). They would say, "I dislike such-and-such," meaning "I prohibit it." Refer to my book 'Fasl al-Qada fi Rasm al-Ifta'. Thus, the meaning of the statement in 'Al-Bahr' is that 'karahat' in the Imam's speech refers to 'tahrim' (prohibition). (3) Do you not see his statement, "And this is explicitly stated in al-Tajnīs," and that it is explicitly stated there as being forbidden (haram)? (T)

(87) Rice, khichdi, and lentils are added after being washed. The water remaining after washing them is suitable for ablution (wudu), provided they were not washed with hands that were in a state of minor ritual impurity (be-wudu), even if the color definitely changes, and undoubtedly even if the taste and smell change as well.

I say: This is agreed upon in my view, even by those who consider the water of soaked chickpeas and fava beans [to be unusable for wudu]. I say this is a consensus in my view, including those who [mention] chickpeas and fava beans (lobia).

1. Al-Bahr al-Ra'iq, chapter on the death of bloodless animals, Saeed Company Karachi, 1/89.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

मैं कहता हूँ: (1) हर वह जानवर जिसमें खून नहीं होता वह हराम है, सिवाय टिड्डी और उस मछली के जो मृत अवस्था में समुद्र की सतह पर तैरती हुई न मिली हो। और जब इसके अंग पानी में मिल जाएं तो पीते समय उनका पानी में शामिल होना एक निश्चित बात है। तो फिर हुक्म को हुरमत (निषेध) से घटाकर 'कराहते तहरीमी' (गंभीर अरुचि) क्यों किया गया? मैंने 'अल-बह्र' [अल-राइक़] को देखा तो उसमें यह इबारत थी: "इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) से वर्णित है कि जब मेंढक पानी में फूल कर फट जाए, तो मैं उस पानी के पीने को नापसंद (कराहत) कहूँगा, उसकी नजासत (अशुद्धता) के कारण नहीं बल्कि उसके मांस के हराम होने के कारण, क्योंकि उसके अंग अब पानी में शामिल हो चुके हैं।" यह इस बात का स्पष्ट विवरण है कि इसका पीना 'कराहते तहरीमी' है, और 'अल-तजनीस' में भी यही स्पष्टता है, जहाँ कहा गया है: "इसका पीना हराम है।" (त)

मैं कहता हूँ: (2) प्राचीन विद्वानों के व्यवहार में 'कराहत' शब्द 'हुरमत' (निषेध) से अधिक व्यापक था। वे कहते थे, "मैं इसे नापसंद करता हूँ," और उनका तात्पर्य होता था "मैं इसे हराम (निषिद्ध) करता हूँ।" मेरी पुस्तक 'फ़स्ल अल-क़ज़ा फ़ी रस्म अल-इफ़्ता' देखें। अतः'अल-बह्र' के कथन का अर्थ यह है कि इमाम के कलाम में 'कराहत' से तात्पर्य 'तहरीम' (निषेध) है। (3) क्या आप उनके इस कथन को नहीं देखते, "और 'अल-तजनीस' में भी यही स्पष्टता है," और यह कि वहाँ स्पष्ट रूप से इसे हराम कहा गया है? (त)

(87) चावल, खिचड़ी और दाल धोकर डाले जाते हैं। उन्हें धोने के बाद बचा हुआ पानी वज़ू के लिए उपयोग किया जा सकता है, बशर्ते कि उन्हें बिना वज़ू वाले हाथों से न धोया गया हो, चाहे उसका रंग निश्चित रूप से बदल जाए, और निस्संदेह चाहे स्वाद और गंध भी बदल जाए।

मैं कहता हूँ: यह मेरे पास सर्वसम्मति से है, यहाँ तक कि उन लोगों के नज़दीक भी जो भीगे हुए चने और बाक़ला (लोबिया) के पानी को [वज़ू के लिए अनुपयोग्य] मानते हैं। मैं कहता हूँ कि यह मेरे नज़दीक सर्वसम्मति से है, यहाँ तक कि उन लोगों के नज़दीक भी जो चने और बाक़ला (लोबिया) [का उल्लेख करते हैं]।

1. अल-बह्र अल-राइक़, बिना खून वाले जानवर की मौत का अध्याय, सईद कंपनी कराची, 1/89।

पृष्ठ 561/711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: کل (۱) مالادم فیه حرام غیر الجراد والسمك الغیر الطافی و اذا اختلطت اجزاؤه بالماء فازدادها فی شربه متیقن فاي وجه للنزول من الحرمة الی کراهة التحریم وراجعت البحر فوجدت نصه هکذا روی عن محمد رحمه الله اذا تفتت الضفدع فی الماء کرهت شربه لاللنجاسة بل لحرمة لحمه وقد صارت اجزاؤه فی الماء و هذا تصریح بان کراهة شربه تحریمیة و به صرح فی التجنیس ۱ فقال یحرم شربه۔

میں کہتا ہوں ہر وہ جانور جس میں خون نہ ہو وہ حرام ہے سوائے ٹڈی اور اُس مچھلی کے جو مُردہ حالت میں سطح سمندر پر تیرتی ہوئی نہ پائی گئی ہو، اور جب اس کے اجزا پانی میں مل جائیں تو ان کا پیتے وقت پانی میں شامل ہونا یقینی امر ہے تو پھر حرمت سے گھٹ کر کراہت تحریم کا حکم کیوں لگایا گیا؟ میں نے بحر کو دیکھا تو اس میں یہ تھا "امام محمد سے مروی ہے جب مینڈک پانی میں پھول پھٹ جائے تو میں اس پانی کے پینے کی کراہت کا قول کروں گا اس کی نجاست کی وجہ سے نہیں بلکہ اس کے گوشت کی حرمت کی وجہ سے اور اس حرام گوشت کے اجزاء پانی میں بھی شامل ہو گئے ہیں، یہ اس امر کی صراحت ہے کہ اس کے پینے کی کراہت تحریمی ہے اور اسی کی تصریح تجنیس میں ہے، فرمایا کہ اس کا پینا حرام ہے۔(ت)

اقول: (۲) الکراهة عرف القدماء اعم من الحرمة یقولون اکره کذا والمعنی احرمه راجع کتابی فصل القضاء فی رسم الافتاء فمعنی قول البحر ان الکراهة في کلام الامام للتحریم (۳) الاتری الی قوله وبه صرح فی التجنیس وانها صرح بانه حرام۔

میں کہتا ہوں کراہت کا لفظ متقدمین کے عرف میں حرمت کو بھی عام ہے وہ فرماتے ہیں میں اس کو مکروہ سمجھتا ہوں اور مراد یہ ہوتی ہے کہ میں اس کو حرام سمجھتا ہوں۔ دیکھئے میری کتاب "فصل القضاء فی رسم الافتاء " تو بحر کی مراد یہ ہے کہ امام کے کلام میں کراہت سے مراد تحریم ہے، چنانچہ انہوں نے فرمایا و بہ صرح فی التجنیس اور اس میں ان کی تصریح یہ ہے کہ حرام ہے۔(ت)

(۸۷) چاول کھچڑی دال دھو کر ڈالے جاتے ہیں ان کے دھونے سے جو پانی بچا قابلِ وضو ہے جبکہ بے وضو ہاتھ سے نہ دھوئے ہوں اگرچہ اس کے رنگ میں ضرور تغیر آجاتا ہے بلاشبہ اگرچہ مزہ بو بھی بدل جائیں۔

اقول: وھذا عندي وفاقا حتی ممن یجعل ماء الحمص والبا قلاء المنقوعین میں کہتا ہوں یہ میرے نزدیک متفقہ طور پر ہے، یہاں تک کہ جو حضرات چنوں اور باقلی (لوبیا)

۱ بحر الرائق موت مالادم لہ سعید کمپنی کراچی ۱/۸۹

Fatawa-e-Razwiya - Volume Two

...consider the water used for cleaning to be restricted water. They also agree with this, because simply washing does not produce the same effect in the water as soaking does. The change that occurs in the water is not due to the grain itself, but because of things like dust on it. And Allah Almighty knows best. (T)

(88) Regarding water in which chickpeas have been soaked, no matter how long they remain soaking, the research is that ablution (wudhu) with it is permissible, unless the components of the grain mix into it and make it so thick that it no longer retains its fluidity and flow.

(89) Similarly, if broad beans (baqilla) are soaked in it, or any other grain. It was stated in Mukhtasar Imam Abu al-Hasan Quduri:

"Ablution is not (permissible) with water where something else has overcome it and taken it out of its natural state as water, like bean-water and broth." [1] Translation: No (meaning ablution is not permissible) with water which has been dominated by something else, and for this reason, has been removed from its nature of being water, such as the water of broad beans and soup. (T)

Regarding this, it is stated in Al-Hidayah: "The meaning of broad-bean water etc. is that which has changed due to cooking. If it changed without cooking, ablution with it is permissible. End." [2] This was affirmed in Al-Fath and Al-Inayah, and followed in Al-Jawharah where it was said: "His statement 'and broad-bean water' refers to cooked water which, when cooled, becomes thick. If it was not cooked, it is like water in which a pure substance has been mixed, and ablution with it is permissible. End." [3] Translation: By broad-bean water, it means water that has changed because it was cooked. If it changed without being cooked, then ablution with it will be permissible. (End). And this was maintained in Al-Fath and Al-Inayah, and in Al-Jawharah, following this, it was said: His statement "and broad-bean water" refers to cooked water that thickens when cooled, and if it was not cooked, then it is like water in which some pure thing has mixed, so ablution with it is permissible. (T)

Note: This is also a well-known grain, although it is not common here; its pods are cooked and used in place of a vegetable curry. (M)

---

1 Quduri, Kitab al-Taharah, Matba' Majidi Kanpur, p. 6 2 Al-Hidayah, Kitab al-Taharah, Maktabah Arabiyah Karachi 1/18 3 Al-Jawharah al-Nayyirah, Kitab al-Taharah, Imdadiyah Multan 1/14

फ़तावा-ए-रज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

...इसे प्रतिबंधित पानी माना जाता है। वे भी इस बात के कायल हैं कि केवल धोने से पानी में वह असर पैदा नहीं होता जो भिगोने से होता है, और जो बदलाव पानी में आता है वह दाने के कारण नहीं बल्कि उसके ऊपर की धूल वगैरह की वजह से होता है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(८८) चने पानी में चाहे कितनी ही देर भीगे रहें, शोध यह है कि उससे वज़ू जायज़ है, जब तक कि अनाज के अंश उसमें मिलकर उसे इतना गाढ़ा न कर दें कि वह अपनी तरलता और बहाव खो दे।

(८९) इसी तरह जिसमें बाक़िला (सेम जैसा अनाज) भिगोएं और इसी तरह हर अनाज। मुख्तसर इमाम अबुल हसन कुदूरी में था:

"उस पानी से (वज़ू जायज़) नहीं जिसमें किसी और चीज़ का दबदबा हो जाए और उसे पानी की प्राकृतिक स्थिति से बाहर कर दे, जैसे बाक़िला का पानी और शोरबा।" [१] अनुवाद: नहीं (यानी वज़ू जायज़ नहीं) उस पानी से जिस पर किसी और चीज़ का असर ग़ालिब (हावी) हो गया हो, और इस वजह से पानी अपनी कुदरती शक्ल खो चुका हो, जैसे बाकली का पानी और शोरबा। (त)

इस पर हिदाया में फ़रमाया गया: "बाक़िला के पानी वगैरह से मुराद वह पानी है जो पकाने की वजह से बदल गया हो। अगर बिना पकाए बदल गया हो तो उससे वज़ू जायज़ है।" [२] अल-फ़तह और अल-इनाया में इसकी पुष्टि की गई और अल-जौहरा में इसका पालन करते हुए कहा गया: उनका कहना 'और बाकली का पानी' इससे मुराद पका हुआ पानी है जो ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाता है, और अगर उसे पकाया न गया हो तो वह उस पानी की तरह है जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई हो, तो उससे वज़ू जायज़ है। [३] अनुवाद: बाक़िला के पानी से मुराद वह पानी है जो पकाए जाने की वजह से बदल गया हो। और अगर बिना पकाए बदल गया हो तो उससे वज़ू जायज़ होगा। इसे फ़तह और इनाया में बरकरार रखा गया, और जौहरा में इसकी पैरवी करते हुए फ़रमाया: उनका कॉल (कथन) 'और बाकली का पानी' इससे मुराद पका हुआ पानी है जो ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाता है, और अगर उसे पकाया न गया हो तो यह उस पानी की तरह है जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई हो, तो उससे वज़ू जायज़ है। (त)

नोट: यह भी एक मशहूर अनाज है हालांकि यहाँ इसका रिवाज नहीं, इसकी फलियां पकाते हैं और सालन की जगह इस्तेमाल करते हैं। (म)

---

१ कुद्दूरी, किताब-उत-तहारत, मतबा मजीदी कानपुर, पृ. ६ २ अल-हिदाया, किताब-उत-तहारत, मकतबा अरबिया कराची १/१८ ३ जौहरा नीरा, किताब-उत-तहारत, इमदादिया मुल्तान १/१४

पृष्ठ ५६२ का ७११

فیہ مقید الان بمجرد الغسل لا یسری الیہ ما یسری بالنقع و التغیر الذی یحدث بہ لیس للحب بل لما علیہ من نحو الغبار واللہ تعالی اعلم۔ کے صاف کئے ہوئے پانی کو مقید قرار دیتے ہیں وہ بھی اسی کے قائل ہیں، کیونکہ صرف دھونے سے پانی میں وہ اثر پیدا نہیں ہوتا ہے جو صاف کرنے سے ہوتا ہے ، اور جو تغیر پانی میں پیدا ہوتا ہے وہ دانہ کے باعث نہیں ہے بلکہ اس کے اوپر غبار کی وجہ سے ہے واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

(۸۸) جس پانی میں چنے بھگوئے کتنی ہی دیر بھیگے رہیں تحقیق یہ ہے کہ اس سے وضو جائز ہے مگر یہ کہ اناج کے اجزاء اس میں مل کر اسے گاڑھا کردیں کہ اپنی رقت و سیلان پر باقی نہ رہے۔

(۸۹) یوں ہی جس میں باقلاء بھگوئیں یونہی ہر اناج۔ مختصر امام ابوالحسن قدوری میں تھا:

لا (ای یجوز الوضوء) بماء غلب علیہ غیرہ فآخرجہ عن طبع الماء کماء الباقلاء والمرق۔[1] نہیں (یعنی وضو جائز نہیں) اس پانی سے جس پر اس کے غیر کا غلبہ ہو گیا ہو ، اور اس وجہ سے پانی کو اس کی طبیعت سے خارج کر دیا ہو، جیسے باقلی کا پانی اور شوربہ۔ (ت)

اس پر ہدایہ میں فرمایا: المراد بماء الباقلاء وغیرہ ماتغیر بالطبخ فان تغیر بدون الطبخ یجوز التوضی بہ[2] اھ و اقرہ علیہ فی الفتح والعنایۃ وتبعہ فی الجوھرۃ فقال قولہ وماء الباقلاء المراد المطبوخ بحیث اذا برد ثخن وان لم یطبخ فھو من قبیل وتجوز الطھارۃ بماء خالطہ شیئ طاھر[3] اھ باقلاء کے پانی سے مراد وہ پانی ہے جو پکائے جانے کی وجہ سے متغیر ہو گیا ہو اور اگر بلا پکائے متغیر ہو گیا ہو تو اس سے وضو جائز ہوگا۔ اھ اور اس کو اس پر برقرار رکھا فتح اور عنایہ میں اور جوہرہ

میں اس کی متابعت کی اور فرمایا: ان کا قول "اور باقلی کا پانی" اس سے مراد پکا ہوا پانی ہے جو ٹھنڈا کئے جانے پر گاڑھا ہو جاتا ہے، اور اگر اس کو پکایا نہ گیا ہو تو یہ اس پانی کی طرح ہے جس میں کوئی پاک چیز مل گئی ہو تو اس سے وضو جائز ہے۔(ت)

عن : یہ بھی ایک معروف غلہ ہے اگرچہ یہاں اس کا رواج نہیں اس کی پھلیاں پکاتے ہیں سالن کی جگہ استعمال کرتے ہیں۔ (م)

---

1 قدوری کتاب الطہارت مطبع مجیدی کان پور، ص ۶ 2 الہدایہ کتاب الطہارت مکتبہ عربیہ کراچی ۱/ ۱۸ 3 جوہرہ نیرہ کتاب الطہارت امدادیہ ملتان ۱/ ۱۴

Fatawa Razavia Volume 2

I say: May Allah Almighty have mercy on the Imam Sheikh and upon us. The discourse of Abu al-Hasan pertains to the case where water is taken out of its natural state, for instance, components are mixed into it such that it thickens and no longer remains thin. In such a scenario, performing wudu (ablution) with it is not permissible, even if it has not been cooked. It is stated in Al-Wiqayah: "Not with water that has lost its natural state due to the predominance of other components, or due to cooking, such as bean water or broth." The commentator Imam said: "What is meant is that it takes it out of the nature of water, which is thinness and fluidity. Bean water is an example of water where other components have predominated, and broth is an example of water that has been cooked so that another thing predominates over it." End of quote.

In Al-Islah wal-Idah: "Not with water whose natural state—which is thinness and fluidity—has been lost due to the predominance of other components, like bean water." End of quote. Yes, it appears from what has been cited from Al-Dhakhirah and At-Tatimmah from Al-Maydani, and followed by Sadr al-Shariah, comparing water colored by falling leaves to bean water, that what is meant is what has been soaked in it, altering its quality but not its essence. This is contrary to the relied-upon opinion. In Al-Khaniyah: "It is permissible to perform wudu with water in which chickpeas or beans have been placed to soak, and its color and taste have changed."

Subnote: Praise be to Allah; the Lord, Glorified and Exalted, has opened [understanding] by which speech is corrected, the goal is clarified, and misconceptions are removed, as will come to you in the sixth rule of the third chapter, if Allah Almighty wills. (12) By him (the author), may his Lord forgive him and protect him.

1. Sharh al-Wiqayah, Book of Purification, Rashidiyya Delhi, 1/85.
2. Al-Islah wal-Idah.

Page 563 of 711

फ़तावा रज़विया खंड २

मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला शेख़ इमाम पर और हम पर रहम फ़रमाए। अबुल हसन की बातचीत उस सूरत से मुताल्लिक़ है जब पानी को उसकी फ़ितरत (प्रकृति) से निकाल दे, मसलन उसमें उसके हिस्से (अजज़ा) मिल जाएँ और वह गाढ़ा हो जाए और उसका पतलापन (रक़्क़त) बाक़ी न रहे। तो ऐसी सूरत में उससे वज़ू जायज़ न होगा, चाहे उसे पकाया न गया हो। और 'विक़ाया' में फ़रमाया: "न कि उस पानी से जो दूसरी चीज़ के ग़लबे की वजह से अपनी तबीअत (प्रकृति) से निकल गया हो या पकाए जाने की वजह से तबीअत-ए-मा (पानी की प्रकृति) से निकल गया हो, जैसे बाक़ली (लोबिया) का पानी या शोरबा।" इमाम शारह (टीकाकार) ने फ़रमाया कि इससे मुराद यह है कि उसको पानी की तबीअत यानी पतलापन और बहाव (सैलान) से निकाल दे। बाक़ली का पानी उस पानी की मिसाल है जिस पर दूसरे अजज़ा ग़ालिब आ गए हों, और शोरबा उस पानी की मिसाल है जिसे पकाया गया हो तो उस पर दूसरी चीज़ ग़ालिब आ जाए।

'इसलाह' और 'ईज़ाह' में है कि उस पानी से वज़ू नहीं जिसकी तबीअत ज़ायल हो गई हो यानी रक़्क़त और सैलान, और यह दूसरी मिसाल बाक़ली के पानी की है। हाँ, जैसा कि 'ज़ख़ीरा' और 'ततिम्मा' से ज़ाहिर है और 'मैदानी' ने ज़िक्र किया और 'सद्रुश-शरीआ' ने उसका अनुसरण किया, गिरे हुए पत्तों से रंगे पानी की तुलना बाक़ली के पानी से करना, इससे मुराद वह है जिसमें कोई चीज़ भिगोई गई हो जिससे उसका गुण बदल जाए पर सार नहीं। यह भरोसेमंद राय के ख़िलाफ़ है। 'ख़ानिया' में है: "उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें चने या बाक़ली (लोबिया) भिगोने के लिए डाले गए हों और उसका रंग और स्वाद बदल गया हो।"

उपनोट: अल्लाह तआला के लिए हम्द (प्रशंसा) है; अल्लाह पाक ने वह खोल दिया है जिसके ज़रिए कलाम (बात) सही होता है, मक़सूद वाज़ेह (स्पष्ट) होता है और वहम (भ्रम) ख़त्म होते हैं जैसा कि फ़स्ल सालिस (तीसरे अध्याय) के छठे ज़ाबिते (नियम) में आएगा, इंशा अल्लाह तआला। (१२) लेखक द्वारा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे और उनकी रक्षा करे।

1. शरह विक़ाया, किताबुत तहारत, रशीदिया दिल्ली, १/८५।
2. इसलाह वल ईज़ाह।

पृष्ठ ५६३/७११

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

اقول: رحم اللہ الشیخ الامام ورحمنا بہ کلام عہ ابی الحسن فیما اذا اخرجہ عن طبع الماء بان اختلطت فیہ اجزاءہ فثخن ولم یبق رقیقاً وحینئذ لا یجوز التوضی بہ وان لم یطبخ وقد قال فی الوقایۃ لایباء زال طبعہ بغلبۃ غیرہ اجزاء او بالطبخ کماء الباقلی والمرق فقال الامام الشارح المراد بہ ان یخرجہ عن طبع الماء وھو الرقۃ والسیلان وماء الباقلی نظیر ما غلب علیہ غیرہ اجزاء والمرق نظیر ما غلب علیہ بالطبخ اھـ

میں کہتا ہوں اللہ تعالیٰ شیخ الامام پر اور ہم پر رحم فرمائے، ابو الحسن کی گفتگو اس صورت سے متعلق ہے جب کہ پانی کو اس کی طبیعت سے نکال دے مثلاً یہ کہ اس میں اس کے اجزاء مل جائیں اور وہ گاڑھا ہو جائے اور اس کی رقت باقی نہ رہے تو ایسی صورت میں اس سے وضوء جائز نہ ہو گا خواہ پکایا نہ گیا ہو، اور وقایہ میں فرمایا "نہ کہ اُس پانی سے جو دوسری شے کے غلبہ کی وجہ سے اپنی طبیعت سے خارج ہو گیا ہو یا پکائے جانے کی وجہ سے طبیعت ماء سے خارج ہو گیا ہو، جیسے باقلی (لوبیا) کا پانی یا شوربہ۔ امام شارح نے فرمایا اس سے مراد یہ ہے کہ اس کو پانی کی طبیعت رقت اور سیلان ہے اور باقلی (لوبیا) کا پانی اُس پانی کی نظیر ہے جس پر دوسرے اجزاء غالب آگئے ہوں، اور شوربہ اُس پانی کی مثال ہے جس کو پکایا گیا ہو تو اس پر دوسری شئ غالب آجائے اھـ اور اصلاح اور ایضاح میں ہے کہ نہ اُس پانی سے کہ جس کی طبیعت زائل ہو گئی ہو یعنی رقت اور سیلان، اور یہ دوسری

وفی الاصلاح والایضاح لایباء زال طبعہ وھو الرقۃ والسیلان بغلبۃ غیرہ اجزاء کماء الباقلا ۲ اھـ نعم الظاھر مما مر عن الذخیرۃ والتتمۃ عن المیدانی وتبعہ صدر الشریعہ من قیاس ما تلون بوقوع الاوراق

علی ماء الباقلی ان المراد مانقع فیه فغیره وصفاً لا ذاتاً وھو خلاف المعتمد۔ ففی الخانیۃ یجوز التوضو بما القی فیہ حمص او باقلاء لیبتل و تغیر لونه وطعمه

عه: الحمد للہ فتح المولی سبحانہ وتعالیٰ بما یصحح الکلام ویوضع المرام و یزیل الاوھام کما یاتیك فی سادس ضوابط الفصل الثالث ان شاء اللہ تعالیٰ ۱۲ منه غفرلہ و حفظہ ربہ

اللہ تعالیٰ کے لئے حمد ہے اللہ پاک نے وہ کھول دیا ہے جس کے ذریعے کلام صحیح ہوتا ہے، مقصود واضح ہوتا ہے اور وہم ختم ہوتے ہیں جیسا کہ فصل ثالث کے چھٹے ضابطہ میں آئے گا۔ (ت)

۱ شرح وقایۃ کتاب الطہارت رشیدیہ دہلی ۱/ ۸۵ ۲ اصلاح والایضاح

Fatawa Rizvia, Volume 2

[Arabic] "But its liquidity did not depart." [End of quote]. ...occurred due to the dominance of the parts of things, such as the water of broad beans (lobia). [End of quote]. Yes, the previous passage from 'Dhakhira' and 'Tatimmah', which is quoted from 'Maydani' and followed by 'Sadr-ush-Shari'ah', compared water in which leaves had fallen and changed its color to broad bean water. They stated that it refers to water in which something was cleaned, changing its quality but not its essence; however, this is against the relied-upon view. It is in 'Khaniyah' that Wudu (ablution) is permissible with water in which chickpeas or broad beans were placed to soak so they become soft, and its color and taste changed but its liquidity remained. [End of quote]. And in 'Al-Fath' via 'Al-Yanabi': "If chickpeas and broad beans were soaked and their color, taste, and smell changed, performing Wudu with it is permissible." [End of quote]. Similar to it is reported in 'Fatawa al-Ghazzi', and the like in 'Al-Munyah', and it was attributed in 'Al-Hilyah' to 'Al-Multaqat', 'Tajnees al-Multaqat', and 'Al-Zahiriyyah'. (Translator's Note)

Benefit: I say: From this it is evident that the water in which horse fodder is being soaked is valid for Wudu as long as it remains thin and flowing and has not been touched by an unpurified hand, for according to the correct school of thought, the horse's leftover is valid for Wudu. It is in 'Durr-ul-Mukhtar':

[Arabic] "The leftover of an animal with edible meat, including the horse according to the most correct view, is pure and a purifier without any dislike."

Those animals whose meat is Halal (lawful to eat), their leftover is pure and through it purification is attained without any dislike, and the horse is also among them according to the most correct view. (Translator's Note)

(90) This happened and. (91) The leftover of Halal animals like cows, buffaloes, goats, etc., is pure as long as no impurity is known on their mouths at that time, even if it is a male. Some have said a male's leftover is impure because it is its habit to sniff when a female urinates, even if it finds urine on the ground. However, the correct view is its purity. 'Durr-ul-Mukhtar'.

---

1. Qazi Khan, in 'What is not permissible for Wudu', Naval Kishore Lucknow, 1/9
2. Fath al-Qadeer, in 'What is not permissible for Wudu', Sukkur, 1/65
3. Durr-ul-Mukhtar, Section on the Well, Mujtabai Delhi, 1/40

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[अरबी] "लेकिन उसकी तरलता (रक़्क़त) ख़त्म नहीं हुई।" [इति]। ...वस्तुओं के अंशों की प्रधानता के कारण ऐसा हुआ हो जैसे लोबिया का पानी। [इति]। हाँ, 'ज़ख़ीरा' और 'ततिम्मा' का पिछला लेख जो 'मैदानी' से उद्धृत है और जिसका अनुसरण 'सदरुश शरीआ' ने किया है, उसमें जिस पानी में पत्तियाँ गिरी हों और उसका रंग बदल गया हो, उसे लोबिया के पानी के समान माना गया। उन्होंने कहा कि इसका अर्थ वह पानी है जिसमें कोई चीज़ साफ़ की गई हो, जिससे पानी का गुण बदल गया हो न कि उसका मूल तत्व; लेकिन यह विश्वसनीय मत के विरुद्ध है। 'ख़ानिया' में है कि उस पानी से वज़ू करना जायज़ है जिसमें चने या लोबिया भीगने के लिए डाले गए हों और उससे उसका रंग और स्वाद बदल गया हो लेकिन उसकी तरलता बनी रही। [इति]। और 'अल-फ़त्ह' में 'यनाबी' के हवाले से है: "अगर चने और लोबिया पानी में भिगोए जाएँ जिससे पानी का रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ है।" [इति]। इसी प्रकार का उल्लेख 'फ़तावा ग़ज़्ज़ी' और 'मुनया' में है, और 'हिल्या' में इसे 'मुल्तक़त', 'तजनीस मुल्तक़त' और 'ज़हीरिया' की ओर संदर्भित किया गया है। (त)

फ़ायदा: अक़ूलु (मैं कहता हूँ): यहाँ से स्पष्ट हुआ कि वह पानी जिसमें घोड़े का दाना भीग रहा हो, वज़ू के योग्य है जब तक कि वह पतला और बहने वाला हो और उसे बिना वज़ू वाले हाथ ने न छुआ हो, क्योंकि सही मत के अनुसार घोड़े का झूठा वज़ू के योग्य है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[अरबी] "खाने योग्य मांस वाले जानवर का बचा हुआ पानी (झूठा), जिसमें सबसे सही मत के अनुसार घोड़ा भी शामिल है, पवित्र और बिना किसी अरुचि के पवित्र करने वाला है।"

वे जानवर जिनका मांस हलाल है, उनका झूठा पाक है और उससे बिना किसी कराहियत के पवित्रता प्राप्त होती है, और सबसे सही मत के अनुसार घोड़ा भी उन्हीं में से है। (त)

(90) यह हुआ और। (91) गाय, भैंस, बकरी आदि हलाल जानवरों का झूठा पाक है जब तक कि उस समय उनके मुँह पर कोई गंदगी न पता हो, चाहे वह नर ही क्यों न हो। कुछ ने कहा है कि नर का झूठा अपवित्र है क्योंकि उसकी आदत होती है कि जब मादा पेशाब करती है तो वह अपना मुँह वहाँ ले जाकर सूँघता है, यहाँ तक कि अगर ज़मीन पर पेशाब पड़ा हो तो भी। लेकिन सही मत उसकी पवित्रता ही है। 'दुर्रे मुख़्तार'

---

1. क़ाज़ी ख़ान, 'फ़ीमा ला यजूसु बिहि अत्तवज़्ज़ी', नवल किशोर लखनऊ, 1/9

2. फ़त्हुल क़दीर, 'फ़ीमा ला यजूसु बिहि अत्तवज़्ज़ी', सुक्कुर, 1/65

3. दुर्रे मुख़्तार, कुएँ का अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली, 1/40

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ولکن لم تذھب رقتہ 1 اھ اشیاء کے اجزاء کے غلبہ کی وجہ سے ہوا ہو جیسے باقلی (لوبیا) کا پانی اھ ہاں ذخیرہ اور تتمہ کی گزشتہ عبارت جو میدانی سے منقول ہے اور جس کی متابعت صدر الشریعہ نے کی ہے، جس پانی میں پتے گرے ہوں اور اس کا رنگ بدل گیا ہو اس کو باقلی کے پانی پر قیاس کیا، اور کہا کہ اس سے مراد وہ پانی ہے جس میں کسی چیز کو صاف کیا گیا ہو، جس سے پانی کا وصف بدل گیا ہو نہ کہ ذات بدلی ہو، اور یہ معتمد کے خلاف ہے۔ خانیہ میں ہے کہ اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں چنے ڈال دئے گئے ہوں یا باقلی (لوبیا) ڈال دیا ہو تاکہ تر ہو جائے اور اسے اس کا رنگ اور مزا بدل گیا ہو لیکن اس کی رقت ختم نہ ہوئی ہو اھ اور فتح میں ہے ینابیع میں ہے کہ اگر چنوں اور باقلی کو پانی میں صاف کیا جس سے پانی کا رنگ، مزا اور بُو بدل گئی تو اُس سے وضو جائز ہے اور اسی کی مثل اس سے فتاوٰی غزی میں ہے اور اسی کی مثل منیہ میں ہے اور حلیہ میں اس کو ملتقط اور تجنیس ملتقط اور ظہیریہ کی طرف منسوب کیا۔ (ت) وفی الفتح فی الینابیع لونقع الحمص والباقلاء وتغیر لونہ وطعمہ وریحہ یجوز التوضی بہ اھ ومثلہ عنھا فی فتاوی الغزی ومثلہ فی المنیۃ وعزاہ فی الحلیۃ للملتقط وتجنیس الملتقط والظھیریۃ۔

فائدہ: اقول: یہاں سے ظاہر ہوا کہ گھوڑے کے دانے سے جو پانی تو بڑے میں بچ رہے قابل وضو ہے جبکہ رقیق سائل ہو اور اسے بے وضو ہاتھ نہ لگا ہو کہ مذہب صحیح میں گھوڑے کا جھوٹا قابل وضو ہے۔ در مختار میں ہے:

وسؤر مأکول لحم ومنہ الفرس فی الاصح طاہر طھور بلا کراھۃ 3۔ وہ جانور جن کا گوشت حلال ہے ان کا جھوٹا پاک ہے اور اس سے بلا کراہت طہارت حاصل ہوتی ہے اور گھوڑا بھی انہی میں سے ہے اصح قول کے مطابق۔ (ت)

(۹۰) یہ ہوا اور۔ (۹۱) گائے بھینس 2 بکری وغیرہ حلال جانوروں کا جھوٹا جبکہ اُس وقت اُن کے منہ کی نجاست نہ معلوم ہو اگرچہ نر ہو اور بعض نے کہا نر کا جھوٹا ناپاک ہے کہ اُس کی عادت ہوتی ہے کہ جب مادہ پیشاب کرے اپنا منہ وہاں لگا کر سونگھتا ہے نیز زمین پر اگر اس کا پیشاب پڑا پائے تو اُسے مگر صحیح طہارت ہے۔ در مختار

---

1 قاضی خان فیما لایجوز بہ التوضی نولکشور لکھنؤ ۱/ ۹ 2 فتح القدیر فیما لایجوز بہ التوضی سکھر ۱/ ۶۵ 3 در مختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۱/ ۴۰

Fatawa Razawiyya Volume II It states:

[Arabic]: The leftover water of a domestic donkey, even if male, is doubtful in its purifying quality according to the most correct opinion, though its cleanliness is not doubtful. 1- [Urdu]: The purifying nature of the leftover water of a domestic donkey is doubtful; its cleanliness is not doubtful according to the most correct opinion. (T)

In Radd al-Muhtar, it says: [Arabic]: His saying 'in the most correct opinion' is said by Qadikhan, and opposing it is the statement of its impurity because it makes its mouth impure by smelling urine. It was said in al-Bada'i: And it is not sound because it is an imagined matter that does not frequently occur, so it does not affect the removal of what is established. Bahr 2. End. [Urdu]: His statement "in the most correct opinion" is the statement of Qadikhan, and opposing it is the statement of its impurity because its mouth becomes impure due to smelling urine. It was stated in al-Bada'i that this is not correct because it is a mere illusion; it does not happen commonly, so it will not be effective in removing what is established. Bahr, end. (T)

[Arabic]: I say: (1) If the criterion is rarity, the impurity of a male goat's leftover water would appear, for if its smelling the female goat's urine is rare, then it recurs several times every day that it lowers its penis and the pre-seminal fluid and urine flow, so it sucks it. Rather, the reason in my view - and Allah knows best - is that (2) drying is a cause of purity on the bodies of animals as it is in the earth, and we have established this by the success of Allah Almighty in the chapter of impurities from our Fatawa, and Allah Almighty knows best. [Urdu]: I say: (1) If the criterion (reason) is to be rare, then the impurity of a male goat's leftover water would also be apparent, because although it rarely smells the goat's urine, this act occurs several times a day where it lowers its penis—and both pre-seminal fluid and urine emerge from it—so that goat sucks that penis; rather, the reason for this according to me (and Allah knows best) is that drying is a cause of purification on the bodies of animals just as is the case with the ground. We have, by the grace of Allah, conducted research on this in the chapter of Impurities of our Fatawa, and Allah Almighty knows best. (T)

I say: Yes 3, if it is seen that a bull, etc., smelled the female's urine or a male goat took out its penis and sucked it, and at that time pre-seminal fluid and urine were emerging, and before its mouth could become clean, it put it in water, then...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai Delhi, 1/40 2 Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt, 1/165

फ़तावा रज़विया जिल्द II में है:

[अरबी]: पालतू गधे का जूठा, चाहे वह नर ही क्यों न हो, सबसे सही राय के अनुसार उसकी शुद्धता संदिग्ध है, न कि उसकी पाकी। 1- उर्दू: पालतू गधे के जूठे की तहूरियत (शुद्ध करने की क्षमता) संदिग्ध है, तहारत (पवित्रता) संदिग्ध नहीं, सबसे सही मत के अनुसार। (त)

रद अल-मुहतार में है: [अरबी]: उनका कहना "सबसे सही मत में" क़ाज़ी खां का कथन है, और इसके विपरीत उसकी नापाकी (नजासत) का कथन है क्योंकि उसका मुँह पेशाब सूंघने के कारण नापाक हो जाता है। बदाइ' में कहा गया: यह सही नहीं है क्योंकि यह एक काल्पनिक बात है जो अक्सर नहीं होती है, इसलिए जो प्रमाणित है उसे हटाने में यह प्रभावी नहीं होगा। बहर 2. अंत। उर्दू: उनका कहना "फी अल-असह" यह क़ाज़ी खां का कथन है और इसके मुक़ाबले में इसकी नजासत का कथन है इसलिए कि इसका मुँह पेशाब सूंघने की वजह से नजिस हो जाता है, बदाइ' में फरमाया यह दुरुस्त नहीं क्योंकि यह बात महज़ वहम है, आमतौर पर ऐसा नहीं होता है तो जो साबित है उसके इज़ाला (हटाने) में मुअस्सिर (प्रभावी) न होगा, बहर इह। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: (1) यदि आधार दुर्लभता है, तो नर बकरे के जूठे का नापाक होना ज़ाहिर होगा, क्योंकि यदि बकरी के पेशाब को सूंघना दुर्लभ है, तो हर दिन कई बार ऐसा होता है कि वह अपना लिंग लटकाता है और मज़ी व पेशाब दोनों उससे निकलते हैं, तो वह उसे चूसता है। बल्कि मेरे निकट इसकी वजह - और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है - यह है कि (2) सूखना जानवरों के शरीर पर पाकी का कारण है जैसा कि ज़मीन के मामले में है, और हमने अल्लाह तआला की तौफीक से अपने फ़तावा के नजासत वाले अध्याय में इसकी तहक़ीक़ की है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

अक़ूल: हाँ 3 अगर देखें कि बैल वग़ैरह ने मादा का पेशाब सूंघा या बकरे ने अपना आला-ए-तनासुल (लिंग) निकाल कर चूसा और उस वक़्त मज़ी और बोल (पेशाब) निकल रहे थे और क़ब्ल इसके कि उसका मुँह पाक हो जाए पानी में डाल दिया तो...

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल बीर, मुजतबाई दिल्ली, 1/40 2 रद अल-मुहतार, बाबुल बीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/165

पृष्ठ 565 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی میں ہے:

سؤر حمار اهلي ولو ذكرا فی الاصح مشكوك فی طهوريته لاطهارته 1۔ پالتو گدھے کے جھوٹے کی طہوریت مشکوک ہے طہارت مشکوک نہیں اصح قول کے مطابق۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: قوله فی الاصح قاله قاضیخان و مقابلاله القول بنجاسته لانه ینجس فمه بشم البول قال فی البدائع وهو غیر سدید لانه امر موهوم لایغلب وجوده فلا یؤثر فی ازالة الثابت بحر 2 اھ اس کا قول "فی الاصح" یہ قاضی خاں کا قول ہے اور اس کے مقابل اس کی نجاست کا قول ہے اس لئے کہ اس کا منہ پیشاب سونگھنے کی وجہ سے نجس ہو جاتا ہے، بدائع میں فرمایا یہ درست نہیں کیونکہ یہ بات محض وہم ہے، عام طور پر ایسا نہیں ہوتا ہے تو جو ثابت ہے اس کے ازالہ میں موثر نہ ہوگا، بحر اھ (ت)

اقول:(۱) ان کان المناط الندرة یظهر تنجیس سؤر التیس فان شمه بول العنزانکان نادرا فانه یتکرر منه کل یوم مرارا انه یدلی ذکره والمذی والبول نابعان فیمصه بل الوجه عندی و اللہ تعالیٰ اعلم ان (۲) الجفاف سبب الطهارة فی ابدان الحیوانات کما فی الارض وقد حققناه بتوفیق اللہ تعالیٰ فی باب الانجاس من فتاؤنا واللہ تعالیٰ اعلم۔ اقول: (۱) میں کہتا ہوں اگر مناط (علت) نادر ہونا ہے تو بکرے کے جھوٹے کا نجس ہونا بھی ظاہر ہوگا، کیونکہ وہ بکری کے پیشاب کو تو کم ہی سونگھتا ہے مگر یہ عمل دن میں کئی بار اس سے سرزد ہوتا ہے کہ وہ اپنا ذکر لٹکاتا ہے اور مذی اور پیشاب دونوں اس سے نکلتے ہیں، تو وہ بکرا اس ذکر کو چوستا ہے بلکہ اس کی وجہ میرے نزدیک (واللہ اعلم) یہ ہے کہ خشک ہونا حیوانات کے بدن میں سبب طہارت ہے جیسا کہ زمین کا حال ہے اور ہم نے بتوفیق اللہ اس کی تحقیق اپنے فتاوی کے باب الانجاس میں کی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

اقول: ہاں ۳ اگر دیکھیں کہ بیل وغیرہ نے مادہ کا پیشاب سونگھا یا بکرے نے اپنا آلہ تناسل نکال کر چوسا اور اُس وقت مذی اور بول نکل رہے تھے اور قبل اس کے کہ اس کا منہ پاک ہو جائے پانی میں ڈال دیا تو

1 در مختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۱/ ۴۰ 2 رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۵

Fatawa Razawiyya - Volume II Now, certainly the water will become impure, and if it [an animal] puts its mouth into four vessels, the first three will be impure, and the fourth will be pure and valid for ablution (Wudu). This was meant to be written with number 27, but the Divine will happened as such. Praise be to Allah for what He has made, for what He has given, and for what He has withheld. And may the blessings and peace of Allah Almighty be upon the Mediator whose intercession is accepted, and upon his family, his companions, his son, and his entire group. (92) Tar (coal tar) fell into the water, causing a strong foul smell, but it did not become thick; performing Wudu with it is permissible. It is mentioned in Fatawa Zainabiyyah: [Arabic] It was asked about water whose smell changed due to tar: Is Wudu permissible with it or not? He answered: Yes, it is permissible. End. Tar (pronounced with Fatha or Kasra, like Zarban) is the extract of Juniper and cedar (Qamus). And Arz is the fruit of the pine tree, as stated by Abu Hanifa (Taj al-Arus). Something similar exists in our country as I mentioned. (T) I say: However, due to the foul smell, it should be disliked (Makruh), especially if the bad smell remains during prayer, as it would cause 'Karahat-e-Tahrimi' (prohibitive dislike). (93) Bread was soaked in water; its particles spread quickly. But as long as it does not make the water thick like Sattu (parched grain drink) and it remains thin and fluid, it is valid for Wudu even if its color, taste, and smell all change. It is mentioned in Khaniyah: [Arabic] If bread is soaked in water and it remains thin, Wudu with it is permissible. If bread was soaked in water and the water remained thin, then Wudu is permissible with it. (T) (94) Similarly, that in which mangoes were soaked. (95) I say, similarly, the wash-water of meat, even if a degree of redness appears in the water, for according to the correct school of thought...

1. Fatawa Zainabiyyah on the margin of Fatawa Ghiyathiyyah, Book of Purification, Maktaba Islamia, Quetta, p. 3
2. Al-Qamus al-Muhit, Chapter of Ra, Section of Qaf, Egypt, 132/2
3. Lisan al-Arab, Beirut, 306/5
4. Qazi Khan, on what is not permissible for Wudu, Naval Kishore, Lucknow, 9/1 Page 566 of 711

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो अब बेशक पानी नापाक हो जाएगा, और अगर चार बर्तनों में मुँह डाला तो पहले तीन नापाक हैं चौथा पाक और वज़ू के काबिल है। इसे नंबर 27 के साथ लिखना था मगर इलाही इरादा यूँ ही हुआ। अल्लाह के लिए हम्द है उस पर जो उसने बनाया, जो उसने दिया और जिससे रोका। और अल्लाह तआला की बरकतें और सलाम हों शफ़ीअ-ए-मुशफ़्फ़अ (सिफ़ारिश करने वाले) पर और उनकी आल, असहाब, बेटे और पूरी जमात पर। (92) पानी में कोलतार गिर गया जिससे उसमें सख्त बदबू आ गई मगर गाढ़ा नहीं हुआ, इससे वज़ू जाइज़ है। फ़तावा ज़ैनबिया में है: [अरबी] कोलतार की वजह से गंध बदलने वाले पानी के बारे में पूछा गया: क्या इससे वज़ू जाइज़ है या नहीं? उन्होंने जवाब दिया: हाँ, जाइज़ है। अंत। और क़तरान (फ़तहा और कसरा के साथ, ज़रबान की तरह) अबहल और अर्ज़ का निचोड़ है (क़ामूस)। और अर्ज़ सनोबर के पेड़ का फल है, यह इमाम अबू हनीफ़ा का क़ौल है (ताज अल-अरूस)। इस तरह का हमारे देश में भी होता है जैसा मैंने ज़िक्र किया। (त) अकुल (मैं कहता हूँ): मगर बदबू की वजह से मकरूह होना चाहिए, ख़ास तौर पर अगर उसकी बदबू नमाज़ में बाकी रही तो यह मकरूह-ए-तहरीमी का सबब होगा। (93) पानी में रोटी भिगोई, उसके कण जल्दी बिखर जाते हैं। मगर जब तक पानी को सत्तू की तरह गाढ़ा न कर दें और वह पतला और तरल रहे, तो वज़ू के काबिल है, चाहे रंग, स्वाद और गंध सब बदल जाएं। ख़ानिया में है: [अरबी] अगर रोटी को पानी में भिगोया और वह पतला रहा तो उससे वज़ू जाइज़ है। अगर रोटी को पानी में भिगोया और वह पानी पतला रहा तो उससे वज़ू जाइज़ है। (त) (94) इसी तरह वह जिसमें आम भिगोए गए हों। (95) अकुल (मैं कहता हूँ): इसी तरह गोश्त का धोवन, चाहे पानी में एक प्रकार की लाली आ जाए, क्योंकि सही मज़हब में...

1. फ़तावा ज़ैनबिया, फ़तावा गयासिया के हाशिये पर, किताब-तहारत, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृ. 3
2. क़ामूस अल-मुहीत, बाब अल-रा, फ़स्ल अल-क़ाफ़, मिस्र 132/2
3. लिसान अल-अरब, बेरूत 306/5
4. क़ाज़ी ख़ान, वज़ू के लिए क्या जाइज़ नहीं है, नवल किशोर लखनऊ 9/1 पृष्ठ 566/711

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی اب بیشک پانی ناپاک ہو جائے گا، اور اگر چار برتنوں میں منہ ڈالا تو پہلے تین ناپاک ہیں چوتھا پاک و قابل وضو۔ اسے نمبر ۲۷ کے ساتھ لکھنا تھا مگر ارادہ الہیہ یو نہی واقع ہوا ولہ الحمد علی ما صنع، و علی ما اعطی و علی ما منع، و صلی اللہ تعالٰی و بارک و سلم علی الشفیع المشفع، و آلہ و صحبہ و ابنہ و حزبہ اجمع ۔ (۹۲) پانی میں کولتار پڑ گیا جس سے اس میں سخت بدبو آگئی مگر گاڑھا نہ ہو گیا اس سے وضو جائز ہے۔ فتاوی زینبیہ میں ہے : سئل عن الماء المتغیر ریحہ بالقطران ھل یجوز الوضوء منہ ام لا اجاب نعم یجوز اھ والقطران بالفتح و بالکسر کظربان عصارۃ الابھل والارز قاموس و الارز ثمر الصنوبر قالہ ابو حنیفۃ تاج العروس و مثلہ في بلادنا ما ذکرت۔ سوال کیا گیا کہ وہ پانی جس کی بو کولتار کی وجہ سے متغیر ہو گئی ہو، کیا اس سے وضو جائز ہے؟ تو انہوں نے جواب دیا : ہاں، اور قطران بالفتح اور بالکسر ظربان کی طرح ابھل اور ارز کا نچوڑ ہے قاموس، اور ارز صنوبر کے درخت کا پھل ہوتا ہے، یہ ابو حنیفہ کا قول ہے تاج العروس۔ اس قسم کا ہمارے ملک میں ہوتا ہے جیسا میں نے ذکر کیا۔(ت) اقول : مگر بوجہ خبث رائحہ مکروہ ہونا چاہئے خصوصاً اگر اس کی بدبو نماز میں باقی رہی کہ باعث کراہت تحریمی ہو گی۔ (۹۳) پانی میں روٹی بھگوئی اس کے اجزاء جلد منتشر ہو جاتے ہیں مگر جب تک پانی کو ستو کی طرح گاڑھا نہ کر دیں رقیق و سیال رہے قابل وضو ہے اگر چہ رنگ ، مزہ، بو سب بدل جائیں، خانیہ میں ہے : لو بل الخبز بالماء و بقی رقیقا جاز بہ الوضوء۔ اگر روٹی کو پانی میں بھگو یا اور وہ پانی پتلا رہا تو اس سے وضو جائز ہے۔(ت) (۹۴) یونہی جس میں آم بھگوئے ۔ (۹۵) اقول اسی طرح گوشت کا دھوون اگر چہ پانی میں ایک گونہ سرخی آجائے کہ صحیح مذہب میں

1 فتاویٰ زینبیہ علی حاشیہ فتاوی غیاثیہ کتاب الطھارۃ مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۳ 2 قاموس المحیط باب الراء فصل القاف مصر ۱۳۲/۲ 3 لسان العرب بیروت ۳۰۶/۵ 4 قاضی خان فیما لایجوز به التوضی نولکشور لکھنؤ ۹/۱ صفحہ 566 از 711

Fatawa Rizwia Volume II The blood of meat is also pure, not the redness that is on its surface in some places and washes away in water. It is stated in Radd al-Muhtar from Bazzaziyyah: 'The blood that comes out of lean meat when cutting, if it is from it, is pure, and such is the ruling of general meat blood.' (Footnote 1) (96) Soap (97) Ushnan, which is a grass, also called 'Haradh'. (98) Raihan, also called 'Aas'. (99) Babuna (Chamomile) (100) Khatmi (Marshmallow) (101) Berry leaves - these things are added to bath water to remove dirt and increase cleanliness; performing Ghusl (ritual bath) and Wudu (ablution) with such water is permissible even if its qualities change, as long as its fluidity remains. It is stated in Mukhtasar Imam Abul Hasan: 'Purification is permissible with water mixed with a pure thing that changes one of its qualities, such as flood water and water mixed with milk, saffron, soap, or Ushnan.' (Footnote 2) On this, it is stated in Jawharah al-Nayyirah: 'If it changes two qualities, then according to the Sheikh's indication, Wudu is not permissible, but the correct view is that it is permissible, as mentioned in al-Mustasfa.' (Footnote 3) It is stated in al-Hilyah: 'Restricting it to one of the three qualities...'

1. Bazzaziyyah with al-Hindiyyah, Section 7 on Impurities, Peshawar 4/21
2. Quduri, Chapter on Purity, Majidi Kanpur p. 6
3. Jawharah al-Nayyirah, Chapter on Purity, Imdadia Multan 1/14 Page 567 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी गोश्त का खून भी पाक है, वह सुर्खी नहीं जो कुछ जगहों पर उसकी सतह पर होती है और पानी में धुल जाती है। रद्द अल-मुह्तार में बज़ज़िया से है: 'दुबले गोश्त से काटने के वक्त निकलने वाला खून, अगर वह उसी से है, तो वह पाक है, और सामान्य मांस के खून का भी यही हुक्म है।' (फुटनोट 1) (96) साबुन (97) उश्नान, जो एक घास है, इसे 'हरज़' भी कहते हैं। (98) रेहान, जिसे 'आस' भी कहते हैं। (99) बाबूना (100) खतमी (101) बेरी के पत्ते - ये चीजें मैल काटने और अधिक स्वच्छता के लिए स्नान के पानी में मिलाई जाती हैं; इनसे ग़ुस्ल (स्नान) और वज़ू करना जायज़ है, भले ही इसके गुणों में बदलाव आ जाए, जब तक कि वह पतला (द्रव) बना रहे। मुख़्तसर इमाम अबुल हसन में है: 'उस पानी से पाकी हासिल करना जायज़ है जिसमें कोई पाक चीज़ मिल जाए और उसके गुणों में से किसी एक को बदल दे, जैसे बाढ़ का पानी और वह पानी जिसमें दूध, केसर, साबुन या उश्नान मिला हो।' (फुटनोट 2) इस पर जौहरा नियरा में है: 'यदि वह दो गुणों को बदल देता है, तो शेख के संकेत के अनुसार वज़ू जायज़ नहीं है, लेकिन सही बात यह है कि यह जायज़ है, जैसा कि अल-मुस्तसफ़ा में है।' (फुटनोट 3) हिलिया में है: 'तीनों गुणों में से एक के साथ प्रतिबंधित करना...'

1. बज़ज़िया मय अल-हिन्दिया, अल्सबे फ़िल नजस, पेशावर 4/21
2. कुदूरी अल-तहारत, मजीदी कानपुर पृ. 6
3. जौहरा नियरा अल-तहारत, इमदादिया मुल्तान 1/14 पेज 567 of 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی گوشت کا خون بھی پاک ہے نہ کہ وہ سُرخی کہ بعض جگہ اس کی سطح پر ہوتی اور پانی میں ڈھل جاتی ہے۔ ردالمحتار میں بزازیہ سے ہے: الدم الخارج من اللحم المهزول عند القطع ان منه فطاهر وكذا دم مطلق اللحم 1۔ دبلے گوشت سے نکلنے والا خون کاٹتے وقت، اگر اس سے نکلے تو پاک ہے اور اسی طرح مطلق گوشت کے خون کا حکم ہے۔ (ت) (۹۶) صابون (۹۷) اشنان کہ ایک گھاس ہے اسے حرض بھی کہتے ہیں۔ (۹۸) ریحان جسے اس بھی کہتے ہیں۔ (۹۹) بابونہ (۱۰۰) خطمی (۱۰۱) بیری کے پتے کہ یہ چیزیں میل کاٹنے اور زیادت نظافت کو آبِ غسل میں شامل کی جاتی ہیں اس سے غسل و وضو جائز ہے اگرچہ اوصاف میں تغیر آ جائے جب تک رقت باقی رہے مختصر امام ابوالحسن میں ہے: يجوز الطهارة بماء خالطه شيئ طاهر فغير احد اوصافه كماء المد والماء الذى اختلط به اللبن او الزعفران او الصابون او الاشنان 2۔ اُس پانی سے طہارت جائز ہے جس میں کوئی پاک چیز مل کر اس کے کسی وصف کو بدل دے جیسے سیلاب کا پانی اور وہ پانی جس میں دودھ، زعفران، صابون یا اشنان ملی ہو۔ (ت) اس پر جوہرہ نیرہ میں ہے: فان غير وصفين فعلى اشارة الشيخ لا يجوز الوضوء ولكن الصحيح انه يجوز كذا فى المستصفى 3۔ تو اگر وہ اس کے دو اوصاف کو بدل دے تو شیخ کے اشارہ کے مطابق اس سے وضو جائز نہیں، لیکن صحیح یہ ہے کہ جائز ہے کذا فی المستصفٰی۔ (ت) حلیہ میں ہے: التقييد باحد الاوصاف الثلثة فيه تین میں سے ایک وصف کے ساتھ مقید کرنے

1 بزازیہ مع الہندیہ السابع فی النجس پشاور ۴/۲۱ 2 قدوری الطہارت مجیدی کانپور ص ۶ 3 جوہرہ نیرہ الطہارت امدادیہ ملتان ۱/۱۴ Page 567 of 711

Fatāwā Raḍawiyyah, Volume II

There is a point for consideration in this, because Sheikh Ḥāfiẓ al-Dīn narrated in *al-Mustasfī* from his teacher, the learned al-Kardarī, that the correct report is contrary to this. (T)

In *Mujtabā Sharḥ Qudūrī*: The author's statement "if one of its qualities changes" does not imply a strict restriction. Even if all three qualities change due to *ushnān* (potash), soap, or saffron, and neither the name "water" is stripped from it nor its essence (fluidity) is lost, then performing wudu with it is permissible. (T)

In *Fatāwā Imām Qāḍī Khān*: Water mixed with soap or *ḥurḍ* (*ushnān* used for washing hands after meals) remains valid for wudu as long as its fluidity and clarity remain. (T)

(102 to 107) Even if these same six things are added to water and boiled, wudu is still permissible as long as the fluidity remains.

In *al-Hidāyah*: If water changes by boiling after another substance has been mixed with it, wudu with it is not permissible. Except if something was boiled in it intended for extra cleanliness, like *ushnān* and the like, because a deceased person is sometimes bathed with water boiled with lotus leaves (*sidr*); this is mentioned in the Sunnah. Unless that substance overcomes the water such that it becomes like *sawiq* (thick gruel).

1 Hilya 2 Al-Bināya Sharḥ al-Hidāyah, Chapter on water with which wudu is permissible, Malik Center Faisalabad 1/189 3 Fatāwā Qāḍī Khān regarding what is not permissible for wudu, Naval Kishore Lucknow 1/9 Page 568 of 711

फतावा रज़विया, खंड II

इसमें विचार करने का एक बिंदु है, क्योंकि शेख हाफिज़ अल-दीन ने 'अल-मुस्तसफी' में अपने शिक्षक, विद्वान अल-करदारी से उद्धृत किया है कि सही रिवायत इसके विपरीत है। (त)

'मुज्तबा शरह कुदूरी' में है: लेखक का कथन "यदि इसके गुणों में से एक बदल जाता है" का अर्थ यह नहीं है कि यह केवल उसी तक सीमित है। यहाँ तक कि यदि तीनों गुण 'उश्नान' (पोटाश), साबुन या केसर के कारण बदल जाते हैं और न तो इसका नाम 'पानी' रहता है और न ही इसका अर्थ (तरलता) खत्म होता है, तो इससे वुज़ू करना जायज़ है। (त)

'फतावा इमाम काज़ी खान' में है: साबुन और 'हुरज़' ('उश्नान' जिससे खाने के बाद हाथ धोते हैं) का पानी, यदि उसकी तरलता और स्वच्छता बनी रहती है, तो उससे वुज़ू जायज़ है। (त)

(102 से 107) यही छह चीजें अगर पानी में डालकर उबाल दी जाएं तब भी वुज़ू जायज़ है जब तक तरलता बाकी है।

'हिदाया' में है: यदि पानी दूसरी चीज़ की मिलावट के बाद पकाने से बदल गया है, तो उससे वुज़ू जायज़ नहीं है। सिवाय इसके कि उसमें ऐसी चीज़ डालकर पकाई गई हो जिससे सफाई में अधिकता वांछित हो, जैसे 'उश्नान' आदि, क्योंकि मृतक को कभी-कभी बेरी (के पत्ते) डालकर उबाले हुए पानी से स्नान कराया जाता है, और यह हदीस में भी वर्णित है। जब तक कि वह चीज़ पानी पर हावी न हो जाए कि वह 'सवीक' (सत्तू के शरबत) जैसा हो जाए।

1 हिलिया 2 अल-बिनाया शरह हिदाया, पानी का अध्याय जिससे वुज़ू जायज़ है, मलिक सेंटर फैसलाबाद 1/189 3 फतावा काज़ी खान उन चीज़ों के बारे में जिनसे वुज़ू जायज़ नहीं है, नवल किशोर लखनऊ 1/9 पेज 568 / 711

نظر فقد نقل الشیخ حافظ الدین فی المستصفی عن شیخه العلامة الکردري ان الروایه الصحیحة خلافه[1] ۔

میں نظر ہے، کیونکہ شیخ حافظ الدین نے مستصفی میں اپنے شیخ علامہ کردری سے نقل کیا ہے کہ صحیح روایت اس کے بر خلاف ہے۔ (ت)

مجتبٰی شرح قدوری میں ہے: قول المصنف فغیر احد اوصافه لایفید التقیید به حتی لوتغیرت الاوصاف الثلثة بالاشنان اوالصابون اوالزعفران ولم یسلب اسم الماء عنه ولا معناه فأنه یجوز التوضؤ به[2] ۔

مصنف کا قول "فغیر احد اوصافہ" اس کے ساتھ تقیید مفید نہیں ہے یہاں تک کہ اگر تینوں اوصاف اشنان، صابون یا زعفران سے بدل گئے اور اس سے نہ تو پانی کا نام سلب ہوا اور نہ معنی سلب ہوئے تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

فتاوٰی امام قاضی خان میں ہے: ماء صابون وحرض ان بقیت رقته ولطافته جاز التوضؤ به[3] ۔ صابون اور حرض (اشنان جس سے کھانے کے بعد ہاتھ دھوتے ہیں) کے پانی کی رقت ولطافت اگر باقی رہی تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

(۱۰۲ تا ۱۰۷) یہی چھ چیزیں اگر پانی میں ڈال کر جوش دی جائیں جب بھی وضو جائز ہے جب تک رقت باقی ہے،

ہدایہ میں ہے: ان تغیر بالطبخ بعد ماخلط به غیره لایجوز التوضؤ به الا اذاطبخ فیه مایقصد به المبالغة في النظافة کالاشنان ونحوه لان المیت قد یغسل بالماء الذی اغلی بالسدر بذلك وردت السنة الا ان یغلب ذلك علی الماء فیصیر کالسویق اگر پانی دوسری چیز کی ملاوٹ کے بعد پکانے سے متغیر ہوگیا تو اس سے وضو جائز نہیں ، ہاں اگر اس میں ایسی چیز ڈال کر پکائی گئی جس سے نظافت میں

زیادتی مطلوب ہو جیسے اشنان وغیرہ کیونکہ مُردہ کو کبھی بیری (کے پتے) ڈال کر اُبلے ہوئے پانی سے غُسل دیا جاتا ہے، اور یہ حدیث میں بھی مذکور ہے، الا یہ کہ وہ چیز پانی پر غالب آ جائے کہ وہ سویق (ستو) کی طرح ہو جائے۔

1 حلیہ 2 البنایہ شرح ہدایہ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ملک سنٹر فیصل آباد ۱/۱۸۹ 3 فتاویٰ قاضی خان فیما لا یجوز بہ التوضی نولکشور لکھنؤ ۱/۹ صفحہ 568 از 711

Fatawa Rizwiya Volume Two

Mixed until the name of 'water' is removed from it 1.	**Yes, if these types of things overcome the water and it becomes like a thick paste (sattoo), then ablution (Wudu) is not permissible because it would no longer be categorized as water. (T)**

It is stated in Fatawa Sheikh al-Islam Ghazzi:

| Maa-us-Sabun (Soap water), if it is thin and flows over the limbs, ablution with it is permissible. Similarly, if Ushnan (an alkali plant) is boiled in water, ablution is permissible, unless it becomes thick, as mentioned in Al-Bazzaziyyah 2. | Thin soap water that flows on the limbs can be used for ablution. Similarly, if water is boiled with Ushnan added, ablution is permissible; if it becomes thick, then ablution is not permissible, as mentioned in Al-Bazzaziyyah. (T) |

In Khaniyah, after the aforementioned text, it says:

| Likewise, if something intended for excessive cleaning, like Beri (jujube leaves) or Hurud (soda), is boiled in water, and even if its color changes but its thinness (fluidity) remains, then it is permissible. But if it becomes thick like Sattoo (thick flour paste), then it is not 3. | And similarly, if something is boiled in water with the intention of extreme cleanliness, such as Beri (leaves) or Hurud, even if its color changes but its fluidity remains, then ablution with it is permissible. But if it becomes thick like Sattoo, then it is not permissible. (T) |

In Munyah and Ghunyah it is mentioned:

| (It is mentioned in Al-Muheet: if one performs ablution with water boiled with Ushnan or Aas, ablution with it is permissible as long as it does not overcome it by removing its thinness (fluidity) 4. | (It is mentioned in Al-Muheet that if someone performs ablution with water that has been boiled with Ushnan or Aas (a tree famously known as Rayhan), ablution with it is permissible provided it does not overcome the water such that it loses its fluidity). (T) |

In Hulyah it is stated:

| In Al-Zakhirah and Tatimmat al-Fatawa al-Sughra, narrated... | In Zakhirah and Tatimma Fatawa Sughra from Abu Yusuf... |

1 Al-Hidayah, Kitab al-Taharah, Maktaba Arabiya Karachi, 1/18 2 Fatawa Ghazzi 3 Fatawa Qazi Khan, regarding what is permissible for ablution, Nawal Kishore Lucknow, 1/9 4 Ghunyat al-Mustamli, Ahkam al-Miyah, Sohail Academy Lahore, p. 91

फतावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

पानी का नाम मिट जाने तक मिलावट 1. **हाँ, अगर इस प्रकार की चीज़ें पानी पर हावी हो जाएँ और वह पानी सत्तू की तरह (गाढ़ा) हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि अब इसे पानी नहीं कहा जाएगा। (त)**

फतावा शेख-उल-इस्लाम गज़्ज़ी में है:

| साबुन का पानी, यदि वह पतला हो और अंगों पर बहे, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। इसी तरह यदि पानी में उशनान (एक क्षार युक्त पौधा) डालकर उबाला जाए, तो वज़ू जायज़ है, जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए, जैसा कि अज़-बज़्ज़ाज़िया में है 2। | साबुन का पतला पानी जो अंगों पर बहे उससे वज़ू जायज़ है, इसी तरह अगर पानी में उशनान डालकर उबाला गया हो तो वज़ू जायज़ है, अगर वह गाढ़ा हो जाए तो वज़ू जायज़ नहीं जैसा कि अज़-बज़्ज़ाज़िया में है। (त) |

खानिया में उक्त इबारत के बाद है:

| इसी तरह अगर पानी में ऐसी चीज़ उबाली जाए जिसका उद्देश्य सफाई में अधिकता हो, जैसे बेरी (के पत्ते) या हुरज़, भले ही उसका रंग बदल जाए लेकिन उसका पतलापन (तरलता) खत्म न हो, तो जायज़ है। और अगर वह सत्तू की तरह गाढ़ा हो जाए तो नहीं 3। | और इसी तरह अगर पानी में ऐसी चीज़ को जोश (उबाला) दिया गया जिससे सफ़ाई में अधिकता मक़सूद हो, जैसे बेरी (के पत्ते) और हुरज़, चाहे उसका रंग बदल जाए लेकिन उसकी रक़्क़त (तरलता) खत्म न हो तो उससे वज़ू जायज़ है और अगर सत्तू की तरह गाढ़ी हो जाए तो जायज़ नहीं। (त) |

मुन्या और गुन्या में है:

| (अल-मुहीत में उल्लेख है: यदि किसी ने ऐसे पानी से वज़ू किया जिसे उशनान या आस के साथ उबाला गया हो, तो उससे वज़ू जायज़ है जब तक कि वह उस पर इस प्रकार हावी न हो जाए कि उसकी तरलता समाप्त हो जाए 4। | (मुहीत में ज़िक्र किया कि अगर किसी ने ऐसे पानी से वज़ू किया जिसको उशनान या आस (एक पेड़ जो रेहान के नाम से मशहूर है) में जोश दिया गया तो उससे वज़ू जायज़ है बशर्ते कि वह पानी पर ग़ालिब न हो कि उसको उसकी रक़्क़त (तरलता) से निकाल दे। (त) |

हुलिया में है:

| अज़-ज़खीरा और ततिम्मतुल फतावा अल-सुग़रा में नक़ल है... | ज़खीरा और ततिम्मा फतावा सुग़रा में अबू यूसुफ से... |

1 अल-हिदाया, किताब-उत-तहारत, मकतबा अरबिया कराची, 1/18 2 फतावा गज़्ज़ी 3 फतावा क़ाज़ी खान, वज़ू के जायज़ होने के बारे में, नवल किशोर लखनऊ, 1/9 4 गुन्यातुल मुस्तमली, अहकाम अल-मियाह, सोहेल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 91

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

المخلوط لزوال اسم ہاں اگر اس قسم کی چیزیں پانی پر غالب آجائیں اور وہ پانی ستوؤں کی طرح الماء عنہ 1۔ ہو جائے تو وضو جائز نہیں کہ اب اس پر پانی کا اطلاق نہ ہوگا۔ (ت)

فتاوٰی شیخ الاسلام غزی میں ہے:

| ماء الصابون لو رقیقا یسیل علی العضو یجوز الوضوء بہ وکذا لو اغلی بالاشنان وان ثخن لاکما فی البزازیہ 2۔ | صابون کا رقیق پانی جو اعضاء پر بہے اس سے وضو جائز ہے، اسی طرح اگر پانی میں اشنان ڈال کر جوش دیا گیا تو وضو جائز ہے اگر وہ گاڑھی ہو جائے تو وضو جائز نہیں کما فی البزازیہ۔ (ت) |

خانیہ میں بعد عبارت مذکورہ آنفا ہے:

| وکذا لو طبخ بالماء ما یقصد بہ المبالغۃ فی التنظیف کالسدر والحرض وان تغیر لونہ ولکن لم تذھب رقتہ یجوز وان صار ثخینا مثل السویق لا 3۔ | اور اسی طرح اگر پانی میں ایسی چیز کو جوش دیا گیا جس سے نظافت میں مبالغہ مقصود ہو، جیسے بیری (کے پتے) اور حرض، خواہ اس کا رنگ بدل جائے لیکن اس کی رقت ختم نہ ہو تو اس سے وضو جائز ہے اور اگر ستوؤں کی طرح گاڑھی ہو جائے تو جائز نہیں۔ (ت) |

منیہ وغنیہ میں ہے:

| (ذکر في المحیط لوتوضاء بماء اغلی باشنان اوبأس جاز الوضوء بہ مالم یغلب علیہ بان اخرجہ عن رقتہ 4 ۔ | (محیط میں ذکر کیا کہ اگر کسی نے ایسے پانی سے وضو کیا جس کو اشنان یا آس

(ایک درخت جو ریحان کے نام سے مشہور ہے) میں جوش دیا گیا تو اس سے وضو جائز ہے بشرطیکہ وہ پانی پر غالب نہ ہو کہ اس کو اس کی رقت سے نکال دے۔ (ت) |

حلیہ میں ہے:

| في الذخيرة وتتمة الفتاوى الصغرى نقلا | ذخیرہ اور تتمہ فتاوی صغری میں ابو یوسف سے |

1 الہدایہ کتاب الطہارۃ مکتبہ عربیہ کراچی ۱/۱۸ 2 فتاویٰ غزی 3 فتاویٰ قاضی خان فیما یجوز بہ التوضی نو لکشور لکھنؤ ۱/ ۹ 4 غنیہ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۱

Fatawa Ridawiyya, Volume Two

(Arabic Text Column): Narrated from Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that if myrtle (Aas) or chamomile (Babunaj) is boiled in water such that it predominates the water until it is called chamomile water or myrtle water, it is not permissible to perform ablution (wudu) with it. This ends here. It was attributed to 'Al-Ajnas' with the following text: Muhammad (may Allah have mercy on him) said regarding water in which basil (Rayhan) or soda ash (Ushnan) is boiled: if its color does not change, meaning it does not turn red because of the soda ash or black because of the basil, and the water remains predominant over it, then there is no harm in performing ablution with it. Thus, Muhammad considers the color of the water, while Abu Yusuf considers the predominance of the ingredients. Then in 'At-Tatimmah' and 'Al-Dhakhirah', the gist of Abu Yusuf's school of thought is that every water mixed with something that is compatible with water in terms of the purpose of using water, which is purification, then ablution with it is permissible on the condition that the mixture does not predominate over the water such that its original quality, which is fluidity/thinness, disappears. Examples of this are soap and soda ash. And if that mixture is not compatible with water in terms of the purpose of using water, then in some narrations the prohibition of the permissibility of ablution was conditioned on that thing predominating over the water, and in some narrations there was no condition. And Muhammad, in this type of issue, considering the predominance of the mixed substance over the water, does not declare ablution with it permissible.

(Urdu Text Column): It is narrated that when myrtle (Aas) or chamomile (Babunaj) is boiled in water and it predominates over the water until it begins to be called water of chamomile or myrtle (a tree known as Rayhan), then ablution with it is not permissible. (End). And it is attributed towards 'Al-Ajnas' that Imam Muhammad said regarding that water in which basil (Rayhan/flower) or soda ash (Ushnan) has been boiled and its color has not changed—meaning it has neither turned red due to the soda ash nor black due to the basil—and the water remains predominant, then there is no harm in performing ablution with it. So, Imam Muhammad considers the color of the water, and Abu Yusuf considers the predominance of the parts (ingredients). Furthermore, in 'Tatimmah' and 'Dhakhirah', the summary of Abu Yusuf's school of thought is that every thing which has a compatibility with water and matches the purpose for which water is used, if it is mixed with water, then it remains a purifier and ablution with it is permissible. However, the condition is that this mixed thing must not predominate over the water so that the original quality of water, i.e.,

fluidity, is not lost. The examples of this are soap and soda ash. And if this mixture does not have compatibility with water and does not match the purpose of water usage, then according to some narrations, the non-permissibility of ablution with it would be conditional upon the thing predominating over the water, and in some narrations there is no condition. And Imam Muhammad, in such matters, considering the predominance of the mixed thing over water, does not declare ablution with it as permissible.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द दो

इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है कि जब आस (एक खुशबूदार झाड़ी) या बाबूना (चमकीला फूल) को पानी में उबाला जाए और वह पानी पर इस कदर हावी हो जाए कि उसे 'बाबूना का पानी' या 'आस का पानी' कहा जाने लगे, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। यहाँ बात समाप्त हुई। और 'अल-अजनास' के हवाले से उद्धृत है कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने उस पानी के बारे में फ़रमाया जिसमें रैहान (तुलसी/खुशबूदार पौधा) या उशनान (एक प्रकार का क्षार) को उबाला गया हो और उसका रंग न बदला हो—यानी न तो उशनान की वजह से लाल हुआ हो और न ही रैहान की वजह से काला—और पानी ही उस पर हावी हो, तो उससे वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं है।

तो इमाम मुहम्मद पानी के रंग को आधार मानते हैं, और इमाम अबू यूसुफ़ चीज़ों के मिश्रण की अधिकता को आधार मानते हैं। फिर 'ततिम्मा' और 'ज़ख़ीरा' में दर्ज है कि इमाम अबू यूसुफ़ के मज़हब (विचारधारा) का सारांश यह है कि हर वह चीज़ जो पानी के स्वभाव के अनुकूल हो और पानी के इस्तेमाल के मक़सद (जो कि पवित्रता है) के अनुरूप हो, अगर वह पानी में मिल जाए तो वह पानी पाक करने वाला ही रहता है और उससे वज़ू जायज़ है, लेकिन शर्त यह है कि यह मिली हुई चीज़ पानी पर हावी न हो जाए ताकि पानी का मूल गुण यानी उसका पतलापन (तरलता) ख़त्म न हो जाए। इसके उदाहरण साबुन और उशनान हैं।

और अगर यह मिली हुई चीज़ पानी के स्वभाव के अनुकूल न हो और पानी के इस्तेमाल के मक़सद से मेल न खाती हो, तो कुछ रिवायतों (वर्णनों) के अनुसार उससे वज़ू का जायज़ न होना इस शर्त पर निर्भर है कि वह चीज़ पानी पर हावी हो जाए, जबकि कुछ रिवायतों में ऐसी कोई शर्त नहीं है। और इमाम मुहम्मद इस प्रकार के मामलों में पानी पर मिली हुई चीज़ की प्रधानता को देखते हुए उससे वज़ू को जायज़ करार नहीं देते।

पृष्ठ 570 का 711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

عن ابی یوسف رحمه الله تعالیٰ اذا طبخ الآس او البابونج فی الماء فان غلب علی الماء حتی یقال ماء البابونج والآس لایجوز التوضی به انتهی وعزی الی الاجناس بما نصه قال محمد رحمه الله تعالی فی الماء الذی یطبخ فیه الریحان او الاشنان اذ لم یتغیر لونه حتی یحمر بالاشنان او یسود بالریحان وکان الغالب علیه الماء فلا بأس بالوضوء به فمحمد یراعی لون الماء وابو یوسف غلبة الاجزاء ثم فی التتمة والذخیرة والحاصل من مذهب ابی یوسف ان کل ماء خلط بشیئ یناسب الماء فیما یقصد من استعمال الماء وهو التطهیر فالتوضی به جائز بشرط ان لایغلب ذلك المخلوط علی الماء حتی لا تزول به الصفة الاصلیه وهی الرقة وذلك مثل الصابون والاشنان وان کان ذلك المخلوط لا یناسب الماء فیما یقصد من استعمال الماء ففی بعض الروایات اشترط لمنع جواز التوضی غلبة ذلك الشیئ الماء وفی بعض الروایات لم یشترط ومحمد اعتبر فی جنس هذه المسألة غلبة المخلوط الماء لمنع جواز التوضی ولکن فی بعضها اشار الی الغلبة من حیث اللون وفی بعضها اشار الی الغلبة من حیث الاجزاء بحیث تسلب صفة الرقة من الماء ویبدلها بضدها

منقول ہے جب آس یا بابونہ کو پانی میں ابالا جائے اور وہ پانی پر غالب آجائے یہاں تک کہ بابونہ یا آس (ایک درخت جو ریحان کے نام سے مشہور ہے) کا پانی کہلانے لگے تو اس سے وضو جائز نہیں انتہی، اور اجناس کی طرف منسوب کیا گیا ہے کہ امام محمد نے اس پانی کی بابت فرمایا جس میں ریحان (پھول) یا اشنان کو جوش دیا گیا ہو اور اس کا رنگ تبدیل نہ ہوا ہو، یعنی نہ تو اشنان کی وجہ سے سرخ ہوا ہو اور نہ ریحان کی وجہ سے سیاہ ہوا ہو، اور اس پر پانی ہی کا غلبہ ہو تو اس سے وضو کرنے میں حرج نہیں، تو امام محمد پانی کے رنگ کا اعتبار کرتے ہیں اور ابو یوسف غلبہ اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں، پھر تتمہ اور ذخیرہ میں ہے کہ ابو یوسف کے مذہب کا

خلاصہ یہ ہے کہ ہر وہ چیز جو پانی سے مناسبت رکھتی ہو اور پانی کے استعمال سے جو مقصود ہے اس کے مطابق ہو اگر وہ پانی میں مل جائے تو وہ مطہر ہے اس سے وضو جائز ہے مگر شرط یہ ہے کہ یہ مخلوط شے پانی پر غالب نہ ہو تاکہ پانی کی صفت اصلیہ یعنی رقت زائل نہ ہو۔ اس کی مثال صابون اور اشنان ہے اور اگر یہ مخلوط پانی سے مناسبت نہ رکھتی ہو اور پانی کے استعمال سے جو مقصود ہے اس سے مطابقت نہ رکھتی ہو تو بعض روایات کے مطابق اس سے وضو کا عدم جواز اس شرط کے ساتھ مشروط ہو گا کہ یہ شئی پانی پر غالب آجائے اور بعض روایات میں کوئی شرط نہیں، اور امام محمد اس طرح کے مسئلہ میں پانی پر مخلوط شئی کے غلبہ کا اعتبار کرتے ہوئے اس سے وضو جائز قرار نہیں دیتے۔

Fatawa Ridawiyyah - Volume Two

“...and it is thickness, finished.”[1]

However, some narrations indicate that ‘dominance’ refers to dominance in color, while others indicate dominance in terms of physical parts, meaning the water's natural fluidity is removed and replaced by thickness. Finished. (T)

Furthermore, in Hulyah, a statement from Al-Bada'i was quoted, stating: “It is mentioned therein and in Al-Tuhfah, Muheet al-Radi, and Fatawa Qadi Khan, etc., that if the substance mixed into the water is something it is boiled with or mixed with to enhance purification, it does not prevent performing ablution with it, even if the color and taste of the water change, such as soap, ushnan (alkali), and lote-tree leaves. Except if it becomes so thick that it does not flow over the body part; in that case, it is not permissible because it has lost the name ‘water’.”[2] (End quote).

It states in it, and in Al-Tuhfah, Muheet Radi al-Din, and Fatawa Qadi Khan, etc., that if a substance mixed in water is such that its purpose in boiling or mixing is to increase purification, then ablution with it is permissible even if the color and taste of the water have changed, like soap, ushnan, and berry (lote-tree) leaves. Yes, if the water becomes so thick that its flow ceases and it is no longer capable of running over the limb, then in this case, ablution with it is not permissible, because now the name ‘water’ has been stripped from it. (End quote). (T)

I say: I have added khatmi (marshmallow plant) based on what has been said regarding funerals: (1) Wash the head and beard with khatmi if available, otherwise with soap and the like.[3] (Al-Tanwir). And in Al-Tabyeen: The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) took a bath and washed his head with khatmi while in a state of ritual impurity (janabah), and he sufficed with it and did not pour more water over it.[4]

I say I have added khatmi to the aforementioned items. This is in light of those sayings of the jurists (Fuqaha) which they mentioned in the section on funerals. They say that the head and beard of the deceased should be washed with khatmi if available, otherwise wash with soap etc., and this is in Tanwir. And in Tabyeen, it is mentioned that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) performed Ghusl, and in the state of Janabat, he washed his head with khatmi and sufficed with it, and did not pour more water over it. (T)

1. Hulyah

2. Hulyah
3. Durr al-Mukhtar, Prayer of Funerals, Mujtabai Delhi, 1/120
4. Tabyeen al-Haqa'iq, Book of Purification, Bulaq Egypt, 1/21

"...और यह गाढ़ापन है। समाप्त।"[1]

लेकिन कुछ रिवायतों में इस तरफ इशारा है कि ग़लबा (प्रभुत्व) से मुराद रंग में ग़लबा है और कुछ में इशारा ग़लबा अजज़ा (अंगों/भागों) के लिहाज़ से मुराद है कि पानी की सिफ़त-ए-रक़्क़त (पतलापन) छिन जाए और उसके बदले में गाढ़ापन उसमें पैदा हो जाए। समाप्त। (त)

मजीद 'हुल्या' में 'बदाइ' का एक कलाम नक़ल करके फ़रमाया: "उसमें और 'अत-तोहफ़ा', 'मुहीत रज़ीउद्दीन' और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' वग़ैरा में ज़िक्र किया गया है कि जब मिलाई जाने वाली चीज़ ऐसी हो जिसे पानी उबालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है या पाकीज़गी बढ़ाने के लिए मिलाया जाता है, तो उससे वज़ू करना वर्जित नहीं है, भले ही पानी का रंग और स्वाद बदल जाए, जैसे साबुन, उश्नान और बेरी के पत्ते। सिवाय इसके कि वह इतना गाढ़ा हो जाए कि अंग पर बहे ही नहीं; तो उस सूरत में जाइज़ नहीं है क्योंकि उससे पानी का नाम ख़त्म हो गया है।"[2] (अंत)

इसमें और 'तोहफ़ा' और 'मुहीत रज़ीउद्दीन' और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' वग़ैरा में ज़िक्र किया कि पानी में मख़लूत (मिली हुई) चीज़ अगर इस क़िस्म की है कि उसको पानी में पकाने या मिलाने से मक़सूद ततहीर (पाकीज़गी) में ज़्यादती होती है तो उससे वज़ू जाइज़ है अगरचे पानी का रंग और मज़ा तब्दील हो गया हो, जैसे साबुन, उश्नान और बेरी (के पत्ते), हाँ अगर पानी इतना गाढ़ा हो गया कि उसका सैलान (बहाव) ख़त्म हो गया और वह उज़्व (अंग) पर बहने के लायक़ भी न रहा, तो इस सूरत में उससे वज़ू जाइज़ नहीं, क्योंकि अब उससे पानी का नाम ही सलब (छिन) हो गया है। (त)

मैं कहता हूँ: मैंने 'ख़तमी' का इज़ाफ़ा किया है उन बातों की रोशनी में जो उन्होंने जनाज़ों के बारे में कही हैं: (१) उसका सिर और दाढ़ी 'ख़तमी' से धोई जाए अगर मिले, वरना साबुन और वैसी ही चीज़ों से।[3] ('तन्वीर' में)। और 'तबीन' में है: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ग़ुस्ल फ़रमाया और जनाबत की हालत में अपना सिर 'ख़तमी' से धोया और इसी पर इक्तिफ़ा (संतोष) किया और उस पर मजीद पानी नहीं बहाया।[4]

मैं कहता हूँ मैंने मज़कूरा अशिया (चीज़ों) में 'ख़तमी' का इज़ाफ़ा किया है, यह फ़ुक़हा के उन अक़वाल (कथनों) की रोशनी में है जो उन्होंने जनाइज़ में ज़िक्र किए हैं, फ़रमाते हैं मय्यत के सर और दाढ़ी को 'ख़तमी' से धोया जाए अगर मयस्सर हो, वरना साबुन वग़ैरा से धोएं और यह 'तन्वीर' में है,

और 'तबीन' में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ुस्ल फ़रमाया और जनाबत की हालत में अपने सर को 'ख़तमी' से धोया और इसी पर इक्तिफ़ा किया और इसी पर मजीद पानी न बहाया। (त)

1. हुल्या
2. हुल्या
3. दुर्रे मुख़्तार, नमाज़-ए-जनाज़ा, मुजतबाई दिल्ली 1/120
4. तबीनुल हक़ाइक़, किताबुत तहारत, बुलाक़ मिस्र 1/21

पेज 571/711

فتاوٰی رضویہ - جلد ثانی

وہي الثخونة انتھٰی-1۔

لیکن بعض روایات میں اس طرف اشارہ ہے کہ غلبہ سے مراد رنگ میں غلبہ ہے اور بعض میں اشارہ غلبہ من حیث الاجزاء مراد ہے کہ پانی کی صفت رقت سلب ہوجائے اور اس کے بدلے میں گاڑھا پن اس میں پیدا ہوجائے انتھٰی۔ (ت)

نیز حلیہ میں ایک کلام بدائع نقل کرکے فرمایا: ذکر فیھا وفی التحفة ومحیط رضی الدین وفتاوٰی قاضی خان وغیرہ اذا کان المخالط مما یطبخ الماء بہ او یخلط الزیادة التطھیر لایمنع التوضی بہ ولو تغیر لون الماء وطعمہ وذلك کالصابون والاشنان والسدر الا اذا صار غلیظا بحیث لایجری علی العضو فانہ حینئذ لایجوز لانہ زال عنہ اسم الماء-2 اھ

اس میں اور تحفہ اور محیط رضی الدین اور فتاوٰی قاضیخان وغیرہ میں ذکر کیا کہ پانی میں مخلوط شیئ اگر اس قسم کی ہے کہ اس کو پانی میں پکانے یا خلط کرنے سے مقصود تطہیر میں زیادتی ہوتی ہے تو اس سے وضو جائز ہے اگر چہ پانی کا رنگ اور مزہ تبدیل ہو گیا ہو، جیسے صابن، اشنان اور بیری (کے پتے)، ہاں اگر پانی اتنا گاڑھا ہو گیا کہ اس کا سیلان ختم ہو گیا اور وہ عضو پر بہنے کے لائق بھی نہ رہا، تو اس صورت میں اس سے وضو جائز نہیں، کیونکہ اب اس سے پانی کا نام ہی سلب ہو گیا ہے اھ (ت)

اقول: واضفت الخطمی اخذا مما قالوہ فی الجنائز (۱) یغسل رأسہ ولحیتہ بالخطمی ان وجد والا فبالصابون ونحوہ-3 تنویر وفی التبیین اغتسل صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وغسل رأسہ بالخطمی وھو جنب واکتفی بہ ولم یصب علیہ الماء-4۔

میں کہتا ہوں میں نے مذکورہ اشیاء میں خطمی کا اضافہ کیا ہے، یہ فقہاء کے ان اقوال کی روشنی میں ہے جو انہوں نے جنائز میں ذکر کئے ہیں فرماتے ہیں میت کے سر اور داڑھی کو خطمی سے دھویا جائے اگر میسر ہو، ورنہ صابن وغیرہ سے دھوئیں اور یہ تنویر میں ہے، اور تبیین میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے غسل فرمایا اور جنابت کی حالت میں اپنے سر کو خطمی سے دھویا اور اسی پر اکتفاء کیا اور اسی پر مزید پانی نہ بہایا۔ (ت)

1. حلیہ

2. حلیہ

3. در مختار صلوٰۃ الجنائز مجتبائی دہلی ۱/ ۱۲۰

4. تبیین الحقائق کتاب الطہارت بولاق مصر ۱/ ۲۱

Fatawa Razawiya Volume II

(108-109) I say: If medicine or food is put into water for cooking and heated, but that substance is still raw and the water has not thickened, then wudu (ablution) with it is permissible, because cooking (Tabkh) did not occur nor did the nature of the water disappear, so the name (water) is not removed. Since neither cooking is found in it nor has the nature of the water perished, the name also did not cease. "Sh" quoted from (1) Al-Qamus: Cooking (Tabkh) means ripening (In-dijaj) and reaching maturity (Istiwā). [Footnote] End of quote. And it is stated in Al-Ghunya: The rule regarding mixing through cooking is that the cooked item should become ripe in the water (T).

(110) I say: Similarly, if tea was put into hot water for brewing or added while boiling and taken out quickly so that its effect could not take place to the extent that it could be called tea, even if very faintly, then there is no harm in performing wudu with it due to the persistence of the name and nature, and also the absence of ripening and cooking (because the name and nature of water remain and cooking was not found). (T) Here, the color of the water will be considered, and in the previous case, its thinness and the state of the decoction.

(111 to 114) Borage water (Arq Gāo-zubān), or distilled rose water, screwpine (kewra), willow (bed-mushk) which have lost their fragrance and are so light that no taste is felt, if mixed with water to some extent as long as they are less in quantity than the water, for example, if a full pitcher is filled up to the neck, then wudu can be performed with it. It is stated in Bahr al-Ra'iq:

If a liquid conforms with water in the three qualities, like the water obtained by distillation of borage (lisān al-thawr) and rose water whose [Footnote 2] scent has ceased, then if such a liquid conforms to the water's three qualities and is thin like the water obtained through distillation of borage and rose water from which the scent has been removed.

[Footnote 1] What is in it will come later in the third chapter, the explanation of cooking. May he be forgiven. (M). There is an objection in this which will come in the third chapter in the explanation of cooking. (T)

[Footnote 2] And I have added "cessation of taste" because you will know, if Allah Almighty wills. May he be forgiven. (M). And I added cessation of taste, the reason for which you will know, if Allah Almighty wills. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/125.

2. Ghunya al-Mustamli, Rulings on Waters, Suhail Academy Lahore, p. 91.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

(108-109) मैं कहता हूँ: अगर दवा या भोजन को पकाने के लिए पानी में डाला गया और आंच दी गई लेकिन वह चीज़ अभी कच्ची है और पानी गाढ़ा नहीं हुआ है, तो उससे वज़ू करना जायज़ है, क्योंकि न तो पकाना (तब्ख़) पाया गया और न ही पानी की प्रकृति समाप्त हुई, इसलिए उसका नाम (पानी) भी नहीं बदला। चूँकि इसमें न तो पकाना पाया गया है और न ही पानी की प्रकृति लुप्त हुई है, इसलिए नाम भी समाप्त नहीं हुआ। "श" ने (1) क़ामूस से उद्धृत करते हुए कहा: पकाने (तब्ख़) का अर्थ है सिझाना/पकाना (इन्दिजाज) और तैयार होना (इस्तिवा)। [फुटनोट] समाप्त। और अल-ग़ुनिया में कहा गया है कि पकाने के माध्यम से मिश्रण का नियम यह है कि पकाई जाने वाली वस्तु पानी में सिझ/पक जाए (त)।

(110) मैं कहता हूँ: इसी प्रकार चाय बनाने के लिए उसे गर्म पानी में डाला गया या उबालते समय ही मिलाया गया और जल्दी निकाल लिया गया ताकि उसका प्रभाव इस स्तर तक न पहुँच सके कि उसे चाय कहा जा सके, चाहे वह कितनी ही हल्की क्यों न हो, तो उससे वज़ू करने में कोई हर्ज़ नहीं है क्योंकि नाम और प्रकृति शेष है, और साथ ही पकने और पकाने की अनुपस्थिति है (क्योंकि पानी का नाम और प्रकृति बाकी है और पकाना भी नहीं पाया गया)। (त) यहाँ पानी के रंग पर विचार किया जाएगा और पिछली स्थिति में उसके पतलेपन और काढ़े की स्थिति पर।

(111 से 114) अर्कए-गाओज़बान, या निथरा हुआ गुलाब, केवड़ा, बेद-मुश्क जिनमें सुगंध नहीं रही और वे इतने हल्के हैं कि कोई स्वाद भी महसूस नहीं होता, अगर पानी में कुछ हद तक मिल जाएं जब तक कि वे मात्रा में पानी से कम हों, उदाहरण के लिए एक लबालब भरे हुए घड़े में वही घड़ा गले तक भरा हो, तो उससे वज़ू हो सकता है। बहर-उर-राइक़ में है:

अगर कोई तरल पदार्थ पानी के साथ तीन गुणों में समानता रखता है और पतला है, जैसे वह पानी जो आसवन (distillation) की प्रक्रिया के माध्यम से गाओज़बान (बोरज) से प्राप्त किया जाता है और गुलाब का पानी जिसकी [फुटनोट 2] गंध समाप्त हो गई है।

[फुटनोट 1] इसमें जो कुछ है वह आगे तीसरे अध्याय में पकाने के विवरण में आएगा। उन्हें क्षमा किया जाए। (म)। इसमें एक आपत्ति है जो तीसरे अध्याय में पकाने के विवरण में आएगी। (त)

[फुटनोट 2] और मैंने स्वाद की समाप्ति को जोड़ा है क्योंकि आप इंशा अल्लाह ताला जान लेंगे। उन्हें क्षमा किया जाए। (म)। और मैंने स्वाद की समाप्ति को जोड़ा है, जिसका कारण इंशा अल्लाह ताला आप जान लेंगे। (त)

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/125।
2. ग़ुनिया अल-मुस्तमली, अहकाम अल-मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 91।

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

(۱۰۸-۱۰۹) اقول: دوا یا غذا پانی میں پکانے کو ڈالی اور آنچ کی مگر وہ شے ابھی کچی ہے اور پانی گاڑھا نہ ہو گیا تو اس سے وضو جائز ہے، کیونکہ اس میں نہ تو پکانا پایا گیا ہے اور نہ ہی طبیعۃ ماء زائل ہوئی تو اسم بھی زائل نہ ہوا، "ش" نے قاموس سے نقل کرتے ہوئے فرمایا طبخ کے معنی استواء پکانے کے ہیں اھ اور غنیہ میں فرمایا مخالطۃ بالطبخ میں قاعدہ یہ ہے کہ مطبوخ پانی میں پک جائے۔ (ت) لانه لم یوجد الطبخ ولا زوال الطبع فلا الاسم قال ش عن (۱) القاموس الطبخ هو الانضاج استواء عہ1 اھـ ۱ وقال في الغنیه القاعدة في المخالطة بالطبخ ان ینضج المطبوخ في الماء ۲۔

(۱۱۰) اقول: یونہی چائے دم کرنے کو گرم پانی میں ڈالی یا جوش ہی میں شریک کی اور جلد نکال لی کہ اثر نہ کرنے پائی اس قابل نہ ہوا کہ اسے چائے کہہ سکیں اگرچہ ہلکی سے ہلکی، تو اس سے بھی وضو میں حرج نہیں لبقاء الاسم والطبع وایضا عدم الانضاج والطبخ (کیونکہ پانی کا نام اور طبیعت باقی ہے اور پکنا پکانا بھی نہیں پایا گیا۔ (ت) یہاں پانی کی رنگت پر نظر ہوگی اور صورت سابقہ میں اس کی رقت اور شے جوشاندہ کی حالت پر۔

(۱۱۱ تا ۱۱۴) عرق گاؤزبان، یا نرے ہوئے گلاب کیوڑا بید مشک جن میں خوشبو نہ رہی اور اتنے ہلکے ہیں کہ کوئی مزہ بھی محسوس نہیں ہوتا پانی میں کسی قدر مل جائیں جب تک پانی سے مقدار میں کم ہوں گی مثلاً لبالب گھڑے میں وہی گھڑا گلے تک بھرا تو اس سے وضو ہو سکتا ہے۔ بحر الرائق میں ہے:

اگر کوئی مائع پانی کے ساتھ اوصافِ ثلاثہ میں مطابقت رکھتا ہے اور رقیق ہے جیسے وہ پانی جو عملِ تقطیر کے ذریعہ گاؤ زبان سے حاصل کیا جائے اور گلاب کا ان کان مائعا موافقا للماء فی الاوصاف الثلثۃ کالماء الذی یؤخذ بالتقطیر من لسان الثور وماء الورد الذی انقطعت عہ۲ رائحتہ

عہ۱ سیأتی مافیہ في الفصل الثالث بیان الطبخ ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) اس میں ایک اعتراض ہے جو فصل ثالث میں طبخ کے بیان میں آئے گا۔ (ت) عہ۲ و زدت انقطاع الطعم لما ستعلم ان شاء اللہ تعالی ۱۲ منہ غفرلہ (م) اور میں نے انقطاع طعم کا اضافہ کیا ہے اس کی وجہ ان شاء اللہ تعالیٰ آپ جان لیں گے۔ (ت)

۱ رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۲۵ ۲ غنیہ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۱

Fatawa Razawiyya - Volume 2

[Table Column Left - Arabic Text] If mixed with absolute water, the consideration is for the parts. If the absolute water is more, then wudu (ablution) with all of it is permissible. If it is overpowered, it is not permissible. If they are equal, its ruling is not mentioned in the Zahir al-Riwayah. In 'al-Badai', it is stated that the jurists said its ruling is the same as the ruling of overpowered water as a precaution. 1 End. And the text of 'al-Durar' says: and the water extracted from plants by distillation, the predominance of parts is considered in it. 2 End.

I say: (1) And its absolute application contradicts the rule in which they followed Imam Zayla'i, for among the distillates are those that differ from water in one, two, or all three attributes, as is not hidden.

[Table Column Right - Urdu Translation] Water whose scent has faded, when mixed with absolute water, the consideration will be of the parts. So if the absolute water is more, wudu is permissible with the whole. If it is overpowered, it is not permissible. And if both are equal, its ruling is not mentioned in the Zahir al-Riwayah. In 'al-Badai', it is stated that the jurists said its ruling as a precaution is the same as that of overpowered water. End. And in 'al-Durar', it is stated that for water extracted from herbs through distillation, the predominance of parts will be considered. (T)

I say: Their keeping it absolute is contrary to their rule in which they followed Imam Zayla'i, because the water obtained through the process of distillation differs from ordinary water in one, two, or three attributes, as is not hidden. (T)

(115) Similarly, every distillate (Arq) that is not distinct from water in color, taste, and smell, like most distillates found at perfumers'. Then I say: In terms of more or less, the consideration is of quantity. Many of these things are lighter than water, so if weight is taken, often there will be an increase in quantity despite a decrease in weight. Therefore, we gave the example of a pot filled to the brim and up to the neck.

[Table Column Bottom Left - Arabic Text] And by it (2) what is in the text of 'al-Minhah' became clear where he interpreted the consideration for parts by saying 'meaning quantity and weight' 3 End. And in the text of Abu al-Saud, where he said predominance is in terms of weight 4. And it has been stipulated by (3) Muhammad that water is measured by volume.

[Table Column Bottom Right - Urdu Translation] And from this, it became clear what is in the text of 'al-Minhah', where they interpreted 'parts' as quantity and weight, and

what is in the text of Abu al-Saud, because predominance is according to weight, and Imam Muhammad has [stipulated that water is measured by volume].

Footnotes: 1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'eed Company Karachi, 1/69 2. Durar al-Hukkam, Ghusl section, Beirut, 1/23 3. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr, Kitab al-Taharah, Sa'eed Company Karachi, 1/69 4. Fath al-Mu'in, Kitab al-Taharah, Sa'eed Company Karachi, 1/27

फतावा रज़विया - जिल्द शानी (खंड 2)

[तालिका बायां स्तंभ - अरबी पाठ] यदि इसे मुतलक (शुद्ध) पानी के साथ मिलाया जाए, तो विचार अंशों (parts) का होगा। यदि मुतलक पानी अधिक है, तो पूरे मिश्रण से वुज़ू जायज़ है। यदि मुतलक पानी दब जाए (मगलूब हो), तो जायज़ नहीं है। और यदि दोनों बराबर हैं, तो ज़ाहिर अल-रवाया में इसका हुक्म वर्णित नहीं है। 'अल-बदाइ' में है कि फकीहों ने कहा है कि एहतियात के तौर पर इसका हुक्म वही है जो दबे हुए (मगलूब) पानी का है। १ समाप्त। और 'अल-दुरर' का पाठ है: और आसवन (distillation) द्वारा पौधों से निकाले गए पानी में अंशों की प्रधानता पर विचार किया जाएगा। २ समाप्त।

मैं कहता हूँ: (१) और उनका इसे बिना किसी शर्त के(मुतलक) छोड़ना उनके उस नियम के विपरीत है जिसमें उन्होंने इमाम ज़ैलाई का अनुसरण किया है, क्योंकि आसुत (distilled) पदार्थों में वे भी हैं जो पानी से एक, दो या तीनों गुणों में भिन्न होते हैं, जैसा कि स्पष्ट है।

[तालिका दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद] पानी जिसकी सुगंध चली गई हो, जब उसे मुतलक पानी के साथ मिलाया जाए, तो अंशों का विचार होगा। यदि मुतलक पानी अधिक हो, तो पूरे मिश्रण से वुज़ू जायज़ है और यदि वह कम (मगलूब) हो, तो जायज़ नहीं है। और यदि दोनों बराबर हों, तो ज़ाहिर अल-रवाया में इसका हुक्म वर्णित नहीं है। 'अल-बदाइ' में है कि फकीहों ने कहा है कि एहतियात के तौर पर इसका हुक्म वही है जो मगलूब पानी का है। समाप्त। और 'दरर' में है कि जड़ी-बूटियों का पानी जो आसवन (distillation) से निकाला जाए, उसमें अंशों की प्रधानता का विचार होगा। (त)

मैं कहता हूँ कि उनका इसे मुतलक रखना उनके उस नियम के विपरीत है जिसमें उन्होंने इमाम ज़ैलाई का अनुसरण किया है, क्योंकि आसवन की प्रक्रिया से जो पानी प्राप्त होता है, वह आम पानी से एक, दो या तीनों गुणों में भिन्न होता है, जैसा कि स्पष्ट है। (त)

(११५) इसी प्रकार प्रत्येक 'अर्क (distillate) जो रंग, स्वाद और गंध में पानी से अलग न हो, जैसे अत्तारों के यहाँ के अधिकांश अर्क। फिर मैं कहता हूँ: कमी और बेशी में मात्रा (مقدار) का विचार है। इनमें से कई चीज़ें पानी से हल्की होती हैं, इसलिए यदि वज़न को पैमाना माना जाए, तो अक्सर वज़न में कमी होने पर मात्रा (आयतन) में वृद्धि हो जाएगी। इसलिए हमने लबालब भरे घड़े और गले तक भरे घड़े का उदाहरण दिया।

[तालिका नीचे बायां स्तंभ - अरबी पाठ] और इसी से (२) वह स्पष्ट हुआ जो 'मन्हा' के पाठ में है, जहाँ उन्होंने अंशों के विचार की व्याख्या करते हुए कहा है 'अर्थात मात्रा और वज़न'। ३ समाप्त। और अबू अल-सऊद के पाठ में है, जहाँ उन्होंने कहा है कि प्रधानता वज़न के आधार पर है। ४ और इमाम मुहम्मद ने (३) स्पष्ट रूप से कहा है कि पानी मापने (कैली) योग्य वस्तु है।

[तालिका नीचे दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद] और इसी से वह स्पष्ट हुआ जो 'मन्हा' के पाठ में है, जहाँ उन्होंने अंशों की व्याख्या मात्रा और वज़न से की है, और जो अबू अल-सऊद के पाठ में है, क्योंकि प्रधानता वज़न के आधार पर है और इमाम मुहम्मद ने [स्पष्ट किया है कि पानी माप की वस्तु है]।

पाद-टिप्पणियाँ: १. बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, १/६९ २. दुरर अल-हुक्काम, फर्ज़ अल-गुस्ल, बेरुत, १/२३ ३. मन्हात अल-खालिक अल बहर, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, १/६९ ४. फतह अल-मुईन, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, १/२७

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[جدول بایاں کالم - عربی متن] اذا اختلط بالمطلق فالعبرة للاجزاء فان کان الماء المطلق اکثر جاز الوضوء بالکل وان کان مغلوباً لا یجوز وان استویا لم یذکر فی ظاھر الروایه وفی البدائع قالوا حکمه حکم الماء المغلوب احتیاطاً ۱ اھ وعبارة الدرر والمستخرج من النبات بالتقطیر تعتبر فیه الغلبه بالاجزاء ۲ اھ اقول: (۱) واطلاقه ینافی ضابطته التی تبع فیھا الامام زیلعی فان من المستقطر مایخالف الماء فی وصف او وصفین او الثالثة کما لا یخفی۔

[جدول دایاں کالم - اردو ترجمہ] پانی جس کی خوشبو جاتی رہی ہو جب وہ مطلق پانی کے ساتھ ملایا جائے تو اعتبار اجزاء کا ہوگا تو اگر مطلق پانی زیادہ ہو تو سب سے وضو جائز ہے اور اگر مغلوب ہو تو جائز نہیں اور اگر دونوں برابر ہوں تو ظاہر روایت میں اس کا حکم مذکور نہیں اور بدائع میں ہے کہ فقہاء نے فرمایا کہ اس کا حکم بھی احتیاطاً وہی ہے جو مغلوب پانی کا ہے اھ اور درر میں ہے کہ جڑی بوٹیوں کا پانی جو تقطیر سے نکالا جائے اس میں اجزاء کے غلبہ کا اعتبار ہوگا۔ (ت) میں کہتا ہوں ان کا اس کو مطلق رکھنا ان کے اس ضابطہ کے منافی ہے جس میں انہوں نے امام زیلعی کی متابعت کی ہے، کیونکہ عمل تقطیر سے جو پانی حاصل ہوتا ہے وہ عام پانی سے ایک وصف یا دو یا تین میں مختلف ہوتا ہے کما لا یخفی۔ (ت)

(۱۱۵) یونہی ہر عرق کہ پانی سے رنگ ومزہ وبو کسی میں ممتاز نہ ہو جیسے عطاروں کے یہاں کے اکثر عرق۔ ثم اقول: کمی بیشی میں اعتبار مقدار کا ہے اور ان میں بہت چیزیں پانی سے ہلکی ہوتی ہیں تو اگر وزن میں کمی لی جائے بارہا مقدار میں بیشی ہو جائے گی لہذا ہم نے لبالب گھڑے اور گلے تک بھرے سے تمثیل دی۔

[جدول نچلا بایاں کالم - عربی متن] وبه(۲) ظهر ما فی عبارة المنحه حیث فسر العبرة للاجزاء بقوله ای القدر والوزن ۳ اھ وفی عبارة ابی السعود اذقال الغلبه من حیث الوزن ۴ وقد نص (۳) محمد ان الماء کیلی

[جدول نچلا دایاں کالم - اردو ترجمہ] اور اسی سے وہ ظاہر ہوا جو منحہ کی عبارت میں ہے، جہاں انہوں نے اجزاء کی تعبیر مقدار اور وزن سے کی ہے، اور جو ابو السعود کی عبارت میں ہے اس لئے کہ غلبہ وزن کے اعتبار سے ہے اور امام محمد نے [تصریح فرمائی ہے کہ پانی کیلی ہے]۔

حواشی: ۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۶۹ ۲۔ درر علی الغرر فرض الغسل کالمیہ بیروت ۱/۲۳ ۳۔ منحۃ الخالق علی البحر الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۶۹ ۴۔ فتح المعین الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/۲۷

Fatawa Rizvia Volume Two

[Arabic Section] Our Imams have agreed that water is not measured by weight. Al-Ayni and then Ibn al-Shalabi stated: if water is two 'ratls' and the 'mustamal' (used) water is one 'ratl', the ruling for it is that of absolute (pure) water. Conversely, it is like restricted water. End. However (1), it is surprising that Allama al-Shurunbulali said in 'Nur al-Idah' and its commentary: Dominance in a liquid which has no quality different from water is determined by weight. So, if two 'ratls' of used water or rose water whose scent has faded are mixed with one 'ratl' of absolute water, ablution (wudu) is not permissible with it. Conversely, it is permissible. End. Thus, he mentioned weight but then returned to volume (kail). (2) (T)

[Urdu Section] It has been clarified that water is a measurable quantity by volume, and our Imams have agreed that water is not a thing measured by weight. Al-Ayni and Ibn al-Shalabi said that if water is two ratls and the used water is one ratl, its ruling is that of absolute water; and if it is vice-versa, then its ruling is like that of restricted water. End. But it is surprising regarding Allama Shurunbulali; he said in Nur al-Idah and its commentary that for a liquid substance that has no quality opposite to water, dominance will be considered by weight. So, if two ratls of used water or rose water from which the fragrance has gone are mixed with one ratl of absolute water, wudu will not be permissible with it; and if the case is vice-versa, wudu is permissible. End. So he mentioned weight and then returned to volume. (T)

Another Type: In this type, those items will be mentioned regarding which the ruling reported in some books is...

Note: Important Clarification: Let it be clear that regarding 'used water' (ma' mustamal), there are only two reported opinions from our Imams of the Madhhab (may Allah Almighty be pleased with them):

First: The opinion of Imam Abu Yusuf, who did not consider the change in qualities of water at all, or only considered the dominance of parts in the sense that will be explained in the third section; and this is correct, reliable, and chosen by the majority.

Second: The opinion of Imam Muhammad, in which consideration was also given to the change in qualities. Here we intend to discuss the principle of Imam Zayla'i (may Allah Almighty have mercy on him); he also considered the qualities. So, disagreement with Imam Abu Yusuf's opinion started from the beginning. We need to compare the rulings reported in books based on Imam Muhammad's opinion with

the Zayla'i principle, seeing where they align and in which places it remained contrary to that, so it became completely outside the opinions of the Imams of the Madhhab. In these discussions, agreement or disagreement simply means the alignment or conflict between reported rulings on the Madhhab of Imam Muhammad and the requirements of the Zayla'i principle, otherwise the origin... (Continued on the next page)

1. Ash-Shalabi 'ala al-Tabyin, Al-Taharah, Bulaq Egypt, 1/20
2. Maraqi al-Falah, Al-Taharah, Bulaq Egypt, p. 17

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[अरबी अनुभाग] हमारे इमामों ने सहमति व्यक्त की है कि पानी वज़नी (वजन से मापी जाने वाली) चीज़ नहीं है। अल-ऐनी और फिर इब्न अल-शलबी ने कहा: यदि पानी दो 'रतल' है और इस्तेमाल किया हुआ (मुस्तमल) पानी एक 'रतल' है, तो इसका फैसला मुतलक (शुद्ध) पानी जैसा होगा। इसके विपरीत, यह मुक़य्यद (सीमित) पानी की तरह है। समाप्त। लेकिन (1), अल्लामा अल-शुरुनबुलाली पर आश्चर्य है कि उन्होंने 'नूर अल-इदाह' और उसकी व्याख्या में कहा: एक ऐसे तरल पदार्थ में जिसकी कोई विशेषता पानी से भिन्न न हो, प्रधानता वजन के आधार पर होगी। अत; यदि दो रतल इस्तेमाल किया हुआ पानी या गुलाब का पानी जिसकी गंध समाप्त हो चुकी हो, एक रतल मुतलक पानी में मिलाया जाता है, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं होगा। इसके विपरीत, यह जायज़ है। समाप्त। इस प्रकार, उन्होंने वजन का उल्लेख किया और फिर वापस माप (कैल) की ओर आ गए। (2) (त)

[उर्दू अनुभाग] यह स्पष्ट किया गया है कि पानी आयतन से मापने वाली वस्तु है और हमारे इमामों का इस पर इत्तेफ़ाक़ (सहमति) है कि पानी वज़नी चीज़ नहीं है, और ऐनी तथा इब्न-ए-अशलबानी ने फ़रमाया कि यदि पानी दो रतल है और मुस्तमल (इस्तेमाल किया हुआ) पानी एक रतल है, तो इसका हुक्म मुतलक पानी का है, और यदि इसके विपरीत हो, तो इसका हुक्म मुक़य्यद (सीमित) पानी जैसा है। अल्लामा शूरुनबुलाली पर आश्चर्य है, उन्होंने नूर-उल-ईज़ाह और उसकी शरह (व्याख्या) में फ़रमाया कि तरल पदार्थ जिसका कोई गुण पानी के विपरीत न हो, तो ग़लबा (प्रधानता) वजन के हिसाब से होगा। तो यदि दो रतल मुस्तमल पानी या गुलाब का पानी जिसकी ख़ुशबू ख़त्म हो चुकी हो, एक रतल मुतलक पानी में मिल जाए, तो उससे वज़ू जायज़ न होगा और यदि मामला इसके विपरीत हो, तो वज़ू जायज़ है। तो वज़्न (वजन) का ज़िक्र किया और लौट कर कैल (आयतन माप) की तरफ आ गए। (त)

नौ-ए-आख़र (एक अन्य प्रकार): इस प्रकार में वे चीज़ें बताई जाएँगी जिनके बारे में कुछ किताबों में दर्ज हुक्म है...

नोट: तनबीह-ए-ज़रूरी (आवश्यक स्पष्टीकरण): स्पष्ट हो कि 'मा-ए-मुस्तमल' (इस्तेमाल किए गए पानी) के बारे में हमारे मज़हब के इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से केवल दो ही कौल (कथन) वर्णित हैं:

पहला: इमाम अबू यूसुफ़ का कौल, जिन्होंने पानी के गुणों के बदलने का एतबार (विचार) ही नहीं फ़रमाया, या केवल हिस्सों की प्रधानता को उन अर्थों में माना जो तीसरे खंड में बयान होंगे; और यही सही, भरोसेमंद और बहुमत का चुना हुआ है।

दूसरा: इमाम मोहम्मद का कौल, जिसमें गुणों के परिवर्तन का भी लिहाज़ रखा गया है। यहाँ हमारा मक़सद इमाम ज़ैलाई (अल्लाह उन पर रहम करे) के नियम पर चर्चा करना है; उन्होंने भी गुणों का लिहाज़ किया है। तो इमाम अबू यूसुफ़ के कौल के साथ मतभेद तो शुरू से ही था। इमाम मोहम्मद के कौल पर किताबों में वर्णित हुक्मों की तुलना ज़ैलाई नियम से करनी है कि यह कितनी जगहों पर उनके अनुकूल रहा और किन स्थानों पर उसके भी विपरीत रहा, तो यह मज़हब के इमामों के कौलों से बिल्कुल बाहर हो गया। इन चर्चाओं में इत्तेफ़ाक़ (सहमति) या इख़्तिलाफ़ (मतभेद) से यही मुराद है कि इमाम मोहम्मद के मज़हब पर वर्णित हुक्म और ज़ैलाई नियम की आवश्यकता के बीच तालमेल या विरोधाभास है, वर्ना असल... (बाकी अगले पृष्ठ पर)

1. अल-शलबी अला अल-तबीन, अत-तहारत, बुलाक़ मिस्र, 1/20
2. मराक़ी अल-फ़लाह, अत-तहारत, बुलाक़ मिस्र, पृष्ठ 17

واجتمع ائمتنا انه لیس وزنیاً وقال العینی ثم ابن الشلبی لو کان الماء رطلین والمستعمل رطلاً فحکمه حکم المطلق وبالعکس کالمقید اھ لیکن (۱) العجب من العلامة الشرنبلالی قال فی نور الایضاح وشرحه الغلبة فی مائع لاوصف له یخالف الماء تکون بالوزن فان اختلط رطلان من المستعمل اوماء الورد الذی انقطعت رائحته برطل من الماء المطلق لایجوز به الوضوء وبعکسه جاز اھ فذکر الوزن وعاد الی الکیل ۲۔

تصریح کی ہے کہ پانی کیلی چیز ہے اور ہمارے ائمہ کا اتفاق ہے کہ پانی وزنی چیز نہیں، اور عینی نیز ابن اشلبی نے فرمایا کہ اگر پانی دو رطل ہے اور مستعمل ایک رطل ہے تو اس کا حکم مطلق پانی کا ہے اور اگر بالعکس ہو تو اس کا حکم مقید کا سا ہے اھ لیکن علامہ شرنبلالی پر تعجب ہے انہوں نے نورالایضاح اور اس کی شرح میں فرمایا کہ سیال چیز جس کا کوئی وصف ایسا نہ ہو جو پانی کے مخالف ہو، تو غلبہ وزن کے اعتبار سے ہو گا تو اگر دو رطل مستعمل پانی یا گلاب کا پانی جس کی خوشبو ختم ہو چکی ہو ایک رطل مطلق پانی میں ملے گا تو اس سے وضو جائز نہ ہوگا اور اگر معاملہ اس کے برعکس ہو تو وضو جائز ہے اھ تو ذکر وزن کا کیا اور لوٹ کر کیل کی طرف آئے ۔ (ت)

نوعِ آخر اس نوع میں وہ اشیاء مذکور ہوں گی جن کی بعض صورتوں میں حکم منقول عہ کتب کچھ ہے اور

عہ: تنبیہ ضروری : واضح ہو کہ مائ مستعمل میں ہمارے ائمہ مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے منقول صرف دو قول ہیں :

اول : قولِ امام ابو یوسف جنہوں نے تبدلِ اوصافِ آب کا اعتبار ہی نہ فرمایا، یا صرف غلبہ اجزاء ان معانی پر کہ فصلِ ثالث میں بیان ہوں گے معتبر رکھا اور یہی صحیح و معتمد و مختارِ جمہور ہے۔

دوم : قولِ امام محمد جس میں تبدلِ اوصاف پر بھی لحاظ فرمایا یہاں ہم کو ضابطہ امام زیلعی رحمہ اللہ تعالیٰ پر کلام کرنا منظور ہے انہوں نے بھی لحاظِ اوصاف کیا ہے تو قول امام ابی یوسف کا خلاف تو ابتدا ہی سے ہوا قول امام محمد پر جو احکام کتب میں منقول ہیں ان سے ضابطہ زیلعیہ کا موازنہ کرنا ہے کہ اتنی جگہ اس کے موافق پڑا اور ان ان مواضع میں اس کے بھی خلاف رہا تو اقوال ائمہ مذہب سے یکسر خارج ہوا ان مباحث میں اتفاق اختلاف سے یہی مراد ہے کہ مذہب امام محمد پر احکام منقولہ اور مقتضائے زیلعیہ کا توافق یا تخالف ورنہ اصل (باقی بر صفحہ آیندہ)

1 اشلبی علی التبیین الطہارت بولاق مصر ۱/ ۲۰ 2 مراقی الفلاح الطہارت بولاق مصر ص ۱۷

Fatawa-e-Razvia, Volume 2. The principle of Imam Zayla'i, which will be explained in the fourth section with Allah's help, dictates certain things. Those situations where the ruling is conveyed according to the principle of consensus on permissibility will be mentioned in the first category. Those where there is consensus on non-permissibility will be in the second category. And where there is disagreement, those cases will belong to the third category. These things are of two types: First type: dry things. (116) Dates were put into water, and only a short time has passed such that it has not yet become Nabidh (a fermented beverage), even if a slight sweetness has appeared in it. By consensus, wudu (ablution) with it is permissible. It is mentioned in Kitab al-Mufid wal-Mazid, then in 'Ayni's commentary on Sahih al-Bukhari, Tabyin, Hilyah, and Hindiyyah, etc.: "The water in which dates have been placed, and it has become sweet, but it is still called water and its thinness has not vanished, there is no disagreement among our companions regarding the permissibility of wudu with it." (End) I say: As for what is in Bada'i', it is necessary to know the Nabidh-al-Tamr (date beverage) over which there is disagreement. It is when some dates are put into water, and their sweetness is released into the water. This is how Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) explained the Nabidh-al-Tamr with which the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) performed wudu. (Footnote from previous page): The correct and relied-upon view, which is the view of Imam Abu Yusuf, will sometimes differ from their consensus even in cases of non-permissibility, as we will mention at the end, if Allah wills. Also, bringing these narrations serves a great purpose in informing about the view of Imam Muhammad, which is a strong opinion in itself. Therefore, out of caution, it is appropriate to consider it. And with Allah is success. (12, from him, may Allah forgive him and protect him, the Mighty and Majestic). (M) Note: It is attributed to Al-Hilyah in Al-Hindiyyah, but I did not find it there, neither in the chapter of Tayammum nor in the chapter of Water. Perhaps it is missing from my copy. And Allah knows best. (12, from him, may Allah forgive him). (T) 1. Fatawa Hindiyyah, regarding things with which wudu is not permissible, Peshawar 1/22. Page 575 of 711

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द दूसरी। इमाम ज़ैलई का सिद्धांत, जिसका विवरण अल्लाह की मदद से चौथे खंड में आएगा, कुछ बातों का तक़ाज़ा करता है। जिन स्थितियों में हुक्म (आदेश) सिद्धांत के अनुसार अनुमति (जवाज़) पर सर्वसम्मत है, वे पहले प्रकार में वर्णित होंगी। और जिनमें अनुमति न होने (अदम-ए-जवाज़) पर सर्वसम्मति है, वे दूसरे प्रकार में होंगी। और जहाँ दोनों में मतभेद है, वे स्थितियाँ तीसरे प्रकार के लिए हैं। ये चीज़ें दो किस्म की हैं: पहली किस्म: सूखी चीज़ें। (११६) पानी में छुहारे डाले गए और अभी थोड़ा ही समय बीता है कि वह नबीज़ (एक प्रकार का पेय) नहीं बना, हालांकि उसमें हल्की सी मिठास आ गई है। सर्वसम्मति से इससे वज़ू जायज़ है। किताब अल-मुफ़िद वल-मज़ीद, फिर ऐनी की सहीह बुख़ारी की शरह (व्याख्या), तबयीन, हिलया और हिन्दिया आदि में है: "वह पानी जिसमें खजूरें डाली गई हों और वह मीठा हो गया हो, लेकिन उसे पानी ही कहा जाता हो और उसका पतलापन भी खत्म न हुआ हो, तो हमारे साथियों (विद्वानों) के बीच इससे वज़ू के जायज़ होने में कोई मतभेद नहीं है।" (समाप्त) मैं कहता हूँ: जहाँ तक बदाए' का सवाल है, उस नबीज़-ए-तम्र (खजूर का पेय) को जानना ज़रूरी है जिसमें मतभेद है। वह यह है कि पानी में कुछ खजूरें डाली जाएँ और उनकी मिठास पानी में आ जाए। इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नबीज़-ए-तम्र की यही व्याख्या की है जिससे हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वज़ू फ़रमाया था। (पिछले पृष्ठ का शेष हाशिया): सही और विश्वसनीय मत जो इमाम अबू यूसुफ़ का मत है, वह तो अनुमति न होने की स्थिति में उनके इत्तेफ़ाक़ (सहमति) से भी कुछ जगहों पर अलग होगा, जिसे हम अंत में ज़िक्र करेंगे, इंशा अल्लाह। साथ ही, इन नकलों (उद्धरणों) को लाने में बड़ा फ़ायदा इमाम मुहम्मद के मत की जानकारी है, जो अपने आप में एक मज़बूत राय है। तो एहतियात के तौर पर उसका लिहाज़ करना मुनासिब है। कामयाबी अल्लाह की तरफ़ से है। (१२, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे और उनकी रक्षा करे)। (म) नोट: अल-हिन्दिया में इसे अल-हिलया की तरफ़ मंसूब (श्रेय) किया गया है, लेकिन मुझे वहां यह नहीं मिला, न तयम्मुम के अध्याय में और न पानी के अध्याय में। शायद यह मेरी प्रति में छूट गया हो। और अल्लाह बेहतर जानता है। (१२, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे)। (त) १. फ़तावा हिन्दिया, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है, पेशावर १/२२। पृष्ठ ५७५ का ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ضابطہ امام زیلعی جس کا بیان بعونہ تعالٰی فصل چہارم میں آتا ہے اس کا مقتضٰی کچھ ان اشیاء کی جس صورت میں حکم منقول مقتضائے ضابطہ جواز پر متفق ہیں وہ اس قسم اول میں مذکور ہوگی اور جس میں عدم جواز پر متفق ہیں وہ قسم دوم میں اور جہاں دونوں مختلف ہیں وہ صورتیں قسم سوم کیلئے ہیں۔ یہ اشیاء دو صنف ہیں: صنف اوّل خشک چیزیں۔ (۱۱۶) پانی میں چھوہارے ڈالے اور ابھی تھوڑی دیر گزری کہ نبیذ نہ ہو گیا اگرچہ خفیف سی شیرینی اس میں آگئی اس سے بالاتفاق وضو جائز ہے کتاب المفید والمزید پھر عینی شرح صحیح بخاری و تبیین و حلیہ عہ و ہندیہ وغیرہما میں ہے : الماء الذی القی فیہ تمرات فصار حلوا ولم یزل | وہ پانی جو کھجوروں کے ڈالے جانے کی وجہ سے میٹھا ہو گیا مگر عنہ اسم الماء وھو رقیق یجوز بہ الوضوء | اس کو پانی ہی کہا جاتا ہو اور اس کی رقت بھی زائل نہ ہوئی تو بلا خلاف بین اصحابنا ۱ـہ اہ | اس سے وضو کے جواز میں ہمارے اصحاب کے درمیان کوئی اقول: اما مافی البدائع لابد من معرفۃ نبیذ | اختلاف نہیں اھ (ت) التمر الذی فیہ الخلاف وھو ان یلقی شیئ من | میں کہتا ہوں بدائع میں ہے کہ وہ نبیذ تمر جس میں اختلاف التمر فی الماء فتخرج حلاوتہ الی الماء وھکذا | ہے اس کی معرفہ ضروری ہے وہ یہ ہے کہ کچھ کھجوریں پانی ذکر ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ في تفسیر | میں ڈال دی جائیں تو ان کی مٹھاس پانی میں آ جائے، ابن نبیذ التمر الذی توضأ بہ | مسعود رضی اللہ عنہ سے نبیذ تمر کی یہی تفسیر منقول ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مذہب صحیح معتمد کہ مذہب امام ابو یوسف ہے وہ تو صورت عدم جواز میں ان کے اتفاق سے بھی بعض جگہ خلاف پڑے گا جسے ہم آخر میں ذکر کریں گے ان شاء اللہ تعالٰی نیز ان نقول کے لانے میں بڑا فائدہ مذہب امام محمد پر اطلاع ہے کہ وہ بھی بجائے خود ایک با قوت قول ہے تو بنظرِ احتیاط اُس کا لحاظ مناسب وب اللہ التوفیق ۱۲ منہ غفر لہ وحفظہ ربہ

عزوجل (م) عہ عزاہ للحلیہ فی الھندیہ ولم ارہ فیھا لافی | ہندیہ میں حلیہ کی طرف نسبت کی ہے اور مجھے اس میں یہ بات التیمم ولا فی المیاہ فلعلہ ساقط من نسختی واللہ | نہیں ملی نہ باب التیمم میں نہ باب المیاہ میں شاید یہ میرے نسخہ تعالی اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (م) | سے ساقط ہو واللہ تعالیٰ اعلم ۔ (ت) 1 فتاویٰ ہندیہ فیما لایجو ز بہ التوضو پشاور ۲۲/۱ Page 575 of 711

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 2

[Arabic Text Transcription]: Rasulullah (peace and blessings of Allah be upon him) performed ablution from it on the night of the Jinn. He said: "I put some dates in the water."[1] (Ah) This is to be interpreted as water in which sweetness has developed and has thus lost its status as absolute water. This is especially so because at the beginning of this Hadith narrated by Ibn Abi Shaybah, it is mentioned that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) asked him: "Do you have any water for ablution?" He replied: "No." He asked: "Then what is in your water-skin?" He replied: "Date-must (Nabidh of dates)." He said: "It is sweet dates and pure water."[2] Had it not lost its status as absolute water, he would not have said "No" in response.

I say: By this (1) the answer given by both Ibn Hajars in the two commentaries of Bukhari and Mishkat is weakened, which was that it refers to water in which dry dates were thrown without changing its characteristics. Al-Asqalani said: "They used to do this because the majority of their waters were not sweet."[3] (Ah) And Al-Makki sensed that this is not called Nabidh, so he said: "Ibn Mas'ud's calling it Nabidh is figurative (Majaz), and what is intended is its linguistic meaning, which is something in which something has been thrown (Nabdh), even if it does not change it."[4] (Ah)

[Urdu Commentary/Translation Transcription]: ...he had performed ablution from it on the Night of Jinn. You [the Prophet] said, "I had put some dates in the water." (Ah) So this should be applied to water in which sweetness has developed and it has gone out of the category of absolute water, as stated at the beginning of this Hadith narrated by Ibn Shaybah that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) asked him, "Do you have water for ablution?" He answered, "No." You asked, "What is in your provision bag?" He said, "It is Nabidh of dates." You said, "This is sweet dates and pure water." So, if that water were absolute, you would not have said 'No' in response. (T)

I say, from this it is known that the answer given by the two Ibn Hajars in the two commentaries (Commentary on Bukhari and Commentary on Mishkat) is weak. That answer is that... by this water is meant water in which dry dates have been put which did not change the quality of the water. Asqalani said that the Arabs used to do this because generally their water was not sweet. (Ah) And Makki said that this is not called Nabidh, and said that Ibn Mas'ud calling it Nabidh is metaphorical, and the intention is the linguistic placement, which is that thing in which something is thrown even if it does not change the water. (Ah) (T)

Footnotes: 1. Bada'i al-Sana'i, Al-Ma' al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/71 2. Musannaf Ibn Abi Shayba, Ablution with Nabidh, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/26 3. Fath al-Bari, Ablution with Nabidh is not permissible, Beirut, 1/305 4. Sharh Mishkat by Mulla Ali Qari, Chapter on Rulings of Waters, Maktabah Imdadiyah Multan, 2/60

फ़तवा-ए-रजविया, जिल्द 2

[अरबी पाठ का अनुवाद]: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जिन्नों की रात (लैलातुल जिन्न) में इसी से वज़ू किया था, आपने फरमाया: "मैंने पानी में कुछ खजूरें डाल दी थीं।"[1] (अह) तो इसे उस पानी पर महमूल किया जाएगा जिसमें मिठास पैदा हो गई हो और वह मुतलक (शुद्ध) पानी की श्रेणी से बाहर निकल गया हो। विशेष रूप से इसलिए क्योंकि इब्ने अबी शैबा द्वारा रिवायत इस हदीस की शुरुआत में है कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनसे पूछा: "क्या तुम्हारे पास वज़ू का पानी है?" उन्होंने जवाब दिया: "नहीं।" आपने फरमाया: "तुम्हारे मश्कीज़ा (तौशा दान) में क्या है?" उन्होंने कहा: "नबीज़-ए-तमर (खजूर का शरबत) है।" आपने फरमाया: "यह तो मीठी खजूर और पाक पानी है।"[2] अगर वह मुतलक पानी की श्रेणी से बाहर न हुआ होता, तो वह जवाब में "नहीं" न कहते।

मैं कहता हूँ: इससे (१) दोनों इब्ने हजर द्वारा बुखारी और मिश्कात की दो व्याख्याओं में दिया गया उत्तर कमज़ोर (ज़ईफ़) साबित होता है, जो यह था कि इसे उस पानी पर महमूल किया जाए जिसमें सूखी खजूरें डाली गई हों जिससे उसका गुण न बदला हो। अल-अस्क़लानी ने कहा: "वे ऐसा इसलिए करते थे क्योंकि उनके अधिकांश जल स्रोत मीठे नहीं थे।"[3] (अह) और अल-मक्की ने महसूस किया कि इसे नबीज़ नहीं कहा जाता, इसलिए उन्होंने कहा: "इब्ने मसऊद का इसे नबीज़ कहना मिज़ाज़ी (अलंकारिक) है, और इसका तात्पर्य भाषाई अर्थ है, जो वह चीज़ है जिसमें कुछ डाला जाए (नब्ज़), भले ही वह उसे न बदले।"[4] (अह)

[उर्दू व्याख्या का हिंदी अनुवाद]: ...उन्होंने इसी से लैलातुल जिन्न में वज़ू फरमाया था, आपने फरमाया मैंने कुछ खजूरें पानी में डाल दी थीं (अह) तो उसको उस पानी पर महमूल किया जाए जिसमें मिठास पैदा हो गई हो और मुतलक पानी से निकल गया हो, जैसा इस हदीस की इब्तिदा में बरवायत इब्ने शैबा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे दरयाफ़्त किया क्या तुम्हारे पास वज़ू का पानी है? उन्होंने जवाब दिया नहीं। आपने फरमाया तुम्हारे तोशा दान में क्या है? उन्होंने कहा नबीज़-ए-तमर है। आपने फरमाया ये तो मीठी खजूरें और पाक पानी है, तो अगर वो पानी मुतलक होता तो आप जवाब में न न फरमाते। (त)

मैं कहता हूँ इससे मालूम हुआ कि दो शरहों (शरह बुखारी व शरह मिश्कात) में जो इब्ने हजर ने जवाब दिया है वो ज़ईफ़ है वो जवाब ये है कि ..... इस पानी से मुराद वो पानी है जिसमें खुश्क खजूरें

डाल दी गई हों जिसने पानी का वस्फ़ न बदला हो, अस्क़लानी ने फरमाया अहल-ए-अरब ऐसा इसलिए करते थे कि आम तौर पर उनका पानी मीठा नहीं होता था (अह) और मक्की ने फरमाया कि इसको नबीज़ नहीं कहा जाता है, और फरमाया इब्ने जाए ख़्वाह वो इस पानी को मुतग़य्यर न करे (अह)। (त)

पाद-टिप्पणियाँ (फुटनोट्स): 1. बदाए-उस-सनाए, अल-मा-उल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/71 2. मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, वज़ू बिन-नबीज़, इदारतुल-कुरान कराची, 1/26 3. फ़तह-उल-बारी, ला यजज़ुल वज़ू बिन-नबीज़, बेरुत, 1/305 4. शरह मिश्कात मुल्ला अली क़ारी, बाब अहकाम-उल-मियाह, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 2/60

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسی سے لیلۃ الجن میں وضو فرمایا تھا، آپ نے فرمایا میں نے کچھ کھجوریں پانی میں ڈال دی تھیں اھ تو اس کو اس پانی پر محمول کیا جائے جس میں مٹھاس پیدا ہو گئی ہو اور مطلق پانی سے نکل گیا ہو، جیسا اس حدیث کی ابتداء میں بروایت ابن شیبہ ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے ان سے دریافت کیا کیا تمہارے پاس وضو کا پانی ہے؟ انہوں نے جواب دیا نہیں ۔ آپ نے فرمایا تمہارے توشہ دان میں کیا ہے؟ انہوں نے کہا نبیذ تمر ہے۔ آپ نے فرمایا یہ تو میٹھی کھجوریں اور پاک پانی ہے ، تو اگر وہ پانی مطلق ہوتا تو آپ جواب میں نہ نہ فرماتے۔ (ت)

میں کہتا ہوں اس سے معلوم ہوا کہ دو شرحوں (شرح بخاری و شرح مشکوۃ) میں جو ابن حجر نے جو جواب دیا ہے وہ ضعیف ہے وہ جواب یہ ہے کہ ..... اس پانی سے مراد وہ پانی ہے جس میں خشک کھجوریں ڈال دی گئی ہوں جس نے پانی کا وصف نہ بدلا ہو ، عسقلانی نے فرمایا اہل عرب ایسا اس لئے کرتے تھے کہ عام طور پر ان کا پانی میٹھا نہیں ہوتا تھا اھ اور مکی نے فرمایا کہ اس کو نبیذ نہیں کہا جاتا ہے ، اور فرمایا ابن جائے خواہ وہ اس پانی کو متغیر نہ کرے اھ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لیلۃ الجن فقال تمیرات القیتھا فی الماء ۱ اھ فیحمل علی ما حلا و خرج عن الاطلاق کیف وفی صدر الحدیث عند ابن ابی شیبۃ ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال لہ ھل معك من وضوء قال قلت لا قال فما فی اداوتك قلت نبیذ تمر قال تمرۃ حلوۃ وماء طیب ۲ فلولا انہ خرج من الاطلاق لما قال لا۔

اقول: وبهذا (١) يضعف ما اجاب به ابنا حجر فی شرحی البخاری والمشکوة انه محمول علی ماء القیت فیہ تمرات یابسة لم تغیر له وصفا قال العسقلانی و انما کانوا یصنعون ذلک لان غالب میاههم لم تکن حلوة ٣ اهـ واستشعر المکی ان هذا لایسمی نبیذا فقال وتسمیہ ابن مسعود له نبیذا من مجاز الاول زادا والمراد به الوضع اللغوی وهو ما ینبذ فیہ شیئ وان لم یغیره ٤ اهـ

حواشی: 1 بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ١/ ٧١ 2 مصنف ابن ابی شیبة وضو بالنبیذ ادارة القرآن کراچی ٢٦/١ 3 فتح الباری لا یجوز الوضوء بالنبیذ بیروت ٣٠٥/١ 4 شرح مشکوة لملا علی قاری باب احکام المیاه مکتبہ امدادیہ ملتان ٦٠/٢

Fatawa Ridawiyya - Volume 2

I say: (1) All this, as you see, is a departure from the literal meaning, except that Malik al-Ulama said, after what we have previously quoted from him, because it was the custom of the Arabs to put dates in brackish water to make it sweet. [Ahmad] Mas'ood had called it Nabeed metaphorically. The former further added that either this refers to its linguistic and original meaning, i.e., water in which something has been put. I say all these interpretations are contrary to the obvious meaning. However, Malik al-Ulama, after all this discussion mentioned above, stated: It was the habit of Arabs that they would put dates in brackish water so that the water becomes sweet. (T)

I say: (2) This is a leaning towards what those two said, but I do not see it as sound, because if it were so, it would remain in its watery state and be absolute (water), so wudu with it would be permissible absolutely. However, the Shaykh al-Imam said at the end of the discussion that the permissibility of wudu with Nabeed-at-Tamr is established as a deviation from analogy, because analogy refuses permissibility except with absolute water, and this is not absolute water, the proof being that it is not permissible to perform wudu with it while having power over absolute water. Except that we know the permissibility through the text (Nass). Therefore, we needed to answer the Hadith that it is abrogated by the verse of Tayammum. This was disputed, and therefore Al-Itqani leaned towards the opinion of (3) Imam Muhammad that one should combine both (wudu and tayammum) so that purification occurs with certainty. I say: this is very good, and Allah Almighty knows best. (T)

(17) I say: From here it becomes clear that if so little sugar or sugar-drops are added to the water that it [does not reach the level of being] a syrup...

---

1. Bada'i al-Sana'i, Al-Ma' al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/71
2. Bada'i al-Sana'i, Al-Ma' al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/71

फ़तावा रज़विया - खंड 2

मैं कहता हूँ: (1) यह सब, जैसा कि आप देखते हैं, स्पष्ट अर्थ से हटकर है, सिवाय इसके कि मलिक अल-उलमा ने, जो हमने पहले उनसे उद्धृत किया है उसके बाद, कहा: क्योंकि अरबों की आदत थी कि वे खारे पानी में खजूर डाल देते थे ताकि वह मीठा हो जाए। [अहमद] मसूद ने इसे लाक्षणिक रूप से नबीज़ कहा था। पहले ने आगे कहा कि या तो इसका तात्पर्य इसके भाषाई और मूल अर्थ से है, यानी वह पानी जिसमें कुछ डाला गया हो। मैं कहता हूँ कि ये सभी व्याख्याएँ स्पष्ट अर्थ के विपरीत हैं। बहरहाल, मलिक अल-उलमा ने ऊपर उल्लिखित इस पूरी चर्चा के बाद कहा: अरबों की यह आदत थी कि वे खारे पानी में खजूर डाल देते थे ताकि पानी मीठा हो जाए। (त)

मैं कहता हूँ: (2) यह उन दोनों की बात की ओर झुकाव है, लेकिन मैं इसे सही नहीं समझता, क्योंकि यदि ऐसा होता, तो वह अपनी जलीय अवस्था में रहता और पूर्ण (पानी) होता, अतः उससे वज़ू करना पूर्णतः जायज़ होता। जबकि शेख इमाम ने चर्चा के अंत में कहा कि नबीज़-ए-तम्र से वज़ू का जायज़ होना क़यास (तर्क) के विपरीत सिद्ध है, क्योंकि क़यास तो केवल शुद्ध जल से ही वज़ू को जायज़ मानता है, और यह शुद्ध जल नहीं है, इसका प्रमाण यह है कि शुद्ध जल उपलब्ध होने पर इससे वज़ू जायज़ नहीं है। सिवाय इसके कि हमने पाठ (नस्स) के आधार पर इसके जायज़ होने को जाना है। इसलिए हमें हदीस का उत्तर देने की आवश्यकता हुई कि यह तयम्मुम की आयत से निरस्त (मनसूख़) है। इस पर विवाद हुआ, और इसलिए अल-इतकानी ने (3) इमाम मुहम्मद के इस कथन की ओर झुकाव दिखाया कि दोनों (वज़ू और तयम्मुम) को मिलाया जाए ताकि पवित्रता निश्चित रूप से प्राप्त हो। मैं कहता हूँ: यह बहुत अच्छा है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(17) मैं कहता हूँ: यहाँ से स्पष्ट हुआ कि यदि पानी में चीनी या बताशे इतने कम डाले जाएँ कि वह शरबत की सीमा तक [न पहुँचे]...

---

1. बदाए अल-सनाए, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/71
2. बदाए अल-सनाए, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/71

पृष्ठ 577 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: (۱) وکل ھذا کما تری خروج عن الظاھر غیر ان ملك العلماء قال بعدما قدمنا عنه لان من عادة العرب انھا تطرح التمر فی الماء الملح لیحلو اھ مسعود نے اس کو مجازاً نبیذ کہا تھا اول نے مزید فرمایا کہ یا اس سے مراد اس کے لغوی وضعی معنی ہیں، یعنی وہ پانی جس میں کوئی چیز ڈال دی میں کہتا ہوں یہ تمام تاویلات ظاہر کے برخلاف ہیں، تاہم ملک العلماء نے اس تمام گفتگو کے بعد جو ہم نے اوپر ذکر کی، فرمایا: عرب کی عادت تھی کہ وہ کھاری پانی میں کھجوریں ڈالتے تھے تاکہ پانی میٹھا ہو جائے۔ (ت)

اقول: (۲) فھذا میل الی ما قالاہ ولا اراہ یستقیم اذ لو کان کذا لبقی علی مائتیه وکان مطلقا فجاز به الوضوء مطلقا وقد قال الشیخ الامام فی اخر الکلام الجواز فی نبیذ التمر ثبت معدولاً به عن القیاس لان القیاس یابی الجواز الا بالماء المطلق وھذا لیس بماء مطلق بدلیل انه لا یجوز التوضو به مع القدرة علی الماء المطلق الا انا عرفنا الجواز بالنص اھ ولذا احتجنا الی الجواب عن الحدیث بأنه منسوخ بآیة التیمم ونوزع ولذا مال الاتقانی الی قول (۳) محمد انه یجمع بینھما لیقع الطھر بالیقین - اقول وھو حسن جدا واللہ تعالٰی اعلم۔ میں کہتا ہوں یہ جواب بھی ان دو حضرات کے قول کی طرف میلان ہے، مگر میرے نزدیک یہ جواب درست نہیں، کیونکہ اگر یہی بات ہوتی تو پانی کا نام باقی رہتا اور مطلق رہتا اور اس سے مطلقاً وضو جائز ہوتا۔ شیخ نے آخر میں فرمایا نبیذ تمر سے وضو کا جواز قیاس کے برخلاف ثابت ہے، کیونکہ قیاس تو یہ چاہتا ہے کہ وضو صرف مطلق پانی سے ہی جائز ہو، اور یہ مطلق پانی نہیں ہے، اور اس کی دلیل یہ ہے کہ ماء مطلق پر قدرت ہوتے ہوئے اُس سے وضو جائز نہیں، لیکن اس کا جواز از روئے نص ثابت ہے اھ اس لئے ہمیں ضرورت ہوئی کہ ہم حدیث کا جواب دیں، اور جواب یہ ہے کہ یہ آیت تیمم سے منسوخ ہے، اور اس لئے اتقانی امام

محمد کے قول کی طرف مائل ہوئے کہ وضو اور تیمم دونوں کو جمع کیا جائے تاکہ طہارت بالیقین حاصل ہو جائے۔ (ت) میں کہتا ہوں یہ جواب بہت اچھا ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۱۷) اقول: یہاں سے ظاہر ہوا کہ اگر پانی میں شکر یا بتاشے اتنے کم پڑے کہ شربت کی حد تک

---

1 بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۱ 2 بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۱

Volume II Fatawa Razawiyya ...does not reach, even if a slight sweetness comes, then wudu (ablution) from it is permissible. (118) I say: Similarly, if medicine is soaked in water, as long as its effect does not reach a point where it is called medicine and not water, until then wudu with it is permissible even if the qualities of the water change. And the issue of leaves in ponds is sufficient as a witness to this. (The issue of leaves in ponds is a sufficient proof for this. - T) (119) Safflower (Kusum) (120) Saffron (Kaisar) (121) Vitriol (Kasais) (122) Gallnut (Mazo) If these things are dissolved in water in such a small quantity that the water does not become capable of dyeing or forming an imprint for writing a letter, then by consensus, wudu with it is permissible.

Arabic Text

And that is because the statements regarding this have come in four paths. The first: it is absolutely permissible as long as the parts (of the added substance) do not overpower the water. It is stated in Al-Hidayah: Imam Al-Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on him) said: Wudu is not permissible with saffron water and the like which are not of the genus of the earth, because it is restricted water (Ma-e-Muqayyad). Do you not see that it is called "saffron water," unlike the parts of the earth, for water is usually not free from them. Our argument is that the name "water" remains absolute. Do you not see that no separate name has been newly created for it? Its attribution to saffron is like its attribution to a well or a spring. Moreover, a small mixture is not considered due to the impossibility of avoiding it, as is the case with the parts of the earth. Thus, the dominant factor is considered, and dominance is by the parts, not by the change of color; this is the correct view. 1 End

Urdu Translation

First Maslak (Path): Wudu is absolutely permissible as long as its parts do not become dominant over the water. It is in Hidayah that Imam Shafi'i said wudu is not permissible with water of saffron and other similar things which are not from the category of earth, because this is restricted water. That is why they say 'saffron water', and the matter of earth's parts is contrary to this, because water is generally not free from these parts. And our proof is that the name of the water remains absolute because there is no new name for it, and its attribution to saffron is like the attribution of water to a well or a spring, and a small mixture is not considered...

[1] Al-Hidayah, Chapter on Water with which Wudu is Permissible and not Permissible, Matba' Arabiyya Karachi 1/18 **Page 578 of 711**

जिल्द सानी (भाग २) फ़तावा रज़विया ...नहीं पहुँचा, हालाँकि एक हल्की सी मिठास आ गई, तो उससे वज़ू जायज़ है। (११८) अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसी तरह दवा पानी में भिगोई जाए, जब तक पानी में उसका इतना असर न आ जाए कि अब उसे दवा कहा जाए, पानी न कहा जाए, उस वक्त तक उससे वज़ू जायज़ है चाहे पानी के औसाफ़ (गुण) बदल जाएँ। "वक़फ़ा शाहिदन अलैहि मसअतुल औराक़ फ़िल हियाज़" (तालाबों में पत्तों का मसला इस पर काफी दलील है। - त) (११९) कुसुम (१२०) केसर (१२१) कसीस (१२२) माजू ये चीज़ें अगर पानी में इतनी कम घुली हों कि पानी रंगने या लिखने के अक्षर का निशान बनाने के काबिल न हुआ हो, तो बिल-इत्तेफ़ाक (सर्वसम्मति से) उससे वज़ू जायज़ है।

अरबी पाठ

और वह इसलिए कि इस बारे में इबारत (कथन) चार रास्तों (मसल्कों) पर आई हैं। पहला: यह मुतलक़न (पूर्णत;) जायज़ है जब तक कि अज्ज़ा (अंश) पानी पर ग़ालिब (प्रभावी) न हो जाएँ। अल-हिदाया में है: इमाम शाफ़ई (रहमहुल्लाह) ने फरमाया: ज़ाफ़रान (केसर) और इसके जैसी चीज़ों के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जो ज़मीन की जिन्स (श्रेणी) से नहीं हैं, क्योंकि यह मुक़ैयद (प्रतिबंधित) पानी है। क्या आप नहीं देखते कि इसे "ज़ाफ़रान का पानी" कहा जाता है, इसके विपरीत ज़मीन के अंशों के; क्योंकि पानी आम तौर पर उनसे खाली नहीं होता। और हमारी दलील यह है कि पानी का नाम मुतलक़ (निरपेक्ष) रहता है। क्या आप नहीं देखते कि इसके लिए कोई नया अलग नाम नहीं बना है? और इसकी निस्बत ज़ाफ़रान की तरफ वैसी ही है जैसे पानी की निस्बत कुएं या चश्मे की तरफ होती है। और इसलिए कि थोड़ी सी मिलावट का ऐतबार नहीं किया जाता क्योंकि उससे बचना मुमकिन नहीं है, जैसा कि ज़मीन के अंशों में होता है। तो

उर्दू अनुवाद

पहला मसल्क: वज़ू मुतलक़न जायज़ है जब तक कि उसके अज्ज़ा (हिस्से) पानी पर ग़ालिब न हो जाएँ, हिदाया में है इमाम शाफ़ई ने फरमाया ज़ाफ़रान और इसी की मिसाल दूसरी चीज़ों के पानी से वज़ू जायज़ नहीं यानी वो चीज़ें जो ज़मीन की जिन्स से नहीं, क्योंकि यह मुक़ैयद पानी है। इसीलिए कहते हैं ज़ाफ़रान का पानी, और ज़मीन के अज्ज़ा का मामला इसके बरअक्स (विपरीत) है, क्योंकि पानी आम तौर पर इन अज्ज़ा से खाली नहीं होता है और हमारी दलील यह है कि पानी का नाम अली अल-इत्तलाक़ (निरपेक्ष रूप से) बाकी है क्योंकि इसका कोई नया नाम नहीं है, और इसकी इज़ाफ़त (संबंध) ज़ाफ़रान की तरफ ऐसी है जैसे पानी की इज़ाफ़त कुएं और चश्मे

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
ग़ालिब का ऐतबार होगा और ग़लबा अज्ज़ा से होता है न कि रंग के बदलने से, यही सही कौल है। १ इ० (समाप्त)	की तरफ होती है और थोड़ी मिलावट का ऐतबार नहीं किया जाता...

१ हिदाया, बाबूल्-माईल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू व मा ला यजूज़ु बिही, मतबा अरबिया कराची १/१८

पेज ५७८/७११

جلد ثانی فتاوی رضویہ نہ پہنچا اگرچہ ایک ہلکی سی مٹھاس آگئی تو اُس سے وضو روا ہے۔

(۱۱۸) اقول: یوں ہی دوا پانی میں بھگوئی جب تک پانی میں اُس کا اثر نہ آجائے کہ اب اسے دوا کہیں پانی نہ کہیں اُس وقت تک اُس سے وضو جائز ہے اگر چہ پانی کے اوصاف بدل جائیں و کفیٰ شاھداً علیہ مسألۃ الاوراق فی الحیاض (اس پر دلیل حوضوں میں پتوں کا مسئلہ کافی ہے۔ ت)

(۱۱۹) کسم (۱۲۰) کیسر (۱۲۱) کسیس (۱۲۲) مازو یہ چیزیں اگر پانی میں اتنی کم حل ہوئیں کہ پانی رنگنے یا لکھنے حرف کا نقش بننے کے قابل نہ ہو گیا تو اُس سے بالاتفاق وضو جائز ہے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
وذلک ان العبارات جاء ت فیھا علی اربعۃ مسالك الاول یجوز مطلقاً ما لم تغلب علی الماء بالاجزاء قال فی الھدایۃ قال الشافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ لا یجوز التوضی بماء الزعفران واشباہہ مما لیس من جنس الارض لانہ ماء مقید الا تریٰ انہ یقال ماء الزعفران بخلاف اجزاء الارض لان الماء لا یخلو عنھا عادۃ ولنا ان اسم الماء باق علی الاطلاق الا تریٰ انہ لم یتجدد لہ اسم علیحدۃ واضافتہ الی الزعفران کاضافتہ الی البئر والعین ولان الخلط القلیل لایعتبر بہ لعدم امکان الاحتراز عنہ کما فی	پہلا مسلک: وضو مطلقاً جائز ہے تاوقتیکہ اُس کے اجزاء پانی پر غالب نہ ہوجائیں، ہدایہ میں ہے امام شافعی نے فرمایا زعفران اور اسی کی مثل دوسری اشیاء کے پانی سے وضو جائز نہیں یعنی وہ اشیاء جو زمین کی جنس سے نہیں، کیونکہ یہ مقید پانی ہے۔ اس لئے کہتے ہیں زعفران کا پانی، اور زمین کے اجزاء کا معاملہ اس کے برعکس ہے، کیونکہ پانی عام طور پر ان اجزاء سے خالی نہیں ہوتا ہے اور ہماری دلیل یہ ہے کہ پانی کا نام علی الاطلاق باقی ہے کیونکہ اس کا کوئی نیا نام نہیں ہے، اور اس کی اضافت زعفران کی طرف ایسی ہے جیسے

عربی متن	اردو ترجمہ
اجزاء الارض فیعتبر الغالب والغلبة بالاجزاء لابتغیر اللون ھو الصحیح ١ اھ	پانی کی اضافت کنوئیں اور چشمے کی طرف ہوتی ہے اور تھوڑی ملاوٹ کا اعتبار نہیں کیا جاتا...

١ ہدایہ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء وما لایوز بہ مطبع عربیہ کراچی ١٨/١ **Page 578 of 711**

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Left Column - Arabic Quotes] In Al-Anqarawiyya: It is permissible to perform ablution with saffron water according to us (Hanafis), but according to Ash-Shafi'i it is not permissible. In Al-Zahiriyya, then Al-Bahr, and in Al-Khaniyya: if vitriol (Az-Zaj) is thrown into water until it turns black (Al-Khaniyya adds: but its thinness did not vanish), ablution with it is permissible. Similar to Al-Khaniyya is in Al-Muniyya from Al-Multaqat, adding "likewise oak gall (Al-Afs)". It says in Al-Ghuniyya: permissible despite the change in color, taste, and smell. In Al-Khaniyya: Not with rose water or saffron water if its thinness vanishes and it becomes thick; if its thinness and lightness remain, it is permissible. In Jawahir al-Akhlati: if any pure substance is mixed and not cooked, like saffron and turmeric, it is permissible to perform ablution with it. Meaning: the condition of remaining thin is known, no need to state it. In Miskeen upon Al-Kanz: It is not permissible with what overcomes it.

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] There is no consideration [of the change] because avoiding it is impossible, just as it happens with particles of earth; so dominance is considered, and dominance is by parts, not by the change of color. This is the correct view. (In Khaniyya this addition is also there: but its thinness did not vanish), then ablution with it is permissible. And in Fatawa Anqarawiyya it is: according to us, wudu with saffron water is permissible, and according to Imam Shafi'i it is not permissible. In Zahiriyya, Bahr, and Khaniyya it is: when turmeric was put in water (this addition is also in Khaniyya: but its thinness did not vanish), wudu is permissible. And like Khaniyya, it is narrated in Muniyya from Multaqat, it also adds gallnuts. In Ghuniyya it is: wudu is permissible despite changes in its taste, smell, and color. And in Khaniyya it is: not with rose and saffron water when its thinness is gone and it becomes thick, and if its thinness and delicacy remain, then wudu with it is permissible. In Jawahir-e-Akhlati it is: when any pure thing is mixed in water and it...

[Middle Section - Arabic and Urdu] Footnote 'Ain': In Al-Saghira: a small amount of saffron changes the three properties despite being thin, so ablution and washing are permissible with it. (M) And in its Sharh Saghira it is: a little saffron may change the three properties of water, but if the water is thin, then ablution and washing are permissible from it. (T)

[Footnotes] 1. Rasa'il al-Arkan bil-Ma'na, section on waters, Matba' Alawi, p. 24. 2. Bahr al-Ra'iq, Kitab at-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/29. 3. Ghunyat al-Mustamli, Ahkam al-Miyah, Sohail Academy Lahore, p. 90. 4. Fatawa Khaniyya al-

Ma'ruf Qadi Khan, section on what is not permissible for wudu, Nawal Kishore Lucknow, 1/19. 5. Jawahir al-Akhlati.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[बायां कॉलम - अरबी उद्धरण] अल-अनक़रविया में: केसर के पानी से वुज़ू करना हमारे नज़दीक जायज़ है, लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक जायज़ नहीं है। अल-ज़हीरिया, फिर अल-बहर, और अल-ख़ानिया में: यदि पानी में नीला थोथा (अज़-ज़ज) डाला जाए जिससे वह काला हो जाए (ख़ानिया जोड़ता है: लेकिन उसका पतलापन ख़त्म नहीं हुआ), तो उससे वुज़ू जायज़ है। अल-ख़ानिया जैसा ही अल-मुनिया में अल-मुल्तक़त से वर्णित है, इसमें "बहेड़े (अफ़्स)" को भी जोड़ा गया है। अल-ग़ुनिया में है: रंग, स्वाद और गंध बदलने के बावजूद जायज़ है। अल-ख़ानिया में: गुलाब जल या केसर के पानी से नहीं यदि उसका पतलापन चला जाए और वह गाढ़ा हो जाए; यदि उसका पतलापन और सूक्ष्मता बनी रहे, तो जायज़ है। जवाहिर अल-अख़लाती में: यदि कोई पाक चीज़ मिलाई जाए और उसे पकाया न जाए, जैसे केसर और हल्दी, तो उससे वुज़ू करना जायज़ है। यानी: पतलापन बने रहने की शर्त मालूम है, इसे अलग से बताने की ज़रूरत नहीं। अल-कन्ज़ पर मिस्कीन में: जो चीज़ पानी पर हावी हो जाए, उससे वुज़ू जायज़ नहीं।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] इसका कोई एतबार नहीं क्योंकि इससे बचना मुमकिन नहीं, जैसा कि ज़मीन के कणों के मामले में होता है; तो प्रबलता (ग़लबा) का एतबार होगा, और प्रबलता मात्रा (अजज़ा) के आधार पर होती है न कि रंग बदलने से। यही सही है। (ख़ानिया में यह बढ़ोत्तरी भी है कि: मगर उसका पतलापन ख़त्म नहीं हुआ), तो उससे वुज़ू जायज़ है। और फ़तावा अनक़रविया में है कि हमारे नज़दीक केसर के पानी से वुज़ू जायज़ है और इमाम शाफ़ई के नज़दीक जायज़ नहीं। ज़हीरिया, बहर और ख़ानिया में है कि जब हल्दी पानी में डाली गई (ख़ानिया में यह इज़ाफ़ा भी है: मगर उसका पतलापन ख़त्म नहीं हुआ), वुज़ू जायज़ है। और ख़ानिया की तरह मुनिया में मुल्तक़त से नक़ल किया गया है, इसमें माजूफ़ल (अफ़्स) का इज़ाफ़ा भी है। ग़ुनिया में है कि स्वाद, गंध और रंग बदलने के बावजूद वुज़ू जायज़ है। और ख़ानिया में है कि गुलाब और केसर के पानी से नहीं जब उसका पतलापन ख़त्म हो जाए और वह गाढ़ा हो जाए, और अगर उसका पतलापन और कोमलता बनी रहे तो उससे वुज़ू जायज़ है। जवाहिर-ए-अख़लाती में है कि जब कोई पाक चीज़ पानी में मिल जाए और वह...

[मध्य भाग - अरबी और उर्दू] हाशिया 'ऐन': सग़ीरा में है: केसर की थोड़ी सी मात्रा पानी के तीनों गुणों को बदल देती है बावजूद इसके कि वह पतला रहे, इसलिए उससे वुज़ू और ग़ुस्ल जायज़ है। (म)

और इसकी शरह सग़ीरा में है कि थोड़ी केसर पानी के तीनों गुणों को बदल दे मगर पानी पतला (रक़ीक़) हो तो उससे वुज़ू और ग़ुस्ल जायज़ है। (त)

[पादलेख] 1. रसाइल अल-अरकान बिल-माना, फ़स्ल फ़िल-मियाह, मतबा अलवी, पृ. 24। 2. बहर अर-राइक़, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/29। 3. गुन्यात अल-मुस्तमली, अहकाम अल-मियाह, सोहेल अकादमी लाहौर, पृ. 90। 4. फ़तावा ख़ानिया अल-मारूफ़ क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़ीमा ला-यजज़ु बिह इत-तवज्जी, नवल किशोर लखनऊ, 1/19। 5. जवाहिर अल-अख़लाती।

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

وفی الانقرویہ یجوز التوضی بماء الزعفران عندنا وعند الشافعی لایجوز اھ وفی الظھیریہ ثم البحر وفی الخانیہ اذا طرح الزاج فی الماء حتی اسود (زاد فی الخانیہ لکن لم تذھب رقتہ) جاز بہ الوضوء اھ ومثل الخانیہ فی المنیہ عن الملتقط وزاد وکذا العفص اھ قال فی الغنیہ عہ جاز مع تغیر لونہ وطعمہ وریحہ اھ وفی الخانیہ لاء بماء ورد وزعفران اذا ذھبت رقتہ وصار ثخینا وان بقیت رقتہ ولطافتہ جاز اھ وفی جواھر الاخلاطی اذا خالط شیئ من الطاھرات ولم یطبخ کالزعفران والزردج یجوز التوضی بہ اھ ای وقید بقاء الرقۃ معلوم لاحاجۃ الی ابانتہ وفی مسکین علی الکنز لایجوز بما غلب علیہ

کوئی اعتبار نہیں کہ اس سے بچنا ممکن نہیں، جیسا کہ زمین کے اجزاء میں ہوتا ہے، تو غالب کا اعتبار ہوگا اور غلبہ باعتبارِ اجزاء ہوتا ہے نہ کہ رنگ کے بدلنے سے، یہی صحیح ہے اھ (خانیہ میں یہ اضافہ بھی یہ ہے مگر اس کی رقت زائل نہ ہوئی) تو اس سے وضو جائز ہے اھ اور فتاوٰی انقرویہ میں ہے کہ ہمارے نزدیک زعفران کے پانی سے وضو جائز ہے اور امام شافعی کے نزدیک جائز نہیں اھ، ظہریہ، بحر اور خانیہ میں ہے کہ جب زردج پانی میں ڈالا گیا خانیہ میں یہ اضافہ بھی ہے مگر اسکی رقت زائل نہ ہوئی) وضو جائز ہے اھ اور خانیہ کی طرح منیہ میں ملتقط سے منقول ہے اس میں عفص کا اضافہ بھی ہے اھ غنیہ میں ہے اس کے مزے بُو اور رنگ کے بدل جانے کے باوجود وضو جائز ہے اھ اور خانیہ میں ہے نہ کہ گلاب اور زعفران کے پانی سے جبکہ اس کی رقت ختم ہوجائے اور گاڑھا ہوجائے، اور اگر اس کی رقت و لطافت باقی رہے تو اس سے وضو جائز ہے اھ جواہر اخلاطی میں ہے کہ جب کوئی پاک شئی پانی میں مل جائے اور اس کو

عہ: وفی صغیرہ القلیل من الزعفران یغیر الاوصاف الثلثۃ مع کونہ رقیقا فیجوز الوضوء و الغسل بہ ۱۲ منہ (م) اور اس کی شرح صغیر میں ہے کہ تھوڑی زعفران پانی کے تینوں اوصاف کو بدل دے مگر پانی رقیق ہو تو اس سے وضو اور غسل جائز ہے ۱۲ منہ (ت)

1 رسائل الارکان بالمعنی فصل فی المیاہ مطبع علوی ص ۲۴ 2 بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱ 3 غنیۃ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 4 فتاوٰی خانیہ المعروف قاضی خان فصل فیما لایجو ز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/ ۱۹ 5 جواھر الاخلاطی

Fatawa Razawiya Volume 2

[Right Column - Urdu] If it has not been cooked, such as saffron and turmeric, then wudu with it is permissible. The condition of the persistence of thinness (fluidity) is known to everyone, hence there is no need for further explanation. And it is stated in *Miskeen 'ala al-Kanz* that when another substance dominates the water, wudu with it is not permissible, such as saffron, when this dominance is in terms of its parts (substance). By the condition of "parts," color is excluded from this, and this is the opinion of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). It is mentioned in *Wajeez al-Kardari* that if water containing turmeric, soap, safflower, or floodwater is thin and can flow over the limbs, then wudu with it is permissible. In fact, it is in *Al-Ghurar* that even if a solid substance changes its qualities, wudu is still permissible, such as saffron and leaves, according to the most correct view. And it says in *Nur al-Idah* that changing all the qualities of water by a solid substance is not harmful, like saffron. So these texts support each other. And what is in *Khania* is that wudu with water containing saffron, turmeric, or safflower is permissible provided it is thin and the water dominates. If redness dominates and it becomes thick (cohesive), it is not permissible. (T) I say: Its beginning is explicit in considering thinness (fluidity), and in its end, although redness is mentioned, it was rectified by the words "and it becomes thick/cohesive." Thus, dominance of color was not sufficient unless it thickens, then he emphasized it by saying...

[Left Column - Arabic] ...other than water like saffron parts, and it is a precaution against dominance in color, and it is the saying of Muhammad, may Allah Almighty have mercy on him (1). End. In *Wajeez al-Kardari*: water of turmeric, soap, safflower, and flood water, if it is thin and flows on the limb, it is permissible to perform wudu with it (2). End. Rather, in *al-Ghurar*, it is permissible even if a solid changes its qualities, like saffron and leaves, according to the most correct [view] (3). In *Nur al-Idah*: the change of all its qualities by a solid like saffron does not harm (4). End. So these are texts supporting each other. In *al-Khaniyah*: wudu with water of saffron, turmeric, and safflower is permissible if it is thin and the water is dominant, but if the redness dominates it and it becomes cohesive, it is not permissible (5). End. I say: its beginning is explicit in considering thinness, and in its end, although he mentioned redness, he rectified it with his saying "and it became cohesive," so he was not content with the dominance of color unless it thickens, then he emphasized it by saying...

[Footnotes] 1. Fath al-Mu'in, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/63. 2. Fatawa Bazzaziya 'ala al-Hindia, type of used, restricted and absolute water, Noorani Kutub Khana Peshawar, 10/2. 3. Al-Ghurar, Matn al-Durar, Book of Purification, Kamiliya Press Beirut, 21/1. 4. Nur al-Idah, Book of Purification, Ilmiya Press Lahore, p. 3. 5. Fatawa Qadi Khan, regarding what is not permissible for wudu, Naval Kishore Press Lucknow, 9/1.

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

[दायां कॉलम - उर्दू] यदि इसे पकाया न गया हो, जैसे केसर (ज़ाफ़रान) और हल्दी (ज़रदज), तो उससे वज़ू करना जायज़ है। पानी के पतलापन (तरलता) बने रहने की शर्त सभी को मालूम है, इसलिए इसे स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। और मिस्कीन अला अल-कंज में है कि जब पानी पर किसी दूसरी चीज़ का ग़लबा (प्रभुत्व) हो जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, जैसे केसर, बशर्ते यह ग़लबा उसके अंशों (पार्ट्स) के आधार पर हो। "अंशों" की शर्त से रंग इससे बाहर हो गया, और यह इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) का कौल (कथन) है। वजीज़ अल-करदरी में है कि हल्दी, साबुन, कुसुम्भ (असफ़र) और बाढ़ का पानी यदि पतला हो और अंगों पर बह सके तो उससे वज़ू जायज़ है। बल्कि अल-ग़ुरर में है कि अगर कोई ठोस चीज़ इसके गुणों को बदल दे, तब भी वज़ू जायज़ है, जैसे केसर और पत्ते, सबसे सही कौल के अनुसार। और नूर अल-ईज़ाह में है कि किसी ठोस चीज़ द्वारा पानी के गुणों को बदल देना हानिकारक नहीं है, जैसे केसर। तो ये नुसूस (ग्रंथों के प्रमाण) एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। और जो खानिया में है कि केसर, हल्दी, कुसुम्भ के पानी से वज़ू जायज़ है बशर्ते वह पतला हो और पानी का ग़लबा हो। यदि उस पर सुर्खी (लालिमा) हावी हो जाए और वह गाढ़ा हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं है। (त) मैं कहता हूँ कि इसकी शुरुआत पतलापन (रक़्कत) के विचार में स्पष्ट है, और इसके अंत में हालांकि सुर्खी का ज़िक्र है, लेकिन इसकी भरपाई इस शब्द से कर दी गई कि "वह गाढ़ा हो जाए।" तो सिर्फ रंग के ग़लबा को पर्याप्त नहीं माना जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए, फिर उन्होंने यह कहकर इसकी पुष्टि की...

[बायां कॉलम - अरबी] ...पानी के अलावा जैसे केसर के अंश, और यह रंग में ग़लबा के प्रति एक सावधानी है, और यह मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) का कथन है (1)। समाप्त। वजीज़ अल-करदरी में है: हल्दी, साबुन, कुसुम्भ और बाढ़ का पानी, यदि वह पतला हो और अंग पर बहता हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ है (2)। समाप्त। बल्कि अल-ग़ुरर में है, यह जायज़ है भले ही कोई ठोस चीज़ उसके गुणों को बदल दे जैसे केसर और पत्ते, सबसे सही के अनुसार (3)। नूर अल-ईज़ाह में: केसर जैसी ठोस चीज़ द्वारा इसके सभी गुणों का परिवर्तन कोई नुकसान नहीं पहुँचाता (4)। समाप्त। तो ये परस्पर सहायक नुसूस हैं। अल-खानिया में: केसर, हल्दी और कुसुम्भ के पानी से वज़ू जायज़ है यदि वह पतला हो और पानी प्रधान हो, लेकिन यदि लाली उस पर हावी हो जाए और वह जम जाए/गाढ़ा हो जाए, तो यह जायज़ नहीं है (5)। समाप्त। मैं कहता हूँ: इसका प्रारंभ पतलापन के विचार में स्पष्ट है, और इसके अंत में, यद्यपि उन्होंने लाली का उल्लेख किया, उन्होंने इसे अपने इस कथन से सुधारा

"और वह जम गया," इसलिए वह रंग की प्रधानता से संतुष्ट नहीं थे जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए, फिर उन्होंने यह कहकर इसे पुष्ट किया...

[पादलेख] 1. फ़तहुल मुईन, किताबुत्तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/63। 2. फ़तावा बज़ाज़िया अला अल-हिंदिया, मुस्तमल, मुक़ैयद और मुतलक पानी के प्रकार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 10/2। 3. अल-ग़ुरर, मतन अद-दुरर, किताबुत्तहारत, कामिलिया प्रेस बेरूत, 21/1। 4. नूर अल-ईज़ाह, किताबुत्तहारत, इल्मिया प्रेस लाहौर, पृ. 3। 5. फ़तावा काज़ी खान, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 9/1।

पेज 580/711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[دایاں کالم - اردو] پکایا نہ گیا ہو جیسے زعفران اور زردج ، تو اس سے وضو جائز ہے اور رقت کے بقاء کی قید سب کو معلوم ہے لہذا اظہار کی طرف کوئی محتاجی نہیں اور مسکین علی الکنز میں ہے کہ جب پانی پر کسی دوسری شے کا غلبہ ہو جائے تو اس سے وضو جائز نہیں جیسے زعفران جبکہ یہ غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہو، اور اجزاء کی قید سے لون (رنگ) اس سے خارج ہو گیا اور یہ امام محمد رحمہ اللہ کا قول ہے اہ اور وجیز کردری میں ہے کہ زردج، صابون، عصفر اور سیلاب کا پانی اگر رقیق ہو اور یہ پانی عضو پر بہہ سکتا ہو تو اس سے وضو جائز ہے اہ بللکہ غرر میں ہے کہ اگرچہ کوئی جامد چیز اس کے اوصاف کو بدل دے تو بھی وضو جائز ہے جیسے زعفران اور پتے، اصح قول کے مطابق۔ اور نور الایضاح میں ہے کہ کسی جامد چیز کا پانی کے اوصاف کو متغیر کر دینا مضر نہیں، جیسے زعفران اہ تو یہ نصوص ایک دوسرے کی تائید کرتی ہیں، اور جو خانیہ میں ہے کہ زعفران، زردج، عصفر کے پانی سے وضو جائز ہے بشرطیکہ رقیق ہو اور پانی کا غلبہ ہو پس اگر اس پر سرخی غالب ہو جائے اور گاڑھا ہو جائے تو وضو جائز نہیں اہ (ت) میں کہتا ہوں اس کی ابتداء رقت کے اعتبار میں صریح ہے اور اس کے آخر میں اگرچہ سرخی کا ذکر ہے لیکن اس کا تدارک اس لفظ سے کر دیا کہ وہ گاڑھا ہو جائے، تو جب تک گاڑھا نہ ہو رنگ کے غلبہ کا

[بایاں کالم - عربی] غير الماء مثل الزعفران اجزاء وهواحتراز عن الغلبة لوناً وهو قول محمد رحمه الله تعالى 1 اهـ وفي وجيز الكردري ماء الزردج والصابون والعصفر والسيل لورقيقا يسيل على العضو يجوز التوضى به 2 اهـ بل في الغرر يجوز وان غير اوصافه جامد كزعفران وورق في الاصح 3 وفي نورالايضاح لايضر تغير اوصافه كلها بجامد كزعفران 4 اهـ فهذه نصوص متظافرة اماماً في الخانيه

التوضؤ بماء الزعفران وزردج العصفر يجوز ان كان رقيقاً والماء غالب فان غلبته الحمرة وصار متمسكاً لايجوز 5 اهـ فأقول: اوله صريح في اعتبار الرقة وفي آخره وان ذكرالحمرة فقد تداركه بقوله وصار متمسكاً فلم يكتف بغلبة اللون مالم يثخن ثم اكده بان قال

[حواشی] 1 فتح المعين كتاب الطہارت ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ۱/۶۳ 2 فتاویٰ بزازيہ على الہنديہ نوع المستعمل والمقيد والمطلق نورانی كتب خانہ پشاور ۱۰/۲ 3 الغرر متن الدرر كتاب الطہارة مطبعۃ كامليہ بيروت ۲۱/۱ 4 نور الايضاح كتاب الطہارت مطبعہ علميہ لاہور ص ۳ 5 فتاویٰ قاضی خان فيما لا يجوز بہ التوضی مطبعہ نولكشور لكھنؤ ۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume 2

Attached to it, according to Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), the dominance is considered in terms of components, not in terms of color. This is the correct view. Similar to this is in Al-Khulasa: a person performed ablution with water of Zardaj, Usfar (safflower), or soap; if it is thin such that the water is visible through it, it is permissible. But if redness dominates it and it becomes like starch, it is not permissible. Thus, it explicitly bases the ruling on thickness, and the mention of redness in both books is as a supplement/afterthought. (T)

The second view: It is not permissible at all. In Sharh al-Tahawi and Khazanat al-Muftin, it is mentioned that 'restricted water', like juice from trees and fruits, and saffron water, is not allowed. In Al-Munya, it says: Ablution is not permissible with restricted water such as saffron water. It is stated in Al-Hilya that this is understood for when saffron is dominant. (T)

I Say: This is ambiguous; it could imply dominance in terms of parts...

(Note): A benefit regarding this will follow at the end of the sixth principle of the third section, which is why it was said 'as a supplement', i.e., in outward appearance. (M - may he be forgiven) (T)

1. Fatawa Qadi Khan, on things with which ablution is not permissible, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/1.
2. Khulasat al-Fatawa, explanation of restricted water, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/8.
3. Khazanat al-Muftin.
4. Munyat al-Musalli, section on waters, Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore, p. 63.
5. Hilya.

Page 581 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

इसके साथ जुड़ा हुआ, इमाम अबू युसुफ़ (रज़िअल्लाहु अन्हु) के अनुसार, प्रभुत्व (ग़ल्बा) अवयवों (अंगों) के संदर्भ में माना जाता है, रंग के संदर्भ में नहीं। यही सही है। अल-ख़ुलासा में इसी तरह का उल्लेख है: एक व्यक्ति ने ज़रदज, कुसुम्भ (असफ़र) या साबुन के पानी से वज़ू किया; यदि वह पतला है जिससे पानी स्पष्ट रूप से दिखाई दे, तो वज़ू जायज़ है। और यदि उस पर लाली हावी हो जाए और वह स्टार्च (नशास्तह) की तरह गाढ़ा हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं है। तो इसमें स्पष्ट रूप से गाढ़ेपन पर हुक्म दिया गया है, और दोनों किताबों में लाली का ज़िक्र मुस्तदरक (अनुपूरक) के रूप में है। (त)

दूसरा मत: यह बिल्कुल जायज़ नहीं है। शरह तहावी और खज़ानतुल मुफ़्तीन में है कि 'मक़य्यद' (प्रतिबंधित) पानी, जैसे पेड़ों और फलों का रस और ज़ाफ़रान का पानी जायज़ नहीं है। मुनिया में है कि मक़य्यद पानी जैसे ज़ाफ़रान के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है। ह़िलिया में कहा गया है कि यह उस स्थिति पर लागू होता है जब ज़ाफ़रान हावी हो। (त)

मैं कहता हूँ: यह अस्पष्ट है, इसमें अवयवों के प्रभुत्व की संभावना है...

(नोट): इसके लिए एक फ़ायदा तीसरे खंड के छठे नियम के अंत में आएगा, इसीलिए 'मुस्तदरक' कहा गया, यानी ज़ाहिरी नज़र में। (म - अल्लाह उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए) (त)

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/1।
2. ख़ुलासतुल फ़तावा, मक़य्यद पानी का बयान, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/8।
3. खज़ानतुल मुफ़्तीन।
4. मुनियतुल मुसल्ली, पानी के बारे में अध्याय, मकतबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर, पृष्ठ 63।
5. ह़िलिया।

पृष्ठ 711 में से 581

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

متصلاً بہ اما عند ابی یوسف رحمہ اللہ تعالٰی تعتبر الغلبۃ من حیث الاجزاء لا من حیث اللون ھو الصحیح اھ ومثل ھذا ما في الخلاصۃ رجل توضأ بماء الزردج اوالعصفر اوالصابون ان کان رقیقا یستبین الماء منہ یجوز وان غلبت علیہ الحمرۃ وصار نشاستج لا یجوز اھ اعتبار نہیں پھر اس کی تائید میں متصلاً فرمایا کہ ابو یوسف کے نزدیک اجزاء کے اعتبار سے غلبہ معتبر ہے رنگ کے اعتبار سے نہیں، یہی صحیح ہے اھ اور اسی کی مثل خلاصہ میں ہے کہ کسی شخص نے زردج، عصفر یا صابن کے پانی سے وضو کیا، اگر وہ رقیق ہو جس سے پانی واضح ہوتا ہو تو وضو جائز ہے اور اگر اس پر سرخی غالب ہوگئی ہو اور نشاستہ بن گیا ہو تو وضو جائز نہیں اھ تو اس میں اس کی تصریح ہے کہ دار ومدار گاڑھے پن پر ہے اور دونوں کتابوں میں سرخی کا ذکر مستدرک کی طرح ہے۔ (ت)

الثانی: لایجوز مطلقا فی شرح الطحاوی ثم خزانۃ المفتین المقید مثل ماء الاشجار والثمار وماء الزعفران اھ وفي المنیہ لا تجوز بالماء المقید کماء الزعفران اھ قال في الحلیہ محمول علی ما اذا کان الزعفران غالبا اھ دوسرا مسلک: مطلقاً جائز نہیں، شرح طحاوی اور خزانتہ المفتین میں ہے مقید جس طرح درخت، اور پھلوں کا پانی اور زعفران کا پانی اھ اور منیہ میں ہے کہ مقید پانی سے وضو جائز نہیں جیسے زعفران کا پانی اھ حلیہ میں کہا کہ یہ اُس صورت پر محمول ہے جبکہ زعفران غالب ہوا۔ (ت)

اقول: ھذا مبھم یحتمل الغلبۃ میں کہتا ہوں یہ مبہم ہے اس میں اجزاء کے

عہ: ستأتی فائدہ لہ اخر الضابطہ السادسة من الفصل الثالث ولذا قال کالمستدرك ای فی النظر الظاهر ۱۲ منہ غفر لہ (م) تیسری فصل کے چھٹے ضابطہ کے آخر میں اس کے لئے ایک فائدہ بیان کیا ہے اس لئے فرمایا کالمستدرک یعنی نظر ظاہر میں ۱۲منہ (ت)

1 فتاوی قاضی خان فیما لا یجوز بہ التوضی مطبع نولکشور لکھنو ۱/ا 2 خلاصة الفتاوی بیان الماء المقید مطبع نولکشور لکھنو ۸/۱ 3 خزانة المفتین 4 منیہ المصلی فصل في المیاہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۶۳ 5 حلیہ

Fatawa Razawiyya, Volume Two

[Arabic Text]: ...by parts and by color. It is stated more clearly in 'Al-Ghunya': "The meaning is what has thickened because of it and lost its fluidity, or what is extracted from it moistly, just as it is extracted from a rose." [End quote]

[Urdu Translation]: There is a possibility of dominance in terms of components as well as in terms of color. There is clarification in 'Al-Ghunya'; it was said that by it is meant that water which has become thick and its fluidity has ended, or it is that which comes out from it moistly, as it comes out from a rose. (T)

[Arabic Text]: I say: According to the second [meaning], it falls outside the dispute; and according to the first, it returns to the first [ruling], which is what was explicitly stated in 'Al-Minya' itself. After it, it says: "Ablution is permissible with water mixed with saffron, on the condition that the dominance belongs to the water in terms of parts, and the name 'water' has not ceased from it." [End quote]

[Urdu Translation]: I say: In the second case, it will be separate from this controversial situation, and in the first case, it will return to the first. This is what is explicitly mentioned in 'Al-Minya'; they said that ablution is permissible with water in which saffron has been mixed, provided that the water remains dominant in terms of parts, and the term 'water' is still applicable to it. (T)

[Arabic Text]: Third: It is permissible (note) as long as it is not suitable for dyeing and engraving, according to 'Al-Fath' and 'Al-Hulya'. It was explicitly stated in 'Al-Tajnīs'.

[Urdu Translation]: Third school of thought: Ablution is permissible with water that does not have the capacity for dyeing or engraving. This is mentioned in 'Al-Fath' and...

[Arabic Marginal Note]: In 'Al-Arkan al-Arba'a' by Mawla Bahr al-Ulum al-Kanawi: It is not permissible to perform ablution with water containing saffron, safflower, or turmeric when it is such that it colors the body or cloth, because the name 'water' has ceased from it in reality. As for when it becomes thick, it is neither absolute water nor restricted water; thus, the name 'water' is not applied to it either literally or metaphorically. [End quote]

[Urdu Translation]: It is mentioned in Bahr al-Ulum's 'Al-Arkan al-Arba'a' that ablution is not permissible with water of saffron, safflower, or turmeric if it colors the body or cloth, because then the name 'water' is truthfully removed from it. And when it

becomes thick, it is neither absolute water nor restricted water, and the term 'water' cannot be applied to it either truthfully or metaphorically. [End quote]

[Arabic Text]: I say: Regarding this (1), firstly, that which is suitable for dyeing has not changed in essence in reality; rather, only a quality of it has changed. So, it is water in reality; yes, it has not remained [absolute] water...

[Urdu Translation]: I say: Firstly, if the water has the capacity to dye, it has not changed in essence in terms of reality; only its quality has changed. Therefore, it is water in reality. (Continued on next page).

Footnotes: 1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Rulings of Waters, Suhail Academy Press, Lahore, p. 89. 2. Munyat al-Musalli, Chapter on Waters, Qadiriyya Library, Jamia Nizamiyya Razawiyya, Lahore, p. 63.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी

[अरबी पाठ]: ...हिस्सों और रंग के आधार पर। 'अल-ग़ुनिया' में यह अधिक स्पष्ट रूप से कहा गया है: "इसका अर्थ वह है जो इसके कारण गाढ़ा हो गया हो और उसने अपनी तरलता खो दी हो, या वह है जो उससे गीला निकलता हो, जैसे गुलाब से निकलता है।" [समाप्त]

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: हिस्सों के आधार पर भी प्रभुत्व (ग़ल्बा) की संभावना है और रंग के आधार पर भी। 'अल-ग़ुनिया' में स्पष्टीकरण है; कहा गया है कि इससे तात्पर्य वह पानी है जो गाढ़ा हो गया हो और उसकी तरलता समाप्त हो गई हो, या वह है जो उससे तर निकलता हो जैसे गुलाब से निकलता है। (त)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: दूसरे [अर्थ] के अनुसार, यह विवाद से बाहर हो जाता है; और पहले के अनुसार, यह पहले [हुक्म] की ओर लौटता है, जो स्वयं 'अल-मिन्या' में स्पष्ट रूप से बताया गया है। इसके बाद कहा गया है: "केसर मिले हुए पानी से वज़ू जायज़ है, इस शर्त पर कि हिस्सों के मामले में पानी का वर्चस्व हो, और उस पर से 'पानी' का नाम न हटा हो।" [समाप्त]

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: मैं कहता हूँ: दूसरी सूरत में यह विवादास्पद स्थिति से अलग हो जाएगा, और पहली सूरत में पहली की ओर लौटेगा। यह वही है जिस पर 'मिन्या' में स्पष्टता है; उन्होंने कहा कि उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें केसर मिलाया गया हो, बशर्ते कि हिस्सों के आधार पर पानी का प्रभुत्व हो और उस पर पानी का नाम लागू होता हो। (त)

[अरबी पाठ]: तीसरा: यह जायज़ है (नोट) जब तक कि यह रंगने और नक़्क़ाशी के लिए उपयुक्त न हो, 'अल-फ़तह' और 'अल-हुल्या' के अनुसार। 'अल-तजनीस' में इसे स्पष्ट रूप से बताया गया है।

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: तीसरा मकलक (विचारधारा): उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें रंगने और नक़्क़ाशी की क्षमता न हो। यह 'फ़तह' और...

[अरबी हाशिये का नोट]: मौला बहरुल उलूम अल-कनवी की 'अल-अरकान अल-अरबा' में है: केसर, कुसुम और हल्दी के पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है जब वह इस प्रकार का हो कि शरीर या कपड़े को रंग दे, क्योंकि वास्तव में उससे 'पानी' का नाम समाप्त हो गया है। जहाँ तक उसके गाढ़ा होने की बात है, तो वह न तो मुतलक़ (निरपेक्ष) पानी है और न ही मुक़य्यद (प्रतिबंधित) पानी; इसलिए उस पर

न तो हक़ीक़तन (वास्तव में) और न ही मजाज़न (लाक्षणिक रूप से) पानी का नाम लागू होगा। [समाप्त]

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: बहरुल उलूम की 'अरकान-ए-अरबा' में है: केसर, कुसुम और हल्दी के पानी के साथ वज़ू जायज़ नहीं है जबकि वह शरीर या कपड़े को रंग दे क्योंकि अब हक़ीक़तन (वास्तव में) पानी का नाम उससे खत्म हो गया। और जब वह गाढ़ा हो जाए तो न मुतलक़ पानी है और न मुक़य्यद पानी, और न ही उस पर पानी का हक़ीक़तन इत्तलाक़ (प्रयोग) होता है और न मजाज़न। [समाप्त]

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: इसमें (१) पहली बात यह है कि जो रंगने के लिए उपयुक्त है, वह वास्तविकता में अपने मूल तत्व में नहीं बदला है; बल्कि केवल उसकी एक विशेषता बदली है। अत; वह वास्तव में पानी है; हाँ, वह [निरपेक्ष] पानी नहीं रहा...

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: मैं कहता हूँ: पहली बात यह कि अगर पानी रंगने की क्षमता रखता हो, तो पानी अपनी वास्तविकता में नहीं बदला, केवल उसकी विशेषता बदली है। अतः वह वास्तव में पानी है। (शेष अगले पृष्ठ पर)।

पादलेख: १. ग़ुनियतुल मुस्तमली, फ़सल अहकामुल मियाह, मतबा सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ ८९। २. मुनियतुल मुसल्ली, फ़सल फ़िल मियाह, मकतबा क़ादिरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृष्ठ ६३।

पृष्ठ ५८२ ऑफ़ ७११

بالاجزاء وباللون وافصح فی الغنیہ فقال المراد ماخثر بہ وخرج عن الرقۃ او ما یستخرج منہ رطباً کما یستخرج من الورد اھ اعتبار سے بھی غلبہ کا احتمال ہے اور رنگ کے اعتبار سے بھی ہے، اور غنیہ میں وضاحت ہے، فرمایا اس سے مراد وہ پانی ہے جو گاڑھا ہو گیا ہو اور رقت ختم ہوگئی ہو، یا وہ ہے جو اس سے تر نکلتا ہو جیسا کہ گلاب سے نکلتا ہے اھ (ت)

اقول: فعلی الثانی یخرج من البین وعلی الاول یرجع الی الاول وھو الذی نص علیہ فی المنیہ نفسہا من بعد اذ قال تجوز الطہارۃ بالماء الذی اختلط بہ الزعفران بشرط ان تکون الغلبۃ للماء من حیث الاجزاء ولم یزل عنہ اسم الماء اھ میں کہتا ہوں تو دوسری صورت میں یہ اختلافی صورت سے الگ ہو جائیگا، اور پہلی صورت میں پہلی کی طرف رجوع کرے گا یہ وہ ہے جس پر منیہ میں صراحت ہے، انہوں نے کہا کہ اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں زعفران ملائی گئی ہو بشرطیکہ اجزاء کے اعتبار سے پانی کو غلبہ ہو، اور پانی کا اطلاق اس پر ہوتا ہو۔ (ت)

الثالث: یجوز عہ مالم یصلح للصبغ والنقش فی الفتح والحلیہ صرح فی التجنیس تیسرا مسلک : اس سے وضو جائز ہے جو رنگنے اور نقش کرنے کی صلاحیت نہ رکھتا ہو، یہ فتح اور

عہ فی الارکان الاربعۃ للمولی بحر العلوم الکنوی لا یجوز التوضی بماء الزعفران والعصفر والزردج اذا کان بحیث یلون البدن او الثوب لانہ ذھب اسم الماء حقیقۃ و اما اذا صار بلیدا فلیس ماء مطلقا ولا ماء مقیدا فلا یطلق علیہ الماء لا حقیقۃ ولا مجازا اھ بحر العلوم کی ارکان اربعہ میں ہے زعفران، عصفر اور زردج کے پانی کے ساتھ وضو جائز نہیں جبکہ وہ بدن یا کپڑے کو رنگ دے کیونکہ

اب حقیقتاً پانی کا نام اس سے ختم ہوگیا اور جب وہ گاڑھا ہو جائے تو نہ مطلق پانی ہے اور نہ مقید پانی ہے اور نہ اس پر نہ تو پانی کا حقیقتاً اطلاق ہوتا ہے اور نہ مجازاً اھـ

اقول: فیہ(۱) اولا ان ما صلح للصبغ لم یتبدل ذاتافی الحقیقہ انما تغیر وصف لہ فھو ماء حقیقۃ نعم لم یبق ماء میں کہتا ہوں اولاً اگر پانی رنگنے کی صلاحیت رکھتا ہو تو پانی ذات کے اعتبار سے حقیقتاً نہیں بدلا، صرف اس کا وصف بدلا ہے، تو وہ حقیقتاً پانی ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

۱ غنیة المستملی فصل احکام المیاہ مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۹ ۲ منیة المصلی فصل فی المیاہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۶۳

Fatawa Razvia, Volume 2.

That the derivation is based on the consideration of the dominance of parts. It is stated in Al-Hilyah, and in At-Tajnis that the derivation is based on the consideration of dominance.

(Remaining footnote from previous page) ...absolutely, unless one intends the customary reality that is understood upon absolute mention. Secondly: (1) He will distinguish the thick liquid by saying it is neither absolute water nor restricted water; thus he has stated that this is restricted water. So how can it not be water in reality? For absolute and restricted are both categories of water. Thirdly: (2) Even if the thick liquid does not remain as water at all, according to what is stated in Al-Fath, there is no hindrance in calling it water metaphorically based on its previous state. Fourthly: (3) The ruling transmitted regarding 'Zardaj' water—which we previously mentioned on page 81—that consideration is given to thinness (liquidity). I have not seen the statements of others here, and it seems to me that it has no place here because it is not used for dyeing, as mentioned there. Its staining a garment if it touches it does not necessitate making it a separate type of liquid as long as it is thin. It will not become another type, for according to us, types come into existence based on purposes. Do you not see that when dates and raisins are put in water, they change its color and taste before it becomes nabidh (date-water), yet performing ablution (wudhu) with it is permissible by consensus, as mentioned on page 116. This is despite the fact that if these two touched a white garment, they would color it. The reason is that the objective here is nabidh, not dye, so the name will not change until the objective is achieved. May Mercy be upon him. These are four submissions to Mawla Bahr al-Ulum Abd al-Ali al-Lucknowi. (T)

Page 583 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2.

कि उपशाखाओं का निर्धारण अंशों की प्रधानता पर आधारित है। अल-हिलिया में है, और अत-तजनीस में है कि उपशाखाओं का निर्धारण प्रधानता के विचार पर आधारित है।

(पिछले पृष्ठ की शेष पाद-टिप्पणी) ...पूरी तरह से, जब तक कि उस प्रथागत वास्तविकता का इरादा न हो जो पूर्ण उल्लेख पर समझी जाती है। दूसरा: (1) वह गाढ़े तरल को यह कहकर अलग करेंगे कि यह न तो शुद्ध पानी है और न ही सीमित पानी; इस प्रकार उन्होंने बताया कि यह सीमित पानी है। तो यह वास्तव में पानी कैसे नहीं होगा? क्योंकि शुद्ध और सीमित दोनों ही पानी के प्रकार हैं। तीसरा: (2) भले ही गाढ़ा तरल 'अल-फ़तह' में बताए गए अनुसार बिल्कुल भी पानी न रहे, फिर भी इसके पूर्व स्वरूप के आधार पर इसे लाक्षणिक रूप से पानी कहने में कोई बाधा नहीं है। चौथा: (3) ज़र्दज के पानी के संबंध में दिया गया आदेश—जैसा कि हमने पहले पृष्ठ 81 में उल्लेख किया था—कि विचार तरलता पर दिया जाता है। मैंने यहाँ दूसरों के कथनों को नहीं देखा है, और मुझे लगता है कि यहाँ इसका कोई स्थान नहीं है क्योंकि इसका उपयोग रंगाई के लिए नहीं किया जाता है, जैसा कि वहाँ बताया गया है। यदि यह कपड़े को लग जाए और उसे रंग दे, तो इससे इसे एक अलग प्रकार का तरल बनाना आवश्यक नहीं हो जाता जब तक कि यह तरल है। यह दूसरा प्रकार नहीं बनेगा, क्योंकि हमारे अनुसार, प्रकार उद्देश्यों के आधार पर अस्तित्व में आते हैं। क्या आप नहीं देखते कि जब खजूर और किशमिश पानी में डाले जाते हैं, तो वे नबीज़ (खजूर का पानी) बनने से पहले ही इसका रंग और स्वाद बदल देते हैं, फिर भी सर्वसम्मति से इसके साथ वज़ू करना जायज़ है, जैसा कि पृष्ठ 116 पर बताया गया है। इसके बावजूद कि यदि ये दोनों चीज़ें सफेद कपड़े को लग जाएँ तो वे उसे रंग देंगी। इसका कारण यह है कि यहाँ उद्देश्य नबीज़ है, न कि रंग, इसलिए नाम तब तक नहीं बदलेगा जब तक उद्देश्य प्राप्त न हो जाए। उन पर रहमत हो। मौला बहरुल उलूम अब्दुल अली लखनवी को ये चार प्रस्तुतियाँ दी गई हैं। (त)

पृष्ठ 583 का 711

فتویٰ رضویہ، جلد ثانی بِاَنَّ مِنَ التَّفْرِیْعِ عَلَی اعْتِبَارِ الْغَلْبَةِ بِالْاَجْزَاءِ حلیہ میں ہے، تجنیس میں ہے کہ تفریع باعتبار غلبہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مطلقا الا ان یرید الحقیقة العرفیه المفهومة عند الاطلاق - صرف مطلق پانی نہیں رہا، ہاں اگر حقیقتِ عرفیہ کا ارادہ کیا جائے جو اطلاق کے وقت سمجھی جاتی ہے تو اور بات ہے۔ وثانیاً: (۱) سیغصل عنه الثخین بأنه لیس ماء مطلقا ولا مقیداً فقد افادان هذا ماء مقید فکیف لایکون ماء حقیقة فان المطلق والمقید صنفان من الماء - ثانیاً: گاڑھا ہونے سے وہ نہ مطلق پانی رہا اور نہ مقید، تو انہوں نے بتایا کہ یہ مقید پانی ہے، اس صورت میں وہ حقیقتہً پانی کیوں نہ ہوگا کیونکہ مطلق اور مقید دونوں ہی پانی کے اقسام ہیں۔ وثالثاً: (۲) الثخین وان لم یبق ماء اصلاً علی ماافاده فی الفتح فلامانع من اطلاق الماء مجازاً باعتبار ما کان - ثالثاً: گاڑھا اگرچہ فتح کے بقول پانی نہ رہا تو باعتبار ماکان مجازاً اس پر پانی کے اطلاق میں کوئی مانع نہیں۔ و رابعاً: (۳) الحکم المنقول في ماء الزردج مأقد منا فی ۸۱ من ان العبرة بالرقة ولم ار ما وقع ههنا لغیره ویظهر لي ان لامحل له لانه لیس مما یصبغ به کما تقدم ثمه وکونه مما یلون الثوب ان اصابه لا یجعله نوعا آخر غیر الماء مادام رقیقاً اذ الانواع عندنا بالاغراض الاتری ان التمر والزبیب اذا القي في الماء یغیران لونه وطعمه قبل ان یصیرا نبیذاً ویجوز الوضوء به بالاجماع کما مر في ۱۱۶ مع انهما لو اصابا ثوباً ابیض لوناه وذلك لان المقصود ههنا النبیذ دون الصبغ فلا یزول الاسم الا بحصول المقصود علیه الرحمة - رابعاً: وہ حکم جو زردج کے پانی کی بابت منقول ہے جو ہم نے ۸۱ میں نقل کیا کہ اعتبار رقت کا ہے اور میں نے دوسروں کا بیان نہیں دیکھا اور مجھے لگتا ہے کہ اس کا یہاں محل نہیں، کیونکہ اس سے رنگا نہیں جاتا ہے جیسا کہ وہاں گزرا اور اس کے کپڑے کو رنگنے سے اگر کپڑے کو لگ جائے اس کا ایک مستقل نوع بنانا لازم نہیں آتا جب تک وہ رقیق ہے دوسری نوع نہیں بنے گا

کیونکہ ہمارے نزدیک انواع اغراض سے وجود میں آتی ہیں، مثلاً کھجور اور منقّٰی جب پانی میں ڈالے جائیں تو وہ اس کے رنگ اور مزے کو بدل دیتے ہیں، اور ابھی وہ نبیذ نہیں بنا ہوتا ہے، اور اس سے وضو بالاجماع جائز ہوتا ہے جیسا کہ ۱۱۶ میں گزرا حالانکہ اگر یہ دونوں چیزیں سفید کپڑے کو لگ جائیں تو اس کا رنگ بدل دیں، اس کی وجہ یہ ہے کہ یہاں مقصود نبیذ ہے نہ کہ رنگ، تو اس کا نام اس وقت تک نہ بدلے گا جب تک مقصود حاصل نہ ہو۔ یہ چار معروضات بحر العلوم پر ہیں۔ (ت) اربع (۱، ۲، ۳، ۴) معروضات علی المولی بحر العلوم عبد العلي الكنوي -

Fatawa Razawiyya Volume 2

(Arabic Text/Left Column): Al-Jurjani said: If vitriol or gallnuts are thrown into water, ablution with it is permissible if it does not leave a mark when written with. If it leaves a mark, it is not permissible as the water is overpowered (ah). Similarly, it is stated in Al-Hindiyyah from Al-Bahr from Al-Tajnis, from his words "if thrown" up to "not permissible." In Al-Qunyah, then Mi'raj al-Dirayah, then Al-Bahr, then Al-Durr, then Fath Allah al-Mu'in: if saffron falls into water, if dyeing is possible in it, then it is not pure water (ah). Fourth Maslak (Methodology): It is permissible as long as its color does not overpower the color of the water. It is narrated in Al-Shalbi from Yahya from Imam al-Qadi al-Isbijabi that if a pure substance mixes with water and changes its color, the consideration is for the color. If the color of the water is dominant, ablution is permissible; otherwise, it is not. Examples of this include milk, vinegar, and saffron mixing with water (ah). Similarly, it is stated in Khizanat al-Muftin and Al-Barjandi. I say: We have already cited on page 116 the consensus of our companions (may Allah be pleased with them) on the permissibility of ablution with water in which dates have been thrown, such that sweetness appears before it becomes Nabidh. It is definitely known that color changes before the taste. Therefore, consensus is established that the change of color and...

(Urdu Translation/Right Column): Al-Jurjani's statement is that when vitriol or gallnuts are put into water, wudu (ablution) from it is permissible; this is at a time when writing with it does not produce an impression. If an impression appears, it is not permissible, while the water has become overpowered. A similar statement is in Hindiyyah from Bahr from Tajnis, from their statement "when thrown" up to "not permissible." And in Qunyah, Mi'raj, Bahr, Durr, then Fath Allah al-Mu'in, it is mentioned that if saffron falls into water, if it is possible to dye with it, then it is not pure water at all. (ah) Fourth Maslak: Wudu is permissible as long as its color does not dominate the color of the water. It is narrated in Shalbi from Yahya from Imam Qazi Isbijabi that if a pure thing mixes with water and changes its color, the color will be taken into account. If the color of the water is dominant, wudu is permissible; otherwise, it is not. For example, milk, vinegar, and saffron mixing in water. (ah) Similar to this is in Khizanat al-Muftin and Barjandi. (T) I say, we have cited the consensus of our companions on page 116 that wudu is permissible with water in which dates have been put so that sweetness appears in it before it becomes nabidh. It is definitely known that the color changes before the change in taste, so consensus is established that...

(Footnotes): 1. Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Ablution is Permissible and Not Permissible, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 1/65. 2. Dur al-Mukhtar, Book of Purification, Mujtabai Delhi, 1/35. 3. Shalbi on Al-Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyyah Bulaq, Egypt, 1/20.

फ़तावा रज़विया जिल्द 2

(अरबी पाठ/बायां कॉलम): अल-जुरजानी ने कहा: यदि फिटकरी या माज़ूफल पानी में डाल दिया जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है यदि उससे लिखने पर कोई छाप न आए। यदि छाप आए, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि पानी अभिभूत (मग़लूब) हो चुका है (अह)। इसी तरह अल-हिंदिया में अल-बह्र से अल-तजनीस के हवाले से, उनके शब्दों "यदि डाला जाए" से लेकर "जायज़ नहीं है" तक उल्लेख है। अल-कुन्या, फिर मेराज अल-दिरया, फिर अल-बह्र, फिर अद-दुर, फिर फ़तह अल्लाह अल-मुईन में है: यदि केसर पानी में गिर जाए, और यदि उसमें रंगना संभव हो, तो वह शुद्ध (मुतलक़) पानी नहीं है (अह)। चौथा मसलक: यह तब तक जायज़ है जब तक कि उसका रंग पानी के रंग पर हावी न हो जाए। अल-शलबी में यह्या से इमाम क़ाज़ी अल-इस्बीजाबी के हवाले से वर्णित है कि यदि कोई पाक (शुद्ध) चीज़ पानी में मिल जाए और उसका रंग बदल दे, तो विचार रंग का होगा। यदि पानी का रंग हावी है, तो वज़ू जायज़ है; अन्यथा नहीं। इसके उदाहरणों में दूध, सिरका और केसर का पानी में मिलना शामिल है (अह)। इसी तरह खज़ाना-तुल-मुफ़्तीन और अल-बरजंदी में भी है। मैं कहता हूँ: हमने पृष्ठ 116 पर अपने साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की इस बात पर सहमति (इजमा) उद्धृत की है कि उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें खजूर डाले गए हों, जिससे नबीज़ बनने से पहले मिठास आ जाए। यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि स्वाद से पहले रंग बदल जाता है। अतः इस पर इजमा स्थापित है कि रंग का परिवर्तन और...

(उर्दू अनुवाद/दायां कॉलम): जुरजानी का कहना है कि जब पानी में फिटकरी या माज़ूफल डाला जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है; यह तब है जब उसके ज़रिए लिखने से कोई निशान न बने। यदि निशान बने तो जायज़ नहीं है, जबकि पानी मग़लूब (दब गया) हो गया हो। इसी तरह की बात हिंदिया में बह्र से तजनीस से है, उनके शब्दों "यदि डाला जाए" से लेकर "जायज़ नहीं है" तक। और कुन्या, मेराज, बह्र, दुर फिर फ़तह अल्लाह अल-मुईन में है कि अगर केसर पानी में गिर जाए, तो अगर उससे रंगना मुमकिन हो तो वह मुतलक़ पानी नहीं है। (अह) चौथा मसलक: वज़ू जायज़ है जब तक कि उसका रंग पानी के रंग पर ग़ालिब (हावी) न हो जाए। शलबी में यह्या से इमाम क़ाज़ी इस्बीजाबी से नक़्ल है कि पानी में अगर कोई पाक चीज़ मिल जाए और उसका रंग बदल दे तो एतबार रंग का होगा। अगर पानी का रंग ग़ालिब हो तो वज़ू जायज़ है वरना नहीं, मिसाल के तौर पर दूध, सिरका और केसर पानी में मिल जाए। (अह) इसी तरह ख़ज़ानिया-तुल-मुफ़्तीन और बरजंदी में है। (त) मैं कहता हूँ कि हमने 116 में अपने असहाब (साथियों) का इस पर इजमा (सहमति) नक़्ल किया है कि

उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें खजूरें डाली गई हों जिससे नबीज़ बनने से पहले-पहले उसमें मिठास आ जाए। और यह क़तई मालूम है कि रंग मज़े (स्वाद) के मुतग़ाय्यर (बदलने) होने से पहले बदल जाता है, तो इजमा इस पर क़ायम है कि...

(पाद टिप्पणियाँ): 1. फ़तह अल-क़ादिर, वज़ू के जायज़ और नाजायज़ पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/65। 2. दुर-ए-मुख्तार, पवित्रता की पुस्तक, मुजतबाई दिल्ली, 1/35। 3. अल-तबीन अल-हक़ाएक़ पर शलबी, पवित्रता की पुस्तक, अल-अमीरिया बुलाक, मिस्र, 1/20।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(بایاں کالم - عربی): قول الجرجانی اذا طرح الزاج اوالعفص فی الماء جاز الوضوء به ان کان لاینقش اذا کتب فان نقش لایجو ز والماء هو المغلوب 1 اھ ومثله فی الهندیة عن البحر عن التجنیس من قوله اذا طرح الی قوله لا یجوز وفي القنیه ثم معراج الدرایه ثم البحر ثم الدر ثم فتح الله المعین الزعفران اذا وقع فی الماء ان امکن الصبغ فیه فلیس بماء مطلق 2 اھ الرابع: یجوز مالم یغلب لونہا لون الماء فی الشلبیہ عن یحیی عن الامام القاضی السبیجابی الباء ان اختلط بہ طاہر فان غیر لونہ فالعبرۃ للون فان کان الغالب لون الماء جاز الوضوء بہ والا فلا وذلک مثل اللبن والخل والزعفران یختلط بالماء 3 اھ ومثلہ فی خزانۃ المفتین والبرجندی۔ اقول: قدمنا 116 اجماع اصحابنا رضی اللہ تعالی عنہم علی جواز الوضوء بماء القی فیہ تمیرات فحلا ولم یصر نبیذا و معلوم قطعا ان اللون اسبق تغیراً فیہ من الطعم فاستقر الاجماع علی ان تغیر اللون و

(دایاں کالم - اردو ترجمہ): جرجانی کا قول ہے جب زاج یا عفص پانی میں ڈالا جائے تو اس سے وضو جائز ہے، یہ اس وقت ہے کہ جب اس کے ذریعہ لکھنے سے نقش نہ آتا ہو اگر نقش آئے تو جائز نہیں، جبکہ پانی مغلوب ہوا ہو، اور اسی کی مثل ہندیہ میں بحر سے تجنیس سے ہے، ان کے قول اذا طرح سے لایحوز تک اور قنیہ، معراج، بحر، در پھر فتح اللہ المعین میں ہے کہ اگر زعفران پانی میں پڑ جائے تو اگر اس سے رنگنا ممکن ہو تو وہ مطلق پانی نہیں ہے اھ چوتھا مسلک: وضو جائز ہے جب تک اس کا رنگ پانی کے رنگ پر غالب نہ ہو، شلبیہ میں یحییٰ سے امام قاضی اسبیجابی سے منقول ہے کہ پانی میں اگر کوئی پاک چیز مل جائے اور اس کے رنگ کو بدل دے تو اعتبار رنگ کا ہوگا اگر پانی کا رنگ غالب ہو تو وضو جائز ہے ورنہ نہیں، مثلاً دودھ، سرکہ اور زعفران پانی میں مل جائے اھ اسی کی مثل خزانیۃ المفتین اور برجندی میں ہے۔(ت) میں کہتا

ہوں ہم نے ۱۱۶ میں اپنے اصحاب کا اس پر اجماع نقل کیا ہے کہ اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں کھجوریں ڈالی گئی ہوں تو نبیز بننے سے پہلے پہلے اس میں مٹھاس آجائے اور یہ قطعی معلوم ہے کہ رنگ مزہ کے متغیر ہونے سے پہلے بدل جاتا ہے تو اجماع اس پر قائم ہے کہ

(حواشی): 1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۵ 2 در مختار کتاب الطہارت مجتبائی دہلی ۳۵/۱ 3 شلبی علی التبیین الحقائق کتاب الطہارت الامیریہ بولاق مصر ۱/ ۲۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

A change in color or taste due to a solid substance is not harmful as long as the name (water) does not change. Therefore, it is necessary to interpret this fourth and the second case according to the third one. Furthermore, there is a consensus and agreement among all experts, without any disagreement or discord, that the removal of the name strips away the general designation (of water). Why so? Because Shari'ah has specified water for ablution (Wudu), and if the name is removed, it is no longer water. This condition is always observed without any doubt, even if its mention is omitted because it is already known, as its ruling is widespread. Thus, it is necessary to interpret the first case according to the third as well, in this manner.

Note (1): However, it is surprising that Allama Khadimi rejected the third based on the first. Where he stated under the previous quote from Al-Ghurar, "and if its qualities are changed by a solid..." that it is narrated from Al-Bahr: if it becomes capable of dyeing, it is not permissible, like date nectar (Nabidh). But it is evident that the cited narration negates this with the phrase "according to the most correct opinion" (fi al-asah), because this statement points towards the negation of what is narrated from Faqih Ahmad bin Ibrahim: that if the color of the mixing substance appears on the palm, Wudu with that water is not permissible. You know that this negation has no relation to the third case; rather, its rejection should be directed towards it. Yes, negating the Faqih's statement is correct because the appearance of the color of leaves on the palm while taking water from a pool does not remove the name of water from it. The ruling for saffron is contrary to this if it makes the water capable of dyeing. Furthermore, it is surprising that the Faqih's (continued on next page).

फतावा रज़विय्या, खंड 2

किसी ठोस पदार्थ के कारण रंग और स्वाद में बदलाव तब तक हानिकारक नहीं है जब तक कि नाम (पानी) न बदल जाए। इसलिए, इस चौथे और दूसरे मामले को तीसरे के अनुसार समझना आवश्यक है। इसके अलावा, सभी विशेषज्ञों के बीच बिना किसी असहमति या विवाद के आम सहमति है कि नाम का हट जाना सामान्य पदनाम (पानी का) को समाप्त कर देता है। ऐसा क्यों? क्योंकि शरीयत ने वज़ू के लिए पानी को निर्धारित किया है, और यदि नाम हट जाता है, तो वह पानी नहीं रहता। यह शर्त हमेशा बिना किसी संदेह के मानी जाती है, भले ही इसका उल्लेख न किया गया हो क्योंकि यह पहले से ही ज्ञात है, क्योंकि इसका आदेश व्यापक है। इस प्रकार, पहले मामले को भी तीसरे के अनुसार समझना आवश्यक है, इस तरह से।

नोट (1): लेकिन अल्लामा खादिमी पर आश्चर्य है कि उन्होंने पहले के आधार पर तीसरे को खारिज कर दिया है। जहाँ उन्होंने अल-गुरर के पिछले कथन "और यदि इसके गुण एक ठोस द्वारा बदल दिए जाते हैं..." के तहत कहा कि अल-बहर से उद्धृत है: यदि वह रंगने के योग्य हो जाता है, तो यह जायज़ नहीं है, जैसे खजूर के रस (नबीज़) के साथ। लेकिन यह स्पष्ट है कि उद्धृत वर्णन "सबसे सही राय के अनुसार" (फी अल-असह) वाक्यांश के साथ इसका खंडन करता है, क्योंकि यह कथन फकीह अहमद बिन इब्राहिम से उद्धृत बात के खंडन की ओर इशारा करता है: कि यदि मिलाने वाली चीज़ का रंग हथेली पर दिखाई दे, तो उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं है। आप जानते हैं कि इस खंडन का तीसरे मामले से कोई संबंध नहीं है; बल्कि, इसका खंडन उसी की ओर होना चाहिए। हाँ, फकीह के कथन का खंडन सही है क्योंकि पूल से पानी लेते समय हथेली पर पत्तियों के रंग का दिखना उससे पानी का नाम नहीं हटाता है। केसर का नियम इसके विपरीत है यदि वह पानी को रंगने योग्य बना देता है। इसके अलावा, यह आश्चर्य की बात है कि फकीह का (अगले पृष्ठ पर जारी)।

पृष्ठ 585/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

رنگ اور مزے کا کسی جامد سے بدلنا اس وقت تک مضر نہیں جب تک کہ نام نہ بدل جائے تو اس چوتھے اور دوسرے کا تیسرے پر حمل کرنا لازم ہے۔ پھر تمام علماء کا اتفاق ہے کہ جب نام زائل ہو جائے تو اطلاق باقی نہیں رہتا کیونکہ شریعت نے وضو کیلئے پانی کو متعین کر رکھا ہے اور جب نام زائل ہو گیا تو پانی نہ رہا یہ شرط اگرچہ مذکور نہ ہو معتبر رہے گی، تو پہلے کو بھی تیسرے پر حمل کرنا لازم ہے، اس طرح

(۱) لیکن علامہ خادمی پر تعجب ہے کہ انہوں نے پہلے سے تیسرے کا رد کیا ہے۔ جہاں انہوں نے غرر کے گزشتہ قول "وان غیر اوصافه جامد الخ" کے تحت فرمایا کہ بحر سے منقول ہے اگر وہ رنگنے کے قابل ہو تو جائز نہیں، جیسے نبیذ تمر سے، لیکن ظاہر میں روایت مشار پر اس کی نفی ہے اس کے قول فی الاصح سے، کیونکہ یہ قول اشارہ ہے اس کی نفی پر جو فقیہ احمد بن ابراہیم سے منقول ہے کہ اگر ملنے والی چیز کا رنگ ہتھیلی میں ظاہر ہو تو اس پانی سے وضو جائز نہیں اھ آپ جانتے ہیں کہ تیسرے کی نفی سے اس کا کوئی تعلق نہیں بلکہ اس کی طرف اس کا رد واجب ہے۔ ہاں فقیہ کے قول کی نفی درست ہے، کیونکہ حوض سے پانی لینے میں ہتھیلی پر پتوں کے رنگ کے ظہور سے پانی کا نام زائل نہیں ہوتا۔ زعفران کا حکم اس کے برخلاف ہے جبکہ وہ پانی کو رنگنے کے قابل کر دے۔ پھر تعجب ہے کہ فقیہ کا (باقی بر صفحہ آئندہ)

الاصلی متن: الطعم بجامد لا یضر مالم یزل الاسم فیجب حمل هذا الرابع وکذا الثاني علی الثالث ثم قد انعقد الاجماع والاطباق من جمیع الحذاق بغیر خلف وشقاق ان زوال الاسم یسلب الاطلاق کیف وانما عین الشرع للوضوء الماء وهذا اذا زال الاسم لیس بماء فهذا الشرط ملحوظ ابدا بلا امتراء وانکان یطوی ذکره للعلم به اذ شاع امره فیجب حمل ع۱ الاول ایضاً

ع١: (١) ولكن العجب من العلامة الخادمى اذرد الثالث بالاول حيث قال عند قول الغرر المار يجوز وان غير اوصافه جامد كزعفران في الاصح مانصه قيل عن البحران امكن الصبغ به لم يجز كنبيد التمر لكن الظاهر انه على الروايه المشار الى نفيها بقوله في الاصح اذ هذا القول اشارة الى نفى ماعن الفقيه احمد بن ابرهيم انه لو ظهر لون المخالط في الكف لايجوز اهـ فقد علمت انه لا مساس له بنفى الثالث بل يجب رده الى هذا نعم نفى قول الفقيه صحيح وجيه لان ظهور لون الاوراق في الكف في ماء الحوض لايزيل عنه اسم الماء بخلاف الزعفران اذا جعله صالحا للصبغ ثم (٢) من العجب كلام الفقيه انما كان في الاوراق

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

Upon the third [view], the discord ceases and agreement is achieved* | This issue will become unanimous. And Allah the Almighty knows best. (T) And Allah the Almighty knows best. (123) I say: Similarly, the packets of dye that are now in use; in our investigation, the fatwa (ruling) is upon their purity when they are mixed in water so slightly that it does not become capable of dyeing, even if the color changes. (124) Similarly, ink, when its mixing does not make the water fit for writing. I say: meaning, it does not form the imprint of a letter that can be read after drying, even if it is faint. Second category: Liquid things. (125 & 126) In water where saffron solution or safflower dye water is mixed so little that the color of these waters does not dominate the plain water, performing ablution (wudhu) with it is permissible by consensus.

[Arabic Box:] Imam Malik al-Ulama said in al-Bada'i': Plain water, if some pure liquid substance like milk, vinegar, raisin soak, or the like is mixed with it, it is observed whether its color differs from the color of the water, such as milk... [Urdu Box:] Malik al-Ulama said in Bada'i': "In plain water, when any pure liquid thing is mixed, such as milk, vinegar, raisin soak, etc., then it will be seen whether its color is different from the color of the water or not, for example, milk..."

(Continued from the footnote of the previous page) [Arabic Footnote:] ...and the learned narrator replaced it with "mukhaliṭ" (mixant), so it included saffron, and Allah is the helper. Then, the greatest wonder is that the learned one himself added the word "wa ismuhu ayḍan" (and its name also) after the statement of Ghurar "if its thinness remains". For he knew that thinness is of no use once the name is lost. How then can the third view be based on the rejected narration? 12 from him, may he be forgiven (M). [Urdu Footnote:] The discussion was about leaves, and the learned narrator changed it to "mukhaliṭ" (mixant), thus including saffron. Allah is the one whose help is sought. Then it is very surprising that the learned one himself added a word "wa ismuhu ayḍan" (and its name also) after the statement of Ghurar "and if its thinness remains". Even though he knew that after the loss of the name "water", thinness has no benefit, then how can the third view be based on the negated narration? 12 from him, may he be forgiven (T).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

तीसरे (मत) पर विवाद समाप्त हो जाएगा और सहमति प्राप्त होगी* | यह मसला सर्वसम्मत हो जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (123) मैं कहता हूँ: इसी तरह रंग की पुड़िया जो अब चलन में हैं; हमारे शोध के अनुसार उनकी पवित्रता पर फतवा तब है जब वे पानी में इतनी कम मिलें कि वह रंगने के योग्य न हो जाए, चाहे रंग बदल जाए। (124) इसी तरह स्याही, जब उसके मिलने से पानी लिखने के लायक न रहे। मैं कहता हूँ: अर्थात, उससे अक्षर का निशान न बने जो सूखने के बाद पढ़ने में आए, चाहे वह हल्का ही क्यों न हो। दूसरी श्रेणी: बहने वाली चीज़ें। (125 और 126) जिस पानी में केसर का घोल वाला पानी या शहाब (कुसुम का रंग) इतना कम पड़े कि उन पानियों का रंग इस सादे पानी पर हावी न हो, उससे वज़ू करना सर्वसम्मति से जायज़ है।

[अरबी बॉक्स:] इमाम मलिकुल उलेमा ने 'बदाए' में फ़रमाया: मुतलक पानी (सादा पानी), जब उसमें कोई पाक तरल पदार्थ जैसे दूध, सिरका, मुनक्का का अर्क आदि मिल जाए, तो देखा जाएगा कि क्या उसका रंग पानी के रंग से अलग है, जैसे दूध... [उर्दू बॉक्स:] मलिकुल उलेमा ने 'बदाए' में फ़रमाया: "मुतलक पानी में जब कोई पाक तरल चीज़ मिल जाए जैसे दूध, सिरका, मुनक्का का अर्क आदि, तो यह देखा जाएगा कि क्या उसका रंग पानी के रंग से अलग है या नहीं, उदाहरण के लिए दूध,"

(पिछले पृष्ठ के हाशिए का शेष) [अरबी हाशिए:] ...और विद्वान वर्णनकर्ता ने इसे 'मुख़ालित' (मिश्रण) से बदल दिया, जिससे केसर भी इसमें शामिल हो गया, और अल्लाह ही मदद करने वाला है। फिर सबसे आश्चर्य की बात यह है कि स्वयं विद्वान ने 'ग़ुरर' के कथन "यदि उसका पतलापन शेष रहे" के बाद "व इस्मुहु अयज़न" (और उसका नाम भी) शब्द जोड़ा है। क्योंकि वे जानते थे कि नाम (पानी) के मिट जाने के बाद पतलेपन का कोई लाभ नहीं है, तो तीसरे मत को अस्वीकृत रिवायत पर आधारित कैसे किया जा सकता है? 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)। [उर्दू हाशिए:] बात पत्तियों के बारे में थी और विद्वान वर्णनकर्ता ने उसे 'मुख़ालित' से बदल दिया है, तो उन्होंने केसर को (भी) शामिल कर लिया है, अल्लाह ही सहायक है। फिर बड़ा आश्चर्य है कि स्वयं विद्वान ने 'ग़ुरर' के कथन "और यदि उसका पतलापन शेष रहे" के बाद एक शब्द "व इस्मुहु अयज़न" का इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया है। हालांकि वे जानते थे कि पानी के नाम के मिट जाने के बाद पतलेपन का कोई फायदा नहीं है, तो तीसरे मत को नफ़ी (नकारी गई) रिवायत पर आधारित किस तरह किया जाएगा? 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)।

علی الثالث فیزول الشقاق ویحصل الوفاق | یہ مسئلہ متفقہ ہوجائے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ (۱۲۳) اقول: یونہی رنگت کی پڑیاں کہ اب چلی ہیں اور ہماری تحقیق میں ان کی طہارت پر فتوی ہے جب پانی میں اتنی خفیف ملیں کہ رنگنے کے قابل نہ ہو جائے اگرچہ رنگت بدل جائے۔ (۱۲۴) یونہی روشنائی جبکہ اس کے ملنے سے پانی لکھنے کے لائق نہ ہوجائے اقول یعنی اس سے حرف کا نقش نہ بنے جو بعد خشکی پڑھنے میں آئے اگرچہ پھیکا ہو۔ صنف دوم بہتی چیزیں۔ (۱۲۵ و ۱۲۶) جس پانی میں زعفران حل کیا ہوا پانی یا شہاب اتنا کم پڑے کہ ان پانیوں کی رنگت اس سادہ پانی پر غالب نہ آئے اس سے وضو بالاتفاق جائز ہے۔

[عربی باکس]: قال الامام ملك العلماء في البدائع الماء المطلق اذا خالطه شيء من المائعات الطاهرة كاللبن والخل ونقيع الزبيب ونحو ذلك ينظر ان كان يخالف لونه لون الماء كاللبن [اردو باکس]: ملک العلماء نے بدائع میں فرمایا "مطلق پانی میں جب کوئی سیال پاک چیز مل جائے جیسے دودھ، سرکہ، منقٰی کا عرق وغیرہ تو یہ دیکھا جائیگا کہ اس کا رنگ پانی کے رنگ سے مختلف ہے یا نہیں، مثلاً دودھ،

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [عربی حاشیہ]: وبدله الفاضل الناقل بالمخالط فعم الزعفران والله المستعان ثم(۱) العجب كل العجب ان الفاضل نفسه زاد بعد قول الغرر ان بقی رقته لفظة واسمه ایضاً اهـ فقد كان يعلم ان الرقة لا تنفع اذا زال الاسم فكيف يجعل القول الثالث مبنياً على الرواية المنفيه ۱۲ منه غفرله (م) [اردو حاشیہ]: کلام تو پتیوں سے متعلق تھا اور فاضل ناقل نے اسے مخالط سے بدل دیا ہے تو اس نے زعفران کو شامل کرلیا ہے واللہ المستعان، پھر بڑا تعجب ہے کہ خود فاضل نے غرر کے قول "وان بقی رقتہ" کے بعد ایک لفظ "واسمہ ایضاً اھـ" کا اضافہ کیا ہے۔ حالانکہ وہ جانتے تھے کہ

پانی کے نام کے زوال کے بعد رقت کا کوئی فائدہ نہیں تو قول ثالث کو روایت منفیہ پر مبنی کس طرح کیا جائے گا ۱۲منہ غفر لہ (ت)

صفحہ 586 منجملہ 711

Fatawa Razawiyya, Volume II

Water mixed with safflower (usfur) or saffron: In this case, the dominance of color in the water will be considered (1). It is mentioned in 'Al-Hilyah' that Fakhr al-Din al-Zayla'i narrated from al-Isbijabi, and Najm al-Din al-Zahidi narrated from 'Zad al-Fuqaha' that they said: If the additive substances have a color different from that of water, such as milk, vinegar, and saffron water, then if the color of the water remains dominant, ablution (wudu) with it is permissible. If the color of the water is overpowered, ablution is not permissible (2). (T)

I say: There is no doubt that this water will differ from absolute (pure) water in all three qualities. Thus, according to Imam al-Zayla'i's rule, the change of two qualities would be considered. There was a possibility that this rule might imply a ruling contrary to the mentioned one in a case where the absolute water is dominated by taste and smell rather than color. However, this is not reasonable because color is the strongest and most immediate among the qualities of water. If any of the qualities of water were to change, the color would change first. If the color has not changed, it means no quality has changed; thus, no disagreement remains regarding its permissibility. (T)

(127) Similarly, if a powder is dissolved in water and its color does not become dominant, ablution is permissible.

I say: This is because if that substance is fragrant, it is like saffron and safflower water; if not, then two qualities are considered.

Note: 'Ah' is in the nominative case (raf') because it is conjoined with 'Fakhr al-Din'. (T)

1. Bada'i' al-Sana'i', Section on Absolute Water, Saeed Company Karachi, 1/15
2. Al-Hilyah

फतावा रज़विया, खंड द्वितीय

कुसुम (उस्फुर) या केसर का पानी: ऐसी स्थिति में पानी में रंग की प्रबलता का विचार किया जाएगा (१)। 'अल-हिलिया' में फख्र अल-दीन अल-ज़ैलाई ने इस्बिजाबी से और नज्म अल-दीन अल-ज़ाहिदी ने 'ज़ाद अल-फुक़हा' से उद्धृत किया है कि इन महानुभावों ने कहा: यदि मिलाने वाली वस्तुओं का रंग पानी के रंग से भिन्न हो, जैसे दूध, सिरका और केसर का पानी, और ऐसी स्थिति में पानी का रंग प्रबल रहे तो वुज़ू जायज़ है, और यदि पानी का रंग दब जाए (मगलूब हो जाए) तो वुज़ू जायज़ नहीं है। (२) (त)

मैं कहता हूँ: इसमें कोई संदेह नहीं कि यह पानी तीनों गुणों में मुतलक़ (शुद्ध) पानी से भिन्न होगा। अतः इमाम ज़ैलाई के नियम के अनुसार इसमें दो गुणों के परिवर्तन का विचार होगा। इसमें यह संभावना थी कि इस नियम के अनुसार वर्णित हुक्म के विपरीत हुक्म उस स्थिति में होता जब मुतलक़ पानी पर स्वाद और गंध प्रबल हो जाते न कि रंग। लेकिन यह बात तर्कसंगत नहीं है क्योंकि रंग पानी के गुणों में सबसे सशक्त और प्रभावशाली है। यदि पानी के गुणों में से कोई गुण बदलता है तो सबसे पहले रंग ही बदलता है, और यदि रंग नहीं बदला तो इसका अर्थ यह है कि कोई गुण नहीं बदला, तो अनुमति की स्थिति में कोई मतभेद नहीं रहा। (त)

(१२७) इसी प्रकार, पानी में घुला हुआ चूर्ण यदि पानी में मिलने से उसकी रंगत प्रबल न हो तो वुज़ू जायज़ है।

मैं कहता हूँ: इसलिए कि यदि वह चीज़ सुगंधित हो तो जैसे केसर और कुसुम का पानी है, और यदि न हो तो दो गुण।

टिप्पणी: 'अह' रफ़अ (पेश) के साथ है क्योंकि इसका संबंध फख्र अल-दीन से है। (त)

1. बदाए अल-सनाए, मुतलक़ पानी का अध्याय, सईद कंपनी कराची, १/१५
2. हिलिया

पृष्ठ ७११ में से ५८७

عُصفر یا زعفران کا پانی، اگر ایسا ہے تو پانی میں رنگت کے غلبہ کا اعتبار ہوگا ۱ــہ اھ اور حلیہ میں ہے فخر الدین زیلعی نے اسبیجابی سے اور نجم الدین عہ الزاہدی نے زاد الفقہاء سے نقل کیا، ان حضرات نے فرمایا کہ اگر ملنے والی اشیاء کا رنگ پانی کے رنگ سے مختلف ہو جیسے دودھ، سرکہ اور زعفران کا پانی، اور ایسی صورت میں غلبہ پانی کے رنگ کو ہو تو وضو جائز ہے اور اگر پانی کا رنگ مغلوب ہو تو وضو جائز نہیں۔ ۲ــہ (ت)

اقول: میں کہتا ہوں اس میں شک نہیں کہ یہ پانی مطلق پانی سے تینوں اوصاف میں مختلف ہوگا تو امام زیلعی کے ضابطہ کے مطابق اس میں دو وصفوں کے تغیر کا اعتبار ہوگا، اس میں یہ احتمال تھا کہ اس ضابطہ کی رُو سے مذکور حکم کے بر خلاف حکم اس صورت میں ہوتا جبکہ مطلق پانی پر مزہ اور بُو کا غلبہ ہوا ہو نہ کہ رنگ کا۔ مگر یہ بات معقول نہیں ہے کیونکہ رنگ پانی کے اوصاف میں قوی تر اور زود اثر ہے تو اگر پانی کے اوصاف میں سے کوئی وصف بدلتا تو سب سے پہلے تو رنگ ہی بدلتا، اور رنگ نہیں بدلا تو اس کے معنی یہ ہیں کہ کوئی وصف نہیں بدلا، تو جواز کی صورت میں کوئی اختلاف نہ رہا۔ (ت)

(۱۲۷) یوں ہی پڑیا حل کیا ہوا پانی پانی میں ملنے سے اس کی رنگت غالب نہ آئے تو وضو روا ہے۔

اقول: میں کہتا ہوں اس لئے اگر وہ چیز خوشبودار ہو تو جیسے زعفران اور عُصفر کا پانی ہے یا نہ ہو تو دو وصف۔

عہ بالرفع: رفع کے ساتھ کیونکہ اس کا فخر الدین پر عطف ہے (ت)

۱ـہ بدائع الصنائع مطلب الماء المطلق سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵ ۲ـہ حلیہ

Fatawa Razawiyya, Volume 2

...and the taste will not change as long as the color does not change, so no disagreement occurred. (T)

(128) Watermelon water, which is referred to as watermelon juice, if mixed in sweet water to such an extent that its taste does not dominate over the water, then by consensus, ablution (wudu) can be performed with it. It is stated in Tabayyin al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, Hilyah, Ghunyah, Durar, and Bahr, etc.: "In watermelon water, dominance is considered by taste." (Quote) I say: It appears to me that it should be restricted to fresh (sweet) water, as I have done. This is because the saltiness of brackish water is sometimes so high that even if watermelon water more than half its volume is added to it, its taste does not change; rather, the sweetness of the watermelon becomes dominated. Therefore, considering taste here is a restriction that leads to an expansion entirely contrary to Sharia laws. So, take note. (T)

I say: Although it possesses the three qualities (as will follow), its taste is stronger. So, if the taste does not change, no quality will change, thus there will be no disagreement regarding its permissibility. And Allah Almighty knows best. (T)

(129) Similarly, if the juice of white grapes is mixed with sweet water, the taste is taken into account. If its taste is not dominant, it is permissible for ablution. It is stated in Badai: "If it does not differ from water in color but differs in taste, such as white grape juice and white grape vinegar, then dominance is considered by taste." (Quote) I say: I added the restriction of 'sweet' because you have learned the reason and are also aware of the attainment of consensus. (T)

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi, 1/70
2. Badai' al-Sanai', Topic: Restricted Water, H.M. Sa'id Company Karachi, 1/15

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

...और स्वाद तब तक नहीं बदलेगा जब तक रंग नहीं बदलता, इसलिए कोई मतभेद नहीं हुआ। (त)

(128) तरबूज का पानी जिसे तरबूज का शर्बत कहते हैं, यदि मीठे पानी में इतना मिलाया जाए कि उसका स्वाद पानी पर हावी न हो, तो सर्वसम्मति से उससे वज़ू हो सकता है। तबीन अल-हक़ा'इक़, फ़तह अल-क़दीर, हिल्या, ग़ुनिया, दुरर और बहर आदि में है: "तरबूज के पानी में स्वाद के आधार पर प्रधानता मानी जाती है।" (उद्धरण) मैं कहता हूँ: मुझे लगता है कि इसे मीठे पानी तक सीमित करना आवश्यक है जैसा कि मैंने किया है। क्योंकि खारे पानी का खारापन कभी-कभी इतना अधिक होता है कि यदि उसमें आधे से अधिक तरबूज का पानी मिला दिया जाए, तो भी उसका स्वाद नहीं बदलता, बल्कि तरबूज की मिठास दब जाती है। इसलिए, यहाँ स्वाद को आधार मानना एक ऐसी संकीर्णता है जो शरीयत के नियमों के बिल्कुल विपरीत विस्तार की ओर ले जाती है। अतः सावधान रहें। (त)

मैं कहता हूँ: हालाँकि इसमें तीनों गुण होंगे (जैसा कि आगे आएगा), लेकिन इसका स्वाद अधिक प्रबल है। तो जब स्वाद नहीं बदला, तो कोई गुण नहीं बदला, इसलिए इसके जायज़ होने में कोई विवाद नहीं होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

(129) इसी तरह, यदि सफेद अंगूर का रस मीठे पानी में मिलाया जाए, तो स्वाद का विचार किया जाएगा। यदि उसका स्वाद हावी न हो, तो वह वज़ू के योग्य है। बदा'ए में है: "यदि वह रंग में पानी से भिन्न न हो लेकिन स्वाद में भिन्न हो, जैसे सफेद अंगूर का रस और सफेद अंगूर का सिरका, तो स्वाद की प्रधानता मानी जाएगी।" (उद्धरण) मैं कहता हूँ: मैंने मीठे की शर्त इसलिए लगाई क्योंकि आप जान चुके हैं और सर्वसम्मति का प्राप्त होना भी आपको ज्ञात है। (त)

---

1. अल-बहर अल-रा'इक़, किताब अत-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/70
2. बदा'ए अस-सना'ए, विषय: अल-मा अल-मुक़य्यद, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/15

والی ہو گی، اور مزہ اس وقت نہ بدلے گا جب تک رنگ نہ بدلے تو اختلاف نہ ہوا۔ (ت)

(۱۲۸) آب تربوز جسے تربوز کا شربت کہتے ہیں جس میٹھے پانی میں اتنا ملے کہ اس کا مزہ پانی پر غالب نہ ہو جائے اس سے بالاتفاق وضو ہو سکتا ہے۔ تبیین الحقائق وفتح القدیر و حلیہ و غنیہ و درر و بحر وغیرہما میں ہے: ماء البطیخ تعتبر الغلبة فیه بالطعم ۱ اه اقول ویظهر لي تقییده بالماء العذب کما فعلت فان الماء الملح ربما تبلغ ملوحته بحیث لو خلط به ماء الحبحب اکثر من نصفه لم یغلب علی طعمه بل کانت حلاوة هذا هي المغلوبة فاعتبار الطعم ههنا تضییق یؤدي الی توسیع خارج عن القوانین بمرة فلیتنبه۔ (ت) آپِ خربوزہ میں مزہ کے غلبہ کا اعتبار ہوگا اھ اقول اور اس کو میٹھے پانی سے مقید کرنا ضروری ہے جیسا کہ میں نے کہا ہے کیونکہ کھارے پانی کی نمکینی بعض اوقات اس درجہ زیادہ ہوتی ہے کہ اگر اس میں تربوز کا پانی آدھے سے بھی زیادہ ملا دیا جائے تو اس کا مزہ نہیں بدلتا ہے، بلکہ اس کی مٹھاس مغلوب ہو جاتی ہے، تو یہاں مزہ کا اعتبار کرنا بڑی تنگی ہے، اس سے معاملہ بہت پھیل جائے گا جو شرعی قوانین کے بالکل مخالف ہے فلیتنبہ۔ (ت)

اقول: وهو وانکان ذا الاوصاف الثلثة کما سیاتي لکن طعمه اقوی فاذا لم یتغیر لم یتغیر شیئ فلا یحصل الخلاف في جانب الجواز واللہ تعالی اعلم۔ میں کہتا ہوں وہ پانی اگر تین اوصاف والا ہو (جیسا کہ آئے گا) لیکن اس کا مزہ قوی تر ہو، تو جب مزہ نہ بدلا تو کوئی وصف نہیں بدلے گا تو جواز کی جانب میں کوئی خلاف نہ ہوگا، واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

(۱۲۹) یوں ہی سپید انگور کا شیرہ اگر شیریں پانی میں ملے مزہ کا اعتبار ہے اگر اس کا مزہ غالب نہ ہوا قابلِ وضو ہے، بدائع میں ہے: انکان لا یخالف الماء في اللون ویخالفه في الطعم کعصیر العنب الابیض وخله تعتبر الغلبة في الطعم ۲ اه اقول وقیدته بالعذب لما علمت وحصول الوفاق لما سمعت۔ اگر وہ پانی کے رنگ میں مخالف نہ ہو مگر مزہ میں مخالف ہو جیسے شیرہ انگور سفید اور سفید انگور کا سرکہ تو مزہ میں غلبہ کا اعتبار ہوگا اھ میں کہتا ہوں میں نے میٹھے کی قید اس لئے لگائی کہ آپ جان چکے ہیں اور اتفاق کا حاصل ہو جانا بھی آپ کو معلوم ہے۔ (ت)

۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۰ ۲۔ بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 2

(130) White grape vinegar: if its taste and smell do not predominate over water, wudhu (ablution) with it is permissible by consensus.

Arabic

I say: Because it has two qualities and its smell is stronger. So, if the smell of the water changes but not its taste, it would not be permissible according to the general rule, contrary to the reported ruling just mentioned from 'Al-Bada'i'. Thus, consensus on permissibility is not achieved except when no quality changes.

Urdu

I say: This is because it has two qualities, and its smell is stronger. So, if the smell of the water changes but the taste does not change, then according to the rule, wudhu will not be permissible. However, the ruling just passed with reference to 'Bada'i' is contrary to this. Therefore, consensus on the side of permissibility was not achieved; this will only happen in a case where no quality changes. (T)

(131) And vinegars that also have color: if they are mixed in water such that none of their qualities predominate over the water, or only the smell predominates, wudhu with it is permissible by consensus.

Arabic

I say: This is because they possess three qualities, and it is known that the smell of vinegar is the strongest thing. So, it does not happen that only the taste of the water changes, or its color only, or both together without the smell. Rather, either (1) nothing changes, or (2) all change, or (3) the smell alone, or (4) along with color, or (5) along with taste. The criterion in the rule for predominance is with two qualities. And what is reported is predominance by color alone, as passed from 'Al-Hilya' from Al-Zaylai from Al-Isbijabi and from Al-Najm al-Zahidi from 'Zad al-Fuqaha'. It was also preceded from Imam Malik

Urdu

I say the reason for this is that they are of three qualities, and it is known that the smell of vinegar is the strongest thing. So, it cannot be that only the taste of the water changes or the color changes or both change while the smell does not change. Rather, either nothing will change, or everything will change, or only the smell will change, or it will change along with color or along with taste. In the rule, the criterion for predominance is with two qualities, and what is reported is the predominance of color alone, as has passed from Hilya from Zaylai from Isbijabi and from Najm Zahidi from Zad al-Fuqaha. The same has been reported from Imam

Arabic	Urdu
al-Ulama. Thus, the report and the rule agree in the first and third scenarios on permissibility, in the second and fourth on prohibition, and in the fifth scenario, the rule uniquely signifies prohibition.	Malik al-Ulama. Therefore, there is agreement between the report and the rule. In the first and third scenarios, there is agreement on permissibility; in the second and fourth, on non-permissibility; and in the fifth scenario, according to the rule, it is non-permissible. (T)

(132) I say: If there is a colored vinegar such that its taste is stronger than all its qualities, so that a small amount of it first changes the taste of the water, and if more is added, a change occurs in the smell or color, then in this case...

फ़तावा रज़विया जिल्द दोम

(१३०) सफ़ेद अंगूर का सिरका: यदि उसका स्वाद और गंध पानी पर हावी न हो, तो उससे वज़ू करना सर्वसम्मति से जायज़ है।

अरबी

मैं कहता हूँ: क्योंकि इसमें दो गुण हैं और इसकी गंध अधिक तीव्र है। इसलिए, यदि पानी की गंध बदल जाए लेकिन उसका स्वाद न बदले, तो नियम के अनुसार वज़ू जायज़ नहीं होगा, जो कि 'अल-बदाए' से अभी उद्धृत हुक्म के विपरीत है। अत; जवाज़ (अनुमति) के पक्ष में सर्वसम्मति प्राप्त नहीं हुई, सिवाय उस स्थिति के जब कोई गुण न बदले।

उर्दू

मैं कहता हूँ क्योंकि इसमें दो गुण हैं, और इसकी गंध बहुत तेज़ है। तो अगर पानी की गंध बदल गई और स्वाद नहीं बदला, तो नियम के अनुसार वज़ू जायज़ नहीं होगा। लेकिन 'बदाए' के हवाले से जो हुक्म अभी गुज़रा है, यह उसके ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा जवाज़ के पक्ष में इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति) हासिल नहीं हुआ; यह सिर्फ़ उसी सूरत में होगा जब कोई गुण न बदले। (त)

(१३१) और वे सिरके जिनमें रंग भी होता है: यदि वे पानी में इतने मिलें कि उनका कोई भी गुण पानी पर हावी न हो, या केवल गंध हावी हो, तो उससे वज़ू करना सर्वसम्मति से जायज़ है।

अरबी

मैं कहता हूँ: ऐसा इसलिए है क्योंकि वे तीन गुण वाले होते हैं, और यह ज्ञात है कि सिरके की गंध सबसे प्रबल वस्तु है। अतः ऐसा नहीं होता कि केवल पानी का स्वाद बदले, या केवल उसका रंग, या गंध के बिना दोनों बदलें। बल्कि, या तो (१) कुछ नहीं बदलेगा, या (२) सब बदल जाएगा, या (३) केवल गंध बदलेगी, या (४) रंग के साथ, या (५) स्वाद के साथ। नियम में प्रधानता (ग़लबह) का पैमाना दो गुणों के साथ है। और जो कुछ रिवायतों में है वह केवल रंग की प्रधानता है, जैसा कि 'हिलिया' से ज़ैलई के माध्यम से इस्बीजाबी और

उर्दू

मैं कहता हूँ इसकी वजह यह है कि वे तीन सिफ़त (गुण) वाले हैं और यह मालूम है कि सिरके की बू सबसे तेज़ चीज़ है। तो यह नहीं हो सकता कि सिर्फ़ पानी का मज़ा बदले या रंग बदले या दोनों बदल जाएँ और बू न बदले। बल्कि या तो कुछ नहीं बदलेगा, या सब कुछ बदल जाएगा, या सिर्फ़ बू बदलेगी, या रंग के साथ या मज़ा के साथ। और ज़ाब्ते (नियम) में एतबार ग़लबे को है दो सिफ़तों के साथ। और जो मंक़ूल है वह सिर्फ़ रंग का ग़ल्बा है, जैसा कि हिलिया से ज़ैलई से इस्बीजाबी से और नज्म ज़ाहिदी से ज़ाद

अरबी	उर्दू
नज्म अल-ज़ाहिदी से 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' के हवाले से गुज़रा। और यही इमाम मलिक अल-उलमा से भी मंक़ूल (उद्धृत) है। इसलिए, नक़्ल और नियम पहली और तीसरी सूरत में जवाज़ (अनुमति) पर सहमत हैं, और दूसरी तथा चौथी में मनाही पर। पाँचवीं सूरत में, नियम के अनुसार मनाही है।	अल-फ़ुक़हा से गुज़रा। और इमाम मलिक अल-उलमा से भी यही मंक़ूल हुआ है। इसलिए नक़्ल और ज़ाब्ते में इत्तेफ़ाक़ हो गया। पहली और तीसरी सूरत में जवाज़ पर इत्तेफ़ाक़ है और दूसरी और चौथी में अदम-ए-जवाज़ पर, और पाँचवीं सूरत में ज़ाब्ते की रू से अदम-ए-जवाज़ है। (त)

(१३२) अक़ूल: यदि कोई रंगीन सिरका ऐसा हो कि उसका स्वाद उसके सभी गुणों से अधिक प्रबल हो, कि उसकी थोड़ी सी मात्रा पहले पानी के स्वाद को बदल दे, और यदि अधिक मिलाया जाए तो गंध या रंग में बदलाव आए, तो इस स्थिति में...

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

(۱۳۰) سپید انگور کا سرکہ کہ اگر اس کا مزہ اور بو پانی پر کچھ غالب نہ آئے اس سے وضو بالاتفاق جائز ہے،

Arabic

اقول لانه ذو وصفين وريحه اقوى فان تغير ريح الماء دون طعمه لم يجز على قضيه الضابطة خلافا للحكم المنقول المار أنفا عن البدائع فلم يحصل الوفاق فی جانب الجواز الا اذالم يتغير شيئ۔

Urdu

میں کہتا ہوں اس لئے کہ اس میں دو وصف ہیں، اور اس کی بو قوی تر ہے تو اگر پانی کی بُو بدل گئی مزہ نہ بدلا تو ضابطہ کی رُو سے وضو جائز نہ ہوگا لیکن بدائع کے حوالے سے جو حکم ابھی گزرا ہے یہ اُس کے برخلاف ہے تو جواز کی جانب میں اتفاق حاصل نہ ہوا، یہ صرف اس صورت میں ہوگا جبکہ کوئی وصف نہ بدلے۔(ت)

(۱۳۱) اور سرکے کہ رنگت بھی رکھتے ہیں اگر پانی میں اتنے ملیں کہ اُن کا کوئی وصف پانی پر غالب نہ آئے یا صرف بُو غالب آئے اُس سے بالاتفاق وضو جائز ہے۔

Arabic

اقول: وذلك لانهاذوات الثلاث ومعلوم ان ريح الخل اقوى شيئ فلا يقع ان يتغير طعم الماء وحده اولونه فقط اوهما معا لاريحه بل امالا يتغير (۱)شيئ او(۲)يتغير الكل او(۳)الريح وحده او (۴)مع اللون او (۵)

Urdu

میں کہتا ہوں اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ تین وصف والے ہیں اور یہ معلوم ہے کہ سرکہ کی بُو قوی تر شیئ ہے تو یہ نہیں ہوسکتا ہے کہ صرف پانی کا مزہ بدلے یا رنگ بدلے یا دونوں بدل جائیں اور بُو نہ بدلے، بلکہ یا تو کچھ نہیں بدلے گا یا سب کچھ بدل جائے گا یا صرف

Arabic

مع الطعم والعبرة فی الضابطة للغلبة بوصفین والمنقول الغلبة باللون وحده کما مر عن حلیه عن الزیلعی عن الاسبیجابی وعن النجم الزاهدی عن زاد الفقهاء وتقدم عن الامام ملك العلماء فیتفق المنقول والضابطة فی الصورة الاولی والثالثة علی الجواز وفی الثانیه والرابعه علی المنع وفی الخامسة تتفرد الضابطة بالمنع۔

Urdu

بُو بدلے گی یا رنگ کے ساتھ یا مزہ کے ساتھ اور ضابطہ میں اعتبار غلبہ کو ہے دو وصفوں کے ساتھ، اور جو منقول ہے وہ صرف رنگ کا غلبہ ہے جیسا کہ حلیہ سے زیلعی سے اسبیجابی سے اور نجم زاہدی سے زاد الفقہاء سے گزرا، اور امام ملک العلماء سے بھی یہی منقول ہوا ہے اس لئے نقل اور ضابطہ میں اتفاق ہوگیا، پہلی صورت اور تیسری میں اتفاق جواز پر ہے اور دوسری اور چوتھی میں عدم جواز پر اور پانچویں صورت میں ضابطہ کی رُو سے عدم جواز ہے۔(ت)

(۱۳۲) اقول: اگر کوئی ذی لون سرکہ ایسا ہو کہ اس کا مزہ اس کے سب اوصاف سے اقوی ہو کہ اس کا قلیل سب سے پہلے پانی کے مزے کو بدلے اُس سے زاید ملے تو بُو یا رنگ میں تغیر آئے اس صورت میں

Fatawa Rizvia Volume Two If no quality of water changes or only the taste is altered, then performing ablution with it is permissible by consensus, due to the lack of dominance of color in the reported narrations and the lack of change in two qualities in the established rule. (Because there is no dominance of color in what is reported, and no change of two qualities in the rule. - Translator) (133) I say: Even if, hypothetically, its color is the strongest and the first to take effect, then ablution with it would only be permissible by consensus if no change occurs in any of its qualities; because any change in its qualities would result in a change in its color, and in the reported narrations, that is what is considered. (Because whatever quality changes, its color will also change, and in the reported narrations, this is what is taken into account. - Translator) (134) If the color of the water does not change due to milk, and the color of the milk does not overpower it, then performing ablution with it is permissible by consensus. I say: This is the agreed-upon ruling that this humble servant has derived from numerous various statements. And that is because the opinions here have come in five ways (there are five opinions here): (1) It is absolutely permissible,

I say: That is as long as its parts do not overpower the water, for this exception is known by consensus. (2) It is permissible if one of its qualities is changed. You will soon know that scholars have differed in taking this in the status of 'unconditional' (La bishart shay), so it includes if more than one quality is changed even if all are, and at that time it refers back to the first opinion; or it is in the status of 'conditioned by nothing' (bishart la shay), so it is restricted to when the change is limited to one quality even if it is color. (3) It is permissible if the color is not changed. (4) If neither color nor taste is changed. (5) If both are not changed together. This is in 'Umdat al-Qari', the commentary on Sahih al-Bukhari by the Imam...

I say: This means as long as its components do not dominate the water, because this is an exception known by consensus. (b) It is permissible if one of its qualities is changed. It will soon be known that the scholars differed in accepting this at the level of 'unconditional', so this will also apply to the case when more than one quality of the water has changed, even if all qualities have changed, and at that time one would have to refer to the first opinion. Or if it is at the level of 'conditioned by nothing', then it will remain limited only to the case where the change is in only one quality, even if it is the color that changed. (c) It is permissible if the color has not changed.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो) अगर पानी का कोई गुण (वस्फ़) न बदले या सिर्फ़ स्वाद बदल जाए, तो उससे वज़ू करना सर्वसम्मति (इत्तेफ़ाक) से जायज़ है, क्योंकि नक़ल किए गए विवरणों में रंग की प्रधानता (ग़लबह) नहीं है और नियम (ज़ाबता) में दो गुणों का परिवर्तन नहीं है। (क्योंकि नक़ल किए गए में रंग की प्रधानता नहीं है और नियम में दो गुणों का परिवर्तन नहीं है। -त) (133) अक़ूल: और अगर मान लिया जाए कि इसका रंग सबसे ज़्यादा प्रभावशाली और सबसे पहले असर करने वाला हो, तो इसके मिलने से वज़ू सर्वसम्मति से उसी समय जायज़ होगा जब उसके किसी भी गुण में परिवर्तन न आए। क्योंकि उसके किसी भी गुण के बदलने से उसका रंग भी बदल जाएगा और नक़ल किए गए में इसी का एतबार (विचार) है। (क्योंकि उसका जो गुण भी बदलेगा उसका रंग भी बदल जाएगा और नक़ल किए गए में इसी का एतबार है। -त) (134) दूध से अगर पानी का रंग न बदले और दूध का रंग उस पर हावी न हो, तो उससे वज़ू करना सर्वसम्मति से जायज़ है। अक़ूल: यह वह सर्वसम्मत आदेश है जिसे फ़क़ीर ने कई अलग-अलग कथनों से प्राप्त किया है। और वह इसलिए कि यहाँ पाँच प्रकार के विचार (अक़वाल) आए हैं: (1) मुतलक़न (पूरी तरह) जायज़ है,

अक़ूल: यानी जब तक पानी पर इसके तत्वों का ग़लबह न हो, क्योंकि यह सर्वसम्मत रूप से ज्ञात अपवाद (इस्तस्ना) है। (2) जायज़ है अगर उसके गुणों में से किसी एक को बदला गया हो, और आप जल्द ही जान लेंगे कि विद्वानों ने इसे 'किसी शर्त के बिना' (ला बशर्त शै) की श्रेणी में स्वीकार करने में मतभेद किया है, तो यह उस स्थिति पर भी लागू होगा जब पानी का एक से अधिक गुण बदल गया हो चाहे सभी गुण ही बदल गए हों और उस समय पहले कथन की ओर लौटना होगा या यह 'बिना किसी चीज़ के (बशर्त ला शै) की श्रेणी में हो तो यह सिर्फ उसी स्थिति में सीमित रहेगा जबकि परिवर्तन एक ही गुण में हो चाहे रंग ही बदला हो। (3) जायज़ है अगर रंग को न बदला गया हो। (4) अगर रंग और स्वाद न बदले हों। (5) अगर दोनों एक साथ न बदले हों। यह इमाम द्वारा रचित सहीह बुखारी की व्याख्या 'उमदतुल क़ारी' में है...

मैं कहता हूँ कि इससे मुराद यह है कि जब तक पानी पर इसके तत्वों (अजज़ा) का ग़लबह न हो, क्योंकि यह इजमाई (सर्वसम्मत) तौर पर मालूम इस्तस्ना (अपवाद) है। (ब) जायज़ है अगर इसके औसाफ़ (गुणों) में से किसी एक को बदला हो, और यह अनक़रीब मालूम हो जाएगा कि उलमा ने इसको 'ला बशर्त शै' के मर्तबा में क़बूल करने से इख्तिलाफ़ किया है, तो यह उस सूरत पर भी सादिक़ आएगा जब पानी का एक से ज़ायद वस्फ़ बदल गया हो ख्वाह सब औसाफ़ ही बदल गए हों और उस वक़्त पहले क़ौल की तरफ रुजू करना होगा या यह 'बशर्त ला शै' के मर्तबा में हो तो यह

सिर्फ़ इसी सूरत में मुन्हसिर रहेगा जबकि तग़य्युर (बदलाव) एक ही वस्फ़ में हो ख्वाह रंग ही बदला हो। (ज) जायज़ है अगर रंग को न बदला हो।

पेज 590 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی اگر پانی کا کوئی وصف نہ بدلے یا صرف مزہ متغیر ہو تو اس سے وضو بالاتفاق جائز ہے لعدم غلبة اللون فی المنقول ولا تغیر وصفین فی الضابطة (کیونکہ رنگ کا غلبہ نہیں ہے منقول میں اور دو وصفوں کا تغیر نہیں ہے ضابطہ میں۔ت) (۱۳۳) اقول اور اگر بالفرض اس کی رنگت سب سے قوی تر اور پہلے اثر کرنے والی ہو تو اس کے ملنے سے وضو بالاتفاق اسی وقت جائز ہوگا کہ اس کے کسی وصف میں تغیر نہ آئے لان ای وصف منه تغیر تغیر لونه وبه العبرة فی المنقول (کیونکہ اس کا جو وصف بھی بدلے گا اس کا رنگ بھی بدل جائے گا اور منقول میں اسی کا اعتبار ہے۔ت) (۱۳۴) دُودھ سے اگر پانی کا رنگ نہ بدلا دُودھ کا رنگ اس پر غالب نہ ہو گیا اس سے وضو بالاتفاق روا ہے۔ اقول: یہ ہے وہ حکم متفق علیہ کہ فقیر نے کلمات کثیرہ مختلفہ سے حاصل کیا وذلک لان الاقوال جاء ت ههنا علی خمسة وجوه (یہاں پانچ اقوال ہیں) (۱) یجوز مطلقا، (۱) مطلق جواز ہے،

اقول: ای مالم یغلب علی الماء اجزاء فان معلوم الاستثناء اجماعا۔ (ب) یجوز ان غیر احد اوصافه وستعرف ان العلماء اختلفوا فی اخذ احد هذا فی مرتبة لابشرط شیئ فیشمل مااذا غیر غیر واحد ولو الکل وحینئذ یرجع الی القول الاول اوفی مرتبة بشرط لاشیئ فیتقید بما اذا اقتصر التغیر علی وصف واحد ولو لونا۔ (ج) یجوز ان لم یغیر اللون۔ (ع) ان لم یغیر اللون ولا الطعم۔ (ھ) ان لم یغیرهما معاً ففی عمدة القاری شرح صحیح البخاری للامام

میں کہتا ہوں اس سے مراد یہ ہے کہ جب تک پانی پر اس کے اجزاء کا غلبہ نہ ہو، کیونکہ یہ اجماعی طور پر معلوم الاستثناء ہے۔ (ب) جائز ہے اگر اس کے اوصاف میں سے کسی ایک کو بدلا ہو، اور یہ عنقریب معلوم ہوجائے گا کہ علماء نے اس کو لا بشرط شیئ کے مرتبہ میں قبول کرنے سے اختلاف کیا ہے تو یہ اس صورت پر بھی صادق آئے گا جب پانی کا ایک سے زائد وصف بدل

گیا ہو خواہ سب اوصاف ہی بدل گئے ہوں اور اس وقت پہلے قول کی طرف رجوع کرنا ہوگا یا یہ بشرط لاشیئ کے مرتبہ میں ہو تو یہ صرف اسی صورت میں منحصر رہے گا جبکہ تغیر ایک ہی وصف میں ہو خواہ رنگ ہی بدلا ہو۔ (ج) جائز ہے اگر رنگ کو نہ بدلا ہو۔

Fatawa Razawiya, Volume 2

[Left Column - Arabic Text] Al-Badr Mahmud states: Performing Wudu with water mixed with milk is permissible for us, contrary to [the opinion of] Al-Shafi'i (1). It is mentioned in the text of Al-Hidayah: Purification is permissible with water mixed with a pure substance that changes one of its qualities, such as water mixed with milk (2). This was confirmed in Al-Inayah and other works. And I have cited (3) texts from Al-Hulyah from those who mentioned them. In Al-Bada'i, it is stated that the consideration is based on color. It is said in Al-Tabyin (4) regarding the mixture: if it differs from water in one or two qualities, dominance is considered from that aspect. For example, milk differs from water in color and taste; if the color or taste of the milk is dominant in it, Wudu with it is not permissible, otherwise it is permissible (3). This was similarly expressed following it in Al-Hulyah, Al-Bahr, and others with the word 'aw' (or) for alternation. In Al-Ghunya, it was stated decisively to prevent any doubt of a scribal error: "And if it differs from water in two qualities, such as milk which differs in color and taste, then what is considered is the appearance of dominance of one of the two qualities (4)." Al-Zayla'i also stated it explicitly thus.

[Right Column - Urdu Text] (A) If neither the color nor the taste has changed. (H) If both the color and taste have not changed collectively. Imam Badr Mahmud in 'Umdat al-Qari, a commentary on Sahih al-Bukhari, mentions that according to us, Wudu is permissible with water mixed with milk, though Al-Shafi'i disagrees. In the text of Al-Hidayah, it is stated that purification is permissible with water mixed with any pure thing that has changed one of its characteristics, such as water mixed with milk. This has been maintained in Al-Inayah and other works. The clarifications of Al-Hulyah and Al-Bada'i have already been noted, stating that the color is what matters. In Al-Tabyin, it says that if the mixed substance differs from water in one or two qualities, dominance will be determined on that basis. For example, milk differs from water in color and taste; if the color or taste of the milk dominates, Wudu will not be permissible; otherwise, it is permissible. And similarly, following him, they expressed this in Al-Hulyah and Al-Bahr using the word 'aw' (or) which is for alternation. In Al-Ghunya, it was mentioned in such a way that no doubt of a clerical error remains, saying: "and if that thing differs from water in two qualities, such as milk which differs from water in color and taste..."

[Footnotes] 1. Umdat al-Qari, Chapter: Wudu is not permissible with Nabidh, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyyah, Egypt, 3/179. 2. Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is permissible and not permissible, Matba' Arabiyya Karachi, 1/18. Note: In the

mentioned book, 'Saffron' is written instead of 'Milk'. 3. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyyah Egypt, 1/20. 4. Ghunyat al-Mustamli, Chapter: Explanation of the Rulings of Water, Matba' Suhail Academy Lahore, 91.

फ़तवा रज़विया, खंड द्वितीय

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] अल-बद्र महमूद कहते हैं: हमारे यहाँ दूध मिले पानी से वज़ू करना जायज़ है, इमाम शाफ़ेई के विपरीत (1)। अल-हिदाया के मूल पाठ में है: उस पानी से पवित्रता जायज़ है जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई हो और उसने उसके किसी एक गुण को बदल दिया हो, जैसे दूध मिला पानी (2)। इसे 'इनाया' और अन्य ग्रन्थों में पुष्ट किया गया है। और मैंने (3) 'हुलिया' के उद्धरणों का उल्लेख किया है। 'बदाई' में कहा गया है कि रंग का विचार किया जाता है। 'तबीन' (4) में मिश्रण के बारे में कहा गया है: यदि वह पानी से एक या दो गुणों में भिन्न हो, तो उसी आधार पर प्रबलता का विचार होगा। उदाहरण के लिए, दूध रंग और स्वाद में भिन्न होता है; यदि दूध का रंग या स्वाद प्रबल हो, तो वज़ू जायज़ नहीं, अन्यथा जायज़ है (3)। इसी प्रकार 'हुलिया', 'बहर' आदि में 'अव' (या) शब्द के साथ इसका वर्णन किया गया है। 'गुनिया' में इसे पूर्ण निश्चय के साथ उल्लेख किया गया ताकि लेखन दोष का भ्रम न रहे: "और यदि वह पानी से दो गुणों में भिन्न हो, जैसे दूध जो रंग और स्वाद में भिन्न है, तो दोनों में से किसी एक गुण की प्रबलता का प्रकट होना विचारणीय है (4)।" इसी प्रकार ज़यलई ने भी इसे स्पष्ट रूप से कहा है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] (अ) यदि न रंग बदला हो और न स्वाद। (ह) यदि रंग और स्वाद दोनों साथ में न बदले हों। इमाम बद्र महमूद की 'उम्दतुल क़ारी' (बुखारी की व्याख्या) में है कि हमारे यहाँ उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें दूध मिल गया हो, इसमें शाफ़ेई का मतभेद है। और हिदाया के मूल पाठ में है कि उस पानी से पवित्रता जायज़ है जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई हो और उसने पानी के किसी एक गुण को बदल दिया हो, जैसे वह पानी जिसमें दूध मिल गया हो। इसे 'इनाया' आदि में भी बरक़रार रखा गया है। 'हुलिया' और 'बदाई' के स्पष्टीकरण पहले आ चुके हैं कि विचार रंग का है। और 'तबीन' में है कि मिलने वाली वस्तु यदि पानी से एक या दो गुणों में भिन्न हो, तो उसी आधार पर प्रबलता का विचार होगा। उदाहरण के लिए, दूध पानी से रंग और स्वाद में भिन्न है, तो यदि दूध का रंग या स्वाद उसमें प्रबल हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा, अन्यथा जायज़ होगा। और इसी तरह उन्होंने इसकी व्याख्या की और उनका अनुसरण करते हुए 'हुलिया' और 'बहर' आदि में 'या' शब्द के साथ, जो विकल्प के लिए होता है, उल्लेख किया। 'गुनिया' में इसे इस अंदाज़ से ज़िक्र किया कि लेखन की ग़लती का भ्रम न रहे, अतः फ़रमाया: "और यदि वह चीज़ पानी से दो गुणों में भिन्न हो, जैसे दूध कि पानी से रंग और स्वाद में भिन्न है..."

[पादलेख] 1. उम्दतुल क़ारी, अध्याय: नबीज़ से वज़ू जायज़ नहीं है, इदारत अल-तिबात अल-मुनीरिया, मिस्र, 3/179। 2. हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, मतबा अरबिया कराची, 1/18। नोट: उक्त पुस्तक में 'दूध' के स्थान पर 'ज़फ़रान' (केसर) है। 3. तबीन अल-हक़ायक़, पवित्रता की पुस्तक, अल-अमीरिय्या मिस्र, 1/20। 4. गुनियात अल-मुस्तमली, पानी के अहकाम के बयान का परिच्छेद, मतबा सुहैल एकेडमी लाहौर, 91।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

البدر محمود التوضو بماء خالطه لبن يجوز عندنا خلافا للشافعی ١ اه وفی متن الهدایه تجوز الطهارة بماء خالطه شیئ طاهر فغیر احد اوصافه کالماء الذی اختلط به اللبن ٢ اه واقره في العنایه وغیرها وسمعت ٣ نصوص الحلیه عمن ذکروا والبدائع ان العبرة باللون وقال ۴ فی التبیین المخالط ان کان مخالفا للماء في وصف واحدا ووصفین تعتبر الغلبة من ذلك الوجه کاللبن مثلا یخالفه فی اللون والطعم فان کان لون اللبن او طعمه هو الغالب فیه لم یجز الوضوء به و الاجاز ٣ اه وهکذا عبربه تبعاله في الحلیه و البحر وغیرها بلفظة او للترديد واتي به فی الغنیه قاطعاً لوهم خطأ الکتابة فقال وان خالف الماء في وصفین کاللبن یخالفه في اللون والطعم فالمعتبر ظهور غلبة احد الوصفین ۴ بل افصح به کذلک الزیلعی

(ع) اگر نہ رنگ بدلا ہو اور نہ مزہ۔ (ھ) اگر رنگ اور مزہ دونوں کو اکٹھا نہ بدلا ہو، امام بدر محمود کی عمدۃ القاری شرح بخاری میں ہے کہ ہمارے نزدیک اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں دودھ مل گیا ہو اس میں شافعی کا اختلاف ہے اھ اور متن ہدایہ میں ہے اس پانی سے طہارت جائز ہے جس میں کوئی پاک چیز مل گئی ہو اور اس نے پانی کے کسی ایک وصف کو بدل دیا ہو جیسے وہ پانی جس میں دودھ مل گیا ہو اھ اور اس کو عنایہ وغیرہ میں برقرار رکھا، حلیہ اور بدائع کی تصریحات گزر چکی ہیں کہ اعتبار رنگ کا ہے، اور تبیین میں ہے کہ ملنے والی چیز اگر پانی سے ایک یا دو اوصاف میں مختلف ہو تو اسی وجہ سے غلبہ کا اعتبار ہوگا، مثلاً دودھ پانی سے رنگ اور مزہ میں مختلف ہے تو اگر دودھ کا رنگ یا مزہ اس میں غالب ہو تو اس سے وضو جائز نہ ہوگا، ورنہ جائز ہوگا اھ (ت) اور اسی طرح انہوں نے اس کی تعبیر کی ان کی اتباع کرتے ہوئے حلیہ اور بحر وغیرہ میں او کے کلمہ کے ساتھ جو تردید کے لئے ہوتا ہے اور غنیہ میں اس کو اس

انداز سے ذکر کیا کہ کتابت کی غلطی کا وہم نہ رہے چنانچہ فرمایا اور اگر وہ چیز پانی سے دو وصفوں میں مخالف ہو جیسے دودھ کہ پانی سے رنگ اور مزہ میں مختلف

۱ عمدة القاری باب لا یجوز الوضوء بالنبیذ ادارة الطباعة المنیریة مصر ۱۷۹/۳ ۲ ہدا یہ باب الماء الذي یجوز به الوضوء وما لا یجوز مطبع عربیہ کراچی ۱۸/۱ نوٹ: اللبن کی جگہ پر کتاب مذکور میں الزعفران ہے۔ ۳ تبیین الحقائق کتاب الطہارت الامیریة مصر ۲۰/۱ ۴ غنیة المستملی فصل فی بیان احکام الماء مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ۹۱

Fatawa Razawiya, Volume 2.

[Left Column - Arabic Text] In the final part of the discourse. However, the researcher in al-Fath, while quoting from al-Tabyin, used 'and' (wa), saying: "or in some of them, then by the dominance of what differs, like milk which differs in taste and color. If its color and taste dominate, it prevents [purity], otherwise it is permissible." Similarly in ad-Durar. ash-Shurunbulali objected to it and said: it must be said "its color or its taste" with 'or' (aw) and not with 'and' (wa), as stated by az-Zayla'i who waded into this rule. Allamah Abdul Halim replied that in milk there are two attributes by which it differs from absolute water; one is stronger than the other because the change in color happens with a small amount. Thus, dominance is found when the other attribute exists, and this is self-evident. Therefore, he did not say "or its taste" with 'or' as in az-Zayla'i's wording, as a rebuttal to him. I say: Firstly, if by 'small amount' he means in proportion to water, then yes. However, according to the consensus of those who follow this rule—which the author of ad-Durar is currently explaining—no consideration is given here to parts. Rather, consideration is given to it in what matches water in attributes. And indeed...

[Right Column - Urdu Text Translation] ...it happens, then the consideration will be of the manifestation of the dominance of one attribute. Rather, similarly, az-Zayla'i clarified this at the end of the discourse. But the researcher in Fath al-Qadir, while quoting from Tabyin, expressed it with 'and' (wa) and said: if there is a difference in some, then in this case, the dominance of that thing due to which there is a difference will be considered. For example, milk differs from water in taste and color; so if its color and taste become dominant, then purification cannot be achieved with it, otherwise it is permissible. It is mentioned in 'Durar' in this way. ash-Shurunbulali objected to this and said that it should be said "its color or its taste" with 'or' (aw); 'and' (wa) should not be used, as az-Zayla'i said, who are among those who take trouble for this rule. Allamah Abdul Halim replied that there are two attributes in milk due to which it is distinguished from absolute water; one attribute is stronger than the other, because color change in it is achieved with even a small amount. So dominance will occur if the second attribute is also found. And this is like something self-evident, and for this reason, he did not say "or its taste" with 'or', as it is in Zayla'i, so that it might be a rebuttal to him. (T) I say: Firstly, if they call it 'small' in proportion to water, it is correct. But according to the consensus of the people of the rule, parts are not considered here. By this rule is meant that rule which the author of 'Durar' is describing here; the consideration of those parts is in those attributes which water...

[Footnotes] 1. Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is permissible and not permissible, Nuriyah Razawiyah Sukkur, 1/25. 2. Hashiyah ala al-Durar by ash-Shurunbulali, Research on Water, Al-Matba'ah al-Kamiliyah, Beirut, 1/23. 3. Hashiyah ala al-Durar by Mawla Abdul Halim, Research on Water, 1/18.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (द्वितीय)।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] चर्चा के अंत में। हालाँकि, अल-फ़तह में शोधकर्ता ने अल-तबयिन से उद्धृत करते हुए 'और' (वा) का उपयोग किया और कहा: "या उनमें से कुछ में, तो उस चीज़ के प्रभुत्व से जो भिन्न है, जैसे दूध जो स्वाद और रंग में भिन्न होता है। यदि उसका रंग और स्वाद प्रभावी हो जाता है, तो यह [पवित्रता] को रोकता है, अन्यथा यह जायज़ है।" इसी तरह अद-दुरर में भी है। अश-शुरुनबुलली ने इस पर आपत्ति जताई और कहा: "उसका रंग या उसका स्वाद" कहा जाना चाहिए, 'या' (अव) के साथ और 'और' (वा) के साथ नहीं, जैसा कि अज़-ज़ैलई ने कहा है जिन्होंने इस नियम में प्रवेश किया। अल्लामा अब्दुल हलीम ने उत्तर दिया कि दूध में दो गुण होते हैं जिनके द्वारा यह पूर्ण जल से भिन्न होता है; एक दूसरे की तुलना में अधिक मजबूत होता है क्योंकि रंग में परिवर्तन थोड़ी मात्रा में भी हो जाता है। इस प्रकार, प्रभुत्व तब पाया जाता है जब दूसरा गुण भी मौजूद हो, और यह स्वतः स्पष्ट है। इसलिए, उन्होंने अज़-ज़ैलई के शब्दों की तरह 'या' के साथ "या उसका स्वाद" नहीं कहा, ताकि उनके प्रति एक खंडन हो सके। मैं कहता हूँ: सबसे पहले, यदि 'थोड़ी मात्रा' से उनका तात्पर्य पानी के अनुपात में है, तो हाँ। हालांकि, इस नियम के अनुयायियों की सर्वसम्मति के अनुसार—जिसकी व्याख्या अद-दुरर के लेखक वर्तमान में कर रहे हैं—यहाँ भागों पर विचार नहीं किया जाता है। बल्कि, जल के गुणों से मेल खाने वाले गुणों में इस पर विचार किया जाता है। और वास्तव में...

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ अनुवाद] ...होता है तो विचार एक गुण के प्रभुत्व के प्रकट होने का होगा, बल्कि इसी तरह इसकी व्याख्या ज़ैलई ने चर्चा के अंत में कर दी। लेकिन शोधकर्ता ने फ़तह अल-क़दीर में तबयिन से उद्धृत करते हुए 'वा' (और) से व्यक्त किया और कहा यदि कुछ में अंतर हो तो इस स्थिति में उस चीज़ के प्रभुत्व का विचार होगा जिसकी वजह से अंतर है जैसे दूध कि पानी से स्वाद और रंग में अलग होता है तो अगर उसका रंग और स्वाद प्रभावी हो जाए तो इससे पवित्रता नहीं हो सकती है वरना जायज़ है। इसी तरह दुरर में है, इस पर शुरुनबुलली ने आपत्ति की है और कहा है कि उसका रंग या उसका स्वाद कहना चाहिए 'औ' (या) के साथ, 'वा' (और) का उपयोग नहीं करना चाहिए, जैसा कि ज़ैलई ने कहा जो इस नियम के परिश्रम में पड़ने वाले हैं। अल्लामा अब्दुल हलीम ने उत्तर दिया कि दूध में दो गुण हैं जिनकी वजह से वह पूर्ण पानी से अलग होता है, एक गुण दूसरे से अधिक प्रबल है, क्योंकि इसमें रंग का परिवर्तन थोड़ी सी मात्रा से ही प्राप्त हो जाता है तो प्रभुत्व यह होगा कि दूसरा गुण पाया जाए और यह स्वयं सिद्ध (बदीही) की तरह है और इसीलिए "या उसका

स्वाद" नहीं कहा "औ" के साथ, जैसे कि ज़ैलई में है ताकि उस पर खंडन हो जाए। (त) मैं कहता हूँ पहले अगर तो वे उसे पानी की तुलना में कम कहते हैं, तो सही है, लेकिन नियम के लोगों की सर्वसम्मति से यहाँ भागों पर ध्यान नहीं दिया जाता है, इस नियम से तात्पर्य वह नियम है जिसे दुरर के लेखक यहाँ बयान कर रहे हैं, उन भागों का विचार उन गुणों में है जो पानी...

[फुटनोट्स] 1. फ़तह अल-क़दीर, वज़ू के लिए अनुमत और वर्जित पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/25। 2. हाशिया अला अल-दुरर लिल-शुरुनबुललली, पानी पर शोध, अल-मत्बा अल-कामिलिया बेरूत, 1/23। 3. हाशिया अला अल-दुरर लिल-मौला अब्दुल हलीम, पानी पर शोध, 1/18।

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[بایاں کالم - عربی عبارت] في آخر الكلام لكن المحقق في الفتح مع نقله عن التبيين عبر بالواو فقال اوفى بعضها فبغلبة ما به الخلاف كاللبن يخالف في الطعم واللون فان غلب لونه وطعمه منع والاجاز ١ وكذلك في الدرر واعترضه الشرنبلالى فقال يجب ان يقال لونه او طعمه باولابالواو كما قال الزيلعي المقتحم لهذا الضابط ٢ اه واجاب العلامة عبد الحليم بانه في اللبن صفتان يغاير بهما الماء المطلق احدهما اقوى من الاخرى لمان تغير اللون يحصل فيه بالقليل فكان الغلبة ان توجد الاخرى وذا كالبديهى ومن ذلك لم يقل او طعمه باو كما في عبارة الزيلعي ردا عليه ٣ اه اقول: اولا (١) ان اراد القليل بالنسبة الى الماء فنعم ولكن لا نظر ههنا الى الاجزاء باجماع اهل الضابطة التي صاحب الدرر ههنا بصدد بيانها وانما العبرة بها فيما يوافق الماء في الاوصاف وقد (٢) مشى

[دایاں کالم - اردو عبارت] ہوتا ہے تو اعتبار ایک وصف کے غلبہ کے ظہور کا ہوگا، بلکہ اسی طرح اس کی وضاحت زیلعی نے کلام کے آخر میں کردی، لیکن محقق نے فتح القدیر میں تبیین سے نقل کرتے ہوئے واؤ سے تعبیر کیا اور کہا یا بعض میں اختلاف ہو تو اس صورت میں اس چیز کے غلبے کا اعتبار ہوگا جس کی وجہ سے اختلاف ہے جیسے دودھ کہ پانی سے مزہ اور رنگ میں مخالف ہوتا ہے تو اگر اس کا رنگ اور مزہ غالب ہو جائے تو اس سے طہارت نہیں ہو سکتی ہے ورنہ جائز ہے، اس طرح درر میں ہے، اس پر شرنبلالی نے اعتراض کیا ہے اور کہا ہے کہ لونہ او طعمہ کہنا چاہئے آؤ کے ساتھ، واؤ کا استعمال نہ کرنا چاہئے، جیسا کہ زیلعی نے کہا جو اس ضابطہ کے تکلف میں پڑنے والے ہیں، علامہ عبدالحلیم نے جواب دیا کہ دودھ میں دو صفات ہیں جن کی وجہ سے وہ مطلق پانی سے ممتاز ہوتا ہے، ایک صفت دوسری سے قوی تر ہے، کیونکہ اس میں رنگ کا تغیر تھوڑی سی مقدار سے ہی حاصل ہو جاتا ہے تو غلبہ یہ ہوگا کہ

دوسری صفت پائی جائے اور یہ بدیہی کی طرح ہے اور اس لئے "او طعمہ" نہ کہا "أو" کے ساتھ، جیسے کہ زیلعی میں ہے تاکہ اس پر رَد ہوجائے اھ (ت) میں کہتا ہوں اول اگر تو وہ اسکو بہ نسبت پانی کے قلیل کہتے ہیں، تو درست ہے، لیکن اہلِ ضابطہ کے اجماع سے یہاں اجزاء پر نظر نہیں کی جاتی ہے، اس ضابطہ سے مراد وہ ضابطہ ہے جس کو صاحبِ درر یہاں بیان کر رہے ہیں ان اجزاء کا اعتبار اُن اوصاف میں ہے جو پانی

[حواشی] ۱ فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء و مالا یجوز به نوریه رضویہ سکھر ۲۵/۱ ۲ حاشیه علی الدرر للشرنبلالی ابحاث الماء المطبعة الکامليه بیروت ۲۳/۱ ۳ حاشیه علی الدرر للمولی عبدالحلیم بحث الماء ۱۸/۱

صفحہ 592 کا 711

Fatawa Rizvia, Volume II

Ad-Durar [al-Hukkam] has placed this here, ruling it as something that does not differ from water in quality, and making milk its counterpart (qaseem) not its partner (saheem). If by 'small quantity' it was meant in itself, then here it is the overcome (maghlub) and consumed (mustahlak) which has no clear trace. When milk changes the color of water, how can it be considered a small quantity? (T)

Second: This is the requirement of analogy (qiyas) in the rule, because for something that differs from water in all three qualities, the dominance of two qualities is considered, because the rule of the whole applies to the majority. For something that differs from water in only one quality, dominance in that one quality is considered. What remains is something that differs in two qualities; if it dominates in both together, then there is no debate. If it dominates in one of them, then dominance is by half, and half is more worthy of being attached to the whole than being discarded entirely. Remember this. However, the truth in my view regarding milk, according to the mentioned rule, is that dominance in two qualities should be considered, not just one. This is because milk is among those things that differ from water in all three qualities. Because its smell is often subtle—though it appears if boiled—the misconception arose that it differs only in two qualities. Allamah ar-Ramli said in his marginalia on Al-Bahr, and then ash-Shami in Al-Minhah and Radd al-Muhtar: "It is observed in milk that it differs from water in smell as well." Ah.

Footnote 1: Minhat al-Khaliq ala al-Bahr, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/701. Page 593 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

अद्दुरर [अल-हुक्काम] ने इसे यहाँ रखा है और इसे उस चीज़ के नियम के अधीन माना है जो गुणों में पानी के विपरीत नहीं है, और दूध को इसका प्रतिपक्ष (क़सीम) बनाया है न कि इसका साझीदार (सहीम)। और यदि 'अल्प मात्रा' से तात्पर्य स्वयं में है, तो यहाँ वह पराजित (मग़लूब) और विलीन (मुस्तह्लक) है जिसका कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं दिखता। और जब दूध पानी का रंग बदल दे, तो उसे अल्प मात्रा कैसे माना जा सकता है? (त)

दूसरा: नियम में सादृश्य (क़ियास) की माँग यही है, क्योंकि जो चीज़ पानी के तीनों गुणों में पानी से भिन्न है, उसमें दो गुणों की प्रधानता मान्य है, क्योंकि बहुमत के लिए पूर्ण का नियम है। और जो चीज़ पानी से केवल एक गुण में भिन्न हो, उसमें उस एक गुण की प्रधानता मान्य होगी। अब केवल वह चीज़ शेष रह गई जो दो गुणों में पानी के विपरीत हो; यदि दोनों गुणों में एक साथ प्रधानता हो जाए तो कोई बात ही नहीं। और यदि एक में प्रधानता हो, तो प्रधानता आधे से होगी, और आधा इस बात का अधिक पात्र है कि उसे पूर्ण के साथ जोड़ा जाए न कि उसे पूरी तरह से त्याग दिया जाए। इसे याद रखें। लेकिन मेरे निकट सत्य, इस उल्लिखित नियम के अनुसार, यह है कि दूध में दो गुणों की प्रधानता पर विचार किया जाना चाहिए, न कि केवल एक पर। क्योंकि दूध उन चीज़ों में से है जो तीनों गुणों में पानी से भिन्न होते हैं। चूँकि इसकी गंध अक्सर सूक्ष्म होती है—हालाँकि उबालने पर प्रकट होती है—इसलिए यह भ्रम हुआ कि यह केवल दो गुणों में भिन्न है। अल्लामा अर-रमली ने 'अल-बह्र' के हाशिये में कहा, और फिर अल-शामी ने 'अल-मिन्हा' और 'रद्द अल-मुह्तार' में कहा: "दूध में यह देखा गया है कि यह गंध में भी पानी के विपरीत होता है।" समाप्त।

पादलेख 1: मिन्हात अल-ख़ालिक़ अला अल-बह्र, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/701. पृष्ठ 593/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

علیہ الدرر ھھنا فجعلہ حکم مالایخالف الماء فی صفۃ وجعل اللبن قسیمہ لاسہیمہ وان اراد القلیل فی نفسہ فھو ھھنا المغلوب المستھلک الذی لایظھر لہ اثر بین واللبن اذا احال الماء الی لونہ کیف یعد قلیلا۔

کے موافق ہوں اوصاف میں، اور درر نے یہاں ان کو بیان کیا ہے، تو انہوں نے اس کو اس چیز کا حکم قرار دیا جو پانی کے مخالف نہ ہو کسی صفت میں اور دودھ کو اس کا قسیم قرار دیا نہ کہ اس کا سہیم، اور اگر فی نفسہ کم کا ارادہ کیا تو وہ یہاں نہ ہونے کے برابر ہے جس کا کوئی واضح اثر ظاہر نہیں ہوتا ہے، اور جب پانی دودھ کا رنگ اختیار کرے تو دودھ کو کس طرح کم کہا جاسکتا ہے؟ (ت)

وثانیا: ھذا(۱) ھو قضیہ القیاس فی الضابط لان ماخالف الماء فی الاوصاف الثلاثۃ اعتبر فیہ الغلبۃ بوصفین لان للاکثر حکم الکل وما خالف فی وصف واحد اعتبر فیہ الغلبۃ بہ بقی ماخالف فی وصفین فان غلب بھما معا فلا کلام وان غلب باحدھما کان الغلبۃ بالنصب والنصف احق ان یلحق بالکل من ان یطرح بالکلیہ ھذا ولکن الحق عندی فی اللبن علی الضابط المذکور ان تعتبر فیہ الغلبۃ بوصفین اثنین لابوصف واحد(۲) لان اللبن مما یخالف الماء فی الاوصاف الثلاثۃ جمیعا ولخفاء رائحتہ غالبا ولو اغلی لظھرت ذھب الوھم الی انہ لایخالف الا فی وصفین وقد قال العلامۃ الرملی فی حاشیہ البحر ثم الشامی فی المنحہ وردالمحتار المشاھد فی اللبن مخالفتہ للماء فی الرائحۃ ایضا اھ اور دوم یہ ہے کہ یہ ضابطہ میں قیاس کا تقاضا ہے، کیونکہ جو چیز پانی کے اوصاف ثلاثہ میں پانی سے مختلف ہے اس میں معتبر دو صفتوں کا غلبہ ہے، کیونکہ اکثر کیلئے کل کا حکم ہے اور جو چیز پانی سے ایک وصف میں مختلف ہو اس میں ایک وصف کا غلبہ معتبر ہوگا، اب صرف وہ چیز رہ گئی جو دو صفتوں میں پانی کے مخالف ہو اگر دونوں وصفوں میں اکٹھا غلبہ ہوجائے تب تو بات واضح ہے

اور ایک میں غلبہ ہو تو غلبہ آدھے سے ہوگا اور نصف اس کا زیادہ مستحق ہے کہ اس کو کل سے ملایا جائے نہ یہ کہ اس کو بالکلیہ ساقط کیا جائے، اس کو یاد رکھئے۔ لیکن میرے نزدیک حق، اس ضابطہ کے مطابق یہ ہے کہ اس میں دو وصفوں کے غلبہ کا اعتبار کیا جائے نہ کہ ایک وصف کا، کیونکہ دودھ پانی سے تینوں وصفوں میں مخالف ہوتا ہے، چونکہ اس کی بُو بہت ہلکی ہوتی ہے ابالنے پر ظاہر ہوتی ہے اس لئے یہ وہم ہوتا ہے کہ وہ صرف دو وصفوں میں مخالف ہوتا ہے، علامہ رملی نے بحر کے حاشیہ میں فرمایا، شامی

۱ منحة الخالق علی البحر کتاب الطهارة سعید کمپنی کراچی ۱/۷۰۱ صفحہ ۵۹۳ از ۷۱۱

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

I say: Verily, the strongest qualities of milk are its color, then its taste, then its smell. No subsequent quality changes in water except that it has been preceded by a previous one. So when any of these changes, the color has already changed, and if the color does not change, then none of them change. Thus, the opinions are unanimous on the permissibility of performing ablution (wudu) with water mixed with milk as long as its color does not change. From this, it becomes clear that the hesitation of Imam az-Zaylai is unnecessary, because a change in taste necessitates a change in color. Therefore, it would have been appropriate to limit it to color, as the predecessors did. Az-Zaylai narrated this from Al-Isbijabi, as you have known, and Allah Almighty knows best.

It was stated in Munyah and Radd al-Muhtar that milk also differs from water in smell. (T) I say that in fact, among the qualities of milk, the strongest is its color, then taste, and then smell. Whichever subsequent quality of water changes, it must be preceded by a previous one. So when any of these qualities undergo change, the color must change. When the color does not change, no quality changes. Thus, all opinions agree that ablution is permissible with water mixed with milk as long as its color has not changed. This shows that Imam az-Zaylai's use of 'or' was not essential because the change of taste implies a change of color. Therefore, one should have sufficed with color, as the predecessors did. Az-Zaylai quoted this from Isbijabi, as you have come to know, and Allah Almighty knows best. (T)

Illustration, I say: (135) Water in which eggs were soft-boiled is suitable for wudu if the eggs were pure. (136) Iron-tempered, silver-tempered, or gold-tempered water—meaning water in which iron, silver, or gold has been heated and then extinguished—due to the persistence of the name and nature. I say: Although some of the water's moisture will decrease and it will acquire some properties of these metals, making it a form of medicine or treatment, it will not become something else. It was water and will remain water. This process is for improving the water, not for making something else out of it. (137) If a person already in a state of wudu or a minor (even if without wudu) used water for wudu or ghusl (ritual bath) to cool their limbs or remove dirt without the intention of seeking spiritual proximity (qurbat). (138) If it was known that an organ had been washed three times and, while the water was still wet, it was poured a fourth time without reason, this water is suitable for wudu. Even if this water was collected in a vessel, any organ could be washed with it during wudu. Or,

even if it was poured on the hand for the fourth time in such a way that it fell on the foot and flowed over it, that much of the foot became pure.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 2

मैं कहता हूँ: वास्तव में, दूध के गुणों में सबसे प्रबल उसका रंग है, फिर उसका स्वाद, फिर उसकी गंध। पानी में बाद वाला कोई भी गुण तब तक नहीं बदलता जब तक कि उससे पहले वाला न बदल गया हो। अतः जब इनमें से कोई बदलता है, तो रंग पहले ही बदल चुका होता है, और यदि रंग नहीं बदलता है, तो उनमें से कोई भी नहीं बदलता। इस प्रकार, दूध मिश्रित पानी से वज़ू करने की अनुमति पर सभी मत एकमत हैं जब तक कि उसका रंग न बदले। इससे स्पष्ट होता है कि इमाम अज़-ज़ैलई द्वारा व्यक्त किया गया संकोच अनावश्यक है, क्योंकि स्वाद में परिवर्तन रंग में परिवर्तन को अनिवार्य बनाता है। इसलिए, रंग तक ही सीमित रहना उचित होता, जैसा कि पूर्ववर्तियों ने किया। अज़-ज़ैलई ने इसे अल-इस्बीजाबी से उद्धृत किया है, जैसा कि आप जान चुके हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मुन्याह और रद अल-मुहतार में कहा गया है कि दूध गंध में भी पानी के विपरीत होता है। (त) मैं कहता हूँ कि वास्तव में दूध के गुणों में सबसे शक्तिशाली उसका रंग है, फिर स्वाद और फिर गंध। पानी का जो भी बाद वाला गुण बदलता है, उससे पहले कोई पिछला गुण अवश्य होता है। तो जब इन गुणों में कोई परिवर्तन होता है, तो रंग अवश्य बदलता है। जब रंग नहीं बदलता, तो कोई गुण नहीं बदलता। अतः सभी मत इस पर सहमत हैं कि उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें दूध मिला हो और उसका रंग न बदला हो। इससे यह ज्ञात हुआ कि इमाम ज़ैलई का 'या' कहना आवश्यक नहीं था क्योंकि स्वाद का बदल जाना रंग के बदल जाने को आवश्यक बनाता है। इसलिए रंग पर ही निर्भर रहना चाहिए था जैसा कि पूर्ववर्तियों ने किया। ज़ैलई ने इसे इस्बीजाबी से नकल किया, जैसा कि आप जान चुके हैं और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

उदाहरण, मैं कहता हूँ: (135) जिस पानी में अंडे अर्ध-उबले (हाफ-बॉयल) किए गए हों, वह वज़ू के लिए उपयुक्त है यदि अंडे पाक (शुद्ध) थे। (136) लोहे, चांदी या सोने से तपाया हुआ पानी—यानी वह पानी जिसमें गर्म लोहा, चांदी या सोना बुझाया गया हो—नाम और स्वभाव के बने रहने के कारण। मैं कहता हूँ: यद्यपि इससे पानी की कुछ नमी कम हो जाएगी और उसमें इन धातुओं की शक्ति आ जाएगी, जिससे यह एक प्रकार की दवा और उपचार बन जाएगा, लेकिन वह कुछ और नहीं बन जाएगा। वह पानी ही था और पानी ही रहेगा। यह प्रक्रिया पानी को बेहतर बनाने के लिए है, न कि उससे कोई और चीज़ बनाने के लिए। (137) यदि किसी वज़ू वाले व्यक्ति या नाबालिग ने (चाहे वह बिना वज़ू के हो) अंगों को ठंडा करने या मैल दूर करने के लिए वज़ू या ग़ुस्ल के लिए पानी का

उपयोग बिना क़ुर्बत (समीपता) की नियत के किया। (138) ज्ञात था कि अंग को तीन बार धोया जा चुका है और पानी अभी सूखा भी नहीं था कि चौथी बार बिना किसी कारण के डाला गया। यह पानी वज़ू के योग्य है। यहाँ तक कि यदि यह पानी किसी बर्तन में ले लिया जाए तो उससे वज़ू में कोई अंग धो सकते हैं। या यदि चौथी बार हाथ पर इस तरह डाला गया कि वह पैर पर गिरकर बह गया, तो पैर का उतना हिस्सा पाक (शुद्ध) हो गया।

पृष्ठ 594 का 711

اقول (میں کہتا ہوں): بیشک دودھ کے اوصاف میں سب سے قوی اس کا رنگ ہے، پھر اس کا ذائقہ، پھر اس کی بو۔ پانی میں کوئی بعد میں آنے والا وصف اس وقت تک تبدیل نہیں ہوتا جب تک کہ اس سے پہلے والا نہ بدل گیا ہو۔ چنانچہ جب ان میں سے کوئی بدلتا ہے تو رنگ پہلے ہی بدل چکا ہوتا ہے، اور اگر رنگ نہ بدلے تو ان میں سے کوئی بھی نہیں بدلتا۔ لہذا تمام اقوال اس بات پر متفق ہیں کہ اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں دودھ ملا ہو بشرطیکہ اس کا رنگ نہ بدلا ہو۔ اس سے یہ ظاہر ہوا کہ امام زیلعی کا تذبذب غیر ضروری ہے، کیونکہ ذائقے کی تبدیلی رنگ کی تبدیلی کو لازم کرتی ہے۔ اس لیے صرف رنگ پر اکتفا کرنا مناسب تھا جیسا کہ متقدمین نے کیا۔ زیلعی نے اسے اسبیجابی سے نقل کیا ہے جیسا کہ آپ جان چکے ہیں اور اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے۔

نے منیہ میں اور ردالمختار میں فرمایا کہ دودھ پانی سے بُو میں بھی مخالف ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں دراصل دُودھ کے اوصاف میں قوی تر اس کا رنگ ہے پھر مزہ اور پھر بُو ہے اور اس سے پانی کا جو وصف لاحق بھی متغیر ہوتا ہے اس سے قبل کوئی سابقہ ضرور ہوتا ہے، تو جب ان اوصاف میں کوئی تغیر ہوتا ہے تو رنگ ضرور بدلتا ہے اور جب رنگ نہ بدلے تو کوئی وصف نہیں بدلتا ہے، تو تمام اقوال اس پر متفق ہیں کہ اس پانی سے وضو جائز ہے جس میں دودھ ملا ہو اور اس کا رنگ نہ بدلا ہو، اور اس سے یہ معلوم ہوا کہ امام زیلعی کا "او" کہنا ضرور کا نہیں کیونکہ مزہ کا بدل جانا رنگ کے بدل جانے کو مستلزم ہے تو رنگ پر اکتفاء کرنا چاہئے تھا جیسا کہ متقدمین نے کیا ہے، اس کو زیلعی نے اسبیجابی سے نقل کیا، جیسا کہ آپ نے جان لیا و اللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

تمثیل اقول: (۱۳۵) انڈے جس پانی میں نیم برشت کے قابل وضو ہے اگر انڈے پاک تھے۔ (۱۳۶) آہن تاب، سیم تاب، زر تاب یعنی جس پانی میں لوہا یا چاندی یا سونا تپا کر بجھایا لبقاء الاسم والطبع اقول: اگرچہ اس سے پانی کی بعض رطوبات کم ہوں گی اس میں ان فلزات کی قوت آئے گی من وجہ ایک دوا و علاج ہو گا مگر وہ کوئی شے غیر نہ ہو جائیگا پانی ہی تھا اور پانی ہی رہے گا یہ عمل پانی ہی کی اصلاح کو ہے نہ کہ اُس سے کوئی اور چیز بنانے کو۔ (۱۳۷) باوضو شخص یا نابالغ نے اگرچہ بے وضو ہو اعضاء ٹھنڈے یا میل دُور کرنے کو جس پانی سے وضو یا غسل بے نیت قربت کیا۔ (۱۳۸) معلوم تھا کہ عضو تین بار دھو چکا ہے اور پانی ہنوز خشک بھی نہ ہوا تھا چوتھی بار بلا وجہ ڈالا یہ پانی قابل وضو ہے گا یہاں تک کہ یہ پانی کسی برتن میں لے لیا تو اس سے وضو میں کوئی عضو دھو سکتے ہیں یا اگر چہ چوتھی بار ہاتھ پر اس طرح ڈالا کہ پاؤں پر گر کر بہہ گیا اتنا پاؤں پاک ہو گیا۔

Fatawa Ridawiyya Volume Two

(139) One who does not need a ritual bath (ghusl) washed parts of the body other than the limbs of ablution (wudu), such as the back or thigh, even if they intended closeness (to God) in their own mind. (140) A person in a state of wudu or a minor washed their hands and rinsed their mouth simply to clean themselves for eating or after eating, without the intention of fulfilling the Sunnah, even if they were without wudu. (141) A person in a state of wudu or a minor performed wudu solely with the intention of teaching someone how to perform wudu. (142) Washing the miswak (twig toothbrush) after using it and before storing it is Sunnah, as we explained in 'Bariq al-Nur'. (This water, although the Sunnah will be fulfilled with it, will remain suitable for wudu, as we established in 'Al-Tars al-Mu'addal' that the condition for water to become 'used' (musta'mal) is its use on the human body. However, it will be disliked (makruh) because it washes away saliva, as mentioned previously from 'Al-Khaniyah'.) (143) Washing the miswak before using it is also Sunnah. This water will not even be disliked if the miswak is new or has already been washed. (144) Among the etiquettes of wudu is that if the water vessel has a handle, place the hand on the handle while washing the limbs, not on its top/head, and wash the handle with three waters. It is stated in 'Fath al-Qadir', then 'Radd al-Muhtar', etc.:

[Arabic Column]: منها ای من اداب الوضوء ان یغسل عروۃ الابریق ثلثا ووضع یدہ حالۃ الغسل على عروته لا على رأسه اه ومثله في الحليه بغير ثلثا- [Urdu Column]: Among them, i.e., the etiquettes of wudu, is that the handle of the vessel should be washed three times, and during washing, the hand should be kept on the handle itself, not on the top; and it is similarly mentioned in 'Al-Hilyah', but the word 'three times' (thulthan) is not present. (T)

(145) Washing any clean cloth, even if for reward, such as the dirty clothes of parents. (146) Washing cooking utensils in which food was cooked or served, even if the characteristics of the water changed due to the residue of curry etc., as long as its fluidity remains, even if the intention of this washing is the Sunnah of cleaning. (147) Similarly, the water with which a grinding stone or rock was washed, even if its characteristics changed due to the effect of spices and the water did not become thick. (148) Washing ice to clean off wood shavings, and the shavings did not affect the fluidity of the water.

---

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/92 Page 595 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

(139) जिसे ग़ुस्ल (स्नान) की ज़रूरत नहीं थी, उसने वज़ू के अंगों के अलावा, जैसे पीठ या जांघ को धोया, भले ही अपने ख़याल में इबादत की नियत की हो। (140) वज़ू वाले या नाबालिग ने, खाना खाने के लिए या खाने के बाद हाथ-मुंह साफ़ करने के लिए हाथ धोए और कुल्ली की, और सुन्नत अदा करने की नियत नहीं की, भले ही वह बिना वज़ू के हो। (141) वज़ू वाले या नाबालिग ने सिर्फ़ किसी को वज़ू सिखाने की नियत से वज़ू किया। (142) मिस्वाक करने के बाद उसे धोकर रखना सुन्नत है, जैसा कि हमने 'बारिक़ अन-नूर' में बयान किया है। (यह पानी हालांकि इससे सुन्नत अदा होगी, वज़ू के लायक़ रहेगा जैसा कि हमने 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में साबित किया है कि पानी के'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) होने के लिए पानी का इंसानी बदन पर इस्तेमाल होना शर्त है। मगर मकरूह होगा क्योंकि इसमें मुँह का थूक धुलेगा, जैसा कि 'अल-खानीय' के हवाले से पहले गुज़रा।) (143) मिस्वाक करने से पहले भी उसे धोना सुन्नत है। यह पानी मकरूह भी नहीं होगा अगर मिस्वाक नई है या पहले धुल चुकी है। (144) वज़ू के आदाब (शिष्टाचार) में से है कि अगर लोटा हत्थे वाला है तो अंगों को धोते समय हाथ हत्थे पर रखे, उसके सिर पर नहीं, और हत्थे को तीन बार पानी से धोए। 'फ़तहुल क़दीर' फिर 'रद्दुल मुह्तार' वगैरह में है:

[अरबी कॉलम]: منها ای من اداب الوضوء ان یغسل عروۃ الابریق ثلثا ووضع یدہ حالۃ الغسل على عروته لا على رأسه اه ومثله في الحليه بغير ثلثا- [उर्दू कॉलम]: उनमें से, यानी वज़ू के आदाब में से यह है कि लोटे के हत्थे को तीन बार धोया जाए और ग़ुस्ल (धोने) के समय हाथ हत्थे पर ही रखा जाए न कि उसके सिर पर, और ऐसा ही 'ह़िलया' में है मगर 'तीन बार' (सुलसा) का शब्द नहीं है। (त)

(145) कोई पाक कपड़ा धोया, चाहे सवाब के लिए हो जैसे माँ-बाप के मैले कपड़े। (146) खाने के बर्तन जिनमें खाना पकाया या निकाला था धोए, भले ही उनमें सालन वगैरह के लगाव से पानी के गुण (रंग, स्वाद, गंध) बदल गए हों, जब तक तरलता (पतलापन) बाकी रहे, भले ही इस धोने से सफ़ाई की सुन्नत की नियत हो। (147) इसी तरह जिस पानी से सिल या पत्थर धोया, भले ही मसालों के असर से गुणों में बदलाव आया और पानी गाढ़ा नहीं हुआ। (148) बुरादा साफ़ करने के लिए बरफ़ धोया और बुरादे ने पानी की तरलता पर असर नहीं किया।

---

1 रद्दुल मुह्तार, किताबुत तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/92 पृष्ठ 595 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

(۱۳۹) جسے حاجتِ غسل نہیں اُس نے اعضائے وضو کے سوا مثلاً پیٹھ یا ران دھوئی اگرچہ اپنے زعم میں قربت کی نیت کی۔ (۱۴۰) با وضو یا نابالغ نے اگرچہ بے وضو ہو کھانا کھانے کو یا کھانے کے بعد ویسے ہی ہاتھ منہ صاف کرنے کو ہاتھ دھوئے کلی کی اور اداءِ سنت کی نیت نہ کی۔ (۱۴۱) با وضو یا نابالغ نے صرف کسی کو وضو سکھانے کی نیت سے وضو کیا۔ (۱۴۲) مسواک کرنے کے بعد اُسے دھو کر رکھنا سنت ہے کما بینا فی بارق النور (جیسا کہ "بارق النور" میں بیان کیا گیا۔ت) یہ پانی اگرچہ اس سے اداءِ سنت ہوگا قابلِ وضو رہے گا کما حققنا فی الطرس المعدل ان الشرط استعمالہ فی بدن الانسان (جیسا کہ ہم نے "الطرس المعدل" میں ثابت کیا ہے کہ پانی کے مستعمل ہونے کیلئے پانی کا بدنِ انسان پر استعمال ہونا شرط ہے۔ت) مگر مکروہ ہوگا کہ لعابِ دہن کو دھوئے گا کما تقدم عن الخانیہ، (۱۴۳) مسواک کرنے سے پہلے بھی اسے دھونا سنت ہے یہ پانی مکروہ بھی نہ ہوگا اگر مسواک نئی ہے یا پہلے دُھل چکی ہے۔ (۱۴۴) آدابِ وضو سے ہے کہ آفتابہ اگر دستہ دار ہے غسلِ اعضاء کے وقت دستہ پر ہاتھ رکھے اس کے سر پر نہیں اور دستہ کو تین پانیوں سے دھو لے۔ فتح القدیر پھر ردالمحتار وغیرہما میں ہے:

[Arabic]: منها ای من اداب الوضوء ان یغسل عروة الابریق ثلثا ووضع یده حالة الغسل علی عروته لا علی رأسه اه ومثله في الحلیه بغیر ثلثا- [Urdu]: ان سے یعنی آدابِ وضو سے یہ ہے کہ لوٹے کے دستے کو تین مرتبہ دھویا جائے اور غسل کے وقت ہاتھ دستے پر ہی رکھا جائے نہ کہ سر پر اور ایسا ہی حلیہ میں ہے مگر ثلثا کا لفظ نہیں ہے۔ (ت)

(۱۴۵) کوئی پاک کپڑا دھویا اگرچہ ثواب کے لئے جیسے ماں باپ کے میلے کپڑے ۔ (۱۴۶) کھانے کے برتن جن میں کھانا پکایا یا اتارا تھا دھوئے اگرچہ ان میں سالن وغیرہ کے لگاؤ سے

پانی کے اوصاف بدل گئے جب تک رقت باقی رہے اگرچہ اس دھونے سے سنت تنظیف کی نیت ہو۔ (۱۴۷) یوں ہی جس پانی سے سل یا پتھر دھویا اگرچہ مسالے کے اثر سے اوصاف میں تغیر آیا اور پانی گاڑھا نہ ہوا۔ (۱۴۸) برادہ صاف کرنے کو برف دھویا اور برادہ نے پانی کی رقت پر اثر نہ کیا۔

---

1 رد المحتار کتاب الطهارة مصطفی البابی مصر ۱/ ۹۲ Page 595 of 711

(149) To clean a stain, washed mango or any kind of fruit. (150) Washed a writing slate and the water did not become thick from the ink. (151) Washed a paved floor to clean it from dust, even if it was for a mosque with the intention of proximity (qurbat). (152) An unintelligent child performed ablution (Wudu). (153) Bathed a minor child. (154) Bathed a horse or any animal, even if done with the intention of reward, provided there was no impurity (najasat) on their bodies. All these waters are suitable for ablution. (155) To ward off the evil eye, it is commanded to wash some body parts of the person who cast the evil eye and pour it on the head of the victim, the detailed explanation of which is in our book "Kitab Muntaha al-Amal fil-Awfaq wal-A'mal". If that person had wudu, this water remains suitable for wudu even if he did it to follow the command "When you are asked to wash, then wash" (Arabic: Wa idha istaghsalatum faghsilu) with the intention of proximity. Reflect and refer to what we stated about the conditions of used water (Musta'mal) in our treatise "Al-Tars al-Mu'addal". (156) When a bride is brought home, it is recommended (Mustahabb) to wash her feet and sprinkle that water in the four corners of the house; this brings blessings (Barakah). This water should also remain suitable for wudu if the bride was in a state of wudu or was a minor, because this and the previous act are of the nature of general actions, not acts of worship (Ibadah), even if the intention is to follow an act of proximity. And Allah knows best. (157) A woman in a state of menstruation (Haiz) or postnatal bleeding (Nifas) bathed before the bleeding stopped without the intention of proximity; this water is also suitable for wudu. (158) Water remaining from a man's wudu or bath (Ghusl) is suitable for purification without dislike (Karahat), even if a woman uses it for purification, unlike the opposite case (woman's leftover water used by a man) which is disliked, as mentioned before. (159) Certain medicines are used after being washed (Maghsul), such as Ruby, Shadnaj, Armenian Stone, Armenian Clay, Lac, Tutia, Cinnabar, Litharge, etc. They are ground very fine and mixed in water until it becomes like dust suspended in water, or if it contains grit, it is discarded. Now, keep this dust-mixed water covered until the dust settles and separates from the water. At that time, decant the water and use the medicine. This water is also suitable for wudu if it has not been touched by an unwashed hand. (160) The sacred hair (Mooy-e-Mubarak) or the holy cloak (Jubba Muqaddasa) or the noble sandal (Na'l Shareef) of the Master of the Universe (Peace and blessings of Allah be upon him)... [Text continues on next page].

(149) धब्बा साफ़ करने के लिए आम या किसी भी फल को धोया। (150) तख्ती धोई और स्याही से पानी गाढ़ा नहीं हुआ। (151) पक्का फ़र्श धूल-मिट्टी से साफ़ करने के लिए धोया, चाहे वह मस्जिद का हो और नीयत कुर्बत (पुण्य) की हो। (152) नासमझ बच्चे ने वज़ू किया। (153) नाबलिग (बच्चे) को नहलाया। (154) घोड़े या किसी जानवर को नहलाया, चाहे दोनों में नीयत सवाब (पुण्य) की हो, जब तक कि उन तीनों के शरीर पर कोई नजासत (गंदगी) न हो, यह सब पानी वज़ू के योग्य हैं। (155) नज़र उतारने के लिए नज़र लगाने वाले के कुछ अंगों को धोकर नज़र लगे व्यक्ति के सिर पर डालने का हुक्म है, जिसका विस्तार हमारी किताब "किताब मुंतहल आमाल फ़िल औफ़ाक़ वल आमाल" में है। अगर वह व्यक्ति वज़ू में था, तो यह पानी वज़ू के योग्य रहना चाहिए, भले ही उसने यह आदेश के पालन में किया हो "जब तुमसे धोने को कहा जाए तो धो लो" (अरबी: वा इज़ा इस्तग़सलतुम फ़ग़सिलू) और नीयत कुर्बत की हो। विचार करें और हमारे लेख "अत-तर्स अल-मुअद्दल" में प्रयुक्त जल की शर्तों को देखें। (156) दुल्हन को ब्याह कर लाएं तो मुस्तहब (पसंदीदा) है कि उसके पैर धोकर घर के चारों कोनों में छिड़कें; इससे बरकत होती है। यह पानी भी वज़ू के योग्य रहना चाहिए अगर दुल्हन वज़ू में थी या नाबलिग थी, क्योंकि यह और पिछला कार्य सामान्य कार्यों की श्रेणी में हैं न कि इबादत (पूजा) की श्रेणी में, चाहे नीयत कुर्बत की ही क्यों न हो। वल्लाहू तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)। (157) मासिक धर्म (हैज़) या प्रसवोपरांत रक्तस्राव (निफ़ास) वाली स्त्री ने रक्त रुकने से पहले बिना नीयत कुर्बत के स्नान किया, यह पानी भी वज़ू के योग्य है। (158) पुरुष के वज़ू और स्नान (ग़ुस्ल) से बचा हुआ पानी बिना किसी कराहत (नापसंदगी) के पवित्रता के योग्य है, चाहे स्त्री उस पानी से पवित्रता प्राप्त करे; इसके विपरीत (स्त्री का बचा हुआ पानी पुरुष द्वारा उपयोग करना) मकरूह (नापसंद) है जैसा कि पहले बताया गया है। (159) कुछ दवाएं धोकर (मग़सूल) इस्तेमाल की जाती हैं जैसे याकूत, शादनज, हजर-ए-अरमनी, गुल-ए-अरमनी, लक, तूतिया, शंजरफ़, मर्दा संग आदि। इन्हें बारीक पीसकर पानी में मिलाते हैं जो धूल की तरह पानी में मिल जाता है, या जिसमें कंकड़ हो उसे फेंक दिया जाता है। अब इस धूल मिले पानी को ढक कर रखें जब तक कि धूल नीचे बैठ जाए और पानी से अलग हो जाए। उस समय पानी निथार कर दवा प्रयोग में लाएं। यह पानी भी वज़ू के योग्य है अगर इसे बिना वज़ू के हाथ न लगा हो। (160) हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मू-ए-मुबारक (पवित्र बाल) या जुब्बा मुकद्दसा (पवित्र चोगा) या नअल शरीफ़ (पवित्र चप्पल)... [शेष अगले पृष्ठ पर]

(۱۴۹) چیک صاف کرنے کو آم یا کسی قسم کے پھل دھوئے۔ (۱۵۰) تختی دھوئی اور سیاہی سے پانی گاڑھا نہ ہوا۔ (۱۵۱) پکا فرش گرد و غبار سے پاک کرنے کو دھویا اگر چہ مسجد کا بہ نیت قربت۔ (۱۵۲) نا سمجھ بچے نے وضو کیا۔ (۱۵۳) نابالغ کو نہلایا۔ (۱۵۴) گھوڑے وغیرہ کسی جانور کو نہلایا اگر چہ ان دونوں سے نیت ثواب کی ہو جبکہ ان تینوں کے بدن پر کوئی نجاست نہ ہو یہ سب پانی قابلِ وضو ہیں۔ (۱۵۵) دفع نظر کے لئے نظر لگانے والے کے بعض اعضاء دھو کر چشم زدہ کے سر پر ڈالنے کا حکم ہے جس کا مفصل بیان ہماری "کتاب منتھی الآمال فی الاوفاق والاعمال" میں ہے وہ اگر باوضو تھا یہ پانی قابلِ وضو رہنا چاہئے اگر چہ اس نے یہ امتثالِ امر "و اذا استغسلتم فاغسلوا" (اگر تم سے دھونے کا مطالبہ کیا جائے تو دھو ڈالو۔ ت) نیت قربت کی ہو تامل وراجع ما قررنا من شرائط الاستعمال في رسالتنا الطرس المعدل (غور کرو اور ہم نے اپنے رسالہ الطرس المعدل میں پانی کے مستعمل ہونے کی جو شرائط بیان کی ہیں ان کی طرف رجوع کرو۔ ت) (۱۵۶) دلہن کو بیاہ کر لائیں تو مستحب ہے کہ اس کے پاؤں دھو کر مکان کے چاروں گوشوں میں چھڑکیں اس سے برکت ہوتی ہے یہ پانی بھی قابلِ وضو رہنا چاہئے اگر دلہن باوضو یا نابالغہ تھی کہ یہ اور اس کا سابق از قبیلِ اعمال ہیں نہ از نوع عبادات اگر چہ نیت اتباع نہیں قربت کر دے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۱۵۷) حائض و نفسا نے قبل انقطاعِ دم بے نیت قربت غسل کیا یہ پانی بھی قابلِ وضو ہے۔ (۱۵۸) مرد کے وضو و غسل سے جو پانی بچا قابلِ طہارت بلا کراہت ہے اگر چہ عورت اس پانی سے طہارت کرے، بخلاف عکس کہ مکروہ ہے کما تقدم۔ (۱۵۹) بعض دوائیں مغسول استعمال کی جاتی ہیں جیسے یا قوت و شادنج و حجر ارمنی و گلِ ارمنی و لک و توتیا و شنجرف و مرد اسنج وغیرہا کہ خوب باریک پیس کر پانی میں ملاتے ہیں جو غبار سا ہو کر پانی

میں مل جائے یا جس میں سنگریزہ رہے پھینک دیا جائے اب یہ آبِ غبار آمیز ڈھانک کر رکھ چھوڑیں یہاں تک کہ وہ غبار تہ نشین ہو کر پانی سے جدا ہو جائے اُس وقت پانی نتھار کر دوا استعمال میں لائیں یہ پانی بھی قابلِ وضو ہے اگر بے وضو ہاتھ نہ لگا ہو۔ (۱۶۰) حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا موئے مبارک یا جبہ مقدسہ یا نعل شریف یا

Fatawa Razawiyya, Volume II

The water in which the blessed bowl was washed for the purpose of seeking blessings is suitable for wudu, even if there was an intention of gaining spiritual proximity in it. However, (1) it should not be poured on the feet as it is contrary to etiquette. If it is flowed over the face, the wudu of the face is accomplished; by merely mentioning their pure name, the heart's wudu is achieved. Peace and blessings of Allah be upon him, his family, and companions, and upon his noble son, the Ghaus-ul-Azam (Great Helper), and Allah Almighty knows best. Praise be to Allah, the origin of these pure waters began with Zamzam, rather it originated from that sacred water which gushed forth from the blessed fingers of the luminous Master of the World (peace and blessings be upon him) with perfect mercy, and its culmination reached the water with which the noble relics of the Prophet were washed, becoming a fountainhead and storehouse of sublime blessings. All praise is for Allah, the Lord of all worlds, and may Allah's peace and blessings be upon our Master and Leader, his family, and all his companions. Amen.

Category Two: Those [waters] from which wudu is not valid. (161) Impure water. (162) Used water, which is discussed in detail in our treatise 'Al-Tars al-Mu'addal'. (163 to 165) Rose water, Keora water, Bed-mushk water; it is stated in Al-Hidaya and Al-Khaniya: [Arabic]: 'Not with rose water' - Similarly in Khazanat al-Muftin from Sharh Majma' al-Bahrayn. And in Al-Sa'diyya, along with rose water, Indian water (chicory water), willow water, and their likes are counted. [Urdu]: Not with rose water - And similarly in Khazanat al-Muftin from Sharh Majma' al-Bahrayn. And in Al-Sa'diyya, along with rose water, chicory water, willow water, etc., were also included. (T)

It is stated in Munya and Ghunya: [Arabic]: Ritual purity (is not permissible) with rose water and other flowers. [Urdu]: Ritual purity is not permissible with rose water and other flower waters. (T)

(166) Borage water, Aniseed water, Nightshade water, etc. Wudu is not permissible with any distilled water. The text from 'Al-Bahr' has been mentioned previously in [page] 11 regarding water obtained through distillation from a tongue...

---

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on things with which wudu is not permissible, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/21.
2. Al-Sa'diyya.

3. Ghunyat al-Mustamli, Chapter explaining the rulings of water, Sohail Academy Lahore, p. 89. Page 597 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

तबर्रुक (बरकत) के लिए जिस पानी में पवित्र प्याला (कासा-ए-मुतहरा) धोया गया हो, वह वुज़ू के काबिल है, चाहे उसमें क़ुर्बत (पुण्य प्राप्ति) का इरादा भी हो। हाँ (१) पैरों पर न डाला जाए कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। अगर चेहरे पर बहाया गया तो चेहरे का वुज़ू हो गया; उनका पाक नाम लेने से दिल का वुज़ू हो जाता है, अल्लाह तआला उन पर और उनके आल व असहाब पर दुरूद ओ सलाम भेजे और उनके नेक बेटे ग़ौस-ए-आज़म पर भी, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अलहम्दुलिल्लाह, इन पाक पानियों की इब्तिदा (शुरुआत) ज़मज़म शरीफ़ से हुई बल्कि उस पवित्र जल से हुई जो हुज़ूर सय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक उँगलियों से कामिल रहमत के साथ फूट पड़ा था, और इसका इंतहा (अंत) उस पानी पर हुआ जिससे हुज़ूर के मुबारक आसार (निशानियों) को धोकर उच्च बरकतों का स्रोत और ख़ज़ाना बना। तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, और हमारे आका व मौला और उनके आल व असहाब पर दुरूद ओ सलाम। आमीन।

किस्म दोम: जिनसे वुज़ू सही नहीं। (१६१) नापाक पानी। (१६२) मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) पानी, जिसका बयान हमारे रिसाले 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' में तफ़सील (विस्तार) से है। (१६३ से १६५) गुलाब, केवड़ा, बेद-मुश्क; हिदाया और ख़ानिया में है: [अरबी]: 'गुलाब के पानी से नहीं' - और इसी तरह ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह मजमउल बहरैन से है। और सादिया में गुलाब के पानी के साथ मा-उल-हिंद (कासनी का अर्क), मा-उल-ख़िलाफ़ (बेद का अर्क) और इनके जैसों को शुमार किया गया है। [उर्दू]: गुलाब के पानी से नहीं - और इसी की तरह ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह मजमउल बहरैन से है और सादिया में गुलाब के पानी के साथ अर्कए-हिंदबा (कासनी), अर्कए-खिलाफ वग़ैरह को भी शुमार किया। (त)

मुनिया और गुनिया में है: [अरबी]: तहारत-ए-हुकमिया (गुलाब के पानी) और अन्य फूलों के पानी से (जायज़ नहीं है)। [उर्दू]: तहारत-ए-हुकमिया गुलाब और दूसरे फूलों के पानी से जायज़ नहीं है। (त)

(१६६) अर्कए-गाओज़बान, अर्कए-बादियान, अर्कए-अनबुस्सआलब वग़ैरह जितने अर्क कशीद (आसवित) किए जाते हैं, किसी से वुज़ू जायज़ नहीं। और अल-बहर की इबारत पहले गुज़र चुकी है उस पानी के बारे में जो कशीदगी (आसवन) के ज़रिए हासिल किया जाता है...

1. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल उन चीज़ों के बयान में जिनसे वुज़ू जायज़ नहीं, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/२१
2. अल-सादिया
3. गुनियातुल मुस्तमली, फ़स्ल पानी के अहकाम के बयान में, सुहैल एकेडमी लाहौर, पेज ८९ पेज ५९७ / ७११

کاسہ مطہرہ تبرک کیلئے جس پانی میں دھویا قابل وضو ہے اگرچہ اس میں قصدِ قربت بھی ہوا۔ ہاں (۱) پاؤں پر نہ ڈالا جائے کہ خلاف ادب ہے اگر منہ پر جاری کیا منہ کا وضو ہوگیا ان کا تو نام پاک لینے سے دل کا وضو ہو جاتا ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وعلٰی الہ وصحبہ وبارک وسلم و علی ابنہ الکریم الغوث الاعظم واللہ سبحنہ تعالٰی اعلم۔ الحمد اللہ ان پاک پانیوں کی ابتداء زمزم شریف بللاکہ اُس آب اقدس سے ہوئی جو انگشتانِ مبارک حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم سے بکمالِ رحمت جوش زن ہوا اور انتہا اس پانی پر ہوئی جو حضور کے آثار شریفہ کو دھو کر برکاتِ عالیہ کا منبع و مخزن ہوا و الحمد للہ رب العالمین و صلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولانا و الہ وصحبہ اجمعین آمین۔

قسم دوم جن سے وضو صحیح نہیں۔ (۱۶۱) آب نجس۔ (۱۶۲) مستعمل کہ ہمارے رسالہ الطرس المعدل میں جس کا بیان مفصل۔ (۱۶۳ تا ۱۶۵) گلاب کیوڑا بید مشک، ہدایہ وخانیہ میں ہے: لاء ماء الورد[1] اھ۔ ومثله في خزانة المفتين عن شرح مجمع البحرين وعد في السعديه مع ماء الوردماء الهند باوماء الخلاف واشباهها[2]۔ نہ گلاب کے پانی سے اھ اور اسی کی مثل خزانہ المفتین میں شرح مجمع البحرین سے ہے اور سعدیہ میں گلاب کے پانی کے ساتھ عرق ہندبا، عرقِ خلاف وغیرہ کو بھی شمار کیا۔ (ت) منیہ وغنیہ میں ہے: (لایجوز)الطهارة الحكميه(بماء الورد) وسائر الازهار[3]۔ طہارتِ حکمیہ گلاب اور دوسرے پھولوں کے پانی سے جائز نہیں ہے۔ (ت) (۱۶۶) عرق گاؤزبان وعرق بادیان وعرق عنب الثعلب وغیرہ جتنے عرق کشید کئے جاتے ہیں کسی سے وضو جائز نہیں

وتقدمت في ۱۱۱ عبارة البحر في الماء الذي يؤخذ بالتقطير من لسان

1 فتاویٰ ہندیہ فصل فیما لا یجوز بہ التوضو نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۱ 2 السعدیہ 3 غنیہ لمستملی فصل فی بیان احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۹ Page 597 of 711

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 2

Al-Thaur[1] and the wording of 'Al-Durr': "And extracted from plants through distillation."[2] (The text of Bahr regarding the water extracted from Borage (Gao-zaban) through the process of distillation; and in Durr, it is stated that the water of herbs extracted through distillation has been mentioned on page 111. - Translator's note)

(167 & 168) Chicory water and Black Nightshade water, even if they are filtered such that the dense components are separated and they become more dilute and fine. Such was the speech of Sa'di Effendi.

(169) The water extracted from Saffron; and the speech of Al-Ghunya has preceded on page 125. (And the speech of Ghunya passed on page 125. - Translator's note)

(170 to 179) The essence of melon, watermelon, wood-apple, cucumber, apple, quince, pomegranate, gourd, and other fruits, which is extracted or squeezed from them. Likewise, sugarcane juice, and especially the water found inside green coconuts which was not formed by melting but was water from the start.

(180) Even more noteworthy is the water of which it has been heard that in some vast deserts near the Equator, where water is not found for long distances, a type of watermelon grows under the sand which contains enough water to satisfy a rider and his horse. If Mercy has provided such a means for human life in a waterless desert, it is not far-fetched. However, even if that water is clear like pure water and there is nothing else in that watermelon, it is still not valid for ablution (Wudu) because it is the water of a fruit and does not fall under the category of absolute water (Ma'e Mutlaq). As for the Wudu for it, by the praise of Allah, that general mercy is available which, by the charity of Siddiqa daughter of Siddiq, the beloved of the Beloved of the Lord of the worlds (Jalla wa Ala and may Allah Almighty bless him and her and grant them peace), is available for every Muslim everywhere, which is:

Perform Tayammum with clean earth. The earth has been made a mosque and a purifier for me.[3] I say: (1) From this it appears that 'pressing' (I'tisaar) has no contrary implication, although some elders have argued from it that Wudu is permissible with water dripping from grapes, as will follow. And Allah Almighty knows best.

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/69. [2] Al-Durr al-Hukkam by Mawla Khusraw, Discussion on Water, Al-Alamiya, Beirut, 1/23. [3] Jami' al-Bukhari, Kitab al-Tayammum, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/48.

फतावा-ए-रजविया, जिल्द 2

अल-थौर[1] और 'अल-दुरर' के शब्द: "और आसवन (distillation) के माध्यम से पौधों से निकाला गया।"[2] (बहर की इबारत उस पानी के बारे में जो आसवन की प्रक्रिया से गाओज़बान से निकाला जाए; और दुरर में है कि जड़ी-बूटियों का पानी जो आसवन से निकाला जाए, पृष्ठ 111 में गुजर चुका है। - अनुवादक)

(167 और 168) कासनी का पानी और मकोह का पानी, भले ही वे साफ़ किए गए हों ताकि भारी हिस्से अलग हो जाएं और वे अधिक पतले और सूक्ष्म हो जाएं। सादी अफ़ंदी का कथन यही है।

(169) वह पानी जो केसर से निकाला जाए; और अल-ग़ुनिया का कथन पृष्ठ 125 में बीत चुका है। (और ग़ुनिया का कथन पृष्ठ 125 में आया। - अनुवादक)

(170 से 179) खरबूजा, तरबूज, लकड़ी, खीरा, सेब, बही, अनार, कद्दू और अन्य फलों का अर्क जो उनसे निकलता है या निचोड़ कर निकाला जाता है। इसी तरह गन्ने का रस, और विशेष रूप से वह पानी जो कच्चे नारियल के अंदर होता है जो पिघल कर पानी नहीं बना बल्कि शुरू से ही पानी था।

(180) इससे भी अधिक ध्यान देने योग्य वह पानी है जिसके बारे में सुना गया है कि भूमध्य रेखा के पास कुछ विशाल रेगिस्तानों में, जहाँ दूर-दूर तक पानी नहीं मिलता, रेत के नीचे एक तरबूज निकलता है जिसमें इतना पानी होता है कि सवार और उसके घोड़े की प्यास बुझा दे। यदि रहमत ने बिना पानी वाले जंगल में मानव जीवन के लिए यह व्यवस्था की हो, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। लेकिन वह पानी चाहे शुद्ध पानी की तरह साफ़ हो और उस तरबूज में उसके अलावा कुछ न हो, फिर भी वज़ू के लिए योग्य नहीं है क्योंकि वह फल का पानी है और 'मा-ए-मुतलक़' (शुद्ध पानी) की श्रेणी में नहीं आता। जहाँ तक इसके लिए वज़ू का सवाल है, अल्हम्दुलिल्लाह वह आम रहमत मौजूद है जो सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, रब्बुल आलमीन के महबूब की महबूबा (जल्ला व अला और अल्लाह उन पर और उनके घर वालों पर दुरूद ओ सलाम भेजे) के सदक़े में हर मुसलमान के लिए हर जगह मौजूद है, जो कि है:

पाक मिट्टी से तयम्मुम करो। मेरे लिए ज़मीन को मस्जिद और पाक करने वाली बना दिया गया है।[3] मैं कहता हूँ: (1) इससे स्पष्ट होता है कि निचोड़ने (एहतिसार) का कोई विपरीत अर्थ नहीं है, हालांकि कुछ बड़ों ने इससे यह दलील दी है कि अंगूर से टपकने वाले पानी से वज़ू जायज़ है, जैसा कि आगे आएगा। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[1] अल-बहर अल-राइक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/69. [2] अद-दुररुल हुक्काम मुल्ला खुसरो, पानी पर चर्चा, अल-आलमिया, बेरूत, 1/23. [3] जामिउल बुखारी, किताबुत तयम्मुम, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/48.

الثور ۱ و لفظ الدرر والمستخرج من النبات بالتقطیر ۲ (بحر کی عبارت اس پانی کی بابت جو عملِ تقطیر سے گاؤ زبان سے نکالا جائے اور درر میں ہے کہ جڑی بوٹیوں کا پانی جو تقطیر سے نکالا جائے ۱۱۱ میں گزر چکی ہے۔ ت)

(۱۶۷ و ۱۶۸) آبِ کاسنی آبِ مکوہ اگرچہ مروق ہوں کہ اجزائے کثیفہ جدا ہو کر زیادہ رقیق و لطیف ہو جاتے ہیں و مر کلام سعدی افندی۔

(۱۶۹) وہ پانی کہ زعفران سے نکالا جائے و تقدم کلام الغنیہ فی ۱۲۵ (اور غنیہ کا کلام ۱۲۵ میں گزرا۔ ت)

(۱۷۰ تا ۱۷۹) خربوزہ، تربوز، لکڑی، کھیرا، سیب، بہی، انار، کدو وغیرہا میووں پھلوں کا عرق کہ ان سے نکلتا یا نچوڑ کر نکالا جاتا ہے، یوں ہی گنے کا رس اور بالخصوص وہ پانی کہ کچے ناریل کے اندر ہوتا ہے جو پگھل کر پانی نہ ہوا بلکہ ابتداء پانی ہی تھا۔

(۱۸۰) اس سے بھی زیادہ قابلِ تنبیہ وہ پانی ہے کہ سنا گیا خطِ استواء کے قریب بعض وسیع ریگستانوں میں جہاں دُور دُور تک پانی نہیں ملتا ریت کے نیچے ایک تربوز نکلتا ہے جس میں اتنا پانی ہوتا ہے کہ سوار اور اس کے گھوڑے کو سیراب کر دے رحمت نے بے آب جنگل میں حیاتِ انسان کا یہ سامان فرمایا ہو تو کیا دُور ہے مگر وہ پانی اگرچہ نتھرے خالص پانی کی طرح ہو اور اس تربوز میں اس کے سوا کچھ نہ ہو جب بھی قابلِ وضو نہیں کہ ثمر کا پانی ہے مائے مطلق کے تحت میں نہیں آسکتا۔ رہا وضو اس کیلئے بحمد اللہ وہ رحمتِ عامہ موجود ہے جو صدیقہ بنت

الصدیق محبوبۂ محبوبِ رب العالمین جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیہا وسلم کے صدقہ میں ہر مسلمان کے لئے ہر جگہ موجود ہے کہ

تیمموا صعیداً طیباً جعلت لی الارض مسجداً وطھوراً ۳ اقول:(۱) وھنالک یظھر ان الاعتصار لا مفھوم لہ وان احتج بہ بعض الکبراء علی جواز الوضوء بـ قاطر الکرم کما سیأتی و اللہ تعالیٰ اعلم۔ پاک مٹی سے تیمم کرو میرے لئے زمین مسجد اور پاک کرنے والی بنا دی گئی ہے۔ میں کہتا ہوں اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ اعتصار کا کوئی مفہوم مخالف نہیں اگرچہ بعض اکابر نے اس سے یہ استدلال کیا ہے کہ انگور سے ٹپکنے والے پانی سے وضو جائز ہے، کما سیأتی و اللہ تعالیٰ اعلم۔

۱ البحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۶۹ ۲ الدرر الحکام للمولی خسرو بحث الماء الکالمیہ بیروت ۱/۲۳ ۳ جامع للبحاری کتاب التیمم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۸

Fatawa Rizvia Volume 2

In Khaniyah and Hindiyyah: "Ablution is not permissible with the water of watermelon, cucumber, and gherkin." [1] And in Khazanat-ul-Muftin, from the commentary of Majma-ul-Bahrayn, instead of 'al-qathd', it is 'maa-ul-khiyar' (cucumber water). (T) [2]

In Munyah and Ghunyah: "(Purification with fruit water is not permissible) such as apples and the like." [3] And in Al-Jawharah, the water of gourd (Duba) is mentioned [4], and it will be discussed later. Purification with fruit water is not permissible, such as apples and similar items, and in Jawharah, the water of gourd is mentioned, and it will be discussed later. (T)

In Khaniyah: "Ablution is not permissible with fruit water." [5] Ablution with fruit water is not permissible. (T) Similarly, water that is extracted by crushing the branches or leaves of any tree. In Khazanat-ul-Muftin, from the commentary of Majma-ul-Bahrayn, it is stated: "Ablution is not permissible with the water of Al-Qadhban (cut branches)." [6] Ablution with the water of Qadhban (cut branches) is not permissible. (T) (183 to 185) Sweet pomegranate syrup, sour pomegranate syrup, grape syrup, and all other syrups made into a thick consistency; it is stated in Hidayah: "Ablution is not permissible with syrups." [7] (Ablution with syrups is not permissible. T)

[1] Fatawa Hindiyyah, Section on what is not permissible for ablution, Noorani Kutub Khana, Karachi, 1/21 [2] Fatawa Qazi Khan, Section on what is not permissible for ablution, Naval Kishore, Lucknow, 1/9 [3] Ghunyat-ul-Mustamli, Rulings on Water, Suhail Academy, Lahore, p. 88 [4] Al-Jawharat-un-Nayyirah, Discussions on Water, Imdadia, Multan, 1/12 [5] Fatawa Qazi Khan, Section on what is not permissible for ablution, Naval Kishore, Lucknow, 1/9 [6] Khazanat-ul-Muftin [7] Hidayah, Water with which ablution is permissible, Arabiya, Karachi, 1/8

फ़तावा रिज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

ख़ानिया व हिन्दिया में है: "तरबूज, ककड़ी और खीरे के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है।" [1] और ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह मज्मउल बहरैन के हवाले से 'अल-क़थद' की जगह 'माउल ख़ियार' (ककड़ी का पानी) लिखा है। (त) [2]

मुनिया व ग़ुनिया में है: "(फलों के पानी से पाकी हासिल करना जायज़ नहीं) जैसे सेब और उसके समान।" [3] और अल-जौहरा में कद्दू(दुबा) के पानी का ज़िक्र है [4], और यह आगे आएगा। फलों के पानी से पाकी जायज़ नहीं, जैसे सेब और उसके सदृश, और जौहरा में कद्दू के पानी का ज़िक्र किया गया है, और यह आगे आएगा। (त)

ख़ानिया में है: "फलों के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है।" [5] फलों के पानी से वज़ू जायज़ नहीं। (त) इसी तरह वह पानी जो किसी पेड़ की टहनियों या पत्तों को कूट कर निकाला जाए। ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह मज्मउल बहरैन से है: "क़ज़बान (कटी हुई टहनियों) के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है।" [6] क़ज़बान (कटी हुई टहनियों) के पानी से वज़ू जायज़ नहीं। (त) (183 से 185) मीठे अनार का शरबत, खट्टे अनार का शरबत, अंगूर का शरबत और अन्य जितने भी शरबत गाढ़े क़वाम में बनाए जाते हैं; हिदाया में है: "शरबतों से वज़ू जायज़ नहीं है।" [7] (शरबतों से वज़ू जायज़ नहीं। त)

[1] फ़तावा हिन्दिया, बाब उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नूरानी कुतुब ख़ाना, कराची, 1/21 [2] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, बाब उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9 [3] ग़ुनियतुल मुस्तमली, पानी के अहकाम, सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृ. 88 [4] अल-जौहरतुन नय्यिरा, पानी पर शोध, इमदादिया, मुल्तान, 1/12 [5] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, बाब उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9 [6] ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन [7] हिदाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अरबी, कराची, 1/8

पृष्ठ 599 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

خانیہ وہندیہ میں ہے: لا یجوز التوضوء بماء البطیخ والقثاء والقثد اھ ۱ وضوء جائز نہیں ہے خربوز، لکڑی اور کھیرے کے پانی سے اہ اور خزانتہ المفتین میں شرح مجمع البحرین سے قند (کھیرے) کے بجائے ماء الخیار (ککڑی کا پانی) ہے۔ (ت) ۲

منیہ وغنیہ میں ہے: (لا تجوز بماء الثمار) مثل التفاح وشبھه ۳ وذکر في الجوھرة ماء الدباء ٤ ویاتی۔ طہارت پھلوں کے پانی سے جائز نہیں، جیسے سیب اور اس کے مشابہ اھ اور جوہرہ میں ذکر کیا کدو کا پانی، اور یہ آئیگا۔ (ت)

خانیہ میں ہے: لا یجوز التوضوء بماء الفواکه ۵۔ پھلوں کے پانی سے وضو جائز نہیں۔ (ت) یونہی وہ پانی کہ کسی درخت کی شاخیں یا پتے کوٹ کر نکالا جائے۔ خزانتہ المفتین میں شرح مجمع البحرین سے ہے: لا یجوز الوضوء بماء القضبان ۶۔ قضبان (کٹی ہوئی شاخوں) کے پانی سے وضو جائز نہیں۔ (ت) (۱۸۳ تا ۱۸۵) شربت انار شیریں، شربت انار ترش، شربت انگور و غیر ہاجتنے شربت قوام میں بنائے جاتے ہیں ہدایہ میں ہے: لا یجوز بالاشربة ۷ (شر بتوں سے وضو جائز نہیں۔ ت)

۱ فتاوی ہندیہ فصل فیما لا یجوز به التوضوء نورانی کتب خانہ کراچی ۱/۲۱ ۲ فتاوی قاضی خاں فصل فیما لا یجوز به التوضوء نولکشور لکھنو ۱/۹ ۳ غنیۃ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۸ ۴ جوہرۃ نیرہ ابحاث الماء امدادیہ ملتان ۱/۱۲ ۵ فتاوی قاضی خاں فصل فیما لا یجوز به التوضوء نولکشور لکھنو ۱/۹ ۶ خزانتہ المفتین ۷ ہدایہ الماء الذی یجوز بہ الوضو عربیہ کراچی ۱/۸

Fatawa Razawiya Volume 2 In 'Inayah it is stated: like drinking pomegranate and rumex (a type of herb) juice. (T) In Shalabiya on At-Tabyin it is stated from Al-Mustasfa:

Table Content: Arabic text (Left): Drinks derived from trees like ribas (rhubarb/beet-like vegetable) drink and from fruits like pomegranate and grapes. It is stated in Ad-Durar after saying "what is squeezed from trees or fruits and not with water whose nature has changed by cooking, like ribas drink": and this phrasing is better than what was said "like drinks", because taking it in a general sense is problematic. Urdu text (Right): Juices obtained from trees like ribas juice (a vegetable like beetroot), and fruit juices such as grape and pomegranate juice. And in Ad-Durar, after the phrase "what is squeezed from trees or fruits etc.", it says: not with that water whose nature has changed due to cooking, like ribas juice. Their phrasing is this, and this phrasing is better than the saying "like drinks", because it is difficult to maintain it in a general sense. (T)

Lower Table Content: Arabic text (Left): I say: It is as you see (1) the text of Al-Hidayah, and the commentators have affirmed it. Similar is found in Mukhtasar al-Quduri, Al-Wafi, Al-Wiqayah, Al-Islah, Al-Multaqa, Al-Bada'i, Al-Khaniyah, Al-Khulasah, Sharh Majma' al-Bahrayn, Khizanat al-Muftin, Al-Ghaniyah, Al-Hindiyah and others which are almost countless (2). Glory be to Allah, why should I count the books when it is a clear text from the Imam of the school of thought? In Al-Jami' al-Saghir, Muhammad narrates from Yaqub from Abu Hanifa (may Allah be pleased with them) that wudu (ablution) should not be performed with any drinks except nabidh tamr (date juice). And I do not know... Urdu text (Right): I say, it is as you see, it is the text of Al-Hidayah and the commentators have maintained it. And similar to it is in Mukhtasar al-Quduri as well as in Wafi, Wiqayah, Islah, Multaqa, Bada'i, Khaniyah, Khulasah, Sharh Majma' al-Bahrayn, Khizanat al-Muftin, Ghaniyah and Hindiyah etc. in countless books. Glory be to Allah, why am I listing books? This is the clarification of the founder of the school of thought (Sahib-e-Mazhab), so in Jami' Saghir there is a report, Muhammad narrates from Yaqub that it is reported from Abu Hanifa that wudu should not be performed with any juice except nabidh tamr. And I do not understand what the problem is in its generality, and its...

Footnotes: 1 'Inayah with al-Fath, Water with which wudu is permissible etc. Arabic, Karachi 1/18 2 Shalabiya with At-Tabyin, Book of Purification, Amiriyah, Egypt 1/19 3 Durar al-Ahkam, Book of Purification, Dar as-Sa'adah, Egypt 1/23 4 Al-Jami' al-Saghir regarding what wudu is not permissible with, Yusufi, Lucknow p 8

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (द्वितीय) 'इनाया' में है: जैसे अनार और 'हुम्माज़' (एक प्रकार की घास) का रस। (त) 'शलबीया अल-तबयीन' में 'मुस्तस्फ़ा' से है:

तालिका सामग्री: अरबी पाठ (बायाँ): पेड़ों से प्राप्त पेय जैसे 'रीबास' (चुकंदर जैसी एक सब्जी) का पेय और फलों से जैसे अनार और अंगूर। और 'दुरर' में 'जो पेड़ों या फलों से निचोड़ा गया हो और उस पानी के साथ नहीं जिसका स्वभाव पकने से बदल गया हो जैसे रीबास का पेय' कहने के बाद है: और यह वाक्यांश उस कथन से बेहतर है जिसमें "पेयों की तरह" कहा गया है, क्योंकि इसे व्यापक अर्थ (उमूम) में रखना कठिन है। उर्दू पाठ (दायाँ): पेड़ों से प्राप्त अर्क(रस) जैसे रीबास (चुकंदर की तरह एक सब्जी) का अर्क और फलों का रस जैसे कि अंगूर और अनार का रस। और 'दुरर' में "पेड़ों या फलों से जो निचोड़ा गया हो" आदि के बाद है कि न उस पानी से जिसकी प्रकृति पकाने के कारण बदल गई हो जैसे रीबास का अर्क। उनका कथन यह है और यह कथन "पेयों की तरह" (क-अल-अशरबा) वाले कथन से बेहतर है, क्योंकि इसे सामान्यता (उमूम) पर रखना कठिन है। (त)

निचली तालिका सामग्री: अरबी पाठ (बायाँ): मैं कहता हूँ: वह वैसा ही है जैसा आप देख रहे हैं (1) हिदाया का पाठ है और टिप्पणीकारों ने इसे स्वीकार किया है। इसके समान 'मुख़्तसर अल-क़ुदूरी', 'अल-वाफ़ी', 'अल-विक़ाया', 'अल-इस्लाह', 'अल-मुल्तका', 'अल-बदाई', 'अल-खानीया', 'अल-खुलसा', 'शरह मजमा अल-बहरैन', 'खज़ानत अल-मुफ़्तीं', 'अल-ग़नीया', 'अल-हिंदिया' और अन्य में है जिनकी गणना लगभग असंभव है (2)। सुभान अल्लाह, मैं किताबें क्यों गिनूँ जबकि यह मज़हब के इमाम का स्पष्ट पाठ है? 'अल-जामे अल-सगीर' में मुहम्मद ने याकूब से, उन्होंने इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि 'नबीज़-ए-तम्र' (खजूर का अर्क) के अलावा किसी भी पेय से वज़ू नहीं किया जाएगा। और मुझे नहीं पता... उर्दू पाठ (दायाँ): मैं कहता हूँ वह जैसा कि आप देखते हैं हिदाया का मूल पाठ (नस्स) है और व्याख्याकारों (शुर्राह) ने इसे बरकरार रखा है और इसके समान मुख्तसर अल-कुदूरी में है तथा वाफी, वकाया, इस्लाह, मुल्तका, बदाइ, खानिया, खुलासा, शरह मजमा उल-बहरैन, खज़ानतुल मुफ़्तीं, गनिया और हिंदिया आदि अनगिनत किताबों में है। सुभान अल्लाह, मैं किताबें क्यों गिनवाऊँ यह तो मज़हब के इमाम (साहिब-ए-मज़हब) का स्पष्टीकरण है, चुनाँचे जामे सगीर में रिवायत है, मुहम्मद रिवायत करते हैं याकूब से कि अबू हनीफ़ा से रिवायत है कि नबीज़-ए-तम्र के सिवा किसी अर्क से वज़ू न किया जाए। और मैं नहीं समझता कि इसके सामान्य अर्थ (उमूम) में क्या समस्या (इश्काल) है, और इसके..

पाद-टिप्पणियाँ: 1 इनाया मा अल-फ़तह, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है आदि, अरबी, कराची 1/18 2 शलबीया मा अत-तबयीन, किताबुत तहारत, अमीरिया, मिस्र 1/19 3 दुरर अल-अहकाम, किताबुत तहारत, दार अस-सा'अदा, मिस्र 1/23 4 जामे अल-सगीर उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, यूसुफ़ी, लखनऊ पृ. 8

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی عنایہ میں ہے: کشرب الرمان والحماض (جیسے انار اور حماض (ایک قسم کی گھاس) کا پانی۔ت) شلبیہ علی التبیین میں مستصفٰی سے ہے:

جدول کے مندرجات: عربی متن (بائیں): الاشربة المتخذة من الشجر كشراب الريباس ومن الثمر كالرمان والعنب اهـ ووقع في الدرر بعد ما قال لابقاً اعتصر من شجر او ثمر ولا بماء زال طبعه بالطبخ كشراب الريباس مانصه وهذه العبارة احسن مما قيل كالأشربة فانه على عمومه مشكل اهـ اردو متن (دائیں): درختوں سے حاصل ہوئے عرق جیسے ریباس (چقندر کی طرح ایک سبزی) کا عرق، اور پھلوں کا رس جیسے کہ انگور اور انار کا رس۔ اور درر میں لابقا اعتصر من شجر او ثمر الخ کے بعد ہے کہ نہ اُس پانی سے جس کی طبیعت پکانے کی وجہ سے بدل گئی ہو جیسے ریباس کا عرق، ان کی عبارت یہ ہے اور یہ عبارت اِس قول سے بہتر ہے کہ کالاشربۃ، کیونکہ اس کو عموم پر رکھنا مشکل ہے اھ (ت)

جدول کے زیریں مندرجات: عربی متن (بائیں): اقول: هو كما ترى(۱) نص الهدايه واقره الشراح ومثله في مختصر القدورى والوافى والوقايه و الاصلاح والملتقى والبدائع والخانيه والخلاصة وشرح مجمع البحرين وخزانة المفتين والغنيه والهنديه وغير هما مما لا يكاد يحصى (۲) سبحن الله مالى اعد الكتب وهو نص صاحب المذهب ففى الجامع الصغير محمد عن يعقوب عن ابى حنيفة رضى الله تعالى عنهم لا يتوضو بشيئ من الاشربة غير نبيذ التمر اهـ ولا ادرى اردو متن (دائیں): میں کہتا ہوں وہ جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں ہدایہ کا نص ہے اور شراح نے اس کو برقرار رکھا ہے اور اس کی مثل مختصر القدوری میں ہے نیز وافی، وقایہ، اصلاح، ملتقی، بدائع، خانیہ، خلاصہ، شرح مجمع البحرین، خزانۃ المفتین، غنیہ اور ہندیہ وغیرہ لا تعداد کتابوں میں ہے سبحان اللہ، میں کتابیں کیوں گنواؤں؟ یہ تو صاحب مذہب کی تصریح ہے، چنانچہ جامع صغیر میں روایت ہے، محمد روایت

کرتے ہیں یعقوب سے ابوحنیفہ سے مروی ہے کہ سوائے نبیذ تمر کے کسی عرق سے وضو نہ کیا جائے اھ اور میں نہیں سمجھتا کہ اس کے عموم میں کیا اشکال ہے، اور اس کے

حواشی: 1 عنایہ مع الفتح الماء الذي یجوز به الوضوء الخ عربیہ کراچی ۱/ ۱۸ 2 شلبیہ مع التبیین کتاب الطہارت الامیریہ مصر ۱/ ۱۹ 3 درر الاحکام کتاب الطہارت دار السعادۃ مصر ۱/ ۲۳ 4 جامع الصغیر فیما لایجوز به التوضو یوسفی لکھنو ص ۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

There is no problem in its generality, and its reviewers like Al-Shurunbulali, Abdul Halim, and Al-Hasan Al-Ajimi did not comment on it. Al-Khadimi presented something that is insufficient. And Allah Almighty knows best. (T)

Annotation (Ah): He said that its generality is problematic because 'Ashriba' (drinks) is originally a name for everything that is drunk, so it includes things like date water etc. The intent here is to specify the extract of Ribas (rhubarb), as understood from the 'Clarification' (Al-Idah). So understand. (Ends).

I say (the author): Their remaining silent would have been better than this. The objective is to provide a general ruling and illustrate it with a specific case; it is not meant to restrict the discourse only to that specific case. In customary usage, 'Ashriba' refers to extracts obtained from fruits and trees; otherwise, water is also a drink. Allah Almighty says: "This is a place for bathing, cool and a drink." (Quran 38:42). There is no doubt that the ruling encompasses all of them. If you say that he (may Allah have mercy on him) leans towards the permissibility of performing ablution (wudu) with date-infusion (Nabidh al-Tamr) because he stated regarding the leftovers of a donkey: "One should perform wudu with it and tayammum if no other water is available, unlike Nabidh al-Tamr," since wudu can be performed with it according to Abu Hanifa, even though Abu Yusuf only holds the view of tayammum and Muhammad combines both. (Ends). (T)

I say: A problem only arises when the reason for its correctness is not apparent. It is not appropriate for someone who chooses one of two equal opinions to raise an objection against the other, let alone... (continued on next page)

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

इसकी व्यापकता में कोई समस्या नहीं है, और इसके समीक्षकों जैसे शुरनबुलाली, अब्दुल हलीम और अल-हसन अल-अजीमी ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है। और खादिमी ने बहुत सी बातें की हैं जो अपर्याप्त हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

व्याख्या 'अह': उन्होंने कहा कि इसकी व्यापकता समस्याग्रस्त है क्योंकि "अशरिबा" (पेय) मूल रूप से हर उस चीज़ का नाम है जिसे पिया जाता है, इसलिए इसमें खजूर का पानी आदि शामिल होगा। और यहाँ उद्देश्य रिबास (एक प्रकार का पौधा) के अर्क की विशिष्टता है, जैसा कि 'स्पष्टीकरण' (अल-इदाह) से समझा जाता है। अतः इसे समझें। (समाप्त)।

मैं कहता हूँ (लेखक): उनका चुप रहना इससे बेहतर था। उद्देश्य एक सामान्य नियम देना और उसे एक विशिष्ट मामले के साथ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना है; इसका उद्देश्य बातचीत को केवल उस विशिष्ट मामले तक सीमित करना नहीं है। आम बोलचाल में, "अशरिबा" फलों और पेड़ों से प्राप्त अर्क को ही कहा जाता है; अन्यथा पानी भी एक पेय है। अल्लाह तआला का फरमान है: "यह नहाने की ठंडी जगह है और एक पेय है।" (कुरान 38:42)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नियम उन सभी को शामिल करता है। यदि आप कहें कि वह (अल्लाह उन पर रहम करे) खजूर के नबीज़ से वज़ू की अनुमति की ओर झुके हुए हैं क्योंकि उन्होंने गधे के जूठे के बारे में कहा: "इससे वज़ू भी करें और तयम्मुम भी यदि अन्य पानी न हो, खजूर के नबीज़ के विपरीत," क्योंकि इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार इससे वज़ू किया जा सकता है, भले ही इमाम अबू यूसुफ़ केवल तयम्मुम के कायल हों और इमाम मुहम्मद दोनों को मिलाते हों। (समाप्त)। (त)

मैं कहता हूँ: समस्या केवल तभी उत्पन्न होती है जब उसकी सत्यता का कारण स्पष्ट न हो। दो बराबर कथनों में से एक को चुनने वाले के लिए दूसरे पर आपत्ति करना उचित नहीं है, और... (बाकी अगले पृष्ठ पर)

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

ای اشکال فی عمومه ولم یتکلم (۱) علیه ناظروه الشرنبلالی وعبدالحلیم والحسن العجیمی واتی الخادمی عه بما لایغنی واللہ تعالی اعلم۔ (ت) دیکھنے والوں نے اس پر کلام نہیں کیا جن میں شرنبلالی، عبدالحلیم اور حسن عجیمی شامل ہیں اور خادمی نے بہت سی باتیں کی ہیں جو بے نیاز نہیں کرتیں واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

عه: اذ قال انه علی عمومه مشکل اذالا شربة فی الاصل اسم لکل ما یشرب فشامل لنحو ماء التمر وغیره والمقصود ههنا الاختصاص بشراب الریباس کما فهم من الایضاح فافهم اھ انہوں نے فرمایا یہ اپنے عموم پر مشکل ہے کیونکہ "اشربہ" ہر اس چیز کا نام ہے جو پی جاتی ہے تو یہ کھجور وغیرہ کے پانی کو شامل ہوگا اور یہاں مقصود ریباس کے عرق کی تخصیص ہے جیسا کہ ایضاح سے مفہوم ہے، فافہم اھ

اقول: ترکهم (۲) التکلم احسن من هذا والمقصود اعطاء حکم عام وتمثیله بجزئی لا تخصیص الکلام بالجزئی والاشربة فی العرف هی هذه المتخذة من الثمار والاشجار والا فالماء ایضا شراب، اللہ تعالی کا ارشاد ہے هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ولا شك ان الحکم یعمها فان قلت هو رحمه اللہ تعالی یمیل الی جواز التوضی بنبیذ التمر لقوله فی سؤر الحمار (یتوضو به ویتیمم ان عدم غیره بخلاف نبیذ التمر) حیث یتوضو به عند ابی حنیفة وان قال ابو یوسف بالتیمم فقط ومحمد جمع بینهما اھ میں کہتا ہوں ان کا کلام نہ کرنا اس سے بہتر ہے اور مقصود عام حکم لگانا ہے اور مثال اس کی ایک جزئی سے دی گئی ہے کلام کو جزئی سے خاص کرنا مقصود نہیں، اور اشربہ عرف میں پھلوں اور درختوں سے حاصل شدہ عرقیات ہی کو کہتے ہیں ، ورنہ تو پانی بھی شراب ہے، اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ اور کوئی شک نہیں کہ حکم ان سب کو عام ہے، اگر تم کہو کہ وہ رحمہ اللہ نبید

تمر سے وضو کے جواز کی طرف مائل ہیں کیونکہ انہوں نے گدھے کے جھوٹھے کے بیان میں فرمایا (اس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی اگر اور پانی نہ ہو ، بخلاف نبیذ تمر کے) کیونکہ اس سے ابو حنیفہ کے نزدیک وضو کیا جاسکتا ہے اگرچہ ابویوسف صرف تیمم کے قائل ہیں ، اور امام محمد وضو اور تیمم دونوں کا قول کرتے ہیں۔ اھ (ت)

اقول: انما یستشکل مالا یظھر وجه صحته ولیس لمن یختار جانباً من قولین متساویین ان یستشکل علی الآخر فضلاً میں کہتا ہوں اشکال صرف اس وقت ہو گا جس کی وجہ صحت ظاہر نہ ہو اور وجود و برابر اقوال میں سے کسی ایک قول کو اختیار کرتا ہے اس کیلئے دوسرے (باقی بر صفحه آینده)

Fatawa Razawiya | Volume II (186 and 187) Every kind of vinegar and distilled liquid. (188) Kamah water, which is called Kamakh in Arabic with a fathah on the 'meem', and Murri with a shaddah on the 'ra' and 'ya' of relation; it is a thin sauce like broth that is made from ingredients such as yogurt and vinegar. It is more common in Isfahan. It is mentioned in Khaniyah, Khazanat al-Muftiin, and Sharh Majma' al-Bahrain: "Ablution with vinegar and Murri (broth) is not permissible. (Al-Hadith ends here). And vinegar has been mentioned in many books." (T) (189) Saltwater where salt is dissolved; there is a consensus on this. (190) Saltwater that turns into salt; there is disagreement on this, and the majority leans towards non-permissibility. (Remainder of the footnote from the previous page): | There is no problem with it, let alone someone who follows a weak opinion contrary to the majority. "Whoever chooses a weak opinion, abandoned by the majority—and Allah Almighty knows best the intention of His servant. Then I saw that Imam Abu al-Sa'ud quoted from Allama Nuh Afandi the same reason for the problem that I had pointed out in my statement that water is also 'sharab' (a drink). It did not please me to interpret the words of the 'Durar' in the same way. He said the reason for the problem is that 'ashribah' (drinks) includes extracts from things other than trees and fruits, as absolute water is also a 'sharab'. He said: 'Indeed, what he said is better because it is possible to interpret the statement as referring to drinks made from those two.' And you know (1) that such a thing is not worthy of mention, let alone applying the words of someone like Mawla Khusraw to it, then describing the interpretation as a possibility. And Allah is the one whose help is sought. 12 from him, may he be forgiven." (M) | He takes [the weak opinion]. Allah Almighty knows best the intent of His servant. Then I saw that Allama Abu al-Sa'ud quoted the reason for the problem from Nuh Afandi, the same one to which I had signaled in my statement that water is also called 'sharab'. And it seemed better to me to interpret the words of the 'Durar' similarly. He says the reason for the problem is that the word "ashribah" includes things other than the extracts of trees and fruits, because absolute water is also a 'sharab'. What they said is better because the phrasing can be interpreted as 'ashribah' referring to what is made from those two. And you know that this kind of interpretation is not even worth mentioning, let alone interpreting the words of Mawla Khusraw in this way, then characterizing the interpretation as a mere possibility. Allah is the Helper. | 12 from him, may he be forgiven (T)

---

1 Fatawa Qazi Khan, regarding that with which ablution is permissible, Naval Kishore, Lucknow 1/9 Page 602 of 711

फ़तावा रज़विया | जिल्द सानी (186 और 187) हर प्रकार का सिरका और मक़त्तर (आसुत तरल)। (188) आबे कामह जिसे अरबी में कामख़ (मीम पर फ़तह के साथ) और मुर्री (रा और या-ए-निसबती पर तशदीद के साथ) कहते हैं, शोरबे की तरह एक पतला सालन है जो दही और सिरके आदि के घटकों से बनता है, इस्फ़हान में इसका अधिक चलन है। खानिया, खज़ानतुल मुफ़्तीन और शरह मजमउल बहरैन में है: सिरका और मुर्री (शोरबा) से वुज़ू जायज़ नहीं है। अह। और सिरके का उल्लेख बहुत सी किताबों में है। (त) (189) नमक का पानी जिसमें नमक घुल गया हो, इस पर इजमा (आम सहमति) है। (190) नमक का पानी जो नमक बन जाता है, इसमें मतभेद है और अधिकांश का रुझान जायज़ न होने की ओर है। (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष): | इस पर कोई आपत्ति नहीं है, उस व्यक्ति की तो बात ही क्या जो बहुमत के विरुद्ध कमज़ोर राय को अपनाता है। "जो व्यक्ति बहुमत द्वारा त्यागी गई कमज़ोर राय चुनता है—और अल्लाह तआला अपने बंदे के इरादे को सबसे बेहतर जानता है। फिर मैंने देखा कि इमाम अबू सऊद ने अल्लामा नूह अफ़ंदी से उस समस्या का वही कारण उद्धृत किया जिसकी ओर मैंने अपने इस कथन से संकेत किया था कि पानी को भी 'शराब' (पेय) कहा जाता है। मुझे यह उचित नहीं लगा कि मैं 'दुरर' के कलाम की उसी तरह व्याख्या करूँ। उन्होंने कहा कि समस्या का कारण यह है कि 'अशरबा' (पेय पदार्थ) में पेड़ों और फलों के अलावा अन्य चीज़ों के सत्व भी शामिल हैं, क्योंकि शुद्ध पानी भी एक 'शराब' है। उन्होंने कहा: 'दरअसल उन्होंने जो कहा वह बेहतर है क्योंकि इबारत की ऐसी व्याख्या संभव है कि उन दोनों से बनाए गए पेय मुराद हों।' और आप जानते हैं (1) कि ऐसी चीज़ उल्लेख के योग्य भी नहीं है, मौला खुसरो जैसे व्यक्ति के कलाम को उस पर महमूल करना तो दूर की बात है, फिर उस व्याख्या को संभावना के तौर पर व्यक्त करना। और अल्लाह ही मदद करने वाला है। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।" (म) | वह ले लेता है। अल्लाह तआला अपने बंदे की मुराद (इच्छा) बेहतर जानता है। फिर मैंने देखा कि अल्लामा अबू सऊद ने नूह अफ़ंदी से वही वजह-ए-इश्काल (आपत्ति का कारण) नकल किया जिसकी तरफ मैंने अपने कौल से इशारा किया था कि पानी को भी 'शराब' कहते हैं। और मुझे अच्छा मालूम हुआ कि मैं इसी की मिसाल दुरर का कलाम करूँ। वह फ़रमाते हैं कि वजह-ए-इश्काल यह है कि 'अशरबा' का शब्द पेड़ों और फलों के अर्कियात के अलावा को भी शामिल है क्योंकि मुतलक पानी भी 'शराब' है। जो उन्होंने कहा है वह ज़्यादा अच्छा है क्योंकि इबारत की तौजीह यह हो सकती है कि 'अशरबा' से वह मुराद हैं जो उन दोनों से बनाए जाएँ। और आप जानते हैं कि इस किस्म की तावील ज़िक्र के क़ाबिल भी नहीं है, चह जाइके मौला खुसरो के कलाम को उस

पर महमूल किया जाए, फिर तौजीह को इमकान (संभावना) से ताबीर करना। वल्लाहुल मुस्तआन (अल्लाह ही मददगार है)। | 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)

---

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वुज़ू जायज़ है, नवल किशोर लखनऊ 1/9 पेज 602/711

فتاوٰی رضویہ | جلد ثانی (۱۸۶ اور ۱۸۷) ہر قسم کا سر کہ اور مقطر (۱۸۸) آب کامہ جسے عربی میں کامخ بفتح میم و مری بتشدید راویائے نسبت کہتے ہیں شور بے کی طرح ایک رقیق ناخورش ہے کہ دہی اور سرکے وغیرہ اجزاء سے بنتی ہے اصفہان میں اس کا زیادہ رواج ہے۔ خانیہ وخزانیۃ المفتین وشرح مجمع البحرین میں ہے: لایجوز الوضوء بالخل والبری ۱ اہ وقذ ذکر | سر کہ اور ناخورش (شوربا) سے وضو جائز نہیں اہ سر کہ کا ذکر الخل فی الکثیر۔ | بہت سی کتابوں میں ہے۔ (ت) (۱۸۹) نمک کا پانی کہ نمک بہ کر ہوتا ہے اس پر اجماع ہے۔ (۱۹۰) نمک کا پانی کہ نمک بن جاتا ہے اس میں اختلاف ہے اور اکثر کا رجحان عدم جواز کی طرف ہے (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) | پر کوئی اشکال نہیں، چہ جائیکہ وہ شخص جو ضعیف مخالف جمہور کو عمن یختار قیلا ضعیفاً مہجور الجمہور واللہ تعالیٰ | لیتا ہے واللہ تعالٰی اعلم بمرا د عبادہ پھر میں نے دیکھا کہ اعلم بمراد عبادہ ثم رأیت السیر ابا السعود نقل | علامہ ابوالسعود نے نوح آفندی سے وجہ اشکال وہی نقل کی جس کی عن العلامۃ نوح افندی وجہ الاشکال ما قد اشرت | طرف میں نے اپنے قول سے اشارہ کیا ہے کہ پانی کو بھی شراب الیہ بقولی الماء ایضا شراب ولم یعجبنی ان اجعل | کہتے ہیں اور مجھے اچھا معلوم ہوا کہ میں اسی کی مثل درر کا کلام مثلہ تفسیرا لکلام الدرر فقال وجھ الاشکال شمول | کروں وہ فرماتے ہیں وجہ اشکال یہ ہے کہ "اشربہ" کا لفظ درخت اور الاشربۃ لغیر المتخذۃ من الشجر والثمر اذا المطلق | پھلوں کے عرقیات کے علاوہ کو بھی شامل ہے کیونکہ مطلق پانی من الماء شراب قال وانما قال احسن لامکان توجیہ | بھی شراب ہے، جو انہوں نے کہا ہے وہ زیادہ اچھا ہے کیونکہ العبارۃ بان یقال ارادا لاشربۃ المتخذۃ منھما اہ | عبارت کی توجیہ یہ ہو سکتی ہے کہ "اشربہ" سے وہ مراد ہیں جو ان وانت تعلم (۱) ان مثل ھذا لایستاھل الذکر فضلا | دونوں سے بنائے جائیں اہ اور آپ جانتے ہیں کہ اس قسم کی تاویل عن حمل کلام مثل مولی خسرو علیہ ثم تعبیر (۲) | قابل ذکر بھی نہیں چہ جائیکہ مولی خسرو کے کلام کو اس پر محمول

التوجیہ بالامکان واللہ المستعان ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) | کیا جائے، پھر توجیہ کو امکان سے تعبیر کرنا، واللہ المستعان | ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

۱ فتاوٰی قاضی خان فیما یجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹ Page 602 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume 2 ...because it is contrary to the nature of water; water freezes in the cold, whereas this [saltwater mentioned] freezes in the summer and melts in the winter. It is mentioned in Tabyin al-Haqa’iq, Al-Bahr al-Ra’iq, and Bazzaziyya:

[Table Header] Arabic: Saltwater is not permissible [for wudu]; it freezes in summer and melts in winter, opposite to water[1]. Urdu: Wudu is not permissible with saltwater [which is formed by melting salt]; salt freezes in the summer and melts in the winter, contrary to water.

It is stated in Ghurar, Tanwir, and Durar:

[Second Table Header] Arabic: The wording is from Durar: (It is permissible to) i.e., perform wudu and ghusl with (water from which salt originates), as mentioned in Uyun al-Madhab; (not with saltwater) which results from the melting of salt, as mentioned in Al-Khulasa. Perhaps the difference is that the former remains on its original nature while the latter has changed into another nature. Urdu: The text is from Durar: Wudu and ghusl are permissible (with that water from which salt is formed). This is also in Uyun al-Madhab. (Not with saltwater) which is obtained by melting salt; this is also in Al-Khulasa. Probably the difference is that the first is situated on its original nature while the second is on another.

[Commentary Section] Arabic: Note: Al-Khadimi mentioned that an objection was raised based on ice and steam. I say: the illusion of 'change of nature' in ice can only occur to one who thinks that butter (ghee) in winter does not remain butter but changes into another essence. He said: the intended meaning is a nature that is not suitable for 'wateriness'. I say: the point of the objection is that water freezes [into ice] and becomes steam, and wudu is not performed with them. Then, when it melts or condenses, wudu becomes permissible because they return to their 'wateriness' as they were. Therefore, if the water that is about to become salt remained on its original nature as you say, wudu would not be permissible with it while it is salt, but when it melts, it would return to its first nature. So what is the difference between... Urdu: Al-Khadimi said that an objection has been raised regarding ice and steam. I say: the delusion of change in ice can only be said by one who has the suspicion that ghee does not remain ghee in winter, but its essence changes. He said, and the answer was given, that the intended meaning is that nature which is not appropriate for water. I say that the objection is that water freezes and becomes steam, so wudu is not performed with it, then when it melts and drips, wudu becomes permissible

because both of these become water. So the water that freezes and becomes salt, if according to you it remains on its original nature, then wudu would not be permissible while it is salt, and when it melts, it will return to its first nature. So what is the... (Continued on next page)

[1] Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyya, Bulaq, Egypt, 1/19. Page 603 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2 ...क्योंकि यह पानी की प्रकृति के विपरीत है; पानी ठंड में जमता है, जबकि यह [उल्लेखित खारा पानी] गर्मियों में जमता है और सर्दियों में पिघलता है। तबीन अल-हक़ाएक़, अल-बहर अल-राएक़ और बज़ाज़िया में है:

[तालिका शीर्षक] अरबी: नमक के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है; यह गर्मियों में जम जाता है और सर्दियों में पिघल जाता है, जो पानी के विपरीत है[1]। उर्दू: नमक के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है; नमक गर्मियों में जम जाता है और सर्दियों में पिघलता है, पानी के विपरीत।

ग़ुरर, तन्वीर और दुरर में है:

[दूसरा तालिका शीर्षक] अरबी: इबारत दुरर की है: (जायज़ है) यानी वज़ू और ग़ुस्ल (उस पानी से जिससे नमक बनता है), जैसा कि उयून अल-मज़ाहिब में है; (न कि नमक के पानी से) जो नमक के पिघलने से प्राप्त होता है, जैसा कि अल-खुलासा में है। शायद फ़र्क यह है कि पहला अपनी मूल प्रकृति पर रहता है और दूसरा दूसरी प्रकृति में बदल गया है। उर्दू: इबारत दुरर की है: वज़ू और ग़ुस्ल जायज़ है (उस पानी से जिससे नमक बना है)। यही उयून अल-मज़ाहिब में है। (न कि नमक के पानी से) जो नमक से पिघलकर प्राप्त होता है; यह ख़ुलासा में भी है। संभवतः अंतर यह है कि पहला अपनी मूल प्रकृति पर स्थित है और दूसरा दूसरी प्रकृति पर।

[टिप्पणी अनुभाग] अरबी: नोट: अल-खादिमी ने उल्लेख किया कि बर्फ और भाप के आधार पर एक आपत्ति उठाई गई थी। मैं कहता हूँ: बर्फ में 'प्रकृति के परिवर्तन' का भ्रम केवल उसे ही हो सकता है जो यह सोचे कि सर्दियों में घी घी नहीं रहता बल्कि किसी अन्य सार में बदल जाता है। उन्होंने कहा: अभिप्रेत अर्थ वह प्रकृति है जो 'जलीयता' के लिए उपयुक्त नहीं है। मैं कहता हूँ: आपत्ति का बिंदु यह है कि पानी जम कर बर्फ बनता है और भाप बन जाता है, और उनके साथ वज़ू नहीं किया जाता है। फिर, जब वह पिघलता है या संघनित होता है, तो वज़ू जायज़ हो जाता है क्योंकि वे वैसे ही 'जलीयता' में वापस आ जाते हैं जैसे वे पहले थे। इसलिए, यदि वह पानी जो नमक बनने वाला है, अपनी मूल प्रकृति पर बना रहता जैसा कि आपने कहा, तो नमक होने की स्थिति में उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा, लेकिन जब वह पिघलेगा, तो वह अपनी पहली प्रकृति में वापस आ जाएगा। तो इनके बीच क्या अंतर है... उर्दू: खादिमी ने कहा कि बर्फ और भाप से आपत्ति की गई है। मैं कहता हूँ कि बर्फ में परिवर्तन का भ्रम वही कह सकता है जिसे यह गुमान हो कि घी सर्दियों में घी नहीं रहता बल्कि उसकी माहिजत (सार) बदल जाती है। फ़रमाया, जवाब दिया गया है कि मुराद वह प्रकृति है जो पानी के

मुनासिब न हो। मैं कहता हूँ कि एतराज़ (आपत्ति) यह है कि पानी जम कर भाप बनता है तो उससे वज़ू नहीं किया जाता, फिर जब यह पिघलता है और टपकता है तो वज़ू जायज़ होता है क्योंकि ये दोनों पानी बन जाते हैं। तो जो पानी जम कर नमक हो जाता है, अगर आपके अनुसार वह अपनी मूल प्रकृति पर बाकी हो, तो नमक होने की स्थिति में उससे वज़ू जायज़ न होगा, और जब वह पिघलेगा तो अपनी पहली प्रकृति की तरफ वापस आ जाएगा, तो क्या... (शेष अगले पृष्ठ पर)

[1] तबीन अल-हक़ाएक़, किताबुल तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/19। पृष्ठ 603 का 711

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی کہ وہ طبیعتِ آب کے خلاف ہے پانی سردی سے جمتا ہے اور وہ گرمی میں جمتا جاڑے میں پگھلتا ہے۔ تبیین الحقائق وبحرالرائق وبزازیہ میں ہے :

لا یجوز بماء الملح وھو یجمد في الصیف ویذوب في الشتاء عکس الماء[1] ۔ نمک کے پانی سے وضو جائز نہیں، نمک گرمی میں جم جاتا ہے اور سردی میں پگھلتا ہے پانی کے برعکس۔

غرر و تنویر و درر ودرر میں ہے :

والنظم للدرر (یجوز ان) ای الوضوء والغسل بماء ینعقد به الملح) کذا في عیون المذاھب (لا بماء الملح) الحاصل بذوبان الملح کذا في الخلاصة ولعل الفرق ان الاول باق علی طبیعته الاصلیه والثاني انقلب عہ الی طبیعة عبارت درر کی ہے وضو اور غسل جائز ہے (اس پانی سے جس سے نمک بنا ہے) یہی عیون المذاہب میں ہے (نہ کہ نمک کے پانی سے) جو نمک سے پگھل کر حاصل ہوتا ہے، خلاصہ میں بھی ہے اور غالباً فرق یہ ہے کہ اوّل اپنی اصل طبیعت پر واقع ہے اور دوسرا دوسری

عہ قال الخادمي اورد الجمد والبخار اہ اقول توھم (۱) الانقلاب في الجمد انما یتأتی ممن یزعم ان السمن في الشتاء لا یبقی سمنا بل ینقلب ماھیة اخری قال واجب المراد الطبیعة غیر الملائمة للمائیه اہ اقول ومراد الایراد ان الماء یجمد ویصیر بخارا فلا یتوضو به ثم اذا ذاب ذاك وتقاطر ھذا جاز لعودھما الی المائیه کما کانا علیھا فلو ان الماء الذی سینعقد ملحاً کان باقیا علی طبیعة الاصلیه کما قلتم انما لا یجوز الوضوء به حین یصیر ملحاً فاذا ذاب فقد عاد الی طبیعة الاولی فما وجه الفرق بین خادمی نے کہا کہ جمد اور بخار سے اعتراض کیا گیا ہے اھ میں کہتا ہوں جمد میں انقلاب کا وہم یہ وہی کہہ سکتا ہے جس کو یہ گمان ہو کہ گھی سردیوں میں گھی نہیں رہتا ہے بلکہ اس کی ماہیت بدل جاتی

ہے فرمایا، جواب دیا گیا ہے کہ مراد وہ طبیعت ہے جو پانی کے مناسب نہ ہو اھ میں کہتا ہوں کہ اعتراض یہ ہے کہ پانی جم کر بخار بنتا ہے تو اس سے وضو نہیں کیا جاتا ہے ، پھر جب یہ پگھلتا ہے اور ٹپکتا ہے تو وضو جائز ہوتا ہے کیونکہ یہ دونوں پانی بن جاتے ہیں، تو جو پانی جم کر نمک ہو جاتا ہے اگر بقول آپ کے اپنی اصلی طبیعت پر باقی ہو تو اس سے نمک ہونے کی حالت میں وضو جائز نہ ہوگا، اور جب وہ پگھلے گا تو اپنی پہلی طبیعت کی طرف واپس آجائے گا تو جو

(باقی بر صفحہ آئندہ)

[1] تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ الامیریۃ ببولاق مصر ۱/ ۱۹ Page 603 of 711

Fatawa Razawiyya | Volume 2 Other [quote end], and the learned annotator objected to it: [saying] It has transitioned towards nature [quote end], on this, his annotator [said]: (Remaining footnote from the previous page) "What is about to solidify and what has already solidified" - what is the reason for the difference in this? "For if the intervention of transformation into another nature is harmful" - so if the change of water towards another nature causes a defect, then this "should be harmful in melted ice and in a rain-bearing cloud" - should be harmful in this ice which has melted and similarly in a flowing cloud. "The crux of the answer is that the harmful thing is the intervention of a nature that is incompatible with the nature of water" - and the summary of the answer is that the harmful thing is the interference of such a nature that is not suitable for the nature of water, "and this is in salt, unlike ice and vapor" - and this thing is in salt, contrary to ice and steam. [quote end] I say: (1) This point is clouded by the fact that "there is no difference between salty water about to become salt and actual salt except for fluidity and solidification" - I say this thing makes it unclear that what is the difference between salty water that is going to become salt and salt which is actually salt, except for flowing and solidifying, "and for this amount, there is no contrast between the two natures or incompatibility between them" - and both will not have an incompatibility, "How can it be, when at the verge of solidification, it possesses everything that salt has, except that it hasn't solidified yet, but it will solidify" - then when it is close to solidifying, it has all those characteristics which are in salt, except only that it has not solidified yet, now it will solidify "like ghee and honey in summer and winter" - like ghee and honey in heat and winter, "so how can it be said that the nature of saltiness is incompatible with the nature of that water?" - then how can it be said that the nature of salt is not suitable for that water? "If you say that by 'the nature of water' what is meant is liquidity and there is no doubt that solidification opposes it" - if this objection is made that the nature of water means liquidity and there is no doubt that solidification is opposite to it. I say: "then the objection returns concerning ice, for the contrast between liquidity and solidification is inherent to them, not due to what occurs to them from water or salt" - I say then the same objection will be there that in ice, the contrast between liquidity and solidification is intrinsic, not accidental that it happened because of water or salt, "so you must be cautious, and Allah Almighty knows best" - so it is necessary to ponder, and Allah Almighty knows best. Then I saw the mentioned answer in 'Al-Khadimi' for Dani Afandi, who said after it: "It is the nature of saltiness, so its water would be..." (Remainder on next page) 1 Durr Ghurar, Book of Purification, Dar al-Sa'ada, Egypt 21/1 Page 604 of 711

फ़तावा रज़विया | जिल्द दूसरी अन्य [उद्धरण समाप्त], और विद्वान टीकाकार ने इस पर आपत्ति जताई: [कहते हुए] यह प्रकृति की ओर स्थानांतरित हो गया है [उद्धरण समाप्त], इस पर उनके टीकाकार [ने कहा]: (पिछले पृष्ठ का शेष पाद-टिप्पणी) "जो जमने वाला है और जो जम चुका है" - इसमें अंतर का क्या कारण है? "यदि दूसरी प्रकृति में परिवर्तन का हस्तक्षेप दोष उत्पन्न करता है" - तो अगर पानी का दूसरी प्रकृति की ओर बदलाव दोष पैदा करता है, तो यह "बर्फ(जल्द) के पिघलने और बरसते बादलों में भी हानिकारक होना चाहिए" - इस बर्फ में भी हानिकारक होना चाहिए जो पिघल गई है और इसी तरह बहने वाले बादल में भी। "उत्तर का सारांश यह है कि हानिकारक वह है जो ऐसी प्रकृति का हस्तक्षेप हो जो पानी की प्रकृति के अनुकूल न हो" - और उत्तर का सारांश यह है कि हानिकारक ऐसी प्रकृति का हस्तक्षेप होना है जो पानी की प्रकृति के अनुकूल न हो, "और यह नमक में है, बर्फ और भाप के विपरीत" - और यह चीज़ नमक में है, बर्फ और भाप के विपरीत। [उद्धरण समाप्त] मैं कहता हूँ: (१) इस बात को यह चीज़ धुंधला कर देती है कि "नमक बनने वाले खारे पानी और वास्तविक नमक के बीच तरलता और जमावट के अलावा कोई अंतर नहीं है" - मैं कहता हूँ कि यह बात इसे अस्पष्ट बनाती है कि खारा पानी जो नमक बनने वाला है और नमक जो वास्तव में नमक है, उनके बीच बहने और जमने के अलावा क्या अंतर है, "और इस मात्रा के लिए, दोनों प्रकृतियों के बीच कोई विरोधाभास या अनुपयुक्तता नहीं होगी" - और दोनों में कोई अनुपयुक्तता नहीं होगी, "यह कैसे हो सकता है, जब जमने के कगार पर उसमें वे सभी गुण होते हैं जो नमक में होते हैं, सिवाय इसके कि वह अभी जमा नहीं है, लेकिन जम जाएगा" - फिर जब वह जमने के करीब होता है तो उसमें वे सभी गुण होते हैं जो नमक में होते हैं, बस इतना है कि वह अभी जमा नहीं है, अब जम जाएगा "जैसे गर्मी और सर्दी में घी और शहद" - जैसे गर्मी और सर्दी में घी और शहद, "तो यह कैसे कहा जा सकता है कि नमकीन प्रकृति उस पानी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है?" - तो यह कैसे कहा जा सकता है कि नमक की प्रकृति उस पानी के लिए उपयुक्त नहीं है? "यदि आप कहें कि 'पानी की प्रकृति' से तात्पर्य तरलता है और इसमें कोई संदेह नहीं कि जमावट उसका विरोध करती है" - यदि यह आपत्ति की जाए कि पानी की प्रकृति का अर्थ तरलता है और इसमें कोई संदेह नहीं कि जमावट इसके विपरीत है। मैं कहता हूँ: "फिर वही आपत्ति बर्फ के संबंध में आती है, क्योंकि तरलता और जमावट के बीच का विरोधाभास उनके लिए स्वाभाविक है, न कि पानी या नमक के कारण होने वाली किसी चीज़ की वजह से" - मैं कहता हूँ कि फिर वही आपत्ति होगी कि बर्फ में, तरलता और जमावट के बीच का अंतर मौलिक है, आकस्मिक नहीं कि वह पानी या नमक की वजह से हुआ हो, "इसलिए आपको सावधान रहना चाहिए, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है" -

इसलिए चिंतन करना आवश्यक है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। फिर मैंने दानी अफ़ंदी की 'अल-खादिमी' में उल्लेखित उत्तर देखा, जिसने इसके बाद कहा: "यह नमकीन प्रकृति है, अतः इसका पानी..." (बाकी अगले पृष्ठ पर) 1 दुरर ग़ुरर, किताबुत तहारत, दारुस साआदत, मिस्र २१/१ पृष्ठ 604 का 711

فتاوی رضویہ | جلد ثانی اخری اھ واعترضہ محشیہ العلامۃ طبیعت کی طرف منتقل ہو گیا اہ اس پر اس کے محشی (بقیہ حاشیہ صفحہ گذشتہ) ماسینعقد وماکان انعقد منعقد ہوگا اور جو منعقد ہو چکا ہے اس میں فرق کی کیا وجہ ہے تو اگر فان ضر تخلل الانقلاب الی طبیعۃ اخری پانی کا دوسری طبیعت کی طرف انقلاب خلل پیدا کرتا ہے تو یہ چیز فلیضر فی الجمد الذائب والسحاب الصائب اس جمد (برف) میں بھی مضر ہونی چاہئے جو پگھل گیا ہے اور اسی طرح بہنے والے بادل میں۔ وحاصل الجواب ان المضر تخلل طبیعۃ لاتناسب طبیعۃ الماء اور جواب کا حاصل یہ ہے کہ مضر ایسی طبیعت کا خلل انداز ہونا جو پانی کی طبیعت سے مناسب نہ ہو، وذلك فی الملح بخلاف الجمد والبخار اھ اور یہ چیز نمک میں ہے، بخلاف جمد اور بخار کے۔ اقول: (ا) ویکدرہ ان لیس بین ماء ملح سینعقد ملحا وبین الملح الا السیلان والجمود میں کہتا ہوں اس کو یہ چیز مکدر کرتی ہے کہ جو نمکین پانی نمک بننے والا ہے اور جو بالفعل نمک ہے اس میں سوائے سیلان (بہنے) اور جمد (جمنے) کے کیا فرق ہے؟ وبھذا لقدر لا یحصل تباین الطبیعتین وعدم التناسب بینھما اور دونوں میں عدم مناسبت بھی نہ ہوگی، کیف وھو حین ھو علی شرف الانعقاد فیہ کل ما فی الملح غیر انہ لم یجمد وسیحمد پھر جب وہ جمنے کے قریب ہوتا ہے تو اس میں وہ تمام خصوصیات ہوتی ہیں جو نمک میں ہوتی ہیں صرف اتنا ہے کہ وہ ابھی جما نہیں ہے اب جم جائیگا کالسمن والعسل فی الصیف والشتاء جیسے گھی اور شہد گرمی اور جاڑے میں، فکیف یقال ان الطبیعۃ الملحیہ لا تناسب طبیعۃ ذالك الماء تو یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ نمک کی طبیعت اس پانی کے مناسب نہیں؟ فانقلت المراد بطبیعۃ الماء ھي الرقۃ ولا شك ان الجمود یباینھا اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ پانی کی طبیعت سے مراد رقت (پتلا پن) ہے اور کچھ شک نہیں کہ جمود اس کے مخالف ہے۔ اقول: فیعود الایراد بالجمد فان التباین بین الرقۃ والجمود لذاتیھما لا لما یعرضانہ من ماء او ملح میں کہتا ہوں پھر وہی اعتراض

ہو گا کہ جمد میں تباین رقت اور جمود کا ذاتی ہے عارضی نہیں کہ پانی یا نمک کی وجہ سے ہو، فعليك بالتثبت والله تعالی اعلم تو غور کرنا لازم ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ ثم رأيت الجواب المذكور فی الخادمی للدانی افندی قال بعده پھر میں نے مذکور جواب دانی آفندی کی خادمی میں دیکھا جس نے اس کے بعد کہا وهی طبيعة الملحيه فيكون ماؤه (باقی بر صفحہ آئندہ) 1 درر غرر كتاب الطهارة دار السعادة مصر ۲۱/۱ صفحہ 604 از 711

Nuh Effendi has objected, as mentioned in "Sh" [commentary], that the phrasing of Al-Khulasa is: "If someone performs ablution with salt-water, it is not permissible." Then he quoted from Al-Bazzaziya and Az-Zaylai what we have previously mentioned, and said that the author of Al-Bahr and Al-Allama Al-Maqdisi maintained this view. Its meaning is the same, that ablution is absolutely not permissible with salt-water, whether it had solidified into salt and then melted, or not. And in my view, this is the correct position. [Abbreviated summary] (T)

I say: Salt is of several types. One is that moisture which boils out of a mountain or cave and solidifies, like Lahori, Indrani, and Sambhar salts. Initially, as long as it was not solidified, it was certainly like it [water]; once solidified and then melted, it no longer belongs to the category of water. Second, the frozen part of a salt sea; this is the water of some swift, intense, hot, and sharp springs such that when the sun's heat acts upon it, it solidifies from the edges while flowing water remains in the middle. Whatever falls into it becomes salt after a period of time. The disagreement is regarding this water.

[Arabic quote]: ...after melting, it is like the water of gold and silver, contrary to ice which, when it turns into water, is compatible with the nature of water. This was narrated by Sayyid Al-Azhari. I say: the refutation of this is clearer, for after melting, it will return only to its former state. Since according to you, it was on its original nature, it will be the same after melting. [12, from him, may he be forgiven] (M)

I saw in it after that, they said it is the nature of salt, so its water after melting will be like the water of gold and silver. Contrary to ice, when it becomes water, because it is suitable for the nature of water. This was narrated by Sayyid Al-Azhari. I say: the refutation of this is clearer because after melting, it will return only to its first state. Since according to you, it was on its original nature, it will be the same after melting. 12 from him, may he be forgiven. (T)

Footnote 1: Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/132.

नूह अफ़ंदी ने आपत्ति की है, जैसा कि "श" में है कि 'खुलासा' का कथन यह है कि यदि किसी ने नमक के पानी से वुज़ू किया तो वह जायज़ नहीं है। फिर उन्होंने 'बज़्ज़ाज़िया' और 'ज़ैलाई' से वही उद्धृत किया जो हमने पहले बयान किया और कहा कि 'साहब-ए-बहर' और 'अल्लामा अल-मक़दसी' ने इसे बरकरार रखा। इसका अर्थ वही है कि नमक के पानी से पूर्णतः वुज़ू जायज़ नहीं है, चाहे वह नमक बनकर फिर पिघला हो या नहीं। और मेरे अनुसार यही सही बात है। [संक्षिप्त सारांश] (त)

मैं कहता हूँ: नमक कई प्रकार के होते हैं। एक वह नमी जो पहाड़ या गुफा से जोश मार कर निकलती है और जम जाती है जैसे लाहौरी, इंद्रानी और सांभर नमक। प्रारंभ में जब तक जमी नहीं थी, निश्चित रूप से उसी [पानी] की तरह थी; जब जमकर पिघल जाए तो वह पानी की श्रेणी में नहीं रहती। दूसरा, नमक के समुद्र का जमा हुआ हिस्सा; यह कुछ तेज़, उग्र, गर्म और तीक्ष्ण चश्मों का पानी है कि जब सूर्य की गर्मी इसमें कार्य करती है तो यह किनारों से जम जाता है जबकि बीच में बहता पानी रहता है। इसमें जो चीज़ भी गिरती है वह एक समय के बाद नमक बन जाती है। मतभेद इसी पानी के बारे में है।

[अरबी पाठ]: ...पिघलने के बाद सोने और चाँदी के पानी की तरह होगा, बर्फ के विपरीत जब वह पानी बन जाए क्योंकि यह पानी की प्रकृति के अनुकूल है। इसे सैय्यद अल-अज़हरी ने उद्धृत किया। मैं कहता हूँ: इसका खंडन और भी स्पष्ट है क्योंकि पिघलने के बाद वह अपनी पहली स्थिति में ही लौटेगा। चूँकि आपके अनुसार वह अपनी मूल प्रकृति पर था, इसलिए पिघलने के बाद भी वैसा ही होगा। [१२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए] (म)

मैंने इसमें देखा उसके बाद उन्होंने कहा कि वह नमक की प्रकृति है तो उसका पानी पिघलने के बाद सोने चाँदी के पानी की तरह होगा। बर्फ के विपरीत जब वह पानी हो जाए क्योंकि यह पानी की प्रकृति के अनुकूल है। इसे सैय्यद अज़हरी ने उद्धृत किया। मैं कहता हूँ इस पर खंडन अधिक स्पष्ट है क्योंकि पिघलने के बाद वह पहली ही स्थिति की ओर लौटेगा और तुम्हारे निकट वह मूल प्रकृति पर था तो इसी तरह पिघलने के बाद होगा। १२ मिन्हु गुफ़िरा लहू (त)

पाद-लेख १: रद अल-मुह्तार, जल अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१३२।

نوح افندی نے اعتراض کیا ہے، جیسا کہ "ش" میں ہے کہ خلاصہ کی عبارت یہ ہے کہ اگر کسی نے نمک کے پانی سے وضو کیا تو جائز نہیں۔ پھر بزازیہ اور زیلعی سے انہوں نے وہی نقل کیا جو ہم نے بیان کیا اور فرمایا اس کو صاحب بحر اور علامہ مقدسی نے برقرار رکھا اس کا مفہوم وہی ہے کہ نمک کے پانی سے مطلقاً وضو جائز نہیں ہے خواہ نمک بن کر پھر پگھلا ہو یا نہ اور میرے نزدیک یہی صواب ہے اھ ملخصاً۔ (ت)

اقول: نمک اقسام ہے ایک وہ رطوبت کہ پہاڑ یا غار سے جوش کر کے نکلتی اور جم جاتی ہے جیسے نمک لاہوری واندرانی اور سانبھر یہ ابتداء جب تک بستہ نہ ہوئی تھی یقیناً اسی کی مانند ہے جب بستہ ہو کر پگھل جائے کہ وہ پانی کی نوع ہی سے نہیں، دوم دریائے نمک کا منجمد حصہ یہ بعض تیز و تند و حار و حاد چشموں کا پانی ہے کہ جب حرارت آفتاب اس میں عمل کرتی ہے کناروں کناروں سے جم جاتا ہے بیچ میں بہتا پانی رہتا ہے اس میں جو چیز پڑے ایک مدت کے بعد نمک ہو جاتی ہے اختلاف اسی پانی میں ہے۔

بعد الذوبان کماء الذھب والفضۃ بخلاف الجمد اذا انقلب ماء فانہ ملائم یطبع الماء اہ نقلہ السید الازھری اقول والرد علی ھذا اظھر فانہ لا ینقلب بعد الذوبان الا الی ما کان علیہ وقد کان عندکم علی طبیعتہ الاصلیہ فکذلك بعد الزوبان ۱۲ منہ غفرلہ (م)

میں دیکھا اس کے بعد انہوں نے کہا کہ وہ نمک کی طبیعت ہے تو اس کا پانی پگھلنے کے بعد سونے چاندی کے پانی کی طرح ہوگا۔ بخلاف جمد کے جب وہ پانی ہو جائے کیونکہ یہ پانی کی طبیعت کے مناسب ہے اھ اس کو سید ازہری نے نقل کیا۔ میں کہتا ہوں اس پر رد اظہر ہے کیونکہ

وہ پگھلنے کے بعد پہلی ہی حالت کی طرف لوٹے گا اور تمہارے نزدیک وہ اصل طبیعت پر تھا تو اسی طرح پگھلنے کے بعد ہوگا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳۲

In my view, if it was indeed water as it appears to be, then there should be no doubt about the permissibility of performing ablution (Wudu) with it. This is because water is water, whether it is sweet and pleasant or bitter and salty. It is mentioned in 'Al-Khaniyyah' that if one performs ablution with floodwater, it is permissible even if soil is mixed in it, as long as the water is dominant and fluid, whether it is sweet or salty (1). The fact that it freezes in summer and melts in winter does not make it something other than water. Freezing in winter and melting in summer are neither among the essential elements of water's nature nor among its conditions. These are rather characteristics that differ with different types; some are sweet and fresh, some are bitter and salty, some cause growth and provide irrigation, while others do neither. Sometimes, salt is formed from seawater through boiling (2), but this does not take away its water-like nature. Similarly, if some water separates due to the intensity of heat from the sun, it does not change its essence. This would suggest favoring what is in 'Ad-Durr' and 'Ad-Durar'. *However, due to the disagreement among jurists and the matter not being fully clear, I have prioritized the prohibitive evidence over the permissive one*. But it is surprising that Allamah Shurunbulali, in 'Maraqi al-Falah', reasoned the prohibition of melted salt by saying that it melts in winter and freezes in summer, and before it becomes salt, it is pure (2). And Allah Almighty knows best.

1. Fatawa Khaniyyah, known as Qazi Khan, chapter on things with which ablution is not permissible, Naval Kishore Lucknow, 1/9.
2. Maraqi al-Falah with At-Tahtawi, Book of Purification, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Karachi, p. 13.

फ़तावा रिज़विया - भाग दो

मेरे विचार में, यदि वह वास्तव में पानी ही था जैसा कि दिखाई देता है, तो उससे वज़ू की अनुमति में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। क्योंकि पानी तो पानी ही है, चाहे वह मीठा और सुहावना हो या खारा और कड़वा। 'अल-खानिया' में कहा गया है कि यदि कोई बाढ़ के पानी से वज़ू करता है, तो यह जायज़ है, भले ही उसमें मिट्टी मिली हो, बशर्ते कि पानी की मात्रा अधिक और पतला हो, चाहे वह मीठा हो या खारा (1)। यह बात कि वह गर्मियों में जम जाता है और सर्दियों में पिघल जाता है, उसे पानी के अलावा कुछ और नहीं बना देती। सर्दियों में जमना और गर्मियों में पिघलना न तो पानी के सार के मूल तत्वों में से हैं और न ही उसकी शर्तों में से। ये केवल ऐसे गुण हैं जो विभिन्न प्रकारों के साथ भिन्न होते हैं; कुछ मीठे और ताज़ा होते हैं, कुछ खारे और कड़वे, कुछ पौधों को उगाने और सिंचाई करने वाले होते हैं, जबकि अन्य ऐसा कुछ नहीं करते। कभी-कभी समुद्री पानी को उबालकर नमक बनाया जाता है (2), लेकिन यह उसे जल की प्रकृति से बाहर नहीं करता। इसी तरह, यदि सूर्य की गर्मी की तीव्रता के कारण कुछ पानी अलग हो जाता है, तो यह उसके सार को नहीं बदलता। यह 'अद-दुर्र' और 'अद-दुरर' में कही गई बात को प्राथमिकता देने का संकेत देता है। हालाँकि, फकीहों के बीच मतभेद होने और मामला पूरी तरह स्पष्ट न होने के कारण, मैंने अनुमति देने वाली दलील पर निषेध करने वाली दलील को प्राथमिकता दी है। लेकिन अल्लामा शरुनबुलाली पर आश्चर्य है कि उन्होंने 'मराकी अल-फलाह' में पिघले हुए नमक की मनाही का कारण यह बताया कि वह सर्दी में पिघलता है और गर्मी में जमता है, और नमक बनने से पहले वह पवित्र होता है (2)। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

1. फ़तावा खानिया, जिसे काज़ी खान के नाम से जाना जाता है, उन चीज़ों का अध्याय जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है, नवल किशोर लखनऊ, 1/9।
2. मराकी अल-फलाह मह अत-तहतावी, पवित्रता की पुस्तक, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कराची, पृष्ठ 13।

पृष्ठ 606 / 711

والذی یظھر لی انہ ان(1) کان ماء حقیقة کما ھو الظاھر فلا ینبغی الریب في جواز الوضوء به لان الماء ماء سواء کان عذبا فراتا او ملحا اجاجا وقد قال في الخانیة لوتوضأ بماء السیل یجوز وان خالطه التراب اذا کان الماء غالبا رقیقا فراتا کان او اجاجا 1 اھ(ا) وکونه یجمد صیفا ویذوب شتاء لا یجعله نوعاً آخر غیر الماء فلیس من ارکان ماھیة الماء ولا من شرائطھا الجمود شتاء و الذوبان صیفا و انما ھذه اوصاف تختلف باختلاف الاصناف ھذا عذب فرات وھذا ملح اجاج ھذا ینبت ویروی وھذا لا یفعل شیئا منه وقد یمکن(2) عقد الملح بماء البحر بالطبخ ولا یخرجه ھذا عن المائیة فکذا لو اجتزأ بعض المیاه لشدة حدته عن الطبخ بحرارة الشمس لم یکن فیه اختلاف الماھیة فھذا ربما یقضی لما في الدر والدرر بالترجیح لکن لما اختلفوا ولم یتبین الامر قدمت الحاظر علی المبیح ولکن العجب من العلامة الشرنبلالی علل فی المراقی المنع من ذائب الملح بما مرا نه یذوب شتاء ویجمد صیفاً ثم قال وقبل انعقاده ملحاً طھور 2 اھ واللہ تعالیٰ اعلم۔

میرے نزدیک اگر وہ حقیقتہً پانی ہی تھا جیسا کہ ظاہر ہے تو اس سے وضو کے جواز میں کوئی شک نہ ہونا چاہئے کیونکہ پانی تو پانی ہی ہے خواہ سخت میٹھا ہو یا سخت کڑوا ہو، خانیہ میں ہے اگر سیلاب کے پانی سے وضو کیا تو جائز ہے خواہ اس میں مٹی ملی ہوئی ہو جبکہ پانی غالب رقیق ہو، میٹھا ہو یا نمکین ہو اھ اور یہ بات کہ وہ گرمیوں میں جم جاتا ہے اور سردیوں میں پگھل جاتا ہے اس کو پانی کے علاوہ کوئی اور چیز نہیں بنا دیتا ہے کیونکہ جاڑوں میں جمنا گرمیوں میں پگھلنا نہ تو پانی کی ماہیت کے ارکان سے ہے اور نہ شرائط سے ہے اور یہ اوصاف ہیں جو قسموں کے اختلاف سے مختلف ہو جاتے ہیں، کوئی سخت میٹھا، کوئی سخت نمکین، کوئی اگانے والا اور سیراب کرنے والا ہوتا ہے اور کچھ بے فائدہ ہوتا ہے اور کبھی سمندری پانی کو ابال کر

نمک بنا لیا جاتا ہے مگر اس کا مطلب یہ نہیں کہ وہ پانی نہیں تھا، اسی طرح اگر کوئی پانی آفتاب کی گرمی سے گرم ہونے کی وجہ سے متجزی ہو گیا تو یہ اس کی ماہیت کو تبدیل نہیں کرتا، اس سے اس چیز کی ترجیح ظاہر ہوتی ہے جو در اور درر میں ہے لیکن فقہاء کے اختلاف کی وجہ سے میں نے منع کرنے والی دلیل کو مباح کرنے والی دلیل پر ترجیح دی ہے، مگر علامہ شرنبلالی پر تعجب ہے کہ انہوں نے مراقی الفلاح میں منع کی علت پگھلے ہوئے نمک میں یہ بتائی کہ وہ سردی میں پگھلتا اور گرمیوں میں جمتا ہے اور نمک بننے سے قبل وہ پاک ہوتا ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

1 فتاوٰی خانیہ المعروف قاضی خان فصل فیما لا یجوز التوضی نو لکشور لکھنئو ۹/۱ 2 مراقی الفلاح مع الطحطاوی، کتاب الطہارت نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۱۳

Fatawa Ridawiyya, Volume Two

(191) Sal ammoniac water that is obtained from its flowing. (192) Camphor water that is obtained from its melting; windy camphor, which is called Bhim Sain here, melts from the heat of the sun. (193) Camphor water that drips from the camphor tree when it is cut. (194) Naphtha water (with 'kasra') is an oily moisture with a strong scent that boils from certain grounds. (195) Kerosene oil is like naphtha water. In Bazaziyya: "Ablution with salt water is not permissible, and similarly naphtha water (a mineral oil)." (196) Zift (with 'kasra') is the resin of the male pine tree that does not bear fruit. (197) Rosin is the resin of the female pine tree that bears fruit. (198) Tar is the resin of a type of cypress tree. (199) Asphalt is a black moisture that boils from certain grounds or hot springs. (200) Bitumen of Judea is a fragrant, violet-colored moisture that emerges from certain rivers like asphalt. (201) Ambergris, according to one saying, is also a mineral moisture that later solidifies due to the heat of the sun, etc. (202) Mumiyayi (Mummy-substance) (203) Shilajit, both of these are resins of stones and are initially fluid, and all these are in the sense of naphtha water (mineral oil). (204) Resin of neem and other trees. (205) In the spring season, water drips by itself from the grapevine; there is a difference of opinion regarding this, and the preferred view is that ablution with it is not permissible.

[Table Content] Left: In Al-Hidayah: (Ablution is not permissible with what is squeezed out from trees and fruits) because it is no longer absolute water, and when absolute water is unavailable, the ruling shifts to Tayammum (dry ablution). As for the water which... Right: In Hidayah: (Ablution is not permissible with the water that has been squeezed from trees and fruit) because it is no longer absolute water, and when there is no absolute water, the command then shifts to Tayammum.

---

1. Fatawa Bazaziyya with Al-Alamgiriyya, section on Used, Absolute, and Restricted water, Noorani Kutub Khana Peshawar 10/1. Page 607 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द-सानी (भाग दो)

(१९१) नौसादर का पानी जो इसके बहने से प्राप्त होता है। (१९२) कपूर का पानी जो इसके पिघलने से प्राप्त होता है; रियाही कपूर जिसे यहाँ भीम सैनी कहते हैं, धूप की गर्मी से पिघल जाता है। (१९३) कपूर का पानी जो कपूर के पेड़ को काटते समय उससे टपकता है। (१९४) आबे नफ़्त (न के नीचे जेर के साथ) एक तेलीय नमी है जिसकी गंध तेज़ होती है और जो कुछ ज़मीनों से उबलती है। (१९५) मिट्टी का तेल आबे नफ़्त के समान है। बज़ाज़िया में है: "नमक के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है, और वैसे ही आबे नफ़्त (एक खनिज तेल) से।" (१९६) ज़फ़्त (ज़ के नीचे जेर के साथ) नर सनोबर के पेड़ का रस है जो फल नहीं देता। (१९७) रातियान्ज मादा सनोबर के पेड़ का रस है जिसमें फल आता है। (१९८) क़तरान एक प्रकार के सरो (सरू) के पेड़ का रस। (१९९) क़ीर एक काली नमी है जो कुछ ज़मीनों या गर्म चश्मों से उबलती है। (२००) फ़क़ुल यहूद एक खुशबूदार बैंगनी रंग की नमी जो क़ीर की तरह कुछ नदियों से निकलती है। (२०१) अम्बर कि यह भी एक मत के अनुसार एक खनिज नमी है जो बाद में सूरज की गर्मी आदि से जम जाती है। (२०२) मोमियाई (२०३) सलाजीत ये दोनों पत्थरों के रस हैं और शुरुआत में तरल होते हैं, और ये सब आबे नफ़्त (खनिज तेल) के अर्थ में हैं। (२०४) नीम आदि पेड़ों का रस। (२०५) बसंत के मौसम में अंगूर की बेल से खुद-ब-खुद पानी टपकता है, इसमें मतभेद है और सही यही है कि उससे वज़ू जायज़ नहीं है।

[तालिका सामग्री] बायां (अरबी): अल-हिदाया में है: (उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जो पेड़ों और फलों से निचोड़ा गया हो) क्योंकि यह पूर्ण जल (मा-ए-मुतलक़) नहीं है, और पूर्ण जल की अनुपस्थिति में आदेश तयम्मुम की ओर स्थानांतरित हो जाता है। रहा वह पानी जो... दायां (उर्दू): हिदाया में है (वज़ू उस पानी से जायज़ नहीं जो पेड़ और फल से निचोड़ा गया हो) क्योंकि वह मुतलक़ पानी नहीं रहा, और जब मुतलक़ पानी न हो तो फिर हुक्म तयम्मुम की तरफ मुंतकिल हो जाता है।

---

1. फ़तावा बज़ाज़िया मअ आलमगीरी, बाब: मुस्तअमल, मुतलक़ और मुक़य्यद पानी, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १०/१। पेज ६०७ ऑफ़ ७११

فتاویٰ رضویہ ، جلد ثانی

(۱۹۱) نوشادر کا پانی کہ اس کے بہنے سے حاصل ہوتا ہے۔ (۱۹۲) آبِ کافور کہ اس کے پگھلنے سے حاصل ہو ریاحی کافور جسے یہاں بھیم سینی کہتے ہیں دھوپ کی گرمی سے پگھل جاتا ہے۔ (۱۹۳) آبِ کافور کہ درخت کافور کاٹتے وقت اس سے ٹپکتا ہے۔ (۱۹۴) آبِ نفط بالکسر ایک روغن رطوبت تیز رائحہ ہے کہ بعض زمینوں سے ابلتی ہے۔ (۱۹۵) مٹی کا تیل مثلِ آبِ نفط ہے۔ بزازیہ میں ہے: ماء الملح لا یجوز الوضوء بہ وکذا ماء النفط (نمک کے پانی سے وضو جائز نہیں، اور ایسے ہی ماء النفط (ایک معدنی تیل) سے۔ت) (۱۹۶) زفت بالکسر درخت صنوبر نر کا مد جو پھل نہیں دیتا۔ (۱۹۷) راتیانج درخت صنوبر مادہ کا مد جس میں پھل آتا ہے۔ (۱۹۸) قطران ایک قسم کا درخت سرو کا مد۔ (۱۹۹) قیر ایک سیاہ رطوبت کہ بعض زمینوں یا گرم چشموں سے ابلتی ہے۔ (۲۰۰) فقر الیہود ایک بودار رطوبت بنفشی رنگ کہ مثلِ قیر بعض دریاؤں سے نکلتی ہے۔ (۲۰۱) عنبر کہ یہ بھی ایک قول میں ایک معدنی رطوبت ہے بعد کو حرارتِ آفتاب وغیرہ سے منجمد ہو جاتی ہے۔ (۲۰۲) مومیا ئی (۲۰۳) سلاجیت یہ دونوں پتھر کے مد ہیں اور ابتدا میں سیال ہوتے ہیں وکل ذلک فی معنی ماء النفط (یہ سب ماء النفط (ایک معدنی تیل) کے معنی میں ہیں۔ت) (۲۰۴) نیم وغیرہ درختوں کا مد (۲۰۵) موسمِ بہار میں انگور کی بیل سے خود بخود پانی ٹپکتا ہے اس میں اختلاف ہے اور راجح یہی ہے کہ اُس سے وضو جائز نہیں۔

[باکس کا متن] بائیں کالم (عربی): فی الہدایۃ (لا یجوز بما اعتصر من الشجر والثمر) لانہ لیس بماء مطلق والحکم عند فقدہ منقول الی التیمم اما الماء الذی دائیں کالم (اردو): ہدایت میں ہے (وضو اس پانی سے جائز نہیں جو درخت اور پھل سے نچوڑا گیا ہو) کیونکہ وہ مطلق پانی نہیں رہا، اور جب مطلق پانی نہ ہو تو پھر حکم تیمم کی طرف منتقل ہو جاتا ہے

1 فتاویٰ بزازیہ مع العالمگیری نوع فی المستعمل والمطلق والمقید نورانی کتب خانہ پشاور ۱۰/۱

Fatawa Razvia, Volume II

[Arabic Text Column] It (water) drops from the vine, so it is permissible to perform wudu with it because it is water that comes out without any treatment (squeezing). This is mentioned in 'Jawami' Abi Yusuf' (may Allah Almighty have mercy on him). In 'Al-Kitab', there is an indication of this where 'squeezing' (i'tisar) was made a condition. This was affirmed in 'Al-Inayah', 'Al-Fath', and others. The author of 'Al-Majma' followed this in his commentary. In 'At-Tabyin', it is stated that if it comes out without treatment, its mixture is not complete, so wudu with it is permissible like the water that drips from the vine. The researcher in 'Al-Fath' followed this. Sadr al-Shariah said, and Ibn Kamal Pasha followed him in his 'Idah', that whatever drips from a tree, wudu with it is permissible. This is the choice of Imam Al-Asbijabi as mentioned in the sixth rule of the third chapter. Al-Allama Al-Tamartashi included it in his text, saying: '(Wudu is) not (permissible) with plant juice, unlike what drips from the vine by itself.' Al-Muhaqqiq Al-Ala'i mentioned a strange point in his commentary, adding 'or fruits' after 'from the vine'. I have not seen this from anyone else; the majority are against its permissibility and have explicitly stated so.

[Urdu Text Column] In any case, the water that drips from a grapevine is permissible for wudu because it came out without any human effort. This was mentioned in 'Jawami' Abi Yusuf' (may Allah Almighty have mercy on him) and there is an indication in the 'Book' where the condition of squeezing is mentioned. This was maintained in 'Inayah', 'Fath', etc., and the author of 'Majma' followed it in his commentary. It is mentioned in 'Tabyin' that if sap comes out without processing, its mixing will not be complete and wudu with it is permissible like water dripping from a grapevine. The researcher in 'Fath' followed this and Sadr al-Shariah said, and Ibn Kamal Pasha followed him in his 'Idah', that water dripping from a tree is permissible for wudu. This is the preferred view of Imam Asbijabi as will appear in the sixth rule of the third chapter. Allama Tamartashi included this in the text and said it is not permissible with grass sap, unlike the water that drips from a grapevine on its own. (T) And Al-Muhaqqiq Al-Ala'i said a very strange thing in his commentary, i.e., after 'from grapevine' he added 'or fruits', I have not found this in anyone else's words.

Note: Its support has already passed in 180, so remember. 12 Minhu Ghafarahu (M)
Note: Its support has already passed, see page 180. 12 Minhu Ghafarahu (T)

Footnotes: 1. Hidayah, Chapter: Water which is permissible and which is not, Arabic Press Karachi, 1/16. 2. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purity, Al-Amiriyah Press Bulaq

Egypt, 1/20. 3. Sharh al-Wiqayah, (Water) with which wudu is not permissible, Al-Maktaba al-Rashidiya Delhi, 1/84. 4. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Delhi, 1/42.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

[अरबी पाठ स्तंभ] यह (पानी) अंगूर की बेल से टपकता है, अतः इससे वूज़ू करना जायज़ है क्योंकि यह ऐसा पानी है जो बिना किसी बाहरी दबाव (निचोड़ने) के निकला है। इसका उल्लेख इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) की 'जवामे' में है। 'अल-किताब' में भी इसकी ओर इशारा है जहाँ निचोड़ने (एतेसार) की शर्त रखी गई है। इसे 'अल-इनाया', 'अल-फ़तह' और अन्य ग्रंथों में स्वीकार किया गया है। 'अल-मजमा' के लेखक ने अपनी व्याख्या में इसका अनुसरण किया है। 'अत-तबीयन' में उल्लेख है कि यदि यह बिना प्रक्रिया के निकलता है, तो इसका मिश्रण पूर्ण नहीं होता, इसलिए इससे वूज़ू जायज़ है जैसे कि अंगूर की बेल से टपकने वाला पानी। 'अल-फ़तह' के शोधकर्ता ने इसका पालन किया। सद्रुश-शरिया ने कहा, और इब्न कमाल पाशा ने अपनी 'ईज़ाह' में उनका अनुसरण किया, कि जो कुछ भी वृक्ष से टपकता है, उससे वूज़ू जायज़ है। यह इमाम अल-अस्बीजाबी का पसंदीदा मत है जैसा कि तीसरे अध्याय के छठे नियम में उल्लेख है। अल्लामा अत-तमरताशी ने इसे अपने मूल पाठ में शामिल किया और कहा: 'पौधों के रस के साथ (वूज़ू जायज़) नहीं है, उस पानी के विपरीत जो अंगूर की बेल से स्वतः टपकता है।' शोधकर्ता अल-अलाई ने अपनी व्याख्या में एक विचित्र बात कही है, उन्होंने 'अंगूर की बेल से' के बाद 'या फलों से' जोड़ दिया है। मैंने इसे किसी और के यहाँ नहीं देखा; बहुमत इसकी मनाही पर है और उन्होंने स्पष्ट रूप से ऐसा कहा है।

[उर्दू पाठ स्तंभ] बहरहाल, वह पानी जो अंगूर की बेल से टपकता है उससे वूज़ू जायज़ है क्योंकि वह बिना किसी मानवीय प्रयास के निकला है। इसका ज़िक्र 'जवामे अबी यूसुफ़' (रहमतुल्लाह अलैह) में किया गया और किताब में इसकी ओर इशारा है जहाँ निचोड़ने की शर्त का उल्लेख है। इसे 'इनाया', 'फ़तह' आदि में बरकरार रखा गया और मजमा के लेखक ने इसकी व्याख्या में इसका अनुसरण किया। 'तबीयन' में उल्लेख है कि यदि प्रक्रिया के बिना अर्क निकलता है, तो इसका मिश्रण पूरा नहीं होगा और इससे वूज़ू जायज़ है जैसे अंगूर की बेल से टपकने वाला पानी। 'फ़तह' के शोधकर्ता ने इसका अनुसरण किया और सद्रुश-शरिया ने कहा, और इब्न कमाल पाशा ने अपनी 'ईज़ाह' में उनका अनुसरण किया, कि पेड़ से टपकने वाले पानी से वूज़ू जायज़ है। यह इमाम अस्बीजाबी का पसंदीदा विचार है जैसा कि तीसरे खंड के छठे नियम में आएगा। अल्लामा तमरताशी ने इसे पाठ में शामिल किया और कहा कि घास के रस के साथ जायज़ नहीं है, उस पानी के विपरीत जो अंगूर की बेल से खुद-ब-खुद टपकता है। (त) और शोधकर्ता अल-अलाई ने अपनी व्याख्या में एक बहुत ही अजीब

बात कही, यानी 'अंगूर की बेल से' के बाद उन्होंने 'या फलों' को जोड़ा, मैंने इसे किसी और के शब्दों में नहीं पाया।

नोट: इसका समर्थन 180 में पहले ही आ चुका है, इसलिए याद रखें। 12 मिन्हु गफ़रहु (म) नोट: इसका समर्थन पहले ही गुज़र चुका है, देखिए पृष्ठ 180। 12 मिन्हु गफ़रहु (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वूज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, अरबी प्रेस कराची, 1/16. 2. तबीयन अल-हकाइक, पवित्रता की पुस्तक, अल-अमीरिया प्रेस बुलाक मिस्र, 1/20. 3. शरह अल-विक़ाया, (पानी) जिससे वूज़ू जायज़ नहीं है, अल-मकतबा अल-रशीदिया दिल्ली, 1/84. 4. दुर्रे मुख्तार, जल अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/42.

يقطع من الكرم فيجوز التوضى به لانه ماء يخرج من غير علاج ذكره في جوامع ابي يوسف رحمه الله تعالى وفى الكتاب اشارة اليه حيث شرط الاعتصار ١ اه واقره في العناية والفتح وغيرهما وتبعه صاحب المجمع في شرحه وفى التبيين ان كان يخرج من غيرعلاج لم يكمل امتزاجه فجاز الوضوء به كالماء الذى يقطر من الكرم ٢اه وتبعه المحقق في الفتح وقال صدرالشريعة وتبعه ابن كمال باشا في ايضاحه اماما يقطر من شجر فيجوز به الوضوء ٣ اه وهو اختيار الامام الاسبيجابى كما يأتى في سادس ضوابط الفصل الثالث وادخله العلامة التمرتاشى في متنه فقال لا بعصير نبات بخلاف ما يقطر من الكرم بنفسه ٤اه واغرب المدقق العلائى فى شرحه فزاد بعد قوله من الكرم او الفواكه و لم اره لغيره و الجمهور على المنع و نصواعه

بہر حال وہ پانی جو انگور کی بیل سے ٹپکتا ہے اس سے وضو جائز ہے کہ وہ بغیر عمل کے نکلا ہے اس کو جوامع ابی یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ میں ذکر کیا اور کتاب میں اس کی طرف اشارہ ہے کہ

اس میں نچوڑ کی شرط ہے اھ اور اس کو عنایہ اور فتح وغیرہ میں برقرار رکھا اور صاحب مجمع نے اس کی شرح میں اس کی متابعت کی اور تبیین میں ہے کہ بغیر عمل کے اگر عرق نکل آئے تو اس کا امتزاج پورا نہ ہوگا اور اس سے وضو جائز ہے جیسے انگور کی بیل سے ٹپکنے والا پانی اھ محقق نے فتح میں اس کی پیروی کی اور صدر الشریعہ نے فرمایا ابن کمال پاشا نے اپنی ایضاح میں اس کی پیروی کی فرمایا جو پانی درخت سے ٹپکتا ہے اس سے وضو جائز ہے اھ اور وہ امام اسپیجابی کا مختار ہے جیسا کہ تیسری فصل کے چھٹے ضابطہ میں آئیگا اور علامہ تمرتاشی نے اس کو متن میں داخل کیا اور فرمایا گھاس کے عرق سے جائز نہیں بخلاف اس پانی کے جو انگور کی بیل سے خود بخود ٹپکتا ہے اھ (ت) اور مدقق علائی نے اپنی شرح میں بڑی عجیب بات کہی یعنی یہ کہ من الکرم کے بعد انہوں نے "او الفواکہ " کا اضافہ کیا، میں نے ان کے علاوہ کسی اور کے کلام میں

عه: وقد مر تأييده في ١٨٠ فتذكر ١٢ منہ غفرلہ (م) اس کی تائید گزر چکی ہے ملاحظہ ہو ١٨٠۔ ١٢ منہ غفرلہ (ت)

١ ہدایتہ باب الماء الذی یجوبہ و مالا یجوز مطبع عربیہ کراچی ١/١٦ ٢ تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبع الامیر یہ بولاق مصر ١/٢٠ ٣ شرح الوقایہ مالا یجوز بہ الوضوء المکتبہ الرشیدیہ دہلی ١/٨٤ ۴ درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ١/۴٢

Fatawa Razawiyya, Volume 2

The most appropriate, apparent, and cautious view is that performing ablution (Wudu) with water extracted from trees or fruits is not permissible, whether it flows out naturally or is squeezed out. According to the majority of scholars, this is prohibited. In "Al-Kafi," "Ibn al-Shalabi on al-Zaylai," and "Al-Anqarawiyya," it is stated that one should not perform Wudu with the liquid that flows from grapevine branches because it is completely mixed with the plant's essence. This is mentioned in "Al-Muhit." There is also an opinion that it is permissible because it emerged without human action. However, "Al-Khaniya" states that Wudu is not valid with the liquid that emerges from grapevines in the spring season. "Shams al-A'imma al-Halwani" also mentions this. In "Al-Hilya," it is stated that the apparent view is this. Then it repeats that this is the most appropriate view. In "Al-Ghuniya," it is said to be the most cautious view. In "Ghuniya Dhawi al-Ahkam," it is stated as the most apparent view, as also mentioned in "Al-Burhan." According to "Nur al-Idah," Wudu is not permissible with water from trees or fruits even if it comes out on its own without squeezing. "Maraqi al-Falah" uses this to avoid the claim that Wudu is permissible with water that drips out naturally, because its natural emergence does not negate the restriction or change the status of its name. In "Al-Durr," it is stated that this is the most apparent view as in "Al-Shurunbulaliyya" from "Al-Burhan," and "Al-Quhistani" relies on this, stating that squeezing covers both literal and figurative senses.

Footnotes: 1. Hashiyah al-Shalabi on Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyya, Bulaq, Egypt, 2/11. 2. Qazi Khan on what is not permissible for Wudu, Naval Kishore, Lucknow, 1/9. 3. Hilya. 4. Ghunyat al-Mustamli, Rulings on Waters, Suhail Academy, Lahore, p. 92. 5. Ghunyat Dhawi al-Ahkam, Commentary on al-Durr, Book of Purification, Al-Kulliyya Press, Beirut, 3/21. 6. Nur al-Idah, Book of Purification, Ilmiyya, Lahore, p. 3. 7. Maraqi al-Falah, Book of Purification, Al-Amiriyya, Bulaq, Egypt, p. 12.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

सबसे उपयुक्त, स्पष्ट और एहतियाती राय यह है कि पेड़ों या फलों से निकलने वाले पानी से वुज़ू (शुद्धि) करना जायज़ नहीं है, चाहे वह प्राकृतिक रूप से निकले या निचोड़ने पर। अधिकांश विद्वानों के अनुसार, यह वर्जित है और स्पष्ट किया गया है कि यही राय सबसे उचित, स्पष्ट और सुरक्षित है। "अल-काफी", "इब्न अल-शालबी अली अल-ज़ैलई", और "अल-अनक़रवीय्या" में उल्लेख है कि अंगूर की बेलों से बहने वाले तरल पदार्थ से वुज़ू नहीं करना चाहिए क्योंकि यह पूरी तरह से पौधे के सत्व के साथ मिश्रित होता है। इसका उल्लेख "अल-मुहीत" में किया गया है। एक राय यह भी है कि यह जायज़ है क्योंकि यह मानवीय हस्तक्षेप के बिना निकला है, लेकिन "अल-खनिया" के अनुसार वसंत ऋतु में अंगूर की बेलों से निकलने वाले पानी से वुज़ू जायज़ नहीं है। "शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी" ने भी इसका उल्लेख किया है। "अल-हिलिया" में है कि ज़ाहिर तौर पर यही राय सही है। फिर इसे दोहराया गया कि यही सबसे उपयुक्त है। "अल-गुनिया" में इसे सबसे सुरक्षित (अहवत) कहा गया है। "गुनिया ज़वी अल-अहकाम" और "अल-बुरहान" में भी इसे सबसे स्पष्ट (अज़हर) बताया गया है। "नूर अल-ईदाह" के अनुसार पेड़ों या फलों के पानी से वुज़ू जायज़ नहीं है, भले ही वह बिना निचोड़े खुद निकल आए। "मराक़ी अल-फ़लाह" में उस राय से बचा गया है जो कहती है कि प्राकृतिक रूप से निकलने वाले पानी से वुज़ू जायज़ है, क्योंकि बिना निचोड़े निकलने से उसकी असलियत या नाम नहीं बदलता। "अल-दुर्र" और "अल-क़ुहिस्तानी" ने भी इसी राय पर भरोसा किया है।

पादलेख: 1. हाशिया अल-शलबी अली तबीन अल-हक़ाएक़, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 2/11। 2. काज़ी ख़ान उन चीज़ों पर जिनसे वुज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9। 3. हिलिया। 4. गुनियात अल-मुस्तमली, पानी के अहकाम, सुहैल अकादमी, लाहौर, पृष्ठ 92। 5. गुनियात ज़वी अल-अहकाम, अल-दुर्र पर हाशिया, किताबुत तहारत, मतबअ अल-कुल्लीय्या, बेरूत, 3/21। 6. नूर अल-ईदाह, किताबुत तहारत, इल्मिय्या, लाहौर, पृष्ठ 3। 7. मराक़ी अल-फ़लाह, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, पृष्ठ 12।

पृष्ठ 609 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

انہ الاوجہ الاظہر الاحوط ففی الکافی ۱ ثم ابن الشلبی ۲ علی الزیلعی والانقرویۃ ۳ لایتوضوء بماء یسیل من الکرم لکمال الامتزاج ذکرہ فی المحیط ۱ اہ وفی الخانیۃ ۲ لابالماء الذی یسیل من الکرم فی الربیع وکذا ذکرہ شمس الائمۃ الحلوانی ۱ اہ وفی الحلیۃ ۳ والظاہر انہ اوجہ اہ ثم اعاد فقال الظاہر انہ الاوجہ ۵ اہ وفی الغنیۃ ۶ ھوالاحوط ۴ اہ وفی غنیۃ ذوی الاحکام ھوالاظہر کما فی البرھان ۱۰ ۵ وفی نور الایضاح ۱۱ لا یجوز بماء شجر وثمر ولو خرج بنفسہ من غیر عصر فی الاظہر ۱ اہ وفی مراقی الفلاح ۱۲ احترز بہ عما قیل انہ یجوز بمایقطر بنفسہ لانہ لیس لخروجہ بلا عصر تاثیر في نفي القید وصحۃ نفی الاسم عنہ ۱ اہ وفی الدر ۱۳ ھوالاظہر کما فی الشرنبلالیۃ عن البرھان واعتمدہ القھستانی ۱۴ فقال والاعتصار یعم الحقیقي والحکمي۔

یہ نہ دیکھا، اور جمہور کے نزدیک ممنوع ہے اور صراحت کی ہے کہ یہی اوجہ، اظہر اور احوط ہے، کافی، ابن شلبی علی الزیلعی اور انقرویہ میں ہے کہ اس پانی سے وضو نہ کرے جو انگور کی بیل سے بہتا ہے کیونکہ اس میں کمال امتزاج پایا جاتا ہے، اس کو محیط میں ذکر کیا ہے اور ایک قول یہ ہے کہ جائز ہے کیونکہ بغیر عمل کے نکلا ہے خانیہ میں ہے کہ اس پانی سے جائز نہیں جو موسم ربیع میں انگور کی بیل سے نکلتا ہے، اسی طرح اس کو ذکر کیا ہے شمس الائمہ حلوانی نے اھ اور حلیہ میں ہے اور ظاہر یہ ہے کہ یہی اوجہ ہے اھ پھر اعادہ کیا اور فرمایا ظاہر یہی ہے کہ یہ اوجہ ہے اھ اور غنیہ میں ہے کہ یہ احوط ہے اھ اور غنیہ ذوی الاحکام میں ہے یہی اظہر ہے جیسا کہ برھان میں ہے اور نور الایضاح میں ہے وضو جائز نہیں درخت یا پھل کے پانی سے خواہ بلا نچوڑے از خود نکل آئے، اظہر یہی ہے اور مراقی الفلاح میں ہے اس سے اس قول سے

احتراز کیا کہ وضو اس پانی سے جائز ہے جو بلا نچوڑے خود نکل آئے، کیونکہ اس کے بلا نچوڑے نکلنے میں نفی قید میں کوئی تاثیر نہیں ہے اسی طرح اس سے۔

حواشی: ۱۔ حاشیہ الشلبی علی تبیین الحقائق کتاب الطہارۃ الامیریۃ ببولاق مصر ۲/۱۱ ۲۔ قاضی خان فیما لایجوز بہ التوضی نو لکشور لکھنئو ۹/۱ ۳۔ حلیہ ۴۔ غنیۃ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۲ ۵۔ غنیۃ ذوی الاحکام حاشیۃ علی الدر الکتاب الطہارت مطبعۃ الکلیۃ بیروت ۲۱/۳ ۶۔ نورالایضاح کتاب الطہارۃ علمیہ لاہور ص ۳ ۷۔ مراقی الفلاح کتاب الطہارۃ الامیریہ ببولاق مصر ص ۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 2

Stripping away this name has no effect [ah]. In 'Ad-Durr', this is described as 'more apparent' [Azhar], as in 'Ash-Shurunbulaliyya' from 'Al-Burhan'. Al-Quhistani relied on this and said 'squeezing' applies generally to both literal and figurative senses, like grape water, watermelon water, and melon water without extraction [ah]. 'Ta' maintained this. In 'Al-Hindiyya', it says: wudu is not permissible with water that flows from a grape vine. Similarly in 'Al-Kafi', 'Al-Muhit', and 'Fatawa Qazi Khan'. This is more preferable [Awjah]; it is also in 'Al-Bahr' and it is more cautious [Ahwat]. Similarly in 'Sharh Munyat al-Musalli' by Ibrahim al-Halabi [ah]. In 'Al-Bahr' and 'Al-Nahr', it is stated that many books clarify that wudu with it is not permissible, and Qazi Khan limited his opinion to this in his 'Fatawa'. | Like the water of grapes and similarly the water of daboogha (annotation) and watermelon without extraction (1 ah). And 'Ta' (15) affirmed it. In 'Al-Hindiyya': and not with water that flows from grapes. Thus in 'Al-Kafi', 'Al-Muhit', and 'Fatawa Qazi Khan', and it is more preferable [Awjah]. Thus in 'Al-Bahr' (16) and it is more cautious [Ahwat]. Thus in 'Sharh Munyat al-Musalli' by Ibrahim al-Halabi (2 ah). In 'Al-Bahr al-Raiq' and 'An-Nahr' (18) 'Al-Faiq',

it is explicitly stated in many books that wudu with it is not permissible. Qazi Khan in 'Al-Fatawa' and the author of 'Al-Muhit' restricted themselves to this, and 'Al-Kafi' prioritized it. The permissibility was mentioned using the expression 'it is said' [qila]. In 'Sharh Munyat al-Musalli', the more preferable view is the lack of permissibility, as it is primary since the mixture is complete, as declared in 'Al-Kafi' regarding what occurred...

Daboogha, Dabooqa, and Habhab refer to watermelon, as mentioned in 'Ash-Shami' where some commentators quoted this explanation from medical books. In 'At-Tuhfa' and 'Al-Makhzan', it is spelled Dabooqa with the letter 'Qaf'; they believe this is its Arabic name. Both books mention Lagh, Indian watermelon, Syrian watermelon, and Palestinian watermelon. In Persian, it's called Hinduwana and in Hindi Tarbooz. Neither book mentions Daboogha with the letter 'Ghayn'. 12 Minhu (T). | Annotation: Al-Daboogha, Al-Dabooqa, and Al-Habhab are green watermelon as in 'Sh' from some annotators from medical books. It is mentioned in 'At-Tuhfa' and 'Al-Makhzan' as Dabooqa with 'Qaf'. And they claimed it is one of its names in Arabic. And they mentioned among them Al-Lagh, Indian watermelon, Syrian watermelon, and Palestinian watermelon. And in Persian Hinduwana and in Hindi Tarbooz. He did not mention Daboogha with 'Ghayn'. 12 Minhu (M).

1 Durr-e-Mukhtar, Kitab-ut-Taharat, Mujtabai Delhi 1/32 2 Hindiyya, regarding that which is not permissible for wudu, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/21

फतावा रज़विया जिल्द दोयम

इस नाम के सलब (मिटाने) में कोई तासीर (प्रभाव) नहीं है अह्। और 'दुर्र' में इसी को 'अज़हर' (अधिक स्पष्ट) कहा गया है जैसा कि 'शुरुनबुलालीया' में 'बुरहान' से है। और इसी पर 'कुहिस्तानी' ने एतिमाद (भरोसा) किया और कहा निचोड़ना हकीकी (वास्तविक) और हुक्मी (आलंकारिक) दोनों को आम है जैसे अंगूर का पानी उसी तरह तरबूज़ का पानी, और खरबूज़े का पानी बिना निकाले अह् और इसको 'त' (ط) ने बरक़रार रखा। और 'हिन्दिया' में है कि उस पानी से वज़ू नहीं होगा जो अंगूर की बेल से निकलता है। इसी तरह 'काफी', 'मुहीत' में है और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है, यही 'औजह' (अधिक उचित) है, यही 'बह्र' में है और यही 'अह्वत' (अधिक सुरक्षित) है। इसी तरह 'शरह मुनयतुल मुसल्ली' में है जो इब्राहीम हलबी की है अह्। और 'बह्र' और 'नहर' में है कि बहुत सी किताबों में सराहत (स्पष्टता) है कि इससे वज़ू जायज़ नहीं, और इस पर क़ाज़ी ख़ान ने फ़तावा में इक्तिफ़ा (बस करना) किया। | अंगूर के पानी की तरह और इसी तरह 'दाबूग़ा' (हाशिया देखें) का पानी और तरबूज़ का पानी बिना निकाले (1 अह्)। और 'त' (15) ने इसकी पुष्टि की। और 'हिन्दिया' में है: और उस पानी से वज़ू नहीं जो अंगूर (की बेल)

से बहता है। ऐसा ही 'काफ़ी' और 'मुहीत' और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है और यही अधिक उचित (औजह) है। इसी तरह 'बह्र' (16) में है और यही अधिक सुरक्षित (अह्वत) है। इसी तरह इब्राहीम हलबी की 'शरह मुनयतुल मुसल्ली' (2 अह्) में है। और 'बह्र रईक़' और 'अल्-नहर' (18) 'अल्-फ़ाइक़' में है, जिसमें बहुत सी किताबों से स्पष्ट उल्लेख है कि इसके साथ वज़ू जायज़ नहीं है। क़ाज़ी ख़ान ने 'अल्-फ़तावा' में और 'मुहीत' के लेखक ने इस पर बस किया और 'काफ़ी' में इसे ही पहले रखा। और जायज़ होने का ज़िक्र 'क़ील' (कहा गया है) शब्द के साथ किया गया। और 'शरह मुनयतुल मुसल्ली' में अधिक उचित राय यह है कि जायज़ नहीं है, तो वही बेहतर था क्योंकि इसका मिश्रण पूरा हो गया जैसा कि 'काफ़ी' में स्पष्ट किया गया है...

दाबूग़ा, दाबूक़ा और हबहब तरबूज़ को कहते हैं जैसा कि 'शामी' में है कि बाज़ (कुछ) हाशिया निगारों (टीकाकारों) ने कुतुब-ए-तिब (चिकित्सा की किताबों) से इसकी यही तशरीह (व्याख्या) नक़्ल की है और 'तोहफ़ा' और 'मख़ज़न' में 'दाबूक़ा' 'क़ाफ़' (ق) से है, उनका ख़याल है कि यह इसका अरबी नाम है। इन दोनों किताबों में 'लाग़' और 'बतीख़-ए-हिन्दी', 'बतीख़-ए-शामी' और 'बतीख़-ए-फ़िलिस्तीनी' का ज़िक्र है। फ़ारसी में 'हिन्दुआना' और हिन्दी में 'तरबूज़' कहते हैं। इन दोनों किताबों में 'दाबूग़ा' 'ग़ैन' के साथ का ज़िक्र नहीं। १२ मिन्हु (त) | हाशिया: दाबूग़ा, दाबूक़ा और हबहब हरा तरबूज़ है जैसा कि 'श' (शामी) में कुछ टीकाकारों से चिकित्सा की किताबों के हवाले से वर्णित है। और 'तोहफ़ा' और 'मख़ज़न' में 'दाबूक़ा' 'क़ाफ़' के साथ ज़िक्र है और उन्होंने दावा किया कि यह अरबी में इसके नामों में से एक है। और उन्होंने इनमें 'लाग़', 'बतीख़-ए-हिन्दी', 'बतीख़-ए-शामी' और 'बतीख़-ए-फ़िलिस्तीनी' का ज़िक्र किया। और फ़ारसी में 'हिन्दुआना' और हिन्दी में 'तरबूज़' है। और 'दाबूग़ा' 'ग़ैन' के साथ का ज़िक्र नहीं किया। 12 मिन्हु (म)

1 दुर्रे मुख्तार किताबुत तहारत मुज्तबाई दिल्ली 1/32 2 हिन्दिया फ़ीमा ला यजूज़ु बिहित-तवज़्ज़ुऊ नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/21

पृष्ठ 610 / 711

اس نام کے سلب کرنے میں کوئی تاثیر نہیں ہے اھ اور در میں اسی کو اظہر کہا جیسا کہ شربلالیہ میں برہان سے ہے اور اسی پر قہستانی نے اعتماد کیا اور کہا نچوڑنا حقیقی اور حکمی دونوں کو عام ہے جیسے انگور کا پانی اسی طرح تربوز کا پانی ، اور خربوزے کا پانی بلا نکالے ہوئے اھ اور اس کو 'ط' نے برقرار رکھا اور ہندیہ میں ہے نہ اس پانی سے جو انگور کی بیل سے نکلتا ہے اسی طرح کافی، محیط میں ہے اور فتاوی قاضی خان میں ہے یہی اوجہ ہے یہی بحر میں ہے اور یہی احوط ہے اسی طرح شرح منیة المصلی میں ہے جو ابراہیم حلبی کی ہے اھ اور بحر اور نہر میں ہے کہ بہت سی کتب میں صراحت ہے کہ اس سے وضو جائز نہیں ، اور اس پر قاضی خان نے فتاوی میں اکتفاء | كماء الكرم وكذا ماء الدابوغة عه والبطيخ بلا استخراج ١ اهـ واقره ١٥ ط وفي الهندية ولا بماء يسيل من الكرم كذا في الكافي

والمحيط وفتاوى قاضى خان وهو الاوجه هكذا في البحر ١٦

وهوالاحوط كذا في شرح منية المصلى لابراهيم الحلبي ٢ اهـ وفي

البحر الرائق والنهر ١٨ الفائق المسرح به في كثير من الكتب انه لا

يجوز الوضوء به واقتصر عليه قاضي خان في الفتاوى وصاحب

المحيط وصدر به في الكافي وذكر الجواز بصيغة قيل وفي شرح

منية المصلى الاوجه عدم الجواز فكان هو الاولى لما انه كمل

امتزاجه كما صرح به في الكافي فما وقع

دابوغہ، دابوقہ اور حبحب تربوز کو کہتے ہیں جیسا کہ شامی میں ہے کہ بعض حاشیہ نگاروں نے کتب طب سے اس کی یہی تشریح نقل کی ہے اور تحفہ اور مخزن میں دابوقہ 'ق' سے ہے ، ان کا خیال ہے کہ یہ اس کا عربی نام ہے ان دونوں کتب میں لاغ اور بطیخ ہندی ، بطیخ شامی اور بطیخ فلسطینی کا ذکر ہے فارسی میں ہندوانہ اور ہندی میں تربوز کہتے ہیں ان دونوں کتابوں میں دابوغہ 'غ' کے ساتھ کا ذکر نہیں ۱۲ منہ (ت) | عه: الدا بوغة والدابوقة والحبحب هوالبطيخ الاخضر كما في ش عن بعض المحشين عن كتب الطب وذكر في التحفة والمخزن دابوقة بالقاف وزعمأ نه من اسمائه بالعربي وذكر امنها اللاغ و البطيخ الهندي والبطيخ الشامي والبطيخ الفلسطيني وبالفارسية هندوانه وبالهندية تربوز ولم يذكر ادا بوغه بالغين ۱۲ منه۔ (م)

1 در مختار کتاب الطہارت مجتبائی دہلی ۱/ ۳۲ 2 ہندیہ فیما لا یجوز بہ التوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۱

Fatawa Rizvia, Volume 2

In Sharh al-Zayla'i, it is mentioned that its mixing was not complete, so there is room for consideration (in this opinion) AH. In 'Sh' (commentary), it is narrated from al-Ramli on al-Manh that whoever reviews the books of the Madhhab (school of law) will find most of them favor its impermissibility. Thus, the practiced opinion should be based on that. Whatever is in this text (referring to al-Tanwir) is less preferred (marjuh) compared to it AH. Similarly, the author of al-Muhit also relied on this and mentioned it initially in al-Kafi. In Sharh Munyat al-Musalli, it is stated that the most evident view is impermissibility, which is more appropriate because its mixing is complete, as explicitly stated in al-Kafi. Therefore, the claim in Sharh al-Zayla'i that the mixing is incomplete is objectionable AH. In 'Sh', it's quoted from Ramli on al-Manh that anyone who has studied the school's books will know that the majority view is impermissibility. Therefore, reliance should be placed on that. Thus, what is stated in this text (Tanwir) is 'marjuh' relative to it. (T)

(206) Tari (207) Sendhi

I say: Even according to those who permit it with what drips from the vine, it was water that would be drunk, and when satisfied, one would return it. I say that even those gentlemen who favor the permissibility of wudu (ablution) with the water dripping from the grapevine, they too...

This is the explicit implication of the discourse of al-Zayla'i and his followers. However, in Bahr al-Ulum's 'Al-Arkan al-Arba'ah', its text states: They differed concerning water that flows by itself from a grapevine or similar. In al-Hidayah, it is mentioned that performing wudu with it is permissible. In al-Kafi and Fatawa Qadi Khan, it is said it is not permissible because it is not water; it merely resembles water, and the term 'water' is applied to it metaphorically AH. I say that this reasoning (ta'leel) is found neither in al-Kafi nor in al-Khaniyyah; rather, I have not seen it from anyone before him, but rather it is an (1) assumption. This is the explicit meaning of the discourse of Zayla'i and those who followed him. But in Bahr al-Ulum's 'Arkan al-Arba'ah', there is a difference of opinion regarding this water that drips from the vine. In Hidayah, it is stated that wudu with it is permissible. In Kafi and Fatawa Qazi Khan, it is stated that wudu is not permissible because it is not water; it is similar to water and applying the word 'water' to it is metaphorical AH. I say that this reasoning

is neither in Kafi nor in Khaniyah; rather, I have not seen it in anyone's discourse before them (Remaining on the next page).

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi 1/29.
2. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt 1/133.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग-2)

शर्ह अल-ज़ैलाई में उल्लेख है कि इसका मिश्रण पूर्ण नहीं हुआ था, इसलिए (इस राय में) विचार की गुंजाइश है। और 'श' (हाशिया) में अर-रमली से अल-मन्ह पर उद्धृत है कि जो कोई भी मज़हब (पंथ) की पुस्तकों का अध्ययन करेगा, वह उनमें से अधिकांश को इसके नाजायज़ (अस्वीकार्य) होने के पक्ष में पाएगा। इसलिए, अमल उसी पर होना चाहिए। इस मतन (पाठ, यहाँ मुराद तनवीर है) में जो कुछ भी है, वह इसके मुक़ाबले में मरजूह (कम पसंदीदा) है। इसी तरह साहिब-ए-मुहीत ने इस पर इक्तिफा (संतोष) किया और शुरू में इसे अल-काफ़ी में ज़िक्र किया। शर्ह मुन्यातुल मुसल्ली में है कि अदम-ए-जवाज़ (अस्वीकार्यता) की दलील अधिक पुख्ता है, इसलिए यही बेहतर है क्योंकि इसका मिश्रण पूर्ण हो चुका है जैसा कि अल-काफ़ी में स्पष्ट किया गया है। इसलिए शर्ह अल-ज़ैलाई में इसके मिश्रण को अपूर्ण बताना आपत्तिजनक है। और 'श' में रमली अल-मन्ह से नक़ल है कि जिसने मज़हब की किताबों को देखा है उसे मालूम होगा कि अक्सर में अदम-ए-जवाज़ है, तो उसी पर एतमाद (भरोसा) होगा। तो जो इस मतन (तनवीर) में है वह उसकी तुलना में मरजूह है। (त)

(206) ताड़ी (207) सेंधी

मैं कहता हूँ: यहाँ तक कि उनके अनुसार भी जो अंगूर की बेल से टपकने वाले पानी से (वुज़ू) जायज़ मानते हैं, तो वह ऐसा पानी था जिसे पिया जाता और प्यास बुझने पर उसे लौटा दिया जाता। मैं कहता हूँ कि यहाँ तक कि जो हज़रात अंगूर की बेल से टपकने वाले पानी से वुज़ू के जवाज़ के कायल हैं, तो वह भी...

यह ज़ैलाई और उनके अनुयायियों के कलाम का स्पष्ट अर्थ है। लेकिन बहरुल उलूम की 'अरकान अल-अर्बा' में है: उनका अंगूर की बेल और उसके जैसे से स्वतः बहने वाले पानी के बारे में मतभेद है। हिदाया में है कि इससे वुज़ू जायज़ है। काफ़ी और फ़तावा क़ाज़ी खान में है कि जायज़ नहीं है क्योंकि यह पानी नहीं है, बल्कि पानी के समान है और इस पर पानी का प्रयोग लाक्षणिक (मज़ाज़ी) है। मैं कहता हूँ कि यह दलील (ता'लील) न तो काफ़ी में है और न ही खानिया में, बल्कि मैंने इससे पहले किसी से यह नहीं देखा, बल्कि यह एक (1) दावा है। यह ज़ैलाई के कलाम और उनके अनुयायियों का स्पष्ट मफ़हूम (अर्थ) है। लेकिन बहरुल उलूम की 'अरकान अल-अर्बा' में है कि इस पानी में मतभेद है जो अंगूर की बेल से टपकता है। हिदाया में है कि इससे वुज़ू जायज़ है, काफ़ी और फ़तावा क़ाज़ी खान में है कि वुज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि वह पानी नहीं है, पानी के मुशाबेह (समान) है और

उस पर पानी का इतलाक (प्रयोग) मज़ाज़ (लाक्षणिक) है। मैं कहता हूँ कि ता'लील (दलील) न काफ़ी में है और न ही खानिया में, बल्कि मैंने उनसे पहले किसी के कलाम में यह नहीं देखा (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

1. बहर अर-राईक़, किताब अत्तहारह, सईद कंपनी कराची 1/29.
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/133.

पृष्ठ 611 / 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

في شرح الزيلعي انه لم يكمل امتزاجه ففيه نظر اھ وفي ش عن الرملي على المنح من راجع كتب المذهب وجد اكثرها على عدم الجواز فيكون المعمول عليه فما في هذا المتن (يريد التنوير) مرجوع بالنسبة اليه اھ کیا ، اسی طرح صاحب محیط نے اس پر اکتفاء کیا اور اس کو ابتداء میں ذکر کیا کافی میں اور جواز کا ذکر بصیغہ قیل کیا اور شرح منیۃ المصلی میں ہے کہ اوجہ عدم جواز ہے تو یہی اولی ہے کیونکہ اس کا امتزاج مکمل ہو گیا ہے جیسا کہ کافی میں مصرح ہے تو شرح زیلعی میں اس کے امتزاج کو مکمل نہ بتانا قابل اعتراض ہے اھ اور 'ش' میں رملي على المنح سے منقول ہے کہ جس نے کتب مذہب کو دیکھا ہے اس کو معلوم ہوگا کہ اکثر میں عدم جواز ہے تو اسی پر اعتماد ہوگا، تو جو اس متن (تنویر) میں ہے وہ اس کی نسبت مرجوع ہے اھ۔ (ت)

(۲۰۶) تاڑی (۲۰۷) سینڈھی

اقول: حتی علی قول من یجوز بقاطر الکرم فانه ماء کان تشربه فاذ ا رتوی رده میں کہتا ہوں یہاں تک کہ جو حضرات انگور کی بیل سے ٹپکنے والے پانی سے وضو کے جواز کے قائل ہیں تو وہ بھی

عه هذا هو صريح مفاد كلام الزيلعي ومن تبعه لكن في الاركان الاربعة لبحر العلوم مانصه اختلفوا في ماء سال من الكرم ونحوه بنفسه ففي الهداية يجوز به التوضي وفي الكافي وفتاوى قاضى خان لا يجوز لانه ليس ماء انما هو شبيه بالماء ويطلق عليه الماء مجازاً اه اقول ليس التعليل فى الكافى ولا فى الخانية بل لم اره لاحد قبله بل (۱) زعم۔ یہ صریح مفہوم ہے زیلعی کے کلام کا اور اس کے متبعین کے کلام کا، لیکن بحر العلوم کی ارکان اربعہ میں ہے اس پانی میں اختلاف ہے جو انگور کی بیل سے ٹپکتا ہے ، ہدایہ میں ہے اس سے وضو جائز ہے، کافی اور فتاوی قاضی خان میں ہے کہ وضو

جائز نہیں کیونکہ وہ پانی نہیں ہے پانی کے مشابہ ہے اور اس پر پانی کا اطلاق مجاز ہے اھ میں کہتا ہوں کہ تعلیل نہ کافی میں ہے اور نہ خانیہ میں ہے بلکہ میں نے ان سے پہلے کسی کے کلام

(باقی بر صفحہ آئندہ)

۱۔ بحر الرائق کتاب الطھارۃ سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱ ۲۔ ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱۳۳/۱

As indicated by the statement of al-Zayla'i: "The perfection of mixing is through the plant's absorption of water such that it does not come out except by extraction (milking)." Then he mentioned the drippings of the vine as previously mentioned, unlike the liquid secretions from these trees, for they are like the tars (bitumen) flowing from stones. And Allah Almighty knows best.

They say that in reality, it was water; when it was saved from being absorbed in the vine, it began to flow, as is known from the statement of al-Zayla'i. The perfection of mixing is that the grass drinks the water so well that it does not come out without being extracted. Then they mentioned the water dripping from the grapevine. Unlike those secretions that flow from these trees because they are like the oils that come out of stones. And Allah Almighty knows best. (T)

(208) Whey (Ma' al-Jubn), which is the watery part extracted by curdling milk. (209) Yogurt water, which is dripped by tying it in a cloth or separates from it in its container. (210) Buttermilk, also called 'Chhaachh', the water that remains after butter is separated from yogurt. (211) Rice water (Starch/Congee).

(Remaining footnote of previous page) The scholar Ibn Kamal al-Wazir, in 'al-Idah', commented on the text's statement "not with what is squeezed from a tree or fruit," that the narration is with restriction (Qasr), as if they refused to apply the name 'water' to it, indicating its falling short of the definition of 'absolute water'. Therefore, performing ablution with it is not permissible. This might create a misconception, or rather it almost explicitly states, that every juice of a fruit or tree is literally water, except that it is restricted and not absolute. This is absolutely false. What the heart accepts regarding the dripping water of the grapevine is also what 'Bahr al-Ulum' said. And Allah Almighty knows best. 12 - From him, may he be forgiven. (M)

I have not seen it, but Allama Ibn Kamal Wazir mentioned near the text of 'al-Idah' that regarding the water squeezed from a tree or fruit, the narration is with restriction. It is as if they do not want to apply the name 'water' to it, pointing out that it is not included in 'absolute water' (Ma' Mutlaq), and hence performing ablution with it is not permissible. This creates an illusion; rather, it should be stated clearly that the water of trees and fruits is literally water, but it is restricted and not absolute. However, this is absolutely false, and regarding the water of the grapevine, the thing that is heartfelt is the statement of 'Bahr al-Ulum'. And Allah Almighty knows best. 12 - Amen, may he be forgiven. (T)

जिल्द सानी (भाग २) फ़तावा रज़विया

जैसा कि अल-ज़ैला'ई के कथन से संकेत मिलता है: "मिश्रण की पूर्णता पौधे द्वारा पानी के अवशोषण के माध्यम से होती है ताकि वह दोहने (निष्कर्षण) के बिना बाहर न आए।" फिर उन्होंने अंगूर की बेल की बूंदों का उल्लेख किया जैसा कि पहले बताया गया है, इन पेड़ों से निकलने वाले तरल स्राव के विपरीत, क्योंकि वे पत्थरों से निकलने वाले डामर (तार) की तरह हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

कहते हैं कि वास्तव में यह पानी था, जब बेल में जज़्ब (अवशोषित) होने से बचा तो बहने लगा जैसा कि ज़ैला'ई के कथन से मालूम होता है। मिश्रण की पूर्णता यह है कि घास पानी को अच्छी तरह पी ले कि बिना निकाले पानी न निकले, फिर उन्होंने अंगूर की बेल से टपकने वाले पानी का ज़िक्र किया। उन रतबतों (तरल पदार्थों) के विपरीत जो इन पेड़ों से बहती हैं क्योंकि ये उन तेलों (रोग़नियात) की तरह हैं जो पत्थरों से निकलते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(२०८) 'मा उल-जुब्न' (छाछ) कि दूध फाड़कर उसकी तरलता निकालते हैं। (२०९) दही का पानी कि कपड़े में बांधकर टपकाएं या उसके बर्तन (कुंडे) में उससे अलग हो जाए। (२१०) मट्ठा जिसे छाछ भी कहते हैं, दही से मक्खन अलग होने के बाद जो पानी रह जाए। (२११) चावलों की पीच (मांड)।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) अल्लामा इब्न कमाल अल-वज़ीर ने 'अल-ईज़ाह' में मूल पाठ के इस कथन पर कि "पेड़ों या फलों से निचोड़े गए पानी से नहीं," कहा कि रिवायत कसर (प्रतिबंध) के साथ है, मानो उन्होंने उस पर 'पानी' नाम लागू करने से मना कर दिया, यह संकेत देते हुए कि वह 'मुतलक पानी' की सीमा से कम है और इसीलिए उससे वुज़ू करना जायज़ नहीं है। इससे यह भ्रम होता है, बल्कि यह स्पष्ट रूप से कहता है कि हर फल या पेड़ का रस वास्तव में पानी है, सिवाय इसके कि वह 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित) है 'मुतलक' नहीं, और यह निश्चित रूप से ग़लत है। और अंगूर की बेल के टपकते पानी के बारे में जो बात दिल को लगती है वह वही है जो बहरुल उलूम ने कही है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। १२ मिन्हु गफ़र लहू (म)

मैंने नहीं देखा, बल्कि अल्लामा इब्न कमाल वज़ीर ने ईज़ाह के मतन (मूल पाठ) के पास फ़रमाया: "न उस पानी से जो पेड़ या फल से निचोड़ा गया हो।" रिवायत क़सर से है, मानो वे उस पर पानी के नाम का इत्तलाक़ (प्रयोग) नहीं करना चाहते, इस ओर इशारा करते हुए कि वह मा-ए-मुतलक में शामिल नहीं, और इसलिए उससे वुज़ू जायज़ नहीं है। इससे वहम (भ्रम) होता है बल्कि सराहत (स्पष्टता) ही

कहनी चाहिए कि पेड़ों और फलों का पानी हक़ीक़तन पानी है, अलबत्ता वह मुक़य्यद है मुतलक नहीं है, हालांकि यह क़तई बातिल (गलत) है और अंगूर की बेल के पानी की बाबत दिल लगती बात बहरुल उलूम ही की है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। १२ आमना गफ़र लहू (त)

पृष्ठ ६१२ / ७११

كما يدل عليه قول الزيلعي كمال الامتزاج بتشرب النبات الماء بحيث لا يخرج منه الا بالحلاب ثم ذكر قاطر الكرم بما مر بخلاف الرطوبات السائلة من هذه الاشجار فأنها كالقارات النابعة من الاحجار والله تعالی اعلم۔ کہتے ہیں کہ دراصل یہ پانی تھا جب بیل میں جذب ہونے سے بچا تو بہنے لگا جیسا کہ قول زیلعی سے معلوم ہوتا ہے، امتزاج کا کمال یہ ہے کہ گھاس پانی کو اچھی طرح پی لے کہ بلا نکالے پانی نہ نکلے، پھر انہوں نے انگور کی بیل سے ٹپکنے والے پانی کا ذکر کیا۔ بخلاف ان رطوبتوں کے جو ان درختوں سے بہتی ہیں کیونکہ یہ ان روغنیات کی طرح ہیں جو پتھروں سے نکلتے ہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

(۲۰۸) ماء الجبن کہ دودھ پھاڑ کر اس کی مائیت نکالتے ہیں۔ (۲۰۹) دہی کا پانی کہ کپڑے میں باندھ کر ٹپکائیں یا اس کے کونڈے میں اس سے چھٹے۔ (۲۱۰) مٹھا جسے چھاچھ بھی کہتے ہیں دہی سے مکھن جدا ہونے کے بعد جو پانی رہ جائے۔ (۲۱۱) چاولوں کی پچ۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) العلامة ابن كمال الوزير فی الايضاح عند قول متنه لابما اعتصر من شجر او ثمر الرواية بالقصر كانهم ابوا عن اطلاق اسم الماء عليه ايماء الى قصوره عن حد الماء المطلق ولذلك لا يجوز التوضی به اه فهذا يوهم بل كمصرح ان كل عصارة ثمر او شجر ماء حقيقة غير انه مقيد لا مطلق وهو باطل قطعا والذی يقبله القلب في ماء الكرم القاطر ايضا ما قاله بحر العلوم والله تعالى اعلم ۱۲ منه غفر له۔ (م)

میں نے نہیں دیکھا، بلکہ علامہ ابن کمال وزیر نے ایضاح کے متن کے پاس فرمایا نہ اس پانی سے جو درخت یا پھل سے نچوڑا گیا ہو روایت قصر سے ہے، گویا وہ اس پر پانی کے نام کا اطلاق

نہیں کرنا چاہتے ہیں، اس طرف اشارہ کرتے ہوئے کہ وہ ماء مطلق میں شامل نہیں، اور اس لئے اس سے وضو جائز نہیں ہے اھ اس سے وہم ہوتا ہے بلکہ صراحت ہی کہنی چاہئے کہ درختوں اور پھلوں کا پانی حقیقۃً پانی ہے، البتہ وہ مقید ہے مطلق نہیں ہے، حالانکہ یہ قطعاً باطل ہے اور انگور کی بیل کے پانی کی بابت دل لگتی بات بحر العلوم ہی کی ہے واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ امنہ غفر لہ (ت)

صفحہ ۶۱۲ / ۷۱۱

Fatawa Razvia Volume 2 (212) Meat water (juice) that comes out of the meat itself like perspiration when placed in a sealed vessel without water and then heated by putting water on top. (213) Maa-ul-Lahm (Meat Water) which is extracted by dripping from meat and suitable ingredients just like essences. Mixtures (214) Yakhni (Meat broth) where the essence of meat is extracted in water. (215) Every kind of soup (Shorba). It is stated in Hidaya: 'Ablution with broth is not permissible because it is not called absolute water.' (216 & 217) If chickpeas or broad beans (Baqla) are cooked in water, and so many of their components mix into the water that it becomes thick upon cooling, then performing wudhu with it is impermissible by consensus. I say: There are three types of clear statements in this regard: First: It is absolutely not permissible because through cooking, a complete mixture is achieved, hence it becomes 'restricted' (not absolute water). This will be further explained in the principle of Imam al-Zaylai and his followers, may Allah have mercy on them. Second: Wudhu is not permissible if the smell of the cooked item is present in it. Third: It is permissible as long as it does not become thick; most are of this opinion, and it is the most famous and explicitly mentioned in general texts. Note: Soon another concise phrase will appear, which is 'change through cooking,' and its discussion will also follow.

Footnote 1: Al-Hidaya, Chapter on Water with which Ablution is Permissible and with which it is Not, Arabiyah Karachi 18/1 Page 613 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (212) मांस का पानी जो बिना पानी के एक सीलबंद बर्तन में रखकर और ऊपर से पानी भरकर आंच देने से स्वयं मांस से पसीने की तरह निकलता है। (213) मा-उल-लहम (मांस का जल) जिसे अर्क की तरह मांस और उपयुक्त सामग्री से टपका कर निकाला जाता है। मिश्रण (अल्-खलातात) (214) यखनी, जिसमें मांस को पानी में उबालकर उसका रस निकाला जाता है। (215) हर प्रकार का शोरबा। हिदाया में लिखा है: 'शोरबे से वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि उसे मुतलक (शुद्ध) पानी नहीं कहा जाता।' (216 और 217) जिस पानी में चने या बाकला पकाए गए हों, यदि उसमें उनके इतने अंश मिल जाएं कि ठंडा होने पर पानी गाढ़ा हो जाए, तो उससे वज़ू करना सर्वसम्मति से नाजायज़ है। मैं कहता हूँ: इस सिलसिले में स्पष्ट इबारतें तीन प्रकार की हैं: प्रथम: पूर्णतः जायज़ नहीं है क्योंकि पकाने से पूर्ण मिश्रण प्राप्त होता है, इसलिए यह 'मुकय्यद' (प्रतिबंधित/शुद्ध जल न रहना) हो जाएगा। इसका उल्लेख इमाम ज़ैलई और उनके अनुयायियों के नियम में आएगा, अल्लाह उन पर रहम करे। द्वितीय: वज़ू जायज़ नहीं है जब उसमें पकी हुई चीज़ की गंध आती हो। तृतीय: जब तक गाढ़ा न हो जाए तब तक जायज़ है, अधिकांश इसी पर हैं और यही सबसे प्रसिद्ध और आम ग्रंथों में स्पष्ट रूप से वर्णित है। हाशिया: शीघ्र ही एक संक्षिप्त इबारत आएगी जो 'पकाने के कारण परिवर्तन' है और उस पर चर्चा भी आएगी।

पादलेख 1: अल-हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, अरबिया कराची 18/1 पृष्ठ 613 of 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی (۲۱۲) گوشت کا پانی کہ سربند بویام میں بے پانی رکھ کر اوپر پانی بھر کر آنچ دینے سے خود گوشت سے مثل عرق نکلتا ہے۔ (۲۱۳) ماء اللحم کہ عرقیات کی طرح گوشت و اجزائے مناسبہ سے ٹپکا کر لیتے ہیں۔ الخلاطات (۲۱۴) یخنی کہ پانی میں گوشت کا آبجوش نکالتے ہیں۔ (۲۱۵) ہر قسم کا شوربا۔ ہدایہ میں ہے: لا یجوز بالمرق فانہ لایسمی ماء مطلقاً ۔ ۱ | شوربا سے وضو جائز نہیں کہ اس کو مطلق پانی نہیں کہتے ہیں۔ (ت) (۲۱۶ و ۲۱۷) جس پانی میں چنے یا باقلا پکایا اگر پانی میں ان کے اتنے اجزاء مل گئے کہ ٹھنڈا ہو کر پانی گاڑھا ہو جائے گا تو اس سے بالاتفاق وضو نا جائز ہے۔ اقول: وذلک ان العبارات الواضحۃ عہ جاءت ھنا علی ثلثۃ وجوہ۔ | میں کہتا ہوں اس سلسلہ میں واضح عبارات تین قسم کی ہیں: الاول: لایجور مطلقا لان بالطبخ یحصل کمال الامتزاج فیفید التقیید وھذا ماياتی فی ضابطۃ الامام الزیلعی واتباعہ رحمہم اللہ تعالی۔ | اول: مطلقاً جائز نہیں کیونکہ پکانے سے مکمل امتزاج حاصل ہوتا ہے لہذا مقید کرنا مفید ہوگا۔ امام زیلعی اور ان کے متبعین کے ضابطہ میں اس کا بیان آئیگا، رحمہم اللہ تعالٰی۔ الثانی: لایجور اذا وجد منہ ریح المطبوخ۔ | دوم: وضو جائز نہیں جبکہ اس میں سے پکی ہوئی چیز کی بُو آتی ہو۔ الثالث: یجوز مالم یثخن وعلیہ الاکثر وھو الاشھر والمنصوص۔ | سوم: جب تک گاڑھا نہ ہو تو جائز ہے، اکثر اسی پر ہیں اور یہی مشہور تر ہے، اور عام متون میں۔ عہ ستاتی عبارۃ اخری مجملۃ و ھي التغیر بالطبخ ویاتی الکلام علیھا۱۲منہ (م) | عنقریب ایک مجمل عبارت آئے گی اور وہ پکانے سے تبدیل ہونا ہے اور اس پر کلام بھی آئیگا ۱۲منہ (ت) ۱ ہدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء و مالا یجوز بہ عربیہ کراچی ۱/۱۸ Page 613 of 711

Fatawa Razawiyah - Volume 2

On it in (1) the primary texts and in al-Khaniyyah: if chickpeas or broad beans were cooked in it and the smell of the broad beans is found in it, then ablution (wudu) is not permissible with it. Al-Natifiyy mentioned: if its thinness has not vanished and the name 'water' is not stripped from it, it is permissible. [End of quote]. And in (2) al-Jami' al-Kabir, then al-Munyah, then al-Yanabi', then al-Zayla'i, then al-Fath, and Tajnis of the Imam, the author of al-Hidayah, then al-Bahr, then Tajnis al-Multaqat, then al-Hulyah, then al-Fatawa al-Zahiriyyah, then al-Burjandi, and the wording for al-Fath in al-Yanabi' is: if chickpeas and broad beans were put into water and its color, taste, and smell changed, ablution is permissible with it. If it was cooked, then if it becomes thick upon cooling, ablution is not permissible with it, but if it does not thicken and the liquidity (thinness) of the water remains, it is permissible. [End of quote]. And this, as you see, is the broadest of opinions. So when its condition for prohibition is met, the prohibition is established by consensus (ijma'). Then I say: And with Allah is success; rather there is no disagreement. As for the first two opinions, the reconciliation between them is clear.

This is it; and it is in al-Khaniyyah that if chickpeas or broad beans were cooked in water and the smell of broad beans comes into it, then wudu is not permissible with it. Al-Natifiyy said: if its thinness has not ended and the term 'water' can still be applied to it, then wudu is permissible, otherwise not. In Jami' al-Kabir, Munyah, Yanabi', Zayla'i, Fath, Tajnis (book of the author of Hidayah), then Bahr, Tajnis al-Multaqat, Hulyah, Fatawa Zahiriyyah and Burjandi, the wording of Fath referring to Yanabi' is: if chickpeas and broad beans were soaked in water and its color, taste, and smell changed, then wudu is permissible with it. So if it was cooked and became thick upon cooling, then wudu is not permissible, and if it did not become thick and the thinness of water still remains, then it is permissible. As you see, there is most leeway in this saying, so when its condition for prohibition is fulfilled, then prohibition will be established unanimously. (T) Then I say, and with Allah is success, rather there is no contradiction at all, and the reconciliation between the first two sayings is clear.

(1) Like al-Wiqayah, al-Multaqa, al-Ghurar, al-Tanwir, and Nur al-Idah, where they considered the removal of the natural state by cooking. Their texts will appear in the third section. 12, from him, may Allah forgive him. (2) Thus it is in al-Hulyah, and in

my copies of al-Munyah and al-Jami' al-Saghir, and upon them is the commentary in al-Ghunyah. 12, from him, may Allah forgive him (M).

1. Fatawa Qazi Khan, Section on what is not permissible for wudu, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/9.
2. Fath al-Qadir, Chapter on water with which wudu is permissible and with which it is not, Nooria Razawiyah Sukkur, 1/65.

फ़तावा रज़विया - भाग 2

इस पर (1) मुख्य ग्रंथों और खनियाह में है: यदि इसमें चने या बाकला (सेम) पकाए गए हों और बाकला की गंध उसमें मौजूद हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। नतिफ़ी ने उल्लेख किया: यदि उसका पतलापन समाप्त नहीं हुआ है और उससे 'जल' (पानी) का नाम नहीं छीना गया है, तो यह जायज़ है। [उद्धरण समाप्त]। और (2) अल-जामि अल-कबीर, फिर अल-मुन्याह, फिर अल-यानाबी', फिर अल-ज़यला'ई, अल-फतह, और इमाम साहिब-ए-हिदाया के तजनीस, फिर अल-बहर, तजनीस अल-मुल्तक़त, फिर अल-हुलियाह, अल-फ़तावा अल-ज़हिरीयाह, फिर अल-बुर्ज़ंदी में है, और अल-यानाबी' में अल-फतह के शब्द हैं: यदि पानी में चने और बाकला गिर जाएं और उसका रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। यदि उसे पकाया गया, फिर यदि ठंडा होने पर वह गाढ़ा हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, लेकिन यदि वह गाढ़ा न हो और पानी का पतलापन बना रहे, तो जायज़ है। [उद्धरण समाप्त]। और यह, जैसा कि आप देखते हैं, मतों में सबसे व्यापक है। अतः जब निषेध की शर्त पूरी हो जाती है, तो आम सहमति (इजमा) द्वारा निषेध स्थापित हो जाता है। फिर मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता है, बल्कि कोई मतभेद ही नहीं है। जहाँ तक पहले दो मतों का प्रश्न है, उनके बीच सामंजस्य स्पष्ट है।

यही है, और खनियाह में है कि यदि पानी में चने या बाकला पकाए गए हों और बाकला की गंध उसमें आ जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। नतिफ़ी ने कहा: यदि उसका पतलापन समाप्त नहीं हुआ है और उस पर पानी का नाम लागू होता है, तो वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं। जामि अल-कबीर, मुन्याह, यानाबी', ज़यला'ई, फ़तह, तजनीस (हिदाया के लेखक की पुस्तक), फिर बहर, मुल्तक़त की तजनीस, हुलियाह, फ़तावा ज़हिरीयाह और बुर्ज़ंदी में है; यानाबी' के हवाले से फ़तह का इबारत है: यदि पानी में चने और बाकला निचोड़ लिए गए हों और उसका रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है। तो यदि पकाया गया और ठंडा होने पर गाढ़ा हो गया तो वज़ू जायज़ नहीं है, और यदि गाढ़ा न हुआ और पानी की रक़त (पतलापन) अभी बाकी है तो जायज़ है। जैसा कि आप देखते हैं, इस कथन में सबसे अधिक गुंजाइश है, तो जब निषेध की शर्त पूरी हो जाए तो सर्वसम्मति (इजमा) से निषेध सिद्ध होगा। (त) फिर मैं कहता हूँ, और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, बल्कि कोई विरोध ही नहीं है, और पहले दो कथनों में सामंजस्य स्पष्ट है।

(1) जैसे विकाया, मुल्तका, ग़ुरर, तनवीर और नूर अल-इज़ाह, इन महानुभावों ने पकाने से प्रकृति के बदलने का विचार किया है; इन पुस्तकों के उद्धरण तीसरे खंड में आएंगे। 12, उनकी ओर से,

अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (2) इसी तरह हुलियाह में है, और मेरे पास मौजूद मुन्याह और जामि सगीर की प्रतियों पर उसकी व्याख्या ग़ुनियाह में है। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)।

1. फ़तावा काज़ी खान, वज़ू के लिए क्या जायज़ नहीं है, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/9।
2. फ़तह अल-क़दीर, वज़ू के लिए जायज़ और नाजायज़ पानी का अध्याय, नूरिआ रज़विया सुक्कुर, 1/65।

पृष्ठ 614/711

علیه في(1) هامة المتون وفي الخانية لو طبخ فيه الحمص او الباقلاء وريح الباقلاء يوجد منه لا يجوز به التوضوء وذكر الناطفي اذ الم تذهب رقته ولم يسلب منه اسم الماء جاز اهـ وفي (2) الجامع الكبير ثم المنية والينابيع ثم الزيلعي والفتح وتجنيس الامام صاحب الهداية ثم البحر وتجنيس الملتقط ثم الحلية والفتاوى الظهيرية ثم البرجندى واللفظ للفتح في الينابيع لو تقع الحمص والباقلاء وتغير لونه وطعمه وريحه يجوز التوضى به فان طبخ فان كان اذ برد ثخن لا يجوز الوضوء به اولم يثخن ورقة الماء باقية جاز 2 اهـ وهذا كما ترى اوسع الاقوال فاذا حصل شرطه في المنع حصل المنع بالاجماع۔ ثم اقول: وبالله التوفيق بل لا خلاف اما القولان الاولان فالتوفيق بينهما واضح

یہی ہے، اور خانیہ میں ہے اگر پانی میں چنے یا باقلا پکایا گیا اور باقلا کی بو اس میں آگئی تو اس سے وضو جائز نہیں اور ناطفی نے فرمایا اگر اس کا پتلا پن ختم نہیں ہوا ہے اور اس پر پانی کا اطلاق ہوتا ہے تو وضو جائز ہے ورنہ نہیں، جامع کبیر، منیہ، ینابیع، زیلعی، فتح، تجنیس (صاحبِ ہدایت کی کتاب) پھر بحر، ملتقط کی تجنیس، حلیہ، فتاویٰ ظہیریہ اور برجندی میں ہے، عبارتِ فتح کی بحوالہ ینابیع ہے اگر چنے اور باقلاء پانی میں نچوڑ لیے گئے اور اس کا رنگ مزہ اور بو بدل گئے تو اس سے وضو جائز ہے، تو اگر پکایا گیا اور ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا ہو گیا تو وضو جائز نہیں، اور اگر گاڑھا نہ ہوا اور پانی کی رقت ہنوز باقی ہے تو جائز ہے اھـ جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں اس قول میں سب سے زیادہ گنجائش ہے، تو جب اس کی شرط منع میں حاصل ہو تو بالاجماع منع ثابت ہوگا۔ (ت) پھر میں کہتا ہوں وباللہ التوفیق، بلکہ کوئی خلاف ہی نہیں، اور دو پہلے اقوال میں تطبیق واضح ہے

(1) كالوقاية والملتقى والغرر والتنوير ونور الايضاح حيث اعتبر وا زوال الطبع بالطبخ وياتى نصوصها في الفصل الثالث ١٢ منه غفر له- جیسے وقایہ، ملتقٰی، غرر، تنویر اور نور الایضاح، ان حضرات نے پکانے سے طبیعت کے زوال کا اعتبار کیا ہے تیسری فصل میں ان کتب کی عبارات آئیں گی ١٢ منہ غفرلہ (2) هكذا في الحلية وفي نسختى المنية والجامع الصغير وعليها شرح في الغنية ١٢ منه غفر له (م) اسی طرح حلیہ میں ہے اور میرے پاس موجود منیہ اور جامع صغیر کے نسخوں پر اس کی شرح غنیہ میں ہے ١٢ منہ غفرلہ (ت)

1 فتاوىٰ قاضی خان فصل فیما لا یجوز بہ التوضی مطبع نولکشور لکھنو ١ / ٩ 2 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ نوریہ رضویہ سکھر ١ / ۶۵

[Arabic Column] Indeed, when broad beans are cooked in water and reach maturity, their smell will inevitably be found in the water, and this is the meaning of cooking as previously mentioned in 108(1). Yes, according to this, the condition becomes redundant, and it is not possible to interpret cooking as merely putting something in with the intention of cooking, so as to avoid cases where it is taken out before it affects the water. This is because it then includes the case where it is removed after the smell of the water has changed but before it is cooked, since the change of smell does not depend on being fully cooked. Thus, mere change of smell without cooking would necessitate restriction, which contradicts the texts mentioned in 89. In the absence of cooking, there is no reason to differentiate between it and an infusion. Reflect on this. As for the third view, Al-Ghunya provided what implies agreement, stating that restriction occurs in water through complete mixing by cooking, such that something is cooked in water until it is soft. At that point, the water loses its natural state, which is rapid flow. There is no doubt that, in such a case, it usually thickens when it cools. Therefore, the rule for mixing by cooking is that the cooked item matures in the water, and for mixing without cooking, it is that its thinness disappears. [Footnote 1] This was followed in Maraqi al-Falah, which stated: Not with water whose nature has been removed by cooking, because when it cools, it thickens. [Footnote 2]

[Urdu Column] That when broad beans are thoroughly cooked in water, their smell will inevitably come into the water, and this is the meaning of cooking as mentioned in 108. Yes, on this premise, setting a condition would be useless, and it is not possible for cooking to be interpreted as putting it in with the intention of cooking, so that the situation where it is taken out before it can affect the water is avoided. Because this also includes the case where it is removed at a time when the water's smell has changed and it has not yet cooked, because the changing of smell is not dependent on cooking. On this basis, mere change of smell without cooking would be a cause for restriction, and this would be against the mentioned texts, mentioned in texts 89. Because in the case of not cooking, there would be no difference between it and an infusion (squeezed out liquid). This is a point for reflection. The third saying, according to Ghunya, is the one with which agreement is known. They say that restriction in water occurs when complete mixing is achieved through cooking, for example, something is cooked in water until it is completely cooked. Then at that time, that water will depart from its nature, which is its swift flow. And it is obvious

that in such a case, it will become thick upon cooling. So the rule for mixing in cooked items is that the thing is cooked in the water, and in mixing without cooking, it is that its thinness ends.

Footnotes: 1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Rulings of Water, Sohail Academy, Lahore, p. 90. 2. Maraqi al-Falah, Book of Purification, Al-Amiriyya Press, Egypt, p. 15.

जिल्द थानी (भाग दो) फ़तावा रज़विया

[अरबी खंड] निश्चित रूप से, जब पानी में बाकला (सेम) अच्छी तरह पक जाता है और तैयार हो जाता है, तो उसकी गंध अनिवार्य रूप से पानी में आ जाएगी, और यही पकाने का अर्थ है जैसा कि पहले 108(1) में बताया गया है। हाँ, इसके अनुसार शर्त लगाना व्यर्थ हो जाएगा, और पकाने का अर्थ केवल पकाने के इरादे से डालना नहीं लिया जा सकता, ताकि उस स्थिति से बचा जा सके जब पानी पर प्रभाव डालने से पहले उसे निकाल लिया जाए। क्योंकि तब इसमें वह स्थिति भी शामिल हो जाएगी जब पानी की गंध बदलने के बाद उसे निकाल लिया जाए लेकिन वह पका न हो, क्योंकि गंध का बदलना पूरी तरह पकने पर निर्भर नहीं है। इस प्रकार, बिना पकाए केवल गंध का बदलना प्रतिबंध (तकीद) का कारण बनेगा, जो 89 में उल्लिखित ग्रंथों के विरुद्ध है। पकाने के अभाव में, इसके और अर्क(नक़ीअ) के बीच अंतर करने का कोई कारण नहीं है। इस पर विचार करें। जहाँ तक तीसरे विचार का प्रश्न है, 'अल-ग़ुनिया' ने वह प्रदान किया जो सहमति दर्शाता है, यह कहते हुए कि पानी में प्रतिबंध पकाने के माध्यम से पूर्ण मिश्रण द्वारा होता है, जैसे कि पानी में कुछ तब तक पकाया जाए जब तक वह नरम न हो जाए। उस बिंदु पर, पानी अपने प्राकृतिक स्वभाव को खो देता है, जो कि इसका तीव्र प्रवाह है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसी स्थिति में, ठंडा होने पर यह आमतौर पर गाढ़ा हो जाता है। इसलिए, पकाने द्वारा मिश्रण का नियम यह है कि पकाई गई वस्तु पानी में परिपक्व हो जाए, और बिना पकाए मिश्रण का नियम यह है कि उसका पतलापन समाप्त हो जाए। [पाद टिप्पणी 1] 'मराक़ी अल-फ़लाह' में इसका अनुसरण किया गया, जिसमें कहा गया: उस पानी के साथ नहीं जिसका स्वभाव पकाने से समाप्त हो गया हो, क्योंकि ठंडा होने पर वह गाढ़ा हो जाता है। [पाद टिप्पणी 2]

[उर्दू खंड] कि जब बाकला पानी में अच्छी तरह पक जाए तो ला-महाल्ला (अनिवार्य रूप से) उसकी बू पानी में आएगी और पकने के यही मायने हैं जैसा कि 108 में गुज़रा। हाँ, इस तक़दीर पर शर्त लगाना बे-सूद (बेकार) होगा और यह इमकान (संभावना) नहीं है कि तबख़ (पकाने) को इस पर महमूल किया जाए कि पकाने के इरादे से डालना, ताकि इस सूरत से एहतराज़ (बचाव) किया जाए जब कि उसको पानी में असर अंदाज़ होने से पहले निकाल लिया जाए क्योंकि यह इस सूरत को भी शामिल है जिसको निकाला जाए उस वक़्त जबकि उससे पानी की बू तब्दील हो जाए और वो पकने न पाए, क्योंकि बू का बदलना पकने पर मौक़ूफ़ (निर्भर) नहीं। इस बिना पर सिर्फ़ बू का बदलना बिला पकाए मोजिब-ए-तक़यीद (प्रतिबंध का कारण) होगा और यह नसूस-ए-मज़कूरा (उल्लिखित

ग्रंथों) के ख़िलाफ़ होगा, नसूस 89 में मज़कूर (वर्णित) हैं, क्योंकि न पकने की सूरत में उसमें और नक़ीअ (निचोड़ा हुआ) में कोई फ़र्क़ नहीं होगा, यह मक़ाम-ए-ग़ौर (सोचने की बात) है। तीसरा क़ौल, ग़ुनिया के मुताबिक़ वो है जिससे इत्तेफ़ाक़ मालूम होता है, वो फ़रमाते हैं तक़यीद पानी में उस वक़्त होती है जब पकने से मुकम्मल इम्तिज़ाज (मिश्रण) हासिल हो जाए, मसलन ये कि पानी में कोई चीज़ पकाई जाए हत्ता कि मुकम्मल तौर पर पक जाए, तो उस वक़्त वो पानी अपनी तबीअत से ख़ारिज (बाहर) हो जाएगा और ये उसका तेज़ी से बहना है, और ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में वो ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाएगा। तो पकाने वाली चीज़ में मुख़ालता (मिश्रण) का क़ायदा ये है कि वो चीज़ पानी में पक जाए, और पकाए बग़ैर मुख़ालता में ये है कि उसकी रक़्क़त (पतलापन) ख़त्म हो जाए।

पाद टिप्पणियां: 1. ग़ुनियतुल मुस्तमली, फ़स्ल अहकामुल मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 90 2. मराक़ी अल-फ़लाह, किताबुल तहारत, मतबा अल-अमीरिय्या मिस्र, पृष्ठ 15

पृष्ठ 615 / 711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ

[عربی متن] فأنه اذا نضج الباقلى في الماء وادرك وجد ريحه من الماء لامحالة وهذا هو معنى الطبخ كما تقدم في ١٠٨(١) نعم على هذا يضيع الشرط ولا امكان لحمل الطبخ على الالقاء بقصده ليكون احترازا عما اذا اخرج قبل ان يؤثر في الماء فأنه ح يشمل ما اذا أخرج بعد ما غير ريح الماء بل ان ينطبخ فان تغير الريح لا يتوقف على النضج فعلى هذا يكون مجرد تغير الريح بدون الطبخ موجبا للتقييد وهو خلاف النصوص المذكورة في ٨٩ فان عند عدم الطبخ لا وجه للفرق بينه وبين النقيع تأمل واما القول الثالث فأفاد في الغنية ما يعطى وفاقه حيث قال التقييد يحصل للماء بكمال الامتزاج بالطبخ بأن يطبخ في الماء شيئ حتى ينضج فحينئذ يخرج الماء عن طبعه وهو سرعة السيلان ولا شك انه اذذاك اذا برد يثخن غالبا فكانت القاعدة في المخالطة بالطبخ ان ينضج المطبوخ في الماء وفى المخالطة بدونه ان تزول رقته اهـ وتبعه في مراقي الفلاح فقال لا بماء زال طبعه بالطبخ لانه اذا برد ثخن (2)۔

[اردو متن] کہ جب باقلا پانی میں اچھی طرح پک جائے تو لامحالہ اس کی بُو پانی میں آئے گی اور پکنے کے یہی معنی ہیں جیسا کہ ١٠٨ میں گزرا۔ ہاں اس تقدیر پر شرط لگانا بے سود ہو گا اور یہ امکان نہیں ہے کہ طبخ کو اس پر محمول کیا جائے کہ پکانے کے ارادہ سے ڈالنا، تاکہ اس صورت سے احتراز کیا جائے جب کہ اس کو پانی میں اثر انداز ہونے سے قبل نکال لیا جائے کیونکہ یہ اس صورت کو بھی شامل ہے جس کو نکالا جائے اس وقت جبکہ اس سے پانی کی بُو تبدیل ہو جائے اور وہ پکنے نہ پائے، کیونکہ بُو کا بدلنا پکنے پر موقوف نہیں اس بناء پر صرف بُو کا بدلنا بلا پکائے موجبِ تقیید ہوگا اور یہ نصوص مذکورہ کے خلاف ہوگا، نصوص ٨٩ میں مذکور ہیں، کیونکہ نہ پکنے کی صورت میں اس میں اور نقیع (نچوڑا ہوا) میں کوئی فرق نہیں ہو گا، یہ مقام غور ہے، تیسرا قول، غنیہ کے مطابق وہ ہے جس سے اتفاق معلوم ہوتا ہے، وہ فرماتے ہیں تقیید

پانی میں اس وقت ہوتی ہے جب پکنے سے مکمل امتزاج حاصل ہو جائے، مثلاً یہ کہ پانی میں کوئی چیز پکائی جائے حتیٰ کہ مکمل طور پر پک جائے، تو اس وقت وہ پانی اپنی طبیعت سے خارج ہو جائیگا اور یہ اس کا تیزی سے بہنا ہے، اور ظاہر ہے کہ ایسی صورت میں وہ ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا ہو جائیگا تو پکانے والی چیز میں مخالطہ کا قاعدہ یہ ہے کہ وہ چیز پانی میں پک جائے، اور پکائے بغیر مخالطہ میں یہ ہے کہ اس کی رقت ختم ہو جائے۔

حواشی: 1 غنیۃ المستملی فصل احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 2 مراقی الفلاح کتاب الطھارۃ مطبعۃ الامیریہ مصر ص ۱۵

Fatawa Razawiya, Volume Two

[Top right snippet:] ...its thinness/fluidity ceases. (End of quote). This same point is stated in Maraqi al-Falah, saying: Not with that water whose natural property has ceased due to being cooked, because when it cools, it will become thick. (T)

I say: There is no cooking except through maturation (boiling), as you have known. Thus, cooking itself is the standard without any additional condition, and this aligns with the masters of established principles. Then, if cooking absolutely results in thickness, a consensus of opinions is achieved, and there is room for discourse in several aspects:

First: What I say is that based on this, no difference remains between the raw and the cooked, since the criterion for both has become thickness, while the Sheikh's words indicate a distinction.

Second: What I also say is that the classification of cooking in 'Al-Yanabi' into the form of thickness and the persistence of thinness indicates that cooking does not necessitate thickness. His saying 'mostly' is of no avail, for if it cools and does not thicken, the permissibility of ablution with it becomes necessary due to the encompassing knowledge of the absence of an impediment.

Third: The researcher of 'Al-Bahr' said in 'Al-Bahr': Ablution is not to be performed with water changed by cooking with something not intended for cleaning, such as broth water and bean water, because it is then not 'absolute water' as it does not come to mind upon the mention of the word 'water'. However, if cleanliness is intended, such as cooking with lotus leaves (Sidr), soap, and potash (Ashnan), then ablution is performed with it, unless it has removed the water from its natural state of thinness and fluidity. And from what has been established, it is known...

Page 616 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

[ऊपरी दाहिना अंश:] ...उसका पतलापन समाप्त हो जाए। (उद्धरण समाप्त)। यही बात 'मराक़ी अल-फ़लाह' में कही गई है, फ़रमाया: उस पानी से नहीं जिसकी प्रकृति पकने के कारण समाप्त हो गई हो क्योंकि जब वह ठंडा होगा, तो गाढ़ा हो जाएगा। (त)

मैं कहता हूँ: पकाना केवल भली-भाँति उबालने (नज़्ज) से ही होता है, जैसा कि आपने जाना है। अत; पकाना स्वयं ही नियम है, जिसमें किसी अतिरिक्त शर्त की आवश्यकता नहीं है, और यह सिद्धांत के विद्वानों के अनुकूल है। इसके अलावा, यदि पकाने से पूर्णतः गाढ़ापन आ जाता है, तो कथनों में सामंजस्य स्थापित हो जाएगा, और इसमें कई पहलुओं से चर्चा की जा सकती है:

पहला: मेरा कहना यह है कि इस आधार पर कच्चे और पके हुए के बीच कोई अंतर नहीं बचा, क्योंकि दोनों का आधार गाढ़ापन हो गया है, जबकि शेख के शब्द उनमें अंतर की ओर संकेत करते हैं।

दूसरा: मैं यह भी कहता हूँ कि 'अल-यनाबी' में पकाने का गाढ़ेपन और तरलता के बने रहने के रूपों में विभाजन यह दर्शाता है कि पकाने से गाढ़ापन अनिवार्य नहीं होता। उनका 'अक्सर' कहना लाभहीन है क्योंकि यदि वह ठंडा होने पर गाढ़ा न हो, तो उससे वज़ू करना अनिवार्य रूप से जायज़ है क्योंकि किसी भी बाधा के न होने का निश्चित ज्ञान है।

तीसरा: 'अल-बहर' के शोधकर्ता ने 'बहर' में कहा है: उस पानी से वज़ू न किया जाए जो पकाने से ऐसी चीज़ के साथ बदल गया हो जिसका उद्देश्य सफाई न हो, जैसे शोरबा और फलियों का पानी, क्योंकि तब वह 'निरपेक्ष जल' नहीं रहता क्योंकि 'जल' शब्द बोलने पर वह तुरंत मन में नहीं आता। लेकिन यदि स्वच्छता का उद्देश्य हो, जैसे बेर के पत्तों (सिद्र), साबुन और अशनार (क्षार) को पानी के साथ पकाया जाए, तो उससे वज़ू किया जाएगा, जब तक कि वह पानी को उसकी तरलता और प्रवाह की प्रकृति से बाहर न कर दे। और जो स्थापित हुआ उससे ज्ञात हुआ...

पृष्ठ 616 का 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

اس کی رقت ختم ہو جائے اھ اور یہی بات مراقی الفلاح میں کہی گئی ہے، فرمایا نہ اس پانی سے جس کی طبیعت پکائے جانے کی وجہ سے ختم ہو گئی کیونکہ جب وہ ٹھنڈا ہوگا گاڑھا ہو جائے گا۔ (ت)

میں کہتا ہوں طبخ بلا نضج نہیں ہوتا ہے جیسا کہ آپ نے جانا، تو طبخ بجائے خود قاعدہ ہے اس میں کسی زائد شرط کی حاجت نہیں اور یہ ضابطہ والوں کے موافق ہے، پھر جب طبخ سے مطلقاً گاڑھا پن پیدا ہوتا ہے تو اقوال میں توافق پیدا ہوگا، اور اس میں کئی وجوہ سے کلام ہو سکتا ہے۔
اول: یہ جو میں کہتا ہوں کہ اس بنا پر کچے اور پکے ہوئے میں کوئی فرق نہیں کیونکہ ان دونوں میں دارومدار گاڑھا ہونا ہے اور شیخ کے کلام سے دونوں میں فرق معلوم ہوتا ہے۔

دوم: میں کہتا ہوں ینابیع میں طبخ کی تقسیم اس طرح کی گئی ہے کہ صورتاً گاڑھا پن ہو اور رقت باقی ہو اس سے معلوم ہوتا ہے کہ طبخ سے گاڑھا پن لازمی نہیں ہوتا ہے، اور ان کے قول غالب کا کوئی فائدہ نہیں، کیونکہ جب ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا نہ ہو تو اس سے وضو جائز ہے کیونکہ مانع کے نہ ہونے کا علم ہے۔

سوم: محقق نے بحر میں فرمایا کہ اس متغیر پانی سے وضو نہ کیا جائے جس کو کسی ایسی چیز کے ساتھ پکایا گیا ہو جو تنظیف کیلئے نہیں ہوتی ہے جیسے شوربہ اور باقلا کا پانی، کیونکہ یہ مطلق پانی نہیں ہے اس لئے کہ جب پانی کا لفظ بولا جاتا ہے تو اس سے یہ پانی متبادر نہیں ہوتا ہے اور اگر وہ چیز ایسی ہو کہ اس سے نظافت مقصود ہو جیسے جھریری، صابون اور اشنان کو پانی کے ساتھ پکایا جائے تو اس پانی سے وضو کیا جائیگا، ہاں اگر...

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

(Arabic Text - Left Column): What was mentioned in At-Tajnīs and Al-Yanābī' (following what was mentioned earlier) is not the chosen fatwa, but it is the saying of An-Nātifī, one of our scholars, may Allah Almighty have mercy on them. What Qādī Khān mentioned points to this (and what was presented earlier is quoted now). He said: And from what we have established, it is known that water cooked with something not intended for excessive cleaning becomes 'restricted' (muqayyad), whether any of its qualities change or not. At that point, it is not appropriate to append it in the Mukhtasar to 'abundance of leaves,' unless it is said that because it became restricted, it changed by cooking. [End of citation]. 'Sh' followed him and said regarding broth and beans that they become restricted whether any of their qualities change or not, and whether the fluidity of the water remains or not, according to the chosen view, as in Al-Bahr.

Fourth: Allamah Al-Birjandi said under the statement of An-Nuqāyah 'even if it changes by staying, etc.': Leaving 'change' absolute and making it a counterpart to 'removal from the nature of water' through cooking, its text suggests that absolute change by cooking is a deterrent, whether it removes it from the nature of water or not. This is understood from Al-Hidāyah, and it is supported by...

(Urdu Text - Right Column): If water loses its natural state, i.e., fluidity and flow cease, then wudu will not be permissible. From the previous discourse, it is also known that whatever is in At-Tajnīs and Al-Yanābī' (which was just quoted) is not the chosen view; rather, it is the saying of An-Nātifī among our scholars. The saying of Qādī Khān points to this (which was just quoted). He said: From our discourse, it is known that if water is boiled with something from which extra cleaning is not intended, it will become 'restricted' (muqayyad), whether its qualities change or not. In this case, its appending in the Mukhtasar to 'abundance of leaves' is not appropriate. Yes, it can be said that when it became restricted, it changed by being cooked. 'Sh' also wrote this and wrote regarding broth and beans that they become restricted whether their qualities change or not, regardless of whether the fluidity of the water remains in it or not. This is the chosen view, as in Al-Bahr. (T)

Fourth: Allamah Birjandi, under the statement of Nuqāyah 'and if it changes by staying etc.', said: Keeping 'change' absolute and making it a counterpart to 'removal from the nature of water,' from this it is evident that absolute change due to cooking

is a preventative factor, whether it removes it from the water's nature or not. This is the meaning from Hidāyah; its support...

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Rā’iq, Discussion on Water, Saeed Company Karachi 1/68. 2. Radd al-Muhtār, Chapter on Waters, Mustafa al-Bābī Egypt 1/133. 3. Sharh al-Nuqāyah by al-Birjandi, Issues of Water, Naval Kishore Lucknow 1/31.

फतावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

(अरबी पाठ - बायाँ कॉलम): जो कुछ 'तजनीस' और 'यनाबी' में उल्लेख किया गया है (पिछले उल्लेख के बाद), वह पसंदीदा (मुख़्तार) मत नहीं है, बल्कि वह हमारे मशाइख़ में से नातिफ़ी का क़ौल है, अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए। क़ाज़ी खाँ ने जो ज़िक्र किया है वह इस पर दलालत करता है (जो पहले गुज़रा उसे अब नक़ल किया गया है)। उन्होंने कहा: और जो हमने तय किया है उससे यह मालूम हुआ कि जिस पानी को ऐसी चीज़ के साथ पकाया जाए जिससे अत्यधिक सफ़ाई मक़सूद न हो, वह 'मुक़य्यद' (सीमित) हो जाता है, चाहे उसके गुणों में से कुछ बदले या न बदले। उस समय, 'मुख़्तसर' में इसका 'अत्यधिक पत्तों' पर उल्लेख (अत्फ़) उचित नहीं है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि जब वह मुक़य्यद हो गया तो पकने के कारण बदल गया। 'श' (टीकाकार) ने उनका अनुसरण किया और शोरबा और बाक़िला (सेम) के बारे में कहा कि वे मुक़य्यद हो जाते हैं, चाहे उनके गुणों में से कुछ बदले या न बदले, और चाहे पानी की तरलता पहले की तरह रहे या न रहे, मुख़्तार मत के अनुसार जैसा कि 'अल-बहर' में है।

चौथा: अल्लामा अल-बिरजंदी ने 'अन-नुक़ाया' के कथन 'चाहे वह रुकने से बदल जाए आदि' के तहत फ़रमाया: 'बदलाव' को व्यापक रखना और उसे पकने के ज़रिए 'पानी की प्रकृति से बाहर निकालने' का समकक्ष बनाना; इससे यह स्पष्ट होता है कि पकने के कारण होने वाला पूर्ण बदलाव बाधक है, चाहे वह उसे पानी की प्रकृति से बाहर निकाले या न निकाले। 'अल-हिदाया' से यही समझा जाता है, और इसका समर्थन...

(उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम): पानी अपनी प्रकृति से निकल जाए यानी रक़्क़त (तरलता) और सैलान (बहाव) ख़त्म हो जाए तो वज़ू जायज़ नहीं होगा, और पिछली तक़रीर से यह भी मालूम हुआ कि जो कुछ 'तजनीस' और 'यनाबी' में है (वह जो अभी गुज़रा) वह मुख़्तार नहीं है बल्कि वह हमारे मशाइख़ में से नातिफ़ी का क़ौल है, क़ाज़ी खाँ का क़ौल इस पर दलालत करता है (जो अभी गुज़रा वह नक़ल किया) फ़रमाया हमारी तक़रीर से मालूम हुआ कि पानी को अगर किसी ऐसी चीज़ से जोश दिया जाए जिससे ज़्यादा तन्ज़ीफ़ (सफ़ाई) मक़सूद न हो तो वह मुक़य्यद हो जाएगा ख़्वाह उसके औसाफ़ (गुणों) में तग़य्युर (बदलाव) हो या न हो इस सूरत में इसका अत्फ़ मुख़्तसर में "बकसरते औराक़" पर मुनासिब नहीं, हाँ यह कहा जा सकता है कि जब वह मुक़य्यद हो गया तो पकने से मुतग़य्यिर हो गया "श" ने भी यही लिखा और शोरबा और बाक़िला में लिखा कि वह मुक़य्यद हो जाएगा ख़्वाह उसके

औसाफ़ में तब्दीली हो या न हो, आम अज़ीं कि इसमें पानी की रक़्क़त रहे या न रहे, मुख़्तार यही है जैसा कि 'बहर' में है। अ.ह. (त)

चहारुम: अल्लामा बिरजंदी ने नुक़ाया के क़ौल 'व इन तग़य्यरा बिल-मक्स इलख़' के तहत फ़रमाया, तग़य्युर को मुतलक़ (व्यापक) रखना और उसको इख़राज मिन तबा-ए-मा (पानी की प्रकृति से बाहर निकालना) का क़सीम (समकक्ष) बनाना, इससे यह ज़ाहिर होता है कि मुतलक़ तग़य्युर पकने की वजह से मानि (बाधक) है, ख़्वाह वह उसको पानी की प्रकृति से निकाले या न निकाले, हिदाया से यही मफ़हूम है, इसकी ताईद...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-बहरुर रैक़, बहसुल मा, सईद कंपनी कराची 1/68 2. रद अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/133 3. शरह अल-नुक़ाया लेखक बिरजंदी, मसाइलुल मा, नवल किशोर लखनऊ 1/31

पृष्ठ 617 / 711

فتاوٰی رضویہ، جلدثانی

(عربی متن - بایاں کالم): ان ماذکرہ فی التجنیس والینابیع (فاثر مامر انفا)لیس ہو المختار بل ہو قول الناطفی من مشایخنا رحمہم اللہ تعالٰی یدل علیہ ماذکرہ قاضی خان (فنقل ما تقدم الان) قال وبما قررناہ علم ان الماء المطبوخ بشیئ لایقصد بہ المبالغۃ فی التنظیف یصیر مقیدا سواء تغیر شیئ من اوصافہ اولم یتغیر فحینئذ لاینبغی عطفہ فی المختصر علی بکثرۃ الاوراق الا ان یقال انہ لما صار مقیدا فقد تغیر بالطبخ اہ وتبعہ ش فقال فی المرق والباقلا انہ یصیر مقید اسواء تغیر شیئ من اوصافہ اولا وسواء بقیت فیہ رقۃ الماء اولا فی المختار کما في البحر - والرابع: قال العلامۃ البرجندی تحت قول النقایۃ وان تغیر بالمکث او اختلط بہ طاھر الا اذا اخرجہ عن طبع الماء او غیرہ طبخا منصہ واطلاق التغییر وجعلہ قسیما للاخراج من طبع الماء یتبادر منہ ان مطلق التغییر بالطبخ مانع سواء اخرجہ عن

(اردو متن - دایاں کالم): پانی اپنی طبیعت سے نکل جائے یعنی رقت اور سیلان ختم ہو جائے تو وضو جائز نہ ہوگا، اور گزشتہ تقریر سے یہ بھی معلوم ہوا کہ جو کچھ تجنیس اور ینابیع میں ہے (وہ نقل کیا جو ابھی گزرا) وہ مختار نہیں ہے بلکہ وہ ہمارے مشائخ میں سے ناطفی کا قول ہے، قاضی خان کا قول اس پر دلالت کرتا ہے (جو ابھی گزرا وہ نقل کیا) فرمایا ہماری تقریر سے معلوم ہوا کہ پانی کو اگر کسی ایسی چیز سے جوش دیا جائے جس سے زیادہ تنظیف مقصود نہ ہو تو وہ مقید ہو جائیگا خواہ اس کے اوصاف میں تغیر ہو یا نہ ہو اس صورت میں اس کا عطف مختصر میں "بکثرۃ الاوراق" پر مناسب نہیں، ہاں یہ کہا جاسکتا ہے کہ جب وہ مقید ہو گیا تو پکنے سے متغیر ہو گیا "ش" نے بھی یہی لکھا اور شور با اور باقلا میں لکھا کہ وہ مقید ہو جائیگا خواہ اس کے اوصاف میں تبدیلی ہو یا نہ ہو، عام ازیں کہ اس میں پانی کی رقت رہے یا نہ رہے، مختار یہی ہے جیسا کہ بحر میں ہے اھ (ت) چہارم: علامہ برجندی نے نقایہ کے قول وان تغیر بالمکث الخ کے

تحت فرمایا، تغییر کو مطلق رکھنا اور اس کو اخراج من طبع الماء کا قسیم بنانا، اس سے متبادر یہ ہوتا ہے کہ مطلق تغییر پکانے کی وجہ سے مانع ہے، خواہ وہ اس کو پانی کی طبیعت سے نکالے یا نہ نکالے، ہدایہ سے یہی مفہوم ہے، اس کی تائید

حواشی: 1 بحر الرائق بحث الماء سعید کمپنی کراچی ۶۸/۱ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۳ 3 شرح النقایة للبر جندی مسائل الماء نولکشور لکھنو ۱/۳۱

Fatawa Razawiyya Volume II [Arabic Column Text] ...boiling of water first. This is the understanding from Al-Hidayah, and it is supported by what is in Al-Khazanah and Fatawa Qadhi Khan, that if fava beans are cooked in it and the smell of the beans is found in it, then performing ablution (wudu) with it is not permissible. It has been mentioned in Al-Fatawa al-Zahiriyya: "When chickpeas or fava beans are cooked..." until the end of what was previously cited from Al-Fath. And I say: And with Allah is success, and through Him is the reaching of the peaks of realization. The action of fire—may Allah protect us from it—is the separation of connections. When something is cooked, the fire reduces its hardness and opens its pores, so water enters it, and its subtle parts come out into the water, causing it to thicken if the water is in the usual amount for cooking things. If the water is very plentiful, then it will not appear [thickened], for the discussion is about standard cooking, and one does not add more than a known amount of water suitable for achieving mixing. This is what Al-Zayla'i and his followers stated, that through cooking, complete mixing occurs. Yes, heat necessitates subtlety; as long as it is hot, that change does not appear as it truly is. By this, the secret of what they (the jurists) said became clear: "When it cools down and becomes thick." This is the differentiating factor between Nabidh (fermented drink) and a cooked substance. For in Nabidh, there is nothing to prevent the appearance of thickness, so it is referred to the loss of thinness itself, unlike...

[Urdu Column Text] ...from Khazanah and Fatawa Qadhi Khan, that if beans were cooked in it and their smell entered the water, then wudu is not valid with it. And in Fatawa Zahiriyya, it is stated: "When chickpeas or beans are cooked, etc." which was cited from Fath. (T) I say, and success is from Allah, the function of fire is to separate what is joined. When something is cooked on fire, the fire removes its hardness and opens its pores, due to which water enters it and its subtle components enter the water. In this way, the water becomes thick when cooked according to habit. When the water is excessive, this thickness is not apparent because the discussion is about customary cooking, and in that, a specific amount of water is mixed so that mixing occurs. In Al-Zayla'i etc., it is stated that complete mixing is achieved through cooking. Yes, heat causes subtlety, so as long as it remains hot, this change cannot become apparent. From this, the hidden secret also became revealed why the jurists say "when water cools down and becomes thick," and this is the point of distinction between the raw and the cooked, because in the raw there is no such thing...

---

[1] Sharh al-Nuqayah by Al-Birjandi, Issues of Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/32.

फतावा रज़विया भाग II [अरबी कॉलम का अनुवाद] ...पहले पानी का उबलना। यही 'अल-हिदाया' से समझा जाता है और 'अल-खज़ाना' तथा 'फतावा काज़ी खान' में जो है, वह इसका समर्थन करता है कि यदि उसमें बाक़ला (सेम) पकाया गया और उसकी गंध पानी में आ गई, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। 'अल-फतावा अल-ज़हीरिया' में उल्लेख है: "जब चने या बाक़ला पकाए जाते हैं..." अंत तक जो पहले 'अल-फतह' से उल्लेखित हो चुका है। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता है, और उसी के माध्यम से शोध की ऊंचाइयों तक पहुंचना संभव है। आग का कार्य—अल्लाह हमें उससे बचाए—जुड़ी हुई चीज़ों को अलग करना है। जब कोई चीज़ पकाई जाती है, तो आग उसकी कठोरता को कम कर देती है और उसके रोम-छिद्रों को खोल देती है, जिससे पानी उसमें प्रवेश कर जाता है और उसके सूक्ष्म अंश पानी में आ जाते हैं, जिससे पानी गाढ़ा हो जाता है, यदि पानी चीजों को पकाने के सामान्य अनुपात में हो। यदि पानी बहुत अधिक हो, तो [गाढ़ापन] दिखाई नहीं देगा। चर्चा मानक पाक विधि के बारे में है जहाँ मिश्रण प्राप्त करने के लिए पानी की एक ज्ञात मात्रा का उपयोग किया जाता है। यही अल-ज़यलई और उनके अनुयायियों ने बताया है कि पकाने के माध्यम से पूर्ण मिश्रण प्राप्त होता है। हाँ, गर्मी सूक्ष्मता का कारण बनती है; जब तक वह गर्म रहता है, यह परिवर्तन वैसा दिखाई नहीं देता जैसा कि वह वास्तव में है। इससे वह रहस्य स्पष्ट हो जाता है कि न्यायविद (फुकहा) क्यों कहते हैं: "जब वह ठंडा हो जाए और गाढ़ा हो जाए।" यही नबीज़ (किण्वित पेय) और पके हुए पदार्थ के बीच अंतर करने वाला कारक है। नबीज़ में गाढ़ापन प्रकट होने से रोकने वाली कोई चीज़ नहीं होती, इसलिए इसे पतलेपन के नष्ट होने के लिए ही संदर्भित किया जाता है, इसके विपरीत...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] खज़ाना और फतावा काज़ी खान से पता चलता है कि अगर उसमें सेम पकाया गया और उसकी गंध पानी में आ गई तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, और फतावा ज़हीरिया में है कि "जब चने या सेम पकाए जाएँ आदि" जैसा कि फतह से उद्धृत किया गया। (त) मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है, आग का काम जुड़ी हुई चीज़ को अलग करना है। जब कोई चीज़ आग पर पकाई जाती है, तो आग उसकी कठोरता को दूर कर देती है और उसके छिद्रों को खोल देती है, जिसकी वजह से उसमें पानी दाखिल हो जाता है और उसके सूक्ष्म तत्व पानी में आ जाते हैं। इस तरह पानी गाढ़ा हो जाता है जबकि पानी आदत के मुताबिक पकाया जाए। और जब पानी बहुत ज़्यादा होता है तो यह गाढ़ापन ज़ाहिर नहीं होता, क्योंकि बातचीत सामान्य पाक कला के बारे में है और उसमें पानी की एक निश्चित मात्रा मिलाई जाती है ताकि मिश्रण प्राप्त हो सके।

ज़यलई वगैरह में यही है कि पकाने से पूर्ण मिश्रण प्राप्त होता है। हाँ, गर्मी सूक्ष्मता पैदा करती है, तो जब तक वह गर्म रहता है, यह बदलाव ज़ाहिर नहीं हो पाता। इसी से यह रहस्य भी खुल गया कि फ़ुकहा फरमाते हैं "जब पानी ठंडा होकर गाढ़ा हो जाए," और यही चीज़ कच्चे और पके हुए के बीच अंतर करने वाली है, क्योंकि कच्चे में ऐसी कोई चीज़ नहीं है...

---

[1] शरह अल-नुकाया, बिरजंदी द्वारा, पानी के मसले, नवल किशोर लखनऊ, 1/32।

فتاوی رضویہ جلد ثانی طبع الماء اولا وھذا ھو المفھوم من الھدایۃ ویؤیدہ ما في الخزانۃ وفتاوی قاضی خان انہ اذا طبخ فیہ الباقلي وریح الباقل یوجد منہ لا یجوز بہ التوضی وقد ذکر في الفتاوی الظھیریۃ انہ اذا طبخ الحمص او الباقلی[1] الی آخر ما تقدم عن الفتح- وانا اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق فعل النار والعیاذ باللہ تعالی منھا تفریق الاتصالات فاذا طبخ شیئ تنزیل النار صلابتہ وتفتح منافذہ فیداخلہ الماء وتخرج اجزاؤہ اللطاف فی الماء فتورثہ ثخونۃ اذا کان الماء علی ماھو المعتاد في طبخ الاشیاء وان لم تظھر اذا کثر الماء جدافان الکلام في الطبخ المعھود ولا یجعل فیہ من الماء الاقدر معلوم موافق لحصول الامتزاج وھذا ما افادالزیلعي واتباعہ ان بالطبخ یحصل کمال الامتزاج نعم الحرارۃ توجب اللطافۃ فمادام حارا لا یظھر ذلك التغیر علی ماھو علیہ وبہ ظھر سرما قالوا اذا صار بحیث اذ برد ثخن وھذا ھو الفارق بین النبیذ و المطبوخ فان النبیذ لیس فیہ ما یمنع ظھور الثخانۃ فاحیل فیہ علی نفس ذھاب الرقۃ بخلاف

خزانہ اور فتاوی قاضی خان سے ہوتی ہے کہ اگر اس میں باقلی پکایا گیا اور اس کی بو پانی میں آگئی تو اس سے وضو جائز نہیں، اور فتاوی ظہیر یہ میں ہے کہ اذا طبخ الحمص او الباقلی الخ جو فتح سے نقل ہوا۔ (ت) میں کہتا ہوں وباللہ التوفیق آگ کا کام متصل کو منفصل کرنا ہے جب کوئی چیز آگ پر پکائی جاتی ہے تو آگ اس کی سختی کو زائل کردیتی ہے اور اس کے سوراخوں کو کھول دیتی ہے جس کی وجہ سے اس میں پانی داخل ہو جاتا ہے اور اس کے لطیف اجزاء پانی میں آجاتے ہیں، اس طرح پانی گاڑھا ہو جاتا ہے جبکہ پانی عادت کے مطابق پکایا جائے اور جب پانی بہت زیادہ ہوتا ہے تو یہ گاڑھا پن ظاہر نہیں ہوتا ہے، کیونکہ گفتگو متعارف پکانے میں ہے اور اس میں ایک معین مقدار کے پانی کی آمیزش کی جاتی ہے تاکہ امتزاج حاصل ہو جائے، زیلعی وغیرہ میں یہی ہے کہ پکانے سے کمال امتزاج حاصل ہوتا ہے، ہاں حرارت لطافت کا موجب ہوتی

ہے تو جب تک وہ گرم رہتا ہے تو یہ تغیر ظاہر نہیں ہونے پاتا ہے، اسی سے یہ راز سربستہ بھی منکشف ہوگیا کہ فقہاء فرماتے ہیں جب پانی ٹھنڈا ہو کر گاڑھا ہو جائے، اور یہی چیز مابہ الامتیاز ہے کچے اور پختہ میں، کیونکہ کچے میں کوئی ایسی چیز نہیں ہے

---

[1] شرح النقایة للبر جندی مسائل الماء نولکشور لکھنو ۱/ ۳۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

[Arabic Column] Cooked items, as long as they are not cooled, are judged based on observation. If it appears that it will thicken upon cooling, then Wudu (ablution) with it is not permissible; otherwise, it is permissible. The reference in this matter is the completion of cooking and maturity, for at that point, full mixing occurs, which normally causes the water to thicken. Thus, with this explanation, and all praise is due to Allah, all difficulties have been resolved. First: The difference between raw and cooked has become clear. Second: "Cooking" in the words of Al-Yanabi' refers to boiling something in water over fire, even if it hasn't reached full maturity, by way of general metaphor. Rather, it is an explanation of a ruling that covers both the usual and the unusual. For example, if someone puts a handful of chickpeas in a large pot of water, it will not thicken upon cooling even if the chickpeas are fully cooked and matured. This is the reason for the restriction of "mostly" in the words of Al-Ghunya. Al-Shurunbulali looked at what is commonly known, so he made an absolute statement that when it cools, it will thicken. And with Allah is success. Third: There are several points regarding this: I say: First (1), it has become clear that the assumption of no change occurring at all along with the achievement of cooking is to assume something that does not happen. Second (2), you have already known that what is in Al-Khaniya...

[Urdu Column] ...which prevents the thickness from appearing, then in that case, the dependence is solely on the end of thinness. Contrary to what is cooked and then cooled, the dependence is on seeing: if it is evident that after cooling it will become thick, then Wudu with it is not permissible, otherwise it will be permissible. The dependence is on the cooking because at that time full mixing is found, and this thing generally causes the thickening of water. Through this discourse, all objections were removed. First: The difference between raw and cooked became clear. Second: In the text of Yanabi', 'Tabkh' (cooking) refers to boiling a thing in water over fire, whether it gets fully cooked or not. This is as a general metaphor. No, rather it is a statement of such a ruling that is common to both the usual and unusual. For example, if someone put a handful of chickpeas in a pot full of water, then this will not become thick upon cooling, no matter how much the chickpeas are cooked. And this is the very meaning of the restriction of 'Ghaliban' (mostly) in the text of Ghunya. And Shurunbulali's gaze went to the common practice, so he gave an absolute statement that when it cools, it will become thick. And with Allah is success. Third: In this, there are a few more noteworthy points: I say first: despite cooking, establishing

this hypothesis that no change has occurred, even after the achievement of cooking, is to suppose something that hasn't happened. Second: what is narrated from Natifi in Khaniya, this...

फतावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी कॉलम] पकी हुई वस्तु जब तक ठंडी न हो जाए, उसका निर्णय देखने पर आधारित है। यदि यह प्रकट होता है कि ठंडे होने पर यह गाढ़ा हो जाएगा, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है; अन्यथा जायज़ है। इस मामले में आधार पकने और परिपक्वता की पूर्णता है, क्योंकि उस स्थिति में पूर्ण मिश्रण होता है, जो सामान्यतः पानी के गाढ़े होने का कारण बनता है। इस स्पष्टीकरण के साथ, और अल्लाह का शुक्र है, सभी शंकाएं पूरी तरह से समाप्त हो गई हैं। पहला: कच्चे और पके के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया है। दूसरा: 'अल-यनाबी' के शब्दों में "पकाना" का अर्थ पानी में आग पर किसी चीज़ को उबालना है, भले ही वह पूरी तरह न पका हो, एक सामान्य अलंकार के रूप में। बल्कि, यह एक ऐसे नियम का वर्णन है जो सामान्य और असामान्य दोनों को शामिल करता है, जैसे कोई व्यक्ति पानी से भरे एक बड़े बर्तन में मुट्ठी भर चने डाल दे; तो चने कितने भी पक जाएं ठंडा होने पर पानी गाढ़ा नहीं होगा। 'अल-ग़ुनिया' के शब्दों में "अक्सर" के प्रतिबंध का यही कारण है। अल-शुरुनबुलाली ने प्रचलित स्थिति पर विचार किया, इसलिए उन्होंने निरपेक्ष रूप से कहा कि जब यह ठंडा होगा, तो गाढ़ा हो जाएगा। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। तीसरा: इसमें कई बातें हैं: मैं कहता हूँ: पहला (1), यह स्पष्ट हो गया है कि पकाने की उपलब्धि के साथ बिल्कुल भी बदलाव न होने की धारणा बनाना एक ऐसी चीज़ को मानना है जो घटित नहीं होती है। दूसरा (2), आप पहले ही जान चुके हैं कि 'अल-खानिया' में क्या है...

[उर्दू कॉलम] ...जो गाढ़ेपन को प्रकट होने से रोकती हो, तो उसमें सारा दारोमदार केवल पतलेपन के समाप्त होने पर है। पके हुए के विपरीत, जो ठंडा हो चुका हो, उसका आधार इस पर है कि देखा जाए: यदि यह स्पष्ट हो कि ठंडा होकर गाढ़ा हो जाएगा तो उससे वज़ू जायज़ नहीं, वरना जायज़ होगा। और आधार इसमें पकना है क्योंकि उसी समय पूर्ण मिश्रण पाया जाता है और यही चीज़ आमतौर पर पानी के गाढ़ा होने का कारण होती है। इस व्याख्या से सभी शंकाएं दूर हो गईं। पहला: कच्चे और पके का अंतर स्पष्ट हुआ। दूसरा: 'यनाबी' की इबारत में 'तब़ख़' (पकाने) से मुराद चीज़ को पानी में आग पर जोश देना है चाहे वह पका हो या न पका हो; यह 'उमूम-ए-मजाज़' (सामान्य अलंकार) के तौर पर है। नहीं, बल्कि यह ऐसे हुक्म का बयान है जो 'मोतात' (सामान्य) और 'ग़ैर-मोतात' (असामान्य) दोनों के लिए आम है। मिसाल के तौर पर, किसी ने एक मुट्ठी चने एक हांडी भर पानी में डाल दिए तो यह ठंडा होने पर गाढ़ा नहीं होगा चाहे चने कितने ही पक जाएं। और 'ग़ुनिया' की इबारत में 'ग़ालिबन' (अक्सर) के प्रतिबंध का यही अर्थ है। और शुरुनबुलाली की नज़र प्रचलित

बात पर गई तो उन्होंने मुतलक़ (निरपेक्ष) बात कही कि जब ठंडा होगा तो गाढ़ा हो जाएगा। और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है। तीसरा: इसमें कुछ और उल्लेखनीय बातें हैं: मैं कहता हूँ पहला: पकने के बावजूद यह फर्ज़ (धारणा) कायम करना कि बदलाव नहीं हुआ है, पकाने के बावजूद एक ऐसी चीज़ को फर्ज़ करना है जो वाक़े(घटित) नहीं हुई है। दूसरा: 'खानिया' में जो नातिफी से मन्क़ूल (वर्णित) है यह...

पृष्ठ ७११ का ६१९

فتاویٰ رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم] المطبوخ مالم یبرد فیحال فیه علی النظر فان ظهرانه یثخن اذا برد لم یجز الوضوء به والا جاز والمرجع فی هذا هو حصول النضج والادراك فان عند ذلك یحصل كمال الامتزاج وهو یوجب فی المعتاد ثخونة الماء فبهذا التقریر ولله الحمد انحلت الاشكالات عن آخرها- فالاول: قد ظهر الفرق بین النیئ والمطبوخ- والثاني: الطبخ فی كلام الینابیع الاغلاء فی الماء علی النار وان لم ینضج علی سبیل عموم المجاز لابل بیان لحكم یعم المعتاد وغیره كمن وضع كفامن حمص فی قدر قربة من الماء فانه لا یثخن حین یبرد وان نضج الحمص وادرك وهذا هو منشؤ التقیید بغالبا فی كلام الغنیة ونظر الشرنبلالی الی المعتاد المعهود فاطلق القول انه اذ برد ثخن وبالله التوفیق- والثالث فیه اشیاء- فأقول: اولا (۱) تبین ان فرض عدم التغیر اصلا مع حصول الطبخ فرض ما لا وقوع له- وثانیا: (۲) قد علمت ان ما فی الخانیة

[اردو کالم] جو گاڑھے پن کو ظاہر ہونے سے روکتی ہو تو اس میں دارومدار صرف رقت کے ختم ہونے پر ہے- برخلاف پکے ہوئے کے جو ٹھنڈا ہوا ہو تو اس کا دارومدار اس پر ہے کہ دیکھا جائے اگر یہ ظاہر ہو کہ ٹھنڈا ہو کر گاڑھا ہو جائیگا تو اس سے وضو جائز نہیں ورنہ جائز ہوگا، اور دارومدار اس میں پکنا ہے کیونکہ اسی وقت کمال امتزاج پایا جاتا ہے اور یہی چیز عام طور پر پانی کے گاڑھا ہونے کا موجب ہوتی ہے، اس تقریر سے تمام اشکالات رفع ہوگئے- اول: کچے اور پکے کا فرق ظاہر ہوا- دوم: ینابیع کی عبارت میں طبخ سے مراد شیئ کو جوش دینا ہے پانی میں آگ پر خواہ پکا ہوانہ ہو، یہ بطور عمومِ مجاز کے ہے، نہیں بلکہ یہ ایسے حکم کا بیان ہے جو معتاد وغیرہ معتاد دونوں کو عام ہے، مثلاً کسی نے ایک مٹھی چنے ایک ہانڈی بھر پانی میں ڈال دیئے تو یہ ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا نہ ہوگا خواہ چنے کتنے ہی پک جائیں، اور غنیہ کی عبارت میں

غالباً کی قید کا یہی مفاد ہے اور شرنبلالی کی نظر معہود پر گئی تو انہوں نے مطلق قول رکھا کہ جب ٹھنڈا ہو گا تو گاڑھا ہو جائے گا وباللہ التوفیق۔ سوم: اس میں چند اور قابل ذکر باتیں ہیں: میں کہتا ہوں اول: پکنے کے باوجود یہ مفروضہ قائم کرنا کہ تغیر نہیں ہوا ہے باوجود حصولِ طبخ کے ایک ایسی چیز کا فرض کرنا ہے جو واقع نہیں ہوئی ہے۔ دوم: خانیہ میں جو ناطفی سے منقول ہے یہ

Fatawa Rizvia, Volume 2

(Right Column): It is not contrary to the previous statement; for this reason, Allama Al-Kaki, the commentator of Al-Hidayah, and Ibn Al-Shalabi, the annotator of Al-Zayla'i, have also attributed Al-Natifi's statement to Qazi Khan. Both these gentlemen stated that when it is cooked and does not become thick, and the thinness of the water remains in it, then wudu (ablution) with it is permissible. Al-Natifi has mentioned this, and it is in Fatawa Qazi Khan. This is alluded to in 'Al-Hulya' because he considered Al-Natifi's discourse to be the gist of Qazi Khan's discussion. Under the text's statement "It is not permissible with bean water," he states that he will soon explain the reason for restricting the non-permissibility with bean water from 'Jami' al-Kabir', which is that it should be cooked in such a way that when it cools down, it becomes thick and its water-like thinness vanishes. Thus, this generalization (even if others besides the author have done the same) will be interpreted in this way so that the contradiction is removed. Therefore, when Quduri mentioned those things with which wudu is not permissible, he mentioned bean water. In Al-Hidayah, it was said that this refers to water that has changed due to cooking. It is better to interpret it as when the name 'water' has been stripped from it, whether cooked or not, as is evident from 'Al-Khaniya'. Then he mentioned his previous discourse regarding raw and cooked substances, which also includes the mention of smell. So if he had considered it contrary to Al-Natifi's statement, his statement would have been considered secondary because only the most apparent and famous view is prioritized. It would not have been appropriate to attribute what he deemed weak to him.

(Left Column): Regarding Al-Natifi, it is not contrary to what was mentioned before. Therefore, the prominent Al-Qawam al-Kaki, commentator of Al-Hidayah, and then Ibn al-Shalabi, annotator of Al-Zayla'i, attributed Al-Natifi's view to Qazi Khan as well. Both said: "If it is cooked but has not thickened, and the thinness of the water remains in it, ablution with it is permissible." Al-Natifi mentioned it, and it is in Fatawa Qazi Khan. This is alluded to by the words in 'Al-Hulya' since he made Al-Natifi's words the gist of what is in Qazi Khan. Under the text's statement "Ablution is not permissible with bean water," it states: "He will soon mention from Al-Jami' al-Kabir the restriction of the non-permissibility of bean water to when it is cooked and such that when it cools down, it thickens and the thinness of the water vanishes. Thus, this general statement—even if others besides the author did the same—will be carried onto that to avoid contradiction." For this reason, when Al-Quduri listed bean water

among the things with which purification is not permissible, the author of Al-Hidayah said: "The meaning is what has been changed by cooking." A better interpretation is to apply it to when the name 'water' has been stripped from it, whether cooked or not, as suggested by what is in 'Al-Khaniya.' He then fully mentioned his previous discourse regarding raw and cooked substances, and it includes the mention of smell. If he had considered it contrary to Al-Natifi's statement, his statement would have been weaker because only the most apparent and famous view is prioritized. It would not have been appropriate to attribute what he deemed weak to him.

Footnotes: 1. Hashiyat al-Shalabi 'ala al-Tabyin, Discourse on Water, Bulaq, Egypt, 19/1. 2. Al-Hulya.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द दो

(दायां कॉलम): पिछले कथन के विरुद्ध नहीं है; इसी कारण अल्लामा काकी (हिदाया के व्याख्याकार) और इब्न-ए-शलबी (ज़ैलई के टीकाकार) ने नातिफी के कथन को काज़ी खान की ओर भी मंसूब किया है। इन दोनों महानुभावों ने फ़रमाया कि जब (पानी) पकाया गया और गाढ़ा न हुआ और पानी का पतलापन उसमें शेष रहा, तो उससे वुज़ू जायज़ है। नातिफी ने इसका उल्लेख किया है और यह फ़तावा काज़ी खान में है। 'अल-हिलया' में इसी ओर इशारा है क्योंकि उन्होंने नातिफी की बात को काज़ी खान की चर्चा का सार माना है। वे मूल पाठ के इस कथन "बाक़िला के पानी से (वुज़ू) जायज़ नहीं" के अंतर्गत कहते हैं कि जल्द ही 'जामे कबीर' के हवाले से बाक़िला के पानी के साथ अपात्रता को सीमित करने का कारण बताएंगे कि वह इस तरह पका हुआ हो कि जब ठंडा हो तो गाढ़ा हो जाए और उसका पतलापन समाप्त हो जाए। तो इस व्यापकता को (यद्यपि लेखक के अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी ऐसा ही किया है) इसी पर आधारित माना जाएगा ताकि विरोधाभास समाप्त हो जाए। इसीलिए जब कुदूरी ने उन वस्तुओं की सूची दी जिनसे पवित्रता प्राप्त करना जायज़ नहीं है, तो उन्होंने बाक़िला के पानी का उल्लेख किया। हिदाया में कहा गया है कि इससे तात्पर्य वह पानी है जो पकने के कारण बदल गया हो। इससे बेहतर यह है कि इसे उस स्थिति पर माना जाए जब उससे 'पानी' का नाम हट गया हो, चाहे वह पका हो या न हो, जैसा कि 'खनिया' से पता चलता है। फिर उन्होंने अपना पिछला कथन उद्धृत किया जो कच्चे और पक्के से संबंधित है, उसी में गंध का भी ज़िक्र है। अतः यदि वे इसे नातिफी के कथन के विरुद्ध समझते, तो उनकी बात गौण होती क्योंकि केवल स्पष्ट और प्रसिद्ध मत को ही वरीयता दी जाती है। फिर जिसे उन्होंने कमज़ोर माना, उसे उनकी ओर मंसूब करना उचित न होता।

(बायां कॉलम): अल-नातिफी का यह कथन पिछले कथन के विरुद्ध नहीं है। इसीलिए अल्लामा काकी (हिदाया के व्याख्याकार) और इब्न-ए-शलबी (ज़ैलई के टीकाकार) ने नातिफी के कथन को काज़ी खान की ओर भी मंसूब किया है। इन दोनों ने कहा है कि जब पानी में कुछ पकाया जाए और वह गाढ़ा न हो और उसमें पानी का पतलापन बना रहे, तो उससे वुज़ू जायज़ है। नातिफी ने इसका उल्लेख किया है और यह फ़तावा काज़ी खान में है। 'अल-हिलया' में इसी ओर इशारा है क्योंकि उन्होंने नातिफी की बात को काज़ी खान की गुफ़्तगू का निचोड़ माना है। वे मूल पाठ के शब्द "बाक़िला के पानी से वुज़ू जायज़ नहीं" के तहत कहते हैं कि जल्द ही 'जामे कबीर' के हवाले से इस पाबंदी की वजह बयान करेंगे कि वह ऐसा पका हुआ हो कि ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाए और उसकी

पानी जैसी तरलता खत्म हो जाए। तो इस आम बात को (चाहे लेखक के अलावा दूसरों ने भी ऐसा ही किया हो) इसी पर आधारित माना जाएगा ताकि विरोधाभास दूर हो जाए। इसीलिए जब कुदूरी ने उन चीज़ों का उल्लेख किया जिनसे वुज़ू जायज़ नहीं है, तो उन्होंने बाक़िला के पानी का ज़िक्र किया। हिदाया में कहा गया है कि इससे मुराद वह पानी है जो पकने से बदल गया हो। इससे बेहतर यह है कि इसे उस स्थिति पर लागू किया जाए जब उससे 'पानी' का नाम छिन गया हो, चाहे वह पका हुआ हो या नहीं, जैसा कि 'खनिया' से पता चलता है। फिर उन्होंने कच्ची और पकी हुई चीज़ों के बारे में अपनी पिछली बात का पूरा उल्लेख किया, जिसमें गंध का भी ज़िक्र है। अगर वे इसे नातिफी के कथन के खिलाफ मानते, तो उनकी बात कमज़ोर मानी जाती क्योंकि केवल स्पष्ट और प्रसिद्ध मत को ही प्राथमिकता दी जाती है। अतः जिसे उन्होंने कमज़ोर माना, उसे उनकी ओर मंसूब करना उचित नहीं होता।

पाद-टिप्पणी: 1. हाशिया अल-शलबी अला अल-तबीन, बहस अल-मा, बुलाक मिस्र, 19/1 2. हिलया

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

گزشتہ قول کے منافی نہیں، اسی لئے علامہ کا کی شارحِ ہدایہ اور ابنِ شلبی محشی زیلعی نے ناطفی کے قول کو قاضی خان کی طرف بھی منسوب کیا ہے، ان دونوں حضرات نے فرمایا جب پکایا گیا اور گاڑھا نہ ہوا اور پانی کی رقت اس میں باقی رہی تو اس سے وضو جائز ہے، اس کو ناطفی نے ذکر کیا ہے، اور یہ فتاوٰی قاضی خان میں ہے اھ اس طرف حلیہ میں اشارہ ہے کیونکہ انہوں نے ناطفی کے کلام کو قاضی خان کی گفتگو کا ما حصل قرار دیا ہے، وہ متن کے قول لا تجوز بماء الباقلی کے تحت فرماتے ہیں کہ عنقریب جامع کبیر سے باقلی کے پانی کے ساتھ عدمِ جواز کے مقید کرنے کی وجہ بیان کرینگے کہ وہ ایسا پکا ہوا ہو کہ جب ٹھنڈا ہو تو گاڑھا ہو جائے اور اس کی رقت زائل ہو جائے تو یہ اطلاق (اگرچہ مصنف کے علاوہ دوسرے حضرات نے بھی ایسا ہی کیا ہے) اس پر محمول کیا جائے گا کہ تناقض مرتفع ہو جائے، اس لئے جب قدوری نے ان اشیاء کا ذکر کیا جن سے وضو جائز نہیں ہے تو باقلی کے پانی کو ذکر کیا، ہدایہ میں فرمایا اس سے مراد وہ پانی ہے جو پکائے جانے سے بدل گیا ہو اور اس کا حمل اس پر زیادہ اچھا ہوگا جبکہ اس پر پانی کا اطلاق ختم ہو گیا ہو خواہ وہ پکا ہوا ہو یا نہ ہو، جیسا کہ خانیہ سے پتا چلتا ہے، پھر انہوں نے اپنا گزشتہ کلام ذکر کیا جو کچے اور پختہ سے متعلق ہے، اسی میں بُو کا بھی تذکرہ ہے تو اگر وہ اس کو ناطفی کے قول کے

عن الناطفی لا یخالف ماقدمه لاجرم ان عزا العلامۃ القوام الکاکي شارح الهدایة ثم ابن الشلبی محشی الزیلعي ماعن الناطفی الی قاضی خان ایضاً فقالا اذا طبخ ولم یثخن بعد ورقة الماء فیه باقیۃ جاز الوضوء به ذکره الناطفی وفی فتاوٰی قاضی خان اھ والیه یشیر کلام الحلیة اذ جعل کلام الناطفی مفاد ما فی قاضی خان حیث قال تحت قول المتن لا تجوز بماء الباقلاء ما نصه سیذکر عن الجامع الکبیر تقیید

عدم الجواز بماء الباقلاء بما اذا كان مطبوخاً و بحال اذا برد ثخن وزالت عنہ رقۃ الماء فیحمل ھذا الاطلاق وان وقع مثلہ لغیر المصنف علی ذلک دفعاً للتناقض ومن ثم لما ذکر القدوری فی عداد ما لا یجوز الطھارۃ بہ ماء الباقلاء قال فی الھدایۃ المراد ماتغیر بالطبخ و احسن منہ حملہ علی ما اذا کان مسلوباً منہ اسم الماء مطبوخاً اولا کما یفیدہ ما فی الخانیۃ فذکر کلامہ المار فی النیئ والمطبوخ تماماً[2] و فیہ حدیث الریح فلو حسبہ مخالفاً لقول الناطفی لکان قولہ مرجوحاً لانہ انما یقدم الاظھر الاشھر فلم یکن یحسن نسبۃ مازیفہ الیہ و من

[1] حاشیۃ الشلبی علی التبیین بحث الماء بولاق مصر ۱/۱۹ [2] حلیہ

[Arabic Text - Left Column] The proof for this is that Imam Qadi Khan himself clearly stated what Imam al-Natifī said, and he affirmed it in most reliable works in his commentary on *Al-Jami' al-Saghir*, as attributed to him in *Al-Ghunyah*. Thirdly, it is surprising (1) that he, may Allah Almighty have mercy on him, argues using the phrasing from *Al-Khaniyah*, where he stipulated the presence of odor and then said, "regardless of whether any of its qualities changed or not." Fourthly: (2) He denied the conjunction to "abundance of leaves," yet there is nothing else suitable for conjunction except that. For the phrasing in *Al-Mukhtasar* is: "One performs ablution with rainwater and seawater, and if one of its qualities is changed but it remains pure, or if it becomes foul-smelling due to stagnation, not if it changed due to an abundance of leaves or by cooking." If it is not conjoined to "abundance [of leaves]," then it must be conjoined to "that which changed," i.e., "one does not perform ablution with what is cooked," which is the talk of a washed person. Fifthly: (3) Interpreting it to mean the change in its nature or quality; however, its general application does not hold in the phrasing of *Al-Niqayah* and *Al-Islah* that "change by cooking is with it." This is something from which cleanliness is not intended. Based on this, it would imply the permissibility of ablution with what changed from the absolute state by cooking with a cleaning agent. This is certainly not the intention. Rather, the matter is that when it changed by cooking, it became restricted, "changed by cooking."

[Urdu Text - Right Column] If they considered it opposing, then their opinion would be non-preferable (marjuh), because they prioritize the clearest and most famous. So, attributing the opinion they deemed undesirable to them is not good. The proof for this is that Qadi Khan himself clarified the matter mentioned by Imam Natifi, and he firmly stated it in his general reliable works within the commentary on *Jami' Saghir*, and it is attributed to him in *Ghunyah*. Third: The wonder is that he is reasoning from the text of *Khaniyah*, and they have placed the condition of smell, then said whether some of its qualities have changed or not. Fourth: He denied the conjunction on "abundance of leaves" whereas only conjunction on that is possible because the text of *Mukhtasar* is "One performs ablution with rainwater etc.", so if conjunction is not made on "abundance", it will have to be on "with what changed", and that is wrong. Fifth: To interpret this as meaning the change of its nature or quality is not the case, rather their general phrasing cannot work in the phrasing of *Islah* and *Niqayah* that "change by cooking is with it", and this is such a thing from which cleanliness is not

intended, therefore on this basis, wudu would be permissible from that thing by which change occurred, i.e., when cooking with a cleaning agent is kept absolute.

[Footnotes] 1. Bahr al-Ra'iq, chapter on water, Saeed Company Karachi 28/1 2. Kanz al-Daqaiq, chapter on water, Educational Press Karachi 11/1

[अरबी पाठ - बायां कॉलम] इसका प्रमाण यह है कि इमाम काज़ी ख़ान ने स्वयं वही बात स्पष्ट की है जो इमाम अल-नातीफ़ी ने कही थी, और उन्होंने 'अल-जामी अल-सग़ीर' की अपनी व्याख्या में अधिकांश विश्वसनीय कृत्यों में इसकी पुष्टि की है, जैसा कि 'अल-ग़ुनिया' में उनके हवाले से उल्लेख किया गया है। तीसरा, यह आश्चर्यजनक (1) है कि वे, अल्लाह उन पर दया करे, 'अल-खानीय' के वाक्यांश का उपयोग करके तर्क देते हैं, जहाँ उन्होंने गंध की उपस्थिति की शर्त रखी और फिर कहा, "चाहे उसके गुणों में से कुछ बदला हो या न बदला हो।" चौथा: (2) उन्होंने "पत्तों की प्रचुरता" के साथ जोड़ने से इनकार किया, जबकि वहाँ इसके अलावा जोड़ने के लिए कुछ भी उपयुक्त नहीं है। क्योंकि 'अल-मुख़्तसर' का वाक्यांश है: "कोई व्यक्ति बारिश के पानी और समुद्री पानी से वज़ू करता है, और यदि उसके गुणों में से एक बदल गया है लेकिन वह शुद्ध है, या यदि वह ठहराव के कारण दुर्गंधयुक्त हो गया है, तो नहीं यदि वह पत्तों की प्रचुरता या खाना पकाने के कारण बदला हो।" यदि इसे "प्रचुरता" के साथ नहीं जोड़ा जाता है, तो इसे "जो बदल गया" के साथ जोड़ना होगा, अर्थात "कोई उस चीज़ से वज़ू नहीं करता जो पकी हुई है," जो एक धुले हुए व्यक्ति की बात है। पाँचवाँ: (3) इसकी व्याख्या करना कि इसका अर्थ उसकी प्रकृति या गुण में परिवर्तन है; हालाँकि, इसका सामान्य प्रयोग 'अल-निक़ाया' और 'अल-इस्लाह' के वाक्यांशों में नहीं टिकता कि "पकाने से परिवर्तन उसके साथ है।" यह एक ऐसी चीज़ है जिससे स्वच्छता का इरादा नहीं है। इस आधार पर, यह एक सफाई एजेंट के साथ पकाने के द्वारा निरपेक्ष अवस्था से जो बदला गया है, उससे वज़ू की अनुमति का संकेत देगा। यह निश्चित रूप से इरादा नहीं है। बल्कि, मामला यह है कि जब यह पकाने से बदल गया, तो यह प्रतिबंधित हो गया, "पकाने से बदल गया।"

[उर्दू पाठ - दायां कॉलम] अगर वे इसे विरोधी समझते, तो उनकी राय गौण (मर्जूह) होती, क्योंकि वे सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध को प्राथमिकता देते हैं। इसलिए, जिस राय को उन्होंने अवांछनीय माना है, उसे उनकी ओर श्रेय देना अच्छा नहीं है। इसका प्रमाण यह है कि स्वयं काज़ी ख़ान ने उस बात को स्पष्ट किया है जिसका उल्लेख इमाम नातीफ़ी ने किया है, और उन्होंने 'जामी सग़ीर' की व्याख्या में अपने सामान्य विश्वसनीय कार्यों में इसे दृढ़ता से कहा है, और 'ग़ुनिया' में इसे उनकी ओर श्रेय दिया गया है। तीसरा: आश्चर्य यह है कि वे 'खानिया' के पाठ से तर्क कर रहे हैं, और उन्होंने गंध की शर्त रखी है, फिर कहा कि चाहे उसके गुणों में से कुछ बदला हो या न बदला हो। चौथा: उन्होंने "पत्तों की प्रचुरता" पर जोड़ने से इनकार किया है जबकि वहाँ केवल उसी पर जोड़ना संभव है क्योंकि

'मुख़्तसर' का पाठ है "कोई वर्षा के जल आदि से वज़ू करता है", इसलिए यदि "प्रचुरता" पर जोड़ नहीं बनाया जाता है, तो इसे "जिसके साथ परिवर्तन हुआ" पर करना होगा, और वह गलत है। पाँचवाँ: इसकी यह व्याख्या करना कि इसका अर्थ उसकी प्रकृति या गुण का बदलना नहीं है, बल्कि उनकी सामान्य शब्दावली 'इस्लाह' और 'निक़ाया' की शब्दावली में नहीं चल सकती कि "पकाने के साथ परिवर्तन उसके साथ है", और यह ऐसी चीज़ है जिससे स्वच्छता का उद्देश्य नहीं है, इसलिए इस आधार पर उस चीज़ से जिससे परिवर्तन हुआ वज़ू जायज़ होगा, यानी जब सफाई वाली चीज़ के साथ पकाने को निरपेक्ष रखा जाए।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. बहर अल-राइक़, पानी का अध्याय, सईद कंपनी कराची 28/1 2. कंज़ अल-दक़ाइक़, पानी का अध्याय, एजुकेशनल प्रेस कराची 11/1

[عربی متن - بایاں کالم] الدلیل علیہ ان الامام قاضی خاں نفسہ صرح بہذا الذی قالہ الامام الناطفی وجزم بہ فی عامۃ المعتمدات فی شرحہ للجامع الصغیر کما عزاہ لہ فی الغنیۃ۔ وثالثا العجب(1)انہ رحمہ اللہ تعالیٰ یحتج بعبارۃ الخانیۃ وقد شرط وجود الرائحۃ ثم یقول سواء تغیر شیئ من اوصافہ اولا ورابعا: (2)انکر العطف علی بکثرۃ الاوراق ولیس ثمہ ما یصلح لعطفہ الا ھو فان عبارۃ المختصر یتوضوء بماء السماء والبحر وان غیر طاہر احداوصافہ اوانتن بالمکث لاما تغیر بکثرۃ الاوراق او بالطبخ فان لم یعطف علی بکثرۃ یعطف علی بما تغیر ای لایتوضوء بالطبخ وھو کلام مغسول وخامسا: (3)تأویلہ بان المراد تغیر طبعہ او وصفہ بل اطلاقہ لایتمشی فی عبارۃ النقایۃ والاصلاح تغیر بالطبخ معہ وھو مما لایقصد بہ النظافۃ اذ یفید علی ھذا جواز الوضوء بما تغیر من الاطلاق بالطبخ مع المنظف ولیس مراد قطعا فانما الامر انہ لما تغیر بالطبخ صار مقیدا تغیر بالطبخ۔

[اردو متن - دایاں کالم] مخالف سمجھتے تو ان کا قول مرجوح ہوتا، کیونکہ وہ اظہر واشہر کو مقدم کرتے ہیں، تو جس قول کو انہوں نے ناپسندیدہ قرار دیا اسی کی نسبت ان کی طرف اچھی نہیں، اس کی دلیل یہ ہے کہ خود قاضی خان نے اس چیز کی تصریح کی ہے جو امام ناطفی نے ذکر کیا ہے اور اسی پر انہوں نے اپنی عام معتمدات میں جامع صغیر کی شرح میں جزم کیا ہے اور غنیہ میں اس کو ان کی طرف منسوب کیا ہے۔ سوم: تعجب اس پر ہے کہ وہ خانیہ کی عبارت سے استدلال کر رہے ہیں اور انہوں نے بُو کی شرط لگائی ہے پھر فرمایا عام ازیں کہ اس کے اوصاف میں سے کچھ بدلا ہو یا نہ بدلا ہوا ہو۔ چہارم: بکثرۃ الاوراق پر عطف کا انکار کیا ہے حالانکہ وہاں صرف اسی پر عطف ممکن ہے کیونکہ مختصر کی عبارت یہ ہے یتوضوء بماء السماء الخ تو اگر بکثرۃ پر عطف نہ کیا جائے تو بما تغیر پر کرنا ہوگا، اور یہ غلط ہے۔ پنجم: اس کی یہ تاویل کرنا کہ مراد

اس کی طبیعت یا وصف کا بدلنا نہیں ہے، بلکہ ان کی عبارت کا اطلاق اصلاح ونقایہ کی عبارت میں نہیں چل سکتا ہے کہ تغیر بالطبخ معہ ہے، اور یہ وہ چیز ہے جس سے نظافت مقصود نہ ہو، اس لئے کہ اس بناء پر اُس چیز سے جس سے تغیر واقع ہو وضو جائز ہوگا، یعنی جب کہ نظافت والی چیز کے ساتھ پکانے کو مطلق رکھا جائے،

[حواشی] 1 بحر الرائق بحث الما سعید کمپنی کراچی ۲۸/۱ 2 کنز الدقائق بحث الما ایجوکیشنل پریس کراچی ۱۱/۱

Fatawa Razawiyya Volume Two

I say: (1) A change occurred in the expression of "Sh" (the commentator) for the benefit of "Al-Bahr" (the book Al-Bahr al-Raiq). For his statement "In Al-Mukhtar, as it is in Al-Bahr" might lead one who has not referred back to Al-Bahr into the delusion that it is a reported correction in Al-Bahr from its authorities. Indeed, he (may Allah have mercy on him) was not among its associates, as "Sh" admitted in "Uqud Rasm al-Mufti". We have explained this in our treatise "Hibatu al-Jir fi Amq Ma' Kathir" (The Gift of Lime in the Depths of Abundant Water). It is not like that; he only said it due to his own disagreement; he does not consider it the preferred view. (T) Although this is definitely not intended, because when it changed due to cooking, it became restricted; it's not that when it became restricted, it changed due to cooking. (T) I say: The change in the text of "sh" is for the benefit of "Bahr", because his saying "in Al-Mukhtar as in Al-Bahr" can involve a person who has not seen "Bahr" in the delusion that this is a correction of the report in "Bahr" which he copied from someone, because he is not from its associates, just as "sh" has admitted this in "Uqud Rasm al-Mufti" and we have mentioned it in "Hibat al-Jir fi Umq Ma' Kathir", whereas the reality is not so. He said this because he is opposed to it from his own side, and he does not consider it the chosen (Mukhtar) view. (T)

Fourth: (2) Since the loss of natural state through cooking might only appear when it cools, the division is correct. Thus, raw state is judged based on actual thickness, and cooked state based on its evidence. It seems Al-Birjandi points to this by following it with the speech from "Al-Zahiriyya". Thus, if Allah wills, it is established on the throne of investigation, with good success in application and reconciliation. And success is from Allah, Glory be to Him. (T) Fourthly: The removal of nature due to cooking sometimes does not manifest; yes, when it cools down then the division is correct. So for the raw, the dependence will be on its thickness and for the cooked it will be on its evidence and probably Birjandi is pointing in this direction as he has brought the speech of Zahiriya after it. This is its complete investigation. (T)

(218) Boiling fruits in water and squeezing their juice; although this juice will be mixed with water as the fruits absorb the water due to the heat of the fire, especially when crushed and added, wudu (ablution) is not permissible with it. It is stated in the Fatawa of Imam Qazi Khan: It is not permissible to perform wudu with fruit water, and its explanation is to finely crush apples or quinces then... Performing ablution with fruit water is not permissible. Its meaning is that apples or guavas should be crushed finely and...

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

अक़ूल: (1) 'श' (टीकाकार) की अभिव्यक्ति में 'अल-बहर' (किताब का नाम) के लाभ के लिए बदलाव हुआ है। उनका यह कथन "अल-मुख़्तार में वैसे ही है जैसे अल-बहर में है" उस व्यक्ति को, जिसने अल-बहर का संदर्भ नहीं लिया है, इस भ्रम में डाल सकता है कि यह अल-बहर में उसके अधिकारियों से रिपोर्ट किया गया सुधार है। वास्तव में, वह (अल्लाह उन पर दया करे) उसके सहयोगियों में से नहीं थे, जैसा कि 'श' ने 'उक़ूद रस्म अल-मुफ़्ती' में स्वीकार किया है। हमने अपनी शोध-पत्रिका 'हिबतुल जीर फ़ी अमुख माए कसीर' में इसे स्पष्ट किया है। ऐसा नहीं है; उन्होंने इसे केवल अपनी असहमति के कारण कहा था; वे इसे पसंदीदा विचार नहीं मानते। (त) हालाँकि यह निश्चित रूप से अभिप्रेत नहीं है, क्योंकि जब पकाने के कारण इसमें बदलाव आया, तो यह प्रतिबंधित हो गया; ऐसा नहीं है कि जब यह प्रतिबंधित हो गया, तो पकाने के कारण इसमें बदलाव आया। (त) मैं कहता हूँ: 'श' के पाठ में परिवर्तन 'बहर' के लाभ के लिए है, क्योंकि उनका यह कहना कि "मुख़्तार में वैसा ही है जैसा बहर में है" उस व्यक्ति को भ्रमित कर सकता है जिसने 'बहर' नहीं देखी है कि यह 'बहर' की रिपोर्ट का सुधार है जिसे उन्होंने किसी से कॉपी किया है, क्योंकि वे उसके सहयोगियों में से नहीं हैं, जैसा कि 'श' ने 'उक़ूद रस्म अल-मुफ़्ती' में इसे स्वीकार किया है और हमने इसका उल्लेख 'हिबत अल-जीर फ़ी अमुख माए कसीर' में किया है, जबकि वास्तविकता ऐसी नहीं है। उन्होंने यह इसलिए कहा क्योंकि वे अपनी ओर से इसके विरुद्ध हैं, और वे इसे चुना हुआ (मुख़्तार) विचार नहीं मानते। (त)

चौथा: (2) चूंकि खाना पकाने के माध्यम से प्राकृतिक स्थिति का नुकसान केवल ठंडा होने पर ही दिखाई दे सकता है, इसलिए विभाजन सही है। इस प्रकार, कच्ची अवस्था का निर्णय वास्तविक मोटाई के आधार पर किया जाता है, और पकी हुई अवस्था का उसके प्रमाण के आधार पर। ऐसा लगता है कि अल-बिरजंदी 'अल-ज़हीरिया' के भाषण के साथ इसका अनुसरण करके इसी ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार, यदि अल्लाह की इच्छा हो, तो यह आवेदन और सामंजस्य में अच्छी सफलता के साथ जांच के सिंहासन पर स्थापित है। और सफलता अल्लाह की ओर से है, वह पवित्र है। (त) चौथा: खाना पकाने के कारण प्रकृति का हटना कभी-कभी प्रकट नहीं होता है; हाँ, जब यह ठंडा हो जाता है तब विभाजन सही होता है। तो कच्चे के लिए, निर्भरता उसके गाढ़ेपन पर होगी और पके हुए के लिए यह उसके प्रमाण पर होगी और शायद बिरजंदी इसी दिशा में इशारा कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने इसके बाद ज़हीरिया का भाषण दिया है। यह इसकी पूर्ण जांच है। (त)

(218) पानी में फलों को उबालना और उनका रस निचोड़ना; यद्यपि यह रस पानी में मिश्रित होगा क्योंकि आग की गर्मी के कारण फल पानी सोख लेंगे, विशेष रूप से जब कुचलकर डाला जाए, तो इसके साथ वज़ू करना जायज़ नहीं है। इमाम क़ाज़ी ख़ान के फ़तावा में कहा गया है: फलों के पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है, और इसका स्पष्टीकरण यह है कि सेब या वही (क्विस) को बारीक कुचल दिया जाता है, फिर... फलों के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है। इसका अर्थ यह है कि सेब या अमरूद को बारीक टुकड़ों में कूट लिया जाए और...

पृष्ठ 711 का 622

فتاوی رضویہ جلد ثانی

اقول: (۱) ووقع فی تعبیر ش تغییر لمفاد البحر فان قولہ فی المختار کما فی البحر یوقع من لا یراجع البحر فی توھم انّہ تصحیح منقول فی البحر عن اھلہ فانہ رحمہ اللہ تعالٰی لم یکن من اصحابہ کما اعترف بہ ش فی عقود رسم المفتی و بیناہ فی رسالتنا ھبۃ الجیر فی عمق ماء کثیر ولیس کذلک وانما قال لخلافہ من قبل نفسہ لیس ہو المختار ۔ حالانکہ یہ قطعاً مراد نہیں ہے، کیونکہ جب پکانے سے متغیر ہو گیا تو مقید ہو گیا یہ نہیں کہ جب مقید ہو گیا تو پکانے سے متغیر ہو گیا۔ (ت) میں کہتا ہوں "ش" کی عبارت میں تبدیلی بحر کے مفاد کیلئے ہے کیونکہ ان کا قول فی المختار کما فی البحر ایک ایسے شخص کو جس نے بحر نہ دیکھی ہو اس وہم میں مبتلا کر سکتا ہے کہ یہ بحر کے منقول کی تصحیح ہے جو انہوں نے کسی سے نقل کیا ہے، کیونکہ وہ اس کے اصحاب سے نہیں جیسا کہ اس کا اعتراف "ش" نے عقود رسم المفتی میں کیا ہے اور ہم نے اس کو "ہبۃ الجیر فی عمق ماء کثیر" میں ذکر کیا ہے جبکہ امر واقعہ یہ نہیں ہے، یہ بات انہوں نے اس لئے کہی ہے کہ وہ اپنی طرف سے اس کے مخالف ہیں، وہ مختار نہیں سمجھتے (ت)

والرابع: (۲) لما کان زوال الطبع بالطبخ ربما لا یظھر الا اذابر دصح التقسیم فیحال فی النیئ علی عین الثخونۃ وفی المطبوخ علی دلیلھا وکأنہ الی ہذا یشیر البرجندی بتعقیبہ بکلام الظھیریۃ فاستقر ان شاء اللہ تعالٰی ولہ الحمد عرش التحقیق بحسن التوفیق علٰی التطبیق والتوفیق وباللہ سبحنہ وتعالٰی التوفیق۔

چہارم: پکنے کی وجہ سے طبیعت کا زائل ہونا کبھی ظاہر نہیں ہوتا ہے، ہاں جب ٹھنڈا ہوتا ہے تو تقسیم صحیح ہے، تو کچے کا دارومدار گاڑھے پن پر ہوگا اور پکے ہوئے میں اس کی دلیل پر ہوگا اور غالباً برجندی اسی طرف اشارہ کر رہے ہیں کہ وہ اس کے بعد ظہیریہ کے کلام کو لائے ہیں، یہ اس کی مکمل تحقیق ہے۔ (ت)

(۲۱۸) پانی میں میوے جوش دے کر اُن کا عرق نچوڑا یہ عرق اگرچہ پانی سے مخلوط ہوگا کہ حرارت نار کے سبب میوے پانی کا تشرب کریں گے خصوصاً جبکہ کُوٹ کر ڈالے اس سے وضو جائز نہیں۔ فتاویٰ امام قاضی خان میں ہے: لا یجوز التوضؤ بماء الفواکہ وتفسیرہ ان یدق التفاح او السفر جل دقاً ناعماً ثم پھلوں کے پانی سے وضو جائز نہیں اس کا مفہوم یہ ہے کہ سیب یا امرود کو باریک باریک کُوٹ لیا جائے اور

Fatawa Rizwia, Volume II

Arabic Text	Urdu Translation
'They are squeezed and water is extracted from them. Some said the interpretation is that apples or quinces are crushed and cooked with water, then squeezed to extract the water. In both cases, performing Wudu with it is not permissible because it is not absolute water.'[1]	Then they should be squeezed to extract water from them. Some have explained its meaning as: apples or quinces are finely chopped and cooked with water, then squeezed and the water extracted; in both scenarios, Wudu is not valid with it because it is not absolute water. (T)

(219) The ruling for water in which fruits are boiled was not mentioned. I say: and from Him I seek help, if the fruits are lightly boiled so that they soften slightly to be squeezed well and then removed such that their subtle components do not significantly change the water, then Wudu with this water should be permissible. Now, this water would fall under numbers 108 and 109. But if the fruits are cooked so much that they change the water, then even after removing them, Wudu with this water is invalid; this will be number 219. (220) If henna, dye, or a thick paste (Dimaad) is applied to the head, and while performing Masah (wiping), the hand passes over it: if that paste (1) or dye is thin without substance, like oil, then Masah is done in its place. If it has substance, then Masah of one-fourth of the head is done outside of it, but the hand passed over it. If during this passing, the moisture of the hand mixes with the components of the dye/paste such that the moisture is no longer called water, then Masah will not be valid; otherwise, it is valid. This is number (221) which should be added to the permissible cases. In Wajeez Imam Kardari, in the chapter of Masah, it says:

Arabic Text	Urdu Translation
'I wiped over the dye; if the moisture mixed with the dye until it ceased to be absolute water, it is not permissible.'[2]	Masah was done over the dye; if the moisture mixed with the dye such that it ceased to be absolute water, then Masah is not permissible. I say: it is necessary to restrict its meaning with the condition I have mentioned; understand this well. (T)

I say: Its meaning must be restricted to what I have mentioned, so know this. (222) If parched grain flour (Sattu) is dissolved in water such that it is no longer thin, then Wudu with it is invalid. In Hidayah and Kaafi, it says:

Arabic Text	Urdu Translation
'Unless it overpowers the water and becomes like parched grain beverage (Sawiq).'	Unless it dominates the water so that the water becomes like parched grain flour mix.

[1] Fatawa Qazi Khan, Chapter on what is not permissible for Wudu, Nawal Kishore Lucknow, 1/9 [2] Fatawa Bazzaziyah with Al-Alamgiriyah, the fourth regarding Masah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/15

फ़तावा रज़विया, जिल्द दोयम

अरबी पाठ

'उन्हें निचोड़ा जाए और उनसे पानी निकाला जाए। कुछ ने इसकी व्याख्या यह की है कि सेब या अमरूद को कूट कर पानी के साथ पकाया जाए, फिर निचोड़ कर पानी निकाला जाए। दोनों ही सूरतों में इससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि यह मुतलक़ पानी (मा-ए-मुतलक़) नहीं है।'[1]

उर्दू अनुवाद

फिर उन्हें निचोड़कर उनसे पानी निकाला जाए, कुछ ने इसका अर्थ यह बताया है कि सेब या अमरूद को बारीक काटकर पानी के साथ पकाया जाए, फिर निचोड़ा जाए और पानी निकाला जाए; दोनों ही स्थितियों में इससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि यह मुतलक़ पानी नहीं है। (त)

(२१९) यह पानी जिसमें मेवे उबाले जाएं, उसका हुक्म ज़िक्र नहीं फ़रमाया। मैं कहता हूँ: और उसी से मैं मदद चाहता हूँ, अगर मेवे हल्के उबाले जाएँ जिससे वे थोड़े नरम हो जाएँ ताकि ठीक से निचोड़े जा सकें और उन्हें निकाल लिया जाए कि पानी में उनके सूक्ष्म अंश ज़्यादा बदलाव न ला पाएँ, तो इस पानी से वज़ू जायज़ होना चाहिए। अब यह पानी नंबर १०८ और १०९ में शामिल होगा। और अगर मेवे उसमें पक गए कि उसे बदल दिया, तो उनके निकाल लेने के बाद भी इस पानी से वज़ू नाजायज़ है; यह २१९ नंबर होगा। (२२०) सर पर मेहंदी या कोई ख़िज़ाब या लेप (ज़िमाद) लगा हुआ है और मसह करते समय हाथ उस पर से गुज़रता है: यदि वह लेप (१) या ख़िज़ाब बिना किसी ठोस पदार्थ के पतला है जैसे तेल, तो उसी की जगह मसह किया गया। यदि वह ठोस है, तो उसके बाहर चौथाई सर के बराबर मसह किया गया लेकिन हाथ उस पर से गुज़रा। अगर इस गुज़रने में हाथ की नमी में उस ख़िज़ाब और लेप के अंश ऐसे मिल गए कि अब वह नमी पानी न कहलाए, तो मसह जायज़ न होगा, वरना जायज़ है। यह नंबर (२२१) हुआ जिसे जायज़ात (जायज़ चीज़ों) में जोड़ा जाना चाहिए। वजीज़ इमाम करदरी के मसह के अध्याय में है:

अरबी पाठ

'ख़िज़ाब पर मसह किया, अगर तरी (नमी) ख़िज़ाब से मिल गई यहाँ तक कि वह मुतलक़ पानी

उर्दू अनुवाद

ख़िज़ाब पर मसह किया गया; अगर तरी ख़िज़ाब से मिल गई यहाँ तक कि वह मुतलक़ पानी होने से बाहर हो गई, तो इससे मसह जायज़ नहीं। मैं कहता हूँ: इसके अर्थ को उस शर्त के साथ

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
रहने से बाहर हो गई, तो जायज़ नहीं।'[2]	सीमित करना ज़रूरी है जिसका मैंने ज़िक्र किया है, इसे अच्छी तरह समझ लें। (त)

मैं कहता हूँ: इसके अर्थ को मेरे द्वारा बताए अनुसार सीमित करना आवश्यक है, अतः जान लो। (२२२) पानी में सत्तू घुले हों कि वह पतला न रहे, तो उससे वज़ू नाजायज़ है। हिदाया और काफ़ी में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
'मगर यह कि वह पानी पर हावी हो जाए और सत्तू जैसा हो जाए।'	मगर यह कि वह पानी पर हावी हो जाए कि पानी सत्तू की तरह हो जाए।

[1] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर लखनऊ, १/९ [2] फ़तावा बज़ाज़िया साथ आलमगीरी, चौथा मसह के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, २/१५

عربی عبارت	اردو ترجمہ
یعصرہ فیستخرج منہ الماء وقال بعضھم تفسیرہ ان یدق التفاح او السفرجل ویطبخ بالماء ثم یعصر فیستخرج منہ الماء وفی الوجھین لا یجوز بہ التوضوء لانہ لیس بماء مطلق[1] -	پھر ان کو نچوڑ کر ان سے پانی نکالا جائے، بعض نے اس کا مفہوم یہ بتایا ہے کہ سیب یا امرود کو باریک کرکے پانی کے ساتھ پکایا جائے پھر نچوڑا جائے اور پانی نکالا جائے اور دونوں صورتوں میں اس سے وضو جائز نہیں کیونکہ یہ مطلق پانی نہیں ہے۔ (ت)

(۲۱۹) یہ پانی جس میں میوے جوش دے اس کا حکم ذکر نہ فرمایا۔ واقول: وبہ استعین اگر میوے خفیف جوش دے جس میں قدرے نرم ہو کر نچوڑنے میں اچھی طرح آئیں اور نکال لئے کہ پانی میں ان کے اجزائے لطیفہ قدرے تغیر نہ ملنے پائے تو اس پانی سے وضو جائز ہونا چاہئے اور اب یہ پانی نمبر ۱۰۸ و ۱۰۹ میں داخل ہوگا اور اگر میوے اس میں پک گئے کہ اسے متغیر کر دیا تو ان کے نکال لینے کے بعد بھی اس پانی سے وضو ناجائز ہے یہ ۲۱۹ نمبر ہوگا۔ (۲۲۰) سر پر مہندی یا کوئی خضاب یا ضماد لگا ہوا ہے اور مسح کرتے میں ہاتھ اس پر گزرتا ہوا پہنچایوں کہ یا تو وہ ضماد (۱) و خضاب رقیق بے جرم مثل روغن ہے تو اسی کی جگہ مسح کیا وہ جرم دار ہے تو اس کے باہر چہارم سر کی قدر مسح کیا مگر ہاتھ اس پر ہوتا گزرا اگر اس گزرنے میں ہاتھ کی تری میں اس خضاب و ضماد کے اجزاء ایسے مل گئے کہ اب وہ تری پانی نہ کہلائے گی تو مسح جائز نہ ہوگا ورنہ جائز۔ یہ نمبر (۲۲۱) ہوا جس کا جائزات میں اضافہ ہونا چاہئے، وجیز امام کردری فصل مسح میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
مسحت علی الخضاب ان خرجت عن کونها ماء مطلقا لم یجز[2] اھ	خضاب پر مسح کیا اگر تری خضاب سے مل گئی یہاں تک کہ ماء اختلطت البلة بالخضاب حتی مطلق ہونے سے خارج ہوگئی تو اس سے مسح جائز نہیں اھ میں کہتا ہوں اس کے مفہوم کو مقید کرنا ضروری ہے اس قید کے ساتھ جو میں نے ذکر کی ہے اس کو اچھی طرح سمجھ لیں۔ (ت)

اقول: ولا بد من تقیید مفهومه بما ذکرت فاعرف۔ (۲۲۲) پانی میں ستو گھلے ہوں کہ وہ رقیق نہ رہے اس سے وضو ناجائز ہے، ہدایہ و کافی میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الا ان یغلب علی الماء فیصیر کالسویق	مگر یہ کہ وہ پانی پر غالب ہو کہ پانی مثل ستوؤں کے ہو جائے،

[1] فتاوٰی قاضی خان فصل فیما لا یجوز به التوضی نولکشور لکھنؤ ۱/ ۹ [2] فتاوٰی بزازیہ مع العالمگیری الرابع فی المسح ، نورانی کتب خانہ پشاور ۲ / ۱۵

Volume Second Fatawa Razvia Because the name "water" has now ceased to apply to it. (T) It is stated in [Al-Fatawa al-] Khaniya: "And if it becomes thick like porridge, then [wudhu is] not [valid]." And if it becomes thick like barley porridge (sattoo), it is not permissible. (T) Counter-cases (223) If it contains so much mixture of mud, waste, etc., that the water becomes thick like slush, then wudhu with it is not permissible. It is stated in Khaniya: Performing wudhu with floodwater is permissible, and if it is thick like mud, then no. | If someone performed wudhu with floodwater, it is permissible; and if it is thick like mud, it is not permissible. (T) In Ajnas by Imam Natifi, then in Munyah, it is stated: Performing wudhu with floodwater is not permissible if the thinness of the water is not dominant. | If the thinness of the water is not dominant, then performing wudhu with floodwater is not permissible. (T) I say: May Allah Almighty's mercies be upon the noble scholars; they mention such rare cases for caution, otherwise it is very unlikely for a flood to be like that. They use this to warn that when such a large volume of water becomes unfit for wudhu due to mixing with so much earth, what can be said about the water in seasonal streams or pots and pitchers? (224 to 251) Moss, flour, leaves, fruit, creepers, cinnabar, or the yellows of safflower, raw lime, silk-worms, frogs, etc., parts of non-sanguineous animals, chickpeas, broad beans, or other grain fragments, coal tar, bread crumbs, soap, soda ash, basil, chamomile, marshmallow, plum leaves—whether raw or boiled for cleaning—in short, any substance, even ice which is original water, if mixed with water removes its thinness, then performing wudhu with it will be impermissible. Note: i.e., those waters whose permissible forms were mentioned in the section on permissible things, these forms are their opposites. 12 (M)

1. Hidaya, Chapter: Water with which Wudhu is Permissible and with which it is Not, Arabic Press Karachi, 1/18
2. Qadi Khan, Regarding what is not permissible for Wudhu, Naval Kishore Lucknow, 1/9
3. Qadi Khan, Regarding what is not permissible for Wudhu, Naval Kishore Lucknow, 1/9
4. Matn Ghunya-tul-Mustamli, Ahkam-ul-Miyah, Sohail Academy Lahore, p. 90

जिल्द-ए-सानी (दूसरा खंड) फ़तावा-ए-रज़विया क्योंकि अब उस पर 'पानी' का नाम ख़त्म हो गया है। (त) खनिया में है: "और अगर वह सत्तू की तरह गाढ़ा हो जाए, तो नहीं।" और अगर सत्तू की तरह गाढ़ा हो जाए तो जायज़ नहीं। (त) मुक़ाबेलात (विपरीत स्थितियाँ) (२२३) अहले (मिट्टी के बर्तन) में अगर इस क़दर मिट्टी, कचरा आदि का मेल हो कि पानी कीचड़ की तरह गाढ़ा हो गया, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं, खनिया में है: सैलाब के पानी से वज़ू करना जायज़ है, और अगर वह मिट्टी की तरह गाढ़ा हो, तो नहीं। | अगर किसी ने सैलाब के पानी से वज़ू किया तो जायज़ है, और अगर कीचड़ की तरह गाढ़ा हो तो जायज़ नहीं। (त) अजनास इमाम नातिफ़ी, फिर मुनिया में है: सैलाब के पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है यदि पानी का पतलापन (रक़्क़त) गालिब (प्रभावी) न हो। | अगर पानी का पतलापन गालिब न हो तो सैलाब के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है। (त) अक़ौल: उलेमा-ए-किराम पर अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की रहमतें हों, वे एहतियात के लिए ऐसी विरल स्थितियाँ भी ज़िक्र फ़रमाते हैं, वरना सैलाब का ऐसा होना बहुत दूर (असंभव सा) है। वे इससे आगाह करते हैं कि जब इतनी अधिक मात्रा में पानी मिट्टी के मिलने से वज़ू के लायक़ नहीं रहा, तो बरसाती नदियों या घड़े-लोटे के पानी का क्या कहना? (२२४ से २५१) काई, आटा, पत्ते, फल, बेलें, शिंगरफ़ या कुसुम की ज़रदियाँ, कच्चा चूना, रेशम के कीड़े, मेंढक आदि गैर-खूनी जानवर के अंग, चने, बाकला आदि अनाज के टुकड़े, कोलतार, रोटी के टुकड़े, साबुन, अश्नान (एक जड़ी-बूटी), तुलसी, बबूना, खत्मी, बेर के पत्ते—चाहे ये सफ़ाई के लिए पानी में पकाए गए हों—कुल मिलाकर कोई भी चीज़, यहाँ तक कि बर्फ़ जो मूल रूप से पानी है, अगर पानी में मिलकर उसका पतलापन ख़त्म कर दे, तो उससे वज़ू नाजायज़ होगा। नोट: यानी वे पानी जिनकी जायज़ होने की सूरतें 'जायज़ात' में गुज़रीं, ये सूरतें उनके मुक़ाबले (विपरीत) में हैं। १२ (म)

1. हिदाया, बाब: अल-माउल-लज़ी यजूज़ु बिहिल-वज़ूअ व मा ला यजूज़ु बिहि, मतबआ अरबी कराची १/१८
2. क़ाज़ी ख़ाँ, फ़ीमा ला यजूज़ु बिहिल-तवज़्ज़ी, नवल किशोर लखनऊ १/९
3. क़ाज़ी ख़ाँ, फ़ीमा ला यजूज़ु बिहिल-तवज़्ज़ी, नवल किशोर लखनऊ १/९
4. मतन ग़ुनियातुल मुस्तमली, अहकामुल मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ ९०

पृष्ठ 711 का 624

جلد ثانی فتاوی رضویہ کیونکہ اب اس سے پانی کا نام ختم ہو گیا ہے۔ (ت) خانیہ میں ہے: وان صار ثخینا مثل السویق لا ۸2 ۔ اور اگر ستوؤں کی طرح گاڑھا ہو جائے تو جائز نہیں۔ (ت) المقابلات ۸عہ (۲۲۳) اہلے میں اگر اس قدر مٹی کوڑے وغیرہ کا خلط ہے کہ پانی کیچڑ کی طرح گاڑھا ہو گیا تو اس سے وضو جائز نہیں ، خانیہ میں ہے: توضأ بماء السیل یجوز وانکان ثخینا کالطین لا ۸3 ۔ | اگر کسی نے سیلاب کے پانی سے وضو کیا تو جائز ہے اور اگر کیچڑ کی طرح گاڑھا ہو تو جائز نہیں۔ (ت) اجناس امام ناطفی پھر منیہ میں ہے : التوضی بماء السیل ان لم تکن رقة الماء غالبة لایجوز ۸4 ۔ | اگر پانی کی رقت غالب نہ ہو تو سیلاب کے پانی سے وضو جائز نہیں ہے۔ (ت) اقول : علمائے کرام پر اللہ عزوجل کی رحمتیں احتیاط کے لئے ایسی نادر صورتیں بھی ذکر فرماتے ہیں ورنہ سیلاب کا ایسا ہونا بہت بعید ہے وہ اس سے تنبیہ فرماتے ہیں کہ جب اس قدر آب کثیر وغیر اتنے اختلاط تراب سے ناقابلِ وضو ہو گیا تو برساتی ندیوں یا گھڑے لوٹے کے پانی کیا ذکر ؟ (۲۲۴ تا ۲۵۱) کاہی آتا پتے پھل بیلیں شنجرف یا کسم کی زردیاں کچ چوناریشم کے کیڑے مینڈک وغیرہ غیر دموی جانور کے اجزا چنے باقلا وغیرہ ناج کے ریزے کولتار روٹی کے ذرے صابون اشنان ریحان بابونہ خطمی برگ کنارہ کچے خواہ یہ چھ نظافت کیلئے پانی میں پکائے ہوئے غرض کوئی چیز حتی کہ برف جو اصل پانی ہے اگر پانی میں مل کر اس رقت زائل کر دے اس سے وضو ناجائز ہوگا۔ عہ : یعنی وہ پانی جن کی صورت جواز جائزات میں گزری یہ صورتیں ان کے مقابل ہیں ۱۲ (م)

1. ہدایت باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ مطبع عربیہ کراچی ۱/۱۸
2. قاضی خان فیما لایجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹
3. قاضی خان فیما لایجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹

4. متن غنیہ لمستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰

I say: This is the interpretation of what is in 'Khizanat al-Muftin' from the commentary of 'Majma' al-Bahrayn': "It is not permissible to perform ablution (wudhu) with bean water, soap water, and alkali (ushnan) water." [End quote]. Just as the former is the interpretation of the general statements in 'al-Quduri' and others regarding the permissibility of soap and alkali water, this is a plausible interpretation (haml-e-qareeb) because typically these two things are mixed in small quantities such that the liquidity of the water is not lost. And what is mentioned in the commentary of 'al-Majma' is far-fetched. (T)

Many texts regarding these have been mentioned in their respective places. And it is stated in 'al-Khaniyah': "If snow falls into water and it becomes thick and dense, performing wudhu with it is not permissible because it is like solid ice. If it does not become thick, it is permissible." (T)

This is the clear text (nass) regarding snow, that if it thickens the water, ablution with it is impermissible until it melts and the water's liquidity returns. If it doesn't thicken it, it's permissible. This becomes number (252) to be added to the list of permissible items.

(253 & 254) Water in which some medicine or food has been cooked; it is stated in the core texts: "Not with what changed through cooking" (i.e., not with water that has changed due to cooking - T).

(255 & 256) Similarly, tea or coffee, the cooking of which causes a change in the liquidity of the water, even if its fluidity is not lost. The difference between liquidity (riqqat) and fluidity (sayalan) will be mentioned in the rules, God willing. Thickness is certainly well-known in coffee. If it is removed before it affects the water, it remains permissible "due to the absence of cooking and the preservation of its nature," as mentioned in 110 Ayah. (257) should also be added to the permissible list.

(258 to 262) Distillates (arq) of borage (gaozaban), rose (gulab), pandanus (kewra), willow (bed mushk), whether they are fragrant or have been extracted...

---

1 Khizanat al-Muftin 2 Qadi Khan regarding what is not permissible for ablution, Naval Kishore Lucknow 1/9

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग 2)

मैं कहता हूँ: 'खिज़ानतुल मुफ़्तीन' में जो 'शराह मजमअ अल-बहरैन' से उद्धृत है, उसका आशय यही है, उसका कथन यह है कि: "बाक़ली (सेम), साबुन और अशनान (क्षार) के पानी से वज़ू जायज़ नहीं है।" जैसा कि पहला 'क़ुदूरी' आदि के सामान्य कथनों का आशय है, उनसे साबुन और अशनान के पानी से जवाज़ (अनुमति) मालूम होती है। यह एक निकटवर्ती व्याख्या (हम्ल-ए-क़रीब) है क्योंकि आम तौर पर ये दोनों चीज़ें कम मात्रा में मिलाई जाती हैं जिससे पानी का पतलापन (रक़्क़त) ख़त्म नहीं होता है। और 'शराह मजमअ' में जो है वह दूर की बात है। (त)

इन पर अधिकतर स्पष्ट प्रमाण (नसूस) अपने-अपने स्थान पर वर्णित हुए। और 'खानिया' में फ़रमाया: "अगर बर्फ़ पानी में गिर जाए और पानी गाढ़ा और मोटा हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि वह जमे हुए बर्फ़ के समान है। और अगर वह गाढ़ा न हो तो जायज़ है।" (त)

यह बर्फ़ के बारे में स्पष्ट आदेश है कि यदि वह पानी को गाढ़ा कर दे, तो उससे वज़ू तब तक नाजायज़ होगा जब तक कि वह पिघलकर पानी का पतलापन वापस न ले आए। और यदि गाढ़ा न करे तो जायज़ है। यह संख्या (252) हुई जो जायज़ वस्तुओं में जोड़ी जाएगी।

(253 और 254) जिस पानी में कोई दवा या भोजन पकाकर तैयार किया गया हो; मूल ग्रंथों (मतून) में है: "पकाने से परिवर्तित होने वाले पानी से नहीं" (अर्थात उस पानी से नहीं जो पकने के कारण बदल गया हो - त)।

(255 और 256) इसी तरह चाय या कॉफ़ी, जिनके पकाने से पानी के पतलेपन में फ़र्क आए, चाहे उनसे बहाव (सैयालान) न जाए। रक़्क़त और सैयालान का अंतर नियमों (ज़वाबित) में इंशा अल्लाह बताया जाएगा। क़हवा (कॉफ़ी) में गाढ़ापन निश्चित रूप से प्रसिद्ध है। और यदि उसे पानी पर प्रभाव डालने से पहले निकाल लिया जाए, तो जवाज़ रहेगा, जैसा कि 'पकाने के अभाव और प्रकृति के बने रहने' के कारण आयत 110 में है। (257) को भी जायज़ चीज़ों में शामिल किया जाए।

(258 से 262) गावज़बान, गुलाब, केवड़ा, बेद मुश्क के अर्क(distillates), चाहे वे सुगंधित हों या निकाले गए हों...

---

1 खिज़ानतुल मुफ़्तीन 2 क़ाज़ी ख़ान, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर लखनऊ 1/9

اقول: وھذا ھو محمل مافي خزانة المفتین عن شرح مجمع البحرین لایجوز الوضوء بماء الباقلی وماء الصابون وماء الاشنان ۱ اھ۔ کما ان الاول محمل اطلاق القدوری وغیرہ الجواز في الصابون والاشنان غیرانه حمل قریب لان المعھودھو خلطھما قلیلا بحیث لایذھب الرقة (۱) وانما البعد في (۱) مافي شرح المجمع۔ میں کہتا ہوں خزانہ المفتین میں جو شرح مجمع البحرین سے ہے اس کا محمل یہی ہے، اس کی عبارت یہ ہے کہ باقلی اور صابون اور اشنان کے پانی سے وضو جائز نہیں ہے اھ جیسا کہ اوّل قدوری وغیرہ کے اطلاق کا محمل ہے ان کے اطلاق سے اشنان اور صابون کے پانی سے جواز معلوم ہوتا ہے، یہ حمل قریبی ہے کیونکہ عام طور پر یہ دونوں چیزیں کم مقدار میں ملائی جاتی ہیں کہ اس سے پانی کی رقت ختم نہیں ہوتی ہے، اور شرح مجمع میں جو ہے وہ بعید ہے۔ (ت)

ان پر اکثر نصوص ان کے مقابلات میں اپنے اپنے محل پر مذکور ہوئے اور خانیہ میں فرمایا:
لووقع الثلج في الماء وصار ثخینا غلیظا لایجوز به التوضوء لانه بمنزلة الجمد وان لم یصر ثخینا جاز۔
اگر برف پانی میں گر گئی اور پانی گاڑھا ہو گیا تو اس سے وضو جائز نہیں کیونکہ یہ بمنزلہ جمد کے ہے اور اگر گاڑھا نہ ہو تو جائز ہے۔ (ت)

یہ برف کا نص ہے کہ اگر پانی کو گاڑھا کر دے اس سے وضو ناجائز ہوگا جب تک پگھل کر پانی کی رقت عود نہ کرے اور گاڑھا نہ کرے تو جائز یہ نمبر (۲۵۲) ہوا کہ جائزات میں اضافہ ہوگا۔

(۲۵۳ و ۲۵۴) جس پانی میں کوئی دوا یا غذا پکا کر تیار کی متون میں ہے لایبما تغیر بالطبخ (نہ اس پانی سے جو پکانے سے متغیر ہو جائے ۔ ت)

(۲۵۵ و ۲۵۶) یوں ہی چائے یا کافی جن کے پکانے سے پانی کی رقت میں فرق آئے اگر چہ ان سے سیلان نہیں جاتا رقت و سیلان کا فرق ضوابط میں مذکور ہوگا ان شاء اللہ قہوہ میں گاڑھا پن ضرور مشہور ہوا ہے اور اگر اسے بھی پانی میں اثر کرنے سے پہلے نکال لیا تو جواز رہے گا لعدم الطبخ وبقاء الطبع كما في ۱۱۰ ایہ (۲۵۷) بھی جائزات میں زائد کیا جائے۔

(۲۵۸ تا ۲۶۲) عرق گاؤزبان گلاب کیوڑا بید مشک خوشبو ہوں یا اترے ہوئے ہوں ہی

---

1 خزانہ المفتین 2 قاضی خان فیما لا یجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹

Volume II Fatawa Razawiyya Every essence whose attributes are either contrary to or in agreement with water—in short, any flowing substance that is not of the nature of water—if it is mixed in water in a quantity greater than the water, then by consensus, ablution (wudu) cannot be performed with it.

[Table content] If the two components are equal, this is not mentioned in the Zahir al-Riwayah. Jurists have said that as a precaution, its ruling is like that of water that has been overcome. It is stated in al-Ghunya: Likewise, if they are equal, it is as a precaution, such that when they are equal, dry ablution (tayammum) should also be performed along with wudu. I say: He did not attribute this to anyone, nor have I seen it from anyone else. It deviates from the established principles. For when a prohibiting factor and a permitting factor combine, the prohibitor prevails, and there is no ruling for the overcome part. Moreover, if they are equal, they conflict, and when two things conflict, they cancel each other out. Furthermore, calling it "water" is not more appropriate than calling it by another name; so how can the name "absolute water" (ma-e-mutlaq) be applied to it? And that which is not absolute water, wudu is not valid with it at all. Engaging in what is not valid is prohibitively disliked (makruh tahrimi), as mentioned in al-Durr from al-Qunyah; rather, it is a waste of money, thus it is forbidden. Reflect and refer back. It seems he understood from their word "precaution" that they had doubt about it being water, so they avoided it as a precaution. For if it is not water, wudu is not permissible with it; and if it is water, tayammum is not permissible while it is present.

Footnotes: 1. Bada'i al-Sana'i, Section on Restricted Water, H.M. Saeed Company Karachi, 1/15. 2. Ghunyat al-Mustamli, Section on Rulings of Water, Suhail Academy Lahore, p. 90.

Page 626 of 711

जिल्द सानी (द्वितीय खंड) फ़तावा रज़विया हर अर्क(तत्व) जिसके गुण पानी के विरुद्ध हों या अनुकूल, संक्षेप में कोई भी बहने वाली चीज़ जो पानी की श्रेणी से नहीं है, यदि वह पानी की मात्रा से अधिक उसमें मिल जाए, तो सर्वसम्मति (इज्मा) से उससे वज़ू नहीं हो सकेगा।

[तालिका सामग्री] यदि दोनों घटक बराबर हों, तो यह ज़ाहिर-ए-रिवायत में उल्लेखित नहीं है। फ़कीहों (न्यायविदों) ने कहा है कि एहतियातन (सावधानी के तौर पर) इसका नियम उस पानी जैसा है जो दब गया हो। गुनिया में कहा गया है कि इसी तरह यदि वे बराबर हों तो एहतियातन, यहाँ तक कि जब दोनों बराबर हों तो वज़ू के साथ तयम्मुम भी कर लिया जाए। मैं कहता हूँ: उन्होंने इसे किसी की ओर श्रेय नहीं दिया और न ही मैंने किसी और से यह देखा है, और यह स्थापित नियमों से दूर है। क्योंकि जब भी किसी चीज़ में हराम करने वाली और मुबाह (अनुमत) करने वाली दलीलें एक साथ आ जाएँ तो हराम करने वाली प्रबल होगी और दबे हुए का कोई नियम नहीं होगा। और जब दोनों बराबर हों तो टकराव (तआरुज़) होगा और टकराव होने पर वे एक-दूसरे को निरस्त कर देंगे। इसके अलावा, उसे "पानी" कहना किसी अन्य नाम से बेहतर नहीं है; तो फिर उस पर "मुतलक पानी" (शुद्ध जल) का नाम कैसे लागू होगा? और जो मुतलक पानी न हो, उससे वज़ू बिल्कुल भी जायज़ नहीं है। जो सही न हो उसमें व्यस्त होना मकरूह-ए-तहरीमी (कड़ाई से नापसंद) है, जैसा कि अल-दुर्र में कुनिया से है; बल्कि यह तो धन की बर्बादी है, इसलिए हराम होगा। इस पर विचार करें और पुनरावलोकन करें। शायद उन्होंने उनके"सावधानी" शब्द से यह समझा कि उन्हें इसके पानी होने में संदेह है, इसलिए उन्होंने सावधानीवश इससे परहेज किया। क्योंकि यदि वह पानी नहीं है, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है; और यदि वह पानी है, तो उसके मौजूद रहते हुए तयम्मुम जायज़ नहीं है।

पाद-टिप्पणियाँ (फ़ुटनोट्स): 1. बदाइय-उस-सनई, फ़सल फ़िल मा-ए-मुक़य्यद, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/15। 2. गुनियतुत मुस्तमली, फ़सल फ़ी अहकाम-ए-मियाह, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 90।

पृष्ठ 711 में से 626

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ ہر عرق اوصاف میں پانی کے خلاف ہو یا موافق غرض جو بہتی چیز پانی کی نوع سے نہیں جب پانی کی مقدار سے زیادہ اُس میں مل جائے بالاجماع اُس سے وضو نہ ہوسکے گا۔

[جدول کا متن] فان استویا فی الاجزاء لم یذکر ھذا فی ظاھر الروایۃ وقالوا حکمہ حکم الماء المغلوب احتیاطاً وقا ل فی الغنیۃ وکذا ان کانت مساویۃ احتیاطاً حتی یضم الیہ التیمم عند المساواۃ۔ (اگر دونوں اجزاء میں برابر ہوں تو یہ چیز ظاہر روایت میں نہیں ہے، فقہاء نے فرمایا اس کا حکم احتیاطاً مغلوب پانی کا سا ہے ۔ غنیہ میں کہا اور اسی طرح ہے جب وہ مساوی ہوں احتیاطاً حتی کہ جب دونوں برابر ہوں تو وضو کے ساتھ تیمم بھی کر لیا جائے اھ) اقول: لم یسندہ لاحد ولم ارہ لغیرہ وفیہ نبوء عن القواعد فمبا(۱) اجتمع حاظر ومبیح الا غلب الحاظر ولا حکم للمغلوب وایضا اذا استویا(۲) فقد تعارضا واذا تعارضا تساقطا وایضا لیس(۳) تسمیتہ ماء باو لی من تسمیۃ غیرہ فکیف ینطلق علیہ اسم الماء المطلق ومالیس بماء مطلق لا یصح الوضوء بہ اصلا والاشتغال بما لا یصح یکرہ تحریما کما فی الدر عن القنیۃ بل ھو اضاعۃ المال فیحرم تأمل وراجع وکانہ فھم من قولھم احتیاطاً ان لھم شکا فی کونہ ماء فاحترزوا عنہ للاحتیاط فان لم یکن ماء لم یجز الوضوء بہ وان کان ماء لم یجز التیمم مع وجودہ (میں کہتا ہوں اس کو انہوں نے کسی کی طرف منسوب نہیں کیا اور ان کے علاوہ کسی نے اس کو ذکر نہیں کیا، اور یہ قواعد سے دوری ہے، جس چیز میں بھی حرام کرنیوالی اور مباح کرنیوالی دلیل جمع ہو جائے تو حرام کرنے والی غالب رہے گی اور مغلوب کا کوئی حکم نہ ہو گا اور جب دونوں برابر ہوں تو تعارض ہو گا اور تساقط ہو جائیگا، پھر اس کا پانی کہا جانا کسی دوسرے نام سے اولیٰ نہیں ہے تو اس پر مطلق پانی کا نام کیسے بولا جائیگا اور جو مطلق پانی نہ ہو اس سے وضو بالکل جائز نہیں اور جو چیز صحیح نہ ہو اس میں مشغولیت مکروہ تحریمی ہے

جیسا کہ در میں قنیہ سے ہے ، بلکہ یہ تو مال کا ضائع کرنا ہے لہٰذا حرام ہوگا ، اس پر غور کیجئے اور مراجعت کیجئے، اور شاید انہوں نے ان کے قول احتیاطاً سے یہ سمجھا کہ ان کو اس کے پانی ہونے میں شک ہے)

حواشی: 1. بدائع الصنائع فصل فی الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵ 2. غنیة المستملی فصل فی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰

صفحہ 711 میں سے 626

Fatawa Rizwia, Volume II

Arabic Text

Therefore, combine both to exit the responsibility with certainty. For if it is water, then he has performed ablution (Wudu), and if it is not, then he has performed dry ablution (Tayammum).

As is the case with the leftover of a donkey due to the doubt in its purity.

It is not so; rather, caution here means acting on the strongest of two pieces of evidence. It is not possible for anyone to

call it 'pure water' absolutely, as it is certainly outside that definition without doubt or conjecture. And Allah Almighty knows best.

Urdu Translation

So, as a precaution, they avoided it. Now if it is not water, then wudu from it is not valid, and if it is water, then tayammum from it is not valid.

Therefore, both tayammum and wudu will be combined so that the duty is performed with certainty. Because if in reality it is water, then wudu is done, and if it is not water, then tayammum is done,

just like the ruling for the leftover water of a donkey, because there is doubt in its being pure. And here it is not so, rather here the precaution is that action should be taken on the stronger of the two evidences.

No one calls it 'pure water'; it is certainly excluded from it. And Allah Almighty knows best. (T)

(264 to 266) I say: If such colorless things have a taste contrary to water, such that by mixing less than half they change it, then according to the transmitted consensus and rule, wudu from it should be invalid.

Arabic Text

As for what is transmitted, it is because consideration is given to taste where there is no color. As for the rule, it is because they possess one or two attributes.

In any case, changing one attribute is sufficient, as mentioned in Al-Bahr regarding (3) consideration of parts in 'Borage water'

Urdu Translation

As for the transmitted evidence, consideration is for the taste where there is no color. And the rule is that it is a thing with two attributes or one attribute,

and in any case, changing one attribute is sufficient. And what is in 'Al-Bahr' that for borage (Zaban-e-

Arabic Text	Urdu Translation
(Ma' Lisan al-Thawr) and rose water whose scent has faded.	Thawr) and rose water whose scent is finished,
Similar things in 'Al-Ghunya' are not accepted, so let one be careful.	the consideration is of parts, is not accepted, so let one be careful. (T)

Another type of comparisons, another type, first category. First sub-category - Solids

(267 to 275) In Nabeez (a fermented beverage), dates or raisins or any fruit; in Sherbet, sugar, batasa (sugar candy), rock sugar or any dry sweet; in infusion; in dye, safflower, saffron, pataryar, or ink; in tanning, nutgall or other parts, when they are so much...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi 29/1 Page 627 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
इसलिए, जिम्मेदारी से निश्चितता के साथ बाहर निकलने के लिए दोनों को मिलाएं। यदि यह पानी है, तो उसने वज़ू कर लिया, और यदि नहीं, तो उसने तयम्मुम (सूखा वज़ू) कर लिया।	तो एहतियात के तौर पर उन्होंने इससे परहेज किया। अब अगर वह पानी नहीं है तो उससे वज़ू जायज़ नहीं और अगर पानी है तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं।
जैसा कि गधे के जूठे के मामले में होता है क्योंकि उसकी पवित्रता में संदेह है।	तो तयम्मुम और वज़ू दोनों को जमा किया जाएगा ताकि यकीन से फ़र्ज़ अदा हो जाए, क्योंकि अगर हकीकत में पानी हो तो वज़ू हो गया और अगर पानी नहीं तो तयम्मुम हो गया।
ऐसा नहीं है; बल्कि यहाँ सावधानी का अर्थ दो साक्ष्यों में से सबसे मजबूत पर कार्य करना है। किसी के लिए भी	जैसा कि गधे के जूठे का हुक्म है, क्योंकि उसके तहूर (पवित्र करने वाला) होने में शक है। और यहाँ ऐसा नहीं है बल्कि यहाँ यह एहतियात है कि अक़वा-उद-दलीलन (सबसे मजबूत दलील) पर अमल हो जाए।
इसे 'शुद्ध जल' कहना बिल्कुल सही नहीं है, क्योंकि यह बिना किसी संदेह या अनुमान के निश्चित रूप से उससे बाहर है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।	कोई इसको मुतलक़ पानी नहीं कहता, यह इससे यकीनन खारिज है और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

(264 से 266) मैं कहता हूँ: ऐसी रंगहीन चीजें अगर पानी के विपरीत स्वाद रखती हों कि आधे से कम मिलकर उसे बदल दें, तो सर्वसम्मत रूप से और नियम के अनुसार उससे वज़ू का अवैध होना चाहिए।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
जहाँ तक जो बताया गया है, वह इसलिए है क्योंकि जहाँ कोई रंग नहीं होता वहाँ स्वाद का विचार किया	रही नक़्ल (हवाला) दलील तो एतबार मज़े का है जहाँ रंग न हो और ज़ाबता (नियम) यह है

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
जाता है। जहाँ तक नियम का सवाल है, वह इसलिए है क्योंकि उनमें एक या दो गुण होते हैं।	कि वह दो वस्फों (गुणों) वाली चीज़ है या एक वस्फ वाली चीज़ है।
किसी भी स्थिति में, एक गुण का बदलना पर्याप्त है, जैसा कि अल-बहर में (3) 'गाओज़बान' (बोरज) के पानी और गुलाब जल जिसकी गंध खत्म हो गई है, में हिस्सों के विचार के बारे में बताया गया है।	और बहर सूरत एक वस्फ का बदलना काफी है और 'बहर' में जो है कि ज़बान-ए-सोर (गाओज़बान) और गुलाब के पानी में जिसकी खुशबू खत्म हो चुकी हो
'अल-गुन्या' में इसी तरह की चीज़ें स्वीकार्य नहीं हैं, इसलिए सावधान रहना चाहिए।	अजज़ा (हिस्सों) का एतबार है, मुस्लिम (स्वीकार्य) नहीं, फ़लियत नबह (सावधान रहें)। (त)

दूसरी तरह के मुक़ाबलात, दूसरी तरह किस्म अव्वल सिन्फ़ अव्वल - जामिदात (ठोस)

(267 से 275) नबीज़ में छुहारे या किशमिश या कोई फल; शरबत में शक्कर, बताशे, मिसरी या कोई सूखी मिठाई; ख़ीसांदा (काढ़ा) में; रंग में कुसुम (मजीठ), केसर, पटियार या रोशनाई में; किस (चमड़ा पकाना) में माज़ू (बलूत का फल) या अन्य हिस्से जब इतने...

---

1 अल-बहर-उर-राइक किताबुत तहारत एच एम सईद कंपनी कराची 29/1 पृष्ठ 627 का 711

عربی متن	اردو ترجمہ
فیجمع بینهما خروجاً عن العهدة بیقین فانه انکان ماء فقد توضأ وان لم یکن فقد تیمم	تو احتیاطاً اس سے انہوں نے پر ہیز کیا ہے اب اگر وہ پانی نہیں تو اس سے وضو جائز نہیں اور اگر پانی ہے تو اس سے تیمم جائز نہیں،
کما في سؤر(1)الحمار للشك في طهوریته	تو تیمم اور وضو دونوں کو جمع کیا جائیگا تاکہ یقین سے فریضہ ادا ہوجائے، کیونکہ اگر درحقیقت پانی ہو تو وضو ہوگیا اور اگر پانی نہیں تو تیمم ہوگیا،
ولیس(2)کذلك بل الاحتیاط ههنا بمعنی العمل بأقوی الدلیلین لایستقیم لاحد ان یسمیه ماء مطلقاً فهو خارج عنه بالیقین من دون شك ولاتخمین واللہ تعالی اعلم۔	جیسا کہ گدھے کے جھوٹے کا حکم ہے، کیونکہ اس کے طہور ہونے میں شک ہے اور یہاں ایسا نہیں ہے بلکہ یہاں یہ احتیاط ہے کہ اقوی الدلیلین پر عمل ہوجائے، کوئی اس کو مطلق پانی نہیں کہتا یہ اس سے یقیناً خارج ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

(۲۶۴ تا ۲۶۶) اقول ایسی بے لون چیزیں اگر مزہ پانی کے خلاف رکھتی ہوں کہ نصف سے کم مل کر بدل دیں تو باتفاق منقول وضابطہ اس سے وضو کا عدم جواز چاہئے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
اما المنقول فلان العبرة بالطعم حیث لاملون واما الضابطة فلانها ذوات وصف او وصفین	رہی نقل دلیل تو اعتبار مزے کا ہے جہاں رنگ نہ ہو اور ضابطہ یہ ہے کہ وہ دو وصفوں والی چیز ہے یا ایک وصف والی چیز ہے
وعلی کل یکفی تغیر وصف واحد فیمامر عن البحر من(۳)العبرة بالاجزاء فی ماء لسان الثور وماء الورد المنقطع الرائحة ومثله فی الغنیة غیر مسلم فلیتنبه۔	اور بہر صورت ایک وصف کا بدلنا کافی ہے اور بحر میں جو ہے کہ زبانِ ثور اور گلاب کے پانی میں جس کی خوشبو ختم ہوچکی ہو اجزاء کا اعتبار ہے، مسلم نہیں، فلیتنبہ۔(ت)

نوعِ آخر مقابلات نوعِ آخر قسم اول صنف اول - جامدات

(۲۶۷ تا ۲۷۵) نبیز میں چھوہارے یا کشمش خواہ کوئی میوہ شربت میں شکر بتا سے مصری خواہ کوئی خشک شیرینی خیسانده میں دوارنگ میں کسم کیسر پٹڑیار و شنائی میں کیس مازو خواہ اور اجزاء جب اتنے

---

1 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۹ Page 627 of 711

Fatawa Razawiya, Volume 2 ...so that the water does not remain in its original thin state; then, by consensus, performing ablution (wudhu) with it is impermissible. It is mentioned in Quduri, Hidayah, Niqayah, and other general books: "Not with water over which something else has predominated, such that it has taken it out of the nature of water." [1] | Not with water that has been dominated by something else so as to take it out of the nature of water. (T)

Category Two - Liquids (276 to 278) Water in which saffron or safflower is dissolved, if by mixing with water it changes its taste or smell along with its color, then by consensus, performing ablution with it is impermissible. "Because the color has changed according to the narrated ruling, and it is more than one quality based on the rule." | Because the color has changed, based on the ruling that has been narrated, and it is more than one quality according to the rule. (T) Similarly, water in which a packet (of medicinal/herbal powder) is dissolved when it changes the color and one more quality. "Because if it had three qualities, the change of two qualities would be sufficient for consensus, so what if it only had two qualities?" | Because if it possessed three qualities, then the change of two qualities is sufficient for consensus, so then what would be the state of two qualities? (T) (279) Sweet juice of a watermelon when mixed with water changes one more quality along with the color; yes, if it has no color, then the taste is considered. "And this is the interpretation of Az-Zayla'i's statement, otherwise it possesses three qualities as is well-known and observed. And it is stated in Al-Minhah: Ar-Ramli said, observation regarding watermelon is that it is contrary to water in smell, and also in watermelon there is that whose color is red and that whose color is yellow." [2] | And this is the meaning of Az-Zayla'i's statement; otherwise, it has three qualities, as observation shows, and it was said in Al-Minhah that Ar-Ramli said the observation in watermelon is that it opposes water in smell, and in watermelon some are red and some are yellow in color. (T) "I say: Meaning the color of its juice, since the discussion is about that." | I say: This refers to the color of its juice.

---

[1] Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudhu is Permissible, Al-Arabia Karachi, 1/18 [2] Minhat al-Khaliq with Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/70 Page 628 of 711

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2) ...ताकि पानी अपने मूल पतलेपन पर न रहे, तो सर्वसम्मति (इज्मा) से इससे वज़ू करना नाजायज़ है। क़ुदूरी, हिदाया, निक़ाया और अन्य सामान्य पुस्तकों में है: "उस पानी से नहीं जिस पर किसी अन्य वस्तु का वर्चस्व हो गया हो, जिससे वह पानी की प्रकृति से बाहर निकल गया हो।" [1] | न उस पानी से जिस पर ग़ैर का ग़लबा (वर्चस्व) हो तो उसको पानी की तबियत (प्रकृति) से निकाल दे।(त)

श्रेणी दो - तरल पदार्थ (276 से 278) केसर घुला हुआ पानी या शहाब (कुसुम) यदि पानी में मिलकर उसके रंग के साथ-साथ स्वाद या गंध को भी बदल दे, तो सर्वसम्मति से इससे वज़ू करना नाजायज़ है। "इसलिए कि रंग बदल गया है, उस हुक्म पर जो वर्णित है, और यह नियम के अनुसार एक विशेषता से अधिक है।" | इसलिए कि रंग मुतग़य्यर (परिवर्तित) हो गया, उस हुक्म पर जो मनक़ूल (वर्णित) हुआ, और एक वस्फ़ (विशेषता) से ज़ायद (अधिक) है ज़ाबिते (नियम) पर।(त) इसी प्रकार पुड़िया घुला हुआ पानी जब रंग और एक और विशेषता बदल दे। "क्योंकि अगर वह तीन विशेषताओं वाला होता, तो दो विशेषताओं का परिवर्तन सर्वसम्मति के लिए पर्याप्त होता, तो फिर यदि केवल दो ही विशेषताएँ हों तो क्या होगा?" | इसलिए कि अगर वह तीन औसाफ़ (विशेषताओं) वाला हो तो उसमें दो वस्फ़ों का तग़य्युर (परिवर्तन) काफ़ी है इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है तो फिर दो वस्फ़ों का क्या हाल होगा?(त) (279) तरबूज का मीठा पानी जब पानी में मिलकर रंग के साथ उसकी एक और विशेषता बदल दे; हाँ, यदि रंग न हो, तो स्वाद का विचार किया जाएगा। "और यही ज़ैलई के कथन का अर्थ है; अन्यथा वह तीन विशेषताओं वाला है जैसा कि प्रत्यक्ष और विदित है। और मिन्हा में कहा गया है: अर-रमली ने कहा, तरबूज में अवलोकन यह है कि यह गंध में पानी के विपरीत होता है, और तरबूज में कुछ लाल रंग के और कुछ पीले रंग के होते हैं।" [2] | और यही ज़ैलई के क़ौल (कथन) का मतलब है, क़ौल यह है वरना वो तीन वस्फ़ों वाला है, जैसा कि मुशाहदा (अवलोकन) मालूम है, और मिन्हा में फ़रमाया रमली ने कहा तरबूज़ में मुशाहदा यह है कि वो बू (गंध) में पानी के मुख़ालिफ़ (विपरीत) होता है और बतीख़ (तरबूज) में कुछ सुर्ख़ (लाल) रंग के और कुछ पीले रंग के होते हैं।(त) "मैं कहता हूँ: इसका अर्थ उसके पानी (रस) का रंग है, क्योंकि चर्चा उसी के बारे में है।" | मैं कहता हूँ इससे मुराद उसके पानी का रंग है।

---

[1] हिदायत अल-मा अल्लज़ी यजोज़ु बिहि अल-वज़ू, अल-अरबिया कराची, 1/18 [2] मिन्हातुल ख़ालिक़ मअ अल-बहरुल रैक़, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/70 पेज 628 ऑफ़ 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ڈالیں کہ پانی اپنی رقت پر نہ رہے اس سے بالاجماع وضو نا جائز ہے۔ قدوری و ہدایہ و نقایہ و غیرہا عامہ کتب میں ہے: لابماء غلب علیه غیره فاخرجه عن طبع الماء ۱- | نہ اس پانی سے جس پر غیر کا غلبہ ہو تو اس کو پانی کی طبیعت سے نکال دے۔(ت)

صنف دوم_ مائعات (۲۷۶تا۲۷۸) زعفران حل کیا ہوا پانی یا شہاب اگر پانی میں مل کر اس کی رنگت کے ساتھ مزہ یا بُو بھی بدل دے تو اس سے بالاتفاق وضو نا جائز ہے۔ لتغیر اللون علی الحکم المنقول واکثر من وصف علی الضابطة | اس لئے کہ رنگ متغیر ہوگیا، اس حکم پر جو منقول ہوا، اور ایک وصف سے زاید ہے ضابطہ پر۔(ت) یوں ہی پڑیا حل کیا ہوا پانی جب رنگ اور ایک وصف اور بدل دے۔ لانه انکان ذا الثلاثة کفی تغیر وصفین للوفاق فکیف اذا کان ذا وصفین۔ | اس لئے کہ اگر وہ تین اوصاف والا ہو تو اس میں دو وصفوں کا تغیر کافی ہے اس پر اتفاق ہے تو پھر دو وصفوں کا کیا حال ہوگا؟(ت) (۲۷۹) تربوز کا شیریں پانی جبکہ پانی میں پڑ کر رنگ کے ساتھ اس کا ایک وصف اور بدل دے، ہاں رنگ نہ رکھتا ہو تو مزے کا اعتبار ہے۔ وھو محمل قول الزیلعی والافھو ذو الثلاثة کما ھو معلوم مشاھد وقال في المنحة قال الرملی لمشاھد في البطیخ مخالفته للماء في الرائحة وایضافی البطیخ مالونه احمر وفیه مالونه اصفر ۲ اھ | اور یہی زیلعی کے قول کا مطلب ہے، قول یہ ہے ورنہ وہ تین وصفوں والا ہے، جیسا کہ مشاہدہ معلوم ہے، اور منحہ میں فرمایا رملی نے کہا تربوز میں مشاہدہ یہ ہے کہ وہ بُو میں پانی کے مخالف ہوتا ہے اور بطیخ میں کچھ سرخ رنگ کے اور کچھ پیلے رنگ کے ہوتے ہیں۔(ت) اقول: ای لون مائه اذفیه الکلام | میں کہتا ہوں اس سے مراد اس کے پانی کا رنگ ہے

---

۱ ہدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء العربیہ کراچی ۱/۱۸ ۲ منحۃ الخالق مع البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۰ Page 628 of 711

Fatawa Rizwia Volume Two

...not its own color. Because the discussion is about that, it does not mean the color of the essence itself through cooking. (T)

(280) When the juice of white grapes dominates the taste of water. Because the change is in taste according to what is narrated, and it (the juice) has two attributes, so a change in one is sufficient according to the rule. This is something in which there is no disagreement from either side regarding permissibility or impermissibility. (T) If it is said that the ruling, according to the people of the rule, is not limited to taste, but similarly if the smell dominates. (T) I say: Its action on taste is faster, so the smell does not change as long as the taste does not change. (T)

(281) White grape vinegar, if the taste of water changes and the taste of vinegar dominates it. For what has passed and the disagreement arises as will come. (Its ruling has passed and disagreement occurs in it. T) (282) Colored vinegar when mixed with water changes both color and smell (because the smell of common vinegars is stronger. 12 Aminah). Because color is attained according to what is narrated, and two attributes according to the rule. It has color according to what is narrated and according to the rule, it has two attributes. (T)

(283) If the taste of such vinegar is stronger, then when the color changes along with the taste. (284) The vinegar whose color is stronger, when another attribute changes along with the color. And the reason is already known. (The reason is known. T) (285) Milk when both its color and taste dominate the water. Because in what is narrated, the consideration is for the color, and according to Al-Zayla'i and many of his followers, for one of the two attributes, the color... (Because the consideration in what is narrated is indeed for the color, and according to Al-Zayla'i [and also according to most of his followers]).

Page 629 of 711

फ़तावा रिज़विया दूसरा खंड

...स्वयं का रंग नहीं। क्योंकि चर्चा उसी के बारे में है, इससे तात्पर्य स्वयं पकाने के कारण होने वाला रंग नहीं है। (त)

(२८०) सफेद अंगूर का रस जब पानी के स्वाद पर अपना स्वाद प्रभावी कर दे। क्योंकि वर्णित के अनुसार स्वाद में परिवर्तन है, और वह दो गुणों वाला है, इसलिए नियम के अनुसार एक में परिवर्तन पर्याप्त है। यह वह मामला है जिसमें अनुमति या निषेध के दोनों पक्षों में कोई मतभेद नहीं है। (त) यदि यह कहा जाए कि नियम के विशेषज्ञों के निकट आदेश केवल स्वाद पर निर्भर नहीं है, बल्कि सुगंध के प्रभावी होने की स्थिति में भी यही आदेश है। (त) मैं कहता हूँ: स्वाद पर इसका प्रभाव अधिक तीव्र होता है, इसलिए जब तक स्वाद नहीं बदलता, सुगंध नहीं बदल सकती। (त)

(२८१) सफेद अंगूर का सिरका, यदि पानी का स्वाद बदल जाए और सिरके का स्वाद उस पर हावी हो जाए। जैसा कि पहले बताया जा चुका है और इसमें मतभेद होगा जैसा कि आगे आएगा। (इसका आदेश गुजर चुका है और इसमें मतभेद आता है। त) (२८२) रंगीन सिरका जब पानी में मिलकर रंग और गंध (क्योंकि सामान्य सिरके की गंध अधिक तीव्र होती है। १२ अमीनह) दोनों बदल दे। वर्णित के अनुसार रंग प्राप्त होने के कारण और नियम के अनुसार दो गुणों के कारण। वर्णित के अनुसार रंग वाला है और नियम के अनुसार दो गुणों वाला है। (त)

(२८३) ऐसे सिरके का स्वाद अधिक प्रबल हो, तो जब उसके साथ स्वाद के साथ-साथ रंग भी बदल जाए। (२८४) जिस सिरके का रंग अधिक प्रबल हो, जब रंग के साथ कोई अन्य गुण बदल जाए। और इसका कारण ज्ञात है। (इसका कारण ज्ञात है। त) (२८५) दूध जब उसका रंग और स्वाद दोनों पानी पर हावी हो जाएं। क्योंकि वर्णित में रंग का ही विचार किया जाता है, और ज़ैला'ई तथा उनके कई अनुयायियों के निकट दो गुणों में से एक, रंग... (क्योंकि वर्णित में विचार रंग का ही है और ज़ैला'ई के निकट [तथा उनके अधिकांश अनुयायियों के निकट])।

पृष्ठ ६२९/७११

لالون عینہ۔ کیونکہ کلام اسی میں ہے اس سے مراد خود بطبخ ذات کا رنگ نہیں۔ (ت)

(۲۸۰) سفید انگور کا شیرہ جب پانی کے مزے پر اس کا مزہ غالب آجائے۔ لتغیر الطعم علی المنقول وھو ذو وصفین فیکفی تغیر واحد علی الضابطۃ فھذا مما لایتأتی فیہ الخلاف فی شیئ من جانبی الجواز وعدمہ۔ کیونکہ مزہ کا تغیر ہے منقول کے مطابق، اور وہ دو وصفوں والا ہے تو ایک میں تغیر کافی ہے ضابطہ کے مطابق، یہ وہ ہے جس میں کوئی اختلاف نہیں جواز و عدم جواز کے جانبین میں۔ (ت) فان قلت بلی فان الحکم لایقتصر عند اھل الضابطۃ علی الطعم بل کذلک لو غلب الریح۔ اگر یہ کہا جائے کہ حکم اہل ضابطہ کے نزدیک مزہ پر موقوف نہیں بلکہ بُو کے غلبہ کی صورت میں بھی یہی حکم ہے۔ (ت) اقول: طعمہ اسرع عملا فلا یتغیر الریح ما لم یتغیر۔ تو میں کہتا ہوں اس کے مزے کا عمل تیز تر ہوتا ہے تو جب تک مزہ نہ بدلے بُو نہیں بدل سکتی ہے۔ (ت)

(۲۸۱) سفید انگور کا سرکہ اگر پانی کا مزہ بدل گیا سرکہ کا مزہ اس پر غالب ہو گیا۔ لما مر و یتأتی فیہ الخلاف کما یاتی (اس کا حکم گزر اور اس میں اختلاف آتا ہے۔ ت) (۲۸۲) رنگت دار سرکہ جب پانی میں مل کر رنگ اور بُو (اس لئے کہ عام سرکوں کی بُو قوی تر ہوتی ہے ۱۲ امنہ) دونوں بدل دے۔ لحصول اللون علی المنقول ووصفین علی الضابطۃ۔ منقول کے مطابق رنگ والا ہے اور ضابطہ کے مطابق دو وصفوں والا ہے۔ (ت)

(۲۸۳) ایسے سرکہ کا مزہ اقویٰ ہو تو جب اُس سے مزہ کے ساتھ رنگت بھی بدل جائے۔ (۲۸۴) جس سرکہ کا رنگ قوی تر ہو جب رنگ کے ساتھ ایک وصف اور بدل دے والوجہ قد علم (اس کی وجہ معلوم ہے۔ ت) (۲۸۵) دودھ جب اس کا رنگ اور مزہ دونوں پانی پر غالب آجائیں۔ لان العبرۃ

فی المنقول باللون وعند الزیلعی و کثیر من اتباعہ باحد وصفین اللون اس لئے کہ اعتبار منقول میں رنگ ہی کا ہے اور زیلعی کے نزدیک (نیز ان کے اکثر متبعین کے نزدیک)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic Box Text]: "And the taste. According to the absolute investigator (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) and the author of Durr, both are considered together. Thus, if both change, there is consensus on the loss of the absolute nature [of the water]." [Urdu Explanation]: One of the two qualities is considered (i.e., color or taste), and according to the absolute investigator and the author of Durr, both are considered together. Now, when both qualities change, there will be consensus that the water is no longer considered 'absolute water'. (T)

These are one hundred and twenty-two things from which performing ablution (wudu) is unanimously disallowed (Note 2), meaning it cannot be done, nor is prayer valid with it. And Allah Almighty knows best. May Allah Almighty send blessings and peace upon our Master and Leader Muhammad, and his family and companions.

Third Category: Those regarding which the ruling on the validity of wudu is narrated but contrary to the principles of Imam Zaylai. First class: Dry objects.

(286 & 287) Apart from dried dates, any fruit like raisins, figs etc., by consensus, except what is narrated from Imam Awzai if it is proven from him (T). And the correct, reliable, fatwa-based, and returned-to doctrine is that dried dates also, when soaked for a long time such that the quality of the fruit enters the water to the extent that it is no longer called water but 'nabeedh' (date-water), wudu cannot be performed with it even if it is thin. It is stated in 'Bada'i' by Imam Malik al-Ulama:

[Arabic Box Text]: "The analogy of what we mentioned is that wudu is not permissible with date 'nabeedh' because the taste of the water has changed and it has become dominated by the taste of the dates. Abu Yusuf took to analogy and said wudu is not permissible with it. However, Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) left analogy due to the text (Nass) and allowed wudu with it. Nuh narrated in 'Al-Jami' al-Marwazi' from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that he retracted that and said wudu is not performed with it." [Urdu Explanation]: The things about which we have said that wudu is not permissible are analogized based on date 'nabeedh', because the taste of the water has changed and been overpowered by the taste of the dates. Abu Yusuf acted upon analogy and said wudu with it is not permissible. And Imam Abu Hanifa left analogy because of a religious text (Nass) and declared wudu with it permissible. Nuh has narrated in 'Jami' Marwazi' from Abu Hanifa that he retracted from this stance.

Note 1: After 160, there were 125, but three of them, numbers 241, 247, and 252, were among the permissible ones, therefore one hundred and twenty-two (122) remained. 12 (M) Note 2: Meaning the principle of Zaylai and the consensus of those rulings which are based on the saying of Imam Muhammad, as mentioned in 'Tanbeeh Zaruri'. 12 Minhu Ghaffara Lahu (M)

फतावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: "और स्वाद। मुहक्क़िक़ अला अल-इतलाक़ और साहिब-ए-दुर्र के अनुसार, दोनों को एक साथ माना जाता है। इस प्रकार, यदि दोनों बदल जाते हैं, तो पूर्ण जल की स्थिति समाप्त होने पर आम सहमति हो जाती है।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: दो गुणों में से एक का श्रेय है (यानी रंग या स्वाद) और मुहक्क़िक़ अला अल-इतलाक़ और साहिब-ए-दुर्र के नज़दीक दोनों का एक साथ श्रेय है, अब जबकि दोनों गुण ही बदल जाएं तो पानी का 'इतलाक़' (पूर्ण पानी होना) न होने पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) हो जाएगा। (त)

ये एक सौ बाईस वो चीज़ें हैं जिनसे वज़ू ब-इत्तिफ़ाक़ (नोट 2) नाजायाज़ है, यानी न हो सकता है न उससे नमाज़ जायज़ हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल और असहाब पर दुरूद ओ सलाम भेजे।

तीसरी क़िस्म: जिनसे वज़ू की सेहत के बारे में हुक्म मन्क़ूल और इमाम ज़ैलाई के ज़ाबिते (नियम) के विपरीत है। पहली श्रेणी: सूखी चीज़ें।

(286 और 287) छुआरे के सिवा किशमिश, अंजीर वगैरह कोई मेवा ब-इज्मा (आम सहमति से) सिवाय उसके जो इमाम औज़ाई से रिवायत है अगर उनसे साबित हो (त)। और मज़हब-ए-सही मुअतमद मुफ़्ती बिह मरजूअ इलैह में छुआरे भी जबकि देर तक भिगोने से पानी में उस मेवे की कैफ़ियत (असर) इस कदर आ जाए कि अब उसे पानी न कहें बल्कि 'नबीज़' (खजूर का शरबत) कहें, उससे वज़ू नहीं हो सकता चाहे वह पतला ही हो। इमाम मलिक उल-उलेमा की 'बदाई' में है:

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: "हमने जो उल्लेख किया है उसका क़यास यह है कि खजूर की नबीज़ से वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि पानी का स्वाद बदल गया है और खजूर के स्वाद से दब गया है। अबू यूसुफ़ ने क़यास अपनाया और कहा कि इसके साथ वज़ू करना जायज़ नहीं है। हालाँकि, इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने स्पष्ट प्रमाण (नस) के कारण क़यास को छोड़ दिया और इसके साथ वज़ू करने की अनुमति दी। नूह ने 'अल-जामी अल-मरवज़ी' में अबू हनीफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि उन्होंने इससे रुजू (वापसी) कर लिया था और कहा था कि इससे वज़ू नहीं किया जाता।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: जिन चीज़ों से हमने वज़ू के जायज़ न होने का क़ौल (बात) किया है वे नबीज़-ए-तमर (खजूर की नबीज़) पर क़यास की गई हैं, क्योंकि पानी का मज़ा बदल गया है और वह खजूर के मज़े से मगलूब (दब) गया है। क़यास पर अबू यूसुफ़ ने अमल किया है, और फ़रमाया है कि

उससे वज़ू जायज़ नहीं, और इमाम अबू हनीफ़ा ने 'नस' की वजह से क़यास को छोड़ दिया और उससे वज़ू को जायज़ क़रार दिया, और नूह ने 'जामी मरवज़ी' में अबू हनीफ़ा से रिवायत की कि आपने इससे रुजू कर लिया।

नोट 1: 160 के बाद 125 हुए मगर उनमें तीन नंबर 241 और 247, 252 जायज़ात के थे लिहाज़ा एक सौ बाईस (122) रहे। 12 (म) नोट 2: यानी ज़ाबिते ज़ैलाई और उन अहकाम के इत्तिफ़ाक़ से जो क़ौल इमाम मुहम्मद पर मबनी (आधारित) हैं जैसा कि 'तन्बीह ज़रूरी' में गुज़रा। 12 मिन्हु गफ़र लहू (म)

والطعم وعند المحقق علی الاطلاق وصاحب الدرر بھما معاً فاذا تغیرا حصل الوفاق علی سلب الاطلاق۔ دو اوصاف میں سے ایک کا اعتبار ہے (یعنی رنگ یا مزہ) اور محقق علی الاطلاق اور صاحب درر کے نزدیک دونوں کا ایک ساتھ اعتبار ہے، اب جبکہ دونوں وصف ہی بدل جائیں تو پانی کا اطلاق نہ ہونے پر اتفاق ہو جائے گا۔ (ت)

یہ ایک سو بائیس وہ ہیں جن سے وضو بالاتفاق عہ۲ ناجائز ہے یعنی نہ ہو سکتا ہے نہ اس سے نماز جائز ہو واللہ تعالی اعلم وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولانا محمد وآلہ وصحبہ وبارک وسلم۔ قسم سوم جن سے صحتِ وضو میں حکم منقول ومقتضائے ضابطہ امام زیلعی کا خلاف ہے صنف اول خشک اشیا (۲۸۶ و ۲۸۷) چھوہارے کے سوا کشمش انجیر وغیرہ کوئی میوہ بالاجماع الاماعن الامام الاوزاعی ان ثبت عنہ (مگر وہ جو امام اوزاعی سے مروی ہے اگر ان سے ثابت ہو۔ ت) اور مذہب صحیح معتمد مفتی بہ مرجوع الیہ میں چھوہارے بھی جبکہ تادیر تر کرنے سے پانی میں اس میوہ کی کیفیت اس قدر آ جائے کہ اب اسے پانی نہ کہیں نبیذ کہیں اس سے وضو نہیں ہو سکتا اگرچہ رقیق ہو، بدائع امام ملک العلماء میں ہے:

قیاس ماذکرنا انہ لا یجوز الوضوء بنبیذ التمر لتغیر طعم الماء وصیرورتہ مغلوباً بطعم التمر وبالقیاس اخذ ابو یوسف وقال لا یجوز التوضوء بہ الا ان ابا حنیفۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ ترک القیاس بالنص فجوز التوضوء بہ وروی نوح فی الجامع المروزی عن ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ انہ رجع عن ذلك وقال لا یتوضوء بہ جن چیزوں سے ہم نے وضو کے جائز نہ ہونے کا قول کیا ہے وہ نبیذ تمر پر قیاس کی گئی ہیں، کیونکہ پانی کا مزہ بدل گیا ہے اور وہ کھجور کے مزہ سے مغلوب ہو گیا ہے قیاس پر ابو یوسف نے عمل کیا ہے، اور فرمایا ہے کہ اس سے وضو جائز نہیں، اور امام ابو حنیفہ

نے نص کی وجہ سے قیاس کو چھوڑ دیا اور اس سے وضو کو جائز قرار دیا، اور نوح نے جامع مروزی میں ابو حنیفہ سے روایت کی کہ آپ نے اس سے رجوع کر لیا۔

عہ ۱: ۱۶۰ کے بعد ۱۲۵ ہوئے مگر ان میں تین نمبر ۲۴۱ و ۲۴۷، ۲۵۲ جائزات کے تھے لہذا ایک سو بائیس ۱۲۲ رہے ۱۲ (م) عہ ۲: یعنی ضابطہ زیلعی اور ان احکام کے اتفاق سے جو قول امام محمد پر مبنی ہیں جیسا کہ تنبیہ ضروری میں گزرا ۱۲ منہ غفر لہ (م)

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Arabic] And he is the one whose statement became established as such. Nuh said, and through this, Abu Yusuf adopted it. [Urdu Translation] ...[he] did so and said that wudu should not be performed with it, and there was agreement on this statement of his. This is the statement of Nuh, and this is what Abu Yusuf adopted. (T)

In 'Fath al-Qadir' it says: [Arabic] It is necessary to authenticate the narration that agrees with the statement of Abu Yusuf because the verse of Tayammum abrogates it due to it being later, as it is Madinan. A group of the later scholars followed this path. [Urdu Translation] Authenticating this narration, which corresponds to the statement of Abu Yusuf, is necessary because the verse of Tayammum is the one that abrogates it; it is later because it is Madinan, and a group of the later scholars has gone towards this [opinion]. (T)

In 'Hilya' it says: [Arabic] Nuh al-Jami' and Al-Hasan bin Ziyad mentioned that Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) retracted to the view that one performs Tayammum and not Wudu, as is the choice of Abu Yusuf and the statement of most scholars among them Malik, Al-Shafi'i, and Ahmad. Qazi Khan said, and this is the correct view. [Urdu Translation] Nuh and Hasan bin Ziyad mentioned that Abu Hanifa retracted from this and said that instead of wudu, tayammum should be performed. This is the choice of Abu Yusuf and the statement of most scholars, for example, Shafi'i, Malik, and Ahmad, and Qazi Khan said this is the correct view. (T)

In 'Ghunyah', from the commentary of 'Jami' al-Saghir' by Qazi Khan, it says: [Arabic] Asad bin 'Amr, Nuh bin Abi Maryam, and Al-Hasan narrated from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that he retracted to the statement of Abu Yusuf. And the correct view is the second statement of Abu Hanifa. I say: These are two strong supporters for Nuh al-Jami', so what was [the concern] disappeared... [Urdu Translation] Asad bin 'Amr, Nuh bin Abi Maryam, and Hasan narrated from Abu Hanifa that he retracted towards the statement of Abu Yusuf, and the correct one is the second statement of Abu Hanifa. I say these are two strong supports in favor of Nuh, through which the danger to Malik al-Ulama's innocence has been removed, Malik al-Ulama...

Footnotes: 1. Bada'i' al-Sana'i', Chapter of Restricted Water, HM Saeed Company, Karachi, 15/1 2. Fath al-Qadir, Chapter of Water with which Wudu is Permitted and not Permitted, Nuriya Razawiya, Sukkur 3. Hilya 4. Sharh al-Jami' al-Saghir by Qazi Khan

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[अरबी] और वह वही है जिस पर उनका कथन स्थिर हुआ। नूह ने कहा, और इसके साथ अबू यूसुफ ने इसे लिया। [उर्दू अनुवाद] ...[उन्होंने] ऐसा किया और कहा कि इससे वज़ू न किया जाए और उनके इस कथन पर सहमति हुई। यही नूह का कथन है और यही अबू यूसुफ़ ने अपनाया है। (त)

'फ़तह अल-क़दीर' में है: [अरबी] उस रिवायत को सही ठहराना ज़रूरी है जो अबू यूसुफ़ के कथन के अनुरूप है क्योंकि तयम्मुम की आयत इसे निरस्त (मन्सूख) करने वाली है क्योंकि वह मदीनी होने के कारण बाद की है। बाद के विद्वानों का एक समूह इसी मार्ग पर चला है। [उर्दू अनुवाद] इस रिवायत की तस्दीक़ जो अबू यूसुफ़ के कथन से मेल खाती है, लाज़िम है, क्योंकि तयम्मुम की आयत इसे मन्सूख करने वाली है, वह मदनी होने की वजह से बाद की है, और बाद के विद्वानों की एक जमात इसी तरफ गई है। (त)

'हिल्या' में है: [अरबी] नूह अल-जामी और अल-हसन बिन ज़ियाद ने उल्लेख किया कि अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने इस विचार को वापस ले लिया कि व्यक्ति तयम्मुम करे और वज़ू न करे, जैसा कि अबू यूसुफ़ की पसंद है और उनमें से अधिकांश विद्वानों जैसे मलिक, अल-शाफ़ई और अहमद का कथन है। क़ाज़ी खान ने कहा, और यही सही विचार है। [उर्दू अनुवाद] नूह और हसन बिन ज़ियाद ने ज़िक्र किया कि अबू हनीफ़ा ने इससे रुजू (वापसी) कर लिया और फ़रमाया कि वज़ू के बजाय तयम्मुम करना चाहिए, यही अबू यूसुफ़ का मख्तार (पसंद) है और अक्सर उलमा मसलन शाफ़ई, मलिक और अहमद का क़ौल है और क़ाज़ी खान ने कहा यही सही है। (त)

'गुनिया' में, क़ाज़ी खान द्वारा 'जामी अल-सग़ीर' की व्याख्या से है: [अरबी] असद बिन अम्र, नूह बिन अबी मरियम और अल-हसन ने अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की कि उन्होंने अबू यूसुफ़ के कथन की ओर रुजू किया। और सही अबू हनीफ़ा का दूसरा कथन है। मैं कहता हूँ: ये नूह अल-जामी के लिए दो मज़बूत समर्थक हैं, इसलिए जो [चिंता] थी वह दूर हो गई... [उर्दू अनुवाद] रिवायत किया असद बिन अम्र और नूह बिन अबी मरियम और हसन ने अबू हनीफ़ा से कि उन्होंने अबू यूसुफ़ के क़ौल की तरफ रुजू कर लिया और सही अबू हनीफ़ा का दूसरा क़ौल है। मैं कहता हूँ ये दो मज़बूत ताईदें (समर्थन) नूह के हक़ में हैं, इससे मलिकुल उलमा की बरात का ख़तरा ज़ायल हो गया, मलिकुल उलमा...

पादलेख (फ़ुटनोट्स): 1. बदाए-उस-सनाए, फ़स्ल अल-मा अल-मुक़ैयद, एचएम सईद कंपनी, कराची, 15/1 2. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-मा अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू व मा ला यजूज़ु बिहि, नूरिया रज़विया, सक्खर 3. हिल्या 4. शरह अल-जामी अल-सग़ीर लिल-क़ाज़ी खान

पृष्ठ 631 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[عربی] وھو الذي استقر علیه قوله کذا قال نوح وبه اخذ ابو یوسف[1] - [اردو ترجمہ] کر لیا اور فرمایا کہ اس سے وضو نہ کیا جائے اور ان کے اس قول پر اتفاق ہوا، یہی نوح کا قول ہے اور یہی ابو یوسف نے لیا ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: [عربی] وجب تصحیح الروایة الموافقة لقول ابي یوسف لان ایة التیمم ناسخة له لتأخرھا اذ ھی مدنیة وعلی ھذا مشی جماعة من المتأخرین[2] - [اردو ترجمہ] اس روایت کی تصحیح جو ابو یوسف کے قول سے مطابقت رکھتی ہے لازم ہے، کیونکہ آیتِ تیمم اس کو منسوخ کرنے والی ہے وہ مدنی ہونے کی وجہ سے متاخر ہے، اور متاخرین کی ایک جماعت اسی طرف گئی ہے۔ (ت)

حلیہ میں ہے: [عربی] ذکر نوح الجامع والحسن بن زیاد ان اباحنیفة رضی اللہ تعالی عنه رجع الی انه یتیمم ولا یتوضوء کما ھو مختار ابي یوسف وقول اکثر العلماء منھم مالك والشافعي واحمد قال قاضي خان وھو الصحیح[3] اھ [اردو ترجمہ] نوح اور حسن بن زیاد نے ذکر کیا کہ ابو حنیفہ نے اس سے رجوع کر لیا اور فرمایا بجائے وضو کے تیمم کرنا چاہئے، یہی ابو یوسف کا مختار ہے اور اکثر علماء مثلاً شافعی، مالک اور احمد کا قول ہے اور قاضی خان نے کہا یہی صحیح ہے اھ (ت)

غنیہ میں شرح جامع صغیر قاضی خان سے ہے: [عربی] روای اسد بن عمر ونوح بن ابی مریم والحسن عن ابي حنیفة رضی اللہ تعالی عنه انه رجع الی قول ابي یوسف والصحیح قول ابی حنیفة الآخر[4] اھ اقول فھذان متابعان قویان لنوح الجامع فزال ماکان [اردو ترجمہ] روایت کیا اسد بن عمرو اور نوح بن ابی مریم اور حسن نے ابو حنیفہ سے کہ انہوں نے ابو یوسف کے قول کی طرف رجوع

کر لیا اور صحیح ابو حنیفہ کا دوسرا قول ہے اھ میں کہتا ہوں یہ دو مضبوط تائیدیں نوح کے حق میں ہیں ، اس سے ملک العلماء کی برأت کا خطرہ زائل ہو گیا، ملک العلماء

حواشی: 1 بدائع الصنائع فصل الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۵/۱ 2 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ نوریہ رضویہ سکھر 3 حلیہ 4 شرح جامع الصغیر لقاضی خان

Fatawa Razawiya Volume 2

One should fear the disavowal of Malik al-Ulama when he said such, as Noah said. (T)

In 'Ghunyah' it is stated: Ablution (Wudu) should not be performed with it [date-palm wine]. This is the narration from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) to which he returned, and the fatwa is based on it. Although the hadith is authentic, the verse regarding Tayammum (dry ablution) is its abrogation, because the implication of the verse is that when absolute water is unavailable, the ruling shifts to Tayammum, and date-palm wine is not absolute water. (T)

In 'Bahr' it is stated: Ablution should not be performed with it. This is the final view of Imam Abu Hanifa, to which he returned. This is correct and was chosen by al-Tahawi. In short, according to us, the corrected, preferred, and relied-upon position of the school is the impermissibility of ablution with it. (T)

In 'Khaniyah' it is stated: This is the final view of Abu Hanifa. (T)

In 'Hindiyyah', citing 'Ayni Sharh Kanz', it is stated: The fatwa is according to the view of Abu Yusuf. (T)

In 'Durr al-Mukhtar' it is stated: According to the corrected view, Tayammum takes precedence over date-palm wine.

---

1. Ghunyah al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 72
2. Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, Saeed Company Karachi, 1/13
3. Qadi Khan, regarding what is not permissible for ablution, Naval Kishore Lucknow, 1/9
4. Al-Hindiyyah, regarding what is not permissible for ablution, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/23

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग 2)

मलिक उल-उलमा की बेज़ारी से डरा जाए जब उन्होंने ऐसा कहा, जैसा नूह ने कहा। (त)

गुनिया में है: इससे वज़ू न किया जाए, यह अबू हनीफ़ा की वह रिवायत है जिसकी तरफ उन्होंने रुजू (लौटना) किया है, और इसी पर फ़तवा है क्योंकि हदीस अगरचे सही है लेकिन तयम्मुम की आयत इसकी नासिख (रद्द करने वाली) है क्योंकि आयत का मफ़हूम यह है कि जब मुतलक़ पानी न हो तो हुक्म को तयम्मुम की तरफ मुंतक़िल कर दिया जाए और नबीज़-ए-तमर मुतलक़ पानी नहीं है। (त)

बहर में है: नबीज़ से वज़ू न किया जाए, यही इमाम अबू हनीफ़ा का आख़िरी क़ौल है, उन्होंने इसकी तरफ रुजू कर लिया था, यही सही है और इसी को तहावी ने इख़्तियार किया, ख़ुलासा यह कि हमारे नज़दीक तस्हीह शुदा (सही किया हुआ), मुख़्तार (चुना हुआ), मोअतमद (भरोसेमंद) मज़हब वज़ू के अदम-ए-जवाज़ (अनुमति न होने) का है। (त)

ख़ानिया में है: यही अबू हनीफ़ा का आख़िरी क़ौल है। (त)

हिन्दिया में ऐनी शरह कंज़ से है: फ़तवा अबू यूसुफ़ के क़ौल पर है। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है: तस्हीह शुदा क़ौल के मुताबिक़ नबीज़-ए-तमर पर तयम्मुम को मुक़द्दम किया जाएगा।

---

1. गुनिया अल-मुस्तमली, बाब अल-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पेज 72
2. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/13
3. क़ाज़ी ख़ान, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नवल किशोर लखनऊ, 1/9
4. अल-हिन्दिया, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/23

पेज 632 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

یخشی من تبری ملك العلماء اذ قال كذا قال كذا قال نوح (ت) | نے فرمایا کذا قال نوح۔(ت)

غنیہ میں ہے: لا یتوضؤہ بہ ھي الروایة المرجوع الیھا عن ابي حنیفة رضی اللہ تعالی عنہ وعلیھا الفتوی لان الحدیث وان صح لکن آیة التیمم ناسخة لہ اذ مفھومھا نقل الحکم عند عدم الماء المطلق الی التیمم ونبیذ التمر لیس ماء مطلقا 1- | اس سے وضو نہ کیا جائے، یہ ابوحنیفہ کی وہ روایت ہے جس کی طرف رجوع کیا ہے، اور اسی پر فتوٰی ہے کیونکہ حدیث اگر چہ صحیح ہے لیکن تیمم کی آیت اس کی ناسخ ہے کیونکہ آیت کا مفہوم یہ ہے کہ جب مطلق پانی نہ ہو تو حکم کو تیمم کی طرف منتقل کر دیا جائے اور نبیذ تمر مطلق پانی نہیں ہے۔ (ت)

بحر میں ہے: لا یتوضؤہ بہ وھو قولہ الآخر قدرجع الیہ وھو الصحیح واختارہ الطحاوی وبالجملة فالمذھب المصحح المختار المعتمد عندنا عدم الجواز 2- | نبیذ سے وضو نہ کیا جائے، یہی امام ابوحنیفہ کا آخری قول ہے، انہوں نے اس کی طرف رجوع کر لیا تھا، یہی صحیح ہے اور اسی کو طحاوی نے اختیار کیا، خلاصہ یہ کہ ہمارے نزدیک تصحیح شدہ، مختار، معتمد مذہب وضو کے عدم جواز کا ہے۔(ت)

خانیہ میں ہے: ھو قول ابی حنیفہ الآخر 3- | یہی ابوحنیفہ کا آخری قول ہے۔ (ت)

ہندیہ میں عینی شرح کنز سے ہے: الفتوی علی قول ابی یوسف 4- | فتوٰی ابویوسف کے قول پر ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: یقدم التیمم علی نبیذ التمر | تصحیح شدہ قول کے مطابق نبیذ تمر پر تیمم کو مقدم کیا جائے گا۔

1 غنية المستملی، باب التيمم سہيل اکيڈمی لاہور ص ۷۲ 2 بحر الرائق کتاب الطهارة سعيد کمپنی کراچی ۱ / ۱۳ 3 قاضی خان فيما لا يجوز بہ التوضی، نولکشور لکهنو ۱/ ۹ 4 ہنديہ فيما لا يجوز بہ التوضی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۳

Fatawa Rizvia Volume Two

On the corrected and fatwa-issued position: Tayammum shall be prioritized; this is the correct school of thought and the fatwa is based on it. This is because when a Mujtahid retracts from a statement, acting upon it is no longer permissible. His phrase 'it shall be prioritized' means it will be preferred, chosen, and given precedence, and wudu (ablution) shall not be performed with Nabidh (a fermented drink). (T)

In Bada'i it is mentioned: Wudu with Nabidh made from raisins and other types of Nabidh is not permissible because, according to analogy (Qiyas), wudu can only be performed with absolute (pure) water, and these are not absolute water. The proof for this is that wudu with them is not permissible even if absolute water is available. However, we have learned of the permissibility of one type from the textual evidence (Nass), and that Nass specifically pertains to Nabidh made from dates. Therefore, for all other types of Nabidh, the rule will be applied according to original analogy. (T)

In Hidaya it is mentioned: Wudu with other types of Nabidh will not be permissible according to the requirement of analogy. (T)

In Inaya it is mentioned: Wudu is not permissible with Nabidh made from raisins, figs, etc. (T)

In Ghuniya it is mentioned: Regarding the impermissibility of wudu with all other drinks besides date Nabidh.

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi 1/41
2. Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, Saeed Company Karachi 1/17
3. Al-Hidaya, Water with which wudu is permissible, Arabic edition Karachi 1/32
4. Al-Inayah with Fath al-Qadir, Water with which wudu is permissible, Nooriya Rizvia Sukkur 1/105

Page 633 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दो)

मुसह्हह मुफ़्ता-बिह (सही और फ़तवे के अनुसार) मत पर: तयम्मुम को मुक़द्दम (प्राथमिकता) किया जाएगा, यही सही मत है और इसी पर फ़तवा है। क्योंकि जब कोई मुजतहिद किसी क़ौल (कथन) से रुजूअ (वापसी) करे तो उस पर अमल जायज़ नहीं, और उनके क़ौल "मुक़द्दम किया जाएगा" से मुराद यह है कि उसको तरजीह (वरीयता) दी जाएगी और इख़्तियार किया जाएगा और नबीज़ से वज़ू न किया जाएगा। (त)

बदाइ में है: नबीज़-ए-मुनक़्क़ा और दूसरे नबीज़ों से वज़ू जायज़ नहीं क्योंकि क़यास (तर्क) की रूह से वज़ू सिर्फ़ मुतलक़ पानी से हो सकता है और यह मुतलक़ पानी नहीं है और इसकी दलील यह है कि मुतलक़ पानी के मौजूद होने की सूरत में इससे वज़ू जायज़ नहीं, मगर हमें इसका जवाज़ नस्स (स्पष्ट प्रमाण) से मालूम हुआ है और नस्स ख़ास नबीज़-ए-तमर की बाबत वारिद हुआ है तो बाक़ी नबीज़ों पर क़यास के मुताबिक़ ही अमल होगा। (त)

हिदाया में है: दूसरे नबीज़ों से वज़ू क़यास के मुताबिक़ जायज़ न होगा। (त)

इनाया में है: मुनक़्क़ा, अंजीर वग़ैरह के नबीज़ से वज़ू जायज़ नहीं। (त)

ग़ुनिया में है: नबीज़-ए-तमर के इलावा बाक़ी नबीज़ों से वज़ू के अदम-ए-जवाज़ (मनाही) के बारे में।

1. दुर्र-ए-मुख़्तार बाब-अत-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली 1/41
2. बदाइ-उस-सनाइ, मतलब अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची 1/17
3. हिदाया अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिह अल-वज़ू अरबी कराची 1/32
4. इनाया मय फ़तह-अल-क़दीर अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिह अल-वज़ू नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/105

فتاوی رضویہ جلد ثانی

علی المذھب المصحح المفتی بہ لان المجتھد اذا رجع عن قول لا یجوز الاخذ بہ اھ وقولہ یقدم ای یرجح ویختار و یؤثر فیفعلہ لا الوضوء بہ۔ تیمم کو مقدم کیا جائیگا، یہی صحیح مذہب ہے اور اسی پر فتوی ہے، کیونکہ جب کوئی مجتہد کسی قول سے رجوع کرے تو اس پر عمل جائز نہیں، اور ان کا قول "مقدم کیا جائیگا" سے مراد یہ ہے کہ اس کو ترجیح دی جائیگی اور اختیار کیا جائیگا اور نبیذ سے وضو نہ کیا جائیگا۔ (ت)

بدائع میں ہے: اما نبیذ الزبیب وسائر الانبذۃ فلا یجوز التوضوء بھا لان القیاس یأبی الجواز بالماء المطلق وھذا لیس بماء مطلق بدلیل انہ لا یجوز التوضوء بہ مع القدرۃ علی الماء المطلق الا انا عرفنا الجواز بالنص والنص ورد فی نبیذ التمر خاصۃ فیبقی ما عداہ علی اصل القیاس 2۔ نبیذ منقی اور دوسرے نبیذوں سے وضو جائز نہیں کیونکہ قیاس کی رُو سے وضو صرف مطلق پانی سے ہو سکتا ہے اور یہ مطلق پانی نہیں ہے اور اس کی دلیل یہ ہے کہ مطلق پانی کے موجود ہونے کی صورت میں اس سے وضو جائز نہیں، مگر ہمیں اس کا جواز نص سے معلوم ہوا ہے اور نص خاص نبیذ تمر کی بابت وارد ہوا ہے تو باقی نبیذوں پر قیاس کے مطابق ہی عمل ہوگا۔ (ت)

ہدایہ میں ہے: لا یجوز التوضی بما سواہ من الانبذۃ جریا علی قضیۃ القیاس 3۔ دوسرے نبیذوں سے وضو قیاس کے مطابق جائز نہ ہوگا۔ (ت)

عنایہ میں ہے: لا یجوز نبیذ الزبیب والتین وغیر ذلك 4۔ منقی، انجیر وغیرہ کے نبیذ سے وضو جائز نہیں۔ (ت)

غنیہ میں ہے: سائر الاشربة سوی نبیذ التمر لیس فی نبیذ تمر کے علاوہ باقی نبیذوں سے وضو کے عدم جواز

1 در مختار باب التیمم، مجتبائی دہلی ۱/۴۱ 2 بدائع الصنائع، مطلب الماء المقید، سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷ 3 ہدایہ الماء الذی یجوز بہ الوضوء عربیہ کراچی ۱/۳۲ 4 عنایہ مع فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۰۵

Fatawa Rizwiya Volume II There is no disagreement regarding the impermissibility of performing ablution with it[1]— (T). It is mentioned similarly in general books.

Arabic

If you say: where did you get your statement "if it was thin"? I say: it is understood from their general statements, and the doubt is removed by the fact that they explicitly stated that the date juice (Nabidh al-Tamr) over whose permissibility for ablution there is disagreement was the thin one, but as for the thick one, no. Then they said: it is not permissible with anything else from the juices because date juice was specially mentioned in the report (athar). Thus, it clearly became evident that what is meant is the negation of performing ablution with the thin among them, as for the thick, its negation is known and there is no disagreement in it between date juice and other juices.

Urdu

If this question arises, where did you get "and if it was thin"? The answer is that it is understood from the general statements of the jurists, and the doubt is removed in such a way that the jurists have explicitly stated that the date juice about which disagreement exists regarding the validity of ablution is thin, and there is no disagreement regarding thick juice. Then they said that it is not permissible with other juices besides this juice because date juice is specific by text. From this, it clearly became evident that the negation of ablution from thin juice is intended because there was already no disagreement regarding the thick one; therefore, in thick juice, date juice and other juices are equal. (T)

In short, the correct, relied-upon, and fatwa-issued position is that performing ablution with date juice is absolutely not valid, and there is consensus (Ijma) on its invalidity with other juices. However, the implication of the Zaylai rule is that as long as thinness remains it should be valid, but this is by no means correct because it would be called juice and not water; so due to the name of water not remaining, it did not remain absolute water, and ablution is only permissible with absolute water and nothing else.

Arabic

The explanation of that is that they are among the solids, or the rule of restriction according to him regarding solids is the disappearance of thinness only. He (may Allah Most High have mercy on him) said: if

Urdu

And its detail is that it is among the solids, and according to them, the rule of restriction in solids is that thinness should disappear. They said: if the mixed thing is solid, as long as it can

Arabic	Urdu
the additive is solid, then as long as it flows over the limbs, water is dominant[2]. End. And he was followed in Al-Hilya and Al-Durar, so they limited themselves to mentioning flowing.	flow over the limbs, water will be dominant. End. And Al-Hilya and Al-Durar followed him in this, and both limited themselves to mentioning the act of flowing. (T)
I say: (1) The distance in it was more because flowing over the limbs is streaming (sayalan), and thinness is more specific than it, as will follow; so it would imply the permissibility of ablution even though	I say: in this, the distance was greater that flowing on the limbs is streaming (sayalan) and thinness is more specific than streaming as will follow; so its meaning came out to be that even though

[1] Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 72 [2] Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purity, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, 1/20

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी इसके साथ वूज़ू के नाजायज़ होने में कोई मतभेद नहीं पाया जाता है[1]। (त) इसी तरह आम किताबों में है।

अरबी

यदि आप कहें: "यदि वह पतला हो" आपका यह कथन कहाँ से है? मैं कहता हूँ: उनके सामान्य कथनों से, और संदेह इस बात से दूर हो जाता है कि उन्होंने स्पष्ट किया है कि खजूर की नबीज़ जिसके वूज़ू के जायज़ होने में मतभेद है, वह पतली थी, लेकिन जहाँ तक गाढ़ी की बात है तो नहीं। फिर उन्होंने कहा: इसके अलावा अन्य नबीज़ों के साथ जायज़ नहीं है क्योंकि खजूर की नबीज़ को साक्ष्यों (असर) में विशेष स्थान मिला है। अतः यह स्पष्ट हो गया कि पतली नबीज़ से वूज़ू की मनाही अभिप्रेत है, जहाँ तक गाढ़ी की बात है, उसकी मनाही ज्ञात है और खजूर की नबीज़ और अन्य नबीज़ों के बीच इसमें कोई मतभेद नहीं है।

उर्दू

अगर यह सवाल हो कि "व इन कान रक़ीक़न" (अगर वह पतला हो) तुमने कहाँ से लिया है? तो इसका जवाब यह है कि यह फ़ुक़हा के सामान्य कथनों से समझा जाता है, और वहम इस तरह दूर हो जाता है कि फ़ुक़हा ने स्पष्ट किया है कि वह नबीज़ जिससे वूज़ू होने के बारे में मतभेद पाया जाता है, रक़ीक़ (पतली) है और गाढ़े में कोई मतभेद नहीं, फिर फ़रमाया इस नबीज़ के अलावा बाकी नबीज़ों से जायज़ नहीं क्योंकि नबीज़-ए-तमर (खजूर की नबीज़) साक्ष्य से विशिष्ट है। इससे निश्चित रूप से स्पष्ट हुआ कि रक़ीक़ नबीज़ से वूज़ू की मनाही मुराद है क्योंकि गाढ़े में तो इख़्तिलाफ़ पहले ही नहीं था, तो गाढ़ी नबीज़ में नबीज़-ए-तमर और बाकी नबीज़ें बराबर हैं। (त)

संक्षेप में, खजूर की नबीज़ से पूर्णतः वूज़ू का सही न होना सही, विश्वसनीय और मुफ़्ती-बह मज़हब है, और बाकी नबीज़ों से न होने पर तो इज्मा (आम सहमति) है, मगर ज़ैली नियम का तक़ाज़ा यह है कि जब तक पतलापन बाकी है सही हो, लेकिन यह हरगिज़ सही नहीं है क्योंकि इसे नबीज़ कहेंगे न कि पानी, तो पानी का नाम बाकी न रहने के कारण वह आब-ए-मुतलक़ (शुद्ध जल) न रहा और वूज़ू आब-ए-मुतलक़ ही से जायज़ है, बस।

अरबी

इसका विवरण यह है कि वे ठोस पदार्थों में से हैं, या उनके अनुसार ठोस में पाबंदी का नियम केवल पतलेपन का लुप्त होना है। उन्होंने

उर्दू

और इसकी तफ़सील यह है कि वह जामिदात (ठोस वस्तुओं) से है और उनके नज़दीक जामिद में तक़यीद (पाबंदी) का ज़ाबता यह है कि रक़्क़त

अरबी

(अल्लाह उन पर रहम करे) फ़रमाया: यदि मिलने वाली चीज़ ठोस हो, तो जब तक वह अंगों पर बहती रहे, पानी ही प्रभावी है[2]। समाप्त। और हिल्या और दुरर में उनका अनुसरण किया गया, अतः उन्होंने केवल बहने के उल्लेख पर संतोष किया।

मैं कहता हूँ: (1) इसमें विसंगति अधिक थी क्योंकि अंगों पर जारी होना 'सैयालान' (बहाव) है और पतलापन उससे विशिष्ट है जैसा कि आगे आएगा, तो इसका तक़ाज़ा था कि वूज़ू जायज़ हो भले ही

उर्दू

(पतलापन) ज़ाइल (खत्म) हो जाए, उन्होंने फ़रमाया अगर मिलने वाली चीज़ जामिद हो तो जब तक वह अंगों पर बह सके तो पानी ही ग़ालिब होगा। समाप्त। और हिल्या और दुरर में इसकी पैरवी की और दोनों ने जारी होने के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा (संतोष) किया। (त)

मैं कहता हूँ इसमें बोअद ज़ायद (अधिक दूरी) था कि जारी होना अंगों पर सैयालान है और रक़्क़त सैयालान से अख़स (विशिष्ट) है जैसा कि आगे आएगा तो इसका मफ़हूम यह निकला कि अगरचे

[1] ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 72 [2] तबयीनुल हक़ाएक़, किताबुत तहारत, मतबअतुल अमीरिया बुलाक मिस्र, 1/20

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی عدم جواز التوضی بہ خلاف[1]- میں کوئی اختلاف نہیں پایا جاتا ہے۔(ت) اسی طرح عامہ کتب میں ہے۔

عربی متن

فان قلت من این قولك انكان رقيقاً قلت لاطلاقهم ويقطع الوهم انهم صرحوا ان نبيذ التمر المختلف فی جواز الوضوء به ماكان رقيقا اما الغليظ فلا ثم قالوا ولايجوز بما سواه من الانبذة لان نبيذ التمرخص بالاثر فوضح قطعاً ان المراد نفی التوضی بالرقيق منها اما الغليظ فمعلوم الانتفاء ولا تخالف فيه بين نبيذ التمر وسائر الانبذة-

اردو متن

اگر یہ سوال ہو کہ وان کان رقیقاً تم نے کہاں سے لیا ہے؟ تو اس کا جواب یہ ہے کہ یہ فقہاء کے اطلاقات سے مفہوم ہے، اور وہم اس طرح دُور ہو جاتا ہے کہ فقہاء نے تصریح کی ہے کہ وہ نبیذ جس سے وضو کے ہونے میں اختلاف پایا جاتا ہے رقیق ہے اور گاڑھے میں کوئی اختلاف نہیں، پھر فرمایا اس نبیذ کے علاوہ باقی نبیذوں سے جائز نہیں کیونکہ نبیذ تمر نص سے مخصوص ہے، اس سے قطعی طور پر واضح ہوا کہ رقیق نبیذ سے وضو کی نفی مراد ہے کیونکہ گاڑھے میں تو اختلاف پہلے ہی نہیں تھا تو گاڑھے نبیذ میں نبیذ تمر اور باقی نبیذیں برابر ہیں۔(ت)

بالجملہ نبیذ تمر سے مطلقاً وضو صحیح نہ ہونا مذہب صحیح معتمد مفتی بہ ہے اور باقی نبیذوں سے نہ ہونے پر تو اجماع ہے مگر ضابطہ زیلعیہ کا اقتضا یہ ہے کہ جب تک رقت باقی ہے صحیح ہو لیکن یہ ہر گز صحیح نہیں کہ اسے نبیذ کہیں گے نہ کہ پانی تو نامِ آب باقی نہ رہنے کے سبب آبِ مطلق نہ رہا اور وضو آبِ مطلق ہی سے جائز ہے وبس۔

عربی متن	اردو متن
وبیان ذلك انها من الجامدات اوضابطة التقیید عنده فی الجامد زوال الرقة فحسب قال رحمه الله تعالی المخالط انکان جامدا فمادام یجری علی الاعضاء فالماء هو الغالب[2] اه وتبعه فی الحلیة والدرر فاقتصر علی ذکر الجریان- اقول:(۱)وکان البعد فیه اکثر لان الجریان علی الاعضاء هو السیلان والرقة اخص منه کما سیاتی فکان یقتضی جواز الوضوء	اور اس کی تفصیل یہ ہے کہ وہ جامدات سے ہے اور ان کے نزدیک جامد میں تقیید کا ضابطہ یہ ہے کہ رقت زائل ہو جائے، انہوں نے فرمایا اگر ملنے والی چیز جامد ہو تو جب تک وہ اعضاء پر بہہ سکے تو پانی ہی غالب ہو گا اھ اور حلیہ اور درر میں اس کی متابعت کی اور دونوں نے جاری ہونے کے ذکر پر اکتفاء کیا۔(ت) میں کہتا ہوں اس میں بعد زائد تھا کہ جاری ہونا اعضاء پر سیلان ہے اور رقت سیلان سے اخص ہے کما سیاتی تو اس کا مفہوم یہ نکلا کہ اگر چہ

[1] غنیۃ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۲ [2] تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ۱ / ۲۰

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Arabic Column]: And if the thinness (fluidity) disappears while the flowing remains, however, Imam al-Zayla'i and, based on the report from him, al-Halabi addressed this by saying afterwards: the statement of those who said that if it is thin, Wudu is permissible with it, otherwise not, is to be interpreted as being when the substance mixed with it is solid. And close to it is the statement of the Researcher in al-Fath and the author of al-Bahr in al-Bahr and others: if it is solid, then by the absence of the thinness of water and its flowing over the limbs [Wudu is not permissible]. So they combined both, and the ruling was built upon their simultaneous absence, and the difficulty returned, unless it is said that the 'and' (wa) is in the sense of 'or' (aw), and at that time, mentioning flowing and streaming after thinness would be redundant, except that it has become common and widespread and the matter is simple. Thus, the better phrasing is that of al-Ghunyah: what is considered in the water becoming restricted through mixing with a solid is the disappearance of its thinness. And al-Bahr said after that: if the mixed substance is solid, then the dominance of the parts in it is known by its thickness. And you know that the basis of this chapter is on the disappearance of the name, as the Imam acknowledged with his rule by saying: the disappearance of the name of water from it is what is considered in the chapter. And with the mixing of a solid, sometimes it disappears...

[Urdu Column]: If thinness disappears and the flow remains, Wudu is permissible; however, Imam al-Zayla'i and, in following him, al-Halabi, addressed this doubt by saying: so those scholars who stated that Wudu is permissible if it is thin, otherwise not, it will be interpreted in the case when the thing mixed in it is solid. And close to this is the statement of the researcher in Fath and the author of al-Bahr in al-Bahr etc., that if that thing is solid, then Wudu will not be permissible at that time when the thinness of the water ends and it cannot flow over the limbs. So the jurists combined both points and the ruling was based on the simultaneous absence of both, and the problem that was there returned. Yes, one possibility is that the 'and' is in the sense of 'or', and in this case, the mention of flowing and streaming after thinness would be additional, but this is what generally happens. So the phrasing of Ghunyah is better, which is: what is considered in the restriction of water due to the mixing of a solid is the disappearance of its thinness. And al-Bahr stated after this that if the mixed thing is solid, then the sign of the dominance of its parts in it will be through its becoming thick. (T) You know that in this regard, the basis is the disappearance of the name, as the Imam has acknowledged. He described the rule

that in this matter, the disappearance of the name [of water] is what matters. And when any solid thing is mixed in water, sometimes the name is lost...

[Footnotes]: 1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, al-Amiriyyah Press, Egypt, 1/20 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 69 3. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Rules of Waters, Sohail Academy, Lahore, p. 91 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 69

फ़तावा रज़विया जिल्द-ए-सानी

[अरबी कॉलम]: और अगर रक़्क़त (तरलता) ज़ाइल हो जाए और बहाव बाक़ी रहे, लेकिन इमाम ज़ैलई और उनके हवाले से हलबी ने यह कहते हुए इसे संभाला: उन लोगों का यह कहना कि अगर पतला हो तो वज़ू जायज़ है वर्ना नहीं, इसे उस सूरत पर महमूल किया जाएगा जब उसमें मिलाई गई चीज़ ठोस हो। और इसी के करीब 'फ़तह' में मुहक़्क़िक का और 'बहर' वग़ैरा में साहिबे 'बहर' का कौल है: अगर वह ठोस है, तो पानी की रक़्क़त के ख़त्म होने और अंगों पर उसके बहाव के न होने से [वज़ू जायज़ न होगा]। फिर उन्होंने दोनों को जमा किया और हुक्म दोनों के एक साथ ख़त्म होने पर बना, और समस्या फिर लौट आई, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि 'वाओ' (और) 'ओ' (या) के अर्थ में है, और उस समय पतलेपन के बाद बहाव और सैलान का ज़िक्र फ़ाज़िल होगा, मगर यह कि यह आम और मशहूर हो गया है और मामला सरल है। अतः'ग़ुनिया' की इबारत बेहतर है: ठोस के मिलने से पानी के मुक़ैय्यद होने में उसकी रक़्क़त का ज़ाइल होना ही मोतबर है। और 'बहर' ने उसके बाद कहा: अगर मिलने वाली चीज़ ठोस हो, तो उसमें अज़्ज़ा के प्रभुत्व का पता उसके गाढ़ेपन से चलेगा। और आप जानते हैं कि इस अध्याय का मदार नाम के ज़ाइल होने पर है जैसा कि इमाम ने अपने ज़ाब्ते के साथ एतराफ़ किया: पानी का नाम ज़ाइल हो जाना ही इस अध्याय में मोतबर है। और ठोस के मिलने से कभी-कभी नाम ज़ाइल हो जाता है...

[उर्दू कॉलम]: रक़्क़त ज़ाइल हो जाए और सैलान बाक़ी रहे तो वज़ू जायज़ है, मगर इमाम ज़ैलई और उनकी मुताअबत में हलबी ने इस शुबहा का तदारुक करते हुए फ़रमाया, तो जिन हज़रात ने फ़रमाया कि इससे वज़ू जायज़ है अगर रक़ीक़ (पतला) हो वर्ना नहीं, उसको इस सूरत पर महमूल किया जाएगा कि जब उसमें मिलने वाली चीज़ जामिद (ठोस) हो और इसी के करीब-करीब मुहक़्क़िक का कौल 'फ़तह' में और साहिबे 'बहर' का 'बहर' वग़ैरा में है कि अगर वह शय जामिद है तो वज़ू उस वक़्त जायज़ न होगा जब पानी की रक़्क़त ख़त्म हो जाए और वह आज़ा (अंगों) पर जारी न हो सके। तो फ़ुक़हा ने दोनों बातों को जमा कर दिया और हुक्म दोनों के मअन (एक साथ) इंतिफ़ा (ख़त्म होने) पर हुआ, और जो महज़ूर (कठिनाई) था वह लौट आया, हाँ एक सूरत यह है कि वाओ ब-मानी 'ओ' हो और इस सूरत में जिरयान और सैलान का ज़िक्र रक़्क़त के बाद इज़ाफ़ी होगा, लेकिन आम तौर पर यह होता है तो 'ग़ुनिया' की इबारत बेहतर है और वह यह है कि किसी जामिद चीज़ के मिलने से पानी के मुक़ैय्यद होने में मोतबर उसकी रक़्क़त का ज़ाइल होना है। और 'बहर' ने इसके बाद फ़रमाया कि अगर मिलने वाली चीज़ जामिद हो तो उसमें अज़्ज़ा के ग़लवे का पता उसके गाढ़ा

पड़ जाने से होगा। (त) आपको मालूम है कि इस सिलसिला में मदार नाम के ज़ाइल होने पर है जैसा कि इमाम ने एतराफ़ किया है उन्होंने ज़ाब्ता यह बयान किया कि इस बात में नाम का ज़ाइल होना ही बेहतर है और जब कोई जामिद शय पानी में मिलती है...

[पादलेख]: 1. तबीय्यन अल-हक़ाएक़, किताब अत-तहारह, मतबअ अल-अमीरिया, मिस्र, 1/20 2. अल-बहर अर-राएक़, किताब अत-तहारह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 69 3. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, फ़स्ल फ़ी अहकाम अल-मियाह, सोहैल एकेडमी, लाहौर, पृ. 91 4. अल-बहर अर-राएक़, किताब अत-तहारह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 69

فتاوی رضویہ جلد ثانی

وان زالت الرقة مع بقاء السيلان لكن الامام الزيلعي وبالنقل عنه الحلبي تداركاه بقولهما بعده فيحمل قول من قال ان كان رقيقاً يجوز الوضوء به والا فلا على ما اذا كان المخالط له جامداً اهـ ويقرب منه قول المحقق في الفتح والبحر في البحر وغيرهما فان كان جامداً فبانتفاء رقة الماء وجريانه على الاعضاء اهـ فجمعوا بينهما فابتنى الحكم على انتفائهما معا وعاد المحذور الا ان يقال ان الواو بمعنى او وحينئذ يكون ذكر الجريان والسيلان بعد الرقة مستدركاً غير انه قد شاع وذاع والخطب سهل فالاحسن عبارة الغنية المعتبر في صيرورة الماء مقيدا بمخالطة الجامد زوال رقتة اهـ والبحر من بعد اذ قال فان كان المخالط جامداً فغلبة الاجزاء فيه بثخونته اهـ وانت تعلم ان المدار الباب على زوال الاسم كما اعترف به الامام الضابط بقوله زوال اسم الماء عنه هو المعتبر في الباب اهـ وبخلط الجامد ربما يزول

رقت زائل ہو جائے اور سیلان باقی رہے تو وضو جائز ہے ، مگر امام زیلعی اور ان کی متابعت میں حلبی نے اس شبہ کا تدارک کرتے ہوئے فرمایا، تو جن حضرات نے فرمایا کہ اس سے وضو جائز ہے اگر رقیق ہو ورنہ نہیں اس کو اس صورت پر محمول کیا جائیگا کہ جب اس میں ملنے والی چیز جامد ہوا اور اسی کے قریب قریب محقق کا قول فتح میں اور صاحب بحر کا بحر وغیرہما میں ہے کہ اگر وہ شئی جامد ہے تو وضو اس وقت جائز نہ ہوگا جب پانی کی رقت ختم ہو جائے اور وہ اعضاء پر جاری نہ ہو سکے اھ تو فقہاء نے دونوں باتوں کو جمع کر دیا اور حکم دونوں کے معاً انتفاء پر ہوا، اور جو محذور تھا وہ لوٹ آیا، ہاں ایک صورت یہ ہے کہ واؤ بمعنی او ہو اور اس صورت میں جریان اور سیلان کا ذکر رقت کے بعد اضافی ہوگا ، لیکن عام طور پر یہ ہوتا ہے تو غنیہ کی عبارت بہتر ہے اور وہ یہ ہے کہ کسی جامد چیز کے ملنے سے پانی کے مقید ہونے میں معتبر اس کی رقت کا زائل ہونا ہے اھ اور بحر نے اس کے بعد فرمایا کہ اگر ملنے والی

چیز جامد ہو تو اس میں اجزاء کے غلبے کا پتا اس کے گاڑھا پڑ جانے سے ہوگا اھ (ت) آپ کو معلوم ہے کہ اس سلسلہ میں مدار نام کے زائل ہونے پر ہے جیسا کہ امام نے اعتراف کیا ہے انہوں نے ضابطہ یہ بیان کیا کہ اس بات میں نام کا زائل ہونا ہی بہتر ہے اھ اور جب کوئی جامد شئی پانی میں ملتی ہے

1 تبیین الحقائق کتاب الطہارۃ مطبعۃ الامیریہ مصر ۱ / ۲۰ 2 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۶۹ 3 غنیۃ المستملی فصل فی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۱ 4 بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۶۹

Fatawa Razawiya - Volume Two

[Arabic Column] The name disappears before the loss of thinness, like saffron water suitable for dyeing and Nabeedh (date drink). They have stated that the disagreement was only regarding thin date Nabeedh. It says in Al-Hidayah: The Nabeedh over which there is disagreement is that which is sweet and thin, flowing over the limbs like water. (1) It added in Al-Kafi: If it is thick like molasses, wudu with it is not permissible. (2) In Al-Bada'i: If it is thick like syrup, wudu is not permissible without disagreement. Likewise, if it is thin but has boiled and become strong and thrown up foam, for it has then become an intoxicant, and intoxicants are forbidden, so wudu with it is not allowed. Moreover, the Nabeedh with which the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) performed wudu was thin and sweet; thus, thick and bitter Nabeedh is not included in this ruling. (3) This is stated in Al-Hilyah, Al-Ghaniyah, Al-Bahr, Al-Durr, and most books, rather in Al-Inayah: Nabeedh...

[Urdu Column] The name (of water) ceases to exist before the loss of thinness, like saffron water with which something can be dyed, and Nabeedh. Jurists have clarified that the disagreement is about thin Nabeedh. It is in Al-Hidayah that the disagreement is when Nabeedh is sweet and thin and flows over the body parts like water. In Al-Kafi, this was added: if it is thick like molasses, wudu with it is not permissible. And in Al-Bada'i, it is stated that if Nabeedh is thick like syrup, then by consensus, wudu is not permissible with it. Similarly, if it is thin but has fermented so much that it has foamed, because now it has become an intoxicant, and intoxicants are forbidden; therefore, wudu with it is not permissible. Also, the Nabeedh with which the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) performed wudu was thin and sweet; hence, bitter and thick Nabeedh does not fall under this ruling.

[Bottom Section - Arabic] Note: In Miskeen 'ala al-Kanz, the Nabeedh under disagreement is that which is sweet and thin, flowing on the limbs like water. Al-Sayyid Abu al-Sa'ud said: meaning the water is predominant, so it aligns with what was previously mentioned from Khizanat al-Akmal. For if it is not sweet, there is no disagreement about the permissibility of wudu with it, as in Al-Nahr. I say: (1) Glory be to Allah, when water is predominant...

[Bottom Section - Urdu] In Miskeen 'ala al-Kanz, it is stated that the Nabeedh over which there is disagreement is thin and sweet, flowing over the limbs like water. Abu al-Sa'ud said: meaning water is predominant so that it matches what was reported from Khizanat al-Akmal. Because if it is not sweet, there is no disagreement

regarding the permissibility of wudu with it, as in Al-Nahr. I say, Glory be to Allah, when water is predominant... (Remainder on the next page)

[Footnotes] 1. Al-Hidayah, "The water with which wudu is permissible," Maktaba Arabiya, Karachi, 1/32. 2. Al-Kafi. 3. Bada'i al-Sana'i, section on restricted water, Saeed Company, Karachi, 1/71.

फतावा रज़विया - भाग दो

[अरबी कॉलम] पतलेपन के समाप्त होने से पहले ही नाम समाप्त हो जाता है, जैसे ज़ाफ़रान का पानी जो रंगने के काम आता है और नबीज़ (खजूर का शरबत)। उन्होंने स्पष्ट किया है कि मतभेद केवल पतले खजूर के नबीज़ के बारे में था। 'हिदाया' में कहा गया है: जिस नबीज़ के बारे में मतभेद है, वह मीठा और पतला होता है जो अंगों पर पानी की तरह बहता है। (1) 'काफी' में यह जोड़ा गया है: यदि यह शीरे की तरह गाढ़ा है, तो इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। (2) 'बदाए' में है: यदि यह चाशनी की तरह गाढ़ा है, तो बिना किसी मतभेद के वज़ू जायज़ नहीं है। इसी तरह यदि यह पतला है लेकिन उबल गया है और कड़क हो गया है और झाग छोड़ दिया है, तो यह नशीला हो गया है, और नशा हराम है, इसलिए इससे वज़ू जायज़ नहीं है। इसके अलावा, जिस नबीज़ से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वज़ू किया था, वह पतला और मीठा था; अतः गाढ़ा और कड़वा नबीज़ इस नियम में शामिल नहीं है। (3) ऐसा ही 'हिलिया', 'ग़निया', 'बहर', 'दुर्र' और अधिकांश पुस्तकों में है, बल्कि 'इनाया' में नबीज़...

[उर्दू कॉलम] पतलापन मिटने से पहले ही (पानी का) नाम मिट जाता है, जैसे ज़ाफ़रान का पानी जिससे कोई चीज़ रंगी जा सकती हो, और नबीज़। फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने स्पष्ट किया है कि मतभेद पतले नबीज़ के बारे में है। 'हिदाया' में है कि मतभेद तब है जब नबीज़ मीठा और पतला हो और अंगों पर पानी की तरह बहता हो। 'काफी' में यह जोड़ा गया है कि अगर वह शीरे की तरह गाढ़ा हो तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। और 'बदाए' में है कि अगर नबीज़ शीरे की तरह गाढ़ा हो तो सर्वसम्मति से उससे वज़ू जायज़ नहीं है। इसी तरह अगर वह पतला है लेकिन उसमें इतना उबाल आ गया हो कि वह झाग देने लगे, क्योंकि अब वह नशीला हो गया है और नशा हराम है; इसलिए उससे वज़ू जायज़ नहीं है। साथ ही यह कि जिस नबीज़ से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वज़ू किया था, वह पतला और मीठा था; इसलिए कड़वा और गाढ़ा नबीज़ इस हुक्म में नहीं आता।

[नीचे का खंड - अरबी] नोट: 'मिस्कीन अली अल-कन्ज़' में, जिस नबीज़ पर मतभेद है वह मीठा और पतला है, जो पानी की तरह अंगों पर बहता है। सैय्यद अबू अल-सऊद ने कहा: अर्थात पानी की प्रधानता हो, ताकि वह 'ख़ज़ाना अल-अकमल' से जो पहले उल्लेखित है उसके अनुरूप हो जाए। क्योंकि यदि वह मीठा नहीं है, तो उससे वज़ू की वैधता के बारे में कोई मतभेद नहीं है, जैसा कि 'नहर' में है। मैं कहता हूँ: (1) सुभानअल्लाह, जब पानी प्रधान हो...

[नीचे का खंड - उर्दू] 'मिस्कीन अली अल-कन्ज़' में है कि वह नबीज़ जिसमें मतभेद है वह पतला और मीठा है जो पानी की तरह अंगों पर बहता है। अबू अल-सऊद ने फ़रमाया यानी पानी का ग़लबा (प्रधानता) हो ताकि 'ख़ज़ाना अकमाल' से जो मन्क़ूल (वर्णित) हुआ उसके मुवाफ़िक़ (अनुरूप) हो जाए। क्योंकि अगर मीठा न हो तो उससे वज़ू के जवाज़ (वैधता) में कोई मतभेद नहीं है, 'नहर' में ऐसा ही है। मैं कहता हूँ सुभानअल्लाह, जब पानी का ग़लबा हो... (शेष अगले पृष्ठ पर)

[पाद टिप्पणियाँ] 1. हिदाया, "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है," मकतबा अरबिया, कराची, 1/32। 2. काफी। 3. बदाए अस्सनाए, प्रतिबंधित पानी पर खंड, सईद कंपनी, कराची, 1/71।

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[عربی کالم] الاسم قبل زوال الرقة كماء الزعفران الصالح للصبغ والنبيذ وقد صرحوا ان الاختلاف انما كان في نبيذ التمر الرقيق قال في الهداية النبيذ المختلف فيه ان يكون حلوا رقيقا يسيل على الاعضاء كالماء ١ اھ زاد في الكافي فان كان غليظا كالدبس لم يجز الوضوء به ٢ اھ وفي البدائع وان كان غليظا كالرب لا يجوز التوضوء به بلا خلاف وكذا ان كان رقيقا لكنه غلا و اشتد وقذف بالزبد لانه صار مسكرا و المسكر حرام فلا يجوز التوضوء به ولان النبيذ الذی توضأ به رسول الله صلی الله تعالٰی علیہ وسلم كان رقيقا حلوا فلا يلحق به الغليظ المر ٣ وهكدا في الحلية والغنية والبحر والدر وعامة الكتب ۴ بل في العناية النبيذ

[اردو کالم] رقت کے زائل ہونے سے قبل ہی نام زائل ہو جاتا ہے، جیسے زعفران کا پانی جس سے کوئی چیز رنگی جاسکتی ہو، اور نبیذ، اور فقہاء نے تصریح کی ہے کہ اختلاف رقیق نبیذ میں ہے ۔ ہدایہ میں ہے اختلاف اس میں ہے کہ نبیذ میٹھا اور پتلا ہو اور اعضاء پر پانی کی طرح بہتا ہواھ کافی میں یہ اضافہ کیا کہ اگر وہ شیرہ کی طرح گاڑھا ہو تو اس سے وضو جائز نہیں اھ اور بدائع میں ہے کہ اگر نبیذ شیرہ کی طرح گاڑھا ہو تو بالاتفاق اس سے وضو جائز نہیں ہے اور اسی طرح اگر رقیق ہے مگر اس میں اتنا جوش آگیا ہو کہ جھاگ دے گیا ہو کیونکہ اب یہ مسکر ہو گیا اور مسکر حرام ہے لہٰذا اس سے وضو جائز نہیں، نیز یہ کہ جس نبیذ سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے وضو فرمایا تھا وہ رقیق اور میٹھا تھا لہٰذا کڑوا اور گاڑھا نبیذ اس کے حکم میں نہیں

[عربی حاشیہ] عه: في مسكين على الكنز النبيذ المختلف فيه ان يكون حلوا رقيقا يسيل على الاعضاء كالماء اھ قال السيد ابو السعود ای والغلبة للماء ليوافق ما تقدم عن خزانة الاكمل فان لم يحل فلا خلاف في جواز الوضوء به نهرا اھ اقول (١) سبحن الله اذا كان الغلبة للماء

[اردو حاشیہ] مسکین علی الکنز میں ہے کہ وہ نبیذ جس میں اختلاف ہے رقیق اور میٹھا ہے جو پانی کی طرح اعضاء پر بہتا ہواھ ابو السعود نے فرمایا یعنی غلبہ پانی کا ہو تاکہ خزانہ اکمل سے جو منقول ہوا اس کے موافق ہو جائے، کیونکہ اگر میٹھا نہ ہو تو اس سے وضو کے جواز میں کوئی خلاف نہیں، نہر اھ میں کہتا ہوں سبحان اللہ جب پانی کا غلبہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

[حواشی] 1 ہدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء مکتبہ عربیہ کراچی ۳۲/۱ 2 کافی 3 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱

| [Arabic Text Column] | [Urdu Text Column] | | Al-Mukhtalaf fihi dhikr Muhammad fi al-Nawadir huwa an | It can be so; this is in Hilya, Ghunya, Bahr, Durr, and | | tulqa tamarat fi ma' hatta sara al-ma' halwan raqiqan. | general books, rather it is in Al-Inayah that | | ah 1. Wa zuwal ism al-ma' 'anhu maqtu' bihi majma' | regarding the disputed Nabidh, Muhammad wrote in | | 'alayhi wa li-ajlihi sara al-madhhab al-mukhtar | Al-Nawadir that its case is when some dates are put in | | al-mu'tamad 'adam jawaz al-wudu' bihi ala tara anna | water until it becomes sweet and thin. And the name | | fi qawl al-Imam al-awwal al-marju' 'anhu innama yajuz | 'water' is certainly removed from it, there is | | al-wudu' bihi idha lam yajid al-ma' wa la yajuz illa | consensus on this. Therefore, the chosen and relied-upon | | manwiyan wa idha wajada ma'an mutlaqan yantaqid fahuwa | position of the school is that Wudu is not permissible | | fi kulli dhalika kal-tayammum dhakarahu fi al-'Inayah | with it. This is why the first opinion of the Imam, | | wa al-Fath wa al-Hilya 'an sharh al-Imam al-Quduri. | from which he retracted, allowed Wudu in this form only| | | when one does not find water, and it will be permissible| | | only with intention, and when plain water is found, | | | this Wudu (will be nullified). |

(Remaining footnote from the previous page) [Urdu part]: ...then by consensus Wudu will be permissible as mentioned on page 116. Then, given the consensus, [Arabic part]: performing ablution with it is permissible by consensus as mentioned on page 116. [Urdu part]: What need is there for any other narration? Because it is established by Shari'i, customary, and [Arabic part]: rational consensus that [Urdu part]: rational consensus that [Arabic part]: the consideration is for the predominant [Urdu part]: the consideration is for the predominant, so then how would this be a point of difference? It should be said: [Arabic part]: "meaning the predominance of dates," [Urdu part]: because in this, the Imam deviated from the paths of analogy because a Hadith has been narrated. Then, the mention of disagreement as in [Arabic part]: "Khizanat al-Akmal" [Urdu part]: does not agree at all, because they [Arabic part]: referred all answers to the consensus-based rulings [Urdu part]: and regarding his saying [Arabic part]: "if it does not become sweet," [Urdu part]: I say similarly if it becomes sweet and the water is dominant, according to what was mentioned on page 116. And Allah Almighty knows best. 12 - from him, may he be forgiven (M). And Allah Almighty knows best. 12 - from him, may he be forgiven (T).

1 Al-Inayah with Al-Fath, Topic: Al-Ma' al-Muqayyad (Bound Water), Nooriya Rizviya, Sukkur 1/105 Page 637 of 711

| [अरबी कॉलम का अनुवाद] | [उर्दू कॉलम का अनुवाद] | | विवादास्पद विषय का ज़िक्र मुहम्मद ने 'नवाज़िर' में किया है | ऐसा हो सकता है; यही 'हुल्या', 'गुनिया', 'बहर', 'दुर्र | | कि खजूरों को पानी में तब तक डाला जाए जब तक पानी मीठा और | और आम किताबों में है, बल्कि 'इनाया' में है कि विवादास्पद | | पतला न हो जाए। 1. और इससे 'पानी' का नाम हट जाना निश्चित | नबीज़ के बारे में मुहम्मद ने 'नवाज़िर' में लिखा है कि इसकी | | और सर्वसम्मत है। इसी कारण, मज़हब का पसंदीदा और विश्वसनीय मत | सूरत यह है कि कुछ खजूरें पानी में डाल दी जाएँ यहाँ तक कि | | यह हो गया कि इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। क्या आप नहीं | वह मीठा और पतला हो जाए। और पानी का नाम इससे निश्चित रूप | | देखते कि इमाम के पहले मत में, जिससे उन्होंने रुजू कर लिया | से समाप्त हो जाता है, इस पर इज्मा (सहमति) है। इसलिए | | था, इससे वज़ू केवल तभी जायज़ था जब पानी न मिले, और वह भी | पसंदीदा और विश्वसनीय मत यह है कि इससे वज़ू जायज़ नहीं है। | | केवल नियत के साथ जायज़ होगा। और यदि शुद्ध पानी मिल जाए, तो | यही कारण है कि इमाम का पहला कौल, जिससे उन्होंने रुजू किया,| | वह टूट जाएगा। तो इन सब में यह तयम्मुम की तरह है। इसका ज़िक्र | वज़ू को इस सूरत में केवल तभी जायज़ मानता था जब पानी न मिले,| | 'इनाया', 'अल-फ़तह' और 'अल-हुल्या' में इमाम कुदूरी की शरह | और वह केवल नियत के साथ जायज़ होगा, और जब शुद्ध पानी मिल | | से किया गया है। | जाए तो यह वज़ू (टूट जाएगा)। |

(पिछले पृष्ठ का शेष हाशिए) [उर्दू अंश]: ...तो बिल-इज्मा वज़ू जायज़ होगा जैसा कि पेज 116 में गुज़रा। फिर इज्मा होने के बाद [अरबी अंश]: इससे वज़ू करना इज्मा के अनुसार जायज़ है जैसा कि पेज 116 में गुज़रा [उर्दू अंश]: किसी और नक़्ल (हवाले) की क्या ज़रूरत है? क्योंकि शरई, उर्फ़ी और [अरबी अंश]: अक़ली इज्मा से यह साबित है कि [उर्दू अंश]: अक़ली तीनों से साबित है कि [अरबी अंश]: एतबार ग़ालिब का है [उर्दू अंश]: एतबार ग़ालिब (प्रभावी अंश) का है, तो फिर यह विवादास्पद कैसे होगा? इसे यूँ कहना चाहिए कि [अरबी अंश]: "यानी खजूरों की बहुलता हो," [उर्दू अंश]: क्योंकि इसमें इमाम ने क़यास के रास्तों से हटकर अमल किया है क्योंकि हदीस आई है। फिर 'ख़िज़ानत अल-अकमल' में असहमति का ज़िक्र बिल्कुल मेल नहीं खाता, क्योंकि उन्होंने [अरबी अंश]: तमाम जवाबों को इज्माई अहकाम की तरफ़ लौटा दिया है [उर्दू अंश]: और उनके कौल [अरबी अंश]: "अगर मीठा न हो" [उर्दू अंश]: के बारे में मैं कहता हूँ कि अगर मीठा भी हो और पानी

ग़ालिब हो, जैसा कि पेज 116 में गुज़रा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12 - उसकी मग़्फ़िरत हो (म)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12 - उसकी मग़्फ़िरत हो (त)।

---

1 इनाया मअ अल-फ़तह, उनवान: अल-मा अल-मुक़य्यद (बाउंड वाटर), नूरिया रिज़विया, सुक्कुर 1/105 पृष्ठ 637 / 711

| المختلف فیه ذکر محمد فی النوادر هو ان تلقّٰی | ہوسکتا ہے، یہی حلیہ، غنیہ، بحر، در اور عام کتب میں ہے، بلکہ | | تمرات فی مائ حتی صار المائ حلوا رقیقاً اھ 1۔ | عنایہ میں ہے کہ مختلف فیہ نبیذ کے بارے میں محمد نے نوادر | | وزوال اسم المائ عنہ مقطوع بہ مجمع علیہ ولا جلہ | میں لکھا ہے کہ اس کی صورت یہ ہے کہ کچھ کھجوریں پانی میں | | صار المذهب المختار المعتمد عدم جواز الوضوء بہ | ڈال دی جائیں حتی کہ وہ میٹھا پتلا ہوجائے اھ | | الا تریٰ ان فی قول الامام الاول المرجوع عنہ | اور پانی کا نام اس سے قطعی طور پر ختم ہوجاتا ہے اس پر اجماع | | انما یجوز الوضوء بہ اذالم یجد المائ ولا یجوز الا | ہے، لہذا مذہب مختار معتمد یہ ہے کہ اس سے وضو جائز نہیں | | منویا واذا وجد مائاً مطلقاً ینتقض فهو فی کل ذلک | ہے، یہی وجہ ہے کہ امام کا پہلا قول جس سے انہوں نے رجوع | | کالتیمم ذکرہ فی العنایۃ والفتح والحلیۃ عن شرح | کرلیا اس سے وضو اسی صورت میں جائز ہے جبکہ پانی نہ | | الامام القدوری | پائے، اور صرف نیت کے ساتھ ہی جائز ہوگا، اور جب مطلق | | | پانی مل جائے تو یہ وضو |

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ہوگا تو بالاجماع وضو جائز ہوگا کما مر فی ۱۱۶ پھر اجماع کے ہوتے ہوئے جاز الوضوء بہ بالاجماع کما مر فی ۱۱۶ وای حاجۃ الی کسی اور نقل کی کیا ضرورت ہے کیونکہ اجماع شرعی اور عرفی اور النقل مع اجماع الشرع والعرف والعقل علی ان عقلی تینوں سے ثابت ہے کہ اعتبار غالب کا ہے، تو پھر یہ مختلف فیہ العبرۃ للغالب فکیف یکون مختلفاً فیہ وانما حقہ کیسے ہوگا؟ اسے یوں کہنا چاہئے کہ "یعنی غلبہ کھجوروں کا ہو کیونکہ ان یقول ای والغلبۃ للتمر فانہ الذی کان الامام اس میں امام نے قیاس سے عدول کیا ہے کیونکہ اس میں حدیث یعدل بہ عن

سنن القیاس لو ورد الحدیث ثم (۱) وارد ہے، پھر خلاف کا ذکر ما فی خِزَانَۃِ الْاَکْمَل سے بالکل نصب خلاف لا یوافق قط مافی خزانۃ الاکمل لانہ موافقت نہیں رکھتا ہے، کیونکہ انہوں نے تمام جواب احکام ارجمع الاجوبۃ کلھا الی الاحکام الاجماعیۃ وقولہ ان اجماعیہ کی طرف راجع کردئے ہیں اور ان کا قول "ان لم یحل" میں لم یحل اقول وکذا ان حلا والمائ غالب بعد ما کہتا ہوں اگر میٹھا بھی ہو تو اس کا حکم یہی ہے بشرطیکہ پانی غالب ہو تقدم فی ۱۱۶ واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (م) جیسا کہ پانی کی قسم ۱۱۶ میں گزرا، واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

---

1 عنایۃ مع الفتح مطلب الماء المقید نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۰۵ Page 637 of 711

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume Two

(It) will break, so in all rulings it is like Tayammum. This is mentioned in Inayah, Fath, and Hilyah, quoted from the commentary on Quduri, which Imam Karkhi narrated from our companions. And in Hilyah, it is said that the reason for Imam Abu Yusuf's position is that Allah Almighty made Tayammum obligatory when absolute water (Maa'-e-Mutlaq) is unavailable, and date-water (Nabidh-e-Tamr) is not absolute water. Otherwise, performing ablution with it would be permissible even in the presence of other absolute waters. [End of quote]. This was also previously mentioned from Al-Bada'i. I say: From this, the answer to the strenuous discussion of Imam Al-Zayla'i also emerges. He said: "As for their statement that it is not absolute water, we say it is water according to Shariah. Do you not see the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), 'pure water'? Thus, the meaning of Allah's word 'if you find no water' would be: find no water either literally or legally." Subhan Allah! If this is the meaning of the verse, why is ablution not permissible with it in the presence of other water? And as for those who have deemed it mandatory to follow a sequence between the two waters by prioritizing the literal meaning over the legal one, as for their argument...

Note: Maulana Bahr al-Ulum followed him in 'Al-Arkan al-Arba'a' and said: The Prophet's (peace and blessings be upon him) statement, "a good date and pure water," indicates that the date-water does not cease to be water simply because a date was placed in it. Therefore, for someone who has date-water, it is not true to say that he is... (continued on next page).

1. Al-Hilyah
2. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah Bulaq, Egypt, 1/35 Page 638 of 711

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द दो

(वह) टूट जाएगा, इसलिए तमाम अहकाम (नियमों) में यह तयम्मुम की तरह है। यह इनाया, फ़तह और हिलया में शरह कुदूरी से उद्धृत है, जिसे इमाम करखी ने हमारे साथियों से रिवायत किया है। और हिलया में कहा गया है कि इमाम अबू यूसुफ के कौल (कथन) की वजह यह है कि अल्लाह तआला ने तयम्मुम उस वक्त वाजिब किया है जब मुतलक पानी (शुद्ध जल) न हो, और नबीज़-ए-तम्र (खजूर का पानी) मुतलक पानी नहीं है। वरना दूसरे मुतलक पानियों के होते हुए भी इससे वज़ू जायज़ हो जाता। यही अल-बदई से भी गुज़र चुका है। मैं कहता हूँ: इससे इमाम ज़ैलई की उस गुफ्तगू का जवाब भी मिल जाता है कि उनका कौल "यह मुतलक पानी नहीं है", हम कहते हैं कि यह शरअन (धार्मिक दृष्टि से) पानी है। क्या आप हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस फरमान को नहीं देखते: "पाक पानी"? इस प्रकार अल्लाह के फरमान "यदि तुम पानी न पाओ" का अर्थ होगा यानी हकीकत में और शरअन पानी न पाओ। सुभान अल्लाह! अगर आयत का यही अर्थ है, तो दूसरे पानी की मौजूदगी में इससे वज़ू करना क्यों जायज़ नहीं? और जिन हज़रात ने दोनों पानियों के बीच तरतीब (क्रम) को लाज़िम करार दिया है, शाब्दिक अर्थ को शरई अर्थ पर प्राथमिकता देते हुए, जहाँ तक उनके तर्क का सवाल है...

नोट: मौलाना बहर अल-उलूम ने 'अल-अरकान अल-अरबा' में उनका अनुसरण करते हुए फरमाया है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान "एक अच्छी खजूर और पाक पानी" यह बताता है कि खजूर के पड़ने से नबीज़ पानी होने से बाहर नहीं हुआ है। इसलिए, जिस व्यक्ति के पास नबीज़ हो, उस पर यह सादिक (सच) नहीं होगा कि वह... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

1. अल-हिलया
2. तबीन अल-हकाइक, किताब अत्तहारत, अल-अमीरिया बुलाक़ मिस्र 1/35 पेज 638 of 711

ٹوٹ جائیگا تو یہ تمام احکام میں مثل تیمم ہے، یہ عنایہ، فتح اور حلیہ میں شرح قدوری سے منقول ہے جو امام کرخی نے ہمارے اصحاب سے نقل کیا ہے اور حلیہ میں فرمایا ابو یوسف کے قول کی وجہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تیمم اس وقت واجب کیا ہے جب مطلق پانی نہ ہو اور نبیذ تمر مطلق پانی نہیں ہے ورنہ دوسرے مطلق پانیوں کے ہوتے ہوئے بھی اس سے وضو جائز ہو جاتا ہے اھ یہی بدائع سے گزر چکا ہے۔ میں کہتا ہوں اس سے امام زیلعی کی اس گفتگو کا جواب بھی نکل آتا ہے کہ ان کا قول "یہ مطلق پانی نہیں ہے" ہم کہتے ہیں یہ شرعاً پانی ہے، چنانچہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "پاک پانی" یعنی شرعاً تو اللہ کے قول "تو تم پانی نہ پاؤ" کا معنی ہوگا یعنی حقیقۃً اور شرعاً پانی نہ پاؤ، تو اگر آیت کے یہی معنی ہیں تو دوسرے پانی کے ہوتے ہوئے اس سے وضو کیوں جائز نہیں؟ اور جن حضرات نے دونوں پانیوں میں ترتیب کو لازم قرار دیا ہے بتقدیم اللغوی علی الشرعی، اما احتجاجہ

عہ : تبعہ فیہ المولی بحر العلوم فی الارکان الاربعۃ فقال قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم تمرۃ طیبۃ وماء طھور یفیدان النبیذ لم یخرج عن کونہ ماء بوقوع التمر فواجد النبیذ لا یصدق علیہ انہ صادق (باقی بر صفحہ آئندہ) بحر العلوم نے ارکانِ اربعہ میں ان کی پیروی کرتے ہوئے فرمایا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان "تمرۃ طیبۃ وماء طھور" سے معلوم ہوتا ہے کہ نبیذ پانی ہونے سے خارج نہیں ہوا ہے کھجور کے وقوع سے، تو جس شخص کے پاس نبیذ ہو تو اس پر یہ صادق (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 حلیہ 2 تبیین الحقائق کتاب الطہارۃ الامیریہ ببولاق مصر ۱/۳۵ Page 638 of 711

[Arabic side] By his saying (peace and blessings of Allah be upon him), "Pure water," I say: (1) The Hadith from its beginning is: "A good date and pure water." This is only to clarify the components from which it is composed, not to inform about it being water; otherwise, it would also be informing that it is a date, which is false linguistically, customarily, and legally. At the beginning of the Hadith, his saying (peace and blessings of Allah be upon him) to Abdullah (may Allah be pleased with him): "Do you have water with you that I may perform ablution with?" He replied: "No, except for Nabidh al-Tamr (date infusion)." It should not be said that he (may Allah be pleased with him) only denied linguistic water because the question was about legal (shar'i) water due to his saying (peace and blessings of Allah be upon him): "that I may perform ablution with it," unless it is said that Abdullah did not know at that time that it was legal water. Indeed (2), Imam al-Zayla'i himself admitted that Ibn Mas'ud denied the name of water for it [end quote]. Once this is established, it is known that limiting the ruling in solids to the disappearance of fluidity is incorrect. The author of al-Bahr noted this in al-Bahr, saying after presenting the rule: "And here are some important notes."

(Remainder of the previous page's footnote): "...he did not find water, so the verse of Tayammum does not contradict it so as to be an abrogation. This is what I have [end quote]." And it seems he was not aware of the discourse of Imam al-Zayla'i (may Allah the Almighty have mercy on both of them and sanctify their secrets).

[Urdu side] That the linguistic has been prioritized over the legal (shar'i), and regarding their deduction from the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) "pure water," I say: Actually, the beginning of the Hadith is like this: "A good date and pure water." So this is for the description of its constituent parts; the intention is not merely to state that this is water, otherwise the information would also be that this is a date, and this is void in every way: customarily, linguistically, and legally. And at the beginning of the Hadith, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) asked Abdullah (may Allah be pleased with him): "Do you have water so that I may perform ablution with it?" He said: "No, except for Nabidh al-Tamr." It should not be thought that Hazrat Abdullah had only denied linguistic water because the question was about legal water, for the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had said, "so that I may perform ablution with it." Yes, it can be said that Abdullah did not know at that time that this is legally water, and Imam al-Zayla'i himself has admitted that Ibn Mas'ud denied water from it [end

quote]. When this is proven, it becomes known that in solids, making the ruling dependent on the disappearance of fluidity is not correct.

(Remainder of the previous page's footnote): ..."does not come that he is not a finder of water, so the verse of Tayammum is not in opposition to it, so that it might be declared as an abrogation. 'This is what is with me' [end quote]." And probably he was not informed about the discourse of Imam al-Zayla'i. (T)

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharat, al-Amiriya, Bulaq, Egypt 1/35 Page 639 of 711

[अरबी पक्ष] हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस कथन "शुद्ध जल" के बारे में मैं कहता हूँ: (1) हदीस अपनी शुरुआत से इस प्रकार है: "एक अच्छी खजूर और शुद्ध जल।" यह केवल उन घटकों को स्पष्ट करने के लिए है जिनसे यह बना है, न कि इसके पानी होने की सूचना देने के लिए; अन्यथा, यह इस बात की भी सूचना होती कि यह खजूर है, और यह भाषाई, व्यावहारिक और शरई (कानूनी) हर तरह से गलत है। हदीस की शुरुआत में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अब्दुल्ला (रज़ियल्लाहु अन्हु) से यह कहना कि: "क्या तुम्हारे पास पानी है जिससे मैं वुज़ू कर सकूँ?" उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं, सिवाय नबीज़-ए-तम्र (खजूर का शरबत) के।" यह नहीं कहा जाना चाहिए कि उन्होंने (रज़ियल्लाहु अन्हु) केवल भाषाई पानी का खंडन किया था क्योंकि प्रश्न शरई पानी के बारे में था, जैसा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: "ताकि मैं उससे वुज़ू कर सकूँ" जब तक कि यह न कहा जाए कि अब्दुल्ला को उस समय यह पता नहीं था कि यह शरई पानी है। वास्तव में (2), स्वयं इमाम ज़ैलई ने स्वीकार किया है कि इब्ने मसूद ने इसके लिए पानी के नाम का खंडन किया है। जब यह साबित हो गया, तो पता चला कि ठोस पदार्थों में हुक्म को केवल तरलता के लुप्त होने पर निर्भर कर देना सही नहीं है। अल-बहर के लेखक ने अल-बहर में इस पर ध्यान दिलाया है, और नियम बताने के बाद कहा: "और यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं।"

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग): "...उसे पानी नहीं मिला, इसलिए तयम्मुम की आयत इसके विपरीत नहीं है, ताकि इसे निरस्त करने वाला (नासिख) माना जाए। मेरे पास जो है वह यही है [समाप्त]।" और संभवतः वे इमाम ज़ैलई के कलाम (कथन) से अवगत नहीं थे (अल्लाह उन दोनों पर रहम करे और उनके रहस्यों को पवित्र करे)।

[उर्दू पक्ष] कि भाषाई अर्थ को शरई अर्थ पर प्राथमिकता दी गई है, और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कथन "शुद्ध जल" से उनके तर्क के संबंध में मैं कहता हूँ: दरअसल हदीस की शुरुआत इस तरह है "एक अच्छी खजूर और शुद्ध जल।" तो यह इसके घटक तत्वों के वर्णन के लिए है; केवल इतना बताना उद्देश्य नहीं है कि यह पानी है अन्यथा यह भी सूचना होती कि यह खजूर है और यह हर तरह से - व्यावहारिक, भाषाई और शरई तौर पर - असत्य है। और हदीस की शुरुआत में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अब्दुल्ला (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछा: "क्या तुम्हारे पास पानी है ताकि मैं उससे वुज़ू करूँ?" उन्होंने कहा: "नहीं, सिवाय नबीज़-ए-तम्र के।" यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि हज़रत अब्दुल्ला ने केवल भाषाई पानी का खंडन किया था क्योंकि प्रश्न शरई पानी के बारे में था,

क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा था, "ताकि मैं उससे वुज़ू करूँ।" हाँ, यह कहा जा सकता है कि अब्दुल्ला को उस समय यह पता नहीं था कि यह शरई तौर पर पानी है, और स्वयं इमाम ज़ैलई ने स्वीकार किया है कि इब्ने मसूद ने इससे पानी होने का खंडन किया है [समाप्त]। जब यह साबित हो गया, तो पता चला कि ठोस पदार्थों में हुक्म को केवल तरलता (रक़्क़त) के लुप्त होने पर निर्भर कर देना सही नहीं है।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग): ..."यह नहीं आता कि वह पानी पाने वाला नहीं है, इसलिए तयम्मुम की आयत इसके विपरीत नहीं है, ताकि इसे नासिख (निरस्त करने वाला) करार दिया जाए। 'मेरे पास जो है वह यही है' [समाप्त]।" और संभवतः वे इमाम ज़ैलई के कलाम पर सूचित नहीं हुए। (त)

---

1. तब्यीनुल हक़ाएक़, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र 1/35 पृष्ठ 639 of 711

[Arabic side] بقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ماء طھور فاقول:(۱) الحدیث من اولہ تمرۃ طیبۃ وماء طھور فانما ھو لبیان اجزائہ التی ترکب منھا لا لا لا خبار عنہ بانہ ماء والا لکان اخبارا یضا بانھا تمرۃ وھو باطل لغۃ وعرفا وشرعا و فی صدر الحدیث قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لعبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ھل معك ماء اتوضوء بہ قال لا الا نبیذ تمر لا یقال انہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ انما نفی الماء اللغوی لان السوال کان عن الماء الشرعی لقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اتوضوء بہ الا ان یقال لم یکن عبداللہ اذذاك یعلم انہ ماء شرعا و قد (۲) اعترف الامام الزیلعی نفسہ انہ نفی عنہ ابن مسعود اسم الماء اہ اذا ثبت ھذا علم ان قصر الحکم فی الجامد علی زوال الرقۃ غیر صحیح و قد تنبہ لھذا البحر فی البحر فقال بعد ایراد الضابطۃ وھھنا تنبیھات مھمۃ۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) لم یجد ماء فلا تعارضہ آیۃ التیمم حتی یکون ناسخا ھذا ما عندی اہ وکأنہ لم یطلع علی کلام الامام الزیلعی رحمہما اللہ تعالیٰ قدس سرہ۔

[Urdu side] کہ لغوی کو شرعی پر مقدم کیا ہے اور ان کا استدلال حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے قول "ماء طھور" سے تو اس کی بابت میں کہتا ہوں دراصل حدیث کی ابتداء اس طرح ہے "تمرۃ طیبۃ وماء طھور" تو یہ اس کے اجزاء ترکیبیہ کے بیان کے لئے ہے صرف اتنا بتانا مقصود نہیں کہ یہ پانی ہے ورنہ یہ بھی خبر ہوتی کہ یہ کھجور ہے اور یہ عرفاً لغۃً اور شرعاً ہر طرح باطل ہے اور حدیث کی ابتداء میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا "کیا تمہارے پاس پانی ہے تاکہ میں اُس سے وضو کروں؟ انہوں نے کہا نہیں سوائے نبیذ تمر کے"۔ یہ خیال نہ کیا جائے کہ حضرت عبداللہ نے صرف لغوی پانی کی نفی کی تھی اس لئے کہ سوال شرعی پانی کی بابت تھا کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا، تاکہ میں اس سے

وضو کروں۔ ہاں یہ کہا جاسکتا ہے کہ عبد اللہ کو اس وقت یہ معلوم نہ تھا کہ یہ شرعاً پانی ہے، اور خود امام زیلعی نے اعتراف کیا ہے کہ ابن مسعود نے اس سے پانی کی نفی کی ہے اہ جب یہ ثابت ہو گیا تو معلوم ہوا کہ جامد میں حکم کاز وال رفتہ پر منحصر کر دینا صحیح نہیں ہے،

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) نہیں آتا کہ وہ پانی کا پانے والا نہیں ہے تو آیۃ تیمم اس کے معارض نہیں، تاکہ اس کو ناسخ قرار دیا جائے "ہذا ما عندی" اہ اور غالباً وہ امام زیلعی کے کلام پر مطلع نہ ہوئے۔ (ت)

---

1 تبیین الحقائق کتاب الطہارت الامیریہ بولاق مصر ۱/ ۳۵ Page 639 of 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Left Column - Arabic Context] First: What they said here implies the permissibility of performing ablution (Wudu) with date-must (nabidh al-tamr) and raisin-must (nabidh al-zabib), even if the three attributes [of water] have changed. They explicitly stated before the chapter on Dry Ablution (Tayammum) that the correct view is contrary to this, and that it is a narration which has been retracted. It might be said that this is conditional upon the water still being called 'water.' In the case of date-must, the name 'water' is removed, so there is no contradiction, as is evident.

Second: This implies that if saffron is mixed with water, ablution is permissible as long as it remains thin and flowing, even if all its attributes change, because it is among solid substances. It is stated in 'Mi'raj al-Diraya,' quoting 'Al-Qunya,' that if saffron falls into water and it is possible to dye with it, then it is no longer 'absolute water' regardless of its thickness. The answer to this is what was mentioned earlier: that the name 'water' has been removed from it. [Footnote 1: ...His brother and student, the Researcher (Al-Muhaqqiq), refuted this in 'Al-Nahr' as mentioned in 'Tahtawi' (ط), stating that Al-Zayla'i did not mention this and that this restriction is of no benefit. [Footnote 2: ...Sayyid al-'Allama Abu al-Sa'ud al-Azhari answered him.]

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] The author of 'Bahr' [Al-Bahr al-Ra'iq] noted this in 'Bahr,' so after stating the rule, he said: Here are several important notices:

First Notice: What they have said implies the permissibility of Wudu with date-must and raisin-must, even if the three attributes change. Before the chapter on Tayammum, they clarified that the correct view is the opposite, and that they have retracted from that narration. This is conditional on the name 'water' not being removed from it. In the issue of date-must, the name 'water' is removed, so there is no contradiction, as is evident.

Second Notice: From this it is known that when saffron is mixed in water, Wudu is permissible as long as it is fluid and thin, even if all its attributes have changed, because it is from the solids. It is quoted from 'Qunya' in 'Mi'raj al-Diraya' that if saffron is put in water and dyeing is possible with it, then it is not absolute water; thickness is not the criteria. The answer is that the name 'water' has been removed from it. (Finished quote)

His brother and researcher-student refuted this in 'Al-Nahr,' as stated in 'Tahtawi' (ط), saying that Zayla'i did not mention this and this restriction will be of no use. Allama Abu al-Sa'ud answered this in 'Fath-ul-Allah al-Mu'in.'

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, HM Saeed Company Karachi, 1/110.
2. Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter of Waters, Beirut, 1/103.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

[बायां कॉलम - अरबी संदर्भ] प्रथम: यहाँ जो उन्होंने कहा है उसका तात्पर्य खजूर और किशमिश के नबीज़ (शरबत) से वज़ू करने की वैधता है, भले ही उसके तीनों गुण बदल गए हों। तयम्मुम के अध्याय से पहले उन्होंने स्पष्ट किया है कि सही मत इसके विपरीत है और यह एक ऐसी रिवायत है जिससे रुजू (वापसी) कर ली गई है। यह कहा जा सकता है कि यह इस शर्त पर आधारित है कि जब तक उसे 'पानी' कहा जा सके। खजूर के नबीज़ के मामले में, 'पानी' नाम समाप्त हो जाता है, इसलिए कोई विरोध नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है।

द्वितीय: इसका तात्पर्य यह है कि यदि केसर पानी में मिल जाए, तो वज़ू तब तक वैध है जब तक वह पतला और बहने वाला रहे, भले ही उसके सभी गुण बदल गए हों, क्योंकि यह ठोस पदार्थों में से है। 'मेराज अल-दिरया' में 'अल-कुन्या' के हवाले से उल्लेख है कि यदि केसर पानी में गिर जाए और उससे रंगना संभव हो, तो वह 'मुतलक पानी' (शुद्ध जल) नहीं रहता, चाहे वह कितना भी गाढ़ा क्यों न हो। इसका उत्तर वही है जो पहले दिया गया है: कि उससे 'पानी' का नाम हट गया है। [फुटनोट 1: ...उनके भाई और शोधकर्ता-छात्र 'अल-मुहक़्क़िक' ने 'अल-नहर' में इसका खंडन किया है जैसा कि 'तहतावी' (ط) में है कि ज़ैलाई ने इसका उल्लेख नहीं किया और यह प्रतिबंध किसी काम का नहीं है। [फुटनोट 2: ...सैय्यद अल-अल्लामा अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने इसका उत्तर दिया है।]

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] बहर के लेखक को 'बहर' में इस पर ध्यान आया है, इसलिए उन्होंने नियम के बाद कहा, यहाँ कुछ महत्वपूर्ण चेतावनियाँ हैं:

पहली चेतावनी: उन्होंने जो कुछ कहा है, उसका अर्थ खजूर और मुनक्का के नबीज़ से वज़ू की वैधता है, चाहे तीनों गुण बदल ही क्यों न गए हों। और तयम्मुम के अध्याय से पहले उन्होंने स्पष्ट किया है कि सही मत इसके विपरीत है और इस रिवायत से रुजू कर लिया गया है। और यह इस शर्त के साथ जुड़ा है कि उससे पानी का नाम समाप्त न हुआ हो। खजूर के नबीज़ के मसले में उससे पानी का नाम समाप्त हो गया है, इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है।

दूसरी चेतावनी: इससे पता चलता है कि जब केसर पानी में मिल जाए, तो उससे वज़ू तब तक जायज़ है जब तक वह तरल और पतला हो, चाहे उसके सभी गुण बदल गए हों, क्योंकि वह ठोस चीज़ों में से है। 'मेराज अल-दिरया' में 'कुन्या' से उद्धृत है कि अगर केसर पानी में डाल दिया जाए और उससे

रंगना मुमकिन हो, तो वह मुतलक पानी नहीं है, इसमें गाढ़ेपन का कोई विचार नहीं है। इसका जवाब यह है कि उससे पानी का नाम समाप्त हो गया है। (समाप्त)

उनके भाई और शोधकर्ता-शिष्य ने 'नहर' में इसका खंडन किया है जैसा कि 'तहतावी' (ط) में है कि ज़ैलाई ने इसका उल्लेख नहीं किया और इस प्रतिबंध से कोई लाभ नहीं होगा। अल्लामा अबू अल-सऊद ने 'फ़तह-उल्लाह अल-मुईन' में इसका उत्तर दिया है।

---

1. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/110।
2. तहतावी अला अल-दुर्र, पानी का अध्याय, बेरूत, 1/103।

पृष्ठ 640/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

الاول: مقتضی ماقالوہ ھنا جواز التوضوء بنبیذ التمر والزبیب ولو غیر الاوصاف الثلثۃ وقد صرحوا قبل باب التیمم ان الصحیح خلافہ وان تلک روایۃ مرجوع عنھا، وقد یقال ان ذلک مشروط بما اذا لم یزل عنہ اسم الماء وفی مسألۃ نبیذ التمر زال عنہ اسم الماء فلا مخالفۃ کمالایخفی۔

الثانی: انہ یقتضی ان الزعفران اذا اختلط بالماء یجوز الوضوء بہ مادام رقیقاً سیالاً ولو غیر الاوصاف کلھالانہ من الجامدات والمصرح بہ فی معراج الدرایۃ معزیاً الی القنیۃ ان الزعفران اذا وقع فی الماء ان امکن الصبغ فیہ فلیس بماء مطلق من غیر نظر الی الثخونۃ ویجاب عنہ بما تقدم من انہ زال عنہ اسم الماء (۱) اھ ورده اخوه وتلمیذه المحقق فی النھر کما فی ط بان الزیلعی لم یذکر ذلک وان ھذا التقیید لایجدی نفعاً (۲) اھ واجاب عنہ السید العلامۃ ابو السعود الازھری

صاحبِ بحر کو بحر میں اس پر تنبہ ہوا ہے، چنانچہ انہوں نے ضابطے کے بعد فرمایا، یہاں چند اہم تنبیہات ہیں:

تنبیہ اول: جو کچھ انہوں نے فرمایا ہے اس کا مقتضیٰ نبیز تمر اور نبیز منقی سے وضو کا جواز ہے خواہ اوصاف ثلاثہ ہی کیوں نہ بدل گئے ہوں، اور تیمم کے باب سے پہلے انہوں نے تصریح کی ہے کہ صحیح اس کے برخلاف ہے اور اس روایت سے رجوع کرلیا ہے، اور یہ اس شرط کے ساتھ مشروط ہے کہ اس پر سے پانی کا نام زائل نہ ہوا ہو، اور نبیز تمر کے مسئلہ میں اس سے پانی کا نام زائل ہوگیا ہے تو کوئی مخالفت نہیں، کما لا یخفی۔

تنبیہ ثانی: اس سے معلوم ہوتا ہے کہ زعفران جب پانی میں مل جائے تو اس سے اس وقت تک وضو جائز ہے جب تک وہ سیال اور رقیق ہو خواہ اس کے تمام اوصاف بدل گئے ہوں، کیونکہ وہ

جامدات سے ہے، اور معراج الدرایہ میں قنیہ سے منقول ہے کہ اگر زعفران پانی میں ڈال دی جائے تو اگر اس سے رنگنا ممکن ہو تو وہ مطلق پانی نہیں ہے، اس میں گاڑھے پن کا کوئی اعتبار نہیں، اس کا جواب یہ ہے کہ اس سے پانی کا نام زائل ہوگیا ہے اھ (ت)

اس کو ان کے بھائی اور شاگردِ محقق نے نہر میں رد کیا ہے جیسا کہ ط میں ہے کہ زیلعی نے اس کو ذکر نہیں کیا ہے اور اس تقیید سے کچھ نفع نہ ہوگا اھ اس کا جواب علامہ ابو السعود نے فتح اللہ المعین میں دیا ہے۔

۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۱۰ ۲۔ طحطاوی علی الدر باب المیاہ بیروت ۱/۱۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 2

In 'Fath Allah al-Mu'in', followed by At-Tahtawi, it is stated that the discussion pertains to situations where the name 'water' is not removed from it, as mentioned by Al-Zaila'i. Therefore, the analogy of the river is invalid. What is mentioned in 'Al-Bahr' regarding the answer is taken from the explicit words of Al-Zaila'i. (Translator's Note: These are three eminent scholars whose views regarding Al-Zaila'i's discourse differ. Both the learned brothers agree that Al-Zaila'i did not mention the condition of the name's retention for solid substances; however, 'Al-Bahr' states this is implied in the intention. Thus, the meaning is: if it is solid, then as long as it remains thin, water is predominant, provided the name 'water' is not removed from it. 'An-Nahr' says he did not mention it, as you see, and did not reject it because there is no benefit in doing so. As-Sayyid claims it is explicitly mentioned in Al-Zaila'i's words and his discourse is about that, and 'Al-Bahr' took it from him. Thus they disagreed.) I am quoting for you all of Al-Zaila'i's discourse so that the reality of the matter becomes clear to you. He (may Allah have mercy on him) said after quoting conflicting opinions: "Thus the disagreement occurred, so there must be a rule and reconciliation. We say that if water remains in its original state and the name 'water' is not removed from it, performing ablution with it is permissible. If it is removed and becomes qualified (restricted), it is not permissible. Qualification occurs either through complete mixing or through the predominance of the mixed substance. Complete mixing occurs through cooking with a pure substance not intended for cleaning, or by absorption into plants, and the predominance of the mixed substance..."

1. Fath Allah al-Mu'in, Researches on Water, Saeed Company Karachi, 1/62

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

'फ़तहुल्लाह अल-मुईन' में, और अत-तह्तावी द्वारा अनुसरण किए जाने पर कहा गया है कि चर्चा उस बारे में है जिसमें 'पानी' का नाम उससे समाप्त नहीं हुआ है, जैसा कि अल-ज़ैलई ने उल्लेख किया है। अतः नदी की तुलना करना निरस्त है। 'अल-बहर' में उत्तर के बारे में जो कुछ उल्लेख किया गया है वह अल-ज़ैलई के स्पष्ट शब्दों से लिया गया है। (अनुवादक नोट: ये तीन प्रतिष्ठित विद्वान हैं जिनकी राय अल-ज़ैलई के शब्दों के बारे में अलग-अलग है। दोनों विद्वान भाई इस बात पर सहमत हैं कि अल-ज़ैलई ने ठोस पदार्थों के लिए नाम बने रहने की शर्त का उल्लेख नहीं किया; हालाँकि, 'अल-बहर' कहता है कि यह नियत (इरादे) में निहित है। तो अर्थ यह है: यदि वह ठोस है, तो जब तक वह पतला है, पानी ही प्रबल है, बशर्ते कि उससे पानी का नाम समाप्त न हो। 'अन-नहर' का कहना है कि उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया जैसा कि आप देख रहे हैं, और उन्होंने इसे अस्वीकार नहीं किया क्योंकि इसमें कोई लाभ नहीं है। अस-सैय्यद का दावा है कि यह अल-ज़ैलई के स्पष्ट शब्दों में वर्णित है और उनकी चर्चा उसी के बारे में है, और 'अल-बहर' ने इसे उन्हीं से लिया है। इस प्रकार वे असहमत हुए।) और मैं आपके लिए अल-ज़ैलई का पूरा कथन उद्धृत कर रहा हूँ ताकि स्थिति की वास्तविकता आप पर स्पष्ट हो जाए। उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) विरोधाभासी मतों को उद्धृत करने के बाद कहा: "इस प्रकार मतभेद हुआ, इसलिए एक नियम और सामंजस्य होना चाहिए। हम कहते हैं कि यदि पानी अपनी मूल अवस्था में रहता है और उससे 'पानी' का नाम समाप्त नहीं होता है, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। यदि वह समाप्त हो जाता है और विशिष्ट (प्रतिबंधित) हो जाता है, तो जायज़ नहीं है। विशिष्टता या तो पूर्ण मिश्रण से होती है या मिश्रित पदार्थ की प्रबलता से। पूर्ण मिश्रण सफाई के उद्देश्य के बिना किसी शुद्ध पदार्थ के साथ पकाने से, या पौधों द्वारा सोख लिए जाने से, और मिश्रित पदार्थ की प्रबलता..."

1. फ़तहुल्लाह अल-मुईन, पानी पर शोध, सईद कंपनी कराची, 1/62

पृष्ठ 641 का 711

فی فتح اللہ المعین وتبعہ ط بأن الکلام فیما اذالم یزل عنہ اسم الماء کما ذکرہ الزیلعي فتنظیر النہر ساقط وما ذکر في البحر من الجواب مأخوذ من صریح کلام الزیلعي ۱- فھؤلاء ثلثہ اجلاء اختلف انظارہم في کلام الامام الزیلعي اما الاخوان العلامتان فاتفقا علی ان الزیلعي لم یذکر في الجامد قید بقاء الاسم غیران البحر یقول انہ مطوي منوي فالمعنی انکان جامدا فمادام باقیا علی رقتہ فالماء ہو الغالب یشترط ان لایزول عنہ اسم الماء والنہر یقول انہ لم یذکرہ کما تری ولم یردہ لانہ لا یجدي نفعا واما السید فزعم انہ مذکورا في صریح کلام الزیلعي وان کلامہ انما ہو فیہ وان البحر انما اخذہ منہ ہکذا اختلفوا وانا انقلہ لک کل کلام الزیلعي لتجلی لک جلیہ الحال قال رحمہ اللہ تعالیٰ بعد مانقل اقوالاً مخالفۃ ہکذا جاء الاختلاف فلابد من ضابط وتوفیق فنقول ان الماء اذا بقی علی اصل خلقہ ولم یزل عنہ اسم الماء جاز الوضوء بہ وان زال وصار مقیدا لم یجز والتقیید اما بکمال الامتزاج او بغلبۃ الممتزج فکمال الامتزاج بالطبخ بطاہر لایقصد بہ التنظیف او بتشرب النبات وغلبۃ الممتزج۔

اور اس کی پیروی ط نے کی ہے کہ گفتگو اس میں ہے جس سے پانی کا نام زائل نہ ہوا ہو جیسا کہ زیلعی نے ذکر کیا ہے، تو نہر کا نظیر دینا ساقط ہے درست نہیں، اور جو جواب بحر میں ہے وہ زیلعی کے صریح کلام سے ماخوذ ہے۔ (ت) تو یہ تین جلیل القدر علماء ہیں جن کی آراء زیلعی کے کلام کی بابت مختلف ہیں، دونوں برادران اس پر متفق ہیں کہ زیلعی نے جامد میں نام کے بقا کی قید ذکر نہیں کی ہے، البتہ بحر کہتے ہیں یہ نیت میں مضمر ہے، تو معنی یہ ہے کہ اگر وہ جامد ہے تو جب تک وہ رقیق ہے تو پانی ہی غالب ہے بشرطیکہ اس سے پانی کا نام زائل نہ ہو، اور نہر کا کہنا ہے کہ انہوں نے اس کو ذکر نہیں کیا ہے جیسا کہ آپ دیکھ رہے ہیں اور اس کو انہوں نے رَد نہیں کیا ہے کیونکہ اس میں کوئی فائدہ نہیں، اور سید کا گمان ہے کہ یہ زیلعی کے کلام میں صریحاً

مذکور ہے اور ان کا کلام اسی میں ہے اور بحر نے اُسی سے اخذ کیا ہے۔ (ت) اسی طرح انہوں نے اختلاف کیا ہے، اور اب میں زیلعی کا کلام نقل کرتا ہوں تاکہ بات پوری طرح واضح ہو جائے، انہوں نے پہلے تو مخالف اقوال ذکر کئے، پھر فرمایا، اسی طرح اختلاف ہوا ہے، تو کوئی ضابطہ اور توفیق ضروری ہے، تو ہم کہتے ہیں کہ پانی جب اپنی اصلی خلقت پر ہو اور اس سے پانی کا نام سلب نہ ہوا ہو تو اس سے وضو جائز ہے اور اگر نام زائل ہو جائے...

۱ فتح اللہ المعین ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی ۱/ ۶۲

Fatawa Rizwiya, Volume II

[Text Content] ...and if it becomes restricted (muqayyad), then it is not permissible. Restriction occurs either through complete mixing or through the dominance of the mixed substance. Complete mixing means cooking a pure substance in water that is not intended for cleaning, or if the water is absorbed into vegetation. Dominance of the mixed substance means mixing without cooking and without absorption. Then, if the added substance is solid, as long as it flows over the limbs, the water is considered dominant. If the added substance is liquid and doesn't differ from water in any quality, such as used water (musta'mal), then dominance is determined by the volume (parts). If it differs and changes the majority of its qualities, then wudu (ablution) is not permissible with it, otherwise it is. If it differs in one or two qualities, dominance is considered based on those qualities. For example, if the color or taste of milk dominates, wudu is not permissible, otherwise it is. Melon water only differs from plain water in taste, so dominance there is judged by taste. Therefore, the texts of the jurists should be understood in the context they are meant for. Now, one who says if it is thin (liquid) then it is permissible, otherwise not, refers to a solid mixed substance. One who says it is permissible even if one quality is changed, refers to a substance that differs in all three qualities. One who says it is not permissible if even one quality is changed, refers to a substance that differs from water in only one or two qualities.

[Arabic Section Summarized in Translation] ...by mixing without cooking and without absorption. If a solid substance is mixed, as long as it flows on the body, water is dominant. If it's a liquid not differing from water, like used water, it's judged by parts. If it differs and changes most, it's not allowed for wudu. If it differs in one or two qualities, like milk (color and taste), if they dominate, it's not allowed. Watermelon juice is judged by taste. Jurists' opinions on 'thin' substances refer to solids. Opinions on changing one quality depend on whether the substance differs in one, two, or all three qualities. Upon reflection, the jurists' views all align with this framework. This summary is complete, except for a distinction in absorption which is incorrect.

[Footnote] 1. Tabyin al-Haqa'iq, Discussion on Water, Bulaq, Egypt, 1/20.

फ़तावा रज़विया, खंड द्वितीय

[पाठ सामग्री] ...और यदि वह प्रतिबंधित (मुक़य्यद) हो जाए तो वह जायज़ नहीं है। प्रतिबंध या तो पूर्ण मिश्रण के माध्यम से होता है या मिश्रित पदार्थ की प्रधानता के साथ। पूर्ण मिश्रण का अर्थ है पानी में ऐसी शुद्ध चीज़ पकायी जाए जो सफाई के उद्देश्य से न हो, या यदि पानी घास में समा जाए। मिश्रित पदार्थ की प्रधानता का अर्थ है बिना पकाए और बिना सोखने के मिश्रण। फिर, यदि मिलाया गया पदार्थ ठोस है, तो जब तक वह अंगों पर बहता है, पानी को प्रधान माना जाएगा। यदि मिलाया गया पदार्थ तरल है और किसी भी गुण में पानी से अलग नहीं है, जैसे इस्तेमाल किया हुआ पानी (मुस्तअमल), तो प्रधानता मात्रा (हिस्सों) द्वारा निर्धारित की जाती है। यदि यह भिन्न है और अधिकांश गुणों को बदल देता है, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, अन्यथा है। यदि यह एक या दो गुणों में भिन्न है, तो प्रधानता उसी आधार पर मानी जाएगी। उदाहरण के लिए, यदि दूध का रंग या स्वाद हावी हो जाता है, तो वज़ू जायज़ नहीं है, अन्यथा होगा। खरबूजे का पानी सादे पानी से केवल स्वाद में भिन्न होता है, इसलिए वहां प्रधानता का निर्णय स्वाद से किया जाता है। इसलिए, न्यायविदों के ग्रंथों को उन्हीं संदर्भों में समझा जाना चाहिए जिसके लिए वे अभिप्रेत हैं। अब, जो कहता है कि यदि यह पतला (तरल) है तो यह अनुमत है, अन्यथा नहीं, तो इसका तात्पर्य ठोस मिश्रित पदार्थ से है। जो कहता है कि यदि एक गुण बदल दिया जाए तो यह अनुमत है, वह उस पदार्थ की बात कर रहा है जो तीनों गुणों में भिन्न है। जो कहता है कि यदि एक गुण बदल दिया जाए तो यह अनुमत नहीं है, वह उस पदार्थ की बात कर रहा है जो पानी से केवल एक या दो गुणों में भिन्न है।

[अरबी खंड का सारांश] ...बिना पकाए और बिना सोखे मिश्रण द्वारा। यदि कोई ठोस पदार्थ मिलाया जाए, जब तक वह शरीर पर बहता है, पानी प्रधान है। यदि यह पानी जैसा तरल है, तो इसका निर्णय हिस्सों द्वारा होता है। यदि यह भिन्न है और अधिकांश को बदल देता है, तो वज़ू की अनुमति नहीं है। यदि यह एक या दो गुणों में भिन्न है, जैसे दूध (रंग और स्वाद), यदि वे हावी हैं, तो अनुमति नहीं है। खरबूजे के रस का निर्णय स्वाद से होता है। न्यायविदों की राय इस बात पर निर्भर करती है कि पदार्थ ठोस है या तरल और वह कितने गुणों में भिन्न है। विचार करने पर पता चलता है कि सभी न्यायविदों के विचार इसी ढांचे के अनुरूप हैं। यह सारांश पूर्ण है, सिवाय अवशोषण के एक अंतर के जो सही नहीं है।

[फ़ुटनोट] १ तबीन अल-हक़ाएक़, पानी पर चर्चा, बुलाक़ मिस्र १ / २०।

بالاختلاط من غير طبخ ولا تشرب نبات ثم المخالط ان جامدا فمادام يجرى على الاعضاء فالماء الغالب وان مائعا فان لم يكن مخالفا في شيئ كالماء المستعمل تعتبر بالاجزاء وان مخالفا فيها فان غيرا كثرهما لايجوز الوضوء به والاجزا وان خالف في وصف او وصفين تعتبر الغلبة من ذلك الوجه كاللبن يخالفه فى اللون والطعم فان كان لون اللبن او طعمه هو الغالب لم يجز والاجاز وماء البطيخ يخالفه فى الطعم فتعتبر الغلبة فيه بالطعم فعلى هذا يحمل ما جاء منهم على ما يليق به فقول من قال ان كان رقيقا يجوز والا لاعلى ما اذا كان المخالط جامدا و من قال ان غير احد اوصافه جاز على ما خالفه في الثلثة ومن قال اذا غير احد اوصافه لايجوز على ما خالفه فى وصف او وصفين ومن اعتبر بالاجزاء على ما يخالفه فى شيئ فاذ نظرت و تأملت وجدت ما قاله الاصحاب لا يخرج عن هذا و وجدت بعضها مصرحا به و بعضها مشارا اليه ١ اه هذا كل كلامه قد لخصته ولم اخرم منه حرفا غير ما ذكر فى التشرب من الفرق بين الخروج والاستخراج فانه غير صحيح۔

اور مقید ہو جائے تو جائز نہیں، اور تقیید یا تو کمالِ امتزاج کے ساتھ ہو یا ملی ہوئی چیز کے غلبہ کے ساتھ ہو گی، تو کمالِ امتزاج یہ ہے کہ پانی میں ایسی پاک چیز ڈال کر پکائے جس سے تنظیف مقصود نہ ہو یا گھاس میں پانی جذب ہو جائے اور ملی ہوئی چیز کا غلبہ یہ ہے کہ پانی کا اختلاط بلا پکائے ہو اور گھاس میں پانی جذب کیے بغیر ہو پھر ملنے والی چیز اگر جامد ہو تو جب تک وہ اعضاء پر بہے تو پانی غالب ہوگا، اور اگر ملنے والی چیز بہنے والی ہے تو وہ اگر کسی چیز میں پانی کے مخالف نہیں ہے، جیسے مستعمل پانی تو غلبہ کا اعتبار اجزا سے ہوگا، اور اگر وہ پانی کے مخالف ہو تو اگر اکثر اوصاف کو بدل دے تو اس سے وضو جائز نہیں ورنہ جائز ہے، اور اگر ایک یا دو وصفوں میں مخالف ہے تو اسی وجہ سے غلبہ معتبر ہوگا، جیسے دودھ کا رنگ یا مزہ

غالب ہو تو وضو جائز نہیں ورنہ جائز ہوگا۔ اور خربوزہ کا پانی، پانی سے صرف مزہ میں مختلف ہے تو اس میں غلبہ باعتبار مزہ ہوگا، لہٰذا فقہاء کی نصوص کو انہی مفاہیم پر محمول کرنا چاہئے جو اس کے لائق ہوں، اب جو یہ کہتا ہے کہ اگر وہ رقیق ہے تو جائز ہے ورنہ نہیں، تو اس کا مطلب یہ ہے کہ ملنے والی اگر جامد ہے تو یہ حکم ہے۔ اور جو کہتا ہے کہ اگر اس کے اوصاف میں سے کسی وصف کو بدل دیا تو جائز ہے، یہ اس صورت میں ہے جب کہ وہ چیز پانی کے ساتھ تینوں وصفوں میں مخالف ہے، اور جو کہتا ہے کہ جب اس کے اوصاف میں سے ایک وصف کو بدل دے تو جائز نہیں، اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ چیز پانی سے ایک یا دو وصفوں میں مخالف ہے،

١ تبيين الحقائق بحث الماء بولاق مصر ١ / ٢٠

Fatawa Rizvia, Volume Second

...And the purpose here is not related to it.

And whoever says that if one of its attributes is changed then it is permissible, this is in the case when that thing is different from water in all three attributes. And whoever says that when it changes one of its attributes then it is not permissible, its meaning is that that thing is different from water in one or two attributes. And he who took dominance based on parts, his understanding is that that thing should not be different from water in anything. So when you reflect, you will reach the same result that whatever the companions have said is not outside this explanation. Some of these matters are explicitly mentioned in the books and some are mentioned by indication. This is their complete discourse which I have quoted without any addition or subtraction; only the difference in 'Tasharrub' (absorption) between exit and extraction is not correct, nor is there any purpose related to it here. (T)

I say: Thus, three matters have become clear to you from his speech. First (1): There is no mention in his speech of restricting the ruling of a solid substance to the retention of the name, even by indication, let alone by explicit statement. He only said as long as it flows over the limbs, then the water is dominant, i.e., absolute, not restricted. So this, as you see, is absolute, not restricted. Then when he came to apply the rule to the different narrations, he applied to the solid the statement of the one who said 'if it is thin it is permissible, otherwise not,' while the statement originally is absolute and in its application, it is also absolute. So when did he incline towards restriction? Similarly, we have recited to you the speech of those taking from him, the authors of Al-Fath, Al-Hulyah, Al-Ghunya, Al-Durar, and Nur Al-Idah, until even Al-Bahr who initiated this restriction, none of them leaned towards it in summarizing the rule. No wonder Al-Shami explicitly stated that it is from the additions of Al-Bahr. Second: He, may Allah Almighty have mercy on him, first mentioned a consensus-based principle that ablution is only permissible with absolute water, which is that from which its nature has not departed.

I say that from their conversation, three things became known to you: First: In their discourse, there is no mention of restricting the ruling of a solid substance to the retention of the name, let alone explicit mention, there is not even an indication. They only said that as long as it flows over the limbs, water is dominant, i.e., it is absolute, not restricted. So as you see, it is absolute, not restricted. Then when he began to apply the rule to different narrations, he interpreted the statement of the one who

said 'if it is thin, it is permissible, otherwise not' to be about a solid substance, whereas this statement is absolute and its application is also absolute. So when did they incline towards restriction? Similarly, we have also quoted the speech of those who took from him, the authors of Al-Fath, Al-Hulyah, Al-Ghunya, Al-Durar, and Nur Al-Idah, until even the author of Al-Bahr, who expressed this restriction, none of them leaned towards it in summarizing the rule. Therefore, Al-Shami stated explicitly that this is from the additions of Al-Bahr. Second: First, they mentioned a consensus-based principle...

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

...और यहाँ उससे कोई उद्देश्य संबंधित नहीं है।

और जो कहता है कि यदि उसके गुणों में से किसी गुण को बदल दिया जाए तो जायज़ है, यह उस स्थिति में है जब वह चीज़ पानी के साथ तीनों गुणों में विपरीत हो, और जो कहता है कि जब उसके गुणों में से एक गुण को बदल दे तो जायज़ नहीं, इसका मतलब यह है कि वह चीज़ पानी से एक या दो गुणों में विपरीत है, और जिसने भागों (अंगों) के आधार पर प्रबलता ली है, उसका आशय यह है कि वह चीज़ पानी के साथ किसी चीज़ में विपरीत न हो, तो जब आप विचार करेंगे तो उसी परिणाम पर पहुँचेंगे जो कुछ साथियों (असहब) ने फ़रमाया है वह इस विवरण से बाहर नहीं है, उनमें से कुछ बातें तो किताबों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित हैं और कुछ का ज़िक्र संकेत में है। यह उनका पूरा बयान है जिसे मैंने बिना किसी कमी या अधिकता के नकल कर दिया है, केवल 'तशर्रुब' (अवशोषण) में जो अंतर निकास और निष्कर्षण के बीच है, वह सही नहीं है, और न ही यहाँ उससे कोई उद्देश्य संबंधित है। (त)

मैं कहता हूँ: उनके कलाम (भाषण) से आपके लिए तीन बातें स्पष्ट हो गईं। पहली (1): उनके कलाम में ठोस के हुक्म को नाम के बने रहने के साथ सीमित करने का कोई ज़िक्र नहीं है, यहाँ तक कि संकेत द्वारा भी नहीं, स्पष्ट कथन तो दूर की बात है। उन्होंने केवल इतना कहा कि जब तक वह अंगों पर प्रवाहित होता रहे, तब तक पानी प्रबल है, यानी मुतलक (निरपेक्ष) है, मुक़य्यद (सीमित) नहीं। तो यह, जैसा कि आप देख रहे हैं, मुतलक है, मुक़य्यद नहीं। फिर जब उन्होंने विभिन्न वर्णनों पर नियम लागू करना शुरू किया, तो उन्होंने ठोस पर उस व्यक्ति का कथन लागू किया जिसने कहा था 'यदि वह पतला हो तो जायज़ है, अन्यथा नहीं', जबकि मूल रूप से यह कथन मुर्सल (निरपेक्ष) है और इसके अनुप्रयोग में भी मुर्सल है। तो वे कब प्रतिबंध की ओर झुके? इसी प्रकार, हमने आपके सामने उनसे शिक्षा लेने वालों का कलाम पढ़ा, जैसे कि फ़तह, हलिया, ग़ुनिया, दुरर और नूरुल ईज़ाह के लेखक, यहाँ तक कि 'बहर' जिसने इस प्रतिबंध को प्रकट किया, उनमें से किसी ने भी नियम को सारांशित करने में इसका पालन नहीं किया। कोई आश्चर्य नहीं कि अल-शामी ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह 'बहर' की वृद्धियों में से है। दूसरा: उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) पहले एक सर्वसम्मत सिद्धांत का उल्लेख किया कि वज़ू केवल मुतलक पानी से जायज़ है, और वह वही है जिससे उसका स्वभाव अलग नहीं हुआ है।

मैं कहता हूँ कि उनकी बातचीत से आपको तीन बातें ज्ञात हुईं: पहला: उनके कलाम में ठोस के हुक्म को नाम की स्थिति से सीमित करने का कोई उल्लेख मौजूद नहीं है, स्पष्टता तो दूर रही, संकेत तक नहीं, उन्होंने केवल यह फ़रमाया है कि जब तक वह अंगों पर प्रवाहित रहे तो पानी प्रबल है यानी मुतलक (निरपेक्ष) है मुक़य्यद (सीमित) नहीं, तो जैसा कि आप देख रहे हैं यह मुतलक है मुक़य्यद नहीं, फिर जब वह नियम को विभिन्न वर्णनों पर लागू करने लगे, तो जिन लोगों ने कहा है कि अगर पतला हो तो जायज़ है अन्यथा नहीं, उनके इस कथन को ठोस पर आधारित किया है जबकि यह कथन मुतलक है और लागू करने में भी मुर्सल है तो वे प्रतिबंध की ओर कब झुके? इसी तरह हमने उन महानुभावों का कलाम भी उद्धृत कर दिया जिन्होंने उनसे लिया है यानी फ़तह, हलिया, ग़ुनिया, दुरर और नूरुल ईज़ाह के लेखक, यहाँ तक कि बहर के लेखक जिन्होंने यह प्रतिबंध लगाया, उनमें से किसी ने भी नियम के सारांश में इसकी ओर ध्यान नहीं दिया, इसलिए शामी ने स्पष्ट कर दिया कि यह बहर की वृद्धियों में से है। दूसरा: पहले तो उन्होंने एक सर्वसम्मत सिद्धांत...

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

ولایتعلق به الغرض ههنا۔

اور جو کہتا ہے کہ اگر اس کے اوصاف میں سے کسی وصف کو بدل دیا تو جائز ہے، یہ اس صورت میں ہے جب کہ وہ چیز پانی کے ساتھ تینوں وصفوں میں مخالف ہے، اور جو کہتا ہے کہ جب اس کے اوصاف میں سے ایک وصف کو بدل دے تو جائز نہیں، اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ چیز پانی سے ایک یا دو وصفوں میں مخالف ہے، اور جس نے غلبہ باعتبار اجزاء لیا ہے اس کا مفہوم یہ ہے کہ وہ چیز پانی کے ساتھ کسی چیز میں مخالف نہ ہو، تو جب آپ غور کریں گے تو اسی نتیجہ پر پہنچیں گے جو کچھ اصحاب نے فرمایا ہے وہ اس بیان سے خارج نہیں، ان میں سے بعض امور تو کتب میں بصراحت مذکور ہیں اور بعض کا ذکرا شارتاً ہے اھ یہ ان کا مکمل کلام ہے جو بلاکم وکاست میں نے نقل کردیا ہے، صرف تشرّب میں جو فرق خروج واستخراج میں ہے، وہ صحیح نہیں، اور نہ ہی اس سے کوئی غرض یہاں متعلق ہے۔ (ت)

اقول: فقد بان لك من كلامه ثلثة امور الاول (۱) لاذكر فی كلامہ لتقييد حكم الجامد ببقاء الاسم حتی بالاشارة فضلا عن التصريح انما قال مادام يجری علی الاعضاء فالماء غالب ای مطلق غير مقيد فهذا كما تری مطلق غير مقيد ثم اذا اتی علی تطبيق الضابطة علی الروايات المختلفة حمل علی الجامد قول من قال ان كان رقيقاً يجوز والا لا والقول في الاصل مرسل وفی الحمل مرسل ارسالا فمتی جنح الی التقييد وكذلك تلونا عليك كلام الآخذين عنه اصحاب الفتح والحلية والغنية والدرر ونور الايضاح حتی البحر الذی ابدی هذا التقييد لم يلم احد منهم في تلخيص الضابطة اليه لاجرم ان صرح الشامي بأنه من

زیادات البحر الثانی ذکر رحمه الله تعالیٰ اولا اصلا مجمعا علیہ ان الوضوء انما یجوز بالماء المطلق وھو الذی لم یزل عنه طبعه

میں کہتا ہوں اُن کی گفتگو سے آپ کو تین باتیں معلوم ہوئیں: اول: ان کے کلام میں جامد کے حکم کو نام کی بقاء سے مقید کرنے کا کوئی تذکرہ موجود نہیں ہے صراحت تو الگ رہی اشارہ تک نہیں، انہوں نے صرف یہ فرمایا ہے کہ جب تک وہ اعضاء پر جاری رہے تو پانی غالب ہے یعنی مطلق ہے مقید نہیں، تو جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں یہ مطلق ہے مقید نہیں، پھر جب وہ ضابطہ کو مختلف روایات پر منطبق کرنے لگے، تو جن لوگوں نے کہا ہے کہ اگر رقیق ہو تو جائز ہے ورنہ نہیں انکے اس قول کو جامد پر محمول کیا ہے حالانکہ یہ قول مطلق ہے اور حمل میں بھی مرسل ہے تو قید لگانے کی طرف کب مائل ہوئے؟ اسی طرح ہم نے ان حضرات کا کلام بھی نقل کردیا جنہوں نے اس سے لیا ہے یعنی فتح، حلیہ، غنیہ، درر اور نور الایضاح کے مصنفین، یہاں تک کہ صاحبِ بحر جنہوں نے یہ قید لگائی، ان میں سے کسی نے بھی ضابطہ کا خلاصہ یہ نہیں کیا، اس لئے شامی نے تصریح کردی کہ یہ زیاداتِ بحر سے ہے۔ دوم: پہلے تو انہوں نے ایک متفق علیہ اصل

Fatawa Ridawiyya, Volume 2

...and nor its name without the restriction from which its name has departed.

I say: He did not mention 'nature' (tab'a) because the departure of 'nature' necessitates the departure of the 'name'. Thus, mentioning it first was for clarification, and omitting it later was for brevity. There is no disagreement among anyone regarding this extent. The matter truly lies in recognizing the 'absolute' (Mutlaq) and the 'restricted' (Muqayyad), i.e., knowing when the name departs and restriction occurs. So, one strives to provide a rule to distinguish the instances of the name's departure from the instances of its permanence. So, he said: restriction occurs by one of two things: complete mixing or the dominance of the mixed substance, etc.

There is no doubt that his discourse pertains to that from which the name of 'water' has not departed, as mentioned by the Sayyid. It is as if it is directed towards explaining what causes restriction. Restriction only applies to the absolute; for restricting the restricted is an attainment of what is already attained (tahsil al-hasil). The absolute is only that from which the name of 'water' has not departed. So, the discourse is about that, and no one has denied it. However, this (1) does not repel the objection; rather, it is the source of it. For he stated that absolute water does not become restricted when mixed with a solid except by thickening. But the rule is contrary to that, for it often becomes restricted before it thickens, as in the case of saffron and date-water (Nabidh). The proof of exclusivity (Hasr) is firstly by limitation (Qasr) as you have known. And I say secondly: it is impossible for the name of water to depart from it while its fluidity remains except by a change in its characteristics. Because if its nature and characteristics remain...

Page 644 of 711

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 2

...और न ही उसका नाम उस प्रतिबंध के बिना जिससे उसका नाम हट गया हो।

मैं कहता हूँ: उन्होंने 'प्रकृति' (तबा) का उल्लेख नहीं किया क्योंकि प्रकृति के हटने से नाम का हटना भी आवश्यक हो जाता है। इसलिए, स्पष्टीकरण के लिए पहले इसका उल्लेख किया और बाद में संक्षिप्तता के लिए इसे हटा दिया। इस हद तक किसी का कोई मतभेद नहीं है। असल मामला 'मुतलक़' (पूर्ण) और 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित) की पहचान का है, यानी यह जानने का है कि कब नाम हटता है और प्रतिबंध प्राप्त होता है। इसलिए, नाम के हटने और बने रहने के स्थानों के बीच अंतर करने के लिए एक नियम प्रदान करने का प्रयास किया गया है। अतः उन्होंने कहा: प्रतिबंध दो में से किसी एक चीज़ से होता है: पूर्ण मिश्रण या मिश्रित पदार्थ की प्रबलता, इत्यादि।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी चर्चा उस पानी के बारे में है जिससे 'पानी' का नाम नहीं हटा है, जैसा कि सैय्यद ने उल्लेख किया है। ऐसा लगता है कि यह उन चीज़ों को समझाने की ओर निर्देशित है जिनसे प्रतिबंध उत्पन्न होता है। प्रतिबंध केवल 'मुतलक़' (पूर्ण) के लिए होता है; क्योंकि जो पहले से ही प्रतिबंधित है उसे प्रतिबंधित करना व्यर्थ है (तहसील-ए-हासिल)। मुतलक़ वही है जिससे पानी का नाम न हटा हो। तो चर्चा उसी के बारे में है, और किसी ने इससे इनकार नहीं किया है। लेकिन यह (1) आपत्ति को दूर नहीं करता; बल्कि यह उसका स्रोत है। क्योंकि उन्होंने बताया कि ठोस के मिलने से मुतलक़ पानी तब तक मुक़य्यद नहीं होता जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए। जबकि नियम इसके विपरीत है, क्योंकि अक्सर वह गाढ़ा होने से पहले ही मुक़य्यद हो जाता है, जैसे ज़ाफ़रान और नबीज़ के मामले में। और विशिष्टता (हस्र) का प्रमाण पहले तो सीमा (क़स्र) से है जैसा कि आप जानते हैं। और मैं दूसरी बात कहता हूँ: पानी की तरलता बने रहते हुए उसका नाम उससे हटना असंभव है, सिवाय इसके कि उसकी विशेषताओं में बदलाव आए। क्योंकि यदि उसकी प्रकृति और विशेषताएँ बनी रहें...

पृष्ठ 644/711

ولا اسمه دون المقید الزائل عنہ اسمہ۔ ذکر کی اور وہ یہ کہ وضو مطلق پانی سے جائز ہوتا ہے، اور مطلق پانی وہ ہے جس کی طبیعت اور نام زائل نہ ہوا ہو نہ کہ مقید پانی سے جس کا نام زائل ہو گیا ہو۔ (ت)

اقول: ولم یذکر الطبع لان زوال الطبع یوجب زوال الاسم فذکرہ اولا ایضاً وحذفه آخرا اجتزاء فہٰذا القدر ممالا خلاف فیه لاحد انما الشان فی معرفة المطلق والمقید ای معرفة انه متی یزول الاسم فیحصل التقیید فتشمر لاعطاء ضابطة ذلك تتمیز بہا مواضع زوال الاسم عن محال بقائه فقال التقیید باحد امرین کمال الامتزاج او غلبة الممتزج الخ میں کہتا ہوں انہوں نے طبیعت کا ذکر نہیں کیا کیونکہ طبیعت کے زائل ہونے سے نام بھی زائل ہو جاتا ہے تو پہلے بطور وضاحت ذکر کیا ہے، اور بعد میں اختصاراً حذف کیا ہے، اور اس میں کسی کا خلاف نہیں، مسئلہ دراصل مطلق و مقید کی پہچان کا ہے، یعنی یہ جاننے کا ہے کہ کب نام زائل ہو گا اور تقیید حاصل ہو گی، تو انہوں نے ایک ضابطہ بیان کیا جس سے یہ معلوم ہو سکے کہ کب زائل ہو گا اور کب باقی رہے گا، یا تو کمالِ امتزاج یا ملنے والی چیز کے غلبہ سے الخ

فلاشك انه کلام فیمالم یزل عنہ اسم الماء کما ذکرہ السید کأنه مسوق لبیان ما یحصل به التقیید والتقیید انما یکون للمطلق فان تقیید المقید تحصیل الحاصل و ما المطلق الامالم یزل عنہ اسم الماء ففیه الکلام وماکان انکرہ احد لکنه (۱) لا یدفع الایراد بل انما منه منشؤہ فانہ افادان الماء المطلق لا یتقید فی خلط الجامد الا بالثخونة والحکم خلافه فانہ ربما یتقید قبل ان یثخن کما فی الزعفران والنبیذ وثبوت الحصر اولاً بالقصر کما علمت واقول ثانیاً محال ان یزول اسم الماء عنه مع بقاء رقته الا

بتغیر وصف لانہ اذا بقی طبعہ واوصافہ تو اس میں کچھ شک نہیں کہ ان کا کلام اس پانی میں ہے جس سے پانی کا نام زائل نہیں ہوا ہے جیسا کہ سید نے ذکر کیا اس لئے کہ کلام اُس چیز کے بیان کیلئے ہے جس سے تقیید پیدا ہوتی ہے اور تقیید تو مطلق کی ہوتی ہے کیونکہ مقید کی تقیید تو تحصیلِ حاصل ہے، اور مطلق تو وہی ہے جس سے پانی کا نام زائل نہ ہوا ہو، تو گفتگو اسی میں ہے اور اس کا کسی نے انکار نہیں کیا، مگر اس سے اعتراض مرتفع نہیں ہوتا ہے، بلکہ اس سے تو پیدا ہوتا ہے، کیونکہ اس کا مفہوم تو یہ ہے کہ مطلق پانی جامد کے ملنے سے تب ہی مقید ہو گا جبکہ گاڑھا ہو جائے حالانکہ حکم اس کے برخلاف ہے کیونکہ بسا اوقات وہ گاڑھا ہونے سے پہلے ہی مقید ہو جاتا ہے جیسا کہ زعفران اور نبیذ۔ اور حصر کا ثبوت اولاً تو قصر ہے کہ اس میں قصر ہے

Fatawa Ridawiyya, Volume Two

[Right Column] As you have understood, and I say again, it is impossible for the name 'water' to cease while its fluidity remains, unless one of its characteristics changes. This is because as long as its nature and characteristics persist, the cessation of its name would be without cause, which is false. And if something else is mixed with it, and this 'other' is among things that do not oppose this water in any characteristic, and that 'other' is equal to or more in its parts, then the name 'water' will be removed from the entire mixture composed of water and that other substance —whether it is equal to or dominant over it—but not from the actual water within it. To the point that if it were possible to separate the water from this mixture, ablution with it would be permissible. And he (may Allah have mercy on him) only mentioned 'thickness' regarding solids and did not consider characteristics in them.

[Left Column] So, the cessation of its name from it would be without cause, which is false. As for that with which something else is mixed that does not oppose its characteristics, whether equal to it in parts or more, the name 'water' is only removed from the entire mixture composed of water and the other thing that is equal to or dominant over it, not from the water that is in it. To the extent that if it were possible to separate the water from that mixture, it would be water valid for ablution. And he (may Allah have mercy on him) did not mention regarding solids anything other than thickness, and he did not consider characteristics in them. He only considered them in contrast to liquids, and contrast is contrary to mixing. He certainly established that there is no dominance in solids through characteristics. Al-Shurunbulali made this clear in the summary of its rule when he said: "And the change of all its characteristics does not harm," end quote. The name only ceases for one of two reasons: the disappearance of fluidity...

[Bottom Section] Note: I say: that is, if, for example, water of borage (Lisan-uth-Thawr) or rose water that has lost its scent is found, the examples they gave are not from it, because there is a difference in the change of taste. And as for the example given of used (musta'mal) water, it is, according to our research, absolute water itself, so how can mixing absolute with absolute make it restricted (muqayyad)? 12- From him, may he be forgiven. (M) I say: that is, if found, and the examples of borage water and rose water that has lost its scent given by them are not relevant here, because there is a difference in the change of taste. And as for the example of used water, according to our research, it is absolute water itself, so how can mixing absolute with absolute make it restricted? 12- From him, may he be forgiven. (T)

[1] Nur al-Idah, Book of Purification, printed at Al-Alimi Press, Lahore, p. 3. Page 645 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड दो

[दायां कॉलम] जैसा कि आपने जाना, और मैं फिर से कहता हूँ, यह असंभव है कि तरलता के बने रहते हुए इससे पानी का नाम हट जाए, सिवाय इसके कि इसका कोई गुण बदल जाए। क्योंकि जब इसका स्वभाव और इसके गुण बने हुए हैं, तो इसके नाम का हटना बिना किसी कारण के होगा और यह गलत है। और जो अन्य चीज़ इसके साथ मिल जाए और वह चीज़ ऐसी हो जो किसी गुण में इस पानी के विपरीत न हो, और वह बाहरी चीज़ इसके हिस्सों में बराबर या अधिक हो, तो पूरे मिश्रण से 'पानी' का नाम हट जाएगा जो पानी और उस बाहरी चीज़ से मिलकर बना है—चाहे वह इसके बराबर हो या इस पर हावी हो—परंतु उस पानी से नहीं जो उसमें मौजूद है। यहाँ तक कि अगर इस मिलावट से पानी को अलग करना संभव होता, तो इस पानी से वज़ू जायज़ होता। और उन्होंने (रहमतुल्लाहि अलैहि) ठोस पदार्थों के बारे में केवल गाढ़ेपन का ज़िक्र किया है, और उसमें गुणों का विचार नहीं किया है।

[बायां कॉलम] अतः, इससे इसके नाम का हटना बिना किसी कारण के होगा, जो कि गलत है। जहाँ तक उस चीज़ का सवाल है जिसमें कोई अन्य पदार्थ मिलाया गया है जो इसके गुणों के विपरीत नहीं है, चाहे वह भागों में इसके बराबर हो या अधिक, तो 'पानी' नाम केवल उस पूरे मिश्रण से हटता है जो पानी और दूसरी चीज़ से बना है जो इसके बराबर या हावी है, न कि उसमें मौजूद पानी से। यहाँ तक कि यदि उस मिश्रण से पानी को अलग करना संभव होता, तो वह वज़ू के लिए वैध पानी होता। और उन्होंने (रहमतुल्लाहि अलैहि) ठोस पदार्थों के संबंध में गाढ़ेपन के अलावा किसी और चीज़ का उल्लेख नहीं किया, और उन्होंने उनमें गुणों पर विचार नहीं किया। उन्होंने केवल तरल पदार्थों के विपरीत उन पर विचार किया, और विरोधाभास मिश्रण के विपरीत है। उन्होंने निश्चित रूप से यह स्पष्ट किया कि गुणों के माध्यम से ठोस पदार्थों में कोई प्रबलता नहीं होती है। अल-शुरुनबुलाली ने इसके नियम के सारांश में इसे स्पष्ट किया जब उन्होंने कहा: "और इसके सभी गुणों का परिवर्तन हानि नहीं पहुँचाता है," उद्धरण समाप्त। नाम केवल दो कारणों में से एक के लिए समाप्त होता है: तरलता का गायब होना...

[नीचे का भाग] नोट: मैं कहता हूँ: यानी अगर पाया जाए, जैसे बोरेज (लिसान-उत-थौर) का पानी और गुलाब जल जिसकी खुशबू खत्म हो गई हो, तो उनके द्वारा दिए गए उदाहरण इससे संबंधित नहीं हैं, क्योंकि स्वाद के बदलाव में अंतर है। और इस्तेमाल किए गए (मुस्तअमल) पानी का जो उदाहरण दिया गया है, वह हमारे शोध के अनुसार स्वयं मुतलक़ (शुद्ध) पानी है, तो मुतलक़ को मुतलक़ के

साथ मिलाकर उसे मुक़य्यद (सीमित) कैसे किया जा सकता है? १२- उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म) मैं कहता हूँ: यानी अगर मिले, और बोरेज जल और खुशबू रहित गुलाब जल के जो उदाहरण उन्होंने दिए हैं, वे यहाँ प्रासंगिक नहीं हैं, क्योंकि स्वाद में बदलाव का अंतर है। और इस्तेमाल किए गए पानी का उदाहरण, हमारे शोध के अनुसार, स्वयं मुतलक़ पानी है, तो मुतलक़ को मुतलक़ के साथ मिलाकर मुक़य्यद कैसे किया जा सकता है? १२- उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

---

[1] नूर अल-इज़ाह, किताब अल-तहारत, अल-अलिमी प्रेस, लाहौर, पृष्ठ ३ द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ ६४५ का ७११

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

[دائیں کالم کا متن] جیسا کہ آپ نے جانا، اور میں ثانیاً کہتا ہوں، یہ امر محال ہے کہ رقت کے باقی رہتے ہوئے اس سے پانی کا نام زائل ہو، الّا یہ کہ اس کا کوئی وصف متغیر ہو جائے اس لئے کہ جب اس کی طبیعت باقی ہو اور اس کے اوصاف باقی ہوں تو اس سے اس کے نام کا زائل ہونا بغیر موجب کے ہوگا اور یہ باطل ہے، اور جو غیر اس کے ساتھ مل جائے اور یہ غیر ان چیزوں میں سے ہو جو کسی وصف میں اس پانی کے مخالف نہ ہو، اور وہ غیر اس کے اجزاء میں مساوی ہو یا زیادہ ہو تو اس میں پانی کا نام کل مرکب سے زائل ہو جائیگا جو پانی اور اس کے غیر سے مرکب ہوا اور اس کے مساوی ہو یا اس پر غالب ہو نہ کہ اُس پانی سے جو اس میں ہے، یہاں تک کہ اگر اس آمیزش سے پانی کا جدا کرنا ممکن ہوتا تو اس پانی سے وضو جائز ہوتا، اور انہوں نے (رحمہ اللہ) جامد میں صرف گاڑھے پن کا ذکر کیا ہے، اور اس میں اوصاف کا اعتبار نہیں کیا ہے،

[بائیں کالم کا متن] فزوال اسمہ عنہ یکون بغیر موجب و ھو باطل امّا ما امتزج بہ غیرہ مما لایخالفہ عہ وصفالہ مساویاً لہ فی الاجزاء او اکثر فانما یزول فیہ اسم الماء عن الکل المرکب من الماء وغیرہ المساوی لہ او الغالب علیہ لا عن الماء الذی فیہ حتی لو امکن افراز الماء عن ذلك المخالط لکان ماء جائزاً بہ الوضوء و ھو رحمہ اللہ تعالی لم یذکر فی الجامد غیر الثخونۃ و لم یعتبر فیہ الاوصاف انما اعتبرھا فی مقابلہ المائع و المقابلۃ تنافی الخلط فقد افاد قطعاً ان لا غلبۃ فی الجامد بالاوصاف و قد افصح بہ الشرنبلالی فی تلخیض ضابطتہ اذ قال ولا یضر تغیرا و صاف کلھا [1] اہ وما کان زوال الاسم الا لاحد امرین زوال الرقۃ

[نیچے کا حصہ] عہ: اقول: ای ان وجد اماماً مثلاً و بہ من ماء لسان الثور و ماء الورد المنقطع الرائحۃ فلیس منہ للاختلاف فی الطعم و ما مثلاً و بہ من الماء المستعمل فھو بنفسہ علی تحقیقنا من

الماء المطلق فکیف یجعل امتزاجہ بالمطلق المطلق مقیداً ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) میں کہتا ہوں یعنی اگر پایا جائے، اور لسان ثور، اور گلاب کا پانی جس میں خوشبو نہ رہی ہو، کی مثالیں جو انہوں دی ہیں وہ اس سے نہیں ہے، کیونکہ مزہ کی تبدیلی میں اختلاف ہے، اور مستعمل پانی کی مثال جو دی ہے تو وہ خود ہماری تحقیق کے مطابق مطلق پانی ہے تو مطلق کو مطلق سے ملا کر مقید کیونکر کیا جاسکتا ہے ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

---

[1] نور الایضاح کتاب الطہارۃ مطبوعہ مطبع علیمی لاہور ص ۳ Page 645 of 711

Fatawa-e-Razvia, Volume 2

Text (Arabic Column): ...or change in description, and this has been negated in the mixing of solids, so nothing remains except the first point. It has become clear that he says the name is not lost in it in any way as long as the liquidity remains. This is the place of objection, so where is the escape? Yes, he mentioned the loss of name at the beginning of the discourse, but that was only a preamble to his rule, being external to it, explaining the need for it as you have known, let alone it being a condition in the ruling for solids.

If you say: Did he not say before this under the summary statement 'or by cooking' that the loss of name is what is considered in this chapter as previously mentioned? So his explicit statement made it the criterion wherever it is found. I say: Yes, and that is the summary of the discourse in this chapter. The rule is only for its detail and for explaining when it occurs. He explicitly stated in it that it does not occur in the mixing of solids except through thickening. So how does making it the criterion help?

Third: He is in the process of providing a rule that distinguishes between the restricted (muqayyad) and the absolute (mutlaq). A rule is only that which encompasses all scenarios. So it is necessary that his discourse includes an explanation of everything by which restriction occurs, i.e., everything by which the name is lost, because there is no restriction except through it.

Text (Urdu Column): These qualities are considered in contrast to liquids, and comparison is against adulteration. So they have stated definitively that there is no dominance by qualities in solids. This same thing was said by Shurunbulali in the summary of his rule. They said that it is not harmful if all qualities change, and the loss of name is due to one of two things: either the end of liquidity or the change of a quality, and this does not happen in the case of mixing solids. So it will remain only in the first case. It became clear that they say as long as liquidity remains, the name will not be lost in any way. This is a case for objection, so what will be the way of escape? Yes, the loss of name was mentioned at the start of the discourse; this is a preamble to their rule and not part of it. It explains why the need for a rule was felt, as you have known. This is not a restriction in the ruling of solids. (Note) If it is objected that they had previously stated under the summary statement 'or by cooking' that the loss of name is considered in this chapter as has passed, so they made this very thing explicitly the criterion wherever it is found. I say: This is correct, and this is the summary of this chapter. The rule is for its explanation and detail, and to tell when

this situation arises. They have explicitly stated in it that in the mixing of solids, it is achieved only by thickening, so keeping it as the criterion is not useful. Third: They want to state a rule that creates a distinction between the restricted and the absolute, and a rule is that which covers all cases, so it is necessary...

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 2

पाठ (अरबी स्तंभ): ...या विवरण में परिवर्तन, और ठोस पदार्थों के मिश्रण में इसे नकार दिया गया है, इसलिए पहले बिंदु के अलावा कुछ भी शेष नहीं रहता है। यह स्पष्ट हो गया है कि वह कहते हैं कि जब तक तरलता बनी रहती है तब तक किसी भी तरह से नाम नहीं बदलता है। यह आपत्ति का स्थान है, तो बचने का रास्ता कहाँ है? हाँ, उन्होंने प्रवचन की शुरुआत में नाम के मिट जाने का उल्लेख किया था, लेकिन यह उनके नियम की केवल एक प्रस्तावना थी, उससे बाहर होने के नाते, इसकी आवश्यकता को समझाते हुए जैसा कि आप जानते हैं, ठोस पदार्थों के नियम में एक शर्त होने की तो बात ही छोड़ दें।

यदि आप कहें: क्या उन्होंने इससे पहले संक्षेप कथन 'या पकने से' के तहत यह नहीं कहा था कि नाम का नष्ट होना ही इस अध्याय में मान्य है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है? तो उनके स्पष्ट कथन ने इसे मानदंड बना दिया जहां भी यह पाया जाता है। मैं कहता हूँ: हाँ, और यही इस अध्याय में प्रवचन का सारांश है। नियम केवल इसके विवरण के लिए और यह समझाने के लिए है कि यह कब घटित होता है। उन्होंने इसमें स्पष्ट रूप से कहा कि ठोस पदार्थों के मिश्रण में यह गाढ़ा होने के अलावा और किसी तरह से नहीं होता है। तो इसे मानदंड बनाना कैसे सहायक होगा?

तीसरा: वह एक ऐसा नियम प्रदान करने की प्रक्रिया में है जो प्रतिबंधित (मुकय्यद) और पूर्ण (मुतलक) के बीच अंतर करता है। नियम केवल वही है जो सभी परिदृश्यों को समाहित करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि उनके प्रवचन में हर उस चीज़ का स्पष्टीकरण शामिल हो जिसके द्वारा प्रतिबंध होता है, यानी हर वह चीज़ जिसके द्वारा नाम खो जाता है, क्योंकि इसके बिना कोई प्रतिबंध नहीं है।

पाठ (उर्दू स्तंभ): इन गुणों को तरल पदार्थों के विपरीत माना जाता है, और तुलना मिलावट के खिलाफ है। इसलिए उन्होंने निश्चित रूप से कहा है कि ठोस पदार्थों में गुणों का वर्चस्व नहीं होता है। यही बात शुरुनबुलाली ने अपने नियम के सारांश में कही थी। उन्होंने कहा कि यदि सभी गुण बदल जाएं तो यह हानिकारक नहीं है, और नाम का नष्ट होना दो चीजों में से एक के कारण होता है: या तो तरलता का अंत या किसी गुण का परिवर्तन, और ठोस पदार्थों के मिश्रण के मामले में ऐसा नहीं होता है। तो यह केवल पहले मामले में ही रहेगा। यह स्पष्ट हो गया कि वे कहते हैं कि जब तक तरलता बनी रहेगी, नाम किसी भी तरह से नष्ट नहीं होगा। यह आपत्ति का मामला है, तो बचने का उपाय क्या होगा? हाँ, प्रवचन की शुरुआत में नाम के मिट जाने का उल्लेख किया गया था; यह उनके नियम की

प्रस्तावना है न कि उसका हिस्सा। यह बताता है कि नियम की आवश्यकता क्यों महसूस की गई, जैसा कि आप जानते हैं। यह ठोस पदार्थों के नियम में कोई प्रतिबंध नहीं है। (नोट) यदि यह आपत्ति की जाए कि उन्होंने इससे पहले संक्षेप कथन 'या पकने से' के तहत कहा था कि इस अध्याय में नाम का नष्ट होना माना जाता है जैसा कि बीत चुका है, इसलिए उन्होंने इसी बात को स्पष्ट रूप से मानदंड बनाया जहां भी यह पाया जाए। मैं कहता हूँ: यह सही है, और यही इस अध्याय का सारांश है। नियम इसके स्पष्टीकरण और विवरण के लिए है, और यह बताने के लिए है कि यह स्थिति कब उत्पन्न होती है। उन्होंने इसमें स्पष्ट रूप से कहा है कि ठोस पदार्थों के मिश्रण में यह केवल गाढ़ा होने से प्राप्त होता है, इसलिए इसे मानदंड के रूप में रखना उपयोगी नहीं है। तीसरा: वे एक ऐसा नियम बताना चाहते हैं जो प्रतिबंधित और पूर्ण के बीच अंतर पैदा करे, और एक नियम वह है जो सभी मामलों को कवर करे, इसलिए यह आवश्यक है...

فتاویٰ رضویہ، جلد ثانی

(عربی متن): او تغير الوصف وقد نفى هذا في خلط الجامد فلم يبق الا الاول وظهر انه يقول لا يزول الاسم فيه بوجه من الوجوه ما دامت الرقة باقية وهذا هو محل الايراد فإين المحيص نعم ذكر في صدر الكلام لفظ زوال الاسم و هو انما هو تمهيد ضابطته خارجاً عنها بياناً للمحوج اليها كما علمت فضلاً عن ان يكون قيداً في حكم الجامد۔ فإن قلت: اليس قد قال قبل هذا تحت قول المختصر او بالطبخ ان زوال الاسم هو المعتبر في الباب كما تقدم فكان صريح منطوقه الادارة عليه حيث كان اقول بلى وهو جملة القول في الباب وما الضابطة الا لتفصيله وبيان انه متى يحصل وقد صرح فيها انه لا يحصل في خلط الجامد الا بالثخونة فإنى تنفع الادارة۔ الثالث: هو بصدد اعطاء ضابط يميز بين المقيد والمطلق وما الضابطة الا ما يحيط بالصور فيجب ان يستوعب كلامه بيان كل ما يحصل به التقييد اى كل ما يزول به الاسم اذ لا تقييد الا به

(اردو متن): ان اوصاف کا اعتبار اس کے مقابل مائع میں کیا ہے اور مقابلہ ملاوٹ کے خلاف ہے، تو انہوں نے قطعاً یہ بات بتائی ہے کہ جامد میں اوصاف سے غلبہ نہیں ہوتا ہے، اور یہی بات شرنبلالی نے اپنے ضابطہ کے خلاصہ میں کہی ہے، انہوں نے کہا کہ اس کو تمام اوصاف کا متغیر ہو جانا مضر نہیں ہے اور نام کا زائل ہونا دو چیزوں میں سے ایک کی وجہ سے ہے، یا تو رقت کا ختم ہونا یا وصف کا تبدیل ہونا اور یہ چیز جامد کے ملنے کی صورت میں نہیں، تو صرف پہلی صورت میں باقی رہے اور یہ ظاہر ہو گیا کہ وہ کہتے ہیں جب تک رقت باقی رہے گی نام کسی طرح زائل نہ ہوگا، یہ اعتراض کی صورت ہے، تو چھٹکارے کی کیا سبیل ہوگی؟ ہاں ابتداء کلام میں نام کے زائل ہونے کا ذکر کیا تھا، یہ ان کے ضابطہ کی تمہید ہے اس میں داخل نہیں، اس چیز کا بیان ہے کہ ضابطہ کی ضرورت کیوں محسوس ہوئی؟ جیسا کہ آپ نے جان لیا، یہ جامد کے

حکم میں قید نہیں۔ (ت) اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ انہوں نے اس سے قبل مختصر کے قول "او بالطبخ" کے تحت فرمایا تھا کہ اس باب میں نام کا زائل ہونا ہی معتبر ہے جیسا کہ گزرا، تو انہوں نے اسی چیز کو صریحاً مدار بنایا جہاں بھی یہ پایا جائے۔ میں کہتا ہوں یہ درست ہے اور اس باب کا خلاصہ یہی ہے، اور ضابطہ تو اس کے بیان اور تفصیل کے لئے ہے اور یہ بتانے کیلئے ہے کہ یہ صورت کب پیدا ہوتی ہے، اور انہوں نے اس میں تصریح کی ہے کہ یہ جامد کے مل جانے میں صرف گاڑھا ہونے سے حاصل ہوتی ہے، تو اس پر مدار رکھنا مفید نہیں۔ سوم: وہ ایک ضابطہ بیان کرنا چاہتے ہیں جو مقید اور مطلق کے درمیان تمیز پیدا کر دے اور ضابطہ وہی ہوتا ہے جو تمام صورتوں کا احاطہ کرے تو لازم ہے

Fatawa Razawiyya Volume II

(1) Limiting some of its rulings by the condition that the name does not vanish is a corruption of its intent and removes the rule from being a rule; it turns distinction into ignorance and detail into suspension. It leads to the conclusion that in the mixing of a solid without thickness, the name does not vanish provided that the name does not vanish. This is washed-out talk, yielding no purpose or result. This is the meaning of Al-Nahr's statement that "it is of no use." It is thus clear that nothing is mentioned, implied, or intended, and the truth in this matter lies with Al-Nahr. This is something that escaped Al-Fakhr, and Al-Bahr picked it up and mentioned it separately in his caution. Then the author of Ad-Durr came and organized it into the chain of the rule by saying: "If it is a solid, then it is by its thickness as long as the name does not vanish, like nabidh al-tamr (date wine)." 1 End. He did well because the ruling became correct, even though the bonds of the rule loosened, and its observer needed another rule to pick up what fell from it. This is how research should be, and Allah Almighty is the grantor of success. It would have been more appropriate for us to postpone this discussion to the fourth chapter, where we will talk, God willing, about the rule. However, the need arose here so that your new occurrences in it do not encounter any contradictions between the transmitted rulings and the premise of the rule. And with Allah Almighty is the success. (T)

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/34. Page 647 of 711

(1) इसके कुछ नियमों को इस बात के साथ सीमित करना कि नाम समाप्त न हो, इसके उद्देश्य को बिगाड़ना है और नियम को नियम होने से बाहर करना है। यह भेद को अज्ञानता में और विवरण को निलंबन में बदल देता है। क्योंकि इसका परिणाम यह होता है कि बिना गाढ़ेपन के ठोस पदार्थ के मिश्रण में नाम समाप्त नहीं होता, इस शर्त पर कि नाम समाप्त न हो। यह निरर्थक बात है, जिसका कोई लाभ या परिणाम नहीं निकलता। अन-नह्र के इस कथन का यही अर्थ है कि "यह उपयोगी नहीं है।" अतः यह स्पष्ट हो गया कि न तो कुछ उल्लेखित है, न ही नियत है और न ही इरादा है। इस मामले में सच्चाई अन-नह्र के साथ है। यह वह बात है जो फ़ख्र से छूट गई थी और अल-बह्र ने इसे पकड़ लिया और अपनी चेतावनी में अलग से इसका उल्लेख किया। फिर अल-दुर्र के लेखक आए और उन्होंने इसे नियम की श्रृंखला में व्यवस्थित किया जब उन्होंने कहा: "तो यदि वह ठोस है, तो उसके गाढ़ेपन के अनुसार जब तक कि नाम समाप्त न हो, जैसे खजूर की शराब (नबीज़-ए-तक्र)।" 1 समाप्त। और उन्होंने अच्छा किया क्योंकि नियम सही हो गया, भले ही नियम के बंधन ढीले हो गए, और इसके पर्यवेक्षक को इसके गिरे हुए हिस्सों को उठाने के लिए एक और नियम की आवश्यकता पड़ी। अन्वेषण इसी तरह होना चाहिए, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सफलता देने वाला है। हमारे लिए यह उचित था कि हम इस चर्चा को चौथे अध्याय तक टाल देते जहाँ हम अल्लाह ने चाहा तो नियम पर चर्चा करेंगे। लेकिन यहाँ इसकी आवश्यकता पड़ गई ताकि इसमें आपके अनुभवों में उद्धृत नियमों और नियम के निहितार्थ के बीच कुछ विरोधाभास न हो। और अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से ही सफलता है। (त)

---

1 अल-दुर्र अल-मुख्तार, जल अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/34। पृष्ठ 647/711

(۱) فتقييد شيئ من احكامه بأن لا يزول الاسم افساد لمقصوده واخراج للضابط عن ان يكون ضابطاً و ارجاع للتمييز الى التجهيل، وللتفصيل الى التعطيل، فأنه يؤل الى ان في خلط الجامد بدون الثخونة لا يزول الاسم بشرط ان لا يزول الاسم وهو كلام مغسول، لا يرجع الى طائل و محصول، هذا معنى قول النهر انه لا يجدى نفعاً فتبين انه لا مذكور و لا مطوى و لا منوى وان الحق فيه بيد النهر، وان هذا شيئ سقط عن الفخر، فلقطه البحر، وذكره في تنبيهه على حدة فجاء الدر فنظمه في سلك الضابطة اذ قال فلو جامدا فبثخانة ما لم يزل الاسم كنبيذ تمر ۱ اه ونعما فعل لانه صح الحكم وان انحلت عرى الضابطة، واحتاج مطلعها الى ضابط آخر يلقط له ساقطه، هكذا ينبغي التحقيق، والله تعالى ولي التوفيق، وكان الحرى بنا ان نؤخر هذا البحث الى الفصل الرابع حيث نتكلم ان شاء الله تعالى على الضابطة ولكن الحاجة مست اليه ههنا كيلا يعترى احداثك فيها نبذى من المخالفات بين الاحكام المنقولة وقضية الضابطة وبالله تعالى التوفيق۔

کہ ان کا کلام ان تمام صورتوں کا احاطہ کرے جن سے تقیید پیدا ہوتی ہے یعنی وہ تمام صورتیں جن میں زائل ہو جاتا ہے کہ تقیید تو اسی سے حاصل ہو گی، تو اس کے احکام میں سے کسی کو اس سے مقید کرنا کہ نام زائل نہیں ہوا اس کے مقصود کو فاسد کرنا اور ضابطہ کو ضابطہ ہونے سے خارج کرنا ہے، اور بجائے اس کے کہ امتیاز پیدا ہو ابہام پیدا کرنا ہے، اور تفصیل کو ختم کرنا ہے، اور اس کا انجام یہ ہوگا کہ جامد کی آمیزش میں گاڑھا ہونے کی صورت میں نام زائل نہ ہو بشرطیکہ نام زائل نہ ہو، اور یہ کلام لغو بے فائدہ ہے، نہر کے قول کہ "یہ مفید نہیں" کا یہی مطلب ہے، یہ بھی ظاہر ہو گیا کہ نہ تو کچھ مذکور ہے اور نہ منوی ہے اور اس بارے میں حق نہر کے ساتھ ہے اور یہ وہ چیز ہے جو فخر سے رہ گئی تھی اور بحر نے اس کو لیا تھا اور اس پر

الگ تنبیہ کی تھی اور صاحب در نے اس کو ضابطہ کی شکل میں پیش کردیا، وہ فرماتے ہیں "اگر آمیزش جامد کی ہو تو دارومدار گاڑھا ہونے پر ہے جب تک نام زائل نہ ہو جیسے نبیذ تمر اھ اور انہوں نے یہ اچھا کام کیا ہے کہ حکم صحیح ہو گیا ہے اگر چہ اس سے ضابطہ ڈھیلا پڑ گیا اور اس صورت میں ایک مزید ضابطہ کی حاجت ہو گئی، تحقیق کا یہ طریقہ ہونا چاہئے ، ہمیں یہ بحث چوتھی فصل تک مؤخر کرنی چاہئے تھی جہاں ہم ضابطہ پر گفتگو کریں گے، مگر یہاں ضرورت بحث کرنا پڑی ہے تاکہ احکام منقولہ اور ضابطہ میں کسی کو شک و شبہ لاحق نہ ہو جائے وباللہ التوفیق۔(ت)

---

۱ الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۴ صفحہ ۶۴۷ از ۷۱۱

Fatawa Ridawiyya - Volume Two

(288) Similarly, performing ablution (Wudu) with syrup (sharbat) is not permissible, whether it is made from sugar, batasha (sugar candies), rock sugar (misri), honey, or anything else. It was mentioned in point number 185 from books such as Al-Hidayah, etc.: "La yajuzu bi'l-ashribati"1 (Ablution is not permissible with syrups. T). Regarding this, it is stated in Al-'Inayah, Al-Binayah, Al-Kifayah, and Al-Ghaniyah:

| Arabic: In arada bi'l-ashribati al-hulwa al-makhloota bi'l-maa'i ka'd-dibsi wa'sh-shahdi al-makhlooti bihi kaanat natheera al-maa'i alladhi ghalaba 'alayhi ghayruhu. -2 | Urdu: If their intent by "ashribah" is sweet syrups like molasses and honey that are mixed in water, then it is a parallel to water over which some other substance has prevailed. (T) |

In Majma' al-Anhur, it is written:

| Arabic: Qaala saahibu al-Fara'idi al-muraadu min al-ashribati al-hulwa al-makhlootu bi'l-maa'i ka'd-dibsi wa'sh-shahdi -3 | Urdu: The author of al-Fara'id stated: By ashribah, sweet syrup is meant that has been mixed into water, such as molasses and honey. (T) |

However, it is necessary for the proponents of the general rule (other than [the authors of] Bahr and Dur) to deem wudu permissible with it as long as the fluidity (thinness) of the water is not lost. And this usually does not occur in [common] syrup. Sugar, batasha, and rock sugar are clear examples, and similarly honey when it is solidified. However, this is not correct for the very reason that syrup is not called "water"; the name has changed, so it is no longer absolute water (ma' mutlaq).

(289) Likewise, a medicinal infusion is not suitable for wudu, even if it has not become thick, as it would be exclusively the medicine and not water. Yet, for the proponents of the rule, its permissibility is necessary.

(290 to 295) Similarly, when safflower, saffron, or dye packets are mixed in water to such an extent that it becomes capable of dyeing; [or when] gallnuts and ink are mixed until it is fit for writing characters. According to the rulings in Tajnis, Fath al-Qadir, Hulyah, Mi'raj ad-Dirayah, Bahr al-Ra'iq, Dur al-Mukhtar, Qunyah, Hindiyyah, Fath-ul-Allah al-Mu'in, and Imam Jurjani—whose texts appeared in point number 124—wudu is not permissible with it because it would be called dye or ink, not water. However, according to the general rule, there is permissibility, especially with dye-

packet water, as it is added in very small quantities which cannot affect the fluidity of the water.

| اقول: وهو ان كان ظاهر عامة الكتب | I say: Although the apparent position of the general books is that. |

1 Al-Hidayah, Chapter on water with which Wudu is permissible and not permissible, Arabic Press Karachi 18/1. 2 Al-Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter on water with which Wudu is permissible and not permissible, Nuriya Ridawiya Press. 3 Al-Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter on water with which Wudu is permissible and not permissible, Nuriya Ridawiya Press.

फ़तावा रज़विया - जिल्द दो

(288) इसी तरह शरबत से वज़ू ना-जायज़ है, चाहे वह शक्कर, बताशे, मिस्री, शहद या किसी भी चीज़ का हो। नंबर 185 में हिदाया आदि किताबों के हवाले से गुज़रा: "ला यजूज़ु बिल-अशरबति"1 (शरबतों से वज़ू जायज़ नहीं। त)। इस पर इनाया, बिनाया, किफ़ाया और गानिया में फ़रमाया:

| अरबी: इन अरादा बिल-अशरबति अल-हलवा अल-मख़लूता बिल-माई कद-दिब्सी वश-शहदी अल-मख़लूती बिही कानत नज़ीरा अल-माई अल्लज़ी ग़लबा अलैहि ग़ैरुहु -2 | उर्दू अनुवाद: अगर उनकी मुराद "अशरबा" से मीठे शरबत हैं जैसे शीरा और शहद जो पानी में मिले हों, तो यह उस पानी की मिसाल है जिस पर कोई दूसरी चीज़ हावी हो गई हो। (त) |

मज्म उल-अनहुर में है:

| अरबी: क़ाला साहिबुल फ़राइद अल-मुरादु मिनल अशरबतिल हलवा अल-मख़लूतु बिल-माई कद-दिब्सी वश-शहद -3 | उर्दू अनुवाद: साहिब-ए-फ़राइद ने फ़रमाया: अशरबा से मुराद मीठा शरबत है जो पानी में शामिल हो गया हो जैसे शीरा और शहद। (त) |

मगर 'साहब-ए-ज़ाब्ता' (नियम के मानने वालों) को, सिवाए बहर और दुर के लेखकों के इस बात पर मजबूर होना चाहिए कि वे इससे वज़ू को जायज़ मानें जब तक पानी का पतलापन (रक़्क़त) ख़त्म न हो जाए। और शरबत में आम तौर पर ऐसा नहीं होता। शक्कर, बताशे, मिस्री तो साफ़ ज़ाहिर हैं, और इसी तरह शहद जब वह जमा हुआ हो। लेकिन यह इसी वजह से सही नहीं है क्योंकि शरबत को पानी नहीं कहा जाता; नाम बदल गया तो वह 'आबे मुतलक़' (शुद्ध जल) नहीं रहा।

(289) इसी तरह दवा का अर्क़(जोशांदा) वज़ू के लिए सही नहीं है, चाहे वह गाढ़ा न भी हुआ हो, क्योंकि वह सिर्फ़ दवा होगी न कि पानी। लेकिन नियम मानने वालों (अहल-ए-ज़ाब्ता) के नज़दीक इसका जायज़ होना ज़रूरी है।

(290 से 295) इसी तरह कुसम (कसूम), केसर, रंग की पुड़िया जब पानी में इतनी मिल जाएं कि वह रंगने के क़ाबिल हो जाए; या माज़ू और रोशनाई मिलकर हर्फ़(अक्षर) लिखने के लायक़ हो जाए। तजनीस, फ़तहुल क़दीर, हुलिया, मेराजुद दिराया, बहुर रायक़, दुर्रे मुख़्तार, कुनिया, हिन्दिया, फ़तहुल्लाह अल-मुईन और इमाम जुरजानी के हुक्म के मुताबिक़ (जिनके कथन नंबर 124 में गुज़रे), इससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि उसे रंग या स्याही या रोशनाई कहा जाएगा, पानी नहीं। लेकिन

नियम (ज़ाब्ता) के अनुसार यह जायज़ है, ख़ास तौर पर पुड़िया वाला पानी क्योंकि वह बहुत कम मात्रा में मिलाया जाता है, जिसका पानी के पतलेपन पर असर नहीं पड़ सकता।

| اقول: وهو ان كان ظاهر عامة الكتب | मैं कहता हूँ: अगरचे आम किताबों का ज़ाहिर मौक़फ़ वही है। |

1 अल-हिदाया, बाबुल मा'अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूअ... मटबा अरबी कराची 18/1 2 अल-किफ़ाया म'अ फ़तहुल क़दीर, बाबुल मा'अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूअ... मटबा नूरया रज़विया 3 अल-किफ़ाया म'अ फ़तहुल क़दीर, बाबुल मा'अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूअ... मटबा नूरया रज़विया

(۲۸۸) یوں ہی شربت سے وضو ناجائز ہے شکر، بتاشے، مصری، شہد کسی چیز کا ہو نمبر ۱۸۵ میں ہدایہ وغیرہ ہا کتابوں سے گزرا: لایجوزبالاشربۃ1 (شربتوں سے وضو جائز نہیں۔ ت) اس پر عنایہ وبنایہ وکفایہ وغانیہ میں فرمایا:

| ان ارادبالا شربۃ الحلوالمخلوط بالماء کالدبس والشھد المخلوط بہ کانت نظیر الماء الذی غلب علیہ غیرہ -2 | اگر ان کی مراد "اشربہ" سے میٹھے شربت ہیں جیسے شیرہ اور شہد جو پانی میں ملے ہوں تو اس پانی کی نظیر ہے جس پر کوئی دوسری چیز غالب ہو گئی ہو۔ (ت) |

مجمع الانہر میں ہے:

| قال صاحب الفرائد المراد من الاشربۃ الحلوالمخلوط بالماء کالدبس والشھد -3 | صاحب الفرائد نے فرمایا اشربہ سے مراد میٹھا شربت ہے جو پانی میں شامل ہو گیا ہو جیسے شیرہ اور شہد۔ (ت) |

مگر اصحاب ضابطہ غیر بحر ودر پر لازم کہ اس سے وضو جائز مانیں جب تک پانی کی رقت نہ زائل ہو اور یہ شربت میں عادۃً نہیں ہوتا شکر، بتاشے، مصری تو ظاہر ہیں اور یوں ہی شہد جبکہ جما ہوا ہو مگر یہ اسی وجہ سے صحیح نہیں کہ شربت کو پانی نہیں کہتے نام بدل گیا تو آبِ مطلق نہ رہا۔

(۲۸۹) یوں ہی دوا کا خیساندہ قابلِ وضو نہیں اگر گاڑھا نہ ہو گیا ہو کہ وہ دوا اکیلا بیگی نہ پانی مگر اہل ضابطہ پر جواز لازم۔

(۲۹۰ تا ۲۹۵) یونہی کسم، کیسر، رنگت کی پڑیاں جب پانی میں اس قدر ملیں کہ رنگنے کے قابل ہو جائے کیس، مازو، روشنائی مل کر حرف کا نقش بننے کے لائق ہو جائے بحکم تجنیس وفتح

القدیر وحلیہ ومعراج الدرایہ وبحرالرائق ودرمختار وقنیہ وہندیہ وفتح اللہ المعین وامام جرجانی جس کی عبارت نمبر ۱۲۴ میں گزریں اس سے وضو جائز نہیں کہ وہ رنگ یا سیاہی یاروشنائی کہلائے گانہ پانی مگر بحکم ضابطہ جواز ہے خصوصاً پڑیا کا پانی کہ بہت کم مقدار میں ملائی جاتی ہے جس کا پانی کی رقت پر اثر نہیں ہوسکتا۔

| اقول: وھو ان کان ظاھر عامۃ الکتب | میں کہتا ہوں اگرچہ ظاہر عام کتب کا وہی ہے |

1 الہدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ مطبع عربیہ کراچی ۱/۱۸ 2 الکفایۃ مع فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ مطبع نوریہ رضویہ 3 الکفایۃ مع فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ مطبع نوریہ رضویہ

Fatawa Razvia, Volume 2

The dominance of any one of the remaining characteristics will not be required. (T)

(303) When only the smell of white grape vinegar appears in water and does not dominate, according to the ruling of Bada'i quoted in number 130, wudu (ablution) is permissible, but according to the standard rule it should not be permissible because "it has two characteristics and one of them has changed". (T)

(304) Vinegar which also has color, and its smell is the strongest of all its characteristics. If its taste and smell appear in water but the color does not change, then according to the quoted ruling explained by Imam Malik-ul-Ulama, Imam Asbijabi, Imam Fakhruddin Zaila'i, Najmuddin Zahidi, Zad al-Fuqaha, and Imam ibn al-Amir al-Haj al-Halabi mentioned in number 126, wudu is permissible. However, following the standard rule clarifies the non-permissibility. In Ghunyah, it is stated:

Arabic Quote	Urdu Translation
In kan yukhalifuhu fil awsaf kulliha kal-khall fal-mu'tabar ghalabatu akthariha 1 -	If it opposes water in all its characteristics like vinegar, then the dominance of the majority of them will be considered. (T)

In Nur al-Idah and Maraqi al-Falah, it is stated:

Arabic Quote	Urdu Translation
Al-ghalabatu tujadu bi-zhuhoori wasfaini min khallin lahu laun wa ta'mun wa reehun ay-wasfaini minha zahara amanna hissat-al wudu'i walau wahidun la yadurru li-qillatihi 2 -	Dominance will be found by the appearance of two characteristics of vinegar because it has three qualities: taste, color, and smell. If any two of these qualities become dominant in it, wudu cannot be performed with it. If only one quality changes, it is not harmful due to its small amount. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

Arabic Quote	Urdu Translation
Fal-ghalabatu bi-taghayyuri akthariha wa huwal-wasfani fala yadurru zhuhooru wasfin wahidin fil ma'i min awsaf-il khalli 3 aj	So consideration is for the change of the majority, which are two characteristics. Therefore, the appearance of only one characteristic of vinegar in water will not be harmful at all. (T)

I say: And indeed Malik-ul-Ulama (may his secret be sanctified) had initially based the matter on the disappearance of the name. And this was also correct; he says:

1 Ghunyat-ul-Mustamli, Chapter on the Rulings of Water, Suhail Academy Lahore, p. 91 2 Maraqi al-Falah, Book of Purification, Al-Amiriyyah Bulaq Egypt, p. 16 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Water, Mustafa Al-Babi Egypt, 1/134

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (द्वितीय)

शेष गुणों में से किसी एक की प्रबलता अनिवार्य नहीं होगी। (त)

(303) सफ़ेद अंगूर के सिरके की जब सिर्फ गंध पानी में आ जाए और प्रबल न हो, तो 'बदाइअ' के उद्धृत आदेश संख्या 130 के अनुसार वूज़ू करना जायज़ है, परन्तु नियम के अनुसार जायज़ नहीं होना चाहिए क्योंकि "यह दो गुणों वाला है और उनमें से एक बदल चुका है"। (त)

(304) सिरका जिसमें रंग भी होता है और उसकी गंध उसके सभी गुणों में सबसे प्रबल होती है। यदि पानी में उसका स्वाद और गंध आ जाए परन्तु रंग न बदले, तो इमाम मलिक-उल-उलेमा, इमाम अस्बिजाबी, इमाम फ़ख़रुद्दीन ज़ैलई, नजमुद्दीन ज़ाहिदी, ज़ाद अल-फ़ुक़हा और इमाम इब्न अल-अमीर अल-हज अल-हलबी के बताए गए उद्धृत आदेश संख्या 126 के अनुसार वूज़ू जायज़ है। हालांकि, नियम का पालन करने से इसके नाजायज़ होने का स्पष्टीकरण मिलता है। 'गुनिया' में है:

अरबी उद्धरण	उर्दू अनुवाद
इन काना युख़ालिफ़ुहू फ़िल औसाफ़ कुल्लिहा कल-ख़ल्ल फ़ल-मुअतबर ग़लबातु अक्सरिहा 1 -	यदि वह पानी के सभी गुणों में उसके विपरीत है जैसे सिरका, तो उनमें से अधिकांश की प्रबलता मानी जाएगी। (त)

'नूर अल-ईदाह' और 'मराक़ी अल-फ़लाह' में है:

अरबी उद्धरण	उर्दू अनुवाद
अल-ग़लबातु तुजदु बि-ज़ुहूरी वसफ़ैनी मिन ख़ल्लिन लहू लौन व तअमुन व रीहुन अय-वसफ़ैनी मिन्हा ज़हरा अमन्ना हिस्सत-अल वुज़ूइ वलौ वाहिदुन ला यदुररु लि-क़िल्लतिहि 2 -	सिरके के गुणों में से दो के प्रकट होने से प्रबलता पाई जाएगी क्योंकि इसके तीन गुण हैं स्वाद, रंग और गंध। यानी, यदि इनमें से कोई दो गुण प्रबल हो जाएं तो उससे वूज़ू नहीं हो सकता। और यदि केवल एक गुण बदलता है, तो वह मात्रा कम होने के कारण हानिकारक नहीं है। (त)

'रद्द अल-मुह्तार' में है:

अरबी उद्धरण	उर्दू अनुवाद
फ़ल-ग़लबातु बि-तग़ैय्युरी अक्सरिहा व हुवल-वसफ़ानी फ़ला यदुररु ज़ुहुरू वसफ़िन वाहिदिन फ़िल मा-इ मिन औसाफ़-इल ख़ल्लि 3 अज	तो विचार बहुमत के परिवर्तन का है और ये दो गुण हैं। अतः पानी में सिरके के केवल एक गुण का प्रकट होना कुछ हानिकारक न होगा। (त)

मैं कहता हूँ: और वास्तव में मलिक-उल-उलेमा (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) ने पहले तो बात नाम के मिट जाने पर रखी थी, और यही सही भी था, वे फ़रमाते हैं:

1 गुनिया-तुल-मुस्तमली, फ़सल फ़ी बयान अहकाम-अल-मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 91 2 मराक़ी अल-फ़लाह, किताब अत-तहारत, अल-अमीरिया बुलाक़ मिस्र, पृ. 16 3 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/134

باقی ماندہ وصفوں میں سے کسی ایک کا غلبہ لازم نہیں آئے گا۔ (ت)

(۳۰۳) سپید انگور کے سرکہ کی جب صرف بُو پانی میں آجائے غالب نہ ہو بحکم بدائع منقول نمبر ۱۳۰ قابلِ وضو ہے مگر بروئے ضابطہ جواز نہ چاہئے لانہ ذو وصفین وقد تغیر احدھما (کیونکہ یہ دو وصفوں والا ہے اور ایک وصف بدل چکا ہے۔ت)

(۳۰۴) سرکہ کہ رنگت بھی رکھتا ہے اور اس کی بُو سب اوصاف سے اقوی ہے اگر پانی میں اس کا مزہ اور بُو آ جائے اور رنگ نہ بدلے بحکم منقول مصرح امام ملک العلماء وامام اسبیجابی و امام فخر الدین زیلعی و نجم الدین زاہدی و زاد الفقہاء وامام ابن امیر الحاج حلبی مذکور نمبر ۱۲۶ قابلِ وضو ہے مگر اتباعِ ضابطہ نے عدم جواز کی تصریح کی، غنیہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ان کان یخالفه في الاوصاف کلها کالخل فالمعتبر غلبة اکثرها 1 -	اگر وہ پانی کے تمام اوصاف میں اس کے مخالف ہے جیسے سرکہ تو معتبر ان میں سے اکثر کا غالب ہونا ہوگا۔ (ت)

نور الایضاح و مراقی الفلاح میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الغلبة توجد بظهور وصفین من خل له لون وطعم وریح ای وصف امنا حصة وصفین منها ظهر	سرکہ کے وصفوں میں سے دو کے ظہور سے غلبہ پایا جائیگا کیونکہ اس کے تین اوصاف ہیں مزہ، رنگ اور بُو، کوئی سے دو وصف ان میں سے غالب ہو جائیں تو اس سے وضو نہیں ہوسکتا

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الوضوء ولو واحد لا یضر لقلته - 2	ہے اور اگر ایک وصف متغیر ہوتا ہے تو کم ہونے کی وجہ سے مضر نہیں۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فالغلبة بتغیر اکثرھا وھو الوصفان فلا یضر ظھور وصف واحد فی الماء من اوصاف الخل 3 ا ج	تو اعتبار اکثریت کے تغیر کا ہے اور یہ دو وصف ہیں تو سرکہ کے صرف ایک وصف کا پانی میں ظاہر ہونا کچھ مضر نہ ہوگا۔ (ت)

اقول: وقدکان ملك العلماء قدس سره احال الامر اولا علی زوال الاسم میں کہتا ہوں ملک العلماء نے پہلے تو مدار نام کے زائل ہونے پر رکھا تھا، اور یہی صحیح بھی تھا، وہ فرماتے ہیں

1 غنیۃ المستملی فصل فی بیان احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۱ 2 مراقی الفلاح کتاب الطہارت الامیریۃ بولاق مصر ص ۱۶ 3 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۳۴

Fatawa Rizvia, Volume Second

[Arabic Text]: This is the clear path. Where it is said: Absolute water (Ma-e-Mutlaq), when any pure liquid is mixed with it, such as milk, vinegar, raisin juice, and the like, in such a way that the name 'water' is removed from it because it has been overpowered by the mixture, then it takes the meaning of restricted water (Ma-e-Muqayyad) [1]. However, then he returned to considering the color in such cases, saying immediately thereafter: "Then it shall be seen; if its color differs from the color of water, the dominance of color will be considered." [2]

[Urdu Translation of Arabic]: When any liquid substance is mixed with absolute water, such as milk, vinegar, raisin water etc., and the name 'water' ceases to apply to it because it has been overpowered, then this water is now 'restricted' (Muqayyad). However, then he mentions the consideration of color in a similar situation, as he states immediately following this: "Then it will be seen; if its color is contrary to the color of water, then dominance in color will be considered."

(305) Vinegar whose taste is stronger than its color and smell: when its taste and smell dominate over the water but the color does not change, then according to the aforementioned ruling of the Imams, it is permissible for wudu, though the general rule suggests otherwise.

(306) Vinegar whose color is most dominant: when only the color changes due to it, the case is the opposite. Meaning, according to the ruling of the Imams, wudu with it is not permissible, while the general rule would necessitate permissibility.

(307) When only the color of water changes due to milk, according to the mentioned Imams, it is not permissible for wudu. It is surprising that Imam Zaila'i also agreed with them, even though their own general rule necessitates permissibility because milk has three attributes and its color is the strongest, so sufficiency should not be based on just one attribute. Yes, Imam ibn al-Humam, Durar, Quduri, Hidaya, 'Inaya, and 'Umdat al-Qari favor the side of permissibility, as previously mentioned. And Allah Almighty knows best. (The complete discussion on this has passed on page 134. And Allah Almighty knows best.)

The completion of individual details is limitless. Regarding a flowing substance that differs from water in some attribute, the rule of disagreement and agreement is clear from the following points:

(1) If no attribute changes, the water is permissible for wudu by consensus.

Note: By the grace of Allah Almighty, the research on the secret of this will come in the sixth rule of the third chapter. [from the author, may he be forgiven].

Side Note: Its wisdom will appear in the sixth rule of the third section. [may he be forgiven].

1. Bada'i al-Sana'i, Al-Ma al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/15
2. Bada'i al-Sana'i, Al-Ma al-Muqayyad, Saeed Company Karachi, 1/15

फतावा रिज़विया, खंड द्वितीय

[अरबी पाठ]: यह स्पष्ट मार्ग है। जहाँ कहा गया है: मुतलक पानी (पूर्ण जल), जब उसमें कोई शुद्ध तरल पदार्थ जैसे दूध, सिरका, किशमिश का रस आदि इस प्रकार मिल जाए कि उससे 'पानी' का नाम समाप्त हो जाए क्योंकि वह मिश्रण उस पर हावी हो गया है, तो वह मुक़य्यद पानी (प्रतिबंधित जल) के अर्थ में है [1]। लेकिन फिर उन्होंने ऐसी स्थिति में रंग पर विचार करने का उल्लेख किया, जैसा कि इसके तुरंत बाद कहा गया है: "फिर देखा जाएगा कि यदि उसका रंग पानी के रंग से भिन्न है, तो रंग में प्रभुत्व मान्य होगा।" [2]

[अरबी का उर्दू अनुवाद]: मुतलक पानी में जब कोई तरल पदार्थ मिल जाए जैसे दूध, सिरका, मुनक्का का पानी आदि, और उससे पानी का नाम समाप्त हो जाए कि पानी अभिभूत (मगलूब) हो जाए, तो अब यह पानी मुक़य्यद है। लेकिन फिर वे वैसी ही स्थिति में रंग के विचार का उल्लेख करते हैं, चुनाँचे इसके साथ ही फ़रमाते हैं: "फिर देखा जाएगा कि अगर उसका रंग पानी के रंग के विपरीत है, तो रंग में प्रबलता (ग़ल्बा) मान्य होगी।"

(305) वह सिरका जिसका स्वाद उसके रंग और गंध से अधिक शक्तिशाली हो: जब उसका स्वाद और गंध पानी पर हावी हो जाए लेकिन रंग न बदले, तो उपर्युक्त इमामों के आदेशानुसार वह वज़ू के लिए मान्य है, यद्यपि नियम इसके विपरीत है।

(306) वह सिरका जिसका रंग अधिक प्रभावी हो: जब उससे केवल रंग बदले, तो मामला इसके विपरीत है। अर्थात, इमामों के आदेशानुसार इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, जबकि नियम इसे जायज़ ठहराता है।

(307) दूध से जब पानी का केवल रंग बदल जाए, तो उल्लेखित इमामों के अनुसार वह वज़ू के लिए मान्य नहीं है। आश्चर्य है कि इमाम ज़ैलई ने भी उनकी सहमति व्यक्त की, जबकि उनका अपना नियम इसकी अनुमति देता है क्योंकि दूध में तीन गुण होते हैं और उसका रंग सबसे प्रबल है, इसलिए केवल एक गुण पर पर्याप्त नहीं समझा जाना चाहिए। हाँ, इमाम इब्न अल-हुमाम, दुरर, क़ुदूरी, हिदाया, इनाया और उम्दत अल-क़ारी इसके जायज़ होने के पक्ष में हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (इसकी पूरी चर्चा 134 में हो चुकी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।)

व्यक्तिगत विवरणों की पूर्णता असीमित है। एक बहने वाली चीज़ जो किसी गुण में पानी से भिन्न है, उसके बारे में इस मतभेद और सहमति का नियम कुछ बिंदुओं से स्पष्ट है:

(1) यदि कोई गुण न बदले, तो पानी सर्वसम्मति से वज़ू के योग्य है।

नोट: अल्लाह तआला की कृपा से, इसका रहस्य तीसरे अध्याय के छठे नियम में आएगा। [लेखक की ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए]।

पार्श्व नोट: इसकी हिकमत (तर्क) तीसरी फ़स्ल के छठे नियम में आएगी। [उन्हें क्षमा किया जाए]।

1. बदाइअ अल-सनाइअ, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/15
2. बदाइअ अल-सनाइअ, अल-मा अल-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/15

पृष्ठ 651/711

وھی الجادۃ الواضحۃ حیث قال الماء المطلق اذا خالطہ شیئ من المائعات الطاھرۃ کاللبن والخل ونقیع الزبیب ونحو ذلك علی وجہ زال عنہ اسم الماء بأن صار مغلوباً بہ فھو بمعنی الماء المقید ۱ اھ۔ لکن ثم عادہ الی اعتبار اللون فی مثلہ فقال متصلا بہ ثم ینظر ان کان یخالف لونہ لون الماء یعتبر الغلبۃ فی اللون ۲۔

مطلق پانی میں جب کوئی سیال شے مل جائے جیسے دودھ، سرکہ، منقی کا پانی وغیرہ، اور اس سے پانی کا نام زائل ہوجائے کہ پانی مغلوب ہو تو اب یہ پانی مقید ہے اھ لیکن پھر وہ اس جیسی صورت میں رنگ کے اعتبار کا ذکر کرتے ہیں چنانچہ اسی کے متصل فرماتے ہیں، پھر دیکھا جائیگا کہ اگر اس کا رنگ پانی کے رنگ کے مخالف ہے تو رنگ میں غلبہ معتبر ہوگا۔

(۳۰۵) جس سرکہ کا مزہ رنگ وبُو سے اقویٰ ہو جب اس کے مزہ وبُو پانی پر غالب آئیں اور رنگ نہ بدلے بحکم مذکور ائمہ قابلِ وضو ہے اور ضابطہ مخالف۔

(۳۰۶) جس سرکہ کا رنگ غالب تر ہو جب اس سے صرف رنگ بدلے تو اس کا عکس ہے یعنی بحکم ائمہ اس سے وضو ناجائز اور ضابطہ مقتضی جواز۔

(۳۰۷) دُودھ سے جب پانی کا صرف رنگ بدلے بحکم ائمہ مذکورین قابلِ وضو نہیں اور عجب کہ امام زیلعی نے بھی اُن کی موافقت کی حالانکہ اُن کا ضابطہ مقتضی جواز ہے لانہ ذو الثلاثۃ ولونہ اقوی فلایکفی وصف واحد (کیونکہ یہ تین وصفوں والا ہے اور اس کے اوصاف میں رنگ قوی تر ہے تو ایک وصف پر اکتفاء نہ کیا جائیگا۔ت) ہاں امام ابن الہمام و دُرر و قدوری و ہدایہ و عنایہ و

عمدۃ القاری جانب جواز ہیں کما تقدم کل ذلک ۱۳۲ و اللہ تعالٰی اعلم (اس کی پوری بحث ۱۳۴ میں گزر چکی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ت)

تکمیل جزئیات نا محصور ہیں بہتی ہوئی چیز کہ پانی سے کسی وصف میں مخالف ہے اس کے بارے میں اس اختلاف واتفاق کا ضابطہ ملاحظہ چند امور سے واضح:

(۱) اگر کوئی وصف نہ بدلے پانی بالاجماع قابلِ وضو ہے۔

عـہ: سیاتی بحمداللہ تعالٰی تحقیق السّر فی ذلک فی سادس ضوابط الفصل الثالث ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) اس کی حکمت تیسری فصل کے چھٹے ضابطہ میں آئے گی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

۱ بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵ ۲ بدائع الصنائع الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵

Fatawa Ridawiyya Volume 2

(2) If the difference is only in color or taste, and it changes, it is unanimously not acceptable for wudu (ablution). Note: The investigation into what is meant by "changing" will, God-willing (Insha Allah al-Aziz), be presented in the third section. (3) If there is a difference in two qualities and both change, it is unanimously impermissible. (4) If the difference is only in color and taste, or color and smell, and the color changes, it is unanimously unacceptable; and if the other changes, it is permissible according to reported rulings but impermissible according to established principles. (5) If the difference is only in taste and smell, and the taste changes, it is unanimously [permissible]; and if the smell changes, it is impermissible according to established principles but permissible according to reported rulings. (6) If all three qualities are different and all change, it is unanimously impermissible. (7) If in this case only the taste or smell changes, it is unanimously permissible; and if only the color changes, it is impermissible according to reported rulings and permissible according to established principles. (8) In the same case, if color and taste, or color and smell change, it is unanimously impermissible; and if taste and smell change, it is impermissible based on principles but permissible based on reported rulings. (9) All possible scenarios of difference and change have been covered in these eight points. As for which form of change is possible where, the explanation is as follows: where only one quality is different, it is obvious that it can only change that quality. If two are different, there are three possibilities: the first is stronger, or the second, or both are equal—meaning if they change, they both change together without priority. If one is stronger, then in the alteration of one, only its own alteration will occur; one cannot assume only the other to be altered. Yes, both changing can occur in all three cases. (10) If all three qualities are different, there are seven possibilities: the first is strongest, or second, or third, or first and second, or first and third, or second and third, or all are equal. Among these, where one is strongest, in the change of one, only that can be assumed; and in the change of two, it is necessary for that one to be included, without which the alteration of the remaining two alone or together cannot be assumed. And if two are strongest, then neither can one alone change, nor such two where one of them is the third one. Yes, all three can change, and where all three are equal, the only possible scenario that can be assumed is that either all change or none change. And Allah Almighty knows best. May Allah Almighty send blessings and peace upon our master and leader Muhammad, the Most Generous of the Generous,

and upon his family, companions, son, and group. Amen, and all praise is due to Allah, Lord of the worlds.

(२) यदि अंतर केवल रंग या स्वाद में है और वह बदल जाए, तो सर्वसम्मति से वह वज़ू (शुद्धि) के लिए स्वीकार्य नहीं है। चेतावनी: "बदलने" का क्या अर्थ है, इसकी जांच इंशा अल्लाह अज़ीज़ (ईश्वर ने चाहा तो) तीसरे खंड में आएगी। (३) यदि दो गुणों में अंतर है और दोनों बदल जाएं तो सर्वसम्मति से यह अमान्य (नाजायज़) है। (४) यदि अंतर केवल रंग और स्वाद में, या रंग और गंध में है, और रंग बदलता है, तो सर्वसम्मति से अमान्य है; और यदि दूसरा बदलता है, तो रिपोर्ट किए गए निर्णयों के अनुसार जायज़ है लेकिन स्थापित नियमों के अनुसार नाजायज़ है। (५) यदि अंतर केवल स्वाद और गंध में है, और स्वाद बदलता है, तो सर्वसम्मति से [जायज़] है; और यदि गंध बदलती है, तो नियमों के अनुसार नाजायज़ है लेकिन रिपोर्ट के अनुसार जायज़ है। (६) यदि तीनों गुण अलग हैं और सभी बदल जाएं तो सर्वसम्मति से नाजायज़ है। (७) यदि इस स्थिति में केवल स्वाद या गंध बदले, तो सर्वसम्मति से जायज़ है; और यदि केवल रंग बदले, तो रिपोर्ट के अनुसार नाजायज़ और नियमों के अनुसार जायज़ है। (८) इसी स्थिति में, यदि रंग और स्वाद, या रंग और गंध बदलें, तो सर्वसम्मति से नाजायज़ है; और यदि स्वाद और गंध बदलें, तो नियमों के आधार पर नाजायज़ और रिपोर्ट के आधार पर जायज़ है। (९) मतभेद और परिवर्तन के सभी संभावित रूपों को इन आठ बिंदुओं में शामिल किया गया है। जहां तक इस बात का संबंध है कि परिवर्तन का कौन सा रूप कहां संभव है, विवरण यह है: जहां केवल एक गुण अलग है, यह स्पष्ट है कि वह केवल उसी को बदल सकता है। और यदि दो में मतभेद है, तो तीन संभावनाएं हैं: पहला प्रबल होगा या दूसरा, या दोनों समान होंगे - अर्थात यदि वे बदलेंगे, तो दोनों एक साथ बदलेंगे, उनके बीच कोई आगे-पीछे नहीं होगा। यदि एक प्रबल है, तो एक के परिवर्तन में केवल उसी का परिवर्तन होगा, केवल दूसरे को परिवर्तित नहीं माना जा सकता। हाँ, दोनों का बदलना तीनों स्थितियों में हो सकता है। (१०) यदि तीनों गुण अलग हैं, तो इसमें सात संभावनाएं हैं: पहला प्रबल हो या दूसरा या तीसरा या पहला और दूसरा या पहला और तीसरा या दूसरा और तीसरा या सभी समान हों। जिनमें एक प्रबल हो, अकेले एक के परिवर्तन में वही कल्पित हो सकता है; और दो के परिवर्तन में उस एक का होना आवश्यक है, उसके बिना शेष दो के अकेले या एक साथ परिवर्तन की कल्पना नहीं की जा सकती। और यदि दो प्रबल हैं, तो न तो एक का परिवर्तन हो सकता है और न ही ऐसे दो का जिनमें से एक वह तीसरा हो। हाँ, तीनों बदल सकते हैं, और जहाँ तीनों समान हैं वहाँ यही स्थिति कल्पित की जा सकती है कि या तो सभी बदल जाएँ या कोई न बदले। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद, जो

करम करने वालों में सबसे ज़्यादा करीम हैं, पर और उनकी आल (वंश), सहाबा (साथियों), बेटे और जमाअत पर दुरूद और सलाम भेजे। आमीन और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

पेज 652 का 711

(۲) مخالفت اگر صرف رنگ یا مزہ میں ہے اور وہ بدل جائے بالاتفاق قابلِ وضو نہیں ۔ تنبیہ : بدلنے سے کیا مراد ہے اس کی تحقیق ان شاء اللہ العزیز فصلِ سوم میں آئے گی۔ (۳) اگر دو وصف میں مخالفت ہے اور دونوں بدل جائیں بالاتفاق عدمِ جواز ہے۔ (۴) اگر صرف رنگ ومزہ یا رنگ وبُو میں تخالف ہے اور رنگ بدلے تو بالاتفاق ناقابل ہے اور دوسرا بدلے تو بحکم منقول جواز اور بروئے ضابطہ ناجائز۔ (۵) اگر صرف مزہ وبُو میں اختلاف ہے اور مزہ بدلے تو بالاتفاق اور بُو بدلے تو صرف بروئے ضابطہ عدمِ جواز ہے منقول جواز۔ (۶) اگر تینوں وصف مختلف ہیں اور سب بدل جائیں بالاتفاق ناجائز۔ (۷) اگر اس صورت میں صرف مزہ یا بُو بدلے بالاتفاق جواز ہے اور فقط رنگ بدلے تو بحکم منقول ناجائز اور حکم ضابطہ جواز۔ (۸) اسی صورت میں اگر رنگ ومزہ یا رنگ وبُو بدلیں بالاتفاق ناجائز اور مزہ وبُو بدلیں تو ضابطہ پر ناجائز اور منقول جواز۔ (۹) تخالف وتبدل دونوں کی جمیع صور کا احاطہ تو ان آٹھ میں ہو گیا، رہا یہ کہ تبدل کی کون سی صورت کہاں ممکن ہے اُس کا بیان یہ کہ جو ایک ہی وصف میں مخالف ہے ظاہر ہے کہ وہ تو اُسی کو بدل سکتا ہے اور اگر دو میں مخالف ہے تو تین صورتیں ہیں اوّل اقویٰ ہوگا یا دوم یا دونوں مساوی، یعنی بدلیں تو دونوں ایک ہی ساتھ بدلیں اُن میں آگا پیچھا نہیں اگر ایک قوی ہے تو ایک کے تغیر میں اُسی کا تغیر ہو گا صرف دوسرے کو متغیر فرض نہیں کر سکتے ہاں دونوں کا بدلنا تینوں صورتوں میں ہو سکتا ہے۔ (۱۰) اگر تینوں وصف مختلف ہیں تو اس میں سات احتمال ہیں: اوّل اقویٰ ہو یا دوم یا سوم یا اول و دوم یا اول و سوم یا دوم و سوم یا سب مساوی جن میں ایک اقویٰ ہو تنہا ایک کے تبدل میں وہی مفروض ہو سکتا ہے اور دو کے تبدل میں ایک وہ ہونا ضرور اس کے بغیر باقی دونوں کا تنہا یا معاً تغیر فرض نہیں کر سکتے اور دو اقویٰ ہیں تو اُسی میں نہ ایک

کا تبدل ہو سکتا ہے نہ ایسے دو کا جن میں ایک وہ تیسرا ہو، ہاں تینوں بدل سکتے ہیں اور جہاں تینوں مساوی ہیں وہاں یہی صورت فرض ہو سکتی ہے کہ سب بدل جائیں یا کوئی نہ بدلے واللہ تعالیٰ اعلم وصلی اللہ تعالیٰ علی سیدنا ومولنا محمد الکریم الاکرم وعلیٰ آلہ وصحبہ وابنہ وحزبہ وبارک وسلم آمین والحمد للہ رب العلمین۔

Fatawa Ridawiyya Volume 2

Section 2: Regarding the Definition of Absolute (Mutlaq) and Restricted (Muqayyad)

Here, different statements of the scholars are presented:

- **Right Column:** Either literally or also in meaning. Some of them are correct and some are contrary to it. Among the correct ones, some are good and some are better. So now we mention them and the discussions regarding them so that the correct and incorrect become apparent and the standard can be maintained in every discussion. (T)
- **Left Column:** Either in words or meaning also, among them are correct ones and others; among the correct ones are good and better. We mention them and what is for them and against them, so that the selected may be distinguished from the avoided, and the standard may be observed in every objective. Allah is the Giver of success; there is no Lord besides Him.

First, Mutlaq (Absolute) is that which denotes the essence of a thing itself, not intending any attribute, whether in negation or affirmation. This was stated in *al-Kifayah*. (This definition is in Kifayah - T). And Muqayyad (Restricted) is that which denotes an attribute along with the essence. It is in *al-'Inayah*:

- **Right Column:** Allah Almighty has mentioned water as absolute in the blessed verse, and absolute is that in which only the essence is mentioned, not the attributes. The absolute name of water is applied to these very waters, i.e., water of the sky, valleys, springs, and wells. This has been mentioned regarding the permissibility of ablution; the divine command is: "And We have sent down from the sky pure water." (T) I say, this is the 'Absolute of Principles' (Usuli Mutlaq) and it is definitely not intended here because that is the 'source of divisions' (Muqassim) for the restricted ones, and this is its 'sub-division' (Qaseem), and that applies to all restricted ones, so the permissibility of ablution would necessarily follow from all of them. Rather, 'Absolute' here is restricted with the 'restriction of absoluteness' and is at the level of 'on the condition of nothing else', meaning as long as such a thing is not attached to it which [strips it of the name of water].
- **Left Column:** Verily, Allah Almighty mentioned water in the verse absolutely (mutlaqan). Mutlaq is what pertains to the essence without attributes. The

absolute name applies to these waters, meaning the water of the sky, valleys, springs, and wells. He mentioned it while providing evidence for the permissibility of performing ablution with it by the saying of Allah Almighty: "And We have sent down from the sky pure water." I say: (1) This is the absolute of the principles (usuli mutlaq), and it is definitely not intended here, for it is the origin (muqassim) of the restricted ones while this is its counterpart (qaseem). It applies to all restricted ones, so it would necessitate the permissibility of ablution with all of them. Rather, 'mutlaq' here is restricted by the condition of absoluteness at the level of 'bi-shart la shay' (on the condition of nothing else), i.e., as long as nothing happens to it that strips it of the name 'water'.

---

[1] *al-'Inayah* with *Fath al-Qadir*, Chapter: Water with which ablution is permissible and that with which it is not, Nooriya Razawiyya Sukkur, 1/60. Page 653 of 711

फतावा रज़विया जिल्द 2

खंड 2: मुतलक़ और मुक़य्यद की परिभाषा के बारे में

यहाँ विद्वानों के विभिन्न कथन दिए गए हैं:

- **दायां कॉलम:** या तो शब्दतः या अर्थतः भी, उनमें से कुछ सही हैं और कुछ इसके विपरीत। सही में से कुछ हसन (अच्छे) हैं और कुछ अहसन (बेहतर) हैं। तो अब हम उनका और उन पर जो बहसें हैं उनका उल्लेख करते हैं ताकि सही और गलत स्पष्ट हो जाए और हर बहस में मानक का ध्यान रखा जा सके। (त)
- **बायां कॉलम:** या तो शब्दों में या अर्थ में भी, उनमें से कुछ सही हैं और कुछ इसके विपरीत; सही में से कुछ अच्छे हैं और कुछ और भी अच्छे। हम उनका उल्लेख करते हैं और उनके पक्ष और विपक्ष में जो कुछ भी है, ताकि चुने हुए और छोड़े जाने वाले के बीच अंतर किया जा सके और हर उद्देश्य में मानक का पालन किया जा सके। अल्लाह ही सफलता देने वाला है, उसके अलावा कोई रब नहीं है।

पहला, मुतलक़ (निरपेक्ष) वह है जो किसी वस्तु के स्वयं के अस्तित्व (ज़ात) को दर्शाता हो, किसी गुण (सिफ़त) का इरादा न रखता हो, चाहे वह नकारात्मक हो या सकारात्मक। यह 'किफ़ाया' में कहा गया है (यह परिभाषा किफ़ाया में है। त)। और मुक़य्यद (प्रतिबंधित) वह है जो ज़ात के साथ किसी सिफ़त को भी दर्शाता हो, 'इनाया' में है:

- **दायां कॉलम:** अल्लाह तआला ने आयत-ए-मुबारका में पानी का मुतलक़ ज़िक्र किया है, और मुतलक़ वह है जिसमें केवल ज़ात का ज़िक्र हो सिफ़ात का नहीं, और पानी का मुतलक़ नाम इन्हीं पानियों पर बोला जाता है यानी आसमान, वादियों, चश्मों और कुओं के पानी पर। इसका ज़िक्र वज़ू की अनुमति के संदर्भ में किया गया है, ईश्वरीय आदेश है: "और हमने आसमान से पाक पानी उतारा।" (त) मैं कहता हूँ, यह 'मुतलक़-ए-उसूली' है और यहाँ निश्चित रूप से अभिप्रेत नहीं है क्योंकि वह मुक़य्यदात का 'मुक़स्सिम' (स्रोत) है और यह उसका 'क़सीम' (उपविभाग) है और यह सभी मुक़य्यदात पर लागू होता है, तो उन सभी से वज़ू की अनुमति आवश्यक हो जाएगी। बल्कि यहाँ मुतलक़, 'मुतलक़ की शर्त' के साथ मुक़य्यद है और 'बशर्ते

ला-शई' के स्तर पर है, यानी जब तक उसे ऐसी चीज़ न मिल जाए जो उससे [पानी का नाम छीन ले]।

- **बायां कॉलम:** बेशक अल्लाह तआला ने आयत में पानी का उल्लेख मुतलक़ रूप से किया है। मुतलक़ वह है जो गुणों के बिना ज़ात से संबंधित हो। मुतलक़ नाम इन पानियों पर लागू होता है, यानी आसमान, वादियों, चश्मों और कुओं का पानी। उन्होंने अल्लाह तआला के इस कथन से इसके साथ वज़ू करने की अनुमति का प्रमाण देते हुए इसका उल्लेख किया: "और हमने आसमान से पवित्र पानी उतारा है।" मैं कहता हूँ: (1) यह सिद्धांतों का मुतलक़ (उसूली मुतलक़) है, और यहाँ निश्चित रूप से इसका इरादा नहीं है, क्योंकि यह प्रतिबंधितों का मूल (मुक़स्सिम) है जबकि यह उसका समकक्ष (क़सीम) है। यह सभी प्रतिबंधितों पर लागू होता है, इसलिए यह उन सभी के साथ वज़ू की अनुमति को अनिवार्य कर देगा। बल्कि, यहाँ 'मुतलक़' निरपेक्षता की शर्त के आधार पर 'बशर्ते ला शय' (बिना किसी और चीज़ की शर्त के) के स्तर पर प्रतिबंधित है, यानी जब तक कि उसके साथ ऐसा कुछ न हो जाए जो उससे 'पानी' का नाम छीन ले।

---

[1] 'अल-इनाया' मय 'फ़तह अल-क़दीर', अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/60। पेज 653 ऑफ़ 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

فصل ثانی مطلق ومقید کی تعریف میں

یہاں عبارات علما مختلف آئیں،

- یا تو لفظاً یا معنیٰ بھی، ان میں سے کچھ صحیح ہیں اور کچھ اس کے برخلاف صحیح میں سے کچھ حسن اور کچھ احسن ہیں، تو اب ہم انہیں اور ان پر جوابحث ہیں انہیں ذکر کرتے ہیں تاکہ صحیح اور غلط ظاہر ہو تا کہ ہر بحث میں معیار کی رعایت کی جاسکے (ت)
- اما لفظا او معنی ایضا فمنها صحیح و خلافه و الصحیح منها حسن و احسن فنذکرها وما لها و علیها لیتبین المنتخب من المجتنب، فیراعی معیارا فی کل مطلب۔ واللہ الموفق ما غیرة رب۔

اول مطلق وہ کہ شے کی نفس ذات پر دلالت کرے کسی صفت سے غرض نہ رکھے نہ نفیانہ اثباتاً قالہ فی الکفایة (یہ تعریف کفایہ میں ہے۔ت) اور مقید وہ کہ ذات کے ساتھ کسی صفت پر بھی دال ہو، عنایہ میں ہے :

- اللہ تعالیٰ نے آیہ مبارکہ میں پانی کو مطلق ذکر کیا ہے، اور مطلق وہ ہے جس میں صرف ذات کا ذکر ہو صفات کا نہ ہو، اور پانی کا مطلق نام انہی پانیوں پر بولا جاتا ہے اھ یعنی آسمان، وادیوں، چشموں اور کنوؤں کے پانیوں پر، اس کا ذکر وضو کے جواز کے سلسلہ میں کیا ہے فرمان الہی ہے وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا۔ (ت) میں کہتا ہوں یہ اصولی مطلق ہے اور وہ یہاں قطعاً مراد نہیں کیونکہ وہ مقیدات کا مقسم ہے اور یہ اُن کا قسیم ہے اور یہ تمام مقیدات پر

جاری ہے تو ان تمام سے وضو کا جواز لازم آتا ہے بلکہ مطلق یہاں بقیدِ اطلاق مقید ہے اور بشرطِ لاشیئ کے مرتبہ میں ہے، یعنی اس کو جب تک ایسی چیز لاحق نہ ہو جو اس سے

- ان الله تعالى ذكر الماء فى الآية مطلقاً و المطلق ما يتعرض للذات دون الصفات ومطلق الاسم ينطبق على هذه المياه اه اى ماء السماء والاودية والعيون والآبار ذكره مستدلا على جواز التوضى بها بقوله تعالى وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا۔ اقول : (ا) هذا هو المطلق الاصولى وليس مراد اهنا قطعاً فانه مقسم المقيدات وهذا قسيمها وهو ينطبق على جميع المقيدات فيلزم جواز التوضى بها بل المطلق ههنا مقيد بقيد الاطلاق فى مرتبة بشرط لا شيئ اى مالم يعرض له ما يسلب عنه اسم الماء

---

[1] العناية مع فتح القدير باب الما الذى يجوز به الوضو ما لا يجوز نوريہ رضويہ سكهر ١/ ٦٠ Page of 711 653

Fatawa Ridawiyya - Volume 2

[Right Column - Urdu Translation of Arabic] ...removes the name of 'absolute water', and there is no doubt that this refers to an attribute added to the essence itself. Thus, 'absolute' here is a type of 'restricted' and a counterpart to other restricted waters. Allama Shami, being aware of this, stated: "Know that 'absolute water' (Al-Ma' al-Mutlaq) is more specific than 'water in general' (Mutlaq Ma') because 'absoluteness' is a condition in it. Therefore, it is correct to exclude restricted water from it. As for 'water in general', it means any water whatsoever, so the aforementioned restricted water would also be included in it, and intending it here is not correct." It is mentioned in 'Al-Bahr' after defining 'absolute': "In principles (Usul), 'absolute' refers to the essence (Dhat) and not the attributes (Sifat), neither in negation nor in affirmation, such as water from the sky, spring, or sea." By comparison, it is understood that they are not intended here, but making them an example of absolute waters creates ambiguity in speech. So, what is better is what is in 'Al-Kafi', 'Al-Binayah', and 'Majma' al-Anhur'...

[Left Column - Arabic Original] ... المرسل ولاشك ان هذا متعرض لوصف زائد على نفس الذات فالمطلق ههنا قسم من المقيد وقسيم لسائر المقيدات وقد تنبه لهذا السيد العلامة الشامي فنبه عليه بقوله واعلم ان الماء المطلق اخص من مطلق ماء لاخذ الاطلاق فيه قيداولذا صح اخراج المقيد به واما مطلق ماء فمعناه اى ماء كان فيدخل فيه المقيد المذكور ولايصح ارادته ههنا اهـ ووقع فى البحر بعد ماعرف المطلق بما يأتى والمطلق في الاصول هوالمتعرض للذات دون الصفات لابالنفى ولا بالاثبات كماء السماء والعين والبحر اهـ فقدكان يفهم بالمقابلة انه ليس مراداههنا لكن جعل المياه المطلقة مثالا صرف الكلام الى الايهام فالاحسن ما فى الكافى عـه والبناية (١)

[Middle Section Annotation] Urdu: And in 'Ghayat al-Bayan', it is stated that what is intended here is what is understood by the mere application of the name 'water'. Otherwise, the mentioned waters are not 'absolute' because they are restricted by an attribute. In the terminology of the people of principles (Usul), 'absolute' is that which refers to the essence alone and not the attribute. I say: 'Absolute' does not exist in reality except within the 'restricted', so there is no specific restriction for the mentioned waters. 12 [signed] may he be forgiven (T). Arabic: عـه وفى غاية البيان المراد هنا مايفهم بمجرد اطلاق اسم الماء والافالمياه المذكورة ليست بمطلقة لتقييدها بصفة وفى اصطلاح اهل الاصول هو المتعرض للذات دون الصفة اهـ اقول: لاوجود للمطلق في الاعيان الا في ضمن للمقيد فلا تخصيص للمياه المذكورة ١٢ منه غفرلهـ (م)

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/132 2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/66

फ़तावा रज़विया - जिल्द 2

[दायां कॉलम - अरबी का उर्दू अनुवाद] ...मुतलक पानी का नाम हटा ले, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह स्वयं अस्तित्व (जात) पर एक अतिरिक्त गुण (वस्फ़) की ओर इशारा है। तो यहाँ 'मुतलक' (निरपेक्ष) 'मुक़य्यद' (सीमित) का एक प्रकार है और अन्य सीमित जलों का समकक्ष है। अल्लामा शामी ने इस पर ध्यान देते हुए फ़रमाया: "जानना चाहिए कि 'मुतलक पानी' (अल-मा अल-मुतलक) 'सामान्य पानी' (मुतलक मा) से अधिक विशिष्ट है क्योंकि इसमें 'मुतलक' होना एक शर्त है। इसलिए, इससे मुक़य्यद (सीमित) पानी को बाहर निकालना सही है। जहाँ तक 'सामान्य पानी' का अर्थ है, इसका अर्थ है कोई भी पानी, तो उसमें उपर्युक्त मुक़य्यद भी शामिल होगा, और यहाँ उसका इरादा करना सही नहीं है।" 'अल-बहर' में मुतलक की परिभाषा के बाद लिखा है: "उसूल (सिद्धांतों) में 'मुतलक' वह है जो केवल अस्तित्व (जात) का वर्णन करता है न कि गुणों (सिफ़ात) का, न नकारात्मक रूप से और न ही सकारात्मक रूप से, जैसे आकाश, झरने और समुद्र का पानी।" तुलना से यह ज्ञात होता है कि वे यहाँ अभिप्रेत नहीं हैं, लेकिन उन्हें मुतलक पानी का उदाहरण बनाना बातचीत में भ्रम पैदा करता है। अतः सबसे अच्छा वही है जो 'काफी', 'बिनाया' और 'मजमा अल-अनहुर' में है...

[मध्य अनुभाग टिप्पणी] उर्दू: और 'ग़ायत अल-बयान' में है कि यहाँ मुराद वह है जो केवल 'पानी' नाम के प्रयोग से समझा जाता है। अन्यथा, उपर्युक्त पानी मुतलक नहीं हैं क्योंकि वे किसी गुण से बंधे हैं। और उसूल के विशेषज्ञों के अनुसार मुतलक वह है जो केवल जात (अस्तित्व) को बताए न कि सिफ़त (गुण) को। मैं कहता हूँ: वास्तविकता में मुतलक का कोई अस्तित्व नहीं है सिवाय मुक़य्यद (सीमित) के भीतर, इसलिए उपर्युक्त पानी के लिए कोई विशेष शर्त नहीं है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (त)।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/132 2. बहर अल-राइक, किताब अल-तहारह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/66

पृष्ठ 654 का 711

فتاوی رضویہ - جلد ثانی

[دایاں کالم] مطلق پانی کا نام سلب کرلے ، اور اس میں شک نہیں کہ یہ نفس ذات پر ایک زائد وصف کی طرف اشارہ ہے ، تو مطلق یہاں مقید کی قسم ہے اور باقی مقیدات کا قسیم ہے علامہ شامی نے اس کو محسوس کرتے ہوئے فرمایا "جاننا چاہئے کہ ماء مطلق مطلق ماء سے اخص ہے کیونکہ اس میں اطلاق کی قید ہے ، اس لئے مقید کا اس سے خارج کرنا درست ہے ، اور مطلق ماء کے معنی ہیں کوئی بھی پانی ہو تو اس میں مذکورہ مقید بھی داخل ہوگا، اور یہاں اس کا ارادہ صحیح نہیں ہے اہـ بحر میں مطلق کی تعریف کے بعد ہے "مطلق اصول میں معترض ذات کو بیان کرتا ہے نہ کہ صفات کو، نہ نفی سے نہ اثبات سے ، جیسے آسمان ، چشمہ اور دریا کا پانی اہـ مقابلہ سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ یہاں مراد نہیں ہے لیکن مطلق پانیوں کی اس کی مثال بنانا کلام میں ایہام پیدا کرنا ہے تو احسن وہی ہے جو کافی ، بنایہ اور مجمع الانہر میں ہے ، ان

[بایاں کالم - اصل عربی] المرسل ولاشک ان هذا متعرض لوصف زائد علی نفس الذات فالمطلق ههنا قسم من المقید وقسیم لسائر المقیدات وقد تنبه لهذا السید العلامة الشامي فنبه علیه بقوله واعلم ان الماء المطلق اخص من مطلق ماء لاخذ الاطلاق فیه قیداولذا صح اخراج المقید به واما مطلق ماء فمعناه ای ماء کان فیدخل فیه المقید المذکور ولایصح ارادته ههنا اهـ ووقع فی البحر بعد ماعرف المطلق بما یأتی والمطلق في الاصول هوالمتعرض للذات دون الصفات لابالنفی ولا بالاثبات کماء السماء والعین والبحر اهـ فقدکان یفهم بالمقابلة انه لیس مراداههنا لکن (۱) جعل المیاه المطلقة مثالا صرف الکلام الی الایهام فالاحسن ما فی الکافی عـه والبنایة

[درمیانی حاشیہ] عہ وفی غایۃ البیان المراد یہاں پر وہ ہے جو محض ماء کے نام کے اطلاق سے سمجھا جاتا ہے ورنہ مذکورہ پانی مطلق پانی نہیں کیونکہ یہ پانی کسی صفت سے مقید ہیں ، اور

اصولیین کے نزدیک مطلق وہ ہے جو صرف ذات کو بتائے نہ کہ صفت کو اھ میں کہتا ہوں مطلق کا وجود اعیان میں نہیں مقید کے ضمن ہی میں ہوتا ہے ، تو مذکورہ پانیوں میں تخصیص نہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عـہ وفی غایة البیان المراد هنا مایفهم بمجرد اطلاق اسم الماء والافالمیاه المذکورة لیست بمطلقة لتقییدها بصفة وفی اصطلاح اهل الاصول هو المتعرض للذات دون الصفة اهـ اقول: لاوجود للمطلق في الاعیان الا في ضمن للمقید فلا تخصیص للمیاه المذکورة ۱۲ منه غفرلهـ (م)

[حواشی] 1 رد المحتار باب المیاه مصطفی البابی مصر 1/ 132 2 بحر الرائق کتاب الطہارة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/ 66

صفحہ 654 از 711

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Left Column] And in Majma' al-Anhur, when they mention the absolute from a legal perspective, then they say, "And what is meant here is that which first comes to mind..." (etc.) Second, Absolute (Mutlaq): That which does not require any other thing in the definition of its essence; and Restricted (Muqayyad): That whose essence cannot be recognized without mentioning a restriction. It is mentioned in Majma' al-Anhur as a weak/undesirable opinion, where it says: "And it is said: Absolute is that which does not need anything else in the definition of its essence, and Restricted is that whose essence is not known except through a restriction." (End quote) I say: Apparently, this is even more incorrect than the first, because no thing whatsoever requires anything else in the definition of its essence. However, the intended meaning is that it remains upon the nature of water and the purity of being water; nothing has entered it that removes it from its nature or makes it in common parlance a composite with something else, such that it becomes another essence other than the essence of water, to which the simple name of 'water' cannot be applied, and its essence is not known through its absolute mention. Clearer than this is the statement from al-Ghunyah: "It is that which is called water in common usage without needing any restriction in the definition of its essence." (End quote). And this is taken from Imam Hafiz al-Din in al-Mustasfa, as will be mentioned, God willing.

[Right Column] Everyone has mentioned the absolute in principle, then it has been said, here the same is meant which precedes towards the minds etc. (T) In Majma' al-Anhur, it has been stated as an undesirable saying. It is said that the absolute is that which does not need any other thing in the definition of its essence, and the restricted is that whose essence is not known without restriction. (End quote) (T) I say, this is apparently even more incorrect than the first because no thing is in need of another thing in the definition of its essence, but the intention is that it remains on the nature of water, and no such thing has entered into the nature of water that takes it out of its nature or makes it a composite with something else in common usage so that it becomes another thing besides water on which the simple name of water cannot be applied, and its essence cannot be recognized by its application. And clearer than that is the passage of Ghunya that it is that which is called water in common usage, there is no need for any restriction in the definition of its essence. This definition was made by Imam Hafiz al-Din in Al-Mustasfa, as will come, God willing. (T)

Footnotes: 1. Majma' al-Anhur, Tajuz al-Taharah bi'l-Ma' al-Mutlaq, Matba'ah 'Amirah, Egypt, 1/27. 2. Majma' al-Anhur, Tajuz al-Taharah bi'l-Ma' al-Mutlaq, Matba'ah 'Amirah, Egypt, 1/27. 3. Ghunyat al-Mustamli, Ahkam al-Miyah, Sohail Academy, Lahore, p. 88.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (भाग 2)

[बायां कॉलम] और मजमा अल-अन्हर में, जब वे पूर्ण मौलिक (मुतलक असूली) का उल्लेख करते हैं, तो वे कहते हैं, "और यहाँ इसका अर्थ वह है जो सबसे पहले दिमाग में आता है..." (आदि) दूसरा, मुतलक (निरपेक्ष): वह जिसकी परिभाषा में किसी दूसरी चीज़ की ज़रूरत न हो; और मुक़ैयद (प्रतिबंधित): वह जिसकी पहचान किसी शर्त या प्रतिबंध के बिना मुमकिन न हो। मजमा अल-अन्हर में इसे एक कमज़ोर राय के तौर पर ज़िक्र किया गया है, चुनाँचे कहा गया: "और कहा जाता है कि मुतलक वह है जो अपनी ज़ात की परिभाषा में किसी दूसरी चीज़ का मोहताज न हो, और मुक़ैयद वह है जिसकी ज़ात बिना किसी शर्त के नहीं पहवनी जाती।" (समाप्त) मैं कहता हूँ: यह स्पष्ट रूप से पहले वाले से भी अधिक गलत है, क्योंकि कोई भी चीज़ अपनी ज़ात की परिभाषा में किसी दूसरी चीज़ की मोहताज नहीं होती। लेकिन मकसद यह है कि वह पानी की प्रकृति और पानी होने की शुद्धता पर बना रहे; उसमें कोई ऐसी चीज़ शामिल न हुई हो जो उसे उसकी प्रकृति से बाहर कर दे या लोक-व्यवहार (उर्फ़) में उसे किसी और चीज़ के साथ मिला हुआ बना दे, जिससे वह पानी के अलावा कुछ और बन जाए, जिस पर केवल 'पानी' का नाम न लिया जा सके, और जिसके नाम लेने से उसकी पहचान न हो। इससे अधिक स्पष्ट 'अल-ग़ुन्या' का कथन है: "यह वह है जिसे लोक-व्यवहार में बिना किसी प्रतिबंध के पानी कहा जाए।" (समाप्त)। यह परिभाषा इमाम हाफ़िज़ अल-दीन ने 'मुस्तस्फ़ा' में दी है, जैसा कि आगे आएगा, इंशा अल्लाह।

[दायां कॉलम] सबने असूली मुतलक का ज़िक्र किया है, फिर फ़रमाया है, यहाँ वही मुराद जो ज़ेहनों की तरफ़ सबक़त करता है अलख (त) इसको मजमा अल-अन्हर में नापसंदीदा क़ौल के तौर पर बयान किया है, फ़रमाया और कहा जाता है कि मुतलक वह है जो अपनी ज़ात की तारीफ़ में किसी दूसरी चीज़ का मोहताज नहीं होता है और मुक़ैयद वह है जिसकी ज़ात क़ैद के बग़ैर नहीं जानी जाती है अह (त) मैं कहता हूँ, यह बज़ाहिर पहले से भी ज़्यादा ग़लत है क्योंकि कोई चीज़ भी अपनी ज़ात की तारीफ़ में किसी दूसरी चीज़ की मोहताज नहीं होती है, लेकिन मक़सूद यह है कि वही पानी की तबियत पर बाक़ी है, और पानी की तबियत में कोई ऐसी चीज़ दाख़िल नहीं हुई जो उसको उसकी तबियत से ख़ारिज कर दे या उर्फ़ में उसके ग़ैर के साथ मुरक्कब कर दे तो वो पानी के अलावा दूसरी चीज़ बन जाए जिस पर महज़ पानी के नाम का इतलाक़ न हो, और उसके इतलाक़ से उसकी ज़ात न पहचानी जाए और उससे ज़्यादा वाज़ेह ग़ुन्या की इबारत है कि वो, वो है जो उर्फ़ में पानी कहलाता है,

उसकी ज़ात की तारीफ़ में किसी तक़यीद की हाजत न हो अह ये तारीफ़ इमाम हाफ़िज़ अल-दीन ने मुस्तसफ़ा में की है, जैसा आएगा इंशा अल्लाह तआला। (त)

पादलेख: 1. मजमा अल-अन्हर, तजौज़ अत-तहारह बिल-मा अल-मुतलक, मतबा आमिराह, मिस्र, 1/27. 2. मजमा अल-अन्हर, तजौज़ अत-तहारह बिल-मा अल-मुतलक, मतबा आमिराह, मिस्र, 1/27. 3. ग़ुन्यत अल-मुस्तमली, अहकाम अल-मियाह, सोहैल एकेडमी, लाहौर, पृ. 88.

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

[بایاں کالم] ومجمع الانھر اذا ذکروا المطلق الاصولی ثم قالوا وارید ھھنا مایسبق الی الافھام الخ دوم مطلق: وہ کہ اپنی تعریف ذات میں دوسری شئے کا محتاج نہ ہو اور مقید وہ کہ جس کی ذات بے ذکر قید نہ پہچانی جائے۔ ذکرہ فی مجمع الانھر علی جھۃ التمریض فقال ویقال المطلق مالا یحتاج فی تعریف ذاتہ الی شیئ آخر والمقید مالایتعرف ذاتہ الابالقید اھ اقول: وھو بظاھرہ افسد من الاول فان شیئا ماقط لا یحتاج فی تعریف ذاتہ الی شیئ آخر و لکن المقصودانہ الباقی علی طبیعۃ الماء وصرافۃ المائیۃ لم یداخلہ مایخرجہ عن طبعہ اویجعلہ فی العرف مرکبا مع غیرہ فیصیر ذاتاً اخری غیر ذات الماء لایطلق علیہ محض اسم الماء ولا تعرف ذاتہ باطلاقہ واوضح منہ قول الغنیۃ ھو مایسمی فی العرف ماء من غیر احتیاج الی تقیید فی تعریف ذاتہ اھ و ھو مأخوذ عن الامام حافظ الدین فی المستصفی کما سیأتی ان شاء اللہ تعالٰی۔

[دایاں کالم] سب نے اصولی مطلق کا ذکر کیا ہے، پھر فرمایا ہے ، یہاں وہی مراد جو ذہنوں کی طرف سبقت کرتا ہے الخ (ت) اس کو مجمع الانہر میں ناپسندیدہ قول کے طور پر بیان کیا ہے فرمایا اور کہا جاتا ہے کہ مطلق وہ ہے جو اپنی ذات کی تعریف میں کسی دوسری چیز کا محتاج نہیں ہوتا ہے اور مقید وہ ہے جس کی ذات قید کے بغیر نہیں جانی جاتی ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں، یہ بظاہر پہلے سے بھی زیادہ غلط ہے کیونکہ کوئی چیز بھی اپنی ذات کی تعریف میں کسی دوسری چیز کی محتاج نہیں ہوتی ہے، لیکن مقصود یہ ہے کہ وہی پانی کی طبیعت پر باقی ہے، اور پانی کی طبیعت میں کوئی ایسی چیز داخل نہیں ہوئی جو اس کو اس کی طبیعت سے خارج کر دے یا عرف میں اس کے غیر کے ساتھ مرکب کر دے تو وہ پانی کے علاوہ دوسری چیز بن جائے جس پر محض پانی کے نام کا اطلاق نہ ہو ، اور اس کے اطلاق سے اس کی ذات نہ پہچانی جائے

اور اس سے زیادہ واضح غنیہ کی عبارت ہے کہ وہ، وہ ہے جو عرف میں پانی کہلاتا ہے، اس کی ذات کی تعریف میں کسی تقیید کی حاجت نہ ہو اھ یہ تعریف امام حافظ الدین نے مستصفیٰ میں کی ہے، جیسا آئیگا ان شاء اللہ تعالیٰ۔ (ت)

حواشی: 1 مجمع الانہر تجوز الطہارۃ بالماء المطلق مطبعہ عامرۃ مصرا ۱ / ۲۷ 2 مجمع الانہر تجوز الطہارۃ بالماء المطلق مطبعہ عامرۃ مصرا ۱ / ۲۷ 3 غنیہ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۸

Fatawa Razawiyya Volume II Thirdly: Absolute water is that which remains upon its natural characteristics. In 'Khizanat al-Muftin,' it is mentioned from 'Sharh al-Tahawi': [Arabic]: He is the one who remains upon the characteristics of his creation. I say: If by 'characteristics' the three specific qualities are meant, or together with thinness and fluidity, then it is invalidated by water in which chickpeas and broad beans have been soaked, and what has been mixed with soap and potash (ushnan), even if cooked with them, or with lotus leaves (sidr) as long as its thinness remains. Similarly, that in which dates have been thrown and it becomes sweet but has not yet become Nabidh; its characteristics change wholly or partially, while performing ablution with it is permissible by consensus. Likewise, water mixed with a liquid that matches it in most characteristics or is equal to it, while performing ablution with it is impermissible by consensus. This [definition] is inconsistent in both inclusion and exclusion. If a more general meaning was intended, the gap would widen and it would also be invalidated by things like hot water. (T) [Urdu Translation]: This is that which remains on its natural characteristics. I say: if by characteristics only the three qualities are meant, or along with thinness and fluidity, then there is an objection regarding water in which chickpeas and broad beans have been soaked, and an objection regarding water in which soap and potash have been mixed, even if it has been cooked with these two, or cooked with lotus leaves (sidr) as long as thinness remains in it. Similarly, water in which dates have been put and it has become sweet but has not become Nabidh, because a total or partial change has occurred in its characteristics, whereas wudu with it is unanimously permissible. Similarly, water which has mixed with some liquid (fluid) that is similar to water in most of its characteristics or equal, although wudu with it is unanimously impermissible. This definition has become inconsistent. And if a general sense was intended, then the inconsistency will become vast, and like hot water, an objection will also apply here. (T)

Fourthly: Absolute water is that which remains upon its thinness and fluidity. It is in 'Shalbi 'ala al-Zayla'i': [Arabic]: Absolute water is what remains upon the original state of its creation in terms of thinness and fluidity. So, if something pure mixes with it and its thickening becomes mandatory, it becomes restricted (Muqayyad). End. Yahya, end. [Urdu Translation]: Absolute water is as long as it is on its original creation, meaning thinness and fluidity remain in it. And when some pure thing mixes with it and creates thickness in it, it will become restricted. End. Yahya, end. (T)

[Arabic]: I say: (3) This is more corrupt, and the previous one included the refutation of it. This increases in invalidation by what is mixed with every liquid that does not strip it of its thinness, even if... [Urdu Translation]: I say this is even more flawed, and it has already been refuted in the previous discussion, and an objection is raised on it in this way too, that along with it...

1 Tahawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, Beirut 1/102 2 Shalbi 'ala al-Tabyin, Kitab al-Taharat, al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt 1/19 Page 656 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द दोम तीसरा: मुतलक वह जो अपनी पैदाइशी ओसाफ़ पर बाक़ी हो, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह ए तहावी से है: [अरबी]: वह अपनी रचना की विशेषताओं पर बना रहता है। मैं कहता हूँ: यदि विशेषताओं से मुराद विशेष रूप से तीन विशेषताएं हैं, या पतलापन (रिक्कत) और तरलता (सैलान) के साथ, तो यह चने और बाक़ली के भीगे हुए पानी से खंडित हो जाता है, और उस पानी से जिसमें साबुन और उशनान मिलाया गया हो, भले ही उनके साथ पकाया गया हो, या बेरी के पत्तों (सिद्र) के साथ जब तक कि उसकी रक़ीक़ियत (पतलापन) बनी रहे। इसी तरह वह पानी जिसमें खजूरें डाली गई हों और वह मीठा हो गया हो लेकिन नबीज़ न बना हो; उसकी विशेषताओं में पूर्ण या आंशिक परिवर्तन आ गया है, जबकि सर्वसम्मति से उससे वज़ू करना जायज़ है। इसी तरह वह जो किसी ऐसे तरल पदार्थ से मिल गया हो जो गुणों में उसके समान या बराबर हो, जबकि सर्वसम्मति से उससे वज़ू करना वर्जित है। यह परिभाषा दोषपूर्ण है। और अगर व्यापक अर्थ लिया गया तो दोष और बढ़ जाएगा और गर्म पानी की तरह आपत्ति यहाँ भी होगी। (त) [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: यह वह है जो अपने पैदाइशी ओसाफ़ पर बाक़ी है, मैं कहता हूँ अगर ओसाफ़ से महज़ ओसाफ़-ए-सलासा मुराद हैं, या मअ रिक्कत ओ सैलान के, तो इस पर चनों और बाक़ली के पानी से एतराज़ है, और उस पानी से एतराज़ है जिसमें साबुन और उशनान मिलाया गया हो, अगरचे इन दोनों के साथ पकाया गया हो, या झड़बैरी (सिद्र) के साथ पकाया गया हो जब तक इसमें रिक्कत बाक़ी हो, और इसी तरह वह पानी जिसमें खजूरें डाली गई हों और मीठा हो गया हो और नबीज़ न बना हो क्योंकि इसके ओसाफ़ में कुल्ली या जुज़्वी तग़य्युर पैदा हो गया है हालाँकि इसके साथ वज़ू इत्तिफ़ाक़न जायज़ है और इसी तरह वह पानी जो किसी माएअ (सैयाल) से मिल गया हो जो पानी के अक्सर ओसाफ़ में इसके मुशाबेह हो या मसावी हो हालाँकि इससे वज़ू इत्तिफ़ाक़न नाजायज़ है ये तर्दन ओ अक्सन मुनक़ज़ हो गया, और अगर आम का इरादा किया गया हो तो नक़्ज़ वसीअ हो जाएगा तो गर्म पानी की मिसाल से भी नक़्ज़ वारिद होगा। (त)

चौथा मुतलक वह जो अपनी रिक्कत ओ सैलान पर बाक़ी हो, शल्बी अल-ज़ैलयी में है: [अरबी]: मुतलक पानी वह है जो रक़ीक़ियत और तरलता के मामले में अपनी मूल रचना पर बना रहता है। अगर इसमें कोई पाक चीज़ मिल जाए और उसका गाढ़ा होना ज़रूरी हो जाए, तो वह मुक़य्यद हो जाता है। [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: मुतलक पानी जब तक है कि अपनी असल ख़िल्क़त पर हो, यानी इसमें रिक्कत और सैलान बाक़ी हो और जब इसमें कोई पाक चीज़ मिल कर इसमें गाढ़ापन पैदा कर दे तो वह मुक़य्यद हो जाएगा। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: (3) यह अधिक भ्रष्ट है, और पिछले कथन में इसका खंडन शामिल है। यह हर उस तरल के साथ मिलने से और भी खंडित हो जाता है जो इसकी रक़ीक़ियत को खत्म नहीं करता, भले ही... [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: मैं कहता हूँ यह और भी ज़ायद फ़ासिद है, और गुज़श्ता बहस में इस पर रद हो चुका है, और इस पर यों भी एतराज़ वारिद होता है उस के साथ कि...

1 तहावी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, बैरूत 1/102 2 शल्बी अला अल-तबीन, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र 1/19 पृष्ठ 656 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی سوم: مطلق وہ کہ اپنی پیدائشی اوصاف پر باقی ہو، خزانہ المفتین میں شرح طحاوی سے ہے: ھو الباقی علی اوصاف خلقتہ ۱ اقول: ان ارید (۱) بالا وصاف الاوصاف الثلثۃ خاصۃ او مع الرقۃ والسیلان انتقض بمنقوع الحمص والبا قلا و ماخلط بصابون واشنان ولو طبخ بھما اوبسدر مادام باقیا علی رقتہ و کذا ماالقی فیہ تمیرات فحلا ولم یصر نبیذ التغیر اوصافھا کلا او بعضا مع جواز الوضوء بھا اتفاقا (۲) و کذا بما خلط بمائع موافق فی الاوصاف اکثر منہ او مساویا مع امتناع الوضوء بہ وفاقا فانتفض طراد و عکسا وان ارید الاعم اتسع الخرق فانتفض بنحو الحمیم ایضا۔ یہ وہ ہے جو اپنے پیدائشی اوصاف پر باقی ہے، میں کہتا ہوں اگر اوصاف سے محض اوصاف ثلاثہ مراد ہیں، یا مع رقت و سیلان کے، تو اس پر چنوں اور باقلی کے پانی سے اعتراض ہے، اور اس پانی سے اعتراض ہے جس میں صابون اور اشنان ملایا گیا ہو، اگرچہ ان دونوں کے ساتھ پکایا گیا ہو، یا جھربیری کے ساتھ پکایا گیا ہو جب تک اس میں رقت باقی ہو، اور اسی طرح وہ پانی جس میں کھجوریں ڈالی گئی ہوں اور میٹھا ہو گیا ہو اور نبیذ نہ بنا ہو کیونکہ اس کے اوصاف میں کلی یا جزوی تغیر پیدا ہو گیا ہے حالانکہ اس کے ساتھ وضو اتفاقاً جائز ہے اور اسی طرح وہ پانی جو کسی مائع (سیال) سے مل گیا ہو جو پانی کے اکثر اوصاف میں اس کے مشابہ ہو یا مساوی ہو حالانکہ اس سے وضو اتفاقاً ناجائز ہے یہ طرد و عکسًا منتقض ہو گیا، اور اگر عام کا ارادہ کیا ہو تو نقض وسیع ہو جائیگا تو گرم پانی کی مثل سے بھی نقض وارد ہو گا۔ (ت)

چہارم مطلق وہ کہ اپنی رقت و سیلان پر باقی ہو شلبیہ علی الزیلعی میں ہے: الماء المطلق مابقی علی اصل خلقتہ من الرقۃ والسیلان فلو اختلط بہ طاھرا وجب غلظہ صار مقیداً ۲ اھ یحیی اھ مطلق پانی جب تک ہے کہ اپنی اصل خلقت پر ہو، یعنی اس میں رقت اور سیلان باقی ہو اور جب اس میں کوئی پاک چیز مل کر اس میں گاڑھا پن پیدا کر دے تو وہ مقید ہو جائیگا اھ یحیی اھ (ت) اقول: (۳)

هذا افسد وقد تضمن سابقہ الرد علیہ ویزید هذا انتقاضا بما خلط بکل مائع لایسلبہ رقتہ وان میں کہتا ہوں یہ اور بھی زائد فاسد ہے، اور گزشتہ بحث میں اس پر رد ہو چکا ہے اور اس پر یوں بھی اعتراض وارد ہوتا ہے اُس کے ساتھ کہ

۱ طحاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱۰۲ /۱ ۲ شلبی علی التبیین کتاب الطہارت الامریہ بولاق مصر ۱ / ۱۹ Page 656 of 711

[Arabic]: Changing its attributes like milk, vinegar, juice, etc. [Urdu]: That some liquid thing is mixed into it which does not end its thinness (consistency), even if it changes its other attributes, like milk, vinegar, essence, etc. (T)

Fifth: Absolute (Mutlaq) water is that for which no new name has emerged; it is stated in Al-Hidayah:

[Arabic]: Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) said: Performing ablution (wudu) is not permissible with saffron water and similar things that are not of the genus of the earth because it is restricted water. Do you not see that it is called "saffron water," unlike the components of the earth, because water is usually not free from them. Our argument is that the name "water" remains absolute; do you not see that no new specific name has been established for it, and its association with saffron is like its association with a well or a spring. (1) End.

[Urdu]: Imam Shafi'i said: Things that are not of the genus of the earth, like saffron water etc., it is not permissible to perform wudu with them because it is restricted (muqayyad) water. That is why it is called saffron water, as opposed to earthly components, because usually no water is free from earthly components. Our proof is that the name 'water' remains applicable in an absolute sense, and no new name has been coined for it, and its association with saffron is just like its association with a well or a spring. (End) (T)

[Arabic]: I say: (1) Apparently, this is contradicted by hot water (al-hamim), for a name has occurred for it that did not exist before. If you say the name "water" remains for it, then the intention is that a new name has occurred along with the negation of the name "water." Do you not look at his saying that the name "water" remains absolute? I say: Firstly, his saying (may his secret be sanctified) "no new name has been established for it" is separate from what preceded it. Do you not see his saying "Do you not see"? Thus, he made it a proof for the permanence of the name, not that the permanence of the name is included in it. Secondly, the permanence of the name absolutely is sufficient for absolute application; after that, it does not need the absence of a new occurrence, and a thousand occurrences do not harm it. Thus, adding it makes it redundant. This was presented by the virtuous 'Isam in the marginalia that it is invalidated.

[Urdu]: I say: Apparently, the objection of hot water (hamim) applies to this because a name is being used for it which was not there before. If it is said that the name 'water' remains in it too, then the meaning is that a new name has been given and the original name 'water' has been eliminated, whereas they said "the name 'water' remains absolute". I say: Firstly, their statement "no new name has been established for it" is separate and distinct from what preceded it, as they said "do you not see", so they made it a proof for the remaining of the name, not that the remaining of the name is included within it. Secondly, the remaining of the name in an absolute sense is sufficient for absolute application, after which it does not need the absence of a new occurrence, and while it exists, a thousand occurrences are not harmful, so...

---

1 Al-Hidayah, Chapter on Water with which Ablution is Permissible and Not Permissible, Arabic Press Karachi 1/18

[अरबी]: इसके गुणों को बदलना जैसे दूध, सिरका, रस आदि। [उर्दू]: इसमें कोई ऐसी तरल वस्तु मिल जाए जो उसकी तरलता (पतलेपन) को समाप्त न करे, चाहे उसके अन्य गुणों में परिवर्तन कर दे, जैसे दूध, सिरका, अर्क़(अर्क) आदि। (त)

पाँचवाँ: मुतलक़ (निरपेक्ष) वह है जिसके लिए कोई नया नाम पैदा न हुआ हो, हिदाया में फ़रमाया:

[अरबी]: इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फ़रमाया: ज़ाफ़रान के पानी और उसके जैसी चीजों से वज़ू करना जायज़ नहीं है जो ज़मीन की जिन्स (श्रेणी) से नहीं हैं, क्योंकि वह मुक़य्यद (सीमित) पानी है। क्या आप नहीं देखते कि उसे "ज़ाफ़रान का पानी" कहा जाता है, इसके विपरीत ज़मीनी घटकों के, क्योंकि पानी आमतौर पर उनसे खाली नहीं होता है। और हमारी दलील यह है कि 'पानी' का नाम मुतलक़न (निरपेक्ष रूप से) बाक़ी है; क्या आप नहीं देखते कि इसके लिए कोई नया विशिष्ट नाम स्थापित नहीं हुआ है, और ज़ाफ़रान के साथ इसका संबंध वैसा ही है जैसे कुएं या झरने के साथ संबंध होता है। (1) इति।

[उर्दू]: इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया वे चीज़ें जो ज़मीन की जिन्स से नहीं हैं, जैसे ज़ाफ़रान का पानी वग़ैरा, उनसे वज़ू जायज़ नहीं है, क्योंकि वह मुक़य्यद पानी है, इसलिए उसे ज़ाफ़रान का पानी कहते हैं, ब-खिलाफ़ ज़मीनी अज्ज़ा (घटकों) के, क्योंकि आम तौर पर कोई पानी ज़मीनी अज्ज़ा से खाली नहीं होता है, और हमारी दलील यह है कि पानी का नाम अली-अल-इतलाक़ (निरपेक्ष रूप से) बाक़ी है और इसका कोई नया नाम वज़अ (निर्धारित) नहीं हुआ है और इसकी इज़ाफ़त (संबंध) ज़ाफ़रान की तरफ़ ऐसी ही है जैसे पानी की इज़ाफ़त कुएं या चश्मे की तरफ़ होती है। अत्तु (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: (1) ज़ाहिर तौर पर हमीम (गर्म पानी) से इसका खंडन होता है क्योंकि इसके लिए एक ऐसा नाम वजूद में आया है जो पहले नहीं था। यदि आप कहें कि 'पानी' का नाम इस पर बाक़ी है, तो इसका अर्थ यह है कि पानी के नाम के मिट जाने के साथ एक नया नाम पैदा हुआ है। क्या आप उनके इस कथन को नहीं देखते कि 'पानी का नाम मुतलक़न बाक़ी है'? मैं कहता हूँ: अव्वल तो उनका क़ौल (कथन) "उसके लिए कोई नया नाम नहीं बना" पिछली बात से अलग है, जैसा कि उन्होंने कहा "क्या आप नहीं देखते", तो उन्होंने इसे नाम के बाक़ी रहने पर दलील बनाया है, न कि नाम का बाक़ी रहना इसमें शामिल है। दूसरे, नाम का मुतलक़न बाक़ी रहना मुतलक़ होने के लिए

काफ़ी है, इसके बाद उसे नए नाम के न होने की ज़रूरत नहीं है, और इसके रहते हज़ारों नए नाम भी नुकसानदेह नहीं हैं। फ़ाज़िल इसाम ने हाशिये में इसे पेश किया है कि यह दलील खंडित है।

[उर्दू]: मैं कहता हूँ बज़ाहिर इस पर गर्म पानी का एतराज़ (आपत्ति) वारिद होता है क्योंकि इस पर एक ऐसा नाम बोला जा रहा है जो पहले न था। अगर यह कहा जाए कि इसमें भी पानी का नाम बाक़ी है, तो मुराद (मकसद) यह है कि जिसका नया नाम पड़ गया हो और पानी का नाम ख़त्म हो गया हो, चुनांचे उन्होंने फ़रमाया "पानी का नाम अली-अल-इतलाक़ बाक़ी है"। मैं कहता हूँ अव्वल तो उनका क़ौल "लम यतजद्दद लहू" मा-क़ब्ल (पिछली बात) से मुनफ़सिल (अलग) है, चुनांचे उन्होंने फ़रमाया है "अला-तरा" (क्या तुम नहीं देखते) तो इसको उन्होंने नाम के बाक़ी रहने पर दलील बनाया है, यह नहीं कि नाम का बाक़ी रहना इसमें माखूज़ (शामिल) है। सानियन (दूसरे), नाम का अली-अल-इतलाक़ बाक़ी रहना इतलाक़ के लिए काफ़ी है, इसके बाद वह अदम-ए-हुदूस (नए नाम की अनुपस्थिति) का मोहताज नहीं और इसके होते हुए हज़ार हुदूस (नए नाम) भी मुज़िर (हानिकारक) नहीं, तो...

---

1 अल-हिदाया, बाब अल-मा अल्लज़ी यजोज़ु बिहिल वुज़ू व मा ला यजोज़ु बिहि, मतबअ अरबी कराची 1/18

غیر اوصافه کاللبن والخل والعصیر ونحو ذلك۔ اس میں کوئی ایسی مائع شے شامل ہو جائے جو اس کی رقت کو ختم نہ کرے خواہ اس کے دوسرے اوصاف میں تغیر پیدا کردے ، جیسے دودھ ، سرکہ ، عرق وغیرہ۔ (ت)

پنجم: مطلق وہ جس کے لئے کوئی نیا نام نہ پیدا ہوا، ہدا یہ میں فرمایا:

قال الشافعي رحمه الله تعالی لایجوز التوضي بماء الزعفران واشباهه مما لیس من جنس الارض لانه ماء مقید الاتری انه یقال ماء الزعفران بخلاف اجزاء الارض لان الماء لایخلو عنها عادة ولنان اسم الماء باق علی الاطلاق الاتری انه لم یتجدد له اسم علی حدة واضافته الی الزعفران کاضافته الی البئر والعین ۱ اھ امام شافعی نے فرمایا وہ اشیاء جو زمین کی جنس سے نہیں ہیں جیسے زعفران کا پانی وغیرہ اُن سے وضو جائز نہیں، کیونکہ وہ مقید پانی ہے، اس لئے اس کو زعفران کا پانی کہتے ہیں، بخلاف زمینی اجزاء کے، کیونکہ عام طور پر کوئی پانی زمینی اجزاء سے خالی نہیں ہوتا ہے، اور ہماری دلیل یہ ہے کہ پانی کا نام علی الاطلاق باقی ہے اور اس کا کوئی نیا نام وضع نہیں ہوا ہے اور اس کی اضافت زعفران کی طرف ایسی ہی ہے جیسے پانی کی اضافت کنویں یا چشمے کی طرف ہوتی ہے اھ (ت)

اقول:(۱) ظاهره منتقض بالحمیم فقد حدث له اسم لم یکن فان قلت اسم الماء باق علیه فالمراد ماتجدد له اسم مع انتفاء اسم الماء الاتری الی قوله ان اسم الماء باق علی الاطلاق اقول اولا قوله قدس سره لم یتجدد له مفصول عما قبله الا تری الی قوله الا تری فقد جعله دلیلا علی بقاء الاسم لان بقاء الاسم مأخوذ فیه وثانیاً بقاء الاسم علی الاطلاق کاف علی الاطلاق لا یحتاج بعده الی عدم حدوث ولا یضر

معه الف حدوث فضمه الیه یجعله لغوا-هذا اورده الفاضل عصام فی حاشیة بانه منقوض میں کہتا ہوں بظاہر اس پر گرم پانی کا اعتراض وارد ہوتا ہے کیونکہ اس پر ایک ایسا نام بولا جا رہا ہے جو پہلے نہ تھا۔ اگر یہ کہا جائے کہ اس میں بھی پانی کا نام باقی ہے، تو مراد یہ ہے کہ جس کا نیا نام پڑ گیا ہو اور پانی کا نام ختم ہو گیا ہو، چنانچہ انہوں نے فرمایا "پانی کا نام علی الاطلاق باقی ہے۔ میں کہتا ہوں اول تو ان کا قول "لم یتجدد له" ما قبل سے منفصل اور الگ ہے چنانچہ انہوں نے فرمایا ہے "الاتری" تو اس کو انہوں نے نام کے باقی رہنے پر دلیل بنایا ہے یہ نہیں کہ نام کا باقی رہنا اس میں ماخوذ ہے، ثانیاً نام کا علی الاطلاق باقی رہنا اطلاق کے لئے کافی ہے اس کے بعد وہ عدم حدوث کا محتاج نہیں اور اس کے ہوتے ہوئے ہزار حدوث بھی مضر نہیں، تو

---

۱ الہدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا یجوز بہ مطبع عربیہ کراچی ۱۸/۱

Fatawa Razawiyyah Volume Two

(Text regarding) bean water, where no new name was created for it, yet it did not remain "absolute water" absolutely. Then he said: The answer is that what is meant is the predominant implication (Istilzam-e-Akthari). This is because, in restricted (Muqayyad) liquids, a name is usually renewed, such as bread (Note 1), gravy, dye, and the like, unlike absolute water. This much is sufficient for our purpose, as for a case whose state is doubtful (Note 2), it is better to associate it with the most frequent and predominant category. (End of quote). On this, Allama Saadi Afandi remarked (followed up), saying: You can deny the majority (in this case). Don't you see rose water, chicory water, willow water, and their like? (End of quote).

I say: The question, the answer, and the critique are all calling from behind a veil. (1) As for the critique, it is because the abundance of things called "water of such-and-such" does not negate the majority of those things for which new names are established, and these are certainly known without any doubt. As for the answer, then firstly (2) the result of the dispute is that Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him)...

Note 1: I say: It is very surprising to count bread among restricted waters. (M) Note 2: i.e., saffron water will be joined with absolute water and bean water to distinguish its state from the restricted ones, even if a new name has not been given to it as well. For we do not claim that every water whose name is not renewed is absolute. (12 Minhu Ghafiralahu).

Footnotes: 1. Hashiya Saadi Chalpi with Al-Fath al-Qadir, Nooriyah Razawiyyah, Sukkur 1/63. 2. Ashiya [Hashiya] Saadi Chalpi with Al-Fath al-Qadir, Nooriyah Razawiyyah, Sukkur 1/63.

Page 658 of 711

फ़तावा रज़विया दूसरा खंड

(पाठ) सेम के पानी के संबंध में, जहाँ इसके लिए कोई नया नाम पैदा नहीं हुआ, और न ही यह पूर्णतः "शुद्ध पानी" रहा। फिर उन्होंने कहा: उत्तर यह है कि इसका अर्थ 'प्रबल निहितार्थ' (अक्सरी इस्तिलज़ाम) है। क्योंकि प्रतिबंधित (मुक़ैयद) द्रवों में सामान्यतः नया नाम पड़ जाता है, जैसे रोटी (हाशिया 1), शोरबा, रंग आदि, शुद्ध पानी के विपरीत। हमारे उद्देश्य के लिए इतना पर्याप्त है, क्योंकि जिस मामले की स्थिति संदिग्ध हो (हाशिया 2), उसे बहुसंख्यक और प्रबल श्रेणी के साथ जोड़ना ही बेहतर है। (उद्धरण समाप्त)। इस पर अल्लामा सादी अफ़ंदी ने आलोचना की और कहा: इसमें बहुमत के अस्तित्व को नकारा जा सकता है। क्या आप गुलाब जल, कासनी जल, बेद का जल और उनके समान अन्य द्रवों को नहीं देखते? (उद्धरण समाप्त)।

मैं कहता हूँ: प्रश्न, उत्तर और आलोचना, यह सब पर्दे के पीछे से पुकारने जैसा है। (1) जहाँ तक आलोचना की बात है, वह इसलिए कि जिन चीज़ों को "फलां चीज़ का पानी" कहा जाता है, उनकी अधिकता उन चीज़ों के बहुमत के विपरीत नहीं है जिनके नए नाम पड़ गए हैं और ये निस्संदेह ज्ञात हैं। और उत्तर के बारे में पहली बात यह है (2) कि विवाद का सार यह है कि इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो)...

हाशिया 1: मैं कहता हूँ: यह बड़े आश्चर्य की बात है कि रोटी को प्रतिबंधित पानियों (मुक़ैयद पानी) में गिना गया है। (म) हाशिया 2: यानी केसर के पानी को शुद्ध पानी और सेम के पानी के साथ मिलाया जाएगा ताकि इसकी स्थिति प्रतिबंधित पानी से अलग हो जाए, भले ही इसका कोई नया नाम न पड़ा हो। क्योंकि हमारा यह दावा नहीं है कि हर वह पानी जिसका नया नाम न हो, वह शुद्ध (मुतलक़) है। (12 मिन्हु गफ़िरलाहु)।

पादलेख (Footnotes): 1. हाशिया सादी चलपी मअ अल-फ़तह अल-क़दीर, नूरियह रज़विया, सुक्कुर 1/63 2. हाशिया सादी चलपी मअ अल-फ़तह अल-क़दीर, नूरियह रज़विया, सुक्कुर 1/63

पृष्ठ 658 का 711

بماء الباقلاء حیث لم یتجددلہ اسم ولم یبق ماء مطلقاً ثم قال والجواب ان المراد ھو الاستلزام الاکثری فان الغالب فی المقید تجدد الاسم کالخبز عہ۱ المرقۃ والصبغ ونحو ذلك بخلاف المطلق وھذا القدر کاف في غرضنا اذا لاولی في الفرد عہ۲ الذی یشتبہ حالہ ان یلحق بالاکثر الاغلب ۱ اہ وتعقبہ العلامۃ سعدی افندی بقولہ لك ان تمنع الاکثریۃ الاتری الی ماء الورد وماء الھندباء وماء الخلاف واشباھھا ۲ اہ

اس کا اُس کے ساتھ ملا دینا اس کو لغو قرار دیا۔ یہ عصام نے اپنے حاشیہ میں لکھا کہ اس پر باقلاء کے پانی سے اعتراض وارد ہوگا اس لئے کہ اس کا کوئی نام نیا نہیں پیدا ہوا اور مطلق پانی بھی نہ رہا پھر فرمایا اس کا جواب یہ ہے کہ مراد استلزام اکثری ہے، کیونکہ مقید میں عام طور پر نام نیا ہو جاتا ہے، جیسے روٹی، شوربہ اور رنگ وغیرہ بخلاف مطلق کے، اتنی مقدار ہماری غرض میں کافی ہے، کیونکہ اولیٰ اُس فرد میں جس کا حال مشتبہ ہو یہ ہے کہ اس کو اکثر و اغلب سے لاحق کیا جائے اھ اس پر علامہ سعدی آفندی نے تعاقب کیا، اور فرمایا اس میں اکثریت کے وجود کا انکار کیا جا سکتا ہے، جیسے گلاب کا پانی، کاسنی کا پانی، اور بید کا پانی اور اسی طرح دوسری اشیا کا پانی اھ (ت)

اقول: السؤال والجواب والتعقب کل ذلك نداء من وراء حجاب (۱) اما التعقب فلان کثرۃ ما یقال لہ ماء کذا لا تنفی اکثریۃ ماتجددت لہ الاسماء وھی معلومۃ قطعا بلا امتراء واما الجواب فاولا (۲) حاصل الجدل ان الامام الشافعی رضی اللہ میں کہتا ہوں سوال وجواب اور تعقب یہ سب پردے کو پیچھے پکارنا ہے، تعقب تو اس لئے کہ جن اشیاء کو کہا جاتا ہے کہ "فلاں چیز کا پانی" ان کی کثرت، ان اشیاء کے اکثر ہونے کے منافی نہیں جن کے نام نئے پڑگئے ہوں اور یہ بلاشبہ معلوم ہیں، اور جواب کی بابت اول تو یہ ہے کہ جھگڑے کا حاصل یہ ہے

عہ ۱ : اقول : من العجب عد الخبز من المیاہ المقیدۃ۔ (م) میں کہتا ہوں بڑے تعجب کی بات ہے کہ روٹی کو مقید پانیوں میں شمار کیا ہے۔ (ت)

عہ ۲ : ای فیلحق ماء الزعفران بالماء المطلق وماء الباقلاء لتبین حالہ بالمقید وان لم یتجددلہ ایضا اسم اذلا تدع ان کل لامتجدد مطلق ۱۲ منہ غفرلہ ۔ یعنی زعفران کے پانی کو مطلق پانی اور باقلی کے پانی سے ملحق کیا جائیگا تا کہ اس کا حال مقید سے جدا ہو جائے، اگرچہ اس کا بھی کوئی نیا نام نہیں پڑا ہے کیونکہ ہمارا یہ دعوی نہیں ہے کہ ہر وہ پانی جس کا نیا نام نہ ہو وہ مطلق ہے ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

1 حاشیہ سعدی چلپی مع الفتح القدیر نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳ 2 اشیہ سعدی چلپی مع الفتح القدیر نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳

Fatawa Razawiya, Volume II

[Arabic column]: He (may Allah be pleased with him) reasoned for it being restricted water because it is called 'saffron water,' thus necessitating restriction. Everything that necessitates restriction is restricted. The Sheikh (may his secret be sanctified) responded to this with a denial and a counter-argument. As for the denial, it is his statement: 'and its addition to saffron etc.,' meaning we do not concede that every addition is for necessity; rather, it may be for defining something beyond the essence itself, like 'well water' and 'spring water.' As for the counter-argument, it is his statement: 'the name water remains etc.' He reasoned for its absolute nature (itlaq) by the persistence of the name of absolute water, and for its persistence by the fact that no new name had been coined for it. Thus, it is necessary to include the universal rule stating that for everything for which a new name has not been coined, the absolute name remains for it. The objector challenged the rule with 'bean water' and the like. The response regarding the majority does not apply to it due to the absence of 'ta'deed' (repetition). Secondly, what follows from his statement: 'prevalence in restricted things is the renewal of the name' is the majority of the implication of renewal from the perspective of restriction, i.e., most restricted things are renewed. However, what is beneficial for him (Footnote 'Ah') is the majority of the implication of absolute nature from the perspective of non-renewal, i.e., most of what has no renewed name is absolute, so that this thing whose name has not been renewed may join the overwhelming majority. But this does not necessarily follow from that; rather, it is possible that most of what is restricted is renewed.

[Urdu column]: Imam Shafi'i has reasoned for this being restricted water by stating that it is called 'saffron water,' so it required a restriction, and every thing that requires a restriction is restricted. The Sheikh (may his secret be sanctified) has responded to this with a denial and a counter-argument. Denial is in this regard; thus, his statement 'and its addition to saffron etc.' means we do not accept that every addition is for necessity, but rather addition is sometimes for defining a thing beyond the essence itself, like well water or spring water. As for the counter-argument, his statement 'the name of the water remains etc.,' he has reasoned for it being absolute by the persistence of the name of the water, and for its persistence he argued that no new name has been given to it. So there is a need to add this universal rule to it: that water which has not been given a new name, the name of absolute water remains for it. Then the objector raised an objection to this rule with bean water etc., and the response regarding the majority does not relate to it

because 'transitivity' (ta'deed) is not found in it. Secondly, it follows from his statement 'the renewal of name is dominant in restricted' that there is a majority of implication of renewal from the side of restriction, i.e., most restricted waters are renewed, whereas for him what is beneficial (Footnote 'Ah') is the majority of implication for it being absolute from the perspective of non-renewal of name, i.e., most of the waters whose name is not renewed are absolute, so that this whose name is not renewed can be counted in the overwhelming majority. But this does not necessarily follow from the other, rather it is possible that most of what is restricted is renewed.

Footnotes: (Ah) i.e., in explanation of the words of the Imam-Author (may his secret be sanctified) to count saffron water among absolute waters. 12 (m) May he be forgiven. (Urdu) i.e., in explanation of the author's words, to count saffron water among absolute waters. 12 (t) May he be forgiven.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी

[अरबी कॉलम]: उन्होंने (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) इसके मुक़य्यद (सीमित) पानी होने पर इस प्रकार तर्क दिया कि इसे 'ज़ाफ़रान का पानी' कहा जाता है, जिससे इसमें क़ैद (प्रतिबंध) की आवश्यकता हुई। हर वह वस्तु जिसे क़ैद की आवश्यकता हो, वह मुक़य्यद होती है। शेख़ (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) ने इसका उत्तर 'निषेध' और 'प्रतिवाद' के साथ दिया। जहाँ तक निषेध का प्रश्न है, तो उनका कथन: 'और इसकी ज़ाफ़रान आदि की ओर इज़ाफ़त (संबंध)', का अर्थ है कि हम यह स्वीकार नहीं करते कि हर इज़ाफ़त आवश्यकता के लिए होती है; बल्कि यह अस्तित्व के अतिरिक्त किसी चीज़ को परिभाषित करने के लिए भी हो सकती है, जैसे 'कुएँ का पानी' और 'चश्मे का पानी'। जहाँ तक प्रतिवाद का प्रश्न है, तो उनका कथन है कि 'पानी का नाम शेष रहता है आदि'। उन्होंने पानी के नाम के शेष रहने से इसके'इतलाक़' (पूर्ण होने) पर तर्क दिया, और इसके शेष रहने पर यह तर्क दिया कि इसका कोई नया नाम नहीं पड़ा है। इसलिए, उस सार्वभौमिक नियम को शामिल करना आवश्यक है जो कहता है कि जिस वस्तु का कोई नया नाम नहीं पड़ा, उसके लिए पूर्ण (मुतलक़) नाम शेष रहता है। आक्षेपक ने 'फली (बाक़िला) के पानी' आदि के माध्यम से इस नियम का खंडन किया। 'बहुमत' (अकसरियत) से संबंधित उत्तर इस पर लागू नहीं होता क्योंकि इसमें 'तअदीद' (दोहराव) का अभाव है। दूसरा, उनके इस कथन से कि 'मुक़य्यद में नाम का नवीनीकरण प्रबल है', यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रतिबंध की दृष्टि से नवीनीकरण की अनिवार्यता अधिकांश है, अर्थात अधिकांश मुक़य्यद वस्तुएँ नवीनीकृत हैं। हालाँकि, उनके लिए जो हितकर है (फुटनोट 'अह') वह नवीनीकरण न होने की दृष्टि से 'इतलाक़' की अनिवार्यता का बहुमत है, अर्थात अधिकांश वे चीज़ें जिनका नया नाम नहीं पड़ा, वे मुतलक़ हैं, ताकि यह वस्तु जिसका नया नाम नहीं पड़ा, वह भारी बहुमत में शामिल हो सके। लेकिन यह उससे आवश्यक रूप से सिद्ध नहीं होता; बल्कि यह संभव है कि मुक़य्यद में से अधिकांश नवीनीकृत हों।

[उर्दू कॉलम]: इमाम शाफ़ई ने इसके मुक़य्यद पानी होने पर इस तरह इस्तदलाल (तर्क) किया है कि इसे ज़ाफ़रान का पानी कहा जाता है, तो इसमें क़ैद की ज़रूरत हुई और हर वो चीज़ जिसमें क़ैद की ज़रूरत हो, मुक़य्यद होती है। तो इसका जवाब शेख़ (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने मना और मुआरज़ा (विरोध) के साथ दिया है। मना तो इस एतबार से है, कि उनका क़ौल 'और इसकी ज़ाफ़रान की तरफ़ इज़ाफ़त आदि' का अर्थ है कि हम यह स्वीकार नहीं करते कि हर इज़ाफ़त ज़रूरत के लिए है, बल्कि इज़ाफ़त कभी किसी चीज़ की परिभाषा के लिए होती है, अस्तित्व के अलावा, जैसे कुएँ का पानी या

चश्मे का पानी। रही बात मुआरज़ा की, तो उनका क़ौल कि 'पानी का नाम शेष रहता है आदि', तो उन्होंने इतलाक़ पर पानी के नाम के शेष रहने से इस्तदलाल किया है और इसके शेष रहने पर यह तर्क दिया है कि इसका कोई नया नाम नहीं पड़ा है। तो इसमें यह सार्वभौमिक नियम जोड़ने की ज़रूरत है कि हर वह पानी जिसका नया नाम न पड़ा हो, तो उस पर मुतलक़ का नाम शेष रहता है। फिर एतराज़ करने वाले ने इस नियम पर बाक़िला आदि के पानी से खंडन पेश किया है, और बहुमत वाले जवाब का इससे संबंध नहीं है क्योंकि इसमें 'तअदिया' नहीं पाया जाता है। और दूसरी बात, उनके क़ौल 'मुक़य्यद में प्रबल नाम का नवीनीकरण है' से यह अनिवार्य होता है कि प्रतिबंध की दिशा से नवीनीकरण की अनिवार्यता का बहुमत है, यानी अधिकांश मुक़य्यद नवीनीकृत हैं, जबकि उनके हक़ में जो लाभकारी है (फ़ुटनोट 'अह') वह नवीनीकरण न होने की दिशा से इतलाक़ की अनिवार्यता का बहुमत है, यानी अधिकांश वे पानी जिनका नाम नवीनीकृत नहीं हुआ, वे मुतलक़ हैं, ताकि जिसका नाम नवीनीकृत नहीं हुआ उसे भारी बहुमत में गिना जा सके। लेकिन इससे वह लाज़िम नहीं आता, बल्कि यह मुमकिन है कि अधिकांश मुक़य्यद नवीनीकृत हों।

फ़ुटनोट्स: (अह) अर्थात, इमाम मुसन्निफ़ (क़ुद्दिस सिर्रहु) के कथन की व्याख्या में ज़ाफ़रान के पानी को मुतलक़ पानी में शामिल करने के लिए। 12 (म) अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (उर्दू) अर्थात, मुसन्निफ़ के कथन की व्याख्या में ज़ाफ़रान के पानी को मुतलक़ पानी में गिनने के लिए। 12 (त) अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

पृष्ठ 659/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

[عربی کالم]: تعالٰی عنہ استدل علی کونہ ماء مقیدا بأنه یقال له ماء الزعفران فاحتاج الی التقیید وکل ما احتاج الی التقیید مقید واجاب عنه الشیخ قدس سره بمنع ومعارضة اما المنع فقوله واضافته الی الزعفران الخ ای لانسلم ان کل اضافة للاحتیاج بل ربما یکون لتعریف شیئ وراء الذات کماء البئر والعین واما المعارضة فقوله ان اسم الماء باق الخ فاستدل علی الاطلاق ببقاء اسم الماء المطلق وعلی بقائه بأنه لم یتجدد له اسم فلا بد من ضم الکلیة القائلة ان کل مالم یتجدد له اسم فاسم المطلق باق علیه فنقض المعترض الکلیة بماء الباقلاء ونحوه ولا یمسه الجواب بالأکثریة لانتفاء التعدید (۱) وثانیا اللازم من قوله الغالب في المقید تجدد الاسم اکثریة الاستلزام للتجدد من جهة التقیید ای اکثر المقیدات متجددات والنافع له (عہ) اکثریة الاستلزام للاطلاق من جهة عدم التجدد ای اکثر مالم یتجددله اسم فهو مطلق لیلحق هذا الذی لم یتجددله اسم بالأکثر الاغلب لکن لا یلزم هذا من ذلك بل یمکن ان یکون اکثر ما تقید تجدد

[اردو کالم]: کہ امام شافعی نے اس کے مقید پانی ہونے پر اس طرح استدلال کیا ہے کہ اس کو زعفران کا پانی کہا جاتا ہے تو اس میں قید کی ضرورت ہوئی اور ہر وہ چیز جس میں قید کی ضرورت ہو مقید ہوتی ہے تو اس کا جواب شیخ قدس سرہ نے منع اور معارضہ کے ساتھ دیا ہے۔ منع تو اس اعتبار سے، پس ان کا قول واضافتہ الی الزعفران الخ یعنی ہم یہ تسلیم نہیں کرتے کہ ہر اضافت احتیاج کیلئے ہے، بلکہ اضافت کبھی کسی شے کی تعریف کیلئے ہوتی ہے، ذات کے علاوہ جیسے کنوئیں کا پانی چشمے کا پانی، باقی رہا معارضہ تو ان کا قول ان اسم الماء باق الخ تو انہوں نے اطلاق پر مطلع پانی کے نام کے باقی ہونے سے استدلال کیا ہے اور اس کے باقی رہنے پر اس طرح استدلال کیا ہے کہ اس کا کوئی نیا نام نہیں پڑا ہے، تو اس میں یہ قاعدہ کلیہ ملانے کی

ضرورت ہے کہ ہر وہ پانی جس کا نیا نام نہ پڑا ہو تو مطلق کا نام اس پر باقی ہے تو معترض نے اس کلیہ پر نقض وارد کیا ہے باقلی وغیرہ کے پانی سے، اور اکثریت والے جواب کا اس سے تعلق نہیں ہے کیونکہ اس میں "تعدیہ" نہیں پایا جاتا ہے، اور ثانیا، لازم ان کے قول "مقید میں غالب نام کا تجدد ہے" سے تجدد من جہۃ التقیید کے استلزام کی اکثریت ہے، یعنی اکثر مقیدات، متجدد ہیں حالانکہ ان کے حق میں نفع بخش اطلاق من جہت عدم التجدد کے۔

حواشی: عہ ای فی توجیہ کلام الامام المصنف قدس سرہ لجعل ماء الزعفران من المیاہ المطلقۃ ۱۲ منہ غفر لہ (م) یعنی مصنف کے کلام کی توجیہ میں ، زعفران کے پانی کو مطلق پانیوں میں شمار کرنے کیلئے ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

Fatawa-e-Razvia Volume 2

And it is not the case that the majority of those whose names have not changed are not restricted (muqayyad). For in a majority-based proposition (al-qadiyya al-akthariyya), it is not necessary that its contrapositive (aks al-naqid) be equal to it, as is the case with the proposition itself. This is because it is possible for the individuals whose names have not changed to be much fewer than the restricted individuals, and for the majority of them to be included among the restricted ones. Thus, the majority of restricted individuals would have new names, while the majority of non-renewed individuals (la-mutajaddid) would be restricted. For example, consider restricted waters where eight hundred have had their names changed and two hundred have not. If the total number of waters whose names have not changed, whether absolute (mutlaq) or restricted, is three hundred, with one hundred being absolute and the remaining two hundred being restricted, then it is true that the majority of the restricted is renewed (has a new name), but it is not true that the majority of the non-renewed is not restricted. Rather, the majority of it is restricted, as you have learned. (T)

If you say: "We formulate it like this: if it were restricted, it would likely have a new name. But since it does not have a new name, it is not restricted based on probability (zann). And probability is sufficient here because its state is ambiguous, so it should be judged based on the dominant case. The dominant case in restricted things is renewal (new naming). Thus, the absence of a frequent necessary consequence (al-lazim al-akthari) indicates the absence of the antecedent (al-malzum) probabilistically, just as the absence of a universal necessary consequence indicates the absence of the antecedent definitively. The summary of this is..."

और ऐसा नहीं होता कि वे बहुसंख्यक जिनका नया नाम नहीं पड़ा है, वे मुक़य्यद (प्रतिबंधित) न हों। क्योंकि एक बहुसंख्यक-आधारित प्रतिज्ञा (अल-क़ज़िय्या अल-अकसरिय्या) में यह आवश्यक नहीं है कि उसका प्रतिलोम (अक्स-ए-नक़ीज़) उसके बराबर हो, जैसा कि वह स्वयं में होता है। ऐसा इसलिए संभव है कि जिन व्यक्तियों का नाम नया नहीं हुआ है, उनकी संख्या मुक़य्यद व्यक्तियों की तुलना में बहुत कम हो, और उनमें से अधिकांश मुक़य्यद के अंतर्गत आते हों। इस प्रकार, मुक़य्यद व्यक्तियों का बहुमत नए नाम वाला होगा, और ला-मुतजद्दिद (जिनका नाम नहीं बदला) के अधिकांश व्यक्ति मुक़य्यद होंगे। उदाहरण के लिए, मान लें कि मुक़य्यद पानी के आठ सौ प्रकारों के नाम बदल गए हैं और दो सौ के नहीं बदले हैं। यदि उन सभी पानियों की कुल संख्या जिनका नाम नहीं बदला है, चाहे वे मुतलक़ (निरपेक्ष) हों या मुक़य्यद, तीन सौ है, जिनमें से एक सौ मुतलक़ पानी है और शेष दो सौ मुक़य्यद पानी है, तो यह बात सही है कि मुक़य्यद का अधिकांश हिस्सा नया नाम रखता है, लेकिन यह कहना सही नहीं है कि ला-मुतजद्दिद का अधिकांश हिस्सा मुक़य्यद नहीं है, बल्कि उसका अधिकांश हिस्सा मुक़य्यद है, जैसा कि आपने जान लिया है। (त)

यदि आप कहें कि हम इसे इस तरह प्रस्तुत करते हैं: यदि यह मुक़य्यद होता, तो संभवतः इसका कोई नया नाम होता। लेकिन चूंकि इसका नया नाम नहीं हुआ है, इसलिए यह केवल अनुमान (ज़न्न) के आधार पर मुक़य्यद नहीं है। और यहाँ अनुमान पर्याप्त है क्योंकि इसकी स्थिति संदिग्ध है, इसलिए इसे बहुमत (ग़ालिब) पर आधारित किया जाएगा। और मुक़य्यद चीज़ों में बहुमत नया नाम होने (तजद्दुद) का है, इसलिए एक सामान्य अनिवार्य परिणाम (अल-लाज़िम अल-अकसरियी) की अनुपस्थिति, पूर्ववर्ती (अल-मलज़ूम) की अनुपस्थिति को अनुमानित रूप से दर्शाती है, जिस प्रकार एक सार्वभौमिक अनिवार्य परिणाम की अनुपस्थिति, पूर्ववर्ती की अनुपस्थिति को निश्चित रूप से दर्शाती है। इसका निष्कर्ष यह है कि...

اور ایسا نہیں ہوتا کہ اکثر وہ جن کا نیا نام نہیں پڑا وہ مقید نہ ہوں، کیونکہ اکثری قضیہ میں یہ ضروری نہیں کہ اس کا عکسِ نقیض اس کے برابر ہو، جیسا کہ اس کے اپنے آپ میں ہے۔ اس لئے کہ یہ جائز ہے کہ جن افراد کا نیا نام نہیں ہوا ان کی تعداد مقید افراد سے بہت کم ہو، اور ان میں سے اکثر مقید میں داخل ہوں، تو مقید کے اکثر افراد نئے نام والے ہوں گے اور لا متجدد (جن کا نام نہیں بدلا) کے اکثر افراد مقید ہوں گے۔ مثال کے طور پر، وہ مقید پانی جس کی آٹھ سو قسموں کے نئے نام پڑ گئے ہوں اور دو سو کے نہ بدلے ہوں، اور وہ تمام پانی جن کے نام نہیں بدلے خواہ وہ مطلق ہوں یا مقید، ان کی کل تعداد تین سو ہو۔ ان میں سے سو مطلق پانی ہوں اور باقی دو سو مقید پانی ہوں۔ تو اب یہ بات درست ہے کہ مقید کا اکثر حصہ نیا نام رکھتا ہے، لیکن یہ کہنا درست نہیں کہ لا متجدد کا اکثر حصہ مقید نہیں ہے، بلکہ اس کا اکثر حصہ مقید ہے، جیسا کہ آپ نے جان لیا۔ (ت)

اگر آپ کہیں کہ ہم اسے اس طرح بیان کرتے ہیں: اگر یہ مقید ہوتا تو غالباً اس کا کوئی نیا نام ہوتا، لیکن چونکہ اس کا نیا نام نہیں ہوا، اس لئے یہ ظنی طور پر مقید نہیں ہے۔ اور یہاں ظن کافی ہے کیونکہ اس کی حالت مشتبہ ہے، تو اسے غالب پر محمول کیا جائے گا۔ اور مقید میں غالب بات تجدد (نیا نام ہونا) ہے، لہذا لازمِ اکثری کا نہ ہونا ملزوم کے نہ ہونے پر ظنی طور پر دلالت کرتا ہے، جس طرح لازمِ کلی کا نہ ہونا ملزوم کے نہ ہونے پر قطعی طور پر دلالت کرتا ہے۔ اس کا حاصل یہ ہے کہ...

Fatawa Ridawiyya - Volume 2

[Arabic Section]: Holding onto the dominance of renewal in the restricted without needing the dominance of the absolute in the non-renewing. [Urdu Commentary]: This indicates, just as the negation of a universal necessity definitely indicates the negation of the antecedent. Its gist is arguing from the dominance of renewal in the restricted, and there is no need for the dominance of the absolute in the non-renewing. (T)

[Arabic Section]: Verily, what is most frequent is what is presumed. The majority of the implication of existence 'A' for the existence of 'B' does not necessitate that the majority of the implication of the absence of 'B' for the absence of 'A' follows. Thus, in such a case, the existence of the consequent (necessary) is presumed upon the realization of the antecedent (melzoom), not the absence of the antecedent upon the absence of the consequent. [Urdu Commentary]: I say, what is most frequent is what is presumed. The majority of the existence of 'A' necessitating the majority of the existence of 'B' does not necessitate that the majority of the implication of the absence of 'B' due to the absence of 'A' follows. So, in such a situation, at the time of the realization of the existence of the antecedent, the existence of the consequent is presumed, not the absence of the antecedent at the time of the absence of the consequent. (T)

[Arabic Section]: Thirdly: (1) What is the difference between fava bean water and saffron water such that this was considered ambiguous and joined with the dominant, while that was specific and thus not joined? As for the question (E), it is because fava bean water is a new name... [Urdu Commentary]: Thirdly, what is the difference between fava bean (baqila) water and saffron water, that this should be considered doubtful and attached to the majority, while that is determined and will not be attached? As for the question, fava bean water is a new name, instead of the name of water.

[Arabic Section]: (E) Then I saw that he answered it in 'Al-Binayah' that the 'mudhaf' (annexed) here is outside of the 'mudhaf ilayh' (annexed-to) due to the treatment, so it is not permissible even if no new name for it has emerged. End. [Urdu Commentary]: Then I saw that they answered in 'Binayah' that here the 'mudhaf' (annexed) is outside the 'mudhaf ilayh' (annexed-to) because of the treatment, so it is not permissible even if its name hasn't become new. End.

[Arabic Section]: I say: (2) His acceptance of the lack of name renewal, you have known what is in it. And what he said is based on what he mentioned in the definition of 'idhafat al-taqyid' (restrictive annexation) (3), and what is in it will come by the help of Allah Almighty. In any case, he accepted that the definition by name renewal is not comprehensive (jami'). Then he said, and Taj al-Shari'ah said: 'The evidence requires permissibility, but cooking and mixing establish a deficiency in its being...' [Urdu Commentary]: I say: Accepting that the name does not become new, you have understood the objection to it. And what they have said is based on what they mentioned in the definition of 'idhafat-e-taqyeed', and this will appear shortly. In any case, they have admitted that the definition that the name should change is not all-encompassing. Then they said that Taj al-Shari'ah stated that the evidence demands permissibility (continued on the next page).

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

[अरबी अनुभाग]: गैर-नविनीकृत में व्यापकता की प्रधानता की आवश्यकता के बिना, प्रतिबंधित में नविनीकरण की प्रधानता पर निर्भर होना। [उर्दू भाष्य]: यह इंगित करता है, जैसे सार्वभौमिक आवश्यकता (लाज़िम कुल्ली) का अभाव निश्चित रूप से पूर्ववृत्त (मल्ज़ूम) के अभाव को दर्शाता है। इसका सार प्रतिबंधित में नविनीकरण की प्रधानता से तर्क करना है, और गैर-नविनीकृत में व्यापकता की प्रधानता की कोई आवश्यकता नहीं है। (त)

[अरबी अनुभाग]: निश्चित रूप से, जो सबसे अधिक बार होता है वही माना जाता है। 'अ' के अस्तित्व का 'ब' के अस्तित्व के लिए निहितार्थ होने का बहुमत यह अनिवार्य नहीं करता कि 'ब' के अभाव का 'अ' के अभाव के लिए निहितार्थ होने का बहुमत भी हो। इस प्रकार, ऐसी स्थिति में, पूर्ववृत्त (मल्ज़ूम) की प्राप्ति पर परिणामी (लाज़िम) के अस्तित्व का अनुमान लगाया जाता है, न कि परिणामी के अभाव पर पूर्ववृत्त का अभाव। [उर्दू भाष्य]: मैं कहता हूँ, जो अक्सर होता है उसी का अनुमान लगाया जाता है। 'अ' के अस्तित्व की बहुतायत का 'ब' के अस्तित्व की बहुतायत को आवश्यक बनाना 'अ' के अभाव के कारण 'ब' के अभाव की आवश्यकता की बहुतायत को अनिवार्य नहीं करता है। अतः ऐसी स्थिति में पूर्ववृत्त के अस्तित्व की प्राप्ति के समय परिणामी के अस्तित्व का अनुमान लगाया जाता है, न कि परिणामी के अभाव के समय पूर्ववृत्त के अभाव का। (त)

[अरबी अनुभाग]: तीसरा: (१) फावा बीन (बाक़िला) के पानी और केसर के पानी में क्या अंतर है कि इसे संदिग्ध मानकर बहुमत के साथ जोड़ दिया गया, जबकि वह विशिष्ट था और उसे नहीं जोड़ा गया? जहाँ तक प्रश्न (ए) का संबंध है, वह इसलिए है क्योंकि बाक़िला का पानी एक नया नाम है... [उर्दू भाष्य]: तीसरा, बाक़िला के पानी और केसर के पानी में क्या अंतर है, कि इसे संदिग्ध माना जाए और बहुमत से जोड़ा जाए, और वह निश्चित है तो उसे नहीं जोड़ा जाएगा? जहाँ तक सवाल का सवाल है, बाक़िला का पानी एक नया नाम है, पानी के नाम के बजाय।

[अरबी अनुभाग]: (ए) फिर मैंने देखा कि उन्होंने 'अल-बिनाया' में इसका उत्तर दिया कि यहाँ 'मुज़ाफ़' (संलग्न) उपचार के कारण 'मुज़ाफ़ इलयह' (जिससे संलग्न है) से बाहर है, इसलिए यह जायज़ नहीं है भले ही इसके लिए कोई नया नाम न उभरा हो। अंत। [उर्दू भाष्य]: फिर मैंने देखा कि उन्होंने 'बिनाया' में इसका उत्तर दिया कि यहाँ मुज़ाफ़, उपचार (इलाज) के कारण मुज़ाफ़ इलयह से बाहर है, इसलिए यह जायज़ नहीं है, भले ही इसका नाम नया न हुआ हो। अंत।

[अरबी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: (२) नाम के नया न होने की उनकी स्वीकृति, उसमें जो है वह आप जान चुके हैं। और उन्होंने जो कहा है वह उस पर आधारित है जो उन्होंने 'इज़ाफ़त-ए-तक़यीद' (प्रतिबंधात्मक अनुलग्नक) की परिभाषा में उल्लेख किया है (३), और उसमें जो है वह अल्लाह तआला की सहायता से शीघ्र ही आएगा। बहरहाल, उन्होंने यह स्वीकार किया है कि नाम के नया होने की परिभाषा व्यापक (जामे) नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि ताज अल-शरिया ने फरमाया कि साक्ष्य वैधता (जवाज़) की मांग करता है... [उर्दू भाष्य]: मैं कहता हूँ: नाम के नया न होने की स्वीकृति, उस पर जो आपत्ति है वह आप जान चुके हैं, और उन्होंने जो कहा है वह उस चीज़ पर आधारित है जिसका उन्होंने इज़ाफ़त-ए-तक़यीद की परिभाषा में उल्लेख किया है, और यह शीघ्र ही सामने आएगा। बहरहाल, उन्होंने यह स्वीकार किया है कि यह परिभाषा कि नाम नया हो जाए, व्यापक नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि ताज अल-शरिया ने फरमाया कि साक्ष्य वैधता की मांग करता है (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

पृष्ठ 711 में से 661

التمسك بغلبة التجدد في المقيد من دون حاجة الى غلبة الاطلاق في اللامتجدد۔ دلالت کرتا ہے، جیسا کہ لازم کلی کا انتفاء ملزوم کے انتفاء پر قطعاً دلالت کرتا ہے، اور اس کا حاصل مقید میں غلبہ تجدد سے استدلال ہے، اور لامتجدد میں غلبہ اطلاق کی حاجت نہیں۔ (ت)

انما یظن ماھو اکثر والاکثریة في استلزام وجود ا لوجودب لاتستلزم اکثریة استلزام انتفاء ب لانتفاءافقی مثلہ انما یظن بوجود اللازم عند تحقق الملزوم لابانتفاء الملزوم عند انتفاء اللازم۔ میں کہتا ہوں جو اکثر ہو اسی کا ظن ہوتا ہے اکے وجود کی اکثریت کاب کے وجود کی اکثریت کو مستلزم ہونا اکے انتفاء کی وجہ سے ب کے انتفاء کے استلزام کی اکثریت کو مستلزم نہیں ہے تو اس جیسی صورت میں ملزوم کے وجود کے تحقق کے وقت لازم کے وجود کا ظن ہوتا ہے نہ کہ انتفاء ملزوم بوقت انتفاء لازم کے۔ (ت)

وثالثاً: (۱) ماالفارق بین ماء الباقلاء وماء الزعفران حتی کان ھذا مشتبھاً فالحق بالغالب وذاك معیناً فلم یلحق واماً السؤال (عه) فلان ماء الباقلاء اسم جدید ثالثاً، یا فرق ہے باقلی کے پانی اور زعفران کے پانی میں، کہ اس کو مشتبہ قرار دیا جائے، اور غالب سے لاحق کیا جائے اور وہ متعین ہے تو لاحق نہ کیا جائے گا باقی رہا سوال تو باقلاء کا پانی نیا نام ہے، پانی کے نام

عه ثم رأیت اجاب عنه في البنایة بان المضاف ھھنا خارج من المضاف الیه بالعلاج فلایجوز وان لم یتجدد له اسم اہ پھر میں نے دیکھا کہ انہوں نے بنایہ میں اس کا جواب دیا کہ یہاں مضاف، مضاف الیہ سے خارج ہے علاج کی وجہ سے تو جائز نہیں اگرچہ اس کا نیا نام نہ ہواھ

اقول:(۲) تسلیمہ عدم تجدد الاسم قد عرفت مافیه وماقاله مبنی علی ما ذکره في تعریف اضافة التقیید (۳) وسیأتی مافیه بعونه تعالی وعلی کل فقد سلم ان التعریف بتجدد الاسم غیر جامع ثم قال وقال تاج الشریعة الدلیل یقتضی الجواز ولکن الطبخ والخلط یثبتان نقصاناً في کونه میں کہتا ہوں نام کے نیا نہ ہونے کا تسلیم کرنا، اس پر جو اعتراض ہے وہ آپ نے جان لیا، اور جو انہوں نے کہا ہے وہ اس چیز پر مبنی ہے جس کو انہوں نے اضافت تقیید کی تعریف میں ذکر کیا ہے، اور یہ عنقریب آئے گا اور بہرحال یہ تعریف کہ نام نیا ہو جائے جامع نہیں اس کو انہوں نے تسلیم کیا ہے پھر کہا کہ تاج الشریعہ نے فرمایا دلیل جواز کا تقاضا کرتی ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiya, Volume 2

Non-water name and the name of water being a part of it does not contradict novelty (jiddat). Do you not see that it is not appropriate to call it "water" because it is thick, while water is thin? This is unlike saffron water, because what is meant by it is that which has not become thick, and this is by consensus; rather, as long as it is not suitable for dyeing. This is upon investigation, as previously mentioned in [partition of water] 120. This is what appeared to me. Then I saw the researcher Ibn Amir al-Hajj pointed towards this in 'Al-Hilyah', where he said: For example, the essence of rose water is not known merely from the speaker saying "water" until he attributes it to the "rose". Therefore, the attribution was necessary because it is an attribution to something that is indispensable, and through this necessity, it developed a separate name. Thus, it is not correct to call it water unconditionally, except metaphorically. And Allah is the Giver of Success, there is no Lord besides Him. Then I say: If it is established (note 'ah') that (1) from the waters...

(Remainder of the previous page's footnote) ...being liquid (end). I say: This agrees with what this humble one mentioned, where he pointed out that the prohibition is due to thickness (12 from him, may Allah forgive him [m]).

Note 'ah': He said this because it is conceivable according to the opinion of Muhammad, but as for the opinion of Abu Yusuf, the correct one is as follows (continued on next page).

Urdu text in footnote: But cooking and mixing create a disturbance in preventing water (end). I say: This is in accordance with what we have mentioned, that the prevention is due to thickness (12 from him, may Allah forgive him [t]).

Page 662 of 711

फ़तावा रज़विया, खंड 2

गैर-पानी नाम और पानी का नाम उसका हिस्सा होना नवीनता (जिदत्त) के विपरीत नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि उसे 'पानी' कहना उचित नहीं है क्योंकि वह गाढ़ा है, जबकि पानी पतला होता है? यह केसर के पानी के विपरीत है, क्योंकि उससे तात्पर्य वह है जो गाढ़ा न हुआ हो, और यह सर्वसम्मति से है; बल्कि, जब तक वह रंगने के योग्य न हो। यह शोध के आधार पर है, जैसा कि [पानी के विभाजन] 120 में पहले बताया गया है। यह मुझ पर प्रकट हुआ। फिर मैंने शोधकर्ता इब्न अमीर अल-हज को 'अल-हिलिया' में इसकी ओर संकेत करते हुए देखा, जहाँ उन्होंने कहा: उदाहरण के लिए, गुलाब जल का सार केवल बोलने वाले के'पानी' कहने मात्र से नहीं जाना जाता जब तक कि वह इसे 'गुलाब' के साथ न जोड़े। इसलिए, संबंध (इज़ाफ़त) आवश्यक था क्योंकि यह एक ऐसी चीज़ का संबंध है जो अपरिहार्य है, और इस आवश्यकता के माध्यम से, इसका एक अलग नाम विकसित हुआ। इस प्रकार, इसे बिना शर्त पानी कहना सही नहीं है, सिवाय लाक्षणिक रूप से। और अल्लाह सफलता देने वाला है, उसके अलावा कोई रब नहीं है। फिर मैं कहता हूँ: यदि यह सिद्ध हो जाए ('अह' नोट) कि (1) पानियों में से...

(पिछली पृष्ठ की फ़ुटनोट का शेष हिस्सा) ...तरल होने के कारण (समाप्त)। मैं कहता हूँ: यह इस तुच्छ व्यक्ति द्वारा उल्लेखित बात से सहमत है, जहाँ उन्होंने संकेत दिया कि निषेध गाढ़ेपन के कारण है (12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे [म])।

नोट 'अह': उन्होंने यह इसलिए कहा क्योंकि यह मुहम्मद की राय के अनुसार बोधगम्य है, लेकिन जहाँ तक अबू यूसुफ की राय का सवाल है, सही राय निम्नलिखित है (अगले पृष्ठ पर जारी)।

फ़ुटनोट में उर्दू पाठ: लेकिन पकाना और मिलना पानी को रोकने में बाधा उत्पन्न करते हैं (समाप्त)। मैं कहता हूँ: यह हमारे द्वारा बताए गए के अनुसार है कि निषेध गाढ़ेपन के कारण है (12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे [त])।

पृष्ठ 662 का 711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

غیر اسم الماء اور پانی کا نام اس کے نام کا جزئی ہونا جدت کے منافی نہیں، اس لئے اس کو پانی نہیں کہا جا سکتا کیونکہ وہ گاڑھا ہے اور پانی پتلا ہوتا ہے، بخلاف زعفران کے پانی کے، کیونکہ اس سے مراد وہ ہے جو گاڑھا نہ ہوا ہو، اور یہ اتفاقاً ہے، بلکہ جب تک رنگنے کے لائق نہ ہو، اور یہ تحقیق کی بنا پر ہے جیسا کہ پانی کی تقسیم ۱۲۰ میں گزرا یہ مجھ پر ظاہر ہوا پھر میں نے محقق ابن امیر الحاج کو دیکھا کہ انہوں نے اس کی طرف حلیہ میں اشارہ فرمایا، وہ فرماتے ہیں گلاب کے پانی کی ذات مثلاً کسی قائل کے صرف اس قول سے معلوم نہیں ہوتی ہے کہ "پانی" جب تک کہ وہ اسے گلاب کی طرف مضاف نہ کرے، اس لئے اضافت لازم ہوئی کیونکہ یہ ایسی چیز کی طرف اضافت ہے جس کی طرف اضافت ضروری ہے اور اس لزوم کے واسطہ سے اس کا الگ نام پڑ گیا، تو اس کو مطلقاً پانی کہنا درست نہ ہوگا، ہاں مجازاً کہا جا سکتا ہے اھ واللہ الموفق لارب سواہ۔ پھر میں کہتا ہوں اگر یہ ثابت ہو جائے کہ بعض مقید (۱) من المیاہ...

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مائعاً اھ اقول: ھذا یوافق ماذکر الحقیر حیث اشار الی ان المنع لاجل الثخن ۱۲ منہ غفرلہ (م)

لیکن پکانا اور مل جانا پانی کے مانع ہونے میں خلل پیدا کرتے ہیں اھ میں کہتا ہوں یہ اس کے مطابق ہے جو ہم نے ذکر کیا ہے کہ منع گاڑھے ہونے کی وجہ سے ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ قالہ لانہ یتصور علی قول محمد اما علی قول ابی یوسف الصحیح علی مایأتی (باقی بر صفحہ آیندہ)

Fatawa Rizwiya Volume Two

[Main Text Column 1 - Arabic] Restricted (Al-Muqayyida) is that for which no new name emerges in custom due to the absence of a specific purpose attached to it. For example, if the name 'Absolute Water' (Al-Ma' al-Mutlaq) is removed from it, this would be a contradiction (naqd) to the prohibition, just as hot water (Al-Hamim) was a contradiction to the collection (1). This becomes more apparent in [the book] 'Al-Fath' (A), regarding its statement on the definition of restriction (At-Taqyid), which is that a separate name arises for it. The necessity of restriction is included therein. This only occurs when the water is overwhelmed (maghlub), as applying the name to the whole at that time would be considering the dominant part as non-existent, which is the opposite of what is established linguistically, customarily, and legally (End).

[Main Text Column 2 - Urdu Translation of Column 1] There are waters for which no new name has been established in custom, because no purpose is attached to it. For example, if the name 'Absolute Water' is removed from it, this will be a contradiction to the prohibition, just as hot water would be a contradiction to the collection. This entry will be more apparent in 'Al-Fath' because it is stated in the explanation of restriction that restriction means its new name should be adopted, and the necessity of restriction is included in this. This will happen when the water is overwhelmed, because in applying the name to the whole, the dominant part would be considered as absent at that time, and this is the opposite of what is established by language, custom, and law. (T)

[I say (Aqulu): (2)] It is only established by this that whenever a name is renewed, the water is overwhelmed. As for the converse, it is only established that whenever the water is overwhelmed, the application of 'Absolute Water' to it is not valid; not that a separate name must necessarily be coined for it. Thus, limiting restriction to the emergence of a name is subject to scrutiny (Mashal-e-Nazar). And Allah (the Exalted) knows best.

[Author's commentary - Urdu translation of Arabic note] I say: What is established through this is that whenever there is a new name for it, the water will be overwhelmed. And in its converse, this thing is established: that whenever water is overwhelmed, applying 'Absolute Water' to it will not be correct. It is not that a new name will be coined for it and that this is necessary. Therefore, to limit restriction to having a new name is subject to scrutiny. And Allah the Exalted knows best. (T)

[Footnote section] (Remainder of the footnote from the previous page) From the weak servant, its verification, if Allah the Exalted wills, after completing the list of definitions: it will not be restricted unless it is suitable for another purpose, then it will be named after what is intended by that purpose. Reflect on this. 12 [from the author], may he be forgiven (M). Note (A): Limiting restriction to the emergence of a name is explicitly stated (mantuq) in 'Al-Fath' and understood (mafhum) from 'Al-Hidayah'. 12 [from the author], may he be forgiven (M).

[Urdu translation of footnote] We will present the verification, and it will not be restricted unless it is suitable for another purpose. At that time, its name will be whatever its purpose is. Reflect on this. 12 [from the author], may he be forgiven (T). The limitation of restriction to the name being new is explicitly stated in 'Al-Fath' and is understood from 'Al-Hidayah'. 12 [from the author], may he be forgiven (T).

फ़तावा रिज़विया जिल्द सानी (भाग दो)

[मुख्य पाठ कॉलम 1 - अरबी] प्रतिबंधित (अल-मुक़य्यदा) वह है जिसके लिए प्रथा (उर्फ़) में कोई नया नाम नहीं उभरता है क्योंकि उससे कोई विशेष उद्देश्य नहीं जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, यदि उससे 'मुतलक पानी' (शुद्ध जल) का नाम हट जाता है, तो यह निषेध पर एक उल्लंघन (नक़्ज़) होगा, जैसे गर्म पानी (अल-हमीम) संग्रह पर एक उल्लंघन था (1)। यह 'अल-फ़तह' (अ) में अधिक स्पष्ट हो जाता है, जहाँ प्रतिबंध (अत-तक़यीद) की परिभाषा के संबंध में कहा गया है कि इसके लिए एक अलग नाम उत्पन्न होता है। प्रतिबंध की आवश्यकता उसी में शामिल है। यह केवल तब होता है जब पानी अभिभूत (मगलूब) हो, क्योंकि उस समय पूरे पर नाम लागू करने में प्रभावी हिस्से को अनुपस्थित माना जाएगा, जो भाषा, प्रथा और शरीयत द्वारा स्थापित के विपरीत है (समाप्त)।

[मुख्य पाठ कॉलम 2 - उर्दू अनुवाद] पानी ऐसे हैं जिनके लिए प्रथा में कोई नया नाम निर्धारित नहीं किया गया है, क्योंकि उससे कोई उद्देश्य संबंधित नहीं है। उदाहरण के तौर पर, यदि उससे मुतलक पानी का नाम समाप्त हो जाएगा, तो यह निषेध पर एक उल्लंघन होगा, जैसे गर्म पानी संग्रह पर उल्लंघन होगा। और यह 'अल-फ़तह' पर अधिक स्पष्ट होगा क्योंकि उन्होंने प्रतिबंध के वर्णन में कहा है कि प्रतिबंध यह है कि उसका नया नाम पड़ जाए, और प्रतिबंध की अनिवार्यता इसी में शामिल है। यह तब होगा जब पानी मगलूब (अभिभूत) होगा क्योंकि उसके समुच्चय पर नाम लागू होने में उस समय प्रभावी को अनुपस्थित माना जाएगा, और यह भाषा, प्रथा और शरीयत द्वारा स्थापित के विपरीत है। (त)

[मैं कहता हूँ (अतुलु): (2)] इससे केवल यही सिद्ध होता है कि जब भी कोई नया नाम आता है, तो पानी मगलूब होता है। जहाँ तक इसके विपरीत का प्रश्न है, यह केवल सिद्ध है कि जब भी पानी मगलूब होगा, उस पर 'मुतलक पानी' का प्रयोग मान्य नहीं होगा; यह नहीं कि उसके लिए अनिवार्य रूप से कोई अलग नाम गढ़ा जाए। अतः प्रतिबंध को केवल नाम की उत्पत्ति तक सीमित रखना विचारणीय (मशले-नज़र) है। और अल्लाह (सर्वोच्च) ही बेहतर जानता है।

[लेखक की टिप्पणी - उर्दू अनुवाद] मैं कहता हूँ: इससे जो कुछ सिद्ध होता है वह यह है कि जब भी उसका नया नाम होगा, तो पानी मगलूब होगा। और इसके विपरीत में यह बात सिद्ध है कि जब भी पानी मगलूब होगा, उस पर मुतलक पानी का प्रयोग सही नहीं होगा। यह नहीं कि उसके लिए कोई

नया नाम गढ़ा जाएगा और यह अनिवार्य है। इसलिए, प्रतिबंध को नए नाम होने तक ही सीमित कर देना विचारणीय है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

[पाद-टिप्पणी खंड] (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) कमजोर सेवक की ओर से, अल्लाह तआला ने चाहा तो परिभाषाओं की सूची पूरी होने के बाद इसका शोध होगा: वह तब तक प्रतिबंधित नहीं होगा जब तक कि वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयुक्त न हो, तब उसका नाम वही होगा जो उस उद्देश्य का है। इस पर विचार करें। 12 [लेखक से], ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म)। नोट (अ): प्रतिबंध का नाम की नवीनता तक सीमित होना 'अल-फ़तह' में स्पष्ट रूप से वर्णित (मंतुक़) है और 'अल-हिदाया' से समझा जाता है (मफ़हूम)। 12 [लेखक से], ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म)।

[पाद-टिप्पणी का उर्दू अनुवाद] शोध के साथ पेश करेंगे, तो यह प्रतिबंधित नहीं होगा सिवाय इसके कि जब वह अन्य उद्देश्य के लिए उपयुक्त हो। उस समय इसका नाम वही होगा जो उसका उद्देश्य है। गौर करें। 12 [लेखक से], ईश्वर उन्हें क्षमा करे (त)। 'अल-फ़तह' में प्रतिबंध का नाम के नए होने में सीमित होना स्पष्ट रूप से वर्णित है, और 'हिदाया' से समझा जाता है। 12 [लेखक से], ईश्वर उन्हें क्षमा करे (त)।

पृष्ठ 663 / 711

[Main Text Column 1 - Arabic] المقیدة مالا یتجددله اسم فی العرف لعدم تعلق الغرض به مثلا انما یزول عنه اسم الماء المطلق کان ذلك نقضا علی المنع کما کان الحمیم نقضا علی الجمع (۱) ویکون هذا اظهر عه ورودا علی الفتح اذقال فیه فی بیان التقیید هو بان یحدث له اسم علیحدة ولزوم التقیید یندرج فیه وانما یکون ذلك اذا کان الماء مغلوبا اذ فی اطلاقه علی المجموع حینئذ اعتبار الغالب عدما وهو عکس الثابت لغة وعرفا وشرعا اهـ اقول: (۲) انما الثابت به انه کلما تجدد الاسم کان الماء مغلوبا اما فی جهت العکس فانما ثبت انه کلما کان الماء مغلوبا لم یصح اطلاق الماء المطلق علیه لا انه یحدث له اسم برأسه ولا بد فحصر التقیید فی حدوث الاسم محل نظر واللہ تعالی اعلم۔

[Main Text Column 2 - Urdu Translation] پانی ایسے ہیں جن کیلئے کوئی نیا نام عرف میں مقرر نہیں ہوا ہے، کیونکہ اس سے کوئی غرض متعلق نہیں، مثال کے طور پر، اس سے مطلق پانی کا نام زائل ہو گا تو یہ نقض ہو گا منع پر، جیسا کہ حمیم نقض ہو گا جمع پر اور یہ فتح پر ورود زیادہ ظاہر ہو گا کیونکہ انہوں نے بیان تقیید میں فرمایا، تقیید یہ ہے کہ اس کا نیا نام پڑ جائے، اور لزوم تقیید اسی میں شامل ہے، اور یہ اس وقت ہو گا جبکہ پانی مغلوب ہو کیونکہ اس کے مجموعہ پر اطلاق ہونے میں اس وقت غالب کا اعتبار ہو گا عدمی طور پر اور یہ لغت سے ثابت شدہ کا اور عرف و شرع سے ثابت شدہ کا برعکس ہے اھ(ت) میں کہتا ہوں اس سے جو کچھ ثابت ہوتا ہے وہ یہ ہے کہ جب بھی اس کا نیا نام ہو گا تو پانی مغلوب ہوگا، اور اس کے برعکس میں یہ چیز ثابت شدہ ہے کہ جب بھی پانی مغلوب ہو گا تو اس پر مطلق پانی کا اطلاق صحیح نہ ہو گا یہ نہیں کہ اس کے لئے کوئی نیا نام وضع کر لیا جائے گا، اور یہ ضروری ہے، تو تقیید کو نئے نام پڑ جانے میں منحصر کر دینا محل نظر ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

[Footnote section] (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) من العبد الضعیف تحقیقه ان شاء الله تعالی بعد تمام سرد التعریفات فلا یتقید الا اذا صلح المقصود اخر فح یسمی بأسم ما یقصد به ذلك المقصود تأمل ۱۲ منہ غفرلہ (م) عه فان حصر التقیید فی حدوث الاسم فی الفتح منطوق وعن الهدایة مفهوم ۱۲ منہ غفرلہ (م) تحقیق سے پیش کرینگے، تو یہ مقید نہ ہوگا مگر جبکہ مقصود آخر کیلئے صالح ہو، تو اس وقت اس کا نام وہی ہو گا جو اس کا مقصود ہے، غور کرو ۱۲ منہ غفرلہ (ت) فتح میں تقیید کا نام کے نئے ہونے میں منحصر ہونا منطوق ہے، اور ہدایہ سے مفہوم ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume Two

Sixth: Absolute water is that which, when a beholder sees it, calls it water; as stated in Khazanah al-Muftin from Sharh al-Tahawi:

The Absolute is that which, when a beholder looks at it, calls it water absolutely. (Arabic) | Absolute water is that which, when a beholder sees it, gives it the name of absolute water. (Urdu)

I say: (1) There are many types of water whose restriction (taqyid) or absolute nature (itlaq) cannot be perceived by sight, such as water mixed with a liquid of similar color. In such cases, the ruling depends on the predominance of taste or components. (2) Similarly, for water in which dates or raisins are placed, it depends on whether it has become 'nabidh' (a fermented drink) or not; mere color is not harmful. As for what is mixed with safflower or saffron, it depends on whether it is suitable for dyeing or not. None of these things can be perceived by the eye; therefore, defining it solely based on sight is not correct in terms of inclusivity or exclusivity. (T)

Seventh: Absolute water is that which can be called "water" without any added restriction; as stated in Fath al-Qadir:

The disagreement regarding water mixed with saffron and the like is based on whether it is restricted by that or not. Imam Shafi'i and others said it is restricted because it is called "saffron water." We do not deny that it is called so, but that does not prevent one, as long as the mixing substance is dominated, from saying "this is water" without addition. (Arabic) | The disagreement regarding water mixed with saffron and the like is based on whether it becomes restricted by that mixture or not. Imam Shafi'i and others stated that it becomes restricted because it is called "saffron water." We do not deny that it is called so, but this does not prevent one from saying "this is water" without any addition, as long as the mixing substance is overcome (dominated) by the water. (Urdu)

Note: The statement in 'Al-Binayah' regarding changes due to cooking points to this, because if an observer looks at it, they would not call it absolute water. [12th from him, may He be forgiven] (T)

1. Khazanah al-Muftin
2. Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is and is not permissible, Nuria Razvia Press, Sukkur 1/63

फतावा रज़विया जिल्द 2

छठा: मुतलक़ पानी वह है जिसे देखने वाला देखकर पानी कहे; खज़ानतुल मुफ़्तीन में शरह तहावी से है:

मुतलक़ वह है कि जब देखने वाला उसे देखे तो उसे मुतलक़ पानी का नाम दे। | मुतलक़ वह है कि जब देखने वाला उसको देखे तो उसको मुतलक़ पानी का नाम दे।

मैं कहता हूँ: (1) बहुत से पानी ऐसे हैं जिनका मुकय्यद (सीमित) होना या मुतलक़ (निरपेक्ष) होना दृष्टि से ज्ञात नहीं होता, जैसे वह पानी जो किसी समरंग तरल पदार्थ में मिला हो। ऐसी स्थिति में मामला स्वाद या अंशों की प्रधानता पर निर्भर करेगा। (2) और जिसमें खजूर या किशमिश डाली गई हो, उसमें फैसला उसके'नबीज़' (किण्वित पेय) बनने पर होगा; केवल रंग हानिकारक नहीं है। और जो कुसुंभ या केसर में मिलाया गया हो, उसमें यह देखा जाएगा कि क्या उससे कोई दूसरी चीज़ रंगी जा सकती है या नहीं। इनमें से कोई भी चीज़ आँख से नहीं पहचानी जा सकती, इसलिए समावेश या वर्जन के आधार पर यह सही नहीं है। (त)

सातवां: मुतलक़ वह है जिसे बिना किसी सीमा के पानी कह सकें फ़तहुल क़दीर में है:

केसर और उसके समान चीज़ों के मिले हुए पानी के बारे में मतभेद इस बात पर आधारित है कि वह उसके साथ मुकय्यद हुआ या नहीं। इमाम शाफई और अन्य कहते हैं कि वह मुकय्यद हो गया क्योंकि उसे केसर का पानी कहा जाता है। हम इसके इनकारी नहीं हैं कि उसे ऐसा कहा जाता है, लेकिन जब तक मिलने वाली चीज़ दबी रहे, तब तक यह कहने से नहीं रोकता कि यह बिना बढ़ोतरी के पानी है। | जिस पानी में केसर या इसी के समान कोई चीज़ मिल जाए, उसमें मतभेद इस बात पर आधारित है कि वह उसके साथ मुकय्यद हुआ या नहीं। इमाम शाफई और अन्य कहते हैं कि मुकय्यद हो गया क्योंकि उसे केसर का पानी कहा जाता है। हम इसके इनकारी नहीं कि उसे केसर का पानी कहा जाता है, लेकिन जब तक मिला हुआ पानी होने वाली चीज़ पानी से दबी रहे, यही कहा जाएगा कि यह पानी है, इसमें कुछ बढ़ोतरी नहीं। (त)

विशेष नोट: 'अल-बिनाया' का कथन इसी ओर संकेत करता है जो पकाने से बदल गया हो, क्योंकि यदि देखने वाला उसे देखे तो उसे मुतलक़ पानी नहीं कहेगा। [12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (त)

1. खज़ानतुल मुफ़्तीन
2. फ़तहुल क़दीर, वुज़ू के लिए जायज़ और नाजायज़ पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया प्रेस, सक्खर 1/63

पृष्ठ 664 / 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

ششم مطلق ۱ وہ ہے جسے دیکھنے والا دیکھ کر پانی کہے خزانہ المفتیین میں شرح طحاوی سے ہے :

المطلق ما اذا نظر الناظر الیه سماه ماء علی الاطلاق | مطلق وہ ہے کہ جب دیکھنے والا اس کو دیکھے تو اس کو مطلق پانی کا نام دے اھ

اه اقول : (۱) رب ماء لایدرك البصر تقییده ولا اطلاقه کالمخلوط بمائع موافق في اللون یتوقف الامر فیه علی غلبة الطعم او الاجزاء (۲) وما القی فیه تمر اوزبیب یتوقف علی صیرورته نبیذا اولا یضر مجرد اللون وما خلط بعصفر او زعفران یتوقف علی صلوحه للصبغ و شیئ من ذلك لا یدرك بالبصر فلا یصح جمعا ولا منعا۔ | میں کہتا ہوں بہت سے پانی ایسے ہیں کہ نگاہ سے نہ توان کا مقید ہونا معلوم ہوتا ہے اور نہ مطلق ہونا جیسے وہ پانی جو کسی سیال میں مخلوط ہو اور دونوں ہم رنگ ہوں، اس میں دار ومدار مزے اور اجزاء کے غلبہ پر ہوگا، اور جس میں کھجور اور منقی ڈالا جائے اس میں دارومدار اسی کے نبیذ ہونے پر ہوگا، محض رنگ مضر نہیں، اور جو عصفر اور زعفران میں ملایا جائے تو اس میں یہ دیکھا جائیگا کہ آیا اس سے کوئی دوسری چیز رنگی جا سکتی ہے یا نہیں، اور ان میں سے کوئی چیز آنکھ سے معلوم نہیں ہوسکتی، تو یہ جمع و منع کے اعتبار سے صحیح نہیں۔ (ت)

ہفتم مطلق وہ ہے جسے بے کسی قید کے بڑھائے پانی کہہ سکیں فتح القدیر میں ہے :

الخلاف في ماء خالطه زعفران ونحوه مبنی علی انه تقیید بذلك اولا فقال الشافعی وغیره تقید لانه یقال ماء الزعفران ونحن لاننکر انه یقال ذلك ولکن لا یمتنع مع ذلك مادام المخالط مغلوبا ان یقول القائل فیه

هذا ماء من غیر زیادة اھ۔ | جس پانی میں زعفران یا اسی کے مثل کوئی چیز مل جائے اس میں اختلاف اس امر پر مبنی ہے کہ وہ اس کے ساتھ مقید ہوا یا نہیں، امام شافعی وغیرہ فرماتے ہیں مقید ہو گیا، کیونکہ اس کو زعفران کا پانی کہا جاتا ہے اور ہم اس کے منکر نہیں کہ اس کو ماء زعفران کہا جاتا ہے، لیکن جب تک مخلوط پانی ہونے والی چیز پانی سے مغلوب ہو یہی کہا جائیگا کہ یہ پانی ہے، اس میں کچھ اضافہ نہیں اھ (ت)

عہ: ویشیر الیہ قول البنایۃ في ماتغیر بالطبخ لان الناظر لونظر الیہ لایسمیہ ماء مطلقا اھـ ۱۲ منہ غفرلہ (م) | بنایہ کا قول اسی کی طرف اشارہ کرتا ہے اس کے بارہ میں جو پکانے سے متغیر ہوجائے کیونکہ اگر دیکھنے والا اس کی طرف دیکھے تو اسے مطلق پانی نہیں کہے گا اھ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

۱ خزانہ المفتیین ۲ فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء و ما لا یجوز بہ مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳

Fatawa Razawiyyah, Volume 2

I say: Without a doubt, restricted water (ma-e-muqayyad) is a type of water, and applying the categorized (maqsam) to the category (qasam) is never prohibited. And what is the relation between the absence of restriction and the restriction of non-restriction? The discussion is about the former, not the latter. The answer is that it is water linguistically, not conventionally, because its negation is correct; you can say, "This is not water, but rather dye," and speech depends on convention. (T)

Eighth: Absolute water (Mutlaq) is that from which the status of water cannot be negated; meaning, it cannot be said that this is not water.

I say: These are the previous meanings; however, the correctness of application and the prohibition of negation may sometimes diverge in cases with two aspects, where predication (haml) is correct from one aspect and negation (salb) from another. (T)

It is stated in Tabyin al-Haqa'iq:

The addition to saffron is for identification, unlike "watermelon water" (ma' al-battikh). Therefore, the name water is negated from it, and its negation from the former is not permissible. (End quote). I say: If the negation of absolute water (ma' mutlaq) is intended, a circularity (dawr) would follow. Or if the essence of water (mutlaq-e-ma') is negated, then the negation of the whole from its part is absolutely impermissible. The liquid that comes out of a watermelon is not of the genus of water. So the truth is that it is not restricted water, but rather it is outside the category of absolute water, just like oil. And the answer remains the answer. (T)

---

1 Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Matba' al-Amiriyah, Bulaq, Egypt, 1/21

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

मैं कहता हूँ: निःसंदेह सीमित जल (मा-ए-मुक़य्यद), जल का ही एक प्रकार है, और संपूर्ण (मक़सम) का भाग (क़सम) पर आरोपण कभी वर्जित नहीं है। और अप्रतिबंध (अदम-ए-तक़्यीद) की तुलना प्रतिबंध-रहित प्रतिबंध (तक़्यीद-बअ़दम-ए-तक़्यीद) से कैसे हो सकती है? और चर्चा इसी के बारे में है, न कि उसके बारे में। और उत्तर यह है कि वह भाषाई रूप से जल है न कि व्यावहारिक रूप से, क्योंकि इसका खंडन सही है; आप कह सकते हैं, "यह जल नहीं है बल्कि रंग है," और कथन का आधार व्यवहार पर होता है। (त)

आठवाँ: पूर्ण जल (मुतलक़) वह है जिससे जल होने का खंडन न किया जा सके, अर्थात यह न कहा जा सके कि यह जल नहीं है।

मैं कहता हूँ: यह पिछले अर्थ ही हैं; हालांकि, लागू होने की सत्यता और खंडन की मनाही कभी-कभी अलग हो सकते हैं जब उसके दो पक्ष हों, जहाँ एक पक्ष से आरोपण और दूसरे पक्ष से खंडन सही हो। (त)

तबीन अल-हक़ाएक़ में उल्लेखित है:

ज़ाफ़रान के साथ जुड़ाव पहचान के लिए है, 'तरबूज के पानी' (मा' अल-बत्तीख) के विपरीत। इसलिए इससे जल का नाम हटा दिया जाता है, और पहले वाले से इसका खंडन जायज़ नहीं है। (समाप्त)। मैं कहता हूँ: यदि पूर्ण जल (मा-ए-मुतलक़) के खंडन का इरादा है, तो एक चक्र (दौर) अनिवार्य हो जाएगा। या यदि जल के सार (मुतलक़-ए-मा) का खंडन किया जाए, तो संपूर्ण का भाग से खंडन कतई जायज़ नहीं है। और वह तरल जो तरबूज से निकलता है, जल की श्रेणी (जिन्स) से नहीं है। तो सच यह है कि वह सीमित जल नहीं है, बल्कि पूर्ण जल की श्रेणी से बाहर है, जैसे तेल। और उत्तर वही उत्तर है। (त)

---

1 तबीन अल-हक़ाएक़, किताब अत-तहारत, मताब' अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/21

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

اقول: لاشك ان الماء المقيد قسم من الماء وحمل المقسم على القسم لا يمتنع ابدا واين عدم التقييد من التقييد بعدم التقييد والكلام فی هذا الا ذاك والجواب انه ماء لغة لا عرفاً لصحة النفی تقول ليس ماء بل صبغ والكلام فی العرف۔ میں کہتا ہوں: بلاشبہ مقید پانی ، پانی ہی کی ایک قسم ہے اور مقسم کو قسم پر حمل کرنا ہرگز ممنوع نہیں اور عدمِ تقید کو تقیید بعدمِ التقیید سے کیا نسبت؟ اور گفتگو اس میں ہے نہ کہ اُس میں۔ اور جواب یہ ہے کہ وہ لغتاً پانی ہے نہ کہ عرفاً ، کیونکہ نفی صحیح ہے، آپ کہہ سکتے ہیں یہ پانی نہیں ہے بلکہ رنگ ہے اور کلام کا دار ومدار عرف پر ہوتا ہے۔ (ت)

ہشتم: مطلق وہ ہے جس سے پانی کی نفی نہ ہوسکے یعنی نہ کہہ سکیں کہ یہ پانی نہیں۔

اقول: وهذا معنى سابقه غيران صحة الاطلاق وامتناع النفی قد يتفارقان فيما كان ذا جهتين يصح فيه الحمل من وجه والسلب من وجه آخر۔ میں کہتا ہوں: یہ گذشتہ معنی ہیں، البتہ صحتِ اطلاق اور امتناعِ نفی، جب دو جہت والے ہوں تو کبھی ایک دوسرے سے جُدا ہوتے ہیں من وجہ حمل اور من وجہ سلب صحیح ہوتا ہے۔ (ت)

تبیین الحقائق میں ہے:

اضافة الى الزعفران للتعريف بخلاف ماء البطيخ ولهذا ينفى اسم الماء عنه ولا يجوز نفيه عن الاول اھ اقول: ان اريد نفی الماء المطلق دار او مطلق الماء فلا يجوز نفی المقسم عن القسم قط والماء الذی يخرج من البطيخ ليس من جنس الماء فالحق انه ليس ماء مقيد ابل خارج من مطلقه كالا دهان والجواب الجواب۔ (ت) پانی کی اضافت زعفران کی طرف تعریف کیلئے ہے بخلاف "ماء البطیخ" کے اس لئے اس سے پانی کے نام کی نفی کی جاتی ہے اور پہلے سے اس کی نفی جائز نہیں۔ اھ میں کہتا

ہوں: اگر ماء مطلق کی نفی کا ارادہ کیا جائے تو دور لازم آئے گا یا مطلقِ ماء کی نفی کی جائے تو مقسم کی نفی قسم سے قطعاً جائز نہیں اور وہ پانی جو بطیخ سے نکلتا ہے جنسِ ماء سے نہیں ہے تو حق یہ ہے کہ وہ مقید پانی نہیں ہے بلکہ مطلق ماء سے خارج ہے جیسے تیل والجواب الجواب۔ (ت)

---

1 تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ مطبع الامیر یہ بولاق مصر ۱/ ۲۱

صفحہ 665 / 711

Fatawa-e-Razawiya Volume 2

Ninth: Absolute water is that from which the name 'water' is not removed,

[Arabic Column] This is the meaning of what preceded, and it has been pointed out in many books. Thus, in 'Al-Tabyin', the removal of the name 'water' from it is what is considered in this chapter (1) - End. And in 'Al-Hidayah' and 'Al-Kafi', except that it overcomes the water so it becomes like barley-water (Sawiq) due to the removal of the name 'water' from it (2) - End. In 'Al-Munyah', quoting Abu Nasr Al-Aqta's commentary on 'Al-Quduri', when a pure substance is mixed with water and the name 'water' is not removed from it, it is both pure (Tahir) and a purifier (Tahur) (3) - End. I say: This is true in itself, but it does not suffice as a definition. For if by 'water' absolute water is intended, a circular argument (Daur) would arise, otherwise, there would be no removal from restricted (Muqayyad) water at all, as you have learned with its answer. And he interpreted it in 'Al-Ghunyah' elsewhere as the 'sixth', saying under the author's statement 'when the name of water is not removed', his text says: 'in such a way that if a viewer sees it, they would call it water' (4) - End. I say: (1) You have already learned of its flaw, and at another time he added a 'fifth' to it, saying under the words of Al-Aqta 'and no other name is newly created for it, such as being called a drink (sharab)'.

[Urdu Column] These are its previous meanings, which have been pointed out in many books. In 'Tabyin', it is stated that the removal of the name 'water' is what is considered. End. And in 'Hidayah' and 'Kafi', it says unless it overcomes the water so it becomes like Sawiq (barley juice), because the name 'water' is removed from it. End. And in 'Munyah', quoting Abu Nasr Al-Aqta's commentary on 'Quduri', it is stated that when a pure substance is mixed with water and the name 'water' is not removed from it, it is both pure (Tahir) and a purifier (Tahur). End. (T) I say: This is true in itself, but this cannot be a definition because if absolute water is intended by water, a circular argument (Daur) will necessarily follow, otherwise, there will be no removal from restricted (Muqayyad) water either, as you have known along with the answer. And its interpretation in 'Ghunyah' was once made as 'sixth', because under the author's statement that 'when the name of water was not removed from it', they said that if a viewer sees it, they should call it water. End. (T) I say: You have already known its defect, and sometimes the 'fifth' was added to it because under Al-Aqta's statement, they said 'it has no new name'.

1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah Press, Egypt, 1/19
2. Al-Hidayah, Al-Ma al-ladhi yajuz bihi al-wudu, etc., Arabiyah Press, Karachi, 1/18
3. Munyat al-Musalli fi al-Miyah, Yusufi Press, Lucknow, p. 64
4. Ghunyat al-Mustamli fi al-Miyah, Suhail Academy, Lahore, p. 90

फ़तावा रिज़विया जिल्द दो

नवां: मुतलक वह जिससे पानी का नाम ज़ाइल न हो,

[अरबी कॉलम] यह इसके पिछले अर्थ हैं, और इसकी ओर कई किताबों में इशारा किया गया है। अतः 'अत-तबीन' में है कि इससे पानी का नाम ज़ाइल (समाप्त) होना ही इस बाब में मोतबर (मान्य) है (१) - समाप्त। और 'हिदाया' और 'काफी' में है: सिवाय इसके कि वह चीज़ पानी पर ग़ालिब (प्रभावी) हो जाए और वह सत्तू के पानी (सवीक) जैसा हो जाए, क्योंकि इससे पानी का नाम ज़ाइल हो गया (२) - समाप्त। 'अल-मुन्या' में अबू नस्र अकता की 'शरह कुदूरी' के हवाले से है कि जब पाक चीज़ पानी में मिल जाए और उससे पानी का नाम ज़ाइल न हो, तो वह ताहिर (शुद्ध) भी है और तहूर (शुद्ध करने वाला) भी है (३) - समाप्त। मैं कहता हूँ: यह अपने आप में सच है लेकिन यह परिभाषा नहीं बन सकती। क्योंकि अगर पानी से 'मुतलक पानी' (शुद्ध जल) मुराद लिया जाए तो 'दौर' (Circular reasoning) लाज़िम आएगा, वरना मुकैय्यद (सीमित) पानी से भी ज़वाल नहीं होगा जैसा कि आपने जवाब के साथ जाना। और इसकी तफ़सीर (व्याख्या) 'ग़ुनिया' में एक जगह "छठे" से की गई क्योंकि उन्होंने मातित (लेखक) के कथन "जब उससे पानी का नाम ज़ाइल न हुआ" के तहत फ़रमाया कि अगर देखने वाला उसे देखे तो उस पर पानी का नाम बोले (४) - समाप्त। मैं कहता हूँ: (१) इसकी खराबी आप जान चुके हैं, और एक बार इसमें पांचवां बिंदु जोड़ा गया क्योंकि उन्होंने अकता के कथन के तहत फ़रमाया कि उसका कोई नया नाम न पड़े जैसे कि उसे शराब (पेय पदार्थ) कहा जाए।

[उर्दू कॉलम] यह इसके पिछले अर्थ हैं, इसकी ओर बहुत सी किताबों में इशारा किया गया है। 'तबीन' में है कि इससे पानी का नाम ज़ाइल होना ही मोतबर है। समाप्त। और 'हिदाया' और 'काफी' में है मगर यह कि वह पानी पर ग़ालिब हो तो सत्तू की तरह हो जाए, क्योंकि इससे पानी का नाम ज़ाइल हो गया। समाप्त। और 'मुन्या' में अबू नस्र अकता की शरह कुदूरी से है कि जब पाक चीज़ पानी में मिल जाए और उससे पानी का नाम ज़ाइल न हो तो वह ताहिर भी है तहूर भी है। समाप्त। (त) मैं कहता हूँ यह फ़ी नफ़्सिही हक़ है लेकिन यह परिभाषा नहीं बन सकती है क्योंकि अगर पानी से मुतलक पानी का इरादा किया जाए तो 'दौर' लाज़िम आएगा वरना मुकैय्यद से भी ज़वाल न होगा जैसा कि आपने जवाब के साथ जाना, और इसकी तफ़सीर 'ग़ुनिया' में एक जगह "छठे" से की क्योंकि उन्होंने मातित के क़ौल कि जब उससे पानी का नाम ज़ाइल न हुआ, के तहत फ़रमाया कि अगर देखने वाला उसको देखे तो उस पर पानी का नाम बोले। समाप्त। (त) मैं कहता हूँ इसका फ़साद आपको मालूम हो चुका

है और कभी इसमें पांचवें को ज़्यादा किया क्योंकि उन्होंने अकता के क़ौल के तहत फ़रमाया इसका कोई नया नाम नहीं।

---

1. तबीन अल-हक़ाएक, किताबुल तहारत, मतबुआ अल-अमीरिया मिस्र १९/१
2. हिदायतुल मा अल-ज़ी यजूज़ बेही अल-वुज़ू इख़, मतबुआ अरबी कराची १८/१
3. मुनियतुल मुसल्ली फ़िल मियाह, मतबुआ युसूफ़ी लखनऊ पृ ६४
4. ग़ुनियतुल मुस्तमली फ़िल मियाह, सुहैल अकादमी लाहौर पृ ९०

पृष्ठ ६६६ / ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

نہم: مطلق وہ جس سے پانی کا نام زائل نہ ہو،

[عربی کالم] وهو معنى سابقه واشير اليه في كثير من الكتب ففى التبيين زوال اسم الماء عنه هو المعتبر في الباب 1 اه وفى الهداية والكافى الا ان يغلب ذلك على الماء فيصير كالسويق لزوال اسم الماء عنه 2 اه افى المنية عن شرح القدورى للاقطع اذا اختلط الطاهر بالماء ولم يزل اسم الماء عنه فهو طاهر وطهور 3 اهـ اقول: هذا حق فى نفسه لكن لا يصلح تعريفا اذلو اريد بالماء الماء المطلق دارو الافلا زوال عن المقيد ايضاً اصلا كما علمت مع جوابه وفسره في الغنية مرة بالسادس اذقال تحت قول المأتن اذالم يزل عنه اسم الماء مانصه بحيث لورأه الرائى يطلق عليه اسم الماء 4 اه اقول: (۱) وقد علمت فساده ومرة زاد فيه الخامس اذ قال تحت قول الاقطع ولم يتجددله اسم أخر بان سمى شرابا

[اردو کالم] یہ اس کے سابقہ معنے ہیں، اس کی طرف بہت سی کتب میں اشارہ کیا گیا ہے، تبیین میں ہے اس سے پانی کا نام زائل ہونا ہی معتبر ہے اہ اور ہدایہ اور کافی میں ہے مگر یہ کہ وہ پانی پر غالب ہو تو ستو کی طرح ہو جائے، کیونکہ اس سے پانی کا نام زائل ہو گیا اہ اور منیہ میں ابو نصر اقطع کی شرح قدوری سے ہے کہ جب پاک چیز پانی میں مل جائے اور اس سے پانی کا نام زائل نہ ہو تو وہ طاہر بھی ہے طہور بھی ہے اہ (ت) میں کہتا ہوں یہ فی نفسہ حق ہے لیکن یہ تعریف نہیں بن سکتا ہے کیونکہ اگر پانی سے مطلق پانی کا ارادہ کیا جائے تو دور لازم آئے گا ورنہ مقید سے بھی زوال نہ ہوگا جیسا کہ آپ نے مع جواب کے جانا، اور اس کی تفسیر غنیہ میں ایک جگہ "چھٹے" سے کی کیونکہ انہوں نے ماتن کے قول کہ جب اس سے پانی کا نام زائل نہ ہوا، کے تحت فرمایا کہ اگر دیکھنے والا اس کو دیکھے تو اس پر پانی کا نام بولے اہ (ت) میں کہتا

ہوں اس کا فساد آپ کو معلوم ہو چکا ہے اور کبھی اس میں پانچویں کو زیادہ کیا کیونکہ انہوں نے اقطع کے قول کے تحت فرمایا اس کا کوئی نیا نام نہیں

---

1 تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبوعۃ الامیریہ مصر ۱۹/۱ 2 ہدایۃ الما ء الذی یجوز بہ الوضو الخ مطبعہ عربیہ کراچی ۱۸/۱ 3 منیۃ المصلی فی المیاہ مطبعہ یوسفی لکھنؤ ص ۶۴ 4 غنیۃ المستملی فی المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰

Fatawa Razawiyya Volume Two

...or Nabidh (date water) or such things. (1) End. I say that (1) its conjunction is explanatory, and it depends on the proof that everything from which the name 'water' is removed, it is necessary to place another name in its place. Or if he intended addition, the meaning would be that the general application (itlaq) depends on the meeting of two absences. So, if one of them is found—for example, the name 'water' is removed and no other name is renewed, or a new name is given but the name 'water' is not removed—it would be restricted (muqayyad). And this second case is invalid, as in hot water. (T)

Doubt: Mutlaq (Absolute) is that which the mind turns to upon mentioning the name 'water,' provided no other name has been created for it. And that which the mind does not turn to from the word 'water' or it has a new name, is Muqayyad (Restricted). It is stated in Hilyah:

Regarding Absolute water, there are several expressions, the best of which is: Absolute water is that towards which people's understanding quickly turns upon the general mention of 'water' as long as it does not have a separate name. Restricted water is that towards which people's understanding does not quickly turn upon the general mention of 'water,' or that which has a separate name. (2) End.

I say: Firstly, this is better than the previous one regarding exclusion (aks), for it is not invalidated by prevention even if a restricted water is found for which no name has been newly created. (1) And it is more susceptible to objection in inclusion (tard), as it clearly stated that the quickness of understanding...

I say that this definition is better than the first one in terms of exclusivity (man'iyat), because it will not be subject to objection on such restricted water that has not been given a new name yet. In terms of inclusivity (jami'iyat), it is more objectionable than the first. If it gets a new name, then having the mind's priority towards it will not be useful. Secondly, regardless of this, this condition is redundant and misplaced because of this name...

1 Ghunyat al-Mustamli fi al-Miyah, Suhail Academy Lahore, p. 90 2 Hilyah

Page 667 of 711

फ़तावा रज़विया दूसरा खंड

...या नबीज़ (खजूर का पानी) या उसके जैसी चीज़ें। (1) समाप्त। मैं कहता हूँ कि (1) उसका संयोजन व्याख्यात्मक है, और यह इस बात के प्रमाण पर निर्भर है कि जिस चीज़ से 'पानी' का नाम हट जाए, उसके स्थान पर दूसरा नाम रखा जाना आवश्यक है। या यदि उसने वृद्धि का इरादा किया, तो अर्थ यह होगा कि सामान्य प्रयोग (इतलाक़) दो अभावों के मिलन पर निर्भर है। अत; यदि उनमें से कोई एक पाया जाता है—उदाहरण के लिए, 'पानी' का नाम हट जाए और कोई नया नाम न पड़े, या नया नाम पड़ जाए लेकिन 'पानी' का नाम न हटे—तो वह प्रतिबंधित (मुक़य्यद) होगा। और यह दूसरी स्थिति अमान्य है, जैसे गर्म पानी में। (त)

भ्रम: मुतलक़ (निरपेक्ष) वह है जिसकी ओर पानी का नाम लेने से मन त्वरित हो, बशर्ते कि उसका कोई और नाम पैदा न हुआ हो। और जिसकी ओर 'पानी' शब्द से मन त्वरित न हो या उसका कोई नया नाम हो, वह मुक़य्यद (प्रतिबंधित) है। 'हिलिया' में है:

निरपेक्ष पानी के संबंध में कई परिभाषाएँ हैं, जिनमें से सबसे उत्तम यह है कि: निरपेक्ष पानी वह है जिसकी ओर पानी के सामान्य उल्लेख पर लोगों की समझ तेजी से जाए जब तक कि उसका कोई अलग नाम न हो। प्रतिबंधित पानी वह है जिसकी ओर पानी शब्द के सामान्य उल्लेख से लोगों की समझ तेजी से न जाए, या जिसका कोई अलग नाम हो। (2) समाप्त।

मैं कहता हूँ: पहली बात यह कि यह परिभाषा पिछली परिभाषा से बहिष्करण (अक्स) के मामले में बेहतर है, क्योंकि यह रुकावट से बाधित नहीं होती भले ही कोई ऐसा प्रतिबंधित पानी मिले जिसका अभी कोई नया नाम न रखा गया हो। (1) और यह समावेश (तर्द) के मामले में अधिक आपत्तिजनक है, क्योंकि इसने स्पष्ट किया है कि समझ की गति...

मैं कहता हूँ कि यह परिभाषा विशिष्टता (मानियत) के मामले में पहली से बेहतर है क्योंकि इसमें ऐसे मुक़य्यद पानी पर कोई आपत्ति नहीं होगी जिसका अभी तक नया नाम नहीं रखा गया है। और व्यापकता (जामियत) के मामले में यह पहली से अधिक आपत्तिजनक है। यदि इसका नया नाम पड़ जाए, तो मनों का उसकी ओर पहले मुड़ना कुछ उपयोगी नहीं होगा। और दूसरी बात, इससे हटकर, यह शर्त फ़िज़ूल और बेमानी है क्योंकि इस नाम का...

1 ग़ुन्यतुल मुस्तमली फ़िल मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 90 2 हिलिया

فتاوی رضویہ جلد ثانی

او نبیذا او نحو ذلك 1 اھ اقول ان (1) عطفه تفسیر ا فموقوف علی ثبوت ان کل ما زال عنه اسم الماء وجب ان یوضع بازائه اسم اخر او ان اراد الزیادة کان المعنی ان الاطلاق یتوقف علی اجتماع العدمین فان وجد احد هما کأن زال عنه اسم الماء ولم یتجدد اسم اخر او تجدد اسم اخر ولم یزل اسم الماء کان مقیدا و هذا الثانی باطل کما فی الحمیم۔

پڑا مثلاً یہ کہ شربت یا نبیز وغیرہ کہا جائے اھ میں کہتا ہوں اس کا عطف تفسیری ہے اور اس امر پر موقوف ہے کہ ہر وہ چیز جس سے پانی کا نام زائل ہوا ہو لازم ہے کہ اُس کے بالمقابل کوئی اور نام وضع کیا جائے اور اگر زیادتی کا ارادہ کیا تو معنی یہ ہوں گے کہ اطلاق موقوف ہے دو عدموں کے اجتماع پر تو اگر ان میں سے کوئی ایک پایا جائے مثلاً یہ کہ اس سے پانی کا نام زائل ہو جائے اور اس کا کوئی نیا نام نہ پڑے یا نیا نام پڑ جائے مگر پانی کا نام زائل نہ ہو تو مقید ہو جائیگا اور یہ دوسری شق باطل ہے جیسا کہ گرم پانی میں۔ (ت)

وہم: مطلق وہ ہے کہ پانی کا نام لینے سے جس کی طرف ذہن سبقت کرے بشر طیکہ اُس کا کوئی اور نام نہ پیدا ہوا ہو اور جس کی طرف لفظ آب سے ذہن سبقت نہ کرے یا اس کا کوئی نیا نام ہو وہ مقید ہے حلیہ میں ہے:

الماء المطلق فیه عبارات من احسنها ما یتسارع افهام الناس الیه عند اطلاق الماء مالم یحدث له اسم علی حدة والماء المقید ما لا تتسارع الیه افهام الناس من اطلاق لفظ الماء او ما حدث له اسم علي حدة 2 اھ

مطلق پانی کے متعلق کئی عبارتیں ہیں، سب سے عمدہ یہ ہے کہ مطلق پانی وہ ہے کہ جب صرف پانی کہا جائے تو ذہن اُس کی طرف منتقل ہو جائیں، جب تک کہ اس کیلئے کوئی نیا نام نہ پڑے اور

مقید پانی وہ ہے کہ جب صرف پانی کا لفظ بولا جائے تو ذہن اس کی طرف نہ جائے یا وہ کہ جس کا کوئی نیا نام ہواھ (ت)

اقول: اولا ھذا اصلح من سابقہ فی العکس فانہ لا ینتقض منعاً وان وجد مقید لم یحدث لہ اسم (1) واقبل ایرادا منہ فی الطرد فانہ صرح بان تسارع الافھام

میں کہتا ہوں اولاً مانعیت کے اعتبار سے یہ تعریف پہلی سے بہتر ہے کیونکہ اس پر ایسے مقید پانی کا اعتراض نہ ہوگا جس کو ابھی نیا نام نہیں دیا گیا اور جامعیت کے اعتبار سے یہ پہلی سے زیادہ قابل اعتراض ہے اگر اس کا نیا نام پڑ جائے تو ذہنوں کا اس کی طرف سبقت رکھنا کچھ مفید نہ ہوگا، اور ثانیاً اس سے قطع نظر کرتے ہوئے یہ شرط فضول اور بے محل ہے کیونکہ اس نام کا

1 غنیۃ المستملی فی المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 2 حلیۃ

Fatawa Razawiyya - Volume Two

...it does not avail him that another name has arisen. Secondly, (1) regardless of that, there is no doubt that this condition is useless and has no place at all; for the occurrence of the name which is in the restricted [water] has no possibility of gathering with it, while minds hasten towards it upon absolute mention. (T)

Eleventh: Absolute [water] is that towards which the mind precedes upon the name of water, and it contains no impurity nor any matter that prevents the validity of prayer. These restrictions were added in 'Al-Bahr' [al-Ra'iq] to exclude impure and used (musta'mal) water.

[Arabic Section]: I say: If he had sufficed with the latter, it would have been enough. His text is: Absolute is what precedes to the understandings by our absolute saying 'water', and no filth or meaning preventing the permissibility of prayer exists in it. He said: Thus, restricted, impure, and used water are excluded. (1) end. I say: (1) Are used water and its brother included in what the mind precedes to upon the absolute mention of water or not? On the second [alternative], the two restrictions are lost and the sub-branching of their exclusion upon the addition of the two restrictions fails. On the first [alternative], (2) there is no doubt that they are of the absolute water, for we mean by absolute nothing but this, and the Imams before him restricted themselves to this; rather (3) it is he himself after that by a page where he said: We mean by absolute nothing but what occurs immediately to the mind upon the absolute mention of the name of water. (2) end. And this...

[Urdu Section]: I say: If he had sufficed with the latter, it would have been enough. His text is that absolute is that towards which minds are transferred upon the absolute mention of water, and it is that water in which there is no impurity and no such attribute that is contrary to the permissibility of prayer. Thus, from this restriction, restricted, impure, and used water are excluded. End. (T) I say: Are used water and its like included in those waters towards which the mind is immediately transferred upon the mention of the word 'water' or not? In the second case, both restrictions would be useless, and the detailed explanation of their exclusion based on the addition of the two restrictions would fall away. In the first case, there is no doubt that both are among the absolute waters, because by 'absolute' this is precisely what is meant, and the Imams before them sufficed with this.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/26.

2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/28.

फ़तावा रज़विया - भाग दो

...उसे कोई लाभ नहीं होता कि दूसरा नाम पैदा हो गया है। दूसरे, (१) इसे नज़रअंदाज़ करते हुए भी, इसमें कोई संदेह नहीं कि यह शर्त व्यर्थ है और इसका कोई स्थान नहीं है; क्योंकि उस नाम का होना जो प्रतिबंधित (मुक़य्यद) में है, उसका साथ होना संभव नहीं है, जबकि सामान्य तौर पर बोले जाने पर मन तुरंत उसकी ओर जाता है। (त)

ग्यारहवाँ: मुतलक़ (शुद्ध/पूर्ण) जल वह है जिसकी ओर 'जल' नाम सुनकर मन सबसे पहले जाए और उसमें न तो कोई अशुद्धि हो और न ही कोई ऐसी चीज़ हो जो नमाज़ की अनुमति में बाधा डाले। 'अल-बहर' [अल-रायिक] में ये शर्तें इसलिए जोड़ी गईं ताकि अशुद्ध और उपयोग किए हुए (मुस्तअमल) जल को बाहर रखा जा सके।

[अरबी खंड]: मैं कहता हूँ: अगर वह अंत वाले पर ही पर्याप्त करते तो काफ़ी होता। उनका पाठ है: मुतलक़ वह है जो हमारे सामान्य रूप से 'जल' कहने पर समझ में आता है, और उसमें कोई गंदगी या ऐसा अर्थ न हो जो नमाज़ की अनुमति को रोकता हो। उन्होंने कहा: अतः प्रतिबंधित, अशुद्ध और उपयोग किया हुआ जल बाहर हो गया। (१) समाप्त। मैं कहता हूँ: (१) क्या उपयोग किया हुआ जल और उसके जैसा जल उस जल में शामिल हैं जिसकी ओर 'जल' शब्द बोलते ही मन तुरंत चला जाता है या नहीं? दूसरी स्थिति में, दोनों शर्तें व्यर्थ हो जाएंगी और इन दोनों के बाहर होने की शाखा दो शर्तों की वृद्धि पर गिर जाएगी। और पहली स्थिति में, (२) इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे दोनों मुतलक़ जल में से हैं, क्योंकि मुतलक़ से हमारा तात्पर्य इसके अलावा कुछ नहीं है, और उनसे पहले के इमामों ने इसी पर पर्याप्त किया; बल्कि (३) वह स्वयं इसके एक पृष्ठ बाद कहते हैं: मुतलक़ से हमारा अर्थ केवल वही है जो जल के नाम के सामान्य उपयोग पर मन में तुरंत आता है। (२) समाप्त। और यह...

[उर्दू खंड]: मैं कहता हूँ अगर वह अंत वाले पर ही पर्याप्त करते तो काफ़ी होता और उनका पाठ यह है कि मुतलक़ वह है जिसकी ओर सामान्य रूप से 'जल' बोलने से मन चला जाता है, और यह वह पानी है जिसमें कोई अशुद्धि न हो और न ही कोई ऐसा गुण हो जो नमाज़ की अनुमति के विपरीत हो। अतः इस शर्त से प्रतिबंधित, अशुद्ध और उपयोग किया हुआ जल बाहर हो गया। (त) मैं कहता हूँ क्या उपयोग किया हुआ जल और उसके जैसा जल उस जल में शामिल हैं जिसकी ओर 'जल' शब्द बोलते ही मन तुरंत चला जाता है या नहीं? दूसरी स्थिति में, दोनों शर्तें व्यर्थ हो जाएंगी, और दो शर्तों की वृद्धि पर उन दोनों के बाहर होने की व्याख्या गिर जाएगी। और पहली स्थिति में, इसमें कोई संदेह नहीं है

कि ये दोनों मुतलक़ जल में से हैं क्योंकि मुतलक़ से यही तात्पर्य है और उनसे पहले के इमामों ने इसी पर पर्याप्त किया।

1. अल-बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/२६।
2. अल-बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/२८।

فتاوی رضویہ جلد ثانی

الیہ لا یجدی عنہ حدوث اسم آخر و ثانیا (۱) مع قطع نظر عنہ لا شک ان ھذا الشرط ضائع لا محل لہ اصلاً فان حدوث الاسم الذی یکون فی المقید لا مکان لاجتماعہ مع تسارع الافھام الیہ عند الاطلاق۔ پیدا ہونا جو مقید میں ہے اُس کا، اُس کے ساتھ مجتمع ہونے کا کوئی امکان نہیں، حالانکہ اذہان اُس کی طرف عند الاطلاق سبقت کرتے ہیں۔ (ت)

یاز دہم مطلق وہ ہے جس کی طرف نامِ آب سے ذہن سبقت کرے اور اس میں نہ کوئی نجاست ہو اور نہ کوئی بات مانعِ جوازِ نماز یہ قیدیں بحر میں اضافہ کیں تاکہ آب نجس و مستعمل کو خارج کر دیں۔

اقول: ولو اکتفی بالآخر لکفی ونصہ المطلق مایسبق الی الافھام بمطلق قولنا ماء ولم یقم بہ خبث ولا معنی یمنع جواز الصلاۃ قال فخرج الماء المقید والمتنجس والمستعمل ۱ اھ میں کہتا ہوں اگر وہ آخر پر اکتفا کرتے تو کافی ہوتا اور اُس کی عبارت یہ ہے کہ مطلق وہ ہے جس کی طرف اذہان مطلق ماء کے بولنے سے منتقل ہو جاتے ہیں، اور یہ وہ پانی ہے جس میں کوئی ناپاکی نہ ہو اور نہ ایسا کوئی وصف ہو جو جواز صلوۃ کے منافی ہو تو اس قید سے مقید، متنجس اور مستعمل پانی خارج ہو گیا اھ (ت)

اقول: (۱) ھل المستعمل واخوہ داخلان فیما یسبق الیہ الذھن باطلاق الماء ام لا علی الثانی ضاع القیدان وسقط تفریع خروجھما علی زیادۃ القیدین وعلی الاول (۲) لا شک انھما من الماء المطلق اذ لا نعنی بالمطلق الا ھذا وعلیہ اقتصر الائمۃ قبلہ بل (۳) ھو نفسہ فیما بعد ذلک بورقۃ اذ قال لا نعنی بالمطلق الا مایتبادر عند اطلاق اسم الماء ۲ اھ وھذا میں کہتا ہوں کیا مستعمل اور اس کا مثل پانی اُس پانی

میں داخل ہیں جن کی طرف لفظ ماء بولتے ہی ذہن فوری طور پر منتقل ہو جاتا ہے یا نہیں، دوسری صورت میں دونوں قیدیں ضائع ہو جائیں گی، اور دو قیدوں کی زیادتی پر ان دونوں کے خروج کی تفریح ساقط ہو جائے گی، اور بر تقدیر اول اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ دونوں مطلق پانی سے ہیں کیونکہ مطلق سے یہی مراد ہے اور اُن سے قبل ائمہ نے اسی پر اکتفا کیا

۱ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۶/۱ ۲ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۱

Fatawa Razawiya, Volume Two

Rather, he himself said one page later: our intention by 'absolute' (mutlaq) is that water which, when the word 'water' is spoken, the mind immediately turns towards it. This is a contradiction; in fact, there is a blend of this in the very speech. He says that restricted (muqayyad), impure (mutannajis), and used (musta'mal) water are excluded from it. Therefore, 'Sh' [commentator] said: its apparent meaning is that impure and used water are not restricted, whereas they are from the restricted category. However, this is according to the one who knows about the impurity or usage. This is why some scholars added the restriction of 'relative to the one who knows its condition' (بالنسبة للعالم بحاله) in the immediate understanding (tabadur). (T)

I say (2): May Allah have mercy on you! When this thing is so hidden that only the one who knows the state can know it, or it can be understood through external information, then it becomes clear that the water in both [cases] remains upon its pure watery state. Nothing has happened to it that would take it out of being water; otherwise, it would be apparent to every observer, because a human does not need external teaching to know about water. So how could it be restricted? In short, this is something in which 'Bahr' is unique; I have not seen it in anyone else's speech...

- [Footnote] 1: Meaning the mentioned or each of them. 12 [source] may he be forgiven. (M)
- [Footnote] 2: Then I saw that Sayyid Sharif, the great scholar (may Allah have mercy on him), preceded him in 'At-Ta'rifat' as will come. 12 [source] may he be forgiven. (T)
- [Footnote] 3: And similarly his student, Shaykh al-Islam al-Ghazzi, mentioned it in 'Al-Minah' and it was affirmed by 'Ta', so they became seven (continued on the next page).
- Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/134. Page 669 of 711

फ़तावा रज़विया, दूसरा खंड

बल्कि उन्होंने खुद ही एक पन्ने बाद कहा: हमारा 'मुतलक़' (पूर्ण) से तात्पर्य वह पानी है कि जब 'पानी' शब्द बोला जाए, तो दिमाग तुरंत उसी की ओर जाए। यह एक अंतर्विरोध है; वास्तव में, स्वयं कथन में ही इसका समावेश है। वह कहते हैं कि प्रतिबंधित (मुक़य्यद), अशुद्ध (मुतन्नजिस) और उपयोग किया हुआ (मुस्तअमल) पानी इससे बाहर हैं। इसलिए, 'श' [व्याख्याकार] ने कहा: इसका प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि अशुद्ध और उपयोग किया हुआ पानी प्रतिबंधित नहीं है, जबकि वे प्रतिबंधित श्रेणी से हैं। हालाँकि, यह उस व्यक्ति के अनुसार है जिसे अशुद्धता या उपयोग का ज्ञान हो। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने तत्काल समझ (तबादुर) में 'उसकी स्थिति जानने वाले के सापेक्ष' (بالنسبة للعالم بحاله) का प्रतिबंध जोड़ा है। (त)

मैं कहता हूँ (२): अल्लाह आप पर रहम करे! जब यह चीज़ इतनी छिपी हुई है कि केवल स्थिति से अवगत व्यक्ति ही इसे जान सकता है, या बाहरी सूचना के माध्यम से इसे समझा जा सकता है, तो यह स्पष्ट हो गया कि उन दोनों में पानी अपनी शुद्ध जलीय अवस्था पर बना हुआ है। उसके साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ जो उसे पानी होने से बाहर कर दे; अन्यथा, यह हर देखने वाले को स्पष्ट हो जाता, क्योंकि पानी के बारे में जानने के लिए मनुष्य को बाहरी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती। तो यह प्रतिबंधित कैसे होगा? संक्षेप में, यह एक ऐसी चीज़ है जिसमें 'बहर' अकेले हैं; मैंने किसी और के कथन में इसे नहीं देखा...

- [पादलेख] १: अर्थात उल्लेखित या उनमें से प्रत्येक। १२ [स्रोत] अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)
- [पादलेख] २: फिर मैंने देखा कि सैयद शरीफ़, महान विद्वान (अल्लाह उन पर रहम करे), 'अत-तारीफ़ात' में उनसे पहले यह लिख चुके हैं, जैसा कि आगे आएगा। १२ [स्रोत] अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)
- [पादलेख] ३: और इसी तरह उनके छात्र, शेख-उल-इस्लाम अल-ग़ज़्ज़ी ने 'अल-मिनह' में इसका उल्लेख किया और 'ता' ने इसकी पुष्टि की, तो ये सात हो गए (अगले पृष्ठ पर जारी)।
- रद-उल-मुहतार, जल अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, १/१३४। पृष्ठ ६६९/७११

بلکہ انہوں نے خود ہی ایک ورق بعد فرمایا: ہماری مراد مطلق سے وہ پانی ہے کہ جب پانی کا لفظ بولا جائے تو اسی کی طرف ذہن متبادر ہو اور یہ مناقضہ ہے بلکہ نفس کلام میں اس کی ملاوٹ ہے، وہ فرماتے ہیں تو مقید، متنجس اور مستعمل اس سے نکل گئے اور اس لئے "ش" نے فرمایا کہ اس کا ظاہر یہ ہے کہ متنجس اور مستعمل غیر مقید ہے حالانکہ یہ مقید سے ہے، مگر اس کے نزدیک جس کو نجاست یا استعمال کا علم ہو، اس لئے بعض علماء نے متبادر میں بالنسبۃ للعالم بحالہ کی قید بڑھائی ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں (۲): رحمك الله، جب یہ چیز ایسی مخفی ہے کہ صرف واقف حال ہی جان سکتا ہے یا خارج سے اطلاع پر معمول ہو سکتی ہے تو یہ ظاہر ہوا کہ پانی اُن دونوں میں اپنے اطلاق پر باقی ہے اس کو کوئی ایسی چیز عارض نہ ہوئی جو اُس کو پانی ہونے سے خارج کر دے ورنہ ہر صاحب نظر کو ظاہر ہو جاتا، کیونکہ پانی کے بارے میں جاننے کیلئے انسان کو باہر سے جاننے کی ضرورت نہیں، تو یہ کیسے مقید ہوگا؟ خلاصہ یہ کہ یہ ایسی چیز ہے جس میں بحر منفرد ہیں میں نے اور کسی کے کلام میں اس کو...

- عہ۱: یعنی مذکور یا ان دونوں میں سے ہر ایک ۱۲ منہ غفر لہ۔ (ت)
- عہ۲: پھر میں نے دیکھا کہ سید شریف نے التعریفات میں بھی یہی لکھا ہے، جیسا کہ آئے گا، ۱۲ منہ غفر لہ (ت)
- عہ۳: اور اسی طرح اُن کے شاگرد شیخ الاسلام غزی نے منح میں ذکر کیا اور اس کو ط نے برقرار رکھا تو یہ سات (باقی بر صفحہ آئندہ)

۱۔ ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳٤ صفحہ 669 از 711

...and Al-Khadimi, and that was when [the author of] Al-Durar mentioned the cessation of its absolute status, either through complete intermingling or through the dominance of the intermingled substance. | [Shamsuddin Shami] did not see it, nor did he follow them. Similarly, the commentators of Al-Durar, Abdul Halim and Al-Khadimi, did the same. The author of Al-Durar says regarding the cessation of its absolute status:

(Remainder of the footnote from the previous page) ...they became; Sayyid, Bahr, Ghazzi, Abdul Halim, Khadimi, 'Ta' [At-Tahtawi] and 'Sha' [Ash-Shami], may Allah Almighty have mercy on them and on us all. Allama 'Ta' said regarding the statement in Al-Durar: "It is what comes to mind immediately upon absolute mention, i.e., understanding precedes towards the mind upon merely hearing it absolutely." This is in accordance with the statement in 'Al-Minh': "It is that which remains upon its natural qualities, no impurity has mixed with it, and nothing else has overcome it." And the words of 'Sayyid' in 'At-Ta'rifat' are: "It is the water that remains upon its original creation, no impurity has mixed with it, and no pure thing has overcome it." End quote.

I say: This is better than the phrasing of 'Al-Minh' in two ways. First, he restricted the 'thing' with 'pure', so his statement "no impurity has mixed with it" would not be redundant, unlike the phrasing of 'Al-Minh'. This is because if impurity is mixed in, then undoubtedly something has overcome it. Second, he used 'originality' instead of 'qualities', so the objection regarding freezing would not apply to him, unlike 'Al-Minh'. For water, by freezing, does not change its color, taste, or smell, and these are what immediately come to mind from the mention of 'qualities'. What is considered in a definition is what is immediately understood. And it is apparent that no impure substance... (Continued on the next page).

फ़तावा रज़विया | जिल्द सानी (दूसरा भाग)

...और अल-खादिमी, और यह उस समय की बात है जब अल-दुरर [के लेखक] ने इसके निरपेक्षता (absolute nature) के अंत को या तो पूर्ण मिश्रण के कारण या मिश्रित वस्तु की प्रबलता के कारण बताया था। | [शम्सुद्दीन शामी] ने इसे नहीं देखा और न ही उनका अनुसरण किया। इसी तरह दुरर के टीकाकारों, अब्दुल हलीम और खादिमी ने भी ऐसा ही किया। दुरर के लेखक इसके निरपेक्षता के अंत के बारे में कहते हैं:

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) ...हो गए; सैय्यद, बहर, ग़ज़्ज़ी, अब्दुल हलीम, खादिमी, 'ता' [अत-तहावी] और 'शा' [अश-शामी] (अल्लाह उन पर और हम सब पर अपनी दया करे)। अल्लामा 'ता' ने दुरर के कथन पर कहा: "निरपेक्ष उल्लेख पर वही बात तुरंत दिमाग में आती है, यानी केवल सुनने मात्र से समझ दिमाग की ओर दौड़ती है।" यह 'अल-मिन्हा' के कथन के अनुरूप है: "यह वही है जो अपने प्राकृतिक गुणों पर बना हुआ है, इसमें कोई अशुद्धि नहीं मिली है और इस पर कोई चीज़ हावी नहीं हुई है।" और 'सैय्यद' के शब्द 'अत-तारीफ़ात' में ये हैं: "यह वह पानी है जो अपनी मूल स्थिति पर बना हुआ है, इसमें कोई अशुद्धि नहीं मिली है और इस पर कोई शुद्ध चीज़ हावी नहीं हुई है।" (समाप्त)

मैं कहता हूँ: यह दो कारणों से 'मिन्हा' के शब्दों से बेहतर है। पहला यह कि उन्होंने 'वस्तु' को 'शुद्ध' (ताहिर) के साथ सीमित किया, इसलिए उनका यह कहना कि "इसमें अशुद्धि नहीं मिली" निरर्थक नहीं होगा, जबकि 'मिन्हा' के शब्दों में ऐसा हो सकता है। क्योंकि जिसमें अशुद्धि मिली, उसमें निःसंदेह कोई चीज़ हावी हो गई। दूसरा यह कि उन्होंने 'गुणों' के स्थान पर 'मूल' (असल) शब्द का प्रयोग किया, इसलिए उन पर जमने (बर्फ बनने) के कारण कोई आपत्ति नहीं आएगी, जबकि 'मिन्हा' पर आती है। क्योंकि पानी जमने से न तो अपना रंग बदलता है और न ही स्वाद और गंध, और 'गुणों' के उल्लेख से यही बातें दिमाग में आती हैं। और परिभाषा में वही मान्य होता है जो तुरंत समझ में आए। और स्पष्ट है कि कोई अशुद्ध... (शेष अगले पृष्ठ पर)।

पृष्ठ ७११ में से ६७०

والخادمی وذلك حین قول الدرر زوال اطلاقه اما بکمال الامتزاج او بغلبة الممتزج | نہیں دیکھا اور انکی متابعت ش نے کی اسی طرح درر کے محشی عبدالحلیم اور خادمی نے کی، صاحبِ درر فرماتے ہیں اس کے اطلاق کا زوال

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ہو گئے، سید، بحر، غزی، عبدالحلیم، خادمی، ط اور ش رحمہم اللہ تعالیٰ علیہم وعلینا اجمعین، علامہ 'ط' نے درر کے قول پر فرمایا، وہ عند الاطلاق متبادر ہوتا ہے، یعنی ذہن کی طرف فہم سبقت کرتا ہے محض سننے سے مطلقا، اور یہ منح کے قول "وہی باقی ہے اپنے خلقی اوصاف پر اور اس میں کوئی نجاست نہیں ملی ہے اور اس پر کوئی شے غالب نہیں ہوئی ہے" کے مطابق ہے، اور سید کے لفظ التعریفات میں یہ ہیں یہ وہی پانی ہے جو اپنی اصلی خلقت پر باقی ہے اور اس کو کوئی نجاست نہیں ملی ہے اور اس پر کوئی پاک شے غالب نہیں ہوئی ہے اھ

اقول: وھو احسن مبانی المنح بوجھین احدھما (۱) انه قید الشیئ بالطاھر فلم یصرح قوله لم تخالطه نجاسة مستدرکا بخلاف عبارة المنح فان ماخالطه نجاسة فقد غلبه شیئ والأخر انه (۲) اتی بالاصل مکان الاوصاف فلا یرد علیه (۳) الجمد بخلاف المنح فان الماء بانجماده لا یتغیر اللون ولا طعم ولا رائحة وھی المتبادرة من ذکر الاوصاف والمعتبر فی التعریف ھو المتبادر وظاھرانه لم یخالطه نجس ولا میں کہتا ہوں یہ منح کی عبارت سے دو طرح اچھا ہے ایک تو یہ کہ انہوں نے شیئ کو طاہر سے مقید کیا تو ان کا قول "نہیں ملی اس سے نجاست" زائد نہ ہوگا بخلاف عبارت منح کے، کیونکہ جس میں نجاست ملی تو بلا شبہ اس پر کوئی چیز غالب ہو گئی، اور دوسرے یہ کہ وہ اصل کو لائے بجائے اوصاف کے تو ان پر جمد کے ذریعہ اعتراض وارد نہ ہوگا، بخلاف منح کے کہ پانی

منجمد ہونے کے باعث نہ تو رنگ کو بدلتا ہے اور نہ مزے اور بو کو اور اوصاف کے ذکر سے متبادر یہی ہے اور تعریف میں متبادر ہی معتبر ہوتا ہے اور ظاہر ہے کہ کوئی نجس (باقی اگلے صفحہ پر)

Fatawa Razawiyya Volume II

[Arabic Column] They said against this: restricting to the used water is necessary. First, the author's words are about its removal by the mixing of something tangible. (1) I say: How? (1) when he mentioned what is distilled from plants. And second, the division is into pure water, and used water is like impure water, so there is no dust (difficulty). (2) I say: (2) You have known that the words of the Imams suggest the inclusion of the 'mutanajjis' (contaminated water) in the 'mutlaq' (absolute water), let alone the used water. Similarly, the words of the scholars of rules before Al-Bahr, as they did not remove the 'itlaq' (absoluteness) except by two matters. Then I saw in the words of Malik al-Ulama (King of Scholars) what clearly indicates this, as he (may his secret be sanctified) said: 'As for the conditions of the pillars of Wudu, among them is that Wudu be with water, and among them is that it be with absolute water, and among them is that the water be...'

[Urdu Column] Either it will be through complete blending or through the predominance of the blended substance. Both of them objected to this, saying that the restriction of objection was made with used water. The first one replied that the author's speech is about its cessation due to the mixing of some perceptible thing. (T) I say: How is this so? Although they mentioned water distilled from grass. And the second one's reply is that the divided entity is pure water and used water is like impure water, so there is no dust (problem) on it. (T) I say: It appears from the speech of the Imams that the impure water is included in 'absolute water,' let alone the used water. Similarly, the speech of the experts of rules before 'Al-Bahr' (a book title), because according to them, the removal of 'absolute' status is by only two matters. Then I found clarity in the speech of Malik al-Ulama (King of Scholars); he says: 'In any case, the pillars and conditions of Wudu, one of them is that Wudu should be with water, and another is that it should be with absolute water, and that the water is pure; so with impure water it is not permissible, one is that...'

(Continuation of footnote from previous page) [Arabic part]: ...predominance of something, unless the qualities are generalized to include thinness and fluidity. And if the Sayyid had dropped his saying 'impurity has not mixed with it,' it would not have mixed with it any unpleasantness, and it would have been among the best definitions, except for what is in the meaning of 'predominance' of hiddenness, as is not hidden. 12 from him, may he be forgiven. (M)

[Urdu part]: ...nothing mixed with it and no thing predominated over it. Yes, if the qualities are generalized and 'thinness' and 'fluidity' are included in it. And if the Sayyid had omitted his statement 'impurity did not mix with it,' there would have been no objection to them, and it would have been the best definition. Yes, there is some ambiguity in the meaning of 'predominance,' as is not hidden. 12 from him, may he be forgiven. (T)

[Footnotes] 1. Footnote of Al-Durar on Al-Ghurar by Abd al-Halim, Discussion on Water, Maktaba Uthmaniyya Beirut 1/18. 2. The Footnote on Al-Durar, commentary on Al-Ghurar by Abi Sa'id al-Khadimi, Discussion on Water, Maktaba Uthmaniyya Beirut, p. 21.

फ़तावा रज़विया जिल्द द्वितीय

[अरबी कॉलम] उन्होंने इसके विरुद्ध कहा: प्रयुक्त जल तक सीमित रखना आवश्यक है। पहला यह कि लेखक का कथन किसी इंद्रियगोचर वस्तु के मिलने से इसके समाप्त होने के बारे में है। (1) मैं कहता हूँ: कैसे? (1) जबकि उन्होंने पौधों से निकाले गए जल का उल्लेख किया है। और दूसरा यह कि विभाजन शुद्ध जल में है, और प्रयुक्त जल अशुद्ध जल की तरह है, इसलिए इस पर कोई धूल (कठिनाई) नहीं है। (2) मैं कहता हूँ: (2) आपको ज्ञात हो गया है कि इमामों के शब्दों से 'मुतनज्जिस' (दूषित जल) का 'मुतलक' (निरपेक्ष जल) में शामिल होना प्रतीत होता है, प्रयुक्त जल की तो बात ही क्या। इसी प्रकार अल-बह्र से पहले नियम विशेषज्ञों का कथन है, क्योंकि उनके अनुसार 'इतलाक़' (निरपेक्षता) केवल दो कारणों से समाप्त होती है। फिर मैंने मलिक अल-उलेमा (विद्वानों के राजा) के शब्दों में इसे स्पष्ट रूप से पाया, उन्होंने (उनकी पवित्रता बनी रहे) कहा: 'जहाँ तक वज़ू के स्तंभों की शर्तों का प्रश्न है, उनमें से एक यह है कि वज़ू पानी से हो, और उनमें से एक यह है कि वह मुतलक (निरपेक्ष) पानी से हो, और उनमें से एक यह है कि पानी...'

[उर्दू कॉलम] या तो पूर्ण सम्मिश्रण से होगा या मिश्रित पदार्थ की प्रबलता से होगा, इस पर उन दोनों ने आपत्ति की है कि आपत्ति का प्रतिबंध प्रयुक्त पानी के साथ किया गया है। पहले ने उत्तर दिया कि लेखक का कथन किसी इंद्रियगोचर वस्तु के सम्मिश्रण के कारण इसके समाप्त होने के बारे में है। (त) मैं कहता हूँ: यह कैसे हो सकता है? जबकि उन्होंने घास से निकाले गए जल का उल्लेख किया है। और दूसरे का उत्तर यह है कि विभाजित इकाई शुद्ध जल है और प्रयुक्त पानी अशुद्ध पानी की तरह है, तो इस पर कोई धूल (समस्या) नहीं है। (त) मैं कहता हूँ: इमामों के वचनों से प्रकट होता है कि अशुद्ध पानी 'मुतलक पानी' में शामिल है, प्रयुक्त पानी की तो बात ही क्या। इसी प्रकार 'अल-बह्र' (एक पुस्तक का नाम) से पहले नियम विशेषज्ञों का कथन है, क्योंकि उनके अनुसार 'मुतलक' स्थिति का समाप्त होना केवल दो कारणों से है। फिर मैंने मलिक अल-उलेमा के शब्दों में स्पष्टता पाई; वे कहते हैं: 'बहरहाल वज़ू के स्तंभ और शर्तें, उनमें से एक यह है कि वज़ू पानी से होना चाहिए, और दूसरा यह कि यह मुतलक पानी से होना चाहिए, और यह कि पानी शुद्ध हो; तो अशुद्ध पानी से यह जायज़ नहीं है, एक यह कि...'

(पिछले पृष्ठ की पाद टिप्पणी का शेष भाग) [अरबी भाग]: ...किसी चीज़ की प्रबलता, जब तक कि गुणों को व्यापक न कर दिया जाए कि उनमें पतलापन और प्रवाह शामिल हो जाए। और यदि सैय्यद अपने इस कथन को हटा देते कि 'अशुद्धि इसमें नहीं मिली है', तो इसमें कोई अरुचि नहीं मिलती,

और यह बेहतरीन परिभाषाओं में से एक होती, सिवाय इसके कि 'प्रबलता' के अर्थ में कुछ रहस्य है, जैसा कि स्पष्ट है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म)

[उर्दू भाग]: ...उससे कुछ नहीं मिला और कोई चीज़ उस पर प्रबल नहीं हुई। हाँ, यदि गुणों को व्यापक बना दिया जाए और 'पतलापन' और 'प्रवाह' को इसमें शामिल कर लिया जाए। और यदि सैय्यद अपना यह कथन छोड़ देते कि 'अशुद्धि इसमें नहीं मिली', तो उन पर कोई आपत्ति नहीं होती, और यह सर्वोत्तम परिभाषा होती। हाँ, 'प्रबलता' के अर्थ में कुछ अस्पष्टता है, जैसा कि स्पष्ट है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

[पाद टिप्पणियाँ] 1. हशिया अल-दुरर अल-ग़ुरर पर अब्दुल हलीम द्वारा, जल पर चर्चा, मकतबा उस्मानिया बेरुत 1/18। 2. अल-हशिया अल-दुरर पर, अल-ग़ुरर की व्याख्या अबी सईद अल-खादिमी द्वारा, जल पर चर्चा, मकतबा उस्मानिया बेरुत, पृ. 21।

पृष्ठ 671/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[Arabic Column] قالا علیہ اورد علی الحصر الماء المستعمل واجب الاول بان کلام المصنف فی زوالہ باختلاط المحسوس ۱ھ اقول: کیف (۱)وقد ذکر المستقطر من النبات والثانی بان المقسم الماء الطاھر والمستعمل کالنجس فلا غبار ۲ھ اقول: (۲) قد علمت ان کلام الائمۃ یؤذن بدخول المتنجس فی المطلق فضلا عن المستعمل وکذلك کلام اھل الضابطۃ قبل البحر حیث لم یزیلو الاطلاق الا بالامرین ثم رأیت فی کلام ملك العلماء مایدل علیہ صریحا اذقال قدس سرہ اما شرائط ارکان الوضوء فمنھا ان یکون الوضوء بالماء ومنھا انیکون بالماء المطلق ومنھا ان یکون الماء

[Urdu Column] یا تو کمالِ امتزاج سے ہو گا یا ممتزج کے غلبہ سے ہو گا، اس پر ان دونوں نے اعتراض کیا ہے کہ حصر اعتراض مستعمل پانی سے کیا گیا ہے، اور پہلے نے جواب دیا کہ مصنف کا کلام اُس کے زوال میں ہے کسی محسوس چیز کے اختلاط کی وجہ سے اھ (ت) میں کہتا ہوں یہ کیسے، حالانکہ انہوں نے گھاس سے ٹپکائے جانے والے کا ذکر کیا ہے اور دوسرے کا جواب یہ ہے کہ مقسم پاک پانی ہے اور مستعمل نجس کی طرح ہے تو اس پر کوئی غبار نہیں اھ (ت) میں کہتا ہوں کہ ائمہ کے کلام سے ظاہر ہوتا ہے کہ ناپاک مطلق میں داخل ہے چہ جائیکہ مستعمل، اور اسی طرح اہل ضابطہ کا کلام بحر سے پہلے، کیونکہ ان کے نزدیک اطلاق زوال صرف دو امروں سے ہے پھر میں نے ملک العلماء کے کلام میں اس کی صراحت پائی، وہ فرماتے ہیں بہر حال ارکانِ شرائط وضو، ان میں سے ایک تو یہ ہے کہ وضو پانی سے ہو اور یہ کہ ماء مطلق سے ہو اور پانی پاک ہو تو نجس پانی سے جائز نہیں، ایک یہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [Arabic part]: غلبہ شیئ الا ان یعمم الاوصاف الرقۃ السیلان ولوان السید اسقط قولہ لم تخالطہ نجاسۃ لم یخالطہ نکارۃ وکان من احسن التعریفات الا مافی معنی الغلبۃ من الخفاء کما لا یخفی ۱۲ منہ غفرلہ ۔ (م)

[Urdu part]: اس سے ملانہیں اور کوئی شیئ اس پر غالب نہ ہوئی، ہاں اگر اوصاف کو عام کر لیا جائے اور رقت و سیلان کو اس میں شامل کرلیا جائے، اور اگر سید اپنا قول لم تخالطہ نجاسۃ ساقط کردیتے تو ان پر کوئی اعتراض نہ ہوتا، اور یہ بہترین تعریف ہوتی، ہاں صرف غلبہ کے معنی میں کچھ پوشیدگی ہے، کما لا یخفی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

[Footnotes] 1 حاشیۃ الدرر علی الغرر لعبد الحلیم بحث الماء مکتبہ عثمانیہ بیروت ۱/ ۱۸ 2 الحاشیۃ علی الدرر شرح الغرر لابی سعید الخادمی بحث الماء مکتبہ عثمانیہ بیروت ص ۲۱

Volume Two Fatawa Razviya

[Arabic Text Column] ...is pure, so it is not permissible with impure water. Among these conditions is that the water must be 'tahur' (purifying), so it is not permissible with used water (ma' musta'mal), as summarized. This is explicit in that the condition of the absolute nature of water did not exclude these two, such that two other conditions were needed. Likewise, the discourse in 'Al-Munya' says: "Purification is permissible with absolute pure water." This indicated the generality of 'absolute' for both pure and non-pure water. A correction was made in 'Al-Hilya' saying: "It would have been better to say 'tahur' (purifying) instead of 'tahir' (pure), because purification is not valid with merely pure water." This indicated its inclusion of 'used water'. This was explicitly stated in 'Al-Ghuniyah', saying: "Impure water is called absolute water, so there was a need to exclude it by saying 'pure'. If being in proximity (to impurities) would make the water restricted, then after mentioning 'absolute', there would have been no need to mention 'pure'." 'Al-Binaya' pointed to this, saying: "Performing ablution with it is permissible as long as the quality of absolute nature remains and no impurity has mixed with it." I say: Perhaps the reason for 'Al-Bahr' saying this was...

[Urdu Text Column] ...that if it is 'tahur' (purifying), then it is not permissible with 'used' water, as summarized. So this is explicit in that the condition of 'absolute water' did not exclude these two, so that the need for two other conditions arose. And the same discourse is in 'Al-Munya'; they say purification is permissible with 'absolute pure water'. So, the generality of 'absolute' conveyed both 'pure' and 'non-pure'. In 'Al-Hilya', a correction was made on this: they said it would have been better to say 'tahur' instead of 'tahir', because purification is not achieved with just 'pure' water. Thus, they indicated it being general to 'used water'. This was explicitly stated in 'Al-Ghuniyah', where it said that impure water is also called 'absolute water', then there was a need to avoid it, so it was said to be 'pure'. And if proximity (to impurities) had made it 'restricted water', then after 'absolute', there would have been no need to mention 'pure'. In 'Al-Binaya', this was pointed out; they said ablution with it is permissible as long as the quality of being 'absolute' remains in it and no impurity is mixed in it. (T) I say: Probably 'Al-Bahr' felt the need to say this because...

[Footnotes] 1. Bada'i al-Sana'i, Pillars of Wudu, Saeed Company Karachi, 1/5. 2. Munyat al-Musalli, Chapter on Waters, Matba Yusafi Lucknow, p. 61. 3. Hilya. 4. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Explanation of Rulings of Waters, Sohail

Academy Lahore, p. 88. 5. Binaya Sharh Hidayat al-Ma', The Water with which Wudu is Permissible etc., Malik Sons Faisalabad, 1/187.

खंड दो फतवा रज़विया

[अरबी पाठ स्तंभ] ...पवित्र हो, इसलिए अशुद्ध पानी से (वज़ू) जायज़ नहीं है। इन्हीं शर्तों में से एक यह है कि पानी 'तहूर' (पवित्र करने वाला) हो, अतः इस्तेमाल किए हुए पानी (मा-ए-मुस्तअमल) से जायज़ नहीं है। यह स्पष्ट है कि पानी के'मुतलक़' (पूर्ण) होने की शर्त ने इन दोनों को बाहर नहीं किया, जिसके लिए दो अन्य शर्तों की आवश्यकता पड़ी। इसी प्रकार 'मुन्या' का कथन है कि "मुतलक़ पाक पानी से पाकी हासिल करना जायज़ है।" इससे 'मुतलक़' की व्यापकता का पता चला कि इसमें पाक और नापाक दोनों शामिल हैं। 'हिलया' में इस पर सुधार करते हुए कहा गया: "बेहतर यह था कि 'पाक' के स्थान पर 'तहूर' कहा जाता, क्योंकि पाकी केवल पाक पानी से हासिल नहीं होती।" इससे उन्होंने इसके'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) होने की व्यापकता का बोध कराया। 'ग़ुनिया' में इसे स्पष्ट रूप से कहा गया है: "नापाक पानी को मुतलक़ पानी कहा जाता है, इसलिए उससे बचने के लिए 'पाक' कहने की आवश्यकता पड़ी। यदि किसी चीज़ के पास होने से पानी 'मुक़य्यद' (सीमित) हो जाता, तो 'मुतलक़' कहने के बाद 'पाक' कहने की ज़रूरत न होती।" 'बिनाया' में इसी ओर इशारा किया गया है, जहाँ कहा गया: "उससे वज़ू जायज़ है जब तक कि उसमें 'मुतलक़' होने का गुण बना रहे और उसमें कोई गंदगी न मिली हो।" मैं कहता हूँ: शायद 'बहर' के ऐसा कहने का कारण यह था...

[उर्दू पाठ स्तंभ] कि 'तहूर' हो तो मुस्तअमल पानी से जायज़ नहीं है, जैसा कि संक्षेप में बताया गया है। तो इसमें स्पष्ट है कि 'मुतलक़ पानी' की शर्त ने इन दोनों को बाहर नहीं किया, ताकि दो अन्य शर्तों की ज़रूरत पड़े। और यही बात 'मुन्या' में है, वे फ़रमाते हैं कि 'मा-ए-मुतलक़ पाक' के साथ पाकी हासिल करना जायज़ है। तो 'मुतलक़' की व्यापकता ने पाक और नापाक दोनों का बोध कराया। और 'हिलया' में इस पर यह सुधार किया गया कि: 'पाक' के बजाय 'तहूर' कहना बेहतर था, क्योंकि पाकी केवल पाक पानी से नहीं होती। तो उन्होंने इसके मुस्तअमल के लिए व्यापक होने का बोध कराया। और 'ग़ुनिया' में इसकी स्पष्ट व्याख्या की गई है, फ़रमाया कि नापाक पानी को भी 'मुतलक़ पानी' कहा जाता है, फिर उससे बचने की ज़रूरत हुई तो फ़रमाया कि 'पाक' हो। और अगर पड़ोस (गंदगी के पास होने) से वह 'मुक़य्यद' हो जाता, तो 'मुतलक़' के बाद 'पाक' के उल्लेख की आवश्यकता न होती। और 'बिनाया' में इसी ओर इशारा किया गया है, फ़रमाया कि इससे वज़ू जायज़ है जब तक कि उसमें 'मुतलक़' होने का गुण शेष रहे और उसमें कोई नजासत (गंदगी) न मिली हो। (त) मैं कहता हूँ: शायद 'बहर' को यह कहने की ज़रूरत इसलिए हुई...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. बदाइउल सनाइ, अरकान-ए-वज़ू, सईद कंपनी कराची, 5/1। 2. मुन्यातुल मुसल्ली, पानी का अध्याय, मतबा यूसुफी लखनऊ, पृष्ठ 61। 3. हिलया। 4. ग़ुनियतुल मुस्तमली, पानी के अहकाम के बयान का अध्याय, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 88। 5. बिनाया शरह हिदायतुल मा, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है आदि, मलिक संस फैसलाबाद, 1/187।

पृष्ठ 672 का 711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ

[عربی عبارت کا کالم] طاہر افلایجوز بالماء النجس ومنها ان یکون طهورا فلایجوز بالماء المستعمل اه ملتقطاً فهو صریح في ان اشتراط اطلاق الماء لم یخرجها حتی احتیج الی شرطین اخرین وکذلك کلام المنیة اذ یقول تجوز الطهارة بماء مطلق طاهر اه فافاد عموم المطلق للطاهر وغیره واستدرك علیه في الحلیة بقوله کان الاولی ان یقول طهور مکان طاهر لان الطهارة لا تجوز بماء طاهر فقط اه فافاد عمومه المستعمل وقد صرح به في الغنیة فقال یسمی التنجس ماء مطلقاً فاحتاج الی الاحتراز عنه بقوله طاهر ولو کانت المجاورة تکسبه تقیید الماء احتیج بعد ذکر الاطلاق الی ذکر الطاهر اه والیه اشار في البنایة اذ قال التوضی به جائز ما دامت صفة الاطلاق باقیة ولم تخالطه نجاسة اه۔ اقول : ولعل الحامل للبحر علیه

[اردو عبارت کا کالم] کہ طہور ہو تو مستعمل پانی سے جائز نہیں اھ ملتقطاً، تو یہ اس میں صراحت ہے کہ مطلق پانی کی شرط نے ان دونوں کو خارج نہیں کیا، تاکہ دو دوسری شرطوں کی حاجت پڑے، اور یہی گفتگو منیہ میں ہے وہ فرماتے ہیں ماء مطلق طاہر کے ساتھ طہارت جائز ہے اھ تو عموم مطلق نے طاہر اور غیر طاہر کا افادہ کیا اور حلیہ میں اس پر یہ استدراک کیا ہے، فرمایا بہتر یہ تھا کہ طہور کہتے بجائے طاہر کے، کیونکہ طہارت صرف طاہر پانی سے نہیں ہوتی ہے اھ تو انہوں نے اس کے مستعمل کو عام ہونے کا افادہ کیا اور غنیہ میں اس کی تصریح کی فرمایا ناپاک پانی کو مطلق پانی کہا جاتا ہے پھر ان کو اس سے احتراز کی حاجت ہوئی تو فرمایا طاہر ہو اور اگر مجاورۃ سے اس میں تقیید ہو جاتی تو اطلاق کے بعد طاہر کے ذکر کی ضرورت نہ ہوتی اھ اور بنایہ میں اسی طرف اشارہ کیا، فرمایا اس سے وضو جائز ہے جب تک اس میں صفتِ اطلاق باقی ہو اور اس میں نجاست نہ ملی ہو اھ۔ (ت) میں کہتا ہوں غالباً بحر کو یہ کہنے کی ضرورت اس لئے

[حواشی] 1۔ بدائع الصنائع ارکان الوضوء سعید کمپنی کراچی ۵/۱ 2۔ منیۃ المصلی فصل فی المیاہ مطبع یوسفی لکھنؤ ص ۶۱ 3۔ حلیہ 4۔ غنیۃ المستملی فصل فی بیان احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۸ 5۔ بنایہ شرح ہدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ ملک سنز فیصل آباد ۱۸۷/۱

Fatawa Rizvia, Volume Two

(Arabic Text): The statement of some [jurists] that purification is permissible with "absolute water" mentioned without restriction—if it included both [absolute and restricted water], there would be a confusion about the permissibility of purification with both. This is nothing, for such restrictions are usually omitted because they are known in their context. Do you not see that most did not restrict it by "absolute" either? They simply said: purification is permissible with rainwater, valley water, etc.

It occurred that some jurists said purification is permissible with absolute water, keeping it general. So if this included both, there would be a doubt regarding the permissibility of purification with both. And this is nothing, because examples of restrictions are generally not mentioned as they are known; this is why most jurists have not even restricted it with the condition of "absolute." Thus, it is said that purification is permissible with rainwater, valley water, etc. (T)

Twelfth: Absolute, free from the restrictions of *Hilyah* and *Bahr*, is only that which the mind goes towards when the word "water" is mentioned. *Malik al-Ulama* says in *Bada'i*:

(Arabic Text): Absolute water is that which people's understanding quickly turns to when the name "water" is mentioned, such as the water of rivers, springs, wells, the sky (rain), ponds, reservoirs, and seas.

Absolute water is that which, when the name "water" is spoken, the mind moves towards it, like the water of canals, springs, wells, clouds, ponds, reservoirs, and rivers. (T)

Then he said:

(Arabic Text): As for restricted water, it is that which the understanding does not quickly turn to when the name "water" is mentioned, and it is water that is extracted from things through a process, like the water of trees, fruits, rose water, and the like. End.

However, restricted water is that which the mind does not race towards when the name "water" is mentioned, and it is the water that is extracted from things through some process, like the water of trees, fruits, roses, etc. End. (T)

(Arabic Text): I say: The exclusivity derived from his statement "it is the water that is

I say that the exclusivity found in his words "it is that water which is

(Arabic Text): As for restricted water, it is that which the understanding does not quickly turn to when the name "water" is mentioned, and it is water that is extracted from things through a process, like the water of trees, fruits, rose water, and the like. End.	**However, restricted water is that which the mind does not race towards when the name "water" is mentioned, and it is the water that is extracted from things through some process, like the water of trees, fruits, roses, etc. End. (T)**
extracted" is definitely not intended. Rather, the meaning is "like the water that [is extracted]," so one should be alert to this.	extracted" is absolutely not intended; its meaning is simply that it is *like* such water, so one should remain alert. (T)

It is in *Durr al-Mukhtar*: (Hadt is removed by absolute water) which is what comes to mind upon absolute mention (removing ritual impurity...

---

1. Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, Saeed Company Karachi, 1/15.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/34.

फ़तावा रज़विया, खंड दो

(अरबी पाठ): कुछ [फ़क़ीहों] का कथन कि "मुतलक़ पानी" (पूर्ण पानी) से शुद्धता अनुमेय है, जिसे उन्होंने बिना किसी प्रतिबंध के उल्लेख किया है—यदि इसमें दोनों [मुतलक़ और मुक़य्यद] शामिल होते, तो दोनों से शुद्धता की अनुमति के बारे में संदेह होता। और यह कुछ भी नहीं है, क्योंकि प्रतिबंधों के ऐसे उदाहरण आमतौर पर नहीं दिए जाते क्योंकि वे अपने संदर्भ में ज्ञात होते हैं। क्या आप नहीं देखते कि अधिकांश ने इसे "मुतलक़" शब्द से भी प्रतिबंधित नहीं किया है? उन्होंने केवल इतना कहा: वर्षा के पानी, घाटी के पानी आदि से शुद्धता जायज़ है।

यह बात आई कि कुछ फ़क़ीहों ने फ़रमाया कि मुतलक़ पानी से शुद्धता जायज़ है, उन्होंने इसे मुतलक़ रखा। तो अगर यह उन दोनों को शामिल करता तो उन दोनों से शुद्धता के जायज़ होने का भ्रम होता, और यह कुछ भी नहीं है, क्योंकि प्रतिबंधों की मिसालें आमतौर पर ज़िक्र नहीं की जातीं क्योंकि उनका इल्म होता है; यही वजह है कि अक्सर फ़क़ीहों ने इसे मुतलक़ की क़ैद से भी मुक़य्यद नहीं किया। फिर फ़रमाया है कि शुद्धता जायज़ है आसमान के पानी से, वादियों के पानी से आदि। (त)

बारहवां: 'हिलिया' और 'बहर' की पाबंदियों से आज़ाद मुतलक़ सिर्फ वह है कि पानी का नाम लेने से जिसकी तरफ़ ज़हन जाता है। 'मलिक अल-उलमा' 'बदाइ' में फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ): मुतलक़ पानी वह है जिसकी ओर पानी का नाम लेने पर लोगों की समझ तेज़ी से जाती है, जैसे नदियों, झरनों, कुओं, आकाश (वर्षा), तालाबों, कुंडों और समुद्रों का पानी।

मुतलक़ पानी वह है कि जब पानी का नाम लिया जाए तो ज़हन उसकी तरफ मुंतक़िल हो जाएं जैसे नहरों, चश्मों, कुओं, बादलों, तालाबों, हौज और दरियाओं का पानी। (त)

फिर फ़रमाया:

(अरबी पाठ): रही बात मुक़य्यद (प्रतिबंधित) पानी की, तो यह वह है जिसकी ओर पानी का नाम लेने पर समझ तेज़ी से नहीं जाती, और यह वह पानी है जिसे किसी प्रक्रिया के माध्यम से चीज़ों से निकाला जाता है, जैसे पेड़ों, फलों का पानी और गुलाब जल आदि। इति।

बहरहाल मुक़य्यद पानी वह है कि जब पानी का नाम लिया जाए तो ज़हन उसकी तरफ़ सबक़त न करे, और यह वह पानी है जो किसी अमल के ज़रिए चीज़ों से निकाला जाए जैसे दरख़्तों, फलों और गुलाब वग़ैरह का पानी। इति। (त)

(अरबी पाठ): मैं कहता हूँ: उनके कथन "यह वह पानी है जो निकाला जाता है" से जो अनन्यता (Exclusivity) निकलती है, वह निश्चित रूप से अभिप्रेत नहीं है। बल्कि इसका अर्थ यह है "जैसे वह पानी जो [निकाला जाता है]", इसलिए सावधान रहना चाहिए।

मैं कहता हूँ वह ह़स्र (घेरा) जो उनके कलाम "यह वह पानी ـे जो निकाला जाए" में है, मुराद नहीं है क़तअन, इसके मायने सिर्फ़ यह हैं कि मिसाल उस पानी के, तो मुतनब्बे (सतर्क) रहना चाहिए। (त)

'दुर्रे मुख़्तार' में है: (ह़दथ को मुतलक़ पानी से दूर किया जाता है) यह वह है जो मुतलक़ ज़िक्र पर ज़हन में आता है (ह़दथ को रफ़ा...

---

1. बदाइ अस-ऱनाइ, विषय: मुक़य्यद पानी, सईद कंपनी कराची, 1/15।
2. दुर्रे मुख़्तार, जल का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/34।

قول بعضهم تجوز الطهارة بالماء المطلق ارسله ارسالاً فلو شملهما وهم جواز الطهارة بهما وليس بشيئ فان امثال القيود تطوى عادة للعلم بها في محله الاترى ان الاكثرين لم يقيدوا بالاطلاق ايضا انما قالوا تجوز بماء السماء والاودية الخ

پڑی کہ بعض فقہاء نے فرمایا مطلق پانی سے طہارۃ جائز ہے، اس کو انہوں نے مطلق رکھا، تو اگر یہ ان دونوں کو شامل ہوتا تو ان دونوں سے طہارت کے جواز کا وہم ہوتا، اور یہ کچھ نہیں، کیونکہ قیود کی مثالیں عام طور پر ذکر نہیں کی جاتی ہیں کہ ان کا علم ہوتا ہے، یہی وجہ ہے کہ اکثر فقہاء نے اس کو اطلاق کی قید سے بھی مقید نہیں کیا ہے پس فرمایا ہے طہارت جائز ہے آسمان کے پانی سے وادیوں کے پانی سے الخ۔ (ت)

دوازدھم: حلیہ و بحر کی قیدوں سے آزاد مطلق صرف وہ ہے کہ پانی کا نام لینے سے جس کی طرف ذہن جاتا ہے ملک العلماء بدائع میں فرماتے ہیں:

الماء المطلق هو الذي تتسارع افهام الناس اليه عند اطلاق اسم الماء كماء الانهار والعيون و الابار والسماء والغدران والحياض والبحار۔

مطلق پانی وہ ہے کہ جب پانی کا نام لیا جائے تو ذہن اس کی طرف منتقل ہوجائیں، جیسے نہروں، چشموں، کنوؤں، بادلوں، تالابوں، حوضوں اور دریاؤں کا پانی۔ (ت)

پھر فرمایا:

واما المقيد فهو مالا تتسارع اليه الافهام عند اطلاق اسم الماء وهو الماء الذی یستخرج من الاشیاء بالعلاج کماء الاشجار والثمار وماء الورد ونحو ذلك اه۔

بہر حال مقید پانی وہ ہے کہ جب پانی کا نام لیا جائے تو ذہن اس کی طرف سبقت نہ کرے، اور یہ وہ پانی ہے جو کسی عمل کے ذریعہ چیزوں سے نکالا جائے جیسے درختوں، پھلوں اور گلاب وغیرہ کا پانی اہ۔ (ت)

اقول: والحصر المستفاد من قوله هو الماء الذي يستخرج غير مراد قطعاً وانما المعنى كالماء الذی فلیتنبه۔

میں کہتا ہوں وہ حصر جو ان کے کلام "یہ وہ پانی ہے جو نکالا جائے" میں ہے، مراد نہیں ہے قطعاً، اس کے معنی صرف یہ ہیں کہ مثل اس پانی کے، تو متنبہ رہنا چاہئے۔ (ت)

درمختار میں ہے: (یرفع الحدث بماء مطلق) ھو ما یتبادر عند الاطلاق (حدث کو رفع

---

1 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵ 2 درمختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۴

Fatawa Razawiya - Volume Two

(Ablution) should be performed with absolute water (Ma-e-Mutlaq), which is what comes to mind immediately upon mention. (T) It passed from 'Bahr': "By absolute, we mean nothing but what comes to mind upon the mention of the name of water." [1] (By 'absolute' we mean exactly what comes to mind when 'Ma' (water) is mentioned. T) It is stated in 'Kafi', 'Binayah', and 'Majma' al-Anhur': "What is meant here is that which immediately strikes the understanding upon our absolute statement 'water'." [2] (By this is meant that which is immediately understood upon our mentioning 'water'. T) It is stated in 'Inayah' and 'Binayah':

Arabic Text

It is not permissible with what is squeezed out because it is not absolute water; for when 'water' is mentioned absolutely, it does not apply to it. The realization of this is that if we assume there is well water, sea water, or spring water in a person's house, and also water squeezed from a tree or fruit, and he is told 'bring water', the mind of the addressee would only go to the former. And we mean nothing by 'absolute' and 'restricted' except this.[3]

Urdu Translation

Ablution is not permissible with water that is squeezed out because it is not absolute water. This is because when 'Ma' (water) is mentioned, it is not applied to it. The verification of this is that if we suppose someone has a well, a river, or a spring in their house, and also water squeezed from a tree or fruit, then if we ask him for water, the listener's mind will first turn towards the former water. This is what is meant by 'absolute' and 'restricted'. (T)

I say: This is the most correct and best of definitions as stated in 'Al-Hilya' (Were it not for what was added, it would not have been excessive. T) but it requires clarification and refinement.

Arabic Text

I say: (1) And with Allah is the guidance. Accidental qualities are neither understood upon absolute mention, nor do they absolutely negate the absolute status. For the essence itself is what is understood from absolute mention, just as when you say 'human', the mind does not immediately race to a Roman or a

Urdu Translation

I say: And with Allah is the guidance. Accidental qualities are neither understood upon absolute mention, nor are they absolutely stripped away. Because upon absolute mention, only the essence is understood. For example, when you say the word 'human', the mind does not shift toward a Roman, an

Arabic Text	Urdu Translation
Zanj, a scholar or an ignorant person, a tall or a short person, or a handsome person...	Abyssinian, a scholar, an ignorant person, tall, short, handsome, ugly, etc. But from this it also...

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi, 1/68
2. Majma' al-Anhur, Tajuz al-Taharah bi-al-Ma' al-Mutlaq, Maktaba Amira Egypt, 1/7
3. Al-Inayah with Al-Fath, al-ma' al-ladhi yajuz bihi al-wudu etc., Nooria Razawiya Sukkur, 1/61

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी

(वज़ू) मुतलक़ पानी से किया जाना चाहिए, यह वह है जो ज़िक्र के समय सबसे पहले दिमाग़ में आए। (त) 'बहर' से गुज़रा: "हम मुतलक़ से वही मुराद लेते हैं जो पानी के ज़िक्र के समय ज़हन में आए।" [1] (हम मुतलक़ से वही मुराद लेते हैं जो 'मा' (पानी) कहने पर सबसे पहले ज़हन में आता है। त) 'काफ़ी', 'बिनाया' और 'मज्मउल अन्हुर' में है: "यहाँ इससे मुराद वह है जो हमारे पानी कहने पर तुरंत समझ में आ जाए।" [2] (यहाँ इससे मुराद वह है जो हमारे पानी के मुतलक़ ज़िक्र से फ़ौरन समझ लिया जाए। त) 'इनाया' और 'बिनाया' में है:

अरबी पाठ

जो पानी निचोड़ा जाए उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि वह मुतलक़ पानी नहीं है; क्योंकि जब पानी का मुतलक़ ज़िक्र होता है तो वह उस पर लागू नहीं होता। इसकी तहक़ीक़ यह है कि अगर हम फ़र्ज़ करें कि किसी के घर में कुएँ का पानी है या दरिया या चश्मे का पानी है और वह पानी भी है जो पेड़ या फल से निचोड़ा गया है, फिर उसे कहा जाए 'पानी लाओ', तो सुनने वाले का ज़हन सिर्फ़ पहले वाले की तरफ़ जाएगा। और मुतलक़ और मुक़य्यद से हमारी यही मुराद है।[3]

उर्दू अनुवाद

जो पानी निचोड़ा जाए उससे वज़ू जायज़ नहीं क्योंकि वह मुतलक़ पानी नहीं है क्योंकि जब 'मा' (पानी) का ज़िक्र किया जाता है तो वह उस पर लागू नहीं होता है और इसकी तहक़ीक़ यह है कि अगर हम फ़र्ज़ करें कि किसी शख़्स के घर में पानी का कुआँ है या दरिया या चश्मा है और वह पानी भी है जो दरख़्त या फल से निचोड़ा गया है, फिर हम उससे पानी माँगें तो सुनने वाले का ज़हन पहले पानी ही की तरफ़ मुंतक़िल होगा, और मुतलक़ व मुक़य्यद से यही मुराद है। (त) मैं कहता हूँ: यही सबसे सही और बेहतरीन परिभाषा है जैसा कि 'अल-हिलिया' में कहा गया है (अगर वह ज़्यादती न होती तो वह ज़्यादती न होती। त) लेकिन यह स्पष्टीकरण और शोध का मोहताज है।

अरबी पाठ

मैं कहता हूँ: (1) और अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से। आकस्मिक गुण (अवआरिज़) न तो मुतलक़ ज़िक्र के समय समझे जाते हैं, और न ही वे मुतलक़ रूप से मुतलक़ होने की स्थिति को छीनते हैं। क्योंकि मुतलक़ ज़िक्र से सिर्फ़ ज़ात (अस्तित्व) ही समझी

उर्दू अनुवाद

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से, आकस्मिक गुण न तो मुतलक़ ज़िक्र के समय समझ में आते हैं और न ही मुतलक़ रूप से छीने जाते हैं, क्योंकि मुतलक़ ज़िक्र के समय ज़ात ही समझ में आती है, जैसे आप इंसान का लफ़्ज़

अरबी पाठ

जाती है, जैसे जब आप 'इंसान' कहते हैं तो ज़हन तुरंत रूमी, जंजी, आलिम, जाहिल, लंबे, छोटे या सुंदर की तरफ़ नहीं दौड़ता...

उर्दू अनुवाद

बोलते हैं तो ज़हन रूमी, हबशी, आलिम, जाहिल, लंबे, छोटे, हसीन, बदशक्ल वग़ैरह की तरफ़ मुंतक़िल नहीं होता है, मगर इससे यह भी...

1. बहरुल रइक़ किताबुत्तहारत सईद कम्पनी कराची 68/1
2. मज्मउल अन्हुर तजूज़ुत्तहारत बिल माउल मुतलक़ मकतबा आमिरह मिस्र 7/1
3. अल-इनायः मअल फ़तहि अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू इलख़ नूरिया रज़विया सुक्कुर 61/1

کیا جائے مطلق پانی سے، یہ وہ ہے جو اطلاق کے وقت متبادر ہوت) بحر سے گزرا:لانعنی بالمطلق الا مایتبادر عنداطلاق اسم الماء [1] (ہم مطلق سے وہی مراد لیتے ہیں جو ماء کا اطلاق کرتے وقت متبادر ہوتا ہےت) کافی وبنایہ و مجمع الانہرمیں ہے:المرادبہ ھھنا مایسبق الی الافھام بمطلق قولناالماء [2] (اس سے مراد یہاں وہ ہے جو ہمارے قول پانی کے اطلاق سے فوری سمجھا جائےت) عنایہ وبنایہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لایجوز بما اعتصر لانه لیس بماء مطلق لانه عند اطلاق الماء لاینطلق علیه وتحقیق ذلك انالوفرضنا في بیت انسان ماء بئر او بحر او عین وماء اعتصر من شجر اوثمر فقیل له هات ماء لایسبق الی ذهن المخاطب الا الاول ولا نعنی بالمطلق والمقید الاهذا[3]۔	جو پانی نچوڑا جائے اس سے وضو جائز نہیں کیونکہ وہ مطلق پانی نہیں کیونکہ جب ماء کا اطلاق کیا جاتا ہے تو اس کا اس پر اطلاق نہیں ہوتا ہے اور اس کی تحقیق یہ ہے کہ اگر ہم فرض کریں کہ کسی شخص کے گھر میں پانی کا کنواں ہے یا دریا چشمہ ہے اور وہ پانی بھی ہے جو درخت یا پھل سے نچوڑا گیا ہے، پھر ہم اس سے پانی مانگیں تو مخاطب کا ذہن پہلے پانی ہی کی طرف منتقل ہوگا، اور مطلق ومقید سے یہی مراد ہے۔(ت)

اقول: یہی اصح واحسن تعریفات ہے کماقال فی الحلیۃ لولا مازاد (جیساکہ حلیہ میں کہا ہے اگر وہ نہ ہوتا تو زیادتی نہ ہوتیت) مگر محتاج توضیح و تنقیح ہے

عربی عبارت	اردو ترجمہ
واقول: (١) وبالله التوفيق العوارض لاهی تفهم عند الاطلاق ولاهی مطلقا تسلب الاطلاق فان الذات هي المفهومة من الاطلاق كما اذا قلت انسان لا يتسارع الفهم منه الی الرومی والزنجي او العالم والجاهل او الطويل والقصير او الحسين	اقول: وباللہ التوفیق عوارض نہ تو عندالاطلاق مفہوم ہوتے ہیں اور نہ مطلقا سلب ہوتے ہیں، کیونکہ عندالاطلاق ذات ہی مفہوم ہوتی ہے، جیسے آپ انسان کا لفظ بولتے ہیں تو ذہن رومی، حبشی، عالم، جاہل، لمبے، چھوٹے، حسین، بد شکل وغیرہ کی طرف منتقل نہیں ہوتا ہے، مگر اس سے یہ بھی

1۔ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۶۸/۱ 2۔ مجمع الانہر تجوز الطھارۃ بالماء المطلق مکتبہ عامر ہ مصر ۷/۱ 3۔ العنایۃ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۶۱/۱

[Arabic Text Section] ...and ugliness and the like of such accidental attributes. It does not follow from this that these [people] are excluded from the general category of 'human,' because their essence is nothing but what is understood from the word 'human.' No accidental attribute has occurred to them that prevents them from being included in what the mind rushes to upon hearing the word 'human.' If accidental attributes in general were to prevent inclusion because they are not understood from the absolute term, then nothing of its individuals would be included under it. This is because every individual has a specific identity towards which the mind does not immediately jump when the absolute name is mentioned. This would necessitate equality between 'water in general' and 'absolute water.' However, there are accidental attributes that prevent their subjects from being included under the absolute thing. Regarding these, it is said that the absolute name does not encompass them because they are not among what the mind rushes to, like a person whose hands and feet have been amputated in the context of 'liberating a slave' (raqabah), for what is understood is a complete person; and date wine (nabidh) and safflower water suitable for dyeing, for the name 'absolute water' is not applied to them, nor does the mind jump to them when it is used. This is despite the fact that the subjects of those accidental attributes are also nothing but what is understood from the absolute application. The lack of understanding of accidental attributes is common to every attribute, so there must be a distinction. I have not seen anyone who has delved into this point. So I say, despite my lack of knowledge...

[Urdu Text Section] It does not necessarily follow that these people are outside the category of 'absolute human,' because their essence is the same as what is understood by the word 'human,' and they do not face any such obstacle that they should not be included in the meaning that comes to mind upon hearing the word 'human.' And if accidental attributes were absolutely a barrier to entry, because they are not understood from the absolute term, then nothing from its individuals would be included under the absolute term. This is because for every individual, there is a specific identity towards which the mind does not shift upon the mention of the absolute name. So this demands that there is equality between 'general water' and 'absolute water.' But there are such accidental attributes present there that prevent their essences from being included under the absolute thing, and it is said about them that the absolute name does not include them because the mind does not shift towards them quickly. This is just like a person with hands and feet cut off in the

context of a 'slave' (raqabah), because the concept is of a complete essence; and date wine and water of safflower (usfur) which is fit for dyeing, because 'absolute water' is not spoken of these two, and at the time of absolute mention, the mind does not shift towards these two. Despite the fact that those with these accidental attributes are not their essences, but that which is understood at the time of absolute mention, and the non-conception of accidental attributes is common in every attribute, so there must be a difference, but I have not seen that anyone has explained this difference. (T) Then I say, despite my lack of scholarly resources.

जिल्द थानी | फतावा रज़विया

[अरबी पाठ अनुभाग] ...और कुरूपता और इसी तरह के अन्य आकस्मिक गुण। इससे यह नहीं निकलता कि ये लोग 'निरपेक्ष मानव' (इंसान-ए-मुतलक) की श्रेणी से बाहर हैं, क्योंकि उनका सार वही है जो 'मानव' शब्द से समझा जाता है। उनके साथ ऐसा कोई आकस्मिक गुण नहीं घटा है जो उन्हें उस अर्थ में शामिल होने से रोके जिस पर 'मानव' शब्द सुनने ही मस्तिष्क तुरंत पहुँच जाता है। यदि आकस्मिक गुण सामान्य रूप से समावेश को रोकते क्योंकि वे निरपेक्ष शब्द से नहीं समझे जाते हैं, तो उसके तहत कोई भी व्यक्ति शामिल नहीं होता। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की एक विशिष्ट पहचान होती है जिसकी ओर निरपेक्ष नाम के उल्लेख पर मस्तिष्क तुरंत नहीं जाता है। यह 'सामान्य पानी' और 'शुद्ध पानी' के बीच समानता की मांग करेगा। हालाँकि, वहाँ ऐसे आकस्मिक गुण मौजूद हैं जो उनके विषयों को निरपेक्ष चीज़ के तहत शामिल होने से रोकते हैं। इनके बारे में यह कहा जाता है कि निरपेक्ष नाम उन्हें शामिल नहीं करता है क्योंकि वे उनमें से नहीं हैं जिनकी ओर मस्तिष्क तुरंत जाता है, जैसे कि 'गर्दन' (गुलाम) के संदर्भ में कटे हुए हाथ और पैर वाला व्यक्ति, क्योंकि जो समझा जाता है वह एक पूर्ण व्यक्ति है; और खजूर की शराब (नबीज़) और रंगाई के लिए उपयुक्त कुसुम का पानी, क्योंकि 'शुद्ध पानी' का नाम उन पर लागू नहीं होता है, और न ही निरपेक्ष उल्लेख के समय मस्तिष्क उनकी ओर जाता है। इसके बावजूद कि उन आकस्मिक गुणों के विषय भी वही हैं जो निरपेक्ष अनुप्रयोग से समझे जाते हैं। आकस्मिक गुणों की समझ की कमी प्रत्येक गुण में आम है, इसलिए एक अंतर होना चाहिए। मैंने किसी को नहीं देखा जिसने इस बिंदु पर विस्तार से चर्चा की हो। तो मैं कहता हूँ, ज्ञान की अपनी कमी के बावजूद...

[उर्दू पाठ अनुभाग] लाज़िम नहीं आता कि ये लोग मुतलक इंसान के ज़ुमरे से ख़ारिज हैं, क्योंकि उनकी ज़ात वही है जो लफ़्ज़ इंसान से मफ़हूम है और उनको कोई ऐसा मानअ दरपेश नहीं कि ये लोग उस मफ़हूम में दाख़िल न हों जो लफ़्ज़ इंसान सुनते ही ज़हन में आ जाता है, और अगर अवारिज़ मुतलकन दुख़ूल से मानअ होते, क्योंकि ये मुतलक से समझे नहीं जाते हैं तो मुतलक के तहत उसके अफ़राद में से कोई शय दाख़िल न होती क्योंकि हर एक फ़र्द के लिए तशख़्ख़ुस है जिसकी तरफ़ मुतलक नाम के ज़िक्र करने से ज़हन मुंतक़िल नहीं होता है तो ये तक़ाज़ा करता है कि मुतलक मा' और मा' मुतलक के दरमियान मसावात है लेकिन वहाँ ऐसे अवारिज़ मौजूद हैं जो उनके ज़वात को मुतलक शय के तहत दाख़िल होने से मानअ हैं, और उनमें कहा जाता है कि मुतलक इस्म उनको शामिल नहीं है क्योंकि ज़हन उनकी तरफ़ तेज़ी से मुंतक़िल नहीं होता है जैसे कि रक़बा में मक़तूअ-

उल-यदैन वल-रिजलैन, क्योंकि मफ़हूम ज़ात-ए-कामिला है और नबीज़-ए-तम्हर और उ'सफ़र का पानी जो रंगाई के लायक़ हो क्योंकि मा' मुतलक इन दोनों पर नहीं बोला जाता है और इत्लाक़ के वक़्त ज़हन इन दोनों की तरफ़ मुंतक़िल नहीं होता है बावजूद इसके कि उन अवारिज़ वाले उनकी ज़ात नहीं हैं, मगर वो जो इत्लाक़ के वक़्त मफ़हूम हो और अवारिज़ का मफ़हूम न होना हर आरिज़ में मुश्तरक है, तो फ़र्क़ होना ज़रूरी है, मगर मैंने नहीं देखा कि किसी ने ये फ़र्क़ बताया हो। (त) फिर मैं इल्मी बे-बज़ाअती के बावजूद कहता हूँ।

पृष्ठ ७११ में से ६७५

[عربی متن کا حصہ] والدمیم وامثال ذلك من العوارض ولا یلزم منه خروج هؤلاء عن الانسان المطلق فان ذاتهم لیست الا ما فهم من لفظ الانسان ولم یعرضهم ما یقعدهم عن الدخول فیما تتسارع الیه الافهام بسماع لفظ الانسان ولوان العوارض مطلقا تمنع الدخول لعدم انفهامها من المطلق لما دخل تحته شیئ من افراده لان لکل فرد تشخصا لا یسبق الیه الذهن عند ذکر اسم المطلق فکان هذا یقتضی التسویة بین مطلق الماء والماء المطلق لکن ثمه عوارض تمنع ذویها عن الدخول تحت الشیئ المطلق ویقال فیها ان اسم المطلق لم یتناولها لکونها مما لا تتسارع الیه الافهام کمقطوع الیدین والرجلین في الرقبة فان المفهوم الذات الکاملة ونبیذ التمر وماء العصفر الصالح الصبغ فان اسم الماء المطلق لا یطلق علیهما ولا یسبق الافهام عند اطلاقه الیهما مع ان اصحاب تلك العوارض ایضا لیست ذاتها الا ما فهم من الاطلاق وعدم انفهام العوارض مشترك في کل عارض فلابد من الفرق ولم ار من حام حول هذا ۔ فاقول: علی مابی من قلة البضاعة*

[اردو متن کا حصہ] لازم نہیں آتا کہ یہ لوگ مطلق انسان کے زمرے سے خارج ہیں، کیونکہ ان کی ذات وہی ہے جو لفظ انسان سے مفہوم ہے اور ان کو کوئی ایسا مانع درپیش نہیں کہ یہ لوگ اس مفہوم میں داخل نہ ہوں جو لفظ انسان سنتے ہی ذہن میں آجاتا ہے، اور اگر عوارض مطلقاً دخول سے مانع ہوتے، کیونکہ یہ مطلق سے سمجھے نہیں جاتے ہیں تو مطلق کے تحت اس کے افراد میں سے کوئی شئی داخل نہ ہوتی کیونکہ ہر ایک فرد کیلئے تشخص ہے جس کی طرف مطلق نام کے ذکر کرنے سے ذہن منتقل نہیں ہوتا ہے تو یہ تقاضا کرتا ہے کہ مطلق ماء اور ماء مطلق کے درمیان مساواۃ ہے لیکن وہاں ایسے عوارض موجود ہیں جو ان کے ذوات کو مطلق شئی کے تحت داخل ہونے سے مانع ہیں، اور ان میں کہا جاتا ہے کہ مطلق اسم ان کو شامل نہیں ہے کیونکہ ذہن

ان کی طرف تیزی سے منتقل نہیں ہوتا ہے جیسے کہ رقبہ میں مقطوع الیدین والرجلین، کیونکہ مفہوم ذات کاملہ ہے اور نبیذ تمر اور عُصفر کا پانی جو رنگائی کے لائق ہو کیونکہ ماء مطلق ان دونوں پر نہیں بولا جاتا ہے اور اطلاق کے وقت ذہن ان دونوں کی طرف منتقل نہیں ہوتا ہے باوجود اس کے کہ ان عوارض والے ان کی ذات نہیں ہیں، مگر وہ جو اطلاق کے وقت مفہوم ہو اور عوارض کا مفہوم نہ ہونا ہر عارض میں مشترک ہے، تو فرق ہونا ضروری ہے، مگر میں نے نہیں دیکھا کہ کسی نے یہ فرق بتایا ہو۔ (ت) پھر میں علمی بے بضاعتی کے باوجود کہتا ہوں

Fatawa Razawiya, Volume II

[Arabic Section]: ...and the deficiency of craftsmanship, seeking help from my Lord, then from the possessor of intercession, peace and blessings of Allah be upon him and his family. The names are established in relation to the realities, and the distinction between realities is according to the variation of purposes. Therefore, some attributes are treated as parts, like the limbs of animals and the branches of trees, because their loss results in the loss of the benefits of the essence. When a thing is void of its purpose, it becomes null and void, and through this, change infiltrates the essences indicated by names conventionally. It is known that a compound made of a thing and something else is different from that thing. However, custom (Urf), Sharia, and language all take dominance into account. Thus, if the mixing substance is greater in quantity than the original thing, the compound is more deserving of the name of the mixing substance than the name of the original thing. If they are equal, they both fall away, and the compound is not understood by the absolute mention of the name of either of them, because the two names were established for each individually, not for the sum total. Yes, if it is less, it is not considered unless its mixing creates a distinct, composite conventional reality intended for separate purposes. In that case, the compound becomes another essence conventionally due to the difference in purposes, so it no longer remains conventionally included under the absolute concept. Thus, it is proven that the understood... Footnote (Arabic): I say, and with this (1), and praise be to Allah, it became clear...

[Urdu Section]: Names are established in comparison to realities, and the distinction in realities is based on purposes. For this reason, some attributes stand in the place of parts, such as the limbs of animals and the branches of trees, because with the end of these things, the benefits of the essence also end. When the very purpose of a thing is lost, that thing becomes void, and in this way, the essence also changes, which is conventionally indicated through names. It is known that what is composed of a thing and something other than it, is different from it. However, in custom, Sharia, and language, dominance is always considered. So when the mixing substance is greater in quantity than the original thing, the compound should be called by the name of that mixing majority substance, not the original thing. If there is equality between the two, then both will fall away, and when any of those things is mentioned, the compound will not be understood because names are independent for each part, not for the whole. Yes, if it is less, it will not be considered; however, if a

new conventional reality comes into existence by its mixing, which is composite and distinct, and is for specific purposes, then the compound will conventionally be a new essence. Because the purposes have changed, it will not conventionally fall under the understanding of the absolute mention. Thus, it is proven that on the mention of the word... Footnote (Urdu): I say, from this the meaning of this saying of the jurists
(Continued on next page)

फ़तावा रज़विया, जिल्द द्वितीय

[अरबी स्तंभ का अनुवाद]: ...और शिल्प की कमी, अपने रब से मदद मांगते हुए, फिर शफ़ाअत के मालिक, उन पर और उनके परिवार पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो। नामों का निर्धारण वास्तविकताओं (हक़ीक़तों) के सापेक्ष होता है, और वास्तविकताओं के बीच अंतर उद्देश्यों के अंतर के आधार पर होता है। इसलिए, कुछ गुणों को अंगों के समान माना जाता है, जैसे जानवरों के अंग और पेड़ों की टहनियाँ, क्योंकि इनके नष्ट होने से मूल अस्तित्व के लाभ भी समाप्त हो जाते हैं। जब किसी वस्तु का मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, तो वह वस्तु व्यर्थ हो जाती है, और इस प्रकार वह मूल अस्तित्व भी बदल जाता है जिसे प्रथागत रूप से नामों द्वारा दर्शाया जाता है। यह सर्वविदित है कि जो वस्तु किसी चीज़ और उसके अलावा किसी अन्य चीज़ से मिलकर बनी होती है, वह उस मूल चीज़ से भिन्न होती है। हालाँकि, प्रथा (उर्फ़), शरीयत और भाषा सभी में प्रधानता (ग़ल्बा) को महत्त्व दिया जाता है। अत; यदि मिलने वाली वस्तु की मात्रा मूल वस्तु से अधिक हो, तो मिश्रण को उस बहुसंख्यक वस्तु के नाम से पुकारा जाना चाहिए, न कि मूल वस्तु के नाम से। यदि दोनों बराबर हों, तो दोनों का प्रभाव समाप्त हो जाएगा, और उनमें से किसी भी एक का नाम लेने पर मिश्रण का बोध नहीं होगा, क्योंकि नाम प्रत्येक के लिए स्वतंत्र रूप से हैं, पूरे मिश्रण के लिए नहीं। हाँ, यदि वह कम हो तो उसे मान्य नहीं माना जाएगा, लेकिन यदि उसके मिलने से एक नई प्रथागत वास्तविकता अस्तित्व में आती है जो मिश्रित और विशिष्ट है और विशिष्ट उद्देश्यों के लिए है, तो वह मिश्रण प्रथागत रूप से एक नया अस्तित्व बन जाएगा। चूँकि उद्देश्य बदल गए हैं, इसलिए वह सामान्य अर्थ के अंतर्गत नहीं आएगा। अतः यह सिद्ध हुआ कि शब्द के प्रयोग में... फुटनोट: मैं कहता हूँ, और इसके साथ (1), और अल्लाह की प्रशंसा हो, यह स्पष्ट हो गया...

[उर्दू स्तंभ का अनुवाद]: नामों का निर्धारण वास्तविकताओं के मुकाबले में होता है, और वास्तविकताओं में अंतर उद्देश्यों के आधार पर होता है। इसी कारण से, कुछ गुण अंगों के स्थान पर खड़े होते हैं, जैसे जानवरों के अंग और पेड़ों की टहनियाँ, क्योंकि इन चीज़ों के अंत के साथ, मूल अस्तित्व के लाभ भी समाप्त हो जाते हैं। जब किसी चीज़ का मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, तो वह चीज़ व्यर्थ हो जाती है, और इस प्रकार, मूल अस्तित्व भी बदल जाता है, जिसे प्रथागत रूप से नामों के माध्यम से दर्शाया जाता है। यह ज्ञात है कि जो चीज़ किसी चीज़ और उसके अलावा किसी अन्य चीज़ से मिलकर बनी होती है, वह उससे भिन्न होती है। हालाँकि, प्रथा, शरीयत और भाषा में हमेशा प्रधानता को माना जाता है। इसलिए जब मिलने वाली चीज़ मूल वस्तु से मात्रा में अधिक हो, तो

मिश्रण को उस मिलने वाली बहुसंख्यक वस्तु के नाम से पुकारा जाना चाहिए, न कि मूल वस्तु के नाम से। यदि दोनों के बीच समानता है, तो दोनों गिर जाएंगे, और जब उन चीज़ों में से किसी का भी उल्लेख किया जाएगा, तो मिश्रण समझ में नहीं आएगा क्योंकि नाम प्रत्येक भाग के लिए स्वतंत्र हैं, पूरे के लिए नहीं। हाँ, यदि यह कम है, तो इस पर विचार नहीं किया जाएगा; हालाँकि, यदि इसके मिलने से एक नई प्रथागत वास्तविकता अस्तित्व में आती है, जो मिश्रित और विशिष्ट है, और विशिष्ट उद्देश्यों के लिए है, तो मिश्रण प्रथागत रूप से एक नया अस्तित्व होगा। क्योंकि उद्देश्य बदल गए हैं, यह प्रथागत रूप से पूर्ण उल्लेख की समझ के अंतर्गत नहीं आएगा। इस प्रकार, यह सिद्ध होता है कि शब्द के प्रयोग पर... फुटनोट: मैं कहता हूँ, इससे फुक़हा के इस कथन का अर्थ... (अगले पृष्ठ पर जारी)

[عربی کالم] وقصور الصناعة مستعینا بربی ثم بصاحب الشفاعة صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم توضح الاسماء بازاء الحقائق و تمایز الحقائق بتفاوت المقاصد ولذا کان بعض الاوصاف تجری مجری الاجزاء کالاطراف فی الحیوان والاغصان فی الاشجار لان بفواتها فوات منافع الذات والشیئ اذا خلا عن مقصوده بطل فیتطرق به التغیر الی الذوات المدلول علیها عرفا بالاسماء ومعلوم ان المرکب من الشیئ وغیره غیره غیر ان العرف بل والشرع واللغة جمیعا تلاحظ الغلبة فاذا کان الممازج اکثر قدرا من الشیئ کان المرکب احق باسم الممازج من اسم الشیئ وان تساویا تساقطا فلم یکن المرکب مفهوما من اطلاق اسم شیئ منهما لان وضع الاسمین بازاء کل بحیاله لا بازاء الکل مجموعا نعم ان کان اقل لم یعتبر الا ان تحدث بامتزاجه حقیقة عرفیة مرکبة ممتازة مقصودة لمقاصد منحازة فیصیر المرکب ذاتا اخری عرفا لاختلاف المقاصد فلا یبقی داخلا تحت المفهوم عرفا من الاطلاق فثبت ان عه المتفاهم عه اقول و بهذا (۱) واللہ الحمد ظهر

[اردو کالم] اسماء کی وضع حقائق کے مقابلہ میں ہوتی ہے اور حقائق میں امتیاز مقاصد کے اعتبار سے ہوتا ہے اور اس لئے بعض اوصاف اجزاء کے قائم مقام ہوتے ہیں جیسے حیوانات کے اعضاء اور درختوں کی ٹہنیاں کیونکہ ان چیزوں کے خاتمہ سے ذات کی منفعتیں بھی ختم ہوجاتی ہیں، اور جب کسی چیز کا مقصود ہی فوت ہوجائے تو وہ چیز باطل ہوجاتی ہے اور اس طرح ذات بھی متغیر ہوجاتی ہے جس پر اسماء کے ذریعہ عرفاً دلالت کی جاتی ہے اور یہ معلوم ہے کہ جو چیز کسی چیز اور اس کے غیر سے مرکب ہوتی ہے وہ اس کا غیر ہوتی ہے، لیکن عرف، شریعت اور لغت سب ہی میں غلبہ کا اعتبار ہوتا ہے تو جب ملنے والی چیز اصلی شئے سے مقدار میں زیادہ ہو تو مرکب پر وہ نام پڑنا چاہئے جو اس ملنے والی اکثر شئے کا ہے نہ کہ اصل شئے کا اور اگر دونوں

میں برابری ہو تو تساقط ہوگا تو ان میں سے جب کسی شئے کا اطلاق ہوگا تو مرکب مفہوم نہ ہوگا کیونکہ نام تو ہر ایک کے مقابل مستقلاً ہے، مجموعہ کے مقابل نہیں، ہاں اگر وہ کم ہو تو معتبر نہ ہوگا ہاں اگر اس کے ملنے سے ایک نئی حقیقت عرفیہ وجود میں آجائے جو مرکب اور ممتاز ہو، اور خاص مقاصد کیلئے ہو تو مرکب عرفاً ایک نئی ذات ہوگا، اس لئے کہ مقاصد مختلف ہوگئے، تو وہ اطلاق سے عرفاً مفہوم کے تحت داخل نہ ہوگا، پس ثابت ہوا کہ لفظ کے اطلاق میں کہتا ہوں اس سے فقہا کے اس قول کے معنی (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Rizvia, Volume Second

From the application of a term, what is meant is the essence (Zat) for which the word was coined, without any deficiency or excess that would change it. Therefore, every accident (aris) that does not afflict the subject with a change in its essence—even if there is deficiency or excess in an external matter—this thing does not prevent the subject from falling under the absolute (mutlaq) category; otherwise, it would be a hindrance. From this, it was also known that...

(Continuation of the footnote from the previous page)

It has become clear that the meaning of their saying, "the absolute refers to the perfect individual," and their saying, "the absolute refers to the lowest degree," and it is evident that there is no contradiction between them. For the absolute refers, in a request, to the lowest degree to which the term applies, whether it is a requested action—as it suffices for the discharge of responsibility—or a prohibition/ abandonment—as its entire genus is forbidden, so no part of it is permissible. However, it refers to an individual perfect in its essence, which is not afflicted by something that would make it deficient in its essence according to the aforementioned meaning, because then it would not be understood from the absolute term. Thus, that to which it refers is the lowest level of that thing in which the essence is complete. This is the elegant research, and as Al-Shami stated: "The referral of the absolute to the perfect individual is mentioned in the context of justification. Its place is when the absolute is applied to something that is perfect in an attribute other than the essence." Master this, for it is precious knowledge. And with Allah is success. 12 [from the author], may his Lord, the Exalted, forgive and protect him. (M) (T)

Page 677 of 711

फतवा रिज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

शब्द के प्रयोग से वही सार (ज़ात) मुराद होती है जिसके लिए वह शब्द बनाया गया हो, उसमें न तो कोई कमी हो और न ही कोई अधिकता जिससे उसके सार में कोई परिवर्तन आए। इसलिए, हर वह आकस्मिक गुण (आरिज़) जिससे सार में कोई परिवर्तन न हो, चाहे किसी बाहरी मामले में कमी या बेशी हो, वह चीज़ विषय के'निरपेक्ष' (मुतलक़) के अंतर्गत आने में बाधा नहीं बनेगी, अन्यथा वह रुकावट होगी। इसी से यह भी ज्ञात हुआ कि...

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग)

स्पष्ट हो गया कि 'मुतलक़' (निरपेक्ष) से मुराद पूर्ण व्यक्ति (फ़र्द-ए-कामिल) होता है, और यह भी कि मुतलक़ को न्यूनतम की ओर मोड़ा जाता है, और इन दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। क्योंकि मांग (तलब) में मुतलक़ से न्यूनतम मुराद होता है, चाहे वह कार्य की मांग हो - क्योंकि वह ज़िम्मेदारी से मुक्ति के लिए पर्याप्त है - या त्याग (तर्क) हो - क्योंकि उसकी पूरी श्रेणी (जिंस) वर्जित है, इसलिए उसमें से कुछ भी जायज़ नहीं है। लेकिन इसका अर्थ सार में पूर्ण व्यक्ति होता है, उसमें ऐसी कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए जो उसके सार में उल्लिखित अर्थ के अनुसार कमी का कारण बने, क्योंकि उस स्थिति में वह मुतलक़ से समझ में नहीं आएगा। तो जिसकी ओर मोड़ा जाता है वह उस चीज़ का न्यूनतम है जिसमें सार पूर्ण हो गया हो। यह एक सुंदर शोध है, और जैसा कि शामी ने कहा है कि मुतलक़ का पूर्ण व्यक्ति की ओर मुड़ना माफ़ी के संदर्भ में उल्लेख किया जाएगा, तो उसका स्थान यह है कि जब मुतलक़ को ऐसे मामले पर लागू किया जाए जो सार के अलावा किसी अन्य गुण में पूर्ण हो। इसे अच्छी तरह समझ लें कि यह बहुमूल्य ज्ञान है। १२ [लेखक की ओर से], अल्लाह उसे क्षमा करे और उसकी रक्षा करे, उसका महान रब। (म) (त)

पृष्ठ 677/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

من اطلاق اللفظ ہی الذات الموضوع لھا من دون نقص ولا زیادۃ یغیرانھا فکل عارض لا یعتری بھا المعروض تغیر فی ذاتہ وان کان ھناک نقص اوز یادۃ فی امر خارج فھو لا یمنع المعروض من الدخول تحت الشیء المطلق والا منع وبہ علم ان بطلان

سے وہی ذات مراد ہوتی ہے جس کے لئے لفظ وضع کیا گیا ہو، اس میں نہ تو کوئی کمی نہ زیادتی، جس کی وجہ سے ذات میں کوئی تغیر آتا ہو، تو ہر وہ عارض جس کی وجہ سے ذات میں کوئی تغیر نہ ہو خواہ کسی خارجی امر میں کمی بیشی ہو تو یہ چیز معروض کے مطلق شئی کے تحت آنے میں منحل نہ ہوگی ورنہ مانع ہوگی۔ اسی سے یہ بھی معلوم ہوا

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ)

معنی قولھم المطلق ینصرف الی الفرد الکامل و قولھم المطلق ینصرف الی الادنی وتبین انہ لا خلاف بینھما فالمطلق ینصرف فی الطلب الی ادنی ما یطلق علیہ سواء کان مطلوب الفعل اذیکفی لبراءۃ الذمۃ او الترک اذ الممنوع جنسہ فلا یجوز شیئی منہ لکن ینصرف الی فرد کامل فی الذات لم یعرضہ ما یجعلہ ناقصاً فی ذاتہ بالمعنی المذکور لعدم انھفامہ ح من المطلق فالمصرف الیہ ادنی ما کمل فیہ الذات ھذا ھو التحقیق الانیق اماماً قال الشامی ان انصراف المطلق الی الفرد الکامل یذکر فی مقام الاعتذار فمحلہ اذا حمل المطلق علی کامل فی وصف آخر وراء الکمال فی الذات اتقنہ فانہ علم نفیس وباللہ التوفیق ۱۲ منہ غفرلہ حفظہ ربہ تعالٰی۔ (م)

واضح ہوگئے کہ مطلق سے مراد فرد کامل ہوتا ہے، نیز یہ کہ مطلق کو ادنیٰ کی طرف پھیرا جاتا ہے اور یہ کہ دونوں باتوں میں کوئی اختلاف نہیں، کیونکہ طلب میں مطلق سے ادنیٰ مراد ہوتا ہے،

عام ازیں کہ مطلوب فعل ہو کہ وہ براتِ ذمہ کیلئے کافی ہوتا ہے یا ترک ہو کہ ممنوع اس کی جنس ہوتی ہے تو اس میں سے کچھ بھی جائز نہیں ہوتا ہے لیکن فرد کامل فی الذات مراد ہوتا ہے، اس میں کوئی چیز ایسی نہ ہونی چاہئے جو اس کی ذات میں مذکور معنی کے اعتبار سے موجبِ نقص ہو کیونکہ اس صورت میں وہ مطلق سے مفہوم نہ ہوگا، تو جس کی طرف پھیرا جاتا ہے وہ ادنیٰ ہے اس چیز کا جس میں ذات مکمل ہوئی ہو یہ تحقیق انیق ہے، اور شامی نے جو کہا ہے کہ مطلق کا فرد کامل کی طرف پھر نا مقام اعتذار میں ذکر کیا جائیگا تو اس کا محل یہ ہے کہ مطلق جب کسی ایسے امر پر محمول ہو جو کسی دوسرے وصف میں کامل ہو ذات کے علاوہ۔ اس کو خوب اچھی طرح سمجھ لیں کہ یہ نفیس علم ہے ۱۲ منہ غفرلہ حفظہ رب تعالیٰ۔ (ت)

Fatawa Razawiya, Volume II

[Arabic Column] The reality in a mixture with an equal or dominant part is invalidated linguistically, customarily, and legally, absolutely. And with the mentioned minor part customarily while the linguistic reality remains; hence, the restricted water is a category of absolute water. In terms of deficiency, reality can sometimes be absolutely invalidated when that description serves as a pillar in the linguistic designation, such as flow for water. It might remain linguistically but be invalidated customarily—meaning it is not understood customarily when the name is uttered, and that occurs when customary purposes change, like 'neck' for a person with an amputated limb, for it is linguistically its reality but not understood customarily. Once you know this, the deficiency in water by the loss of its flow or its thinness means the thick is not called water, let alone the frozen. And the increase by mixing it with something greater in quantity or equal, and by what makes it a distinct, separate mixture for a purpose—like water in which dates are soaked becoming nabidh (date wine), that in which meat is cooked becoming broth, that in which saffron is dissolved becoming dye, and that mixed with milk until it becomes buttermilk. From this, all legal branches diverge according to the school of the judges of the East and West, which is the correct and verified one, as previously mentioned from al-Hidayah and al-Khaniyah. There is no doubt that in these four ways, the essence changes in reality or customarily. Imam Muhammad added a fifth: that which resembles the mixture such that one would almost think...

[Urdu Column] That the invalidation of reality in a compound occurs with the equal and the dominant linguistically, customarily, and legally, absolutely, and with the mentioned minor part customarily while the linguistic reality remains; therefore, restricted water is a type of absolute water. In the aspect of deficiency, reality sometimes becomes absolutely void when the description also stands as a pillar from the linguistic point of view, like flow for water. And sometimes reality remains linguistically but becomes void customarily—meaning at the time the name is spoken, it does not come into common understanding. This happens only when customary purposes change, like 'neck' for an amputee, because this is its reality linguistically but it is not understood as such customarily. When you have learned this, the form of deficiency in water will be that its flow or thinness ends; then thick liquid will not be called water, let alone frozen ice. And the form of excess in it will be that it is mixed with something which is more than it or equal to it in quantity, or with that thing through which it becomes a distinct compound and becomes completely

different in terms of purpose—like water in which dates are soaked so it becomes nabidh, and that in which meat is cooked and it becomes broth, and that in which saffron is mixed and it becomes dye, and that which is mixed in milk until it becomes buttermilk. Upon this same principle, all legal branches diverge according to the school of the judges of the East and West, as has passed from al-Hidayah and al-Khaniyah, and there is no doubt in this...

फ़तावा रज़विया, जिल्द सानी (खंड 2)

[अरबी स्तंभ] मिश्रण में वास्तविकता (हक़ीक़त) का अमान्य होना भाषाई, प्रथागत और कानूनी रूप से पूर्णतः बराबर और प्रभावी के साथ है। और भाषाई वास्तविकता के बने रहने के साथ प्रथागत रूप से बताए गए थोड़े के साथ; इसलिए प्रतिबंधित (मुक़ैयद) पानी, पूर्ण (मुतलक) पानी का एक प्रकार है। और कमी के पहलू में, यह कभी पूर्णतः अमान्य हो जाता है जब वह गुण भाषाई पद में एक स्तंभ (रुकन) के रूप में कार्य करता है, जैसे पानी के लिए बहना। और कभी-कभी यह भाषाई रूप से बना रहता है लेकिन प्रथागत रूप से अमान्य हो जाता है, अर्थात नाम बोले जाने पर प्रथागत समझ में नहीं आता है, और यह तब होता है जब प्रथागत उद्देश्य बदल जाते हैं, जैसे 'गर्दन' कटे हुए अंग वाले व्यक्ति के लिए, क्योंकि भाषाई रूप से यह उसकी वास्तविकता है लेकिन प्रथागत रूप से इसे नहीं समझा जाता है। जब आप यह जान गए, तो पानी में कमी की स्थिति यह होगी कि उसका बहना या उसका पतलापन समाप्त हो जाए, तो गाढ़े को पानी नहीं कहा जाएगा, जमे हुए को तो और भी नहीं। और मात्रा में उससे अधिक या उसके बराबर किसी चीज़ के साथ मिलने से वृद्धि, और जिससे वह एक विशिष्ट, अलग मिश्रण बन जाए, जैसे वह पानी जिसमें खजूर भिगोए जाने पर वह नबीज़ (खजूर की शराब) बन जाए, और जिसमें मांस पकाया जाए तो वह शोरबा बन जाए, और जिसमें केसर घोला जाए तो वह रंग बन जाए, और जिसे दूध में मिलाया जाए जब तक कि वह लस्सी न बन जाए। इसी आधार पर पूर्व और पश्चिम के काज़ियों के मत पर सभी शाखाएँ विभाजित होती हैं, जो कि सही और प्रमाणित है, जैसा कि पहले अल-हिदाया और अल-खानिया से बताया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन चार तरीकों में सार वास्तविकता या प्रथागत रूप से बदल जाता है। मुहम्मद ने पाँचवाँ जोड़ा है, जो कि मिश्रक के समान है जिससे लगभग ऐसा लगता है कि...

[उर्दू स्तंभ] कि हक़ीक़त का मुरक्कब (मिश्रण) में बातिल होना मसावी और ग़ालिब के साथ है लगतन, उरफ़न और शरअन, मुतलक़न, और क़लील मज़कूर के साथ उरफ़न मय हक़ीक़ते लुगविया के बाक़ी रहने के, इसलिए मुक़ैयद, मुतलक़ मा (पानी) की क़िस्म होता है, और नक़्स (कमी) की जहत में कभी हक़ीक़तन मुतलक़न बातिल हो जाती है जबकि वस्फ़ वज़अ-ए-लुगवी एतबार से भी रुकन के क़ायम मुक़ाम हो जैसे पानी के लिए सैलान (बहना), और कभी हक़ीक़तन लगतन तो बाक़ी रहती है और उरफ़न बातिल हो जाती है, यानी नाम को बोले जाने के वक़्त उरफ़ के फ़हम में नहीं आती, और यह उसी वक़्त होता है जब मक़ासिद-ए-उरफ़िया बदल जाएँ जैसे 'रक़बा' अक़ता (कटे हुए अंग वाले) पर क्योंकि यह इसमें हक़ीक़त है लगतन लेकिन उरफ़न इससे नहीं समझा जाता है। जब आपने यह

जान लिया तो पानी में नक़्स की सूरत यह होगी कि उसका सैलान या उसकी रिक़्क़त (पतलापन) ख़त्म हो जाए तो गाढ़े को पानी नहीं कहेंगे चेह जाएके जम्द (बर्फ़) को, और इसमें ज़्यादती की सूरत यह होगी कि वह किसी ऐसी चीज़ में मख़लूत (मिश्रित) हो जाए जो मिक़दार में उससे ज़्यादा या उसके बराबर हो या उस चीज़ से जिससे मुरक्कब होकर वह मुमताज़ (विशिष्ट) हो जाए और मक़सद के एतबार से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हो जाए, जैसे वह पानी जिसमें खजूरें भिगोई जाएँ तो वह नबीज़ बन जाए, और जिसमें गोश्त पकाया जाए और वह शोरबा हो जाए, और जिसमें जाफ़रान मिलाया जाए और वह रंग बन जाए और जिसको दूध में मिलाया जाए यहाँ तक कि वह लस्सी हो जाए, इसी असल पर क़ाज़ी-ए-शर्क़ ओ ग़र्ब के मज़हब पर तमाम फ़ुरूह मुतफ़र्रअ होती हैं, जैसा कि हिदाया और ख़ानिया से गुज़रा, और इसमें शक...

पेज 678 का 711

فتاوی رضویہ جلد ثانی

[Arabic Column] الحقیقة فی المرکب مع المساوی والغالب لغة وعرفا وشرعا مطلقا ومع القلیل المذکور عرفا مع بقاء الحقیقة اللغویة ولذا کان المقید قسما من مطلق الماء وفی جهة النقص قد تبطل مطلقا اذا کان ذلك الوصف جاریا مجری الرکن فی الوضع اللغوی ایضا کالسیلان للماء وقد تبقی لغة وتبطل عرفا اعنی عن المتفاهم العرفی عند اطلاق الاسم وذلك اذا تبدلت المقاصد العرفیة کالرقبة علی الاقطع فانها حقیقة فیه لغة ولا یفهم منها عرفا اذا علمت هذا فالنقص فی الماء بزوال سیلانه اورقته فالثخین لا یسمی ماء فضلا عن الجمد والزیادة باختلاطه باکثر منه قدرا او مساویا وبما یصیر به مرکبا ممتازا منحازا بالغرض کالمنقوع فیها التمر اذا صار نبیذا والمطبوخ فیه اللحم اذا صار مرقا والمحلول فیه الزعفران اذا صار صبغا والمخلوط فیه اللبن اذا صار ضیا حا فعن هذا تتشعب(۱) الفروع جمیعا علی مذهب قاضی الشرق والغرب الصحیح المصحح کما تقدم عن الهدایة والخانبة ولا شك ان فی هذه الوجوه الاربعة تبدل الذات حقیقة او عرفا ومحمد زاد خامسا وهو ما اشبه المازج له بحیث یکاد یحسبه الذی

[Urdu Column] کہ حقیقت کا مرکب میں باطل ہونا مساوی اور غالب کے ساتھ ہے لغتہً، عرفاً اور شرعاً، مطلقاً، اور قلیل مذکور کے ساتھ عرفاً مع حقیقتِ لغویہ کے باقی رہنے کے اس لئے مقید، مطلق ماء کی قسم ہوتا ہے، اور نقص کی جہت میں کبھی حقیقتہً مطلقاً باطل ہو جاتی ہے جبکہ وصف وضعِ لغوی اعتبار سے بھی رکن کے قائم مقام ہو جیسے پانی کیلئے سیلان، اور کبھی حقیقتہً لغتہً تو باقی رہتی ہے اور عرفاً باطل ہو جاتی ہے، یعنی نام کو بولے جانے کے وقت عرف کے فہم میں نہیں آتی، اور یہ اُسی وقت ہوتا ہے جب مقاصدِ عرفیہ بدل جائیں جیسے "رقبہ" اقطع پر کیونکہ یہ اس میں حقیقت ہے لغتہً لیکن عرفاً اس سے نہیں سمجھا جاتا ہے۔ جب آپ نے یہ جان لیا تو پانی

میں نقص کی صورت یہ ہوگی کہ اس کا سیلان یا اس کی رقت ختم ہوجائے تو گاڑھے کو پانی نہیں کہیں گے چہ جائیکہ جمد کو، اور اس میں زیادتی کی صورت یہ ہوگی کہ وہ کسی ایسی چیز میں مخلوط ہو جائے جو مقدار میں اُس سے زیادہ یا اس کے برابر ہو یا اس چیز سے جس سے مرکب ہو کر وہ ممتاز ہو جائے اور مقصد کے اعتبار سے بالکل مختلف ہو جائے، جیسے وہ پانی جس میں کھجوریں بھگوئی جائیں تو وہ نبیذ بن جائے، اور جس میں گوشت پکایا جائے اور وہ شوربہ ہو جائے، اور جس میں زعفران ملایا جائے اور وہ رنگ بن جائے اور جس کو دودھ میں ملایا جائے یہاں تک کہ وہ لسی ہو جائے، اسی اصل پر قاضی شرق و غرب کے مذہب پر تمام فروع متفرع ہوتی ہیں، جیسا کہ ہدایہ اور خانیہ سے گزرا، اور اس میں شک

Fatawa Razawiyya Volume 2

[Left Column (Arabic Text)] ...does not know the state of that fluid and thinks it is not water. Such a thing does not fall under his understanding of 'absolute water.' So, the basis of prohibition for Abu Yusuf is that it becomes something other than water, even if it is by conjecture. In summary, its being water is doubted, and on this is based the rule of the two Imams, al-Asbijabi and Malik al-Ulama (may Allah have mercy on them). This is the rule we compared with the Zayla'i rule. We explained in the first two sections where they agree on permissibility or prohibition, and in the third section where they differ. All of this will be explained further, if Allah, the Gracious Giver, wills. If you say: according to what has been established, it is necessary that impure and used water be excluded from absolute water, for one of the greatest purposes of water is to achieve purification through it. Allah Almighty said, 'And He sends down water upon you from the sky to purify you thereby.' This [quality] has been lost from both of them, so in addition to the loss of flow and thinness on the side of deficiency, the loss of the quality of being a purifier is added. I say: (1) Legal realities are for legal purposes; by their loss, the purposes are lost, such as fasting and prayer. As for water...

[Right Column (Urdu Text)] ...no, in these four cases, the essence truly or conventionally changes, and Imam Muhammad has mentioned a fifth case addition, and that is water that resembles the fluid mixed into it, to such an extent that one unaware of the situation would consider it that same thing and not water. According to him, this type of thing does not fall within the understanding of absolute water. For Abu Yusuf, the basis of prohibition is that it becomes something other than water, even if conventionally. According to Imam Muhammad, it depends on whether the user perceives it as some other liquid besides water, even if it is only a suspicion. In summary, he doubts its being water, and on this is the rule based. This rule was stated by Imam al-Asbijabi and Malik al-Ulama; this is the same rule we compared with the Zayla'i rule. It was mentioned in the first two types that they agree on permissibility and prohibition, and the third type where they differ will be explained, God willing. If it is objected that based on this, it follows that impure and used water must be excluded from 'absolute water,' because the greatest purpose of water is to obtain purity, as the Divine decree says, 'And He sends down water upon you from the sky to purify you thereby,' and this quality has ended for both these waters, then on the side of deficiency, to the loss of flow and thinness, the loss of the quality of

being a purifier will be added. I say: legal realities are for legal purposes; so when legal purposes are lost...

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

[बायां कॉलम (अरबी अनुवाद)] ...वह उस द्रव की स्थिति को नहीं जानता और सोचता है कि वह पानी नहीं है। इसलिए, ऐसी चीज़ उसके अनुसार 'परम जल' की समझ में नहीं आती है। अत; अबू यूसुफ के लिए निषेध का आधार यह है कि वह पानी के अलावा कुछ और बन जाए, भले ही वह अनुमान से हो। संक्षेप में, इसके पानी होने पर संदेह किया जाता है, और इसी पर दो इमामों, अल-असबीजाबी और मलिक अल-उलेमा (अल्लाह उन पर रहम करे) का नियम आधारित है। यह वही नियम है जिसकी हमने ज़ैलई नियम से तुलना की थी। हमने पहले दो वर्गों में बताया कि वे कहाँ अनुमति या निषेध पर सहमत हैं, और तीसरे वर्ग में जहाँ वे असहमत हैं। यह सब आगे स्पष्ट किया जाएगा, यदि अल्लाह, कृपावान दाता, चाहे। यदि आप कहें: जो स्थापित किया गया है उसके अनुसार, यह आवश्यक है कि अशुद्ध और उपयोग किए गए पानी को परम जल से बाहर रखा जाए, क्योंकि पानी के सबसे बड़े उद्देश्यों में से एक इसके माध्यम से शुद्धिकरण प्राप्त करना है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा, 'और वह तुम पर आसमान से पानी भेजता है ताकि उससे तुम्हें शुद्ध करे।' यह उन दोनों से खो गया है, इसलिए कमी के पक्ष में प्रवाह और पतलापन के नुकसान के अलावा, शुद्ध होने की गुणवत्ता का नुकसान भी जुड़ जाता है। मैं कहता हूँ: (1) कानूनी वास्तविकताएं कानूनी उद्देश्यों के लिए हैं; उनके खोने से उद्देश्य खो जाते हैं, जैसे उपवास और प्रार्थना। जहाँ तक पानी का सवाल है...

[दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद)] ...नहीं कि इन चारों सूरतों में ज़ात हक़ीक़त या उर्फ़न तब्दील हो जाती है, और इमाम मुहम्मद ने एक पांचवीं सूरत का इज़ाफ़ा फरमाया है और वह, वह पानी है जो उस सयाल शै से मुशाबा हो जो उस में मिलाई गई है, और वह ऐसा हो जाए कि नावाक़िफ़ हाल उस को वही शै समझे पानी न समझे, इस किस्म की चीज़ उन के नज़दीक मुतलक़ मा के मफहूम में दाखिल नहीं, तो अबू यूसुफ के नज़दीक मना का दारोमदार इस पर है कि वह पानी का ग़ैर हो जाए ख़्वाह उर्फ़न ही। और इमाम मुहम्मद के नज़दीक इस पर है कि उस को इस्तेमाल करने वाला पानी के अलावा कोई और माए समझने लगे ख़्वाह सिर्फ़ गुमान ही हो। खुलासा ये कि वह उस के पानी होने में शक करे, और इसी पर ज़ाबता मबनी है, ये ज़ाबता इमाम असबीजाबी और मलिक अल-उलेमा ने बयान किया है, यही वही ज़ाबता है जिस का मुकाबला हम ने ज़ाबता ज़ैलई से किया है और पहली दो किस्मों में बयान किया है कि उन का इत्तेफाक़ जवाज़ और मना में है और तीसरे में वह जिस में उन का इख़्तेलाफ़ है उस का बयान इंशाअल्लाह तआला आएगा। अगर ये एतराज़ किया जाए कि इस बिना पर नापाक और मुस्तअमल पानी का मा-ए-मुतलक़ से ख़ारिज होना लाज़िम आता है, क्योंकि

पानी का सब से बड़ा मक़सद पाकी का हुसूल है फ़रमाने इलाही है 'वह तुम पर आसमान से पानी नाज़िल फरमाता है ताकि उस से तुम को पाक करे' और ये वस्फ उन दोनों पानियों से ख़त्म हो गया, तो जानिबे नक़्स में ज़वाले सैलान ओ रिक्क़त पर सिफते तहूरीय्यत के ज़वाल का इज़ाफ़ा किया जाएगा। मैं कहता हूँ हक़ाइक़े शरईय्या मक़ासिदे शरईय्या के लिए होते हैं, तो जब मक़ासिदे शरईय्या फ़ौ ت हो जाएँ..

पेज 679/711

[بائیں کالم کا عربی متن] لایعلم حالہ ذلك المائع ویظن انه لیس بماء فمثل هذا لایدخل عنده في المتفاهم من مطلق الماء فمناط المنع عند ابي یوسف صیر ورته غیر الماء ولو ظناً و بالجملة یرتاب في کونه ماء و علیه بناء ضابطة الامامین الاسبیجابي و ملك العلماء رحمهما الله تعالی وهي التي قابلناها بالضابطة الزیلعیة وبینّا في القسمین الاولین ما اتفقتا فیه علی الجواز او المنع وفي الثالث ما اختلفتا فیه وسیأتي بیان کل ذلك ان شاء الله الکریم الوهاب۔ فان قلت: علی ما قررت یلزم خروج الماء المتنجس والمستعمل من الماء المطلق فان من اعظم مقاصد الماء حصول التطهیر به قال الله تعالی وینزل علیکم من السماء ماء لیطهر کم به وقد سقط هذا منهما فیزاد في جانب النقص علی زوال السیلان والرقة زوال صفة الطهوریة اقول: (۱) الحقائق الشرعیة للمقاصد الشرعیة فبفواتها تفوت کالصوم والصلاة اما الماء

[دائیں کالم کا اردو متن] نہیں کہ ان چاروں صورتوں میں ذات حقیقۃ یا عرفاً تبدیل ہو جاتی ہے، اور امام محمد نے ایک پانچویں صورت کا اضافہ فرمایا ہے اور وہ، وہ پانی ہے جو اس سیال شے سے مشابہ ہو جو اس میں ملائی گئی ہے، اور وہ ایسا ہو جائے کہ ناواقف حال اس کو وہی شیئی سمجھے پانی نہ سمجھے، اس قسم کی چیز ان کے نزدیک مطلق ماء کے مفہوم میں داخل نہیں، تو ابو یوسف کے نزدیک منع کا دارومدار اس پر ہے کہ وہ پانی کا غیر ہو جائے خواہ عرفاً ہی۔ اور امام محمد کے نزدیک اس پر ہے کہ اس کو استعمال کرنے والا پانی کے علاوہ کوئی اور مائع سمجھنے لگے خواہ صرف گمان ہی ہو۔ خلاصہ یہ کہ وہ اس کے پانی ہونے میں شک کرے، اور اسی پر ضابطہ مبنی ہے، یہ ضابطہ امام اسبیجابی اور ملک العلماء نے بیان کیا ہے، یہی وہی ضابطہ ہے جس کا مقابلہ ہم نے ضابطہ زیلعیہ سے کیا ہے اور پہلی دو قسموں میں بیان کیا ہے کہ ان کا اتفاق جواز اور منع میں ہے اور تیسرے میں وہ جس میں ان کا اختلاف ہے اس کا بیان ان شاء

اللہ تعالیٰ آئے گا۔ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ اس بنا پر ناپاک اور مستعمل پانی کا ماءِ مطلق سے خارج ہونا لازم آتا ہے، کیونکہ پانی کا سب سے بڑا مقصد پاکی کا حصول ہے فرمانِ الٰہی ہے "وہ تم پر آسمان سے پانی نازل فرماتا ہے تاکہ اس سے تم کو پاک کرے" اور یہ وصف ان دونوں پانیوں سے ختم ہو گیا، تو جانب نقص میں زوال سیلان ورقت پر صفت طہوریہ کے زوال کا اضافہ کیا جائیگا۔ میں کہتا ہوں حقائق شرعیہ مقاصد شرعیہ کیلئے ہوتے ہیں، تو جب مقاصد شرعیہ فوت ہو جائیں

Fatawa Rizvia, Volume II

(Arabic Text Box - Left): The essence is objective, and what is considered in its sustenance are the customary objectives. Do you not see that the greatest purpose of a human is worship? Allah the Almighty says: "And I did not create the jinn and mankind except to worship Me." This purpose is missing in a disbeliever as he is not eligible for it; nevertheless, he is not excluded from the general understanding of the term 'human'. Allah says: "Verily, man is in loss, except those who believe." And He says: "Cursed be man; how ungrateful he is!"

(Urdu Translation Box - Right): So realities also cease to exist, just as prayer, fasting, and water are objective realities, and their survival depends on customary purposes. Do you not see that the primary purpose of a human is worship? Allah says: "And I have created jinn and humans only for worship." These things are not found in a disbeliever because he is not worthy of worship; despite this, when the word 'human' is applied, it does not fall outside the concept of human. Allah says: "Indeed, mankind is in loss, except for those who believe." Allah says: "Cursed be man; how ungrateful he is." (T)

(Middle Section): In summary, the research (1) of this humble servant (the author), may he be forgiven, regarding the definition of 'Absolute Water' (Ma-e-Mutlaq) is this: It is that water which remains in its natural thinness (fluidity), and no such substance is mixed or blended with it that exceeds or equals it in quantity, nor is it something that by mixing creates a composite called by a different name for a separate purpose. To facilitate understanding, all mentioned and unmentioned branches of this discussion can be summarized in these two Persian couplets:

Absolute is the water that is in its natural state, without another substance mixed in equal or greater quantity. Nor does any mixture turn it into another thing, which has a title and purpose separate from water.

Note: The definitions from Manh and Sayyid that appeared in the margins were the 13th and 14th, and this Rizvian definition, by the grace of Allah, is the fifteenth.

(Lower Left Box - Arabic): Then I found another definition from Al-Mujtaba, mentioned by him in the section of impurities in Al-Bahr: "Restricted water (Ma-e-Muqayyad) is that which is extracted through a process, like soap water, haradh (alkali), saffron, and water from trees, fruits, and beans." Absolute water is the opposite of this. I say: (2) This is insignificant, and it aligns with the first of the

forthcoming statements regarding additions, and its refutation will follow there. 12 (signed) forgiven by Him. (M)

(Lower Right Box - Urdu): Then I saw another definition from Mujtaba in the chapter on impurities of Bahr, stating that restricted water is that which is extracted by some process, such as soap water and haradh, saffron, water from trees, fruits, and beans, etc., and absolute water is the opposite of it. I say this is nothing; it agrees with the first statement mentioned in additions, and its rejection will be there. 12 (signed) forgiven by Him. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द II

(अरबी टेक्स्ट बॉक्स - बाएँ: तथ्य वस्तुपरक होते हैं, और उनके अस्तित्व में व्यावहारिक उद्देश्यों का विचार किया जाता है। क्या आप नहीं देखते कि मनुष्य का सबसे बड़ा उद्देश्य इबादत (उपासना) है? अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और मैंने जिन्न और मनुष्यों को अपनी इबादत के सिवा किसी और काम के लिए पैदा नहीं किया।" एक काफ़िर में यह उद्देश्य लुप्त हो जाता है क्योंकि वह इबादत का पात्र नहीं है; इसके बावजूद, उसे 'इंसान' की सामान्य समझ से बाहर नहीं निकाला जाता। अल्लाह कहता है: "बेशक इंसान घाटे में है, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए।" और फ़रमाया: "लानत हो इंसान पर, वह कितना बड़ा नाशुक्रा है।"

(उर्दू अनुवाद बॉक्स - दाएँ: तो वास्तविकताएं भी समाप्त हो जाती हैं, जैसे रोज़ा, नमाज़ और पानी वस्तुपरक वास्तविकताएं हैं, और उनका अस्तित्व व्यावहारिक उद्देश्यों पर निर्भर है। क्या आप नहीं देखते कि मनुष्य का प्राथमिक उद्देश्य इबादत है? अल्लाह का फ़रमान है: "और मैंने जिन्न और मनुष्यों को केवल इबादत के लिए पैदा किया है।" ये चीज़ें काफ़िर में नहीं पाई जातीं क्योंकि वह इबादत का पात्र नहीं है; इसके बावजूद, जब 'इंसान' शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो वह इंसान की अवधारणा से बाहर नहीं होता। अल्लाह कहता है: "बेशक, मानव जाति घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो विश्वास करते हैं।" अल्लाह कहता है: "लानत हो इंसान पर; वह कितना कृतघ्न है।" (T)

(मध्य भाग): संक्षेप में, इस तुच्छ सेवक (लेखक), अल्लाह उसे क्षमा करे, का 'मा-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) की परिभाषा पर शोध (1) यह है: वह पानी जो अपनी स्वाभाविक तरलता पर बना रहे, और उसमें ऐसी कोई चीज़ मिश्रित या घुली हुई न हो जो मात्रा में उससे अधिक या उसके बराबर हो, और न ही ऐसी चीज़ जो मिलकर एक अलग नाम और अलग उद्देश्य वाली संयुक्त वस्तु बन जाए। समझने में आसानी के लिए, चर्चा की गई सभी उप-शाखाओं को इन दो फ़ारसी पंक्तियों में समाहित किया जा सकता है:

मुतलक़ वह पानी है जो अपनी प्राकृतिक स्थिति में हो, उसमें बराबर या अधिक मात्रा में कोई अन्य चीज़ न मिली हो। न ही किसी मिश्रण से वह ऐसी चीज़ बन जाए, जिसका शीर्षक और उद्देश्य पानी से अलग हो।

नोट: हाशिए पर दी गई मन्ह और सय्यिद की परिभाषाएँ13वीं और 14वीं थीं, और अल्लाह के फ़ज़ल से यह रज़वी परिभाषा 15वीं है।

(नीचे का बायाँ बॉक्स - अरबी): फिर मैंने अल-मुज्तबा से एक और परिभाषा देखी, जिसका ज़िक्र अल-बहर के अशुद्धियों वाले भाग में है: "प्रतिबंधित जल (मा-ए-मुक़य्यद) वह है जिसे किसी प्रक्रिया के माध्यम से निकाला जाए, जैसे साबुन का पानी, हरज़ (क्षार), ज़ाफ़रान, और पेड़ों, फलों और फलियों का पानी।" मुतलक़ पानी इसके विपरीत है। मैं कहता हूँ: (2) यह महत्वहीन है, और यह परिशिष्टों के बारे में आने वाले पहले कथनों से मेल खाता है, और इसका खंडन वहीं किया जाएगा। 12 (लेखक द्वारा हस्ताक्षरित)। (M)

(नीचे का दायाँ बॉक्स - उर्दू): फिर मैंने मुज्तबा से बहर की अशुद्धियों के अध्याय में एक और परिभाषा देखी, जिसमें कहा गया है कि प्रतिबंधित पानी वह है जिसे किसी प्रक्रिया द्वारा निकाला जाता है, जैसे साबुन का पानी और हरज़, ज़ाफ़रान, पेड़ों, फलों और फलियों का पानी आदि, और मुतलक़ पानी इसके विपरीत है। मैं कहता हूँ कि यह कुछ भी नहीं है; यह परिशिष्टों में उल्लिखित पहले कथन से सहमत है, और इसका खंडन वहीं होगा। 12 (लेखक द्वारा हस्ताक्षरित)। (T)

पृष्ठ 680 / 711

فتاوٰی رضویہ ، جلد ثانی

(Arabic Text Box): فحقیقة عینیة والمعتبر فی بقائھا المقاصد العرفیة الاتری ان اعظم المقصود من الانسان العبادة قال تعالٰی وماخلقت الجن والانس الا لیعبدون وقد فاتت الکافر اذلیس اھلا لھا ومع ذلك لم یخرج من المتفاھم باطلاق الانسان قال تعالٰی ان الانسان لفی خسر الا الذین امنو اوقال تعالٰی قتل الانسان ما اکفرہ۔

(Urdu Translation Box): تو حقائق بھی فوت ہوجاتے ہیں، جیسا کہ روزہ اور نماز اور پانی حقیقت عینیہ ہے اور اسی کی بقاء میں مقاصد عرفیہ ہیں، کیا تم نہیں دیکھتے ہو کہ انسان کا بڑا مقصود عبادت ہے فرمان الٰہی ہے "اور میں نے انس و جن کو عبادت ہی کیلئے پیدا کیا ہے" اور یہ چیزیں کافر میں نہیں پائی جاتی ہیں کیونکہ وہ عبادت کا اہل نہیں، اس کے باوجود جب لفظ انسان کا اطلاق کیا جاتا ہے تو مفہوم انسان سے خارج نہیں ہوتا ہے فرمان الٰہی ہے "بلاشبہ انسان خسارے میں ہے سوائے ایمان والوں کے"۔ فرمان الٰہی ہے "لعنت ہو انسان پر کتنا ناشکرا ہے۔ (ت)

بالجملہ تحقیق (۱) فقیر غفرلہ ، میں مائے مطلق کی تعریف عہ یہ ہے کہ وہ پانی کہ اپنی رقت طبعی پر باقی ہے اور اس کے ساتھ کوئی ایسی شے مخلوط و ممتزج نہیں جو اس سے مقدار میں زائد یا مساوی ہے نہ ایسی جو اس کے ساتھ مل کر مجموع ایک دوسری شے کسی جُدا مقصد کے لئے کہلائے ان تمام مباحث بلا لکہ فہم کیلئے جملہ فروع مذکورہ و غیر مذکورہ کو ان دو بیت میں منضبط کریں کہ

مطلق آبے ست کہ بر وقت طبعی خودست نہ درو ممتزج دگر چیز مساوی یا بیش نہ بخلطے کہ بترکیب کُند چیز دگر کہ بود ز آب جُدا در لقب و مقصد خویش

عہ: منح وسید کی تعریفیں کہ حاشیہ پر گزریں ۱۳ و ۱۴ تھیں اور یہ تعریف رضوی بحمدہ تعالٰی پازدھم

(Lower Arabic Text): ثم وجدت عن المجتبی تعریفا آخر ذکرہ عنہ فی انجاس البحر ان الماء المقید ما استخرج بعلاج کماء الصابون والحرض والزعفران والاشجار والاثمار والباقلاء اہ فالمطلق خلافہ اقول: (۲) لیس بشیئ ویوافقہ اول الاقوال الآتیۃ فی الاضافات وسیأتی ردہ ثبہ ۱۲ منہ غفرلہ- (م)

(Lower Urdu Translation): پھر میں نے مجتبٰی سے ایک اور تعریف بحر کے انجاس میں دیکھی کہ مقید پانی وہ ہے جو کسی عمل کے ذریعہ نکالا جائے، جیسے صابون کا پانی اور حرض، زعفران، درختوں، پھلوں اور باقلی کا پانی اھ اور مطلق اس کے خلاف ہے، میں کہتا ہوں یہ کچھ بھی نہیں، اس کی موافقت اضافات میں وارد شدہ پہلے قول سے ہوتی ہے، اس کی تردید وہاں ہوگی ۱۲منہ غفرلہ (ت)

Volume Two Fatawa Razawiyya And from Allah comes success * and praise be to Him for showing the path * and the most excellent blessings and most perfect peace be upon the Beloved Friend * and his family and companions, the people of research, and all who follow him in faith and affirmation * Amen * and all praise is due to Allah, Lord of the worlds. Additions (1): The name "water" (maa') is attributed to many things. Some of these fall outside the category of water and are called water only by way of metaphor, such as 'gold water' (aap-e-zar) or 'camphor water' (aap-e-kafoor). Those that are truly water include 'absolute water' (maa-e-mutlaq) like rain water and river water, and 'restricted water' (maa-e-muqayyad) like honey water (maa-ul-asal) or barley water (maa-ush-shair). The former is called an attribution of definition (idafat-e-ta'reef) and the latter an attribution of restriction (idafat-e-taqyeed). Scholars have distinguished between them in several ways: First, if water is extracted from something through a process (tadbeer), its attribution to that thing will be one of restriction; otherwise, it is an attribution of definition. It is stated in Inayah etc.:

Arabic Text

Attributing it to saffron is for definition, not for restriction. The difference between the two is that if the attributed (mudhaf) is not separated from that to which it is attributed (mudhaf ilayh) through some process, then the attribution is for definition. If it is separated from it, then it is for restriction, like rose water. End of quote. I say: If (2) the intention is its creation through a process as in rose water and all other distillates, then coconut water, watermelon water, and Indian date palm water (called Taari) exist naturally; the process is only for their extraction, just as phlebotomy (fasd) is performed to extract blood. And if the intention is its appearance through it, then it should not apply to well water because its appearance from the earth is through the process of digging the well,

Urdu Translation

The attribution of water to saffron is for definition, not for restriction. The difference between the two is that if the mudhaf (water) is not extracted from the mudhaf ilayh (saffron) through some action, then the attribution is for definition. And if it is extracted through a process, then it is for restriction, like rose water. End of quote. I say, if their intention is its creation by process as in rose water or in those other waters which are extracted by squeezing, then coconut water, watermelon water, and toddy (palm wine) water are besides these because these waters already exist; the process is only for their extraction, just like phlebotomy is performed for extracting blood. And if this is the intention that its appearance is through it, then if there is no objection regarding

Arabic Text	Urdu Translation
not from that to which it is attributed (the well), and honey water... for water	well water, that its appearance is also through digging the earth...

1. Al-Inayah with Al-Fath al-Qadeer, Chapter on Water with which Wudu is Permissible, Nooriya Razawiyya Sukkur, 1/63. Page 681 of 711

जिल्द सानी (भाग दो) फ़तावा रज़विया और अल्लाह ही से तौफ़ीक़ (सफलता) है * और उसी की हम्द (प्रशंसा) है रास्ता दिखाने पर * और अफ़ज़ल सलवात और कामिल सलाम हो हबीब-ए-रफ़ीक़ पर * और उनकी आल और असहाब पर जो तहक़ीक़ वाले हैं और उन सब पर जिन्होंने ईमान और तस्दीक़ के साथ उनकी पैरवी की * आमीन * और तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। इज़ाफ़ात (१): बहुत सी चीज़ों पर पानी का नाम किसी चीज़ की तरफ़ मुज़ाफ़ (जोड़कर) करके बोला जाता है। उनमें से कुछ तो जिन्स-ए-आब (पानी की श्रेणी) से बाहर हैं और उन पर आब (पानी) का इत्लाक़ (नाम देना) महज़ बतौरे तशबीह (उपमा के रूप में) है जैसे आब-ए-ज़र (सोने का पानी), आब-ए-काफ़ूर। और जो हक़ीक़तन पानी हैं उनमें कुछ 'माए मुतलक़' (पूर्ण पानी) हैं जैसे बारिश का पानी, दरिया का पानी और कुछ 'माए मुक़य्यद' (सीमित पानी) जैसे मा-उल-असल (शहद का पानी), मा-उश-शईर (जौ का पानी)। पहले को 'इज़ाफ़ते-तारीफ़' (परिभाषा का संबंध) कहते हैं और दूसरे को 'इज़ाफ़ते-तक़यीद' (प्रतिबंध का संबंध)। उलेमा ने इनमें कई तरह से फ़र्क़ फ़रमाया है: अव्वल, जो पानी किसी चीज़ से बज़रीया-ए-तदबीर (किसी प्रक्रिया द्वारा) निकाला जाए, उसकी तरफ़ पानी की इज़ाफ़त 'तक़यीद' होगी, वरना 'इज़ाफ़ते-तारीफ़'। इनाया वगैरह में है:

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
इसकी इज़ाफ़त ज़ाफ़रान की तरफ़ तारीफ़ के लिए है न कि तक़यीद के लिए। दोनों में फ़र्क़ यह है कि अगर मुज़ाफ़, मुज़ाफ़ इलैह से इलाज (प्रक्रिया) के ज़रिए बाहर न निकला हो तो इज़ाफ़त तारीफ़ के लिए है और अगर तदबीर से बाहर हो तो तक़यीद के लिए है जैसे मा-उल-वर्द (गुलाब का पानी)। इह (समाप्त)। मैं कहता हूँ: अगर (२) मुराद इसकी पैदाइश तदबीर से हो जैसे गुलाब के पानी में और दीगर तमाम कसीद किए हुए पानियों में है, तो नारियल का पानी, तरबूज़ का पानी और खजूर का पानी जिसे ताड़ी कहते हैं, वे मौजूद होते हैं और तदबीर सिर्फ़ उन्हें निकालने के लिए होती है जैसे खून निकालने के लिए फ़स्द (नस खोलना) की	पानी की इज़ाफ़त ज़ाफ़रान की तरफ़ तारीफ़ के लिए है न कि तक़यीद के लिए। और दोनों में फ़र्क़ यह है कि अगर मुज़ाफ़, मुज़ाफ़ इलैह से अमल के ज़रिए न निकाला गया हो तो इज़ाफ़त तारीफ़ के लिए है और अगर तदबीर से बाहर हो तो तक़यीद के लिए है जैसे गुलाब का पानी। इह (समाप्त)। मैं कहता हूँ अगर उनकी मुराद इसकी पैदाइश तदबीर से है जैसे गुलाब के पानी में या दूसरे उन पानियों में है जो निचोड़ कर निकाले जाते हैं तो नारियल का पानी, तरबूज़ का पानी, ताड़ी का पानी, इसके अलावा हैं कि ये पानी पहले से ही मौजूद होते हैं, तदबीर सिर्फ़ उनके निकालने के लिए की जाती है जैसे

अरबी इबारत

जाती है। और अगर मुराद इसके ज़रिए इसका ज़हूर (प्रकट होना) हो, तो कुएं का पानी इसमें नहीं आएगा क्योंकि ज़मीन से इसका ज़हूर कुआं खोदने की तदबीर से है न कि मुज़ाफ़ इलैह से, और शहद का पानी... क्योंकि पानी

उर्दू तर्जुमा

खून निकालने के लिए फ़स्द खुलवाई जाती है। और अगर यह मुराद हो कि इसके ज़रिए इसका ज़हूर हो, तो अगर कुएं के पानी से एतराज़ (आपत्ति) न हो कि इसका ज़हूर भी ज़मीन के खोदने...

1. अल-इनाया मअल-फ़तहुल क़दीर, बाबुल मा अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, नूरिया रज़विया सुक्कुर १/६३ पेज ६८१ ऑफ़ ७११

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ وباللہ التوفیق ولہ الحمد علی اراءۃ الطریق وافضل الصلوۃ واکمل السلام علی الحبیب الرفیق وآلہ وصحبہ اولی التحقیق و سائر من دانہ بالایمان و التصدیق آمین* والحمد للہ رب العلمین۔ اضافات (۱) بہت چیزوں پر پانی کا نام کسی شے کی طرف مضاف کر کے بولا جاتا ہے اُن میں بعض تو جنس آب سے خارج ہیں اور اطلاقِ آب محض بطور تشبیہ جیسے آبِ زر، آبِ کافور اور جو حقیقۃً پانی ہیں ان میں کچھ مائے مطلق ہیں جیسے آبِ باراں، آبِ دریا اور کچھ مائے مقید جیسے ماء العسل، ماء الشعیر اول کو اضافتِ تعریف کہتے ہیں اور دوم کو اضافتِ تقیید۔ علماء نے ان میں چند طرح فرق فرمایا: اول جو پانی کسی شے سے بذریعہ تدبیر نکالا جائے اُس کی طرف پانی کی اضافت تقیید ہوگی ورنہ اضافتِ تعریف، عنایہ وغیرہ میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اضافته الی الزعفران للتعریف لاللتقیید	پانی کی اضافت زعفران کی طرف تعریف کیلئے ہے نہ
الفرق بینهما ان المضاف ان لم یکن خارجاً	کہ تقیید کیلئے، اور دونوں میں فرق یہ ہے کہ اگر
عن المضاف الیه بالعلاج فالاضافة	مضاف، مضاف الیہ سے عمل کے ذریعہ نہ نکالا گیا ہو
للتعریف وان کان خارجاً منه فللتقیید کماء	تو اضافت تعریف کیلئے ہے اور اگر تدبیر سے خارج
الورد [1] اه اقول: ان (۲) کان المراد حدوثه	ہو تو تقیید کیلئے ہے جیسے گلاب کا پانی اھ میں کہتا
بالتدبیر کما هو فی ماء الورد و سائر	ہوں اگر ان کی مراد اس کا حدوث ہے تدبیر سے جیسے
المستقطرات ورد ماء النارجیل وماء	گلاب کے پانی میں یا دوسرے ان پانیوں میں ہے جو
الجبحب وماء النخل الهندی المسمی تارفانها	نچوڑ کر نکالے جاتے ہیں تو ناریل کا پانی، تربوز کا
موجودة وانما التدبیر لاخراجها کالفصد	پانی، تاڑی کا پانی، اس کے علاوہ ہیں کہ یہ پانی سے
لاخراج الدم وان ارید ظهوره به فان لم یرد	ہی موجود ہوتے ہیں تدبیر صرف ان کے نکالنے کیلئے

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ماء البئر لان ظهوره من الارض بالتدبير بحفر البئر لا من المضاف اليه ورد ماء العسل فان الماء	کی جاتی ہے جیسے خون نکالنے کیلئے فصد کھلوائی جاتی ہے، اور اگر یہ مراد ہو کہ اس کا اس کے ذریعہ ظہور ہو، پس اگر کنویں کے پانی سے اعتراض نہ ہو کہ اس کا ظہور بھی زمین کے کھودے

1 العناية مع الفتح القدير باب الماء الذى يجوز بہ الوضو نوريہ رضويہ سكهر ١/ ٦٣ Page 681 of 711

Fatawa Razawiyya Volume Two

[Table/Box 1] Arabic: For water is apparent in itself; the process (tadbeer) is only in its mixing by cooking it with honey. Thus, if honey-water (ma' al-asal) as such is intended, then its occurrence is through processing, not merely by manifestation. Urdu: ...is through the 'annexed' (mudhaf ilayh) and not through it itself, then an objection would arise regarding honey-water. Because water is apparent in itself, processing occurs by mixing and cooking it with honey. And if honey-water as such is intended, then its occurrence would be by processing, not merely by manifestation. (T)

Secondly, where the essence of the 'annexed' (mudhaf) is complete, the annexation is for the purpose of definition, like the Dawn (Fajr) prayer. And if it is deficient, it is for restriction (taqyid), like the Funeral (Janaza) prayer, which does not contain bowing, prostration, recitation, or sitting. It is stated in Al-Kifayah and Majma' al-Anhur:

[Table/Box 2] Arabic: The sign of a restrictive annexation is the deficiency of the essence in the annexed part, as if its deficiency restricts it so that it does not fall under the absolute (mutlaq). For example: someone swore that they would not pray, then they prayed the Noon (Dhuhr) prayer; they break their oath (yanhath) because it is an absolute prayer, and its annexation to Dhuhr is for definition. However, they do not break their oath by performing the funeral prayer because it is not an absolute prayer, and its annexation to 'Janaza' (funeral) is for restriction. 1 Urdu: The sign of restrictive annexation is the deficiency of the essence in the annexed part; it is as if its being deficient is its restriction so that it does not enter under the absolute. Its example is that someone swore they would not pray, and then they prayed the Dhuhr prayer; they will be considered to have broken the oath because that is an absolute prayer, and its annexation towards Dhuhr is for definition. Performing the funeral prayer will not break the oath because it is not an absolute prayer, and its annexation towards the funeral is for restriction. (T)

Similarly, in Shalabiya 'ala al-Zayla'i, it is quoted from Mi'raj al-Dirayah Sharh al-Hidayah, and also in Mushkilat by Imam Khawahir Zadah: Annotation: This is what is inferred from the words of Imam al-Ayni, as he considered broad-bean water (ma' al-baqali) as something resulting from a process. Otherwise, there is no occurrence or manifestation in the water itself; rather, it was already present and apparent. What occurred was the mixture in its mixed state. Thus, the first part is determined in his words. (May he be forgiven) Urdu: This is inferred from the words of Al-Ayni. He

considered broad-bean water to be water resulting from processing. Otherwise, there is neither occurrence nor manifestation in water; rather, it was existing and apparent beforehand. However, the mixture as a mixture was created later. Thus, in his words, the first possibility was determined. (May he be forgiven) (T)

1 Shalabiya 'ala al-Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah Bulaq, Egypt, 1/21.

फ़तावा रज़विया जिल्द दो

[बॉक्स 1] अरबी: क्योंकि पानी स्वयं में प्रकट है; प्रक्रिया (तदबीर) केवल उसे शहद के साथ पकाकर मिलाने में है। अत; यदि 'शहद-पानी' (मा-अल-असल) को उसी रूप में अभिप्रेत किया जाए, तो उसकी उत्पत्ति प्रक्रिया के माध्यम से होती है, न कि केवल प्रकटीकरण से। उर्दू: ...संबद्ध (मुज़ाफ़ इलैह) के माध्यम से होता है न कि स्वयं उसके माध्यम से, तो शहद-पानी के संबंध में आपत्ति उत्पन्न होगी। क्योंकि पानी स्वयं में स्पष्ट है, प्रक्रिया उसे शहद में मिलाकर पकाने से होती है। और यदि शहद-पानी के रूप में ही अभिप्रेत हो, तो उसकी उत्पत्ति प्रक्रिया से होगी न कि केवल प्रकटीकरण से। (त)

दूसरे, जहाँ 'मुज़ाफ़' (संबद्ध) का सार पूर्ण होता है, वहाँ संबंध परिभाषा (तारीफ़) के लिए होता है, जैसे फज्र की नमाज़। और यदि यह अपूर्ण है, तो यह प्रतिबंध (तक़ीद) के लिए है, जैसे जनाज़ा की नमाज़, जिसमें रुकू सजदा, पाठ या बैठना नहीं होता। अल-किफ़ाया और मजमा अल-अनहुर में कहा गया है:

[बॉक्स 2] अरबी: प्रतिबंधात्मक संबंध का संकेत संबद्ध भाग में सार की कमी है, जैसे कि उसकी कमी उसे प्रतिबंधित करती है ताकि वह निरपेक्ष (मुतलक़) के अंतर्गत न आए। उदाहरण: किसी ने शपथ ली कि वह नमाज़ नहीं पढ़ेगा, फिर उसने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी; वह शपथ तोड़ता है (यन्हास) क्योंकि यह एक निरपेक्ष नमाज़ है, और ज़ुहर के साथ इसका संबंध परिभाषा के लिए है। हालाँकि, वह जनाज़ा की नमाज़ पढ़कर शपथ नहीं तोड़ता क्योंकि यह एक निरपेक्ष नमाज़ नहीं है, और 'जनाज़ा' के साथ इसका संबंध प्रतिबंध के लिए है। 1 उर्दू: प्रतिबंधात्मक संबंध का संकेत संबद्ध भाग में सार का अधूरा होना है; मानो उसका अधूरा होना ही उसका प्रतिबंध है ताकि वह निरपेक्ष के अंतर्गत न आए। इसका उदाहरण यह है कि किसी ने शपथ ली कि वह नमाज़ नहीं पढ़ेगा, और फिर उसने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी; तो वह शपथ तोड़ने वाला माना जाएगा क्योंकि वह एक निरपेक्ष नमाज़ है, और ज़ुहर की ओर उसका संबंध परिभाषा के लिए है। जनाज़ा की नमाज़ पढ़ने से शपथ नहीं टूटेगी क्योंकि वह निरपेक्ष नमाज़ नहीं है, और जनाज़ा की ओर उसका संबंध प्रतिबंध के लिए है। (त)

इसी प्रकार, शलबिया अला अल-ज़ैला'ई में मेराज अल-दिराया शराह अल-हिदाया से उद्धृत है, और इमाम खवाहिर ज़ादा की मुश्किलात में भी है: फुटनोट: यह इमाम अल-ऐनी के शब्दों से अनुमानित है, क्योंकि उन्होंने सेम के पानी (मा-अल-बाक़ली) को प्रक्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला पानी

माना था। अन्यथा, पानी में कोई नई घटना या प्रकटीकरण नहीं है; बल्कि वह पहले से ही मौजूद और स्पष्ट था। जो हुआ वह मिश्रित अवस्था में मिश्रण था। इस प्रकार, उनके शब्दों में पहला भाग निर्धारित होता है। (ईश्वर उन्हें क्षमा करे) उर्दू: यह ऐनी के शब्दों से निकाला गया है। उन्होंने सेम के पानी को प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाला पानी माना है। अन्यथा पानी में न तो कोई उत्पत्ति है और न ही प्रकटीकरण; बल्कि वह पहले से ही मौजूद और स्पष्ट था। हालाँकि, मिश्रण के रूप में मिश्रण बाद में पैदा हुआ। अत; उनके शब्दों में पहली संभावना निर्धारित हो गई। (ईश्वर उन्हें क्षमा करे) (त)

1 शलबिया अला अल-तब्यीन अल-हक़ा'इक़, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया बुलाक़, मिस्र, 1/21।

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[پہلا خانہ] عربی: فان الماء ظاہر بنفسہ انما التدبیر فی امتزاجہ طبخاً بالعسل فانارید عہ ماء العسل من حیث ہو ماء العسل فحدوثہ بالتدبیر لامجرد ظہورہ۔ اردو: سے ہوتا ہے مضاف الیہ سے نہیں ہوتا تو شہد کے پانی کے ذریعہ اعتراض وارد ہوگا، کیونکہ پانی بنفسہ ظاہر ہے تدبیر تو اس کو شہد میں ملا کر پکانے سے ہوتی ہے اور اگر شہد کا پانی من حیث ھو مراد ہو تو اس کا حدوث تدبیر سے ہوگا نہ کہ محض ظہور سے۔ (ت)

دوم جہاں ماہیت مضاف کامل ہو اضافت تعریف کیلئے ہے جیسے نماز فجر اور قاصر ہو تو تقیید کیلئے جیسے نماز جنازہ کہ رکوع و سجود و قرات و قعود نہیں رکھتی، کفایہ و مجمع الانہر میں ہے:

[دوسرا خانہ] عربی: علامة اضافة التقييد قصور الماهية في المضاف كأن قصورها قيده كيلا يدخل تحت المطلق مثاله (ا) حلف لا يصلى فصلى الظهر يحنث لانها صلاة مطلقة واضافتها الى الظهر التعريف ولا يحنث بصلاة الجنازة لانها ليست بصلاة مطلقة واضافتها اليها للتقييد ١۔ اردو: تقیید کی اضافت کی علامت مضاف میں ماہیت کا ناقص ہونا ہے، گویا اس کا ناقص ہونا اس کی قید ہے تاکہ مطلق کے تحت داخل نہ ہو ، اس کی مثال یہ ہے کہ کسی نے حلف اٹھایا کہ وہ نماز نہ پڑھے گا پھر اس نے ظہر کی نماز پڑھی تو حانث ہو جائیگا کہ وہ مطلق نماز ہے اور اس کی اضافت ظہر کی طرف تعریف کیلئے ہے اور نماز جنازہ پڑھنے سے حانث نہ ہوگا کیونکہ وہ مطلق نماز نہیں ہے اور اس کی اضافت جنازہ کی طرف تقیید کیلئے ہے۔ (ت)

اسی طرح شلبیہ علی الزیلعی میں معراج الدرایہ شرح ہدایہ سے ہے نیز اسی میں مشکلات امام خواہر زادہ عہ: ہذا ھو مفاد کلام الامام العینی اذ جعل ماء الباقلی خارجا بالتدبیر والا فالماء لاحدث بہ ولاظھر بل کان موجودا ظاھرا من قبل انما حدث المزوج من حیث ھو مزوج فتعین فی کلامہ الشق الاول ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) یہ عینی کے کلام سے مستفاد ہوتا ہے، انہوں نے باقلی کے پانی کو تدبیر سے خارج ہونے والا پانی قرار دیا ہے ورنہ تو پانی میں نہ کوئی حدوث ہے اور ظہور، بلکہ وہ موجود و ظاہر پہلے تھا البتہ ممزوج من حیث المزوج بعد میں پیدا ہوا، تو ان کے کلام میں شق اول متعین ہو گئی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 شلبیہ علی التبیین الحقائق کتاب الطہارۃ الامریہ ببولاق مصر ۲۱/۱

Fatawa Razawiyya Volume Two

From:

[Arabic Text]: Every essence that is complete, its attribution is for definition. Every essence that is deficient, its attribution is for restriction. An example of the former is rainwater and sea water, and the Solar Eclipse prayer. An example of the latter is bean-water and the Funeral prayer. [Urdu Translation]: Every thing in which the essence is complete, its attribution is for definition. And that in which the essence is deficient, its attribution is for restriction. An example of the former is rainwater and sea water, and the Solar Eclipse prayer. And the example of the second is bean-water and the Funeral prayer. End. I say: (1) Deficiency of essence is only in bean-water and the like among those waters which have thickened and lost their fluidity. As for that which changed due to addition, like fermented drinks and diluted milk, they have changed, not decreased. However, if 'deficiency and decrease' are intended to metaphorically encompass negation, the Arabs say 'qalla' (it became little) meaning it ceased to exist; it is mentioned similarly in Naseem al-Riyadh. (T)

Thirdly: Where one can say 'water' without the need to mention a restriction, the attribution is for definition; and where mentioning a restriction is necessary to call it 'water', the attribution is for restriction. It is stated in Maraqi al-Falah:

[Arabic Text]: The difference between the two attributions is the correctness of applying the term 'water' to the first but not the second. For it is not correct to say of rose water, 'This is water,' without the restriction of 'rose'. In contrast, with well water, it is correct to apply the term 'water' to it. [Urdu Translation]: The difference between the two attributions is that it is correct to apply the term 'water' to the first, but not to the second. Because it is not correct to call rose water 'this is water', it is necessary to apply the restriction of 'rose'. Yes, one can call well water 'this is water'. (T)

In al-Bahr it is stated:

[Arabic Text]: In 'sea water', the attribution is for definition, unlike restricted water, for the restriction is essential for it and not permissible [to omit]. [Urdu Translation]: In 'sea water', the attribution is for definition, unlike restricted water, because the restriction is necessary for it.

1. Shalmiyah 'ala al-Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, 1/21.
2. Maraqi al-Falah, Book of Purification, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, p. 13.

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी

से है:

[अरबी पाठ]: हर वह चीज़ जिसमें माहियत (तत्व) पूर्ण हो तो उसमें इज़ाफ़त (संबंध) परिभाषा के लिए है और जिसमें माहियत अपूर्ण हो तो उसमें इज़ाफ़त प्रतिबंध के लिए है। [उर्दू अनुवाद]: हर वह चीज़ जिसमें माहियत पूर्ण हो तो उसमें इज़ाफ़त परिभाषा के लिए है और जिसमें माहियत अपूर्ण हो तो उसमें इज़ाफ़त प्रतिबंध के लिए है। पहले की मिसाल 'माउस्समा' (वर्षा जल) और 'माउल बह्र' (समुद्र का पानी) और नमाज़-ए-कुसूफ़ (सूर्य ग्रहण की नमाज़) है, और दूसरे की मिसाल 'माउल बाक़ला' (सेम का पानी) और नमाज़-ए-जनाज़ा है। मैं कहता हूँ माहियत का अपूर्ण होना 'माउल बाक़ला' में है या इस किस्म के और पानियों में जो गाढ़े हो गए हों और उनमें से तरलता खत्म हो गई हो। लेकिन वह पानी जो किसी अधिकता के कारण बदल गया हो जैसे नबीज़ और मज़क़ तो ये बदल गए हैं, कम नहीं हुए। हाँ, अगर अपूर्णता और कमी से मुराद वह हो जो इंतिफ़ा (अस्तित्वहीनता) को रूपक के तौर पर आम हो, अरब के लोग कहते हैं 'क़ल्ला' यानी वह लुप्त हो गया, नसीम अल-रियाज़ में ऐसा ही है। (त)

तीसरा: जिसे बिना किसी ज़रूरत के'पानी' कह सकें वहाँ इज़ाफ़त परिभाषा की है और जहाँ पानी कहने में प्रतिबंध का उल्लेख ज़रूरी हो वहाँ इज़ाफ़त प्रतिबंध की, मराक़ी अल-फ़लाह में है:

[अरबी पाठ]: दोनों इज़ाफ़तों में फ़र्क यह है कि पहली पर पानी का प्रयोग सही है, दूसरी पर नहीं है क्योंकि गुलाब के पानी को 'यह पानी है' कहना सही नहीं, इसमें 'गुलाब' का प्रतिबंध लगाना ज़रूरी है, इसके विपरीत कुएँ के पानी को 'पानी' कहना सही है। [उर्दू अनुवाद]: दोनों इज़ाफ़तों में फ़र्क यह है कि पहली पर पानी का प्रयोग सही है दूसरी पर नहीं है क्योंकि गुलाब के पानी को 'हाज़ा मा' कहना सही नहीं, इसमें 'वर्द' (गुलाब) का प्रतिबंध लगाना ज़रूरी है, हाँ कुएँ के पानी को 'हाज़ा मा' कह सकते हैं। (त)

बह्र में है:

[अरबी पाठ]: 'समुद्र का पानी' में इज़ाफ़त परिभाषा के लिए है, इसके विपरीत प्रतिबंधित पानी के, क्योंकि प्रतिबंध उसके लिए अनिवार्य है और अनुमेय नहीं है। [उर्दू अनुवाद]: समुद्र के पानी में इज़ाफ़त परिभाषा के लिए है, प्रतिबंधित पानी के विपरीत, क्योंकि प्रतिबंध उसके लिए अनिवार्य है।

1. शलमिया अला अल-तबीन अल-हक़ाएक़, किताब अल-तहारत, मताब'अत अल-अमीरिया, बोलाक़, मिस्र, 1/21.
2. मराक़ी अल-फ़लाह, किताब अल-तहारत, मताब'अत अल-अमीरिया, बोलाक़, मिस्र, पृ. 13.

पृष्ठ 683/711

سے ہے:

کل ماکانت الماھیۃ فیہ کاملۃ فالاضافۃ فیہ للتعریف | ہر وہ چیز جس میں ماہیت کامل ہو تو اس میں اضافت تعریف وماکانت ناقصۃ فالاضافۃ للتقیید نظیر الاول ماء | کیلئے ہے اور جس میں ماہیت ناقص ہو تو اس میں اضافت السماء وماء البحر وصلاۃ الکسوف ونظیر الثانی ماء | تقیید کیلئے ہے پہلے کی نظیر ماء السماء اور ماء البحر اور صلوۃ الباقلاء وصلاۃ الجنازۃ اھ اقول: (۱) قصور الماھیۃ | الکسوف ہے اور دوسری کی مثال ماء الباقلی اور صلوۃ الجنازہ ہے انما ھو فی ماء الباقلا ونحوہ عماثخن وزالت رقتہ | اھ میں کہتا ہوں ماہیت کا ناقص ہونا ماء الباقلی میں ہے یا اس اما فی المتغیر بالزیادۃ کالانبذۃ والمذق فتبدلت | قسم کے اور پانیوں میں جو گاڑھے پڑ گئے ہوں اور ان میں سے لا نقصت الا ان یراد بالقصور والنقص مایعم | رقت ختم ہوگئی ہو لیکن وہ پانی جو کسی زیادتی کے باعث الانتفاء مجازا (۲) تقول العرب قل ای عدم کما | متغیر ہوگئے ہوں جیسے نبیذ ومذق تو یہ تبدیل ہوئے ہیں کم فی نسیم الریاض۔ | نہیں ہوئے۔ ہاں اگر قصور ونقص سے مراد وہ ہو جو انتفاء کو | عام ہو مجازا، عرب کے لوگ کہتے ہیں قلّ یعنی معدوم ہو گیا، | نسیم الریاض میں ایسا ہی ہے۔ (ت)

سوم: جسے بے حاجتِ ذکرِ قید پانی کہہ سکیں وہاں اضافت تعریف کی ہے اور جہاں پانی کہنے میں ذکرِ قید ضروری ہو تقیید کی، مراقی الفلاح میں ہے:

الفرق بین الاضافتین صحۃ اطلاق الماء علی الاول | دونوں اضافتوں میں فرق یہ ہے کہ پہلی پر پانی کا اطلاق صحیح ہے دون الثانی اذلا یصح ان یقال لماء الورد ھذا ماء من | دوسری پر نہیں ہے

کیونکہ گلاب کے پانی کو ہٰذا ماء کہنا صحیح غیر قید بالورد بخلاف ماء البئر لصحۃ اطلاقہ فیہ | نہیں، اس میں ورد کی قید لگانا ضروری ہے، ہاں کنویں کے | پانی کو ہٰذا ماء کہہ سکتے ہیں۔ (ت)

بحر میں ہے: ماء البحر الاضافۃ فیہ للتعریف بخلاف الماء | ماء البحر اس میں اضافت تعریف کے لئے ہے بخلاف مقید پانی المقید فان القید لازم لہ لایجون | کے، کیونکہ قید اس کو لازم ہے

1 شلمیۃ علی التبیین الحقائق کتاب الطھارۃ مطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ۲۱/۱ 2 مراقی الفلاح کتاب الطہارۃ مطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ص ۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 2

“Applying the term 'water' to it without restriction is not permissible, such as rose water.” (End quote)[1] I say: This is the seventh definition of 'Mutlaq' (absolute/ unrestricted water). The same discussion applies here as before. It is called rose water, although in reality it is not water. Thus, upon investigation, it is not categorized under 'Muqayyad' (restricted water). As for 'Muqayyad' such as saffron-water which is suitable for dyeing, it is definitely water and it is correct to say 'this is water' because the predication of the whole on its part is a self-evident necessity. Yes, from our absolute statement 'water' (Al-Ma'), and this is something other than predication, and it is not correct to intend the predication of absolute water. This would mean that absolute water is predicated on restricted water while mentioning the restriction, which is a combination of opposites. The answer is as previously mentioned.

Fourthly, where the name 'water' can be negated, i.e., it can be said 'this is not water', there the addition (idafat) is for restriction (taqyid), otherwise it is for definition (ta'rif). It is stated in 'Tabyin': “Its addition to saffron and the like is for definition, just like its addition to a well. In contrast, melon-water and the like have addition for restriction, which is why the name 'water' is negated for them, and its negation from the former is not permissible.” (End quote)[2] I say: This is the eighth definition of 'Mutlaq'.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharat, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/26.
2. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharat, Al-Amiriyya, Bulaq, Egypt, 1/21.

फ़तावा रज़विया खण्ड 2

“बिना किसी प्रतिबंध के इस पर 'पानी' शब्द का प्रयोग करना जायज़ नहीं है जैसे गुलाब का पानी।” (उद्धरण समाप्त)[1] मैं कहता हूँ: यह 'मुतलक़' (पूर्ण जल) की सातवीं परिभाषा है। और इस पर वही चर्चा है जो पहले गुज़री। इसे गुलाब जल कहा जाता है, हालाँकि वास्तव में यह पानी नहीं है। अतः शोध के अनुसार, यह 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित जल) की श्रेणी में नहीं आता। जहाँ तक 'मुक़य्यद' जैसे केसर का पानी है जो रंगने के योग्य हो, तो वह निश्चित रूप से पानी है और इसे 'हाज़ा मा' (यह पानी है) कहना सही है क्योंकि अंश पर पूर्ण का आरोपण स्वयं-सिद्ध आवश्यकताओं में से है। हाँ, जब हम 'अल-मा' (पानी) कहते हैं और 'हाज़ा' (यह), तो इससे आरोपण (हमल) के अलावा और कुछ समझ में नहीं आता और मुतलक़ पानी के आरोपण का इरादा सही नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि मुतलक़ पानी मुक़य्यद पर आरोपित होगा और प्रतिबंध का भी उल्लेख किया जाएगा, जो कि दो विरोधाभासी बातों का मिलना है। इसका उत्तर वही है जो पहले गुज़रा।

चौथा, जहाँ पानी के नाम को नकारा जा सके यानी कहा जा सके कि यह पानी नहीं है, वहाँ संबंध (इज़ाफ़त) प्रतिबंध (तक़यीद) के लिए है, अन्यथा यह परिभाषा (तारीफ़) के लिए है। 'तब्बीन' में कहा गया है: “केसर आदि की ओर इसका संबंध परिभाषा के लिए है, जैसे कुएं की ओर पानी का संबंध। इसके विपरीत तरबूज के पानी आदि में संबंध प्रतिबंध के लिए है, इसीलिए उनसे पानी का नाम हटा दिया जाता है, और पहले वाले से इसका निषेध जायज़ नहीं है।” (उद्धरण समाप्त)[2] मैं कहता हूँ: यह मुतलक़ की आठवीं परिभाषा है।

1. अल-बह्र अल-रईक़, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/26।
2. तब्बीन अल-हक़ा'इक़, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/21।

पृष्ठ 684/711

اطلاق الماء علیه بدون القید کماء الورد[1] اھـ اس پر پانی کا اطلاق بلاذکر قید جائز نہیں جیسے گلاب کا پانی اھـ (ت) اقول: ھذا ھو السابع فی تعریفات المطلق میں کہتا ہوں یہ مطلق کی ساتویں تعریف ہے اور اس پر وہی والکلام الکلام فیقال ماء الورد لیس ماء حقیقة گفتگو ہے جو گزری، کہا جاتا ہے گلاب کا پانی، حالانکہ در حقیقت فعلی التحقیق لیس من المقید اما المقید کماء یہ پانی نہیں ہے تو تحقیقی طور پر یہ مقید نہیں مقید جیسے ماء الزعفران الصالح للصبغ فماء قطعاً ویصح ان الزعفران جو رنگنے کی صلاحیت رکھتا ہو تو یہ قطعاً پانی ہے اور یقال ہذا ماء لان صحة حمل المقسم علی اس کو ہذا ماء کہہ سکتے ہیں کیونکہ مقسم کا قسم پر محمول ہونا القسم من الضروریات نعم لا یفہم من اطلاق بدیہیات میں سے ہے، ہاں جب ہم الماء اور ہذا کہتے ہیں تو قولنا الماء وھذا شیئی غیر الحمل ولا یصح ارادة اس سے سوائے حمل کے اور کچھ سمجھ میں نہیں آتا اور ماء حمل الماء المطلق فیرجع الی ان المقید یحمل مطلق کے حمل کا ارادہ صحیح نہیں تو اس کا مطلب یہ ہوا کہ مقید علیہ الماء المطلق مع ذکر القید وہذا جمع بین پر الماء المطلق محمول ہوگا اور قید بھی ذکر کی جائے گی اور یہ النقیضین والجواب مآمر۔ جمع بین النقیضین ہے اور جواب وہ ہے جو گزرا۔ (ت) چہارم جس سے پانی کی نفی کر سکیں یعنی کہہ سکیں کہ یہ پانی نہیں وہاں اضافت تقیید کی ہے ورنہ تعریف کی، تبیین میں ہے: اضافتہ الی الزعفران ونحوہ للتعریف کاضافتہ الی اس کی اضافت زعفران وغیرہ کی طرف تعریف کیلئے ہے البئر بخلاف ماء البطیخ ونحوہ حیث تکون اضافتہ جیسے پانی کی اضافت کنویں کی طرف، بخلاف ماء البطیخ وغیرہ للتقیید ولھذا ینفی اسم الماء عنہ ولا یجوز نفیہ کے، وہاں اضافت تقیید کیلئے ہے، اس لئے پانی کا نام اس سے عن الاول[2] اھـ منفی

کیا جاتا ہے اور اس کی نفی اول سے جائز نہیں اھ (ت) اقول: ھذا ھو ثامن تعریفات المطلق میں کہتا ہوں یہ مطلق کی آٹھویں تعریف ہے

1۔ بحر الرائق کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۶ 2۔ تبیین الحقائق کتاب الطہارت الامیریہ بولاق مصر ۱/۲۱

Fatawa Rizvia Volume Two

Regarding the discussion mentioned above, it can be said that denying the whole (muqassam) through one of its parts (qism) is never literally correct. If the intention is to deny absolute water (maa mutlaq), although this seems far from the literal meaning of the expression, it would mean that the annexation of restriction (idhafat at-taqyid) is present in restricted water (maa muqayyad). This is as useless as the first type of predication (haml awwali), and the answer is what has already passed. (T)

Fifth: Where annexation is towards external factors of the essence like location, attribute, or proximity, such that the definition of the essence does not depend on it, it is called descriptive annexation (idhafat ta'rif). It is stated in Al-Ghunya: "That which is customarily called water without needing any restriction in the definition of its essence; so its annexation to a location like 'well water' (maa al-bi'r), or an attribute like 'sea water' (maa al-bahr), or proximity like 'saffron water' (maa az-za'faran) is not a restrictive annexation (qayd)." (T)

Sixth: Where the reality (mahiyyat) cannot be recognized without a restriction, the annexation is restrictive (taqyidi). Therefore, it is not permissible to call it 'water' without the restriction. However, where the term can be correctly applied without mentioning the restriction, it is descriptive (ta'rifi). It is stated in Al-Hilya: Arabic: The essence of a restricted (muqayyad) thing is not known except through the restriction; hence the annexation is necessary, and it is not permissible to call it 'water' absolutely. This is contrary to the annexation of absolute water to something like a well or a spring, as this is an annexation to its source by way of accidental causes, to signify one of its accidental characteristics. It is a description of its location where it exists or from which it emerges, such that it is possible to dispense with its mention for the term 'water' to be validly applied to it. Urdu: ...knowledge of the essence of restricted water is not possible without the restriction, hence annexation is necessary; this is why it is not permissible to call it absolute water. Contrary to the annexation of absolute water towards a well or spring, because this is an annexation towards something not necessary, thus it is accidental, because it is providing the benefit of one of its accidental traits, and it is an explanation of its location where it stays or from which it comes out, so that it is possible to dispense with its mention.

1. Ghunya al-Mustamli, Chapter on the Rules of Water, Suhail Academy Lahore, p. 88. Page 685 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (भाग २)

उपरोक्त चर्चा के संबंध में यह कहा जा सकता है कि किसी चीज़ की नफ़ी (निषेध) उसके हिस्से (भाग) के ज़रिए करना हक़ीक़त में कभी सही नहीं होता। और अगर 'मा-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) की नफ़ी का इरादा किया जाए, हालाँकि यह अभिव्यक्ति के शाब्दिक अर्थ से दूर प्रतीत होता है, तो इसका अर्थ यह होगा कि प्रतिबंध का जुड़ाव (इज़ाफ़त-ए-तक़्यीद) 'मा-ए-मुक़य्यद' (प्रतिबंधित जल) में है। और यह पहले प्रकार के वर्णन (हम्ल अव्वली) की तरह व्यर्थ है, और उत्तर वही है जो पहले गुज़र चुका है। (त)

पाँचवाँ: जहाँ ज़ात (अस्तित्व) के बाहरी कारकों जैसे स्थान, गुण या समीपता की ओर इज़ाफ़त (अनुलग्नक) हो, जिससे ज़ात की परिभाषा उस पर निर्भर न हो, वह इज़ाफ़त-ए-तारीफ़ (परिचयात्मक अनुलग्नक) कहलाती है। 'ग़ुनिया' में है: "वह जिसे प्रथा में पानी कहा जाता है जिसके अस्तित्व की परिभाषा में किसी प्रतिबंध (तक़्यीद) की आवश्यकता नहीं होती, तो उसका उसके स्थान की ओर इज़ाफ़त जैसे कुएं का पानी (मा-उल-बीर), या उसके गुण की ओर जैसे समुद्र का पानी (मा-उल-बहर), या उसकी समीपता की ओर जैसे केसर का पानी (मा-उज़-ज़फ़रान), यह प्रतिबंध (क़ैद) नहीं है।" (त)

छठा: जहाँ माहियत (वास्तविकता) को बिना किसी प्रतिबंध के नहीं पहचाना जा सकता, वहाँ इज़ाफ़त तक्यीदी (प्रतिबंधात्मक) होती है। इसलिए बिना प्रतिबंध के उस पर 'आब' (पानी) शब्द का प्रयोग करना जायज़ नहीं होगा। और जहाँ प्रतिबंध के उल्लेख के बिना भी शब्द का सही प्रयोग संभव हो, वह इज़ाफ़त-ए-तारीफ़ी है। 'हिलिया' में है: प्रतिबंधित (मुक़य्यद) की ज़ात की पहचान बिना प्रतिबंध के नहीं होती, इसलिए इज़ाफ़त अनिवार्य है। यही कारण है कि इसे मुतलक़ (निरपेक्ष) पानी कहना जायज़ नहीं है। इसके विपरीत 'मा-ए-मुतलक़' का कुएं या चश्मे की ओर इज़ाफ़त, क्योंकि यह ऐसी चीज़ की ओर इज़ाफ़त है जो ज़रूरी नहीं, तो यह आरज़ी (आकस्मिक) है, क्योंकि यह उसके लक्षणों (अवारिज़) में से किसी एक लक्षण का लाभ दे रहा है, और यह उसके उस स्थान का विवरण है जिसमें वह मौजूद है या जिससे वह निकलता है, जिससे कि 'पानी' शब्द के सही प्रयोग के लिए उसका उल्लेख छोड़ना संभव है।

1. ग़ुनिया अल-मुस्तमली, पानी के अहकाम का बयान, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ ८८। पृष्ठ ६८७ (७११ में से)

فتاوی رضویہ جلد ثانی

والبحث البحث فيقال ان القسم لا يصح نفي المقسم عنه حقيقة ابداً و ان اريد نفي الماء المطلق مع بعده عن ظاهر العبارة يرجع الى ان اضافة التقييد في الماء المقيد وهذا لا يجدى شبه الحمل الاولى والجواب ما مر۔ اور اس میں جو بحث ہے وہ بحث ہے اس میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ قسم سے مقسم کی نفی صحیح نہیں حقیقۃً، اور اگر ماء مطلق کی نفی کا ارادہ کیا جائے، حالانکہ بظاہر عبارۃ سے یہ بعید ہے، تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ اضافت تقیید ماء مقید میں ہے، اور یہ پہلے حمل کی طرح غیر مفید ہے اور جواب وہ ہے جو گزرا۔ (ت)

پنجم: جہاں امور خارجہ عن الذات مثل محل یا صفت یا مجاور کی طرف اضافت ہو تعریف ذات اس کی محتاج نہ ہو وہ اضافت تعریف ہے غنیہ میں ہے: ما يسمى فى العرف ماء من غير احتياج الى التقييد فى تعريف ذاته فاضافته الى محل كماء البئر او صفته كماء البحر او مجاوره كماء الزعفران ليست بقيد ۱۔ وہ جس کو عرف میں پانی کہا جاتا ہے جس کی ذات کی تعریف میں تقیید کی ضرورت نہیں، تو اس کی اضافت اس کے محل کی طرف ہے جیسے ماء البئر یا اس کی صفت کی طرف ہے جیسے ماء البحر یا اس کے مجاور کی طرف ہے جیسے ماء الزعفران یہ قید نہیں ہے۔ (ت)

ششم: جہاں ماہیت بے قید نہ پہچانی جائے اضافت تقیید ہے ولذا اس پر بلا قید لفظ آب کا اطلاق جائز نہ ہوگا اور جہاں بے ذکر قید اطلاق لفظ صحیح ہو اضافت تعریف ہے، حلیہ میں ہے: المقيد لاتعرف ذاته الا بالقيد ولهذا كانت الاضافة لازمة فلا يسوغ تسميته ماء على الاطلاق بخلاف اضافة الماء المطلق الى نحو البئر والعين فانها اضافة الى ما منه بداعي عارضة لافادة عارض من عوارضه وهو بيان محله الكائن فيه او الخارج منه الذى يمكن الاستغناء عن ذكره في صحة اطلاق لفظ الماء عليه و

مقید کی ذات کی معرفت بلا قید نہیں ہوتی ہے اس لئے اضافت لازم ہے، یہی وجہ ہے کہ اس کو مطلق پانی کہنا جائز نہیں۔ بخلاف ماء مطلق کی اضافت کے کنویں اور چشمے کی طرف، کیونکہ یہ ایسی چیز کی طرف اضافت ہے جو ضروری نہیں، تو یہ عارضی ہے، کیونکہ یہ اس کے عوارض میں سے کسی ایک عرض کا فائدہ دے رہی ہے، اور یہ اس کے محل کا بیان ہے جس میں کہ وہ ہے یا جس سے وہ خارج ہو کہ اس کے ذکر سے استغنا ممکن

۱ غنیۃ المستملی، فصل فی بیان احکام المیاہ، سہیل اکیڈمی لاہور، ص ۸۸ Page 685 of 711

Volume 2 Fatawa Razawiyya

[Arabic Passage]: Therefore, it is permissible for the speaker to call it 'water' (Maa) absolutely and truly, without restricting it to a well or similar. It has become clear from this restriction that it does not prevent the inclusion of what is restricted by it under absolute water, unlike the first [definition]. [1] End. [Urdu Commentary]: ...was [correct], and it is correct to apply the term 'water' to it absolutely. Therefore, it is permissible to apply the term 'water' truly even without the restriction of 'well' etc. From this restriction, it became clear that for whatever is restricted by this restriction, its inclusion in 'absolute water' is not forbidden, contrary to the first [definition]. (T)

[Arabic Passage]: I say: 'Al-Ghunyah' relied on the second of the definitions of 'absolute' (Mutlaq), while 'Al-Hilyah' combined it with the seventh. So, he proceeded according to the second in defining the 'annexation of restriction' (Idafat al-Taqyid) and according to the seventh in the 'annexation of definition' (Idafat al-Ta'rif), and the matter is close. (T) [Urdu Commentary]: I say: Al-Ghunyah has sufficed with the second definition of 'absolute' (Mutlaq), and Al-Hilyah has combined it and the seventh. In the definition of 'Idafat al-Taqyid' (annexation of restriction), they kept the second in mind, and in 'Idafat al-Ta'rif' (annexation of definition), the seventh. However, this is nearly correct. (T)

Seventh: Whose essence is recognized without any annexation, and where the absolute name 'water' is understood by itself, there the annexation is for definition; otherwise, it is for restriction. In 'Shalabiya 'ala al-Zayla'i' from Imam Hafiz al-Din's 'Mustasfa', it states:

[Arabic Passage]: If it is said: such annexation, meaning 'bean water' (Maa al-Baqila) and similar, exists in what you mentioned of absolute waters because one says 'valley water' (Maa al-Wadi) and 'spring water' (Maa al-Ayn). We say: its annexation to the valley and the spring is an annexation of definition, not of restriction, because its essence becomes known [through it]. [Urdu Commentary]: If it is said that an annexation like this, i.e., 'bean water' (Maa al-Baqila) etc., is also present in the aforementioned absolute waters, because 'valley water' (Maa al-Wadi) and 'spring water' (Maa al-Ayn) are spoken of. We say: the annexation of water to 'valley' and 'spring' is for definition, not for restriction, because their essence...

[Arabic Passage]: I say: These are seven phrases. The other three of them are close in meaning, rather united in outcome, although different in wording. The third and fourth are definitions by what this meaning entails. There is deficiency and

shortcoming in the first two. And Allah knows best. (Written by the author, may he be forgiven). (M) [Urdu Commentary]: I say: These are seven phrases; among them, the last three are close in terms of meaning, rather they are identical in outcome, though the wordings are different. The third and fourth definitions are with that which entails this meaning, and deficiency and shortcoming are in the first two definitions. (Written by the author, may he be forgiven) (T)

[1] Hilyah Page 686 of 711

[अरबी पाठ]: इसलिए, वक्ता के लिए इसे पूर्ण और वास्तविक रूप में 'जल' (मा) कहना जायज़ है, बिना कुएं या उसके समान किसी प्रतिबंध के। इस प्रतिबंध से यह स्पष्ट हो गया है कि यह पूर्ण जल के अंतर्गत इसके द्वारा प्रतिबंधित वस्तु के समावेश को नहीं रोकता है, पहले [परिभाषा] के विपरीत। [१] समाप्त। [उर्दू टीका]: ...था, और इस पर केवल 'मा' (जल) का प्रयोग सही हो, इसलिए इस पर बिना कुआँ आदि की कैद के भी 'मा' का प्रयोग वास्तविक रूप से जायज़ है। इस तक़यीद (प्रतिबंध) से यह ज़ाहिर हुआ कि जो इस कैद के साथ मुक़य्यद (प्रतिबंधित) हो, उसका 'मा-ए-मुतलक़' (पूर्ण जल) में शामिल होना मना नहीं है, पहले के ख़िलाफ़। (त)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: 'अल-गुनिया' ने 'मुतलक़' की परिभाषाओं में से दूसरी पर इकतफ़ा (संतोष) किया, और 'अल-हिलया' ने इसे और सातवीं को जमा किया। अत; उन्होंने 'इज़ाफ़त-ए-तक़यीद' की परिभाषा में दूसरी का पालन किया और 'इज़ाफ़त-ए-तारीफ़' की परिभाषा में सातवीं का, और मामला करीब है। (त) [उर्दू टीका]: मैं कहता हूँ कि 'गुनिया' ने मुतलक़ की दूसरी परिभाषा पर इकतफ़ा किया है और 'हिलया' ने इसे और सातवीं को जमा किया है। 'इज़ाफ़त-ए-तक़यीद' की परिभाषा में उन्होंने दूसरी को ध्यान में रखा है और 'इज़ाफ़त-ए-तारीफ़' में सातवीं को, लेकिन यह करीब-करीब सही है। (त)

सातवाँ: जिसकी माहियत (तत्व) बिना किसी इज़ाफ़त (संबंध) के पहचानी जाए और 'पानी' का मुतलक़ नाम लेने से वही समझा जाए, वहाँ इज़ाफ़त तारीफ़ (परिभाषा) के लिए है, वरना तक़यीद (प्रतिबंध) के लिए। शलबीया अली अल-ज़ैलई में इमाम हाफ़िज़ुद्दीन की 'मुस्तसफ़ा' से है:

[अरबी पाठ]: यदि कहा जाए: ऐसी इज़ाफ़त, अर्थात 'सेम का पानी' (मा अल-बकीला) और इसके समान, आपके द्वारा बताए गए मुतलक़ पानी में भी मौजूद है क्योंकि 'वादी का पानी' (मा अल-वादी) और 'सोते का पानी' (मा अल-ऐन) कहा जाता है। हम कहते हैं: वादी और ऐन की ओर इसकी इज़ाफ़त तारीफ़ के लिए है, न कि तक़यीद के लिए, क्योंकि इसकी माहियत इससे पहचानी जाती है। [उर्दू टीका]: यदि कहा जाए कि इस जैसी इज़ाफ़त यानी 'मा-उल-बाक़िला' (सेम का पानी) वगैरह ऊपर बताए गए मुतलक़ पानी में भी मौजूद है, क्योंकि 'मा-उल-वादी' (घाटी का पानी) और 'मा-उल-ऐन' (सोते का पानी) कहा जाता है। हम कहते हैं कि पानी की इज़ाफ़त 'वादी' और 'ऐन' की तरफ़ तारीफ़ के लिए है, न कि तक़यीद के लिए, क्योंकि उनकी माहियत को...

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: ये सात इबारतें (वाक्यांश) हैं। इनमें से अंतिम तीन अर्थ के लिहाज़ से करीब हैं, बल्कि परिणाम के लिहाज़ से एक ही हैं, हालाँकि बनावट में अलग हैं। तीसरी और चौथी परिभाषाएँ उस चीज़ के साथ हैं जो इस अर्थ को लाज़िम करती हैं, और पहले दो में कमी और क़ुसूर है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (लेखक द्वारा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। (म) [उर्दू टीका]: मैं कहता हूँ ये सात इबारतें हैं, इनमें से आख़िरी तीन मा'नवी एतिबार से करीब हैं बल्कि अंजाम के एतिबार से मुत्तहिद (एक) हैं, इबारत में मुख़्तलिफ़ हैं। तीसरी और चौथी परिभाषाएँ उस चीज़ के साथ हैं जो इस मा'नी को मुस्तलज़िम हैं, और नक़्स (कमी) व क़ुसूर पहली दो परिभाषाओं में है। (लेखक द्वारा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे) (त)

[१] हिलया पृष्ठ ६८६/७११

جلد ثانی فتاوی رضویه

لهذا ساغ ان یطلق القائل علیه ماء اطلاقاً حقیقیاً من غیر تقیید بالبئر ونحوها وقد ظهر من هذا التقیید انه لم یمنع اندراج المقید به تحت الماء المطلق بخلاف الاول ۱۸ اهـ ہوا اور اس پر صرف ماء کا اطلاق صحیح ہو، اس لئے اس پر ماء کا اطلاق حقیقی بئر وغیرہ کی قید کے بغیر بھی جائز ہے، اس تقیید سے ظاہر ہوا کہ جو اس قید کے ساتھ مقید ہو اس کا ماء مطلق میں داخل ہونا ممنوع نہیں بخلاف اول کے اھـ (ت)

اقول: اقتصر الغنیة علی الثاني من تعریفات المطلق وجمع الحلیة بینه وبین السابع فمشی علی الثاني في تحدید اضافة التقیید وعلی السابع في تعریف اضافة التعریف والاغز وفالامر قریب۔ (ت) میں کہتا ہوں غنیہ نے مطلق کی دوسری تعریف پر اکتفا کیا ہے اور حلیہ نے اس کو اور ساتویں کو جمع کیا ہے، اور اضافہ تقیید کی تعریف میں انہوں نے دوسری کو ملحوظ رکھا ہے اور اضافتِ تعریف میں ساتویں کو، مگر یہ قریب قریب درست ہے۔ (ت)

ہفتم عہ جس کی ماہیت بے اضافت پہچانی جائے اور مطلق نام آپ لینے سے مفہوم ہو وہاں اضافت تعریف کی ہے ورنہ تقیید کی۔ شلبیہ علی الزیلعی میں امام حافظ الدین کی مستصفیٰ سے ہے:

فان قیل مثل هذه الاضافة یعنی ماء الباقلاء واشباهه موجود فیما ذکرت من المیاه المطلقة لانه یقال ماء الوادی وماء العین قلنا اضافته الی الوادی والعین اضافة تعریف لاتقیید لانه تتعرف ماهیته اگر کہا جائے کہ اس جیسی اضافت یعنی ماء الباقلی وغیرہ کی مذکورہ مطلق پانیوں میں بھی موجود ہے، اس لئے کہ ماء الوادی اور ماء العین کہا جاتا ہے، ہم کہتے ہیں پانی کی اضافہ وادی اور عین کی طرف تعریف کیلئے ہے نہ کہ تقیید کیلئے، کیونکہ ان کی ماہیت کو

عہ اقول: هذه سبع عبارات الثلاث الأخرى منها متقاربة المعنى بل متحدة المآل مختلفة المبنى والثالثة والرابعة تعريفان بما يستلزم هذا المعنى والنقص و القصور فی الاولیین واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منه غفر له۔

(م) میں کہتا ہوں یہ سات عبارتیں ہیں ان میں سے آخری تین معنوی اعتبار سے قریب ہیں بلکہ انجام کے اعتبار سے متحد ہیں، عبارت میں مختلف ہیں، تیسری اور چوتھی تعریفیں اس چیز کے ساتھ ہیں جو اس معنی کو مستلزم ہیں، اور نقص و قصور پہلی دو تعریفوں میں ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiya, Volume 2

...without this addition, and it is understood by our absolute expression "the water," unlike bean water and its likes, for its essence is not recognized without that restriction, and the mind does not turn to it when mentioned absolutely. Therefore, it is correct to deny the name "water" to it, so it is said: "So-and-so did not drink water," even if he drank bean water or broth. If it were truly water, its denial would not be correct, because the reality is never stripped from the named entity, and whoever denies it would be deemed a liar. This is similar to saying "Friday prayer," "camel meat," "funeral prayer" (1), and "fish meat." End of quote. Something similar was mentioned in "Al-Kafi," by Jalal-ud-Din in "Al-Kifayah," and by Al-Badr Mahmud in "Al-Binayah."

I say: This combines the second, the twelfth, and the eighth points as a guide to their proximity. Even if he had sufficed with the middle one, it would have been adequate as a description.

Note: Then I saw Imam Al-Ayni did the same in "Al-Binayah," as he said: Addition (Idhafah) is of two types: an addition of identification, such as "Zaid's servant," which does not change the named entity, and an addition of restriction, such as "grape water," which does change it and is not understood from the absolute name of water. End of quote. I say: This is an "Inni" argument (reasoning from effect to cause). What is meant by "grape water" is the water in which grapes have been soaked, because that is the restricted water, not the juice extracted by pressing, for that is not water at all, as we previously mentioned in the footnote on page 207, contrary to... (continued on the next page).

Footnote: 1. Shalbiyyah with Tabyin al-Haqa’iq, Book of Purification, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/20.

फ़तावा रज़विया, खंड 2

...इस अतिरिक्त शब्द (इज़ाफ़त) के बिना भी इसे हमारे "पानी" (अल-मा) कहने मात्र से समझा जा सकता है, जबकि सेम के पानी (माउल-बाक़ला) और इसके जैसे अन्य के साथ ऐसा नहीं है। क्योंकि उनकी वास्तविकता उस बंधन (क़ैद) के बिना नहीं जानी जा सकती और साधारणतः "पानी" बोलने पर विचार उस ओर नहीं जाता। इसीलिए उनसे "पानी" नाम का निषेध करना सही है; अतः यह कहा जा सकता है कि "अमुक व्यक्ति ने पानी नहीं पिया", भले ही उसने सेम का पानी या शोरबा पिया हो। यदि वह वास्तव में पानी होता, तो उसका निषेध सही नहीं होता, क्योंकि वास्तविकता कभी अपने नामधारी (मुसम्मा) से अलग नहीं होती, और उसका निषेध करने वाला झूठा ठहराया जाता। यह वैसा ही है जैसे जुमे की नमाज़, ऊंट का मांस, जनाज़े की नमाज़ (1) और मछली का मांस कहा जाता है। उन्होंने अपनी किताब "काफ़ी" में इसी तरह की बात कही है, और जलालुद्दीन ने "किफ़ाया" में, और बद्र महमूद ने "बिनाया" में।

मैं कहता हूँ: यह दूसरे, बारहवें और आठवें को जोड़ने जैसा है ताकि उनकी समानता की ओर संकेत किया जा सके। यदि वह केवल बीच वाले पर ही संतोष करते, तो वह भी वर्णन के लिए पर्याप्त होता।

नोट: फिर मैंने इमाम ऐनी को "बिनाया" में ऐसा ही करते देखा जब उन्होंने कहा: इज़ाफ़त (जोड़ना) दो प्रकार की होती है: एक पहचान के लिए इज़ाफ़त, जैसे "ज़ैद का गुलाम", यह नामधारी में कोई परिवर्तन नहीं करती, और दूसरी बंधन के लिए इज़ाफ़त (इज़ाफ़त-ए-तक़्यीद), जैसे "अंगूर का पानी" (माउल-अनब), जो इसे बदल देती है और केवल "पानी" शब्द से उसका बोध नहीं होता। मैं कहता हूँ: यह तर्क "इन्नी" है (प्रभाव से कारण की ओर तर्क)। अंगूर के पानी से तात्पर्य वह पानी है जिसमें अंगूर भिगोए गए हों, क्योंकि यही "बद्ध पानी" (मा-ए-मुक़य्यद) है, वह नहीं जो निचोड़कर निकाला जाए, क्योंकि वह तो मूल रूप से पानी ही नहीं है, जैसा कि हमने पहले पृष्ठ 207 के फुटनोट में उल्लेख किया है... (शेष अगले पृष्ठ पर)।

फुटनोट: 1. शल्बिया साथ में तबीन अल-हक़ाएक़, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/20.

पृष्ठ 687/711

فتاوی رضویہ، جلد ثانی

اس قید کے بغیر بھی سمجھا جاسکتا ہے اور مطلق لفظ ماء سے سمجھ میں آجاتے ہیں ، بخلاف باقلی وغیرہ کے پانیوں کے ، کیونکہ ان کی ماہیت اس قید کے بغیر سمجھ میں نہیں آتی ہے اور جب مطلق لفظ ماء بولا جاتا ہے تو ذہن اس طرف منتقل نہیں ہوتا ہے ، اس لئے پانی کے لفظ کی نفی ان پانیوں سے درست ہے تو یوں کہا جاسکتا ہے کہ فلاں نے پانی نہیں پیا ، اگرچہ اس نے شوربہ یا باقلی کا پانی پیا ہو ، اور اگر یہ حقیقۃ پانی ہوتے تو یہ نفی صحیح نہ ہوتی۔ کیونکہ حقیقت کبھی اپنے مسمی سے ساقط نہیں ہوتی ہے اور جو شخص اس کی نفی کرے اس کی تکذیب کی جاتی ہے اور یہ ایسا ہی ہے جیسا کہ صلوۃ الجمعۃ، لحم الابل، صلاۃ الجنازۃ (۱) اور لحم السمک کہا جاتا ہے اھ اسی قسم کی چیز انہوں نے اپنی کافی میں ذکر کی اور جلال الدین نے کفایہ میں اور بدر محمود نے بنایہ میں۔

اقول: جمع بين الثاني والثاني عشر بل والثامن ارشادا الى تقاربها ولو اكتفى بالوسط عه لكفي وصفاً عن۔ (میں کہتا ہوں: دوسرے، بارہویں اور آٹھویں اقوال کو ان کی باہمی قربت کی رہنمائی کے لیے جمع کیا گیا ہے۔ اگر درمیانی قول پر ہی اکتفا کیا جاتا تو وہ بھی بیان کے لیے کافی ہوتا)۔

اقول: پھر امام عینی نے بنایہ میں ایسا ہی کیا ہے فرمایا اضافت کی دو قسمیں ہیں ایک اضافت تعریف کیلئے ہے جیسے غلام زید ، یہ مسمی میں کوئی تبدیلی نہیں پیدا کرتی ہے اور دوسری اضافت برائے تقیید ، جیسے ماء العنب، یہ مسمی کو متغیر کر دیتی ہے اور مطلق ماء کے نام سے مفہوم نہیں ہوتا ہے اھ میں کہتا ہوں یہ استدلال "انّی" ہے اور ماء العنب سے مراد وہ پانی ہے جس میں انگور پڑے ہوئے ہوں کیونکہ یہی ماء مقید ہے وہ نہیں جو عصر (نچوڑنے) سے نکلے

کیونکہ وہ اصلاً پانی ہی نہیں ہے جیسا کہ ہم پہلے اپنے حاشیہ ۲۰۷ میں ذکر کر چکے ہیں خلافاً

(باقی بر صفحہ آئندہ)

حاشیہ: ۱ شلبیہ مع تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ الامیر یہ بولاق مصر ۱ / ۲۰

Fatawa Razawiyya, Volume 2

[Right box]: ...in 'Badr Mahmud' and in 'Binaya'. I say they have combined two and twelve, rather even eight, so that the proximity to them becomes known. If they had contented themselves with the middle one, no dispute would have remained. (T)

[Left box]: No room for any dispute.

In short, the most correct and best definition is the last one of absolute water referred to here as well, that when the term 'absolute water' is mentioned, its meaning immediately comes to mind. Its annexation is an annexation of definition, otherwise it's an annexation of restriction. I say: That is, as long as it does not fall outside the true linguistic genus of water; otherwise, even annexation of restriction is not metaphorical, such as 'golden water' (ink). And Allah knows best.

Section Three: Specific Rules of Texts, etc.

I say: And with Allah is success. First, I mention a few consensual issues such that no principle can go against them.

(Remaining footnote of previous page) [Arabic Text]: Because of what the learned Ibn Kamal conjectured, then I saw in the text of 'Al-Kifaya' the clarification of what I held, when he said: it is not permissible [to use] what is squeezed, because it is not water in reality. Then Imam Al-Ayni relegated the matter of definition and restriction to change and its absence, and reasoned it by the understanding from the absolute and its absence. This is clearer than vague change. So it was more appropriate to base it on that, as was done before him in 'Ghayat al-Bayan', when it said: and its annexation to the well is for definition, not for restriction, as it is understood by the absolute of our saying 'The Water'. Ah. And it is a wonder that Al-Ayni proceeded here upon this correct [view], then after two pages returned to the first wounded [view]. 12 Minhu Ghafar Allahu Lahu (M)

[Urdu Translation/Commentary]: ...extracted by squeezing, because it is not water at all, as we mentioned in the footnote of page 720. This is contrary to the misconception of Allama Ibn Kamal. Then I found the same clarification in 'Kifaya', where they state that wudu is not permissible with water that has been squeezed because in reality it is not water. Then I say Imam Ayni has based definition and restriction on change and lack of change, and explained its reason as whether it is understood from the term 'absolute' or not. This is clearer than vague change. So it is better to base it on this, as was done before in 'Ghayat al-Bayan', where it was stated:

its annexation to 'well' is for definition, not for restriction, because it is understood from the absolute saying 'Al-Ma' (The Water). Ah. And it is strange that Ayni adopted this correct view, then two pages later he returned to the first flawed view. 12 Minhu Ghafar Lahu (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 2

[दायां बॉक्स]: ...'बद्र महमूद' में और 'बिनाया' में। मैं कहता हूँ कि उन्होंने दो और बारह को एक जगह जमा कर दिया है, बल्कि आठ को भी, ताकि उनसे क़रीब होने का पता चल जाए। और अगर वे दरमियानी पर इक्तिफ़ा कर लेते तो कोई झगड़ा बाक़ी न रहता। (त)

[बायां बॉक्स]: किसी भी बहस की गुंजाइश नहीं।

संक्षेप में, सबसे सही और अच्छी परिभाषा वही आख़िरी 'मुतलक़ पानी' (शुद्ध जल) की है, जिसका हवाला यहाँ भी है कि जिसके लिए 'मुतलक़ पानी' कहने से अर्थ तुरंत समझ में आ जाए। उसका संबंध 'परिभाषा' का संबंध है, वरना वह 'प्रतिबंध' (तक़यीद) का संबंध होता। मैं कहता हूँ: यानी जब तक वह पानी के वास्तविक भाषाई अर्थ से बाहर न हो जाए, वरना प्रतिबंध का संबंध भी अलंकारिक नहीं है, जैसे 'आब-ए-ज़र' (सोने का पानी)। और अल्लाह बेहतर जानता है।

तीसरा अनुभाग: मूल पाठों आदि के विशिष्ट नियम।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता है। पहले मैं कुछ सर्वसम्मत मसले ज़िक्र करता हूँ कि कोई भी नियम उनके ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

(पिछले पृष्ठ की शेष पाद-टिप्पणी) [अरबी पाठ]: अल्लामा इब्न कमाल ने जो अनुमान लगाया था, उसके कारण, फिर मैंने 'अल-किफ़ाया' के पाठ में वही स्पष्टीकरण देखा जो मेरा विचार था, जब उन्होंने कहा: जो निचोड़ा गया हो उससे [वुज़ू] जायज़ नहीं है, क्योंकि वह वास्तव में पानी नहीं है। फिर इमाम अल-ऐनी ने परिभाषा और प्रतिबंध के मामले को परिवर्तन और उसके अभाव पर छोड़ दिया, और मुतलक़ से इसकी समझ होने या न होने को इसका कारण बताया। यह अस्पष्ट परिवर्तन से अधिक स्पष्ट है। तो उसी पर आधार रखना अधिक उचित था, जैसा कि उनसे पहले 'ग़ायत अल-बयान' में किया गया था, जहाँ कहा गया था: और इसका कुएं के साथ संबंध परिभाषा के लिए है न कि प्रतिबंध के लिए, क्योंकि यह हमारे मुतलक़ कहने 'अल-मा' (पानी) से समझ में आता है। अ.ह. और आश्चर्य है कि ऐनी यहाँ इस सही [विचार] पर चले, फिर दो पृष्ठों के बाद पहली कमज़ोर [राय] की ओर लौट आए। १२ मिन्हु ग़फ़र अल्लाह लहु (म)

[उर्दू अनुवाद/कमेंट्री]: ...निचोड़ने से निकले, क्योंकि वह तो पानी है ही नहीं, जैसा कि हमने ७२० के हाशिए में ज़िक्र किया। यह अल्लामा इब्न कमाल के भ्रम के विपरीत है। फिर मुझे 'किफ़ाया' में यही

स्पष्टीकरण मिल गया, वे फ़रमाते हैं कि उस पानी से वुज़ू जायज़ नहीं है जिसे निचोड़ा गया हो क्योंकि वह वास्तव में पानी नहीं है। फिर मैं कहता हूँ कि इमाम ऐनी ने परिभाषा और प्रतिबंध का दारोमदार परिवर्तन और परिवर्तन की कमी पर रखा है और उसका कारण यह बताया है कि वह मुतलक़ से समझा जाता है या नहीं। और यह अस्पष्ट परिवर्तन से अधिक स्पष्ट है। तो बेहतर यही है कि इसी पर आधार रखा जाए, जैसा कि इससे पहले 'ग़ायत अल-बयान' में किया गया है। उन्होंने फ़रमाया कि इसका संबंध 'कुएं की तरफ परिभाषा के लिए है न कि प्रतिबंध के लिए, क्योंकि वह मुतलक़ शब्द 'अल-मा' (पानी) से समझा जाता है। अ.ह. और आश्चर्य है कि ऐनी ने इस सही राय को अपनाया, फिर दो पन्ने बाद वे उसी पहली कमज़ोर राय की तरफ लौट आए। १२ मिन्हु ग़फ़र लहु (त)

पृष्ठ ६८८ में से ७११

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

[دائیں باکس]: میں اور بدر محمود نے بنائیہ میں۔ میں کہتا ہوں انہوں نے دوسرے اور بارہ کو یکجا کردیا ہے بلکہ آٹھ کو بھی، تاکہ ان کے قریب ہونے کا پتا چل جائے، اور اگر درمیانی پر اکتفا کرلیتے تو کوئی جھگڑا باقی نہ رہتا۔ (ت)

[بائیں باکس]: مجال کل جدال۔

با جملہ اصح واحسن وہی تعریف اخیر مائ مطلق پر یہاں بھی حوالہ ہے کہ جس کی طرف مطلق آب کہنے سے افہام سبقت کریں اُس کی اضافت اضافت تعریف ہے ورنہ اضافت تقیید اقول یعنی جبکہ جنس آب حقیقی لغوی سے خارج نہ ہو ورنہ اضافت تقیید بھی نہیں مجاز ہے جیسے آب زر واللہ تعالٰی اعلم۔

فصل ثالث ضوابط جزئیہ متون وغیرہا

اقول: وباللہ التوفیق اول چند مسائلِ اجماعیہ ذکر کریں کہ کوئی ضابطہ اُن کے خلاف نہیں ہوسکتا۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [عربی متن]: لما اوھم العلامة ابن کمال ثم رأیت فی نص الکفایة التصریح بما ذھبت الیه اذقال لایجوز بما اعتصر لانه لیس بماء حقیقة ثم احال الامام العینی امر التعریف والتقیید علی التغیر وعدمه وعلله بالانفهام من المطلق وعدمه وھذا اجلی من التغیر المبهم فکان الاولی الارادة علیه کما فعل قبله فی غایة البیان اذقال واضافته الی البئر للتعریف لا للتقیید اذایفهم بمطلق قولنا الماء اه والعجب ان العینی مشی ههنا علی هذا الصحیح ثم بعد ورقتین عاد الی الاول الجریح ۱۲منه غفر له۔ (م)

[اردو ترجمہ/تشریح]: نچوڑنے سے نکلے، کیونکہ وہ تو پانی ہے ہی نہیں، جیسا کہ ہم نے ۷۲۰ کے حاشیہ میں ذکر کیا، یہ علامہ ابن کمال کے وہم کے برخلاف ہے پھر مجھے کفایہ میں یہی تصریح مل گئی، وہ فرماتے ہیں اس پانی سے وضو جائز نہیں جو نچوڑا گیا ہو کیونکہ وہ در حقیقت پانی نہیں ہے۔ پھر میں کہتا ہوں امام عینی نے تعریف وتقیید کا دارومدار تغیر وعدم تغیر پر رکھا ہے اور اس کی علت یہ بیان کی کہ وہ مطلق سے مفہوم ہوتا ہے یا نہیں، اور یہ تغیر مبہم سے زیادہ واضح ہے تو اولٰی یہ ہے کہ اسی پر دارومدار کیا جائے جیسا کہ اس سے قبل غایۃ البیان میں کیا ہے فرمایا اس کی اضافت کنویں کی طرف تعریف کیلئے ہے نہ کہ تقیید کیلئے کیونکہ وہ مطلق المآء سے مفہوم ہوجاتا ہے اھ اور تعجب ہے کہ عینی نے اس صحیح قول کو اختیار کیا، پھر دو ۲ ورق بعد وہ پہلے مجروح قول کی طرف آگئے ہیں ۱۲منہ غفر لہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume II (1) There is a consensus of the Ummah that wudu and ghusl, i.e., the removal of ritual impurity (najasat hukmiya), cannot be performed with any liquid other than water. (2) There is a consensus that the water must be 'absolute water' (ma-e-mutlaq); wudu cannot be performed with 'restricted water' (ma-e-muqayyad), except for date infusion (nabidh tamr). Initially, our master Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), considering a Hadith, was a proponent of its permissibility. Later, he retracted his opinion and a consensus was established on its impermissibility. An exception is what is mentioned from Imam al-Awza'i (may Allah have mercy on him) regarding the permissibility with every nabidh, if it is authentically proven from him. And Allah the Almighty knows best. (However, what is narrated from Imam Awza'i (may Allah have mercy on him) that wudu is permissible with every nabidh, provided this narration is correctly attributed to him, and Allah the Almighty knows best. - T) (3) There is a consensus that ghusl (with a fatha), i.e., washing a limb, requires the water to flow over it; merely becoming wet is not enough as that constitutes wiping (mash). And Allah (Glory be to Him) has kept washing and wiping as two separate duties. Except for what is narrated from the Second Imam (may Allah have mercy on him), which is interpreted as mentioned earlier. (But what is narrated from Imam Yusuf is interpreted as previously discussed. - T). Thus, it is absolutely necessary for the water to maintain its flow. (Side Note 1): It is stated in Al-Binayah that Hasan bin Salih deviated and permitted wudu with vinegar and its likes. 12 From him, may he be forgiven. (T) (Side Note 2): It is stated in Al-Binayah that wudu with snow is permissible provided it is melting and dripping, otherwise not. Then regarding the issue of snow, he said that when two or more drops drip from it, it is permissible by consensus; otherwise, according to the statement of the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), it is not permissible, but according to the statement of Abu Yusuf, it is permissible. Ah. I say: (1) It was not appropriate to say that their misleading statement is contrary to reality. This is just a rare narration from them. Prior to this, he had stated in Al-Binayah that flow (sailan) is a condition in the apparent narration (Zahir al-Riwayah). Therefore, as long as drops of water do not drip, wudu is not permissible. And from Abu Yusuf it is narrated that flow (Continued on the next page). Page 689 of 711

फ़तावा रज़विया जिल्द द्वितीय (1) उम्मत का इजमा (आम सहमति) है कि पानी के अलावा किसी भी तरल पदार्थ से वुज़ू और गुस्ल यानी नजासत-ए-हुकमिया (धार्मिक अशुद्धि) को दूर नहीं किया जा सकता। (2) इजमा है कि वह पानी 'मा-ए-मुतलक' (शुद्ध जल) होना चाहिए; 'मा-ए-मुक़य्यद' (किसी चीज़ मिला हुआ पानी) से वुज़ू नहीं हो सकता, सिवाय 'नबीज़-ए-तमर' (खजूर के अर्क) के, जिसके बारे में शुरू में हमारे स्वामी इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) हदीस के आधार पर इसके जायज़ होने के कायल थे। फिर उन्होंने अपनी राय वापस ले ली और इसके ना-जायज़ होने पर भी इजमा हो गया। सिवाय उस ज़िक्र के जो इमाम अल-औज़ाई (रहमतुल्लाह अलैह) से हर नबीज़ से वुज़ू जायज़ होने के बारे में मिलता है, अगर यह रिवायत उनसे प्रमाणित हो। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (लेकिन जो इमाम औज़ाई (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत है कि हर नबीज़ से वुज़ू जायज़ है, इस शर्त पर कि यह रिवायत उनकी ओर सही रूप से संबंधित हो, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। - त) (3) इजमा है कि गुस्ल (फ़त्ह के साथ) यानी किसी अंग को धोने में उस पर पानी का बहना ज़रूरी है; सिर्फ़ गीला हो जाना काफ़ी नहीं है क्योंकि वह मसह (पोंछना) है। अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल ने गुस्ल और मसह को दो अलग-अलग कर्तव्य (वज़ीफ़े) रखा है। सिवाय उसके जो दूसरे इमाम (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत है, जो तावील (व्याख्या) के अधीन है जैसा कि पहले बताया गया। (लेकिन जो इमाम यूसुफ़ से रिवायत है, उसकी तावील की जा चुकी है जैसा कि गुज़र चुका है। - त) तो पानी का अपने प्रवाह (सैलान) पर रहना बिल्कुल लाज़िम है। (हाशिया 1): बिनाया में है कि हसन बिन सालेह ने अलग राय रखते हुए सिरके और इस तरह की अन्य चीज़ों से वुज़ू को जायज़ करार दिया। (त) (हाशिया 2): बिनाया में है कि बर्फ़ से वुज़ू जायज़ है बशर्ते कि वह पिघल कर टपक रहा हो, वरना नहीं। फिर बर्फ़ के मसले में फ़रमाया कि जब उससे दो या उससे ज़्यादा कतरे टपकें तो इत्तेफ़ाक़न वुज़ू जायज़ है, वरना तरफ़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) के कथन पर जायज़ नहीं है और अबू यूसुफ़ के कथन पर जायज़ है। मैं कहता हूँ: (1) यह कहना मुनासिब नहीं है कि उनका भ्रम पैदा करने वाला कथन हकीकत के खिलाफ है, क्योंकि यह तो उनसे एक दुर्लभ (नादिर) हिकायत है। इससे पहले बिनाया में फ़रमाया जा चुका है कि 'सैलान' (पानी का बहना) ज़ाहिर रिवायत में शर्त है। तो जब तक पानी के कतरे न टपकें, वुज़ू जायज़ नहीं है। और अबू यूसुफ़ से है कि सैलान (बाकी अगले पृष्ठ पर)। पृष्ठ 689/711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی (۱) اجماعِ اُمّت ہے کہ پانی کے سوا کسی مائع سے وضو و غسل یعنی ازالہ نجاست حکمیہ نہیں ہو سکتا۔ (۲) اجماع ہے کہ وہ پانی مائے مطلق ہونا چاہئے مائے مقید سے وضو نہیں ہو سکتا سوائے نبیز تمر کے کہ سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ ابتداءً بنظرِ حدیث اُس سے جواز کے قائل تھے پھر رجوع فرمائی اور اُس سے بھی عدم جواز پر اجماع منعقد ہو گیا الا ما یذکر من امام عه الشام الاوزاعی رحمه الله تعالٰی من التجویز بکل نبید ان ثبت عنه والله تعالٰی اعلم (مگر وہ جو امام اوزاعی رحمہ اللہ تعالٰی سے منقول ہے کہ ہر نبیز سے وضو جائز ہے بشر طیکہ یہ روایت ان کی طرف درست منسوب ہو واللہ تعالٰی اعلم-ت) (۳) اجماع ہے کہ غسل بالفتح یعنی کسی عضو کے دھونے میں اُس پر پانی کا بہنا ضرور ہے صرف تر ہو جانا کافی نہیں کہ وہ مسح ہے اور حضرت عزت عز جلالہ، نے غسل و مسح دو وظیفے جُدا رکھے ہیں الاما عه حکی عن الامام الثانی رحمه الله وهو مؤول کما تقدم (مگر وہ جو امام یوسف سے منقول ہے وہ مؤول ہے جیسا گزر چکا۔ ت) تو پانی کا اپنے سیلان پر باقی رہنا قطعاً لازم۔ عه۱ وقال في البناية شذ الحسن بن صالح وجوز الوضوء بالخل وماجری مجراه۱۲منه غفر له-(م) | بنایہ میں ہے کہ حسن بن صالح نے شذوذ کرتے ہوئے سرکہ اور اس قسم کی دوسری اشیاء سے وضو کو جائز قرار دیا ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت) عه۲ وقال في البناية التوضی بالثلج یجوز ان کان ذائبا یتقاطر والا فلا ثم قال وفي مسألة الثلج اذا قطر قطرتان فصاعدا جاز اتفاقاً والافعلی قولهما لا یجوز وعلی قول ابي یوسف یجوز اهـ | بنایہ میں ہے کہ برف سے وضو جائز ہے بشرطیکہ پگھل کر ٹپک رہا ہو ورنہ نہیں، پھر برف کے مسئلہ میں فرمایا جب اس سے دو یا زائد قطرے ٹپکیں تو وضو جائز ہے اتفاقاً ورنہ طرفین کے قول پر جائز نہیں ہے اور ابو یوسف کے قول پر جائز ہے اھ اقول: (۱) ما کان ینبغی ان یقال قوله الموهم خلاف الواقع فانما هي حکایة نادرة وقد قال قبله فی البنایة السیلان شرط فی ظاهر الروایة فلا یجوز

الوضوء مالم يتقاطر الماء وعن ابي يوسف انه ليس بشرط ثم الرواية مؤولة كما علمت | میں کہتا ہوں یہ کہنا مناسب نہیں ہے کہ ان کا وہم پیدا کرنے والا قول خلاف واقع ہے کیونکہ یہ تو ان سے ایک نادر حکایت ہے اور اس سے قبل وہ بنایہ میں فرما چکے ہیں کہ سیلان ظاہر روایت میں شرط ہے تو جب تک پانی کے قطرے نہ ٹپکیں وضو جائز نہیں، اور ابو یوسف سے ہے کہ سیلان (باقی بر صفحہ آئندہ)

(4) It is a consensus of language, custom, and law that in a mixture of two things, the ruling applies to the dominant one. This has been established on the authority of al-Muhaqqiq al-al-Itlaq in the fifth definition of "absolute water" (and we have mentioned this earlier from al-Muhaqqiq al-al-Itlaq in the fifth definition of absolute water. - Translator). Therefore, when something other than water is mixed with it in a greater quantity, by the first consensus, it is no longer suitable for ablution (Wudu).

(5) It is a consensus of reason and narration that conflict leads to mutual cancellation, and in the combination of a prohibition and a permission, the prohibition prevails. So even if the other substance is equal in quantity, it will not remain suitable for ablution. This has been mentioned before in page 262 (as has passed in 262. - Translator).

(Remainder of the footnote from the previous page)

[Arabic Section]: (1) Therefore, it is not appropriate to mention it except with its interpretation so that an ignorant person does not dare to disobey the command of Allah Almighty by clinging to it. 12 [Author] May he be forgiven. (M)

[Urdu Explanation]: It is not a condition, etc. This narration is interpreted as you have known. So it is not correct to mention it without interpretation so that no one, seeing it, dares to oppose the command of Allah Almighty. 12 [Author] May he be forgiven. (Translator)

[Arabic Section]: [Note]: The statement from *Al-Ghuniyah* has preceded there: "Tayammum (dry ablution) should be joined with it in case of equality," etc. And what I have commented on it, now I see in *Al-Binayah* when one of my companions sent me a transcript of this chapter from it, its text is: It was narrated from Abu Tahir al-Dabbas that he said: "The answers of Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) varied only because of the variety of questions. He was asked about (3) ablution when sweetness prevails; he said: one should perform Tayammum and not perform Wudu. He was also asked when water and sweetness are equal and neither prevails over the other; he said: one should combine both. Al-Sighnaqi said: according to this method, the ruling does not differ between date-nabidh and other [types of nabidh]."

[Urdu Explanation]: Here the statement of *Al-Ghuniyah* has passed that at the time of equality, Tayammum should also be included. And the objections I have made to it are also in *Al-Binayah*. A friend of mine sent me this part of *Al-Binayah* transcribed. In

it, it is narrated from Abu Tahir al-Dabbas that the reason for the different answers of Abu Hanifa in this regard is the difference in the questions. He was asked, "What should be done if sweetness prevails?" He replied, "Perform Tayammum and do not perform Wudu." He was asked, "What should be done when water and sweetness are equal?" He replied, "Perform both Wudu and Tayammum." Sighnaqi said that in this way, the ruling for date-nabidh and other nabidhs will not be different. This (continued on the next page).

(४) भाषा, प्रथा और शरीयत का यह आम सहमति (इज्मा) है कि दो चीजों के मिश्रण में आदेश प्रबल वस्तु के लिए होता है। हमने इसे मुहाक़िक़ अल-अल-इतलाक़ के हवाले से 'मुतलक़ पानी' की पांचवीं परिभाषा में पहले ही उल्लेख कर दिया है (और हमने मुहाक़िक़ अल-अल-इतलाक़ से मुतलक़ पानी की पांचवीं परिभाषा में इसका उल्लेख पहले ही कर दिया है। - टी)। अतः, जब पानी में उसके अलावा कोई और चीज़ उससे अधिक मात्रा में मिल जाए, तो पहले इज्मा के अनुसार वह वज़ू के योग्य नहीं रहेगा।

(५) बुद्धि और प्रमाण का इज्मा है कि विरोधाभास परस्पर विलोपन (तसाकुत) का कारण बनता है, और वर्जना (हाज़िर) और अनुमति (मुबीह) के मिलन में वर्जना प्रबल होती है। इसलिए यदि दूसरी वस्तु समान मात्रा में भी मिले, तो वह वज़ू के योग्य नहीं रहेगा। जैसा कि पृष्ठ २६२ में पहले उल्लेख किया जा चुका है (जैसा कि २६२ में बीत चुका है। - टी)।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग)

[अरबी खंड]: (१) इसलिए, इसे इसके अर्थ की व्याख्या के बिना उल्लेख करना उचित नहीं है ताकि कोई अज्ञानी अल्लाह तआला के आदेश की अवज्ञा करने का साहस न करे। १२ [लेखक] उसे क्षमा किया जाए। (म)

[उर्दू स्पष्टीकरण]: यह शर्त नहीं है आदि। यह रिवायत व्याख्यायित (मउव्वल) है जैसा कि आपने जाना। इसलिए इसे बिना व्याख्या के उल्लेख करना सही नहीं है ताकि कोई इसे देखकर अल्लाह तआला के आदेश का विरोध करने का साहस न करे। १२ [लेखक] उसे क्षमा किया जाए। (टी)

[अरबी खंड]: [नोट]: 'अल-ग़ुनिया' का कथन वहाँ पहले ही आ चुका है: "समानता के मामले में इसके साथ तयम्मुम को भी शामिल किया जाना चाहिए," आदि। और मैंने इस पर जो आपत्तियाँ की हैं, अब मैं 'अल-बिनाया' में देखता हूँ जब मेरे एक साथी ने मुझे इस अध्याय का एक अंश भेजा, जिसका पाठ है: अबू ताहिर अल-दब्बास से रिवायत है कि उन्होंने कहा: "अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के उत्तरों में भिन्नता केवल प्रश्नों की भिन्नता के कारण थी। उनसे (३) वज़ू के बारे में पूछा गया जब मिठास प्रबल हो; उन्होंने कहा: तयम्मुम करें और वज़ू न करें। उनसे यह भी पूछा गया जब पानी और मिठास बराबर हों और कोई भी दूसरे पर प्रबल न हो; उन्होंने कहा: दोनों को मिला दें। अल-

सिग़नाकी ने कहा: इस पद्धति के अनुसार, खजूर के नबीज़ और अन्य [प्रकार के नबीज़] के बीच आदेश में कोई अंतर नहीं होगा।"

[उर्दू स्पष्टीकरण]: यहाँ 'अल-ग़ुनिया' का कथन गुज़र चुका है कि समानता के समय तयम्मुम को भी शामिल कर लेना चाहिए। और इस पर जो आपत्तियाँ मैंने की हैं वे 'अल-बिनाया' में भी हैं। मेरे एक मित्र ने मुझे 'अल-बिनाया' का यह हिस्सा नक़ल करके भेजा है। इसमें अबू ताहिर अल-दब्बास से उद्धृत है कि इस संबंध में अबू हनीफ़ा के उत्तरों के भिन्न होने का कारण प्रश्नों का अंतर है। उनसे पूछा गया कि अगर मिठास प्रबल हो तो क्या करें? तो उन्होंने फरमाया कि तयम्मुम करे, वज़ू न करे। उनसे पूछा गया कि जब पानी और मिठास बराबर हो तो क्या करें? फरमाया कि वज़ू और तयम्मुम दोनों करें। सिग़नाकी ने फरमाया कि इस अंदाज़ में खजूर के नबीज़ और दूसरे नबीज़ों का हुक्म अलग नहीं होगा। यह (शेष अगले पृष्ठ पर)।

(۴) اجماع لغت و عرف و شرع ہے کہ دو چیزوں سے مرکب میں حکم غالب کیلئے ہے وقد قدمناہ عن المحقق علی الاطلاق فی التعریف الخامس للماء المطلق (اور ہم نے محقق علی الاطلاق سے مطلق پانی کی پانچویں تعریف میں اس کو پہلے ذکر کر دیا ہے۔ت) تو پانی میں جب اُس کا غیر اُس سے زائد مقدار میں مل جائے بحکم اجماع اول قابل وضو نہ رہے گا۔

(۵) اجماع عقل و نقل ہے کہ تعارض موجب تساقط ہے اور اجتماع حاضر و مبیح میں حاضر غالب تو اگر دوسری چیز مساوی القدر بھی ملے گی قابل وضو نہ رکھے گی وقد عہ تقدم في ۲۶۲ (جیسا کہ ۲۶۲ میں گزر چکا۔ ت)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ)

[اردو وضاحت]: شرط نہیں اھ یہ روایت مؤول ہے جیسا آپ نے جانا تو اس کو بلا تاویل ذکر کرنا درست نہیں تاکہ کوئی اس کو دیکھ کر اللہ تعالیٰ کے حکم کی مخالفت کی جرات نہ کر بیٹھے ۱۲منہ غفرلہ(ت)

عربی عبارت: عہ تقدم هناک قول الغنیۃ یضم الیہ التیمم عند المساواۃ اہ و ما تعقبتها به والان رأیت فی البنایۃ حین ارسل الی نقل هذا الباب منها بعض اصحابی ما نصه حکی عن ابی طاہر الدباس انه قال انما اختلف(۲) اجوبۃ ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنه لاختلاف الاسئلۃ فانہ سئل عن(۳) التوضوئ اذا کانت الغلبۃ للحلاوۃ قال یتیمم ولا یتوضو وسئل عنہ ایضاً کان الماء والحلاوۃ سواء ولم یغلب احدهما علی الآخر قال یجمع بینهما وقال السغناقی و علی هذہ الطریقۃ لایختلف الحکم بین نبیذ التمر و سائر

[اردو وضاحت]: یہاں غنیہ کا قول گزر چکا ہے کہ اس کے ساتھ مساوات کے وقت تیمم کو بھی شامل کرلینا چاہئے اھ اور اس پر جو اعتراضات میں نے کئے ہیں وہ بنایہ میں بھی ہیں، میرے ایک دوست نے بنایہ کا یہ حصہ مجھے نقل کرکے بھیجا ہے اس میں ہے ابو طاہر الدباس سے منقول ہے کہ اس سلسلہ میں ابو حنیفہ کے جوابات کے مختلف ہونے کی وجہ سوالات کا اختلاف ہے اُن سے دریافت کیا گیا کہ مٹھاس کا غلبہ ہو تو کیا کریں تو فرمایا تیمم کرے وضو نہ کرے ان سے دریافت کیا گیا کہ جب پانی مٹھاس برابر ہو تو کیا کریں؟ فرمایا وضو اور تیمم دونوں کریں، سغناقی نے فرمایا اس انداز میں نبیذ تمر اور دوسرے نبیذوں کا حکم مختلف نہ ہوگا، یہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya | Volume II (6) It is the consensus of the Hanafi Imams that the mixing of a small amount of something that becomes completely consumed (lost within) does not remove the absolute nature (status as pure water), even if it is not of a terrestrial substance. (Hidaya) (Remainder of the footnote from the previous page) A question was asked: "When water is dominant, what is the ruling?" He replied: "Perform wudu and do not perform tayammum." I say: If the sweetness does not reach a level that turns the water into Nabidh (a specific date/raisin drink), then the sweetness will be considered overcome (subordinate). If it reaches that level, then it will be dominant, and there is no intermediate state between the two. Furthermore, there is no meaning to the equality of water and sweetness because equality and disparity occur between two quantities of the same genus. Thus, it is necessary that this 'equality' refers to equality in probability; meaning, it is not predominant in one's thought whether it has become Nabidh or remained water, but rather both outcomes are equally possible. Therefore, the result is the occurrence of doubt and hesitation, as others have also expressed. In 'Al-Tabyin' and 'Al-Fath', citing 'Khizanat al-Akmal', and in 'Al-Hilya' from 'Al-Khizana' etc., it is mentioned that our masters said the variation in Imam Abu Hanifa's (may Allah be pleased with him) answers is due to the variation in the questions. Once he was asked if the water is dominant, he said: "Perform wudu." Another time he was asked if the sweetness is dominant, his answer was: "Perform tayammum and not wudu." When asked when it's unknown which is dominant, he said: "Combine both (wudu and tayammum)." These are the words of 'Al-Fath'. Following this, it states: "Based on this, a detailed ruling is also necessary for Ghusl (ritual bath); if the sweetness in the Nabidh becomes so dominant that the name 'water' is no longer applied to it, then Ghusl cannot be performed with it. Conversely, if it can still be called water, Ghusl is performed, following the path of indicative reasoning." Page 691 of 711

फ़तावा रज़विया | जिल्द II (भाग दो) (६) हनफ़ी इमामों की सर्वसम्मति (इज्मा) है कि किसी वस्तु की अल्प मात्रा का पूरी तरह घुल जाना उसके जल के पूर्ण अस्तित्व (शुद्ध जल का दर्जा) को समाप्त नहीं करता, भले ही वह मिट्टी की श्रेणी से न हो। (हिदाया) (पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) सवाल किया गया कि जब पानी की प्रधानता हो तो क्या हुक्म है? फ़रमाया: "वज़ू कर ले और तयम्मुम न करे।" मैं कहता हूँ कि यदि मिठास उस सीमा तक न पहुँचे कि पानी 'नबीज़' (खजूर का शर्बत) बन जाए, तो मिठास को दबा हुआ (गौण) माना जाएगा। यदि वह उस स्तर तक पहुँच जाए, तो वह प्रधान होगी, और इन दोनों के बीच कोई मध्य स्थिति नहीं है। साथ ही, पानी और मिठास की समानता का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि समानता और असमानता एक ही श्रेणी की दो मात्राओं के बीच होती है। अतः यह आवश्यक है कि इस 'समानता' का अर्थ संभावना (Probability) की समानता हो; अर्थात, यह धारणा प्रबल न हो कि वह नबीज़ बन गया है या पानी ही रहा है, बल्कि दोनों की बराबर संभावना हो। परिणामस्वरूप, संदेह और हिचकिचाहट की स्थिति उत्पन्न होती है, जैसा कि अन्य विद्वानों ने भी व्यक्त किया है। 'अल-तब्बीन' और 'अल-फ़तह' में 'ख़िज़ानतुल अकमल' के हवाले से, और 'अल-हिलिया' में 'अल-ख़िज़ा़ना' आदि के हवाले से उल्लेख है कि हमारे आचार्यों ने फ़रमाया कि इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के उत्तरों में भिन्नता का कारण पूछे गए प्रश्नों की भिन्नता है। एक बार उनसे पूछा गया कि यदि पानी प्रधान है, तो उन्होंने कहा: "वज़ू करो।" दूसरी बार पूछा गया कि यदि मिठास प्रधान है, तो उन्होंने उत्तर दिया: "तयम्मुम करो और वज़ू नहीं।" जब पूछा गया कि जब पता न हो कि कौन प्रधान है, तो उन्होंने कहा: "दोनों (वज़ू और तयम्मुम) को एक साथ करें।" ये 'अल-फ़तह' के शब्द हैं। इसके बाद कहा गया है: "इसी आधार पर ग़ुस्ल (स्नान) में भी विवरण आवश्यक होगा; यदि नबीज़ में मिठास इतनी प्रबल हो जाए कि उसे 'पानी' न कहा जा सके तो उससे ग़ुस्ल नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, यदि उसे पानी कहा जा सकता है, तो ग़ुस्ल किया जाएगा, जो सांकेतिक तर्क का अनुसरण है।" पृष्ठ ६९१/७११

فتاوی رضویہ | جلد ثانی (۶) اجماع ائمہ حنیفہ ہے کہ قلیل مستہلک کا خلط منزیل اطلاق نہیں اگرچہ وہ قلیل جنس ارض سے نہ ہو، ہدایہ (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) سوال کیا گیا کہ جب پانی کا غلبہ ہو تو کیا حکم ہے؟ فرمایا وضو کرلے اور تیمم نہ کرے۔ میں کہتا ہوں کہ مٹھاس اگر اس درجہ نہ ہو کہ پانی کو نبیز بنا دے تو مٹھاس مغلوب سمجھی جائے گی، اور اگر اس درجہ ہو تو غالب ہوگی اور ان دونوں میں کوئی واسطہ نہیں، نیز پانی اور مٹھاس کی مساوات کے کوئی معنی نہیں، کیونکہ تساوی اور تفاضل دو ہم جنس کمیتوں میں ہوتے ہیں، تو ضروری ہوا کہ یہ مساواۃ احتمال ہے یعنی اس کا نبیز ہونا یا پانی رہنا، غالب گمان میں نہیں ہے بلکہ دونوں چیزوں میں برابر کا احتمال ہے، تو حاصل شک و تردد کا حصول ہے، اور ان کے غیر نے اس کی یہی تعبیر کی ہے۔ تبیین اور فتح میں خزانۃ الاکمل سے اور حلیہ میں خزانہ وغیرہ سے ہے کہ ہمارے مشائخ نے فرمایا ہے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے جوابات کے مختلف ہونے کی وجہ سوالات کا اختلاف ہے۔ جب آپ سے پوچھا گیا کہ اگر پانی غالب ہو، تو آپ نے فرمایا وضو کرے اور جب یہ پوچھا کہ اگر مٹھاس غالب ہو، تو جواب میں فرمایا کہ وضو اور تیمم دونوں کو جمع کرے اھ، یہ فتح کے الفاظ ہیں اور اس پر پھر یہ کہا اس بنا پر غسل میں بھی ضرور تفصیل ہوگی کہ اگر نبیز میں مٹھاس اتنی غالب ہو جائے کہ پانی کا نام اس پر نہ بولا جائے تو اس سے۔ الانبذة وسئل عنه ایضاً اذا کانت الغلبة للماء فقال یتوضو به ولا یتیمم اهـ اقول: الحلاوة ان لم تبلغ مبلغاً تجعله نبیذاً کانت مغلوبة وان بلغت فقد غلبت ولا واسطة بینهما وایضاً لا معنی التساوی الماء والحلاوة فان التساوي والتفاضل في کمین متجانسین فوجب ان المراد المساواة في الاحتمال ای لا یغلب علی الظن احد طرفي صیر ورته نبیذاً او بقائه ماء بل یحتملان علی السواء فالحاصل حصول الشك والتردد وبه عبر غیره ففی التبیین والفتح عن خزانة الاکمل وفی الحلیة عنها وعن غیرها قال مشایخنا انما اختلفت اجوبته

رضی اللہ تعالیٰ عنہ لاختلاف المسائل سئل مرۃ ان کان الماء غالباً قال یتوضو وسئل مرۃ ان کانت الحلاوۃ غالبۃ قال یتیمم ولا یتوضو وسئل مرۃ اذالم یدر ایھما الغالب قال یجمع بینھما اھ۔ ھذا لفظ الفتح وقال بعدہ وعلی ھذا یجب التفضیل في الغسل ان کان النبیذ غالب الحلاوۃ قریبا من سلب الاسم لا یغتسل بہ اوضدہ فیغتسل الحاقاً بطریق الدلالۃ۔ صفحہ ۶۹۱ از ۷۱۱

Fatawa Rizvia, Volume Two

Slight mixture is not considered because it is impossible (to avoid) | The components of clay are not considered in small amounts in water.

(Remaining footnote from the previous page) ... or there is hesitation in it, then both ghusl (bath) and tayammum (dry ablution) should be combined. End. I say: (1) There is no need for analogy (al-ilhaq) as long as the absolute status (of water) remains. As for those who differed regarding the permissibility of ghusl with it, the author of Al-Mabsut authenticated its permissibility, while the author of Al-Mufid authenticated its non-permissibility because ritual impurity (janaba) is more severe, as mentioned in Al-Fath later. So I say: Their discussion is about what has become nabidh (date-water), and this is different from this elegant reconciliation. Based on this, the one who permits ghusl with it is forced to link it to wudu by way of indication (dalala), not by analogy (qiyas). This is because the permissibility of (performing wudu with) date nabidh is an exception to the rules of analogy. What is such (an exception), its linkage can be through indication, not analogy. As for this reconciliation, there is no doubt that wudu and ghusl are equal in their permissibility with absolute water. Therefore, one should not be made the principle (asl) and the other linked (mulhaq) to it. This, and similar are the words of Al-Tabyin and Al-Hilya, since it is not known which one is dominant. This is regarding the doubtful (case), not the equal mixture.

[Urdu Translation text on page]: ...ghusl should not be performed. And if it is contrary to this, such that the sweetness is overcome and it is called water, then one should perform ghusl, because the ruling of ghusl will be considered linked to wudu by way of indication. And if there is hesitation regarding the dominance in nabidh, then one should combine ghusl and tayammum. (T) I say that in the presence of absolute status, there is no need for linkage. Those who differed regarding the permissibility of ghusl with nabidh, like the author of Mabsut who authenticated its permissibility and Mufid who called non-permissibility correct, the reason is that janaba is more severe, as will be mentioned in Al-Fath later. (T) Therefore, I say that their discussion is for the case when it becomes nabidh. In that case, the mentioned reconciliation will not apply. Hence, those who argue for the permissibility of ghusl are forced to link it with wudu based on indication. They cannot use analogy here because the permissibility of wudu with date nabidh is not based on the rule of analogy. That which is against analogy can have linkage via indication, but analogy cannot be performed on it. Thus, wudu and ghusl are both equal in permissibility with absolute

water. One cannot be designated as the original and the other as linked. This, the words of Tabyin and Hilya are also similar, so when (continued on next page)

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

अल्प मिश्रण का विचार नहीं किया जाता क्योंकि वह संभव नहीं है | पानी में मिट्टी के अंश का मामूली मिलावट मान्य नहीं है।

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) ... या उसमें संदेह हो तो ग़ुस्ल (स्नान) और तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) दोनों को मिलाया जाए। (इंतिहा) मैं कहता हूँ: (१) जब तक पानी का 'मुतलक' (निरपेक्ष) होना बना रहे, तब तक 'इल्हाक' (तुलना/जुड़ाव) की कोई आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक उन लोगों का प्रश्न है जिन्होंने इसके साथ ग़ुस्ल की अनुमति पर मतभेद किया है, तो 'मबसूत' के लेखक ने इसके जायज़ होने को सही माना है, जबकि 'अल-मुफ़िद' के लेखक ने इसके नज़ायज़ होने को सही ठहराया है, क्योंकि जनाबत (अशुद्धता) अधिक गंभीर है, जैसा कि बाद में 'अल-फ़तह' में उल्लेख किया गया है। तो मैं कहता हूँ: उनकी बात उस चीज़ के बारे में है जो 'नबीज़' (खजूर का शरबत) बन गई हो, और यह इस सुंदर समाधान से अलग है। इसके आधार पर, जो इसके साथ ग़ुस्ल की अनुमति देता है, वह इसे 'दलालत' (संकेत) के आधार पर वज़ू के साथ जोड़ने पर मजबूर है, 'क़यास' (तर्क/अनुमान) के आधार पर नहीं। क्योंकि खजूर की नबीज़ से वज़ू करने की अनुमति क़यास के नियमों के विरुद्ध एक अपवाद है। जो चीज़ ऐसी हो, उसका जुड़ाव संकेत द्वारा हो सकता है, क़यास द्वारा नहीं। जहाँ तक इस समाधान का प्रश्न है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि मुतलक पानी से वज़ू और ग़ुस्ल दोनों की अनुमति समान है। इसलिए, इनमें से एक को मूल और दूसरे को उससे जुड़ा हुआ नहीं माना जाना चाहिए। यह, और इसी तरह 'अत-तबयीन' और 'अल-हिलिया' के शब्द हैं, क्योंकि यह ज्ञात नहीं है कि कौन सा प्रबल है। तो यह संदेहास्पद के बारे में है, बराबर मिश्रण के बारे में नहीं।

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: ...ग़ुस्ल न किया जाए। और यदि इसके विपरीत हो कि मिठास कम हो और उसे पानी कहा जाए, तो ग़ुस्ल करे क्योंकि दलालत के तौर पर ग़ुस्ल का हुक्म वज़ू से जुड़ा हुआ माना जाएगा। और यदि नबीज़ में प्रबलता के बारे में संदेह हो, तो ग़ुस्ल और तयम्मुम को जमा (एकत्र) करे। (त) मैं कहता हूँ कि मुतलक होने की उपस्थिति में इल्हाक की आवश्यकता नहीं है। नबीज़ से ग़ुस्ल की अनुमति के बारे में मतभेद करने वालों ने जैसा कि मबसूत में अनुमति की पुष्टि की है और मुफ़िद में अनुमति न होने को सही कहा है, तो उसकी वजह यह है कि जनाबत अधिक गंभीर है जैसा कि बाद में फ़तह में इसका उल्लेख है। (त) अतः मैं कहता हूँ कि उनकी बात उस स्थिति में है जब वह नबीज़ बन जाए। तब उसमें उल्लेखित समाधान लागू नहीं होगा। इसलिए ग़ुस्ल की अनुमति के पक्षधर वज़ू के साथ इल्हाक करने में दलालत के कथन पर मजबूर हैं और वे यहाँ क़यास का उपयोग नहीं

कर सकते क्योंकि खजूर की नबीज़ से वज़ू का जायज़ होना क़यास के नियम पर नहीं है। जो क़यास के खिलाफ हो, उससे इल्हाक दलालत के तौर पर हो सकता है, उस पर क़यास नहीं किया जा सकता। अतः इस तरह वज़ू और ग़ुस्ल दोनों मुतलक पानी से जायज़ होने में समान हैं। एक को असल (मूल) और दूसरे को मुलहक़ (जुड़ा हुआ) नहीं माना जा सकता। यह, तबयीन और हिलिया के शब्द भी इसी तरह हैं, तो जब (बाकी अगले पेज पर)

الخلط القليل لا معتبر به لعدم امكان | پانی میں معمولی ملاوٹ کا اعتبار نہیں کیونکہ مٹی کے اجزاء

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) او مترددا فيه يجمع بين الغسل والتيمم اھ - اقول: (1) لا حاجة الى الالحاق مع بقاء الاطلاق اما الذين اختلفوا في جواز الغسل به فصحح في المبسوط الجواز وصحح في المفيد عدمه لان الجنابة اغلظ كما ذكره في الفتح بعده - فأقول: كلامهم في ماصار نبيذا وهو غير هذا التوفيق الانيق وعليه يضطر القائل بجواز الاغتسال به الى الحاقه بالوضوء دلالة لاقياسا لان الجواز في نبيذ التمر معدول به عن سنن القياس وما كان كذا يجوز الالحاق به دلالة لاقياسا اما على هذا التوفيق فلاشك ان الوضوء والغسل سيان في جوازهما بالماء المطلق فلا يجعل احدهما اصلا والآخر ملحقا به هذا ومثله لفظ التبيين والحلية اذ الم يدر ايهما الغالب فهذا في المشكوك دون المخالط المساوي

غسل نہ کیا جائے اور اگر اس کے خلاف ہو کہ مٹھاس مغلوب ہو اور اس کو پانی کہا جائے تو غسل کرے کیونکہ دلالت کے طور پر غسل کا حکم وضو سے ملحق قرار پائے گا اور اگر نبیذ میں غلبہ کے بارے میں تردد ہو تو غسل اور تیمم کو جمع کرے اھ (ت) میں کہتا ہوں کہ اطلاق کی موجودگی میں الحاق کی ضرورت نہیں، نبیذ سے غسل کے جواز کے بارے میں اختلاف کرنے والوں نے جیسا کہ مبسوط میں جواز کی صحت کی ہے اور مفید میں عدم جواز کو صحیح کہا تو اس کی وجہ یہ ہے کہ جنابت زیادہ غلیظ ہے جیسا کہ بعد میں اسے فتح میں ذکر کیا ہے۔ (ت) پس میں کہتا ہوں کہ ان کا کلام اس صورت میں ہے جب نبیذ بن جائے تو اس میں مذکورہ توفیق جاری نہ ہوگی لہٰذا غسل کے جواز کے قائل وضو کے ساتھ الحاق کرنے میں دلالت کے قول پر مجبور ہیں اور وہ قیاس کو یہاں استعمال نہیں کرسکتے کیونکہ نبیذ تمر سے وضو کا جواز قیاس کے قاعدہ پر نہیں ہے، جو قیاس کے خلاف ہو تو اس سے الحاق بطور دلالت ہو سکتا ہے اس پر قیاس نہیں

کیا جاسکتا پس اس طرح وضو اور غسل دونوں مطلق پانی سے جواز میں مساوی ہیں ایک کو اصل اور دوسرے کو ملحق نہیں قرار دیا جاسکتا، ہذا، تبیین اور حلیہ کے الفاظ بھی اسی طرح ہیں، تو جب (باقی اگلے صفحہ پر)

Fatawa Ridawiyya Volume 2

Avoiding it is difficult, just as with soil particles (it's difficult to keep water safe from such mixtures). (T) It is stated in Fath al-Qadir: We have seen that in the water of the flood and the Nile, the color of clay dominates, and in autumn leaves fall into ponds. Despite this, we have observed two companions passing by, one saying to the other: "Here is water, come, let's drink and perform ablution (Wudu)." They refer to it as "water" in absolute terms, even though its qualities have changed due to these infusions. Thus, it is clear to us from common usage that a substance mixed into water and overcome by it does not strip the water of its absolute status. Therefore, the rulings for absolute water must apply to such water. Furthermore, on the day of the conquest (of Makkah), the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) bathed from a vessel which had traces of dough in it. This was narrated by al-Nasa'i, and the water was [judged] by that standard.

(Continuation of footnote from previous page) If the dominance of either is not known, then it is a matter of doubt. It is not about a mixture of equal proportions; here, no leaning towards what is in al-Ghunya is established. I say: (1) A parallel to this disagreement regarding the Imam (Abu Hanifa) is found in the Hadith: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was once asked about a fasting person kissing his wife. He permitted it. Another time, the same question was asked, and he forbade it. It turned out that the one he permitted was an elderly man, and the one he forbade was a youth. (12, from him, may he be forgiven) (M). Similarly, Imam Abu Hanifa gave different opinions regarding nabidh (a type of drink), because each answer pertains to a different point of view. (T)

[1] Al-Hidaya, Chapter on water with which ablution is permissible, Arabic Press, Karachi, 1/8. Page 693 of 711

इसे बचाना मुश्किल है, जैसे मिट्टी के कणों से पानी को सुरक्षित रखना मुश्किल होता है। (त) 'फ़तह अल-क़दीर' में लिखा है: हमने देखा है कि बाढ़ और नील नदी के पानी में मिट्टी का रंग हावी होता है और पतझड़ के मौसम में तालाबों में पत्ते गिरते हैं। इसके बावजूद, हमने दो साथियों को वहां से गुजरते हुए देखा है, जिनमें से एक दूसरे से कहता है: "यहाँ पानी है, आओ पियें और वज़ू करें।" वे इसे सामान्य अर्थों में 'पानी' ही कहते हैं, हालाँकि इन चीजों के मिलने से पानी के गुण बदल चुके होते हैं। अतः, भाषा (आम बोलचाल) से हमें यह स्पष्ट होता है कि पानी में मिली हुई और दबी हुई चीज़ पानी से उसके'पानी' होने का सामान्य दर्जा नहीं छीनती। इसलिए, ऐसे पानी पर 'मुतलक़' (शुद्ध/पूर्ण) पानी के नियम ही लागू होंगे। इसके अलावा, मक्का फतह के दिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक ऐसे बर्तन से स्नान किया जिसमें गूँथे हुए आटे के निशान थे। इसे इमाम नसाई ने रिवायत किया है, और उस पानी का हुक्म भी वही था।

(पिछले पृष्ठ के फ़ुटनोट का शेष भाग) अगर दोनों में से किसी का प्रभुत्व ज्ञात न हो, तो यह संदेह की बात है। यह समान अनुपात के मिश्रण की बात नहीं है; यहाँ 'अल-गुनिया' में वर्णित बात की ओर कोई झुकाव सिद्ध नहीं होता है। मैं कहता हूँ: (1) इमाम (अबू हनीफ़ा) के बारे में इस मतभेद की मिसाल उस हदीस में है जहाँ हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से एक बार सवाल हुआ कि क्या रोज़ेदार अपनी पत्नी का चुंबन ले सकता है, तो आपने अनुमति दे दी। दूसरी बार यही सवाल किया गया तो आपने मना फ़रमाया। पता चला कि जिसे अनुमति दी गई वह बूढ़ा था और जिसे मना किया गया वह जवान था। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए) (म)। इसी तरह इमाम अबू हनीफ़ा ने 'नबीज़' (एक प्रकार का पेय) के बारे में अलग-अलग राय दी हैं क्योंकि हर जवाब एक अलग दृष्टिकोण से संबंधित है। (त)

[1] अल-हिदाया, बाब अल-मा अल्लज़ी यजुलु बिहिल वुज़ू, मतबा अरबिया कराची, 1/8. पृष्ठ 693/711

الاحتراز عنه کما فی اجزاء الارض[1]۔ کی طرح ایسی ملاوٹ سے پانی کا محفوظ ہونا مشکل ہے۔

(ت) فتح القدیر میں ہے: قدر رأیناہ یقال فی ماء المد والنیل حال غلبة لون الطین علیه وتقع الاوراق فی الحیاض زمن الخریف فیمر الرفیقان ویقول احدهما للآخر هنا ماء تعال نشرب نتوضأ فیطلقه مع تغیر اوصافه بانتقاعها فظهر لنا من اللسان ان المخلوط المغلوب لا یسلب الاطلاق فوجب ترتیب حکم المطلق علی الماء الذی هو کذلك وقد اغتسل صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یوم الفتح من قصعة فیها اثر العجین رواه النسائی والماء بذلك مد اور نیل کے پانی میں مٹی کا رنگ غالب ہوتا ہے اور حوضوں میں موسمِ خزاں کے پتے گرتے ہیں اس کے باوجود ہم نے دیکھا کہ دو ساتھی وہاں سے گزرتے ہوئے ایک دوسرے کو کہتے ہیں یہ پانی ہے آؤ پئیں اور وضو کریں اسی کو مطلق پانی قرار دیتے ہیں حالانکہ ان چیزوں کے ملنے کی وجہ سے پانی کے اوصاف متغیر ہوچکے ہوتے ہیں تو معلوم ہوا کہ ملنے والی مغلوب چیز پانی کو اپنے اطلاق سے خارج نہیں کرتی لہذا ایسے پانی پر مطلق کا حکم مرتب ہوگا نیز فتح مکہ کے روز حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ایک ایسے پیالے سے وضو

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) دونوں میں سے کسی کا غلبہ معلوم نہ ہو، تو یہ مشکوک کی بات ہوئی مقدار کے اعتبار سے مساوی مخلوط کی بات نہیں ہے، یہاں غنیہ والی بات کی طرف میلان ثابت نہیں ہے۔ قدرا فلیس فیه ما یمیل الی ما فی الغنیة فتثبت وللہ الحمد۔ اقول: (۱) ونظیر هذا الاختلاف عن الامام ما فی الحدیث انہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سئل عن تقبیل الصائم عرسه فاجاز فسئل اخری فنهی فاذا الذی اباه لہ شیخ والذی نهاه عنه شاب ۱۲ منہ غفرلہ (م) میں کہتا ہوں کہ اس کی نظیر وہ ہے جو حدیث میں ہے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے ایک بار یہ سوال ہوا کہ اگر روزے والا اپنی بیوی کا بوسہ لے تو کیا حکم ہے، تو جواب میں اجازت فرمائی۔ اور دوسری بار یہی سوال کیا

گیا تو آپ نے منع فرمایا۔ تو اسی ایک سوال کے مختلف جوابات کی وجہ یہ ہے کہ اگر وہ روزے والا بوڑھا ہو تو جائز فرمایا اور اگر وہ جوان ہے تو منع فرمایا، اس طرح امام ابو حنیفہ نے نبیذ کے بارے میں مختلف قول فرمائے کیونکہ ہر جواب علیحدہ نقطہ سے متعلق ہے۔ (ت)

[1] الھدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء مطبع عربیہ کراچی ۱/۸ Page 693 of 711

Fatawa Ridawiyya, Volume II

...it changes, but being overwhelmed is not taken into account. — 1 [He] said: [Water] in which flour was added. An-Nasa'i narrated it. The water changes because of this flour, but the Prophet (peace and blessings be upon him) did not mind it. (T)

(7) It is the consensus of custom and Sharia that the disappearance of the name [water] causes the loss of the 'absolute' status. This has already been mentioned in the definitions of 'absolute' [water], especially the ninth definition. (T). Therefore, there is a consensus that wudu is invalid with date-palm wine (nabidh tamr), even if the water remains thin. This has already been mentioned in 286. (T).

(8) There is a consensus of the Hanafi Imams that a slight change in the qualities of water does not prevent it from being 'absolute'. This has already been mentioned in 116. (T). These eight points of consensus are mandatory to follow, indisputable, and cannot be rejected. By the grace of Allah, this is the perfect standard that was mentioned in the Ridwi definition of 'absolute water'. Praise be to Allah. Keeping these refined rulings in mind, let us move toward the principles.

Principle 1: Wudu is not permissible with the juice or extract of any fruit, tree, vine, leaf, or grass. It is stated in Quduri, Hidaya, Waqaya, Nuqaya, Kanz, Islah, Ghurar, Nur al-Idah, and other standard books: "Wudu is not permissible with what is squeezed from a tree or fruit." 2 (T). And the correct view is that this ruling applies generally to dripped, distilled, and squeezed [liquids], as previously mentioned in the discussion on 205. (T).

[Table Box] Left Side: I say: In my view, this is among the derivatives of the first consensus, even regarding the liquid that drips from a grapevine. This matter has already been mentioned in the footnote of 207. Right Side: I say: In my view, this is among the derivatives of the first consensus, even including the droplets coming out from a grapevine. This matter has already been mentioned in the footnote of discussion 207. (T)

Principle 2 to 4: Three reasons are mentioned in the reliable texts for purifying water to become unfit for wudu: (1) Loss of the natural state of water. (2) Dominance of a non-water substance. (3) Cooking with another substance. Although some [scholars]

mentioned one reason, some two, and some mentioned all summarily, and there are variations in their expressions.

1. Fath al-Qadir, Chapter on water with which wudu is permissible, Arabiya Press, Karachi, 1/64.
2. Nur al-Idah, Book of Purification, Alimiya Press, Lahore, p. 3.

फ़तावा रज़विया, जिल्द दो

...यह बदल जाता है और अभिभूत (ग़ालिब) होना विचारणीय नहीं है। — 1 कहा: जिसमें आटा लगा हुआ था, इसे नसाई ने रिवायत किया है और पानी इस आटे की वजह से बदल जाता है, लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसकी परवाह नहीं की। (त)

(7) उर्फ़ और शरीयत का इज्मा (आम सहमति) है कि नाम का मिट जाना, 'मुतलक़' (पूर्ण) होने की स्थिति को खत्म कर देता है। यह बात 'मुतलक़' की परिभाषाओं में, विशेष रूप से नौवीं परिभाषा में गुज़र चुकी है। (त)। इसीलिए 'नबीज़-ए-तम्र' (खजूर के अर्क) से वज़ू के नाजायज़ होने पर इज्मा हुआ, चाहे पानी पतला ही रहे। यह 286 में गुज़र चुका है। (त)।

(8) अइम्मा-ए-ह़नफ़िया का इज्मा है कि पानी के गुणों में थोड़ा सा बदलाव इसे 'मुतलक़' रहने से नहीं रोकता। यह 116 में गुज़र चुका है। (त)। ये आठ इज्मा वाजिब-उल-इत्तेबा (अनुकरण के योग्य), निर्विवाद और अटल हैं। और अल्लाह के फ़ज़्ल से यही वह मुकम्मल पैमाना है जो 'मा-ए-मुतलक़' (पूर्ण जल) की रज़वी परिभाषा में गुज़रा है। अल्लाह का शुक्र है। इन साफ़-सुथरे अहकाम को ज़हन में रखकर उसूलों (नियमों) की तरफ़ चलें।

ज़ाह़िबता (नियम) 1: किसी फल, पेड़, बेल, पत्तों या घास के अर्क या रस से वज़ू जायज़ नहीं है। क़ुदूरी, हिदाया, वक़ाया, नुक़ाया, कन्स, इसलाह़, ग़ुरर, नूर-उल-ईज़ाह़ और अन्य किताबों में है: "पेड़ या फल से निचोड़े गए रस से वज़ू जायज़ नहीं है।" 2 (त)। और सही यह है कि यह हुक्म टपकने वाले (क़ातिर), कसीद किए हुए (मुस्तक़्तर) और निचोड़े हुए (मोत़सर) सब पर आम है, जैसा कि बहस 205 में गुज़र चुका है। (त)।

[तालिका बॉक्स] बायाँ भाग: मैं कहता हूँ: मेरे नज़दीक यह पहले इज्मा की शाखाओं में से है, यहाँ तक कि अंगूर के पेड़ से टपकने वाली बूंदों को भी शामिल है। यह बात 207 के हाशिये में गुज़र चुकी है। दायाँ भाग: मैं कहता हूँ कि यह मेरे नज़दीक पहले इज्मा के फ़ुरूआत (शाखाओं) में से है हत्ता कि अंगूर के दरख़्त से निकलने वाले क़तरों को शामिल है और यह बात बहस 207 के हाशिए में गुज़र चुकी है। (त)

ज़ाह़िबता (नियम) 2 से 4: पाक पानी के वज़ू के नाक़ाबिल हो जाने के लिए मोतबर किताबों में तीन कारण बताए गए हैं: (1) पानी की प्राकृतिक अवस्था का ख़त्म होना। (2) दूसरी चीज़ का ग़ालिब आ

जाना। (3) किसी दूसरी चीज़ के साथ पकाना। हालाँकि कुछ ने एक सबब बताया, कुछ ने दो और कुछ ने संक्षेप में सभी, और उनके बयान करने के शब्दों में भी अंतर है।

1. फ़तह़-उल-क़दीर, वज़ू के लिए जायज़ पानी का अध्याय, अरबिया प्रेस कराची, 1/64
2. नूर-उल-ईज़ाह़, किताब-उत-त़हारत, अलमिया प्रेस लाहौर, पृ. 3

یتغیر ولم یعتبر المغلوبیة - ۱ فرمایا جس میں آٹا لگا ہوا تھا، اس کو نسائی نے روایت کیا ہے اور پانی اس آٹے کی وجہ سے متغیر ہوتا ہے لیکن حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اس کی کچھ پرواہ نہ کی۔(ت)

(۷) اجماع عرف و شرع ہے کہ زوال اسم موجب زوال اطلاق ہے وقد تقدم فی تعاریف المطلق لاسیما التاسع (مطلق کی تعریفوں خصوصاً نویں تعریف میں گزر چکا ہے۔ت) ولذا نبیذ تمر سے وضو ناجائز ہونے پر اجماع ہوا اگرچہ پانی اپنی رقت پر رہے وقد تقدم فی ۲۸۶ (۲۸۶ میں گزر چکا۔ ت)

(۸) اجماع ائمہ حنفیہ ہے کہ پانی کے اوصاف میں قلیل تغیر مانع اطلاق نہیں وقد تقدم في ۱۱۶ (۱۱۶ میں گزر چکا ہے۔ ت) یہ آٹھ اجماع واجب الاتباع ناقابل نزاع غیر صالح الاندفاع ہیں اور یہی بحمد اللہ تعالٰی وہ معیار کامل ہے جو مائے مطلق کی تعریف رضوی میں گزرا وللہ الحمد یہ احکام منقحہ ہاتھ میں رکھ کر ضوابط کی طرف چلئے۔

ضابطہ ۱: کسی پھل یا پیڑ یا بیل یا پتوں یا گھاس کے عرق یا عصارے سے وضو جائز نہیں۔ قدوری ہدایہ وقایہ نقایہ کنز اصلاح غرر نور الایضاح متون وغیرہ عامہ کتب میں ہے لا یجوز بما اعتصر من شجر او ثمر ۲ (درخت اور پھل کے نچوڑے ہوئے پانی سے وضو جائز نہیں۔(ت) اور صحیح یہ کہ یہ حکم قاطر و مستقطر و معتصر سب کو عام ہے کما تقدم فی ۲۰۵ (جیسا کہ بحث ۲۰۵ میں گزر چکا ہے۔ (ت)

[باکس] بائیں طرف: اقول: ھو عندی من فروع الاجتماع الاول حتی فی قاطر الکرم وقد تقدم فی حاشیۃ ۲۰۷۔ دائیں طرف: میں کہتا ہوں کہ یہ میرے نزدیک پہلے اجماع کے فروعات میں سے ہے حتی کہ انگور کے درخت سے نکلنے والے قطروں کو شامل ہے اور یہ بات بحث ۲۰۷ کے حاشیہ میں گزر چکی ہے۔(ت)

ضابطہ ۲ تا ۴: مطہر پانی کے ناقابلِ وضو ہو جانے کیلئے متونِ معتمدہ میں تین سبب ارشاد ہوئے: (۱) زوالِ طبعِ آب (۲) غلبہ غیر (۳) طبخ با غیر ۔ اگرچہ بعض نے ایک سبب بیان کیا بعض نے دو بعض نے اجمالاً سب، اور ان سے تعبیر میں بھی عبارات

1 فتح القدیر، باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء، مطبع عربیہ کراچی ۱/ ۶۴ 2 نور الایضاح، کتاب الطہارۃ، مطبع علیمیہ لاہور ص ۳

Fatawa Razawiya - Volume Two

Various [texts] have come forth, but upon investigation, by the grace of Allah Almighty, all fall within this same criterion. The texts are as follows:

(1) Quduri: Ablution is not permissible with water that has been dominated by something else such that it has taken it out of the nature of water, like broad bean water, broth, and saffron water. (Trans: Ablution is not valid with that water over which another thing has dominated and removed it from the nature of water, like broad bean water and saffron water. -T)

(2) Hidaya: Similar to it; it was taken from him [Quduri], though some examples were added. (Trans: In Hidaya, it is similar; they have taken it from Quduri although some examples have been added. -T)

(3) Wiqayah: Nor with water whose nature has vanished due to the dominance of other parts or by cooking, like broad bean water and broth. (Trans: In Wiqayah it is stated: and not with that water over which something else has dominated in the form of parts or due to cooking, like broad bean water and soup. -T)

(4) Niqayah: One may perform ablution with water from the sky and the earth even if a pure substance has mixed with it, unless it has removed it from the nature of water or changed it through cooking, and it [the additive] is something from which cleanliness is not sought. (Trans: In Niqayah it is stated: Perform wudu with water of the sky and earth even if some pure thing has mixed into it, unless it has taken it out of the nature of water, or it has been taken out of the nature of water due to cooking, and that other thing is not something from which cleanliness is required. -T)

(5 & 6) Kanz and Wafi: Not with water that has changed due to an abundance of leaves, or by cooking, or if other parts have dominated over it. (Trans: In Kanz and Wafi it is stated: Ablution is not permissible with that water which has changed due to an abundance of leaves, or cooking, or the dominance of parts. -T)

(7) Islah: Not with water whose nature has vanished due to the dominance of other parts or changed by cooking with it, and it is something from which cleanliness is not intended. (Trans: In Islah it is stated: Ablution is not permissible with that water which has lost its nature due to the dominance of the parts of another thing or due to cooking, and it is such a thing from which cleanliness is not intended. -T)

---

1. Quduri, Kitab al-Taharah, Matba' Mujtabai, Kanpur, p. 6

2. Hidaya al-Mubtadi
3. Sharh al-Wiqayah, Kitab al-Taharah, Matba' Rashidiya, Delhi, 1/85
4. Jami' al-Rumuz, Kitab al-Taharah, Matba' al-Islamiya, Gumbad, Iran, 1/25
5. Kanz al-Daqaiq, Miyah al-Wudu, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/11
6. Islah

फ़तावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग दो)

विभिन्न [पाठ] सामने आए हैं, लेकिन अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से जांच करने पर, सभी इसी मानदंड के दायरे में हैं। इबारतें (पाठ) इस प्रकार हैं:

(1) कुदूरी: उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जिस पर किसी दूसरी चीज़ का ग़लबा (प्रधानता) हो गया हो और उसने उसे पानी के स्वभाव से बाहर कर दिया हो, जैसे बाक़ली (एक प्रकार की फली) का पानी, शोरबा और केसर का पानी। (अनु: वज़ू जायज़ नहीं है उस पानी से जिस पर किसी दूसरी चीज़ का ग़लबा हो गया हो और उसने उसको पानी की तबीयत (स्वभाव) से निकाल दिया हो, जैसे बाक़ली का पानी और केसर का पानी। -त)

(2) हिदाया: इसी की तरह है और इसी से लिया गया है, हालांकि कुछ उदाहरणों का इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया गया है। (अनु: हिदाया में इसी की तरह है; उन्होंने इसे कुदूरी से लिया है हालांकि कुछ मिसालों का इज़ाफ़ा किया है। -त)

(3) वक़ाया: और न ही उस पानी से जिसका स्वभाव अन्य भागों के ग़लबे या पकाने के कारण समाप्त हो गया हो, जैसे बाक़ली का पानी और शोरबा। (अनु: वक़ाया में है: और न उस पानी से जिस पर दूसरे का भागों के रूप में या पकाने की वजह से ग़लबा हो गया हो जैसे बाक़ली का पानी और शोरबा। -त)

(4) निक़ाया: आकाश और पृथ्वी के पानी से वज़ू करें, भले ही उसमें कोई पाक (शुद्ध) चीज़ मिल गई हो, सिवाय इसके कि उसने उसे पानी के स्वभाव से निकाल दिया हो या पकाने के कारण वह पानी के स्वभाव से बाहर हो गया हो, और वह दूसरी चीज़ ऐसी न हो जिससे स्वच्छता अभीष्ट हो। (अनु: निक़ाया में है: आसमान और ज़मीन के पानी से वज़ू करे अगरचे इसमें कोई पाक चीज़ मिल गई हो, सिवाय इसके कि उसने इसको पानी की तबीयत से ख़ारिज कर दिया हो या पकने की वजह से इसको पानी की तबीयत से ख़ारिज कर दिया हो और वो ग़ैर चीज़ ऐसी न हो जिससे नज़ाफ़त (स्वच्छता) मतलूब होती है। -त)

(5 और 6) कंज़ और वाफ़ी: उस पानी से नहीं जो पत्तों की बहुतायत या पकने या अन्य भागों की प्रधानता के कारण बदल गया हो। (अनु: कंज़ और वाफ़ी में है: उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जो पत्तों की कसरत या पकने या ग़लबा-ए-अज़ज़ा (भागों की प्रधानता) की वजह से बदल गया हो। -त)

(7) इसलाह: उस पानी से नहीं जिसका स्वभाव दूसरे भागों की प्रधानता के कारण समाप्त हो गया हो या उसके साथ पकने से बदल गया हो, और वह ऐसी चीज़ हो जिससे स्वच्छता का इरादा न किया जाता हो। (अनु: इसलाह में है: इस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जो अपनी तबीयत खो बैठा हो दूसरे के अजज़ा (भागों) के ग़लबा से या पकने की वजह से और वो चीज़ ऐसी हो जिससे नज़ाफ़त का इरादा न किया जाता हो। -त)

---

1. कुदूरी, किताबुल तहारत, मतबअ मुजतबाई, कानपुर, पृष्ठ 6
2. हिदायातुल मुब्तदी
3. शरह अल-वक़ाया, किताबुल तहारत, मतबअ रशीदिया, दिल्ली 1/85
4. जामिउर रूमूज़, किताबुल तहारत, मतबअ अल-इस्लामिया, गुम्बद, ईरान 1/25
5. कंज़ुल दक़ाईक़, मियाह अल-वज़ू, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/11
6. इसलाह

पृष्ठ 711 का 695

فتاوی رضویہ جلد ثانی

مختلف آئیں مگر عند التحقیق بتوفیق اللہ تعالی سب اسی معیار کے دائرے میں ہیں عبارات میں یہ ہیں :

(۱) قدوری لا یجوز بما غلب علیه غیره فأخرجه عن طبع الماء کماء الباقلي والمرق وماء الزردج (وضو جائز نہیں ہے اُس پانی سے جس پر کسی دوسری شے کا غلبہ ہو گیا ہو اور اس کو پانی کی طبیعت سے نکال دیا ہو، جیسے باقلی کا پانی اور زردج کا پانی۔ ت)

(۲) ہدایہ مثله وانما اخذ عنه وان زاد بعض الامثلة (ہدایہ میں اسی کی مثل ہے انہوں نے قدوری سے لیا ہے اگرچہ بعض مثالوں کا اضافہ کیا ہے۔ ت)

(۳) وقایه ولا بماء زال طبعه بغلبة غیره اجزاء او بالطبخ کماء الباقلی والمرق (وقایہ میں ہے اور نہ اس پانی سے جس پر غیر کا بصورت اجزاء یا پکانے کی وجہ سے غلبہ ہو گیا ہو جیسے باقلی کا پانی اور شوربہ۔ ت)

(۴) نقایه یتوضؤ بماء السماء والارض وان اختلط به طاهر الا اذا اخرجه عن طبع الماء او غیره طبخا وهو مما لا یقصد به النظافة (نقایہ میں ہے آسمان اور زمین کے پانی سے وضو کرے اگرچہ اس میں کوئی پاک چیز مل گئی ہو، الا یہ کہ اس کو پانی کی طبیعت سے خارج کر دیا ہو یا پکنے کی وجہ سے اس کو پانی کی طبیعت سے خارج کر دیا ہو اور وہ غیر چیز ایسی نہ ہو جس سے نظافت مطلوب ہوتی ہے۔ ت)

(۵ و ۶) کنز و وافی لا بماء تغیر بکثرۃ الاوراق او بالطبخ او غلب علیہ غیرہ اجزاء (کنز و وافی میں ہے اس پانی سے وضو جائز نہیں جو پتوں کی کثرت یا پکنے یا غلبہ اجزا کی وجہ سے بدل گیا ہو۔ ت)

(۷) اصلاح لا بماء زال طبعہ بغلبۃ غیرہ اجزاء او تغیر بالطبخ معہ وھو مما لا یقصد بہ النظافۃ (اصلاح میں ہے اس پانی سے وضو جائز نہیں جو اپنی طبیعت کھو بیٹھا ہو دوسرے کے اجزاء کے غلبہ سے یا پکنے کی وجہ سے اور وہ چیز ایسی ہو جس سے نظافت کا ارادہ نہ کیا جاتا ہو۔ ت)

---

1 قدوری کتاب الطہارت مطبع مجتبائی کان پور ص ۶ 2 ہدایۃ المبتدی 3 شرح الوقایۃ کتاب الطہارت مطبع رشیدیہ دہلی ۱/ ۸۵ 4 جامع الرموز کتاب الطہارت مطبع الاسلامیہ گنبد ایران ۱/ ۲۵ 5 کنز الدقائق میاہ الوضوء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۱ 6 اصلاح

Fatawa Rizwia Volume II

(8) Multaqa: Wudu is not permissible with water that has changed its nature due to an abundance of leaves, the dominance of something else, or through cooking, such as bean water or broth. (T)

(9) Ghurar: Wudu is not permissible with water whose natural state has been altered, whether due to cooking or because something else has dominated it. (T)

(10) Tanwir: Wudu is not permissible with water that has been overwhelmed by a pure substance or has lost its natural state due to cooking, such as broth. (T)

(11) Nur al-Idah: Wudu is not permissible with water whose nature has been lost due to cooking or the dominance of something else over it. (T)

I say: We have omitted the summary of the Zaila'i principle that was mentioned after this because the purpose of writing primary texts (Mutun) is to transmit the established school of thought (Madhhab), not for conducting modern research. (T)

---

1. Multaqa al-Abhur, Tajuz al-Taharat bil-Ma al-Mutlaq, Aamira, Egypt, 1/28.
2. Ghurar, Fard al-Ghusl, Dar al-Sa'ada, Egypt, 1/23.
3. Tanwir al-Absar, Bab al-Miyah, Mujtabai Delhi, 1/34.
4. Nur al-Idah, Kitab al-Tahara, Ilmiya Lahore, p. 3.

फ़तावा रज़विया जिल्द दोयम

(८) मुल्तक़ा: उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जो पत्तों की कसरत या किसी और चीज़ के ग़ालिब आने या पकाने के कारण अपनी असल तबियत (प्रकृति) खो चुका हो, जैसे सेम का पानी और शोरबा। (त)

(९) ग़ुरर: जिस पानी की प्राकृतिक स्थिति ज़ाइल (खत्म) हो चुकी हो, उससे वज़ू जायज़ नहीं, चाहे वह पकने की वजह से हो या किसी और चीज़ के ग़ालिब आने के कारण। (त)

(१०) तनवीर: जो पानी किसी पाक चीज़ के मिलने से मग़लूब हो चुका हो या पकने से अपनी प्रकृति खो चुका हो, उससे वज़ू जायज़ नहीं। (त)

(११) नूरुल ईज़ाह: जिस पानी की प्रकृति पकने या किसी और चीज़ के ग़लबे की वजह से ज़ाइल हो चुकी हो, उससे वज़ू जायज़ नहीं। (त)

मैं कहता हूँ: उन्होंने इसके बाद ज़ैलई नियम के सारांश का जो उल्लेख किया था, हमने उसे छोड़ दिया है क्योंकि मूल ग्रंथों (मतून) का संकलन मज़हब को नक़ल करने के लिए किया गया है, न कि नयी शोध (रिसर्च) के लिए। (त)

---

1. मुल्तक़ा अल-अब्हुर, तजूज़ अल-तहारत बिल-मा अल-मुतलाक़, आमरा, मिस्र, १/२८।
2. ग़ुरर, फ़र्ज़ अल-गुस्ल, दार अस-सआदा, मिस्र, १/२३।
3. तनवीर अल-अबसार, बाब अल-मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, १/३४।
4. नूरुल ईज़ाह, किताब अल-तहारत, इल्मिया लाहौर, पृ. ३।

पृष्ठ ६९६ / ७११

(۸) ملتقی لاءباء خرج عن طبعه بکثرة الاوراق او بغلبة غیره او بالطبخ کماء الباقلاء والمرق (ملتقی میں ہے اس پانی سے وضو جائز نہیں جو پتوں کی کثرت یا غیر کے غلبہ یا پکانے کے سبب اپنی طبیعت کھو بیٹھا ہو جیسے باقلا کا پانی اور شوربہ۔ ت)

(۹) غرر لاءباء زال طبعه بالطبخ کالمرق او بغلبة غیره علیه (غرر میں ہے جس پانی کی طبیعت زائل ہو چکی ہو اس سے وضو جائز نہیں خواہ پکنے کی وجہ سے یا غیر کے غلبہ کی وجہ سے۔ ت)

(۱۰) تنویر لاءباء مغلوب بطاهر ولا بمازال طبعه بطبخ کمرق (تنویر میں ہے جو پانی کسی پاک چیز کے ملنے سے مغلوب ہو چکا ہو یا پکنے سے طبیعت کھو چکا ہو اس سے وضو جائز نہیں۔ ت)

(۱۱) نورالایضاح لاءبما زال طبعه بالطبخ او بغلبة غیره علیه اه (نورالایضاح میں ہے جس پانی کی طبیعت پکنے یا غیر کے غلبہ کی بنا پر زائل ہو چکی ہو اس سے وضو جائز نہیں۔ ت)

اقول: وترکنا ماذکر بعده من تلخیص الضابطة الزیلعیة فان(۱) وضع المتون لنقل المذهب دون الابحاث الحادثة۔ | میں کہتا ہوں انہوں نے اس کے بعد جو ضابطہ زیلعیہ کی تلخیص ذکر کی ہے ہم نے اسے ترک کردیا ہے کیونکہ متون کو مذہب نقل کرنے کے لئے وضع کیا ہے نئی ابحاث کیلئے نہیں۔ (ت)

---

1 ملتقی الابحر تجوز الطهارات بالماء المطلق عامره مصر ۱/ ۲۸ 2 غرر فرض الغسل دار السعادة مصر ۱/ ۲۳ 3 تنویر الابصار باب المیاه مجتبائی دہلی ۱/ ۳۴ 4 نور الایضاح کتاب الطهارة علمیہ لاہور ص ۳

صفحہ ۶۹۶ از ۷۱۱

Volume II Fatawa Razawiya Sources and References

No.	Name	Author	Year of Death (Hijri)
1	Al-Ajza' fi al-Hadith	Abdur Rahman bin Umar bin Muhammad al-Baghdadi, known as an-Nahhas	416
2	Al-Ajnas fi al-Furu'	Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad al-Natafi al-Hanafi	446
3	Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar	Abdullah bin Mahmud bin Mawdud al-Hanafi	683
4	Al-Adab al-Mufrad lil-Bukhari	Muhammad bin Isma'il al-Bukhari	256
5	Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari	Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad al-Qastallani	923
6	Irshad al-Aql al-Salim	Abu Su'ud Muhammad bin Muhammad al-Imadi	951
7	Al-Arkan al-Arba'	Maulana Abdul Ali Bahr al-Ulum	1225
8	Al-Ashbah wa al-Naza'ir	Sheikh Zayn al-Din bin Ibrahim bin Nujaym	970
9	Ashi'at al-Lam'at	Sheikh Abdul Haq al-Muhaddith al-Dihlawi	1052
10	Usul al-Bazdawi	Ali bin Muhammad al-Bazdawi	482
11	Al-Islah lil-Wiqaya fi al-Furu'	Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha	940
12	Akam al-Marjan fi Ahkam al-Jann	Qadi Badr al-Din Muhammad bin Abdullah al-Shibli	769
13	Anfa' al-Wasa'il	Qadi Burhan al-Din Ibrahim bin Ali al-Tarsusi al-Hanafi	758
14	Imdad al-Fattah	Hasan bin Ammar al-Shurunbulali	1069
15	Anwar al-A'imma al-Shafi'iyya	Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i	799
16	Al-Idah lil-Wiqaya fi al-Furu'	Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha	940
17	Amali fi al-Hadith	Abdul Malik bin Muhammad bin Muhammad Bishran	432

No.	Name	Author	Year of Death (Hijri)
18	Al-I'jaz fi al-Hadith	Ahmad bin Muhammad, known as Ibn al-Sunni	364
19	Alqab al-Ruwat	Ahmad bin Abdur Rahman al-Shirazi	407

जिल्द सानी (भाग 2) फ़तावा रज़विया मआख़िज़-ओ-मराजअ़ (स्रोत्र एवं संदर्भ)

क्र.	नाम	लेखक	मृत्यु का हिजरी वर्ष
१	अल-अजज़ा' फ़िल हदीस	अब्दुर रहमान बिन उमर बिन मुहम्मद अल-बग़दादी, जिन्हें अन-नह़ास कहा जाता है	४१६
२	अल-अजनास फ़िल फ़ुरू'	अबू अल-अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अन-नातफ़ी अल-हनफ़ी	४४६
३	अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार	अब्दुल्लाह बिन महमूद बिन मौदूद अल-हनफ़ी	६८३
४	अल-अदब अल-मुफ़रद लिल-बुख़ारी	मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुख़ारी	२५६
५	इरशाद अस-सारी शरह अल-बुख़ारी	शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी	९२३
६	इरशाद अल-अक़्ल अस-सलीम	अबू सुऊद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-इमादी	९५१
७	अल-अरकान अल-अर्बा	मौलाना अब्दुल अली बहरुल उलूम	१२२५
८	अल-अश्बाह वन-नज़ाइर	शेख़ ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम बिन नुजैम	९७०
९	अशिअ़तुल लमआत	शेख़ अब्दुल हक़ अल-मुह़द्दिस अद-देह़लवी	१०५२
१०	उसूल अल-बज़दवी	अली बिन मुहम्मद अल-बज़दवी	४८२
११	अल-इस्लाह लिल-विक़ाया फ़िल फ़ुरू'	अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा	९४०
१२	आकाम अल-मर्जान फ़ी अहकाम अल-जान	क़ाज़ी बदरुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-शिबली	७६९
१३	अन्फ़ा अल-वसाईल	क़ाज़ी बुरहानुद्दीन इब्राहीम बिन अली अत-तरसूसी अल-हनफ़ी	७५८

क्र.	नाम	लेखक	मृत्यु का हिजरी वर्ष
१४	इमदाद अल-फ़त्ताह़	हसन बिन अम्मार अश-शुरुनबुलाली	१०६९
१५	अनवार अल-आइम्मा अल-शाफ़ईय्या	इमाम यूसुफ़ अल-अरदबीली अल-शाफ़ई	७९९
१६	अल-ईज़ाह़ लिल-विक़ाया फ़िल फ़ुरू'	अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा	९४०
१७	अमाली फ़िल हदीस	अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिशरान	४३२
१८	अल-इअ़ज़ाज़ फ़िल हदीस	अहमद बिन मुहम्मद, जिन्हें इब्न अस-सुन्नी के नाम से जाना जाता है	३६४
१९	अलक़ाब अर-रुवात	अहमद बिन अब्दुर रहमान अल-शीराज़ी	४०७

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ مآخذ و مراجع

نام مصنف	سن وفات ہجری
۱۔ الاجزاء فی الحدیث	عبدالرحمن بن عمر بن محمد البغدادی المعروف بالنحاس
۲۔ الاجناس فی الفروع	ابوالعباس احمد بن محمد الناطفی الحنفی
۳۔ الاختیار شرح المختار	عبداللہ بن محمود بن مودود الحنفی
۴۔ الادب المفرد للبخاری	محمد بن اسماعیل البخاری
۵۔ ارشاد الساری شرح البخاری	شہاب الدین احمد بن محمد القسطلانی
۶۔ ارشاد العقل السلیم	ابوسعود محمد بن محمد العمادی
۷۔ الارکان الاربع	مولانا عبدالعلی بحر العلوم
۸۔ الاشباہ والنظائر	شیخ زین الدین بن ابراھیم بن نجیم
۹۔ اشعۃ اللمعات	شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی
۱۰۔ اصول البزدوی	علی بن محمد البزدوی
۱۱۔ الاصلاح للوقایۃ فی الفروع	احمد بن سلیمان بن کمال پاشا
۱۲۔ اکام المرجان فی احکام الجان	قاضی بدرالدین محمد بن عبداللہ الشبلی
۱۳۔ انفع الوسائل	قاضی برہان الدین ابراھیم بن علی الطرسوسی الحنفی
۱۴۔ امداد الفتاح	حسن بن عمار الشرنبلالی
۱۵۔ انوار الائمۃ الشافعیہ	امام یوسف الاردبیلی الشافعی

نام مصنف	سن وفات ہجری
۱۶۔ الایضاح للوقایۃ فی الفروع	احمد بن سلیمان بن کمال پاشا
۱۷۔ امالی فی الحدیث	عبدالملک بن محمد بن محمد بشران
۱۸۔ الایجاز فی الحدیث	احمد بن محمد المعروف بابن السنی
۱۹۔ القاب الروات	احمد بن عبدالرحمن الشیرازی

Fatawa Razawiya Volume Second

B (Letter Be) 20. Bada'i' al-Sana'i' - Ala al-Din Abi Bakr bin Mas'ud al-Kasani - 587 21. Al-Hidayah (Bidayat al-Mubtadi) - Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 22. Al-Bahr al-Ra'iq - Shaykh Zayn al-Din bin Ibrahim ibn Nujaym - 970 23. Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman - Ibrahim bin Musa al-Tarabulsi - 922 24. Bustan al-Arifin - Faqih Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi - 372 25. Al-Basit fil Furu' - Hujjat al-Islam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali - 505 26. Al-Binayah Sharh al-Hidayah - Imam Badr al-Din Abu Muhammad al-Ayni - 855

T (Letter Te) 27. Taj al-Arus - Sayyid Muhammad Murtada al-Zabidi - 1205 28. Tarikh Ibn Asakir - Ali bin al-Hasan al-Dimashqi ibn Asakir - 571 29. Tarikh al-Bukhari - Muhammad bin Isma'il al-Bukhari - 256 30. Al-Tajnis wal Mazid - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 31. Tahrir al-Usul - Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid ibn al-Humam - 861 32. Tuhfat al-Fuqaha - Imam Ala al-Din Muhammad bin Ahmed al-Samarqandi - 540 33. Tahqiq al-Husami - Abd al-Aziz bin Ahmed al-Bukhari - 730 34. Al-Tarjih wal Tas-hih ala al-Quduri - Allama Qasim bin Qutlubugha al-Hanafi - 879 35. Al-Ta'rifat li-Sayyid Sharif - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 36. Tafsir Ibn Jarir (Jami' al-Bayan) - Muhammad bin Jarir al-Tabari - 310 37. Tafsir al-Baydawi - Abdullah bin Umar al-Baydawi - 691 38. Tafsir al-Jalalayn - Allama Jalal al-Din al-Mahalli wa Jalal al-Din al-Suyuti - 911_8 39. Tafsir al-Jamal - Sulayman bin Umar al-Ajili al-Shahir bil Jamal - 1202 40. Tafsir al-Qurtubi - Abu Abdullah Muhammad bin Ahmed al-Qurtubi - 167 41. Al-Tafsir al-Kabir - Imam Fakhr al-Din al-Razi - 26

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दूसरा)

ब (अक्षर 'बे') 20. बदाइ-उस-सनाइ - अलाउद्दीन अबी बक्र बिन मसूद अल-कासानी - 587 21. अल-हिदाया (बिदायत अल-मुब्तदी) - अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 22. अल-बहर अल-राइक़ - शैख़ ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम इब्ने नुजैम - 970 23. अल-बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान - इब्राहीम बिन मूसा अल-तराबुलसी - 922 24. बुस्तान अल-आरिफ़ीन - फ़क़ीह अबुल लैस नसर बिन मुहम्मद अल-समरक़ंदी - 372 25. अल-बसीत फ़िल फ़ुरू - हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505 26. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया - इमाम बदरुद्दीन अबू मुहम्मद अल-ऐनी - 855

त (अक्षर 'ते') 27. ताज अल-अरूस - सैय्यद मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी - 1205 28. तारीख़ इब्ने असाकिर - अली बिन अल-हसन अद-दिमश्क़ी इब्ने असाकिर - 571 29. तारीख़ अल-बुखारी - मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुखारी - 256 30. अत-तजनीस वल मज़ीद - बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 31. तहरीर अल-उसूल - कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्नुल हुमाम - 861 32. तोहफ़तुल फ़ुक़हा - इमाम अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-समरक़ंदी - 540 33. तहक़ीक़ अल-हुसामी - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी - 730 34. अत-तरजीह वत-तसहीह अलल क़ुदूरी - अल्लामा क़ासिम बिन क़ुतलू बुग़ा अल-हनफ़ी - 879 35. अत-तारीफ़ात लि-सैय्यद शरीफ़ - सैय्यद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - 816 36. तफ़्सीर इब्ने जरीर (जामे अल-बयान) - मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी - 310 37. तफ़्सीर अल-बैज़ावी - अब्दुल्ला बिन उमर अल-बैज़ावी - 691 38. तफ़्सीर अल-जलालैन - अल्लामा जलालुद्दीन अल-महल्ली व जलालुद्दीन अस-सुयूती - 911_8 39. तफ़्सीर अल-जमल - सुलैमान बिन उमर अल-अजीली अश-शहीर बिल जमल - 1202 40. तफ़्सीर अल-क़ुर्तुबी - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अहमद अल-क़ुर्तुबी - 167 41. अत-तफ़्सीर अल-कबीर - इमाम फ़खरुद्दीन अर-राज़ी - 26

पृष्ठ 711 में से 699

فتاوىٰ رضويہ جلد ثانى

ب 20۔ بدائع الصنائع - علاء الدين ابى بكر بن مسعود الكاسانى - 587 21۔ الہداية (بداية المبتدى) - على بن ابى بكر المرغينانى - 593 22۔ البحر الرائق - شيخ زين الدين بن ابراهيم ابن نجيم - 970 23۔ البرہان شرح مواہب الرحمن - ابراهيم بن موسى الطرابلسى - 922 24۔ بستان العارفين - فقيه ابواللیث نصر بن محمد السمرقندى - 372 25۔ البسيط في الفروع - حجۃ الاسلام محمد بن محمد الغزالى - 505 26۔ البناية شرح الہداية - امام بدرالدين ابو محمد العينى - 855

ت 27۔ تاج العروس - سيد محمد مرتضىٰ الزبيدى - 1205 28۔ تاريخ ابن عساكر - على بن الحسن الدمشقى ابن عساكر - 571 29۔ تاريخ البخارى - محمد بن اسماعيل البخارى - 256 30۔ التجنيس والمزيد - برہان الدين على بن ابى بكر المرغينانى - 593 31۔ تحرير الاصول - كمال الدين محمد بن عبد الواحد بن الہمام - 861 32۔ تحفۃ الفقہاء - امام علاء الدين محمد بن احمد السمرقندى - 540 33۔ تحقيق الحسامى - عبدالعزيز بن احمد البخارى - 730 34۔ الترجيح والتصحيح على القدورى - علامہ قاسم بن قطلوبغا الحنفى - 879 35۔ التعريفات لسيّد شريف - سيد شريف على بن محمد الجرجانى - 816 36۔ تفسير ابن جرير (جامع البيان) - محمد بن جرير الطبرى - 310 37۔ تفسير البيضاوي - عبدالله بن عمر البيضاوى - 691 38۔ تفسير الجلالين - علامہ جلال الدين المحلى وجلال الدين السيوطى - 911_8 39۔ تفسير الجمل - سليمان بن عمر العجيلى الشہير بالجمل - 1202 40۔ تفسير القرطبى - ابو عبدالله محمد بن احمد القرطبى - 167 41۔ التفسير الكبير - امام فخر الدين الرازى - 26

Fatawa Ridawiyya Volume 2

42- Al-Tafsir li al-Nishapuri | Nizam al-Din al-Hasan bin Muhammad bin Hussain al-Nishapuri | 728 43- Taqrib al-Qarib | Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 911 44- Al-Taqrir wa al-Tahbir | Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj al-Halabi | 879 45- Al-Taysir lil-Munawi | Abd al-Ra'uf al-Munawi | 1031 46- Tabyin al-Haqa'iq | Fakhr al-Din 'Uthman bin Ali al-Zayla'i | 743 47- Taqrib al-Tahdhib | Shihab al-Din Ahmad bin Ali bin Hajar al-Asqalani | 852 48- Tanwir al-Miqbas | Abu Tahir Muhammad bin Ya'qub al-Firuzabadi | 817 49- Tanwir al-Absar | Shams al-Din Muhammad bin Abdullah bin Ahmad al-Timurtashi | 1004 50- Ta'zim al-Salah | Muhammad bin Nasr al-Marwazi | 292 51- Tarikh Baghdad | Abu Bakr Ahmad bin Ali al-Khatib al-Baghdadi | 463 52- Al-Tawshih fi Sharh al-Hidayah | 'Umar bin Ishaq al-Siraj al-Hindi | 773

J (Section J) 53- Jami' al-Tirmidhi | Abu 'Isa Muhammad bin 'Isa al-Tirmidhi | 279 54- Jami' al-Rumuz | Shams al-Din Muhammad al-Khurwasani | 962 55- Al-Jami' al-Sahih lil-Bukhari | Imam Muhammad bin Isma'il al-Bukhari | 256 56- Al-Jami' al-Saghir fil-Fiqh | Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189 57- Al-Jami' al-Sahih li-Muslim | Muslim bin Hajjaj al-Qushayri | 261 58- Jami' al-Fiqh (Jawami' al-Fiqh) | Abu Nasr Ahmad bin Muhammad al-'Attabi | 582 59- Jami' al-Fasulayn | Shaykh Badr al-Din Mahmud bin Isra'il bin Qadi | 823 60- Al-Jami' al-Kabir | Abi al-Hasan Ubayd Allah bin Husayn al-Karkhi | 340 61- Jawahir al-Akhlati | Burhan al-Din Ibrahim bin Abu Bakr al-Akhlati | . 62- Al-Jawahir al-Zakiyah | Ahmad bin Turki bin Ahmad al-Maliki | 989 63- Jawahir al-Fatawa | Rukn al-Din Abu Bakr bin Muhammad bin Abi al-Mafakhir | 565 64- Al-Jawharah al-Nayyirah | Abu Bakr bin Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani | 800 65- Al-Jarh wa al-Ta'dil fi Rijal al-Hadith | Yahya bin Ma'in al-Baghdadi | 233 66- Al-Jami' al-Saghir fil-Hadith | Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti | 911

फतावा रजविया खंड 2

42- अत-तफ़सीर लि अल-निशापुरी | निजामुद्दीन अल-हसन बिन मुहम्मद बिन हुसैन अल-निशापुरी | 728 43- तक़रीब अल-क़रीब | अबू ज़कारिया याह्या बिन शराफ अल-नववी | 911 44- अत-तकरीर व अत-तहबीर | मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज अल-हलबी | 879 45- अत-तयसीर लिल-मुनावी | अब्दुल रऊफ अल-मुनावी | 1031 46- तब्यीन अल-हक़ाइक | फखरुद्दीन उस्मान बिन अली अल-ज़ैलई | 743 47- तक़रीब अत-तहज़ीब | शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली बिन हजर अल-अस्क़लानी | 852 48- तनवीर अल-मिक़बास | अबू ताहिर मुहम्मद बिन याकूब अल-फिरोज़ाबादी | 817 49- तनवीर अल-अबसार | शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन अहमद अल-तिमरताशी | 1004 50- ताज़ीम अस-सलाह | मुहम्मद बिन नस्र अल-मरवाज़ी | 292 51- तारीख़ बग़दाद | अबू बक्र अहमद बिन अली अल-ख़तीब अल-बग़दादी | 463 52- अत-तौशीह फ़ी शरह अल-हिदाया | उमर बिन इसहाक़ अस-सिराज अल-हिंदी | 773

ज (अनुभाग 'ज') 53- जामि अल-तिर्मिज़ी | अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अल-तिर्मिज़ी | 279 54- जामि अल-रुमूज़ | शम्स अल-दीन मुहम्मद अल-खुरवासानी | 962 55- अल-जामि अस-सहीह लिल-बुखारी | इमाम मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी | 256 56- अल-जामि अस-सग़ीर फ़िल-फिक्ह | इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | 189 57- अल-जामि अस-सहीह लि-मुस्लिम | मुस्लिम बिन हज्जाज अल-कुशायरी | 261 58- जामि अल-फिक्ह (जवामि अल-फिक्ह) | अबू नस्र अहमद बिन मुहम्मद अल-अत्ताबी | 582 59- जामि अल-फ़सूलैन | शेख बदरुद्दीन महमूद बिन इस्राईल बिन काज़ी | 823 60- अल-जामि अल-कबीर | अबी अल-हसन उबैदुल्ला बिन हुसैन अल-करखी | 340 61- जवाहिद अल-अख़लाती | बुरहान अल-दीन इब्राहिम बिन अबू बक्र अल-अख़लाती | . 62- अल-जवाहिद अज़-ज़कियाह | अहमद बिन तुर्की बिन अहमद अल-मालिकी | 989 63- जवाहिद अल-फतावा | रुकनुद्दीन अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अबी अल-मफाखिर | 565 64- अल-जौहरा अन-नयिराह | अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी | 800 65- अल-जर्ह व अत-तादील फ़ी रिजाल अल-हदीस | याह्या बिन मईन अल-बग़दादी | 233 66- अल-जामि अस-सग़ीर फ़िल-हदीस | अल्लामा जलाल अल-दीन अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र अस-सुयूती | 911

पृष्ठ 700 / 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی

۴۲- التفسیر لنیشابوری | نظام الدین الحسن بن محمد بن حسین النیشابوری | ۷۲۸ ۴۳- تقریب القریب | ابوزکریا یحیی بن شرف النووی | ۹۱۱ ۴۴- التقریر والتحبیر | محمد بن محمد ابن امیر الحاج الحلبی | ۸۷۹ ۴۵- التیسیر للمناوی | عبدالرؤف المناوی | ۱۰۳۱ ۴۶- تبیین الحقائق | فخر الدین عثمان بن علی الزیلعی | ۷۴۳ ۴۷- تقریب التهذیب | شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی | ۸۵۲ ۴۸- تنویر المقباس | ابوطاہر محمد بن یعقوب الفیروزآبادی | ۸۱۷ ۴۹- تنویر الابصار | شمس الدین محمد بن عبد اللہ بن احمد التمر تاشی | ۱۰۰۴ ۵۰- تعظیم الصلوٰۃ | محمد بن نصر المروزی | ۲۹۲ ۵۱- تاریخ بغداد | ابوبکر احمد بن علی الخطیب البغدادی | ۴۶۳ ۵۲- التوشیح في شرح الهداية | عمر بن اسحاق السراج الہندی | ۷۷۳

ج ۵۳- جامع الترمذی | ابوعیسی محمد بن عیسی الترمذی | ۲۷۹ ۵۴- جامع الرموز | شمس الدین محمد الخراسانی | ۹۶۲ ۵۵- الجامع الصحیح للبخاری | امام محمد بن اسمعیل البخاری | ۲۵۶ ۵۶- الجامع الصغیر فی الفقہ | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۵۷- الجامع الصحیح لمسلم | مسلم بن حجاج القشیری | ۲۶۱ ۵۸- جامع الفقہ (جوامع الفقہ) | ابونصر احمد بن محمد العتابی | ۵۸۲ ۵۹- جامع الفصولین | شیخ بدر الدین محمود بن اسرائیل بابن قاضی | ۸۲۳ ۶۰- الجامع الکبیر | ابی الحسن عبید اللہ بن حسین الکرخی | ۳۴۰ ۶۱- جواهر الاخلاطی | برہان الدین ابراهیم بن ابوبکر الاخلاطی | . ۶۲- الجواہر الزکیۃ | احمد بن ترکی بن احمد المالکی | ۹۸۹ ۶۳- جواہر الفتاوی | رکن الدین ابوبکر بن محمد بن ابی المفاخر | ۵۶۵ ۶۴- الجوهرة النيرة | ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی | ۸۰۰ ۶۵- الجرح والتعدیل فی رجال الحدیث | یحیی بن معین البغدادی | ۲۳۳ ۶۶- الجامع الصغیر فی الحدیث | علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی | ۹۱۱

Fatawa Rizvia, Volume Second

Section ح (Ha) 66. Hashiyah 'ala al-Durar — Muhammad bin Mustafa Abu Sa'id al-Khadimi — 1176 68. Hashiyah Ibn Shalabi 'ala al-Tabyin — Ahmad bin Muhammad al-Shalabi — 1021 69. Hashiyah 'ala al-Durar — Abdul Halim bin Muhammad al-Rumi — 1013 70. Hashiyah 'ala al-Durar li-Mulla Khusraw — Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw — 885 71. Hashiyah 'ala al-Muqaddimah al-'Ashmawiyyah — Allama Safati — • 72. Al-Hashiyah li-Sa'di Afandi — Sa'dullah bin Isa al-Afandi — 945 73. Al-Hadiqat al-Nadiyyah Sharh Tariqah Muhammadiyyah — Abdul Ghani al-Nabulsi — 1143 74. Al-Hawi al-Qudsi — Qadi Jamal al-Din Ahmad bin Muhammad Nuh al-Qabisi al-Hanafi — 600 75. Hasr al-Masa'il fi al-Furu' — Imam Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi al-Hanafi — 372 76. Hilyat al-Awliya' — Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani — 430 77. Hilyat al-Mujalli — Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj — 879

Section خ (Kha) 78. Khazanat al-Riwayat — Qadi Jakan al-Hanafi 79. Khazanat al-Fatawa — Tahir bin Ahmad Abdul Rashid al-Bukhari — 532 80. Khazanat al-Muftin — Husayn bin Muhammad al-Sam'ani al-Samiqani — After 740 81. Khulasat al-Dala'il — Husam al-Din Ali bin Ahmad al-Makki al-Razi — 598 82. Khulasat al-Fatawa — Tahir bin Ahmad Abdul Rashid al-Bukhari — 532 83. Khayrat al-Hissan — Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki — 973

Section د (Dal) 84. Al-Dirayah fi Takhrij Ahadith al-Hidayah — Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 85. Al-Durar (Durar al-Hukkam) — Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw — 885 86. Al-Durr al-Mukhtar — Ala' al-Din al-Haskafi — 1088 87. Al-Durr al-Nathir — Allama Jalal al-Din Abdul Rahman al-Suyuti — 911

फतावा रिज़विया, जिल्द सानी (भाग दो)

अनुभाग ८ (ह) 66. हाशिया अला अल-दुरर — मुहम्मद बिन मुस्तफा अबू सईद अल-खादिमी — 1176 68. हाशिया इब्न शलबी अला अल-तबीन — अहमद बिन मुहम्मद अल-शलबी — 1021 69. हाशिया अला अल-दुरर — अब्दुल हलीम बिन मुहम्मद अल-रूमी — 1013 70. हाशिया अला अल-दुरर लि-मुल्ला खुसरो — काज़ी मुहम्मद बिन फरामुज़ मुल्ला खुसरो — 885 71. हाशिया अला अल-मुकद्दिमा अल-अशमाविया — अल्लामा सफती — • 72. अल-हाशिया लि-सादी अफ़ंदी — सादुल्लाह बिन ईसा अल-अफ़ंदी — 945 73. अल-हद्दीका अल-नदिया शरह तरीका मुहम्मदिया — अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी — 1143 74. अल-हावी अल-कुदसी — काज़ी जमालुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद नूह अल-काबिसी अल-हनफी — 600 75. हसर अल-मसाइल फ़िल फुरूअ — इमाम अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अल-समरकंदी अल-हनफी — 372 76. हिल्यातुल औलिया — अबू नईम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-अस्बहानी — 430 77. हिल्यातुल मुजल्ली — मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हज्ज — 879

अनुभाग ९ (ख) 78. खज़ानतुल रिवायात — काज़ी जकन अल-हनफी 79. खज़ानतुल फतावा — ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी — 532 80. खज़ानतुल मुफ़्तीन — हुसैन बिन मुहम्मद अल-समानी अल-समीकानी — 740 के बाद 81. खुलासातुल दलाइल — हुसामुद्दीन अली बिन अहमद अल-मक्की अल-राज़ी — 598 82. खुलासातुल फतावा — ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी — 532 83. खैरातुल हिसान — शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की — 973

अनुभाग ১ (द) 84. अद-दिराया फ़ी तखरीज़ अहादीस अल-हिदाया — शहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-असकलानी — 852 85. अल-दुरर (दुरर अल-हुक्काम) — काज़ी मुहम्मद बिन फरामुज़ मुल्ला खुसरो — 885 86. अद-दुरुल मुख़्तार — अलाउद्दीन अल-हसकफी — 1088 87. अद-दुरुल नशीर — अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुल रहमान अल-सुयूती — 911

पृष्ठ 701 का 711

فتاوٰی رضویہ، جلد ثانی

ح ۶۶- حاشیہ علی الدرر — محمد بن مصطفٰی ابوسعید الخادمی — ۱۱۷۶ ۶۸- حاشیہ ابن شلبی علی التبیین — احمد بن محمد الشلبی — ۱۰۲۱ ۶۹- حاشیہ علی الدرر — عبدالحلیم بن محمد الرومی — ۱۰۱۳ ۷۰- حاشیہ علی الدرر لملا خسرو — قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو — ۸۸۵ ۷۱- حاشیہ علی المقدمۃ العشماویۃ — علامہ سفطی — ۷۲- الحاشیہ لسعدی آفندی — سعد اللہ بن عیسٰی الافندی — ۹۴۵ ۷۳- الحدیقۃ الندیۃ شرح طریقہ محمدیہ — عبدالغنی النابلسی — ۱۱۴۳ ۷۴- الحاوی القدسی — قاضی جمال الدین احمد بن محمد نوح القابسی الحنفی — ۶۰۰ ۷۵- حصر المسائل فی الفروع — امام ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی الحنفی — ۳۷۲ ۷۶- حلیۃ الاولیاء — ابونعیم احمد بن عبداللہ الاصبہانی — ۴۳۰ ۷۷- حلیۃ المجلی — محمد بن محمد ابن امیر الحاج — ۸۷۹

خ ۷۸- خزانۃ الروایات — قاضی جکن الحنفی ۷۹- خزانۃ الفتاوی — طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری — ۵۳۲ ۸۰- خزانۃ المفتین — حسین بن محمد السمعانی السمیقانی — ۷۴۰ کے بعد ۸۱- خلاصۃ الدلائل — حسام الدین علی بن احمد المکی الرازی — ۵۹۸ ۸۲- خلاصۃ الفتاوی — طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری — ۵۳۲ ۸۳- خیرات الحسان — شہاب الدین احمد بن حجر المکی — ۹۷۳

د ۸۴- الدرایۃ فی تخریج احادیث الہدایۃ — شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۸۵- الدرر (درر الحکام) — قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو — ۸۸۵ ۸۶- الدر المختار — علاء الدین الحصکفی — ۱۰۸۸ ۸۷- الدر النثیر — علامہ جلال الدین عبدالرحمن السیوطی — ۹۱۱

Fatawa Rizwia - Volume 2

Section: Z (ذ) 88_ Zakheerat-ul-Uqba - Yusuf bin Junaid al-Halabi (Chalpi) - 905 89_ Zakheerat-ul-Fatawa - Burhan-ud-Din Mahmood bin Ahmad - 616 90_ Zamm-ul-Gheebat - Abdullah bin Muhammad ibn Abi-ud-Dunya al-Qurashi - 281

Section: R (ر) 91_ Al-Rahmaniyah - 1252 92_ Radd-ul-Muhtar - Muhammad Amin ibn Abidin ash-Shami - 781 93_ Rahmat-ul-Ummah fi Ikhtilaf-il-Aimmah - Abu Abdullah Muhammad bin Abdur-Rahman ad-Dimashqi - 239 94_ Ragha'ib-ul-Quran - Abu Marwan Abdul Malik bin Habib al-Sulami (al-Qurtubi) - 970 95_ Raf-ul-Ghasha fi Waqt-il-Asr wal-Isha - Sheikh Zain-ud-Din ibn Nujaim - 280 96_ Radd ala al-Jahmiyyah - Uthman bin Sa'id ad-Darimi

Section: Z (ز) 97_ Zad-al-Fuqaha - Sheikh-ul-Islam Muhammad bin Ahmad al-Asbijabi (Died late 6th century) - 861 98_ Zad-al-Faqir - Kamal-ud-Din Muhammad bin Abdul Wahid known as Ibn-ul-Humam - Approx. 1016 99_ Zawajir-al-Jawahir - Muhammad bin Muhammad at-Tumurtashi - 189 100_ Ziyadat - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 800

Section: S (س) 101_ As-Siraj-ul-Wahhaj - Abu Bakr bin Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani - 273 102_ As-Sunan li-Ibn Majah - Abu Abdullah Muhammad bin Yazid ibn Majah - 273 103_ As-Sunan li-Ibn Mansur - Sa'id bin Mansur al-Khorasani - 275 104_ As-Sunan li-Abi Dawood - Abu Dawood Sulayman bin Ash'ath - 303 105_ As-Sunan lin-Nasai - Abu Abdur-Rahman Ahmad bin Shu'ayb an-Nasai - 458 106_ As-Sunan lil-Bayhaqi - Abu Bakr Ahmad bin Husayn bin Ali al-Bayhaqi

Page 702 of 711

फतावा रज़विया - जिल्द सानी (भाग २)

भाग: ज़ (ذ) ८८_ ज़खीरत-उल-उक़्बा - यूसुफ़ बिन जुनैद अल-हलबी (चलपी) - ९०५ ८९_ ज़खीरत-उल-फ़तावा - बुरहान-उद-दीन महमूद बिन अहमद - ६१६ ९०_ ज़म्म-उल-ग़ीबत - अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी-उद-दुनिया अल-क़ुरशी - २८१

भाग: र (ر) ९१_ अर-रहमानिया - १२५२ ९२_ रद-उल-मुहतार - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश-शामी - ७८१ ९३_ रहमत-उल-उम्माह फ़ी इख़्तिलाफ़-इल-आइम्माह - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान अद-दमश्क़ी - २३९ ९४_ रग़ाइब-उल-क़ुरान - अबू मरवान अब्दुल मलिक बिन हबीब अल-सुलमी (अल-क़ुरतुबी) - ९७० ९५_ रफ़-उल-ग़शा फ़ी वक़्त-इल-अस्र वल-इशा - शेख़ ज़ैन-उद-दीन इब्न नुजैम - २८० ९६_ रद अला अल-जहमिया - उस्मान बिन सईद अद-दारिमी

भाग: ज़ (ز) ९७_ ज़ाद-अल-फ़ुक़हा - शेख़-उल-इस्लाम मुहम्मद बिन अहमद अल-असबीजाबी (मृत्यु छठी शताब्दी के अंत में) - ८६१ ९८_ ज़ाद-अल-फ़क़ीर - कमाल-उद-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद जिन्हें इब्न-उल-हुमाम के नाम से जाना जाता है - लगभग १०१६ ९९_ ज़वाज़िर-अल-जवाहिर - मुहम्मद बिन मुहम्मद अत-तमुर्ताशी - १८९ १००_ ज़ियादात - इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - ८००

भाग: स (س) १०१_ अस-सिराज-उल-वहाज - अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - २७३ १०२_ अस-सुनन लि-इब्न माजा - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद इब्न माजा - २७३ १०३_ अस-सुनन लि-इब्न मंसूर - सईद बिन मंसूर अल-ख़ुरासानी - २७५ १०४_ अस-सुनन लि-अबी दाऊद - अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअ़स - ३०३ १०५_ अस-सुनन लिन-नसाई - अबू अब्दुर रहमान अहमद बिन शुऐब अन-नसाई - ४५८ १०६_ अस-सुनन लिल-बैहक़ी - अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी

पृष्ठ ७०२ का ७११

فتاوىٰ رضويہ - جلدثانى

ز ٨٨- ذخيرة العقبىٰ - يوسف بن جنيد الحلبى (چلپى) - ٩٠٥ ٨٩- ذخيرة الفتاوىٰ - برہان الدين محمود بن احمد - ٦١٦ ٩٠- ذم الغيبة - عبدالله بن محمد ابن ابى الدنيا القرشى - ٢٨١

ر ٩١- الرحمانية - ١٢٥٢ ٩٢- ردالمحتار - محمد امين ابن عابدين الشامى - ٧٨١ ٩٣- رحمة الامة فى اختلاف الائمة - ابو عبد الله محمد بن عبدالرحمن الدمشقى - ٢٣٩ ٩٤- رغائب القرآن - ابو مروان عبدالملک بن حبيب السلمى (القرطبى) - ٩٧٠ ٩٥- رفع الغشاء فى وقت العصر والعشاء - شيخ زين الدين ابن نجيم - ٢٨٠ ٩٦- رد على الجهمية - عثمان بن سعيد الدارمى

ز ٩٧- زاد الفقهاء - شيخ الاسلام محمد بن احمد الاسبيجابى المتوفى اواخر القرن السادس - ٨٦١ ٩٨- زاد الفقير - كمال الدين محمد بن عبدالواحد المعروف بابن الهمام - تقريباً ١٠١٦ ٩٩- زواجر الجواهر - محمد بن محمد التمرتاشى - ١٨٩ ١٠٠- زيادات - امام محمد بن حسن الشيبانى - ٨٠٠

س ١٠١- السراج الوہاج - ابو بكر بن على بن محمد الحداد اليمنى - ٢٧٣ ١٠٢- السنن لابن ماجة - ابو عبد الله محمد بن يزيد ابن ماجة - ٢٧٣ ١٠٣- السنن لابن منصور - سعيد بن منصور الخراسانى - ٢٧٥ ١٠٤- السنن لابى داؤد - ابو داؤد سليمان بن اشعث - ٣٠٣ ١٠٥- السنن للنسائى - ابو عبدالرحمن احمد بن شعيب النسائى - ٤٥٨ ١٠٦- السنن للبيهقى - ابو بكر احمد بن حسين بن على البيهقى

Fatawa Razawiya | Volume 2

1. Al-Sunan li-Daraqutni - Ali Umar al-Daraqutni - 385
2. Al-Sunan li-Darimi - Abd Allah bin Abd al-Rahman al-Darimi - 255

Letter: Shin (ش)

1. Al-Shafi - Shams al-A'immah Abd Allah bin Mahmud al-Kardari
2. Sharh al-Arba'in li-l-Nawawi - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki - 973
3. Sharh al-Arba'in li-l-Nawawi - Ibrahim ibn Atiyyah al-Maliki - 1106
4. Sharh al-Arba'in li-l-Nawawi - Allamah Ahmad bin al-Hijazi - 978
5. Sharh al-Ashbah wa al-Nazair - Ibrahim bin Husain bin Ahmad bin Muhammad ibn al-Biri - 1099
6. Sharh al-Jami' al-Saghir - Imam Qadi Khan Husain bin Mansur - 592
7. Sharh al-Durar - Shaikh Ismail bin Abd al-Ghani al-Nabulsi - 1062
8. Sharh Safar al-Sa'adah - Shaikh Abd al-Haq Muhaddith Dehlvi - 1052
9. Sharh al-Sunnah - Husain bin Mansur al-Baghawi - 516
10. Sharh Shir'at al-Islam - Ya'qub bin Sayyidi Ali Zadah - 931
11. Sharh Mukhtasar al-Tahawi li-l-Ispijabi - Abu Nasr Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Ispijabi - 480
12. Sharh al-Gharibayn
13. Sharh al-Muslim li-l-Nawawi - Shaikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 676
14. Sharh Ma'ani al-Athar - Abu Ja'far Ahmad bin Muhammad al-Tahawi - 321
15. Sharh al-Manzumah li-ibn Wahban - Abd al-Barr bin Muhammad ibn Shuhnah - 921
16. Sharh al-Manzumah fi Rasm al-Mufti - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami - 1252
17. Sharh al-Munyah al-Saghir - Shaikh Muhammad Ibrahim al-Halabi - 956
18. Sharh Mawahib al-Ladunniyyah - Allamah Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani - 1122
19. Sharh Muwatta Imam Malik - Allamah Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani - 1122
20. Sharh al-Muhadhdhab li-l-Nawawi - Shaikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 676
21. Sharh al-Nuqayah - Maulana Abd al-Ali al-Birjandi - 932
22. Sharh al-Wiqayah - Sadr al-Shariah Abd Allah bin Mas'ud - 727

1. अस-सुनन लि-दाराकुतनी - अली उमर अद-दाराकुतनी - 385
2. अस-सुनन लि-दारिमी - अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहमान अद-दारिमी - 255

अक्षर: शीन (ش)

1. अश-शाफ़ी - शम्स अल-अइम्मा अब्दुल्लाह बिन महमूद अल-करदरी
2. शरह अल-अरबईन लि-न-नववी - शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - 973
3. शरह अल-अरबईन लि-न-नववी - इब्राहीम इब्न अतिया अल-मालिकी - 1106
4. शरह अल-अरबईन लि-न-नववी - अल्लामा अहमद बिन अल-हिजाज़ी - 978
5. शरह अल-अश्बाह व-न-नज़ाइर - इब्राहीम बिन हुसैन बिन अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-बीरी - 1099
6. शरह अल-जामे अस-सगीर - इमाम क़ाज़ी खान हुसैन बिन मंसूर - 592
7. शरह अद-दुरर - शेख इस्माईल बिन अब्दुल गनी अल-नाबुलसी - 1062
8. शरह सफर अस-सआदा - शेख अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी - 1052
9. शरह अस-सुन्नाह - हुसैन बिन मंसूर अल-बगवी - 516
10. शरह शिरअत अल-इस्लाम - याकूब बिन सैयदी अली ज़ादा - 931
11. शरह मुख़्तसर अत-तहावी लि-ल-इस्पीजाबी - अबू नस्र अहमद बिन मंसूर अल-हनफ़ी अल-इस्पीजाबी - 480
12. शरह अल-गरीबैन
13. शरह अल-मुस्लिम लि-न-नववी - शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अन-नववी - 676
14. शरह मआनी अल-आसार - अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद अत-तहावी - 321
15. शरह अल-मंज़ूमा लि-इब्न वहबान - अब्दुल बर बिन मुहम्मद इब्न शुहना - 921
16. शरह अल-मंज़ूमा फ़ी रस्म अल-मुफ़्ती - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश-शामी - 1252
17. शरह अल-मुन्या अल-सगीर - शेख मुहम्मद इब्राहीम अल-हलबी - 956
18. शरह मवाहिब अल-लदुन्निया - अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़रक़ानी - 1122
19. शरह मुवत्ता इमाम मालिक - अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़रक़ानी - 1122
20. शरह अल-मुहज्ज़ब लि-न-नववी - शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अन-नववी - 676

21. शरह अन-नुक़ाया - मौलाना अब्दुल अली अल-बिरजंदी - 932
22. शरह अल-विकाया - सदरुश शरीया अब्दुल्लाह बिन मसूद - 727

पृष्ठ 711 का 703

فتاوٰی رضویہ | جلد ثانی

۱۰۷۔ السنن لدارقطنی | علی عمر الدارقطنی | ۳۸۵ ۱۰۸۔ السنن لدارمی | عبد اللہ بن عبد الرحمن الدارمی | ۲۵۵

ش

۱۰۹۔ الشافی | شمس الائمہ عبد اللہ بن محمود الکردری ۱۱۰۔ شرح الاربعین للنووی | شہاب الدین احمد بن حجر المکی | ۹۷۳ ۱۱۱۔ شرح الاربعین للنووی | ابراہیم ابن عطیہ المالکی | ۱۱۰۶ ۱۱۲۔ شرح الاربعین للنووی | علامہ احمد بن الحجازی | ۹۷۸ ۱۱۳۔ شرح الاشباہ والنظائر | ابراہیم بن حسین بن احمد بن محمد ابن البیری | ۱۰۹۹ ۱۱۴۔ شرح الجامع الصغیر | امام قاضی خان حسین بن منصور | ۵۹۲ ۱۱۵۔ شرح الدرر | شیخ اسمعیل بن عبد الغنی النابلسی | ۱۰۶۲ ۱۱۶۔ شرح سفر السعادۃ | شیخ عبد الحق المحدث الدہلوی | ۱۰۵۲ ۱۱۷۔ شرح السنہ | حسین بن منصور البغوی | ۵۱۶ ۱۱۸۔ شرح شرعۃ الاسلام | یعقوب بن سیدی علی زادہ | ۹۳۱ ۱۱۹۔ شرح مختصر الطحاوی للاسپیجابی | ابو نصر احمد بن منصور الحنفی الاسپیجابی | ۴۸۰ ۱۲۰۔ شرح الغریبین ۱۲۱۔ شرح المسلم للنووی | شیخ ابوزکریا یحیی بن شرف النووی | ۶۷۶ ۱۲۲۔ شرح معانی الآثار | ابو جعفر احمد بن محمد الطحاوی | ۳۲۱ ۱۲۳۔ شرح المنظومۃ لابن وہبان | عبد البر بن محمد ابن شحنہ | ۹۲۱ ۱۲۴۔ شرح المنظومۃ فی رسم المفتی | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۲۵۲ ۱۲۵۔ شرح المنیۃ الصغیر | شیخ محمد ابراہیم الحلبی | ۹۵۶ ۱۲۶۔ شرح مواہب اللدنیہ | علامہ محمد بن عبد الباقی الزرقانی | ۱۱۲۲ ۱۲۷۔ شرح مؤطا امام مالک | علامہ محمد بن عبد الباقی الزرقانی | ۱۱۲۲ ۱۲۸۔ شرح المہذب للنووی | شیخ ابوزکریا یحیی بن شرف النووی | ۶۷۶

١٢٩۔ شرح النقایہ | مولانا عبد العلی البرجندی | ٩٣٢ ١٣٠۔ شرح الوقایہ | صدر الشریعہ عبد اللہ بن مسعود | ٧٢٧

Fatawa Razawiyya Volume Two

131- Sharh al-Hidayah --- Muhammad ibn Muhammad ibn Muhammad ibn Shuhnah --- 890 132- Shir'at al-Islam --- Imam al-Islam Muhammad ibn Abi Bakr --- 573 133- Shu'ab al-Iman --- Abu Bakr Ahmad ibn Husayn ibn 'Ali al-Bayhaqi --- 458 134- Sharh al-Jami' al-Saghir --- Ahmad ibn Mansur al-Hanafi al-Isbijabi --- 480 135- Sharh al-Jami' al-Saghir --- 'Umar ibn 'Abd al-'Aziz al-Hanafi --- 536

(S) 136- Sahah al-Jawhari --- Isma'il ibn Hammad al-Jawhari --- 393 137- Sahih Ibn Hibban --- Muhammad ibn Hibban --- 352 138- Sahih Ibn Khuzaymah --- Muhammad ibn Ishaq ibn Khuzaymah --- 311 139- Al-Surah --- Abu al-Fadl Muhammad ibn 'Umar ibn Khalid al-Qurashi --- approx. 690

(T) 140- Al-Tahtawi 'ala al-Durr --- Sayyid Ahmad al-Tahtawi --- 1302 141- Al-Tahtawi 'ala al-Maraqi --- Sayyid Ahmad al-Tahtawi --- 1302 142- Al-Tariqah al-Muhammadiyyah --- Muhammad ibn Bir 'Ali, known as Birikli --- 981 143- Tilbat al-Talabah --- Najm al-Din 'Umar ibn Muhammad al-Nasafi --- 537

('A) 144- 'Umdat al-Qari --- 'Allamah Badr al-Din Abi Muhammad Mahmud ibn Ahmad al-'Ayni --- 855 145- Al-'Inayah --- Akmal al-Din Muhammad ibn Muhammad al-Babarti --- 786 146- 'Inayat al-Qadi --- Shihab al-Din al-Khafaji --- 1069 147- 'Uyun al-Masa'il --- Abu al-Layth Nasr ibn Muhammad al-Samarqandi --- 378 148- 'Uqud al-Durriyah --- Muhammad Amin ibn 'Abidin al-Shami --- 1252 149- 'Uddah --- Kamal al-Din Muhammad ibn Ahmad, known as Tashkubri --- 1030 150- ---

फ़तावा रज़विय्या जिल्द सानी (भाग दो)

131- शरह अल-हिदाया --- मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्ने शुहना --- 890 132- शिअतुल इस्लाम --- इमामुल इस्लाम मुहम्मद बिन अबी बक्र --- 573 133- शुअबुल ईमान --- अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी --- 458 134- शरह अल-जामि' अस-सगीर --- अहमद बिन मंसूर अल-ह़नफ़ी अल-इसबीजाबी --- 480 135- शरह अल-जामि' अस-सगीर --- उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अल-ह़नफ़ी --- 536

(स - साद) 136- सहाह अल-जौहरी --- इस्माईल बिन ह़म्माद अल-जौहरी --- 393 137- सहीह इब्ने ह़िब्बान --- मुहम्मद बिन ह़िब्बान --- 352 138- सहीह इब्ने खुज़ैमा --- मुहम्मद बिन इसह़ाक इब्ने खुज़ैमा --- 311 139- अस-सुराह़ --- अबुल फज़्ल मुहम्मद बिन उमर बिन खालिद अल-क़ुरशी --- लगभग 690

(त - ता) 140- अत-तह़तावी अलल दुर --- सैय्यद अहमद अत-तह़तावी --- 1302 141- अत-तह़तावी अलल मराक़ी --- सैय्यद अहमद अत-तह़तावी --- 1302 142- अत-तरीक़ा अल-मुह़म्मदिय्या --- मुहम्मद बिन बीर अली अल-मारूफ बि-बिरकली --- 981 143- तिलबतुल तलबा --- नज्मुल दीन उमर बिन मुहम्मद अन-नसफी --- 537

(अ - ऐन) 144- उम्दतुल क़ारी --- अल्लामा बदरुल दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी --- 855 145- अल-इनाया --- अकमलुल दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बाबरती --- 786 146- इनायतुल क़ाज़ी --- शिहाबुल दीन अल-खाफ़ाजी --- 1069 147- उयूनुल मसाइल --- अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अस-समरकंदी --- 378 148- उक़ूद अल-दुर्रिया --- मुहम्मद अमीन इब्ने आबिदीन अल-शामी --- 1252 149- उद्दह़ --- कमालुल दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-शहीर बि-ताशकुबरी --- 1030 150- ---

पृष्ठ 711 का 704

فتاوی رضویہ جلد ثانی

۱۳۱- شرح الهداية --- محمد بن محمد بن محمد ابن شحنة --- ۸۹۰ ۱۳۲- شرعة الاسلام --- امام الاسلام محمد بن ابی بکر --- ۵۷۳ ۱۳۳- شعب الایمان --- ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیهقی --- ۴۵۸ ۱۳۴- شرح الجامع الصغیر --- احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی --- ۴۸۰ ۱۳۵- شرح الجامع الصغیر --- عمر بن عبدالعزیز الحنفی --- ۵۳۶

(ص) ۱۳۶- صحاح الجوهری --- اسمعیل بن حماد الجوهری --- ۳۹۳ ۱۳۷- صحیح ابن حبان --- محمد بن حبان --- ۳۵۲ ۱۳۸- صحیح ابن خزیمة --- محمد بن اسحاق ابن خزیمة --- ۳۱۱ ۱۳۹- الصراح --- ابوفضل محمد بن عمر بن خالد القرشی --- تقریباً ۶۹۰

(ط) ۱۴۰- الطحطاوی علی الدر --- سید احمد الطحطاوی --- ۱۳۰۲ ۱۴۱- الطحطاوی علی المرافی --- سید احمد الطحطاوی --- ۱۳۰۲ ۱۴۲- الطریقة المحمدیة --- محمد بن بیر علی المعروف ببرکلی --- ۹۸۱ ۱۴۳- طلبة الطلبة --- نجم الدین عمر بن محمد النسفی --- ۵۳۷

(ع) ۱۴۴- عمدة القاری --- علامه بدر الدین ابی محمد محمود بن احمد العینی --- ۸۵۵ ۱۴۵- العنایة --- اکمل الدین محمد بن محمد البابرتی --- ۷۸۶ ۱۴۶- عنایة القاضی --- شهاب الدین الخفاجی --- ۱۰۶۹ ۱۴۷- عیون المسائل --- ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی --- ۳۷۸ ۱۴۸- عقود الدریة --- محمد امین ابن عابدین لشامی --- ۱۲۵۲ ۱۴۹- عدّة --- کمال الدین محمد بن احمد الشهیر بطاشکبری --- ۱۰۳۰ ۱۵۰- ---

Fatawa Razawiyya Volume Two

Section: Ghain (غ) 151. Ghayat al-Bayan - Shaykh Qawam al-Din Amir Katib ibn Amir al-Itqani - 758 152. Ghurar al-Ahkam - Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw - 885 153. Gharib al-Hadith - Abu al-Hasan Ali bin Mughira al-Baghdadi known as Athram - 230 154. Ghamz 'Uyun al-Basair - Ahmad bin Muhammad al-Hamwi al-Hanafi - 1098 155. Ghunyat Dhul Ahkam - Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali - 1069 156. Ghunyat al-Mustamli - Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi - 956

Section: Fa (ف) 157. Fath al-Bari Sharh al-Bukhari - Shihab al-Din Ahmad bin Ali Ibn Hajar al-Asqalani - 852 158. Fath al-Qadir - Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid ibn al-Humam - 861 159. Fatawa al-Nasafi - Imam Najm al-Din al-Nasafi - 537 160. Fatawa Bazzaziyya - Muhammad bin Muhammad bin Shihab Ibn Bazzaz - 827 161. Fatawa Hujjah 162. Fatawa Khayriyyah - Allama Khayr al-Din bin Ahmad bin Ali al-Ramli - 1081 163. Fatawa Sirajiyyah - Siraj al-Din Ali bin Uthman al-Oshi - 575 164. Fatawa Ata bin Hamza - Ata bin Hamza al-Sughdi 165. Fatawa Ghiyathiyyah - Dawud bin Yusuf al-Khatib al-Hanafi 166. Fatawa Qadi Khan - Hasan bin Mansur Qadi Khan - 592 167. Fatawa Hindiyyah - Jamiyat-ul-Ulama Aurangzeb Alamgir 168. Fatawa Zahiriyyah - Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad - 619 169. Fatawa al-Walwalijiyyah - Abd al-Rashid bin Abi Hanifa al-Walwaliji - 520 170. Fatawa al-Kubra - Imam Sadr al-Shahid Husam al-Din Umar bin Abd al-Aziz - 536 171. Fiqh al-Akbar - Al-Imam al-Azam Abu Hanifa Nu'man bin Thabit al-Kufi - 150 172. Fath al-Mu'in - Sayyid Muhammad Abi al-Sa'ud al-Hanafi

Page 705 of 711

फ़तावा रज़विया جلد ثانی (भाग दो)

अनुभाग: ग़ैन (غ) 151. ग़ायत अल-बयान - शेख क़वाम अल-दीन अमीर कातिब इब्न अमीर अल-इत़क़ानी - 758 152. ग़ुरर अल-अहकाम - क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो - 885 153. ग़रीब अल-हदीस - अबुल हसन अली बिन मुग़ीरा अल-बग़दादी अल-मारूफ़ बा-अतरम - 230 154. ग़म्ज़ उयून अल-बसायर - अहमद बिन मुहम्मद अल-हमवी अल-हनफ़ी - 1098 155. ग़ुनयत ज़ुल अहकाम - हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली - 1069 156. ग़ुनयत अल-मुस्तमली - मुहम्मद इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी - 956

अनुभाग: फ़ा (ف) 157. फ़तह अल-बारी शरह अल-बुखारी - शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी - 852 158. फ़तह अल-क़दीर - कमाल अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्न अल-हुमाम - 861 159. फ़तावा अल-नसाफ़ी - इमाम नज्म अल-दीन अल-नसाफ़ी - 537 160. फ़तावा बज़ाज़िया - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़ाज़ - 827 161. फ़तावा हुज्जह 162. फ़तावा खैरिया - अल्लामा खैर अल-दीन बिन अहमद बिन अली अल-रमली - 1081 163. फ़तावा सिराजिया - सिराज अल-दीन अली बिन उस्मान अल-ओशी - 575 164. फ़तावा अता बिन हमज़ा - अता बिन हमज़ा अल-सुग़दी 165. फ़तावा ग़ियासिया - दाऊद बिन यूसुफ़ अल-ख़तीब अल-हनफ़ी 166. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान - हसन बिन मंसूर क़ाज़ी ख़ान - 592 167. फ़तावा हिंदिया - जमीयत-ए-उलेमा औरंगज़ेब आलमगीर 168. फ़तावा ज़हीरिया - ज़हीर अल-दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद - 619 169. फ़तावा अल-वलवालिजिया - अब्दुल रशीद बिन अबी हनीफ़ा अल-वलवालिजी - 520 170. फ़तावा अल-कुबरा - इमाम सद्र अल-शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ - 536 171. फ़िक़्ह अल-अकबर - अल-इमाम अल-आज़म अबी हनीफ़ा नुमान बिन साबित अल-कूफ़ी - 150 172. फ़तह अल-मुईन - सय्यद मुहम्मद अबी अल-सऊद अल-हनफ़ी

पृष्ठ 711 का 705

غ ۱۵۱۔ غایۃ البیان شیخ قوام الدین امیر کاتب ابن امیر الاتقانی ۷۵۸ ۱۵۲۔ غرر الاحکام قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو ۸۸۵ ۱۵۳۔ غریب الحدیث ابوالحسن علی بن مغیرہ البغدادی المعروف باثرم ۲۳۰ ۱۵۴۔ غمز عیون البصائر احمد بن محمد الحموی الحنفی ۱۰۹۸ ۱۵۵۔ غنیۃ ذوالاحکام حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ۱۰۶۹ ۱۵۶۔ غنیۃ المستملی محمد ابراہیم بن محمد الحلبی ۹۵۶

ف ۱۵۷۔ فتح الباری شرح البخاری شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی ۸۵۲ ۱۵۸۔ فتح القدیر کمال الدین محمد بن عبدالواحد بابن الہمام ۸۶۱ ۱۵۹۔ فتاوٰی النسفی امام نجم الدین النسفی ۵۳۷ ۱۶۰۔ فتاوٰی بزازیہ محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز ۸۲۷ ۱۶۱۔ فتاوٰی حجّہ ۱۶۲۔ فتاوٰی خیریہ علامہ خیر الدین بن احمد بن علی الرملی ۱۰۸۱ ۱۶۳۔ فتاوٰی سراجیہ سراج الدین علی بن عثمان الاوشی ۵۷۵ ۱۶۴۔ فتاوٰی عطاء بن حمزہ عطاء بن حمزہ السغدی ۱۶۵۔ فتاوٰی غیاثیہ داؤد بن یوسف الخطیب الحنفی ۱۶۶۔ فتاوٰی قاضی خان حسن بن منصور قاضی خان ۵۹۲ ۱۶۷۔ فتاوٰی ہندیہ جمعیت علماء اورنگ زیب عالمگیر ۱۶۸۔ فتاوٰی ظہیریہ ظہیر الدین ابو بکر محمد بن احمد ۶۱۹ ۱۶۹۔ فتاوٰی الولوالجیہ عبدالرشید بن ابی حنیفۃ الولوالجی ۵۲۰ ۱۷۰۔ فتاوٰی الکبرٰی امام صدر الشہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز ۵۳۶ ۱۷۱۔ فقہ الاکبر الامام الاعظم ابی حنیفہ نعمان بن ثابت الکوفی ۱۵۰ ۱۷۲۔ فتح المعین سید محمد ابی السعود الحنفی

Fatawa Razawiyya Volume Two

173- Fath al-Mu'in Sharh Qurrat al-Ayn - Zayn al-Din bin Ali bin Ahmad al-Shafi'i - 928 174- Al-Futuhat al-Makkiyya - Muhiy al-Din Muhammad bin Ali ibn Arabi - 638 175- Fawatih al-Rahamut - Abd al-Ali Muhammad bin Nizam al-Din al-Kindi - 1225 176- Al-Fawa'id - Tammam bin Muhammad bin Abdullah al-Bajli - 414 177- Fawa'id al-Mukhasasah - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami - 1252 178- Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir - Abd al-Rauf al-Munawi - 1031 179- Fawa'id Samawiyyah - Isma'il bin Abdullah, known as Samawiyyah - 267

Q (Section Heading) 180- Al-Qamus - Muhammad bin Yaqub al-Fayruzabadi - 817 181- Qurrat al-Ayn - Allama Zayn al-Din bin Ali al-Malibari - 928 182- Al-Qunyah - Najm al-Din Mukhtar bin Muhammad al-Zahidi - 658 183- Al-Qur'an

K (Section Heading) 184- Al-Kafi fi al-Furu' - Hakim Shahid Muhammad bin Muhammad - 334 185- Al-Kamel li-Ibn Adi - Abu Ahmad Abdullah bin Adi - 365 186- Al-Kibrit al-Ahmar - Sayyid Abd al-Wahhab al-Sha'rani - 973 187- Kitab al-Athar - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189 188- Kitab al-Athar - Imam Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim al-Ansari - 182 189- Kitab al-Ilmam fi Adab Dukhul al-Hammam - Abu al-Mahasin Muhammad bin Ali 190- Kitab al-Siwak - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah - 430 191- Kitab al-Hadiyyah li-Ibn Imad - Abd al-Rahman bin Muhammad Imad al-Din bin Muhammad al-Imadi - 1050 192- Kitab al-Tuhur - For Abu Ubayd 193- Kitab al-Ilal ala Abwab al-Fiqh - Abu Muhammad Abd al-Rahman ibn Abi Hatim Muhammad al-Razi - 327 194- Kitab al-Asl - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189 195- Kitab al-Waswasah - Abu Bakr bin Abi Dawud

फ़तावा रज़विया जिल्द सानी (खंड दो)

1. फ़तहुल मुईन शरह क़ुर्रतुल ऐन - ज़ैनुद्दीन बिन अली बिन अहमद अल-शाफ़ई - ९२८
2. अल-फ़ुतूहात अल-मक्कीय्या - मुहियुद्दीन मुहम्मद बिन अली इब्न अरबी - ६३८
3. फ़वातिहुर रहमूत - अब्दुल अली मुहम्मद बिन निज़ामुद्दीन अल-किंदी - १२२५
4. अल-फ़वाइद - तमाम बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-बजली - ४१४
5. फ़वाइद अल-मुख़स्ससा - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी - १२५२
6. फ़ैज़ुल क़दीर शरह अल-जामि' अस-सग़ीर - अब्दुल रऊफ़ अल-मुनावी - १०३१
7. फ़वाइदे समविया - इस्माइल बिन अब्दुल्ला उपनाम समविया - २६७

क़ (अनुभाग शीर्षक) १८०. अल-क़ामूस - मुहम्मद बिन याक़ूब अल-फ़ैरूज़ाबादी - ८१७ १८१. क़ुर्रतुल ऐन - अल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन अली अल-मलीबारी - ९२८ १८२. अल-क़ुन्या - नजमुद्दीन मुख़्तार बिन मुहम्मद अल-ज़ादी - ६५८ १८३. अल-क़ुरआन

क (अनुभाग शीर्षक) १८४. अल-काफ़ी फ़िल फ़ुरूह - हाकिम शहीद मुहम्मद बिन मुहम्मद - ३३४ १८५. अल-कामिल लि-इब्न अदी - अबू अहमद अब्दुल्ला बिन अदी - ३६५ १८६. अल-किबरीतुल अहमर - सैय्यद अब्दुल वहाब अल-शारानी - ९७३ १८७. किताबुल आसार - इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - १८९ १८८. किताबुल आसार - इमाम अबू यूसुफ़ याक़ूब बिन इब्राहीम अल-अंसारी - १८२ १८९. किताबुल इल्माम फ़ी आदाब दुख़ूलिल हम्माम - अबुल महासिन मुहम्मद बिन अली १९०. किताबुस सिवाक - अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्ला - ४३० १९१. किताबुल हदीय्या लि-इब्न इमाद - अब्दुल रहमान बिन मुहम्मद इमाद उद्दीन बिन मुहम्मद अल-इमादी - १०५० १९२. किताबुत तुहूर - लाबी उबैद १९३. किताबुल इलल अला अबवाबिल फ़िक़्ह - अबू मुहम्मद अब्दुल रहमान इब्न अबी हातिम मुहम्मद अल-राज़ी - ३२७ १९४. किताबुल असल - इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - १८९ १९५. किताबुल वसवसा - अबू बक्र बिन अबी दाऊद

पृष्ठ ७०६ का ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

۱۷۳۔ فتح المعین شرح قرۃ العین - زین الدین بن علی بن احمد الشافعی - ۹۲۸ ۱۷۴۔ الفتوحات المکیۃ - محی الدین محمد بن علی ابن عربی - ۶۳۸ ۱۷۵۔ فواتح الرحموت - عبد العلی محمد بن نظام الدین الکندی - ۱۲۲۵ ۱۷۶۔ الفوائد - تمام بن محمد بن عبداللہ البجلی - ۴۱۴ ۱۷۷۔ فوائد المخصصۃ - محمد امین ابن عابدین الشامی - ۱۲۵۲ ۱۷۸۔ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر - عبدالرؤف المناوی - ۱۰۳۱ ۱۷۹۔ فوائد سمویہ - اسمعیل بن عبداللہ الملقب بسمویہ - ۲۶۷

ق ۱۸۰۔ القاموس - محمد بن یعقوب الفیروزآبادی - ۸۱۷ ۱۸۱۔ قرۃ العین - علامہ زین الدین بن علی الملیباری - ۹۲۸ ۱۸۲۔ القنیۃ - نجم الدین مختار بن محمد الزاہدی - ۶۵۸ ۱۸۳۔ القرآن

ک ۱۸۴۔ الکافی فی الفروع - حاکم شہید محمد بن محمد - ۳۳۴ ۱۸۵۔ الکامل لابن عدی - ابواحمد عبداللہ بن عدی - ۳۶۵ ۱۸۶۔ الکبریت الاحمر - سید عبدالوہاب الشعرانی - ۹۷۳ ۱۸۷۔ کتاب الآثار - امام محمد بن حسن الشیبانی - ۱۸۹ ۱۸۸۔ کتاب الآثار - امام ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری - ۱۸۲ ۱۸۹۔ کتاب الالمام فی آداب دخول الحمام - ابوالحاسن محمد بن علی ۱۹۰۔ کتاب السواک - ابونعیم احمد بن عبداللہ - ۴۳۰ ۱۹۱۔ کتاب الھدیۃ لابن عماد - عبدالرحمن بن محمد عماد الدین بن محمد العمادی - ۱۰۵۰ ۱۹۲۔ کتاب الطھور - لابی عبید ۱۹۳۔ کتاب العلل علی ابواب الفقہ - ابو محمد عبدالرحمن ابن ابی حاتم محمد الرازی - ۳۲۷ ۱۹۴۔ کتاب الاصل - امام محمد بن حسن الشیبانی - ۱۸۹ ۱۹۵۔ کتاب الوسوسۃ - ابوبکر بن ابی داؤد

Fatawa Razawiyya, Volume Second 196. Kashf al-Asrar — Ala al-Din Abdul Aziz bin Ahmed Bukhari — 730 197. Kashf al-Ramz — Allama al-Maqdisi 198. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar — Amin al-Din Abdul Wahab bin Wahban al-Dimashqi — 768 199. Kanz al-Ummal — Ala al-Din Ali al-Muttaqi bin Husam al-Din — 975 200. Al-Kifayah — Jalal al-Din bin Shams al-Din al-Khwarizmi — Approximately 800 201. Kaff al-Rua' — Shihab al-Din Ahmed bin Hajar al-Makki — 973 202. Kanz al-Daqa'iq — Abdullah bin Ahmed bin Mahmood — 710 203. Al-Kuna lil-Hakim — Abu Abdullah al-Hakim — 405 204. Al-Kawakib al-Durari — Shams al-Din Muhammad bin Yusuf al-Shafi'i al-Kirmani — 786 205. Kitab al-Jarh wal-Ta'dil — Muhammad bin Hibban al-Tamimi — 352 206. Kitab al-Maghazi — Yahya bin Sa'id al-Qattan — 198 207. Kitab al-Samt — Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi — 281 208. Kitab al-Zuhd — Abdullah bin Mubarak — 180 209. Al-Kashshaf 'an Haqa'iq al-Tanzil — Jarullah Mahmood bin Umar al-Zamakhshari — 538 L 210. Lama'at al-Tanqih — Allama Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlvi — 1052 211. Laqt al-Marjan fi Akhbar al-Jan — Allama Jalal al-Din Abdur Rahman bin Muhammad al-Suyuti — 911 M 212. Mabariq al-Azhar — Al-Sheikh Abdul Latif bin Abdul Aziz ibn al-Malak — 801 213. Mabsut Khwahir Zada — Bakr Khwahir Zada Muhammad bin Hasan al-Bukhari al-Hanafi — 483 214. Mabsut al-Sarakhsi — Shams al-A'immah Muhammad bin Ahmed al-Sarakhsi — 483 215. Majra al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur — Nur al-Din Ali al-Baqani — Approximately 995 216. Majma' Bihar al-Anwar — Muhammad Tahir al-Siddiqui — 981 217. Majmu' al-Nawazil — Ahmed bin Musa bin Isa — 550 218. Majma' al-Anhur — Al-Sheikh Abdullah bin Muhammad bin Sulayman, known as Damad Afandi — 1078

फ़तावा रज़विया, जिल्द दूसरी 196. कश्फ़ुल असरार — अलाउद्दीन अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद बुखारी — 730 197. कश्फ़ुर रम्ज़ — अल्लामा अल-मक़दिसी 198. कश्फ़ुल अस्तर अन ज़वाइद अल-बज़ार — अमीन उद्दीन अब्दुल वहाब बिन वहबान अद-दमिश्की — 768 199. कंज़ुल उम्माल — अलाउद्दीन अली अल-मुत्तक़ी बिन हुसामुद्दीन — 975 200. अल-किफ़ाया — जलाल उद्दीन बिन शम्स उद्दीन अल-ख़्वारिज़मी — तक़रीबन 800 201. कफ़ुर रुआ — शिहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की — 973 202. कंज़ुद दक़ाइक़ — अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद — 710 203. अल-कुना लिल-हाकिम — अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम — 405 204. अल-कवाकिब अद-दुरारी — शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अश-शाफ़ई अल-किरमानी — 786 205. किताब अल-जर्ह वत-तदील — मुहम्मद बिन हिब्बान अत-तमीमी — 352 206. किताब अल-मग़ाज़ी — यह्या बिन सईद अल-क़त्तान — 198 207. किताब अस-सम्त — अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबि दुन्या अल-क़ुरशी — 281 208. किताबुज़ ज़ुहद — अब्दुल्लाह बिन मुबारक — 180 209. अल-कश्शाफ़ अन हक़ाइक़ अत-तंज़ील — जारुल्लाह महमूद बिन उमर अज़-ज़मख़्शरी — 538 ल 210. लमआत अत-तनक़ीह — अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी — 1052 211. लक्तुल मरजान फ़ी अख़बार अल-जान — अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद अस-सुयूती — 911 म 212. मबारिक़ अल-अज़हार — अश-शैख़ अब्दुल लतीफ़ बिन अब्दुल अज़ीज़ इब्न अल-मलक — 801 213. मबस्तूत ख़्वाहिर ज़ादा — बक्र ख़्वाहिर ज़ादा मुहम्मद बिन हसन अल-बुखारी अल-हनफ़ी — 483 214. मबस्तूत अस-सरख़्सी — शम्सुल अइम्मा मुहम्मद बिन अहमद अस-सरख़्सी — 483 215. मजरा अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ल अबहुर — नूरुद्दीन अली अल-बाक़ानी — तक़रीबन 995 216. मजमा बिहार अल-अनवार — मुहम्मद ताहिर अस-सिद्दीक़ी — 981 217. मजमूअ अल-नवाज़िल — अहमद बिन मूसा बिन ईसा — 550 218. मजमा अल-अन्हुर — अश-शैख़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन सुलेमान अल-मारूफ़ बदामद आफ़ंदी — 1078

पृष्ठ 707 का 711

فتاوٰی رضویہ جلد ثانی ۱۹۶۔ کشف الاسرار علاء الدین عبدالعزیز بن احمد بخاری ۷۳۰ ۱۹۷۔ کشف الرمز علامۃ المقدسی ۱۹۸۔ کشف الاستار عن زوائد البزار امین الدین عبدالوہاب بن وہبان الدمشقی ۷۶۸ ۱۹۹۔ کنز العمال علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین ۹۷۵ ۲۰۰۔ الکفایۃ جلال الدین بن شمس الدین الخوارزمی تقریباً ۸۰۰ ۲۰۱۔ کف الرعاع شہاب الدین احمد بن حجر المکی ۹۷۳ ۲۰۲۔ کنز الدقائق عبداللہ بن احمد بن محمود ۷۱۰ ۲۰۳۔ الکنی للحاکم ابو عبداللہ الحاکم ۴۰۵ ۲۰۴۔ الکواکب الدراری شمس الدین محمد بن یوسف الشافعی الکرمانی ۷۸۶ ۲۰۵۔ کتاب الجرح والتعدیل محمد بن حبان التمیمی ۳۵۲ ۲۰۶۔ کتاب المغازی یحیٰی بن سعید القطان ۱۹۸ ۲۰۷۔ کتاب الصمت عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی ۲۸۱ ۲۰۸۔ کتاب الزہد عبداللہ بن مبارک ۱۸۰ ۲۰۹۔ الکشاف عن حقائق التنزیل جاراللہ محمود بن عمر الزمخشری ۵۳۸ ل ۲۱۰۔ لمعات التنقیح علامہ شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی ۱۰۵۲ ۲۱۱۔ لقط المرجان فی اخبار الجان علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن محمد السیوطی ۹۱۱ م ۲۱۲۔ مبارق الازہار الشیخ عبداللطیف بن عبدالعزیز ابن الملک ۸۰۱ ۲۱۳۔ مبسوط خواہرزادہ بکر خواہرزادہ محمد بن حسن البخاری الحنفی ۴۸۳ ۲۱۴۔ مبسوط السرخسی شمس الائمہ محمد بن احمد السرخسی ۴۸۳ ۲۱۵۔ مجری الانہر شرح ملتقی الابحر نور الدین علی الباقانی تقریباً ۹۹۵ ۲۱۶۔ مجمع بحار الانوار محمد طاہر الصدیقی ۹۸۱ ۲۱۷۔ مجموع النوازل احمد بن موسیٰ بن عیسیٰ ۵۵۰ ۲۱۸۔ مجمع الانہر الشیخ عبداللہ بن محمد بن سلیمان المعروف بداماد آفندی ۱۰۷۸

Volume II Fatawa Razawiyya 219_ Al-Muhit al-Burhani — Imam Burhan al-Din Mahmud bin Taj al-Din — 616 220_ Al-Muhit al-Radawi — Radi al-Din Muhammad bin Muhammad al-Sarakhsi — 176 221_ Mukhtarat al-Nawazil — Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani — 593 222_ Mukhtar al-Sihah — Muhammad bin Abi Bakr Abd al-Qadir al-Razi — 660 223_ Al-Mukhtarah fi al-Hadith — Diya al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid — 633 224_ Al-Mukhtasar — Allama Jalal al-Din al-Suyuti — 911 225_ Madkhal al-Shar' al-Sharif — Ibn al-Hajj Abi Abdullah Muhammad bin Muhammad al-Abdari — 737 226_ Maraqi al-Falah bi-Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah — Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali — 1069 227_ Mirqat Sharh Mishkat — Ali bin Sultan Mulla Ali Qari — 1013 228_ Mirqat al-Su'ud — Allama Jalal al-Din al-Suyuti — 911 229_ Mustakhlas al-Haqa'iq — Ibrahim bin Muhammad al-Hanafi — 405 230_ Al-Mustadrak lil-Hakim — Abu Abdullah al-Hakim — 710 231_ Al-Mustasfa — Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi — 1119 232_ Musallam al-Thubut — Muhibbullah al-Bihari — 204 233_ Musnad Abi Dawud — Sulayman bin Dawud al-Tayalisi — 307 234_ Musnad Abi Ya'la — Ahmad bin Ali al-Mawsili — 238 235_ Musnad Ishaq ibn Rahwayh — Hafiz Ishaq ibn Rahwayh — 241 236_ Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal — Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal — 292 237_ Musnad al-Bazzar — Abu Bakr Ahmad bin Amr bin Abd al-Khaliq al-Bazzar — 294 238_ Musnad Abd bin Humayd — Abu Muhammad Abd bin Muhammad Humayd al-Kashi — 558 239_ Musnad al-Firdaws — Shahrdar bin Shirawayh al-Daylami — 770 240_ Misbah al-Munir — Ahmad bin Muhammad bin Ali — 710 241_ Al-Musaffa — Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi — 235 242_ Musannaf Ibn Abi Shaybah — Abu Bakr Abdullah bin Muhammad Ahmad al-Nasafi — 211 243_ Musannaf Abd al-Razzaq — Abu Bakr Abd al-Razzaq bin Hammam al-San'ani — 650 244_ Misbah al-Duja — Imam Hasan bin Muhammad al-Saghani al-Hindi

Page 708 of 711

जिल्द दो फ़तवा रज़विया 219_ अल-मुहीत अल-बुरहानी — इमाम बुरहानुद्दीन महमूद बिन ताज अल-दीन — 616 220_ अल-मुहीत अल-रज़वी — रज़ीउद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-सरख़सी — 176 221_ मुख़्तारात अल-नवाज़िल — बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी — 593 222_ मुख़्तार अल-सिहाह — मुहम्मद बिन अबी बक्र अब्दुल क़ादिर अल-राज़ी — 660 223_ अल-मुख़्तारा फ़िल हदीस — ज़ियाउद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद — 633 224_ अल-मुख़्तसर — अल्लामा जलालुद्दीन अल-सुयूती — 911 225_ मदख़ल अल-शरा अल-शरीफ़ — इब्न अल-हाज अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-अब्दरी — 737 226_ मराक़ी अल-फ़लाह बि-इमदाद अल-फ़त्ताह शरह नूर अल-ईज़ाह — हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली — 1069 227_ मिर्क़ात शरह मिश्क़ात — अली बिन सुल्तान मुल्ला अली क़ारी — 1013 228_ मिर्क़ात अल-सुऊद — अल्लामा जलालुद्दीन अल-सुयूती — 911 229_ मुस्तख़लस अल-हक़ाएक़ — इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हनफ़ी — 405 230_ अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम — अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम — 710 231_ अल-मुस्तस्फ़ा — हाफ़िज़ुद्दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नसफ़ी — 1119 232_ मुसल्लम अल-सुबूत — मुहिबुल्लाह अल-बिहारी — 204 233_ मुसनद अबी दाऊद — सुलेमान बिन दाऊद अल-तयालिसी — 307 234_ मुसनद अबी याला — अहमद बिन अली अल-मूसली — 238 235_ मुसनद इसहाक़ इब्न राहवैय — हाफ़िज़ इसहाक़ इब्न राहवैय — 241 236_ मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल — इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल — 292 237_ मुसनद अल-बज़्ज़ार — अबू बक्र अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल ख़ालिक़ अल-बज़्ज़ार — 294 238_ मुसनद अब्द बिन हुमैद — अबू मुहम्मद अब्द बिन मुहम्मद हुमैद अल-कशी — 558 239_ मुसनद अल-फ़िरदौस — शहरदार बिन शीरवैह अल-दैलामी — 770 240_ मिस्बाह अल-मुनीर — अहमद बिन मुहम्मद बिन अली — 710 241_ अल-मुसफ़्फ़ा — हाफ़िज़ुद्दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नसफ़ी — 235 242_ मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा — अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अहमद अल-नसफ़ी — 211 243_ मुसन्निफ़ अब्द अल-रज़्ज़ाक़ — अबू बक्र अब्द अल-रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम अल-सनआनी — 650 244_ मिस्बाह अल-दुजा — इमाम हसन बिन मुहम्मद अल-सग़ानी अल-हिन्दी

पृष्ठ 708/711

جلد ثانی فتاویٰ رضویہ ۲۱۹_ المحیط البرہانی — امام برہان الدین محمود بن تاج الدین — ۶۱۶ ۲۲۰_ المحیط الرضوی — رضی الدین محمد بن محمد السرخسی — ۱۷۶ ۲۲۱_ مختارات النوازل — برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی — ۵۹۳ ۲۲۲_ مختار الصحاح — محمد بن ابی بکر عبدالقادر الرازی — ۶۶۰ ۲۲۳_ المختارہ فی الحدیث — ضیاء الدین محمد بن عبدالواحد — ۶۳۳ ۲۲۴_ المختصر — علامہ جلال الدین السیوطی — ۹۱۱ ۲۲۵_ مدخل الشرع الشریف — ابن الحاج ابی عبداللہ محمد بن محمد العبدری — ۷۳۷ ۲۲۶_ مراقی الفلاح بامداد الفتاح شرح نور الایضاح — حسن بن عمار بن علی الشرنبلانی — ۱۰۶۹ ۲۲۷_ مرقات شرح مشکوۃ — علی بن سلطان ملا علی قاری — ۱۰۱۳ ۲۲۸_ مرقات الصعود — علامہ جلال الدین السیوطی — ۹۱۱ ۲۲۹_ مستخلص الحقائق — ابراہیم بن محمد الحنفی — ۴۰۵ ۲۳۰_ المستدرک للحاکم — ابو عبد اللہ الحاکم — ۷۱۰ ۲۳۱_ المستصفیٰ — حافظ الدین عبد اللہ بن احمد النسفی — ۱۱۱۹ ۲۳۲_ مسلم الثبوت — محب اللہ البہاری — ۲۰۴ ۲۳۳_ مسند ابی داؤد — سلیمان بن داؤد الطیالسی — ۳۰۷ ۲۳۴_ مسند ابی یعلیٰ — احمد بن علی الموصلی — ۲۳۸ ۲۳۵_ مسند اسحق ابن راہویہ — حافظ اسحق ابن راہویہ — ۲۴۱ ۲۳۶_ مسند الامام احمد بن حنبل — امام احمد بن محمد بن حنبل — ۲۹۲ ۲۳۷_ مسند البزار — ابو بکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق البزار — ۲۹۴ ۲۳۸_ مسند عبد بن حمید — ابو محمد عبد بن محمد حمید الکشی — ۵۵۸ ۲۳۹_ مسند الفردوس — شہر دار بن شیرویہ الدیلمی — ۷۷۰ ۲۴۰_ مصباح المنیر — احمد بن محمد بن علی — ۷۱۰ ۲۴۱_ المصفیٰ — حافظ الدین عبد اللہ بن احمد النسفی — ۲۳۵ ۲۴۲_ مصنف ابن ابی شیبہ — ابو بکر عبد اللہ بن محمد احمد النسفی — ۲۱۱ ۲۴۳_ مصنف عبد الرزاق — ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام الصنعانی — ۶۵۰ ۲۴۴_ مصباح الدجیٰ — امام حسن بن محمد الصغانی الہندی

Fatawa Razawiyya - Volume Two

1. Ma'rifat al-Sahaba — Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani — 430
2. Al-Mu'jam al-Awsat — Sulayman bin Ahmad al-Tabarani — 360
3. Al-Mu'jam al-Saghir — Sulayman bin Ahmad al-Tabarani — 360
4. Al-Mu'jam al-Kabir — Sulayman bin Ahmad al-Tabarani — 360
5. Mi'raj al-Dirayah — Qawam al-Din Muhammad bin Muhammad al-Bukhari — 729
6. Mishkat al-Masabih — Shaykh Wali al-Din al-Iraqi — 722
7. Al-Mughni fi al-Usul — Shaykh Umar bin Muhammad al-Khabbazi al-Hanafi — 691
8. Al-Maghrib — Abu al-Fath Nasir bin Abd al-Sayyid al-Mutarrizi — 610
9. Mukhtasar al-Quduri — Abu al-Husayn Ahmad bin Muhammad al-Quduri al-Hanafi — 428
10. Mafatih al-Jinan — Ya'qub bin Sayyidi Ali — 931
11. Al-Mufradat lil-Imam Raghib — Husayn bin Muhammad bin Mufaddal al-Asfahani — 502
12. Al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah — Abu al-Abbas Abd al-Bari al-Ashmawi al-Maliki
13. Al-Multaqat (fi Fatawa Nasiri) — Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Husayni — 556
14. Majma' al-Zawa'id — Nur al-Din Ali bin Abi Bakr al-Haythami — 807
15. Manaqib al-Kardari — Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz — 827
16. Al-Muntaqa (fi al-Hadith) — Abdullah bin Ali ibn Jarud — 307
17. Al-Muntaqa fi Furu' al-Hanafiyyah — Al-Hakim al-Shahir Muhammad bin Muhammad bin Ahmad — 334
18. Minhat al-Khaliq — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami — 1252
19. Minah al-Ghaffar — Muhammad bin Abdullah al-Timurtashi — 1004
20. Multaqa al-Abhur — Imam Ibrahim bin Muhammad al-Halabi — 956
21. Minhaj — Shaykh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi — 676
22. Majma' al-Bahrayn — Muzaffar al-Din Ahmad bin Ali bin Tha'lab al-Hanafi — 694
23. Al-Mubtagha — Shaykh Isa bin Muhammad ibn Eynaj al-Hanafi
24. Al-Mabsut — Abd al-Aziz bin Ahmad al-Halwani — 456
25. Musnad fi al-Hadith — Al-Hafiz Abu al-Fath Nasr bin Ibrahim al-Barwi — 510

फ़तावा रज़विया - खंड दो

1. मारिफ़त अल-सहाबा — अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-असबहानी — ४३०
2. अल-मुअजम अल-औसत — सुलैमान बिन अहमद अत-तबरानी — ३६०
3. अल-मुअजम अस-सगीर — सुलैमान बिन अहमद अत-तबरानी — ३६०
4. अल-मुअजम अल-कबीर — सुलैमान बिन अहमद अत-तबरानी — ३६०
5. मेराज अद-दिराया — क़वाम उद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बुखारी — ७२९
6. मिश्कात अल-मसाबीह — शेख वली उद्दीन अल-इराकी — ७२२
7. अल-मुगनी फी अल-उसूल — शेख उमर बिन मुहम्मद अल-खब्बाज़ी अल-हनफी — ६९१
8. अल-मग़रिब — अबू अल-फतह नासिर बिन अब्द अस-सय्यद अल-मुतरिज़ी — ६१०
9. मुख्तसर अल-कुदुरी — अबू अल-हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अल-कुदुरी अल-हनफी — ४२८
10. मफ़ातीह अल-जिनान — याकूब बिन सैयदी अली — ९३१
11. अल-मुफ़रदात लिल-इमाम राकिब — हुसैन बिन मुहम्मद बिन मुफ़द्दल अल-असफ़हानी — ५०२
12. अल-मुकद्दिमा अल-अशमाविया — अबुल अब्बास अब्द अल-बारी अल-अशमावी अल-मलिकी
13. अल-मुल्तक़त (फी फ़तावा नासिरी) — नासिर उद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अल-हुसैनी — ५५६
14. मज्मअ अज़-ज़वाइद — नूर उद्दीन अली बिन अबी बकर अल-हैथमी — ८०७
15. मनाकिब अल-करदरी — मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़्ज़ाज़ — ८२७
16. अल-मुन्तका (फी अल-हदीस) — अब्दुल्लाह बिन अली इब्न जारूद — ३०७
17. अल-मुन्तका फी फुरू अल-हनफ़िया — अल-हाकिम अल-शाहिर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद — ३३४
18. मिन्हत अल-खालिक — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी — १२५२
19. मिनह अल-गफ़्फ़ार — मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अत-तिमुरताशी — १००४
20. मुल्तक़ अल-अबहुर — इमाम इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-हलबी — ९५६
21. मिन्हाज — शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अन-नवावी — ६७६
22. मज्मअ अल-बहरैन — मुज़फ़्फ़र उद्दीन अहमद बिन अली बिन थलब अल-हनफी — ६९४
23. अल-मुब्तगा — शेख ईसा बिन मुहम्मद इब्न ऐनाज अल-हनफी
24. अल-मबसूत — अब्द अल-अज़ीज़ बिन अहमद अल-हलवानी — ४५६

25. मुसनद फी अल-हदीस — अल-हाफिज़ अबू अल-फतह नस्र बिन इब्राहीम अल-बरवी — ५१०

पृष्ठ ७०९ का ७११

۲۴۵- معرفۃ الصحابۃ — ابو نعیم احمد بن عبداللہ الاصبہانی — ۴۳۰ ۲۴۶- المعجم الاوسط — سلیمان بن احمد الطبرانی — ۳۶۰ ۲۴۷- المعجم الصغیر — سلیمان بن احمد الطبرانی — ۳۶۰ ۲۴۸- المعجم الکبیر — سلیمان بن احمد الطبرانی — ۳۶۰ ۲۴۹- معراج الدرایۃ — قوام الدین محمد بن محمد البخاری — ۷۲۹ ۲۵۰- مشکوۃ المصابیح — شیخ ولی الدین العراقی — ۷۲۲ ۲۵۱- المغنی فی الاصول — شیخ عمر بن محمد الخبازی الحنفی — ۶۹۱ ۲۵۲- المغرب — ابوالفتح ناصر بن عبدالسید المطرزی — ۶۱۰ ۲۵۳- مختصر القدوری — ابو الحسین احمد بن محمد القدوری الحنفی — ۴۲۸ ۲۵۴- مفاتیح الجنان — یعقوب بن سیدی علی — ۹۳۱ ۲۵۵- المفردات للامام راغب — حسین بن محمد بن مفضل الاصفہانی — ۵۰۲ ۲۵۶- المقدمۃ العشماویۃ — ابوالعباس عبدالباری العشماوی المالکی ۲۵۷- الملتقط (فی فتاوٰی ناصری) — ناصر الدین محمد بن یوسف الحسینی — ۵۵۶ ۲۵۸- مجمع الزوائد — نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی — ۸۰۷ ۲۵۹- مناقب الکردری — محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز — ۸۲۷ ۲۶۰- المنتقیٰ (فی الحدیث) — عبد اللہ بن علی ابن جارود — ۳۰۷ ۲۶۱- المنتقیٰ فی فروع الحنیفہ — الحاکم الشہیر محمد بن محمد بن احمد — ۳۳۴ ۲۶۲- منحۃ الخالق — محمد امین ابن عابدین الشامی — ۱۲۵۲ ۲۶۳- منح الغفار — محمد بن عبداللہ التمر تاشی — ۱۰۰۴ ۲۶۴- ملتقی الابحر — امام ابراہیم بن محمد الحلبی — ۹۵۶ ۲۶۵- منہاج — شیخ ابو زکریا یحییٰ بن شرف النووی — ۶۷۶ ۲۶۶- مجمع البحرین — مظفر الدین احمد بن علی بن ثعلب الحنفی — ۶۹۴ ۲۶۷- المبتغیٰ — شیخ عیسیٰ بن محمد ابن ایناج الحنفی ۲۶۸- المبسوط — عبدالعزیٰ بن احمد الحلوانی — ۴۵۶ ۲۶۹- مسند فی الحدیث — الحافظ ابوالفتح نصر بن ابراہیم البروی — ۵۱۰

Fatawa Razawiya - Volume 2

270- Al-Musnad al-Kabir - Yaqub ibn Shayba al-Sadusi - 262 271- Munyat al-Musalli - Sadid al-Din Muhammad ibn Muhammad al-Kashghari - 705 272- Muwatta Imam Malik - Imam Malik ibn Anas al-Madani - 179 273- Mawarid al-Zaman - Nur al-Din Ali ibn Abi Bakr al-Haythami - 807 274- Mushkilat - Ahmad ibn Muzaffar al-Razi - 642 275- Muhadhdhab - Abi Ishaq ibn Muhammad al-Shafi'i - 476 276- Mizan al-Sharia al-Kubra - Abd al-Wahhab al-Sha'rani - 973 277- Mizan al-I'tidal - Muhammad ibn Ahmad al-Dhahabi - 748 278- Al-Mustakhraj 'ala al-Sahih al-Bukhari - Ahmad ibn Musa ibn Marduyah - 410 279- Makarim al-Akhlaq - Muhammad ibn Ja'far al-Khara'iti - 327

ن (Noon) 280- Al-Niqayah Mukhtasar al-Wiqayah - Abdullah ibn Mas'ud - 725 281- Nasb al-Rayah - Abu Muhammad Abdullah ibn Yusuf al-Hanafi al-Zayla'i - 762 282- Nur al-Idah - Hasan ibn 'Ammar ibn Ali al-Shurunbulali - 1069 283- Al-Nihayah - Husam al-Din Husayn ibn Ali al-Sighnaqi - 711 284- Al-Nihayah li-Ibn Athir - Majd al-Din Mubarak ibn Muhammad al-Jazari ibn Athir - 606 285- Al-Nahr al-Fa'iq - Umar ibn Nujaym al-Misri - 1005 286- Nawadir fi al-Fiqh - Hisham ibn Ubayd Allah al-Mazini al-Hanafi - 201 287- Nur al-Ayn - Muhammad ibn Ahmad al-Ma'ruf bi-Nishanjizada - 1031 288- Al-Nawazil fi al-Furu' - Abu al-Layth Nasr ibn Muhammad ibn Ibrahim al-Samarqandi - 376 289- Nawadir al-Usul fi Ma'rifah Akhbar al-Rasul - Abu Abd Allah Muhammad ibn Ali al-Hakim al-Tirmidhi - 255

Page 710 of 711

फ़तावा रज़विया - खण्ड 2

270- अल-मुसनद अल-कबीर - याक़ूब बिन शायबा अल-सादुसी - 262 271- मुनियत अल-मुसल्ली - सदीद अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-काशगरी - 705 272- मुवत्ता इमाम मालिक - इमाम मालिक बिन अनस अल-मदनी - 179 273- मवारिद अल-ज़मान - नूर अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी - 807 274- मुश्किलात - अहमद बिन मुज़फ़्फ़र अल-राज़ी - 642 275- मुहज़्ज़ब - अबी इसहाक़ इब्न मुहम्मद अल-शाफ़ई - 476 276- मीज़ान अल-शरिया अल-कुबरा - अब्दुल वहाब अल-शारानी - 973 277- मीज़ान अल-इतिदाल - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हबी - 748 278- अल-मुस्तख़रज 'अला अल-सहीह अल-बुखारी - अहमद बिन मूसा इब्न मरदुया - 410 279- मकारिम अल-अखलाक़ - मुहम्मद बिन जाफ़र अल-खरायती - 327

न (नून) 280- अल-निक़ाया मुख्तसर अल-विक़ाया - अब्दुल्लाह बिन मसूद - 725 281- नसब अल-राया - अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ अल-हनफ़ी अल-ज़ैलई - 762 282- नूर अल-ईदाह - हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलली - 1069 283- अल-निहाया - हुसाम अल-दीन हुसैन बिन अली अल-सिग़नाक़ी - 711 284- अल-निहाया लि-इब्न असीर - मजद अल-दीन मुबारक बिन मुहम्मद अल-ज़ज़री इब्न असीर - 606 285- अल-नहर अल-फ़ाइक़ - उमर बिन नुजैम अल-मिसरी - 1005 286- नवादिर फ़ी अल-फिक़्ह - हिशाम बिन उबैद अल्लाह अल-माज़िनी अल-हनफ़ी - 201 287- नूर अल-ऐन - मुहम्मद बिन अहमद अल-मारूफ़ बिनिशानचीज़ादा - 1031 288- अल-नवाज़िल फ़ी अल-फ़ुर' - अबू अल-लैथ नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-समरकंदी - 376 289- नवादिर अल-उसूल फ़ी मारिफ़ा अख़बार अल-रसूल - अबू अब्द अल्लाह मुहम्मद बिन अली अल-हाकिम अल-तिरमिज़ी - 255

पृष्ठ 710 का 711

فتاوىٰ رضويہ - جلد ثانى

٢٧٠۔ المسند الكبير - يعقوب بن شيبہ السدوسى - ٢٦٢ ٢٧١۔ منيۃ المصلى - سديد الدين محمد بن محمد الكاشغرى - ٧٠٥ ٢٧٢۔ موطا امام مالک - امام مالک بن انس المدنى - ١٧٩ ٢٧٣۔ موارد الظمآن - نور الدين على بن ابى بكر الہيثمى - ٨٠٧ ٢٧٤۔ مشكلات - احمد بن مظفر الرازى - ٦٤٢ ٢٧٥۔ مہذب - ابى اسحق ابن محمد الشافعى - ٤٧٦ ٢٧٦۔ ميزان الشريعۃ الكبرى - عبدالوہاب الشعرانى - ٩٧٣ ٢٧٧۔ ميزان الاعتدال - محمد بن احمد الذہبى - ٧٤٨ ٢٧٨۔ المستخرج على الصحيح البخارى - احمد بن موسىٰ ابن مردويہ - ٤١٠ ٢٧٩۔ مكارم اخلاق - محمد بن جعفر الخرائطى - ٣٢٧ ن ٢٨٠۔ النقايۃ مختصر الوقايۃ - عبداللہ بن مسعود - ٧٢٥ ٢٨١۔ نصب الراية - ابو محمد عبداللہ بن يوسف الحنفى الزيلعى - ٧٦٢ ٢٨٢۔ نور الايضاح - حسن بن عمار بن على الشرنبلالى - ١٠٦٩ ٢٨٣۔ النہاية - حسام الدين حسين بن على السغناقى - ٧١١ ٢٨٤۔ النہاية لابن اثير - مجد الدين مبارک بن محمد الجزرى ابن اثير - ٦٠٦ ٢٨٥۔ النہر الفائق - عمر بن نجيم المصرى - ١٠٠٥ ٢٨٦۔ نوادر فى الفقہ - ہشام بن عبيد اللہ المازنى الحنفى - ٢٠١ ٢٨٧۔ نور العين - محمد بن احمد المعروف بنشانچى زادہ - ١٠٣١ ٢٨٨۔ النوازل في الفروع - ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہيم السمرقندى - ٣٧٦ ٢٨٩۔ نوادر الاصول فى معرفۃ اخبار الرسول - ابو عبد اللہ محمد بن على الحكيم الترمذى - ٢٥٥

Fatawa Ridawiyya Volume Second

Waw 290- Al-Wafi fil Furoo' -- Abdullah bin Ahmad al-Nasafi -- 710 291- Al-Wajeez fil Furoo' -- Abu Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali -- 505 292- Al-Wiqaayah -- Mahmood bin Sadr-ush-Shari'ah -- 673 293- Al-Waseet fil Furoo' -- Abi Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali -- 505

He 294- Al-Hidayah fi Sharh al-Bidayah -- Burhan-ud-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani -- 593

Ye 295- Al-Yawaqeet wal Jawahir -- Sayyid Abdul Wahhab al-Sha'rani -- 973 296- Yanabee' fi Ma'rifat al-Usool -- Abi Abdullah Muhammad ibn Ramadan al-Rumi -- 769

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

फ़तावा रज़विया दूसरा खंड

व (Waw) २९०- अल-वाफी फिल फुरू -- अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नस्फी -- ७१० २९१- अल-वजीज फिल फुरू -- अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली -- ५०५ २९२- अल-विक़ायाह -- महमूद बिन सद्र-ुश-शरीअत -- ६७३ २९३- अल-वसीत फिल फुरू -- अबी हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली -- ५०५

ह (He) २९४- अल-हिदायाह फी शरह अल-बिदायाह -- बुरहान-उद-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी -- ५९३

य (Ye) २९५- अल-यवाक़ीत वल जवाहिर -- सय्यद अब्दुल वहाब अल-शरानी -- ९७३ २९६- यनाबी फी मारिफत अल-उसूल -- अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्न रमज़ान अल-रूमी -- ७६९

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस ऑफ दावत-ए-इस्लामी

पेज ७११ का ७११

فتاوی رضویہ جلد ثانی

و ۲۹۰- الوافی فی الفروع -- عبداللہ بن احمد النسفی -- ۷۱۰ ۲۹۱- الوجیز فی الفروع -- ابو حامد محمد بن محمد الغزالی -- ۵۰۵ ۲۹۲- الوقایۃ -- محمود بن صدر الشریعہ -- ۶۷۳ ۲۹۳- الوسیط فی الفروع -- ابی حامد محمد بن محمد الغزالی -- ۵۰۵

ھ ۲۹۴- الھدایۃ فی شرح البدایۃ -- برہان الدین علی بن ابی بکر المریغانی -- ۵۹۳

ی ۲۹۵- الیواقیت والجواھر -- سید عبدالوہاب الشعرانی -- ۹۷۳ ۲۹۶- ینابیع فی معرفۃ الاصول -- ابی عبداللہ محمد ابن رمضان الرومی -- ۷۶۹

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami